

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

अध्यात्म की ओर यात्रा

हिंदी अनुवाद

वॉल्यूम 1

SikhBookClub.Com

SGGS Online.com

Index
Volume -1
{Ang 1-715}

1. जपुजी साहब----------1-55
2. सोदर (रहरस साहिब)----------55-76
3. सोहिला साहिब----------76-83
4. सुखमणि साहिब----------1546-1780
5. आसा दी वार ----------2699-2776

🙏🙏🙏 We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher: SikhBookClub.com

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

अकाल-पुरख एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचनहार है, (करता है) जो सब में व्यापक है, भय से रहित है (निर्भय), वैर से रहित है (निर्वैर), जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव, जिसका शरीर नाश-रहित है), जो योनियों में नहीं आता,जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सत्गुरू की कृपा से मिलता है।

॥ ਜਪੁ ॥

॥ जपु ॥

जाप करो। (इसे गुरु की वाणी का शीर्षक भी माना गया है।)

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

निरंकार (अकाल पुरुष) सृष्टि की रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य (स्वरूप) था।

ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

अब वर्तमान में भी उसी का अस्तित्व है, श्री गुरु नानक देव जी का कथन है भविष्य में भी उसी सत्यस्वरूप निरंकार का अस्तित्व होगा II १ II

ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥

यदि कोई लाख बार शौच (स्नानादि) करता रहे तो भी इस शरीर के बाहरी स्नान से मन की पवित्रता नहीं हो सकती। मन की पवित्रता के बिना परमेश्वर (वाहिगुरु) के प्रति विचार भी नहीं किया जा सकता।

ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥

चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥

यदि कोई एकाग्रचित्त समाधि लगाकर मुंह से चुप्पी धारण कर ले तो भी मन की शांति (चुप) प्राप्त नहीं हो सकती; जब तक कि मन से झूठे विकार नहीं निकल जाते।

ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥

बेशक कोई जगत् की समस्त पुरियों के पदार्थों को ग्रहण कर ले तो भी पेट से भूखे रह कर (व्रत आदि करके) इस मन की तृष्णा रूपी भूख को नहीं मिटा सकता।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥

चाहे किसी के पास हज़ारों-लाखों चतुराई भरे विचार हों लेकिन ये सब अहंयुक्त होने के कारण परमेश्वर तक पहुँचने में कभी सहायक नहीं होते।

ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥

अब प्रश्न पैदा होता है कि फिर परमात्मा के समक्ष सत्य का प्रकाश पुंज कैसे बना जा सकता है, हमारे और निरंकार के बीच मिथ्या की जो दीवार है वह कैसे टूट सकती है ?

ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

सत्य रूप होने का मार्ग बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं - यह सृष्टि के प्रारंभ से ही लिखा चला आ रहा है कि ईश्वर के आदेश अधीन चलने से ही सांसारिक प्राणी यह सब कर सकता है II १ II

ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥

(सृष्टि की रचना में) समस्त शरीर (निरंकार के) आदेश द्वारा ही रचे गए हैं, किन्तु उसके आदेश को मुँह से शब्द निकाल कर ब्यान नहीं किया जा सकता।

ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥

हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥

परमेश्वर के आदेश से (इस धरा पर) अनेकानेक योनियों में जीवों का सृजन होता है, उसी के आदेश से ही मान-सम्मान (अथवा ऊँच - नीच का पद) प्राप्त होता है।

ਹੁਕਮੀ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥

परमेश्वर (वाहिगुरु) के आदेश से ही जीव श्रेष्ठ अथवा निम्न जीवन प्राप्त करता है, उसके द्वारा ही लिखे गए आदेश से जीव सुख और दुख की अनुभूति करता है।

ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

परमात्मा के आदेश से ही कई जीवों को कृपा मिलती है, कई उसके आदेश से आवागमन के चक्र में फँसे रहते हैं।

ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
उस सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर के अधीन ही सब-कुछ रहता है, उससे बाहर संसार का कोई कार्य नहीं है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁਝੈ ਤ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥
हे नानक ! यदि जीव उस अकाल पुरुष के आदेश को प्रसन्नचित्त होकर जान ले तो कोई भी आहंकारमयी 'मैं' के वश में नहीं रहेगा। यही अहंतत्व सांसारिक वैभव में लिप्त प्राणी को निरंकार के निकट नहीं होने देता॥ २ II

ਗਾਵੈ ਕੋ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥
गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
(परमेश्वर की कृपा से ही) जिस किसी के पास आत्मिक शक्ति है, वही उस (सर्वशक्तिमान) की ताकत का यश गायन कर सकता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
कोई उसके द्वारा प्रदत बख्शिशों को (उसकी) कृपादृष्टि मानकर ही उसकी कीर्ति का गुणगान कर रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ ਵਡਿਆਈਆ ਚਾਰ ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
कोई जीव उसके अकथनीय गुणों व महिमा को गा रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
कोई उसके विषम विचारों (ज्ञान) का गान विद्या द्वारा कर रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਸਾਜਿ ਕਰੇ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥
कोई उसका गुणगान रचयिता व संहारक ईश्वर का रूप जानकर करता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਜੀਅ ਲੈ ਫਿਰਿ ਦੇਹ ॥
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
कोई उसका बखान इस प्रकार करता है कि वह परम सत्ता जीवन देकर फिर वापिस ले लेती है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਜਾਪੈ ਦਿਸੈ ਦੂਰਿ ॥

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

कोई जीव उस निरंकार को स्वयं से दूर जानकर उसका यश गाता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਹਾਦਰਾ ਹਦੂਰਿ ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कोई उसे अपने अंग-संग जानकर उसकी महिमा गाता है।

ਕਥਨਾ ਕਥੀ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
अनेकानेक ने उसकी कीर्ति का कथन किया है किन्तु फिर अन्त नहीं हुआ।

ਕਥਿ ਕਥਿ ਕਥੀ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
करोड़ों जीवों ने उसके गुणों का कथन किया है, फिर भी-उसका वास्तविक स्वरूप पाया नहीं जा सका।

ਦੇਦਾ ਦੇ ਲੈਦੇ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
अकाल पुरुष दाता बनकर जीव को भौतिक पदार्थ (अथक) देता ही जा रहा है, (परंतु) जीव लेते हुए थक जाता है।

ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
समस्त जीव युगों-युगों से इन पदार्थों का भोग करते आ रहे हैं।

ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਰਾਹੁ ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
आदेश करने वाले निरंकार की इच्छा से ही (सम्पूर्ण सृष्टि के) मार्ग चल रहे हैं।

ਨਾਨਕ ਵਿਗਸੈ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੩॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥
श्री गुरु नानक देव जी सृष्टि के जीवों को सुचेत करते हुए कहते हैं कि वह निरंकार (वाहिगुरु) चिंता रहित होकर (इस संसार के जीवों पर) सदैव प्रसन्न रहता है॥ ३॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥

वह अकाल पुरुष (निरंकार) अपने सत्य नाम के साथ स्वयं भी सत्य है, उस (सत्य एवं सत्य नाम वाले) को प्रेम करने वाले ही अनंत कहते हैं।

ਆਖਹਿ ਮੰਗਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥

(समस्त देव, दैत्य, मनुष्य तथा पशु इत्यादि) जीव कहते रहते हैं, माँगते रहते हैं, (भौतिक पदार्थ) दे दे करते हैं, वह दाता (परमात्मा) सभी को देता ही रहता है।

ਫੇਰਿ ਕਿ ਅਗੈ ਰਖੀਐ ਜਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਰਬਾਰੁ ॥

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥

अब प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि (जैसे अन्य राजा - महाराजाओं के समक्ष कुछ भेंट लेकर जाते हैं वैसे ही) उस परिपूर्ण परमात्मा के समक्ष क्या भेंट ले जाई जाए कि उसका द्वार सरलता से दिखाई दे जाए ?

ਮੁਹੌ ਕਿ ਬੋਲਣੁ ਬੋਲੀਐ ਜਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥

जुबां से उसका गुणगान किस प्रकार का करें कि सुनकर वह अनंत शक्ति (ईश्वर) हमें प्रेम- प्रशाद प्रदान करे ?

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ਵਡਿਆਈ ਵੀਚਾਰੁ ॥

अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥

इनका उत्तर गुरु महाराज स्पष्ट करते हैं कि प्रभात काल (अमृत वेला) में (जिस समय व्यक्ति का मन आम तौर पर सांसारिक उलझनों से विरक्त होता है) उस सत्य नाम वाले अकाल पुरुष का नाम-स्मरण करें और उसकी महिमा का गान करें, तभी उसका प्रेम प्राप्त कर सकते हैं।

ਕਰਮੀ ਆਵੈ ਕਪੜਾ ਨਦਰੀ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥

(इससे यदि उसकी कृपा हो जाए तो) गुरु जी बताते हैं कि कर्म मात्र से जीव को यह शरीर रूपी कपड़ा अर्थात् मानव जन्म प्राप्त होता है, इससे मुक्ति नहीं मिलती, मोक्ष प्राप्त करने के लिए उसकी कृपामयी दृष्टि चाहिए।

ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭੁ ਆਪੇ ਸਚਿਆਰੁ ॥੪॥

नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

हे नानक ! इस प्रकार का बोध ग्रहण करो कि वह सत्य स्वरूप निरंकार ही सर्वस्व है इससे मनुष्य की समस्त शंकाएँ मिट जाएँगी॥ ४ ॥

ਥਾਪਿਆ ਨ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

वह परमात्मा किसी के द्वारा मूर्त रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता, न ही उसे बनाया जा सकता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਇ ॥

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥

वह मायातीत होकर स्वयं से ही प्रकाशमान है।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥

जिस मानव ने उस ईश्वर का नाम-स्मरण किया है उसी ने उसके दरबार में सम्मान प्राप्त किया है

ਨਾਨਕ ਗਾਵੀਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि उस गुणों के भण्डार निरंकार की बंदगी करनी चाहिए।

ਗਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਰਖੀਐ ਭਾਉ ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥

उसका गुणगान करते हुए, प्रशंसा सुनते हुए अपने ह्रदय में उसके प्रति श्रद्धा धारण करें।

ਦੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖੁ ਘਰਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥

ऐसा करने से दुखों का नाश होकर घर में सुखों का वास हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु के मुँह से निकला हुआ शब्द ही वेदों का ज्ञान है, वही उपदेश रूपी ज्ञान सभी जगह विद्यमान है।

ਗੁਰੁ ਈਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਰਖੁ ਬਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
गुरु ही शिव, विष्णु, ब्रह्मा और माता पार्वती है, क्योंकि गुरु परम शक्ति हैं।

ਜੇ ਹਉ ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
यदि मैं उस सर्गुण स्वरूप परमात्मा के बारे में जानता भी हूँ तो उसे कथन नहीं कर सकता, क्योंकि उसका कथन किया ही नहीं जा सकता।

ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
हे सच्चे गुरु ! मुझे सिर्फ यही समझा दो कि

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥
समस्त जीवों का जो एकमात्र दाता है मैं कभी भी उसे भूल न पाऊं ॥ ५॥

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਾ ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵਾ ਵਿਣੁ ਭਾਣੇ ਕਿ ਨਾਇ ਕਰੀ ॥
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
तीर्थ-स्नान भी तभी किया जा सकता है यदि ऐसा करना उसे स्वीकार हो, उस अकाल पुरुष की इच्छा के बिना में तीर्थ-स्नान करके क्या करूँगा, क्योंकि फिर तो यह सब अर्थहीन ही होगा।

ਜੇਤੀ ਸਿਰਠਿ ਉਪਾਈ ਵੇਖਾ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿ ਮਿਲੈ ਲਈ ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
उस रचयिता की पैदा की हुई जितनी भी सृष्टि मैं देखता हूँ, उसमें कर्मों के बिना न कोई जीव कुछ प्राप्त करता है और न ही उसे कुछ मिलता है।

ਮਤਿ ਵਿਚਿ ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਮਾਣਿਕ ਜੇ ਇਕ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣੀ ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
यदि सच्चे गुरु का मात्र एक ज्ञान ग्रहण कर लिया जाए तो मानव जीव की बुद्धि रत्न, जवाहर व माणिक्य जैसे पदार्थों से परिपूर्ण हो जाए।

ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
हे गुरु जी ! मुझे सिर्फ यही बोध करवा दो कि

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੬॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

सृष्टि के समस्त प्राणियों को देने वाला निरंकार मुझ से विस्मृत न हो ॥ ६ ॥

ਜੇ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਆਰਜਾ ਹੋਰ ਦਸੂਣੀ ਹੋਇ ॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥

यदि किसी मनुष्य अथवा योगी की योग-साधना करके चार युगों से दस गुणा अधिक, अर्थात्-चालीस युगों की आयु हो जाए।

ਨਵਾ ਖੰਡਾ ਵਿਚਿ ਜਾਣੀਐ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥

नवखण्डों (पौराणिक धर्म-ग्रन्थों में वर्णित इलावृत, किंपुरुष, भद्र, भारत, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश) में उसकी कीर्ति हो, सभी उसके सम्मान में साथ चलें।

ਚੰਗਾ ਨਾਉ ਰਖਾਇ ਕੈ ਜਸੁ ਕੀਰਤਿ ਜਗਿ ਲੇਇ ॥

चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥

संसार में प्रख्यात पुरुष बनकर अपनी शोभा का गान करवाता रहे।

ਜੇ ਤਿਸੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਈ ਤ ਵਾਤ ਨ ਪੁਛੈ ਕੇ ॥

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥

यदि अकाल पुरुष की कृपादृष्टि में वह मनुष्य नहीं आया तो किसी ने भी उसकी क्षेम नहीं पूछनी।

ਕੀਟਾ ਅੰਦਰਿ ਕੀਟੁ ਕਰਿ ਦੋਸੀ ਦੋਸੁ ਧਰੇ ॥

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥

इतने वैभव तथा मान-सम्मान होने के बावजूद भी ऐसा मनुष्य परमात्मा के समक्ष कीटों में क्षुद्र कीट अर्थात् अत्यंत अधम समझा जाता है, दोषयुक्त मनुष्य भी उसे दोषी समझेंगे

ਨਾਨਕ ਨਿਰਗੁਣਿ ਗੁਣੁ ਕਰੇ ਗੁਣਵੰਤਿਆ ਗੁਣੁ ਦੇ ॥

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥

गुरु नानक जी का कथन है कि वह असीम-शक्ति निरंकार गुणहीन मनुष्यों को गुण प्रदान करता है और गुणी मनुष्यों को अतिरिक्त गुणवान बनाता है।

ਤੇਹਾ ਕੋਇ ਨ ਸੁਝਈ ਜਿ ਤਿਸੁ ਗੁਣੁ ਕੋਇ ਕਰੇ ॥੭॥

तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

परंतु ऐसा कोई और दिखाई नहीं देता, जो उस गुणों से परिपूर्ण परमात्मा को कोई गुण प्रदान कर सके ॥ ७ ॥

ਸੁਣਿਐ ਸਿਧ ਪੀਰ ਸੁਰਿ ਨਾਥ ॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥

परमात्मा का नाम सुनने, अर्थात्-उसकी कीर्ति में अपने हृदय को लगाने के कारण ही सिद्ध, पीर, देव तथा नाथ इत्यादि को परम-पद की प्राप्ति हुई है।

ਸੁਣਿਐ ਧਰਤਿ ਧਵਲ ਆਕਾਸ ॥

सुणिऐ धरति धवल आकास ॥

नाम सुनने से ही पृथ्वी, उसको धारण करने वाले वृषभ (पौराणिक धर्न ग्रन्थों के अनुसार जो धौला बैल इस भू-लोक को अपने सीगों पर टिकाए हुए है) तथा आकाश के स्थायित्व की शक्ति का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੀਪ ਲੋਅ ਪਾਤਾਲ ॥

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥

नाम सुनने से शाल्मलि, क्रौंच, जम्बू, पलक आदि सप्त द्वीपः भूः भवः, स्वः आदि चौदह लोक तथा अतल, वितल, सुतल आदि सातों पातालों की अन्तर्यामता प्राप्त होती है।

ਸੁਣਿਐ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਕਾਲੁ ॥

सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥

नाम सुनने वाले को काल स्पर्श भी नहीं कर सकता।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥

हे नानक ! प्रभु के भक्त में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है,

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੮॥

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मो का नाश होता है॥ ८॥

ਸੁਣਿਐ ਈਸਰੁ ਬਰਮਾ ਇੰਦੁ ॥
सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
परमात्मा का नाम सुनने से ही शिव, ब्रह्मा तथा इन्द्र आदि उत्तम पदवी को प्राप्त कर सके हैं।

ਸੁਣਿਐ ਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹਣ ਮੰਦੁ ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
मंदे लोग यानी कि बुरे कर्म करने वाले मनुष्य भी नाम को श्रवण करने मात्र से प्रशंसा के लायक हो जाते हैं।

ਸੁਣਿਐ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਤਨਿ ਭੇਦ ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
नाम के साथ जुड़ने से योगादि तथा शरीर के विशुद्ध, मणिपूरक, मूलाधार आदि षट्-चक्र के रहस्य का बोध हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਸਾਸਤ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਵੇਦ ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नाम सुनने से षट्-शास्त्र, (सांख्य, योग, न्याय आदि), सत्ताईस स्मृतियों (मनु, याज्ञवल्कय स्मृति आदि) तथा चारों वेदों का ज्ञान उपलब्ध होता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
हे नानक ! संत जनों के हृदय में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੯॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥
परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मो का नाश होता है ॥ ९ ॥

ਸੁਣਿਐ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਗਿਆਨੁ ॥
सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
नाम सुनने से मनुष्य को सत्य, संतोष व ज्ञान जैसे मूल धमों की प्राप्ति होती है।

ਸੁਣਿਐ ਅਠਸਠਿ ਕਾ ਇਸਨਾਨੁ ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
नाम को सुनने मात्र से समस्त तीर्थों में श्रेष्ठ अठसठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਪੜਿ ਪੜਿ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
निरंकार के नाम को सुनने के बाद बार-बार रसना पर लाने वाले मनुष्य को उसके दरबार में सम्मान प्राप्त होता है।

ਸੁਣਿਐ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नाम सुनने से परमात्मा में लीनता सरलता से हो जाती है, क्योंकि इससे आत्मिक शुद्धि होकर ज्ञान प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
हे नानक ! प्रभु के भक्तों को सदैव आत्मिक आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੧੦॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥
परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मो का नाश होता है॥ १०॥

ਸੁਣਿਐ ਸਰਾ ਗੁਣਾ ਕੇ ਗਾਹ ॥
सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
नाम सुनने से गुणों के सागर श्री हरि में लीन हुआ जा सकता है।

ਸੁਣਿਐ ਸੇਖ ਪੀਰ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
नाम-श्रवण के प्रभाव से ही शेख, पीर और बादशाह अपने पद पर शोभायमान हैं।

ਸੁਣਿਐ ਅੰਧੇ ਪਾਵਹਿ ਰਾਹੁ ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
अज्ञानी मनुष्य प्रभु-भक्ति का मार्ग नाम-श्रवण करने से ही प्राप्त कर सकते हैं।

ਸੁਣਿਐ ਹਾਥ ਹੋਵੈ ਅਸਗਾਹੁ ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
इस भव-सागर की अथाह गहराई को जान पाना भी नाम-श्रवण की शक्ति से सम्भव हो सकता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
हे नानक ! सद्-पुरुषों के अंतर में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੧੧॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥
परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मो का नाश होता है।॥ ११॥

ਮੰਨੇ ਕੀ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
मंने की गति कही न जाइ ॥
उस अकाल पुरुष का नाम सुनने के पश्चात उसे मानने वाले अर्थात् उसे अपने हृदय में बसाने वाले मनुष्य की अवस्था कथन नहीं की जा सकती।

ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਪਿਛੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
जो भी उसकी अवस्था का बखान करता है तो उसे अंत में पछताना पड़ता है क्योंकि यह सच कर लेना सरल नहीं है, ऐसी कोई रचना नहीं जो नाम से प्राप्त होने वाले आनन्द का रहस्योद्घाटन कर सके।

ਕਾਗਦਿ ਕਲਮ ਨ ਲਿਖਣਹਾਰੁ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
ऐसी अवस्था को यदि लिखा भी जाए तो इसके लिए न कागज़ है, न कलम और न ही लिखने वाला कोई जिज्ञासु,

ਮੰਨੇ ਕਾ ਬਹਿ ਕਰਨਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
जो वाहिगुरु में लिवलीन होने वाले का विचार कर सकें।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम सर्वश्रेष्ठ व मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੨॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में बसा कर उसका चिन्तन करे॥ १२ ॥

ਮੰਨੈ ਸੁਰਤਿ ਹੋਵੈ ਮਨਿ ਬੁਧਿ ॥
मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
परमात्मा का नाम सुनकर उसका चिन्तन करने से मन और बुद्धि में उत्तम प्रीति पैदा हो जाती है।

ਮੰਨੈ ਸਗਲ ਭਵਣ ਕੀ ਸੁਧਿ ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
चिन्तन करने से सम्पूर्ण सृष्टि का ज्ञान-बोध होता है।

ਮੰਨੈ ਮੁਹਿ ਚੋਟਾ ਨਾ ਖਾਇ ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
चिन्तन करने वाला मनुष्य कभी सांसारिक कष्टों अथवा परलोक में यमों के दण्ड का भोगी नहीं होता।

ਮੰਨੈ ਜਮ ਕੈ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਇ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
चिन्तनशील मनुष्य अंतकाल में यमों के साथ नरकों में नहीं जाता, बल्कि देवगणों के साथ स्वर्ग-लोक को जाता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੩॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १३॥

ਮੰਨੈ ਮਾਰਗਿ ਠਾਕ ਨ ਪਾਇ ॥
मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥
निरंकार के नाम का चिन्तन करने वाले मानव जीव के मार्ग में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आती।

ਮੰਨੈ ਪਤਿ ਸਿਉ ਪਰਗਟੁ ਜਾਇ ॥
मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
चिन्तनशील मनुष्य संसार में शोभा का पात्र होता है।

ਮੰਨੈ ਮਗੁ ਨ ਚਲੈ ਪੰਥੁ ॥
मंनै मगु न चलै पंथु ॥
ऐसा व्यक्ति दुविधापूर्ण मार्ग अथवा साम्प्रदायिकता को छोड़ धर्म-पथ पर चलता है।

ਮੰਨੈ ਧਰਮ ਸੇਤੀ ਸਨਬੰਧੁ ॥
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
चिन्तनशील का धर्म-कार्यों से सुदृढ़ सम्बन्ध होता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੪॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १४ ॥

ਮੰਨੈ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥
मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
प्रभु के नाम का चिन्तन करने वाले मनुष्य मोक्ष द्वार को प्राप्त कर लेते हैं।

ਮੰਨੈ ਪਰਵਾਰੈ ਸਾਧਾਰੁ ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
चिन्तन करने वाले अपने समस्त परिजनों को भी उस नाम का आश्रय देते हैं।

ਮੰਨੈ ਤਰੈ ਤਾਰੇ ਗੁਰੁ ਸਿਖ ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
चिन्तनशील गुरसिख स्वयं तो इस भव-सागर को पार करता ही है तथा अन्य संगियों को भी पार करवा देता है।

ਮੰਨੈ ਨਾਨਕ ਭਵਹਿ ਨ ਭਿਖ ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
चिन्तन करने वाला मानव जीव, हे नानक ! दर-दर का भिखारी नहीं बनता।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੫॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे ॥ १५॥

ਪੰਚ ਪਰਵਾਣ ਪੰਚ ਪਰਧਾਨੁ ॥
पंच परवाण पंच परधानु ॥
जिन्होंने प्रभु-नाम का चिन्तन किया है वे श्रेष्ठ संतजन निरंकार के द्वार पर स्वीकृत होते हैं, वे ही वहाँ पर प्रमुख होते हैं।

ਪੰਚੇ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹਿ ਮਾਨੁ ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
ऐसे गुरुमुख प्यारे अकाल पुरुष की सभा में सम्मान पाते हैं।

ਪੰਚੇ ਸੋਹਹਿ ਦਰਿ ਰਾਜਾਨੁ ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
ऐसे सद्-पुरुष राज दरबार में शोभावान होते हैं।

ਪੰਚਾ ਕਾ ਗੁਰੁ ਏਕੁ ਧਿਆਨੁ ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
सद्गुणी मानव का ध्यान उस एक सतगुरु (निरंकार) में ही दृढ़ रहता है।

ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਕਰੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
यदि कोई व्यक्ति उस सृजनहार के बारे में कहना चाहे अथवा उसकी रचना का लेखा करे

ਕਰਤੇ ਕੈ ਕਰਣੈ ਨਾਹੀ ਸੁਮਾਰੁ ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
तो उस रचयिता की कुदरत का आकलन नहीं किया जा सकता।

ਧੌਲੁ ਧਰਮੁ ਦਇਆ ਕਾ ਪੂਤੁ ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
निरंकार द्वारा रची गई सृष्टि धर्म रूपी वृषभ (धौला बैल) ने अपने ऊपर टिका कर रखी हुई है जो कि दया का पुत्र है (क्योंकि मन में दया-भाव होगा तभी धर्म-कार्य इस मानव जीव से सम्भव होगा।)

ਸੰਤੋਖੁ ਥਾਪਿ ਰਖਿਆ ਜਿਨਿ ਸੂਤਿ ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जिसे संतोष रूपी सूत्र के साथ बांधा हुआ है।

ਜੇ ਕੋ ਬੁਝੈ ਹੋਵੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
यदि कोई परमात्मा के इस रहस्य को जान ले तो वह सत्यनिष्ठ हो सकता है।

ਧਵਲੈ ਉਪਰਿ ਕੇਤਾ ਭਾਰੁ ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
कितना बोझ है, वह कितना बोझ उठाने की समर्था रखता है।

ਧਰਤੀ ਹੋਰੁ ਪਰੈ ਹੋਰੁ ਹੋਰੁ ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
क्योंकि इस धरती पर सृजनहार ने जो रचना की है वह परे से परे है, अनन्त है।

ਤਿਸ ਤੇ ਭਾਰੁ ਤਲੈ ਕਵਣੁ ਜੋਰੁ ॥

तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
फिर उस बैल का बोझ किस शक्ति पर आश्रित है।

ਜੀਅ ਜਾਤਿ ਰੰਗਾ ਕੇ ਨਾਵ ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सृजनहार की इस रचना में अनेक जातियों, रंगों तथा अलग-अलग नाम से जाने जाने वाले लोग मौजूद हैं।

ਸਭਨਾ ਲਿਖਿਆ ਵੁੜੀ ਕਲਾਮ ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
जिनके मस्तिष्क पर परमात्मा की आज्ञा में चलने वाली कलम से कर्मों का लेखा लिखा गया है।

ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
किन्तु यदि कोई जन-साधारण इस कर्म-लेख को लिखने की बात कहे तो

ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਕੇਤਾ ਹੋਇ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
वह यह भी नहीं जान पाएगा कि यह लिखा जाने वाला लेखा कितना होगा।

ਕੇਤਾ ਤਾਣੁ ਸੁਆਲਿਹੁ ਰੂਪੁ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
लिखने वाले उस परमात्मा में कितनी शक्ति होगी, उसका रूप कितना सुन्दर है।

ਕੇਤੀ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਕੌਣੁ ਕੂਤੁ ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
उसकी कितनी दात है, ऐसा कौन है जो उसका सम्पूर्ण अनुमान लगा सकता है।

ਕੀਤਾ ਪਸਾਉ ਏਕੋ ਕਵਾਉ ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥
अकाल पुरुष के मात्र एक शब्द से समस्त सृष्टि का प्रसार हुआ है।

ਤਿਸ ਤੇ ਹੋਏ ਲਖ ਦਰੀਆਉ ॥

तिस ते होए लख दरीआउ ॥
उस एक शब्द रूपी आदेश से ही सृष्टि में एक से अनेक जीव-जन्तु, तथा अन्य पदार्थों के प्रवाह चल पड़े हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूं।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੬॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! तू सदा शाश्वत रूप हैं ॥ १६॥

ਅਸੰਖ ਜਪ ਅਸੰਖ ਭਾਉ ॥
असंख जप असंख भाउ ॥
इस सृष्टि में असंख्य लोग उस सृजनहार का जाप करते हैं, असंख्य ही उसको प्रीत करने वाले हैं।

ਅਸੰਖ ਪੂਜਾ ਅਸੰਖ ਤਪ ਤਾਉ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख्य उसकी अर्चना करते हैं, असंख्य तपी तपस्या कर रहे है।

ਅਸੰਖ ਗਰੰਥ ਮੁਖਿ ਵੇਦ ਪਾਠ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख्य लोग धार्मिक ग्रंथों व वेदों आदि का मुंह द्वारा पाठ कर रहे हैं।

ਅਸੰਖ ਜੋਗ ਮਨਿ ਰਹਹਿ ਉਦਾਸ ॥

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥

असंख्य ही योग-साधना में लीन रह कर मन को आसक्तियों से मुक्त रखते हैं।

ਅਸੰਖ ਭਗਤ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ਵੀਚਾਰ ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख्य ऐसे भक्तजन हैं जो उस गुणी निरंकार के गुणों को विचार कर ज्ञान की उपलब्धि करते हैं।

ਅਸੰਖ ਸਤੀ ਅਸੰਖ ਦਾਤਾਰ ॥
असंख सती असंख दातार ॥
असंख्य सत्य को जानने वाले अथवा परमार्थ-पथ पर चलने वाले तथा दानी सज्जन हैं।

ਅਸੰਖ ਸੂਰ ਮੁਹ ਭਖ ਸਾਰ ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख्य शूरवीर रणभूमि में शत्रु का सामना करते हुए शस्त्रों की मार सहते हैं।

ਅਸੰਖ ਮੋਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤਾਰ ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
असंख्य मानव जीव मौन धारण करके एकाग्रचित होकर उस अकाल-पुरुष में लिवलीन रहते हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूं।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੭॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! तू सदा शाश्वत रूप हैं।॥ १७ ॥

ਅਸੰਖ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਘੋਰ ॥
असंख मूरख अंध घोर ॥
इस सृष्टि में असंख्य मनुष्य विमूढ़ तथा गहन अज्ञानी हैं।

ਅਸੰਖ ਚੋਰ ਹਰਾਮਖੋਰ ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख्य चोर तथा अभक्ष्य खाने वाले हैं, जो दूसरों का माल चुरा कर खाते हैं।

ਅਸੰਖ ਅਮਰ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ਜੋਰ ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख्य ही ऐसे हैं जो अन्य लोगों पर जब्र-जुल्म से अत्याचार का शासन करके इस संसार को त्याग जाते हैं।

ਅਸੰਖ ਗਲਵਢ ਹਤਿਆ ਕਮਾਹਿ ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख्य अधर्मी मनुष्य जो दूसरों का गला काट कर हत्या का पाप कमा रहे हैं।

ਅਸੰਖ ਪਾਪੀ ਪਾਪੁ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख्य ही पापी इस संसार से पाप करते हुए चले जाते हैं।

ਅਸੰਖ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੇ ਫਿਰਾਹਿ ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख्य ही झूठा स्वभाव रखने वाले मिथ्या वचन बोलते फिरते हैं।

ਅਸੰਖ ਮਲੇਛ ਮਲੁ ਭਖਿ ਖਾਹਿ ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख्य मानव ऐसे हैं जो मलिन बुद्धि होने के कारण विष्ठा का भोजन खाते हैं।

ਅਸੰਖ ਨਿੰਦਕ ਸਿਰ�ि ਕਰਹਿ ਭਾਰੁ ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
असंख्य लोग दूसरों की निन्दा करके अपने सिर पर पाप का बोझ रखते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
श्री गुरु नानक देव जी स्वयं को निम्न कहते हुए फुरमाते हैं कि हमने तो कुकर्मी जीवों अर्थात् तामसी व आसुरी सम्पदा वाली सृष्टि का कथन किया है।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੮॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! तू सदा शाश्वत रूप हैं॥ १८॥

ਅਸੰਖ ਨਾਵ ਅਸੰਖ ਥਾਵ ॥
असंख नाव असंख थाव ॥
उस सृजनहार की सृष्टि में असंख्य ही नाम तथा असंख्य ही स्थान वाले जीव विचरन कर रहे हैं; अथवा इस सृष्टि में अकाल-पुरुष के अनेकानेक नाम हैं तथा अनेकानेक ही स्थान हैं, जहाँ पर परमात्मा का वास रहता है।

ਅਗੰਮ ਅਗੰਮ ਅਸੰਖ ਲੋਅ ॥
अगम अगम असंख लोअ ॥
असंख्य ही अकल्पनीय लोक हैं।

ਅਸੰਖ ਕਹਹਿ ਸਿਰਿ ਭਾਰੁ ਹੋਇ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
किन्तु जो मनुष्य उसकी रचना का गणित करते हुए 'असंख्य' शब्द का प्रयोग करते हैं उनके सिर पर भी भार पड़ता है।

ਅਖਰੀ ਨਾਮੁ ਅਖਰੀ ਸਾਲਾਹ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
शब्दों द्वारा ही उस निरंकार के नाम को जपा जा सकता है, शब्दों से ही उसका गुणगान किया जा सकता है।

ਅਖਰੀ ਗਿਆਨੁ ਗੀਤ ਗੁਣ ਗਾਹ ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
परमात्मा के गुणों का ज्ञान भी शब्दों द्वारा हो सकता है तथा उसकी प्रशंसा भी शब्दों द्वारा ही कही जा सकती है।

ਅਖਰੀ ਲਿਖਣੁ ਬੋਲਣੁ ਬਾਣਿ ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
शब्दों द्वारा ही उसकी वाणी को लिखा व बोला जा सकता है।

ਅਖਰਾ ਸਿਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ਵਖਾਣਿ ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
शब्दों द्वारा मस्तिष्क पर लिखे गए कर्मों को बताया जा सकता है।

ਜਿਨਿ ਏਹਿ ਲਿਖੇ ਤਿਸੁ ਸਿਰਿ ਨਾਹਿ ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
किन्तु जिस निरंकार ने यह कर्म लेख लिखे हैं उसके मस्तिष्क पर कोई कर्म-लेख नहीं है; अर्थात्- उसके कर्मों को न तो कोई कह सकता है और न उनका हिसाब रख सकता है।

ਜਿਵ ਫੁਰਮਾਏ ਤਿਵ ਤਿਵ ਪਾਹਿ ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
अकाल-पुरुष जिस प्रकार मनुष्य के कर्मों के अनुसार आदेश करता है, वैसे ही वह अपने कर्मों को भोगता है।

ਜੇਤਾ ਕੀਤਾ ਤੇਤਾ ਨਾਉ ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥
सृजनहार ने इस सृष्टि का जितना प्रसार किया है, वह समस्त नाम-रूप ही है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਹੀ ਕੋ ਥਾਉ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कोई भी स्थान उसके नाम से रिक्त नहीं है।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूं।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मैं तुझ पर एक बार भी क़ुर्बान होने के लायक नहीं हूँ।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੯॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! तू सदा शाश्वत रूप हैं।॥ १९ ॥

ਭਰੀਐ ਹਥੁ ਪੈਰੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ॥
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
यदि यह शरीर, हाथ-पैर अथवा कोई अन्य अंग मलिन हो जाए

ਪਾਣੀ ਧੋਤੈ ਉਤਰਸੁ ਖੇਹ ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
तो पानी से धो लेने से उसकी गन्दगी व मिट्टी साफ हो जाती है।

ਮੂਤ ਪਲੀਤੀ ਕਪੜੁ ਹੋਇ ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
यदि कोई वस्त्र पेशाब आदि से अपवित्र हो जाए

ਦੇ ਸਾਬੂਣੁ ਲਈਐ ਓਹੁ ਧੋਇ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
तो उसे साबुन के साथ धो लिया जाता है।

ਭਰੀਐ ਮਤਿ ਪਾਪਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
यदि मनुष्य की बुद्धि दुष्कर्मों के करने से मलिन हो जाए

ਓਹੁ ਧੋਪੈ ਨਾਵੈ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
तो वह वाहेगुरु के नाम का सिमरन करने से ही पवित्र हो सकती है।

ਪੁੰਨੀ ਪਾਪੀ ਆਖਣੁ ਨਾਹਿ ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
पुण्य और पाप मात्र कहने को ही नहीं हैं।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਕਰਣਾ ਲਿਖਿ ਲੈ ਜਾਹੁ ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
अपितु इस संसार में रहकर जैसे-जैसे कर्म किए जाएँगे वही धर्मराज द्वारा भेजे गए चित्र-गुप्त लिख कर ले जाएँगे ; अर्थात् मानव जीव द्वारा इस धरती पर किए जाने वाले प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्मो का हिसाब उसके साथ ही जाएगा, जिसके फलानुसार उसे स्वर्ग अथवा नरक की प्राप्ति होगी।

ਆਪੇ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਹੁ ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
सो मनुष्य स्वयं ही कर्म बीज बीजता है और स्वयं ही उसका फल प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੀ ਆਵਹੁ ਜਾਹੁ ॥੨੦॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥
गुरु नानक का कथन है कि जीव इस संसार में अपने कर्मो का फल भोगने हेतु अकाल-पुरुष के आदेश से आता जाता रहेगा ; अर्थात् जीव के कर्म उसे आवागमन के चक्र में ही रखेंगे, निरंकार जीव के कर्मों के अनुसार ही उसके फल की आज्ञा करेगा ॥ २० ॥

ਤੀਰਥੁ ਤਪੁ ਦਇਆ ਦਤੁ ਦਾਨੁ ॥
तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
तीर्थ-यात्रा, तप-साधना, जीवों पर दया-भाव करके तथा नि:स्वार्थ दान देने से

ਜੇ ਕੋ ਪਾਵੈ ਤਿਲ ਕਾ ਮਾਨੁ ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
यदि कोई मनुष्य सम्मान प्राप्त करता है तो वह अति लघु होता है।

ਸੁਣਿਆ ਮੰਨਿਆ ਮਨਿ ਕੀਤਾ ਭਾਉ ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
किन्तु जिन्होंने परमेश्वर के नाम को मन में प्रीत करके सुना व उसका निरन्तर चिन्तन किया है।

ਅੰਤਰਗਤਿ ਤੀਰਥਿ ਮਲਿ ਨਾਉ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
उन्होंने अपने अंतर के तीर्थ का मानो स्नान कर लिया और अपनी मलिनता को दूर कर लिया। (अर्थात् उस जीव ने अपने हृदय में बसे हुए निरंकार में लीन होकर अपनी अन्तरात्मा की मैल को साफ कर लिया है।)

ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਮੈ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
हे सर्गुण स्वरूप ! समस्त गुण आप में हैं, मुझ में शुभ-गुण कोई भी नहीं है।

ਵਿਣੁ ਗੁਣ ਕੀਤੇ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सदाचार के गुणों को धारण किए बिना परमेश्वर की भक्ति भी नहीं हो सकती।

ਸੁਅਸਤਿ ਆਥਿ ਬਾਣੀ ਬਰਮਾਉ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
हे निरंकार ! तुम्हारी सदा जय हो, तुम कल्याण स्वरूप हो, ब्रह्म रूप हो।

ਸਤਿ ਸੁਹਾਣੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
तुम सत्य हो, चेतन्य हो और सदैव आनन्द स्वरूप हो।

ਕਵਣੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਵਖਤੁ ਕਵਣੁ ਕਵਣ ਥਿਤਿ ਕਵਣੁ ਵਾਰੁ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
परमात्मा ने यह सृष्टि जब पैदा की थी तब कौन-सा समय, कौन-सा वक्त, कौन-सी तारीख, तथा कौन-सा दिन था।

ਕਵਣਿ ਸਿ ਰੁਤੀ ਮਾਹੁ ਕਵਣੁ ਜਿਤੁ ਹੋਆ ਆਕਾਰੁ ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
तब कौन-सी ऋतु, कौन-सा महीना था, जब यह प्रसार हुआ था, यह सब कौन जानता है।

ਵੇਲ ਨ ਪਾਈਆ ਪੰਡਤੀ ਜਿ ਹੋਵੈ ਲੇਖੁ ਪੁਰਾਣੁ ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
सृष्टि के प्रसार का निश्चित समय महा विद्वान, ऋषि-मुनि आदि भी नहीं जान पाए, यदि वे जान पाते तो निश्चय ही उन्होंने वेदों अथवा धर्म-ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया होता।

ਵਖਤੁ ਨ ਪਾਇਓ ਕਾਦੀਆ ਜਿ ਲਿਖਨਿ ਲੇਖੁ ਕੁਰਾਣੁ ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
इस समय का ज्ञान तो काजियों को भी नहीं हो पाया, यदि उन्हें पता होता तो वे कुरान आदि में इसका उल्लेख अवश्य करते।

ਥਿਤਿ ਵਾਰੁ ਨਾ ਜੋਗੀ ਜਾਣੈ ਰੁਤਿ ਮਾਹੁ ਨਾ ਕੋਈ ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
इस सृष्टि की रचना का दिन, वार, ऋतु व महीना आदि कोई योगी भी नहीं जान पाया है।

ਜਾ ਕਰਤਾ ਸਿਰਠੀ ਕਉ ਸਾਜੇ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
इसके बारे में तो जो इस जगत् का रचयिता है वह स्वयं ही जान सकता है कि इस सृष्टि का प्रसार कब किया गया।

ਕਿਵ ਕਰਿ ਆਖਾ ਕਿਵ ਸਾਲਾਹੀ ਕਿਉ ਵਰਨੀ ਕਿਵ ਜਾਣਾ ॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
मैं किस प्रकार उस अकाल पुरुष के कौतुक को कहूँ, कैसे उसकी प्रशंसा करूँ, किस प्रकार वर्णन करूँ और कैसे उसके भेद को जान सकता हूँ ?

ਨਾਨਕ ਆਖਣਿ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਇਕ ਦੂ ਇਕੁ ਸਿਆਣਾ ॥

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

सतगुरु जी कहते हैं कि कहने को तो हर कोई एक दूसरे से अधिक बुद्धिमान बनकर उस परमात्मा की श्लाघा को कहता है।

ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵਡੀ ਨਾਈ ਕੀਤਾ ਜਾ ਕਾ ਹੋਵੈ ॥

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥

किंतु परमेश्वर महान् है, उसका नाम उससे भी महान् है, सृष्टि में जो भी हो रहा है वह सब उसके किए से ही हो रहा है।

ਨਾਨਕ ਜੇ ਕੋ ਆਪੌ ਜਾਣੈ ਅਗੈ ਗਇਆ ਨ ਸੋਹੈ ॥੨੧॥

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

हे नानक ! यदि कोई उसके गुणों को जानने की बात कहता है तो वह परलोक में जाकर शोभा प्राप्त नहीं करता। अर्थात यदि कोई जीव उस अभेद निरंकार के गुणात्मक रहस्य को जानने का अभिमान करता है तो उसे इस लोक में तो क्या परलोक में भी सम्मान नहीं मिलता ॥ २१ ॥

ਪਾਤਾਲਾ ਪਾਤਾਲ ਲਖ ਆਗਾਸਾ ਆਗਾਸ ॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

सतगुरु जी जन-साधारण के मन में सात आकाश व सात पाताल होने के संशय की निवृति करते हुए कहते हैं कि सृष्टि की रचना में पाताल-दर-पाताल लाखों ही हैं तथा आकाश-दर-आकाश भी लाखों ही हैं।

ਓੜਕ ਓੜਕ ਭਾਲਿ ਥਕੇ ਵੇਦ ਕਹਨਿ ਇਕ ਵਾਤ ॥

ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥

वेद-ग्रंथों में भी यही एक बात कही गई है कि ढूंढने वाले इसको अंतरिम छोर तक ढूंढ कर थक गए हैं किंतु इनका अंत किसी ने नहीं पाया है।

ਸਹਸ ਅਠਾਰਹ ਕਹਨਿ ਕਤੇਬਾ ਅਸੁਲੂ ਇਕੁ ਧਾਤੁ ॥

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥

सभी धर्म ग्रन्थों में अठ्ठारह हजार जगत् होने की बात कही गई है परंतु वास्तव में इनका मूल एक ही परमेश्वर है जो कि इनका स्रष्टा है।

ਲੇਖਾ ਹੋਇ ਤ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੈ ਹੋਇ ਵਿਣਾਸੁ ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
यदि उसकी सृष्टि का लेखा हो सके तो कोई लिखे, किंतु यह लेखा करने वाला स्वयं नष्ट हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਵਡਾ ਆਖੀਐ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਆਪੁ ॥੨੨॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥
हे नानक ! जिस सृजनहार को इस सम्पूर्ण जगत् में महान कहा जा रहा है वह स्वयं को स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है ॥ २२ ॥

ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਿ ਏਤੀ ਸੁਰਤਿ ਨ ਪਾਈਆ ॥
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
स्तुति करने वाले साधकों ने भी उस परमात्मा की स्तुति करके उसकी सीमा को नहीं पाया।

ਨਦੀਆ ਅਤੈ ਵਾਹ ਪਵਹਿ ਸਮੁੰਦਿ ਨ ਜਾਣੀਅਹਿ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
जैसे नदियां-नाले समुद्र में मिलकर उसका अथाह अंत नहीं पा सकते, बल्कि अपना अस्तित्व भी खो लेते हैं, वैसे ही स्तुति करने वाले स्तुति करते-करते उसमें ही लीन हो जाते हैं।

ਸਮੁੰਦ ਸਾਹ ਸੁਲਤਾਨ ਗਿਰਹਾ ਸੇਤੀ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ॥
मुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
समुद्रों की शाह, शहंशाह होकर, पर्वत समान धन-सम्पत्ति के मालिक होकर भी,

ਕੀੜੀ ਤੁਲ�ि ਨ ਹੋਵਨੀ ਜੇ ਤਿਸੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰਹਿ ॥੨੩॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥
उस चींटी के समान नहीं हो सकते, यदि उनके मन से परमेश्वर विस्मृत नहीं हुआ होता ॥ २३॥

ਅੰਤੁ ਨ ਸਿਫਤੀ ਕਹਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
उस निरंकार की स्तुति करने की कोई सीमा नहीं तथा कहने से भी उसकी प्रशंसा का अन्त नहीं हो सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਕਰਣੈ ਦੇਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
सृजनहार द्वारा रची गई सृष्टि का भी कोई अन्त नहीं परंतु जब वह देता है तब भी उसका कोई अन्त नहीं है ।

ਅੰਤੁ ਨ ਵੇਖਣਿ ਸੁਣਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
उसके देखने व सुनने का भी अन्त नहीं है, अर्थात्-वह निरंकार सर्वद्रष्टा व सर्वश्रोता है ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿਆ ਮਨਿ ਮੰਤੁ ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
ईश्वर के हृदय का रहस्य क्या है, उसका बोध भी नहीं हो सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕੀਤਾ ਆਕਾਰੁ ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
इस सृष्टि का प्रसार जो उसने किया उसकी अवधि अथवा सीमा को भी नहीं जाना जा सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
उसके आदि व अन्त को भी नहीं जाना जा सकता ।

ਅੰਤ ਕਾਰਣਿ ਕੇਤੇ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥
अनेकानेक जीव उसका अन्त पाने के लिए बिलखते फिर रहे हैं ।

ਤਾ ਕੇ ਅੰਤ ਨ ਪਾਏ ਜਾਹਿ ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
किन्तु उस अथाह, अनन्त अकाल पुरुष का अंत नहीं पाया जा सकता ।

ਏਹੁ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
उसके गुणों का अन्त कहाँ होता है यह कोई नहीं जान सकता ।

ਬਹੁਤਾ ਕਹੀਐ ਬਹੁਤਾ ਹੋਇ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
उस पारब्रह्म की प्रशंसा, स्तुति, आकार अथवा गुणों को जितना कहा जाता है वह उतने ही अधिक होते जाते हैं

ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਊਚਾ ਥਾਉ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
निरंकार सर्वश्रेष्ठ है, उसका स्थान सर्वोच्च है ।

ਊਚੇ ਉਪਰਿ ਊਚਾ ਨਾਉ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
किन्तु उस सर्वश्रेष्ठ निरंकार का नाम महानतम है ।

ਏਵਡੁ ਊਚਾ ਹੋਵੈ ਕੋਇ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
यदि कोई शक्ति उससे बड़ी अथवा ऊँची है,

ਤਿਸੁ ਊਚੇ ਕਉ ਜਾਣੈ ਸੋਇ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
तो वह ही उस सर्वोच्च मालिक को जान सकती है ।

ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਜਾਣੈ ਆਪਿ ਆਪਿ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
निरंकार अपना सर्वस्व स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है, अन्य कोई नहीं

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਕਰਮੀ ਦਾਤਿ ॥੨੪॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥
सतिगुरु नानक देव जी का कथन है कि वह कृपासागर जीवों पर करुणा करके उनके कर्मों के अनुसार उन्हें समस्त पदार्थ प्रदान करता है॥ २४॥

ਬਹੁਤਾ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ ਨਾ ਜਾਇ ॥
बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥
उसके उपकार इतने अधिक हैं कि उनको लिखने की समर्था किसी में भी नहीं ।

ਵਡਾ ਦਾਤਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
वह अनेक बख्शिशें करने वाला होने के कारण बड़ा है किंतु उसे लोभ तिनका मात्र भी नहीं है ।

ਕੇਤੇ ਮੰਗਹਿ ਜੋਧ ਅਪਾਰ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
कई अनगिनत शूरवीर उसकी कृपा-दृष्टि की चाहना रखते हैं ।

ਕੇਤਿਆ ਗਣਤ ਨਹੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
उनकी संख्या की तो बात ही नहीं हो सकती ।

ਕੇਤੇ ਖਪਿ ਤੁਟਹਿ ਵੇਕਾਰ ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥
कई मानव निरंकार द्वारा प्रदत पदार्थों को विकारों हेतु भोगने के लिए जूझ-जूझ कर मर जाते हैं ।

ਕੇਤੇ ਲੈ ਲੈ ਮੁਕਰੁ ਪਾਹਿ ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
कई अकाल पुरुष द्वारा दिए जाने वाले पदार्थों को लेकर मुकर जाते हैं ।

ਕੇਤੇ ਮੂਰਖ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
कई मूढ़ व्यक्ति परमात्मा से पदार्थ ले लेकर खाते रहते हैं, कभी उसे स्मरण नहीं करते ।

ਕੇਤਿਆ ਦੂਖ ਭੂਖ ਸਦ ਮਾਰ ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
कईयों को दुख व भूख की मार सदैव पड़ती रहती है, क्योंकि यह उनके कर्मों में ही लिखा होता है।

ਏਹਿ ਭਿ ਦਾਤਿ ਤੇਰੀ ਦਾਤਾਰ ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥
किन्तु ऐसे सज्जन ऐसी मार को उस परमात्मा की बख्शिश ही मानते हैं ।

ਬੰਦਿ ਖਲਾਸੀ ਭਾਣੈ ਹੋਇ ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
इन्हीं कष्टों के कारण ही मानव जीव को वाहेगुरु का स्मरण होता है ।

ਹੋਰੁ ਆਖਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
मनुष्य को माया-मोह के बंधन से छुटकारा भी ईश्वर की आज्ञा में रहने से ही मिलता है

ਜੇ ਕੋ ਖਾਇਕੁ ਆਖਣਿ ਪਾਇ ॥

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥

इसके लिए कोई अन्य विधि हो, कोई भी नहीं कह सकता; अर्थात्-ईश्वर की आज्ञा में रहने के अतिरिक्त माया के मोह-बंधन से छुटकारा पाने की कोई अन्य विधि कोई नहीं बता सकता ।

ਓਹੁ ਜਾਣੈ ਜੇਤੀਆ ਮੁਹਿ ਖਾਇ ॥

ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥

यदि अज्ञानता वश कोई व्यक्ति इसके बारे में कथन करने की चेष्टा करे तो फिर उसे ही मालूम पड़ेगा कि उसे अपने मुँह पर यमों आदि की कितनी चोटें खानी पड़ी हैं ।

ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥

आपे जाणै आपे देइ ॥

परमात्मा संसार के समस्त प्राणियों की जरूरतों को जानता है और उन्हें स्वयं ही प्रदान भी करता है ।

ਆਖਹਿ ਸਿ ਭਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥

आखहि सि भि केई केइ ॥

संसार में सभी जीव कृतघ्न ही नहीं हैं, कई व्यक्ति ऐसे भी हैं जो इस बात को मानते हैं

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਸਿਫਤਿ ਸਾਲਾਹ ॥

जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥

परमात्मा प्रसन्न होकर जिस व्यक्ति को अपनी स्तुति को गाने की शक्ति प्रदान करता है

ਨਾਨਕ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥੨੫॥

नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

हे नानक ! वह बादशाहों का भी बादशाह हो जाता है ; अर्थात्- उसे ऊँचा व उत्तम पद प्राप्त हो जाता है॥ २५ ॥

ਅਮੁਲ ਗੁਣ ਅਮੁਲ ਵਾਪਾਰ ॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥

निरंकार के जिन गुणों को कथन नहीं किया जा सकता वे अमूल्य हैं, और इस निरंकार का सुमिरन अमूल्य व्यापार है ।

ਅਮੁਲ ਵਾਪਾਰੀਏ ਅਮੁਲ ਭੰਡਾਰ ॥

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

यह सुमिरन रूपी व्यापार का मार्गदर्शन करने वाले संत भी अमूल्य व्यापारी हैं और उन संतों के पास जो सद्गुणों का भण्डार है वह भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲ ਆਵਹਿ ਅਮੁਲ ਲੈ ਜਾਹਿ ॥

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥

जो व्यक्ति इन संतों के पास प्रभु-मिलाप हेतु आते हैं वे भी अमूल्य हैं और इनसे जो गुण ले जाते हैं वे भी अमूल्य हैं ।

ਅਮੁਲ ਭਾਇ ਅਮੁਲਾ ਸਮਾਹਿ ॥

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

परस्पर गुरु-सिख का प्रेम अमूल्य है, गुरु के प्रेम से आत्मा को प्राप्त होने वाला आनंद भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਧਰਮੁ ਅਮੁਲੁ ਦੀਬਾਣੁ ॥

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥

अकाल-पुरुष का न्याय भी अमूल्य है, उसका न्यायालय भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਤੁਲੁ ਅਮੁਲੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥

अकाल पुरुष की न्याय करने वाली तुला अमूल्य है, और जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों को तोलने हेतु परिमाण (तौल) भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਬਖਸੀਸ ਅਮੁਲੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

अकाल पुरुष द्वारा प्रदान किए जाने वाले पदार्थ भी अमूल्य हैं और उन पदार्थों का चिन्ह भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਕਰਮੁ ਅਮੁਲੁ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

निरंकार की जीव पर होने वाली कृपा भी अमूल्य है तथा उसका आदेश भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੋ ਅਮੁਲੁ ਆਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
वह परमात्मा अति अमूल्य है उसका कथन घनिष्ठता से कर पाना असम्भव है ।

ਆਖਿ ਆਖਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
परंतु फिर भी अनेक भक्त जन उसके गुणों का व्याख्यान करके अर्थात् उसकी स्तुति कर-करके भूत, भविष्य व वर्तमान काल में उसमें लिवलीन हो रहे हैं ।

ਆਖਹਿ ਵੇਦ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥
चारों वेद व अट्ठारह पुराणों में भी उसकी महिमा कही गई है ।

ਆਖਹਿ ਪੜੇ ਕਰਹਿ ਵਖਿਆਣ ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
उनको पढ़ने वाले भी अकाल-पुरुष का व्याख्यान करते हैं ।

ਆਖਹਿ ਬਰਮੇ ਆਖਹਿ ਇੰਦ ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
सृष्टिकर्ता ब्रह्मा व स्वर्गाधिपति इन्द्र भी उसके अमूल्य गुणों को कथन करते हैं ।

ਆਖਹਿ ਗੋਪੀ ਤੈ ਗੋਵਿੰਦ ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥
गिरिधर गोपाल कृष्ण तथा उसकी गोपियाँ भी उस निरंकार का गुणगान करती हैं ।

ਆਖਹਿ ਈਸਰ ਆਖਹਿ ਸਿਧ ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
महादेव तथा गोरख आदि सिद्ध भी उसकी कीर्ति को कहते हैं ।

ਆਖਹਿ ਕੇਤੇ ਕੀਤੇ ਬੁਧ ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
उस सृष्टिकर्ता ने इस जगत् में जितने भी बुद्धिमान किए हैं वे भी उसके यश को कहते हैं

ਆਖਹਿ ਦਾਨਵ ਆਖਹਿ ਦੇਵ ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥
समस्त दैत्य व देवतादि भी उसकी महिमा को कहते हैं ।

ਆਖਹਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵ ॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
संसार के सभी पुण्य-कर्मी मानव, नारद आदि ऋषि-मुनि तथा अन्य भक्त जन उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं ।

ਕੇਤੇ ਆਖਹਿ ਆਖਣਿ ਪਾਹਿ ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥
कितने ही जीव वर्तमान में कह रहे हैं, तथा कितने ही भविष्य में कहने का यत्न करेंगे

ਕੇਤੇ ਕਹਿ ਕਹਿ ਉਠਿ ਉਠਿ ਜਾਹਿ ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
तने ही जीव भूतकाल में कहते हुए अपना जीवन समाप्त कर चुके हैं ।

ਏਤੇ ਕੀਤੇ ਹੋਰਿ ਕਰੇਹਿ ॥
एते कीते होरि करेहि ॥
इतने तो हम गिन चुके हैं यदि इतने ही और भी साथ मिला लिए जाएँ ।

ਤਾ ਆਖਿ ਨ ਸਕਹਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥
ता आखि न सकहि केई केइ ॥
तो भी कोई किसी साधन से उसकी अमूल्य स्तुति कह नहीं सकता ।

ਜੇਵਡੁ ਭਾਵੈ ਤੇਵਡੁ ਹੋਇ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
जितना स्व-विस्तार चाहता है उतना ही विस्तृत हो जाता है ।

ਨਾਨਕ ਜਾਣੈ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥
श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वह सत्य स्वरूप निरंकार ही अपने अमूल्य गुणों को जानता है ।

ਜੇ ਕੋ ਆਖੈ ਬੋਲੁਵਿਗਾੜੁ ॥
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥
यदि कोई निरर्थक बोलने वाला परमेश्वर का अंत कहे कि वह इतना है

ਤਾ ਲਿਖੀਐ ਸਿਰਿ ਗਾਵਾਰਾ ਗਾਵਾਰੁ ॥੨੬॥
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥
तो उसे महामूर्खों में अंकित किया जाता है॥ २६ ॥

ਸੋ ਦਰੁ ਕੇਹਾ ਸੋ ਘਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਬਹਿ ਸਰਬ ਸਮਾਲੇ ॥
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
उस प्रतिपालक ईश्वर का द्वार तथा घर कैसा है, जहाँ बैठकर वह सम्पूर्ण सृष्टि को सम्भाल रहा है ?

ਵਾਜੇ ਨਾਦ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖਾ ਕੇਤੇ ਵਾਵਣਹਾਰੇ ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
(यहाँ पर सतिगुरु जी इस प्रश्न की निवृति में उत्तर देते हैं) हे मानव ! उसके द्वार पर नाना प्रकार के असंख्य वादन गूंज रहे हैं और कितने ही उनको बजाने वाले विद्यमान हैं ।

ਕੇਤੇ ਰਾਗ ਪਰੀ ਸਿਉ ਕਹੀਅਨਿ ਕੇਤੇ ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
कितने ही राग हैं जो रागिनियों के संग वहाँ गान किए जा रहे हैं और उन रागों को गाने वाले गंधर्व आदि रागी भी कितने ही हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਤੁਹਨੋ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਗਾਵੈ ਰਾਜਾ ਧਰਮੁ ਦੁਆਰੇ ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

उस निरंकार का यश पवन, जल तथा अग्नि देव गा रहे हैं तथा समस्त जीवों के कर्मों का विश्लेषक धर्मराज भी उसके द्वार पर खड़ा उसकी महिमा को गाता है ।

ਗਾਵਹਿ ਚਿਤੁ ਗੁਪਤੁ ਲਿਖਿ ਜਾਣਹਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਧਰਮੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

जीवों द्वारा किए जाने वाले कर्मों को लिखने वाले चित्र-गुप्त भी उस अकाल-पुरुष का यशोगान करते हैं तथा धर्मराज चित्रगुप्त द्वारा लिखे जाने वाले शुभाशुभ कर्मों का विचार करता है ।

ਗਾਵਹਿ ਈਸਰੁ ਬਰਮਾ ਦੇਵੀ ਸੋਹਨਿ ਸਦਾ ਸਵਾਰੇ ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

परमात्मा द्वारा प्रतिपादित शिव, ब्रह्मा व उनकी देवियों (शक्ति) जो शोभायमान हैं, सदैव उसका स्तुति-गान करते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਇੰਦ ਇਦਾਸਣਿ ਬੈਠੇ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

हे निरंकार ! समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर तुम्हारे द्वार पर खड़ा तुम्हारा यश गा रहे हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਇੰਦ ਇਦਾਸਣਿ ਬੈਠੇ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

हे निरंकार ! समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर तुम्हारे द्वार पर खड़ा तुम्हारा यश गा रहे हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਦਰਿ ਗਾਵਨਿ ਸਾਧ ਵਿਚਾਰੇ ॥

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

सिद्ध लोग समाधियों में स्थित हुए तुम्हारा यश गाते हैं, जो विचारवान साधु हैं वे विवेक से यशोगान करते हैं ।

ਗਾਵਨਿ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਗਾਵਹਿ ਵੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

तुम्हारा स्तुतिगान यति, सती और संतोषी व्यक्ति भी गाते हैं तथा पराक्रमी योद्धा भी तुम्हारी महिमा का गान करते हैं ।

ਗਾਵਨਿ ਪੰਡਿਤ ਪੜਨਿ ਰਖੀਸਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵੇਦਾ ਨਾਲੇ ॥
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
संसार के समस्त विद्वान व महान् जितेन्द्रिय ऋषि-मुनि युगों-युगों से वेदों को पढ़-पढ़ कर उस अकाल पुरुष का यशोगान कर रहे हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗਾ ਮਛ ਪਇਆਲੇ ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥
मन को मोह लेने वाली समस्त सुन्दर स्त्रियां स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक व पाताल लोक में तुम्हारा गुणगान कर रही हैं ।

ਗਾਵਨਿ ਰਤਨ ਉਪਾਏ ਤੇਰੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
निरंकार द्वारा उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न, संसार के अठसठ तीर्थ तथा उन में विद्यमान संत जन (श्रेष्ठ जन) भी उसके यश को गाते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰਾ ਗਾਵਹਿ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
सभी योद्धा, महाबली, शूरवीर अकाल पुरुष का यश गाते हैं, उत्पत्ति के चारों स्रोत (अण्डज, जरायुज, स्वेदज व उदभिज्ज) भी उसके गुणों को गाते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਵਰਭੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਧਾਰੇ ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
नवखण्ड, मण्डल व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, जो उस सृजनहार ने बना-बना कर धारण कर रखे हैं, वे सभी तेरी स्तुति गाते हैं ।

ਸੇਈ ਤੁਧੁਨੋ ਗਾਵਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
वास्तव में वे ही तेरी कीर्ति को गा सकते हैं जो तेरी भक्ति में लीन हैं, तेरे नाम के रसिया हैं, और जो तुझे अच्छे लगते हैं ।

ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਵੀਚਾਰੇ ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
अनेकानेक और भी कई ऐसे जीव मुझे स्मरण नहीं हो रहे हैं, जो तुम्हारा यशोगान करते हैं, हे नानक ! मैं कहाँ तक उनका विचार करूँ, अर्थात् यशोगान करने वाले जीवों की गणना मैं कहाँ तक करूँ ।

ਸੋਈ ਸੋਈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
वह सत्यस्वरूप अकाल पुरुष भूतकाल में था, वही सद्गुणी निरंकार वर्तमान में भी है

ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
वह भविष्य में सदैव रहेगा, वह सृजनहार परमात्मा न जन्म लेता है और न ही उसका नाश होता है।

ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
जिस सृष्टि रचयिता ईश्वर ने रंग-बिरंगी, तरह-तरह के आकार वाली व अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति अपनी माया द्वारा की है ।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਜਿਵ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
अपनी इस उत्पत्ति को कर-करके वह अपनी रुचि अनुसार ही देखता है अर्थात् उनकी देखभाल अपनी इच्छानुसार ही करता है ।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
जो भी उस अकाल पुरुष को भला लगता है वही कार्य वह करता है और भविष्य में करेगा, इसके प्रति उसको आदेश करने वाला उसके समान कोई नहीं है ।

ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ ॥੨੭॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥
गुरु नानक जी का फरमान है कि हे मानव ! वह ईश्वर शाहों का शाह अर्थात शहंशाह है, उसकी आज्ञा में रहना ही उचित है॥ २७ ॥

ਮੁੰਦਾ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰਮੁ ਪਤੁ ਝੋਲੀ ਧਿਆਨ ਕੀ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤਿ ॥
मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
गुरु जी कहते हैं कि हे मानव योगी ! तुम संतोष रूपी मुद्राएँ, दुष्कर्मों से लाज रूपी पात्र, पाप रहित होकर लोक-परलोक में बनाई जाने वाली प्रतिष्ठा रूपी चोली ग्रहण कर तथा शरीर को प्रभु की नाम-सिमरन रूपी विभूति लगाकर रख ।

ਖਿੰਥਾ ਕਾਲੁ ਕੁਆਰੀ ਕਾਇਆ ਜੁਗਤਿ ਡੰਡਾ ਪਰਤੀਤਿ ॥

खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥

मृत्यु का स्मरण करना तेरी गुदड़ी है, शरीर का पवित्र रहना योग की युक्ति है, अकाल पुरुष पर दृढ़ विश्वास तुम्हारा डण्डा है । इन सब सदाचारों को ग्रहण करना ही वास्तविक योगी भेष है ।

ਆਈ ਪੰਥੀ ਸਗਲ ਜਮਾਤੀ ਮਨਿ ਜੀਤੈ ਜਗੁ ਜੀਤੁ ॥

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥

संसार के समस्त जीवों में तुम्हारा प्रेम हो अर्थात् उनके दुख-सुख को तुम अपना दुख-सुख अनुभव करो, यही तुम्हारा आई पंथ(योगियों का श्रेष्ठ पंथ) है । काम आदिक विकारों से मन को जीत लेना जगत् पर विजय प्राप्त कर लेने के समान है ।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है ।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੨੮॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ २८ ॥

ਭੁਗਤਿ ਗਿਆਨੁ ਦਇਆ ਭੰਡਾਰਣਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਾਜਹਿ ਨਾਦ ॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥

हे मानव ! निरंकार की सर्व-व्यापकता के ज्ञान का भण्डार होना तुम्हारा भोजन है, तुम्हारे हृदय की दया भण्डारिन होगी, क्योंकि दया-भाव रखने से ही सद्गुणों की प्राप्ति होती है। घट-घट में जो चेतन सत्ता प्रकट हो रही है वह नाद बजने के समान है।

ਆਪਿ ਨਾਥੁ ਨਾਥੀ ਸਭ ਜਾ ਕੀ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਅਵਰਾ ਸਾਦ ॥

आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥

जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को एक सूत्र में बांध रखा है, वही सृजनहार परमात्मा नाथ है, सभी ऋद्धियों-सिद्धियाँ अन्य प्रकार का स्वाद हैं।

ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਦੁਇ ਕਾਰ ਚਲਾਵਹਿ ਲੇਖੇ ਆਵਹਿ ਭਾਗ ॥

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥

संयोग व वियोग रूपी नियम दोनों मिलकर इस सृष्टि का कार्य चला रहे हैं, कर्मानुसार ही जीवों को अपने-अपने भाग्य की प्राप्ति होती है।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੨੯॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है ॥ २९ ॥

ਏਕਾ ਮਾਈ ਜੁਗਤਿ ਵਿਆਈ ਤਿਨਿ ਚੇਲੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥
एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
एक ब्रह्म की किसी रहस्यमयी युक्ति द्वारा माया की प्रसूति से तीन पुत्र पैदा हुए।

ਕੁ ਸੰਸਾਰੀ ਇਕੁ ਭੰਡਾਰੀ ਇਕੁ ਲਾਏ ਦੀਬਾਣੁ ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
इन में से एक ब्रह्मा सृष्टि रचयिता, एक विष्णु संसार का पोषक, और एक शिव संहारक के रूप में दरबार लगाकर बैठ गया।

ਜਿਵ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈ ਜਿਵ ਹੋਵੈ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
जिस तरह उस अकाल पुरुष को भला लगता है उसी तरह वह इन तीनों को चलाता है और जैसा उसका आदेश होता है वैसा ही कार्य ये देव करते हैं।

ਓਹੁ ਵੇਖੈ ਓਨਾ ਨਦਰ�ि ਨ ਆਵੈ ਬਹੁਤਾ ਏਹੁ ਵਿਡਾਣੁ ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
वह अकाल पुरुष तो इन तीनों को आदि व अन्त समय में देख रहा है किंतु इनको वह अदृश्य स्वरूप निरंकार नज़र नहीं आता, यह अत्याश्चर्यजनक बात है।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੩੦॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३०॥

ਆਸਣੁ ਲੋਇ ਲੋਇ ਭੰਡਾਰ ॥
आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
उसका आसन प्रत्येक लोक में है तथा प्रत्येक लोक में उसका भण्डार है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ਸੁ ਏਕਾ ਵਾਰ ॥
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
उस परमात्मा ने सभी भण्डारों को एक ही बार परिपूर्ण कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
वह सृजनहार रचना कर करके सृष्टि को देख रहा है।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਕੀ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ॥
नानक सचे की साची कार ॥
हे नानक ! उस सत्यस्वरूप निरंकार की सम्पूर्ण रचना भी सत्य है।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੩੧॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३१॥

ਇਕ ਦੂ ਜੀਭੌ ਲਖ ਹੋਹਿ ਲਖ ਹੋਵਹਿ ਲਖ ਵੀਸ ॥
इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
एक जिव्हा से लाख जिव्हा हो जाएँ, फिर लाख से बीस लाख हो जाएँ।

ਲਖੁ ਲਖੁ ਗੇੜਾ ਆਖੀਅਹਿ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਜਗਦੀਸ ॥

लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥

फिर एक-एक जिव्हा से लाख-लाख बार उस जगदीश्वर का एक नाम उच्चारण करें, अर्थात् निशदिन उस प्रभु का नाम सिमरन किया जाए।

ਏਤੁ ਰਾਹਿ ਪਤਿ ਪਵੜੀਆ ਚੜੀਐ ਹੋਇ ਇਕੀਸ ॥

एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥

इस मार्ग से पति-परमेश्वर को मिलने हेतु बनी नाम रूपी सीढ़ियों पर चढ़ कर ही उस अद्वितीय प्रभु से मिलन हो सकता है।

ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਆਕਾਸ ਕੀ ਕੀਟਾ ਆਈ ਰੀਸ ॥

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥

वैसे तो ब्रह्म-ज्ञानियों की बड़ी-बड़ी बातें सुनकर निकृष्ट जीव भी देहाभिमान में अनुकरण करने की इच्छा रखते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਕੂੜੀ ਕੂੜੈ ਠੀਸ ॥੩੨॥

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

परंतु गुरु नानक जी कहते हैं कि उस परमात्मा की प्राप्ति तो उसकी कृपा से ही होती है, वरन् ये तो मिथ्या लोगों की मिथ्या ही बातें है ॥ ३२ ॥

ਆਖਣਿ ਜੋਰੁ ਚੁਪੈ ਨਹ ਜੋਰੁ ॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥

अकाल पुरुष की कृपा-दृष्टि के बिना इस जीव में कुछ भी कहने व चुप रहने की शक्ति नहीं है अर्थात् रसना को चला पाना जीव के वश में नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਮੰਗਣਿ ਦੇਣਿ ਨ ਜੋਰੁ ॥

जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥

माँगने की भी इसमें ताकत नहीं है और न ही कुछ देने की समर्था है।

ਜੋਰੁ ਨ ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਨਹ ਜੋਰੁ ॥

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥

यदि जीव चाहे कि मैं जीवित रहूँ तो भी इसमें बल नहीं है, क्योंकि कई बार मनुष्य उपचाराधीन ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, मरना भी उसके वश में नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਰਾਜਿ ਮਾਲਿ ਮਨਿ ਸੋਰੁ ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
धन, सम्पत्ति व वैभव प्राप्त करने में भी इस जीव का कोई बल है, जिन के लिए मन में जो जुनून होता है।

ਜੋਰੁ ਨ ਸੁਰਤੀ ਗਿਆਨਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
श्रुति वेदों के ज्ञान का विचार करने का भी इसमें बल नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਜੁਗਤੀ ਛੁਟੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
संसार से मुक्त होने की षट्-शास्त्रों में दी गई युक्तियाँ धारण कर लेने की शक्ति भी इसमें नहीं है।

ਜਿਸੁ ਹਥਿ ਜੋਰੁ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸੋਇ ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
जिस अकाल पुरुष के हाथ में ताकत है वही रचना करके देख रहा है।

ਨਾਨਕ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਨ ਕੋਇ ॥੩੩॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि फिर तो यही जानना चाहिए कि इस संसार में न कोई स्वेच्छा से नीच है, न उत्तम है, वह प्रभु जिस को कर्मानुसार जैसा रखता है वैसा ही वह रहता है॥ ३३॥

ਰਾਤੀ ਰੁਤੀ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ॥
राती रुती थिती वार ॥
रात्रियों, ऋतुओं, तिथियों, सप्ताह के वारों,

ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਪਾਤਾਲ ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
वायु, जल, अग्नि व पाताल आदि यावत प्रपंच हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਥਾਪਿ ਰਖੀ ਧਰਮ ਸਾਲ ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
स्रष्टा प्रभु ने उस में पृथ्वी रूपी धर्मशाला स्थापित करके रखी हुई है, इसी को कर्मभूमि कहते हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਕੇ ਰੰਗ ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
उस धर्मशाला में नाना प्रकार के जीव हैं, जिनकी अनेक भांति की धर्म-कर्म की उपासना की युक्ति है और उनके श्वेत-श्यामादि अनेक प्रकार के वर्ण हैं।

ਤਿਨ ਕੇ ਨਾਮ ਅਨੇਕ ਅਨੰਤ ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
उनके अनेक प्रकार के अनंत नाम हैं।

ਕਰਮੀ ਕਰਮੀ ਹੋਇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
संसार में विचरन कर रहे उन अनेकानेक जीवों को अपने शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही उन पर विचार किया जाता है।

ਸਚਾ ਆਪਿ ਸਚਾ ਦਰਬਾਰੁ ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
विचार करने वाला वह निरंकार स्वयं भी सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है।

ਤਿਥੈ ਸੋਹਨਿ ਪੰਚ ਪਰਵਾਣੁ ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
वही उसके दरबार में शोभायमान होते हैं जो प्रामाणिक संत हैं,

ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
जिनके माथे पर कृपालु परमात्मा की कृपा का चिन्ह अंकित होता है।

ਕਚ ਪਕਾਈ ਓਥੈ ਪਾਇ ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
प्रभु के दरबार में कच्चे-पक्के होने का परीक्षण होता है।

ਨਾਨਕ ਗਇਆ ਜਾਪੈ ਜਾਇ ॥੩੪॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥
हे नानक ! इस तथ्य का निर्णय वहाँ जाकर ही होता है ॥ ३४ ॥

ਧਰਮ ਖੰਡ ਕਾ ਏਹੋ ਧਰਮੁ ॥
धरम खंड का एहो धरमु ॥
(कर्मकाण्ड में) धर्मखण्ड का यही नियम है; जो पूर्व पंक्तियों में कथन किया गया है।

ਗਿਆਨ ਖੰਡ ਕਾ ਆਖਹੁ ਕਰਮੁ ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
(गुरु नानक जी) अब ज्ञान खण्ड का व्यवहार वर्णन करते हैं।

ਕੇਤੇ ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਵੈਸੰਤਰ ਕੇਤੇ ਕਾਨ ਮਹੇਸ ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
(इस संसार में) कितने प्रकार के पवन, जल, अग्नि हैं, और कितने ही रूप कृष्ण व रुद्र (शिव) के हैं।

ਕੇਤੇ ਬਰਮੇ ਘਾੜਤਿ ਘੜੀਅਹਿ ਰੂਪ ਰੰਗ ਕੇ ਵੇਸ ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
कितने ही ब्रह्मा इस सृष्टि में अनेकानेक रूप-रंगों के भेष में जीव पैदा करते हैं।

ਕੇਤੀਆ ਕਰਮ ਭੂਮੀ ਮੇਰ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਧੂ ਉਪਦੇਸ ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
कितनी ही कर्म भूमियों, सुमेर पर्वत, धुव भक्त व उनके उपदेष्टा हैं।

ਕੇਤੇ ਇੰਦ ਚੰਦ ਸੂਰ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਮੰਡਲ ਦੇਸ ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
इन्द्र व चंद्रमा भी कितने हैं, कितने ही सूर्य, कितने ही मण्डल व मण्डलांतर्गत देश हैं।

ਕੇਤੇ ਸਿਧ ਬੁਧ ਨਾਥ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਦੇਵੀ ਵੇਸ ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
कितने ही सिद्ध, विद्वान व नाथ हैं, कितने ही देवियों के स्वरूप हैं।

ਕੇਤੇ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਮੁਨਿ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਰਤਨ ਸਮੁੰਦ ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
कितने ही देव, दैत्य व मुनि हैं और रत्नों से भरपूर कितने ही समुद्र हैं।

ਕੇਤੀਆ ਖਾਣੀ ਕੇਤੀਆ ਬਾਣੀ ਕੇਤੇ ਪਾਤ ਨਰਿੰਦ ॥

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥

कितने ही उत्पत्ति के स्रोत हैं (अण्डज-जरायुजादि), कितनी प्रकार की वाणी है (परा, पश्यन्ती आदि) कितने ही बादशाह हैं और कितने ही राजा हैं।

ਕੇਤੀਆ ਸੁਰਤੀ ਸੇਵਕ ਕੇਤੇ ਨਾਨਕ ਅੰਤੁ ਨ ਅੰਤੁ ॥੩੫॥

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

कितनी ही वेद-श्रुतियाँ हैं, उनके सेवक भी कितने ही हैं, गुरु नानक जी कहते हैं कि उसकी रचना का कोई अन्त नहीं है; इन सबके अन्त का बोध ज्ञान-खण्ड में जाने से होता है, जहाँ पर जीव ज्ञानयान हो जाता है॥ ३५॥

ਗਿਆਨ ਖੰਡ ਮਹਿ ਗਿਆਨੁ ਪਰਚੰਡੁ ॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥

ज्ञान खण्ड में जो ज्ञान कथन किया है वह प्रबल है।

ਤਿਥੈ ਨਾਦ ਬਿਨੋਦ ਕੋਡ ਅਨੰਦੁ ॥

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥

इस खण्ड में रागमयी, प्रसन्नतापूर्ण व कौतुकी आनंद विद्यमान है।

ਸਰਮ ਖੰਡ ਕੀ ਬਾਣੀ ਰੂਪੁ ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
(श्रम खंड में परमेश्वर की भक्ति को प्रमुख माना गया है) परमेश्वर की भक्ति करने का उद्यम करने वाले संतजनों की वाणी मधुर है।

ਤਿਥੈ ਘਾੜਤਿ ਘੜੀਐ ਬਹੁਤੁ ਅਨੂਪੁ ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
वहाँ (श्रम खण्ड में) पर अद्वितीय सुन्दरता वाले स्वरूप की गढ़न की जाती है।

ਤਾ ਕੀਆ ਗਲਾ ਕਥੀਆ ਨਾ ਜਾਹਿ ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
उनकी बातों का कथन नहीं किया जा सकता।

ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਪਿਛੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
यदि कोई उनकी महिमा कथन करने की चेष्टा करता भी है तो उसे बाद में पछताना पड़ता है।

ਤਿਥੈ ਘੜੀਐ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਮਨਿ ਬੁਧਿ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
वहाँ पर वेद-श्रुति, ज्ञान, मन और बुद्धि गढ़े जाते हैं।

ਤਿਥੈ ਘੜੀਐ ਸੁਰਾ ਸਿਧਾ ਕੀ ਸੁਧਿ ॥੩੬॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥
वहाँ पर दिव्य बुद्धि वाले देवों व सिद्ध अवस्था की प्राप्ति वाली सूझ गढ़ी जाती है॥ ३६॥

ਕਰਮ ਖੰਡ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜੋਰੁ ॥
करम खंड की बाणी जोरु ॥
जिन उपासकों पर परमेश्वर की कृपा हुई उनकी वाणी शक्तिवान हो जाती है।

ਤਿਥੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ਹੋਰੁ ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
जहाँ पर ये उपासक विद्यमान होते हैं वहाँ पर कोई और नहीं होता।

ਤਿਥੈ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰ ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
उन उपासकों में देह को जीतने वाले योद्धा, इन्द्रियों को जीतने वाले महाबली तथा मन को जीतने वाले शूरवीर होते हैं।

ਤਿਨ ਮਹਿ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰ ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
उन में प्रभु राम परिपूर्ण रहते हैं।

ਤਿਥੈ ਸੀਤੋ ਸੀਤਾ ਮਹਿਮਾ ਮਾਹਿ ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
उन निर्गुण स्वरूप राम के साथ महिमा रूपी सीता चन्द्रमा समान प्रकाशमान व मन को शीतल करने वाली है।

ਤਾ ਕੇ ਰੂਪ ਨ ਕਥਨੇ ਜਾਹਿ ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ऐसा स्वरूप प्राप्त करने वालों के गुण कथन नहीं किए जा सकते।

ਨਾ ਓਹਿ ਮਰਹਿ ਨ ਠਾਗੇ ਜਾਹਿ ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
वे उपासक न तो मरते हैं और न ही ठगे जाते हैं,

ਜਿਨ ਕੈ ਰਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
जिनके हृदय में परमात्मा राम का स्वरूप विद्यमान होता है।

ਤਿਥੈ ਭਗਤ ਵਸਹਿ ਕੇ ਲੋਅ ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
वहाँ कई लोकों के भक्त निवास करते हैं।

ਕਰਹਿ ਅਨੰਦੁ ਸਚਾ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
जिनके हृदय में सत्यस्वरूप निरंकार वास करता है, वे आनंद प्राप्त करते हैं।

ਸਚ ਖੰਡਿ ਵਸੈ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
सत्य धारण करने वालों के ह्रदय (सचखण्ड) में वह निरंकार निवास करता है; अर्थात् वैकुण्ठ लोक, जहाँ सद्गुणी व्यक्तियों का वास हैं), में वह सर्गुण स्वरूप परमात्मा रहता है।

करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
यह सृजनहार परमात्मा अपनी सृजना को रच-रचकर कृपा-दृष्टि से देखता है अर्थात् उसका पोषण करता है।

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
उस सचखण्ड में अनन्त ही खण्ड, मण्डल व ब्रह्माण्ड है।

जे को कथै त अंत न अंत ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
यदि कोई उसके अन्त को कथन करे तो अन्त नहीं पा सकता, क्योंकि वह असीम है।

तिथै लोअ लोअ आकार ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
वहाँ अनेकानेक लोक विद्यमान है और उनमें रहने वालों के अस्तित्व भी अनेक हैं।

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
फिर जिस तरह वह सर्वशक्तिमान परमात्मा आदेश करता है उसी तरह वे कार्य करते हैं।

वेखै विगसै करि वीचारु ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
अपने इस रचे हुए प्रपंच को देख कर व शुभाशुभ कर्मों को विचार कर वह प्रसन्न होता है।

नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि उस निरंकार के मूल-तत्व का जो मैंने उल्लेख किया है उसे कथन करना अत्यंत कठिन है ॥३७॥

ਜਤੁ ਪਾਹਾਰਾ ਧੀਰਜੁ ਸੁਨਿਆਰੁ ॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
इंद्रिय-निग्रह रूपी भट्ठी हो, संयम रूपी सुनार हो।

ਅਹਰਣਿ ਮਤਿ ਵੇਦੁ ਹਥੀਆਰੁ ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
अचल बुद्धि रूपी अहरन हो, गुरु ज्ञान रूपी हथौड़ा हो।

ਭਉ ਖਲਾ ਅਗਨਿ ਤਪ ਤਾਉ ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
निरंकार के भय को धौंकनी तथा तपोमय जीवन को अग्नि ताप बनाओ।

ਭਾਂਡਾ ਭਾਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਿਤੁ ਢਾਲਿ ॥
भांडा भाउ अम्रितु तितु ढालि ॥
हृदय - प्रेम को बर्तन बनाकर उसमें नाम - अमृत को गलाया जाए।

ਘੜੀਐ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਟਕਸਾਲ ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
इसी सच्ची टकसाल में नैतिक जीवन को गढ़ा जाता है। अर्थात्-ऐसी टकसाल से ही सद्गुणी जीवन बनाया जा सकता है।

ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰਮੁ ਤਿਨ ਕਾਰ ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
जिन पर अकाल पुरुष की कृपा-दृष्टि होती है, उन्हीं को ये कार्य करने को मिलते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥੩੮॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥
हे नानक ! ऐसे सद्गुणी जीव उस कृपासागर परमात्मा की कृपा-दृष्टि के कारण कृतार्थ होते हैं। ॥ ३८ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
सलोकु ॥

ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਧਰਤਿ ਮਹਤੁ ॥
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
समस्त सृष्टि का गुरु पवन है, पानी पिता है, और पृथ्वी बड़ी माता है।

ਦਿਵਸੁ ਰਾਤਿ ਦੁਇ ਦਾਈ ਦਾਇਆ ਖੇਲੈ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
दिन और रात दोनों धाय एवं धीया (बच्चों को खिलाने वाले) के समान हैं तथा सम्पूर्ण जगत् इन दोनों की गोद में खेल रहा है।

ਚੰਗਿਆਈਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ਵਾਚੈ ਧਰਮੁ ਹਦੂਰਿ ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
शुभ व अशुभ कर्मों का विवेचन उस अकाल-पुरुष के दरबार में होगा।

ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਕੇ ਨੇੜੈ ਕੇ ਦੂਰਿ ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
अपने शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप ही जीव परमात्मा के निकट अथवा दूर होता है।

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗਏ ਮਸਕਤਿ ਘਾਲਿ ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
जिन्होंने प्रभु का नाम-सुमिरन किया है, वे जप-तप आदि की गई मेहनत को सफल कर गए हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਕੇਤੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ॥੧॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥
गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि ऐसे सद्प्राणियों के मुख उज्ज्वल हुए हैं और कितने ही जीव उनके साथ, अर्थात् उनका अनुसरण करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो गए हैं।॥ १॥

ਸੋ ਦਰੁ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧
सो दरु रागु आसा महला १
सो दरु रागु आसा महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੋ ਦਰੁ ਤੇਰਾ ਕੇਹਾ ਸੋ ਘਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਬਹਿ ਸਰਬ ਸਮਾਲੇ ॥
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
हे निरंकार ! तेरा वह (अकथनीय) द्वार कैसा है, वह निवास-स्थान कैसा है, जहाँ पर विराजमान होकर तुम सम्पूर्ण सृष्टि का प्रतिपालन करते हो ? (इसके बारे में कैसे कथन करूं)।

ਵਾਜੇ ਤੇਰੇ ਨਾਦ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖਾ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਵਾਵਣਹਾਰੇ ॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥
हे अनन्त स्वरूप ! तुम्हारे द्वार पर अनगिनत दिव्य नाद गूंज रहे हैं, कितने ही वहाँ पर नादिन् हैं।

ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਰਾਗ ਪਰੀ ਸਿਉ ਕਹੀਅਹਿ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥
तुम्हारे द्वार पर कितने ही रागिनियों के संग राग कहते हैं और कितने ही वहीं पर उन रागों व रागिनियों को गाने वाले हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪਵਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਗਾਵੈ ਰਾਜਾ ਧਰਮੁ ਦੁਆਰੇ ॥
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
(आगे गाने वालों का वर्णन करते हैं) हे अकाल पुरुष ! तुझे पवन, जल व अग्नि देव आदि गाते हैं और धर्मराज भी तुम्हारे द्वार पर तुम्हारा यश गाता है।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਚਿਤੁ ਗੁਪਤੁ ਲਿਖਿ ਜਾਣਨਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਧਰਮੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥
जीवों के शुभाशुभ कर्म लिखने वाले चित्र-गुप्त तुम्हारा ही यशोगान करते है तथा लिख कर शुभ व अशुभ कर्मों का विचार करते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਈਸਰੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਦੇਵੀ ਸੋਹਨਿ ਤੇਰੇ ਸਦਾ ਸਵਾਰੇ ॥
गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥
शिव व ब्रह्मा अपनी दैवी-शक्तियों सहित तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं, जो तुम्हारे संवारे हुए सदैव शोभा पा रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਇੰਦ੍ਰ ਇੰਦ੍ਰਾਸਣਿ ਬੈਠੇ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥
गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
देवताओं के संग अपने सिंहासन पर बैठा इन्द्र भी तुम्हारी महिमा को गा रहा है।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਦਰਿ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਸਾਧ ਬੀਚਾਰੇ ॥

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥

समाधि में स्थित हुए सिद्ध भी तुम्हारा यश गा रहे हैं, विचारवान साधु भी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਵੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥
गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥
तुम्हारा गुणगान यति, सत्यवादी व संतोषी व्यक्ति भी कर रहे हैं और शूरवीर भी तुम्हारे गुणों की प्रशंसा कर रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪੰਡਿਤ ਪੜਨਿ ਰਖੀਸੁਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵੇਦਾ ਨਾਲੇ ॥
गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
युगों-युगों तक वेदाध्ययन द्वारा विद्वान व ऋषि-मुनि आदि तुम्हारी कीर्ति को कहते हैं

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਇਆਲੇ ॥
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥
मन को मोह लेने वाली स्त्रियाँ स्वर्ग, मृत्यु व पाताल लोक में तुम्हारा यशोगान कर रही हैं

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਰਤਨ ਉਪਾਏ ਤੇਰੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥
गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
तुम्हारे उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न व संसार के अठसठ तीर्थ भी तुम्हारी स्तुति कर रहे हैं

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰਾ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥
गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥
योद्धा, महाबली व शूरवीर भी तुम्हारा यशोगान कर रहे हैं, चारों उत्पत्ति के स्रोत भी तुम्हारे यश को गा रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥
गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥
नवखण्ड, द्वीप व ब्रह्माण्ड आदि के जीव भी तुम्हारा गान कर रहे हैं जो तुम ने रच-रच कर इस सृष्टि में स्थित कर रखे हैं।

ਸੇਈ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ ॥
सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
जो तुम्हें अच्छे लगते हैं व तेरे प्रेम में रत हैं वे भक्त ही तुम्हारा यशोगान करते हैं।

ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਬੀਚਾਰੇ ॥
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥
और भी अनेकानेक तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं, वे मेरे चिंतन में नहीं आ रहे हैं।

ਸੋਈ ਸੋਈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि मैं उनका क्या विचार करूँ।

ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
सत्य स्वरूप निरंकार भूतकाल में था और वह सत्य सम्मान वाला अब भी है।

ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ ਕਰ�ि ਕਰ�ि ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
पुनः भविष्य में भी वही सत्य स्वरूप होगा, जिसने इस सृष्टि की रचना की है, वह न नष्ट होता है, न नष्ट होगा।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਜਿਉ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥
करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥
अनेक प्रकार के रंगों की और विभिन्न तरह की माया द्वारा पशु-पक्षी आदि जीवों की जिसने रचना की है, वह सृजनहार परमात्मा अपने किए हुए प्रपंच को कर-करके अपनी इच्छानुसार ही देखता।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਫਿਰਿ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥
जो उसे भला लगता है वही करता है, पुनः उस पर आदेश करने वाला कोई भी नहीं है।

ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਤਿਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ ॥੧॥
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥
हे नानक ! वह शाहों का शाह शहंशाह है, उसकी आज्ञा में रहना ही उचित है॥ १॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਸੁਣਿ ਵਡਾ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥
हे निरंकार स्वरूप ! (शास्त्रों व विद्वानों से) सुन कर तो प्रत्येक कोई तुझे बड़ा कहता है।

ਕੇਵਡੁ ਵਡਾ ਡੀਠਾ ਹੋਇ ॥
केवडु वडा डीठा होइ ॥
किंतु कितना बड़ा है, यह तो तभी कोई बता सकता है यदि किसी ने तुझे देखा हो अथवा तुम्हारे दर्शन किए हों।

ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥
वास्तव में उस सगुण स्वरूप परमात्मा की न तो कोई कीमत आंक सकता है और न ही उसका कोई अंत कह सकता है, क्योंकि वह अनन्त व असीम है।

ਕਹਣੈ ਵਾਲੇ ਤੇਰੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥
जिन्होंने तेरी गहिमा का अंत पाया है अर्थात् तेरे सच्चिदानन्द स्वरूप को जाना है वे तुझ में ही अभेद हो जाते हैं॥ १॥

ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥
वडे मेरे साहिबा गहिर ग्मभीरा गुणी गहीरा ॥
हे मेरे अकाल पुरुष ! तुम सर्वोच्च हो, स्वभाव में स्थिर व गुणों के निधान हो।

ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੈ ਤੇਰਾ ਕੇਤਾ ਕੇਵਡੁ ਚੀਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारा कितना विस्तार है, इस तथ्य का ज्ञान किसी को भी नहीं है ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਸਭਿ ਸੁਰਤੀ ਮਿਲਿ ਸੁਰਤਿ ਕਮਾਈ ॥
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥
समस्त ध्यान-मग्न होने वाले व्यक्तियों ने मिलकर अपनी वृत्ति लगाई।

ਸਭ ਕੀਮਤਿ ਮਿਲਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥
समस्त विद्वानों ने मिलकर तुम्हारा अन्त जानने की कोशिश की।

ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਗੁਰ ਗੁਰਹਾਈ ॥
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥
शास्त्रवेता, प्राणायामी, गुरु व गुरुओं के भी गुरु

ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਤੇਰੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥
तेरी महिमा का तिनका मात्र भी व्याख्यान नहीं कर सकते॥ २॥

ਸਭਿ ਸਤ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭਿ ਚੰਗਿਆਈਆ ॥
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥
सभी शुभ-गुण, सभी तप और सभी शुभ कर्मः

ਸਿਧਾ ਪੁਰਖਾ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥
सिद्ध - पुरुषों की सिद्धि समान महानता

ਸਿਧੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥
तुम्हारी कृपा के बिना पूर्वोक्त गुणों की जो सिद्धियाँ हैं वे किसी ने भी प्राप्त नहीं की।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਨਾਹੀ ਠਾਕਿ ਰਹਾਈਆ ॥੩॥
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥
यदि परमेश्वर की कृपा से ये शुभ-गुण प्राप्त हो जाएँ तो फिर किसी के रोके रुक नहीं सकते॥ ३॥

ਆਖਣ ਵਾਲਾ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰਾ ॥
आखण वाला किआ वेचारा ॥
यदि कोई कहे कि हे अकाल-पुरुष ! मैं तुम्हारी महिमा कथन कर सकता हूँ तो यह बेचारा क्या कह सकता है।

ਸਿਫਤੀ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥
क्योंकि हे परमेश्वर ! तेरी स्तुति के भण्डार तो वेदों, ग्रंथों व तेरे भक्तों के हृदय में भरे पड़े हैं।

ਜਿਸੁ ਤੂ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਕਿਆ ਚਾਰਾ ॥
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥
जिन को तुम अपनी स्तुति करने की बुद्धि प्रदान करते हो, उनके साथ किसी का क्या ज़ोर चल सकता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੪॥੨॥
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही सबको शोभायमान करने वाला है ॥ ४ ॥ २ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਆਖਾ ਜੀਵਾ ਵਿਸਰੈ ਮਰਿ ਜਾਉ ॥
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
हे माता जी ! जब तक मैं परमेश्वर का नाम सिमरन करता हूँ तब तक ही मैं जीवित रहता हूँ, जब मुझे यह नाम विस्मृत हो जाता है तो मैं स्वयं को मृत समझता हूँ ; अर्थात् मैं प्रभु के नाम में ही सुख अनुभव करता हूँ, वरन् मैं दुखी होता हूँ।

ਆਖਣਿ ਅਉਖਾ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
किन्तु यह सत्य नाम कथन करना बहुत कठिन है।

ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਲਾਗੈ ਭੂਖ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
यदि प्रभु के सत्य नाम की (भूख) चाहत हो

ਉਤੁ ਭੂਖੈ ਖਾਇ ਚਲੀਅਹਿ ਦੂਖ ॥੧॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥
तो वह चाहत ही समस्त दुखों को नष्ट कर देती है॥ १॥

ਸੋ ਕਿਉ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
सो हे माता जी ! ऐसा नाम फिर मुझे विस्मृत क्यों हो।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह स्वामी सत्य है और उसका नाम भी सत्य है। ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥
परमात्मा के सत्य नाम की तिनका मात्र महिमाः

ਆਖਿ ਥਕੇ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
आखि थके कीमति नही पाई ॥
(व्यासादि मुनि) कह कर थक गए हैं, किंतु वे उसके महत्व को नहीं जान पाए हैं।

ਜੇ ਸਭਿ ਮਿਲਿ ਕੈ ਆਖਣ ਪਾਹਿ ॥
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
यदि सृष्टि के समस्त जीव मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने लगें

ਵਡਾ ਨ ਹੋਵੈ ਘਾਟਿ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥
तो वह स्तुति करने से न बड़ा होता है और न निन्दा करने से घटता है॥ २ ॥

ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥
वह निरंकार न तो कभी मरता है और न ही उसे कभी शोक होता है।

ਦੇਦਾ ਰਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਭੋਗੁ ॥
देदा रहै न चूकै भोगु ॥
वह संसार के जीवों को खान-पान देता रहता है जो कि उसके भण्डार में कभी भी समाप्त नहीं होता।

ਗੁਣੁ ਏਹੋ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥
दानेश्वर परमात्मा जैसा गुण सिर्फ उसी में ही है, अन्य किसी में नहीं।

ਨਾ ਕੋ ਹੋਆ ਨਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥੩॥
ना को होआ ना को होइ ॥३॥
ऐसे परमेश्वर जैसा न पहले कभी हुआ है और न ही आगे कोई होगा ॥ ३॥

ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਤੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥
जितना महान् परमात्मा स्वयं है उतनी ही महान उसकी बख्शिश है।

ਜਿਨਿ ਦਿਨੁ ਕਰਿ ਕੈ ਕੀਤੀ ਰਾਤਿ ॥
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥
जिस ने दिन बनाकर फिर रात की रचना की है।

ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਹਿ ਤੇ ਕਮਜਾਤਿ ॥
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
ऐसे परमेश्वर को जो विस्मृत कर दे वह नीच है।

ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਬਾਝੁ ਸਨਾਤਿ ॥੪॥੩॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना मनुष्य संकीर्ण जाति का होता है। ॥ ४॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु गूजरी महला ४ ॥
रागु गूजरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਜਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਤਪੁਰਖਾ ਬਿਨਉ ਕਰਉ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥
हे परमात्मा स्वरूप, सतिगुरु, सति पुरुष जी ! मेरी आप से यही विनती है कि

ਹਮ ਕੀਰੇ ਕਿਰਮ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਕਰਿ ਦਇਆ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੧॥
हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥
मैं अति सूक्ष्म कृमियों के समान जीव हूँ, सो हे सतगुरु जी ! मैं आपकी शरण में उपस्थित हूँ, कृपा करके मेरे अंत : करण में प्रभु-नाम का प्रकाश कर दो ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਗੁਰਦੇਵ ਮੋ ਕਉ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥
हे मेरे मित्र गुरुदेव ! मुझे राम के नाम का प्रकाश प्रदान करो।

ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਨ ਸਖਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਮਰੀ ਰਹਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु उपदेश के अनुसार जो परमात्मा का नाम सिमरन करता है वही मेरे प्राणों का सहायक है, परमेश्वर की महिमा कथन करना ही मेरी रीति है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਕੇ ਵਡ ਭਾਗ ਵਡੇਰੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਧਾ ਹਰਿ ਪਿਆਸ ॥

हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥

हे सतिगुरु जी ! आपकी कृपा से मैं जानता हूँ कि जिन की प्रभु-नाम में निष्ठा है, और उसको जपने की तृष्णा है उन हरि-भक्तों का सौभाग्य है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਹਿ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿ ॥੨॥

हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥

क्योंकि उस हरि का हरि-नाम प्राप्त होने से ही उसके भक्तों को संतुष्टि प्राप्त होती है तथा संतों की संगत मिलने से उनके हृदय में हरि के गुणों का ज्ञान रूपी प्रकाश।

ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਤੇ ਭਾਗਹੀਣ ਜਮ ਪਾਸਿ ॥

जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥

जिन्होंने हरि के हरि हरि नाम रस को नहीं चखा, अर्थात् जो प्राणी ईश्वर के नाम में लीन नहीं हुए, वे भाग्यहीन यमों के चंगुल में फँस जाते हैं।

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਿ ਸੰਗਤਿ ਨਹੀ ਆਏ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵੇ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਾਸਿ ॥੩॥

जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥

जो सतिगुरु की शरण में आकर सत्संगति प्राप्त नहीं करते उन विमुख व्यक्तियों के जीवन पर धिक्कार है और भविष्य में उनके जीने पर भी धिक्कार है॥ ३॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਤਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖਾਸਿ ॥

जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥

जिन हरि-भक्तों ने सतिगुरु की संगति प्राप्त की है, उनके मस्तिष्क पर अकाल-पुरुष द्वारा जन्म से पूर्व ही शुभ लेख लिखा होता है।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਸਤਸੰਗਤਿ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੪॥੪॥

धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥

सतिगुरु जी का फुरमान है कि हे निरंकार ! धन्य है वह सत्संगति, जिस से हरि-रस प्राप्त होता है और प्रभु भक्तों को उसके नाम का ज्ञान-प्रकाश मिलता है। इसलिए हे सतिगुरु जी ! मुझे तो अकाल-पुरुष के नाम की बख्शिश करो ॥ ४॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

राग गूजरी महला ५ ॥ ;

ਕਾਹੇ ਰੇ ਮਨ ਚਿਤਵਹਿ ਉਦਮੁ ਜਾ ਆਹਰਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਪਰਿਆ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥

हे मन ! तू किसलिए सोचता है, जबकि समस्त सृष्टि के प्रबंध का उद्यम तो स्वयं अकाल पुरुष कर रहा है।

ਸੈਲ ਪਥਰ ਮਹਿ ਜੰਤ ਉਪਾਏ ਤਾ ਕਾ ਰਿਜਕੁ ਆਗੈ ਕਰਿ ਧਰਿਆ ॥੧॥

सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥

चट्टानों एवं पत्थरों में जिन जीवों को निरंकार ने पैदा किया है, उनका भोजन भी उसने पहले ही तैयार कर रखा है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਾਧਉ ਜੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੇ ਸੁ ਤਰਿਆ ॥

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥

हे निरंकार ! जो भी संतों की संगति में जाकर बैठता है वह भव-सागर से पार उतर गया

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸੂਕੇ ਕਾਸਟ ਹਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥

उसने गुरु की कृपा से परमपद (मोक्ष) प्राप्त किया है और उसका हृदय मानो यूं हो गया जैसे कोई सूखी लकड़ी हरी हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਨਨਿ ਪਿਤਾ ਲੋਕ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਕੀ ਧਰਿਆ ॥

जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥

जीवन में माता, पिता, पुत्र, पत्नी व अन्य सम्बन्धीजन में से कोई भी किसी जगह आश्रय नहीं होता।

ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹੇ ਠਾਕੁਰੁ ਕਾਹੇ ਮਨ ਭਉ ਕਰਿਆ ॥੨॥

सिरि सिरि रिजकु स्मबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥

प्रत्येक जीव को सृष्टि में पैदा करके निरंकार स्वयं भोग पदार्थ पहुँचाता है, फिर हे मन ! तू भय किसलिए करता है ॥ २॥

ਊਡੇ ਊਡਿ ਆਵੈ ਸੈ ਕੋਸਾ ਤਿਸੁ ਪਾਛੈ ਬਚਰੇ ਛਰਿਆ ॥

ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥

क्यूंजों का समूह उड़ कर सैकड़ों मील दूर चला आता है और अपने बच्चों को वह पीछे (अपने घोंसले में ही) छोड़ आता है।

ਤਿਨ ਕਵਣੁ ਖਲਾਵੈ ਕਵਣੁ ਚੁਗਾਵੈ ਮਨ ਮਹਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿਆ ॥੩॥

तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥

उनको पीछे कौन खाना खिलाता है, कौन खेल खिलाता है, अर्थात् उनका पोषण उनकी माता के बिना कौन करता है, (उत्तर में कहा) उनकी माता के हृदय में अपने बच्चों का स्मरण होता है, वही उनके पोषण का साधन बन जाता है॥ 3 ॥

ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਦਸ ਅਸਟ ਸਿਧਾਨ ਠਾਕੁਰ ਕਰ ਤਲ ਧਰਿਆ ॥

सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥

समस्त नौ निधियाँ, अट्ठारह सिद्धियाँ निरंकार ने अपनी हथेली पर रखी हुई हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਰਿਆ ॥੪॥੫॥

जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

हे नानक ! ऐसे अकाल-पुरुष पर मैं सदा-सर्वदा बलिहार जाता हूँ, असीम निरंकार का कोई पारावार व अंत नहीं है। ॥४॥५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਸੋ ਪੁਰਖੁ

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਅਗਮਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥

वह अकाल पुरुष सृष्टि के समस्त जीवों में व्यापक है, फिर भी मायातीत है. अगम्य है तथा अनन्त है।

ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥

सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥

हे सत्यस्वरूप सृजनहार परमात्मा ! तुम्हारा ध्यान अतीत में भी सब करते थे, अब भी करते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे।

ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀ ਤੂੰ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾਰਾ ॥

सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥

सृष्टि के समस्त जीव तुम्हारी ही रचना हैं और तुम ही स्वयं जीवों के प्रतिभोग व मुक्ति दाता हो।

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜੀ ਸਭਿ ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰਾ ॥

हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥

हे भक्त जनो ! उस निरंकार का सिमरन करो जो समस्त दुखों का नाश करके सुख प्रदान करता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਜੀ ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੧॥

हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥

निरंकार स्वयं स्वामी व स्वयं ही सेवक है, सो हे नानक ! मुझ दीन जीव की क्या योग्यता है कि मैं उस अकथनीय प्रभु का वर्णन कर सकूं ॥ १॥

ਤੂੰ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜੀ ਹਰਿ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਸਮਾਣਾ ॥
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥
सर्वव्यापक निरंकार समस्त प्राणियों के हृदय में अभेद समा रहा है।

ਇਕਿ ਦਾਤੇ ਇਕਿ ਭੇਖਾਰੀ ਜੀ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥
संसार में कोई दाता बना हुआ है, कोई भिक्षु का रूप लिया हुआ है, हे परमात्मा ! यह सब तुम्हारा ही आश्चर्यजनक कौतुक है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਜੀ ਹਉ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ॥
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥
तुम स्वयं ही देने वाले हो और स्वयं ही भोक्ता हो, तुम्हारे बिना में किसी अन्य को नहीं जानता।

ਤੂੰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਬੇਅੰਤੁ ਜੀ ਤੇਰੇ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਾ ॥
तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥
तुम पारब्रह्म हो, तुम तीनों लोकों में अंतरहित हो, मैं तुम्हारे गुणों को मुख से कथन कैसे करूं।

ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੨॥
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥
सतगुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव आप का अंतर्मन से सिमरन करते हैं, सेवा-भाव से समर्पित होते हैं उन पर मैं न्योछावर होता हूँ॥ २॥

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਸੇ ਜਨ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥
हे निरंकार ! जो आपका मन व वाणी द्वारा ध्यान करते हैं, वो मानव-जीव युगों-युगों तक सुखों का भोग करते हैं।

ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਤਿਨ ਤੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥
से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥
जिन्होंने आपका सिमरन किया है वे इस संसार से मुक्ति प्राप्त करते हैं और उनका यम-पाश टूट जाता है।

ਜਿਨ ਨਿਰਭਉ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਿਰਭਉ ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਤਿਨ ਕਾ ਭਉ ਸਭੁ ਗਵਾਸੀ ॥
जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥
जिन्होंने भय से मुक्त होकर उस अभय स्वरूप अकाल-पुरुष का ध्यान किया है उनके जीवन का समस्त (जन्म-मरण व यमादि का) भय वह समाप्त कर देता है।

ਜਿਨ ਸੇਵਿਆ ਜਿਨ ਸੇਵਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੂਪਿ ਸਮਾਸੀ ॥
जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥
जिन्होंने निरंकार का चिन्तन किया, सेवा-भाव से उस में लीन हुए, वे तुम्हारे दुखहर्ता रूप में ही विलीन हो गए।

ਸੇ ਧੰਨੁ ਸੇ ਧੰਨੁ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਸੀ ॥੩॥
से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥
हे नानक ! जिन्होंने नारायण स्वरूप निरंकार का सिमरन किया, वे धन्य ही धन्य हैं, मैं उन पर कुर्बान होता हूँ ॥ ३ ॥

ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਜੀ ਭਰੇ ਬਿਅੰਤ ਬੇਅੰਤਾ ॥
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥
हे अनंत स्वरूप ! तेरी भक्ति के खजाने भक्तों के हृदय में अनंतानंत भरे हुए हैं।

ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸਲਾਹਨਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ ਅਨਿਕ ਅਨੇਕ ਅਨੰਤਾ ॥
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥
तेरे भक्त तीनों काल तेरी प्रशंसा के गीत गाते हैं कि हे परमेश्वर ! तू अनेकानेक व अनंत स्वरूप हैं।

ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਪੂਜਾ ਜੀ ਤਪੁ ਤਾਪਹਿ ਜਪਹਿ ਬੇਅੰਤਾ ॥
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥
संसार में तेरी नाना प्रकार से आराधना और जप-तपादि द्वारा साधना की जाती है।

ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਪੜਹਿ ਬਹੁ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਿਆ ਖਟੁ ਕਰਮ ਕਰੰਤਾ ॥
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥
अनेकानेक ऋषि-मुनि व विद्वान कई तरह के शास्त्र, स्मृतियों का अध्ययन करके तथा षट्-कर्म, यज्ञादि धर्म कार्यों द्वारा तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं।

ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਭਗਤ ਭਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੀ ਜੋ ਭਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਭਗਵੰਤਾ ॥੪॥
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥
हे नानक ! वे समस्त श्रद्धालु भक्त संसार में भले हैं जो निरंकार को अच्छे लगते हैं ॥ ४ ॥

ਤੂੰ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਜੀ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तूं आदि पुरखु अपर्मपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
हे अकाल पुरुष ! तुम अपरिमेय पारब्रह्म अनन्त स्वरूप हो, तुम्हारे समान अन्य कोई भी नहीं है।

ਤੂੰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੂੰ ਏਕੋ ਜੀ ਤੂੰ ਨਿਹਚਲੁ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥
युगों युगों से तुम एक हो, सदा सर्वदा तुम अद्वितीय स्वरूप हो और तुम ही निश्चल रचयिता हो।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਵਰਤੈ ਜੀ ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈ ॥
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥
जो तुम्हें भला लगता है वही घटित होता है, जो तुम स्वेच्छा से करते हो वही कार्य होता है।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਉਪਾਈ ਜੀ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥
तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥
तुमने स्वयं ही इस सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही रच कर उसका संहार भी करता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਜੀ ਜੋ ਸਭਸੈ ਕਾ ਜਾਣੋਈ ॥੫॥੧॥
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥
हे नानक ! मैं उस स्रष्टा प्रभु का गुणगान करता हूँ, जो समस्त सृष्टि का सृजक है अथवा जो समस्त जीवों के अन्तर्मन का ज्ञाता है ॥ ५ ॥ १ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਸਚਿਆਰੁ ਮੈਡਾ ਸਾਂਈ ॥
तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥
हे निरंकार ! तुम ही सृजनहार हो, सत्यस्वरूप हो और मेरे मालिक हो।

ਜੋ ਤਉ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥੀਸੀ ਜੋ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਹਉ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जो तुम्हें भला लगता है वही होता है, जो तुम देते हो वही मैं प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਭ ਤੇਰੀ ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥
सम्पूर्ण सृष्टि तुम्हारी पैदा की हुई है, तुम्हें सभी जीवों ने स्मरण किया है

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਤਿਨਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ॥
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥
किंतु जिन पर तुम्हारी दया होती है, उन्होंने ही तुम्हारा नाम रूपी रत्न-पदार्थ प्राप्त किया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਧਾ ਮਨਮੁਖਿ ਗਵਾਇਆ ॥
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥
यह नाम-रत्न श्रेष्ठ साधक पा जाते हैं और स्वेच्छाचारी मनुष्य इसे गंवा बैठते हैं।

ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਵਿਛੋੜਿਆ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥
तुम स्वयं ही विच्छन्न करते हो और स्वयं ही सम्मिलित करते हो। ॥ १॥

ਤੂੰ ਦਰੀਆਉ ਸਭ ਤੁਝ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥
हे परमेश्वर ! तुम नदी हो, सारा प्रपंच तुझ में ही तरंग रूप है।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥
तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ॥
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥
सृष्टि के सभी छोटे-बड़े जीव तुम्हारा ही कौतुक है।

ਵਿਜੋਗਿ ਮਿਲਿ ਵਿਛੁੜਿਆ ਸੰਜੋਗੀ ਮੇਲੁ ॥੨॥
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥
वियोगी कर्मों के कारण जो तुम में लीन था, वह विछुड़ गया और संयोग के कारण विछुड़ा हुआ तुम से आ मिला है; अर्थात् तुम्हारी कृपा से जिन्हें सत्संगति प्राप्त नहीं हुई वे तुम से अलग हो गए और जिन्हें संतों का संग मिल गया उन्हें तुम्हारी भक्ति प्राप्त हो गई॥ २॥

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂ ਜਾਣਾਇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਜਾਣੈ ॥
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥
हे परमात्मा ! जिसे तुम गुरु द्वारा ज्ञान प्रदान करते हो वही इस विधि को जान सकता है। फिर वही सदैव तेरे गुणों का व्याख्यान करता है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦ ਹੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥
फिर वही सदैव तेरे गुणों का व्याख्यान करता है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
जिन्होंने उस अकाल पुरुष का सिमरन किया है, उन्होंने आत्मिक सुखों की प्राप्ति की है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥

सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥

फिर वह परम पुरुष सरलता से ही प्रभु-नाम में समाहित हो जाता है॥ ३॥

ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਹੋਇ ॥
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥
तुम स्वयं रचयिता हो, तुम्हारे आदेश से ही सब कुछ होता है।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥
तुम्हारे अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई नहीं है।

ਤੂ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
तुम ही रचना कर-करके जीवों के कौतुक देख रहे हो और उनके बारे सब कुछ जानते हो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੪॥੨॥
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥
हे नानक ! यह भेद गुरु के उन्मुख होने वाले व्यक्ति के अन्दर प्रकाशमान होता है॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਤਿਤੁ ਸਰਵਰੜੈ ਭਈਲੇ ਨਿਵਾਸਾ ਪਾਣੀ ਪਾਵਕੁ ਤਿਨਹਿ ਕੀਆ ॥
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥
हे मन ! तेरा ऐसे संसार-सागर में वास हुआ है जहाँ पर शब्द-स्पर्श रूपी रस-गंध जल व तृष्णाग्नि है।

ਪੰਕਜੁ ਮੋਹ ਪਗੁ ਨਹੀ ਚਾਲੈ ਹਮ ਦੇਖਾ ਤਹ ਡੂਬੀਅਲੇ ॥੧॥
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥
वहाँ मोह रूपी कीचड़ में फँस कर तेरी बुद्धि रूपी चरण परमात्मा की भक्ति की ओर नहीं चल पाएगा, उस सागर में हमने स्वेच्छाचारी जीवों (जो मन के होते हैं) को डूबते देखा है॥ १॥

ਮਨ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥
हे विमूढ मन ! यदि तुम एकाग्रचित होकर प्रभु का सिमरन नहीं करोगे

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥

तो हरि-प्रभु के विस्मृत हो जाने से तेरे सभी गुण नष्ट हो जाएँगे, अथवा परमात्मा को विस्मृत कर देने से तेरे गले में (यमादि का) फँदा पड़ जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾ ਹਉ ਜਤੀ ਸਤੀ ਨਹੀ ਪੜਿਆ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ॥

ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥

अतः हे मन ! तू अकाल पुरुष के समक्ष विनती कर कि मैं यति, सती व ज्ञानी नहीं हूँ, मेरा जीवन महामूखों की भाँति निष्फल हो गया है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੀ ਸਰਣਾ ਜਿਨ ਤੂ ਨਾਹੀ ਵੀਸਰਿਆ ॥੨॥੩॥

प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

हे नानक ! जिन को तू विरमृत नहीं होता, मैं उन संतों की शरण पड़ता हूँ तथा उन्हें प्रणाम करता हूँ

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹੁਰੀਆ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥

हे मानव ! तुझे जो यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है।

ਗੋਬਿੰਦ ਮਿਲਣ ਕੀ ਇਹ ਤੇਰੀ ਬਰੀਆ ॥

गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

यही तुम्हारा प्रभु को मिलने का शुभावसर है : अर्थात् प्रभु का नाम सिमरन करने हेतु ही यह मानव जन्म तुझे प्राप्त हुआ है।

ਅਵਰਿ ਕਾਜ ਤੇਰੈ ਕਿਤੈ ਨ ਕਾਮ ॥

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥

इसके अतिरिक्त किए जाने वाले सांसारिक कार्य तुम्हारे किसी काम के नहीं हैं।

ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥੧॥

मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥

सिर्फ तुम साधुओं-संतों का संग करके उस अकाल-पुरुष का चिन्तन ही करो ॥ १॥

ਸਰੰਜਾਮਿ ਲਾਗੁ ਭਵਜਲ ਤਰਨ ਕੈ ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
इसलिए इस संसार-सागर से पार उतरने के उद्यम में लग।

ਜਨਮੁ ਬ੍ਰਿਥਾ ਜਾਤ ਰੰਗਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥
अन्यथा माया के प्रेम में रत तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਧਰਮੁ ਨ ਕਮਾਇਆ ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥
हे मानव ! तुमने जप, तप व संयम नहीं किया और न ही कोई पुनीत कार्य करके धर्म कमाया है।

ਸੇਵਾ ਸਾਧ ਨ ਜਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥
साधु-संतों की सेवा नहीं की है तथा न ही परमेश्वर को स्मरण किया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਨੀਚ ਕਰੰਮਾ ॥
कहु नानक हम नीच करमा ॥
हे नानक ! हम मंद कर्मी जीव हैं।

ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਸਰਮਾ ॥੨॥੪॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥
मुझ शरणागत की लाज रखो ॥ २॥ ४॥

ਸੋਹਿਲਾ ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਦੀਪਕੀ ਮਹਲਾ ੧
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੈ ਘਰਿ ਕੀਰਤਿ ਆਖੀਐ ਕਰਤੇ ਕਾ ਹੋਇ ਬੀਚਾਰੋ ॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
जिस सत्संगति में निरंकार की कीर्ति का गान होता है तथा करतार के गुणों का विचार किया जाता है;

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਗਾਵਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਿਵਰਿਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥੧॥

तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥

उसी सत्संगति रूपी घर में जाकर सृष्टि रचयिता के यश का गायन करो और उसी का सिमरन करो॥ १॥

ਤੁਮ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਨਿਰਭਉ ਕਾ ਸੋਹਿਲਾ ॥

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥

हे मानव ! तुम उस भय-रहित मेरे वाहिगुरु की प्रशंसा के गीत गाओ।

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜਿਤੁ ਸੋਹਿਲੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥

साथ में यह कहो कि मैं उस सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ। जिसका सिमरन करने से सदैव सुखों की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਨਿਤ ਨਿਤ ਜੀਅੜੇ ਸਮਾਲੀਅਨਿ ਦੇਖੈਗਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥

हे मानव जीव ! जो पालनहार ईश्वर नित्य-प्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुम पर भी अपनी कृपा-दृष्टि करेगा।

ਤੇਰੇ ਦਾਨੈ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਤਿਸੁ ਦਾਤੇ ਕਵਣੁ ਸੁਮਾਰੁ ॥੨॥

तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥

उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं।॥ २॥

ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥

स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥

इस लोक से जाने के लिए साहे-पत्र रूपी संदेश संवत्-दिन आदि लिख कर नियत किया हुआ है, इसलिए वाहिगुरु से मिलाप के लिए अन्य सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो। अर्थात् - मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ-कर्म कर लो ।

ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਅਸੀਸੜੀਆ ਜਿਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੩॥

देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥

हे मित्रो ! अब शुभाशीष दो कि सतिगुरु से मिलाप हो जाए॥ ३॥

ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦੜੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥

प्रत्येक घर में इस साहे-पत्र को भेजा जा रहा, नित्य यह संदेश किसी न किसी घर पहुँच रहा है। (नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।

ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਐ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥
श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, क्योंकि वह दिन निकट आ रहे हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु आसा महला १ ॥
रागु आसा महला १ ॥

ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने-अपने तौर पर छः ही हैं।

ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥
किंतु इनका मूल तत्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं।

ਬਾਬਾ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥
बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥
हे मनुष्य ! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो, उसका गुणगान हो,

ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਵਡਾਈ ਤੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥
उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਿਸੁਏ ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਥਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਹੋਆ ॥
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥
काष्ठा, चसा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है।

ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ ਅਨੇਕ ॥
सूरजु एको रुति अनेक ॥
इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग-अलग अंश हैं।)

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕੇਤੇ ਵੇਸ ॥੨॥੨॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥
वैसे ही हे नानक ! कर्ता-पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं॥ २॥ २॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥

ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲੁ ਰਵਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਿਕਾ ਮੰਡਲ ਜਨਕ ਮੋਤੀ ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों।

ਧੂਪੁ ਮਲਆਨਲੋ ਪਵਣੁ ਚਵਰੋ ਕਰੇ ਸਗਲ ਬਨਰਾਇ ਫੂਲੰਤ ਜੋਤੀ ॥੧॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं।॥ १॥

ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥
कैसी आरती होइ ॥
प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है

ਭਵ ਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
सृष्टि के जीवों का जन्म-मरण नाश करने वाले हे प्रभु !

ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜੰਤ ਭੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
कि जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानों नगारे बज रहे हों। ॥१॥ रहाउ॥

ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹਹਿ ਤੋਹਿ ਕਉ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੋਹੀ ॥
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति ननां एक तोही ॥
हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं हैं क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हों,

ਸਹਸ ਪਦ ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੁ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਇਵ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सर्गुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण-कमल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम धाणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हजारों ही नासिकाएँ है; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है॥ २॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति-स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है।

ਤਿਸ ਦੈ ਚਾਨਣਿ ਸਭ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥੩॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है॥ ३॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਵਲ ਮਕਰੰਦ ਲੋਭਿਤ ਮਨੋ ਅਨਦਿਨੁ ਮੋਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य-प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਕਉ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਵਾਸਾ ॥੪॥੩॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥
हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा-जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए॥ ४॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨਗਰੁ ਬਹੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਖੰਡਲ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥

यह मानव शरीर काम व क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है; लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने काम, क्रोध को क्षीण कर दिया हैं।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਤ ਲਿਖੇ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਮੰਡਲ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੧॥

पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥

जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मो के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही ईश्वर में लीन हुआ है॥ १॥

ਕਰਿ ਸਾਧੂ ਅੰਜੁਲੀ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥

करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥

संत-जनों को हाथ जोड़कर वंदना करना बड़ा पुण्य कर्म है।

ਕਰਿ ਡੰਡਉਤ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥

उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कार्य है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਕੰਡਾ ਹੇ ॥

साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥

पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो परमेश्वर से विस्मृत) ने अकाल पुरुष के रस का आनंद नहीं पाया,क्योंकि उनके अंतर में अहंकार रूपी कांटा होता है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਚਲਹਿ ਚੁਭੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਡੰਡਾ ਹੇ ॥੨॥

जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥

जैसे-जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ-चुभ कर कष्ट देता रहता है और अंतिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं।॥ २ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਦੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥

हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥

इसके अतिरिक्त जो मानव जीव सांसारिक वैभव अथवा भौतिक पदार्थों का त्याग करके परमेश्वर के भक्त बन कर उसके सिमरन में लिवलीन रहते हैं, ये आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं,

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਹੁ ਸੋਭ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਹੇ ॥੩॥

अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥

उन्हें नाश रहित सर्वव्यापक परमात्मा मिल जाता हैं और खण्डों-ब्रह्मण्डों में उनको शोभायमान किया जाता है॥ ३॥

ਹਮ ਗਰੀਬ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਵਡ ਵਡਾ ਹੇ ॥

हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥

हे प्रभु ! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं, तुम सर्वोच्चतम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੪॥੪॥

जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥

हे नानक ! जीव को तुम्हारे ही नाम का आश्रय है, हरि के नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है॥ ४॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀ ਸੁਣਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥

हे सत्संगी मित्रो ! सुनो, मैं तुम्हे प्रार्थना करता हूँ कि यह जो मानव शरीर प्राप्त हुआ हैं, वह संत जनों की सेवा करने का शुभावसर है।

ਈਹਾ ਖਾਟਿ ਚਲਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਆਗੈ ਬਸਨੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥

ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥

यदि यह सेवा करोगे तो इस जन्म में प्रभु के नाम-सिमरन का लाभ प्राप्त होगा, जिससे परलोक में वास सरलता से होगा ॥ १॥

ਅਉਧ ਘਟੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਾਰੇ ॥

अउध घटै दिनसु रैणारे ॥

हे मन ! समय व्यतीत होते हुए निशदिन यह उम्र कम हो रही है।

ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥

इसलिए तुम गुरु से मिलकर उनकी शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन के पार हेतु समस्त कार्य पूर्ण कर लो॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸੰਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਓ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥

इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥

इस जगत् में समस्त जीव काम-क्रोधादि विकारों और भ्रमों में लिप्त हैं, यहाँ से कोई तत्वेता यानी ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला ही मोक्ष को प्राप्त हुआ है।

ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਵੈ ਇਹੁ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥

विकारों में लिप्त जिस मानव को ईश्वर ने स्वयं माया रूपी निद्रा से जगाकर नाम-रस पिला दिया, वही उस अकथनीय प्रभु की अलौकिक कथा को जान सका है॥

ਜਾ ਕਉ ਆਏ ਸੋਈ ਬਿਹਾਝਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥

जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥

इसलिए हे सत्संगियों ! जिस नाम रूप अमूल्य वस्तु का व्यापार करने आए हो उसे ही खरीदो, इस मन में हरि का वास गुरु द्वारा ही होता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੋ ਫੇਰਾ ॥੩॥

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥

यदि तुम गुरु की शरण लोगे तभी इस हृदय रूपी घर में हरि का स्वरूप बसा सकोगे और आत्मिक सुखों का आनंद प्राप्त करोगे, जिससे फिर इस संसार में आने-जाने का चक्र समाप्त हो जाएगा ॥ ३॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥

अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥

हे मेरे अंतर्मन को जानने वाले सर्वव्यापक सृजनहार ! मेरे मन की श्रद्धा को पूर्ण करो।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਇਹੈ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੫॥

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

गुरु साहिब कथन करते हैं कि यह सेवक सिर्फ यही कामना करता है कि मुझे केवल संतों की चरण-धूल बना दो ॥४ ॥ ५॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ਪਹਿਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला पहिला १ घरु १ ॥
सिरीरागु महला पहला १ घरु १ ॥

ਮੋਤੀ ਤ ਮੰਦਰ ਊਸਰਹਿ ਰਤਨੀ ਤ ਹੋਹਿ ਜੜਾਉ ॥
मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
यदि मेरे लिए मोती व रत्न जड़ित भवन निर्मित हो जाएँ।
even if

ਕਸਤੂਰਿ ਕੁੰਗੂ ਅਗਰਿ ਚੰਦਨਿ ਲੀਪਿ ਆਵੈ ਚਾਉ ॥
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
उन भवनों पर कस्तूरी, केसर, सुगंधित काष्ठ व चंदन की लकड़ी आदि के लेपन करके मन में उत्साह पैदा हो जाए।

ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥੧॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥
कहीं ऐसा न हो कि इन्हें देखकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। (इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ)॥ १॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਉ ਜਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥
परमात्मा अथवा उसके नाम सिमरन के बिना जीव तृष्णाग्नि में जल जाता है।

ਮੈ ਆਪਣਾ ਗੁਰੁ ਪੂਛਿ ਦੇਖਿਆ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपने अराध्य इष्ट से पूछ कर देख लिया है कि निरंकार के अतिरिक्त अन्य कोई पदार्थ व स्थान जीव की मुक्ति के योग्य नहीं है॥ १॥ रहाउ ॥

ਧਰਤੀ ਤ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਜੜਤੀ ਪਲਘਿ ਲਾਲ ਜੜਾਉ ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥
धरती में हीरे जड़े हुए हों, मेरे घर में पड़ा पलंघ लाल-रत्न से सुशोभित हो।

ਮੋਹਣੀ ਮੁਖਿ ਮਣੀ ਸੋਹੈ ਕਰੇ ਰੰਗਿ ਪਸਾਉ ॥
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥
घर में मन को मोह लेने वाली सुन्दर स्त्रियों का मुख मणियों की भाँति प्रकाशमान हो और वे प्रेम-भाव का आनंद प्रकट करती हों।

ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥੨॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥
कहीं ऐसा न हो कि इन्हें देखकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। (इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ) ॥२॥

ਸਿਧੁ ਹੋਵਾ ਸਿਧਿ ਲਾਈ ਰਿਧਿ ਆਖਾ ਆਉ ॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
सिद्ध होकर सिद्धियाँ भी लगाऊं और ऋद्धियों भी कहने मात्र से मेरे पास आ जाएँ।

ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ਬੈਸਾ ਲੋਕੁ ਰਾਖੈ ਭਾਉ ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
स्वेच्छा से अलोक व आलोक हो जाऊँ, जिससे लोगों के मन में मेरे प्रति श्रद्धा पैदा हो।

ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥੩॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥
कहीं ऐसा न हो कि इन शक्तियों से भ्रमित होकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ॥ ३॥

ਸੁਲਤਾਨੁ ਹੋਵਾ ਮੇਲਿ ਲਸਕਰ ਤਖਤਿ ਰਾਖਾ ਪਾਉ ॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥
बादशाह होकर सेना एकत्रित कर लूं और सिंहासन पर विराजमान हो जाऊ

ਹੁਕਮੁ ਹਾਸਲੁ ਕਰੀ ਬੈਠਾ ਨਾਨਕਾ ਸਭ ਵਾਉ ॥
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
वहाँ बैठ कर जो चाहूँ आदेश करके प्राप्त कर लूं, सतिगुरु जी कहते हैं कि यह सब कुछ व्यर्थ है।

ਮਤੁ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਵੀਸਰੈ ਤੇਰਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥੪॥੧॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥
कहीं ऐसा न हो कि इन शक्तियों से भ्रमित होकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ॥ ४ ॥ १॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਕੋਟਿ ਕੋਟੀ ਮੇਰੀ ਆਰਜਾ ਪਵਣੁ ਪੀਅਣੁ ਅਪਿਆਉ ॥
कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥
हे निरंकार ! बेशक मेरी आयु करोड़ों युगों तक हो जाए (समस्त पदार्थों को छोड़कर) पवन ही मेरा खाना-पीना हो।

ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਗੁਫੈ ਨ ਦੇਖਾ ਸੁਪਨੈ ਸਉਣ ਨ ਥਾਉ ॥
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
जहाँ पर चंद्रमा व सूर्य दोनों का प्रवेश न हो, ऐसी गुफा में बैठ कर मैं तुम्हारा चिन्तन करूँ और स्वप्न में भी निद्रा का स्थान न हो।

ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਹਉ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਉ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥
(ऐसी कठिन तपस्या करने के उपरान्त भी) मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूं। अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है ॥ १ ॥

ਸਾਚਾ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਨਿਜ ਥਾਇ ॥
साचा निरंकारु निज थाइ ॥
सत्यस्वरूप निरंकार सदा अपनी महिमा में ही स्थित है।

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਆਖਣੁ ਆਖਣਾ ਜੇ ਭਾਵੈ ਕਰੇ ਤਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥
शास्त्रों से अध्ययन करके ही कोई उसके गुणों को कथन करता है, किन्तु जिस पर निरंकार की कृपा होती है उसी में (उसके गुण श्रवण व कथन करने की) जिज्ञासा उत्पन्न होती है॥ १॥ रहाउ॥

ਕੁਸਾ ਕਟੀਆ ਵਾਰ ਵਾਰ ਪੀਸਣਿ ਪੀਸਾ ਪਾਇ ॥
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥
यदि मैं पुनः पुनः कष्ट देकर काट दिया जाऊँ तथा चक्की में डाल कर पीस दिया जाऊँ।

ਅਗੀ ਸੇਤੀ ਜਾਲੀਆ ਭਸਮ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਜਾਉ ॥
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
अग्नि में मेरे शरीर को जला दिया जाए अथवा शरीर को भस्म लगा कर रखू

ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਹਉ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਉ ॥੨॥

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥

तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है ॥ २॥

ਪੰਖੀ ਹੋਇ ਕੈ ਜੇ ਭਵਾ ਸੈ ਅਸਮਾਨੀ ਜਾਉ ॥

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥

(सिद्धियों के बल पर) मैं पक्षी बनकर आकाश में भ्रमण करूं और इतना ऊँचा चला जाऊँ कि सैंकड़ों ही आसमान छू लूं।

ਨਦਰੀ ਕਿਸੈ ਨ ਆਵਉ ਨਾ ਕਿਛੁ ਪੀਆ ਨ ਖਾਉ ॥

नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥

ऐसा सूक्ष्म हो जाऊँ कि किसी की दृष्टि में न आऊं और न कुछ पीऊं न कुछ खाऊं।

ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਹਉ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਉ ॥੩॥

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥

तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है ॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਕਾਗਦ ਲਖ ਮਣਾ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕੀਚੈ ਭਾਉ ॥
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥
सतगुरु जी कथन करते हैं कि लाखों मन कागज़ पढ़-पढ़ कर, अर्थात् अनेकानेक शास्त्रों व धर्म ग्रंथों का अध्ययन करके, ईश्वर से प्रेम किया जाए।

ਮਸੁ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਲੇਖਣਿ ਪਉਣੁ ਚਲਾਉ ॥
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥
उसकी स्तुति लिखने हेतु स्याही का भी अभाव न हो और कलम पवन की भाँति चलती रहे।

ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਹਉ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਉ ॥੪॥੨॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥
तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है ॥४॥२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਲੇਖੈ ਬੋਲਣੁ ਬੋਲਣਾ ਲੇਖੈ ਖਾਣਾ ਖਾਉ ॥
लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥
हे मानव ! शब्दों का बोलना सीमित है। खाना-पीना भी सीमित है।

ਲੇਖੈ ਵਾਟ ਚਲਾਈਆ ਲੇਖੈ ਸੁਣਿ ਵੇਖਾਉ ॥
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥
मार्ग पर चलने की सीमा बंधी हुई है, देखने व श्रवण करने की सीमा निश्चित है।

ਲੇਖੈ ਸਾਹ ਲਵਾਈਅਹਿ ਪੜੇ ਕਿ ਪੁਛਣ ਜਾਉ ॥੧॥
लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥
यहाँ तक की स्रष्टा (प्रभु) ने जो तुझे श्वास प्रदान किए हैं उनके लेने की भी सीमा है, (इसकी पुष्टि हेतु) किसी विद्वान से पूछने की क्या आवश्यकता है ॥ १॥

ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਰਚਨਾ ਧੋਹੁ ॥
बाबा माइआ रचना धोहु ॥
इसलिए हे जीव ! यह सांसारिक माया सब-कुछ कपट है।

ਅੰਧੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਨਾ ਤਿਸੁ ਏਹ ਨ ਓਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अंधै नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥१॥ रहाउ ॥

जिस अज्ञानी ने परमात्मा का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दिया, उसके हाथ न तो यह माया आई और न उसे परमात्मा की प्राप्ति हुई है ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਵਣ ਮਰਣਾ ਜਾਇ ਕੈ ਏਥੈ ਖਾਜੈ ਕਾਲਿ ॥

जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥

जन्म से लेकर मृत्यु काल तक मानव इस संसार में अपने सम्बन्धियों के संग सांसारिक पदार्थों का भोग करता रहता है।

ਜਿਥੈ ਬਹਿ ਸਮਝਾਈਐ ਤਿਥੈ ਕੋਇ ਨ ਚਲਿਓ ਨਾਲਿ ॥

जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नालि ॥

किन्तु जिस धर्मराज की सभा में बिठा कर जीव को उसके कर्मों का लेखा बताया जाता है, वहाँ तक जाने के लिए अथवा वहाँ उसकी सहायता करने हेतु कोई साथ नहीं चलता।

ਰੋਵਣ ਵਾਲੇ ਜੇਤੜੇ ਸਭਿ ਬੰਨਹਿ ਪੰਡ ਪਰਾਲਿ ॥੨॥

रोवण वाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ॥२॥

मृत्यु के पश्चात् जो रोते हैं वे सभी व्यर्थ का भार बांधते हैं:, अर्थात् वे रोने का व्यर्थ-कर्म करते हैं। ॥ २ ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਘਟਿ ਨ ਆਖੈ ਕੋਇ ॥

सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥

परमात्मा को प्रत्येक अधिक ही अधिक ही कहता है, अल्प कोई नहीं कहता।

ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ਕਹਣਿ ਨ ਵਡਾ ਹੋਇ ॥

कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥

किन्तु उसका मूल्यांकन कोई नहीं कर सकता, कहने मात्र से वह बड़ा अथवा महान् नहीं होता है।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਬੁ ਏਕੁ ਤੂ ਹੋਰਿ ਜੀਆ ਕੇਤੇ ਲੋਅ ॥੩॥

साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥३॥

सत्य स्वरूप निरंकार तू सिर्फ एक ही हैं, तथा अन्य प्राणियों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करने वाला हैं ॥३॥

ਨੀਚਾ ਅੰਦਰਿ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਨੀਚੀ ਹੂ ਅਤਿ ਨੀਚੁ ॥

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

निम्न में जो निम्न जाति के लोग हैं और फिर उनमें भी जो अति निम्न प्रभु भक्त हैं।

ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਾਥਿ ਵਡਿਆ ਸਿਉ ਕਿਆ ਰੀਸ ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
सतिगुरु जी कहते हैं कि हे निरंकार ! उनके साथ मेरा मिलाप करो, माया व ज्ञानाभिमान के कारण जो बड़े हैं उनसे मेरी क्या समानता है।

ਜਿਥੈ ਨੀਚ ਸਮਾਲੀਅਨਿ ਤਿਥੈ ਨਦਰਿ ਤੇਰੀ ਬਖਸੀਸ ॥੪॥੩॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥
जिस स्थान पर उन निम्न व्यक्तियों की सम्भाल की जाती है, वहाँ पर ही, हे कृपासागर ! मेरे प्रति तेरी कृपा होगी ॥ ४॥ ३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਲਬੁ ਕੁਤਾ ਕੂੜੁ ਚੂਹੜਾ ਠਗਿ ਖਾਧਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥
लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥
लोभ करने वाला कुते के समान, मिथ्या बोलने वाला भंगी, छल-कपट से दूसरे को खाने वाला शव-भक्षक होता है।

ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਪਰ ਮਲੁ ਮੁਖ ਸੁਧੀ ਅਗਨਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚੰਡਾਲੁ ॥
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥
दूसरे की निंदा करने से मुँह में सर्वथा पराई मैल पड़ती है, क्रोधाग्नि से मनुष्य चाण्डाल का रूप धारण कर लेता है।

ਰਸ ਕਸ ਆਪੁ ਸਲਾਹਣਾ ਏ ਕਰਮ ਮੇਰੇ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥१॥
आत्म-प्रशंसा खट्टे-मीठे रसों का पदार्थ है, हे करतार ! यही तुम से विमुख करने वाले अस्मदादिक जीवों के कर्म हैं। ॥ १॥

ਬਾਬਾ ਬੋਲੀਐ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
बाबा बोलीऐ पति होइ ॥
हे मानव ! ऐसे वचन करो जिनसे प्रतिष्ठित हुआ जाए।

ਊਤਮ ਸੇ ਦਰਿ ਊਤਮ ਕਹੀਅਹਿ ਨੀਚ ਕਰਮ ਬਹਿ ਰੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि जो जीव इस लोक में श्रेष्ठ हैं वही परमात्मा के द्वार पर भी उत्तम कहे जाते हैं और मंद कर्मी जीवों को नरकों के कष्ट भोग कर रोना पड़ता है। ॥१॥ रहाउ ॥

ਰਸੁ ਸੁਇਨਾ ਰਸੁ ਰੁਪਾ ਕਾਮਣਿ ਰਸੁ ਪਰਮਲ ਕੀ ਵਾਸੁ ॥
रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥
(मानव मन में) सोने के आभूषणों का प्रेम है, चांदी के प्रति स्नेह है, सुंदर स्त्री के भोग का रस है, सुगन्धि का प्यार है,

ਰਸੁ ਘੋੜੇ ਰਸੁ ਸੇਜਾ ਮੰਦਰ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਰਸੁ ਮਾਸੁ ॥
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥
घुड़सवारी की प्रीत है, आकर्षक सेज पर सोने व भव्य महलों में रहने का चाव है, मीठे पदार्थों के खाने तथा मांस-मदिरा सेवन करने की लगन है।

ਏਤੇ ਰਸ ਸਰੀਰ ਕੇ ਕੈ ਘਟਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥੨॥
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥
ये जो कथन किए हैं, ये सभी रसानंद शरीर में विद्यमान हो रहे हैं तो परमात्मा का नाम-रस अंत : करण के किस स्थान पर निवास करे ॥२॥

ਜਿਤੁ ਬੋਲਿਐ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਸੋ ਬੋਲਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥
जो वचन बोलने से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है वही कथन परमात्मा के दरबार में स्वीकृत होता है।

ਫਿਕਾ ਬੋਲਿ ਵਿਗੁਚਣਾ ਸੁਣਿ ਮੂਰਖ ਮਨ ਅਜਾਣ ॥
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥
हे अज्ञानी मन ! सुन, नीरस वचन बोलने वाला व्यक्ति दुखी होता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇ ਭਲੇ ਹੋਰਿ ਕਿ ਕਹਣ ਵਖਾਣ ॥੩॥
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥३॥
जो परमेश्वर को भले लगते हैं वही वचन श्रेष्ठ हैं, और क्या कथन व बखान किया जाए ॥ ३॥

ਤਿਨ ਮਤਿ ਤਿਨ ਪਤਿ ਤਿਨ ਧਨੁ ਪਲੈ ਜਿਨ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥
उन व्यक्तियों की बुद्धि, प्रतिष्ठा व दैवी सम्पदा रूपी धन श्रेष्ठ है, जिनके हृदय में परमेश्वर का समावेश है।

ਤਿਨ ਕਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹਣਾ ਅਵਰ ਸੁਆਲਿਉ ਕਾਇ ॥
तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥
उनकी प्रशंसा क्या की जाए, अन्य कौन प्रशंसनीय हो सकते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰੇ ਰਾਚਹਿ ਦਾਨਿ ਨ ਨਾਇ ॥੪॥੪॥

नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥४॥४॥

सतिगुरु जी कहते हैं कि जो लोग निरंकार की कृपा-दृष्टि से परे हैं, वे परमात्मा द्वारा प्रदत्त विभूतियों में ही खचित रहते हैं, नाम में नहीं ॥ ४॥ ४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥

सिरीरागु महला १ ॥

सिरीरागु महला १ ॥

ਅਮਲੁ ਗਲੋਲਾ ਕੂੜ ਕਾ ਦਿਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰਿ ॥

अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥

प्रदाता निरंकार ने जीव को जो नश्वर शरीर रूपी नशे की गोली प्रदान की है। अर्थात् मानव को जो परमात्मा ने देह प्रदान की है, उसके अभिमान रूपी नशे में जीव अचेत हो रहा है।

ਮਤੀ ਮਰਣੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਖੁਸੀ ਕੀਤੀ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥

मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥

उसके अभिमान में मस्त बुद्धि ने मृत्यु को भुला रखा है और अल्पकालिक खुशी में परमेश्वर से विमुख हो रहा हैं

ਸਚੁ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ ਸੋਫੀਆ ਰਾਖਣ ਕਉ ਦਰਵਾਰੁ ॥੧॥

सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥१॥

जिन को यह नशा नहीं हुआ उन सूफियों को सत्य स्वरूप अकाल पुरुष प्राप्त हुआ है ताकि उन्हें बैकुंठ में स्थान मिले ॥ १॥

ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਕਉ ਸਚੁ ਜਾਣੁ ॥

नानक साचे कउ सचु जाणु ॥

इसलिए नानक जी का कथन है कि हे मानव ! सत्यस्वरूप अकाल पुरुष को ही निश्चित व सत्य जान।

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਤੇਰੀ ਦਰਗਹ ਚਲੈ ਮਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥१॥ रहाउ ॥

जिसका सिमरन करने से आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है और निरंकार के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਸਰਾ ਗੁੜ ਬਾਹਰਾ ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥

सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ॥

वास्तव में मदिरा गुड़ के बिना नहीं बनती, इसलिए निरंकार के नाम की खुमारी हेतु सत्यता रूपी मदिरा में ज्ञान रूपी गुड़ का सम्मिलित होना आवश्यक है, जिसमें प्रभु-नाम मिला हुआ हो।

ਸੁਣਹਿ ਵਖਾਣਹਿ ਜੇਤੜੇ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥
जितने पुरुष नाम के श्रोता व वाचक हैं, उन पर मैं कुर्बान जाता हूँ।

ਤਾ ਮਨੁ ਖੀਵਾ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਮਹਲੀ ਪਾਏ ਥਾਉ ॥੨॥
ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥२॥
इस नाम सिमरन रूपी मदिरा से मन मस्त हुआ तभी जाना जा सकता है,जब जिज्ञासु निरंकार के स्वरूप को प्राप्त कर ले ॥२॥

ਨਾਉ ਨੀਰੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਸਤੁ ਪਰਮਲੁ ਤਨਿ ਵਾਸੁ ॥
नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥
जो नाम-जाप व सत्कर्म रुपी जल में स्नान करते हैं और सत्य वचन रूपी सुगंधि को तन पर लगाते हैं।

ਤਾ ਮੁਖੁ ਹੋਵੈ ਉਜਲਾ ਲਖ ਦਾਤੀ ਇਕ ਦਾਤਿ ॥
ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥
उनका ही मुँह उज्ज्वल होता है और अन्त लाखों प्राप्तियों में एक नाम की प्राप्ति ही श्रेष्ठ है।

ਦੂਖ ਤਿਸੈ ਪਹਿ ਆਖੀਅਹਿ ਸੂਖ ਜਿਸੈ ਹੀ ਪਾਸਿ ॥੩॥
दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥३॥
दुख भी उसके सम्मुख ही कथन किए जाएँ जिसके पास देने के लिए सुख हो। ॥ ३ ॥

ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣ ॥
सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
फिर उस वाहेगुरु को हृदय से विस्मृत क्योंकर किया जाए. जिसने संसार के समस्त प्राणियों को प्राण दिए हुए हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਣੁ ਸਭੁ ਅਪਵਿਤ੍ਰੁ ਹੈ ਜੇਤਾ ਪੈਨਣੁ ਖਾਣੁ ॥
तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥
उस निरंकार के बिना खाना-पीना व पहनना सब अपवित्र है।

ਹੋਰਿ ਗਲਾਂ ਸਭਿ ਕੂੜੀਆ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥੪॥੫॥
होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥४॥५॥
अन्य सभी बातें व्यर्थ अथवा मिथ्या हैं सिर्फ वही सत्य व स्वीकृत हैं जो तुझे भला लगता है॥ ४॥ ५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲੁ ੧ ॥
सिरीरागु महलु १ ॥
सिरीरागु महलु १ ॥

ਜਾਲਿ ਮੋਹੁ ਘਸਿ ਮਸੁ ਕਰਿ ਮਤਿ ਕਾਗਦੁ ਕਰਿ ਸਾਰੁ ॥
जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥
मोह को जलाकर, तदनन्तर रगड़ स्याही बना लें और श्रेष्ठ बुद्धि को कागज़ बना लें।

ਭਾਉ ਕਲਮ ਕਰਿ ਚਿਤੁ ਲੇਖਾਰੀ ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਲਿਖੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥
प्रेम-रूपी लेखनी से एकाग्र मन रूपी लेखक द्वारा गुरु से सत्यासत्य का विचार उस बुद्धि रूपी कागज़ पर लिखें।

ਲਿਖੁ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹ ਲਿਖੁ ਲਿਖੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੧॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥
वाहिगुरु का नाम लिखें, उसकी स्तुति को लिखें और फिर उसकी अनंतता को लिखें ॥ १॥

ਬਾਬਾ ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿ ਜਾਣੁ ॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥
हे बाबा जी ! ऐसा लेखा लिखा जाना चाहिए।

ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਹੋਇ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥
ताकि जहां (परलोक में) जीवों से कर्मों का हिसाब लिया जाता है वहाँ सत्य नाम का चिन्ह साथ हो ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਥੈ ਮਿਲਹਿ ਵਡਿਆਈਆ ਸਦ ਖੁਸੀਆ ਸਦ ਚਾਉ ॥
जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥
जिस परलोक में भक्त जनों को सम्मान मिलता है, सदैव प्रसन्नता तथा सदैव आनन्द की प्राप्ति होती है।

ਤਿਨ ਮੁਖਿ ਟਿਕੇ ਨਿਕਲਹਿ ਜਿਨ ਮਨਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥
जिनके हृदय में सत्य नाम बसा हुआ है, उनके ललाट पर तिलक सुशोभित होते हैं।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਗਲੀ ਵਾਉ ਦੁਆਉ ॥੨॥

करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥

ऐसा नाम जब निरंकार की कृपा हो तभी प्राप्त होता है, अन्यथा जो और वार्ता करनी है वह व्यर्थ है ॥२॥

ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਹਿ ਉਠਿ ਰਖੀਅਹਿ ਨਾਵ ਸਲਾਰ ॥

इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥

कोई यहाँ जन्मता है और कोई मृत्यु को प्राप्त होता है, किन्हीं यहाँ पर मुखिया बन बैठते हैं।

ਇਕਿ ਉਪਾਏ ਮੰਗਤੇ ਇਕਨਾ ਵਡੇ ਦਰਵਾਰ ॥

इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥

कोई भिखारी पैदा होता है, कोई यहाँ पर बड़े दरबार लगा कर रहते हैं।

ਅਗੈ ਗਇਆ ਜਾਣੀਐ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਵੇਕਾਰ ॥੩॥

अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥

किन्तु परलोक में जाकर ही प्रतीत होता है कि निरंकार के नाम बिना यह सब-कुछ व्यर्थ है ॥३॥

ਭੈ ਤੇਰੈ ਡਰੁ ਅਗਲਾ ਖਪਿ ਖਪਿ ਛਿਜੈ ਦੇਹ ॥

भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥

हे पांधा जी ! आप के हृदय में परलोक का भय है अथवा नहीं, किन्तु मुझे आगे परलोक का भय बहुत है। इसलिए यह शरीर व्यवहारिक कार्यों में खप-खप कर टूट रहा है।

ਨਾਵ ਜਿਨਾ ਸੁਲਤਾਨ ਖਾਨ ਹੋਦੇ ਡਿਠੇ ਖੇਹ ॥

नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥

जिनके नाम बादशाह व सरदार होते हैं, वे भी ख्वार होते यहाँ देखे गए हैं।

ਨਾਨਕ ਉਠੀ ਚਲਿਆ ਸਭਿ ਕੂੜੇ ਤੁਟੇ ਨੇਹ ॥੪॥੬॥

नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जब जीव इस नश्वर संसार को त्याग कर चला जाता है तो जितने भी यहाँ पर मेिथ्या प्रेम-सम्वन्ध स्थापेित किए होते हैं, वे टूट जाते हैं। ॥ ४॥ ६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥

सिरीरागु महला १ ॥

सिरीरागु महला १ ॥

ਸਭਿ ਰਸ ਮਿਠੇ ਮੰਨਿਐ ਸੁਣਿਐ ਸਾਲੋਣੇ ॥
सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
हे पिता जी ! परमेश्वर के नाम का चिन्तन करने से मीठे रस तथा श्रवण करने से लवणीय रस प्राप्त होते हैं।

ਖਟ ਤੁਰਸੀ ਮੁਖਿ ਬੋਲਣਾ ਮਾਰਣ ਨਾਦ ਕੀਏ ॥
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥
मुँह से उसकी स्तुति कथन करने से खट्टे व तुर्श पदार्थों का स्वाद प्राप्त होता है और रागों में कीर्तन करने से सर्व प्रकार के मसालों का स्वाद मिलता है।

ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਾਉ ਏਕੁ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥
छतीह अम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥१॥
वास्तव में छत्तीस प्रकार का अमृत रूपी भोजन एक परमेश्वर का प्रेम है, परंतु जिन पर परमात्मा की कृपा होती है यह उसी को प्राप्त होते हैं। ॥ १॥

ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਖਾਣਾ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
हे पिता जी ! जिव्हा के स्वाद हेतु अन्य पदार्थों का भक्षण करना ख्वार करता है।

ਜਿਤੁ ਖਾਧੈ ਤਨੁ ਪੀੜੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके खाने से मन में कामादिक विकारों की प्रवृति हो, उससे परलोक में देह को पीड़ित किया जाता है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਰਤਾ ਪੈਨਣੁ ਮਨੁ ਰਤਾ ਸੁਪੇਦੀ ਸਤੁ ਦਾਨੁ ॥
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥
मन को वाहिगुरु-नाम में लीन करने को ही मैंने लाल रंग का पहरावा बनाया है, सत्य वचन कथन करने को श्वेत पहरावा बनाया है।

ਨੀਲੀ ਸਿਆਹੀ ਕਦਾ ਕਰਣੀ ਪਹਿਰਣੁ ਪੈਰ ਧਿਆਨੁ ॥
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥
पाप रहित होकर प्रभु के चरणों का ध्यान करने को मैंने नील वस्त्र का पहरावा बनाया है।

ਕਮਰਬੰਦੁ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ॥੨॥
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥
संतोष को कमरबंद और ईश्वर-नाम को धन व यौवन माना है ॥ २॥

ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਪੈਨਣੁ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥
बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥
हे पिता जी ! मन-भावना के अनुसार अन्य पहनने से मानव ख्वार होता है।

ਜਿਤੁ ਪੈਧੈ ਤਨੁ ਪੀੜੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके पहनने से तन को पीड़ा हो तथा मन में विकारों की उत्पति हो, ऐसे वस्त्र पहनने व्यर्थ हैं ॥१॥ रहाउ॥

ਘੋੜੇ ਪਾਖਰ ਸੁਇਨੇ ਸਾਖਤਿ ਬੂਝਣੁ ਤੇਰੀ ਵਾਟ ॥
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥
धर्म रूपी घोड़े को सत्य वचन की ज़ीन पहना कर, उसको करुणादि स्वर्ण के दुमची भूषण से सजा कर निरंकार की प्राप्ति के मार्ग की सूझ पर मैंने चलन किया है।

ਤਰਕਸ ਤੀਰ ਕਮਾਣ ਸਾਂਗ ਤੇਗਬੰਦ ਗੁਣ ਧਾਤੁ ॥
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥
शुद्धचित रूपी तरकश में प्रेम रूपी तीर हैं, परमेश्वर की ओर उन्मुख बुद्धि मेरा कमान है, शांति मेरे लिए बर्छी है, ज्ञान को मैंने म्यान माना है, इन शुभ गुणों की ओर ही मैंने दौड़ना किया है।

ਵਾਜਾ ਨੇਜਾ ਪਤਿ ਸਿਉ ਪਰਗਟੁ ਕਰਮੁ ਤੇਰਾ ਮੇਰੀ ਜਾਤਿ ॥੩॥
वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३॥
ईश्वर-कृपा से आपके घर में प्रतिष्ठा से प्रकट होना मेरे लिए धोंसा व भाला है, आपकी साक्षात् कृपा ही मानों मेरी उच्च जाति है ॥ ३ ॥

ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਚੜਣਾ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥
बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥
हे पिता जी ! चित प्रसंन करते हेतु किसी अन्य की सवारी करने से मानव ख्वार होता है।

ਜਿਤੁ ਚੜਿਐ ਤਨੁ ਪੀੜੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
जिस पर चढ़ने से तन को पीड़ा हो और मन में विकारों की उत्पति हो, ऐसी सवारी करना व्यर्थ है॥ १॥ रहाउ॥

ਘਰ ਮੰਦਰ ਖੁਸੀ ਨਾਮ ਕੀ ਨਦਰਿ ਤੇਰੀ ਪਰਵਾਰੁ ॥
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥
हे निरंकार ! तेरे नाम की प्रसंनता ही मेरे लिए भवनादि हैं और तुम्हारी कृपा-दृष्टि मेरा परिवार है।

ਹੁਕਮੁ ਸੋਈ ਤੁਧੁ ਭਾਵਸੀ ਹੋਰੁ ਆਖਣੁ ਬਹੁਤੁ ਅਪਾਰੁ ॥
हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥
हे अनंत परमेश्वर ! तुम्हारी रज़ा से सांसारिक क्रिया हेतु आदेश होता है, अन्य निरर्थक बातों का करना निष्फल है।

ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਪੂਛਿ ਨ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥
नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥
सतिगुरु जी का फुरमान है कि यह सत्य स्वरूप अकाल पुरुष किसी अन्य से पूछ कर विचार नहीं करता अर्थात् वह स्वतंत्र शक्ति है ॥ ॥४॥

ਬਾਬਾ ਹੋਰੁ ਸਉਣਾ ਖੁਸੀ ਖੁਆਰੁ ॥
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥
हे पिता जी ! अन्य भोग-विलास की निद्रा से मानव ख्वार होता है।

ਜਿਤੁ ਸੁਤੈ ਤਨੁ ਪੀੜੀਐ ਮਨ ਮਹਿ ਚਲਹਿ ਵਿਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੪॥੭॥
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥
जिस सोने से तन को पीड़ा हो और मन में विकारों की उत्पत्ति हो, ऐसी निद्रा लेना व्यर्थ है ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਕੁੰਗੂ ਕੀ ਕਾਂਇਆ ਰਤਨਾ ਕੀ ਲਲਿਤਾ ਅਗਰਿ ਵਾਸੁ ਤਨਿ ਸਾਸੁ ॥
कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥
शुभ कर्म करने से शरीर केसर के समान पवित्र है, वैरागमयी वचन बोलने से जिव्हा रत्न समान है तथा निरंकार का यशोगान करने से शरीर में विद्यमान श्वास चंदन की सुगन्ध के समान हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਕਾ ਮੁਖਿ ਟਿਕਾ ਤਿਤੁ ਘਟਿ ਮਤਿ ਵਿਗਾਸੁ ॥
अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥
अठसठ तीर्थों के स्नान-फल का तिलक मस्तिष्क पर शोभायमान होता है, ऐसे संतों की बुद्धि में प्रकाश होता है।

ਓਤੁ ਮਤੀ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੧॥
ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥
फिर तो उस प्रकाशमान बुद्धि द्वारा परमेश्वर के गुणों की प्रशंसा की जाए॥ १॥

ਬਾ ਹੋਰ ਮਤਿ ਹੋਰ ਹੋਰ ॥
बाबा होर मति होर होर ॥
हे मानव जीव ! परमेश्वर के ज्ञान के बिना अन्य सांसारिक विकारों में लिप्त बुद्धि व्यर्थ है।

ਜੇ ਸਉ ਵੇਰ ਕਮਾਈਐ ਕੂੜੈ ਕੂੜਾ ਜੋਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥
यदि सौ बार लुभावने पदार्थों को अर्जित किया जाए, तो वे मिथ्या पदार्थ व उनका बल मिथ्या है ॥१॥ रहाउ ॥

ਪੂਜ ਲਗੈ ਪੀਰੁ ਆਖੀਐ ਸਭੁ ਮਿਲੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥
अन्य ज्ञान-बल से पूजा होने लगे, लोग पीर-पीर कहने लगें तथा सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर उसके सम्मुख हो जाए।

ਨਾਉ ਸਦਾਏ ਆਪਣਾ ਹੋਵੈ ਸਿਧੁ ਸੁਮਾਰੁ ॥
नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥
अपना नाम भी कहलाए तथा पुनः सिद्धों में भी गिना जाए।

ਜਾ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਸਭਾ ਪੂਜ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥
जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥
किन्तु यदि अकाल पुरुष के दरबार में उसकी प्रतिष्ठा स्वीकृत न हो तो उसकी यह सब पूजादि उसे ख्वार करती है ॥ २॥

ਜਿਨ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰਿ ਥਾਪਿਆ ਤਿਨ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥
जिनको सतिगुरु ने उच्च पद पर आसीन किया है, उन्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता।

ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੋ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥
क्योंकि उनके अंतर्मन में वाहिगुरु नाम का खजाना है और नाम के कारण ही संसार में उनका अस्तित्व है।

ਨਾਉ ਪੂਜੀਐ ਨਾਉ ਮੰਨੀਐ ਅਖੰਡੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੩॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥
जो सत्य स्वरूप, त्रैकालाबाध, भेद रहित निरंकार है उसके नाम के कारण ही (परमात्मा द्वारा प्रतिष्ठित व्यक्ति) वे पूजनीय व मानने योग्य होते हैं। ॥ ३॥

ਖੇਹੂ ਖੇਹ ਰਲਾਈਐ ਤਾ ਜੀਉ ਕੇਹਾ ਹੋਇ ॥
खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥
जब मानव शरीर (मृत्यु के पश्चात्) धूल में मिल जाता है तब जीवात्मा की दशा कैसी होगी।

ਜਲੀਆ ਸਭਿ ਸਿਆਣਪਾ ਉਠੀ ਚਲਿਆ ਰੋਇ ॥
जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥
फिर उसकी सभी चतुराइयां जल जाती हैं और वह विलाप करता हुआ यमदूतों के साथ उठ कर चला जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਵਿਸਾਰਿਐ ਦਰਿ ਗਇਆ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥੪॥੮॥
नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥
सतिगुरु जी कथन करते हैं कि वाहिगुरु का नाम विस्मृत करके यमों के द्वार पर जाने से क्या होता है ॥४॥८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਗੁਣਵੰਤੀ ਗੁਣ ਵੀਥਰੈ ਅਉਗੁਣਵੰਤੀ ਝੂਰਿ ॥
गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
हे मानव ! जो शुभ गुणों से युक्त संत रूप गुणवती (जीवात्मा) है, वह अकाल पुरुष के गुणों का विस्तार करती है और जो अवगुणों से युक्त मनमुख रूप गुणहीन है. वह पश्चाताप करती है।

ਜੇ ਲੋੜਹਿ ਵਰੁ ਕਾਮਣੀ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਪਿਰ ਕੂਰਿ ॥
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥
इसलिए यदि जीव रूपी स्त्री पति-परमेश्वर को मिलना चाहती हो तो उसे हृदय में सत्य को धारण करना होगा, क्योंकि झूठ के आश्रय से पति-परमेश्वर प्राप्त नहीं होता।

ਨਾ ਬੇੜੀ ਨਾ ਤੁਲਹੜਾ ਨਾ ਪਾਈਐ ਪਿਰੁ ਦੂਰਿ ॥੧॥
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥
उस जीव-स्त्री के पास तृष्णा रूपी नदी पार करने हेतु न तो भक्ति-भाव की नाव है और न ही प्रेम-भाव का तुल्हा (रस्सों से बांध कर | काष्ठ का बनाया हुआ तख्ता) है, इन साधनों के बिना तो वह परमात्मा इतना दूर है कि उसकी प्राप्ति सम्भव नहीं ॥१॥

ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਪੂਰੈ ਤਖਤਿ ਅਡੋਲੁ ॥
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥
मेरा निरंकार सर्व-सम्पन्न है और अचल सिंहासन पर विराजमान है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂਰਾ ਜੇ ਕਰੇ ਪਾਈਐ ਸਾਚੁ ਅਤੋਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥

यदि कोई गुरु के उन्मुख होने वाला सद्पुरुष कृपा करे तो अपरिमेय व सत्य स्वरूप परमेश्वर किसी साधक को प्राप्त हो सकता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿਮੰਦਰੁ ਸੋਹਣਾ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਮਾਣਕ ਲਾਲ ॥ ਮੋਤੀ ਹੀਰਾ ਨਿਰਮਲਾ ਕੰਚਨ ਕੋਟ ਰੀਸਾਲ ॥

प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥

मानव शरीर रूपी परमेश्वर का मंदिर अत्यंत सुंदर है, उसमें चिन्तन रूपी माणिक्य व प्रेम रूपी लाल विद्यमान हैं। वैराग रूपी मोती है, ज्ञान रूपी निर्मल हीरा है तथा धातुओं में श्रेष्ठ स्वर्ण की भाँति यह मानव देह भी एक श्रेष्ठ मनोहर दुर्ग है।

ਬਿਨੁ ਪਉੜੀ ਗੜਿ ਕਿਉ ਚੜਉ ਗੁਰ ਹਰਿ ਧਿਆਨ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥

बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥

(यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि) इस दुर्ग पर बिना सीढ़ी के कैसे चढ़ा जाए, (सतिगुरु जी उत्तर देते हैं) इस मानव देह रूपी दुर्ग पर चढ़ने हेतु, अर्थात इस मानव शरीर मुक्ति हेतु गुरु द्वारा निरंकार का चिंतन करके प्रसनचित यानि गुरु उपदेश से परमात्मा का नाम सिमरन करके मुक्ति प्राप्त कर ॥२॥

ਗੁਰੁ ਪਉੜੀ ਬੇੜੀ ਗੁਰੂ ਗੁਰੁ ਤੁਲਹਾ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥

गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥

हे मानव ! (इस दुर्ग पर चढ़ने हेतु) गुरु रूप सीढ़ी, (तृष्णा रूपी नदी पार करने हेतु) गुरु रूप नाव व गुरु रूप तुल्हा और (आवागमन से मुक्ति प्राति हेतु) गुरु द्वारा हरिनाम रूपी जहाज का सहारा लिया जा सकता है, अथवा निरंकार के नाम-सिमरन की प्राप्ति के लिए गुरु-उपदेश रूपी सीढ़ी, नाव व तुल्हा को अपना आश्रय बनाओ।

ਗੁਰੁ ਸਰੁ ਸਾਗਰੁ ਬੋਹਿਥੋ ਗੁਰੁ ਤੀਰਥੁ ਦਰੀਆਉ ॥

गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥

गुरु के पास भवसागर पार करने हेतु ज्ञान रूपी जहाज़ है, और गुरु ही पाप कर्मों की निवृति हेतु तीर्थ स्थान व तन शुद्धि हेतु पवित्र दरिया है।

ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਊਜਲੀ ਸਤ ਸਰਿ ਨਾਵਣ ਜਾਉ ॥੩॥

जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥

यदि निरंकार को उस जीव-स्त्री का आचरण भला लगता है तो उसकी बुद्धि निर्मल होती है और वह सत्संगति रूपी सरोवर में स्नान करने जाती है। ॥ ३॥

ਪੂਰੋ ਪੂਰੋ ਆਖੀਐ ਪੂਰੈ ਤਖਤਿ ਨਿਵਾਸ ॥
पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥
वह जो परिपूर्ण निरंकार है उसकी पूर्ण श्रद्धा से उपासना करें तो उस अधिष्ठान स्वरूप अकाल पुरुष में स्थिर हुआ जा सकता है।

ਪੂਰੈ ਥਾਨਿ ਸੁਹਾਵਣੈ ਪੂਰੈ ਆਸ ਨਿਰਾਸ ॥
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
परिपूर्ण परमेश्वर को प्राप्त हुआ मानव जीव शोभायमान होकर निराश व्यक्तियों की आशाएँ पूर्ण करने के समर्थ हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਜੇ ਮਿਲੈ ਕਿਉ ਘਾਟੈ ਗੁਣ ਤਾਸ ॥੪॥੯॥
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥९॥
सतिगुरु जी कथन करते हैं कि वह परिपूर्ण अकाल पुरुष जिसको प्राप्त हो जाए तो उसके शुभ गुणों में कमी कैसे आ सकती है ॥४॥९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਆਵਹੁ ਭੈਣੇ ਗਲਿ ਮਿਲਹ ਅੰਕਿ ਸਹੇਲੜੀਆਹ ॥
आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
हे सत्संगी बहन ! आओ, मेरे गले मिलो, क्योंकि हम एक ही पति-परमेश्वर की सखियाँ हैं।

ਮਿਲਿ ਕੈ ਕਰਹ ਕਹਾਣੀਆ ਸੰਮ੍ਰਥ ਕੰਤ ਕੀਆਹ ॥
मिलि कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह ॥
हम दोनों मिलकर उस सर्वशक्तिमान निरंकार पति की कीर्ति की बातें करें,

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਸਭਿ ਗੁਣ ਅਉਗਣ ਸਭਿ ਅਸਾਹ ॥੧॥
साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥
उस सत्य स्वरूप वाहिगुरु में सर्वज्ञानादि के सभी गुण हैं और हम में सभी अवगुण ही हैं।॥ १॥

ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰੈ ਜੋਰਿ ॥
करता सभु को तेरै जोरि ॥
हे कर्ता पुरुष ! सृष्टि तेरी शक्ति के कारण ही है।

ਏਕੁ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੀਐ ਜਾ ਤੂ ਤਾ ਕਿਆ ਹੋਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥

जब एकमेव अद्वितीय ब्रह्म का विचार करें तो तू ही तू व्यापक हैं फिर अन्य किसी की क्या आवश्यकता है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਤੁਸੀ ਰਾਵਿਆ ਕਿਨੀ ਗੁਣੀ ॥

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥

हे सखियों ! जिन्हें पति-परमेश्वर की प्राप्ति हुई है, सौभाग्यवती स्त्रियों से जाकर पूछो कि तुम ने कौन से गुणों के कारण पति-परमेश्वर को प्राप्त है, अर्थात् ब्रह्मानंद का उपभोग किया है।

ਸਹਜਿ ਸੰਤੋਖਿ ਸੀਗਾਰੀਆ ਮਿਠਾ ਬੋਲਣੀ ॥

सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥

(प्रत्युत्तर में कहा है कि) संतोष धारण करने व मधुर-वाणी के कारण स्वाभाविक ही श्रृंगारित हुई हैं।

ਪਿਰੁ ਰੀਸਾਲੂ ਤਾ ਮਿਲੈ ਜਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣੀ ॥੨॥

पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥

जिज्ञासु रूपी स्त्री जब गुरु का उपदेश श्रवण-करे तब उसे सुन्दर स्वरूप अकाल पुरुष रूपी पति मिलता है।॥ २॥

ਕੇਤੀਆ ਤੇਰੀਆ ਕੁਦਰਤੀ ਕੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥
हे निरंकार ! कितनी ही तेरी शक्तियां हैं और तेरा दिया हुआ दान भी कितना महान् है (यह सब अकथनीय है) ।

ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਿਫਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥
कितने ही असंख्य सूक्ष्म व स्थूल जीव-जंतु हैं जो तेरा निशदिन स्तुतिगान कर रहे हैं।

ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਰੂਪ ਰੰਗ ਕੇਤੇ ਜਾਤਿ ਅਜਾਤਿ ॥੩॥
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥
असंख्य ही तेरे गौरश्यामादि रूप-रंग हैं तथा कितनी ही ब्राह्मण-क्षत्रियादि उच्च जातियाँ व शूद्रादि निम्न जातियों रची हुई है॥ ३॥

ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਊਪਜੈ ਸਚ ਮਹਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
फिर तो हे सखियो ! जब सद्पुरुषों की सत्संगति प्राप्त होती है तो हृदय में सुगुणों की उत्पत्ति होती है और सत्य नाम सुमिरन में श्रद्धा करके जीव सत्यस्वरूप अकाल पुरुष में समा जाता है।

ਸੁਰਤਿ ਹੋਵੈ ਪਤਿ ਊਗਵੈ ਗੁਰਬਚਨੀ ਭਉ ਖਾਇ ॥
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
(पुनः क्या होता है इसका विचार सतिगुरु जी ने कथन किया है) जब मानव-मन प्रभु चरणों में लीन होता है तब पति-परमेश्वर प्रकट होता है, किन्तु यह सब गुरु-उपदेश द्वारा हृदय में परमात्मा का भय धारण करने से ही सम्भव है।

ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥੧੦॥
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥
सतिगुरु जी कहते हैं कि वह सत्य स्वरूप निरंकार (बादशाह) ऐसी गुणवती ज्ञानी रूप सुहागिन सखियों को स्वयं ही अपने स्वरूप में अभेद कर लेता है ॥४॥१०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਭਲੀ ਸਰੀ ਜਿ ਉਬਰੀ ਹਉਮੈ ਮੁਈ ਘਰਾਹੁ ॥
भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥
भला हुआ, जो मेरी बुद्धि अवगुणों से रिक्त हो गई है और मेरे हृदय-घर से अहंत्व व ममत्व विकारों का नाश हो गया है।

दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥
दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥
(जब इन विकारों से हृदय व बुद्धि रिक्त हो गई तो) सतिगुरु का भरोसा प्राप्त हुआ और विकारों में लिप्त रूपी दूत ऐन्द्रिक दूत मेरे दास बन गए।

कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥
कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥
उस निश्चिन्त परमात्मा में निश्चय करते हुए व्यर्थ की कल्पना का त्याग कर दिया है॥ १॥

मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥
मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥
हे मानव मन ! सत्य नाम हृदय में धारण करने से ही यमादि का भय क्षीण होता है।

भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
परमेश्वर का भय माने बिना निर्भय कैसे हुआ जा सकता है परमेश्वर का भय पाने हेतु गुरु के मुख से किया गया उपदेश मनन करना पड़ता है॥ १॥ रहाउ ॥

केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥
केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥
फिर तो हे भाई ! उस निरंकार का यश कितना कथन किया जाए, क्योंकि उसके यशोगान की तो कोई सीमा ही नहीं है।

मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥
मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥
उस प्रदाता अकाल पुरुष से माँगने वाले तो अनेकानेक जीव हैं और देने वाला वह मात्र एक ही है।

जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥
जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥
जिस के आसरे जीव और प्राण हैं उस निरंकार को मन में बसा लेने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति हो सकती है॥ २॥

ਜਗੁ ਸੁਪਨਾ ਬਾਜੀ ਬਨੀ ਖਿਨ ਮਹਿ ਖੇਲੁ ਖੇਲਾਇ ॥

जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥

उसके अतिरिक्त अन्य जो जगत् की रचना है वह एक स्वप्न व तमाशा ही है, क्षण मात्र में यह खेल की भाँति समाप्त हो जाएगा; अर्थात् परमात्मा के बिना यह संसार व अन्य पदार्थ सब नश्वर हैं।

ਸੰਜੋਗੀ ਮਿਲਿ ਏਕਸੇ ਵਿਜੋਗੀ ਉਠਿ ਜਾਇ ॥

संजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥

जीव संयोगी कर्मो के कारण संसार में एकत्र होते हैं और वियोर्गीकर्मो से यहाँ से प्रस्थान कर जाते हैं।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਸੋ ਥੀਐ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੩॥

जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥

जो निरंकार को भला लगता है वही होता है, अपनी समर्था से अन्य कोई भी कुछ नहीं कर सकता ॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸਤੁ ਵੇਸਾਹੀਐ ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥

गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥

जिनके पास श्रद्धा रूपी पूँजी है उन गुरु के उन्मुख सौदागरों ने ही वाहिगुरु-नाम रूपी सौदा क्रय किया है और वे नामी पुरुष ही आत्म-वस्तु को खरीदते हैं।

ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿਆ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥

जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥

जिन्होंने गुरु द्वारा सत्य नाम रूपी सौदा खरीदा है, वे परलोक में भी दृढ़ होते हैं।

ਨਾਨਕ ਵਸਤੁ ਪਛਾਣਸੀ ਸਚੁ ਸਉਦਾ ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ ॥੪॥੧੧॥

नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिसके पास नाम रूपी सच्चा सौदा है, वही लोक-परलोक में आत्म-वस्तु को पहचानसकेगा ॥ ४॥ ११॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲੁ ੧ ॥

सिरीरागु महलु १ ॥

सिरीरागु महलु १ ॥

ਧਾਤੁ ਮਿਲੈ ਫੁਨਿ ਧਾਤੁ ਕਉ ਸਿਫਤੀ ਸਿਫਤਿ ਸਮਾਇ ॥

धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥

(यहाँ पर सतिगुरु मनमुख व गुरमुख में अंतर कथन करते हैं) जो माया से प्रीत करने वाला प्राणी है वह पुन: माया में ही लिप्त होता है, अर्थात् आवागमन के चक्र में भ्रमण करता है, पर गुरु से मिल कर जो अकाल पुरुष का स्तुति गान करता है वह उस परमेश्वर में ही अभेद हो जाता है।

ਲਾਲੁ ਗੁਲਾਲੁ ਗਹਬਰਾ ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਚੜਾਉ ॥

लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥

(स्तुति करने वालों को) उन्हें आनंददायक (लाल) अति आनंददायक (गुलाल) व अत्यंतानंददायक (गहबरा) सत्य रंग चढ़ जाता है।

ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਸੰਤੋਖੀਆ ਹਰਿ ਜਪਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥੧॥

सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥१॥

यह सत्य रंग संतोषी पुरुषों को मिलता है और जो श्रद्धापूर्वक एकाग्रचित होकर वाहिगुरु-नाम का सिमरन करते हैं॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਰੇਣੁ ॥

भाई रे संत जना की रेणु ॥

हे भाई ! संत जनों की चरण-धूलि होकर रहो।

ਸੰਤ ਸਭਾ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਧੇਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥१॥ रहाउ ॥

क्योंकि इन संतों की सभा रूपी सत्संगति के कारण ही गुरु की प्राप्ति होती है और वे गुरु मुक्ति जैसा दुर्लभ पदार्थ देने हेतु कामधेनु गाय के समान है॥१॥रहाउ ॥

ਊਚਉ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ਊਪਰਿ ਮਹਲੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥

ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥

सर्वोच्च व शोभनीय स्थान मानव जन्म है, उसे सर्वश्रेष्ठ मानकर ही निरंकार ने अपना निवास स्थान बनाया है।

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਦੇ ਪਾਈਐ ਦਰੁ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਪਿਆਰਿ ॥

सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥

नाम-सिमरन व जप-तपादि सत्कर्मों के करने से ही मानव देह में जो निरंकार का स्वरूप है, उसके साथ प्रेम प्राप्त होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਸਮਝਾਈਐ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੨॥

गुरमुखि मनु समझाईऐ आतम रामु बीचारि ॥२॥

गुरु के मुख से हुए उपदेश द्वारा मन को समझाने से ही जीवात्मा और परमेश्वर दोनों की अभेदता का विचार प्रकट होता है।॥ २॥

त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥

त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥

(नित्य, नैमित्तिक व काम्य अथवा सत्व, रजस्व तमस्) त्रिविध कर्म करने से प्रथम तो स्वर्ग प्राप्ति की आशा होती है, फिर इसके छूट जाने की चिन्ता सताने लगती है।

किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥

किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥

इस तीन गुणों की पेचीदगी गुरु के बिना कैसे छूट सकती है जिससे ज्ञान प्राप्ति होकर आत्मिक सुख उपलब्ध हों।

निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥

निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥

जब निरंकार कृपालु होकर पापों की मैल को धो देता है तभी इस मानव शरीर में विद्यमान अकाल पुरुष का स्वरूप पहचाना जा सकता है॥ ३॥

बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥

बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥

इसलिए यही निश्चय कर कि गुरु के बिना पापों की यह मैल हृदय से नहीं उतर सकती और (जब तक इस मैल की निवृति नहीं हो जाती तब तक) हरि-परमेश्वर की कृपा नहीं हो सकती तथा आत्मस्वरूप में निवास असम्भव है॥३॥

ऐको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥

एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥

इसलिए समस्त आशाओं का त्याग करके जिज्ञासु को एक ही गुरु का उपदेश मनन करना चाहिए।

नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥

नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥

सतिगुरु जी कहते हैं कि जो सद्पुरुष (नश्वर पदार्थों का त्याग करके) स्वयं निरंकार को देखते हैं फिर अन्य जिज्ञासुओं को दिखाते हैं, उन पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥४॥१२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਦੋਹਾਗਣੀ ਮੁਠੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
जो अभागिन जीव-स्त्री द्वैत-भाव के कारण ठगी गई है उसके जीवन को धिक्कार है।

ਕਲਰ ਕੇਰੀ ਕੰਧ ਜਿਉ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਿਰਿ ਢਹਿ ਪਾਇ ॥
कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥
एक के अतिरिक्त किसी अन्य से अनुरक्त होने के कारण अभागिन जीव स्त्री का जीवन कल्लर की दीवार की भाँति है, जो निशदिन किर-किर कर अंत में गिर पड़ती है; अर्थात् मनमुख जीव आवागमन के चक्र में ही फंसा रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸੁਖੁ ਨਾ ਥੀਐ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਦੂਖੁ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥
बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥
गुरु उपदेश के बिना जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर के मिलाप का आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं होता तथा आत्मानंद के बिना दैहिक एवं दैविक कष्टों की निवृति नहीं होती।॥१॥

ਮੁੰਧੇ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਸੀਗਾਰੁ ॥
मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥
अर्थात् निरंकार में श्रद्धा-भाव के बिना जप-तपादि का किया हुआ श्रृंगार क्या सुख देगा?

ਦਰਿ ਘਰਿ ਢੋਈ ਨ ਲਹੈ ਦਰਗਹ ਝੂਠੁ ਖੁਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥

जैसे पति से विमुख हुई स्त्री को उस के घर में समीपता प्राप्त नहीं होती, वैसे ही निरंकार की विमुखता के कारण अभागिन स्त्री की भाँति परलोक में भी झूठ में लिप्त जीव को अपमानित होना पड़ता है।॥१॥ रहाउ ॥

ਆਪਿ ਸੁਜਾਣੁ ਨ ਭੁਲਈ ਸਚਾ ਵਡ ਕਿਰਸਾਣੁ ॥

आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥

निरंकार स्वयं समझदार,सत्य व बड़ा किसान है जो जीवों के कर्मों को नहीं भूलता।

ਪਹਿਲਾ ਧਰਤੀ ਸਾਧਿ ਕੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਦੇ ਦਾਣੁ ॥

पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥

पहले तो वह अंत:करण रूपी बुद्धि को शोध कर फिर उसमें सत्य नाम रूपी बीज को बोता है।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਉਪਜੈ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥

नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥

उस नाम रूपी एक बीज से नौ निधियों की उत्पत्ति होती है, फिर जीव के मस्तिष्क पर प्रभु की कृपा का चिन्ह अंकित होता है॥२॥

ਗੁਰ ਕਉ ਜਾਣਿ ਨ ਜਾਣਈ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਚਜੁ ਅਚਾਰੁ ॥

गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥

किन्तु जो मनमुख जीव वेद-शास्त्रों आदि से गुरु की महिमा जानकर भी अनभिज्ञ होता है, अर्थात् गुरु-उपदेश को ग्रहण नहीं करता उसके कर्म उत्तम कैसे हो सकते हैं।

ਅੰਧੁਲੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰੁ ॥

अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥

अज्ञानी पुरुषों ने अज्ञान के अंधेरे कारण ही वाहिगुरु के नाम को विस्मृत कर दिया है।

ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਨ ਚੁਕਈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੩॥

आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥३॥

फिर उसका इस संसार से आवागमन समाप्त नहीं होता और वह पुनः-पुनः जन्म-मरण के चक्र में फँस कर (मुक्ति प्राप्ति हेतु) कमजोर होता रहता है अर्थात्-परमात्मा से विमुख होकर कर्म करने वाला जीव इहलोक व परलोक में अपमानित होकर दुखों को भोगता है॥ ३॥

ਚੰਦਨੁ ਮੋਲਿ ਅਣਾਇਆ ਕੁੰਗੂ ਮਾਂਗ ਸੰਧੂਰੁ ॥
चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥
जैसे कोई स्त्री चंदन केसर को मोल मंगवा लेती है और सिंदूर से माँग भर लेती है।

ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ ਬਹੁ ਘਣਾ ਪਾਨਾ ਨਾਲਿ ਕਪੂਰੁ ॥
चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥
इत्र,कपूर व चंदन आदि से कपड़ों को अति सुगंधित कर ले।

ਜੇ ਧਨ ਕੰਤਿ ਨ ਭਾਵਈ ਤ ਸਭਿ ਅਡੰਬਰ ਕੂੜੁ ॥੪॥
जे धन कंति न भावई त सभि अड्मबर कूड़ु ॥४॥
इतना सब कुछ कर लेने पर भी यदि स्त्री अपने पति को प्रिय न लगी तो श्रृंगार के किए गए वे सभी आडम्बर मिथ्या हैं, व्यर्थ हैं। अर्थात् जीवात्मा बेशक जप, तप, यज्ञ, उपासना व संन्यासादि के भेष धारण कर ले किंतु जब तक निरंकार से वह विमुख है ये सब निष्फल हैं॥ ४॥

ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਬਾਦਿ ਹਹਿ ਸਭਿ ਸੀਗਾਰ ਵਿਕਾਰ ॥
सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥
मनमुख जीव के समस्त रसों का भोगना व्यर्थ है और जप-तपादि का श्रृंगार करना निरर्थक है।

ਜਬ ਲਗੁ ਸਬਦਿ ਨ ਭੇਦੀਐ ਕਿਉ ਸੋਹੈ ਗੁਰਦੁਆਰਿ ॥
जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥
क्योंकि जब तक गुरु-उपदेश को ग्रहण नहीं करता, तब तक वह गुरु के सम्मुख सत्संगति में शोभायमान नहीं होगा।

ਨਾਨਕ ਧੰਨੁ ਸੁਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਸਹ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੫॥੧੩॥
नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥
सतिगुरु जी कहते हैं कि उस सौभाग्यवती रूप गुरमुख का जीवन कृतार्थ है जिसका पति-परमात्मा के साथ प्रेम है॥ ५॥ १३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਸੁੰਞੀ ਦੇਹ ਡਰਾਵਣੀ ਜਾ ਜੀਉ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ॥
जब पुर्यष्टक सहित चेतन सत्ता शरीर में निकल जाती है तब रिक्त देह भयानक हो जाती है।

ਭਾਹਿ ਬਲੰਦੀ ਵਿਝਵੀ ਧੂਉ ਨ ਨਿਕਸਿਓ ਕਾਇ ॥
भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥
चेतन सत्ता रूपी अग्नि जो पहले प्रज्वलित हो रही थी, वह जब बुझ गई तो शरीर में से प्राण रूपी धुआं नहीं निकला।

ਪੰਚੇ ਰੁੰਨੇ ਦੁਖਿ ਭਰੇ ਬਿਨਸੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥੧॥
पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥१॥
पिता-पुत्रादि पांचों सम्बन्धी दुख में रुदन कर रहे हैं, अर्थात् पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ वियोग में विलख रही हैं, क्योंकि यह मानव जन्म द्वैत-भाव में ही नाश हो गया ॥ १॥

ਮੂੜੇ ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥
मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥
हे मूढ़ जीव ! शुभ गुणों को सम्भालते हुए वाहिगुरु नाम का सिमरन करो।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮੋਹਣੀ ਸਭ ਮੁਠੀ ਅਹੰਕਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥१॥ रहाउ ॥
जो देहाभिमान स्त्री-पुत्रादि का ममत्व तथा माया का मोह है, इस के कारण सम्पूर्ण सृष्टि ठगी हुई है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਦੂਜੀ ਕਾਰੈ ਲਗਿ ॥
जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥
जिन्होंने अन्य सांसारिक विकारों में संलग्न होकर वाहिगुरु नाम को भुला दिया है।

ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੇ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅੰਤਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਿ ॥
दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि त्रिसना अगि ॥
उनके अंतःकरण में तृष्णाग्नि जल रही है और वे द्वैत-भाव में लग कर जल मरे हैं

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਹੋਰਿ ਮੁਠੀ ਧੰਧੈ ਠਗਿ ॥੨॥
गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥२॥
जिनकी गुरु ने रक्षा की, वे बच निकले तथा अन्य सभी को दुनियावी कार्यो रूपी ठगों ने ठग लिया है ॥२॥

ਮੁਈ ਪਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ਗਇਆ ਮੁਆ ਵੈਰੁ ਵਿਰੋਧੁ ॥
मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥
अब तो स्त्रियों में जो प्रीत लगी थी वह नष्ट हो गई, सगे-सम्बन्धियों से जो स्नेह था वह भी समाप्त हो गया तथा शत्रु-भाव भी खत्म हो गया है।

ਧੰਧਾ ਥਕਾ ਹਉ ਮੁਈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ਕ੍ਰੋਧੁ ॥
धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥
सांसारिक क्रिया-कलापों से थक गया, अहंत्व, ममत्व व क्रोध नष्ट हो गए।

करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥३॥
करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥३॥
अकाल पुरुष की कृपा द्वारा गुरु उपदेश की प्राप्ति होती है और (उस उपदेश द्वारा ही) चित्तवृतियों का दमन करके निरंकार के सत्य नाम को प्राप्त किया जा सकता है। ॥३॥

सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥
सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥
हे मानव ! गुरु-उपदेश द्वारा अंतर्मन से नाम सिमरन रूपी सत्कर्म करके सत्य स्वरूप निरंकार की प्राप्ति सम्भव है।

सो नरु जंमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥
सो नरु जमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥
फिर तो वह मानव न जन्म लेता है और न मृत्यु को प्राप्त होता है तथा न आता है व न जाता है, अर्थात् वह सांसारिक बंधन व आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥४॥१४॥
नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥४॥१४॥
सतिगुरु जी कथन करते हैं कि अकाल पुरुष के द्वार पर वह मुखिया होता है और आगे परलोक में भी उसको प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ॥४॥१४॥

सिरीरागु महल १ ॥
सिरीरागु महल १ ॥
सिरीरागु महल १ ॥

तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥
तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥
हे मानव जीव ! यह जो शरीर प्राप्त हुआ था वह चिन्ता में जल कर राख हो गया और माया में लिप्त मन (मण्डूर) लोहे की जंग के समान निरर्थक हो गया है।

अउगण फिरि लागु भए कूरि वजावै तूरु ॥
उगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ॥
जो पाप कर्म किए गए वे उल्ट कर उन पर ही लागू हो जाते हैं और झूठ उनके समक्ष तुरही बजाता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭਰਮਾਈਐ ਦੁਬਿਧਾ ਡੋਬੇ ਪੂਰੁ ॥੧॥
बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥१॥
गुरु-उपदेश के बिना जीव भटकता रहता है तथा द्वैत-भाव ने पूर्ण समूह को नरकों में धकेल दिया है ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸਬਦਿ ਤਰਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥
हे मन ! तू गुरु-उपदेश में चित्त लगा कर इस भवसागर को पार कर।

ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਬੂਝਿਆ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिन जीवों ने गुरु द्वारा नाम-ज्ञान को प्राप्त नहीं किया, वे बार-बार आवागमन में ही व्यस्त रहते हैं ॥१॥ रहाउ ॥

ਤਨੁ ਸੂਚਾ ਸੋ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਮਹਿ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ॥
जिस अंतर्मन में सत्य-नाम विद्यमान हो, वही पवित्र कहा जाता है।

ਭੈ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ਦੇਹੁਰੀ ਜਿਹਵਾ ਸਚੁ ਸੁਆਉ ॥
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥
शरीर सत्य स्वरूप निरंकार के भय में रत है और रसना सत्य-नाम का स्वाद चख रही है।

ਸਚੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ਬਹੁੜਿ ਨ ਪਾਵੈ ਤਾਉ ॥੨॥
सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥२॥
उस जीव पर जब परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हो गई तब उसे नरकों की अग्नि का ताप नहीं सहना पड़ता ॥२॥

ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਵਨਾ ਭਇਆ ਪਵਨੈ ਤੇ ਜਲੁ ਹੋਇ ॥
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥
(अब सतगुरु जी पुनः सृष्टि की रचना का चित्रण करते हैं।) सत्य स्वरूप निरंकार से पवन हुआ, पवन से जल की उत्पति हुई।

ਜਲ ਤੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਸਾਜਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮੋਇ ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥
फिर सृजनहार परमात्मा ने जलादि तत्वों से तीनों लोकों (सम्पूर्ण सृष्टि) की रचना की, फिर इस रचना के कण-कण में उसने जीव रूप में अपनी ज्योति विद्यमान की।

ਨਿਰਮਲੁ ਮੈਲਾ ਨਾ ਥੀਐ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥੩॥

निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥३॥

गुरु उपदेश में तदाकार होने से जिसका मन निर्मल होता है, वह फिर कभी द्वैत के कारण दूषित नहीं होता, इसी से वह प्रतिष्ठित होता है। ॥ ३।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਾਚਿ ਸੰਤੋਖਿਆ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ॥

इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥

जब यह मन सत्य द्वारा संतुष्ट हो जाता है तब उस पर निरंकार की कृपा होती है।

ਪੰਚ ਭੂਤ ਸਚਿ ਭੈ ਰਤੇ ਜੋਤਿ ਸਚੀ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥
जिस सत्य स्वरूप के भय में पांचों भौतिक तत्व (सम्पूर्ण मानव शरीर) अनुरक्त हैं उस सत्य स्वरूप परमात्मा की परम ज्योति मन में निवास करती है।

ਨਾਨਕ ਅਉਗਣ ਵੀਸਰੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਪਤਿ ਤਾਹਿ ॥੪॥੧੫॥
नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥४॥१५॥
सतिगुरु जी कथन करते हैं कि उस मानव जीव को समस्त अवगुण विस्मृत हो गए हैं और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा स्वयं गुरु करते हैं। ॥४॥१५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਨਾਨਕ ਬੇੜੀ ਸਚ ਕੀ ਤਰੀਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥
गुरु नानक देव जी कथन करते हैं गुरु-उपदेश का मनन करने से ही सत्य नाम रूपी नौका में सवार होकर जीव भवसागर को पार कर सकता है।

ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਵਹੀ ਪੂਰਿ ਭਰੇ ਅਹੰਕਾਰਿ ॥
इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥
लेकिन अनेक जीव अभिमान करते हुए जन्म ले रहे हैं और मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं।

ਮਨਹਠਿ ਮਤੀ ਬੂਡੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਸੁ ਤਾਰਿ ॥੧॥
मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥१॥
हठी इन्सान मन की बुद्धि के कारण संसार-सागर के विकारों में डूबा रहता है, लेकिन गुरु के बताए सत्य मार्ग पर चल कर इस संसार सागर को पार किया जा सकता है॥ १॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕਿਉ ਤਰੀਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥
गुरु के आश्रय बिना कैसे यह भवसागर पार किया जा सकता है और कैसे आत्मिक-आनंद प्राप्त किया जा सकता है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਤੂ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥१॥ रहाउ ॥

इसलिए उस परमात्मा में ऐसा निश्चय रख कर विनती करो कि जैसे आप को अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, आप के अतिरिक्त मेरा अन्य कोई आश्रय नहीं है।॥ १॥ रहाउ॥

ਆਗੈ ਦੇਖਉ ਡਉ ਜਲੈ ਪਾਛੈ ਹਰਿਓ ਅੰਗੂਰੁ ॥

आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥

सृष्टि के आश्चर्यजनक दृश्य का वर्णन करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि हे मानव ! जब संसार के आगे (श्मशान भूमि में) मैं देखता हूँ तो दावानल प्रज्वलित है, और पीछे (संसार में) देखता हूँ तो अंकुर स्फुटित हो रहे हैं अर्थात् नए जीव पैदा हो रहे हैं।

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜੈ ਤਿਸ ਤੇ ਬਿਨਸੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਚੁ ਭਰਪੂਰਿ ॥

जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥

जिस सृष्टिकर्ता के आदेश से यह सांसारिक जीव पैदा हो रहे हैं और जिस संहारक शक्ति की आज्ञा से नष्ट हो रहे हैं, वह परिपूर्ण सत्य परमेश्वर कण-कण में व्याप्त हैं।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਹੀ ਸਾਚੈ ਮਹਲਿ ਹਦੂਰਿ ॥੨॥

आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥२॥

वह स्वयं गुरु से मिलाप करवाता है और गुरु से मिलकर जीव सत्य स्वरूप के समक्ष होता है॥ २॥

ਸਾਹਿ ਸਾਹਿ ਤੁਝੁ ਸੰਮਲਾ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਾਰੇਉ ॥

साहि साहि तुझु समला कदे न विसारेउ ॥

हे प्रभु ! कृपा करो, मैं श्वास-श्वास आप को स्मरण करूँ, कभी भी न भुलाऊं।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਸਾਹਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੇਉ ॥

जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अम्रितु पेउ ॥

हे साहिब ! जब-जब तुम मेरे मन में वास करोगे, तब-तब मैं आत्मिक आनंद देने वाला नाम रूपी अमृत पीता रहूँगा।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਤੂ ਧਣੀ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿ ਸਮੇਉ ॥੩॥

मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥३॥

हे परमात्मा ! मेरा यह तन और मन तुम्हारा ही दिया हुआ है, तुम मेरे स्वामी हो, इसलिए कृपा करके मेरे अंतर्मन से अहंकार दूर करके मुझे अपने में लिवलीन कर लो॥ ३॥

ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਕਰਿ ਆਕਾਰੁ ॥

जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥

जिस परमात्मा ने इस सृष्टि का निर्माण किया है, उसने इसे तीन लोकों का आकार दिया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਨਣੁ ਜਾਣੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਮੁਗਧੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥
इस रहस्यमयी ज्ञान को गुरमुख जीव ही जानते है, मायाधारी मनमुख विमूढ़ जीव अंधकार में रहते हैं।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰੀ ਬੂਝੈ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਰੁ ॥੪॥
घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥४॥
श्रेष्ठ गुरु की शिक्षा प्राप्त जीव ही सर्वव्यापक ज्योति को निरंतर जान सकता है ॥ ४ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਜਾਣਿਆ ਤਿਨ ਕੀਚੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥
गुरमुखि जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥
जिन गुरमुख जीवों ने उस परमात्मा को जान लिया है, वे धन्य हैं।

ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਮਿਲੇ ਸਚੇ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿ ॥
सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥
जो परमात्मा के सत्य नाम में लिप्त होकर उसी सत्य में अभेद हो गए हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੀਆ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ॥੫॥੧੬॥
नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥५॥१६॥
श्री गुरु नानक जी कथन करते हैं कि वे नाम द्वारा संतुष्ट हो गए हैं और उन्होंने अपने प्राण व शरीर उस परमेश्वर को ही अर्पित कर दिए हैं।॥ ५॥ १६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਮਿਤ੍ਰ ਪਿਆਰਿਆ ਮਿਲੁ ਵੇਲਾ ਹੈ ਏਹ ॥
सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥
हे प्रिय मित्र मन ! सुनो, यह समय (मानव जन्म) परमात्मा से मिलने का है।

ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਬਨਿ ਸਾਸੁ ਹੈ ਤਬ ਲਗੁ ਇਹੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ॥
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥
जब तक यह यौवनावस्था के श्वास चल रहे हैं, तब तक ही यह शरीर नाम सुमिरन करने के योग्य है। अर्थात्-वृद्धावस्था में निर्बलता सुमिरन नहीं करने देती।

ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਈ ਢਹਿ ਢੇਰੀ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥੧॥
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥१॥
शुभ गुणों के बिना यह तन किसी काम का नहीं है, अंत में इसने नष्ट होकर राख का ढेर बन जाना है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਲੈ ਲਾਹਾ ਘਰਿ ਜਾਹਿ ॥
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥
हे मेरे प्रिय मन ! तुम नाम-स्मरण का लाम उठा कर सत्य स्वरूप के घर जाओ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਹਉਮੈ ਨਿਵਰੀ ਭਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के उन्मुख होकर नाम-स्मरण कर, इससे अहंकार की अग्नि बुझ जाएगी॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਗੰਢਣੁ ਗੰਢੀਐ ਲਿਖਿ ਪੜਿ ਬੁਝਹਿ ਭਾਰੁ ॥
सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥
अनेकानेक कथा-कहानियाँ सुन-सुन कर बौद्धिक उधेड़बुन में लगे रहते हैं, और अनेकानेक लिख-लिख कर, पढ़-पढ़ कर तथा सोच-विचार कर पदों का संग्रह करते हैं वह स्वयं एक बोझ के समान हैं।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਗਲੀ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥
उनकी तृष्णा में दिन-रात वृद्धि होती रहती है और अहंकार के रोग में ग्रस्त होकर कई तरह के विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

ਓਹੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਅਤੋਲਵਾ ਗੁਰਮਤਿ ਕੀਮਤਿ ਸਾਰੁ ॥੨॥
ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥२॥
वह प्रभु निश्चित तथा अपरिमेय है, उसके बारे में ज्ञान गुरु की शिक्षा द्वारा ही होता है॥ २॥

ਲਖ ਸਿਆਣਪ ਜੇ ਕਰੀ ਲਖ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਿਲਾਪੁ ॥
लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥
हम लाखों तरह की चतुराई कर लें और लाखों ही लोगों के साथ प्रीत कर लें।

ਬਿਨੁ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਨ ਧ੍ਰਾਪੀਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੂਖ ਸੰਤਾਪੁ ॥
बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥
(तो भी) संतों की संगति किए बिना तृप्ति नहीं होती तथा नाम सुमिरन के बिना सांसारिक दुख एवं संताप बने रहते हैं।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਜੀਅਰੇ ਛੁਟੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੀਨੈ ਆਪੁ ॥੩॥
हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥३॥
हे जीव ! गुरु उपदेश द्वारा स्वयं को पहचान कर हरि सिमरन करके इन विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है॥ ३॥

ਤਨੁ ਮਨੁ ਗੁਰ ਪਹਿ ਵੇਚਿਆ ਮਨੁ ਦੀਆ ਸਿਰੁ ਨਾਲਿ ॥
तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥
जिसने अपना तन-मन गुरु के पास बेच दिया है, अंतः करण और सिर भी अर्पित कर दिया है।

ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਖੋਜਿ ਢੰਢੋਲਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥
त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥
उसने जिस प्रभु को तीनों लोकों में ढूंढा था, उसे गुरु उपदेश द्वारा खोज कर प्रसन्नता प्राप्त की है।

ਸਤਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਲਿ ॥੪॥੧੭॥
सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥४॥१७॥
गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि सतिगुरु ने अपने साथ मिला कर उस प्रभु से मिलाप करवा दिया है॥ ४॥ १७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਮਰਣੈ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਹੀ ਜੀਵਣ ਕੀ ਨਹੀ ਆਸ ॥
मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥
गुरु के उन्मुख जीवों को न मरने की चिन्ता होती है और न ही जीने की आशा।

ਤੂ ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹੀ ਲੇਖੈ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ ॥
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥
वह निश्चय करके कहते हैं कि हे प्रभु ! तुम समस्त प्राणियों की प्रतिपालना करने वाले हो, प्रत्येक के श्वास-ग्रास का लेखा तुम्हारे पास है।

ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੂ ਵਸਹਿ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥੧॥
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥
गुरमुखों के हृदय मैं तुम वास करते हो, जैसे आपको अच्छा लगता है, वैसे तुम निर्णय लेते हो॥ १॥

ਜੀਅਰੇ ਰਾਮ ਜਪਤ ਮਨੁ ਮਾਨੁ ॥

जीअरे राम जपत मनु मानु ॥

हे जीव! अकाल पुरुष का चिंतन करते हुए मन में निश्चय धारण करो।

ਅੰਤਰਿ ਲਾਗੀ ਜਲਿ ਬੁਝੀ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥

जब गुरु द्वारा गुरमुख को ज्ञान प्राप्त हुआ तो अंतर्मन में लगी तृष्णा रूपी आग की जलन समाप्त हो गई॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਜਾਣੀਐ ਗੁਰ ਮਿਲੀਐ ਸੰਕ ਉਤਾਰਿ ॥
अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥
अंतर्मन का रहस्य तभी जाना जा सकता है, जब सभी शंकाओं को दूर करके गुरु से मिला जाए।

ਮੁਇਆ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ਤਿਤੁ ਜੀਵਦਿਆ ਮਰੁ ਮਾਰਿ ॥
मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥
मरणोपरांत जिस यम घर में जाना है, क्यों न जीवित रह कर नाम सिमरन द्वारा उस यम को ही मार लें।

ਅਨਹਦ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣੇ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥੨॥
अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥२॥
गुरु के उपदेश से ही परब्रह्म की अनाहत वाणी श्रवण करने को मिलती है॥ २॥

ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਪਾਈਐ ਤਹ ਹਉਮੈ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੁ ॥
अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥
जब यह अनाहत वाणी प्राप्त होती है तो अभिमान का विनाश हो जाता है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਣਾ ਹਉ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੈ ਤਾਸੁ ॥
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥
जो अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, उन पर सदैव कुर्बान जाएँ।

ਖੜਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਈਐ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥੩॥
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरि नाम निवासु ॥३॥
जिनके मुँह में हरिनाम का वास होता है, उसे परमात्मा की सभा में ले जाकर प्रतिष्ठा के परिधान से सुशोभित किया जाता है॥ ३॥

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਸਿਵ ਸਕਤੀ ਕਾ ਮੇਲੁ ॥
जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥
जहाँ कहीं भी मेरी दृष्टि पड़ती है, वहाँ पर शिव (चेतन) और शक्ति (प्रवृति) का संयोग है।

ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣ ਬੰਧੀ ਦੇਹੁਰੀ ਜੋ ਆਇਆ ਜਗਿ ਸੋ ਖੇਲੁ ॥
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥
त्रिगुणी (तम,रज,सत्त्व) आत्मिक माया से यह शरीर बंधा हुआ है, जो इस संसार में आया है, उसने इनके साथ ही खेलना है।

ਵਿਜੋਗੀ ਦੁਖਿ ਵਿਛੁੜੇ ਮਨਮੁਖਿ ਲਹਹਿ ਨ ਮੇਲੁ ॥੪॥
विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥४॥
जो गुरु से विमुख हैं, वह परमात्मा से बिछुड़ कर दुखी होते हैं तथा मनमुख (स्वेच्छाचारी) मिलाप की अवस्था को प्राप्त नहीं करते॥ ४॥

ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਘਰਿ ਵਸੈ ਸਚ ਭੈ ਰਾਤਾ ਹੋਇ ॥
मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥
यदि माया में लिप्त रहने वाला मन सत्य स्वरूप परमात्मा के भय में लीन हो जाए तो वह अपने वास्तविक गृह में निवास प्राप्त कर लेता है।

ਗਿਆਨ ਮਹਾਰਸੁ ਭੋਗਵੈ ਬਾਹੁੜਿ ਭੂਖ ਨ ਹੋਇ ॥
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥
वह ज्ञान द्वारा ब्रह्मानंद रूपी महारस को भोगता है तथा उसे फिर कोई तृष्णा नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲੁ ਭੀ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥੧੮॥
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥५॥१८॥
गुरु नानक जी कथन करते हैं कि इस चंचल मन को मोह-माया से दूर करके परमात्मा से मिलाप करो फिर तुझे कोई दुख-संताप नहीं सताएगा॥ ५॥ १८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਏਹੁ ਮਨੋ ਮੂਰਖੁ ਲੋਭੀਆ ਲੋਭੇ ਲਗਾ ਲੋਭਾਨੁ ॥
एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥
यह मन विमूढ़ व लोभी है, जो भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए लालायित है।

ਸਬਦਿ ਨ ਭੀਜੈ ਸਾਕਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਆਵਨੁ ਜਾਨੁ ॥
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥
शाक्त (शक्ति उपासक लोभी जीवों) का मन गुरु-शब्द (प्रभु-नाम) में लिवलीन नहीं होता, इसलिए दुर्मति वाले आवागमन के चक्र में पड़े रहते हैं।

ਸਾਧੂ ਸਤਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥
यदि श्रेष्ठ सतिगुरु की प्राप्ति हो जाए तो शुभ गुणों का कोष (परमात्मा) प्राप्त हो जाता है॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਹਉਮੈ ਛੋਡਿ ਗੁਮਾਨੁ ॥
मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥
हे मेरे चंचल मन ! तू अभिमान और गर्व का त्याग कर दे।

ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਸਰਵਰੁ ਸੇਵਿ ਤੂ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु को हरि (जो सुखों का सरोवर है) का रूप मानकर उसकी सेवा कर, तभी तुम परमात्मा के दरबार में सम्मान प्राप्त करोगे॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਨੁ ॥
राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥
गुरु के उपदेशानुसार दिन-रात राम-नाम का सुमिरन करो और इस हरि-नाम की पहचान करो।

ਸਭਿ ਸੁਖ ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗਣੇ ਸੰਤ ਸਭਾ ਮਿਲਿ ਗਿਆਨੁ ॥
सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥
हरि-नाम में ही सभी सुखों का भोग करने को मिलता है, लेकिन ऐसा ज्ञान संत-सभा (सत्संग) में ही प्राप्त होता है।

ਨਿਤਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਿਆ ਸਤਗੁਰਿ ਦੀਆ ਨਾਮੁ ॥੨॥
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥२॥
जिनको सत्संगति में सतिगुरु ने हरि का नाम प्रदान किया है, उन्होंने नित्य दिन-रात इस हरि प्रभु की उपासना की है॥ २॥

ਕੂਕਰ ਕੂੜੁ ਕਮਾਈਐ ਗੁਰ ਨਿੰਦਾ ਪਚੈ ਪਚਾਨੁ ॥
कूकर कूड़ु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥
जो कुत्ते (लोभी पुरुष) मिथ्या कमाई करते हैं, अर्थात् झूठ बोलते हैं, गुरु की निन्दा करना उनका आहार बन जाता है।

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਦੁਖੁ ਘਣੋ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੈ ਖੁਲਹਾਨੁ ॥
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥
इसके फलस्वरूप वह भ्रम में विस्मृत हो कर बहुत कष्ट सहन करते हैं और यमों के दण्ड से नष्ट हो जाते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਸੁਭਾਨੁ ॥੩॥
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥३॥
मनमुख जीव कभी आत्मिक सुख प्राप्त नहीं करते, केवल गुरु के उन्मुख प्राणी ही सर्वसुखों को प्राप्त करते हैं।॥ ३॥

ਐਥੈ ਧੰਧੁ ਪਿਟਾਈਐ ਸਚੁ ਲਿਖਤੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥
इहलोक में मनमुख जीव माया के धंधों में खपते रहते हैं, जो असत्य कर्म हैं, लेकिन परमात्मा के दर पर सत्य कर्मों का लेखा ही स्वीकृत है।

ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਗੁਰੁ ਸੇਵਦਾ ਗੁਰ ਕਰਣੀ ਪਰਧਾਨੁ ॥
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥
जो गुरु की सेवा करता है, वह हरि का मित्र है, उसकी करनी श्रेष्ठ है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਕਰਮਿ ਸਚੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੧੯॥
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि जिनके मस्तिष्क पर सत्य कर्मों का लेखा लिखा है, उनको प्रभु का नाम कभी विस्मृत नहीं होता ॥ ४॥ १९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਵੀਸਰੈ ਰੋਗੁ ਵਡਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥
अल्पतम समय के लिए भी यदि प्रियतम प्रभु विस्मृत हो जाए तो मन में बहुत बड़ा रोग अनुभव होता है, अर्थात् पश्चाताप होता है।

ਕਿਉ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਹਰਿ ਨ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥
जब मन में हरि का वास ही नहीं होगा तो उसके दरबार में प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त करेगा।

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਅਗਨਿ ਮਰੈ ਗੁਣ ਮਾਹਿ ॥੧॥
गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥१॥
गुरु से मिलाप करके आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है, प्रभु का यशोगान करके तृष्णाग्नि मिट जाती है ॥ ५ ॥

ਮਨ ਰੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥
मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ॥
हे मन ! दिन-रात हरि-गुणों का स्मरण कर।

ਜਿਨ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਤੇ ਜਨ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥ रहाउ ॥

जिनको क्षण-मात्र भी प्रभु का नाम विस्मृत नहीं होता। ऐसे लोग विरले ही इस संसार में होते हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈਐ ਸੁਰਤੀ ਸੁਰਤਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥

जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥

यदि जीवात्मा को परमात्मा की ज्योति मे विलीन कर दिया जाये और निज चेतना को दिव्य चेतना मे संलिप्त कर दिया जाए

ਹਿੰਸਾ ਹਉਮੈ ਗਤੁ ਗਏ ਨਾਹੀ ਸਹਸਾ ਸੋਗੁ ॥

हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥

तो मन से हिंसा, अभिमान, शोक, शंका और चंचलता आदि कृतियाँ समाप्त हो जाएँगी और साथ ही संशय व शोक भी मिट जाएँगे।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਿਸੁ ਮੇਲੇ ਗੁਰੁ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥

गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥

जिस गुरमुख के मन में हरि का वास है, उसे सतिगुरु संयोगवश अपने साथ मिला लेते हैं॥ २ ॥

ਕਾਇਆ ਕਾਮਣਿ ਜੇ ਕਰੀ ਭੋਗੇ ਭੋਗਣਹਾਰੁ ॥

काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥

यदि बुद्धि रूपी स्त्री को निष्काम कर्मों द्वारा शुद्ध करके गुरु उपदेश का श्रेष्ठतम भोग भोगने को तत्पर किया जाए।

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਨ ਕੀਜਈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥

तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥

सभी नश्वर पदार्थों की कामना का त्याग किया जाए

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਵਹਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਜ ਭਤਾਰੁ ॥੩॥

गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥३॥

तो वह गुरमुख सदैव गुरु उपदेश के कारण सुहागिन जीवन व्यतीत कर सकता है और अपने प्रभु-पति के साथ आनंद प्राप्त कर सकता है। ३ ॥

ਚਾਰੇ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰਿ ਮਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਲੁ ਪਾਇ ॥
चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु पाइ ॥
गुरमुख जीव हरि-नाम रुपी जल डाल कर चहु- अग्नि (हिंसा, मोह, क्रोध, लोभ) बुझा देता है

ਅੰਤਰਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭਰਿਆ ਅਘਾਇ ॥
अंतरि कमलु प्रगासिआ अम्रितु भरिआ अघाइ ॥
उसका हृदय कमल की भांति खिल उठता है, क्योंकि उनके हृदय में नाम-अमृत भरा हुआ है।

ਨਾਨਕ ਸਤਗੁਰੁ ਮੀਤੁ ਕਰਿ ਸਚੁ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹ ਜਾਇ ॥੪॥੨੦॥
नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥४॥२०॥
गुरु जी कथन करते हैं कि हे जीव ! तू सतगुरु को अपना मित्र बना, जिनकी कृपा से तुम परलोक मैं सुख प्राप्त करोगे ॥ ४ ॥ २०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਹੁ ਪਿਆਰਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਲੇ ਹਰਿ ਬੋਲਿ ॥
हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥
हे प्रिय जीव ! हरि–नाम का जाप करो तथा गुरु उपदेश द्वारा प्रभु का नाम-सुमिरन करो।

ਮਨੁ ਸਚ ਕਸਵਟੀ ਲਾਈਐ ਤੁਲੀਐ ਪੂਰੈ ਤੋਲਿ ॥
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥
मन को सत्य की कसौटी पर कस कर परमात्मा की यथार्थ तुला पर तोला जाता है।

ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਐ ਰਿਦ ਮਾਣਕ ਮੋਲਿ ਅਮੋਲਿ ॥੧॥
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥
उस मन की कीमत कही नहीं डाली जा सकती, क्योंकि वह माणिक्य की भाँति शुद्ध है और वह मूल्य से अमूल्य है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਹਰਿ ਹੀਰਾ ਗੁਰ ਮਾਹਿ ॥
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥
हे भाई ! हरि रूपी हीरा गुरु के हृदय में ही देखा जा सकता है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਤਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਅਹਿਨਿਸਿ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥
उस हीरे को सत्संगति में तथा दिन-रात प्रभु के यशोगान से प्राप्त किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਲੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਪਰਗਾਸਿ ॥
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥
हे जिज्ञासु ! श्रद्धा रूपी पूंजी लेकर गुरु के ज्ञान-प्रकाश में सत्य सौदा करो।

ਜਿਉ ਅਗਨਿ ਮਰੈ ਜਲਿ ਪਾਇਐ ਤਿਉ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਿ ॥
जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ त्रिसना दासनि दासि ॥
जैसे जल डालने से अग्नि बुझ जाती है, वैसे तृष्णाग्नि गुरु-भक्ति रूपी जल से दासों की दास बन जाती है।

ਜਮ ਜੰਦਾਰੁ ਨ ਲਗਈ ਇਉ ਭਉਜਲੁ ਤਰੈ ਤਰਾਸਿ ॥੨॥
जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥
इससे जीव यमों के दण्ड से बच जाता है और स्वयं भी भवसागर से पार हो जाता है तथा अन्य को भी पार होने में सहायता करता है॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੂੜੁ ਨ ਭਾਵਈ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸਚ ਭਾਇ ॥
गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥
गुरु के उन्मुख जीवों को असत्य अच्छा नहीं लगता, वे प्रायः सत्य परमात्मा में लिप्त रहते हैं और सत्य ही उनको भाता है।

ਸਾਕਤ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵਈ ਕੂੜੈ ਕੂੜੀ ਪਾਂਇ ॥
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥
शक्ति उपासक (शाक्त) गुरु से विमुख जीव को सत्य नहीं भाता, असत्य की नीव भी असत्य ही होती है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿਐ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥
पूर्ण गुरु से मिल कर जो सत्य नाम में रम रहे हैं, वे गुरमुख सत्य होकर सत्य स्वरूप परमात्मा में अभेद हो रहे हैं।॥ ३॥

ਮਨ ਮਹਿ ਮਾਣਕੁ ਲਾਲੁ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਹੀਰੁ ॥
मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥
मन में माणिक्य, लाल, हीरे, रत्न के तुल्य हरि-नाम पदार्थ विद्यमान है।

ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਘਟਿ ਘਟਿ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥
सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर ग्मभीरु ॥
वह गहन-गम्भीर प्रभु प्रत्येक हृदय में वास करता है, उसका नाम-धन ही सच्चा सौदा है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਦਇਆ ਕਰੇ ਹਰਿ ਹੀਰੁ ॥੪॥੨੧॥
नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥
नानक जी कहते हैं कि हीरे की भाँति अमूल्य हरि यदि कृपा करे तो गुरु द्वारा ही नाम रूपी सच्चा सौदा प्राप्त किया जा सकता है॥४॥२१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਭਰਮੇ ਭਾਹਿ ਨ ਵਿਝਵੈ ਜੇ ਭਵੈ ਦਿਸੰਤਰ ਦੇਸੁ ॥
भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥
देश-देशान्तर का भ्रमण करने से भी भ्रमाग्नि शांत नहीं होती, चाहे कोई कितना भी भ्रमण क्यों न कर ले।

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਵੇਸੁ ॥
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥
अंतर्मन से मैल दूर नहीं होती, ऐसे जीवन को धिक्कार है, ऐसे भेष को भी धिक्कार है।

ਹੋਰੁ ਕਿਤੈ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਉਪਦੇਸ ॥੧॥
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥
सतिगुरु के उपदेश बिना किसी भी प्रकार से प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती ॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰਿ ॥
मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥
हे प्रिय मन ! गुरु के मुँह से निकलने वाले उपदेश द्वारा नाम जल लेकर तृष्णाग्नि को बुझा ले।

ਗੁਰ ਕਾ ਕਹਿਆ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥१॥ रहाउ ॥
यदि गुरु-उपदेश मन में बस जाए तो अहंकार व तृष्णाग्नि जैसे सभी विकार नष्ट हो जाते हैं। १॥ रहाउ ॥

ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ ਨਿਰਮੋਲੁ ਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥
मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥
परमात्मा के नाम में लिवलीन होकर यह मन अमूल्य माणिक्य बन जाता है, और प्रतिष्ठित होता है।

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥
लेकिन परमात्मा का नाम सत्संगति करने से ही प्राप्त होता है, गुरु की शरण पड़ने से ही परमात्मा के चरणों में सुरति लगती है।

ਆਪੁ ਗਇਆ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਸਲਲੈ ਸਲਲ ਸਮਾਇ ॥੨॥
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥
अहंकार दूर होने से सुख प्राप्त होता है। तब जीवात्मा परमात्मा में उसी प्रकार विलीन हो जाती है, जैसे जल में जल मिल जाता है॥ २॥

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੁ ਅਉਗੁਣਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥
जिस ने हरि-हरि नाम का सुमिरन नहीं किया, वह अपने अवगुणों के फलस्वरूप आवागमन के चक्र में ही पड़ा रहता है।

ਜਿਸੁ ਸਤਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੇਟਿਓ ਸੁ ਭਉਜਲਿ ਪਚੈ ਪਚਾਇ ॥
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥
जिस ने सतिगुरु महापुरुषों के साथ भेंट नहीं की, वे भवसागर में स्वयं भी दुखों के साथ खपता है और अन्य जीवों को भी खपाता है।

ਇਹੁ ਮਾਣਕੁ ਜੀਉ ਨਿਰਮੋਲੁ ਹੈ ਇਉ ਕਉਡੀ ਬਦਲੈ ਜਾਇ ॥੩॥
इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥
यह अमूल्य रत्नों के समान मानव जन्म यूं ही कौड़ी के बदले व्यर्थ चला जाता है॥ ३॥

ਜਿੰਨਾ ਸਤਗੁਰੁ ਰਸਿ ਮਿਲੈ ਸੇ ਪੂਰੇ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਣ ॥
जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥
जिन को सतिगुरु जी प्रसन्न होकर मिले हैं, वे पुरुष पूर्ण ज्ञानी हैं।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਉਜਲੁ ਲੰਘੀਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥
गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥
गुरु से मिल कर ही भवसागर पार किया जा सकता है तथा परलोक में सम्मान प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੨੨॥
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥
नानक जी कथन करते हैं कि उनके मुख उज्ज्वल होते हैं जिन के मुख से नाम-ध्वनि उत्पन्न हो रही हो और जो गुरु के उपदेश का प्रतीक हैं॥४॥२२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਵਣਜੁ ਕਰਹੁ ਵਣਜਾਰਿਹੋ ਵਖਰੁ ਲੇਹੁ ਸਮਾਲਿ ॥
वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
हे जीव रूपी व्यापारियों! नाम रूपी व्यापार करो और सौदा सम्भाल कर रख लो।

ਤੈਸੀ ਵਸਤੁ ਵਿਸਾਹੀਐ ਜੈਸੀ ਨਿਬਹੈ ਨਾਲਿ ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
गुरु-उपदेशानुसार ऐसी वस्तु का क्रय करो जो सदा तुम्हारे साथ रहे।

ਅਗੈ ਸਾਹੁ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਲੈਸੀ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥
आगे परलोक में परमात्मा रूपी सौदागर बहुत सूझवान बैठा है, वह तुम्हारी वस्तु की सम्भाल कर लेगा। अर्थात्-तुम्हारे सौदे को वह जांच-परख कर ही ग्रहण करेगा ॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਰਾਮੁ ਕਹਹੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥
हे भाई ! एकाग्रचित होकर राम-नाम जपो।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਵਖਰੁ ਲੈ ਚਲਹੁ ਸਹੁ ਦੇਖੈ ਪਤੀਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥
इस संसार में जो श्वास रूपी पूंजी लेकर आए हो, इससे हरि यश का सौदा खरीद कर ले चलो, जिसे देख कर पति-परमात्मा प्रसंन होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨਾ ਰਾਸਿ ਨ ਸਚੁ ਹੈ ਕਿਉ ਤਿਨਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
जिनके पास सत्य नाम की पूँजी नहीं है, उनको आत्मिक सुख कैसे प्राप्त हो सकता है।

ਖੋਟੈ ਵਣਜਿ ਵਣੰਜਿਐ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਟਾ ਹੋਇ ॥
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
पाप रूपी अनिष्टकारी पदार्थ क्रय कर लेने से मन व तन भी दूषित हो जाता है।

ਫਾਹੀ ਫਾਥੇ ਮਿਰਗ ਜਿਉ ਦੂਖੁ ਘਣੋ ਨਿਤ ਰੋਇ ॥੨॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥
ऐसे जीव की दशा जाल में फँसे मृग के समान होती है, यह नित्य प्रति गहन दुखों को सहता हुआ रोता है॥ २॥

ਖੋਟੇ ਪੋਤੈ ਨਾ ਪਵਹਿ ਤਿਨ ਹਰਿ ਗੁਰ ਦਰਸੁ ਨ ਹੋਇ ॥
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥
जिस प्रकार खोटा सिक्का खजाने में नहीं पड़ता, वैसे ही मिथ्या जीव को परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता।

ਖੋਟੇ ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ ਹੈ ਖੋਟਿ ਨ ਸੀਝਸਿ ਕੋਇ ॥
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥
मिथ्या जीव की न कोई जाति है न उसकी कोई प्रतिष्ठा होती है, पाप कर्म करने वाले जीव को आत्मिक जीवन में कभी सफलता नहीं मिलती।

ਖੋਟੇ ਖੋਟੁ ਕਮਾਵਣਾ ਆਇ ਗਇਆ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥੩॥
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥
मिथ्या पुरुषों के कर्म भी मिथ्या ही होते हैं, इसलिए वे आवागमन में ही अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं।॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਸਮਝਾਈਐ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹ ॥
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥
गुरु नानक जी कथन करते हैं कि हमें गुरु उपदेश द्वारा प्रभु का यशोगान करने हेतु मन को समझाना चाहिए।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਰਤਿਆ ਭਾਰੁ ਨ ਭਰਮੁ ਤਿਨਾਹ ॥
राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥
जो प्रभु-प्रेम में रंगे होते हैं उनको न पापों का भार तथा न ही कोई भ्रम होता है।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਲਾਹਾ ਅਗਲਾ ਨਿਰਭਉ ਹਰਿ ਮਨ ਮਾਹ ॥੪॥੨੩॥
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥
ऐसे जीवों को हरि के नाम-सुमिरन का बहुत लाभ मिलता है तथा उनके मन में निर्भय परमात्मा का वास होता है ॥४॥२३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥

ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਅਰੁ ਫੁਲੜਾ ਨਾਠੀਅੜੇ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥
धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥
मानव जीवन में धन व यौवन तो फूल की भाँति चार दिनों के अतिथि हैं, जो चले जाएँगे।

ਪਬਣਿ ਕੇਰੇ ਪਤ ਜਿਉ ਢਲਿ ਢੁਲਿ ਜੁੰਮਣਹਾਰ ॥੧॥
पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुमणहार ॥१॥
यह पद्मनी के पतों के समान गिर कर गल-सड़ कर नष्ट हो जाने वाले हैं।॥ १॥

ਰੰਗੁ ਮਾਣਿ ਲੈ ਪਿਆਰਿਆ ਜਾ ਜੋਬਨੁ ਨਉ ਹੁਲਾ ॥
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥
अतः हे जीव ! जब तक यौवन में नवोल्लास है, तब तक नाम-सुगिरन का आनन्द प्राप्त कर ले।

ਦਿਨ ਥੋੜੜੇ ਥਕੇ ਭਇਆ ਪੁਰਾਣਾ ਚੋਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारे यौवनावस्था के दिन कम रह गए हैं, क्योंकि तुम्हारा शरीर रूपी चोला अब वृद्ध हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਜਣ ਮੇਰੇ ਰੰਗੁਲੇ ਜਾਇ ਸੁਤੇ ਜੀਰਾਣਿ ॥
सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥
मेरे प्रिय मित्र भी (वृद्धावस्था उपरांत) श्मशान में जाकर गहरी निद्रा में सो गए हैं अर्थात्-मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं।

ਹੰ ਭੀ ਵੰਞਾ ਡੁਮਣੀ ਰੋਵਾ ਝੀਣੀ ਬਾਣਿ ॥੨॥
हं भी वंजा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥
मैं भी दुविधा में यहाँ जाकर धीमे स्वर में रोऊं॥ २॥

ਕੀ ਨ ਸੁਣੇਹੀ ਗੋਰੀਏ ਆਪਣ ਕੰਨੀ ਸੋਇ ॥
की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥
हे सुन्दर जीव रूपी नारी! तुम अपने कानों से ध्यानपूर्वक यह बात क्यों नहीं सुन रही कि तुझे भी परलोक रूपी ससुराल में आना है।

ਲਗੀ ਆਵਹਿ ਸਾਹੁਰੈ ਨਿਤ ਨ ਪੇਈਆ ਹੋਇ ॥੩॥
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥
मायके रूपी इस लोक में तुम्हारा सदा के दिए वास नहीं हो सकता॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਸੁਤੀ ਪੇਈਐ ਜਾਣੁ ਵਿਰਤੀ ਸੰਨਿ ॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥
नानक जी कहते हैं कि जो जीवात्मा निश्चित होकर इस लोक में आज्ञान निद्रा में लीन है, उसे दिन के प्रकाश में ही सेंध लग रही है।

ਗੁਣਾ ਗਵਾਈ ਗੰਠੜੀ ਅਵਗਣ ਚਲੀ ਬੰਨਿ ॥੪॥੨੪॥
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥
यह जीव रूप स्त्री सद्गुणों की गठरी गंवा कर अवगुणों को एकत्रित करके चल पड़ी है॥ ४॥ २४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ਦੂਜਾ ੨ ॥
सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥
सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥

ਆਪੇ ਰਸੀਆ ਆਪਿ ਰਸੁ ਆਪੇ ਰਾਵਣਹਾਰੁ ॥
आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥
वह परिपूर्ण परमात्मा स्वयं ही रसिया है, स्वयं ही रस रूप है तथा स्वयं ही रमण करने वाला है।

ਆਪੇ ਹੋਵੈ ਚੋਲੜਾ ਆਪੇ ਸੇਜ ਭਤਾਰੁ ॥੧॥
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥
स्वयं स्त्री रूप हो रहा है, स्वयं ही सेज और स्वयं ही पति रूप में व्याप्त है ॥१॥

ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
समस्त रूपों में मेरा स्वामी परिपूर्ण होकर रमण कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਮਾਛੀ ਮਛੁਲੀ ਆਪੇ ਪਾਣੀ ਜਾਲੁ ॥
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥
वह स्वयं ही मछुआ है, स्वयं मछली रूप में है, स्वयं जल है और स्वयं ही जाल रूप हो रहा है।

ਆਪੇ ਜਾਲ ਮਣਕੜਾ ਆਪੇ ਅੰਦਰਿ ਲਾਲੁ ॥੨॥
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥
स्वयं ही जाल के आगे बंधा हुआ लोहे का मनका है तथा स्वयं ही उस जाल में लगा हुआ माँस का टुकड़ा (लालु) है; अर्थात्- सर्वस्व स्वयं वह परमेश्वर ही है॥ २॥

ਆਪੇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਰੰਗੁਲਾ ਸਖੀਏ ਮੇਰਾ ਲਾਲੁ ॥
आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥
सतिगुरु जी कथन करते हैं कि हे सखी ! मेरा प्रियतम प्रभु स्वयं ही अनेक तरह के आनन्द वाला हो रहा है।

ਨਿਤ ਰਵੈ ਸੋਹਾਗਣੀ ਦੇਖੁ ਹਮਾਰਾ ਹਾਲੁ ॥੩॥
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥
वह नित्य ही सुहागिनों (प्रभु-प्रेमियों) को प्रीत करता है, हम द्वैत-भावी जीवों का हाल बहुत बुरा है॥ ३॥

ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਨਕੁ ਬੇਨਤੀ ਤੂ ਸਰਵਰੁ ਤੂ ਹੰਸੁ ॥
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥
गुरु नानक जी कथन करते हैं कि हे जीव ! तुम यही विनती करो कि हे परम पिता ! तुम ही स्वयं सरोवर हो, उस पर रहने वाले हंस भी तुम ही हो।

ਕਉਲੁ ਤੂ ਹੈ ਕਵੀਆ ਤੂ ਹੈ ਆਪੇ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸੁ ॥੪॥੨੫॥
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥
तुम स्वयं ही कमल हो, कुमुदिनी भी तुम हो, इन सब को देख कर तुम स्वयं ही प्रसन्न होने वाले हो! ।। ४॥ २५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

ਇਹੁ ਤਨੁ ਧਰਤੀ ਬੀਜੁ ਕਰਮਾ ਕਰੋ ਸਲਿਲ ਆਪਾਉ ਸਾਰਿੰਗਪਾਣੀ ॥
इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥
इस तन रूपी भूमि में सद्कर्मों का बीजारोपण करके प्रभु-चिंतन रूपी जल से इसकी सिंचाई करो।

ਮਨੁ ਕਿਰਸਾਣੁ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਜੰਮਾਇ ਲੈ ਇਉ ਪਾਵਸਿ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੧॥
मनु किरसाणु हरि रिदै जमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥१॥
मन को कृषक बना कर हृदय में हरि-प्रभु को उगाओ, अर्थात् हृदय में प्रभु को धारण करो तथा इस तरह निर्वाण-पद रूपी फसल प्राप्त कर लोगे ॥ १॥

ਕਾਹੇ ਗਰਬਸਿ ਮੂੜੇ ਮਾਇਆ ॥
काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥
हे विमूढ़ जीव ! माया का अभिमान क्यों करता है।

ਪਿਤ ਸੁਤੋ ਸਗਲ ਕਾਲਤ੍ਰ ਮਾਤਾ ਤੇਰੇ ਹੋਹਿ ਨ ਅੰਤਿ ਸਖਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥
माता, पिता, पुत्र व स्त्री आदि समस्त सगे-सम्बन्धी अंत समय में तेरे सहायक नहीं होंगे ॥ रहाउ ॥

ਬਿਖੈ ਬਿਕਾਰ ਦੁਸਟ ਕਿਰਖਾ ਕਰੇ ਇਨ ਤਜਿ ਆਤਮੈ ਹੋਇ ਧਿਆਈ ॥
बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥
जिस प्रकार नदीन (खरपतवार) खेती में उग जाते हैं और कृषक उन्हें उखाड़ फेंकता है, इसी प्रकार हे मानव ! विषय-विकार रूपी नदीनों को हृदय में पनप रही खेती में से उखाड़ कर फेंक दो और इन विकारों को त्याग कर मन की एकाग्रता से प्रभु को स्मरण करो।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਹੋਹਿ ਜਬ ਰਾਖੇ ਕਮਲੁ ਬਿਗਸੈ ਮਧੁ ਆਸ੍ਰਮਾਈ ॥੨॥
जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥२॥
जप, तप, संयम जब शरीर रूपी भूमि के रक्षक हो जाते हैं तो हृदय में कमल खिलता है और उस में से ब्रह्मानंद रूपी शहद टपक पड़ता है॥ २ ॥

ਬੀਸ ਸਪਤਾਹਰੋ ਬਾਸਰੋ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਤੀਨਿ ਖੋੜਾ ਨਿਤ ਕਾਲੁ ਸਾਰੈ ॥
बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥
जब मनुष्य पाँच स्थूल तत्त्व, पाँच सूक्ष्म तत्त्व, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण तथा मन व बुद्धि के निवास स्थान वश में करे, तीनों अवस्थाओं-बाल्यावस्था, युवावस्था व जरावस्था में काल को स्मरण रखें।

ਦਸ ਅਠਾਰਮੈ ਅਪਰੰਪਰੋ ਚੀਨੈ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਇਵ ਏਕੁ ਤਾਰੈ ॥੩॥੨੬॥
दस अठार मै अपर्मपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥३॥२६॥
दस दिशाओं तथा समस्त वनस्पतियों में अपरम्पार परमेश्वर को जाने तो हे नानक ! ऐसा एकमेय अद्वितीय प्रभु उसको भवसागर से पार उतार लेगा ॥ ३॥ २६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

ਅਮਲੁ ਕਰਿ ਧਰਤੀ ਬੀਜੁ ਸਬਦੋ ਕਰਿ ਸਚ ਕੀ ਆਬ ਨਿਤ ਦੇਹਿ ਪਾਣੀ ॥
अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
गुरु जी कथन करते हैं कि हे जीव ! शुभ कर्मों को भूमि बना कर उसमें गुरु-उपदेश रूपी बीज का रोपण करो और सत्य-नाम रूपी जल से इसकी सिंचाई करो।

ਹੋਇ ਕਿਰਸਾਣੁ ਈਮਾਨੁ ਜੰਮਾਇ ਲੈ ਭਿਸਤੁ ਦੋਜਕੁ ਮੂੜੇ ਏਵ ਜਾਣੀ ॥੧॥
होइ किरसाणु ईमानु जमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥
इस प्रकार तुम कृषक बन कर धार्मिक-निष्ठा को उत्पन्न करो, इससे तुझे स्वर्ग-नरक का ज्ञान प्राप्त होगा ॥ १ ॥

ਮਤੁ ਜਾਣ ਸਹਿ ਗਲੀ ਪਾਇਆ ॥
मतु जाण सहि गली पाइआ ॥
यह मत समझ लेना कि ज्ञान केवल बातों से ही प्राप्त हो जाता है।

ਮਾਲ ਕੈ ਮਾਣੈ ਰੂਪ ਕੀ ਸੋਭਾ ਇਤੁ ਬਿਧੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
धन-सम्पति के अभिमान तथा रूप की शोभा में तुम ने अपना जन्म निष्फल ही गंवा लिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਐਬ ਤਨਿ ਚਿਕੜੋ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੀਡਕੋ ਕਮਲ ਕੀ ਸਾਰ ਨਹੀ ਮੂਲਿ ਪਾਈ ॥
ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥
मानव शरीर में अवगुण कीचड़ की भाँति हैं तथा मन मेंढक समान, ऐसे में निकट ही विकसित हुए कमल की उसे कोई सूझ नहीं है। अर्थात्-अवगुणों के कीचड़ में फँसे मानव मन रूपी मेंढक ने परमात्मा रूपी कमल की पहचान कदाचित नहीं की है।

ਭਉਰੁ ਉਸਤਾਦੁ ਨਿਤ ਭਾਖਿਆ ਬੋਲੇ ਕਿਉ ਬੂਝੈ ਜਾ ਨਹ ਬੁਝਾਈ ॥੨॥
भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥
गुरु रूपी भंवरा नित्य प्रति आकर अपनी भाषा बोलता है, अर्थात-उपदेश देता है, लेकिन मेंढक रूपी मानव मन इसे कैसे समझ सकता है, जब तक प्रभु स्वयं इस मन को समझा न दे॥ २॥

ਆਖਣੁ ਸੁਨਣਾ ਪਉਣ ਕੀ ਬਾਣੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਤਾ ਮਾਇਆ ॥

आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥

जिनका मन माया में रंजित है, उनको उपदेश देना अथवा उनके द्वारा उपदेश अवण करना (पवन की वाणी) व्यर्थ की बात है।

ਖਸਮ ਕੀ ਨਦਰਿ ਦਿਲਹਿ ਪਸਿੰਦੇ ਜਿਨੀ ਕਰਿ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥੩॥

खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥

स्वामी की कृपा-दृष्टि में तथा हृदय में प्रिय वही जीव हैं, जिन्होंने एक परमेश्वर को स्मरण किया है॥ ३॥

ਤੀਹ ਕਰਿ ਰਖੇ ਪੰਜ ਕਰਿ ਸਾਥੀ ਨਾਉ ਸੈਤਾਨੁ ਮਤੁ ਕਟਿ ਜਾਈ ॥

तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥

हे काजी ! सुनो, तुम तीस रोज़े रखते हो, तथा पाँच समय की नमाज़ तुम्हारी साथी है, किन्तु देखना, कहीं ऐसा न हो (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार में से कोई) शैतान इन को नष्ट न कर दे।

ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਰਾਹਿ ਪੈ ਚਲਣਾ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਕਿਤ ਕੂ ਸੰਜਿਆਹੀ ੪॥੨੭॥

नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥

गुरु जी कहते हैं कि हे काज़ी ! एक दिन तुम ने भी मृत्यु-मार्ग पर चलना है, फिर यह धन-सम्पति तुम किस के लिए संग्रहित कर रहे हो ॥ ४॥ २७ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

ਸੋਈ ਮਉਲਾ ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਮਉਲਿਆ ਹਰਿਆ ਕੀਆ ਸੰਸਾਰੋ ॥

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥

वही परमात्मा है, जिसने इस जगत् को प्रफुल्लित किया है तथा संसार को हरा-भरा किया है।

ਆਬ ਖਾਕੁ ਜਿਨਿ ਬੰਧਿ ਰਹਾਈ ਧੰਨੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥੧॥

आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥

जिस परमात्मा ने पानी व पृथ्वी आदि पाँच तत्वों से सम्पूर्ण सृष्टि को बांध रखा है, वह सृजनहार परमात्मा धन्य है॥ १॥

ਮਰਣਾ ਮੁਲਾ ਮਰਣਾ ॥

मरणा मुला मरणा ॥

हे मुल्लां ! मृत्यु अपरिहार्य है।

ਭੀ ਕਰਤਾਰਹੁ ਡਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा से डरना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਤਾ ਤੂ ਮੁਲਾ ਤਾ ਤੂ ਕਾਜੀ ਜਾਣਹਿ ਨਾਮੁ ਖੁਦਾਈ ॥
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥
तभी तुम श्रेष्ठ मुल्लां हो सकते हो, तभी तुम श्रेष्ठ काजी हो सकते हो, यदि तुम परमात्मा के नाम के बारे में जानते हो।

ਜੇ ਬਹੁਤੇਰਾ ਪੜਿਆ ਹੋਵਹਿ ਕੋ ਰਹੈ ਨ ਭਰੀਐ ਪਾਈ ॥੨॥
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥
यदि तुम बहुत विद्वान हो तो भी तुम मृत्यु से बच कर नहीं रह सकते अर्थात् पनधड़ी की भाँति भर जाने पर डूब जाओगे॥ २॥

ਸੋਈ ਕਾਜੀ ਜਿਨਿ ਆਪੁ ਤਜਿਆ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਕੀਆ ਆਧਾਰੋ ॥
सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥
असली काज़ी तो वही है, जिस ने अहंत्व का त्याग किया है और एक प्रभु के नाम का आश्रय लिया है।

ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥੩॥
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥
सत्य सृष्टि का सृजनहार आज भी है, भविष्य में भी होगा, उसकी यह रचना तो नष्ट हो जाएगी, किन्तु वह नष्ट नहीं होगा ॥ २॥

ਪੰਜ ਵਖਤ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਹਿ ਪੜਹਿ ਕਤੇਬ ਕੁਰਾਣਾ ॥
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥
बेशक तुम पांचों समय की नमाज़ पढ़ते हो, चाहे कुरान शरीफ आदि धार्मिक ग्रंथ भी पढ़ते हो।

ਨਾਨਕੁ ਆਖੈ ਗੋਰ ਸਦੇਈ ਰਹਿਓ ਪੀਣਾ ਖਾਣਾ ॥੪॥੨੮॥
नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥
नानक देव जी कहते हैं कि हे काज़ी ! जब तुम्हें मृत्यु कब्र की ओर बुलाएगी तो तुम्हारा खाना-पीना ही समाप्त हो जाएगा।॥४॥२८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

ਏਕੁ ਸੁਆਨੁ ਦੁਇ ਸੁਆਨੀ ਨਾਲਿ ॥
एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥
गुरु जी कहते हैं कि जीव के साथ लोभ रुपी कुत्ता है तथा आशा व तृष्णा रूपी दो कुतियाँ हैं।

ਭਲਕੇ ਭਉਕਹਿ ਸਦਾ ਬਇਆਲਿ ॥
भलके भउकहि सदा बइआलि ॥
सदैव प्रातः होते ही ये आहार हेतु भौंकने लग जाते हैं।

ਕੂੜੁ ਛੁਰਾ ਮੁਠਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥
कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥
जीव के पास झूठ रूपी छुरा है, जिससे वह सांसारिक प्राणियों को ठग कर खाता है। अर्थात् जीव झूठ के आसरे अभक्ष्य पदार्थ सेवन करता है।

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥
हे प्रभु ! सांसारिक जीव हत्यारे के रूप में रह रहा है॥ १॥

ਮੈ ਪਤਿ ਕੀ ਪੰਦਿ ਨ ਕਰਣੀ ਕੀ ਕਾਰ ॥
मै पति की पंदि न करणी की कार ॥
जीव के लिए गुरु जी स्वयं को पुरुष मान कर कहते हैं कि मैंने उस प्रभु-पति की प्रतिष्ठित शिक्षा ग्रहण नहीं की तथा न ही कोई श्रेष्ठ कार्य किया है।

ਹਉ ਬਿਗੜੈ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਬਿਕਰਾਲ ॥
हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥
मैं ऐसे विकृत विकराल रूप में रह रहा हूँ।

ਤੇਰਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਤਾਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥
तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥
हे प्रभु ! आपका एक नाम ही भवसागर पार करने वाला है!.

ਮੈ ਏਹਾ ਆਸ ਏਹੋ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे इसी नाम की आशा है और इसी नाम का आश्रय है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਾ ਆਖਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥
मैं अपने मुंह से दिन-रात निन्दा करता रहता हूँ।

ਪਰ ਘਰੁ ਜੋਹੀ ਨੀਚ ਸਨਾਤਿ ॥
पर घरु जोही नीच सनाति ॥
मैं निम्न वर्ग वाला चोरी करने हेतु पराए घरों की ओर देखता रहता हूँ।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਤਨਿ ਵਸਹਿ ਚੰਡਾਲ ॥
कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥
इस देह में काम-क्रोधादि चाण्डाल बसते हैं।

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੨॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥
हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ २॥

ਫਾਹੀ ਸੁਰਤਿ ਮਲੂਕੀ ਵੇਸੁ ॥
फाही सुरति मलूकी वेसु ॥
मेरा ध्यान लोगों को फँसाने में लगा रहता है, यद्यपि मेरा बाह्य भेष फकीरों वाला है।

ਹਉ ਠਗਵਾੜਾ ਠਗੀ ਦੇਸੁ ॥
हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥
मैं बड़ा ठग हूँ तथा दुनिया को ठग रहा हूँ।

ਖਰਾ ਸਿਆਣਾ ਬਹੁਤਾ ਭਾਰੁ ॥
खरा सिआणा बहुता भारु ॥
मैं स्वयं को बहुत चतुर समझता हूँ, लेकिन मेरे ऊपर पापों का बहुत भार पड़ा हुआ है।

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੩॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥
हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ ३॥

ਮੈ ਕੀਤਾ ਨ ਜਾਤਾ ਹਰਾਮਖੋਰੁ ॥
मै कीता न जाता हरामखोरु ॥
मैंने प्रभु के किए उपकारों को भी नहीं जाना, अतः मैं कृतघ्न हूँ।

ਹਉ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਾ ਦੁਸਟੁ ਚੋਰੁ ॥
हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥
अर्थात् मैं अपने कुकृत्यों से इतना शर्मिन्दा हूँ कि प्रभु के द्वार पर क्या मुँह लेकर जाऊँ।

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥
गुरु नानक देव जी स्वयं को जीव रूप में संबोधित करते हुए कहते हैं कि मैं इतना नीच हो गया हूँ।

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੪॥੨੯॥
धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥
मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ। अर्थात्-इस स्वरूप में मेरी मुक्ति कैसे होगी ? ॥ ४॥ २९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

ਏਕਾ ਸੁਰਤਿ ਜੇਤੇ ਹੈ ਜੀਅ ॥
एका सुरति जेते है जीअ ॥
इस दुनिया में जितने भी जीव हैं, उन सब में एक-सी सूझ है।

ਸੁਰਤਿ ਵਿਹੂਣਾ ਕੋਇ ਨ ਕੀਅ ॥
सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥
इस सूझ से वंचित कोई भी नहीं है

ਜੇਹੀ ਸੁਰਤਿ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਰਾਹੁ ॥
जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥
अर्थात्-प्रत्येक जीव अपनी सूझ-बूझ के अनुसार इस संसार में कर्म-मार्ग अपना चुका है।

ਲੇਖਾ ਇਕੋ ਆਵਹੁ ਜਾਹੁ ॥੧॥
लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥
सभी जीवों के कर्मों के निर्णय का नियम एक ही है, जिसके अनुसार वे आवागमन के चक्र में रहते हैं।॥ १॥

ਕਾਹੇ ਜੀਅ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥
काहे जीअ करहि चतुराई ॥
हे जीव ! तुम चतुराई क्यों करते हो ?

ਲੇਵੈ ਦੇਵੈ ਢਿਲ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥ रहाउ ॥
वह दाता प्रभु लेने और देने में कभी भी विलम्ब नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਜੀਆ ਕਾ ਤੋਹਿ ॥
तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥
हे परमेश्वर ! यह समस्त जीव तुम्हारे बनाए हुए हैं तथा इन सब जीवों के तुम स्वामी हो।

ਕਿਤ ਕਉ ਸਾਹਿਬ ਆਵਹਿ ਰੋਹਿ ॥
कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥
हे प्रभु ! फिर तुम (इन जीवों की भूलों पर) क्रोध क्यों करते हो?

ਜੇ ਤੂ ਸਾਹਿਬ ਆਵਹਿ ਰੋਹਿ ॥
जे तू साहिब आवहि रोहि ॥
यदि तुम इन पर क्रोध करते भी हो।

ਤੂ ਓਨਾ ਕਾ ਤੇਰੇ ਓਹਿ ॥੨॥
तू ओना का तेरे ओहि ॥२॥
तो भी तुम इन जीवों के हो और ये जीव तुम्हारे हैं ॥ २॥

ਅਸੀ ਬੋਲਵਿਗਾੜ ਵਿਗਾੜਹ ਬੋਲ ॥
असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल ॥
हम अपशब्द बोलने वाले हैं तथा निरर्थक बातें करते हैं।

ਤੂ ਨਦਰੀ ਅੰਦਰਿ ਤੋਲਹਿ ਤੋਲ ॥
तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥
हमारी निरर्थक बातों को तुम अपनी कृपा-दृष्टि में तोलते हो।

ਜਹ ਕਰਣੀ ਤਹ ਪੂਰੀ ਮਤਿ ॥
जह करणी तह पूरी मति ॥
जहाँ सत्कर्म हैं, वहाँ बुद्धि भी परिपक्व होती है।

ਕਰਣੀ ਬਾਝਹੁ ਘਟੇ ਘਟਿ ॥੩॥
करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥
सत्कर्मों के बिना जीवन में हानि ही हानि है॥ ३॥

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਗਿਆਨੀ ਕੈਸਾ ਹੋਇ ॥
प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥
नानक देव जी विनयपूर्वक कथन करते हैं कि सूझवान जीव कैसा होना चाहिए?

ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਬੂਝੈ ਸੋਇ ॥
आपु पछाणै बूझै सोइ ॥
प्रत्युत्तर में कहते हैं, स्वयं को जो पहचानता है और उस परमात्मा को समझता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥
गुर परसादि करे बीचारु ॥
उस गुरु रूप परमात्मा की कृपा से उसके गुणों का चिन्तन (विचार) करता है।

ਸੋ ਗਿਆਨੀ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਣੁ ॥੪॥੩੦॥
सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥
ऐसा सूझवान, परम ज्ञानी ही परमात्मा के दरबार में अथवा परलोक में स्वीकृत होता है॥ ४॥ ३०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

ਤੂ ਦਰੀਆਉ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਮੈ ਮਛੁਲੀ ਕੈਸੇ ਅੰਤੁ ਲਹਾ ॥
तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
हे प्रभु ! तुम दरिया के समान विशाल हो, सर्वज्ञाता हो, सर्वदृष्टा हो और मैं एक छोटी मछली के समान हूँ तो मैं तुम्हारी सीमा को कैसे जान सकता हूँ. (क्योंकि तुम तो असीम प्रभु हो)।

ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਤਹ ਤੂ ਹੈ ਤੁਝ ਤੇ ਨਿਕਸੀ ਛੂਟਿ ਮਰਾ ॥੧॥

जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥

जिस ओर भी मेरी दृष्टि जाती है, वहाँ सब ओर तुम परिपूर्ण व्यापक हो, अतः तुम से बिछुड़ कर मैं तड़प कर मर जाऊँगी, अर्थात्-तुम्हारे नाम-सुमिरन से विस्मृत होने पर मैं दुखी होकर मर जाऊँगी ॥ १॥

ਨ ਜਾਣਾ ਮੇਉ ਨ ਜਾਣਾ ਜਾਲੀ ॥

न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥

न ही मैं यम रूपी मछुए को जानती हूँ तथा न उसके जाल को जानती हूँ।

ਜਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਤਾ ਤੁਝੈ ਸਮਾਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥

जीवन में जब भी कोई कष्ट आता है तो मैं तुझे ही स्मरण करती हूँ॥ ॥१॥ रहाउ ॥

ਤੂ ਭਰਪੂਰਿ ਜਾਨਿਆ ਮੈ ਦੂਰਿ ॥

तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥

हे परमात्मा ! तुम सर्वव्यापक हो, किन्तु मैंने तुझे अपनी तुच्छ बुद्धि के कारण कहीं दूर ही समझा है।

ਜੋ ਕਛੁ ਕਰੀ ਸੁ ਤੇਰੈ ਹਦੂਰਿ ॥

जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥

जो कुछ भी मैं करती हूँ, वह सब कुछ तेरी दृष्टि में ही है। अर्थात्- क्योंकि तुम सर्वव्यापक हो, इसलिए जीव जो भी कर्म करता है वह तुम्हारी उपस्थिति में ही होता है।

ਤੂ ਦੇਖਹਿ ਹਉ ਮੁਕਰਿ ਪਾਉ ॥

तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥

मेरे किए कर्मों को जबकि तुम देख रहे हो, लेकिन मैं फिर भी इन्कार करती हूँ।

ਤੇਰੈ ਕੰਮਿ ਨ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ॥੨॥

तेरै कमि न तेरै नाइ ॥२॥

न तो मैं तुम्हारे द्वारा स्वीकृत होने वाले कार्य ही करती हूँ तथा न ही मैं तुम्हारा नाम-सुमिरन करती हूँ॥ २॥

ਜੇਤਾ ਦੇਹਿ ਤੇਤਾ ਹਉ ਖਾਉ ॥

जेता देहि तेता हउ खाउ ॥

हे परमात्मा ! जितना तुम देते हो, मैं उतना ही खाती हूँ।

ਬਿਆ ਦਰੁ ਨਾਹੀ ਕੈ ਦਰਿ ਜਾਉ ॥
बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥
तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई द्वार नहीं, तो फिर मैं किस द्वार पर जाऊँ।

ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
नानकु एक कहै अरदासि ॥
मैं नानक तुम्हारे समक्ष यही एक प्रार्थना करता हूँ कि

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੈ ਪਾਸਿ ॥੩॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥
मेरे प्राण एवं तन-मन आदि सब कुछ तुम्हारे अधीन ही रहें।॥ ३॥

ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਦੂਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪੇ ਮੰਝਿ ਮਿਆਨੋ ॥
आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो ॥
तुम स्वयं निकट हो, दूर भी तुम ही हो तथा मध्य स्थान में भी आप हो।

ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਸੁਣੇ ਆਪੇ ਹੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਜਹਾਨੋ ॥
आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानो ॥
तुम स्वयं (हमारे कर्मों को) देखते हो, तुम ही (अच्छे-बुरे वचन) सुनते हो तथा तुम स्वयं ही अपनी शक्ति द्वारा इस सृष्टि की रचना करते हो।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਹੁਕਮੁ ਸੋਈ ਪਰਵਾਨੋ ॥੪॥੩੧॥
जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥४॥३१॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो आप को आदेश करना अच्छा लगता है, वही हम सब को मान्य है ॥४॥३१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

ਕੀਤਾ ਕਹਾ ਕਰੇ ਮਨਿ ਮਾਨੁ ॥
कीता कहा करे मनि मानु ॥
परमात्मा द्वारा रचित जीव अपने मन में किस प्रकार अभिमान कर सकता है ?

ਦੇਵਣਹਾਰੇ ਕੈ ਹਥਿ ਦਾਨੁ ॥
देवणहारे कै हथि दानु ॥
जबकि सभी पदार्थ तो उस दाता के हाथ में हैं।

ਭਾਵੈ ਦੇਇ ਨ ਦੇਈ ਸੋਇ ॥
भावै देइ न देई सोइ ॥
जीव को देना अथवा न देना उस प्रभु की ही इच्छा है।

ਕੀਤੇ ਕੈ ਕਹਿਐ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥੧॥
कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥
जीव के कहने से क्या होता है॥ १॥

ਆਪੇ ਸਚੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਸਚੁ ॥
आपे सचु भावै तिसु सचु ॥
वह स्वयं तो सत्य स्वरूप है ही, उसे सत्य ही स्वीकृत भी है।

ਅੰਧਾ ਕਚਾ ਕਚੁ ਨਿਕਚੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥
अज्ञानी जीव पूर्णतया कच्चा है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੇ ਰੁਖ ਬਿਰਖ ਆਰਾਉ ॥
जा के रुख बिरख आराउ ॥
जिस कर्ता-पुरुष के ये मानव रूपी पेड़-पौधे हैं वही इन्हें संवारता है।

ਜੇਹੀ ਧਾਤੁ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਨਾਉ ॥
जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥
जैसी उनकी नस्ल बन जाती है, वैसा ही इनका नाम पड़ जाता है। अर्थात्-जीव के कर्मानुसार ही संसार में उसका नाम प्रसिद्ध होता है।

ਫੁਲੁ ਭਾਉ ਫਲੁ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥
फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥
इनकी भावना के अनुसार ही फूल लगता है तथा लिखे हुए कर्मानुसार फल प्राप्त करता है।

ਆਪਿ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਇ ॥੨॥
आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥
जीव स्वयं ही बोता है और स्वयं ही खाता है। अर्थात्-जीव जैसे कर्म करता है, वैसे ही फल को भोगता है॥ २॥

ਕਚੀ ਕੰਧ ਕਚਾ ਵਿਚਿ ਰਾਜੁ ॥
कची कंध कचा विचि राजु ॥
जीव की तन रूपी दीवार दुर्बल है और इसके अन्दर बैठा मन रूपी राजमिस्त्री भी अनाड़ी है।

ਮਤਿ ਅਲੂਣੀ ਫਿਕਾ ਸਾਦੁ ॥
मति अलूणी फिका सादु ॥
इसकी बुद्धि भी नाम रूपी नमक से रहित है, इसलिए इसे आत्मिक पदार्थों का स्वाद भी रसहीन ही लगेगा।

ਨਾਨਕ ਆਣੇ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥
नानक आणे आवै रासि ॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि परमेश्वर जब मानव-जीवन को संवारता है तभी उसका जीवन सफल होता है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਹੀ ਸਾਬਾਸਿ ॥੩॥੩੨॥
विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥
प्रभु के नाम-सुमिरन के बिना उसको दरबार में सम्मान प्राप्त नहीं होता ॥३॥३२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੫ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥

ਅਛਲ ਛਲਾਈ ਨਹ ਛਲੈ ਨਹ ਘਾਉ ਕਟਾਰਾ ਕਰਿ ਸਕੈ ॥
अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥
अछल माया भी मानव को छलने में स्वयं सफल नहीं हो सकती, तथा न ही कटार उसको कोई घाव लगा सकती है।

ਜਿਉ ਸਾਹਿਬੁ ਰਾਖੈ ਤਿਉ ਰਹੈ ਇਸੁ ਲੋਭੀ ਕਾ ਜੀਉ ਟਲ ਪਲੈ ॥੧॥
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥
क्योंकि प्रभु सदैव उसका रक्षक है, किन्तु मानव लोभी होने के कारण माया के पीछे भटकता रहता है। १॥

ਬਿਨੁ ਤੇਲ ਦੀਵਾ ਕਿਉ ਜਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥
नाम सुमिरन रूपी तेल के बिना भला यह आत्मिक प्रकाश करने वाला ज्ञान रूपी दीपक कैसे जल सकता है? ॥ १॥ रहाउ॥

ਪੋਥੀ ਪੁਰਾਣ ਕਮਾਈਐ ॥
पोथी पुराण कमाईऐ ॥
गुरु जी प्रत्युत्तर में कथन करते हैं कि ज्ञान रूपी दीपक जलाने के लिए धर्म-ग्रंथों के सिद्धांतों पर चलकर जीवन को संवारना तेल है।

ਭਉ ਵਟੀ ਇਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਐ ॥ *ਭਉ ਵਟੀ ਇਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਐ ॥*
इस शरीर रूपी दीपक में भय की बाती डाली जाए।

ਸਚੁ ਬੂਝਣੁ ਆਣਿ ਜਲਾਈਐ ॥੨॥
सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥
सत्य ज्ञान रूपी अग्नि की लौ द्वारा यह दीपक जलाया जाए ॥२॥

ਇਹੁ ਤੇਲੁ ਦੀਵਾ ਇਉ ਜਲੈ ॥
इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥
इस प्रकार की सामग्री से ही यह ज्ञान रूपी दीपक जल सकता है।

ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਸਾਹਿਬ ਤਉ ਮਿਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥
जब ज्ञान रूपी दीपक प्रकाश करता है तो निरंकार से मिलाप हो जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਇਤੁ ਤਨਿ ਲਾਗੈ ਬਾਣੀਆ ॥
इतु तनि लागै बाणीआ ॥
मानव शरीर धारण करने पर जीव को गुरु उपदेश ग्रहण करना चाहिए।

ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸੇਵ ਕਮਾਣੀਆ ॥
सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥
प्रभु की उपासना करने से ही सुखों की प्राप्ति होती है।

ਸਭ ਦੁਨੀਆ ਆਵਣ ਜਾਣੀਆ ॥੩॥
सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥
यह समस्त संसार तो आने-जाने वाला है। अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि नश्वर है॥ ३॥

ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਸੇਵ ਕਮਾਈਐ ॥
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
इस दुनिया में रहते हुए ही यदि जीव सेवा-सुमिरन करता रहे,

ਤਾ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ ਪਾਈਐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
तभी प्रभु के दरबार में बैठने के लिए स्थान प्राप्त होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਲੁਡਾਈਐ ॥੪॥੩੩॥
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि यह जीव उन्हीं कर्मो द्वारा चिन्ता मुक्त होकर रह सकता है ॥ ४ ॥ ३३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧
सिरीरागु महला ३ घरु १
सिरीरागु महला ३ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀ ਆਪਣਾ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਭਾਇ ॥
हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥
मैं अपने सतिगुरु,की सेवा एकाग्रचित और मन व प्रेम-भाव के साथ करता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥
सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥
मेरा सतिगुरु मनोकामना पूर्ण करने वाला तीर्थ है, किन्तु जिस पर परमेश्वर की कृपा होती है, उसी को ऐसी समझ होती है।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਵਰੁ ਪਾਵਣਾ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥
मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥
प्रभु की स्तुति करने से ही मनवांछित आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है और इच्छानुसार फल की प्राप्ति होती है।

ਨਾਉ ਧਿਆਈਐ ਨਾਉ ਮੰਗੀਐ ਨਾਮੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥
इसलिए उस परमेश्वर का नाम-सुमिरन करें, नाम की ही कामना करें, इसी नाम द्वारा हम सहजावस्था में लीन हो सकते हैं ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥
मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥
हे मेरे मन ! हरि का नाम-रस चखने से ही तृष्णा मिट सकती है।

ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਖਿਆ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिन गुरुमुख जीवों ने इसे चखा है, वे ही सहजावस्था में समाए हैं।॥ ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨੀ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥
जिन्होंने सतिगुरु की सेवा की है, उन्होंने परमेश्वर का नाम-कोष प्राप्त किया है।

ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਚੂਕਾ ਮਨਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥
इससे अंतर्मन में हरिनाम रस भरपूर हो जाता है और मन से अभिमान समाप्त हो जाता है।

ਹਿਰਦੈ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ਲਾਗਾ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥
सहजावस्था में लीन हो जाने से हृदय रूपी कमल खिल जाता है।

ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪਾਇਆ ਦਰਗਹਿ ਮਾਨੁ ॥੨॥
मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥
जिस मन में हरि व्याप्त है, वह निर्मल हो जाता है, और उसने प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त किया है॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥
वे जीव इस संसार में बहुत कम हैं जो अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਰਿ ਕੈ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥
ऐसे जीवों ने अभिमान, मोह आदि विकारों का दमन करके प्रभु को हृदय में धारण कर रखा है।

ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਾ ਨਾਮੇ ਲਗਾ ਪਿਆਰੁ ॥
हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥
मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिनको प्रभु-नाम के साथ प्रीत हुई है।

ਸੇਈ ਸੁਖੀਏ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਜਿਨਾ ਨਾਮੁ ਅਖੁਟੁ ਅਪਾਰੁ ॥੩॥
सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥
वे चारों युगों में सुखी हैं, जिनके पास अक्षय एवं अपार नाम की निधि है॥ ३॥

ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਚੂਕੈ ਮੋਹ ਪਿਆਸ ॥
गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥
गुरु के मिलने से नाम की प्राप्ति होती है और इसी नाम के कारण ही माया का मोह व विषयों की तृष्णा समाप्त होती है।

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸੁ ॥
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥
ऐसे में जीव का मन हरि के साथ मिल जाता है तथा जीव को गृहस्थ जीवन में रह कर ही उदासीनता प्राप्त हो जाती है।

ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਕਾ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥
जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥
जिन को हरि की उपासना का आनंद मिला है, उन पर मैं सदा बलिहारी जाऊँ।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੪॥੧॥੩੪॥
नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि प्रभु की कृपा-दृष्टि से ही गुणों का खज़ाना सत्य नाम प्राप्त किया जा सकता है ॥४॥१॥३४॥

ਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਬਹੁ ਭੇਖ ਕਰਿ ਭਰਮਾਈਐ ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਕਪਟੁ ਕਮਾਇ ॥
बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥
मनुष्य कितने ही तरह-तरह के भेष बना कर इधर-उधर भटकता है, ऐसा करके वह हृदय में छल अर्जित करता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵਈ ਮਰਿ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥१॥
छलिया मन के साथ मनुष्य प्रभु के दर्शन नहीं पाता और अंततः मर कर वह नरकों की गंदगी में समा जाता है ॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਗ੍ਰਿਹ ਹੀ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸੁ ॥
मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥
हे मन ! गृहस्थ जीवन में रह कर ही मोह-मायादि बंधनों से उदासीन होकर रहो।

ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਣੀ ਸੋ ਕਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥१॥ रहाउ ॥
सत्य व संयम की क्रिया वही करता है, जिस मनुष्य को गुरु के उपदेश द्वारा ज्ञान रूपी प्रकाश प्राप्त हो जाता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਜੀਤਿਆ ਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਘਰੈ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥
गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥
जिसने गुरु के उपदेश द्वारा विषयों-विकारों से मन को जीत लिया है, उसने गृहस्थ जीवन में ही सदगति व मुक्ति पा ली है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ॥२॥
हरि का नाम-सिमरन करने से ही सत्संगति द्वारा प्रभु से मिलन होता है ॥ २॥

ਜੇ ਲਖ ਇਸਤਰੀਆ ਭੋਗ ਕਰਹਿ ਨਵ ਖੰਡ ਰਾਜੁ ਕਮਾਹਿ ॥
जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ॥
मनुष्य यदि लाखों स्त्रियों का भोग कर ले, सम्पूर्ण सृष्टि पर राज्य कर ले।

ਬਿਨੁ ਸਤਗੁਰ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥੩॥
बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥३॥
तब भी बिना सतिगुरु के आत्मिक सुख नहीं मिलता तथा मनुष्य पुनः पुनः योनियों में पड़ता है।॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਕੰਠਿ ਜਿਨੀ ਪਹਿਰਿਆ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥
जिन्होंने हरि नाम रूपी हार अपने गले में पहन लिया तथा गुरु-चरणों में मन को लीन किया है।

ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਫਿਰੈ ਓਨਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੪॥
तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥४॥
उनके पीछे ऋद्धि -सिद्धि आदि सम्पूर्ण शक्तियाँ फिरती हैं, किन्तु उन्हें इन सब की तिनका मात्र मी लालसा नहीं है॥ ४॥

ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥
जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥
जो ईश्वर को अच्छा लगे वही होता है, अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜੀਵੈ ਨਾਮੁ ਲੈ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੫॥੨॥੩੫॥
जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि हे प्रभु ! मैं आपके नाम-सिमरन द्वारा ही जीवित रहता हूँ. इसलिए आप मुझे शांत स्वभाव प्रदान कीजिए ॥ ५॥ २॥ ३५ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥
सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥

ਜਿਸ ਹੀ ਕੀ ਸਿਰਕਾਰ ਹੈ ਤਿਸ ਹੀ ਕਾ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥
जिस परमेश्वर की यह सृष्टि रूपी सरकार है, प्रत्येक जीव उसका ही दास है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਸਚੁ ਘਟਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥
गुरु के उपदेशानुसार जिसने भी सद्कर्म किए हैं, उसके हृदय में सत्य स्वरूप परमात्मा प्रकट हुआ है।

ਅੰਤਰਿ ਜਿਸ ਕੈ ਸਚੁ ਵਸੈ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥
जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, उस गुरमुख व्यक्ति की सच्ची शोभा होती है।

ਸਚਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਤਿਨ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੋਇ ॥੧॥
सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥
जब जीव सत्य स्वरूप परमेश्वर के साथ मिल जाता है, तो फिर वह उससे कभी नहीं बिछुड़ता क्योंकि उसका आत्म-स्वरूप में निवास हो जाता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे राम ! परमेश्वर के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸਚੁ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਮਲਾ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥ रहाउ ॥
परन्तु सत्य-स्वरूप एवं पवित्र परमात्मा के साथ मिलन सतिगुरु के उपदेश द्वारा ही होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਸੋ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਜਿਸ ਨਉ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥
जो जीव गुरु के उपदेश को ग्रहण करते हैं, वे परमात्मा से मिल पाते हैं, लेकिन गुरु के उपदेश को भी वही प्राप्त करता है, जिस पर स्वयं परमात्मा कृपा करता है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਕੋ ਨਾ ਮਿਲੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥
द्वैत-भाव रखने वाले को परमात्मा नहीं मिलता तथा वह जीव इस संसार में पुनः पुनः आता-जाता रहता है।

ਸਭ ਮਹਿ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਏਕੋ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥
समस्त प्राणियों में वह एक ही परमात्मा व्याप्त है और सभी जगह वही समाया हुआ है।

ਜਿਸ ਨਉ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥
जिस पर वह स्वयं कृपालु होता है, वही गुरुमुख जीव नाम-सिमरन में लीन होता है॥ २॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਵਾਦ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥
विद्वान तथा ज्योतिषी लोग ग्रंथों को पढ़-पढ़ कर वाद-विवाद निमित्त विचार करते हैं।

ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਭਵੀ ਨ ਬੁਝਈ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭ ਵਿਕਾਰੁ ॥
मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥
ऐसे लोगों की बुद्धि तथा विवेक भटक जाते हैं और वे यह नहीं समझते कि उनके अंतर्मन में लोभ का विकार है।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਭਰਮਦੇ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥
वे चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं और भटक-भटक कर अपमानित होते हैं।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੩॥
पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥
पूर्व कर्मानुसार जो लेख भाग्य में लिखे हैं, उन्हें भोगना ही होगा, उन्हें कोई नहीं मिटा सकता॥ ३॥

ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਗਾਖੜੀ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
सतिगुरु की सेवा करना अति विषम है, इस कार्य के लिए सिर और अहंत्व का त्याग करना पड़ता है।

ਸਬਦਿ ਮਿਲਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਸੇਵਾ ਪਵੈ ਸਭ ਥਾਇ ॥
सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥
गुरु की सेवा करते हुए जो गुरु-उपदेश प्राप्त होता है उसी से प्रभु-प्राप्ति संभव है तब जाकर कहीं सेवा सफल होती है।

ਪਾਰਸਿ ਪਰਸਿਐ ਪਾਰਸੁ ਹੋਇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥
पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥
गुरु रूपी पारस के संकर्षण से जीव पारस हो जाता है तथा आत्मिक ज्योति परम ज्योति में अभेद हो जाती है।

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥੪॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥
पूर्व-जन्म के कर्मानुसार प्रारब्ध में जिनके लिखा है, उन्हें सतिगुरु आकर मिला है॥ ४॥

ਮਨ ਭੁਖਾ ਭੁਖਾ ਮਤ ਕਰਹਿ ਮਤ ਤੂ ਕਰਹਿ ਪੂਕਾਰ ॥
मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥
है जीव ! तुम ऐसी बात मत कहो कि मैं भूखा हूँ, मैं भूखा हूँ और न ही चीख-चीख कर पुकार करो।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜਿਨਿ ਸਿਰੀ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥
लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥
चौरासी लाख योनियों के रूप में जिसने सृष्टि की रचना की है, वही परमात्मा समस्त जीवों को आश्रय देता है।

ਨਿਰਭਉ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਸਭਨਾ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥
निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥
भय-रहित परमात्मा सदैव दयालु रहा है, वह सभी की रक्षा करता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝੀਐ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੫॥੩॥੩੬॥
नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥५॥३॥३६॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि यह सब क्रीड़ा गुरुमुख जीव ही समझता है और वही मोक्ष-द्वार को प्राप्त करता है॥ ५ ॥ ३॥ ३६ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਜਿਨੀ ਸੁਣਿ ਕੈ ਮੰਨਿਆ ਤਿਨਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ॥
जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥
जिन जीवों ने गुरु-उपदेश श्रवण करके उसका चिन्तन किया है, उनका निज-स्वरूप घर में वास हुआ है।

ਗੁਰਮਤੀ ਸਾਲਾਹਿ ਸਚੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥
जिन्होंने गुरु-उपदेश ग्रहण करके सत्य परमात्मा की स्तुति की है, उन्होंने गुण-निधान हरि को प्राप्त किया है।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥
जो गुरुओं की वाणी में लीन हैं, वे पवित्रात्मा हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ।

ਹਿਰਦੈ ਜਿਨ ਕੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਤਿਤੁ ਘਟਿ ਹੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥
जिनके हृदय में हरि का निवास है, उनके हृदय में ज्ञान रूपी प्रकाश होता है ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਧਿਆਇ ॥
मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! उस पवित्र प्रभु का नाम-सुमिरन कर।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਖਿਆ ਸੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिनके मस्तिष्क पर आदि से ही प्रभु का नाम सुमिरन लिखा हुआ है, वे गुरुमुख बनकर उसमें लीन हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਸੰਤਹੁ ਦੇਖਹੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਭਰਪੂਰਿ ॥
हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥
हे संत जनो ! अपनी दिव्य दृष्टि से देखो कि वह परमेश्वर परिपूर्ण होकर सभी के अंत:करण में व्याप्त है।

ਗੁਰਮਤਿ ਜਿਨੀ ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਦੇਖਹਿ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ॥
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥
जिन्होंने गुरु-उपदेश के मार्ग पर चल कर उस परमेश्वर को पहचाना है, वे प्रायः उसे अपने समक्ष ही देखते हैं।

ਜਿਨ ਗੁਣ ਤਿਨ ਸਦ ਮਨਿ ਵਸੈ ਅਉਗੁਣਵੰਤਿਆ ਦੂਰਿ ॥
जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥
जो सद्गुणी जीव हैं, उनके हृदय में सदा हरि वास करता है, अवगुणी जीवों से वह दूर ही रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਗੁਣ ਤੈ ਬਾਹਰੇ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਰਦੇ ਝੂਰਿ ॥੨॥
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥२॥
स्वेच्छाचारी (मनमुख) जीव गुण-रहित होते हैं और वे बिना नाम-सुमिरन किए यूं ही दुखी होकर मरते हैं॥ २॥

ਜਿਨ ਸਬਦਿ ਗੁਰੂ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿਆ ਤਿਨ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥
जिन्होंने गुरु-उपदेश को सुन कर उसको मान लिया है, उन्होंने ही उस हरि-परमात्मा को हृदय में स्मरण किया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥
प्रतिदिन भक्ति में अनुरक्त होने के कारण उनका तन-मन पवित्र हो जाता है।

ਕੂੜਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਰੋਇ ॥
कूड़ा रंगु कसुमभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥
जिस प्रकार कुसुम्भ पुष्प का रंग अस्थिर होता है उसी प्रकार भौतिक पदार्थ भी अस्थिर हैं, उनका नाश हो जाने से जीव दुख में व्याकुल होकर रोता है।

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਹੈ ਓਹੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਹੋਇ ॥੩॥
जिसु अंदरि नाम प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥३॥
जिसके हृदय में नाम का प्रकाश है, वह सदा-सदा के लिए प्रभु में स्थिर होता है॥ ३॥

ਇਹੁ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥
यह मानव-जन्म रूपी पदार्थ पाकर जो जीव एकाग्रचित होकर प्रभु-नाम को स्मरण नहीं करता।

ਪਗਿ ਖਿਸਿਐ ਰਹਣਾ ਨਹੀ ਆਗੈ ਠਉਰੁ ਨ ਪਾਇ ॥
पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥
वह श्वास रूपी पांव फिसलने के कारण इस संसार में भी नहीं रहता और उसे परलोक में भी ठिकाना नहीं मिलता।

ਓਹ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵਈ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਇ ॥
ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥
फिर यह मानव-जन्म का समय हाथ नहीं लगता तथा अंत में प्रायश्चित करता हुआ इस संसार से चला जाता है।

ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਉਬਰੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੪॥
जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥४॥
जिन पर परमेश्वर की कृपा होती है, वे परमात्मा में लिवलीन होकर आवागमन के चक्र से बच जाते हैं।॥ ४॥

ਦੇਖਾ ਦੇਖੀ ਸਭ ਕਰੇ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥
एक-दूसरे को देख कर तो सभी नाम-सुमिरन करने लगते हैं, लेकिन स्वेच्छाचारी इसे समझ नहीं पाता।

ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹੈ ਸੇਵ ਪਈ ਤਿਨ ਥਾਇ ॥
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥
जिन गुरुमुख जीवों का हृदय पवित्र है, उनकी उपासना सफल होती है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਮਾਇ ॥
हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ समाइ ॥
ऐसे जीव कीर्तन द्वारा हरि का गुणगान करते हैं और धर्म-ग्रंथों में हरि के गुणों को पढ़ते हैं तथा हरि के गुणों को गाते हुए उसी में समाधिस्थ हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਦਾ ਸਚੁ ਹੈ ਜਿ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੫॥੪॥੩੭॥
नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥५॥४॥३७॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव प्रभु-नाम में लिवलीन रहते हैं, उनकी वाणी सदा सत्य

होती है॥ ५॥ ४॥ ३७ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਜਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰਿ ॥
जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥
जिन्होंने भी गुरु उपदेशानुसार एकाग्र मन से प्रभु के नाम का सुमिरन किया है।

ਤਿਨ ਕੇ ਮੁਖ ਸਦ ਉਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥
इस सत्य स्वरूप परमात्मा के दरबार में उनके मुँह सदा उज्ज्वल होते हैं, अर्थात् वे प्रभु दरबार में सम्मानित होते हैं।

ਓਇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਹਿ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥
ओइ अम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥१॥
वे ही गुरुमुख जीव सत्य नाम के साथ प्रीत करके सदैव ब्रह्मानंद रूपी अमृत-पान करते हैं ॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥
हे भाई ! गुरुमुख जीवों का सदा सम्मान होता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥
हरि प्रभु का नाम-सुमिरन सदा करें तो वह अहंकार रूपी मैल हृदय से धोकर निकाल देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨਮੁਖ ਨਾਮੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਜਾਇ ॥
मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव नाम-सुमिरन के बारे में नहीं जानता तथा नाम-सुमिरन के बिना सम्मान नष्ट हो जाता है।

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਓ ਲਾਗੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥
ऐसे जीवों को द्वैत-भाव में लिप्त होने के कारण गुरु-शिक्षा का रस अनुभव नहीं होता।

ਵਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀੜੇ ਪਵਹਿ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਸੇ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥२॥
जिस प्रकार विष्ठा के कीड़े विष्ठा में ही पड़े रहते हैं, और वही पर ही मर जाते हैं (उसी प्रकार स्वेच्छाचारी जीव भी विषय-विकारों की गंदगी में लिप्त रह कर अंत में नरकों की गंदगी में समा जाता है) ॥ २॥

ਤਿਨ ਕਾ ਜਨਮੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੋ ਚਲਹਿ ਸਤਗੁਰ ਭਾਇ ॥
तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥
उन जीवों का जन्म सफल है जो सतिगुरु के विचारानुसार चलते हैं।

ਕੁਲੁ ਉਧਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਧੰਨੁ ਜਣੇਦੀ ਮਾਇ ॥
कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥
वह स्वयं ही मुक्त नहीं होते, बल्कि अपने कई कुटुम्ब भी मुक्त कर लेते हैं, ऐसे जीवों की जन्मदात्री माँ धन्य है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਨਉ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੩॥
हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥३॥
सो हे भाई ! परम पिता परमेश्वर का नाम-सुमिरन करो, किन्तु नाम सुमिरन भी वही जीव कर सकता है, जिस पर वह परमात्मा कृपा करता है॥ ३॥

ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥
जिन गुरुमुख जीवों ने अहं-भाव त्याग कर नाम-सुमिरन किया है।

ਓਇ ਅੰਦਰਹੁ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲੇ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥
ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥
वे अन्दर-बाहर से (अंतर्मन व तन से) निर्मल हैं और निश्चित ही उस सत्य स्वरूप परमात्मा में अभेद हो रहे हैं।

ਨਾਨਕ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥੪॥੫॥੩੮॥
नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥४॥५॥३८॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि उन गुरुमुख जीवों का संसार में आना स्वीकृत है, जिन्होंने गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु का नाम-सुमिरन किया है॥ ४॥ ५॥ ३८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਹੈ ਗੁਰ ਪੂਛਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥
हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥
हरि भक्तों के पास हरि की नाम रूपी पूंजी है और वे गुरु से पूछ कर नाम का व्यापार करते हैं,

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਸਦਾ ਸਦਾ ਵਖਰੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥
वे सदैव परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं और वे हरिनाम रूपी सौदे के आश्रय में ही रहते हैं।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਅਤੁਟੁ ਭੰਡਾਰੁ ॥੧॥
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥
पूर्ण गुरु ने उन्हें परमात्मा का नाम दृढ़ करवाया है, इसलिए उनका अक्षय भण्डार नाम ही है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਸਮਝਾਇ ॥
भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥
हे भाई ! इस चंचल मन को समझाओ।

ਏ ਮਨ ਆਲਸੁ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥
यह आलस्य क्यों करता है, गुरु के द्वारा इस मन को नाम-स्मरण में लीन करो ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਕਾ ਪਿਆਰੁ ਹੈ ਜੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥
हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥
यदि कोई जीव गुरु उपदेश द्वारा चिन्तन करे कि हरि भक्ति क्या है? तो प्रत्युत्तर है कि हरि-भक्ति हरि—परमेश्वर का प्रेम है।

ਪਾਖੰਡਿ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਦੁਬਿਧਾ ਬੋਲੁ ਖੁਆਰੁ ॥
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥
छल-कपट करने से भक्ति नहीं हो सकती, छल-कपट से किए वचन दुविधापूर्ण अर्थात् द्वैत-भाव वाले होते हैं, जो जीव को अपमानित करते हैं।

ਸੋ ਜਨੁ ਰਲਾਇਆ ਨਾ ਰਲੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਬਿਬੇਕ ਬੀਚਾਰੁ ॥੨॥
सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥
जिसके अंतर्मन में ज्ञान-विवेक होता है, वह गुरुमुख जीव किसी के मिलाने से नहीं मिलता ॥ २॥

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਹਰਿ ਆਖੀਐ ਜੋ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥
वही जीव परमेश्वर का सेवक कहलाता है, जो प्रायः परमात्मा को हृदय में धारण करके रखता

है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਉਪੇ ਆਗੈ ਧਰੇ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ॥
मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥
इसके अतिरिक्त अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके अपना तन-मन उस परमात्मा को अर्पित कर देता है।

ਧਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥੩॥
धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥
वह गुरुमुख जीव धन्य एवं परमात्मा के द्वार पर स्वीकृत होता है, जो विषय-विकारों के समक्ष कभी अपनी पराजय स्वीकार करके नहीं आता ॥ ३॥

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥
करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥
परमात्मा अपनी कृपा से ही किसी जीव को मिले तो उसे प्राप्त किया जा सकता, अन्यथा उसकी कृपा के बिना उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਤਰਸਦੇ ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਆਇ ॥
लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥
चौरासी लाख योनियों के जीव अर्थात्-सृष्टि के समस्त प्राणी उस परमात्मा के मिलन को तरस रहे हैं, किन्तु जिसे वह स्वयं दया-दृष्टि करके मिलाता है, वही परमात्मा से आकर मिल सकता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੬॥੩੯॥
नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥४॥६॥३९॥
नानक देव जी कथन करते हैं जो गुरु उपदेशानुसार हरि-नाम में लीन हुए हैं, उन्होंने ही हरि-प्रभु को प्राप्त किया है ॥४॥६॥३९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥
हरि-नाम सुखों का सागर है तथा इसे गुरु के उपदेशानुसार ही पाया जा सकता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥
अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥
प्रतिदिन प्रभु-नाम का चिंतन करने से जीव स्वाभाविक ही परमेश्वर में समा जाता है।

ਅੰਦਰੁ ਰਚੈ ਹਰਿ ਸਚ ਸਿਉ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧॥
अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥१॥
यदि जीव का अंतर्मन सत्य स्वरूप परमात्मा के साथ मिल जाए तो जिव्हा हरि-प्रभु का गुणगान करती है ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਜਗੁ ਦੁਖੀਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥
हे भाई ! द्वैत-भाव के कारण सम्पूर्ण जगत् दुखी हो रहा है।

ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਸੁਖੁ ਲਹਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि गुरु की शरण में आकर जीव नित्य प्रति नाम-स्मरण करता रहे तो वह आत्मिक सुख प्राप्त करता है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਚੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗਈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥
साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥
ऐसे सत्य प्राणी को कभी पापों की मैल नहीं लगती और वह शुद्ध मन से हरि-प्रभु का नाम-सिमरन करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੀਐ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥
गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अम्रित नामि समाइ ॥
गुरु-उपदेश को पहचानने से हरि-प्रभु के अमृत रूपी नाम में समाया जा सकता है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਚੰਡੁ ਬਲਾਇਆ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥੨॥
गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥२॥
जिस जीव ने अपने हृदय में तीक्ष्ण ज्ञान का दीपक जला लिया तो उसके हृदय से अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो जाता है। ॥२॥

ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੇ ਮਲੁ ਭਰੇ ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਵਿਕਾਰੁ ॥
मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ॥
स्वेच्छाचारी जीव अहंकार, तृष्णादि विकारों की मैल से मलिन हो रहे हैं।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जमहि होइ खुआरु ॥
गुरु के उपदेश बिना यह मैल कभी नहीं उतरती, ऐसे में जीव आवागमन के चक्र में फँस कर पीड़ित होता है।

ਧਾਤੁਰ ਬਾਜੀ ਪਲਚਿ ਰਹੇ ਨਾ ਉਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥੩॥
धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥३
वह मायावी क्रीड़ा में खचित हुए रहते हैं और इस कारण वह न तो इस संसार का सुख भोग पाते हैं तथा न ही परलोक का आनंद ले पाते हैं। ॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮੀ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰੁ ॥
गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥
गुरुमुख जीव जप, तप व संयम में रह कर हरि-प्रभु के नाम से प्रीति करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥
ऐसा जीव सदैव ईश्वर के एक नाम का सिमरन करता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਆਧਾਰੁ ॥੪॥੭॥੪੦॥
नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥४॥७॥४०॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि समस्त प्राणियों का आसरा केवल नाम सिमरन ही है ॥४॥७॥४०॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
स्रीरागु महला ३ ॥
स्रीरागु महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖੁ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਬੈਰਾਗੁ ਉਦਾਸੀ ਨ ਹੋਇ ॥
मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव माया के मोह में फंसा होने के कारण उदासीनता एवं वैराग्य प्राप्त नहीं कर सकता।

ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥
वह गुरु-उपदेश के रहस्य को नहीं समझता, इसलिए वह परमात्मा के दर पर अपनी प्रतिष्ठा खो देता है।

ਹਉਮੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਈਐ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥
हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥१॥
यदि वह गुरुमुख होकर अहंत्व का त्याग करके परमात्मा के नाम में लीन होता है, तभी उसे आत्मिक आनंद की प्राप्ति होगी॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪੂਰਿ ਰਹੀ ਨਿਤ ਆਸਾ ॥
मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥
हे मन ! तुझ में सदैव भौतिक पदार्थों की कामना ही भरी रहती है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਮੋਹੁ ਪਰਜਲੈ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥
परिपूर्ण सतिगुरु की सेवा करने से यह मोह पूरी तरह सड़ जाता है तथा जीव गृहस्थ जीवन में ही उदासीन रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਬਿਗਸੈ ਹਰਿ ਬੈਰਾਗੁ ਅਨੰਦੁ ॥
गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ॥
गुरु की शरण लेकर यदि जीव धर्म कार्य करे तो वह परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करता है तथा वैराग्य का आनंद उठाता है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਨਿਚੰਦੁ ॥
अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥
वह अपने अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके निश्चित होकर नित्य-प्रति दिन-रात ईश्वर की उपासना करता है।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਅਨੰਦੁ ॥੨॥
वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ॥२॥
ऐसा जीव सौभाग्य से ही सत्संगति पाता है और वह स्वाभाविक ही परमात्मा को प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਸੋ ਸਾਧੂ ਬੈਰਾਗੀ ਸੋਈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥
वास्तविक तौर पर साधु और वैरागी वही है जो हृदय में प्रभु-नाम को धारण कर ले।

ਅੰਤਰਿ ਲਾਗਿ ਨ ਤਾਮਸੁ ਮੂਲੇ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ॥
उसके मन में तनिक भी तामसिकता नहीं रहती तथा वह अंतर्मन से अहंत्व को मिटा लेता है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਗੁਰੂ ਦਿਖਾਲਿਆ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਆ ਅਘਾਏ ॥੩॥
नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाए ॥३॥
प्रभु का यह नाम रूपी खज़ाना सतिगुरु ने ही दिखाया है और हरि-प्रभु का नाम-रस पीकर वह तृप्त हो गए॥ ३॥

ਜਿਨਿ ਕਿਨੈ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸੰਗਤੀ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਬੈਰਾਗਿ ॥
जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥
जिस किसी ने भी हरि-नाम को प्राप्त किया तो उसने सौभाग्य, वैराग्य तथा सत्संगति द्वारा ही पाया है।

ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਹਿ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸਤਗੁਰੁ ਹਉਮੈ ਅੰਦਰਿ ਲਾਗਿ ॥
मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥
भौतिक पदार्थों में आसक्त जीव (मनमुख) सतिगुरु को नहीं पहचानता अर्थात् वह गुरु का उपदेश ग्रहण नहीं करता, क्योंकि उसके अंदर अहंकार प्रबल होता है तथा वह योनियों में ही भटकता रहता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰੰਗਾਏ ਬਿਨੁ ਭੈ ਕੇਹੀ ਲਾਗਿ ॥੪॥੮॥੪੧॥
नानक सबदि रते हरि नामि रंगाए बिनु भै केही लागि ॥४॥८॥४१॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेश में अनुरक्त जीव परमात्मा के नाम में रंग गए तथा यह रंग प्रभु के भय के बिना नहीं लग सकता॥ ४॥ ८ ॥ ४१ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਘਰ ਹੀ ਸਉਦਾ ਪਾਈਐ ਅੰਤਰਿ ਸਭ ਵਥੁ ਹੋਇ ॥
घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥
शरीर (घर) द्वारा ही नाम रूपी सौदा प्राप्त होता है, क्योंकि अंतर्मन में समस्त पदार्थ व्याप्त हैं।

ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥
खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥
लेकिन यह सौदा किसी विशेष गुरुमुख जीव को प्रतिक्षण नाम-सिमरन करने से ही प्राप्त होता है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਅਖੁਟੁ ਹੈ ਵਡਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥
नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥१॥
प्रभु का नाम-भण्डार अक्षुण्ण है और यह सौभाग्य से ही प्राप्त होता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਜਿ ਨਿੰਦਾ ਹਉਮੈ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
मेरे मन तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥
हे प्राणी मन ! अपने भीतर से निंदा, अहंकार और गर्व का त्याग कर दे।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ਤੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु ॥१॥ रहाउ ॥
तुम गुरुमुख होकर परमेश्वर हरि-प्रभु को स्मरण करो॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਾ ਕੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰਿ ॥
गुरमुखा के मुख उजले गुर सबदी बीचारि ॥
जो गुरुमुख जीव गुरु उपदेश ग्रहण करके उस पर विचार करता है, वह लोक-परलोक में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਦੇ ਜਪਿ ਜਪਿ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰਿ ॥
हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥
वह अपने हृदय में मुरारि के नाम को जपने से मृत्युलोक व परलोक में सुखों को प्राप्त करता है।

ਘਰ ਹੀ ਵਿਚਿ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰਿ ॥੨॥
घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥२॥
गुरु के उपदेश का चिन्तन करने से वह गृह रूपी अंतःकरण में परमात्मा के स्वरूप को पा लेता है॥ २॥

ਸਤਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹ ਫੇਰਹਿ ਮਥੇ ਤਿਨ ਕਾਲੇ ॥
सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
जो जीव सतिगुरु से परामुख होते हैं उनके मुख कलंकित होते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਦੁਖ ਕਮਾਵਦੇ ਨਿਤ ਜੋਹੇ ਜਮ ਜਾਲੇ ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
वे प्रतिदिन कष्ट भोगते हैं और नित्य यमों के जाल में फँसते हैं।

ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਦੇਖਨੀ ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਪਰਜਾਲੇ ॥੩॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥३॥
उनको स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता तथा कई तरह की चिंताग्नि उन्हें पूर्णतया जला देती है॥ ३॥

ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰੇਇ ॥
सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥
समस्त प्राणियों को देने वाला ईश्वर एक ही है और वह स्वयं ही अनुग्रह करता है।

ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਵਈ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਦੇਇ ॥
कहणा किछु न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥
उसके अनुग्रह के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जिसे चाहे वह देता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਇ ॥੪॥੯॥੪੨॥
नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥९॥४२॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु की शरण में जाकर जो प्रभु को पाने का उद्यम करता है, वही उसके आनंद को जान सकता है॥ ४॥ ६॥ ४२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ਦੇਇ ॥
सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥
सत्य परमात्मा की सेवा-उपासना की जाए तो वह सत्य स्वरूप रूपी सम्मान प्रदान करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਦੂਰਿ ਕਰੇਇ ॥
गुर परसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥
गुरु की कृपा द्वारा वह हृदय में वास करता है और अहंकार को दूर करता है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਧਾਵਤੁ ਤਾ ਰਹੈ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥
इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥
यह मन भटकने से तभी बच सकता है, जब वह परमेश्वर स्वयं कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
भाई रे गुरमुखि हरि नामु धिआइ ॥
हे भाई ! गुरु के उपदेश द्वारा हरि-प्रभु के नाम का सिमरन करो।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਦ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮਹਲੀ ਪਾਵੈ ਥਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु निधानु सद मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि नाम-भण्डार सदा के लिए मन में स्थिर हो जाए तो जीव उस प्रभु के स्वरूप में स्थान प्राप्त कर लेता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਨਮੁਖ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਤਿਸ ਨਉ ਠਉਰ ਨ ਠਾਉ ॥
मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥
स्वेच्छाचारी जीव का हृदय व शरीर अविद्या के कारण अन्धा हो रहा है, इसलिए उसे ठहरने के लिए कोई आश्रय नहीं होता।

ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਉਦਾ ਫਿਰੈ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਉ ॥
बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञै घरि काउ ॥
वह अनेकानेक योनियों में भटकता फिरता है, जैसे सूने घर में कौवा रहता हो।

ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੨॥
गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥२॥
गुरु की शिक्षा द्वारा हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है और वाणी द्वारा परमेश्वर का नाम प्राप्त होता है।॥ २॥

त्रै ਗੁਣ ਬਿਖਿਆ ਅੰਧੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰ ॥
त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥
संसार में त्रिगुणी (सत्त्व, रज, तम) विषय-विकारों का अंधेरा छाया हुआ है और माया के मोह की धूलि चढ़ी हुई है।

ਲੋਭੀ ਅਨ ਕਉ ਸੇਵਦੇ ਪੜਿ ਵੇਦਾ ਕਰੈ ਪੂਕਾਰ ॥
लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करै पूकार ॥
लोभी जीव वेद आदि धर्म ग्रंथों को पढ़-पढ़ कर परमेश्वर को पुकारते तो हैं, लेकिन द्वैत-भाव के कारण वह एकेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को स्मरण करते हैं।

ਬਿਖਿਆ ਅੰਦਰਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਨਾ ਉਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥੩॥
बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥३॥
विषय-विकारों की अग्नि में जल कर वे मर गए तथा वह न इस संसार के सुख भोग सके और न ही परलोक में स्थान पा सके॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਸਾਰਿਆ ਜਗਤ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ॥
माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥
उन्होंने माया-मोह में लिप्त होकर उस प्रतिपालक परमात्मा को विस्मृत कर दिया है।

ਬਾਝਹੁ ਗੁਰੂ ਅਚੇਤੁ ਹੈ ਸਭ ਬਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥
बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥
सम्पूर्ण सृष्टि गुरु के बिना चेतना रहित है और वह यमों के जाल में फँसी हुई है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਉਬਰੇ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥੧੦॥੪੩॥
नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेशानुसार सत्य-नाम का सिमरन करके ही जीव यमों के बंधन से बच सकते हैं। ४॥ १० ॥ ४३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥
त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥
गुरुमुख जीवों ने त्रिगुणी माया का मोह त्याग कर तुरीयावस्था (चौथा पद) को प्राप्त किया है।

करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥
करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥
उसके हृदय में ही उस हरि-प्रभु का नाम बसा है।

पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥
पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥
जिनके भाग्य रूपी खज़ाने में पुण्य जमा है, प्रभु उनको सत्संगति में मिलाता है॥ १॥

भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥
भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥
हे माई ! गुरु की शिक्षा द्वारा सत्य में निवास करो।

साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥
साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥
केवल सत्य की साधना करो, जिससे उस सत्य स्वरूप से मिलन संभव हो सके ॥ १॥ रहाउ ॥

जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥
जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥
जिन्होंने पारब्रह्म परमेश्वर के नाम को पहचाना है, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ।

आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥
आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥
अहंत्व का त्याग करके उनके चरणों में पड़ जाऊँ और उनकी इच्छानुसार चलू।

लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥
लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥
क्योंकि उनकी संगति में रह कर नाम-सिमरन का लाभ मिलता है, तथा सहज ही नाम की प्राप्ति हो जाती है॥ २॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਨ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥
किन्तु गुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती और नाम के बिना सत्य स्वरूप को नहीं पाया जा सकता।

ਐਸਾ ਸਤਗੁਰੁ ਲੋੜਿ ਲਹੁ ਜਿਦੂ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥
फिर कोई ऐसा सत्य गुरु ढूंढ लो, जिसके द्वारा वह सत्य परमात्मा प्राप्त किया जाए।

ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੈ ਸੁਖਿ ਵਸੈ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਇ ॥੩॥
असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥३॥
जो जीव गुरु के मार्गदर्शन में सत्य परमात्मा को पा लेता है उसके काम, क्रोध, लोभ रूपी दैत्यों का संहार हो

ਜੇਹਾ ਸਤਗੁਰੁ ਕਰਿ ਜਾਣਿਆ ਤੇਹੋ ਜੇਹਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥
जैसी सतिगुरु में श्रद्धा होगी, वैसा सुख-फल जीव को प्राप्त होगा।

ਏਹੁ ਸਹਸਾ ਮੂਲੇ ਨਾਹੀ ਭਾਉ ਲਾਏ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥
इस तथ्य में बिल्कुल भी संदेह नहीं है, निस्संकोच कोई भी जीव सतिगुरु से प्रेम करके देख ले।

ਨਾਨਕ ਏਕ ਜੋਤਿ ਦੁਇ ਮੂਰਤੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੪॥੧੧॥੪੪॥
नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥४॥११॥४४॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि अकाल पुरुष एवं गुरु बेशक दो रूप दिखाई देते हैं, परंतु इन दोनों में ज्योति एक ही है, गुरु के उपदेश द्वारा ही अकाल-पुरुष से मिलन संभव है॥ ४॥ ११॥ ४४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਛੋਡਿ ਬਿਖਿਆ ਲੋਭਾਣੇ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਵਿਡਾਣੀ ॥
अम्रितु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥
जो स्वेच्छाचारी जीव नाम-अमृत को छोड़ कर विषय-विकार रूपी विष में मोहित हैं, सत्य वाहिगुरु के अतिरिक्त अन्य कोई पार्थिव पूजा करते ह

ਆਪਣਾ ਧਰਮੁ ਗਵਾਵਹਿ ਬੂਝਹਿ ਨਾਹੀ ਅਨਦਿਨੁ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥
आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥
वे मायातीत होकर अपने मूल कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं और अपने मानव-जन्म का तात्पर्य नहीं समझते तथा अपनी आयु नित्य ही दुखों में व्यतीत करते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਨ ਚੇਤਹੀ ਡੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ॥੧॥
मनमुख अंध न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥१॥
ऐसे जीव अज्ञानी होकर उस परमात्मा को स्मरण नहीं करते और वे माया में ग्रसे हुए विषय रूपी सागर में बिना जल के ही डूब कर मर रहे हैं।॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਸਦਾ ਭਜਹੁ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥
मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥
हे जीव ! गुरु की शरण में रह कर हरि-प्रभु का चिन्तन करो।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਤਾ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
जब गुरु का उपदेश अंतर्मन में प्रविष्ट हो जाता है तो फिर कभी हरि-प्रभु भूल नहीं पाता॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਮਾਇਆ ਕਾ ਪੁਤਲਾ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਦੁਸਟੀ ਪਾਈ ॥
इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥
जीव के माया निर्मित तन में अहंकार रूपी विकार भरा हुआ है।

ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
आवणु जाणा जमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥
इसलिए जीव स्वेच्छाचारी होकर जन्म-मरण के चक्र में फंस कर परमात्मा समक्ष अपनी प्रतिष्ठा को गंवा रहा है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੨॥
सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥२॥
सतिगुरु की सेवा करने से सदैव सुख की प्राप्ति होती है और आत्म-ज्योति का परमात्म-ज्योति से मिलन हो जाता है ॥ २॥

ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਅਤਿ ਸੁਖਾਲੀ ਜੋ ਇਛੇ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥
सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाए ॥
सतिगुरु की सेवा अति सुखदायी है, जिससे मनवांछित फल प्राप्त होता है।

ਜਤੁ ਸਤੁ ਤਪੁ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥
सतिगुरु की सेवा के परिणाम स्वरूप संयम, सत्य व तप प्राप्त होते हैं और तन पवित्र हो जाता है तथा जीव हरि-नाम को हृदय में धारण कर लेता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੩॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥३॥
हरि-प्रभु से मिलन होने पर जीव आत्मिक सुख अनुभव करता है और प्रायः रात-दिन आनंद में रहता है॥ ३॥

ਜੋ ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥
जो जीव सतिगुरु की शरण में आए हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ।

ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਉ ॥
दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥
उस सत्य-स्वरूप परमात्मा की सभा में सत्य को ही सम्मान प्राप्त होता है, ऐसा जीव सहज ही उस सत्य में समा जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਉ ॥੪॥੧੨॥੪੫॥
नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥४॥१२॥४५॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा से मिलाप तो केवल अकाल-पुरुष की कृपा-दृष्टि एवं गुरु-उपदेश द्वारा ही संभव है॥ ४॥ १२॥ ४५ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਜਿਉ ਦੋਹਾਗਣਿ ਤਨਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥

मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥

स्वेच्छाचारी जीव के लिए सद्कर्म इस प्रकार व्यर्थ होते हैं, जैसे किसी दुहागिन स्त्री के तन पर किया हुआ श्रृंगार व्यर्थ है।

ਸੇਜੈ ਕੰਤੁ ਨ ਆਵਈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥

सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥

क्योंकि उसकी शय्या पर उसका स्वामी तो आता नहीं और वह नित्य ही ऐसा करके अपमानित होती है।

ਪਿਰ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵਈ ਨਾ ਦੀਸੈ ਘਰੁ ਬਾਰੁ ॥੧॥

पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥१॥

अर्थात्-स्वेच्छाचारी जीव द्वारा नाम-सिमरन रूपी सद्कर्म न करने पर परमात्मा उसके समीप नहीं आता और वह पति-परमात्मा का स्वरूप प्राप्त नहीं करता, क्योंकि उसे परमात्मा का घर-द्वार दिखाई ही नहीं देता ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਇਕ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥

भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥

हे भाई ! एकाग्र मन होकर नाम-सिमरन करो।

ਸੰਤਾ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥

संतों की संगति में मिल कर रहो, उस सत्संगति में नाम-स्मरण करने से आत्मिक सुख की प्राप्ति होगी॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਪਿਰੁ ਰਾਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥

गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ॥

गुरुमुख जीव सदा सुहागिन स्त्री की भाँति होता है, क्योंकि उसने पति-परमात्मा को अपने हृदय में धारण करके रखा होता है।

ਮਿਠਾ ਬੋਲਹਿ ਨਿਵਿ ਚਲਹਿ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਭਤਾਰੁ ॥

मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥

उसके बोल मीठे होते हैं और उसका स्वभाव विनम्र होता है, उसी कारण उस हृदय रूपी शय्या पर पति-परमात्मा का रमण प्राप्त होता है।

ਸੋਭਾਵੰਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਗੁਰ ਕਾ ਹੇਤੁ ਅਪਾਰੁ ॥੨॥
सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥२॥
जिनको गुरु का अनंत प्रेम प्राप्त हुआ है, वह गुरुमुख जीव सुहागिन व शोभा वाली स्त्री के समान है॥ २॥

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਜਾ ਭਾਗੈ ਕਾ ਉਦਉ ਹੋਇ ॥
पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥
सद्कर्मों के कारण जीव का जब भाग्योदय होता है तभी उसे सौभाग्य से सतिगुरु की प्राप्ति होती है।

ਅੰਤਰਹੁ ਦੁਖੁ ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਸੁਖੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ॥
गुरु के मिलाप द्वारा अंतर्मन से दुख देने वाला अहम् दूर हो जाता है तथा आत्मिक सुख प्राप्त होता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਦੁਖੁ ਨ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥੩॥
गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥३॥
जो जीव गुरु की आज्ञानुसार व्यवहार करता है, उसके जीवन में कभी कोई कष्ट नहीं आता ॥ ३॥

ਗੁਰ ਕੇ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਸਹਜੇ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥
गुर के भाणे विचि अम्रितु है सहजे पावै कोइ ॥
गुरु की आज्ञा में नाम-अमृत होता है, उस नाम-अमृत को ज्ञान द्वारा ही पाया जा सकता है।

ਜਿਨਾ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਨ ਪੀਆ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਖੋਇ ॥
जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥
जिस जीव ने हृदय में से अहंत्व का त्याग किया है, उसी ने गुरु द्वारा नाम अमृत प्राप्त करके उसका पान किया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਚਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੪॥੧੩॥੪੬॥
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ॥४॥१३॥४६॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरुमुख होकर नाम-सिमरन करते हैं, उनका सत्य-स्वरूप परमेश्वर से मिलन होता है ॥४॥१३॥४६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਜਾ ਪਿਰੁ ਜਾਣੈ ਆਪਣਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਗੈ ਧਰੇਇ ॥
जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥
जब जीव रूपी स्त्री परमात्मा को अपना पति मानती है तो वह अपना सर्वस्व उसको अर्पण कर देती है।

ਸੋਹਾਗਣੀ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੀਆ ਸੇਈ ਕਰਮ ਕਰੇਇ ॥
सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ॥
फिर जो कर्म सुहागिर्ने करती हैं, वही कर्म तुम भी करो।

ਸਹਜੇ ਸਾਚਿ ਮਿਲਾਵੜਾ ਸਾਚੁ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੧॥
सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥१॥
ससे स्वाभाविक ही सत्य स्वरूप परमात्मा रूपी पति से मिलाप होगा और वह परमात्मा-पति तुझे सत्य प्रतिष्ठा प्रदान करेगा ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥
हे जीव ! परमात्मा का चिन्तन गुरु के बिना नहीं हो सकता।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
बेशक प्रत्येक जीव उस परमात्मा को पाने की कामना करे, किन्तु गुरु के बिना उस परमात्मा की भक्ति प्राप्त नहीं होती ॥ १॥ रहाउ॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਇਆ ਕਾਮਣਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ॥
जीव रूपी स्त्री द्वैत-भाव में फँस कर चौरासी लाख योनियों के चक्र में भटकती है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨੀਦ ਨ ਆਵਈ ਦੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥
बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥
गुरु उपदेश के बिना उसे शांति नहीं मिलती और वह दुखों में ही जीवन रूपी रात व्यतीत करती है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਪਿਰੁ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੨॥
बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ॥२॥
गुरु के शब्द बिना वह पति-परमात्मा को प्राप्त नहीं कर पाती और वह अपना जन्म यूं ही व्यर्थ गंवा देती है॥ २॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤੀ ਜਗੁ ਫਿਰੀ ਨਾ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਨਾਲਿ ॥
हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु स्मपै नालि ॥
ऐसी जीव-कामिनी 'मैं-मैं करती हुई सम्पूर्ण संसार में भटकती फिरती है, किन्तु यह धन-सम्पति किसी के साथ नहीं गई।

ਅੰਧੀ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਈ ਸਭ ਬਾਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥
अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥
भौतिक पदार्थों के लोभ में अंधी हुई सम्पूर्ण सृष्टि प्रभु का नाम-सिमरन नहीं करती और वह यमों के जाल में बंधी पड़ी है।

ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਰਿਦੈ ਸਮਾਲਿ ॥੩॥
सतगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरि नामा रिदै समालि ॥३॥
सतिगुरु के मिलाप से जिसने हरि-नाम को हृदय में सम्भाला है, उसने ही सत्य पूँजी अर्जित की है॥ ३॥

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥
जो जीव गुरु के उपदेशानुसार नाम में अनुरक्त हुए हैं, वे ही निर्मल व शांत स्वभाव वाले हुए है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ਰੰਗ ਸਿਉ ਰਸਨਾ ਰਸਨ ਰਸਾਇ ॥
मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ॥
उनका मन व तन प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुआ है और जिव्हा नाम-रस में रत हो गई।

ਨਾਨਕ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਜੋ ਹਰਿ ਧੁਰਿ ਛੋਡਿਆ ਲਾਇ ॥੪॥੧੪॥੪੭॥
नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥४॥१४॥४७॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो रंग अकाल-पुरुष ने आरम्भ से लगा दिया है वह कभी नहीं उतरता ॥ ४॥ १४॥ ४७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਭਗਤਿ ਕੀਜੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥
सतिगुरु की कृपा हो तो प्रभु-भक्ति की जा सकती है, अन्यथा गुरु के बिना भक्ति संभव नहीं है।

ਆਪੈ ਆਪੁ ਮਿਲਾਏ ਬੂਝੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ॥
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥
जो जीव स्वयं को गुरु के साथ मिला कर नाम का रहस्य समझता है तो वह निर्मल होता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥੧॥
हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥१॥
हरि-प्रभु स्वयं सत्य है, उसका नाम सत्य है, परन्तु गुरु-उपदेश द्वारा उस सत्य स्वरूप से मिलन हो सकता है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਭਗਤਿਹੀਣੁ ਕਾਹੇ ਜਗਿ ਆਇਆ ॥
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥
हे जीव ! जिसने प्रभु-भक्ति नहीं की, उसका इस संसार में आना व्यर्थ है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु की जिसने सेवा नहीं की, उसने अपना मानव जन्म व्यर्थ गंवा लिया ॥ १॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ॥
आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए ॥
परमात्मा स्वयं ही सांसारिक जीवों का जीवनाधार व सुखों का दाता है और वह जीवों के अवगुण क्षमा करके स्वयं में अभेद कर लेता है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਏ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥
ये बेचारे दीन-हीन जीव-जन्तु क्या समर्था रखते हैं और क्या कुछ कह कर सुना सकते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥੨॥
गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥२॥
वह परमेश्वर स्वयं ही गुरुमुख जीवों को नाम द्वारा प्रतिष्ठित करता है और स्वयं ही उन से सेवा करवाता है॥ २॥

ਦੇਖਿ ਕੁਟੰਬੁ ਮੋਹਿ ਲੋਭਾਣਾ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਈ ॥
देखि कुट्मबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥
स्वेच्छाचारी जीव अपने कुटुम्ब-मोह में लिप्त हो रहा है, किन्तु अंतकाल में किसी ने भी साथ नहीं देना।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਇਆ ਤਿਸ ਦੀ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥
सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥
जिसने सतिगुरु की सेवा करके गुणों के खजाने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लिया है, उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਖਾ ਮੀਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੩॥
हरि प्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥
हरि-परमेश्वर सदैवकाल मेरा मित्र व साथी है और अंतकाल में भी वह सहायक होगा ॥ ३॥

ਆਪਣੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਆਪੁ ਨ ਜਾਈ ॥
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥
अपने मन-चित्त में कोई चाहे कहता रहे अथवा किसी अन्य से कहलाए कि मुझ में अभिमान नहीं है, किन्तु गुरु की कृपा के बिना जीव के अंतर्मन से अभिमान समाप्त नहीं होता।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਦਾਤਾ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹੈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥
हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥
परमेश्वर समस्त जीवों का दाता एवं भक्त-वत्सल है, और वह स्वयं ही कृपा करके जीव के हृदय में भक्ति बसाता है।

ਨਾਨਕ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੧੫॥੪੮॥
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥४॥१५॥४८॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा स्वयं ही यश व ज्ञान देता है और स्वयं गुरु द्वारा प्रतिष्ठा प्रदान करता है अर्थात्-अकाल-पुरुष स्वयं ही गुरुमुख जीव को आत्म ज्ञान देकर इस लोक में यश तथा परलोक में प्रतिष्ठित पद प्रदान करता है ॥ ४ ॥ १५॥ ४८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਧਨੁ ਜਨਨੀ ਜਿਨਿ ਜਾਇਆ ਧੰਨੁ ਪਿਤਾ ਪਰਧਾਨੁ ॥
धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥
वह माता धन्य है, जिसने (गुरु को) जन्म दिया और पिता भी श्रेष्ठ है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਗਇਆ ਗੁਮਾਨੁ ॥
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥
ऐसे सतिगुरु की सेवा करके जिन जीवों ने आत्मिक सुख प्राप्त किया है और अपने अंतर्मन से अभिमान को समाप्त किया है।

ਦਰਿ ਸੇਵਨਿ ਸੰਤ ਜਨ ਖੜੇ ਪਾਇਨਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥

दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥१॥

ऐसे सद्कर्मी पुरुष के द्वार पर अनेक जिज्ञासु खड़े सेवा करते हुए गुणनिधान परमात्मा को पा रहे हैं।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਮੁਖਿ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥

मेरे मन गुर मुखि धिआइ हरि सोइ ॥

हे मेरी जीवात्मा ! तुम गुरु के मुँह से उच्चारण होने वाले उपदेश द्वारा आचरण करते हुए उस अकाल-पुरुष हरि का सिमरन करो।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥१॥ रहाउ ॥

जब गुरु-उपदेश हृदय में धारण हो जाता है तो तन व मन दोनों पवित्र हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥

करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥

गुरु उपदेशानुसार चिन्तन करने से परमात्मा जीव पर कृपालु होकर उसके अंतर्मन में वास करता है और स्वयं उसे आकर मिलता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਰੰਗੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥

गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥

इसलिए गुरु-उपदेश द्वारा उस परमात्मा का गुणगान करें तो स्वाभाविक ही उसके प्रेम का रंग चढ़ जाता है।

ਸਚੈ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਨ ਵਿਛੁੜਿ ਜਾਇ ॥੨॥

सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ॥२॥

इस प्रकार जीव निर्मल होकर उस सत्य स्वरूप में लीन हो जाता है और उसके साथ ही मिला रहता है, फिर कभी उससे विमुक्त होकर आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता ॥ २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥

जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ॥

उस परमात्मा ने जो कुछ करना है, वह कर रहा है, इसके अतिरिक्त कुछ किया भी नहीं जा सकता।

ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨੇ ਮੇਲਿਅਨੁ ਸਤਗੁਰ ਪੰਨੈ ਪਾਇ ॥

चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ॥

सतिगुरु की शरण में डाल कर परमात्मा ने चिरकाल से विमुक्त हुई जीवात्मा को अपने स्वरूप में अभेद कर लिया।

ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਰਾਇਸੀ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੩॥
आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥३॥
वह अपनी इच्छानुसार ही जीवों से कर्म करवाएगा, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं किया जा सकता ॥ ३॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰੰਗ ਸਿਉ ਹਉਮੈ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥
मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥
जिस जीव ने अहंत्व और विषय-विकारों का त्याग करके अपना मन व तन परमात्मा के प्रेम-रंग में लीन कर लिया है,

ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਿਰਦੈ ਰਵਿ ਰਹੈ ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥
वह जीव निर्भय होकर अपने हृदय में परमात्मा का नाम-सिमरन करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰ ॥੪॥੧੬॥੪੯॥
नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥४॥१६॥४९॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा ने स्वयं ही ऐसे जीव को परिपूर्ण गुरु के उपदेश द्वारा अपने स्वरुप में मिला लिया है ॥ ४ ॥ १६॥ ४९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਗੋਵਿਦੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥
गुरुबाणी द्वारा लब्ध पारब्रह्म गुणों का भण्डार है, उसका अंत नहीं पाया जा सकता।

ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਨ ਪਾਈਐ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥
मात्र कथन कर देने से उसकी प्राप्ति संभव नहीं है, बल्कि वह तो हृदय से अहंत्व का त्याग करने से ही मिलता है।

ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਦ ਭੈ ਰਚੈ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥
सतिगुरु के मिलन से प्रायः हृदय में परमात्मा का भय रहता है और वह स्वयं ही मन में आकर निवास करता है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥
भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥
हे जीव ! गुरुमुख होकर कोई विरला ही इस भेद को जान सकता है।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥ रहाउ ॥
इस भेद को समझे बिना कर्म करने से सम्पूर्ण जीवन को व्यर्थ गंवाना है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਨੀ ਚਾਖਿਆ ਤਿਨੀ ਸਾਦੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਚਾਖੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥
जिसने नाम-रस को चखा है, उसी ने इसका स्वाद पाया है, अर्थात्-जिस जीव ने प्रभु-नाम का सिमरन किया, उसी ने इसका आनंद अनुभव किया है, नाम-रस चखे बिना तो वह भ्रम में ही भटकते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
अम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥
परमात्मा का सत्य नाम अमृत समान है, उसका आनंद वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਪੀਵਤ ਹੂ ਪਰਵਾਣੁ ਭਇਆ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥
जिस जीव ने इस नामामृत का पान किया, यह पीते ही उस प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो गया तथा वह परिपूर्ण परब्रह्म में अभेद हो गया ॥ २ ॥

ਆਪੇ ਦੇਇ ਤ ਪਾਈਐ ਹੋਰੁ ਕਰਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥
यह नाम भी यदि वह प्रभु स्वयं कृपालु होकर प्रदान करे तो मिलता है अन्यथा और कुछ नहीं किया जा सकता।

ਦੇਵਣ ਵਾਲੇ ਕੈ ਹਥਿ ਦਾਤਿ ਹੈ ਗੁਰੂ ਦੁਆਰੈ ਪਾਇ ॥
देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥
उस देने वाले प्रभु के हाथ में ही यह बख्शिश है लेकिन उस दाता को गुरु द्वारा ही प्राप्त किया

जा सकता है।

ਜੇਹਾ ਕੀਤੋਨੁ ਤੇਹਾ ਹੋਆ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੩॥
जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥३॥
जीव ने पूर्व जन्म में जो कर्म किए हैं, उनके अनुसार ही अब फल प्राप्त हुआ है और जो वर्तमान में कर्म वह कर रहा है, उस अनुसार फल भविष्य में प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਿਰਮਲੁ ਨ ਹੋਇ ॥
जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥
संयम, सत्य और इन्द्रिय-निग्रह ये सभी नाम के अंतर्गत आते हैं, नाम के बिना मन निर्मल नहीं होता।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥
सौभाग्य से ही जीव के मन में नाम बसता है, जिससे परमात्मा से मिलाप होता है।

ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਹੀ ਰੰਗਿ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੭॥੫੦॥
नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव स्वाभाविक ही प्रभु के प्रेम-रंग में रमण करता है, वही हरि-गुणों को प्राप्त करता है ॥ ४॥ १७ ॥ ५0॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਕਾਂਇਆ ਸਾਧੈ ਉਰਧ ਤਪੁ ਕਰੈ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਨ ਜਾਇ ॥
कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥
बेशक यदि जीव शरीर द्वारा साधना कर ले,कठिन तप कर ले, किन्तु यह सब कर लेने से उसके अंतर्मन से अहंत्व नहीं मिट जाता।

ਅਧਿਆਤਮ ਕਰਮ ਜੇ ਕਰੇ ਨਾਮੁ ਨ ਕਬ ਹੀ ਪਾਇ ॥
अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥
आत्म-ज्ञान हेतु किए जाने वाले बाह्य कर्म भी कर ले, तब भी वह कभी प्रभु-नाम प्राप्त नहीं कर सकता।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥१॥
परंतु जो जीव गुरु-उपदेश द्वारा जीवित मरता है अर्थात मोह -माया से अनासक्त होता है,

उसके हृदय में आकर ही प्रभु का नाम बसता है॥ १॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਭਜੁ ਸਤਗੁਰ ਸਰਣਾ ॥
सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥
हे मेरे जीव रूपी मन ! सुनो, तुम सतिगुरु की शरण में जाओ।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਛੁਟੀਐ ਬਿਖੁ ਭਵਜਲੁ ਸਬਦਿ ਗੁਰ ਤਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा द्वारा ही माया के मोह से बचा जा सकता है और विषय-विकारों से लिप्त भवसागर को पार किया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਸਭਾ ਧਾਤੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਵਿਕਾਰੁ ॥
त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥
समस्त जीव त्रिगुणात्मक माया की ओर भागते हैं और इसमें जो द्वैत-भाव है, वही विकारों की उत्पत्ति करने वाला है।

ਪੰਡਿਤੁ ਪੜੈ ਬੰਧਨ ਮੋਹ ਬਾਧਾ ਨਹ ਬੂਝੈ ਬਿਖਿਆ ਪਿਆਰਿ ॥
पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥
वेद-शास्त्रादि को पढ़ने वाला पंडित भी मोहपाश में बँधा हुआ है, तथा माया के वश में होने के कारण परमात्मा को भी नहीं बूझता।

ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਛੂਟੈ ਚਉਥੈ ਪਦਿ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥੨॥
सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥
सतिगुरु के मिलाप द्वारा त्रिकुटी छूट जाती है तथा में पहुँच कर मोक्ष-द्वार की प्राप्ति होती है॥ २॥

ਗੁਰ ਤੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਈਐ ਚੂਕੈ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥
यदि गुरु के उपदेश द्वारा ज्ञान-भक्ति रूपी मार्ग पर जीव चले तो मोह रूपी गर्द(धुंद) दूर हो जाती है।

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਉਧਰੈ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥
यदि जीव गुरु के उपदेश में लीन होकर माया के मोह से मृत हो जाए तो वह भवसागर से तर जाता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥੩॥
गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥
गुरु की कृपा द्वारा ही मानव जीव सत्य नाम वाले परमात्मा को मिल सकता है ॥ ३ ॥

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਅਤਿ ਸਬਲ ਹੈ ਛਡੇ ਨ ਕਿਤੈ ਉਪਾਇ ॥
इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥
यह चंचल मन अत्यंत बलशाली है, किसी भी यत्न से यह मन जीव को नहीं छोड़ता।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਲਾਇਦਾ ਬਹੁਤੀ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥
दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥
द्वैत-भाव वालों को यह मन कष्ट देता है तथा बहुत यातना देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਗਵਾਇ ॥੪॥੧੮॥੫੧॥
नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥
गुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरु उपदेश द्वारा अहंत्व को गंवा कर नाम-सिमरन में लीन रहते हैं, वे यमों की यातना से बच गए हैं ॥ ४॥ १८ ॥ ५१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਦੇਇ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ॥
किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥
जब परमेश्वर कृपा करता है, तब गुरु की प्राप्ति होती है, और गुरु हरिनाम को दृढ़ करवा देता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥
बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥
गुरु के बिना हरिनाम को किसी ने भी प्राप्त नहीं किया और नामहीन व्यक्तियों ने अपना जन्म व्यर्थ गंवाया है।

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥
अपने मन की बात मान कर जो व्यक्ति कर्म करते हैं, उन्हें परमात्मा की सभा में सजा मिलती है॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਚੁਕਾਇ ॥
मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥
हे मन ! तू द्वैत-भाव को दूर कर दे।

ਅੰਤਰਿ ਤੇਰੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥
क्योंकि तेरे अंदर हरि का वास है, उसकी प्राप्ति के लिए गुरु की सेवा करो, तभी सुखों की प्राप्ति होगी॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥
जब जीव सत्य-स्वरूप परमात्मा से प्रेम करता है तो उसके वचन एवं कर्म सत्य हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਵਾਰਿ ॥
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥
परमात्मा का नाम मन में बस जाए तो अहम् व क्रोधादि समस्त विकार निवृत्त हो जाते हैं।

ਮਨਿ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੨॥
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥२॥
निर्मल मन से प्रभु के नाम का ध्यान करने से ही जीव मोक्ष द्वार को प्राप्त करता है॥ २॥

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜਗੁ ਬਿਨਸਦਾ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जमै आवै जाइ ॥
अहंकार में ही सम्पूर्ण जगत् नष्ट होता है तथा पुनःपुनः आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਜਾਸਨਿ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥
मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव गुरु-उपदेश को नहीं जानते, इसलिए वे अपना सम्मान गंवा कर चले जाएँगे।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਸਚੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੩॥
गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥३॥
गुरु-सेवा द्वारा प्रभु नाम प्राप्त होता है और उस सत्य स्वरूप परमात्मा में लीन होते हैं। ॥ ३॥

ਸਬਦਿ ਮੰਨਿਐ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥
गुरु-उपदेश मान कर अंत:करण में से अभिमान समाप्त किया जा सकता है तथा सर्वश्रेष्ठ परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਸਦਾ ਸਾਚੇ ਕੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥
नित्यप्रति भक्ति करके स्थिर व सत्य-स्वरूप परमात्मा में लीन होना करो।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੧੯॥੫੨॥
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जिस जीव के मन में नाम-पदार्थ बस गया, वह सहजावस्था में समा गया ॥ ४॥ १६॥ ५२ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਜਿਨੀ ਪੁਰਖੀ ਸਤਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸੇ ਦੁਖੀਏ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥
जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥
जिन व्यक्तियों ने सतिगुरु की सेवा नहीं की वे चहुं युगों में दुखी रहते हैं।

ਘਰਿ ਹੋਦਾ ਪੁਰਖੁ ਨ ਪਛਾਣਿਆ ਅਭਿਮਾਨਿ ਮੁਠੇ ਅਹੰਕਾਰਿ ॥
घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥
उन्होंने हृदय रूपी घर में स्थिर परमात्मा को नहीं पहचाना, इसलिए वे अभिमान एवं अहंकार आदि विकारों में ग्रस्त होकर ठगे गए हैं।

ਸਤਗੁਰੂ ਕਿਆ ਫਿਟਕਿਆ ਮੰਗਿ ਥਕੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥
सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु के धिक्कारे हुए हैं, वे संसार में माँग-माँग कर थक गए हैं।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸਭਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੧॥
सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥१॥
उन्होंने उस सत्य स्वरूप परमात्मा का सिमरन नहीं किया, जो समस्त कार्य संवारने वाला है ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਹਰਿ ਵੇਖੁ ਹਦੂਰਿ ॥
मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥
हे मेरे मन ! तू हरि को सदैव प्रत्यक्ष ही देख।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਪਰਹਰੈ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तुम परमात्मा को परिपूर्ण मान लो तो वह तुम्हें आवागमन के चक्र से मुक्त कर देगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਸਲਾਹਨਿ ਸੇ ਸਚੇ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥
जो सत्य नाम का आश्रय लेकर सत्य की स्तुति करते हैं, वे ही सत्य हैं।

ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਸਚੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥
जिसने भक्ति रूपी सत्य कर्म किया है, उसका सत्य परमात्मा (वाहिगुरु) के साथ प्रेम है।

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਵਰਤਦਾ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥
सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥
सत्य स्वरूप परमात्मा ही है, जिसका आदेश चलता है, उसके आदेश को कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਮਨਮੁਖ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇਨੀ ਕੂੜਿ ਮੁਠੇ ਕੂੜਿਆਰ ॥੨॥
मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥
स्वेच्छाचारी जीव परमात्मा के महल तक नहीं पहुँचते, वे असत्य जीव मार्ग में ही असत्य द्वारा लूटे जाते हैं।॥ २॥

ਹਉਮੈ ਕਰਤਾ ਜਗੁ ਮੁਆ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ॥
हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥
अभिमान करता हुआ सम्पूर्ण संसार नष्ट हो गया, गुरु के बिना इस संसार में अज्ञानता का घोर अंधकार बना रहता है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥
माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥
माया में लिप्त प्राणियों ने सुख प्रदान करने वाले परमात्मा को विस्मृत कर दिया है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਤਾ ਉਬਰਹਿ ਸਚੁ ਰਖਹਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥
यदि प्राणी सतिगुरु की सेवा करेगा, तथा सत्य नाम को हृदय में धारण करेगा, तभी इस अज्ञान रूपी अंधकार से उबर सकंगा।

ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥੩॥
किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥
गुरु द्वारा प्रदत्त सत्य उपदेश का मनन करने से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है॥ ३॥

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ਹਉਮੈ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥
सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥
जीव सतिगुरु की सेवा करके अहंकारादि विकारों का त्याग करता हुआ अपने हृदय को पवित्र करे।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰ ॥
आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥
गुरु उपदेश द्वारा परमात्मा की गुणस्तुति का मनन करके अहंकार को त्याग कर विकारों से क्षीण हो जाता है।

ਧੰਧਾ ਧਾਵਤ ਰਹਿ ਗਏ ਲਾਗਾ ਸਾਚਿ ਪਿਆਰੁ ॥
धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥
जब सत्य के साथ प्रीत हो गई तो सांसारिक मोह-माया के धन्धों से निवृति मिल जाती है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੪॥
सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥
जो सत्य में अनुरक्त हैं, उनके मुँह उस सत्य परमात्मा के दरबार में उज्ज्वल होते हैं।॥ ४॥

ਸਤਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਮੰਨਿਓ ਸਬਦਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥
जिन्होंने सतिगुरु में श्रद्धा व्यक्त नहीं की, उनके उपदेश में प्रीत नहीं लगाई।

ਇਸਨਾਨੁ ਦਾਨੁ ਜੇਤਾ ਕਰਹਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਰੁ ॥
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ ī
वे जितना भी तीर्थ-स्नान अथवा दान आदि कर लें, द्वैत-भाव के कारण वे अपमानित होते हैं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਆਪਣੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਲਾਗੈ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥
हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥
जब परमात्मा अपनी कृपा करता है, तभी नाम-सिमरन में प्रीत लगती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੫॥੨੦॥੫੩॥
नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव ! तुम गुरु के अपार प्रेम द्वारा परमात्मा के नाम का सिमरन किया कर ॥५॥२०॥५३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥

ਕਿਸੁ ਹਉ ਸੇਵੀ ਕਿਆ ਜਪੁ ਕਰੀ ਸਤਗੁਰ ਪੂਛਉ ਜਾਇ ॥
किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥
जब मैं अपने गुरु से जाकर पूछता हूँ कि किस की सेवा करूँ और कौन-सा जाप करूँ

ਸਤਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿ ਲਈ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥
तो आदेश मिलता है कि - अपने अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके सतिगुरु का आदेश मान लेना।

ਏਹਾ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥
सतिगुरु का आदेश मानना ही वास्तविक सेवा एवं चाकरी है, इसके द्वारा ही मन में प्रभु का नाम बसता है।

ਨਾਮੈ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇ ॥੧॥
नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥
ईश्वर के नाम सिमरन द्वारा ही सुखों की प्राप्ति होती है तथा सत्य नाम से ही जीव शोभायमान होता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੁ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ॥
मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥
हे मेरे मन ! तुम दिन-रात प्रभु के चिन्तन में जागृत रहो।

ਆਪਣੀ ਖੇਤੀ ਰਖਿ ਲੈ ਕੂੰਜ ਪੜੈਗੀ ਖੇਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥ रहाउ ॥
अपने प्रेमा-भक्ति मूलक जीवन को सम्भालो, वरन् आयु रूपी खेती को मृत्यु रूपी कूज खा जाएगी।॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨ ਕੀਆ ਇਛਾ ਪੂਰੀਆ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥
जिन्होंने ब्रह्म को परिपूर्ण माना है, उनकी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण हुई हैं।

ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਜੀਉ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ॥
भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥
जो व्यक्ति परमात्मा का भय मानकर दिन-रात प्रेमा-भक्ति करते हैं, वे सदैव परमात्मा को प्रत्यक्ष देखते हैं।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਭ੍ਰਮੁ ਗਇਆ ਸਰੀਰਹੁ ਦੂਰਿ ॥
सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥
उनका मन परमात्मा की गुणस्तुति में स्थिर अनुरक्त रहता है, इसी से शरीर में से भ्रम दूर होता है।

ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਹਿਬੁ ਪਾਇਆ ਸਾਚਾ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥੨॥
निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥
यही जीव शुभ-गुण स्वरूप पवित्र खज़ाने वाले परमात्मा को प्राप्त करते हैं।॥ २॥

ਜੋ ਜਾਗੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਸੂਤੇ ਗਏ ਮੁਹਾਇ ॥
जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥
जो जीव मोह-माया से सुचेत रहते हैं, वे विकारों की मृत्यु से बच जाते हैं और जो अज्ञानता की निद्रा में सो जाते हैं, वे शुभ-गुण स्वरूप सम्पति को लुटा गए।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਣਿਓ ਸੁਪਨਾ ਗਇਆ ਵਿਹਾਇ ॥
सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥
वे प्रभु की गुणस्तुति का सार नहीं पहचान पाते और उनका जीवन स्वप्न भाँति व्यतीत हो जाता है।

ਸੁੰਞੇ ਘਰ ਕਾ ਪਾਹੁਣਾ ਜਿਉ ਆਇਆ ਤਿਉ ਜਾਇ ॥
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ॥
ऐसे जीव खाली घर के अतिथि की भाँति भूखे आते हैं और भूखे ही चले जाते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਜਨਮੁ ਬਿਰਥਾ ਗਇਆ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸੀ ਜਾਇ ॥੩॥
मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥३॥
स्वेच्छाचारी जीव का जन्म व्यर्थ चला जाता है, ऐसे में वह आगे परलोक में जाकर क्या मुंह दिखाएगा ? ॥ ३॥

ਸਭ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਹੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥
सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥
वह परमात्मा ही सर्वस्व है, यह बात अहंकारी जीव द्वारा नहीं कही जा सकती।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਗਵਾਇ ॥
गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥
गुरु का उपदेश पहचान कर ही कष्टदायक अहंकार को हृदय में से निकाला जा सकता है।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥
सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥
अपना कर्तव्य जान कर जो सतिगुरु की सेवा करता है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ਹਹਿ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੪॥੨੧॥੫੪॥
नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥४॥२१॥५४॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि सत्य स्वरूप परमात्मा के द्वार पर वे जीव ही सत्य धारण करते हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥४॥२१॥५४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਜੇ ਵੇਲਾ ਵਖਤੁ ਵੀਚਾਰੀਐ ਤਾ ਕਿਤੁ ਵੇਲਾ ਭਗਤਿ ਹੋਇ ॥
जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥
परमात्मा का चिन्तन करने हेतु यदि समय निश्चित करने का विचार करते रहें तो किस समय भक्ति हो सकती है, अर्थात्- कभी भी भक्ति नहीं हो सकती।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥
दिन-रात परमात्मा के नाम में विलीन रहने वाले जीव की शोभा होती है।

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਵਿਸਰੈ ਭਗਤਿ ਕਿਨੇਹੀ ਹੋਇ ॥
इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥
उह क्याहदी भगती होती, जे इक खिन भर भी पिआरा परमात्मा विॅसर जाऐ? यदि क्षण भर के लिए भी प्रियतम प्रभु विस्मृत हो जाए तो वह कैसी भक्ति हुई।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਚ ਸਿਉ ਸਾਸੁ ਨ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ॥੧॥
मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥
सत्य सिमरन द्वारा ही मन-तन शीतल रहता है और कोई भी श्वास निष्फल नहीं जाता॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! तुम भी प्रभु-नाम का सिमरन करो।

ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਤਾ ਥੀਐ ਜਾ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥
सत्य भक्ति तभी होती है, जब हरि-प्रभु मन में आकर बस जाए॥ १॥ रहाउ॥

ਸਹਜੇ ਖੇਤੀ ਰਾਹੀਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਬੀਜੁ ਪਾਇ ॥
सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥
सहजावस्था में स्थिर होकर हृदय-रूपी खेत में सत्य नाम का बीज डाल कर खेती बोई जाए

ਖੇਤੀ ਜੰਮੀ ਅਗਲੀ ਮਨੂਆ ਰਜਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
खेती जमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥
तो शुभगुण रूपी खेती बहुत पैदा होती है, अर्थात्- फसल देख कर मन स्वाभाविक ही तृप्त हो जाता है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਤਿਖ ਜਾਇ ॥
गुर का सबदु अम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥
गुरु का उपदेश अमृत रूप है, जिसका पान करने से माया की तृष्णा बुझ जाती है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਾਚਾ ਸਚਿ ਰਤਾ ਸਚੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੨॥
इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥
जिस गुरुमुख जीव का यह सत्य मन सत्य नाम में लीन है, वह सत्य-स्वरूप परमात्मा में समा गया है ॥२॥

ਆਖਣੁ ਵੇਖਣੁ ਬੋਲਣਾ ਸਬਦੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥
उनका स्वयं कुछ बोलना, कहना व देखना आदि शब्द गुरु-वाणी में ही समाया होता है।

ਬਾਣੀ ਵਜੀ ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਸੁਣਾਇ ॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥
उनके वचन चार-युगों में विख्यात हो जाते हैं, क्योंकि वे पूर्ण रूप से सत्य पर आधारित होते हैं।

ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਰਹਿ ਗਇਆ ਸਚੈ ਲਇਆ ਮਿਲਾਇ ॥
हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥
जीव का अहंकार व अहंभाव समाप्त हो जाता है और सत्य प्रभु उन्हें स्वयं में मिला लेता है।

ਤਿਨ ਕਉ ਮਹਲੁ ਹਦੂਰਿ ਹੈ ਜੋ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥
तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥
जो जीव सत्य-स्वरूप में लीन हैं, उन्हें परमात्मा का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई देता है ॥ ३॥

ਨਦਰੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥
नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥
परमात्मा की कृपा-दृष्टि से ही परमात्मा का नाम-सिमरन किया जा सकता है, बिना सद्कर्मों के नाम-सिमरन को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਲਹੈ ਸਤਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥
पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥
जिस जीव को सौभाग्य से सत्संगति मिलती है, उसे सतिगुरु आकर मिलते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਦੁਖੁ ਬਿਖਿਆ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥
प्रतिदिन नाम में अनुरक्त होने पर हृदय में से विषय-विकारों का दुख दूर हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੜਾ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੨੨॥੫੫॥
नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेश द्वारा ही जीव का परमात्मा से मिलन होता है तथा नाम-सिमरन में लीन रहता है ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५५ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਆਪਣਾ ਭਉ ਤਿਨ ਪਾਇਓਨੁ ਜਿਨ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥
आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥
जिन्होंने गुरु के उपदेश का मनन किया है, परमेश्वर ने उनके मन में अपना भय डाला है।

ਸਤਸੰਗਤੀ ਸਦਾ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥
सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥
वे व्यक्ति प्रायः सत्संगति में मिले रहते हैं तथा सत्य परमात्मा के गुणों को ग्रहण करते हैं।

ਦੁਬਿਧਾ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਈਅਨੁ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥
परमात्मा ने उनके हृदय में से दुविधा की मैल को दूर कर दिया है तथा ऐसे व्यक्ति परमात्मा के नाम को हृदय में धारण करके रखते हैं।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਮਨਿ ਸਚੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥
गुरु का सत्य उपदेश उनके मन में बस जाता है और उस सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ उनका प्रेम हो जाता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਭਰ ਨਾਲਿ ॥
मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥
हे मेरे मन ! यह जीव अहंकार रूपी मैल से भरा हुआ है।

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਸੋਹਣਾ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥ रहाउ ॥

परमात्मा इस मैल से रहित है और वह पवित्र व सुंदर है, परमात्मा पवित्र जीवों को ही गुरु-उपदेश से जोड़ कर संवारने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
चै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥
गुरु के सत्य उपदेश से जिस जीव का मन मोहित हो गया, उसे प्रभु ने स्वयं ही अपने स्वरूप में मिला लिया।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥
अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥
रात-दिन नाम सिमरन में लीन रहने से उनकी ज्योति प्रभु की ज्योति में समा जाती है।

ਜੋਤੀ ਹੂ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਦਾ ਬਿਨੁ ਸਤਗੁਰ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥
अपने अंतर्मन के प्रकाश द्वारा ही परमात्मा की पहचान होती है, किन्तु सतिगुरु के बिना ऐसा ज्ञान प्राप्त होना असंभव है।

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸਤਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਤਿਨ ਆਇ ॥੨॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥
जिनके भाग्य में पूर्व काल से ही लिखा है, वे गुरु को आकर मिल गए ॥ २॥

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਡੁਮਣੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥
विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥
नाम-साधना के बिना समस्त जीव द्विचितापन हो रहे हैं और द्वैत-भाव में नष्ट हो रहे हैं।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਦੀ ਦੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥
उस परमात्मा के बिना एक क्षण भी सुख के साथ नहीं बिताया जा सकता दुख में ही रात व्यतीत होती है।

ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਾ ਅੰਧੁਲਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥

भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥

अहं में भूला हुआ अज्ञानी जीव आवागमन के चक्र में भटकता है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥

नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥३॥

परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करे, तो अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੁਣਦਾ ਵੇਖਦਾ ਕਿਉ ਮੁਕਰਿ ਪਇਆ ਜਾਇ ॥
सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥
परमात्मा हमारा सब-कुछ कहा व किया, सुनता व देखता है, फिर उसके समक्ष कैसे इन्कार किया जा सकता है।

ਪਾਪੋ ਪਾਪੁ ਕਮਾਵਦੇ ਪਾਪੇ ਪਚਹਿ ਪਚਾਇ ॥
पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव असंख्य पाप कमाते हैं, पापों में गलते-सड़ते रहते हैं।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਈ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥
उनको वह परमात्मा दृश्यमान नहीं है,क्योकि स्वेच्छाचारी जीव ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता।

ਜਿਸੁ ਵੇਖਾਲੇ ਸੋਈ ਵੇਖੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇ ॥੪॥੨੩॥੫੬॥
जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥४॥२३॥५६॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जिस गुरुमुख जीव को परमात्मा शुभ-मार्ग दिखाता है, वही उस मार्ग द्वारा परमात्मा को देख पाता है ॥४॥२३॥५६॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
स्रीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਰੋਗੁ ਨ ਤੁਟਈ ਹਉਮੈ ਪੀੜ ਨ ਜਾਇ ॥
बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥
गुरु के बिना नाम की प्राप्ति संभव नहीं, नाम-सिमरन के बिना अहंकार रूपी रोग का निवारण नहीं होता और इस रोग के निवारण के बिना जीव आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं होता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਾਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥
गुरु की कृपा द्वारा मन में नाम बसता है और वह जीव नाम में समाया रहता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥੧॥
गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥१॥
गुरु के उपदेश द्वारा हरि परमात्मा को पाया जा सकता है, इसके बिना मनमुख व्यक्ति भ्रम में ही भटकते हैं ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੋਇ ॥
मन रे निज घरि वासा होइ ॥
हे मेरे मन ! नाम-सिमरन के कारण ही परमात्मा के स्वरूप में निवास होता है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਿ ਤੂ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइ ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए तुम राम-नाम की स्तुति करो, तभी तुम्हारा आवागमन छूट सकेगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਵਰਤਦਾ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥
हरि-परमेश्वर दाता एक ही सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, इसके अतिरिक्त दूसरा अन्य कोई नहीं है।

ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥
गुरु-उपदेश द्वारा परमात्मा का चिन्तन मन में बस जाए तो सुख सरलता से प्राप्त हो जाता है।

ਸਭ ਨਦਰੀ ਅੰਦਰਿ ਵੇਖਦਾ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੨॥
सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥२॥
वह परमात्मा अपनी दृष्टि में सभी को देखता है, जिसे वह चाहता उसी को सुख प्रदान करता है॥ २॥

ਹਉਮੈ ਸਭਾ ਗਣਤ ਹੈ ਗਣਤੈ ਨਉ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥
हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥
समस्त प्राणी अहंकार में लिप्त होकर पाप-पुण्य, धर्म-कर्म अथवा शुभ कर्मों आदि की गणना करते हैं, किन्तु गणना करने वाले को कोई सुख नहीं मिलता।

ਬਿਖੁ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਬਿਖੁ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥
बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥
ऐसे जीव विषय-विकारों की कमाई ही करते हैं और अंततः इस विष में ही समा जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਠਉਰੁ ਨ ਪਾਇਨੀ ਜਮਪੁਰਿ ਦੂਖ ਸਹਾਹਿ ॥੩॥
बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥३॥
परमात्मा के नाम के बिना विशेष स्थान प्राप्त नहीं कर पाते तथा परलोक में जाकर दुख सहारते हैं।॥ ३॥

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਤਿਸੈ ਦਾ ਆਧਾਰੁ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥
जीव को शरीर आदि सब कुछ उस परमात्मा का दिया हुआ है, सभी को उस परमेश्वर का ही आसरा है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
गुरु की कृपा द्वारा उस परमात्मा को जाने, तभी मोक्ष द्वार की प्राप्ति होती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂੰ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੪॥੨੪॥੫੭॥
नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥४॥२४॥५७॥
नानक देव जी कहते हैं कि हे जीव ! उस परमात्मा का स्तुति गान करो, जिसके गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता ॥४॥२४॥५७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਤਿਨਾ ਅਨੰਦੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੈ ਜਿਨਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥
उन जीवों को सुख आनंद की प्राप्ति होती है, जिनको सत्य नाम का आश्रय प्राप्त है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਦੂਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥
गुरु का उपदेश ग्रहण करने वालों ने सत्य स्वरूप परमात्मा को पाया है, जो समस्त दुखों की निवृत्ति करता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥
प्रायः सत्य स्वरूप परमात्मा के गुणों का गायन करें तथा सत्य नाम के साथ प्रेम करें।

ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਆਪਣੀ ਦਿਤੋਨੁ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰੁ ॥੧॥

किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥१॥

परमात्मा ने अपनी कृपा-दृष्टि द्वारा उन्हें भक्ति का भण्डार प्रदान किया है।॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥

मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥

हे मेरे मन ! उस परमात्मा के गुणों का गायन करते रहो, तुम्हें सदा आनंद बना रहेगा।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥

सतिगुरु के उपदेश द्वारा हरि-नाम को प्राप्त करें, तो जीव हरि के संग ही समाया रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਮਨੁ ਲਾਲੁ ਥੀਆ ਰਤਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥

सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥

सत्य भक्ति करने वाले जीव का मन गहन रंग में रंग जाता है तथा स्वतः ही परमात्मा में लीन रहता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥

गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥

गुरु-उपदेश द्वारा गुरुमुख जीवों का मन परमेश्वर में ऐसा मोहित हो गया है कि कुछ कथन ही नहीं किया जा सकता।

ਜਿਹਵਾ ਰਤੀ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਰਸਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥

जिहवा रती सबदि सचै अम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ॥

ऐसे जीवों की जिव्हा सत्य उपदेश में रत है, नाम-अमृत का पान करती है और प्रेम सहित गुणों का गायन करती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਹੁ ਰੰਗੁ ਪਾਈਐ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੨॥

गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥

इस परमात्मा के आनंद को गुरु के मुख से उच्चारण होने वाले उपदेश द्वारा वही जीव पाते हैं, जिन पर उस परमात्मा की कृपा होती है।॥ २॥

ਸੰਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਸੁਤਿਆ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥
संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ॥
यह संसार संशय रूप है, इसमें जीव आयु रूपी रात सोकर (अज्ञानता में) व्यतीत करता है।

ਇਕਿ ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਕਢਿ ਲਇਅਨੁ ਆਪੇ ਲਇਓਨੁ ਮਿਲਾਇ ॥
इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥
कुछेक को वह अपनी इच्छानुसार इस संसार-सागर में से निकाल लेता है, और अपने साथ मिला लेता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇ ॥
आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ॥
उनके मन में परमात्मा स्वयं ही विद्यमान होता है, जिन्होंने माया का मोह त्याग दिया है।

ਆਪਿ ਵਡਾਈ ਦਿਤੀਅਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥੩॥
आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥३॥
परमात्मा ने स्वयं ही उन्हें सम्मान प्रदान किया है, जिन्हें वह गुरु द्वारा समझा देता है॥ ३॥

ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਭੁਲਿਆ ਲਏ ਸਮਝਾਇ ॥
सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥
समस्त जीवों का दाता परमेश्वर एक है, जो विस्मृत प्राणियों को समझा लेता है।

ਇਕਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ਖੁਆਇਅਨੁ ਦੂਜੈ ਛਡਿਅਨੁ ਲਾਇ ॥
इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥
किन्हीं जीवों को उसने स्वयं से विस्मृत आप ही किया हुआ है, उन्हें द्वैत-भाव में लगाया हुआ है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥
गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ॥
गुरु के उपदेश द्वारा परमात्मा प्राप्त होता है तथा आत्मा को परमात्मा से मिलाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੨੫॥੫੮॥
अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ॥४॥२५॥५८॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि नित्य-प्रति हरि-नाम के चिन्तन में लीन होकर नाम में ही अभेद होता ॥४॥२५॥५८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਗੁਣਵੰਤੀ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥
गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥
गुणों से विभूषित जीवों ने तृष्णादि विकारों का त्याग करके सत्य स्वरूप को प्राप्त किया है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਰੰਗਿਆ ਰਸਨਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥
गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥
उसका हृदय गुरु के उपदेश में रंग गया है और जिव्हा परमात्मा के भक्ति प्रेम में रंग गई है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਕਰਿ ਵੇਖਹੁ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥
सतिगुरु के बिना परमात्मा को किसी ने भी नहीं पाया, बेशक अपने हृदय में विचार करके देख लो।

ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਜਿਚਰੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥
मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥१॥
जब तक जीव गुरु के उपदेश से प्रीति नहीं करता, अर्थात् अपना मन गुरु के उपदेश में नहीं टिकाता, ऐसे मनमुख के हृदय से तब तक विषय-विकारों की मैल नष्ट नहीं होती ॥ १ ॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਚਲੁ ॥
मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥
हे मेरे मन ! तुम सतगुरु की इच्छानुसार चलो

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਹਿ ਤਾ ਸੁਖ ਲਹਹਿ ਮਹਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निज घरि वसहि अम्रितु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥१॥ रहाउ ॥
तभी तुम निज स्वरूप में रह कर नामामृत पान कर सकोगे तथा सुख धाम को प्राप्त करोगे॥ १॥ रहाउ॥

ਅਉਗੁਣਵੰਤੀ ਗੁਣੁ ਕੋ ਨਹੀ ਬਹਣਿ ਨ ਮਿਲੈ ਹਦੂਰਿ ॥
अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥
जिस जीव में अवगुण ही विद्यमान हैं, कोई भी गुण नहीं है, उनको प्रभु के सम्मुख बैठने का अवसर प्राप्त नहीं होता।

ਮਨਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਈ ਅਵਗਣਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਰਿ ॥
मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥
ऐसे स्वेच्छाचारी जीव गुरु के उपदेश को नहीं जानते तथा अवगुणों के कारण वह परमात्मा से दूर रहते हैं।

ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਚਿ ਰਤੇ ਭਰਪੂਰਿ ॥
जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥
जिन्होंने सत्य-नाम को पहचाना है, वे उस सत्य-स्वरूप में पूर्ण-रूपेण अनुरक्त हैं।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਆਪਿ ਹਦੂਰਿ ॥੨॥
गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥२॥
उनका हृदय गुरु के उपदेश में विंधा गया है तथा परमात्मा उन्हें स्वयं प्रत्यक्ष रूप में मिला है॥ २॥

ਆਪੇ ਰੰਗਣਿ ਰੰਗਿਓਨੁ ਸਬਦੇ ਲਇਓਨੁ ਮਿਲਾਇ ॥
आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥
प्रभु ने स्वयं ही जीवों को अपने रंग में रंगा है तथा गुरु-उपदेश द्वारा अपने साथ मिला लिया है,

ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਜੋ ਸਚਿ ਰਤੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥
जो लिवलीन होकर सत्य परमात्मा में जुड़े हैं, उनका नाम रूपी सत्य रंग नहीं उतरता।

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਵਿ ਥਕੇ ਮਨਮੁਖ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव सम्पूर्ण सृष्टि में भटकता हुआ थक जाए, किन्तु उन्हें कहीं से भी परमात्मा का रहस्य पता नहीं चल सकता।

ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥३॥
जिस जीव को सत्य गुरु मिलाता है, वही मिल पाता है, वह सत्य ब्रह्म में अभेद हो जाता है ॥ ३॥

ਮਿਤ੍ਰ ਘਣੇਰੇ ਕਰਿ ਥਕੀ ਮੇਰਾ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ਕੋਇ ॥
मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥
जीव रूपी स्त्री कहती है कि मैं संसार में अनेकानेक व्यक्तियों को मित्र बना-बना कर थक गई हूँ कि कोई तो मेरा दुख निवृत्त करे।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥
अंततः प्रियतम प्रभु से मिल कर दुख निवृत्त होता है, जिसका मिलन गुरु उपदेश द्वारा ही संभव है।

ਸਚੁ ਖਟਣਾ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ਹੈ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥
सत्य श्रद्धा रूपी पूँजी द्वारा जिसने सत्य-नाम रूपी पदार्थ को कमाया है, उस सत्य की सत्य शोभा होती है।

ਸਚਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ॥੪॥੨੬॥੫੯॥
सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥४॥२६॥५९॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरुमुख बनकर सत्य स्वरूप में समाए हैं, फिर वे कभी भी सत्य-स्वरूप से बिछुड़ते नहीं हैं। ॥४॥२६॥५९॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਦੇਖੈ ਆਪਿ ਉਪਾਇ ॥
आपे कारणु करता करे स्रिसटि देखै आपि उपाइ ॥
परमात्मा स्वयं ही कारण एवं स्वयं ही कर्ता है, जो सृष्टि को उत्पन्न करता है और उसकी परवरिश करता है।

ਸਭ ਏਕੋ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਇ ॥
सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥
समस्त प्राणियों में वह एक ही विद्यमान है, पुनः वह अलक्ष्य भी है जो समझा नहीं जा सकता।

ਆਪੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥
आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥
स्वयं परमात्मा दयालु भी है जो अपनी कृपा-दृष्टि से अपना स्वरूप समझा भी देता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਸਦ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥
गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥१॥
गुरु के उपदेश द्वारा जिन जीवों के मन में वह परमात्मा व्याप्त रहता है, वे उस सत्य स्वरूप में सदा लीन रहते हैं।॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਮੰਨਿ ਲੈ ਰਜਾਇ ॥
मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥
हे मेरे मन ! तुम गुरु की आज्ञा मान कर चलो।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਭੁ ਥੀਐ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥

ऐसा करने से तन-मन शांत हो जाता है और मन में नाम आकर बस जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਕਾਰਣੁ ਧਾਰਿਆ ਸੋਈ ਸਾਰ॥

जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥

जिस प्रभु ने इस सृष्टि को मूल रूप से रच कर सम्भाल रखा है, वही इसका ध्यान रखता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥

गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥

यदि गुरु के उपदेश को पहचानें, तभी वह परमेश्वर स्वयं कृपा-दृष्टि करता है

ਸੇ ਜਨ ਸਬਦੇ ਸੋਹਣੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥

से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥

वह मानव जीवं गुरु उपेदश द्वारा ही उस सत्य परमात्मा के द्वार पर शोभनीय होते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੨॥

गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥

गुरमुख जीव उस सत्य उपदेश में लीन रहते हैं, उन जीवों को कर्ता पुरुष (परमात्मा) ने अपने श्री चरणों से जोड़ा है ॥२॥

ਗੁਰਮਤੀ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥

गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥

हे जीव गुरु का उपदेश ग्रहण कर के उस सत्य स्वरूप परमात्मा का गुणगान करो, जिसके गुणों की कोई सीमा नहीं है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਵਸੈ ਹੁਕਮੇ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥

घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥

सर्वव्यापक परमेश्वर अपने ही आदेश से प्रत्येक हृदय में विद्यमान होता तथा अपने आदेश द्वारा ही जीवों की पालना का विचार करता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਖੋਇ ॥

गुर सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥

हे मानव ! गुरु उपदेश द्वारा अपने हृदय में से अहंकार को त्याग कर उस सर्व-सम्पन्न परमात्मा की स्तुति करो।

ਸਾ ਧਨ ਨਾਵੈ ਬਾਹਰੀ ਅਵਗਣਵੰਤੀ ਰੋਇ ॥੩॥
सा धन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥३॥
जो नाम-विहीन जीव रूपी स्त्री है। वह अवगुणों वाली रोती रहती है॥ ३॥

ਸਚੁ ਸਲਾਹੀ ਸਚਿ ਲਗਾ ਸਚੈ ਨਾਇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਹੋਇ ॥
सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥
मैं सत्य स्वरूप परमात्मा का चिन्तन करूँ, सत्य में लीन रहूँ तथा सत्य-नाम द्वारा तृप्त रहूँ।

ਗੁਣ ਵੀਚਾਰੀ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹਾ ਅਵਗੁਣ ਕਢਾ ਧੋਇ ॥
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥
शुभ गुणों का विचार करूं, शुभ गुणों को ही एकत्र करूँ, अवगुणों की मैल को नाम-जल से धोकर बाहर निकाल दूँ।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ਫਿਰਿ ਵੇਛੋੜਾ ਨ ਹੋਇ ॥
आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥
तब परमेश्वर स्वयं ही मिला लेता है और पुनः वियोग नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਜਿਦੂ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੪॥੨੭॥੬੦॥
नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥४॥२७॥६०॥
नानक देव जी कथन करते हैं कि अपने पूर्ण गुरु की श्लाघा करूं, जिनके द्वारा वह प्रभु प्राप्त होता है ॥४॥२७॥६०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਕਾਮ ਗਹੇਲੀਏ ਕਿਆ ਚਲਹਿ ਬਾਹ ਲੁਡਾਇ ॥
सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥
हे कामना में ग्रस्त जीव-रूपी स्त्री ! सुनो, तुम बांहे उलार-उलार कर क्यों चलती हो ?

ਆਪਣਾ ਪਿਰੁ ਨ ਪਛਾਣਹੀ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਹਿ ਜਾਇ ॥
आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥
इस लोक में तो तुम अपने पति-परमात्मा को पहचानती नहीं, आगे परलोक में जाकर क्या मुंह दिखाओगी ?

ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥

जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ॥

जिस ज्ञानवान सखी ने अपने पति-परमात्मा को पहचान लिया है, गुरु जी कहते हैं कि मैं उनके पांव लगती हूँ।

ਤਿਨ ਹੀ ਜੈਸੀ ਥੀ ਰਹਾ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥

तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥१॥

मैं उनके सत्संग के मिलन द्वारा उनके जैसी ही हो जाऊँ॥ १॥

ਮੁੰਧੇ ਕੂੜਿ ਮੁਠੀ ਕੂੜਿਆਰਿ ॥
मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥
जीव रूपी मुग्ध स्त्री! तू झूठ द्वारा तगी हुई झूठी बन रही है।

ਪਿਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਸੋਹਣਾ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥१॥ रहाउ ॥
सत्य व सुन्दर पति-परमात्मा गुरु के उपदेश द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਕੰਤੁ ਨ ਪਛਾਣਈ ਤਿਨ ਕਿਉ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥
मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव रूपी स्त्रियों पति-परमेश्वर को नहीं पहचानती, इसलिए उनकी जीवन रूपी रात कैसे व्यतीत हो ?

ਗਰਬਿ ਅਟੀਆ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਲਹਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥
अहंकार में पूर्ण रूप से भरी हुई वह स्त्री, तृष्णाग्नि में जलती है तथा द्वैत-भाव में दुख पाती है।

ਸਬਦਿ ਰਤੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਤਿਨ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥
सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥
जो सुहागवती स्त्रियाँ गुरु-उपदेश में रत हैं, उनके हृदय में से अहंत्व नष्ट हो जाता है।

ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵਹਿ ਆਪਣਾ ਤਿਨਾ ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥੨॥
सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥२॥
वह अपने पति-परमेश्वर के आनंद को सदैव भोगती हैं, इसलिए उनका जीवन पूर्ण सुख में व्यतीत होता है ॥२॥

ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਪਿਰ ਮੁਤੀਆ ਪਿਰਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥
जो स्त्रियाँ (जीव) ज्ञान-रहित हैं, उनको पति-परमात्मा द्वारा परित्यक्त किया हुआ है और वह पति-परमात्मा का प्रेम ग्रहण नहीं कर पाती।

ਅਗਿਆਨ ਮਤੀ ਅੰਧੇਰੁ ਹੈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਦੇਖੇ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥
उनकी बुद्धि में अज्ञानता का अंधकार है, परमात्मा को देखे बिना भौतिक पदार्थों की भूख नहीं जाती।

ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਮੈ ਪਿਰੁ ਦੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ॥
आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥
हे सत्संगिनों ! सत्संग में आओ और मिल कर विनती करो कि मुझे भी परमात्मा से मिला दो।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥३॥
जिस जीव रूपी स्त्री को सौभाग्य से सतिगुरु की प्राप्ति होती है, उसने ही पति-परमात्मा को प्राप्त किंया है और वह सत्य स्वरूप में समा जाती है ॥ २॥

ਸੇ ਸਹੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥
से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥
वे सखियाँ सुहागिन होती हैं, जिन पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है।

ਖਸਮੁ ਪਛਾਣਹਿ ਆਪਣਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਆਗੈ ਦੇਇ ॥
खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥
वह अपना तन-मन अर्पण करके अपने पति-परमात्मा को पहचानती हैं।

ਘਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਆਪਣਾ ਹਉਮੈ ਦੂਰਿ ਕਰੇਇ ॥
घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥
गुरु कृपा द्वारा अहंकार दूर करके अपने हृदय रूपी घर में पति-परमात्मा पा लेती हैं।

ਨਾਨਕ ਸੋਭਾਵੰਤੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰੇਇ ॥੪॥੨੮॥੬੧॥
नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥४॥२८॥६१॥
गुरु जी कथन करते हैं कि वह यशस्वी सुहागिनें होती हैं जो प्रतिदिन पति-परमात्मा का चिन्तन करती है ॥४॥२८॥६१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਇਕਿ ਪਿਰੁ ਰਾਵਹਿ ਆਪਣਾ ਹਉ ਕੈ ਦਰਿ ਪੂਛਉ ਜਾਇ ॥
इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥
कई जीव रूपी स्त्रियाँ अपने पति-परमेश्वर के साथ सुख मान रही हैं परन्तु मैं किसके द्वार पर जाकर प्रभु-मिलन की युक्ति पूछू ?

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀ ਭਾਉ ਕਰਿ ਮੈ ਪਿਰੁ ਦੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ॥
सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥
गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्राणी ! तू श्रद्धापूर्वक सच्चे हृदय से अपने सतिगुरु की सेवा कर और सतिगुरु तुझ पर अपार कृपा करके तेरा परमेश्वर-पति से मिलन करवा देगा।

ਸਭੁ ਉਪਾਏ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਕਿਸੁ ਨੇੜੈ ਕਿਸੁ ਦੂਰਿ ॥
सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥
अकाल पुरुष समस्त जीवों का रक्षक है और उसके लिए कोई निकट एवं दूर नहीं।

ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਸੰਗੇ ਜਾਣਿਆ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ॥੧॥
जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥
जिस प्राणी ने अपने पति-परमेश्वर को पा लिया है, वह उसकी संगति का सदैव आनंद प्राप्त करता है ॥१॥

ਮੁੰਧੇ ਤੂ ਚਲੁ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ॥
मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥
हे ज्ञानहीन प्राणी ! तू अपने गुरु की आज्ञानुसार कर्म करता रह, गुरु के उपदेशानुसार चलने से हे प्राणी !

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
तुझे परमात्मा का रात-दिन सुख अनुभव होगा और तू प्रभु के हृदय में समा जाएगा ॥१॥रहाउ॥

ਸਬਦਿ ਰਤੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥
सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥
जो जीवात्माएँ गुरु-शब्दों में लीन हैं, वही सुहागिनें हैं। वे सत्यनाम से श्रृंगार करती हैं।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਨਿ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥
हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥
वे गुरु के साथ प्रेम में रहने से अपने अन्तर में हरि-रूपी वर प्राप्त कर लेती हैं।

ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਵੈ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥
सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥
उनकी सेज अति सुन्दर है, जिस पर परमात्मा रूपी पति से उनका मिलन होता है और उनके पास भक्ति के अमूल्य भण्डार विद्यमान होते हैं।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਜਿ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥੨॥
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥
वह प्रीतम प्रभु जो संसार के समस्त जीवों का आश्रय है, वह उनके हृदय में निवास करता है॥ २॥

ਪਿਰੁ ਸਾਲਾਹਨਿ ਆਪਣਾ ਤਿਨ ਕੈ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥
गुरु जी कथन करते हैं कि मैं उन जीवात्माओं (प्रभु-भक्तों) पर बलिहारी जाता हूँ, जो अपने स्वामी की प्रशंसा करती हैं।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਸਿਰੁ ਦੇਈ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਾ ਪਾਇ ॥
मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥
मैं उन प्रभु-भक्तों पर अपना तन-मन समर्पित करता हूँ और अपना शीश निवाता (झुकता) हूँ।

ਜਿਨੀ ਇਕੁ ਪਛਾਣਿਆ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਚੁਕਾਇ ॥
जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥
जिन्होंने विषय-विकार एवं द्वैत भावना त्यागकर एक पारब्रह्म को पहचान कर अपना लिया है, वह द्वैतवाद के प्रेम को अस्वीकृत कर देते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥੨੯॥੬੨॥
गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२९॥६२॥
गुरु जी वचन करते हैं कि हे नानक ! गुरु-उपदेश से ही पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होता है और गुरु की कृपा से वह ईश्वर में लीन हो जाता है।॥३॥२९॥६२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥

सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਹਰਿ ਜੀ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤੂ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰੈ ਚੀਰੈ ॥
हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥
हे पूज्य-परमेश्वर ! तू ही सत्य है और सब कुछ तेरे ही वश में है।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਤਰਸਦੇ ਫਿਰੇ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਪੀਰੈ ॥
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥
चौरासी लाख योनियों में प्राणी गुरु-मिलन के बिना सर्वत्र भटकता रहता है और प्रभु प्राप्ति के लिए डगमगाता फिरता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਬਖਸੇ ਬਖਸਿ ਲਏ ਸੂਖ ਸਦਾ ਸਰੀਰੈ ॥
हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥
परमात्मा की कृपा-दृष्टि हो तो क्षमा करने पर मनुष्य देह दुखों से निवृत्त होकर सदा सुख सागर में रहती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੇਵ ਕਰੀ ਸਚੁ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੈ ॥੧॥
गुर परसादी सेव करी सचु गहिर ग्मभीरै ॥१॥
गुरु की दया-दृष्टि से ही प्राणी सच्चे, गहर, गंभीर परम सत्य को प्राप्त करता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥
इसलिए हे मेरे मन ! भगवान के नाम में मग्न होने से सुख की उपलब्धि होती है।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु उपदेशानुसार परमात्मा के नाम का यश गान करता जा, क्योकि इसके अतिरिक्त और कोई अन्य उपाय नहीं ॥ १॥ रहाउ॥

ਧਰਮ ਰਾਇ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਬਹਿ ਸਚਾ ਧਰਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥
धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥
धर्मराज को सच्चे न्याय का उपदेश उसी परमात्मा ने प्रदान किया था केि सबके साथ बैठ कर एक सच्चा-न्याय कर।
ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਸਟੁ ਆਤਮਾ ਓਹੁ ਤੇਰੀ ਸਰਕਾਰ ॥

दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥
उस महान् परमात्मा ने धर्मराज को अधिकार प्रदान किया था कि दुष्ट आत्माएँ जो लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों में ग्रस्त हैं वह तेरे नरकों की प्रजा है।

ਅਧਿਆਤਮੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਤਾਸੁ ਮਨਿ ਜਪਹਿ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥
अधिआतमी हरि गुण तासु मनि जपहि एकु मुरारि ॥
आध्यात्मिक प्राणी जो गुणों के भण्डार से ओतप्रोत हैं तथा परमेश्वर का सिमरन करते हैं।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਰੈ ਧੰਨੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥
तिन की सेवा धरम राइ करै धंनु सवारणहारु ॥२॥
प्रभु-भक्तों की धर्मराज स्वयं उनकी लगन से सेवा करता है, वे प्राणी धन्य हैं और उनका सृजनहार प्रभु धन्य-धन्य है ॥२॥

ਮਨ ਕੇ ਬਿਕਾਰ ਮਨਹਿ ਤਜੈ ਮਨਿ ਚੂਕੈ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥
जिन प्राणियों ने मन के विकार मन से त्याग दिए हैं, वे मोह-अभिमान इत्यादि से मुक्त होकर निर्मल हो जाते हैं।

ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੁ ॥
आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥
वे प्राणी आत्मा में ही परमात्मा को पहचान लेते हैं और सहज ही हरि नाम में लीन हो जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਫਿਰੈ ਦਿਵਾਨੁ ॥
बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥
किन्तु सतिगुरु के बिना प्राणी को मोक्ष प्राप्त नहीं होता, वह मनमुखी प्राणी दीवानों की तरह दर-दर भटकता रहता है।

ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨੈ ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਕਰੇ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੁ ॥੩॥
सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥३॥
वह प्राणी उस प्रभु के शब्द का चिंतन नहीं करता अपितु व्यर्थ ही वाद-विवाद करता रहता है और पापों में ग्रस्त होने के कारण उस जीव की मुक्ति नहीं होती।॥३॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਹੈ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥
पारब्रह्म स्वयं ही सर्वस्व है और इसके अलावा अन्य कोई नहीं।

ਜਿਉ ਬੋਲਾਏ ਤਿਉ ਬੋਲੀਐ ਜਾ ਆਪਿ ਬੁਲਾਏ ਸੋਇ ॥
जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥
पारब्रह्म जैसे प्राणी को स्वयं बुलाता है, प्राणी वैसे ही बोलता है और प्राणी उसके बुलाने परही बोलते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥
गुरु की वाणी स्वयं ब्रह्म है और गुरु के शब्द द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੪॥੩੦॥੬੩॥
नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥४॥३०॥६३॥
हे नानक ! तू उस अकाल पुरुष का नाम सिमरन कर जिसकी आराधना से तुझे शांति एवं सुख उपलब्ध होगा ॥४॥३०॥६३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਜਗਿ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥
समूचा जगत् मोह-माया में लिप्त होने के कारण अहंकार की मैल से बहुत दुखी है।

ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਧੋਤੀ ਕਿਵੈ ਨ ਉਤਰੈ ਜੇ ਸਉ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥
मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥
सांसारिक ममत्व के कारण ही अहंकार की मैल लगती है। यह अहंकार की मैल किसी भी विधि द्वारा निवृत्त नहीं होती, चाहे प्राणी सैंकड़ों तीर्थों का भी स्नान कर ले।

ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਦੂਣੀ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਆਇ ॥
बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥
अनेकों कर्मकाण्डों द्वारा भी यह मैल दुगुणी हो जाती है और प्राणी के साथ कर्मों के फलस्वरूप लगी ही रहती है।

ਪੜਿਐ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਪੂਛਹੁ ਗਿਆਨੀਆ ਜਾਇ ॥੧॥
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥
धर्म ग्रंथों के अध्ययन द्वारा भी यह मलिनता दूर नहीं होती, इस बारे चाहे ब्रह्मवेताओं से पता कर लो ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥

मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ॥

हे मेरे मन ! यद्यपि तू गुरु साहिब के आश्रय में आ जाओ तो इस मलिनता से निवृत्त हो सकते हो। गुरु की शरण में आने से प्राणी निर्मल हो सकता है।

ਮਨਮੁਖ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਿ ਥਕੇ ਮੈਲੁ ਨ ਸਕੀ ਧੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥१॥ रहाउ ॥

मनमुख प्राणी हरि के नाम का उच्चारण भले ही कितना भी करते रहे, वे इससे थक गए हैं किन्तु उनकी मलिनता निवृत नहीं हुई ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥

मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥

मन अशुद्ध होने के कारण भगवान की भक्ति नहीं होती और न ही नाम (प्रभु) प्राप्त होता है।

ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੇ ਮੈਲੇ ਮੁਏ ਜਾਸਨਿ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥

मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥

मनमुख प्राणी मलिन ही जीवन व्यतीत करते हैं और फिर मलिन ही इस संसार से प्राण त्याग कर चले जाते हैं।वह अपना मान-सम्मान गंवा कर संसार से कूच कर जाते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਸਮਾਇ ॥

गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ॥

यदि गुरु की कृपा-दृष्टि हो तो प्राणी की मलिनता नाश हो जाती है और पारब्रह्म प्राणी के हृदय में वास करता है।

ਜਿਉ ਅੰਧੇਰੈ ਦੀਪਕੁ ਬਾਲੀਐ ਤਿਉ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਅਗਿਆਨੁ ਤਜਾਇ ॥੨॥

जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुर गिआनि अगिआनु तजाइ ॥२॥

जैसे दीपक जलाने से अंधकार में प्रकाश होता है, वैसे ही सतिगुरु की कृपा-दृष्टि से अज्ञान का नाश होकर ज्ञान का आगमन होता है। सतिगुरु के ज्ञान द्वारा अज्ञान रूपी अँधेरा दूर हो जाता है।॥ २॥

ਹਮ ਕੀਆ ਹਮ ਕਰਹਗੇ ਹਮ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰ ॥

हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥

जो प्राणी कहते फिरते हैं कि हमने किया या हम करेंगे, वे अहंकार के कारण मूर्ख तथा गंवार हैं।

ਕਰਣੈ ਵਾਲਾ ਵਿਸਰਿਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥
वे प्राणी कर्ता परमेश्वर को भूलकर गए हैं तथा ईष्या-द्वेष में लिप्त रहते हैं, जिसके कारण उन्हें दुख भोगने पड़ते हैं।

ਮਾਇਆ ਜੇਵਡੁ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਸਭਿ ਭਵਿ ਥਕੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥
माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥
प्राणी के लिए कोई पीड़ा इतनी बड़ी नहीं जितनी माया की है, इसलिए प्राणी सारा संसार भ्रमण करके सुख संचय के प्रयास में ही लगा रहता है और धन के लोभ में भ्रष्ट होकर सारे जगत् से थक-हार कर चूर हो जाता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੩॥
गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उर धारि ॥३॥
लेकिन सतिगुरु के उपदेश द्वारा सत्य-नाम को हृदय में बसा कर परमात्मा मिलन का सुख प्राप्त करता है॥ ३॥

ਜਿਸ ਨੋ ਮੇਲੇ ਸੋ ਮਿਲੈ ਹਉ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥
जिस पुण्यात्मा को परमात्मा प्राप्त हो जाता है, वही परमेश्वर से मिलन करवाता है, मैं उस पर कुर्बान हूँ।

ਏ ਮਨ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਨਿਜ ਥਾਉ ॥
ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥
इस मन के ईश्वर-भक्ति में लीन होने से सत्यवाणी द्वारा जीव निजस्वरूप में स्थिर रहता है।

ਮਨਿ ਰਤੇ ਜਿਹਵਾ ਰਤੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਚੇ ਗਾਉ ॥
मनि रते जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥
मन के लीन होने से जिव्हा भी सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा गायन करती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਉ ॥੪॥੩੧॥੬੪॥
नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥४॥३१॥६४॥
हे नानक ! जिन्हें भगवान का नाम विस्मृत नहीं होता, वहीं सत्य में लीन होते हैं।॥ ४॥ ३१॥ ६४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥
श्रीरागु महला ४ घरु १॥

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਅਤਿ ਅਗਲਾ ਕਿਉ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਲੈ ਘਰਿ ਆਇ ॥
मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥
मेरी आत्मा व देह विरह की दुख अग्नि में अत्यंत जल रही है। अब मेरा प्रियतम प्रभु किस तरह मेरे हृदय रूपी गृह में आकर मिलेगा।

ਜਾ ਦੇਖਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਭਿ ਦੇਖਿਐ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥
जब मुझे प्रियतम (प्रभु) के दर्शन प्राप्त होते हैं, तो उसके दर्शन-मात्र से ही समस्त दुख निवृत हो जाते हैं।

ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਤਿਨ ਸਜਣਾ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥
जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥१॥
जीवात्मा को अपने स्वामी (प्रभु) के दर्शनों की आकांक्षा है और वह कहती है कि मैं साधु-संतों के पास जाकर निवेदन करती हूँ कि किस विधि से मुझे प्रियतम प्रभु के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे सतिगुरु ! आपके बिना मेरा अन्य कोई नहीं।

ਹਮ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਸਰਣਾਗਤੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं मूर्ख एवं नासमझ हूँ, इसलिए आपकी शरण में आई हूँ, मुझ पर कृपा करके उस प्रीतम-प्रभु से मिलन करवा दीजिए॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸੋਇ ॥
सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥
सतिगुरु ही प्रभु के नाम का दाता है। सतिगुरु ही आत्मा का परमात्मा से सुमेल करवाता है, इसलिए सतिगुरु महान् है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬੁਝਿਆ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥

सतिगुरि हरि प्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥

सतिगुरु ने ही अकाल पुरुष को जान लिया है, गुरु के बिना जगत् में अन्य कोई बड़ा नहीं।

ਹਉ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਢਹਿ ਪਵਾ ਕਰਿ ਦਇਆ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੨॥

हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥२॥

जीवात्मा कहती है कि मैं गुरु की शरण में नतमस्तक हूँ। अतः गुरु जी की कृपा-दृष्टि द्वारा मेरा मिलन उस परमात्मा से अवश्य होगा ॥ २॥

ਮਨਹਠਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਕਰਿ ਉਪਾਵ ਥਕੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥

मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥

मन के हठ के कारण गुरु विहीन जीव को अकाल पुरुष कदापि प्राप्त नहीं होगा। समस्त लोग प्रत्येक उपाय करके हार गए हैं।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪ ਕਰਿ ਰਹੇ ਮਨਿ ਕੋਰੈ ਰੰਗੁ ਨ ਹੋਇ ॥
सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥
हजार चतुराईयों का प्रयोग करके प्राणी असफल हो गए हैं। उनके कोरे मन पर ईश्वर के प्रेम का रंग धारण नहीं हुआ।

कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥
कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥
झूठ एवं छल-कपट का प्रयोग करके कोई भी प्राणी परमेश्वर को नहीं पा सकता। प्राणी जैसे बीज बोता है वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है॥ ३॥

सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥
सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥
हे पारब्रह्म ! इस जगत् के समस्त प्राणी तुम्हारे ही हैं, उन जीवों की समस्त पूँजी तुम ही हो और तुम्हीं से उनकी आशा-उम्मीद हैं।

प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥
प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥
तेरी शरण में आने वाला प्राणी कदापि खाली हाथ नहीं जाता, तुम कृपालु एवं दयालु हो। तेरे दर में आने वाला गुरमुख प्रशस्ति का अधिकारी बन जाता है।

बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥
बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥
।गुरु जी वचन करते हैं कि हे परमेश्वर ! मेरी सादर विनती है कि मनुष्य पापों के भयानक समुद्र के भीतर डूब रहे हैं, इनकी रक्षा करो। हे प्रभु ! जगत् के जीवों को भवसागर में डूबने से बचा लो॥ ४॥ १॥ ६५॥

सिरीरागु महला ४ ॥
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੀਐ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਾਸੁ ॥
नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥
भगवान का नाम मिलने से मन तृप्त हो जाता है लेकिन नामविहीन मनुष्य का जीवन धिक्कार योग्य है।

ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਜਣੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਮੈ ਦਸੇ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥
इस बारे गुरु जी उत्तर देते हैं कि यदि सतिगुरु से मिलन हो जाए तो वही मुझे गुणनिधान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्रदान करे।

ਹਉ ਤਿਸੁ ਵਿਟਹੁ ਚਉ ਖੰਨੀਐ ਮੈ ਨਾਮ ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
हउ तिसु विटहु चउ खंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥
जो मुझे नाम का आलोक दे मैं उस पर चार टुकड़े होकर कुर्बान जाऊँ ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਹਉ ਜੀਵਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु! नाम-सिमरन से ही मेरा यह समूचा जीवन है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜੀਵਣੁ ਨਾ ਥੀਐ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥१॥ रहाउ ॥
नाम के बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है। इसलिए हे मेरे सतिगुरु ! मुझ पर प्रभु के नाम का रहस्य दृढ़ करवा दो॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਰਤਨੁ ਹੈ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥
भगवान का नाम अमूल्य रत्न है, जो सतिगुरु के पास विद्यमान है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੈ ਲਗਿਆ ਕਢਿ ਰਤਨੁ ਦੇਵੈ ਪਰਗਾਸਿ ॥
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥
सतिगुरु वह उज्ज्वल नाम रूपी रत्न निकाल कर प्रकाशमान कर देते है, जो उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करता है।

ਧੰਨੁ ਵਡਭਾਗੀ ਵਡ ਭਾਗੀਆ ਜੋ ਆਇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥੨॥
धंनु वडभागी वड भागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥
भाग्यवानों में भी सौभाग्यशाली वे धन्य हैं, जो गुरु के पास आकर उनसे मिलते हैं और नाम रूपी उस खजाने को प्राप्त कर लेते हैं ॥२॥

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੇਟਿਓ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਵਸਿ ਕਾਲ ॥
जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥
जो प्राणी सतिगुरु महापुरुष के मिलन से वंचित हैं, वे भाग्यहीन काल (मृत्यु) के अधीन हैं।

ਓਇ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਕਰਿ ਵਿਕਰਾਲ ॥
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥
ऐसे प्राणी पुनः पुनः जन्म-मरण के चक्कर में पड़कर विभिन्न योनियों में भटकते रहते हैं। ऐसे प्राणी मलिनता के भयानक कीट बने पड़े हैं।

ਓਨਾ ਪਾਸਿ ਦੁਆਸਿ ਨ ਭਿਟੀਐ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚੰਡਾਲ ॥੩॥
ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥
उनके समीप आकर छूना भी नहीं चाहिए, क्योंकि हृदय के भीतर दुश्वृतियाँ पनपती हैं॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੁ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਵਹਿ ਆਇ ॥
सतिगुरु पुरखु अम्रित सरु वडभागी नावहि आइ ॥
महापुरुष सतिगुरु अमृत के सरोवर हैं, जहाँ पर भाग्यशाली इसमें आकर स्नान करते हैं। अर्थात् उनकी कृपा-दृष्टि से कृपा-पात्र बनते हैं।

ਉਨ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮੈਲੁ ਉਤਰੈ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ॥
उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥
उनकी जन्म-जन्मांतर की मलिनता धुल जाती है और उनके भीतर पवित्र नाम सुदृढ़ हो जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਉਤਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੪॥੨॥੬੬॥
जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥
गुरु जी कहते हैं कि हे नानक ! सतिगुरु की ओर सुरति लगाने से (गुरु-भक्तों को) परम पद की प्राप्ति होती हे॥ ४॥ २॥ ६६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਗੁਣ ਵਿਥਰਾ ਗੁਣ ਬੋਲੀ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥
गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥
हे मेरी माता! मैं तो उस पारब्रह्म का ही यश गान करता हूँ. उसकी प्रशंसा में प्रत्यक्ष करता हूँ और उनके गुणों की व्याख्या करता हूँ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਜਣੁ ਗੁਣਕਾਰੀਆ ਮਿਲਿ ਸਜਣ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥
प्रभु प्रेमी गुरमुख परोपकारी एवं गुणों के भण्डार हैं, उनसे मिलकर मैं पारब्रह्म का यश-कीर्ति करता हूँ।

ਹੀਰੈ ਹੀਰੁ ਮਿਲਿ ਬੇਧਿਆ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਨਾਇ ॥੧॥
हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥
गुरु रूपी रत्न से मिलकर मेरा हृदय बंध गया है और हरिनाम से गहन लाल वर्ण रंग गया है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥
मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥
हे मेरे गोविन्द ! तेरा गुण-गान करने से मेरा मन तृप्त हो गया है।

ਅੰਤਰਿ ਪਿਆਸ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਗੁਰੁ ਤੁਸਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे हृदय के भीतर तेरे नाम की तृष्णा है। परमात्मा कृपा-दृष्टि करे तो गुरु जी हर्षित होकर वह नाम (प्रभु) मुझे प्रदान करें ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨੁ ਰੰਗਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ॥
मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥
हे प्राणी ! अपने हृदय को प्रभु के प्रेम से रंग लो । हे सौभाग्यशालियो ! गुरु जी आपकी सेवा भावना से प्रसन्न होकर आपको अपनी दातें प्रदान करेंगे।

ਗੁਰੁ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ਰੰਗ ਸਿਉ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
गुरु नामु द्रिड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥
मैं उस सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ, जो मेरे भीतर हरि नाम को प्रीत से दृढ़ करते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਲਭਈ ਲਖ ਕੋਟੀ ਕਰਮ ਕਮਾਉ ॥੨॥
बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥
सतिगुरु के बिना अकालपुरुष का नाम प्राप्त नहीं होता। चाहे प्राणी लाखों करोड़ों कर्मकाण्ड संस्कार इत्यादि करता रहे, उसे ईश्वर प्राप्त नहीं होता ॥ २॥

ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਾ ਮਿਲੈ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਨਿਕਟਿ ਨਿਤ ਪਾਸਿ ॥
बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ प्राणी को भाग्य के
बिना सच्चा गुरु प्राप्त नहीं होता चाहे वह गृह में सदा इसके निकट एवं पास ही बैठा है।

ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨ ਦੁਖੁ ਭਰਮੁ ਹੈ ਵਿਚਿ ਪੜਦਾ ਦੂਰਿ ਪਈਆਸਿ ॥
अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥
मनुष्य के भीतर मूर्खता एवं संदेह की पीड़ा ने वास किया हुआ है। मनुष्य एवं परमात्मा के बीच अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है। जब अज्ञान निवृत्त हो तो ज्ञान के उजाले से मनुष्य एवं परमात्मा के बीच का पर्दा निवृत्त हो जाता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਕੰਚਨੁ ਨਾ ਥੀਐ ਮਨਮੁਖੁ ਲੋਹੁ ਬੂਡਾ ਬੇੜੀ ਪਾਸਿ ॥੩॥
बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥
सतिगुरु के मिलन के बिना प्राणी स्वर्णमय नहीं होता। अपितु अधर्मों लोहे की भाँति डूब जाता है, जबकि नाव इतनी करीब ही हो ॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਹਰਿ ਨਾਵ ਹੈ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਚੜਿਆ ਜਾਇ ॥
सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥
सतिगुरु जी हरि-नाम रूपी जहाज है, किस विधि द्वारा उस पर सवार हुआ जा सकता है ?

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਵਿਚਿ ਬੋਹਿਥ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥
सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥
गुरु जी कथन करते हैं कि जो सतिगुरु की आज्ञानुसार चलता है, वह हरि नाम रूपी जहाज में बैठ जाता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥੩॥੬੭॥

धंनु धंनु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥

हे नानक ! वे व्यक्ति धन्य-धन्य एवं भाग्यवान हैं जिनको सतिगुरु जी अपने साथ मिला कर परमात्मा से मिलन करवाते हैं॥ ४ ॥ ३॥ ६७ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਹਉ ਪੰਥੁ ਦਸਾਈ ਨਿਤ ਖੜੀ ਕੋਈ ਪ੍ਰਭੁ ਦਸੇ ਤਿਨਿ ਜਾਉ ॥
हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥
जीव रूपी नारी नित्य खड़ी होकर कहती है कि मैं प्रतिदिन अपने प्रियतम प्रभु का मार्ग देखती रहती हूँ कि यदि कोई मुझे मार्गदर्शन करे तो उस प्रियतम-पति के पास जाकर मिल सकूं।

ਜਿਨੀ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਰਾਵਿਆ ਤਿਨ ਪੀਛੈ ਲਾਗਿ ਫਿਰਾਉ ॥
जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥
मैं उन महापुरुषों के आगे-पीछे लगी रहती हूँ अर्थात् सेवा-भावना करती हूँ, जिन्होंने परमेश्वर को माना है।

ਕਰਿ ਮਿੰਨਤਿ ਕਰਿ ਜੋਦੜੀ ਮੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਣੈ ਕਾ ਚਾਉ ॥੧॥
करि मिंनति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥
मैं उनका अनुकरण करती हूँ क्योंकि मुझे प्रभु-पति के मिलन का चाव है कृपा करके मुझे परमात्मा से मिला दो॥ १॥

ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਜਨਾ ਕੋਈ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥
मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥
हे मेरे भाई ! कोई तो मेरे हरि-प्रभु से मेरा मिलन करवा दे।

ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं सतिगुरु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जिन्होंने हरि-प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं। सतिगुरु ने मेरी मनोकामना पूर्ण की है॥ १॥ रहाउ॥

ਹੋਇ ਨਿਮਾਣੀ ਢਹਿ ਪਵਾ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥
मैं अत्यंत विनम्र होकर अपने सतिगुरु पर नतमस्तक होती हूँ।

ਨਿਮਾਣਿਆ ਗੁਰੁ ਮਾਣੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥
निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥
सतिगुरु जी बेसहारा प्राणियों का एकमात्र सहारा हैं। मेरे सतिगुरु ने परमात्मा से मिलन करवा दिया है, इसलिए मैं उनका गुणगान करते तृप्त नहीं होती।

ਹਉ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਜਉ ਮੈ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਸਿ ॥੨॥
हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥
जीवात्मा कहती है कि मेरे भीतर सतिगुरु की स्तुति की भूख लगी रहती है॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਸਭ ਕੋ ਲੋਚਦਾ ਜੇਤਾ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥
सतिगुरु से समस्त प्राणी उतना ही स्नेह रखते हैं, जितना सारा जगत् एवं सृष्टिकर्ता प्रभु प्रेम करते हैं।

ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਦਰਸਨੁ ਨਾ ਥੀਐ ਭਾਗਹੀਣ ਬਹਿ ਰੋਇ ॥
बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥
भाग्यहीन प्राणी दर्शन न होने के कारण अश्रु बहाते रहते हैं

ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਾ ਸੋ ਥੀਆ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥੩॥
जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥
क्योंकि जो विधाता को स्वीकार होता है तैसा ही होता है। उस परब्रह्म के हुक्म से जो लिखा होता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता॥ ३॥

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪਿ ਹਰਿ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥
आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥
हरि-परमेश्वर स्वयं ही सतिगुरु है, वह स्वयं ही जिज्ञासु रूप है और स्वयं ही सत्संग द्वारा मिलन करवाता है।

ਆਪਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਮੇਲਸੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੀਛੈ ਪਾਇ ॥
आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥
हरि-परमेश्वर प्राणी पर दया करके उसे सतिगुरु की शरण प्रदान करता है।

ਸਭੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਜਗਿ ਆਪਿ ਹੈ ਨਾਨਕ ਜਲੁ ਜਲਹਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੪॥੬੮॥
सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥

गुरु जी कथन करते हैं कि प्रभु-परमेश्वर ही सम्पूर्ण सृष्टि का जीवनाधार है और प्राणी को स्वयं में विलीन कर लेता है। हे नानक ! जैसे जल में जल अभेद हो जाता है वैसे ही परमात्मा का भक्त परमात्मा के भीतर ही लीन हो जाता है ॥ ४॥ ४॥ ६८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥.
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਰਸੁ ਅਤਿ ਭਲਾ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥
रसु अम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥
नाम-रस अमृत समान मधुर तथा सर्वश्रेष्ठ है। इस प्रभु रूपी रस का पान करने के लिए इसे किस तरह प्राप्त किया जाए ?

ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਤੁਸਾ ਕਿਉ ਕਰਿ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥
जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥
इस जगत् की सुहागिनों से जाकर पता करूँगी कि उन्होंने प्रभु-पति की संगति क्या कर प्राप्त की है।

ਓਇ ਵੇਪਰਵਾਹ ਨ ਬੋਲਨੀ ਹਉ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਤਿਨ ਪਾਇ ॥੧॥
ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥१॥
ऐसा न हो कि वे बेपरवाही से मेरी उपेक्षा करें, किन्तु मैं तो पुनः पुनः उनके चरण धोऊंगी, शायद वह प्रभु मिलन का रहस्य बता दें ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਮਿਲਿ ਸਜਣ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥
भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥
हे भाई ! मित्र गुरु से मिल तथा परमात्मा की प्रशंसा करते हुए गुणगान कर।

ਸਜਣੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਦੁਖੁ ਕਢੈ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु जी महापुरुष हैं, जो दुख, दरिद्र, कलह एवं अभिमान निवृत्त करते हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਤਿਨ ਦਇਆ ਪਈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥
गुरमुख आत्माएँ विवाहित जीवन का सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त करती हैं अर्थात् प्रभु-पति को प्राप्त करके वे करुणावती हो जाती हैं। उनके हृदय में दया निवास करती है।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਚਨੁ ਰਤੰਨੁ ਹੈ ਜੋ ਮੰਨੇ ਸੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥
सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरि रसु खाइ ॥
सच्चे गुरु की वाणी अनमोल रत्न है, जो कोई प्राणी उसे स्वीकृत करता है, वह हरि रूपी अमृत का पान करता है।

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਵਡ ਜਾਣੀਅਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਧਾ ਗੁਰ ਭਾਇ ॥੨॥
से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥२॥
वे प्राणी बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने गुरु के कथनानुसार हरि-रस का पान किया है॥ २॥

ਇਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਵਣਿ ਤਿਣਿ ਸਭਤੁ ਹੈ ਭਾਗਹੀਣ ਨਹੀ ਖਾਇ ॥
इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥
यह हरि-रस वन-तृण सर्वत्र उपस्थित है अर्थात् सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। लेकिन वे प्राणी भाग्यहीन हैं जो इससे वंचित रहते हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਲੈ ਨਾ ਪਵੈ ਮਨਮੁਖ ਰਹੇ ਬਿਲਲਾਇ ॥
बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥
सतिगुरु की दया के बिना इसकी सही पहचान असंभव है, इसलिए मनमुखी प्राणी अश्रु बहाते रहते हैं।

ਓਇ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ ਨਾ ਨਿਵਹਿ ਓਨਾ ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਲਾਇ ॥੩॥
ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥३॥
वे प्राणी सतिगुरु के समक्ष अपना तन-मन समर्पित नहीं करते, अपितु उनके भीतर काम, क्रोध इत्यादि विकार विद्यमान रहते हैं।॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ॥
हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥
वह हरि-प्रभु ही स्वयं नाम का स्वाद है एवं स्वयं ही ईश्वरीय अमृत है।

ਆਪਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਦੇਵਸੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚੋਇ ॥
आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अम्रितु चोइ ॥
दया करके हरि स्वयं ही गुरु के माध्यम से यह नामामृत दुहकर प्राणी को प्रदान करता है।

ਸਭੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਇਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੪॥੫॥੬੯॥
सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥४॥५॥६९॥

हे नानक ! प्राणी की देह एवं आत्मा मन में हरिनाम के बस जाने से हर्षित हो जाती है एवं परमात्मा उसके चित के भीतर समा जाता है ॥ ४ ॥ ५॥ ६९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਦਿਨਸੁ ਚੜੈ ਫਿਰਿ ਆਥਵੈ ਰੈਣਿ ਸਬਾਈ ਜਾਇ ॥
दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥
दिन उदय होता है एवं पुनः सूर्यास्त हो जाता है और सारी रात्रि बीत जाती है।

ਆਵ ਘਟੈ ਨਰੁ ਨਾ ਬੁਝੈ ਨਿਤਿ ਮੂਸਾ ਲਾਜੁ ਟੁਕਾਇ ॥
आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥
इस तरह उम्र कम हो रही है लेकिन मनुष्य समझता नहीं, काल रूपी मूषक प्रतिदिन जीवन की रस्सी को कुतर रहा है।

ਗੁੜੁ ਮਿਠਾ ਮਾਇਆ ਪਸਰਿਆ ਮਨਮੁਖੁ ਲਗਿ ਮਾਖੀ ਪਚੈ ਪਚਾਇ ॥੧॥
गुड़ु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥१॥
उसके आसपास माया रूपी मीठा गुड़ बिखरा पड़ा है और मक्खी की भाँति उससे चिपक कर मनमुख मानव अपना अनमोल जीवन गंवा रहा है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਮੈ ਮੀਤੁ ਸਖਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥
हे भाई ! वह प्रभु ही मेरा मित्र एवं सखा है।

ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਮੋਹੁ ਬਿਖੁ ਹੈ ਅੰਤਿ ਬੇਲੀ ਕੋਇ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥
सुपुत्रों एवं माया की ममता विष समान है। अंतकाल में प्राणी का कोई भी सहायक नहीं होता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਉਬਰੇ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੇ ਸਰਣਾਇ॥
गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥
जो प्राणी गुरु उपदेशानुसार पारब्रह्म से वृति लगा कर रखता है वह इस संसार से मोक्ष प्राप्त करता है और परब्रह्म के आश्रय में रहकर इस संसार से अप्रभावित रहते हैं।

ਓਨੀ ਚਲਣੁ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲਿਆ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲੀਆ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥
ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥
वह सदैव मृत्यु को अपने नेत्रों के समक्ष रखते हैं और प्रवास हेतु व्यय के लिए परमेश्वर के नाम की राशि एकत्र करते हैं, जिससे लोकों में उन्हें मान-यश प्राप्त होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਗਹ ਮੰਨੀਅਹਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਏ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥੨॥
गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥
गुरमुख जीवों की प्रभु के दरबार भरपूर प्रशंसा होती है। ईश्वर इन जीवों को आलिंगन में ले लेता है॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਪੰਥੁ ਪਰਗਟਾ ਦਰਿ ਠਾਕ ਨ ਕੋਈ ਪਾਇ ॥
गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥
गुरमुख जीवों हेतु यह मार्ग प्रत्यक्ष है। ईश्वर के दरबार में प्रवेश करने में कोई बाधा नहीं आती।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਨਾਮਿ ਰਹਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥
वे सदैव हरिनाम का यशगान करते हैं, उनके नाम में चित्त को भीतर रखते हैं तथा नित्य हरिनाम के यश में लिवलीन रहते हैं।

ਅਨਹਦ ਧੁਨੀ ਦਰਿ ਵਜਦੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥੩॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥
प्रभु के दर पर अनाहत ध्वनि होती है, जो गुरमुख प्राणी प्रभु आश्रय में पहुँचते हैं तथा प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं।॥ ३॥

ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿਆ ਤਿਨਾ ਸਭ ਕੋ ਕਹੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥
जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥
जो गुरमुख प्राणी गुरुओं द्वारा प्रभु का यशोगान करते हैं, उन्हें सबकी प्रशंसा प्राप्त होती है।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਦੇਹਿ ਪ੍ਰਭ ਮੈ ਜਾਚਿਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥
हे मेरे परमेश्वर ! मुझे उन पवित्र आत्माओं की संगति प्रदान करो, मैं तेरा याचक यही वंदना करता

हूँ।

ਨਾਨਕ ਭਾਗ ਵਡੇ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੪॥੩੩॥੩੧॥੬॥੭੦॥
नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥३३॥३१॥६॥७०॥
हे नानक ! उन गुरमुख प्राणियों के बड़े सौभाग्य हैं, जिनके हृदय के भीतर भगवान के नाम का प्रकाश उज्ज्वल है ॥४॥३३॥३१॥६॥७०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥
श्रीरागु महला ५ घरु १ ॥

ਕਿਆ ਤੂ ਰਤਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਸੀਗਾਰ ॥
किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥
हे मूर्ख ! तुम अपने पुत्रों, स्त्री व सांसारिक पदार्थों को देखकर इतने मुग्ध क्यों हो रहे हो ?

ਰਸ ਭੋਗਹਿ ਖੁਸੀਆ ਕਰਹਿ ਮਾਣਹਿ ਰੰਗ ਅਪਾਰ ॥
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥
तू संसार के विभिन्न रस भोग रहा है, हर्ष, आनंद तथा अनंत स्वादों में रत हो।

ਬਹੁਤੁ ਕਰਹਿ ਫੁਰਮਾਇਸੀ ਵਰਤਹਿ ਹੋਇ ਅਫਾਰ ॥
बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥
तुम बहुत सारे आदेश प्रदान करते हो और लोगों से अहंभाव से व्यवहार करते हो।

ਕਰਤਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਗਵਾਰ ॥੧॥
करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥
कर्ता-पुरुष परमात्मा तुझे स्मरण नहीं होता, इसलिए तुम मनमुख, अज्ञानी एवं गंवार हो।॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥
हे मेरे मन ! वास्तविक सुख-समृद्धि प्रदान करने वाला वह भगवान है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥
मनुष्य के सुकर्मों द्वारा ही उसे गुरु मिलता है और गुरु की अपार कृपा से ही परमेश्वर प्राप्त होता

है।॥१॥ रहाउ॥

ਕਪੜਿ ਭੋਗਿ ਲਪਟਾਇਆ ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਖਾਕੁ ॥
कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥
हे मूर्ख ! तुम सुन्दर वस्त्र पहनने, नाना प्रकार के व्यंजन सेवन करने तथा सोने-चांदी के आभूषण व सम्पति इत्यादि एकत्र करने में लगे हो।

ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਬਹੁ ਰੰਗੇ ਕੀਏ ਰਥ ਅਥਾਕ ॥
हैवर गैवर बहु रंगे कीए रथ अथाक ॥
ये अश्व, हाथी तथा अनेक प्रकार के रथ इत्यादि तुम्हारे पास हैं। वह न थकने वाली गाड़ियों जमा करता है।

ਕਿਸ ਹੀ ਚਿਤਿ ਨ ਪਾਵਹੀ ਬਿਸਰਿਆ ਸਭ ਸਾਕ ॥
किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥
इस वैभव में वह किसी अन्य को स्मरण ही नहीं करता। अपने समस्त संबंधियों की भी उपेक्षा कर दी है।

ਸਿਰਜਣਹਾਰਿ ਭੁਲਾਇਆ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਪਾਕ ॥੨॥
सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥
उसने इस सृष्टि के रचनाकार प्रभु को विस्मृत कर दिया है और नाम के बिना वह अपवित्र है॥ २॥

ਲੈਦਾ ਬਦ ਦੁਆਇ ਤੂੰ ਮਾਇਆ ਕਰਹਿ ਇਕਤ ॥
लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥
लोगों की बद-दुआएँ ले-लेकर तुमने इतनी धनराशि जमा कर ली है।

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂੰ ਪਤੀਆਇਦਾ ਸੋ ਸਣੁ ਤੁਝੈ ਅਨਿਤ ॥
जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥
जिन संबंधियों की प्रसन्नता हेतु तुम यह सब करते हो, वे भी तुम्हारे सहित नश्वर हैं।

ਅਹੰਕਾਰੁ ਕਰਹਿ ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਵਿਆਪਿਆ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ॥
अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥
हे अहंकारी मनुष्य ! तुम अभिमान करते हो तथा धमण्ड में लीन होकर मन-मति पर चलते हो।

ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ਨਾ ਤਿਸੁ ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ ॥੩॥

तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥

जिस प्राणी ने कुमार्ग पर चलकर प्रभु को विस्मृत कर दिया है, उसकी न तो कोई जाति है और न ही कोई मान-सम्मान ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੁਰਖਿ ਮਿਲਾਇਆ ਇਕੋ ਸਜਣੁ ਸੋਇ ॥

सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥

सतिगुरु ने कृपावश उस परम-पुरुष से मुझे मिला दिया है जो कि मेरा अद्वितीय मित्र तथा एकमात्र सहारा है।

ਹਰਿ ਜਨ ਕਾ ਰਾਖਾ ਏਕੁ ਹੈ ਕਿਆ ਮਾਣਸ ਹਉਮੈ ਰੋਇ ॥

हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥

प्रभु-भक्तों का एक परमेश्वर ही रक्षक है। अहंकारी मनुष्य अहंकारवश व्यर्थ क्यों विलाप करते रहते हो।

ਜੋ ਹਰਿ ਜਨ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਦਰਿ ਫੇਰੁ ਨ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥

जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥

परमेश्वर वही करता है, जो कुछ भक्तों को अच्छा लगता है। ईश्वर के दरबार से भगवान के भक्तों को कोई लौटा नहीं सकता।

ਨਾਨਕ ਰਤਾ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥੪॥੧॥੭੧॥

नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥४॥१॥७१॥

हे नानक ! जो मानव जीव भगवान के प्रेम रंग में मग्न हैं वह सम्पूर्ण संसार में प्रकाश पुंज बन जाता है ॥ ४॥ १ ॥ ७१ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सिरीरागु महला ५ ॥

श्रीरागु महला ५ ॥

ਮਨਿ ਬਿਲਾਸੁ ਬਹੁ ਰੰਗੁ ਘਣਾ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਭੂਲਿ ਖੁਸੀਆ ॥

मनि बिलासु बहु रंगु घणा द्रिसटि भूलि खुसीआ ॥

हे मानव ! तेरा मन आनंद-उल्लास, गहरे तथा अनेकों विलास मनाने तथा नेत्रों के दृश्यों के रस में

डूबा होने के कारण जीवन का मनोरथ भूल गया है।

ਛਤ੍ਰਧਾਰ ਬਾਦਿਸਾਹੀਆ ਵਿਚਿ ਸਹਸੇ ਪਰੀਆ ॥੧॥
छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥१॥
छत्रपति बादशाह जिन्हें सिंहासन प्राप्त हुआ हैं, वह भी संशय में पड़े हुए हैं।॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਸੁਖੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਇਆ ॥
भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥
हे भाई ! सत्संग के भीतर बड़ा सुख प्राप्त होता है।

ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਤਿਨਿ ਪੁਰਖਿ ਬਿਧਾਤੈ ਦੁਖੁ ਸਹਸਾ ਮਿਟਿ ਗਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥
उस विधाता ने जिस पुरुष का शुभ भाग्य लिख दिया है उसकी समस्त चिंताएँ मिट जाती हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਜੇਤੇ ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਾ ਤੇਤੇ ਭਵਿ ਆਇਆ ॥
जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥
मैं इतने स्थानों के भीतर चक्र काट आया हूँ कि जितनी की सर्वत्र हैं।

ਧਨ ਪਾਤੀ ਵਡ ਭੂਮੀਆ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਪਰਿਆ ॥੨॥
धन पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥२॥
धन के स्वामी एवं बड़े-बड़े जमींदार 'यह मेरी है, यह मेरी है' पुकारते हुए नश्वर हो गए हैं। २॥

ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਨਿਸੰਗ ਹੋਇ ਵਰਤੈ ਅਫਰਿਆ ॥
हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥
वे निर्भय होकर आदेश जारी करते हैं तथा अहंकारवश होकर समस्त कार्य करते हैं।

ਸਭੁ ਕੋ ਵਸਗਤਿ ਕਰਿ ਲਇਓਨੁ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਖਾਕੁ ਰਲਿਆ ॥੩॥
सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ॥३॥
उसने सारे वश में कर लिए हैं, परन्तु हरि-नाम के बिना वे मिट्टी में मिल जाते हैं।॥ ३॥

ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਸੇਵਕਾ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਦਰਿ ਖਰਿਆ ॥
कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥
प्रभु के दरबार में तेतीस करोड़ देवी-देवता, सिद्ध इत्यादि कर्मचारियों तथा अभ्यासी अनुचरों की

भाँति खड़े थे

ਗਿਰੰਬਾਰੀ ਵਡ ਸਾਹਬੀ ਸਭੁ ਨਾਨਕ ਸੁਪਨੁ ਥੀਆ ॥੪॥੨॥੭੨॥

गिर्मबारी वड साहबी सभु नानक सुपनु थीआ ॥४॥२॥७२॥

और जो पहाड़ों, समुद्रों पर साम्राज्य कायम करके शासन करते थे, हे नानक ! ये सारे ही स्वप्न हो गए हैं॥ ४॥ २॥ ७२ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਭਲਕੇ ਉਠਿ ਪਪੋਲੀਐ ਵਿਣੁ ਬੁਝੇ ਮੁਗਧ ਅਜਾਣਿ ॥
भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥
मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपनी देहि का पालन-पोषण करता है, किन्तु जब तक ईश्वर बारे ज्ञान नहीं होता, वह मूर्ख तथा नासमझ ही बना रहता है।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਛੁਟੈਗੀ ਬੇਬਾਣਿ ॥
सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥
यदि परमेश्वर को स्मरण न किया तो व्यर्थ ही यह (देहि) उजाड़ श्मशान घाट में दी जाएगी।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿ ॥੧॥
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥
यदि इस देहि में अर्थात् मानव योनि में रहते हम सतिगुरु को हृदय में बसा लें तो सदैव के लिए आनंद की प्राप्ति होगी॥१॥

ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੂੰ ਆਇਆ ਲਾਹਾ ਲੈਣਿ ॥
प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
हे नश्वर प्राणी ! तुम मानव-योनि में लाभ प्राप्ति हेतु आया था।

ਲਗਾ ਕਿਤੁ ਕੁਫਕੜੇ ਸਭ ਮੁਕਦੀ ਚਲੀ ਰੈਣਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्राणी ! तुम व्यर्थ के कर्मों में संलग्न क्यों हो गए हो ? जिससे शनैः शनैः तेरी सारी जीवन रात्रि समाप्त होती जा रही है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕੁਦਮ ਕਰੇ ਪਸੁ ਪੰਖੀਆ ਦਿਸੈ ਨਾਹੀ ਕਾਲੁ ॥
कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥
जिस तरह पशु-पक्षी क्रीड़ा मग्न रहते हैं और मृत्यु के बारे कुछ नहीं सूझता।

ਓਤੈ ਸਾਥਿ ਮਨੁਖੁ ਹੈ ਫਾਥਾ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ॥
ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥
इसी प्रकार मनुष्य है जो मोह-माया के जाल में फँसा हुआ है।

ਮੁਕਤੇ ਸੇਈ ਭਾਲੀਅਹਿ ਜਿ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥
जो प्राणी सच्चे परमेश्वर के नाम की आराधना करते हैं, उन्हें ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। २॥

ਜੋ ਘਰੁ ਛਡਿ ਗਵਾਵਣਾ ਸੋ ਲਗਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥
वह घर जिसे त्यागकर खाली कर देना है, वह मन से जुड़ा हुआ है।

ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਤੁਧੁ ਵਰਤਣਾ ਤਿਸ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਾਹਿ ॥
जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥
तुझे उसकी कोई चिन्ता नहीं, जहाँ जाकर तूने निवास करना है।

ਫਾਥੇ ਸੇਈ ਨਿਕਲੇ ਜਿ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥੩॥
फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥
जो प्राणी गुरु के चरण आश्रय में आ जाते हैं, वह फाँसी अर्थात् जीवन-मृत्यु के चक्कर से मोक्ष प्राप्त करते हैं।॥३॥

ਕੋਈ ਰਖਿ ਨ ਸਕਈ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨ ਦਿਖਾਇ ॥
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥
गुरु के बिना कोई बचा नहीं सकता। मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता।

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲਿ ਕੈ ਆਇ ਪਇਆ ਸਰਣਾਇ ॥
चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥
मैं चारों दिशाओं में खोज-भाल करके गुरु की शरण में आ गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਪਾਤਿਸਾਹਿ ਡੁਬਦਾ ਲਇਆ ਕਢਾਇ ॥੪॥੩॥੭੩॥
नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥७३॥
हे नानक ! मैं डूब रहा था, परन्तु सच्चे पातशाह ने मेरी रक्षा करके मुझे पार कर दिया है ॥४ ॥ ३ ॥ ७३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਘੜੀ ਮੁਹਤ ਕਾ ਪਾਹੁਣਾ ਕਾਜ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥
घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥
तुम घड़ी दो घड़ी के अतिथि बनकर उस दुनिया में आए हो, अतः अपना सिमरन रूपी कार्य संसार लो।

ਮਾਇਆ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪਿਆ ਸਮਝੈ ਨਾਹੀ ਗਾਵਾਰੁ ॥
माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥
किन्तु जीव तो मोह-माया व कामवासना में ही लिप्त है और जीवन के असल मनोरथ को यह मुर्ख समझ ही नहीं रहा।

ਉਠਿ ਚਲਿਆ ਪਛੁਤਾਇਆ ਪਰਿਆ ਵਸਿ ਜੰਦਾਰ ॥੧॥
उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥१॥
जब इस से यह कूच कर करेगा और यमों के वश में हो जाएगा, तब यह पश्चाताप करेगा ॥ १॥

ਅੰਧੇ ਤੂੰ ਬੈਠਾ ਕੰਧੀ ਪਾਹਿ ॥
अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥
हे अज्ञानी मनुष्य ! तू काल रूपी नदी के तट पर विराजमान है। अर्थात् मृत्यु रूपी सागर के तट पर बैठे हुए हो।

ਜੇ ਹੋਵੀ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਕਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तेरे पूर्व कर्म शुभ हैं तो तू गुरु के उपदेश को पा सकता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰੀ ਨਾਹੀ ਨਹ ਡਡੁਰੀ ਪਕੀ ਵਢਣਹਾਰ ॥
हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥
जैसे कच्ची फ़सल,कच्ची-पक्की अथवा पूर्ण पक्की फसल किसी भी अवस्था में काटी जा सकती है, वैसे ही बाल्यावस्था, युवावस्था अथवा वृद्धावस्था में कभी भी मृत्यु आ सकती है।

ਲੈ ਲੈ ਦਾਤ ਪਹੁਤਿਆ ਲਾਵੇ ਕਰਿ ਤਈਆਰੁ ॥
लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥

जैसे फसल काटने वाले दरांत लेकर कृषक के बुलावे पर फसल काटने के लिए तैयार हो जाते हैं, वैसे ही यम के आदेश पर यमदूत किसी भी समय पाश लेकर मानव को लेने आ जाते हैं।

ਜਾ ਹੋਆ ਹੁਕਮੁ ਕਿਰਸਾਣ ਦਾ ਤਾ ਲੁਣਿ ਮਿਣਿਆ ਖੇਤਾਰੁ ॥੨॥

जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥२॥

जब कृषक का आदेश हुआ तो फसल काटने वाले सारा खेत काट कर नाप लेते हैं और अपना पारिश्रमिक ले लेते हैं, वैसे ही कृषक रूपी परमात्मा के आदेश होते ही यमदूत मानव जीव का शरीर रूपी खेत नाप लेते हैं अर्थात् श्वासों की गिनती करते हैं और श्वास पूरे होते ही शरीर रूपी खेत श्वास रूपी फसल से रिक्त कर देते हैं।॥ २॥

ਪਹਿਲਾ ਪਹਰੁ ਧੰਧੈ ਗਇਆ ਦੂਜੈ ਭਰਿ ਸੋਇਆ ॥

पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥

मानव की आयु का प्रथम भाग बाल्यावस्था तो क्रीड़ा में व्यतीत हो गया तथा दूसरा भाग किशोरावस्था गहन निद्रा में चला गया।

ਤੀਜੈ ਝਾਖ ਝਖਾਇਆ ਚਉਥੈ ਭੋਰੁ ਭਇਆ ॥

तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥

तीसरा भाग युवावस्था सांसारिक व्यर्थ कार्यों में गुजर गया तथा चौथा भाग वृद्धावस्था के आते ही काल रूपी दिन उदय हो गया।

ਕਦ ਹੀ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਜਿਨਿ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦੀਆ ॥੩॥

कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥

इतने लम्बे समय में वह परमात्मा स्मरण नहीं हुआ, जिसने यह मानव तन प्रदान किया है॥ ३॥

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਉ ਵਾਰਿਆ ਜੀਉ ਕੀਆ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥

साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥

गुरु जी कथन करते है कि मैंने तो साधु-संगति पर जीवन न्योछावर कर दिया।

ਜਿਸ ਤੇ ਸੋਝੀ ਮਨਿ ਪਈ ਮਿਲਿਆ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥

जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥

मुझे ऐसा सतिगुरु रूपी मित्र मिल गया है, जिससे मेरे अन्तर्मन में उस परमात्मा का ज्ञान प्रकाश उदय हुआ।

ਨਾਨਕ ਡਿਠਾ ਸਦਾ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਣੁ ॥੪॥੪॥੭੪॥
नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥४॥४॥७४॥
हे नानक ! उस अन्तर्यामी परमात्मा को जान लो, जो सबके साथ रहता है ॥ ४॥ ४ ॥ ७४ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸਭੇ ਗਲਾ ਵਿਸਰਨੁ ਇਕੋ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਉ ॥
सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥
मैं प्रत्येक बात भूल जाऊँ, परन्तु एक ईश्वर को कदापि न विस्मृत करूँ।

ਧੰਧਾ ਸਭੁ ਜਲਾਇ ਕੈ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਸਚੁ ਸੁਆਉ ॥
धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥
गुरु ने समस्त धंधों को नष्ट करके सत्य आनंद को प्राप्त करने वाला परमेश्वर का नाम प्रदान किया है।

ਆਸਾ ਸਭੇ ਲਾਹਿ ਕੈ ਇਕਾ ਆਸ ਕਮਾਉ ॥
आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥
मन की सभी आशाएँ त्याग कर केवल एक ही आशा प्रभु-मिलन की आशा मैं अर्जित करूँ।

ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਅਗੈ ਮਿਲਿਆ ਥਾਉ ॥੧॥
जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥
जो प्राणी सतिगुरु की भरपूर सेवा करता है, उसे परलोक में प्रभु के दरबार में बैठने का सम्मान प्राप्त होता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਕਰਤੇ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿ ॥
मन मेरे करते नो सालाहि ॥
हे मेरे मन ! सृष्टिकर्ता का गुणगान कर।

ਸਭੇ ਛਡਿ ਸਿਆਣਪਾ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी समस्त चतुराइयाँ त्याग कर गुरु के चरणों की शरण ग्रहण करो॥ |१॥ रहाउ॥

ਦੁਖ ਭੁਖ ਨਹ ਵਿਆਪਈ ਜੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥

दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥

यदि सर्वगुण सम्पन्न सुखदाता परमेश्वर हृदय में बसा हुआ हो तो दुखों एवं तृष्णाओं की लालसा से मुक्ति मिल जाती है।

ਕਿਤ ਹੀ ਕੰਮਿ ਨ ਛਿਜੀਐ ਜਾ ਹਿਰਦੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥

कित ही कमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥

यदि वह सच्चा स्वामी मनुष्य के हृदय में वास कर जाए तो उसे किसी भी कार्य में असफलता नहीं मिलती।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਰਖਹਿ ਹਥ ਦੇ ਤਿਸੁ ਮਾਰਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥

जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥

परम-परमेश्वर जिसे भी अपना हाथ देकर रक्षा करता है, उसे कोई भी नहीं मार सकता।

ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਸਭਿ ਅਵਗਣ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥੨॥

सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥२॥

सुखों के दाता गुरु की आज्ञानुसार आचरण करना ही सर्वोत्तम है, क्योंकि वह प्राणी के समस्त अवगुणों को धोकर निर्मल कर देते हैं।॥ २॥

ਸੇਵਾ ਮੰਗੈ ਸੇਵਕੋ ਲਾਈਆਂ ਅਪੁਨੀ ਸੇਵ ॥

सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥

भक्तजन भगवान के समक्ष विनती करें कि हे प्रभु ! यह सेवक उनकी सेवा करना चाहता है, जिन्हें तूने अपनी सेवा में लगाया हुआ है।

ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਮਸਕਤੇ ਤੂਠੈ ਪਾਵਾ ਦੇਵ ॥
साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥
हे गुरुदेव ! आपकी प्रसन्नता से ही साधु-संगति एवं नाम-सिमरन का कठिन परिश्रम किया जा सकता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸਗਤਿ ਸਾਹਿਬੈ ਆਪੇ ਕਰਣ ਕਰੇਵ ॥
सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥
सृष्टि के समस्त कार्य सच्चे पातशाह के अधीन हैं, वह स्वयं ही सब कुछ करने एवं करवाने वाला है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਮਨਸਾ ਸਭ ਪੂਰੇਵ ॥੩॥
सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥३॥
मैं उस सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जो सभी की कामनाएँ पूर्ण करने वाला है॥ ३॥

ਇਕੋ ਦਿਸੈ ਸਜਣੋ ਇਕੋ ਭਾਈ ਮੀਤੁ ॥
इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥
हे मेरे मित्र। मुझे वह परमात्मा ही मात्र अपना सज्जन दिखाई देता है और केवल एक ही मेरा भ्राता तथा मित्र है।

ਇਕਸੈ ਦੀ ਸਾਮਗਰੀ ਇਕਸੈ ਦੀ ਹੈ ਰੀਤਿ ॥
इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥
समूचे ब्रह्माण्ड की सारी सामग्री एक परमेश्वर की ही है और केवल उस हरि ने ही प्रत्येक वस्तु को नियमबद्ध किया है।

ਇਕਸ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਾ ਹੋਆ ਨਿਹਚਲੁ ਚੀਤੁ ॥
इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥
एक परमेश्वर में ही मेरा मन लीन हो गया, तभी मेरा मन निश्चल हुआ है।

ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕੀਤੁ ॥੪॥੫॥੭੫॥
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥५॥७५॥
हे नानक ! सत्य नाम ही उसके मन का आहार है, सत्य नाम उसकी पोशाक और सत्य नाम को ही उसने अपना आश्रय बनाया है ॥ ४ ॥ ५॥ ७५ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸਭੇ ਥੋਕ ਪਰਾਪਤੇ ਜੇ ਆਵੈ ਇਕੁ ਹਥਿ ॥
सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥
एक परमेश्वर की प्राप्ति से जीवन की समस्त वस्तुएँ (आनंद-उल्लास) प्राप्त हो जाती हैं।

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੇ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਕਥਿ ॥
जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥
यदि प्रभु का नाम-स्मरण किया जाए तो अमूल्य मनुष्य जीवन भी फलदायक हो जाता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਮਹਲੁ ਪਰਾਪਤੇ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਹੋਵੈ ਮਥਿ ॥੧॥
गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥
जिसके मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य लिखा हुआ हो, वह गुरु की कृपा-दृष्टि से परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਏਕਸ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥
हे मेरे मन ! एक प्रभु के स्मरण में अपना चित्त लगा।

ਏਕਸ ਬਿਨੁ ਸਭ ਧੰਧੁ ਹੈ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਮੋਹੁ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥१॥ रहाउ ॥
एक परमात्मा के अलावा अन्य कर्म-धर्म समस्त विपदा ही हैं। धन-दौलत की लालसा समस्त मिथ्या है॥ १॥ रहाउ॥

ਲਖ ਖੁਸੀਆ ਪਾਤਿਸਾਹੀਆ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥
लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥
यदि सतिगुरु की कृपा-दृष्टि हो जाए तो लाखों साम्राज्य (उच्च पद) एवं ऐश्वर्य-वैभव के आनंद चरणों में बिखर जाएँ।

ਨਿਮਖ ਏਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥
निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥
यदि सतिगुरु एक क्षण-मात्र के लिए भी मुझे परमेश्वर के नाम की अनुकंपा कर दें तो मेरी आत्मा एवं देहि शीतल हो जाएँगे।

ਜਿਸ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਗਹੇ ॥੨॥
जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥
जिस प्राणी के भाग्य में पूर्व-कर्मों का भाग्य-फल लिखा हुआ हो, वही सतिगुरु के चरणों की शरण लेता है॥२॥

ਸਫਲ ਮੂਰਤੁ ਸਫਲਾ ਘੜੀ ਜਿਤੁ ਸਚੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥
वह मुहूर्त एवं घड़ी भी फलदायक है, जब सत्य स्वरूप परमेश्वर से प्रेम किया जाता है।

ਦੂਖੁ ਸੰਤਾਪੁ ਨ ਲਗਈ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥
जिस प्राणी को ईश्वर के नाम का आधार प्राप्त है, उसे कोई भी दुःख-दर्द उत्पन्न नहीं होता।

ਬਾਹ ਪਕੜਿ ਗੁਰਿ ਕਾਢਿਆ ਸੋਈ ਉਤਰਿਆ ਪਾਰਿ ॥੩॥
बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥
जिस प्राणी को गुरु ने भुजा से पकड़कर उबारा है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥३॥

ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਜਿਥੈ ਸੰਤ ਸਭਾ ॥
थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥
वह स्थान बहुत पावन एवं शोभायमान है, जहाँ प्रभु के नाम का यशगान (सत्संग) होता है।

ਢੋਈ ਤਿਸ ਹੀ ਨੋ ਮਿਲੈ ਜਿਨਿ ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਲਭਾ ॥
ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥
उस व्यक्ति को ही प्रभु के दरबार का आश्रय मिलता है, जिसको पूर्ण गुरुदेव की प्राप्ति हो गई है।

ਨਾਨਕ ਬਧਾ ਘਰੁ ਤਹਾਂ ਜਿਥੈ ਮਿਰਤੁ ਨ ਜਨਮੁ ਜਰਾ ॥੪॥੬॥੭੬॥
नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥
हे नानक ! गुरुन्मुख प्राणी ने अपना घर वहाँ बनाया है, जहाँ न मृत्यु है, न जन्म है और न ही बुढ़ापा है ॥४॥६॥७६॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
स्रीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸੋਈ ਧਿਆਈਐ ਜੀਅੜੇ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾਂ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ॥
हे जीव ! उस भगवान का ध्यान कर, जो राजाओं और महाराजाओं का भी बादशाह है।

ਤਿਸ ਹੀ ਕੀ ਕਰਿ ਆਸ ਮਨ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭਸੁ ਵੇਸਾਹੁ ॥
तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥
उस भगवान की मन में आशा रख, जिस पर सब को भरोसा है।

ਸਭਿ ਸਿਆਣਪਾ ਛਡਿ ਕੈ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਪਾਹੁ ॥੧॥
सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥१॥
अपनी समस्त चालाकियाँ त्याग कर गुरु के चरणों में शरण प्राप्त कर ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਜਪਿ ਨਾਉ ॥
मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥
हे मेरे मन ! सुख और शांति से प्रभु के नाम का अभ्यास कर।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇ ਤੂੰ ਗੁਣ ਗੋਇੰਦ ਨਿਤ ਗਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥१॥ रहाउ ॥
आठों पहर प्रभु का ध्यान करो तथा गोविन्द-हरि की महिमा नित्य ही गायन करो ॥१॥ रहाउ॥

ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੁ ਮਨਾ ਜਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे मन ! जिस परमात्मा के स्वरूप जितना बड़ा अन्य कोई नहीं है, तुम उस परमात्मा की शरण में रहो।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਘਣਾ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਨ ਮੂਲੇ ਹੋਇ ॥
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥
उसकी आराधना करने से बहुत आत्मिक सुख मिलता है तथा पीड़ा एवं दुःख का बिल्कुल नाश हो जाता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਕਰਿ ਚਾਕਰੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੨॥
सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥२॥
इसलिए तू सदैव उस परब्रह्म की सेवा अर्थात् यशोगान में रत रहा कर॥२॥

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲਾ ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥
साधसंगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥
साधु-संतों की संगति करने से मन पवित्र हो जाता है और मृत्यु का फँदा कट जाता है।

ਸੁਖਦਾਤਾ ਭੈ ਭੰਜਨੋ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥
वह परमात्मा सुखों का दाता तथा भय नाश करने वाला है, इसलिए उसके समक्ष वंदना करो।

ਮਿਹਰ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਤਾਂ ਕਾਰਜੁ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੩॥
मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ॥३॥
वह कृपालु तथा दयालु परमात्मा जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसके समस्त कार्य सम्पन्न हो जाते हैं।॥३॥

ਬਹੁਤੋ ਬਹੁਤੁ ਵਖਾਣੀਐ ਊਚੋ ਊਚਾ ਥਾਉ ॥
बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥
उस प्रभु को विशाल से भी विशाल कहा जाता है और उसका निवास ऊँचे से भी ऊँचा सर्वोच्च है।

ਵਰਨਾ ਚਿਹਨਾ ਬਾਹਰਾ ਕੀਮਤਿ ਕਹਿ ਨ ਸਕਾਉ ॥
वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥
वह वर्ण-भेद जाति-चिन्ह आदि से रहित है और मैं उसके मूल्य का वर्णन नहीं कर सकता।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਮਇਆ ਕਰਿ ਸਚੁ ਦੇਵਹੁ ਅਪੁਣਾ ਨਾਉ ॥੪॥੭॥੭੭॥
नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥४॥७॥७७॥
हे सत्य परमेश्वर ! नानक पर अपनी दया-दृष्टि करके उसे अपना सत्य-स्वरूप नाम प्रदान करो ॥ ४॥ ७ ॥ ७७ ॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
स्रीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਸੋ ਸੁਖੀ ਤਿਸੁ ਮੁਖੁ ਊਜਲੁ ਹੋਇ ॥
नामु धिआए सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ॥
जो व्यक्ति प्रभु का नाम-सिमरन करता है, वह इहलोक में सुखी रहता है तथा उसका मुख प्रभु की सभा में उज्ज्वल होता है

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਰਗਟੁ ਸਭਨੀ ਲੋਇ ॥

पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥

किन्तु प्रभु का नाम पूर्ण गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है, वह समस्त लोकों में प्रसिद्ध हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਘਰਿ ਵਸੈ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੧॥

साधसंगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥१॥

वह सत्य परमेश्वर साध संगत के गृह में निवास करता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! तू हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान किया करो।

ਨਾਮੁ ਸਹਾਈ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਆਗੈ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि भगवान का नाम-सिमरन ही सदैव साथ रहता है और सहायक होता है जो आगे जाकर यमों के कष्टों से छुड़ा लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੁਨੀਆ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਕਵਨੈ ਆਵਹਿ ਕਾਮਿ ॥
दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥
हे जीव ! दुनिया का दिया हुआ सम्मान कभी काम नहीं आता।

ਮਾਇਆ ਕਾ ਰੰਗੁ ਸਭੁ ਫਿਕਾ ਜਾਤੋ ਬਿਨਸਿ ਨਿਦਾਨਿ ॥
माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥
माया का रंग फीका है, जो अन्त में नष्ट हो जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਵਸੈ ਸੋ ਪੂਰਾ ਪਰਧਾਨੁ ॥੨॥
जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥
जिसके हृदय में प्रभु वास करता है, वही आदरणीय पूर्ण एवं मुख्य है॥२॥

ਸਾਧੂ ਕੀ ਹੋਹੁ ਰੇਣੁਕਾ ਅਪਣਾ ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ॥
साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥
हे प्राणी ! अपनी अहं-भावना त्याग कर संतों के चरणों की धूल हो जाओ।

ਉਪਾਵ ਸਿਆਣਪ ਸਗਲ ਛਡਿ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥
उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥
व्यर्थ के उपाय तथा चतुराईयों समस्त त्याग दे और गुरु के चरणाश्रय में आ जा।

ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਰਤਨੁ ਹੋਇ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ॥੩॥
तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥
केवल वहीं नाम रूपी रत्न को प्राप्त करता है, जिसके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ उज्ज्वल होती हैं॥३॥

ਤਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਭਾਈਹੋ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥
हे सज्जनो ! जिसको परमात्मा स्वयं प्रदान करता है, वही नाम को प्राप्त करता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਬਿਨਸੈ ਹਉਮੈ ਤਾਪੁ ॥
सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥
जिस मनुष्य ने अपना अहंत्व रूपी रोग दूर कर लिया है, वही सतिगुरु की सेवा कर सकता है।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਸੰਤਾਪ ॥੪॥੮॥੭੮॥
नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७८॥
हे नानक ! जिसे गुरु मिला है, उसके सभी दुःख-संताप नष्ट हो गए हैं ॥ ४॥ ८ ॥ ७८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਇਕੁ ਪਛਾਣੂ ਜੀਅ ਕਾ ਇਕੋ ਰਖਣਹਾਰੁ ॥
इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥
एक परमात्मा ही मनुष्य का ज्ञाता है तथा वही एक उसका संरक्षक है।

ਇਕਸ ਕਾ ਮਨਿ ਆਸਰਾ ਇਕੋ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੁ ॥
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥
केवल वही मन का सहारा है और प्राणाधार वही एक प्रभु है।

ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥
तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥
उस परब्रह्म परमात्मा की शरण लेने से सदैव सुखों की उपलब्धि होती है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਗਲ ਉਪਾਵ ਤਿਆਗੁ ॥
मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥
हे मेरे मन ! प्रभु-प्राप्ति के अपने अन्य सभी उपाय त्याग दे।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿ ਨਿਤ ਇਕਸੁ ਕੀ ਲਿਵ ਲਾਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥
केवल परिपूर्ण गुरु की नित्य आराधना करो तथा गुरु के मार्गदर्शन से उसी एक परमात्मा में लिवलीन हो जाओ ॥१॥ रहाउ ॥

ਇਕੋ ਭਾਈ ਮਿਤੁ ਇਕੁ ਇਕੋ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ॥
इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥
एक ईश्वर ही सच्चा भ्राता, मित्र एवं माता-पिता है।

ਇਕਸ ਕੀ ਮਨਿ ਟੇਕ ਹੈ ਜਿਨਿ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦਿਤਾ ॥
इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥
मेरे मन के भीतर उस प्रभु का ही आश्रय है, जिसने मुझे आत्मा तथा यह देह प्रदान की है।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵਿਸਰੈ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸਿ ਕੀਤਾ ॥੨॥
सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥
उस प्रभु को, जो संसार की प्रत्येक वस्तु अपने अधीन रखता है, मुझे अपने मन में कदापि विस्मृत न हो।॥ २॥

ਘਰਿ ਇਕੋ ਬਾਹਰਿ ਇਕੋ ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਆਪਿ ॥
घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥
वह सर्वव्यापक परमेश्वर हृदय रूपी घर में भी विद्यमान है और शरीर के बाहर भी मौजूद है। वह स्वयं ही समस्त स्थानों के भीतर बसा हुआ है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਜਿਨਿ ਕੀਏ ਆਠ ਪਹਰ ਤਿਸੁ ਜਾਪਿ ॥
जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥
जिस सृष्टिकर्ता ने मनुष्य एवं अन्य जीवों की रचना की है, उसकी आठों पहर आराधना करनी चाहिए।

ਇਕਸੁ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਨ ਹੋਵੀ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੁ ॥੩॥
इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥
यदि एक ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाओगे तो तुम्हारे समस्त शोक-संतापों का विनाश हो जाएगा। ३॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥
एक परमात्मा ही परब्रह्म है, अन्य कोई नहीं।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਇ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥
मनुष्य का जीवन एवं शरीर समस्त उसी की देन हैं, जो कुछ उसे अच्छा लगता है, वही होता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰਾ ਭਇਆ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੪॥੯॥੭੯॥
गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥४॥९॥७९॥
हे नानक ! परिपूर्ण गुरु द्वारा मनुष्य भी सम्पूर्ण हो गया है, क्योंकि उसने गुरुन्मुख होकर भगवान का नाम-सिमरन किया है॥ ४॥ ६॥ ७६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸੇ ਪੂਰੇ ਪਰਧਾਨ ॥
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥
जिन्होंने सतिगुरु के उपदेश का चिन्तन किया है, वह मनुष्य पूर्ण व श्रेष्ठ हो जाते हैं।

ਜਿਨ ਕਉ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਤਿਨ ਉਪਜੈ ਮਨਿ ਗਿਆਨੁ ॥
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥
जिन पर भगवान स्वयं कृपालु होता है, उनके मन में ज्ञान उत्पन्न होता है,

ਜਿਨ ਕਉ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥१॥
जिनके माथे पर शुभ भाग्य अंकित होते हैं, वही भगवान का नाम-सिमरन प्राप्त करते हैं।॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मन मेरे एको नामु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! इसलिए तुम उस एक परमात्मा के नाम का ध्यान करो,

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਊਪਜਹਿ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि नाम-सिमरन से ही मानव के जीवन में श्रेष्ठ सुख उत्पन्न होते हैं तथा प्रभु के दरबार में यह प्रतिष्ठित पोशाक पहन कर जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਭਉ ਗਇਆ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਗੋਪਾਲ ॥
जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥
भगवान की प्रेमा-भक्ति करने से मनुष्य जन्म-मरण के भय से मुक्त होता है।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਨਿਰਮਲਾ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥
संतों की संगति करने से मनुष्य निर्मल हो जाता है जिसके फलस्वरूप स्वामी (प्रभु) स्वयं उसका पालन-पोषण करता है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੀ ਮਲੁ ਕਟੀਐ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥
जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल ॥२॥
उनके आवागमन (जन्म-मरण) की मैल कट जाती है और वे सतिगुरु का दर्शन करके कृतार्थ हो जाता है। २ ॥

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥
परम-परमेश्वर कण-कण में विद्यमान है।

ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥
केवल परमात्मा ही समस्त प्राणियों का स्वामी है, अन्य दूसरा कोई नहीं।

ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਛੁਟੀਐ ਕੀਤਾ ਲੋੜੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੩॥
तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥३॥
उसकी शरण में आने से जीव को जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है, जो कुछ परमेश्वर करना चाहता है, वही होता है॥३॥

ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੇ ਪੂਰੇ ਪਰਧਾਨ ॥
जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥
जिनके हृदय में सर्वज्ञाता परमेश्वर वास करता है, वह सम्पूर्ण एवं प्रभुख है।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਨਿਰਮਲੀ ਪਰਗਟੁ ਭਈ ਜਹਾਨ ॥
तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥

वह जीव शुभ गुणों के कारण श्रेष्ठ पुरुष हो जाते हैं। उनकी सुकीर्ति पवित्र होकर सम्पूर्ण विश्व में फैल जाती है।

ਜਿਨੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥੧੦॥੮੦॥

जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥४॥१०॥८०॥

हे नानक ! जिन्होंने मेरे परमात्मा का ध्यान किया है, मैं उन पर कुर्बान हूँ॥ ४॥ १०॥ ८०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਗਇਆ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरि सुखु वसिआ मनि आइ ॥
सतिगुरु के मिलन से समस्त दुःख निवृत्त हो गए हैं और सुख स्वरूप परमात्मा हृदय में आ बसा है।

ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀਆ ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥
एक ईश्वर के साथ सुरती लगाने से अन्तर्मन में पवित्र ज्ञान-ज्योति का प्रकाश हो गया है।

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥
मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥
साधु-संतों से भेंट करके मेरा चेहरा उज्जवल हो गया है तथा पूर्व कर्मों के लिखे शुभ लेख के कारण मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है।

ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਵਣੇ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥
गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥१॥
सृष्टि के स्वामी गोविंद तथा सत्य नाम का यश सदैव करने से मैं निर्मल हो गया हूँ॥१

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥
हे मेरे मन ! गुरु के शब्द द्वारा ही सुख प्राप्त होता है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु की सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, अपितु गुरु की सेवा से अवश्य फल प्राप्त होता है।॥१॥ रहाउ॥

ਮਨ ਕੀਆ ਇਛਾਂ ਪੂਰੀਆ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥
भगवान ने मेरी मनोकामनाएँ पूर्ण कर दी हैं और मुझे नाम रूपी खजाना प्राप्त हो गया है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਨੁ ॥
अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥
अंतर्यामी सदैव तेरे अंग-संग है तथा वह निरपेक्ष कर्ता है, उसकी पहचान कर लो।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥
गुर परसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥
गुरु कृपा द्वारा नाम-सिमरन, दान-पुण्य एवं पवित्र तीर्थ-स्नान करने से मानव का मुख उज्ज्वल हो जाता है अर्थात् ख्याति प्राप्त होती है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਬਿਨਸਿਆ ਤਜਿਆ ਸਭੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੨॥
कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥
ऐसे व्यक्ति के अन्तर्मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि सब नष्ट हो जाते हैं तथा अहंकार का त्याग कर देते हैं ॥ २ ॥

ਪਾਇਆ ਲਾਹਾ ਲਾਭੁ ਨਾਮੁ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮ ॥
पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥
जिन्होंने भगवान के नाम-सिमरन का जीवन में लाभार्जित किया है, उनके समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲਿਆ ਦੀਆ ਅਪਣਾ ਨਾਮੁ ॥
करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥
ऐसे जीवों को भगवान स्वयं कृपा करके अपने साथ मिलाता है और उन्हें अपना नाम-सिमरन प्रदान करता है।

ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਰਹਿ ਗਇਆ ਆਪਿ ਹੋਆ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥
आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥
जिन पर भगवान कृपालु हुआ है, उनका आवागमन समाप्त हो गया है।

ਸਚੁ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਪਛਾਨੁ ॥੩॥
सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥
उन्होंने गुरु के उपदेश का मनन करके सत्यस्वरूप परमात्मा का दर प्राप्त किया है॥ ३॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਰਾਖਦਾ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥
परमात्मा अपनी दया-दृष्टि से भक्तों की स्वयं विषय-विकारों से रक्षा करता है।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥
हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥
इहलोक एवं परलोक में उनके मुख उज्ज्वल हो जाते हैं, जो पारब्रह्म के गुणों को हृदय में स्मरण करते हैं।

ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਸਾਰਦੇ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਅਪਾਰ ॥
आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥
दिन के आठों पहर ही वह ईश्वर के सर्वगुणों का यशोगान करते हैं तथा उसकी अनन्त प्रीत में मग्न हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੋ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੪॥੧੧॥੮੧॥
पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥
हे नानक ! मै सुखों के सागर पारब्रह्म पर सदैव बलिहारी जाता हूँ ॥४॥११॥८१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਸਬਦੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥
मानव को यदि पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो उसे नाम रूपी खजाना मिल जाता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਜਪੀਐ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ॥
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अम्रित नामु ॥
हे प्रभु ! तुम मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मैं तुम्हारे नामामृत का जाप करूँ।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਕਾਟੀਐ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥
मेरे जन्म-मरण का दुख दूर हो जाए तो मेरा सहजावस्था में ध्यान लग जाए॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ਪਾਇ ॥
मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥
हे मेरे मन ! तुम प्रभु की शरण प्राप्त करो।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥

उस एक परमात्मा के नाम का ध्यान करो, क्योंकि उस हरि के बिना अन्य कोई नहीं है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈਐ ਸਾਗਰੁ ਗੁਣੀ ਅਥਾਹੁ ॥

कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥

उस परमेश्वर का मूल्यांकन कदापि नहीं किया जा सकता। क्योंकि वह परमात्मा अथाह गुणों का सागर है।

ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੰਗਤੀ ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਵਿਸਾਹੁ ॥

वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥

सौभाग्य के कारण तुम सत्संग में मिल जाओ तथा वहाँ से श्रद्धा रूपी मूल्य देकर गुरु से सत्य उपदेश खरीद लो।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸੁਖ ਸਾਗਰੈ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥੨॥

करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥

उस सुखों के सागर की सेवा कर अर्थात् श्रद्धा सहित उस परमात्मा की आराधना कर, वह राजाओं का भी महाराजा सबसे बड़ा मालिक है॥ २॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਕਾ ਆਸਰਾ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ॥

चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥

हमें प्रभु के चरण कवलों का सहारा है क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ठिकाना नहीं।

ਮੈ ਧਰ ਤੇਰੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤੇਰੈ ਤਾਣਿ ਰਹਾਉ ॥

मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥

हे परमेश्वर ! तुम्हारी शक्ति से ही मेरा अस्तित्व है। मुझे आपका ही आश्रय है और आपके सत्य द्वारा ही मैं जीवित हूँ।

ਨਿਮਾਣਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਣੁ ਤੂੰ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਮਾਉ ॥੩॥

निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥

हे प्रभु ! सम्मानहीनों का ही तू सम्मान है जिन पर तुम्हारी कृपा हुई है, वह तुझ में ही विलीन हुए हैं।॥३॥

ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਆਰਾਧੀਐ ਆਠ ਪਹਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥
हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥
गोविन्द को आठों प्रहर जपते रहना चाहिए, उसकी आराधना करनी चाहिए।

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਤਨੁ ਧਨੁ ਰਖੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖੀ ਜਿੰਦੁ ॥
जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥
भगवान अपनी कृपा करके जीवों के प्राणों, तन, धन की विषय-विकारों से रक्षा करता है।

ਨਾਨਕ ਸਗਲੇ ਦੋਖ ਉਤਾਰਿਅਨੁ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥੪॥੧੨॥੮੨॥
नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥४॥१२॥८२॥
हे नानक ! परमात्मा ने मेरे समस्त पाप दूर कर दिए हैं, चूंकि वह पारब्रह्म क्षमाशील है॥ ४॥ १२॥ ६२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਸੁ ਸਚ ਸਿਉ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥
भक्तों की उस परमसत्य परमात्मा से प्रीति लगी है, जो न कभी जन्म लेता है और न ही मरता है।

ਨਾ ਵੇਛੋੜਿਆ ਵਿਛੁੜੈ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥
जुदा किए भी वह जुदा नहीं होता क्योंकि वह परमात्मा कण-कण में विद्यमान है।

ਦੀਨ ਦਰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ ਸੇਵਕ ਕੈ ਸਤ ਭਾਇ ॥
दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाइ ॥
वह प्रभु अनाथों के दुःख-दर्द नाश करता है और अपने भक्तों को आदर-सहित मिलता है।

ਅਚਰਜ ਰੂਪੁ ਨਿਰੰਜਨੋ ਗੁਰਿ ਮੇਲਾਇਆ ਮਾਇ ॥੧॥
अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥
हे मेरी माता ! वह माया रहित प्रभु आश्चर्यजनक स्वरूप वाला है तथा गुरु ने आकर मुझे उससे मिला दिया है॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਮੀਤੁ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥

भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥

हे भाई ! उस परमेश्वर को अपना मित्र बना।

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਰੀਤਿ ਧ੍ਰਿਗੁ ਸੁਖੀ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
मोह-माया की प्रीति को धिक्कार है। इससे कोई भी सुखी दिखाई नहीं देता ॥१॥ रहाउ॥

दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥
दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥
वह परमेश्वर सर्वज्ञ, महान दाता, शीलवान, पवित्र, सुन्दर तथा बेअंत है।

सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥
सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥
वह प्राणी का साथी, सहायक, महान्, अनंत, विशाल एवं सर्वोच्च है।

बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥
बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥
परमात्मा को न बालक अथवा न ही वृद्ध समझना चाहिए, उस परमात्मा का दरबार सदैव स्थिर है।

जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥
जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥
हम जो कुछ भी परमात्मा के समक्ष श्रद्धापूर्वक याचना करते हैं, वह उससे प्राप्त कर लेते हैं। सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा आश्रयहीनों का आश्रय है ॥२॥

जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥
जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥
जिस प्रभु के दर्शन-मात्र से समस्त पाप दूर हो जाते हैं, मन एवं देह शीतल हो जाते हैं

इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥
इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥
तथा मन की समस्त भ्रांतियाँ मिट जाती हैं, उस प्रभु को एकाग्रचित होकर स्मरण करना चाहिए।

गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥
गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥
वह परमेश्वर गुणों का भण्डार है, वह सदैव निरोग एवं दानशील है। उसकी अनुकंपा अपरम्पार है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਰਾਧੀਐ ਦਿਨੁ ਵਿਸਰਹੁ ਨਹੀ ਰਾਤਿ ॥੩

सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥

दिन एवं रात उसे कभी भी विस्मृत मत करो, सदैव उस परब्रह्म की आराधना करते रहनी चाहिए ॥३॥

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਸਖਾ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥

जिसके माथे पर पूर्व से ही शुभ कर्मो का भाग्य लिखा है, गोविन्द उसका घनिष्ठ बना है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਰਪੀ ਸਭੋ ਸਗਲ ਵਾਰੀਐ ਇਹ ਜਿੰਦੁ ॥

तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥

उसे मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ समर्पित करता हूँ और यह जीवन भी उस परमेश्वर पर न्योछावर करता हूँ।

ਦੇਖੈ ਸੁਣੈ ਹਦੂਰਿ ਸਦ ਘਟਿ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਰਵਿੰਦੁ ॥

देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥

सर्वव्यापक परमात्मा नित्य ही जीवों को अपने समक्ष देखता एवं सुनता है। वह घट-घट प्रत्येक हृदय में व्याप्त है।

ਅਕਿਰਤਘਣਾ ਨੋ ਪਾਲਦਾ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥੪॥੧੩॥੮੩॥

अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥

परमात्मा इतना दयालु-कृपालु है कि वह कृतघ्नों का भी पालन-पोषण करता है। हे नानक ! वह परमात्मा सदैव क्षमाशील है ॥४ ॥१३ ॥८३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सिरीरागु महला ५ ॥

श्रीरागु महला ५ ॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਆ ਰਖਿਆ ਸਹਜਿ ਸਵਾਰਿ ॥

मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥

जिस प्रभु ने यह मन, तन व धन इत्यादि सब कुछ दिया है तथा इनको सजा संवार कर रखा हुआ है।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਰਿ ਥਾਪਿਆ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥
उस प्रभु ने सर्वकला सम्पूर्ण शक्तियों द्वारा शरीर की रचना की है और अन्तर्मन में अपनी ज्योति प्रकट की है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ ਅੰਤਰਿ ਰਖੁ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उर धारि ॥१॥
उस प्रभु की सदा आराधना करनी चाहिए तथा हृदय में बसाकर रखें॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर के बिना अन्य कोई समर्थ नहीं।

ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ਸਦਾ ਰਹੁ ਦੂਖੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
सदैव उस प्रभु की शरण में रहने से तुझे कोई विपत्ति नहीं आएगी॥ १॥ रहाउ ॥

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਮਾਣਕਾ ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਖਾਕੁ ॥
रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥
स्वर्ण, चांदी, माणिक्य, हीरे-मोती रत्न पदार्थ समस्त मिट्टी समान हैं।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪਾ ਕੂੜੇ ਸਭੇ ਸਾਕ ॥
मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥
माता-पिता, सगे-संबंधी, रिश्तेदार समस्त झूठे रिश्तेदार हैं।

ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਈ ਮਨਮੁਖ ਪਸੁ ਨਾਪਾਕ ॥੨॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥
जिस प्रभु ने सब कुछ उत्पन्न किया है, उसे स्वेच्छाचारी एवं अपवित्र पशु समान जीव स्मरण नहीं करता॥२॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਤਿਸ ਨੋ ਜਾਣੈ ਦੂਰਿ ॥
अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥
परमेश्वर शरीर के अन्दर एवं बाहर परिपूर्ण है, वह कण-कण में व्याप्त है लेकिन उसे मनुष्य दूर समझता है।

.

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਗੀ ਰਚਿ ਰਹਿਆ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਕੂਰਿ ॥
त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥
जीव के अन्तर्मन में भोग विलास की तृष्णा है, वह विषय-विकारों में लिप्त है और उसका हृदय अहंकार एवं झूठ में भरा हुआ है।

ਭਗਤੀ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣਿਆ ਆਵਹਿ ਵੰਞਹਿ ਪੂਰ ॥੩॥
भगती नाम विहूणिआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥
प्रभु की भक्ति एवं नाम-सिमरन से वंचित होने के कारण प्राणियों के समुदाय योनियों में फँसकर आते जाते रहते हैं। ३॥

ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਣਹਾਰ ਜੀਅ ਜੰਤ ਕਰਿ ਦਇਆ ॥
राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥
हे करुणा निधान पारब्रह्म ! इन जीव-जन्तुओं पर कृपा-दृष्टि करके उनकी रक्षा करो।

ਬਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕੋਇ ਨ ਰਖਨਹਾਰੁ ਮਹਾ ਬਿਕਟ ਜਮ ਭਇਆ ॥
बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥
यमराज बड़ा विकट हो गया है। प्रभु के बिना अन्य कोई रखवाला नहीं है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰਉ ਕਰਿ ਅਪੁਨੀ ਹਰਿ ਮਇਆ ॥੪॥੧੪॥੮੪॥
नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥४॥१४॥८४॥
नानक जी का कथन है कि हे प्रभु! अपनी कृपा करो तांकि मैं कभी भी तेरा नाम न भूलूं ॥४॥१४॥८४ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਮੇਰਾ ਤਨੁ ਅਰੁ ਧਨੁ ਮੇਰਾ ਰਾਜ ਰੂਪ ਮੈ ਦੇਸੁ ॥
मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥
मनुष्य गर्व से कहता है कि यह तन-मन एवं धन मेरा है, इस देश पर शासन मेरा है।

ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਬਨਿਤਾ ਅਨੇਕ ਬਹੁਤੁ ਰੰਗ ਅਰੁ ਵੇਸ ॥
सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥
मैं सुन्दर स्वरूप वाला हूँ तथा मेरे पुत्र हैं, स्त्री है, पुत्री है और अनेकानेक रंगों के भेष मैं ही धारण कर सकता हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਨ ਵਸਈ ਕਾਰਜਿ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਿ ॥੧॥

हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥

हे भाई ! जिस मानव के हृदय में प्रभु नाम का निवास नहीं है, उसके समस्त किए काम गणना में नहीं आते ॥ १ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥

मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥

हे मेरे मन ! हरि-परमात्मा के नाम की आराधना करो

ਕਰਿ ਸੰਗਤਿ ਨਿਤ ਸਾਧ ਕੀ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥

प्रतिदिन साधु-संतों की संगति में रहने का प्रयास करो और गुरु के चरणों में अपने चित्त को लगाओ ॥१॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਧਿਆਈਐ ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਭਾਗੁ ॥

नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥

हरि-नाम, जो सर्व प्रकार की निधि है, उसका चिन्तन तभी हो सकता है, यदि मनुष्य के माथे पर शुभ भाग्य अंकित हो।

ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰੀਅਹਿ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥

कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥

गुरु के चरणों में लगने से समस्त कार्य संवर जाते हैं।

ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਗੁ ॥੨॥

हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥२॥

इस प्रकार अहंकार के रोग एवं शंकाएँ निवृत्त हो जाती हैं और प्राणी का आवागमन कट जाता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।॥२॥

ਕਰਿ ਸੰਗਤਿ ਤੂ ਸਾਧ ਕੀ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਉ ॥

करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥

इसलिए हे जीव ! तू साधु की संगति कर, जो अठसठ तीर्थों के स्नान के समान अति पावन है।

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰੇ ਸਾਚਾ ਏਹੁ ਸੁਆਉ ॥

जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥

नाम-सिमरन से तुम्हारी आत्मा, प्राण, मन एवं देहि प्रफुल्लित हो जाएँगे और यही जीवन का सत्य मनोरथ है।

ਐਥੈ ਮਿਲਹਿ ਵਡਾਈਆ ਦਰਗਹਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਉ ॥੩॥
ऐथै मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥
यहाँ पर तुझे मान-सम्मान प्राप्त होगा और प्रभु के दरबार में भी श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा ॥३॥

करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥
करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥
अकाल पुरुष स्वयं ही करने-करवाने वाला है। परमेश्वर सर्व-कर्ता है, सब कुछ उसके अधीन है।

मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥
मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥
वह सर्वव्यापक प्रभु कण-कण में विद्यमान है, जो स्वयं ही मारने वाला तथा जीवन दाता है। अन्दर तथा बाहर वह प्राणी का साथी है।

नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥४॥१५॥८५॥
नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥४॥१५॥८५॥
हे नानक ! प्रभु समस्त जीवों का स्वामी है, अत : मैं उसकी शरण में आया हूँ ॥४॥१५॥८५॥

सिरीरागु महला ५ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥
सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥
जब मेरा गुरु मुझ पर कृपालु हुआ तो मैं अपने प्रभु की शरण में आ गया।

सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ॥
सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ॥
सतिगुरु के उपदेश द्वारा मेरे समस्त बन्धन दूर हो गए हैं।

अंदरु लगा राम नामि अंम्रित नदरि निहालु ॥१॥
अंदरु लगा राम नामि अम्रित नदरि निहालु ॥१॥
जब अन्तर्मन राम नाम के सिमरन में लीन हो गया तो मैं गुरु की कृपा से कृतार्थ हो गया।॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸਾਰੁ ॥
मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥
हे मेरे मन ! सतिगुरु की सेवा श्रेष्ठ है।

ਕਰੇ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥
उस प्रभु को एक पल के लिए भी विस्मृत मत करना, तभी वह तुझ पर कृपा-दृष्टि करेगा ॥ रहाउ॥

ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਵੀਅਹਿ ਅਵਗੁਣ ਕਟਣਹਾਰ ॥
गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ॥
हमें प्रतिदिन उस गोविन्द-प्रभु का यशगान करना चाहिए, जो मनुष्य के समस्त अवगुणों को निवृत्त करने वाला है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਕਰਿ ਡਿਠੇ ਬਿਸਥਾਰ ॥
बिनु हरि नाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥
अनेक व्यक्तियों ने माया के प्रपंच करके देख लिए हैं किन्तु हरि-नाम के अलावा सुख नहीं मिलता।

ਸਹਜੇ ਸਿਫਤੀ ਰਤਿਆ ਭਵਜਲੁ ਉਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥੨॥
सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ॥२॥
जो व्यक्ति भगवान की उपमा करने में मग्न रहते हैं, वे सहज ही भवसागर से पार हो जाते हैं ॥ २ ॥

ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਲਖ ਸੰਜਮਾ ਪਾਈਐ ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ॥
तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ॥
लाखों तीर्थों के स्नान, लाखों व्रत रखने व इन्द्रियों को विषय-विकारों से रोकने का फल संतजनों की चरण-धूलि ग्रहण करने से ही प्राप्त हो जाता है।

ਲੂਕਿ ਕਮਾਵੈ ਕਿਸ ਤੇ ਜਾ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ॥
लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥
हे भाई ! मानव किससे छिपकर पाप कमाता है, जबकि वह प्रभु सदैव समक्ष देख रहा है।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥
थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥३॥
मेरा परिपूर्ण परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त हो रहा है ॥३॥

ਸਚੁ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਅਮਰੁ ਸਚੁ ਸਚੇ ਸਚਾ ਥਾਨੁ ॥
सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥
सत्य परमेश्वर का साम्राज्य सत्य है, उसका आदेश भी सत्य है, उस सत्य परमेश्वर का स्थिर रहने वाला स्थान भी सत्य है।

ਸਚੀ ਕੁਦਰਤਿ ਧਾਰੀਅਨੁ ਸਚਿ ਸਿਰਜਿਓਨੁ ਜਹਾਨੁ ॥
सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ॥
उसने सत्य शक्ति धारण की हुई है और उसने सत्य-सृष्टि की रचना की हुई है।

ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਹਉ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੪॥੧੬॥੮੬॥
नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥४॥१६॥८६॥
हे नानक ! मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ, जो सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम-सिमरन करता है ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८६ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪਣਾ ਵਡਭਾਗੀ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ॥
उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥
हे भाग्यवान पुरुष ! परिश्रम करके हरि नाम सिमरन रूपी आत्म-धन एकत्र करो।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣਾ ਮਲੁ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਕਾਟਿ ॥੧॥
संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥
सत्संग में जाकर हरि नाम का सिमरन किया जाता है, जिससे जन्म-जन्म के पापों की मैल कट जाती है। १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਜਾਪੁ ॥
मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥
हे मेरे मन ! राम-नाम रूपी जाप का सिमरन करो।

ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਭੁੰਚਿ ਤੂ ਸਭੁ ਚੂਕੈ ਸੋਗੁ ਸੰਤਾਪੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥
इससे तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होंगे और तुम्हारे दुख तथा संताप सब नष्ट हो जाएँगे। ॥ रहाउ ॥

ਜਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਤਨੁ ਧਾਰਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਨਾਲਿ ॥
जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥
जिस भगवान को पाने के लिए यह मानव-देह को धारण किया है, वह प्रभु अपने अंग-संग ही देख लिया है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੨॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥
वह परिपूर्ण प्रभु जल में, धरती में, गगन में सर्वत्र व्यापक है, वह सब प्राणियों को दया की दृष्टि से देखता है ॥२॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇਆ ਲਾਗੀ ਸਾਚੁ ਪਰੀਤਿ ॥
मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥
सच्चे स्वामी प्रभु के साथ प्रीति लगाने से तन-मन सभी पवित्र हो जाते हैं।

ਚਰਣ ਭਜੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸਭਿ ਜਪ ਤਪ ਤਿਨ ਹੀ ਕੀਤਿ ॥੩॥
चरण भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥
जो प्राणी प्रभु के चरणों का ध्यान करता है, मानो उसने समस्त जप-तप (उपासना-तपस्या) कर लिए हैं।॥३॥

ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਮਾਣਿਕਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ॥
रतन जवेहर माणिका अम्रितु हरि का नाउ ॥
अमृत रूपी हरि का नाम हीरे, जवाहर रत्नों की भाँति अमूल्य है।

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਰਸ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੪॥੧੭॥੮੭॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥
हे नानक ! जिसने प्रेम भाव से भगवान की महिमा का गायन किया है, उसे सहज ही अच्युत सुख के आनंद का रस प्राप्त हुआ है ॥४॥१७॥८७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸੋਈ ਸਾਸਤੁ ਸਉਣੁ ਸੋਇ ਜਿਤੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरि नाउ ॥
वह धार्मिक शास्त्र उचित है और वही शगुन शुभ है जिसके द्वारा हरि-नाम का सिमरन किया जाए।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਗੁਰਿ ਧਨੁ ਦੀਆ ਮਿਲਿਆ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥
चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥
जिस मानव जीव को गुरु ने चरण कमल रूप धन दिया है उस आश्रयहीन व्यक्ति को आश्रय मिल गया।

ਸਾਚੀ ਪੂੰਜੀ ਸਚੁ ਸੰਜਮੋ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥
आठ पहर भगवान के गुणों का गायन करना ही सत्य राशि है तथा सत्य संयम है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭੇਟਿਆ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣੁ ਜਾਉ ॥੧॥
करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥१॥
भगवान स्वयं जिनको कृपा करके मिला है वह जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है।॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸਦਾ ਇਕ ਰੰਗਿ ॥
मेरे मन हरि भजु सदा इक रंगि ॥
हे मेरे मन ! तू सदैव एकाग्रचित होकर भगवान का भजन किया कर,

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਸੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि भगवान तो प्रत्येक हृदय के अन्दर समाया हुआ है तथा जीव के साथ होकर सहायता करता है ॥१॥ रहाउ॥

ਸੁਖਾ ਕੀ ਮਿਤਿ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਾ ਸਿਮਰੀ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥
सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥
जब प्रभु स्मरण किया तो इतने सुखों की उपलब्धि होती है कि उनकी गिनती नहीं हो सकती।

ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਿਆ ਉਹ ਰਸੁ ਜਾਣੈ ਜਿੰਦੁ ॥
जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ॥
जिसने भी हरि रस को चखा है, वह तृप्त हो गया तथा उस रस को वही आत्मा जानती है।

ਸੰਤਾ ਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥
संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥
संतों की संगति द्वारा क्षमावान प्रियतम प्रभु हृदय में बसता है।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਸੋਈ ਰਾਜ ਨਰਿੰਦੁ ॥੨॥
जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥२॥
जिसने अपने प्रभु नाम का सिमरन किया है। वह राजाओं का भी राजा है॥ २॥

ਅਉਸਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗੁਣ ਰਮਣ ਜਿਤੁ ਕੋਟਿ ਮਜਨ ਇਸਨਾਨੁ ॥
अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥
जिस समय हरि नाम के यश व गुणों का चिन्तन किया जाए, वह करोड़ों तीर्थों के स्नान के पुण्य-फल के समान है।

ਰਸਨਾ ਉਚਰੈ ਗੁਣਵਤੀ ਕੋਇ ਨ ਪੁਜੈ ਦਾਨੁ ॥
रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥
हरि स्मरण द्वारा रसना गुणों वाली हो जाती है, पुनः उसके तुल्य कोई दान नहीं है।

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਧਾਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸੈ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥
द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥
अकालपुरुष दयालु एवं मेहरबान है, वह अपनी कृपा-दृष्टि द्वारा जीव के मन व तन में विराजमान होता है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਧਨੁ ਤਿਸ ਦਾ ਹਉ ਸਦਾ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੩॥
जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥
जीव को तन एवं धन उस परमात्मा का दिया हुआ है, मैं उस पर सदैव ही न्यौछावर हूँ॥ ३॥

ਮਿਲਿਆ ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁੜੈ ਜੋ ਮੇਲਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥
मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥
जिसे कर्ता-पुरुष परमात्मा अपने साथ मिला ले, वह परमात्मा से मिला ही रहता है फिर कभी नहीं बिछुड़ता।

ਦਾਸਾ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਟਿਆ ਸਾਚੈ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿ ॥
दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥
सृजनहार प्रभु ने अपने सेवकों के माया रूपी बंधनों को काट दिया है।

ਭੂਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਓਨੁ ਗੁਣ ਅਵਗੁਣ ਨ ਬੀਚਾਰਿ ॥
भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥
अपने सेवकों के गुणों-अवगुणों का विचार किए बिना भूले हुए को भी भक्ति-मार्ग पर डाल देता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਿ ਸਗਲ ਘਟਾ ਆਧਾਰੁ ॥੪॥੧੮॥੮੮॥
नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥
नानक कथन करते हैं कि उस भगवान की शरण में पड़ जा, जो समस्त जीवों का आधार है॥ ४ ॥ १८ ॥ ८८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਰਸਨਾ ਸਚਾ ਸਿਮਰੀਐ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥
यदि सत्य परमात्मा को रसना द्वारा स्मरण किया जाए तो जीव का मन एवं तन दोनों पवित्र हो जाते हैं।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਾਕ ਅਗਲੇ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
जीव के माता-पिता एवं अन्य सगे-संबंधी तो बहुत होते हैं किन्तु इहलोक एवं परलोक में उस परमात्मा के सिवाय अन्य कोई सहायक नहीं है।

ਮਿਹਰ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਚਸਾ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੋਇ ॥੧॥
मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥१॥
परमात्मा यदि अपनी कृपा-दृष्टि करे तो मनुष्य उसको क्षण-मात्र के लिए भी विस्मृत नहीं करता ॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਾਚਾ ਸੇਵਿ ਜਿਚਰੁ ਸਾਸੁ ॥
मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥
हे मेरे मन ! जब तक तेरे प्राण हैं, उस सत्य परमात्मा का सिमरन करता जा।

ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਸਭ ਕੂੜੁ ਹੈ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥१॥ रहाउ ॥
उस परमात्मा के अलावा समस्त सृष्टि मिथ्या है और अंत में नाश हो जाने वाली है ॥१॥ रहाउ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਨਿਰਮਲਾ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥
मेरा परमात्मा बड़ा निर्मल है। उसके बिना मैं कभी नहीं रह सकता।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭੁਖ ਅਤਿ ਅਗਲੀ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮਾਇ ॥
मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥
मेरे मन एवं तन के भीतर परमेश्वर हेतु परम तृष्णा है। कोई भी आकर उससे मुझे मिला दे।

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਭਾਲੀਆ ਸਹ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥
चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइ ॥२॥
मैंने चारों दिशाओं में उसकी खोज कर ली है, परम-पिता परमेश्वर के बिना अन्य कोई भी विश्राम स्थल नहीं ॥ २॥

ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰਿ ਜੋ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥
तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥
उस गुरु के समक्ष प्रार्थना कर, जो तुझे इस सृष्टि के सृजनहार से तेरा मिलाप करवा दे।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਨਾਮ ਕਾ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਭੰਡਾਰੁ ॥
सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥
सतिगुरु जी नाम के दाता हैं, जिनके पास भक्ति का पूर्ण भंडार है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੩॥
सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥
सदैव उस प्रभु की प्रशंसा करो, जिसकी सीमा को अंत तक नहीं जाना जा सकता ॥३॥

ਪਰਵਦਗਾਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸ ਦੇ ਚਲਤ ਅਨੇਕ ॥
परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥
उस पालनहार परमात्मा की सराहना करो, जिसके अनेक कौतुक हैं।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਰਾਧੀਐ ਏਹਾ ਮਤਿ ਵਿਸੇਖ ॥
सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥
विशेष बुद्धिमत्ता यही है कि उस परमात्मा की हमेशा आराधना करनी चाहिए।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਮਿਠਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਨਾਨਕ ਲੇਖ ॥੪॥੧੯॥੮੯॥
मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१९॥८९॥
हे नानक ! परमात्मा का नाम उसी जीव के मन एवं तन को मीठा लगता है, जिसके मस्तक पर शुभ-कर्मों के भाग्य लिखे हुए हैं। ॥४॥१९ ॥८९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥ ||
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਮਿਲਿ ਭਾਈਹੋ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥
हे भाइयो ! संतजनों की संगति करके सत्यनाम की आराधना करो।

ਤੋਸਾ ਬੰਧਹੁ ਜੀਅ ਕਾ ਐਥੈ ਓਥੈ ਨਾਲਿ ॥
तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥
जीवन के सफर में रास्ते का नाम रूपी भोजन बुद्धि रूपी दामन के साथ बांध लो, जो इहलोक एवं परलोक में तेरा सहायक होगा।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਅਪਣੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥
गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥
यदि स्वामी अपनी कृपा करे तो यह भोजन गुरु की संगति से प्राप्त कर सकते हो।

ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸੁ ਹੋਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ॥੧॥
करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥१॥
जिस पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उसे नाम रूपी भोजन शुभ कर्मों द्वारा मिल जाता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे मन ! गुरु जैसा अन्य कोई (महान्) नहीं।

ਦੂਜਾ ਥਾਉ ਨ ਕੋ ਸੁਝੈ ਗੁਰ ਮੇਲੇ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥

मैं किसी अन्य स्थान का ख्याल नहीं कर सकता। केवल गुरु ही मुझे सत्य परमेश्वर से मिला सकता है।॥१॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਤਿਸੁ ਮਿਲੇ ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਡਿਠਾ ਜਾਇ ॥

सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥

जो प्राणी गुरु जी के दर्शन करता है, उसको संसार के समस्त पदार्थ (धन-दौलत,ऐश्वर्य) प्राप्त हो जाते हैं।

ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਿਨ ਮਨੁ ਲਗਾ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਮਾਇ ॥

गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥

हे मेरी माता ! वह प्राणी बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिनका मन गुरु-चरणों में लीन हो जाता है।

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਸਮਰਥੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥

गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥

गुरु जी दानशील हैं, गुरु जी सर्वशक्तिमान, गुरु ही ईश्वर रूप सभी के भीतर विद्यमान हैं।

ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਰੁ ਡੁਬਦਾ ਲਏ ਤਰਾਇ ॥੨॥

गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराइ ॥२॥

गुरु ही परमेश्वर एवं पारब्रह्म हैं। गुरु जी ही डूबते हुओं को पार लगाने वाले हैं जो प्राणियों को जीवन-मृत्यु रूपी सागर से पार करवाते हैं॥२॥

ਕਿਤੁ ਮੁਖਿ ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥

कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करण कारण समरथु ॥

किस मुख से गुरु की प्रशंसा करूँ, जो करने एवं करवाने में समर्थ हैं।

ਸੇ ਮਥੇ ਨਿਹਚਲ ਰਹੇ ਜਿਨ ਗੁਰਿ ਧਾਰਿਆ ਹਥੁ ॥

से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥

वे मस्तक (व्यक्ति) सदैव स्थिर रहते हैं, जिन पर गुरु ने अपना अनुकंपा का हाथ रखा है।

ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੀਆਲਿਆ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾ ਪਥੁ ॥

गुरि अम्रित नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥

गुरु ने मुझे जन्म-मरण का भय नाश करने वाला अमृत नाम पान करवाया है।

ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਸੇਵਿਆ ਭੈ ਭੰਜਨੁ ਦੁਖ ਲਥੁ ॥੩॥

गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥३॥

मैंने गुरु परमेश्वर की भरपूर सेवा का फल प्राप्त किया है, जिसने सब भय-भंजन एवं मेरे दुखों को निवृत्त कर दिया है॥३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਗਹਿਰ ਗਭੀਰੁ ਹੈ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਅਘਖੰਡੁ ॥
सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ॥
सतिगुरु गहन, गंभीर एवं सुखों का सागर है और समस्त पापों का नाश करने वाले हैं।

ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਆਪਣਾ ਜਮਦੂਤ ਨ ਲਾਗੈ ਡੰਡੁ ॥
जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥
जिस प्राणी ने अपने गुरु की सेवा का फल प्राप्त किया है, उसे यमदूतों का कदापि दंड नहीं मिलता अपितु वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰ ਨਾਲਿ ਤੁਲਿ ਨ ਲਗਈ ਖੋਜਿ ਡਿਠਾ ਬ੍ਰਹਮੰਡੁ ॥
गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥
गुरु के बराबर कोई भी समर्थ नहीं, क्योंकि मैंने यह सारा ब्रह्माण्ड खोजकर देख लिया है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਮਨ ਮਹਿ ਮੰਡੁ ॥੪॥੨੦॥੯੦॥
नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥४॥२०॥९०॥
सतिगुरु ने नाम का खजाना प्रदान कर दिया है और उस द्वारा नानक ने अपने चित्त के भीतर सुख धारण कर लिया है ॥४॥२०॥६०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਇਆ ਕਉੜਾ ਉਪਜਿਆ ਸਾਦੁ ॥
मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥
प्राणी सांसारिक रसों को बड़ा मीठा समझकर भोगता है परन्तु उनका स्वाद बड़ा कटु निकलता है।

ਭਾਈ ਮੀਤ ਸੁਰਿਦ ਕੀਏ ਬਿਖਿਆ ਰਚਿਆ ਬਾਦੁ ॥
भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥
भाई, मित्र से सुहृद करके व्यर्थ का विवाद उत्पन्न कर लिया है और तुम व्यर्थ ही पापों में ग्रस्त हो गए हो।

ਜਾਂਦੇ ਬਿਲਮ ਨ ਹੋਵਈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥੧॥
जांदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥१॥
अलोप होते इनको विलम्ब नहीं होता, नाम के अतिरिक्त सब नश्वर है, व्यक्ति दुख में चूर-चूर हो जाता है॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਤਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੁ ॥
मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥
हे मेरे मन ! सतिगुरु की सेवा में लीन हो जाओ।

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਵਿਣਸਣਾ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥१॥ रहाउ ॥
दुनिया में जो कुछ दिखाई देता है, वह समस्त नश्वर हो जाएगा। हे प्राणी ! तू मन की चतुरता को त्याग दे॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਕੂਕਰੁ ਹਰਕਾਇਆ ਧਾਵੈ ਦਹ ਦਿਸ ਜਾਇ ॥
जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥
यह मन इतना दुःशील है कि पागल कुत्ते की भाँति दसों-दिशाओं में भागता तथा भटकता फिरता है।

ਲੋਭੀ ਜੰਤੁ ਨ ਜਾਣਈ ਭਖੁ ਅਭਖੁ ਸਭ ਖਾਇ ॥
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥
इसी तरह लालची प्राणी कुछ भी ध्यान नहीं करता। लोभी पशु की तरह खाद्य तथा अखाद्य सबको ग्रहण कर लेता है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਦਿ ਬਿਆਪਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥੨॥
काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥
प्राणी काम, क्रोध तथा अहंकार के नशे में लीन होकर बार-बार योनियों में पड़ता है ॥२॥

ਮਾਇਆ ਜਾਲੁ ਪਸਾਰਿਆ ਭੀਤਰਿ ਚੋਗ ਬਣਾਇ ॥
माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥
माया ने अपना जाल (फांसने का) बिछा रखा है और इस जाल में तृष्णा रूपी दाना भी रख दिया है।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਪੰਖੀ ਫਾਸਿਆ ਨਿਕਸੁ ਨ ਪਾਏ ਮਾਇ ॥
त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥
हे मेरी माता ! लालची पक्षी (प्राणी) इसके भीतर वहाँ फँस जाता है और निकल नहीं पाता।

ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੩॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥३॥
मनुष्य उसको नहीं पहचानता जिस सृष्टिकर्ता ने इसकी रचना की है और पुनःपुनः आवागमन में भटकता फिरता है॥ ३॥

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰੀ ਮੋਹਿਆ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥
माया ने इस विश्व को विभिन्न विधियों एवं अनेको ढंगों से मोह कर रखा हुआ है।

ਜਿਸ ਨੋ ਰਖੈ ਸੋ ਰਹੈ ਸੰਮ੍ਰਿਥੁ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥
जिस नो रखै सो रहै सम्रिथु पुरखु अपारु ॥
जिसकी अपार एवं समर्थ अकालपुरुष रक्षा करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है।

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਲਿਵ ਉਧਰੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੁ ॥੪॥੨੧॥੯੧॥
हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥४॥२१॥९१॥
हे नानक ! प्रभु भक्तों पर मैं सदैव न्यौछावर हूँ, जो भगवान में सुरति लगाने के कारण भवसागर से पार हो गए हैं ॥४॥२१॥९१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥
श्रीरागु महला ५ घरु २ ॥

ਗੋਇਲਿ ਆਇਆ ਗੋਇਲੀ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਡੰਫੁ ਪਸਾਰੁ ॥
गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु ड्मफु पसारु ॥
ग्वाला अपनी गायें लेकर थोड़ी देर के लिए चरागाह में आता है। उसका वहाँ आडम्बर करने का क्या अभिप्राय है?

ਮੁਹਲਤਿ ਪੁੰਨੀ ਚਲਣਾ ਤੂੰ ਸੰਮਲੁ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥੧॥
मुहलति पुंनी चलणा तूं समलु घर बारु ॥१॥
हे प्राणी ! जब तेरा इस दुनिया में आने का समय खत्म हो जाएगा, तब तूने यहाँ से चले जाना है। इसलिए अपने वास्तविक घर प्रभु-चरणों को याद रख॥१॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ਮਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਿਆਰਿ ॥
हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥
हे मेरे मन ! भगवान का गुणगान करो तथा प्रेम से सतिगुरु की सेवा का फल प्राप्त करो।

ਕਿਆ ਥੋੜੜੀ ਬਾਤ ਗੁਮਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥
तुम थोड़े समय के लिए मिले इस जीवन का अहंकार क्यों करते हो?॥१॥ रहाउ॥

ਜੈਸੇ ਰੈਣਿ ਪਰਾਹੁਣੇ ਉਠਿ ਚਲਸਹਿ ਪਰਭਾਤਿ ॥
जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥
रात्रिकाल के अतिथि की तरह तुम सुबह-सवेरे उठकर गमन कर जाओगे।

ਕਿਆ ਤੂੰ ਰਤਾ ਗਿਰਸਤ ਸਿਉ ਸਭ ਫੁਲਾ ਕੀ ਬਾਗਾਤਿ ॥੨॥
किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥
हे प्राणी ! तुम अपने गृहस्थ के साथ क्यों मोहित हुए फिरते हो? क्योंकि सृष्टि के समस्त पदार्थ उद्यान के पुष्पों की भांति क्षणभंगुर हैं।॥ २॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲੋੜਿ ॥
मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥
हे प्राणी ! तुम यह क्यों कहते फिरते हो कि 'यह मेरा है, वो मेरा है।' उस ईश्वर को स्मरण कर, जिसने यह सबकुछ तुझे प्रदान किया है।

ਸਰਪਰ ਉਠੀ ਚਲਣਾ ਛਡਿ ਜਾਸੀ ਲਖ ਕਰੋੜਿ ॥੩॥
सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥
हे प्राणी ! तुम इस नश्वर संसार से अवश्य ही गमन कर जाओगे (जब मृत्युकाल की अवधि आएगी और लाखों, करोड़ों अमूल्य पदार्थ सब कुछ त्याग कर ही जाओगे)॥ ३॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਭ੍ਰਮਤਿਆ ਦੁਲਭ ਜਨਮੁ ਪਾਇਓਇ ॥
लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥
हे प्राणी ! चौरासी लाख योनियों में भटकने के पश्चात् तूने यह दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त किया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਸੋ ਦਿਨੁ ਨੇੜਾ ਆਇਓਇ ॥੪॥੨੨॥੯੨॥
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥९२॥
हे नानक ! तू नाम का सिमरन किया कर क्योंकि तेरा इस संसार को छोड़ने का दिवस निकट आ गया है ॥४॥२२॥९२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਤਿਚਰੁ ਵਸਹਿ ਸੁਹੇਲੜੀ ਜਿਚਰੁ ਸਾਥੀ ਨਾਲਿ ॥
तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥
हे शरीर रूपी स्त्री ! तू तब तक ही इस दुनिया में सुखी है, जब तक तेरा साथी (आत्मा) तेरे साथ है।

ਜਾ ਸਾਥੀ ਉਠੀ ਚਲਿਆ ਤਾ ਧਨ ਖਾਕੂ ਰਾਲਿ ॥੧॥
जा साथी उठी चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥
जब आत्मा रूपी साथी निकल जाएगा, यह शरीर रूपी स्त्री मिट्टी में मिल जाएगी ॥१॥

ਮਨਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਇਆ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਣੈ ਕਾ ਚਾਉ ॥
मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥
हे प्रभु ! मेरा मन सांसारिक तृष्णाओं से विरक्त हो गया है और तेरे दर्शनों की तीव्र अभिलाषा है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਤੇਰਾ ਥਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धंनु सु तेरा थानु ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! आपका वह निवास स्थान धन्य है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਚਰੁ ਵਸਿਆ ਕੰਤੁ ਘਰਿ ਜੀਉ ਜੀਉ ਸਭਿ ਕਹਾਤਿ ॥
जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥
हे शरीर रूपी स्त्री ! जब तक तेरा मालिक (आत्मा) तेरे हृदय में रहता है, तब तक सभी लोग तुझे 'जी-जी' कहते हैं अर्थात आदर-सत्कार करते हैं।

ਜਾ ਉਠੀ ਚਲਸੀ ਕੰਤੜਾ ਤਾ ਕੋਇ ਨ ਪੁਛੈ ਤੇਰੀ ਬਾਤ ॥੨॥
जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥२॥
जब उस देहि से प्राण निकल जाते हैं तो देहि रूपी नारी को कोई भी नहीं पूछता। तदुपरांत पार्थिव शरीर को सभी हटाने के लिए कहेंगे॥२॥

ਪੇਈਅੜੈ ਸਹੁ ਸੇਵਿ ਤੂੰ ਸਾਹੁਰੜੈ ਸੁਖਿ ਵਸੁ ॥
पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥
बाबुल के घर (इस संसार) में अपने पति-परमेश्वर की सेवा करो और ससुराल (परलोक) सुख में निवास करो।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਚਜੁ ਅਚਾਰੁ ਸਿਖੁ ਤੁਧੁ ਕਦੇ ਨ ਲਗੈ ਦੁਖੁ ॥੩॥
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥
गुरु की शरण में आकर शुभ आचरण एवं रहन-सहन की शिक्षा ग्रहण कर। फिर तुझे कदाचित दुखी नहीं होना पड़ेगा।॥३॥

ਸਭਨਾ ਸਾਹੁਰੈ ਵੰਞਣਾ ਸਭਿ ਮੁਕਲਾਵਣਹਾਰ ॥

सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥

समस्त जीव स्त्रियों ने अपने पति-परमेश्वर के घर (परलोक में) जाना है और सभी का विवाह उपरांत गौना (विदायगी) होनी है। अर्थात् सभी प्राणियों ने इस संसार में आकर मृत्यु के उपरांत परलोक गमन करना है, इसलिए इस संसार में अपने पिया प्रभु की स्तुति अवश्य करनी चाहिए ताकि उसके घर (परलोक) में स्थान प्राप्त हो। ?"

ਨਾਨਕ ਧੰਨੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਸਹ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥੪॥੨੩॥੯੩॥
नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥
हे नानक ! वह सुहागिनें (प्राणी) धन्य हैं, जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर का प्रेम प्राप्त कर लिया है ॥४॥२३॥९३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਏਕੁ ਓਹੀ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਆਕਾਰੁ ॥
करण कारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥
जिस एक परमात्मा ने सृष्टि-रचना की है, वह परमात्मा ही करने एवं कराने वाला है|

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਰਬ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥
तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥१॥
हे मेरे मन ! उसका सिमरन करो, जो समस्त जीवों का आधार है॥१॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਮਨ ਮਹਿ ਧਿਆਇ ॥
गुर के चरन मन महि धिआइ ॥
हे मन ! अपने हृदय में गुरु के चरणों का ध्यान करो

ਛੋਡਿ ਸਗਲ ਸਿਆਣਪਾ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥
और अपनी समस्त चतुराइयों त्यागकर सत्य नाम में सुरति लगाओ ॥१॥ रहाउ॥

ਦੁਖੁ ਕਲੇਸੁ ਨ ਭਉ ਬਿਆਪੈ ਗੁਰ ਮੰਤ੍ਰੁ ਹਿਰਦੈ ਹੋਇ ॥
दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होइ ॥
यदि मनुष्य के हृदय में गुरु का मंत्र (शब्द) बस जाए तो उसके समस्त दुःख-संताप अथवा मृत्यु का भय कदापि आगमन नहीं करते।

ਕੋਟਿ ਜਤਨਾ ਕਰਿ ਰਹੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਤਰਿਓ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥
कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥२॥
मनुष्य करोड़ों ही उपाय करके असफल हो गए हैं। परन्तु गुरु के बिना किसी का भी इस भवसागर से उद्धार नहीं हुआ ॥२॥

ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰੈ ਪਾਪ ਸਗਲੇ ਜਾਹਿ ॥
देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥
गुरुदेव के दर्शन-मात्र से ही आत्मा को सहारा प्राप्त होता है और समस्त दोष निवृत्त हो जाते हैं।

ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿ ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥੩॥
हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥
मैं उन पर न्योछावर होता हूँ, जिन्होंने गुरु-चरणों पर स्वयं को अर्पण किया है ॥३॥

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਾਚੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ॥
साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥
साधु की संगति करने से ही ईश्वर का सत्य नाम मन में आकर बसता है।

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨਾ ਮਨਿ ਇਹੁ ਭਾਉ ॥੪॥੨੪॥੯੪॥
से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥
हे नानक ! वे मनुष्य बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिनके हृदय में भगवान के लिए प्रेम है ॥४॥२४॥९४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਸੰਚਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪੂਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਛੋਡਿ ਸਗਲ ਵਿਕਾਰ ॥
संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥
हे प्राणी! समस्त पाप विकारों को त्याग दो। सतिगुरु की पूजा करो एवं हरि नाम रूपी धन संचित करो।

ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥੧॥
जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥१॥
जिस परमात्मा ने तुझे पैदा करके संवारा है, उसका सिमरन करने से तेरा उद्धार हो। जाएगा ॥१॥

ਜਪਿ ਮਨ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਅਪਾਰੁ ॥
जपि मन नामु एकु अपारु ॥
हे मेरे मन ! एक अपार प्रभु का ही नाम जपो।

ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜਿਨਹਿ ਦੀਆ ਰਿਦੇ ਕਾ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥
जिस ईश्वर ने तुझे प्राण, मन एवं तन दिया है, वही समस्त जीवों के हृदय का आधार है॥१॥ रहाउ॥

ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਮਾਤੇ ਵਿਆਪਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥
कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥
सम्पूर्ण जगत् काम, क्रोध अहंकार इत्यादि में मग्न है, दुनिया माया के मोह में फंसी हुई है।

ਪਉ ਸੰਤ ਸਰਣੀ ਲਾਗੁ ਚਰਣੀ ਮਿਟੈ ਦੂਖੁ ਅੰਧਾਰੁ ॥੨॥
पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥
हे प्राणी ! तू संतों के चरणों में लगकर उनकी शरण में जा, फिर तेरा दुख मिट जाएगा और तेरे मन में से अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाएगा ॥२॥

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਦਇਆ ਕਮਾਵੈ ਏਹ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥
सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥
हे प्राणी ! जीवन की श्रेष्ठ करनी यही है कि तू सत्य, संतोष एवं दया की पूंजी संचित कर।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸਭ ਹੋਇ ਰੇਣਾ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥੩॥
आपु छोडि सभ होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥
जिस प्राणी पर निरंकार प्रभु ने कृपा-दृष्टि की है, वह अपना अहंकार त्याग कर उसी की चरण धूल बन जाता है॥३॥

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਸਗਲ ਤੂੰਹੈ ਪਸਰਿਆ ਪਾਸਾਰੁ ॥
जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥
समूचा दृश्यमान संसार उसी प्रभु का प्रसार है, वही उसमें व्यापक है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਕਾਟਿਆ ਸਗਲ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥੨੫॥੯੫॥
कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥४॥२५॥९५॥
हे नानक ! कहो- गुरु ने जिस व्यक्ति की शंका निवृत्त कर दी है, वह सारे जगत् को ब्रह्म ही समझता है ॥४॥२५॥९५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਦੁਕ੍ਰਿਤ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਮੰਧੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਗਲਾਣਾ ॥
दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥
समूचा जगत् शुभ एवं अशुभ कर्मों के जाल में फँसा हुआ है।

ਦੁਹਹੂੰ ਤੇ ਰਹਤ ਭਗਤੁ ਹੈ ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ਜਾਣਾ ॥੧॥
दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥
कोई विरला प्रभु-भक्त ही मिलता है, जो इन दोनों प्रकार के कर्मों से रहित हो। ॥१॥

ਠਾਕੁਰੁ ਸਰਬੇ ਸਮਾਣਾ ॥
ठाकुरु सरबे समाणा ॥
परमात्मा समस्त जीवों में समाया हुआ है।

ਕਿਆ ਕਹਉ ਸੁਣਉ ਸੁਆਮੀ ਤੂੰ ਵਡ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मालिक ! मैं तेरे बारे में क्या कहूँ और क्या सुनुं? तू सबसे महान चतुर पुरुष है ॥१॥ रहाउ॥

ਮਾਨ ਅਭਿਮਾਨ ਮੰਧੇ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਨਾਹੀ ॥
मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥
जो व्यक्ति मान-अभिमान में फँसा हुआ है, वह ईश्वर का भक्त नहीं।

ਤਤ ਸਮਦਰਸੀ ਸੰਤਹੁ ਕੋਈ ਕੋਟਿ ਮੰਧਾਹੀ ॥੨॥
तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥
हे संतो ! करोड़ों मनुष्यों में से कोई विरला ही है जिसे परमतत्व प्रभु का ज्ञान है और जो समस्त जीवों को एक दृष्टि से देखता है॥ २॥

ਕਹਨ ਕਹਾਵਨ ਇਹੁ ਕੀਰਤਿ ਕਰਲਾ ॥
कहन कहावन इहु कीरति करला ॥
भगवान बारे वाद-विवाद करना दुनिया में व्यर्थ शोभा प्राप्ति का एकमात्र साधन है

ਕਥਨ ਕਹਨ ਤੇ ਮੁਕਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ॥੩॥
कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥
लेकिन कोई विरला ही गुरमुख है जो इस वाद-विवाद से परे रहता है।

ਗਤਿ ਅਵਿਗਤਿ ਕਛੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਇਆ ॥
गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥
वाद-विवाद करने वालों को गति एवं अवगति की अवस्था कुछ भी दिखाई नहीं देती ॥३॥

ਸੰਤਨ ਕੀ ਰੇਨੁ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨੬॥੯੬॥
संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥९६॥
हे नानक ! मैंने संतों की चरण-धूलि का दान प्राप्त कर लिया है ॥ ४ ॥ २६ ॥ ६६ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥
श्रीरागु महला ५ घरु ७ ॥

ਤੇਰੈ ਭਰੋਸੈ ਪਿਆਰੇ ਮੈ ਲਾਡ ਲਡਾਇਆ ॥
तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥
हे प्रिय प्रभु ! तेरे भरोसे पर मैंने बालक भाँति प्रीति में रहकर हास-विलास किए हैं।

ਭੂਲਹਿ ਚੂਕਹਿ ਬਾਰਿਕ ਤੂੰ ਹਰਿ ਪਿਤਾ ਮਾਇਆ ॥੧॥
भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥१॥
हे भगवान ! तुम ही मेरी माता एवं मेरे पिता हो, मैं तेरा बालक हूँ जो भूल चूक करता हूँ ॥१॥

ਸੁਹੇਲਾ ਕਹਨੁ ਕਹਾਵਨੁ ॥
सुहेला कहनु कहावनु ॥
बातें करनी बड़ी सरल हैं।

ਤੇਰਾ ਬਿਖਮੁ ਭਾਵਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा बिखमु भावनु ॥१॥ रहाउ ॥
परन्तु आपके विधान अनुसार चलना बड़ा कठिन है ॥१॥ रहाउ ॥

ਹਉ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਕਰਉ ਤੇਰਾ ਹਉ ਜਾਨਉ ਆਪਾ ॥
हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥
हे प्रभु ! मुझे आपके ऊपर बड़ा मान है, क्योंकि मुझे आपके बल का ही आधार है और मैं आपको अपना रक्षक समझता हूँ।

ਸਭ ਹੀ ਮਧਿ ਸਭਹਿ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਬੇਮੁਹਤਾਜ ਬਾਪਾ ॥੨॥
सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥
हे परम पिता ! आप समस्त जीवों के भीतर मौजूद हो, सबसे बाहर भी आप ही हो ॥ २॥

ਪਿਤਾ ਹਉ ਜਾਨਉ ਨਾਹੀ ਤੇਰੀ ਕਵਨ ਜੁਗਤਾ ॥
पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥
हे मेरे पिता ! मैं तेरी युक्ति को नहीं जानता जिससे तू प्रसन्न होता है।

ਬੰਧਨ ਮੁਕਤੁ ਸੰਤਹੁ ਮੇਰੀ ਰਾਖੈ ਮਮਤਾ ॥੩॥
बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥
हे संतों ! वह मुझे समस्त बंधनों से मुक्ति प्रदान करता है और मेरे लिए ममता-प्यार रखता है ॥३॥

ਭਏ ਕਿਰਪਾਲ ਠਾਕੁਰ ਰਹਿਓ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥
भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥
मेरा ठाकुर बड़ा दयालु हो गया है और मेरा (जन्म-मरण) आवागमन मिट गया है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਾ ॥੪॥੨੭॥੯੭॥
गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥४॥२७॥९७॥
हे नानक ! गुरु से मिलकर मैंने पारब्रह्म को पहचान लिया ॥४॥२७॥९७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥
श्रीरागु महला ५ घरु १ ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਭਾਈਆ ਕਟਿਅੜਾ ਜਮਕਾਲੁ ॥
संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥
हे भाइयो ! संतजनों ने मिलकर मेरा यम का भय दूर कर दिया है।

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਹੋਆ ਖਸਮੁ ਦਇਆਲੁ ॥
सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥
मेरा मालिक प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है और उस सच्चे परमेश्वर ने मेरे मन में वास कर लिया है।

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਬਿਨਸਿਆ ਸਭੁ ਜੰਜਾਲੁ ॥੧॥
पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥
पूर्ण सतिगुरु के मिलन से समस्त बंधन विनष्ट हो गए हैं। ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਹਉ ਤੁਧੁ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥
हे मेरे सतिगुरु ! मैं आप पर बलिहारी जाता हूँ।

ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਤੁਸਿ ਦਿਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अम्रित नामु ॥१॥ रहाउ ॥

मैं आपके दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ। आप ने प्रसन्न होकर मुझे अमृत रूप नाम प्रदान किया है ॥१॥ रहाउ॥ १ ॥

ਜਿਨ ਤੂੰ ਸੇਵਿਆ ਭਾਉ ਕਰਿ ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਨ ॥

जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥

जो प्रेमपूर्वक आपकी सेवा करते हैं, वे पुरुष बड़े बुद्धिमान हैं।

ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਛੁਟੀਐ ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥

तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥

जिनके अन्तर्मन में नाम का खजाना है, उनकी संगति में आकर प्राणी जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है।

ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਨਿ ਦਿਤਾ ਆਤਮ ਦਾਨੁ ॥੨॥

गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥२॥

गुरु जैसा दानशील दाता इस संसार में कोई भी नहीं, जिन्होंने मेरी आत्मा को नाम दान प्रदान किया है ॥ २॥

ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੁਭਾਇ ॥

आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥

जो प्रेम भावना से गुरु जी से भेंट करते हैं, उनका मनुष्य जन्म धारण करके जगत् में आगमन प्रभु के दरबार में स्वीकृत है।

ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ ਜਾਇ ॥

सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥

जो सत्य-प्रभु के प्रेम में लिवलीन हो जाते हैं, उन्हें भगवान के दरबार में बैठने हेतु स्थान प्राप्त हो जाता है।

ਕਰਤੇ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥੩॥

करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥३॥

परमात्मा के हाथ समूची उपलब्धियाँ विद्यमान हैं, जिनकी किस्मत में शुभ कर्मो द्वारा लिखा हो, उन्हें प्राप्त हो जाती है। ॥३॥

ਸਚੁ ਕਰਤਾ ਸਚੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਟੇਕ ॥

सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥

सत्य प्रभु समस्त जगत् का कर्ता है, सत्य प्रभु ही समस्त जीवों को पैदा करने वाला है, वह सत्य प्रभु ही सबका मालिक है, सत्य प्रभु ही सबका आधार है।

ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਖਾਣੀਐ ਸਚੋ ਬੁਧਿ ਬਿਬੇਕ ॥
सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥
उस सत्य प्रभु को सभी सच्चा कहते हैं, मनुष्य को विवेक बुद्धि सत्य प्रभु से ही मिलती है।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਏਕ ॥੪॥੨੮॥੯੮॥
सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥४॥२८॥९८॥
हे नानक ! जो परमात्मा इस जगत् के कण-कण में विद्यमान है, उस परमात्मा का चिंतन करके ही मैं जीवित हूँ ॥४॥२८॥९८॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਪੂਜੀਐ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥
हे प्राणी ! तन-मन में प्रेम बनाकर परमेश्वर के रुप गुरु की पूजा करनी चाहिए।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਕਾ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥
सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥
सतिगुरु जीवों का दाता है, वह सभी को सहारा देता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਕਮਾਵਣੇ ਸਚਾ ਏਹੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥
सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥
सत्य ज्ञान यही है कि सतिगुरु की शिक्षा अनुसार ही आचरण करना चाहिए।

ਬਿਨੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਰਤਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਛਾਰੁ ॥੧॥
बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥१॥
साधु-संतों की संगति में लीन हुए बिना माया का मोह धूल समान है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਸਾਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥
हे मेरे मित्र ! तू ईश्वर के हरि-नाम का सिमरन कर।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ ਘਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥ रहाउ ॥
साधु की संगति में रहने से मनुष्य के हृदय में प्रभु निवास करता है और मनुष्य की सेवा सफल हो जाती है ॥१॥ रहाउ ॥

ਗੁਰੁ ਸਮਰਥੁ ਅਪਾਰੁ ਗੁਰੁ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ ਹੋਇ ॥
गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥
गुरु ही समर्थावान एवं गुरु ही अनंत है, बड़े सौभाग्य से जीव को उसके दर्शन प्राप्त होते हैं।

ਗੁਰੁ ਅਗੋਚਰੁ ਨਿਰਮਲਾ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥
गुरु ही अगोचर है, गुरु पवित्र पावन है, गुरु जैसा अन्य कोई महान् नहीं।

ਗੁਰੁ ਕਰਤਾ ਗੁਰੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥
गुरु ही जगत् का कर्ता है और गुरु ही सभी को पैदा करने वाले हैं, गुरु द्वारा ही शरण में आए जीव की वास्तविक शोभा है।

ਗੁਰ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀ ਗੁਰੁ ਕੀਤਾ ਲੋੜੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥
गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥२॥
गुरु की अभिलाषा से परे कुछ भी नहीं, जो कुछ भी गुरु जी चाहते हैं, वहीं होता है॥२॥

ਗੁਰੁ ਤੀਰਥੁ ਗੁਰੁ ਪਾਰਜਾਤੁ ਗੁਰੁ ਮਨਸਾ ਪੂਰਣਹਾਰੁ ॥
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥
गुरु ही सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थल है, गुरु ही कल्प-वृक्ष और गुरु ही समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण करने वाले हैं।

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਉਧਰੈ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥
गुरु ही दाता है जो ईश्वर का नाम प्रदान करते हैं, जिससे समूचे विश्व का उद्धार हो जाता है।

ਗੁਰੁ ਸਮਰਥੁ ਗੁਰੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਗੁਰੁ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥
गुरु ही समर्थाशाली है और गुरु ही निरंकार है, गुरु ही माया के गुणों से परे है, गुरु सर्वोच्च, अथाह, अपार है।

ਗੁਰ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਅਗਮ ਹੈ ਕਿਆ ਕਥੇ ਕਥਨਹਾਰੁ ॥੩॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥३॥
गुरु की महिमा अपरम्पार है, कोई भी कथन करने वाला उसकी महिमा को कथन नहीं कर सकता ॥३॥

ਜਿਤੜੇ ਫਲ ਮਨਿ ਬਾਛੀਅਹਿ ਤਿਤੜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥
प्राणी को समस्त मनोवांछित फल सतिगुरु द्वारा ही प्राप्त होते हैं, जितना भी मन करे उसे सतिगुर से पाया जा सकता है।

ਪੂਰਬ ਲਿਖੇ ਪਾਵਣੇ ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਦੇ ਰਾਸਿ ॥
पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥
गुरु के पास सत्यनाम के धन के भरपूर भण्डार हैं, जिसके भाग्य में लिखा हो, उसे अवश्य प्राप्त होता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣੀ ਆਇਆਂ ਬਾਹੁੜਿ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ ॥
सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥
सतिगुरु की शरण में आने से जीवन-मृत्यु के चक्कर से प्राणी को मुक्ति प्राप्त होती है।

ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਰਉ ਏਹੁ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਤੇਰਾ ਸਾਸੁ ॥੪॥੨੯॥੯੯॥
हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥९९॥
हे प्रभु ! यह आत्मा, देहि तथा श्वास सब तेरे ही दिए हुए हैं, हे नानक ! परमात्मा मुझे कभी भी विस्मृत न हो ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५॥

ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਸੁਣਿ ਭਾਈਹੋ ਛੁਟਨੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥
संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥
हे संतजनो, हे भाइयों, ध्यानपूर्वक सुनो, आपको इस नश्वर संसार के बंधनों से मुक्ति केवल सत्यनाम की प्राप्ति से ही मिल सकती है।

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਸਰੇਵਣੇ ਤੀਰਥ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ॥
गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥
आप गुरु के चरणों की उपासना करो तथा ईश्वर के नाम को अपना तीर्थस्थल जानकर स्नान करो।

ਆਗੈ ਦਰਗਹਿ ਮੰਨੀਅਹਿ ਮਿਲੈ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥੧॥
आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥१॥
आगे परलोक में प्रभु के दरबार के भीतर निःआश्रयों को आश्रय प्राप्त होता है, आपको मान-यश की प्राप्ति होगी ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਸਾਚੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵ ॥
भाई रे साची सतिगुर सेव ॥
हे भाई ! केवल सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक निष्काम सेवा ही सत्य है।

ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੈ ਪਾਈਐ ਪੂਰਨ ਅਲਖ ਅਭੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥ रहाउ ॥
जब सतिगुरु परम-प्रसन्न हो जाते हैं, तभी सर्वव्यापक अगाध, अदृश्य स्वामी प्राप्त होता है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਦਿਤਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥
सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥
मैं सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे सत्य-नाम प्रदान किया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥
अब तो रात्रि-दिवस उस सत्यपुरुष का यशोगान करता रहता हूँ और सत्य की ही मैं कीर्ति करता रहता हूँ।

ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੇ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥੨॥
सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥२॥
उस सत्य स्वरूप परमात्मा का भोजन भी सत्य है और उसकी पोशाक भी सत्य है और उस सच्चे प्रभु के सत्य नाम का स्मरण करता हूँ॥ २॥

ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸਫਲੁ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰੁ ਆਪਿ ॥
सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥
हे प्राणी ! श्वास लेते तथा भोजनपान करते मुझे गुरु कभी विस्मृत नहीं होते, जो स्वयं ही दाता गुरु-मूर्ति हैं।

ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦਿਸਈ ਆਠ ਪਹਰ ਤਿਸੁ ਜਾਪਿ ॥
गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥
गुरु के समान अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता, इसलिए दिन के आठों पहर उनकी ही वंदना करनी चाहिए।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੩॥
नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥
यदि गुरु जी अपनी कृपा-दृष्टि करें, तब मनुष्य गुणों के भण्डार सत्य नाम को पा लेता है ॥३॥

ਗੁਰੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥
गुरदेव एवं ईश्वर एक है और ईश्वर रूप गुरु सब के भीतर व्यापक हो रहा है।

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੇਈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥
जिनके सुकर्मों से भाग्य में लिखा हो तो वह ईश्वर के नाम का सुमिरन करते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੪॥੩੦॥੧੦੦॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥
हे नानक ! गुरु के आश्रय में आने से जन्म-मरण का चक्कर छूट गया है, वह अब पुनः आवागमन के चक्कर में नहीं आएगा ॥४॥ ३०॥१००॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥
सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥
सिरीरागु महला 1 घरु 1 असटपदीआ ॥

ਆਖਿ ਆਖਿ ਮਨੁ ਵਾਵਣਾ ਜਿਉ ਜਿਉ ਜਾਪੈ ਵਾਇ ॥
आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥
जैसे-जैसे हम मन रूपी वाद्य को बजाते हैं, वैसे-वैसे ही अल्लाह की महिमा को समझते हैं। जितना अधिक वाद्य बजाते हैं, उतना ही उसे समझते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਵਾਇ ਸੁਣਾਈਐ ਸੋ ਕੇਵਡੁ ਕਿਤੁ ਥਾਇ ॥
जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥
जिसे मन वाद्य बजा कर सुनाया जाता है, वह कितना महान है और किस स्थान पर रहता है।

ਆਖਣ ਵਾਲੇ ਜੇਤੜੇ ਸਭਿ ਆਖਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥
आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥
जितने भी अल्लाह का यश करने वाले है, वह सभी उसका यश करते एवं उसमें सुरति लगाते हैं ॥१॥

ਬਾਬਾ ਅਲਹੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥
बाबा अलहु अगम अपारु ॥
हे बाबा ! अल्लाह अगम्य एवं अपार है।

ਪਾਕੀ ਨਾਈ ਪਾਕ ਥਾਇ ਸਚਾ ਪਰਵਦਿਗਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥

उस अल्लाह का नाम बड़ा पवित्र है तथा बड़ा ही पावन स्थल है जहाँ वह रहता है। वह सदैव सत्य है और सारे संसार का पालन पोषण करता है ॥१॥ रहाउ॥

ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਪੀ ਕੇਤੜਾ ਲਿਖਿ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥

तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥

हे परमेश्वर ! कोई ज्ञान नहीं होता कि तेरा हुक्म कितना महान है? कोई भी तेरे हुक्म को नहीं जानता और न ही वह उसे लिख सकता है।

ਜੇ ਸਉ ਸਾਇਰ ਮੇਲੀਅਹਿ ਤਿਲੁ ਨ ਪੁਜਾਵਹਿ ਰੋਇ ॥

जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥

यदि सैंकड़ों कवि एकत्रित हो जाएँ, वे भी तेरे हुक्म को तिल-मात्र वर्णन करने में भी समर्थ नहीं।

ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ਸਭਿ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਆਖਹਿ ਸੋਇ ॥੨॥

कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥

कोई भी तेरा मूल्यांकन करने में समर्थ नहीं हो सका, सभी लोग दूसरों से सुन कर तेरे बारे कहते जाते हैं।॥२॥

ਪੀਰ ਪੈਕਾਮਰ ਸਾਲਕ ਸਾਦਕ ਸੁਹਦੇ ਅਉਰੁ ਸਹੀਦ ॥

पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥

कोई भी तेरा मूल्यांकन करने में समर्थ नहीं हो सका, सभी लोग दूसरों से सुन कर तेरे बारे कहते जाते हैं।॥२॥

ਸੇਖ ਮਸਾਇਕ ਕਾਜੀ ਮੁਲਾ ਦਰਿ ਦਰਵੇਸ ਰਸੀਦ ॥

सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥

शेख, काजी, मुल्लां, दरवेश, साहिब के दरबार में पहुँचे हुए साधु,"

ਬਰਕਤਿ ਤਿਨ ਕਉ ਅਗਲੀ ਪੜਦੇ ਰਹਨਿ ਦਰੂਦ ॥੩॥

बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥

जो प्रभु का यशोगान करते रहते हैं उन्हें प्रभु की कृपा से बड़ा यश प्राप्त होता है॥३॥

ਪੁਛਿ ਨ ਸਾਜੇ ਪੁਛਿ ਨ ਢਾਹੇ ਪੁਛਿ ਨ ਦੇਵੈ ਲੇਇ ॥

पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥

परमात्मा जब सृष्टि का निर्माण करता है तो वह किसी की सलाह नहीं लेता और जब विनाश करता है तो भी किसी की सलाह नहीं लेता। वह जीवों को दान किसी से पूछकर नहीं देता और न ही किसी से पूछकर उनसे वापिस लेता है।

ਆਪਣੀ ਕੁਦਰਤਿ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਆਪੇ ਕਰਣੁ ਕਰੇਇ ॥
आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥
अपनी कुदरत को वह स्वयं ही जानता है और वह स्वयं ही सारे कार्य सम्पूर्ण करता है।

ਸਭਨਾ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੪॥
सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥
वह सबको समान कृपा दृष्टि से देखता है। परन्तु वह उसको फल प्रदान करता है। जिस पर उसकी प्रसन्नता होती है । ॥४॥

ਥਾਵਾ ਨਾਵ ਨ ਜਾਣੀਅਹਿ ਨਾਵਾ ਕੇਵਡੁ ਨਾਉ ॥
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥
नाम ने इतने स्थान रचे हुए हैं कि उनके नाम जाने नहीं जा सकते। उस प्रभु का नाम कितना महान् है इस बारे असमर्थ मनुष्य अनभिज्ञ हैं।

ਜਿਥੈ ਵਸੈ ਮੇਰਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸੋ ਕੇਵਡੁ ਹੈ ਥਾਉ ॥
जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥
वह स्थान कितना महान् है, जहाँ मेरा पारब्रह्म परमेश्वर निवास करता है?"

ਅੰਬੜਿ ਕੋਇ ਨ ਸਕਈ ਹਉ ਕਿਸ ਨੋ ਪੁਛਣਿ ਜਾਉ ॥੫॥
अम्बड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥
वहाँ तक कोई भी प्राणी नहीं पहुँच सकता। मैं वहाँ तक जाने का रहस्य किससे पूछू॥५॥

ਵਰਨਾ ਵਰਨ ਨ ਭਾਵਨੀ ਜੇ ਕਿਸੈ ਵਡਾ ਕਰੇਇ ॥
वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥
जब प्रभु किसी एक को बड़ा करता है तो उसे उसकी उच्च अथवा निम्न जाति अच्छी नहीं लगती।

ਵਡੇ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥
वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥
परमात्मा समर्थाशाली है, वह जिसे चाहे बड़ाई दे सकता है लेकिन बड़ाई उसी को देता है जिसे वह पसंद करता है।

ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰੇ ਆਪਣੈ ਚਸਾ ਨ ਢਿਲ ਕਰੇਇ ॥੬॥
हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥
सब कुछ उसी के वश में है। वह अपने हुक्म से उसका जीवन संवार देता है। परमेश्वर क्षण मात्र भी विलम्ब नहीं होने देता ॥६॥

ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਲੈਣੈ ਕੈ ਵੀਚਾਰਿ ॥

सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥

उससे प्राप्ति के विचार से सभी इसकी महानता का गुणगान करते हैं कि "मुझे और अधिक प्रदान करो, और अधिक।" किन्तु वह प्रभु बड़ा दानशील है।

ਕੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਆਖੀਐ ਦੇ ਕੈ ਰਹਿਆ ਸੁਮਾਰਿ ॥

केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥

वह गणना से बाहर बेअंत फल प्रदान करता है।

ਨਾਨਕ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਤੇਰੇ ਜੁਗਹ ਜੁਗਹ ਭੰਡਾਰ ॥੭॥੧॥

नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥

हे नानक ! उस परमात्मा के भण्डार असीम हैं, प्रत्येक युग में परिपूर्ण हैं और कदाचित उनमें कमी नहीं आती ॥७॥१॥

ਮਹਲਾ ੧ ॥

महला १ ॥

महला १ ॥

ਸਭੇ ਕੰਤ ਮਹੇਲੀਆ ਸਗਲੀਆ ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥

सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥

समस्त जीव उस प्राणपति (प्रभु) की स्त्रियाँ हैं एवं सभी जीव-स्त्रियों उसे प्रसन्न करने के लिए हार-श्रृंगार करती हैं।

ਗਣਤ ਗਣਾਵਣਿ ਆਈਆ ਸੂਹਾ ਵੇਸੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥
जो अपने प्राणपति से अनुकंपा करने की जगह उससे हिसाब-किताब मोल करने आई हैं, उनका दुल्हन-वेष लाल पहरावा भी बेकार है, अर्थात् आडम्बर है।

ਪਾਖੰਡਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਪਾਈਐ ਖੋਟਾ ਪਾਜੁ ਖੁਆਰੁ ॥੧॥
पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥
हे जीवात्मा ! आडम्बर से उसकी प्रीति प्राप्त नहीं होती। खोटा आडम्बर विनाशकारी होता है, इससे प्रभु-पति की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती॥१॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਇਉ ਪਿਰੁ ਰਾਵੈ ਨਾਰਿ ॥
हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥
हे प्रभु जी ! प्रियवर अपनी स्त्री से ऐसे रमण करता है

ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਲੈਹਿ ਸਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥
हे ईश्वर ! वही सुहागिन है जो तुझे अच्छी लगती है और अपनी दया-दृष्टि से तुम उसे संवार लेते हो॥१॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੀਗਾਰੀਆ ਤਨੁ ਮਨੁ ਪਿਰ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥
गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥
गुर-शब्द से वह सुशोभित हुई हैं और उसका तन एवं मन उसके प्रीतम के समक्ष समर्पित है।

ਦੁਇ ਕਰ ਜੋੜਿ ਖੜੀ ਤਕੈ ਸਚੁ ਕਹੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥
अपने दोनों हाथ जोड़कर वे प्रभु-परमेश्वर की प्रतीक्षा करती हैं और सच्चे हृदय से उसके समक्ष वंदना करके सत्य प्राप्ति की लालसा बनाए रखती हैं।

ਲਾਲਿ ਰਤੀ ਸਚ ਭੈ ਵਸੀ ਭਾਇ ਰਤੀ ਰੰਗਿ ਰਾਸਿ ॥੨॥
लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥
वह अंपने प्रीतम के प्रेम में लिवलीन हो गई हैं और सत्यपुरुष के भय में रहती हैं। उसकी प्रीत में रंग जाने से उसकी सत्य की रंगत में लिवलीन हो जाती हैं।॥२॥

ਪ੍ਰਿਅ ਕੀ ਚੇਰੀ ਕਾਂਢੀਐ ਲਾਲੀ ਮਾਨੈ ਨਾਉ ॥
प्रिअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ ॥
वह अपने प्रियतम की अनुचर कही जाती है, जो अपने नाम को समर्पण होती है।

ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੁਟਈ ਸਾਚੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਉ ॥
साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥
प्रीतम का सच्चा प्रेम कभी टूटता नहीं और वह सच्चे स्वामी के मिलाप अंदर मिल जाती है।

ਸਬਦਿ ਰਤੀ ਮਨੁ ਵੇਧਿਆ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੩॥
सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥
गुरुवाणी में रंग जाने से उसका मन बिंध गया है। मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ॥३॥

ਸਾ ਧਨ ਰੰਡ ਨ ਬੈਸਈ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥
सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥
वह नारी जो अपने सतिगुर के (उपदेशों-शिक्षाओं) भीतर लीन हुई है, वह कदापि विधवा नहीं होती।

ਪਿਰੁ ਰੀਸਾਲੂ ਨਉਤਨੋ ਸਾਚਉ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥
पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥
उसका प्रीतम रसों का घर हमेशा नवीन देह वाला एवं सत्यवादी है। वह जीवन-मृत्यु के चक्कर से विमुक्त है।

ਨਿਤ ਰਵੈ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਾਚੀ ਨਦਰਿ ਰਜਾਇ ॥੪॥
नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥
वह हमेशा अपनी पवित्र-पाक नारी को हर्षित करता है और उस पर अपनी सत्य-दृष्टि रखता है, क्योंकि वह उसकी आज्ञानुसार विचरण करती है॥४॥

ਸਾਚੁ ਧੜੀ ਧਨ ਮਾਡੀਐ ਕਾਪੜੁ ਪ੍ਰੇਮ ਸੀਗਾਰੁ ॥
साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥
ऐसी जीवात्माएँ सत्य की माँग संवारती हैं और प्रभु प्रीत को अपनी पोशाक तथा हार-श्रृंगार बनाती हैं।

ਚੰਦਨੁ ਚੀਤਿ ਵਸਾਇਆ ਮੰਦਰੁ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ॥
दनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥
स्वामी को हृदय में धारण करने का चन्दन लगाती हैं और दसवें द्वार को अपना महल बनाती हैं।

ਦੀਪਕੁ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਉਰ ਹਾਰੁ ॥੫॥
दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥
वह गुर-शब्द का दीपक प्रज्वलित करती हैं और राम-नाम ही उनकी माला है॥ ५॥

ਨਾਰੀ ਅੰਦਰਿ ਸੋਹਣੀ ਮਸਤਕਿ ਮਣੀ ਪਿਆਰੁ ॥
नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥
नारियों में वह अति रूपवान सुन्दर है और अपने मस्तक पर उसने स्वामी के स्नेह का माणिक्य शोभायमान है।

ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਸਾਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਅਪਾਰ ॥
सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥
उसकी महिमा तथा विवेक अति मनोहर है तथा उसकी प्रीति अनंत प्रभु के लिए सच्ची है।

ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਪੁਰਖੁ ਨ ਜਾਣਈ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੬॥
बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥
वह अपने प्रियतम के अतिरिक्त किसी को भी परम-पुरुष नहीं समझती। केवल सतिगुरु हेतु ही वह प्रेम तथा अनुराग रखती है॥ ६ ॥

ਨਿਸਿ ਅੰਧਿਆਰੀ ਸੁਤੀਏ ਕਿਉ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥
निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥
परन्तु जो अंधेरी निशा में सोई हुई है, वह अपने प्रियतम के अलावा अपनी रात्रि किस तरह व्यतीत करेगी?"

ਅੰਕੁ ਜਲਉ ਤਨੁ ਜਾਲੀਅਉ ਮਨੁ ਧਨੁ ਜਲਿ ਬਲਿ ਜਾਇ ॥
अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥
तेरे अंग जल जाएँगे, तेरी देहि जल जाएगी और तेरा हृदय एवं धन सभी जल जाएँगे।

ਜਾ ਧਨ ਕੰਤਿ ਨ ਰਾਵੀਆ ਤਾ ਬਿਰਥਾ ਜੋਬਨੁ ਜਾਇ ॥੭॥
जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥
यदि जीव रूपी नारी को प्राणपति सम्मान प्रदान नहीं करता, तब उसका यौवन व्यर्थ जाता है॥ ७ ॥

ਸੇਜੈ ਕੰਤ ਮਹੇਲੜੀ ਸੁਤੀ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥
जीव रूपी स्त्री एवं मालिया प्रभु दोनों का एक ही हृदय रुपी सेज पर निवास है। लेकिन जीव-स्त्री माया के मोह की निद्रा में मग्न है परन्तु सोई हुई पत्नी को उस बारे ज्ञान ही नहीं।.

ਹਉ ਸੁਤੀ ਪਿਰੁ ਜਾਗਣਾ ਕਿਸ ਕਉ ਪੂਛਉ ਜਾਇ ॥
हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥
मैं निद्रा-मग्न हूँ, मेरा पति प्रभु जाग रहा है। मैं किसके पास जाकर पूछू?"

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਭੈ ਵਸੀ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸਖਾਇ ॥੮॥੨॥
सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥
हे नानक ! जिस जीव-स्त्री को सतिगुरु उसके पति-प्रभु से मिला देते हैं, वह सदैव पति-प्रभु के भय में रहती है। प्रभु का प्रेम उस जीव-स्त्री का साथी बन जाता है॥८ ॥२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਆਪੇ ਗੁਣ ਆਪੇ ਕਥੈ ਆਪੇ ਸੁਣਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥
हे स्वामी ! तू स्वयं ही रत्न में गुण है। तू जौहरी बन कर स्वयं ही रत्न के गुणों को कथन करता है। तुम स्वयं ही ग्राहक बनकर उसके गुणों को सुनते एवं विचार करते हो।

ਆਪੇ ਰਤਨੁ ਪਰਖਿ ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੋਲੁ ਅਪਾਰੁ ॥
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥
तुम स्वयं ही नाम रूपी रतन हो तुम स्वयं ही इसकी परख करने वाले हो और तुम अनन्त मूल्यवान हो।

ਸਾਚਉ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਤੂੰ ਆਪੇ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥੧॥
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥
हे ईश्वर ! तुम ही मान-प्रतिष्ठा और महत्ता हो और स्वयं ही दानशील प्रभु उनको मान-सम्मान देने वाले हो॥१॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਕਰਤਾਰੁ ॥
हरि जीउ तूं करता करतारु ॥
हे हरि ! तुम ही जगत् के रचयिता एवं सृजनहार हो।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਤੂੰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਆਚਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥
जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, मेरी रक्षा करो। हे परमात्मा ! मुझे अपना नाम-सुमिरन एवं जीवन आचरण प्रदान करो॥१॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਹੀਰਾ ਨਿਰਮਲਾ ਆਪੇ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ॥
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥
तुम स्वयं ही शुद्ध-निर्मल रत्न हो और स्वयं ही भक्ति का मजीठ रंग भी हो।

ਆਪੇ ਮੋਤੀ ਊਜਲੋ ਆਪੇ ਭਗਤ ਬਸੀਠੁ ॥
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
तुम ही निर्मल मोती हो और स्वयं ही भक्तों में मध्यस्थ भी हो।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਣਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਡੀਠੁ ਅਡੀਠੁ ॥੨॥
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥
गुरु के शब्द द्वारा अदृश्य प्रभु को प्रशंसित किया जाता है और प्रत्येक हृदय में उसके दर्शन किए जाते हैं।॥ २॥

ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਪਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥
आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥
हे प्रभु! तुम स्वयं ही सागर तथा पार होने का जहाज हो। तथा स्वयं ही इस पार का किनारा और उस पार का किनारा हो।

ਸਾਚੀ ਵਾਟ ਸੁਜਾਣੁ ਤੂੰ ਸਬਦਿ ਲਘਾਵਣਹਾਰੁ ॥
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥
हे सर्वज्ञ स्वामी ! तू ही सत्य मार्ग है। और तेरा नाम पार करने के लिए मल्लाह है।

ਨਿਡਰਿਆ ਡਰੁ ਜਾਣੀਐ ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਗੁਬਾਰੁ ॥੩॥
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥
जो प्रभु के नाम से भय नहीं रखते, वही भवसागर में भयभीत होते हैं। गुरदेव के अतिरिक्त घनघोर अंधकार है॥३॥

ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਤਾ ਦੇਖੀਐ ਹੋਰੁ ਕੇਤੀ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥
केवल सृष्टि का कर्ता ही सदैव स्थिर देखा जाता है। अन्य सभी आवागमन के चक्कर में रहते हैं।

ਆਪੇ ਨਿਰਮਲੁ ਏਕੁ ਤੂੰ ਹੋਰ ਬੰਧੀ ਧੰਧੈ ਪਾਇ ॥
आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥
हे पारब्रह्म ! केवल एक तू ही अपने आप शुद्ध है। शेष सांसारिक कर्मों के भीतर अपने-अपने धंधों में बंधे हुए हैं।

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਸਾਚੇ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੪॥
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥
जिन प्राणियों की गुरु जी रक्षा करते हैं, वे प्रभु की भक्ति में लिवलीन सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करते हैं।॥ ४॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਗੁਰ ਵਾਕਿ ॥
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥
नाम द्वारा इन्सान पूज्य प्रभु को पहचान लेता है और गुरु की वाणी द्वारा वह सत्य के रंग में लिवलीन हो जाता है।

ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਸਚ ਘਰਿ ਜਿਸੁ ਓਤਾਕੁ ॥
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥
उस प्राणी की देहि को तुच्छ मात्र भी मलिनता नहीं लगती, जिसने सच्चे घर के भीतर निवास कर लिया है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਸਾਕੁ ॥੫॥
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥
यदि प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करे तो सत्यनाम प्राप्त हो जाता है। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त प्राणी का अन्य संबंधी कौन है? ॥ ५॥

ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥
जिन्होंने सत्य को अनुभव किया है, वे चारों युगों में सुखी रहते हैं।

ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਰਿ ਕੈ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥
अहंकार एवं तृष्णा का नाश करके वह सत्य-नाम को अपने हृदय में धारण करके रखते हैं।

ਜਗ ਮਹਿ ਲਾਹਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥੬॥
जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥
इस जगत् में केवल नाम (प्रभु-भक्ति) का ही लाभ उचित है। इसकी प्राप्ति केवल गुरु की कृपा सोच-विचार द्वारा ही होती है।॥ ६॥

ਸਾਚਉ ਵਖਰੁ ਲਾਦੀਐ ਲਾਭੁ ਸਦਾ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥
यदि सत्य की पूँजी द्वारा सत्यनाम का सौदा व्यवसायिक तौर पर किया जाए तो सदैव ही लाभ होता है।

ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਬੈਸਈ ਭਗਤਿ ਸਚੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥
प्रेममयी सुमिरन एवं सच्ची लगन से प्रार्थना द्वारा मनुष्य ईश्वर के दरबार के अन्दर बैठ जाता है।

ਪਤਿ ਸਿਉ ਲੇਖਾ ਨਿਬੜੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੭॥
पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥
सर्वव्यापक परमेश्वर के नाम के उजाले में मनुष्य का हिसाब सम्मान-पूर्वक व स्पष्ट हो जाता है।॥ ७॥

ਊਚਾ ਊਚਉ ਆਖੀਐ ਕਹਉ ਨ ਦੇਖਿਆ ਜਾਇ ॥
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥
बुलंदों में परम बुलंद स्वामी कहा जाता है, पर वह किसी द्वारा भी नहीं देखा जा सकता।

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੁ ਤੂੰ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥
जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, सर्वत्र में केवल तुझे ही पाता हूँ। मुझे सतिगुरु ने आपके दीदार-दर्शन करवा दिए हैं।

ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜਾਣੀਐ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੮॥੩॥
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥
हे नानक ! प्रेम द्वारा सहज अवस्था प्राप्त होने पर हृदय में विद्यमान प्रभु की ज्योति की सूझ होती है। ॥८॥३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਮਛੁਲੀ ਜਾਲੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਸਰੁ ਖਾਰਾ ਅਸਗਾਹੁ ॥
मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥
जब मछली की मृत्यु आई तो उसने मछेरे के जाल की पहचान नहीं की। वह गहरे खारे समुद्र में रहती है।

ਅਤਿ ਸਿਆਣੀ ਸੋਹਣੀ ਕਿਉ ਕੀਤੋ ਵੇਸਾਹੁ ॥
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥
वह बहुत चतुर एवं सुन्दर है। उसने मछेरे पर विश्वास क्यों किया?

ਕੀਤੇ ਕਾਰਣਿ ਪਾਕੜੀ ਕਾਲੁ ਨ ਟਲੈ ਸਿਰਾਹੁ ॥੧॥
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥
वह विश्वास करने के कारण ही जाल में पकड़ी गई। उसके सिर पर मृत्यु को टाला नहीं जा सकता, जो अटल है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਇਉ ਸਿਰਿ ਜਾਣਹੁ ਕਾਲੁ ॥
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥
हे भाई ! इस तरह तू मृत्यु को अपने सिर पर मंडराता हुआ समझ, क्योंकि काल बहुत बलवान है।

ਜਿਉ ਮਛੀ ਤਿਉ ਮਾਣਸਾ ਪਵੈ ਅਚਿੰਤਾ ਜਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥
जिस तरह मछली है, उसी तरह ही मनुष्य है। मृत्यु का जाल अकस्मात ही उस पर आ गिरता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਾਧੋ ਕਾਲ ਕੋ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਾਲੁ ਅਫਾਰੁ ॥
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥
सारे संसार को काल (मृत्यु) ने दबोचा हुआ है। गुरु की कृपा बिना मृत्यु अनिवार्य है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਦੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਵਿਕਾਰ ॥
सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥
जो सत्य में लिवलीन हो गए हैं और द्वैत-भाव तथा पापों को त्याग देते हैं, वह बच जाते हैं।

ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ॥੨॥
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥
मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो सत्य के दरबार में सत्यवादी माने जाते हैं।॥२॥

ਸੀਚਾਨੇ ਜਿਉ ਪੰਖੀਆ ਜਾਲੀ ਬਧਿਕ ਹਾਥਿ ॥
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥
जैसे बाज पक्षियों को मार देता है और शिकारी के हाथ में पकड़ा हुआ जाल उन्हें फँसा लेता है, वैसे ही माया के मोह के कारण सभी मनुष्य यम के जाल में फंस जाते हैं।

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਹੋਰਿ ਫਾਥੇ ਚੋਗੈ ਸਾਥਿ ॥
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥
जिनकी गुरदेव रक्षा करते हैं, वह यम के जाल से बच जाते हैं, शेष दाने (मृत्यु) के साथ फँस जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਚੁਣਿ ਸੁਟੀਅਹਿ ਕੋਇ ਨ ਸੰਗੀ ਸਾਥਿ ॥੩॥
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥
हरि नाम के बिना वे मृत्यु के वश में दाने की तरह चुन लिए जाएँगे, फिर उनका कोई भी साथी या सहायक नहीं होगा।॥३॥

ਸਚੋ ਸਚਾ ਆਖੀਐ ਸਚੇ ਸਚਾ ਥਾਨੁ ॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥
सत्य प्रभु को सभी सत्य कहते हैं। सत्य प्रभु का निवास भी सत्य है

ਜਿਨੀ ਸਚਾ ਮੰਨਿਆ ਤਿਨ ਮਨਿ ਸਚੁ ਧਿਆਨੁ ॥
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥
सत्य प्रभु उनके हृदय में निवास करता है, जो उसका सिमरन एवं ध्यान करते हैं।

ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਸੂਚੇ ਜਾਣੀਅਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨਾ ਗਿਆਨੁ ॥੪॥
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥
गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्त करने वाले प्राणियों के हृदय एवं मुख पवित्र माने जाते हैं।॥ ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰਿ ਸਾਜਨੁ ਦੇਇ ਮਿਲਾਇ ॥
सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥
हे प्राणी ! सतिगुरु के समक्ष वंदना करो कि वह तुझे तेरे मित्र (प्रभु) से मिलन करवा दे।

ਸਾਜਨਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਮਦੂਤ ਮੁਏ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥
मित्र (ईश्वर) के मिलन से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है और यमदूत विष सेवन करके कालवश हो जाते हैं।

ਨਾਵੈ ਅੰਦਰਿ ਹਉ ਵਸਾਂ ਨਾਉ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੫॥
नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥५॥
मैं परमात्मा के नाम (भक्ति) में वास करता हूँ और नाम ने मेरी आत्मा में निवास कर लिया है॥ ५॥

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥
गुरु के बिना मनुष्य के हृदय में अज्ञानता का अंधेरा विद्यमान रहता है और ईश्वर के नाम के बिना उसे ज्ञान-बुद्धि की प्राप्ति नहीं होती।

ਗੁਰਮਤੀ ਪਰਗਾਸੁ ਹੋਇ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥
जब गुरु की मति द्वारा उसके भीतर ज्योति का प्रकाश होता है, फिर वह सत्य प्रभु में सुरति लगाकर रखता है।

ਤਿਥੈ ਕਾਲੁ ਨ ਸੰਚਰੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥੬॥
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥
इस अवस्था में वहाँ मृत्यु प्रवेश नहीं करती और मनुष्य की ज्योति (आत्मा) परम ज्योति (परमात्मा) के साथ अभेद हो जाती है॥ ६॥

ਤੂੰਹੈ ਸਾਜਨੁ ਤੂੰ ਸੁਜਾਣੁ ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੇਲਣਹਾਰੁ ॥
तूंहै साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥
हे प्रभु ! तुम बुद्धिमान हो, तुम मेरे मित्र हो और तुम ही मनुष्य को अपने साथ मिलाने वाले हो।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥
मैं गुरु की वाणी द्वारा तेरी महिमा करता हूँ। तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता एवं ओर-छोर भी नहीं पाया जा सकता। गुरु बेअंत है।

ਤਿਥੈ ਕਾਲੁ ਨ ਅਪੜੈ ਜਿਥੈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰੁ ॥੭॥
तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥
जहाँ पर गुरु का अनहद शब्द विद्यमान है, काल वहाँ पर कदापि प्रवेश नहीं करता॥ ७ ॥

ਹੁਕਮੀ ਸਭੇ ਊਪਜਹਿ ਹੁਕਮੀ ਕਾਰ ਕਮਾਹਿ ॥
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥
प्रभु की इच्छा द्वारा समस्त जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं और उसकी इच्छानुसार ही वे कार्य व्यवहार करते हैं।

ਹੁਕਮੀ ਕਾਲੈ ਵਸਿ ਹੈ ਹੁਕਮੀ ਸਾਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥
हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
प्रभु की इच्छानुसार ही वे काल के अधीन है और उसकी इच्छानुसार वे सत्यस्वरूप परमात्मा में विलीन हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਇਨਾ ਜੰਤਾ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥੮॥੪॥
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥
हे नानक ! जो कुछ भी प्रभु को लुभाता है, वही होता है। सांसारिक जीवों के वश में कुछ भी नहीं ॥८॥४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਮਨਿ ਜੂਠੈ ਤਨਿ ਜੂਠਿ ਹੈ ਜਿਹਵਾ ਜੂਠੀ ਹੋਇ ॥

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥

यदि मन में जूठन है तो तन में भी जूठन आ जाती है और जूठन के कारण जिव्हा भी जूठी हो जाती है। अर्थात् विषय-विकारों में लीन होने के कारण तन-मन-जिव्हा मलिन हो जाती है।

ਮੁਖਿ ਝੂਠੈ ਝੂਠੁ ਬੋਲਣਾ ਕਿਉ ਕਰਿ ਸੂਚਾ ਹੋਇ ॥
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥
मुख झूठा हो तो झूठा मनुष्य असत्य वचन ही व्यक्त करता है, फिर वह किस तरह पवित्र-पावन हो सकता है?"

ਬਿਨੁ ਅਭ ਸਬਦ ਨ ਮਾਂਜੀਐ ਸਾਚੇ ਤੇ ਸਚੁ ਹੋਇ ॥੧॥
बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥
नाम (भक्ति) के जल बिना आत्मा स्वच्छ नहीं होती। सत्य नाम द्वारा ही सत्य प्रभु प्राप्त होता है॥ १॥

ਮੁੰਧੇ ਗੁਣਹੀਣੀ ਸੁਖੁ ਕੇਹਿ ॥
मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥
हे भोली जीव-स्त्री ! गुण के बिना सुख कहाँ है?

ਪਿਰੁ ਰਲੀਆ ਰਸਿ ਮਾਣਸੀ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਨੇਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥
प्रियतम प्राणपति उनके साथ आनंद एवं रस के साथ रमण करता है जो सत्य नाम की प्रीति के भीतर शांति-सुख अनुभव करते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਪਿਰੁ ਪਰਦੇਸੀ ਜੇ ਥੀਐ ਧਨ ਵਾਂਢੀ ਝੂਰੇਇ ॥
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥
यदि प्राणपति परदेस चला जाए तो नारी (जीवात्मा) वियोग में ऐसे पीड़ित अनुभव करती है

ਜਿਉ ਜਲਿ ਥੋੜੈ ਮਛੁਲੀ ਕਰਣ ਪਲਾਵ ਕਰੇਇ ॥
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥
जिस तरह थोड़े से जल में मछली तड़पती है।

ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥
जब प्राणपति को अच्छा लगता है तो वह स्वयं ही अपनी कृपा-दृष्टि करता है और पत्नी को सुख-समृद्धि प्राप्त हो जाती है।॥२॥

ਪਿਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਨਾਲਿ ॥
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥
अपनी सखियों एवं सहेलियों के साथ बैठकर हे जीवात्मा ! तू अपने पति परमेश्वर का यशोगान कर।

ਤਨਿ ਸੋਹੈ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਰਤੀ ਰੰਗਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥
उसके दर्शन करने से तेरा शरीर सुन्दर तथा मन मोहित हो गया है और तू उसकी प्रीति के साथ रंग गई है।

ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀ ਸੋਹਣੀ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਗੁਣ ਨਾਲਿ ॥੩॥
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥
सुन्दर पत्नी, जिसने नाम के साथ शृंगार किया है, वह गुणवती होकर अपने पति की भरपूर सेवा करती है॥३॥

ਕਾਮਣਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਈ ਖੋਟੀ ਅਵਗਣਿਆਰਿ ॥
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥
बुराइयों तथा विषय-विकारों में लिप्त नारी गुणहीन होने के कारण पति के किसी भी काम नहीं आती।

ਨਾ ਸੁਖੁ ਪੇਈਐ ਸਾਹੁਰੈ ਝੂਠਿ ਜਲੀ ਵੇਕਾਰਿ ॥
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥
इस जीवात्मा को न तो बाबुल के घर (इहलोक) में सुख मिलता है और न ही ससुराल (परलोक) में और वह बुराइयों तथा पापों के अंदर व्यर्थ ही तड़पती रहती है।

ਆਵਣੁ ਵੰਞਣੁ ਡਾਖੜੋ ਛੋਡੀ ਕੰਤਿ ਵਿਸਾਰਿ ॥੪॥
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥
उसका आवागमन (जन्म-मरण) बड़ा दुर्लभ है, जिसे उसके पति ने प्रेम से वंचित करके भुला दिया है॥४॥

ਪਿਰ ਕੀ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਮੁਤੀ ਸੋ ਕਿਤੁ ਸਾਦਿ ॥
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥
प्राणपति परमेश्वर की अति सुन्दर नारी सुहागिन है, किन्तु विषय-विकारों के कारण भोक्ता के लिए जीवन का कोई भी रस नहीं।

ਪਿਰ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਈ ਬੋਲੇ ਫਾਦਿਲੁ ਬਾਦਿ ॥
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥
जो नारी व्यर्थ ही विवादपूर्ण बकवास करती है, वह पति के किसी भी काम योग्य नहीं।

ਦਰਿ ਘਰਿ ਢੋਈ ਨਾ ਲਹੈ ਛੁਟੀ ਦੂਜੈ ਸਾਦਿ ॥੫॥
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥
सांसारिक रसों के कारण वह त्याग दी गई है और उसको अपने स्वामी के द्वार एवं मंदिर में आश्रय नहीं मिलता ॥५॥

ਪੰਡਿਤ ਵਾਚਹਿ ਪੋਥੀਆ ਨਾ ਬੂਝਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥
पण्डित धर्म ग्रंथों का अध्ययन करते हैं परन्तु वे यथार्थ ज्ञान का मनन नहीं करते।

ਅਨ ਕਉ ਮਤੀ ਦੇ ਚਲਹਿ ਮਾਇਆ ਕਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥
वे दूसरों को उपदेश देते रहते हैं। किन्तु स्वयं ज्ञान की उपलब्धि के बिना संसार से चले जाते हैं। उन्होंने उपदेश देने को धन ऐंठने का व्यापार बना लिया है।

ਕਥਨੀ ਝੂਠੀ ਜਗੁ ਭਵੈ ਰਹਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁ ਸਾਰੁ ॥੬॥
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥
उनकी झूठी कथनी से गुमराह होकर सारा संसार भटक रहा है। सत्य नाम की कमाई करना ही श्रेष्ठ जीवन आचरण है ॥६॥

ਕੇਤੇ ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਬੇਦਾ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥
कितने ही पंडित तथा ज्योतिष वेदों को सोचते-विचारते हैं।

ਵਾਦਿ ਵਿਰੋਧਿ ਸਲਾਹਣੇ ਵਾਦੇ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥
वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥
वे विवादों एवं निरर्थक झगड़ों की प्रशंसा करते हैं और वाद-विवाद में फंसे जन्म-मरण के चक्कर में आवागमन करते रहते हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਰਮ ਨ ਛੁਟਸੀ ਕਹਿ ਸੁਣਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣੁ ॥੭॥
बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥
किन्तु गुरु के बिना उनकी अपने कर्मों से मुक्ति नहीं होनी, चाहे वे जितने भी कथन, श्रवण करें, उपदेश दें अथवा व्याख्या करते रहें। गुरु की अपार कृपा के बिना इनकी मुक्ति नहीं हो सकती॥ ७॥

ਸਭਿ ਗੁਣਵੰਤੀ ਆਖੀਅਹਿ ਮੈ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥
समस्त जीव-स्त्रियों को गुणवान कहा जाता है परन्तु मुझ में कोई भी गुण विद्यमान नहीं।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਮੈ ਭਾਵੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥
यदि प्रभु मुझे भी पसंद करने लगे तो मैं भी प्रभु की सुन्दर पत्नी बन सकती हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੜਾ ਨਾ ਵੇਛੋੜਾ ਹੋਇ ॥੮॥੫॥
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥
हे नानक ! जीव-स्त्री का प्रभु-पति से मिलन नाम द्वारा ही होता है। प्रभु से मिलन उपरांत फिर उसका पति से बिछोड़ा कभी नहीं होता ॥८॥५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਸਾਧੀਐ ਤੀਰਥਿ ਕੀਚੈ ਵਾਸੁ ॥
जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥
भगवान का भजन किए बिना मनुष्य को जप, तपस्या एवं संयम की साधना करने, तीर्थ स्थलों में जाकर निवास करने,

ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਚੰਗਿਆਈਆ ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਕਿਆ ਤਾਸੁ ॥
पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥
पुण्य-दान इत्यादि अन्य शुभ कर्म करने का कोई लाभ नहीं होता।

ਜੇਹਾ ਰਾਧੇ ਤੇਹਾ ਲੁਣੈ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਜਨਮੁ ਵਿਣਾਸੁ ॥੧॥
जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥१॥
प्राणी जैसा बोता है, वैसा ही फल काटता है। गुण ग्रहण किए बिना मानव जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता है।॥१॥

ਮੁੰਧੇ ਗੁਣ ਦਾਸੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥
हे भोली जीव-स्त्री ! दासी वाले गुण पैदा करने से सुख उपलब्ध होता है।

ਅਵਗਣ ਤਿਆਗਿ ਸਮਾਈਐ ਗੁਰਮਤਿ ਪੂਰਾ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
अवगुणों का त्याग करके गुरु की मति द्वारा पूर्ण प्रभु में समाया जाता है॥१॥ रहाउ॥

ਵਿਣੁ ਰਾਸੀ ਵਾਪਾਰੀਆ ਤਕੇ ਕੁੰਡਾ ਚਾਰਿ ॥
विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥
जिस व्यापारी के पास गुणों की पूँजी विद्यमान नहीं, वह चारों दिशाओं में व्यर्थ भटकता रहता है।

ਮੂਲੁ ਨ ਬੁਝੈ ਆਪਣਾ ਵਸਤੁ ਰਹੀ ਘਰ ਬਾਰਿ ॥
मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥
वह मूल-प्रभु का नाम बोध नहीं करता। नाम रूपी वस्तु उसके दसम द्वार रूपी घर में विद्यमान है।

ਵਿਣੁ ਵਖਰ ਦੁਖੁ ਅਗਲਾ ਕੂੜਿ ਮੁਠੀ ਕੂੜਿਆਰਿ ॥੨॥
विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥२॥
इस नाम-वस्तु के बिना वह बहुत दुखी होता है। झूठी माया ने झूठ का व्यापार करने वाले को ठग लिया है ॥२॥

ਲਾਹਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਉਤਨਾ ਪਰਖੇ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥
जो नाम-रत्न का ध्यान से सिमरन (जांच पड़ताल) करता है, उसे नित्य अधिकाधिक लाभ मिलता है।

ਵਸਤੁ ਲਹੈ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਚਲੈ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਿ ॥
वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥
वह नाम रूपी वस्तु को अपने हृदय गृह में ही पा लेता है और अपने कार्य को संवार गमन करता है अर्थात् जीवन में शुभ कर्म करके अपने जीवन को सफल करके परमात्मा में विलीन हो जाता है।

ਵਣਜਾਰਿਆ ਸਿਉ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੩॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि ॥३॥
ईश्वर के व्यापारियों (भक्तों) के साथ व्यापार (भक्ति) करो और अपने गुरु से मिलकर परमेश्वर का चिंतन करो ॥३॥

ਸੰਤਾਂ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈਐ ਜੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਣਹਾਰੁ ॥
संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥
साधु-संगति द्वारा ही प्रभु को पाया जाता है, जब प्रभु से मिलन करवाने वाले गुरु जी अपनी दया से प्राणी को परमात्मा से मिलाते हैं।

ਮਿਲਿਆ ਹੋਇ ਨ ਵਿਛੁੜੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥
जिस की आत्मा के भीतर प्रभु का अनन्त प्रकाश प्रज्वलित है, वह उसे मिल जाता है और पुनः जुदा नहीं होता अर्थात् जीवन-मृत्यु के चक्र से छूटकर वह मोक्ष प्राप्त करता है।

ਸਚੈ ਆਸਣਿ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਚੈ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰ ॥੪॥

सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥

ऐसे पुरुष का निवास सत्य है, जो सत्य के भीतर निवास करता है और सत्य स्वरूप परमेश्वर के प्रेम में सदैव विचरता है ॥४॥

ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਘਰ ਮਹਿ ਮਹਲੁ ਸੁਥਾਇ ॥

जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥

जीवात्मा का स्वरूप ज्योति है। जिसने अपने इस स्वरूप को पहचान लिया है, वह अपने हृदय गृह के श्रेष्ठ स्थान में ही स्वामी के मन्दिर को पा लेते हैं।

ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਸਚੋ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥

सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥

सत्य नाम के रंग में लिवलीन होने से सत्य प्रभु प्राप्त हो जाता है।

ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੀਐ ਸਾਚੋ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੫॥
त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥
सत्य प्रभु के नाम द्वारा वह उसे पहचान लेते हैं, जो पाताल, धरती एवं आकाश तीनों लोकों में रहता है॥ ५॥

सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥
सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥
वह जीव-स्त्री बहुत ही सुन्दर है जिसने अपने प्रियतम-प्रभु को समझ लिया है, जो सदैव इसके साथ रहता है।

महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥
महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥
दसम द्वार रूपी महल में रहने वाला प्रियतम प्रभु जीव-स्त्री को अपने महल में आमंत्रित कर लेता है। पति उसे बड़ी प्रीति से रखता है।

सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥੬॥
सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥
वही नारी सचमुच प्रसन्न तथा गुणवान सुहागिन है, जो अपने प्रियतम पति के गुणों पर मोहित होती है ॥६॥

भूली भूली थलि चੜा थलि चੜि डूगरि जाउ ॥
भूली भूली थलि चड़ा थलि चढ़ि डूगरि जाउ ॥
मुझ नाम से भूली हुई को गुरु के बिना नाम की सूझ नहीं होगी।

बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥
बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥
मैं सारी धरती पर फिरती रहूँ, धरती पर घूमने के पश्चात पर्वतों पर चढ़ जाऊँ और जंगलों में भटकती रहूँ।

नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥੭॥
नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥
यदि हरेि नाम को विस्मृत करके मैं भटकती रहूँ तो मैं पुनः पुनः आवागमन के चक्र में रहूँगी ॥७॥

ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ਪਧਾਊਆ ਚਲੇ ਚਾਕਰ ਹੋਇ ॥
पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥
हे जीव-स्त्री ! जाकर उन पथिकों से पता कर लो जो प्रभु के भक्त होकर उसके मार्ग पर चलते हैं।

ਰਾਜਨੁ ਜਾਣਹਿ ਆਪਣਾ ਦਰਿ ਘਰਿ ਠਾਕ ਨ ਹੋਇ ॥
राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥
वह ईश्वर को अपना सम्राट मानते हैं और उनको प्रभु के दरबार एवं घर में जाते समय कोई भी रोक नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੮॥੬॥
नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥८॥६॥
हे नानक ! एक परमेश्वर ही सर्वव्यापक है, इसके अलावा अन्य कोई भी अस्तित्व में नहीं ॥८॥६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਗੁਰ ਤੇ ਨਿਰਮਲੁ ਜਾਣੀਐ ਨਿਰਮਲ ਦੇਹ ਸਰੀਰੁ ॥
गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥
जब गुरु द्वारा मनुष्य का शरीर एवं मन निर्मल हो जाते हैं तो निर्मल प्रभु को जाना जाता है।

ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚੋ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸੋ ਜਾਣੈ ਅਭ ਪੀਰ ॥
निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥
सत्य निर्मल प्रभु मन में आ बसता है। वह परमेश्वर जीव के हृदय की पीड़ा को अनुभव करता है।

ਸਹਜੈ ਤੇ ਸੁਖੁ ਅਗਲੋ ਨਾ ਲਾਗੈ ਜਮ ਤੀਰੁ ॥੧|
सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥१॥
सहज अवस्था प्राप्त होने पर मन बहुत सुखी होता है और काल (मृत्यु) का बाण उसे नहीं लगता ॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਨਿਰਮਲ ਜਲਿ ਨਾਇ ॥
भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥
हे भाई ! हरि नाम के निर्मल जल में स्नान करने से तुझे कोई भी मलिनता नहीं लगी रहेगी, अपितु तेरे समस्त अवगुणों की मैल उतर जाएगी।

ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚਾ ਏਕੁ ਤੂ ਹੋਰੁ ਮੈਲੁ ਭਰੀ ਸਭ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥१॥ रहाउ ॥

हे प्रभु ! एकमात्र तू ही सत्य और निर्मल है, अन्य समस्त स्थानों पर मैल विद्यमान है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਮੰਦਰੁ ਸੋਹਣਾ ਕੀਆ ਕਰਣੈਹਾਰਿ ॥

हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥

यह जगत् ईश्वर का अति सुन्दर महल है। सृजनहार प्रभु ने स्वयं इसकी रचना की है।

ਰਵਿ ਸਸਿ ਦੀਪ ਅਨੂਪ ਜੋਤਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥

रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥

सूर्य एवं चंद्रमा की ज्योतियों की चमक अनूप है। ईश्वर का अनन्त प्रकाश तीनों ही लोकों में प्रज्वलित हो रहा है।

ਹਾਟ ਪਟਣ ਗੜ ਕੋਠੜੀ ਸਚੁ ਸਉਦਾ ਵਾਪਾਰ ॥੨॥

हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥२॥

तन के अन्दर दुकानें, नगर तथा किले विद्यमान हैं। जहाँ पर व्यापार करने के लिए सत्य नाम का सौदा है॥ २॥

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਭੈ ਭੰਜਨਾ ਦੇਖੁ ਨਿਰੰਜਨ ਭਾਇ ॥

गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइ ॥

ज्ञान का सुरमा भय को नाश करने वाला है और प्रेम के द्वारा ही पवित्र प्रभु के दर्शन किए जाते हैं।

ਗੁਪਤੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਠਾਇ ॥

गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥

प्राणी अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष समूह को जान लेता है, यदि वह अपने मन को एक स्थान पर केन्द्रित रखे।

ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਾ ਸਹਜੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥

ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥३॥

यदि मनुष्य को ऐसा सतिगुरु मिल जाए तो वह सहज ही उसको प्रभु से मिला देता है ॥३॥

ਕਸਿ ਕਸਵਟੀ ਲਾਈਐ ਪਰਖੇ ਹਿਤੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥

कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥

जैसे सोने को परखने के लिए कसौटी पर परख लिया जाता है, वैसे ही पारब्रह्म अपने उत्पन्न किए हुए प्राणियों के आत्मिक जीवन को बड़े प्रेम से ध्यान लगाकर परखता है।

ਖੋਟੇ ਠਉਰ ਨ ਪਾਇਨੀ ਖਰੇ ਖਜਾਨੈ ਪਾਇ ॥
खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥
गुणहीन मंदे जीवों को स्थान नहीं मिलता और गुणवान वास्तविक कोष में डाले जाते हैं।

ਆਸ ਅੰਦੇਸਾ ਦੂਰਿ ਕਰਿ ਇਉ ਮਲੁ ਜਾਇ ਸਮਾਇ ॥੪॥
आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥४॥
अपनी आशा एवं चिन्ता को निवृत कर दे, इस तरह तेरी मलिनता धुल जाएगी॥ ४॥

ਸੁਖ ਕਉ ਮਾਗੈ ਸਭੁ ਕੋ ਦੁਖੁ ਨ ਮਾਗੈ ਕੋਇ ॥
सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥
प्रत्येक व्यक्ति सुख की कामना करता है, कोई भी दुख की याचना नहीं करता।

ਸੁਖੈ ਕਉ ਦੁਖੁ ਅਗਲਾ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂਝ ਨ ਹੋਇ ॥
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥
रसों-स्वादों के पीछे अत्यंत कष्ट प्राप्त होता है परन्तु मनमुखी प्राणी इसको नहीं समझते।

ਸੁਖ ਦੁਖ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੀਅਹਿ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੫॥
सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥५॥
जो सुख और दुख को एक समान जानते हैं और अपनी आत्मा को नाम के साथ अभेद करते हैं, वह ईश्वरीय सुख-समृद्धि प्राप्त करते हैं ॥ ५॥

ਬੇਦੁ ਪੁਕਾਰੇ ਵਾਚੀਐ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮ ਬਿਆਸੁ ॥
बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ॥
ब्रह्मा के वेद तथा व्यास के शब्दों के पाठ पुकारते हैं कि

ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵਕ ਸਾਧਿਕਾ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥
मौनधारी ऋषि, प्रभु के भक्त एवं साधक गुणों के भण्डार नाम के साथ रंगे हुए हैं।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਜਿਣਿ ਗਏ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਸੁ ॥੬॥
सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ॥६॥
जो सत्यनाम के साथ रंग जाते हैं, वे सदैव विजय प्राप्त करते हैं। मैं उन पर सदैव ही बलिहारी जाता हूँ ॥६॥

ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਮੈਲੇ ਮਲੁ ਭਰੇ ਜਿਨ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਹੋਇ ॥
चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥
जिनके मुख में प्रभु का नाम नहीं, वे मैल से भरे रहते हैं और चारों ही युगों में मैले रहते हैं।

ਭਗਤੀ ਭਾਇ ਵਿਹੂਣਿਆ ਮੁਹੁ ਕਾਲਾ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥

भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥

जो भगवान से प्रेम नहीं करते उन भक्तिहीनों का भगवान के दरबार में मुँह काला किया जाता है और वे अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं।

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਅਵਗਣ ਮੁਠੀ ਰੋਇ ॥੭॥

जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥७॥

जिन्होंने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है, उन्हें उनके अवगुणों ने ठग लिया है, इसलिए वे विलाप करते हैं।॥७॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਪਾਇਆ ਡਰੁ ਕਰਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥

खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥

भगवान खोज करने से मिल जाता है। जब मनुष्य के मन में भगवान का भय पैदा हो जाता है फिर गुरु के द्वारा उसे भगवान मिल जाता है।

ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਘਰਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਾਇ ॥

आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ ॥

जीवात्मा का स्वरूप ज्योति है। जब जीवात्मा को अपने ज्योति स्वरूप की पहचान हो जाती है तो वह अपने दसम द्वार रूपी घर में जाकर बसती है।

ਨਾਨਕ ਨਿਰਮਲ ਊਜਲੇ ਜੋ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੮॥੭॥

नानक निरमल ऊजले जो राते हरि नाइ ॥८॥७॥

उसकी अहंकार एवं तृष्णा मिट जाती है। हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे निर्मल हो जाते हैं और उनके मुख भी उज्ज्वल हो जाते हैं।॥८॥७॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥

सिरीरागु महला १ ॥

श्रीरागु महला १ ॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਭੂਲੇ ਬਾਵਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥

सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥

हे मेरे भूले बावले मन ! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन। तू गुरु के चरणों में जाकर लग।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਜਮੁ ਡਰਪੈ ਦੁਖ ਭਾਗੁ ॥

हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥

तू ईश्वर का नाम जप और भगवान का ध्यान किया कर, नाम से यमदूत भी भयभीत होता है और समस्त दुख निवृत्त हो जाते हैं।

ਦੂਖੁ ਘਣੋ ਦੋਹਾਗਣੀ ਕਿਉ ਥਿਰੁ ਰਹੈ ਸੁਹਾਗੁ ॥੧॥

दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥१॥

अभाग्यशाली नारी बहुत कष्ट झेलती है, उसका सुहाग कैसे स्थिर रह सकता है ॥

ਭਾਈ ਰੇ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਮੈ ਥਾਉ ॥
भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥
हे भाई ! गुरु के बिना मेरा अन्य कोई भी स्थान नहीं।

ਮੈ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु ने कृपा करके मुझे हरि-नाम की दौलत का खजाना प्रदान किया है, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਪਤਿ ਸਾਬਾਸਿ ਤਿਸੁ ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਉ ॥
गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥
गुरु के उपदेश द्वारा बड़ा यश प्राप्त होता है। ईश्वर करे मेरा उनको साथ मेल-मिलाप हो।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਊ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਰ�ि ਜਾਉ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥
उसके बिना में क्षण-मात्र भी जीवित नहीं रह सकता। उसके नाम के बिना मैं प्राण त्याग देता हूँ।

ਮੈ ਅੰਧੁਲੇ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਟੇਕ ਟਿਕੀ ਘਰਿ ਜਾਉ ॥੨॥
मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥
मुझ नेत्रहीन (ज्ञानहीन) को उस पारब्रह्म-प्रभु का नाम कदापि विस्मृत न हो। उसकी शरण में रह कर मैं अपने धाम (परलोक) में पहुँच जाऊँगा ॥२॥

ਗੁਰੂ ਜਿਨਾ ਕਾ ਅੰਧੁਲਾ ਚੇਲੇ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ॥
गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥
जिनका गुरु नेत्रहीन (ज्ञानहीन) है, उन शिष्यों को कहीं भी स्थान नहीं मिलता।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਉ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਸੁਆਉ ॥
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥
सतिगुरु के बिना परमेश्वर का नाम प्राप्त नहीं होता। नाम के बिना मनुष्य जीवन का क्या मनोरथ है?

ਆਇ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਣਾ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਉ ॥੩॥
आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥
उजाड़ गृह में कौए की भाँति चक्कर लगाने की तरह मनुष्य अपने आवागमन पर दुःख व्यक्त करता है ॥३॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਦੇਹੁਰੀ ਜਿਉ ਕਲਰ ਕੀ ਭੀਤਿ ॥
बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥
नाम के बिना मानव देहि ऐसे संताप झेलती है जैसे शोरा लगी ईटों की दीवार ध्वस्त होती है।

ਤਬ ਲਗੁ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ਜਬ ਲਗੁ ਸਾਚੁ ਨ ਚੀਤਿ ॥
तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥
जब तक सत्य नाम प्राणी के मन में प्रवेश नहीं करता, तब तक सत्य (प्रभु) की संगति इसे प्राप्त नहीं होती।

ਸਬਦਿ ਰਪੈ ਘਰੁ ਪਾਈਐ ਨਿਰਬਾਣੀ ਪਦੁ ਨੀਤਿ ॥੪॥
सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥
नाम के साथ रंग जाने से अपने गृह में ही प्राणी को सदैव स्थिर मोक्ष-पद मिल जाता है ॥४॥

ਹਉ ਗੁਰ ਪੂਛਉ ਆਪਣੇ ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਕਾਰ ਕਮਾਉ ॥
हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥
मैं अपने गुरु से जाकर पूछूगी और उससे पूछकर आचरण करूँगी।

ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਦੁਖੁ ਜਲਿ ਜਾਉ ॥
सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥
मैं नाम द्वारा भगवान की महिमा करूंगी चूंकि जो वह मेरे मन में आकर बस जाए और मेरे अहंकार का दुख जल जाए।

ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਮਿਲਾਵੜਾ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਮਿਲਾਉ ॥੫॥
सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥
सहज ही मेरा भगवान से मिलन हो जाए और मैं सत्य प्रभु में सदैव के लिए मिली रहूँ॥ ५॥

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਤਜਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
वही पवित्र पावन हैं जो काम, क्रोध एवं अहंकार को त्याग कर नाम में मग्न रहते हैं।

ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਸਦ ਸਦਾ ਹਰਿ ਰਾਖਹਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥
वह सदैव ही नाम की महिमा करते हैं और भगवान को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਸਭ ਜੀਆ ਕਾ ਆਧਾਰੁ ॥੬॥
सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥
अपने चित्त के अंदर हम उसको क्यों भुलाएँ, जो समस्त प्राणियों का आधार है? ॥ ६ ॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਸੋ ਮਰਿ ਰਹੈ ਫਿਰਿ ਮਰੈ ਨ ਦੂਜੀ ਵਾਰ ॥
सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥
जो व्यक्ति शब्द द्वारा अपने अहंकार को मार लेता है। वे मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है और पुनः दूसरी बार नहीं मरता।

ਸਬਦੈ ਹੀ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥
गुर-उपदेश से ही ईश्वर के नाम हेतु प्रीति उत्पन्न हो जाती है और परमात्मा मिल जाता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੭॥
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥
ईश्वर के नाम बिना जगत् यथार्थ से अनजान होकर भटकता फिरता और पुनः पुनः आवागमन में पड़ता है।॥७॥

ਸਭ ਸਾਲਾਹੈ ਆਪ ਕਉ ਵਡਹੁ ਵਡੇਰੀ ਹੋਇ ॥
सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥
हरेक अपने आप की प्रशंसा करता है और अपने आप को महान् जताना चाहता है।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਆਪੁ ਨ ਚੀਨੀਐ ਕਹੇ ਸੁਣੇ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥
गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥
गुरु के बिना आत्म-पहचान नहीं हो सकती। केवल कहने-सुनने से क्या हो सकता है?

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਹਉਮੈ ਕਰੈ ਨ ਕੋਇ ॥੮॥੮॥
नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥
हे नानक ! यदि मनुष्य प्रभु के सुमिरन द्वारा आत्म-स्वरूप की पहचान कर ले तो वह अपने आप पर अहंकार नहीं करता ॥ ८ ॥ ८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥

ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਧਨ ਸੀਗਾਰੀਐ ਜੋਬਨੁ ਬਾਦਿ ਖੁਆਰੁ ॥
बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥
प्राणपति परमेश्वर के बिना भार्या का हार-श्रृंगार एवं सुन्दर यौवन व्यर्थ एवं विनष्ट है।

ਨਾ ਮਾਣੇ ਸੁਖਿ ਸੇਜਜ਼ੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਬਾਦਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥
ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥
वह अपने प्राणपति की सेज का आनंद नहीं भोगती। पति की अनुपस्थिति पर उसका समस्त हार-श्रृंगार व्यर्थ है।

दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥
दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥
भाग्यहीन पत्नी को अत्यंत कष्ट होता है। उसका पति उसकी गृह की सेज पर विश्राम नहीं करता ॥१॥

मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥
मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥
हे मेरे मन ! राम नाम जप, तभी सुख मिलेगा।

बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के बिना भगवान से प्रेम नहीं होता। यदि नाम मिल जाए तभी प्यार का रंग चढ़ता है॥१॥ रहाउ॥

गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥
गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥
गुरु की सेवा से बड़ा सुख मिलता है और ज्ञान का हार-श्रृंगार करने से पत्नी ईश्वर को अपने पति के तौर पर पा लेती है।

सचि माणे पिर सेजजी गूड़ा हेतु पिआरु ॥
सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥
प्रभु के प्रगाढ़ प्रेम द्वारा पत्नी निश्चित ही अपने प्रीतम की सेज पर आनंद पाती है।

गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥
गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥
गुरु की कृपा से पत्नी की अपने प्राणपति प्रभु से पहचान होती है। गुरु के मिलन से वह सुशील नेक आचरण वाली हो जाती है।॥२॥

सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥
सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥
हे जीव-स्त्री ! सत्य के द्वारा तू अपने पति से मिलन कर। उससे प्रेम करके तुम अपने प्रियतम पर आकर्षित हो जाओगी। हे जीव-स्त्री ! तेरे पति ने तुझे अपने प्रेम पर आकर्षित किया है, इसलिए उसके प्रेम में लीन हो जा।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਾਚਿ ਵਿਗਸਿਆ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥
सत्य परमेश्वर के साथ उसका तन-मन प्रफुल्लित हो जाएँगे और उसका मोल नहीं पाया जा सकता।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਘਰਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੩॥
हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥
जिस जीव-स्त्री के हृदय में उसका पति-परमेश्वर समाया है, वह उसके सत्य नाम के साथ पवित्र हुई है॥३॥

ਮਨ ਮਹਿ ਮਨੂਆ ਜੇ ਮਰੈ ਤਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੈ ਨਾਰਿ ॥
मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥
यदि वह अपने अहंकार को चित्त के भीतर ही कुचल दे तो प्राणपति प्रभु उसे भरपूर सुख सम्मान देता है।

ਇਕਤੁ ਤਾਗੈ ਰਲਿ ਮਿਲੈ ਗਲਿ ਮੋਤੀਅਨ ਕਾ ਹਾਰੁ ॥
इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥
धागे पिरोए हुए मोतियों की माला जैसे गले से मिलकर सुन्दर बनावट होती है, वैसे ही पति-पत्नी एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

ਸੰਤ ਸਭਾ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮ ਅਧਾਰੁ ॥੪॥
संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥
सत्संग के भीतर गुरु द्वारा नाम का आश्रय लेने से सुकून प्राप्त होता है। ४॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਉਪਜੈ ਖਿਨਿ ਖਪੈ ਖਿਨੁ ਆਵੈ ਖਿਨੁ ਜਾਇ ॥
खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥
मनुष्य का मन एक क्षण में यूं हो जाता है, जैसे मृत जीवित हो जाए। वह एक क्षण में मृत समान हो जाता है। यह एक क्षण में कहाँ से आ जाता है और एक क्षण में कहाँ चला जाता है।

ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੈ ਰਵਿ ਰਹੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਇ ॥
सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥
यदि यह नाम को पहचान ले और नाम-सिमरन में लगा रहे फिर इसे मृत्यु दुखी नहीं करती

ਸਾਹਿਬੁ ਅਤੁਲੁ ਨ ਤੋਲੀਐ ਕਥਨਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥੫॥
साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥
वह साहिब (प्रभु) अतुल्य है जिसे किसी वस्तु के समक्ष तोला नहीं जा सकता, उसकी प्राप्ति सिर्फ कहने या बाते करने से नहीं हो सकती ॥ ५ ॥

ਵਾਪਾਰੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਆਏ ਵਜਹੁ ਲਿਖਾਇ ॥
वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥
जीव वणजारे हैं। वह जगत् में नाम का व्यापार करने आते हैं। वह प्रभु के दरबार में अपना वेतन लिखवाकर लाते हैं।

ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚ ਕੀ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਰਜਾਇ ॥
कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥
जो सत्य की कमाई करते हैं और ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करते हैं। वह कर्म का लाभ कमाते हैं।

ਪੂੰਜੀ ਸਾਚੀ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੬॥
पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥
सत्य की पूँजी द्वारा वही गुरु प्राप्त करते हैं, जिनको तुल्य मात्र भी लोभ-लालच नहीं ॥ ६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਇਸੀ ਸਚੁ ਤਰਾਜੀ ਤੋਲੁ ॥
गुरमुखि तोलि तोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥
सत्य के तराजू पर सत्य के वजन से गुरमुख प्राणियों को गुरदेव स्वयं तोलते हैं तथा अन्यों को तुलाते हैं।

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਮੋਹਣੀ ਗੁਰਿ ਠਾਕੀ ਸਚੁ ਬੋਲੁ ॥
आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥
गुरु ने, जिसका वचन सत्य है, आशा-तृष्णा जो सभी को बहका लेती है, उनकी रोकथाम (गुरु) करते हैं।

ਆਪਿ ਤੁਲਾਏ ਤੋਲਸੀ ਪੂਰੇ ਪੂਰਾ ਤੋਲੁ ॥੭॥
आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥
परमेश्वर कर्मों अनुसार प्राणियों को स्वयं तराजू पर तोलता है, पूर्ण पुरुष का तोल-परिमाण पूर्ण है॥ ७॥

ਕਥਨੈ ਕਹਣਿ ਨ ਛੁਟੀਐ ਨਾ ਪੜਿ ਪੁਸਤਕ ਭਾਰ ॥
कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥
केवल कहने तथा बातचीत द्वारा किसी की मुक्ति नहीं होती और न ही ढेर सारे ग्रंथों के अध्ययन द्वारा।

ਕਾਇਆ ਸੋਚ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਿਆਰ ॥
काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥
हरि की भक्ति और प्रीति के बिना तन की पवित्रता प्राप्त नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਮੇਲੇ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰ ॥੮॥੯॥
नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥९॥
हे नानक ! मुझे भगवान का नाम विस्मृत न हो और गुरु मुझे भगवान से मिला दे ॥ ८ ॥९ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਰਤਨੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥
यदि प्राणी को पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो उसे ज्ञान रूपी रत्न प्राप्त हो जाता है।

ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਪਾਈਐ ਸਰਬ ਪਿਆਰੁ ॥
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥
यदि अपना मन अपने गुरु को अर्पित कर दे तो उसे सबका प्रेम प्राप्त हो जाता है।

ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਅਵਗਣ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੧॥
मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥
उसे गुरु से मोक्ष-रूपी धन मिल जाता है जो समस्त अवगुणों का नाश करने वाला है॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥
भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥
हे भाई ! गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता।

ਪੂਛਹੁ ਬ੍ਰਹਮੇ ਨਾਰਦੈ ਬੇਦ ਬਿਆਸੈ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
चाहे कोई भी जाकर ब्रह्मा, नारद एवं वेदों के रचयिता व्यास से पूछ ले॥१॥ रहाउ ॥

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਧੁਨਿ ਜਾਣੀਐ ਅਕਥੁ ਕਹਾਵੈ ਸੋਇ ॥
गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥
ज्ञान एवं ध्यान गुरु के शब्द द्वारा ही प्राप्त होते हैं और गुरु अपने सेवक से अकथनीय हरि का वर्णन करवा देते हैं।

ਸਫਲਿਓ ਬਿਰਖੁ ਹਰੀਆਵਲਾ ਛਾਵ ਘਣੇਰੀ ਹੋਇ ॥
सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥
गुरु जी हरे भरे, फल प्रदान करने वाले एवं छायादार पेड़ के समान हैं।

ਲਾਲ ਜਵੇਹਰ ਮਾਣਕੀ ਗੁਰ ਭੰਡਾਰੈ ਸੋਇ ॥੨॥
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥२॥
सर्वगुण मणियाँ, जवाहर एवं पन्ने ये गुरु जी के अमूल्य भण्डार में हैं। २॥

ਗੁਰ ਭੰਡਾਰੈ ਪਾਈਐ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥
गुरु जी के कोष गुरुवाणी में से पवित्र-पावन नाम की प्रीति प्राप्त होती है।

ਸਾਚੋ ਵਖਰੁ ਸੰਚੀਐ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਅਪਾਰੁ ॥
साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥
अनंत परमेश्वर की पूर्ण कृपा द्वारा हम सत्य नाम का सौदा संचित करते हैं।

ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖ ਮੇਟਣੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੁ ॥੩॥
सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥३॥
सुखों के दाता सतिगुरु सुख प्रदान करने वाले, कष्ट निवृत्त करने वाले एवं दुष्कर्मों के दैत्यों का संहार करने वाले हैं॥३॥

ਭਵਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਡਰਾਵਣੋ ਨਾ ਕੰਧੀ ਨਾ ਪਾਰੁ ॥
भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥
यह भवसागर बड़ा विषम एवं भयानक है, इसका कोई भी तट नहीं तथा न ही उसका कोई आर-पार किनारा है।

ਨਾ ਬੇੜੀ ਨਾ ਤੁਲਹੜਾ ਨਾ ਤਿਸੁ ਵੰਝੁ ਮਲਾਰੁ ॥
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥
इसकी न ही कोई नैया, न ही कोई लकड़ी है, न ही कोई चप्पू और न ही कोई खेवट है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੈ ਕਾ ਬੋਹਿਥਾ ਨਦਰੀ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੁ ॥੪॥

सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥

केवल सतिगुरु ही भयानक सागर पर एक जहाज है, जिसकी कृपा-दृष्टि मनुष्यों को पार कर देती है अर्थात् इहलोक से परलोक तक पहुँचाती है॥ ४॥

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਪਿਆਰਾ ਵਿਸਰੈ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਸੁਖੁ ਜਾਇ ॥

इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥

यदि मैं एक क्षण भर के लिए भी प्रीतम प्रभु को विस्मृत कर दूँ तो मुझे कष्ट घेर लेते हैं तथा सुख चला जाता है।

ਜਿਹਵਾ ਜਲਉ ਜਲਾਵਣੀ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪੈ ਰਸਾਇ ॥

जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥

जो जिव्हा प्यार से ईश्वर के नाम का उच्चारण नहीं करती, उसे जल जाना चाहिए, क्योंकि नाम का उच्चारण न करने वाली जिव्हा जलाने योग्य ही है।

ਘਟੁ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਅਗਲੋ ਜਮੁ ਪਕੜੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥੫॥

घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥५॥

जब देहि का घड़ा टूट जाता है, मनुष्य बहुत पीड़ा तथा कष्ट भोगता है और यमदूत जब शिकंजे में लेता है तो मनुष्य अफसोस प्रकट करता है ॥५॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਗਏ ਤਨੁ ਧਨੁ ਕਲਤੁ ਨ ਸਾਥਿ ॥

मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥

मनुष्य "मुझे, मैं, मेरी" पुकारते हुए संसार से चले गए हैं और उनका तन, धन एवं नारियाँ उनके साथ नहीं गई अर्थात् मृत्युकाल के समय कोई भी साथ नहीं देता।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧਨੁ ਬਾਦਿ ਹੈ ਭੂਲੋ ਮਾਰਗਿ ਆਥਿ ॥

बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥

नामविहीन पदार्थ रसहीन है। धन इत्यादि के मोह में बहका हुआ प्राणी कुमार्ग लग जाता है।

ਸਾਚਉ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥੋ ਕਾਥਿ ॥੬॥

साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥

इसलिए गुरु के आश्रय में आकर परमेश्वर की भक्ति कर और अकथनीय परमात्मा का वर्णन कर ॥६॥

ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਇ ॥

आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥

प्राणी आवागमन के चक्कर में पड़कर जन्म लेता और मरता रहता है और योनियों में पड़ा रहता है।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਿਉ ਮੇਟੀਐ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਰਜਾਇ ॥
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥
वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार काम करता है। विधाता की लिखी विधि को कैसे मिटाया जा सकता है, जबकि लिखी विधि परमेश्वर की इच्छानुसार लिखी गई हो?

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਛੁਟੀਐ ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੭॥
बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥७॥
ईश्वर के नाम के बिना प्राणी की मुक्ति नहीं हो सकती। गुरु उपदेशानुसार ही वह परमात्मा के मिलाप में मिल जाता है।॥७॥

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਮੇਰਾ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਸ ਕਾ ਜੀਉ ਪਰਾਨੁ ॥
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥
मेरे प्राणों के स्वामी परमात्मा के अलावा मेरा कोई भी अपना नहीं, मेरी आत्मा व जीवन सब पर उसका अधिकार है।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਜਲਿ ਬਲਉ ਲੋਭੁ ਜਲਉ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥
हे मेरे अहंकार एवं सांसारिक मोह ! तू जल कर राख हो जा, मेरे लोभ, ममता, अभिमान इत्यादि सब जल जाएँ जो मुझे ईश्वर से दूर करते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀਐ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੮॥੧੦॥
नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥
हे नानक ! नाम की आराधना करने से गुणों के भण्डार (ईश्वर) की प्राप्ति हो जाती है। ॥८ ॥१०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਜਲ ਕਮਲੇਹਿ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर से ऐसी मुहब्बत कर, जैसी कमल की जल से है।

ਲਹਰੀ ਨਾਲਿ ਪਛਾੜੀਐ ਭੀ ਵਿਗਸੈ ਅਸਨੇਹਿ ॥
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥
इसको जल की लहरें टपका कर लगातार धकियाती हैं परन्तु फिर भी यह प्रेम के भीतर प्रफुल्लित रहता है।

ਜਲ ਮਹਿ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਕੈ ਬਿਨੁ ਜਲ ਮਰਣੁ ਤਿਨੇਹਿ ॥੧॥

जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥

प्रभु जल के भीतर ऐसे प्राणी उत्पन्न करता है, जिनकी जल के बिना मृत्यु हो जाती है।॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਕਿਉ ਛੂਟਹਿ ਬਿਨੁ ਪਿਆਰ ॥।
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥
हे मेरे मन ! प्रभु से प्रेम के बिना तेरी मुक्ति किस तरह होगी ?

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान तो गुरु के हृदय में निवास करता है और वह जीवों को भक्ति के भण्डार प्रदान करता है अर्थात् गुरु की कृपा से ही भक्ति प्राप्त होती है।॥१॥ रहाउ॥

ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਮਛੁਲੀ ਨੀਰ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर से ऐसी प्रेम-भक्ति कर जैसी मछली की जल से है।

ਜਿਉ ਅਧਿਕਉ ਤਿਉ ਸੁਖੁ ਘਣੋ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
जितना अधिक जल बढ़ता है उतना अधिक सुख प्राप्त करती है। मछली आत्मा, तन व शरीर में सुख-शांति अनुभव करती है।

ਬਿਨੁ ਜਲ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵਈ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ਅਭ ਪੀਰ ॥੨॥
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥२॥
जल के बिना वह एक क्षण मात्र भी जीवित नहीं रहती। स्वामी उसके हृदय की पीड़ा को जानता है ॥२ ॥

ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਮੇਹ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर से ऐसी प्रीति कर, जैसी चात्रिक की बारिश से प्रीति है।

ਸਰ ਭਰਿ ਥਲ ਹਰੀਆਵਲੇ ਇਕ ਬੂੰਦ ਨ ਪਵਈ ਕੇਹ ॥
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥
यदि वर्षा की बूंद इसके मुख में न पड़े, तो इसको लबालव भरे तालाबों एवं हरी-भरी धरती का क्या लाभ है?

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਸੋ ਪਾਈਐ ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਸਿਰਿ ਦੇਹ ॥੩॥
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥३॥
यदि परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हो तो वह बारिश की बूंदों की बौछार करेगा, अन्यथा अपने पूर्व कर्मों अनुसार वह अपना शीश दे देता है ॥३॥

ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਜਲ ਦੁਧ ਹੋਇ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥
हे मेरे मन ! तू परमेश्वर के साथ ऐसी प्रीति कर जैसी जल की दूध के साथ है।

ਆਵਟਣੁ ਆਪੇ ਖਵੈ ਦੁਧ ਕਉ ਖਪਣਿ ਨ ਦੇਇ ॥
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥
जल स्वयं तपस बर्दाश्त करता है और दूध को जलने नहीं देता ।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ਸਚਿ ਵਡਿਆਈ ਦੇਇ ॥੪॥
आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥४॥
ईश्वर स्वयं ही बिछुड़ों का मिलन करवाता है और स्वयं ही सत्य द्वारा प्रशंसा प्रदान करता है ॥४॥

ਰੇ ਮਨ ਐਸੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਜੈਸੀ ਚਕਵੀ ਸੂਰ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥
हे मेरे मन ! प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी चकवी की सूर्य के साथ है।

ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵਈ ਜਾਣੈ ਦੂਰਿ ਹਜੂਰਿ ॥
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥
वह एक क्षण या एक पल के लिए सो नहीं सकती; सूर्य बहुत दूर है, लेकिन वह सोचती है कि यह निकट है।

ਮਨਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੫॥
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥
कुमार्गी पुरुष को सूझ नहीं पड़ती। गुरमुख के लिए प्रभु सदैव निकट ही है ॥५॥

ਮਨਮੁਖਿ ਗਣਤ ਗਣਾ ਵਣੀ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥
स्वार्थी प्राणी लेखा-जोखा करते हैं, परन्तु जो कुछ सृजनहार की इच्छा हो, वही होता है।

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥
चाहे सभी जैसी इच्छा करें, उसका मोल नहीं पाया जा सकता।

ਗੁਰਮਤਿ ਹੋਇ ਤ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੬॥
गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥६॥
परन्तु, गुरु की शिक्षा अनुसार इसका बोध होता है। परमात्मा से मिलन द्वारा सुख प्राप्त होता है।॥६॥

ਸਚਾ ਨੇਹੁ ਨ ਤੁਟਈ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਸੋਇ ॥
सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥
यदि प्राणी को सतिगुरु मिल जाएँ तो सच्ची प्रीति नहीं टूटती।

ਗਿਆਨ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥
जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो फिर उसे आकाश, पाताल, मृत्युलोक तीनों लोकों की सूझ हो जाती है।

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜੇ ਗੁਣ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਇ ॥੭॥
निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥७॥
यदि प्राणी प्रभु के गुणों का ग्राहक बन जाए तो वह पवित्र नाम को कदापि विस्मृत नहीं करता ॥७॥

ਖੇਲਿ ਗਏ ਸੇ ਪੰਖਣੂੰ ਜੋ ਚੁਗਦੇ ਸਰ ਤਲਿ ॥
खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥
जो जीव रूपी पक्षी संसार सागर के तट पर दाना चुगते थे, वह जीवन बाजी खेल कर चले गए हैं।

ਘੜੀ ਕਿ ਮੁਹਤਿ ਕਿ ਚਲਣਾ ਖੇਲਣੁ ਅਜੁ ਕਿ ਕਲਿ ॥
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥
प्रत्येक जीव ने एक घड़ी अथवा मुहूर्त उपरांत यहाँ से चले जाना है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜਾਇ ਸਚਾ ਪਿੜੁ ਮਲਿ ॥੮॥
जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥८॥
उसकी खुशी का खेल आज अथवा कल के लिए है। हे प्रभु ! तुझे वहीं मिलता है, जिसे तुम स्वयं मिलाते हो। वह यहाँ से सच्ची बाजी जीत कर जाता है।॥८॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥
इसलिए गुरु के बिना मनुष्य के मन में प्रभु के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं होता और उसकी अहंकार की मलिनता दूर नहीं होती।

ਸੋਹੰ ਆਪੁ ਪਛਾਣੀਐ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਪਤੀਆਇ ॥
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥
जो ईश्वर की अपने हृदय में स्तुति करता है और उसके नाम के साथ बिंध गया है, उसकी तृप्ति हो जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੀਐ ਅਵਰ ਕਿ ਕਰੇ ਕਰਾਇ ॥੯॥
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥९॥
जब मनुष्य गुरु के ज्ञान द्वारा अपने स्वरुप को समझ लेता है, तब उसके लिए अन्य क्या करना या करवाना शेष रह जाता है ?॥९॥

ਮਿਲਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਮੇਲੀਐ ਸਬਦਿ ਮਿਲੇ ਪਤੀਆਇ ॥
मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥
उनको परमेश्वर से मिलाने बारे क्या कहना हुआ, जो आगे ही गुरु के शब्द द्वारा उसके मिलन में है। नाम प्राप्त करने से उनको संतोष हो गया है।

ਮਨਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ ਵੀਛੁੜਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥
मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥
मनमुख प्राणियों को प्रभु का ज्ञान नहीं होता। ईश्वर से अलग होकर वे यमों की मार खाते हैं।

ਨਾਨਕ ਦਰੁ ਘਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜੀ ਜਾਇ ॥੧੦॥੧੧॥
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥१०॥११॥
हे नानक ! प्रभु का दर एवं घर ही जीव का एकमात्र सहारा है। उसके लिए अन्य कोई ठिकाना नहीं हैं ॥१०॥११॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਭੁਲੈ ਭੁਲਾਈਐ ਭੂਲੀ ਠਉਰ ਨ ਕਾਇ ॥
मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥
मनमुख जीव-स्त्री भगवान को भूल जाती है। माया उसे मोह में फँसाकर भुला देती है। भूली हुई जीव-स्त्री को सहारा लेने हेतु कोई स्थान नहीं मिलता।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨ ਦਿਖਾਵਈ ਅੰਧੀ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥
गुरु के बिना कोई भी उसे प्रभु-मिलन का मार्ग नहीं दिखा सकता। वह ज्ञानहीन जन्मती-मरती रहती है।

ਗਿਆਨ ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇਆ ਠਗਿਆ ਮੁਠਾ ਜਾਇ ॥੧॥
गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥
जिस ने ज्ञान-पदार्थ गंवा लिया है, वह लुट जाता है ॥१॥

ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥

बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥

हे भाई ! माया ने भ्रम पैदा किया है

ਭਰਮਿ ਭੁਲੀ ਡੋਹਾਗਣੀ ਨਾ ਪਿਰ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥

इस भ्रम में पड़कर भूली हुई दुहागिन प्रभु पति के आलिंगन में नहीं आ सकती ॥१॥ रहाउ॥

ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਦਿਸੰਤਰੀ ਭੂਲੀ ਗ੍ਰਿਹੁ ਤਜਿ ਜਾਇ ॥

भूली फिरै दिसंतरी भूली ग्रिहु तजि जाइ ॥

वह भूली हुई अपना घर छोड़कर चली जाती है और देश-देशांतरों में भटकती रहती है।

ਭੂਲੀ ਡੂੰਗਰਿ ਥਲਿ ਚੜੈ ਭਰਮੈ ਮਨੁ ਡੋਲਾਇ ॥

भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥

संदेह के कारण उसका चित्त डगमगाता फिरता है और वह अपना सद्मार्ग भूलकर ऊँचे मैदानों तथा पर्वतों पर आरोहण करती है।

ਧੁਰਹੁ ਵਿਛੁੰਨੀ ਕਿਉ ਮਿਲੈ ਗਰਬਿ ਮੁਠੀ ਬਿਲਲਾਇ ॥੨॥

धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥

वह आदि से ही प्रभु के हुक्म से बिछुड़ी हुई है, वह प्रभु से कैसे मिल सकती है? अहंकारवश ठगी हुई वह दुखी होकर विलाप करती है॥२॥

ਵਿਛੁੜਿਆ ਗੁਰੁ ਮੇਲਸੀ ਹਰਿ ਰਸਿ ਨਾਮ ਪਿਆਰਿ ॥

विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥

गुरु जी बिछुड़ी आत्माओं का प्रभु के साथ मिलन करवा देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रेम से नाम जप कर हरि रस का आनंद प्राप्त करते हैं।

ਸਾਚਿ ਸਹਜਿ ਸੋਭਾ ਘਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥
साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥
सत्य ईश्वर के यशोगान से उन्हें सहज अवस्था की उपलब्धि होती है और मनुष्य बहुत शोभा प्राप्त करता है। वे हरि नाम के सहारे रहते हैं।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖੁ ਤੂੰ ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਭਤਾਰੁ ॥੩॥
जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥
हे प्रभु ! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तुम मुझे रखो चूंकि तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं ॥३॥

ਅਖਰ ਪੜਿ ਪੜਿ ਭੁਲੀਐ ਭੇਖੀ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥
निरंतर ग्रंथों के अध्ययन करके मनुष्य भूल में पड़ जाते हैं और धार्मिक वेष धारण करके वे बहुत अभिमान करते हैं

ਤੀਰਥ ਨਾਤਾ ਕਿਆ ਕਰੇ ਮਨ ਮਹਿ ਮੈਲੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥
तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥
तीर्थ स्थल पर स्नान करने का क्या लाभ है, जबकि उसके चित्त में अहंकार की मैल है?

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਸਮਝਾਈਐ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਸੁਲਤਾਨੁ ॥੪॥
गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥
मन शरीर रूपी नगरी का राजा है, सुलतान है। इसे गुरु बिना अन्य कौन समझा सकता है॥४॥

ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥
प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥
गुरु द्वारा वास्तविकता को सोचने-समझने से प्रभु-प्रेम का धन प्राप्त होता है।

ਸਾ ਧਨ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥
सा धन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥
अपने आपको गुरु के शब्द द्वारा श्रृंगार कर, पत्नी ने अपना अहंकार निवृत्त कर दिया है।

ਘਰ ਹੀ ਸੋ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੁ ॥੫॥
घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥
गुरु के अपार प्रेम द्वारा वह अपने गृह के भीतर ही उस प्रीतम को प्राप्त कर लेती है॥ ५॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥
गुरु की चाकरी और सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है और उसे सुख की उपलब्धि होती है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਖੋਇ ॥
गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥
जब गुरु का शब्द अंत:करण में निवास कर लेता है तो अभिमान भीतर से निवृत्त हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਲਾਭੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥੬॥
नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥६॥
इससे नाम रूपी दौलत प्राप्त हो जाती है और आत्मा सदैव लाभ अर्जित करती है॥ ६॥

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਆਪਿ ਨ ਲਇਆ ਜਾਇ ॥
करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥
यदि हम पर परमात्मा की अनुकंपा हो तो हमें नाम प्राप्त होता है। हम अपने साधन से इसे प्राप्त नहीं कर सकते।

ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਗਿ ਰਹੁ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥
इसलिए अहंकार का नाश करके गुरु के आश्रय में आओ।

ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਸਚੋ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੭॥
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥
सत्यनाम के साथ रंग जाने से सच्चा साहिब परमात्मा प्राप्त हो जाता है॥ ७॥

ਭੁਲਣ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਅਭੁਲੁ ਗੁਰੂ ਕਰਤਾਰੁ ॥
भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥
सारे प्राणी भूल करने वाले हैं परन्तु गुरु और सृष्टिकर्ता परमात्मा ही अचूक है।

ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੁ ਸਮਝਾਇਆ ਲਾਗਾ ਤਿਸੈ ਪਿਆਰੁ ॥
गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥
जिसने गुरु के उपदेश द्वारा अपने मन को सुधारा है, उसका ईश्वर से स्नेह हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਮੇਲੇ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰੁ ॥੮॥੧੨॥
नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥८॥१२॥
हे नानक ! जिसे अपार प्रभु अपने नाम के साथ मिला लेता है। वह सत्यनाम को कदापि विस्मृत नहीं करता ॥ ८ ॥ १२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਘਰ ਨਾਰਿ ॥
त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥
मोहिनी माया की तृष्णा पुत्रों, रिश्तेदारों एवं घर की स्त्री सब को लगी हुई है।

ਧਨਿ ਜੋਬਨਿ ਜਗੁ ਠਗਿਆ ਲਬਿ ਲੋਭਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ॥
धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥
इस जगत् को धन, यौवन, लालच, लोभ और अहंकार ने छल लिया है।

ਮੋਹ ਠਗਉਲੀ ਹਉ ਮੁਈ ਸਾ ਵਰਤੈ ਸੰਸਾਰਿ ॥੧॥
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥
मोह रूपी ठग बूटी के हाथों मैं लुट गई हूँ। ऐसा हाल ही बाकी दुनिया का (इसके द्वारा) होता है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तुझ बिन मेरा अन्य कोई नहीं।

ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਵਈ ਤੂੰ ਭਾਵਹਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
तुझ बिन, अन्य कुछ भी मुझे नहीं लुभाता। तुझे प्रेम करने से मुझे सुख-शांति प्राप्त होती है ॥१॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹੀ ਰੰਗ ਸਿਉ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੰਤੋਖੁ ॥
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥
गुरु के शब्द द्वारा संतोष धारण करो और प्रेमपूर्वक परमात्मा के नाम की सराहना करो।

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਚਲਸੀ ਕੂੜਾ ਮੋਹੁ ਨ ਵੇਖੁ ॥
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥
समस्त दृश्यमान संसार नश्वर है, इसके झूठे मोह के साथ प्रीति न लगा।

ਵਾਟ ਵਟਾਊ ਆਇਆ ਨਿਤ ਚਲਦਾ ਸਾਥੁ ਦੇਖੁ ॥੨॥
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥
तुम मार्ग के पथिक की भाँति आए हो अर्थात् सारा जगत् यात्री है। प्रतिदिन अपने साथियों को हम चलता देखते हैं।॥२॥

ਆਖਣਿ ਆਖਹਿ ਕੇਤੜੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਬੂਝ ਨ ਹੋਇ ॥
आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥
कई पुरुष धर्मोपदेश का प्रचार करते हैं, परन्तु गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਜੇ ਮਿਲੈ ਸਚਿ ਰਪੈ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥
यदि व्यक्ति को नाम की प्रशंसा प्राप्त हो जाए तो वह सत्य के साथ रंग जाता है और मान-सम्मान पा लेता है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇ ਭਲੇ ਖੋਟਾ ਖਰਾ ਨ ਕੋਇ ॥੩॥
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥
हे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वह सर्वोत्तम हैं। अपने आप कोई भी खोटा अथवा खरा नहीं ॥३॥

ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਛੁਟੀਐ ਮਨਮੁਖ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ॥
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥
गुरु की शरण लेने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है। मनमुख की पूंजी ही असत्य है।

ਅਸਟ ਧਾਤੁ ਪਾਤਿਸਾਹ ਕੀ ਘੜੀਐ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿ ॥
असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥
बादशाह की अपनी आठ धातुओं पर अधिकार होता है। उसकी इच्छानुसार ही सिक्के ढाले जाते हैं और मूल्य पाया जाता है।

ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਪਾਰਖੂ ਪਵੈ ਖਜਾਨੈ ਰਾਸਿ ॥੪॥
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥
परीक्षक स्वयं ही सिक्कों की परीक्षा कर लेता है और विशुद्ध को अपने कोष में डाल लेता है ॥४॥

ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਸਭ ਡਿਠੀ ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ॥
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥
हे प्रभु ! तेरा मूल्य नहीं पाया जा सकता। मैंने सब कुछ मूल्यांकन करके देख लिया है।

ਕਹਣੈ ਹਾਥ ਨ ਲਭਈ ਸਚਿ ਟਿਕੈ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥
कहने से उसकी गहराई नहीं पाई जा सकती। यदि मनुष्य सत्य के अंदर टिक जाए, वह सम्मान पा लेता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਤੂੰ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹੋਰੁ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੫॥
गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥
गुरु के उपदेश द्वारा हे प्रभु ! मैं तेरी कीर्ति करता हूँ। कोई अन्य तरीका तेरी कद्र बयान करने का नहीं ॥५॥

ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਨ ਭਾਵਈ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਹਉਮੈ ਵਾਦੁ ॥
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥
जिस तन को नाम अच्छा नहीं लगता, वह तन अहंकार वाद-विवाद का सताया हुआ है।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ਬਿਖਿਆ ਦੂਜਾ ਸਾਦੁ ॥
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥
गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता, अन्य रस पूरी तरह विषैले हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਈ ਮਾਇਆ ਫੀਕਾ ਸਾਦੁ ॥੬॥
बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥
गुणों के बिना कुछ भी काम नहीं आना। धन-दौलत का स्वाद बहुत फीका है ॥६॥

ਆਸਾ ਅੰਦਰਿ ਜੰਮਿਆ ਆਸਾ ਰਸ ਕਸ ਖਾਇ ॥
आसा अंदरि जमिआ आसा रस कस खाइ ॥
आशा में ही मनुष्य उत्पन्न हुआ है और आशा के अंदर ही वह मीठे तथा खट्टे पदार्थ सेवन करता है।

ਆਸਾ ਬੰਧਿ ਚਲਾਈਐ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥
तृष्णा में बंधा हुआ वह आगे को धकेला जाता है और अपने मुख पर पुनःपुनः चोटें खाता है।

ਅਵਗਣਿ ਬਧਾ ਮਾਰੀਐ ਛੂਟੈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਇ ॥੭॥
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥७॥
लेकिन गुरु की शिक्षा अनुसार नाम-सिमरन करने से उसकी मुक्ति हो जाती है ॥७ ॥

ਸਰਬੇ ਥਾਈ ਏਕੁ ਤੂੰ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ॥
सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥
हे जगत के पालनहार ! तुम सर्वव्यापक हो, संसार के कण-कण में तुम विद्यमान हो। जिस तरह तुझे लुभाता है उसी तरह मेरी रक्षा करो।

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਾਮੁ ਭਲੋ ਪਤਿ ਸਾਖੁ ॥
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥
गुरु-उपदेशानुसार सत्यनाम मनुष्य के हृदय में वास करता है। नाम की संगति में उसकी बहुत इज्जत होती है।

ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਵਾਈਐ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਸਚੁ ਭਾਖੁ ॥੮॥
हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥
अहंकार के रोग को दूर करके वह परमात्मा के सत्यनाम की आराधना करता है ॥८ ॥

ਆਕਾਸੀ ਪਾਤਾਲਿ ਤੂੰ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥
हे प्रभु ! तुम आकाश, पाताल तीनों लोकों में समाए हुए हो।

ਆਪੇ ਭਗਤੀ ਭਾਉ ਤੂੰ ਆਪੇ ਮਿਲਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥
तुम ही जीवों को भक्ति में लगाते हो और स्वयं ही तुम अपने मिलाप में मिलाते हो।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਰਜਾਇ ॥੯॥੧੩॥
नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥९॥१३॥
हे नानक ! मैं प्रभु के नाम को कदाचित विस्मृत न करूँ। हे जगत् के पालनहार ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तेरी इच्छा काम करती है, अपनी इच्छानुसार ही मेरी पालना करो ॥६॥१३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਅਵਰੁ ਕਿ ਕਰੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥
राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥
राम नाम से मेरा मन बिंध गया है। इसलिए किसी अन्य के विचार की कोई आवश्यकता नहीं रह गई ?

ਸਬਦ ਸੁਰਤਿ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤਉ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥
नाम में सुरति लगाने से मन में आनंद उत्पन्न होता है। अब मैं प्रभु के प्रेम में रंग गया हूँ, यही सुख का आधार है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਤੂੰ ਮੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥੧॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरि नामु अधारु ॥१॥
हे ईश्वर ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मुझे रखो, तेरा हरि-नाम मेरा आधार है॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸਾਚੀ ਖਸਮ ਰਜਾਇ ॥
मन रे साची खसम रजाइ ॥
हे मेरे मन ! पति-परमेश्वर की इच्छा ही बिल्कुल सत्य है,

ਜਿਨਿ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਾਜਿ ਸੀਗਾਰਿਆ ਤਿਸੁ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥
तुम उसी के प्रेम में लीन रहो, जिसने तेरे तन एवं मन की रचना करके संवारे हैं ॥१॥ रहाउ

ਤਨੁ ਬੈਸੰਤਰਿ ਹੋਮੀਐ ਇਕ ਰਤੀ ਤੋਲਿ ਕਟਾਇ ॥
तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥
यदि मैं अपने तन को रत्ती-रत्ती के टुकड़ों में काटकर अग्नि में जला दूँ,

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਮਧਾ ਜੇ ਕਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਅਗਨਿ ਜਲਾਇ ॥
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥
यदि मैं अपने तन तथा मन को ईंधन बना लूं और दिन-रात इनको अग्नि में प्रज्वलित करूँ

ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੁਲਿ ਨ ਪੁਜਈ ਜੇ ਲਖ ਕੋਟੀ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥੨॥
हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥२॥
और यदि में लाखों-करोड़ों धार्मिक यज्ञ करूँ तो भी ये सारे कर्म हरि-नाम के तुल्य नहीं पहुँचते ॥२॥

ਅਰਧ ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਈਐ ਸਿਰਿ ਕਰਵਤੁ ਧਰਾਇ ॥
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥
यदि मेरे सिर पर आरा रख कर मेरी देहि को दो आधे-आधे टुकड़ों में कटवा दिया जाए

ਤਨੁ ਹੈਮੰਚਲਿ ਗਾਲੀਐ ਭੀ ਮਨ ਤੇ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥
अथवा हिमालय की बर्फ में जाकर गाल दिया जाए तो भी मन के रोग निवृत नहीं होते।

ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੁਲਿ ਨ ਪੁਜਈ ਸਭ ਡਿਠੀ ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ॥੩॥
हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥३॥
ये ईश्वर के नाम के तुल्य नहीं पहुँचते। यह सब कुछ मैंने जांच-परखकर निर्णय करके देख लिया है॥३॥

ਕੰਚਨ ਕੇ ਕੋਟ ਦਤੁ ਕਰੀ ਬਹੁ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਦਾਨੁ ॥
कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥
यदि मैं सोने के किले दान करूँ और बहुत सारे बढ़िया नस्ल के हाथी-घोड़े दान करूँ

ਭੂਮਿ ਦਾਨੁ ਗਊਆ ਘਣੀ ਭੀ ਅੰਤਰਿ ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥
भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥
और यदि भूमिदान तथा बहुसंख्यक गाएँ भी दान करूं, तो भी मेरे मन के भीतर अहंकार एवं घमंड विद्यमान रहेगा।

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਸਚੁ ਦਾਨੁ ॥੪॥
राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥४॥
राम नाम ने मेरा मन बिंध लिया है और गुरु की कृपा-दृष्टि ने मुझे सच्चा दान प्रदान किया है, इस राम नाम में ही मेरा मन लीन हो गया है ॥४॥

ਮਨਹਠ ਬੁਧੀ ਕੇਤੀਆ ਕੇਤੇ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥
मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥
मनुष्य अपने मन के हठ से कितने ही कर्म अपनी बुद्धि अनुसार करता है और वेदों में बताए हुए अन्य कितने ही कर्मकांड करता है

ਕੇਤੇ ਬੰਧਨ ਜੀਅ ਕੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर ॥
उसकी आत्मा को कितने ही बंधन पड़े हुए हैं। मोक्ष द्वार गुरु द्वारा ही मिलता है।

ਸਚਹੁ ਓਰੈ ਸਭੁ ਕੋ ਉਪਰਿ ਸਚੁ ਆਚਾਰੁ ॥੫॥
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥५॥
सभी धर्म-कर्म प्रभु के नाम से न्यून हैं। सत्य आचरण सर्वश्रेष्ठ है॥ ५॥

ਸਭੁ ਕੋ ਊਚਾ ਆਖੀਐ ਨੀਚੁ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਇ ॥
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥
सभी जीवों को ऊँचा समझना चाहिए और जीवों को अपने से नीचा मत समझो।

ਇਕਨੈ ਭਾਂਡੇ ਸਾਜਿਐ ਇਕੁ ਚਾਨਣੁ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
क्योंकि यह सभी शरीर रूपी बर्तन एक प्रभु की रचना हैं। तीनों लोकों के जीवों में एक ही प्रभु की ज्योति प्रज्वलित हो रही है।

करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥६॥
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥६॥
प्रभु का सत्य नाम उसकी कृपा से ही मिलता है। आदि से लिखी हुई प्रभु की मेहर को कोई मिटा नहीं सकता ॥६॥

साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥
जब कोई साधु दूसरे साधु से मिलता है तो गुरु की प्रीति द्वारा वह संतोष प्राप्त कर लेता है।

अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥
यदि मनुष्य सतिगुरु में लीन हो जाए तो वह अकथनीय स्वामी की वार्ता को सोचने समझने लग जाता है।

पी अंम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥७॥
पी अम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥७॥
सुधा रस अमृत पान से वह तृप्त हो जाता है और मान-प्रतिष्ठा का वेष धारण करके प्रभु के दरबार को जाता है ॥७॥

घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥
घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥
रात-दिन उन सबके हृदय में अनहद शब्द रूपी वीणा बज रही है, जो ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं।

विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥
कोई विरला प्राणी ही है जो गुरु की अनुकंपा से अपनी आत्मा को सद्मार्ग में लगाकर ज्ञान प्राप्त करता है।

नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥८॥१४॥
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥८॥१४॥
हे नानक ! मुझे भगवान का नाम कभी भी विस्मृत न हो ! मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में से नाम की साधना करके ही मुक्त हो सकता है ॥८॥१४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਚਿਤੇ ਦਿਸਹਿ ਧਉਲਹਰ ਬਗੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰ ॥
चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥
मनुष्य को अपने चित्रित किए महल दिखाई देते हैं जिनके सफेद एवं सुन्दर द्वार हैं।

ਕਰਿ ਮਨ ਖੁਸੀ ਉਸਾਰਿਆ ਦੂਜੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥
करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥
उसने उन्हें मन में बड़े चाव से माया के प्रेम में बनाया है

ਅੰਦਰੁ ਖਾਲੀ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਨੁ ਢਹਿ ਢੇਰੀ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ॥੧॥
अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥
परन्तु उसका हृदय भगवान के प्रेम के बिना खाली है। उसके ये सुन्दर महल ध्वस्त हो जाएँगे और उसका शरीर भी राख का ढेर हो जाएगा ॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਾਥਿ ਨ ਹੋਇ ॥
भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥
हे भाई ! मृत्यु के समय तन और धन तेरे साथ नहीं जाएँगे।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੋ ਗੁਰੁ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
राम का नाम ही निर्मल धन है। भगवान का रूप गुरु ही नाम का दान जीव को देते हैं॥ १॥ रहाउ ॥

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੋ ਜੇ ਦੇਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥
राम नाम रूपी निर्मल धन मनुष्य को तभी मिलता है, यदि देने वाला गुरु स्वयं ही प्रदान करें।

ਆਗੈ ਪੂਛ ਨ ਹੋਵਈ ਜਿਸੁ ਬੇਲੀ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥
सृष्टिकर्ता रुप गुरु जिसका मित्र बन जाए, उसकी आगे परलोक में पूछताछ नहीं होती।

ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੨॥
आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥२॥
यदि ईश्वर मनुष्य को स्वयं मुक्त करे, तो वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही क्षमाशील है॥ २॥

ਮਨਮੁਖੁ ਜਾਣੈ ਆਪਣੇ ਧੀਆ ਪੂਤ ਸੰਜੋਗੁ ॥
मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥
कुमार्गी पुरुष पुत्र-पुत्रियों एवं सगे-संबंधियों को अपना मान बैठता है

ਨਾਰੀ ਦੇਖਿ ਵਿਗਾਸੀਅਹਿ ਨਾਲੇ ਹਰਖੁ ਸੁ ਸੋਗੁ ॥
नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥
वह अपनी गृहलक्ष्मी पत्नी को देख कर बड़ा प्रसन्न होता है। उसे हर्ष-शोक दोनों का सामना करना पड़ता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਵਲੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਗੁ ॥੩॥
गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥३॥
पर गुरमुख गुरु-शब्दों द्वारा हरि-नाम में लिवलीन हैं और वह दिन-रात प्रभु के अमृत का आनंद लेते हैं।॥ ३॥

ਚਿਤੁ ਚਲੈ ਵਿਤੁ ਜਾਵਣੋ ਸਾਕਤ ਡੋਲਿ ਡੋਲਾਇ ॥
चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥
शाक्त व्यक्ति का मन क्षण-भंगुर धन-दौलत की तलाश में भटकता रहता है।

ਬਾਹਰਿ ਢੂੰਢਿ ਵਿਗੁਚੀਐ ਘਰ ਮਹਿ ਵਸਤੁ ਸੁਥਾਇ ॥
बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥
जबकि पदार्थ उनके गृह के पवित्र स्थान में है, मनुष्य उसकी बाहर तलाश करने से बर्बाद हो जाते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਮੁਸੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੪॥
मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥
गुरमुख इसको अपने दामन में प्राप्त कर लेते हैं, जबकि कुनार्गी अहंकार द्वारा इसको गंवा लेते हैं।॥४॥

ਸਾਕਤ ਨਿਰਗੁਣਿਆਰਿਆ ਆਪਣਾ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣੁ ॥
साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥
हे गुणहीन शाक्त ! तू अपने मूल की पहचान कर।

ਰਕਤੁ ਬਿੰਦੁ ਕਾ ਇਹੁ ਤਨੋ ਅਗਨੀ ਪਾਸਿ ਪਿਰਾਣੁ ॥
रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥
यह शरीर रक्त और वीर्य का बना है। इसका अन्त अग्नि में जलकर राख हो जाने में है।

ਪਵਣੈ ਕੈ ਵਸਿ ਦੇਹੁਰੀ ਮਸਤਕਿ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੫॥
पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥
यह शरीर प्राण रूप वायु के वश में है। तेरे माथे पर सच्चा निशान पड़ा हुआ है कि तूने कितने समय तक जीना है॥५॥

ਬਹੁਤਾ ਜੀਵਣੁ ਮੰਗੀਐ ਮੁਆ ਨ ਲੋੜੈ ਕੋਇ ॥
बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥
प्रत्येक प्राणी लम्बी आयु की कामना करता है और कोई भी मरना नहीं चाहता।

ਸੁਖ ਜੀਵਣੁ ਤਿਸੁ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥
सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥
उसी का जीवन सुखदायक कहा जा सकता है, जिस सज्जन पुरुष के भीतर गुरु-कृपा से प्रभु वास करता है,

ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਦਰਸੁ ਨ ਹੋਇ ॥੬॥
नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥६॥
नाम-विहीन प्राणी का क्या महत्त्व है जिसको भगवान का रूप गुरु के दर्शन नहीं होते॥६॥

ਜਿਉ ਸੁਪਨੈ ਨਿਸਿ ਭੁਲੀਐ ਜਬ ਲਗਿ ਨਿਦ੍ਰਾ ਹੋਇ ॥
जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जब लगि निद्रा होइ ॥
जिस तरह मनुष्य स्वप्न में रात्रिकाल निद्रा-मग्न रहता है, भूला फिरता है,

ਇਉ ਸਰਪਨਿ ਕੈ ਵਸਿ ਜੀਅੜਾ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਦੋਇ ॥
इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ॥
इसी तरह वह प्राणी मुश्किलों में भटकता है, जिसके हृदय में अहंकार तथा द्वैत-भावना है और जो माया रूपी सर्पिणी के वश में है।

ਗੁਰਮਤਿ ਹੋਇ ਵੀਚਾਰੀਐ ਸੁਪਨਾ ਇਹੁ ਜਗੁ ਲੋਇ ॥੭॥
गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥
गुरु के उपदेशानुसार ही प्राणी अनुभव करता एवं देखता है कि यह संसार केवल स्वप्न मात्र ही है॥ ७॥

ਅਗਨਿ ਮਰੈ ਜਲੁ ਪਾਈਐ ਜਿਉ ਬਾਰਿਕ ਦੂਧੈ ਮਾਇ ॥
अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥
जिस तरह जल से अग्नि बुझ जाती है, जिस तरह माता के दुग्ध से शिशु संतुष्ट हो जाता है।

ਬਿਨੁ ਜਲ ਕਮਲ ਸੁ ਨਾ ਥੀਐ ਬਿਨੁ ਜਲ ਮੀਨੁ ਮਰਾਇ ॥
बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥
जिस तरह जल के बिना कमल नहीं रहता और जिस तरह जल के बिना मछली मर जाती है,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸਿ ਮਿਲੈ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੮॥੧੫॥
नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥८॥१५॥
इसी तरह ही हे नानक ! यदि मुझे गुरु द्वारा हरि रस मिल जाए तो ही मैं भगवान की महिमा गाकर जीवित रह सकता हूँ॥ ८ ॥१५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਡੂੰਗਰੁ ਦੇਖਿ ਡਰਾਵਣੋ ਪੇਈਅੜੈ ਡਰੀਆਸੁ ॥
डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥
मैं अपने पीहर (इहलोक) में भयानक पर्वत देखकर सहम गई हूँ।

ਊਚਉ ਪਰਬਤੁ ਗਾਖੜੋ ਨਾ ਪਉੜੀ ਤਿਤੁ ਤਾਸੁ ॥
ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥
पर्वत ऊँचा और चढ़ाई कठिन है। वहाँ तक पहुँचने के लिए कोई भी सीढ़ी नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਜਾਣਿਆ ਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਤਰੀਆਸੁ ॥੧॥
गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥१॥
गुरु की कृपा से मैंने पर्वत को भीतर ही पहचान लिया है। गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और मैं (भवसागर) से पार हो गई हूँ॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਭਵਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਡਰਾਂਉ ॥
भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥
हे भाई ! भवसागर बड़ा विषम एवं भयभीत करने वाला है।

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਸਿ ਮਿਲੈ ਗੁਰੁ ਤਾਰੇ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि हरि रस का पान कराने वाला पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो गुरु उसे भगवान का नाम प्रदान करके भवसागर से पार करवा देते हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਚਲਾ ਚਲਾ ਜੇ ਕਰੀ ਜਾਣਾ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥
चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥
यदि मैं कहूँ, "मैंने चले जाना है" इसका मुझे कोई लाभ नहीं होना। परन्तु यदि मैं वास्तव तौर पर अनुभव कर लूं मैं कूच कर जाने वाला हूँ, तभी होगा।

ਜੋ ਆਇਆ ਸੋ ਚਲਸੀ ਅਮਰੁ ਸੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥
जो कोई भी दुनिया में आया है, वह एक न एक दिन चला जाएगा केवल करतार रूप गुरु ही अमर है।

ਭੀ ਸਚਾ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਚੈ ਥਾਨਿ ਪਿਆਰੁ ॥੨॥
भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥२॥
इसलिए सच्चे स्थान सत्संगत में मिलकर श्रद्धा से सत्य परमात्मा की महिमा-स्तुति करनी चाहिए॥२॥

ਦਰ ਘਰ ਮਹਲਾ ਸੋਹਣੇ ਪਕੇ ਕੋਟ ਹਜਾਰ ॥
दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥
जिनके पास सुन्दर दरवाजे, मकान, मन्दिर एवं हजारों ही मजबूत किले,

ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ਪਾਖਰੇ ਲਸਕਰ ਲਖ ਅਪਾਰ ॥
हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥
हाथी-घोड़े पालकियाँ एवं लाखों ही सेना हो,

ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਿਆ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮੁਏ ਅਸਾਰ ॥੩॥
किस ही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार॥३॥
इन में कुछ भी किसी के साथ नहीं जाते। मूर्ख लोग व्यर्थ ही इनके लिए जूझ-जूझकर मरते हैं॥३॥

ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਸੰਚੀਐ ਮਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜੰਜਾਲੁ ॥
सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥
मनुष्य सोना तथा चांदी कितना भी एकत्रित कर ले, परन्तु दौलत मनुष्य को फँसाने वाला जाल है।

ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ ਦੋਹੀ ਫੇਰੀਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਿਰਿ ਕਾਲੁ ॥
सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥
वह अपनी सल्तनत का ढिंढोरा सारे जगत् में करवा दें परन्तु हरि-नाम के बिना मृत्यु उसके सिर पर सवार है।

ਪਿੰਡੁ ਪੜੈ ਜੀਉ ਖੇਲਸੀ ਬਦਫੈਲੀ ਕਿਆ ਹਾਲੁ ॥੪॥

पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥

जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो शरीर पार्थिव हो जाता है और जीवन का अंत हो जाता है। तब दुष्टों का क्या हश्र होगा ॥४॥

ਪੁਤਾ ਦੇਖਿ ਵਿਗਸੀਐ ਨਾਰੀ ਸੇਜ ਭਤਾਰ ॥

पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥

मनुष्य अपने पुत्रों को देखकर एवं अपनी पत्नी को सेज पर निहार कर बहुत खुश होता है।

ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ ਲਾਈਐ ਕਾਪੜੁ ਰੂਪੁ ਸੀਗਾਰੁ ॥

चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥

मनुष्य शरीर पर इत्र और चन्दन लगाता है और सुन्दर वस्त्रों के साथ अपना श्रृंगार करता है।

ਖੇਹੂ ਖੇਹ ਰਲਾਈਐ ਛੋਡਿ ਚਲੈ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥੫॥

खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥५॥

किन्तु जब वह प्राण त्याग कर इस संसार से चला जाता है तो शरीर मिट्टी में मिला दिया जाता है।॥५॥

ਮਹਰ ਮਲੂਕ ਕਹਾਈਐ ਰਾਜਾ ਰਾਉ ਕਿ ਖਾਨੁ ॥

महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥

कोई व्यक्ति स्वयं को भूमिपति, महाराजा, बादशाह, उच्चाधिकारी कहलवाता है।

ਚਉਧਰੀ ਰਾਉ ਸਦਾਈਐ ਜਲਿ ਬਲੀਐ ਅਭਿਮਾਨ ॥

चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥

कोई स्वयं को चौधरी एवं नवाब कहलवाता है परन्तु ये सभी अभिमान की अग्नि में जल मरते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਜਿਉ ਡਵਿ ਦਧਾ ਕਾਨੁ ॥੬॥

मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥६॥

मनमुख जीव ने भगवान के नाम को भुला दिया है। वह ऐसे बन गया है जैसे जंगल को लगी अग्नि में जला हुआ सरकण्डा होता है॥६॥

ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਾਇਸੀ ਜੋ ਆਇਆ ਜਗ ਮਾਹਿ ॥

हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥

जो भी इस संसार में आया है, उसको अभिमान बुरी तरह लिपटा हुआ है और अभिमान का खेल खेलकर गमन कर जाता है।

will

ਸਭੁ ਜਗੁ ਕਾਜਲ ਕੋਠੜੀ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੇਹ ਸੁਆਹਿ ॥
सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥
यह संसार कालिख की कुटिया है। शरीर, आत्मा एवं मनुष्य तन सब उसके साथ काले हो जाते हैं।

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੀ ਭਾਹਿ ॥੭॥
गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥७॥
लेकिन जिनकी गुरु जी स्वयं रक्षा करते हैं, वह निर्मल हैं और ईश्वर के नाम के साथ वह तृष्णाओं की अग्नि को बुझा देते हैं।॥ ७ ॥

ਨਾਨਕ ਤਰੀਐ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥
हे नानक ! सम्राटों के सम्राट परमेश्वर के सत्यनाम के साथ मनुष्य भवसागर पार कर जाता है।

ਮੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਵੇਸਾਹੁ ॥
मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥
हे प्रभु! मुझे आपका हरि-नाम कदापि विस्मृत न हो, मैंने हरि के नाम का आभूषण खरीद लिया है।

ਮਨਮੁਖ ਭਉਜਲਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੇ ਅਥਾਹੁ ॥੮॥੧੬॥
मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥८॥१६॥
स्वेच्छाचारी भयानक भवसागर में माया-लिप्त होने के कारण नष्ट हो जाते हैं परन्तु गुरमुख भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ८॥ १६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥
श्रीरागु महला १ घर २ ॥

ਮੁਕਾਮੁ ਕਰਿ ਘਰਿ ਬੈਸਣਾ ਨਿਤ ਚਲਣੈ ਕੀ ਧੋਖ ॥
मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥
यदि कोई प्राणी सांसारिक गृह को अपना स्थाई निवास समझकर बैठा रहे, परन्तु फिर भी उसे यहाँ से गमन कर जाने की (मृत्यु की) सदैव चिन्ता लगी रहती है।

ਮੁਕਾਮੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਰਹੈ ਨਿਹਚਲੁ ਲੋਕ ॥੧॥

mukāmu tā paru jāṇīai jā rahai nihcalu lok ॥१॥

इस संसार घर को स्थाई निवास तभी समझा जा सकता है, यदि इस जगत् ने सदैव स्थिर रहना हो, परन्तु यह जगत् तो क्षणभंगुर है॥१॥

ਦੁਨੀਆ ਕੈਸਿ ਮੁਕਾਮੇ ॥

dunīā kaisi mukāme ॥

यह दुनिया स्थाई कैसे हो सकती है?

ਕਰਿ ਸਿਦਕੁ ਕਰਣੀ ਖਰਚੁ ਬਾਧਹੁ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ਨਾਮੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

kari sidaku karaṇī kharacu bādhahu lāgi rahu nāme ॥१॥ rahāu ॥

इसलिए श्रद्धायुक्त होकर शुभ कर्म करके सदाचरण की कमाई कर और ईश्वर भक्ति में लीन रह ॥१॥ रहाउ॥

ਜੋਗੀ ਤ ਆਸਣੁ ਕਰਿ ਬਹੈ ਮੁਲਾ ਬਹੈ ਮੁਕਾਮਿ ॥

jogī ta āsaṇu kari bahai mulā bahai mukāmi ॥

योगी ध्यान-अवस्था में आसन बनाकर विराजमान होता है और मुल्लां विश्राम स्थल पर विराजता है।

ਪੰਡਿਤ ਵਖਾਣਹਿ ਪੋਥੀਆ ਸਿਧ ਬਹਹਿ ਦੇਵ ਸਥਾਨਿ ॥੨॥

paṇḍit vakhāṇahi pothīā sidh bahahi dev sathāni ॥२॥

ब्राह्मण ग्रंथों का पाठ करते हैं और सिद्ध देव-मन्दिरों में वास करते हैं ॥२॥

ਸੁਰ ਸਿਧ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਖ ਪੀਰ ਸਲਾਰ ॥

sur sidh gaṇ gaṇdharab muni jan sekh pīr salār ॥

देवता, सिद्ध-पुरुष, शिवगण, गंधर्व, ऋषि-मुनि, शेख, पीर, सेनापति समस्त उच्चाधिकारी

ਦਰਿ ਕੂਚ ਕੂਚਾ ਕਰਿ ਗਏ ਅਵਰੇ ਭਿ ਚਲਣਹਾਰ ॥੩॥

dari kūc kūcā kari gae avare bhi calaṇahār ॥३॥

एक-एक करके प्राण त्याग गए हैं और जो दिखाई दे रहे हैं, वे भी चले जाने वाले हैं। ॥ ३॥

ਸੁਲਤਾਨ ਖਾਨ ਮਲੂਕ ਉਮਰੇ ਗਏ ਕਰਿ ਕਰਿ ਕੂਚੁ ॥

sulatān khān malūk umare gae kari kari kūcu ॥

सम्राट, खान, फरिश्ते व सरदार बारी -बारी संसार त्याग गए हैं।

ਘੜੀ ਮੁਹਤਿ ਕਿ ਚਲਣਾ ਦਿਲ ਸਮਝੁ ਤੂੰ ਭਿ ਪਹੂਚੁ ॥੪॥
घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥
प्राणी को एक क्षण या घड़ी में यह संसार त्यागना पड़ेगा। हे मेरे मन ! तुम भी वहाँ पहुंचने वाले हो, इस संसार को त्याग कर तुम भी परलोक गमन करोगे ॥४॥

ਸਬਦਾਹ ਮਾਹਿ ਵਖਾਣੀਐ ਵਿਰਲਾ ਤ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥
सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥
शब्दों द्वारा तो सभी कहते हैं परन्तु किसी विरले को ही इस बारे ज्ञान है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਇ ॥੫॥
नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि वह प्रभु जल, थल, पाताल, आकाश में विद्यमान हैं। ॥५॥

ਅਲਾਹੁ ਅਲਖੁ ਅਗੰਮੁ ਕਾਦਰੁ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰੀਮੁ ॥
अलाहु अलखु अगमु कादरु करणहारु करीमु ॥
अल्लाह को जाना नहीं जा सकता। वह अगम्य एवं कुदरत का मालिक है, सृष्टि-रचयिता एवं जीवो पर मेहर करने वाला है।

ਸਭ ਦੁਨੀ ਆਵਣ ਜਾਵਣੀ ਮੁਕਾਮੁ ਏਕੁ ਰਹੀਮੁ ॥੬॥
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥
शेष सारी दुनिया जन्म एवं मृत्यु के अधीन है। परन्तु जीवों पर मेहर करने वाला एक अल्लाह ही सदैव स्थिर है ॥६॥

ਮੁਕਾਮੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਸਿਸਿ ਨ ਹੋਵੀ ਲੇਖੁ ॥
मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥
स्थिर केवल उसे ही कहा जा सकता है, जिसके सिर पर कर्मों का आलेख नहीं।

ਅਸਮਾਨੁ ਧਰਤੀ ਚਲਸੀ ਮੁਕਾਮੁ ਓਹੀ ਏਕੁ ॥੭॥
असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥
गगन तथा धरती नष्ट हो जाएँगे परन्तु सदैव स्थिर केवल ईश्वर ही रहेगा ॥ ७॥

ਦਿਨ ਰਵਿ ਚਲੈ ਨਿਸਿ ਸਸਿ ਚਲੈ ਤਾਰਿਕਾ ਲਖ ਪਲੋਇ ॥
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥
दिन में उजाला करने वाला सूर्य नाश हो जाएगा और रात्रि व चाँद नष्ट हो जाएँगे और लाखों ही सितारे लुप्त हो जाएँगे।

ਮੁਕਾਮੁ ਓਹੀ ਏਕੁ ਹੈ ਨਾਨਕਾ ਸਚੁ ਬੁਗੋਇ ॥੮॥੧੭॥
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥
नानक सत्य कथन करता है कि एक अल्लाह ही स्थिर है ॥८॥१७॥

ਮਹਲੇ ਪਹਿਲੇ ਸਤਾਰਹ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥
महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥
प्रथम सतिगुरु नानक देव जी की सत्रह अष्टपदियाँ।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥
सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ ॥
श्रीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਭਗਤਿ ਕੀਜੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥
यदि गुरु कृपा करे तो ही मनुष्य भक्ति करता है, गुरु के बिना भक्ति नहीं हो सकती।

ਆਪੈ ਆਪੁ ਮਿਲਾਏ ਬੂਝੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਕੋਇ ॥
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥
यदि गुरु जी दया करके अपनी संगति में रखें तो ईश्वर बोध का रहस्य समझकर प्राणी निर्मल हो जाता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਚਾ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੧॥
हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥
भगवान सत्य है और उसकी वाणी भी सत्य है। शब्द द्वारा ही प्राणी का ईश्वर से मिलन होता है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਭਗਤਿਹੀਣੁ ਕਾਹੇ ਜਗਿ ਆਇਆ ॥
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥
हे भाई ! भक्तिविहीन प्राणी इस जगत् में क्यों आया है?

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि इस संसार में उसने पूर्ण गुरु की सेवा का फल प्राप्त नहीं किया तो उसने यह जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है ॥१॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਹਰਿ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ॥

आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥

ईश्वर जगत् के जीवों का दाता और जगत् का पालनहार है और क्षमा प्रदान करके तुच्छ जीवों को अपने साथ मिला लेता है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਏ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥

जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥

ये जीव-जन्तु बेचारे क्या हैं ? वह क्या कह तथा समझ-सुना सकते हैं?

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥੨॥

गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥२॥

गुरमुख को ईश्वर स्वयं मान-प्रतिष्ठा प्रदान करता है और स्वयं ही अपनी भक्ति में लगाता है ॥२॥

ਦੇਖਿ ਕੁਟੰਬੁ ਮੋਹਿ ਲੋਭਾਣਾ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਈ ॥

देखि कुट्मबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥

अपने कुटुम्ब को देखकर उसके आकर्षण में प्राणी लुभायमान हो गया है परन्तु मृत्युकाल पर कोई भी साथ नहीं देता अर्थात् परलोक गमन के समय कोई भी सदस्य साथ नहीं जाता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਇਆ ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥
सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥
जिसने सतिगुरु की भरपूर सेवा करके गुणों के भण्डार प्रभु को प्राप्त कर लिया है उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता।

ਪ੍ਰਭੁ ਸਖਾ ਹਰਿ ਜੀਉ ਮੇਰਾ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੩॥
प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥
पूज्य प्रभु मेरा मित्र है और अंतिम काल मेरा सहायक होगा ॥३॥

ਪੇਈਅੜੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥
जगत् का पालनहार, प्राणदाता, प्रभु पीहर इस संसार में ही है जिसे इसी लोक में पाया जा सकता है। उससे बेखबर मनमुख प्राणी ने अपना सम्मान गंवा दिया है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੋ ਮਗੁ ਨ ਜਾਣੈ ਅੰਧੇ ਠਉਰ ਨ ਕਾਈ ॥
बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥
सतिगुरु के बिना कोई भी ईश्वर का मार्ग नहीं जानता। अज्ञानन्ध प्राणी को परलोक में स्थान नहीं मिलना।

ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਨਹੀ ਵਸਿਆ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥੪॥
हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥
यदि सुखदाता परमेश्वर मनुष्य के हृदय में निवास नहीं करता तो अंतिमकाल वह मनुष्य पश्चाताप करता हुआ गमन कर जाता है।॥४॥

ਪੇਈਅੜੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ॥
पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥
जिसने गुरु से मति लेकर जगत् के जीवन एवं जीवों के दाता प्रभु को अपने मन में बसा लिया है,

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥
वह प्रतिदिन भगवान की भक्ति करता है तथा वह अपने अहंत्व एवं मोह को मिटा देता है।

ਜਿਸੁ ਸਿਉ ਰਾਤਾ ਤੈਸੋ ਹੋਵੈ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥
जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥
मनुष्य जिसके प्रेम में मग्न रहता है, वह स्वयं भी उस जैसा बन जाता है तथा सत्य में ही समा जाता है ॥ ५॥

ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਭਾਉ ਲਾਏ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਬੀਚਾਰਿ ॥
आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी बीचारि ॥
जिस पर भगवान स्वयं कृपा-दृष्टि करता है, उसके भीतर अपना प्रेम उत्पन्न कर देता है। फिर वह गुरु की वाणी द्वारा भगवान की महिमा का विचार करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥
सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ॥
सतिगुरु की सेवा से प्राणी को बड़ा सुख उत्पन्न होता है और मनुष्य का अहंकार एवं तृष्णा मिट जाती है।

ਹਰਿ ਗੁਣਦਾਤਾ ਸਦ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਚੁ ਰਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੬॥
हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥६॥
गुणदाता प्रभु क्षमाशील है, वह सदैव ही उसके चित्त में वास करता है, जो सत्य को अपने हृदय में बसाए रखता है ॥ ६॥

ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲਾ ਮਨਿ ਨਿਰਮਲਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥
मेरा प्रभु सदैव निर्मल है। निर्मल मन के साथ ही वह प्राप्त होता है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਦੁਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥
यदि गुणों के भण्डार भगवान का नाम उसके हृदय में बस जाए, तो अहंकार एवं दुःख निवृत्त हो जाते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੭॥
सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥
सतिगुरु ने मुझे परमात्मा का नाम सुनाया है। मैं उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ ७ ॥

ਆਪਣੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਆਪੁ ਨ ਜਾਈ ॥
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥
प्राणी के अन्तर्मन का अभिमान कहने-कहलाने अथवा पढ़ने-पढ़ाने से दूर नहीं होता और गुरु के बिना अभिमान का कोई अंत नहीं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥
हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥
हरि आप ही भक्त-वत्सल है, और सुखों का दाता है। वह कृपा करके स्वयं ही मन में आकर बसता है।

ਨਾਨਕ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥੮॥੧॥੧੮॥
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥८॥१॥१८॥
हे नानक ! भगवान स्वयं ही गुरु के माध्यम से मनुष्य को शोभा, सुरति एवं ख्याति प्रदान करता है ॥ ८ ॥ १॥ १८ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३॥

ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਜਮਡੰਡੁ ਲਗੈ ਤਿਨ ਆਇ ॥
हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥
जो प्राणी अपने कर्म अहंकारवश करते हैं, उन्हें यमदूतों की बड़ी प्रताड़ना सहन करनी पड़ती है।

ਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਉਬਰੇ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥
जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥
जो प्राणी सतिगुरु की सेवा करते हैं, वे भगवान में सुरति लगाकर यमदूतों की प्रताड़ना से बच जाते हैं।॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! गुरु की संगति में ईश्वर की आराधना कर,"

ਧੁਰਿ ਪੂਰਬਿ ਕਰਤੈ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिनके भाग्य में विधाता ने पूर्व से ही निर्दिष्ट कर लिखा है, वह सतिगुरु के उपदेश द्वारा नाम के अंदर लिवलीन हो जाते हैं। १॥ रहाउ॥

ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਵਈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਾਗੋ ਭਾਉ ॥
विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥
सतिगुरु के बिना प्राणी के हृदय में भगवान के प्रति श्रद्धा कायम नहीं होती और न ही ईश्वर नाम के साथ प्रीति उत्पन्न होती है।

ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਈ ਦੁਖ ਮਹਿ ਸਵੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥
सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥२॥
ऐसे प्राणी को स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता और वह पीड़ा में ही सोता और मरता है ॥ २॥

ਜੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਚੈ ਬਹੁਤੁ ਲੋਚੀਐ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਇ ॥

जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥

चाहे जीव भगवान का नाम जपने की तीव्र इच्छा रखता हो परन्तु उसके पूर्व जन्म के कर्म मिटाए नहीं जा सकते।

ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਭਗਤੀ ਮੰਨਿਆ ਸੇ ਭਗਤ ਪਏ ਦਰਿ ਥਾਇ ॥੩॥

हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥३॥

भक्तों ने भगवान की इच्छा को ही माना है और ऐसे भक्त भगवान के दरबार पर स्वीकृत हुए हैं।॥ ३॥

ਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਦਿੜਾਵੈ ਰੰਗ ਸਿਉ ਬਿਨੁ ਕਿਰਪਾ ਲਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥

गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥

गुरु बड़ी प्रेम-भावना से उपदेश प्रदान करते हैं परन्तु उसकी कृपा के बिना नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती।

ਜੇ ਸਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨੀਰੀਐ ਭੀ ਬਿਖੁ ਫਲੁ ਲਾਗੈ ਧਾਇ ॥੪॥

जे सउ अम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥४॥

चाहे विषैले पौधे को सैंकड़ों बार अमृत रस से सींचा जाए, फिर भी विषैले पौधे पर विषैले फल ही लगेंगे॥ ४॥

ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਨਿਰਮਲੇ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥

से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥

वह पुरुष सत्यवादी एवं निर्मल हैं, जिनका सतिगुरु के साथ प्रेम है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਕਮਾਵਦੇ ਬਿਖੁ ਹਉਮੈ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰੁ ॥੫॥

सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥५॥

वह सतिगुरु की इच्छानुसार कर्म करते हैं और अहंकार एवं बुराइयों के विष को त्याग देते हैं।॥ ५॥

ਮਨਹਠਿ ਕਿਤੈ ਉਪਾਇ ਨ ਛੂਟੀਐ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਸੋਧਹੁ ਜਾਇ ॥

मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत्र सोधहु जाइ ॥

मन के हठ द्वारा किसी भी विधि से मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती। चाहे स्मृति, शास्त्रादि प्रामाणिक ग्रंथों का अध्ययन करके देख लो।

ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧੂ ਉਬਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥੬॥

मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥६॥

जो साधु की संगति में मिलकर गुरु की वाणी की साधना करते हैं, वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।॥ ६॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥
हरि का नाम गुणों का अमूल्य भण्डार है, जिसका कोई अंत अथवा पारावार नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਈ ਸੋਹਦੇ ਜਿਨ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥੭॥
गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥७॥
परमात्मा की जिन पर कृपा होती है, वहीं गुरमुख शोभा पाते हैं।॥ ७ ॥

ਨਾਨਕ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਅਉਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥
हे नानक ! एक प्रभु ही समस्त जीवों का दाता है, अन्य दूसरा कोई नहीं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੨॥੧੯॥
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥८॥२॥१९॥
गुरु की कृपा से ही प्रभु की प्राप्ति होती है और प्रारब्ध द्वारा ही गुरु जी मिलते ॥८॥२॥१९॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਪੰਖੀ ਬਿਰਖਿ ਸੁਹਾਵੜਾ ਸਚੁ ਚੁਗੈ ਗੁਰ ਭਾਇ ॥
पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥
जीव रूपी पक्षी, शरीर रूपी सुन्दर वृक्ष पर विराजमान होकर गुरु जी की इच्छानुसार सत्य नाम रूपी दाना चुगता है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਉਡੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
हरि रसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥
वह हरि रस का पान करता है, और परम आनंद में रहता है और वह वहाँ न ही उड़ता, आता या जाता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥
वह अपने आत्म स्वरूप के अन्दर आवास हासिल कर लेता है और हरि-नाम में लीन हो जाता है।॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
मन रे गुर की कार कमाइ ॥
हे मेरे मन ! तू गुरु की सेवा करके उनके उपदेशानुसार पालन कर।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੇ ਚਲਹਿ ਤਾ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਚਹਿ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तुम गुरु की इच्छानुसार चलोगे, तब तुम रात-दिन ईश्वर के नाम में लीन रहोगे ॥१॥ रहाउ॥

ਪੰਖੀ ਬਿਰਖ ਸੁਹਾਵੜੇ ਊਡਹਿ ਚਹੁ ਦਿਸਿ ਜਾਹਿ ॥
पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥
कई शरीर रूपी वृक्ष अत्यन्त सुन्दर हैं परन्तु जीव रूपी पक्षी उन पर टिक कर नहीं बैठते। वह माया रूपी दाना चुगने के लिए उड़कर चारों दिशाओं में जाते रहते हैं।

ਜੇਤਾ ਊਡਹਿ ਦੁਖ ਘਣੇ ਨਿਤ ਦਾਝਹਿ ਤੈ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥
जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥
जितना अधिक वह (ऊपर) उड़ते हैं, उतना अधिक कष्ट सहन करते हैं। वे सदैव दुखों-संतापों में ग्रस्त रहकर जलते एवं विलाप करते हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਹਲੁ ਨ ਜਾਪਈ ਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲ ਪਾਹਿ ॥੨॥

बिनु गुर महलु न जापई ना अम्रित फल पाहि ॥२॥

गुरु के अतिरिक्त उनको परमेश्वर का महल दिखाई नहीं देता, न ही वह अमृत फल को प्राप्त करते हैं। ॥२॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਹਰੀਆਵਲਾ ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥

गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥

ब्रह्म का रूप गुरुमुख सदैव हरे-भरे वृक्ष जैसा है। उसको स्वाभाविक ही सत्य परमेश्वर की प्रीत की कृपा प्राप्त होती है।

ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਨਿਵਾਰੀਆ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥

साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥

वह तीनों शाखाओं (सत्, रज और तम्) को काट कर ऊँचा उठता है और एक शब्द के साथ प्रेम लगाता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਹਰਿ ਏਕੁ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਖਵਾਇ ॥੩॥

अम्रित फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥

केवल ईश्वर का नाम ही अमृतमयी फल है। वह स्वयं ही कृपा करके इसका सेवन करने के लिए देता है॥३॥

ਮਨਮੁਖ ਊਭੇ ਸੁਕਿ ਗਏ ਨਾ ਫਲੁ ਤਿੰਨਾ ਛਾਉ ॥

मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥

मनमुख ऐसे वृक्ष हैं, जो खड़े-खड़े सूख जाते हैं। उनमें कोई फल और छाया नहीं।

ਤਿੰਨਾ ਪਾਸਿ ਨ ਬੈਸੀਐ ਓਨਾ ਘਰੁ ਨ ਗਿਰਾਉ ॥

तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥

इन अज्ञानी प्राणियों की संगति नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनका कोई भी घर और गांव नहीं होता।

ਕਟੀਅਹਿ ਤੈ ਨਿਤ ਜਾਲੀਅਹਿ ਓਨਾ ਸਬਦੁ ਨ ਨਾਉ ॥੪॥

कटीअहि तै नित जालीअहि ओना सबदु न नाउ ॥४॥

वे सदैव काटे और जलाए जाते हैं। उनके पास न तो गुरु का उपदेश और न ही हरि का नाम है ॥४॥

ਹੁਕਮੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਉ ॥

हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥

मनुष्य ईश्वर के आदेश अनुसार कर्म करते हैं और अपने पूर्व-जन्म के कर्मों के अनुकूल भटकते फिरते हैं।

ਹੁਕਮੇ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਣਾ ਜਹ ਭੇਜਹਿ ਤਹ ਜਾਉ ॥
हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥
ईश्वर के आदेशानुसार गुरमुख उसके दर्शन करते हैं और जहाँ वह उनको भेजता है, वहाँ वह जाते हैं।

ਹੁਕਮੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹੁਕਮੇ ਸਚਿ ਸਮਾਉ ॥੫॥
हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥
अपने आदेश द्वारा ईश्वर गुरमुखों के चित में टिकता है और उसके आदेश द्वारा ही वह सत्य में लीन हो जाते हैं ॥५॥

ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਬਪੁੜੇ ਭੂਲੇ ਫਿਰਹਿ ਗਵਾਰ ॥
हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥
मूर्ख, दुरात्मा ईश्वर की इच्छा को नहीं समझते और भ्रम में पड़े जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकते फिरते हैं।

ਮਨਹਠਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥
मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥
मन के हठ अनुसार वह कर्म करते हैं और नित्य ही कलंकित होते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵਈ ਨਾ ਸਚਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੬॥
अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥
उनके अंदर सुख-शांति नहीं आती और वे सत्य-स्वरूप हरि के साथ प्रेम नहीं कर पाते ॥६॥

ਗੁਰਮੁਖੀਆ ਮੁਹ ਸੋਹਣੇ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥
गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥
जो गुरु के साथ प्रीति एवं स्नेह करते हैं। उन गुरमुखों के मुख सुन्दर हो जाते हैं।

ਸਚੀ ਭਗਤੀ ਸਚਿ ਰਤੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ॥
सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥
वे सत्य की भक्ति में लीन रहते हैं और सत्य के साथ रंगे रहते हैं और परमेश्वर के द्वार पर वे सत्यवादी रूप में सम्मानित होते हैं

ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਸਭ ਕੁਲ ਕਾ ਕਰਹਿ ਉਧਾਰੁ ॥੭॥
आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥
उन मनुष्यों का ही जगत् में आगमन स्वीकृत होता है, और अपनी समस्त कुल का भी उद्धार कर देते हैं। ॥७ ॥

ਸਭ ਨਦਰੀ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰਿ ਨ ਕੋਇ ॥
सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥
प्रत्येक प्राणी ईश्वर की दृष्टि अधीन कर्म करता है। कोई भी प्राणी उसकी दृष्टि से ओझल नहीं।

ਜੈਸੀ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸਚਾ ਤੈਸਾ ਹੀ ਕੋ ਹੋਇ ॥
जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥
परमात्मा जिस पर जैसी कृपा-दृष्टि करता है, मनुष्य वैसा ही हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਵਡਾਈਆ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੩॥੨੦॥
नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥
हे नानक ! मनुष्य को नाम द्वारा ही यश मिलता है और नाम की उपलब्धि भगवान की मेहर से होती है ॥८॥३॥२०॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥
गुरमुख भगवान के नाम का ध्यान करते हैं किन्तु मनमुख को भगवान के ध्यान की सूझ नहीं होती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥
गुरमुख का मुख हमेशा उज्ज्वल रहता है और भगवान उसके हृदय में निवास करता है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥
सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥१॥
उसे सहज ही सुख की उपलब्धि होती है। वह सहज ही नाम में मग्न रहता है। ॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਹੋਇ ॥
भाई रे दासनि दासा होइ ॥
हे भाई ! तू परमात्मा के अनुचरों का अनुचर बन जा।

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਭਗਤਿ ਹੈ ਵਿਰਲਾ ਪਾਏ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की सेवा से ही गुरु की भक्ति है किन्तु इसकी उपलब्धि कोई विरला ही प्राप्त करता है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਦਾ ਸੁਹਾਗੁ ਸੁਹਾਗਣੀ ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥
जो भाग्यशाली नारी सतिगुरु की इच्छानुसार आचरण करती है, वह सदैव सौभाग्यवती होती है।

ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਈਐ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥
सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥
वह अमर व अचल स्वामी को प्राप्त हो जाती है। न वह मरता है और न ही जाता है।

ਸਬਦਿ ਮਿਲੀ ਨਾ ਵੀਛੁੜੈ ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥
वह शब्द द्वारा प्रभु से मिलाप करती है, इसलिए उसे वियोग नहीं होता। अपितु अपने स्वामी की गोद में लीन हो जाती है। ॥ २॥

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਅਤਿ ਊਜਲਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥
हरि पवित्र व अत्यंत उज्ज्वल है। गुरु के बिना वह प्राप्त नहीं होता।

ਪਾਠੁ ਪੜੈ ਨਾ ਬੂਝਈ ਭੇਖੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥
धर्म-ग्रंथों के अध्ययन द्वारा मनुष्य को उसका बोध नहीं होता। आडम्बर करने वाले भ्रम-भुलैया में पड़े भटके हुए हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਸਦਾ ਪਾਇਆ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਮਾਇ ॥੩॥
गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥
भगवान तो सदैव ही गुरु की मति द्वारा प्राप्त हुआ है। गुरमुख की रसना में हरि रस समाया रहता है ॥३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥
गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य माया के मोह को नष्ट कर देता है। वह सहज अवस्था प्राप्त करके भगवान के प्रेम में मग्न रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਦੁਖੀਆ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਗਈ ਖਾਇ ॥
बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥
नाम के अतिरिक्त सारा संसार दुखी है। माया मनमुखी प्राणियों को निगल गई है।

ਸਬਦੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਬਦੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥
सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥
शब्द द्वारा मनुष्य नाम-सिमरन करता है और शब्द द्वारा ही वह भगवान में समा जाता है ॥४॥

ਮਾਇਆ ਭੂਲੇ ਸਿਧ ਫਿਰਹਿ ਸਮਾਧਿ ਨ ਲਗੈ ਸੁਭਾਇ ॥
माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥
माया में फँसकर सिद्ध पुरुष भी भटकते रहते हैं और भगवान के प्रेम में लीन करने वाली उनकी समाधि नहीं लगती।

ਤੀਨੇ ਲੋਅ ਵਿਆਪਤ ਹੈ ਅਧਿਕ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥
तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥
माया आकाश, पाताल, धरती तीनों लोकों में जीवों को अपने मोह में फँसा रही है। वह समस्त जीवों को अत्याधिक लिपटी हुई है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਇਆ ਜਾਇ ॥੫॥
बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥
गुरु के बिना माया से मुक्ति प्राप्त नहीं होती और न ही दुविधापन व सांसारिक ममता दूर होते हैं। ॥५॥

ਮਾਇਆ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਕਿਆ ਮਾਇਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥
माया किसे कहते हैं? माया क्या कार्य करती है?

ਦੁਖਿ ਸੁਖਿ ਏਹੁ ਜੀਉ ਬਧੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥
दुःख व सुख के भीतर माया ने इस प्राणी को जकड़ा हुआ है और जिससे प्राणी अहंकार का कर्म करता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਭਰਮੁ ਨ ਚੂਕਈ ਨਾ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥੬॥
बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥
शब्द के बिना भ्रम दूर नहीं होता और न ही अन्तर्मन से अहंकार दूर होता है ॥६॥

ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤੀ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਥਾਇ ਨ ਪਾਇ ॥
बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ
प्रेम के बिना भगवान की भक्ति नहीं हो सकती और नाम के अतिरिक्त मनुष्य को प्रभु के दरबार में स्थान नहीं मिलता।

ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀਐ ਮਾਇਆ ਕਾ ਭ੍ਰਮੁ ਜਾਇ ॥
सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥
जब अहंत्व को नाम द्वारा मार दिया जाता है तो माया का पैदा किया भ्रम दूर हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੭॥
नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥७॥
गुरमुख सहज ही हरि-नाम के धन को प्राप्त कर लेता है ॥७॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗੁਣ ਨ ਜਾਪਨੀ ਬਿਨੁ ਗੁਣ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥
गुरु के बिना शुभ गुणों का पता नहीं लगता तथा शुभ गुण ग्रहण किए बिना भगवान की भक्ति नहीं होती।

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥
जब भक्तवत्सल श्री हरि मन में आकर बसता है तो मनुष्य के भीतर सहज अवस्था उत्पन्न हो जाती है। फिर वह प्रभु स्वयं आकर मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦੇ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੮॥੪॥੨੧॥
नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥
हे नानक ! किस्मत से ही सतिगुरु की प्राप्ति होती है और गुरु के शब्द द्वारा ही भगवान की महिमा-स्तुति करनी चाहिए ॥८॥४॥२१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨਾ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥
माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥
भगवान ने स्वयं ही माया-मोह की रचना की है। उसने स्वयं ही जीवों को माया के मोह में फंसा कर भुलाया हुआ है।

ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਨਹੀ ਬੂਝਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥
मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥
मनमुख कर्म तो करते हैं परन्तु उन्हें इसकी सूझ नहीं होती। लेकिन वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਕਰਮਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥੧॥
गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥१॥
गुरुवाणी इस संसार में ईश्वरीय प्रकाश है। प्रभु की दया से प्राणी के मन में यह वाणी आकर बसती है ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥
हे मेरे मन ! भगवान का नाम जपो, इससे ही सुख की उपलब्धि होती है।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु की महिमा करने से परमेश्वर सहज ही प्राणी को मिल जाता है ॥१॥ रहाउ॥

ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਭਉ ਭਾਗਿਆ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥
ईश्वर के चरणों में चित्त लगाने से मनुष्य का माया का भ्रम एवं मृत्यु का भय नाश हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈਐ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥
जिज्ञासु प्राणी जब गुरु-कृपा से नाम की आराधना करता है तो ईश्वर स्वयं उसके हृदय में निवास करता है।

ਘਰਿ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਸਕੈ ਖਾਇ ॥੨॥
घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥
मनुष्य सत्य प्रभु के आत्म स्वरूप रूपी महल के अन्दर लीन हो जाता है और यमदूत उसे कदापि नहीं निगल सकता ॥२॥

ਨਾਮਾ ਛੀਬਾ ਕਬੀਰੁ ਜੋਲਾਹਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥
नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥
निम्न जाति के नामदेव छींबे और कबीर जुलाहे ने पूर्ण गुरु की कृपा से मोक्ष प्राप्त किया था।

ਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਬੇਤੇ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਹਿ ਹਉਮੈ ਜਾਤਿ ਗਵਾਈ ॥
ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥
वे गुरु-शब्द का ज्ञान पाकर ब्रह्मज्ञानी बने और उन्होंने जातिगत गौरव अथवा अहंत्व का पूर्ण त्याग कर दिया।

सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥
सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥
देवते एवं मनुष्य उनकी पावन वाणी का गायन करते है। उनकी शोभा कोई भी मिटा नहीं सकता ॥३॥

दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥
दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥
दैत्य हिरण्यकशिपु का पुत्र भक्त प्रहलाद कोई धर्म-कर्म नहीं करता था। वह मन को स्थिर करने वाली संयम, ध्यान एवं समाधि रूप विधियों बारे कुछ भी नहीं जानता था। वह माया के मोह को नहीं जानता था।

सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥
सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥
सतिगुरु से मिलकर वह निर्मल हो गया था वह रात-दिन नाम का जाप करता था

एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥
एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥
और एक नाम को ही जानता था तथा अन्य किसी दूसरे को नहीं जानता था ॥४॥

खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥
खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥
छः शास्त्रों के उपदेशों को मानने वाले योगी, संन्यासी इत्यादि गुरु के बिना संदेह में भूले पड़े हैं।

सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥
सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥
यदि वे सतिगुरु की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करें तो वे मोक्ष एवं ईश्वर को खोजने में समर्थ होते हैं और पूज्य हरि को अपने चित्त में टिका लेते हैं।

सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥
सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥
सच्ची गुरुवाणी से उनका मन जुड़ जाता है और उनका आवागमन (जन्म-मरण के चक्र से) मिट जाता है। ॥ ५॥

ਪੰਡਿਤ ਪੜਿ ਪੜਿ ਵਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥

पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥

गुरु के बिना भ्रम में भूले हुए पण्डित शास्त्र इत्यादि का अध्ययन करके वाद-विवाद करते हैं, किन्तु शब्द के बिना उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होता,

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਇਆ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥

लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥

वे चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं। जब ईश्वर की अनुकंपा होती है तो सतिगुरु से मिलन होता है

ਜਾ ਨਾਉ ਚੇਤੈ ਤਾ ਗਤਿ ਪਾਏ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੬॥

जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥६॥

और जब सतिगुरु के उपदेशानुसार नाम की आराधना करते हैं, तब वह गति प्राप्त करते हैं। ॥ ६॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਉਪਜੈ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁਭਾਏ ॥

सतसंगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥

यदि प्राणी का गुरु से मिलन हो जाए तो सत्संग के कारण वह हरि-नाम स्मरण कर पाता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ਚਲਾ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥
मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥
मैं अपनी आत्मा एवं देहि समर्पित करता हूँ और अपनी अहंकार-भावना त्यागता हूँ और सतिगुरु के उपदेशानुसार आचरण करता हूँ।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਵਿਟਹੁ ਜਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੭॥
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥७॥
मैं सदैव अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जो मेरी आत्मा को प्रभु के साथ मिलाते हैं।॥ ७ ॥

ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਜੋ ਬਿੰਦੇ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥
ब्राह्मण वही है जिसे ब्रह्म का ज्ञान है और प्रभु की प्रीति के साथ रंगा हुआ है।

ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਸਭਨਾ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥
प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥
पारब्रह्म-परमेश्वर समस्त प्राणियों के अति निकट उनके भीतर ही निवास करता है, किन्तु इस रहस्य को कोई विरला प्राणी गुरु के द्वारा ही जानता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥੮॥੫॥੨੨॥
नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥८॥५॥२२॥
हे नानक ! हरि-नाम द्वारा प्राणियों को बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और गुरु के शब्द द्वारा वह स्वामी को पहचान लेता है ॥८ ॥५॥२२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਸਹਜੈ ਨੋ ਸਭ ਲੋਚਦੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪਾਇਆ ਨ ਜਾਇ ॥
सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥
सारी दुनिया सहज सुख की कामना करती है परन्तु गुरु के बिना सहज की प्राप्ति नहीं होती।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਥਕੇ ਭੇਖੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ॥
पण्डित एवं ज्योतिष वेद एवं शास्त्रों का अध्ययन कर करके थक गए हैं और धार्मिक वेष धारण करने वाले साधु भ्रमों में भूले हुए हैं।

ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਸਹਜੁ ਪਾਇਆ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੧॥
गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥१॥
जिस पर भगवान स्वयं कृपा करता है, वहीं गुरु से मिलकर सहज सुख को प्राप्त करता है।॥१॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸਹਜੁ ਨ ਹੋਇ ॥
भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥
हे भाई ! गुरु के बिना सहज सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

ਸਬਦੈ ਹੀ ਤੇ ਸਹਜੁ ਊਪਜੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान का नाम जपने से ही सहज उत्पन्न होता है और फिर भगवान मिल जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਸਹਜੇ ਗਾਵਿਆ ਥਾਇ ਪਵੈ ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ ਕਥਨੀ ਬਾਦਿ ॥
सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥
भगवान का गायन किया यश तभी स्वीकृत होता है, यदि वह सहज ही गाया जाए। सहज के बिना भगवान के गुणों की कथा करना व्यर्थ है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਭਗਤਿ ਊਪਜੈ ਸਹਜਿ ਪਿਆਰਿ ਬੈਰਾਗਿ ॥
सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥
सहज से ही मनुष्य के हृदय में भक्ति उत्पन्न होती है। सहज से ही भगवान हेतु प्रेम एवं उसके मिलन हेतु वैराग्य उत्पन्न होता है।

ਸਹਜੈ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ ਜੀਵਣੁ ਬਾਦਿ ॥੨॥
सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥२॥
सहज से ही सुख एवं शांति मिलती है। सहज के बिना जीवन व्यर्थ है ॥२ ॥

ਸਹਜਿ ਸਾਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇ ॥
सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥
भगवान की महिमा सदैव सहज ही करनी चाहिए और सहज ही समाधि लगानी चाहिए।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਗੁਣ ਊਚਰੈ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥
सहज ही भगवान की महिमा उच्चारण करनी चाहिए और सहज ही सुरति लगाकर भगवान की भक्ति करनी चाहिए।

ਸਬਦੇ ਹੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥੩॥
सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइ ॥३॥
शब्द द्वारा भगवान मन में आकर बसता है और रसना हरि-रस का पान करती है ॥३॥

ਸਹਜੇ ਕਾਲੁ ਵਿਡਾਰਿਆ ਸਚ ਸਰਣਾਈ ਪਾਇ ॥
सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥
सत्य की शरण में आने वाला प्राणी सहजावस्था में मृत्यु-भय से मुक्त हो जाता है।

ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥
यदि प्राणी सच्ची जीवन मर्यादा की कमाई करे तो ईश्वर का नाम सहज ही उसके चित्त में टिक जाता है।

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨੀ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੪॥
से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥४॥
वे प्राणी बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने ईश्वर को पा लिया है और सहज ही उस हरि के नाम में लीन रहते हैं ॥४ ॥

ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਸਹਜੁ ਨ ਊਪਜੈ ਮਾਇਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥
माया में लिप्त प्राणी कभी सहज-ज्ञान को नहीं पा सकता, क्योंकि माया द्वैत-भाव को बढ़ाती है।

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਹਉਮੈ ਜਲੈ ਜਲਾਇ ॥
मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥
मनमुख प्राणी चाहे धार्मिक संस्कार करते हैं परन्तु अहंभावना उनको जला देती है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੂਕਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੫॥
जमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥५॥
वे कभी जन्म-मरण के चक्र से निवृत नहीं होते अपितु पुनः पुनः जन्म लेते और मृत्यु को प्राप्त होते हैं।॥५॥

ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣਾ ਵਿਚਿ ਸਹਜੁ ਨ ਪਾਈਐ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥
जब तक माया के तीनों गुणों-रजस्, तमस्, सत में प्राणी का चित्त लिप्त रहता है, वह सहज का अधिकारी नहीं हो पाता; उक्त तीनों गुण भ्रान्ति उत्पन्न करते हैं।

ਪੜੀਐ ਗੁਣੀਐ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਜਾ ਮੁੰਢਹੁ ਘੁਥਾ ਜਾਇ ॥

पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥

ऐसे प्राणी को पढ़ने-लिखने एवं बोलने का क्या लाभ है, यदि वह जगत् के मूल (प्रभु) को ही विस्मृत किए रहता है।

ਚਉਥੇ ਪਦ ਮਹਿ ਸਹਜੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੬॥

चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥६॥

वास्तव में सहज सुख चौथे पद पर लभ्य होता है, जिसकी प्राप्ति केवल गुरमुख के दामन में ही होती है।॥६॥

ਨਿਰਗੁਣ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਸਹਜੇ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥

निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥

निर्गुण प्रभु का नाम एक अमूल्य भण्डार है। मनुष्य को इसका ज्ञान सहज अवस्था में ही होता है।

ਗੁਣਵੰਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥

गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥

भगवान की महिमा गुणवान जीव ही करते हैं। भगवान की महिमा करने वाला सच्ची शोभा वाला बन जाता है।

ਭੁਲਿਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਸੀ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੭॥

भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥७॥

प्रभु भूले हुए जीवों को भी सहज द्वारा अपने साथ मिला लेता है। यह मिलाप शब्द द्वारा होता है ॥७ ॥

ਬਿਨੁ ਸਹਜੈ ਸਭੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥

बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥

सहज ज्ञान के बिना सारा जगत् ज्ञानहीन है। मोह-माया की ममता बिल्कुल अंधेरा है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੋਝੀ ਪਈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਿ ॥

सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥

सहज ज्ञान द्वारा अपार सच्चे शब्द की सूझ हो जाती है

ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਰਤਾਰਿ ॥੮॥

आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥

पूर्ण गुरु करतार स्वयं ही क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है। ॥८ ॥

ਸਹਜੇ ਅਦਿਸਟੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਿਰਭਉ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥

सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥

सहज ज्ञान द्वारा ही उस अदृश्य, निर्भय, निरंकार ज्योति प्रभु को जिज्ञासु प्राणी पहचानता है।

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੁ ॥

सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥

समस्त प्राणियों का एकमात्र पालनहार दाता है। यह सबकी ज्योति को अपनी ज्योति के साथ मिलाने में समर्थ है।

ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀਐ ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੯॥

पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥९॥

पूर्ण शब्द द्वारा तू उस परमात्मा का यशोगान कर जिसका कोई अन्त या सीमा नहीं अथवा सागर की भांति अपरिमित है ॥९॥

ਗਿਆਨੀਆ ਕਾ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਸਹਜਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥

गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥

भगवान का नाम ही ज्ञानियों का धन है। वह सहज अवस्था में रहकर नाम का व्यापार करते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈਨਿ ਅਖੁਟ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥

अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥

वे दिन-रात हरि नाम रूपी लाभ प्राप्त करते हैं तथा उनके भण्डार नाम से भरे रहते हैं और कभी समाप्त नहीं होते।

ਨਾਨਕ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਦੀਏ ਦੇਵਣਹਾਰਿ ॥੧੦॥੬॥੨੩॥

नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥

हे नानक ! यह नाम के भण्डार दाता प्रभु ने स्वयं उन्हें दिए हैं और इन भण्डारों में कोई कमी नहीं आती ॥१०॥६॥२३॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਫੇਰੁ ਨ ਪਵੈ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥
यदि सतिगुरु मिल जाए तो प्राणी जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। उसकी जन्म एवं मृत्यु की पीड़ा निवृत्त हो जाती है।

ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥
पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥१॥
पूर्ण गुरु के उपदेश द्वारा सारी समझ आ जाती है और मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहता है।॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥
हे मेरे मन ! अपना चित्त गुरु के साथ लगाओं।

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਸਦ ਨਵਤਨੋ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का नित्य नवीन और पवित्र नाम स्वतः साधु के मन में टिक जाता है।॥१॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਰਾਖਹੁ ਅਪੁਨੀ ਸਰਣਾਈ ਜਿਉ ਰਾਖਹਿ ਤਿਉ ਰਹਣਾ ॥
हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥
हे मेरे परमेश्वर ! मुझे अपने शरणाश्रय में रखो; आप मुझे जैसे रखोगे, मुझे उसी अवस्था में रहना है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਵਜਲੁ ਤਰਣਾ ॥੨॥
गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥
गुरु के द्वारा भवसागर से पार तभी हुआ जा सकता है, यदि गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व को मार कर जीवन व्यतीत किया जाए॥२॥

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਗੁਰਮਤਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਈ ॥
वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥
भगवान का नाम बड़ी किस्मत से मिलता है। गुरु की मति पर चलकर नाम-सिमरन से जीवन सुन्दर बन जाता है।

ਆਪੇ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੩॥

आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥

जगत् का कर्ता प्रभु स्वयं ही मनुष्य के हृदय में आकर बसता है। फिर मनुष्य सहज ही भगवान में लीन रहता है॥३॥

ਇਕਨਾ ਮਨਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਨ ਭਾਵੈ ਬੰਧਨਿ ਬੰਧਿ ਭਵਾਇਆ ॥

इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥

कई मनमुखी प्राणियों को प्रभु का नाम अच्छा नहीं लगता। ऐसे मनमुखी प्राणी अज्ञान-बंधन में बंधे चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੪॥

लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥४॥

वे चौरासी लाख योनियों के अंदर बारंबार भटकते हैं और अपना अनमोल जीवन व्यर्थ गवा देते हैं। ॥४॥

ਭਗਤਾ ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ਹੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥

भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥

भगवान के भक्तों के मन में आनंद बना रहता है। क्योंकि वे सच्चे शब्द में ही मग्न रहते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਦ ਨਿਰਮਲ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਤੇ ॥੫॥

अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥५॥

वह सदैव ही रात-दिन भगवान की निर्मल महिमा गायन करते हैं और सहज ही नाम में लीन रहते हैं।॥५॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਬੋਲਹਿ ਸਭ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣੀ ॥

गुरमुखि अम्रित बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥

गुरमुख सदैव अमृत समान मधुर वाणी बोलते हैं, क्योंकि वे समस्त प्राणियों के भीतर प्रभु के अंश आत्मा की समानता को पहचानते हैं।

ਏਕੋ ਸੇਵਨਿ ਏਕੁ ਅਰਾਧਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੬॥

एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥

गुरमुखों की कथा अकथनीय है। वे एक प्रभु की सेवा एवं आराधना करते हैं।॥६॥

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥

सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥

गुरमुख सच्चे प्रभु की आराधना करते हैं और प्रभु गुरमुख के मन में आकर बसता है।

ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਚ ਸਿਉ ਅਪੁਨੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਮਿਲਾਇ ॥੭॥
सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥
जो सदैव ही भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं, उन्हें भगवान अपनी कृपा करके अपने साथ मिला लेता है ॥७॥

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਇਕਨਾ ਸੁਤਿਆ ਦੇਇ ਜਗਾਇ ॥
आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥
प्रभु स्वयं ही करता है और स्वयं ही करवाता है। वह माया की निद्रा से भी प्राणियों को जगा देता है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੮॥੭॥੨੪॥
आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥
हे नानक ! गुरु के शब्द में मिलाकर वह स्वयं ही भक्तों को अपने मिलाप में मिला लेता है ॥८॥७॥२४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सिरीरागु महला ३ ॥
श्रीरागु महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ਭਏ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰ ॥
सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥
सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य का मन निर्मल और शरीर पवित्र हो जाता है।

ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਭੇਟਿਆ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥
मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर ग्मभीरु ॥
समुद्र जैसे गहरे एवं गंभीर प्रभु को पाकर मन आनन्दित हो जाता है और परमसुख प्राप्त करता है।

ਸਚੀ ਸੰਗਤਿ ਬੈਸਣਾ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਧੀਰ ॥੧॥
सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥
सत्संग में बैठने वाला जिज्ञासु सत्यनाम के रहस्य को जानकर मन में धैर्य प्राप्त करता है॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਨਿਸੰਗੁ ॥
मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥
हे मेरे मन ! तू निःशंक होकर अपने सतिगुरु की सेवा कर।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਲਗੈ ਨ ਮੈਲੁ ਪਤੰਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥१॥ रहाउ ॥

सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मन में प्रभु का वास होता है और तुझे मोह-माया रूपी मलिनता नहीं लगती अपितु चित्त पूर्णतः पावन हो जाता है॥१॥ रहाउ॥

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਸਚੇ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥

सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥

सत्य नाम द्वारा मनुष्य को लोक-परलोक में बड़ी शोभा प्राप्त होती है। सत्य स्वरूप स्वामी का नाम सत्य है।

ਜਿਨੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਪਛਾਣਿਆ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥

जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥

मैं उन प्राणियों पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने अपनी अहंकार-भावना का नाश करके सत्य को पहचान लिया है।

ਮਨਮੁਖ ਸਚੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਤਿਨ ਠਉਰ ਨ ਕਤਹੂ ਥਾਉ ॥੨॥

मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥

नमुखी प्राणी उस सत्य को नहीं पा सकते, उनको कहीं भी पनाह अथवा ठिकाना प्राप्त नहीं होता॥२॥

ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੇ ਹੀ ਵਿਚਿ ਵਾਸੁ ॥

सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥

गुरमुखों का खाना, पहनना एवं रहना सब सत्य ही है।

ਸਦਾ ਸਚਾ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥

सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥

वह सदैव सच्चे स्वामी की प्रशंसा करते हैं और सत्य नाम के अन्दर उनका निवास है।

ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਗੁਰਮਤੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ॥੩॥

सभु आतम रामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥३॥

वे समस्त प्राणियों को ब्रह्मस्वरूप से ही पहचानते हैं और स्वयं भी सदैव गुरु उपदेशानुसार अपने आत्म-स्वरूप में रहते हैं ॥३ ॥

ਸਚੁ ਵੇਖਣੁ ਸਚੁ ਬੋਲਣਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥

सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥

वह सत्य देखते हैं और सत्य ही बोलते हैं और उनके तन व मन के भीतर वह सत्य ही होता है।

ਸਚੀ ਸਾਖੀ ਉਪਦੇਸੁ ਸਚੁ ਸਚੇ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥
ऐसे भक्तजन ईश्वर का अनुभूत सत्य दूसरों पर प्रकट करते हैं, परम-सत्य का उपदेश देते हैं, इसी से जगत् में उनकी सच्ची शोभा होती है।

ਜਿੰਨੀ ਸਚੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਦੁਖੀਏ ਚਲੇ ਰੋਇ ॥੪॥
जिंनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥४॥
जिन्होंने सत्य को विस्मृत कर दिया है, वह सदा दुखी रहते हैं और विलाप करते हुए असफल जीवन के कारण चले जाते हैं ॥४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸੇ ਕਿਤੁ ਆਏ ਸੰਸਾਰਿ ॥
सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥
जिन्होंने सतिगुरु की सेवा नहीं की, वह संसार में क्यों आए हैं?

ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਕੂਕ ਨ ਸੁਣੈ ਪੂਕਾਰ ॥
जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥
काल (मृत्यु) के द्वार पर ऐसे प्राणियों को बांधकर पीटा जाता है और कोई भी उनकी चिल्लाहट व विलाप नहीं सुनता।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੫॥
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जमहि वारो वार ॥५॥
वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं और पुनः पुनः मरते और जन्मते रहते हैं अर्थात् उन्हें मुक्ति नहीं मिलती ॥५॥

ਏਹੁ ਜਗੁ ਜਲਤਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭਜਿ ਪਏ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾ ॥
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥
इस संसार को मोह-तृष्णा की अग्नि में जलता देखकर जो जिज्ञासु प्राणी भागकर सतिगुरु की शरण लेते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਚੁ ਦਿੜਾਇਆ ਸਦਾ ਸਚਿ ਸੰਜਮਿ ਰਹਣਾ ॥
सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥
सतिगुरु उनकें हृदय में भगवान का सत्य नाम बसा देते हैं और उन्हें संयम द्वारा सदैव ही सत्य प्रभु के नाम में रहने का जीवन जीना सिखा देते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਸਚਾ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਸਬਦੇ ਭਵਜਲੁ ਤਰਣਾ ॥੬
सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥
भवसागर से पार होने के लिए सतिगुरु शाश्वत जहाज है। शब्द द्वारा ही भवसागर से पार हुआ जाता है॥६॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫਿਰਦੇ ਰਹੇ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥
विमुख प्राणी चौरासी लाख योनियों के अन्दर भटकते रहते हैं और गुरु के बिना उन्हें मुक्ति नहीं मिलती।

ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਕੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥
बड़े-बड़े पण्डित धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन करते और मौनधारी साधु समाधि लगाकर थक गए हैं, किन्तु द्वैत-भाव में लीन होने के कारण वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੭॥
सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥
केवल सतिगुरु ने ही उपदेश प्रदान किया है कि सत्य ईश्वर के सिवाय जगत् में मोक्ष का अन्य कोई साधन नहीं ॥७॥

ਜੋ ਸਚੈ ਲਾਏ ਸੇ ਸਚਿ ਲਗੇ ਨਿਤ ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਰੰਨਿ ॥
जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥
जिन्हें सत्य प्रभु ने अपने नाम-सिमरन में लगाया था, वहीं सत्य प्रभु के नाम सिमरन में लगे थे। फिर वे सदैव निर्मल कर्म करते रहे।

ਤਿਨਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਮਹਲਿ ਰਹੰਨਿ ॥
तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥
उन्होंने मरणोपरांत अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त कर लिया है और सच्चे महल में ही रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੁਖੀਏ ਸਦਾ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਰਚੰਨਿ ॥੮॥੧੭॥੮॥੨੫॥
नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥
हे नानक ! भक्तजन सदैव सुखी रहते हैं। वे सत्य प्रभु के नाम में समा जाते हैं॥८॥१७॥८॥२५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਮੁਸਕਲੁ ਅਤਿ ਬਣੈ ਢੋਈ ਕੋਇ ਨ ਦੇਇ ॥
जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥
यदि किसी व्यक्ति पर भारी विपत्ति आ जाए, उसे बचाने के लिए कोई उसकी मदद न करे,

ਲਾਗੂ ਹੋਏ ਦੁਸਮਨਾ ਸਾਕ ਭਿ ਭਜਿ ਖਲੇ ॥
लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥
उसे मारने के लिए उसके दुश्मन उसके पीछे फिरते हों, यदि उसके रिश्तेदार भी उसका साथ छोड़कर भाग गए हों,

ਸਭੋ ਭਜੈ ਆਸਰਾ ਚੁਕੈ ਸਭੁ ਅਸਰਾਉ ॥
सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥
उसका हर प्रकार का सहारा खत्म हो गया हो।

ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਓਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਲਗੈ ਨ ਤਤੀ ਵਾਉ ॥੧॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न ततती वाउ ॥१॥
यदि ऐसी विपत्ति के समय उसे भगवान स्मरण हो जाए तो उसको गर्म हवा भी नहीं छू सकती ॥१॥

ਸਾਹਿਬੁ ਨਿਤਾਣਿਆ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥
साहिबु निताणिआ का ताणु ॥
भगवान निर्बलों का बल है।

ਆਇ ਨ ਜਾਈ ਥਿਰੁ ਸਦਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥

वह जन्मता एवं मरता नहीं, सदैव स्थिर अर्थात् अनश्वर है। गुरु के शब्द द्वारा सत्य प्रभु को समझ लो ॥१॥ | रहाउ॥

ਜੇ ਕੋ ਹੋਵੈ ਦੁਬਲਾ ਨੰਗ ਭੁਖ ਕੀ ਪੀਰ ॥

जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥

यदि कोई मनुष्य अति दुर्बल है और भूख मिटाने के लिए भोजन का अभाव है और तन ढांपने के लिए वस्त्र भी नहीं,

ਦਮੜਾ ਪਲੈ ਨਾ ਪਵੈ ਨਾ ਕੋ ਦੇਵੈ ਧੀਰ ॥

दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥

यदि उसके पास कोई धन-राशि नहीं और न ही उसको कोई दिलासा देने वाला है।

ਸੁਆਰਥੁ ਸੁਆਉ ਨ ਕੋ ਕਰੇ ਨਾ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਕਾਜੁ ॥

सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥

यदि कोई भी उसका मनोरथ व इच्छाएँ पूर्ण न करे और उसका कोई भी कार्य सम्पूर्ण न हो।

ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਓਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਨਿਹਚਲੁ ਹੋਵੈ ਰਾਜੁ ॥੨॥

चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥

यदि वह अपने हृदय में उस परब्रह्म का स्मरण कर ले तो उसका शासन सदैव स्थिर हो जाता है॥ २॥

ਜਾ ਕਉ ਚਿੰਤਾ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਦੇਹੀ ਵਿਆਪੈ ਰੋਗੁ ॥

जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥

जिसे अधिक चिन्ता लगी हो, उसकें शरीर को बहुत सारे रोग लगे हों।

ਗ੍ਰਿਸਤਿ ਕੁਟੰਬਿ ਪਲੇਟਿਆ ਕਦੇ ਹਰਖੁ ਕਦੇ ਸੋਗੁ ॥

ग्रिसति कुट्मबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥

जो गृहस्थ में पारिवारिक दुःखों-सुखों में घिरा हुआ है और किसी समय हर्ष एवं किसी समय शोक अनुभव करता हो

ਗਉਣੁ ਕਰੇ ਚਹੁ ਕੁੰਟ ਕਾ ਘੜੀ ਨ ਬੈਸਣੁ ਸੋਇ ॥

गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥

और चारों दिशाओं में भटकता फिरता है और एक क्षण भर के लिए भी बैठ अथवा निद्रा नहीं कर सकता।

ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਓਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥੩॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥३॥
यदि वह पारब्रह्म परमेश्वर की आराधना करे तो उसका तन-मन शीतल हो जाते हैं ॥३॥

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਮੋਹਿ ਵਸਿ ਕੀਆ ਕਿਰਪਨ ਲੋਭਿ ਪਿਆਰੁ ॥
कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥
जिस प्राणी को काम-क्रोध-मोह आदि ने अपने वश में कर रखा है और जो धन-दौलत के निरन्तर लोभ में कृपण (कंजूस) बना रहता है,

ਚਾਰੇ ਕਿਲਵਿਖ ਉਨਿ ਅਘ ਕੀਏ ਹੋਆ ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰੁ ॥
चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥
जिसने चारों ही व्रज पाप एवं अन्य कुकर्म किए हों, दानव-प्रवृत्ति के कारण निर्दयता पूर्वक जिसने जीव-हत्या की हो,

ਪੋਥੀ ਗੀਤ ਕਵਿਤ ਕਿਛੁ ਕਦੇ ਨ ਕਰਨਿ ਧਰਿਆ ॥
पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥
जिसने कभी कोई धर्म-पुस्तक उपदेश अथवा ईश्वर–प्रेम की कविता तक न सुनी हो,

ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਓਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਨਿਮਖ ਸਿਮਰਤ ਤਰਿਆ ॥੪॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥४॥
यदि क्षण भर के लिए भी वह मन प्रभु का नाम सिमरन कर ले तो इस भवसागर से पार हो जाता है। ॥४॥

ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਚਾਰਿ ਮੁਖਾਗਰ ਬਿਚਰੇ ॥
सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥
हे प्राणी को चारों वेद, छः शास्त्र और समस्त स्मृतियाँ कण्ठाग्र हों;

ਤਪੇ ਤਪੀਸਰ ਜੋਗੀਆ ਤੀਰਥਿ ਗਵਨੁ ਕਰੇ ॥
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥
चाहे वह पश्चातापी, महान ऋषेि एवं योगी हो; और अठसत तीर्थों की यात्रा करे

ਖਟੁ ਕਰਮਾ ਤੇ ਦੁਗੁਣੇ ਪੂਜਾ ਕਰਤਾ ਨਾਇ ॥
खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥
और चाहे वह छः संस्कारों द्वारा कर्मों को करता हो और सुबह एवं शाम स्नान करके उपासना करता हो,

ਰੰਗੁ ਨ ਲਗੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਾ ਸਰਪਰ ਨਰਕੇ ਜਾਇ ॥੫॥
रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥५॥
फिर भी यदि उसकी प्रीति परमात्मा के रंग में नहीं रंगी गई तो वह निश्चित ही नरक को जाएगा ॥५॥

ਰਾਜ ਮਿਲਕ ਸਿਕਦਾਰੀਆ ਰਸ ਭੋਗਣ ਬਿਸਥਾਰ ॥
राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥
चाहे मनुष्य के पास राज्याधिकार, धन-सम्पत्ति, शासन एवं अन्य असंख्य स्वादिष्ट भोग हो,

ਬਾਗ ਸੁਹਾਵੇ ਸੋਹਣੇ ਚਲੈ ਹੁਕਮੁ ਅਫਾਰ ॥
बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥
उसके पास मनोहर व सुन्दर उद्यान हो और जिसके आदेश की सब पालना करते हों,

ਰੰਗ ਤਮਾਸੇ ਬਹੁ ਬਿਧੀ ਚਾਇ ਲਗਿ ਰਹਿਆ ॥
रंग तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ ॥
अथवा रंग तमाशों के विषय विलास में आसक्त व्यक्ति हों,

ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਸਰਪ ਕੀ ਜੂਨਿ ਗਇਆ ॥੬॥
चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ॥६॥
फिर भी यदि वह भगवान का सिमरन नहीं करता, तो वह सर्प-योनि में जन्म लेता है ॥६॥

ਬਹੁਤੁ ਧਨਾਢਿ ਅਚਾਰਵੰਤੁ ਸੋਭਾ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥
बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥
मनुष्य यदि धनवान, सदाचारी, निर्मल व्यवहारी तथा सर्वप्रिय हो,

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਭਾਈਆ ਸਾਜਨ ਸੰਗਿ ਪਰੀਤਿ ॥
मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥
उसे माता-पिता, सुत-भाई एवं अन्य स्वजनों से अनुराग भी हों,

ਲਸਕਰ ਤਰਕਸਬੰਦ ਬੰਦ ਜੀਉ ਜੀਉ ਸਗਲੀ ਕੀਤ ॥
लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥
उसके पास शस्त्र हो, सेना हो और असंख्य लोग उसकी चापलूसी करते हों,

ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਖੜਿ ਰਸਾਤਲਿ ਦੀਤ ॥੭॥
चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ॥७॥
तब भी यदि उसका मन पारब्रह्म के निर्मल नाम से रहित है तो उसे ले जाकर कुंभी नरक में फेंक दिया जाता है॥ ७॥

ਕਾਇਆ ਰੋਗੁ ਨ ਛਿਦ੍ਰ ਕਿਛੁ ਨਾ ਕਿਛੁ ਕਾੜਾ ਸੋਗੁ ॥
काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥
यदि काया भी पूर्णतः नीरोग है और कोई रोग नहीं, यदि उसको कोई शोक-संताप नहीं,

ਮਿਰਤੁ ਨ ਆਵੀ ਚਿਤਿ ਤਿਸੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਭੋਗੈ ਭੋਗੁ ॥
मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥
वह मृत्यु का ख्याल तक भी नहीं करता हो और दिन-रात भोग विलास में लीन रहता है,

ਸਭ ਕਿਛੁ ਕੀਤੋਨੁ ਆਪਣਾ ਜੀਇ ਨ ਸੰਕ ਧਰਿਆ ॥
सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥
यदि उसने भुजबल से सबको अपने अधीन कर लिया है और उसके मन में कोई भय भी न हो,

ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਮਕੰਕਰ ਵਸਿ ਪਰਿਆ ॥੮॥
चिति न आइओ पारब्रहमु जमकंकर वसि परिआ ॥८॥
यदि वह परमात्मा को स्मरण नहीं करता तो वह यमदूत के वश में आ जाता है॥८॥

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੋਵੈ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥
किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥
जिस पर भगवान अपनी कृपा करता है, उसे साधु-संतों की संगति प्राप्त होती है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਓਹੁ ਵਧਾਈਐ ਤਿਉ ਤਿਉ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰੰਗੁ ॥
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥
ज्यों ज्यों सत्संग में चित्त लगता है, उतना ही ज्यादा उस प्रभु के साथ प्रेम प्रगाढ़ हो जाता है।

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਕਾ ਖਸਮੁ ਆਪਿ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਥਾਉ ॥
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥
परमात्मा ही लोक-परलोक का स्वामी है, उसके बिना प्राणियों के सुख का और कोई आधार नहीं।

ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੈ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥੯॥੧॥੨੬॥
सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥९॥१॥२६॥
परन्तु उस परमेश्वर के पवित्र नाम की प्राप्ति सतिगुरु की प्रसन्नता से ही होती है। हे नानक ! यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो मनुष्य को सत्य नाम की उपलब्धि हो जाती है॥९॥१॥२६॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥
श्रीरागु महला ५ घरु ५ ॥

ਜਾਨਉ ਨਹੀ ਭਾਵੈ ਕਵਨ ਬਾਤਾ ॥
जानउ नही भावै कवन बाता ॥
मैं नहीं जानता कि प्रभु को कौन-सी बातें अच्छी लगती हैं।

ਮਨ ਖੋਜਿ ਮਾਰਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन खोजि मारगु ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! प्रभु को प्रसन्न करने का मार्ग खोज ॥१॥ रहाउ ॥

ਧਿਆਨੀ ਧਿਆਨੁ ਲਾਵਹਿ ॥
धिआनी धिआनु लावहि ॥
ध्यानी इन्सान समाधि लगाकर भगवान में ध्यान लगाता है।

ਗਿਆਨੀ ਗਿਆਨੁ ਕਮਾਵਹਿ ॥
गिआनी गिआनु कमावहि ॥
ज्ञानी ज्ञान-मार्ग द्वारा प्रभु को समझने का प्रयास करता है।

ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਨ ਹੀ ਜਾਤਾ ॥੧॥
प्रभु किन ही जाता ॥१॥
परन्तु कोई विरला पुरुष ही भगवान को जानता है ॥१॥

ਭਗਉਤੀ ਰਹਤ ਜੁਗਤਾ ॥
भगउती रहत जुगता ॥
भगवती जन अपनी धार्मिक क्रियाओं में लीन रहता है।

ਜੋਗੀ ਕਹਤ ਮੁਕਤਾ ॥
जोगी कहत मुकता ॥
योगी अष्टांग-भाव से मुक्ति की कल्पना करते हैं।

ਤਪਸੀ ਤਪਹਿ ਰਾਤਾ ॥੨॥
तपसी तपहि राता ॥२॥
तपस्वी लोग तपस्या में ही कल्याण मानते हैं। ॥२॥

ਮੋਨੀ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ॥
मोनी मोनिधारी ॥
मौनी साधु मौन धारण करने में ही ईश्वर की प्राप्ति संभव मानते हैं।

ਸਨਿਆਸੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥
सनिआसी ब्रहमचारी ॥
सन्यासी ब्रह्मचारी बन गया है।सन्यासी ब्रह्मचारी ॥

ਉਦਾਸੀ ਉਦਾਸਿ ਰਾਤਾ ॥੩॥
उदासी उदासि राता ॥३॥
उदासी वैराग्य में मग्न हुआ है ॥३॥

ਭਗਤਿ ਨਵੈ ਪਰਕਾਰਾ ॥
भगति नवै परकारा ॥
कोई कहता है कि वह नौ प्रकार की भक्ति करता है।

ਪੰਡਿਤੁ ਵੇਦੁ ਪੁਕਾਰਾ ॥
पंडितु वेदु पुकारा ॥
पण्डित वेदों को सस्वर उच्चारण करते हैं।

ਗਿਰਸਤੀ ਗਿਰਸਤਿ ਧਰਮਾਤਾ ॥੪॥
गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥
गृहस्थ-जन धर्मशास्त्रानुसार यज्ञ-दानादि धर्मो के पालन में ही कल्याण समझते हैं ॥४॥

ਇਕ ਸਬਦੀ ਬਹੁ ਰੂਪਿ ਅਵਧੂਤਾ ॥
इक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥
कोई साधु एक नाम 'अलख' ही बोलता है। कोई साधु बहुरूपिया बन गया है।

ਕਾਪੜੀ ਕਉਤੇ ਜਾਗੂਤਾ ॥
कापड़ी कउते जागूता ॥
कापड़िए साधु केसरिया कपड़े पहनते हैं, जागूता अर्थात् रात्रि जागरण करने वाले लोग भी जगराते में ही मोक्ष सम्भव मानते हैं।

ਇਕਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਤਾ ॥੫॥
इकि तीरथि नाता ॥५॥
कुछ लोग तीर्थ-यात्रा में स्नान द्वारा भी प्रभु-प्राप्ति की संभावना स्वीकारते हैं ॥५॥

ਨਿਰਹਾਰ ਵਰਤੀ ਆਪਰਸਾ ॥
निरहार वरती आपरसा ॥
निराहार रहने वाले व्रत को ही ईश्वर मिलन का साधन मानते हैं, ऊँची जाति के लोग निम्न जाति से परहेज करते हैं।

ਇਕਿ ਲੂਕਿ ਨ ਦੇਵਹਿ ਦਰਸਾ ॥
इकि लूकि न देवहि दरसा ॥
कुछ लोग गुफाओं में छिपे रहते हैं और किसी को अपने दर्शन नहीं देते।

ਇਕਿ ਮਨ ਹੀ ਗਿਆਤਾ ॥੬॥
इकि मन ही गिआता ॥६॥
कुछ लोग अपने चित्त के भीतर ही बुद्धिमान हैं। ॥६॥

ਘਾਟਿ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਕਹਾਇਆ ॥
घाटि न किन ही कहाइआ ॥
कोई भी अपने आपको कम नहीं कहता।

ਸਭ ਕਹਤੇ ਹੈ ਪਾਇਆ ॥
सभ कहते है पाइआ ॥
हर कोई कहता है कि उसने भगवान को पा लिया है।

ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਭਗਤਾ ॥੭॥
जिसु मेले सो भगता ॥७॥
लेकिन भगवान का भक्त वही होता है जिसे भगवान अपने साथ मिला लेता है ॥ ७॥

ਸਗਲ ਉਕਤਿ ਉਪਾਵਾ ॥
सगल उकति उपावा ॥
मैं समस्त युक्तियों एवं उपाय

ਤਿਆਗੀ ਸਰਨਿ ਪਾਵਾ ॥
तिआगी सरनि पावा ॥
त्याग कर भगवान की शरण में आ गया हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਚਰਣਿ ਪਰਾਤਾ ॥੮॥੨॥੨੭॥
नानकु गुर चरणि पराता ॥८॥२॥२७॥
हे नानक ! भगवान की प्राप्ति हेतु गुरु के चरणों में पड़ना सर्वोत्तम युक्ति है ॥८॥२॥२७॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ॥
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥
श्रीरागु महला १ घरु ३ ॥

ਜੋਗੀ ਅੰਦਰਿ ਜੋਗੀਆ ॥
जोगी अंदरि जोगीआ ॥
हे ईश्वर ! तू सृष्टि में अनेक रूपों में विचरण कर रहा है। योगियों में तुम योगीराज हो

ਤੂੰ ਭੋਗੀ ਅੰਦਰਿ ਭੋਗੀਆ ॥
तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥
एवं भोगियो में तुम महाभोगी हो।

ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਸੁਰਗਿ ਮਛਿ ਪਇਆਲਿ ਜੀਉ ॥੧॥
तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥१॥
स्वर्ग लोक के देवता, मृत्युलोक के वासी तथा पाताल के नागादि जीवों ने तुम्हारा भेद नहीं पाया ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਹਉ ਵਾਰਣੈ ਕੁਰਬਾਣੁ ਤੇਰੇ ਨਾਵ ਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥ रहाउ ॥
मैं तुझ पर कुर्बान हूँ, मैं तेरे पावन नाम पर न्यौछावर हूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਤੁਧੁ ਸੰਸਾਰੁ ਉਪਾਇਆ ॥
तुधु संसारु उपाइआ ॥
तुम सृष्टि कर्ता हो, तुम ने ही संसार की रचना करके

ਸਿਰੇ ਸਿਰਿ ਧੰਧੇ ਲਾਇਆ ॥
सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥
उनकी किस्मत निर्धारित करके सांसारिक कार्यों में लगाया है।

ਵੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਕਰਿ ਕੁਦਰਤਿ ਪਾਸਾ ਢਾਲਿ ਜੀਉ ॥੨॥
वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥
अपनी रचना का तुम स्वयं ध्यान रखते हो और अपनी माया-शक्ति से इस संसार की चौपड़ पर निरन्तर पासा फेंक रहे हो ॥२॥

ਪਰਗਟਿ ਪਾਹਾਰੈ ਜਾਪਦਾ ॥
परगटि पाहारै जापदा ॥
समूचे विश्व में तुम प्रत्यक्ष दिखते हो।

ਸਭੁ ਨਾਵੈ ਨੋ ਪਰਤਾਪਦਾ ॥
सभु नावै नो परतापदा ॥
प्रत्येक प्राणी तेरे नाम की कामना करता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝੁ ਨ ਪਾਇਓ ਸਭ ਮੋਹੀ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ਜੀਉ ॥੩॥
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥३॥
किन्तु सतिगुरु के बिना तुम्हें कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। समस्त प्राणी मोह-माया के जाल में लुभायमान होकर फंसे हुए हैं। ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥
सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥
मैं सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ,

ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥
जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥
जिनके मिलन से परमगति प्राप्त होती है।

ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਲੋਚਦੇ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ਜੀਉ ॥੪॥
सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥
सतिगुरु ने मुझे उस प्रभु बारे बताया है जिस परमात्मा को पाने को देवता, मानव और ऋषि-मुनि कामना करते हैं। ॥४॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਕੈਸੀ ਜਾਣੀਐ ॥
सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
सत्संगति किस प्रकार जानी जा सकती है?

ਜਿਥੈ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀਐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥
एक प्रभु के नाम का वहाँ उच्चारण होता है।

ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ਜੀਉ ॥੫॥
एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥
हे नानक ! हरिनाम ही ईश्वर का हुक्म है, यह बात मुझे गुरु जी ने समझा दी है ॥५॥

ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥
इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥
यह संसार संदेह के कारण भ्रम भुलैया में पड़ा हुआ है।

ਆਪਹੁ ਤੁਧੁ ਖੁਆਇਆ ॥
आपहु तुधु खुआइआ ॥
हे प्रभु ! तुमने स्वयं ही प्राणियों के कर्मानुसार उन्हें भुलाया है।

ਪਰਤਾਪੁ ਲਗਾ ਦੋਹਾਗਣੀ ਭਾਗ ਜਿਨਾ ਕੇ ਨਾਹਿ ਜੀਉ ॥੬॥
परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥
वे प्राणी जिनके भाग्य में परमात्मा का मिलन नहीं, वियोगिनी स्त्री के समान प्रतिदिन तड़पते रहते हैं। ॥६॥

ਦੋਹਾਗਣੀ ਕਿਆ ਨੀਸਾਣੀਆ ॥
दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥
दुहागिन नारियों के क्या लक्षण हैं?

ਖਸਮਹੁ ਘੁਥੀਆ ਫਿਰਹਿ ਨਿਮਾਣੀਆ ॥
खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥
वे पति द्वारा उपेक्षित मान-रहित होकर भटकती रहती हैं।

ਮੈਲੇ ਵੇਸ ਤਿਨਾ ਕਾਮਣੀ ਦੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ਜੀਉ ॥੭॥
मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥७॥
उन दुर्भाग्यशाली नारियों की वेश-भूषा मलिन होती है और प्रतिदिन तड़प-तड़प कर रात्रि बिताती हैं ॥७॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਕਿਆ ਕਰਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥
सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥
सुहागिन ने आखिर क्या शुभ कर्म कमाया है?

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥
उसे ईश्वर ने पूर्व जन्म के किसी उत्तम कर्म का फल प्रदान किया है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਕੈ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ਜੀਉ ॥੮॥
नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥
अपनी कृपा-दृष्टि करके परमेश्वर उनको अपने साथ मिला लेता है ॥८॥

ਹੁਕਮੁ ਜਿਨਾ ਨੋ ਮਨਾਇਆ ॥
हुकमु जिना नो मनाइआ ॥
जिन जिज्ञासु प्राणियों ने परमात्मा के आदेश की पालना की है,

ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆ ॥
तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥
वे गुरु का सच्चा उपदेश मन में धारण करते हैं।

ਸਹੀਆ ਸੇ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਸਹ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ਜੀਉ ॥੯॥
सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥
ऐसी सखियाँ सत्यवती पत्नी हैं, जो अपने पिया के साथ प्रीति करती हैं ॥९ ॥

ਜਿਨਾ ਭਾਣੇ ਕਾ ਰਸੁ ਆਇਆ ॥
जिना भाणे का रसु आइआ ॥
जो ईश्वर की इच्छानुसार प्रसन्नता अनुभव करती हैं,

ਤਿਨ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥
उनके भीतर से संदेह निवृत्त हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਐਸਾ ਜਾਣੀਐ ਜੋ ਸਭਸੈ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ਜੀਉ ॥੧੦॥
नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥
हे नानक ! सतिगुरु ऐसा दयालु है जो सभी को भगवान के साथ मिला देता है ॥१०॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥
वह सतिगुरु से मिलन करके हरि-नाम रूपी फल प्राप्त कर लेता है।

ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਅਹਕਰਣੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥
जो अपने अहंकार को नाश कर देता है,

ਦੁਰਮਤਿ ਕਾ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਭਾਗੁ ਬੈਠਾ ਮਸਤਕਿ ਆਇ ਜੀਉ ॥੧੧॥
दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥११॥
उसकी मंद-बुद्धि की पीड़ा निवृत हो जाती है और उसके मस्तक पर भाग्योदय हो जाता है ॥११॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀਆ ॥
अम्रितु तेरी बाणीआ ॥
हे प्रभु ! तेरी वाणी अमृत समान है।

ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੀਆ ॥
तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥
यह तेरे भक्तों के मन में रमी हुई है।

ਸੁਖ ਸੇਵਾ ਅੰਦਰਿ ਰਖਿਐ ਆਪਣੀ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਨਿਸਤਾਰਿ ਜੀਉ ॥੧੨॥
सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥
तुम्हारी सेवा में ही वास्तविक सुख की उपलब्धि है और अपनी कृपा-दृष्टि से तुम अपने भक्तों को भवसागर से पार कर देते हो ॥१२॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਜਾਣੀਐ ॥
सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥
सतिगुरु से मिलन तभी समझा जाता है।

ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀਐ ॥
जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥
यदि इस मिलन द्वारा ईश्वर के नाम का उच्चारण किया जाए।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝੁ ਨ ਪਾਇਓ ਸਭ ਥਕੀ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਜੀਉ ॥੧੩॥
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥१३॥
सतिगुरु के बिना किसी को भी प्रभु प्राप्त नहीं हुआ। सारी दुनिया धर्म-कर्म करते-करते थक गई है ॥१३॥

ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਘੁਮਾਇਆ ॥
हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥
मैं अपने सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ

ਜਿਨਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭੁਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥
जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥
जिसने मुझे माया-तृष्णा के भ्रमों से निकाल कर सद्मार्ग लगाया है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਲਏ ਰਲਾਇ ਜੀਉ ॥੧੪॥
नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥
यदि सतिगुरु अपनी कृपा-दृष्टि करे तो यह मनुष्य को अपनी संगति में मिला लेता है ॥१४॥

ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥
तूं सभना माहि समाइआ ॥
हे भगवान ! तुम समस्त प्राणियों के भीतर समाए हुए हो।

ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ॥-
तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥
ईश्वर ने अपनी ज्योति गुप्त रूप में मनुष्य के हृदय में रखी हुई है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇਆ ਜਾ ਕਉ ਜੋਤਿ ਧਰੀ ਕਰਤਾਰਿ ਜੀਉ ॥੧੫॥
नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥
हे नानक ! जिस मनुष्य के हृदय में ईश्वर ने अपनी ज्योति रखी हुई हैं, ईश्वर गुरु के माध्यम से उस मनुष्य के हृदय में प्रगट हो जाता है। ॥१५॥

ਆਪੇ ਖਸਮਿ ਨਿਵਾਜਿਆ ॥
आपे खसमि निवाजिआ ॥
हे ईश्वर ! तुमने ही तन की मूर्ति गढ़कर

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਸਾਜਿਆ ॥
जीउ पिंडु दे साजिआ ॥
उसमें प्राणों का संचार करके मुझे पैदा किया है।

ਆਪਣੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੀਆ ਦੁਇ ਕਰ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿ ਜੀਉ ॥੧੬॥
आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥
अपने दोनों हाथ उसके मस्तक पर रखकर प्रभु अपने सेवक की प्रतिष्ठा बरकरार रखता है ॥१६॥

ਸਭਿ ਸੰਜਮ ਰਹੇ ਸਿਆਣਪਾ ॥
सभि संजम रहे सिआणपा ॥
समूह अटकलें और चतुराईयाँ किसी काम नहीं आती।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ॥
मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥
मेरा प्रभु सब कुछ जानता है।

ਪ੍ਰਗਟ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਵਰਤਾਇਓ ਸਭੁ ਲੋਕੁ ਕਰੈ ਜੈਕਾਰੁ ਜੀਉ ॥੧੭॥
प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥
ईश्वर ने मेरा प्रताप सब ओर प्रकट किया है और सब मेरी जय-जयकार करने लगे हैं ॥१७॥

ਮੇਰੇ ਗੁਣ ਅਵਗਨ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥
मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥
परमात्मा ने मेरे गुणों-अवगुणों पर ध्यान नहीं दिया,

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥
प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥
उसने तो केवल अपने विरद की लाज निभाई है।

ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਕੈ ਰਖਿਓਨੁ ਲਗੈ ਨ ਤਤੀ ਵਾਉ ਜੀਉ ॥੧੮॥
कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न ततीं वाउ जीउ ॥१८॥
ईश्वर ने अपने गले लगा कर मेरी रक्षा की है और मुझे गर्म हवा भी नहीं छूती ॥१८॥

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਇਆ ॥
मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥
अपने तन-मन से मैंने प्रभु की स्तुति की है।

ਜੀਇ ਇਛਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥

जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥

इसलिए मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हुआ है।

ਸਾਹ ਪਾਤਿਸਾਹ ਸਿਰਿ ਖਸਮੁ ਤੂੰ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਨਾਉ ਜੀਉ ॥੧੯॥

साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥१९॥

हे ईश्वर ! तुम सम्राटों के भी सम्राट हो, इसलिए हे नानक ! मैं तुम्हारे ही नाम-सिमरन से जीवन धारण करता हूँ ॥१९॥

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਆਪੁ ਉਪਾਇਆ ॥
तुधु आपे आपु उपाइआ ॥
हे भगवान ! तुमने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है

ਦੂਜਾ ਖੇਲੁ ਕਰਿ ਦਿਖਲਾਇਆ ॥
दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥
और जगत् रूपी खेल को साज कर प्रत्यक्ष किया है।

ਸਭੁ ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤਦਾ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੈ ਬੁਝਾਇ ਜੀਉ ॥੨੦॥
सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥
समस्त स्थानों पर सत्य प्रभु के सत्य हुक्म का प्रसार हो रहा है, किन्तु उसके मूल रहस्य को वही समझता है जिसे तुम समझाते हो ॥२०॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥
गुर परसादी पाइआ ॥
गुरु की कृपा से जिसने भगवान को पा लिया है,

ਤਿਥੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥
भगवान ने उसका माया का मोह नष्ट कर दिया है।

ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਲਏ ਸਮਾਇ ਜੀਉ ॥੨੧॥
किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥२१॥
अपनी कृपा करके वह स्वयं अपने साथ मिला लेता है ॥ २१॥

ਗੋਪੀ ਨੈ ਗੋਆਲੀਆ ॥
गोपी नै गोआलीआ ॥
हे प्रभु ! तुम ही गोपी हो, तुम ही यमुना हो,

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਗੋਇ ਉਠਾਲੀਆ ॥
तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥
तुम ही कृष्ण हो। तूने ही कृष्ण रूप में गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठाया था।

ਹੁਕਮੀ ਭਾਂਡੇ ਸਾਜਿਆ ਤੂੰ ਆਪੇ ਭੰਨਿ ਸਵਾਰਿ ਜੀਉ ॥੨੨॥
हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥
तूने ही अपने हृदय में जीवों के शरीर रूपी बर्तन निर्मित किए हैं। तुम स्वयं ही इन शरीर रूपी बर्तनों को नष्ट करते एवं निर्माण करते हो ॥२२॥

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥
जिन्होंने अपना चित सतिगुरु से लगाया है,

ਤਿਨੀ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਚੁਕਾਇਆ ॥
तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥
उन्होंने माया का मोह दूर कर दिया है।

ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਤਿਨ ਪ੍ਰਾਣੀਆ ਓਇ ਚਲੇ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿ ਜੀਉ ॥੨੩॥
निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥
ऐसे प्राणियों की ज्योति निर्मल हो जाती है। वह अपने जीवन को संवार कर परलोक में जाते हैं। ॥२३॥

ਤੇਰੀਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਚੰਗਿਆਈਆ ॥
तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥
हे भगवान ! तुम हमेशा ही मुझ पर उपकार करते रहते हो।

ਮੈ ਰਾਤਿ ਦਿਹੈ ਵਡਿਆਈਆਂ ॥
मै राति दिहै वडिआईआं ॥
admire by night and day.

ਅਣਮੰਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵਣਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਮਾਲਿ ਜੀਉ ॥੨੪॥੧॥
अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥
तू इतना दयालु है कि बिना मांगे ही जीवों को दान देता रहता है। हे नानक ! हमेशा ही भगवान का सिमरन करते रहूँ ॥२४॥१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਪੈ ਪਾਇ ਮਨਾਈ ਸੋਇ ਜੀਉ ॥
पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥
मैं सतिगुरु के चरणों में पड़कर मन्नत करता हूँ ,

ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖਿ ਮਿਲਾਇਆ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि महापुरुष सतिगुरु ने मुझे उस ईश्वर से मिला दिया है। उस जैसा महान् जगत् में अन्य कोई भी नहीं ॥१॥ रहाउ॥

ਗੋਸਾਈ ਮਿਹੰਡਾ ਇਠੜਾ ॥
गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥
मेरा मालिक प्रभु मुझे बहुत प्रिय है।

ਅੰਮ ਅਬੇ ਥਾਵਹੁ ਮਿਠੜਾ ॥
अम अबे थावहु मिठड़ा ॥
वह माता और पिता से बहुत मीठा लगता है।

ਭੈਣ ਭਾਈ ਸਭਿ ਸਜਣਾ ਤੁਧੁ ਜੇਹਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥੧॥
भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥१॥
हे प्रभु ! बहन-भाई, मित्रादि स्वजनों में तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं ॥१॥

ਤੇਰੈ ਹੁਕਮੇ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ॥
भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥१॥
हे प्रभु ! बहन-भाई, मित्रादि स्वजनों में तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं ॥१॥

ਮੈ ਸਤ ਕਾ ਹਲੁ ਜੋਆਇਆ ॥
तैरै हुकमे सावणु आइआ ॥
तुम्हारे आदेश से श्रावण का महीना आया है।

ਨਾਉ ਬੀਜਣ ਲਗਾ ਆਸ ਕਰਿ ਹਰਿ ਬੋਹਲ ਬਖਸ ਜਮਾਇ ਜੀਉ ॥੨॥
मै सत का हलु जोआइआ ॥
तुम्हारी प्रसन्नता हेतु मैंने सत्य का हल जोड़ा है।

ਹਉ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਇਕੁ ਪਛਾਣਦਾ ॥
नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥२॥
इस आशा में कि ईश्वर, अपनी कृपा से दातों का अम्बार उत्पन्न करेगा, मैं नाम बीज बोने लगा हूँ॥२॥

ਦੁਯਾ ਕਾਗਲੁ ਚਿਤਿ ਨ ਜਾਣਦਾ ॥
दुया कागलु चिति न जाणदा ॥
मैं अपने मन के अन्दर किसी अन्य हिसाब को नहीं जानता हूँ।

ਹਰਿ ਇਕਤੈ ਕਾਰੈ ਲਾਇਓਨੁ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਂਵੈ ਨਿਬਾਹਿ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिंवै निबाहि जीउ ॥३॥
ईश्वर ने एक कार्य मेरी जिम्मेदारी में लगाया है, जिस तरह उसको अच्छा लगता है, उसी तरह मैं उसको सम्पन्न करता हूँ॥३॥

ਤੁਸੀ ਭੋਗਿਹੁ ਭੁੰਚਹੁ ਭਾਈਹੋ ॥
तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥
हे मेरे भाईयो ! आप नाम पदार्थ सेवन करो एवं आनंद मानो।

ਗੁਰਿ ਦੀਬਾਣਿ ਕਵਾਇ ਪੈਨਾਈਓ ॥
गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥
परमेश्वर के दरबार में गुरदेव ने मुझे भक्ति रूपी पोशाक भेंटकर प्रतिष्ठा प्रदान की है।

ਹਉ ਹੋਆ ਮਾਹਰੁ ਪਿੰਡ ਦਾ ਬੰਨਿ ਆਦੇ ਪੰਜਿ ਸਰੀਕ ਜੀਉ ॥੪॥
हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥
मैं शरीर रूपी गांव का स्वामी हो गया हूँ और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि अपने पांचों शरीकों को मैंने बांध लिया है॥४॥

ਹਉ ਆਇਆ ਸਾਮ੍ਹ੍ਰੈ ਤਿਹੰਡੀਆ ॥
हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥
हे प्रभु ! जब से मैंने तेरी शरण ली है।

ਪੰਜਿ ਕਿਰਸਾਣ ਮੁਜੇਰੇ ਮਿਹਡਿਆ ॥
पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥
तब से मेरी पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ मेरे सेवकों की भाँति मेरी आज्ञा में रहती हैं।

ਕੰਨੁ ਕੋਈ ਕਢਿ ਨ ਹੰਘਈ ਨਾਨਕ ਵੁਠਾ ਘੁਘਿ ਗਿਰਾਉ ਜੀਉ ॥੫॥
कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥५॥
मेरे खिलाफ अब कोई कान (सिर) उठाने का साहस नहीं कर सकता। हे नानक ! इसलिए शरीर रूपी गांव आध्यात्मिक सम्पदा की सघनता से बस गया है॥५॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਘੁੰਮਾ ਜਾਵਦਾ ॥
हउ वारी घुमा जावदा ॥
हे मेरे प्रभु! मैं तुझ पर बलिहार हूँ, कुर्बान हूँ,"

ਇਕ ਸਾਹਾ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦਾ ॥
इक साहा तुधु धिआइदा ॥
श्वास-श्वास मैं तुम्हारा ही नाम जपता हूँ।

ਉਜੜੁ ਥੇਹੁ ਵਸਾਇਓ ਹਉ ਤੁਧ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥੬॥
उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥६॥
मेरा मन ऊजड़-गांव (गुण-रहित) की भाँति था, तुमने उसे बसा दिया है, इसलिए मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ॥६॥

ਹਰਿ ਇਠੈ ਨਿਤ ਧਿਆਇਦਾ ॥
हरि इठै नित धिआइदा ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तेरा मैं सदैव ही सिमरन करता हूँ

ਮਨਿ ਚਿੰਦੀ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਦਾ ॥
मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥
और जैसी मेरी अभिलाषा थी मेरी वह कामना पूरी हो गई है।

ਸਭੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਅਨੁ ਲਾਹੀਅਨੁ ਮਨ ਕੀ ਭੁਖ ਜੀਉ ॥੭॥
सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥७॥
तुमने मेरे समस्त कार्य संवार दिए हैं और मेरी आत्मा की भूख निवृत्त कर दी है॥७॥

ਮੈ ਛਡਿਆ ਸਭੋ ਧੰਧੜਾ ॥
मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥
मैंने संसार के मिथ्या कार्य त्याग दिए हैं।

ਗੋਸਾਈ ਸੇਵੀ ਸਚੜਾ ॥
गोसाई सेवी सचड़ा ॥
मैं सृष्टि के स्वामी की आराधना करता हूँ।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਮੈ ਪਲੈ ਬਧਾ ਛਿਕਿ ਜੀਉ ॥੮॥
नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥८॥
नवनिधि को देने में समर्थ कल्पवृक्ष-समान हरिनाम मुझे मिला है, जिसे बड़े यत्न से मैंने अन्तर्मन में संजोया हुआ है।॥८॥

ਮੈ ਸੁਖੀ ਹੂੰ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥
मैं बहुत सुखी हूँ चूंकि मैंने सुख प्राप्त कर लिया है।

ਗੁਰਿ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆ ॥
गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥
गुरु ने मेरे हृदय में भगवान का नाम बसा दिया है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੁਰਖਿ ਵਿਖਾਲਿਆ ਮਸਤਕਿ ਧਰਿ ਕੈ ਹਥੁ ਜੀਉ ॥੯॥

सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥९॥

सतिगुरु ने मेरे माथे पर हाथ रखकर अर्थात् आशीर्वाद देकर मुझे भगवान के साक्षात् दर्शन करवा दिए हैं॥९ ॥

ਮੈ ਬਧੀ ਸਚੁ ਧਰਮ ਸਾਲ ਹੈ ॥

मै बधी सचु धरम साल है ॥

मैंने सच्चाई के मन्दिर की धर्मशाला बनाई है।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਲਹਦਾ ਭਾਲਿ ਕੈ ॥

गुरसिखा लहदा भालि कै ॥

गुरु के शिष्यों को ढूंढ कर मैं यहाँ पर लेकर आया हूँ।

ਪੈਰ ਧੋਵਾ ਪਖਾ ਫੇਰਦਾ ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਗਾ ਪਾਇ ਜੀਉ ॥੧੦॥

पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥१०॥

मैं उनके चरण धोता हूँ, पंखा झुलाता और विनम्रतापूर्वक झुक-झुककर उनके चरण स्पर्श करता हूं॥१०॥

ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਗੁਰ ਪਹਿ ਆਇਆ ॥
सुणि गला गुर पहि आइआ ॥
गुरु के शिष्यों से बातें सुनकर मैं गुरु के पास आया हूँ।

ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਦਿੜਾਇਆ ॥
नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥
गुरु ने मुझे नाम, दान-पुण्य और स्नान निश्चित करवा दिया है।.

ਸਭੁ ਮੁਕਤੁ ਹੋਆ ਸੈਸਾਰੜਾ ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਬੇੜੀ ਚਾੜਿ ਜੀਉ ॥੧੧॥
सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥११॥
हे नानक ! नाम रूपी सच्ची नाव पर सवार होने के कारण सारा संसार बच गया है। ११॥

ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸੇਵੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਜੀਉ ॥
सभ स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥
हे प्रभु ! सारी सृष्टि दिन-रात तेरी सेवा का फल पाती है।

ਦੇ ਕੰਨੁ ਸੁਣਹੁ ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਉ ॥
दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ॥
हे स्वामी ! अपना कान देकर मेरी प्रार्थना सुनो।

ਠੋਕਿ ਵਜਾਇ ਸਭ ਡਿਠੀਆ ਤੁਸਿ ਆਪੇ ਲਇਅਨੁ ਛਡਾਇ ਜੀਉ ॥੧੨॥
ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ॥१२॥
मैंने सभी को भली भांति निर्णय करके देख लिया है। केवल तुम ही अपनी प्रसन्नता द्वारा प्राणियों को मोक्ष प्रदान करते हो ॥१२॥

ਹੁਣਿ ਹੁਕਮੁ ਹੋਆ ਮਿਹਰਵਾਣ ਦਾ ॥
हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥
अब मेहरबान परमात्मा का आदेश जारी हो गया है।

ਪੈ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸੈ ਰਞਾਣਦਾ ॥
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
कोई भी किसी को दुखी नहीं करता।

ਸਭ ਸੁਖਾਲੀ ਵੁਠੀਆ ਇਹੁ ਹੋਆ ਹਲੇਮੀ ਰਾਜੁ ਜੀਉ ॥੧੩॥
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥१३॥
सारी दुनिया सुखपूर्वक रहती है। क्योंकि अब यहाँ सात्विक का राज्य स्थापित हो गया है॥१३॥

ਝਿੰਮਿ ਝਿੰਮਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਰਸਦਾ ॥
झिमि झिमि अम्रितु वरसदा ॥
सतिगुरु मेघ की भाँति अमृत बरसा रहे हैं।

ਬੋਲਾਇਆ ਬੋਲੀ ਖਸਮ ਦਾ ॥
बोलाइआ बोली खसम दा ॥
मैं उस तरह बोलता हूँ, जिस तरह भगवान मुझे बुलाता है।

ਬਹੁ ਮਾਣੁ ਕੀਆ ਤੁਧੁ ਉਪਰੇ ਤੂੰ ਆਪੇ ਪਾਇਹਿ ਥਾਇ ਜੀਉ ॥੧੪॥
बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥१४॥
हे दाता ! मुझे तुम पर बड़ा गर्व है। | तुम स्वयं ही मेरे कर्मों को निर्दिष्ट कर सफल बनाते हो ॥१४॥

ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਭੁਖ ਸਦ ਤੇਰੀਆ ॥
तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥
हे प्रभु ! तुम्हारे भक्तों को सदा तुम्हारे दर्शनों की लालसा है।

ਹਰਿ ਲੋਚਾ ਪੂਰਨ ਮੇਰੀਆ ॥
हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥
हे प्रभु! मेरी मनोवांछित कामनाओं को सफल करो।

ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਸੁਖਦਾਤਿਆ ਮੈ ਗਲ ਵਿਚਿ ਲੈਹੁ ਮਿਲਾਇ ਜੀਉ ॥੧੫॥
देहु दरसु सुखदातिआ मै गल विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥१५॥
हे सुखदाता ! मुझे अपने दर्शन देकर अपने गले से लगा लो॥१५॥

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਲਿਆ ॥
तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥
तेरे जैसा महान् मुझे अन्य कोई नहीं मिला।

ਤੂੰ ਦੀਪ ਲੋਅ ਪਇਆਲਿਆ ॥
तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥
तुम धरती, आकाश व पाताल में व्यापक हो।

ਤੂੰ ਥਾਨਿ ਥਨੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਚੁ ਅਧਾਰੁ ਜੀਉ ॥੧੬॥
तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥१६॥
सातों द्वीपों और पाताल लोकों में तुम्हारा ही आलोक प्रसारित है। हे नानक ! भक्तों को परमात्मा का ही सहारा है ॥१६॥

ਹਉ ਗੋਸਾਈ ਦਾ ਪਹਿਲਵਾਨੜਾ ॥
हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥
मैं अपने मालिक प्रभु का एक छोटा-सा पहलवान हूँ।

ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਉਚ ਦੁਮਾਲੜਾ ॥
मै गुर मिलि उच दुमालड़ा ॥
गुरु से मिलकर मैंने ऊँची दस्तार सजा ली है।

ਸਭ ਹੋਈ ਛਿੰਝ ਇਕਠੀਆ ਦਯੁ ਬੈਠਾ ਵੇਖੈ ਆਪਿ ਜੀਉ ॥੧੭॥
सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥१७॥
मेरी कुश्ती देखने के लिए तमाशा देखने वालों की भीड़ एकत्र हो गई है और दयालु परमात्मा स्वयं बैठ कर देख रहा है॥१७॥

ਵਾਤ ਵਜਨਿ ਟੰਮਕ ਭੇਰੀਆ ॥
वात वजनि टमक भेरीआ ॥
अखाड़े में वाजे, नगाड़े और तूतीयाँ बज रहे हैं।

ਮਲ ਲਥੇ ਲੈਦੇ ਫੇਰੀਆ ॥
मल लथे लैदे फेरीआ ॥
पहलवान अखाड़े के अन्दर प्रवेश करते हैं और इसके आसपास चक्कर काट रहे हैं।

ਨਿਹਤੇ ਪੰਜਿ ਜੁਆਨ ਮੈ ਗੁਰ ਥਾਪੀ ਦਿਤੀ ਕੰਡਿ ਜੀਉ ॥੧੮॥
निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥१८॥
मैंने अकेले ही पाँच जवानों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) को पराजित कर दिया है और गुरु ने मेरी पीठ पर शाबाश (आशीर्वाद) दी है ॥१८॥

ਸਭ ਇਕਠੇ ਹੋਇ ਆਇਆ ॥
सभ इकठे होइ आइआ ॥
समस्त जीव जन्म लेकर दुनिया में इकट्ठे हुए हैं।

ਘਰਿ ਜਾਸਨਿ ਵਾਟ ਵਟਾਇਆ ॥
घरि जासनि वाट वटाइआ ॥
ये विभिन्न योनियों में पड़कर अपने घर परलोक में चले जाएँगे।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਹਾ ਲੈ ਗਏ ਮਨਮੁਖ ਚਲੇ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ਜੀਉ ॥੧੯॥
गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥१९॥
गुरमुख नाम रूपी पूंजी का लाभ प्राप्त करके जाएँगे, जबकि मनमुख अपना मूल भी गंवा देंगे ॥१९॥

ਤੂੰ ਵਰਨਾ ਚਿਹਨਾ ਬਾਹਰਾ ॥
तूं वरना चिहना बाहरा ॥
हे प्रभु ! तेरा कोई वर्ण अथवा चिन्ह नहीं।

ਹਰਿ ਦਿਸਹਿ ਹਾਜਰੁ ਜਾਹਰਾ ॥
हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥
परमात्मा प्रत्यक्ष ही सबको दर्शन देता है।

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਤੁਝੈ ਧਿਆਇਦੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਤੇ ਗੁਣਤਾਸੁ ਜੀਉ ॥੨੦॥
सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥२०॥
हे गुणों के भण्डार ! हे पारब्रह्म-परमेश्वर ! तुम्हारे भक्त तुम्हारा यशोगान निरन्तर सुनते, तेरा सुमिरन करते और तेरे ही रंग में मग्न हैं ॥२०॥

ਮੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਦਯੈ ਸੇਵੜੀ ॥
मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥
मैं समस्त युगों में भगवान की भक्ति करता रहा हूँ।

ਗੁਰਿ ਕਟੀ ਮਿਹਡੀ ਜੇਵੜੀ ॥
गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥
गुरु ने माया-बन्धन की बेड़ियों काट फेंकी है।

ਹਉ ਬਾਹੁੜਿ ਛਿੰਝ ਨ ਨਚਊ ਨਾਨਕ ਅਉਸਰੁ ਲਧਾ ਭਾਲਿ ਜੀਉ ॥੨੧॥੨॥੨੯॥
हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥२१॥२॥२९॥
मैं संसार के अखाड़े में पुनः पुनः दंगल करने नहीं जाऊँगा, क्योंकि हे नानक ! मैंने मनुष्य-जीवन का सही मूल्य जानकर उसे सार्थक कर लिया है ॥२१॥२॥२९॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਪਹਰੇ ਘਰੁ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥
श्रीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹੁਕਮਿ ਪਇਆ ਗਰਭਾਸਿ ॥
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर के आदेशानुसार प्राणी माता के गर्भ में आता है।

ਉਰਧ ਤਪੁ ਅੰਤਰਿ ਕਰੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥

उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! वह गर्भ में उल्टा लटका हुआ तपस्या करता है और भगवान के समक्ष प्रार्थना करता रहता है।

ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ਵਖਾਣੈ ਉਰਧ ਧਿਆਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥

खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥

वह उलटा लटका हुआ भगवान के ध्यान में सुरति लगाता है।

ਨਾ ਮਰਜਾਦੁ ਆਇਆ ਕਲਿ ਭੀਤਰਿ ਬਾਹੁੜਿ ਜਾਸੀ ਨਾਗਾ ॥

ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥

वह रस्मों की मर्यादा के बिना दुनिया में नग्न आता है और मरणोपरांत नग्न ही जाता है।

ਜੈਸੀ ਕਲਮ ਵੁੜੀ ਹੈ ਮਸਤਕਿ ਤੈਸੀ ਜੀਅੜੇ ਪਾਸਿ ॥

जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥

विधाता ने प्राणी के कर्मानुसार उसके मस्तक पर जो भाग्य रेखाएँ खींच दी हैं, उसी के अनुसार उसे सुख-दुख उपलब्ध होते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਹੁਕਮਿ ਪਇਆ ਗਰਭਾਸਿ ॥੧॥

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि रात्रि के प्रथम-प्रहर में ईश्वर की इच्छानुसार प्राणी गर्भ में प्रवेश करता है।॥१॥

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਵਿਸਰਿ ਗਇਆ ਧਿਆਨੁ ॥
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में मनुष्य परमेश्वर के सिमरन को विस्मृत कर देता है। अर्थात्-जब प्राणी गर्भ से बाहर आता और जन्म लेता है तो गर्भ में की गई प्रार्थना को भूल जाता है।

ਹਥੋ ਹਥਿ ਨਚਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਜਿਉ ਜਸੁਦਾ ਘਰਿ ਕਾਨੁ ॥
हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥
उसके परिजन, भाई-बन्धु सब उसे ऐसे नचाते हैं, हर्षित होते हैं, जैसे माता यशोदा के घर कृष्ण नचाया जाता था।

ਹਥੋ ਹਥਿ ਨਚਾਈਐ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮਾਤ ਕਹੈ ਸੁਤੁ ਮੇਰਾ ॥
हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! परिवार के समस्त लोग नश्वर प्राणी उस बच्चे को उछालते-खेलाते हैं और माता मोह-वश उसे अपना पुत्र कहकर बड़ा मान करती है।

ਚੇਤਿ ਅਚੇਤ ਮੂੜ ਮਨ ਮੇਰੇ ਅੰਤਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਤੇਰਾ ॥
चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥
हे मेरे अज्ञानी एवं मूर्ख मन ! परमात्मा को स्मरण कर। अंतकाल तेरा कोई साथी नहीं होना।

ਜਿਨਿ ਰਚਿ ਰਚਿਆ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣੈ ਮਨ ਭੀਤਰਿ ਧਰਿ ਗਿਆਨੁ ॥
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥
तू उसको नहीं समझता जिसने रचना रची है। अब तू अपने मन में ज्ञान प्राप्त कर ले।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਵਿਸਰਿ ਗਇਆ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥
कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥
गुरु जी कहते हैं कि रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी परमेश्वर का ध्यान भुला देता है ॥२॥

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਧਨ ਜੋਬਨ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ॥
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में प्राणी का मन, धन-यौवन (स्त्री-यौवन) में रम जाता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਧਾ ਛੁਟਹਿ ਜਿਤੁ ॥
हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥
वह हरि-नाम का चिंतन नहीं करता, जिसके द्वारा वह संसार-बंधन से मुक्ति पा सकता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਬਿਕਲੁ ਭਇਆ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ॥

हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥

नश्वर प्राणी प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं करता और सांसारिक पदार्थों के साथ व्याकुल रहता है।

ਧਨ ਸਿਉ ਰਤਾ ਜੋਬਨਿ ਮਤਾ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥

धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥

वह भार्या-प्रेम की आसक्ति और यौवन की मस्ती में ऐसा लीन हो जाता है कि इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही गंवा देता है।

ਧਰਮ ਸੇਤੀ ਵਾਪਾਰੁ ਨ ਕੀਤੋ ਕਰਮੁ ਨ ਕੀਤੋ ਮਿਤੁ ॥

धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥

वह न तो धर्मानुसार आचरण करता है और न ही शुभ कर्मों के साथ मैत्री बनाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਧਨ ਜੋਬਨ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ॥੩॥

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥

गुरु जी कहते हैं कि हे नानक ! मनुष्य का जीवन रूपी तृतीय प्रहर भी धन-यौवन की तृष्णा में नष्ट हो जाता है॥३॥

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਲਾਵੀ ਆਇਆ ਖੇਤੁ ॥

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥

हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चौथे प्रहर (वृद्धावस्था) में जीवन-रूपी कृषि को काटने के लिए यमदूत उपस्थित हो जाते हैं अर्थात् देहि की कृषि तब तक पककर कटने को तैयार हो जाती है।

ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕਿਸੈ ਨ ਮਿਲਿਆ ਭੇਤੁ ॥

जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥

हे वणजारे मित्र ! जब यमदूत उसको पकड़कर चल देते हैं तो प्राणों के अलग होने का रहस्य किसी को भी पता नहीं चलता।

ਭੇਤੁ ਚੇਤੁ ਹਰਿ ਕਿਸੈ ਨ ਮਿਲਿਓ ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ॥

भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥

इस रहस्य बारे कि कब यमदूतों ने प्राणी को पकड़कर आगे ले जाना है, किसी को भी पता नहीं लगा।

ਝੂਠਾ ਰੁਦਨੁ ਹੋਆ ਦੋਆਲੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਇਆ ਪਰਾਇਆ ॥
झूठा रुदनु होआ दोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥
सो हरि का चिन्तन कर, हे मनुष्य ! झूठा है रुदन उसके आसपास। एक क्षण में ही प्राणी परदेसी हो जाता है।

ਸਾਈ ਵਸਤੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ਜਿਸੁ ਸਿਉ ਲਾਇਆ ਹੇਤੁ ॥
साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥
आगामी लोक में प्राणी को वही उपलब्धि होती है, जिसमें उसने चित्त एकाग्र किया होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਲਾਵੀ ਲੁਣਿਆ ਖੇਤੁ ॥੪॥੧॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥
गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे नानक ! जीवन रूपी चौथे प्रहर में मानव जीवन पकी कृषि लावी द्वारा काट ली जाती है। अर्थात् वृद्धावस्था में देहि का अन्त निकट आ जाता है और समय पर यमदूत प्राणी को पकड़ कर ले जाते हैं ॥४॥१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सिरीरागु महला १ ॥
श्रीरागु महला १ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਾਲਕ ਬੁਧਿ ਅਚੇਤੁ ॥
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में जीव बालक बुद्धि वाला एवं ज्ञानहीन होता है।

ਖੀਰੁ ਪੀਐ ਖੇਲਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਹੇਤੁ ॥
खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥
बालक माता का दूध पीता है और उससे बड़ा लाड-प्यार किया जाता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! माता-पिता अपने बालक से बड़ा अनुराग करते हैं।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਨੇਹੁ ਘਨੇਰਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਾਈ ॥
मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥
संसार में व्याप्त मोह-माया के कारण माता-पिता स्नेह में उसके पोषण में उठाए कष्टों की भी उपेक्षा कर देते हैं।

ਸੰਜੋਗੀ ਆਇਆ ਕਿਰਤੁ ਕਮਾਇਆ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਰਾਈ ॥
संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥
संयोग और पूर्व जन्मों के कर्मों की बदौलत प्राणी संसार में आता है और अब अपनी अगली जीवन मर्यादा के लिए कर्म कर रहा है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਬੂਡੀ ਦੂਜੈ ਹੇਤਿ ॥
राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥
राम नाम के बिना मुक्ति नहीं हो सकती और द्वैत भाव में लीन रहने के कारण समूची सृष्टि का विनाश हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਛੂਟਹਿਗਾ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ॥੧॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥
हे नानक ! प्राणी जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान का नाम-सिमरन करके ही जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है।॥१॥

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਮੈ ਮਤਿ ॥
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥
हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी यौवन की भरपूर मस्ती में मस्त रहता है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅੰਧੁਲੇ ਨਾਮੁ ਨ ਚਿਤਿ ॥
अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति
हे वणजारे मित्र ! दिन-रात वह भोग-विलास में आसक्त रहता है और उस अज्ञानी को भगवान का नाम याद ही नहीं आता।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਨਾਹੀ ਹੋਰਿ ਜਾਣੈ ਰਸ ਕਸ ਮੀਠੇ ॥
राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥
राम नाम उसके हृदय में नहीं बसता। वह अन्यों रसों को ही मीठा समझता है।

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਗੁਣ ਸੰਜਮੁ ਨਾਹੀ ਜਨਮਿ ਮਰਹੁਗੇ ਝੂਠੇ ॥
गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥
जिन्हें प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं, जो भगवान का ध्यान नहीं करते, जो प्रभु की महिमा को स्मरण नहीं करते, जो संयम नहीं करते, ऐसे झूठे प्राणी जन्मते-मरते रहेंगे।

ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮੁ ਨਾਹੀ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਨਹੀ ਪੂਜਾ ॥
गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥
जिन्हें प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं, जो भगवान का ध्यान नहीं करते, जो प्रभु की महिमा को स्मरण नहीं करते, जो संयम नहीं करते, ऐसे झूठे प्राणी जन्मते-मरते रहेंगे।

ਨਾਨਕ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਦੁਬਿਧਾ ਵਿਆਪੈ ਦੂਜਾ ॥੨॥
नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥
ऐसे प्राणियों का प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करने से उद्धार हो जाता है। दुविधा में फँसे हुए जीवों को माया का मोह लगा रहता है।॥२॥

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਸਰਿ ਹੰਸ ਉਲਥੜੇ ਆਇ ॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में शरीर-सरोवर पर हंस आ बैठते हैं अर्थात् प्राणी के सिर पर सफेद बाल पकने लगते हैं।

ਜੋਬਨੁ ਘਟੈ ਜਰੂਆ ਜਿਣੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਆਵ ਘਟੈ ਦਿਨੁ ਜਾਇ ॥

जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥

हे वणजारे मित्र ! जीवन बीतने पर शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और धीरे-धीरे शरीर पर प्रौढ़ावस्था हावी होने लगती है।

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਪਛੁਤਾਸੀ ਅੰਧੁਲੇ ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ॥
अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ
अज्ञानी प्राणी, अन्तकाल पश्चाताप करता है, जब यमदूत इसे आ पकड़ते हैं अर्थात् काल आने पर प्राणी पछतावा करने लगता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਾਖਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਇਆ ਪਰਾਇਆ ॥
सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥
वह सब कुछ जिसे प्रतिदिन वह अपना कहता था, क्षण में ही उससे पराया हो जाता है।

ਬੁਧਿ ਵਿਸਰਜੀ ਗਈ ਸਿਆਣਪ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੁਤਾਇ ॥
बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥
यमदूतों के वश पड़ते ही प्राणी का विवेक कुष्ठित हो जाता है। सारी चतुराई धरी रह जाती है और वह अपने अवगुणों को याद कर-करके पछताने लगता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਚੇਤਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥
नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में चित्त लगाकर भगवान का सिमरन करो ॥३॥

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਤਨੁ ਖੀਣੁ ॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में शरीर वृद्ध होकर क्षीण हो जाता है। तन में कमजोरी आ जाती है।

ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਨ ਦੀਸਈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕੰਨੀ ਸੁਣੈ ਨ ਵੈਣ ॥
अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! आंखों-कानों की शक्ति भी चली जाती है, उसे आंखों से दिखाई नहीं देता और कानों से वह सुन नहीं पाता।

ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਜੀਭ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਰਹੇ ਪਰਾਕਉ ਤਾਣਾ ॥
अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥
दाँतों की असमर्थता के कारण जिव्हा का रस भी जाता रहता है और वह पराए सहारे की आशा में जीवनयापन करने लगता है।

ਗੁਣ ਅੰਤਰਿ ਨਾਹੀ ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਮਨਮੁਖ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥

गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥

उस मनमुख के भीतर कोई आध्यात्मिक गुण कभी नहीं पनपता, इसलिए उसे सुख कैसे प्राप्त हो। बेचारा यूं ही जीवन-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

ਖੜੁ ਪਕੀ ਕੁੜਿ ਭਜੈ ਬਿਨਸੈ ਆਇ ਚਲੈ ਕਿਆ ਮਾਣੁ ॥

खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥

शरीर-रूपी खेती पककर झुक जाती है। कभी अपने आप अंग टूटते लगते हैं, शरीर नष्ट हो जाता है। प्राणी के जीवन-मरण की इस लोक में कोई प्रतिष्ठा नहीं रह जाती।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥੪॥

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥

हे नानक ! प्राणी को अपनी जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में गुरु के माध्यम से नाम की पहचान करनी चाहिए ॥४॥

ਓੜਕੁ ਆਇਆ ਤਿਨ ਸਾਹਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਜਰੁ ਜਰਵਾਣਾ ਕੰਨਿ ॥

ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जब जीव को मिले श्वासों का अन्तिम समय निकट आ जाता है तो जालिम बुढापा उसके कंधों पर आ चढ़ता है।

ਇਕ ਰਤੀ ਗੁਣ ਨ ਸਮਾਣਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅਵਗਣ ਖੜਸਨਿ ਬੰਨਿ ॥

इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जिस जीव ने अपने हृदय में कोई गुण संचित नहीं किए उसके अवगुण ही उसे बांधकर ले जाते हैं।

ਗੁਣ ਸੰਜਮਿ ਜਾਵੈ ਚੋਟ ਨ ਖਾਵੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ॥

गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जमणु मरणा ॥

जो जीव संयम,ध्यान एवं समाधि द्वारा अपने भीतर गुण पैदा करके दुनिया से जाता है, वह यमों की मार नहीं खाता और उसका जन्म-मरण मिट जाता है।

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਭੈ ਤਰਣਾ ॥

कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥

वह यम के जाल में नहीं फंसता और यम उसकी तरफ दृष्टि नहीं करता। वह प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करके भवसागर से पार हो जाता है।

ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਜਾਵੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਮਿਟਾਵੈ ॥
पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥
फिर प्रभु के दरबार में उसे बड़ी शोभा प्राप्त होती है। वह सहज ही भगवान में समा जाता है और उसके सभी दुःख मिट जाते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟੈ ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥੫॥੨॥
कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से ही प्राणी की जीवन-मृत्यु से मुक्ति होती है और वह सत्य प्रभु से सम्मान प्राप्त करता हे ॥५॥२॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सिरीरागु महला ४ ॥
श्रीरागु महला ४ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਉਦਰ ਮੰਝਾਰਿ ॥
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी को माँ के गर्भ में डाल देता है।

ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਹਰਿ ਉਚਰੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ ॥
हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥
हे वणजारे मित्र ! माँ के उदर में पड़ा प्राणी ईश्वर की आराधना करता है, वह हरि का नाम अपने मुख से उच्चरित करता रहता है। वह अपने मन द्वारा हरि नाम का सिमरन करता रहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਆਰਾਧੇ ਵਿਚਿ ਅਗਨੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜੀਵਿਆ ॥
हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥
प्राणी बार-बार हरि-नाम की स्तुति और आराधना करता है। गर्भ की अग्नि में वह परमात्मा के नाम के कारण ही जीवित रह पाता है।

ਬਾਹਰਿ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ਮੁਖਿ ਲਾਗਾ ਸਰਸੇ ਪਿਤਾ ਮਾਤ ਥੀਵਿਆ ॥
बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥
जब वह जन्म लेकर माँ के गर्भ में से बाहर आता है तो माता-पिता उसका मुख देखकर प्रसन्न होते हैं।

ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਤਿਸੁ ਚੇਤਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਰਿ ਹਿਰਦੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਚਾਰਿ ॥
जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥
हे प्राणी ! जिसकी यह वस्तु (बालक) है। उसे स्मरण करो। गुरु की दया से अपने हृदय में हरि-नाम का स्मरण करो।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥

हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में तभी नाम-सिमरन किया जा सकता है। यदि भगवान अपनी कृपा धारण करें ॥१॥

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी का मन माया के आकर्षणों में लीन हो जाता है।

ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਪਾਲੀਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਲੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥

मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥

माता-पिता उसे 'मेरा-मेरा' करके बड़े प्यार से पालन-पोषण करते हैं और उसे अपने गले से लगाते हैं।

ਲਾਵੈ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਦਾ ਗਲ ਸੇਤੀ ਮਨਿ ਜਾਣੈ ਖਟਿ ਖਵਾਏ ॥

लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥

माता-पिता (स्वार्थवश) गले से लगाते हुए सोचते हैं कि वह बड़ा होकर उन्हें कमाकर खिलाएगा।

ਜੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣੈ ਮੂੜਾ ਦਿਤੇ ਨੋ ਲਪਟਾਏ ॥

जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥

प्राणी कितना मूर्ख है कि देने वाले (दाता) को तो पहचानने का प्रयास नहीं करता और उसकी प्रदान की हुई नश्वर वस्तुओं से लिपटता फिरता है।

ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਰੈ ਵੀਚਾਰੁ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਮਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥

कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥

कोई गुरमुख ही भक्ति करता है और वह अपने मन में सुरति लगाकर भगवान का ध्यान करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਖਾਇ ॥੨॥

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥

हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में जो प्राणी भगवान का ध्यान करता है, उसे काल कदापि नहीं निगलता ॥२ ॥

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਨੁ ਲਗਾ ਆਲਿ ਜੰਜਾਲਿ ॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में मनुष्य का मन दुनिया के धंधे-व्यवहार में आसक्त हो जाता है।

ਧਨੁ ਚਿਤਵੈ ਧਨੁ ਸੰਚਵੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਨ ਸਮਾਲਿ ॥

धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥

वह धन-दौलत का ही ध्यान करता है और धन-दौलत ही संग्रह करता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! परन्तु हरि-नाम और हरि का चिन्तन नहीं करता।

ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਦੇ ਨ ਸਮਾਲੈ ਜਿ ਹੋਵੈ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥

हरि नामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥

वह कदाचित हरि-नाम और स्वामी हरेि को स्मरण नहीं करता, जो अंत में उसका सहायक होना है।

ਇਹੁ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਮਾਇਆ ਝੂਠੀ ਅੰਤਿ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥
इहु धनु स्मपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥
यह धन-सम्पत्ति और मोह-माया सब झूठे हैं। जिसे अन्तकाल त्याग कर पश्चाताप करते हुए प्राणी चला जाता है।

जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥
जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥
जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, उसका गुरु से मिलन होता है और वह ईश्वर की उपासना में लीन हो जाता है।

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥
गुरु जी उद्बोधन करते हैं हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में जो प्राणी हरि-भजन करता है, वह प्रभु में ही विलीन हो जाता है ॥३॥

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में ईश्वर ने मृत्यु काल निकट ला दिया है।

करि सेवहु पूरा सतिगुरु वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥
करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥
इसलिए हे मित्र ! अपने हाथों से पूर्ण सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा कर, क्योंकि जीवन रूपी समूची रात्रि अब व्यतीत होती जा रही है।

हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥
हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥
प्रतिक्षण परमेश्वर की सेवा करो, इसमें विलम्ब उचित नहीं, क्योंकि इससे तुम युग-युग के लिए अमर हो जाओगे।

हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥
हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥
हे प्राणी ! ईश्वर के रंग में आनंद मनाओ और जन्म-मरण के दुःख को सदैव के लिए भुला दो।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਆਮੀ ਭੇਦੁ ਨ ਜਾਣਹੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਖਾਂ ॥
गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥
सतिगुरु एवं भगवान में कोई अन्तर मत समझो। सतिगुरु को मिलकर भगवान की भक्ति अच्छी लगती है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਸਫਲਿਓ ਰੈਣਿ ਭਗਤਾ ਦੀ ॥੪॥੧॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैणि भगता दी ॥४॥१॥३॥
हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में जो प्राणी भगवान की भक्ति करते हैं, उन भक्तों की जीवन-रात्रेि सफल हो जाती है ॥ ४॥१ ॥३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सिरीरागु महला ५ ॥
श्रीरागु महला ५ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ॥
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी की माता के उदर में डाल देता है।

ਦਸੀ ਮਾਸੀ ਮਾਨਸੁ ਕੀਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕਰਿ ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥
माता के उदर में ही प्रभु दस माह में उसे मनुष्य बना देता है। प्रभु उसे जीवन रूपी समय देता है और इस समय में प्राणी शुभ-अशुभ कर्म करता है।

ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਕਰਮ ਕਮਾਣੇ ਜੈਸਾ ਲਿਖਤੁ ਧੁਰਿ ਪਾਇਆ ॥
मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥
प्रभु यह जीवन-अवधि निर्धारित कर देता है। जीव के पूर्व जन्म के कर्मो अनुसार उसके माथे पर ऐसी किस्मत लिख दी जाती है, जैसे वह कर्म करता है।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਤਿਨ ਭੀਤਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੰਜੋਇਆ ॥
मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥
परमात्मा प्राणी को माता-पिता, भाई, पुत्र-पत्नी इत्यादि के संबंधों में बांध देता है।

ਕਰਮ ਸੁਕਰਮ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਇਸੁ ਜੰਤੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥
हरि स्वयं ही शुभ अथवा अशुभ कर्म प्राणी से करवाता है तथा प्राणी के अपने वश में कुछ नहीं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ॥੧॥

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥१॥

हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान प्राणी को माता के उदर में डाल देता है ॥१॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह और तृष्णा की तरंगों में बहती है।

बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहंमेइ ॥

बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहमेइ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! अहंकार में मदमस्त होने के कारण प्राणी बुरा-भला पहचानने में असमर्थ होता है।

बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥

बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥

प्राणी अच्छे-बुरे की पहचान नहीं करता और आगे बढ़ने का मार्ग उसके लिए अधिक कठोर है।

पूरा सतिगुरु कबहुँ न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥

पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥

वह सतिगुरु को पहचानकर उसकी सेवा में लीन नहीं होता और निर्दयी यमदूत उसके सिर पर (मृत्यु रूपी) दण्ड धारण किए खड़ा रहता है।

धरम राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥

धरम राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥

हे मूर्ख मनुष्य ! जब धर्मराज तुझे पकड़कर पूछेगा? तुम उसको अपने कर्मों का क्या उत्तर दोगे?

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥

हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह एवं तृष्णा की तरंगों में बहती है॥२॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में ज्ञानहीन,मुर्ख प्राणी विषय-वासनाओं का विष संग्रह करता है।

ਪੁਤ੍ਰਿ ਕਲਤ੍ਰਿ ਮੋਹਿ ਲਪਟਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ ਲੋਭਾਨੁ ॥
पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥
वह अपने पुत्र एवं पत्नी के मोह में फँसा हुआ है और उसके मन में लोभ की लहरें उठती हैं।

ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ ਲੋਭਾਨੁ ਪਰਾਨੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥
अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥
मन में आकर्षक पदार्थों के लोभ की लहरें विद्यमान हैं। यह ईश्वर की ओर चित्त नहीं लगाता और ईश्वर-उपासना नहीं करता।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਆ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥
वह सत्संग के साथ मेल-मिलाप नहीं करता और विभिन्न योनियों के अन्दर कष्ट सहन करता है।

ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਲਗੋ ਧਿਆਨੁ ॥
सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥
जगत् के सृजनहार स्वामी को उसने विस्मृत कर दिया है और वह एक क्षण मात्र भी अपनी वृत्ति प्रभु की तरफ नहीं लगाता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਬਿਖੁ ਸੰਚੇ ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥੩॥
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥
हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में अज्ञान में अंधा हुआ प्राणी विषय-वासनाओं का विष संचित करता रहता है।॥३॥

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु का दिन निकट आ रहा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਤੇਰਾ ਦਰਗਹ ਬੇਲੀ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! तू सतिगुरु की शरण लेकर ईश्वर का नाम स्मरण कर, वह परलोक में तेरा एकमात्र सहारा होगा।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਪਰਾਣੀ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥
गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥
हे प्राणी ! गुरु-उपदेशानुसार नाम को स्मरण कर और अंत में यही तेरा सखा होगा।

ਇਹੁ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਝੂਠੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ॥
इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥
जिस मोह-माया के साथ तुमने लगन लगा रखी है, यह मिथ्या है, मृत्यु के समय यह तुम्हारा साथ नहीं देगी।

ਸਗਲੀ ਰੈਣਿ ਗੁਦਰੀ ਅੰਧਿਆਰੀ ਸੇਵਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥
तेरी जीवन रूपी समूह रात्रि अज्ञानता के अंधेरे में बीत गई है, अब भी यदि सतिगुरु की शरण लेकर उनकी सेवा करोगे तो तेरे अंतर्मन में ज्ञान का प्रकाश उदय हो जाएगा।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੪॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥
हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु-काल निकट आ रहा है॥४॥

ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਉਠਿ ਚਲੇ ਕਮਾਣਾ ਸਾਥਿ ॥
लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥
हे मेरे वणजारे मित्र !जब भगवान का सन्देश आ जाता है तो प्राणी इस दुनिया को छोड़कर चल देता है। उसके किए कर्म उसके साथ जाते हैं।

ਇਕ ਰਤੀ ਬਿਲਮ ਨ ਦੇਵਨੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਓਨੀ ਤਕੜੇ ਪਾਏ ਹਾਥ ॥
इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! वह एक क्षण की भी देरी नहीं करने देते। यमदूत नश्वर प्राणी को मजबूत हाथों से पकड़कर ले जाते हैं।

ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਦੁਹੇਲੇ ॥
लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥
प्रभु का लिखित आदेश मिलते ही प्राणी को यमदूत संसार से अलग कर देते हैं। ऐसे में मनमुखी प्राणी सदा कष्ट सहन करते हैं।

ਜਿਨੀ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਸੇ ਦਰਗਹ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥
जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥
जो प्राणी पूर्ण सतिगुरु की भरपूर सेवा करते हैं, वे परमात्मा के दरबार में सदैव सुखी रहते हैं।

ਕਰਮ ਧਰਤੀ ਸਰੀਰੁ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ ਜੋ ਬੋਵੈ ਸੋ ਖਾਤਿ ॥
करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥
इस कलियुग में शरीर धरती रूप है। इस शरीर रूपी धरती में मनुष्य जो कर्म रूपी बीज बोता है, वह उसका वही फल प्राप्त करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਵਾਰੇ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਭਵਾਤਿ ॥੫॥੧॥੪॥
कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥
हे नानक ! भगवान के भक्त उसके दरबार में सुन्दर लगते हैं और मनमुख हमेशा ही जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकते रहते हैं ॥५॥१॥४॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ਛੰਤ
सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत
श्रीरागु महला ४ घरु २ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ ਪੇਈਅੜੈ ਕਿਉ ਕਰਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਿਖੈ ॥
मुंध इआणी पेईअड़ै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥
यदि नवयौवन जीव-स्त्री अपने बाबुल (इहलोक) के घर में ज्ञानहीन ही रहे तो वह अपने पति-प्रभु के दर्शन कैसे कर सकती है?

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਹੁਰੜੈ ਕੰਮ ਸਿਖੈ ॥
हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कम सिखै ॥
जब भगवान अपनी कृपा करता है तो वह गुरु के माध्यम से ससुराल (परलोक) के कार्य सीख लेती है।

ਸਾਹੁਰੜੈ ਕੰਮ ਸਿਖੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥
साहुरड़ै कम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥
गुरमुख पत्नी पिया के घर के कामकाज सीखती है और सदैव ही अपने ईश्वर का चिन्तन करती है।

ਸਹੀਆ ਵਿਚਿ ਫਿਰੈ ਸੁਹੇਲੀ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਬਾਹ ਲੁਡਾਏ ॥
सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाए ॥
यह अपनी सत्संगी सखियों में रहकर सुखी जीवन व्यतीत करती है और मरणोपरांत वह अपनी बाह घुमाती हुई अर्थात निश्चित होकर हरि के दरबार में जाती है।

ਲੇਖਾ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੀ ਬਾਕੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਿਰਖੈ ॥
लेखा धरम राइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥
हरि-परमेश्वर के नाम का उच्चारण करने से वह धर्मराज के हिसाब-किताब से बच जाती है।

ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ ਪੇਈਅੜੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦਿਖੈ ॥੧॥
मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥
इस तरह अपने पीहर (इहलोक) में ही ज्ञानहीन नवयौवन जीव-स्त्री अपने पति-परमेश्वर के साक्षात् दर्शन कर लेती है॥१॥

ਵੀਆਹੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਗੁਰਮੁਖੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥
वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥
हे मेरे बाबुल ! अब मेरा विवाह हो गया है, गुरु के उपदेश द्वारा मैंने पति-परमेश्वर को पा लिया है।

ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਪ੍ਰਚੰਡੁ ਬਲਾਇਆ ॥
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥
गुरु ने मेरे अन्तर्मन से अज्ञान का अंधेरा दूर कर दिया है। गुरु ने मेरे अन्तर्मन में ज्ञान का प्रचण्ड दीपक प्रज्वलित कर दिया है।

ਬਲਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਬਿਨਸਿਆ ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਲਾਧਾ ॥
बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥
गुरु का प्रदान किया हुआ ज्ञान का प्रकाश होने पर अँधेरा नष्ट हो गया है और उस आलोक में हरि के नाम का अमूल्य रत्न-पदार्थ मिल गया है।

ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ਆਪੁ ਆਪੈ ਗੁਰਮਤਿ ਖਾਧਾ ॥
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥
मेरे अहंकार का रोग दूर हो गया है और मेरा दुख मिट गया है। गुरु के उपदेश अधीन अपने अहंकार को मैंने स्वयं ही निगल लिया है।

ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਅਬਿਨਾਸੀ ਨਾ ਕਦੇ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇਆ ॥
अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥
मैंने अकाल मूर्ति को अपना पति वरण कर लिया है। वह अनश्वर है और इसलिए वह जन्म और मरण से सदा ऊपर है।

ਵੀਆਹੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਬਾਬੋਲਾ ਗੁਰਮੁਖੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥
वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥२॥
हे मेरे बाबुल ! अब मेरा विवाह हो गया है और गुरु के उपदेश अनुसार पति-परमेश्वर हरि को प्राप्त कर लिया है ॥२॥

ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤੇ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਹਰਿ ਜਨ ਮਿਲਿ ਜੰਞ ਸੁਹੰਦੀ ॥

हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जंञ सुहंदी ॥

हे मेरे बाबुल ! मेरा हरि-परमेश्वर सत्यस्वरूप है; भगवान के भक्त मिलकर भगवान की बारात में आए हैं। उनके आगमन से बारात बहुत सुन्दर लगती है।

ਪੇਵਕੜੈ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸੁਹੇਲੀ ਵਿਚਿ ਸਾਹੁਰੜੈ ਖਰੀ ਸੋਹੰਦੀ ॥

पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥

मैं अपने पीहर (इहलोक) में भगवान का नाम जपकर सुखपूर्वक रहती हूँ। अब मैं अपने ससुराल (परलोक) में शोभा प्राप्त कर रही हूँ।

ਸਾਹੁਰੜੈ ਵਿਚਿ ਖਰੀ ਸੋਹੰਦੀ ਜਿਨਿ ਪੇਵਕੜੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥

साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥

जिन्होंने अपने पीहर (इहलोक) में नाम-सिमरन किया होता है, उनकी ससुराल (परलोक) में बड़ी शोभा होती है।

ਸਭੁ ਸਫਲਿਓ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨਾ ਮਨੁ ਜਿਣਿ ਪਾਸਾ ਢਾਲਿਆ ॥

सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥

उनका समूचा जीवन सफल हो जाता है, जिन्होंने गुरु के उपदेशानुसार मन की तृष्णाओं पर विजय प्राप्त की है।

ਹਰਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਕਾਰਜੁ ਸੋਹਿਆ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਪੁਰਖੁ ਅਨੰਦੀ ॥

हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥

ईश्वर के सन्तजनों से भेंट करके मेरा विवाह कार्य सफल हुआ है और आनन्द के स्वरूप प्रभु को मैंने पति के तौर पर पा लिया है।

ਹਰਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਮੇਰੇ ਬਾਬੋਲਾ ਹਰਿ ਜਨ ਮਿਲਿ ਜੰਞ ਸੋਹੰਦੀ ॥੩॥

हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जंञ सोहंदी ॥३॥

हे मेरे बाबुल ! भगवान सत्यस्वरूप है। भगवान के भक्तों के आगमन से बारात बहुत सुन्दर लगती है॥३॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਮੈ ਦਾਜੋ ॥
हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥
हे मेरे बाबुल ! मुझे दहेज में हरि-प्रभु के नाम का दान दो।

ਹਰਿ ਕਪੜੋ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਦੇਵਹੁ ਜਿਤੁ ਸਵਰੈ ਮੇਰਾ ਕਾਜੋ ॥
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥
वस्त्रों के स्थान पर हरि का नाम दो और शोभा बढ़ाने वाले आभूषणों इत्यादि के स्थान पर भगवान का नाम ही दो। भगवान के नाम से मेरा विवाह कार्य संवर जाएगा।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਕਾਜੁ ਸੁਹੇਲਾ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਾਨੁ ਦਿਵਾਇਆ ॥
हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥
भगवान की भक्ति से ही विवाह-कार्य सुखदायक होता है। सतिगुरु ने मुझे भगवान की भक्ति का ही दान दिलवाया है।

ਖੰਡਿ ਵਰਭੰਡਿ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਹੋਈ ਇਹੁ ਦਾਨੁ ਨ ਰਲੈ ਰਲਾਇਆ ॥
खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥
इस दान से समूचे ब्रह्माण्ड एवं समस्त खण्डों में मेरी शोभा हो गई है। कोई अन्य दान इस दान की बराबरी नहीं कर सकता।

ਹੋਰਿ ਮਨਮੁਖ ਦਾਜੁ ਜਿ ਰਖਿ ਦਿਖਾਲਹਿ ਸੁ ਕੂੜੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਕਚੁ ਪਾਜੋ ॥
होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥
हरिनाम के दहेज के अतिरिक्त जो लोग दान-दहेज का प्रदर्शन करते हैं, वे मिथ्या डम्बरी और अहंकारी हैं।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਮੈ ਦਾਜੋ ॥੪॥
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥४॥
हे मेरे बाबुल ! मुझे दहेज में केवल हरि-नाम का ही दान व दहेज प्रदान करो॥४॥

ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਮੇਰੇ ਬਾਬੋਲਾ ਪਿਰ ਮਿਲਿ ਧਨ ਵੇਲ ਵਧੰਦੀ ॥
हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥
हे मेरे बाबुल ! प्रभु-परमेश्वर सर्वव्यापक है। हे मेरे बाबुल ! हरि प्रभु को मिलकर जीव-स्त्री की लता विकसित होती है।

ਹਰਿ ਜੁਗਹ ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਜੁਗਹ ਜੁਗੋ ਸਦ ਪੀੜੀ ਗੁਰੂ ਚਲੰਦੀ ॥
हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥
अनेक युगों से गुरु वंश सदैव चला आता है।

ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਪੀੜੀ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥
जो गुरु के माध्यम से नाम-सिमरन करते हैं वहीं गुरु का वंश होता है। सतिगुरु का वंश प्रत्येक युग में चलता है।

ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨ ਕਬ ਹੀ ਬਿਨਸੈ ਜਾਵੈ ਨਿਤ ਦੇਵੈ ਚੜੈ ਸਵਾਇਆ ॥
हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥
सर्वशक्तिमान परमेश्वर कदापि मरता या जन्मता नहीं। वह जो कुछ देता है सदैव ही बढ़ता जाता है।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਸੰਤ ਹਰਿ ਏਕੋ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੋਹੰਦੀ ॥
नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥
हे नानक ! अद्वितीय प्रभु संतों का संत है। ईश्वर के नाम का उच्चारण करने से पत्नी सुशोभित हो जाती है।

ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਮੇਰੇ ਬਾਬੁਲਾ ਪਿਰ ਮਿਲਿ ਧਨ ਵੇਲ ਵਧੰਦੀ ॥੫॥੧॥
हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥
हे मेरे बाबुल ! मुझे हरि-रूप पति मिला है, हरि सर्वव्यापक है। अपने पति से मिलकर पत्नी की अपने परिवार में अभिवृद्धि हुई है ॥५॥१॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ
सिरीरागु महला ५ छंत
श्रीरागु महला ५ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! भगवान का नाम-सिमरन करो। हे मेरे प्रिय मित्र मन !

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਨਿਬਹੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲੇ ॥
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥
भगवान का नाम हमेशा तेरे साथ रहेगा। अतः भगवान के नाम का ध्यान करो !

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਜਾਏ ॥
संगि सहाई हरि नामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥
यह तेरे साथ रहेगा और तेरी सहायता करेगा। नाम-सिमरन करने वाला कोई भी दुनिया से खाली हाथ नहीं जाता।

ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਸੇਈ ਫਲ ਪਾਵਹਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥
जो भगवान के चरण-कमलों में अपना चित लगाता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਬਨਵਾਰੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥
यह प्रभु जल एवं थल में सर्वव्यापक है। वह समस्त जीवों के हृदय में विद्यमान है और सबको अपनी कृपा-दृष्टि से देखता हैं।

ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਧਸੰਗਿ ਭ੍ਰਮੁ ਜਾਲੇ ॥੧॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥
नानक शिक्षा देते हैं कि हे मेरे प्रिय मन ! संतों की संगति करके माया के भ्रम-जाल को नष्ट कर दो ॥१॥

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰੇ ॥
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! भगवान के बिना माया का जगत् रूप प्रसार झूठा है।

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਿਖੁ ਸਾਗਰੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥
यह संसार विष से भरा हुआ सागर है।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਕਰਿ ਬੋਹਿਥੁ ਕਰਤੇ ਸਹਸਾ ਦੂਖੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥
चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥
अतः ईश्वर के चरणों को अपना जहाज बनाओ फिर तुझे कोई दुःख एवं भय नहीं लगेगा।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟੈ ਵਡਭਾਗੀ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ॥
गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥
जिस भाग्यशाली को पूर्ण गुरु मिल जाता है, वह आठ प्रहर प्रभु नाम का भजन करता रहता है।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਸੇਵਕ ਸੁਆਮੀ ਭਗਤਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥
आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥
हे प्रभु ! तू सृष्टि के आदि एवं युगों से ही अपने सेवकों का स्वामी है। तेरा नाम भक्तों का आधार है।

ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਝੂਠ ਪਸਾਰੇ ॥੨॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥
नानक शिक्षा देते हैं किं हे मेरे प्रिय मित्र मन ! भगवान के बिना जगत् का यह माया-प्रसार झूठा है ॥२॥

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਲਦੇ ਖੇਪ ਸਵਲੀ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! हरिनाम के व्यापार में ही लाभ है।

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਦਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਮਲੀ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥
हे मेरे मित्र मन ! ईश्वर के द्वार पर आसन जमा ले।

ਹਰਿ ਦਰੁ ਸੇਵੇ ਅਲਖ ਅਭੇਵੇ ਨਿਹਚਲੁ ਆਸਣੁ ਪਾਇਆ ॥
हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥
जिन प्राणियों ने अगाध व भेद-रहित ईश्वर का द्वार पकड़ा है, वे वहीं समाधिस्थ हो गए हैं।

ਤਹ ਜਨਮ ਨ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਸੰਸਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥
तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥
वे जन्म-मरण तथा आवागमन से मुक्त हो गए हैं, उनके संशयों एवं दुःखों का नाश हो जाता है।

ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤ ਕਾ ਕਾਗਦੁ ਫਾਰਿਆ ਜਮਦੂਤਾ ਕਛੂ ਨ ਚਲੀ ॥
चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥
चित्रगुप्त द्वारा उनके कर्मों का लेखा-जोखा भी मिट जाता है और यमदूत विवश हो जाते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹਰਿ ਲਦੇ ਖੇਪ ਸਵਲੀ ॥੩॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥
नानक शिक्षा देते हैं कि हरि नाम रूपी व्यापार लाभदायक है। अत: इस व्यापार को लेकर अपने साथ ले जाओ ॥३॥

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕਰਿ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਨਿਵਾਸੋ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! संतों की संगति में निवास करो।

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਰਗਾਸੋ ॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु जपत परगासो ॥

हे मेरे मित्र मन ! ईश्वर का नाम जपने से ज्ञान का प्रकाश उज्ज्वल होता है।

ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਇਛ ਸਗਲੀ ਪੁੰਨੀਆ ॥

सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥

प्रभु जगत् का स्वामी है और जीवों को सुख देने वाला है। उसकी आराधना करने से समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

ਪੁਰਬੇ ਕਮਾਏ ਸ੍ਰੀਰੰਗ ਪਾਏ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥
पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥
वही सर्वोत्तम प्राणी ईश्वर को पाता है, जिसके पूर्व जन्म के कर्म शुभ होते हैं, वह लम्बे वियोग से मुक्त होकर अपने भगवान में मिल जाता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਰਬਤਿ ਰਵਿਆ ਮਨਿ ਉਪਜਿਆ ਬਿਸੁਆਸੋ ॥
अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥
मेरे चित्त के भीतर उसमें विश्वास उत्पन्न हो गया है जो प्रत्येक जगह अन्दर और बाहर व्यापक हो रहा है।

ਨਾਨਕੁ ਸਿਖ ਦੇਇ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਿ ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਨਿਵਾਸੋ ॥੪॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥
नानक शिक्षा देते हैं कि हे मेरे प्रिय मित्र मन ! संतों की संगति में निवास करो। ॥४॥

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! हरि की प्रेम भक्ति में ऐसे लीन रह ।

ਮਨ ਪਿਆਰਿਆ ਜੀਉ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਜਲ ਮਿਲਿ ਜੀਵੇ ਮੀਨਾ ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥
हे मेरे प्रिय मित्र मन ! जैसे मछली जल को मिल कर ही जीवित रहती है।

ਹਰਿ ਪੀ ਆਘਾਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੇ ਸ੍ਰਬ ਸੁਖਾ ਮਨ ਵੁਠੇ ॥
हरि पी आघाने अम्रित बाने स्रब सुखा मन वुठे ॥
जो व्यक्ति अमृतवाणी द्वारा भगवान के नाम रूपी जल को पीकर तृप्त हो जाते हैं, उनके मन में सर्व सुख आ बसते हैं।

ਸ੍ਰੀਧਰ ਪਾਏ ਮੰਗਲ ਗਾਏ ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਤੁਠੇ ॥
स्रीधर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥
वह भगवान को पा लेते हैं और भगवान का मंगल गायन करते हैं। सतिगुरु उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

ਲੜਿ ਲੀਨੇ ਲਾਏ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ਨਾਉ ਸਰਬਸੁ ਠਾਕੁਰਿ ਦੀਨਾ ॥
लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥
प्रभु उन्हें अपने साथ मिला लेता है। जगत् का स्वामी प्रभु उन्हें अपना नाम प्रदान करता है, जो नवनिधियाँ प्रदान करने वाला है।

ਨਾਨਕ ਸਿਖ ਸੰਤ ਸਮਝਾਈ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥੫॥੧॥੨॥
नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥५॥१॥२॥
हे नानक ! जिसे संतों ने नाम-सिमरन की शिक्षा समझा दी है, वह भगवान की प्रेम-भक्ति में मग्न रहता है। ॥५॥१॥२॥

ਸਿਰੀਰਾਗ ਕੇ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫
सिरीराग के छंत महला ५
सिरीराग के छंत महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਡਖਣਾ ॥
डखणा ॥
डखणा ॥

ਹਠ ਮਝਾਹੂ ਮਾ ਪਿਰੀ ਪਸੇ ਕਿਉ ਦੀਦਾਰ ॥
हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥
मेरा प्रिय-प्रभु मेरे अन्तर्मन में ही निवास करता है। फिर मैं उसके दर्शन कैसे करूँ।

ਸੰਤ ਸਰਣਾਈ ਲਭਣੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥੧॥
संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥
हे नानक ! संतों की शरण ग्रहण करने से प्राणों का आधार प्रभु मिल जाता है। ॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰੀਤਿ ਸੰਤਨ ਮਨਿ ਆਵਏ ਜੀਉ ॥
चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥
प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम करने की मर्यादा संतों के मन में बसती है।

ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਬਿਪਰੀਤਿ ਅਨੀਤਿ ਦਾਸਾ ਨਹ ਭਾਵਏ ਜੀਉ ॥
दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥
माया से प्रेम करना मर्यादा और नीति के विरुद्ध है।

ਦਾਸਾ ਨਹ ਭਾਵਏ ਬਿਨੁ ਦਰਸਾਵਏ ਇਕ ਖਿਨੁ ਧੀਰਜੁ ਕਿਉ ਕਰੈ ॥
दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥
प्रभु के भक्तों को यह विपरीत मर्यादा अच्छी नहीं लगती। भगवान के दर्शनों के बिना उसके भक्त एक क्षण भर के लिए भी कैसे धैर्य कर सकते हैं ?

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੀਨਾ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਛੁਲੀ ਜਿਉ ਮਰੈ ॥
नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥
जैसे मछली जल के बिना तड़प-तड़प कर मर जाती है, वैसे ही नाम के बिना प्रभु-भक्तों का मन एवं तन मृत समान हो जाते हैं।

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੇ ਗੁਣ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਗਾਵਏ ॥
मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंगि मिलि गावए ॥
मेरे प्राणों के आधार प्रिय प्रभु ! मुझे मिलो, चूंकि संतों की सभा में मिलकर मैं तेरी महिमा-स्तुति करूँ।

ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵਏ ॥੧॥
नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥१॥
नानक के स्वामी ! मुझ पर कृपा करो, चूंकि मेरा मन एवं तन तेरे ही स्वरूप में समा जाए ॥ १॥

ਡਖਣਾ ॥
डखणा ॥
डखणा ॥

ਸੋਹੰਦੜੋ ਹਭ ਠਾਇ ਕੋਇ ਨ ਦਿਸੈ ਡੂਜੜੋ ॥
सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥
उस प्रभु के अलावा मुझे अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता

ਖੁਲ੍ਹੜੇ ਕਪਾਟ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਤੇ ॥੧॥
खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु को मिलने से मेरे कपाट खुल गए हैं। अब मुझे ज्ञान हो गया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। ॥१॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਤੇਰੇ ਬਚਨ ਅਨੂਪ ਅਪਾਰ ਸੰਤਨ ਆਧਾਰ ਬਾਣੀ ਬੀਚਾਰੀਐ ਜੀਉ ॥

तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥

हे संतों के आधार प्रभु ! तेरे वचन बहुत सुन्दर एवं अपार हैं। मनुष्य को वाणी का ही चिन्तन करना चाहिए।

ਸਿਮਰਤ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ ਪੂਰਨ ਬਿਸੁਆਸ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੀਐ ਜੀਉ ॥

सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥

जो व्यक्ति श्वास-श्वास एवं भोजन के ग्रास के साथ प्रभु के नाम का सिमरन करते हैं, उनकी प्रभु में पूर्ण आस्था हो जाती है।

ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਬੇਸਾਰੀਐ ਨਿਮਖ ਨਹੀ ਟਾਰੀਐ ਗੁਣਵੰਤ ਪ੍ਰਾਨ ਹਮਾਰੇ ॥

किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥

हे प्रभु ! तुम्हें हम क्यों विस्मृत करें? हे अनंत गुणों वाले प्रभु ! तुम ही मेरे प्राण हो। फिर तुझे एक क्षण भर के लिए भी क्यों विस्मृत किया जाए।

ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਫਲ ਦੇਤ ਹੈ ਸੁਆਮੀ ਜੀਅ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਸਾਰੇ ॥

मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥

मेरा प्रभु मुझे मनोवांछित फल प्रदान करता है। यह मेरे मन की पीड़ा को जानता है।

ਅਨਾਥ ਕੇ ਨਾਥੇ ਸ੍ਰਬ ਕੈ ਸਾਥੇ ਜਪਿ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੀਐ ॥

अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥

हे अनाथों के नाथ प्रभु ! तू हमेशा समस्त जीवों के साथ रहता है। तेरा नाम-स्मरण करने से मानव जन्म जुए की बाजी की तरह व्यर्थ नहीं जाता।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰੀਐ ॥੨॥

नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥

नानक की प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे भवसागर से पार कर दीजिए ॥२ ॥

ਡਖਣਾ ॥

डखणा ॥

डखणा ॥

ਧੂੜੀ ਮਜਨੁ ਸਾਧ ਖੇ ਸਾਈ ਥੀਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥

धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥

हे नानक ! संतों की चरण-धूलि में वही व्यक्ति स्नान करता है, जिस पर मालिक-प्रभु कृपालु होता है।

ਲਧੇ ਹਭੇ ਥੋਕੜੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਨੁ ਮਾਲ ॥੧॥

लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥

जिन्हें हरि-नाम रूपी धन मिल जाता है, समझ लो उन्हें सभी पदार्थ मिल गए हैं॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥

छंतु ॥

छंद॥

ਸੁੰਦਰ ਸੁਆਮੀ ਧਾਮ ਭਗਤਹ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ਆਸਾ ਲਗਿ ਜੀਵਤੇ ਜੀਉ ॥

सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥

जगत् के स्वामी प्रभु का धाम अत्यंत सुन्दर है। वह प्रभु के भक्तों का निवास-स्थान है। प्रभु के भक्त उस सुन्दर स्थान की प्राप्ति की आशा में जीते हैं।

ਮਨਿ ਤਨੇ ਗਲਤਾਨ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਤੇ ਜੀਉ ॥

मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अम्रितु पीवते जीउ ॥

वह अपने मन एवं तन द्वारा भगवान का नाम-सिमरन करने में मग्न रहते हैं। वे हरि-रस का पान करते हैं और सदैव स्थिर जीवन वाले हो जाते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਪੀਵਤੇ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਥੀਵਤੇ ਬਿਖੈ ਬਨੁ ਫੀਕਾ ਜਾਨਿਆ ॥
अम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥
वे विष रूप संसार के रसों को फीका समझते हैं।

ਭਏ ਕਿਰਪਾਲ ਗੋਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਨਿਧਿ ਮਾਨਿਆ ॥
भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥
जब मेरा गोपाल प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया तो मेरे मन ने सत्संगति को नाम की निधि स्वीकार कर लिया।

ਸਰਬਸੋ ਸੁਖ ਆਨੰਦ ਘਨ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਸੀਵਤੇ ॥
सरबसो सूख आनंद घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥
प्रभु के प्रिय भक्त समस्त सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त करते हैं। वह हरि-नाम रूपी रत्न को अपने हृदय में पिरो कर रखते हैं।

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਵਿਸਰੈ ਪ੍ਰਾਨ ਆਧਾਰਾ ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਜੀਵਤੇ ॥੩॥
इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥३॥
हे नानक ! प्राणों का आधार प्रभु उन्हें तिल भर समय के लिए भी विस्मृत नहीं होता। वे हर समय उसका नाम-सिमरन करके ही जीवित रहते हैं। ॥३॥

ਡਖਣਾ ॥
डखणा ॥
डखणा ॥

ਜੋ ਤਉ ਕੀਨੇ ਆਪਣੇ ਤਿਨਾ ਕੂੰ ਮਿਲਿਓਹਿ ॥
जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ॥
हे प्रभु ! तुम उन्हें ही मिलते हो, जिन्हें तुम अपना बना लेते हो।

ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਮੋਹਿਓਹੁ ਜਸੁ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਸੁਣਿਓਹਿ ॥੧॥
आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥१॥
हे नानक ! प्रभु भक्तजनों से अपनी महिमा सुनकर स्वयं मुग्ध हो जाता है।॥१॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਪ੍ਰੇਮ ਠਗਉਰੀ ਪਾਇ ਰੀਝਾਇ ਗੋਬਿੰਦ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ਜੀਉ ॥
प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥
भक्तों ने प्रेम की नशीली बूटी भगवान को प्रसन्न करके अपने मोह-जाल में फँसा लिया है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਅਗਾਧਿ ਕੰਠੇ ਲਗਿ ਸੋਹਿਆ ਜੀਉ ॥
संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥
संतों की दया से अथाह परमेश्वर के गले लगकर वह शोभा प्राप्त करता है।

ਹਰਿ ਕੰਠਿ ਲਗਿ ਸੋਹਿਆ ਦੋਖ ਸਭਿ ਜੋਹਿਆ ਭਗਤਿ ਲਖਜਣ ਕਰਿ ਵਸਿ ਭਏ ॥
हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ॥
वह भगवान के कण्ठ से लगकर शोभा प्राप्त करता है और उसके सभी दुख नाम के फलस्वरूप नष्ट हो गए हैं। उसकी भक्ति के गुणों के कारण प्रभु उसके वश में हो गया है

ਮਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਵੁਠੇ ਗੋਵਿਦ ਤੁਠੇ ਜਨਮ ਮਰਣਾ ਸਭਿ ਮਿਟਿ ਗਏ ॥
मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥
जब गोबिंद प्रसन्न हुए तो सभी सुख उसके मन में आकर बस गए हैं और जन्म - मृत्यु के चक्र टूट गया है ।

ਸਖੀ ਮੰਗਲੋ ਗਾਇਆ ਇਛ ਪੁਜਾਇਆ ਬਹੁੜਿ ਨ ਮਾਇਆ ਹੋਹਿਆ ॥
सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥
जीव रूपी स्त्री ने अपनी सत्संगी सहेलियों के साथ मिलकर मंगल गायन किया है। उसकी मनोकामनाएँ पूरी हो गई है। अब वह माया के मोह में नहीं फँसेगी ।

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਨਹੀ ਪੋਹਿਆ ॥੪॥
करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥४॥
हे नानक ! प्रिय प्रभु ने जिनका हाथ पकड़ा है उसे भवसागर ने स्पर्श नहीं किया ॥४॥

ਡਖਣਾ ॥
डखणा ॥
डखणा ॥

ਸਾਈ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੁ ਕੀਮ ਨ ਕੋਈ ਜਾਣਦੋ ॥
साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥
ईश्वर का नाम अमूल्य है। इसका मूल्य कोई भी नहीं जानता।

ਜਿਨਾ ਭਾਗ ਮਥਾਹਿ ਸੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣਦੋ ॥੧॥
जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥१॥
जिनके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं, हे नानक ! वे ईश्वर की प्रीति का आनंद प्राप्त करते हैं॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਕਹਤੇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸੁਣਤੇ ਸਭਿ ਧੰਨੁ ਲਿਖਤੀ ਕੁਲੁ ਤਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥
कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥
हरिनाम इतना पावन है कि उसका मुख से उच्चारण करने वाले पवित्र हो जाते है। वे सभी धन्य हैं, जो प्रभु के नाम को सुनते हैं और प्रभु नाम महिमा को लिखने वालों का तो समूचा वंश ही भवसागर से पार हो जाता है।

ਜਿਨ ਕਉ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਤਿਨੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥
जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥
जिन्हें संतों की संगत मिल जाती हैं, वे परमात्मा के नाम में मग्न हो जाता है और ईश्वर का चिन्तन करता हैं।

ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿਆ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿਆ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕਰੀ ॥
ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥
जो ब्रह्म का चिन्तन करते हैं वे अपना जीवन सफल कर लेते हैं और उन पर ठाकुर की बड़ी कृपा होती है।

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਹਰਿ ਜਸੋ ਦੀਨੇ ਜੋਨਿ ਨਾ ਧਾਵੈ ਨਹ ਮਰੀ ॥
करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥
ईश्वर उनका हाथ थाम कर उन्हें यश प्रदान करता है और योनियों के आवागमन से मुक्त होकर जन्म-मरण के बंधन में नहीं पड़ते।

ਸਤਿਗੁਰ ਦਇਆਲ ਕਿਰਪਾਲ ਭੇਟਤ ਹਰੇ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮਾਰਿਆ ॥
सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥
दयालु एवं कृपालु सतिगुरु को मिलकर काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं।

ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਇ ਅਕਥੁ ਸੁਆਮੀ ਸਦਕੈ ਜਾਇ ਨਾਨਕੁ ਵਾਰਿਆ ॥੫॥੧॥੩॥
कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥
जगत् का स्वामी अकथनीय है और उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती। नानक उस पर तन-मन से न्यौछावर हैं। इसलिए वह उस पर कुर्बान जाता है॥ ५ ॥ १॥३ ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ਵਣਜਾਰਾ
सिरीरागु महला ४ वणजारा
श्रीरागु महला ४ वणजारा

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु गुरप्रसादि ॥
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਉਤਮੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਿਰਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥
हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥
जिस परमात्मा ने यह सृष्टि-रचना की है, उसका 'हरि-हरि' नाम सबसे उत्तम है।

ਹਰਿ ਜੀਅ ਸਭੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਸੋਇ ॥
हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥
वह हरि-परमेश्वर समस्त जीवों का पालन-पोषण करता है और वह राम सर्वव्यापक है।

ਸੋ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
इसलिए सदैव उस परमात्मा का ध्यान करना चाहिए। चूंकि उसके अतिरिक्त जीव का अन्य कोई सहारा नहीं है।

ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਸੇ ਛੋਡਿ ਚਲੇ ਦੁਖੁ ਰੋਇ ॥
जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥
जो व्यक्ति अपना चित्त माया के मोह में लगाकर रखते हैं, वे मृत्यु समय दुखी होकर विलाप करते हुए सब कुछ दुनिया में छोड़कर ही चले जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਹੋਇ ॥੧॥
जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान का नाम-सिमरन करते हैं, अन्तिम समय भगवान का नाम ही उनका साथी बनता है॥ १॥

ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
मेरे भगवान के अलावा मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है।

ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਪਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਵਡਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! भगवान तो गुरु की शरण ग्रहण करने से ही मिलता है। यदि मनुष्य की किस्मत अच्छी हो तो ही भगवान मिलता है।॥१॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਵਿਣੁ ਭਾਈਆ ਹਰਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਨਾਉ ॥
संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥
हे भाई ! संतजनों की कृपा बिना ईश्वर का नाम प्राप्त नहीं हुआ।

ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਜਿਉ ਵੇਸੁਆ ਪੁਤੁ ਨਿਨਾਉ ॥
विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥
स्वेच्छाचारी अहंकारवश ऐसे कर्म करते हैं, जैसे वेश्या-पुत्र पिता का नाम नहीं जानता।

ਪਿਤਾ ਜਾਤਿ ਤਾ ਹੋਈਐ ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ॥
पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥
वैसे ही ऐसे लोगों का प्रभु पिता का पता नहीं चलता। प्राणी पितृ-जाति को तभी प्राप्त करता है, यदि गुरु जी प्रसन्न होकर उस पर कृपा धारण करे।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਗਾ ਭਾਉ ॥
वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥
मनुष्य को बड़े सौभाग्य से गुरु प्राप्त होता है और दिन-रात वह प्रभु की प्रीति में लगा रहता है।

ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਉ ॥੨॥
जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥
हे नानक ! जिसने ब्रह्म को पहचान लिया है, वहीं भगवान की महिमा का कर्म करता है॥२॥

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਗਾ ਚਾਉ ॥
मनि हरि हरि लगा चाउ ॥
उसके हृदय में भगवान के सिमरन हेतु चाव उत्पन्न हो गया है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने उसके हृदय में नाम बसा दिया है। जिसके कारण उसे हरि-प्रभु का नाम मिल गया है और भगवान भी मिल गया है॥१॥ रहाउ॥

ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਬਨਿ ਸਾਸੁ ਹੈ ਤਬ ਲਗੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥
जब तक शरीर है, स्वस्थ और उसमें प्राणों का संचार होता है, तब तक तुम हरि-नाम की आराधना करो।

ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਚਲਸੀ ਹਰਿ ਅੰਤੇ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥
चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥
तेरे नश्वर संसार से गमन करते समय ईश्वर का नाम तेरे साथ जाएगा और अंत में स्वामी तुझे मृत्यु से मुक्त कराएगा।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਇ ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥
मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिनके हृदय में ईश्वर ने आकर वास कर लिया है।

ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਇ ॥
जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥
जो लोग दुखभंजक हरि के नाम का चिन्तन नहीं करते, वे अंतिम समय पश्चाताप करते हुए चले जाएँगे।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੩॥
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥
हे नानक ! ईश्वर ने जिसके मस्तक पर भाग्य-रेखा लिखी है, वह ईश्वर के नाम का स्मरण करते हैं।॥३॥

ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਇ ॥
मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥
हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम के साथ प्रीति लगा।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਰਿ ਲਘਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥१॥ रहाउ ॥
किसी भाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु मिलता है और गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है ॥१॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਆਪੁ ਉਪਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਲੇਇ ॥
हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥
ईश्वर इस सृष्टि को स्वयं उत्पन्न करता है और स्वयं ही प्राण देता और लेता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥
हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥
हरि स्वयं ही मोह-माया के भ्रम में भुला देता है और स्वयं ही बुद्धि प्रदान करता है।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ਹੈ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥
गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥
गुरमुखों के मन में आत्मिक प्रकाश होता है और ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤੇ ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥
मैं उन पर कुर्बान जाता हैं, जिन्होंने गुरु के उपदेश द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया है।

ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਵੁਠੜਾ ਹੇ ॥੪॥
जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥
हे नानक ! मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया है और मेरे चित्त के अन्दर ईश्वर आकर बस गया है॥४॥

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਕਰੇ ॥
मनि हरि हरि जपनु करे ॥
हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम का जाप कर।

ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਉ ਜਿੰਦੂ ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਪਰਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! तू भागकर ईश्वर रूप गुरु की शरण ग्रहण कर। वह तेरे सर्व पाप -दुःखों का निवारण कर देंगे॥१॥ रहाउ॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਮਨਿ ਵਸੈ ਕਿਉ ਪਾਈਐ ਕਿਤੁ ਭਤਿ ॥
घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥
राम प्रत्येक प्राणी के हृदय में वास करता है। कैसे और किस भेद से वह प्राप्त किया जा सकता है?

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੀਐ ਹਰਿ ਆਇ ਵਸੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ॥
गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥
यदि प्राणी को भाग्यवश पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तभी उसके हृदय में हरि आकर टिक जाता है।

ਮੈ ਧਰ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੇ ਗਤਿ ਮਤਿ ॥
मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥
ईश्वर का नाम ही मेरा आश्रय और निर्वाह है। स्वामी के नाम से ही मुझे मोक्ष एवं मुक्तिदायिनी सूझ मिलती है।

ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਜਤਿ ਪਤਿ ॥
मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥
ईश्वर के नाम में मेरा विश्वास है और ईश्वर का नाम ही मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤਿ ॥੫॥
जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥
नानक ने नाम की आराधना की है और यह ईश्वर-रंग में मग्न उसी का नाम स्मरण करता है॥५॥

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਿ ॥
हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥
भगवान का ध्यान करो, भगवान सदैव सत्य है।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿਆ ਸਭ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤੇ ਉਤਪਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के शब्द द्वारा मनुष्य ईश्वर को समझता है। परमेश्वर ही सृष्टि का कर्त्ता है ॥१॥ रहाउ॥

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥
जिन प्राणियों के भाग्य में प्राप्ति लिखी है, वे गुरु के पास आते हैं और उनको मिलते हैं।

ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿ ॥
सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥
हे मेरे वणजारे मित्र ! जो व्यक्ति श्रद्धा भावना से गुरु के पास आते हैं, गुरु उनके हृदय में भगवान के नाम का प्रकाश कर देता है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਜਿਨ ਵਖਰੁ ਲਦਿਅੜਾ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥
धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥
वह व्यापार और व्यापारी दोनों ही धन्य हैं, जिन्होंने ईश्वर के नाम का व्यापार किया है अर्थात् जो श्रद्धा की पूंजी लगाकर प्रभु नाम की सामग्री लादते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਦਰਿ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ॥
गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥
गुरमुख जनों के मुख प्रभु-दरबार में उज्ज्वल हैं। ईश्वर के दरबार में वह प्रभु के पास आते हैं और उसमें लीन हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਜਿਨਾ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੬॥
जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥
हे नानक ! गुरु उन्हें ही मिलता है, जिन पर गुणों का भण्डार भगवान स्वयं प्रसन्न होता है।॥६॥

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥

हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥

हे मनुष्य ! प्रत्येक श्वास एवं भोजन के ग्रास के साथ तुम ईश्वर का ध्यान करो।

ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨਾ ਰਹਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੧॥

मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥१॥

जिन्होंने भगवान के नाम को अपने जीवन सफर की पूंजी बनाया है, उन गुरमुखों के मन में भगवान के लिए प्रेम उत्पन्न होता है॥ १॥ रहाउ ॥१॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ॥
सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥
सिरीराग की वार महला ४ श्लोकों साथ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਰਾਗਾ ਵਿਚਿ ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਹੈ ਜੇ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥
रागों में श्री राग तभी सर्वोत्तम राग है, यदि इसके द्वारा प्राणी का सत्य-परमेश्वर से प्रेम हो जाए।

ਸਦਾ ਹਰਿ ਸਚੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਿਹਚਲ ਮਤਿ ਅਪਾਰੁ ॥
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥
फिर मन में हमेशा ही सत्य प्रभु निवास करता है और प्राणी की बुद्धि अपार प्रभु में स्थिर होती है।

ਰਤਨੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥
गुरु के शब्द का चिंतन करने से प्राणी नाम रूपी अमूल्य रत्न को प्राप्त कर लेता है।

ਜਿਹਵਾ ਸਚੀ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚਾ ਸਰੀਰ ਅਕਾਰੁ ॥
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥
नाम-सिमरन करने से मनुष्य की जिव्हा एवं मन सत्य हो जाते हैं और उसका शरीर एवं आकार भी सत्य हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ॥੧॥
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥१॥
हे नानक ! नाम का सत्य व्यापार हमेशा सत्य के पुंज सतिगुरु की सेवा करने से ही होता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਹੋਰੁ ਬਿਰਹਾ ਸਭ ਧਾਤੁ ਹੈ ਜਬ ਲਗੁ ਸਾਹਿਬ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥
जब तक प्रभु से सच्चा प्यार नहीं होता, मनुष्य की शेष प्रीति निरर्थक है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਵੇਖਣੁ ਸੁਨਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥
इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥
मन को माया ने मोहित कर रखा है, इसलिए वह प्रभु को देखता-सुनता ही नहीं।

ਸਹ ਦੇਖੇ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਅੰਧਾ ਕਿਆ ਕਰੇਇ ॥
सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥
पति-परमेश्वर के दर्शन के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता। अंधा अर्थात ज्ञानहीन आदमी क्या कर सकता है?

ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਅਖੀ ਲੀਤੀਆ ਸੋਈ ਸਚਾ ਦੇਇ ॥੨॥
नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥२॥
हे नानक ! जिस प्रभु ने मनुष्य को नेत्रहीन (ज्ञानहीन) किया है, वही उसे ज्ञान रूपी नेत्र दे भी सकता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਇਕੋ ਕਰਤਾ ਇਕੁ ਇਕੋ ਦੀਬਾਣੁ ਹਰਿ ॥
हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥
एक ईश्वर ही समस्त जीवों का रचयिता है और एक ही ईश्वर का दरबार है।

ਹਰਿ ਇਕਸੈ ਦਾ ਹੈ ਅਮਰੁ ਇਕੋ ਹਰਿ ਚਿਤਿ ਧਰਿ ॥
हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥
एक ईश्वर का ही आदेश सब पर चल रहा है और तुम एक ईश्वर को अपने हृदय में धारण करो।

ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ਡਰੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਦੂਰਿ ਕਰਿ ॥
हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥
उस स्वामी के अलावा अन्य कोई नहीं, तुम अपना डर, संदेह तथा भय निवृत कर दो।

ਹਰਿ ਤਿਸੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਰਖੈ ਬਾਹਰਿ ਘਰਿ ॥
हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥
उस हरि की ही स्तुति करो, जो तेरे घर के अन्दर व बाहर रक्षा करता है।

ਹਰਿ ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਸੋ ਹਰਿ ਜਪਿ ਭਉ ਬਿਖਮੁ ਤਰਿ ॥੧॥
हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥१॥
ईश्वर जिस पर दयालु होता है, वह प्रभु का भजन करने से भय के विकराल सागर से पार हो जाता है ॥ १ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਦਾਤੀ ਸਾਹਿਬ ਸੰਦੀਆ ਕਿਆ ਚਲੈ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ॥
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
समस्त नियामतें उस भगवान की दी हुई हैं, उसके साथ कोई बल नहीं चल सकता है?

ਇਕ ਜਾਗੰਦੇ ਨਾ ਲਹੰਨਿ ਇਕਨਾ ਸੁਤਿਆ ਦੇਇ ਉਠਾਲਿ ॥੧॥
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥
कई प्राणी जागते हुए भी उससे नियामतें प्राप्त नहीं कर सकते और कई प्राणियों को वह नींद से जगाकर नियामतें देता है ॥१॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਸਿਦਕੁ ਸਬੂਰੀ ਸਾਦਿਕਾ ਸਬਰੁ ਤੋਸਾ ਮਲਾਇਕਾਂ ॥
सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ॥
विश्वास एवं संतोष धैर्यशालियों के गुण हैं और सहनशीलता फरिश्तों का यात्रा-व्यय हैं।

ਦੀਦਾਰੁ ਪੂਰੇ ਪਾਇਸਾ ਥਾਉ ਨਾਹੀ ਖਾਇਕਾ ॥੨॥
दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥
ऐसे व्यक्ति पूर्ण प्रभु के दर्शन कर लेते हैं परन्तु दोषियों को कहीं भी स्थान नहीं मिलता ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭ ਆਪੇ ਤੁਧੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਆਪਿ ਕਾਰੈ ਲਾਈ ॥
सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥
हे प्रभु ! इस दुनिया की रचना आपने की है और स्वयं ही तुमने दुनिया को अलग-अलग धंधों में लगाया है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸਦਾ ਆਪਣੀ ਵਡਿਆਈ ॥
तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥
अपनी महानता को देखकर तुम स्वयं ही प्रसन्न होते हो।

ਹਰਿ ਤੁਧਹੁ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਈ ॥
हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥
मेरे प्रभु तेरे अलावा अन्य कुछ भी नहीं। तुम सच्चे मालिक हो।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਸਭਨੀ ਹੀ ਥਾਈ ॥
तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥
तुम स्वयं ही सर्वत्र व्यापक हो।

ਹਰਿ ਤਿਸੈ ਧਿਆਵਹੁ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਜੋ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥੨॥
हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥२॥
हे संतजनो ! आप उस परमेश्वर की उपासना करो, जो अंतिम समय तुम्हें मुक्ति प्रदान करेगा। ॥२॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਫਕੜ ਜਾਤੀ ਫਕੜੁ ਨਾਉ ॥
फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥
ऊँची जाति एवं नाम का अहंकार व्यर्थ है।

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਇਕਾ ਛਾਉ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥
समस्त जीवों में एक ही ईश्वर रूपी वृक्ष की छाया का सुख उपलब्ध है।

ਆਪਹੁ ਜੇ ਕੋ ਭਲਾ ਕਹਾਏ ॥
आपहु जे को भला कहाए ॥
हे नानक ! यदि कोई व्यक्ति स्वयं को अच्छा कहलवाता है

ਨਾਨਕ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਪੈ ਜਾ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਪਾਏ ॥੧॥
नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥
तों उसे तभी अच्छा जाना जाएगा, यदि उसका सम्मान प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा ॥१॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਜਿਸੁ ਪਿਆਰੇ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਮਰਿ ਚਲੀਐ ॥
जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
जिस प्रियतम से प्रेम होता है, उसके समाने जगत् से प्राण त्याग कर चले जाना बेहतर है।

ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ਤਾ ਕੈ ਪਾਛੈ ਜੀਵਣਾ ॥੨॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥२॥
प्रियतम के पश्चात् जीना संसार में धिक्कार का जीवन व्यतीत करना है ॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਐ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਦੀਵੇ ॥
तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥
हे प्रभु ! तूने स्वयं इस धरती की रचना की है, चाँद एवं सूर्य ये दो दीपक बनाए हैं। |

ਦਸ ਚਾਰਿ ਹਟ ਤੁਧੁ ਸਾਜਿਆ ਵਾਪਾਰੁ ਕਰੀਵੇ ॥
दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥
तुम्हीं ने इस ब्रह्माण्ड में चौदह पुरियों की रचना की है, जहाँ पर प्राणियों के कर्मों का व्यापार होता है।

ਇਕਨਾ ਨੋ ਹਰਿ ਲਾਭੁ ਦੇਇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਥੀਵੇ ॥
इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥
जो प्राणी गुरमुख हो जाते हैं, ईश्वर उन्हें मोक्ष-रूपी लाभ प्रदान करता है।

ਤਿਨ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਵਿਆਪਈ ਜਿਨ ਸਚੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੇ ॥
तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अम्रितु पीवे ॥
जो सत्य नाम के अमृत का पान करते हैं, उन्हें यमदूत नहीं पकड़ते।

ਓਇ ਆਪਿ ਛੁਟੇ ਪਰਵਾਰ ਸਿਉ ਤਿਨ ਪਿਛੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਛੁਟੀਵੇ ॥੩॥

ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥

ऐसे ईश्वर से स्नेह करने वाले प्राणी स्वयं भी मुक्त होते हैं और उनका परिवार भी बच जाता है तथा जो उनके पीछे चलता है, वह भी बच जाता है ॥३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥

सलोक मः १ ॥

श्लोक महला १॥

ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਿ ਕੈ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥

भगवान अपनी कुदरत की रचना करके स्वयं ही इसमें निवास कर रहा है।

ਵਖਤੁ ਵੀਚਾਰੇ ਸੁ ਬੰਦਾ ਹੋਇ ॥
वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥
जो प्राणी जीवन काल का विचार करता है, वही परमात्मा का सच्चा भक्त होता है।

ਕੁਦਰਤਿ ਹੈ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥
कुदरति है कीमति नही पाइ ॥
भगवान कुदरत में निवास करता है परन्तु उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਜਾ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਤ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥
यदि इन्सान मूल्य जान भी ले, तो वह ब्यान नहीं कर सकता।

ਸਰੈ ਸਰੀਅਤਿ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
सरै सरीअति करहि बीचारु ॥
कुछ लोग शरीयत द्वारा मालिक-प्रभु बारे विचार करते हैं।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਕੈਸੇ ਪਾਵਹਿ ਪਾਰੁ ॥
बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥
परन्तु ईश्वर को समझने के बिना वह किस तरह पार हो सकते हैं ?

ਸਿਦਕੁ ਕਰਿ ਸਿਜਦਾ ਮਨੁ ਕਰਿ ਮਖਸੂਦੁ ॥
सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥
धैर्य को नमन करो और मन को नाम-सिमरन में लगाने का जीवन-मनोरथ बनाओ ।

ਜਿਹ ਧਿਰਿ ਦੇਖਾ ਤਿਹ ਧਿਰਿ ਮਉਜੂਦੁ ॥੧॥
जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥
फिर जिस तरफ भी देखोगे, उधर ही ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन करोगे ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥ .
श्लोक महला ३ ॥

ਗੁਰ ਸਭਾ ਏਵ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾ ਨੇੜੈ ਨਾ ਦੂਰਿ ॥
गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥
गुरु की संगति (शारीरिक रूप से) निकट अथवा दूर रहने से प्राप्त नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾਂ ਮਿਲੈ ਜਾ ਮਨੁ ਰਹੈ ਹਦੂਰਿ ॥੨॥
नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥
हे नानक ! सतिगुरु तभी मिलते हैं, यदि मन उनकी उपस्थिति के अन्दर सदैव विचरण करे ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਪਤ ਦੀਪ ਸਪਤ ਸਾਗਰਾ ਨਵ ਖੰਡ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਦਸ ਅਸਟ ਪੁਰਾਣਾ ॥
सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दस असट पुराणा ॥
सृष्टि में सात द्वीप, सात समुद्र, नौ खण्ड, चार वेद एवं अठारह पुराण हैं।

ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਤੂੰ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਭਾਣਾ ॥
हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥
प्रभु ! तुम इन सबमें विद्यमान हो और तुम सबको प्रिय हो।

ਸਭਿ ਤੁਝੈ ਧਿਆਵਹਿ ਜੀਅ ਜੰਤ ਹਰਿ ਸਾਰਗ ਪਾਣਾ ॥
सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारग पाणा ॥
हे सारिंगपाणि ईश्वर ! समस्त जीव-जन्तु सदैव तुम्हारा ही सिमरन करते हैं।

ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਦੇ ਤਿਨ ਹਉ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥
जो गुरमुख हरि की वंदना करते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥੪॥
तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥४॥
हे ईश्वर ! तुम ही आश्चर्यजनक लीलाओं को रचकर स्वयं ही सब में विद्यमान हो रहे हो ॥४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਕਲਉ ਮਸਾਜਨੀ ਕਿਆ ਸਦਾਈਐ ਹਿਰਦੈ ਹੀ ਲਿਖਿ ਲੇਹੁ ॥
कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥
लेखनी और दवात मंगवाने की क्या आवश्यकता है? जो लिखना चाहते हो, उसे अपने हृदय में ही लिखो।

ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਹੈ ਕਬਹੂੰ ਨ ਤੂਟਸਿ ਨੇਹੁ ॥
सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥
हृदय में लिख लेने से तुम सदैव प्रभु के प्रेम में लीन रहोगे और कभी भी उस परमेश्वर से अलग नहीं होगे।

ਕਲਉ ਮਸਾਜਨੀ ਜਾਇਸੀ ਲਿਖਿਆ ਭੀ ਨਾਲੇ ਜਾਇ ॥
कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥
कलम और दवात नाशवान हैं, लिखित कागज भी नष्ट हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਸਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਜਾਇਸੀ ਜੋ ਧੁਰਿ ਛੋਡੀ ਸਚੈ ਪਾਇ ॥੧॥
नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥१॥
हे नानक ! जो प्रेम प्रभु ने प्रारम्भ से ही जीव की किस्मत में लिख दिया है, वह प्रेम कभी भी मिट नहीं सकता ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਨਦਰੀ ਆਵਦਾ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਵਿਉਪਾਇ ॥
नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥
जो वस्तु दृश्यमान है, वह कभी अनंतकाल तक प्राणी का साथ नहीं देती। चाहे तुम परख कर देख सकते हो।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਚੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਸਚਿ ਰਹਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥
अतः सतिगुरु ने सदैव सत्य की प्रेरणा दी है; उसी सत्य में सुरति लगाने से सत्य की प्राप्ति होगी।

ਨਾਨਕ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਹੈ ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥२॥
हे नानक ! वह सत्य प्रभु नाम द्वारा ही मिलता है, किन्तु उसकी उपलब्धि शुभ कर्मों से होती है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਅੰਦਰਿ ਬਾਹਰਿ ਇਕੁ ਤੂੰ ਤੂੰ ਜਾਣਹਿ ਭੇਤੁ ॥
हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥
हे प्रभु ! अन्दर-बाहर अर्थात् समस्त सृष्टि में तू ही मौजूद है। इस रहस्य को तू ही जानता है।

ਜੋ ਕੀਚੈ ਸੋ ਹਰਿ ਜਾਣਦਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਚੇਤੁ ॥
जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥
मनुष्य जो कुछ भी करता है, उसको परमात्मा जानता है। हे मेरे मन ! तू ईश्वर का चिन्तन कर।

ਸੋ ਡਰੈ ਜਿ ਪਾਪ ਕਮਾਵਦਾ ਧਰਮੀ ਵਿਗਸੇਤੁ ॥
सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥
जो प्राणी पाप करता है, केवल वही भय में रहता है। परन्तु धर्म करने वाला नित्य प्रसन्नचित्त रहता है।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਆਪਿ ਨਿਆਉ ਸਚੁ ਤਾ ਡਰੀਐ ਕੇਤੁ ॥
तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥
हे भगवान ! तुम सत्य-स्वरूप हो, तुम्हारा न्याय भी सत्य है। अतः (प्रभु की शरण में) हमें किस बात का भय है।

ਜਿਨਾ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸੇ ਸਚਿ ਰਲੇਤੁ ॥੫॥
जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥५॥
हे नानक ! जिन्होंने सत्य (परमात्मा) को पहचान लिया, वे उस सत्य में ही विलीन हो जाते हैं ॥५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਕਲਮ ਜਲਉ ਸਣੁ ਮਸਵਾਣੀਐ ਕਾਗਦੁ ਭੀ ਜਲਿ ਜਾਉ ॥
कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥
दवात सहित कलम भी जल जाए, लिखा हुआ कागज भी जल जाए,

ਲਿਖਣ ਵਾਲਾ ਜਲਿ ਬਲਉ ਜਿਨਿ ਲਿਖਿਆ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ॥
लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥
स्वयं लिखने वाला भी जल कर मर जाए, जिसने द्वैत-भाव बारे लिखा है।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥१॥
हे नानक ! प्राणी वही कर्म करता है, जो उसके पूर्व-जन्म के कर्म-फलानुसार है। अन्य कुछ नहीं किया जा सकता॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਹੋਰੁ ਕੂੜੁ ਪੜਣਾ ਕੂੜੁ ਬੋਲਣਾ ਮਾਇਆ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥
भगवान के नाम के सिवाय अन्य कुछ पढ़ना एवं बोलना मिथ्या है। ये तो माया से प्रेम उत्पन्न करते हैं।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਥਿਰੁ ਨਹੀ ਪੜਿ ਪੜਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥
नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥२॥
हे नानक ! भगवान के नाम के सिवाय कुछ भी अटल नहीं रह सकता। इसके अलावा अन्य पढ़-पढ़कर मनुष्य नष्ट ही होते हैं।

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਕਾ ॥
हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥
भगवान की महिमा महान है और भगवान का भजन करना ही जीव हेतु उत्तम है।

ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਨਿਆਉ ਹੈ ਧਰਮ ਕਾ ॥
हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥
भगवान की महिमा महान है, क्योंकि भगवान का न्याय धर्म का है।

ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਫਲੁ ਹੈ ਜੀਅ ਕਾ ॥
हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥
भगवान की महिमा महान है, जो जीव को महिमा करने का ही फल प्राप्त होता है।

ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਜਾ ਨ ਸੁਣਈ ਕਹਿਆ ਚੁਗਲ ਕਾ ॥
हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥
भगवान की महिमा महान है, जो वह निंदक की बात नहीं सुनता।

ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਅਪੁਛਿਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵਕਾ ॥੬॥

हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥

भगवान की महिमा महान है, क्योंकि वह बिना पूछे ही सबकी कामनाएँ पूरी करता है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥

सलोक मः ३ ॥

श्लोक महला ३ ॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤੀ ਸਭ ਮੁਈ ਸੰਪਉ ਕਿਸੈ ਨ ਨਾਲਿ ॥

हउ हउ करती सभ मुई स्मपउ किसै न नालि ॥

सारी दुनिया मैं-मैं अर्थात् अहंकार करती हुई नष्ट हो गई है। मृत्यु के समय यह धन-संपति किसी के साथ नहीं जाती।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਭ ਜੋਹੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥

दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥

मोह-माया में फँसकर सभी ने दुःख ही प्राप्त किया है। यमदूत सभी को प्रताड़ित करता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥
नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥१॥
हे नानक ! सत्य नाम की आराधना करने से गुरमुख प्राणियों को मोक्ष प्राप्त हुआ है ॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਗਲੀ ਅਸੀ ਚੰਗੀਆ ਆਚਾਰੀ ਬੁਰੀਆਹ ॥
गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥
बातों में हम उत्तम विचार व्यक्त करते हैं परन्तु आचरण से अपवित्र हैं।

ਮਨਹੁ ਕੁਸੁਧਾ ਕਾਲੀਆ ਬਾਹਰਿ ਚਿਟਵੀਆਹ ॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥
मन में हम अशुद्ध और मलिन हैं परन्तु बाहरी वेशभूषा से सफेद दिखते हैं।

ਰੀਸਾ ਕਰਿਹ ਤਿਨਾੜੀਆ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਦਰੁ ਖੜੀਆਹ ॥
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥
हम उनकी समानता करते हैं जो प्रभु के द्वार पर उसकी सेवा में मग्न हैं।

ਨਾਲਿ ਖਸਮੈ ਰਤੀਆ ਮਾਣਹਿ ਸੁਖਿ ਰਲੀਆਹ ॥
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥
किन्तु वे अपने पति-परमेश्वर के रंग में लीन हैं और सुख एवं आनंद भोगती हैं।

ਹੋਦੈ ਤਾਣਿ ਨਿਤਾਣੀਆ ਰਹਹਿ ਨਿਮਾਨਣੀਆਹ ॥
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥
वे सशक्त होने पर भी विनीत होती हुई सदैव दीन एवं नम्र हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨਮੁ ਸਕਾਰਥਾ ਜੇ ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਹ ॥੨॥
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥
हे नानक ! हमारा जीवन तभी सफल हो सकता है, यदि हम उन मुक्तात्माओं के साथ संगति करें ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂੰ ਆਪੇ ਜਲੁ ਮੀਨਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਜਾਲੁ ॥
तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥
हे जगत् के स्वामी ! तू स्वयं ही जल है और स्वयं ही जल में रहने वाली मछली है। हे प्रभु ! तू स्वयं ही मछली को फँसाने वाला जाल है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਜਾਲੁ ਵਤਾਇਦਾ ਆਪੇ ਵਿਚਿ ਸੇਬਾਲੁ ॥
तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥
तुम स्वयं ही मछेरा बनकर मछली को पकड़ने हेतु जाल फैंकते हो और स्वयं ही जल में रखा हुआ टुकड़ा हो।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਮਲੁ ਅਲਿਪਤੁ ਹੈ ਸੈ ਹਥਾ ਵਿਚਿ ਗੁਲਾਲੁ ॥
तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥
हे ईश्वर ! तुम स्वयं ही सैंकड़ों हाथ गहरे जल में गहरे लाल रंग का निर्लिप्त कमल हो।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਇਦਾ ਇਕ ਨਿਮਖ ਘੜੀ ਕਰਿ ਖਿਆਲੁ ॥
तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥
हे भगवान ! जो प्राणी क्षण भर के लिए भी तुम्हारा चिन्तन करते हैं। उन्हें तुम स्वयं ही जन्म-मरण के चक्र से मुक्त कर देते हो।

ਹਰਿ ਤੁਧਹੁ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਹੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੇਖਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥੭॥
हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥७॥
हे परमेश्वर ! तेरे हुक्म से परे कुछ भी नहीं, गुरु के शब्द द्वारा तेरे दर्शन करके प्राणी कृतार्थ हो जाता है॥ ७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣੈ ਬਹੁਤਾ ਰੋਵੈ ॥
हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥
जो जीव-स्त्री परमेश्वर के आवेश को नहीं जानती, वह बहुत विलाप करती है।

ਅੰਦਰਿ ਧੋਖਾ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੈ ॥
अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥
उसके मन में छल-कपट विद्यमान होता है, सो वह सुख की गहरी नींद नहीं सोती।

ਜੇ ਧਨ ਖਸਮੈ ਚਲੈ ਰਜਾਈ ॥
जे धन खसमै चलै रजाई ॥
यदि जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु की इच्छानुसार चले,

ਦਰਿ ਘਰਿ ਸੋਭਾ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈ ॥
दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥
तो वह अपने प्रभु के दरबार एवं घर में ही सम्मान पा लेती है और पति-प्रभु उसे अपने आत्म-स्वरूप में बुला लेता है।

ਨਾਨਕ ਕਰਮੀ ਇਹ ਮਤਿ ਪਾਈ ॥
नानक करमी इह मति पाई ॥
हे नानक ! उसे यह ज्ञान भगवान की कृपा द्वारा ही होता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥
गुर परसादी सचि समाई ॥१॥
गुरु की कृपा से वह सत्य में ही समा जाती है।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨਮੁਖ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣਿਆ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭਾ ਦੇਖਿ ਨ ਭੁਲੁ ॥
मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुमभा देखि न भुलु ॥
हे नामविहीन मनमुख ! माया का रंग कुसुंभे के फूल जैसा सुन्दर होता है। तू इसे देखकर भूल मत जाना।

ਇਸ ਕਾ ਰੰਗੁ ਦਿਨ ਥੋੜਿਆ ਛੋਛਾ ਇਸ ਦਾ ਮੁਲੁ ॥
इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥
इसका रंग थोड़े दिन ही रहता है। इसका मूल्य भी बहुत न्यून है।

ਦੂਜੈ ਲਗੇ ਪਚਿ ਮੁਏ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਗਵਾਰ ॥
दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥
जो व्यक्ति माया से प्रेम करते हैं, वे मूर्ख ज्ञानहीन एवं गंवार हैं।

ਬਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ ਕੀਟ ਸੇ ਪਇ ਪਚਹਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥
वे माया के मोह में जल कर मरते हैं। मरणोपरांत वे विष्ठा के कीड़े बनते हैं, जो पुनः पुनः जन्म लेकर विष्ठा में जलते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਰਤੇ ਸੇ ਰੰਗੁਲੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति सहज अवस्था में गुरु के प्रेम द्वारा प्रभु-नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही सुख भोगते हैं।

ਭਗਤੀ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥
भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥२॥
उनका भक्ति का प्रेम कभी नाश नहीं होता और वे सहज अक्स्था में समाए रहते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਿਸਟਿ ਉਪਾਈ ਸਭ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿਆ ॥
सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु स्मबाहिआ ॥
हे ईश्वर ! तुमने समूची सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही भोजन देकर सबका पालन करते हो।

ਇਕਿ ਵਲੁ ਛਲੁ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਵਦੇ ਮੁਹਹੁ ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਤਿਨੀ ਢਾਹਿਆ ॥
इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥
कई प्राणी छल-कपट करके भोजन खाते हैं और अपने मुख से वह झूठ एवं असत्यता व्यक्त करते हैं।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰਹਿ ਤੁਧੁ ਓਤੈ ਕੰਮਿ ਓਇ ਲਾਇਆ ॥
तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कमि ओइ लाइआ ॥
हे प्रभु ! जो तुम्हें भला प्रतीत होता है, तुम वहीं करते हो और प्राणियों को अलग-अलग कार्यों में लगाते हो और वह वही कुछ करते हैं।

ਇਕਨਾ ਸਚੁ ਬੁਝਾਇਓਨੁ ਤਿਨਾ ਅਤੁਟ ਭੰਡਾਰ ਦੇਵਾਇਆ ॥
इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥
कई प्राणियों को तुमने सत्य नाम की सूझ प्रदान की है और उनको गुरु द्वारा नाम के अमूल्य भण्डार दिलवाए हैं।

ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਖਾਹਿ ਤਿਨਾ ਸਫਲੁ ਹੈ ਅਚੇਤਾ ਹਥ ਤਡਾਇਆ ॥੮॥
हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥८॥
जो प्राणी ईश्वर का स्मरण करके खाते हैं उनका खाना फलदायक है। जो प्राणी ईश्वर को स्मरण नहीं करते, वह दूसरे से माँगने के लिए हाथ फैलाते हैं ॥८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਬੇਦ ਵਖਾਣਹਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸੁਆਇ ॥
पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥
माया-मोह के स्वाद कारण पण्डित वेदों को पढ़-पढ़कर उनकी कथा करते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨ ਮੂਰਖ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥
माया के प्रेम में मूर्ख मन ने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है। अतः उसे प्रभु के दरबार में अवश्य दण्ड मिलेगा।

ਜਿਨਿ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦਿਤਾ ਤਿਸੁ ਕਬਹੂੰ ਨ ਚੇਤੈ ਜੋ ਦੇਂਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु स्मबाहि ॥
जिस परमेश्वर ने मनुष्य को प्राण और शरीर दिया है, उसे वह कदाचित स्मरण नहीं करता, जो सबका भोजन देकर पालन कर रहा है।

ਜਮ ਕਾ ਫਾਹਾ ਗਲਹੁ ਨ ਕਟੀਐ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥
मनमुख प्राणियों के गले यम-पाश प्रतिदिन बना रहता है और वे सदैव जन्म-मरण के बंधन में कष्ट सहन करते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਕਿਛੁ ਨ ਸੂਝੈ ਅੰਧੁਲੇ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਇ ॥
मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥
ज्ञानहीन मनमुख इन्सान कुछ भी नहीं समझता और वही कुछ करता है जो पूर्व-जन्म के कर्मों अनुसार लिखा है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥
सौभाग्यवश जब सुखदाता सतिगुरु जी मिलते हैं तो हरि-नाम मनुष्य के हृदय में निवास करने लगता है।

ਸੁਖੁ ਮਾਣਹਿ ਸੁਖੁ ਪੈਨਣਾ ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥
सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥
ऐसा व्यक्ति सुख ही भोगता है। उसके लिए सुख ही वस्त्रों का पहनावा है और उसका समूचा जीवन सुख में ही व्यतीत होता है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਨਾਉ ਮਨਹੁ ਨ ਵਿਸਾਰੀਐ ਜਿਤੁ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥੧॥

नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥

हे नानक ! अपने हृदय में से उस नाम को विस्मृत मत करो, जिसकी बदौलत सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त होती है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥
जिसने सतिगुरु की सेवा की है, उसे सुख ही उपलब्ध हुआ है। भगवान का सत्यनाम गुणों का खजाना है।

ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਪਰਗਾਸੁ ॥
गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥
जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा अपने स्वरूप को पहचान लिया है, उसके हृदय में प्रभु नाम का प्रकाश हो जाता है।

ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਾ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਪਾਸਿ ॥
सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥
जो व्यक्ति सत्य-नाम का सिमरन करते हैं, उन्हें भगवान से बड़ी शोभा मिलती है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਸਿਫਤਿ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥
मैं उस भगवान की महिमा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभु ! मेरे प्राण एवं मेरा शरीर यह सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥
यदि सत्य प्रभु की महिमा नाम द्वारा की जाए तो मनुष्य अनंत सुख भोगता है।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਾਸੁ ॥
जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥
मन द्वारा भगवान की महिमा करनी ही जप, तप एवं संयम है। नामविहीन मानुष का जीवन धिक्कार योग्य है।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਉ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖ ਮੋਹਿ ਵਿਣਾਸੁ ॥
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥
नाम गुरु की मति द्वारा ही मिलता है। माया के मोह में फँसकर मनमुख व्यक्ति का विनाश हो जाता है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਤੂੰ ਨਾਨਕੁ ਤੇਰਾ ਦਾਸੁ ॥੨॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥२॥
हे जगत् के स्वामी ! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, नानक तेरा सेवक है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਸਭਸੁ ਦਾ ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਰਾਸਿ ॥
सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥
हे प्रभु ! सारे प्राणी तेरी संतान हैं और तुम सबके पिता हो। तुम हरेक प्राणी की पूँजी हो।

ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਪਾਸਹੁ ਮੰਗਦੇ ਨਿਤ ਕਰਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥
सभी जीव प्रार्थना करके हमेशा तुझसे माँगते रहते हैं।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮਿਲੈ ਇਕਨਾ ਦੂਰਿ ਹੈ ਪਾਸਿ ॥
जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥
हे प्रभु ! जिस किसी को भी तुम देते हो, वह सब कुछ पा लेता है। कई जीवों को तू कहीं दूर ही निवास करता लगता है और कई तुझे अपने पास ही निवास करते समझते हैं।

ਤੁਧੁ ਬਾਝਹੁ ਥਾਉ ਕੋ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਪਾਸਹੁ ਮੰਗੀਐ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥
तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि वेखहु को निरजासि ॥
तेरे अलावा कोई स्थान नहीं जिससे माँगा जाए। अपने मन में इसका निर्णय करके देख ले।

ਸਭਿ ਤੁਧੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਦੇ ਦਰਿ ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਗਾਸਿ ॥੯॥
सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥९॥
हे प्रभु! सभी तेरी उपमा करते हैं, गुरमुखों को तेरे दरबार पर तेरे प्रकाश के दर्शन होते हैं ॥९॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਪੰਡਿਤੁ ਪੜਿ ਪੜਿ ਉਚਾ ਕੂਕਦਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਪਿਆਰੁ ॥
पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥
पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़कर उच्च स्वर में लोगों को सुनाता है। उसे तो माया-मोह से ही प्रेम है।

ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਚੀਨਈ ਮਨਿ ਮੂਰਖੁ ਗਾਵਾਰੁ ॥
अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥
वह मूर्ख एवं गंवार है जो अपने हृदय में विद्यमान परमात्मा को नहीं पहचानता।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਜਗਤੁ ਪਰਬੋਧਦਾ ਨਾ ਬੂਝੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥
वह माया-मोह में मुग्ध हुआ जगत् के लोगों को उपदेश देता है और ज्ञान को नहीं समझता।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੧॥
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जमै वारो वार ॥१॥
उसने अपना जन्म व्यर्थ गंवा दिया है और वह बार-बार जन्मता एवं मरता रहता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨੀ ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਬੂਝਹੁ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥
विचार करके यह बात समझ लो कि जिन्होंने सतिगुरु की सेवा की है, उन्होंने ईश्वर के नाम को प्राप्त किया है।

ਸਦਾ ਸਾਂਤਿ ਸੁਖੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਚੂਕੈ ਕੂਕ ਪੁਕਾਰ ॥
सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥
उनके चित्त में सदैव सुख-शांति का निवास होता है और उनके दुःख, विलाप-शिकायत नष्ट हो जाते हैं।

ਆਪੈ ਨੋ ਆਪੁ ਖਾਇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥
आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥
जब मन गुरु के शब्द को विचार कर अपने अहंत्व को स्वयं ही नष्ट कर देता है तो वह निर्मल हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਜੀਉ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੁ ॥੨॥
नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥२॥
हे नानक ! जो प्राणी हरिनाम में लीन रहते हैं, वे मोक्ष प्राप्त करते हैं और भगवान से उनका प्रेम हो जाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਥਾਇ ॥
हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥
हरि की सेवा तभी सफल होती है, जब वह गुरु द्वारा इसे स्वीकृत करता है।

ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु धिआइ ॥
जिस पर प्रभु प्रसन्न होता है, उसको गुरु जी मिल जाते हैं, केवल वही हरिनाम का ध्यान करता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲਘਾਇ ॥
गुर सबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥
गुरु की वाणी द्वारा वह प्रभु को पा लेता है। फिर भगवान उसे भवसागर से पार कर देता है।

ਮਨਹਠਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਪੁਛਹੁ ਵੇਦਾ ਜਾਇ ॥
मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥
मन के हठ से किसी को भी ईश्वर प्राप्त नहीं हुआ। चाहे वेदों-शास्त्रों का मनन करके देख लो।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਲਏ ਹਰਿ ਲਾਇ ॥੧੦॥
नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥१०॥
हे नानक ! वही प्राणी ईश्वर की भक्ति करता है, जिसको भगवान अपने साथ मिला लेता है ॥१०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੂਰਾ ਵਰੀਆਮੁ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਦੁਸਟੁ ਅਹੰਕਰਣੁ ਮਾਰਿਆ ॥
नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥
हे नानक ! वही व्यक्ति शूरवीर एवं महान योद्धा है, जिसने अपने अन्तर्मन से दुष्ट अहंकार का नाश कर लिया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥
उसने गुरु के माध्यम से नाम की महिमा करके अपना जन्म संवार लिया है।

ਆਪਿ ਹੋਆ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਸਭੁ ਕੁਲੁ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥
वह स्वयं सदैव के लिए मुक्त हो जाता है तथा अपने समूचे वंश को भी भवसागर से बचा लेता है।

ਸੋਹਨਿ ਸਚਿ ਦੁਆਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਿਆ ॥
सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥
वह सत्य प्रभु के दरबार पर बड़ी शोभा प्राप्त करता है और उसे प्रभु का नाम ही प्रिय लगता है।

ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਮਰਣੁ ਵਿਗਾੜਿਆ ॥
मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥
मनमुख प्राणी अहंकार में मरते हैं और अपनी मृत्यु को भी दुःखदायक बना लेते हैं।

ਸਭੋ ਵਰਤੈ ਹੁਕਮੁ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਵਿਚਾਰਿਆ ॥
सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥
सब ओर ईश्वर का आदेश चलता है। बेचारे प्राणी क्या कर सकते हैं?

ਆਪਹੁ ਦੂਜੈ ਲਗਿ ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥
आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥
उन्होंने स्वयं ही माया के प्रेम में लगकर प्रभु को विस्मृत कर दिया है।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥੧॥
नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥१॥
हे नानक ! नाम से विहीन होने के कारण उन्हें दुःख आकर लग जाते हैं तथा सुख तो उन्हें भूल ही जाता है। ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਤਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥
जिन्हें पूर्ण गुरु ने भगवान का नाम दृढ़ करवा दिया है; उन्होंने अपने अन्तर्मन में से भ्रम को दूर कर लिया है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗਾਈ ਕਰਿ ਚਾਨਣੁ ਮਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥

राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥

वह राम नाम द्वारा भगवान की महिमा-स्तुति करते है; भगवान ने उनके अन्तर्मन में अपनी ज्योति का प्रकाश करके उन्हें भक्ति-मार्ग दिखा दिया है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਆ ॥

हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥

उन्होंने अपने अहंकार को नष्ट करके एक प्रभु में सुरति लगाई है; जिससे उनके अन्तरमन में भगवान के नाम निवास हो गया है।

ਗੁਰਮਤੀ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਸਾਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥
गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥
गुरु की मति पर अनुसरण करने से मृत्यु उन्हें देख भी नहीं सकती; वे सत्य-प्रभु के नाम में ही मग्न रहते हैं।

ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਕਰਤਾ ਜੋ ਭਾਵੈ ਸੋ ਨਾਇ ਲਾਇਆ ॥
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥
सृष्टिकर्ता स्वयं सब में मौजूद हो रहा है; जो उसे अच्छा लगता है, उसे वह अपने नाम-सिमरन में लगा देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਲਏ ਤਾ ਜੀਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਖਿਨੁ ਮਰਿ ਜਾਇਆ ॥੨॥
जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२॥
यदि नानक भगवान का नाम-सिमरन करता रहता है तो ही वह जीवित रहता है; नाम के बिना तो वह एक क्षण में ही मर जाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜੋ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਦੀਬਾਣ ਸਿਉ ਸੋ ਸਭਨੀ ਦੀਬਾਣੀ ਮਿਲਿਆ ॥
जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥
जो प्रभु के दरबार में सम्मानित होता है, वह संसार की समस्त सभाओं के भीतर सम्मानित होता है।

ਜਿਥੈ ਓਹੁ ਜਾਇ ਤਿਥੈ ਓਹੁ ਸੁਰਖਰੂ ਉਸ ਕੈ ਮੁਹਿ ਡਿਠੈ ਸਭ ਪਾਪੀ ਤਰਿਆ ॥
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥
जहाँ कहीं भी वह जाता है, उधर ही वह प्रफुल्लित हो जाता है; उसका चेहरा देखने से सारे दोषी पार हो जाते है।

ਓਸੁ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੋ ਪਰਵਰਿਆ ॥
ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥
उसके भीतर नाम का अमूल्य भण्डार है और हरि के नाम द्वारा ही वह स्वीकृत होता है।

ਨਾਉ ਪੂਜੀਐ ਨਾਉ ਮੰਨੀਐ ਨਾਇ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭ ਹਿਰਿਆ ॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥
नाम की वह पूजा करता है, नाम पर ही उसका निश्चय है और हरिनाम ही उसके समस्त पापों को नष्ट करता है।

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਸੇ ਅਸਥਿਰੁ ਜਗਿ ਰਹਿਆ ॥੧੧॥
जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥११॥
जो प्राणी प्रभु के नाम का, एक मन व एक चित से सिमरन करते हैं, वह इस संसार के अन्दर अमर रहते हैं ॥११॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਆਤਮਾ ਦੇਉ ਪੂਜੀਐ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥
सहज अवस्था में गुरु की आज्ञानुसार परमात्मा की पूजा करो।

ਆਤਮੇ ਨੋ ਆਤਮੇ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ਹੋਇ ਤਾ ਘਰ ਹੀ ਪਰਚਾ ਪਾਇ ॥
आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥
जब जीवात्मा की परमात्मा में आस्था हो जाती है तो जीवात्मा का अपने हृदय-घर में ही भगवान से प्रेम हो जाता है।

ਆਤਮਾ ਅਡੋਲੁ ਨ ਡੋਲਈ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਸੁਭਾਇ ॥
आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥
गुरु के आचरण में रहकर जीवात्मा अटल हो जाती है और वह कहीं भी डगमगाती नहीं।

ਗੁਰ ਵਿਣੁ ਸਹਜੁ ਨ ਆਵਈ ਲੋਭੁ ਮੈਲੁ ਨ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥
गुरु के बिना सहज सुख उपलब्ध नहीं होता और मन में से लालच की मलिनता दूर नहीं होती।

ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਭ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥
खिनु पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥
यदि हरि का नाम एक पल व क्षण भर के लिए चित्त में वास कर जाए तो अठसठ तीर्थों के स्नान का फल मिल जाता है।

ਸਚੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਮਲੁ ਲਾਗੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥
पवित्रात्मा को कभी माया की मैल नहीं लगती परन्तु जो द्वैतभाव में लगते है यह मैल उन्हें लगती है।

ਧੋਤੀ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰੈ ਜੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥
धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥
चाहे मनुष्य अठसठ तीर्थस्थलों पर स्नान कर ले, यह मैल धोने से बिल्कुल दूर नहीं होती।

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ ਅਹੰਕਾਰੀ ਸਭੁ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਇ ॥
मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥
मनमुख व्यक्ति अहंकार में धर्म-कर्म करता है और वह सदैव दुःखों का बोझ वहन करता है।

ਨਾਨਕ ਮੈਲਾ ਊਜਲੁ ਤਾ ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥
हे नानक ! मैला मन तभी पवित्र होता है, यदि वह सतिगुरु में लीन हुआ रहे ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਮਨਮੁਖੁ ਲੋਕੁ ਸਮਝਾਈਐ ਕਦਹੁ ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਇ ॥
मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥
यदि मनमुख व्यक्ति को समझाने का प्रयास भी किया जाए तो वे समझाने से भी कभी नहीं समझते।

ਮਨਮੁਖੁ ਰਲਾਇਆ ਨਾ ਰਲੈ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਇ ॥
मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥
ऐसे मनमुख प्राणियों को यदि गुरमुखों के साथ मिलाने का प्रयास करें तो भी कर्म-बन्धनों के कारण आवागमन में भटकते रहते हैं।

ਲਿਵ ਧਾਤੁ ਦੁਇ ਰਾਹ ਹੈ ਹੁਕਮੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥
प्रभु की प्रीति व माया की लगन दो मार्ग हैं, मनुष्य कौन-सा कर्म करता है अर्थात् किस मार्ग चलता है, वह प्रभु की इच्छा पर निर्भर है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਸਬਦਿ ਕਸਵਟੀ ਲਾਇ ॥
गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥
गुरुवाणी की कसौटी का अभ्यास करने से गुरमुख ने अपने मन को वश में कर लिया है।

ਮਨ ਹੀ ਨਾਲਿ ਝਗੜਾ ਮਨ ਹੀ ਨਾਲਿ ਸਥ ਮਨ ਹੀ ਮੰਝਿ ਸਮਾਇ ॥
मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥
अपने मन के साथ वह विवाद करता है, मन के साथ ही वह सुलह की बात करता है और मन के साथ ही वह संघर्ष के लिए जूजता है।

ਮਨੁ ਜੋ ਇਛੇ ਸੋ ਲਹੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ॥
मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥
सच्ची गुरुवाणी की प्रीति से मनुष्य सब कुछ पा लेता है जो कुछ वह चाहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦ ਭੁੰਚੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
अम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥
वह हमेशा अमृत नाम का पान करता है और गुरु के उपदेशानुसार कर्म करता है।

ਵਿਣੁ ਮਨੈ ਜਿ ਹੋਰੀ ਨਾਲਿ ਲੁਝਣਾ ਜਾਸੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥
विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥
जो अपने मन के अलावा किसी अन्य के साथ झगड़ा करता है, वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा कर चला जाएगा।

ਮਨਮੁਖੀ ਮਨਹਠਿ ਹਾਰਿਆ ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਕਮਾਇ ॥
मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥
मन के हठ और झूठ तथा मिथ्या कुत्सा के कर्म द्वारा मनमुख प्राणी जीवन का खेल हार जाते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨੁ ਜਿਣੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥
विवेकशील गुरमुख गुरु की दया से अपने मंदे-अहंकार पर विजय पा लेता है और उसकी प्रीति हरि के साथ लग जाती है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਮਨਮੁਖਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥
नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥
हे नानक ! गुरमुख सत्य नाम की कमाई करता है और मनमुख प्राणी आवागमन के चक्र में फँसा रहता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਸੁਣਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਇਕ ਸਾਖੀ ॥
हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥
हे भगवान के संतजनों, भाइयों ! भगवान रूप सतिगुरु की एक कथा सुनो।

ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਭਾਗੁ ਹੋਵੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਲੈ ਹਿਰਦੈ ਰਾਖੀ ॥
जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥
जिस व्यक्ति के माथे पर प्रारम्भ से ही उसकी किस्मत में लिखा होता है, वहीं इस कथा को सुनकर अपने हृदय में बसाता है।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਥਾ ਸਰੇਸਟ ਊਤਮ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਹਜੇ ਚਾਖੀ ॥
हरि अम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥
भगवान की अमृत कथा सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठ है; गुरु की वाणी द्वारा सहज ही इसका स्वाद प्राप्त होता है।

ਤਹ ਭਇਆ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਜਿਉ ਸੂਰਜ ਰੈਣਿ ਕਿਰਾਖੀ ॥
तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥
उनके हृदय में प्रभु की ज्योति का प्रकाश हो जाता है; उसके हृदय में से अज्ञान रूपी अँधेरा यूं मिट जाता है जैसे सूर्य रात्रि के अन्धेरे को नाश कर देता है।

ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਲਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋ ਦੇਖਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੀ ॥੧੨॥
अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥१२॥
गुरमुख अपने नेत्रों से उस अदृष्ट, अगोचर, अलक्ष्य परमेश्वर के साक्षात् दर्शन कर लेता है॥ १२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਣਾ ਸੋ ਸਿਰੁ ਲੇਖੈ ਲਾਇ ॥
सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥
जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, वह अपना सिर प्रभु के लेखे में लगा देते हैं अर्थात् वह अपना जन्म सफल कर लेते हैं।

ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਕੈ ਰਹਨਿ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥
ऐसा मनुष्य अपने अहंकार का नाश करके सत्यस्वरूप ईश्वर की प्रीति में लीन रहते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਓ ਤਿਨਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥
सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥
जिन्होंने सतिगुरु की सेवा नहीं की, वह मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा वहीं कुछ करता है, जो कुछ उसे अच्छा लगता है उसमें किसी का कोई हस्तक्षेप नहीं ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਮਨੁ ਵੇਕਾਰੀ ਵੇੜਿਆ ਵੇਕਾਰਾ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥
जिसका मन पापों में घिरा हुआ है, यह मंदे कर्म करता है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਅਗਿਆਨੀ ਪੂਜਦੇ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥
ज्ञानहीन मनुष्य माया के मोह में फँसकर माया की पूजा करते हैं।

ਆਤਮ ਦੇਉ ਪੂਜੀਐ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥
आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥
जिसके फलस्वरुप उन्हें भगवान के दरबार में दण्ड मिलता है; अतः हमें सदैव ही भगवान की पूजा करनी चाहिए परन्तु सतिगुरु के बिना मनुष्य को ज्ञान नहीं मिलता।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਭਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਾ ਕਰਮੀ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥
जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ॥
सतिगुरु की आज्ञा में रहने वाले प्राणी को ईश्वर की दया से जप-तप, संयम सब कुछ सहज ही मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਕਮਾਵਣੀ ਜੋ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥਾਇ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥२॥
हे नानक ! भगवान की सेवा-भक्ति उसके चरणों में सुरति लगाने से होती है; जो भगवान को बेहतर लगता है, वहीं उसे स्वीकार होता है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜਿਤੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥
हे मेरे मन ! उस हरि-परमेश्वर के नाम का हमेशा भजन करो, जिससे तुझे दिन-रात सदैव सुख उपलब्ध होता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜਿਤੁ ਸਿਮਰਤ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਲਹਾਤੀ ॥
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥
हे मेरे मन ! तू हरिनाम का भजन कर, जिसका सिमरन करने से तेरे पाप मिट जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜਿਤੁ ਦਾਲਦੁ ਦੁਖ ਭੁਖ ਸਭ ਲਹਿ ਜਾਤੀ ॥
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥
हे मेरे मन ! उस हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करो, जिससे दरिद्रता, दुख एवं भूख सब दूर हो जाती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਤੀ ॥
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥
हे मेरे मन ! तू हरिनाम का चिन्तन कर, जिससे जिज्ञासु की सतिगुरु से आसक्ति होती है।

ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਭਾਗੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਸਾਚੈ ਹਰਿ ਤਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਤੀ ॥੧੩॥
jitu mukhi bhagu likhiaa dhuri saachai hari titu mukhi naamu japaatee ॥१३॥
जिसके माथे पर परमेश्वर ने भाग्य लिखा है, वह अपने मुख से हरि के नाम का भजन करता है ॥१३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥:
salok mः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸਬਦਿ ਨ ਕੀਤੋ ਵੀਚਾਰੁ ॥
satiguru jinee na seviO sabadi na keeto veechaaru ॥
जो प्राणी सतिगुरु की सेवा नहीं करते और न ही गुरु-शब्द का चिन्तन करते हैं,

ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਨ ਆਇਓ ਮਿਰਤਕੁ ਹੈ ਸੰਸਾਰਿ ॥
antari giaanu na aaieO miratku hai sansaari ॥
उनके अन्तर्मन में ज्ञान प्रवेश नहीं करता और वह इस जगत् में मृतक समान हैं।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਇਆ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
lakh chauraaseeh feru paieaa mari jammai hoi khuaaru ॥
ऐसे प्राणी चौरासी लाख योनियों में चक्र काटते हैं और जीवन-मृत्यु के चक्र में पड़कर नष्ट होते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸੋਇ ॥
satigur kee sevaa so kare jis no aapi karaae soi ॥
सतिगुरु की सेवा वही करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
satigur vichi naamu nidhaanu hai karami paraapati hoi ॥
सतिगुरु में नाम रूपी खजाना है, जो प्रभु की दया से उपलब्ध होता है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਗੁਰ ਸਬਦ ਸਿਉ ਤਿਨ ਸਚੀ ਸਦਾ ਲਿਵ ਹੋਇ ॥
sachi rate gur sabad siu tin sachee sadaa liv hoi ॥
जो व्यक्ति गुरु की वाणी द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, उनकी सच्ची सुरति हमेशा ही प्रभु में लगी रहती है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਮੇਲੇ ਨ ਵਿਛੁੜੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥१॥
हे नानक ! जिसे परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, वह उससे कभी भी जुदा नहीं होता और सहज ही उसमें लीन हो जाता है।॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸੋ ਭਗਉਤੀ ਜੋ ਭਗਵੰਤੈ ਜਾਣੈ ॥
सो भगउती जो भगवंतै जाणै ॥
भगवद् भक्त का पद उसी को दिया जा सकता है, जो भगवान को जानता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥
गुर परसादी आपु पछाणै ॥
गुरु की कृपा से वह अपने स्वरूप को पहचान लेता है।

ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੈ ॥
धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥
वह अपने भटकते हुए मन को संयमित करके एक स्थान पर स्थिर कर देता है।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥
जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥
वह जीवित ही मृतक समान रहता है और हरिनाम का जाप करता है।

ਐਸਾ ਭਗਉਤੀ ਉਤਮੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा भगउती उतमु होइ ॥
ऐसा भगवत भक्त ही उत्तम होता है;

ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੨॥
नानक सचि समावै सोइ ॥२॥
हे नानक ! वह सत्य (परमात्मा) में ही समा जाता है ॥ २॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਭਗਉਤੀ ਕਹਾਏ ॥
अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में छल-कपट है और वह अपने आपको सच्चा भक्त कहलवाता है।

ਪਾਖੰਡਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਦੇ ਨ ਪਾਏ ॥
पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥
ऐसा पाखंडी व्यक्ति परमात्मा को कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता।

ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਲਾਏ ॥
पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥
जो व्यक्ति पराई निंदा करता है, वह अपने हृदय को अहंकार की मैल लगाता रहता है।

ਬਾਹਰਿ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ਮਨ ਕੀ ਜੂਠਿ ਨ ਜਾਏ ॥
बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥
वह स्नान करके बाहर से शरीर की मैल को ही स्वच्छ करता है परन्तु उसके मन की अपवित्रता दूर नहीं होती।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਬਾਦੁ ਰਚਾਏ ॥
सतसंगति सिउ बादु रचाए ॥
साधु-संतों से वह विवाद खड़ा कर लेता है।

ਨਦਿਨੁ ਦੁਖੀਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਰਚਾਏ ॥
अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥
वह द्वैत-भाव में लीन हुआ दिन-रात दुखी रहता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
हरि नामु न चेतै बहु करम कमाए ॥
वह हरि नाम का चिन्तन नहीं करता और अधिकतर कर्मकाण्ड करता है।

ਪੂਰਬ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਏ ॥
पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥
जो कुछ उसकी किस्मत में पूर्व-जन्म के कर्मों द्वारा लिखा हुआ है, वह मिटाया नहीं जा सकता।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਮੋਖੁ ਨ ਪਾਏ ॥੩॥
नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाए ॥३॥
हे नानक ! सतिगुरु की सेवा के बिना वह मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ॥३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਸੇ ਕੜਿ ਨ ਸਵਾਹੀ ॥
सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि न सवाही ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु को स्मरण करते हैं, वह जलकर राख नहीं होते।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਸੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਹੀ ॥
सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु का चिन्तन करते हैं, वह संतुष्ट और तृप्त हो जाते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਜਮ ਡਰੁ ਨਾਹੀ ॥
सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु का ध्यान करते हैं, उनको मृत्यु का कोई भय नहीं होता।

ਜਿਨ ਕਉ ਹੋਆ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹਰਿ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੈਰੀ ਪਾਹੀ ॥
जिन कउ होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥
जिन पर परमात्मा दयालु होता है, वह सतिगुरु पर नतमस्तक होते हैं।

ਤਿਨ ਐਥੈ ਓਥੈ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਜਾਹੀ ॥੧੪॥
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥१४॥
लोक तथा परलोक में उनके चेहरे उज्ज्वल होते हैं, वह परमात्मा के दरबार में प्रतिष्ठा की पोशाक धारण करके जाते हैं ॥ १४ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥
सलोक मः २ ॥
श्लोक महला २ ॥

ਜੋ ਸਿਰੁ ਸਾਂਈ ਨਾ ਨਿਵੈ ਸੋ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਡਾਰਿ ॥
जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
जो सिर ईश्वर की याद में नमन नहीं होता, उस सिर को काट देना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪਿੰਜਰ ਮਹਿ ਬਿਰਹਾ ਨਹੀ ਸੋ ਪਿੰਜਰੁ ਲੈ ਜਾਰਿ ॥੧॥
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥
हे नानक ! उस मनुष्य ढांचे को लेकर जला देना चाहिए, जिस मनुष्य ढांचे में ईश्वर से विरह की पीड़ा नहीं ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਮੁੰਢਹੁ ਭੁਲੀ ਨਾਨਕਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ ਮੁਈਆਸੁ ॥
मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्री जगत् के मूल प्रभु को भूली हुई है, वह पुनः पुनः जन्मती और मरती है।

ਕਸਤੂਰੀ ਕੈ ਭੋਲੜੈ ਗੰਦੇ ਡੁੰਮਿ ਪਈਆਸੁ ॥੨॥
कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुमि पईआसु ॥२॥
वह कस्तूरी के भ्रम में गंदे पानी के गड्ढे में पड़ी हुई है ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੋ ਸਭਨਾ ਉਪਰਿ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ॥
सो ऐसा हरि नामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥
हे मेरे मन ! तू हरि-परमेश्वर के ऐसे नाम का ध्यान कर, जो समस्त जीवों पर अपना हुक्म चलाता है।

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੋ ਅੰਤੀ ਅਉਸਰਿ ਲਏ ਛਡਾਏ ॥
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥
हे मेरे मन ! तू हरि-परमेश्वर के ऐसे नाम का जाप कर, जो अंतिम समय तुझे मोक्ष प्रदान करेगा।

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਮਨ ਮੇਰੇ ਜੁ ਮਨ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸਭ ਭੁਖ ਗਵਾਏ ॥
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ॥
हे मेरे मन ! तू हरि-परमेश्वर के ऐसे नाम का सिमरन कर, जो तेरे चित्त की समस्त तृष्णाएँ एवं भूख को मिटा देता है।

ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਵਡਭਾਗੀ ਤਿਨ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਸਭਿ ਪੈਰੀ ਪਾਏ ॥
सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ॥
वे गुरमुख बड़े सौभाग्यशाली हैं, जो उस परमेश्वर के नाम का चिन्तन करके निन्दकों-दुष्टों को अपने अधीन कर लेते हैं।

ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਸਭਨਾ ਤੇ ਵਡਾ ਸਭਿ ਨਾਵੈ ਅਗੈ ਆਣਿ ਨਿਵਾਏ ॥੧੫॥
नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥१५॥
हे नानक ! उस नाम की आराधना करो जो सबसे महान है; प्रभु ने तो समस्त जीवों को नाम के समक्ष झुका दिया है ॥१५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵੇਸ ਕਰੇ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਲਖਣੀ ਮਨਿ ਖੋਟੈ ਕੂੜਿਆਰਿ ॥
वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥
कुरूप एवं आचरणहीन जीव-स्त्री बड़े सुन्दर वस्त्र सुशोभित करती है परन्तु मन में खोट होने के कारण वह झूठी है।

ਪਿਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਨਾ ਚਲੈ ਹੁਕਮੁ ਕਰੇ ਗਾਵਾਰਿ ॥
पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥
वह अपने पति-प्रभु की इच्छानुसार नहीं चलती, वह गंवार अपने पति-प्रभु पर आदेश चलाती है।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰਿ ॥
गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥
जो जीव-स्त्री गुरु की आज्ञानुसार चलती है, वह समस्त दुःखों से बच जाती है।

ਲਿਖਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੀਐ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥
लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ॥
परमात्मा ने पूर्व-कर्म फल रूप में जो लिख दिया है, वह मिटाया अथवा बदला नहीं जा सकता।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਉਪੇ ਕੰਤ ਕਉ ਸਬਦੇ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥
इसलिए उसे अपना तन-मन पति-परमेश्वर को अर्पण करके नाम में अपना प्रेम लगाना चाहिए।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥
बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥
अपने मन में विचार करके देख लो कि नाम-स्मरण के अलावा किसी को भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुआ।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਸੁਆਲਿਓ ਸੁਲਖਣੀ ਜਿ ਰਾਵੀ ਸਿਰਜਨਹਾਰਿ ॥੧॥
नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥१॥
हे नानक ! वहीं जीव-स्त्री सुन्दर एवं सुलक्षणा है, जिसकी सेज पर सृजनहार स्वामी रमण करता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਤਿਸ ਦਾ ਨ ਦਿਸੈ ਉਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥
माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥
माया का मोह अज्ञानता का अँधकार है यह मोह रूपी अँधेरा एक समुद्र की तरह है, जिसका कोई आर-पार नजर नहीं आता।

ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦੇ ਡੁਬੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥
मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि ॥
अज्ञानी मनमुख व्यक्ति ईश्वर के नाम को विस्मृत करके डूब जाते हैं और भयानक दुःख सहन करते हैं।

ਭਲਕੇ ਉਠਿ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥
वह माया के मोह में मुग्ध हुए प्रातः काल उठकर बहुत सारे कर्मकाण्ड करते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਆਪਣਾ ਭਉਜਲੁ ਉਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥
सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥
जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, वह भवसागर से पार हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उर धारि ॥२॥
हे नानक ! गुरमुख जन सत्यनाम को अपने हृदय में लगा कर रखते हैं और सत्य प्रभु में लीन हो जाते हैं ॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਪੂਰਿ ਦੂਜਾ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ॥
हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥
ईश्वर सागर, मरुस्थल, धरती एवं गगन के अन्दर परिपूर्ण है, उसके अलावा अन्य दूसरा कोई नहीं।

ਹਰਿ ਆਪਿ ਬਹਿ ਕਰੇ ਨਿਆਉ ਕੂੜਿਆਰ ਸਭ ਮਾਰਿ ਕਢੋਇ ॥
हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ॥
ईश्वर अपने दरबार में विराजमान होकर जीवों के कर्मों का स्वयं न्याय करता है और समस्त झूठों को पीटकर बाहर निकाल देता है।

ਸਚਿਆਰਾ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਧਰਮ ਨਿਆਉ ਕੀਓਇ ॥
सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ॥
सत्यवादियों को परमेश्वर शोभा प्रदान करता है और कर्मानुसार प्रत्येक प्राणी को फल देकर न्याय करता है।

ਸਭ ਹਰਿ ਕੀ ਕਰਹੁ ਉਸਤਤਿ ਜਿਨਿ ਗਰੀਬ ਅਨਾਥ ਰਾਖਿ ਲੀਓਇ ॥
सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥
इसलिए तुम सभी हरि की महिमा- स्तुति करो, जो निर्धनों एवं अनाथों की रक्षा करता है।

ਜੈਕਾਰੁ ਕੀਓ ਧਰਮੀਆ ਕਾ ਪਾਪੀ ਕਉ ਡੰਡੁ ਦੀਓਇ ॥੧੬॥
जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥१६॥
वह भद्रपुरुषों को मान-प्रतिष्ठा प्रदान करता है और दोषियों को वह दण्ड देता है ॥१६ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੀ ਕਾਮਣੀ ਕੁਲਖਣੀ ਕੁਨਾਰਿ ॥
मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥
मनमुख जीव-स्त्री विषय-विकारों से मलिन, कुलक्षणी एवं धुरी नारी है।

ਪਿਰੁ ਛੋਡਿਆ ਘਰਿ ਆਪਣਾ ਪਰ ਪੁਰਖੈ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥
वह अपने स्वामी एवं घर को त्याग देती हैं और पराए पुरुष के साथ प्रीत करती है।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਕਦੇ ਨ ਚੁਕਈ ਜਲਦੀ ਕਰੇ ਪੂਕਾਰ ॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥
उसकी तृष्णा कभी बुझती नहीं, वह तृष्णा अग्नि में जलती है और तृष्णा अग्नि में जलती हुई विलाप करती रहती है।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਸੋਹਣੀ ਪਰਹਰਿ ਛੋਡੀ ਭਤਾਰਿ ॥੧॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥१॥
हे नानक ! हरिनाम के अलावा वह कुरुप और कुलक्षणी है और उसके स्वामी ने उसे त्याग दिया है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਬਦਿ ਰਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥
सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥
सुहागिन जीव-स्त्री सतिगुरु की रज़ा में प्रेमपूर्वक नाम में मग्न रहती है।

ਸਦਾ ਰਾਵੇ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਪਿਆਰਿ ॥
सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥
वह सत्य-प्रेम से अपने पति-प्रभु के साथ सदैव ही रमण करती है।

ਅਤਿ ਸੁਆਲਿਉ ਸੁੰਦਰੀ ਸੋਭਾਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ॥
अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥
वह बड़ी सुन्दर रूप वाली सुन्दरी एवं शोभावान नारी है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੇਲੀ ਮੇਲਣਹਾਰਿ ॥੨॥
नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥२॥
हे नानक ! मिलाने वाले पति-प्रभु ने नाम में मग्न हुई सुहागिन को अपने साथ मिला लिया है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਤੇਰੀ ਸਭ ਕਰਹਿ ਉਸਤਤਿ ਜਿਨਿ ਫਾਥੇ ਕਾਢਿਆ ॥
हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥
हे भगवान ! माया-मोह के जाल में से जिन जीवों को तूने निकाला है, वे सभी तेरी महिमा-स्तुति करते हैं।

ਹਰਿ ਤੁਧਨੋ ਕਰਹਿ ਸਭ ਨਮਸਕਾਰੁ ਜਿਨਿ ਪਾਪੈ ਤੇ ਰਾਖਿਆ ॥
हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥
जिन जीवों की तूने पापों से रक्षा की है, वे सभी तुझे नमन करते हैं।

ਹਰਿ ਨਿਮਾਣਿਆ ਤੂੰ ਮਾਣੁ ਹਰਿ ਡਾਢੀ ਹੂੰ ਤੂੰ ਡਾਢਿਆ ॥
हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥
हे हरि ! तुम मान-हीनों के मान हो, तुम बलशालियों में बलशाली हो।

ਹਰਿ ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਏ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਸਾਧਿਆ ॥
हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥
हे प्रभु ! तूने अहंकारियों को दण्डित करके झुका दिया है, मनमुख विमूढ़ जीवों का तूने ही सुधार किया है।हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥

ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਗਰੀਬ ਅਨਾਥਿਆ ॥੧੭॥
हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥१७॥
हे भगवान ! तुम हमेशा ही अपने निर्धन एवं अनाथ भक्तों को मान-प्रतिष्ठा प्रदान करते हो ॥१७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਤਿਸੁ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੋਇ ॥
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की रजा अनुसार चलता है, वह बड़ा यश प्राप्त करता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਉਤਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥
हरि का उत्तम नाम उसके हृदय में वास करता है और इस नाम को उसके हृदय में से कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਤਿਸੁ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥
जिस पर ईश्वर अपनी कृपा करता है, वह शुभ कर्मों के कारण भाग्य से नाम को प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤੇ ਵਸਿ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥
हे नानक ! सृष्टि की तमाम रचना का कारण परमात्मा के अधीन है, कोई गुरमुख व्यक्ति ही इस भेद को समझता है ॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥
नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति हरि के नाम का सिमरन करते हैं, वह रात-दिन ईश्वर के एक रस स्नेह में बसते हैं।

ਮਾਇਆ ਬੰਦੀ ਖਸਮ ਕੀ ਤਿਨ ਅਗੈ ਕਮਾਵੈ ਕਾਰ ॥
माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥
भगवान की दासी माया उनकी सेवा करती है,

ਪੂਰੈ ਪੂਰਾ ਕਰਿ ਛੋਡਿਆ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥
पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥
संवारने वाले प्रभु के हुक्म में पूर्ण सतिगुरु ने उन व्यक्तियों को गुणों से पूर्ण कर दिया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨਿ ਬੁਝਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥
गुरु की कृपा से जिन्होंने भगवान को पहचान लिया है, उन्हें ही मोक्ष द्वार प्राप्त हुआ है।

ਮਨਮੁਖ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਤਿਨ ਮਾਰੇ ਜਮ ਜੰਦਾਰੁ ॥
मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥
मनमुख व्यक्ति परमात्मा के हुक्म को नहीं जानते, इसलिए यमदूत उन्हें मारता रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨੀ ਤਰਿਆ ਭਉਜਲੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥
जो गुरमुख व्यक्ति ईश्वर की आराधना करते हैं, वह भयानक जगत् सागर से पार हो जाते हैं।

ਸਭਿ ਅਉਗਣ ਗੁਣੀ ਮਿਟਾਇਆ ਗੁਰੁ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੨॥
सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥२॥
गुरु जी स्वयं ही क्षमावान हैं, वह जीवों को गुण प्रदान करके उनके समस्त अवगुण मिटा देते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਾ ਪਰਤੀਤਿ ਹਰਿ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ॥
हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥
भगवान के भक्तों की भगवान पर पूर्ण आस्था है, हरि-प्रभु सब कुछ जानता है।

ਹਰਿ ਜੇਵਡੁ ਨਾਹੀ ਕੋਈ ਜਾਣੁ ਹਰਿ ਧਰਮੁ ਬੀਚਾਰਦਾ ॥
हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥
परमेश्वर जैसा महान कोई अन्य मत समझो, हरि पूर्ण न्याय करता है।

ਕਾੜਾ ਅੰਦੇਸਾ ਕਿਉ ਕੀਜੈ ਜਾ ਨਾਹੀ ਅਧਰਮਿ ਮਾਰਦਾ ॥
काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥
जब परमात्मा अन्याय करके किसी को भी मारता नहीं तो फिर हम क्यों चिंता एवं भय करें ?

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਨਿਆਉ ਪਾਪੀ ਨਰੁ ਹਾਰਦਾ ॥
सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥
वह परमात्मा सत्य है और उसका न्याय भी सत्य है, उसके दरबार में पापी व्यक्ति ही पराजित होते हैं।

ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਭਗਤਹੁ ਕਰ ਜੋੜਿ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨ ਤਾਰਦਾ ॥੧੮॥
सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥१८॥
हे भक्तजनों ! दोनों हाथ जोड़कर भगवान की महिमा-स्तुति करो। भगवान अपने भक्तजनों को भवसागर से पार कर देता है॥ १८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਿਲਿ ਰਹਾ ਅੰਤਰਿ ਰਖਾ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥
मेरी यही कामना है कि मैं अपने प्रियतम-प्रभु से मिली रहूँ और उसे अपने हृदय में हमेशा बसाकर रखूं।

ਸਾਲਾਹੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭ ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥
गुरु के स्नेह एवं अनुराग द्वारा मैं हमेशा प्रभु की स्तुति करती रहूँ ।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸਾਈ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ॥੧॥

नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥

हे नानक ! जिस जीव-स्त्री पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसे वह अपने साथ मिला लेता है और वही जीव-स्त्री सुहागिन है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥

गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥

जिस पर ईश्वर दयालु होता है, वह गुरु की सेवा से उसको पा लेता है।

ਮਾਣਸ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਭਏ ਧਿਆਇਆ ਨਾਮੁ ਹਰੇ ॥

माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥

जो लोग हरिनाम की आराधना करते हैं, वह मनुष्य से देवते बन जाते हैं।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਤਰੇ ॥

हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥

वह अपने अहंकार को मिटा देते हैं तथा प्रभु के साथ मिल जाते हैं और गुरु के शब्द द्वारा पार हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਅਨੁ ਹਰਿ ਆਪਣੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ॥੨॥

नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥२॥

हे नानक ! जिन पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह सहज ही उसमें लीन हो जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਆਪਣੀ ਭਗਤਿ ਕਰਾਇ ਵਡਿਆਈ ਵੇਖਾਲੀਅਨੁ ॥

हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥

भगवान ने स्वयं ही भक्तजनों से अपनी भक्ति करवा कर उन्हें अपनी महिमा दिखाई है।

ਆਪਣੀ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪਰਤੀਤਿ ਆਪੇ ਸੇਵ ਘਾਲੀਅਨੁ ॥

आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥

भगवान स्वयं ही भक्तों के हृदय में अपनी आस्था उत्पन्न करता है, वह स्वयं ही उनसे अपनी सेवा करवाता है।

ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਨੋ ਦੇਇ ਅਨੰਦੁ ਥਿਰੁ ਘਰੀ ਬਹਾਲਿਅਨੁ ॥
हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥
भगवान भक्तों को आनंद प्रदान करता है और उन्हें अपने अटल घर में स्थिर करके विराजमान करता है।

ਪਾਪੀਆ ਨੋ ਨ ਦੇਈ ਥਿਰੁ ਰਹਣਿ ਚੁਣਿ ਨਰਕ ਘੋਰਿ ਚਾਲਿਅਨੁ ॥
पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥
वह पापियों को स्थिर नहीं रहने देता और उन्हें चुन-चुनकर घोर नरकों में डालता है।

ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਨੋ ਦੇਇ ਪਿਆਰੁ ਕਰਿ ਅੰਗੁ ਨਿਸਤਾਰਿਅਨੁ ॥੧੯॥
हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥१९॥
भगवान अपने भक्तों से बहुत प्रेम करता है और उनका पक्ष लेते हुए उन्हें भवसागर से पार कर देता है ॥ १६ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਕੁਬੁਧਿ ਡੂਮਣੀ ਕੁਦਇਆ ਕਸਾਇਣਿ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਘਟ ਚੂਹੜੀ ਮੁਠੀ ਕ੍ਰੋਧਿ ਚੰਡਾਲਿ ॥
कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥
गुरु साहिब जी फुरमाते हैं कि हे पण्डित ! तेरे शरीर रूपी घर में कुबुद्धि का निवास है, जो डोमनी है, हिंसा का भी निवास है, जो कसाइन है, जो पराई निंदा रहती है, वह भंगिन है और क्रोध चाण्डाल के रूप में रहता है।

ਕਾਰੀ ਕਢੀ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾਂ ਚਾਰੇ ਬੈਠੀਆ ਨਾਲਿ ॥
कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ॥
यह सभी वृतियाँ तेरे शुभ गुणों को लूट रही हैं लकीरें खींचने का तुझे क्या लाभ है, जब ये चारों ही तेरे साथ विराजमान हैं ?

ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਣੀ ਕਾਰਾਂ ਨਾਵਣੁ ਨਾਉ ਜਪੇਹੀ ॥
सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥
सत्य को अपना संयम, शुभ आचरण को अपनी लकीरें एवं नाम स्मरण को अपना स्नान बना।

ਨਾਨਕ ਅਗੈ ਊਤਮ ਸੇਈ ਜਿ ਪਾਪਾਂ ਪੰਦਿ ਨ ਦੇਹੀ ॥੧॥
नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥१॥
हे नानक ! परलोक में केवल वही सर्वश्रेष्ठ होंगे, जो गुनाहों के मार्ग पर नहीं चलते॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਕਿਆ ਹੰਸੁ ਕਿਆ ਬਗੁਲਾ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥
हे नानक ! यदि प्रभु चाहे तो वह विष्ठा खाने वाले कौए को भी मोती चुगने वाला हंस बना देता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਕਾਗਹੁ ਹੰਸੁ ਕਰੇਇ ॥੨॥
जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥२॥
जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह बगुले जैसे पाखंडी पापी को भी हंस जैसा पवित्र बना देता है ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਕੀਤਾ ਲੋੜੀਐ ਕੰਮੁ ਸੁ ਹਰਿ ਪਹਿ ਆਖੀਐ ॥
कीता लोड़ीऐ कमु सु हरि पहि आखीऐ ॥
यदि कोई कार्य करने की आवश्यकता पड़ जाए तो उसकी सफलता के लिए भगवान के पास प्रार्थना करनी चाहिए।

ਕਾਰਜੁ ਦੇਇ ਸਵਾਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਚੁ ਸਾਖੀਐ ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥
सतिगुरु की शिक्षा द्वारा सत्य प्रभु अपने सेवक का कार्य संवार देता है।

ਸੰਤਾ ਸੰਗਿ ਨਿਧਾਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਾਖੀਐ ॥
संता संगि निधानु अम्रितु चाखीऐ ॥
संतों की संगति में मिलकर ही नाम रूपी अमृत भण्डार को चखा जाता है।

ਭੈ ਭੰਜਨ ਮਿਹਰਵਾਨ ਦਾਸ ਕੀ ਰਾਖੀਐ ॥
भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥
हे भय को नाश करने वाले मेहरबान प्रभु ! अपने सेवकों की लाज-प्रतिष्ठा रखो।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਲਖੁ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਖੀਐ ॥੨੦॥
नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥२०॥
हे नानक ! भगवान की महिमा-स्तुति करने से अलक्ष्य प्रभु से साक्षात्कार हो जाता है॥ २०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला १॥

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਸਭਸੈ ਦੇਇ ਅਧਾਰੁ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥
यह शरीर एवं प्राण सब कुछ भगवान की देन है, वह सभी जीवों को सहारा देता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵੀਐ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥
नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से हमेशा ही उस दाता-प्रभु का सिमरन करना चाहिए।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿਨਿ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥
मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ जो निरंकार प्रभु की आराधना करते हैं।

ਓਨਾ ਕੇ ਮੁਖ ਸਦ ਉਜਲੇ ਓਨਾ ਨੋ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਕਰੇ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੧॥
ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥
उनके मुख सदैव उज्ज्वल रहते हैं और सारा संसार उनको प्रणाम करता है ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਉਲਟੀ ਭਈ ਨਵ ਨਿਧਿ ਖਰਚਿਉ ਖਾਉ ॥
सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥
यदि सतिगुरु मिल जाए तो मनुष्य की वृति माया से हट जाती है, उसे नवनिधियों की उपलब्धि हो जाती है, जिन्हें वह खाता एवं खर्च करता है।

ਅਠਾਰਹ ਸਿਧੀ ਪਿਛੈ ਲਗੀਆ ਫਿਰਨਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸੈ ਨਿਜ ਥਾਇ ॥
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥
समस्त अठारह सिद्धियाँ उसके आगे-पीछे लगी रहती हैं, वह अपने आत्म-स्वरूप निज घर में जाकर रहता है।

ਅਨਹਦ ਧੁਨੀ ਸਦ ਵਜਦੇ ਉਨਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥
उसके मन में हमेशा ही अनहद ध्वनि बजती रहती है, वह परमानंद अवस्था में रहता हुआ भगवान में सुरति लगाकर रखता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਤਿਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸੈ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥
हे नानक ! जिनके माथे पर प्रारम्भ से ही उनकी किस्मत में लिखा होता है, उनके मन में ही भगवान की भक्ति निवास करती है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਉ ਢਾਢੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਖਸਮ ਕਾ ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਿ ਆਇਆ ॥
हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥
मैं अपने मालिक हरि-प्रभु का चारण हूँ और प्रभु के द्वार पर आया हूँ।

ਹਰਿ ਅੰਦਰਿ ਸੁਣੀ ਪੂਕਾਰ ਢਾਢੀ ਮੁਖਿ ਲਾਇਆ ॥
हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥
ईश्वर ने भीतर से मेरी ऊँची पुकार सुनकर मुझ चारण को अपनी उपस्थिति में बुलवा लिया।

ਹਰਿ ਪੁਛਿਆ ਢਾਢੀ ਸਦਿ ਕੈ ਕਿਤੁ ਅਰਥਿ ਤੂੰ ਆਇਆ ॥
हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥
भगवान ने मुझे बुलाकर पूछा कि तुम किस मनोरथ हेतु मेरे पास आए हो।

ਨਿਤ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥
हे मेरे दयावान परमात्मा ! मुझे हमेशा ही अपने हरि नाम-सिमरन का दान दीजिए।

ਹਰਿ ਦਾਤੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ ਨਾਨਕੁ ਪੈਨਾਇਆ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ
हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥२१॥१॥ सुधु
नानक की यह विनती सुनकर दाता-प्रभु ने उसे हरि-नाम स्मरण करवाया तथा उसे सम्मान की पोशाक पहनाई ॥२१॥ १॥ सुधु॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕਾ ॥ ਏਕੁ ਸੁਆਨੁ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਣਾ
सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा
श्रीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा

ਜਨਨੀ ਜਾਨਤ ਸੁਤੁ ਬਡਾ ਹੋਤੁ ਹੈ ਇਤਨਾ ਕੁ ਨ ਜਾਨੈ ਜਿ ਦਿਨ ਦਿਨ ਅਵਧ ਘਟਤੁ ਹੈ ॥
जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥
माता सोचती है कि उसका पुत्र बड़ा होता जा रहा है परन्तु वह इतना नहीं समझती कि प्रतिदिन उसकी आयु के दिन कम होते जा रहे हैं।

ਮੋਰ ਮੋਰ ਕਰ�ि ਅਧਿਕ ਲਾਡੁ ਧਰਿ ਪੇਖਤ ਹੀ ਜਮਰਾਉ ਹਸੈ ॥੧॥
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥
माता बड़े लाड-प्यार से उसको 'मेरा-मेरा' कह कर स्नेह करती है, परन्तु यमराज यह मोह देखकर मुस्कराता है ॥१॥

ਐਸਾ ਤੈਂ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਲਾਇਆ ॥
ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥
हे प्रभु! आप ने ही इस तरह जगत् को भ्रम में डाला हुआ है।

ਕੈਸੇ ਬੂਝੈ ਜਬ ਮੋਹਿਆ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! माया ने जगत् को अपने मोह में फँसाया हुआ है, फिर जगत् इस भेद को कैसे समझ सकता है? ॥१॥रहाउ॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਛੋਡਿ ਬਿਖਿਆ ਰਸ ਇਤੁ ਸੰਗਤਿ ਨਿਹਚਉ ਮਰਣਾ ॥
कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! तू पापों का विषय-रस त्याग दे, क्योंकि इनकी संगति से तुम निश्चित ही मर जाओगे।

ਰਮਈਆ ਜਪਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਅਨਤ ਜੀਵਣ ਬਾਣੀ ਇਨ ਬਿਧਿ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰਣਾ ॥੨॥
रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥
हे नश्वर प्राणी ! राम नाम का भजन करो, क्योंकि वहीं अनन्त जीवनदायक वाणी है। इस विधि से तुम भयानक सागर से पार हो जाओगे ॥२॥

ਜਾਂ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਾਗੈ ਭਾਉ ॥
जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥
जब भगवान को उपयुक्त लगता है तो ही जीव का उससे प्रेम होता है।

ਭਰਮੁ ਭੁਲਾਵਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥
उसके मन में से दुविधा में डालने वाला भ्रम दूर हो जाता है।

ਉਪਜੈ ਸਹਜੁ ਗਿਆਨ ਮਤਿ ਜਾਗੈ ॥
उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥
फिर मन में सहज अवस्था उत्पन्न होने से उसकी सोई हुई ज्ञान बुद्धि जाग जाती है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅੰਤਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ॥੩॥
गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥
गुरु की कृपा से उसके अन्तर्मन में भगवान से सुरति लग जाती है॥ ३॥

ਇਤੁ ਸੰਗਤਿ ਨਾਹੀ ਮਰਣਾ ॥
इतु संगति नाही मरणा ॥
परमात्मा की संगति में रहने से जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਿ ਤਾ ਖਸਮੈ ਮਿਲਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥
हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥
ईश्वर की आज्ञा को पहचान कर ही जीव का उससे मिलन हो जाता है॥ १॥ रहाउ दूसरा ॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨ ਕਾ ॥
सिरीरागु त्रिलोचन का ॥
श्रीरागु त्रिलोचन का ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਮਨਿ ਆਗਲੜਾ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜਰਾ ਮਰਣੁ ਭਉ ਵਿਸਰਿ ਗਇਆ ॥
माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥
हे प्राणी ! तेरे मन में मोह-माया की इतनी आसक्ति है कि तुझे बुढ़ापा और मृत्यु का भय भी भूल गया है।

ਕੁਟੰਬੁ ਦੇਖਿ ਬਿਗਸਹਿ ਕਮਲਾ ਜਿਉ ਪਰ ਘਰਿ ਜੋਹਹਿ ਕਪਟ ਨਰਾ ॥੧॥
कुट्मबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥
जैसे कमल का फूल जल में खिलता है, वैसे ही तुम अपने परिवार को देखकर प्रसन्न होते हो। परन्तु हे कपटी मानव ! तुम पराई-नारी को देखते रहते हो॥१॥

ਦੂੜਾ ਆਇਓਹਿ ਜਮਹਿ ਤਣਾ ॥ ਤਿਨ ਆਗਲੜੈ ਮੈ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥
जब बलवान यमदूत आते हैं तो मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता।

ਤਿਨ ਆਗਲੜੈ ਮੈ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥
कोई विरला ही संत है जो इस जगत् में आकर यह बात कहता है।

ਕੋਈ ਕੋਈ ਸਾਜਣੁ ਆਇ ਕਹੈ ॥
कोई कोई साजणु आइ कहै ॥
हे मेरे प्रभु ! मुझे दर्शन दीजिए और अपनी भुजाएं गले में डालकर मुझसे भेंट करो।

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਬੀਠੁਲਾ ਲੈ ਬਾਹੜੀ ਵਲਾਇ ॥ ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਰਮਈਆ ਮੈ ਲੇਹਿ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥
हे मेरे राम ! मुझे मिलो और बन्धन से मुक्त करो ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਰਮਈਆ ਮੈ ਲੇਹਿ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्राणी ! तूने विभिन्न प्रकार के भोग-विलासों एवं राजकीय शान-शौकत में पड़कर ईश्वर को विस्मृत कर दिया है तथा इस संसार सागर में पड़कर तुम ध्यान करते हो कि तुम अमर हो गए हो।

ਅਨਿਕ ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਰਾਜ ਬਿਸਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਪੈ ਅਮਰੁ ਭਇਆ ॥
अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥
तुझे माया ने छल लिया है इसलिए तू प्रभु को स्मरण ही नहीं करता।

ਮਾਇਆ ਮੂਠਾ ਚੇਤਸਿ ਨਾਹੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਓ ਆਲਸੀਆ ॥੨॥
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥
हे आलसी प्राणी ! तूने अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ २॥

ਬਿਖਮ ਘੋਰ ਪੰਥਿ ਚਾਲਣਾ ਪ੍ਰਾਣੀ ਰਵਿ ਸਸਿ ਤਹ ਨ ਪ੍ਰਵੇਸੰ ॥
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥
हे प्राणी ! मरणोपरांत तुझे यमपुरी जाते वक्त बहुत ही भयानक अंधकारमय मार्ग से चलना पड़ेगा। उस यमपुरी में सूर्य एवं चन्द्रमा का भी प्रवेश नहीं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਤਬ ਬਿਸਰਿ ਗਇਆ ਜਾਂ ਤਜੀਅਲੇ ਸੰਸਾਰੰ ॥੩॥
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥३॥
जब प्राणी संसार को त्याग देता है, तब वह माया के मोह को भूल जाता है।॥३॥

ਆਜੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਇਆ ਹੈ ਪੇਖੀਅਲੇ ਧਰਮਰਾਓ ॥
आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥
आज मेरे मन में यमराज प्रगट हो गया था और मैंने उसे नेत्रों से देख लिया है।

ਤਹ ਕਰ ਦਲ ਕਰਨਿ ਮਹਾਬਲੀ ਤਿਨ ਆਗਲੜੈ ਮੈ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੪॥
तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥
वहाँ यमराज के शक्तिशाली दूत लोगों को अपने हाथों से दलन करते हैं और मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता ॥४॥

ਜੇ ਕੋ ਮੂੰ ਉਪਦੇਸੁ ਕਰਤੁ ਹੈ ਤਾ ਵਣਿ ਤ੍ਰਿਣਿ ਰਤੜਾ ਨਾਰਾਇਣਾ ॥
जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ॥
हे नारायण ! जब कोई मुझे उपदेश करता है तो मुझे यूं लगता है कि जैसे तुम वनों एवं घास के तृणों में भी विद्यमान हो।

ਐ ਜੀ ਤੂੰ ਆਪੇ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਬਦਤਿ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨੁ ਰਾਮਈਆ ॥੫॥੨॥
ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥५॥२॥
भक्त त्रिलोचन जी प्रार्थना करते हैं कि हे मेरे राम ! तुम स्वयं ही सबकुछ जानते हो ॥ ५ ॥ २ ॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗੁ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕਾ ॥
स्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥
श्री रागु भगत कबीर जीउ का ॥

ਅਚਰਜ ਏਕੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਪੰਡੀਆ ਅਬ ਕਿਛੁ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥
हे पण्डित ! परमात्मा की माया की एक आश्चर्यजनक बात सुनो। उस बारे अब कुछ कहा नहीं जा सकता,

ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧ੍ਰਬ ਜਿਨਿ ਮੋਹੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਮੇਖੁਲੀ ਲਾਈ ॥੧॥
सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥१॥
उसने देवते, मनुष्य, स्वर्ग के गण-गंधर्व सभी मोहित कर रखे हैं और उसने तीनों लोकों आकाश, पाताल एवं पृथ्वी को जकड़ा हुआ है। ॥१॥

ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਅਨਹਦ ਕਿੰਗੁਰੀ ਬਾਜੈ ॥
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥
हे मेरे राम ! तेरी वीणा बज रही है, जिससे अनहद नाद उत्पन्न हो रहा है।

ਜਾ ਕੀ ਦਿਸਟਿ ਨਾਦ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥

तेरी कृपा-दृष्टि से भक्तों की उस नाद में सुरति लगती है ॥१॥ रहाउ॥

ਭਾਠੀ ਗਗਨੁ ਸਿੰਞਿਆ ਅਰੁ ਚੁੰਞਿਆ ਕਨਕ ਕਲਸ ਇਕੁ ਪਾਇਆ ॥

भाठी गगनु सिंञिआ अरु चुंञिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥

"(दशम द्वार पर मदिरा खींचने की भट्टी है, इड़ा-पिंगला दोनों नलकियाँ हैं और शुद्ध अन्तःकरण मदिरा भरने के लिए स्वर्ण-पात्र है।) मुझे दशम द्वार की भट्ठी सहित एक नलकी अंदर खींचने वाली और एक नलिका बाहर फेंकने वाली के अन्तःकरण का स्वर्ण-पात्र प्राप्त हुआ है।

ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਧਾਰ ਚੁਐ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲ ਰਸ ਮਹਿ ਰਸਨ ਚੁਆਇਆ ॥੨॥

तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥

उस पात्र में निर्मल हरि रस की धारा स्रवित होती है। यह बहने वाला हरि रस अन्यों रसों से श्रेष्ठ रस है ॥२॥

ਏਕ ਜੁ ਬਾਤ ਅਨੂਪ ਬਨੀ ਹੈ ਪਵਨ ਪਿਆਲਾ ਸਾਜਿਆ ॥

एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥

एक बहुत ही सुन्दर बात बनी है कि प्रभु ने श्वास रूपी पवन को हरि रस पान करने के लिए प्याला बना दिया है।

ਤੀਨਿ ਭਵਨ ਮਹਿ ਏਕੋ ਜੋਗੀ ਕਹਹੁ ਕਵਨੁ ਹੈ ਰਾਜਾ ॥੩॥

तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥

तीनों लोकों में एक प्रभु ही योगी रूप में निवास कर रहा है। बताओ, उस प्रभु के अतिरिक्त इस जगत् का राजा अन्य कौन है? ॥ ३॥

ਐਸੇ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਪੁਰਖੋਤਮ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥

ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥

भगत कबीर जी कहते हैं कि मेरे अन्तर्मन में पुरुषोत्तम प्रभु का ऐसा ज्ञान प्रगट हो गया है कि मैं प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया हूँ।

ਅਉਰ ਦੁਨੀ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨੀ ਮਨੁ ਰਾਮ ਰਸਾਇਨ ਮਾਤਾ ॥੪॥੩॥

अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥४॥३॥

शेष सारी दुनिया भ्रम में भूली हुई है, मैं तो समस्त रसों के स्रोत प्रभु नाम में मग्न रहता हूँ ॥४॥३॥

ਸ੍ਰੀਰਾਗ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਬੇਣੀ ਜੀਉ ਕੀ ॥
स्रीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥
श्री राग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥

ਪਹਰਿਆ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਣਾ ॥
पहरिआ कै घरि गावणा ॥
(प्रस्तुत पद को पहरे वाणी के स्वर में गाने का आदेश दिया गया है।)

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰੇ ਨਰ ਗਰਭ ਕੁੰਡਲ ਜਬ ਆਛਤ ਉਰਧ ਧਿਆਨ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥
रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥
हे मानव ! जब तुम मातृ-गर्भ में थे तो सिर के बल खड़े होकर ईश्वर के स्मरण में लीन थे।

ਮਿਰਤਕ ਪਿੰਡਿ ਪਦ ਮਦ ਨਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਏਕੁ ਅਗਿਆਨ ਸੁ ਨਾਗਾ ॥
मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सु नागा ॥
उस समय तुझे पार्थिव देह की गरिमा का अहंकार नहीं था और अज्ञानी एवं पूर्ण विहीन होने के कारण तुम दिन-रात एक हरि की आराधना करते थे।

ਤੇ ਦਿਨ ਸੰਮਲੁ ਕਸਟ ਮਹਾ ਦੁਖ ਅਬ ਚਿਤੁ ਅਧਿਕ ਪਸਾਰਿਆ ॥
ते दिन समलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥
कष्ट एवं दुखों के वह दिन स्मरण कर, अब तुमने अपने मन के जाल को अत्याधिक फैला लिया है।

ਗਰਭ ਛੋਡਿ ਮ੍ਰਿਤ ਮੰਡਲ ਆਇਆ ਤਉ ਨਰਹਰਿ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿਆ ॥੧॥
गरभ छोडि म्रित मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥१॥
जब से गर्भ को त्याग कर तू इस नश्वर संसार में आया है, तब से तूने हे मानव ! ईश्वर को अपने मन से विस्मृत कर दिया ॥१॥

ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵਹਿਗਾ ਮੂੜਿਆ ਤੂੰ ਕਵਨ ਕੁਮਤਿ ਭ੍ਰਮਿ ਲਾਗਾ ॥
फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥
हे मूर्ख ! तुम्हें फिर पछताना पड़ेगा, क्यों भ्रम में पड़कर तुम कुमति कर रहे हो।

ਚੇਤਿ ਰਾਮੁ ਨਾਹੀ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿਗਾ ਜਨੁ ਬਿਚਰੈ ਅਨਰਾਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥१॥ रहाउ ॥
राम का चिन्तन कर, अन्यथा यमपुरी जाओगे, हे मानव ! मूखों की भाँति क्यों भटकते फिरते हो? ॥१॥रहाउ॥

ਬਾਲ ਬਿਨੋਦ ਚਿੰਦ ਰਸ ਲਾਗਾ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਮੋਹਿ ਬਿਆਪੈ ॥
बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥
तू अपने बचपन में मनपसंद क्रीड़ाओं-विनोद के स्वाद में लीन रहा है, तुझे क्षण-क्षण उनका मोह उलझा रहा था।

ਰਸੁ ਮਿਸੁ ਮੇਧੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਿਖੁ ਚਾਖੀ ਤਉ ਪੰਚ ਪ੍ਰਗਟ ਸੰਤਾਪੈ ॥
रसु मिसु मेधु अम्रितु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥
अब युवावस्था में तू विष रूप माया के रसों को पवित्र समझ कर भोग रहा है; इसलिए काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पांचों विकार तुझे दुखी कर रहे हैं।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਛੋਡਿ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨ ਅਰਾਧਿਆ ॥
जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति राम नामु न अराधिआ ॥
तूने जप, तप, संयम एवं शुभ कर्मों वाली बुद्धि छोड़ दी है; तू राम नाम की आराधना भी नहीं करता।

ਉਛਲਿਆ ਕਾਮੁ ਕਾਲ ਮਤਿ ਲਾਗੀ ਤਉ ਆਨਿ ਸਕਤਿ ਗਲਿ ਬਾਂਧਿਆ ॥੨॥
उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥२॥
तेरे अन्तर्मन में कामवासना का वेग तरंगें मार रहा है; तुझे काल रूपी बुद्धि आ लगी है अब तूने कामपिपासा हेतु स्त्री को लाकर अपने गले लगा लिया है॥ २॥

ਤਰੁਣ ਤੇਜੁ ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਮੁਖੁ ਜੋਹਹਿ ਸਰੁ ਅਪਸਰੁ ਨ ਪਛਾਣਿਆ ॥
तरुण तेजु पर त्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥
यौवन के जोश में तू पराई-नारियों को देखता है और भले-बुरे की पहचान नहीं करता।

ਉਨਮਤ ਕਾਮਿ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਭੂਲੈ ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਨ ਪਛਾਨਿਆ ॥

उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥

तू कामवासना में मग्न रहकर विष रूपी प्रबल माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है; फिर तू पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं करता।

ਸੁਤ ਸੰਪਤਿ ਦੇਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਗਰਬਿਆ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਤੇ ਖੋਇਆ ॥

सुत स्मपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥

अपने पुत्रों एवं सम्पति को देखकर तेरा यह मन अहंकारी हो गया है और अपने हृदय से तूने राम को विस्मृत कर दिया है।

ਅਵਰ ਮਰਤ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਤੋਲੇ ਤਉ ਭਗ ਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਵਿਗੋਇਆ ॥੩॥

अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥३॥

सगे-सम्बन्धियों की मृत्यु पर तू अपने मन में सोचता है कि तुझे उसका कितना धन प्राप्त होगा हे मानव ! सौभाग्य से मिले अपने अमूल्य जीवन को तूने व्यर्थ गंवा दिया हैं॥ ३॥

ਪੁੰਡਰ ਕੇਸ ਕੁਸਮ ਤੇ ਧਉਲੇ ਸਪਤ ਪਾਤਾਲ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥

पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥

बुढ़ापे में तेरे बाल चमेली के फूलों से भी अधिकतर सफेद हैं और तेरी वाणी इतनी धीमी पड़ गई है, जैसे वह सातवें लोक से आती हो।

ਲੋਚਨ ਸ੍ਰਮਹਿ ਬੁਧਿ ਬਲ ਨਾਠੀ ਤਾ ਕਾਮੁ ਪਵਸਿ ਮਾਧਾਣੀ ॥

लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥

तेरे नेत्रों से जल बह रहा है; तेरी बुद्धि एवं बल शरीर में से लुप्त हो गए हैं; ऐसी अवस्था में काम तेरे मन में से यूं मंथन करता है, जैसे दूध का मंथन किया जाता है।

ਤਾ ਤੇ ਬਿਖੈ ਭਈ ਮਤਿ ਪਾਵਸਿ ਕਾਇਆ ਕਮਲੁ ਕੁਮਲਾਣਾ ॥

ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥

इसलिए तेरी बुद्धि में विषय-विकारों की झड़ी लगी हुई है; तेरा शरीर मुरझाए हुए फूल जैसा हो गया है।

ਅਵਗਤਿ ਬਾਣਿ ਛੋਡਿ ਮ੍ਰਿਤ ਮੰਡਲਿ ਤਉ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੪॥

अवगति बाणि छोडि म्रित मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥४॥

तुम अलक्ष्य प्रभु की वाणी को छोड़कर नश्वर जगत् के कार्यों में लीन हो रहे हो, तदुपरांत तुम पश्चाताप करोगे ॥४॥

ਨਿਕੁਟੀ ਦੇਹ ਦੇਖਿ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਮਾਨ ਕਰਤ ਨਹੀ ਬੂਝੈ ॥
निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥
नन्हे-मुन्ने छोटे बच्चों को देखकर तेरे मन में बड़ा प्रेम उत्पन्न होता है और तू उन पर गर्व करता है परन्तु तू ईश्वर बारे कोई सूझ प्राप्त नहीं करता।

ਲਾਲਚੁ ਕਰੈ ਜੀਵਨ ਪਦ ਕਾਰਨ ਲੋਚਨ ਕਛੂ ਨ ਸੂਝੈ ॥
लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥
चाहे तेरे नेत्रों से कुछ भी नहीं दिखाई देता फिर भी तू लम्बी आयु की लालच करता है।

ਥਾਕਾ ਤੇਜੁ ਉਡਿਆ ਮਨੁ ਪੰਖੀ ਘਰਿ ਆਂਗਨਿ ਨ ਸੁਖਾਈ ॥
थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥
अंत को शरीर का बल काम करने से थक जाता है और मन रूपी पक्षी शरीर रूपी पिंजरे में से उड़ जाता है। घर के आंगन में पड़ा मृतक शरीर किसी को अच्छा नहीं लगता।

ਬੇਣੀ ਕਹੈ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਭਗਤਹੁ ਮਰਨ ਮੁਕਤਿ ਕਿਨਿ ਪਾਈ ॥੫॥
बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥
भगत वेणी जी कहते हैं, हे भक्तों ! सुनो, मृत्यु के पश्चात किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की ॥५॥

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ॥
सिरीरागु ॥
सिरीरागु॥

ਤੋਹੀ ਮੋਹੀ ਮੋਹੀ ਤੋਹੀ ਅੰਤਰੁ ਕੈਸਾ ॥
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
हे प्रभु ! तू ही मैं हूँ और मैं ही तुम हूँ।;तेरे और मेरे बीच कोई अन्तर नहीं है।

ਕਨਕ ਕਟਿਕ ਜਲ ਤਰੰਗ ਜੈਸਾ ॥੧॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥
यह अन्तर ऐसा है जैसे स्वर्ण एवं स्वर्ण से बने आभूषण का है; जैसे जल एवं इसकी लहरों में है; वैसे ही प्राणी और ईश्वर है॥ १ ॥

ਜਉ ਪੈ ਹਮ ਨ ਪਾਪ ਕਰੰਤਾ ਅਹੇ ਅਨੰਤਾ ॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
हे अनंत परमेश्वर ! यदि मैं पाप न करता;

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਕੈਸੇ ਹੁੰਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥

तो तेरा पतितपावन नाम कैसे होता ? ॥१॥ रहाउ॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਜੁ ਨਾਇਕ ਆਛਹੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥

तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥

हे अन्तर्यामी प्रभु ! तुझे जगत् का स्वामी कहा जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਜਨੁ ਜਾਨੀਜੈ ਜਨ ਤੇ ਸੁਆਮੀ ॥੨॥

प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥

प्रभु से उसके दास की एवं दास से उसके स्वामी की पहचान हो जाती है। ॥ २॥

ਸਰੀਰੁ ਆਰਾਧੈ ਮੋ ਕਉ ਬੀਚਾਰੁ ਦੇਹੂ ॥

सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥

हे प्रभु ! मुझे यह ज्ञान दीजिए कि जब तक मेरा यह शरीर है, तब तक मैं तेरा नाम-सिमरन करता रहूँ।

ਰਵਿਦਾਸ ਸਮ ਦਲ ਸਮਝਾਵੈ ਕੋਊ ॥੩॥

रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥

भक्त रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु ! मेरी यही कामना है कि कोई महापुरुष आकर मुझे यह ज्ञान दे जाए कि तू समस्त स्थानों में विद्यमान हे॥३॥

ਰਾਗੁ ਮਾਝ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ਮਹਲਾ ੪
रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४
रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
सबका मालिक एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला सर्वशक्तिमान,निर्भय, निर्वैर, अकालमूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥
हरि-परमेश्वर एवं उसका 'हरि-हरि' नाम मुझे मन में अति प्रिय है।

ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥
मेरे सौभाग्य ही हैं कि मैं हरि-नाम का सिमरन करता रहता हूँ।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਗੁਰਮਤਿ ਚਲੈ ਜੀਉ ॥੧॥
गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥१॥
हरि-नाम सिमरन की सिद्धि मैंने पूर्ण गुरु से प्राप्त की है; कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति पर चलता है ॥१॥

ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲਇਆ ਬੰਨਿ ਪਲੈ ॥
मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥
मैंने परलोक में जाने हेतु यात्रा व्यय हेतु हरि-नाम का धन दामन में बांध लिया है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਣ ਸਖਾਈ ਸਦਾ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ॥
मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥
हरि-नाम मेरे प्राणों का साथी बन गया है और यह हमेशा ही मेरे साथ रहता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਹਰਿ ਨਿਹਚਲੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ਜੀਉ ॥੨॥
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥२॥
पूर्ण गुरु ने मेरे मन में हरि का नाम बसा दिया है; यह हरि धन सदैव स्थिर रहने वाला है; गुरु ने हरिनाम रूपी धन मेरे दामन में डाल दिया है॥२॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਾਇਆ ॥
हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥
हरि-परमेश्वर मेरा सज्जन एवं प्रियतम बादशाह है।

ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਜੀਵਾਇਆ ॥
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥
कोई संत-महापुरुष आकर मुझे हरि से मिला दे, क्योंकि वह मेरे प्राणों का जीवन है।

ਹਉ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਮੈ ਨੀਰੁ ਵਹੇ ਵਹਿ ਚਲੈ ਜੀਉ ॥੩॥
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥३॥
हे मेरी माँ ! मैं अपने प्रियतम के दर्शनों बिना रह नहीं सकता, मेरे नेत्रों में से अश्रु बह रहे हैं।॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਤ੍ਰੁ ਮੇਰਾ ਬਾਲ ਸਖਾਈ ॥
सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥
सतगुरु मेरा मित्र एवं मेरा बचपन का साथी है।

ਹਉ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥
हे मेरी माँ ! मैं उसके दर्शनों से वंचित हुआ जीवित नहीं रह सकता।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ਜੀਉ ॥੪॥੧॥
हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥४॥१॥
हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे गुरु से मिला दो; हे नानक ! गुरु हरि-नाम रूपी धन मेरे दामन में डाल देगा।॥४ ॥१॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਮਧੁਸੂਦਨ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਨ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥
मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥
हे मधुसूदन ! तू ही मेरा मन, तन एवं प्राण हैं,

ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥
हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥
क्योंकि हरि के अलावा मैं किसी अन्य को नहीं जानता।

ਕੋਈ ਸਜਣੁ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗੀ ਮੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ਦਸੈ ਜੀਉ ॥੧॥
कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥१॥
भाग्य से यदि कोई सज्जन संत मुझे मिल जाए तो वह मुझे मेरे प्रियतम हरि-प्रभु का मार्गदर्शन करेगा ॥१॥

ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਜੀ ਭਾਲਿ ਭਾਲਾਈ ॥
हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥
मैं अपने मन एवं तन की खोज से उस परमेश्वर को ढूंढ रहा हूँ।

ਕਿਉ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਲੈ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥
हे मेरी माँ ! मेरा प्रियतम प्रभु मुझे किस प्रकार मिले?

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਖੋਜੁ ਦਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵਸੈ ਜੀਉ ॥੨॥
मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥२॥
संतों की संगति में रहकर मैं उस ईश्वर का पता पूछता हूँ क्योंकि संतों की संगति के बीच हरि-प्रभु का निवास है ॥२॥

ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ॥
मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥
हे प्रभु ! मुझे मेरे प्रिय प्रियतम सतिगुरु से मिला दो, जो मेरा रखवाला है।

ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਦੀਨ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥
मैं एक विवश बालक हूँ, मेरा पालन-पोषण कीजिए।

ਮੇਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਗੁਰ ਜਲ ਮਿਲਿ ਕਮਲੁ ਵਿਗਸੈ ਜੀਉ ॥੩॥
मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥३॥
पूर्ण सतिगुरु ही मेरे माता-पिता हैं, उनके दर्शन रूपी जल के मिलन से मेरा हृदय रूपी कमल प्रफुल्लित हो जाता है॥ ३॥

ਮੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਦੇਖੇ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ॥
मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥
गुरु के दर्शनों के बिना मुझे नींद नहीं आती

ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਨਿ ਵੇਦਨ ਗੁਰ ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਵੈ ॥
मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥
क्योंकि मेरा मन एवं तन गुरु के विरह की पीड़ा सहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰਹਸੈ ਜੀਉ ॥੪॥੨॥
हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥४॥२॥
हे हरि प्रभु ! मुझ पर दया कीजिए और मेरा गुरु से मिलन करवा दो, गुरु के मिलन से दास नानक आनंदित हो जाता है ॥४॥२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਪੜੀਐ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੁਣੀਐ ॥
हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥
हमें हरि-परमेश्वर की महिमा को ही पढ़ना चाहिए और हरि की महिमा का ही चिन्तन करना चाहिए।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਥਾ ਨਿਤ ਸੁਣੀਐ ॥
हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥
सदैव ही हरि नाम की कथा को सुनना चाहिए

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਜਗੁ ਭਉਜਲੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ਜੀਉ ॥੧॥
मिलि सतसंगति हरि गुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥१॥
तथा संतों की सभा में मिलकर हरि की महिमा-स्तुति का गायन करना चाहिए; इस प्रकार भवसागर से पार हुआ जा सकता है ॥१॥

ਆਉ ਸਖੀ ਹਰਿ ਮੇਲੁ ਕਰੇਹਾ ॥
आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥
हे मेरी सखियो ! आओ हम हरि मिलन का प्रयास करें।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਾ ਮੈ ਦੇਇ ਸਨੇਹਾ॥
मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥
कोई मुझे मेरे प्रियतम का संदेश दे जाए।

ਮੇਰਾ ਮਿਤ੍ਰ ਸਖਾ ਸੋ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਭਾਈ ਮੈ ਦਸੇ ਹਰਿ ਨਰਹਰੀਐ ਜੀਉ ॥੨॥
मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥२॥
केवल वही मेरा मित्र एवं सखा है, वही प्रियतम एवं बन्धु है, जो मुझे नरसिंह-हरि का मार्गदर्शन करता है॥२॥

ਮੇਰੀ ਬੇਦਨ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਾਣੈ ॥
मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥
मेरी वेदना को पूर्ण हरि-रूप गुरु जी समझते हैं।

ਹਉ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਵਖਾਣੇ ॥
हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥
मैं प्रभु का नाम सिमरन किए बिना रह नहीं सकता।

ਮੈ ਅਉਖਧੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦੀਜੈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਉਧਰੀਐ ਜੀਉ ॥੩॥
मै अउखधु मंत्रु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥३॥
हे मेरे पूर्ण गुरदेव जी ! मुझे नाम मंत्र रूपी औषधि दीजिए एवं हरि के नाम द्वारा मेरा उद्धार कर दीजिए॥ ३॥

ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਦੀਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥
हम चात्रिक दीन सतिगुर सरणाई ॥
मैं दीन चातक हूँ और सतिगुरु की शरण में आया हूँ!

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬੂੰਦ ਮੁਖਿ ਪਾਈ ॥
हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥
गुरु जी ने हरि प्रभु के नाम की बूंद मुख में डाली है।

ਹਰਿ ਜਲਨਿਧਿ ਹਮ ਜਲ ਕੇ ਮੀਨੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮਰੀਐ ਜੀਉ ॥੪॥੩॥
हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥४॥३॥
हरि जल का समुद्र है और मैं उस जल की मछली हूँ। हे नानक ! इस जल के बिना मैं मर जाती हूँ ॥४॥३ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥
हे मेरे हरि के संतजनों ! हे भाइयों ! मुझे मिलो।

ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦਸਹੁ ਮੈ ਭੁਖ ਲਗਾਈ ॥
मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥
मुझे मेरे हरि प्रभु बारे बताओ, क्योंकि मुझे हरि के दर्शनों की भूख लगी हुई है।

ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤੇ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਜੀਉ ॥੧॥
मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥१॥
हे जगत् के जीवन दाता ! मेरी मनोकामना पूरी करो ; हरि से मिलकर उसके दर्शन करके मेरा मन प्रसन्न हो जाएगा ॥१॥

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਿ ਬੋਲੀ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥
मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥
सत्संग में मिलकर मैं हरि की वाणी बोलता हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥
हरि की कथा मेरे मन को बहुत अच्छी लगती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि हरि अम्रितु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अम्रितु पीजै जीउ ॥२॥
हरि का हरि नाम रूपी अमृत मेरे मन को मधुर लगता है; गुरु से भेंट करके मैं नाम अमृत का पान करता हूँ ॥२॥

ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਸੰਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
वडभागी हरि संगति पावहि ॥
भाग्यशाली व्यक्ति हरि की संगति प्राप्त करता है।

ਭਾਗਹੀਨ ਭ੍ਰਮਿ ਚੋਟਾ ਖਾਵਹਿ ॥
भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥
किन्तु भाग्यहीन मनुष्य भ्रम में भटकते और चोटें सहते हैं।

ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਸਤਸੰਗੁ ਨ ਲਭੈ ਬਿਨੁ ਸੰਗਤਿ ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ਜੀਉ ॥੩॥
बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥३॥
भाग्य के बिना सत्संगति नहीं मिलती; सत्संग के बिना मनुष्य पापों की मलिनता के साथ लथपथ हो जाता है।॥३॥

ਮੈ ਆਇ ਮਿਲਹੁ ਜਗਜੀਵਨ ਪਿਆਰੇ ॥
मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥
हे मेरे प्रियतम ! हे जगजीवन ! आकर मुझे दर्शन दीजिए।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਇਆ ਮਨਿ ਧਾਰੇ ॥
हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥
अपने मन में दया धारण करके मुझे हरि नाम प्रदान कीजिए।

ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਜੀਉ ॥੪॥੪॥
गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥४॥४॥
गुरु के उपदेश से मेरे मन को हरि-नाम मधुर एवं अच्छा लगने लग गया है; हे नानक ! मेरा मन हरि नाम से भीग गया है ॥४॥४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਹਰਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥
हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥
मैंने हरि बारे गुरु के दिए ज्ञान द्वारा हरि-रस प्राप्त किया है।

ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਆਇਆ ॥
मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइआ ॥
जब गुरु ने मुझे हरि-रस का पान करवाया तो मेरा मन हरि के प्रेम में मग्न हो गया।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰਸਿ ਟੁਲਿ ਟੁਲਿ ਪਉਦਾ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥१॥
मैं हरि का हरिनाम अपने मुख से बोलता रहता हूँ; मेरा मन हरि रस पान करने को उत्सुक होता है॥१॥

ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਮੈ ਗਲਿ ਮੇਲਾਈਐ ॥
आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥
हे संतजनो ! आओ और मुझे अपने गले से लगाओ।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੀ ਮੈ ਕਥਾ ਸੁਣਾਈਐ ॥
मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥
मेरे प्रियतम प्रभु की कथा सुनाओ।

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮਨੁ ਦੇਵਾ ਜੋ ਗੁਰਬਾਣੀ ਮੁਖਿ ਚਉਦਾ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥२॥
हे हरि के संतजनो ! मुझे मिलो ; जो मेरे मुंह में गुरुवाणी डालता है, मैं उसे अपना मन अर्पण कर दूँगा ॥२॥

ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥
वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥
पूर्ण सौभाग्य से ईश्वर ने मुझे अपने संत से मिला दिया है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥
गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥
पूर्णगुरु ने मेरे मुख में हरि-रस डाल दिया है।

ਭਾਗਹੀਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ਮਨਮੁਖੁ ਗਰਭ ਜੂਨੀ ਨਿਤਿ ਪਉਦਾ ਜੀਉ ॥੩॥
भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥३॥
भाग्यहीन मनुष्य को सतिगुरु प्राप्त नहीं होता; मनमुख व्यक्ति सदा गर्भ-योनि में प्रवेश करता है ॥३॥

ਆਪਿ ਦਇਆਲਿ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ॥
आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥
दयालु ईश्वर ने स्वयं मुझ पर दया की है

ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਬਿਖਿਆ ਸਭ ਨਿਵਾਰੀ ॥
मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥
और उसने अहंकार की समस्त विषैली मलिनता हटा दी है।

ਨਾਨਕ ਹਟ ਪਟਣ ਵਿਚਿ ਕਾਂਇਆ ਹਰਿ ਲੈਂਦੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਉਦਾ ਜੀਉ ॥੪॥੫॥
नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥४॥५॥
हे नानक ! गुरमुख मनुष्य देह रूपी नगर में इन्द्रिय रूपी दुकानों पर ईश्वर के नाम का सौदा खरीदते हैं।॥४॥५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਹਉ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥
मैं गोविन्द का गुणानुवाद करता हूँ और हरि नाम का ध्यान करने में ही मग्न रहता हूँ।

ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ ॥
मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥
मैं सत्संग में मिलकर नाम को अपने मन में बसाता हूँ।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਸੁਆਮੀ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਰਸੁ ਕੀਚੈ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥१॥
मेरा स्वामी हरि-प्रभु अगम्य एवं अगोचर है तथा सतिगुरु से मिलकर मैं हरि-रस का आनंद प्राप्त करता हूँ ॥१॥

ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ ਜਨ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥
धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥
वह हरि के सेवक धन्य हैं, जिन्होंने हरि-प्रभु को समझ लिया है।

ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਜਨ ਹਰਿ ਕੀ ਬਾਤਾ ॥
जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥
मैं जाकर ऐसे सेवकों से हरि की बातें पूछता हूँ।

ਪਾਵ ਮਲੋਵਾ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਚੈ ਜੀਉ ॥੨॥
पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥२॥
मैं उनके चरण दबाता हूँ और उन्हें स्वच्छ करता एवं धोता हूँ; हरि के सेवकों से भेंट करके मैं हरि-रस का पान करता हूँ ॥२॥

ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤੈ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ॥
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥
दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम बसा दिया है।
(ਨਾਮ ਦੀ ਦਾਤਿ) ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਮੇਰੇ ਹਿਰਦੇ ਵਿਚ ਪੱਕਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ,

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥
वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥
परम सौभाग्य से मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਸਚੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੋਲੀ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੀਚੈ ਜੀਉ ॥੩॥
अम्रित रसु सचु अम्रितु बोली गुरि पूरै अम्रितु लीचै जीउ ॥३॥
सतिगुरु सत्य अमृत रस का पान करते हैं और सत्य अमृतवाणी ही बोलते हैं; अतः पूर्ण गुरु से अमृत नाम प्राप्त करो॥३॥

ਹਰਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਈਐ ॥
हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥
हे प्रभु ! मुझे सद्पुरुषों की संगति में मिलाओ।

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥
पवित्र पुरुषों की सभा में मिलकर मैं हरि के नाम की आराधना करता रहूँ।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣੀ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਪਰੀਚੈ ਜੀਉ ॥੪॥੬॥
नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥४॥६॥
हे नानक ! मैं हरि कथा ही सुनता हूँ और अपने मुँह से वाणी ही बोलता हूँ; गुरु के उपदेश द्वारा हरि के नाम से मैं तृप्त हो जाता हूँ॥४॥६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਆਵਹੁ ਭੈਣੇ ਤੁਸੀ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੀਆ ॥
आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥
हे मेरी प्यारी सत्संगी बहनो ! तुम मुझे आकर मिलो।

ਜੋ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਦਸੇ ਤਿਸ ਕੈ ਹਉ ਵਾਰੀਆ ॥
जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥
जो मुझे मेरे प्रियतम प्रभु का पता बताएगी, मैं उस पर कुर्बान हो जाऊँगी।

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਲਧਾ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਘੁਮਾਈਆ ਜੀਉ ॥੧॥
मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥१॥
सत्संग में मिलकर मैंने अपने साजन हरि को ढूंढ लिया है, अपने सतिगुरु पर में बलिहारी जाती हूँ॥१॥

ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਤਹ ਸੁਆਮੀ ॥
जह जह देखा तह तह सुआमी ॥
जँहा कहीं भी मैं देखती हूँ, उधर ही मैं अपने स्वामी को देखती हूँ।

ਤੂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਵਿਆ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥
हे अन्तर्यामी प्रभु ! तू सर्वत्र व्यापक है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ਦਿਖਾਲਿਆ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਸਦ ਵਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥੨॥
गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥२॥
पूर्ण गुरु ने मेरे परमेश्वर को मेरे साथ हृदय में बसता दिखा दिया है; मैं सतिगुरु पर हमेशा कुर्बान जाती हूँ ॥२॥

ਏਕੋ ਪਵਣੁ ਮਾਟੀ ਸਭ ਏਕਾ ਸਭ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈਆ ॥
एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥
समस्त शरीरों में एक ही पवन है, एक ही मिट्टी है और सबमें एक ही ज्योति विद्यमान है।

ਸਭ ਇਕਾ ਜੋਤਿ ਵਰਤੈ ਭਿਨਿ ਭਿਨਿ ਨ ਰਲਈ ਕਿਸੈ ਦੀ ਰਲਾਈਆ ॥
सभ इका जोति वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥
भिन्न-भिन्न शरीरों में एक ही ज्योति कार्य कर रही है; परन्तु एक शरीर की ज्योति दूसरे शरीर की ज्योति में नहीं मिलाई जा सकती।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਇਕੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਹਉ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਤਾਇਆ ਜੀਉ ॥੩॥
गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥३॥
गुरु की कृपा से मुझे एक परमात्मा ही सबमें मौजूद दिखाई देता है। मैं अपने सतिगुरु पर न्योछावर हूँ ॥३॥

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
जनु नानकु बोलै अम्रित बाणी ॥
सेवक नानक अमृत वाणी उच्चारण करता है।

ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਕੈ ਮਨਿ ਪਿਆਰੀ ਭਾਣੀ ॥
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥
गुरु के सिक्खों के हृदय को यह वाणी बड़ी प्यारी एवं अच्छी लगती है।

ਉਪਦੇਸੁ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਰਉਪਕਾਰੀਆ ਜੀਉ ॥੪॥੭॥
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥४॥७॥
पूर्ण सतिगुरु वाणी द्वारा उपदेश देते हैं और वह सतिगुरु बड़े परोपकारी हैं।॥४॥७॥

ਸਤ ਚਉਪਦੇ ਮਹਲੇ ਚਉਥੇ ਕੇ ॥
सत चउपदे महले चउथे के ॥
सात चउपदे सतिगुरु रामदास जी के हैं।

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥
माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥
माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲੋਚੈ ਗੁਰ ਦਰਸਨ ਤਾਈ ॥
मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥
मेरे मन को गुरु के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा हो रही है।

ਬਿਲਪ ਕਰੇ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਕੀ ਨਿਆਈ ॥
बिलप करे चात्रिक की निआई ॥
यह चातक की भाँति विलाप करता है।

ਤ੍ਰਿਖਾ ਨ ਉਤਰੈ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵੈ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਉ ॥੧॥
त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥
हे सन्तजनों के प्रिय ! आपके दर्शनों के बिना मेरी प्यास नहीं बुझती और न ही मुझे शांति प्राप्त होती है।॥१॥

ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਗੁਰ ਦਰਸਨ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥
हे संत जनों के प्रिय ! गुरु के दर्शनों पर मैं तन, मन से न्योछावर हूँ और सदैव ही कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥

ਤੇਰਾ ਮੁਖੁ ਸੁਹਾਵਾ ਜੀਉ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥
तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥
हे मेरे गुरु ! तेरा मुख अति सुन्दर है और तेरी वाणी की ध्वनि मन को आनंद प्रदान करती है।

ਚਿਰੁ ਹੋਆ ਦੇਖੇ ਸਾਰਿੰਗਪਾਣੀ ॥
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥
हे सारंगपाणि ! तेरे दर्शन किए मुझे चिरकाल हो चुका है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਦੇਸੁ ਜਹਾ ਤੂੰ ਵਸਿਆ ਮੇਰੇ ਸਜਣ ਮੀਤ ਮੁਰਾਰੇ ਜੀਉ ॥੨॥
धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥
हे मेरे सज्जन एवं मित्र प्रभु ! वह धरती धन्य है जहाँ तुम वास करते हो॥२॥

ਹਉ ਘੋਲੀ ਹਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਗੁਰ ਸਜਣ ਮੀਤ ਮੁਰਾਰੇ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरे सज्जन एवं मित्र प्रभु रूप गुरु जी ! मैं आप पर तन-मन से न्यौछावर हूँ और आप पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਇਕ ਘੜੀ ਨ ਮਿਲਤੇ ਤਾ ਕਲਿਜੁਗੁ ਹੋਤਾ ॥

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥

यदि मैं तुझे एक क्षण भर नहीं मिलता तो मेरे लिए कलियुग उदय हो जाता है।

ਹੁਣਿ ਕਦਿ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਿਅ ਤੁਧੁ ਭਗਵੰਤਾ ॥

हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥

हे मेरे प्रिय भगवान ! मैं तुझे अब कब मिलूंगा ?

ਮੋਹਿ ਰੈਣਿ ਨ ਵਿਹਾਵੈ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਗੁਰ ਦਰਬਾਰੇ ਜੀਉ ॥੩॥
मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥
आपका दरबार देखे बिना न ही मुझे नींद आती है, न ही मेरी रात्रि बीतती है।

ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਤਿਸੁ ਸਚੇ ਗੁਰ ਦਰਬਾਰੇ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं पूज्य गुरु के सच्चे दरबार पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਭਾਗੁ ਹੋਆ ਗੁਰਿ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥
भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥
मेरे भाग्य उदय हो गए हैं और संत-गुरु से मिल पाया हूँ।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਘਰ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥
प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥
मैंने अनश्वर प्रभु को अपने हृदय-घर में ही प्राप्त कर लिया है।

ਸੇਵ ਕਰੀ ਪਲੁ ਚਸਾ ਨ ਵਿਛੁੜਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਉ ॥੪॥
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥
हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों की सेवा करता रहता हूँ और मैं उनसे एक पल अथवा क्षण मात्र भी जुदा नहीं होता।

ਹਉ ਘੋਲੀ ਜੀਉ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥੧॥੮॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥१॥८॥
हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों पर तन एवं मन से कुर्बान जाता हूँ॥ रहाउ॥१॥८॥

ਰਾਗੁ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु माझ महला ५ ॥
रागु माझ महला ५ ॥

ਸਾ ਰੁਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਸਮਾਲੀ ॥
सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥
हे प्रभु ! वहीं ऋतु अति सुन्दर है जब मैं तेरा सिमरन करता हूँ।

ਸੋ ਕੰਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ਜੋ ਤੇਰੀ ਘਾਲੀ ॥
सो कमु सुहेला जो तेरी घाली ॥
वही कार्य मुझे सुखदायक लगता है; जो कार्य मैं तेरे नाम-सिमरन के लिए करता हूँ।

ਸੋ ਰਿਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਤੁ ਰਿਦੈ ਤੂੰ ਵੁਠਾ ਸਭਨਾ ਕੇ ਦਾਤਾਰਾ ਜੀਉ ॥੧॥
सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥
हे समस्त जीवों के दाता ! वही हृदय सुखी है, जिस हृदय में तुम्हारा निवास होता है।॥१॥

ਤੂੰ ਸਾਝਾ ਸਾਹਿਬੁ ਬਾਪੁ ਹਮਾਰਾ ॥
तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥
हे मालिक ! तुम हम सब के संयुक्त पिता हो;

ਨਉ ਨਿਧਿ ਤੇਰੈ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰਾ ॥
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥
तेरे पास नवनिधियाँ हैं, तेरा भण्डार अक्षय है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਸੁ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਵੈ ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਤੁਮਾਰਾ ਜੀਉ ॥੨॥
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥
तू जिसे यह भण्डार देता है, वह मन और तन से तृप्त हो जाता है और वही तेरा भक्त बन जाता है।॥२॥

ਸਭੁ ਕੋ ਆਸੈ ਤੇਰੀ ਬੈਠਾ ॥
सभु को आसै तेरी बैठा ॥
हे मेरे मालिक ! सभी प्राणी तेरी आशा में ही बैठे हैं।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਤੂੰਹੈ ਵੁਠਾ ॥
घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥
तू घट-घट में वास कर रहा है।

ਸਭੇ ਸਾਝੀਵਾਲ ਸਦਾਇਨਿ ਤੂੰ ਕਿਸੈ ਨ ਦਿਸਹਿ ਬਾਹਰਾ ਜੀਉ ॥੩॥
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥
समस्त प्राणी तेरे भागीदार कहलाते हैं और किसी भी प्राणी को ऐसा नहीं लगता कि तुम उससे बाहर किसी अन्य स्थान पर निवास करते हो॥३॥

ਤੂੰ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਇਹਿ ॥
तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥
गुरमुखों को तुम स्वयं ही बंधनों से मुक्त कराते हो

ਤੂੰ ਆਪੇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮਿ ਭਵਾਇਹਿ ॥
तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥
और मनमुख प्राणियों को तुम स्वयं जीवन-मृत्यु के बंधन में धकेल देते हो।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਦਸਾਹਰਾ ਜੀਉ ॥੪॥੨॥੯॥
नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥२॥९॥
दास नानक तुझ पर कुर्बान जाता है; हे प्रभु! यह सबकुछ तेरा ही खेल तमाशा है॥ ४॥ २॥ ९॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲਾ ॥
अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥
मेरे मन में सुखदायक अनहद शब्द मधुर ध्वनि में बजता रहता है।

ਸਬਦਿ ਅਨੰਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥
सबदि अनंद करे सद केला ॥
उस अनहद शब्द को सुनकर मेरा मन सदैव आनंदित एवं प्रसन्न रहता है।

ਸਹਜ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਤਾੜੀ ਲਾਈ ਆਸਣੁ ਊਚ ਸਵਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥੧॥
सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥१॥
मन ने सहज गुफा में समाधि लगाई है और उच्चमण्डलों में अपना आसन बना लिया है॥१॥

ਫਿਰਿ ਘਿਰਿ ਅਪੁਨੇ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥
फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥
मन बाहर भटकने के पश्चात अपने आत्म स्वरूप रूपी घर में आया है।

ਜੋ ਲੋੜੀਦਾ ਸੋਈ ਪਾਇਆ ॥
जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥
जिस प्रभु को पाने की कामना थी, उसे मैंने पा लिया है।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ਰਹਿਆ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਗੁਰਿ ਅਨਭਉ ਪੁਰਖੁ ਦਿਖਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥੨॥
त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥२॥
हे सन्तजनो ! अब मेरा मन तृप्त तथा शांत हो गया है क्योंकि गुरदेव ने मुझे निडर स्वामी के दर्शन करवा दिए हैं॥२॥

ਆਪੇ ਰਾਜਨੁ ਆਪੇ ਲੋਗਾ ॥
आपे राजनु आपे लोगा ॥
प्रभु स्वयं ही राजन है और स्वयं ही प्रजा है।

ਆਪਿ ਨਿਰਬਾਣੀ ਆਪੇ ਭੋਗਾ ॥
आपि निरबाणी आपे भोगा ॥
वह स्वयं ही विरक्त है और स्वयं ही पदार्थों को भोगता है।

ਆਪੇ ਤਖਤਿ ਬਹੈ ਸਚੁ ਨਿਆਈ ਸਭ ਚੂਕੀ ਕੂਕ ਪੁਕਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥੩॥
आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥३॥
सत्य प्रभु सिंघासन पर विराजमान होकर स्वयं ही सत्य का न्याय करता है, मेरे अन्तर्मन की चीख-पुकार दूर हो गई है॥३॥

ਜੇਹਾ ਡਿਠਾ ਮੈ ਤੇਹੋ ਕਹਿਆ ॥
जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥
जैसा प्रभु मैंने देखा है, वैसा ही मैंने कह दिया है।

ਤਿਸੁ ਰਸੁ ਆਇਆ ਜਿਨਿ ਭੇਦੁ ਲਹਿਆ ॥
तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥
जिसको यह भेद समझ आ गया उसे असीम रस की प्राप्ति हो जाती है ।

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਪਸਾਰਿਆ ਜੀਉ ॥੪॥੩॥੧੦॥
जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥४॥३॥१०॥
जब मेरी ज्योति परम-ज्योति प्रभु में विलीन हो गई तो मुझे सुख उपलब्ध हो गया। हे नानक ! एक प्रभु का ही सारे जगत् में प्रसार हो रहा है॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਪਿਰਿ ਸੋਹਾਗੁ ਬਣਾਇਆ ॥
जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥
हे सखी ! जिस जीव-स्त्री के हृदय-घर में पति-प्रभु ने सुहाग बना लिया है अर्थात् अपना निवास कर लिया है,

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਸਖੀਏ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥
तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥
उसके हृदय-घर में मंगल गायन किया जाता है।

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਤਿਤੈ ਘਰਿ ਸੋਹਹਿ ਜੋ ਧਨ ਕੰਤਿ ਸਿਗਾਰੀ ਜੀਉ ॥੧॥
अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥१॥
जिस जीव-स्त्री को पति-प्रभु ने शुभ गुणों से अलंकृत कर दिया है, उसके हृदय-घर में आनंद एवं उल्लास बना रहता है।॥१॥

ਸਾ ਗੁਣਵੰਤੀ ਸਾ ਵਡਭਾਗਣਿ ॥
सा गुणवंती सा वडभागणि ॥
जो जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु को प्यारी लगती है, वही जीव-स्त्री गुणवान, भाग्यशालिनी,

ਪੁਤ੍ਰਵੰਤੀ ਸੀਲਵੰਤਿ ਸੋਹਾਗਣਿ ॥
पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥
पुत्रवती, शीलवान एवं सुहागिन है

ਰੂਪਵੰਤਿ ਸਾ ਸੁਘੜਿ ਬਿਚਖਣਿ ਜੋ ਧਨ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਜੀਉ ॥੨॥
रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥२॥
और वह जीव-स्त्री रूपवान, चतुर एवं पटरानी है॥ २॥

ਅਚਾਰਵੰਤਿ ਸਾਈ ਪਰਧਾਨੇ ॥
अचारवंति साई परधाने ॥
जो जीव-स्त्री पति-प्रभु के प्रेम में मग्न होकर सुन्दर बन जाती हैं, वही शुभ आचरण वाली एवं सर्वश्रेष्ठ है।

ਸਭ ਸਿੰਗਾਰ ਬਣੇ ਤਿਸੁ ਗਿਆਨੇ ॥
सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥
उस ज्ञानवान को सभी श्रृंगार सुन्दर लगते हैं।

ਸਾ ਕੁਲਵੰਤੀ ਸਾ ਸਭਰਾਈ ਜੋ ਪਿਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਸਵਾਰੀ ਜੀਉ ॥੩॥
सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥३॥
जो पति-प्रभु के प्रेम में संवारी गई है, वही कुलीना एवं पटरानी हैं ॥३॥

ਮਹਿਮਾ ਤਿਸ ਕੀ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਏ ॥
महिमा तिस की कहणु न जाए ॥
उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती,

ਜੋ ਪਿਰਿ ਮੇਲਿ ਲਈ ਅੰਗਿ ਲਾਏ ॥
जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥
जिसे पति-प्रभु ने अपने गले से लगाकर अपने साथ मिला लिया है।

ਥਿਰੁ ਸੁਹਾਗੁ ਵਰੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮ ਸਾਧਾਰੀ ਜੀਉ ॥੪॥੪॥੧੧॥
थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥४॥४॥११॥
हे नानक ! जो पति-प्रभु अगम्य एवं अगोचर है, वह उस जीव-स्त्री का सदैव स्थिर रहने वाला सुहाग बन जाता है। पति-प्रभु का प्रेम उस जीव-स्त्री का आधार बन जाता है॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਦਰਸਨ ਚਾਹੇ ॥
खोजत खोजत दरसन चाहे ॥
हे मेरे प्रभु ! तुझे ढूंढता-ढूंढता मैं तेरे दर्शनों का अभिलाषी बन गया हूँ।

ਭਾਤਿ ਭਾਤਿ ਬਨ ਬਨ ਅਵਗਾਹੇ ॥
भाति भाति बन बन अवगाहे ॥
मैंने विभिन्न प्रकार के वनों में भ्रमण किया है।

ਨਿਰਗੁਣੁ ਸਰਗੁਣੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਕੋਈ ਹੈ ਜੀਉ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਜੀਉ ॥੧॥
निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥१॥
मेरा हरि-प्रभु निर्गुण भी है और सगुण भी है। क्या कोई ऐसा महापुरुष है जो आकर मुझे उससे मिला दे? ॥१॥

ਖਟੁ ਸਾਸਤ ਬਿਚਰਤ ਮੁਖਿ ਗਿਆਨਾ ॥
खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥
कई लोग छः शास्त्रों का ज्ञान अपने मुँह से बोलकर दूसरों को सुनाते हैं।

ਪੂਜਾ ਤਿਲਕੁ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨਾ ॥
पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥
कई लोग तीर्थों के स्नान करते हैं, कई लोग देवतों की पूजा करते हैं और माथे पर तिलक लगाते हैं।

ਨਿਵਲੀ ਕਰਮ ਆਸਨ ਚਉਰਾਸੀਹ ਇਨ ਮਹਿ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜੀਉ ॥੨॥
निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥२॥
कई लोग निम्नस्तरीय कर्म करते हैं और कई लोग चौरासी प्रकार के आसन लगाते हैं परन्तु इन विधियों द्वारा मन को शांति नहीं मिलती ॥२॥

ਅਨਿਕ ਬਰਖ ਕੀਏ ਜਪ ਤਾਪਾ ॥
अनिक बरख कीए जप तापा ॥
कुछ लोगों ने अनेक वर्ष जप एवं तप किए हैं।

ਗਵਨੁ ਕੀਆ ਧਰਤੀ ਭਰਮਾਤਾ ॥
गवनु कीआ धरती भरमाता ॥
योगी धरती पर भ्रमण कर रहा है और अनेकों स्थानों पर भी गया है

ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵੈ ਜੋਗੀ ਬਹੁੜਿ ਬਹੁੜਿ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ਜੀਉ ॥੩॥
इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥
परन्तु उसके हृदय में एक क्षण भर के लिए भी शांति प्राप्त नहीं होती। योगी का मन पुनःपुन विषयों की तरफ दौड़ता रहता है॥३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਸਾਧੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥
करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥
प्रभु ने कृपा करके मुझे संतों से मिला दिया है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਧੀਰਜੁ ਪਾਇਆ ॥
मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥
मेरा मन और तन अत्यंत शीतल हो गए हैं और मुझे धैर्य मिल गया है।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਬਸਿਆ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ ਨਾਨਕੁ ਗਾਵੈ ਜੀਉ ॥੪॥੫॥੧੨॥
प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥४॥५॥१२॥
अमर परमात्मा ने मेरे हृदय में निवास कर लिया है और नानक ईश्वर का मंगल रूप गुणानुवाद ही करता है ॥४॥५॥१२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਪਰੰਪਰ ਦੇਵਾ ॥
पारब्रहम अपर्मपर देवा ॥
पारब्रह्म-प्रभु अपरंपार एवं हम सबका पूज्य देव है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥
अगम अगोचर अलख अभेवा ॥
वह अगम्य, अगोचर एवं अलक्ष्य है और उसका भेद पाया नहीं जा सकता।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਤੀ ਜੀਉ ॥੧॥
दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥१॥
परमात्मा दीनदयाल एवं जीवों का पालनहार है, गुरु के माध्यम से उस प्रभु का ध्यान करो जो मोक्षदाता है ॥१॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥
गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥
हे मधुसूदन ! आपने गुरमुखों को पार किया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੰਗੀ ਕ੍ਰਿਸਨ ਮੁਰਾਰੇ ॥
गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥
हे कृष्ण मुरारी ! आप गुरमुखों के साथी हो।

ਦਇਆਲ ਦਮੋਦਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਹੋਰਤੁ ਕਿਤੈ ਨ ਭਾਤੀ ਜੀਉ ॥੨॥
दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥२॥
गुरु की कृपा से दयालु दामोदर प्राप्त होता है और किसी अन्य विधि से वह प्राप्त नहीं होता।॥२॥

ਨਿਰਹਾਰੀ ਕੇਸਵ ਨਿਰਵੈਰਾ ॥
निरहारी केसव निरवैरा ॥
हे केशव ! आप हमेशा निराहारी, निर्वैर हो।

ਕੋਟਿ ਜਨਾ ਜਾ ਕੇ ਪੂਜਹਿ ਪੈਰਾ ॥
कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥
करोड़ों ही मनुष्य आपके चरणों की पूजा करते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਇਕਾਤੀ ਜੀਉ ॥੩॥
गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥३॥
जिसके मन में गुरु के द्वारा हरि-परमेश्वर का नाम बसता है वहीं उसका अनन्य भक्त है॥३॥

ਅਮੋਘ ਦਰਸਨ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰਾ ॥
अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥
प्रभु अनंत एवं अपार है और उसके दर्शन अवश्य ही फलदायक हैं।

ਵਡ ਸਮਰਥੁ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰਾ ॥
वड समरथु सदा दातारा ॥
वह बहुत महान एवं सब कुछ करने में समर्थ है, वह सदैव ही जीवों को दान देता रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਤਿਤੁ ਤਰੀਐ ਗਤਿ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੀ ਜਾਤੀ ਜੀਉ ॥੪॥੬॥੧੩॥
गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥४॥६॥१३॥
जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से उसका नाम-सिमरन करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है; हे नानक ! ऐसे गुरमुख की गति को कोई विरला पुरुष ही जानता है॥४॥६॥१३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਕਹਿਆ ਕਰਣਾ ਦਿਤਾ ਲੈਣਾ ॥
कहिआ करणा दिता लैणा ॥
हे प्रभु! जो तुम कथन करते हो, वहीं कुछ मैं करता हूँ और जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं वहीं कुछ लेता हूँ।

ਗਰੀਬਾ ਅਨਾਥਾ ਤੇਰਾ ਮਾਣਾ ॥
गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥
गरीब एवं अनाथ तुझ पर गर्व करते हैं।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੂੰਹੈ ਤੂੰਹੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥१॥
हे मेरे प्रिय प्रभु ! जगत् में सब कुछ तू ही कर रहा है और मैं तेरी कुदरत पर कुर्बान जाता हूँ॥१॥

ਭਾਣੈ ਉਝੜ ਭਾਣੈ ਰਾਹਾ ॥
भाणै उझड़ भाणै राहा ॥
हे प्रभु ! तेरी इच्छा से हम पथ भ्रष्ट होते हैं और तेरी इच्छा पर ही हम सदमार्ग लगते हैं।

ਭਾਣੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਾਹਾ ॥
भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥
गुरमुख प्राणी प्रभु की इच्छा पर ही प्रभु की महिमा गाते हैं।

ਭਾਣੈ ਭਰਮਿ ਭਵੈ ਬਹੁ ਜੂਨੀ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤਿਸੈ ਰਜਾਈ ਜੀਉ ॥੨॥
भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥२॥
तेरी इच्छा पर ही जीव भ्रमवश योनियों के अन्दर भटकते हैं; इस तरह सब कुछ प्रभु के आदेश पर ही हो रहा है॥२॥

ਨਾ ਕੋ ਮੂਰਖੁ ਨਾ ਕੋ ਸਿਆਣਾ ॥
ना को मूरखु ना को सिआणा ॥
इस जगत् में न कोई मूर्ख है और न ही कोई बुद्धिमान है।

ਵਰਤੈ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥
वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥
प्रत्येक स्थान पर तेरी इच्छा ही कारगर हो रही है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਬੇਅੰਤ ਅਥਾਹਾ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥
अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥३॥
हे मेरे परमात्मा ! तुम अगम्य, अगोचर, अनन्त और अपार हो। तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥३॥

ਖਾਕੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਦੇਹੁ ਪਿਆਰੇ ॥
खाकु संतन की देहु पिआरे ॥
हे प्रियतम प्रभु ! मुझे संतों के चरणों की धूल प्रदान करो।

ਆਇ ਪਇਆ ਹਰਿ ਤੇਰੈ ਦੁਆਰੈ ॥
आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥
हे परमेश्वर ! मैं तेरे द्वार पर आकर नतमस्तक हो गया हूँ।

ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਮਨੁ ਆਘਾਵੈ ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ ਸੁਭਾਈ ਜੀਉ ॥੪॥੭॥੧੪॥
दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥४॥७॥१४॥
प्रभु के दर्शनों से मेरा मन तृप्त हो जाता हैं, हे नानक ! प्रभु से मिलन उसकी इच्छा से ही होता है ॥४॥७॥१४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਦੁਖੁ ਤਦੇ ਜਾ ਵਿਸਰਿ ਜਾਵੈ ॥
दुखु तदे जा विसरि जावै ॥
मनुष्य जब भगवान को विस्मृत कर देता है तो वह बहुत दुखी होता है।

ਭੁਖ ਵਿਆਪੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਧਾਵੈ ॥
भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥
जब मनुष्य को धन-दौलत की भूख लगती है तो वह अनेक विधियों द्वारा धन प्राप्ति हेतु भरसक प्रयास करता है।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ਜੀਉ ॥੧॥
सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥१॥
दीनदयालु प्रभु जिसे अपना नाम देता है, वही उसका नाम-सिमरन करके सदैव सुखी रहता है ॥१॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਵਡ ਸਮਰਥਾ ॥
सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥
मेरा सतिगुरु सर्वशक्तिमान है।

ਜੀਇ ਸਮਾਲੀ ਤਾ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਲਥਾ ॥
जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥
यदि मैं अपने मन में उसका चिंतन करूँ, तब मेरे समस्त दुख निवृत हो जाते हैं।

ਚਿੰਤਾ ਰੋਗੁ ਗਈ ਹਉ ਪੀੜਾ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੨॥
चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥२॥
मेरी चिंता का रोग व अहंकार का दर्द दूर हो गए हैं और प्रभु स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है ॥२॥

ਬਾਰਿਕ ਵਾਂਗੀ ਹਉ ਸਭ ਕਿਛੁ ਮੰਗਾ ॥
बारिक वांगी हउ सभ किछु मंगा ॥
बालक की भाँति मैं भगवान से सबकुछ माँगता रहता हूँ।

ਦੇਦੇ ਤੋਟਿ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਾ ॥
देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥
वह मुझे बड़े प्यार से सबकुछ देता रहता है और उसकी दी हुई वस्तुओं में मुझे कोई कमी नहीं आती।

ਪੈਰੀ ਪੈ ਪੈ ਬਹੁਤੁ ਮਨਾਈ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਗੋਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੩॥
पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥३॥
मैं अपने दीनदयालु गोपाल के चरणों में बारंबार पड़-पड़कर मनाता रहता हूँ॥३॥

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥
मैं अपने पूर्ण सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ,

ਜਿਨਿ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਸਗਲੇ ਮੇਰੇ ॥
जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥
जिसने मेरे समस्त बन्धन काट दिए हैं।

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਦੇ ਨਿਰਮਲ ਕੀਏ ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਸਾਲਾ ਜੀਉ ॥੪॥੮॥੧੫॥
हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥४॥८॥१५॥
सतिगुरु ने मेरे हृदय में नाम देकर मुझे निर्मल कर दिया है। हे नानक ! परमेश्वर के प्रेम से मैं अमृत का घर बन गया हूँ ॥४॥८॥१५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਲਾਲ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਰੰਗੀਲੇ ॥
लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु! तुम सृष्टि के पालनहार, दयालु एवं परम सुखी हो।

ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਬੇਅੰਤ ਗੋਵਿੰਦੇ ॥
गहिर ग्मभीर बेअंत गोविंदे ॥
हे मेरे गोविन्द ! तू गहरे सागर की तरह है। तू बड़ा गंभीर स्वभाव वाला एवं अनंत है।

ਊਚ ਅਥਾਹ ਬੇਅੰਤ ਸੁਆਮੀ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਹਉ ਜੀਵਾਂ ਜੀਉ ॥੧॥
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥१॥
तुम सर्वोच्च, असीम एवं बेअंत हो। हे प्रभु ! मैं तुझे मन-तन से स्मरण करके ही जीवित रहता हूँ ॥१॥

ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਨਿਧਾਨ ਅਮੋਲੇ ॥
दुख भंजन निधान अमोले ॥
हे दुखों के नाशक ! तू अमूल्य गुणों का भण्डार है।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰ ਅਥਾਹ ਅਤੋਲੇ ॥
निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥
तू निर्भय, निर्वैर, असीम एवं अतुलनीय है।

ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੰਭੌ ਮਨ ਸਿਮਰਤ ਠੰਢਾ ਥੀਵਾਂ ਜੀਉ ॥੨॥
अकाल मूरति अजूनी स्मभौ मन सिमरत ठंढा थीवां जीउ ॥२॥
हे अकाल मूर्ति ! तू अयोनि एवं स्वयंभू है, और मन में तेरा सिमरन करने से बड़ी शांति प्राप्त होती है।॥२॥

ਸਦਾ ਸੰਗੀ ਹਰਿ ਰੰਗ ਗੋਪਾਲਾ ॥
सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥
भगवान सदैव जीवों के साथ रहता है। वह जगत् का पालनहार एवं आनंद का स्रोत है।

ਊਚ ਨੀਚ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥
हमेशा ऊँच-नीच की वह रक्षा करता है।

ਨਾਮੁ ਰਸਾਇਣੁ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਇਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਾਂ ਜੀਉ ॥੩॥
नामु रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अम्रितु पीवां जीउ ॥३॥
अमृत के घर परमेश्वर के नाम से मेरा मन तृप्त हो जाता है। गुरु की दया से मैं नाम रूपी अमृत का पान करता हूँ ॥३॥

ਦੁਖਿ ਸੁਖਿ ਪਿਆਰੇ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ॥
दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥
हे प्रियतम प्रभु ! मैं दुख और सुख में तुझे ही स्मरण करता हूँ।

ਏਹ ਸੁਮਤਿ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਈ ॥
एह सुमति गुरू ते पाई ॥
यह सुमति मैंने गुरु से प्राप्त की है।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਧਰ ਤੂੰਹੈ ਠਾਕੁਰ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਪਾਰਿ ਪਰੀਵਾਂ ਜੀਉ ॥੪॥੯॥੧੬॥
नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥४॥९॥१६॥
हे ठाकुर जी ! तुम ही नानक का सहारा हो। मैं हरि के प्रेम में मग्न होकर भवसागर से पार हो जाऊँगा ॥४॥९॥१६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਧੰਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ॥
धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥
वह समय बड़ा शुभ है, जब मुझे मेरे सतिगुरु मिले।

ਸਫਲੁ ਦਰਸਨੁ ਨੇਤ੍ਰ ਪੇਖਤ ਤਰਿਆ ॥
सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥
गुरु के दर्शन सफल हो गए हैं, क्योंकि नेत्रों से उनके दर्शन करके मैं भवसागर से पार हो गया हूँ।

ਧੰਨੁ ਮੂਰਤ ਚਸੇ ਪਲ ਘੜੀਆ ਧੰਨਿ ਸੁ ਓਇ ਸੰਜੋਗਾ ਜੀਉ ॥੧॥
धंनु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥१॥
वह मुहूर्त, पल और घड़ी एवं संयोग भी शुभ है, जिससे मेरा सतिगुरु से मिलन हुआ है॥ १॥
॥1॥

ਉਦਮੁ ਕਰਤ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ॥
उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥
पुरुषार्थ करने से मेरा मन पवित्र हो गया है।

ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਚਲਤ ਭ੍ਰਮੁ ਸਗਲਾ ਖੋਇਆ ॥
हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥
हरिप्रभु के मार्ग पर चलने से मेरा भृम दूर हो गया है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਣਾਇਆ ਮਿਟਿ ਗਏ ਸਗਲੇ ਰੋਗਾ ਜੀਉ ॥੨॥
नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥२॥
सतिगुरु ने मुझे गुणों का भण्डार नाम सुनाया है और नाम सुनकर मेरे तमाम रोग नाश हो गए हैं।॥२॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥
अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥
हे प्रभु ! घर के अन्दर और बाहर मैं तेरी वाणी गाता रहता हूँ।

ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਕਥੀ ਤੈ ਆਪਿ ਵਖਾਣੀ ॥
तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥
यह वाणी तूने स्वयं ही उच्चारण की है और स्वयं ही इसका वर्णन किया है।

ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਸਭੁ ਏਕੋ ਏਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਹੋਇਗਾ ਜੀਉ ॥੩॥
गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥३॥
गुरु ने कहा है कि समस्त स्थानों पर एक प्रभु ही है और एक प्रभु ही होगा और प्रभु जैसा जगत् में अन्य कोई नहीं होगा।॥ ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪੀਆ ॥
अम्रित रसु हरि गुर ते पीआ ॥
मैंने हरि-रस रूपी अमृत गुरु से पान किया है।

ਹਰਿ ਪੈਨਣੁ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਥੀਆ ॥
हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥
अब हरि का नाम ही मेरा पहरावा एवं भोजन बन गया है।

ਨਾਮਿ ਰੰਗ ਨਾਮਿ ਚੋਜ ਤਮਾਸੇ ਨਾਉ ਨਾਨਕ ਕੀਨੇ ਭੋਗਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੦॥੧੭॥
नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥४॥१०॥१७॥
हे नानक ! नाम में मग्न रहना ही मेरे लिए आनंद, खेल एवं मनोरंजन है और नाम हो पदार्थों का भोग है ॥४॥१०॥१७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਗਲ ਸੰਤਨ ਪਹਿ ਵਸਤੁ ਇਕ ਮਾਂਗਉ ॥
सगल संतन पहि वसतु इक मांगउ ॥
मैं समस्त संतजनों से एक वस्तु ही माँगता हूँ।

ਕਰਉ ਬਿਨੰਤੀ ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਉ ॥
करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥
मैं एक प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपना अहंकार त्याग दूँ।

ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਜਾਈ ਲਖ ਵਰੀਆ ਦੇਹੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰਾ ਜੀਉ ॥੧॥
वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥१॥
मैं संतजनों पर लाख-लाख बार कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! मुझे संतों की चरण-धूलि प्रदान कीजिए॥१॥

ਤੁਮ ਦਾਤੇ ਤੁਮ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥
तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥
हे प्रभु ! तुम ही जीवों के दाता हो और तुम ही विधाता हो।

ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥
तुम समरथ सदा सुखदाते ॥
तुम सर्वशक्तिमान हो और तुम ही सदैव सुख देने वाले हो।

ਸਭ ਕੋ ਤੁਮ ਹੀ ਤੇ ਵਰਸਾਵੈ ਅਉਸਰੁ ਕਰਹੁ ਹਮਾਰਾ ਪੂਰਾ ਜੀਉ ॥੨॥
सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥२॥
हे प्रभु ! सभी जीव तुझसे ही मनोकामनाएँ प्राप्त करते हैं। मेरा यह अमूल्य जीवन मेरे लिए तुझ से मिलने का एक सुनहरी अवसर है, अतः मेरा जीवन समय सफल कर दीजिए ॥२॥

ਦਰਸਨਿ ਤੇਰੈ ਭਵਨ ਪੁਨੀਤਾ ॥
दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥
हे प्रभु ! जिन लोगों ने तेरे दर्शन करके अपने शरीर रूपी भवन को पवित्र कर लिया है।

ਆਤਮ ਗੜੁ ਬਿਖਮੁ ਤਿਨਾ ਹੀ ਜੀਤਾ ॥
आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥
उन्होंने मन रूपी विषम किले पर विजय प्राप्त की है।

ਤੁਮ ਦਾਤੇ ਤੁਮ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਸੂਰਾ ਜੀਉ ॥੩॥
तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥३॥
तुम ही जीवों के दाता और तुम ही विधाता हो तथा जगत् में तेरे जैसा अन्य कोई शूरवीर नहीं ॥३॥

ਰੇਨੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਮੇਰੈ ਮੁਖਿ ਲਾਗੀ ॥
रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥
जब संतों के चरणों की धूल मेरे माथे में लगी,"

ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਨਸੀ ਕੁਬੁਧਿ ਅਭਾਗੀ ॥
दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥
तब मेरी खोटी बुद्धि और कुबुद्धि लुप्त हो गई।

ਸਚ ਘਰਿ ਬੈਸਿ ਰਹੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ਨਾਨਕ ਬਿਨਸੇ ਕੂਰਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੧॥੧੮॥
सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥४॥११॥१८॥
हे नानक ! अब मैं सत्य घर में बसता हूँ और परमात्मा का यशोगान ही करता हूँ। मेरे अन्तर्मन से मेरा झूठ भी नाश हो गया है ॥४॥११॥१८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਏਵਡ ਦਾਤੇ ॥
विसरु नाही एवड दाते ॥
हे इतने महान दानशील प्रभु ! मैं तुझे कदापि विस्मृत न करूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਤਨ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥
करि किरपा भगतन संगि राते ॥
इसलिए मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मेरा मन तेरे भक्तों के प्रेम में मग्न रहे।

ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਜਿਉ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ਏਹੁ ਦਾਨੁ ਮੋਹਿ ਕਰਣਾ ਜੀਉ ॥੧॥
दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥१॥
हे प्रभु! जिस तरह तुझे अच्छा लगे, मुझे यह दान दीजिए कि दिन-रात मैं तेरा ही सिमरन करता रहूँ॥१॥

ਮਾਟੀ ਅੰਧੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਈ ॥
माटी अंधी सुरति समाई ॥
जीवों के शरीर ज्ञानहीन मिट्टी के बने हुए हैं और इन शरीरों में चेतन सुरति समाई हुई है।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਦੀਆ ਭਲੀਆ ਜਾਈ ॥
सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥
हे प्रभु ! तू जीवों को सबकुछ देता है। तू जीवों को रहने के लिए अच्छे स्थान देता है

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਚੋਜ ਤਮਾਸੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਹੋਣਾ ਜੀਉ ॥੨॥
अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥२॥
और ये जीव विभिन्न प्रकार के विलास, विनोद, आश्चर्यमयी कौतुक एवं मनोरंजन प्राप्त करते हैं। जो कुछ तुझे भाता है, वही होता है॥२॥

ਜਿਸ ਦਾ ਦਿਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਲੈਣਾ ॥
जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥
(उस परमात्मा को स्मरण करो) जिस भगवान का दिया हुआ हम सब कुछ ले रहे हैं

ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭੋਜਨੁ ਖਾਣਾ ॥
छतीह अम्रित भोजनु खाणा ॥
और छत्तीस प्रकार के भोजन खा रहे हैं।

ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਸੀਤਲੁ ਪਵਣਾ ਸਹਜ ਕੇਲ ਰੰਗ ਕਰਣਾ ਜੀਉ ॥੩॥
सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥३॥
हमें सुखदायक सेज सोने के लिए मिल रही है, हम शीतल पवन का आनंद लेते हैं तथा विलासपूर्ण क्रीड़ाएँ करते हैं।॥३॥

ਸਾ ਬੁਧਿ ਦੀਜੈ ਜਿਤੁ ਵਿਸਰਹਿ ਨਾਹੀ ॥
सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥
हे प्रियतम प्रभु ! मुझे वह बुद्धि दीजिए, जो तुझे विस्मृत न करे।

ਸਾ ਮਤਿ ਦੀਜੈ ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ॥
सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥
मुझे ऐसी मति प्रदान करो जिससे मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ।

ਸਾਸ ਸਾਸ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਓਟ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਚਰਣਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੨॥੧੯॥
सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥४॥१२॥१९॥
हे प्रभु ! अपने प्रत्येक श्वास से मैं तेरा यशोगान करता हूँ। नानक ने गुरु के चरणों की शरण ली है ॥४॥१२॥१९॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਿਫਤਿ ਸਾਲਾਹਣੁ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਰਜਾਈ ॥
सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥
हे प्रभु ! तेरी महिमा-स्तुति करना ही तेरे हुकम एवं इच्छा को मानना है।

ਸੋ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਈ ॥
सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥
जो तुझे अच्छा लगता है, उसे भला समझना ही ज्ञान एवं ध्यान है।

ਸੋਈ ਜਪੁ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਭਾਵੈ ਭਾਣੈ ਪੂਰ ਗਿਆਨਾ ਜੀਉ ॥੧॥
सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥१॥
जो पूज्य प्रभु को भाता है, वही जप है, उसकी इच्छा में रहना ही पूर्ण ज्ञान है॥१॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸੋਈ ਗਾਵੈ ॥ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥
अम्रितु नामु तेरा सोई गावै ॥
हे प्रभु ! तेरा नाम अमृत है परन्तु इस नाम को वहीं गाता है,

ਤੂੰ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਸੰਤ ਸਾਹਿਬ ਮਨੁ ਮਾਨਾ ਜੀਉ ॥੨॥
जो साहिब तेरै मनि भावै ॥
जो तेरे मन को प्यारा लगता है।

ਤੂੰ ਸੰਤਨ ਕੀ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥२॥
तुम संतों के हो और संत तुम्हारे हैं। हे स्वामी ! संतों का चित तुझ में माना हुआ है।॥२॥

ਸੰਤ ਖੇਲਹਿ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਗੋਪਾਲਾ ॥
तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥
हे ईश्वर ! तुम संतों का पालन करते हो।

ਸੰਤ ਖੇਲਹਿ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਗੋਪਾਲਾ ॥
संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥
हे गोपाल ! संत तेरे साथ प्यार की खेल खेलते हैं।

ਅਪੁਨੇ ਸੰਤ ਤੁਧੁ ਖਰੇ ਪਿਆਰੇ ਤੂ ਸੰਤਨ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨਾ ਜੀਉ ॥੩॥
अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥३॥
तुझे अपने संत अति प्रिय हैं। तुम अपने संतों के प्राण हो।॥३॥

ਉਨ ਸੰਤਨ ਕੈ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਕੁਰਬਾਨੇ ॥
उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥
मेरा मन उन संतों पर कुर्बान जाता है,

ਜਿਨ ਤੂੰ ਜਾਤਾ ਜੋ ਤੁਧੁ ਮਨਿ ਭਾਨੇ ॥
जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥
जिन्होंने तुझे पहचान लिया है और जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं।

ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਸ ਨਾਨਕ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਨਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੩॥੨੦॥
तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक त्रिपति अघाना जीउ ॥४॥१३॥२०॥
उनकी संगति में रहकर मैंने सदैव सुख पा लिया है। हे नानक ! हरि रस का पान करके मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ ॥४॥१३॥२०॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਤੂੰ ਜਲਨਿਧਿ ਹਮ ਮੀਨ ਤੁਮਾਰੇ ॥
तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥
हे परमेश्वर ! तुम जलनिधि हो और हम जल में रहने वाली तेरी मछलियाँ हैं।

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਬੂੰਦ ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਤਿਖਹਾਰੇ ॥
तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे ॥
तेरा नाम वर्षा की बूंद है और हम प्यासे पपीहे हैं।

ਤੁਮਰੀ ਆਸ ਪਿਆਸਾ ਤੁਮਰੀ ਤੁਮ ਹੀ ਸੰਗਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਜੀਉ ॥੧॥
तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥१॥
तुम ही मेरी आशा हो और मुझे तेरे नाम रूपी अमृत का पान करने की प्यास लगी हुई है। मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि मेरा मन तुझ में ही लीन हुआ रहे॥१॥

ਜਿਉ ਬਾਰਿਕੁ ਪੀ ਖੀਰੁ ਅਘਾਵੈ ॥
जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥
जिस तरह बालक दुग्धपान करके तृप्त होता है,

ਜਿਉ ਨਿਰਧਨੁ ਧਨੁ ਦੇਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥
जैसे एक निर्धन दौलत मिल जाने पर प्रसन्न होता है,

ਤ੍ਰਿਖਾਵੰਤ ਜਲੁ ਪੀਵਤ ਠੰਢਾ ਤਿਉ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭੀਨਾ ਜੀਉ ॥੨॥
त्रिखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥
जैसे प्यासा पुरुष शीतल जल पान करके शीतल हो जाता है वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में भीग गया है ॥२॥

ਜਿਉ ਅੰਧਿਆਰੈ ਦੀਪਕੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥
जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥
जिस तरह दीपक अंधेरे में प्रकाश कर देता है,

ਭਰਤਾ ਚਿਤਵਤ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
भरता चितवत पूरन आसा ॥
जिस तरह अपने पति का ध्यान करने वाली पत्नी की आशा पूरी हो जाती है,

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਿਉ ਹੋਤ ਅਨੰਦਾ ਤਿਉ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਮਨੁ ਰੰਗੀਨਾ ਜੀਉ ॥੩॥
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥
जिस तरह प्राणी अपने प्रियतम से मिलकर प्रसन्न होता है, वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में मग्न हो गया है॥३॥

ਸੰਤਨ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥
संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥
संतजनों ने मुझे प्रभु के मार्ग लगा दिया है।

ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਗਿਝਾਇਆ ॥
साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ॥
संतों की कृपा से मेरा मन भगवान से मिल गया है।

ਹਰਿ ਹਮਰਾ ਹਮ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸੇ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਸਚੁ ਦੀਨਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੪॥੨੧॥
हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥४॥१४॥२१॥
भगवान मेरा स्वामी है और मैं भगवान का सेवक हूँ। हे नानक ! गुरदेव ने मुझे सत्य नाम का दान दिया है ॥४॥१४॥२१॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲੀਆ ॥
अम्रित नामु सदा निरमलीआ ॥
भगवान का अमृतमयी नाम सदैव ही निर्मल रहता है।

ਸੁਖਦਾਈ ਦੂਖ ਬਿਡਾਰਨ ਹਰੀਆ ॥
सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥
भगवान सुख देने वाला और दुखों का नाश करने वाला है।

ਅਵਰਿ ਸਾਦ ਚਖਿ ਸਗਲੇ ਦੇਖੇ ਮਨ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਭ ਤੇ ਮੀਠਾ ਜੀਉ ॥੧॥
अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥
हे मेरे मन ! तूने अन्य स्वाद चखकर देख लिए हैं परन्तु हरि-रस ही सबसे मीठा है॥१॥

ਜੋ ਜੋ ਪੀਵੈ ਸੋ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥
जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥
जो कोई भी इस हरि-रस का पान करता है, वह प्रसन्न हो जाता है।

ਅਮਰੁ ਹੋਵੈ ਜੋ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ॥
अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥
जो नाम रस को प्राप्त कर लेता है, वह अमर हो जाता है।

ਨਾਮ ਨਿਧਾਨ ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਮਨਿ ਵੂਠਾ ਜੀਉ ॥੨॥
नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥२॥
नाम की निधि उसको मिलती है, जिसके हृदय में गुरु की वाणी वास करती है॥२॥

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਨਾ ॥
जिनि हरि रसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥
जिसने भी हरि रस को पाया है, वह तृप्त हो गया है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸਾਦੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਨਾਹਿ ਡੁਲਾਨਾ ॥
जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥
जो व्यक्ति हरि-रस का स्वाद प्राप्त कर लेता है, वह फिर कभी डगमगाता नहीं।

ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੀਠਾ ਜੀਉ ॥੩॥
तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥३॥
भगवान का हरि नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर भाग्य विद्यमान होता है।॥३॥

ਹਰਿ ਇਕਸੁ ਹਥਿ ਆਇਆ ਵਰਸਾਣੇ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥
हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥
परमात्मा अकेले गुरु के हाथ लगा है, जिससे बहुत ही लाभ प्राप्त करते हैं।

ਤਿਸੁ ਲਗਿ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਘਣੇਰੇ ॥
तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥
उससे संगति करके बहुत सारे लोग मुक्त हो जाते हैं।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੀ ਡੀਠਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੫॥੨੨॥
नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥४॥१५॥२२॥
नाम की निधि गुरदेव से ही प्राप्त होती है। हे नानक ! उस नाम-निधि के विरले पुरुषों ने ही दर्शन किए हैं।॥४॥१५॥२२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ਰਿਧਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਰੈ ॥
निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥
हरि-परमेश्वर का हरि-नाम ही मेरी निधियां, सिद्धियाँ एवं ऋद्धियाँ हैं।

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੈ ॥
जनमु पदारथु गहिर ग्मभीरै ॥
गहरे एवं गम्भीर ईश्वर की दया से मुझे दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है।

ਲਾਖ ਕੋਟ ਖੁਸੀਆ ਰੰਗ ਰਾਵੈ ਜੋ ਗੁਰ ਲਾਗਾ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥१॥
जो प्राणी गुरु की चरण-सेवा में लगा है, वह लाखों, करोड़ों खुशियाँ एवं आनन्द भोगता है॥१॥

ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਭਏ ਪੁਨੀਤਾ ॥
दरसनु पेखत भए पुनीता ॥
गुरु के दर्शन करके प्राणी पवित्र हो जाता है

ਸਗਲ ਉਧਾਰੇ ਭਾਈ ਮੀਤਾ ॥
सगल उधारे भाई मीता ॥
और वह अपने भ्राताओं एवं सज्जनों को बचा लेता है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨਾ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਚੁ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥੨॥
अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥२॥
गुरदेव की दया से मैं अपने अगम्य, अगोचर व महान सत्य परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥२॥

ਜਾ ਕਉ ਖੋਜਹਿ ਸਰਬ ਉਪਾਏ ॥
जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥
जिस भगवान की उसके उत्पन्न किए हुए समस्त जीव खोज करते रहते हैं,

ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਪਾਏ ॥
वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥
उसके दर्शन कोई विरला भाग्यशाली ही प्राप्त करता है।

ਊਚ ਅਪਾਰ ਅਗੋਚਰ ਥਾਨਾ ਓਹੁ ਮਹਲੁ ਗੁਰੂ ਦੇਖਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥
ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥३॥
प्रभु का निवास सर्वोच्च, अपार एवं अगोचर है तथा गुरु ने मुझे प्रभु निवास के दर्शन करवा दिए हैं॥३॥

ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥
गहिर ग्मभीर अम्रित नामु तेरा ॥
हे प्रभु ! तू गहरा और गम्भीर है, तेरा नाम अमृत रूप है।

ਮੁਕਤਿ ਭਇਆ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਵਸੇਰਾ ॥
मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥
जिसके हृदय में प्रभु वास करता है, वह मुक्त हो जाता है।

ਗੁਰਿ ਬੰਧਨ ਤਿਨ ਕੇ ਸਗਲੇ ਕਾਟੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਜੀਉ ॥੪॥੧੬॥੨੩॥
गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥४॥१६॥२३॥
हे नानक ! गुरदेव ने जिनके समस्त बन्धन काट दिए हैं, वह सहज ही प्रभु में विलीन हो जाता है॥ ४ ॥ १६ ॥ २३ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵਉ ॥
प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥
प्रभु की कृपा से मैं हरि-परमेश्वर का ध्यान करता हूँ।

ਪ੍ਰਭੂ ਦਇਆ ਤੇ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਉ ॥
प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥
प्रभु की दया से मैं उसका मंगल गायन करता हूँ।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਸਗਲ ਅਵਰਦਾ ਜੀਉ ॥੧॥
ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥१॥
उठते-बैठते, सोते और जागते सब अवस्थाओं में हमें हरि का ध्यान करना चाहिए॥१॥

ਨਾਮੁ ਅਉਖਧੁ ਮੋ ਕਉ ਸਾਧੂ ਦੀਆ ॥
नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥
संतों ने मुझे नाम रूपी औषधि प्रदान की है।

ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੇ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਆ ॥
किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥
इसने मेरे समस्त पाप काट दिए हैं और मैं पवित्र हो गया हूँ।

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਨਿਕਸੀ ਸਭ ਪੀਰਾ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਦਰਦਾ ਜੀਉ ॥੨॥
अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥२॥
मेरी सारी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कष्ट मिट गए हैं तथा बड़ा आनंद प्राप्त हो रहा है॥२॥

ਜਿਸ ਕਾ ਅੰਗੁ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥
जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥
मेरा प्रियतम प्रभु जिसकी सहायता करता है,

ਸੋ ਮੁਕਤਾ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰਾ ॥
सो मुकता सागर संसारा ॥
वह संसार सागर से मुक्त हो जाता है।

ਸਤਿ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਗੁਰੂ ਪਛਾਤਾ ਸੋ ਕਾਹੇ ਕਉ ਡਰਦਾ ਜੀਉ ॥੩॥
सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥३॥
जिस व्यक्ति ने गुरु को सत्य रूप में समझ लिया है, वह मृत्यु से क्यों भयभीत हो ॥३॥

ਜਬ ਤੇ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਪਾਏ ॥
जब ते साधू संगति पाए ॥
जब से मैंने साधु की संगति प्राप्त की है,

ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਹਉ ਗਈ ਬਲਾਏ ॥
गुर भेटत हउ गई बलाए ॥
तब से गुरु को मिलने से अहंकार का भूत दूर हो गया है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਰਿ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰ ਢਾਕਿ ਲੀਆ ਮੇਰਾ ਪੜਦਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੭॥੨੪॥
सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥४॥१७॥२४॥
हे प्रभु ! श्वास-श्वास से नानक परमात्मा की कीर्ति गायन करता है। सतिगुरु ने मेरे पाप ढांप लिए हैं।॥४॥१७ ॥२४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਸੇਵਕ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
ओति पोति सेवक संगि राता ॥
भगवान अपने सेवकों से ताने-बाने की तरह मिला रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਸੇਵਕ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥
सुखदाता परमेश्वर अपने सेवकों का पालन करता है।

ਪਾਣੀ ਪਖਾ ਪੀਸਉ ਸੇਵਕ ਕੈ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਕਾ ਆਹਰੁ ਜੀਉ ॥੧॥
पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥१॥
हे ईश्वर ! जो भक्त तेरे भजन में लीन हैं, मैं उनके घर पानी ढ़ोता, पंखा करता एवं चक्की से आटा पीसता हूँ॥१॥

ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਪ੍ਰਭਿ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥
काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥
हे परमात्मा ! आपने मेरी वासना रूपी फाँसी को काट मुझे अपनी सेवा में प्रवृत्त कर लिया है।

ਹੁਕਮੁ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਸੇਵਕ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥
इसलिए प्रभु का हुक्म सेवक के मन को अच्छा लगता है।

ਸੋਈ ਕਮਾਵੈ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੇਵਕੁ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਮਾਹਰੁ ਜੀਉ ॥੨॥

सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥२॥

सेवक वही कर्म करता है जो प्रभु के मन को भला लगता है। इसलिए सेवक भीतर-बाहर सेवा करने में परिपक्व हो जाता है॥२॥

तुँ दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥

तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥

हे प्रभु ! तुम बुद्धिमान स्वामी हो और समस्त युक्तियों में सर्वज्ञ हो।

ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਹਰਿ ਰੰਗ ਮਾਣਹਿ ॥
ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥
परमात्मा के सेवक ईश्वर की प्रीति का आनन्द भोगते हैं।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੋ ਸੇਵਕ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਸੰਗਿ ਜਾਹਰੁ ਜੀਉ ॥੩॥
जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥३॥
जो कुछ परमात्मा का है, वही उसके सेवक का है। सेवक अपने परमात्मा की संगति में जगत् में लोकप्रिय होता है। ॥३॥

ਅਪੁਨੈ ਠਾਕੁਰਿ ਜੋ ਪਹਿਰਾਇਆ ॥
अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥
जिसको उसका परमात्मा प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाता है,

ਬਹੁਰਿ ਨ ਲੇਖਾ ਪੁਛਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥
बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥
उसे फिर बुलाकर उसके कर्मों का लेखा नहीं पूछता।

ਤਿਸੁ ਸੇਵਕ ਕੈ ਨਾਨਕ ਕੁਰਬਾਣੀ ਸੋ ਗਹਿਰ ਗਭੀਰਾ ਗਉਹਰੁ ਜੀਉ ॥੪॥੧੮॥੨੫॥
तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥४॥१८॥२५॥
हे नानक ! मैं उस सेवक पर सदैव कुर्बान हूँ जो प्रभु की तरह अथाह, गंभीर एवं अमूल्य मोती बन जाता है।॥४॥१८॥२५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਭ ਕਿਛੁ ਘਰ ਮਹਿ ਬਾਹਰਿ ਨਾਹੀ ॥
सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥
सब कुछ शरीर रूपी घर में ही है और शरीर से बाहर कुछ भी नहीं है।

ਬਾਹਰਿ ਟੋਲੈ ਸੋ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਹੀ ॥
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥
जो व्यक्ति भगवान को हृदय से बाहर ढूंढता है, वह भ्रम में पड़कर भटकता रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨੀ ਅੰਤਰਿ ਪਾਇਆ ਸੋ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੁਹੇਲਾ ਜੀਉ ॥੧॥
गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥१॥
गुरु की दया से जिसने भगवान को हृदय में पाया है, वह अन्दर एवं बाहर से सुखी है॥ १॥

ਝਿਮਿ ਝਿਮਿ ਵਰਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰਾ ॥
झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा ॥
उसके अन्दर नाम रूपी अमृत की धारा रिमझिम कर बरसती है।

ਮਨੁ ਪੀਵੈ ਸੁਨਿ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥
मन उस नाम रूपी अमृत का पान करता है।

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਕਰੇ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇਲਾ ਜੀਉ ॥੨॥
अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥२॥
अनहद शब्द को सुनकर मन उस बारे चिन्तन करता है। मेरा मन दिन-रात आनंद प्राप्त करता है और भगवान के साथ विलास करता है॥२॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਵਿਛੁੜਿਆ ਮਿਲਿਆ ॥
जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥
मैं भगवान से जन्म-जन्मांतरों का बिछुड़ा हुआ उससे मिल गया हूँ।

ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਸੂਕਾ ਹਰਿਆ ॥
साध क्रिपा ते सूका हरिआ ॥
साधु की कृपा से मेरा मुरझाया हुआ मन प्रफुल्लित हो गया है।

ਸੁਮਤਿ ਪਾਏ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਏ ਮੇਲਾ ਜੀਉ ॥੩॥
सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥३॥
गुरु से सुमति प्राप्त करके नाम-सिमरन करने से मेरा भगवान से मिलाप हो गया है ॥३ ॥

ਜਲ ਤਰੰਗੁ ਜਿਉ ਜਲਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥
जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥
जिस तरह जल की लहरें जल में मिल जाती हैं,

ਤਿਉ ਜੋਤੀ ਸੰਗਿ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥
इसी तरह मेरी ज्योति परमात्मा की ज्योति में मिल गई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭ੍ਰਮ ਕਟੇ ਕਿਵਾੜਾ ਬਹੁੜਿ ਨ ਹੋਈਐ ਜਉਲਾ ਜੀਉ ॥੪॥੧੯॥੨੬॥
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥४॥१९॥२६॥
हे नानक ! भगवान ने भ्रम रूपी किवाड़ काट दिए हैं और अब मेरा मन पुनः माया के पीछे नहीं भटकता ॥४॥१६॥२६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਤਿਸੁ ਕੁਰਬਾਣੀ ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਸੁਣਿਆ ॥
तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥
हे ईश्वर ! मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने तेरा नाम श्रवण किया है।

ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਨਿ ਰਸਨਾ ਭਣਿਆ ॥
तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥
जिसने अपनी जिव्हा से तेरे नाम का उच्चारण किया है, मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ।

ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਜਾਈ ਤਿਸੁ ਵਿਟਹੁ ਜੋ ਮਨਿ ਤਨਿ ਤੁਧੁ ਆਰਾਧੇ ਜੀਉ ॥੧॥
वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥
हे प्रभु! जो प्राणी मन-तन से तेरी आराधना करता है, मैं सदैव ही तन-मन से उस पर न्योछावर हूँ॥१॥

ਤਿਸੁ ਚਰਣ ਪਖਾਲੀ ਜੋ ਤੇਰੈ ਮਾਰਗਿ ਚਾਲੈ ॥
तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥
मैं उस व्यक्ति के चरण धोता हूँ जो तेरे मार्ग पर चलता है।

ਨੈਨ ਨਿਹਾਲੀ ਤਿਸੁ ਪੁਰਖ ਦਇਆਲੈ ॥
नैन निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥
मैं उस दयालु महापुरुष के नयनों से दर्शन करता हूँ।

ਮਨੁ ਦੇਵਾ ਤਿਸੁ ਅਪੁਨੇ ਸਾਜਨ ਜਿਨਿ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਧੇ ਜੀਉ ॥੨॥
मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥२॥
मैं अपना मन अपने उस मित्र को अर्पण करता हूँ, जिसने गुरु से मिलकर उस प्रभु को ढूंढ लिया है॥२॥

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨਿ ਤੁਮ ਜਾਣੇ ॥
से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥
हे भगवान ! वे मनुष्य बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने तुझे समझ लिया है।

ਭ ਕੈ ਮਧੇ ਅਲਿਪਤ ਨਿਰਬਾਣੇ ॥
सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥
वे पुरुष सबके मध्य निर्लिप्त और निर्विकार हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਉਨਿ ਭਉਜਲੁ ਤਰਿਆ ਸਗਲ ਦੂਤ ਉਨਿ ਸਾਧੇ ਜੀਉ ॥੩॥
साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥३॥
संतों की संगति करके वे भवसागर से पार हो जाते हैं और काम आदि सकल दूत वश में कर लिए हैं।॥३॥

ਤਿਨ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਰਿਆ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥
तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥
मेरा मन उनकी शरण में आ गया है,"

ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਤਜਿ ਮੋਹੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥
माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥
और अहंकार, बल एवं अँधेरा पैदा करने वाले मोह को त्याग दिया है ।

ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਕਉ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਗਾਧੇ ਜੀਉ ॥੪॥੨੦॥੨੭॥
नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥४॥२०॥२७॥
हे प्रभु! नानक को अगम्य, अगोचर परमात्मा के नाम का दान प्रदान कीजिए॥४॥२० ॥२७ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਤੂੰ ਪੇਡੁ ਸਾਖ ਤੇਰੀ ਫੂਲੀ ॥
तूं पेडु साख तेरी फूली ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तू एक पेड़ है और यह सृष्टि तेरी प्रफुल्लित हुई शाखा है।

ਤੂੰ ਸੂਖਮੁ ਹੋਆ ਅਸਥੂਲੀ ॥
तूं सूखमु होआ असथूली ॥
तू सूक्ष्म रूप से स्थूल रूप में बदल गया है।

ਤੂੰ ਜਲਨਿਧਿ ਤੂੰ ਫੇਨੁ ਬੁਦਬੁਦਾ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਲੀਐ ਜੀਉ ॥੧॥
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥१॥
तू जल का सागर है और तू ही इसकी झाग से पैदा हुआ बुलबुला है। तेरे अलावा जगत् में मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता॥१॥

ਤੂੰ ਸੂਤੁ ਮਣੀਏ ਭੀ ਤੂੰਹੈ ॥
तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥
हे ईश्वर ! देहि रूपी माला के लिए तुम ही प्राण रूपी सूत हो।

ਤੂੰ ਗੰਠੀ ਮੇਰੁ ਸਿਰਿ ਤੂੰਹੈ ॥
तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥
उस माला की गांठ भी तुम हो और सब मनकों के ऊपर मेरु मनका भी तुम ही हो।

ਆਦਿ ਮਧਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਦਿਖਾਲੀਐ ਜੀਉ ॥੨॥
आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥२॥
जगत् के आदि, मध्य और अंत में वही परमेश्वर है, तुझ से अलग कोई दृष्टिगोचर नहीं होता ॥२॥

ਤੂੰ ਨਿਰਗੁਣੁ ਸਰਗੁਣੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥
हे सुखदाता परमेश्वर ! तू ही निर्गुण एवं तू ही सगुण है।

ਤੂੰ ਨਿਰਬਾਣੁ ਰਸੀਆ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥
तू स्वयं ही निर्लेप, आनंदकारी और समस्त रंगों में अनुरक्त है।

ਅਪਣੇ ਕਰਤਬ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ ਆਪੇ ਤੁਧੁ ਸਮਾਲੀਐ ਜੀਉ ॥੩॥
अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥३॥
हे प्रभु ! अपनी कला में तुम स्वयं ही दक्ष हो और तुम स्वयं ही अपना सिमरन करते हो। ॥२१॥

ਤੂੰ ਠਾਕੁਰੁ ਸੇਵਕੁ ਫੁਨਿ ਆਪੇ ॥
तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥
तुम ठाकुर हो और फिर तुम स्वयं ही सेवक।

ਤੂੰ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪੇ ॥
तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥
हे पारब्रह्म ! तू स्वयं ही गुप्त भी है और तू ही प्रगट भी है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਇਕ ਭੋਰੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ਜੀਉ ॥੪॥੨੧॥੨੮॥
नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥४॥२१॥२८॥
सेवक नानक सदैव ही प्रभु का यशोगान करता है। कृपया, बस एक पल के लिए, उसे अपनी दया दृष्टि से देख आशीर्वाद दें ॥४॥२१॥२८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਫਲ ਸੁ ਬਾਣੀ ਜਿਤੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀ ॥
सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥
वहीं वाणी शुभ फलदायक है, जिससे हरि के नाम का जाप किया जाता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਣੀ ॥
गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥
कोई विरला ही पुरुष है, जिसने गुरु की कृपा से ऐसी वाणी को समझा है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗਾਵਤ ਸੁਨਣਾ ਆਏ ਤੇ ਪਰਵਾਨਾ ਜੀਉ ॥੧॥
धंनु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥१॥
वह समय बड़ा शुभ है, जब परमात्मा का यशोगान किया जाता एवं सुना जाता है। जगत् में जन्म लेकर उनका आगमन ही स्वीकृत है, जो भगवान का यश गाते एवं सुनते हैं ॥ १॥

ਸੇ ਨੇਤ੍ਰ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਾ ॥
से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥
भगवान को वहीं नेत्र स्वीकृत होते हैं, जिन्होंने भगवान के दर्शन किए हैं।

ਸੇ ਕਰ ਭਲੇ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਲੇਖਾ ॥
से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥
वह हाथ प्रशंसनीय है जो (ईश्वर की) उपमा लिखते हैं।

ਸੇ ਚਰਣ ਸੁਹਾਵੇ ਜੋ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਚਲੇ ਹਉ ਬਲਿ ਤਿਨ ਸੰਗਿ ਪਛਾਣਾ ਜੀਉ ॥੨॥
से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥२॥
वह चरण सुन्दर हैं जो परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ जिनकी संगति करके मैंने भगवान को पहचान लिया है ॥२॥

ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥
सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥
हे मेरे प्रिय मित्र एवं सज्जन ! सुनो,"

ਸਾਧਸੰਗਿ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਉਧਾਰੇ ॥
साधसंगि खिन माहि उधारे ॥
भगवान ने मुझे संतों की संगति में मिलाकर एक क्षण में ही मेरा उद्धार कर दिया है।

ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟਿ ਹੋਆ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਿਟਿ ਗਏ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਜੀਉ ॥੩॥
किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥३॥
उसने मेरे पाप काट दिए हैं और मेरा मन निर्मल हो गया है। अब मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है। ३॥

ਦੁਇ ਕਰ ਜੋੜਿ ਇਕੁ ਬਿਨਉ ਕਰੀਜੈ ॥
दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥
प्रभु ! अपने दोनों हाथ जोड़कर मैं एक प्रार्थना करता हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਡੁਬਦਾ ਪਥਰੁ ਲੀਜੈ ॥
करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥
मुझ पर दया कीजिए और डूबते हुए पत्थर को बचा लीजिए।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲਾ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ਜੀਉ ॥੪॥੨੨॥੨੯॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥४॥२२॥२९॥
भगवान नानक पर दयालु हो गया है और नानक के मन को भगवान ही अच्छा लगता है।॥ ४॥ २२॥ २९ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੇਰੀ ॥
अम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥
हे हरि-परमेश्वर ! तेरी वाणी अमृत है।

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਹੋਵੈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਮੇਰੀ ॥
सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥
इस अमृत वाणी को सुन-सुनकर मुझे परमगति प्राप्त हुई है।

ਜਲਨਿ ਬੁਝੀ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ਮਨੂਆ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ ਜੀਉ ॥੧॥
जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥१॥
सतिगुरु के दर्शन करके मेरे मन की तृष्णा रूपी जलन बुझ गई है और मेरा मन शीतल हो गया है॥ १॥

ਸੂਖੁ ਭਇਆ ਦੁਖੁ ਦੂਰਿ ਪਰਾਨਾ ॥
सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥
उसे बड़ा सुख प्राप्त होता है और उसके दुख दूर भाग जाते हैं।

ਸੰਤ ਰਸਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨਾ ॥
संत रसन हरि नामु वखाना ॥
जो सन्तजन अपनी जिव्हा से परमात्मा के नाम का उच्चारण करते हैं ।

ਜਲ ਥਲ ਨੀਰਿ ਭਰੇ ਸਰ ਸੁਭਰ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਜਾਏ ਜੀਉ ॥੨॥
जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥२॥
जैसे वर्षा होने से तमाम सरोवर जल से भलीभांति भर जाते हैं, वैसे ही गुरु के पास आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता॥ २॥

ਦਇਆ ਧਾਰੀ ਤਿਨਿ ਸਿਰਜਨਹਾਰੇ ॥
दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥
सृजनहार प्रभु ने अपनी दया न्यौछावर की है

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥
और समस्त जीव-जन्तुओं की पालना की है।

ਮਿਹਰਵਾਨ ਕਿਰਪਾਲ ਦਇਆਲਾ ਸਗਲੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਏ ਜੀਉ ॥੩॥
मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥३॥
भगवान मेहरबान है, कृपालु एवं बड़ा दयालु है। भगवान की दी हुई नियामतों से सभी जीव-जन्तु तृप्त एवं संतुष्ट हो गए हैं। ॥३॥

ਵਣੁ ਤ੍ਰਿਣੁ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਕੀਤੋਨੁ ਹਰਿਆ ॥
वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥
वन, तृण, तीनों लोक प्रभु ने हरे-भरे कर दिए हैं।

ਕਰਣਹਾਰਿ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਕਰਿਆ ॥
करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥
कर्ता परमेश्वर ने एक क्षण में ही यह सब कुछ कर दिया।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਤਿਸੈ ਅਰਾਧੇ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪੁਜਾਏ ਜੀਉ ॥੪॥੨੩॥੩੦॥
गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥४॥२३॥३०॥
हे नानक ! जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान की आराधना करता है, भगवान उसके मन की आशा पूरी कर देता है॥ ४॥ २३॥ ३०॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਪਿਤਾ ਤੂੰਹੈ ਮੇਰਾ ਮਾਤਾ ॥
तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥
हे भगवान ! तू ही मेरा पिता है एवं तू ही मेरी माता है।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਬੰਧਪੁ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਭ੍ਰਾਤਾ ॥
तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥
तू ही मेरा रिश्तेदार है और तू ही मेरा भ्राता है।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਰਾਖਾ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਤਾ ਭਉ ਕੇਹਾ ਕਾੜਾ ਜੀਉ ॥੧॥
तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥१॥
जब तू ही समस्त स्थानों में मेरा रक्षक है तो मुझे कैसा भय व चिंता कैसी होगी ॥ १॥

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਤੁਧੁ ਪਛਾਣਾ ॥
तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥
तुम्हारी दया से मैं तुझे समझता हूँ।

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਓਟ ਤੂੰਹੈ ਮੇਰਾ ਮਾਣਾ ॥
तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥
तू ही मेरी शरण है और तू ही मेरी प्रतिष्ठा है।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਅਖਾੜਾ ਜੀਉ ॥੨॥
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥२॥
तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं। यह सारी सृष्टि तेरी एक खेल है और यह धरती जीवों के लिए जीवन खेल का मैदान है॥ २॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ॥
जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥
हे भगवान ! समस्त जीव-जन्तु तूने ही उत्पन्न किए हैं।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਭਾਣਾ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਾਏ ॥
जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥
जिस तरह तेरी इच्छा है वैसे ही कार्यों में तूने उन्हें कार्यरत किया है।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਅਸਾੜਾ ਜੀਉ ॥੩॥
सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥३॥
जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, सब तेरा ही किया हो रहा है। इसमें हमारा कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥
तेरे नाम की आराधना करने से मुझे महासुख प्राप्त हुआ है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸੀਤਲਾਇਆ ॥
हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥
हरि प्रभु का यशोगान करने से मेरा मन शीतल हो गया है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ਨਾਨਕ ਜਿਤਾ ਬਿਖਾੜਾ ਜੀਉ ॥੪॥੨੪॥੩੧॥
गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु की दया से मैंने काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी विषम मैदान-ए-जंग जीत लिया है और मुझे विजय की शुभकामनाएँ मिल रही हैं॥॥ ४ ॥ २४ ॥ ३१ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਪ੍ਰਭ ਮਨਹਿ ਅਧਾਰਾ ॥
जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥
भगवान अपने भक्तों की आत्मा, प्राण एवं मन का आधार है।

ਭਗਤ ਜੀਵਹਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਪਾਰਾ ॥
भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥
भक्त भगवान की अपार महिमा-स्तुति गायन करके ही जीते हैं।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੀਉ ॥੧॥
गुण निधान अम्रितु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥१॥
भगवान का नाम अमृत एवं गुणों का भण्डार है और भगवान के भक्त उसका नाम-सिमरन करके बड़ा सुख प्राप्त करते हैं।॥ १॥

ਮਨਸਾ ਧਾਰਿ ਜੋ ਘਰ ਤੇ ਆਵੈ ॥
मनसा धारि जो घर ते आवै ॥
जो व्यक्ति अभिलाषा धारण करके घर से आता है,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਨਮੁ ਮਰਣੁ ਮਿਟਾਵੈ ॥
साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥
वह संतों की संगति करके अपना जन्म-मरण का चक्र मिटा लेता है।

ਆਸ ਮਨੋਰਥੁ ਪੂਰਨੁ ਹੋਵੈ ਭੇਟਤ ਗੁਰ ਦਰਸਾਇਆ ਜੀਉ ॥੨॥
आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥२॥
गुरु के दर्शन करने से समस्त मनोरथ व दिल की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं।॥ २॥

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਕਿਛੁ ਮਿਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥
अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥
अगम्य व अगोचर प्रभु का अंत जाना नहीं जा सकता।

ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਧਿਆਵਹਿ ਗਿਆਨੀ ॥
साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥
ज्ञांनी, सिद्ध, साधक उस भगवान का ही ध्यान करते हैं।

ਖੁਦੀ ਮਿਟੀ ਚੂਕਾ ਭੋਲਾਵਾ ਗੁਰਿ ਮਨ ਹੀ ਮਹਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ਜੀਉ ॥੩॥
खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥३॥
जिस व्यक्ति का अहंकार मिट जाता है और भ्रम दूर हो जाता है, गुरु उसके हृदय में ही भगवान को प्रगट कर देते हैं।॥ ३॥

ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਕਲਿਆਣ ਨਿਧਾਨਾ ॥
अनद मंगल कलिआण निधाना ॥
भगवान के नाम का जाप करने से आनंद एवं खुशियाँ प्राप्त हो जाती हैं और यह मुक्तिदायक एवं गुणों का भण्डार है।

ਸੂਖ ਸਹਜ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨਾ ॥
सूख सहज हरि नामु वखाना ॥
जो व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, उसे सुख एवं आनंद उपलब्ध हो जाते हैं।

ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਸੁਆਮੀ ਅਪਨਾ ਨਾਉ ਨਾਨਕ ਘਰ ਮਹਿ ਆਇਆ ਜੀਉ ॥੪॥੨੫॥੩੨॥
होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥४॥२५॥३२॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति पर मेरा स्वामी कृपालु हो जाता है, उसके हृदय-घर में ही भगवान का नाम आ बसता है॥ ४ ॥ २५ ॥ ३२ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਾ ਸੋਇ ਤੁਮਾਰੀ ॥
सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥
हे प्रभु ! अपने कानों से तेरी शोभा सुन-सुनकर ही जीता हूँ।

ਤੂੰ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਠਾਕੁਰੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥
तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥
हे मेरे महान ठाकुर ! तुम मेरे प्रियतम हो।

ਤੁਮਰੇ ਕਰਤਬ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਣਹੁ ਤੁਮਰੀ ਓਟ ਗੋਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੧॥
तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥१॥
हे गोपाल ! अपने कर्म तू ही जानता है। मुझे तेरा ही आश्रय है॥ १॥

ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਹੋਵੈ ॥
गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥
तेरी महिमा-स्तुति गाने से मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ਕਥਾ ਸੁਣਤ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਵੈ ॥
कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥
तेरी कथा सुनने से मन के विकारों की तमाम मलिनता दूर हो जाती है।

ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਸਾਧ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸਦਾ ਜਪਉ ਦਇਆਲਾ ਜੀਉ ॥੨॥
भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥२॥
साधुओं एवं संतों की संगति में मिलकर मैं सदैव दया के घर परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥ २॥

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰਉ ॥
प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥
अपने प्रभु को मैं श्वास-श्वास से स्मरण करता हूँ।

ਇਹ ਮਤਿ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਨਿ ਧਾਰਉ ॥
इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥
यह मति गुरु की कृपा से अपने मन में धारण करो।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ਸਰਬ ਮਇਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੩॥
तुमरी क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥३॥
हे भगवान ! तेरी कृपा से ही मेरे मन में तेरी ज्योति का प्रकाश हुआ है। तू समस्त जीव-जन्तुओं तथा सबका रक्षक है॥ ३॥

ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥
सति सति सति प्रभु सोई ॥
प्रभु आदि भी सत्य है जुगों जुगों में सत्य रहा है, वर्तमान में भी सत्य है

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਦ ਆਪੇ ਹੋਈ ॥
सदा सदा सद आपे होई ॥
और वह प्रभु सदैव ही सत्य रहेगा ।

ਚਲਿਤ ਤੁਮਾਰੇ ਪ੍ਰਗਟ ਪਿਆਰੇ ਦੇਖਿ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ਜੀਉ ॥੪॥੨੬॥੩੩॥
चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥४॥२६॥३३॥
हे प्रिय प्रभु ! तेरी अदभुत लीलाएँ जगत् में प्रत्यक्ष हैं। हे नानक ! मैं प्रभु की उन अदभुत लीलाओं को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ ॥४॥२६॥३३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਹੁਕਮੀ ਵਰਸਣ ਲਾਗੇ ਮੇਹਾ ॥
हुकमी वरसण लागे मेहा ॥
भगवान के हुक्म से मेघ बरसने लगे हैं।

ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇਹਾ ॥
साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥
सज्जन संत मिलकर भगवान के नाम का जाप करते हैं।

ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਠਾਢਿ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਜੀਉ ॥੧॥
सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥१॥
संतों के हृदय शीतल एवं शांत हो गए हैं और उन्हें सहज सुख उपलब्ध हो गया है। भगवान ने स्वयं ही संतों के हृदय में शांति प्रदान की है॥ १॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਬਹੁਤੋ ਬਹੁਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥
सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥
भगवान ने सब कुछ अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न किया है।

करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥
करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥
अपनी कृपा से परमात्मा ने सभी को सन्तुष्ट कर दिया है।

दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥
दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥
हे मेरे दाता ! अपनी देन प्रदान करो ताकि सभी जीव-जन्तु तृप्त हो जाएँ॥ २॥

सचा साहिबु सची नाई ॥
सचा साहिबु सची नाई ॥
मेरा मालिक प्रभु सदैव सत्य है और उसकी महिमा भी सत्य है।

गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥
गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥
गुरु की कृपा से मैं सदैव ही उसका ध्यान करता रहता हूँ।

जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥
जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥
उस प्रभु ने मेरा जन्म-मरण का भय एवं माया का मोह नाश कर दिया है॥३ ॥

सासि सासि नानकु सालाहे ॥
सासि सासि नानकु सालाहे ॥
नानक तो श्वास-श्वास से भगवान की महिमा-स्तुति ही करता है।

सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥
सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥
भगवान का सिमरन करने से उसकी तमाम जंजीरें कट गई हैं।

ਪੂਰਨ ਆਸ ਕਰੀ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਾਪੇ ਜੀਉ ॥੪॥੨੭॥੩੪॥
पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥४॥२७॥३४॥
भगवान ने एक क्षण में उसकी आशा पूरी कर दी है, अब तो वह भगवान के नाम का ही जाप करता रहता है और उसकी ही महिमा गाता रहता है॥ ४ ॥ २७ ॥ ३४ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਆਉ ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥
*आउ साजन संत मीत पिआरे ॥*हे मेरे संतजनों एवं प्रिय मित्रों ! आओ

ਮਿਲਿ ਗਾਵਹ ਗੁਣ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥
हम मिलकर अगम्य व अनन्त प्रभु का यशोगान करें।

ਗਾਵਤ ਸੁਣਤ ਸਭੇ ਹੀ ਮੁਕਤੇ ਸੋ ਧਿਆਈਐ ਜਿਨਿ ਹਮ ਕੀਏ ਜੀਉ ॥੧॥
गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥१॥
भगवान की महिमा गाने एवं सुनने वाले सभी व्यक्ति माया के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। आओ हम उस प्रभु की आराधना करें जिसने हमें उत्पन्न किया है। ॥१॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਜਾਵਹਿ ॥
जनम जनम के किलबिख जावहि ॥
भगवान का सिमरन करने से जन्म-जन्मांतरों के तमाम पाप नष्ट हो जाते हैं।

ਮਨਿ ਚਿੰਦੇ ਸੇਈ ਫਲ ਪਾਵਹਿ ॥
मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥
और मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

ਸਿਮਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋ ਸਚੁ ਸੁਆਮੀ ਰਿਜਕੁ ਸਭਸੁ ਕਉ ਦੀਏ ਜੀਉ ॥੨॥
सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥२॥
उस सत्य प्रभु-परमेश्वर की आराधना करो, जो सभी को भोजन पदार्थ देता है॥ २॥

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥
नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥
भगवान के नाम का जाप करने से सर्व सुख मिल जाते हैं।

ਸਭੁ ਭਉ ਬਿਨਸੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥
सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥
हरि-प्रभु की आराधना करने से तमाम भय नाश हो जाते हैं।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਸੋ ਪਾਰਗਿਰਾਮੀ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਥੀਏ ਜੀਉ ॥੩॥
जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥
जो परमात्मा की सेवा करता है, वह पूर्ण पुरुष है और उसके समस्त कार्य संवर जाते हैं।॥ ३॥

ਆਇ ਪਇਆ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥
आइ पइआ तेरी सरणाई ॥
हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में आ गया हूँ,

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਈ ॥
जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥
जैसे तुझे अच्छा लगता है वैसे ही मुझे अपने साथ मिला लो।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਗਤੀ ਲਾਵਹੁ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਏ ਜੀਉ ॥੪॥੨੮॥੩੫॥
करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अम्रितु पीए जीउ ॥४॥२८॥३५॥
हे प्रभु ! कृपा करके मुझे अपनी भक्ति में लगा लो जिससे हे नानक ! वह प्रभु के सत्य नाम रूपी अमृत का पान करता रहे॥ ४ ॥ २८ ॥ ३५ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਸਾਈ ॥
भए क्रिपाल गोविंद गुसाई ॥
सृष्टि का स्वामी गोविन्द गुसाई समस्त जीवों पर ऐसे दयालु हो गया है जैसे.

ਮੇਘੁ ਵਰਸੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥
मेघु वरसै सभनी थाई ॥
बादल समस्त स्थानों पर वर्षा करता है,"

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲਾ ਠਾਢਿ ਪਾਈ ਕਰਤਾਰੇ ਜੀਉ ॥੧॥
दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥१॥
सृष्टिकर्ता सदैव ही दीनदयालु एवं कृपालु है और उसने अपने भक्तों के हृदय शीतल कर दिए हैं। १ ॥

ਅਪੁਨੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥
अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥
प्रभु अपने जीव-जन्तुओं की पालना ऐसे करता है।

ਜਿਉ ਬਾਰਿਕ ਮਾਤਾ ਸੰਮਾਰੇ ॥
जिउ बारिक माता समारे ॥
जैसे माता अपने शिशु की देखभाल करती है

ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸੁਆਮੀ ਦੇਤ ਸਗਲ ਆਹਾਰੇ ਜੀਉ ॥੨॥
दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥२॥
भगवान दुखनाशक एवं सुखों का सागर है। वह समस्त जीवों को खाने के लिए भोजन देता है॥ २॥

ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥
जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥
दयालु परमात्मा जल एवं धरती में सर्वत्र समाया हुआ है।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥
सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥
मैं सदैव उस पर बलिहारी व कुर्बान जाता हूँ।

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਧਿਆਈ ਜਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੇ ਜੀਉ ॥੩॥
रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥३॥
दिन-रात हमें सदैव ही उस भगवान का ध्यान करना चाहिए जो एक क्षण में ही सभी का उद्धार कर देता है॥ ३॥

ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ॥
राखि लीए सगले प्रभि आपे ॥
भगवान ने स्वयं ही अपने भक्तों की रक्षा की है

ਉਤਰਿ ਗਏ ਸਭ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੇ ॥
उतरि गए सभ सोग संतापे ॥
और उनके सभी दुःख एवं संताप दूर हो गए हैं।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰੀਆਵਲੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰੇ ਜੀਉ ॥੪॥੨੯॥੩੬॥
नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥४॥२९॥३६॥
हे नानक ! भगवान जब कृपा-दृष्टि से देखता है तो उसका नाम-सिमरन करने से मनुष्य का मन एवं तन हरा-भरा हो जाता है॥ ४॥ २६॥ ३६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਜਿਥੈ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੇ ॥
जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥
हे प्रियतम प्रभु ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप किया जाता है,

ਸੇ ਅਸਥਲ ਸੋਇਨ ਚਉਬਾਰੇ ॥
से असथल सोइन चउबारे ॥
वह स्थान स्वर्ण के चौबारे के तुल्य है।

ਜਿਥੈ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪੀਐ ਮੇਰੇ ਗੋਇਦਾ ਸੇਈ ਨਗਰ ਉਜਾੜੀ ਜੀਉ ॥੧॥
जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥१॥
हे मेरे गोबिन्द ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप नहीं किया जाता, वह नगर वीरान भूमि के तुल्य है॥१॥

ਹਰਿ ਰੁਖੀ ਰੋਟੀ ਖਾਇ ਸਮਾਲੇ ॥
हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥
जो व्यक्ति रूखी-सूखी रोटी खा कर भगवान का सिमरन करता रहता है,

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥
उसे भगवान घर एवं बाहर सर्वत्र कृपा-दृष्टि से देखता रहता है।

ਖਾਇ ਖਾਇ ਕਰੇ ਬਦਫੈਲੀ ਜਾਣੁ ਵਿਸੂ ਕੀ ਵਾੜੀ ਜੀਉ ॥੨॥
खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥२॥
जो व्यक्ति भगवान के दिए पदार्थ खा-खाकर दुष्कर्म करता रहता है, उसे विष की वाटिका समझो ॥ २ ॥

ਸੰਤਾ ਸੇਤੀ ਰੰਗੁ ਨ ਲਾਏ ॥
संता सेती रंगु न लाए ॥
जो व्यक्ति संतों से प्रेम नहीं करता

ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਵਿਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
साकत संगि विकरम कमाए ॥
और शाक्तों के साथ मिलकर दुष्कर्म करता है,

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਖੋਈ ਅਗਿਆਨੀ ਜੜ ਅਪੁਣੀ ਆਪਿ ਉਪਾੜੀ ਜੀਉ ॥੩॥
दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥३॥
ऐसा ज्ञानहीन व्यक्ति अपने दुर्लभ जन्म को व्यर्थ गंवा रहा है तथा वह अपनी जड़ को स्वयं ही उखाड़ रहा है॥ ३॥

ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
तेरी सरणि मेरे दीन दइआला ॥
हे दीनदयाल ! मैं तेरी शरण में आया हूँ।

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥
सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥
हे मेरे गुरु गोपाल ! तू सुखों का सागर है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਰਾਖਹੁ ਸਰਮ ਅਸਾੜੀ ਜੀਉ ॥੪॥੩੦॥੩੭॥
करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीउ ॥४॥३०॥३७॥
मुझ पर कृपा करो। नानक तेरी ही महिमा गायन करता है। मेरी लाज-प्रतिष्ठा रखो ॥४॥३०॥३७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਚਰਣ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੇ ॥
चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥
जब भगवान के सुन्दर चरण मेरे हृदय में स्थित हो गए तो

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਸਭ ਦੂਰਿ ਪਇਆਣੇ ॥
कलि कलेस सभ दूरि पइआणे ॥
मेरे तमाम दुःख एवं संताप नाश हो गए।

ਸਾਂਤਿ ਸੂਖ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੀ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਨਿਵਾਸਾ ਜੀਉ ॥੧॥
सांति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥१॥
संतों की संगति में निवास होने से मेरे अन्तर्मन में अनहद शब्द की मधुर ध्वनि उत्पन्न हो गई और मन में शांति एवं सहज सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥

ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੂਟੈ ਮੂਲੇ ॥
लागी प्रीति न तूटै मूले ॥
भगवान से ऐसी प्रीति लगी है, जो कदापि नहीं टूटती।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥
हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥
भगवान मेरे अन्दर व बाहर सर्वत्र व्यापक हो रहा है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ਜੀਉ ॥੨॥
सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥२॥
भगवान का सदैव नाम-सिमरन करने तथा उसकी महिमा-स्तुति द्वारा मेरी मृत्यु की फाँसी कट गई है।॥२॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਰਖੈ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ॥
अम्रितु वरखै अनहद बाणी ॥
मेरे मन में अनहद शब्द के प्रगट होने से हरि रस रूपी अम्रित वर्षा होने लग गई है ।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥
मन तन अंतरि सांति समाणी ॥
मेरे मन एवं तन मैं शांति प्रवेश कर गई है ।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ਰਹੇ ਜਨ ਤੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕੀਆ ਦਿਲਾਸਾ ਜੀਉ ॥੩॥
त्रिपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥३॥
हे भगवान ! सतगुरु ने तेरे भक्तों को आश्वासन दिया है और हरि रस रूपी अमृत का पान करवाकर उन्हें तृप्त एवं संतुष्ट कर दिया है॥३॥

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਸ ਤੇ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥
जिस भगवान का मैं सेवक था, उससे मैंने अपनी की हुई सेवा का फल पाया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
करि किरपा प्रभ संगि मिलाइआ ॥
सतिगुरु ने कृपा करके मुझे भगवान से मिला दिया है।

ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ਜੀਉ ॥੪॥੩੧॥੩੮॥
आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥४॥३१॥३८॥
हे नानक ! सौभाग्य से मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है और भगवान से मिलन की कामना पूरी हो गई है॥ ४ ॥ ३१ ॥ ३८ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਮੀਹੁ ਪਇਆ ਪਰਮੇਸਰਿ ਪਾਇਆ ॥
मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥
वर्षा हुई है, इसे परमेश्वर ने ही बरसाया है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸੁਖੀ ਵਸਾਇਆ ॥
जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥
इससे प्रभु ने समस्त जीव-जन्तुओं को सुखी बसा दिया है।

ਗਇਆ ਕਲੇਸੁ ਭਇਆ ਸੁਖੁ ਸਾਚਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੀ ਜੀਉ ॥੧॥
गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥१॥
हरि-परमेश्वर के नाम का सिमरन करने से उनकी पीड़ा दूर हो गई है और उनको सच्चा सुख मिल गया है ॥१॥

ਜਿਸ ਕੇ ਸੇ ਤਿਨ ਹੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥
जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥
ये जीव-जन्तु जिस परमात्मा के उत्पन्न किए हुए हैं, उसने ही उनकी रक्षा की है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਰਖਵਾਰੇ ॥
पारब्रहम प्रभ भए रखवारे ॥
पारब्रह्म-परमेश्वर उनका रक्षक बन गया है।

ਸੁਣੀ ਬੇਨੰਤੀ ਠਾਕੁਰਿ ਮੇਰੈ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਘਾਲੀ ਜੀਉ ॥੨॥
सुणी बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥२॥
मेरे ठाकुर जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और मेरी भक्ति सफल हो गई है॥२॥

ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਉ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥
सरब जीआ कउ देवणहारा ॥
परमेश्वर समस्त प्राणियों को देने वाला है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰਾ ॥
गुर परसादी नदरि निहारा ॥
गुरु की कृपा से उसने हमें दया की नज़र से देख लिया है।

ਜਲ ਥਲ ਮਹੀਅਲ ਸਭਿ ਤ੍ਰਿਪਤਾਣੇ ਸਾਧੂ ਚਰਨ ਪਖਾਲੀ ਜੀਉ ॥੩॥
जल थल महीअल सभि त्रिपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥३॥
सागर, धरती एवं गगन में रहने वाले समस्त प्राणी तृप्त हो गए हैं। मैं संत-गुरु के चरण धोता हूँ॥३॥

ਮਨ ਕੀ ਇਛ ਪੁਜਾਵਣਹਾਰਾ ॥
मन की इछ पुजावणहारा ॥
परमात्मा मन की इच्छा पूरी करने वाला है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥
सदा सदा जाई बलिहारा ॥
मैं सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਕੀਆ ਦੁਖ ਭੰਜਨਿ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਰਸਾਲੀ ਜੀਉ ॥੪॥੩੨॥੩੯॥
नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥४॥३२॥३९॥
हे नानक ! दुख नाशक प्रभु ने मुझे यह दान दिया है कि मैं उसकी प्रीति में मग्न हो गया हूँ जो प्रसन्नता का घर है॥४॥३२॥३९॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥:

ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਧਨੁ ਭੀ ਤੇਰਾ ॥
मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥
हे भगवान ! मेरा मन एवं तन तेरा ही दिया हुआ है और धन भी तेरा ही दिया हुआ है।

ਤੂੰ ਠਾਕੁਰੁ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥
तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥
हे ईश्वर ! तुम मेरे ठाकुर एवं स्वामी हो।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਰਾਸਿ ਤੁਮਾਰੀ ਤੇਰਾ ਜੋਰੁ ਗੋਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੧॥
जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥१॥
हे प्रभु ! मेरे प्राण एवं तन तेरी ही पूंजी है। हे गोपाल ! मेरी प्रभुता तुझ से ही है॥१॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੂੰਹੈ ਸੁਖਦਾਈ ॥
सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥
हे परमेश्वर ! सर्वदा तुम सुख प्रदान करने वाले हो।

ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਾ ਤੇਰੀ ਪਾਈ ॥
निवि निवि लागा तेरी पाई ॥
मैं नतमस्तक होकर तुझे ही नमन करता हूँ और तेरे चरण स्पर्श करता हूँ।

ਕਾਰ ਕਮਾਵਾ ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਾ ਜਾ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਦਇਆਲਾ ਜੀਉ ॥੨॥
कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥२॥
हे दयालु परमात्मा ! मैं वहीं कार्य करूँगा जो तू मुझे करने के लिए देगा और जो तुझे अच्छा लगे॥२॥

ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਤੇ ਲਹਣਾ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਗਹਣਾ ॥
प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥
हे भगवान ! मैं सबकुछ तुझ से ही लेता हूँ और तुम ही मेरे आभूषण हो।

ਜੋ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਸਹਣਾ ॥
जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥
हे अकालपुरुष ! जो कुछ तुम मुझे दुःख-सुख देते हो, मैं उसको सुख समझकर सहता हूँ।

ਜਿਥੈ ਰਖਹਿ ਬੈਕੁੰਠੁ ਤਿਥਾਈ ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ਜੀਉ ॥੩॥
जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥३॥
हे भगवान ! जहाँ कहीं भी तुम मुझे रखते हो, वही मेरा स्वर्ग है। तुम सबकी रक्षा करने वाले हो ॥३॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥
हे नानक ! उस परम पिता परमेश्वर की आराधना करने से मुझे सुख उपलब्ध हो गया है।

ਆਠ ਪਹਰ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥
हे प्रभु ! दिन के आठों प्रहर तेरी महिमा गायन करता हूँ।

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ਦੁਖਾਲਾ ਜੀਉ ॥੪॥੩੩॥੪੦॥
सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥४॥३३॥४०॥
उसके हृदय के समस्त मनोरथ पूर्ण हो गए हैं और अब वह कभी भी दुखी नहीं होता ॥४॥३३॥४०॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਘੁ ਪਠਾਇਆ ॥
पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥
पारब्रह्म प्रभु ने मेघ को वर्षा करने के लिए भेजा है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਵਰਸਾਇਆ ॥
जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥
मेघ ने सागर, धरती एवं आकाश दसों दिशाओं में वर्षा की है।

ਸਾਂਤਿ ਭਈ ਬੁਝੀ ਸਭ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸਭ ਠਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
सांति भई बुझी सभ त्रिसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥१॥
वर्षा से जीवों के अन्त्रतमन में सुख-शांति हो गई है तथा उनकी सारी प्यास मिट गई है और समस्त स्थानों पर प्रसन्नता हो गई है॥१॥

ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖ ਭੰਜਨਹਾਰਾ ॥
सुखदाता दुख भंजनहारा ॥
हे भगवान ! तू सुख प्रदान करने वाला और दुःख नाश करने वाला है।

ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਕਰੇ ਜੀਅ ਸਾਰਾ ॥
आपे बखसि करे जीअ सारा ॥
तू स्वयं ही समस्त प्राणियों को क्षमा करता है।

ਅਪਨੇ ਕੀਤੇ ਨੋ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਪਇ ਪੈਰੀ ਤਿਸਹਿ ਮਨਾਈ ਜੀਉ ॥੨॥
अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥२॥
अपनी सृष्टि का वह स्वयं ही पालन पोषण करता है। मैं उसके चरणों में नतमस्तक होकर उसे प्रसन्न करता हूँ॥२॥

ਜਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥
जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥
जिस भगवान की शरण लेने से मुक्ति प्राप्त होती है,

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥
श्वास-श्वास से उस भगवान के नाम का ही ध्यान करना चाहिए।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਹੋਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਭ ਤਿਸੈ ਕੀਆ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥
तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥३॥
उसके अलावा अन्य कोई दूसरा स्वामी नहीं। समस्त स्थान केवल उसी के हैं॥३॥

ਤੇਰਾ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ॥
तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥
हे प्रभु ! मुझे तेरा ही मान एवं तेरा ही बल है।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਣੀ ਗਹੇਰਾ ॥
तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥
तू ही मेरा सच्चा स्वामी एवं गुणों का सागर है।

ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਬੇਨੰਤੀ ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥੪॥੩੪॥੪੧॥
नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥४॥३४॥४१॥
दास नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! दिन के आठों प्रहर मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ॥४॥३४॥ ४१॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਭੇ ਸੁਖ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਤੁਠੇ ॥
सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥
जब प्रभु प्रसन्न हो जाते हैं तो समस्त सुख उपलब्ध हो जाते हैं।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੇ ਚਰਣ ਮਨਿ ਵੁਠੇ ॥
गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥
फिर पूर्ण गुरु के चरण मन में निवास कर लेते हैं।

ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਲਗੀ ਲਿਵ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਰਸੁ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਜੀਉ ॥੧॥
सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥१॥
जिसकी प्रभु की सुरति में सहज समाधि लग जाती है, वही व्यक्ति इस आनंद को जानता है ॥ १ ॥

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ॥
अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥
मेरा परमेश्वर अगम्य एवं अगोचर है ।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਵਰਤੈ ਨੇਰਾ ॥
घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥
वह प्रत्येक हृदय मे निकट ही रहता है ।

ਸਦਾ ਅਲਿਪਤੁ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਜੀਉ ॥੨॥
सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥२॥
वह सदैव निर्लेप है और जीवों का दाता है। कोई विरला पुरुष ही अपने स्वरूप को समझता है॥२॥

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਣੈ ਕੀ ਏਹ ਨੀਸਾਣੀ ॥
प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥
प्रभु के मिलन का यही लक्षण है कि

ਮਨਿ ਇਕੋ ਸਚਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੀ ॥
मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥
मनुष्य अपने मन में एक सत्यस्वरूप परमात्मा के हुक्म की ही पहचान करता है ।

ਸਹਜਿ ਸੰਤੋਖਿ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਅਨਦੁ ਖਸਮ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੀਉ ॥੩॥

सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥३॥

प्रभु की इच्छा अनुसार चलने वाले मनुष्य को सदैव सुख, संतोष, तृप्ति एवं हर्ष प्राप्त होता है ॥३॥

ਹਥੀ ਦਿਤੀ ਪ੍ਰਭਿ ਦੇਵਣਹਾਰੈ ॥

हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥

दाता परमेश्वर ने मुझे अपना हाथ दिया है अर्थात् सहारा दिया है और

ਜਨਮ ਮਰਣ ਰੋਗ ਸਭਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥

जनम मरण रोग सभि निवारे ॥

प्रभु ने जीवन-मृत्यु के समूह कष्ट दूर कर दिए हैं।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਕੀਏ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ਜੀਉ ॥੪॥੩੫॥੪੨॥

नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥४॥३५॥४२॥

हे नानक ! जिनको परमात्मा ने अपना सेवक बना लिया है, वह प्रभु का यशोगान करने का आनंद प्राप्त करते हैं॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४२ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਕੀਨੀ ਦਇਆ ਗੋਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ॥
कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥
सृष्टि के पालनहार गोपाल ने मुझ पर कृपा-दृष्टि की है और

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਵਸੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
गुर के चरण वसे मन माही ॥
गुरु के चरण मेरे मन में स्थित हो गए हैं।

ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਆ ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਦੁਖ ਕਾ ਡੇਰਾ ਢਾਹਿਆ ਜੀਉ ॥੧॥
अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥१॥
अब उस सृजनहार प्रभु ने मुझे अपना सेवक स्वीकार करके मुसीबतों का डेरा ही ध्वस्त कर दिया है॥१॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥
मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥
मेरे तन एवं मन में सत्यस्वरूप परमेश्वर वास करता है और

ਬਿਖੜਾ ਥਾਨੁ ਨ ਦਿਸੈ ਕੋਈ ॥
बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥
अब मुझे कोई स्थान दुखदायी नहीं लगता।

ਦੂਤ ਦੁਸਮਣ ਸਭਿ ਸਜਣ ਹੋਏ ਏਕੋ ਸੁਆਮੀ ਆਹਿਆ ਜੀਉ ॥੨॥
दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥२॥
काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी दूत जो मेरे शत्रु थे, अब वह सभी मेरे मित्र बन गए हैं, क्योंकि मुझे एक जगत् का स्वामी ही प्रिय है॥२॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪੇ ਆਪੈ ॥
जो किछु करे सु आपे आपै ॥
भगवान जो कुछ भी करता है, वह स्वयं ही करता है।

ਬੁਧਿ ਸਿਆਣਪ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਪੈ ॥
बुधि सिआणप किछु न जापै ॥
उसके कार्यों में किसी अन्य की बुद्धि एवं चतुराई काम नहीं करती।

ਆਪਣਿਆ ਸੰਤਾ ਨੋ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ਪ੍ਰਭਿ ਭਰਮ ਭੁਲਾਵਾ ਲਾਹਿਆ ਜੀਉ ॥੩॥
आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥३॥
ईश्वर अपने संतों का स्वयं ही सहायक होता है। उसने मेरा भ्रम व संशय दूर कर दिया है॥३॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਜਨ ਕਾ ਆਧਾਰੋ ॥
चरण कमल जन का आधारो ॥
प्रभु के चरण कमल उसके भक्तों का सहारा है।

ਆਠ ਪਹਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੋ ॥
आठ पहर राम नामु वापारो ॥
वह दिन-रात आठ प्रहर राम नाम का व्यापार करते हैं।

ਸਹਜ ਅਨੰਦ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਸਮਾਹਿਆ ਜੀਉ ॥੪॥੩੬॥੪੩॥
सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥४॥३६॥४३॥
वह सहज अवस्था में आनंदपूर्वक गोविन्द की महिमा गायन करते रहते हैं। हे नानक ! प्रभु समस्त जीवों में समाया हुआ है॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४३ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸੋ ਸਚੁ ਮੰਦਰੁ ਜਿਤੁ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ॥
सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥
सत्य का मन्दिर वहीं है, जहाँ सत्य प्रभु का सिमरन किया जाता है।

ਸੋ ਰਿਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥
सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईऐ ॥
वही हृदय सुखी है, जिससे भगवान की महिमा का गायन किया जाता है।

ਸਾ ਧਰਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਜਿਤੁ ਵਸਹਿ ਹਰਿ ਜਨ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੋ ਜੀਉ ॥੧॥

सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥१॥

वह धरती बड़ी सुन्दर है, जहाँ प्रभु के भक्त रहते हैं। वे तेरे सत्य नाम पर कुर्बान जाते हैं।॥१॥

ਸਚੁ ਵਡਾਈ ਕੀਮ ਨ ਪਾਈ ॥

सचु वडाई कीम न पाई ॥

सत्य-स्वरूप परमात्मा की महिमा का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਮੁ ਨ ਕਹਣਾ ਜਾਈ ॥

कुदरति करमु न कहणा जाई ॥

परमेश्वर की कुदरत एवं करम का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਜੀਵਹਿ ਜਨ ਤੇਰੇ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਮਾਣੋ ਜੀਉ ॥੨॥

धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥२॥

हे प्रभु ! तेरे भक्त सदैव तुझे स्मरण करके जीते हैं। उनकी आत्मा सत्य रूपी वाणी का आनंद लेती हैं।॥२॥

ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥

सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥

सद्पुरुष परमात्मा की महिमा करनी सौभाग्य से ही प्राप्त होती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥

गुर परसादी हरि गुण गाईऐ ॥

गुरु की दया से परमात्मा का गुणगान किया जाता है।

ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਤੇਰੈ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੋ ਜੀਉ ॥੩॥

रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु नीसाणो जीउ ॥३॥

जो तेरी प्रीति में मग्न रहते हैं, वह तुझे अच्छे लगते हैं। हे प्रभु ! तेरे दरबार में जाने के लिए सत्यनाम उनका परिचय चिन्ह है॥३॥

ਸਚੇ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥

सचे अंतु न जाणै कोई ॥

सत्यस्वरूप परमात्मा का अंत कोई नहीं जानता।

ਥਾਨਿ ਥਨੰਤਰਿ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥
थानि थनंतरि सचा सोई ॥
सच्चा प्रभु सर्वव्यापक है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ਸਦ ਹੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਣੋ ਜੀਉ ॥੪॥੩੭॥੪੪॥
नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥४॥३७॥४४॥
हे नानक ! उस सत्य प्रभु का सदैव ही सिमरन करना चाहिए, वह अन्तर्यामी समस्त जीवों की भावना को जानता है॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४४ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਰੈਣਿ ਸੁਹਾਵੜੀ ਦਿਨਸੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥
*रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥*वह रात्रि सुन्दर है और वह दिन भी बड़ा सुखदायक है,"

ਜਪਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸੰਤਸੰਗਿ ਮੇਲਾ ॥
जपि अम्रित नामु संतसंगि मेला ॥
जब संतों की सभा में मिलकर अमृत नाम का जाप किया जाता है।

ਘੜੀ ਮੂਰਤ ਸਿਮਰਤ ਪਲ ਵੰਞਹਿ ਜੀਵਣੁ ਸਫਲੁ ਤਿਥਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥१॥
जहाँ जीवन-समय की घड़ियों, मुहूर्त एवं पल सभी नाम-सिमरन में व्यतीत होते हैं, वहाँ जीवन सफल हो जाता है॥१॥

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਦੋਖ ਸਭਿ ਲਾਥੇ ॥
सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥
नाम की स्तुति करने से मेरे समस्त दोष मिट गए हैं और

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਥੇ ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥
अन्दर-बाहर हरि-प्रभु मेरे साथ रहता है।

ਭੈ ਭਉ ਭਰਮੁ ਖੋਇਆ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੇਖਾ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੨॥

भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥२॥

पूर्ण गुरु ने मेरे भीतर से भय, खौफ व भ्रम निवृत्त कर दिए हैं और अब मैं परमेश्वर को सर्वत्र देखता हूँ॥२ ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਸਮਰਥੁ ਵਡ ਊਚ ਅਪਾਰਾ ॥

प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥

परमात्मा सर्वशक्तिमान, महान, सर्वश्रेष्ठ एवं अनन्त है।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥

नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥

नवनिधियाँ प्रदान करने वाले नाम से उसके भण्डार भरे हुए हैं।

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਧਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਦੂਜਾ ਲਵੈ ਨ ਲਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥

आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥३॥

परमात्मा जगत् के आदि, अन्त एवं मध्य तक विद्यमान है। किसी अन्य को मैं अपने निकट नहीं आने देता ॥३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥

करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥

हे दीनदयाल ! मुझ पर दया कीजिए।

ਜਾਚਿਕੁ ਜਾਚੈ ਸਾਧ ਰਵਾਲਾ ॥

जाचिकु जाचै साध रवाला ॥

मैं तेरे दर का भिखारी हूँ और संतों की चरण-धूलि ही माँगता हूँ।

ਦੇਹਿ ਦਾਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਮਾਗੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥੪॥੩੮॥੪੫॥

देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥४॥३८॥४५॥

हे प्रभु ! दास नानक तुझ से यहीं माँगता है कि मुझे यह दान दीजिए कि मैं सदैव ही तेरा सिमरन करता रहूँ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४५ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥

माझ महला ५ ॥

माझ महला ५ ॥

ਐਥੈ ਤੂੰਹੈ ਆਗੈ ਆਪੇ ॥
ऐथै तूंहै आगै आपे ॥
हे प्रभु ! इस मृत्यु लोक मे तू ही (मेरा आधार) है और आगे परलोक में भी तू ही (मेरा आधार) है।

ਜੀਅ ਜੰਤ੍ਰ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਥਾਪੇ ॥
जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥
समस्त जीव-जंतु तेरी ही रचना है।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਕਰਤੇ ਮੈ ਧਰ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਉ ॥੧॥
तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥१॥
हे सृजनहार प्रभु ! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं। तुम ही मेरा सहारा और आधार हो॥१॥

ਰਸਨਾ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਸੁਆਮੀ ॥
रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥
हे जगत् के स्वामी ! मैं तेरा नाम अपनी रसना से जप-जप कर जीता हूँ।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥
पारब्रह्म प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਜਨਮੁ ਨ ਜੂਐ ਹਾਰੀ ਜੀਉ ॥੨॥
जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥२॥
जो प्राणी प्रभु की भक्ति करता है, वह सुख प्राप्त करता है। वह अपना मनुष्य जीवन जुए के खेल में नहीं हारता॥२॥

ਨਾਮੁ ਅਵਖਧੁ ਜਿਨਿ ਜਨ ਤੇਰੈ ਪਾਇਆ ॥
नामु अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥
हे प्रभु ! तेरे जिन भक्तों ने नाम रूपी औषधि को पा लिया है,

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇਆ ॥
जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥
उन्होंने अपना जन्म-जन्मांतरों का पुराना रोग दूर कर लिया है।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਫਲ ਏਹਾ ਹੈ ਕਾਰੀ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥३॥
हे मानव ! दिन-रात भगवान का भजन करते रहो, क्योंकि यही कार्य फलदायक है॥३॥

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਧਾਰਿ ਅਪਨਾ ਦਾਸੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥
द्रिसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥
अपनी कृपा-दृष्टि करके प्रभु अपने जिस भक्त को गुणवान बना देता है,

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਮਸਕਾਰਿਆ ॥
घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥
वह भक्त प्रत्येक हृदय में विद्यमान प्रभु को नमस्कार करता रहता है।

ਇਕਸੁ ਵਿਣੁ ਹੋਰੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਇਹ ਮਤਿ ਸਾਰੀ ਜੀਉ ॥੪॥੩੯॥੪੬॥
इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥४॥३९॥४६॥
एक ईश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं है। हे नानक ! यही मति सर्वश्रेष्ठ है॥ ४ ॥ ३९ ॥ ४६ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥
मनु तनु रता राम पिआरे ॥
यह मन एवं तन तो प्रिय राम के प्रेम में ही मग्न रहना चाहिए।

ਸਰਬਸੁ ਦੀਜੈ ਅਪਨਾ ਵਾਰੇ ॥
सरबसु दीजै अपना वारे ॥
हमें अपना सर्वस्व ही प्रभु को न्योछावर कर देना चाहिए।

ਆਠ ਪਹਰ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ਬਿਸਰੁ ਨ ਕੋਈ ਸਾਸਾ ਜੀਉ ॥੧॥
आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥१॥
हमें दिन के आठ प्रहर भगवान की महिमा-स्तुति करनी चाहिए और कोई एक सांस लेते भी उस प्रभु को भूलना नहीं चाहिए॥१॥

ਸੋਈ ਸਾਜਨ ਮੀਤੁ ਪਿਆਰਾ ॥
सोई साजन मीतु पिआरा ॥
वही मेरा प्रिय मित्र एवं सज्जन है,

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥
राम नामु साधसंगि बीचारा ॥
जो सत्संग में राम के नाम का चिन्तन करता है।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਤਰੀਜੈ ਸਾਗਰੁ ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ਜੀਉ ॥੨॥
साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥२॥
संतों की संगति करने से ही भवसागर पार किया जाता है और मृत्यु की फाँसी कट जाती है।॥२॥

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥
चारि पदारथ हरि की सेवा ॥
चारों पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रभु की भक्ति से प्राप्त होते हैं।

ਪਾਰਜਾਤੁ ਜਪਿ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥
पारजातु जपि अलख अभेवा ॥
अदृष्य एवं भेद रहित परमात्मा की उपासना ही कल्प वृक्ष है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਕਿਲਬਿਖ ਗੁਰਿ ਕਾਟੇ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ਜੀਉ ॥੩॥
कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥३॥
सतिगुरु जिस व्यक्ति के अन्तर्मन से काम, क्रोध एवं पाप निवृत कर देते हैं, उसकी प्रभु मिलन की आशा पूरी हो जाती है॥३॥

ਪੂਰਨ ਭਾਗ ਭਏ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥
पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥
जिस प्राणी के पूर्ण भाग्य उदय होते हैं,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲੇ ਸਾਰੰਗਪਾਣੀ ॥
साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥
उसे संतों की संगति करने से सारंगपाणी भगवान मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਪਰਵਾਣੁ ਗਿਰਸਤ ਉਦਾਸਾ ਜੀਉ ॥੪॥੪੦॥੪੭॥
नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥४॥४०॥४७॥
हे नानक ! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास कर जाता है, वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता हुआ भी माया से उदासीन रहता है और भगवान के दरबार में स्वीकृत हो जाता है।॥४॥४०॥४७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥
हरि का नाम-सिमरन करने से मुझे हृदय में सुख प्राप्त हुआ है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਤੀ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥
करि किरपा भगतीं प्रगटाइआ ॥
भगवान के भक्तों ने कृपा करके उसे मेरे मन में प्रगट कर दिया है।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਬਿਨਸੇ ਆਲਸ ਰੋਗਾ ਜੀਉ ॥੧॥
संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥१॥
संतों की सभा में मिलकर मैंने हरि-प्रभु के नाम का ही जाप किया है और मेरा आलस्य रोग मिट गया है ॥१॥

ਜਾ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਭਾਈ ॥
जा कै ग्रिहि नव निधि हरि भाई ॥
हे भाई ! जिस (भगवान) के गृह में नवनिधियाँ हैं,

ਤਿਸੁ ਮਿਲਿਆ ਜਿਸੁ ਪੁਰਬ ਕਮਾਈ ॥
तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥
भगवान उस व्यक्ति को ही मिलता है, जिसने पूर्व जन्म में नाम-सिमरन के शुभ कर्म किए हैं।

ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭਨਾ ਗਲਾ ਜੋਗਾ ਜੀਉ ॥੨॥
गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥२॥
पूर्ण परमेश्वर ज्ञान एवं ध्यान से भरपूर है, प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है॥२॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ॥
खिन महि थापि उथापनहारा ॥
परमेश्वर क्षण में ही जगत् की उत्पति तथा विनाश करने वाला है।

ਆਪਿ ਇਕੰਤੀ ਆਪਿ ਪਸਾਰਾ ॥
आपि इकंती आपि पसारा ॥
ईश्वर स्वयं ही निराकार स्वरूप है और ब्रह्माण्ड रूप सगुण भी स्वयं ही है।

ਲੇਪੁ ਨਹੀ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤੇ ਦਰਸਨ ਡਿਠੇ ਲਹਨਿ ਵਿਜੋਗਾ ਜੀਉ ॥੩॥
लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥३॥
प्रभु जगत् का जीवन एवं दाता है और माया उसे प्रभावित नहीं करती, वह निर्लिप्त है। उस प्रभु के दर्शन करने से विरह की पीड़ा निवृत हो जाती है।॥३॥

ਅੰਚਲਿ ਲਾਇ ਸਭ ਸਿਸਟਿ ਤਰਾਈ ॥
अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥
वह परमात्मा गुरु के आंचल से लगाकर सारी सृष्टि को भवसागर से पार करवाता है।

ਆਪਣਾ ਨਾਉ ਆਪਿ ਜਪਾਈ ॥
आपणा नाउ आपि जपाई ॥
भगवान गुरु द्वारा अपने नाम की जीवों से स्वयं ही आराधना करवाता है।

ਗੁਰ ਬੋਹਿਥੁ ਪਾਇਆ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗਾ ਜੀਉ ॥੪॥੪੧॥੪੮॥
गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥४॥४१॥४८॥
हे नानक ! जिसकी किस्मत में प्रारब्ध से ही संयोग लिखे होते हैं, उसे भगवान की कृपा से भवसागर पार करने के लिए गुरु रूपी जहाज मिल जाता है॥४॥४१॥४८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਸੋਈ ਕਰਣਾ ਜਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
सोई करणा जि आपि कराए ॥
हे भगवान ! मैं वही कुछ करता हूँ जो तुम स्वयं ही मुझ से करवाते हो।

ਜਿਥੈ ਰਖੈ ਸਾ ਭਲੀ ਜਾਏ ॥
जिथै रखै सा भली जाए ॥
मेरे लिए वहीं स्थान उत्तम है, जिस स्थान पर तुम रखते हो।

ਸੋਈ ਸਿਆਣਾ ਸੋ ਪਤਿਵੰਤਾ ਹੁਕਮੁ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਮੀਠਾ ਜੀਉ ॥੧॥
सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥१॥
वहीं व्यक्ति बुद्धिमान और प्रतिष्ठित है जिसको ईश्वर का हुक्म मीठा लगता है॥१॥

ਸਭ ਪਰੋਈ ਇਕਤੁ ਧਾਗੈ ॥
सभ परोई इकतु धागै ॥
सारी सृष्टि भगवान ने माया रूपी एक धागे में पिरोई हुई है।

ਜਿਸੁ ਲਾਇ ਲਏ ਸੋ ਚਰਣੀ ਲਾਗੈ ॥
जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥
वही व्यक्ति भगवान के चरणों में लगता है, जिसे वह स्वयं अपने चरणों में लगाता है।

ਊਂਧ ਕਵਲੁ ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ਤਿਨਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਜਨੁ ਡੀਠਾ ਜੀਉ ॥੨॥
ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥२॥
भगवान का निवास मनुष्य के हृदय-कमल में है। यह कमल पहले उलटा पड़ा होता है परन्तु भगवान के सिमरन द्वारा सीधा हो जाता है। फिर इस सीधे हुए कमल में भगवान की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जो व्यक्ति उस प्रकाश को देखता है, वह उस सर्वव्यापक निरंजन के दर्शन करता है॥२॥

ਤੇਰੀ ਮਹਿਮਾ ਤੂੰਹੈ ਜਾਣਹਿ ॥
तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥
हे भगवान ! अपनी महिमा को तुम स्वयं ही जानते हो

ਅਪਣਾ ਆਪੁ ਤੂੰ ਆਪਿ ਪਛਾਣਹਿ ॥
अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥
और तुम अपने स्वरूप को स्वयं ही पहचान सकते हो।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸੰਤਨ ਤੇਰੇ ਜਿਨਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਪੀਠਾ ਜੀਉ ॥੩॥

हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥३॥

मैं तेरे संतों पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने अपने काम, क्रोध एवं लालच को पीस दिया है॥३॥

ਤੂੰ ਨਿਰਵੈਰੁ ਸੰਤ ਤੇਰੇ ਨਿਰਮਲ ॥

तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥

हे ईश्वर ! तुम निर्वैर हो और तेरे सन्त पवित्र हैं,

ਜਿਨ ਦੇਖੇ ਸਭ ਉਤਰਹਿ ਕਲਮਲ ॥

जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥

जिनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਜੀਵੈ ਬਿਨਸਿਆ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਧੀਠਾ ਜੀਉ ॥੪॥੪੨॥੪੯॥

नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥४॥४२॥४९॥

हे नानक ! मैं प्रभु के नाम की वंदना एवं सिमरन करके ही जीवित हूँ और मेरा कठोर स्वभाव, भ्रम एवं भय नाश हो गए हैं॥४॥४२॥४९॥

ਮਾਂਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
मांझ महला ५ ॥
मांझ महला ५ ॥

ਝੂਠਾ ਮੰਗਣੁ ਜੇ ਕੋਈ ਮਾਗੈ ॥
झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥
यदि कोई व्यक्ति झूठी माया की याचना करे तो

ਤਿਸ ਕਉ ਮਰਤੇ ਘੜੀ ਨ ਲਾਗੈ ॥
तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥
उसे मृत्युकाल में एक क्षण भी नहीं लगता।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜੋ ਸਦ ਹੀ ਸੇਵੈ ਸੋ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਿਹਚਲੁ ਕਹਣਾ ॥੧॥
पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥१॥
जो व्यक्ति पारब्रह्म प्रभु की सदैव भक्ति करता रहता है, वह गुरु से मिलकर सदैव जीवन प्राप्त कर लेता है॥१॥

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜਿਸ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ॥
प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥
जिसका मन प्रभु की भक्ति में मग्न है,

ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਅਨਦਿਨੁ ਨਿਤਿ ਜਾਗੀ ॥
गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥
वह दिन-रात प्रभु की कीर्ति गायन करता है और सदैव मग्न रहता है।

ਬਾਹ ਪਕੜਿ ਤਿਸੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਲੈ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲਹਣਾ ॥੨॥
बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥२॥
जिसकी किस्मत में नाम की देन लेने का लेख विद्यमान है, उसे ही भुजा से पकड़ कर प्रभु अपने साथ मिला लेता है॥२॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਭਗਤਾਂ ਮਨਿ ਵੁਠੇ ॥
चरन कमल भगतां मनि वुठे ॥
हरि के चरण कमल उसके भक्तों के हृदय में बसते हैं।

ਵਿਣੁ ਪਰਮੇਸਰ ਸਗਲੇ ਮੁਠੇ ॥
विणु परमेसर सगले मुठे ॥
महान परमेश्वर की दया के अलावा सारे ठगे जाते हैं।

ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਕੀ ਧੂੜਿ ਨਿਤ ਬਾਂਛਹਿ ਨਾਮੁ ਸਚੇ ਕਾ ਗਹਣਾ ॥੩॥
संत जनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥३॥
जो व्यक्ति संतों की चरण-धूलि की नित्य कामना करते रहते हैं, उन्हें संतों द्वारा सत्य प्रभु का नाम रूपी आभूषण मिल जाता है।॥३॥

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥
ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥
उठते-बैठते हर वक्त हमें भगवान की महिमा-स्तुति करते रहना चाहिए,

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਵਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਈਐ ॥
जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥
भगवान का सिमरन करने से अटल प्रभु मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਹੋਇ ਦਇਆਲਾ ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਸਹਣਾ ॥੪॥੪੩॥੫੦॥
नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥४॥४३॥५०॥
हे नानक ! परमात्मा उस पर दयालु हुआ है। हे प्रभु ! तुम जो कुछ करते हो, मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ॥४॥ ४३॥ ५०॥

ਰਾਗੁ ਮਾਝ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧
रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १
रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਏ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਏ ॥
सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥
ईश्वर के हुक्म द्वारा सभी गुरु के शब्द में मग्न हैं

ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ॥
सची दरगह महलि बुलाए ॥
और परमात्मा के सत्य दरबार में उसकी उपस्थिति में आमंत्रित किए जाते हैं।

ਸਚੇ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਵਣਿਆ ॥੧॥
सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥१॥
हे मेरे मालिक ! तू दीनदयाल एवं सदैव सत्य है और तेरे सत्य से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने शब्द द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लिया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮਤੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु का अमृत नाम सदा ही सुख देने वाला है। गुरु के उपदेश द्वारा मैंने प्रभु के नाम को अपने मन में बसा लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾ ਕੋ ਮੇਰਾ ਹਉ ਕਿਸੁ ਕੇਰਾ ॥
ना को मेरा हउ किसु केरा ॥
न ही कोई मेरा है, न ही मैं किसी का हूँ।

ਸਾਚਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਮੇਰਾ ॥
साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥
तीनों लोकों का स्वामी सत्य परमात्मा ही मेरा है।

ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਾਇ ਘਣੇਰੀ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥
हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥
अनेक जीव अहंकार करके प्राण त्याग गए हैं। दुष्कर्म करके प्राणी को बड़ा पश्चाताप होता है॥ २॥

ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਸੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਵਖਾਣੈ ॥
हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥
जो परमात्मा के हुक्म को पहचानता है, वही उसका यशोगान करता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਾਮਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥
गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥
वह गुरु के शब्द द्वारा नाम रूपी परवाना अपने साथ लेकर दरबार में जाता है।

ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਰਿ ਲੇਖਾ ਸਚੈ ਛੁਟਸਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सभना का दरि लेखा सचै छुटसि नामि सुहावणिआ ॥३॥
सत्य प्रभु के दरबार में समस्त जीवों के कर्मों का लेखा होता है। वहाँ वहीं व्यक्ति मुक्त होते हैं, जो नाम द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लेते हैं।॥ ३॥

ਮਨਮੁਖੁ ਭੂਲਾ ਠਉਰੁ ਨ ਪਾਏ ॥
मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥
मनमुख व्यक्ति को कहीं भी सुख नहीं मिलता।

ਜਮ ਦਰਿ ਬਧਾ ਚੋਟਾ ਖਾਏ ॥
जम दरि बधा चोटा खाए ॥
मृत्यु के द्वार पर बंधा हुआ वह चोटें खाता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਸੰਗਿ ਨ ਸਾਥੀ ਮੁਕਤੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੪॥
बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥४॥
वहाँ नाम के अलावा मनुष्य का कोई मित्र अथवा सज्जन नहीं होता। नाम सिमरन करने वाला व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है॥ ४॥

ਸਾਕਤ ਕੂੜੇ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵੈ ॥
साकत कूड़े सचु न भावै ॥
झूठे शाक्त को सत्य उत्तम नहीं लगता।

ਦੁਬਿਧਾ ਬਾਧਾ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥
दुबिधा बाधा आवै जावै ॥
वह दुविधा में फँसा होने के कारण जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੫॥
लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥५॥
जीव की किस्मत को कोई मिटा नहीं सकता। गुरु की दया से ही मनुष्य मोक्ष पाता है॥ ५॥

ਪੇਈਅੜੈ ਪਿਰੁ ਜਾਤੋ ਨਾਹੀ ॥
पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥
जिस जीव-स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में अपने मालिक-प्रभु को नहीं समझा,

ਝੂਠਿ ਵਿਛੁੰਨੀ ਰੋਵੈ ਧਾਹੀ ॥
झूठि विछुंनी रोवै धाही ॥
वह झूठी प्रभु से जुदा हुई ऊँची ऊँची विलाप करती है।

ਅਵਗਣਿ ਮੁਠੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ਅਵਗਣ ਗੁਣਿ ਬਖਸਾਵਣਿਆ ॥੬॥
अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥६॥
उस अवगुणों की ठगी हुई जीव-स्त्री को प्रभु के महल में स्थान नहीं मिलता। गुणों का स्वामी प्रभु स्वयं ही जीव के अवगुणों को क्षमा कर देता है॥ ६॥

ਪੇਈਅੜੈ ਜਿਨਿ ਜਾਤਾ ਪਿਆਰਾ ॥
पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥
जिस जीव-स्त्री ने अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति-प्रभु को समझ लिया है,

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥
वह गुरु के माध्यम से परम तत्त्व अर्थात् प्रभु के गुणों को समझ लेती है।

ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥७॥
प्रभु उसके जन्म-मरण के चक्र को मिटा देता है। तदुपरांत वह सत्य प्रभु के नाम में लीन रहती है॥ ७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਅਕਥੁ ਕਹਾਵੈ ॥
गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥
गुरमुख प्रभु के गुणों को स्वयं समझता है और दूसरों से अकथनीय प्रभु की लीला एवं उसके गुणों की कथा करवाता है।

ਸਚੇ ਠਾਕੁਰ ਸਾਚੋ ਭਾਵੈ ॥
सचे ठाकुर साचो भावै ॥
सच्चे ठाकुर प्रभु को सत्य नाम ही अच्छा लगता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨੰਤੀ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥

नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥८॥१॥

हे नानक ! वह सत्य प्रभु के समक्ष सच्ची प्रार्थना करता है कि उसे सत्य नाम मिले ताकि वह उसकी महिमा करता रहे ॥ ८॥ १॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥

माझ महला ३ घरु १ ॥

माझ महला ३ घरु १ ॥

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥

करमु होवै सतिगुरू मिलाए ॥

उनकी दया से, हम सच्चे गुरु से मिलते हैं।

ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥
फिर वह व्यक्ति अपनी सुरति प्रभु की सेवा में लगाता और अपना मन शब्द में जोड़ता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੧॥
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥१॥
वह अपने अहंकार को त्याग कर सदैव सुख पाता है और अपने माया के मोह को मिटा देता है॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥
मैं अपने सतिगुरु पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ,

ਗੁਰਮਤੀ ਪਰਗਾਸੁ ਹੋਆ ਜੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि गुरु की मति द्वारा उसके हृदय में प्रभु ज्योति का प्रकाश हो जाता है। वह व्यक्ति प्रतिदिन भगवान की महिमा -स्तुति करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਨੁ ਮਨੁ ਖੋਜੇ ਤਾ ਨਾਉ ਪਾਏ ॥
तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥
जब मनुष्य अपने तन एवं मन में ही उसकी खोज करता है तो उसे ईश्वर का नाम प्राप्त हो जाता है।

ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥
वह अपने भटकते मन को स्थिर करता है और इसको अपने वश में रखता है।

ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਅਨਦਿਨੁ ਗਾਵੈ ਸਹਜੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੨॥
गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥२॥
वह रात-दिन गुरु की वाणी गायन करता है और सहज ही प्रभु की भक्ति में जुट जाता है॥ २॥

ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਵਸਤੁ ਅਸੰਖਾ ॥
इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥
इस शरीर में विद्यमान अनंत गुणों वाली नाम रूपी वस्तु जब किसी को मिल जाती है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਵੇਖਾ ॥
गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥
तो वह सत्य प्रभु के दर्शन करता है।

ਨਉ ਦਰਵਾਜੇ ਦਸਵੈ ਮੁਕਤਾ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੩॥
नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥३॥
शरीर रूपी घर को आँखें, कान, नाक, मुँह इत्यादि नौ द्वार लगे हुए है। इन दरवाजों द्वारा मन बाहर भटकता रहता है। जब वह विकारों एवं मोह-माया से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है तो वह दसम द्वार में आ जाता है। फिर निर्मल मन में अनहद शब्द बजने लगता है॥ ३ ॥

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥
सचा साहिबु सची नाई ॥
परमात्मा सदैव सत्य है एवं उसकी महिमा भी सत्य है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥
गुर परसादी मंनि वसाई ॥
गुरु की कृपा से ही परमात्मा मन में आकर निवास करता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥४॥
फिर व्यक्ति दिन-रात परमात्मा के प्रेम में मग्न रहता है और उसे सत्य दरबार की सूझ हो जाती है॥ ४॥

ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
पाप पुंन की सार न जाणी ॥
मनमुख प्राणी को पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं होती।

ਦੂਜੈ ਲਾਗੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥
दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥
उसकी बुद्धि मोह-माया में मग्न हो जाती है, जिससे वह भ्रम में फँसकर भटकती रहती है।

ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧਾ ਮਗੁ ਨ ਜਾਣੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥੫॥
अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥५॥
मोह-माया में ज्ञानहीन मनमुख भगवान के मिलन के मार्ग को नहीं जानता, जिसके कारण वह बार-बार जन्मता एवं मरता रहता है।॥ ५ ॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥
गुरमुख गुरु की सेवा करके सदैव ही सुख प्राप्त करते हैं।

ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥
हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥
वह अहंकार को नष्ट करके अपने भटकते हुए मन को विकारों की तरफ जाने से वर्जित करते हैं।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਖੁਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥६॥
गुरु की शिक्षा से उनका अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है और वज कपाट खुल जाते हैं।॥६॥

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥
वह अपना अहंकार मिटाकर भगवान को अपने मन में बसा लेते हैं।

ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਸਦਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥
फिर वह अपना चित्त सदैव ही गुरु के चरणों में लगाकर रखते हैं।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੭॥
गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥७॥
गुरु की कृपा से उनका मन एवं तन निर्मल हो। जाता है। फिर वह भगवान के निर्मल नाम का सिमरन करते रहते हैं।॥ ७॥

ਜੀਵਣੁ ਮਰਣਾ ਸਭੁ ਤੁਧੈ ਤਾਈ ॥
जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥
हे प्रभु ! जीवों का जन्म एवं मृत्यु सब कुछ तुझ पर निर्भर है

ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥
और हे प्रभु ! आप उसे महानता प्रदान करते हैं, जिसे तुम क्षमा कर देते हो।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸਦਾ ਤੂੰ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਸਵਾਰਣਿਆ ॥੮॥੧॥੨॥
नानक नामु धिआइ सदा तूं जमणु मरणु सवारणिआ ॥८॥१॥२॥
हे नानक ! तू सदैव ही परमेश्वर के नाम का भजन कर, जो मनुष्य के जन्म और मृत्यु को संवार देता है॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥
मेरा निर्मल प्रभु अगम्य एवं अपार है।

ਨੁ ਤਕੜੀ ਤੋਲੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥
बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥
वह तराजु के बिना जगत् को तोलता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਬੁਝੈ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥
इस तथ्य को वहीं व्यक्ति समझता है, जो गुरु के सान्निध्य में रहता है। वह प्रभु के गुणों को कह-कह कर उसी में विलीन हो जाता है ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥
जो व्यक्ति भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। मेरा तन-मन उन पर न्योछावर है।

ਜੋ ਸਚਿ ਲਾਗੇ ਸੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति सत्य प्रभु के नाम-सिमरन में मग्न हैं, वह रात-दिन जागृत रहते है और सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं।॥१॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਸੁਣੈ ਤੈ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ॥
आपि सुणै तै आपे वेखै ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं ही समस्त जीवों की प्रार्थना सुनता है और स्वयं ही उन्हें देखता रहता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥
जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥
जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह व्यक्ति प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो जाता है।

ਆਪੇ ਲਾਇ ਲਏ ਸੋ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥२॥
जिसे प्रभु स्वयं ही अपने सिमरन में लगाता है, वहीं व्यक्ति उसके सिमरन में लगता है। गुरमुख ही सत्य नाम की साधना करते हैं।॥२॥

ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਸੁ ਕਿਥੈ ਹਥੁ ਪਾਏ ॥
जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥
वह किस का आश्रय ले सकता है, जिसको प्रभु स्वयं गुमराह करता है?

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਏ ॥
पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥
विधाता के विधान को मिटाया नहीं जा सकता अर्थात् पूर्व जन्म का लिखा लेख मिटाया नहीं जाता।

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥
जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥३॥
वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें सतिगुरु मिले हैं। पूर्ण भाग्य से ही सतिगुरु जी मिलते हैं।॥३॥

ਪੇਈਅੜੈ ਧਨ ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਤੀ ॥
पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥
जीव-स्त्री अपने पीहर (इहलोक) में दिन-रात अज्ञानता में निंद्रामग्न रहती है।

ਕੰਤਿ ਵਿਸਾਰੀ ਅਵਗਣਿ ਮੁਤੀ ॥
कंति विसारी अवगणि मुती ॥
उसके पति-प्रभु ने उसे विस्मृत कर दिया है और अवगुणों के कारण वह त्याग दी गई है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਬਿਲਲਾਦੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਦ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥४॥
वह रात-दिन सदैव ही विलाप करती रहती है। अपने पति-प्रभु के बिना उसको सुख की निद्रा नहीं आती ॥ ४॥

ਪੇਈਅੜੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਾਤਾ ॥

पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥

गुरमुख जीव-स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में सुखदाता पति-प्रभु को जान लिया है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥

हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥

उसने अपना अहंकार त्याग कर गुरु के शब्द द्वारा अपने पति-प्रभु को पहचान लिया है।

ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥

सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥५॥

वह सदैव ही सुन्दर शय्या पर शयन करती है और पति-प्रभु के साथ रमण करती है। ऐसी जीव-स्त्री प्रभु के सत्य-नाम को अपना श्रृंगार बनाती है॥५॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜੀਅ ਉਪਾਏ ॥
लख चउरासीह जीअ उपाए ॥
पारब्रह्म-प्रभु ने चौरासी लाख योनियों में अनंत जीव उत्पन्न किए हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥
जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥
जिस जीव पर वह अपनी दया-दृष्टि करता है, उसको गुरु से मिला देता है।

ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਿ ਸਦਾ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਦਰਿ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੬॥
किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥६॥
वह जीव अपने पापों को धोकर हमेशा के लिए पवित्र हो जाता है और सत्य दरबार के अन्दर नाम से सुहावना लगता है॥६॥

ਲੇਖਾ ਮਾਗੈ ਤਾ ਕਿਨਿ ਦੀਐ ॥
लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥
यदि प्रभु कर्मो का हिसाब मांगेगा, वह तब कौन दे सकेगा?

ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਫੁਨਿ ਦੂਐ ਤੀਐ ॥
सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥
तब द्वैत अथवा त्रिगुणी अवस्था में कोई सुख प्राप्त नहीं होना।

ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥७॥
सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं क्षमाशील है और क्षमा करके अपने आप से मिला लेता है॥७॥

ਆਪਿ ਕਰੇ ਤੈ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
आपि करे तै आपि कराए ॥
प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥
पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥
पूर्ण गुरु के उपदेश से ही प्रभु अपने साथ मिला लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨॥੩॥
नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥८॥२॥३॥
हे नानक ! जिस जीव को प्रभु के नाम की शोभा मिलती है, सृष्टि का स्वामी स्वयं ही उसे अपने मिलाप में मिलाता है ॥८॥२॥३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਇਕੋ ਆਪਿ ਫਿਰੈ ਪਰਛੰਨਾ ॥
इको आपि फिरै परछंना ॥
एक परमेश्वर ही अदृष्य होकर सर्वत्र भ्रमण करता रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖਾ ਤਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭਿੰਨਾ ॥
गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिंना ॥
जिस व्यक्ति ने गुरु के माध्यम से उसके दर्शन कर लिए हैं, उसका मन उसके प्रेम में भीग गया है।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਤਜਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਏਕੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥
त्रिसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥१॥
उसने अपनी तृष्णा को त्यागकर सहज सुख प्राप्त कर लिया है। फिर उसने एक प्रभु को ही अपने मन में बसाया है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਇਕਸੁ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥
मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरी आत्मा कुर्बान है, जो एक ईश्वर से अपनी सुरति लगाते हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਇਆ ਸਚੈ ਰੰਗਿ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की मति द्वारा उसका मन एक ही आत्मस्वरूप घर में आकर बसता है और सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हो जाता है।॥१॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਭੂਲਾ ਤੈਂ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥
इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥
हे प्रभु ! यह संसार भ्रम में पड़ा हुआ है और तूने स्वयं ही इसे भ्रम में डाल दिया है।

ਇਕੁ ਵਿਸਾਰਿ ਦੂਜੈ ਲੋਭਾਇਆ ॥
इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥
एक ईश्वर को विस्मृत करके यह लोभ लालच में ग्रस्त हुआ पड़ा है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲਾ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥२॥
रात-दिन यह भ्रम का भ्रमित हुआ हमेशा भटकता रहता है और नाम के बिना कष्ट उठाता है॥२ ॥

ਜੋ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤੇ ॥
जो रंगि राते करम बिधाते ॥
जो भाग्य विधाता के प्रेम में मग्न रहते हैं,

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਤੇ ॥
गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥
वह गुरु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥
जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥३॥
जिस प्राणी को प्रभु स्वयं महानता प्रदान करता है, वह ईश्वर के नाम में लीन हो जाता है।॥३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ॥
माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥
माया-मोह में ग्रस्त मनुष्य परमेश्वर को स्मरण नहीं करता।

ਜਮਪੁਰਿ ਬਧਾ ਦੁਖ ਸਹਾਹੀ ॥
जमपुरि बधा दुख सहाही ॥
फिर यमदूतों की नगरी में जकड़ा हुआ वह कष्ट सहन करता है।

ਅੰਨਾ ਬੋਲਾ ਕਿਛੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਮਨਮੁਖ ਪਾਪਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥४॥
मनमुख व्यक्ति अन्धा एवं बहरा है, उसे कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता और गुनाहों में ही नष्ट हो जाता है॥४॥

ਇਕਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥
हे प्रभु! कई जीव तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं, जिन्हें तूने ही नाम के साथ लगाया है।

ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥
भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥
प्रेमा-भक्ति द्वारा वह तेरे हृदय को अच्छे लगते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਭ ਇਛਾ ਆਪਿ ਪੁਜਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥५॥
वह सदैव सुखदाता सतिगुरु की सेवा करते रहते हैं और ईश्वर स्वयं ही उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी करता है॥५॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰੀ ਸਦਾ ਸਰਣਾਈ ॥
हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में रहता है,

ਆਪੇ ਬਖਸਿਹਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
आपे बखसिहि दे वडिआई ॥
तू स्वयं ही उसे क्षमादान करके शोभा प्रदान करते हो।

ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਸੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੬॥
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥६॥
जो व्यक्ति भगवान का नाम-सिमरन करता रहता है, यम उसके निकट नहीं आता ॥६ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ਜੋ ਹਰਿ ਭਾਏ ॥
अनदिनु राते जो हरि भाए ॥
जो व्यक्ति भगवान को अच्छे लगते हैं, वह रात-दिन भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं।

ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥
मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥
मेरे प्रभु ने उनका सतिगुरु से मिलाप करवा कर अपने साथ मिला लिया है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਚੇ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਤੂੰ ਆਪੇ ਸਚੁ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥७॥
हे सत्य स्वरूप परमेश्वर ! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में हैं। तुम स्वयं ही उन्हें सत्य का ज्ञान प्रदान करते हो।॥७॥

ਜਿਨ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਸੇ ਸਚਿ ਸਮਾਣੇ ॥
जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥
जो व्यक्ति सत्य प्रभु को समझ लेते हैं, वे सत्य में ही लीन रहते हैं।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਚੁ ਵਖਾਣੇ ॥
हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥
वह हरि का यशोगान करते हैं और सत्य का ही बखान करते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾੜੀ ਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩॥੪॥
नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥८॥३॥४॥
हे नानक ! जो नाम में मग्न रहते हैं, वे निर्लेप हैं और अपने निज घर आत्मस्वरूप में समाधि लगाते हैं ॥८॥३॥४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਸੁ ਮੁਆ ਜਾਪੈ ॥
सबदि मरै सु मुआ जापै ॥
जो व्यक्ति शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, वही मृत माना जाता है।

ਕਾਲੁ ਨ ਚਾਪੈ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥
कालु न चापै दुखु न संतापै ॥
उसे काल (मृत्यु) भी नहीं कुचलता और न ही कोई कष्ट दुखी करता है।

ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਸੁਣਿ ਮਨ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥१॥
उसकी ज्योत परम ज्योति में मिलकर उस में ही समा जाती है। उसका मन भी सत्य नाम को सुनकर सत्य में ही समा जाता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥

हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥

मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के नाम द्वारा जगत् में शोभा पाते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਗੁਰਮਤੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा करते हैं एवं सत्य प्रभु में अपना चित्त लगाते हैं, वह गुरु के उपदेश द्वारा सहज अवस्था में लीन रहते हैं।॥१॥ रहाउ॥

ਕਾਇਆ ਕਚੀ ਕਚਾ ਚੀਰੁ ਹੰਢਾਏ ॥

काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥

मनुष्य का शरीर कच्चा अर्थात् क्षणभंगुर है। शरीर जीवात्मा का वस्त्र है और जीवात्मा इस क्षणभंगुर वस्त्र को पहनकर रखती है।

ਦੂਜੈ ਲਾਗੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਏ ॥

दूजै लागी महलु न पाए ॥

जीवात्मा माया के मोह में लीन रहने के कारण अपने आत्मस्वरूप को नहीं पा सकती।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਦੀ ਫਿਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥२॥
वह दिन-रात तृष्णाग्नि में जलती रहती है और पति-प्रभु के बिना बहुत दुखी रहती है॥२ ॥

ਦੇਹੀ ਜਾਤਿ ਨ ਆਗੈ ਜਾਏ ॥
देही जाति न आगै जाए ॥
मनुष्य का शरीर एवं जाति परलोक में नहीं जाते।

ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਤਿਥੈ ਛੁਟੈ ਸਚੁ ਕਮਾਏ ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए ॥
जहाँ कर्मों का लेखा तलब किया जाता है, वहाँ सत्य की कमाई द्वारा ही वह मोक्ष को प्राप्त होगा।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਧਨਵੰਤੇ ਐਥੈ ਓਥੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥३॥
जो सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वह धनवान हैं। वह लोक तथा परलोक में हरिनाम में विलीन रहते हैं॥३॥

ਭੈ ਭਾਇ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥
भै भाइ सीगारु बणाए ॥
जो जीव-स्त्री प्रभु के भय एवं प्रेम को अपना हार-श्रृंगार बनाती है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਏ ॥
गुर परसादी महलु घरु पाए ॥
वह गुरु की दया से अपने घर में ही उसकी उपस्थिति को पा लेती है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਰਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਜੀਠੈ ਰੰਗੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥४॥
वह दिन-रात हमेशा उपने प्रियतम के साथ रमण करती है और मजीठ जैसे पक्की रंगत निश्चित कर लेती है॥४॥

ਸਭਨਾ ਪਿਰੁ ਵਸੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥
सभना पिरु वसै सदा नाले ॥
समस्त जीव-स्त्रियों का प्रियतम प्रभु हमेशा ही सभी के साथ रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
गुर परसादी को नदरि निहाले ॥
गुरु की दया से कोई विरला ही अपने नेत्रों से उसके दर्शन करता है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਤਿ ਊਚੋ ਊਚਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥
मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥५॥
मेरा प्रभु सर्वश्रेष्ठ है। वह अपनी कृपा करके स्वयं ही जीव-स्त्री को अपने साथ मिला लेता है॥ ५॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸੁਤਾ ॥
माइआ मोहि इहु जगु सुता ॥
यह जगत् मोह-माया में फँसकर अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ है।

ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਅੰਤਿ ਵਿਗੁਤਾ ॥
नामु विसारि अंति विगुता ॥
प्रभु के नाम को विस्मृत करके यह अंतः नष्ट हो जाता है।

ਜਿਸ ਤੇ ਸੁਤਾ ਸੋ ਜਾਗਾਏ ਗੁਰਮਤਿ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥६॥
जिस परमात्मा के हुक्म से यह जगत् निद्रामग्न है, वही इसे ज्ञान प्रदान करके जगाता है। गुरु के उपदेश द्वारा इसको सूझ प्राप्त होती है॥६॥

ਅਪਿਉ ਪੀਐ ਸੋ ਭਰਮੁ ਗਵਾਏ ॥
अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए ॥
जो व्यक्ति नाम रूपी अमृत पान करता है, वह अपना भ्रम निवृत्त कर देता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥
गुर परसादि मुकति गति पाए ॥
गुरु की दया से वह मोक्ष की पदवी को प्राप्त कर लेता है।

ਭਗਤੀ ਰਤਾ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਆਪੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥७॥
जो परमेश्वर की भक्ति में मग्न रहता है, वह सदैव ही निर्लेप है। अपने अंह को मारकर वह अपने प्रभु को मिल जाता है।॥७॥

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਧੰਧੈ ਲਾਏ ॥
आपि उपाए धंधै लाए ॥
हे ईश्वर ! तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना करके प्राणी उत्पन्न किए हैं और अपने-अपने कर्म में लगा दिया है।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀ ਰਿਜਕੁ ਆਪਿ ਅਪੜਾਏ ॥
लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥
हे प्रभु ! चौरासी लाख योनियों को स्वयं ही तुम जीविका पहुँचाते हो।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਕਾਰ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੮॥੪॥੫॥
नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥८॥४॥५॥
हे नानक ! जो व्यक्ति प्रभु का नाम-सिमरन करते रहते हैं, वे सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। वह वहीं कार्य करते हैं, जो प्रभु को अच्छा लगता है ॥८॥४॥५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਅੰਦਰਿ ਹੀਰਾ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ॥
अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥
भगवान ने आत्मस्वरूप में हीरे एवं लाल जैसा अमूल्य नाम रखा हुआ है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਰਖਿ ਪਰਖਾਇਆ ॥
गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥
गुरु के शब्द द्वारा इसकी परख की तथा करवाई जाती है।

ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਸਚੁ ਵਖਾਣਹਿ ਸਚੁ ਕਸਵਟੀ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥
जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥१॥
जिनके पास सत्यनाम है, वह सत्य-नाम का ही बखान करते हैं तथा इसकी परख करने के लिए सत्यनाम की ही कसौटी लगानी पड़ती है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥
जिन्होंने गुरु की वाणी को अपने मन में बसा लिया है, मैं उन पर तन-मन से न्योछावर हूँ।

ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

वह माया के अंजन में ही निरंजन प्रभु को पा लेते हैं। वह अपनी ज्योति को प्रभु की परम-ज्योति में मिला देते हैं ॥१॥ रहाउ ॥

ਇਸੁ ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਬਹੁਤੁ ਪਸਾਰਾ ॥

इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा ॥

जैसे ब्रह्माण्ड में परमात्मा ने अपना प्रसार किया हुआ है, वैसे ही उसने मनुष्य की काया में अपना अत्यधिक प्रसार किया हुआ है।

ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਤਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥

नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥

प्रभु का निरंजन नाम अत्यंत अगम्य एवं अपरंपार है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਪਾਏ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥

गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥२॥

जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहता है, इस नाम की लब्धि उसे ही हो सकती है। प्रभु गुरमुख व्यक्ति को क्षमा करके स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥२॥

ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਚੁ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥

मेरा ठाकुरु सचु द्रिड़ाए ॥

मेरा ठाकुर प्रभु जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य नाम बसा देता है

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥

गुर परसादी सचि चितु लाए ॥

और गुरु की कृपा से वह सत्य में ही अपना चित्त लगाता है।

ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥

सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥३॥

सत्य का पुंज परमेश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है। वह मनुष्य सत्य प्रभु में ही लीन रहता है॥३॥

ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਸਚੁ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥

वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥

मेरा प्रिय प्रभु सदैव सत्य एवं बेपरवाह है।

ਕਿਲਵਿਖ ਅਵਗਣ ਕਾਟਣਹਾਰਾ ॥
किलविख अवगण काटणहारा ॥
वह जीवों के पापों एवं अवगुणों को नाश करने वाला है।

ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਵਣਿਆ ॥੪॥
प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति द्रिड़ावणिआ ॥४॥
अतः प्रेमपूर्वक सदैव ही उसका सिमरन करते रहना चाहिए। उसका भय मानते हुए प्रेमपूर्वक उसकी भक्ति को अपने हृदय में बसाना चाहिए॥४॥

ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਸਚੀ ਜੇ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥
तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥
हे भगवान ! तेरी भक्ति सदैव सत्य है और इसकी देन जीव को तेरी इच्छानुसार ही मिलती है।

ਆਪੇ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥
आपे देइ न पछोतावै ॥
तू स्वयं ही अपनी भक्ति की देन प्रदान करता है परन्तु देन देकर तू पश्चाताप नहीं करता।

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਏਕੋ ਦਾਤਾ ਸਬਦੇ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥५॥
समस्त जीव-जन्तुओं का दाता एक प्रभु ही है। वह नाम द्वारा जीवों के अहंकार को नष्ट करके उन्हें सत्य जीवन प्रदान करने वाला है॥ ५॥

ਹਰਿ ਤੁਧੁ ਬਾਝਹੁ ਮੈ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥
हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥
हे भगवान ! तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई नहीं।

ਹਰਿ ਤੁਧੈ ਸੇਵੀ ਤੈ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥
में तेरी ही भक्ति करता हूँ और तेरी ही महिमा-स्तुति करता हूँ।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਤੂੰ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥६॥
हे सत्य परमेश्वर ! आप ही मुझे अपने साथ मिला लो। तेरी पूर्ण कृपा से ही तुझे पाया जा सकता है॥ ६॥

ਮੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ਤੁਧੈ ਜੇਹਾ ॥
मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥
हे भगवान ! मुझे तेरे जैसा अन्य कोई नजर नहीं आता।

ਤੇਰੀ ਨਦਰੀ ਸੀਝਸਿ ਦੇਹਾ ॥
तेरी नदरी सीझसि देहा ॥
तेरी कृपा-दृष्टि से मेरा शरीर सफल हो सकता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲਿ ਹਰਿ ਰਾਖਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥
भगवान प्रतिदिन जीवों की देखरेख करके उनकी रक्षा करता है। अतः गुरमुख सहज ही प्रभु में लीन रहते हैं। ७॥

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਮੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥
हे भगवान ! तेरे जैसा महान मुझे अन्य कोई भी नहीं दिखता।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜੀ ਆਪੇ ਗੋਈ ॥
तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥
तू स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही इसका विनाश करता है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਹੀ ਘੜਿ ਭੰਨਿ ਸਵਾਰਹਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੮॥੫॥੬॥
तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥८॥५॥६॥
हे भगवान ! तू स्वयं ही सृष्टि का निर्माण करके एवं विनाश करके संवारता है। हे नानक ! भगवान जीवों को अपने नाम में लगाकर उन्हें सुन्दर बना देता है ॥८॥५॥६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਸਭ ਘਟ ਆਪੇ ਭੋਗਣਹਾਰਾ ॥
सभ घट आपे भोगणहारा ॥
समस्त जीवों में व्यापक होकर भगवान स्वयं ही पदार्थों को भोगने वाला है।

ਅਲਖੁ ਵਰਤੈ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
अलखु वरतै अगम अपारा ॥
अदृष्य, अगम्य, अनन्त परमात्मा सर्वत्र व्यापक हो रहा है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥१॥
गुरु के शब्द द्वारा मेरे प्रभु-परमात्मा का ध्यान करने से मनुष्य सहज ही सत्य में लीन हो जाता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥
मैं तन-मन से उन पर न्यौछावर हूँ, जो गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਸਬਦੁ ਸੂਝੈ ਤਾ ਮਨ ਸਿਉ ਲੂਝੈ ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मनुष्य को गुरु की वाणी का ज्ञान हो जाता है, तब वह अपने मन से युद्ध करता है और अपनी तृष्णा को निवृत्त करके परमेश्वर में समा जाता है॥१॥ रहाउ॥

ਪੰਚ ਦੂਤ ਮੁਹਹਿ ਸੰਸਾਰਾ ॥
पंच दूत मुहहि संसारा ॥
माया के पाँच दूत-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जगत् के जीवों के सद्गुणों को लूट रहे हैं।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸੁਧਿ ਨ ਸਾਰਾ ॥
मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥
ज्ञानहीन अन्धे मनमुख को इसका कोई ज्ञान नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਅਪਣਾ ਘਰੁ ਰਾਖੈ ਪੰਚ ਦੂਤ ਸਬਦਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੨॥
गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥२॥
जो गुरमुख हो जाता है, वह अपना हृदय रूपी घर इन दूतों से बचा लेता है। पांचों ही कट्टर वैरी गुरु के उपदेश से नाश किए जाते हैं।॥२॥

ਇਕਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਚੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥
इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥
कई गुरमुख हमेशा सत्यस्वरूप ईश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं।

ਸਹਜੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਮਾਤੇ ॥
सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥
वह स्वाभाविक ही अपने ईश्वर की भक्ति करते हैं और रात-दिन उसके प्रेम में मस्त रहते हैं।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥
जो मनुष्य प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान करते हैं, वह ईश्वर के दरबार में शोभा पाते हैं।॥३॥

ਏਕਮ ਏਕੈ ਆਪੁ ਉਪਾਇਆ ॥
एकम एकै आपु उपाइआ ॥
पहले, प्रभु निराकार था। वह स्वंयभू है और उसने स्वयं ही अपना एक साकार रूप पैदा किया,

ਦੁਬਿਧਾ ਦੂਜਾ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥
दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥
दूसरा, द्वैत-भाव की सूझ को और तीसरा, रज, तम एवं सत त्रिगुणात्मक माया उत्पन्न की। त्रिगुणात्मक माया द्वारा सृष्टि-रचना हुई। त्रिगुणात्मक माया के जीव चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं।

ਚਉਥੀ ਪਉੜੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਊਚੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥

चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥४॥

इन जीवों को ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देने के लिए संत, साधु, भक्त एवं ब्रह्मज्ञानी उत्पन्न किए गए जिन्हें गुरमुख कहा जाता है। यह चौथे पद की अवस्था वाले होते हैं। जिसे तुरिया पद भी कहा जाता है। गुरमुख अवस्था सर्वोच्च अवस्था है। वह नाम-सिमरन की साधना करते हैं॥४ ॥

सभु है सचा जे सचे भावै ॥

सभु है सचा जे सचे भावै ॥

जो सत्यस्वरूप परमात्मा को अच्छा लगता है, सब सत्य है।

जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥

जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥

जो सत्य को पहचानता है, वह प्रभु में विलीन हो जाता है।

गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥५॥

गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥५॥

गुरमुख की जीवन-मर्यादा सदपुरुष की भक्ति-सेवा ही करती है। वे जाकर सत्य में ही समा जाते हैं।॥५॥

सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥

सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥

सत्य (ईश्वर) के अलावा अन्य कोई दूसरा नहीं।

दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥

दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥

माया के मोह में फंस कर दुनिया बड़ी व्याकुल होकर मरती है।

गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥६॥

गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥६॥

जो गुरमुख होता है, वह केवल एक ईश्वर को ही जानता है और एक ईश्वर की भक्ति करके सुख पाता है॥६॥

जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥

जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥

हे भगवान ! समस्त जीव-जन्तु तुम्हारी शरण में हैं।

ਆਪੇ ਧਰਿ ਦੇਖਹਿ ਕਚੀ ਪਕੀ ਸਾਰੀ ॥
आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥
यह जगत् एक चौपड़ की खेल है। तूने जीवों को इस खेल की कच्ची-पक्की गोटियाँ बनाया है। तू स्वयं ही जीवों की देखभाल करता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਆਪੇ ਕਾਰ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥७॥
तू स्वयं ही जीवों से कामकाज करवाता है और तू स्वयं ही इन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिलाने वाला है॥ ७॥

ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੇਲਹਿ ਵੇਖਹਿ ਹਦੂਰਿ ॥
तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥
हे प्रभु ! जो जीव तुझे प्रत्यक्ष देखते हैं, तू उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है।

ਸਭ ਮਹਿ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥
तू स्वयं ही समस्त जीवों में विद्यमान हो रहा है।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੬॥੭॥
नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥८॥६॥७॥
हे नानक ! भगवान स्वयं ही सर्वव्यापक है परन्तु इसका ज्ञान गुरमुखो को ही होता है ॥८॥६॥७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਕੀ ਮੀਠੀ ॥
अम्रित बाणी गुर की मीठी ॥
अमृत रूपी गुरु की वाणी बड़ी मीठी है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਚਖਿ ਡੀਠੀ ॥
गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥
कोई विरला गुरमुख ही इसको चख कर देखता है।

ਅੰਤਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੧॥
अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥१॥
जो इस अमृत रूपी महारस का पान करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और सत्य प्रभु के दरबार में अनहद शब्द बजने लगता है।॥१॥

हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो गुरु के चरणों में मन को लगाते हैं।

सतिगुरु है अंम्रित सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु है अम्रित सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु अमृत का सत्य सरोवर है। जब मन इसमें स्नान करता है तो वह अपने विकारों की मैल दूर कर लेता है॥१॥ रहाउ॥

तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥
तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥
हे सत्यस्वरूप ईश्वर ! तेरा अन्त कोई भी नहीं जानता।

गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥
गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥
गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही तेरे चरणों में अपना मन लगाता है।

तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥२॥
तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥२॥
इतनी बड़ी क्षुधा सत्यनाम की मुझे लगी हुई है कि तेरी उपमा करने से मुझे कदाचित तृप्ति नहीं होती ॥ २॥

एको वेखा अवरु न बीआ ॥
एको वेखा अवरु न बीआ ॥
मैं केवल एक ईश्वर को देखता हूँ और किसी अन्य दूसरे को नहीं।

गुर परसादी अंम्रितु पीआ ॥
गुर परसादी अम्रितु पीआ ॥
गुरु की दया से मैंने नाम रूपी अमृत पान कर लिया है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਤਿਖਾ ਨਿਵਾਰੀ ਸਹਜੇ ਸੂਖਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥
गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥३॥
गुरु के शब्द से मेरी तृष्णा बुझ गई है और मैं स्वाभाविक ही सदैव सुख में लीन हो गया हूँ॥३॥

ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਲਰਿ ਤਿਆਗੈ ॥
रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥
रत्न जैसे अमूल्य नाम को व्यर्थ ही त्याग कर

ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਲਾਗੈ ॥
मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥
ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति माया के प्रेम में लीन हो रहता है

ਜੋ ਬੀਜੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਏ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥
वह जैसा बीज बोता है, वह तैसा ही फल पाता है। जिसके कारण स्वप्न में भी उसे सुख प्राप्त नहीं होता ॥४॥

ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥
अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥
जिस मनुष्य पर परमात्मा अपनी दया करता है, वही गुरु को प्राप्त करता है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
गुर का सबदु मंनि वसाए ॥
गुरु के शब्द को वह अपने हृदय में बसाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਰਹੈ ਭੈ ਅੰਦਰਿ ਭੈ ਮਾਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੫॥
अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥५॥
दिन-रात वह सदा ही प्रभु के भय में रहता है और यम के भय को मिटा कर वह अपने संशय को निवृत्त कर देता है॥५ ॥

ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥
जो व्यक्ति अपने मन का भ्रम दूर कर देता है, वह सदैव ही सुखी रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥
गुरु की कृपा से वह परमपद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है।

ਅੰਤਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਹਜੇ ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥
अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥६॥
निर्मल वाणी से उसका अन्तर्मन भी निर्मल हो जाता है और वह सहज ही भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है॥६॥

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਵਖਾਣੈ ॥
सिम्रिति सासत बेद वखाणै ॥
पण्डित स्मृतियों, शास्त्रों एवं वेदों की कथा लोगों को सुनाता रहता है

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਤਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥
भरमे भूला ततु न जाणै ॥
परन्तु वह स्वयं ही भ्रम में पड़कर भटकता रहता है और परम तत्व ब्रह्म को नहीं जानता।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਏ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥७॥
सतिगुरु की सेवा किए बिना उसको सुख नहीं मिलता और वह दुःख ही दुःख अर्जित करता है॥७॥

ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੈ ਕੋਈ ॥
आपि करे किसु आखै कोई ॥
परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता है। फिर किसी को कोई क्या समझा सकता है?

ਆਖਣਿ ਜਾਈਐ ਜੇ ਭੂਲਾ ਹੋਈ ॥
आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥
किसी को समझाने की तभी आवश्यकता है यदि वह भूल करता हो।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੭॥੮॥
नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥८॥७॥८॥
हे नानक ! परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। नाम सिमरन करके जीव नाम में ही लीन हो जाता है ॥८॥७ ॥८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
आपे रंगे सहजि सुभाए ॥
भगवान स्वयं ही जीव को सहज स्वभाव द्वारा अपने प्रेम में रंग देता है

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਚੜਾਏ ॥
गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥
और गुरु के शब्द द्वारा अपने प्रेम का रंग चढ़ा देता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰਸਨਾ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੀ ਭੈ ਭਾਇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਵਣਿਆ ॥੧॥
मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥१॥
उसका मन एवं तन प्रेम में रंग जाता है और उसकी जिव्हा पोस्त के पुष्प की भाँति लाल वर्ण धारण कर लेती है। भगवान उसे यह नाम रंग उसके मन में अपना भय एवं प्रेम उत्पन्न करके चढ़ाता है॥१ ॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਨਿਰਭਉ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर न्यौछावर हूँ मेरा जीवन उन पर कुर्बान है, जो निडर परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਨਿਰਭਉ ਧਿਆਇਆ ਬਿਖੁ ਭਉਜਲੁ ਸਬਦਿ ਤਰਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की दया से वे निर्भय परमेश्वर को स्मरण करते हैं और उनकी वाणी द्वारा विषैले संसार सागर को पार कर जाते हैं।॥१॥ रहाउ ॥

ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥
मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥
मनमुख मूर्ख व्यक्ति चतुरता करता है।

ਨਾਤਾ ਧੋਤਾ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
नाता धोता थाइ न पाई ॥
अपने स्नान व स्वच्छता के बावजूद वह स्वीकृत नहीं होता।

ਜੇਹਾ ਆਇਆ ਤੇਹਾ ਜਾਸੀ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥
जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥
जिस तरह वह जगत् में आया था, वैसे ही पापों पर पश्चाताप करता हुआ चला जाता है।॥२॥

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਕਿਛੁ ਨ ਸੂਝੈ ॥
मनमुख अंधे किछु न सूझै ॥
ज्ञानहीन मनमुखों को कुछ भी ज्ञान नहीं होता

ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਆਏ ਨਹੀ ਬੂਝੈ ॥
मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥
क्योंकि वह प्रारम्भ से ही अपनी किस्मत में अपनी मृत्यु के लेख लिखवा कर जगत् में आते हैं। वे अपने जीवन-मनोरथ को नहीं समझते।

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ ਨਹੀ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੩॥
मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥३॥
मननुख कर्म करते रहते हैं परन्तु उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता। नामविहीन होकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं॥३ ॥

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥
सचु करणी सबदु है सारु ॥
सत्यनाम की साधना ही सर्वश्रेष्ठ है।

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥
पूर्णगुरु के द्वारा मोक्ष द्वार मिलता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਏ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਰੰਗਿ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥४॥
गुरु जी प्रतिदिन अपनी वाणी द्वारा सिक्खों को नाम सुनाते रहते हैं और वह शब्द द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हुए नाम रंग में लीन हो जाते हैं।॥४॥

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥
रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥
गुरमुख की रसना हरि-रस में रंग जाती है और प्रभु से ही प्यार करती है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੋਹਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥
सहज स्वभाव ही उसका मन एवं तन प्रभु प्रेम से मुग्ध हो जाता है।

ਸਹਜੇ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥५॥
वह सहज ही अपने प्रियतम प्रभु को पा लेता है। फिर वह सहज ही सहज अवस्था में समा जाता है।॥५ ।

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਰੰਗੁ ਸੋਈ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥
जिस मनुष्य में प्रभु का प्रेम विद्यमान है। वह ईश्वर का यशोगायन करता है

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਹਜੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਵੈ ॥
गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥
और गुरु के शब्द द्वारा सहज ही आत्मिक आनंद में समा जाता है।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਦਾ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥६॥
मैं सदैव ही उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो अपने मन को गुरु की सेवा में समर्पित करते हैं।॥६॥

ਸਚਾ ਸਚੋ ਸਚਿ ਪਤੀਜੈ ॥
सचा सचो सचि पतीजै ॥
वही व्यक्ति सत्यवादी है जो सत्य नाम द्वारा सत्य प्रभु से विश्वस्त हो जाता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅੰਦਰੁ ਭੀਜੈ ॥
गुर परसादी अंदरु भीजै ॥
गुरु की कृपा से उसका हृदय नाम-रस से भीग जाता है।

ਬੈਸਿ ਸੁਥਾਨਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਆਪੇ ਕਰਿ ਸਤਿ ਮਨਾਵਣਿਆ ॥੭॥
बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥७॥
वह साध संगत रूपी सुन्दर स्थान पर बैठकर भगवान की महिमा-स्तुति ही करता है। भगवान स्वयं ही उस पर कृपा करके उसके मन में यह श्रद्धा पैदा करता है कि सत्य का गुणानुवाद ही सत्यकर्म है॥७॥

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥
जिस नो नदरि करे सो पाए ॥
जिस पर प्रभु अपनी दया-दृष्टि करता है, वह उसके नाम को पाता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਉਮੈ ਜਾਏ ॥
गुर परसादी हउमै जाए ॥
गुरु की दया से उसका अहंकार निवृत्त हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੮॥੯॥
नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥८॥८॥९॥
हे नानक ! जिसके मन में ईश्वर का नाम निवास करता है, वह सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥८॥८॥९ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥
सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥
सतिगुरु की सेवा करने से बड़ी शोभा प्राप्त होती है

ਹਰਿ ਜੀ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥

हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥

और पूज्य परमेश्वर अकस्मात ही हृदय में आकर निवास करता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਫਲਿਓ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਿਨਿ ਪੀਤਾ ਤਿਸੁ ਤਿਖਾ ਲਹਾਵਣਿਆ ॥੧॥

हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥१॥

हरि-परमेश्वर एक फलदायक पौधा है जो इसके नाम रूपी अमृत का पान करता है, उसकी प्यास बुझ जाती है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਚੁ ਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥

हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥

मेरा तन, मन एवं प्राण उस प्रभु पर न्यौछावर हैं जो जीवों को सत्संग में मिलाकर अपने साथ मिला लेता है।

ਹਰਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਆਪੇ ਮੇਲੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

भगवान स्वयं ही जीवो को सत्संग में मिलाता है और गुरु के शब्द द्वारा जीव भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है॥१॥ रहाउ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥
सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥
जो सतिगुरु की सेवा करता है, गुरु की वाणी से शोभा पा रहा है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥
जिस व्यक्ति ने भगवान का नाम अपने मन में बसा लिया है,

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਗਵਾਏ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥२॥
निर्मल भगवान उसके मन की अहंकार रूपी मैल को दूर कर देता है और वह व्यक्ति सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त करता है।॥२॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥
गुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती।

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਰਹੇ ਬਿਲਲਾਇ ॥
सिध साधिक रहे बिललाइ ॥
सिद्ध-साधक इससे विहीन होकर विलाप करते हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਵੀ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥३॥
गुरु की सेवा के बिना सुख नहीं मिलता लेकिन बड़े सौभाग्य से सुकर्मो द्वारा गुरु जी मिलते हैं।॥३॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਆਰਸੀ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖੈ ॥
इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥
यह मन एक दर्पण है। कोई विरला गुरमुख ही उसमें अपने-आपको देखता है।

ਮੋਰਚਾ ਨ ਲਾਗੈ ਜਾ ਹਉਮੈ ਸੋਖੈ ॥
मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥
यदि मनुष्य अपना अहंकार जला दे तो उसे अहंकार रूपी जंगाल नहीं लगता।

ਅਨਹਤ ਬਾਣੀ ਨਿਰਮਲ ਸਬਦੁ ਵਜਾਏ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥४॥
जिस गुरमुख के मन में अनहद ध्वनि वाला निर्मल अनहद बजने लग जाता है, वह गुरु के शब्द द्वारा सत्य (परमेश्वर) में समा जाता है॥४॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਹੁ ਨ ਦੇਖਿਆ ਜਾਇ ॥
बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥
सतिगुरु के बिना परमेश्वर किसी तरह भी देखा नहीं जा सकता।

ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਆਪੁ ਦਿਤਾ ਦਿਖਾਇ ॥
गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥
अपनी दया करके गुरदेव ने स्वयं ही मुझे ईश्वर के दर्शन करवा दिए हैं।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਮਿਲਿ ਰਹਿਆ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੫॥
आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥५॥
ईश्वर अपने आप स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है। ब्रह्म-ज्ञान द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥५॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਇਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥
जो व्यक्ति गुरमुख बन जाता है, वह एक ईश्वर के साथ स्नेह करता है।

ਦੂਜਾ ਭਰਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥
गुरु के शब्द द्वारा वह मोह माया रूपी भ्रम को जला फेंकता है।

ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਵਣਜੁ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਚੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥६॥
अपनी देहि में ही वह नाम रूपी वस्तु का व्यापार करता है और सत्यनाम की निधि पा लेता है॥६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਸਾਰੁ ॥
गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥
भगवान की महिमा-स्तुति करना ही गुरमुख की श्रेष्ठ करनी है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥
इसलिए गुरमुख मोक्ष द्वार को पा लेता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥७॥
प्रभु के स्नेह में रंगा हुआ वह रात-दिन उसकी कीर्ति का गायन करता रहता है और प्रभु उसे अपने आत्म-स्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥७॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥
सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥
सतिगुरु नाम का दाता है और सतिगुरु भगवान का मिलाया हुआ ही जीव को मिलता है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਨਿ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆ ॥
पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥
जिस व्यक्ति के पूर्ण भाग्य होते हैं, सतिगुरु उसके मन में नाम बसा देते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੮॥੯॥੧੦॥
नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥८॥९॥१०॥
हे नानक ! यदि सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा-स्तुति की जाए तो ही मनुष्य को नाम की शोभा प्राप्त होती है ॥८॥९॥१०॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਆਪੁ ਵੰਞਾਏ ਤਾ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ॥
आपु वंजाए ता सभ किछु पाए ॥
यदि मनुष्य अपने अहंत्व को त्याग दे तो वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੀ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुर सबदी सची लिव लाए ॥
गुरु के शब्द द्वारा वह सत्य परमेश्वर में सुरति लगाता है।

ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਸਚੁ ਸੰਘਰਹਿ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੧॥
सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥१॥
वह सत्य-नाम का व्यापार करता है और सत्य नाम रूपी धन ही एकत्रित करता है और सत्य नाम का ही वह दूसरों से व्यापार करवाता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਅਨਦਿਨੁ ਗਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥
मैं तन-मन से उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो सदैव ही ईश्वर का यशोगान करते हैं।

ਹਉ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਬਦਿ ਵਡਿਆਈ ਦੇਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! मैं तेरा सेवक हूँ, तुम मेरे ठाकुर हो। तुम मुझे नाम की शोभा प्रदान करते हो॥१॥ रहाउ॥

ਵੇਲਾ ਵਖਤ ਸਭਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥
वेला वखत सभि सुहाइआ ॥
वह समय एवं क्षण सभी सुन्दर हैं,

ਜਿਤੁ ਸਚਾ ਮੇਰੇ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥
जब सत्यस्वरूप परमात्मा मेरे चित्त को अच्छा लगता है।

ਸਚੇ ਸੇਵਿਐ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਚੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥२॥
सत्य प्रभु की सेवा-भक्ति द्वारा सच्ची महानता प्राप्त होती है किन्तु गुरु की दया से ही सत्यस्वरूप ईश्वर मिलता है।॥२॥

ਭਾਉ ਭੋਜਨੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਪਾਏ ॥
भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥
प्रभु प्रीति का भोजन तभी मिलता है जब सतिगुरु जी परम प्रसन्न होते हैं।

ਅਨ ਰਸੁ ਚੂਕੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाए ॥
मनुष्य अन्य रस भूल जाता है जब वह हरि रस को अपने मन में बसा लेता है।

ਸਚੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਬਾਣੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥३॥
प्राणी पूर्ण गुरु की वाणी से ही सत्य, संतोष एवं सहज सुख प्राप्त करता है॥३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਹਿ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਗਵਾਰਾ ॥
सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥
मूर्ख, अंधे, गंवार मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करते।

ਫਿਰਿ ਓਇ ਕਿਥਹੁ ਪਾਇਨਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥
फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥
तब वह किस तरह मोक्ष-द्वार को प्राप्त होंगे?

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਹਿ ਜਮ ਦਰਿ ਚੋਟਾ ਖਾਵਣਿਆ ॥੪॥
मरि मरि जमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥४॥
वह बार-बार मरते और जन्म लेते हैं और पुनःपुनः जीवन-मृत्यु के बंधन में फँसकर आवागमन करते हैं। मृत्यु के द्वार पर वह चोटें खाते हैं।॥४॥

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਜਾਣਹਿ ਤਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ ॥
सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥
वह अपने स्वरूप की तभी पहचान कर सकते हैं, यदि वह शब्द के स्वाद को जानते हो

ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਵਖਾਣਹਿ ॥
निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥
और निर्मल वाणी द्वारा नाम-सिमरन करते हों।

ਸਚੇ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਨਿ ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥५॥
गुरमुख सत्य परमेश्वर की भक्ति द्वारा सदैव सुख प्राप्त करते हैं और अपने चित्त में ईश्वर के नाम की नवनिधि को बसाते हैं।॥५॥

ਸੋ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਇਆ ਜੋ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥
वह स्थान अति सुन्दर है जो परमेश्वर के मन को लुभाता है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਬਹਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥

सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥

केवल वही सत्संग है, जिस में बैठकर मनुष्य हरि-प्रभु का यशोगान करता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹਹਿ ਸਾਚਾ ਨਿਰਮਲ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੬॥

अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥६॥

गुरमुख प्रतिदिन भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते हैं और उनके मन में निर्मल नाद अर्थात् अनहद शब्द बजने लग जाता है।॥६॥

ਮਨਮੁਖ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ਖੋਟਾ ਪਾਸਾਰਾ ॥
मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥
मनमुख व्यक्ति माया-धन संचित करते हैं जो खोटी पूंजी है और वह इस खोटी पूंजी का ही प्रसार करते हैं।

ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਨਿ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਭਾਰਾ ॥
कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥
वह माया धन की मिथ्या कमाई करते हैं और अत्यंत कष्ट सहन करते हैं।

ਭਰਮੇ ਭੂਲੇ ਫਿਰਨਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥
भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥७॥
वे भ्रम में फँसकर दिन-रात भटकते रहते हैं और जीवन-मृत्यु के बंधन में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं।॥७॥

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮੈ ਅਤਿ ਪਿਆਰਾ ॥
सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥
सत्यस्वरूप परमात्मा मुझे अत्यन्त प्रिय है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਧਾਰਾ ॥
पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥
पूर्ण गुरु का शब्द मेरा जीवन आधार है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਨਣਿਆ ॥੮॥੧੦॥੧੧॥
नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥८॥१०॥११॥
हे नानक ! जिनको परमात्मा के नाम की शोभा प्राप्त होती है, वह दुख-सुख को एक समान जानते हैं॥८॥१०॥११॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਤੇਰੀਆ ਖਾਣੀ ਤੇਰੀਆ ਬਾਣੀ ॥
तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥
हे ठाकुर जी ! चारों ही उत्पत्ति के स्रोत तेरे हैं और चारों ही वाणी तेरी है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥
बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥
प्रभु के नाम के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकी हुई है।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥
गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥१॥
गुरु की सेवा करने से ईश्वर का नाम प्राप्त होता है। सतिगुरु के बिना किसी को भी ईश्वर का नाम नहीं मिल सकता ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥
मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के साथ अपना चित्त लगाते हैं।

ਹਰਿ ਸਚਾ ਗੁਰ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਸਹਜੇ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
सत्यस्वरूप ईश्वर गुरु-भक्ति से ही प्राप्त होता है और प्रभु सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास करता है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥
यदि मनुष्य सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करे, तो वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है।

ਜੇਹੀ ਮਨਸਾ ਕਰਿ ਲਾਗੈ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥
जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥
जिस तरह की कामना हेतु वह सेवा में सक्रिय होता है, वैसा ही फल वह प्राप्त करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਸਭਨਾ ਵਥੁ ਕਾ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥
सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥२॥
सतिगुरु समस्त पदार्थों का दाता है। भगवान भाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु से मिलाता है॥२॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਇਕੁ ਨ ਧਿਆਏ ॥
इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥
यह मलिन मन एक ईश्वर की आराधना नहीं करता।

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਲਾਗੀ ਬਹੁ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ॥
अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥
मोह-माया में फँसने के कारण इसके भीतर बहुत सारी मैल लगी हुई है।

ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ ਦਿਸੰਤਰਿ ਭਵੈ ਅਹੰਕਾਰੀ ਹੋਰੁ ਵਧੇਰੈ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥३॥
अहंकारी मनुष्य दरिया के तट, धार्मिक स्थलों व प्रदेशों में भटकता रहता है परन्तु वह अपने मन को अहंकार की अधिक मैल लगा लेता है॥३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਾ ਮਲੁ ਜਾਏ ॥
सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥
यदि वह सतिगुरु की सेवा करे तो उसकी मैल दूर हो जाती है।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥
वह अहंत्व को मारकर हरि प्रभु में अपना चित्त लगाता है।

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਸਚੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਸਚਿ ਲਾਗੈ ਮੈਲੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੪॥
हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥४॥
भगवान निर्मल है और उस सत्य प्रभु को अहंकार की मैल नहीं लगती। जो व्यक्ति सत्य के साथ जुड़ जाता है वह अपनी मैल गंवा देता है ॥४॥

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥
बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥
गुरु के बिना जगत् में अज्ञानता का घोर अंधकार है।

ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਅੰਧਾਰਾ ॥
अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥
ज्ञानहीन व्यक्ति अज्ञानता के अंधेरे में अंधा बना रहता है।

ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀੜੇ ਬਿਸਟਾ ਕਮਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੫॥
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥५॥
उसका ऐसा हाल होता है जैसे विष्ठा के कीड़े का होता है, जो विष्ठा खाने का कार्य करता है और विष्ठा में ही जलकर मर जाता है॥ ५॥

ਮੁਕਤੇ ਸੇਵੇ ਮੁਕਤਾ ਹੋਵੈ ॥
मुकते सेवे मुकता होवै ॥
जो व्यक्ति माया से मुक्त होकर गुरु की सेवा करता है, वही माया से मुक्त होता है।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਸਬਦੇ ਖੋਵੈ ॥
हउमै ममता सबदे खोवै ॥
वह नाम द्वारा अपने अहंकार को दूर कर लेता है

ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਚਾ ਸੇਵੀ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥६॥
और रात-दिन पूज्य परमेश्वर की भक्ति करता रहता है। उसे पूर्ण भाग्य से गुरु मिलता है॥६॥

ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥
आपे बखसे मेलि मिलाए ॥
भगवान स्वयं ही मनुष्य को क्षमा कर देता है और उसे गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ॥
पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥
वह पूर्ण गुरु से नाम रूपी निधि प्राप्त कर लेता है।

ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਦਾ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੇਵੇ ਦੁਖੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥७॥
उसका मन सदैव ही सत्य नाम द्वारा प्रभु का सिमरन करता रहता है। फिर प्रभु का सिमरन करके वह अपना दुख मिटा लेता है।॥७॥

ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ॥
सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥
भगवान स्वयं ही जीव के समीप रहता है, इसलिए उसे कहीं दूर मत समझो।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਪਛਾਣਹੁ ॥
गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥
गुरु के शब्द द्वारा भगवान को अपने मन में विद्यमान समझो।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੧॥੧੨॥
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥११॥१२॥
हे नानक ! नाम से जीव को बड़ी शोभा प्राप्त होती है परन्तु नाम पूर्ण गुरु द्वारा ही मिलता है ॥८॥११॥१२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਐਥੈ ਸਾਚੇ ਸੁ ਆਗੈ ਸਾਚੇ ॥
ऐथै साचे सु आगै साचे ॥
जो व्यक्ति इहलोक में सत्यवादी है, वह आगे परलोक में भी सत्यवादी है।

ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਾਚੇ ॥
मनु सचा सचै सबदि राचे ॥
वह मन सत्य है जो सत्य नाम में लीन रहता है।

ਸਚਾ ਸੇਵਹਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥१॥
वह सत्यस्वरूप परमात्मा की आराधना करता है, सत्य नाम का वह जाप करता है और शुद्ध सत्य का ही वह कर्म करता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥
मेरा तन, मन सर्वस्व उन पर न्योछावर है, जो व्यक्ति सत्य-नाम को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਸਚੇ ਸੇਵਹਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
वे सत्य प्रभु की सेवा करते हैं, सत्य नाम में ही लीन रहते हैं और सत्य-परमेश्वर का ही यश गायन करते हैं॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਪੰਡਿਤ ਪੜਹਿ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥
पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥
पण्डित धार्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं परन्तु उन्हें आनंद नहीं मिलता।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਭਰਮਾਵਹਿ ॥
दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥
क्योंकि द्वैत भाव के कारण उनका हृदय सांसारिक पदार्थों में भटकता रहता है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਭ ਸੁਧਿ ਗਵਾਈ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੋਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥
माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥
माया-मोह की लगन ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और दुष्कर्मों के कारण वे पश्चाताप करते हैं।॥२॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਤਤੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥
यदि मनुष्य को सतिगुरु मिल जाए तो उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
हरि का नामु मंनि वसाए ॥
फिर वह भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाता है।

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਮਨੁ ਮਾਰੈ ਅਪੁਨਾ ਮੁਕਤੀ ਕਾ ਦਰੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ ॥३॥
वह नाम द्वारा अपने अहंकार को नष्ट करके विनम्रता धारण करता है। वह अपने मन को वश में करके मोक्ष द्वार को पा लेता है ॥३॥

ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥
किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥
वह अपने पापों को नाश कर देता है और क्रोध को दूर कर देता है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਖੈ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥
गुर का सबदु रखै उर धारे ॥
वह गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाकर रखता है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੪॥
सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥४॥
वह सत्य नाम के प्रेम में मग्न रहता है और उसके मन में प्रभु-मिलन का वैराग्य बना रहता है। वह अपने अहंकार को नष्ट करके प्रभु को मिल पाता है॥४॥

ਅੰਤਰਿ ਰਤਨੁ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥
अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥
मनुष्य के हृदय में नाम रूपी अमूल्य रत्न है। यह रत्न उसे गुरु के मिलाने से ही प्राप्त होता है।

ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਨਸਾ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥
त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ ॥
माया (रज, तम, सत) त्रिगुणात्मक है अतः मन की इच्छाएँ भी तीन प्रकार की होती हैं।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਕੇ ਚਉਥੇ ਪਦ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥५॥
पण्डित एवं मोनधारी ऋषि धार्मिक ग्रंथों को पढ़-पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें चतुर्थ पद तुरीया अवस्था का ज्ञान नहीं हुआ ॥५॥

ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਏ ॥
आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥
ईश्वर स्वयं ही जीवों को अपना प्रेम रंग चढ़ाकर रंग देता है।

ਸੇ ਜਨ ਰਾਤੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਰੰਗਾਏ ॥
से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥
लेकिन वही पुरुष प्रभु के प्रेम में रंग जाते हैं जो गुरु की वाणी के प्रेम में रंग जाते हैं।

ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਚੜਿਆ ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਸਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥
हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥६॥
उन्हें अपार परमात्मा के प्रेम का रंग इतना चढ़ जाता है कि वह स्वाद ले लेकर भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते हैं।॥ ६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਸੋਈ ॥
गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥
गुरमुख के लिए वह सद्पुरुष ही ऋद्धि, सिद्धि और संयम है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਨਾਮਿ ਮੁਕਤਿ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥
गुरमुख को ज्ञान प्राप्त हो जाता है और हरिनाम द्वारा वह माया से मुक्त हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥७॥
पवित्रात्मा गुरमुख सत्य कर्म करता है और सत्य प्रभु के सत्य नाम में लीन हो जाता है।॥७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ॥
गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥
भगवान स्वयं ही मनुष्य को गुरमुख बनाता है और गुरमुख यही अनुभव करता है कि ईश्वर ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही प्रलय करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਭੁ ਆਪੇ ॥
गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥
गुरमुख का ईश्वर स्वयं ही जाति और समूह सम्मान है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੨॥੧੩॥
नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥८॥१२॥१३॥
हे नानक ! गुरमुख सत्यनाम की आराधना करता है और परमेश्वर के नाम में ही लीन हो जाता है ॥८॥१२॥१३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਉਤਪਤਿ ਪਰਲਉ ਸਬਦੇ ਹੋਵੈ ॥
उतपति परलउ सबदे होवै ॥
सृष्टि की रचना एवं प्रलय शब्द द्वारा ही होती है

ਸਬਦੇ ਹੀ ਫਿਰਿ ਓਪਤਿ ਹੋਵੈ ॥
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥
और शब्द द्वारा ही प्रलय के उपरांत ही पुनः सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਰਤੈ ਸਭੁ ਆਪੇ ਸਚਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਪਾਇ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥१॥
वह सत्य-परमेश्वर स्वयं ही गुरु के रूप में सर्वव्यापक है। गुरु-परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि-रचना करके इसमें समाया हुआ है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने पूर्ण गुरु को अपने हृदय में बसाया है।

ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਤਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु से ही मनुष्य को शांति प्राप्त होती है और वह दिन-रात भगवान की भक्ति करता रहता है। वह प्रभु के गुण अपने मुख से उच्चरित करता रहता है और गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समा जाता है॥१॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਰਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਣੀ ॥
गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥
गुरु ने ही धरती, जल,

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਵਣੁ ਬੈਸੰਤਰੁ ਖੇਲੈ ਵਿਡਾਣੀ ॥
गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥
पवन एवं अग्नि को पैदा किया है और गुरु स्वयं ही एक अद्भुत खेल को खेल रहा है।

ਸੋ ਨਿਗੁਰਾ ਜੋ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਨਿਗੁਰੇ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥੨॥
सो निगुरा जो मरि मरि जमै निगुरे आवण जावणिआ ॥२॥
निगुरा वह व्यक्ति होता है, जो जन्मता-मरता रहता है। निगुरा जन्म-मरण के चक्र में ही पड़ा रहता है।॥२॥

ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਇਕੁ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥
तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥
उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने यह जगत् अपनी एक खेल रचा हुआ है।

ਕਾਇਆ ਸਰੀਰੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ॥
काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥
उसने मानव शरीर में सब कुछ डाल दिया है

ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਕੋਈ ਮਹਲੁ ਪਾਏ ਮਹਲੇ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥३॥
जो व्यक्ति शब्द द्वारा भगवान के आत्मस्वरूप का भेद समझ लेता है, भगवान उस व्यक्ति को अपने आत्मस्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥३॥

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥
सचा साहु सचे वणजारे ॥
वह परमात्मा ही सच्चा साहूकार है और जीव सच्चे व्यापारी हैं।

ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੇ ॥
सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥
जीव अनंत प्रभु के रूप गुरु से प्रेम करके सत्य नाम का व्यापार करते हैं।

ਸਚੁ ਵਿਹਾਝਹਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥४॥
वे सत्य नाम खरीदते हैं और सत्य नाम की कमाई करते रहते हैं। वह सत्य द्वारा सत्य नाम ही कमाते हैं।॥४॥

ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਕੋ ਵਥੁ ਕਿਉ ਪਾਏ ॥
बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥
सत्य नाम की पूँजी के बिना सत्य नाम रूपी वस्तु को कोई कैसे प्राप्त कर सकता है?

ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ ਲੋਕ ਸਬਾਏ ॥
मनमुख भूले लोक सबाए ॥
मनमुख व्यक्ति भटके हुए हैं

ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਸਭ ਖਾਲੀ ਚਲੇ ਖਾਲੀ ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥५॥
और नाम रूपी पूँजी के बिना वह दुनिया से खाली हाथ चले जाते हैं और खाली हाथ बड़े दुःखी होते हैं ॥५॥

ਇਕਿ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਿਆਰੇ ॥
इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥
जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा सत्य नाम का व्यापार करते हैं,

ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ॥
आपि तरहि सगले कुल तारे ॥
वह भवसागर से पार हो जाते हैं और अपनी वंशावलि के समस्त सदस्यों को भी पार करवा देते हैं।

ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥६॥
ऐसे लोगों का ही जन्म लेकर दुनिया में आगमन सफल होता है और वे अपने प्रिय प्रभु से मिलकर सुखी रहते हैं।॥६॥

ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਮੂੜਾ ਬਾਹਰੁ ਭਾਲੇ ॥
अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥
प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नाम रूपी वस्तु विद्यमान है परन्तु मूर्ख मनमुख इसे अपने शरीर से बाहर ढूंढता रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਫਿਰਹਿ ਬੇਤਾਲੇ ॥
मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥
ज्ञानहीन मनमुख प्रेतों की तरह पागल हुए फिरते रहते हैं।

ਜਿਥੈ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਤਿਥਹੁ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥

जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥७॥

जहाँ नाम रूपी वस्तु मिलती है, वहाँ कोई भी उसे प्राप्त नहीं करता। मनमुख व्यक्ति भ्रम में फसकर भटकते रहते हैं।॥७॥

ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸਬਦਿ ਬੁਲਾਏ ॥

आपे देवै सबदि बुलाए ॥

परमात्मा स्वयं ही जीव को आमंत्रित करके शब्द द्वारा नाम रूपी वस्तु देता है।

ਮਹਲੀ ਮਹਲਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥

महली महलि सहज सुखु पाए ॥

जीव परमात्मा के स्वरूप में पहुँच कर परमानंद एवं सुख भोगता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਆਪੇ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੮॥੧੩॥੧੪॥

नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥८॥१३॥१४॥

हे नानक ! नाम में लीन रहने वाले को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है और वह स्वयं ही सुन-सुनकर ध्यान लगाता है ॥८॥१३॥१४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥

माझ महला ३ ॥

माझ महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਚੀ ਸਿਖ ਸੁਣਾਈ ॥

सतिगुर साची सिख सुणाई ॥

सतगुरु ने यही सच्ची शिक्षा सुनाई है कि

ਹਰਿ ਚੇਤਹੁ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥
हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥
भगवान का भजन करो, जो अंतिमकाल तेरा सहायक बनेगा।

ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਨਾਥੁ ਅਜੋਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥
हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥१॥
भगवान अगम्य, अगोचर एवं अयोनि है, जिसका कोई भी स्वामी नहीं। ऐसे प्रभु को सतिगुरु के प्रेम द्वारा ही पाया जाता है ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो अपने अहंत्व को दूर कर देते हैं।

ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਤਾ ਹਰਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਸਿਉ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति अपने अहंत्व को छोड़ देता है, वह भगवान को पा लेता है और सहज ही भगवान में समा जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕਰਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥
पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥
जीव वही कर्म करता है, जो उसकी किस्मत में पूर्व-जन्म के कर्मों द्वारा लिखा होता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥
सतगुरु की सेवा से वह सदा सुख प्राप्त करता है।

ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਨਾਹੀ ਸਬਦੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥
बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥२॥
भाग्य के बिना मनुष्य को गुरु नहीं मिलता। गुरु नाम द्वारा ही जीव को परमेश्वर से मिलाता है॥२॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੈ ਸੰਸਾਰੇ ॥
गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥
गुरमुख इस संसार में निर्लिप्त होकर रहता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਤਕੀਐ ਨਾਮਿ ਅਧਾਰੇ ॥
गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥
उसको गुरु का आश्रय एवं नाम का सहारा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋਰੁ ਕਰੇ ਕਿਆ ਤਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਖਪਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥३॥
जो गुरमुख है उसके साथ कौन अन्याय कर सकता है? दुष्ट अपने आप ही मर मिटता है और कष्ट झेलता है॥३॥

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੇ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ॥
मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥
ज्ञानहीन मनमुख को कोई ज्ञान नहीं होता।

ਆਤਮ ਘਾਤੀ ਹੈ ਜਗਤ ਕਸਾਈ ॥
आतम घाती है जगत कसाई ॥
वह आत्मघाती और संसार का जल्लाद है।

ਨਿੰਦਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਬਹੁ ਭਾਰੁ ਉਠਾਵੈ ਬਿਨੁ ਮਜੂਰੀ ਭਾਰੁ ਪਹੁਚਾਵਣਿਆ ॥੪॥
निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥४॥
दूसरों की निंदा करके वह पापों का बोझ उठाता है। वह उस मजदूर जैसा है जो बिना मजदूरी लिए दूसरों का भार उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है॥४॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਵਾੜੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਲੀ ॥
इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥
यह संसार एक उपवन है और मेरा प्रभु इसका बागबां है।

ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ਕੋ ਨਾਹੀ ਖਾਲੀ ॥
सदा समाले को नाही खाली ॥
वह सदा ही इसकी रक्षा करता है। इसका कोई भाग उसकी देखरेख से अधूरा नहीं हुआ।

ਜੇਹੀ ਵਾਸਨਾ ਪਾਏ ਤੇਹੀ ਵਰਤੈ ਵਾਸੁ ਵਾਸੁ ਜਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥
जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥५॥
जिस तरह की महक ईश्वर पुष्प में डालता है, वह वैसी ही उसमें प्रबल होती है। सुगंधित पुष्प अपनी सुगंध से जाना जाता है॥५॥

ਮਨਮੁਖੁ ਰੋਗੀ ਹੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥
मनमुखु रोगी है संसारा ॥
मनमुख प्राणी इस संसार में रोगग्रस्त रोगी है।

ਸੁਖਦਾਤਾ ਵਿਸਰਿਆ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥
उसने सुखदाता अगम्य व अनन्त प्रभु को विस्मृत कर दिया है।

ਦੁਖੀਏ ਨਿਤਿ ਫਿਰਹਿ ਬਿਲਲਾਦੇ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਾਂਤਿ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिआ ॥६॥
मनमुख हमेशा ही दुखी होकर रोते-चिल्लाते रहते हैं। गुरु के बिना उनको शांति प्राप्त नहीं होती।॥६॥

ਜਿਨਿ ਕੀਤੇ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥
जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥
जिस प्रभु ने उनकी सृजना की है, वह उनकी दशा को समझता है।

ਆਪਿ ਕਰੇ ਤਾ ਹੁਕਮਿ ਪਛਾਣੈ ॥
आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥
यदि प्रभु स्वयं दया करे, तब मनुष्य उसके हुक्म की पहचान करता है।

ਜੇਹਾ ਅੰਦਰਿ ਪਾਏ ਤੇਹਾ ਵਰਤੈ ਆਪੇ ਬਾਹਰਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥७॥
जिस तरह की बुद्धि ईश्वर प्राणी में डालता है, वैसे ही प्राणी कार्यरत होता है। परमात्मा स्वयं ही प्राणी को बाहर जगत् में जीवन-मार्ग पर लगाता है ॥७॥

ਤਿਸੁ ਬਾਝਹੁ ਸਚੇ ਮੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥
उस सत्यस्वरूप परमेश्वर के अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता।

ਜਿਸੁ ਲਾਇ ਲਏ ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥
जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥
जिसको प्रभु अपनी भक्ति में लगाता है वह पवित्र हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਸੋ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੪॥੧੫॥
नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥८॥१४॥१५॥
हे नानक ! परमेश्वर का नाम मनुष्य के हृदय में निवास करता है। लेकिन जिसे प्रभु अपना नाम देता हैं, वही इसको प्राप्त करता है ॥८॥१४॥१५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
अम्रित नामु मंनि वसाए ॥
जो व्यक्ति अमृत-नाम को अपने हृदय में बसा लेता है,

ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਗਵਾਏ ॥
हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥
वह 'मैं' मेरा कहने वाले अहंत्व एवं समस्त दुःखों को नाश कर देता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਸਦਾ ਸਲਾਹੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥
अम्रित बाणी सदा सलाहे अम्रिति अम्रितु पावणिआ ॥१॥
वह अमृत-वाणी द्वारा सदैव ही भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है और अमृत-वाणी द्वारा अमृत-नाम को पा लेता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी अम्रित बाणी मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो अमृत वाणी को अपने हृदय में बसा लेते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित बाणी मंनि वसाए अम्रितु नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
वह अमृत वाणी को अपने हृदय में बसाकर अमृत नाम का ध्यान करता रहता है।॥१॥ रहाउ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੋਲੈ ਸਦਾ ਮੁਖਿ ਵੈਣੀ ॥
अम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥
वह अपने मुँह से वचनों द्वारा हमेशा ही अमृत-नाम बोलता रहता है

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੇਖੈ ਪਰਖੈ ਸਦਾ ਨੈਣੀ ॥
अम्रितु वेखै परखै सदा नैणी ॥
और अपनी आँखों से अमृत रूप परमात्मा को सर्वव्यापक देखता है एवं सत्य की परख करता रहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਥਾ ਕਹੈ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਅਵਰਾ ਆਖਿ ਸੁਨਾਵਣਿਆ ॥੨॥
अम्रित कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥२॥
वह सदैव ही दिन-रात हरि की अमृत कथा करता है तथा दूसरों को भी यह कथा बोलकर सुनाता है॥२॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
अम्रित रंगि रता लिव लाए ॥
अमृत-नाम के प्रेम में मग्न हुआ व्यक्ति भगवान में सुरति लगाता है

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਏ ॥
अम्रितु गुर परसादी पाए ॥
और यह अमृत-नाम उसे गुरु की कृपा से ही मिलता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਸਨਾ ਬੋਲੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੩॥
अम्रितु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अम्रितु पीआवणिआ ॥३॥
वह दिन-रात नाम-अमृत को अपनी रसना से बोलता रहता है और भगवान उसे मन एवं तन द्वारा नाम-अमृत ही पान करवाता है॥३॥

ਸੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਜੁ ਚਿਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
सो किछु करै जु चिति न होई ॥
भगवान वही कुछ करता है, जो मनुष्य की कल्पना में भी नहीं होता।

ਤਿਸ ਦਾ ਹੁਕਮੁ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥
तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥
उसके हुक्म को कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਹੁਕਮੇ ਵਰਤੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਹੁਕਮੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੪॥
हुकमे वरतै अम्रित बाणी हुकमे अम्रितु पीआवणिआ ॥४॥
भगवान के हुक्म से ही गुरु के माध्यम से जीवों को अमृत वाणी का पान करवाया जाता है। भगवान अपने हुक्म से ही मनुष्य को नाम-अमृत का पान करवाता है॥४॥

ਅਜਬ ਕੰਮ ਕਰਤੇ ਹਰਿ ਕੇਰੇ ॥

अजब कम करते हरि केरे ॥

हे सृजनहार परमेश्वर ! तेरे कौतुक बड़े अदभुत हैं।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਭੂਲਾ ਜਾਂਦਾ ਫੇਰੇ ॥

इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥

जब यह मन भटक जाता है तो तू ही उसे सदमार्ग लगाता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦਿ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੫॥

अम्रित बाणी सिउ चितु लाए अम्रित सबदि वजावणिआ ॥५॥

जब मनुष्य अमृत-वाणी में अपना चित्त लगाता है तो तू उसके अन्तर्मन में अमृत अनहद शब्द बजा देता है॥५॥

ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਉਪਾਏ ॥
खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥
हे भगवान ! बुरे एवं भले जीव तूने ही पैदा किए हैं।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਲੋਕ ਸਬਾਏ ॥
तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥
समस्त लोगों के अच्छे एवं दुष्कर्मो की परख तू स्वयं ही करता है।

ਖਰੇ ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਇਹਿ ਖੋਟੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥६॥
भले जीवों को तुम अपने भक्ति-कोष में डाल देते हो परन्तु बुरे जीवों को तुम भ्रम में फँसाकर कुमार्ग लगा देते हो।॥६॥

ਕਿਉ ਕਰਿ ਵੇਖਾ ਕਿਉ ਸਾਲਾਹੀ ॥
किउ करि वेखा किउ सालाही ॥
हे भगवान ! मैं तेरे दर्शन कैसे करूं ? और कैसे तेरी महिमा-स्तुति करूं ?

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ॥
गुर परसादी सबदि सलाही ॥
गुरु की कृपा से ही मैं वाणी द्वारा तेरी ही महिमा कर सकता हूँ!

ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਸੈ ਤੂੰ ਭਾਣੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੭॥
तेरे भाणे विचि अम्रितु वसै तूं भाणै अम्रितु पीआवणिआ ॥७॥
हे प्रभु ! तेरी इच्छा से ही नाम-अमृत की वर्षा होती है और तू अपनी इच्छानुसार ही जीव को नाम-अमृत का पान करवाता है॥७॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥
अम्रित सबदु अम्रित हरि बाणी ॥
हे भगवान ! तेरा नाम अमृत है और तेरी वाणी भी अमृत है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੀ ॥
सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥
सतिगुरु की सेवा करने से ही तेरी वाणी मनुष्य के हृदय में समा जाती है।

ਨਾਨਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਭ ਭੁਖ ਲਹਿ ਜਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੫॥੧੬॥
नानक अम्रित नामु सदा सुखदाता पी अम्रितु सभ भुख लहि जावणिआ ॥८॥१५॥१६॥
हे नानक ! अमृत-नाम सदैव ही सुखदाता है और नाम रूपी अमृत का पान करने से मनुष्य की तमाम भूख मिट जाती है।॥८॥१५॥१६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵਰਸੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
अम्रितु वरसै सहजि सुभाए ॥
नाम-अमृत सहज-स्वभाव ही बरस रहा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਕੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥
गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥
गुरु के माध्यम से इसे कोई विरला पुरुष ही प्राप्त करता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੧॥
अम्रितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥१॥
नाम-अमृत का पान करने वाले सदैव तृप्त रहते हैं। अपनी दया करके प्रभु उनकी प्यास बुझा देता है॥१ ॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अम्रितु पीआवणिआ ॥
मैं उन पर न्यौछावर हूँ, जिन्हें गुरु जी नाम अमृत का पान करवाते हैं।

ਰਸਨਾ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
नाम अमृत को चखकर जिव्हा सदैव प्रभु की प्रीति में लीन रहती है और सहज ही हरि प्रभु का यशोगान करती है ॥१॥रहाउ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜੁ ਕੋ ਪਾਏ ॥
गुर परसादी सहजु को पाए ॥
गुरु की कृपा से कोई विरला प्राणी ही सहज अवस्था को प्राप्त करता है

ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰੇ ਇਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥
और अपनी दुविधा का नाश करके एक ईश्वर के साथ सुरति लगाता है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਦਰੀ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥२॥
जब परमात्मा दया-दृष्टि करता है तो प्राणी उस प्रभु के गुण गायन करता है और उसकी दया से सत्य में लीन हो जाता है।॥२॥

ਸਭਨਾ ਉਪਰਿ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥
सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥
हे मेरे हरि-प्रभु ! तेरी कृपा-दृष्टि समस्त जीवों पर है

ਕਿਸੈ ਥੋੜੀ ਕਿਸੈ ਹੈ ਘਣੇਰੀ ॥
किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥
किन्तु यह (कृपा-दृष्टि) किसी पर कम और किसी पर अधिकतर है।

ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਝੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥३॥
आपके सिवाय कुछ भी नहीं होता। इस बात का ज्ञान मनुष्य को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है॥३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਹੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥
गुरमुखि ततु है बीचारा ॥
गुरमुख इस तथ्य पर चिंतन करते हैं कि

ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
अम्रिति भरे तेरे भंडारा ॥
तेरे भण्डार नाम-अमृत से परिपूर्ण हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਕੋਈ ਨ ਪਾਵੈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥४॥
सतिगुरु की सेवा करने के अलावा कोई भी नाम अमृत को प्राप्त नहीं कर सकता। यह तो गुरु की दया से ही मिलता है।॥४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਸੋਹੈ ॥
सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥
जो पुरुष सतिगुरु की सेवा करता है, वह शोभनीय है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਿ ਅੰਤਰੁ ਮਨੁ ਮੋਹੈ ॥
अम्रित नामि अंतरु मनु मोहै ॥
प्रभु का अमृत-नाम मनुष्य के मन एवं हृदय को मोहित कर देता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬਾਣੀ ਰਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਹਜਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥
अम्रिति मनु तनु बाणी रता अम्रितु सहजि सुणावणिआ ॥५॥
जिनके मन एवं तन अमृत वाणी में मग्न हो जाते हैं, प्रभु उन्हें सहज ही अपना अमृत-नाम सुनाता है॥५॥

ਮਨਮੁਖੁ ਭੂਲਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥
मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥
स्वेच्छाचारी जीव भटका हुआ है। और मोह-माया में फँसकर नष्ट हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵੈ ਮਰੈ ਬਿਖੁ ਖਾਏ ॥
नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥
प्रभु नाम का वह जाप नहीं करता और माया रूपी विष सेवन करके प्राण त्याग देता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਵਿਸਟਾ ਮਹਿ ਵਾਸਾ ਬਿਨੁ ਸੇਵਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੬॥
अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥६॥
रात-दिन उसका बसेरा सदैव विष्ठा रूपी विषय-विकारों में रहता है। गुरु की सेवा के बिना वह अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥६॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਪੀਆਏ ॥
अम्रितु पीवै जिस नो आपि पीआए ॥
जिसको प्रभु स्वयं पिलाता है वही नाम अमृत का पान करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਹਜਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥
गुरु की कृपा से सहज ही वह परमात्मा में सुरति लगाता है।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਆਪੇ ਗੁਰਮਤਿ ਨਦਰੀ ਆਵਣਿਆ ॥੭॥
पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥७॥
पूर्ण परमेश्वर स्वयं ही सर्वत्र परिपूर्ण हो रहा है। गुरु की मति द्वारा वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है। ७॥

ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥
आपे आपि निरंजनु सोई ॥
वह निरंजन प्रभु सब कुछ अपने आप से ही है।

ਜਿਨਿ ਸਿਰਜੀ ਤਿਨਿ ਆਪੇ ਗੋਈ ॥
जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥
जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वह स्वयं ही इसका विनाश भी करता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਸਦਾ ਤੂੰ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੬॥੧੭॥
नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥८॥१६॥१७॥
हे नानक ! तुम सदैव ही प्रभु नाम का सिमरन करो। ऐसे तुम सहज ही परमात्मा में विलीन हो जाओगे ॥८॥१६॥१७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਸੇ ਸਚਿ ਲਾਗੇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਏ ॥
से सचि लागे जो तुधु भाए ॥
हे ईश्वर ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वहीं सत्य (नाम) में लगते हैं।

ਸਦਾ ਸਚੁ ਸੇਵਹਿ ਸਹਜ ਸੁਭਾਏ ॥
सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥
वह सहज-स्वभाव सदैव ही परमेश्वर की सेवा भक्ति करते हैं।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਾ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੈ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥
सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥१॥
वह सत्य-नाम द्वारा सत्य-प्रभु की सराहना करते हैं और सत्य-नाम उन्हें सत्य से मिला देता है।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਿਆ ॥

हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥

मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ, जो सत्य परमेश्वर की सराहना करते हैं।

ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸੇ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

जो सत्य परमेश्वर का ध्यान करते हैं, वह सत्य में ही रंग जाते हैं और सत्यवादी बन कर सत्य में लीन हो जाते हैं।॥१॥ रहाउ॥

ਜਹ ਦੇਖਾ ਸਚੁ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥

जह देखा सचु सभनी थाई ॥

मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, सत्य परमात्मा मुझे सर्वत्र दिखाई देता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥

गुर परसादी मंनि वसाई ॥

वह गुरु की कृपा से मनुष्य के मन में आकर निवास करता है।

ਤਨੁ ਸਚਾ ਰਸਨਾ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ਸਚੁ ਸੁਣਿ ਆਖਿ ਵਖਾਨਣਿਆ ॥੨॥

तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥२॥

फिर उस मनुष्य का शरीर शाश्वत हो जाता है और उसकी रसना सत्य में ही मग्न हो जाती है। वह मनुष्य सत्य नाम को सुनकर स्वयं भी मुँह से सत्य का ही बखान करता है ॥२॥

ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥
मनसा मारि सचि समाणी ॥
जब बुद्धि मन की अभिलाषा को नष्ट करके सत्य में समा गई

ਇਨਿ ਮਨਿ ਡੀਠੀ ਸਭ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥
इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥
तो इस मन ने देख लिया कि यह सृष्टि जन्मती एवं मरती रहती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸਦਾ ਮਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥३॥
जो व्यक्ति हमेशा ही सतिगुरु की सेवा करता है, उसका मन अटल हो जाता है और अपने आत्म-स्वरूप में निवास प्राप्त कर लेता है॥३॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਿਦੈ ਦਿਖਾਇਆ ॥
गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥
गुरु के शब्द ने मुझे प्रभु हृदय में ही दिखा दिया है

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ॥
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥
और मेरे अन्तर्मन में से माया के मोह को जला दिया है।

ਸਚੋ ਸਚਾ ਵੇਖਿ ਸਾਲਾਹੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥४॥
सत्य-प्रभु के दर्शन करके अब मैं उस सत्य-परमात्मा की ही महिमा-स्तुति करता रहता हूँ। वह सत्य गुरु के शब्द द्वारा ही मिलता है॥४॥

ਜੋ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਤਿਨ ਸਚੀ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥
जो व्यक्ति सत्य-परमेश्वर के प्रेम में मग्न हो जाते हैं, उनकी प्रभु में सुरति लग जाती है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥
हरि नामु समालहि से वडभागी ॥
वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जो हरि-नाम का सिमरन करते हैं।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਚੁ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥५॥
सत्य-परमेश्वर उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है, जो सत्संग में मिलकर सत्य-परमेश्वर का गुणगान करते हैं ॥५॥

ਲੇਖਾ ਪੜੀਐ ਜੇ ਲੇਖੇ ਵਿਚਿ ਹੋਵੈ ॥
लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥
परमात्मा लेखे से परे है। उसका लेखा-जोखा हम तब ही पढें, यदि वह किसी लेखे-जोखे में आता हो।

ਓਹੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਬਦਿ ਸੁਧਿ ਹੋਵੈ ॥
ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥
वह तो अगम्य एवं अगोचर है तथा उसकी सूझ गुरु के शब्द से ही होती है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਚ ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੀ ਹੋਰੁ ਕੋਇ ਨ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥६॥
मैं प्रतिदिन सत्य वाणी द्वारा उसकी महिमा-स्तुति करता रहता हूँ तथा अन्य कोई भी उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता ॥६॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਥਾਕੇ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਈ ॥
पड़ि पड़ि थाके सांति न आई ॥
कई विद्वान ग्रंथ पढ़-पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਾਲੇ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ॥
त्रिसना जाले सुधि न काई ॥
वे तृष्णाग्नि में ही जलते रहे और प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं मिला।

ਬਿਖੁ ਬਿਹਾਝਹਿ ਬਿਖੁ ਮੋਹ ਪਿਆਸੇ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਵਣਿਆ ॥੭॥
बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥७॥
वह जीवन भर विष रूप माया ही खरीदते रहे और उन्हें विष रूप मोह-माया की प्यास ही लगी रही। अतः वह झूठ बोल-बोलकर विष रूप माया ही सेवन करते रहे ॥७॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣਾ ॥
गुर परसादी एको जाणा ॥
जिस व्यक्ति ने गुरु की कृपा से एक परमेश्वर को जाना है,

ਦੂਜਾ ਮਾਰਿ ਮਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਣਾ ॥
दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥
उसका मन माया के मोह को नष्ट करके सत्य में समा गया है।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਵਰਤੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੭॥੧੮॥
नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥८॥१७॥१८॥
हे नानक ! जिसके मन में एक परमात्मा ही प्रवृत हो रहा है, गुरु की कृपा से वहीं भगवान को प्राप्त करता है ॥८॥१७॥१८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਵਰਨ ਰੂਪ ਵਰਤਹਿ ਸਭ ਤੇਰੇ ॥
वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥
हे प्रभु ! जगत् में विभिन्न वर्ण एवं रूप वाले जितने भी जीव है, वह तेरे ही रूप हैं और तू स्वयं ही उन में प्रवृत्त हो रहा है।

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਫੇਰ ਪਵਹਿ ਘਣੇਰੇ ॥
मरि मरि जमहि फेर पवहि घणेरे ॥
ये समस्त जीव बार-बार जन्मते एवं मरते रहते हैं और इन्हें जन्म-मरण के अधिकतर चक्र पड़े रहते हैं।

ਤੂੰ ਏਕੋ ਨਿਹਚਲੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਗੁਰਮਤੀ ਬੂਝ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੧॥
तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥१॥
लेकिन हे ईश्वर ! एक तू ही अमर, अगम्य एवं अपरंपार है और इस तथ्य का ज्ञान जीवों को तू गुरु की मति द्वारा ही देता है।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो राम नाम को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਵਰਨੁ ਨ ਕੋਈ ਗੁਰਮਤੀ ਆਪਿ ਬੁਝਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

प्रभु का कोई भी रूप-रंग आकार-प्रकार अथवा वर्ण नहीं है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को ज्ञान प्रदान करता है॥१॥ रहाउ ॥

ਸਭ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਜਾਣੈ ਜੇ ਕੋਈ ॥

सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥

समस्त जीवों में एक प्रभु की ही ज्योति विद्यमान है परन्तु इस भेद को कोई विरला ही जानता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ॥

सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥

सतिगुरु की सेवा करने से यह ज्योति मनुष्य के हृदय में प्रगट हो जाती है अर्थात् उसे अपने हृदय में ही प्रकाश के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं।

ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਥਾਈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥

गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥२॥

भगवान अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं एवं मनुष्य की ज्योति प्रभु की परम ज्योति में विलीन हो जाती है।॥२॥

ਤਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਜਲੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥

तिसना अगनि जलै संसारा ॥

सारा संसार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है।

ਲੋਭੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਬਹੁਤੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥

लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥

जीवों में लोभ, अभिमान तथा अहंकार अधिकतर बढ़ रहा है।

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਪਤਿ ਗਵਾਏ ਅਪਣੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੩॥

मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥३॥

जीब बार-बार मरता और जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा गंवाता है। इस तरह वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥३॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ॥

गुर का सबदु को विरला बूझै ॥

कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द को समझता है।

ਆਪੁ ਮਾਰੇ ਤਾ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਸੂਝੈ ॥
आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥
जब मनुष्य अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, तब उसको तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है।

ਫਿਰਿ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਮਰਣਾ ਹੋਵੈ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥४॥
यद्यपि मनुष्य मिथ्या-तत्व की परख उपरांत मृत्यु प्राप्त करे तो इसके पश्चात मृत्यु नहीं होती और वह सहज ही सत्य-परमात्मा में लीन हो जाता है ॥४॥

ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਫਿਰਿ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਏ ॥
माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥
तब वह अपना मन मोह-माया में नहीं लगाता और

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥
गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥
गुरु की वाणी में सदैव लीन हुआ रहता है।

ਸਚੁ ਸਲਾਹੇ ਸਭ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥५॥
वह सत्य परमेश्वर की ही महिमा-स्तुति करता है जो सर्वव्यापक है। उसे यूं प्रतीत होता है कि एक सत्य-परमेश्वर ही सब में शोभायमान हो रहा है॥५॥

ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥
सचु सालाही सदा हजूरे ॥
मैं सत्य-परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ और उसे ही सदैव प्रत्यक्ष समझता हूँ।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥
गुरु के शब्द द्वारा मुझे प्रभु सारे जगत् में ही विद्यमान लगता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚੁ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ਸਚੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥६॥
सत्य-परमेश्वर के गुरु की कृपा से ही दर्शन होते हैं और सत्य-परमेश्वर से ही सुख प्राप्त होता है॥६॥

ਸਚੁ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥
सत्य-परमेश्वर प्रत्येक जीव के मन में समाया हुआ है।

ਸਦਾ ਸਚੁ ਨਿਹਚਲੁ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥
सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥
वह सत्य-परमेश्वर सदैव अमर है और जन्म-मरण में कभी नहीं आता।

ਸਚੇ ਲਾਗੈ ਸੋ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰਮਤੀ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥७॥
जो मन सत्य-परमेश्वर के साथ प्रेम करता है, वह निर्मल हो जाता है और गुरु की मति द्वारा सत्य में ही समाया रहता है ॥७॥

ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
सचु सालाही अवरु न कोई ॥
मैं तो एक परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ तथा किसी अन्य की पूजा नहीं करता।

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
जितु सेविऐ सदा सुखु होई ॥
उसकी सेवा करने से सदैव ही सुख मिलता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਵੀਚਾਰੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੮॥੧੯॥
नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१९॥
हे नानक ! जो व्यक्ति परमेश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे परमेश्वर के बारे ही विचार करते रहते हैं और सत्य-परमेश्वर के सत्य-नाम की ही कमाई करते हैं ॥८॥१८॥१९॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਨਿਰਮਲ ਸਬਦੁ ਨਿਰਮਲ ਹੈ ਬਾਣੀ ॥
निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥
शब्द निर्मल है और वाणी भी निर्मल है।

ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥
निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥
भगवान की निर्मल ज्योति समस्त जीवों में समाई हुई है।

ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਮੈਲੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੧॥
निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥१॥
मैं निर्मल वाणी द्वारा भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता हूँ और निर्मल परमात्मा का भजन करके अपने मन की अहंत्व रूपी मैल को दूर करता हूँ॥ १ ॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥
मैं तन एवं मन से उन पर कुर्बान हूँ, जो सुखदाता परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਸਬਦੋ ਸੁਣਿ ਤਿਸਾ ਮਿਟਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं गुरु के शब्द द्वारा निर्मल भगवान की महिमा-स्तुति करता हूँ और नाम को सुनकर अपनी तृष्णा को मिटा देता हूँ॥१॥ रहाउ॥

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਏ ॥
निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥
अब निर्मल नाम आकर मेरे मन में बस गया है,

ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗਵਾਏ ॥
मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥
जिससे मेरा मन एवं तन निर्मल हो गया है और मेरे अन्तर्मन में से मोह-माया का विनाश हो गया है।

ਨਿਰਮਲ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਿਤ ਸਾਚੇ ਕੇ ਨਿਰਮਲ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵਣਿਆ ॥੨॥
निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥२॥
जो व्यक्ति नित्य ही सत्य-परमेश्वर का गुणानुवाद करता है, उसके मन में निर्मल नाद अर्थात, अनहद शब्द गूंजने लग जाता है।॥२॥

ਨਿਰਮਲ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
निरमल अम्रितु गुर ते पाइआ ॥
जो व्यक्ति गुरु से नाम रूपी निर्मल अमृत प्राप्त कर लेता है,

ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਮੁਆ ਤਿਥੈ ਮੋਹੁ ਨ ਮਾਇਆ ॥
विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥
उसके मन में से अहंकार नष्ट हो जाता है और उसके अन्तर्मन में माया का मोह नहीं रहता।

ਨਿਰਮਲ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੩॥
निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥३॥
उसके मन में निर्मल ज्ञान उत्पन्न हो जाता है और निर्मल प्रभु में उसका पूर्ण ध्यान लगता है। वह निर्मल वाणी को अपने हृदय में बसा लेता है॥३॥

ਜੋ ਨਿਰਮਲੁ ਸੇਵੇ ਸੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ॥
जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥
जो व्यक्ति निर्मल परमात्मा की सेवा करता है, वह भी निर्मल हो जाता है।

ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਧੋਵੈ ॥
हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥
वह गुरु के शब्द द्वारा अपने अन्तर्मन में से अहंकार की मैल को स्वच्छ कर लेता है।

ਨਿਰਮਲ ਵਾਜੈ ਅਨਹਦ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥४॥
उसके मन में अनहद वाणी की निर्मल ध्वनि गूंजने लग जाती है और वह सत्य परमेश्वर के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥४॥

ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਸਭ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ॥
निरमल ते सभ निरमल होवै ॥
निर्मल प्रभु से सभी निर्मल हो जाते हैं।

ਨਿਰਮਲੁ ਮਨੂਆ ਹਰਿ ਸਬਦਿ ਪਰੋਵੈ ॥
निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥
निर्मल भगवान का नाम मनुष्य के मन को स्वयं में पिरो लेता है।

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਬਡਭਾਗੀ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥
निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥५॥
सौभाग्यशाली व्यक्ति ही निर्मल नाम में लगते हैं और निर्मल नाम द्वारा शोभा के पात्र बन जाते हैं॥५॥

ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਜੋ ਸਬਦੇ ਸੋਹੈ ॥
सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥
वहाँ व्यक्ति निर्मल हैं, जो शब्द द्वारा सुन्दर हो जाते हैं।

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੋਹੈ ॥
निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥
निर्मल नाम उनके तन एवं मन को मुग्ध कर देता है।

ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਮਲੁ ਕਦੇ ਨ ਲਾਗੈ ਮੁਖੁ ਊਜਲੁ ਸਚੁ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੬॥
सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥६॥
सत्य-नाम में ध्यान लगाने से मन को कभी भी अहंकार की मैल नहीं लगती। सत्य-नाम उसके मुख को प्रभु के दरबार में उज्ज्वल करा देता है॥ ६ ॥

ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਹੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
मनु मैला है दूजै भाइ ॥
मन माया के मोह में फँसकर मैला हो जाता है।

ਮੈਲਾ ਚਉਕਾ ਮੈਲੈ ਥਾਇ ॥
मैला चउका मैलै थाइ ॥
यदि मन मैला हो तो उसका चौका भी अपवित्र है और वह स्थान भी अपवित्र है।

ਮੈਲਾ ਖਾਇ ਫਿਰਿ ਮੈਲੁ ਵਧਾਏ ਮਨਮੁਖ ਮੈਲੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥७॥
वह अपवित्र भोजन सेवन करके अपने पापों की मैल और भी अधिक बढ़ा लेता है। ऐसा मनमुख पापों की मैल के कारण बड़ा दुखी होता है।॥७॥

ਮੈਲੇ ਨਿਰਮਲ ਸਭਿ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਏ ॥
मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥
सभी जीव भगवान के हुक्म में ही मैले अथवा निर्मल बने हैं।

ਸੇ ਨਿਰਮਲ ਜੋ ਹਰਿ ਸਾਚੇ ਭਾਏ ॥
से निरमल जो हरि साचे भाए ॥
लेकिन वही मनुष्य निर्मल है जो सत्य-परमेश्वर को प्रिय लगता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧੯॥੨੦॥
नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥८॥१९॥२०॥
हे नानक ! जो गुरु के माध्यम से अपने अहंकार की मैल को दूर कर लेता है, नाम उसके मन में ही आकर निवास करता है ॥८॥२०॥२१॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਗੋਵਿੰਦੁ ਊਜਲੁ ਊਜਲ ਹੰਸਾ ॥
गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥
गोविन्द उज्ज्वल (सरोवर) है और गोविन्द का अंश जीवात्मा भी उज्ज्वल है।

ਮਨੁ ਬਾਣੀ ਨਿਰਮਲ ਮੇਰੀ ਮਨਸਾ ॥
मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥
नाम-सिमरन से मेरा मन, वाणी एवं बुद्धि सब निर्मल हो गए हैं।

ਮਨਿ ਊਜਲ ਸਦਾ ਮੁਖ ਸੋਹਹਿ ਅਤਿ ਊਜਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੧॥
मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥१॥
मन उज्ज्वल होने से मेरा मुख हमेशा ही सुन्दर लगता है। मैं अत्यन्त उज्ज्वल नाम का सिमरन करता रहता हूँ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥
मैं उस पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ जो गोबिन्द का यशोगान करता है।

ਗੋਬਿਦੁ ਗੋਬਿਦੁ ਕਹੈ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਗੋਬਿਦ ਗੁਣ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
वह दिन-रात गोविन्द-गोविन्द बोलता रहता है और वाणी द्वारा दूसरों को भी गोविन्द की महिमा सुनाता रहता है।॥१॥ रहाउ॥

ਗੋਬਿਦੁ ਗਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥
जो व्यक्ति सहज-स्वभाव ही गोविन्द का गुणानुवाद करता है,

ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਊਜਲ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਜਾਏ ॥
गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥
गुरु के भय से उसकी अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है और वह उज्ज्वल हो जाता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹਹਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸੁਣਿ ਗੋਬਿਦ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥
सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥२॥
जो व्यक्ति दिन-रात भगवान की भक्ति करता है वह सदैव आनंदपूर्वक रहता है। वह दूसरों से भगवान की महिमा सुनता है और स्वयं भी उसकी महिमा-स्तुति करता है॥ २॥

ਮਨੂਆ ਨਾਚੈ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥
मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए ॥
भक्ति करने से मनुष्य का मन प्रसन्न होकर नृत्य करने लग जाता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੈ ਮਨੁ ਮਿਲਾਏ ॥
गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥
वह गुरु की वाणी द्वारा अपने अशुद्ध मन को शुद्ध मन में ही मिलाकर रखता है।

ਸਚਾ ਤਾਲੁ ਪੂਰੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਏ ਸਬਦੇ ਨਿਰਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੩॥

सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥३॥

माया के मोह को दूर करना ही गुरमुख का ताल बजाना है। उसका नाम-सिमरन ही नृत्य करना है ॥ ३ ॥

ਊਚਾ ਕੂਕੇ ਤਨਹਿ ਪਛਾੜੇ ॥

ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥

जो जोर-जोर से चिल्लाता है और अपने तन को गिराता है,

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਜੋਹਿਆ ਜਮਕਾਲੇ ॥

माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥

माया ने उसे मुग्ध किया हुआ है। यम उसकी तरफ देख रहा है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਇਸੁ ਮਨਹਿ ਨਚਾਏ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥४॥
जो इस मन को मोह-माया में नचाता है तथा मन में कपट है, वह बड़ा दुःखी होता है।॥४॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜਾ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥
जब भगवान स्वयं मनुष्य से गुरु के सान्निध्य द्वारा अपनी भक्ति करवाता है

ਤਨੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥
तो सहज-स्वभाव ही उसका मन एवं तन भगवान के प्रेम में मग्न हो जाता है।

ਬਾਣੀ ਵਜੈ ਸਬਦਿ ਵਜਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਥਾਇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥५॥
जब वाणी का बजाया हुआ अनहद शब्द गुरमुख के हृदय में गूंजने लग जाता है तो ही उसकी भक्ति प्रभु को स्वीकार होती है॥५॥

ਬਹੁ ਤਾਲ ਪੂਰੇ ਵਾਜੇ ਵਜਾਏ ॥
बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥
स्वेच्छाचारी अत्यधिक ताल लगाते एवं बाजे बजाते हैं

ਨਾ ਕੋ ਸੁਣੇ ਨ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
ना को सुणे न मंनि वसाए ॥
परन्तु उन में कोई भी न ही प्रभु के नाम को सुनता है और न ही नाम को अपने मन में बसाते हैं।

ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਪਿੜ ਬੰਧਿ ਨਾਚੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥६॥
वह तो माया के लिए अखाड़ा बांध कर नाचते हैं और माया के मोह में फँसकर दुःखी होते रहते हैं। ६॥

ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੈ ਸੋ ਮੁਕਤਾ ॥
जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥
जिस व्यक्ति के मन में प्रभु की प्रीति उत्पन्न हो जाती है, वही मोह-माया से मुक्त है।

ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਜੁਗਤਾ ॥
इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥
इन्द्रियों को नियंत्रण में कर लेना ही संयम रूप सच्ची युक्ति है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਏ ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥੭॥
गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥७॥
भगवान को यही भक्ति अच्छी लगती है कि उसे हमेशा ही गुरु की वाणी द्वारा स्मरण किया जाए॥७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥
भगवान की भक्ति चारों युगों में गुरु के माध्यम से ही होती रही है।

ਹੋਰਤੁ ਭਗਤਿ ਨ ਪਾਏ ਕੋਈ ॥
होरतु भगति न पाए कोई ॥
किसी अन्य विधि द्वारा भगवान की भक्ति होती ही नहीं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੦॥੨੧॥
नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥८॥२०॥२१॥
हे नानक ! गुरु के चरणों में चित्त लगाने से भगवान का नाम गुरु-भक्ति द्वारा प्राप्त होता है॥ ८ ॥ २० ॥ २१ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਸਚਾ ਸੇਵੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
सचा सेवी सचु सालाही ॥
में तो सत्यस्वरूप परमात्मा की ही सेवा करता हूँ और उस सत्यस्वरूप परमात्मा की ही महिमा स्तुति करता रहता हूँ।

ਸਚੈ ਨਾਇ ਦੁਖੁ ਕਬ ਹੀ ਨਾਹੀ ॥
सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥
सत्य परमेश्वर का नाम-सिमरन करने से दुःख कभी भी निकट नहीं आता।

ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇਵਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਨਿ ਗੁਰਮਤਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥

सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥१॥

जो व्यक्ति सुखदाता भगवान की सेवा करते हैं और गुरु की मति द्वारा उसे अपने हृदय में बसाकर रखते हैं, ऐसे व्यक्ति सदैव सुखी रहते हैं।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਵਣਿਆ ॥

हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥

मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ, जो सहज सुखदायक समाधि लगाते हैं।

ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਸਦਾ ਸੋਹਹਿ ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

जो व्यक्ति भगवान की सेवा करते हैं, वह सदैव ही सुन्दर लगते हैं। वह भगवान में वृति लगाकर शोभा के पात्र बन जाते हैं और भगवान के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਭਗਤੁ ਕਹਾਏ ॥

सभु को तेरा भगतु कहाए ॥

हे प्रभु-परमेश्वर ! प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को तेरा भक्त कहलवाता है

ਸੇਈ ਭਗਤ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥

सेई भगत तेरै मनि भाए ॥

परन्तु तेरे भक्त वहीं हैं जो तेरे मन को प्रिय लगते हैं।

ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਤੁਧੈ ਸਾਲਾਹਨਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੨॥

सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥२॥

वह सच्ची वाणी द्वारा तेरी सराहना करते रहते हैं और तेरे प्रेम में मग्न हुए तेरी भक्ति करते रहते हैं।॥२॥

ਸਭੁ ਕੋ ਸਚੇ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰਾ ॥

सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥

हे सच्चे परमेश्वर ! प्रत्येक जीव तेरा ही उत्पन्न किया हुआ है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਚੂਕੈ ਫੇਰਾ ॥

गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥

यदि मनुष्य को गुरु मिल जाए तो उसका जीवन एवं मृत्यु का चक्र मिट जाता है।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਨਾਇ ਰਚਾਵਹਿ ਤੂੰ ਆਪੇ ਨਾਉ ਜਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥

जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥३॥

हे भगवान ! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो तू अपने नाम में जीव की रुचि उत्पन्न कर देता है और तू स्वयं ही उससे अपना नाम जपवाता है॥३॥

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥

गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥

हे पूज्य-परमेश्वर ! गुरु के उपदेश द्वारा तू मनुष्य के मन में अपना नाम बसा देता है

ਹਰਖੁ ਸੋਗੁ ਸਭੁ ਮੋਹੁ ਗਵਾਇਆ ॥

हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥

और उसका हर्ष, शोक एवं मोह सब नष्ट कर देता है।

ਇਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਦ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੪॥

इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥४॥

जिसकी सुरति सदैव ही एक परमेश्वर में लीन रहती है, वह भगवान के नाम को अपने मन में बसा लेता है॥ ४ ॥

ਭਗਤ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਤੇਰੈ ਚਾਏ ॥

भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥

हे प्रभु परमेश्वर ! तेरे भक्त हमेशा ही बड़े चाव से तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं

ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਏ ॥

नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥

और नवनिधियाँ प्रदान करने वाला तेरा नाम, उनके मन में आकर बस जाता है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥

पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥५॥

जो व्यक्ति सौभाग्य से सतिगुरु को पा लेता है, गुरु उसे शब्द द्वारा भगवान से मिला देता है॥५॥

ਤੂੰ ਦਇਆਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥

तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥

हे प्रभु ! तू बड़ा दयालु एवं सदैव ही जीवों को सुख देता रहता है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੇਲਿਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥
तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥
तू स्वयं ही जीवों को अपने साथ मिला लेता है और तुझे गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਦੇਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥६॥
तू स्वयं ही जीवों को नाम रूपी महानता प्रदान करता है। जो व्यक्ति तेरे नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही सुखी रहते हैं।॥६॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਚੇ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥
हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! मैं हमेशा ही तेरी महिमा-स्तुति करता रहता हूँ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥
तुझे गुरमुख ने ही जाना है और कोई दूसरा तुझे जान ही नहीं सकता।

ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਮਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ਮਨਿ ਮੰਨਿਐ ਮਨਹਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥७॥
यदि मनुष्य का मन विश्वस्त हो जाए और वह एक परमेश्वर में ही समाया रहे तो सतिगुरु उसे उसके मन में ही प्रभु से मिला देता है॥ ७ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਸਾਲਾਹੇ ॥
गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥
तेरी महिमा-स्तुति वही मनुष्य करता है जो गुरमुख बन जाता है।

ਸਾਚੇ ਠਾਕੁਰ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥
साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥
हे मेरे सच्चे ठाकुर ! तू बेपरवाह है,

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਮੇਲਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੧॥੨੨॥
नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥८॥२१॥२२॥
हे नानक ! जिनके मन में नाम का निवास हो जाता है, गुरु अपनी वाणी द्वारा उसे भगवान से मिला देते हैं ॥८॥२१॥२२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰੇ ॥
तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥
हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! तेरे भक्त तेरे सत्य-दरबार में बैठे बड़ी शोभा पा रहे हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰੇ ॥
गुर कै सबदि नामि सवारे ॥
तूने उन्हें गुरु के शब्द द्वारा नाम में लगाकर ही संवारा है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥
वह दिन-रात सदैव आनंद में रहते हैं और गुणों के भण्डार प्रभु का गुणानुवाद कर-करके उसमें ही लीन रहते हैं।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ जो भगवान के नाम को सुनकर अपने हृदय में बसाते हैं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਚਾ ਊਚੋ ਊਚਾ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तू सदैव सत्य एवं सर्वोपरि है। भगवान जीव के अहंकार को नष्ट करके उसे स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥
हरि जीउ साचा साची नाई ॥
पूज्य परमेश्वर सत्यस्वरूप है और उसकी महिमा भी सत्य है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕਿਸੈ ਮਿਲਾਈ ॥
गुर परसादी किसै मिलाई ॥
गुरु की कृपा से वह परमेश्वर किसी विरले को ही अपने साथ मिलाता है।

ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਿਲਹਿ ਸੇ ਵਿਛੁੜਹਿ ਨਾਹੀ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥२॥
जो जीव गुरु की वाणी द्वारा प्रभु से मिल जाते हैं, फिर वह कभी भी प्रभु से जुदा नहीं होते और सहज ही सत्य में समाए रहते हैं।॥२॥

ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਛੁ ਨ ਹੋਇ ॥
तुझ ते बाहरि कछु न होइ ॥
हे परमेश्वर ! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता।

ਤੂੰ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖਹਿ ਜਾਣਹਿ ਸੋਇ ॥
तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
तू ही जगत् की रचना करके उसकी देखरेख करता है

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੩॥

आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥३॥

और तू ही सबकुछ जानता है। सृष्टिकर्ता स्वयं ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को अपने साथ मिला लेता है॥३॥

ਕਾਮਣਿ ਗੁਣਵੰਤੀ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥

कामणि गुणवंती हरि पाए ॥

गुणवान जीव-स्त्री प्रियतम-प्रभु को पा लेती है।

ਭੈ ਭਾਇ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥

भै भाइ सीगारु बणाए ॥

वह प्रभु के भय एवं प्रेम को ही अपना श्रृंगार बनाती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਚ ਉਪਦੇਸਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥

सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥४॥

जो जीव-स्त्री सतिगुरु की सेवा करती है, वह सदा सुहागिन है और वह सत्य-उपदेश में ही समाई रहती है॥ ४ ॥

ਸਬਦੁ ਵਿਸਾਰਨਿ ਤਿਨਾ ਠਉਰੁ ਨ ਠਾਉ ॥

सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥

जो व्यक्ति भगवान के नाम को भुला देते हैं, उन्हें सहारा लेने के लिए कहीं भी आश्रय एवं स्थान नहीं मिलता।

ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਉ ॥

भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥

वह भ्रम में फँसकर भटकते रहते हैं। वह जगत् में से खाली हाथ यूं ही चले जाते हैं जैसे किसी सूने घर में से कौआ खाली चला जाता है

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਤਿਨੀ ਦੋਵੈ ਗਵਾਏ ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥

हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥५॥

ऐसे व्यक्ति अपना लोक-परलोक दोनों ही गंवा देते हैं और जीवन भर दुखी ही होते रहते हैं।॥५॥

ਲਿਖਦਿਆ ਲਿਖਦਿਆ ਕਾਗਦ ਮਸੁ ਖੋਈ ॥

लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥

मनमुख व्यक्ति माया के लेख लिखते-लिखते अनेक कागज एवं स्याही खत्म कर लेते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਨ ਕੋਈ ॥
दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥
कोई भी व्यक्ति माया के मोह में फँसकर सुख नहीं पा सकता।

ਕੂੜੁ ਲਿਖਹਿ ਤੈ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹਿ ਜਲਿ ਜਾਵਹਿ ਕੂੜਿ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥६॥
मनमुख मिथ्या माया के लेखे लिखते रहते हैं और मिथ्या माया ही कमाते रहते हैं। मिथ्या माया के मोह में चित्त लगाने वाले तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं।॥६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਲਿਖਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥
गुरमुख सत्य-प्रभु का नाम एवं गुणों बारे लिखते रहते हैं।

ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥
वह सत्यवादी बन जाते हैं और वह मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेते हैं।

ਸਚੁ ਕਾਗਦੁ ਕਲਮ ਮਸਵਾਣੀ ਸਚੁ ਲਿਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥७॥
सत्य नाम ही उनका कागज, कलम एवं स्याही हैं। वे प्रभु की महिमा को लिख-लिख कर सत्य में ही समा जाते हैं॥ ७ ॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਿ ਬੈਠਾ ਵੇਖੈ ॥
मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥
मेरा प्रभु समस्त जीवों के हृदय में बैठकर उनके कर्म देख रहा है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲੈ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥
गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥
जो पुरुष गुरु की दया से परमात्मा को मिलता है, जगत् में उसका आगमन ही सफल है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੨॥੨੩॥
नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२२॥२३॥
हे नानक ! प्रभु के नाम से उसके दरबार में महानता प्राप्त होती है और पूर्ण गुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है ॥८॥२२॥२३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਆਤਮ ਰਾਮ ਪਰਗਾਸੁ ਗੁਰ ਤੇ ਹੋਵੈ ॥
आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥
मनुष्य के हृदय में आत्म-राम का प्रकाश गुरु की कृपा से होता है।

ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਲਾਗੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਖੋਵੈ ॥
हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥
जब मनुष्य अपने मन को लगी अहंत्व की मैल को गुरु की वाणी द्वारा स्वच्छ कर लेता है तो

ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਾਤਾ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਹਰਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥
मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥१॥
उसका निर्मल मन रात-दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भक्ति करके वह भगवान को पा लेता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਆਪਿ ਭਗਤਿ ਕਰਨਿ ਅਵਰਾ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥
में उन पर तन एवं मन से न्योछावर हूँ जो स्वयं भी भगवान की भक्ति करते हैं और दूसरों से भी भक्ति करवाते हैं।

ਤਿਨਾ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਸਦ ਨਮਸਕਾਰੁ ਕੀਜੈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
उन भक्तजनों को सदैव ही प्रणाम करो, जो रात-दिन ईश्वर का यशोगान करते हैं।॥१॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਾਰਣੁ ਕਰਾਏ ॥
आपे करता कारणु कराए ॥
सृजनहार प्रभु स्वयं ही कारण बनाता है।

ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਕਾਰੈ ਲਾਏ ॥
जितु भावै तितु कारै लाए ॥
जैसे उसको अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को कामकाज में लगाता है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥२॥
पूर्ण सौभाग्य से ही गुरदेव की सेवा की जाती है और गुरु की सेवा से ही सुख प्राप्त होता है॥२॥

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ॥
मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥
यदि मनुष्य अपने आपको मोह-माया से निर्लिप्त करके प्रभु भक्ति में जीवे तो उसे सबकुछ प्राप्त होता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
गुर परसादी हरि मंनि वसाए ॥
गुरु की कृपा से वह ईश्वर को अपने हृदय में बसाता है।

ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥३॥
जो प्राणी ईश्वर को अपने हृदय में बसा लेता है वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है और सहज ही प्रभु में समा जाता है॥३॥

ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਏ ॥
बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥
जो व्यक्ति अधिकतर धर्म-कर्म करता है, वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

ਦੇਸੰਤਰੁ ਭਵੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥
देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥
जो व्यक्ति देश-देशांतर भटकता रहता है, वह भी मोह-माया में फंसकर नष्ट हो जाता है।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਕਪਟੀ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥४॥
कपटी प्राणी व्यर्थ ही अपना जीवन गंवा देता है। हरि-नाम के बिना वह बहुत कष्ट सहन करता है॥४॥

ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥
जो व्यक्ति विषय-विकारों में भटकते हुए अपने मन को नियंत्रित कर लेता है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਏ ॥
गुर परसादी परम पदु पाए ॥
वह गुरु की कृपा से (परमपद) मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥५॥
सतिगुरु स्वयं ही जीव का भगवान से मिलाप करवाते हैं। फिर वह जीव अपने प्रियतम प्रभु को मिलकर सुख की अनुभूति करता है॥५॥

ਇਕਿ ਕੂੜਿ ਲਾਗੇ ਕੂੜੇ ਫਲ ਪਾਏ ॥
इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥
कई व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में फँसे हुए हैं। वे मिथ्या माया रूपी फल ही प्राप्त करते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥
दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥
द्वैत-भाव में फँसकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं।

ਆਪਿ ਡੁਬੇ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਡੋਬੇ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਵਣਿਆ ॥੬॥
आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥६॥
वह स्वयं तो भवसागर में डूब जाते हैं और अपने समूह वंशों को भी डुबा लेते हैं। झुठ बोलकर वह माया रूपी विष सेवन करते हैं।॥६॥

ਇਸੁ ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਕੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਖੈ ॥
इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥
गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही अपने शरीर में अपने मन को देखता है।

ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਜਾ ਹਉਮੈ ਸੋਖੈ ॥
भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥
जब वह अपने अहंकार को मिटा देता है तो ही उसके अन्तर्मन में भगवान की प्रेम-भक्ति उत्पन्न होती है। प्रेम-भक्ति द्वारा उसका अहंकार सूख जाता है।

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤਿਨ ਭੀ ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਨ ਦਿਖਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥७॥
सिद्ध,साधक और मौनधारी सुरति लगाकर थक गए हैं। उन्होंने भी अपने तन में मन को नहीं देखा ॥७॥

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥
आपि कराए करता सोई ॥
वह सृजनहार प्रभु स्वयं ही जीवों से कार्य करवाता है।

ਹੋਰੁ ਕਿ ਕਰੇ ਕੀਤੈ ਕਿਆ ਹੋਈ ॥
होरु कि करे कीतै किआ होई ॥
अन्य कोई क्या कर सकता है? प्रभु के उत्पन्न किए जीवों द्वारा करने से क्या हो सकता है?

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਸੋ ਲੇਵੈ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੩॥੨੪॥
नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥८॥२३॥२४॥
हे नानक ! जिसको प्रभु अपने नाम की अनुकंपा करता है, वही उसको पाता है और वह मनुष्य नाम को सदैव ही अपने हृदय में बसाकर रखता है ॥८॥२३॥२४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਇਸੁ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰਾ ॥
इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥
इस शरीर रूपी गुफा में ही नाम का अमूल्य भण्डार मौजूद हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥
इस गुफा में ही अलक्ष्य एवं अपरंपार प्रभु निवास करता है।

ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਹੈ ਆਪੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਆਪੁ ਵੰਞਾਵਣਿਆ ॥੧॥
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥१॥
वह स्वयं ही अप्रत्यक्ष एवं स्वयं ही प्रत्यक्ष है और गुरु के शब्द से आत्माभिमान नष्ट हो जाता है।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी अम्रित नामु मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्योछावर हूँ जो अमृत नाम को अपने हृदय में बसाते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰਮਤੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अम्रितु पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
यह अमृत नाम महारस है और इसका स्वाद बड़ा मधुर है। यह नाम रूपी अमृत गुरु के उपदेश द्वारा पान किया जाता है॥१॥ रहाउ ॥

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਖੁਲਾਇਆ ॥
हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥
जो व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके वज्र कपाट खोल लेता है,

ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥
वह गुरु की कृपा से अमूल्य नाम को प्राप्त कर लेता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਏ ਕੋਈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੨॥
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥२॥
गुरु के शब्द बिना किसी को भी नाम प्राप्त नहीं होता। नाम को गुरु की दया से ही हृदय में बसाया जा सकता है॥ २॥

ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਚੁ ਨੇਤ੍ਰੀ ਪਾਇਆ ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
जो व्यक्ति गुरु का ज्ञान रूपी सच्चा सुरमा अपने नेत्रों में डालता है,

ਅੰਤਰਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥
उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है।

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥
जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥
उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है तथा उसका मन नाम-सिमरन से संतुष्ट हो जाता है और भगवान के दरबार में वह बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥३॥

ਸਰੀਰਹੁ ਭਾਲਣਿ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਜਾਏ ॥
सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥
यदि कोई व्यक्ति अपनी देहि से बाहर किसी अन्य स्थान पर प्रभु की तलाश में जाए

ਨਾਮੁ ਨ ਲਹੈ ਬਹੁਤੁ ਵੇਗਾਰਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥
नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥
तो वह नाम को नहीं पाता, अपितु बेगारी की तरह अधिक कष्ट सहन करता है।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸੂਝੈ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਘਿਰਿ ਆਇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਥੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥

मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥४॥

ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति इधर-उधर भटकने के पश्चात पुनः अपने घर लौट आता है परन्तु उसे नाम का ज्ञान नहीं होता। लेकिन सतिगुरु द्वारा वह असली पदार्थ को भीतर से ही प्राप्त कर लेता है॥४॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਚਾ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥

गुर परसादी सचा हरि पाए ॥

गुरु की कृपा से वह सत्यस्वरूप परमात्मा को पा लेता है।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਵੇਖੈ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਜਾਏ ॥

मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥

उसकी अहंकार की मलिनता दूर हो जाती है और अपने मन एवं तन में वह प्रभु के ही दर्शन करता है।

ਬੈਸਿ ਸੁਥਾਨਿ ਸਦ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੫॥

बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥५॥

श्रेष्ठ स्थान सत्संग में विराजमान होकर वह सदैव प्रभु का यशोगान करता है और सत्य-परमेश्वर में लीन हो जाता है।॥५॥

ਨਉ ਦਰ ਠਾਕੇ ਧਾਵਤੁ ਰਹਾਏ ॥

नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥

शरीर रूपी घर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्दी यह नौ द्वार लगे हुए हैं। इनके द्वारा ही मन बाहर भटकता रहता है।

ਦਸਵੈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ॥

दसवै निज घरि वासा पाए ॥

जो व्यक्ति इन द्वारों को बंद करके अपने भटकते मन को नियंत्रित कर लेता है तो उसका मन अपने आत्म-स्वरूप में निवास कर लेता है।

ਓਥੈ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਵਜਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮਤੀ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੬॥

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥६॥

वहाँ पर दिन-रात अनहद शब्द गूंजता रहता है। अनहद शब्द को गुरु की मति द्वारा ही सुना जा सकता है॥६॥

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਅੰਤਰਿ ਆਨੇਰਾ ॥
बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥
शब्द के बिना अन्तर्मन में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है।

ਨ ਵਸਤੁ ਲਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਫੇਰਾ ॥
न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥
मनुष्य को नाम रूपी वस्तु प्राप्त नहीं होती और उसका आवागमन का चक्र मिटता नहीं।

ਸਤਿਗੁਰ ਹਥਿ ਕੁੰਜੀ ਹੋਰਤੁ ਦਰੁ ਖੁਲੈ ਨਾਹੀ ਗੁਰੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੭॥
सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥७॥
सतिगुरु के पास ब्रह्म-विद्या रूपी कुंजी है। किसी अन्य विधि से यह द्वार खुलता नहीं और गुरु पूर्ण भाग्य से ही मिलता है।॥७॥

ਗੁਪਤੁ ਪਰਗਟੁ ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥
हे ईश्वर ! तू गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥
गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥
गुरु की कृपा से प्रभु को मिलने से ही मनुष्य को इस भेद का ज्ञान होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਸਦਾ ਤੂੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੪॥੨੫॥
नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥८॥२४॥२५॥
हे नानक ! तू सदैव भगवान के नाम की महिमा-स्तुति किया कर, चूंकि गुरु के माध्यम से ही मनुष्य के मन में नाम का निवास होता है ॥८॥२४॥२५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਏ ਆਪੇ ॥
गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥
जो व्यक्ति गुरु की शरण में आता है, उसे भगवान मिल जाता है और भगवान स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है।

ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹੈ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੇ ॥
कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥
ऐसे व्यक्ति को मृत्यु देख भी नहीं सकती और कोई दुख-क्लेश उसे पीड़ित नहीं कर सकता।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਬੰਧਨ ਸਭ ਤੋੜੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੧॥
हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥१॥
ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके माया के तमाम बन्धनों को तोड़ देता है। गुरु की शरण में रहने वाला व्यक्ति नाम द्वारा सुशोभित हो जाता है ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से न्योछावर हूँ जो हरि-प्रभु के नाम से सुन्दर बन जाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਚੈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुख भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है और मस्त होकर नाचता झूमता है और वह भगवान से अपना चित्त लगाकर रखता है॥१॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਵੈ ਮਰੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥
गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥
गुरमुख का जीना एवं मरना प्रमाणिक है।

ਆਰਜਾ ਨ ਛੀਜੈ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥
आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥
उसका जीवन व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि वह परमात्मा को पहचानता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਰੈ ਨ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥२॥
गुरमुख मरता नहीं और न ही उसको मृत्यु निगलती है। गुरमुख सत्य में लीन रहता है। २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ॥
गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए ॥
ऐसे गुरमुख ईश्वर के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥
गुरमुख अपने मन में से अहंकार को मिटा देता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਸਗਲੇ ਤਾਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਣਿਆ ॥੩॥
आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥३॥
गुरमुख स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार कर लेता है और अपना जीवन संवार लेता है॥३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਲਗੈ ਸਰੀਰਿ ॥
गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥
गुरमुख के शरीर को कभी कोई दुःख नहीं लगता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਚੂਕੈ ਪੀਰ ॥
गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥
गुरमुख के अहंकार की वेदना-पीड़ा दूर हो जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਫਿਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥४॥
गुरमुख का मन अहंत्व को मैल से निर्मल हो जाता है और उसे फिर अहंत्व की मैल नहीं लगती। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥४॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥
गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥
गुरमुख ईश्वर के नाम की महानता प्राप्त करता है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥
गुरमुख भगवान का गुणानुवाद करता है और दुनिया में बड़ी शोभा प्राप्त करता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥५॥
वह सदैव ही दिन-रात आनंदपूर्वक रहता है। गुरमुख भगवान के नाम की ही साधना करता है॥५॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ ਸਬਦੇ ਰਾਤਾ ॥
गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥
गुरमुख रात-दिन शब्द में मग्न रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੈ ਜਾਤਾ ॥
गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥
गुरमुख चारों युगों में जाना जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲੁ ਸਬਦੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੬॥
गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥६॥
गुरमुख सदा निर्मल प्रभु का यशोगान करता है और शब्द द्वारा भगवान की भक्ति करता रहता है।॥६॥

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰਾ ॥
बाझु गुरू है अंध अंधारा ॥
गुरु के बिना घनघोर अंधकार है।

ਜਮਕਾਲਿ ਗਰਠੇ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ॥
जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥
यमदूत द्वारा जकड़े हुए मनुष्य जोर-जोर से चिल्लाते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਰੋਗੀ ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀੜੇ ਬਿਸਟਾ ਮਹਿ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥७॥
वह रात-दिन रोगी बने रहते हैं, जैसे विष्ठा के कीड़े विष्ठा में दुखी होते रहते हैं।॥७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥
गुरमुखि आपे करे कराए ॥
गुरमुख स्वयं ही भगवान की भक्ति करते एवं अन्यों से भी करवाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਵੁਠਾ ਆਪਿ ਆਏ ॥
गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥
गुरमुख के हृदय में परमेश्वर स्वयं आकर निवास कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੫॥੨੬॥
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२५॥२६॥
हे नानक ! प्रभु के नाम से महानता प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है॥८॥२५॥२६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸਰੀਰਾ ॥
एका जोति जोति है सरीरा ॥
समस्त शरीरों में जो ज्योति विद्यमान है, वह ज्योति एक ही है अर्थात् एक ईश्वर की ज्योति सब में विद्यमान है।

ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਏ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥
पूर्ण सतिगुरु शब्द द्वारा मनुष्य को इस ज्योति के दर्शन करवा देते हैं।

ਆਪੇ ਫਰਕੁ ਕੀਤੋਨੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਬਣਤ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੧॥
आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥१॥
विभिन्न शरीरों में ईश्वर ने स्वयं ही विविधता उत्पन्न की है और स्वयं ही जीवों के शरीर की रचना की है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ जो सत्यस्वरूप परमेश्वर का गुणगान करते हैं।

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਕੋ ਸਹਜੁ ਨ ਪਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के अलावा किसी को भी सहज प्राप्त नहीं होता। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥१॥ रहाउ॥

ਤੂੰ ਆਪੇ ਸੋਹਹਿ ਆਪੇ ਜਗੁ ਮੋਹਹਿ ॥
तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं ही सर्वत्र सुन्दर रूप में शोभा दे रहा है और स्वयं ही जगत् को मोहित कर रहा है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਨਦਰੀ ਜਗਤੁ ਪਰੋਵਹਿ ॥
तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥
तूने स्वयं ही अपनी कृपा-दृष्टि से समूचे जगत् को मोह-माया में पिरोया हुआ है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਵਹਿ ਕਰਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦੇਖਾਵਣਿਆ ॥੨॥
तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥२॥
हे मेरे हरि-परमेश्वर ! तुम स्वयं ही दुख और सुख प्रदान करते हो और गुरमुखों को हरि-दर्शन करवाते हो ॥२ ॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥
आपे करता करे कराए ॥
जगत् का रचयिता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है।

ਆਪੇ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥
वह स्वयं गुरु का शब्द मनुष्य के हृदय में बसाता है।

ਸਬਦੇ ਉਪਜੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सबदे उपजै अम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥३॥
शब्द से अमृत-वाणी उत्पन्न होती है। गुरमुख इस अमृत-वाणी को बोलकर दूसरों को सुनाते हैं।॥३॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ॥
आपे करता आपे भुगता ॥
हरि-प्रभु स्वयं ही कर्ता और स्वयं ही जगत् के पदार्थों को भोगने वाला है।

ਬੰਧਨ ਤੋੜੇ ਸਦਾ ਹੈ ਮੁਕਤਾ ॥
बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥
भगवान जिस व्यक्ति के बन्धनों को तोड़ देता है, वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।

ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਆਪੇ ਹੈ ਸਚਾ ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਲਖਾਵਣਿਆ ॥੪॥
सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥४॥
सत्य स्वरूप परमेश्वर स्वयं भी माया के बन्धनों से हमेशा के लिए मुक्त है। वह अलक्ष्य परमेश्वर स्वयं ही अपने स्वरूप के दर्शन करवाता है॥४॥

ਆਪੇ ਮਾਇਆ ਆਪੇ ਛਾਇਆ ॥
आपे माइआ आपे छाइआ ॥
परमेश्वर स्वयं ही माया है और स्वयं ही उस माया में प्रतिबिम्बित है।

ਆਪੇ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥
आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥
उस प्रभु ने स्वयं ही माया के मोह को पैदा किया है और स्वयं ही जगत् की रचना की है।

ਆਪੇ ਗੁਣਦਾਤਾ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਆਪੇ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥
आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥५॥
परमेश्वर स्वयं ही गुणदाता और वह स्वयं ही अपने गुण गा रहा है। वह स्वयं ही अपने गुण बोलकर सुना रहा है॥५॥

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ॥
आपे करे कराए आपे ॥
प्रभु स्वयं प्राणियों का कर्ता है और उनसे कर्म करवाता है।

ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ਆਪੇ ॥

आपे थापि उथापे आपे ॥

परमात्मा स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही सृष्टि का विनाश भी करता है।

ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਾਰੈ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥

तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥६॥

हे प्रभु ! तेरे हुक्म के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। तुमने स्वयं ही प्राणियों को विभिन्न कर्मों में लगाया हुआ है॥६॥

ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪਿ ਜੀਵਾਏ ॥

आपे मारे आपि जीवाए ॥

भगवान स्वयं ही जीवों को मारता है और स्वयं ही उन्हें जीवित भी रखता है।

ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥

आपे मेले मेलि मिलाए ॥

वह स्वयं ही जीवों को गुरु से मिलाता है और उन्हें गुरु के सम्पर्क में रखकर अपने साथ मिला लेता है।

ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੭॥

सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥

गुरु की सेवा करने से मनुष्य को सदैव ही सुख प्राप्त होता है और गुरु की प्रेरणा से जीव सहज ही सत्य में समा जाता है ॥७॥

ਆਪੇ ਊਚਾ ਊਚੋ ਹੋਈ ॥
आपे ऊचा ऊचो होई ॥
हे भगवान ! तू स्वयं ही बड़ों से भी बड़ा अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है।

ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਵਿਖਾਲੇ ਸੁ ਵੇਖੈ ਕੋਈ ॥
जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥
जिस व्यक्ति को तू स्वयं अपना रूप दिखाता है, वहीं तेरे दर्शन कर सकता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਵੇਖਿ ਵਿਖਾਲਣਿਆ ॥੮॥੨੬॥੨੭॥
नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥८॥२६॥२७॥
हे नानक ! जिसके हृदय में नाम का निवास हो जाता है, फिर प्रभु स्वयं ही उसके हृदय में प्रगट होकर अपने स्वरूप के दर्शन करवा देता है ॥८॥२६॥२७॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਰਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਥਾਈ ॥
मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥
मेरा प्रभु समस्त स्थानों में रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਘਰ ਹੀ ਮਹਿ ਪਾਈ ॥
गुर परसादी घर ही महि पाई ॥
गुरु की कृपा से मैंने उसको अपने हृदय घर में ही पा लिया है।

ਸਦਾ ਸਰੇਵੀ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥१॥
मैं हमेशा ईश्वर की सेवा करता हूँ और एकाग्रचित होकर उसका ही ध्यान करता हूँ। गुरु के द्वारा मैं सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो गया हूँ॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਜਗਜੀਵਨੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥
मैं तन-मन से उन पर कुर्बान हूँ जो अपने मन में जगजीवन को बसाते हैं।

ਹਰਿ ਜਗਜੀਵਨੁ ਨਿਰਭਉ ਦਾਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान जगत् का जीवन, निर्भीक एवं दाता है। गुरु की मति द्वारा जीव सहज ही उसमें समा जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਘਰ ਮਹਿ ਧਰਤੀ ਧਉਲੁ ਪਾਤਾਲਾ ॥
घर महि धरती धउलु पाताला ॥
धरती, धवल एवं पाताल-यह सबकुछ मानव के शरीर रूपी घर में ही हैं।

ਘਰ ਹੀ ਮਹਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਦਾ ਹੈ ਬਾਲਾ ॥
घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥
मेरा नित-नवीन प्रियतम परमेश्वर भी शरीर रूपी घर में ही रहता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥२॥
सुखदाता प्रभु सदैव ही आनंदपूर्वक रहता है और गुरु की मति द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें समा जाता है ॥२॥

ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ॥
काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥
जब तक काया के भीतर अहंकार एवं ममत्व है,

ਜੰਮਣ ਮਰਣੁ ਨ ਚੂਕੈ ਫੇਰਾ ॥
जमण मरणु न चूकै फेरा ॥
तब तक जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਸਚੋ ਸਚੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੩॥
गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥३॥
जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वह अपने अहंकार को निवृत्त कर लेता है और परम सत्य प्रभु का ध्यान करता है॥३॥

ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਦੁਇ ਭਾਈ ॥
काइआ अंदरि पापु पुंनु दुइ भाई ॥
पाप एवं पुण्य दोनों भाई शरीर में ही रहते हैं।

ਦੁਹੀ ਮਿਲਿ ਕੈ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਈ ॥
दुही मिलि कै स्रिसटि उपाई ॥
इन दोनों ने मिलकर सृष्टि को पैदा किया है

ਦੋਵੈ ਮਾਰਿ ਜਾਇ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਵੈ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥
दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥४॥
जो व्यक्ति इन दोनों का वध करके आत्म-स्वरूप में निवास कर लेता है, वह गुरु की मति द्वारा सहज ही समाया रहता है।॥४॥

ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਅਨੇਰਾ ॥
घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥
मोह-माया में फँसने के कारण मनुष्य के हृदय-घर में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है।

ਚਾਨਣੁ ਹੋਵੈ ਛੋਡੈ ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ॥
चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥
यदि वह अहंत्व एवं ममत्व की भावना को त्याग दे तो उसके हृदय में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है।

ਪਰਗਟੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸੁਖਦਾਤਾ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੫॥
परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥५॥
जब सुखदाता अनहद शब्द मन में प्रगट हो जाता है तो मनुष्य प्रतिदिन नाम का ध्यान करता रहता है।॥५॥

ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਪਾਸਾਰਾ ॥
अंतरि जोति परगटु पासारा ॥
जिस परमात्मा ने जगत् को प्रगट किया है, समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥
मनुष्य का अज्ञानता का अँधेरा गुरु की शिक्षा से मिट जाता है और

ਕਮਲੁ ਬਿਗਾਸਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥६॥
उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है। फिर मनुष्य की ज्योति परम-ज्योति प्रभु में विलीन हो जाती है॥६॥

ਅੰਦਰਿ ਮਹਲ ਰਤਨੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥
भगवान के आत्म-स्वरूप रूपी महल में नाम रूपी रत्न के भण्डार भरे हुए हैं

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥
गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥
परन्तु मनुष्य अनंत प्रभु के नाम को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੇ ਸਦਾ ਵਾਪਾਰੀ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸਦ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥७॥
जीव रूपी व्यापारी हमेशा ही गुरु के माध्यम से नाम का व्यापार करता है और हमेशा ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करता है ॥७॥

ਆਪੇ ਵਥੁ ਰਾਖੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥
आपे वथु राखै आपे देइ ॥
भगवान स्वयं ही अपने आत्म-स्वरूप रूपी महल में नाम-वस्तु को रखता है और स्वयं यह नाम-वस्तु गुरु के माध्यम से जीवों को देता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜਹਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥
गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥
कोई विरला पुरुष गुरु के माध्यम से ही यह व्यापार करता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੭॥੨੮॥
नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥
हे नानक ! परमेश्वर जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वहीं नाम को प्राप्त करता है। परमेश्वर अपनी कृपा करके नाम को उसके हृदय में बसा देता है॥८ ॥२७॥२८॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥
हरि आपे मेले सेव कराए ॥
भगवान स्वयं ही जीव को अपने साथ मिलाता है और उससे अपनी सेवा करवाता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਜਾਏ ॥
गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥
फिर गुरु के शब्द द्वारा माया का प्रेम जीव के मन से दूर हो जाता है।

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਗੁਣਦਾਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਮਹਿ ਆਪਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੧॥
हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥१॥
भगवान निर्मल है और सदैव ही गुणों का दाता है। भगवान स्वयं ही जीव को अपने गुणों में लीन करता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਸਚੁ ਸਚਾ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥
मैं कुर्बान हूँ और मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो परम सत्य परमात्मा को अपने अन्तर्मन में बसाते हैं।

ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਹੈ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
सत्य नाम हमेशा ही निर्मल है। इस निर्मल नाम को जीव गुरु के शब्द द्वारा अपने मन में बसा लेता है॥१॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਕਰਮਿ ਬਿਧਾਤਾ ॥
आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥
भगवान स्वयं ही जीवों को नाम की देन देने वाला गुरु है और स्वयं ही जीवों के कर्मों का भाग्यविधाता है।

ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਾਤਾ ॥
सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥
भगवान के सेवक उसकी सेवा करते हैं और गुरु के माध्यम से वह भगवान को पहचान लेते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮਿ ਸਦਾ ਜਨ ਸੋਹਹਿ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
अम्रित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥२॥
जो व्यक्ति हमेशा ही नाम-अमृत का पान करते रहते हैं वह सुन्दर बन जाते हैं। वह गुरु की मति द्वारा हरि-रस को प्राप्त कर लेते हैं।॥२॥

ਇਸੁ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਇਕੁ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਇਆ ॥

इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥

इस शरीर रूपी गुफा में आत्मस्वरूप रूपी एक अत्यंत सुन्दर स्थान है।

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਹਉਮੈ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥

पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥

पूर्ण गुरु ने जिनका अहंकार नाश कर दिया है,

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਨਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੩॥

अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥३॥

वे रात-दिन प्रेमपूर्वक मग्न होकर नाम की सराहना करते रहते हैं। ऐसे लोगों को गुरु की कृपा से ही नाम प्राप्त होता है॥३॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਇਹੁ ਗੁਫਾ ਵੀਚਾਰੇ ॥
गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥
जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा इस गुफा का चिन्तन करता है,

ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਮੁਰਾਰੇ ॥
नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥
उसके हृदय में मुरारि प्रभु का निरंजन नाम बस जाता है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥४॥
वह भगवान की महिमा गाता है और शब्द द्वारा प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करता है। फिर वह अपने प्रियतम-प्रभु से मिलकर सुख अनुभव करता है॥४॥

ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਕਰੁ ਲਾਏ ॥
जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥
कर वसूल करने वाला यम द्वैत भाव रखने वाले लोगों पर कर लगाता है।

ਨਾਵਹੁ ਭੂਲੇ ਦੇਇ ਸਜਾਏ ॥
नावहु भूले देइ सजाए ॥
जो ईश्वर के नाम को विस्मृत करते हैं वह उनको दण्ड देता है।

ਘੜੀ ਮੁਹਤ ਕਾ ਲੇਖਾ ਲੇਵੈ ਰਤੀਅਹੁ ਮਾਸਾ ਤੋਲ ਕਢਾਵਣਿਆ ॥੫॥
घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥५॥
यम प्रत्येक जीव से प्रत्येक घड़ी एवं मुहूर्त में किए कर्मों का लेखा-जोखा लेता है और उनके अंश के कण मात्र वजन के कर्मों को भी तोलता है॥ ५॥

ਪੇਈਅੜੈ ਪਿਰੁ ਚੇਤੇ ਨਾਹੀ ॥
पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥
जो जीव-स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण नहीं करती,

ਦੂਜੈ ਮੁਠੀ ਰੋਵੈ ਧਾਹੀ ॥
दूजै मुठी रोवै धाही ॥
वह माया के प्रेम में फँसकर लुटी जा रही है, वह कर्मों का लेखा देते समय चिल्ला-चिल्ला कर विलाप करती है।

ਖਰੀ ਕੁਆਲਿਓ ਕੁਰੂਪਿ ਕੁਲਖਣੀ ਸੁਪਨੈ ਪਿਰੁ ਨਹੀ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥६॥
वह नीच घराने की बहुत कुरुप और कुलक्षणी है और स्वप्न में भी वह अपने पति-परमेश्वर से नहीं मिलती॥ ६॥

ਪੇਈਅੜੈ ਪਿਰੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥
जिस जीव-स्त्री ने अपने पति-प्रभु को अपने मन में बसा लिया है,

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਹਦੂਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥
पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने उसे पति-प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन करवा दिए हैं।

ਕਾਮਣਿ ਪਿਰੁ ਰਾਖਿਆ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਸਬਦੇ ਪਿਰੁ ਰਾਵੈ ਸੇਜ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੭॥
कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥७॥
ऐसी जीव-स्त्री अपने प्रियतम को अपने हृदय के साथ लगाए रखती है और नाम द्वारा अपने प्रियतम के साथ उसकी सुन्दर सेज पर रमण करती है॥७॥

ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸਦਿ ਬੁਲਾਏ ॥
आपे देवै सदि बुलाए ॥
भगवान स्वयं ही अपने सेवक को बुला कर उसे नाम की देन प्रदान करता है।

ਆਪਣਾ ਨਾਉ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
आपणा नाउ मंनि वसाए ॥
वह अपना नाम उसके मन में बसा देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੮॥੨੯॥
नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥८॥२८॥२९॥
हे नानक ! नाम द्वारा सेवक को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है। फिर भगवान का सेवक रात-दिन सदैव ही उसका गुणगान करता रहता है।॥८॥२८॥२९॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਊਤਮ ਜਨਮੁ ਸੁਥਾਨਿ ਹੈ ਵਾਸਾ ॥
ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥
जो व्यक्ति सत्संगति रूपी श्रेष्ठ स्थान पर रहते हैं, उनका जन्म उत्तम बन जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਘਰ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥
सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥
ऐसे व्यक्ति अपने सच्चे गुरु की सेवा करते रहते हैं और गृहस्थ में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਹਹਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਰਸਿ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵਣਿਆ ॥੧॥
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु त्रिपतावणिआ ॥१॥
वह सदैव ही प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। उनका मन हरि-रस का पान करके तृप्त हो जाता है।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਪੜਿ ਬੁਝਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥
मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर बलिहारी है जो ब्रह्म-ज्ञान को पढ़कर एवं समझकर अपने मन में बसाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਹਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुख ब्रह्म-ज्ञान को पढ़कर हरि-नाम की महिमा-स्तुति करते हैं और सत्य के दरबार में शोभा पाते हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਅਲਖ ਅਭੇਉ ਹਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥
अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥
अलक्ष्य एवं अभेद परमात्मा सर्वव्यापक है।

ਉਪਾਇ ਨ ਕਿਤੀ ਪਾਇਆ ਜਾਏ ॥
उपाइ न किती पाइआ जाए ॥
किसी भी उपाय से वह प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੨॥
किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥२॥
यदि परमात्मा कृपा करे तो मनुष्य को गुरु मिल जाता है। परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि से मनुष्य को सतिगुरु से मिलाकर उस द्वारा अपने साथ मिला लेता है॥२॥

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪੜੈ ਨਹੀ ਬੂਝੈ ॥
दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥
जो व्यक्ति द्वैतभाव के कारण ग्रंथों का अध्ययन करता है, उसे कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਲੂਝੈ ॥
त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥
वह त्रिगुणात्मक माया के लिए उलझता रहता है।

ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਬੰਧਨ ਤੂਟਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਵਣਿਆ ॥੩॥
त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥३॥
लेकिन त्रिगुणात्मक माया के बंधन गुरु के शब्द से टूट जाते हैं और गुरु के शब्द से ही मोह-माया से मोक्ष प्राप्त होता है।॥३॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਵਸਿ ਨ ਆਵੈ ॥
इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥
मनुष्य का यह मन बड़ा ही चंचल है और यह मनुष्य के वश में नहीं आता।

ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੈ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵੈ ॥
दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥
यह दुविधा उत्पन्न करने वाली माया के पीछे लगकर दसों दिशाओं में भटकता रहता है।

ਬਿਖੁ ਕਾ ਕੀੜਾ ਬਿਖੁ ਮਹਿ ਰਾਤਾ ਬਿਖੁ ਹੀ ਮਾਹਿ ਪਚਾਵਣਿਆ ॥੪॥
बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥४॥
इस तरह मनुष्य विष-रूपी माया का कीड़ा बनकर विष रूपी विषय-विकारों में मग्न रहता है और विष रूपी माया के विषय-विकारों में ही गल-सड़ जाता है॥४ ॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰੇ ਤੈ ਆਪੁ ਜਣਾਏ ॥
हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥
जो व्यक्ति अहंकार से बोलता है और स्वयं को बड़ा प्रगट करता है,

ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਰੈ ਕਿਛੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਏ ॥
बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥
वह अधिकतर धर्म-कर्म करता है परन्तु प्रभु के दरबार में स्वीकार नहीं होता।

ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਬਖਸੇ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਿਆ ॥੫॥
तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥५॥
हे प्रभु ! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता। जिसे तुम क्षमा कर देते हो, वह शब्द द्वारा सुन्दर बन जाता है॥५॥

ਉਪਜੈ ਪਚੈ ਹਰਿ ਬੂਝੈ ਨਾਹੀ ॥
उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥
मनमुख जन्मता एवं मरता रहता है। उसे भगवान का ज्ञान ही नहीं होता।

ਅਨਦਿਨੁ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਫਿਰਾਹੀ ॥
अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥
वह रात-दिन माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਜਨਮੁ ਗਇਆ ਹੈ ਬਿਰਥਾ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਣਿਆ ॥੬॥
मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥६॥
इस तरह मनमुख व्यक्ति अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है और अन्त में पश्चाताप करता हुआ जगत् से चला जाता है ॥६॥

ਪਿਰੁ ਪਰਦੇਸਿ ਸਿਗਾਰੁ ਬਣਾਏ ॥
पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥
जैसे कोई स्त्री जिसका पति तो परदेस गया हुआ है परन्तु फिर भी वह अपने शरीर का श्रृंगार करती रहती है।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੁ ਐਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ॥
वैसे ही मनमुख माया में अंधा हो ऐसे व्यर्थ कर्म करता है,

ਹਲਤਿ ਨ ਸੋਭਾ ਪਲਤਿ ਨ ਢੋਈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਣਿਆ ॥੭॥
हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥७॥
उसकी न इहलोक में शोभा होती है और न ही उसे परलोक में कोई सहारा मिलता है। उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है॥७ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥
हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥
किसी विरले ने ही भगवान के नाम को जाना है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥
नाम की पहचान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही होती है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥
अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥८॥
जो व्यक्ति दिन-रात हर समय भगवान की भक्ति करता रहता है, उसे सहज ही सुख उपलब्ध हो जाता है ॥८॥

ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥
सभ महि वरतै एको सोई ॥
एक परमेश्वर समस्त जीवों में मौजूद है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥
परन्तु इस भेद को गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही समझता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਜਨ ਸੋਹਹਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੯॥੨੯॥੩੦॥
नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥९॥२९॥३०॥
हे नानक ! भगवान के दरबार में वह व्यक्ति शोभा प्राप्त करते हैं, जो उसके नाम में मग्न रहते हैं। भगवान स्वयं ही कृपा करके जीव को अपने साथ मिला लेता है ॥७॥२६॥३०॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖ ਪੜਹਿ ਪੰਡਿਤ ਕਹਾਵਹਿ ॥
मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥
स्वेच्छाचारी जीव द्वैतभाव में ग्रंथ पढ़ते रहते हैं और स्वयं को विद्वान कहलवाते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥
दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥
वे माया के मोह में फँसकर बहुत दुखी होते हैं।

ਬਿਖਿਆ ਮਾਤੇ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਆਵਣਿਆ ॥੧॥
बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥१॥
वह विष रूपी माया के मोह में मग्न रहते हैं और प्रभु बारे उन्हें कोई ज्ञान नहीं मिलता, जिसके कारण वह पुनः पुनः योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं।॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥
मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर कुर्बान है जो अपने अहंकार को नष्ट करके ईश्वर में विलीन हो जाते हैं।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਹਜਿ ਪੀਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की सेवा से ईश्वर मनुष्य के हृदय में आ बसता है और वह सहज ही हरि-रस पान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥

ਵੇਦੁ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨਹੀ ਆਇਆ ॥
वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥
कुछ व्यक्ति वेद पढ़ते हैं परन्तु उन्हें हरि-रस का आनंद नहीं मिलता।

ਵਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ਮੋਹੇ ਮਾਇਆ ॥
वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥
मोह-माया के कारण बुद्धिहीन हुए वह वाद-विवाद करते रहते हैं।

ਅਗਿਆਨਮਤੀ ਸਦਾ ਅੰਧਿਆਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝਿ ਹਰਿ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥
अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥२॥
अज्ञान बुद्धि वाले हमेशा अज्ञानता के अंधकार में हैं। गुरमुख ईश्वर को जान लेते हैं और हरि का यशोगान करते रहते हैं।॥२ ॥

ਅਕਥੋ ਕਥੀਐ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥
अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥
जो व्यक्ति अकथनीय प्रभु की महिमा का कथन करता रहता है, वह नाम द्वारा सुन्दर बन जाता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਮਨਿ ਸਚੋ ਭਾਵੈ ॥
गुरमती मनि सचो भावै ॥
गुरु की मति द्वारा सत्य-प्रभु उसके मन को प्रिय लगता है।

ਸਚੋ ਸਚੁ ਰਵਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਚਿ ਰੰਗਾਵਣਿਆ ॥੩॥
सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥३॥
वह दिन-रात सत्य-परमेश्वर का ही सिमरन करता रहता है। उसका यह मन सत्य-प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है॥३॥

ਜੋ ਸਚਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਸਚੋ ਭਾਵੈ ॥
जो सचि रते तिन सचो भावै ॥
जो सत्य-प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, उन्हें सत्य-प्रभु ही प्रिय लगता है।

ਆਪੇ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥
आपे देइ न पछोतावै ॥
प्रभु उन्हें अपने प्रेम की देन स्वयं ही देता है और यह देन देकर वह अफसोस नहीं करता।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਸਚੁ ਜਾਤਾ ਮਿਲਿ ਸਚੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥४॥
गुरु के शब्द से सत्य प्रभु सदैव ही जाना जाता है। सत्यस्वरूप प्रभु को मिलने से बड़ा आनंद प्राप्त होता है ॥४॥

ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਤਿਨਾ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥
झूठ एवं कपट की मैल उनको नहीं लगती क्योंकि

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥
गुर परसादी अनदिनु जागै ॥
वे रात-दिन गुरु की कृपा से भजन में जागते हैं।

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥
निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥५॥
निर्मल नाम उनके हृदय में निवास करता है और उनकी ज्योति प्रभु की ज्योति में विलीन हो जाती है।॥५॥

त्रै ਗੁਣ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਤਤੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ॥
त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥
मनमुख ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं, जिनका संबंध त्रिगुणात्मक माया से होता है। वह परम तत्व ईश्वर को नहीं समझ सकते।

ਮੂਲਹੁ ਭੁਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਣਹਿ ॥
मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥
ऐसे व्यक्ति जगत् के मूल प्रभु को भूले हुए हैं परन्तु गुरु की वाणी का बोध नहीं करते।

ਮੋਹ ਬਿਆਪੇ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ਨਾਹੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥६॥
वे मोह-माया में मग्न हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि भगवान गुरु की वाणी द्वारा ही मिलता है।॥६॥

ਵੇਦੁ ਪੁਕਾਰੈ ਤ੍ਰਿਬਿਧਿ ਮਾਇਆ ॥
वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥
वेद पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि माया त्रिगुणात्मक है

ਮਨਮੁਖ ਨ ਬੂਝਹਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇਆ ॥
मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥
परन्तु स्वेच्छाचारी जीवों को कोई सूझ ही नहीं होती, उन्हें तो माया का मोह ही प्यारा लगता है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਪੜਹਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥७॥
वह त्रिगुणात्मक माया से संबंधित ग्रंथ पढ़ते रहते हैं परन्तु उस एक ईश्वर को नहीं जान सकते। वह एक ईश्वर को समझे बिना बहुत दुःखी होते हैं॥७ ॥

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥
जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥
जब भगवान को उपयुक्त लगता है तो ही वह जीव को अपने साथ मिला लेता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਹਸਾ ਦੂਖੁ ਚੁਕਾਏ ॥
गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥
भगवान गुरु-शब्द द्वारा जीव का भय एवं दुःख दूर कर देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਕੀ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩੦॥੩੧॥
नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥८॥३०॥३१॥
हे नानक ! भगवान जिसे अपने नाम की महानता प्रदान कर देता है, वह अपने मन में नाम को बसाकर सुख प्राप्त करता है॥८॥३०॥३१॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਨਿਰਗੁਣੁ ਸਰਗੁਣੁ ਆਪੇ ਸੋਈ ॥
निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥
ईश्वर स्वयं ही निर्गुण और स्वयं ही सगुण है।

ਤਤੁ ਪਛਾਣੈ ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਹੋਈ ॥
ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥
जो इस ज्ञान को समझ लेता है वही पण्डित बन जाता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੧॥
आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥१॥
जो मनुष्य हरिनाम अपने हृदय में बसा लेता है, वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी भवसागर से पार करवा देता है॥१॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਖਿ ਸਾਦੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥
मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो हरि रस का पान करते हैं और इसके स्वाद को प्राप्त करते हैं।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि रसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जो हरि रस का पान करते हैं, वह पवित्र पुरुष हैं और वह निर्मल नाम का सिमरन करते हैं।॥१॥ रहाउ॥

ਸੋ ਨਿਹਕਰਮੀ ਜੋ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥
सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥
जो व्यक्ति शब्द का चिन्तन करता है, वहीं कर्मयोगी है।

ਅੰਤਰਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ॥
अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥
उसके हृदय में परम तत्व प्रभु का ज्ञान प्रगट हो जाता है और वह अपने अहंकार को नष्ट कर देता है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮੇਟਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੨॥
नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥२॥
वह नाम-पदार्थ से नवनिधि पा लेता है और माया के त्रिगुणों को मिटाकर भगवान में लीन हो जाता है ॥२॥

ਹਉਮੈ ਕਰੈ ਨਿਹਕਰਮੀ ਨ ਹੋਵੈ ॥
हउमै करै निहकरमी न होवै ॥
जो व्यक्ति अहंकार करता है, वह कर्मों के बंधनों से मुक्त नहीं होता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਉਮੈ ਖੋਵੈ ॥
गुर परसादी हउमै खोवै ॥
लेकिन गुरु की कृपा से मनुष्य अपना अहंकार नष्ट कर देता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਿਬੇਕੁ ਸਦਾ ਆਪੁ ਵੀਚਾਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੩॥

अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥३॥

उसके अन्तर्मन में विवेक उत्पन्न हो जाता है, वह सदा अपने स्वरूप का चिंतन करता है और गुरु के शब्द से हरि-प्रभु का यशोगान करता है॥३ ॥

ਹਰਿ ਸਰੁ ਸਾਗਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸੋਈ ॥

हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥

निर्मल भगवान स्वयं ही सरोवर है और स्वयं ही सागर है।

ਸੰਤ ਚੁਗਹਿ ਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥

हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥

निर्मल भगवान स्वयं ही सरोवर है और स्वयं ही सागर है।

ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਹਿ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੪॥

इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥४॥

वह भगवान रूपी सरोवर में दिन-रात स्नान करते रहते हैं और अपने अहंकार की मैल स्वच्छ करते रहते हैं ॥४॥

ਨਿਰਮਲ ਹੰਸਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥

निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥

जीव रूपी हंस प्रेम एवं प्यार से निर्मल हो जाते हैं और

ਹਰਿ ਸਰਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ॥

हरि सरि वसै हउमै मारि ॥

अपने अहंकार को मार कर भगवान रूपी सरोवर में निवास करते हैं।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਬਦਿ ਸਾਚੈ ਹਰਿ ਸਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥५॥
वह दिन-रात सत्य नाम के प्रेम में अनुरक्त रहते हैं और भगवान के सागर में बसेरा कर लेते हैं।॥५॥

ਮਨਮੁਖੁ ਸਦਾ ਬਗੁ ਮੈਲਾ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਲਾਈ ॥
मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥
मनमुख पाखंडी बगुले की तरह हमेशा मैला रहता है, जिसके मन को अहंकार की मैल लगी हुई है।

ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੈ ਪਰੁ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਈ ॥
इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥
वह तीर्थों पर स्नान करता है परन्तु उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਵਣਿਆ ॥੬॥
जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥६॥
उसकी अहंकार की मैल तभी दूर हो सकती है, यदि वह गुरु-शब्द का चिंतन करे और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करे॥६॥

ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਘਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥
अपनी आत्मा में ही हरि नाम रूपी अमूल्य रत्न पदार्थ पा लिया,

ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
जब पूर्ण सतिगुरु ने उसे अपना शब्द सुनाया।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਆਪੁ ਪਛਾਨਣਿਆ ॥੭॥
गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥७॥
गुरु की दया से उसके मन में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है। उसके हृदय में ज्योति का प्रकाश हो गया है और उसने स्वयं ही अपने स्वरूप को पहचान लिया है॥७॥

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਤੈ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ॥
आपि उपाए तै आपे वेखै ॥
प्रभु ने स्वयं ही जीवों की रचना की है और स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਲੇਖੈ ॥
सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥
जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है, वह प्रभु के दरबार में स्वीकार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩੧॥੩੨॥
नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥८॥३१॥३२॥
हे नानक ! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है, गुरु की कृपा से वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है। ॥८॥३१॥३२॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੩ ॥
माझ महला ३ ॥
माझ महला ३ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ॥
माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥
सम्पूर्ण संसार मोह-माया में लिप्त है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਦੀਸਹਿ ਮੋਹੇ ਮਾਇਆ ॥
त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥
त्रिगुणी प्राणी माया में मोहित हुए दिखाई देते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਚਉਥੈ ਪਦਿ ਲਿਵ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥
गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥१॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही सत्य का बोध करता है और अपनी वृत्ति सहज ही चतुर्थ अवस्था में लगाता है॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਦਿ ਜਲਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥
मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ जो गुरु की वाणी से मोह-माया की तृष्णा को जला देते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਏ ਸੋ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਹਰਿ ਦਰਿ ਮਹਲੀ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जो प्राणी मोह-माया की तृष्णा को जला देता है और अपना मन हरि-प्रभु से लगाता है, वह हरि के दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਮੂਲੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥
देवी देवा मूलु है माइआ ॥
देवी-देवताओं का मूल माया है,

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਜਿੰਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥
सिम्रिति सासत जिंनि उपाइआ ॥
जिन्होंने स्मृतियों एवं शास्त्रों को उत्पन्न किया है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਪਸਰਿਆ ਸੰਸਾਰੇ ਆਇ ਜਾਇ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੨॥
कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥२॥
इस संसार में काम, क्रोध प्रवृत्त है, इसलिए प्राणी आवागमन के चक्र में पड़कर जन्मता-मरता एवं कष्ट सहन करता है॥ २॥

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਇਕੁ ਪਾਇਆ ॥
तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥
भगवान ने मानव शरीर में एक ज्ञान रूपी रत्न डाल दिया है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥
जिसे गुरु की कृपा से हृदय में बसाया जाता है।

ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥੩॥
जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥३॥
वे ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रिय, संयम धारण करके सत्य की भक्ति करते हैं परन्तु पूर्ण गुरु की दया से नाम का स्मरण प्राप्त होता है॥३॥

ਪੇਈਅੜੈ ਧਨ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ॥
पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥
जो जीव-स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में भ्रम में पड़कर कुमार्ग लगी हुई है।

ਦੂਜੈ ਲਾਗੀ ਫਿਰਿ ਪਛੋਤਾਣੀ ॥
दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥
द्वैतभाव में फँसी हुई वह अन्तः पश्चाताप करती है।

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੋਵੈ ਗਵਾਏ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥
वह अपना लोक तथा परलोक दोनों ही गंवा देती है और स्वप्न में भी उसको सुख नहीं मिलता॥ ४ ॥

ਪੇਈਅੜੈ ਧਨ ਕੰਤੁ ਸਮਾਲੇ ॥
पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥
जो जीव-स्त्री इहलोक में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण करती है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਵੇਖੈ ਨਾਲੇ ॥
गुर परसादी वेखै नाले ॥
गुरु की कृपा से वह पति-परमेश्वर के निकट ही दर्शन करती है।

ਪਿਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਬਦਿ ਸਿੰਗਾਰੁ ਬਣਾਵਣਿਆ ॥੫॥
पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥५॥
वह सहज ही अपने प्रियतम के प्रेम में मग्न रहती है और उसकी वाणी को अपना हार-श्रृंगार बनाती है॥ ५॥

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥
उनका ही जन्म सफल है जिन्होंने सतिगुरु को पाया है।

ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇਆ ॥
दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥
गुरु के शब्द द्वारा उन्होंने माया-मोह को जला दिया है।

ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੬॥
एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥६॥
सत्संग में सम्मिलित होकर वह एक ईश्वर का यशोगान करते हैं जो सबके हृदय में व्यापक है॥६॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵੇ ਸੋ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥
सतिगुरु न सेवे सो काहे आइआ ॥
जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करता, वह संसार में क्यों आया है?

ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥
उसके जीवन को धिक्कार है। उसने अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवाया है।

ਮਨਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥७॥
मनमुख नाम का सुमिरन नहीं करता। हरि नाम के बिना वह बहुत कष्ट सहन करता है॥ ७॥

ਜਿਨਿ ਸਿਸਟਿ ਸਾਜੀ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ॥
जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥
जिस प्रभु ने इस सृष्टि की रचना की है, वह इस बारे सबकुछ जानता है।

ਆਪੇ ਮੇਲੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥
आपे मेलै सबदि पछाणै ॥
प्रभु उनको अपने साथ मिला लेता है जो गुरु-शब्द को सदैव अपने नेत्रों में रखता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ ਜਨ ਕਉ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥੩੨॥੩੩॥
नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥८॥१॥३२॥३३॥
हे नानक ! नाम उन्हें ही मिलता है, जिनके मस्तक पर सुकर्मों के कारण आदि से ही भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं ॥८॥१॥३२॥३३॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
माझ महला ४ ॥
माझ महला ४ ॥

ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਆਪੇ ॥
आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥
हे ईश्वर ! तुम ही आदिपुरुष, अपरम्पार एवं सर्वज्ञ हो।

ਆਪੇ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ॥

आपे थापे थापि उथापे ॥

वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही प्रलय करके सृष्टि का विनाश भी करता है।

ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥

सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥१॥

सबके भीतर एक ईश्वर ही व्यापक है। इस प्रकार अनुभव करके गुरमुख प्रभु के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं।॥ १ ॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਣਿਆ ॥

हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ ॥

मैं तन-मन से उन पर बलिहारी हूँ, जो निरंकार परमात्मा के नाम का ध्यान करते हैं।

ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਦੇਖਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
उस प्रभु का न ही कोई रूप है अथवा न ही कोई रेखा है, उसे गुरमुखों ने घट-घट में देखा है। गुरमुख दूसरों को भी प्रभु के स्वरूप के दर्शन करवाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥
तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥
हे ईश्वर ! तुम बड़े दयालु एवं कृपालु हो

तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥
और तेरे अलावा अन्य कोई भी नहीं।

गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥२॥
गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥२॥
जिस पर गुरु कृपा करता है, उसे ही यह अपना नाम देता है। वह व्यक्ति नाम द्वारा तेरे नाम में ही समा जाता है॥ २॥

तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥
तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥
हे नाथ ! तुम स्वयं ही सच्चे सृजनहार हो।

भगती भरे तेरे भंडारा ॥
भगती भरे तेरे भंडारा ॥
तेरे भण्डार प्रभु-भक्ति से हैं।

गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥३॥
गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥३॥
जिसे गुरु के माध्यम से तेरा नाम मिल जाता है, उसका मन प्रसन्न हो जाता है और वह ही समाधि लगाता है॥ ३॥

ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ॥
अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥
हे प्रभु ! रात-दिन मैं तेरा ही यशोगान करता हूँ।

ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੇਰੇ ॥
तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥
हे मेरे प्रियतम ! मैं तेरी ही सराहना करता हूँ।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਜਾਚਾ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤੂੰ ਪਾਵਣਿਆ ॥੪॥
तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥४॥
हे ईश्वर ! तेरे अलावा मैं किसी अन्य से नहीं माँगता। गुरु की दया से ही तुम प्राप्त होते हो ॥ ४॥

ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਮਿਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥
हे अगम्य, अगोचर प्रभु ! तेरी सीमा का पार नहीं पाया जा सकता।

ਅਪਣੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਤੂੰ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਈ ॥
अपणी क्रिपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥
हे सृष्टिकर्ता ! अपनी कृपा से तुम प्राणी को अपने साथ मिला लेते हो।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਧਿਆਈਐ ਸਬਦੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੫॥
पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥५॥
तेरा ध्यान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही करना चाहिए। परमेश्वर की सेवा से बड़ा सुख प्राप्त होता है॥ ५ ॥

ਰਸਨਾ ਗੁਣਵੰਤੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
रसना गुणवंती गुण गावै ॥
वही रसना गुणवान है जो प्रभु का गुणगान करती है।

ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੇ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥
नामु सलाहे सचे भावै ॥
नाम की उपमा करने से प्राणी सत्य स्वरूप ईश्वर को अच्छा लगने लग जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਮਿਲਿ ਸਚੇ ਸੋਭਾ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥
गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥६॥
पवित्रात्मा अपने प्रियतम-प्रभु के प्रेम में मग्न रहती है और सत्य से मिलकर बड़ी शोभा प्राप्त करती है ॥६॥

ਮਨਮੁਖੁ ਕਰਮ ਕਰੇ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
मनमुखु करम करे अहंकारी ॥
मनमुख अपना कर्म-धर्म अहंकारवश ही करता है।

ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਸਭ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥
जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥
वह अपना समूचा जीवन जुए के खेल में पराजित कर देता है।

ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥੭॥
अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥७॥
उसके हृदय में लालच एवं अज्ञानता का घोर अंधकार है, इसलिए वह पुनःपुन: जन्म लेता और मरता है अर्थात् आवागमन के चक्र में फंसा रहता है॥ ७ ॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
आपे करता दे वडिआई ॥
हे सृष्टिकर्ता ! तुम उन्हें स्वयं ही महानता प्रदान करते हो,

ਜਿਨ ਕਉ ਆਪਿ ਲਿਖਤੁ ਧੁਰਿ ਪਾਈ ॥
जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥
जिनकी किस्मत में उसने स्वयं ही आदि से ऐसा लेख लिखा हुआ है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥੩੪॥
नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥८॥१॥३४॥
हे नानक ! जिसे गुरु के शब्द द्वारा भयनाशक परमात्मा का नाम मिल जाता है, वह बहुत सुख प्राप्त करता है ॥८॥१॥३४॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ॥
माझ महला ५ घरु १ ॥
माझ महला ५ घरु १ ॥

ਅੰਤਰਿ ਅਲਖੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ॥
अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥
अलक्ष्य परमात्मा जीव के हृदय में ही विद्यमान हे लेकिन उसे देखा नहीं जा सकता।

ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਲੈ ਗੁਝਾ ਰਖਿਆ ॥
नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥
उसने नाम-रत्न को आत्म-स्वरूप में गुप्त रखा हुआ है।

ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਲਖਾਵਣਿਆ ॥੧॥
अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥१॥
अगम्य, अगोचर परमात्मा सर्वश्रेष्ठ है, जिसे गुरु के शब्द द्वारा ही जाना जा सकता है॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਕਲਿ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥
मैं तन-मन से उन पर कुर्बान हैं, जो इस कलियुग में जीवों को भगवान का नाम सुनाते हैं!

ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਸਚੈ ਧਾਰੇ ਵਡਭਾਗੀ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे सच्चे परमेश्वर ! तुझे संत अति प्रिय हैं, जिन्हें तूने सहारा दिया हुआ है। बड़े सौभाग्य से उनके दर्शन प्राप्त होते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਜਿਸੈ ਕਉ ਫਿਰਦੇ ॥
साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥
जिस प्रभु को पाने के लिए साधक, सिद्ध ढूंढते फिरते हैं,

ਬ੍ਰਹਮੇ ਇੰਦ੍ਰ ਧਿਆਇਨਿ ਹਿਰਦੇ ॥
ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥
ब्रह्मा, इन्द्र भी अपने हृदय में उसी का ध्यान करते हैं

ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸਾ ਖੋਜਹਿ ਤਾ ਕਉ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹਿਰਦੈ ਗਾਵਣਿਆ ॥੨॥
कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥२॥
और जिसे तेतीस करोड़ देवी-देवता तलाशते हैं, गुरु से भेंट करके उस प्रभु का संतजन अपने मन में यशोगान करते रहते हैं।॥२॥

ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਧੁ ਜਾਪੇ ਪਵਨਾ ॥
आठ पहर तुधु जापे पवना ॥
हे प्रभु ! वायु देवता आठ प्रहर तेरा ही स्मरण करता रहता है

ਧਰਤੀ ਸੇਵਕ ਪਾਇਕ ਚਰਨਾ ॥
धरती सेवक पाइक चरना ॥
और धरती माता तेरे चरणों की सेवा करती है।

ਖਾਣੀ ਬਾਣੀ ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਭਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥੩॥
खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥३॥
हे ईश्वर ! समस्त दिशाओं एवं समस्त वाणियों में तेरा निवास है। सर्वव्यापक परमात्मा सबके मन को अच्छा लगता है॥ ३॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ॥
साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥
हे सत्यस्वरूप परमात्मा ! गुरमुख तेरा ही जाप करते हैं।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਿਞਾਪੈ ॥
पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥
लेकिन पूर्ण गुरु की वाणी द्वारा ही बोध होता है।

ਜਿਨ ਪੀਆ ਸੇਈ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਸਚੇ ਸਚਿ ਅਘਾਵਣਿਆ ॥੪॥
जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥४॥
जो परमात्मा के नाम अमृत का पान करते हैं, ये तृप्त हो जाते हैं। वे सत्य प्रभु के सत्य-नाम से कृतार्थ हो गए हैं।॥ ४ ॥

ਤਿਸੁ ਘਰਿ ਸਹਜਾ ਸੋਈ ਸੁਹੇਲਾ ॥
तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥
जिस व्यक्ति के हृदय-घर में सहज अवस्था विद्यमान है वही सुखी रहता है।

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥
अनद बिनोद करे सद केला ॥
वह मोद-प्रमोद से सदैव आनन्द करता है।

ਸੋ ਧਨਵੰਤਾ ਸੋ ਵਡ ਸਾਹਾ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਵਣਿਆ ॥੫॥
सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥५॥
वही धनवान है और वही परम सम्राट है, जो गुरु चरणों में अपना हृदय लगाता है॥ ५॥

ਪਹਿਲੋ ਦੇ ਤੈਂ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਹਾ ॥
पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥
हे अकाल पुरुष ! | सर्वप्रथम तूने प्राणियों के लिए भोजन पहुँचाया है।

ਪਿਛੋ ਦੇ ਤੈਂ ਜੰਤੁ ਉਪਾਹਾ ॥
पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥
तदुपरांत तुमने प्राणियों को उत्पन्न किया है।

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਸੁਆਮੀ ਲਵੈ ਨ ਕੋਈ ਲਾਵਣਿਆ ॥੬॥
तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥६॥
हे मेरे स्वामी ! तेरे जैसा महान दाता अन्य कोई भी नहीं। हे प्रभु ! कोई भी तेरी बराबरी नहीं कर सकता ॥ ६॥

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਤੁਠਾ ਸੋ ਤੁਧੁ ਧਿਆਏ ॥
जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥
हे ईश्वर ! जिस पर तुम परम-प्रसन्न हुए हो, वही तेरी आराधना करता है।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰੁ ਕਮਾਏ ॥
साध जना का मंत्रु कमाए ॥
ऐसा व्यक्ति ही संत-जनों के मंत्र का अनुसरण करता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ਤਿਸੁ ਦਰਗਹ ਠਾਕ ਨ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥
आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥७॥
वह स्वयं इस संसार सागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार करवा देता है। प्रभु के दरबार में पहुँचने में उसे कोई रोक-टोक नहीं होती ॥७॥

ਤੂੰ ਵਡਾ ਤੂੰ ਊਚੋ ਊਚਾ ॥
तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥
हे प्रभु ! तुम महान हो, तुम सर्वोच्च एवं सर्वोपरि हो।

ਤੂੰ ਬੇਅੰਤੁ ਅਤਿ ਮੂਚੋ ਮੂਚਾ ॥
तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥
हे दाता ! तुम अनन्त हो और सर्वश्रेष्ठ हो।

ਹਉ ਕੁਰਬਾਣੀ ਤੇਰੈ ਵੰਞਾ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੧॥੩੫॥
हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥८॥१॥३५॥
हे प्रभु ! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। हे नानक ! मैं प्रभु के दासों का दास हूँ॥ ८ ॥ १ ॥ ३५॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਕਉਣੁ ਸੁ ਮੁਕਤਾ ਕਉਣੁ ਸੁ ਜੁਗਤਾ ॥
कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥
वह कौन है जो माया के बंधनों से मुक्त हो गया है? और कौन परमात्मा से नाम द्वारा जुड़ा हुआ है?

ਕਉਣੁ ਸੁ ਗਿਆਨੀ ਕਉਣੁ ਸੁ ਬਕਤਾ ॥
कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥
कौन ज्ञानी है ? और कौन वक्ता है?

ਕਉਣੁ ਸੁ ਗਿਰਹੀ ਕਉਣੁ ਉਦਾਸੀ ਕਉਣੁ ਸੁ ਕੀਮਤਿ ਪਾਏ ਜੀਉ ॥੧॥
कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥१॥
कौन गृहस्थी है ? और कौन त्यागी है ? और परमेश्वर का मूल्य कौन पा सकता है?॥ १॥

ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਬਾਧਾ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਛੂਟਾ ॥
किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥
मनुष्य कैसे माया के बंधनों में बंध जाता है? और कैसे मुक्त हो जाता है ?

ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤੂਟਾ ॥
किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥
किस विधि द्वारा जीव आवागमन (जन्म-मरण) से बच सकता है ?

ਕਉਣ ਕਰਮ ਕਉਣ ਨਿਹਕਰਮਾ ਕਉਣੁ ਸੁ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ਜੀਉ ॥੨॥
कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥२॥
धर्म-कर्म करने वाला कोन है ? और वासना रहित होकर कर्म करने वाला कौन है ? कौन ईश्वर के नाम की महिमा करता और अन्यों से महिमा करवाता है॥ २ ॥

ਕਉਣੁ ਸੁ ਸੁਖੀਆ ਕਉਣੁ ਸੁ ਦੁਖੀਆ ॥
कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥
जगत् में कौन सुखी है और कौन दुखी है ?

ਕਉਣੁ ਸੁ ਸਨਮੁਖੁ ਕਉਣੁ ਵੇਮੁਖੀਆ ॥
कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥
कौन समक्ष है और कौन विमुख ?

ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਮਿਲੀਐ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਬਿਛੁਰੈ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕਉਣੁ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਜੀਉ ॥੩॥
किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥३॥
किस विधि से परमात्मा मिलता है और किस विधि से मनुष्य उससे बिछुड़ जाता है? यह विधि मुझे कौन बतलाएगा ? ॥ ३॥

ਕਉਣੁ ਸੁ ਅਖਰੁ ਜਿਤੁ ਧਾਵਤੁ ਰਹਤਾ ॥
कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥
वह कौन-सा दिव्य अक्षर है, जिसके अध्ययन से मन का भटकना मिट जाता है ?

ਕਉਣੁ ਉਪਦੇਸੁ ਜਿਤੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਸਹਤਾ ॥
कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥
वह कौन-सा उपदेश है ? जिसके द्वारा प्राणी सुख-दुख को एक समान जानकर सहन करता है।

ਕਉਣੁ ਸੁ ਚਾਲ ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਏ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਏ ਜੀਉ ॥੪॥
कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥४॥
वह कौन-सी युक्ति है? जिसके द्वारा प्राणी पारब्रह्म-परमेश्वर की आराधना करे ? किस विधि द्वारा प्रभु का भजन कर सकता है ? ॥ ४॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੁਗਤਾ ॥
गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥
गुरु जी उत्तर देते हैं कि गुरमुख मुक्त है और गुरमुख ईश्वर से जुड़ा रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਕਤਾ ॥
गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥
गुरमुख ज्ञानी है और गुरमुख वक्ता है।

ਧੰਨੁ ਗਿਰਹੀ ਉਦਾਸੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਏ ਜੀਉ ॥੫॥
धंनु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥५॥
धन्य है वह गुरमुख चाहे वह गृहस्थी हो अथवा त्यागी। गुरमुख ही प्रभु का मूल्यांकन जानता है॥ ५॥

ਹਉਮੈ ਬਾਧਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟਾ ॥
हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥
जीव अहंकारवश माया के बंधनों में बंध जाता है परन्तु गुरमुख माया के बधनों से मुक्त हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤੂਟਾ ॥
गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥
गुरमुख का आवागमन जीवन-मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਹਕਰਮਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਸੁ ਸੁਭਾਏ ਜੀਉ ॥੬॥
गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥६॥
गुरमुख सुकर्म (धर्म-कर्म) करता है, परन्तु फल की इच्छा नहीं रखता। गुरमुख प्रभु-प्रेम में जो भी कर्म करता है, वह शोभनीय है॥ ६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੀਆ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੀਆ ॥
गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥
इस दुनिया में गुरमुख सदैव सुखी रहता है परन्तु मनमुख सदैव दुखी रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਨਮੁਖੁ ਮਨਮੁਖਿ ਵੇਮੁਖੀਆ ॥
गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥
गुरमुख हमेशा ही भगवान के समक्ष रहता है किन्तु मनमुख भगवान से विमुख हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਵਿਛੁਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਿਧਿ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਜੀਉ ॥੭॥
गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥७॥
गुरमुख ही भगवान से मिलता है। परन्तु मनमुख भगवान से बिछुड़ जाता है। गुरु ही भगवान से मिलन की विधि प्रगट करता है॥ ७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਖਰੁ ਜਿਤੁ ਧਾਵਤੁ ਰਹਤਾ ॥
गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥
गुरु का उपदेश दिव्य अक्षर है, जिससे भटका हुआ मन वश में आ जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਸਹਤਾ ॥
गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥
गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य दुःख एवं सुख को एक समान समझता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਲ ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਧਿਆਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਏ ਜੀਉ ॥੮॥
गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥८॥
गुरु का उपदेश ही सन्मार्ग है, जिस द्वारा पारब्रह्म प्रभु का चिन्तन किया जाता है। गुरमुख ही परमेश्वर का कीर्तन गायन करते हैं॥ ८ ॥

ਸਗਲੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ਆਪੇ ॥
सगली बणत बणाई आपे ॥
जगत-रचना की सारी संरचना प्रभु ने आप ही की है।

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਥਾਪੇ ॥
आपे करे कराए थापे ॥
परमात्मा प्राणियों का कर्ता है, स्वयं ही कर्म करवाता है और स्वयं ही जीवों को पैदा करता है।

ਇਕਸੁ ਤੇ ਹੋਇਓ ਅਨੰਤਾ ਨਾਨਕ ਏਕਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ਜੀਉ ॥੯॥੨॥੩੬॥
इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥९॥२॥३६॥
वह सृष्टि रचना के समय अनन्त रूप हो जाता है। हे नानक ! जगत् के प्रलयकाल में समस्त प्राणी एक ईश्वर में ही समा जाते हैं॥९॥२॥३६॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
माझ महला ५ ॥
माझ महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਤਾ ਕਿਆ ਕਾੜਾ ॥
प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥
हे अविनाशी प्रभु ! जब तू मेरा रखवाला है तो मुझे क्या चिंता है ?

ਹਰਿ ਭਗਵੰਤਾ ਤਾ ਜਨੁ ਖਰਾ ਸੁਖਾਲਾ ॥
हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥
हे हरि-परमेश्वर ! जब तू मेरा रक्षक है तो मैं तेरा उपासक बहुत सुखी रहता हूँ।

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਤੂੰ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੧॥
जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥१॥
तू ही मेरी आत्मा, प्राण एवं मान-प्रतिष्ठा है और तू ही सुखदाता है। तुम जो कुछ भी करते हो, उससे ही मैं सुख प्राप्त करता हूँ॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭਾਵਣਿਆ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥
मैं उन गुरमुखों पर तन-मन से बलिहारी हूँ जिनके मन एवं तन को तुम अच्छे लगते हो।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਪਰਬਤੁ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਓਲਾ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਲਵੈ ਨ ਲਾਵਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
तू ही मेरा पर्वत है और तू ही मेरा आधार है। हे प्रभु ! तेरे साथ कोई भी समानता नहीं कर सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਜਿਸੁ ਲਾਗੈ ਮੀਠਾ ॥
तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥
जिस व्यक्ति को तेरा किया (इच्छा) मीठा लगता है,

ਘਟਿ ਘਟਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਡੀਠਾ ॥
घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥
उसे पारब्रह्म-प्रभु प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान दिखाई देता है।

ਥਾਨਿ ਥਨੰਤਰਿ ਤੂੰਹੈ ਤੂੰਹੈ ਇਕੋ ਇਕੁ ਵਰਤਾਵਣਿਆ ॥੨॥
थानि थनंतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥२॥
एक तू ही समस्त स्थानों में रहता है। एक तू ही सर्वत्र अपना हुक्म चला रहा है॥ २॥

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਤੂੰ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥
सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥
हे प्रभु ! तुम समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले हो।

ਭਗਤੀ ਭਾਇ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
भगती भाइ भरे भंडारा ॥
तेरे भण्डार प्रेम एवं भक्ति से भरे हुए हैं।

ਦਇਆ ਧਾਰਿ ਰਾਖੇ ਤੁਧੁ ਸੇਈ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਸਮਾਵਣਿਆ ॥੩॥
दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥३॥
हे नाथ ! जिन पर तुम दया करके रक्षा करते हो, वह तेरी पूर्ण कृपा से तुझ में ही समा जाते हैं।॥ ३॥

ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਕੰਢੈ ਚਾੜੇ ॥
अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥
हे ईश्वर ! तूने भक्तों को संसार रूपी अंधकूप में से निकाल कर पार कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦਾਸ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
करि किरपा दास नदरि निहाले ॥
और तूने अपनी कृपा-दृष्टि करके अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया है

ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਪੂਰਨ ਅਬਿਨਾਸੀ ਕਹਿ ਸੁਣਿ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਣਿਆ ॥੪॥
गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥४॥
हे पूर्ण अविनाशी प्रभु ! सेवक तेरे गुणों का गुणगान करते हैं। कहने एवं श्रवण करने से भी प्रभु के गुणों में कभी कमी नहीं आती ॥ ४॥

ਐਥੈ ਓਥੈ ਤੂੰਹੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥
ऐथै ओथै तूंहै रखवाला ॥
हे प्रभु ! इहलोक तथा परलोक में तुम ही रक्षक हो।

ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਤੁਮ ਹੀ ਪਾਲਾ ॥
मात गरभ महि तुम ही पाला ॥
तुम ही माता के गर्भ में आए शिशु का पालन-पोषण करते हो।

ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਨ ਪੋਹੈ ਤਿਨ ਕਉ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਗੁਣ ਗਾਵਣਿਆ ॥੫॥
माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥५॥
जो प्रभु के प्रेम में मग्न हुए उसकी कीर्ति का गायन करते हैं, उन्हें माया की अग्नि प्रभावित नहीं कर सकती ॥ ५॥

ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਆਖਿ ਸਮਾਲੀ ॥
किआ गुण तेरे आखि समाली ॥
हे परमात्मा ! मैं तेरे कौन-कौन से गुणों को कहकर स्मरण करुं?

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਤੁਧੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀ ॥
मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥
मैं अपने मन एवं तन में तुझे ही मौजूद देखता हूँ।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਮੀਤੁ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਣਿਆ ॥੬॥
तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥६॥
हे प्रभु ! तुम ही मेरे मित्र, मेरे साजन एवं मेरे स्वामी हो। तेरे अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता ॥ ६॥

ਜਿਸ ਕਉ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭ ਭਇਆ ਸਹਾਈ ॥
जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥
हे प्रभु ! जिस पुरुष के तुम सहायक सिद्ध हुए हो,

ਤਿਸੁ ਤਤੀ ਵਾਉ ਨ ਲਗੈ ਕਾਈ ॥
तिसु तती वाउ न लगै काई ॥
उसे कोई गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् किसी प्रकार की कोई पीड़ा नहीं आती।

ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਸਰਣਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਤਸੰਗਤਿ ਜਪਿ ਪ੍ਰਗਟਾਵਣਿਆ ॥੭॥
तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥७॥
हे परमात्मा ! तू सबका मालिक है, तू ही आश्रयदाता एवं सुखदाता है। सत्संग में तेरे नाम की आराधना करने से तुम प्रकट हो जाते हो ॥ ७ ॥

ਤੂੰ ਊਚ ਅਥਾਹੁ ਅਪਾਰੁ ਅਮੋਲਾ ॥
तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥
हे प्रभु ! तुम सर्वोच्च, अथाह, अनन्त एवं अनमोल हो।

ਤੂੰ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਗੋਲਾ ॥
तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥
तू ही मेरा सच्चा साहिब है और मैं तेरा सेवक एवं दास हूँ।

ਤੂੰ ਮੀਰਾ ਸਾਚੀ ਠਕੁਰਾਈ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵਣਿਆ ॥੮॥੩॥੩੭॥
तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥८॥३॥३७॥
तुम सम्राट हो और तेरा साम्राज्य सत्य है। हे नानक ! मैं प्रभु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥
माझ महला ५ घरु २ ॥
माझ महला ५ घरु २ ॥

ਨਿਤ ਨਿਤ ਦਯੁ ਸਮਾਲੀਐ ॥
नित नित दयु समालीऐ ॥
हे प्राणी ! हमें सदैव ही दयालु भगवान का सिमरन करना चाहिए और

ਮੂਲਿ ਨ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥
उस प्रभु को कभी भी अपने हृदय से विस्मृत नहीं करना चाहिए ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤਾ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥
संता संगति पाईऐ ॥
यदि सन्तों की संगति की जाए

ਜਿਤੁ ਜਮ ਕੈ ਪੰਥਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥
जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥
तो जीव को यम-मार्ग में नहीं जाना पड़ेगा।

ਤੋਸਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲੈ ਤੇਰੇ ਕੁਲਹਿ ਨ ਲਾਗੈ ਗਾਲਿ ਜੀਉ ॥੧॥
तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥१॥
हरि के नाम का यात्रा-खर्च प्राप्त करो। उसे प्राप्त करने से तेरी वंश को कोई कलंक नहीं लगेगा ॥१॥

ਜੋ ਸਿਮਰੰਦੇ ਸਾਂਈਐ ॥
जो सिमरंदे सांईऐ ॥
जो व्यक्ति परमात्मा की आराधना करते हैं,"

ਨਰਕਿ ਨ ਸੇਈ ਪਾਈਐ ॥
नरकि न सेई पाईऐ ॥
उन्हें नरक में नहीं डाला जाता।

ਤਤੀ ਵਾਉ ਨ ਲਗਈ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਇ ਜੀਉ ॥੨॥
तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥२॥
जिनके मन में ईश्वर ने आकर निवास कर लिया है, उनको गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचता ॥२॥

ਸੇਈ ਸੁੰਦਰ ਸੋਹਣੇ ॥
सेई सुंदर सोहणे ॥
वहीं व्यक्ति सुन्दर एवं शोभनीय हैं

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਿਨ ਬੈਹਣੇ ॥
साधसंगि जिन बैहणे ॥
जो सत्संग में वास करते हैं।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਿਨੀ ਸੰਜਿਆ ਸੇਈ ਗੰਭੀਰ ਅਪਾਰ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि धनु जिनी संजिआ सेई ग्मभीर अपार जीउ ॥३॥
जिन्होंने ईश्वर के नाम का धन अर्जित किया है वह बड़े दूरदर्शी और अपरम्पार हैं ॥३॥

ਹਰਿ ਅਮਿਉ ਰਸਾਇਣੁ ਪੀਵੀਐ ॥
हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥
जो प्रभु-भक्त सत्संग में मिलकर हरि-नाम रूपी अमृत रस का पान करता है,"

ਮੁਹਿ ਡਿਠੈ ਜਨ ਕੈ ਜੀਵੀਐ ॥
मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥
मैं उस भक्त के दर्शन करके ही जीता हूँ।

ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰਿ ਲੈ ਨਿਤ ਪੂਜਹੁ ਗੁਰ ਕੇ ਪਾਵ ਜੀਉ ॥੪॥
कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥४॥
हे प्राणी ! सदैव गुरु-चरणों की पूजा करके अपने समस्त कार्य संवार लो॥ ४॥

ਜੋ ਹਰਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ॥
जो हरि कीता आपणा ॥
जिसे प्रभु ने अपना सेवक बना लिया है,"

ਤਿਨਹਿ ਗੁਸਾਈ ਜਾਪਣਾ ॥
तिनहि गुसाई जापणा ॥
वहीं भगवान का सिमरन करता है।

ਸੋ ਸੂਰਾ ਪਰਧਾਨੁ ਸੋ ਮਸਤਕਿ ਜਿਸ ਦੈ ਭਾਗੁ ਜੀਉ ॥੫॥
सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥५॥
वही शूरवीर है और वही प्रधान है जिसके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं।॥५॥

ਮਨ ਮੰਧੇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਵਗਾਹੀਆ ॥
मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥
जिस व्यक्ति ने भगवान का अपने मन में सिमरन किया है, उसने ही इस रस का पान किया है।

ਏਹਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਪਾਤਿਸਾਹੀਆ ॥
एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥
हरि-रस का भोग ही प्रभुता के रस मानने की भाँति है।

ਮੰਦਾ ਮੂਲਿ ਨ ਉਪਜਿਓ ਤਰੇ ਸਚੀ ਕਾਰੈ ਲਾਗਿ ਜੀਉ ॥੬॥
मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥६॥
नाम-सिमरन करने वालों के मन में कदाचित बुराई उत्पन्न नहीं होती। वे नाम-सिमरन के शुभ-कर्म में लगकर भवसागर से पार हो जाते हैं।॥ ६॥

ਕਰਤਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
करता मंनि वसाइआ ॥
जिसने सृष्टि-कर्ता प्रभु को अपने हृदय में वसा लिया है

ਜਨਮੈ ਕਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
जनमै का फलु पाइआ ॥
उसने मानव जीवन का फल प्राप्त कर लिया है।

ਮਨਿ ਭਾਵੰਦਾ ਕੰਤੁ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਥਿਰੁ ਹੋਆ ਸੋਹਾਗੁ ਜੀਉ ॥੭॥
मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥७॥
हे जीव-स्त्री ! तुझे अपना मनपसंद हरि-प्रभु मिल गया है और अब तेरा सुहाग स्थिर हो गया है॥ ७॥

ਅਟਲ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥
अटल पदारथु पाइआ ॥
तब हरि-नाम रूपी अटल पदार्थ मिल गया

ਭੈ ਭੰਜਨ ਕੀ ਸਰਣਾਇਆ ॥
भै भंजन की सरणाइआ ॥
जब मैं भयनाशक प्रभु की शरण में आया।

ਲਾਇ ਅੰਚਲਿ ਨਾਨਕ ਤਾਰਿਅਨੁ ਜਿਤਾ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰ ਜੀਉ ॥੮॥੪॥੩੮॥
लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥८॥४॥३८॥
हे नानक ! भगवान ने अपने दामन से लगाकर तुझे भवसागर से पार कर दिया है और तूने अपनी जीवन-बाजी को जीत कर अपार प्रभु को प्राप्त कर लिया है ॥८॥४॥३८॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ॥
माझ महला ५ घरु ३ ॥
माझ महला ५ घरु ३ ॥

ਹ`ਰਿ ਜਪਿ ਜਪੇ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जपि जपे मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान का नाम जपने से मेरे मन को धैर्य हो गया है॥ १ ॥ रहाउ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਰਦੇਉ ਮਿਟਿ ਗਏ ਭੈ ਦੂਰੇ ॥੧॥
सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गए भै दूरे ॥१॥
गुरदेव का नाम-सिमरन करने से मेरे तमाम भय मिट गए हैं।॥ १॥

ਸਰਨਿ ਆਵੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਤਾ ਫਿਰਿ ਕਾਹੇ ਝੂਰੇ ॥੨॥
सरनि आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥२॥
जो पारब्रहम की शरण में आ जाता है, वह फिर चिन्ता क्यों करेगा ? ॥ २॥

ਚਰਨ ਸੇਵ ਸੰਤ ਸਾਧ ਕੇ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰੇ ॥੩॥
चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥३॥
संतों व साधु जनों के चरणों की सेवा करने से मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई हैं॥ ३॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਏਕੁ ਵਰਤਦਾ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰੇ ॥੪॥
घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥४॥
कण-कण में एक ईश्वर ही विद्यमान है। जल, थल एवं गगन में भी वही समाया हुआ है॥ ४॥

ਪਾਪ ਬਿਨਾਸਨੁ ਸੇਵਿਆ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੫॥
पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥५॥
संतों के चरणों की धूलि द्वारा पवित्र होकर मैंने पापों के विनाशक प्रभु की सेवा की है॥ ५॥

ਸਭ ਛਡਾਈ ਖਸਮਿ ਆਪਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਭਈ ਠਰੂਰੇ ॥੬॥
सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥६॥
सारी सृष्टि को मालिक प्रभु ने स्वयं ही माया-जाल में से मुक्त किया है और सारी सृष्टि भगवान का नाम जप कर शीतल हो गई है॥ ६॥

ਕਰਤੈ ਕੀਆ ਤਪਾਵਸੋ ਦੁਸਟ ਮੁਏ ਹੋਇ ਮੂਰੇ ॥੭॥
करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥७॥
सृजनहार प्रभु ने स्वयं इन्साफ किया है और काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि सभी दुष्ट मूक होकर प्राण त्याग गए हैं॥ ७॥

ਨਾਨਕ ਰਤਾ ਸਚਿ ਨਾਇ ਹਰਿ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥੮॥੫॥੩੯॥੧॥੩੨॥੧॥੫॥੩੯॥
नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥८॥५॥३९॥१॥३२॥१॥५॥३९॥
हे नानक ! जो व्यक्ति सत्य-नाम में मग्न हो जाता है, वह प्रभु-परमेश्वर को सदैव अपने नेत्रों के समक्ष प्रत्यक्ष देखता है ॥८॥५॥३९॥१॥३२॥१॥५॥३९॥

ਬਾਰਹ ਮਾਹਾ ਮਾਂਝ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪
बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४
बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਰਤਿ ਕਰਮ ਕੇ ਵੀਛੁੜੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਰਾਮ ॥
किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
हे मेरे राम ! पूर्व जन्म के कृत-कर्मों के अनुसार लिखी किस्मत के कारण हम तुझसे बिछुड़ गए हैं, अतः कृपा करके हमें अपने साथ मिला लो।

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸ ਭ੍ਰਮੇ ਥਕਿ ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਾਮ ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
हे प्रभु ! चारों ही कोनों उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम एवं दसों दिशाओं में भटकने के पश्चात थककर हम तेरी शरण में आए हैं।

ਧੇਨੁ ਦੁਧੈ ਤੇ ਬਾਹਰੀ ਕਿਤੈ ਨ ਆਵੈ ਕਾਮ ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
दूध न देने वाली गाय किसी भी कार्य नहीं आती।

ਜਲ ਬਿਨੁ ਸਾਖ ਕੁਮਲਾਵਤੀ ਉਪਜਹਿ ਨਾਹੀ ਦਾਮ ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
जल के बिना फसल मुरझा जाती है और उससे दाम बटोरने हेतु अनाज पैदा नहीं होता।

ਹਰਿ ਨਾਹ ਨ ਮਿਲੀਐ ਸਾਜਨੈ ਕਤ ਪਾਈਐ ਬਿਸਰਾਮ ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
यदि हम प्रभु-पति अपने मित्र से न मिलें तो हम किस तरह विश्राम पा सकते हैं ?

ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਹਰਿ ਕੰਤੁ ਨ ਪ੍ਰਗਟਈ ਭਠਿ ਨਗਰ ਸੇ ਗ੍ਰਾਮ ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
वह घर, गांव एवं नगर जहाँ पर हरि प्रभु प्रत्यक्ष नहीं होता, अग्निकुण्ड के तुल्य है।

ਸਭ ਸੀਗਾਰ ਤੰਬੋਲ ਰਸ ਸਣੁ ਦੇਹੀ ਸਭ ਖਾਮ ॥
सभ सीगार त्मबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
समूह हार-श्रृंगार, पान एवं रस सहित शरीर के सभी अंग व्यर्थ हैं।

ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਕੰਤ ਵਿਹੂਣੀਆ ਮੀਤ ਸਜਣ ਸਭਿ ਜਾਮ ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
प्रभु-परमेश्वर के बिना सभी मित्र एवं सखा यमदूत के तुल्य हैं।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀਆ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਜੈ ਨਾਮੁ ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
नानक की विनती है कि हे प्रभु ! अपनी कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए।

ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੁਆਮੀ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਜਿਸ ਕਾ ਨਿਹਚਲ ਧਾਮ ॥੧॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥
हे सतिगुरु ! मुझे मेरे स्वामी प्रभु से मिला दो, जिसका धाम (वैकुण्ठ) सदैव अटल है॥ १॥

ਚੇਤਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਰਾਧੀਐ ਹੋਵੈ ਅਨੰਦੁ ਘਣਾ ॥
चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
यदि चैत्र के महीने में गोविन्द का सिमरन किया जाए तो बड़ा आनन्द प्राप्त होता है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਭਣਾ ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
संतजनों से मिलकर जिव्हा से नाम का जाप करने से हरि-प्रभु पाया जाता है।

ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਆਏ ਤਿਸਹਿ ਗਣਾ ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
जिन्होंने हरि-प्रभु को प्राप्त कर लिया है, उनका ही जगत् में जन्म लेना सफल है।

ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਜੀਵਣਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਜਣਾ ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
प्रभु को एक क्षण भर के लिए भी स्मरण न करने से मनुष्य के तमाम जन्म को ही व्यर्थ गया समझो।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਰਵਿਆ ਵਿਚਿ ਵਣਾ ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
परमेश्वर जल, थल, एवं गगन में सर्वत्र विद्यमान है और वनों में भी मौजूद है।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਕਿਤੜਾ ਦੁਖੁ ਗਣਾ ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
यदि ऐसा प्रभु मुझे स्मरण न हो तो कैसे बताऊं कि मुझे कितना दुःख होता है ?

ਜਿਨੀ ਰਾਵਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਤਿੰਨਾ ਭਾਗੁ ਮਣਾ ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
जिन्होंने उस पारब्रह्म-प्रभु को स्मरण किया है, वे बड़े भाग्यवान हैं।

ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕੰਉ ਮਨੁ ਲੋਚਦਾ ਨਾਨਕ ਪਿਆਸ ਮਨਾ ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
हे नानक ! मेरा मन हरि के दर्शन करने हेतु अभिलाषी है और मेरे मन में उसके दर्शनों की तीव्र लालसा बनी हुई है।

ਚੇਤਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਤਿਸ ਕੈ ਪਾਇ ਲਗਾ ॥੨॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥
मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ जो मुझे चैत्र के महीने में उस ईश्वर से मिला दे॥ २॥

ਵੈਸਾਖਿ ਧੀਰਨਿ ਕਿਉ ਵਾਢੀਆ ਜਿਨਾ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਛੋਹੁ ॥
वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
वैसाख के महीने में वह जीव-स्त्रियां कैसे धैर्य करें, जिनका अपने प्रियतम से विरहा हुआ है।

ਹਰਿ ਸਾਜਨੁ ਪੁਰਖੁ ਵਿਸਾਰਿ ਕੈ ਲਗੀ ਮਾਇਆ ਧੋਹੁ ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
अपने हरि-प्रभु साजन को भुलाकर वह झूठी माया के मोह में फँस गई हैं।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਨ ਸੰਗਿ ਧਨਾ ਹਰਿ ਅਵਿਨਾਸੀ ਓਹੁ ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
मरणोपरांत पुत्र, पत्नी तथा धन-दौलत प्राणी के साथ नहीं जाते अपितु अविनाशी प्रभु ही उसका रक्षक बनता है।

ਪਲਚਿ ਪਲਚਿ ਸਗਲੀ ਮੁਈ ਝੂਠੈ ਧੰਧੈ ਮੋਹੁ ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
सारी दुनिया झूठे कर्मों की लगन में मोह बद्ध उलझ-उलझकर नष्ट हो गई है।

ਇਕਸੁ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਅਗੈ ਲਈਅਹਿ ਖੋਹਿ ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
आगे परलोक में एक ईश्वर के नाम के अलावा मनुष्य के किए हुए सभी कर्म-धर्म छीन लिए जाते हैं। अर्थात् उन्हें कोई फल नहीं मिलता।

ਦਯੁ ਵਿਸਾਰਿ ਵਿਗੁਚਣਾ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥

दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥

दयालु परमात्मा को विस्मृत करके मनुष्य तबाह हो जाता है। हरि-प्रभु के अलावा अन्य कोई भी जीव का रक्षक नहीं बनता।

ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਰਣੀ ਜੋ ਲਗੇ ਤਿਨ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥

प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥

जो प्रियतम के चरणों में लग जाते हैं, वे बड़े पवित्र हैं और उनकी बहुत शोभा होती है।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਹੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
नानक की प्रभु के समक्ष प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मुझे आकर मिलो एवं मुझे तेरे दर्शन प्राप्त होते रहें।

ਵੈਸਾਖੁ ਸੁਹਾਵਾ ਤਾਂ ਲਗੈ ਜਾ ਸੰਤੁ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥੩॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥
वैसाख का महीना मुझे तभी सुन्दर लगता है यदि कोई हरि का संत मिल जाए॥ ३॥

ਹਰਿ ਜੇਠਿ ਜੁੜੰਦਾ ਲੋੜੀਐ ਜਿਸੁ ਅਗੈ ਸਭਿ ਨਿਵੰਨਿ ॥
हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
ज्येष्ठ के महीने में सिमरन द्वारा उस भगवान से जुड़ने की आवश्यकता है जिसके समक्ष जगत् के सभी जीव अपना सिर झुकाते हैं।

ਹਰਿ ਸਜਣ ਦਾਵਣਿ ਲਗਿਆ ਕਿਸੈ ਨ ਦੇਈ ਬੰਨਿ ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
जो व्यक्ति हरि-मित्र के दामन से जुड़ा हुआ है अर्थात् शरण में है, उसे यम इत्यादि कोई भी बंदी नहीं बना सकता।

ਮਾਣਕ ਮੋਤੀ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਉਨ ਲਗੈ ਨਾਹੀ ਸੰਨਿ ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
प्रभु का नाम ऐसे माणिक-मोतियों के तुल्य है, जिसे कोई भी सेंध लगाकर चुरा नहीं सकता।

ਰੰਗ ਸਭੇ ਨਾਰਾਇਣੈ ਜੇਤੇ ਮਨਿ ਭਾਵੰਨਿ ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जितने भी रंग-रूप मन को प्रिय लगते हैं, वे सभी रंग नारायण के ही हैं।

ਜੋ ਹਰਿ ਲੋੜੇ ਸੋ ਕਰੇ ਸੋਈ ਜੀਅ ਕਰੰਨਿ ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
भगवान वही कुछ करता है, जो उसकी इच्छा होती है और जगत् के सभी जीव भी वही कुछ करते हैं।

ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਤੇ ਆਪਣੇ ਸੇਈ ਕਹੀਅਹਿ ਧੰਨਿ ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
जिनको प्रभु ने अपना सेवक बनाया है, लोग उन्हें ही धन्य-धन्य कहते हैं।

ਆਪਣ ਲੀਆ ਜੇ ਮਿਲੈ ਵਿਛੁੜਿ ਕਿਉ ਰੋਵੰਨਿ ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
यदि मनुष्य को भगवान उसके अपने प्रयास से मिल सकता हो तो वह उनसे जुदा होकर क्यों विलाप करें?

ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਪਰਾਪਤੇ ਨਾਨਕ ਰੰਗ ਮਾਣੰਨਿ ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हे नानक ! जिन्हें संतों की संगति मिल जाती है, वे प्रभु से मिलकर आनंद भोगते हैं।

ਹਰਿ ਜੇਠੁ ਰੰਗੀਲਾ ਤਿਸੁ ਧਣੀ ਜਿਸ ਕੈ ਭਾਗੁ ਮਥੰਨਿ ॥੪॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥
ज्येष्ठ का महीना उसके लिए ही हर्षोल्लास वाला है, जिसे जगत् का स्वामी भगवान मिल जाता है। लेकिन भगवान उसे ही मिलता है जिसके माथे पर किस्मत के शुभ लेख होते हैं ॥ ४ ॥

ਆਸਾੜੁ ਤਪੰਦਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਹਰਿ ਨਾਹੁ ਨ ਜਿੰਨਾ ਪਾਸਿ ॥
आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥
आषाढ़ का महीना, उसे ही तपता हुआ लगता है जिसके पास हरि-प्रभु नहीं है।

ਜਗਜੀਵਨ ਪੁਰਖੁ ਤਿਆਗਿ ਕੈ ਮਾਣਸ ਸੰਦੀ ਆਸ ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
जो जीव-स्त्री जगजीवन प्रभु को त्याग कर मनुष्य पर उम्मीद और विश्वास रखती है,

ਦੁਯੈ ਭਾਇ ਵਿਗੁਚੀਐ ਗਲਿ ਪਈਸੁ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸ ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
वह मोह-माया में फँसकर नष्ट हो जाती है और मरणोपरांत उसके गले में यम की फाँसी डाली जाती है।

ਜੇਹਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਮਥੈ ਜੋ ਲਿਖਿਆਸੁ ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
प्राणी जिस तरह बोएगा वैसे ही काटेगा अर्थात् मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल प्राप्त होगा, जो कुछ मस्तक या भाग्य में विद्यमान है।

ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ਪਛੁਤਾਣੀ ਉਠਿ ਚਲੀ ਗਈ ਨਿਰਾਸ ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जब जीव-स्त्री की जीवन-रात्रि व्यतीत हो जाती है तो वह पश्चाताप करती है और निराश होकर संसार त्याग देती है।

ਜਿਨ ਕੌ ਸਾਧੂ ਭੇਟੀਐ ਸੋ ਦਰਗਹ ਹੋਇ ਖਲਾਸੁ ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥
जो संतों से मिलते हैं, वह प्रभु के दरबार में बन्धनमुक्त हुए शोभायमान होते हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਹੋਇ ਪਿਆਸ ॥
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥
हे प्रभु ! मुझ पर कृपा कीजिए जिससे तेरे दर्शनों की अभिलाषा हो।

ਪ੍ਰਭ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई भी नहीं।

ਆਸਾੜੁ ਸੁਹੰਦਾ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸ ॥੫॥
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥
आषाढ़ का महीना उसे ही सुहावना लगता है, जिसके हृदय में ईश्वर के चरणों का निवास हो जाता है।॥ ५ ॥

ਸਾਵਣਿ ਸਰਸੀ ਕਾਮਣੀ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਪਿਆਰੁ ॥
सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
श्रावण के महीने में वहीं जीव-स्त्री वनस्पति की तरह प्रफुल्लित हो जाती है, जिसका प्रभु के चरण कवलों से प्रेम है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਸਚ ਰੰਗਿ ਇਕੋ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
उसका तन-मन सद्पुरुष के प्रेम से मग्न हो जाता है और सत्य-परमेश्वर का नाम ही उसका एकमात्र सहारा बन जाता है।

ਬਿਖਿਆ ਰੰਗ ਕੂੜਾਵਿਆ ਦਿਸਨਿ ਸਭੇ ਛਾਰੁ ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
विष-रूपी माया का मोह झूठा है। सब कुछ जो दृष्टिमान होता है, वह क्षणभंगुर है।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬੂੰਦ ਸੁਹਾਵਣੀ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਪੀਵਣਹਾਰੁ ॥
हरि अम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
हरि-नाम रुपी अमृत की बूंद बहुत सुन्दर है। संतों-गुरुओं से मिलकर मनुष्य उनका पान करता है।

ਵਣੁ ਤਿਣੁ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਮਉਲਿਆ ਸੰਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖ ਅਪਾਰੁ ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ सम्रथ पुरख अपारु ॥
प्रभु के मिलन से सारी वनस्पति वन एवं तृण प्रफुल्लित हो गए हैं। प्रभु बेअंत एवं सब कुछ करने में समर्थ है।

ਹਰਿ ਮਿਲਣੈ ਨੋ ਮਨੁ ਲੋਚਦਾ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੁ ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
ईश्वर के मिलन हेतु मेरा हृदय बहुत व्याकुल है। परन्तु प्रभु अपनी कृपा से ही जीव को अपने साथ मिलाता है।

ਜਿਨੀ ਸਖੀਏ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਹੰਉ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
जो सखियाँ ईश्वर को प्राप्त हुई हैं, उन पर मैं सदैव कुर्बान हूँ।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜੀ ਮਇਆ ਕਰਿ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
नानक जी का कथन है कि हे प्रभु! मुझ पर दया करो। प्रभु अपने नाम द्वारा जीव को संवारने वाला है।

ਸਾਵਣੁ ਤਿਨਾ ਸੁਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਉਰਿ ਹਾਰੁ ॥੬॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥
श्रावण का महीना उन सुहागिनों के लिए ही सुन्दर है, जिन्होंने राम नाम को अपने हृदय का हार बना लिया है॥ ६॥

ਭਾਦੁਇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀਆ ਦੂਜੈ ਲਗਾ ਹੇਤੁ ॥
भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
भाद्रों के महीने में जो जीवात्मा पति-प्रभु को छोड़कर द्वैतभाव से प्रीति लगाती है, वह भ्रम में भटकी हुई है।

ਲਖ ਸੀਗਾਰ ਬਣਾਇਆ ਕਾਰਜਿ ਨਾਹੀ ਕੇਤੁ ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
चाहे वह लाखों ही हार-श्रृंगार कर ले परन्तु वह किसी भी लाभ के नहीं।

ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਦੇਹ ਬਿਨਸਸੀ ਤਿਤੁ ਵੇਲੈ ਕਹਸਨਿ ਪ੍ਰੇਤੁ ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
जिस दिन शरीर नाश होता है, उस समय लोग उसे प्रेत कहते हैं।

ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਨਿ ਦੂਤ ਜਮ ਕਿਸੈ ਨ ਦੇਨੀ ਭੇਤੁ ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
यमदूत आत्मा को पकड़ कर चल देते हैं और किसी को भी भेद नहीं बताते।

ਛਡਿ ਖੜੋਤੇ ਖਿਨੈ ਮਾਹਿ ਜਿਨ ਸਿਉ ਲਗਾ ਹੇਤੁ ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
जिनके साथ मनुष्य का बड़ा स्नेह होता है, एक क्षण में उस को त्याग कर दूर चले जाते हैं।

ਹਥ ਮਰੋੜੈ ਤਨੁ ਕਪੇ ਸਿਆਹਹੁ ਹੋਆ ਸੇਤੁ ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जब मनुष्य की मृत्यु आती है तो वह अपने हाथ मरोड़ता है। यमदूतों को देख कर उसका शरीर कांपता है और प्राण निकलने के पश्चात् उसका शरीर काले से सफेद हो जाता है।

ਜੇਹਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਕਰਮਾ ਸੰਦੜਾ ਖੇਤੁ ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
मनुष्य जैसा बोता है वैसा ही काटता है अर्थात् जैसे कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਚਰਣ ਬੋਹਿਥ ਪ੍ਰਭ ਦੇਤੁ ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति प्रभु की शरण में आता है, प्रभु उसे भवसागर से पार होने के लिए चरण रूपी जहाज दे देता है अर्थात् अपने चरणों की सेवा प्रदान करता है।

ਸੇ ਭਾਦੁਇ ਨਰਕਿ ਨ ਪਾਈਅਹਿ ਗੁਰੁ ਰਖਣ ਵਾਲਾ ਹੇਤੁ ॥੭॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥
भाद्रों के महीने में जो व्यक्ति रक्षक गुरु से स्नेह करते हैं, वे नरककुण्ड में नहीं पड़ते॥ ७॥

ਅਸੁਨਿ ਪ੍ਰੇਮ ਉਮਾਹੜਾ ਕਿਉ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਜਾਇ ॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥

आश्विन के महीने में मेरे मन में प्रभु से प्रेम करने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ है। मैं कैसे जाकर ईश्वर से मिलू ?

ਮਨਿ ਤਨਿ ਪਿਆਸ ਦਰਸਨ ਘਣੀ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮਾਇ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
मेरे मन एवं तन में ईश्वर के दर्शनों की अधिकतर तृष्णा है। हे मेरी जननी ! कोई संत आकर मुझे उससे मिला दे।

ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਪ੍ਰੇਮ ਕੇ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਾ ਪਾਇ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
मैं संतों के चरणों में लगा हूँ क्योंकि संत प्रभु से प्रेम करने वालों की सहायता करते हैं।

ਵਿਣੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
परमेश्वर के बिना सुख की उपलब्धि हेतु अन्य कोई स्थान नहीं है।

ਜਿੰਨ੍ਹ੍ਹੀ ਚਾਖਿਆ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਸੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਇ ॥
जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
जिन्होंने प्रभु प्रेम का अमृतपान किया है, वह तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं।

ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਬਿਨਤੀ ਕਰਹਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਲੜਿ ਲਾਇ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
अपना अहंकार त्याग कर वह प्रार्थना करते हैं, 'हे ईश्वर ! हमें अपने दामन के साथ लगा लो।'

ਜੋ ਹਰਿ ਕੰਤਿ ਮਿਲਾਈਆ ਸਿ ਵਿਛੁੜਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਇ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
जिन जीव-स्त्रियों को प्रभु पति ने अपने साथ मिला लिया है, वह कदापि जुदा होकर अन्य कहीं भी नहीं जाती।

ਪ੍ਰਭ ਵਿਣੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਇ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
हे नानक ! भगवान की शरण लो, क्योंकि उस प्रभु के अलावा अन्य कोई भी शरण देने में समर्थ नहीं है।

ਅਸੂ ਸੁਖੀ ਵਸੰਦੀਆ ਜਿਨਾ ਮਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੮॥

असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥

आश्विन के महीने में जिन पर परमेश्वर की दया होती है, वह बहुत सुखपूर्वक रहती हैं।॥ ८ ॥

ਕਤਿਕਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਦੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਜੋਗੁ ॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥

कार्तिक माह में हे प्राणी ! पूर्व जन्मों में किए शुभ-अशुभ कर्मों के फल भोगने ही पड़ते हैं। अत: किसी अन्य पर दोष लगाना न्यायसंगत नहीं।

ਪਰਮੇਸਰ ਤੇ ਭੁਲਿਆਂ ਵਿਆਪਨਿ ਸਭੇ ਰੋਗ ॥

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥

पारब्रह्म-प्रभु को विस्मृत करके मनुष्य को समस्त रोग लग जाते हैं।

ਵੇਮੁਖ ਹੋਏ ਰਾਮ ਤੇ ਲਗਨਿ ਜਨਮ ਵਿਜੋਗ ॥

वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥

जो व्यक्ति राम से विमुख हो जाते हैं, वे जन्म-जन्म के लिए जुदा हो जाते हैं।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਉੜੇ ਹੋਇ ਗਏ ਜਿਤੜੇ ਮਾਇਆ ਭੋਗ ॥

खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥

जितने भी भोगने वाले पदार्थ हैं, वह एक क्षण में ही उसके लिए कड़वे हो जाते हैं।

ਵਿਚੁ ਨ ਕੋਈ ਕਰਿ ਸਕੈ ਕਿਸ ਥੈ ਰੋਵਹਿ ਰੋਜ ॥

विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥

फिर अपने रोज के दुःख किसके समक्ष रोएँ ? जुदाई को दूर करने के लिए कोई भी मध्यस्थ नहीं बनता।

ਕੀਤਾ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਵਈ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰ�ि ਸੰਜੋਗ ॥

कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥

मनुष्य के करने से कुछ भी नहीं हो सकता, यदि प्रारम्भ से ही मनुष्य की किस्मत में ऐसा संयोग लिखा हुआ था।

ਵਡਭਾਗੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲੈ ਤਾਂ ਉਤਰਹਿ ਸਭਿ ਬਿਓਗ ॥

वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥

सौभाग्य से मेरा प्रभु मिल जाता है तो जुदाई के समूह दुख दूर हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਬੰਦੀ ਮੋਚ ॥
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! तू जीवों को माया के बंधनों से मुक्त करने वाला है इसलिए नानक को भी बंधनों से मुक्त कर दो।

ਕਤਿਕ ਹੋਵੈ ਸਾਧਸੰਗੁ ਬਿਨਸਹਿ ਸਭੇ ਸੋਚ ॥੯॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥
यदि कार्तिक के महीने में संतों की संगति हो जाए तो समस्त चिंताएँ मिट जाती हैं ॥९॥

ਮੰਘਿਰਿ ਮਾਹਿ ਸੋਹੰਦੀਆ ਹਰਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਬੈਠੜੀਆਹ ॥
मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
मार्गशीर्ष महीने में जीव-स्त्रियाँ भगवान के साथ बैठी भजन करती हुई बहुत सुन्दर लगती हैं।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਿ ਸਾਹਿਬਿ ਮੇਲੜੀਆਹ ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
उनकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती, जिनको ईश्वर ने अपने साथ मिला लिया है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਮਉਲਿਆ ਰਾਮ ਸਿਉ ਸੰਗਿ ਸਾਧ ਸਹੇਲੜੀਆਹ ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
अपनी सत्संगी सहेलियों के साथ सत्संग में मिलकर राम का सिमरन करने से मेरा मन एवं तन प्रफुल्लित हो गया है।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਤੇ ਬਾਹਰੀ ਸੇ ਰਹਨਿ ਇਕੇਲੜੀਆਹ ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
जो जीव-स्त्रियाँ संतजनों की संगति से वंचित रहती हैं, वे पति-प्रभु से जुदा होने के कारण अकेली रहती हैं।

ਤਿਨ ਦੁਖੁ ਨ ਕਬਹੂ ਉਤਰੈ ਸੇ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ ਪੜੀਆਹ ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
उनका पति-प्रभु से जुदाई का दुःख कभी दूर नहीं होता और वह यमदूत के पंजे में फंस जाती हैं।

ਜਿਨੀ ਰਾਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਸੇ ਦਿਸਨਿ ਨਿਤ ਖੜੀਆਹ ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
जिन्होंने अपने ईश्वर के साथ रमण किया है, वह उसकी सेवा में सदैव खड़ी दिखती हैं।

ਰਤਨ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ਹਰਿ ਕੰਠਿ ਤਿਨਾ ਜੜੀਆਹ ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
उनका कण्ठ प्रभु-नाम रुपी रत्न-जवाहर, माणिकों तथा हीरों से जड़ित हुआ है।

ਨਾਨਕ ਬਾਂਛੈ ਧੂੜਿ ਤਿਨ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣੀ ਦਰਿ ਪੜੀਆਹ ॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
हे नानक ! वह उनके चरणों की धूलि का अभिलाषी है, जो ईश्वर के दरबार पर उसकी शरण में पड़े हैं।

ਮੰਘਿਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਰਾਧਣਾ ਬਹੁੜਿ ਨ ਜਨਮੜੀਆਹ ॥੧੦॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥
जो लोग मार्गशीर्ष महीने में ईश्वर की आराधना करते हैं, वह मुड़ कर जीवन-मृत्यु के बंधन में नहीं पड़ते और मुक्त हो जाते हैं। ॥१० ॥

ਪੋਖਿ ਤੁਖਾਰੁ ਨ ਵਿਆਪਈ ਕੰਠਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਨਾਹੁ ॥
पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
पोष के महीने में हरि-प्रभु जिस जीव-स्त्री को उसके गले से लगकर मिलता है, उसे शीत नहीं लगती।

ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਚਰਨਾਰਬਿੰਦ ਦਰਸਨਿ ਲਗੜਾ ਸਾਹੁ ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
प्रभु के चरण-कमलों का प्रेम उसके मन को बांधकर रखता है और उसकी सुरति मालिक-प्रभु के दर्शनों में लगी रहती है।

ਓਟ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਸੇਵਾ ਸੁਆਮੀ ਲਾਹੁ ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
वह गोविन्द गोपाल का सहारा लेती हैं और अपने स्वामी की सेवा करके नाम रूपी लाभ प्राप्त करती है।

ਬਿਖਿਆ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਗੁਣ ਗਾਹੁ ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
विष रूपी माया उसे प्रभावित नहीं कर सकती और वह संतों से मिलकर भगवान की महिमा गायन करती रहती है।

ਜਹ ਤੇ ਉਪਜੀ ਤਹ ਮਿਲੀ ਸਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਮਾਹੁ ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
वह जिस प्रभु से उत्पन्न हुई है, उसे मिलकर उसके प्रेम में लीन रहती है।

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਵਿਛੁੜੀਆਹੁ ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
पारब्रह्म प्रभु ने उसका हाथ पकड़ लिया है, वह पुनः जुदा नहीं होती।

ਬਾਰਿ ਜਾਉ ਲਖ ਬੇਰੀਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਅਗਮ ਅਗਾਹੁ ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
मैं लाख बार अपने अगम्य एवं अगोचर साजन हरि पर कुर्बान जाता हूँ।

ਸਰਮ ਪਈ ਨਾਰਾਇਣੈ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਪਈਆਹੁ ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्रियाँ नारायण के द्वार पर नतमस्तक हो गई हैं, वह उनकी लाज-प्रतिष्ठा रखता है।

ਪੋਖੁ ਸੋਹੰਦਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੧੧॥
पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥
पोष महीना उसके लिए सुन्दर एवं सर्वसुख प्रदान करने वाला है, जिसको बेपरवाह परमेश्वर क्षमा कर देता है॥ ११॥

ਮਾਘਿ ਮਜਨੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂਆ ਧੂੜੀ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ॥
माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
माघ के महीने में साधुओं की चरणरज में स्नान करने को तीर्थ स्थलों के स्नान तुल्य समझो।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸੁਣਿ ਸਭਨਾ ਨੋ ਕਰਿ ਦਾਨੁ ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
भगवान के नाम का ध्यान करो एवं उसे सुनो तथा दूसरों को भी नाम का दान दो।

ਜਨਮ ਕਰਮ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਮਨ ਤੇ ਜਾਇ ਗੁਮਾਨੁ ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
नाम-सिमरन से जन्म-जन्मान्तरों की दुष्कर्मों की मलिनता दूर हो जाती है और मन का अहंकार दूर हो जाता है।

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨ ਮੋਹੀਐ ਬਿਨਸੈ ਲੋਭੁ ਸੁਆਨੁ ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
इस तरह काम-क्रोध मोहित नहीं करते और लालच का कूकर (कुत्ता) नाश हो जाता है।

ਸਚੈ ਮਾਰਗਿ ਚਲਦਿਆ ਉਸਤਤਿ ਕਰੇ ਜਹਾਨੁ ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
संसार उनकी महिमा करता है जो सद्मार्ग पर चलते हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਸਗਲ ਪੁੰਨ ਜੀਅ ਦਇਆ ਪਰਵਾਨੁ ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
अठसठ तीर्थ स्थानों पर स्नान करने एवं समस्त दान-पुण्य करने से प्राणियों पर दया करना अधिकतर स्वीकार्य है।

ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਵੈ ਦਇਆ ਕਰਿ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिस पर दया करके ईश्वर यह गुण प्रदान करता है वह बुद्धिमान पुरुष है।

ਜਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
नानक उन पर बलिहारी (कुर्बान) जाता है जो अपने ईश्वर से मिल गए हैं।

ਮਾਘਿ ਸੁਚੇ ਸੇ ਕਾਂਢੀਅਹਿ ਜਿਨ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥੧੨॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥
माघ महीने में वहीं पवित्र कहे जाते हैं जिन पर पूर्ण गुरदेव जी मेहरबान हैं।॥ १२॥

ਫਲਗੁਣਿ ਅਨੰਦ ਉਪਾਰਜਨਾ ਹਰਿ ਸਜਣ ਪ੍ਰਗਟੇ ਆਇ ॥
फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
फाल्गुन के महीने में केवल वही आनंद प्राप्त करते हैं, जिनके हृदय में साजन हरि प्रभु प्रकट हुआ है।

ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਰਾਮ ਕੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਆ ਮਿਲਾਇ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
संतजन राम से मिलन करवाने हेतु जीव की सहायता कहते हैं। प्रभु ने कृपा करके संतों से मिला दिया है।

ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੁਣਿ ਦੁਖਾ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
उसकी हृदय रूपी शैय्या बहुत सुन्दर है, अब सर्व सुख प्राप्त हुए हैं और दुखों के लिए अब कोई स्थान नहीं।

ਇਛ ਪੁਨੀ ਵਡਭਾਗਣੀ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
भाग्यशाली जीव-स्त्री की इच्छा पूरी हो गई है, उसे हरि-प्रभु वर के रूप में मिल गया है।

ਮਿਲਿ ਸਹੀਆ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹੀ ਗੀਤ ਗੋਵਿੰਦ ਅਲਾਇ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥
वह अपनी सत्संगी सखियों सहित मंगल गीत गायन करती है और वह गोविन्द का ही भजन करती रहती है।

ਹਰਿ ਜੇਹਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦਿਸਈ ਕੋਈ ਦੂਜਾ ਲਵੈ ਨ ਲਾਇ ॥
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हरि-प्रभु समान उसे अन्य कोई दिखाई नहीं देता। उस प्रभु के समान अन्य कोई नहीं है।

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰਿਓਨੁ ਨਿਹਚਲ ਦਿਤੀਅਨੁ ਜਾਇ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥
प्रभु ने उसका लोक-परलोक संवार दिया है और उसे अटल स्थान दे दिया है।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤੇ ਰਖਿਅਨੁ ਬਹੁੜਿ ਨ ਜਨਮੈ ਧਾਇ ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
प्रभु ने उसे भवसागर से बचा लिया है और वह पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं आएगी।

ਜਿਹਵਾ ਏਕ ਅਨੇਕ ਗੁਣ ਤਰੇ ਨਾਨਕ ਚਰਣੀ ਪਾਇ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
हे नानक ! मनुष्य की रसना तो एक है परन्तु प्रभु के गुण असीम हैं। मनुष्य उसके चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है।

ਫਲਗੁਣਿ ਨਿਤ ਸਲਾਹੀਐ ਜਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੧੩॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥
हे मनुष्य ! फाल्गुन के महीने में हमें सदैव उस प्रभु की महिमा-स्तुति करनी चाहिए, जिसे तिल मात्र भी अपनी महिमा करवाने की लालसा नहीं ॥ १३ ॥

ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕੇ ਕਾਜ ਸਰੇ ॥
जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
जिन-जिन प्राणियों ने भगवान का नाम-सिमरन किया है, उनके समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं।

ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿਆ ਦਰਗਹ ਸਚਿ ਖਰੇ ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
जो परमेश्वर स्वरूप पूर्ण गुरु का चिन्तन करते हैं, वह हरि के दरबार में सच्चे एवं शुद्ध सिद्ध हुए हैं।

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਨਿਧਿ ਚਰਣ ਹਰਿ ਭਉਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਤਰੇ ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
ईश्वर के चरण सर्व-सुखों का भण्डार हैं। प्रभु द्वारा मनुष्य भयानक एवं विषम संसार-सागर से पार हो जाता है।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਤਿਨ ਪਾਈਆ ਬਿਖਿਆ ਨਾਹਿ ਜਰੇ ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
वे प्रेमा-भक्ति को प्राप्त होते हैं और विषय-वासनाओं में नहीं जलते।

ਕੂੜ ਗਏ ਦੁਬਿਧਾ ਨਸੀ ਪੂਰਨ ਸਚਿ ਭਰੇ ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
उनका झूठ लुप्त हो गया है और द्वैत भाव भाग गया है और वह सत्य के साथ पूर्ण तौर पर निश्चय से भरे हुए हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਦੇ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਏਕੁ ਧਰੇ ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
वह पारब्रह्म प्रभु की भरपूर सेवा करते हैं और अद्वितीय प्रभु को अपने हृदय में धारण करते हैं।

ਮਾਹ ਦਿਵਸ ਮੂਰਤ ਭਲੇ ਜਿਸ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
सारे महीने, दिवस एवं मुहूर्त उनके लिए भले हैं जिन पर प्रभु दया-दृष्टि करता है।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਰਸ ਦਾਨੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਹਰੇ ॥੧੪॥੧॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥
हे परमात्मा ! नानक तेरे दर्शनों के दान की याचना करता है। हे प्रभु ! अपनी कृपा उस पर न्यौछावर कीजिए॥ १४॥ १॥

ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ਦਿਨ ਰੈਣਿ
माझ महला ५ दिन रैणि
माझ महला ५ दिन रैणि

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੇਵੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪਣਾ ਹਰਿ ਸਿਮਰੀ ਦਿਨ ਸਭਿ ਰੈਣ ॥
सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥
हे प्रभु ! मैं अपने सतिगुरु की सेवा करके समस्त दिन-रात्रि तेरी आराधना करता रहूँ।

ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਸਰਣੀ ਪਵਾਂ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਮਿਠੜੇ ਵੈਣ ॥
आपु तिआगि सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥
अपना अहंकार त्याग कर मैं ईश्वर का आश्रय ग्रहण करूं और अपने मुख से मधुर वचन उच्चारण करूँ।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਵਿਛੁੜਿਆ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਜਣੁ ਸੈਣ ॥
जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥
हे मेरे मित्र एवं संबंधी प्रभु ! अनेक जन्मों से मैं तुझ से बिछुड़ा हुआ हूँ, मुझे अपने साथ मिला लो।

ਜੋ ਜੀਅ ਹਰਿ ਤੇ ਵਿਛੁੜੇ ਸੇ ਸੁਖਿ ਨ ਵਸਨਿ ਭੈਣ ॥
जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥
हे मेरी बहन ! जो प्राणी ईश्वर से बिछुड़े हुए हैं, वह सुख में नहीं बसते।

ਹਰਿ ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਚੈਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ਖੋਜਿ ਡਿਠੇ ਸਭਿ ਗੈਣ ॥
हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥
मैंने समस्त मण्डल खोज कर देख लिए हैं। ईश्वर पति के अलावा सुख प्राप्त नहीं होता।

ਆਪ ਕਮਾਣੈ ਵਿਛੁੜੀ ਦੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਦੇਣ ॥
आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥
क्योंकि अपने मंदे कर्मों ने ही मुझे ईश्वर से जुदा किया है। फिर मैं किस पर दोष लगाऊँ ?

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕਰਣ ਕਰੇਣ ॥
करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥
हे नाथ ! कृपा करके मेरी रक्षा करें। तेरे सिवाय अन्य कोई भी कुछ करने एवं करवाने में समर्थ नहीं।

ਹਰਿ ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਖਾਕੂ ਰੂਲਣਾ ਕਹੀਐ ਕਿਥੈ ਵੈਣ ॥
हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥
हे हरि ! तेरे अलावा धूल में मिलना है। दुखों के वचन किसके समक्ष व्यक्त करूँ ?

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀਆ ਹਰਿ ਸੁਰਜਨੁ ਦੇਖਾ ਨੈਣ ॥੧॥
नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥१॥
नानक यही प्रार्थना करता है, अपने नेत्रों से मैं अपने परमात्मा के ही दर्शन करूं ॥ १॥

ਜੀਅ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਸੋ ਸੁਣੇ ਹਰਿ ਸੰਮ੍ਰਿਥ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥
जीअ की बिरथा सो सुणे हरि सम्रिथ पुरखु अपारु ॥
जो सर्वशक्तिमान एवं अनन्त हरि है, वही प्राणी की पीड़ा को सुनता है।

ਮਰਣਿ ਜੀਵਣਿ ਆਰਾਧਣਾ ਸਭਨਾ ਕਾ ਆਧਾਰੁ ॥
मरणि जीवणि आराधणा सभना का आधारु ॥
मृत्यु एवं जीवन में उसकी ही आराधना करनी चाहिए, जो सबका आधार है।

ਸਸੁਰੈ ਪੇਈਐ ਤਿਸੁ ਕੰਤ ਕੀ ਵਡਾ ਜਿਸੁ ਪਰਵਾਰੁ ॥
ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥
लोक-परलोक में जीव-स्त्री उस प्रभु की है, जिसका बड़ा परिवार है।

ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧ ਕਿਛੁ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥
प्रभु सर्वोच्च एवं अगम्य है। उसका ज्ञान अथाह है और उसके आर-पार का कोई अन्त नहीं।

ਸੇਵਾ ਸਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵਸੀ ਸੰਤਾ ਕੀ ਹੋਇ ਛਾਰੁ ॥
सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥
उसे वही सेवा भली लगती है जो सन्तों की चरण धूलि बनकर की जाती है।

ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਦੈਆਲ ਦੇਵ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣਹਾਰੁ ॥
दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥
वह परमात्मा दीनानाथ एवं दयालु है और पापियों का कल्याण करने वाला है।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਰਖਦਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥
सृष्टि के आदि-जुगादि काल से ही सृजनहार का सत्य नाम भक्तों की रक्षा करता रहा है।

ਕੀਮਤਿ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣਈ ਕੋ ਨਾਹੀ ਤੋਲਣਹਾਰੁ ॥
कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥
स्वामी के मूल्य को कोई भी नहीं जानता और न ही कोई इसका वजन करने वाला है।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਵਸਿ ਰਹੇ ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਸੁਮਾਰੁ ॥
मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥
हे नानक ! जो परमात्मा गणना से परे है, वह मन एवं तन में निवास कर रहा है।

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਜਿ ਪ੍ਰਭ ਕੰਉ ਸੇਵਦੇ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੨॥
दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥२॥
मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूँ जो परमात्मा की दिन-रात सेवा करते हैं।॥ २॥

ਸੰਤ ਅਰਾਧਨਿ ਸਦ ਸਦਾ ਸਭਨਾ ਕਾ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥
संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥
संतजन हमेशा ही भगवान की आराधना करते रहते हैं,

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿਆ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦਿਤੀਨੁ ਜਿੰਦੁ ॥
जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥
जो समस्त जीवों पर क्षमावान है और जिसने आत्मा एवं तन की सृजना की है और दया करके प्राण प्रदान किए हैं।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਆਰਾਧੀਐ ਜਪੀਐ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤੁ ॥
गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥
हे प्राणी ! गुरु के शब्द द्वारा उस प्रभु की आराधना करनी चाहिए और निर्मल मंत्र रूपी नाम को स्मरण करना चाहिए।

ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈਐ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਬੇਅੰਤੁ ॥
कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥
उस अनन्त परमेश्वर का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਨਰਾਇਣੋ ਸੋ ਕਹੀਐ ਭਗਵੰਤੁ ॥
जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥
उस व्यक्ति को ही भाग्यवान कहा जाता है, जिसके हृदय में नारायण निवास करता है।

ਜੀਅ ਕੀ ਲੋਚਾ ਪੂਰੀਐ ਮਿਲੈ ਸੁਆਮੀ ਕੰਤੁ ॥
जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥
प्रभु-पति को मिलने से हृदय की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

ਨਾਨਕੁ ਜੀਵੈ ਜਪਿ ਹਰੀ ਦੋਖ ਸਭੇ ਹੀ ਹੰਤੁ ॥
नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥
नानक ईश्वर की स्तुति करने से जीता है और उसके समस्त पाप नष्ट हो गए हैं।

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਜਿਸੁ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੋ ਹਰਿਆ ਹੋਵੈ ਜੰਤੁ ॥੩॥
दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥३॥
दिन-रात जो ईश्वर को विस्मृत नहीं करता वह प्राणी कृतार्थ हो जाता है॥ ३॥

ਸਰਬ ਕਲਾ ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਣੋ ਮੰਞੁ ਨਿਮਾਣੀ ਥਾਉ ॥
सरब कला प्रभ पूरणो मंजु निमाणी थाउ ॥
सर्वकला सम्पूर्ण परमेश्वर परिपूर्ण है। मुझ निराश्रित का तू ही आश्रय है।

ਹਰਿ ਓਟ ਗਹੀ ਮਨ ਅੰਦਰੇ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਾਂ ਨਾਉ ॥
हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवां नाउ ॥
अपने हृदय में मैंने प्रभु का आश्रय लिया हुआ है और मैं नाम स्मरण एवं चिन्तन करने से जीता हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੀ ਜਨ ਧੂੜੀ ਸੰਗਿ ਸਮਾਉ ॥
करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥
हे ईश्वर ! अपनी ऐसी कृपा कीजिए जो तेरे दासों की चरणधूलि के साथ मैं मिल जाऊँ।

ਜਿਉ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਉ ਰਹਾ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਪੈਨਾ ਖਾਉ ॥
जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥
हे नाथ ! जिस तरह तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। जो तुम मुझे देते हो, मैं वही पहनता और खाता हूँ।

ਉਦਮੁ ਸੋਈ ਕਰਾਇ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥
हे प्रभु ! मुझे वह उपाय प्रदान करो जिससे मैं संतों से मिलकर तेरा यशोगान करूँ।

ਦੂਜੀ ਜਾਇ ਨ ਸੁਝਈ ਕਿਥੈ ਕੂਕਣ ਜਾਉ ॥
दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥
तेरे सिवाय में किसी अन्य का ख्याल नहीं कर सकता। फिर मैं विनती करने के लिए कहाँ जाऊँ ?

ਅਗਿਆਨ ਬਿਨਾਸਨ ਤਮ ਹਰਣ ਊਚੇ ਅਗਮ ਅਮਾਉ ॥
अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥
हे प्रभु ! तुम अज्ञान का नाश करने वाले हो, तमोगुण के भी विनाशक, सर्वोच्च, अगम्य एवं माप से रहित हो।

ਮਨੁ ਵਿਛੁੜਿਆ ਹਰਿ ਮੇਲੀਐ ਨਾਨਕ ਏਹੁ ਸੁਆਉ ॥
मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥
हे प्रभु ! नानक का एक यही स्वार्थ है कि मुझ बिछुड़े हुए मन को अपने साथ मिला लो।

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣਾ ਤਿਤੁ ਦਿਨਿ ਹਰਿ ਪਰਸੀ ਗੁਰ ਕੇ ਪਾਉ ॥੪॥੧॥
सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥४॥१॥
हे प्रभु ! उस दिन सर्व कल्याण होगा अर्थात् मोक्ष जानूंगा, जब मैं गुरु के चरण स्पर्श करूँगा॥ ४॥ १॥

ਵਾਰ ਮਾਝ ਕੀ ਤਥਾ ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੧ ਮਲਕ ਮੁਰੀਦ ਤਥਾ ਚੰਦ੍ਰਹੜਾ ਸੋਹੀਆ ਕੀ ਧੁਨੀ ਗਾਵਣੀ ॥
वार माझ की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥
वार माझ की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਹਿਵੈ ਘਰੁ ਗੁਰੁ ਦੀਪਕੁ ਤਿਹ ਲੋਇ ॥
गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥
गुरु नाम का दाता है और गुरु ही हिम अर्थात् शांति का घर है। गुरु ही तीनों लोकों में ज्ञान का प्रकाश करने वाला दीपक है।

ਅਮਰ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਨਕਾ ਮਨਿ ਮਾਨਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥
अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥१॥
हे नानक ! नाम रूपी पदार्थ जीव को अमर करने वाला है, यदि मनुष्य का मन गुरु की शरण लेने हेतु विश्वस्त हो जाए तो सुख उपलब्ध हो जाता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਪਹਿਲੈ ਪਿਆਰਿ ਲਗਾ ਥਣ ਦੁਧਿ ॥
पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥
अपने जीवन की प्रथम अवरथा बचपन में प्राणी माता के दुग्ध से प्रेम पाता है।

ਦੂਜੈ ਮਾਇ ਬਾਪ ਕੀ ਸੁਧਿ ॥
दूजै माइ बाप की सुधि ॥
द्वितीय अवस्था में उसको अपने माता-पिता का ज्ञान होता है।

ਤੀਜੈ ਭਯਾ ਭਾਭੀ ਬੇਬ ॥
तीजै भया भाभी बेब ॥
तृतीय अवस्था में वह अपने भाई, भाभी एवं अपनी बहन को पहचानता है।

ਚਉਥੈ ਪਿਆਰਿ ਉਪੰਨੀ ਖੇਡ ॥
चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥
चौथी अवस्था में उसमें खेलने की रुचि उत्पन्न हो जाती है।

ਪੰਜਵੈ ਖਾਣ ਪੀਅਣ ਕੀ ਧਾਤੁ ॥
पंजवै खाण पीअण की धातु ॥
पंचम अवस्था में वह खाने-पीने की ओर दौड़ता है।

ਛਿਵੈ ਕਾਮੁ ਨ ਪੁਛੈ ਜਾਤਿ ॥
छिवै कामु न पुछै जाति ॥
छठी अवस्था में उसके भीतर कामवासना उत्पन्न होती है और वह कामवासना से अंधा हुआ जाति-कुजाति भी नहीं देखता।

ਸਤਵੈ ਸੰਜਿ ਕੀਆ ਘਰ ਵਾਸੁ ॥
सतवै संजि कीआ घर वासु ॥
सप्तम अवस्था में वह धन-दौलत एकत्रित करता है और अपने घर में निवास कर लेता है।

ਅਠਵੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਹੋਆ ਤਨ ਨਾਸੁ ॥
अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥
आठवीं अवस्था में उसका तन क्रोध में नष्ट हो जाता है।

ਨਾਵੈ ਧਉਲੇ ਉਭੇ ਸਾਹ ॥
नावै धउले उभे साह ॥
नौवीं अवस्था में उसके बाल-सफेद हो जाते हैं, और उसका सांस लेना कठिन हो जाता है।

ਦਸਵੈ ਦਧਾ ਹੋਆ ਸੁਆਹ ॥
दसवै दधा होआ सुआह ॥
दसवी अवस्था में उसका शरीर जल कर भस्म हो जाता है,

ਗਏ ਸਿਗੀਤ ਪੁਕਾਰੀ ਧਾਹ ॥
गए सिगीत पुकारी धाह ॥
उसके संगी साथी चिता तक उसके साथ जाते हैं और अश्रु बहाते हैं।

ਉਡਿਆ ਹੰਸੁ ਦਸਾਏ ਰਾਹ ॥
उडिआ हंसु दसाए राह ॥
राजहंस (आत्मा) उड़ जाती है और जाने का मार्ग पूछती है।

ਆਇਆ ਗਇਆ ਮੁਇਆ ਨਾਉ ॥
आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥
वह इस संसार में आया था और चला गया है और उसका नाम भी मर मिट गया है।

ਪਿਛੈ ਪਤਲਿ ਸਦਿਹੁ ਕਾਵ ॥
पिछै पतलि सदिहु काव ॥
उसके उपरांत पत्तलों पर भोजन दिया जाता है और कौए बुलाए जाते हैं अर्थात् श्राद्ध किए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੁ ਪਿਆਰੁ ॥
नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥
हे नानक ! स्वेच्छाचारी जीव का जगत् से मोह ज्ञानहीनों वाला है।

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਡੁਬਾ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥
बाझु गुरू डुबा संसारु ॥२॥
गुरु के बिना सारा जगत् ही भवसागर में डूब रहा है॥ २ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਦਸ ਬਾਲਤਣਿ ਬੀਸ ਰਵਣਿ ਤੀਸਾ ਕਾ ਸੁੰਦਰੁ ਕਹਾਵੈ ॥
दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥
मनुष्य के दस वर्ष बचपन में बीत जाते हैं। बीस वर्ष का युवक और तीस वर्ष का सुन्दर कहा जाता है।

ਚਾਲੀਸੀ ਪੁਰੁ ਹੋਇ ਪਚਾਸੀ ਪਗੁ ਖਿਸੈ ਸਠੀ ਕੇ ਬੋਢੇਪਾ ਆਵੈ ॥
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥
चालीस पर वह पूर्ण होता है। पचास वर्ष में उसके पग पीछे मुड़ जाते हैं और साठ वर्ष में वृद्धावस्था आ जाती है।

ਸਤਰਿ ਕਾ ਮਤਿਹੀਣੁ ਅਸੀਹਾਂ ਕਾ ਵਿਉਹਾਰੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥
सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥
सत्तर वर्ष में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अस्सी वर्ष की आयु में वह अपने कार्य नहीं कर सकता।

ਨਵੈ ਕਾ ਸਿਹਜਾਸਣੀ ਮੂਲਿ ਨ ਜਾਣੈ ਅਪ ਬਲੁ ॥
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥
नब्बे वर्ष में उसका आसन बिस्तर पर होता है और क्षीण होने के कारण वह बिल्कुल नहीं समझता कि शक्ति क्या है?

ਢੰਢੋਲਿਮੁ ਢੂਢਿਮੁ ਡਿਠੁ ਮੈ ਨਾਨਕ ਜਗੁ ਧੂਏ ਕਾ ਧਵਲਹਰੁ ॥੩॥
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥३॥
खोज-तलाश करके मैंने देख लिया है, हे नानक ! यह संसार धुएँ का क्षणभंगुर महल है॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਆਪਿ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਤੀ ॥
तूं करता पुरखु अगमु है आपि स्रिसटि उपाती ॥
हे कर्ता प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान एवं अगम्य है। तूने स्वयं सृष्टि की रचना की है।

ਰੰਗ ਪਰੰਗ ਉਪਾਰਜਨਾ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤੀ ॥
रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥
तूने अनेक प्रकार के रंग तथा विविध प्रकार के पक्षियों के रंग-बिरंगे पंख उपजाए हैं।

ਤੂੰ ਜਾਣਹਿ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈਐ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਤੁਮਾਤੀ ॥
तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥
तू ही जिसने यह सृष्टि-रचना की है, इस भेद को जानता है कि क्यों रचना की है। यह जगत् तेरी एक लीला है।

ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਹਿ ਉਠਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਰਿ ਜਾਤੀ ॥
इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥
कई प्राणी जन्म लेते हैं और कई संसार त्याग कर चले जाते हैं। नाम सिमरन के बिना सभी नाश हो जाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਿਆ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥
गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥
गुरमुख सदैव भगवान के प्रेम में गहरे लाल रंग की भाँति मग्न रहते हैं।

ਸੋ ਸੇਵਹੁ ਸਤਿ ਨਿਰੰਜਨੋ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤੀ ॥
सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥
उस सदैव सत्य एवं निरंजन प्रभु की सेवा करो जो हम सबका विधाता है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਵਡ ਪੁਰਖੁ ਵਡਾਤੀ ॥
तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं चतुर है और जगत् में सबसे बड़ा महापुरुष है।

ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦੇ ਮੇਰੇ ਸਚਿਆ ਬਲਿ ਬਲਿ ਹਉ ਤਿਨ ਜਾਤੀ ॥੧॥
जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥१॥
हे मेरे सत्य परमेश्वर ! मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जो एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान करते रहते हैं॥ १ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਜੀਉ ਪਾਇ ਤਨੁ ਸਾਜਿਆ ਰਖਿਆ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥
जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥
भगवान ने पंचभूतक तन की रचना करके उसमें प्राण कला प्रदान की है और इसकी रक्षा का प्रबंध किया है।

ਅਖੀ ਦੇਖੈ ਜਿਹਵਾ ਬੋਲੈ ਕੰਨੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥
अखी देखै जिहवा बोलै कंनी सुरति समाइ ॥
मनुष्य अपने नेत्रों से देखता है, और जिव्हा से बोलता है। इसके कानों में सुनने की शक्ति समाई हुई है।

ਪੈਰੀ ਚਲੈ ਹਥੀ ਕਰਣਾ ਦਿਤਾ ਪੈਨੈ ਖਾਇ ॥
पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥
वह पैरों से चलता है, हाथों से कार्य करता है और जो कुछ उसे मिलता है, उसको पहनता एवं सेवन करता है।

ਜਿਨਿ ਰਚਿ ਰਚਿਆ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣੈ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥

जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥

लेकिन बड़े दुःख की बात है कि जिस परमात्मा ने मानव की रचना की है, उसे यह जानता ही नहीं। अंधा मनुष्य ज्ञानहीन होने के कारण बुरे कर्म करता है।

ਜਾ ਭਜੈ ਤਾ ਠੀਕਰੁ ਹੋਵੈ ਘਾੜਤ ਘੜੀ ਨ ਜਾਇ ॥

जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥

जब मनुष्य का शरीर रूपी घड़ा टूटता है तो वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और इसकी बनावट पुनः नहीं की जा सकती।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਨਾਹਿ ਪਤਿ ਪਤਿ ਵਿਣੁ ਪਾਰਿ ਨ ਪਾਇ ॥੧॥

नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥१॥

हे नानक ! गुरु के बिना मान-सम्मान नहीं मिलता और इस मान-सम्मान के अलावा मनुष्य संसार से पार नहीं हो सकता ॥ १॥

ਮਃ ੨ ॥

मः २ ॥

महला २ ॥

ਦੇਂਦੇ ਥਾਵਹੁ ਦਿਤਾ ਚੰਗਾ ਮਨਮੁਖਿ ਐਸਾ ਜਾਣੀਐ ॥

देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥

मनमुख ऐसा समझता है कि देने वाले प्रभु से उसकी दी हुई वस्तु उत्तम है।

ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਚਤੁਰਾਈ ਤਾ ਕੀ ਕਿਆ ਕਰਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀਐ ॥

सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥

उसकी बुद्धिमत्ता, समझ एवं चतुरता बारे क्या कथन किया जाए ?

ਅੰਤਰਿ ਬਹਿ ਕੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਸੋ ਚਹੁ ਕੁੰਡੀ ਜਾਣੀਐ ॥

अंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥

चाहे वह अपने घर में बैठकर छिपकर दुष्कर्म करता है परन्तु फिर भी चारों दिशाओं में लोगों को इनका पता लग जाता है।

ਜੋ ਧਰਮੁ ਕਮਾਵੈ ਤਿਸੁ ਧਰਮ ਨਾਉ ਹੋਵੈ ਪਾਪਿ ਕਮਾਣੈ ਪਾਪੀ ਜਾਣੀਐ ॥
जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥
जो व्यक्ति धर्म करता है, उसका नाम धर्मात्मा हो जाता है और जो पाप करता है, वह पापी जाना जाता है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਖੇਲ ਕਰਹਿ ਸਭਿ ਕਰਤੇ ਕਿਆ ਦੂਜਾ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀਐ ॥
तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥
हे सृजनहार प्रभु ! तुम स्वयं ही समस्त लीलाएँ रचते हो। किसी अन्य की क्यों बात एवं कथा करें?

ਜਿਚਰੁ ਤੇਰੀ ਜੋਤਿ ਤਿਚਰੁ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਤੂੰ ਬੋਲਹਿ ਵਿਣੁ ਜੋਤੀ ਕੋਈ ਕਿਛੁ ਕਰਿਹੁ ਦਿਖਾ ਸਿਆਣੀਐ ॥
जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥
हे प्रभु ! जब तक तेरी ज्योति मानव शरीर में है, तब तक तुम ज्योतिमान देहि में बोलते हो। यदि कोई प्राणी दिखा दे कि उसने तेरी ज्योति के अलावा कुछ कर लिया है तो मैं उसको बुद्धिमान कहूँगा।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਹਰਿ ਇਕੋ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੀਐ ॥੨॥
नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥२॥
हे नानक ! गुरमुख को तो सर्वत्र एक चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु ही दिखाई देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥
तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥
प्रभु ! तुमने स्वयं ही जगत् को उत्पन्न किया और तुमने स्वयं ही इसको कामकाज में लगा दिया है।

ਮੋਹ ਠਗਉਲੀ ਪਾਇ ਕੈ ਤੁਧੁ ਆਪਹੁ ਜਗਤੁ ਖੁਆਇਆ ॥
मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥
सांसारिक मोह रूपी नशीली बूटी खाने के लिए देकर तुमने स्वयं ही संसार को कुमार्ग लगा दिया है।

ਤਿਸਨਾ ਅੰਦਰਿ ਅਗਨਿ ਹੈ ਨਹ ਤਿਪਤੈ ਭੁਖਾ ਤਿਹਾਇਆ ॥
तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥
प्राणी के भीतर तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। वह तृप्त नहीं होता और भूखा तथा प्यासा ही रहता है।

ਸਹਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਇਆ ਜਾਇਆ ॥

सहसा इहु संसारु है मरि जमै आइआ जाइआ ॥

यह संसार सहसा भूल-भुलैया है। यह मरता, जन्म लेता, आता और जाता रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੋਹੁ ਨ ਤੁਟਈ ਸਭਿ ਥਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥

बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइआ ॥

सतिगुरु के बिना मोह नहीं टूटता। सभी प्राणी अपने कर्म करके थक चुके हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸੁਖਿ ਰਜਾ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਇਆ ॥

गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥

हे स्वामी ! जब तुझे अच्छा लगता है, गुरु के उपदेश से प्राणी तेरे नाम की आराधना करके प्रसन्नता से संतुष्ट हो जाता है।

ਕੁਲੁ ਉਧਾਰੇ ਆਪਣਾ ਧੰਨੁ ਜਣੇਦੀ ਮਾਇਆ ॥

कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥

वह अपने वंश का कल्याण कर लेता है। ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली माता धन्य है।

ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥੨॥
सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥२॥
जिन्होंने प्रभु से अपना चित लगाया है, उनकी जगत् में बड़ी शोभा होती है एवं उनकी सुरति सुन्दर हो जाती है॥ २ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੨ ॥
सलोकु मः २ ॥
श्लोक महला २॥

ਅਖੀ ਬਾਝਹੁ ਵੇਖਣਾ ਵਿਣੁ ਕੰਨਾ ਸੁਨਣਾ ॥
अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
नेत्रों के बिना देखना, कानों के बिना सुनना,

ਪੈਰਾ ਬਾਝਹੁ ਚਲਣਾ ਵਿਣੁ ਹਥਾ ਕਰਣਾ ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
पैरों के बिना चलना, हाथों के बिना कार्य करना और

ਜੀਭੈ ਬਾਝਹੁ ਬੋਲਣਾ ਇਉ ਜੀਵਤ ਮਰਣਾ ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
जिव्हा के बिना वचन करना, इस तरह जीवित रहते हुए मृत रहना ।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਿ ਕੈ ਤਉ ਖਸਮੈ ਮਿਲਣਾ ॥੧॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥१॥
हे नानक ! प्रभु का हुक्म पहचान कर प्राणी अपने पति-परमेश्वर को मिल सकता है॥ १॥(अर्थात् नेत्रों से नहीं सुरति द्वारा ईश्वर को देखना चाहिए और स्थूल कानों से नहीं अपितु श्रद्धा से प्रभु का यशोगान श्रवण करना चाहिए और हाथों के बिना मानसिक पूजा रूपी कर्म करना चाहिए, स्थूल जिव्हा के बिना प्रेम जिव्हा से उसका यश करना चाहिए।)

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਦਿਸੈ ਸੁਣੀਐ ਜਾਣੀਐ ਸਾਉ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥

मनुष्य को अपने नेत्रों से भगवान सर्वत्र दिखाई देता भी है, वह महापुरुषों से सुनता भी है कि वह सर्वव्यापक है और उसे ज्ञान हो भी जाता है कि वह हर जगह मौजूद हैं परन्तु फिर भी वह उससे मिलकर आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। वह भगवान को मिले भी कैसे?

ਰੁਹਲਾ ਟੁੰਡਾ ਅੰਧੁਲਾ ਕਿਉ ਗਲਿ ਲਗੈ ਧਾਇ ॥

रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥

क्योंकि उसकी मिलने हेतु उसके पास पैर नहीं है, हाथ नहीं है और आँखे भी नहीं हैं। एक लंगड़ा, अपाहिज और नेत्रहीन पुरुष किस तरह दौड़कर परमात्मा को गले लगा सकता है?

ਭੈ ਕੇ ਚਰਣ ਕਰ ਭਾਵ ਕੇ ਲੋਇਣ ਸੁਰਤਿ ਕਰੇਇ ॥

भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥

तू ईश्वर के भय को अपने चरण, उसके प्रेम को अपने हाथ एवं उसके ज्ञान को अपने नेत्र बना

ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸਿਆਣੀਏ ਇਵ ਕੰਤ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੨॥

नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥२॥

नानक कहते हैं कि हे चतुर जीव-स्त्री ! प्रभु से इस तरह ही मिलन हो सकता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੂੰ ਏਕੁ ਹੈ ਤੁਧੁ ਦੂਜਾ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥

सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥

हे प्रभु! तुम सदैव एक हो, अन्य क्रीड़ा रूपी संसार तूने माया द्वारा पैदा किया है।

ਹਉਮੈ ਗਰਬੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਲੋਭੁ ਅੰਤਰਿ ਜੰਤਾ ਪਾਇਆ ॥

हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥

हे नाथ ! तूने अहंकार एवं ममत्व पैदा करके प्राणियों के भीतर लोभ इत्यादि अवगुणों को डाल दिया है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖੁ ਤੂ ਸਭ ਕਰੇ ਤੇਰਾ ਕਰਾਇਆ ॥
जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥
हे स्वामी ! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को रखो। प्रत्येक प्राणी वैसा ही कर्म करता है जिस तरह तुम करवाते हो।

ਇਕਨਾ ਬਖਸਹਿ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਗੁਰਮਤੀ ਤੁਧੈ ਲਾਇਆ ॥
इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥
कुछ जीवों को तूने क्षमा करके अपने साथ मिला लिया है और कुछ जीवों को तूने ही गुरु की मति में लगाया है।

ਇਕਿ ਖੜੇ ਕਰਹਿ ਤੇਰੀ ਚਾਕਰੀ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥
इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥
कई तेरे मन्दिर में खड़े होकर भक्ति करते हैं। नाम के अलावा उनको कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

ਹੋਰੁ ਕਾਰ ਵੇਕਾਰ ਹੈ ਇਕਿ ਸਚੀ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ॥
होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥
कईओं को तुमने सत्य कर्म में लगा दिया है। कोई अन्य कर्म उनके लिए लाभहीन है।

ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਕੁਟੰਬੁ ਹੈ ਇਕਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਇਆ ॥
पुतु कलतु कुट्मबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥
जिन प्राणियों का कर्म तुझे लुभाया है, वे प्राणी स्त्री, पुत्र एवं परिवार से तटस्थ रहते हैं।

ਓਹਿ ਅੰਦਰਹੁ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲੇ ਸਚੈ ਨਾਇ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥
ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥३॥
हे प्रभु! ऐसे व्यक्ति अन्दर एवं बाहर से पवित्र हैं और वे सत्य नाम में लीन रहते हैं।॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸੁਇਨੇ ਕੈ ਪਰਬਤਿ ਗੁਫਾ ਕਰੀ ਕੈ ਪਾਣੀ ਪਇਆਲਿ ॥
सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥
चाहे मैं स्वर्गलोक में जाकर सोने के सुमेर पर्वत पर रहने के लिए गुफा बना लूं, चाहे पाताललोक में जाकर जल में रहूँ।

ਕੈ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਕੈ ਆਕਾਸੀ ਉਰਧਿ ਰਹਾ ਸਿਰਿ ਭਾਰਿ ॥
कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥
चाहे मैं धरती अथवा आकाश के किसी लोक में सिर के बल उलटा खड़ा होकर तपस्या करूँ,

ਪੁਰੁ ਕਰਿ ਕਾਇਆ ਕਪੜੁ ਪਹਿਰਾ ਧੋਵਾ ਸਦਾ ਕਾਰਿ ॥
पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥
चाहे मैं पूरी तरह शरीर को स्वच्छ करके वस्त्र पहनूं और हमेशा ही यह कर्म करके अपने शरीर एवं वस्त्रों को स्वच्छ करता रहूँ,

ਬਗਾ ਰਤਾ ਪੀਅਲਾ ਕਾਲਾ ਬੇਦਾ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥
बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥
चाहे मैं सफेद, लाल, पीले एवं काले वस्त्र पहनकर चारों वेद-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद का पाठ करूँ,

ਹੋਇ ਕੁਚੀਲੁ ਰਹਾ ਮਲੁ ਧਾਰੀ ਦੁਰਮਤਿ ਮਤਿ ਵਿਕਾਰ ॥
होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥
चाहे मैं गन्दा एवं मलिन रहूँ। परन्तु यह सब कर्म दुर्बुद्धि होने के कारण व्यर्थ ही हैं।

ਨਾ ਹਉ ਨਾ ਮੈ ਨਾ ਹਉ ਹੋਵਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥
ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥१॥
हे नानक ! मैं केवल शब्द का चिन्तन करता हूँ, जिसके अलावा किसी भी मूल्य का मैं नहीं था, न ही मैं हूँ और न ही मैं होऊंगा ॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਵਸਤ੍ਰ ਪਖਾਲਿ ਪਖਾਲੇ ਕਾਇਆ ਆਪੇ ਸੰਜਮਿ ਹੋਵੈ ॥
वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥
जो व्यक्ति अपने वस्त्र धो कर एवं स्नान करके संयमी बन बैठता है,

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਲਗੀ ਨਹੀ ਜਾਣੈ ਬਾਹਰਹੁ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵੈ ॥
अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥
उसे अपने मन में लगी अहंकार रूपी मैल का पता ही नहीं लगता और वह अपने शरीर को बाहर से ही रगड़ रगड़ कर स्वच्छ करता रहता है।

ਅੰਧਾ ਭੂਲਿ ਪਇਆ ਜਮ ਜਾਲੇ ॥
अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥
वह ज्ञानहीन होता है और कुमार्ग में पड़कर यम के जाल में फंस जाता है।

ਵਸਤੁ ਪਰਾਈ ਅਪੁਨੀ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਘਾਲੇ ॥
वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥
वह पराई वस्तु को अपनी समझता है और अहंकारवश बड़े दुख सहन करता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਤੁਟੈ ਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥
हे नानक ! जब गुरु के माध्यम से मनुष्य का अहंकार नष्ट हो जाता है तो वह हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है।

ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਨਾਮੋ ਆਰਾਧੇ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥
नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥२॥
वह नाम का जाप करता है, नाम को स्मरण करता है और नाम द्वारा सुख में समा जाता है।॥ २॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਕਾਇਆ ਹੰਸਿ ਸੰਜੋਗੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥
भगवान ने संयोग बनाकर तन एवं आत्मा का मिलन कर दिया है।

ਤਿਨ ਹੀ ਕੀਆ ਵਿਜੋਗੁ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥
तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥
जिस प्रभु ने इनकी रचना की है, उसी ने उनको जुदा किया है।

ਮੂਰਖੁ ਭੋਗੇ ਭੋਗੁ ਦੁਖ ਸਬਾਇਆ ॥
मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥
मूर्ख प्राणी भोग भोगता रहता है और यह भोग ही उसके तमाम दु:खों का कारण बनता है।

ਸੁਖਹੁ ਉਠੇ ਰੋਗ ਪਾਪ ਕਮਾਇਆ ॥
सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥
वह सुख की उपलब्धि हेतु पाप करता है और इन सुखों से उसके शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

ਹਰਖਹੁ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਉਪਾਇ ਖਪਾਇਆ ॥
हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥
हर्ष से शोक तथा संयोग से वियोग और जन्म से मृत्यु उत्पन्न होते हैं।

ਮੂਰਖ ਗਣਤ ਗਣਾਇ ਝਗੜਾ ਪਾਇਆ ॥
मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥
मूर्ख प्राणी ने दुष्कर्मों की गिनती गिनाकर जीवन-मृत्यु का विवाद खड़ा कर लिया है अर्थात् मूर्ख दुष्कर्मों में फंस जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਹਥਿ ਨਿਬੇੜੁ ਝਗੜੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥
निर्णय सतिगुरु के हाथ में है, जो इस विवाद को खत्म कर देते हैं।

ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੁ ਨ ਚਲੈ ਚਲਾਇਆ ॥੪॥
करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥४॥
सृष्टिकर्ता प्रभु जो करता है, वही कुछ होता है और प्राणी का चलाया हुक्म नहीं चलता ॥ ४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਮੁਰਦਾਰੁ ਖਾਇ ॥
कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥
जो व्यक्ति झूठ बोलकर दूसरों का हक खाता है वह मुर्दे को खाता है अर्थात् हराम खाता है।

ਅਵਰੀ ਨੋ ਸਮਝਾਵਣਿ ਜਾਇ ॥
अवरी नो समझावणि जाइ ॥
फिर भी वह दूसरों को उपदेश करने जाता है कि झूठ मत बोलो।

ਮੁਠਾ ਆਪਿ ਮੁਹਾਏ ਸਾਥੈ ॥
मुठा आपि मुहाए साथै ॥
जो स्वयं लुटा जा रहा है और अपने साथियों को भी लुटा रहा है,

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਆਗੂ ਜਾਪੈ ॥੧॥
नानक ऐसा आगू जापै ॥१॥
हे नानक ! वह इस तरह का नेता मालूम होता है ॥ १॥

ਮਹਲਾ ੪ ॥
महला ४ ॥
महला ४॥

ਜਿਸ ਦੈ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਹੈ ਸੋ ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਸਚੁ ਅਲਾਏ ॥
जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥
जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, वही सत्यतादी है और वह अपने मुख से सत्य बोलता है।

ਓਹੁ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਆਪਿ ਚਲਦਾ ਹੋਰਨਾ ਨੋ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥
ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥
वह स्वयं हरि के मार्ग चलता है और दूसरों को भी हरि के मार्ग लगाता है।

ਜੇ ਅਗੈ ਤੀਰਥੁ ਹੋਇ ਤਾ ਮਲੁ ਲਹੈ ਛਪੜਿ ਨਾਤੈ ਸਗਵੀ ਮਲੁ ਲਾਏ ॥
जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥
यदि सामने पवित्र तीर्थ रूपी सत्संग हो, तब मैल उतर जाती है। लेकिन मंदे पुरुषों के साथ संगति करने से मैल उतरने की जगह और भी मैल लग जाती है।

ਤੀਰਥੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥
तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥
सतिगुरु जी पूर्णरूपेण तीर्थ हैं जो दिन-रात हरि-प्रभु के नाम का ध्यान करते रहते हैं।

ਓਹੁ ਆਪਿ ਛੁਟਾ ਕੁਟੰਬ ਸਿਉ ਦੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਛਡਾਏ ॥
ओहु आपि छुटा कुट्मब सिउ दे हरि हरि नामु सभ स्रिसटि छडाए ॥
वह अपने कुटुंब सहित संसार सागर से पार हो जाता है अर्थात् उसे मोक्ष मिल जाता है और हरि-परमेश्वर का नाम प्रदान करके सारे संसार को पार कर देता है।

जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥२॥
जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥२॥
हे नानक ! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं हरि के नाम का जाप करता है और दूसरों से भी नाम का जाप करवाता है॥ २ ॥

पउड़ी ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥
इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥
कई साधु वन प्रदेश में निवास करते हैं और कंदमूल चुनकर उनका सेवन करते हैं।

इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥
इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥
कई भगवे रंग के वस्त्र पहन कर योगियों एवं संन्यासियों की भाँति फिरते हैं।

अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥
अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥
उनके भीतर अधिकतर तृष्णा है और वे वस्त्रों एवं भोजन की लालसा करते हैं।

बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥
बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥
वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। इस तरह न वह गृहस्थी हैं और न ही त्यागी।

जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥
जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥
यमराज उनके सिर पर मंडराता रहता है क्योंकि वे त्रिगुणात्मक वासना के शिकार हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਕਾਲੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇੜੈ ਜਾ ਹੋਵੈ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ॥
गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥
जब गुरु के उपदेश से प्राणी परमात्मा के सेवकों का सेवक हो जाता है, तो काल उनके निकट नहीं आता।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਮਨਿ ਘਰ ਹੀ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥
सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥
सत्य-नाम उसके सत्यवादी हृदय में निवास करता है और वे घर में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਆਸਾ ਤੇ ਨਿਰਾਸਾ ॥੫॥
नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥५॥
हे नानक ! जो प्राणी अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वे सांसारिक अभिलाषाओं से तटस्थ हो जाते हैं॥ ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਜੇ ਰਤੁ ਲਗੈ ਕਪੜੈ ਜਾਮਾ ਹੋਇ ਪਲੀਤੁ ॥
जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
यदि वस्त्रों को रक्त लग जाए तो वस्त्र अपवित्र हो जाता है।

ਜੋ ਰਤੁ ਪੀਵਹਿ ਮਾਣਸਾ ਤਿਨ ਕਿਉ ਨਿਰਮਲੁ ਚੀਤੁ ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
जो व्यक्ति दूसरों पर अत्याचार करके उनका रक्त चूसते हैं, उनका मन किस तरह पवित्र हो सकता है ?

ਨਾਨਕ ਨਾਉ ਖੁਦਾਇ ਕਾ ਦਿਲਿ ਹਛੈ ਮੁਖਿ ਲੇਹੁ ॥
नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥
हे नानक ! उस अल्लाह का नाम साफ दिल से मुख से बोलो!

ਅਵਰਿ ਦਿਵਾਜੇ ਦੁਨੀ ਕੇ ਝੂਠੇ ਅਮਲ ਕਰੇਹੁ ॥੧॥
अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥१॥
नाम के बिना आपके सभी कार्य दुनिया के दिखावा मात्र ही हैं और आप सभी झूठे कर्म करते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਜਾ ਹਉ ਨਾਹੀ ਤਾ ਕਿਆ ਆਖਾ ਕਿਹੁ ਨਾਹੀ ਕਿਆ ਹੋਵਾ ॥
जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥
जब मैं कुछ भी नहीं तो दूसरों को मैं क्या उपदेश कर सकता हूँ? अथवा जब मुझ में कोई भी गुण नहीं तो मैं कैसे गुणों का दिखावा करूँ ?

ਕੀਤਾ ਕਰਣਾ ਕਹਿਆ ਕਥਨਾ ਭਰਿਆ ਭਰਿ ਭਰਿ ਧੋਵਾਂ ॥
कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥
जिस तरह का ईश्वर ने मुझे बनाया है, वैसे ही मैं करता हूँ। जिस तरह उसने मुझे कहा है, वैसे ही मैं बोलता हूँ। मैं बुरे कर्मों के कारण पापों से भरा हुआ हूँ। उनको अब मैं धोने का प्रयास करता हूँ।

ਆਪਿ ਨ ਬੁਝਾ ਲੋਕ ਬੁਝਾਈ ਐਸਾ ਆਗੂ ਹੋਵਾਂ ॥
आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥
मैं स्वयं समझता नहीं लेकिन फिर भी दूसरों को समझाता हूँ। मैं इस तरह का ज्ञानहीन मार्गदर्शक बन सकता हूँ।

ਨਾਨਕ ਅੰਧਾ ਹੋਇ ਕੈ ਦਸੇ ਰਾਹੈ ਸਭਸੁ ਮੁਹਾਏ ਸਾਥੈ ॥
नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति स्वयं ज्ञानहीन अंधा होकर मार्ग-दर्शन करता है, वह अपने साथियों को भी लुटवा देता है।

ਅਗੈ ਗਇਆ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਪਾਹਿ ਸੁ ਐਸਾ ਆਗੂ ਜਾਪੈ ॥੨॥
अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥२॥
आगे परलोक में जाकर उसके मुख पर जूते पड़ते हैं और फिर पता चलता है कि वह किस तरह का पाखंडी मार्गदर्शक था ॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਮਾਹਾ ਰੁਤੀ ਸਭ ਤੂੰ ਘੜੀ ਮੂਰਤ ਵੀਚਾਰਾ ॥
माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥
हे अकालपुरुष ! समस्त महीनों, ऋतुओं, घड़ी, मुहूर्त में मैं तेरी वन्दना करता हूँ।

ਤੂੰ ਗਣਤੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਸਚੇ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥
तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥
हे सच्चे अलख, अपार प्रभु ! कर्मों की गणना करके तुझे किसी ने भी नहीं पाया।

ਪੜਿਆ ਮੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥
उस पढ़े हुए विद्वान व्यक्ति को महामूर्ख ही समझो, जिसके अन्तर्मन में लोभ, लालच एवं अहंकार है।

ਨਾਉ ਪੜੀਐ ਨਾਉ ਬੁਝੀਐ ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰਾ ॥
नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥
गुरु की मति द्वारा हमें विचार करके नाम को पढ़ना एवं समझना चाहिए।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥
जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा नाम रूपी धन की कमाई की है, उसके भण्डार भक्ति से भर गए हैं।

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿਆ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰਾ ॥
निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥
जिस व्यक्ति ने निर्मल नाम का मन से सिमरन किया है, वह सत्य के दरबार में सत्यवादी स्वीकृत हो जाता है।

ਜਿਸ ਦਾ ਜੀਉ ਪਰਾਣੁ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥
जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥
जिसने प्रत्येक जीव को आत्मा एवं प्राण दिए हैं, वह प्रभु अनंत है और उसकी ज्योति प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान है।

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਇਕੁ ਤੂੰ ਹੋਰੁ ਜਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ॥੬॥
सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥६॥
हे प्रभु ! एक तू ही सच्चा शाह है और शेष सारा जगत् वणजारा है॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਮਿਹਰ ਮਸੀਤਿ ਸਿਦਕੁ ਮੁਸਲਾ ਹਕੁ ਹਲਾਲੁ ਕੁਰਾਣੁ ॥
मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥
जीवों पर दया करना ही मस्जिद में जाकर सजदा करना है। अल्लाह पर पूर्ण श्रद्धा रखना ही मुसल्ले पर बैठ कर नमाज पढ़ना है। हक-हलाल अर्थात् धर्म-कर्म करना ही कुरान को पढ़ना है।

ਸਰਮ ਸੁੰਨਤਿ ਸੀਲੁ ਰੋਜਾ ਹੋਹੁ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ॥
सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥
नाम की कमाई करना ही सुन्नत करवाना है। शील स्वभाव का बनना ही रोजा रखना है। तभी तुम एक सच्चे मुसलमान बनोगे।

ਕਰਣੀ ਕਾਬਾ ਸਚੁ ਪੀਰੁ ਕਲਮਾ ਕਰਮ ਨਿਵਾਜ ॥
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥
सत्य कर्म करना ही मक्का जाकर काबे के दर्शन करना है। सच्चे खुदा को जानना ही पीर की पूजा करना है। शुभ कर्म करना ही कलमा एवं नमाज है।

ਤਸਬੀ ਸਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵਸੀ ਨਾਨਕ ਰਖੈ ਲਾਜ ॥੧॥
तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥१॥
अल्लाह की रजा में रहना ही माला फेर कर नाम जपना है। हे नानक ! जो इन गुणों से युक्त होगा तो ही अल्लाह को अच्छा लगेगा और ऐसे मुसलमान की खुदा लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਹਕੁ ਪਰਾਇਆ ਨਾਨਕਾ ਉਸੁ ਸੂਅਰ ਉਸੁ ਗਾਇ ॥
हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
हे नानक ! पराया हक खाना मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है और हिन्दू के लिए गाय खाने के समान है।

ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ਹਾਮਾ ਤਾ ਭਰੇ ਜਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ਨ ਖਾਇ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
हिन्दुओं का गुरु एवं मुसलमानों का पीर खुदा की दरगाह में तभी मनुष्य की रक्षा की हामी भरेंगे यदि वह पराया हक न खाए।

ਗਲੀ ਭਿਸਤਿ ਨ ਜਾਈਐ ਛੁਟੈ ਸਚੁ ਕਮਾਇ ॥
गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥
अधिक बातें करने से प्राणी स्वर्गलोक को नहीं जाता। मुक्ति तो सत्य की कमाई द्वारा ही संभव है।

ਮਾਰਣ ਪਾਹਿ ਹਰਾਮ ਮਹਿ ਹੋਇ ਹਲਾਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥
मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥
हराम के भोजन में मसाला डालने से वह हलाल नहीं हो जाता, क्योंकि रिश्वत का धन दान करने से शुद्ध नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਗਲੀ ਕੂੜੀਈ ਕੂੜੋ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥२॥
हे नानक ! झूठी बातों से केवल झूठ ही हासिल होता है।॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਪੰਜਿ ਨਿਵਾਜਾ ਵਖਤ ਪੰਜਿ ਪੰਜਾ ਪੰਜੇ ਨਾਉ ॥
पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥
मुसलमानों के लिए पाँच नमाजें हैं, एवं नमाज़ों के लिए पाँच ही वक्त हैं और पाँचों नमाजो के साथ अलग-अलग नाम हैं ।

ਪਹਿਲਾ ਸਚੁ ਹਲਾਲ ਦੁਇ ਤੀਜਾ ਖੈਰ ਖੁਦਾਇ ॥
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
पहली नमाज यह है कि सच्चे खुदा की बंदगी करो । दूसरी नमाज है कि हक हलाल अर्थात् धर्म की कमाई करो। तीसरी नमाज यह है कि अल्लाह से सबकी भलाई माँगो, दान-पुण्य करो।

ਚਉਥੀ ਨੀਅਤਿ ਰਾਸਿ ਮਨੁ ਪੰਜਵੀ ਸਿਫਤਿ ਸਨਾਇ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
चौथी नमाज यह है की अपनी नीयत एवं मन को साफ रखो। पाँचवी नमाज यह है कि अल्लाह की महिमा एवं प्रशंसा करो।

ਕਰਣੀ ਕਲਮਾ ਆਖਿ ਕੈ ਤਾ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਸਦਾਇ ॥
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥
तू शुभ कर्मों का कलमा पढ़ और तभी तू स्वयं को सच्चा मुसलमान कहलवा सकता है।

ਨਾਨਕ ਜੇਤੇ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੈ ਕੂੜੀ ਪਾਇ ॥੩॥
नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥३॥
हे नानक ! जितने भी झूठे हैं, उनकी प्रतिष्ठा भी झूठी है और उन्हें झूठ ही प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਇਕਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜਦੇ ਇਕਿ ਕਚੈ ਦੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥
इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥
जीव जगत् में व्यापार करने आते हैं। कई जीव नाम रूपी रत्न पदार्थों का व्यापार करते हैं और कई जीव कांच अर्थात् क्षणभंगुर सुखों का व्यापार करते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਪਾਈਅਨਿ ਅੰਦਰਿ ਰਤਨ ਭੰਡਾਰਾ ॥
सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥
यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो यह नाम रूपी रत्न-पदार्थों का अक्षय भण्डार मिल जाता है।

ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਲਧਿਆ ਅੰਧੇ ਭਉਕਿ ਮੁਏ ਕੂੜਿਆਰਾ ॥
विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥
जीव के हृदय में ही नाम रूपी रत्न पदार्थों का भण्डार है परन्तु यह भण्डार गुरु के बिना किसी को भी नहीं मिला। अर्थात् परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। झूठे एवं अज्ञानी लोग टक्करें मार-मारकर प्राण त्याग गए हैं।

ਮਨਮੁਖ ਦੂਜੈ ਪਚਿ ਮੁਏ ਨਾ ਬੂਝਹਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥
मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥
मनमुख लोग द्वैत भाव में पड़कर गल सड़कर मर जाते हैं और ज्ञान को नहीं समझते।

ਇਕਸੁ ਬਾਝਹੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਕਿਸੁ ਅਗੈ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ॥
इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥
एक ईश्वर के अलावा संसार में दूसरा कोई भी नहीं। वह किसके समक्ष जाकर फरियाद करें?

ਇਕਿ ਨਿਰਧਨ ਸਦਾ ਭਉਕਦੇ ਇਕਨਾ ਭਰੇ ਭੁਜਾਰਾ ॥
इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे भुजारा ॥
कई धनहीन निर्धन हैं और हमेशा भटकते फिरते हैं और कईओं के खजाने दौलत से परिपूर्ण हैं।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ਬਿਖਿਆ ਸਭੁ ਛਾਰਾ ॥
विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥
लेकिन इस संसार में हरि नाम के अलावा शेष कोई भी धन जीव के साथ जाने वाला नहीं। अन्य सब कुछ विष रूपी माया-धन धूलि के तुल्य है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੭॥
नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥७॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। अपने आदेश द्वारा वह प्रभु स्वयं ही प्राणियों को संवारने वाला है॥ ७॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਕਹਾਵਣੁ ਮੁਸਕਲੁ ਜਾ ਹੋਇ ਤਾ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਕਹਾਵੈ ॥

मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥

मुसलमान कहलाना बड़ा कठिन है। यदि कोई गुणों से युक्त सच्चा मुसलमान है, तो ही वह अपने आपको मुसलमान कहलवा सकता है।

ਅਵਲਿ ਅਉਲਿ ਦੀਨੁ ਕਰਿ ਮਿਠਾ ਮਸਕਲ ਮਾਨਾ ਮਾਲੁ ਮੁਸਾਵੈ ॥

अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥

सच्चा मुसलमान बनने के लिए सर्वप्रथम बात यह है कि वह अपने पैगम्बर के चलाए धर्म को मीठा समझकर माने। दूसरी बात यह है कि वह अपनी मेहनत की कमाई का धन गरीबों में यूं बांट दे जैसे रंग मार लोहे के जंग को दूर कर देता है।

ਹੋਇ ਮੁਸਲਿਮੁ ਦੀਨ ਮੁਹਾਣੈ ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕਾ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥

होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥

वह अपने पैगम्बर के धर्म का सच्चा मुरीद (शिष्य) होकर मृत्यु एवं जीवन के भ्रम को मिटा दे।

ਰਬ ਕੀ ਰਜਾਇ ਮੰਨੇ ਸਿਰ ਉਪਰਿ ਕਰਤਾ ਮੰਨੇ ਆਪੁ ਗਵਾਵੈ ॥

रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥

सच्चे दिल से वह ईश्वर की इच्छा को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृत करे, सृष्टिकर्ता परमात्मा की वन्दना करे और अपना अहंकार नष्ट कर दे।

ਤਉ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਿਹਰੰਮਤਿ ਹੋਇ ਤ ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਕਹਾਵੈ ॥੧॥

तउ नानक सरब जीआ मिहरमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥१॥

हे नानक ! यदि वह समस्त प्राणियों पर दयालु हो तो ही वह मुसलमान कहलवा सकता है॥१॥

ਮਹਲਾ ੪ ॥

महला ४ ॥

महला ४॥

ਪਰਹਰਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧੁ ਝੂਠੁ ਨਿੰਦਾ ਤਜਿ ਮਾਇਆ ਅਹੰਕਾਰੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥

परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥

जो व्यक्ति काम, क्रोध, झूठ, निंदा एवं धन-दौलत को त्यागकर अपना अहंकार मिटा देता है,

ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕਾਮਿਨੀ ਮੋਹੁ ਤਜੈ ਤਾ ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਵੈ ॥

तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥

कामवासना का त्याग करके अपनी स्त्री का मोह त्याग देता है, वह माया में रहता हुआ भी निरंजन प्रभु को पा लेता है।

ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਤਜਿ ਪਿਆਸ ਆਸ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥

तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥

हे नानक ! सत्यस्वरूप प्रभु उस व्यक्ति के मन में आकर निवास करता है, जो व्यक्ति मान-अभिमान, अपने पुत्र एवं स्त्री का प्रेम, माया की तृष्णा एवं इच्छा को त्याग कर राम में सुरति लगाता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥

नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥२॥

ऐसा व्यक्ति सच्चे शब्द द्वारा हरिनाम में ही समा जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਰਾਜੇ ਰਯਤਿ ਸਿਕਦਾਰ ਕੋਇ ਨ ਰਹਸੀਓ ॥

राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥

राजा, प्रजा एवं प्रधानों में किसी ने भी इस संसार में नहीं रहना।

ਹਟ ਪਟਣ ਬਾਜਾਰ ਹੁਕਮੀ ਢਹਸੀਓ ॥

हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥

दुकाने, नगर एवं बाज़ार ईश्वर की इच्छा से नष्ट हो जाएँगे।

ਪਕੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰ ਮੂਰਖੁ ਜਾਣੈ ਆਪਣੇ ॥

पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥

मूर्ख मनुष्य सुन्दर द्वारों वाले पक्के मन्दिरों को अपना समझते हैं।

ਦਰਬਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ਰੀਤੇ ਇਕਿ ਖਣੇ ॥

दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥

धन-दौलत से परिपूर्ण भण्डार एक क्षण में ही खाली हो जाते हैं।

ਤਾਜੀ ਰਥ ਤੁਖਾਰ ਹਾਥੀ ਪਾਖਰੇ ॥
ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥
घोड़ों, सुन्दर रथों, ऊँट, अम्बारियों वाले हाथी,

ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਘਰ ਬਾਰ ਕਿਥੈ ਸਿ ਆਪਣੇ ॥
बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥
उद्यान, सम्पत्तियाँ, घर एवं इमारतें इत्यादि जिन्हें मनुष्य अपना जानता है, वे अपने कहाँ हैं?

ਤੰਬੂ ਪਲੰਘ ਨਿਵਾਰ ਸਰਾਇਚੇ ਲਾਲਤੀ ॥
तंबू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥
तम्बू, निवार के पलंग, अतलस की कनातें सब क्षणभंगुर हैं।

ਨਾਨਕ ਸਚ ਦਾਤਾਰੁ ਸਿਨਾਖਤੁ ਕੁਦਰਤੀ ॥੮॥
नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥८॥
हे नानक ! सदैव स्थिर एक सत्य परमेश्वर ही है, जो लोगों को यह सब वस्तुएँ देने वाला दाता है। उसकी पहचान उसकी कुदरत द्वारा ही होती है ॥८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਨਦੀਆ ਹੋਵਹਿ ਧੇਣਵਾ ਸੁੰਮ ਹੋਵਹਿ ਦੁਧੁ ਘੀਉ ॥
नदीआ होवहि धेणवा सुम होवहि दुधु घीउ ॥
हे भगवान ! यदि मेरे लिए नदियां कामधेनु गाय बन जाएँ, समुद्रों का जल दूध एवं घी बन जाए,

ਸਗਲੀ ਧਰਤੀ ਸਕਰ ਹੋਵੈ ਖੁਸੀ ਕਰੇ ਨਿਤ ਜੀਉ ॥
सगली धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥
सारी धरती शक्कर बन जाए और मेरा मन इन पदार्थों का सेवन करके प्रसन्न होता हो,

ਪਰਬਤੁ ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਹੋਵੈ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਜੜਾਉ ॥
परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥
यदि हीरे एवं जवाहरों से जड़ित सोने एवं चांदी का पर्वत भी मुझे मिल जाए,

ਭੀ ਤੂੰਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਉ ॥੧॥
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥१॥
मैं फिर भी तेरा ही यशोगान करूँगा और तेरी महिमा करने की मेरी उमंग खत्म नहीं होगी॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਮੇਵਾ ਹੋਵੈ ਗਰੁੜਾ ਹੋਇ ਸੁਆਉ ॥
भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥
हे प्रभु ! यदि मेरे लिए अठारह भार वाली सारी वनस्पति मेवा बन जाए, जिसका स्वाद गुड़ जैसा मीठा हो,

ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਫਿਰਦੇ ਰਖੀਅਹਿ ਨਿਹਚਲੁ ਹੋਵੈ ਥਾਉ ॥
चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥
यदि मेरा निवास स्थान अटल हो जाए, जिसके आस-पास सूर्य एवं चंद्रमा दोनों ही घूमते रहें,

ਭੀ ਤੂੰਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਉ ॥੨॥
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥२॥
फिर भी मैं तेरा ही यश करूँगा और तेरा यश करने का मेरा चाव हृदय से नहीं हटेगा ॥ २ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਜੇ ਦੇਹੈ ਦੁਖੁ ਲਾਈਐ ਪਾਪ ਗਰਹ ਦੁਇ ਰਾਹੁ ॥
जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥
हे भगवान ! यदि मेरे शरीर को दुख लग जाए और दोनों पापी ग्रह राहु-केतु मुझे कष्ट दें।

ਰਤੁ ਪੀਣੇ ਰਾਜੇ ਸਿਰੈ ਉਪਰਿ ਰਖੀਅਹਿ ਏਵੈ ਜਾਪੈ ਭਾਉ ॥
रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥
यदि रक्तपिपासु राजा मेरे सिर पर शासन करते हों मुझे फिर भी यूं ही लगे कि जैसे तुम मुझे प्रेम करते हो,

ਭੀ ਤੂੰਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਉ ॥੩॥
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥३॥
हे ईश्वर ! फिर भी मैं तेरी ही सराहना करूँगा और तेरा यश करने की चाहत खत्म नहीं होगी॥ ३॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਅਗੀ ਪਾਲਾ ਕਪੜੁ ਹੋਵੈ ਖਾਣਾ ਹੋਵੈ ਵਾਉ ॥
अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥
यदि मेरे लिए अग्नि एवं शीत मेरा परिधान हो, हवा मेरा भोजन हो

ਸੁਰਗੈ ਦੀਆ ਮੋਹਣੀਆ ਇਸਤਰੀਆ ਹੋਵਨਿ ਨਾਨਕ ਸਭੋ ਜਾਉ ॥
सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥
और यदि स्वर्ग की मोहिनी अप्सराएँ मेरी पत्नियाँ हों, हे नानक ! यह सब पदार्थ क्षणभंगुर हैं।

ਭੀ ਤੂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਆਖਣ ਲਹੈ ਨ ਚਾਉ ॥੪॥
भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥४॥
हे प्रभु ! तो भी मैं तेरी ही महिमा गायन करूँगा। तेरी महिमा करने की तीव्र लालसा मिटती ही नहीं ॥ ४ ॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਦਫੈਲੀ ਗੈਬਾਨਾ ਖਸਮੁ ਨ ਜਾਣਈ ॥
बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥
जो दुष्कर्मी हैवान है, वह परमात्मा को नहीं जानता।

ਸੋ ਕਹੀਐ ਦੇਵਾਨਾ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣਈ ॥
सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥
यह पागल कहा जाता है जो अपने स्वरूप को नहीं समझता।

कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥
कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥
इस संसार में कलह हानिकारक है, क्योंकि वाद-विवाद में मनुष्य व्यर्थ ही पीड़ित हो जाता है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਵੇਕਾਰਿ ਭਰਮੇ ਪਚੀਐ ॥
विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥
हरिनाम के अलावा प्राणी व्यर्थ है और भ्रम-विकारों में वह नष्ट हो जाता है।

ਰਾਹ ਦੋਵੈ ਇਕੁ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ਸਿਝਸੀ ॥
राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥
जो दोनों मागों को एक प्रभु की ओर जाते समझता है वह मुक्त हो जाएगा।

ਕੁਫਰ ਗੋਅ ਕੁਫਰਾਣੈ ਪਇਆ ਦਝਸੀ ॥
कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥
झूठ बोलने वाला नरक में पड़कर जलकर राख हो जाता है।

ਸਭ ਦੁਨੀਆ ਸੁਬਹਾਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥
सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥
यदि मनुष्य सत्य में लीन रहता है तो उसके लिए सारी दुनिया ही सुन्दर है।

ਸਿਝੈ ਦਰਿ ਦੀਵਾਨਿ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥੯॥
सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥९॥
वह अपना अहंकार मिटाकर प्रभु के दरबार में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

ਮਃ ੧ ਸਲੋਕੁ ॥
मः १ सलोकु ॥
महला १ श्लोक॥

ਸੋ ਜੀਵਿਆ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥
सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥
जिसके मन में भगवान का निवास है, उस व्यक्ति को ही जिया समझो।

ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਜੀਵੈ ਕੋਇ ॥
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥
हे नानक ! भगवान के नाम बिना किसी को भी जिया नहीं कहा जा सकता,

ਜੇ ਜੀਵੈ ਪਤਿ ਲਥੀ ਜਾਇ ॥
जे जीवै पति लथी जाइ ॥
वह तो मृतक के समान होता है। यदि वह जीता भी है तो वह जगत् में से अपनी मान-प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है।

ਸਭੁ ਹਰਾਮੁ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਖਾਇ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥
वह जो कुछ भी खाता है, वह सब हराम बन जाता है।

ਰਾਜਿ ਰੰਗੁ ਮਾਲਿ ਰੰਗੁ ॥
राजि रंगु मालि रंगु ॥
किसी व्यक्ति का शासन से प्रेम है और किसी का धन-दौलत से प्रेम है।

ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਨਚੈ ਨੰਗੁ ॥
रंगि रता नचै नंगु ॥
ऐसा बेशर्म व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में मग्न हुआ नग्न नृत्य कर रहा है।

ਨਾਨਕ ਠਗਿਆ ਮੁਠਾ ਜਾਇ ॥
नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥
हे नानक ! वह ठगा और लुटपुट जाता है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਗਇਆ ਗਵਾਇ ॥੧॥
विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥१॥
ईश्वर के नाम के अलावा वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਕਿਆ ਖਾਧੈ ਕਿਆ ਪੈਧੈ ਹੋਇ ॥
किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥
हे जीव ! स्वादिष्ट भोजन खाने एवं सुन्दर वस्त्र पहनने का क्या अभिप्राय है,"

ਜਾ ਮਨਿ ਨਾਹੀ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
जा मनि नाही सचा सोइ ॥
यदि तेरे मन में उस भगवान का निवास ही नहीं?

ਕਿਆ ਮੇਵਾ ਕਿਆ ਘਿਉ ਗੁੜੁ ਮਿਠਾ ਕਿਆ ਮੈਦਾ ਕਿਆ ਮਾਸੁ ॥
किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥
मेवा, धी, मीठा गुड़, मैदा एवं माँस खाने का क्या अभिप्राय है?"

ਕਿਆ ਕਪੜੁ ਕਿਆ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕੀਜਹਿ ਭੋਗ ਬਿਲਾਸ ॥
किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥
सुन्दर वस्त्र पहनने, सुखदायक शय्या पर विश्राम करने और भोग-विलास का आनंद प्राप्त करने का क्या अभिप्राय है?"

ਕਿਆ ਲਸਕਰ ਕਿਆ ਨੇਬ ਖਵਾਸੀ ਆਵੈ ਮਹਲੀ ਵਾਸੁ ॥
किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥
सेना, द्वारपाल, कर्मचारी रखने एवं महलों में निवास करने का क्या अभिप्राय है ?"

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਸਭੇ ਟੋਲ ਵਿਣਾਸੁ ॥੨॥
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥२॥
हे नानक ! सत्य-परमेश्वर के नाम के सिवाय सभी पदार्थ क्षणभंगुर हैं।॥२॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਾਤੀ ਦੈ ਕਿਆ ਹਥਿ ਸਚੁ ਪਰਖੀਐ ॥
जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥
उच्च जाति वाले के वश में कुछ भी नहीं है, क्योंकि परमात्मा तो जीवों के शुभ-अशुभ कर्मो की ही जाँच करता है। ऊँची जाति का अभिमान विष समान है।

ਮਹੁਰਾ ਹੋਵੈ ਹਥਿ ਮਰੀਐ ਚਖੀਐ ॥
महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥
यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विष हो तो वह उस विष को खा कर प्राण त्याग देता है।

ਸਚੇ ਕੀ ਸਿਰਕਾਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਜਾਣੀਐ ॥
सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥
सत्य परमेश्वर की सरकार युग-युग में जानी जाती है।

ਹੁਕਮੁ ਮੰਨੇ ਸਿਰਦਾਰੁ ਦਰਿ ਦੀਬਾਣੀਐ ॥
हुकमु मंने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥
जो उसके हुक्म का पालन करता है, वह उसके दरबार में प्रतिष्ठित हो जाता है।

ਫੁਰਮਾਨੀ ਹੈ ਕਾਰ ਖਸਮਿ ਪਠਾਇਆ ॥
फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥
सत्य प्रभु का यही हुक्म है कि नाम-सिमरन का कर्म करो। इसलिए प्रभु ने मनुष्य को संसार में भेजा है।

ਤਬਲਬਾਜ ਬੀਚਾਰ ਸਬਦਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥
तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥
गुरु नगाड़ची ने वाणी द्वारा इस परमेश्वर की आराधना लोगों को सुनाई है।

ਇਕਿ ਹੋਏ ਅਸਵਾਰ ਇਕਨਾ ਸਾਖਤੀ ॥
इकि होए असवार इकना साखती ॥
इसको श्रवण करके गुरमुख अपने घोड़ों पर सवार हो गए हैं और कई उनको तैयार कर रहे हैं।

ਇਕਨੀ ਬਧੇ ਭਾਰ ਇਕਨਾ ਤਾਖਤੀ ॥੧੦॥
इकनी बधे भार इकना ताखती ॥१०॥
कईओं ने अपना सामान बांध लिया है और कई तो सवार होकर चले भी गए हैं॥ १० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਜਾ ਪਕਾ ਤਾ ਕਟਿਆ ਰਹੀ ਸੁ ਪਲਰਿ ਵਾੜਿ ॥
जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥
जब अनाज पक जाता है तो किसान उसे काट लेता है। केवल घास फूस और वाड रह जाती है।

ਸਣੁ ਕੀਸਾਰਾ ਚਿਥਿਆ ਕਣੁ ਲਇਆ ਤਨੁ ਝਾੜਿ ॥
सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥
अनाज फसल से उतार लिया जाता है और उड़ा कर फसल से दाने अलग कर लिए जाते हैं।

ਦੁਇ ਪੁੜ ਚਕੀ ਜੋੜਿ ਕੈ ਪੀਸਣ ਆਇ ਬਹਿਠੁ ॥
दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥
चक्की के दोनों पाट इकट्ठे करके मनुष्य आकर दानों को पीसने बैठ जाते हैं।

ਜੋ ਦਰਿ ਰਹੇ ਸੁ ਉਬਰੇ ਨਾਨਕ ਅਜਬੁ ਡਿਠੁ ॥੧॥
जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥१॥
जो केन्द्रीय धुरे से जुड़े रहते हैं, वह बच जाते हैं। हे नानक ! यह एक आश्चर्यजनक बात देखी है॥१॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਵੇਖੁ ਜਿ ਮਿਠਾ ਕਟਿਆ ਕਟਿ ਕੁਟਿ ਬਧਾ ਪਾਇ ॥
वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥
देखो कि गन्ना कट जाता है। इसको साफ करके ठोक पीटकर बन्धनों में बांधा है।

ਖੁੰਢਾ ਅੰਦਰਿ ਰਖਿ ਕੈ ਦੇਨਿ ਸੁ ਮਲ ਸਜਾਇ ॥
खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥
बेलनों के बीच रखकर मलकर अथवा पहलवानों के समान जो पुरुष हैं वह इसको दबाते और दण्ड देते हैं।

ਰਸੁ ਕਸੁ ਟਟਰਿ ਪਾਈਐ ਤਪੈ ਤੈ ਵਿਲਲਾਇ ॥
रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥
उसका रस खींचकर कड़ाहे में डाला जाता है और यह जलता हुआ चीखता-चिल्लाता है।

ਭੀ ਸੋ ਫੋਗੁ ਸਮਾਲੀਐ ਦਿਚੈ ਅਗਿ ਜਾਲਾਇ ॥
भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥
गन्ने की खोई भी जिसका रस निकाल लिया है उसे भी इकठ्ठा करके अग्नि में जला दिया जाता है।

ਨਾਨਕ ਮਿਠੈ ਪਤਰੀਐ ਵੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਆਇ ॥੨॥
नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥२॥
हे नानक ! मीठे पत्तों वाले गन्ने से किस तरह का व्यवहार हुआ है, हे प्राणियों ! आकर देखो॥ २॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਇਕਨਾ ਮਰਣੁ ਨ ਚਿਤਿ ਆਸ ਘਣੇਰਿਆ ॥
इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥
कुछ लोगों को मृत्यु स्मरण नहीं, उनके मन में दुनिया के सुख भोगने की अधिक आशा होती है।

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਨਿਤ ਕਿਸੈ ਨ ਕੇਰਿਆ ॥
मरि मरि जमहि नित किसै न केरिआ ॥
वह हमेशा जन्मते-मरते रहते हैं तथा किसी के भी सच्चे मित्र नहीं बनते।

ਆਪਨੜੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਹਨਿ ਚੰਗੇਰਿਆ ॥
आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥
वह अपने मन ही मन में अपने आपको भला कहते हैं।

ਜਮਰਾਜੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮਨਮੁਖ ਹੇਰਿਆ ॥
जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥
यमराज हमेशा इन मनमुखों को समाप्त करने के लिए देखता रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਲੂਣ ਹਾਰਾਮ ਕਿਆ ਨ ਜਾਣਿਆ ॥
मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥
मनमुख नमक खाकर हराम करने वाला है और अपने ऊपर किए हुए परमेश्वर के उपकार का धन्यवादी नहीं होता।

ਬਧੇ ਕਰਨਿ ਸਲਾਮ ਖਸਮ ਨ ਭਾਣਿਆ ॥
बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥
जो दबाव अधीन प्रणाम करते हैं वह प्रभु को अच्छे नहीं लगते।

ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵਸੀ ॥
सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥
जो मुख से सत्यनाम बोलते हैं वह ईश्वर के मन को अच्छे लगने लग जाते हैं

ਕਰਸਨਿ ਤਖਤਿ ਸਲਾਮੁ ਲਿਖਿਆ ਪਾਵਸੀ ॥੧੧॥
करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥११॥
वे भगवान की पूजा करते हैं और उसके सिंहासन पर झुकते हैं। वे अपनी पूर्वनिर्धारित नियति को पूरा करते हैं।॥११॥

ਮਃ ੧ ਸਲੋਕੁ ॥
मः १ सलोकु ॥
महला १ श्लोक॥

ਮਛੀ ਤਾਰੂ ਕਿਆ ਕਰੇ ਪੰਖੀ ਕਿਆ ਆਕਾਸੁ ॥
मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥
मछली को गहरे जल का क्या लाभ है, यदि वह उसे मछेरे से नहीं बचा सकता? खुले आकाश का पक्षी को क्या लाभ है, यदि वह उसे शिकारी से नहीं बचा सकता ?

ਪਥਰ ਪਾਲਾ ਕਿਆ ਕਰੇ ਖੁਸਰੇ ਕਿਆ ਘਰ ਵਾਸੁ ॥
पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥
पत्थर को शीत का क्या लाभ है, जब उस पर सर्दी का कोई प्रभाव ही नहीं होता ? नपुंसक को विवाह करवाने का क्या लाभ है, यदि वह दुल्हन से भोग का आनंद ही नहीं ले सकता ?

ਕੁਤੇ ਚੰਦਨੁ ਲਾਈਐ ਭੀ ਸੋ ਕੁਤੀ ਧਾਤੁ ॥
कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥
यदि कुत्ते को चंदन लगा दिया जाए तो फिर भी उसका कुत्ते वाला स्वभाव ही रहेगा और कुतिया की ओर ही दौड़ेगा।

ਬੋਲਾ ਜੇ ਸਮਝਾਈਐ ਪੜੀਅਹਿ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪਾਠ ॥
बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिम्रिति पाठ ॥
यदि बहरे मनुष्य को स्मृतियों का पाठ पढ़कर सुनाए तो भी वह सुनकर समझता नहीं।

ਅੰਧਾ ਚਾਨਣਿ ਰਖੀਐ ਦੀਵੇ ਬਲਹਿ ਪਚਾਸ ॥
अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥
यदि अंधे मनुष्य के समक्ष पचास दीपकों का प्रकाश भी कर दिया जाए तो भी उसे कुछ भी दिखाई नहीं देगा।

ਚਉਣੇ ਸੁਇਨਾ ਪਾਈਐ ਚੁਣਿ ਚੁਣਿ ਖਾਵੈ ਘਾਸੁ ॥
चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥
मनुष्य चाहे गाय एवं भैसों के समूह के पास सोना रख दे तो भी वह घास को ही चुन-चुनकर खाएँगे।

ਲੋਹਾ ਮਾਰਣਿ ਪਾਈਐ ਢਹੈ ਨ ਹੋਇ ਕਪਾਸ ॥
लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥
लोहे को कपास के समान लकड़ी के साथ झाड़ें तो भी वह नरम नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਮੂਰਖ ਏਹਿ ਗੁਣ ਬੋਲੇ ਸਦਾ ਵਿਣਾਸੁ ॥੧॥
नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥१॥
हे नानक ! मूर्ख मनुष्य में यही गुण होते हैं कि वह जो कुछ भी बोलता है, उससे उसका अपना ही विनाश होता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਕੈਹਾ ਕੰਚਨੁ ਤੁਟੈ ਸਾਰੁ ॥
कैहा कंचनु तुटै सारु ॥
जब कांस्य, सोना एवं लोहा टूट जाए

ਅਗਨੀ ਗੰਢੁ ਪਾਏ ਲੋਹਾਰੁ ॥
अगनी गंढु पाए लोहारु ॥
तो सुनार अग्नि से गांठ लगा देता है।

ਗੋਰੀ ਸੇਤੀ ਤੁਟੈ ਭਤਾਰੁ ॥
गोरी सेती तुटै भतारु ॥
यदि पत्नी के साथ पति नाराज़ हो जाए तो

ਪੁਤੀ ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਸੰਸਾਰਿ ॥
पुतीं गंढु पवै संसारि ॥
पुत्र के द्वारा जगत् में पुनः संबंध कायम हो जाते हैं।

ਰਾਜਾ ਮੰਗੈ ਦਿਤੈ ਗੰਢੁ ਪਾਇ ॥
राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥
राजा अपनी प्रजा से कर माँगता है और उसे कर देने से प्रजा का राजा से संबंध बना रहता है।

ਭੁਖਿਆ ਗੰਢੁ ਪਵੈ ਜਾ ਖਾਇ ॥
भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥
भूखे लोगों का दानी सज्जनों से संबंध बन जाता है क्योंकि वे उनसे मांग कर भोजन खाते रहते हैं।

ਕਾਲਾ ਗੰਢੁ ਨਦੀਆ ਮੀਹ ਝੋਲ ॥
काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥
अकाल पड़ने से लोगों का नदियों से संबंध तब बनता है, जब बर्षा होने पर उनमें से बहुत जल मिलने लगता है।

ਗੰਢੁ ਪਰੀਤੀ ਮਿਠੇ ਬੋਲ ॥
गंढु परीती मिठे बोल ॥
प्रेम व मधुर वचनों का मेलजोल है।

ਬੇਦਾ ਗੰਢੁ ਬੋਲੇ ਸਚੁ ਕੋਇ ॥
बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥
यदि कोई सत्य बोले तो उसका संबंध वेदों से हो जाता है।

ਮੁਇਆ ਗੰਢੁ ਨੇਕੀ ਸਤੁ ਹੋਇ ॥
मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥
जो व्यक्ति अपने जीवन में भलाई करते हैं और दान देते हैं, मरणोपरांत उनका संबंध दुनिया से बना रहता है।

ऐतु गंढि वरतै संसारु ॥
एतु गंढि वरतै संसारु ॥
इस तरह का मेल-मिलाप इस संसार में प्रचलित है।

मुरख गंढु पवै मुहि मार ॥
मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥
मूर्ख के सुधार का हल केवल यही है कि वह मुँह की मार खाए।

नानकु आखै एहु बीचारु ॥
नानकु आखै एहु बीचारु ॥
नानक एक ज्ञान की बात कहता है कि

सिफती गंढु पवै दरबारि ॥२॥
सिफती गंढु पवै दरबारि ॥२॥
भगवान की महिमा-स्तुति करने से मनुष्य का उसके दरबार से संबंध कायम हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥
आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥
परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही विचार करता है।

इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥
इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥
कई जीव दुष्ट हैं और कई जीव धर्मात्मा हैं। इन दुष्ट एवं धर्मी जीवों की जाँच भगवान स्वयं ही करता है।

ਖਰੇ ਖਜਾਨੈ ਪਾਈਅਹਿ ਖੋਟੇ ਸਟੀਅਹਿ ਬਾਹਰ ਵਾਰਿ ॥
खरे खजानै पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥
जैसे खजानची शुद्ध सिक्कों को खजाने में डाल देता है और खोटे सिक्कों को खजाने से बाहर फेंक देता है,

ਖੋਟੇ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਸੁਟੀਅਹਿ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥
खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥
वैसे ही पापियों को प्रभु के दरबार में से बाहर फेंक दिया जाता है। वे पापी जीव किसके समक्ष विनती कर सकते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਛੈ ਭਜਿ ਪਵਹਿ ਏਹਾ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥
सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥
वह दौड़कर सतिगुरु की शरण में आएँ, यही कर्म श्रेष्ठ है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਖੋਟਿਅਹੁ ਖਰੇ ਕਰੇ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥
सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥
सतिगुरु पापियों को पवित्र बना देता है। वह पापी मनुष्य को प्रभु के नाम से सुशोभित करने वाला है।

ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਮੰਨੀਅਨਿ ਗੁਰ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰਿ ॥
सची दरगह मंनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥
गुरु के साथ प्रेम एवं स्नेह करने से प्राणी सत्य दरबार में प्रशंसा के पात्र हो जाते हैं।

ਗਣਤ ਤਿਨਾ ਦੀ ਕੋ ਕਿਆ ਕਰੇ ਜੋ ਆਪਿ ਬਖਸੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੧੨॥
गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥१२॥
जिन्हें सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने स्वयं क्षमा कर दिया है, उनके कर्मों का कौन मूल्यांकन कर सकता है ॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਹਮ ਜੇਰ ਜਿਮੀ ਦੁਨੀਆ ਪੀਰਾ ਮਸਾਇਕਾ ਰਾਇਆ ॥
हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥
पीर, शेख एवं राजा इत्यादि सभी दुनिया के लोग जमीन में दफन कर दिए जाते हैं।

ਮੇ ਰਵਦਿ ਬਾਦਿਸਾਹਾ ਅਫਜੂ ਖੁਦਾਇ ॥
मे रवदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥
बादशाह भी अंत में दुनिया से चले जाते हैं। केवल एक खुदा ही सदैव विद्यमान है।

ਏਕ ਤੂਹੀ ਏਕ ਤੁਹੀ ॥੧॥
एक तूही एक तुही ॥१॥
हे अल्लाह ! एक तू ही हैं और तू ही इस दुनिया में हमेशा रहने वाला है।

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨ ਦੇਵ ਦਾਨਵਾ ਨਰਾ ॥
न देव दानवा नरा ॥
धरती पर सदैव रहने वाले न देवता हैं, न दैत्य हैं, न ही मनुष्य हैं,

ਨ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕਾ ਧਰਾ ॥
न सिध साधिका धरा ॥
न ही सिद्ध एवं साधक हैं।

ਅਸਤਿ ਏਕ ਦਿਗਰਿ ਕੁਈ ॥
असति एक दिगरि कुई ॥
यह सभी क्षणभंगुर हैं।

ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੨॥
एक तुई एक तुई ॥२॥
हे ईश्वर ! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी सदैव स्थिर नहीं है। तीनों कालों में एक तू ही सदैव सत्य है॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਨ ਦਾਦੇ ਦਿਹੰਦ ਆਦਮੀ ॥
न दादे दिहंद आदमी ॥
जगत् में न धरती के उपरोक्त आकाश के सप्त लोक स्थिर हैं, जहाँ मनुष्यों के कर्मो का न्याय करने वाले देवते रहते हैं,

ਨ ਸਪਤ ਜੇਰ ਜਿਮੀ ॥
न सपत जेर जिमी ॥
न जमीन के नीचे सात पाताल के लोग स्थिर हैं, जहाँ दैत्य रहते हैं।

ਅਸਤਿ ਏਕ ਦਿਗਰਿ ਕੁਈ ॥
असति एक दिगरि कुई ॥
सभी क्षणभंगुर हैं। हे प्रभु ! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी अमर नहीं है।

ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੩॥
एक तुई एक तुई ॥३॥
एक तुम ही हो, आदि में भी तुम ही हो और अन्त में भी तुम ही हो॥ ३॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨ ਸੂਰ ਸਸਿ ਮੰਡਲੋ ॥
न सूर ससि मंडलो ॥
न सूर्यमण्डल, न चंद्र मण्डल,

ਨ ਸਪਤ ਦੀਪ ਨਹ ਜਲੋ ॥
न सपत दीप नह जलो ॥
न ही सप्त द्वीप, न ही सागर,

ਅੰਨ ਪਉਣ ਥਿਰੁ ਨ ਕੁਈ ॥
अंन पउण थिरु न कुई ॥
न ही अनाज और हवा कोई भी स्थिर नहीं।

ਏਕੁ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੪॥
एकु तुई एकु तुई ॥४॥
हे प्रभु! केवल तुम ही हो, तीनों कालों में एक तुम ही हो।॥ ४॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਨ ਰਿਜਕੁ ਦਸਤ ਆ ਕਸੇ ॥
न रिजकु दसत आ कसे ॥
जगत् के समस्त जीवों का भोजन पदार्थ उस प्रभु के सिवाय किसी अन्य के वश में नहीं है।

ਹਮਾ ਰਾ ਏਕੁ ਆਸ ਵਸੇ ॥
हमा रा एकु आस वसे ॥
हम सबको एक प्रभु की ही आशा है।

ਅਸਤਿ ਏਕੁ ਦਿਗਰ ਕੁਈ ॥
असति एकु दिगर कुई ॥
शेष सब क्षणभंगुर है। हे प्रभु ! एक तेरे सिवाय अन्य कोई दूसरा सदैव स्थिर नहीं है।

ਏਕ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੫॥
एक तुई एकु तुई ॥५॥
तीनों कालों में केवल तुम ही हो॥ ५॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਪਰੰਦਏ ਨ ਗਿਰਾਹ ਜਰ ॥
परंदए न गिराह जर ॥
परिंदो के न अपने घर हैं और न ही उनके पास धन है।

ਦਰਖਤ ਆਬ ਆਸ ਕਰ ॥
दरखत आब आस कर ॥
वह जीने के लिए जल एवं वृक्षों में अपनी आशा रखते हैं।

ਦਿਹੰਦ ਸੁਈ ॥
दिहंद सुई ॥
उन्हें भी आहार देने वाला एक प्रभु ही है।

ਏਕ ਤੁਈ ਏਕ ਤੁਈ ॥੬॥
एक तुई एक तुई ॥६॥
हे प्रभु! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अटल है॥ ६ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਨਕ ਲਿਲਾਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋਇ ॥
नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥
हे नानक ! इन्सान के माथे पर जो तकदीर के लेख परमात्मा ने लिख दिए हैं,

ਮੇਟਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕੋਇ ॥
मेटि न साकै कोइ ॥
उन्हें कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਕਲਾ ਧਰੈ ਹਿਰੈ ਸੁਈ ॥
कला धरै हिरै सुई ॥
हे प्रभु ! एक तू ही जीवों में प्राण-कला को धारण करते हो, तुम ही उसे वापिस निकाल लेते हो।

ਏਕੁ ਤੁਈ ਏਕੁ ਤੁਈ ॥੭॥
एकु तुई एकु तुई ॥७॥
हे ठाकुर ! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अनश्वर है॥ ७॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਿਆ ॥
सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥
हे भगवान ! तेरा हुक्म सदैव सत्य है और इसे गुरु द्वारा ही जाना जा सकता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥
गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥
जो व्यक्ति गुरु के उपदेश द्वारा अपने अहंत्व को त्याग देता है, वह भगवान को पहचान लेता है।

ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਦਰਬਾਰੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣਿਆ ॥
सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥
हे प्रभु ! तेरा दरबार सत्य है और तेरा शब्द तेरे दरबार में जाने हेतु निशान है।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਸਚਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥
सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥
जो व्यक्ति सत्य-नाम का चिंतन करता है, वह सत्य में ही समा जाता है।

ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਕੂੜਿਆਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਿਆ ॥
मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥
मनमुख सदैव झूठे हैं और भ्रम में पड़कर भटके हुए हैं।

ਵਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ ਵਾਸੁ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ॥
विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥
मरणोपरांत उनका निवास विष्ठा में ही होता है क्योंकि अपने जीवन में कभी भी नाम के स्वाद को जाना नहीं होता अर्थात् उन्होंने कभी भी नाम-सिमरन नहीं किया होता।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ਆਵਣ ਜਾਣਿਆ ॥
विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥
नाम के बिना वे बहुत दु:खी होते हैं। वे योनियों के चक्र में फँस कर जन्मते-मरते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਪਾਰਖੁ ਆਪਿ ਜਿਨਿ ਖੋਟਾ ਖਰਾ ਪਛਾਣਿਆ ॥੧੩॥
नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥१३॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही पारखी है, वह पापी एवं धर्मी की पहचान कर लेता है ॥१३ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸੀਹਾ ਬਾਜਾ ਚਰਗਾ ਕੁਹੀਆ ਏਨਾ ਖਵਾਲੇ ਘਾਹ ॥
सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥
यदि भगवान की इच्छा हो तो वह शेरों, बाजों, चीलों तथा कुईयों इत्यादि मांसाहारी पशु-पक्षियों को घास खिला देता है।

ਘਾਹੁ ਖਾਨਿ ਤਿਨਾ ਮਾਸੁ ਖਵਾਲੇ ਏਹਿ ਚਲਾਏ ਰਾਹ ॥
घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥
जो घास खाने वाले पशु हैं, उनको वह माँस खिला देता है। वह जीवों को ऐसे मार्ग पर चला देता है।

ਨਦੀਆ ਵਿਚਿ ਟਿਬੇ ਦੇਖਾਲੇ ਥਲੀ ਕਰੇ ਅਸਗਾਹ ॥
नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥
वह नदियों में टीले बनाकर दिखा देता है और रेगिस्तान में गहरा सागर बना देता है।

ਕੀੜਾ ਥਾਪਿ ਦੇਇ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਲਸਕਰ ਕਰੇ ਸੁਆਹ ॥
कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥
वह चाहे तो तुच्छ जीव को भी साम्राज्य सौंप देता है और राजाओं की सशक्त सेना का वध करके राख बना देता है।

ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਜੀਵਹਿ ਲੈ ਸਾਹਾ ਜੀਵਾਲੇ ਤਾ ਕਿ ਅਸਾਹ ॥
जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥
जगत् में जितने भी जीव हैं वे सभी श्वास लेकर जीते हैं अर्थात् श्वासों के बिना जीवित नहीं रह सकते परन्तु यदि परमात्मा की इच्छा हो तो उन्हें श्वासों के बिना भी जीवित रख सकता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਉ ਜਿਉ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਤਿਉ ਦੇਇ ਗਿਰਾਹ ॥੧॥
नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥१॥
हे नानक ! जिस तरह सत्य प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे ही वह जीवों को आहार देता है। १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਇਕਿ ਮਾਸਹਾਰੀ ਇਕਿ ਤ੍ਰਿਣੁ ਖਾਹਿ ॥
इकि मासहारी इकि त्रिणु खाहि ॥
कई जीव मांसाहारी हैं, कई जीव घास खाते हैं,"

ਇਕਨਾ ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਾਹਿ ॥
इकना छतीह अम्रित पाहि ॥
कई जीव छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाते है जैसे मनुष्य।

ਇਕਿ ਮਿਟੀਆ ਮਹਿ ਮਿਟੀਆ ਖਾਹਿ ॥
इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥
कई जीव मिट्टी में ही रहते हैं और मिट्टी ही खाते हैं।

ਇਕਿ ਪਉਣ ਸੁਮਾਰੀ ਪਉਣ ਸੁਮਾਰਿ ॥
इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥
कई जीव पवन आहारी गिने जाते हैं।

ਇਕਿ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ਨਾਮ ਆਧਾਰਿ ॥
इकि निरंकारी नाम आधारि ॥
कई जीव निरंकार के पुजारी हैं और उन्हें नाम का ही आधार है।

ਜੀਵੈ ਦਾਤਾ ਮਰੈ ਨ ਕੋਇ ॥
जीवै दाता मरै न कोइ ॥
जीवनदाता प्रभु सदैव जीवित है। कोई भी जीवभूखा नहीं मरता क्योंकि प्रभु सबको आहार देता है।

ਨਾਨਕ ਮੁਠੇ ਜਾਹਿ ਨਾਹੀ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੨॥
नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥२॥
हे नानक ! जो उस परमेश्वर को अपने हृदय में नहीं बसाते, वे मोह-माया के हाथों ठगे जाते हैं॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਰਮਿ ਕਮਾਈਐ ॥
पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥
भाग्य से ही पूर्ण गुरु की सेवा की जाती है।

ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥
गुरु की मति द्वारा हमें अपने अहंत्व को मिटाकर भगवान के नाम का ध्यान करते रहना चाहिए।

ਦੂਜੀ ਕਾਰੈ ਲਗਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈਐ ॥
दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥
धन-दौलत कमाने के कार्य में लगकर हम अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਵਿਸੁ ਪੈਝੈ ਖਾਈਐ ॥
विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥
नाम के सिवाय हमारा वस्त्र पहनना एवं भोजन ग्रहण करना सब कुछ ही विष खाने के समान है।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਾਲਾਹਿ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥
सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥
अतः सत्यनाम की महिमा- स्तुति करने से ही सत्य में समाया जा सकता है।

ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਨਾਹੀ ਸੁਖਿ ਨਿਵਾਸੁ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਈਐ ॥
विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥
सतिगुरु की सेवा किए बिना मनुष्य का सुख में निवास नहीं होता और वह बार-बार जन्मता एवं मरता है।

ਦੁਨੀਆ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ਕੂੜੁ ਕਮਾਈਐ ॥
दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥
झुठे संसार में प्राणी झूठे कर्म करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਖਰਾ ਸਾਲਾਹਿ ਪਤਿ ਸਿਉ ਜਾਈਐ ॥੧੪॥
नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥१४॥
हे नानक ! निर्मल सत्य नाम का यशोगान करने से मनुष्य सत्य के दरबार में सम्मानपूर्वक संसार से जाता है॥ १४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥

सलोकु मः १ ॥

श्लोक महला १॥

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਵਾਵਹਿ ਗਾਵਹਿ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਜਲਿ ਨਾਵਹਿ ॥

तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥

हे भगवान ! जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य संगीतमय बाजे बजाता और गाता है। जब तेरी इच्छा होती है तो वह जल में स्नान करता है।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਤਾ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤਾ ਸਿੰਙੀ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵਹਿ ॥
जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंङी नादु वजावहि ॥
जब तुझे अच्छा लगता है तो प्राणी अपने शरीर पर विभूति मलता है और सिंगी नाद बजाता है।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪੜਹਿ ਕਤੇਬਾ ਮੁਲਾ ਸੇਖ ਕਹਾਵਹਿ ॥
जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥
जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य कुरान पढ़ता है और मुल्लां और शेख कहलाया जाता है।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹੋਵਹਿ ਰਾਜੇ ਰਸ ਕਸ ਬਹੁਤੁ ਕਮਾਵਹਿ ॥
जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥
हे नाथ ! जब तेरी इच्छा होती है, तो कई राजा बन जाते हैं और अधिकतर स्वादों का आनंद लेते हैं।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤੇਗ ਵਗਾਵਹਿ ਸਿਰ ਮੁੰਡੀ ਕਟਿ ਜਾਵਹਿ ॥
जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥
हे ठाकुर ! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो मनुष्य तलवार चलाते हैं और शीश को धड़ से काट फेंकते हैं।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਜਾਹਿ ਦਿਸੰਤਰਿ ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ॥
जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥
हे स्वामी ! जब तेरी इच्छा होती है तो लोग देश-देशांतरों में जाते हैं और अनेकों सूचनाएँ श्रवण करके घर लौट आते हैं।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਨਾਇ ਰਚਾਵਹਿ ਤੁਧੁ ਭਾਣੇ ਤੂੰ ਭਾਵਹਿ ॥
जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥
हे प्राणपति ! जब तुझे उपयुक्त लगता है, तो मनुष्य तेरे नाम में लीन हो जाता है और जब तेरी इच्छा होती है, वह तुझे अच्छा लगने लग जाता है।

ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਬੇਨੰਤੀ ਹੋਰਿ ਸਗਲੇ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹਿ ॥੧॥
नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥१॥
नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तेरी इच्छा में चलने वालों के अलावा शेष सभी जीव झूठ ही कमाते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਜਾ ਤੂੰ ਵਡਾ ਸਭਿ ਵਡਿਆਂਈਆ ਚੰਗੈ ਚੰਗਾ ਹੋਈ ॥
जा तूं वडा सभि वडिआंईआ चंगै चंगा होई ॥
हे ईश्वर ! जब तू महान है, तो सारी महानता तुझ से ही प्रकट होती है। तुम स्वयं भले हो और तुझसे भला ही होना है।

ਜਾ ਤੂੰ ਸਚਾ ਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਸਚਾ ਕੂੜਾ ਕੋਇ ਨ ਕੋਈ ॥
जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥
जब तू स्वयं सत्य है तो जो तेरी पूजा करते हैं वह सभी सत्यवादी बन जाते हैं। तेरे सच्चे भक्त को कोई भी मनुष्य झूठा दिखाई नहीं देता।

ਆਖਣੁ ਵੇਖਣੁ ਬੋਲਣੁ ਚਲਣੁ ਜੀਵਣੁ ਮਰਣਾ ਧਾਤੁ ॥
आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥
जीवों का कहना, देखना, बोलना, चलना, जीना एवं मरना इत्यादि यह तेरी माया खेल ही है।

ਹੁਕਮੁ ਸਾਜਿ ਹੁਕਮੈ ਵਿਚਿ ਰਖੈ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਆਪਿ ॥੨॥
हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥२॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं ही अपने हुक्म द्वारा सृष्टि रचना करता है और अपने हुक्म में ही समस्त प्राणियों को रखता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਨਿਸੰਗੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਈਐ ॥
सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥
यदि हम सतिगुरु की निष्काम सेवा करें तो भ्रम दूर हो जाते है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਖੈ ਕਾਰ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਈਐ ॥
सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥
हमें वहीं कार्य करना चाहिए जो सतिगुरु करने के लिए कहते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥
यदि सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ, तो ही हम नाम सिमरन कर सकते हैं।

ਲਾਹਾ ਭਗਤਿ ਸੁ ਸਾਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ॥
लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥
भक्ति पूजा का लाभ उत्कृष्ट है। यह गुरुमुख द्वारा प्राप्त किया जाता है।

ਮਨਮੁਖਿ ਕੂੜੁ ਗੁਬਾਰੁ ਕੂੜੁ ਕਮਾਈਐ ॥
मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥
मनमुख व्यक्ति के लिए अज्ञानता का अँधेरा बना रहता और वे झूठे धन की ही कमाई करते रहते हैं।

ਸਚੇ ਦੈ ਦਰਿ ਜਾਇ ਸਚੁ ਚਵਾਂਈਐ ॥
सचे दै दरि जाइ सचु चवांईऐ ॥
जो व्यक्ति सत्य के दर सत्य प्रभु का नाम-सिमरन करता है,"

ਸਚੈ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਬੁਲਾਈਐ ॥
सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥
ऐसे सत्यवादी को सत्य प्रभु के आत्मस्वरूप में बुला लिया जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਦਾ ਸਚਿਆਰੁ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥੧੫॥
नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥१५॥
हे नानक ! जो व्यक्ति हमेशा ही सत्य-नाम का सिमरन करता रहता है, वहीं सत्यवादी है और वह सत्य में ही समा जाता है॥ १५ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਕਲਿ ਕਾਤੀ ਰਾਜੇ ਕਾਸਾਈ ਧਰਮੁ ਪੰਖ ਕਰਿ ਉਡਰਿਆ ॥
कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कलियुग छुरी है और बादशाह कसाई है। धर्म पंख लगाकर दुनिया में से उड़ गया है अर्थात् कलियुग में धर्म का नाश हो गया है।

ਕੂੜੁ ਅਮਾਵਸ ਸਚੁ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਦੀਸੈ ਨਾਹੀ ਕਹ ਚੜਿਆ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥
झूठ की इस अमावस्या की रात्रि में सत्य का चाँद कहीं उदय हुआ दिखाई नहीं देता अर्थात हर तरफ झूठ ही विद्यमान है और सत्य का नाश हो गया है।

ਹਉ ਭਾਲਿ ਵਿਕੁੰਨੀ ਹੋਈ ॥
हउ भालि विकुंनी होई ॥
मैं सत्य की खोज-तलाश करती हुई पागल हो गई हूँ,

ਆਧੇਰੈ ਰਾਹੁ ਨ ਕੋਈ ॥
आधेरै राहु न कोई ॥
इस अंधेरे में, मुझे रास्ता नहीं मिल रहा है।

ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਦੁਖੁ ਰੋਈ ॥
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥
सारी दुनिया ही झूठ के अंधेरे में अहंकारवश दुखी होकर विलाप कर रही है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥੧॥
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥१॥
हे नानक ! इस झूठ से किस विधि द्वारा जीवों की मुक्ति होगी ? ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਕਲਿ ਕੀਰਤਿ ਪਰਗਟੁ ਚਾਨਣੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥
कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥
कलियुग में भगवान की महिमा दुनिया में ज्ञान रूपी प्रकाश प्रगट कर देती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਉਤਰੈ ਪਾਰਿ ॥
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥
कोई विरला गुरमुख ही भवसागर को तर कर पार होता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਦੇਵੈ ॥
जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति पर भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसे ही अपनी महिमा की देन प्रदान करता है

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਤਨੁ ਸੋ ਲੇਵੈ ॥੨॥
नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥२॥
किन्तु गुरमुख ही नाम रूपी रत्न प्राप्त करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਭਗਤਾ ਤੈ ਸੈਸਾਰੀਆ ਜੋੜੁ ਕਦੇ ਨ ਆਇਆ ॥
भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥
भगवान के भक्तों एवं दुनिया के जीवों में मिलाप कभी भी योग्य नहीं बना।

ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਹੈ ਨ ਭੁਲੈ ਕਿਸੈ ਦਾ ਭੁਲਾਇਆ ॥
करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥
भगवान स्वयं अचूक है। वह किसी दूसरे के भुलाने से भी भूल नहीं करता।

ਭਗਤ ਆਪੇ ਮੇਲਿਅਨੁ ਜਿਨੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥
भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥
जिन्होंने सत्यवादी बनकर सत्य की ही साधना की है ऐसे भक्तों को भगवान ने स्वयं ही अपने साथ मिलाया हुआ है।

ਸੈਸਾਰੀ ਆਪਿ ਖੁਆਇਅਨੁ ਜਿਨੀ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਇਆ ॥
सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥
जिन लोगों ने झूठ बोल-बोलकर माया रूपी विष खाया है, ऐसे लोगों को भगवान ने स्वयं ही कुमार्गगामी कर दिया हैं।

ਚਲਣ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਕਾਮੁ ਕਰੋਧੁ ਵਿਸੁ ਵਧਾਇਆ ॥
चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥
वे परम वास्तविकता को नहीं पहचानते हैं, कि हम सभी एक दिन इस दुनिया से जाएंगे; वे काम और क्रोध के जहर पैदा करना जारी रखते हैं।

ਭਗਤ ਕਰਨਿ ਹਰਿ ਚਾਕਰੀ ਜਿਨੀ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥
जिन्होंने दिन-रात नाम का ही ध्यान किया है, ऐसे भक्तजन ही भगवान की भक्ति एवं सेवा करते रहते हैं।

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਹੋਇ ਕੈ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥
जिन्होंने प्रभु के दासों के दास बनकर अपने अन्तर्मन से अहंकार को मिटा दिया है,

ਓਨਾ ਖਸਮੈ ਕੈ ਦਰਿ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥੧੬॥
ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥१६॥
मालिक-प्रभु के दरबार में उनके ही मुख उज्ज्वल होते हैं और वे सत्य नाम द्वारा सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥ १६ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਸਬਾਹੀ ਸਾਲਾਹ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਇਕ ਮਨਿ ॥
सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥
जो व्यक्ति प्रातः काल एकाग्रचित होकर ईश्वर का यश करते और उसे स्मरण करते हैं,

ਸੇਈ ਪੂਰੇ ਸਾਹ ਵਖਤੈ ਉਪਰਿ ਲੜਿ ਮੁਏ ॥
सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥
वही पूर्ण सम्राट हैं और सही वक्त पर लड़कर मृत्यु को प्राप्त हुए हैं।

ਦੂਜੈ ਬਹੁਤੇ ਰਾਹ ਮਨ ਕੀਆ ਮਤੀ ਖਿੰਡੀਆ ॥
दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥
दूसरे प्रहर में मन की वृति विखर जाती है और मन अनेक मागों पर दौड़ता है।

ਬਹੁਤੁ ਪਏ ਅਸਗਾਹ ਗੋਤੇ ਖਾਹਿ ਨ ਨਿਕਲਹਿ ॥
बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥
मनुष्य बहुत सारे धंधों के झंझटों रूपी अथाह सागर में गिर जाता है और ऐसे गोते खाता है कि उसमें से बाहर निकल ही नहीं सकता।

ਤੀਜੈ ਮੁਹੀ ਗਿਰਾਹ ਭੁਖ ਤਿਖਾ ਦੁਇ ਭਉਕੀਆ ॥
तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ ॥
तीसरे प्रहर में जब भूख और प्यास रूपी दोनों कुत्ते भौंकने लग जाते हैं तो मनुष्य को उनके मुँह में भोजन एवं पानी डालना पड़ता है,

ਖਾਧਾ ਹੋਇ ਸੁਆਹ ਭੀ ਖਾਣੇ ਸਿਉ ਦੋਸਤੀ ॥
खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥
जब पहला भोजन का ग्रास हजम हो जाता है तो और भोजन खाने की लालसा उत्पन्न होती है।

ਚਉਥੈ ਆਈ ਉਂਘ ਅਖੀ ਮੀਟਿ ਪਵਾਰਿ ਗਇਆ ॥
चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ ॥
चौथे प्रहर में मनुष्य को निंद्रा आ जाती है, वह अपने नेत्र बन्द कर लेता है और स्वप्न मण्डलों में चला जाता है।

ਭੀ ਉਠਿ ਰਚਿਓਨੁ ਵਾਦੁ ਸੈ ਵਰ੍ਹ੍ਹਿਆ ਕੀ ਪਿੜ ਬਧੀ ॥
भी उठि रचिओनु वादु सै वर्हिआ की पिड़ बधी ॥
फिर निंद्रा से उठकर, वह पुनः विवाद खड़ा कर देता है और यूं अखाड़ा बनता है, जिस तरह उसने सैकड़ों वर्ष जीना है।

ਸਭੇ ਵੇਲਾ ਵਖਤ ਸਭਿ ਜੇ ਅਠੀ ਭਉ ਹੋਇ ॥
सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥
यद्यपि मनुष्य के मन में आठों प्रहर परमात्मा का भय बना रहे तो उसके लिए सभी वक्त नाम-सिमरन हेतु शुभ हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਚਾ ਨਾਵਣੁ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥१॥
हे नानक ! यदि भगवान मनुष्य के हृदय में निवास कर ले तो उसका यह सच्चा स्नान हो जाता है॥ १ ॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਸੇਈ ਪੂਰੇ ਸਾਹ ਜਿਨੀ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥
सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥
वही व्यक्ति पूर्ण शाह हैं, जिन्होंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है।

ਅਠੀ ਵੇਪਰਵਾਹ ਰਹਨਿ ਇਕਤੈ ਰੰਗਿ ॥
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥
वह दुनिया से बेपरवाह होकर आठों प्रहर एक परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं।

ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਥਾਹ ਵਿਰਲੇ ਪਾਈਅਹਿ ॥
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥
ऐसे विरले पुरुष हैं जो अनंत परमात्मा के दर्शन प्राप्त करते हैं।

ਕਰਮਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਜਾ ਕਾ ਬੋਲੁ ॥
करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥
बड़ी तकदीर से ही पूर्ण गुरु मिलता है, जिस गुरु के सारे ही किए वचन पूर्ण होते हैं।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਜੇ ਕਰੇ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਤੋਲੁ ॥੨॥
नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥२॥
हे नानक ! यदि गुरु जी किसी सेवक को सम्पूर्ण बना दें तो उसका विवेक कम नहीं होता॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਾ ਤੂੰ ਤਾ ਕਿਆ ਹੋਰਿ ਮੈ ਸਚੁ ਸੁਣਾਈਐ ॥
जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥
हे मेरे प्रभु ! मैं सत्य कहता हूँ जब तुम मेरे हो, तो मुझे शेष और क्या चाहिए ?

ਮੁਠੀ ਧੰਧੈ ਚੋਰਿ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥
मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥
जिस जीव-स्त्री को लौकिक कार्यो रूपी चोरों ने लूट लिया है, वह प्रभु के आत्म-स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकती।

ਏਨੈ ਚਿਤਿ ਕਠੋਰਿ ਸੇਵ ਗਵਾਈਐ ॥
एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥
उसने अपने निष्ठुर हृदय के कारण सेवा-भक्ति का अवसर गंवा दिया है।

ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਸਚੁ ਨ ਪਾਇ ਸੁ ਭੰਨਿ ਘੜਾਈਐ ॥
जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥
जिसके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा का निवास नहीं होता। उसको नष्ट करके नए तरीके से बनाया जाता है। अर्थात् उसका जन्म-मरण होता रहता है।

ਕਿਉ ਕਰਿ ਪੂਰੈ ਵਟਿ ਤੋਲਿ ਤੁਲਾਈਐ ॥
किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥
ऐसा व्यक्ति अपने कर्मों का लेखा देते वक्त पूरे माप सहित तोलने से कैसे पूरा तोला जाएगा?

ਕੋਇ ਨ ਆਖੈ ਘਟਿ ਹਉਮੈ ਜਾਈਐ ॥
कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥
यदि जीव का अहंकार दूर हो जाए तो उसके कर्मों के तोल को कोई भी कम नहीं कहेगा।

ਲਈਅਨਿ ਖਰੇ ਪਰਖਿ ਦਰਿ ਬੀਨਾਈਐ ॥
लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥
सभी जीव चतुर प्रभु के दरबार पर परखे जाते हैं कि वह धर्मात्मा है अथवा पापी हैं।

ਸਉਦਾ ਇਕਤੁ ਹਟਿ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਪਾਈਐ ॥੧੭॥
सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥१७॥
नाम का सौदा एक सत्संग रूपी दुकान से ही मिलता है। यह पूर्ण गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है॥ १७ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੨ ॥
सलोक मः २ ॥
श्लोक महला २॥

ਅਠੀ ਪਹਰੀ ਅਠ ਖੰਡ ਨਾਵਾ ਖੰਡੁ ਸਰੀਰੁ ॥
अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥
दिन-रात के वक्त को आठ भागों में विभक्त किया हुआ है, जिन्हें आठ प्रहर कहा जाता है। एक प्रहर तीन घण्टों का होता है। इन आठों प्रहरों में से एक प्रहर का संबंध शरीर से है। (इस प्रहर को अगली तुकों में प्रातः काल का चतुर्थ प्रहर कहा गया है।)"

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਭਾਲਹਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥
तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥
उस शरीर में अद्वितीय परमात्मा के नाम की नवनिधि है। भले और गंभीर पुरुष उन निधियों को ढूंढते हैं।

ਕਰਮਵੰਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ॥
करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥
हे नानक ! भाग्यशाली मनुष्य गुरु अथवा पीर धारण करके भगवान की महिमा गायन करते हैं।

ਚਉਥੈ ਪਹਰਿ ਸਬਾਹ ਕੈ ਸੁਰਤਿਆ ਉਪਜੈ ਚਾਉ ॥
चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥
दिन के चौथे प्रहर प्रातः काल नाम में वृत्ति लगाने वाले व्यक्तियों के मन में उत्साह उत्पन्न होता है।

ਤਿਨਾ ਦਰੀਆਵਾ ਸਿਉ ਦੋਸਤੀ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥
उनकी मित्रता नदियों से होती है अर्थात् सत्संग रूपी नदिया पर जाकर स्नान है और उनके मन एवं मुख में सत्य नाम विद्यमान है।

ਓਥੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੰਡੀਐ ਕਰਮੀ ਹੋਇ ਪਸਾਉ ॥
ओथै अम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥
उस सत्संग में अमृत रूप ईश्वर का नाम बांटा जाता है और भाग्यशालियों को नाम की देन प्राप्त होती है।

ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਕਸੀਐ ਵੰਨੀ ਚੜੈ ਚੜਾਉ ॥
कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ॥
उनके सोने जैसे अर्थात् शुद्ध तन को जब नाम रूपी कसौटी लगाई जाती है तो उनके तन को भक्ति का सुन्दर रंग चढ़ जाता है।

ਜੇ ਹੋਵੈ ਨਦਰਿ ਸਰਾਫ ਕੀ ਬਹੁੜਿ ਨ ਪਾਈ ਤਾਉ ॥
जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥
जब सतिगुरु रूपी सर्राफ की उन पर कृपा-दृष्टि हो जाती है तो उन्हें जन्म-मरण रूपी कष्ट नहीं मिलता।

ਸਤੀ ਪਹਰੀ ਸਤੁ ਭਲਾ ਬਹੀਐ ਪੜਿਆ ਪਾਸਿ ॥
सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥
शेष सातों प्रहरों में सत्य बोलना एवं विद्वानों के पास बैठना अति उत्तम है।

ਓਥੈ ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਬੀਚਾਰੀਐ ਕੂੜੈ ਘਟੈ ਰਾਸਿ ॥
ओथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥
वहाँ पाप एवं पुण्य की पहचान होती है और झूठ की पूँजी कम होती है।

ਓਥੈ ਖੋਟੇ ਸਟੀਅਹਿ ਖਰੇ ਕੀਚਹਿ ਸਾਬਾਸਿ ॥
ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥
वहाँ खोटे पुरुष दूर फेंके जाते हैं और भले पुरुषों को शाबाशी मिलती है।

ਬੋਲਣੁ ਫਾਦਲੁ ਨਾਨਕਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਖਸਮੈ ਪਾਸਿ ॥੧॥
बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥१॥
हे नानक ! जीवों को दुःख एवं सुख भगवान स्वयं ही देता है और मनुष्य का किसी प्रकार का शिकवा करना व्यर्थ है॥ १॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਪਉਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਧਰਤਿ ਮਹਤੁ ॥
पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
सारी दुनिया का गुरु पवन है, जल पिता है और पृथ्वी बड़ी माता है।

ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਦੁਇ ਦਾਈ ਦਾਇਆ ਖੇਲੈ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥
दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
दिन एवं रात्रि दोनों उपपिता एवं उपमाता है, जिनकी गोद में सारी दुनिया खेल रही है।

ਚੰਗਿਆਈਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ਵਾਚੇ ਧਰਮੁ ਹਦੂਰਿ ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥
परलोक में भगवान के समक्ष यमराज जीवों के शुभ-अशुभ कर्मों का विवेचन करता है।

ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਕੇ ਨੇੜੈ ਕੇ ਦੂਰਿ ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
अपने-अपने कर्मों के अनुसार कुछ जीव ईश्वर के निकट एवं कुछ जीव दूर होते हैं।

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗਏ ਮਸਕਤਿ ਘਾਲਿ ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
जिन्होंने भगवान का नाम-सिमरन किया है, वे पूजा-तपस्या इत्यादि की मेहनत को साकार कर गए हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ॥੨॥
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥२॥
हे नानक ! ऐसे प्राणियों के चेहरे उज्ज्वल हुए हैं और अनेकों ही उनके साथ वाले मुक्ति प्राप्त कर गए हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਚਾ ਭੋਜਨੁ ਭਾਉ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਸਿਆ ॥
सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥
सतिगुरु ने जिस व्यक्ति को यह ज्ञान बता दिया है कि भगवान का प्रेम ही खाने योग्य सत्य-भोजन है,

ਸਚੇ ਹੀ ਪਤੀਆਇ ਸਚਿ ਵਿਗਸਿਆ ॥
सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥
वही व्यक्ति सत्य प्रभु में निष्ठावान हुआ है और सत्य में समाकर फूल की तरह खिल गया है।

ਸਚੈ ਕੋਟਿ ਗਿਰਾਂਇ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ॥
सचै कोटि गिरांइ निज घरि वसिआ ॥
उसके गांव रूपी शरीर में जो भगवान का आत्मस्वरूप रूपी किला है, वहाँ स्थित हो गया है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਨਾਉ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਹਸਿਆ ॥
सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥
सतिगुरु ने प्रसन्न होकर उसे नाम प्रदान किया है और वह भगवान के प्रेम से कृतार्थ हो गया है।

ਸਚੈ ਦੈ ਦੀਬਾਣਿ ਕੂੜਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥
सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥
कोई भी व्यक्ति सत्य के दरबार में झूठ की कमाई करके नहीं जा सकता।

ਝੂਠੋ ਝੂਠੁ ਵਖਾਣਿ ਸੁ ਮਹਲੁ ਖੁਆਈਐ ॥
झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥
जो व्यक्ति केवल झूठ ही बोलता रहता है, वह आत्मस्वरूप में नहीं जा सकता।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਨੀਸਾਣਿ ਠਾਕ ਨ ਪਾਈਐ ॥
सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥
जो व्यक्ति सत्य-नाम का परवाना लेकर जाता है, उसे आत्मस्वरूप में जाने से कोई भी रोक नहीं सकता।

ਸਚੁ ਸੁਣਿ ਬੁਝਿ ਵਖਾਣਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ॥੧੮॥
सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥१८॥
जो व्यक्ति भगवान के सत्यनाम को सुनता, समझता एवं उसे जपता है, वह आत्म-स्वरूप में निमंत्रित कर लिया जाता है॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਪਹਿਰਾ ਅਗਨਿ ਹਿਵੈ ਘਰੁ ਬਾਧਾ ਭੋਜਨੁ ਸਾਰੁ ਕਰਾਈ ॥
पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥
यदि मैं अग्नि की पोशाक धारण कर लूं, हिम में अपना घर बना लूं और लोहे को अपना आहा बनालूं,

ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਪਾਣੀ ਕਰਿ ਪੀਵਾ ਧਰਤੀ ਹਾਕ ਚਲਾਈ ॥
सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥
समस्त दुखों को यदि मैं जल की भाँति पान कर लूं और धरती को पशुओं की भाँति हॉक कर चलाऊँ।

ਧਰਿ ਤਾਰਾਜੀ ਅੰਬਰੁ ਤੋਲੀ ਪਿਛੈ ਟੰਕੁ ਚੜਾਈ ॥
धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥
आकाश को तराजू में रखकर तोलूं और यदि मैं दूसरी ओर चार माशे के तोल से तोलूं,

ਏਵਡੁ ਵਧਾ ਮਾਵਾ ਨਾਹੀ ਸਭਸੈ ਨਥਿ ਚਲਾਈ ॥
एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥
यदि मैं अपने शरीर को इतना बड़ा कर लूं कि कहीं भी समा न सकूं और यदि मैं समस्त जीवों के नाक में नुकेल डालकर अपने हुक्म में चलाता रहूँ,

ਏਤਾ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਕਰੀ ਭਿ ਆਖਿ ਕਰਾਈ ॥
एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥
यदि मेरे मन में इतना बल हो कि इस तरह की बातें मैं करूँ और अपने कथन से दूसरों से भी कराऊँ पर यह सब कुछ व्यर्थ है।

ਜੇਵਡੁ ਸਾਹਿਬੁ ਤੇਵਡ ਦਾਤੀ ਦੇ ਦੇ ਕਰੇ ਰਜਾਈ ॥
जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥
जितना महान परमेश्वर है उतने महान ही उसके दान हैं। वह अपनी इच्छानुसार जीवों को दान देता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਉਪਰਿ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥
नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥१॥
हे नानक ! जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसको सत्य नाम की महानता प्राप्त होती है ॥ १ ॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਆਖਣੁ ਆਖਿ ਨ ਰਜਿਆ ਸੁਨਣਿ ਨ ਰਜੇ ਕੰਨ ॥
आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥
इन्सान का मुँह बातें कह-कह कर तृप्त नहीं होता, उसके कान बातें अथवा संगीत सुन-सुनकर संतुष्ट नहीं होते

ਅਖੀ ਦੇਖਿ ਨ ਰਜੀਆ ਗੁਣ ਗਾਹਕ ਇਕ ਵੰਨ ॥
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥
और उसकी आँखें सुन्दर रूप देख-देखकर तृप्त नहीं होती। प्रत्येक अंग एक प्रकार की विशेषता का ग्राहक है।

ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੈ ਗਲੀ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥
भूखों की भूख निवृत्त नहीं होती। मौखिक बातों से भूख दूर नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਭੁਖਾ ਤਾ ਰਜੈ ਜਾ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਇ ॥੨॥
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥२॥
हे नानक ! भूखा मनुष्य तभी तृप्त होता है यदि वह गुणों के भण्डार परमात्मा की महिमा करके उसमें समा जाता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਸਭੁ ਕੂੜੁ ਕੂੜੁ ਕਮਾਈਐ ॥
विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥
सत्य नाम के अलावा सभी कार्य झूठे हैं और झूठ का ही कर्म करते हैं।

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਕੂੜਿਆਰੁ ਬੰਨਿ ਚਲਾਈਐ ॥
विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥
सत्यनाम के सिवाय अन्य झूठे कार्य करने वाले लोगों को यमदूत बांधकर यमपुरी ले जाते हैं।

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ਛਾਰੁ ਰਲਾਈਐ ॥
विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥
सत्य नाम के अलावा यह तन मिट्टी समान है और मिट्टी में ही मिल जाता है।

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਸਭ ਭੁਖ ਜਿ ਪੈਝੈ ਖਾਈਐ ॥
विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥
सत्यनाम के सिवाय मनुष्य जितना बढ़िया पहनता एवं खाता है, उससे उसकी भूख में ही वृद्धि होती है।

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਦਰਬਾਰੁ ਕੂੜਿ ਨ ਪਾਈਐ ॥
विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥
मनुष्य सत्य नाम के बिना झूठे कार्य करके प्रभु के दरबार को प्राप्त नहीं कर सकता।

ਕੂੜੈ ਲਾਲਚਿ ਲਗਿ ਮਹਲੁ ਖੁਆਈਐ ॥
कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥
सच्चे परमात्मा के अलावा झूठे लोग ईश्वर के मन्दिरको प्राप्त नहीं होते। झूठे लोभ से सम्मिलित होकर मनुष्य प्रभु के मन्दिर को गंवा देता है।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਠਗਿਓ ਠਗਿ ਆਈਐ ਜਾਈਐ ॥
सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥
सारा जगत् घोखेबाज माया ने छल लिया है और प्राणी योनियों में फँसकर जन्म लेता और मरता रहता है।

ਤਨ ਮਹਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਿ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਈਐ ॥੧੯॥
तन महि त्रिसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥१९॥
प्राणी के तन में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। यह प्रभु के नाम से ही बुझाई जा सकती है॥ १९ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਸੰਤੋਖੁ ਰੁਖੁ ਧਰਮੁ ਫੁਲੁ ਫਲ ਗਿਆਨੁ ॥
नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥
हे नानक ! गुरु संतोष रूपी वृक्ष है, इस वृक्ष को धर्म रूपी फूल लगता है और ज्ञान रूपी फल लगते हैं।

ਰਸਿ ਰਸਿਆ ਹਰਿਆ ਸਦਾ ਪਕੈ ਕਰਮਿ ਧਿਆਨਿ ॥
रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥
हरि-रस रूपी जल से सीचा हुआ यह वृक्ष सदैव ही हरा-भरा रहता है। भगवान की कृपा से ध्यान द्वारा यह ज्ञान रूपी फल पकते हैं।

ਪਤਿ ਕੇ ਸਾਦ ਖਾਦਾ ਲਹੈ ਦਾਨਾ ਕੈ ਸਿਰਿ ਦਾਨੁ ॥੧॥
पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥१॥
इस ज्ञान रूपी फल को खाने वाला मनुष्य पति-प्रभु के मिलाप के आनंद को प्राप्त करता है। ज्ञान रूपी दान ही समस्त दानों में से बड़ा दान है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਸੁਇਨੇ ਕਾ ਬਿਰਖੁ ਪਤ ਪਰਵਾਲਾ ਫੁਲ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲ ॥
सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥
गुरु सोने का वृक्ष है, जिसके पते मूंगे हैं और इसके पुष्प जवाहर एवं माणिक हैं।

ਤਿਤੁ ਫਲ ਰਤਨ ਲਗਹਿ ਮੁਖਿ ਭਾਖਿਤ ਹਿਰਦੈ ਰਿਦੈ ਨਿਹਾਲੁ ॥

तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥

उस पौधे को गुरु के मुखारबिंद के वचन की मणि का फल लगा हुआ है। जो व्यक्ति गुरु के वचनों को अपने हृदय में बसा लेता है, वह कृतार्थ हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਵੈ ਲੇਖੁ ॥

नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥

हे नानक ! गुरु के शब्द रूपी फल उस व्यक्ति के मुंह में ही पड़ते हैं, जिस पर भगवान की कृपा होती है और उसके माथे पर तकदीर का शुभ लेख लिखा होता है।

ਅਠਿਸਠਿ ਤੀਰਥ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਪੂਜੈ ਸਦਾ ਵਿਸੇਖੁ ॥

अठिसठि तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥

गुरु के चरणों में आने से अठसठ तीर्थों के स्नान से भी अधिक फल मिलता है। अतः हमेशा ही गुरु के चरणों की पूजा करनी चाहिए।

ਹੰਸੁ ਹੇਤੁ ਲੋਭੁ ਕੋਪੁ ਚਾਰੇ ਨਦੀਆ ਅਗਿ ॥

हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥

हे नानक ! हिंसा, मोह, लालच एवं क्रोध यह चारों ही अग्नि की नदियाँ हैं।

ਪਵਹਿ ਦਝਹਿ ਨਾਨਕਾ ਤਰੀਐ ਕਰਮੀ ਲਗਿ ॥੨॥

पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥२॥

इनमें पड़ने से प्राणी जल जाता है। इन नदियों में से वहीं मनुष्य पार होते हैं जो भगवान की कृपा से नाम-सिमरन में लग जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਜੀਵਦਿਆ ਮਰੁ ਮਾਰਿ ਨ ਪਛੋਤਾਈਐ ॥

जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥

जीवित ही मर जाओ अर्थात् अपने अहंकार को नष्ट कर दो । अहंकार को नष्ट करने के उपरांत पश्चाताप नहीं होगा।

ਝੂਠਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਕਿਨਿ ਸਮਝਾਈਐ ॥
झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥
यह दुनिया झूठी है, परन्तु किसी विरले ने ही यह बात गुरु से समझी है।

ਸਚਿ ਨ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ਧੰਧੈ ਧਾਈਐ ॥
सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥
मनुष्य सत्यनाम से प्रेम नहीं करता और दुनिया के धंधों में लगकर भटकता रहता है।

ਕਾਲੁ ਬੁਰਾ ਖੈ ਕਾਲੁ ਸਿਰਿ ਦੁਨੀਆਈਐ ॥
कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥
यम बहुत निर्दयी है और जीवों का नाश करने वाला है। यह दुनिया के लोगों पर सवार है।

ਹੁਕਮੀ ਸਿਰਿ ਜੰਦਾਰੁ ਮਾਰੇ ਦਾਈਐ ॥
हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥
ईश्वर के आदेश से यमदूत अवसर पाकर मनुष्य के सिर पर डण्डा मारता है।

ਆਪੇ ਦੇਇ ਪਿਆਰੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈਐ ॥
आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥
परमेश्वर स्वयं ही अपना प्रेम प्रदान करता है और इसे प्राणी के मन में वास कराता है।

ਮੁਹਤੁ ਨ ਚਸਾ ਵਿਲੰਮੁ ਭਰੀਐ ਪਾਈਐ ॥
मुहतु न चसा विलमु भरीऐ पाईऐ ॥
मनुष्य का शरीर त्यागने में मुहूर्त अथवा क्षण भर का विलम्ब नहीं होता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨੦॥
गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥२०॥
गुरु की कृपा से इस भेद को समझ कर प्राणी सत्य में ही समा जाता है।॥२०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਤੁਮੀ ਤੁਮਾ ਵਿਸੁ ਅਕੁ ਧਤੂਰਾ ਨਿਮੁ ਫਲੁ ॥
तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥
उस व्यक्ति के मन एवं मुंह में तुंधी, विष, आक, धतूरा एवं नीम फल जैसी कड़वाहट बनी रहती है,"

ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਵਸਹਿ ਤਿਸੁ ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਹੀ ॥
मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥
हे प्रभु ! जिस व्यक्ति को तू हृदय में याद नहीं आता,

ਨਾਨਕ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਹੰਢਨਿ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ॥੧॥
नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥१॥
हे नानक ! ऐसे भाग्यहीन व्यक्ति भटकते रहते हैं और उनकी दुखद दशा किसे बताई जाए॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਮਤਿ ਪੰਖੇਰੂ ਕਿਰਤੁ ਸਾਥਿ ਕਬ ਉਤਮ ਕਬ ਨੀਚ ॥
मति पंखेरू किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥
आदमी की मति एक पक्षी है। आदमी की किस्मत उस पक्षी के पंख हैं जो उसके साथ रहते हैं। यह पक्षी पंखों से उड़कर कभी उत्तम एवं कभी नीच स्थानों पर बैठता है।

ਕਬ ਚੰਦਨਿ ਕਬ ਅਕਿ ਡਾਲਿ ਕਬ ਊਚੀ ਪਰੀਤਿ ॥
कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥
यह कभी स्वर्ग रूपी चंदन के वृक्ष और कभी नरक रूपी आक की डाली पर बैठता है। यह कभी भगवान से भी प्रेम कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਈਐ ਸਾਹਿਬ ਲਗੀ ਰੀਤਿ ॥੨॥
नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥२॥
हे नानक ! भगवान प्राणियों को अपनी इच्छानुसार चलाता है। यह रीति आदिकाल से प्रचलित है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਕੇਤੇ ਕਹਹਿ ਵਖਾਣ ਕਹਿ ਕਹਿ ਜਾਵਣਾ ॥
केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥
कितने ही लोग भगवान के गुणों का बखान कर रहे हैं और कितने ही लोग बखान कर करके दुनिया से चले गए हैं।

ਵੇਦ ਕਹਹਿ ਵਖਿਆਣ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਣਾ ॥
वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥
वेद भगवान के गुणों का बखान करते हैं परन्तु उसके गुणों का अंत नहीं पा सकते।

ਪੜਿਐ ਨਾਹੀ ਭੇਦੁ ਬੁਝਿਐ ਪਾਵਣਾ ॥
पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥
पढ़ने से उसका भेद नहीं पाया जा सकता। उसका भेद ज्ञान से ही पाया जाता है।

ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਕੈ ਭੇਖਿ ਕਿਸੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵਣਾ ॥
खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥
षट्दर्शन के छः मत हैं परन्तु उनके द्वारा कोई विरला पुरुष ही परमात्मा में लीन होता है।

ਸਚਾ ਪੁਰਖੁ ਅਲਖੁ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣਾ ॥
सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥
जिस प्राणी ने गुरु की शिक्षा से सच्चा अलख पुरुष पाया है, वह शोभायमान है।

ਮੰਨੇ ਨਾਉ ਬਿਸੰਖ ਦਰਗਹ ਪਾਵਣਾ ॥
मंने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥
जिन्होंने अनन्त ईश्वर के नाम का चिंतन-मनन किया है, वह उसके दरबार में जाता है।

ਖਾਲਕ ਕਉ ਆਦੇਸੁ ਢਾਢੀ ਗਾਵਣਾ ॥
खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥
मैं ढाडी (गायक) हूँ और सृष्टि के सृजनहार को प्रणाम करता उसका यशोगान करता रहता हूँ।

ਨਾਨਕ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਾ ॥੨੧॥
नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा ॥२१॥
हे नानक ! वह एक ईश्वर प्रत्येक युग में विद्यमान है और उसे ही अपने मन में बसाना चाहिए ॥ २१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक महला २॥

ਮੰਤ੍ਰੀ ਹੋਇ ਅਠੂਹਿਆ ਨਾਗੀ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
मंत्री होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥
यदि कोई आदमी मन्त्र तो बिच्छू का जानता हो, लेकिन सपों को जाकर पकड़ ले

ਆਪਣ ਹਥੀ ਆਪਣੈ ਦੇ ਕੂਚਾ ਆਪੇ ਲਾਇ ॥
आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥
तो वह अपने हाथों से स्वयं अपने आपको अग्नि का लूका लगा लेता है।
आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥

ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ਧੁਰਿ ਖਸਮ ਕਾ ਅਤੀ ਹੂ ਧਕਾ ਖਾਇ ॥
हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ ॥
आदिकाल से ही ईश्वर का यह हुक्म हुआ है कि जो बुरा करता है वह भारी ठोकर खाता है।

ਗੁਰਮੁਖ ਸਿਉ ਮਨਮੁਖੁ ਅੜੈ ਡੁਬੈ ਹਕਿ ਨਿਆਇ ॥
गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ ॥
जो मनमुख इन्सान गुरमुख से विरोध करता है, वह नष्ट हो जाता है। यही सच्चा न्याय है।

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਆਪੇ ਖਸਮੁ ਵੇਖੈ ਕਰਿ ਵਿਉਪਾਇ ॥
दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥
लोक एवं परलोक दोनों तरफ का न्याय करने वाला मालिक-प्रभु स्वयं ही न्याय करके देखता है।

ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤਿਸਹਿ ਰਜਾਇ ॥੧॥
नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ ॥१॥
हे नानक ! इसे इस तरह समझो कि सबकुछ परमात्मा की इच्छानुसार ही हो रहा है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਨਾਨਕ ਪਰਖੇ ਆਪ ਕਉ ਤਾ ਪਾਰਖੁ ਜਾਣੁ ॥
नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥
हे नानक ! यदि मनुष्य अपने आप को परखे, केवल तभी उसे पारखी समझो।

ਰੋਗੁ ਦਾਰੂ ਦੋਵੈ ਬੁਝੈ ਤਾ ਵੈਦੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥
यदि मनुष्य रोग एवं औषधि दोनों को समझता हो तो ही वह चतुर वैद्य है।

ਵਾਟ ਨ ਕਰਈ ਮਾਮਲਾ ਜਾਣੈ ਮਿਹਮਾਣੁ ॥
वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥
मानव को चाहिए कि वह इस दुनिया में स्वयं को एक अतिथि समझे तथा धर्म-मार्ग पर चलता हुआ दूसरों से विवाद मत करे।

ਮੂਲੁ ਜਾਣਿ ਗਲਾ ਕਰੇ ਹਾਣਿ ਲਾਏ ਹਾਣੁ ॥
मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥
वह जगत् के मूल प्रभु को समझकर दूसरों से प्रभु बारे विचार-विमर्श करे। वह दुनिया में नाम-सिमरन:करने आया है तथा उसे कामादिक हानिकारक पापों को नष्ट कर देना चाहिए।

ਲਬਿ ਨ ਚਲਈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸੋ ਵਿਸਟੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥
लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥
जो लालच के मार्ग पर नहीं चलता और सत्य में वास करता है, वह मध्यस्थ ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होता है।

ਸਰੁ ਸੰਧੇ ਆਗਾਸ ਕਉ ਕਿਉ ਪਹੁਚੈ ਬਾਣੁ ॥
सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥
यदि बाण आकाश को मारा जाए, वह बाण किस तरह वहाँ पहुँच सकता है ?

ਅਗੈ ਓਹੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਵਾਹੇਦੜੁ ਜਾਣੁ ॥੨॥
अगै ओहु अगमु है वाहेदड़ु जाणु ॥२॥
ऊपर वह आकाश अगम्य है, इसलिए समझ लीजिए कि बाण उलटकर बाण चलाने वाले पर ही लगेगा ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਪਿਆਰੁ ਪ੍ਰੇਮਿ ਸੀਗਾਰੀਆ ॥
नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥
जीव-स्त्रियाँ अपने प्रभु-पति से मुहब्बत करती हैं और उन्होंने प्रेम का श्रृंगार किया हुआ है।

ਕਰਨਿ ਭਗਤਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਨ ਰਹਨੀ ਵਾਰੀਆ ॥
करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥
दिन-रात वह प्रभु की भक्ति करती हैं और भक्ति करने से वह रुकती नहीं।

ਮਹਲਾ ਮੰਝਿ ਨਿਵਾਸੁ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀਆ ॥
महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥
परमेश्वर के मन्दिर में उनका निवास है और प्रभु के नाम से वह संवरी हुई हैं।

ਸਚੁ ਕਹਨਿ ਅਰਦਾਸਿ ਸੇ ਵੇਚਾਰੀਆ ॥
सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥
वह विनीत होकर सच्चे हृदय से प्रार्थना करती हैं।

ਸੋਹਨਿ ਖਸਮੈ ਪਾਸਿ ਹੁਕਮਿ ਸਿਧਾਰੀਆ ॥
सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥
वह अपने स्वामी के पास सुन्दर लगती हैं और पति-प्रभु के हुक्म में उसके पास पहुँची हैं।

ਸਖੀ ਕਹਨਿ ਅਰਦਾਸਿ ਮਨਹੁ ਪਿਆਰੀਆ ॥
सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥
वह प्रभु को श्रद्धा से प्रेम करती है। वे सभी सखियां प्रभु के समक्ष प्रार्थना करती हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਵਾਸੁ ਫਿਟੁ ਸੁ ਜੀਵਿਆ ॥
बिनु नावै ध्रिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥
प्रभु-नाम के बिना मनुष्य का जीवन धिक्कार-योग्य है और उसका निवास भी धिक्कार योग्य है।

ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀਆਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਿਆ ॥੨੨॥
सबदि सवारीआसु अम्रितु पीविआ ॥२२॥
जो जीव-स्त्री नाम द्वारा संवर गई है उसने ही नाम रूपी अमृत पान कर लिया है॥ २२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਮਾਰੂ ਮੀਹਿ ਨ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਅਗੀ ਲਹੈ ਨ ਭੁਖ ॥
मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख ॥
जैसे मरुस्थल वर्षा से तृप्त नहीं होता वैसे ही अग्नि की भूख लकड़ियों से दूर नहीं होती।

ਰਾਜਾ ਰਾਜਿ ਨ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਸਾਇਰ ਭਰੇ ਕਿਸੁਕ ॥
राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक ॥
कोई भी सम्राट साम्राज्य से तृप्त नहीं होता और सागर को कभी कोई नहीं भर सका।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਕੇਤੀ ਪੁਛਾ ਪੁਛ ॥੧॥
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥१॥
हे नानक ! भक्तजनों को सत्य नाम की कितनी भूख लगी रहती है, वह बताई नहीं जा सकती अर्थात् भक्त नाम जप-जप कर तृप्त ही नहीं होते॥१॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਨਿਹਫਲੰ ਤਸਿ ਜਨਮਸਿ ਜਾਵਤੁ ਬ੍ਰਹਮ ਨ ਬਿੰਦਤੇ ॥
निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
जब तक इन्सान को परमेश्वर का ज्ञान नहीं होता उसका जीवन व्यर्थ है।

ਸਾਗਰੰ ਸੰਸਾਰਸਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਤਰਹਿ ਕੇ ॥
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥
गुरु की कृपा से विरले पुरुष ही संसार सागर से पार होते हैं।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬੀਚਾਰਿ ॥
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥
नानक विचार कर कहते हैं कि परमेश्वर सब कार्य करने में समर्थ है।

ਕਾਰਣੁ ਕਰਤੇ ਵਸਿ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕਲ ਰਖੀ ਧਾਰਿ ॥੨॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥
जगत् का कारण सृजनहार प्रभु के वश में है और प्रभु की कला ने इस जगत् को धारण किया हुआ है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਖਸਮੈ ਕੈ ਦਰਬਾਰਿ ਢਾਢੀ ਵਸਿਆ ॥
खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥
भाट (यशोगान करने वाला) प्रभु के दरबार में वास करता है।

ਸਚਾ ਖਸਮੁ ਕਲਾਣਿ ਕਮਲੁ ਵਿਗਸਿਆ ॥
सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥
सत्यस्वरूप परमेश्वर की महिमा गायन करने से उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो गया है।

ਖਸਮਹੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇ ਮਨਹੁ ਰਹਸਿਆ ॥

खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥

ईश्वर से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से अपने हृदय में वह परम प्रसन्न हो गया है।

ਦੁਸਮਨ ਕਢੇ ਮਾਰਿ ਸਜਣ ਸਰਸਿਆ ॥

दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥

उसने अपने हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि शत्रुओं को मार कर बाहर निकाल दिया है और उसके सज्जन-सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि प्रसन्न हो गए हैं।

ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸਚਾ ਮਾਰਗੁ ਦਸਿਆ ॥

सचा सतिगुरु सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥

सच्चे सतिगुरु ने उसे प्रभु-मिलन का सन्मार्ग बता दिया है।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਕਾਲੁ ਵਿਧਉਸਿਆ ॥
सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥
सत्यस्वरूप ब्रह्म का चिन्तन करने से उसने काल (मृत्यु) को नष्ट कर दिया है।

ढਾਢੀ ਕਥੇ ਅਕਥੁ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥
यशोगान करने वाला चारण अकथनीय प्रभु की महिमा बखान करता है और प्रभु नाम से श्रृंगारा गया है अर्थात् उसका जन्म सफल हो गया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਹਿ ਰਾਸਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥੨੩॥
नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥२३॥
हे नानक ! शुभ गुणों की पूँजी पकड़ कर रखने से उसने पूज्य परमेश्वर हरि से भेंट कर ली है॥ २३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਖਤਿਅਹੁ ਜੰਮੇ ਖਤੇ ਕਰਨਿ ਤ ਖਤਿਆ ਵਿਚਿ ਪਾਹਿ ॥
खतिअहु जमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥
हम जीवों के जन्म पूर्वकृत किए पापों के कारण हुए हैं। हम जन्म लेकर अब फिर पाप किए जा रहे हैं और अगले जन्मों में भी हम पाप कर्मों में ही पड़ेंगे।

ਧੋਤੇ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰਹਿ ਜੇ ਸਉ ਧੋਵਣ ਪਾਹਿ ॥
धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥
हमारे यह पाप धर्म-कर्म करने से बिल्कुल ही नहीं मिटते, चाहे हम हजारों बार तीर्थ-स्नान करके पाप धोने का प्रयास ही कर लें।

ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਬਖਸੀਅਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਪਾਹੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥
नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥१॥
हे नानक ! यदि प्रभु क्षमादान कर दें तो यह पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, अन्यथा अत्यन्त प्रताड़ना मिलती है॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਨਕ ਬੋਲਣੁ ਝਖਣਾ ਦੁਖ ਛਡਿ ਮੰਗੀਅਹਿ ਸੁਖ ॥
नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥
हे नानक ! यदि हम भगवान से दुखों को छोड़कर सुख ही माँगें, तो यह बोलना व्यर्थ ही है।

ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦੁਇ ਦਰਿ ਕਪੜੇ ਪਹਿਰਹਿ ਜਾਇ ਮਨੁਖ ॥
सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥
सुख एवं दुख यह दोनों ही भगवान के दरबार से मिले हुए वस्त्र हैं, जिन्हें मानव दुनिया में आकर पहनता है।

ਜਿਥੈ ਬੋਲਣਿ ਹਾਰੀਐ ਤਿਥੈ ਚੰਗੀ ਚੁਪ ॥੨॥
जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥२॥
जहाँ बोलने से पराजित ही होना है, वहाँ चुप रहने में ही भलाई है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਦੇਖਿ ਅੰਦਰੁ ਭਾਲਿਆ ॥
चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥
चारों दिशाओं में ढूंढने के पश्चात मैंने परमात्मा को अपने हृदय में ही ढूंढ लिया है।

ਸਚੈ ਪੁਰਖਿ ਅਲਖਿ ਸਿਰਜਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥
सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥
उस अलक्ष्य, सद्पुरुष एवं सृष्टिकर्ता को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ।

ਉਝੜਿ ਭੁਲੇ ਰਾਹ ਗੁਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ॥
उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥
मैं उजाड़ संसार में भटक गया था लेकिन गुरदेव ने मुझे सद्मार्ग दिखा दिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸਚੇ ਵਾਹੁ ਸਚੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥
सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥
सत्य के पुंज सतिगुरु धन्य हैं, जिनकी दया से मैंने सत्य स्वरूप परमात्मा की आराधना की है।

ਪਾਇਆ ਰਤਨੁ ਘਰਾਹੁ ਦੀਵਾ ਬਾਲਿਆ ॥
पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥
सतिगुरु ने मेरे अन्तर्मन में ही ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया है, जिससे मैंने अपने हृदय-घर में नाम रूपी रत्न को पा लिया है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿ ਸੁਖੀਏ ਸਚ ਵਾਲਿਆ ॥
सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥
गुरु के शब्द द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा-स्तुति करके मैं सुखी हो गया हूँ और सत्यवादी बन गया हूँ।

ਨਿਡਰਿਆ ਡਰੁ ਲਗਿ ਗਰਬਿ ਸਿ ਗਾਲਿਆ ॥
निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥
जिन लोगों को प्रभु का भय नहीं, उन्हें यम का भय लगा रहता है और वे अहंकार में ही नष्ट हो जाते हैं।

ਨਾਵਹੁ ਭੁਲਾ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਬੇਤਾਲਿਆ ॥੨੪॥
नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥२४॥
नाम को विस्मृत करके संसार प्रेत की भाँति भटकता रहता है।॥ २४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੰਮੈ ਭੈ ਮਰੈ ਭੀ ਭਉ ਮਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ॥
भै विचि जमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥
मानव भय में जन्म लेता है और भय में ही प्राण त्याग देता है। जन्म-मरण के उपरांत भी उसके मन में भय ही बना रहता है।

ਨਾਨਕ ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੇ ਮਰੈ ਸਹਿਲਾ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥१॥
हे नानक ! यदि मानव प्रभु के भय में मरता है अर्थात् मानता है तो उसका जगत् में आगमन सफल सुखदायक हो जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਭੈ ਵਿਣੁ ਜੀਵੈ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਖੁਸੀਆ ਖੁਸੀ ਕਮਾਇ ॥
भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥
ईश्वर का भय धारण किए बिना प्राणी बहुत ज्यादा देर तक जीता और आनन्द ही आनन्द प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਭੈ ਵਿਣੁ ਜੇ ਮਰੈ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਉਠਿ ਜਾਇ ॥੨॥
नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥
हे नानक ! यदि वह ईश्वर के भय बिना प्राण त्याग दे तो वह चेहरे पर कालिख लगा कर दुनिया से चला जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤ ਸਰਧਾ ਪੂਰੀਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥
जिस व्यक्ति पर सतिगुरु दयालु हो जाते हैं, उसकी श्रद्धा पूर्ण हो जाती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਝੂਰੀਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥
जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य कभी पश्चाताप नहीं करता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਦੁਖੁ ਨ ਜਾਣੀਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥
जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य दुख को जानता ही नहीं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥
जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य हरि की प्रीति का आनंद प्राप्त करता है।
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਜਮ ਕਾ ਡਰੁ ਕੇਹਾ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥
जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो मनुष्य को यम का भय नहीं रहता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਸਦ ਹੀ ਸੁਖੁ ਦੇਹਾ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥
जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो तन को सदा सुख प्राप्त होता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈਐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥
जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤ ਸਚਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨੫॥
सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥२५॥
जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य सत्य में ही समा जाता है।॥२५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸਿਰੁ ਖੋਹਾਇ ਪੀਅਹਿ ਮਲਵਾਣੀ ਜੂਠਾ ਮੰਗਿ ਮੰਗਿ ਖਾਹੀ ॥
सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥
वह सिर के केश उखड़वाते हैं, मलिन जल पीते और दूसरों की जूठन बार-बार मांगते और खाते हैं।

ਫੋਲਿ ਫਦੀਹਤਿ ਮੁਹਿ ਲੈਨਿ ਭੜਾਸਾ ਪਾਣੀ ਦੇਖਿ ਸਗਾਹੀ ॥
फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥
वह गंदगी बिखेरते हैं, अपने मुख से गन्दी हवा लेते हैं और जल देखने से संकोच करते हैं।

ਭੇਡਾ ਵਾਗੀ ਸਿਰੁ ਖੋਹਾਇਨਿ ਭਰੀਅਨਿ ਹਥ ਸੁਆਹੀ ॥
भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥
भस्म से लथपथ हुए हाथों से भेड़ों की भाँति वह अपने केश उखड़वाते हैं।

ਮਾਊ ਪੀਊ ਕਿਰਤੁ ਗਵਾਇਨਿ ਟਬਰ ਰੋਵਨਿ ਧਾਹੀ ॥
माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥
माता-पिता के प्रति जो कर्म था अर्थात् उनकी सेवा की मर्यादा वह त्याग देते हैं और उनके सगे-संबंधी फूट-फूट कर अश्रु बहाते हैं।

ਓਨਾ ਪਿੰਡੁ ਨ ਪਤਲਿ ਕਿਰਿਆ ਨ ਦੀਵਾ ਮੁਏ ਕਿਥਾਊ ਪਾਹੀ ॥
ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥
उनके लिए कोई भी पिण्डदान, पत्तल क्रिया नहीं करता है, न ही अन्तिम संस्कार करता है, न ही कोई मिट्टी का दीपक प्रज्वलित करता है। मरणोपरांत वह कहाँ फेंके जाएँगे ?

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਦੇਨਿ ਨ ਢੋਈ ਬ੍ਰਹਮਣ ਅੰਨੁ ਨ ਖਾਹੀ ॥
अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही ॥
अठसठ तीर्थ स्थान भी उनको आश्रय नहीं देते और ब्राह्मण उनका भोजन नहीं करते।

ਸਦਾ ਕੁਚੀਲ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਮਥੈ ਟਿਕੇ ਨਾਹੀ ॥
सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥
वह सदा दिन-रात मलिन रहते हैं और उनके माथे पर तिलक भी नहीं।

ਝੁੰਡੀ ਪਾਇ ਬਹਨਿ ਨਿਤਿ ਮਰਣੈ ਦੜਿ ਦੀਬਾਣਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥
झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥
शोक करने वालों की भाँति वह समूह बना कर बैठते हैं। अथवा जैसे मृतक के घर महिलाएँ मुख पर कपड़ा डालकर शोक मनाती हैं और प्रभु-भक्तों के सत्संग में नहीं जाते।

ਲਕੀ ਕਾਸੇ ਹਥੀ ਫੁੰਮਣ ਅਗੋ ਪਿਛੀ ਜਾਹੀ ॥
लकी कासे हथी फुमण अगो पिछी जाही ॥
वे कमर से माँगने वाले प्याले लटकाते हुए और हाथों में धागों के गुच्छों सहित आगे-पीछे चलते हैं।

ਨਾ ਓਇ ਜੋਗੀ ਨਾ ਓਇ ਜੰਗਮ ਨਾ ਓਇ ਕਾਜੀ ਮੁੰਲਾ ॥
ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला ॥
न ही वह योगी हैं, न ही वह शिव के उपासक, न ही वह काजी और न ही मुल्लां हैं।

ਦਯਿ ਵਿਗੋਏ ਫਿਰਹਿ ਵਿਗੁਤੇ ਫਿਟਾ ਵਤੈ ਗਲਾ ॥
दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥
प्रभु द्वारा कुमार्गगामी किए हुए वह अपमानित हुए फिरते हैं और उनका समूह समुदाय भ्रष्ट हो जाता है।

ਜੀਆ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੇ ਸੋਈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਰਖੈ ॥
जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥
वह यह भी नहीं समझते कि प्राणियों को केवल वही परमात्मा मारता और पुनर्जीवित करता है। दूसरा कोई भी उनको बचा नहीं सकता।

ਦਾਨਹੁ ਤੈ ਇਸਨਾਨਹੁ ਵੰਜੇ ਭਸੁ ਪਈ ਸਿਰਿ ਖੁਥੈ ॥
दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥
वह पुण्य करने एवं स्नान करने से वंचित रह जाते हैं। उनके उखड़े हुए सिरों पर राख पड़ती है।

ਪਾਣੀ ਵਿਚਹੁ ਰਤਨ ਉਪੰਨੇ ਮੇਰੁ ਕੀਆ ਮਾਧਾਣੀ ॥
पाणी विचहु रतन उपंने मेरु कीआ माधाणी ॥
वह इस बात को भी नहीं समझते कि जब देवताओं एवं दैत्यों ने मिलकर क्षीर सागर को सुमेर पर्वत की मथनी बनाकर मंथन किया था तो जल में से १४ रत्न निकले थे।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਦੇਵੀ ਥਾਪੇ ਪੁਰਬੀ ਲਗੈ ਬਾਣੀ ॥
अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥
देवताओं ने अठसठ तीर्थ-स्थलों को नियुक्त किया है। जहाँ पर्व त्यौहार मनाए जाते हैं और भजन गाए जाते हैं। अर्थात् वहाँ वाणी द्वारा हरि की कथा होती है।

ਨਾਇ ਨਿਵਾਜਾ ਨਾਤੈ ਪੂਜਾ ਨਾਵਨਿ ਸਦਾ ਸੁਜਾਣੀ ॥
नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥
स्नान उपरांत मुसलमान नमाजें पढ़ते हैं और स्नान करके हिन्दु पूजा-अर्चना करते हैं और सभी बुद्धिमान सदैव नहाते हैं।

ਮੁਇਆ ਜੀਵਦਿਆ ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਜਾਂ ਸਿਰਿ ਪਾਈਐ ਪਾਣੀ ॥
मुइआ जीवदिआ गति होवै जां सिरि पाईऐ पाणी ॥
जब मनुष्य जम्मते-मरते हैं, तब उनके सिर पर जल डाला जाता है ताकि उनकी गति हो जाए।

ਨਾਨਕ ਸਿਰਖੁਥੇ ਸੈਤਾਨੀ ਏਨਾ ਗਲ ਨ ਭਾਣੀ ॥
नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥
हे नानक ! सिर उखड़ाने वाले शैतान हैं और स्नान की बात उन्हें अच्छी नहीं लगती।

ਵੁਠੈ ਹੋਇਐ ਹੋਇ ਬਿਲਾਵਲੁ ਜੀਆ ਜੁਗਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥
वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥
जब जल बरसता है, हर तरफ प्रसन्नता होती है। प्राणियों के जीवन की युक्ति जल में विद्यमान है।

ਵੁਠੈ ਅੰਨੁ ਕਮਾਦੁ ਕਪਾਹਾ ਸਭਸੈ ਪੜਦਾ ਹੋਵੈ ॥
वुठै अंनु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥
जब जल बरसता है, अनाज, गन्ना, कपास इत्यादि जो सबके पोषक हैं उत्पन्न होते हैं। कपास, जो सबको ढांपने वाली चादर बनती है।

ਵੁਠੈ ਘਾਹੁ ਚਰਹਿ ਨਿਤਿ ਸੁਰਹੀ ਸਾ ਧਨ ਦਹੀ ਵਿਲੋਵੈ ॥
वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥
जब मेघ बरसते हैं, गाएँ सदा घास चरती हैं और उनके दूध से दहीं होता है।

ਤਿਤੁ ਘਿਇ ਹੋਮ ਜਗ ਸਦ ਪੂਜਾ ਪਇਐ ਕਾਰਜੁ ਸੋਹੈ ॥
तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥
तब स्त्रियां मंथन करती हैं। उसमें से जो घी निकलता है, उससे होम, यज्ञ, पवित्र भण्डारे और नित्य पूजा सदा ही सम्पन्न होते हैं और घी से अन्य संस्कार सुशोभित होते हैं।.

ਗੁਰੂ ਸਮੁੰਦੁ ਨਦੀ ਸਭਿ ਸਿਖੀ ਨਾਤੈ ਜਿਤੁ ਵਡਿਆਈ ॥
गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥
गुरु सागर है, गुरु-वाणी सभी नदियां (उनकी सेविकाएँ) हैं, जिनमें स्नान करने से महानता प्राप्त होती है।

ਨਾਨਕ ਜੇ ਸਿਰਖੁਥੇ ਨਾਵਨਿ ਨਾਹੀ ਤਾ ਸਤ ਚਟੇ ਸਿਰਿ ਛਾਈ ॥੧॥
नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥१॥
हे नानक ! यदि सिर मुंडाने वाले मुनि स्नान नहीं करते हैं तो उनके सिर पर सौ अंजुलि भस्म ही पड़ती है॥ १॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਅਗੀ ਪਾਲਾ ਕਿ ਕਰੇ ਸੂਰਜ ਕੇਹੀ ਰਾਤਿ ॥
अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥
सर्दी अग्नि का क्या बिगाड़ सकती है ? रात्रि सूर्य का क्या बिगाड़ सकती है ?

ਚੰਦ ਅਨੇਰਾ ਕਿ ਕਰੇ ਪਉਣ ਪਾਣੀ ਕਿਆ ਜਾਤਿ ॥
चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥
अंधेरा चाँद का क्या बिगाड़ सकता है ? कोई जाति पवन एवं जल का क्या बिगाड़ सकती है ?

ਧਰਤੀ ਚੀਜੀ ਕਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥
धरती का वस्तुएँ क्या बिगाड़ सकती हैं, जिसके भीतर सब वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਪਤਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਪਤਿ ਰਖੈ ਸੋਇ ॥੨॥
नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥२॥
हे नानक ! प्राणी केवल तभी प्रतिष्ठित समझा जाता है, जब प्रभु उसका मान-सम्मान बरकरार रखे ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੁਧੁ ਸਚੇ ਸੁਬਹਾਨੁ ਸਦਾ ਕਲਾਣਿਆ ॥
तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥
हे मेरे आश्चर्यजनक परमेश्वर ! मैं सदैव तेरी महिमा-स्तुति करता हूँ।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਦੀਬਾਣੁ ਹੋਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣਿਆ ॥
तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥
तू सदैव स्थिर है और तेरा दरबार सत्य है तथा अन्य सभी जीव जन्मते-मरते रहते हैं।

ਸਚੁ ਜਿ ਮੰਗਹਿ ਦਾਨੁ ਸਿ ਤੁਧੈ ਜੇਹਿਆ ॥
सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥
हे प्रभु! जो तुझसे सत्यनाम का दान माँग लेता है, वह तेरा नाम जप-जप कर तेरे जैसा ही बन जाता है।

ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਫੁਰਮਾਨੁ ਸਬਦੇ ਸੋਹਿਆ ॥
सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥
तेरा हुक्म सत्य है और मनुष्य तेरे नाम से शोभा पाते हैं।

ਮੰਨਿਐ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਤੁਧੈ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
मंनिऐ गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥
हे प्रभु ! तेरा हुक्म मानने से ही मनुष्य को तुझसे ज्ञान-ध्यान की सूझ मिलती है।

ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਨੁ ਨ ਚਲੈ ਚਲਾਇਆ ॥
करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥
तेरे दरबार में जाने हेतु नाम रूपी परवाना तेरी कृपा से ही मिलता है तथा वहाँ अन्य कोई परवाना चलाया नहीं चलता।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਦਾਤਾਰੁ ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
हे प्रभु ! तू ही सच्चा दाता हैं और सदैव ही जीवों को देते रहते हो ! तेरे भण्डार कभी भी समाप्त नहीं होते अपितु अधिकतर होते जाते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਇਆ ॥੨੬॥
नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइआ ॥२६॥
हे प्रभु ! नानक तुझसे वहीं दान माँगता है, जो तुझे अच्छा लगता है॥ २६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੨ ॥
सलोकु मः २ ॥
श्लोक महला २॥

ਦੀਖਿਆ ਆਖਿ ਬੁਝਾਇਆ ਸਿਫਤੀ ਸਚਿ ਸਮੇਉ ॥
दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥
जिन्हें गुरु ने शिक्षा अथवा उपदेश देकर समझा दिया है, वे सत्यनाम की महिमा करके सत्य में ही समा गए हैं।

ਤਿਨ ਕਉ ਕਿਆ ਉਪਦੇਸੀਐ ਜਿਨ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕ ਦੇਉ ॥੧॥
तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥१॥
अब उनको उपदेश देने का क्या अभिप्राय है ? जिनका गुरु नानक देव है॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋਈ ਬੂਝੈ ॥
आपि बुझाए सोई बूझै ॥
जिसको प्रभु स्वयं समझा देता है, वही उसको समझता है।

ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਸੁਝਾਏ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ॥
जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥
जिसे ईश्वर स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, वह सर्वज्ञ जान लेता है।

ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਥਨਾ ਮਾਇਆ ਲੂਝੈ ॥
कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥
जो व्यक्ति कह-कह कर कथन ही करता रहता है, वह माया के झंझटों में फंसा रहता है।

ਹੁਕਮੀ ਸਗਲ ਕਰੇ ਆਕਾਰ ॥
हुकमी सगल करे आकार ॥
प्रभु ने अपने हुक्म से ही सूर्य, चन्द्रमा एवं पृथ्वी इत्यादि की रचना की है।

ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸਰਬ ਵੀਚਾਰ ॥
आपे जाणै सरब वीचार ॥
वह स्वयं ही सबके विचारों को समझता है।

ਅਖਰ ਨਾਨਕ ਅਖਿਓ ਆਪਿ ॥
अखर नानक अखिओ आपि ॥
हे नानक ! प्रभु ने स्वयं ही वाणी का उच्चारण किया है।

ਲਹੈ ਭਰਾਤਿ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਦਾਤਿ ॥੨॥
लहै भराति होवै जिसु दाति ॥२॥
जिसको यह देन मिल जाती है, उसका अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਉ ਢਾਢੀ ਵੇਕਾਰੁ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ॥
हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥
मुझ बेकार ढाढी को प्रभु ने अपनी भक्ति कार्य में लगा लिया है।

ਰਾਤਿ ਦਿਹੈ ਕੈ ਵਾਰ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥
आदिकाल से प्रभु ने मुझे रात-दिन अपना यशोगान करने का हुक्म दिया है।

ਢਾਢੀ ਸਚੈ ਮਹਲਿ ਖਸਮਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥
स्वामी ने ढाढी को अपने सत्य दरबार में निमंत्रण दिया है।

ਸਚੀ ਸਿਫਤਿ ਸਾਲਾਹ ਕਪੜਾ ਪਾਇਆ ॥
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥
परमात्मा ने अपनी सच्ची महिमा-स्तुति की पोशाक मुझे पहना दी है।

ਸਚਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਆਇਆ ॥
सचा अम्रित नामु भोजनु आइआ ॥
तब से सत्यनाम मेरा अमृत स्वरूप आहार बन गया है।

ਗੁਰਮਤੀ ਖਾਧਾ ਰਜਿ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥
जो गुरु के उपदेश से इस आहार को पेट भर कर सेवन करते हैं, वे सदा सुख पाते हैं।

ਢਾਢੀ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ਸਬਦੁ ਵਜਾਇਆ ॥
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥
गुरु-वाणी गायन करने से मैं चारण परमेश्वर की महानता का प्रसार करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਿ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥੨੭॥ ਸੁਧੁ
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥२७॥ सुधु
हे नानक ! सत्यनाम की स्तुति करके मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है॥ २७॥सुधु

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਚਉਪਦੇ ਦੁਪਦੇ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे
रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं, वह कालातीत, अयोनि एवं स्वयंभू है। उसकी लब्धि गुरु-कृपा से होती है।

ਭਉ ਮੁਚੁ ਭਾਰਾ ਵਡਾ ਤੋਲੁ ॥
भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥
ईश्वर का भय बहुत भारी और बड़ा वजनदार है।

ਮਨ ਮਤਿ ਹਉਲੀ ਬੋਲੇ ਬੋਲੁ ॥
मन मति हउली बोले बोलु ॥
मन की मति पर चलने वाला मनुष्य तुच्छ मति अनुसार अपने मुँह से घटिया वचन ही बोलता है।

ਸਿਰਿ ਧਰਿ ਚਲੀਐ ਸਹੀਐ ਭਾਰੁ ॥
सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥
प्रभु का भय अपने सिर पर धारण करके चलना चाहिए और उसका बोझ सहन करना चाहिए।

ਨਦਰੀ ਕਰਮੀ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧॥
नदरी करमी गुर बीचारु ॥१॥
प्रभु की कृपा-दृष्टि एवं भाग्य से ही मनुष्य को गुरु की शिक्षा मिलती है॥ १ ॥

ਭੈ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਲੰਘਸਿ ਪਾਰਿ ॥
भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥
परमात्मा के भय बिना कोई भी प्राणी संसार सागर से पार नहीं हो सकता।

ਭੈ ਭਉ ਰਾਖਿਆ ਭਾਇ ਸਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु के साथ जीव के प्रेम को प्रभु का भय ही संवार कर रखता है॥ १॥ रहाउ

ਭੈ ਤਨਿ ਅਗਨਿ ਭਖੈ ਭੈ ਨਾਲਿ ॥
भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥
मनुष्य के शरीर की क्रोध रूपी अग्नि ईश्वर के भय से जल जाती है।

ਭੈ ਭਉ ਘੜੀਐ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿ ॥
भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥
प्रभु के भय से शब्द की रचना सुन्दर बन जाती है।

ਭੈ ਬਿਨੁ ਘਾੜਤ ਕਚੁ ਨਿਕਚ ॥
भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥
प्रभु के भय के बिना शब्द की रचना बहुत ही कच्ची रह जाती है।

ਅੰਧਾ ਸਚਾ ਅੰਧੀ ਸਟ ॥੨॥
अंधा सचा अंधी सट ॥२॥
शब्द रचने वाला सांचा निरुपयोगी है अर्थात् मनुष्य की बुद्धि ज्ञानहीन होती है और ज्ञानहीन बुद्धि पर ज्ञान रूपी हथौड़े की चोट कोई प्रभाव नहीं करती ॥ २॥

ਬੁਧੀ ਬਾਜੀ ਉਪਜੈ ਚਾਉ ॥
बुधी बाजी उपजै चाउ ॥
जीवन बाजी खेलने का चाव मनुष्य की बुद्धि द्वारा ही उत्पन्न होता है।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪ ਪਵੈ ਨ ਤਾਉ ॥
सहस सिआणप पवै न ताउ ॥
हजारों ही चतुराइयों के बावजूद ईश्वर-भय की तपस (आंच) नहीं लगती।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਬੋਲਣੁ ਵਾਉ ॥
नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥
हे नानक ! मनमुख की बातचीत निरर्थक होती है।

ਅੰਧਾ ਅਖਰੁ ਵਾਉ ਦੁਆਉ ॥੩॥੧॥
अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥३॥१॥
उसका उपदेश निकम्मा और व्यर्थ होता है॥ ३॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਡਰਿ ਘਰੁ ਘਰਿ ਡਰੁ ਡਰਿ ਡਰੁ ਜਾਇ ॥
डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥
अपने हृदय-घर में प्रभु के भय को धारण करना चाहिए। जब प्रभु का भय हृदय-घर में निवास कर जाता है तो मृत्यु का भय भयभीत होकर भाग जाता है।

ਸੋ ਡਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਡਰਿ ਡਰੁ ਪਾਇ ॥
सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥
यह प्रभु भय किस प्रकार का है, जिस द्वारा मृत्यु का भय भयभीत हो जाता है।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥
हे भगवान ! तेरे अलावा दूसरा कोई सुख का स्थान नहीं।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਤੇਰੀ ਰਜਾਇ ॥੧॥
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥
जो कुछ भी होता है, सब तेरी इच्छानुसार ही होता है॥ १॥

ਡਰੀਐ ਜੇ ਡਰੁ ਹੋਵੈ ਹੋਰੁ ॥
डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥
हे प्रभु ! हम भयभीत तब हों, जब कोई दूसरा भय कायम रहे।

ਡਰਿ ਡਰਿ ਡਰਣਾ ਮਨ ਕਾ ਸੋਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥१॥ रहाउ ॥
ईश्वर-भय बिना दूसरे के भय से सहम जाना मन का शोर है॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾ ਜੀਉ ਮਰੈ ਨ ਡੁਬੈ ਤਰੈ ॥
ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥
आत्मा न ही मरती है, न ही जल में डूबती है और न ही जल में तैरती है।

ਜਿਨਿ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ॥
जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥
जिस परमात्मा ने सृष्टिरचना की है, वहीं सब कुछ करता है।

ਹੁਕਮੇ ਆਵੈ ਹੁਕਮੇ ਜਾਇ ॥
हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥
मनुष्य ईश्वर के हुक्म से संसार में आता है और उसके हुक्मानुसार संसार से कूच करता है।

ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
आगै पाछै हुकमि समाइ ॥२॥
वर्तमान काल एवं भविष्य काल में भी प्राणी उसके हुक्म में लीन रहता है॥ २॥

ਹੰਸੁ ਹੇਤੁ ਆਸਾ ਅਸਮਾਨੁ ॥
हंसु हेतु आसा असमानु ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में हिंसा, मोह, आशा एवं अहंकार होता है

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਭੂਖ ਬਹੁਤੁ ਨੈ ਸਾਨੁ ॥
तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥
उसमें नदी के जल की तरह माया की अत्यधिक भूख होती है।

ਭਉ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਆਧਾਰੁ ॥
भउ खाणा पीणा आधारु ॥
ऐसे व्यक्ति को इनसे मुक्ति पाने के लिए प्रभु के भय को अपना भोजन-पानी एवं जीवन का आधार बनाना चाहिए।

ਵਿਣੁ ਖਾਧੇ ਮਰਿ ਹੋਹਿ ਗਵਾਰ ॥੩॥
विणु खाधे मरि होहि गवार ॥३॥
जो मूर्ख व्यक्ति प्रभु के भय का सेवन नहीं करते, वह मरते एवं बर्बाद होते रहते हैं।॥३॥

ਜਿਸ ਕਾ ਕੋਇ ਕੋਈ ਕੋਇ ਕੋਇ ॥
जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥
यदि प्राणी का कोई अपना है तो वह कोई बहुत ही विरला है।

ਸਭੁ ਕੋ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਇ ॥
सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥
हे परमेश्वर ! सभी जीव तेरे हैं और तुम सबके हो।

ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥
जा के जीअ जंत धनु मालु ॥
हे नानक ! जिस भगवान के ये जीव-जन्तु एवं धनमाल निर्मित किए हैं,

ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਬਿਖਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥੨॥
नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥४॥२॥
उस बारे कहना एवं विचार करना बड़ा कठिन है ॥ ४ ॥ २ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਮਾਤਾ ਮਤਿ ਪਿਤਾ ਸੰਤੋਖੁ ॥
माता मति पिता संतोखु ॥
मैंने बुद्धि को अपनी माता, संतोष को अपना पिता

ਸਤੁ ਭਾਈ ਕਰਿ ਏਹੁ ਵਿਸੇਖੁ ॥੧॥
सतु भाई करि एहु विसेखु ॥१॥
और सत्य को अपना भाई बना लिया है। बुद्धि, संतोष एवं सत्य मेरे अच्छे संबंधी हैं।॥ १॥

ਕਹਣਾ ਹੈ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥
भगवान के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ परन्तु मुझसे कुछ कहा नहीं जा सकता।

ਤਉ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे भगवान ! तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਰਮ ਸੁਰਤਿ ਦੁਇ ਸਸੁਰ ਭਏ ॥
सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥
लज्जा एवं सुरति दोनों मेरे सास-ससुर बन गए हैं।

ਕਰਣੀ ਕਾਮਣਿ ਕਰਿ ਮਨ ਲਏ ॥੨॥
करणी कामणि करि मन लए ॥२॥
सदाचरण को मैंने अपनी पत्नी बना लिया है॥ २॥

ਸਾਹਾ ਸੰਜੋਗੁ ਵੀਆਹੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥
साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥
सत्संग मेरे विवाह का समय है और संसार से टूट जाना मेरा विवाह है।

ਸਚੁ ਸੰਤਤਿ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋਗੁ ॥੩॥੩॥
सचु संतति कहु नानक जोगु ॥३॥३॥
हे नानक ! ऐसे प्रभु मिलन से मेरे यहाँ सत्य की संतान उत्पन्न हुई है॥ ३॥ ३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਪਉਣੈ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਕਾ ਮੇਲੁ ॥
पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥
मानव-शरीर की रचना पवन, जल एवं अग्नि के मिलन से हुई है।

ਚੰਚਲ ਚਪਲ ਬੁਧਿ ਕਾ ਖੇਲੁ ॥
चंचल चपल बुधि का खेलु ॥
यह शरीर चंचल मन एवं चतुर बुद्धि का बनाया हुआ एक खिलौना है।

ਨਉ ਦਰਵਾਜੇ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ॥
नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥
इस शरीर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्दी रूपी नौ द्वार लगे हुए हैं और दसम द्वार गुप्त है।

ਬੁਝੁ ਰੇ ਗਿਆਨੀ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧॥
बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥१॥
हे ज्ञानी ! इस विचार को समझो ॥ १॥

ਕਥਤਾ ਬਕਤਾ ਸੁਨਤਾ ਸੋਈ ॥
कथता बकता सुनता सोई ॥
भगवान स्वयं ही कथा करने वाला, बोलने वाला एवं सुनने वाला है।

ਆਪੁ ਬੀਚਾਰੇ ਸੁ ਗਿਆਨੀ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥१॥ रहाउ ॥
वहीं व्यक्ति ज्ञानी होता है जो अपने आत्मिक जीवन को सोचता-समझता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਦੇਹੀ ਮਾਟੀ ਬੋਲੈ ਪਉਣੁ ॥
देही माटी बोलै पउणु ॥
यह शरीर मिट्टी है और पवन उसमें बोलती है।

ਬੁਝੁ ਰੇ ਗਿਆਨੀ ਮੂਆ ਹੈ ਕਉਣੁ ॥
बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥
हे ज्ञानी ! इस तथ्य को समझो कि वह कोन हैं? जो प्राण त्याग गया है?

ਮੂਈ ਸੁਰਤਿ ਬਾਦੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
मूई सुरति बादु अहंकारु ॥
यह शरीर एवं विवाद पैदा करने वाला अहंकार मरे हैं।

ਓਹੁ ਨ ਮੂਆ ਜੋ ਦੇਖਣਹਾਰੁ ॥੨॥
ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥२॥
भगवान का अंश आत्मा नहीं मरी जो दुनिया रूपी खेल देखने वाली है॥ २॥

ਜੈ ਕਾਰਣਿ ਤਟਿ ਤੀਰਥ ਜਾਹੀ ॥
जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥
जिस नाम रूपी रत्न-पदार्थ के लिए तुम तीर्थों के तट पर जाते हो,

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਘਟ ਹੀ ਮਾਹੀ ॥
रतन पदारथ घट ही माही ॥
वह नाम रूपी अमूल्य रत्न तेरे हृदय में ही विद्यमान है।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤੁ ਬਾਦੁ ਵਖਾਣੈ ॥
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥
पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़ कर परस्पर विवाद करते हैं

ਭੀਤਰਿ ਹੋਦੀ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ॥੩॥
भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥३॥
परन्तु वह उस नाम रूपी अमूल्य वस्तु को नहीं जानते जो उनके हृदय में ही है॥३॥

ਹਉ ਨ ਮੂਆ ਮੇਰੀ ਮੁਈ ਬਲਾਇ ॥
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥
मैं नहीं मरा, अपितु मेरी विपदा लाने वाली अज्ञानता रूपी बला मरी है।

ਓਹੁ ਨ ਮੂਆ ਜੋ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥
वह आत्मा नहीं मरी, जो सब में समाई हुई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥
हे नानक ! गुरु ने मुझे ब्रह्म के दर्शन करवा दिए हैं

ਮਰਤਾ ਜਾਤਾ ਨਦਰਿ ਨ ਆਇਆ ॥੪॥੪॥
मरता जाता नदरि न आइआ ॥४॥४॥
और अब मुझे कोई भी मरता एवं जन्म लेता दिखाई नहीं देता॥ ४॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ਦਖਣੀ ॥
गउड़ी महला १ दखणी ॥
गउड़ी महला १ दखणी ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਬੂਝੈ ਮਾਨੈ ਨਾਉ ॥
सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥
जो प्रभु-नाम को निरन्तर सुनकर उसे समझने का प्रयास करता, एवं उस पर आस्था रखता है।

ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥
मैं हमेशा ही उस पर कुर्बान जाता हूँ,

ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਠਉਰ ਨ ਠਾਉ ॥
आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥
हे प्रभु ! जिसे तू स्वयं विस्मृत कर देता है, उसे कहीं भी स्थान नहीं मिलता।

ਤੂੰ ਸਮਝਾਵਹਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਉ ॥੧॥
तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥१॥
तू ही जीव को ज्ञान देता है और फिर उसे गुरु से साक्षात्कार करवा कर अपने साथ मिला लेता है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਚਲੈ ਮੈ ਨਾਲਿ ॥
नामु मिलै चलै मै नालि ॥
मेरी यही कामना है कि मुझे नाम प्राप्त हो, जो मेरे साथ परलोक में जाएगा।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਾਧੀ ਸਭ ਕਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु के नाम के अलावा सारी दुनिया काल ने बंधन में डाली हुई है॥ १॥ रहाउ ॥

ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਨਾਵੈ ਕੀ ਓਟ ॥
खेती वणजु नावै की ओट ॥
मेरी कृषि एवं व्यापार प्रभु के नाम के आश्रय में ही है।

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਬੀਜ ਕੀ ਪੋਟ ॥
पापु पुंनु बीज की पोट ॥
मनुष्य ने अपने सिर पर पाप एवं पुण्य रूपी कर्मों के बीज की पोटली उठाई हुई है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜੀਅ ਮਹਿ ਚੋਟ ॥
कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥
काम, क्रोध प्राणी के अन्तर्मन में घाव हैं।

ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਚਲੇ ਮਨਿ ਖੋਟ ॥੨॥
नामु विसारि चले मनि खोट ॥२॥
खोटे मन वाले प्रभु नाम को विस्मृत करके संसार से चले जाते हैं।॥ २॥

SikhBookClub.com

ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਚੀ ਸੀਖ ॥
साचे गुर की साची सीख ॥
सच्चे गुरु की शिक्षा सत्य है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਚੁ ਪਰੀਖ ॥
तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥
सत्य नाम का सही मूल्यांकन जानने से तन एवं मन शीतल हो जाते हैं। सतिगुरु की यही परख है कि

ਜਲ ਪੁਰਾਇਨਿ ਰਸ ਕਮਲ ਪਰੀਖ ॥
जल पुराइनि रस कमल परीख ॥
वह विकारों रूपी स्वादों से यूं निर्लिप्त रहता है जैसे कमल का फूल कीचड़ से निर्लिप्त रहता है।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਮੀਠੇ ਰਸ ਈਖ ॥੩॥
सबदि रते मीठे रस ईख ॥३॥
प्रभु के नाम में मग्न हुआ वह गन्ने के रस की भाँति मीठा है॥ ३॥

ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਗੜਿ ਦਸ ਦੁਆਰ ॥
हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥
यह दस द्वारों वाला शरीर रूपी किला परमात्मा के हुक्म में बनाया गया है।

ਪੰਚ ਵਸਹਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥
इसमें अपार प्रभु की ज्योति के साथ मिलकर पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ रहती हैं।

ਆਪਿ ਤੁਲੈ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰ ॥
आपि तुलै आपे वणजार ॥
परमात्मा स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही तुलने वाला सौदा है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੪॥੫॥
नानक नामि सवारणहार ॥४॥५॥
हे नानक ! परमात्मा का नाम ही जीव का जीवन सुन्दर बनाने वाला है॥४ ॥५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਜਾਤੋ ਜਾਇ ਕਹਾ ਤੇ ਆਵੈ ॥
जातो जाइ कहा ते आवै ॥
क्या यह जाना जा सकता है कि आत्मा कहाँ से आई है?

ਕਹ ਉਪਜੈ ਕਹ ਜਾਇ ਸਮਾਵੈ ॥
कह उपजै कह जाइ समावै ॥
वह कहाँ से उत्पन्न हुई है और वह कहाँ जाकर समा जाती है ?

ਕਿਉ ਬਾਧਿਓ ਕਿਉ ਮੁਕਤੀ ਪਾਵੈ ॥
किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥
वह किस तरह मोह-माया के बंधनों में फंस जाती है और कैसे संधनों से मुक्ति प्राप्त करती है ?

ਕਿਉ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥
किउ अबिनासी सहजि समावै ॥१॥
वह किस तरह सहज ही अविनाशी प्रभु में समा जाती है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥
नामु रिदै अम्रितु मुखि नामु ॥
जिसके हृदय में परमात्मा का नाम निवास करता है और मुँह से भी अमृत-नाम उच्चरित होता है।

ਨਰਹਰ ਨਾਮੁ ਨਰਹਰ ਨਿਹਕਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नरहर नामु नरहर निहकामु ॥१॥ रहाउ ॥
वह प्रभुः का अमृत नाम निष्काम होकर जपता रहता है और इच्छा रहित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਹਜੇ ਆਵੈ ਸਹਜੇ ਜਾਇ ॥
सहजे आवै सहजे जाइ ॥
मनुष्य सहज ही इस दुनिया में आता है और सहज ही दुनिया से चला जाता है अर्थात् वह सहज ही जन्मता-मरता रहता है।

ਮਨ ਤੇ ਉਪਜੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥
मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥
मन (की तृष्णाओं) से वह उत्पन्न हुआ है और मन (की तृष्णाओं) में ही वह समा जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤੋ ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਇ ॥
गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥
गुरमुख मोह-माया के बंधनों से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और वह सांसारिक बंधनों में नहीं पड़ता।

ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ਛੁਟੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੨॥
सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥२॥
वह शब्द का चिन्तन करता है और प्रभु-नाम द्वारा मुक्त हो जाता है॥ २॥

ਤਰਵਰ ਪੰਖੀ ਬਹੁ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁ ॥
तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥
बहुत सारे पक्षी रात्रिकाल को पेड़ पर आकर निवास करते हैं।

ਸੁਖ ਦੁਖੀਆ ਮਨਿ ਮੋਹ ਵਿਣਾਸੁ ॥
सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥
कई सुखी हैं और कई दुखी हैं। मन के मोह कारण वह सारे नाश हो जाते हैं।

ਸਾਝ ਬਿਹਾਗ ਤਕਹਿ ਆਗਾਸੁ ॥
साझ बिहाग तकहि आगासु ॥
जब रात्रेि बीतती है और सूर्योदय होता है, वह आकाश की ओर देखते हैं।

ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਹਿ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆਸੁ ॥੩॥
दह दिसि धावहि करमि लिखिआसु ॥३॥
विधाता की विधि अनुसार कर्मों के कारण वे दस दिशाओं में उड़ जाते हैं।॥ ३॥

ਨਾਮ ਸੰਜੋਗੀ ਗੋਇਲਿ ਥਾਟੁ ॥
नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥
जो नाम संजोगी हैं, वह संसार को चरागाह में एक अस्थिर स्थान समझते हैं।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਫੂਟੈ ਬਿਖੁ ਮਾਟੁ ॥
काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥
भोग-विलास एवं अहंकार की विषैली गागर अन्त में फूट जाती है।

ਬਿਨੁ ਵਖਰ ਸੂਨੋ ਘਰੁ ਹਾਟੁ ॥
बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥
नाम के सौदे सूत के बिना देहि रूपी घर एवं मन की दुकान शून्य है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਖੋਲੇ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ॥੪॥
गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥४॥
गुरु के मिलन से व्रज कपाट खुल जाते हैं।॥ ४॥

ਸਾਧੁ ਮਿਲੈ ਪੂਰਬ ਸੰਜੋਗ ॥
साधु मिलै पूरब संजोग ॥
किस्मत से ही संत मिलते हैं।

ਸਚਿ ਰਹਸੇ ਪੂਰੇ ਹਰਿ ਲੋਗ ॥
सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥
परमात्मा के भक्त सत्य में हर्षित होते हैं।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇ ਲੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥
हे नानक ! जो अपना मन एवं तन समर्पित करने से सहज ही अपने प्रभु को पा लेते हैं,

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥੫॥੬॥
नानक तिन कै लागउ पाइ ॥५॥६॥
मैं उनके चरणों पर नतमस्तक हूँ ॥ ५॥ ६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਚੀਤੁ ॥
कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥
तेरा मन काम, क्रोध एवं माया के मोह में लीन है।

ਝੂਠ ਵਿਕਾਰਿ ਜਾਗੈ ਹਿਤ ਚੀਤੁ ॥
झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥
उनके मोह के कारण तेरे मन में झूठ एवं पाप उदय हो गए हैं।

ਪੁੰਜੀ ਪਾਪ ਲੋਭ ਕੀ ਕੀਤੁ ॥
पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥
तुमने पाप एवं लोभ की पूंजी संग्रह की हुई है।

ਤਰੁ ਤਾਰੀ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਸੁਚੀਤੁ ॥੧॥
तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥१॥
अतः तू शुद्ध हृदय से मन द्वारा पावन नाम का जाप करके भवसागर से पार हो जा॥ १॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਾਚੇ ਮੈ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ॥
वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥
हे मेरे सच्चे प्रभु ! तू धन्य-धन्य है। मुझे केवल तेरा ही सहारा है।

ਹਉ ਪਾਪੀ ਤੂੰ ਨਿਰਮਲੁ ਏਕ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ पापी तूं निरमलु एक ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु! मैं पापी हूँ, एक तू ही पावन हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਅਗਨਿ ਪਾਣੀ ਬੋਲੈ ਭੜਵਾਉ ॥
अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥
अग्नि व जल इत्यादि पंच तत्वों से बने शरीर में श्वास ऊँची-ऊँची गूंजते हैं।

ਜਿਹਵਾ ਇੰਦ੍ਰੀ ਏਕੁ ਸੁਆਉ ॥
जिहवा इंद्री एकु सुआउ ॥
जिव्हा व इन्द्रिय अपना-अपना स्वाद प्राप्त करते हैं।

ਦਿਸਟਿ ਵਿਕਾਰੀ ਨਾਹੀ ਭਉ ਭਾਉ ॥
दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥
तेरी दृष्टि विकारों में लीन है और तुझे प्रभु का भय एवं प्रेम नहीं।

ਆਪੁ ਮਾਰੇ ਤਾ ਪਾਏ ਨਾਉ ॥੨॥
आपु मारे ता पाए नाउ ॥२॥
यदि प्राणी अपना अहंकार नष्ट कर दे तो वह नाम को प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥
सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥
जो व्यक्ति शब्द द्वारा अहंकार को समाप्त कर देता है, उसे दोबारा मरना नहीं पड़ता।

ਬਿਨੁ ਮੂਏ ਕਿਉ ਪੂਰਾ ਹੋਇ ॥
बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥
अहंकार को समाप्त किए बिना वह पूरा कैसे हो सकता है?

ਪਰਪੰਚਿ ਵਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਮਨੁ ਦੋਇ ॥
परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥
मन दुनिया के प्रपंचों एवं द्वैतभाव में लीन हो रहा है।

ਥਿਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੩॥
थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥३॥
एक नारायण ही स्थिर है और दुनिया में वही होता है जो वह करता है॥३ ॥

ਬੋਹਿਥਿ ਚੜਉ ਜਾ ਆਵੈ ਵਾਰੁ ॥
बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥
जब मेरी बारी आएगी तो मैं भवसागर से पार होने के लिए नाम रूपी जहाज पर सवार हो जाऊँगा।

ਠਾਕੇ ਬੋਹਿਥ ਦਰਗਹ ਮਾਰ ॥
ठाके बोहिथ दरगह मार ॥
जो जहाज पर सवार होने से वर्जित हो जाते हैं, उनकी प्रभु के दरबार में खूब पिटाई होती है।

ਸਚੁ ਸਾਲਾਹੀ ਧੰਨੁ ਗੁਰਦੁਆਰੁ ॥
सचु सालाही धंनु गुरदुआरु ॥
गुरु का दरबार धन्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान किया जाता है।

ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਘਰਿ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੪॥੭॥
नानक दरि घरि एकंकारु ॥४॥७॥
हे नानक ! अद्वितीय एक ईश्वर प्रत्येक हृदय-घर में व्यापक हो रहा है॥ ४॥ ७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਉਲਟਿਓ ਕਮਲੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥
उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥
ब्रह्म का चिंतन करने से मोह-माया में उल्टा पड़ा हृदय-कमल बदल कर सीधा हो जाता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰ ਗਗਨਿ ਦਸ ਦੁਆਰਿ ॥
अम्रित धार गगनि दस दुआरि ॥
दसम द्वार रूपी गगन से अमृत रस की धारा बहने लग जाती है।

ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਬੇਧਿਆ ਆਪਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥
त्रिभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥१॥
मुरारि-प्रभु तीनों लोकों में स्वयं ही व्यापक हो रहा है॥ १॥

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਭਰਮੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥
रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥
हे मेरे मन ! किसी दुविधा में मत पड़।

ਮਨਿ ਮਾਨਿਐ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनि मानिऐ अम्रित रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मन विश्वस्त हो जाए तो वह नाम रूपी अमृत रस का पान करने लगता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਨਮੁ ਜੀਤਿ ਮਰਣਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥
जब मन अपने अहंत्व को नाश करना स्वीकृत कर लेता है तो यह जीवन की बाजी को विजय कर लेता है।

ਆਪਿ ਮੂਆ ਮਨੁ ਮਨ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ॥
आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥
जब मन का अहंत्व नाश हो जाता है तो उसे हृदय में ही परमात्मा बारे ज्ञान हो जाता है।

ਨਜਰਿ ਭਈ ਘਰੁ ਘਰ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ॥੨॥
नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥२॥
जब परमात्मा की कृपा होती है तो हृदय-घर में उसे आत्म-स्वरूप की पहचान हो जाती है॥ २ ॥

ਜਤੁ ਸਤੁ ਤੀਰਥੁ ਮਜਨੁ ਨਾਮਿ ॥
जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥
ईश्वर का नाम ही सच्या ब्रह्मचार्य, सत्य तीर्थ एवं स्नान है।

ਅਧਿਕ ਬਿਥਾਰੁ ਕਰਉ ਕਿਸੁ ਕਾਮਿ ॥
अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥
यदि मैं नाम को छोड़ कर अन्य अधिकतर आडम्बर करूँ तो वह सब व्यर्थ हैं।

ਨਰ ਨਾਰਾਇਣ ਅੰਤਰਜਾਮਿ ॥੩॥
नर नाराइण अंतरजामि ॥३॥
चूंकि नारायण बड़ा अन्तर्यामी है॥३॥

ਆਨ ਮਨਉ ਤਉ ਪਰ ਘਰ ਜਾਉ ॥
आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥
यदि भगवान के सिवाय मैं किसी दूसरे पर श्रद्धा धारण करूं, तो ही मैं पराए घर जाऊँ।

ਕਿਸੁ ਜਾਚਉ ਨਾਹੀ ਕੋ ਥਾਉ ॥
किसु जाचउ नाही को थाउ ॥
मैं नाम की देन किससे मांगू? भगवान के सिवाय मेरे लिए कोई स्थान नहीं है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਉ ॥੪॥੮॥
नानक गुरमति सहजि समाउ ॥४॥८॥
हे नानक ! गुरु के उपदेश से मैं सहज ही सत्य में समा जाऊँगा॥ ४॥८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁ ਮਰਣੁ ਦਿਖਾਏ ॥
सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥
यदि सतिगुरु मिल जाए तो वह जीवित ही मृत्यु का मार्ग दिखा देता है।

ਮਰਣ ਰਹਣ ਰਸੁ ਅੰਤਰਿ ਭਾਏ ॥
मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥
इस तरह की मृत्यु उपरांत जीवित रहने की प्रसन्नता मन को लुभाती है।

ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰਿ ਗਗਨ ਪੁਰੁ ਪਾਏ ॥੧॥
गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥१॥
अहंकार को मिटाकर ही दसम द्वार पाया जाता है॥ १॥

ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇ ਆਏ ਨਹੀ ਰਹਣਾ ॥
मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥
मानव जीव अपनी मृत्यु का समय लिखवा कर ही दुनिया में आते हैं और वे दुनिया में अधिक समय निवास नहीं कर सकते।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਾਪਿ ਰਹਣੁ ਹਰਿ ਸਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए मनुष्य को दुनिया में आकर हरि का जाप करते रहना और हरि की शरणागत वास करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਦੁਬਿਧਾ ਭਾਗੈ ॥
सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥
यदि सतिगुरु मिल जाए तो समस्त दुविधा भाग जाती है।

ਕਮਲੁ ਬਿਗਾਸਿ ਮਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਲਾਗੈ ॥
कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥
हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है और मन हरि-प्रभु के साथ जुड़ जाता है।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਮਹਾ ਰਸੁ ਆਗੈ ॥੨॥
जीवतु मरै महा रसु आगै ॥२॥
जो व्यक्ति अहंकार का नाश करके जीता है, वह परलोक में नाम रूपी महारस का पान करता है॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਸੂਚਾ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥
सतिगुरु के मिलन से मनुष्य सत्यवादी, त्यागी एवं पावन हो जाता है।

ਗੁਰ ਕੀ ਪਉੜੀ ਊਚੋ ਊਚਾ ॥
गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥
गुरु का मार्ग धर्म की सीढ़ी है और उस सीढ़ी द्वारा मनुष्य सर्वोच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਜਮ ਕਾ ਭਉ ਮੂਚਾ ॥੩॥
करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥३॥
सतिगुरु भगवान की कृपा से ही मिलता है और मृत्यु का भय नाश हो जाता है॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਮਿਲਿ ਅੰਕਿ ਸਮਾਇਆ ॥
गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइआ ॥
गुरु को मिलने से मनुष्य प्रभु से मिल जाता है और उसकी गोद में समा जाता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰੁ ਮਹਲੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥
अपनी कृपा-दृष्टि करके गुरु जी प्राणी को उसके अपने हृदय-घर में प्रभु के आत्म-स्वरूप के दर्शन करवा देते हैं।

ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੪॥੯॥
नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥४॥९॥
हे नानक ! गुरु प्राणी के अहंकार को नाश करके परमेश्वर के साथ मिला देते हैं॥ ४ ॥ ९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਨਹ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥
किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥
पूर्व जन्म के कर्मों के कारण जो मेरी किस्मत में लिखा हुआ है, उसे कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਕਿਆ ਆਗੈ ਹੋਇ ॥
किआ जाणा किआ आगै होइ ॥
मैं नहीं जानता कि मेरे साथ आगे क्या बीतेगा?

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਸੋਈ ਹੂਆ ॥
जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥
जो कुछ ईश्वर की इच्छा है, वहीं कुछ हुआ है।

ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣੈ ਵਾਲਾ ਦੂਆ ॥੧॥
अवरु न करणै वाला दूआ ॥१॥
प्रभु के अलावा दूसरा कोई करने वाला नहीं ॥ १॥

ਨਾ ਜਾਣਾ ਕਰਮ ਕੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥
ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥
हे ईश्वर ! मैं नहीं जानता कि तेरी कृपा की देन कितनी बड़ी है।

ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਕੀ ਜਾਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥१॥ रहाउ ॥
सभी शुभ कर्म, धर्म, श्रेष्ठ जाति तेरे नाम अधीन हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਤੂ ਏਵਡੁ ਦਾਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
तू एवडु दाता देवणहारु ॥
हे ईश्वर ! तू देन देने वाला इतना बड़ा दाता है

ਤੋਟਿ ਨਾਹੀ ਤੁਧੁ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥
तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥
कि तेरी भक्ति के भण्डार कभी कम नहीं होते।

ਕੀਆ ਗਰਬੁ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥
कीआ गरबु न आवै रासि ॥
अहंकार करने से कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੈ ਪਾਸਿ ॥੨॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥२॥
हे प्रभु ! मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे पास अर्पण हैं।॥ २॥

ਤੂ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਹਿ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇ ॥
तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥
हे भगवान ! तू जीव को मार कर फिर जीवित कर देता है और तू ही क्षमा करके जीव को अपने साथ मिल लेता है।

ਜਿਉ ਭਾਵੀ ਤਿਉ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇ ॥
जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥
जैसे तुझे उपयुक्त लगता है वैसे ही तू जीव से अपना नाम सिमरन करवाता है।

ਤੂੰ ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਸਾਚਾ ਸਿਰਿ ਮੇਰੈ ॥
तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥
हे मेरे परमेश्वर ! तुम बड़े बुद्धिमान हो और मेरे मन की दशा जानते हो, तुम मेरे रक्षक हो और सत्य स्वरूप हो।

ਗੁਰਮਤਿ ਦੇਇ ਭਰੋਸੈ ਤੇਰੈ ॥੩॥
गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥३॥
हे प्रभु! मुझे गुरु की मति दीजिए, चूंकि मैं तेरे भरोसे पर ही बैठा हूँ॥ ३॥

ਤਨ ਮਹਿ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
तन महि मैलु नाही मनु राता ॥
जिसका हृदय प्रभु के प्रेम में मग्न है, उसके तन में पापों की कोई मलिनता नहीं।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸਚੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥
गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥
मैंने तेरे सत्य-नाम को गुरु की वाणी द्वारा पहचान लिया है।

ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ਨਾਮ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥
मेरे शरीर में तेरा ही दिया हुआ बल है और तूने ही मुझे अपने नाम की ख्याति प्रदान की है।

ਨਾਨਕ ਰਹਣਾ ਭਗਤਿ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੧੦॥
नानक रहणा भगति सरणाई ॥४॥१०॥
हे नानक! मुझे तो तेरी भक्ति की शरण में ही रहना है॥ ४॥ १०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਜਿਨਿ ਅਕਥੁ ਕਹਾਇਆ ਅਪਿਓ ਪੀਆਇਆ ॥
जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥
जिस प्राणी ने अकथनीय परमात्मा को स्मरण किया है और दूसरों को आराधना हेतु प्रेरित किया है, उस प्राणी ने स्वयं अमृत पान किया है।

ਅਨ ਭੈ ਵਿਸਰੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥
अन भै विसरे नामि समाइआ ॥१॥
वह प्राणी दूसरे समस्त भय विस्मृत कर देता है, क्योंकि वह ईश्वर के नाम में समा जाता है॥ १॥

ਕਿਆ ਡਰੀਐ ਡਰੁ ਡਰਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥
किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥
हम क्यों भयभीत हों, जब तमाम भय परमात्मा के भय में नष्ट हो जाते हैं।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा मैंने ईश्वर को पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਸੁ ਨਰ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥
जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में राम का निवास हो जाता है,

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਮਿਲੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥੨॥
सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥२॥
उसे हरि-नाम की पूंजी मिल जाती है और उसे सहज ही प्रभु के दरबार में प्रशंसा भी मिलती है॥ २॥

ਜਾਹਿ ਸਵਾਰੈ ਸਾਝ ਬਿਆਲ ॥
जाहि सवारै साझ बिआल ॥
परमात्मा जिन स्वेच्छाचारी जीवों को संध्याकाल एवं प्रातःकाल मोह-माया-रुपी निद्रा में मग्न रखता है,

ਇਤ ਉਤ ਮਨਮੁਖ ਬਾਧੇ ਕਾਲ ॥੩॥
इत उत मनमुख बाधे काल ॥३॥
ऐसे मनमुख इहलोक तथा परलोक में काल द्वारा बंधे रहते हैं।॥ ३॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸੇ ਪੂਰੇ ॥
अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥
जिन व्यक्तियों के हृदय में दिन-रात राम का निवास होता है, वहीं पूर्ण संत हैं।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਮਿਲੇ ਭ੍ਰਮ ਦੂਰੇ ॥੪॥੧੧॥
नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥४॥११॥
हे नानक ! जिसे राम मिल जाता है, उसका भ्रम दूर हो जाता है॥ ४॥ ११॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਹਿਤਕਾਰੁ ॥
जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥
जिस व्यक्ति का त्रिगुणात्मक दुनिया से प्रेम है, वह जन्मता-मरता ही रहता है।

ਚਾਰੇ ਬੇਦ ਕਥਹਿ ਆਕਾਰੁ ॥
चारे बेद कथहि आकारु ॥
चारों ही वेद सृष्टि का कथन करते हैं।

ਤੀਨਿ ਅਵਸਥਾ ਕਹਹਿ ਵਖਿਆਨੁ ॥
तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥
वह मन् की तीन अवस्थाओं का बखान करते हैं।

ਤੁਰੀਆਵਸਥਾ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥੧॥
तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥१॥
मन की तुरीयावस्था भगवान रूप सतिगुरु से ही जानी जाती है॥ १॥

ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤਰਣਾ ॥
राम भगति गुर सेवा तरणा ॥
राम की भक्ति एवं गुरु की सेवा करने से प्राणी भवसागर से पार हो जाता है।

ਬਾਹੁੜਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਇ ਹੈ ਮਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥१॥ रहाउ ॥
जो भवसागर से पार हो जाता है, उसका पुनः दुनिया में जन्म-मरण नहीं होता ॥ १॥ रहाउ॥

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥
प्रत्येक प्राणी घर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार उत्तम पदार्थों का वर्णन करता है।

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਪੰਡਿਤ ਮੁਖਿ ਸੋਈ ॥
सिम्रिति सासत पंडित मुखि सोई ॥
सत्ताइस स्मृतियों, छः शास्त्रों और पण्डितों के मुख से यही सुना जाता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਰਥੁ ਬੀਚਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥
गुरु के बिना अर्थ का ज्ञान किसी ने भी नहीं पाया।

ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥
मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥२॥
मुक्ति पदार्थ अर्थात् मोक्ष ईश्वर की भक्ति द्वारा ही प्राप्त होता है॥ २॥

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥
जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है,"

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि भगति परापति होई ॥
उसे गुरु के माध्यम से परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो जाती है।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਆਨੰਦੁ ॥
हरि की भगति मुकति आनंदु ॥
परमात्मा की भक्ति करने से मोक्ष एवं आनंद प्राप्त हो जाता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ॥੩॥
गुरमति पाए परमानंदु ॥३॥
गुरु की मति द्वारा उसे परमानन्द प्राप्त होता है॥ ३॥

ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥
जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥
जिसने गुरु को पा लिया है, गुरु स्वयं ही उसे भगवान के दर्शन करवा देता है।

ਆਸਾ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਸੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥
आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥
मुझे आशावादी को गुरु ने निर्लिप्त रहना सिखा दिया है।

ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
दीना नाथु सरब सुखदाता ॥
दीनानाथ प्रभु जीवों को सर्व सुख प्रदान करने वाला है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੪॥੧੨॥
नानक हरि चरणी मनु राता ॥४॥१२॥
हे नानक ! मेरा मन भगवान के सुन्दर चरणों में मग्न हो गया है॥ ४॥ १२॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾਇਆ ਰਹੈ ਸੁਖਾਲੀ ਬਾਜੀ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥

अम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥

यह सुन्दर काया स्वयं को अमर समझकर जीवन के सुख भोगने में लगी रहती है किन्तु उसे यह ज्ञान नहीं कि यह दुनिया तो (भगवान की) एक खेल है।

ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਮੁਚੁ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹਿ ਬਹੁਤੁ ਉਠਾਵਹਿ ਭਾਰੋ ॥

लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥

हे मेरी काया ! तू लालच, लोभ एवं बहुत झूठ कमा रही है और तू अपने सिर पर पापों का अत्यधिक भार उठा रही है।

ਤੂੰ ਕਾਇਆ ਮੈ ਰੁਲਦੀ ਦੇਖੀ ਜਿਉ ਧਰ ਉਪਰਿ ਛਾਰੋ ॥੧॥

तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥१॥

हे मेरी काया ! मैंने तुझे पृथ्वी पर राख की भाँति बर्बाद होते देखा है॥ १॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਿਖ ਹਮਾਰੀ ॥

सुणि सुणि सिख हमारी ॥

हे मेरी काया ! मेरी सीख ध्यानपूर्वक सुन।

ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਕੀਤਾ ਰਹਸੀ ਮੇਰੇ ਜੀਅੜੇ ਬਹੁੜਿ ਨ ਆਵੈ ਵਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी ॥१॥ रहाउ ॥

तेरे किए हुए शुभ कर्म ही अन्तिम समय तेरे साथ रहेंगे। हे मेरे मन ! इस तरह का सुनहरी अवसर दोबारा तेरे हाथ नहीं लगेगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉ ਤੁਧੁ ਆਖਾ ਮੇਰੀ ਕਾਇਆ ਤੂੰ ਸੁਣਿ ਸਿਖ ਹਮਾਰੀ ॥
हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥
हे मेरी काया ! मैं तुझे फिर कहता हूँ, मेरी सीख को ध्यानपूर्वक सुन।

ਨਿੰਦਾ ਚਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਪਰਾਈ ਝੂਠੀ ਲਾਇਤਬਾਰੀ ॥
निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥
तुम दूसरों की निन्दा और प्रशंसा करती हो और झूठी चुगली करती रहती हो।

ਵੇਲਿ ਪਰਾਈ ਜੋਹਹਿ ਜੀਅੜੇ ਕਰਹਿ ਚੋਰੀ ਬੁਰਿਆਰੀ ॥
वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥
हे मन ! तुम पराई नारी को कुदृष्टि से देखते हो, तुम चोरी करते हो और कुकर्म करते हो।

ਹੰਸੁ ਚਲਿਆ ਤੂੰ ਪਿਛੈ ਰਹੀਏਹਿ ਛੁਟੜਿ ਹੋਈਅਹਿ ਨਾਰੀ ॥੨॥
हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥२॥
हे मेरी काया ! जब आत्मा रूपी राजहंस निकल कर परलोक चला जाएगी तो तू पीछे यही रह जाएगा और परित्यक्ता स्त्री की तरह हो जाओगी॥ २॥

ਤੂੰ ਕਾਇਆ ਰਹੀਅਹਿ ਸੁਪਨੰਤਰਿ ਤੁਧੁ ਕਿਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥
तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥
हे मेरी काया ! तुम स्वप्न की तरह वास करती हो। तुमने कौन-सा शुभ कर्म किया है।

ਕਰਿ ਚੋਰੀ ਮੈ ਜਾ ਕਿਛੁ ਲੀਆ ਤਾ ਮਨਿ ਭਲਾ ਭਾਇਆ ॥
करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥
जब मैं चोरी करके कोई वस्तु लाया तो यह हृदय को अच्छा लगता रहा।

ਹਲਤਿ ਨ ਸੋਭਾ ਪਲਤਿ ਨ ਢੋਈ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥
हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥३॥
इस मृत्यु लोक में मुझे कोई शोभा नहीं मिली और परलोक में मुझे कोई सहारा नहीं मिलेगा। मैंने अपना अनमोल मानव जीवन व्यर्थ ही गंवा लिया है॥ ३॥

ਹਉ ਖਰੀ ਦੁਹੇਲੀ ਹੋਈ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਬਾਤ ਨ ਪੁਛੈ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥१॥ रहाउ ॥
हे बाबा नानक ! मैं बहुत दुखी हो गई हूँ, और कोई भी मेरी चिन्ता नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਤਾਜੀ ਤੁਰਕੀ ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਕਪੜ ਕੇਰੇ ਭਾਰਾ ॥
ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥
हे नानक ! यदि किसी के पास तुर्की घोड़े, सोना-चांदी एवं वस्त्रों के अम्बार हो,

ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੇ ਨਾਨਕ ਝੜਿ ਝੜਿ ਪਏ ਗਵਾਰਾ ॥
किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥
परन्तु अन्तिम समय यह उसके साथ नहीं जाते, हे मूर्ख जीव ! ये सभी दुनिया में ही रह जाते हैं।

ਕੂਜਾ ਮੇਵਾ ਮੈ ਸਭ ਕਿਛੁ ਚਾਖਿਆ ਇਕੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥੪॥
कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अम्रितु नामु तुमारा ॥४॥
हे प्रभु! मैंने मिश्री एवं मेवा इत्यादि सभी फल खा कर देखे हैं, परन्तु एक तुम्हारा ही नाम अमृत है॥ ४॥

ਦੇ ਦੇ ਨੀਵ ਦਿਵਾਲ ਉਸਾਰੀ ਭਸਮੰਦਰ ਕੀ ਢੇਰੀ ॥
दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥
गहरी नीव रख-रख कर मनुष्य मकान की दीवार खड़ी करता है। परन्तु (काल आने पर) यह मन्दिर भी ध्वस्त होकर मिट्टी का ढेर बन जाता है।

ਸੰਚੇ ਸੰਚਿ ਨ ਦੇਈ ਕਿਸ ਹੀ ਅੰਧੁ ਜਾਣੈ ਸਭ ਮੇਰੀ ॥
संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥
मूर्ख प्राणी धन-दौलत संचित करता है और किसी को भी नहीं देता। मूर्ख प्राणी ख्याल करता है कि सब कुछ उसका अपना है।

ਸੋਇਨ ਲੰਕਾ ਸੋਇਨ ਮਾੜੀ ਸੰਪੈ ਕਿਸੈ ਨ ਕੇਰੀ ॥੫॥
सोइन लंका सोइन माड़ी स्मपै किसै न केरी ॥५॥
परन्तु (यह नहीं जानता कि)'सोने की लंका, सोने के महल (रावण के भी नहीं रहे, तू कौन बेचारा है) यह धन किसी का भी नहीं बना रहता ॥ ५॥

ਸੁਣਿ ਮੂਰਖ ਮੰਨ ਅਜਾਣਾ ॥
सुणि मूरख मंन अजाणा ॥
हे मूर्ख एवं अज्ञानी मन ! मेरी बात सुनो,

ਹੋਗੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਭਾਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
होगु तिसै का भाणा ॥१॥ रहाउ ॥
उस ईश्वर की रज़ा ही फलीभूत होगी॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਭਾਰਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥
साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥
मेरा ठाकुर-प्रभु बहुत बड़ा साहूकार है और मैं उसका एक व्यापारी हूँ।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਰਾਸਿ ਤਿਸੈ ਕੀ ਮਾਰਿ ਆਪੇ ਜੀਵਾਲੇ ॥੬॥੧॥੧੩॥
जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥६॥१॥१३॥
मेरी आत्मा एवं शरीर यह सब उसकी दी हुई पूंजी है। वह स्वयं ही जीवों को मार कर पुनः जीवित कर देता है॥ ६॥ १॥ १३ ॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥

ਅਵਰਿ ਪੰਚ ਹਮ ਏਕ ਜਨਾ ਕਿਉ ਰਾਖਉ ਘਰ ਬਾਰੁ ਮਨਾ ॥
अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
हे मेरे मन ! मेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पाँच शत्रु हैं, मैं अकेला हूँ, मैं इनसे अपना घर किस तरह बचाऊं,

ਮਾਰਹਿ ਲੂਟਹਿ ਨੀਤ ਨੀਤ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ਜਨਾ ॥੧॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥१॥
ये पाँच मुझे प्रतिदिन मारते और लूटते रहते हैं। फिर मैं किस के समक्ष विनती करूं ॥ १॥

ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਉਚਰੁ ਮਨਾ ॥
स्री राम नामा उचरु मना ॥
हे मेरे मन ! श्री राम के नाम का सिमरन कर।

ਆਗੈ ਜਮ ਦਲੁ ਬਿਖਮੁ ਘਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आगै जम दलु बिखमु घना ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे समक्ष यमराज की बेशुमार सेना दिखाई दे रही है॥ १॥ रहाउ॥

ਉਸਾਰਿ ਮੜੋਲੀ ਰਾਖੈ ਦੁਆਰਾ ਭੀਤਰਿ ਬੈਠੀ ਸਾ ਧਨਾ ॥
उसारि मड़ोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना ॥
परमात्मा ने देहि का देहुरा बनाया है, इसको दस द्वार लगाए हैं और इसके भीतर ईश्वर के आदेश से आत्मा रूपी स्त्री बैठी है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੇਲ ਕਰੇ ਨਿਤ ਕਾਮਣਿ ਅਵਰਿ ਲੁਟੇਨਿ ਸੁ ਪੰਚ ਜਨਾ ॥੨॥

अम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥२॥

परन्तु देहि को अमर जानकर कामिनी सदैव खेल-तमाशे करती है और कामादिक पांचों वैरी भीतरी शुभ गुण लूटते रहते हैं।॥ २॥

ढਾਹਿ ਮੜੋਲੀ ਲੂਟਿਆ ਦੇਹੁਰਾ ਸਾ ਧਨ ਪਕੜੀ ਏਕ ਜਨਾ ॥

ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥

अंतः मृत्यु देहि रूपी इमारत को ध्वस्त कर देती है, मन्दिर को लूट लेती है और अकेली कामिनी पकड़ी जाती है।

ਜਮ ਡੰਡਾ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਪੜਿਆ ਭਾਗਿ ਗਏ ਸੇ ਪੰਚ ਜਨਾ ॥੩॥

जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥३॥

पांचों विकार भाग जाते हैं। जीव-स्त्री की गर्दन में जंजीरें पड़ती हैं और उसके सिर पर यम का दण्ड पड़ता है॥ ३॥

ਕਾਮਣਿ ਲੋੜੈ ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਮਿਤ੍ਰ ਲੁੜੇਨਿ ਸੁ ਖਾਧਾਤਾ ॥

कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥

कामिनी (जीव-स्त्री) सोने-चांदी के आभूषणों की माँग करती है, उसके संबंधी स्वादिष्ट भोजन पदार्थ मांगते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਕਰੇ ਤਿਨ ਕਾਰਣਿ ਜਾਸੀ ਜਮਪੁਰਿ ਬਾਧਾਤਾ ॥੪॥੨॥੧੪॥

नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥४॥२॥१४॥

हे नानक ! इनकी खातिर प्राणी पाप करता है। अंतत: पापों के कारण बंधा हुआ यम (मृत्यु) की नगरी में जाता है ॥४॥२॥१४॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥

गउड़ी चेती महला १ ॥

गउड़ी चेती महला १ ॥

ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਤੇ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਕਾਂਇਆ ਕੀਜੈ ਖਿੰਥਾਤਾ ॥

मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥

हे योगी ! तू अपने हृदय में संतोष उत्पन्न कर, यही तेरे कानों में पहनने वाले वास्तविक कुण्डल हैं। अपने नश्वर शरीर को ही गुदड़ी बना।

ਪੰਚ ਚੇਲੇ ਵਸਿ ਕੀਜਹਿ ਰਾਵਲ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕੀਜੈ ਡੰਡਾਤਾ ॥੧॥

पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥१॥

हे योगी ! अपने पाँच शिष्यों ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर और इस मन को अपना डण्डा बना ॥ १॥

ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਇਵ ਪਾਵਸਿਤਾ ॥

जोग जुगति इव पावसिता ॥

इस तरह तुझे योग करने की युक्ति मिल जाएगी।

ਏਕੁ ਸਬਦੁ ਦੂਜਾ ਹੋਰੁ ਨਾਸਤਿ ਕੰਦ ਮੂਲਿ ਮਨੁ ਲਾਵਸਿਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥१॥ रहाउ ॥

एक प्रभु का नाम ही सदैव स्थिर है, शेष सब कुछ क्षणभंगुर है। अपने मन को नाम-सिमरन में लगा, यह नाम ही तेरे लिए कन्दमूल रूपी भोजन है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੂੰਡਿ ਮੁੰਡਾਇਐ ਜੇ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਹਮ ਗੁਰੁ ਕੀਨੀ ਗੰਗਾਤਾ ॥

मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥

यदि गंगा पर जाकर सिर मुंडाने से गुरु मिलता है तो मैंने तो पहले ही गुरु को गंगा बना लिया है अर्थात् गुरु ही पवित्र तीर्थ है।

ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਤਾਰਣਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਅੰਧਾਤਾ ॥੨॥

त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥२॥

एक ईश्वर तीनों लोकों (के प्राणियों) को पार करने में समर्थ है। ज्ञानहीन मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता ॥ २॥

ਕਰਿ ਪਟੰਬੁ ਗਲੀ ਮਨੁ ਲਾਵਸਿ ਸੰਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਜਾਵਸਿਤਾ ॥

करि पट्मबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ॥

हे योगी ! तुम आडम्बर रचते हो और मौखिक बातों से अपने मन को लगाते हो। लेकिन तेरा संशय कदापि दूर नहीं होगा।

ਏਕਸੁ ਚਰਣੀ ਜੇ ਚਿਤੁ ਲਾਵਹਿ ਲਬਿ ਲੋਭਿ ਕੀ ਧਾਵਸਿਤਾ ॥੩॥
एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥३॥
यदि तुम अपना मन एक प्रभु के चरणों से लगा लो तो झूठ, लोभ के कारण बनी तेरी दुविधा दूर हो जाए॥ ३॥

ਜਪਸਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਰਚਸਿ ਮਨਾ ॥
जपसि निरंजनु रचसि मना ॥
हे योगी ! निरंजन प्रभु की आराधना करने से तेरा मन उस में लीन हो जाएगा।

ਕਾਹੇ ਬੋਲਹਿ ਜੋਗੀ ਕਪਟੁ ਘਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥१॥ रहाउ ॥
हे योगी ! तुम इतना बड़ा छल-कपट क्यों बोलते हो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਇਆ ਕਮਲੀ ਹੰਸੁ ਇਆਣਾ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ ਬਿਹਾਣੀਤਾ ॥
काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥
तेरी काया बावली है और मन मूर्ख है। तेरी समस्त अवस्था माया के मोह में बीतती जा रही है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਨਾਗੀ ਦਾਝੈ ਫਿਰਿ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਣੀਤਾ ॥੪॥੩॥੧੫॥
प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥४॥३॥१५॥
नानक विनती करता है कि नग्न देहि जब जल जाती है तो समय समाप्त हुआ जानकर आत्मा पश्चाताप करती है॥ ४ ॥ ३॥ १५॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥

ਅਉਖਧ ਮੰਤ੍ਰ ਮੂਲੁ ਮਨ ਏਕੈ ਜੇ ਕਰਿ ਦ੍ਰਿੜੁ ਚਿਤੁ ਕੀਜੈ ਰੇ ॥
अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे ॥
हे मेरे मन ! यदि तू समस्त रोगों की औषधि रूपी मूल मंत्र (प्रभु-नाम) को अपने हृदय में बसा ले,

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਪਾਪ ਕਰਮ ਕੇ ਕਾਟਨਹਾਰਾ ਲੀਜੈ ਰੇ ॥੧॥
जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥१॥
तो तू जन्म-जन्मांतरों में किए पापों का नाश करने वाले परमेश्वर को प्राप्त कर लेगा।॥ १॥

ਮਨ ਏਕੋ ਸਾਹਿਬੁ ਭਾਈ ਰੇ ॥
मन एको साहिबु भाई रे ॥
हे मेरे भाई ! मेरे मन को एक ईश्वर ही अच्छा लगता है।

ਤੇਰੇ ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਸੰਸਾਰਿ ਸਮਾਵਹਿ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਣਾ ਜਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
हे परमेश्वर ! तेरी तीन विशेषताओं में जगत् समाया हुआ है अर्थात् त्रिगुणी इन्द्रियां संसार के मोह में लगी हुई हैं और उस अलक्ष्य परमेश्वर को समझा नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥

ਸਕਰ ਖੰਡੁ ਮਾਇਆ ਤਨਿ ਮੀਠੀ ਹਮ ਤਉ ਪੰਡ ਉਚਾਈ ਰੇ ॥
सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥
यह माया शक्कर व चीनी की भाँति शरीर को मधुर लगती है। हम प्राणियों ने माया का बोझ उठाया हुआ है।

ਰਾਤਿ ਅਨੇਰੀ ਸੂਝਸਿ ਨਾਹੀ ਲਜੁ ਟੂਕਸਿ ਮੂਸਾ ਭਾਈ ਰੇ ॥੨॥
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥२॥
ज्ञानहीन रूपी अंधेरी रात में कुछ दिखाई नहीं देता और मृत्यु का चूहा (यमराज) जीवन की रस्सी काटता जा रहा है॥ २॥

ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਹਿ ਤੇਤਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ਰੇ ॥
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥
स्वेच्छाचारी जीव जितना अधिक धर्म कर्म करता है, उतना अधिक वह दुखी होता है। लेकिन गुरमुख को यश प्राप्त होता है।

ਜੋ ਤਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋਈ ਹੋਆ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਈ ਰੇ ॥੩॥
जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥३॥
जो कुछ परमात्मा करता है, वही होता है, जीव की किस्मत मिटाई नहीं जा सकती॥ ३॥

ਸੁਭਰ ਭਰੇ ਨ ਹੋਵਹਿ ਊਣੇ ਜੋ ਰਾਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਈ ਰੇ ॥
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥
जो प्राणी परमात्मा के चरणों में प्रीति लगाते और मग्न रहते हैं, वे प्रेम-रस से परिपूर्ण रहते हैं और प्रेम से शून्य नहीं होते।

ਤਿਨ ਕੀ ਪੰਕ ਹੋਵੈ ਜੇ ਨਾਨਕੁ ਤਉ ਮੂੜਾ ਕਿਛੁ ਪਾਈ ਰੇ ॥੪॥੪॥੧੬॥
तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥४॥४॥१६॥
यदि नानक उनके चरणों की धूलि बन जाए तो उस विमूढ़ (मन) को भी कुछ प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ४॥ १६॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥
गउड़ी चेती महला १ ॥

ਕਤ ਕੀ ਮਾਈ ਬਾਪੁ ਕਤ ਕੇਰਾ ਕਿਦੂ ਥਾਵਹੁ ਹਮ ਆਏ ॥
कत की माई बापु कत केरा किद्रू थावहु हम आए ॥
"[हम जीवों को पापों के कारण अनेक योनियों में भटकना पड़ता है, फिर हम क्या व्यक्त करें कि] हमारी माता कौन है, हमारा पिता कौन है, किस स्थान से हम आए हैं ?

ਅਗਨਿ ਬਿੰਬ ਜਲ ਭੀਤਰਿ ਨਿਪਜੇ ਕਾਹੇ ਕੰਮਿ ਉਪਾਏ ॥੧॥
अगनि बि्मब जल भीतरि निपजे काहे कमि उपाए ॥१॥
पिता के जल रूपी वीर्य के बुलबुले से माता की गर्भ-अग्नि में पड़कर हम उत्पन्न हुए हैं लेकिन पता नहीं भगवान ने किस मकसद से हमारी रचना की है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਕਉਣੁ ਜਾਣੈ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ॥
मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥
हे मेरे भगवान ! तेरे गुणों को कौन जान सकता है?

ਕਹੇ ਨ ਜਾਨੀ ਅਉਗਣ ਮੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कहे न जानी अउगण मेरे ॥१॥ रहाउ ॥
मुझ में इतने अवगुण हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਕੇਤੇ ਰੁਖ ਬਿਰਖ ਹਮ ਚੀਨੇ ਕੇਤੇ ਪਸੂ ਉਪਾਏ ॥
केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥
हमने अनेक वृक्षों की योनियां देखीं। अनेक बार पशु-योनियों में उत्पन्न हुए।

ਕੇਤੇ ਨਾਗ ਕੁਲੀ ਮਹਿ ਆਏ ਕੇਤੇ ਪੰਖ ਉਡਾਏ ॥੨॥
केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥२॥
अनेक बार हम सांपो के वंशों में उत्पन्न हुए और अनेक बार पक्षी बन-बनकर उड़ते रहे॥ २॥

ਹਟ ਪਟਣ ਬਿਜ ਮੰਦਰ ਭੰਨੈ ਕਰਿ ਚੋਰੀ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥
हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ॥
मनुष्य नगरों कोठी दुकानों एयं मजबूत महलों को सेंध लगाता है और वहाँ चोरी करके घर आ जाता है।

ਅਗਹੁ ਦੇਖੈ ਪਿਛਹੁ ਦੇਖੈ ਤੁਝ ਤੇ ਕਹਾ ਛਪਾਵੈ ॥੩॥
अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥३॥
वह मूर्ख अपने आगे देखता है और अपने पीछे भी देखता है किन्तु मूर्ख मनुष्य ईश्वर से अपने आपको कहाँ छिपा सकता है? ॥ ३॥

ਤਟ ਤੀਰਥ ਹਮ ਨਵ ਖੰਡ ਦੇਖੇ ਹਟ ਪਟਣ ਬਾਜਾਰਾ ॥
तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥
मैंने पावन तीर्थ-स्थलों के तट, नवखण्ड, नगर की दुकानें एवं व्यापार के केन्द्र देखे हैं।

ਲੈ ਕੈ ਤਕੜੀ ਤੋਲਣਿ ਲਾਗਾ ਘਟ ਹੀ ਮਹਿ ਵਣਜਾਰਾ ॥੪॥
लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥
जीव रूपी व्यापारी अपने हृदय में तराजू लेकर अपने कमाए नाम रूपी धन को तोलता है॥ ४॥

ਜੇਤਾ ਸਮੁੰਦੁ ਸਾਗਰੁ ਨੀਰਿ ਭਰਿਆ ਤੇਤੇ ਅਉਗਣ ਹਮਾਰੇ ॥
जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥
हे प्रभु ! जितना सागर में जल भरा हुआ है, हमारे अवगुण उतने ही हैं।

ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਕਿਛੁ ਮਿਹਰ ਉਪਾਵਹੁ ਡੁਬਦੇ ਪਥਰ ਤਾਰੇ ॥੫॥
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥५॥
हे ईश्वर ! मुझ पर अपनी दया एवं कुछ कृपा दृष्टि करो और मुझ डूबते पत्थर को भवसागर में से पार कर दो॥ ५॥

ਜੀਅੜਾ ਅਗਨਿ ਬਰਾਬਰਿ ਤਪੈ ਭੀਤਰਿ ਵਗੈ ਕਾਤੀ ॥
जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥
मेरा हृदय अग्नि की भाँति दीप्यमान हो रहा है और उसके भीतर तृष्णा रूपी कैंची चल रही है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥੬॥੫॥੧੭॥
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥६॥५॥१७॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्रभु! यदि मैं तेरे हुक्म को पहचान लूं तो मुझे दिन-रात सुख मिलता रहेगा ॥ ६॥ ५॥ १७॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥

ਰੈਣਿ ਗਵਾਈ ਸੋਇ ਕੈ ਦਿਵਸੁ ਗਵਾਇਆ ਖਾਇ ॥
रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥
मनुष्य अपनी रात्रि सोकर और दिन खा-पीकर व्यर्थ ही गंवा देता है।

ਹੀਰੇ ਜੈਸਾ ਜਨਮੁ ਹੈ ਕਉਡੀ ਬਦਲੇ ਜਾਇ ॥੧॥
हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥१॥
उसका हीरे समान अनमोल जीवन (भक्ति के बिना) कौड़ी के भाव व्यर्थ चला जाता है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਰਾਮ ਕਾ ॥
नामु न जानिआ राम का ॥
हे मूर्ख ! तूने राम के नाम को नहीं जाना।

ਮੂੜੇ ਫਿਰਿ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਹਿ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥१॥ रहाउ ॥
तुम फिर मरणोपरांत पश्चाताप करोगे॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਤਾ ਧਨੁ ਧਰਣੀ ਧਰੇ ਅਨਤ ਨ ਚਾਹਿਆ ਜਾਇ ॥
अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥
तूने नाशवान धन संग्रह करके धरती में दबाकर रखा हुआ है। इस धन के कारण ही तेरे मन में अनन्त परमेश्वर के स्मरण की इच्छा उत्पन्न नहीं होती।

ਅਨਤ ਕਉ ਚਾਹਨ ਜੋ ਗਏ ਸੇ ਆਏ ਅਨਤ ਗਵਾਇ ॥੨॥
अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥२॥
जो भी नाशवान धन पदार्थ की ओर दौड़ते फिरते हैं, वे अनन्त प्रभु के नाम-धन को गंवा कर आए हैं।॥ २॥

ਆਪਣ ਲੀਆ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਭਾਗਠੁ ਹੋਇ ॥
आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥
यदि केवल चाहने से धन मिलता हो तो सभी मनुष्य धनवान बन जाएँ।

ਕਰਮਾ ਉਪਰਿ ਨਿਬੜੈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੩॥
करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥३॥
चाहे सभी मनुष्य धन की तृष्णा में रहते हैं परन्तु उनकी किस्मत का उनके कर्मो अनुसार ही फैसला होता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਕਰਣਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋਈ ਸਾਰ ਕਰੇਇ ॥
नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ ॥
हे नानक ! जिसने सृष्टि की रचना की है, वही सबका पालन-पोषण करता है।

ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਪੀ ਖਸਮ ਕਾ ਕਿਸੈ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੪॥੧॥੧੮॥
हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥४॥१॥१८॥
मालिक-प्रभु का हुक्म जाना नहीं जा सकता कि वह किसे महानता प्रदान करता है॥ ४॥ १॥ १८ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥

ਹਰਣੀ ਹੋਵਾ ਬਨਿ ਬਸਾ ਕੰਦ ਮੂਲ ਚੁਣਿ ਖਾਉ ॥
हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥
यदि मुझे मृगिनी बनकर वन में निवास करना पड़े तो मैं वहाँ कन्दमूल चुन-चुनकर खा लिया करूँगी।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਮਿਲੈ ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਹਉ ਜਾਉ ਜੀਉ ॥੧॥
गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥
यदि गुरु की कृपा से मुझे मेरा पति-प्रभु मिल जाए तो मैं बार-बार उस पर कुर्बान जाऊँ॥ १॥

ਮੈ ਬਨਜਾਰਨਿ ਰਾਮ ਕੀ ॥
मै बनजारनि राम की ॥
मैं राम की वनजारिन (व्यापारी) हूँ।

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਰੁ ਵਾਪਾਰੁ ਜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तेरा नाम ही व्यापार करने के लिए मेरा सौदा है॥ १॥ रहाउ॥

ਕੋਕਿਲ ਹੋਵਾ ਅੰਬਿ ਬਸਾ ਸਹਜਿ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥
कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥
यदि मुझे कोयल बन कर आम के पौधे पर रहना पड़े तो भी मैं सहज ही नाम की आराधना करूँगी।

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਮਿਲੈ ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰੁ ॥੨॥
सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥
यदि मुझे सहज-स्वभाव मेरा पति-प्रभु मिल जाए तो उसके अपार रूप के दर्शन करूँगी॥ २॥

ਮਛੁਲੀ ਹੋਵਾ ਜਲਿ ਬਸਾ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸਾਰਿ ॥
मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥
यदि मुझे मछली बनकर जल में निवास करना पड़े तो भी मैं उसकी आराधना करूँगी, जो समरत जीव-जन्तुओं की देखभाल करता है।

ਉਰਵਾਰਿ ਪਾਰਿ ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਵਸੈ ਹਉ ਮਿਲਉਗੀ ਬਾਹ ਪਸਾਰਿ ॥੩॥
उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥
प्रियतम प्रभु (इस संसार-सागर के अथाह जल के) दोनों ओर निवास करता है। अपनी भुजाएँ फैलाकर मैं उससे मिलूगी ॥ ३॥

ਨਾਗਨਿ ਹੋਵਾ ਧਰ ਵਸਾ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਭਉ ਜਾਇ ॥
नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥
यदि मुझे नागिन बनकर पृथ्वी में निवास करना पड़े तो भी मैं अपने प्रभु के नाम में ही निवास करूँगी और मेरा भय निवृत्त हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੨॥੧੯॥
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१९॥
हे नानक ! वह जीव-स्त्री सदा सुहागिन है, जिसकी ज्योति प्रभु-ज्योति में समाई रहती है॥ ४॥ २॥ १९॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਦੀਪਕੀ ਮਹਲਾ ੧
गउड़ी पूरबी दीपकी महला १
गउड़ी पूरबी दीपकी महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੈ ਘਰਿ ਕੀਰਤਿ ਆਖੀਐ ਕਰਤੇ ਕਾ ਹੋਇ ਬੀਚਾਰੋ ॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
जिस सत्संगति में परमात्मा की कीर्ति का गान होता है और सृष्टिकर्ता की महिमा का चिंतन किया जाता है,

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਗਾਵਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਿਵਰਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥੧॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥१॥
उस सत्संगति रूपी घर में जाकर यश के गीत गायन करो और उस करतार की ही आराधना करो।॥ १॥

ਤੁਮ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਨਿਰਭਉ ਕਾ ਸੋਹਿਲਾ ॥
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हे मन ! तू सत्संगियों के साथ मिलकर निडर प्रभु की स्तुति के गीत गायन कर।

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜਾਉ ਜਿਤੁ ਸੋਹਿਲੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उस स्तुति के गीत पर कुर्बान जाता हूँ, जिस द्वारा सदैव सुख प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਿਤ ਨਿਤ ਜੀਅੜੇ ਸਮਾਲੀਅਨਿ ਦੇਖੈਗਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
हे मानव ! जो पालनहार ईश्वर नित्यप्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुझ पर भी कृपा-दृष्टि करेगा।

ਤੇਰੇ ਦਾਨੈ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਤਿਸੁ ਦਾਤੇ ਕਵਣੁ ਸੁਮਾਰੁ ॥੨॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्यांकन नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं।॥ २॥

ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥
स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
इस मृत्युलोक से जाने का समय निश्चित किया हुआ है अर्थात् इहलोक से जाने हेतु साहे-पत्र रूपी संदेश संवत-दिन इत्यादि लिखकर तय किया हुआ है, इसलिए भगवान से मिलाप हेतु सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो अर्थात् मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ कर्म कर लो ।

ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਆਸੀਸੜੀਆ ਜਿਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੩॥
देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥
हे सज्जनो ! मुझे अपना आशीर्वाद दो कि मेरा प्रभु-पति से मिलन हो जाए॥ ३॥

ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦੜੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
प्रत्येक घर में इस साहे-पत्र को भेजा जा रहा है, नित्य ही यह सन्देश किसी न किसी घर पहुँच रहा है अर्थात् नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।

ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਐ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥੨੦॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥२०॥
नानक कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, चूंकि वह दिन निकट आ रहे हैं।॥ ४॥ १॥ २०॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ॥
रागु गउड़ी गुआरेरी ॥
रागु गउड़ी गुआरेरी ॥

ਮਹਲਾ ੩ ਚਉਪਦੇ ॥
महला ३ चउपदे ॥
महला ३ चउपदे ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਮੇਲਾ ਹੋਈ ॥
गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥
यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर से मिलन हो जाता है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸੋਈ ॥
आपे मेलि मिलावै सोई ॥
वह ईश्वर स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭ ਬਿਧਿ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ॥
मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥
मेरा प्रभु जीवों को अपने साथ मिलाने की समस्त युक्तियां जानता है।

ਹੁਕਮੇ ਮੇਲੇ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥੧॥
हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥१॥
अपने हुक्म द्वारा वह उनको अपने साथ मिला लेता है, जो उसके नाम को पहचानते हैं।॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਇ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਜਾਇ ॥
सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥
सतिगुरु के भय-आदर में रहने से संशय एवं दूसरे खौफ लुप्त हो जाते हैं।

ਭੈ ਰਾਚੈ ਸਚ ਰੰਗਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भै राचै सच रंगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जो गुरु के भय में हर्षित रहता है, वह सत्य के प्रेम में लीन रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸੁਭਾਇ ॥
गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥
यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास कर जाता है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਾਰਾ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥
मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥
मेरा प्रभु महान है, उसका मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता।

ਸਬਦਿ ਸਾਲਾਹੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥

सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥

गुरु के उपदेश से मैं प्रभु की सराहना करता हूँ, जिसका कोई अन्त नहीं, उसके अस्तित्व का ओर-छोर नहीं मिल सकता।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੨॥

मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥२॥

मेरा परमेश्वर क्षमाशील है। वह दोषी जीवों को भी क्षमा कर देता है॥ २॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਭ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਹੋਇ ॥

गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥

गुरु के मिलन से समस्त चतुराइयां एवं सद्बुद्धि प्राप्त हो जाती है।

ਮਨਿ ਨਿਰਮਲਿ ਵਸੈ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥
इस तरह मन निर्मल हो जाता है और सत्यस्वरूप परमेश्वर उसमें निवास कर लेता है।

ਸਾਚਿ ਵਸਿਐ ਸਾਚੀ ਸਭ ਕਾਰ ॥
साचि वसिऐ साची सभ कार ॥
यदि मनुष्य सत्य में निवास कर ले तो उसके कर्म सच्चे (श्रेष्ठ) हो जाते हैं।

ਊਤਮ ਕਰਣੀ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰ ॥੩॥
ऊतम करणी सबद बीचार ॥३॥
ईश्वर का नाम-सिमरन ही शुभ कर्म है ॥३॥

ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਚੀ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥
गुर ते साची सेवा होइ ॥
गुरु के द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा-भक्ति की जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ਕੋਇ ॥
गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥
गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही हरिनाम को पहचानता है।

ਜੀਵੈ ਦਾਤਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
जीवै दाता देवणहारु ॥
समस्त जीवों को देने वाला दाता सदैव ही जीवित रहता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥੪॥੧॥੨੧॥
नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥४॥१॥२१॥
हे नानक ! मनुष्य का हरि-नाम से ही प्रेम हो जाता है॥ ४ ॥ १ ॥ २१ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਪਾਏ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही गुरु से ज्ञान प्राप्त करता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਬੂਝੈ ਸੀਝੈ ਸੋਇ ॥
गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥
जो व्यक्ति गुरु से ईश्वर बारे ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसका जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਸਹਜੁ ਸਾਚੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥
गुरु से ही सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम-स्मरण प्राप्त होता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰੁ ॥੧॥
गुर ते पाए मुकति दुआरु ॥१॥
गुरु द्वारा ही मोक्ष का द्वार पाया जाता है। १॥

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲੈ ਗੁਰੁ ਆਇ ॥
पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥
गुरु उसे ही आकर मिलता है, जिसके पूर्ण भाग्य होते हैं।

ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साचै सहजि साचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह परमात्मा का सिमरन करके सहज ही सत्य में समा जाता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਏ ॥
गुरि मिलिऐ त्रिसना अगनि बुझाए ॥
गुरु को मिलने से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है।

ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਂਤਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥
गुर ते सांति वसै मनि आए ॥
गुरु के द्वारा सुख-शांति आकर मन में निवास करती है।

ਗੁਰ ਤੇ ਪਵਿਤ ਪਾਵਨ ਸੁਚਿ ਹੋਇ ॥
गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥
गुरु के द्वारा मनुष्य पवित्र पावन एवं निर्मल हो जाता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੨॥
गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥२॥
गुरु द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है। २॥

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਸਭ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥
बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥
गुरु के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकती रहती है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਬਹੁਤਾ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥
बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥
नाम के बिना प्राणी बहुत कष्ट सहन करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥
जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वहीं व्यक्ति ईश्वर के नाम का ध्यान करता है।

ਦਰਸਨਿ ਸਚੈ ਸਚੀ ਪਤਿ ਹੋਈ ॥੩॥
दरसनि सचै सची पति होई ॥३॥
सद्पुरुष के दर्शनों से मनुष्य को सच्ची शोभा प्राप्त होती है॥ ३॥

ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਦਾਤਾ ਇਕੁ ਸੋਈ ॥
किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥
केवल एक वही दाता है, दूसरा किसी का क्यों जिक्र किया जाए ?

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥
किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥
जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपा कर देता है, उसका शब्द द्वारा उससे मिलाप हो जाता है।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥
मैं अपने प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति करता रहता हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵਾ ॥੪॥੨॥੨੨॥
नानक साचे साचि समावा ॥४॥२॥२२॥
हे नानक ! मैं सच्चे गुरु की कृपा से सत्यस्वरूप परमात्मा में समाया रहता हूँ॥ ४॥ २॥ २२॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਸੁ ਥਾਉ ਸਚੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥
वह (सत्संग का) स्थान सत्य का पावन स्थल है, जहाँ मन निर्मल हो जाता है।

ਸਚਿ ਨਿਵਾਸੁ ਕਰੇ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
सचि निवासु करे सचु सोइ ॥
वह निवास भी सत्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा निवास करता है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਪੈ ॥
सची बाणी जुग चारे जापै ॥
सच्ची वाणी चारों ही युगों में प्रसिद्ध है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸਾਚਾ ਆਪੇ ਆਪੈ ॥੧॥
सभु किछु साचा आपे आपै ॥१॥
सत्य स्वरूप परमात्मा स्वयं ही सब कुछ है॥ १॥

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥
करमु होवै सतसंगि मिलाए ॥
यदि परमात्मा की कृपा हो जाए तो मनुष्य को संतों की संगति मिल जाती है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਬੈਸਿ ਸੁ ਥਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुण गावै बैसि सु थाए ॥१॥ रहाउ ॥
फिर वह उस श्रेष्ठ स्थान पर विराजमान होकर भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਲਉ ਇਹ ਜਿਹਵਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥
यह जिव्हा जल जाए, जो दूसरे स्वादों में लगी रहती है अर्थात् दूसरों की प्रीति की चाहवान है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਾਖੈ ਫੀਕਾ ਆਲਾਇ ॥
हरि रसु न चाखै फीका आलाइ ॥
यह हरि-रस का आस्वादन नहीं करती और मन्दे वचन बोलती रहती है।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫੀਕਾ ਹੋਇ ॥
बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥
ईश्वर को समझे बिना तन एवं मन फीके हो जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੀਆ ਚਲਿਆ ਰੋਇ ॥੨॥
बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥२॥
स्वामी के नाम के बिना दुःखी होकर मनुष्य विलाप करता हुआ दुनिया से चला जाता है। २॥

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
रसना हरि रसु चाखिआ सहजि सुभाइ ॥
जिनकी जिव्हा सहज ही हरि-रस का पान करती है,

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥
गुर किरपा ते सचि समाइ ॥
वह गुरु की कृपा से सत्य में ही समा जाती है।

ਸਾਚੇ ਰਾਤੀ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰ ॥
साचे राती गुर सबदु वीचार ॥
वह गुरु के शब्द का चिंतन करती रहती है और सत्य में ही मग्न रहती है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਨਿਰਮਲ ਧਾਰ ॥੩॥
अम्रितु पीवै निरमल धार ॥३॥
फिर वह अमृत रस की निर्मल धारा का पान करती रहती है ॥३॥

ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਜੋ ਭਾਡਾ ਹੋਇ ॥
नामि समावै जो भाडा होइ ॥
भगवान का नाम उस व्यक्ति के हृदय रूपी बर्तन में तभी समाता है, यदि वह शुद्ध हो तथा

ਊਂਧੈ ਭਾਂਡੈ ਟਿਕੈ ਨ ਕੋਇ ॥
ऊंधै भांडै टिकै न कोइ ॥
अशुद्ध हृदय रूपी बर्तन में कुछ भी नहीं ठहरता।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨਿ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
गुर सबदी मनि नामि निवासु ॥
गुरु के शब्द द्वारा मन में भगवान के नाम का निवास हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਭਾਂਡਾ ਜਿਸੁ ਸਬਦ ਪਿਆਸ ॥੪॥੩॥੨੩॥
नानक सचु भांडा जिसु सबद पिआस ॥४॥३॥२३॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय में प्रभु-नाम को पान करने की तीव्र लालसा होती है, उसका ही हृदय-रूपी बर्तन शुद्ध होता है॥ ४ ॥ ३ ॥ २३ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਇਕਿ ਗਾਵਤ ਰਹੇ ਮਨਿ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਇ ॥
इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥
कई व्यक्ति प्रभु-यश गाते रहते हैं परन्तु उनके हृदय को आनंद नहीं आता।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਗਾਵਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥
हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥
जो व्यक्ति अहंकार में गाते हैं उनका सब कुछ व्यर्थ ही जाता है। अर्थात् उन्हें उसका कोई फल नहीं मिलता।

ਗਾਵਣਿ ਗਾਵਹਿ ਜਿਨ ਨਾਮ ਪਿਆਰੁ ॥
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥
जो व्यक्ति ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं, वही असल में प्रभु के गीत गाते हैं।

ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰੁ ॥੧॥
साची बाणी सबद बीचारु ॥१॥
वह सच्ची वाणी एवं शब्द का चिंतन करते हैं॥ १॥

ਗਾਵਤ ਰਹੈ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥
गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥
यदि सतिगुरु को अच्छा लगे तो मनुष्य प्रभु का यशोगान करता रहता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मनु तनु राता नामि सुहावै ॥१॥ रहाउ ॥

उसका मन एवं तन नाम में मग्न हो जाता है और नाम से उसका जीवन सुन्दर बन जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਇਕਿ ਗਾਵਹਿ ਇਕਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹਿ ॥

इकि गावहि इकि भगति करेहि ॥

कई प्राणी प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं और कई भक्ति करते हैं।

ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਬਿਨੁ ਅਸਨੇਹ ॥

नामु न पावहि बिनु असनेह ॥

परन्तु मन में प्रेम न होने के कारण उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता।

ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦ ਪਿਆਰਿ ॥

सची भगति गुर सबद पिआरि ॥

जो व्यक्ति गुरु के शब्द से प्रेम करता है उसकी ही भक्ति सच्ची है।

ਅਪਨਾ ਪਿਰੁ ਰਾਖਿਆ ਸਦਾ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥੨॥

अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि ॥२॥

ऐसा व्यक्ति सदैव ही अपने प्रियतम प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखता है॥ २॥

ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਮੂਰਖ ਆਪੁ ਜਣਾਵਹਿ ॥
भगति करहि मूरख आपु जणावहि ॥
कई मूर्ख व्यक्ति रास प्रदर्शन करके भक्ति करते हैं और स्वयं को भक्त होने का दिखावा ही करते हैं।

ਨਚਿ ਨਚਿ ਟਪਹਿ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥
नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥
वे निरन्तर नृत्य करते और कूदते हैं और बहुत दुख सहन करते हैं।

ਨਚਿਐ ਟਪਿਐ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
नचिऐ टपिऐ भगति न होइ ॥
नृत्य करने एवं कूदने से प्रभु की भक्ति नहीं होती।

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਭਗਤਿ ਪਾਏ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੩॥
सबदि मरै भगति पाए जनु सोइ ॥३॥
प्रभु की भक्ति वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जो गुरु के शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है॥ ३॥

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਭਗਤਿ ਕਰਾਏ ਸੋਇ ॥
भगति वछलु भगति कराए सोइ ॥
भक्तवत्सल प्रभु स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है।

ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਖੋਇ ॥
सची भगति विचहु आपु खोइ ॥
अपने अन्तर्मन में से अहंकार को नाश करना ही सच्ची भक्ति है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥
मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥
मेरा सत्यस्वरूप प्रभु जीवों से भक्ति करवाने की समस्त विधियों को जानता है।

ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥੪॥੪॥੨੪॥
नानक बखसे नामु पछाणै ॥४॥४॥२४॥
हे नानक ! भगवान उन्हें ही क्षमा कर देता है, जो उसके नाम को पहचान लेता है॥ ४ ॥ ४ ॥ २४ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਧਾਤੁ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥
मनु मारे धातु मरि जाइ ॥
जब मनुष्य अपने मन को नियंत्रण में कर लेता है तो उसकी समस्त दुविधा समाप्त हो जाती है।

ਬਿਨੁ ਮੂਏ ਕੈਸੇ ਹਰਿ ਪਾਇ ॥
बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥
मन को नियंत्रण में किए बिना भगवान की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

ਮਨੁ ਮਰੈ ਦਾਰੂ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही मन को नियंत्रण में करने की औषधि को जानता है।

ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਬੂਝੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੧॥
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥
मन भगवान के नाम द्वारा ही नियंत्रण में आता है परन्तु इस भेद को वही जानता है जो नाम-सिमरन करता है॥ १॥

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
जिस नो बखसे दे वडिआई ॥
ईश्वर जिसे क्षमा कर देता है, उसे ही वह शोभा प्रदान करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से ईश्वर आकर उसके हृदय में निवास करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥
जो व्यक्ति गुरमुख बनकर शुभ कर्मों के आचरण की कमाई करता है,

ਤਾ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਸੋਝੀ ਪਾਵੈ ॥
ता इसु मन की सोझी पावै ॥
उसे ही मन के स्वभाव की सूझ होती है।

ਮਨੁ ਮੈ ਮਤੁ ਮੈਗਲ ਮਿਕਦਾਰਾ ॥
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥
मनुष्य का मन मदिरा में मस्त हुए हाथी की भाँति है।

ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਣਹਾਰਾ ॥੨॥
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥
गुरु ही आत्मिक रूप से मृत इस मन को अपनी वाणी द्वारा अंकुश लगाकर आत्मिक जीवन प्रदान करने में समर्थ है॥ २॥

ਮਨੁ ਅਸਾਧੁ ਸਾਧੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥
यह मन सहज रूप में नियंत्रण में आने वाला नहीं। कोई विरला पुरुष ही इसे नियंत्रण में करता है।

ਅਚਰੁ ਚਰੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥
यदि मनुष्य मन के स्वेच्छाचरण को नष्ट कर दे, केवल तभी यह मन पवित्र होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਇਆ ਸਵਾਰਿ ॥
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥
गुरमुख ने यह मन सुन्दर बना लिया है।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਤਜੇ ਵਿਕਾਰ ॥੩॥
हउमै विचहु तजे विकार ॥३॥
वह अपने भीतर से अहंकार रूपी विकार को बाहर निकाल देता है॥ ३॥

ਜੋ ਧੁਰਿ ਰਾਖਿਅਨੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥
जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥
जिन लोगों को परमात्मा ने आदि से ही साधुओं के मिलाप में मिला रखा है,

ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥
वह कदाचित अलग नहीं होते और ईश्वर में ही लीन रहते हैं।

ਆਪਣੀ ਕਲਾ ਆਪੇ ਹੀ ਜਾਣੈ ॥
आपणी कला आपे ही जाणै ॥
सर्वकला सम्पूर्ण परमात्मा अपनी कला (शक्ति) स्वयं ही जानता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥੪॥੫॥੨੫॥
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥५॥२५॥
हे नानक ! गुरमुख ही नाम को पहचानता है॥ ४॥ ५॥ २५ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨਾ ॥
हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥
सारी दुनिया अहंकार में फँसकर पागल हो रही है

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥
दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥
तथा द्वैत-भाव के कारण भ्रम में पड़कर कुमार्गगामी हो रही है।

ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਚਿਤਵੈ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਨਾ ॥
बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥
चिंता में पड़कर लोग बहुत सोचते रहते हैं परन्तु अपने स्वरूप की पहचान नहीं करते।

ਧੰਧਾ ਕਰਤਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਵਿਹਾਨਾ ॥੧॥
धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥१॥
अपने कर्म (धंधा) करते हुए उनके रात-दिन बीत जाते हैं।॥ १॥

ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਰਮਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! अपने हृदय में राम का सिमरन करते रहो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुख की जिव्हा हरि-रस का आनंद प्राप्त करती रहती है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਜਿਨਿ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥
गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥
जो गुरमुख अपने ह्रदय में राम को पहचान लेते हैं,

ਜਗਜੀਵਨੁ ਸੇਵਿ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਜਾਤਾ ॥
जगजीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥
वह जगजीवन प्रभु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥
हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥
वह अपना अहंकार नष्ट कर के गुरु के शब्द द्वारा प्रभु को समझ लेते हैं।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥੨॥
क्रिपा करे प्रभ करम बिधाता ॥२॥
कर्मविधाता प्रभु उन पर अपनी कृपा करता है॥ २॥

ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਜੋ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥
से जन सचे जो गुर सबदि मिलाए ॥
जिन लोगों को गुरु के शब्द द्वारा भगवान अपने साथ मिला लेता है, वहीं व्यक्ति सत्यवादी हैं।

ਧਾਵਤ ਵਰਜੇ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
धावत वरजे ठाकि रहाए ॥
वह अपने मन को विकारों की ओर दौड़ने से वर्जित करते हैं और उस पर विराम लगाते हैं।

ਨਾਮੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ॥
नामु नव निधि गुर ते पाए ॥
नवनिधियाँ प्रदान करने वाले नाम को वह गुरु से प्राप्त करते हैं।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਏ ॥੩॥
हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥३॥
भगवान अपनी कृपा करके उनके मन में आकर निवास कर लेता है॥ ३॥

ਰਾਮ ਰਾਮ ਕਰਤਿਆ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥
'राम-राम' नाम का सिमरन करने से शरीर को बड़ा सुख एवं शांति प्राप्त होती है।

ਅੰਤਰਿ ਵਸੈ ਨ ਲਾਗੈ ਜਮ ਪੀਰ ॥
अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥
जिस प्राणी के हृदय में प्रभु-नाम आ बसता है, उसको मृत्यु की पीड़ा स्पर्श नहीं करती।

ਆਪੇ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਿ ਵਜੀਰ ॥
आपे साहिबु आपि वजीर ॥
ईश्वर स्वयं ही जगत् का स्वामी है और स्वयं ही मंत्री है।

ਨਾਨਕ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥੪॥੬॥੨੬॥
नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥४॥६॥२६॥
हे नानक ! सदैव ही गुणों के भण्डार भगवान की सेवा करते रहो॥ ४॥ ६॥ २६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਸੋ ਕਿਉ ਵਿਸਰੈ ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਨਾ ॥
सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥
उस भगवान को हम क्यों विस्मृत करें ? जिसके हमें ये आत्मा और प्राण दिए हुए हैं।

ਸੋ ਕਿਉ ਵਿਸਰੈ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥
सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥
उसे हम क्यों विस्मृत करें ? जो समस्त जीवों में समाया हुआ है।

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਰਵਾਨਾ ॥੧॥
जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥१॥
जिसकी सेवा-भक्ति करने से जीव उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है तथा वहाँ उसे बड़ा आदर-सत्कार मिलता है ॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥

हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥

मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ।

ਤੂੰ ਵਿਸਰਹਿ ਤਦਿ ਹੀ ਮਰਿ ਜਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरे प्रभु! जब मैं तुझे विस्मृत करूँ, मैं उसी क्षण ही प्राण त्याग देता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤਿਨ ਤੂੰ ਵਿਸਰਹਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ॥

तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥

हे परमात्मा ! तू उन्हें ही विस्मृत हो जाता है, जिन्हें तूने स्वयं ही कुमार्गगामी बनाया है।

ਤਿਨ ਤੂੰ ਵਿਸਰਹਿ ਜਿ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ॥
तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥
तू उन्हें ही विस्मृत होता है जो माया के मोह में लीन रहते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਜੋਨੀ ਪਾਏ ॥੨॥
मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥२॥
तू ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीवों को योनियों में डालकर रखता है॥ २॥

ਜਿਨ ਇਕ ਮਨਿ ਤੁਠਾ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥
जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥
जिन प्राणियों पर परमात्मा प्रसन्न होता है, उनको वह सतिगुरु की सेवा में लगा देता है।

ਜਿਨ ਇਕ ਮਨਿ ਤੁਠਾ ਤਿਨ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥
जिन प्राणियों पर भगवान बड़ा प्रसन्न होता है, भगवान स्वयं को उनके मन में बसा देता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥
गुरमती हरि नामि समाए ॥३॥
गुरु के उपदेश से वह हरि के नाम में लीन हो जाते हैं।॥ ३ ॥

ਜਿਨਾ ਪੋਤੈ ਪੁੰਨੁ ਸੇ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥
जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥
जिन्होंने पुण्य-कर्म किए हुए हैं, वे ज्ञान का चिंतन करते रहते हैं

ਜਿਨਾ ਪੋਤੈ ਪੁੰਨੁ ਤਿਨ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥
जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥
और अपने अहंकार को नष्ट कर देते हैं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੪॥੭॥੨੭॥
नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥
हे नानक ! जो ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ ७॥ २७॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਤੂੰ ਅਕਥੁ ਕਿਉ ਕਥਿਆ ਜਾਹਿ ॥
तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥
हे भगवान ! तू अकथनीय है। फिर तुझे किस तरह कथन किया जा सकता है?

ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਮਾਰਣੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥
गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥
जो व्यक्ति गुरु के शब्द से अपने मन को वश में कर लेते हैं, भगवान उसके मन में आ बसता है।

ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਅਨੇਕ ਕੀਮਤਿ ਨਹ ਪਾਹਿ ॥੧॥
तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१॥
हे ईश्वर ! तेरे गुण अनेक हैं और उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ १॥

ਜਿਸ ਕੀ ਬਾਣੀ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥
जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥
यह गुरुवाणी जिस (परमेश्वर) की है, उस (प्रभु) में ही लीन रहती है।

ਤੇਰੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਖਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तेरी अकथनीय कथा को गुरु के शब्द द्वारा ही वर्णन किया गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਹ ਸਤਸੰਗਤਿ ਬਣਾਈ ॥
जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥
जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ सत्संगति हो जाती है।

ਜਹ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥
जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥
सतिगुरु सत्संगति में सहज ही भगवान की गुणस्तुति करते हैं।

ਜਹ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਹਾ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥੨॥
जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥२॥
जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ नाम द्वारा प्राणियों का अहंकार जल जाता है। २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਮਹਲੀ ਥਾਉ ਪਾਏ ॥
गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥
गुरमुख ईश्वर की सेवा-भक्ति करके उसके आत्म-स्वरूप में स्थान प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥
गुरमुख ही अपने हृदय में भगवान के नाम को बसा लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥
गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥३॥
गुरमुख भक्ति द्वारा भगवान के नाम में ही समा जाता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥
आपे दाति करे दातारु ॥
दाता प्रभु जिस व्यक्ति को नाम की देन प्रदान करता है,

ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥
उस व्यक्ति का पूर्ण सतिगुरु से प्रेम हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਕਉ ਜੈਕਾਰੁ ॥੪॥੮॥੨੮॥
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥४॥८॥२८॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, उनकी लोक-परलोक में जय-जयकार होती है ॥ ४ ॥ ८ ॥ २८ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਏਕਸੁ ਤੇ ਸਭਿ ਰੂਪ ਹਹਿ ਰੰਗਾ ॥
एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥
एक ईश्वर से ही समस्त रूप एवं रंग उत्पन्न हुए हैं।

ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਸਭਿ ਸਹਲੰਗਾ ॥
पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥
पवन, जल एवं अग्नि सब में मिले हुए हैं।

ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਵੇਖੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰੰਗਾ ॥੧॥
भिंन भिंन वेखै हरि प्रभु रंगा ॥१॥
हरि-प्रभु इन भिन्न-भिन्न रंगों वाले जीवों एवं पदार्थों को देखकर प्रसन्न होता है॥ १॥

ਏਕੁ ਅਚਰਜੁ ਏਕੋ ਹੈ ਸੋਈ ॥
एकु अचरजु एको है सोई ॥
यह एक अदभुत कौतुक है कि यह सारा जगत-प्रसार एक ईश्वर का ही है और वह स्वयं इसमें विद्यमान है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੀਚਾਰੇ ਵਿਰਲਾ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥१॥ रहाउ ॥
कोई विरला पुरुष ही गुरु के माध्यम से इस कौतुक पर विचार करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਹਜਿ ਭਵੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥
सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥
परमेश्वर सहज ही सर्वव्यापक हो रहा है।

ਕਹਾ ਗੁਪਤੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਪ੍ਰਭਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥
कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥
परमेश्वर ने ऐसी सृष्टि रचना की है कि किसी स्थान पर वह लुप्त है और कहीं प्रत्यक्ष है।

ਆਪੇ ਸੁਤਿਆ ਦੇਇ ਜਗਾਈ ॥੨॥
आपे सुतिआ देइ जगाई ॥२॥
भगवान स्वयं ही अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवों को ज्ञान देकर जगा देता है॥ २॥

ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਹੋਈ ॥
तिस की कीमति किनै न होई ॥
उसका मूल्यांकन कोई नहीं कर सका

ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਥਨੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥
चाहे सभी लोग उसके गुणों को कह-कहकर कथन कर रहे हैं।

ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਮਾਵੈ ਬੂਝੈ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥੩॥
गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥३॥
जो प्राणी गुरु के शब्द में लीन होता है, वह भगवान को समझ लेता है॥ ३॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਵੇਖੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥
सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥
भगवान जीवों की प्रार्थना सुन-सुनकर उनकी जरुरतों को देखता और उन्हें नाम द्वारा अपने साथ मिला लेता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਪਾਏ ॥
वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥
गुरु की सेवा करने से मनुष्य को बड़ी शोभा प्राप्त होती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥੯॥੨੯॥
नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥४॥९॥२९॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, वह भगवान के नाम में ही समा जाते हैं॥ ४॥ ६ ॥ २९ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਸੂਤਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਪਿਆਰਿ ॥
मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥
स्वेच्छाचारी जीव माया के मोह एवं प्रेम में फंस कर अज्ञानता की निदा में सोया रहता है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗੇ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰਿ ॥
गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥
परन्तु गुरमुख भगवान के गुणों का चिंतन करके ज्ञान द्वारा जागता रहता है।

ਸੇ ਜਨ ਜਾਗੇ ਜਿਨ ਨਾਮ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥
से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥१॥
जो व्यक्ति प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं, वहीं जागते रहते हैं।॥ १॥

ਸਹਜੇ ਜਾਗੈ ਸਵੈ ਨ ਕੋਇ ॥
सहजे जागै सवै न कोइ ॥
जो व्यक्ति सहज ही जागता रहता है, वह अज्ञानता की निद्रा में नहीं सोता।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਬੂਝੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
इस तथ्य को कोई पुरुष पूर्ण गुरु द्वारा समझता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਸੰਤੁ ਅਨਾੜੀ ਕਦੇ ਨ ਬੂਝੈ ॥
असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥
दुष्ट एवं अनाड़ी व्यक्ति समझाने से कभी भी नहीं समझता।

ਕਥਨੀ ਕਰੇ ਤੈ ਮਾਇਆ ਨਾਲਿ ਲੂਝੈ ॥
कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥
वह बातें तो बहुत करता रहता है परन्तु माया से ही उलझा रहता है।

ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੀ ਕਦੇ ਨ ਸੀਝੈ ॥੨॥
अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥२॥
मोह-माया में अन्धा हुआ ज्ञानहीन व्यक्ति कभी भी अपने जीवन-मनोरथ में सफल नहीं होता ॥ २॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥
इसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥
इस युग में राम के नाम द्वारा ही मोक्ष संभव है।

ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਪਾਏ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥
विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥
कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द द्वारा इस तथ्य को समझता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਉਧਾਰਾ ॥੩॥
आपि तरै सगले कुल उधारा ॥३॥
वह स्वयं तो भवसागर से पार होता है और अपने समूचे वंश को भी बचा लेता है॥ ३॥

ਇਸੁ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਕਰਮ ਧਰਮੁ ਨ ਕੋਈ ॥
इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥
इस कलियुग में कोई भी व्यक्ति धर्म-कर्म करने में सफल नहीं होता।

ਕਲੀ ਕਾ ਜਨਮੁ ਚੰਡਾਲ ਕੈ ਘਰਿ ਹੋਈ ॥
कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥
कलियुग का जन्म चंडाल के घर में हुआ है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੋ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੪॥੧੦॥੩੦॥
नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥४॥१०॥३०॥
हे नानक ! परमात्मा के नाम बिना कोई भी मोक्ष नहीं पा सकता ॥ ४ ॥ १० ॥ ३० ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ਗੁਆਰੇਰੀ ॥
गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥
गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥

ਸਚਾ ਅਮਰੁ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥
भगवान विश्व का सच्चा बादशाह है और उसका हुक्म भी सत्य अर्थात् अटल है।

ਮਨਿ ਸਾਚੈ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥
मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥
जो व्यक्ति अपने मन से सत्यस्वरूप एवं बेपरवाह भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं।

ਸਚੈ ਮਹਲਿ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੁ ॥੧॥
सचै महलि सचि नामि समाहु ॥१॥
वे उसके सच्चे महल में निवास प्राप्त कर लेते है और उसके सत्य-नाम में ही समा जाते हैं।॥ १॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥
हे मेरे मन ! सुनो, प्रभु का चिन्तन करो।

ਰਾਮ ਜਪਹੁ ਭਵਜਲੁ ਉਤਰਹੁ ਪਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥१॥ रहाउ ॥
राम का भजन करो और भवसागर से पार हो जाओ ॥ १॥ रहाउ ॥

ਭਰਮੇ ਆਵੈ ਭਰਮੇ ਜਾਇ ॥
भरमे आवै भरमे जाइ ॥
जीव मोह-माया के भ्रम में फँसने के कारण जन्मता एवं मरता रहता है।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਜਨਮਿਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥
इस जगत् के जीवों ने माया के प्रेम कारण जन्म लिया है।

ਮਨਮੁਖਿ ਨ ਚੇਤੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੨॥
मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥२॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता इसलिए वह जन्मता-मरता रहता है।॥ २॥

ਆਪਿ ਭੁਲਾ ਕਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥
आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥
क्या प्राणी स्वयं कुमार्गगामी होता है अथवा ईश्वर स्वयं उसको कुमार्गगामी करता है ?

ਇਹੁ ਜੀਉ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਲਾਇਆ ॥
इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥
यह आत्मा माया की सेवा में लिप्त हुई है।

ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਖਟੇ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥
महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥
भगवान ने इस जीव को माया की सेवा में लगाया है, जिसके फलस्वरूप यह भारी दुःख प्राप्त करता है और अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥ ३॥

ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥
किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥
प्रभु अपनी कृपा करके मनुष्य का सतिगुरु से मिलन करवाता है।

ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਚੇਤੇ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥
एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥
वह तब, केवल नाम का ही स्मरण करता है और अपने अन्तर्मन से वह भ्रम को निकाल देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਨਾਉ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ॥੪॥੧੧॥੩੧॥
नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥४॥११॥३१॥
हे नानक ! वह नाम का जाप करता है और ईश्वर के नाम की नवनिधि प्राप्त कर लेता है॥ ४ ॥ ११ ॥ ३१ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਪੂਛਉ ਜਾਇ ॥
जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥
जिन लोगों ने गुरु की प्रेरणा से भगवान के नाम का ध्यान किया है, मैं उन से जाकर पूछता हूँ।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇ
गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥
गुरु की सेवा करने से मन संतुष्ट हो जाता है।

ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਾਇ ॥
से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥
वहीं धनवान हैं जो हरि का नाम धन कमाते हैं।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੧॥
पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥१॥
इस बात का ज्ञान पूर्ण-गुरु से ही प्राप्त होता है॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करते रहो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਹਰਿ ਘਾਲ ਥਾਇ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की प्रेरणा से की हुई सेवा-भक्ति के परिश्रम को भगवान स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥
अपने स्वरूप की पहचान करने से मन निर्मल हो जाता है।

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥
जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥
वह अपने जीवन में माया के बंधनों से मुक्त होकर भगवान को पा लेता है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥
हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥
जो व्यक्ति भगवान की गुणस्तुति करता है, उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है।

ਸਹਜੇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੨॥
सहजे सहजि समावै सोइ ॥२॥
वह सहज ही ईश्वर में लीन हो जाता है।॥ २ ॥

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਨ ਸੇਵਿਆ ਜਾਇ ॥
दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥
मोह-माया में फंसने से परमात्मा की सेवा-भक्ति नहीं की जा सकती।

ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਮਹਾ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥
हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥
मनुष्य अहंकारवश माया रूपी महा विष सेवन करता है।

ਪੁਤਿ ਕੁਟੰਬਿ ਗ੍ਰਿਹਿ ਮੋਹਿਆ ਮਾਇ ॥
पुति कुट्मबि ग्रिहि मोहिआ माइ ॥
उसके पुत्र, कुटुंब एवं घर इत्यादि के मोह के कारण माया उसे ठगती रहती है

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥੩॥
मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥३॥
और वह ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी व्यक्ति जन्मता-मरता रहता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥
हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥
जिस मनुष्य को हरि-प्रभु अपना नाम देता है,

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹੋਇ ॥
अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥
वह उसका भक्त बन जाता है। भगवान की भक्ति रात-दिन सदैव ही गुरु के शब्द से होती है।

ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥
गुरमति विरला बूझै कोइ ॥
परन्तु कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति द्वारा इस भेद को समझता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੨॥੩੨॥
नानक नामि समावै सोइ ॥४॥१२॥३२॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति हमेशा ही ईश्वर के नाम में लीन रहता है॥ ४ ॥ १२ ॥ ३२ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥
गुर सेवा जुग चारे होई ॥
गुरु की सेवा चारों युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग) में सफल हुई है

ਪੂਰਾ ਜਨੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ਕੋਈ ॥
पूरा जनु कार कमावै कोई ॥
कोई पूर्ण मनुष्य ही गुरु अनुसार कार्य करता है।

ਅਖੁਟੁ ਨਾਮ ਧਨੁ ਹਰਿ ਤੋਟਿ ਨ ਹੋਈ ॥
अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥
सेवा करने वाला मनुष्य अक्षय हरि-नाम रूपी धन संचित कर लेता है और उस नाम-धन में कभी कोई कमी नहीं आती।

ਐਥੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਹੋਈ ॥੧॥
ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥१॥
उस मनुष्य को इहलोक में सदैव सुख मिलता है और वह प्रभु के दरबार में भी शोभा प्राप्त करता है॥ १॥

ऐ मन मेरे भरमु न कीजै ॥
ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥
हे मेरे मन ! इसके बारे कोई शंका मत कर।

गुरमुखि सेवा अंम्रित रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुखि सेवा अम्रित रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥
अमृत रस गुरु की सेवा करके ही पान किया जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

सतिगुरु सेवहि से महापुरख संसारे ॥
सतिगुरु सेवहि से महापुरख संसारे ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की तन-मन से सेवा करते हैं, वह इस संसार में महापुरुष हैं।

आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥
आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥
वह स्वयं भवसागर से पार हो जाते हैं और अपने समूचे वंशों को भी पार कर देते हैं।

हरि का नामु रखहि उर धारे ॥
हरि का नामु रखहि उर धारे ॥
हरि के नाम को वह अपने हृदय में धारण करके रखते हैं।

नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥२॥
नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥२॥
हरि के नाम में मग्न हुए वह भवसागर से पार हो जाते हैं। २॥

सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥
सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥
जो व्यक्ति मन में विनीत भावना रखकर अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं,

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥
हउमै मारि कमलु परगासा ॥
वे अपने अहंत्व को नष्ट कर देते हैं और उनका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है।

ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥
अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥
उनके मन में अनहद शब्द गूंजने लगता है और वे आत्म-स्वरूप में निवास कर लेते हैं।

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਘਰ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥੩॥
नामि रते घर माहि उदासा ॥३॥
नाम के साथ अनुरक्त हुए वे अपने घर में निर्लिप्त रहते हैं।॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਤਿਨ ਕੀ ਸਚੀ ਬਾਣੀ ॥
सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥
उनकी वाणी सत्य है जो सतिगुरु की सेवा करते हैं।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਭਗਤੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥
जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥
प्रत्येक युग में भगवान के भक्तों ने वाणी की रचना करके उसका बखान किया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਹਿ ਹਰਿ ਸਾਰੰਗਪਾਣੀ ॥
अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥
वे दिन-रात सारंगपाणि प्रभु का सिमरन करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਨਿਹਕੇਵਲ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੪॥੧੩॥੩੩॥
नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥४॥१३॥३३॥
हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे वासना-रहित एवं पवित्र हो जाते हैं।॥ ४ ॥ १३ ॥ ३३ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗਿ ਸੰਜੋਗ ॥
सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥
सौभाग्य एवं संयोग से सतिगुरु जी मनुष्य को मिलते हैं।

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗ ॥੧॥
हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥१॥
फिर उस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है और वह नित्य ही हरि-रस का भोग करता रहता है॥ १ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥
गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥
जो प्राणी गुरु के सान्निध्य में रहकर भगवान के नाम का ध्यान करता है,

ਜਨਮੁ ਜੀਤਿ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपनी जीवनबाजी जीत लेता है और उसे नाम धन का लाभ प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਹੈ ਮੀਠਾ ॥
गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥
जिसे गुरु का शब्द मधुर-मीठा लगता है, वह ज्ञान एवं ध्यान को पा लेता है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਚਖਿ ਡੀਠਾ ॥੨॥
गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥२॥
गुरु की कृपा से किसी विरले पुरुष ने ही इसका रस चखकर देखा है॥ २ ॥

ਕਰਮ ਕਾਂਡ ਬਹੁ ਕਰਹਿ ਅਚਾਰ ॥
करम कांड बहु करहि अचार ॥
जो व्यक्ति अधिकतर कर्मकाण्ड के आचरण करता है,

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਅਹੰਕਾਰ ॥੩॥
बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥३॥
भगवान के नाम बिना उसके यह कर्म अहंकार रूप होते हैं। ऐसा नामविहीन व्यक्ति धिक्कार योग्य है॥ ३ ॥

ਬੰਧਨਿ ਬਾਧਿਓ ਮਾਇਆ ਫਾਸ ॥
बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥
हे दास नानक ! ऐसा व्यक्ति बंधनों में जकड़ा और मोह-माया में फँसा हुआ है,

ਜਨ ਨਾਨਕ ਛੂਟੈ ਗੁਰ ਪਰਗਾਸ ॥੪॥੧੪॥੩੪॥
जन नानक छूटै गुर परगास ॥४॥१४॥३४॥
और वह गुरु के ज्ञान-प्रकाश द्वारा ही बन्धनों से मुक्त होता है॥ ४॥ १४॥ ३४॥

ਮਹਲਾ ੩ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ॥
महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥
महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥

ਜੈਸੀ ਧਰਤੀ ਊਪਰਿਮੇਘੁਲਾ ਬਰਸਤੁ ਹੈ ਕਿਆ ਧਰਤੀ ਮਧੇ ਪਾਣੀ ਨਾਹੀ ॥
जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥
जिस तरह मेघ धरती पर जल बरसाते हैं, (इसी तरह गुरुवाणी नाम के जल की बरसात करती है)। परन्तु क्या धरती में जल नहीं है?

ਜੈਸੇ ਧਰਤੀ ਮਧੇ ਪਾਣੀ ਪਰਗਾਸਿਆ ਬਿਨੁ ਪਗਾ ਵਰਸਤ ਫਿਰਾਹੀ ॥੧॥
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥१॥
जिस तरह धरती में जल व्याप्त है (इसी तरह प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में नाम-जल व्याप्त है) परन्तु मेघ पैरों के बिना अधिक मात्रा में बरसता रहता है॥ १॥

ਬਾਬਾ ਤੂੰ ਐਸੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਹੀ ॥
बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥
हे बाबा ! इस तरह तू अपने भ्रम को दूर कर दे।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਤੁ ਹੈ ਸੋਈ ਕੋਈ ਹੈ ਰੇ ਤੈਸੇ ਜਾਇ ਸਮਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥१॥ रहाउ ॥

जो कुछ भी परमात्मा मनुष्य को बनाता है, वही कुछ वह हो जाता है। उस तरह वह जाकर उस में ही मिल जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖ ਹੋਇ ਕੈ ਕਿਆ ਓਇ ਕਰਮ ਕਮਾਹੀ ॥

इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ करम कमाही ॥

स्त्री एवं पुरुष होकर (तेरी महानता के बिना) वह कौन-सा कर्म सम्पूर्ण कर सकते हैं ?

ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਸਦਾ ਹਹਿ ਤੇਰੇ ਤੁਝ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹੀ ॥੨॥

नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥२॥

हे प्रभु ! भिन्न-भिन्न रूप सदैव ही तेरे हैं और तुझ में ही लीन हो जाते हैं।॥ २ ॥

ਇਤਨੇ ਜਨਮ ਭੂਲਿ ਪਰੇ ਸੇ ਜਾ ਪਾਇਆ ਤਾ ਭੂਲੇ ਨਾਹੀ ॥

इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥

मैं अनेक जन्मों से भूला हुआ था, अब जब परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, मैं पुन: उसे विस्मृत नहीं करूँगा।

ਜਾ ਕਾ ਕਾਰਜੁ ਸੋਈ ਪਰੁ ਜਾਣੈ ਜੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹੀ ॥੩॥

जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥३॥

यदि मनुष्य गुरु के शब्द में लीन रहे तो वह अनुभव करेगा कि जिसका यह कर्म है, वही इसको भलीभांति जानता है॥ ३॥

ਤੇਰਾ ਸਬਦੁ ਤੂੰਹੈ ਹਹਿ ਆਪੇ ਭਰਮੁ ਕਹਾਹੀ ॥

तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहा ही ॥

हे प्रभु ! जो तेरा नाम है, वह भी तू स्वयं ही है। तू स्वयं ही सबकुछ है, फिर भ्रम कहाँ है?

ਨਾਨਕ ਤਤੁ ਤਤ ਸਿਉ ਮਿਲਿਆ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਹੀ ॥੪॥੧॥੧੫॥੩੫॥

नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥४॥१॥१५॥३५॥

हे नानक ! जब आत्म-तत्व अर्थात् जीवात्मा परम तत्व प्रभु में मिल जाता है तो फिर उसका पुनः पुनः जन्म नही होता॥ ४॥ १॥ १५॥ ३५॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਕਾਲੈ ਵਸਿ ਹੈ ਬਾਧਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥
यह सारा जगत् मृत्यु के अधीन है और मोह-माया के बंधन में फंसा हुआ है।

ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਮਨਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥१॥
स्वेच्छाचारी अपना कर्म अहंकारवश करते हैं और परिणामस्वरूप उनको सत्य के दरबार में दण्ड मिलता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥
हे मेरे मन ! अपना चित्त गुरु के चरणों में लगा।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਲੈ ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के सान्निध्य में नाम-निधि को प्राप्त कर। प्रभु के दरबार में यह तेरी मुक्ति करवा देगी और बड़ी शोभा मिलेगी॥ १॥ रहाउ॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਭਰਮਦੇ ਮਨਹਠਿ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥
मन के हठ कारण मनुष्य चौरासी लाख योनियों में भटकते हैं और संसार में जन्मते-मरते रहते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨਿਓ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਇ ॥੨॥
गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥
वह गुरु के शब्द को अनुभव नहीं करते और पुनःपुनः गर्भ योनियों में डाले जाते हैं।॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥
जब मनुष्य गुरु के माध्यम से अपने आत्मिक जीवन को समझ लेता हैं तो हरि का नाम उसके मन में निवास कर जाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥३॥
वह रात-दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भगवान के नाम द्वारा सुख में समा जाता है॥ ३ ॥

ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਪਰਤੀਤਿ ਹੋਇ ਹਉਮੈ ਤਜੇ ਵਿਕਾਰ ॥
मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥
जब मनुष्य का मन गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व से रहित हो जाता है तो उस मनुष्य की श्रद्धा बन जाती है और वह अपना अहंकार एवं विकारों को त्याग देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਰਮੀ ਪਾਈਅਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ॥੪॥੨॥੧੬॥੩੬॥
जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥४॥२॥१६॥३६॥
हे नानक ! ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य उसके नाम एवं भक्ति के भण्डार को प्राप्त करता है ॥४॥२॥१६॥३६॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

ਪੇਈਅੜੈ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥
पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥
हरि-प्रभु ने (प्रत्येक जीव के मस्तक पर यही भाग्य) लिखकर रख दिया है कि जीव-स्त्री ने अपने मायके (मृत्युलोक) चार दिनों (कुछ दिन) के लिए रहना है।

ਸੋਭਾਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥
वही जीव-स्त्री शोभावान है जो गुरु के माध्यम से ईश्वर की महिमा गायन करती है।

ਪੇਵਕੜੈ ਗੁਣ ਸੰਮਲੈ ਸਾਹੁਰੈ ਵਾਸੁ ਪਾਇਆ ॥
पेवकड़ै गुण समलै साहुरै वासु पाइआ ॥
जो अपने मायके (इहलोक) में सदाचार को सँभालती है, वह अपने ससुराल (परलोक) में बसेरा पा लेती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੧॥
गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥१॥
गुरमुख के हृदय को हरि-प्रभु ही अच्छा लगता है, और वह सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥ १॥

ਸਸੁਰੈ ਪੇਈਐ ਪਿਰੁ ਵਸੈ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਪਾਈਐ ॥

ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥

प्रियतम (प्रभु) इस लोक एवं परलोक में निवास करता है। बताइए, उसको किस विधि से प्राप्त किया जा सकता है ?

ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਆਪੇ ਮੇਲਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥

निरंजन प्रभु स्वयं ही अलक्ष्य है और वह जीव को स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਹਿ ਮਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥
परमेश्वर स्वयं ही सुमति प्रदान करता है और मनुष्य हरि के नाम का ध्यान करता है।

ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਈਐ ॥
वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अम्रितु पाईऐ ॥
बड़े सौभाग्य से सतिगुरु जी मिलते हैं, जो उसके मुख (हरिनाम का) अमृत डालते हैं।

ਹਉਮੈ ਦੁਬਿਧਾ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਸਹਜੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਈਐ ॥
हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥
जब अहंकार एवं दुविधा नष्ट हो जाते हैं, वह सहज ही सुख में लीन हो जाता है।

ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਨਾਇ ਲਾਈਐ ॥੨॥
सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥२॥
प्रभु स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही मनुष्य को अपने नाम-सिमरन में लगाता है॥ २॥

ਮਨਮੁਖਿ ਗਰਬਿ ਨ ਪਾਇਓ ਅਗਿਆਨ ਇਆਣੇ ॥
मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥
स्वेच्छाचारी अहंकारवश ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते, वे मूर्ख एवं ज्ञानहीन हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਨਾ ਕਰਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਣੇ ॥
सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥
वे सतिगुरु की सेवा-भक्ति नहीं करते और पुनः पुनः पश्चाताप करते हैं।

ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਵਾਸੁ ਪਾਇਦੇ ਗਰਭੇ ਗਲਿ ਜਾਣੇ ॥
गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥
गर्भयोनि में उनको निवास मिलता है और गर्भ में ही गल-सड़ जाते हैं।

ਮੇਰੇ ਕਰਤੇ ਏਵੈ ਭਾਵਦਾ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਾਣੇ ॥੩॥
मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥३॥
मेरे सृजनहार प्रभु को यहीं भला लगता है कि स्वेच्छाचारी भटकते रहें॥ ३॥

ਮੇਰੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇਆ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਪੂਰਾ ॥
मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥
मेरे हरि-प्रभु ने आदि से ही प्राणी के मस्तक पर उसका भाग्य लिख दिया था।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਭੇਟਿਆ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ॥
हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥
जब मनुष्य शूरवीर गुरु से मिलता है, वह हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करता है।

ਮੇਰਾ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਹਰਿ ਬੰਧਪੁ ਬੀਰਾ ॥
मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥
हरि का नाम मेरा पिता एवं मेरी माता है। भगवान ही मेरा संबंधी और भ्राता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇ ਪ੍ਰਭ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਕੀਰਾ ॥੪॥੩॥੧੭॥੩੭॥
हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥४॥३॥१७॥३७॥
हे प्रभु ! कृमि सेवक नानक को क्षमादान करके अपने साथ मिला लो ॥४॥३॥१७॥३७॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥
सतिगुरु से ज्ञान प्राप्त करके मैंने परम तत्व ईश्वर के मूल का चिन्तन किया है।

ਮਤਿ ਮਲੀਣ ਪਰਗਟੁ ਭਈ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਾ ॥
मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥
मुरारि प्रभु के नाम का जाप करने से मेरी मलिन बुद्धि निर्मल हो गई है।

ਸਿਵਿ ਸਕਤਿ ਮਿਟਾਈਆ ਚੂਕਾ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥
सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥
ईश्वर ने माया का नाश कर दिया है और मेरा अज्ञानता का अंधकार दूर हो गया है।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥੧॥
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥१॥
जिनके मस्तक पर आदि से ही भाग्य-रेखाएँ विद्यमान हों, उनको हरि का नाम प्रिय लगता है॥ १ ॥

ਹਰਿ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਪਾਈਐ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਜਿਸੁ ਦੇਖਿ ਹਉ ਜੀਵਾ ॥
हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥
हे सन्तजनो ! कौन-से साधनों द्वारा परमात्मा को पाया जा सकता है? जिसके दर्शन करके मैं जीवित रहती हूँ।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਚਸਾ ਨ ਜੀਵਤੀ ਗੁਰ ਮੇਲਿਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा के बिना मैं निमिष मात्र भी जीवित नहीं रह सकती। मुझे गुरु के साथ मिला दीजिए चूंकि जो मैं हरि-रस का पान करूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਨਿਤ ਹਰਿ ਸੁਣੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਤਿ ਕੀਨੀ ॥
हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥
मैं नित्य ईश्वर की गुणस्तुति करती हूँ और प्रतिदिन परमेश्वर की महिमा ही सुनती हूँ। मुझे हरि-प्रभु ने (संसार से) मुक्त कर दिया है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਲੀਨੀ ॥
हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥
हरि-रस मैंने गुरु से प्राप्त किया है। मेरा मन एवं तन उसमें लीन हो गए हैं।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੁ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਦੀਨੀ ॥
धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥
वह सत्यपुरुष गुरु धन्य-धन्य है, जिन्होंने मुझे भगवान की भक्ति प्रदान की है।

ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸੋ ਗੁਰੁ ਹਮ ਕੀਨੀ ॥੨॥
जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥२॥
मैंने उसे ही अपना गुरु धारण किया है, जिस गुरु के द्वारा मैंने परमात्मा को पाया है॥ २॥

ਗੁਣਦਾਤਾ ਹਰਿ ਰਾਇ ਹੈ ਹਮ ਅਵਗਣਿਆਰੇ ॥
गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥
विश्व का मालिक प्रभु गुणों का दाता है परन्तु हम जीवों में अनेक अवगुण विद्यमान हैं।

ਪਾਪੀ ਪਾਥਰ ਡੁਬਦੇ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਤਾਰੇ ॥
पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥
पानी में डूबते पत्थरों की तरह भवसागर में डूबते पापी जीवों को भगवान ने गुरु की मति देकर पार कर दिया है।

ਤੂੰ ਗੁਣਦਾਤਾ ਨਿਰਮਲਾ ਹਮ ਅਵਗਣਿਆਰੇ ॥
तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥
हे गुणों के दाता ! तू बड़ा निर्मल है लेकिन हम जीवों में अनेक अवगुण भरे हुए हैं।

ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤਿ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥
हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥३॥
हे भगवान ! तू महा मूर्खों को भी भवसागर से पार कर देता है, अतः मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और मुझे भी भवसागर से पार कर दो॥ ३॥

ਸਹਜੁ ਅਨੰਦੁ ਸਦਾ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥
सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥
जो व्यक्ति गुरु की मति द्वारा अपने मन में हरि-परमेश्वर का ध्यान करते हैं, उन्हें हमेशा ही सहज सुख एवं आनंद प्राप्त होता है।

ਸਜਣੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਘਰਿ ਸੋਹਿਲਾ ਗਾਇਆ ॥
सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥
वे अपने सज्जन प्रभु को पाकर अपने हृदय-घर में उसकी महिमा-स्तुति के गीत गाते रहते हैं।

ਹਰਿ ਦਇਆ ਧਾਰਿ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚੇਤਾਇਆ ॥
हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥
हे हरि ! मुझ पर दया करो। हे प्रभु ! मेरी यही विनती है कि मैं सर्वदा ही हरि-परमेश्वर का नाम याद करता रहूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਧੂੜਿ ਤਿਨ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੪॥੧੮॥੩੮॥
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥
जन नानक उन महापुरुषों की चरण-धूलि की ही कामना करता है, जिन्होंने सतिगुरु को पाया है ॥४॥४॥१८॥३८॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਚਉਥਾ ਚਉਪਦੇ
गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे
गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है

ਪੰਡਿਤੁ ਸਾਸਤ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਪੜਿਆ ॥
पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ ॥
पण्डित शास्त्रों एवं स्मृतियों का अध्ययन करता है।

ਜੋਗੀ ਗੋਰਖੁ ਗੋਰਖੁ ਕਰਿਆ ॥
जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥
योगी अपने गुरु का नाम 'गोरख गोरख' पुकारता है।

ਮੈ ਮੂਰਖ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਪੜਿਆ ॥੧॥
मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥१॥
लेकिन मैं मूर्ख हरि-परमेश्वर के नाम का ही जाप करता हूँ॥ १॥

ਨਾ ਜਾਨਾ ਕਿਆ ਗਤਿ ਰਾਮ ਹਮਾਰੀ ॥
ना जाना किआ गति राम हमारी ॥
हे मेरे राम ! मैं नहीं जानता कि मेरी क्या हालत होगी।

ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤਰੁ ਭਉਜਲੁ ਤੂ ਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू तारी ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! तू भगवान का भजन करके भवसागर से पार हो जा॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਸੰਨਿਆਸੀ ਬਿਭੂਤ ਲਾਇ ਦੇਹ ਸਵਾਰੀ ॥
संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥
संन्यासी विभूति लगाकर अपने शरीर का श्रृंगार करता है।

ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਤਿਆਗੁ ਕਰੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥
पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥
वह पराई नारी को त्याग कर ब्रह्मचारी बनता है।

ਮੈ ਮੂਰਖ ਹਰਿ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥
मै मूरख हरि आस तुमारी ॥२॥
हे हरि ! मुझ मूर्ख को तुझ पर ही भरोसा है॥ २॥

ਖਤ੍ਰੀ ਕਰਮ ਕਰੇ ਸੂਰਤਣੁ ਪਾਵੈ ॥
खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥
क्षत्रिय शूरवीरता के कर्म करता है और वीरता पाता है।

ਸੂਦੁ ਵੈਸੁ ਪਰ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵੈ ॥
सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥
शूद्र एवं वैश्य दूसरों की सेवा का कर्म करते हैं।

ਮੈ ਮੂਰਖ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਛਡਾਵੈ ॥੩॥
मै मूरख हरि नामु छडावै ॥३॥
मुझ मूर्ख को भगवान का नाम ही मुक्त करवाएगा ॥ ३॥

ਸਭ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਤੂੰ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
सभ तेरी स्रिसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥
हे प्रभु ! यह सारी सृष्टि तेरी ही रचना है और तू स्वयं ही समस्त जीवों में समाया हुआ है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥
हे नानक ! गुरमुख को प्रभु महानता प्रदान करता है।

ਮੈ ਅੰਧੁਲੇ ਹਰਿ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥੪॥੧॥੩੯॥
मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥४॥१॥३९॥
मुझ ज्ञानहीन ने भगवान का ही सहारा लिया है ॥४॥४॥१८॥३८॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਨਿਰਗੁਣ ਕਥਾ ਕਥਾ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀ ॥
निरगुण कथा कथा है हरि की ॥
हरि की कथा माया के तीनों गुणों से परे है।

ਭਜੁ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਜਨ ਕੀ ॥
भजु मिलि साधू संगति जन की ॥
संतजनों की संगति में मिलकर भगवान का भजन करो और

ਤਰੁ ਭਉਜਲੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਸੁਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ॥੧॥
तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥१॥
हरि की अकथनीय कथा को सुनकर भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥

ਗੋਬਿੰਦ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਾਇ ॥
गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥
हे गोविन्द ! मुझे संतों की संगति में मिला दो

ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि मेरी रसना राम के गुण गा-गाकर हरि-रस का पान करती रहे॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਜਨ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥
जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥
जो हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करते रहते हैं।

ਤਿਨ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਕਰਹੁ ਹਮ ਰਾਮਾ ॥
तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥
हे मेरे राम ! मुझे उन पुरुषों के दासों का दास बना दो,

ਜਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਊਤਮ ਕਾਮਾ ॥੨॥
जन की सेवा ऊतम कामा ॥२॥
तेरे सेवक की सेवा एक उत्तम कार्य है॥ २॥

ਜੋ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਵੈ ॥
जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥
जो व्यक्ति मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है,

ਸੋ ਜਨੁ ਹਮਰੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਭਾਵੈ ॥
सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥
वह मेरे मन एवं चित्त को बहुत अच्छा लगता है।

ਜਨ ਪਗ ਰੇਣੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵੈ ॥੩॥
जन पग रेणु वडभागी पावै ॥३॥
ईश्वर के सेवकों की चरण-धूलि भाग्यवान ही प्राप्त करते हैं।॥ ३ ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥
संत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥
संतजनों से उनकी प्रीति होती है,

ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਖਤੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਪਾਈ ॥
जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥
जिनके मस्तक पर विधाता ने ऐसा भाग्य लिख दिया है।

ਤੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੪॥੨॥੪੦॥
ते जन नानक नामि समाई ॥४॥२॥४०॥
हे नानक ! ऐसे व्यक्ति प्रभु के नाम में समा जाते हैं ॥४॥२॥४०॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਮਾਤਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੇ ਪੁਤੁ ਖਾਇ ॥
माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥
जब पुत्र कोई स्वादिष्ट पदार्थ खाता है तो माता बड़ी प्रसन्न होकर प्रेम करती है।

ਮੀਨੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਈ ਜਲਿ ਨਾਇ ॥
मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥
जब मछली जल में स्नान करती है तो उसका जल से प्रेम हो जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰਸਿਖ ਮੁਖਿ ਪਾਇ ॥੧॥
सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥१॥
सतिगुरु का प्रेम गुरसिक्ख के मुख में नाम रूपी भोजन डालने से है॥ १॥

ਤੇ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਹਮ ਪਿਆਰੇ ॥
ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥
हे प्रिय प्रभु ! मुझे ऐसे हरि के भक्तों से मिला,

ਜਿਨ ਮਿਲਿਆ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥१॥ रहाउ ॥
जिनको मिलने से मेरे दुःख दूर हो जाएँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਮਿਲਿ ਬਛਰੇ ਗਊ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਵੈ ॥
जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥
जिस तरह अपने गुम हुए बछड़े से मिलकर गाय प्रेम करती है,

ਕਾਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਾ ਪਿਰੁ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥
कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥
जैसे कामिनी (पत्नी) अपने पति से मिलकर प्रेम करती है, जब वह घर लौट कर आता है,

ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ॥੨॥
हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥२॥
वैसे ही जब प्रभु का भक्त प्रभु का यशोगान करता है तो उसका मन प्रभु के प्रेम में लीन हो जाता है॥ २॥

ਸਾਰਿੰਗ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਸੈ ਜਲ ਧਾਰਾ ॥
सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥
पपीहा मूसलाधार वर्षा के जल से प्रेम करता है।

ਨਰਪਤਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਾਇਆ ਦੇਖਿ ਪਸਾਰਾ ॥
नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥
नरपति (सम्राट) को धन-दौलत का आडम्बर (विस्तार) देखने का चाव है।

ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਪੈ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥੩॥
हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥३॥
हरि का सेवक निरंकार की आराधना करने से प्रेम करता है॥ ३॥

ਨਰ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਾਇਆ ਧਨੁ ਖਾਟੇ ॥
नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥
मनुष्य को धन-दौलत एवं सम्पत्ति कमाने से अति प्रेम है।

ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਗਲਾਟੇ ॥
गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥
गुरु के सिक्ख को गुरु से प्रेम होता है, जब गुरु उसे गले लगकर मिलता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਧ ਪਗ ਚਾਟੇ ॥੪॥੩॥੪੧॥
जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥४॥३॥४१॥
नानक तो संतों के चरण चूमने से ही प्रेम करता है ॥४॥३॥४१॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਭੀਖਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭੀਖ ਪ੍ਰਭ ਪਾਇ ॥
भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥
भिखारी को भिक्षा से प्रेम है, जो वह किसी दानी से प्राप्त करता है।

ਭੂਖੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੋਵੈ ਅੰਨੁ ਖਾਇ ॥
भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥
भूखे का प्रेम भोजन खाने से है।

ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਆਘਾਇ ॥੧॥
गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥१॥
गुरु के सिक्ख की प्रीति गुरु से भेंट करके तृप्त होने से है॥ १॥

ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਹਰਿ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥
हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥
हे प्रभु ! मुझे अपने हरि दर्शन दीजिए। मुझे एक तेरी ही आशा है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੋਚ ਪੂਰਿ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करके मेरी कामना पूरी करो ॥ १॥ रहाउ॥

ਚਕਵੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੂਰਜੁ ਮੁਖਿ ਲਾਗੈ ॥
चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥
चकवी को प्रसन्नता तब होती है, जब उसे सूर्य के दर्शन होते हैं।

ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਸਭ ਦੁਖ ਤਿਆਗੈ ॥
मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥
अपने प्रियतम से मिलकर उसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं।

ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਮੁਖਿ ਲਾਗੈ ॥੨॥
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥२॥
गुरु का सिक्ख तब प्रसन्न होता है जब उसे गुरु के दर्शन होते हैं।॥ २॥

ਬਛਰੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਖੀਰੁ ਮੁਖਿ ਖਾਇ ॥
बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥
बछड़ा (अपनी माता का) अपने मुख से दूध चूषन करके प्रसन्न होता है।

ਹਿਰਦੈ ਬਿਗਸੈ ਦੇਖੈ ਮਾਇ ॥
हिरदै बिगसै देखै माइ ॥
अपनी माता को देखकर उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है।

ਗੁਰਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਮੁਖਿ ਲਾਇ ॥੩॥
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥३॥
(इसी तरह) गुरु का सिक्ख गुरु के दर्शन करके बड़ा हर्षित होता है॥ ३॥

ਹੋਰੁ ਸਭ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਕਾਚਾ ॥
होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥
"(गुरु-परमात्मा के अलावा) दूसरा मोह झूठा है, चूंकि माया की प्रीति क्षणभंगुर है।

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਕੂਰਾ ਕਚੁ ਪਾਚਾ ॥

बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥

यह झूठी प्रीति कांच की तरह टूट कर नाश हो जाती है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਗੁਰੁ ਸਾਚਾ ॥੪॥੪॥੪੨॥

जन नानक प्रीति त्रिपति गुरु साचा ॥४॥४॥४२॥

जन नानक सच्चे गुरु से ही प्रेम करता और उसके दर्शन करके तृप्त हो जाता है॥ ४॥ ४॥ ४२ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਹੈ ਬਣੀ ॥
सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥
उस सतिगुरु की सेवा फलदायक है।

ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਧਣੀ ॥
जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥
जिस सतिगुरु को मिलकर जगत् के स्वामी परमात्मा के नाम का ध्यान किया जाता है,

ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਤਿਨ ਪੀਛੈ ਛੂਟੀ ਘਣੀ ॥੧॥
जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥१॥
जिन्होंने ईश्वर का नाम-स्मरण किया है, उनका अनुसरण करके बहुत सारे लोग भवसागर से मुक्त हो गए हैं।॥ १॥

ਗੁਰਸਿਖ ਹਰਿ ਬੋਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाइयो ! गुरु के शिष्यो, 'हरि-हरि' बोलो।

ਹਰਿ ਬੋਲਤ ਸਭ ਪਾਪ ਲਹਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥
हरि बोलने से मनुष्य के समस्त पाप दूर हो जाते हैं। १॥ रहाउ॥

ਜਬ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਤਬ ਮਨੁ ਵਸਿ ਆਇਆ ॥
जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥
जब गुरु जी मिलते हैं तो मन वश में आ जाता है।

ਧਾਵਤ ਪੰਚ ਰਹੇ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥
भगवान का ध्यान करने से पांचों ज्ञानेन्द्रियां (विकारों की ओर) दौड़ने से रुक जाती हैं

ਅਨਦਿਨੁ ਨਗਰੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੨॥
अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥२॥
और रात-दिन मनुष्य अपनी शरीर रूपी नगरी में ईश्वर का यशोगान करता रहता है॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪਗ ਧੂਰਿ ਜਿਨਾ ਮੁਖਿ ਲਾਈ ॥
सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की चरण-धूलि अपने चेहरे पर लगाते हैं,

ਤਿਨ ਕੂੜ ਤਿਆਗੇ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥
वह झूठ को त्याग देते हैं और प्रभु के साथ वृति लगा लेते हैं।

ਤੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਮੁਖ ਊਜਲ ਭਾਈ ॥੩॥
ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥३॥
हे भाई ! प्रभु के दरबार में उनके चेहरे ही उज्ज्वल होते हैं।॥ ३॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਆਪਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ॥
गुर सेवा आपि हरि भावै ॥
गुरु की सेवा परमेश्वर को भी स्वयं भली लगती है।

ਕ੍ਰਿਸਨੁ ਬਲਭਦ੍ਰ ਗੁਰ ਪਗ ਲਗਿ ਧਿਆਵੈ ॥
क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥
श्री कृष्ण एवं बलभद्र ने अपने गुरु संदीपन के चरणों में नतमस्तक होकर भगवान का ही ध्यान किया था।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਤਰਾਵੈ ॥੪॥੫॥੪੩॥
नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥४॥५॥४३॥
हे नानक ! गुरमुखों को परमात्मा भवसागर से स्वयं पार करवाता है॥ ४ ॥ ५ ॥ ४३ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਜੋਗੀ ਡੰਡਾਧਾਰੀ ॥
हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥
ईश्वर स्वयं ही (हाथों में) डंडा रखने वाला योगी है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਬਨਵਾਰੀ ॥
हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥
(जगत् का) बनवारी परमेश्वर सर्वव्यापक हो रहा है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਤਪੁ ਤਾਪੈ ਲਾਇ ਤਾਰੀ ॥੧॥
हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥१॥
ईश्वर स्वयं ही समाधि लगाकर तपस्या करता है॥ १॥

ਐਸਾ ਮੇਰਾ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥
मेरा राम ऐसा है जो सर्वत्र स्थानों में भरपूर है।

ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਦੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥१॥ रहाउ ॥
ईश्वर (प्राणी के) निकट ही रहता है, वह कहीं दूर नहीं है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਧੁਨਿ ਆਪੇ ॥
हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥
ईश्वर स्वयं ही अनहद शब्द है और स्वयं ही अनहद शब्द की ध्वनि को सुनने वाली सुरति है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ॥
हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥
ईश्वर स्वयं ही अपनी सृष्टि को देख-देख कर स्वयं ही प्रसन्न होता है।

ਹਰਿ ਆਪਿ ਜਪਾਇ ਆਪੇ ਹਰਿ ਜਾਪੇ ॥੨॥
हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥२॥
प्रभु स्वयं ही अपने नाम का जाप करता है और जीवों से भी अपने ही नाम का जाप करवाता है। २॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਾਰਿੰਗ ਅੰਮ੍ਰਿਤਧਾਰਾ ॥
हरि आपे सारिंग अम्रितधारा ॥
ईश्वर स्वयं ही पपीहा है और स्वयं ही नाम-अमृत की धारा है।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਆਪਿ ਪੀਆਵਣਹਾਰਾ ॥
हरि अम्रितु आपि पीआवणहारा ॥
ईश्वर स्वयं ही जीवों को नाम-अमृत पिलाने वाला है।

ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਰੇ ਆਪੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੩॥
हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥
ईश्वर स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करता है और स्वयं ही जीवों को भवसागर से पार करवाता है॥ ३ ॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਬੇੜੀ ਤੁਲਹਾ ਤਾਰਾ ॥
हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥
परमात्मा स्वयं ही नाव, तुला और नावक है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਗੁਰਮਤੀ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥
हरि आपे गुरमती निसतारा ॥
गुरु के उपदेश से ईश्वर स्यं ही प्राणियों का उद्धार करता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਨਾਨਕ ਪਾਵੈ ਪਾਰਾ ॥੪॥੬॥੪੪॥
हरि आपे नानक पावै पारा ॥४॥६॥४४॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही प्राणियो को संसार-सागर से पार करवाता है॥ ४॥ ६॥ ४४॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਤੂੰ ਧਣੀ ਜੈਸੀ ਤੂੰ ਰਾਸਿ ਦੇਹਿ ਤੈਸੀ ਹਮ ਲੇਹਿ ॥
साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥
हे ईश्वर ! तू ही मेरा शाह एवं मालिक हैं। जैसी पूँजी तुम मुझे देते हो, वैसी ही पूंजी मैं लेता हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਣੰਜਹ ਰੰਗ ਸਿਉ ਜੇ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਦੇਹਿ ॥੧॥
हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥१॥
यदि तुम दयालु होकर स्वयं मुझे हरि-नाम दो तो ही मैं हरि-नाम का व्यापार करूँ॥ १॥

ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ਰਾਮ ਕੇ ॥
हम वणजारे राम के ॥
हे भाई ! मैं तो राम का व्यापारी हूँ

ਹਰਿ ਵਣਜੁ ਕਰਾਵੈ ਦੇ ਰਾਸਿ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥
और भगवान अपनी पूंजी देकर मुझसे अपने नाम का व्यापार करवाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਾਹ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥
मैंने हरि-भक्ति के नाम रूपी धन का लाभ कमाया है और सच्चे साहूकार परमेश्वर के हृदय को पसंद आ गया हूँ।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਵਖਰੁ ਲਦਿਆ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਨੇੜਿ ਨ ਆਇਆ ॥੨॥
हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥
मैंने हरि का नाम जपकर हरि-नाम रूपी सौदा सत्य के दरबार में ले जाने के लिए लाद लिया है और कर लेने वाला यमदूत मेरे निकट नहीं आता॥ २ ॥

ਹੋਰੁ ਵਣਜੁ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੀਏ ਅਨੰਤ ਤਰੰਗੀ ਦੁਖੁ ਮਾਇਆ ॥
होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥
जो व्यापारी नाम के सिवाय अन्य पदार्थों का व्यापार करते हैं, वह अनंत तरंगों वाली माया के मोह में फँसकर बड़ा दुखी होते हैं।

ਓਇ ਜੇਹੈ ਵਣਜਿ ਹਰਿ ਲਾਇਆ ਫਲੁ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ॥੩॥
ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥३॥
जिस तरह का व्यापार ईश्वर ने उनके लिए लगाया है, वैसा ही फल वे प्राप्त करते हैं। ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਵਣਜੁ ਸੋ ਜਨੁ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਈ ॥
हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥
भगवान के नाम का व्यापार वहीं व्यक्ति करते हैं, जिन्हें प्रभु कृपालु होकर नाम का व्यापार करने के लिए देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਾਹੁ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੂਲਿ ਨ ਲੇਈ ॥੪॥੧॥੭॥੪੫॥
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥
हे नानक ! जो व्यक्ति साहूकार भगवान की सेवा करता है, भगवान फिर उससे बिल्कुल ही कर्मों का लेखा नहीं माँगता ॥४॥१॥७॥४५॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਜਿਉ ਜਨਨੀ ਗਰਭੁ ਪਾਲਤੀ ਸੁਤ ਕੀ ਕਰਿ ਆਸਾ ॥
जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥
जैसे कोई माता यह आशा रखकर गर्भ में पड़े शिशु की नौ माह रक्षा करती है कि उसे पुत्र पैदा होगा

ਵਡਾ ਹੋਇ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ਦੇਇ ਕਰਿ ਭੋਗ ਬਿਲਾਸਾ ॥
वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥
और वह बड़ा होकर धन कमा कर सुख एवं आनंद हेतु उसे देगा,"

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰਿ ਰਾਖਦਾ ਦੇ ਆਪਿ ਹਥਾਸਾ ॥੧॥
तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥१॥
वैसे ही भगवान अपने भक्तों से प्रेम करता है, और उन्हें अपनी सहायता का हाथ देता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਮੈ ਮੂਰਖ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ ਗੁਸਈਆ ॥
मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥
हे मेरे राम ! हे मेरे गुसाई ! मैं मूर्ख हूँ, मेरी रक्षा कीजिए।

ਜਨ ਕੀ ਉਪਮਾ ਤੁਝਹਿ ਵਡਈਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तेरे सेवक की उपमा तेरी अपनी ही कीर्ति है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੰਦਰਿ ਘਰਿ ਆਨੰਦੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥
मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥
जिसके हृदय को हरि-प्रभु का यश लुभाता है, वह अपने हृदय रूपी मन्दिर एवं धाम में आनन्द भोगता है।

ਸਭ ਰਸ ਮੀਠੇ ਮੁਖਿ ਲਗਹਿ ਜਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥
जब वह परमात्मा का यश गायन करता है तो उसका मुख समस्त मीठे रसों (कामनाओं) को चखता है।

ਹਰਿ ਜਨੁ ਪਰਵਾਰੁ ਸਧਾਰੁ ਹੈ ਇਕੀਹ ਕੁਲੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਛਡਾਵੈ ॥੨॥
हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥
प्रभु का सेवक अपने परिवार का कल्याण करने वाला है। वह अपने इक्कीस वंशों (सात पिता के, सात माता के, सात ससुर के) के समस्त प्राणियों का उद्धार कराता है॥ २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋ ਹਰਿ ਕੀਆ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥
जो कुछ किया है, परमेश्वर ने किया है और परमेश्वर का यश है ।

ਹਰਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂੰ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਪੂਜ ਕਰਾਈ ॥
हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥
मेरे प्रभु-परमेश्वर समस्त जीव-जन्तु तेरे हैं। तुम उनमें व्यापक हो रहे हो और उनसे अपनी पूजा-अर्चना करवाते हो।

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਲਹਾਇਦਾ ਆਪੇ ਵਰਤਾਈ ॥੩॥
हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥३॥
परमेश्वर स्वयं ही प्राणियों को अपनी सेवा-भक्ति का खजाना दिलवाता है और स्वयं ही इसे बांटता है॥ ३॥

ਲਾਲਾ ਹਾਟਿ ਵਿਹਾਝਿਆ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥
लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥
मैं तो दुकान से खरीदा हुआ तेरा गुलाम हूँ, मैं क्या चतुरता कर सकता हूँ?

ਜੇ ਰਾਜਿ ਬਹਾਲੇ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਲਾਮੁ ਘਾਸੀ ਕਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਢਾਈ ॥
जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥
यदि हे प्रभु ! तू मुझे सिंघासन पर आरूढ़ कर दे तो भी मैं तेरा ही गुलाम रहूँगा तथा एक घसियारे की अवस्था में भी तुम मुझसे अपने नाम का ही जाप करवा।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੨॥੮॥੪੬॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४६॥
नानक तो परमात्मा का दास है और परमात्मा की ही स्तुति करता रहता है। ४॥ २॥ ८॥ ४६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥

ਕਿਰਸਾਣੀ ਕਿਰਸਾਣੁ ਕਰੇ ਲੋਚੈ ਜੀਉ ਲਾਇ ॥
किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥
कृषक बड़े चाव से एवं दिल लगाकर कृषि करता है।

ਹਲੁ ਜੋਤੈ ਉਦਮੁ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪੁਤੁ ਧੀ ਖਾਇ ॥
हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥
वह हल चलाता है और कड़ी मेहनत करता है और लालसा करता है कि उसके पुत्र एवं पुत्री संतुष्ट होकर खाएँ।

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਕਰੇ ਹਰਿ ਅੰਤਿ ਛਡਾਇ ॥੧॥
तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥
इसी तरह प्रभु का सेवक प्रभु के नाम का जाप करता रहता है, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर अन्तिम समय उसे मोह-माया के पन्जे से मुक्त कराता है॥ १॥

ਮੈ ਮੂਰਖ ਕੀ ਗਤਿ ਕੀਜੈ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥
मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥
हे मेरे राम ! मुझ मूर्ख की मुक्ति करो।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹਰਿ ਲਾਇ ਹਮ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान ने मुझे गुरु-सतिगुरु की सेवा के कार्य में लगा दिया है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਲੈ ਤੁਰੇ ਸਉਦਾਗਰੀ ਸਉਦਾਗਰੁ ਧਾਵੈ ॥
लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥
व्यापारी कुशल घोड़े लेकर उनके व्यापार हेतु चलता है।

ਧਨੁ ਖਟੈ ਆਸਾ ਕਰੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਵਧਾਵੈ ॥
धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥
वह धन कमाता है और अधिकतर धन की आशा करता है। फिर मोह-माया के साथ अपनी लालसा को बढ़ाता है।

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲਤਾ ਹਰਿ ਬੋਲਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥
तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥
इसी तरह हरि का सेवक हरि-परमेश्वर का नाम बोलता है और हरि बोलकर सुख पाता है॥ २॥

ਬਿਖੁ ਸੰਚੈ ਹਟਵਾਣੀਆ ਬਹਿ ਹਾਟਿ ਕਮਾਇ ॥
बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥
दुकानदार दुकान में बैठकर दुकानदारी करता है और माया रूपी धन एकत्रित करता है। जो उसके आत्मिक जीवन में विष का काम करती है।

ਮੋਹ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰਾ ਝੂਠ ਕਾ ਝੂਠੇ ਲਪਟਾਇ ॥
मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥
माया ने जीवों को फँसाने हेतु झूठे मोह का प्रसार किया हुआ है और वे माया के झूठे मोह से लिपटे हुए हैं।

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲੈ ਜਾਇ ॥੩॥
तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥३॥
इसी तरह हरि का सेवक हरि-नाम रूपी धन संचित करता है और हरि-नाम रूपी धन को वह जीवन-यात्रा हेतु खर्च के रूप में ले जाता है॥ ३॥

ਇਹੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਕੁਟੰਬੁ ਹੈ ਭਾਇ ਦੂਜੈ ਫਾਸ ॥
इहु माइआ मोह कुट्मबु है भाइ दूजै फास ॥
माया धन एवं परिवार के मोह के कारण मनुष्य माया की मोह रूपी फाँसी में फंस जाता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਸੋ ਜਨੁ ਤਰੈ ਜੋ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ॥
गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥
गुरु के उपदेश से वहीं मनुष्य भवसागर से पार होता है जो प्रभु के सेवकों का सेवक बन जाता है।

ਜਨਿ ਨਾਨਕਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਾਸ ॥੪॥੩॥੯॥੪੭॥
जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥९॥४७॥
जन नानक ने गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का ही ध्यान किया है और उसके हृदय में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है ॥४॥३॥९॥४७॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਨਿਤ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਲਾਲਚੁ ਕਰੇ ਭਰਮੈ ਭਰਮਾਇਆ ॥
नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥
जो व्यक्ति नित्य दिन-रात लालच करता है। मोह-माया की प्रेरणा से भ्रम में ही भटकता रहता है।

ਵੇਗਾਰਿ ਫਿਰੈ ਵੇਗਾਰੀਆ ਸਿਰਿ ਭਾਰੁ ਉਠਾਇਆ ॥
वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥
वह उस वेगारी के तुल्य है जो अपने सिर पापों का बोझ उठाकर बेगार करता है।

ਜੋ ਗੁਰ ਕੀ ਜਨੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਸੋ ਘਰ ਕੈ ਕੰਮਿ ਹਰਿ ਲਾਇਆ ॥੧॥
जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कमि हरि लाइआ ॥१॥
जो व्यक्ति गुरु की सेवा करता है, उसे ही भगवान ने अपने घर की सेवा अर्थात् नाम-सिमरन में लगाया है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਤੋੜਿ ਬੰਧਨ ਮਾਇਆ ਘਰ ਕੈ ਕੰਮਿ ਲਾਇ ॥
मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कमि लाइ ॥
हे मेरे राम ! हमें मोह-माया के बंधन से मुक्त कर और हमें अपने घर की सेवा नाम- सिमरन में लगा।

ਨਿਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं प्रतिदिन प्रभु की गुणस्तुति ही करता हूँ और प्रभु के नाम में लीन रहता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਰੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਕਰੇ ਨਰਪਤਿ ਰਾਜੇ ਅਰਥਿ ਸਭ ਮਾਇਆ ॥
नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥
नश्वर मनुष्य धन की खातिर राजा-महाराजा की नौकरी करता है।

ਕੈ ਬੰਧੈ ਕੈ ਡਾਨਿ ਲੇਇ ਕੈ ਨਰਪਤਿ ਮਰਿ ਜਾਇਆ ॥
कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥
राजा कई बार किसी आरोप के कारण उसे बंदी बना लेता है अथवा कोई (जुर्माना इत्यादि) दण्ड देता है अथवा राजा जब स्वयं ही प्राण त्याग देता है तो उसकी नौकरी ही समाप्त हो जाती है।

ਧੰਨੁ ਧਨੁ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
धंनु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥२॥
परन्तु सतिगुरु की सेवा धन्य-धन्य और फलदायक है जिसकी बदौलत मनुष्य प्रभु-परमेश्वर का नाम-स्मरण करके सुख प्राप्त करता है॥ २॥

ਨਿਤ ਸਉਦਾ ਸੂਦੁ ਕੀਚੈ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਤਾਈ ॥
नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥
धन-दौलत की खातिर मनुष्य विभिन्न प्रकार का व्यापार करता है।

ਜਾ ਲਾਹਾ ਦੇਇ ਤਾ ਸੁਖੁ ਮਨੇ ਤੋਟੈ ਮਰਿ ਜਾਈ ॥
जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥
यदि व्यापार में लाभ प्राप्त हो तो वह सुख अनुभव करता है। लेकिन क्षति (घाटा) होने पर उसका दिल टूट जाता है।

ਜੋ ਗੁਣ ਸਾਝੀ ਗੁਰ ਸਿਉ ਕਰੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥੩॥
जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥३॥
परन्तु जो गुरु के साथ गुणों (भलाई) को सांझा करता है वह सदा के लिए सुख प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਜਿਤਨੀ ਭੂਖ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ ਹੈ ਤਿਤਨੀ ਭੂਖ ਫਿਰਿ ਲਾਗੈ ॥
जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥
मनुष्य को जितनी ज्यादा भूख दूसरे रसों एवं आस्वादनों के लिए है उतनी अधिक भूख (लालसा) उसे बार-बार लगती है।

ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੋ ਵੇਚੇ ਸਿਰੁ ਗੁਰ ਆਗੈ ॥
जिसु हरि आपि क्रिपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥
जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है, वह अपना शीश गुरु के समक्ष बेच देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਿ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਫਿਰਿ ਭੂਖ ਨ ਲਾਗੈ ॥੪॥੪॥੧੦॥੪੮॥
जन नानक हरि रसि त्रिपतिआ फिरि भूख न लागै ॥४॥४॥१०॥४८॥
हे नानक ! जो व्यक्ति हरि-रस से तृप्त हो जाता है, उसे दोबारा भूख नहीं लगती ॥ ४॥ ४॥ १०॥ ४८ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਹਮਰੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਹਰਿ ਆਸ ਨਿਤ ਕਿਉ ਦੇਖਾ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥
हे भगवान ! मेरे मन एवं चित्त में सदैव ही यह उम्मीद बनी रहती है। मैं कैसे हरि-दर्शन करूं ?

ਜਿਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਸੋ ਜਾਣਤਾ ਹਮਰੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਹਰਿ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਰਾ ॥
जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥
जो प्रभु से प्रेम करता है वही इसको समझता है। मेरे मन एवं चित्त को ईश्वर अत्यन्त ही प्यारा लगता है।

ਹਉ ਕੁਰਬਾਨੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਵਿਛੁੜਿਆ ਮੇਲਿਆ ਮੇਰਾ ਸਿਰਜਨਹਾਰਾ ॥੧॥
हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥१॥
मैं अपने उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे मेरे सृजनहार प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जुदा हुआ था ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਮ ਪਾਪੀ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਹਰਿ ਦੁਆਰਿ ॥
मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥
हे मेरे राम ! मैं पापी हूँ। मैंने तेरी शरण ली है और मैं तेरे द्वार पर आ पड़ा हूँ

ਮਤੁ ਨਿਰਗੁਣ ਹਮ ਮੇਲੈ ਕਬਹੂੰ ਅਪੁਨੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि तुम अपनी कृपा करके मुझ अल्पबुद्धि, गुणहीन एवं मलिन को कभी अपने साथ मिला लो॥ १॥ रहाउ॥

ਹਮਰੇ ਅਵਗੁਣ ਬਹੁਤੁ ਬਹੁਤੁ ਹੈ ਬਹੁ ਬਾਰ ਬਾਰ ਹਰਿ ਗਣਤ ਨ ਆਵੈ ॥
हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥
मुझ में अत्यंत अवगुण हैं और मेरे अवगुण गिने नहीं जा सकते और मैं बार-बार अवगुण करता जाता हूँ।

ਤੂੰ ਗੁਣਵੰਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਇਆਲੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ॥
तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥
हे प्रभु-परमेश्वर ! तुम गुणवान एवं दयालु हो। हे प्रभु ! जब तुझे भला लगता है, तुम स्वयं ही क्षमा कर देते हो।

ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਸੰਗਤੀ ਉਪਦੇਸੁ ਦੀਓ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਛਡਾਵੈ ॥੨॥
हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥२॥
मुझ अपराधी को गुरु की संगति ने बचा लिया है। गुरु जी ने मुझे उपदेश दिया है कि ईश्वर का नाम जीवन से मुक्ति दिलवा देता है॥ २॥

ਤੁਮਰੇ ਗੁਣ ਕਿਆ ਕਹਾ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਜਬ ਗੁਰੁ ਬੋਲਹ ਤਬ ਬਿਸਮੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥
तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥
हे मेरे सतिगुरु ! मैं तेरे गुण कैसे बताऊं? जब गुरु जी मधुर वचन करते हैं तो मैं आश्चर्य से सुप्रसन्न हो जाता हूँ।

ਹਮ ਜੈਸੇ ਅਪਰਾਧੀ ਅਵਰੁ ਕੋਈ ਰਾਖੈ ਜੈਸੇ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਛਡਾਇ ॥
हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥
क्या कोई दूसरा मुझ जैसे अपराधी को बचा सकता है जैसे सतिगुरु ने मुझे बचाकर भवसागर से मुक्त कर दिया है।

ਤੂੰ ਗੁਰੁ ਪਿਤਾ ਤੂੰਹੈ ਗੁਰੁ ਮਾਤਾ ਤੂੰ ਗੁਰੁ ਬੰਧਪੁ ਮੇਰਾ ਸਖਾ ਸਖਾਇ ॥੩॥
तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥३॥
हे मेरे गुरु ! तुम मेरे पिता हो। तुम ही मेरी माता हो और तुम ही मेरे भाई-बन्धु, साथी एवं सहायक हो।॥ ३॥

ਜੋ ਹਮਰੀ ਬਿਧਿ ਹੋਤੀ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰਾ ਸਾ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹਰਿ ਜਾਣਹੁ ਆਪੇ ॥
जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हे मेरे सतिगुरु जी ! जो अवस्था मेरी थी उस अवस्था को तुम हे हरि रूप गुरु जी स्वयं ही जानते हो।

ਹਮ ਰੁਲਤੇ ਫਿਰਤੇ ਕੋਈ ਬਾਤ ਨ ਪੂਛਤਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਕੀਰੇ ਹਮ ਥਾਪੇ ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥
हे प्रभु ! मैं मिट्टी में ठोकरें खा रहा था और कोई भी मेरी बात नहीं पूछता था अर्थात् कोई भी चिन्ता नहीं करता था। सतिगुरु ने अपनी संगति देकर मुझ तुच्छ कीड़े को सम्मान प्रदान किया है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੇਰਾ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਚੂਕੇ ਸਭਿ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪੇ ॥੪॥੫॥੧੧॥੪੯॥
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥४॥५॥११॥४९॥
नानक का गुरु धन्य-धन्य है। जिसको मिलने से मेरे सारे दुख एवं संताप मिट गए हैं ॥४॥५॥११॥४९॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਕੰਚਨ ਨਾਰੀ ਮਹਿ ਜੀਉ ਲੁਭਤੁ ਹੈ ਮੋਹੁ ਮੀਠਾ ਮਾਇਆ ॥
कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥
मेरा मन सुन्दर नारी के मोह में फँसा हुआ है एवं माया का मोह मुझे बड़ा मीठा लगता है।

ਘਰ ਮੰਦਰ ਘੋੜੇ ਖੁਸੀ ਮਨੁ ਅਨ ਰਸਿ ਲਾਇਆ ॥
घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥
मुझे घर, मन्दिर, घोड़े देख-देखकर बड़ी खुशी होती है और दूसरे रसों के आनन्द में मेरा मन चाव से लगा हुआ है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਕਿਉ ਛੂਟਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥
हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥१॥
प्रभु-परमेश्वर को मैं स्मरण नहीं करता। हे मेरे प्रभु ! फिर मुझे कैसे मोक्ष मिलेगा ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਇਹ ਨੀਚ ਕਰਮ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ॥
मेरे राम इह नीच करम हरि मेरे ॥
हे मेरे राम ! ऐसे मेरे नीच कर्म हैं।

ਗੁਣਵੰਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਇਆਲੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਬਖਸਿ ਅਵਗਣ ਸਭਿ ਮੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे गुणनिधि एवं दयालु प्रभु-परमेश्वर ! मुझ पर कृपा-दृष्टि करके मेरे समस्त अवगुण क्षमा कर दीजिए॥ १॥ रहाउ॥

ਕਿਛੁ ਰੂਪੁ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਜਾਤਿ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਢੰਗੁ ਨ ਮੇਰਾ ॥
किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥
हे ईश्वर ! न मेरा (सुन्दर) रूप है, न मेरी उच्च जाति है, न ही मेरा जीवन आचरण अच्छा है।

ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਲੈ ਬੋਲਹ ਗੁਣ ਬਿਹੂਨ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਨ ਤੇਰਾ ॥
किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥
मुझ गुणहीन ने तेरा नाम भी नहीं जपा, अतः मैं कौन-सा मुँह लेकर बोलू?

ਹਮ ਪਾਪੀ ਸੰਗਿ ਗੁਰ ਉਬਰੇ ਪੁੰਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇਰਾ ॥੨॥
हम पापी संगि गुर उबरे पुंनु सतिगुर केरा ॥२॥
सतिगुरु ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं अपराधी गुरु की संगति से (मोह-माया से) बच गया हूँ॥ २॥

ਸਭੁ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਮੁਖੁ ਨਕੁ ਦੀਆ ਵਰਤਣ ਕਉ ਪਾਣੀ ॥
सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥
परमात्मा ने समस्त प्राणियों को आत्मा, देह, मुख, नाक और प्रयोग करने के लिए जल दिया है।

ਅੰਨੁ ਖਾਣਾ ਕਪੜੁ ਪੈਨਣੁ ਦੀਆ ਰਸ ਅਨਿ ਭੋਗਾਣੀ ॥
अंनु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥
प्रभु ने उनको खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र एवं अनेक रस ऐश्वर्य भोग करने के लिए दिए हैं।

ਜਿਨਿ ਦੀਏ ਸੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਪਸੂ ਹਉ ਕਰਿ ਜਾਣੀ ॥੩॥
जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥३॥
जिस प्रभु ने प्राणियों की रचना करके यह कुछ दिया है, मनुष्य को वह (प्रभु) स्मरण नहीं होता। यह मनुष्य पशु के समान है जो यह समझता है कि यह सब कुछ मैंने स्वयं प्राप्त किया है। ३॥

ਸਭੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤਦਾ ਤੂੰ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥
हे ईश्वर ! दुनिया में सब कुछ तेरा किया हो रहा है, तुम अंतर्यामी हो।

ਹਮ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਤੁਮ ਸੁਆਮੀ ॥
हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥
हे परमात्मा ! हम जीव बेचारे क्या कर सकते हैं ? अर्थात् हमारे वश में कुछ भी नहीं। हे मेरे स्वामी ! यह सारी दुनिया तेरी एक लीला है।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਾਟਿ ਵਿਹਾਝਿਆ ਹਰਿ ਗੁਲਮ ਗੁਲਾਮੀ ॥੪॥੬॥੧੨॥੫੦॥
जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि गुलम गुलामी ॥४॥६॥१२॥५०॥
(जिस तरह कोई गुलाम मण्डी से खरीदा जाता है वैसे ही) मण्डी में से मूल्य लिया हुआ सेवक नानक प्रभु के सेवकों का सेवक है॥ ४॥ ६॥ १२॥ ५०॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਜਿਉ ਜਨਨੀ ਸੁਤੁ ਜਣਿ ਪਾਲਤੀ ਰਾਖੈ ਨਦਰਿ ਮਝਾਰਿ ॥
जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥
जैसे माता पुत्र को जन्म देकर उसकी परवरिश करती है और उसको अपनी दृष्टि में रखती है।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਮੁਖਿ ਦੇ ਗਿਰਾਸੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪੋਚਾਰਿ ॥
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥
घर के भीतर एवं बाहर वह उसके मुख में ग्रास देती है और क्षण-क्षण उसको दुलारती है।

ਤਿਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰਸਿਖ ਰਾਖਤਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥१॥
वैसे ही सतिगुरु अपने सिक्खों को भगवान का प्रेम-प्यार देकर रखते हैं।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਹੈ ਇਆਣੇ ॥
मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥
हे मेरे राम ! हम हरि-प्रभु के नादान बच्चे हैं।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਧਾ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੇ ਕੀਏ ਸਿਆਣੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु-सतिगुरु उपदेश-दाता धन्य-धन्य है, जिसने हमें हरि-नाम का उपदेश देकर बुद्धिमान बना दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੈਸੀ ਗਗਨਿ ਫਿਰੰਤੀ ਊਡਤੀ ਕਪਰੇ ਬਾਗੇ ਵਾਲੀ ॥
जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥
जैसे श्वेत पंखों वाली (चिड़िया) गगन में उड़ती फिरती है,"

ਓਹ ਰਾਖੈ ਚੀਤੁ ਪੀਛੈ ਬਿਚਿ ਬਚਰੇ ਨਿਤ ਹਿਰਦੈ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੀ ॥
ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥
परन्तु उसका मन अपने पीछे छोड़े बच्चों में अटका रहता है और अपने मन में सदा उन्हें स्मरण करती है,"

ਤਿਉ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਖ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀ ਗੁਰੁ ਸਿਖ ਰਖੈ ਜੀਅ ਨਾਲੀ ॥੨॥

तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥२॥

वैसे ही सतिगुरु गुरु के सिक्ख में हरि-प्रभु का प्रेम दे कर गुरु सिक्ख को अपने हृदय से लगाकर रखते हैं।॥ २॥

ਜੈਸੇ ਕਾਤੀ ਤੀਸ ਬਤੀਸ ਹੈ ਵਿਚਿ ਰਾਖੈ ਰਸਨਾ ਮਾਸ ਰਤੁ ਕੇਰੀ ॥

जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥

जैसे परमेश्वर माँस एवं रुधिर की बनी हुई जिव्हा को तीस अथवा बत्तीस दांतों की कैंची में से रक्षा करता है।

ਕੋਈ ਜਾਣਹੁ ਮਾਸ ਕਾਤੀ ਕੈ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਹੈ ਸਭ ਵਸਗਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ॥

कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥

कोई यह न समझे कि इस तरह करना जिव्हा अथवा कैंची के कुछ वश में है। प्रत्येक वस्तु परमेश्वर के वश में है।

ਤਿਉ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਨਰ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਪੈਜ ਜਨ ਕੇਰੀ ॥੩॥

तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥३॥

इसी तरह ही मनुष्य संतजनों की आलोचना-निन्दा करता है तो परमेश्वर अपने सेवक की प्रतिष्ठा को बचाता है॥ ३ ॥

ਭਾਈ ਮਤ ਕੋਈ ਜਾਣਹੁ ਕਿਸੀ ਕੈ ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਹੈ ਸਭ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥

भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥

मेरे भाइओ ! कोई यह न समझे कि किसी के कुछ वश में है। सभी लोग वहीं कर्म करते है, जो परमेश्वर उनसे करवाता है।

ਜਰਾ ਮਰਾ ਤਾਪੁ ਸਿਰਤਿ ਸਾਪੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਕੋਈ ਲਾਗਿ ਨ ਸਕੈ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਾ ਲਾਇਆ ॥

जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥

बुढ़ापा, मृत्यु, बुखार, सिर-दर्द एवं ताप सभी रोग परमेश्वर के वश में हैं। परमेश्वर के हुक्म के बिना कोई रोग प्राणी को स्पर्श नहीं कर सकता।

ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਨਿਤਿ ਧਿਆਵਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੋ ਅੰਤੀ ਅਉਸਰਿ ਲਏ ਛਡਾਇਆ ॥੪॥੭॥੧੩॥੫੧॥

ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥४॥७॥१३॥५१॥

हे दास नानक ! अपने चित्त एवं मन में ऐसे परमात्मा के नाम का नित्य ध्यान करो जो अन्तिमं समय (यम इत्यादि से) मुक्ति करवाता हे॥ ४॥ ७॥ १३॥ ५१ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਐ ਮਨਿ ਹੋਇ ਅਨੰਦੁ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਹੀਐ ॥
जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥
जिसको मिलने से मन को खुशी मिलती है, उसे ही सतिगुरु कहा जाता है।

ਮਨ ਕੀ ਦੁਬਿਧਾ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਹਰਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਲਹੀਐ ॥੧॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥१॥
मन की दुविधा दूर हो जाती है और हरि के परमपद की प्राप्ति हो जाती है। १॥

ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ॥
मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥
मेरा प्रिय सतिगुरु मुझे किस विधि से मिल सकता है?

ਹਉ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਕਰੀ ਨਮਸਕਾਰੁ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਕਿਉ ਮਿਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उस गुरु को क्षण-क्षण प्रणाम करता रहता हूँ। मुझे मेरा पूर्ण गुरु कैसे मिल सकता हैं?॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਮੇਲਿਆ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥
करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥
अपनी कृपा करके ईश्वर ने मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दिया है।

ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਜਨ ਕੇਰੀਆ ਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਧੂਰਾ ॥੨॥
इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥२॥
सतिगुरु की चरण-धूलि प्राप्त करने से उसके सेवक की कामना पूर्ण हो गई है॥ २ ॥

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਣੈ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੀਐ ॥
हरि भगति द्रिड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥
मनुष्य को उस सतिगुरु से मिलना चाहिए, जिससे वह भगवान की भक्ति के बारे में सुने एवं उसे भगवान की भक्ति हृदय में दृढ़ करवा दे।

ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵਈ ਹਰਿ ਲਾਭੁ ਨਿਤਿ ਦ੍ਰਿੜੀਐ ॥੩॥
तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्रिड़ीऐ ॥३॥
उससे मिलकर मनुष्य हमेशा ही भगवान का नाम रूपी लाभ प्राप्त करता रहता है और उसे बिल्कुल ही कोई कमी नहीं आती॥ ३॥

ਜਿਸ ਕਉ ਰਿਦੈ ਵਿਗਾਸੁ ਹੈ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ॥
जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥
जिसके हृदय में प्रसन्नता विद्यमान है और परमात्मा के सिवाय कोई मोह नहीं,

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਉਧਰੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਹੀ ॥੪॥੮॥੧੪॥੫੨॥
नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥४॥८॥१४॥५२॥
हे नानक ! उस गुरु से मिलकर मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है, जो ईश्वर का यशोगान करवाता है ॥४॥८॥१४॥५२॥

ਮਹਲਾ ੪ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ॥
महला ४ गउड़ी पूरबी ॥
महला ४ गउड़ी पूरबी ॥

ਹਰਿ ਦਇਆਲਿ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੀ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ॥
हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥
दयालु हरि-परमेश्वर ने मुझ पर अपनी दया की है और उसने मेरे मन, तन एवं मुँह में हरि की वाणी डाल दी है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗੁ ਭਇਆ ਅਤਿ ਗੂੜਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਭੀਨੀ ਮੇਰੀ ਚੋਲੀ ॥੧॥
गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥१॥
मेरी हृदय रूपी चोली हरि-रंग में भीग गई है। गुरु का आश्रय लेकर वह रंग बहुत गहरा हो गया है॥ १॥

ਅਪੁਨੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਉ ਗੋਲੀ ॥
अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥
मैं अपने प्रभु-परमेश्वर की दासी हूँ।

ਜਬ ਹਮ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਕਰਿ ਦੀਨੋ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਗੋਲ ਅਮੋਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥१॥ रहाउ ॥

जब प्रभु के साथ मेरा मन प्रसन्न हो गया तो उसने सारे जगत् को मेरा बिना मूल्य दास बना दिया।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਹੁ ਬਿਬੇਕੁ ਸੰਤ ਜਨ ਭਾਈ ਖੋਜਿ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖਿ ਢੰਢੋਲੀ ॥

करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥

हे सन्तजनो, भाइओ ! विचार करो ! अपने हृदय में ही खोज-तलाश करके ईश्वर को देख लो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੂਪੁ ਸਭ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਕੋਲੀ ॥੨॥

हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥२॥

यह सारी दुनिया भगवान का रूप है और समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है। भगवान प्रत्येक जीव के निकट एवं पास ही निवास करता है ॥ २॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਸਭ ਜਗ ਕੈ ਅਪਰੰਪਰ ਪੁਰਖੁ ਅਤੋਲੀ ॥
हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपर्मपर पुरखु अतोली ॥
अनन्त, सर्वशक्तिमान एवं अतुलनीय प्रभु-परमेश्वर सारे जगत् के निकट ही रहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਗਟੁ ਕੀਓ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਿਰੁ ਵੇਚਿਓ ਗੁਰ ਪਹਿ ਮੋਲੀ ॥੩॥
हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥३॥
उस ईश्वर को पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में ही प्रकट किया है, (इसलिए) मैंने अपना सिर गुरु के पास बेच दिया है॥ ३॥

ਹਰਿ ਜੀ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੁਮ ਸਰਣਾਗਤਿ ਤੁਮ ਵਡ ਪੁਰਖ ਵਡੋਲੀ ॥
हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तू जीवों के अन्दर एवं बाहर सर्वत्र विद्यमान है और अन्दर एवं बाहर मैं तेरी शरण में हूँ, (मेरे लिए) तुम दुनिया के सबसे बड़े महापुरुष हो।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਗੁਰ ਵੇਚੋਲੀ ॥੪॥੧॥੧੫॥੫੩॥
जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥४॥१॥१५॥५३॥
जन नानक मध्यस्थ-सतिगुरु से मिलकर रात-दिन प्रभु की महिमा-स्तुति करता रहता है ॥ ४॥ १॥ १५॥ ५३॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਜਗਜੀਵਨ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਜਗਦੀਸੁਰ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥
जगजीवन अपर्मपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥
हे प्रभु ! तू जगत् का जीवन, अपरम्पार एवं हम सबका स्वामी है। हे जगदीश्वर ! तुम सर्वशक्तिमान एवं भाग्यविधाता हो।

ਜਿਤੁ ਮਾਰਗਿ ਤੁਮ ਪ੍ਰੇਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਤਿਤੁ ਮਾਰਗਿ ਹਮ ਜਾਤੇ ॥੧॥
जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥१॥
हे मेरे स्वामी ! हम प्राणियों को तुम जिस मार्ग की भी प्रेरणा करते हो, उसी मार्ग में हम चलते हैं।॥१॥

ਰਾਮ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਾਤੇ ॥
राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥
हे मेरे राम ! मेरा मन प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥१॥ रहाउ ॥
सत्संग में मिलकर मैंने राम रस प्राप्त किया है और अब मेरा मन हरि-राम के नाम में लीन रहता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਗਿ ਅਵਖਧੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਾਤੇ ॥
हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥
हरि-परमेश्वर का नाम जगत् में समस्त रोगों की औषधि है। हरि-परमेश्वर का नाम सदैव सत्य है।

ਤਿਨ ਕੇ ਪਾਪ ਦੋਖ ਸਭਿ ਬਿਨਸੇ ਜੋ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਖਾਤੇ ॥੨॥
तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥२॥
जो व्यक्ति गुरु के उपदेश से राम रस को चखते हैं, उनके तमाम पाप एवं दोष नाश हो जाते हैं।॥ २॥

ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਖਤੁ ਲਿਖੇ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਤੇ ਗੁਰ ਸੰਤੋਖ ਸਰਿ ਨਾਤੇ ॥
जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥
जिनके मस्तक पर विधाता ने प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिख दिया है, वह गुरु रूपी संतोष सरोवर में स्नान करते हैं।

ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਗਈ ਸਭ ਤਿਨ ਕੀ ਜੋ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥੩॥
दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥३॥
जो राम-नाम के प्रेम में मग्न रहते हैं, उनकी मंदबुद्धि में से पापों की तमाम मैल दूर हो जाती है॥ ३॥

ਰਾਮ ਤੁਮ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰ ਤੁਮ ਜੇਵਡ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤੇ ॥
राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥
हे मेरे राम ! तुम स्वयं ही सबकुछ हो। तुम स्वयं ही समस्त जीवों के ठाकुर हो और तेरे जैसा महान दाता दूसरा कोई नहीं।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਲਏ ਤਾਂ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ॥੪॥੨॥੧੬॥੫੪॥

जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥४॥२॥१६॥५४॥

नानक केवल ईश्वर का नाम लेने से ही जीता है। प्रभु की दया से ही प्रभु का जाप होता है॥ ४॥ २॥ १६॥ ५४॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਕਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਾਚੇ ॥

करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥

हे जगजीवन ! हे दाता ! मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मेरा मन प्रभु की स्मृति में लीन रहे।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਬਚਨੁ ਦੀਓ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨੁ ਮਾਚੇ ॥੧॥

सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥१॥

सतिगुरु ने मुझे अत्यन्त निर्मल वचन किया है और हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥

ਰਾਮ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬੇਧਿ ਲੀਓ ਹਰਿ ਸਾਚੇ ॥

राम मेरा मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥

हे मेरे राम ! मेरा मन एवं तन सच्चे परमेश्वर ने बाँध लिया है।

ਜਿਹ ਕਾਲ ਕੈ ਮੁਖਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਗ੍ਰਸਿਆ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਹਮ ਬਾਚੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥१॥ रहाउ ॥

हे हरि-परमेश्वर ! गुरु-सतिगुरु के उपदेश से मैं उस काल (मृत्यु) से बच गया हूँ, जिसके मुख (पंजे) में सारा जगत् फँसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ ਕਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਤੇ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਨਰ ਕਾਚੇ ॥

जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥

जिनकी प्रीति परमेश्वर से नहीं, वह अधर्मी, मूर्ख एवं झूठे पुरुष हैं।

ਤਿਨ ਕਉ ਜਨਮੁ ਮਰਣੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਮਰਿ ਮਰਿ ਪਾਚੇ ॥੨॥

तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥२॥

वह जन्म एवं मृत्यु का अत्यंत भारी दुख उठाते हैं और बार-बार जन्मते-मरते और विष्ठा में सड़ते रहते हैं।॥ २॥

ਤੁਮ ਦਇਆਲ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਮੋ ਕਉ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਹਮ ਜਾਚੇ ॥
तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥
हे प्रभु! तुम दया के घर एवं शरणार्थियों के पालनहार हो। हे ठाकुर ! मैं याचना करता हूँ कि मुझे अपने प्रेम का दान प्रदान करो।

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਦਾਸ ਹਮ ਕੀਜੈ ਮਨੁ ਨਿਰਤਿ ਕਰੇ ਕਰਿ ਨਾਚੇ ॥੩॥
हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥३॥
मुझे प्रभु के सेवकों का सेवक बना दे, चूंकि मेरा मन प्रेम धारण करके नृत्य करे॥ ३॥

ਆਪੇ ਸਾਹ ਵਡੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ਹਹਿ ਤਾ ਚੇ ॥
आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥
हे मेरे स्वामी प्रभु ! तू स्वयं ही बड़ा साहूकार है और मैं तेरा व्यापारी हूँ।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਉ ਰਾਸਿ ਸਭ ਤੇਰੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸਾਹ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ॥੪॥੩॥੧੭॥੫੫॥
मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥४॥३॥१७॥५५॥
मेरा मन, तन एवं जीवन सब कुछ तेरी ही पूंजी है। हे सच्चे प्रभु ! तुम नानक के साहूकार हो॥ ४॥ ३॥ १७॥ ५५॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਤੁਮ ਦਇਆਲ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਇਕ ਬਿਨਉ ਸੁਨਹੁ ਦੇ ਕਾਨੇ ॥
तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥
हे प्रभु ! तुम बड़े दयालु एवं सर्व दुःखों का नाश करने वाले हो। अतः मेरी एक प्रार्थना ध्यानपूर्वक सुनो ।

ਜਿਸ ਤੇ ਤੁਮ ਹਰਿ ਜਾਨੇ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਨੇ ॥੧॥
जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥१॥
हे मेरे स्वामी हरि ! मुझ उस सतगुरु से मिला दो जिसकी कृपा से तुझे जाना जाता है और जो मेरे प्राण हैं।॥ १॥

ਰਾਮ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਰਿ ਮਾਨੇ
राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥
हे मेरे राम ! मैं सतिगुरु को पारब्रह्म कह कर मानता हूँ।

ਹਮ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਅਸੁਧ ਮਤਿ ਹੋਤੇ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਹਮ ਜਾਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥१॥ रहाउ ॥

मैं मूर्ख, मक्कार और खोटी बुद्धि वाला हूँ। हे ईश्वर ! मैंने तुझे सतिगुरु की वाणी से जान लिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਤਨੇ ਰਸ ਅਨ ਰਸ ਹਮ ਦੇਖੇ ਸਭ ਤਿਤਨੇ ਫੀਕ ਫੀਕਾਨੇ ॥

जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥

संसार के जितने भी विभिन्न रस हैं, मैंने देख लिए हैं परन्तु ये सभी बिल्कुल फीके हैं।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੀਠ ਰਸ ਗਾਨੇ ॥੨॥
हरि का नामु अम्रित रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥२॥
सतिगुरु से मिलकर मैंने हरि-नाम रूपी अमृत रस चख लिया है, जो गन्ने के रस के समान बड़ा मीठा है॥ २ ॥

ਜਿਨ ਕਉ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨਹੀ ਭੇਟਿਆ ਤੇ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਦਿਵਾਨੇ ॥
जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥
जो व्यक्ति गुरु-सतिगुरु से नहीं मिले, वह मूर्ख, दीवाने एवं शाक्त हैं।

ਤਿਨ ਕੇ ਕਰਮਹੀਨ ਧੁਰਿ ਪਾਏ ਦੇਖਿ ਦੀਪਕੁ ਮੋਹਿ ਪਚਾਨੇ ॥੩॥
तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥३॥
(लेकिन उनके भी क्या वश ?) उन भाग्यहीनों की किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसे नीचे कर्म लिखे हुए हैं। ये माया के मोह में फँसकर यूं जलते हैं जैसे पतंगा दीपक को देखकर जल जाता है।॥३॥

ਜਿਨ ਕਉ ਤੁਮ ਦਇਆ ਕਰਿ ਮੇਲਹੁ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਵ ਲਗਾਨੇ ॥
जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥
हे हरि-परमेश्वर! जिनको तुम दया करके गुरु से मिला देते हो, वह तेरी सेवा-भक्ति में जुट जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੇ ॥੪॥੪॥੧੮॥੫੬॥
जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥४॥४॥१८॥५६॥
हे नानक ! ऐसे मनुष्य हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से दुनिया में प्रसिद्ध हो जाते हैं और गुरु के उपदेश से नाम में लीन रहते हैं ॥४॥४॥१८॥५६॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਨਾਲਿ ਹੈ ਸੁਆਮੀ ਕਹੁ ਕਿਥੈ ਹਰਿ ਪਹੁ ਨਸੀਐ ॥
मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥
हे मेरे मन ! वह स्वामी-प्रभु सदैव हमारे साथ रहता है। बताओ ! परमेश्वर से भागकर हम कहाँ जा सकते हैं ?

ਹਰਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ ॥੧॥
हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥१॥
सत्यस्वरूप प्रभु-परमेश्वर स्वयं ही जीवों को क्षमा कर देता है। यदि प्रभु स्वयं मनुष्य को मुक्त करे तो ही वह मुक्त होता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਜਪੀਐ ॥
मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥
हे मेरे मन ! हृदय से हरि-परमेश्वर का हरि-नाम ही जपते रहना चाहिए।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਉ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪੀਛੈ ਛੁਟੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! भाग कर सतिगुरु की शरण लो। सतिगुरु का आश्रय लेने से तेरी (मोह-माया के बंधनों से) मुक्ति हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸੇਵਹੁ ਸੋ ਪ੍ਰਭ ਸ੍ਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸੀਐ ॥
मेरे मन सेवहु सो प्रभ स्रब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥
हे मेरे मन ! उस सर्वसुखदाता परमेश्वर की सेवा-भक्ति करो, जिसकी सेवा-भक्ति करने से आत्मस्वरूप में निवास हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਇ ਲਹਹੁ ਘਰੁ ਅਪਨਾ ਘਸਿ ਚੰਦਨੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਘਸੀਐ ॥੨॥
गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥२॥
गुरु के माध्यम से अपने आत्मस्वरूप रूपी घर में जाकर निवास करो और जैसे चन्दन को शिला पर घिसाया जाता है, वैसे ही हरि-यश को अपने मन पर घिसाओ॥ २॥|2|

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਊਤਮੁ ਲੈ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਹਸੀਐ ॥
मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥
हे मेरे मन ! हरि-परमेश्वर का हरि-नाम जप। हरि-परमेश्वर का यश सर्वोत्तम है। हरि-परमेश्वर का नाम रूपी लाभ प्राप्त करके हृदय में सुप्रसन्न होना चाहिए।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਖੀਐ ॥੩॥
हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अम्रितु हरि रसु चखीऐ ॥३॥
यदि हरि-परमेश्वर स्वयं दया कर दे तो मनुष्य हरि-रस रूपी अमृत को चखता है॥ ३॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੋ ਦੂਜੈ ਲਾਗੇ ਤੇ ਸਾਕਤ ਨਰ ਜਮਿ ਘੁਟੀਐ ॥
मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥
हे मेरे मन ! जो प्रभु के नाम से विहीन होकर माया-मोह में तल्लीन हैं, उन शाक्त पुरुषों को यमदूत दबोचकर मार देता है।

ਤੇ ਸਾਕਤ ਚੋਰ ਜਿਨਾ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਨ ਤਿਨ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਭਿਟੀਐ ॥੪॥
ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥४॥
हे मेरे मन ! जिन्होंने परमात्मा के नाम को भुला दिया है, उनके निकट नहीं आना चाहिए, क्योंकि वे तो शाक्त एवं प्रभु के चोर हैं।॥ ४॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸੇਵਹੁ ਅਲਖ ਨਿਰੰਜਨ ਨਰਹਰਿ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਲੇਖਾ ਛੁਟੀਐ ॥
मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥
हे मेरे मन ! उस अलख निरंजन नृसिंह भगवान की सेवा-भक्ति करो, जिसकी सेवा-भक्ति करने से कर्मों का लेखा जोखा समाप्त हो जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਪੂਰੇ ਕੀਏ ਖਿਨੁ ਮਾਸਾ ਤੋਲੁ ਨ ਘਟੀਐ ॥੫॥੫॥੧੯॥੫੭॥
जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥५॥५॥१९॥५७॥
हे नानक ! जिन्हें हरि-प्रभु ने तोल में पूर्ण कर दिया है, उनका फिर तोल एक माशा मात्र भी कम नहीं होता ॥५॥५॥१९॥५७॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਹਮਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਵਸਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੈ ਮੇਰਾ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਤੇਰੀ ॥
हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥
हे मेरे ईश्वर ! मेरे प्राण तेरे ही वश में हैं। मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे ही हैं।

ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਵਹੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲੋਚ ਘਣੇਰੀ ॥੧॥
दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥१॥
हे प्रभु ! मुझ पर दया करके अपने दर्शन दीजिए, क्योंकि मेरे मन एवं तन में तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है॥ १॥

SikhBookClub.com

ਰਾਮ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲੋਚ ਮਿਲਣ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ॥
राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥
हे मेरे राम ! मेरे मन एवं तन में प्रभु-मिलन की तीव्र लालसा है।

ਗੁਰ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਿੰਚਤ ਗੁਰਿ ਕੀਨੀ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर क्रिपालि क्रिपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्राणी ! जब कृपा के घर गुरु ने मुझ पर थोड़ी-सी कृपा की, तो मेरा प्रभु-परमेश्वर आकर मुझे मिल गया।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਹਮਰੈ ਮਨ ਚਿਤਿ ਹੈ ਸੁਆਮੀ ਸਾ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹਰਿ ਜਾਨਹੁ ਮੇਰੀ ॥
जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥
हे प्रभु-परमेश्वर ! जो कुछ भी मेरे मन एवं चित्त में है, मेरी उस अवस्था को तुम जानते हो।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਜਪੀ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ਨਿਤ ਜੀਵਾ ਆਸ ਹਰਿ ਤੇਰੀ ॥੨॥
अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥२॥
हे प्रभु ! रात-दिन मैं तेरे नाम का जाप करता और सुख पाता हूँ। मैं सदा ही तेरी आशा में जीता हूँ॥ २॥

ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਾਤੈ ਪੰਥੁ ਬਤਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੀ ॥
गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥
जब दाता सतिगुरु ने मुझे सन्मार्ग दिखाया तो हरि-प्रभु आकर मुझसे प्रत्यक्ष आ मिला।

ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਸਭ ਆਸ ਪੁਜੀ ਜਨ ਕੇਰੀ ॥੩॥
अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥३॥
तकदीर से मेरे हृदय में रात-दिन आनंद बना रहता है। प्रभु ने मुझ सेवक की अभिलाषा पूरी कर दी है॥ ३॥

ਜਗੰਨਾਥ ਜਗਦੀਸੁਰ ਕਰਤੇ ਸਭ ਵਸਗਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ॥
जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥
हे जगन्नाथ ! हे जगदीश्वर ! हे कर्ता-प्रभु ! सारी जगत् क्रीड़ा तेरे वश में है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤਿ ਆਏ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਜਨ ਕੇਰੀ ॥੪॥੬॥੨੦॥੫੮॥
जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥४॥६॥२०॥५८॥
हे प्रभु ! नानक तेरी शरणागत आया है, अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा रखो ॥४॥६॥२०॥५८॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖਿਨੁ ਨ ਟਿਕੈ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਦਹ ਦਹ ਦਿਸਿ ਚਲਿ ਚਲਿ ਹਾਢੇ ॥
इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥
दसों-दिशाओं में दौड़-दौड़कर भटकता रहता है।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦੀਆ ਮਨੁ ਠਾਢੇ ॥੧॥
गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥१॥
लेकिन बड़े सौभाग्य से मुझे पूर्ण गुरु मिल गए हैं, जिन्होंने मुझे हरि नाम रूपी मंत्र प्रदान किया है, जिससे यह अस्थिर मन शांत हो गया है। १॥

ਰਾਮ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਲੇ ਕਾਂਢੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम हम सतिगुर लाले कांढे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे राम ! मुझे सतिगुरु का गुलाम कहा जाता है। १॥ रहाउ॥

ਹਮਰੈ ਮਸਤਕਿ ਦਾਗੁ ਦਗਾਨਾ ਹਮ ਕਰਜ ਗੁਰੂ ਬਹੁ ਸਾਢੇ ॥
हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥
मेरे मस्तक पर सतिगुरु के गुलाम होने का चिन्ह लगा हुआ है। गुरु के उपकार का मैंने बहुत अधिक कर्जा अदा करना है अर्थात् मैं गुरु कर्जा उतार नहीं सकता इसलिए गुरु का गुलाम बन गया।

ਪਰਉਪਕਾਰੁ ਪੁੰਨੁ ਬਹੁ ਕੀਆ ਭਉ ਦੁਤਰੁ ਤਾਰਿ ਪਰਾਢੇ ॥੨॥
परउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि पराढे ॥२॥
गुरु ने मुझ पर बहुत बड़ा परोपकार एवं उदार किया है और मुझे इस कठिन एवं भयानक संसार-सागर से पार कर दिया है। ॥२॥

ਜਿਨ ਕਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਨਾਹੀ ਤਿਨ ਕੂਰੇ ਗਾਢਨ ਗਾਢੇ ॥
जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥
जिन लोगों के हृदय में प्रभु का प्यार नहीं होता, वे झूठी योजनाएँ ही बनाते रहते हैं।

ਜਿਉ ਪਾਣੀ ਕਾਗਦੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਤ ਹੈ ਤਿਉ ਮਨਮੁਖ ਗਰਭਿ ਗਲਾਢੇ ॥੩॥
जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥३॥
जैसे जल में कागज का नाश हो जाता है, वैसे ही स्वेच्छाचारी जीव अहंकार में योनियों के चक्र में फंसकर नष्ट हो जाता है। ३॥

ਹਮ ਜਾਨਿਆ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨਹ ਆਗੈ ਜਿਉ ਹਰਿ ਰਾਖੈ ਤਿਉ ਠਾਢੇ ॥
हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥
मुझे भूतकाल का कुछ पता नहीं, न ही मैं भविष्यकाल बारे कुछ जानता हूँ, जैसे परमेश्वर हमें रखता है, उसी अवस्था में हम रहते हैं।

ਹਮ ਭੂਲ ਚੂਕ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੁਤਰੇ ਕਾਢੇ ॥੪॥੭॥੨੧॥੫੯॥

हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥४॥७॥२१॥५९॥

हे गुरु जी ! हम बहुत भूल-चूक करते रहते हैं अत: हम पर कृपा करो। हे नानक ! मुझे गुरु के घर का कुत्ता कहा जाता है ॥ ४॥ ७॥ २१॥ ५९ ॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨਗਰੁ ਬਹੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਖੰਡਲ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥

यह मानव शरीर रूपी-नगर काम-क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है। लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने इन्हें क्षीण कर दिया है।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਤ ਲਿਖੇ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਮੰਡਲ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੧॥

पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥

जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मों के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही भगवान में लीन हुआ है। १॥

ਕਰਿ ਸਾਧੂ ਅੰਜੁਲੀ ਪੁੰਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥

करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥

संतजनों को हाथ जोड़कर नमन करना बड़ा पुण्य कर्म है।

ਕਰਿ ਡੰਡਉਤ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥

उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कर्म है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਕੰਡਾ ਹੇ ॥

साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥

पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो भगवान से विस्मृत) ने हरि-रस का आनंद प्राप्त नहीं किया, क्योंकि उनके अन्तर्मन में अहंकार रूपी कांटा होता है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਚਲਹਿ ਚੁਭੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਡੰਡਾ ਹੇ ॥੨॥

जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥

जैसे-जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ-चुभकर कष्ट देता रहता है और अन्तिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं। २॥

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਦੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥

हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥

प्रभु के भक्त प्रभु-परमेश्वर के नाम सिमरन में लीन रहते हैं और वे आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਹੁ ਸੋਭ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਹੇ ॥੩॥

अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥

फिर वे अविनाशी सर्वव्यापक प्रभु को पा लेते हैं और वे खण्डों-ब्रह्मण्डों में शोभा पाते हैं। ३ ।

ਹਮ ਗਰੀਬ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਵਡ ਵਡਾ ਹੇ ॥

हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥

हे प्रभु! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं तुम सर्वोच्चतम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੪॥੮॥੨੨॥੬੦॥

जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥८॥२२॥६०॥

हे नानक ! जीव को तुम्हारे ही नाम का आधार है, हरि-नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की उपलब्धि होती है ॥४॥८॥२२॥६०॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਇਸੁ ਗੜ ਮਹਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਇ ਹੈ ਕਿਛੁ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਵੈ ਧੀਠਾ ॥

इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥

मानव-शरीर रूपी दुर्ग में जगत् के बादशाह हरेि-परमेश्वर का निवास है परन्तु निर्लज्ज प्राणी उसके स्वाद को प्राप्त नहीं करता।

ਹਰਿ ਦੀਨ ਦਇਆਲਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਕੀਆ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚਖਿ ਡੀਠਾ ॥੧॥

हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥१॥

जब दीनदयालु ईश्वर ने मुझ पर करुणा-दृष्टि की तो मैंने गुरु के शब्द द्वारा हरि-रस के स्वाद को चख कर देख लिया ॥ १॥

ਰਾਮ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਰ ਲਿਵ ਮੀਠਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरे राम ! गुरु में सुरति धारण करने से परमेश्वर का यश गायन करना मुझे मीठा लगने लग गया ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਿ ਬਸੀਠਾ ॥

हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥

हरि-परमेश्वर अगम्य, अगोचर एवं पारब्रह्म है। सतिगुरु-मध्यस्थ के साथ मिलने से वह मिलता है।

ਜਿਨ ਗੁਰ ਬਚਨ ਸੁਖਾਨੇ ਹੀਅਰੈ ਤਿਨ ਆਗੈ ਆਣਿ ਪਰੀਠਾ ॥੨॥

जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥२॥

जिनके हृदय को गुरु का वचन सुखदायक लगता है, गुरु उनके समक्ष नाम रूपी अमृत रस सेवन करने के लिए परोस देता है। ॥ २॥

ਮਨਮੁਖ ਹੀਅਰਾ ਅਤਿ ਕਠੋਰੁ ਹੈ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਕਾਰ ਕਰੀਠਾ ॥

मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥

स्वेच्छाचारी का हृदय बड़ा निष्ठुर है, उनके भीतर माया के विकारों की कालिख ही कालिख होती है।

ਬਿਸੀਅਰ ਕਉ ਬਹੁ ਦੂਧੁ ਪੀਆਈਐ ਬਿਖੁ ਨਿਕਸੈ ਫੋਲਿ ਫੁਲੀਠਾ ॥੩॥

बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥३॥

यदि हम साँप को कितना भी दूध पिलाएँ, जाँच पड़ताल करने पर उसके भीतर से विष ही निकलेगा। ॥ ३॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਆਨਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਘਸਿ ਗਰੁੜੁ ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਲੀਠਾ ॥

हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥

हे मेरे हरि-प्रभु! मुझे गुरदेव से मिला दीजिए चूंकि जो साँप का विष नाश करने के लिए मैं अपने मुख से गुरुवाणी को नीलकण्ठ के मन्त्र के तौर पर पीकर सेवन करूं (गायन करू)।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੇ ਲਾਲੇ ਗੋਲੇ ਲਗਿ ਸੰਗਤਿ ਕਰੂਆ ਮੀਠਾ ॥੪॥੯॥੨੩॥੬੧॥
जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥४॥९॥२३॥६१॥
हे नानक ! मैं गुरु का सेवक एवं गुलाम हूँ। उनकी सत्संग से मिलकर कड़वा विष भी मीठा अमृत बन जाता है ॥४॥९॥२३॥६१॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਰਥਿ ਸਰੀਰੁ ਹਮ ਬੇਚਿਆ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਆਗੇ ॥
हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥
हरि-परमेश्वर का नाम लेने की खातिर मैंने अपना शरीर पूर्ण गुरु के समक्ष बेच दिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਦਾਤੈ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ਸਭਾਗੇ ॥੧॥
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥१॥
दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम सुदृढ़ कर दिया है। मेरे चेहरे एवं मस्तक पर भाग्य जाग गए हैं, मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ॥ १ ॥

ਰਾਮ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम गुरमति हरि लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे राम ! गुरु की मति से मेरी सुरति भगवान में लग गई है। १॥ रहाउ॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਰਮਤ ਰਾਮ ਰਾਇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥
घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥
राम प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। गुरु के शब्द एवं गुरु द्वारा प्रभु में वृति लगती है।

ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਵਉ ਕਾਟਿ ਗੁਰੂ ਕਉ ਮੇਰਾ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਭਾਗੇ ॥੨॥
हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥२॥
अपने मन एवं तन के टुकड़े-टुकड़े करके मैं उनको गुरु के समक्ष अर्पण करता हूँ। गुरु के वचन द्वारा मेरा भ्रम एवं भय निवृत हो गए। ॥२॥

ਅੰਧਿਆਰੈ ਦੀਪਕ ਆਨਿ ਜਲਾਏ ਗੁਰ ਗਿਆਨਿ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥
अंधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥
जब अज्ञानता के अन्धेरे में गुरु ने अपना ज्ञान-रुपी दीपक प्रज्वलित कर दिया तो मेरी वृत्ति परमात्मा में लग गई।

ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸਿਓ ਘਰਿ ਵਸਤੁ ਲਹੀ ਮਨ ਜਾਗੇ ॥੩॥
अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन जागे ॥३॥
मेरे हृदय में से अज्ञानता का अँधेरा नाश हो गया और माया के मोह में निद्रामग्न मेरा मन जाग गया। मेरे मन को हृदय-घर में ही नाम रूपी वस्तु मिल गई है। ॥३॥

ਸਾਕਤ ਬਧਿਕ ਮਾਇਆਧਾਰੀ ਤਿਨ ਜਮ ਜੋਹਨਿ ਲਾਗੇ ॥
साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥
भगवान से विमुख, हिंसक, पतित एवं मायाधारी जीवों को ही यमदूत मृत्यु के बन्धन में बांधता है।

ਉਨ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ ਸੀਸੁ ਨ ਬੇਚਿਆ ਓਇ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥੪॥
उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥४॥
जिन्होंने सतिगुरु के समक्ष अपना सिर नहीं बेचा, वे भाग्यहीन आवागमन (जीवन-मृत्यु) के चक्र में पड़े रहते हैं। ॥४ ॥

ਹਮਰਾ ਬਿਨਉ ਸੁਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਠਾਕੁਰ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰਿ ਮਾਗੇ ॥
हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥
हे प्रभु-ठाकुर ! मेरी एक विनती सुनो। मैं प्रभु की शरणागत हैं और हरि नाम की याचना करता हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਲਜ ਪਾਤਿ ਗੁਰੂ ਹੈ ਸਿਰੁ ਬੇਚਿਓ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੇ ॥੫॥੧੦॥੨੪॥੬੨॥
जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥५॥१०॥२४॥६२॥
गुरु ही नानक की लाज-प्रतिष्ठा रखने वाला है। उसने अपना सिर सतिगुरु के समक्ष बेच दिया है ॥५॥१०॥२४॥६२॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਹਮ ਅਹੰਕਾਰੀ ਅਹੰਕਾਰ ਅਗਿਆਨ ਮਤਿ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥
हम (प्राणी) बड़े अहंकारी हैं, हमारी बुद्धि अहंकार और अज्ञानता वाली बनी रहती है। लेकिन गुरु से मिलकर हमारा अहंकार नष्ट हो गया है।

ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ धनु धंनु गुरू हरि राइआ ॥१॥
हमारे हृदय में से अहंकार का रोग निवृत हो गया है और हमें सुख उपलब्ध हो गया है। हरि-परमेश्वर का रूप गुरु धन्य-धन्य हैं॥ १॥

ਰਾਮ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे राम ! गुरु के वचन द्वारा मैंने प्रभु को पा लिया है। १॥ रहाउ॥

ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਾਮ ਰਾਇ ਕੀ ਗੁਰਿ ਮਾਰਗੁ ਪੰਥੁ ਬਤਾਇਆ ॥
मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइआ ॥
मेरे हृदय में राम का प्रेम है। गुरु ने मुझे प्रभु-मिलन का मार्ग दिखा दिया है।

ਮੇਰਾ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਸਤਿਗੁਰ ਆਗੈ ਜਿਨਿ ਵਿਛੁੜਿਆ ਹਰਿ ਗਲਿ ਲਾਇਆ ॥੨॥
मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइआ ॥२॥
मेरी आत्मा एवं देहि सब कुछ सतिगुरु के समक्ष समर्पित हैं, जिन्होंने मुझ बिछुड़े को परमात्मा के आलिंगन लगा दिया है। २॥

ਮੇਰੈ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਦੇਖਨ ਕਉ ਗੁਰਿ ਹਿਰਦੇ ਨਾਲਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥
मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइआ ॥
मेरे अन्तर्मन में प्रभु के दर्शनों की प्रीति उत्पन्न हुई है। गुरु ने मुझे मेरे हृदय में ही मेरे साथ विद्यमान प्रभु को दिखा दिया है।

ਸਹਜ ਅਨੰਦੁ ਭਇਆ ਮਨਿ ਮੋਰੈ ਗੁਰ ਆਗੈ ਆਪੁ ਵੇਚਾਇਆ ॥੩॥
सहज अनंदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥३॥
मेरे मन में सहज आनंद उत्पन्न हो गया है। मैंने खुद को गुरु के समक्ष बेच दिया है॥ ३॥

ਹਮ ਅਪਰਾਧ ਪਾਪ ਬਹੁ ਕੀਨੇ ਕਰਿ ਦੁਸਟੀ ਚੋਰ ਚੁਰਾਇਆ ॥
हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥
मैंने बहुत अपराध एवं पाप किए हैं। जैसे कोई चोर अपनी की हुई चोरी को छिपाता है, वैसे ही मैंने बुराइयां करके उन्हें छिपाया है।

ਅਬ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤਿ ਆਏ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਹਰਿ ਭਾਇਆ ॥੪॥੧੧॥੨੫॥੬੩॥
अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥४॥११॥२५॥६३॥
हे नानक ! अब मैं हरि की शरण में आया हूँ। हे हरि ! जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी लाज रखो॥ ४ ॥ ११॥ २५॥ ६३ ॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਬਾਜੈ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੂਆ ਗਾਵੈ ॥
गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥
गुरु के उपदेश से मेरे अन्तर में अनहद शब्द गूंजने लग गया है और गुरु के उपदेश से ही मेरा मन परमात्मा का यश गायन करता है।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥੧॥
वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धंनु गुरू लिव लावै ॥१॥
बड़े सौभाग्य से मुझे गुरु जी के दर्शन नसीब हुए हैं। वह गुरु धन्य-धन्य है, जिसने मेरी वृत्ति ईश्वर से लगा दी है। १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि हरि लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के माध्यम से ही ईश्वर में वृत्ति लगती है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਮਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮਨੁ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥
हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥
पूर्ण सतिगुरु ही मेरा ठाकुर है और मेरा मन गुरु की ही सेवा करता है।

ਹਮ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਹ ਪਾਵ ਗੁਰੂ ਕੇ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਾਵੈ ॥੨॥
हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥२॥
मैं गुरु के चरण मल-मल कर धोता हूँ, जो मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है। २॥

ਹਿਰਦੈ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरि गुण गावै ॥
गुरु के उपदेश से रसों का घर प्रभु मेरे हृदय में आकर बस गया है। मेरी जिव्हा ईश्वर का यश गायन करती रहती है।

ਮਨ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਹਰਿ ਰਸਿ ਆਘਾਨੇ ਫਿਰਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭੂਖ ਲਗਾਵੈ ॥੩॥
मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥३॥
मेरा मन प्रेम में भीगकर ईश्वर के अमृत से तृप्त हो गया है और तदुपरांत इसको दोबारा भूख नहीं लगती ॥३ ॥

ਕੋਈ ਕਰੈ ਉਪਾਵ ਅਨੇਕ ਬਹੁਤੇਰੇ ਬਿਨੁ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥
कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥
चाहे कोई अनेक उपाय करे किन्तु प्रभु की कृपा बिना उसको नाम प्राप्त नहीं होता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ॥੪॥੧੨॥੨੬॥੬੪॥
जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिड़ावै ॥४॥१२॥२६॥६४॥
नानक पर हरि-परमेश्वर ने अपनी कृपा धारण की है, गुरु के उपदेश से उसकी बुद्धि में हरि का नाम बस गया है॥ ४॥ १२ ॥ २६ ॥ ६४ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥
रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿੰਦੂ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਕਰੰਮਾ ॥
गुरमुखि जिंदू जपि नामु करमा ॥
हे मेरे प्राण ! गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के नाम का जाप करो।

ਮਤਿ ਮਾਤਾ ਮਤਿ ਜੀਉ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਰਾਮਾ ॥
मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥
हे मेरे प्राण ! उस बुद्धि को अपनी माता बना, बुद्धि को ही अपना जीवन-आधार बना और मुँह में राम का नाम जप।

ਸੰਤੋਖੁ ਪਿਤਾ ਕਰਿ ਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਅਜਨਮਾ ॥
संतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥
संतोष को अपना पिता और गुरु को अपना अजन्मा सत्पुरुष बना।

ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਰਾਮਾ ॥੧॥
वडभागी मिलु रामा ॥१॥
हे सौभाग्यशाली ! राम से मिल॥ १॥

ਗੁਰੁ ਜੋਗੀ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ਜੀਉ ॥
गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥
मैं, योगी गुरु परमेश्वर से मिल गया हूँ और उसके रंग में आनंद प्राप्त करता हूँ।

ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਸਦਾ ਨਿਰਬਾਣੀ ਜੀਉ ॥
गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥
गुरु परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहता है और सदैव पावन-पवित्र है।

ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣੀ ਜੀਉ ॥
वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥
सौभाग्य से मैं चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु से मिल गया हूँ।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਭਿੰਨਾ ॥੨॥
मेरा मनु तनु हरि रंगि भिंना ॥२॥
मेरा मन एवं तन परमेश्वर के रंग में मग्न है। ॥२॥

ਆਵਹੁ ਸੰਤਹੁ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥
आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥
हे संतजनों! आओ हम मिलकर प्रभु के नाम का जाप करें।

ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ਜੀਉ ॥
विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥
हम सत्संगति में मिलकर सदैव नाम रूपी लाभ प्राप्त करें।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸੰਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਪਾਹਾ ਜੀਉ ॥
करि सेवा संता अम्रितु मुखि पाहा जीउ ॥
संतों की सेवा करके हम अपने मुख में नाम रूपी अमृत डालें।

ਮਿਲੁ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਅੜੇ ਧੁਰਿ ਕਰਮਾ ॥੩॥
मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥३॥
प्रारम्भ से किस्मत में पूर्व कर्मों के लिखे लेखों अनुसार प्रभु से जा मिलो। ॥३॥

ਸਾਵਣਿ ਵਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਜਗੁ ਛਾਇਆ ਜੀਉ ॥
सावणि वरसु अम्रिति जगु छाइआ जीउ ॥
श्रावण के महीने में नाम अमृत वाला बादल जगत् पर छाया हुआ है।

ਮਨੁ ਮੋਰੁ ਕੁਹੁਕਿਅੜਾ ਸਬਦੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥
मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥
नाम अमृत को चखकर मेरे मन का मोर प्रसन्न होकर चहचहाने लग गया।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੁਠੜਾ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਜੀਉ ॥
हरि अम्रितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥
जब हरि-नाम रूपी अमृत मेरे हृदय में आ बसा तो मुझे प्रभु-परमेश्वर मिल गया।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਤੰਨਾ ॥੪॥੧॥੨੭॥੬੫॥
जन नानक प्रेमि रतंना ॥४॥१॥२७॥६५॥
हे नानक ! मैं प्रभु की प्रीति में मग्न हो गया हूँ। ॥४॥१॥२७॥६५॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਆਉ ਸਖੀ ਗੁਣ ਕਾਮਣ ਕਰੀਹਾ ਜੀਉ ॥
आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥
हे मेरी सत्संगी सखियों ! आओ, हम प्रभु को वश में करने के लिए शुभ गुणों के जादू-टोने तैयार करें और

ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿਹ ਰਲੀਆ ਜੀਉ ॥
मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥
संतजनों से मिलकर हम प्रभु-प्रेम का सुख एवं आनंद भोगें।

ਗੁਰ ਦੀਪਕੁ ਗਿਆਨੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਬਲੀਆ ਜੀਉ ॥
गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥
मेरे हृदय में गुरु के ज्ञान का दीपक सदैव प्रज्वलित रहता है।

ਹਰਿ ਤੁਠੈ ਢੁਲਿ ਢੁਲਿ ਮਿਲੀਆ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥१॥
अति प्रसन्न एवं दया से कोमल होकर प्रभु मुझे मिल गया है॥ १॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ਹਰਿ ਢੋਲੇ ਜੀਉ ॥
मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥
मेरे मन एवं तन में प्रियतम प्रभु का प्रेम लगा हुआ है।

ਮੈ ਮੇਲੇ ਮਿਤ੍ਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵੇਚੋਲੇ ਜੀਉ ॥
मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥
मेरी यही कामना है कि मध्यस्थ सतिगुरु मुझे मेरे प्रिय मित्र प्रभु से मिला दे।

ਮਨੁ ਦੇਵਾਂ ਸੰਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲੇ ਜੀਉ ॥
मनु देवां संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥
मैं अपना मन उन संतो को अर्पण कर दूँगा जो मुझे मेरे प्रभु से मिला देंगे।

ਹਰਿ ਵਿਟੜਿਅਹੁ ਸਦਾ ਘੋਲੇ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥२॥
प्रभु पर मैं सदैव कुर्बान जाताहूँ ॥ २॥

ਵਸੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਵਸੁ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮਨਿ ਵਸੁ ਜੀਉ ॥
वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥
हे मेरे प्रिय गोविन्द! मेरे मन में आकर निवास करो। हे प्रभु! कृपा करके मेरे मन में आकर निवास करो।

ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸੁ ਜੀਉ ॥
मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मुझे मनोवांछित फल मिल गया है। पूर्ण गुरु के दर्शन करके मैं अत्यंत प्रसन्न हो गई हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਮਨਿ ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਰਹਸੁ ਜੀਉ ॥
हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मुझे गुरु से हरि-नाम मिल गया है और मैं सुहागिन बन गई हूँ। अब मेरे मन में दिन-रात प्रसन्नता एवं आनंद बना रहता है।

ਹਰਿ ਪਾਇਅੜਾ ਵਡਭਾਗੀਈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਨਿਤ ਲੈ ਲਾਹਾ ਮਨਿ ਹਸੁ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥३॥
हे मेरे गोविन्द! बड़े भाग्य से मैंने प्रभु को पाया है और मैं नित्य ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करके अपने मन में मुस्कराती रहती हूँ॥ ३ ॥

ਹਰਿ ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਹਰਿ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ਜੀਉ ॥
हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥
भगवान ने स्वयं ही जीवों को उत्पन्न किया है और वह स्वयं ही उनकी देखभाल करता है। भगवान ने स्वयं ही जीवों को कामकाज में लगाया है।

ਇਕਿ ਖਾਵਹਿ ਬਖਸ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਇਕਨਾ ਫਕਾ ਪਾਇਆ ਜੀਉ ॥
इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥
कई प्रभु की नियामतें सेवन करते हैं, जिनमें कभी कमी नहीं आती और कइयों को केवल मुट्ठी भर दानों की मिलती है।

ਇਕਿ ਰਾਜੇ ਤਖਤਿ ਬਹਹਿ ਨਿਤ ਸੁਖੀਏ ਇਕਨਾ ਭਿਖ ਮੰਗਾਇਆ ਜੀਉ ॥
इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥
भगवान ने कई जीवों को राजा बनाया है, वे राजसिंघासन पर विराजमान होते हैं और सदा ही सुखी रहते हैं और भगवान कई जीवों को भिखारी बनाकर उनसे दर-दर से भीख मंगवाता है।

ਸਭੁ ਇਕੋ ਸਬਦੁ ਵਰਤਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਜੀਉ ॥੪॥੨॥੨੮॥੬੬॥
सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥४॥२॥२८॥६६॥
हे मेरे गोविन्द ! सर्वत्र एक तेरा ही नाम विद्यमान है। हे नानक ! प्रभु का सेवक प्रभु नाम का ही ध्यान करता है ॥४॥२॥२८॥६६॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਮਨ ਮਾਹੀ ਮਨ ਮਾਹੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤਾ ਮਨ ਮਾਹੀ ਜੀਉ ॥
मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मैं अपने मन में ही हरि-रंग में मग्न हो गया हूँ।

ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਨਾਲਿ ਨ ਲਖੀਐ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਅਲਖੁ ਲਖਾਹੀ ਜੀਉ ॥
हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥
हरि रंग प्रत्येक जीव के भीतर उसके साथ ही रहता है परन्तु उसे देखा नहीं जा सकता। हे मेरे गोविन्द! पूर्ण गुरु ने मुझे अदृश्य प्रभु के दर्शन करा दिए हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਸਭ ਦਾਲਦ ਦੁਖ ਲਹਿ ਜਾਹੀ ਜੀਉ ॥
हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! जब गुरु ने मेरे हृदय में हरि-परमेश्वर के नाम का प्रकाश कर दिया तो मेरी दरिद्रता के तमाम दुख निवृत्त हो गए।

ਹਰਿ ਪਦੁ ਊਤਮੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹੀ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥१॥
हे मेरे गोविन्द! मैंने हरि-मिलन की उच्च पदवी प्राप्त कर ली है और बड़े भाग्य से मैं हरि के नाम में लीन हो गया हूँ। ॥१॥

ਨੈਣੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਨੈਣੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਕਿਨੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠੜਾ ਨੈਣੀ ਜੀਉ ॥
नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥
हे मेरे प्रिय गोविन्द! हरि-प्रभु को किसी विरले पुरुष ने ही अपने नेत्रों से देखा है।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬਹੁਤੁ ਬੈਰਾਗਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਬਾਝਹੁ ਧਨ ਕੁਮਲੈਣੀ ਜੀਉ ॥
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मेरा मन एवं तन तेरे विरह में वैराग्यवान हो गया है। मालिक-प्रभु के बिना मैं जीव-स्त्री बहुत उदास हो गई हूँ।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਸੈਣੀ ਜੀਉ ॥
संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द ! संतजनों से मिलकर मैंने अपने मित्र एवं सज्जन हरि-प्रभु को पा लिया है।

ਹਰਿ ਆਇ ਮਿਲਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਮੈ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਣੀ ਰੈਣੀ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥२॥
हे मेरे गोविन्द! जगजीवन हरि आकर मुझे मिल गया है और अब मेरी जीवन रूपी रात्रि सुख से बीत रही है। ॥२॥

ਮੈ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਜਣੁ ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭੁਖ ਲਗਾਈਆ ਜੀਉ ॥
मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥
हे संतजनो ! मुझे मेरे सज्जन हरि-प्रभु से मिलाओ। मेरे मन एवं तन को उसके मिलन की भूख लगी हुई है।

ਹਉ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੈ ਅੰਤਰਿ ਬਿਰਹੁ ਹਰਿ ਲਾਈਆ ਜੀਉ ॥
हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥
मैं अपने प्रियतम के दर्शनों के बिना जीवित नहीं रह सकती। मेरे मन में प्रभु की जुदाई की पीड़ा विद्यमान है।

ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਮੇਰਾ ਸਜਣੁ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਜੀਵਾਈਆ ਜੀਉ ॥
हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥
सम्राट प्रभु मेरा सर्वप्रिय मित्र है। गुरदेव ने मुझे उनसे मिला दिया है और मेरा मन पुनः जीवित होकर ईश्वर-परायण हो गया है।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਆਸਾ ਪੂਰੀਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਮਨਿ ਵਾਧਾਈਆ ਜੀਉ ॥੩॥
मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥३॥
मेरे मन एवं तन की आशाएँ पूर्ण हो गई हैं। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर को मिलने से मेरे मन को शुभकामनाएँ मिल रही हैं। ॥३॥

ਵਾਰੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਵਾਰੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਹਉ ਤੁਧੁ ਵਿਟੜਿਅਹੁ ਸਦ ਵਾਰੀ ਜੀਉ ॥
वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥
हे मेरे प्रिय गोविन्द! मैं तुझ पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਪਿਰੰਮ ਕਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਪੂੰਜੀ ਰਾਖੁ ਹਮਾਰੀ ਜੀਉ ॥
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम का मेरे गोविदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मेरे मन एवं तन में मेरे प्रियतम-पति की प्रीति है। हे प्रभु! मेरी प्रेम रूपी पूँजी की रक्षा कीजिए।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਿਸਟੁ ਮੇਲਿ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਕਰਿ ਰੈਬਾਰੀ ਜੀਉ ॥
सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! मुझे मेरे मध्यस्थ सतिगुरु से मिला दो, जो अपने मार्गदर्शन से मुझे परमेश्वर से मिला देगा।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਇਆ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਜੀਉ
॥੪॥੩॥੨੯॥੬੭॥
हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥४॥३॥२९॥६७॥
हे मेरे गोविन्द ! तेरी दया से मैंने हरि का नाम प्राप्त किया है। नानक ने तेरी ही शरण ली है ॥४॥३॥२९॥६७॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਚੋਜੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਚੋਜੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਚੋਜੀ ਜੀਉ ॥
चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥
हे मेरे प्रिय गोविन्द! तू बड़ा विनोदी है, मेरा प्रभु-परमेश्वर विनोदी है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਾਨ੍ਹੁ ਉਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਗੋਪੀ ਖੋਜੀ ਜੀਉ ॥
हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥
परमेश्वर ने स्वयं ही कृष्ण को उत्पन्न किया है। हरि स्वयं ही कृष्ण को खोजने वाली गोपी है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਭ ਘਟ ਭੋਗਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਆਪੇ ਰਸੀਆ ਭੋਗੀ ਜੀਉ ॥
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द ! ईश्वर स्वयं ही समस्त शरीरो में पदार्थों को भोगता है वह स्वयं ही रस भोगने वाला भोगी है,

ਹਰਿ ਸੁਜਾਣੁ ਨ ਭੁਲਈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੋਗੀ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥१॥
हे मेरे गोविन्द ! हरि स्वयं ही चतुर एवं अचूक है। वह स्वयं ही भोगों से निर्लिप्त सतिगुरु है। १॥

ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਖੇਲੈ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਜੀਉ ॥
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द ! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही अनेकों विधियों से खेलता है।

ਇਕਨਾ ਭੋਗ ਭੋਗਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਇਕਿ ਨਗਨ ਫਿਰਹਿ ਨੰਗ ਨੰਗੀ ਜੀਉ ॥
इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! कई प्राणियों को वह नियामतें प्रदान करता है, जिससे वे आनंद प्राप्त करते हैं और कई प्राणी नग्न होकर (जिनके तन पर वस्त्र नहीं) नंगे भटकते फिरते हैं।

ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਦਾਨੁ ਦੇਵੈ ਸਭ ਮੰਗੀ ਜੀਉ ॥
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और माँगने वाले समस्त प्राणियों को दान प्रदान करता है,

ਭਗਤਾ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਕਥਾ ਮੰਗਹਿ ਹਰਿ ਚੰਗੀ ਜੀਉ ॥੨॥
भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥२॥
हे मेरे गोविन्द! भक्तों को प्रभु-नाम का ही आधार है और वे श्रेष्ठ हरि कथा की माँग करते रहते हैं ॥२॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਕਰਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਭਗਤਾ ਲੋਚ ਮਨਿ ਪੂਰੀ ਜੀਉ ॥
हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द ! ईश्वर स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है और अपने भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी करता है।

ਆਪੇ ਜਲਿ ਥਲਿ ਵਰਤਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਨਹੀ ਦੂਰੀ ਜੀਉ ॥
आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥
हे मेरे गोविन्द ! हरि जल-थल सर्वत्र विद्यमान है। वह सर्वव्यापक है और कहीं दूर नहीं रहता।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੀ ਜੀਉ ॥

हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥

हे मेरे गोविन्द ! भीतर एवं बाहर प्रभु स्वयं ही विद्यमान है। ईश्वर स्वयं ही समस्त स्थानों को परिपूर्ण कर रहा है।

ਹਰਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਵੇਖੈ ਆਪਿ ਹਦੂਰੀ ਜੀਉ ॥੩॥

हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥३॥

हे मेरे गोविन्द ! राम स्वयं ही इस जगत्-प्रसार को प्रसारित कर रहा है। प्रभु स्वयं निकट से सभी को देखता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਵਾਜਾ ਪਉਣੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਵਜਾਏ ਤਿਉ ਵਾਜੈ ਜੀਉ ॥

हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ ॥

हे मेरे गोविन्द! प्राणियों के भीतर पवन का नाद (बज रहा) है। जैसे ईश्वर स्वयं इसको बजाता है, वैसे ही यह गूंजता है।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਜੈ ਜੀਉ ॥

हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥

हे मेरे गोविन्द! हम जीवों के अन्तर्मन में नाम रूपी खजाना है। गुरु के उपदेश से हरि-प्रभु प्रकट हो जाता है।

ਆਪੇ ਸਰਣਿ ਪਵਾਇਦਾ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਰਾਖੁ ਲਾਜੈ ਜੀਉ ॥

आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥

हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं ही मनुष्य को अपनी शरणागत में प्रवेश करवाता है और भक्तजनों की लाज रखता है।

ਵਡਭਾਗੀ ਮਿਲੁ ਸੰਗਤੀ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਸਿਧਿ ਕਾਜੈ ਜੀਉ ॥੪॥੪॥੩੦॥੬੮॥
वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥४॥४॥३०॥६८॥
हे मेरे गोविन्द! कोई सौभाग्यशाली मनुष्य ही सत्संग में जुड़ता है। हे नानक ! प्रभु के नाम से उसके जीवन मनोरथ सफल हो जाते हैं।॥४ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६८॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਮੈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਈ ਜੀਉ ॥
मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥
हे भद्रपुरुषो ! हरि ने मुझे हरि-नाम की प्रेम-प्यास लगा दी है।

ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਤੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥
मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥
यदि मेरा मित्र हरि-प्रभु मुझे मिल जाए तो मुझे बड़ा सुख उपलब्ध होगा।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਖਿ ਜੀਵਾ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ਜੀਉ ॥
हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥
हे मेरी माँ! मैं हरि को देख कर ही जीवित रहती हूँ।

ਮੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਖਾ ਹਰਿ ਭਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥१॥
हरि का नाम मेरा सखा एवं भाई है॥ १॥

ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਸੰਤ ਜੀਉ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੇ ਜੀਉ ॥
गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥
हे पूज्य संतो ! मेरे हरि-प्रभु का यश-गायन करो।

ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜੀਉ ਭਾਗ ਵਡੇਰੇ ਜੀਉ ॥
जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥
गुरु के माध्यम से प्रभु के नाम का जाप करने से भाग्य उदय हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਨ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ਜੀਉ ॥
हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥
हरि-परमेश्वर का नाम और हरि मेरे प्राण एवं आत्मा हैं।

ਫਿਰਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਭਵਜਲ ਫੇਰੇ ਜੀਉ ॥੨॥
फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥२॥
नाम का जाप करने से मुझे दोबारा भवसागर पार नहीं करना पड़ेगा। ॥२॥

ਕਿਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਵੇਖਾ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਚਾਉ ਜੀਉ ॥
किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥
मेरे मन एवं तन में बड़ा चाव बना हुआ है कि मैं कैसे हरि-प्रभु के दर्शन करें?

ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ ਜੀਉ ਮਨਿ ਲਗਾ ਭਾਉ ਜੀਉ ॥
हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥
हे संतजनो ! मुझे हरि से मिला दीजिए। मेरे मन में हरि के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਉ ਜੀਉ ॥
गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥
गुरु के शब्द से प्रियतम प्रभु प्राप्त होता है।

ਵਡਭਾਗੀ ਜਪਿ ਨਾਉ ਜੀਉ ॥੩॥
वडभागी जपि नाउ जीउ ॥३॥
हे सौभाग्यशाली प्राणी! तू प्रभु के नाम का जाप कर॥ ३ ॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਡੜੀ ਗੋਵਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਆਸਾ ਜੀਉ ॥
मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥
मेरे मन एवं तन में गोविन्द प्रभु के मिलन की बड़ी लालसा बनी हुई है।

ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸੰਤ ਜੀਉ ਗੋਵਿਦ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਾ ਜੀਉ ॥
हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥
हे संतजनो ! मुझे गोविन्द प्रभु से मिला दीजिए, जो मेरे पास ही रहता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਪਰਗਾਸਾ ਜੀਉ ॥
सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥
सतिगुरु की शिक्षा द्वारा हमेशा जीव के हृदय में नाम का प्रकाश होता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪੂਰਿਅੜੀ ਮਨਿ ਆਸਾ ਜੀਉ ॥੪॥੫॥੩੧॥੬੯॥
जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥४॥५॥३१॥६९॥
हे नानक ! मेरे मन की अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ४॥ ५ ॥ ३१॥ ६९॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥
गउड़ी माझ महला ४ ॥

ਮੇਰਾ ਬਿਰਹੀ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਜੀਵਾ ਜੀਉ ॥
मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥
यदि मुझसे जुदा हुआ प्रिय नाम मुझे मिल जाए तो ही में जीवित रह सकता हूँ।

ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲੀਵਾ ਜੀਉ ॥
मन अंदरि अम्रितु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥
मेरे मन में नाम रूपी अमृत है। गुरु के उपदेश से मैं हरि से यह नाम लेता हूँ।

ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਦਾ ਪੀਵਾ ਜੀਉ ॥
मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥
मेरा मन हरि के प्रेम में अनुरक्त है। मैं सदैव हरि-रस का पान करता रहता हूँ।

ਹਰਿ ਪਾਇਅੜਾ ਮਨਿ ਜੀਵਾ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥१॥
मैंने प्रभु को हृदय में पा लिया है, इसलिए मैं जीवित हूँ। १॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ਹਰਿ ਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥
मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥
हरि का प्रेम रूपी तीर मेरे मन एवं तन में लग गया है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਤ੍ਰੁ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ਜੀਉ ॥
मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥
मेरा प्रिय मित्र हरि पुरुष बहुत चतुर है।

ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੰਤ ਹਰਿ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ਜੀਉ ॥
गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥
कोई संत गुरु ही जीव को चतुर एवं दक्ष हरि से मिला सकता है।

ਹਉ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥੨॥
हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥२॥
मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ॥

ਹਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਰਿ ਮੀਤੁ ਦਸਾਈ ਜੀਉ ॥
हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥
मैं अपने सज्जन एवं मित्र हरि-परमेश्वर का पता पूछता हूँ।

ਹਰਿ ਦਸਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜੀ ਹਰਿ ਖੋਜੁ ਪਵਾਈ ਜੀਉ ॥
हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥
हे संतजनों! हरि के बारे में बताओ, मैं हरि की खोज करता रहता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਠੜਾ ਦਸੇ ਹਰਿ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥
सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥
यदि सतिगुरु प्रसन्न होकर मुझे बता दें तो मैं हरि को पा सकता हूँ

ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि नामे नामि समाई जीउ ॥३॥
और हरि के नाम द्वारा हरि-नाम में ही समा सकता हूँ।॥३॥

ਮੈ ਵੇਦਨ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਬਿਰਹੁ ਲਗਾਈ ਜੀਉ ॥
मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥
हरि ने मेरे अन्तर्मन में प्रेम वेदना लगा दी है।

ਗੁਰ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥
गुर सरधा पूरि अम्रितु मुखि पाई जीउ ॥
गुरु ने मेरी श्रद्धा पूरी कर दी है और मेरे मुँह में नाम रूपी अमृत डाल दिया है।

ਹਰਿ ਹੋਹੁ ਦਇਆਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥
हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥
हे हरि ! मुझ पर दयालु हो जाओ। चूंकि मैं हरि-नाम का ध्यान करता रहूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥੪॥੬॥੨੦॥੧੮॥੩੨॥੭੦॥
जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥४॥६॥२०॥१८॥३२॥७०॥
नानक ने तो हरि रस पा लिया है ॥४॥६॥२०॥१८॥३२॥७०॥

ਮਹਲਾ ੫ ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਚਉਪਦੇ
महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे
महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲੁ ਹੋਤ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई! किस विधि से आत्मिक सुख उपलब्ध हो सकता है।

ਕਿਉ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਾਮ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥
उस सहायक हरि को कैसे पाया जा सकता है। १॥ रहाउ॥

ਕੁਸਲੁ ਨ ਗ੍ਰਿਹਿ ਮੇਰੀ ਸਭ ਮਾਇਆ ॥
कुसलु न ग्रिहि मेरी सभ माइआ ॥
यदि मनुष्य के घर में दुनिया की तमाम दौलत आ जाए और वह यह माने यह सारी दौलत मेरी ही है तो भी उसे सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਸੁੰਦਰ ਛਾਇਆ ॥
ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥
यदि मनुष्य के पास ऊँचे महल और छाया वाले सुन्दर बाग हो तो

ਝੂਠੇ ਲਾਲਚਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥
झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥१॥
वह इनके झूठे लालच में फँसकर अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है। ॥१॥

ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ਦੇਖਿ ਵਿਗਾਸਾ ॥
हसती घोड़े देखि विगासा ॥
मनुष्य अपने हाथी और घोड़े देखकर बड़ा प्रसन्न होता है।

ਲਸਕਰ ਜੋੜੇ ਨੇਬ ਖਵਾਸਾ ॥
लसकर जोड़े नेब खवासा ॥
वह भारी भरकम फौज इकट्ठी करता है और मंत्री तथा शाही नौकर रखता है

ਗਲਿ ਜੇਵੜੀ ਹਉਮੈ ਕੇ ਫਾਸਾ ॥੨॥
गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥२॥
लेकिन यह सबकुछ अहंकार की फाँसी रूपी रस्सी है जो उसके गले में पड़ जाती है॥ २॥

ਰਾਜੁ ਕਮਾਵੈ ਦਹ ਦਿਸ ਸਾਰੀ ॥
राजु कमावै दह दिस सारी ॥
दसों दिशाओं में शासन करना,

ਮਾਣੈ ਰੰਗ ਭੋਗ ਬਹੁ ਨਾਰੀ ॥
माणै रंग भोग बहु नारी ॥
अनेक भोगों में आनंद प्राप्त करना अधिकतर नारियों से भोग विलास करना

ਜਿਉ ਨਰਪਤਿ ਸੁਪਨੈ ਭੇਖਾਰੀ ॥੩॥
जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥३॥
एक भिखारी के स्वप्न में राजा बनने के सामान है। ॥३॥

ਏਕੁ ਕੁਸਲੁ ਮੋ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਤਾਇਆ ॥
एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥
सतिगुरु ने मुझे सुखी होने की एक विधि बताई है।

ਹਰਿ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹਰਿ ਕਿਆ ਭਗਤਾ ਭਾਇਆ ॥
हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥
वह विधि यह है कि जो कुछ भी ईश्वर करता है, वह प्रभु के भक्तों को अच्छा लगता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥
जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥४॥
हे नानक ! गुरमुख अपने अहंकार को मिटा कर प्रभु में समा जाता है। ॥४ ॥

ਇਨਿ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲ ਹੋਤ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
इनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई! इस विधि से सुखी हुआ जाता है

ਇਉ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਾਮ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥
इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥
और इस तरह सहायक प्रभु पाया जाता है॥ १॥ रहाउ दूजा ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਕਿਉ ਭ੍ਰਮੀਐ ਭ੍ਰਮੁ ਕਿਸ ਕਾ ਹੋਈ ॥
किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥
हम क्यों भ्रम करें ? किस बात का भ्रम करना है?

ਜਾ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿਆ ਸੋਈ ॥
जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥
जब वह प्रभु जल, थल, धरती और आकाश में विद्यमान हो रहा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਮਨਮੁਖ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੧॥
गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥१॥
गुरमुख भवसागर से बच जाते हैं परन्तु स्वेच्छाचारी अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं। ॥१॥

ਜਿਸੁ ਰਾਖੈ ਆਪਿ ਰਾਮੁ ਦਇਆਰਾ ॥
जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥
जिसकी दया का घर राम स्वयं रक्षा करता है,

ਤਿਸੁ ਨਹੀ ਦੂਜਾ ਕੋ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥१॥ रहाउ ॥
उसकी समानता कोई दूसरा नहीं कर सकता १॥ रहाउ ॥

ਸਭ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਏਕੁ ਅਨੰਤਾ ॥
सभ महि वरतै एकु अनंता ॥
समस्त जीवों में एक अनन्त परमेश्वर व्यापक हो रहा है।

ਤਾ ਤੂੰ ਸੁਖਿ ਸੋਉ ਹੋਇ ਅਚਿੰਤਾ ॥
ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥
इसलिए तू निश्चिंत होकर सुख से सो जा।

ਓਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਜੋ ਵਰਤੰਤਾ ॥੨॥
ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥२॥
संसार में जो कुछ हो रहा है प्रभु सब कुछ जानता है। ॥२॥

ਮਨਮੁਖ ਮੁਏ ਜਿਨ ਦੂਜੀ ਪਿਆਸਾ ॥
मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥
जिन स्वेच्छाचारी जीवों को माया की तृष्णा लग जाती है, वे माया के मोह में फंसकर मरते हैं।

ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਵਹਿ ਧੁਰਿ ਕਿਰਤਿ ਲਿਖਿਆਸਾ ॥
बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥
वह अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। उनकी किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसा कर्म-लेख लिखा होता है।

ਜੈਸਾ ਬੀਜਹਿ ਤੈਸਾ ਖਾਸਾ ॥੩॥
जैसा बीजहि तैसा खासा ॥३॥
जैसा वह बोते हैं (कर्म करते हैं), वैसा ही वह खाते हैं। ॥३ ॥

ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਮਨਿ ਭਇਆ ਵਿਗਾਸਾ ॥
देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥
प्रभु के दर्शन प्राप्त करके मेरा हृदय प्रसन्न हो गया है।

ਸਭੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥
सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥
अब में सर्वत्र परमेश्वर का प्रकाश देखता हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਹਰਿ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥੪॥੨॥੭੧॥
जन नानक की हरि पूरन आसा ॥४॥२॥७१॥
नानक की प्रभु ने अभिलाषा पूर्ण कर दी है। ॥४॥२॥७१॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਕਈ ਜਨਮ ਭਏ ਕੀਟ ਪਤੰਗਾ ॥
कई जनम भए कीट पतंगा ॥
हे प्राणी ! तू अनेकों जन्मों में कीड़ा और पतंगा बना हुआ था।

ਕਈ ਜਨਮ ਗਜ ਮੀਨ ਕੁਰੰਗਾ ॥
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
अनेकों जन्मों में तू हाथी, मछली एवं मृग था।

ਕਈ ਜਨਮ ਪੰਖੀ ਸਰਪ ਹੋਇਓ ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥
अनेक योनियों में तू पक्षी एवं सर्प बना था।

ਕਈ ਜਨਮ ਹੈਵਰ ਬ੍ਰਿਖ ਜੋਇਓ ॥੧॥
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥१॥
अनेक योनियों में तू घोड़ा और बैल बनकर जोता गया था। १ ॥

ਮਿਲੁ ਜਗਦੀਸ ਮਿਲਨ ਕੀ ਬਰੀਆ ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥
अब तुझे मानव-जन्म में जगत् के ईश्वर को मिलने का समय मिला है,

ਚਿਰੰਕਾਲ ਇਹ ਦੇਹ ਸੰਜਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥
अतः तू उसे मिल, चिरकाल पश्चात् यह मानव-जन्म तुझे प्राप्त हुआ है। १॥ रहाउ॥

ਕਈ ਜਨਮ ਸੈਲ ਗਿਰਿ ਕਰਿਆ ॥
कई जनम सैल गिरि करिआ ॥
अनेक योनियों में तू चट्टान एवं पहाड़ों में उत्पन्न किया गया था।

ਕਈ ਜਨਮ ਗਰਭ ਹਿਰਿ ਖਰਿਆ ॥
कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥
अनेक जन्मों में तेरी माँ का गर्भ ही गिर गया था।

ਕਈ ਜਨਮ ਸਾਖ ਕਰਿ ਉਪਾਇਆ ॥
कई जनम साख करि उपाइआ ॥
अनेक योनियों में तू वनस्पति बन कर उत्पन्न किया गया था।

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਇਆ ॥੨॥
लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥२॥
इस तरह तू चौरासी लाख योनियों में भटकाया गया था। २॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਇਓ ਜਨਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ॥
साधसंगि भइओ जनमु परापति ॥
अब तुझे अमूल्य मानव जीवन मिला है। अतः तू संतों की संगति किया कर।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਭਜੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤਿ ॥
करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥
तू संतों की निष्काम सेवा किया कर और गुरु की मति द्वारा हरि-परमेश्वर का भजन कर।

ਤਿਆਗਿ ਮਾਨੁ ਝੂਠੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥
तू अपना अहंकार, झूठ एवं अभिमान त्याग दे।

ਜੀਵਤ ਮਰਹਿ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੩॥
जीवत मरहि दरगह परवानु ॥३॥
यदि तू अपने अहंकार को नष्ट कर देगा तो ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा। ॥३ ॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਸੁ ਤੁਝ ਤੇ ਹੋਗੁ ॥
जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥
हे परमात्मा ! जो कुछ भी हुआ है अथवा होगा, वह तुझ पर निर्भर है।

ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥
अवरु न दूजा करणै जोगु ॥
दूसरा कोई उसको करने में समर्थ नहीं।

ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਜਾ ਲੈਹਿ ਮਿਲਾਇ ॥
ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥
हे प्रभु! यदि तू मिलाए तो केवल तभी मनुष्य तुझे मिलता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੪॥੩॥੭੨॥
कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥४॥३॥७२॥
हे नानक ! हे प्राणी ! तू हरि-परमेश्वर का यश-गायन कर ॥ ४॥ ३॥ ७२॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਮਹਿ ਬੋਅਹੁ ਨਾਮੁ ॥
करम भूमि महि बोअहु नामु ॥
हे प्राणी ! शरीर रूपी कर्म-भूमि में तू नाम का बीज बो।

ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਤੁਮਾਰਾ ਕਾਮੁ ॥
पूरन होइ तुमारा कामु ॥
तेरा कर्म सफल हो जाएगा।

ਫਲ ਪਾਵਹਿ ਮਿਟੈ ਜਮ ਤ੍ਰਾਸ ॥
फल पावहि मिटै जम त्रास ॥
तुम फल (मोक्ष) प्राप्त कर लोगे और तेरा मृत्यु का भय दूर हो जाएगा।

ਨਿਤ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਾਸ ॥੧॥
नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥१॥
इसलिए हमेशा प्रभु-परमेश्वर के गुण एवं उपमा गायन कर।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਤਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥
हरि-परमेश्वर के नाम को तू अपने हृदय एवं मन से लगाकर रख और

ਸੀਘਰ ਕਾਰਜੁ ਲੇਹੁ ਸਵਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सीघर कारजु लेहु सवारि ॥१॥ रहाउ ॥
शीघ्र ही अपने कार्य संवार लो। ॥१॥रहाउ ॥

ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਹੋਹੁ ਸਾਵਧਾਨੁ ॥
अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥
अपने प्रभु की सेवा के लिए सदा सावधान रह।

ਤਾ ਤੂੰ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥
ता तूं दरगह पावहि मानु ॥
तब तुझे उसके दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

ਉਕਤਿ ਸਿਆਣਪ ਸਗਲੀ ਤਿਆਗੁ ॥
उकति सिआणप सगली तिआगु ॥
अपनी युक्तियां एवं समस्त चतुरता त्याग दे

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥੨॥
संत जना की चरणी लागु ॥२॥
और संतजनों के चरणों से लग जा। २॥

ਸਰਬ ਜੀਅ ਹਹਿ ਜਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥
सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥
जिस भगवान के वश में समस्त जीव हैं,

ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁੜੈ ਸਭ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥
कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥
जो सदा जीवों के साथ रहता है, वह कभी उनसे अलग नहीं होता।

ਉਪਾਵ ਛੋਡਿ ਗਹੁ ਤਿਸ ਕੀ ਓਟ ॥
उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥
हे प्राणी ! अपनी युक्तियां त्याग और उसकी शरण में आ,

ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਹੋਵੈ ਤੇਰੀ ਛੋਟਿ ॥੩॥
निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥३॥
एक क्षण में तेरी मुक्ति हो जाएगी। ३ ॥

ਸਦਾ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਤਿਸ ਨੋ ਜਾਣੁ ॥
सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥
प्रभु को हमेशा अपने निकट समझ

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੁ ॥
प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥
प्रभु की आज्ञा को सत्य करके स्वीकार कर।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਮਿਟਾਵਹੁ ਆਪੁ ॥
गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥
गुरु के उपदेश से अपने अहंत्व को मिटा दे।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਜਾਪੁ ॥੪॥੪॥੭੩॥
हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥४॥४॥७३॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम जप, हमेशा प्रभु के गुणों का जाप करता रह॥ ४॥ ४ ॥ ७३॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥
गुरु का वचन सदा अविनाशी है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਕਟੀ ਜਮ ਫਾਸੀ ॥
गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥
गुरु के वचन द्वारा मृत्यु की फाँसी कट जाती है।

.
ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥
गुरु का वचन सदैव जीव के साथ रहता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਰਚੈ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੧॥
गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥
गुरु के वचन द्वारा मनुष्य राम के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥

ਜੋ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਸੁ ਮਨ ਕੈ ਕਾਮਿ ॥
जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥
गुरु जो कुछ भी देते हैं, वह आत्मा के लाभ हेतु है।

ਸੰਤ ਕਾ ਕੀਆ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत का कीआ सति करि मानि ॥१॥ रहाउ ॥
जो कुछ भी संत करते हैं, उसको सत्य जानकर स्वीकार करो ॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਅਟਲ ਅਛੇਦ ॥
गुर का बचनु अटल अछेद ॥
गुरु का वचन अटल एवं शाश्वत है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਕਟੇ ਭ੍ਰਮ ਭੇਦ ॥
गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥
गुरु के वचन से तमाम भ्रम एवं भेदभाव मिट जाते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਇ ॥
गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥
गुरु का वचन मनुष्य को छोड़कर कहीं नहीं जाता।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੨॥
गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥२॥
गुरु के वचन से ही प्राणी हरि का यश गायन करता है॥ २॥

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸਾਥ ॥
गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥
गुरु का वचन जीव के साथ रहता है।

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥ ॥
गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥
गुरु का वचन अनाथों का नाथ है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਨਰਕਿ ਨ ਪਵੈ ॥
गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥
गुरु के वचन द्वारा प्राणी नरक में नहीं जाता।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਵੈ ॥੩॥
गुर कै बचनि रसना अम्रितु रवै ॥३॥
गुरु के वचन द्वारा प्राणी की रसना नाम रूपी अमृत का आनंद प्राप्त करती है। ३ ।

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਪਰਗਟੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥
गुर का बचनु परगटु संसारि ॥
गुरु का वचन विश्व में प्रकट है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥
गुर कै बचनि न आवै हारि ॥
गुरु के वचन से प्राणी कभी पराजित नहीं होता।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਹੋਏ ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥
हे नानक ! जिस प्राणी पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाता है,

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਸਦਾ ਦਇਆਲ ॥੪॥੫॥੭੪॥
नानक सतिगुर सदा दइआल ॥४॥५॥७४॥
उस पर सतिगुरु जी हमेशा ही दयालु रहते हैं। ४॥ ५॥ ७४ ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਮਾਟੀ ਤੇ ਰਤਨੁ ॥
जिनि कीता माटी ते रतनु ॥
जिस भगवान ने मिट्टी से मेरे शरीर की रचना करके इसे रत्न जैसा अमूल्य बना दिया है,

ਗਰਭ ਮਹਿ ਰਾਖਿਆ ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਜਤਨੁ ॥
गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥
जिसने प्रयास करके मातृ-गर्भ में मेरी रक्षा की है,

ਜਿਨਿ ਦੀਨੀ ਸੋਭਾ ਵਡਿਆਈ ॥
जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥
जिसने मुझे शोभा एवं बड़ाई प्रदान की है,

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਆਠ ਪਹਰ ਧਿਆਈ ॥੧॥
तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥
मैं उस भगवान का आठ प्रहर सिमरन करता रहता हूँ॥ १ ॥

ਰਮਈਆ ਰੇਨੁ ਸਾਧ ਜਨ ਪਾਵਉ ॥
रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥
हे मेरे राम ! मुझे संतजनों की चरण धूलि प्राप्त हो।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਅਪੁਨਾ ਖਸਮੁ ਧਿਆਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु से मिलकर मैं अपने परमेश्वर का ध्यान करता रहूँ। १॥ रहाउ॥

ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਮੂੜ ਤੇ ਬਕਤਾ ॥
जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥
जिसने मुझे मूर्ख से प्रचारक बना दिया,

ਜਿਨਿ ਕੀਤਾ ਬੇਸੁਰਤ ਤੇ ਸੁਰਤਾ ॥
जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥
अचेत पुरुष से जिसने मुझे चतुर बना दिया है,

ਜਿਸੁ ਪਰਸਾਦਿ ਨਵੈ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥
जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥
जिसकी दया से मुझे नवनिधि प्राप्त हुई है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰਤ ਨਾਹੀ ॥੨॥
सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥२॥
उस प्रभु को मेरा हृदय विस्मृत नहीं करता॥ २॥

ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਨਿਥਾਵੇ ਕਉ ਥਾਨੁ ॥
जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥
जिस (प्रभु) ने मुझ निराश्रित को आश्रय दिया

ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਨਿਮਾਨੇ ਕਉ ਮਾਨੁ ॥
जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥
और जिस (प्रभु) ने मुझ तुच्छ प्राणी को आदर-सत्कार प्रदान किया है,

ਜਿਨਿ ਕੀਨੀ ਸਭ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥
जिसने मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण की हैं।

ਸਿਮਰਉ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥੩॥
सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥३॥
हे प्राणी ! दिन-रात, प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ध्यान करो ॥ ३।

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਾਇਆ ਸਿਲਕ ਕਾਟੀ ॥
जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥
जिसके प्रसाद (दया) से मोह-माया के बंधन कट गए हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਿਖੁ ਖਾਟੀ ॥
गुर प्रसादि अम्रितु बिखु खाटी ॥
गुरु की कृपा से (मोह-माया का) खट्टा विष अमृत बन गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਸ ਤੇ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥
कहु नानक इस ते किछु नाही ॥
हे नानक ! इस जीव से कुछ नहीं हो सकता।

ਰਾਖਨਹਾਰੇ ਕਉ ਸਾਲਾਹੀ ॥੪॥੬॥੭੫॥
राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥
मैं रक्षक-प्रभु की सराहना करता हूँ ॥४॥६॥७५॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਣਿ ਨਾਹੀ ਭਉ ਸੋਗੁ ॥
तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥
उस भगवान की शरण में आने से कोई भय एवं चिंता नहीं रहती।

ਉਸ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕਛੁ ਨ ਹੋਗੁ ॥
उस ते बाहरि कछु न होगु ॥
उसके हुक्म बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता।

ਤਜੀ ਸਿਆਣਪ ਬਲ ਬੁਧਿ ਬਿਕਾਰ ॥
तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥
मैंने चतुराई, बल एवं मन्दबुद्धि त्याग दी है।

ਦਾਸ ਅਪਨੇ ਕੀ ਰਾਖਨਹਾਰ ॥੧॥
दास अपने की राखनहार ॥१॥
वह अपने दास की प्रतिष्ठा बचाने वाला है ॥ १ ॥

ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ॥

जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥

हे मेरे मन ! तू प्रेमपूर्वक राम-नाम का सिमरन कर।

ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੇਰੈ ਸਦ ਸੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥१॥ रहाउ ॥

वह हृदय-घर में एवं बाहर सदैव तेरे साथ रहता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਤਿਸ ਕੀ ਟੇਕ ਮਨੈ ਮਹਿ ਰਾਖੁ ॥

तिस की टेक मनै महि राखु ॥

अपने मन में उसके सहारे की आशा रख।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥
गुर का सबदु अम्रित रसु चाखु ॥
हे प्राणी ! गुरु का शब्द अमृत रस है और इस अमृत रस का पान कर।

ਅਵਰਿ ਜਤਨ ਕਹਹੁ ਕਉਨ ਕਾਜ ॥
अवरि जतन कहहु कउन काज ॥
हे भाई! बताओ, तेरे अन्य प्रयास किस काम के हैं?

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖੈ ਆਪਿ ਲਾਜ ॥੨॥
करि किरपा राखै आपि लाज ॥२॥
प्रभु स्वयं ही कृपा करके मनुष्य की लाज बचाता है। २॥

ਕਿਆ ਮਾਨੁਖ ਕਹਹੁ ਕਿਆ ਜੋਰੁ ॥
किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥
बेचारा मनुष्य क्या कर सकता है? बताइए, उसमें कौन-सा बल है?

ਝੂਠਾ ਮਾਇਆ ਕਾ ਸਭੁ ਸੋਰੁ ॥
झूठा माइआ का सभु सोरु ॥
धन-दौलत का शोर-शराबा सब झूठा है।

ਕਰਣ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ॥
करण करावनहार सुआमी ॥
जगत् का स्वामी प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने एवं कराने वाला है।

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੩॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥
अन्तर्यामी (प्रभु) सर्वज्ञाता है। ३॥

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖੁ ਸਾਚਾ ਏਹੁ ॥
सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥
सर्व सुखों में सच्चा सुख यही है कि

ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ਮਨੈ ਮਹਿ ਲੇਹੁ ॥
गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥
गुरु की शिक्षा को अपने हृदय में स्मरण रखो।

ਜਾ ਕਉ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
जा कउ राम नाम लिव लागी ॥
जिसकी वृत्ति राम नाम में लगी हुई है,"

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਧੰਨੁ ਵਡਭਾਗੀ ॥੪॥੭॥੭੬॥
कहु नानक सो धंनु वडभागी ॥४॥७॥७६॥
हे नानक ! वह बड़े धन्य एवं भाग्यवान हैं ॥४॥७॥७६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਉਤਾਰੀ ਮੈਲੁ ॥
सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥
जिन्होंने हरि की कथा सुनकर अपने मन की अहंत्व रूपी मैल उतार दी है,

ਮਹਾ ਪੁਨੀਤ ਭਏ ਸੁਖ ਸੈਲੁ ॥
महा पुनीत भए सुख सैलु ॥
वे बहुत ही पवित्र एवं सुखी हो गए हैं।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸੰਗੁ ॥
वडै भागि पाइआ साधसंगु ॥
उन्हें बड़े भाग्य से संतों की संगति मिल गई है

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਿਉ ਲਾਗੋ ਰੰਗੁ ॥੧॥
पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥१॥
और उनका पारब्रह्म से प्रेम पड़ गया है। १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਜਨੁ ਤਾਰਿਓ ॥
हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥
हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करने वाले सेवक भवसागर से पार हो गए हैं।

ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਗੁਰਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु जी ने उन्हें तृष्णा रूपी अग्नि-सागर से पार कर दिया है ॥१॥ रहाउ॥

ਕਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਮਨ ਸੀਤਲ ਭਏ ॥
करि कीरतनु मन सीतल भए ॥
प्रभु का कीर्तन करने से उनका हृदय शीतल हो गया है और

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਗਏ ॥
जनम जनम के किलविख गए ॥
जन्म-जन्मांतरों के पाप धुल गए हैं।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਪੇਖੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
सरब निधान पेखे मन माहि ॥
समस्त खजाने उन्होंने अपने हृदय में देख लिए हैं।

ਅਬ ਢੂਢਨ ਕਾਹੇ ਕਉ ਜਾਹਿ ॥੨॥
अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥२॥
अब वह सुखों को ढूँढने के लिए बाहर क्यों जाएँ? ॥ २॥

ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਜਬ ਭਏ ਦਇਆਲ ॥
प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥
जब मेरा प्रभु दयालु हो गया तो

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਘਾਲ ॥
पूरन होई सेवक घाल ॥
उसके सेवक की सेवा सम्पूर्ण हो गई है।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਕੀਏ ਅਪਨੇ ਦਾਸ ॥
बंधन काटि कीए अपने दास ॥
उसने (मोह-माया के) बंधन काट कर अपना दास बना लिया है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਣਤਾਸ ॥੩॥
सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥३॥
अब वे गुणों के भण्डार प्रभु का सिमरन करते रहते हैं। ३॥

ਏਕੋ ਮਨਿ ਏਕੋ ਸਭ ਠਾਇ ॥
एको मनि एको सभ ठाइ ॥
केवल वही अंत:करण में है और केवल वही सर्वत्र विद्यमान है।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਭ ਜਾਇ ॥
पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥
सम्पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों को पूर्णतया भर रहा है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਭੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने समस्त भ्रम निवृत्त कर दिए हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੮॥੭੭॥
हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥४॥८॥७७॥
हे नानक ! हरि का सिमरन करके उसने सुख प्राप्त किया है ॥४॥८॥७७॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਅਗਲੇ ਮੁਏ ਸਿ ਪਾਛੈ ਪਰੇ ॥
अगले मुए सि पाछै परे ॥
हमारे जो पूर्वज प्राण त्याग चुके हैं, वह हमें भूल गए हैं।

ਉਬਰੇ ਸੇ ਬੰਧਿ ਲਕੁ ਖਰੇ ॥
जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥
जो बच गए हैं, वह कमर बांधकर धन एकत्रित करने के लिए खड़े हैं।

ਜਿਹ ਧੰਧੇ ਮਹਿ ਓਇ ਲਪਟਾਏ ॥
जिह धंधे महि ओइ लपटाए ॥
वह उन काम-धंधों में व्यस्त होते हैं, जिन में पूर्वज लीन हुए थे।

ਉਨ ਤੇ ਦੁਗੁਣ ਦਿੜੀ ਉਨ ਮਾਏ ॥੧॥
उन ते दुगुण दिड़ी उन माए ॥१॥
उनके मुकाबले में वह धन को दुगुणी शक्ति से जोड़ते हैं। १॥

ਓਹ ਬੇਲਾ ਕਛੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥
ओह बेला कछु चीति न आवै ॥
मृत्यु के उस समय को मनुष्य स्मरण नहीं करता।

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਤਾਹੂ ਲਪਟਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनसि जाइ ताहू लपटावै ॥१॥ रहाउ ॥
वह उससे चिपकता है, जिसने नाश हो जाना है। ॥१॥ रहाउ॥

ਆਸਾ ਬੰਧੀ ਮੂਰਖ ਦੇਹ ॥
आसा बंधी मूरख देह ॥
मूर्ख इन्सान का शरीर तृष्णाओं ने बांधा हुआ है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲਪਟਿਓ ਅਸਨੇਹ ॥
काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥
वह काम, क्रोध एवं सांसारिक मोह में फँसा रहता है।

ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਠਾਢੋ ਧਰਮ ਰਾਇ ॥
सिर ऊपरि ठाढो धरम राइ ॥
उसके सिर पर धर्मराज खड़ा है।

ਮੀਠੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਬਿਖਿਆ ਖਾਇ ॥੨॥
मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥२॥
मूर्ख इन्सान माया रूपी विष को मीठा समझकर खाता है। ॥२॥

ਹਉ ਬੰਧਉ ਹਉ ਸਾਧਉ ਬੈਰੁ ॥
हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥
(मूर्ख अहंकार में बातें करता है कि) मैं अपने शत्रु को बांध लुंगा और उसे पछाड़ दूंगा।

ਹਮਰੀ ਭੂਮਿ ਕਉਣੁ ਘਾਲੈ ਪੈਰੁ ॥
हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥
मेरी धरती पर कौन चरण रख सकता है।

ਹਉ ਪੰਡਿਤੁ ਹਉ ਚਤੁਰੁ ਸਿਆਣਾ ॥
हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥
मैं विद्वान हूँ, मैं चतुर एवं बुद्धिमान हूँ।

ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਨ ਬੁਝੈ ਬਿਗਾਨਾ ॥੩॥
करणैहारु न बुझै बिगाना ॥३॥
लेकिन मूर्ख इन्सान अपने कर्तार को नहीं जानता। ॥३॥

ਅਪੁਨੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਆਪੇ ਜਾਨੈ ॥
अपुनी गति मिति आपे जानै ॥
(परन्तु इन्सान के वश में क्या) अपनी गति एवं मूल्य प्रभु स्वयं ही जानता है।

ਕਿਆ ਕੋ ਕਹੈ ਕਿਆ ਆਖਿ ਵਖਾਨੈ ॥
किआ को कहै किआ आखि वखानै ॥
कोई क्या कह सकता है ? इन्सान किस तरह उसको कथन एवं वर्णन कर सकता है ?

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹਿ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਨਾ ॥
जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥
जिस किसी से हरि इन्सान को मिलाता है, उसी से वह मिल जाता है।

ਅਪਨਾ ਭਲਾ ਸਭ ਕਾਹੂ ਮੰਗਨਾ ॥੪॥
अपना भला सभ काहू मंगना ॥४॥
हरेक इन्सान अपनी भलाई माँगता है॥ ४ ॥

ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ॥
सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥
हे प्रभु! तू सूजनहार है, सब कुछ तेरे वश में है।

ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
अंतु नाही किछु पारावारु ॥
तेरे गुणों का कोई अन्त नहीं, तेरे स्वरूप का ओर-छोर नहीं मिल सकता।

ਦਾਸ ਅਪਨੇ ਕਉ ਦੀਜੈ ਦਾਨੁ ॥
दास अपने कउ दीजै दानु ॥
हे प्रभु! अपने दास को नाम का दान दीजिए।

ਕਬਹੂ ਨ ਵਿਸਰੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ॥੫॥੯॥੭੮॥
कबहू न विसरै नानक नामु ॥५॥९॥७८॥
हे नानक ! मुझे प्रभु का नाम कभी विस्मृत न हो ॥५॥९॥७८॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਨਹੀ ਹੋਤ ਛੁਟਾਰਾ ॥
अनिक जतन नही होत छुटारा ॥
अनेक यत्नों से भी (माया के बंधनों से) मुक्ति नहीं होती।

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਆਗਲ ਭਾਰਾ ॥
बहुतु सिआणप आगल भारा ॥
अधिक चतुराई करने से पापों का बोझ सिर पर और भी बढ़ता है।

ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਿਰਮਲ ਹੇਤ ॥
हरि की सेवा निरमल हेत ॥
जो व्यक्ति निर्मल मन एवं प्रेम से भगवान की सेवा करता है,

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾ ਸੇਤ ॥੧॥
प्रभ की दरगह सोभा सेत ॥१॥
वह प्रभु के दरबार में शोभा का पात्र बन जाता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਓਲਾ ॥
मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर के नाम का आश्रय लो।

ਤੁਝੈ ਨ ਲਾਗੈ ਤਾਤਾ ਝੋਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुझै न लागै ताता झोला ॥१॥ रहाउ ॥
तुझे हवा का गर्म झोका भी स्पर्श नहीं करेगा। ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਬੋਹਿਥੁ ਭੈ ਸਾਗਰ ਮਾਹਿ ॥
जिउ बोहिथु भै सागर माहि ॥
जैसे भयानक सागर में जहाज सहायक होता है,

ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਕ ਦੀਪਾਹਿ ॥
अंधकार दीपक दीपाहि ॥
जैसे दीपक अंधेरे में उजाला कर देता है,

ਅਗਨਿ ਸੀਤ ਕਾ ਲਾਹਸਿ ਦੂਖ ॥
अगनि सीत का लाहसि दूख ॥
जैसे अग्नि सर्दी की पीड़ा को दूर कर देती है,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨਿ ਹੋਵਤ ਸੁਖ ॥੨॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥२॥
वैसे ही नाम-स्मरण से मन को शांति प्राप्त हो जाती है। २ ॥

ਉਤਰਿ ਜਾਇ ਤੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ॥
उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥
नाम-सिमरन से तेरे मन की तृष्णा बुझ जाएगी,"

ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ ਸਗਲੀ ਆਸ ॥
पूरन होवै सगली आस ॥
समस्त आकांक्षा पूर्ण हो जाएँगी,

ਡੋਲੈ ਨਾਹੀ ਤੁਮਰਾ ਚੀਤੁ ॥
डोलै नाही तुमरा चीतु ॥
तेरा मन डावांडोल नहीं होगा,

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੀਤ ॥੩॥
अम्रित नामु जपि गुरमुखि मीत ॥३॥
यदि हे मित्र ! तू गुरु की दया से नाम अमृत का स्मरण करे। ॥३॥

ਨਾਮੁ ਅਉਖਧੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ॥
नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥
केवल वही मनुष्य नाम रूपी औषधि प्राप्त करता है,

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਵੈ ॥
करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥
जिसे प्रभु स्वयं दया धारण करके गुरु से दिलवाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸੈ ॥
हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥
हे नानक ! जिसके हृदय में हरि-परमेश्वर का नाम निवास करता है,

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਤਿਹ ਨਾਨਕ ਨਸੈ ॥੪॥੧੦॥੭੯॥
दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥४॥१०॥७९॥
उसके दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं ॥ ४॥ १०॥ ७९॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਬਹੁਤੁ ਦਰਬੁ ਕਰਿ ਮਨੁ ਨ ਅਘਾਨਾ ॥
बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥
अधिकतर धन संग्रह करने से भी इन्सान का मन तृप्त नहीं होता।

ਅਨਿਕ ਰੂਪ ਦੇਖਿ ਨਹ ਪਤੀਆਨਾ ॥
अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥
अनेक रूपसियों का सौन्दर्य देखकर भी इन्सान संतुष्ट नहीं होता।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਉਰਝਿਓ ਜਾਨਿ ਮੇਰੀ ॥
पुत्र कलत्र उरझिओ जानि मेरी ॥
अपने पुत्र एवं पत्नी के मोह में मेरे प्राण उलझे हुए हैं।

ਓਹ ਬਿਨਸੈ ਓਇ ਭਸਮੈ ਢੇਰੀ ॥੧॥
ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥१॥
मेरी धन-दौलत सब नाश हो जाएगी और वह संबधी राख का अम्बार हो जायेंगे ॥१॥

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਦੇਖਉ ਬਿਲਲਾਤੇ ॥
बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥
हरि-भजन के बिना में प्राणियों को विलाप करते देखता हूँ।

ਧ੍ਰਿਗੁ ਤਨੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਧਨੁ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु माइआ संगि राते ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति माया के मोह में मग्न रहते हैं, उनका तन एवं मन धिक्कार योग्य है ॥१॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਬਿਗਾਰੀ ਕੈ ਸਿਰਿ ਦੀਜਹਿ ਦਾਮ ॥
जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥
जैसे जैसे धन दौलत की पोटली बेगारी के सिर पर रख दी जाती है,

ਓਇ ਖਸਮੈ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਉਨ ਦੂਖ ਸਹਾਮ ॥
ओइ खसमै कै ग्रिहि उन दूख सहाम ॥
वह धन दौलत की पोटली स्वामी के घर पहुँच जाती है परन्तु बेगारी भार उठाने का कष्ट सहन करता है।

ਜਿਉ ਸੁਪਨੈ ਹੋਇ ਬੈਸਤ ਰਾਜਾ ॥
जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥
जैसे स्वप्न में साधारण पुरुष राजा बनकर विराजमान हो जाता है

ਨੇਤ੍ਰ ਪਸਾਰੈ ਤਾ ਨਿਰਾਰਥ ਕਾਜਾ ॥੨॥
नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥२॥
परन्तु जब वह अपने नेत्र खोलता है, तो उसका सारा कार्य व्यर्थ हो जाता है ॥२॥

ਜਿਉ ਰਾਖਾ ਖੇਤ ਊਪਰਿ ਪਰਾਏ ॥
जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥
जैसे कोई रखवाला फसल की रक्षा करता है,

ਖੇਤੁ ਖਸਮ ਕਾ ਰਾਖਾ ਉਠਿ ਜਾਏ ॥
खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥
फसल तो स्वामी की बन जाती है और रखवाला उठ कर अपने घर चला जाता है |

ਉਸੁ ਖੇਤ ਕਾਰਣਿ ਰਾਖਾ ਕੜੈ ॥
उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥
उस फसल के कारन रखवाला अधिक कष्ट सहन करता है,

ਤਿਸ ਕੈ ਪਾਲੈ ਕਛੂ ਨ ਪੜੈ ॥੩॥
तिस कै पालै कछू न पड़ै ॥३॥
परन्तु उसमें आखिर उसे कुछ नहीं मिलता ॥ ३॥

ਜਿਸ ਕਾ ਰਾਜੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਸੁਪਨਾ ॥
जिस का राजु तिसै का सुपना ॥
जिस प्रभु का दिया हुआ शासन मिलता है। उसी का दिया हुआ स्वप्न भी होता है।

ਜਿਨਿ ਮਾਇਆ ਦੀਨੀ ਤਿਨਿ ਲਾਈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ॥
जिनि माइआ दीनी तिनि लाई त्रिसना ॥
जिसने धन-दौलत प्रदान की है, उसने ही इसलिए तृणा उत्पन्न की है।

ਆਪਿ ਬਿਨਾਹੇ ਆਪਿ ਕਰੇ ਰਾਸਿ ॥
आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥
परमेश्वर स्वयं प्राणी का विनाश करता है और स्वयं ही उसका मनोरथ सफल करता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥੪॥੧੧॥੮੦॥
नानक प्रभ आगै अरदासि ॥४॥११॥८०॥
हे नानक ! प्रभु के समक्ष प्रार्थना किया कर ॥४॥११॥८०॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਬਹੁ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਪੇਖੀ ॥
बहु रंग माइआ बहु बिधि पेखी ॥
बहुरंगी मोहिनी मैंने अनेक विधियों से लुभाती हुई देखी है।

ਕਲਮ ਕਾਗਦ ਸਿਆਨਪ ਲੇਖੀ ॥
कलम कागद सिआनप लेखी ॥
अनेक विद्वानों ने अपनी कलम से कागज पर प्रवीण बातें लिखी हैं।

ਮਹਰ ਮਲੂਕ ਹੋਇ ਦੇਖਿਆ ਖਾਨ ॥
महर मलूक होइ देखिआ खान ॥
मैंने कुछ लोगों को चौधरी, राजा और सामन्त बनते देखा है।

ਤਾ ਤੇ ਨਾਹੀ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨ ॥੧॥
ता ते नाही मनु त्रिपतान ॥१॥
परन्तु ऐसा बन जाने पर भी उनका मन तृप्त नहीं हुआ। १॥

ਸੋ ਸੁਖੁ ਮੋ ਕਉ ਸੰਤ ਬਤਾਵਹੁ ॥
सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥
हे सन्तजनो ! मुझे वह सुख बताएँ,

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੂਝੈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
त्रिसना बूझै मनु त्रिपतावहु ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे तृष्णा मिट जाए और मन तृप्त हो जाए। १॥ रहाउ॥

ਅਸੁ ਪਵਨ ਹਸਤਿ ਅਸਵਾਰੀ ॥
असु पवन हसति असवारी ॥
चाहे मेरे पास वायुगतिगामी घोड़ों एवं हाथियों की सवारी हो,

ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ ਸੇਜ ਸੁੰਦਰਿ ਨਾਰੀ ॥
चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥
चन्दन का इत्र, सुन्दर नारियों की सेज हो,

ਨਟ ਨਾਟਿਕ ਆਖਾਰੇ ਗਾਇਆ ॥
नट नाटिक आखारे गाइआ ॥
रंगभूमि में नटों के नाटक, मेरे लिए गाने वाले कलाकार हों,

ਤਾ ਮਹਿ ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
ता महि मनि संतोखु न पाइआ ॥२॥
परन्तु उन में से हृदय को संतोष प्राप्त नहीं होता। २॥

ਤਖਤੁ ਸਭਾ ਮੰਡਨ ਦੋਲੀਚੇ ॥
तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥
राजसिंहासन, राजकीय दरबार, आभूषण, गलीचे,

ਸਗਲ ਮੇਵੇ ਸੁੰਦਰ ਬਾਗੀਚੇ ॥
सगल मेवे सुंदर बागीचे ॥
समूह फल, सुन्दर उद्यान,

ਆਖੇੜ ਬਿਰਤਿ ਰਾਜਨ ਕੀ ਲੀਲਾ ॥
आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥
आखेट का शौक और राजाओं की क्रीड़ाएँ-मनोरंजन,

ਮਨੁ ਨ ਸੁਹੇਲਾ ਪਰਪੰਚੁ ਹੀਲਾ ॥੩॥
मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥३॥
ऐसे झूठे प्रयासों से हृदय प्रसन्न नहीं होता। ३ ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤਨ ਸਚੁ ਕਹਿਆ ॥
करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥
संतों ने कृपा करके यह सत्य ही कहा है

ਸਰਬ ਸੂਖ ਇਹੁ ਆਨੰਦੁ ਲਹਿਆ ॥
सरब सूख इहु आनंदु लहिआ ॥
कि यह आनंद एवं सर्व सुख वही मनुष्य प्राप्त करता है,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
जो संतों की संगति करके भगवान का कीर्तन गायन करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੪॥
कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥
हे नानक! संतो की संगती सौभाग्यवश ही मिलती है

ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੋਈ ਸੁਹੇਲਾ ॥
जा कै हरि धनु सोई सुहेला ॥
जिसके पास हरि नाम रूपी धन है,

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧੨॥੮੧॥
प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥८१॥
वही सुप्रसन्न है। प्रभु की दया से संतों की संगति प्राप्त होती है। १॥ रहाउ दूजा ॥१२ ॥ ८१॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਾਣੀ ਜਾਣੈ ਇਹੁ ਤਨੁ ਮੇਰਾ ॥
प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥
प्राणी विचार करता है कि यह शरीर उसका अपना है।

ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਉਆਹੂ ਲਪਟੇਰਾ ॥
बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥
वह बार-बार उस शरीर से ही लिपटता है।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਗਿਰਸਤ ਕਾ ਫਾਸਾ ॥
पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥
जितनी देर तक पुत्र, स्त्री एवं गृहस्थ के मोह का फंदा उसके गले में पड़ा रहता है,

ਹੋਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ਕੇ ਦਾਸਾ ॥੧॥
होनु न पाईऐ राम के दासा ॥१॥
तब तक वह राम का दास नहीं बनता ॥ १ ॥

ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥
वह कौन-सी विधि है, जिससे राम का यश गायन किया जाए?

ਕਵਨ ਸੁ ਮਤਿ ਜਿਤੁ ਤਰੈ ਇਹ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे माता! वह कौन-सी बुद्धि है, जिससे यह प्राणी माया से पार हो जाए। १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਭਲਾਈ ਸੋ ਬੁਰਾ ਜਾਨੈ ॥
जो भलाई सो बुरा जानै ॥
जो कार्य मानव की भलाई का है, उसको वह बुरा समझता है।

ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਸੋ ਬਿਖੈ ਸਮਾਨੈ ॥
साचु कहै सो बिखै समानै ॥
यदि कोई उसको सत्य कहे, तो वह उसको विष के समान कड़वा लगता है।

ਜਾਣੈ ਨਾਹੀ ਜੀਤ ਅਰੁ ਹਾਰ ॥
जाणै नाही जीत अरु हार ॥
वह नहीं जानता कि जीत क्या है और हार क्या है ?

ਇਹੁ ਵਲੇਵਾ ਸਾਕਤ ਸੰਸਾਰ ॥੨॥
इहु वलेवा साकत संसार ॥२॥
इस दुनिया में शाक्त व्यक्ति का यही जीवन-आचरण है। २॥

ਜੋ ਹਲਾਹਲ ਸੋ ਪੀਵੈ ਬਉਰਾ ॥
जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥
जो विष है, पागल पुरुष उसको पान करता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਜਾਨੈ ਕਰਿ ਕਉਰਾ ॥
अम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥
प्रभु के अमृत नाम को वह कड़वा समझता है।

ਸਾਧਸੰਗ ਕੈ ਨਾਹੀ ਨੇਰਿ ॥
साधसंग कै नाही नेरि ॥
वह साधु-संतों की संगति के निकट नहीं आता,

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਭ੍ਰਮਤਾ ਫੇਰਿ ॥੩॥
लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥३॥
जिससे वह चौरासी लाख योनियों में भटकता फिरता है |

ਏਕੈ ਜਾਲਿ ਫਹਾਏ ਪੰਖੀ ॥
एकै जालि फहाए पंखी ॥
समस्त जीव पक्षी माया ने अपने मोह रूपी जाल में फंसाए हुए हैं।

ਰਸਿ ਰਸਿ ਭੋਗ ਕਰਹਿ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ॥
रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥
मनुष्य स्वाद लेकर अनेक प्रकार के भोग भोगता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
कहु नानक जिसु भए क्रिपाल ॥
हे नानक ! कहो- जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपालु हो गया है,

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤਾ ਕੇ ਕਾਟੇ ਜਾਲ ॥੪॥੧੩॥੮੨॥
गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥४॥१३॥८२॥
पूर्ण गुरु ने उसके मोह-माया के बंधन काट दिए हैं। ४॥ १३ ॥८२॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਤਉ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਈਐ ॥
तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥
हे प्रभु! तेरी कृपा से जीवन-मार्ग मिलता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥
प्रभु की कृपा से नाम का ध्यान किया जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬੰਧਨ ਛੁਟੈ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥
प्रभु की कृपा से प्राणी बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਤਉ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਉਮੈ ਤੁਟੈ ॥੧॥
तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥
हे प्रभु! तेरी कृपा से अहंकार दूर हो जाता है। १॥

ਤੁਮ ਲਾਵਹੁ ਤਉ ਲਾਗਹ ਸੇਵ ॥
तुम लावहु तउ लागह सेव ॥
हे ईश्वर ! यदि तू मुझे अपनी सेवा में लगाए, तो ही मैं तेरी सेवा-भक्ति में लगता हूँ।

ਹਮ ਤੇ ਕਛੁ ਨ ਹੋਵੈ ਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम ते कछू न होवै देव ॥१॥ रहाउ ॥
हे देव ! अपने आप में कुछ भी नहीं कर सकता। १॥ रहाउ ।

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗਾਵਾ ਬਾਣੀ ॥
तुधु भावै ता गावा बाणी ॥
हे ईश्वर ! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं तेरी वाणी गा सकता हूँ।

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸਚੁ ਵਖਾਣੀ ॥
तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥
हे प्रभु! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं सत्य बोलता हूँ।

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰ ਮਇਆ ॥
तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥
यदि तुझे अच्छा लगे तो ही सतिगुरु की दया जीव पर होती है।

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਦਇਆ ॥੨॥
सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥२॥
हे मेरे ठाकुर ! तेरी दया से ही जीव को सर्व सुख प्राप्त होते हैं। ॥२॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮਾ ॥
जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥
हे प्रभु! जो तुझे उपयुक्त लगता है, वही पवित्र कर्म है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਸਚੁ ਧਰਮਾ ॥
जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥
हे नाथ ! जो तुझे लुभाता है, वही सत्य धर्म है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਗੁਣ ਤੁਮ ਹੀ ਪਾਸਿ ॥
सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥
सर्वगुणों का खजाना तेरे पास है।

ਤੂੰ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵਕ ਅਰਦਾਸਿ ॥੩॥
तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥३॥
हे प्रभु! तू मेरा स्वामी है और तेरा सेवक तेरे समक्ष यही प्रार्थना करता है |

ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥
मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥
ईश्वर के प्रेम में मन एवं तन पवित्र हो जाते है |

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਪਾਵਉ ਸਤਸੰਗਿ ॥
सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥
सत्संग में जाने से सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਨਾਮਿ ਤੇਰੈ ਰਹੈ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
नामि तेरै रहै मनु राता ॥
हे प्रभु! मेरा मन तेरे नाम में ही मग्न रहे।

ਇਹੁ ਕਲਿਆਣੁ ਨਾਨਕ ਕਰਿ ਜਾਤਾ ॥੪॥੧੪॥੮੩॥
इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥४॥१४॥८३॥
हे नानक ! मैं उसे ही कल्याण समझता हूँ |॥४॥१४॥८३॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਆਨ ਰਸਾ ਜੇਤੇ ਤੈ ਚਾਖੇ ॥
आन रसा जेते तै चाखे ॥
हे मेरी जिव्हा ! हरि-रस के सिवाय अन्य जितने भी रस तू चखती है,

ਨਿਮਖ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਤੇਰੀ ਲਾਥੇ ॥
निमख न त्रिसना तेरी लाथे ॥
उनसे तेरी तृष्णा एक क्षण-मात्र के लिए भी दूर नहीं होती।

ਹਰਿ ਰਸ ਕਾ ਤੂੰ ਚਾਖਹਿ ਸਾਦੁ ॥
हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥
यदि तू हरि-रस की मिठास चख ले तो

ਚਾਖਤ ਹੋਇ ਰਹਹਿ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥੧॥
चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥१॥
तू इसको चखकर चकित हो जाएगी। ॥ १ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਸਨਾ ਪੀਉ ਪਿਆਰੀ ॥
अम्रितु रसना पीउ पिआरी ॥
हे मेरी प्रिय जिव्हा! तू हरि-रस रूपी अमृत का पान कर।

ਇਹ ਰਸ ਰਾਤੀ ਹੋਇ ਤ੍ਰਿਪਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इह रस राती होइ त्रिपतारी ॥१॥ रहाउ ॥
इस हरि-रस के स्वाद में अनुरक्त हुई तू तृप्त हो जाएगी। ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹੇ ਜਿਹਵੇ ਤੂੰ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥
हे जिव्हा ! तू राम का यशोगान कर।

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਉ ॥
निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥
क्षण-क्षण तू हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान कर।

ਆਨ ਨ ਸੁਨੀਐ ਕਤਹੂੰ ਜਾਈਐ ॥
आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥
हरि-परमेश्वर के नाम के अलावा कुछ भी सुनना नहीं चाहिए और सत्संगति के अलावा कहीं और नहीं जाना चाहिए।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੨॥
साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥२॥
सत्संग बड़े सौभाग्य से मिलती है ॥ २ ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਜਿਹਵੇ ਆਰਾਧਿ ॥
आठ पहर जिहवे आराधि ॥
हे जिव्हा ! आठ प्रहर ही तू अगाध एवं

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਠਾਕੁਰ ਆਗਾਧਿ ॥
पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥
जगत् के ठाकुर परब्रह्म की आराधना कर।

ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੀ ॥
ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥
यहाँ (इहलोक) और वहाँ (परलोक) तू सदैव सुप्रसन्न रहेगी।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਰਸਨ ਅਮੋਲੀ ॥੩॥
हरि गुण गावत रसन अमोली ॥३॥
हे जिव्हा ! प्रभु का यशोगान करने से तू अमूल्य गुणों वाली हो जाएगी। ॥ ३ ॥

ਬਨਸਪਤਿ ਮਉਲੀ ਫਲ ਫੁਲ ਪੇਡੇ ॥
बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥
चाहे वनस्पति खिली रहती है और पेड़ों को फल एवं फूल लगे होते हैं

ਇਹ ਰਸ ਰਾਤੀ ਬਹੁਰਿ ਨ ਛੋਡੇ ॥
इह रस राती बहुरि न छोडे ॥
परन्तु हरि-रस में मग्न हुई जिव्हा इस हरि-रस को नहीं छोड़ती

ਆਨ ਨ ਰਸ ਕਸ ਲਵੈ ਨ ਲਾਈ ॥
आन न रस कस लवै न लाई ॥
चूंकि कोई दूसरे मीठे व नमकीन स्वाद इसके तुल्य नहीं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਭਏ ਹੈ ਸਹਾਈ ॥੪॥੧੫॥੮੪॥
कहु नानक गुर भए है सहाई ॥४॥१५॥८४॥
हे नानक ! गुरु मेरे सहायक हो गए हैं। ॥४॥१५॥८४॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਮਨੁ ਮੰਦਰੁ ਤਨੁ ਸਾਜੀ ਬਾਰਿ ॥
मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥
मन एक मन्दिर है और तन को इसके पास मेड़ बनाया गया है।

ਇਸ ਹੀ ਮਧੇ ਬਸਤੁ ਅਪਾਰ ॥
इस ही मधे बसतु अपार ॥
इस मन्दिर में अनन्त प्रभु की नाम-रूपी वस्तु विद्यमान है।

ਇਸ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਸੁਨੀਅਤ ਸਾਹੁ ॥
इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥
संतों से सुनते हैं कि इस मन्दिर में ही नाम देने वाला साहूकार प्रभु निवास करता है |

ਕਵਨੁ ਬਾਪਾਰੀ ਜਾ ਕਾ ਊਹਾ ਵਿਸਾਹੁ ॥੧॥
कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥१॥
वह कौन सा व्यापारी है जिसका वँहा विश्वास किया जाता है ॥१ ॥

ਨਾਮ ਰਤਨ ਕੋ ਕੋ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
नाम रतन को को बिउहारी ॥
कोई विरला ही व्यापारी है, जो नाम रत्न का व्यापार करता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭੋਜਨੁ ਕ ਰੇ ਆਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित भोजनु करे आहारी ॥१॥ रहाउ ॥
वह व्यापारी नाम रूपी अमृत को अपना आहार बनाता है। ॥१॥ रहाउ॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਸੇਵ ਕਰੀਜੈ ॥
मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥
मैं अपना मन एवं तन उसे अर्पण करके उसकी सेवा करूंगा

ਕਵਨ ਸੁ ਜੁਗਤਿ ਜਿਤੁ ਕਰਿ ਭੀਜੈ ॥
कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥
जो मुझे यह बताए कि वह कौन-सी युक्ति है जिससे परमात्मा हर्षित होता है।

ਪਾਇ ਲਗਉ ਤਜਿ ਮੇਰਾ ਤੇਰੈ ॥
पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥
अपना अहंत्व मेरी-तेरी गंवा कर मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ।

ਕਵਨੁ ਸੁ ਜਨੁ ਜੋ ਸਉਦਾ ਜੋਰੈ ॥੨॥
कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥२॥
वह कौन-सा मनुष्य है, जो मुझे भी नाम के व्यापार में लगा दे॥ २॥

ਮਹਲੁ ਸਾਹ ਕਾ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥
महलु साह का किन बिधि पावै ॥
किस विधि से मैं उस व्यापारी के मन्दिर पहुँच सकता हूँ।

ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਭੀਤਰਿ ਬੁਲਾਵੈ ॥
कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥
वह कौन-सी विधि है जिस द्वारा वह मुझे अन्दर बुलवा ले ?

ਤੂੰ ਵਡ ਸਾਹੁ ਜਾ ਕੇ ਕੋਟਿ ਵਣਜਾਰੇ ॥
तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥
हे प्रभु! तू बड़ा व्यापारी है, जिसके करोड़ों ही दुकानदार हैं।

ਕਵਨੁ ਸੁ ਦਾਤਾ ਲੇ ਸੰਚਾਰੇ ॥੩॥
कवनु सु दाता ले संचारे ॥३॥
वह कौन-सा दाता है जो मुझे हाथ से पकड़ कर उसके मन्दिर में पहुँचा दे। ३॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਨਿਜ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ॥
खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥
खोजते-खोजते मैंने अपना धाम (गृह) पा लिया है।

ਅਮੋਲ ਰਤਨੁ ਸਾਚੁ ਦਿਖਲਾਇਆ ॥
अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु ने मुझे अमूल्य रत्न दिखा दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਬ ਮੇਲੇ ਸਾਹਿ ॥
करि किरपा जब मेले साहि ॥
जब व्यापारी (प्रभु) कृपा करता है, वह प्राणी को अपने साथ मिला लेता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੈ ਵੇਸਾਹਿ ॥੪॥੧੬॥੮੫॥
कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥४॥१६॥८५॥
हे नानक ! यह तब होता है, जब प्राणी गुरु जी पर विश्वास धारण कर लेता है ॥४॥१६॥८५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ਗੁਆਰੇਰੀ ॥
गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥
गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਰਹੈ ਇਕ ਰੰਗਾ ॥
रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥
जो व्यक्ति दिन-रात भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਜਾਣੈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗਾ ॥
प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥
और प्रभु को हमेशा अपने आसपास समझते हैं,

ਠਾਕੁਰ ਨਾਮੁ ਕੀਓ ਉਨਿ ਵਰਤਨਿ ॥
ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥
उन्होंने ठाकुर के नाम को अपना जीवन-आचरण बना लिया है।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਵਨੁ ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ॥੧॥
त्रिपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥१॥
वह ईश्वर के दर्शनों द्वारा संतुष्ट एवं तृप्त हो जाते हैं। १॥

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਮਨ ਤਨ ਹਰੇ ॥
हरि संगि राते मन तन हरे ॥
ईश्वर के साथ अनुरक्त होने से उनका मन एवं तन प्रफुल्लित हो जाते हैं।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे की सरनी परे ॥१॥ रहाउ ॥
वे पूर्ण गुरु की शरण लेते हैं। १॥ रहाउ ॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਆਤਮ ਆਧਾਰ ॥
चरण कमल आतम आधार ॥
ईश्वर के चरण कमल उनकी आत्मा का आधार बन जाता है।

ਏਕੁ ਨਿਹਾਰਹਿ ਆਗਿਆਕਾਰ ॥
एकु निहारहि आगिआकार ॥
वह एक ईश्वर को ही देखते हैं और उसके आज्ञाकारी बन जाते हैं।

ਏਕੋ ਬਨਜੁ ਏਕੋ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
एको बनजु एको बिउहारी ॥
वे एक नाम का ही व्यापार करते हैं और नाम-सिमरन ही उनका व्यवसाय बन जाता है।

ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਹਿ ਬਿਨੁ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ॥੨॥
अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥२॥
निरंकार परमेश्वर के बिना वह किसी को भी नहीं जानते। ॥२॥

ਹਰਖ ਸੋਗ ਦੁਹਹੂੰ ਤੇ ਮੁਕਤੇ ॥
हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥
वे हर्ष एवं शोक दोनों से मुक्त हैं।

ਸਦਾ ਅਲਿਪਤੁ ਜੋਗ ਅਰੁ ਜੁਗਤੇ ॥
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥
हमेशा ही संसार से निर्लिप्त और प्रभु से जुड़े रहने की विधि उनको आती है।

ਦੀਸਹਿ ਸਭ ਮਹਿ ਸਭ ਤੇ ਰਹਤੇ ॥
दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥
वे सबसे प्रेम करते दिखाई देते हैं और सबसे अलग भी दिखाई देते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਓਇ ਧਿਆਨੁ ਧਰਤੇ ॥੩॥
पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥३॥
वे पारब्रह्म-प्रभु के स्मरण में वृत्ति लगाकर रखते हैं। ॥३॥

ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਵਨ ਵਖਾਨਉ ॥
संतन की महिमा कवन वखानउ ॥
संतों की महिमा का मैं क्या-क्या वर्णन कर सकता हूँ।

ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਕਿਛੁ ਮਿਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨਉ ॥
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥
उनका बोध अनन्त है लेकिन मैं उनका मूल्य नहीं जानता।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮੋਹਿ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥
पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥
हे पारब्रह्म-परमेश्वर ! मुझ पर कृपा कीजिए,

ਧੂਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਨਾਨਕ ਦੀਜੈ ॥੪॥੧੭॥੮੬॥
धूरि संतन की नानक दीजै ॥४॥१७॥८६॥
नानक को संतों की चरण-धूलि प्रदान करो ॥४॥१७॥८६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਸਖਾ ਤੂੰਹੀ ਮੇਰਾ ਮੀਤੁ ॥
तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥
हे ईश्वर ! तू ही मेरा साथी है और तू ही मेरा मित्र।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਹੀਤੁ ॥
तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥
तू ही मेरा प्रियतम है और तेरे साथ ही मेरा प्रेम है।

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਪਤਿ ਤੂਹੈ ਮੇਰਾ ਗਹਣਾ ॥
तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥
तू ही मेरी प्रतिष्ठा है और तू ही मेरा आभूषण है।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਨਿਮਖੁ ਨ ਜਾਈ ਰਹਣਾ ॥੧॥
तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥१॥
तेरे बिना में एक क्षण भर भी नहीं रह सकता ॥ १ ॥

ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਲਾਲਨ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥
तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥
हे प्रभु! तू ही मेरा सुन्दर लाल है और तू ही मेरे प्राण है।

ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਖਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥१॥ रहाउ ॥
तू मेरा स्वामी है और तू ही मेरा सामन्त है। १॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਤੁਮ ਰਾਖਹੁ ਤਿਵ ਹੀ ਰਹਨਾ ॥
जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥
हे ठाकुर ! जैसे तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ।

ਜੋ ਤੁਮ ਕਹਹੁ ਸੋਈ ਮੋਹਿ ਕਰਨਾ ॥
जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥
जो कुछ तुम कहते हो, वही में करता हूँ।

ਜਹ ਪੇਖਉ ਤਹਾ ਤੁਮ ਬਸਨਾ ॥
जह पेखउ तहा तुम बसना ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, उधर ही मैं तेरा निवास पाता हूँ।

ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਜਪਉ ਤੇਰਾ ਰਸਨਾ ॥੨॥
निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥२॥
हे निर्भय प्रभु! अपनी जिह्म से मैं तेरे नाम का जाप करता रहता हूँ। ॥२॥

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਨਵ ਨਿਧਿ ਤੂੰ ਭੰਡਾਰੁ ॥
तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥
हे प्रभु! तू मेरी नवनिधि है और तू ही मेरा भण्डार है।

ਰੰਗ ਰਸਾ ਤੂੰ ਮਨਹਿ ਅਧਾਰੁ ॥
रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥
हे स्वामी ! तेरे प्रेम से मैं साँचा हुआ हूँ और तू मेरे मन का आधार है।

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਸੋਭਾ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਰਚੀਆ ॥
तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥
तू ही मेरी शोभा है और तेरे साथ ही मैं सुरति लगाकर रखता हूँ।

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਓਟ ਤੂੰ ਹੈ ਮੇਰਾ ਤਕੀਆ ॥੩॥
तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥३॥
तू मेरी शरण है और तू ही मेरा आश्रय है। ॥३॥

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਤੁਹੀ ਧਿਆਇਆ ॥
मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥
हे प्रभु! मैं अपने मन एवं तन में तेरा ही ध्यान करता रहता हूँ।

ਮਰਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥
तेरा भेद मैंने गुरु जी से प्राप्त किया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਦ੍ਰਿੜਿਆ ਇਕੁ ਏਕੈ ॥
सतिगुर ते द्रिड़िआ इकु एकै ॥
सतिगुरु से मैंने एक ईश्वर का नाम-सिमरन ही दृढ़ किया है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਟੇਕੈ ॥੪॥੧੮॥੮੭॥
नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥१८॥८७॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम ही मेरा एक आधार हैं ॥४॥१८॥८७॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਬਿਆਪਤ ਹਰਖ ਸੋਗ ਬਿਸਥਾਰ ॥
बिआपत हरख सोग बिसथार ॥
माया का सुख-दुख में प्रसार है।

ਬਿਆਪਤ ਸੁਰਗ ਨਰਕ ਅਵਤਾਰ ॥
बिआपत सुरग नरक अवतार ॥
वह स्वर्ग में जन्म लेने वाले जीवों को सुख रूप में तथा नरक के जीवों को दुख रूप में प्रभावित करती है।

ਬਿਆਪਤ ਧਨ ਨਿਰਧਨ ਪੇਖਿ ਸੋਭਾ ॥
बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥
यह धनवानों, कगालों एवं शोभावानों पर प्रभाव करती देखी जाती है।

ਮੂਲੁ ਬਿਆਧੀ ਬਿਆਪਸਿ ਲੋਭਾ ॥੧॥
मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥१॥
यह लोभ रूप में जीवों में फैली हुई है और तमाम रोगों की जड़ है। ॥१॥

ਮਾਇਆ ਬਿਆਪਤ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰੀ ॥
माइआ बिआपत बहु परकारी ॥
माया अनेक विधियों से प्रभाव करती है।

ਸੰਤ ਜੀਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु! तेरी शरण में साधु-संत इसके प्रभाव के बिना ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। १॥ रहाउ॥

ਬਿਆਪਤ ਅਹੰਬੁਧਿ ਕਾ ਮਾਤਾ ॥
बिआपत अह्मबुधि का माता ॥
माया उससे लिपटी हुई है जो अहंबुद्धि से मदहोश हुआ है।

ਬਿਆਪਤ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥
जो अपने पुत्रों एवं भार्या के प्रेम में अनुरक्त हुआ है, माया उससे भी लिपटी हुई है।

ਬਿਆਪਤ ਹਸਤਿ ਘੋੜੇ ਅਰੁ ਬਸਤਾ ॥
बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥
मोहिनी उससे लिपटी हुई है जो हाथियों, घोड़ों एवं सुन्दर वस्त्रों में लीन है।

ਬਿਆਪਤ ਰੂਪ ਜੋਬਨ ਮਦ ਮਸਤਾ ॥੨॥
बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥२॥
यह (मोहिनी) उस पुरुष से लिपटी हुई है जो सुन्दरता एवं यौवन के नशे में मस्त हुआ है। ॥२॥

ਬਿਆਪਤ ਭੂਮਿ ਰੰਕ ਅਰੁ ਰੰਗਾ ॥
बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥
माया धरती के स्वामियों, निर्धनों एवं भोग-विलासियों से लिपटी हुई है।

ਬਿਆਪਤ ਗੀਤ ਨਾਦ ਸੁਣਿ ਸੰਗਾ ॥
बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥
यह सभाओं में गीत एवं राग श्रवण करने वालों से लिपटी हुई है।

ਬਿਆਪਤ ਸੇਜ ਮਹਲ ਸੀਗਾਰ ॥
बिआपत सेज महल सीगार ॥
यह सेज, हार-श्रृंगार, महलों में व्याप्त हुई है।

ਪੰਚ ਦੂਤ ਬਿਆਪਤ ਅੰਧਿਆਰ ॥੩॥
पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥३॥
यह मोह के अन्धेरे में कामादिक पांचों दूत बनकर प्रभाव डाल रही है॥ ३॥

ਬਿਆਪਤ ਕਰਮ ਕਰੈ ਹਉ ਫਾਸਾ ॥
बिआपत करम करै हउ फासा ॥
यह मोहिनी उसके भीतर व्याप्त हुई है जो अहंकार में फंसकर अपना कर्म करता है।

ਬਿਆਪਤਿ ਗਿਰਸਤ ਬਿਆਪਤ ਉਦਾਸਾ ॥
बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥
गृहस्थ में भी यह हम पर प्रभाव डालती है और त्याग में भी प्रभावित करती है।

ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰ ਬਿਆਪਤ ਇਹ ਜਾਤਿ ॥
आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥
हमारे चरित्र, कामकाज और जाति द्वारा मोहिनी हम पर आक्रमण करती हैं।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਬਿਆਪਤ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਤ ॥੪॥
सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥४॥
सिवाय उनके जो परमेश्वर के प्रेम में अनुरक्त है, यह प्रत्येक पदार्थ को चिपकती है। ॥४॥

ਸੰਤਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥
संतों के बन्धन प्रभु ने काट दिए हैं।

ਤਾ ਕਉ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇ ॥
ता कउ कहा बिआपै माइ ॥
मोहिनी उनको किस तरह चिपक सकती है ?

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਧੂਰਿ ਸੰਤ ਪਾਈ ॥
कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥
हे नानक ! जिसको संतों की चरण-धूलि प्राप्त हुई है

ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਮਾਈ ॥੫॥੧੯॥੮੮॥
ता कै निकटि न आवै माई ॥५॥१९॥८८॥
मोहिनी उनके निकट नहीं आती ।॥५॥१९॥८८॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਨੈਨਹੁ ਨੀਦ ਪਰ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਵਿਕਾਰ ॥
नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥
पराई नारी के सौन्दर्य को कामवासना रूपी विकृत दृष्टि से देखने से नेत्र निद्रा में सोए हुए हैं।

ਸ੍ਰਵਣ ਸੋਏ ਸੁਣਿ ਨਿੰਦ ਵੀਚਾਰ ॥
स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥
परनिन्दा के विचारों को सुनकर कान सोए हुए हैं।

ਰਸਨਾ ਸੋਈ ਲੋਭਿ ਮੀਠੈ ਸਾਦਿ ॥
रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥
मीठे पदार्थों के स्वाद की तृष्णा-लालसा में जिह्म सोई हुई है।

ਮਨੁ ਸੋਇਆ ਮਾਇਆ ਬਿਸਮਾਦਿ ॥੧॥
मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥१॥
मन माया की आश्चर्यजनक लीला को देखकर सोया हुआ है। ॥१॥

ਇਸੁ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਕੋਈ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ॥
इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै ॥
शरीर रूपी घर में कोई विरला पुरुष ही जागता रहता है

ਸਾਬਤੁ ਵਸਤੁ ਓਹੁ ਅਪਨੀ ਲਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥१॥ रहाउ ॥
और वह अपनी पूँजी सुरक्षित पा लेता है। १ ॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਸਹੇਲੀ ਅਪਨੈ ਰਸ ਮਾਤੀ ॥
सगल सहेली अपनै रस माती ॥
मन की सखियां पाँच ज्ञानेन्द्रियां अपने स्वाद में मस्त हैं।

ਗ੍ਰਿਹ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਖਬਰਿ ਨ ਜਾਤੀ ॥
ग्रिह अपुने की खबरि न जाती ॥
वह अपने घर की रक्षा करनी नहीं जानती।

ਮੁਸਨਹਾਰ ਪੰਚ ਬਟਵਾਰੇ ॥
मुसनहार पंच बटवारे ॥
पांचों दुष्ट विकार अपहरणकर्ता एवं लुटेरे हैं।

ਸੂਨੇ ਨਗਰਿ ਪਰੇ ਠਗਹਾਰੇ ॥੨॥
सूने नगरि परे ठगहारे ॥२॥
लुटेरे सुनसान नगर में आ जाते हैं। ॥२॥

ਉਨ ਤੇ ਰਾਖੈ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਈ ॥
उन ते राखै बापु न माई ॥
उनसे माता-पिता बचा नहीं सकते।

ਉਨ ਤੇ ਰਾਖੈ ਮੀਤੁ ਨ ਭਾਈ ॥
उन ते राखै मीतु न भाई ॥
मित्र एवं भाई भी उनसे रक्षा नहीं कर सकते।

दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥
दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥
दौलत एवं चतुरता से वे नहीं रुकते।

साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥३॥
साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥३॥
लेकिन सत्संग में वे दुष्ट वश में आ जाते हैं। ॥३॥

करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥
करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥
हे सारिंगपाणि प्रभु! मुझ पर कृपा कीजिए।

संतन धूरि सरब निधान ॥
संतन धूरि सरब निधान ॥
मुझे संतों की चरण-धूलि प्रदान कीजिए चूंकि मेरे लिए यह चरण-धूलि ही सर्वनिधि है।

साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥
साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥
सतिगुरु की संगति में नाम रूपी पूँजी सुरक्षित रहती है।

नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥४॥
नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥४॥
नानक पारब्रह्म प्रभु के प्रेम में जागता है॥ ४॥

सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥
सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥
केवल वही जागता है जिस पर प्रभु दयालु है।

इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८९॥
इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८९॥
ये पूँजी, पदार्थ और सम्पति फिर बचे रहते हैं। १॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८९॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਖਾਨ ਸੁਲਤਾਨ ॥
जा कै वसि खान सुलतान ॥
हे प्राणी ! जिस प्रभु के वश में सरदार और सुल्तान हैं।

ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਗਲ ਜਹਾਨ ॥
जा कै वसि है सगल जहान ॥
जिसके अधीन सारा संसार है।

ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥
जिसके करने से सब कुछ हो रहा है,

ਤਿਸ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੧॥
तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥१॥
उससे बाहर कुछ भी नहीं ॥ १ ॥

ਕਹੁ ਬੇਨੰਤੀ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਹਿ ॥
कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥
हे प्राणी ! अपने सतिगुरु के पास विनती कर।

ਕਾਜ ਤੁਮਾਰੇ ਦੇਇ ਨਿਬਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काज तुमारे देइ निबाहि ॥१॥ रहाउ ॥
वह तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण कर देगा। १॥ रहाउ ॥

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਜਾ ਕਾ ਦਰਬਾਰੁ ॥
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥
उस प्रभु का दरबार सबसे ऊँचा है।

ਸਗਲ ਭਗਤ ਜਾ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
सगल भगत जा का नामु अधारु ॥
उसका नाम उसके समस्त भक्तों का आधार है।

ਸਰਬ ਬਿਆਪਿਤ ਪੂਰਨ ਧਨੀ ॥
सरब बिआपित पूरन धनी ॥
जगत् का स्वामी प्रभु सबमें विद्यमान है।

ਜਾ ਕੀ ਸੋਭਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਬਨੀ ॥੨॥
जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥
उसकी शोभा समस्त जीवों के हृदय में प्रकट है। ॥२॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖ ਡੇਰਾ ਢਹੈ ॥
जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥
जिस प्रभु का सिमरन करने से दुखों का पहाड़ नष्ट हो जाता है।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਜਮੁ ਕਿਛੂ ਨ ਕਹੈ ॥
जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥
जिसका सिमरन करने से यमदूत तुझे दुख नहीं देता।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਹੋਤ ਸੂਕੇ ਹਰੇ ॥
जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥
जिसकी आराधना करने से नीरस मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਡੂਬਤ ਪਾਹਨ ਤਰੇ ॥੩॥
जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥
जिसकी आराधना करने से डूबते हुए पत्थर अर्थात् पापी जीव भी भवसागर से पार हो जाते हैं। ३॥

ਸੰਤ ਸਭਾ ਕਉ ਸਦਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥
संत सभा कउ सदा जैकारु ॥
संतों की सभा को मैं सदैव नमन करता हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ॥
हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥
हरि-परमेश्वर का नाम संतजनों के प्राणों का आधार है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਸੁਣੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥
हे नानक ! प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुन ली है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੋ ਕਉ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸਿ ॥੪॥੨੧॥੯੦॥
संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥९०॥
संतों की कृपा से मुझे ईश्वर के नाम में निवास मिल गया है ॥४॥२१॥९०॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਦਰਸਨਿ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥
सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥
सतिगुरु के दर्शनों से तृष्णा की अग्नि बुझ गई है।

ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਤ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥
सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥
सतिगुरु को मिलने से अहंकार मिट गया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਮਨੁ ਡੋਲੈ ॥
सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥
सतिगुरु की संगति में मन डाँवाडोल नहीं होता।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੋਲੈ ॥੧॥
अम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥
गुरु के माध्यम से प्राणी अमृत वाणी का उच्चारण करता है॥ १॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਸਾਚਾ ਜਾ ਸਚ ਮਹਿ ਰਾਤੇ ॥
सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥
जब से मेरा मन सत्य के प्रेम में मग्न हुआ है, तब से मुझे वह सत्य-प्रभु सारी दुनिया में निवास करता दिखाई देता है।

ਸੀਤਲ ਸਾਤਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪ੍ਰਭ ਜਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के माध्यम से प्रभु को जानकर मेरा मन शीतल एवं शांत-स्थिर हो गया है। १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਪੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥
संतों की कृपा से मनुष्य हरि का नाम स्मरण करता है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਉ ॥
संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥
संतों के प्रसाद से मनुष्य हरि का यश कीर्तन करता है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਗਲ ਦੁਖ ਮਿਟੇ ॥
संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥
संतों की दया से मनुष्य की समस्त पीड़ा दूर हो जाती है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬੰਧਨ ਤੇ ਛੁਟੇ ॥੨॥
संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥
संतों की कृपा से प्राणी (मोह-माया के) बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। ॥२॥

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਮਿਟੇ ਮੋਹ ਭਰਮ ॥
संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम ॥
संतों की कृपा से मोह एवं भ्रम मिट गए हैं।

ਸਾਧ ਰੇਣ ਮਜਨ ਸਭਿ ਧਰਮ ॥
साध रेण मजन सभि धरम ॥
संतों की चरण-धूलि में स्नान करने से सभी धर्म कर्मों का फल मिल जाता है।

ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥
साध क्रिपाल दइआल गोविंदु ॥
जब संत कृपालु हैं तो गोविन्द दयालु हो जाता है।

ਸਾਧਾ ਮਹਿ ਇਹ ਹਮਰੀ ਜਿੰਦੁ ॥੩॥
साधा महि इह हमरी जिंदु ॥३॥
मेरे यह प्राण संतों में निवास करते हैं। ॥३॥

ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਕਿਰਪਾਲ ਧਿਆਵਉ ॥
किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥
यदि मैं कृपा के भण्डार दयालु परमात्मा का चिन्तन करूं,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਾ ਬੈਠਣੁ ਪਾਵਉ ॥
साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥
तो ही मैं संतों की संगति में बैठ सकता हूँ।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਕਉ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੀ ਦਇਆ ॥
मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥
हे नानक ! जब प्रभु ने मुझ गुणहीन पर दया की

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਲਇਆ ॥੪॥੨੨॥੯੧॥
साधसंगि नानक नामु लइआ ॥४॥२२॥९१॥
तो मैंने संतो की सभा में नाम सिमरन किया है ॥४॥२२॥९१॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਿਓ ਭਗਵੰਤੁ ॥
साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥
मैं संतों की सभा में मिलकर भगवान का सिमरन करता हूँ।

ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਗੁਰਿ ਮੰਤੁ ॥
केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥
गुरु ने मुझे केवल नाम का ही मंत्र प्रदान किया है।

ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨ ਭਏ ਨਿਰਵੈਰ ॥
तजि अभिमान भए निरवैर ॥
अपना अहंकार त्याग कर मैं निर्वैर हो गया हूँ।

ਆਠ ਪਹਰ ਪੂਜਹੁ ਗੁਰ ਪੈਰ ॥੧॥
आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥१॥
दिन के आठ प्रहर गुरु के चरणों की पूजा करो ॥ १॥

ਅਬ ਮਤਿ ਬਿਨਸੀ ਦੁਸਟ ਬਿਗਾਨੀ ॥
अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥
मेरी पराई दुष्ट बुद्धि तब नष्ट हो गई,"

ਜਬ ਤੇ ਸੁਣਿਆ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥१॥ रहाउ ॥
जब से मैंने हरि का यश अपने कानों से सुना है ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਹਜ ਸੁਖ ਆਨੰਦ ਨਿਧਾਨ ॥
सहज सूख आनंद निधान ॥
रक्षक प्रभु जो सहज सुख एवं आनन्द का भण्डार है,

ਰਾਖਨਹਾਰ ਰਖਿ ਲੇਇ ਨਿਦਾਨ ॥
राखनहार रखि लेइ निदान ॥
अन्ततः मेरी रक्षा करेगा।

ਦੂਖ ਦਰਦ ਬਿਨਸੇ ਭੈ ਭਰਮ ॥
दूख दरद बिनसे भै भरम ॥
मेरे दुख-दर्द एवं भय-भ्रम नाश हो गए हैं।

ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਖੇ ਕਰਿ ਕਰਮ ॥੨॥
आवण जाण रखे करि करम ॥२॥
प्रभु ने कृपा करके जन्म-मृत्यु के आवागमन से मेरी रक्षा की है। ॥२॥

ਪੇਖੈ ਬੋਲੈ ਸੁਣੈ ਸਭੁ ਆਪਿ ॥
पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥
प्रभु स्वयं ही सब कुछ देखता, बोलता एवं सुनता है।

ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਤਾ ਕਉ ਮਨ ਜਾਪਿ ॥
सदा संगि ता कउ मन जापि ॥
हे मेरे मन ! उस प्रभु का सदैव ही सिमरन कर, जो सदैव तेरे साथ रहता है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਇਓ ਪਰਗਾਸੁ ॥
संत प्रसादि भइओ परगासु ॥
संतों की कृपा से मेरे मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है।

ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਏਕੈ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥੩॥
पूरि रहे एकै गुणतासु ॥३॥
गुणों का भण्डार एक ईश्वर सर्वत्र व्यापक हो रहा है। ॥३ ॥

ਕਹਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸੁਣਤ ਪੁਨੀਤ ॥
कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥
वे सभी पवित्र-पावन हो जाते हैं, जो मुख से उसकी महिमा करते एवं सुनते रहते हैं,

ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਵਹਿ ਨਿਤ ਨੀਤ ॥
गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥
और सदैव ही गोविन्द की महिमा-स्तुति करते रहते हैं,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਹੋਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
कहु नानक जा कउ होहु क्रिपाल ॥
हे नानक ! जिस पर ईश्वर कृपालु हो जाता है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਸਭ ਪੂਰਨ ਘਾਲ ॥੪॥੨੩॥੯੨॥
तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥४॥२३॥९२॥
उस प्राणी की नाम-साधना सम्पूर्ण हो जाती है ॥४॥२३॥९२॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਬੰਧਨ ਤੋੜਿ ਬੋਲਾਵੈ ਰਾਮੁ ॥
बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥
सतिगुरु मोह-माया के बन्धन तोड़कर मनुष्य से राम का सिमरन करवाता है।

ਮਨ ਮਹਿ ਲਾਗੈ ਸਾਚੁ ਧਿਆਨੁ ॥
मन महि लागै साचु धिआनु ॥
उस व्यक्ति के मन में सत्य-परमेश्वर का ध्यान लग जाता है।

ਮਿਟਹਿ ਕਲੇਸ ਸੁਖੀ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ॥
मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥
उसके क्लेश मिट जाते हैं और वह मनुष्य सुखपूर्वक रहता है।

ਐਸਾ ਦਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਹੀਐ ॥੧॥
ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥१॥
ऐसे दाता को ही सतिगुरु कहा जाता है। १॥

ਸੋ ਸੁਖਦਾਤਾ ਜਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥
सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥
केवल वही सुखदाता है, जो प्राणी से प्रभु के नाम का जाप करवाता है

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥
और कृपा करके उसके साथ मिला देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਿਸੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥
जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥
जिस व्यक्ति पर परमात्मा दयालु हो जाता है, उसको वह गुरु से मिला देता है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਵੈ ॥
सरब निधान गुरू ते पावै ॥
समस्त भण्डार सर्वनिधि वह गुरु द्वारा प्राप्त कर लेता है।

ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਮਿਟੈ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥
आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥
जो व्यक्ति अपना अहंकार त्याग देता है, उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਾ ॥੨॥
साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥२॥
वह संतों की संगति करके पारब्रह्म को पहचान लेता है॥ २॥

ਜਨ ਊਪਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਇਆਲ ॥
जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥
अपने सेवक पर प्रभु दयालु हो गया है।

ਜਨ ਕੀ ਟੇਕ ਏਕ ਗੋਪਾਲ ॥
जन की टेक एक गोपाल ॥
उस सेवक का सहारा एक गोपाल ही है।

ਏਕਾ ਲਿਵ ਏਕੋ ਮਨਿ ਭਾਉ ॥
एका लिव एको मनि भाउ ॥
वह सेवक एक परमेश्वर में ही अपनी सुरति लगाता है और उसके मन में एक प्रभु का ही प्रेम होता है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਜਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੩॥
सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥३॥
सेवक के लिए हरि का नाम ही तमाम भण्डार है। ॥३॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥
जो पारब्रह्म से प्रेम करता है,

ਨਿਰਮਲ ਕਰਣੀ ਸਾਚੀ ਰੀਤਿ ॥
निरमल करणी साची रीति ॥
उसके कर्म पवित्र और जीवन-आचरण सत्य है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਟਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥
गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥
पूर्ण गुरु ने अज्ञानता का अंधकार मिटा दिया है।

ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ॥੪॥੨੪॥੯੩॥
नानक का प्रभु अपर अपारा ॥४॥२४॥९३॥
नानक का प्रभु असीम एवं अनन्त है। ॥४॥२४॥६३॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਰੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥
जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर निवास करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
जा कै करमि परापति होइ ॥
जिसकी किस्मत में लिखा होता है, वह ईश्वर को प्राप्त कर लेता है।

ਦੂਖੁ ਰੋਗੁ ਕਛੁ ਭਉ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥
दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥
दुख, रोग एवं भय उसको तनिक मात्र भी प्रभावित नहीं करते,

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਜਾਪੈ ॥੧॥
अम्रित नामु रिदै हरि जापै ॥१॥
जो अपने हृदय में ईश्वर के अमृत नाम का सिमरन करते रहते हैं। ॥१॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸੁਰੁ ਧਿਆਈਐ ॥
पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥
हमें पारब्रह्म-परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहिए।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਇਹ ਮਤਿ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु से यह सूझ प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਣ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਦਇਆਲ ॥
करण करावनहार दइआल ॥
दयावान प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥
वह सृष्टि के समस्त जीव-जन्तुओं की पालना करता है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਸਦਾ ਬੇਅੰਤਾ ॥
अगम अगोचर सदा बेअंता ॥
प्रभु सदैव ही अगम्य, अगोचर एवं अनन्त है।

ਸਿਮਰਿ ਮਨਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਮੰਤਾ ॥੨॥
सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥२॥
हे मेरे मन ! पूर्ण गुरु के उपदेश से प्रभु का सिमरन कर ॥ २ ॥

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨੁ ॥
जा की सेवा सरब निधानु ॥
प्रभु की सेवा करने से तमाम भण्डार प्राप्त हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪੂਜਾ ਪਾਈਐ ਮਾਨੁ ॥
प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥
प्रभु की पूजा करने से मान-सम्मान प्राप्त होता है।

ਜਾ ਕੀ ਟਹਲ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਇ ॥
जा की टहल न बिरथी जाइ ॥
प्रभु की सेवा व्यर्थ नहीं जाती,

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੩॥
सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥३॥
अतः नित्य ही उसका गुणानुवाद करते रहो ॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥
अन्तर्यामी प्रभु मुझ पर कृपा कीजिए।

ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਅਲਖ ਸੁਆਮੀ ॥
सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥
जगत् का स्वामी, अलक्ष्य परमेश्वर सुखों का खजाना है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥
समस्त जीव-जन्तु तेरी शरण में हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੨੫॥੯੪॥
नानक नामु मिलै वडिआई ॥४॥२५॥९४॥
हे नानक ! मुझे प्रभु का नाम मिल जाए चूंकि उसका नाम ही मेरे लिए बड़ाई है। ॥४॥२५॥९४॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਜਾ ਕੈ ਹੈ ਹਾਥ ॥
जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥
जिस भगवान के वश में जीवों की जीवन-युक्ति है,

ਸੋ ਸਿਮਰਹੁ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥੁ ॥
सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥
उसका ही सिमरन करो, वह अनाथों का नाथ है।

ਪ੍ਰਭ ਚਿਤਿ ਆਏ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥
यदि मनुष्य भगवान को स्मरण करता रहे तो उसके समस्त दुख नष्ट हो जाते हैं।

ਭੈ ਸਭ ਬਿਨਸਹਿ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥੧॥
भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥१॥
हरि के नाम सिमरन से समस्त भय नाश हो जाते हैं।॥ १॥

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਉ ਕਾਹੇ ਕਾ ਮਾਨਹਿ ॥
बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥
हे प्राणी ! तू ईश्वर के अलावा किसी दूसरे का भय क्यों अनुभव करता है ?

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਕਾਹੇ ਸੁਖੁ ਜਾਨਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तू प्रभु को विस्मृत कर देता है तो फिर तू अपने आप को सुख में क्यों समझते हो॥ १ ॥ रहाउ॥

ਜਿਨਿ ਧਾਰੇ ਬਹੁ ਧਰਣਿ ਅਗਾਸ ॥
जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥
जिसने अनेकों धरती-आकाश कायम किए हैं,

ਜਾ ਕੀ ਜੋਤਿ ਜੀਅ ਪਰਗਾਸ ॥
जा की जोति जीअ परगास ॥
जिसकी ज्योति का समस्त जीवों में प्रकाश है,

ਜਾ ਕੀ ਬਖਸ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥
जा की बखस न मेटै कोइ ॥
जिसकी दया को कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ॥੨॥
सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥२॥
उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य निर्भय हो जाता है॥ २॥

ਆਠ ਪਹਰ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ॥
आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥
दिन के आठ प्रहर प्रभु के नाम का सिमरन करते रहो।

ਅਨਿਕ ਤੀਰਥ ਮਜਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥
अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥
चूंकि प्रभु का नाम-सिमरन ही अनेकों तीर्थों का स्नान है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਸਰਣੀ ਪਾਹਿ ॥
पारब्रहम की सरणी पाहि ॥
परब्रह्म की शरण में आने से

ਕੋਟਿ ਕਲੰਕ ਖਿਨ ਮਹਿ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ॥੩॥
कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥३॥
मनुष्य के करोड़ों ही कलंक एक क्षण में मिट जाते हैं।॥ ३॥

ਬੇਮੁਹਤਾਜੁ ਪੂਰਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥
वह बेपरवाह पूर्ण बादशाह है।

ਪ੍ਰਭ ਸੇਵਕ ਸਾਚਾ ਵੇਸਾਹੁ ॥
प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥
ईश्वर के सेवक की उसमें सच्ची आस्था है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਰਾਖੇ ਦੇ ਹਾਥ ॥
गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥
अपना हाथ देकर पूर्ण गुरु जी उसकी रक्षा करते हैं।

ਨਾਨਕ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਮਰਾਥ ॥੪॥੨੬॥੯੫॥
नानक पारब्रहम समराथ ॥४॥२६॥९५॥
हे नानक ! पारब्रह्म प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है ॥४॥२६॥९५॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
गुर परसादि नामि मनु लागा ॥
गुरु की कृपा से मेरा मन प्रभु के नाम में लग गया है।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਸੋਇਆ ਜਾਗਾ ॥
जनम जनम का सोइआ जागा ॥
यह मन जन्म-जन्मांतरों से अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ था परन्तु अब यह जाग गया है अर्थात् इसे ज्ञान हो गया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਣ ਉਚਰੈ ਪ੍ਰਭ ਬਾਣੀ ॥
अम्रित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥
वही प्राणी प्रभु की वाणी द्वारा उसके अमृतमयी गुणों का उच्चारण करता है,

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੁਮਤਿ ਪਰਾਣੀ ॥੧॥
पूरे गुर की सुमति पराणी ॥१॥
जिसे पूर्ण गुरु की सुमति प्राप्त हो जाती है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਤ ਕੁਸਲ ਸਭਿ ਪਾਏ ॥
प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥
प्रभु का सिमरन करने से मुझे सर्वसुख प्राप्त हो गए हैं।

ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਬਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥१॥ रहाउ ॥
घर के भीतर एवं बाहर मुझे सहज ही सर्वसुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੋਈ ਪਛਾਤਾ ਜਿਨਹਿ ਉਪਾਇਆ ॥
सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥
मैंने उस प्रभु को पहचान लिया है, जिसने मुझे उत्पन्न किया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥
प्रभु ने कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लिया है।

ਪਕਰਿ ਲੀਨੋ ਕਰਿ ਅਪਨਾ ॥
बाह पकरि लीनो करि अपना ॥
भुजा से पकड़कर प्रभु ने मुझे अपना बना लिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸਦਾ ਜਪੁ ਜਪਨਾ ॥੨॥
हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥२॥
हरि की सुन्दर हरि-कथा एवं नाम का मैं हमेशा जाप जपता हूँ॥ २॥

ਮੰਤ੍ਰ ਤੰਤ੍ਰ ਅਉਖਧੁ ਪੁਨਹਚਾਰੁ ॥
मंत्र तंत्र अउखधु पुनहचारु ॥
मन्त्र-तन्त्र, औषधि, प्रायश्चित कर्म समूह

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ॥
हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥
प्रभु-परमेश्वर के नाम में विद्यमान है, जो मेरे मन एवं प्राणों का आधार है।

ਸਾਚਾ ਧਨੁ ਪਾਇਓ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥
साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥
मैंने प्रभु के प्रेम की सच्ची दौलत प्राप्त की है।

ਦੁਤਰੁ ਤਰੇ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥੩॥
दुतरु तरे साध कै संगि ॥३॥
साधु-संतों की संगत से ही विषम संसार सागर पार किया जा सकता है॥ ३॥

ਸੁਖਿ ਬੈਸਹੁ ਸੰਤ ਸਜਨ ਪਰਵਾਰੁ ॥
सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥
हे संतजनो ! सज्जनों के परिवार सहित सुख में विराजो।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟਿਓ ਜਾ ਕਾ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰੁ ॥
हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥
मैंने हरिनाम का धन कमाया है जो गणना से बाहर है।

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਦੇਇ ॥
जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥
यह नाम-धन उसे ही मिलता है, जिसे गुरु जी देते हैं।

ਨਾਨਕ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਹੋਇ ॥੪॥੨੭॥੯੬॥
नानक बिरथा कोइ न होइ ॥४॥२७॥९६॥
हे नानक ! गुरु के द्वार से कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता ॥४॥२७॥९६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਹਸਤ ਪੁਨੀਤ ਹੋਹਿ ਤਤਕਾਲ ॥
हसत पुनीत होहि ततकाल ॥
हाथ तत्काल ही पवित्र हो जाते हैं,

ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਮਾਇਆ ਜੰਜਾਲ ॥
बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥
एवं माया के जंजाल नाश हो जाते हैं,"

ਰਸਨਾ ਰਮਹੁ ਰਾਮ ਗੁਣ ਨੀਤ ॥
रसना रमहु राम गुण नीत ॥
यदि जिव्हा के साथ सदैव ही राम का यशोगान किया जाए तो

ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਮੀਤ ॥੧॥
सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥१॥
हे मेरे भाई एवं मित्र ! इस तरह तू सुख-शांति प्राप्त कर॥ १॥

ਲਿਖੁ ਲੇਖਣਿ ਕਾਗਦਿ ਮਸਵਾਣੀ ॥
लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥
अपनी कलम एवं दवात से तू कागज पर

ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नाम हरि अम्रित बाणी ॥१॥ रहाउ ॥
राम का नाम एवं हरि की अमृतमयी वाणी लिख॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹ ਕਾਰਜਿ ਤੇਰੇ ਜਾਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥
इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥
इस कर्म से तेरे पाप धुल जाएँगे।

ਸਿਮਰਤ ਰਾਮ ਨਾਹੀ ਜਮ ਮਾਰ ॥
सिमरत राम नाही जम मार ॥
राम का भजन करने से यमदूत तुझे दण्ड नहीं देगा।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੇ ਦੂਤ ਨ ਜੋਹੈ ॥
धरम राइ के दूत न जोहै ॥
धर्मराज के दूत तेरी ओर नहीं देख सकेंगे।

ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਨ ਕਛੂਐ ਮੋਹੈ ॥੨॥
माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥२॥
मोहिनी का उन्माद तुझे तनिक मात्र भी मुग्ध नहीं करेगा॥ २॥

ਉਧਰਹਿ ਆਪਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
उधरहि आपि तरै संसारु ॥
तेरा स्वयं उद्धार हो जाएगा और तेरे द्वारा संसार का भी कल्याण हो जाएगा,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪਿ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥
राम नाम जपि एकंकारु ॥
जब तू राम का नाम सिमरन और एक ऑकार का स्मरण करता रहेगा ॥

ਆਪਿ ਕਮਾਉ ਅਵਰਾ ਉਪਦੇਸ ॥
आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥
नाम-स्मरण की स्वयं साधना कर और दूसरों को उपदेश दे।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਰਦੈ ਪਰਵੇਸ ॥੩॥
राम नाम हिरदै परवेस ॥३॥
राम के नाम को अपने हृदय में विराजमान कर॥ ३ ॥

ਜਾ ਕੈ ਮਾਥੈ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
जा कै माथै एहु निधानु ॥
जिसके मस्तक पर उसकी किस्मत में नाम-भण्डार की उपलब्धि का लेख लिखा हुआ है,

ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਜਪੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥
सोई पुरखु जपै भगवानु ॥
वही पुरुष भगवान की आराधना करता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥
जो आठ प्रहर हरि- परमेश्वर की महिमा-स्तुति करता रहता है,"

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਉ ਤਿਸੁ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੪॥੨੮॥੯੭॥
कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥४॥२८॥९७॥
हे नानक ! मैं उस व्यक्ति पर बलिहारी जाता हूँ, ॥ ४॥ २८ ॥ ९ ७॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਚਉਪਦੇ ਦੁਪਦੇ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੋ ਪਰਾਇਓ ਸੋਈ ਅਪਨਾ ॥
जो पराइओ सोई अपना ॥
जो धन पराया हो जाना है, उसे मनुष्य अपना समझता है।

ਜੋ ਤਜਿ ਛੋਡਨ ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਮਨੁ ਰਚਨਾ ॥੧॥
जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥१॥
जो कुछ त्याग जाना है, उससे उसका मन लीन रहता है॥ १॥

ਕਹਹੁ ਗੁਸਾਈ ਮਿਲੀਐ ਕੇਹ ॥
कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥
बताओ, गुसाई-प्रभु कैसे मिल सकता है?

ਜੋ ਬਿਬਰਜਤ ਤਿਸ ਸਿਉ ਨੇਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥१॥ रहाउ ॥
जो कुछ वर्जित किया हुआ है, उससे उसका स्नेह है॥ १॥ रहाउ ॥

ਝੂਠੁ ਬਾਤ ਸਾ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਤੀ ॥
झूठु बात सा सचु करि जाती ॥
झूठी बात को वह सत्य करके जानता है।

ਸਤਿ ਹੋਵਨੁ ਮਨਿ ਲਗੈ ਨ ਰਾਤੀ ॥੨॥
सति होवनु मनि लगै न राती ॥२॥
जो सदा सत्य है, क्षण भर भी हृदय उससे जुड़ा हुआ नहीं है॥ २॥

ਬਾਵੈ ਮਾਰਗੁ ਟੇਢਾ ਚਲਨਾ ॥
बावै मारगु टेढा चलना ॥
वह वाम मार्ग टेढा होकर चलता है।

ਸੀਧਾ ਛੋਡਿ ਅਪੂਠਾ ਬੁਨਨਾ ॥੩॥
सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥३॥
जीवन के सन्मार्ग को त्याग कर जीवन के ताने-बाने को उल्टा बुन रहा है॥ ३॥

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਕਾ ਖਸਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥
दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥
लोक-परलोक दोनों कोनों का स्वामी प्रभु स्वयं ही है।

ਜਿਸੁ ਮੇਲੇ ਨਾਨਕ ਸੋ ਮੁਕਤਾ ਹੋਈ ॥੪॥੨੯॥੯੮॥
जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥४॥२९॥९८॥
हे नानक ! जिसको परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, यह मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ४ ॥ २९॥ ९८॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਮਿਲਿ ਆਏ ਸੰਜੋਗ ॥
कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥
कलियुग में संयोगवश पति-पत्नी पूर्व संबंधों के कारण इहलोक में आकर मिलते है।

ਜਿਚਰੁ ਆਗਿਆ ਤਿਚਰੁ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ॥੧॥
जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥१॥
जब तक परमात्मा का हुक्म होता है, तब तक वह भोग भोगते हैं॥ १॥

ਜਲੈ ਨ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ॥
जलै न पाईऐ राम सनेही ॥
जो स्त्री अपने मृत पति के साथ जल कर मर जाती है, उसे प्रियतम राम नहीं मिलता।

ਕਿਰਤਿ ਸੰਜੋਗਿ ਸਤੀ ਉਠਿ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किरति संजोगि सती उठि होई ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने किए हुए कर्मों के संयोग कारण उठकर अपने पति के साथ जल कर सती हो जाती है॥ १ ॥ रहाउ॥

ਦੇਖਾ ਦੇਖੀ ਮਨਹਠਿ ਜਲਿ ਜਾਈਐ ॥
देखा देखी मनहठि जलि जाईऐ ॥
देखादेखी और मन के हठ द्वारा जल जाती है।

ਪ੍ਰਿਅ ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਵੈ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭਵਾਈਐ ॥੨॥
प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥२॥
वह मरणोपरांत अपने मृत पति को भी नहीं मिलती और अनेक योनियों में भटकती रहती है॥ २॥

ਸੀਲ ਸੰਜਮਿ ਪ੍ਰਿਅ ਆਗਿਆ ਮਾਨੈ ॥
सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥
जिसके पास शील एवं संयम है और पति-परमेश्वर की आज्ञा मानती है,

ਤਿਸੁ ਨਾਰੀ ਕਉ ਦੁਖੁ ਨ ਜਮਾਨੈ ॥੩॥
तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥३॥
वह जीव-स्त्री यमदूतों से कष्ट नहीं प्राप्त करती ॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਿਉ ਪਰਮੇਸਰੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्री परमेश्वर को अपने पति के रूप में जानती है,

ਧੰਨੁ ਸਤੀ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨਿਆ ॥੪॥੩੦॥੯੯॥
धंनु सती दरगह परवानिआ ॥४॥३०॥९९॥
वह जीव-स्त्री धन्य है और वह ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाती है॥ ४ ॥ ३० ॥ ९९॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

ਹਮ ਧਨਵੰਤ ਭਾਗਠ ਸਚ ਨਾਇ ॥
हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
प्रभु के सत्य-नाम से मैं धनवान एवं भाग्यशाली बन गया हूँ,

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं सहज-स्वभाव ही हरि-परमेश्वर की गुण-स्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਪੀਊ ਦਾਦੇ ਕਾ ਖੋਲਿ ਡਿਠਾ ਖਜਾਨਾ ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
जब मैंने अपने पिता और दादा का भण्डार अर्थात् गुरुओं की वाणी का भण्डार खोल कर देखा

ਤਾ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਇਆ ਨਿਧਾਨਾ ॥੧॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥
तो मेरे मन में आनंद का भण्डार भर गया ॥ १॥

ਰਤਨ ਲਾਲ ਜਾ ਕਾ ਕਛੁ ਨ ਮੋਲੁ ॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
गुणस्तुति के अमूल्य रत्न एवं जवाहरों से

ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ਅਖੂਟ ਅਤੋਲ ॥੨॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥
अक्षय एवं अतुल भण्डार भरे हुए हैं।॥ २॥

ਖਾਵਹਿ ਖਰਚਹਿ ਰਲਿ ਮਿਲਿ ਭਾਈ ॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
हे भाई ! हम सभी मिलकर इन भण्डारों को सेवन और इस्तेमाल करते हैं।

ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਵਧਦੋ ਜਾਈ ॥੩॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥३॥
इस भण्डार में कोई कमी नहीं और प्रतिदिन वह अधिकाधिक बढ़ता जाता है॥ ३ ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇ ॥
कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के मस्तक पर विधाता ने ऐसी भाग्यरेखाएँ विद्यमान की हैं,

ਸੁ ਏਤੁ ਖਜਾਨੈ ਲਇਆ ਰਲਾਇ ॥੪॥੩੧॥੧੦੦॥
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥४॥३१॥१००॥
वह इस (गुणस्तुति के) भण्डार में भागीदार बन जाता है ॥४॥ ३१॥१००॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਡਰਿ ਡਰਿ ਮਰਤੇ ਜਬ ਜਾਨੀਐ ਦੂਰਿ ॥
डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥
जब मैं प्रभु को दूर समझता था तो मैं डर-डर कर मरता रहता था।

ਡਰੁ ਚੂਕਾ ਦੇਖਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੧॥
डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥१॥
उस प्रभु को सर्वव्यापक देखकर मेरा भय दूर हो गया है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰੈ ॥
सतिगुर अपने कउ बलिहारै ॥
में अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ।

ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਸਰਪਰ ਤਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
छोडि न जाई सरपर तारै ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे छोड़कर वह कहीं नहीं जाता और निश्चित ही मुझे भवसागर से पार कर देगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਦੂਖੁ ਰੋਗੁ ਸੋਗੁ ਬਿਸਰੈ ਜਬ ਨਾਮੁ ॥
दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥
जब प्राणी ईश्वर के नाम को भुला देता है तो उसे दुख, रोग एवं संताप लग जाते हैं।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਜਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਮੁ ॥੨॥
सदा अनंदु जा हरि गुण गामु ॥२॥
लेकिन जब वह प्रभु का यश गायन करता है, उसको सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ३॥

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕੋਈ ਨ ਕਹੀਜੈ ॥
बुरा भला कोई न कहीजै ॥
हमें किसी को बूरा-भला नहीं कहना चाहिए

ਛੋਡਿ ਮਾਨੁ ਹਰਿ ਚਰਨ ਗਹੀਜੈ ॥੩॥
छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥३॥
और अपना अहंकार त्याग कर भगवान के चरण पकड़ लेने चाहिए॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮੰਤ੍ਰੁ ਚਿਤਾਰਿ ॥
कहु नानक गुर मंत्रु चितारि ॥
नानक का कथन है कि (हे प्राणी !) गुरु के मंत्र (उपदेश) को स्मरण करो।

ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੪॥੩੨॥੧੦੧॥
सुखु पावहि साचै दरबारि ॥४॥३२॥१०१॥
सत्य के दरबार में बड़ा सुख प्राप्त होगा ॥ ४॥ ३२॥ १०१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਾ ਮੀਤੁ ਸਾਜਨੁ ਹੈ ਸਮੀਆ ॥
जा का मीतु साजनु है समीआ ॥
हे भाई ! जिसका मित्र एवं सज्जन सर्वव्यापक प्रभु है।

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਕਹੁ ਕਾ ਕੀ ਕਮੀਆ ॥੧॥
तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥१॥
बताओ-उस पुरुष को किस पदार्थ की कमी हो सकती है॥ १॥

ਜਾ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ॥
जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥
जिसका प्रेम गोविन्द से हो जाता है,

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭ੍ਰਮੁ ਤਾ ਕਾ ਭਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥१॥ रहाउ ॥
उसके दुख-दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਕਉ ਰਸੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੈ ਆਇਓ ॥
जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥
जिस व्यक्ति को हरि-रस का आनंद प्राप्त हो जाता है,

ਸੋ ਅਨ ਰਸ ਨਾਹੀ ਲਪਟਾਇਓ ॥੨॥
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥२॥
वह हरि-रस के सिवाय अन्य रसों से नहीं लिपटता ॥ २॥

ਜਾ ਕਾ ਕਹਿਆ ਦਰਗਹ ਚਲੈ ॥
जा का कहिआ दरगह चलै ॥
जिसका बोला हुआ शब्द प्रभु के दरबार में माना जाता है,

ਸੋ ਕਿਸ ਕਉ ਨਦਰਿ ਲੈ ਆਵੈ ਤਲੈ ॥੩॥
सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥३॥
वह किसकी चिन्ता करता है (अर्थात् उसे कोई आवश्यकता नहीं रहती)॥ ३॥

ਜਾ ਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਾ ਕਾ ਹੋਇ ॥
जा का सभु किछु ता का होइ ॥
जिस ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है, जीव-जन्तु अथवा समूचा जगत् उसका है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਉ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੪॥੩੩॥੧੦੨॥
नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥४॥३३॥१०२॥
हे नानक ! उस ईश्वर का भक्त जो मनुष्य बनता है, उसे सदैव सुख प्राप्त हो जाता है ॥ ४॥ ३३ ॥ १०२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਾ ਕੈ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਪੈ ॥
जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥
जिस व्यक्ति को दुःख एवं सुख एक समान प्रतीत होते हैं,

ਤਾ ਕਉ ਕਾੜਾ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ॥੧॥
ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥१॥
उसे कोई चिन्ता कैसे हो सकती है ? ॥१॥

ਸਹਜ ਅਨੰਦ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਮਾਹਿ ॥
सहज अनंद हरि साधू माहि ॥
जिस भगवान के साधू के मन में सहज आनंद उत्पन्न हो जाता है,

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आगिआकारी हरि हरि राइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह सदैव प्रभु-परमेश्वर का आज्ञाकारी बना रहता है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਕੈ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥
जिसके हृदय में अचिंत परमेश्वर आकर निवास कर जाता है,

ਤਾ ਕਉ ਚਿੰਤਾ ਕਤਹੂੰ ਨਾਹਿ ॥੨॥
ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥२॥
उसको चिन्ता कदापि नहीं लगती॥ २॥

ਜਾ ਕੈ ਬਿਨਸਿਓ ਮਨ ਤੇ ਭਰਮਾ ॥
जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥
जिसके हृदय से भ्रम निवृत्त हो गया है,

ਤਾ ਕੈ ਕਛੂ ਨਾਹੀ ਡਰੁ ਜਮਾ ॥੩॥
ता कै कछू नाही डरु जमा ॥३॥
उसको मृत्यु का लेशमात्र भी भय नहीं रहता ॥ ३॥

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਦੀਓ ਗੁਰਿ ਨਾਮਾ ॥
जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥
जिसके हृदय में गुरदेव ने प्रभु-नाम प्रदान किया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨਾ ॥੪॥੩੪॥੧੦੩॥
कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥४॥३४॥१०३॥
हे नानक ! वह समस्त निधियों का स्वामी बन जाता है ॥ ४॥ ३४॥ १०३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਅਗਮ ਰੂਪ ਕਾ ਮਨ ਮਹਿ ਥਾਨਾ ॥
अगम रूप का मन महि थाना ॥
अगम्य स्वरूप परमेश्वर का मनुष्य के मन में निवास है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਨਾ ॥੧॥
गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥१॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इस तथ्य को समझता है॥ १॥

ਸਹਜ ਕਥਾ ਕੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੁੰਟਾ ॥
सहज कथा के अम्रित कुंटा ॥
प्रभु की सहज कथा के अमृत-कुण्ड हैं।

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸੁ ਲੈ ਭੁੰਚਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसकी इनको प्राप्ति हो जाती है, वह अमृत पान करता रहता है। १॥ रहाउ ॥

ਅਨਹਤ ਬਾਣੀ ਥਾਨੁ ਨਿਰਾਲਾ ॥
अनहत बाणी थानु निराला ॥
बैकुण्ठ में एक अद्भुत स्थान है, जहाँ हर पल अनहद वाणी की मधुर ध्वनि गूंजती रहती है।

ਤਾ ਕੀ ਧੁਨਿ ਮੋਹੇ ਗੋਪਾਲਾ ॥੨॥
ता की धुनि मोहे गोपाला ॥२॥
इस मधुर ध्वनि को सुनकर गोपाल भी मुग्ध हो जाता है॥ २॥

ਤਹ ਸਹਜ ਅਖਾਰੇ ਅਨੇਕ ਅਨੰਤਾ ॥
तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥
वहाँ विभिन्न प्रकार के आनंददायक एवं अनन्त सुख के निवास स्थान हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸੰਗੀ ਸੰਤਾ ॥੩॥
पारब्रहम के संगी संता ॥३॥
वहाँ पारब्रह्म प्रभु के साथी, साधु निवास करते हैं।॥ ३॥

ਹਰਖ ਅਨੰਤ ਸੋਗ ਨਹੀ ਬੀਆ ॥
हरख अनंत सोग नही बीआ ॥
वहाँ अनन्त हर्ष है और दुख अथवा द्वैत भाव नहीं।

ਸੋ ਘਰੁ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਦੀਆ ॥੪॥੩੫॥੧੦੪॥
सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥४॥३५॥१०४॥
वह घर गुरु ने नानक को प्रदान किया है॥ ४ ॥ ३५ ॥ १०४॥

ਗਉੜੀ ਮਃ ੫ ॥
गउड़ी मः ५ ॥
गउड़ी मः ५ ॥

ਕਵਨ ਰੂਪੁ ਤੇਰਾ ਆਰਾਧਉ ॥
कवन रूपु तेरा आराधउ ॥
हे प्रभु ! तेरे तो अनन्त रूप हैं। इसलिए तेरा वह कौन-सा रूप है, जिसकी मैं आराधना करूं।

ਕਵਨ ਜੋਗ ਕਾਇਆ ਲੇ ਸਾਧਉ ॥੧॥
कवन जोग काइआ ले साधउ ॥१॥
हे ईश्वर ! योग का वह कौन-सा साधन है जिससे मैं अपने तन को वश में करूँ॥ १॥

ਕਵਨ ਗੁਨੁ ਜੋ ਤੁਝੁ ਲੈ ਗਾਵਉ ॥
कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥
हे ईश्वर !वह कौन-से गुण है जिनकी मैं स्तुति करू,"

ਕਵਨ ਬੋਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੀਝਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥१॥ रहाउ ॥
हे पारब्रह्म-प्रभु ! में क्या बोलू जिससे मैं तुझे प्रसन्न कर दूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਵਨ ਸੁ ਪੂਜਾ ਤੇਰੀ ਕਰਉ ॥
कवन सु पूजा तेरी करउ ॥
हे नाथ ! वह कौन-सी पूजा-अर्चना है, जो मैं तेरी करूँ।

ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਭਵਜਲ ਤਰਉ ॥੨॥
कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥२॥
हे दीनदयालु! वह कौन-सी विधि है, जिससे मैं भयानक सागर से पार हो जाऊँ ?॥ २॥

ਕਵਨ ਤਪੁ ਜਿਤੁ ਤਪੀਆ ਹੋਇ ॥
कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥
हे प्रभु ! वह कौन-सी तपस्या है, जिससे मैं तपस्वी हो जाऊँ ?

ਕਵਨੁ ਸੁ ਨਾਮੁ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਖੋਇ ॥੩॥
कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥३॥
हे परमात्मा ! यह कौन-सा नाम है, जिस द्वारा अहंकार की मैल दूर हो जाती है॥ ३॥

ਗੁਣ ਪੂਜਾ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਨਾਨਕ ਸਗਲ ਘਾਲ ॥
गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥
हे नानक ! उसकी तमाम साधना, गुणानुवाद, पूजा, ज्ञान एवं ध्यान सफल हो जाते है

ਜਿਸੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਦਇਆਲ ॥੪॥
जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥४॥
जिसे दयालु सतिगुरु अपनी कृपा करके मिल जाते हैं, ॥ ४॥

ਤਿਸ ਹੀ ਗੁਨੁ ਤਿਨ ਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥
तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥
केवल वही गुण-फल प्राप्त करता है और केवल वही प्रभु को समझता है,

ਜਿਸ ਕੀ ਮਾਨਿ ਲੇਇ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੩੬॥੧੦੫॥
जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३६॥१०५॥
जिसकी भक्ति सुखदाता स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ ३६॥ १०५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਆਪਨ ਤਨੁ ਨਹੀ ਜਾ ਕੋ ਗਰਬਾ ॥
आपन तनु नही जा को गरबा ॥
हे प्राणी ! यह तन जिसका तुझे अभिमान हैं, यह तेरा अपना नहीं है।

ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਨਹੀ ਆਪਨ ਦਰਬਾ ॥੧॥
राज मिलख नही आपन दरबा ॥१॥
शासन, सम्पति, धन (सदा के लिए) तेरे नहीं है॥ १॥

ਆਪਨ ਨਹੀ ਕਾ ਕਉ ਲਪਟਾਇਓ ॥
आपन नही का कउ लपटाइओ ॥
हे प्राणी ! जब यह तेरे नहीं, तो फिर उनसे क्यों मोह करते हो ?

ਆਪਨ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
केवल नाम ही तेरा है और वह तुझे सतिगुरु से प्राप्त होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਆਪਨ ਨਹੀ ਭਾਈ ॥
सुत बनिता आपन नही भाई ॥
हे प्राणी ! पुत्र, पत्नी एवं भाई तेरे नहीं।

ਇਸਟ ਮੀਤ ਆਪ ਬਾਪੁ ਨ ਮਾਈ ॥੨॥
इसट मीत आप बापु न माई ॥२॥
इष्ट मित्र, पिता एवं माता तेरे अपने नहीं हैं।॥ २॥

ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਫੁਨਿ ਨਹੀ ਦਾਮ ॥
सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥
सोना, चांदी एवं धन-दौलत भी तेरे नहीं हैं।

ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਆਪਨ ਨਹੀ ਕਾਮ ॥੩॥
हैवर गैवर आपन नही काम ॥३॥
कुशल घोड़े एवं सुन्दर हाथी तेरे किसी काम नहीं ॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਗੁਰਿ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥
हे नानक ! जिसको गुरु जी क्षमा कर देते हैं, उसको वह प्रभु से मिला देते हैं।

ਤਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਿਸ ਕਾ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੪॥੩੭॥੧੦੬॥
तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥४॥३७॥१०६॥
जिसका प्रभु-परमेश्वर है उसके पास सब कुछ है॥ ४ ॥ ३७ ॥ १०६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਊਪਰਿ ਮੇਰੇ ਮਾਥੇ ॥
गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥
गुरु के चरण मेरे मस्तक पर विद्यमान हैं।

ਤਾ ਤੇ ਦੁਖ ਮੇਰੇ ਸਗਲੇ ਲਾਥੇ ॥੧॥
ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥१॥
इससे मेरे समस्त दुःख दूर हो गए हैं।॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਕਉ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥
सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥
मैं अपने सतिगुरु पर कुर्बान जाता हूँ।

ਆਤਮ ਚੀਨਿ ਪਰਮ ਰੰਗ ਮਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आतम चीनि परम रंग मानी ॥१॥ रहाउ ॥
जिनके द्वारा मैंने अपने आत्मिक जीवन को समझ लिया है और सर्वोपरि आनन्द भोगता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਣ ਰੇਣੁ ਗੁਰ ਕੀ ਮੁਖਿ ਲਾਗੀ ॥
चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥
गुरु की चरण-धूलि मेरे चेहरे पर लग गई है

ਅਹੰਬੁਧਿ ਤਿਨਿ ਸਗਲ ਤਿਆਗੀ ॥੨॥
अह्मबुधि तिनि सगल तिआगी ॥२॥
और उसने मेरी अहंबुद्धि सारी निवृत्त कर दी है॥ २॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਲਗੋ ਮਨਿ ਮੀਠਾ ॥
गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥
गुरु का शब्द मेरे मन को मीठा लग रहा है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਾ ਤੇ ਮੋਹਿ ਡੀਠਾ ॥੩॥
पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥३॥
पारब्रह्म प्रभु का इस कारण मैं दर्शन कर रहा हूँ॥ ३॥

ਗੁਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥
गुरु ही सुखदाता और गुरु ही करतार हैं।

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਆਧਾਰੁ ॥੪॥੩੮॥੧੦੭॥
जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥४॥३८॥१०७॥
हे नानक ! गुरु मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है ॥४॥३८॥१०७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂੰ ਤਾ ਕਉ ਆਹਿ ॥
रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥
हे मेरे मन ! तू उस प्रभु के मिलन की लालसा कर,

ਜਾ ਕੈ ਊਣਾ ਕਛਹੂ ਨਾਹਿ ॥੧॥
जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥१॥
जिसके घर में किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं है॥ १॥

ਹਰਿ ਸਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮੀਤ ॥
हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥
हे मेरे मन ! तू उस प्रियतम हरि को अपना मित्र बना।

ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ਰਾਖਹੁ ਸਦ ਚੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥१॥ रहाउ ॥
तू सदैव ही प्रभु को अपने हृदय में बसा कर रख, जो तेरे प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ ॥

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂੰ ਤਾ ਕਉ ਸੇਵਿ ॥
रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥
हे मेरे मन ! तू उसकी सेवा कर,

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਅਪਰੰਪਰ ਦੇਵ ॥੨॥
आदि पुरख अपर्मपर देव ॥२॥
जो आदिपुरुष एवं अपरंपार देव है॥ २॥

ਤਿਸੁ ਊਪਰਿ ਮਨ ਕਰਿ ਤੂੰ ਆਸਾ ॥
तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥
हे मेरे मन ! तू उस पर अपनी आशा रख,

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥੩॥
आदि जुगादि जा का भरवासा ॥३॥
जो आदि एवं युगों के आरम्भ से प्राणियों का सहारा है॥ ३॥

ਜਾ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥
जिसके प्रेम से हमेशा सुख-शांति प्राप्त होती है,

ਨਾਨਕੁ ਗਾਵੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸੋਇ ॥੪॥੩੯॥੧੦੮॥
नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥४॥३९॥१०८॥
हे नानक ! गुरु से मिलकर वह उसकी महिमा ही गायन करता है॥ ४॥ ३९॥ १०८ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮੀਤੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਹਮ ਮਾਨਾ ॥
मीतु करै सोई हम माना ॥
जो कुछ मेरा मित्र (प्रभु) करता है, उसको मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ।

ਮੀਤ ਕੇ ਕਰਤਬ ਕੁਸਲ ਸਮਾਨਾ ॥੧॥
मीत के करतब कुसल समाना ॥१॥
मेरे मित्र प्रभु के कार्य मुझे सुख के तुल्य प्रतीत होते हैं।॥ १॥

ਏਕਾ ਟੇਕ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਚੀਤ ॥
एका टेक मेरै मनि चीत ॥
मेरे मन एवं चित्त में एक ही प्रभु का सहारा है,

ਜਿਸੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਹਮਰਾ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥१॥ रहाउ ॥
जिसकी यह सब रचना है, वही मेरा मित्र-प्रभु है॥१॥ रहाउ॥

ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ਵੇਪਰਵਾਹਾ ॥
मीतु हमारा वेपरवाहा ॥
मेरा मित्र प्रभु बेपरवाह है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮੋਹਿ ਅਸਨਾਹਾ ॥੨॥
गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥२॥
गुरु की दया से मेरा उससे प्रेम हो गया है॥ २॥

ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
मीतु हमारा अंतरजामी ॥
मेरा मित्र प्रभु अन्तर्यामी है।

ਸਮਰਥ ਪੁਰਖੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਆਮੀ ॥੩॥

समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥३॥

परब्रह्म पुरुष रूप एवं सारे जगत् का स्वामी है और सब कुछ करने में समर्थ है॥ ३॥

ਹਮ ਦਾਸੇ ਤੁਮ ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ ॥

हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥

हे प्रभु ! मैं तेरा दास हूँ और तू मेरा ठाकुर है।

ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਤੇਰੇ ॥੪॥੪੦॥੧੦੯॥
मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥४॥४०॥१०९॥
नानक का कथन है कि हे दयालु परमात्मा ! मुझे प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान तेरा ही दिया हुआ है॥ ४ ॥ ४० ॥ १०९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਤੁਮ ਭਏ ਸਮਰਥ ਅੰਗਾ ॥
जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥
हे सर्वशक्तिमान स्वामी ! तू जिस व्यक्ति की सहायता करता है,"

ਤਾ ਕਉ ਕਛੁ ਨਾਹੀ ਕਾਲੰਗਾ ॥੧॥
ता कउ कछु नाही कालंगा ॥१॥
उसे कोई भी कलंक नहीं लग सकता॥ १॥

ਮਾਧਉ ਜਾ ਕਉ ਹੈ ਆਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥
माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥
हे माधो ! जिसकी आशा तुझ में है,"

ਤਾ ਕਉ ਕਛੁ ਨਾਹੀ ਸੰਸਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ता कउ कछु नाही संसारी ॥१॥ रहाउ ॥
उसे संसार की तृष्णा लेशमात्र भी नहीं रहती।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਠਾਕੁਰੁ ਹੋਇ ॥
जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥
जिसके हृदय में जगत् का ठाकुर निवास करता है,"

ਤਾ ਕਉ ਸਹਸਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੨॥
ता कउ सहसा नाही कोइ ॥२॥
उसको कोई भी दुःख-दर्द स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥

ਜਾ ਕਉ ਤੁਮ ਦੀਨੀ ਪ੍ਰਭ ਧੀਰ ॥
जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥
हे सर्वेश्वर प्रभु ! जिसे तू अपना धैर्य प्रदान करता है,"

ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਪੀਰ ॥੩॥
ता कै निकटि न आवै पीर ॥३॥
उसके निकट कोई भी पीड़ा नहीं आती॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਸੋ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥
हे नानक ! मुझे वह गुरु प्राप्त हुआ है,"

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਦੇਖਾਇਆ ॥੪॥੪੧॥੧੧੦॥
पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥४॥४१॥११०॥
जिसने मुझे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं॥ ४ ॥ ४१ ॥ ११० ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਪਾਈ ਵਡਭਾਗੀ ॥
दुलभ देह पाई वडभागी ॥
यह दुर्लभ मानव-देहि सौभाग्य से प्राप्त हुई है।

ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਹਿ ਤੇ ਆਤਮ ਘਾਤੀ ॥੧॥
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥
जो ईश्वर का नाम-स्मरण नहीं करते, वे आत्मघाती हैं॥ १॥

ਮਰਿ ਨ ਜਾਹੀ ਜਿਨਾ ਬਿਸਰਤ ਰਾਮ ॥
मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥
जो व्यक्ति राम को विस्मृत करते हैं, वह मृत्यु को क्यों नहीं प्राप्त होते ?

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨ ਜੀਵਨ ਕਉਨ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥ रहाउ ॥
नाम के बिना यह जीवन किस काम का है ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਖਾਤ ਪੀਤ ਖੇਲਤ ਹਸਤ ਬਿਸਥਾਰ ॥
खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥
खाना-पीना, खेलना- हँसना इत्यादि साधन आडम्बर हैं,

ਕਵਨ ਅਰਥ ਮਿਰਤਕ ਸੀਗਾਰ ॥੨॥
कवन अरथ मिरतक सीगार ॥२॥
क्योंकि यह मृतक को आभूषणों से सज्जित करने के समान हैं।॥ २॥

ਜੋ ਨ ਸੁਨਹਿ ਜਸੁ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥
जो व्यक्ति परमानंद प्रभु का यश नहीं सुनता,

ਪਸੁ ਪੰਖੀ ਤ੍ਰਿਗਦ ਜੋਨਿ ਤੇ ਮੰਦਾ ॥੩॥
पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥३॥
वह पशु-पक्षियों, रेंगने वाले जीवों की योनियों से भी बुरा है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥
हे नानक ! गुरु ने मेरे भीतर नाम मंत्र सुदृढ़ कर दिया है।

ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੪੨॥੧੧੧॥
केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥४॥४२॥१११॥
केवल नाम ही मेरे हृदय में लीन रहता है॥ ४॥ ४२॥ १११॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕਾ ਕੀ ਮਾਈ ਕਾ ਕੋ ਬਾਪ ॥
का की माई का को बाप ॥
न कोई किसी की माता है और न कोई किसी का पिता है।

ਨਾਮ ਧਾਰੀਕ ਝੂਠੇ ਸਭਿ ਸਾਕ ॥੧॥
नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥
ये सारे रिश्ते नाममात्र एवं झूठे हैं।॥ १॥

ਕਾਹੇ ਕਉ ਮੂਰਖ ਭਖਲਾਇਆ ॥
काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥
हे मूर्ख ! तू किसके लिए दुहाई दे रहा है?

ਮਿਲਿ ਸੰਜੋਗਿ ਹੁਕਮਿ ਤੂੰ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान के हुक्म एवं संयोगवश तू इस दुनिया में आया है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਏਕਾ ਮਾਟੀ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ॥
एका माटी एका जोति ॥
समस्त प्राणियों में एक ही मिट्टी है और एक ही ब्रह्म-ज्योति है।

ਏਕੋ ਪਵਨੁ ਕਹਾ ਕਉਨੁ ਰੋਤਿ ॥੨॥
एको पवनु कहा कउनु रोति ॥२॥
सब में एक ही प्राण हैं, जिसके द्वारा जीव श्वास लेते एवं जीवित रहते हैं। अतः किसी के दुनिया से चले जाने से हम क्यों विलाप करें ? ॥ २॥

ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਬਿਲਲਾਹੀ ॥
मेरा मेरा करि बिललाही ॥
लोग 'मेरा मेरा' कहकर विलाप करते हैं।

ਮਰਣਹਾਰੁ ਇਹੁ ਜੀਅਰਾ ਨਾਹੀ ॥੩॥
मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥३॥
परन्तु यह आत्मा नाशवंत नहीं ॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਖੋਲੇ ਕਪਾਟ ॥
कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥
हे नानक ! गुरु ने जिनके कपाट खोल दिए हैं,

ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਬਿਨਸੇ ਭ੍ਰਮ ਥਾਟ ॥੪॥੪੩॥੧੧੨॥
मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥४॥४३॥११२॥
वे मुक्त हो गए हैं और उनका भ्रम का प्रसार नाश हो गया है ॥४॥४३॥११२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਵਡੇ ਵਡੇ ਜੋ ਦੀਸਹਿ ਲੋਗ ॥
वडे वडे जो दीसहि लोग ॥
जितने भी बड़े-बड़े (धनवान) लोग दिखाई देते हैं,

ਤਿਨ ਕਉ ਬਿਆਪੈ ਚਿੰਤਾ ਰੋਗ ॥੧॥
तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥१॥
उनको चिन्ता का रोग लगा रहता है॥ १॥

ਕਉਨ ਵਡਾ ਮਾਇਆ ਵਡਿਆਈ ॥
कउन वडा माइआ वडिआई ॥
माया की प्रशंसा के कारण कोई भी मनुष्य बड़ा नहीं बनता ?

ਸੋ ਵਡਾ ਜਿਨਿ ਰਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥
वही महान है जिसने राम से वृति लगाई है॥ १॥ रहाउ॥

ਭੂਮੀਆ ਭੂਮਿ ਊਪਰਿ ਨਿਤ ਲੁਝੈ ॥
भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥
भूमि का स्वामी मनुष्य भूमि के लिए दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करता है।

ਛੋਡਿ ਚਲੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨਹੀ ਬੁਝੈ ॥੨॥
छोडि चलै त्रिसना नही बुझै ॥२॥
लेकिन जिसकी खातिर वह लड़ता है, वह सारी भूमि यहीं छोड़कर चला जाता है परन्तु उसकी तृष्णा नहीं मिटती ॥ २ ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥
हे नानक ! वास्तविक बात जिस पर मैंने विचार किया है,

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਨਾਹੀ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥੩॥੪੪॥੧੧੩॥
बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥३॥४४॥११३॥
वह यह है कि भगवान के भजन के बिना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती॥ ३॥ ४४॥ ११३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪੂਰਾ ਮਾਰਗੁ ਪੂਰਾ ਇਸਨਾਨੁ ॥
पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥
प्रभु लब्धि हेतु नाम-मार्ग पूर्ण सही है और नाम-सिमरन ही पूर्ण तीर्थ-स्नान है

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪੂਰਾ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ॥੧॥
सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥१॥
जिस व्यक्ति के हृदय में नाम का निवास हो जाता है, उसका सब कुछ पूर्ण हो जाता है। ॥ १॥

ਪੂਰੀ ਰਹੀ ਜਾ ਪੂਰੈ ਰਾਖੀ ॥
पूरी रही जा पूरै राखी ॥
उस पूर्ण ब्रह्म ने उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा रख ली ;

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਸਰਣਿ ਜਨ ਤਾਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥१॥ रहाउ ॥
जब सेवक ने अपने स्वामी पारब्रह्म की शरण ली ॥ १॥ रहाउ॥

ਪੂਰਾ ਸੁਖੁ ਪੂਰਾ ਸੰਤੋਖੁ ॥
पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥
सेवक को पूर्ण सुख एवं पूर्ण संतोष प्राप्त हो गया है।

ਪੂਰਾ ਤਪੁ ਪੂਰਨ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ॥੨॥
पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥२॥
नाम-सिमरन ही पूर्ण तपस्या और पूर्ण राज योग है॥२॥

ਹਰਿ ਕੈ ਮਾਰਗਿ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ॥
हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥
भगवान के मार्ग पर चलने वाला पापी भी पवित्र हो जाता है

ਪੂਰੀ ਸੋਭਾ ਪੂਰਾ ਲੋਕੀਕ ॥੩॥
पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥३॥
और वह लोक-परलोक में पूर्ण शोभा प्राप्त करता है तथा लोगों से उसका व्यवहार भी अच्छा हो जाता है।॥३॥

ਕਰਣਹਾਰੁ ਸਦ ਵਸੈ ਹਦੂਰਾ ॥
करणहारु सद वसै हदूरा ॥
सृजनहार प्रभु सदैव उसके निकट वास करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੪॥੪੫॥੧੧੪॥
कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥४॥४५॥११४॥
हे नानक ! मेरा सतिगुरु पूर्ण है॥ ४॥ ४५॥ ११४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸੰਤ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਿਟੇ ਅਘ ਕੋਟ ॥
संत की धूरि मिटे अघ कोट ॥
संतों की चरण-धूलि से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਛੋਟ ॥੧॥
संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥१॥
संतों की कृपा से जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है॥ १॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦਰਸੁ ਪੂਰਨ ਇਸਨਾਨੁ ॥
संत का दरसु पूरन इसनानु ॥
संतों के दर्शन ही पूर्ण तीर्थ स्नान है।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਜਪੀਐ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत क्रिपा ते जपीऐ नामु ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की कृपा से हरिनाम का जाप किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟਿਆ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥
संतों की संगति से मनुष्य का अहंत्व मिट जाता है

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਆਵੈ ਸਭੁ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੨॥
द्रिसटि आवै सभु एकंकारु ॥२॥
और फिर सर्वत्र एक ईश्वर ही दृष्टिगोचर होता है॥ २॥

ਸੰਤ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਆਏ ਵਸਿ ਪੰਚਾ ॥
संत सुप्रसंन आए वसि पंचा ॥
संतों की सुप्रसन्नता से पाँच विकार-(काम, क्रोध, लोभ, मोह-अहंकार) वश में आ जाते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਲੈ ਸੰਚਾ ॥੩॥
अम्रितु नामु रिदै लै संचा ॥३॥
मनुष्य अपने हृदय को अमृत नाम से संचित कर लेता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਾ ਪੂਰਾ ਕਰਮ ॥
कहु नानक जा का पूरा करम ॥
हे नानक ! जिसकी किस्मत पूर्ण है,

ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਸਾਧੂ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥੪੬॥੧੧੫॥
तिसु भेटे साधू के चरन ॥४॥४६॥११५॥
वही संतों के चरण स्पर्श करता है ॥ ४॥ ४६ ॥ ११५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਪਤ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸੈ ॥
हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥
भगवान की महिमा-स्तुति करने से हृदय-कमल प्रफुल्लित हो जाता है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤ੍ਰਾਸ ਸਭ ਨਾਸੈ ॥੧॥
हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥१॥
भगवान का सिमरन करने से समस्त भय नाश हो जाते हैं।॥ १॥

ਸਾ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥
वही मति पूर्ण है, जिससे भगवान का यश गायन किया जाता है।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
वडै भागि साधू संगु पावै ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की संगति किस्मत से ही मिलती है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਈਐ ਨਿਧਿ ਨਾਮਾ ॥
साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥
संतों की संगति करने से नाम-निधि प्राप्त हो जाती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮਾ ॥੨॥
साधसंगि पूरन सभि कामा ॥२॥
संतों की संगति करने से समस्त कार्य सफल हो जाते हैं॥ २ ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥
हरि की भगति जनमु परवाणु ॥
भगवान की भक्ति करने से मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੁ ॥੩॥
गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥३॥
गुरु की कृपा से प्रभु का नाम सिमरन होता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
कहु नानक सो जनु परवानु ॥
हे नानक ! वह सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाता है,"

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੪॥੪੭॥੧੧੬॥
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥४॥४७॥११६॥
जिस मनुष्य के हृदय में भगवान का निवास हो जाता है॥ ४ ॥ ४७ ॥ ११६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
एकसु सिउ जा का मनु राता ॥
जिस व्यक्ति का मन एक ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाता है,

ਵਿਸਰੀ ਤਿਸੈ ਪਰਾਈ ਤਾਤਾ ॥੧॥
विसरी तिसै पराई ताता ॥१॥
वह दूसरों से इर्षा-द्वेष करना भूल जाता है॥ १ ॥

ਬਿਨੁ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਦੀਸੈ ਕੋਈ ॥
बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥
उसे गोविन्द के अलावा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करन करावन करता सोई ॥१॥ रहाउ ॥
उसे ज्ञान हो जाता है कि जगत् का कर्ता स्वयं ही सबकुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨਹਿ ਕਮਾਵੈ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥
मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥
जो व्यक्ति एकाग्रचित होकर नाम-सिमरन की साधना करता है, और अपने मुख से हरि-परमेश्वर का नाम बोलता रहता है,

ਸੋ ਜਨੁ ਇਤ ਉਤ ਕਤਹਿ ਨ ਡੋਲੈ ॥੨॥
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥२॥
वह लोक-परलोक में कहीं भी डगमगाता नहीं ॥ २॥

ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੋ ਸਚ ਸਾਹੁ ॥
जा कै हरि धनु सो सच साहु ॥
जिस मनुष्य के पास हरि नाम रूपी धन है, वही सच्चा साहूकार है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕਰਿ ਦੀਨੋ ਵਿਸਾਹੁ ॥੩॥
गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥३॥
पूर्ण गुरु ने उसकी प्रतिष्ठा बना दी है॥ ३॥

ਜੀਵਨ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥
उसे जीवन पुरुष हरि-परमेश्वर मिल जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੪੮॥੧੧੭॥
कहु नानक परम पदु पाइआ ॥४॥४८॥११७॥
हे नानक ! इस तरह वह परम पद प्राप्त कर लेता है॥ ४ ॥ ४८॥ ११७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕੈ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੁ ॥
नामु भगत कै प्रान अधारु ॥
प्रभु का नाम ही उसके भक्त के प्राणों का आधार है।

ਨਾਮੋ ਧਨੁ ਨਾਮੋ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥੧॥
नामो धनु नामो बिउहारु ॥१॥
नाम ही उसका धन है, नाम ही उसका व्यापार है॥ १॥

ਨਾਮ ਵਡਾਈ ਜਨੁ ਸੋਭਾ ਪਾਏ ॥
नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥
नाम द्वारा भक्त प्रशंसा एवं शोभा प्राप्त करता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन यह नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसको प्रभु स्वयं कृपा करके दिलवाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕੈ ਸੁਖ ਅਸਥਾਨੁ ॥
नामु भगत कै सुख असथानु ॥
नाम भक्त की सुख-शांति का निवास है।

ਨਾਮ ਰਤੁ ਸੋ ਭਗਤੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥
नाम रतु सो भगतु परवानु ॥२॥
जो भक्त नाम में मग्न रहता है, वह स्वीकार हो जाता है॥ २ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਉ ਧਾਰੈ ॥
हरि का नामु जन कउ धारै ॥
हरि का नाम उसके सेवक को आधार प्रदान करता है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਜਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥
सासि सासि जनु नामु समारै ॥३॥
श्वास-श्वास से ईश्वर का सेवक नाम-सिमरन करता रहता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪੂਰਾ ਭਾਗੁ ॥
कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति की किस्मत अच्छी होती है,

ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗੁ ॥੪॥੪੯॥੧੧੮॥
नाम संगि ता का मनु लागु ॥४॥४९॥११८॥
उसका ही मन नाम से लगा रहता है ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ११८ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥
संत की कृपा से जब से मैंने भगवान के नाम का ध्यान किया है,

ਤਬ ਤੇ ਧਾਵਤੁ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਇਆ ॥੧॥
तब ते धावतु मनु त्रिपताइआ ॥१॥
तब से मेरा विकारों की ओर भटकता हुआ मन तृप्त हो गया है॥ १॥

ਸੁਖ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ਪਾਇਆ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥
प्रभु की गुणस्तुति करने से मुझे सुख का विश्राम प्राप्त हो गया है।

ਸ੍ਰਮੁ ਮਿਟਿਆ ਮੇਰੀ ਹਤੀ ਬਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कुकर्मों का दैत्य नष्ट हो गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਰਾਧਿ ਭਗਵੰਤਾ ॥
चरन कमल अराधि भगवंता ॥
हे भाई ! भगवान के चरण-कमलों का चिन्तन कर।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਮਿਟੀ ਮੇਰੀ ਚਿੰਤਾ ॥੨॥
हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥२॥
हरि का सिमरन करने से मेरी चिन्ता मिट गई है ॥ २ ॥

ਸਭ ਤਜਿ ਅਨਾਥੁ ਏਕ ਸਰਣਿ ਆਇਓ ॥
सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥
मैं अनाथ सब सहारों को त्याग चुका हूँ और एक ईश्वर की शरणागत हूँ।

ਊਚ ਅਸਥਾਨੁ ਤਬ ਸਹਜੇ ਪਾਇਓ ॥੩॥
ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥३॥
तब से मैंने सर्वोच्च स्थान को सहज ही प्राप्त कर लिया है॥ ३॥

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਨਸਿਆ ॥
दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥
मेरे दुःख-दर्द, भ्रम-भय नाश हो गए हैं।

ਕਰਣਹਾਰੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਬਸਿਆ ॥੪॥੫੦॥੧੧੯॥
करणहारु नानक मनि बसिआ ॥४॥५०॥११९॥
हे नानक ! सृजनहार प्रभु ने हृदय में निवास कर लिया है॥ ४॥ ५० ॥ ११९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕਰ ਕਰਿ ਟਹਲ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਗਾਵਉ ॥
कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥
मैं अपने हाथों से प्रभु की सेवा करता हूँ और मुख से उसकी गुणस्तुति करता हूँ।

ਚਰਨ ਠਾਕੁਰ ਕੈ ਮਾਰਗਿ ਧਾਵਉ ॥੧॥

चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥१॥

चरणों से मैं ठाकुर के मार्ग का अनुसरण करता हूँ॥ १॥

ਭਲੋ ਸਮੋ ਸਿਮਰਨ ਕੀ ਬਰੀਆ ॥

भलो समो सिमरन की बरीआ ॥

जीवन का वह समय बड़ा शुभ है, जिसमें भगवान का सिमरन करने का अवसर मिलता है।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਭੈ ਪਾਰਿ ਉਤਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥१॥ रहाउ ॥

भगवान का नाम-सिमरन करने से भयानक सागर से पार हुआ जा सकता है ॥१॥रहाउ॥

ਨੇਤ੍ਰ ਸੰਤਨ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖੁ ॥

नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥

हे भाई ! अपने नेत्रों से संतों के दर्शन कर।

ਪ੍ਰਭ ਅਵਿਨਾਸੀ ਮਨ ਮਹਿ ਲੇਖੁ ॥੨॥

प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥२॥

अविनाशी प्रभु को अपने हृदय में धारण कर ले॥ २॥

ਸੁਣਿ ਕੀਰਤਨੁ ਸਾਧ ਪਹਿ ਜਾਇ ॥

सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥

संतों के पास जाकर ईश्वर का भजन सुन

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਮਿਟਾਇ ॥੩॥

जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥३॥

और इस प्रकार तेरा जन्म-मरण का भय दूर हो जाएगा ॥ ३॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਠਾਕੁਰ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥
हे भाई ! ठाकुर जी के सुन्दर चरणों को अपने हृदय में बसाकर रख।

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਨਾਨਕ ਨਿਸਤਾਰਿ ॥੪॥੫੧॥੧੨੦॥
दुलभ देह नानक निसतारि ॥४॥५१॥१२०॥
हे नानक ! इस तरह अपने अमूल्य मानव शरीर का कल्याण कर ले ॥४॥५१॥१२०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਅਪਨੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੈ ॥
जा कउ अपनी किरपा धारै ॥
जिस व्यक्ति पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करता है,

ਸੋ ਜਨੁ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਉਚਾਰੈ ॥੧॥
सो जनु रसना नामु उचारै ॥१॥
वह अपनी रसना से भगवान के नाम का जाप करता है॥ १॥

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਬਿਆਪੈ ॥
हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥
हरि को विस्मृत करके सन्देह एवं दुख प्राणी को लग जाते हैं।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन नाम-सिमरन करने से भ्रम एवं भय भाग जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਸੁਣੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵੈ ॥
हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥
जो व्यक्ति ईश्वर का भजन सुनता है और ईश्वर का भजन गाता है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਦੂਖੁ ਨਿਕਟਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥੨॥

तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥२॥

उस व्यक्ति के निकट कोई भी मुसीबत नहीं आती ॥ २॥

ਹਰਿ ਕੀ ਟਹਲ ਕਰਤ ਜਨੁ ਸੋਹੈ ॥

हरि की टहल करत जनु सोहै ॥

ईश्वर का सेवक उसकी सेवा करता हुआ सुन्दर लगता है।

ਤਾ ਕਉ ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਨ ਪੋਹੈ ॥੩॥

ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥३॥

उसे माया की अग्नि स्पर्श नहीं करती ॥ ३ ॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਇਆਲ ॥

मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥

हे नानक ! दया के घर ईश्वर का नाम जिस व्यक्ति के हृदय एवं मुख में वास कर जाता है,

ਨਾਨਕ ਤਜੀਅਲੇ ਅਵਰਿ ਜੰਜਾਲ ॥੪॥੫੨॥੧੨੧॥

नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥४॥५२॥१२१॥

उस व्यक्ति ने दूसरे समस्त जंजाल त्याग दिए हैं॥ ४॥ ५२॥ १२१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਬਹੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥

छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥

हे भाई ! अपनी बुद्धिमता एवं अधिक चतुरता को त्याग कर

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥੧॥

गुर पूरे की टेक टिकाई ॥१॥

पूर्ण गुरु की शरण ले॥ १॥

ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥

दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥

ऐसा व्यक्ति भगवान का गुणानुवाद करता हुआ सुखी हो जाता है और उसके तमाम दुख नाश हो जाते हैं,

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥

जिस व्यक्ति की पूर्ण गुरु से भेंट हो जाती है, वह गुरु की कृपा से भगवान में ही सुरति लगाता है। ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਗੁਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ॥

हरि का नामु दीओ गुरि मंत्रु ॥

गुरु ने मुझे ईश्वर के नाम का मंत्र प्रदान किया है,

ਮਿਟੇ ਵਿਸੂਰੇ ਉਤਰੀ ਚਿੰਤ ॥੨॥

मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥२॥

जिससे मेरी चिन्ताएँ मिट गई हैं और व्याकुलता दूर हो गई है॥ २॥

ਅਨਦ ਭਏ ਗੁਰ ਮਿਲਤ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥

अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥

कृपा के घर गुरु को मिलने से आनन्द प्राप्त हो गया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਾਟੇ ਜਮ ਜਾਲ ॥੩॥

करि किरपा काटे जम जाल ॥३॥

अपनी कृपा धारण करके गुरु ने यमदूतों का फँदा काट दिया है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥

कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥

हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है,

ਤਾ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥੪॥੫੩॥੧੨੨॥
ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥४॥५३॥१२२॥
इसलिए माया मुझे पुनः पीड़ित नहीं करेगी॥ ४॥ ५३॥ १२२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰਾਖਿ ਲੀਆ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਆਪਿ ॥
राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥
पूर्ण गुरु ने स्वयं मेरी रक्षा की है।

ਮਨਮੁਖ ਕਉ ਲਾਗੋ ਸੰਤਾਪੁ ॥੧॥
मनमुख कउ लागो संतापु ॥१॥
लेकिन स्वेच्छाचारी पर मुसीबतों का पहाड़ उमड़ पड़ा है॥ १॥

ਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਜਪਿ ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ॥
गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥
हे मेरे मित्र ! गुरु को हमेशा स्मरण कर।

ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਵਹਿ ਦਰਬਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਇ ॥
गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥
हे मित्र ! तू गुरु के चरण अपने हृदय में बसा,

ਦੁਖ ਦੁਸਮਨ ਤੇਰੀ ਹਤੈ ਬਲਾਇ ॥੨॥
दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥२॥
तेरा दुःख, शत्रु एवं आपदा नष्ट हो जाएँगे॥ २॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥
गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥
गुरु का शब्द ही तेरा साथी एवं सहायक है।

ਦਇਆਲ ਭਏ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਭਾਈ ॥੩॥
दइआल भए सगले जीअ भाई ॥३॥
हे भाई ! सभी लोग तुझ पर दयालु होंगे॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਜਬ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ॥
गुरि पूरै जब किरपा करी ॥
हे नानक ! जब पूर्ण गुरु ने अपनी कृपा-दृष्टि की,

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਪੂਰੀ ਪਰੀ ॥੪॥੫੪॥੧੨੩॥
भनति नानक मेरी पूरी परी ॥४॥५४॥१२३॥
तो मेरा जीवन परिपूर्ण हो गया ॥ ४॥ ५४॥ १२३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਅਨਿਕ ਰਸਾ ਖਾਏ ਜੈਸੇ ਢੋਰ ॥
अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥
मनुष्य अधिकतर स्वादिष्ट पदार्थ पशु की भाँति सेवन करता है

ਮੋਹ ਕੀ ਜੇਵਰੀ ਬਾਧਿਓ ਚੋਰ ॥੧॥
मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥१॥
और सांसारिक मोह की रस्सी से वह चोर की भाँति जकड़ा रहता है।॥ १॥

ਮਿਰਤਕ ਦੇਹ ਸਾਧਸੰਗ ਬਿਹੂਨਾ ॥
मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥
हे भाई ! जो व्यक्ति संतों की संगति से विहीन रहता है, उसका शरीर मृतक है।

ਆਵਤ ਜਾਤ ਜੋਨੀ ਦੁਖ ਖੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

आवत जात जोनी दुख खीना ॥१॥ रहाउ ॥

ऐसा व्यक्ति योनियों में फंसकर आवागमन करता रहता है और दुख से नष्ट हो जाता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਬਸਤ੍ਰ ਸੁੰਦਰ ਪਹਿਰਾਇਆ ॥

अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥

मनुष्य मोहवश विभिन्न प्रकार की सुन्दर पोशाकें धारण करता है,

ਜਿਉ ਡਰਨਾ ਖੇਤ ਮਾਹਿ ਡਰਾਇਆ ॥੨॥

जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥२॥

परन्तु निर्धनों के लिए वह ऐसा होता है जैसे फसल में पशुओं को डराने के लिए बनावटी रक्षक खड़ा किया होता है॥ २॥

ਸਗਲ ਸਰੀਰ ਆਵਤ ਸਭ ਕਾਮ ॥

सगल सरीर आवत सभ काम ॥

दूसरे पशुओं इत्यादि के शरीर काम आ जाते हैं।

ਨਿਹਫਲ ਮਾਨੁਖੁ ਜਪੈ ਨਹੀ ਨਾਮ ॥੩॥

निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥३॥

लेकिन जो व्यक्ति भगवान के नाम का जाप नहीं करता, उसका दुनिया में आगमन निष्फल हो जाता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ॥

कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥

हे नानक ! भगवान जिस व्यक्ति पर दयालु हो जाता है,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਭਜਹਿ ਗੋਪਾਲਾ ॥੪॥੫੫॥੧੨੪॥

साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥४॥५५॥१२४॥

वह संतों की संगति में शामिल होकर गोपाल का भजन करता रहता है॥ ४ ॥ ५५ ॥ १२४ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

गउड़ी महला ५

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥
कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥
गुरु की वाणी मानसिक क्लेश एवं कष्टों को दूर कर देती है।

ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਸੁਖ ਸਾਰੇ ॥੧॥
आवण जाण रहे सुख सारे ॥१॥
गुरु की वाणी के फलस्वरूप जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है और सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं।॥ १॥

ਭੈ ਬਿਨਸੇ ਨਿਰਭਉ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥
निडर ईश्वर का ध्यान करने से मेरा भय दूर हो गया है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की संगति में मैं ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਚਰਨ ਕਵਲ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥
चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥
ईश्वर के चरण कमल मैंने अपने हृदय में टिका लिए हैं।

ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਗੁਰਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥੨॥
अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥२॥
गुरु ने मुझे तृष्णा के अग्नि सागर से पार कर दिया है॥ २ ॥

ਜਾਤ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਕਾਢੇ ॥
बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥
मैं भवसागर में डूब रहा था परन्तु पूर्ण गुरु ने मेरी रक्षा की है।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਟੂਟੇ ਗਾਢੇ ॥੩॥
जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥
गुरु ने मुझे प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़ा हुआ था ॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥
हे नानक ! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ,

ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥੫੬॥੧੨੫॥
जिसु भेटत गति भई हमारी ॥४॥५६॥१२५॥
जिनको मिलने से मेरी मुक्ति हो गई है ॥४॥५६॥१२५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਾ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰਹੁ ॥
साधसंगि ता की सरनी परहु ॥
हे भाई ! संतों की सभा में उसकी शरण में पड़ो।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਨਾ ਆਗੈ ਧਰਹੁ ॥੧॥
मनु तनु अपना आगै धरहु ॥१॥
अपना मन एवं तन ईश्वर के समक्ष समर्पित कर दो ॥ १ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪੀਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
अम्रित नामु पीवहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! अमृत रूपी नाम पान करो।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਭ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु की स्तुति एवं आराधना करने से मोह-माया की अग्नि पूर्णतया बुझ जाती है।॥ १॥ रहाउ॥

ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰਹੁ ॥
तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥
अपना अभिमान त्याग कर अपने जन्म-मरण को समाप्त कर लो ।

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਕੇ ਚਰਣ ਨਮਸਕਾਰਹੁ ॥੨॥
हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥२॥
ईश्वर के सेवक के चरणों पर प्रणाम करो ॥ २॥

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਹਿ ਸਮਾਲੇ ॥
सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥
श्वास-श्वास से अपने मन में प्रभु स्मरण कर लो।

ਸੋ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਜੋ ਚਾਲੈ ਨਾਲੇ ॥੩॥
सो धनु संचहु जो चालै नाले ॥३॥
हे भाई ! वह नाम धन संचित करो जो तेरे साथ परलोक में जाएगा॥ ३ ॥

ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥
तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥
केवल वही व्यक्ति नाम धन को पाता है, जिसके मस्तक पर विधाता द्वारा भाग्यरेखाएँ विद्यमान होती हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥੪॥੫੭॥੧੨੬॥
कहु नानक ता की चरणी लागु ॥४॥५७॥१२६॥
हे नानक ! तू उसके चरणों पर झुक ॥४॥५७॥१२६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸੂਕੇ ਹਰੇ ਕੀਏ ਖਿਨ ਮਾਹੇ ॥
सूके हरे कीए खिन माहे ॥
नीरस (सूखों) को गुरदेव क्षण में ही हरा-भरा कर देता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸੰਚਿ ਜੀਵਾਏ ॥੧॥
अम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥१॥
उसकी अमृत रूपी दृष्टि उनको सींच कर पुनजीर्वित कर देती है॥ १॥

ਕਾਟੇ ਕਸਟ ਪੂਰੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥
काटे कसट पूरे गुरदेव ॥
पूर्ण गुरदेव ने मेरे कष्ट दूर कर दिए हैं।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਦੀਨੀ ਅਪੁਨੀ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥१॥ रहाउ ॥
अपने सेवक को वह अपनी सेवा प्रदान करता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਿਟਿ ਗਈ ਚਿੰਤ ਪੁਨੀ ਮਨ ਆਸਾ ॥
मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥
मेरी चिन्ता मिट गई है और मनोकामनाएँ पूर्ण हो गई हैं

ਕਰੀ ਦਇਆ ਸਤਿਗੁਰਿ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥੨॥
करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥२॥
जब से गुणों के भण्डार, सतिगुरु ने अपनी दया की है ।॥ २॥

ਦੁਖ ਨਾਠੇ ਸੁਖ ਆਇ ਸਮਾਏ ॥
दुख नाठे सुख आइ समाए ॥
दुख दौड़ जाते हैं और सुख आकर उसका स्थान ले लेता है।

ਢੀਲ ਨ ਪਰੀ ਜਾ ਗੁਰਿ ਫੁਰਮਾਏ ॥੩॥
ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥३॥
जब गुरु जी आज्ञा करते हैं, तो इसमें कोई देरी नहीं लगती ॥ ३॥

ਇਛ ਪੁਨੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ॥
इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥
जिन पुरुषों को पूर्ण गुरु जी मिल जाते हैं,

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸੁਫਲ ਫਲੇ ॥੪॥੫੮॥੧੨੭॥
नानक ते जन सुफल फले ॥४॥५८॥१२७॥
हे नानक ! उनकी तमाम इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और वे श्रेष्ठ फलों से प्रफुल्लित हो जाते हैं॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤਾਪ ਗਏ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਂਤਿ ॥
ताप गए पाई प्रभि सांति ॥
प्रभु ने सुख-शांति प्रदान की है जिससे ताप दूर हो गया है।

ਸੀਤਲ ਭਏ ਕੀਨੀ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤਿ ॥੧॥
सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥
जिन्हें प्रभु ने नाम की देन प्रदान की है, जिससे वे सभी शीतल हो गए हैं। १॥

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਭਏ ਸੁਹੇਲੇ ॥
प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥
प्रभु की कृपा से हम सुखी हो गए हैं।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਬਿਛੁਰੇ ਮੇਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥
जन्म-जन्मांतरों के बिछुड़े हुओं को ईश्वर ने मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਉ ॥
सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥
ईश्वर के नाम की स्तुति-आराधना करने से

ਸਗਲ ਰੋਗ ਕਾ ਬਿਨਸਿਆ ਥਾਉ ॥੨॥
सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥२॥
समस्त रोगों का स्थान नष्ट हो गया है। २।

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥
सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥
वह सहज स्वभाव हरि की वाणी बोलता रहता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥੩॥
आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥३॥
हे प्राणी ! दिन के आठ प्रहर ही प्रभु का सिमरन करो।

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥
दुख-दर्द एवं यमदूत उसके निकट नहीं आते

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੪॥੫੯॥੧੨੮॥
कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥४॥५९॥१२८॥
हे नानक ! जो व्यक्ति ईश्वर का यशोगान करता है ॥ ४॥ ५९॥ १२८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਭਲੇ ਦਿਨਸ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗ ॥
भले दिनस भले संजोग ॥
वह दिन बड़ा शुभ है और वह संयोग भी भला है,

ਜਿਤੁ ਭੇਟੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰਜੋਗ ॥੧॥
जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥१॥
जब मुझे निर्लिप्त पारब्रह्म मिला ॥ १॥

ਓਹ ਬੇਲਾ ਕਉ ਹਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥
उस समय पर मैं बलिहारी जाता हूँ,

ਜਿਤੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਜਪੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
जब मेरा मन ईश्वर के नाम की आराधना करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਫਲ ਮੂਰਤੁ ਸਫਲ ਓਹ ਘਰੀ ॥
सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥
वह मुहूर्त सफल है और वह घडी भी सफल है,

ਜਿਤੁ ਰਸਨਾ ਉਚਰੈ ਹਰਿ ਹਰੀ ॥੨॥
जितु रसना उचरै हरि हरी ॥२॥
जब मेरी रसना हरि-प्रभु का नाम उच्चरित करती है॥ २॥

ਸਫਲੁ ਓਹੁ ਮਾਥਾ ਸੰਤ ਨਮਸਕਾਰਸਿ ॥
सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥
वह मस्तक भाग्यवान है जो संतों के समक्ष नतमस्तक होता है।

ਚਰਣ ਪੁਨੀਤ ਚਲਹਿ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ॥੩॥
चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥३॥
वह चरण पवित्र हैं जो प्रभु-मार्ग का अनुसरण करते हैं।॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਲਾ ਮੇਰਾ ਕਰਮ ॥
कहु नानक भला मेरा करम ॥
हे नानक ! मेरा भाग्य भला है,

ਜਿਤੁ ਭੇਟੇ ਸਾਧੂ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥੬੦॥੧੨੯॥
जितु भेटे साधू के चरन ॥४॥६०॥१२९॥
जिसके फलस्वरूप मैं संतों के चरणाश्रय लगा ॥ ४ ॥ ६० ॥ १२९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਾਖੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
गुर का सबदु राखु मन माहि ॥
गुरु का शब्द अपने मन में धारण करो।

ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਿ ਚਿੰਤਾ ਸਭ ਜਾਹਿ ॥੧॥
नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥१॥
प्रभु का नाम-सिमरन करने से समस्त चिन्ताएँ मिट जाती हैं।॥ १ ॥

ਬਿਨੁ ਭਗਵੰਤ ਨਾਹੀ ਅਨ ਕੋਇ ॥
बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥
भगवान के अलावा प्राणी का दूसरा कोई नहीं।

ਮਾਰੈ ਰਾਖੈ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मारै राखै एको सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
एक भगवान ही जीवों की रक्षा करता और नाश करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਰਿਦੈ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥
गुरु के चरणों को अपने हृदय में बसाओ।

ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਜਪਿ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥
अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥२॥
अग्नि का सागर तू परमेश्वर का स्मरण करने से पार कर लेगा ॥ २॥

ਗੁਰ ਮੂਰਤਿ ਸਿਉ ਲਾਇ ਧਿਆਨੁ ॥
गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥
गुरु के स्वरूप पर ध्यान लगाने से

ਈਹਾ ਊਹਾ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥੩॥
ईहा ऊहा पावहि मानु ॥३॥
तुझे लोक-परलोक में बड़ा सम्मान प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਗੁਰ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥
हे नानक ! सब कुछ त्यागकर उसने गुरु की शरण ली है

ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸੇ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੬੧॥੧੩੦॥
मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥४॥६१॥१३०॥
और उसकी चिंताएँ मिट गई हैं एवं आत्मिक सुख प्राप्त हो गया है ॥४॥६१॥१३०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੂਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥
जिसका सिमरन करने से समस्त दुःख मिट जाते हैं

ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
नामु रतनु वसै मनि आइ ॥१॥
और नाम-रत्न मन में आकर बस जाता है॥ १ ॥

ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥
हे मेरे मन ! उस गोविन्द की वाणी का जाप कर।

ਸਾਧੂ ਜਨ ਰਾਮੁ ਰਸਨ ਵਖਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥
संतजन तो अपनी रसना से राम का ही गुणानुवाद करते रहते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਇਕਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਦੂਜਾ ਕੋਇ ॥
इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥
दुनिया में एक ईश्वर के सिवाय दूसरा कोई नहीं।

ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥
जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥२॥
उसकी कृपादृष्टि से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ २॥

ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਸਖਾ ਕਰਿ ਏਕੁ ॥
साजनु मीतु सखा करि एकु ॥
हे मेरे मन ! एक ईश्वर को अपना मित्र, सखा एवं साथी बना।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਖਰ ਮਨ ਮਹਿ ਲੇਖੁ ॥੩॥
हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥
अपने हृदय में हरि-परमेश्वर की गुणस्तुति का अक्षर लिख ले ॥ ३॥

ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤ ਸੁਆਮੀ ॥
रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥
इस जगत् का स्वामी हर जगह मौजूद है।

ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੬੨॥੧੩੧॥
गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥६२॥१३१॥
हे नानक ! वह तो अन्तर्यामी प्रभु का ही यशोगान करता रहता है॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਭੈ ਮਹਿ ਰਚਿਓ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥
भै महि रचिओ सभु संसारा ॥
सारा जगत् (किसी न किसी) भय में दबा हुआ रहता है।

ਤਿਸੁ ਭਉ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥
तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥१॥
जिस व्यक्ति को भगवान के नाम का आधार मिल जाता है, उसे कोई भय नहीं ॥ १॥

ਭਉ ਨ ਵਿਆਪੈ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥
भउ न विआपै तेरी सरणा ॥
हे प्रभु ! जो तेरी शरण में आता है, उसे कोई भय नहीं लगता।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो तुधु भावै सोई करणा ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तू वही करता है, जो तुझे लुभाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੋਗ ਹਰਖ ਮਹਿ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥
सोग हरख महि आवण जाणा ॥
मनुष्य सुख एवं दुख में जन्मता- मरता रहता है।

ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਾ ॥੨॥
तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥२॥
लेकिन जो ईश्वर को अच्छे लगते हैं, वह आत्मिक सुख पाते हैं॥ २॥

ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਮਹਾ ਵਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥
अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥
यह दुनिया तृष्णा की अग्नि का सागर है, जहाँ लोगों को माया प्रभावित करती रहती है।

ਸੇ ਸੀਤਲ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥
से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥३॥
जिस व्यक्ति को सतिगुरु प्राप्त हो जाता है, वह माया में रहता हुआ भी शांत रहता है॥ ३॥

ਰਾਖਿ ਲੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ॥
राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥
हे रक्षक प्रभु ! हमारी रक्षा कीजिए।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੪॥੬੩॥੧੩੨॥
कहु नानक किआ जंत विचारा ॥४॥६३॥१३२॥
हे नानक ! भय से बचने हेतु जीव बेचारा क्या कर सकता है ? ॥ ४॥ ६३॥ १३२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਜਪੀਐ ਨਾਉ ॥
तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥
हे प्रभु ! तुम्हारी कृपा से ही नाम-स्मरण किया जा सकता है।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਦਰਗਹ ਥਾਉ ॥੧॥
तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥१॥
तुम्हारी कृपा से ही तेरे दरबार में जीव को सम्मान मिलता है॥ १॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥
तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइ ॥
हे पारब्रह्म प्रभु ! तेरे सिवाय (जगत् में) दूसरा कोई नहीं।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुमरी क्रिपा ते सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारी कृपा से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਮਨਿ ਵਸੇ ਤਉ ਦੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥
हे ठाकुर ! यदि तू हृदय में बस जाए तो प्राणी को दुख नहीं लगता।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥੨॥
तुमरी क्रिपा ते भ्रमु भउ भागै ॥२॥
तुम्हारी कृपा से भ्रम एवं भय दौड़ जाते हैं।॥ २॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ॥
पारब्रहम अपर्मपर सुआमी ॥
हे अपरंपार पारब्रह्म प्रभु !

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੩॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥
हे जगत् के स्वामी ! तू सबके दिलों का ज्ञाता हैं।॥ ३॥

ਕਰਉ ਅਰਦਾਸਿ ਅਪਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥
मैं नानक अपने गुरु के समक्ष विनती करता हूँ कि

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਰਾਸਿ ॥੪॥੬੪॥੧੩੩॥
नानक नामु मिलै सचु रासि ॥४॥६४॥१३३॥
मुझे सत्य नाम की पूंजी की देन प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ६४॥ १३३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕਣ ਬਿਨਾ ਜੈਸੇ ਥੋਥਰ ਤੁਖਾ ॥
कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥
जैसे अनाज के बिना भूसा शून्य है,

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨ ਸੂਨੇ ਸੇ ਮੁਖਾ ॥੧॥
नाम बिहून सूने से मुखा ॥१॥
वैसे ही वह मुख शून्य है जो नामविहीन है॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥
हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥
हे नश्वर प्राणी ! नित्य ही हरि-परमेश्वर का नाम-सिमरन करते रहो।

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨ ਧ੍ਰਿਗੁ ਦੇਹ ਬਿਗਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु के नाम बिना यह शरीर धिक्कार योग्य है, जो पराया हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਮੁਖਿ ਭਾਗ ॥
नाम बिना नाही मुखि भागु ॥
नाम सिमरन के बिना चेहरा भाग्य से उदय नहीं होता।

ਭਰਤ ਬਿਹੂਨ ਕਹਾ ਸੋਹਾਗੁ ॥੨॥
भरत बिहून कहा सोहागु ॥२॥
अपने पति के बिना सुहाग कहाँ है? ॥ २॥

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਲਗੈ ਅਨ ਸੁਆਇ ॥
नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥
जो व्यक्ति नाम को विस्मृत करके दूसरे रसों में लगा हुआ है,

ਤਾ ਕੀ ਆਸ ਨ ਪੂਜੈ ਕਾਇ ॥੩॥
ता की आस न पूजै काइ ॥३॥
उसकी कोई भी आकांक्षा पूरी नहीं होती।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਦਾਤਿ ॥
करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जिस व्यक्ति को तू कृपा करके नाम की देन प्रदान करता है,

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥੪॥੬੫॥੧੩੪॥
नानक नामु जपै दिन राति ॥४॥६५॥१३४॥
वह दिन-रात तेरा नाम-सिमरन ही करता रहता है ॥४॥६५॥१३४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੂੰ ਸਮਰਥੁ ਤੂੰਹੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ॥
तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥
हे प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है और तू ही मेरा स्वामी है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਤੇ ਤੂੰ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੧॥
सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥१॥
हे ठाकुर ! तू अंतर्यामी है और इस दुनिया में सब कुछ तेरी प्रेरणा से ही हो रहा है॥ १॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਜਨ ਓਟ ॥
पारब्रहम पूरन जन ओट ॥
हे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु ! तू ही सेवक का सहारा है।

ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਉਧਰਹਿ ਜਨ ਕੋਟਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥१॥ रहाउ ॥
तेरी शरण लेकर करोड़ों ही प्राणी (भवसागर से) पार हो जाते हैं। १॥ रहाउ॥

ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਤੇਤੇ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ॥
जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥
हे गोविन्द ! संसार में जितने भी जीव-जन्तु हैं, वह सभी तेरे उत्पन्न किए हुए हैं,

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਸੁਖ ਘਨੇਰੇ ॥੨॥
तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥२॥
तेरी कृपा से हम जीवों को अनंत सुख उपलब्ध हो रहे हैं। २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥
जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥
हे प्रभु ! जगत् में जो कुछ भी घटित होता है, वह सब तेरी इच्छानुसार है।

ਹੁਕਮੁ ਬੂਝੈ ਸੋ ਸਚਿ ਸਮਾਣਾ ॥੩॥
हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥३॥
जो व्यक्ति भगवान के हुक्म को समझ लेता है, वह सत्य में ही समा जाता है॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਜੈ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥
करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥
नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! कृपा करके नाम की देन प्रदान कीजिए

ਨਾਨਕ ਸਿਮਰੈ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੪॥੬੬॥੧੩੫॥
नानक सिमरै नामु निधानु ॥४॥६६॥१३५॥
चूंकि वह तेरे नाम के भण्डार का ही सिमरन करता रहे॥ ४ ॥ ६६ ॥ १३५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤਾ ਕਾ ਦਰਸੁ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥
ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥
उस प्रभु के दर्शन वह भाग्यशाली ही प्राप्त करता है,"

ਜਾ ਕੀ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੧॥
ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥
उस प्रभु के दर्शन वह भाग्यशाली ही प्राप्त करता है,"

ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
जा कै हरि वसिआ मन माही ॥
जिसके हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है,"

ਤਾ ਕਉ ਦੁਖੁ ਸੁਪਨੈ ਭੀ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥१॥ रहाउ ॥
उसे स्वप्न में भी कोई दुःख स्पर्श नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਰਾਖੇ ਜਨ ਮਾਹਿ ॥
सरब निधान राखे जन माहि ॥
गुणों के समूचे भण्डार ईश्वर ने अपने सेवक के हृदय में बसाए हैं।

ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥
ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥२॥
उसकी संगति में पाप व संताप निवृत्त हो जाते हैं।॥ २॥

ਜਨ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਥੀ ਨ ਜਾਇ ॥
जन की महिमा कथी न जाइ ॥
ईश्वर के सेवक की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੩॥
पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥३॥
ऐसा सेवक पारब्रह्म-प्रभु में ही लीन रहता है॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਉ ਸੁਨੀਜੈ ॥
करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥
हे प्रभु! कृपा करके मेरी एक विनती सुन लो कि

ਦਾਸ ਕੀ ਧੂਰਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਦੀਜੈ ॥੪॥੬੭॥੧੩੬॥
दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥४॥६७॥१३६॥
अपने दास की चरण-धूलि की देन नानक को दे दीजिए ॥४॥६७॥१३६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤੇਰੀ ਜਾਇ ਬਲਾਇ ॥
हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥
हे जीव ! भगवान का नाम-सिमरन करने से तेरी विपदा दूर हो जाएगी

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥१॥
और तेरे मन में सर्व कल्याण आकर वास कर जाएँगे ॥ १॥

ਭਜੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਏਕੋ ਨਾਮ ॥
भजु मन मेरे एको नाम ॥
हे मेरे मन ! एक परमेश्वर के नाम का भजन कर ले,

ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਕੈ ਆਵੈ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअ तेरे कै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥
चूँकि यह नाम ही तेरी आत्मा के लिए परलोक में काम आएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਗੁਣ ਗਾਉ ਅਨੰਤਾ ॥
रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥
रात-दिन अनन्त प्रभु का यशोगान करता रह

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤਾ ॥੨॥
गुर पूरे का निरमल मंता ॥२॥
यही पूर्ण गुरु के निर्मल मंत्र है | ॥ २॥

ਛੋਡਿ ਉਪਾਵ ਏਕ ਟੇਕ ਰਾਖੁ ॥
छोडि उपाव एक टेक राखु ॥
दूसरे उपाय त्याग दे और अपनी आस्था एक प्रभु पर रख।

ਮਹਾ ਪਦਾਰਥੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ॥੩॥
महा पदारथु अम्रित रसु चाखु ॥३॥
इस तरह तू महा पदार्थ अमृतमयी रस को चख लेगा ॥ ३॥

ਬਿਖਮ ਸਾਗਰੁ ਤੇਈ ਜਨ ਤਰੇ ॥
बिखम सागरु तेई जन तरे ॥
हे नानक ! वही पुरुष भवसागर से (आत्मिक पूँजी सहित) पार होते हैं,

ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੪॥੬੮॥੧੩੭॥
नानक जा कउ नदरि करे ॥४॥६८॥१३७॥
जिन पर प्रभु कृपा-दृष्टि करता है॥ ४ ॥ ६८ ॥ १३७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਿਰਦੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰੇ ॥
हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥
जिस व्यक्ति ने प्रभु के सुन्दर चरण-कमल अपने हृदय में धारण किए हैं,

ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥
पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥१॥
ऐसा व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु से मिलकर भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! गोविन्द का यशोगान करते रहो।

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥
संतों से मिलकर भगवान के नाम का ध्यान करो।॥ १॥ रहाउ॥

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਹੋਈ ਪਰਵਾਨੁ ॥
दुलभ देह होई परवानु ॥
तब प्राणी की दुर्लभ देहि सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाती है,"

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਨਾਮ ਨੀਸਾਨੁ ॥੨॥
सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥२॥
जब उसको सतिगुरु से नाम का प्रमाण मिल जाता है ॥ २॥

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਪੂਰਨ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥
प्रभु का नाम-सिमरन करने से पूर्ण पद मिल जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭੈ ਭਰਮ ਮਿਟਾਇਆ ॥੩॥
साधसंगि भै भरम मिटाइआ ॥३॥
संतों की सभा में भय-भ्रम मिट जाते हैं।॥ ३ ॥

ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥
कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ प्रभु व्यापक हो रहा है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥੪॥੬੯॥੧੩੮॥
नानक दास हरि की सरणाइ ॥४॥६९॥१३८॥
इसलिए दास नानक ने ईश्वर की शरण ही ली है ॥४॥६९॥१३८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਜੀ ਕੇ ਦਰਸਨ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥
मैं अपने गुरु जी के दर्शन पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਉ ॥੧॥
जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥१॥
मैं तो अपने सतिगुरु के नाम का निरंतर जाप करने से ही जीवित रहता हूँ॥ १॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਗੁਰਦੇਵ ॥
पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥
हे मेरे पूर्ण पारब्रह्म, गुरदेव !

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲਾਗਉ ਤੇਰੀ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥
कृपा करो चूंकि जो मैं तेरी सेवा-भक्ति में जुट जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਉਰ ਧਾਰੀ ॥
चरन कमल हिरदै उर धारी ॥
गुरु के चरण-कमल मैं अपने हृदय में बसाता हूँ,

ਮਨ ਤਨ ਧਨ ਗੁਰ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੀ ॥੨॥
मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥२॥
चूंकि गुरदेव के सुन्दर चरण ही मेरे मन, तन, धन एवं प्राणों का एकमात्र आधार है॥ २ ॥

ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥
सफल जनमु होवै परवाणु ॥
तेरा जीवन सफल एवं सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाएगा

ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਜਾਣੁ ॥੩॥
गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥३॥
जब तू पारब्रह्म गुरदेव को अपने निकट समझेगा ।॥ ३ ॥

ਸੰਤ ਧੂਰਿ ਪਾਈਐ ਵਡਭਾਗੀ ॥

संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥

संतों की चरण-धूलि सौभाग्य से ही प्राप्त होती है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਹਰਿ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੭੦॥੧੩੯॥

नानक गुर भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥४॥७०॥१३९॥

हे नानक ! गुरु जी को मिलने से ईश्वर से प्रेम की लगन लग जाती है॥ ४ ॥ ७० ॥ १३९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕਰੈ ਦੁਹਕਰਮ ਦਿਖਾਵੈ ਹੋਰੁ ॥
करै दुहकरम दिखावै होरु ॥
मनुष्य दुष्कर्म करता है परन्तु बाहर लोगों को दूसरा रूप दिखाता है।

ਰਾਮ ਕੀ ਦਰਗਹ ਬਾਧਾ ਚੋਰੁ ॥੧॥
राम की दरगह बाधा चोरु ॥१॥
ऐसा व्यक्ति राम के दरबार में चोर की भाँति जकड़ा जाएगा ॥ १॥

ਰਾਮੁ ਰਮੈ ਸੋਈ ਰਾਮਾਣਾ ॥
रामु रमै सोई रामाणा ॥
जो व्यक्ति राम को स्मरण करता है, वह राम का ही उपासक है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਏਕੁ ਸਮਾਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥१॥ रहाउ ॥
एक ईश्वर जल, थल एवं आकाश में सर्वत्र मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਬਿਖੁ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥
अंतरि बिखु मुखि अम्रितु सुणावै ॥
स्वेच्छाचारी व्यक्ति अपने मुख से अमृत सुनाता है परन्तु उसके भीतर विष विद्यमान है।

ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧਾ ਚੋਟਾ ਖਾਵੈ ॥੨॥
जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥२॥
ऐसा व्यक्ति यमलोक में बंधा हुआ चोटें खाता है॥ २॥

ਅਨਿਕ ਪੜਦੇ ਮਹਿ ਕਮਾਵੈ ਵਿਕਾਰ ॥
अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥
अनेक पर्दों में (पीछे) प्राणी पाप कर्म करता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਹਿ ਸੰਸਾਰ ॥੩॥
खिन महि प्रगट होहि संसार ॥३॥
परन्तु एक क्षण में वह संसार के समक्ष प्रकट हो जाता है॥ ३॥

ਅੰਤਰਿ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਰਸਿ ਰਾਤਾ ॥
अंतरि साचि नामि रसि राता ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति सदा सत्य में मग्न रहता है और नाम अमृत से रंगा हुआ है,

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਕਿਰਪਾਲੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥੪॥੭੧॥੧੪੦॥
नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥४॥७१॥१४०॥
उस पर विधाता दयालु हो जाता है॥ ४ ॥ ७१ ॥ १४० ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰਾਮ ਰੰਗੁ ਕਦੇ ਉਤਰਿ ਨ ਜਾਇ ॥
राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥
राम का प्रेम रंग कभी दूर नहीं होता,

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥੧॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥१॥
जिसको पूर्ण गुरु प्रदान करता है, वही इस प्रेम को पाता है॥ १ ॥

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸੋ ਮਨੁ ਸਾਚਾ ॥
हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥
जिसका मन भगवान के रंग में मग्न रहता है, वही मन सच्चा है।

ਲਾਲ ਰੰਗ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ रहाउ ॥
उस पर माया का कोई दूसरा रंग प्रभाव नहीं डाल सकता, वह मानो गहरे लाल रंग वाला हो जाता है, ऐसा व्यक्ति पूर्ण पुरुष विधाता का रूप हो जाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਬੈਸਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥
संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥
जो व्यक्ति संतों के साथ विराजमान होकर प्रभु का यशोगान करता है,

ਤਾ ਕਾ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਜਾਇ ॥੨॥
ता का रंगु न उतरै जाइ ॥२॥
उसका प्रेम रंग कभी नहीं उतरता ॥ २॥

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥
बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥
भगवान के सिमरन के बिना सुख उपलब्ध नहीं होता

ਆਨ ਰੰਗ ਫੀਕੇ ਸਭ ਮਾਇਆ ॥੩॥
आन रंग फीके सभ माइआ ॥३॥
और माया के अन्य सभी रंग फीके हैं॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਰੰਗੇ ਸੇ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥
गुरि रंगे से भए निहाल ॥
जिस व्यक्ति को गुरु जी प्रभु के प्रेम से रंग देते हैं, यह कृतार्थ हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਭਏ ਹੈ ਦਇਆਲ ॥੪॥੭੨॥੧੪੧॥
कहु नानक गुर भए है दइआल ॥४॥७२॥१४१॥
हे नानक ! उन पर गुरु जी दयालु हो गए हैं॥ ४॥ ७२॥ १४१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਿਮਰਤ ਸੁਆਮੀ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸੇ ॥
सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥
जगत् के स्वामी प्रभु का नाम सिमरन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਨਿਵਾਸੇ ॥੧॥
सूख सहज आनंद निवासे ॥१॥
और मनुष्य सहज सुख एवं प्रसन्नता में वास करता है॥ १॥

ਰਾਮ ਜਨਾ ਕਉ ਰਾਮ ਭਰੋਸਾ ॥
राम जना कउ राम भरोसा ॥
राम के भक्तों को राम पर ही भरोसा है।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸਭੁ ਮਿਟਿਓ ਅੰਦੇਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान का नाम-स्मरण करने से तमाम फिक्र मिट जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਛੁ ਭਉ ਨ ਭਰਾਤੀ ॥
साधसंगि कछु भउ न भराती ॥
सत्संग में रहने से कोई भय एवं दुविधा स्पर्श नहीं करती

ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਗਾਈਅਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥੨॥
गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥
और दिन-रात गोपाल का यशोगान होता रहता है।॥ २॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਬੰਧਨ ਛੋਟ ॥
करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥
प्रभु ने अपनी कृपा करके अपने भक्तों को (मोह-माया के) बंधनों से मुक्त कर दिया है

ਚਰਣ ਕਮਲ ਕੀ ਦੀਨੀ ਓਟ ॥੩॥
चरण कमल की दीनी ओट ॥३॥
और अपने चरण कमलों का सहारा दे दिया है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਈ ਪਰਤੀਤਿ ॥
कहु नानक मनि भई परतीति ॥
हे नानक ! प्रभु-भक्त के हृदय में आस्था बनी रहती है

ਨਿਰਮਲ ਜਸੁ ਪੀਵਹਿ ਜਨ ਨੀਤਿ ॥੪॥੭੩॥੧੪੨॥
निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥१४२॥
और वह सदैव ही प्रभु के निर्मल यश का पान करता रहता है॥ ४ ॥ ७३॥ १४२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
हरि चरणी जा का मनु लागा ॥
जिस व्यक्ति का मन, हरि के चरणों में लग जाता है,

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭ੍ਰਮੁ ਤਾ ਕਾ ਭਾਗਾ ॥੧॥
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥१॥
उसके दुःख, दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਧਨ ਕੋ ਵਾਪਾਰੀ ਪੂਰਾ ॥
हरि धन को वापारी पूरा ॥
वह व्यापारी पूर्ण है, जो हरि के नाम रूपी धन का व्यापार करता है।

ਜਿਸਹਿ ਨਿਵਾਜੇ ਸੋ ਜਨੁ ਸੂਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे परमात्मा नाम की देन देता है, वही शूरवीर होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੁਸਾਈ ॥
जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥
जिस व्यक्ति पर भगवान कृपा के घर में आता है,

ਸੇ ਜਨ ਲਾਗੇ ਗੁਰ ਕੀ ਪਾਈ ॥੨॥
से जन लागे गुर की पाई ॥२॥
ऐसा व्यक्ति ही गुरु के चरणों में आकर लगता है॥ २॥

ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਾਂਤਿ ਆਨੰਦਾ ॥
सूख सहज सांति आनंदा ॥
उस व्यक्ति को सहज सुख, शांति एवं आनंद प्राप्त हो जाता है

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੩॥
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥३॥
और वह परमानन्द प्रभु की स्तुति-आराधना करके ही जीता है॥ ३॥

ਨਾਮ ਰਾਸਿ ਸਾਧ ਸੰਗਿ ਖਾਟੀ ॥
नाम रासि साध संगि खाटी ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति ने सत्संग में रहकर ईश्वर के नाम-घन की पूंजी कमाई है,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਦਾ ਕਾਟੀ ॥੪॥੭੪॥੧੪੩॥
कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥४॥७४॥१४३॥
ईश्वर ने उसकी प्रत्येक विपदा निवृत्त कर दी है॥ ४ ॥ ७४ ॥ १४३ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਸਭਿ ਮਿਟਹਿ ਕਲੇਸ ॥
हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥
भगवान का सिमरन करने से तमाम दुख-कलेश मिट जाते हैं

ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਨ ਮਹਿ ਪਰਵੇਸ ॥੧॥
चरण कमल मन महि परवेस ॥१॥
और प्रभु के सुन्दर चरण कमल मन में बस जाते हैं॥ १॥

ਉਚਰਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਲਖ ਬਾਰੀ ॥
उचरहु राम नामु लख बारी ॥
हे प्यारी जिव्हा ! राम नाम का लाखों बार उच्चारण कर।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरी प्रिय जिव्हा ! तू नाम रूपी अमृत रस का पान कर ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਖ ਸਹਜ ਰਸ ਮਹਾ ਅਨੰਦਾ ॥
सूख सहज रस महा अनंदा ॥
तुझे सहज सुख एवं महा आनंद प्राप्त होगा

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੨॥
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥२॥
यदि तू परमानंद प्रभु का बार-बार भजन करने से अपना जीवन व्यतीत करे॥ २॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮਦ ਖੋਏ ॥
काम क्रोध लोभ मद खोए ॥
काम, क्रोध, लोभ, अहंकार , इत्यादि विकार नष्ट हो जाते है

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਿਲਬਿਖ ਸਭ ਧੋਏ ॥੩॥

साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥३॥

संतों की सभा में रहने से मनुष्य के तमाम पाप दूर हो जाते हैं।॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥

करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥

हे दीनदयालु प्रभु ! अपनी कृपा-दृष्टि करके

ਨਾਨਕ ਦੀਜੈ ਸਾਧ ਰਵਾਲਾ ॥੪॥੭੫॥੧੪੪॥

नानक दीजै साध रवाला ॥४॥७५॥१४४॥

नानक को संतों की चरण-धूलि प्रदान कीजिए॥ ४ ॥ ७५ ॥ १४४ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਿਸ ਕਾ ਦੀਆ ਪੈਨੈ ਖਾਇ ॥
जिस का दीआ पैनै खाइ ॥
हे जननी ! जिस भगवान का दिया हुआ वस्त्र इन्सान पहनता है और दिया हुआ भोजन खाता रहता है,

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਆਲਸੁ ਕਿਉ ਬਨੈ ਮਾਇ ॥੧॥
तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥१॥
उस भगवान का सिमरन करने में आलस्य नहीं करना चाहिए ॥ १॥

ਖਸਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਆਨ ਕੰਮਿ ਲਾਗਹਿ ॥
खसमु बिसारि आन कमि लागहि ॥
जो जीव-स्त्री अपने प्रभु-पति को भुलाकर दूसरे कामों में व्यस्त होती हैं,

ਕਉਡੀ ਬਦਲੇ ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥१॥ रहाउ ॥
वह कौड़ी के भाव अपने हीरे जैसे अमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देती है॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭੂ ਤਿਆਗਿ ਲਾਗਤ ਅਨ ਲੋਭਾ ॥
प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥
वह प्रभु को त्यागकर दूसरे पदार्थों की तृष्णा में लगी हुई है।

ਦਾਸਿ ਸਲਾਮੁ ਕਰਤ ਕਤ ਸੋਭਾ ॥੨॥
दासि सलामु करत कत सोभा ॥२॥
लेकिन प्रभु की बजाय उसकी दासी माया को वन्दना करने से किसने शोभा पाई है ? ॥ २॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਖਾਵਹਿ ਖਾਨ ਪਾਨ ॥
अम्रित रसु खावहि खान पान ॥
मनुष्य अमृत समान स्वादिष्ट खानपान को चखता है

ਜਿਨਿ ਦੀਏ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਨਹਿ ਸੁਆਨ ॥੩॥
जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥३॥
परन्तु कुत्ता उसको नहीं जानता, जो (यह पदार्थ) प्रदान करता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ ॥
कहु नानक हम लूण हरामी ॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! हम (प्राणी) कृतघ्न नमकहरामी हैं।

ਬਖਸਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੭੬॥੧੪੫॥
बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥४॥७६॥१४५॥
हे अन्तर्यामी प्रभु ! हमें क्षमा कर दीजिए॥ ४॥ ७६॥ १४५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਚਰਨ ਮਨ ਮਾਹਿ ਧਿਆਨੁ ॥
प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥
हे मेरे भाई ! प्रभु के चरणों का अपने मन में ध्यान करो।

ਸਗਲ ਤੀਰਥ ਮਜਨ ਇਸਨਾਨੁ ॥੧॥
सगल तीरथ मजन इसनानु ॥१॥
चूंकि प्रभु के चरणों का ध्यान ही तमाम तीर्थ-स्थानों का स्नान है॥ १॥

ਹਰਿ ਦਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥
प्रतिदिन हरि-परमेश्वर का सिमरन करो।

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੀ ਮਲੁ ਲਹਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि हरि का सिमरन करने से करोड़ों जन्मों की मैल दूर हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਬਸਾਈ ॥
हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥
जो व्यक्ति हरि की कथा अपने हृदय में बसा कर रखता है,

ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਸਗਲੇ ਫਲ ਪਾਈ ॥੨॥
मन बांछत सगले फल पाई ॥२॥
उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं ॥ २ ॥

ਜੀਵਨ ਮਰਣੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
जीवन मरणु जनमु परवानु ॥
उसका जीवन, मृत्यु एवं जन्म स्वीकार हो जाता है

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੩॥
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥३॥
जिसके हृदय में भगवान निवास करता है ॥३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥
हे नानक ! वहीं व्यक्ति पूर्ण हैं,

ਜਿਨਾ ਪਰਾਪਤਿ ਸਾਧੂ ਧੂਰੇ ॥੪॥੭੭॥੧੪੬॥
जिना परापति साधू धूरे ॥४॥७७॥१४६॥
जिन्हें संतों की चरण-धूलि प्राप्त हो जाती है। ॥४॥७७॥१४६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਖਾਦਾ ਪੈਨਦਾ ਮੂਕਰਿ ਪਾਇ ॥
खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥
जो प्राणी प्रभु की नियामतें खाता और पहनता रहता है लेकिन इस बात को अस्वीकार करता है कि ये प्रभु ने दिए हैं,

ਤਿਸ ਨੋ ਜੋਹਹਿ ਦੂਤ ਧਰਮਰਾਇ ॥੧॥
तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥१॥
उस प्राणी को यमराज के दूत अपनी दृष्टि में रखते हैं।॥ १॥

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਬੇਮੁਖੁ ਜਿਨਿ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦੀਨਾ ॥
तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥
जिस भगवान ने मनुष्य को आत्मा एवं शरीर दिए हैं, वह उससे ही विमुख बना रहता है।

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਭਰਮਹਿ ਬਹੁ ਜੂਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु से विमुख रहने वाला व्यक्ति करोड़ों ही जन्म अधिकतर योनियों में भटकता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਕੀ ਐਸੀ ਹੈ ਰੀਤਿ ॥
साकत की ऐसी है रीति ॥
भगवान से टूटे हुए शाक्त व्यक्ति का यही जीवन-आचरण है कि

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸਗਲ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥੨॥
जो किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥
जो कुछ भी वह करता है, सब विपरीत ही करता है॥ २ ॥

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਣ ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਧਾਰਿਆ ॥
जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥
जिसने उसकी आत्मा, प्राण, मन और शरीर का निर्माण किया है

ਸੋਈ ਠਾਕੁਰੁ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿਆ ॥੩॥
सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥३॥
जीव अपने मन से उस प्रभु को विस्मृत कर देता है ॥ ३ ॥

ਬਧੇ ਬਿਕਾਰ ਲਿਖੇ ਬਹੁ ਕਾਗਰ ॥
बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥
नास्तिक प्राणी के पाप इतने बढ़ जाते हैं कि ढेर सारे कागजों पर लिखे जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ॥੪॥
नानक उधरु क्रिपा सुख सागर ॥४॥
नानक की प्रार्थना है कि हे सुख के सागर ! हम प्राणियों की रक्षा करो ॥ ४॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਇ ॥
पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥
हे पारब्रह्म प्रभु! जो व्यक्ति तेरी शरण में आ जाता है,

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਤਰੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੭੮॥੧੪੭॥
बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७८॥१४७॥
वह हरि-नाम के फलस्वरूप बन्धनों को तोड़कर भवसागर से पार हो जाता है॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७८ ॥ १४७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਅਪਨੇ ਲੋਭ ਕਉ ਕੀਨੋ ਮੀਤੁ ॥
अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥
मनुष्य अपने लोभ हेतु ईश्वर को अपना मित्र बनाता है।

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਮੁਕਤਿ ਪਦੁ ਦੀਤੁ ॥੧॥
सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥१॥
ईश्वर उसके सभी मनोरथ पूर्ण करता है और उसे मोक्ष की पदवी प्रदान कर देता है॥ १॥

ਐਸਾ ਮੀਤੁ ਕਰਹੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥
हरेक मनुष्य ऐसे ईश्वर को अपना मित्र बनाए,

ਜਾ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਇ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके द्वार से कोई खाली नहीं लौटता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਪੁਨੈ ਸੁਆਇ ਰਿਦੈ ਲੈ ਧਾਰਿਆ ॥
अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥
जिस मनुष्य ने अपने स्वार्थ हेतु भी उस प्रभु को मन में बसाया है,

ਦੂਖ ਦਰਦ ਰੋਗ ਸਗਲ ਬਿਦਾਰਿਆ ॥੨॥
दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥२॥
प्रभु उसके दुःख-दर्द एवं तमाम रोग निवृत्त कर देता है॥ २॥

ਰਸਨਾ ਗੀਧੀ ਬੋਲਤ ਰਾਮ ॥
रसना गीधी बोलत राम ॥
जिसकी जिव्हा राम का नाम उच्चारण करना चाहती है,

ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਸਗਲੇ ਕਾਮ ॥੩॥
पूरन होए सगले काम ॥३॥
उसके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।॥ ३॥

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥
अनिक बार नानक बलिहारा ॥
हे नानक ! हम अपने गोबिन्द पर अनेक बार कुर्बान जाते हैं,

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹਮਾਰਾ ॥੪॥੭੯॥੧੪੮॥
सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥४॥७९॥१४८॥
हमारा गोविन्द ऐसा है कि उसके दर्शन तमाम फल प्रदान करते हैं ॥४॥७९॥१४८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਹਿਰੇ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ॥
कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥
उसके करोड़ों विघ्न एक क्षण में ही मिट जाते हैं

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸੁਨਾਹਿ ॥੧॥
हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥१॥
जो व्यक्ति संतों की निर्मल सभा में हरि की हरि कथा सुनता है । १॥

ਪੀਵਤ ਰਾਮ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਗੁਣ ਜਾਸੁ ॥
पीवत राम रसु अम्रित गुण जासु ॥
वह राम रस का पान करता है और अमृत गुणों का यश करता है।

ਜਪਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਮਿਟੀ ਖੁਧਿ ਤਾਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥

हरि के चरणों का ध्यान धारण करने से उसकी भूख निवृत्त हो जाती है।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸੁਖ ਸਹਜ ਨਿਧਾਨ ॥

सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥

उसको सर्वकल्याण और सहज सुख के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸਹਿ ਭਗਵਾਨ ॥੨॥

जा कै रिदै वसहि भगवान ॥२॥

जिसके हृदय में भगवान का निवास हो जाता है।॥ २॥

ਅਉਖਧ ਮੰਤ੍ਰ ਤੰਤ ਸਭਿ ਛਾਰੁ ॥
अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥
प्रभु के अलावा समस्त औषधियां एवं मंत्र-तंत्र व्यर्थ हैं

ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਰਿਦੇ ਮਹਿ ਧਾਰੁ ॥੩॥
करणैहारु रिदे महि धारु ॥३॥
इसलिए सृजनहार प्रभु को अपने हृदय में धारण करो ॥३॥

ਤਜਿ ਸਭਿ ਭਰਮ ਭਜਿਓ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ॥
हे नानक ! सभी भ्रम त्यागकर पारब्रह्म प्रभु का ही भजन करो

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਟਲ ਇਹੁ ਧਰਮੁ ॥੪॥੮੦॥੧੪੯॥
कहु नानक अटल इहु धरमु ॥४॥८०॥१४९॥
चूंकि यही अटल धर्म है ॥४॥८०॥१४९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਸੋਈ ॥
करि किरपा भेटे गुर सोई ॥
भगवान जिस व्यक्ति पर अपनी कृपा कर देता है, उसे गुरु मिल जाता है।

ਤਿਤੁ ਬਲਿ ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਕੋਈ ॥੧॥
तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥१॥
ऐसे व्यक्ति को गुरु के बल के फलस्वरूप कोई रोग नहीं लगता ॥ १॥

ਰਾਮ ਰਮਣ ਤਰਣ ਭੈ ਸਾਗਰ ॥
राम रमण तरण भै सागर ॥
सर्वव्यापक राम की आराधना करने से भयानक संसार सागर पार किया जाता है।

ਸਰਣਿ ਸੂਰ ਫਾਰੇ ਜਮ ਕਾਗਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरणि सूर फारे जम कागर ॥१॥ रहाउ ॥
शूरवीर गुरु का आश्रय लेने से यमों के लेखे खत्म हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦੀਓ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥
सतिगुरि मंत्रु दीओ हरि नाम ॥
सतिगुरु ने मुझे हरि के नाम का मंत्र प्रदान किया है।

ਇਹ ਆਸਰ ਪੂਰਨ ਭਏ ਕਾਮ ॥੨॥
इह आसर पूरन भए काम ॥२॥
इस आश्रय द्वारा मेरे सभी कार्य सफल हो गए हैं॥ २॥

ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਪੂਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥
जप तप संजम पूरी वडिआई ॥
मुझे ध्यान, तपस्या, संयम एवं पूर्ण प्रशंसा प्राप्त हो गए,"

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾਲ ਹਰਿ ਭਏ ਸਹਾਈ ॥੩॥
गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥३॥
जब गुरु जी कृपा के घर में आए तो भगवान भी सहायक बन गए ॥ ३॥

ਮਾਨ ਮੋਹ ਖੋਏ ਗੁਰਿ ਭਰਮ ॥
मान मोह खोए गुरि भरम ॥
हे नानक ! देख, गुरु ने जिस व्यक्ति के घमण्ड, मोह एवं भ्रम नाश कर दिए हैं,

ਪੇਖੁ ਨਾਨਕ ਪਸਰੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੪॥੮੧॥੧੫੦॥
पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥४॥८१॥१५०॥
उस व्यक्ति को पारब्रह्म प्रभु के सर्वत्र दर्शन हो गए हैं॥ ४ ॥ ८१ ॥ १५० ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਬਿਖੈ ਰਾਜ ਤੇ ਅੰਧੁਲਾ ਭਾਰੀ ॥
बिखै राज ते अंधुला भारी ॥
अन्धा मनुष्य अत्याचारी सम्राट से भला है।

ਦੁਖਿ ਲਾਗੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੀ ॥੧॥
दुखि लागै राम नामु चितारी ॥१॥
क्योंकि दुख लगने पर अंधा मनुष्य राम के नाम का भजन करता है। १॥

ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਕਉ ਤੁਹੀ ਵਡਿਆਈ ॥
तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥
हे प्रभु ! अपने सेवक की तू ही मान-प्रतिष्ठा है।

ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਨਰਕਿ ਲੈ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥१॥ रहाउ ॥
माया का नशा प्राणी को नरक में ले जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਰੋਗ ਗਿਰਸਤ ਚਿਤਾਰੇ ਨਾਉ ॥
रोग गिरसत चितारे नाउ ॥
रोग से ग्रस्त हुआ अन्धा मनुष्य नाम का सिमरन करता है।

ਬਿਖੁ ਮਾਤੇ ਕਾ ਠਉਰ ਨ ਠਾਉ ॥੨॥
बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥२॥
परन्तु विकारों में मस्त हुए दुराचारी मनुष्य को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता॥ २॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥
जो व्यक्ति प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम करता है,

ਆਨ ਸੁਖਾ ਨਹੀ ਆਵਹਿ ਚੀਤਿ ॥੩॥
आन सुखा नही आवहि चीति ॥३॥
वह अन्य लौकिक सुखों का ध्यान ही नहीं करता ॥ ३॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਿਮਰਉ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥
सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥
सदैव ही जगत् के स्वामी प्रभु का भजन करो।

ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੮੨॥੧੫੧॥
मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥४॥८२॥१५१॥
नानक की प्रार्थना है कि हे अन्तर्यामी प्रभु! मुझे आकर मिलो॥ ४॥ ८२॥ १५१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਸੰਗੀ ਬਟਵਾਰੇ ॥
आठ पहर संगी बटवारे ॥
आठों प्रहर (कामादिक पांचों विकार) लुटेरे मेरे साथी बने हुए थे।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਲਏ ਨਿਵਾਰੇ ॥੧॥
करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥१॥
अपनी कृपा करके प्रभु ने उनको तितर-बितर (नष्ट) कर दिया है॥ १ ॥

ਐਸਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਮਹੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥
प्रत्येक प्राणी ऐसे समर्थ शाली प्रभु के नाम-रस का आस्वादन करे

ਸਰਬ ਕਲਾ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
जो ईश्वर सर्वकला सम्पूर्ण है। ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਹਾ ਤਪਤਿ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰ ॥
महा तपति सागर संसार ॥
कामादिक विकारों की संसार-सागर में बड़ी तेज गर्मी पड़ रही है।

ਪ੍ਰਭ ਖਿਨ ਮਹਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਣਹਾਰ॥੨॥
प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥२॥
लेकिन प्रभु एक क्षण में ही प्राणी को इस जलन से पार कर देने वाला है॥ २ ॥

ਅਨਿਕ ਬੰਧਨ ਤੋਰੇ ਨਹੀ ਜਾਹਿ ॥
अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥
ऐसे अनेक बंधन हैं, जो काटे नहीं जा सकते।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ ਮੁਕਤਿ ਫਲ ਪਾਹਿ ॥੩॥
सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥३॥
लेकिन भगवान के नाम का सिमरन करने से मनुष्य मोक्ष फल प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਉਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਇਸ ਤੇ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥
उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥
हे नानक ! मनुष्य किसी युक्ति अथवा चतुरता से कुछ नहीं कर सकता।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥੪॥੮੩॥੧੫੨॥
करि किरपा नानक गुण गाहि ॥४॥८३॥१५२॥
हे प्रभु ! कृपा कर चूंकि वह तेरा ही यश गायन करता रहे ॥४॥८३॥१५२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਥਾਤੀ ਪਾਈ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥
थाती पाई हरि को नाम ॥
जिसे हरि के नाम का धन प्राप्त हो जाता है,

ਬਿਚਰੁ ਸੰਸਾਰ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮ ॥੧॥
बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥१॥
वह निसंकोच होकर संसार में गतिमान होता है और उसके सारे कार्य सफल हो जाते हैं।॥ १॥

ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥
सौभाग्यवश ही ईश्वर का भजन गायन किया जा सकता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਤ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे पारब्रह्म प्रभु ! यदि तू हम प्राणियों को गुणस्तुति की देन प्रदान करे तो ही मिल सकती है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਹਿਰਦੈ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥
प्रभु के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसाओ।

ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਚੜਿ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਿ ॥੨॥
भव सागरु चड़ि उतरहि पारि ॥२॥
प्रभु-चरणों के जहाज पर सवार होने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ २ ॥

साधू संगु करहु सभु कोइ ॥
साधू संगु करहु सभु कोइ ॥
प्रत्येक प्राणी को संतों की संगति करनी चाहिए,

सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥३॥
सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥३॥
जिससे सदैव कल्याण मिलता है और पुनः कोई दुःख प्राप्त नहीं होता ॥ ३॥

प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥
प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥
हे नानक ! प्रेमा-भक्ति द्वारा गुणों के भण्डार भगवान का भजन करो,

नानक दरगह पाईऐ मानु ॥४॥८४॥१५३॥
नानक दरगह पाईऐ मानु ॥४॥८४॥१५३॥
इस तरह प्रभु के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त होता है ॥४॥८४॥१५३॥

गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥
जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥
जल, धरती एवं गगन में मित्र-प्रभु सर्वव्यापक है।

भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥१॥
भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥१॥
उस प्रभु का नित्य यशोगान करने से भ्रम निवृत हो जाते हैं। ॥ १ ॥

ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥
ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥
जागते-सोते हर समय प्रभु मनुष्य के साथ रक्षक-रूप में है।

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਜਮ ਨਹੀ ਡਰੂਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥१॥ रहाउ ॥

उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य मृत्यु के दूत के भय से रहित हो जाता है। १॥ रहाउ॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਪ੍ਰਭ ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸੁ ॥

चरण कमल प्रभ रिदै निवासु ॥

यदि प्रभु के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाए तो

ਸਗਲ ਦੂਖ ਕਾ ਹੋਇਆ ਨਾਸੁ ॥੨॥
सगल दूख का होइआ नासु ॥२॥
तमाम दुःख-कलेश नष्ट हो जाते हैं। २॥

ਆਸਾ ਮਾਣੁ ਤਾਣੁ ਧਨੁ ਏਕ ॥
आसा माणु ताणु धनु एक ॥
एक ईश्वर ही मेरी आशा, प्रतिष्ठा, बल एवं धन है।

ਸਾਚੇ ਸਾਹ ਕੀ ਮਨ ਮਹਿ ਟੇਕ ॥੩॥
साचे साह की मन महि टेक ॥३॥
मेरे हृदय में सच्चे साहूकार का ही सहारा है॥ ३ ॥

ਮਹਾ ਗਰੀਬ ਜਨ ਸਾਧ ਅਨਾਥ ॥
महा गरीब जन साध अनाथ ॥
हे नानक ! परमात्मा के संतों का मैं एक महा निर्धन एवं अनाथ सेवक हूँ।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ਦੇ ਹਾਥ ॥੪॥੮੫॥੧੫੪॥
नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥४॥८५॥१५४॥
परन्तु ईश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है ॥४॥८५॥१५४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮਜਨੁ ਕਰਿ ਸੂਚੇ ॥
हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥
हरि-परमेश्वर के नाम (तीर्थ) में स्नान करने से मैं पवित्र हो गया हूँ।

ਕੋਟਿ ਗ੍ਰਹਣ ਪੁੰਨ ਫਲ ਮੂਚੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥
नाम-तीर्थ में स्नान करने से करोड़ों ग्रहणों के समय किए दान-पुण्य से भी अधिक फल प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਰਿਦੇ ਮਹਿ ਬਸੇ ॥
हरि के चरण रिदे महि बसे ॥
यदि भगवान के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाएँ तो

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਨਸੇ ॥੧॥
जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥
जन्म-जन्मांतरों के पाप नाश हो जाते हैं।॥ १॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਕੀਰਤਨ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
साधसंगि कीरतन फलु पाइआ ॥
सत्संग में ईश्वर का भजन गायन करने का फल मुझे मिल गया है

ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਨ ਆਇਆ ॥੨॥
जम का मारगु द्रिसटि न आइआ ॥२॥
और इसलिए मृत्यु का मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता।॥ २ ॥

ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਗੋਵਿੰਦ ਅਧਾਰੁ ॥
मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥
जो व्यक्ति अपने मन, वचन एवं कर्म का आधार गोविन्द के नाम को बना लेता है,

ਤਾ ਤੇ ਛੁਟਿਓ ਬਿਖੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੩॥
ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥३॥
वह विषैले भवसागर से पार हो जाता है॥ ३ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੋ ਅਪਨਾ ॥
करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥
हे नानक ! भगवान ने जिस व्यक्ति को अपनी कृपा करके अपना बना लिया है,

ਨਾਨਕ ਜਾਪੁ ਜਪੇ ਹਰਿ ਜਪਨਾ ॥੪॥੮੬॥੧੫੫॥
नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥८६॥१५५॥
वह सदा प्रभु का जाप जपता है और प्रभु का भजन करता रहता हैं।॥४॥८६॥१५५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪਉ ਸਰਣਾਈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਜਾਤੇ ॥
पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥
हे जीव ! जिन्होंने भगवान को समझ लिया है, उनकी शरण में पड़े रहो।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਚਰਣ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ॥੧॥
मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥१॥
भगवान के चरणों में मग्न होने से मन एवं तन शीतल हो जाते हैं।॥ १॥

ਭੈ ਭੰਜਨ ਪ੍ਰਭ ਮਨਿ ਨ ਬਸਾਹੀ ॥
भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥
जो व्यक्ति भयनाशक प्रभु को अपने मन में नहीं बसाता,

ਡਰਪਤ ਡਰਪਤ ਜਨਮ ਬਹੁਤੁ ਜਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥ रहाउ ॥
उसके अनेक जन्म इसी आतंक-भय में कांपते हुए बीत जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਸਿਓ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥
जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥
जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है,

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਤਾ ਕੇ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੨॥
सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥२॥
उसकी तमाम मनोकामनाएँ एवं कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥ २॥

ਜਨਮੁ ਜਰਾ ਮਿਰਤੁ ਜਿਸੁ ਵਾਸਿ ॥
जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥
जिसके वश में जन्म, बुढ़ापा एवं मृत्यु है

ਸੋ ਸਮਰਥੁ ਸਿਮਰਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥੩॥
सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥
उस सर्वशक्तिमान प्रभु को अपने हर श्वास एवं ग्रास से स्मरण करता रह॥ ३॥

ਮੀਤੁ ਸਾਜਨੁ ਸਖਾ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕ ॥
मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥
हे नानक ! एक ईश्वर ही हमारा मित्र, साजन और साथी है।

ਨਾਮੁ ਸੁਆਮੀ ਕਾ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ॥੪॥੮੭॥੧੫੬॥
नामु सुआमी का नानक टेक ॥४॥८७॥१५६॥
जगत् के स्वामी प्रभु का नाम ही उसका एकमात्र सहारा है॥ ४ ॥ ८७ ॥ १५६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਬਾਹਰਿ ਰਾਖਿਓ ਰਿਦੈ ਸਮਾਲਿ ॥
बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥
संतजन संसार के साथ लोक-व्यवहार करते हुए गोविन्द को अपने मन में बसाकर रखते हैं।

ਘਰਿ ਆਏ ਗੋਵਿੰਦੁ ਲੈ ਨਾਲਿ ॥੧॥
घरि आए गोविंदु लै नालि ॥१॥
घर को लौटते हुए वह उसको साथ लेकर आते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥
हरि-परमेश्वर का नाम संतजनों का साथी है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनु तनु राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥
उनका मन एवं तन राम के प्रेम रंग में ही मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ॥
गुर परसादी सागरु तरिआ ॥
गुरु की कृपा से संसार सागर से पार हुआ जा सकता है

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਹਿਰਿਆ ॥੨॥
जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥२॥
और जन्म-जन्मांतरों के तमाम पाप नाश हो जाते हैं।॥ २॥

ਸੋਭਾ ਸੁਰਤਿ ਨਾਮਿ ਭਗਵੰਤੁ ॥
सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥
भगवान के नाम से ही मनुष्य को शोभा एवं सुरति प्राप्त होती है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤੁ ॥੩॥
पूरे गुर का निरमल मंतु ॥३॥
पूर्ण गुरु का नाम-मंत्र सदैव निर्मल है॥ ३॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਹਿਰਦੇ ਮਹਿ ਜਾਪੁ ॥
चरण कमल हिरदे महि जापु ॥
भगवान के चरण-कमलों का हृदय में भजन कर।

ਨਾਨਕੁ ਪੇਖਿ ਜੀਵੈ ਪਰਤਾਪੁ ॥੪॥੮੮॥੧੫੭॥
नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥
नानक तो उस ईश्वर का प्रताप देखकर जीवन प्राप्त करता है ॥४॥८८॥१५७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਧੰਨੁ ਇਹੁ ਥਾਨੁ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
धंनु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥
वह स्थान बड़ा धन्य है, जहाँ गोविन्द की गुणस्तुति की जाती है।

ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਬਸਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु स्वयं उनको सुख व आनंद में (कुशलक्षेम) बसाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਿਪਤਿ ਤਹਾ ਜਹਾ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਨਾਹੀ ॥
बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
जहाँ प्रभु का भजन नहीं होता है, वहाँ विपदा विद्यमान है।

ਕੋਟਿ ਅਨੰਦ ਜਹ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਹੀ ॥੧॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥१॥
यहाँ करोड़ों ही आनंद हैं, जहाँ भगवान की महिमा का गायन किया जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਬਿਸਰਿਐ ਦੁਖ ਰੋਗ ਘਨੇਰੇ ॥
हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥
प्रभु को विस्मृत करने से मनुष्य को अधिकतर दुख एवं रोग लग जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਸੇਵਾ ਜਮੁ ਲਗੈ ਨ ਨੇਰੇ ॥੨॥
प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥२॥
प्रभु की सेवा-भक्ति के फलस्वरूप यमदूत प्राणी के निकट नहीं आता ॥ २॥

ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ਨਿਹਚਲ ਥਾਨੁ ॥
सो वडभागी निहचल थानु ॥
वह स्थान सौभाग्यशाली एवं अटल है,

ਜਹ ਜਪੀਐ ਪ੍ਰਭ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ॥੩॥
जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥३॥
जहाँ केवल प्रभु के नाम का ही जाप होता रहता है।॥ ३॥

ਜਹ ਜਾਈਐ ਤਹ ਨਾਲਿ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ॥
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥
जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरा स्वामी मेरे साथ होता है।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਮਿਲਿਆ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੮੯॥੧੫੮॥
नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥४॥८९॥१५८॥
नानक को अन्तर्यामी प्रभु मिल गया है॥ ४॥ ८९ ॥ १५८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੋ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੋਵਿੰਦੁ ਧਿਆਵੈ ॥
जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥
जो प्राणी गोविन्द का ध्यान करता है,

ਪੜਿਆ ਅਣਪੜਿਆ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥
पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥१॥
वह चाहे विद्वान हो अथवा अनपढ़-वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਿਮਰਿ ਗੋਪਾਲ ॥
साधू संगि सिमरि गोपाल ॥
हे भाई ! संतों की सभा में रहकर गोपाल का सिमरन करो,

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਝੂਠਾ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥१॥ रहाउ ॥

क्योंकि नाम के बिना धन-दौलत एवं सम्पत्ति सब झूठे हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਰੂਪਵੰਤੁ ਸੋ ਚਤੁਰੁ ਸਿਆਣਾ ॥
रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥
केवल वही मनुष्य सुन्दर, चतुर एवं बुद्धिमान है,

ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਮਾਨਿਆ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਭਾਣਾ ॥੨॥
जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥२॥
जो व्यक्ति प्रभु की इच्छा को स्वीकार करता है॥ २॥

ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जग महि आइआ सो परवाणु ॥
इस दुनिया में उसका जन्म ही सफल होता है,

ਘਟਿ ਘਟਿ ਅਪਣਾ ਸੁਆਮੀ ਜਾਣੁ ॥੩॥
घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥३॥
जो सर्वव्यापक प्रभु को जान लेता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰਨ ਭਾਗ ॥
कहु नानक जा के पूरन भाग ॥
हे नानक ! जिसके भाग्य पूर्ण हैं,

ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲਾਗ ॥੪॥੯੦॥੧੫੯॥
हरि चरणी ता का मनु लाग ॥४॥९०॥१५९॥
वही व्यक्ति ईश्वर के चरणों में अपने मन को लगाता है ॥४॥९०॥१५९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਸਿਉ ਸਾਕਤ ਨਹੀ ਸੰਗੁ ॥
हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥
प्रभु-भक्त के साथ (भगवान से टूटे हुए) शाक्त इन्सान का साथ नहीं होता।

ਓਹੁ ਬਿਖਈ ਓਸੁ ਰਾਮ ਕੋ ਰੰਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि वह नास्तिक विषयों का प्रेमी होता है और उस भक्त को प्रभु का रंग चढ़ा होता है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਮਨ ਅਸਵਾਰ ਜੈਸੇ ਤੁਰੀ ਸੀਗਾਰੀ ॥
मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥
उनका मिलन ऐसे है, जैसे अनाड़ी घुड़सवार के लिए एक सुसज्जित घोड़ी हो।

ਜਿਉ ਕਾਪੁਰਖੁ ਪੁਚਾਰੈ ਨਾਰੀ ॥੧॥
जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥१॥
जैसे कोई नपुंसक किसी नारी को प्रेम करता है॥ १॥

ਬੈਲ ਕਉ ਨੇਤ੍ਰਾ ਪਾਇ ਦੁਹਾਵੈ ॥
बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥
नास्तिक और आस्तिक का मिलन ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति बछड़े द्वारा बैल दुहता हो।

ਗਊ ਚਰਿ ਸਿੰਘ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥੨॥
गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥२॥
जैसे गाय पर सवार होकर व्यक्ति शेर का पीछा करता है॥ २ ॥

ਗਾਡਰ ਲੇ ਕਾਮਧੇਨੁ ਕਰਿ ਪੂਜੀ ॥
गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥
जैसे कोई व्यक्ति भेड़ लेकर उसे कामधेनु समझकर पूजा-अर्चना करने लगे अथवा

ਸਉਦੇ ਕਉ ਧਾਵੈ ਬਿਨੁ ਪੂੰਜੀ ॥੩॥
सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥३॥
जैसे धन-दौलत के बिना व्यक्ति सौदा खरीदने के लिए जाता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਚੀਤ ॥
नानक राम नामु जपि चीत ॥
हे नानक ! अपने मन में राम नाम का जाप कर।

ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਸਾ ਮੀਤ ॥੪॥੯੧॥੧੬੦॥
सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥४॥९१॥१६०॥
तू मित्र जैसे स्वामी प्रभु की आराधना कर ॥४॥९१॥१६०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਾ ਮਤਿ ਨਿਰਮਲ ਕਹੀਅਤ ਧੀਰ ॥
सा मति निरमल कहीअत धीर ॥
हे भाई ! वही बुद्धि निर्मल एवं धैर्यवान कही जाती है,

ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਪੀਵਤ ਬੀਰ ॥੧॥
राम रसाइणु पीवत बीर ॥१॥
जो राम के अमृत (नाम) का पान करती है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਹਿਰਦੈ ਕਰਿ ਓਟ ॥
हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥
अपने हृदय में ईश्वर के चरणों का सहारा ले।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਹੋਵਤ ਛੋਟ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम मरण ते होवत छोट ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह जन्म-मरण से तुझे मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।॥१॥ रहाउ ॥

ਸੋ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿਤੁ ਉਪਜੈ ਨ ਪਾਪੁ ॥
सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥
वही शरीर निर्मल है, जिसके भीतर पाप उत्पन्न नहीं होता।

ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਨਿਰਮਲ ਪਰਤਾਪੁ ॥੨॥
राम रंगि निरमल परतापु ॥२॥
राम के प्रेम (रंग) से व्यक्ति का निर्मल प्रताप बढ़ता जाता है।॥ २॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟਿ ਜਾਤ ਬਿਕਾਰ ॥
साधसंगि मिटि जात बिकार ॥
संतों की संगति में रहने से (मनुष्य के) पाप नष्ट हो जाते हैं।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਏਹੋ ਉਪਕਾਰ ॥੩॥
सभ ते ऊच एहो उपकार ॥३॥
संतों की संगति का यही सर्वोच्च उपकार है॥ ३॥

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਰਾਤੇ ਗੋਪਾਲ ॥
प्रेम भगति राते गोपाल ॥
जो गोपाल के प्रेमा-भक्ति के रंग में मग्न रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਾਚੈ ਸਾਧ ਰਵਾਲ ॥੪॥੯੨॥੧੬੧॥
नानक जाचै साध रवाल ॥४॥९२॥१६१॥
नानक ऐसे संतों की चरण-धूलि की याचना करता है ॥४॥९२॥१६१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ॥
ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥
मुझे गोविन्द से ऐसा प्रेम हो गया है कि

ਮੇਲਿ ਲਏ ਪੂਰਨ ਵਡਭਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेलि लए पूरन वडभागी ॥१॥ रहाउ ॥
उसने मुझे अपने साथ मिला लिया है और मैं पूर्ण भाग्यशाली हो गया हूँ ॥ १॥ रहाउ॥

ਭਰਤਾ ਪੇਖਿ ਬਿਗਸੈ ਜਿਉ ਨਾਰੀ ॥
भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥
जैसे पत्नी अपने पति को देख कर हर्षित होती है,

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨੁ ਜੀਵੈ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੀ ॥੧॥
तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥
वैसे ही प्रभु का सेवक उसके नाम को उच्चारण करने से आत्मिक प्रसन्नतापूर्वक जीता है॥ १॥

ਪੂਤ ਪੇਖਿ ਜਿਉ ਜੀਵਤ ਮਾਤਾ ॥
पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥
जैसे अपने पुत्र को देखकर माता जीवन ग्रहण करती है,

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਾਤਾ ॥੨॥
ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥
वैसे ही प्रभु का भक्त परमात्मा के साथ ताने-बाने के धागे के तुल्य मग्न रहता है।॥ २ ॥

ਲੋਭੀ ਅਨਦੁ ਕਰੈ ਪੇਖਿ ਧਨਾ ॥
लोभी अनदु करै पेखि धना ॥
जैसे कोई लोभी व्यक्ति धन को देख कर प्रसन्नता व्यक्त करता है,

ਜਨ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੋ ਮਨਾ ॥੩॥
जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥
वैसे ही प्रभु के भक्त का मन प्रभु के चरण कमलों से लगा रहता है॥ ३ ॥

ਬਿਸਰੁ ਨਹੀ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਦਾਤਾਰ ॥
बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥
हे मेरे दाता ! तुम मुझे क्षण भर के लिए विस्मृत न हों।

ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥੪॥੯੩॥੧੬੨॥
नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥९३॥१६२॥
नानक का प्रभु उसके प्राणों का सहारा है॥ ४ ॥९३॥ १६२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਜੋ ਜਨ ਗੀਧੇ ॥
राम रसाइणि जो जन गीधे ॥
जो भक्त राम के अमृत (नाम) में लीन हुए हैं,

ਚਰਨ ਕਮਲ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤੀ ਬੀਧੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥१॥ रहाउ ॥
वह उसके चरण-कमलों की प्रेमा-भक्ति में बंधे हुए हैं।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਆਨ ਰਸਾ ਦੀਸਹਿ ਸਭਿ ਛਾਰੁ ॥
आन रसा दीसहि सभि छारु ॥
ऐसे भक्तों को दूसरे भोग-विलास राख के तुल्य दिखाई देते हैं ।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਿਹਫਲ ਸੰਸਾਰ ॥੧॥
नाम बिना निहफल संसार ॥१॥
भगवान के नाम के बिना इस दुनिया में जन्म लेना निष्फल है॥ १॥

ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਕਾਢੇ ਆਪਿ ॥
अंध कूप ते काढे आपि ॥
ईश्वर स्वयं ही मनुष्य को अज्ञानता के अंधे कुएँ से बाहर निकाल देता है।

ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਅਚਰਜ ਪਰਤਾਪ ॥੨॥
गुण गोविंद अचरज परताप ॥२॥
गोविन्द की महिमा का तेज प्रताप अदभुत है॥ २॥

ਵਣਿ ਤ੍ਰਿਣਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਪੂਰਨ ਗੋਪਾਲ ॥
वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥
वनों, वनस्पति एवं तीनों लोकों में गोपाल सर्वव्यापक है।

ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰੁ ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਦਇਆਲ ॥੩॥
ब्रहम पसारु जीअ संगि दइआल ॥३॥
सृष्टि में ब्रह्म का ही प्रसार है और भगवान जीवों के साथ दयालु दिखाई देता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਾ ਕਥਨੀ ਸਾਰੁ ॥
कहु नानक सा कथनी सारु ॥
हे नानक ! केवल वही वाणी श्रेष्ठ है,

ਮਾਨਿ ਲੇਤੁ ਜਿਸੁ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥੪॥੯੪॥੧੬੩॥
मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥४॥९४॥१६३॥
जिसे कर्तार स्वीकार कर लेता है॥ ४ ॥ ९४ ॥ १६३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
उड़ी महला ५ ॥

ਨਿਤਪ੍ਰਤਿ ਨਾਵਣੁ ਰਾਮ ਸਰਿ ਕੀਜੈ ॥
नितप्रति नावणु राम सरि कीजै ॥
राम के सरोवर में प्रतिदिन स्नान कीजिए।

ਝੋਲਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
झोलि महा रसु हरि अम्रितु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥
हरि के नाम अमृत के महारस का प्रेमपूर्वक पान कीजिए॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਿਰਮਲ ਉਦਕੁ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਨਾਮ ॥
निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥
गोविन्द के नाम का जल बड़ा निर्मल है।

ਮਜਨੁ ਕਰਤ ਪੂਰਨ ਸਭਿ ਕਾਮ ॥੧॥

मजनु करत पूरन सभि काम ॥१॥

उसमें स्नान करने से सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।॥ १॥

ਸੰਤਸੰਗਿ ਤਹ ਗੋਸਟਿ ਹੋਇ ॥
संतसंगि तह गोसटि होइ ॥
वहाँ सत्संग में प्रभु की कथा वार्ता होती है

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਖੋਇ ॥੨॥
कोटि जनम के किलविख खोइ ॥२॥
और करोड़ों जन्मों के पाप मिट जाते हैं।॥ २॥

ਸਿਮਰਹਿ ਸਾਧ ਕਰਹਿ ਆਨੰਦੁ ॥
सिमरहि साध करहि आनंदु ॥
संतजन प्रभु को स्मरण करके बड़ा आनंद प्राप्त करते हैं।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿਆ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ॥੩॥
मनि तनि रविआ परमानंदु ॥३॥
उनका मन एवं तन परमानंद में लीन रहता है॥ ३॥

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਧਾਨ ॥
जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥
जिसने ईश्वर के चरणों का भण्डार प्राप्त कर लिया है

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਿਸਹਿ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥੯੫॥੧੬੪॥
नानक दास तिसहि कुरबान ॥४॥९५॥१६४॥
दास नानक उस पर कुर्बान जाता है, ॥ ४ ॥ ९५ ॥ १६४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸੋ ਕਿਛੁ ਕਰਿ ਜਿਤੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥
हे मानव ! वही कर्म कर, जिससे तेरे मन को मोह-माया की मैल न लग सके

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਮਹਿ ਏਹੁ ਮਨੁ ਜਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि कीरतन महि एहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥
और तेरा यह मन प्रभु के भजन में जाग्रत रहे॥ १॥ रहाउ॥

ਏਕੋ ਸਿਮਰਿ ਨ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ॥
एको सिमरि न दूजा भाउ ॥
हे मानव ! एक ईश्वर का नाम सिमरन कर और अहंत्व की ओर ध्यान मत दे।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਜਪਿ ਕੇਵਲ ਨਾਉ ॥੧॥
संतसंगि जपि केवल नाउ ॥१॥
महापुरुषों की संगति में केवल नाम का जाप कर॥ १॥

ਕਰਮ ਧਰਮ ਨੇਮ ਬ੍ਰਤ ਪੂਜਾ ॥
करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥
हे मानव ! कर्म-धर्म, व्रत एवं पूजा-अर्चना इत्यादि

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬਿਨੁ ਜਾਨੁ ਨ ਦੂਜਾ ॥੨॥
पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥२॥
सब प्रभु के बिना किसी दूसरे की पहचान न करने में आ जाते हैं।॥ २॥

ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਘਾਲ ॥
ता की पूरन होई घाल ॥
उस व्यक्ति की साधना सफल हो जाती है,

ਜਾ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਭ ਨਾਲਿ ॥੩॥
जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥
जिसका प्रेम अपने ईश्वर के साथ होता है॥ ३॥

ਸੋ ਬੈਸਨੋ ਹੈ ਅਪਰ ਅਪਾਰੁ ॥
सो बैसनो है अपर अपारु ॥
हे नानक ! कर्म-धर्म, व्रत-पूजा करने वाला वैष्णव नहीं अपितु वही वैष्णव सर्वश्रेष्ठ है

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਤਜੇ ਬਿਕਾਰ ॥੪॥੯੬॥੧੬੫॥
कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥४॥९६॥१६५॥
जिसने समस्त पाप (विकार) त्याग दिए हैं। ४॥ ९६ ॥ १६५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੀਵਤ ਛਾਡਿ ਜਾਹਿ ਦੇਵਾਨੇ ॥
जीवत छाडि जाहि देवाने ॥
हे पागल प्राणी ! तेरे जीवन में भौतिक पदार्थ एवं संबंधी तुझे त्याग जाते हैं।

ਮੁਇਆ ਉਨ ਤੇ ਕੋ ਵਰਸਾਂਨੇ ॥੧॥
मुइआ उन ते को वरसांने ॥१॥
मरणोपरांत क्या कोई उनसे लाभ प्राप्त कर सकता है॥ १॥

ਸਿਮਰਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ॥
सिमरि गोविंदु मनि तनि धुरि लिखिआ ॥
जिसके लिए विधाता ने ऐसा कर्म लिखा हुआ है, वह अपने मन एवं तन से गोविन्द को स्मरण करता है।

ਕਾਹੂ ਕਾਜ ਨ ਆਵਤ ਬਿਖਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काहू काज न आवत बिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥
माया (जिसके लिए मनुष्य भागदौड़ करता है) किसी काम नहीं आती॥ १॥ रहाउ॥

ਬਿਖੈ ਠਗਉਰੀ ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਖਾਈ ॥
बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥
जिस किसी ने छल-कपट रूपी विष सेवन किया है,

ਤਾ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਕਬਹੂੰ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥
ता की त्रिसना कबहूं न जाई ॥२॥
उसकी तृष्णा कभी निवृत्त नहीं होती॥ २॥

ਦਾਰਨ ਦੁਖ ਦੁਤਰ ਸੰਸਾਰੁ ॥
दारन दुख दुतर संसारु ॥
हे प्राणी ! यह कठिन जगत् सागर भयानक दु:खों से भरा हुआ है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕੈਸੇ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥੩॥
राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥३॥
राम के नाम बिना प्राणी इससे किस तरह पार होगा ? ॥ ३॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਦੁਇ ਕੁਲ ਸਾਧਿ ॥
साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥
सत्संग में मिलकर अपने लोक-परलोक दोनों ही संवार ले,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਾਨਕ ਆਰਾਧਿ ॥੪॥੯੭॥੧੬੬॥
राम नाम नानक आराधि ॥४॥९७॥१६६॥
हे नानक ! राम के नाम का भजन कर॥ ४ ॥ ९७ ॥ १६६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗਰੀਬਾ ਉਪਰਿ ਜਿ ਖਿੰਜੈ ਦਾੜੀ ॥
गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥
हे प्राणी ! जो दाढ़ी निर्धनों पर खिझती रहती है,

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸਾ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਸਾੜੀ ॥੧॥
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥
उस दाढ़ी को पारब्रह्म-प्रभु ने अग्नि में जला दिया है (अर्थात् जो मनुष्य गुस्से में आकर अहंकारवश दूसरों को तंग करता है, वह स्वयं भी क्रोधाग्नि में जलता रहता है) ॥ १॥

ਪੂਰਾ ਨਿਆਉ ਕਰੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥
पूरा निआउ करे करतारु ॥
सृष्टि का निर्माता प्रभु पूर्ण न्याय करता है।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने सेवकों का रखवाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਪ੍ਰਗਟਿ ਪਰਤਾਪੁ ॥
आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥
हे प्राणी ! सृष्टि के प्रारम्भ से, युगों के आदिकाल से ही प्रभु का प्रताप उजागर है।

ਨਿੰਦਕੁ ਮੁਆ ਉਪਜਿ ਵਡ ਤਾਪੁ ॥੨॥
निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥२॥
निंदक मनुष्य भारी ताप से प्राण त्याग देता है॥ २॥

ਤਿਨਿ ਮਾਰਿਆ ਜਿ ਰਖੈ ਨ ਕੋਇ ॥
तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥
उसको उस प्रभु ने मार दिया है, जिसे कोई बचा नहीं सकता।

ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਮੰਦੀ ਸੋਇ ॥੩॥
आगै पाछै मंदी सोइ ॥३॥
ऐसे मनुष्य की लोक-परलोक में बदनामी ही होती है॥ ३॥

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਰਾਖੈ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ॥
अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥
हे नानक ! अपने सेवकों को प्रभु अपने गले से लगाकर रखता है।

ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੪॥੯੮॥੧੬੭॥
सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥४॥९८॥१६७॥
हमें प्रभु की ही शरण लेनी चाहिए और भगवान के नाम का ध्यान करना चाहिए ॥ ४ ॥ ९८ ॥ १६७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਹਜਰੁ ਝੂਠਾ ਕੀਤੋਨੁ ਆਪਿ ॥
महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥
ईश्वर ने स्वयं दावा झूठा सिद्ध कर दिया है।

ਪਾਪੀ ਕਉ ਲਾਗਾ ਸੰਤਾਪੁ ॥੧॥
पापी कउ लागा संतापु ॥१॥
अपराधी को विपदा पड़ गई है॥ १॥

ਜਿਸਹਿ ਸਹਾਈ ਗੋਬਿਦੁ ਮੇਰਾ ॥
जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥
जिसका सहायक मेरा गोविन्द है।

ਤਿਸੁ ਕਉ ਜਮੁ ਨਹੀ ਆਵੈ ਨੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥
मृत्यु उसके निकट भी नहीं आती॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਬੋਲੈ ਕੂੜੁ ॥
साची दरगह बोलै कूड़ु ॥
ज्ञानहीन मूर्ख मनुष्य ईश्वर के सच्चे दरबार में झूठ बोलता है

ਸਿਰੁ ਹਾਥ ਪਛੋੜੈ ਅੰਧਾ ਮੂੜੁ ॥੨॥
सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥२॥
और अपने हाथों से अपना सिर पीटता है॥ २॥

ਰੋਗ ਬਿਆਪੇ ਕਰਦੇ ਪਾਪ ॥
रोग बिआपे करदे पाप ॥
जो व्यक्ति पाप करते रहते हैं, उन्हें अनेक रोग लग जाते हैं।

ਅਦਲੀ ਹੋਇ ਬੈਠਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥੩॥
अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥३॥
ईश्वर स्वयं ही न्यायकर्ता बनकर बैठा हुआ है॥ ३॥

ਅਪਨ ਕਮਾਇਐ ਆਪੇ ਬਾਧੇ ॥
अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥
मनुष्य अपने कर्मों के कारण स्वयं ही बंध गए हैं।

ਦਰਬੁ ਗਇਆ ਸਭੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸਾਥੈ ॥੪॥
दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥४॥
सारा धन-पदार्थ जीवन (प्राणों) के साथ ही चला जाता है॥ ४॥

ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਦਰਬਾਰਿ ॥
नानक सरनि परे दरबारि ॥
हे नानक ! जिन्होंने प्रभु के दरबार में शरण ली है।

ਰਾਖੀ ਪੈਜ ਮੇਰੈ ਕਰਤਾਰਿ ॥੫॥੯੯॥੧੬੮॥
राखी पैज मेरै करतारि ॥५॥९९॥१६८॥
मेरे करतार ने उनकी प्रतिष्ठा रख ली है ॥५॥९९॥१६८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਨ ਮੀਠ ਖਟਾਨੀ ॥
जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥
उस प्राणी के मन को भगवान के सेवक की चरण-धूलि ही मीठी लगती है,"

ਪੂਰਬਿ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके ललाट पर पूर्व जन्म में किए कर्मों अनुसार आदि से लेख लिखा होता है ॥ १॥ रहाउ॥

ਅਹੰਬੁਧਿ ਮਨ ਪੂਰਿ ਬਿਧਾਈ ॥
अह्मबुधि मन पूरि थिधाई ॥
जिस व्यक्ति का मन अहंकारी बुद्धि की चिकनाई से भरा हुआ होता है,

ਸਾਧ ਧੂਰਿ ਕਰਿ ਸੁਧ ਮੰਜਾਈ ॥੧॥
साध धूरि करि सुध मंजाई ॥१॥
संतों के चरणों की धूलि से साफ करके शुद्ध हो जाता है॥ १॥

ਅਨਿਕ ਜਲਾ ਜੇ ਧੋਵੈ ਦੇਹੀ ॥
अनिक जला जे धोवै देही ॥
यदि शरीर को अनेक जलों से धोया जाए,

ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਸੁਧੁ ਨ ਤੇਹੀ ॥੨॥
मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥२॥
उससे इसकी मलिनता नहीं उतरती और यह शुद्ध नहीं होता।॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਓ ਸਦਾ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
सतिगुरु भेटिओ सदा क्रिपाल ॥
मुझे सदैव ही कृपा का घर सतिगुरु मिल गया है,

ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਕਾਟਿਆ ਭਉ ਕਾਲ ॥੩॥
हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥३॥
और भगवान का सिमरन करने से मैंने मृत्यु के भय को निवृत कर दिया है॥ ३॥

ਮੁਕਤਿ ਭੁਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥
भगवान का नाम ही मुक्ति, भुक्ति एवं युक्ति है।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੪॥੧੦੦॥੧੬੯॥
प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥४॥१००॥१६९॥
हे नानक ! प्रेमा-भक्ति से ईश्वर की गुणस्तुति करते रहो॥ ४॥ १००॥ १६६॥

ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੀਵਨ ਪਦਵੀ ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ॥
जीवन पदवी हरि के दास ॥
ईश्वर के सेवक (नाम सिमरन करके) जीवन पदवी प्राप्त कर लेते हैं।

ਜਿਨ ਮਿਲਿਆ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
जिन मिलिआ आतम परगासु ॥१॥
उन्हें मिलने से आत्मा को (ज्ञान का) प्रकाश मिलता है॥ १॥

ਹਰਿ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸੁਨਿ ਮਨ ਕਾਨੀ ॥
हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥
हे नश्वर प्राणी ! अपने मन से ध्यानपूर्वक भगवान का सिमरन सुनो,

ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਦੁਆਰ ਪਰਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥१॥ रहाउ ॥
तुझे प्रभु के द्वार पर सुख प्राप्त होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਧਿਆਈਐ ਗੋਪਾਲੁ ॥
आठ पहर धिआईऐ गोपालु ॥
हे नानक ! हमें आठ प्रहर भगवान का ध्यान करना चाहिए,

ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥੨॥੧੦੧॥੧੭੦॥
नानक दरसनु देखि निहालु ॥२॥१०१॥१७०॥
जिसके फलस्वरूप भगवान के दर्शन करने से मनुष्य का मन कृतार्थ हो जाता है ॥२॥१०१॥ १७०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਾਂਤਿ ਭਈ ਗੁਰ ਗੋਬਿਦਿ ਪਾਈ ॥
सांति भई गुर गोबिदि पाई ॥
गोविन्द गुरु ने जिस व्यक्ति को नाम की देन प्रदान की है, उसे शांति प्राप्त हो गई है।

ਤਾਪ ਪਾਪ ਬਿਨਸੇ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे भाई ! उस व्यक्ति की जलन एवं पाप नष्ट हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਰਸਨ ਬਖਾਨ ॥
राम नामु नित रसन बखान ॥
अपनी जिव्हा से नित्य ही राम के नाम का बखान करते रहो ।

ਬਿਨਸੇ ਰੋਗ ਭਏ ਕਲਿਆਨ ॥੧॥
बिनसे रोग भए कलिआन ॥१॥
तेरे समस्त रोग दूर हो जाएँगे और तुझे मुक्ति प्राप्त होगी॥ १॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਣ ਅਗਮ ਬੀਚਾਰ ॥
पारब्रहम गुण अगम बीचार ॥
अगम्य पारब्रह्म के गुणों का चिन्तन करते रहो।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਮਿ ਹੈ ਨਿਸਤਾਰ ॥੨॥
साधू संगमि है निसतार ॥२॥
संतों की संगति में रहने से कल्याण की प्राप्ति होती है॥ २॥

ਨਿਰਮਲ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਨਿਤ ਨੀਤ ॥
निरमल गुण गावहु नित नीत ॥
हे मेरे मित्र ! जो मनुष्य सदैव हरि की पवित्र महिमा गायन करता है,

ਗਈ ਬਿਆਧਿ ਉਬਰੇ ਜਨ ਮੀਤ ॥੩॥
गई बिआधि उबरे जन मीत ॥३॥
उसके रोग दूर हो जाते हैं और वह भवसागर से बच जाता है।॥ ३॥

ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਧਿਆਈ ॥
मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥
मन, वचन एवं कर्म से मैं अपने प्रभु की आराधना करता रहता हूँ।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੧੦੨॥੧੭੧॥
नानक दास तेरी सरणाई ॥४॥१०२॥१७१॥
हे प्रभु ! दास नानक ने तेरी ही शरण ली है॥ ४॥ १०२॥ १७१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਨੇਤ੍ਰ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਕੀਆ ਗੁਰਦੇਵ ॥
नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥
गुरदेव ने ज्ञान नेत्र दिए हैं।

ਭਰਮ ਗਏ ਪੂਰਨ ਭਈ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भरम गए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे मेरे भ्रम दूर हो गए हैं और मेरी साधना सफल हो गई है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੀਤਲਾ ਤੇ ਰਖਿਆ ਬਿਹਾਰੀ ॥
सीतला ते रखिआ बिहारी ॥
हे दयालु प्रभु ! तूने ही दया करके सीतला से बचाया है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੧॥
पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥१॥
पारब्रह्म प्रभु ने अपनी कृपा धारण की है॥ १॥

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਸੋ ਜੀਵੈ ॥
नानक नामु जपै सो जीवै ॥
हे नानक ! जो प्रभु के नाम का जाप करता है, उसे ही जीवन प्राप्त होता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ॥੨॥੧੦੩॥੧੭੨॥
साधसंगि हरि अम्रितु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥
संतों की संगति में रहकर वह हरि अमृत का पान करता है ॥२॥१०३॥१७२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਧਨੁ ਓਹੁ ਮਸਤਕੁ ਧਨੁ ਤੇਰੇ ਨੇਤ ॥
धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥
हे ईश्वर ! वह मस्तक धन्य है (जो तेरे समक्ष झुकता है), वे नेत्र भी धन्य हैं जो तेरे दर्शन करते हैं।

ਧਨੁ ਓਇ ਭਗਤ ਜਿਨ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਹੇਤ ॥੧॥
धनु ओइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥१॥
वह भक्त धन्य हैं जिनका तेरे साथ अनुराग बना रहता है॥ १॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਸੁਖੁ ਲਹੀਐ ॥
नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥
प्रभु के नाम-स्मरण के बिना कभी सुख नहीं मिल सकता।

ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਸੁ ਕਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हमें अपनी रसना से राम नाम का ही यश बखान करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਤਿਨ ਊਪਰਿ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥
हमें उन पर सर्वदा ही कुर्बान होना चाहिए

ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਜਪਿਆ ਨਿਰਬਾਣੁ ॥੨॥੧੦੪॥੧੭੩॥
नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥२॥१०४॥१७३॥
हे नानक ! जिन्होंने निर्लिप्त प्रभु के नाम का जाप किया है, ॥२॥१०४॥१७३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੂੰਹੈ ਮਸਲਤਿ ਤੂੰਹੈ ਨਾਲਿ ॥
तूंहै मसलति तूंहै नालि ॥
हे भगवान ! तू ही मेरा सलाहकार हैं और तू ही मेरे साथ रहता है।

ਤੂਹੈ ਰਾਖਹਿ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥
तूहै राखहि सारि समालि ॥१॥
तू ही ध्यानपूर्वक मेरी रक्षा करता है॥ १॥

ਐਸਾ ਰਾਮੁ ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਸਹਾਈ ॥
ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥
हे मेरे भाई ! ऐसा है मेरा राम जो इहलोक एवं परलोक में मेरा सहायक है।

ਦਾਸ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दास की पैज रखै मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਗੈ ਆਪਿ ਇਹੁ ਥਾਨੁ ਵਸਿ ਜਾ ਕੈ ॥
आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥
जिस प्रभु के वश में यह लोक है, वही स्वयं परलोक में भी रक्षक है।

ਆਠ ਪਹਰ ਮਨੁ ਹਰਿ ਕਉ ਜਾਪੈ ॥੨॥
आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥२॥
यह मन दिन-रात भगवान के नाम का जाप करता रहता है॥ २ ॥

ਪਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥
पति परवाणु सचु नीसाणु ॥
उसकी प्रतिष्ठा स्वीकृत होती है और उसको ही सत्यनाम का चिन्ह लगता है,

ਜਾ ਕਉ ਆਪਿ ਕਰਹਿ ਫੁਰਮਾਨੁ ॥੩॥
जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥३॥
जिसके लिए प्रभु स्वयं हुक्म लागू करता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿ ॥
आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥
ईश्वर स्वयं दाता है और स्वयं ही पालनहार है।

ਨਿਤ ਨਿਤ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥੧੦੫॥੧੭੪॥
नित नित नानक राम नामु समालि ॥४॥१०५॥१७४॥
हे नानक ! हमेशा ही प्रभु के नाम की आराधना करते रहो ॥ ४॥ १०५॥ १७४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭਇਆ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ॥
सतिगुरु पूरा भइआ क्रिपालु ॥
जब पूर्ण सतिगुरु जी कृपा के घर में आ जाते हैं तो

ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਸਦਾ ਗੁਪਾਲੁ ॥੧॥

हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥१॥

जगत् का मालिक गोपाल मनुष्य के हृदय में हमेशा के लिए निवास कर लेता है॥ १॥

ਰਾਮੁ ਰਵਤ ਸਦ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥

रामु रवत सद ही सुखु पाइआ ॥

राम का चिन्तन करने से मुझे सदैव सुख प्राप्त हो गया है।

ਮਇਆ ਕਰੀ ਪੂਰਨ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण हरि-परमेश्वर ने मुझ पर बड़ी दया धारण की है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰੇ ਭਾਗ ॥
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥
हे नानक ! कह - जिस व्यक्ति के मस्तक पर पूर्ण भाग्य उदय होते हैं,

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਸਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ॥੨॥੧੦੬॥
हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥२॥१०६॥
वह सदा प्रभु-परमेश्वर का नाम-स्मरण करता है और सदा स्थिर रहने वाला स्वामी अपना हाथ रखता है॥ २ ॥ १०६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਧੋਤੀ ਖੋਲਿ ਵਿਛਾਏ ਹੇਠਿ ॥
धोती खोलि विछाए हेठि ॥
हे मान्यवर ! ब्राह्मण अपनी धोती खोलकर अपने नीचे बिछा लेता है।

ਗਰਧਪ ਵਾਂਗੂ ਲਾਹੇ ਪੇਟਿ ॥੧॥
गरधप वांगू लाहे पेटि ॥१॥
जो कुछ उसके हाथ (खीर-पूरी इत्यादि) आता है, गधे की भाँति अपने पेंट में डालता रहता है॥ १॥

ਬਿਨੁ ਕਰਤੂਤੀ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ॥
बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥
शुभ कर्मों के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
मुक्ति तो भगवान के नाम का ध्यान करने से ही मिलती है॥ १॥ रहाउ॥

ਪੂਜਾ ਤਿਲਕ ਕਰਤ ਇਸਨਾਨਾਂ ॥
पूजा तिलक करत इसनानां ॥
ब्राह्मण पूजा-अर्चना एवं स्नान करता है और अपने माथे पर तिलक लगाता है।

ਛੁਰੀ ਕਾਢਿ ਲੇਵੈ ਹਥਿ ਦਾਨਾ ॥੨॥
छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥२॥
दान-पुण्य लेने के लिए स्वर्ग का धोखा देकर छुरी निकाल लेता है (अर्थात् निर्दयता से दान लेता है) ॥ २ ॥

ਬੇਦੁ ਪੜੈ ਮੁਖਿ ਮੀਠੀ ਬਾਣੀ ॥
बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥
वह अपने मुख से मधुर स्वर में वेदों का पाठ करता है।

ਜੀਆਂ ਕੁਹਤ ਨ ਸੰਗੈ ਪਰਾਣੀ ॥੩॥
जीआं कुहत न संगै पराणी ॥३॥
नश्वर मनुष्य जीव-जन्तुओं को मारने में संकोच नहीं करता॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੈ ॥
कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपा करता है,

ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥੪॥੧੦੭॥
हिरदा सुधु ब्रहमु बीचारै ॥४॥१०७॥
उसका हृदय शुद्ध हो जाता है और वह प्रभु का चिन्तन करता रहता है ॥ ४॥ १०७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਥਿਰੁ ਘਰਿ ਬੈਸਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਪਿਆਰੇ ॥
थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥
हे प्रभु के प्रिय भक्तजनों ! अपने हृदय घर में एकाग्रचित होकर बैठो।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਮਰੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु ने तुम्हारे कार्य संवार दिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਦੁਸਟ ਦੂਤ ਪਰਮੇਸਰਿ ਮਾਰੇ ॥
दुसट दूत परमेसरि मारे ॥
परमेश्वर ने दुष्ट एवं नीचों का नाश कर दिया है।

ਜਨ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੀ ਕਰਤਾਰੇ ॥੧॥
जन की पैज रखी करतारे ॥१॥
अपने सेवक की प्रतिष्ठा सृजनहार प्रभु ने रखी है॥ १॥

ਬਾਦਿਸਾਹ ਸਾਹ ਸਭ ਵਸਿ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ॥
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥
संसार के राजा-महाराजा प्रभु ने अपने सेवक के सब अधीन कर दिए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮ ਮਹਾ ਰਸ ਪੀਨੇ ॥੨॥
अम्रित नाम महा रस पीने ॥२॥
उसने प्रभु के अमृत नाम का परम रस पान किया है॥ २ ॥

ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਭਜਹੁ ਭਗਵਾਨ ॥
निरभउ होइ भजहु भगवान ॥
निडर होकर भगवान का भजन करो।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਕੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥੩॥
साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥३॥
साध संगत में मिलकर प्रभु स्मरण का यह दान (फल) दूसरों को भी प्रदान करो ॥ ३ ॥

ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥
नानक का कथन है कि हे अन्तर्यामी प्रभु ! मैं तेरी शरण में हूँ

ਨਾਨਕ ਓਟ ਪਕਰੀ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੧੦੮॥
नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥४॥१०८॥
और उसने जगत् के स्वामी प्रभु का सहारा ले लिया हैं ।॥ ४ ॥१०८ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਭਾਹਿ ਨ ਜਲੈ ॥
हरि संगि राते भाहि न जलै ॥
जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में मग्न रहता है, वह तृष्णा की अग्नि में नहीं जलता।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਮਾਇਆ ਨਹੀ ਛਲੈ ॥
हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥
जो व्यक्ति प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है, उससे माया किसी प्रकार का छल नहीं करती।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਨਹੀ ਡੂਬੈ ਜਲਾ ॥
हरि संगि राते नही डूबै जला ॥
जो व्यक्ति भगवान की स्मृति में मग्न रहता है, वह भवसागर के जल में नहीं डूबता।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥੧॥
हरि संगि राते सुफल फला ॥१॥
जो व्यक्ति प्रभु की प्रीति में मग्न रहता है, उसको जीवन का श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है। ॥ १॥!

ਸਭ ਭੈ ਮਿਟਹਿ ਤੁਮਾਰੈ ਨਾਇ ॥
सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥
हे प्रभु ! तेरे नाम से सारे भय नाश हो जाते हैं।

ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥
हे नश्वर प्राणी ! सत्संग में मिलकर तू हरि प्रभु का यश-गायन करता रह ॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਮਿਟੈ ਸਭ ਚਿੰਤਾ ॥
हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥
जो व्यक्ति भगवान की याद में मग्न रहता है, उसकी तमाम चिन्ता मिट जाती है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਸੋ ਰਚੈ ਜਿਸੁ ਸਾਧ ਕਾ ਮੰਤਾ ॥
हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥
लेकिन भगवान की याद में वही व्यक्ति जुड़ता है जिसे साधु का नाम-मंत्र मिल जाता है।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਜਮ ਕੀ ਨਹੀ ਤ੍ਰਾਸ ॥
हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥
प्रभु की याद में अनुरक्त होने से मृत्यु का भय नहीं सताता।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਪੂਰਨ ਆਸ ॥੨॥
हरि संगि राते पूरन आस ॥२॥
प्रभु की स्मृति में अनुरक्त होने से तमाम मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। ॥ २ ॥

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਦੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
हरि संगि राते दूखु न लागै ॥
परमात्मा के चरणों में जुड़े रहने से कोई दुःख स्पर्श नहीं करता।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥
हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥
प्रभु के चिंतन में मस्त हुआ व्यक्ति दिन-रात सचेत रहता है।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸਹਜ ਘਰਿ ਵਸੈ ॥
हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥
प्रभु के चिंतन में जुड़े रहने से व्यक्ति सहज घर में वास करता है।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਨਸੈ ॥੩॥
हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥३॥
प्रभु के स्मरण में रहने से मनुष्य का भ्रम एवं भय दौड़ जाते हैं।॥ ३ ॥

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥
हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥
प्रभु के चिन्तन में जुड़े रहने से बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਾਤੇ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥
हरि संगि राते निरमल सोइ ॥
प्रभु के स्मरण में जुड़े रहने से जीवन-आचरण निर्मल हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥
हे नानक ! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ,

ਜਿਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਬਿਸਰਤ ਨਾਹੀ ॥੪॥੧੦੯॥
जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥४॥१०९॥
जो मेरे प्रभु को विस्मृत नहीं करते॥ ४॥ १०९ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕਰਤ ਸੀਤਲ ਮਨ ਭਏ ॥
उदमु करत सीतल मन भए ॥
संतों की पावन सभा में जाने का उद्यम करने से मन शीतल हो जाता है

ਮਾਰਗਿ ਚਲਤ ਸਗਲ ਦੁਖ ਗਏ ॥
मारगि चलत सगल दुख गए ॥
प्रभु-मार्ग का अनुसरण करने से तमाम दुःख दूर हो गए हैं।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨਿ ਭਏ ਅਨੰਦ ॥
नामु जपत मनि भए अनंद ॥
प्रभु के नाम का जाप करने से मन प्रसन्न हो जाता है।

ਰਸਿ ਗਾਏ ਗੁਨ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥੧॥
रसि गाए गुन परमानंद ॥१॥
प्रेमपूर्वकप्रभु की महिमा गायन करने से परमानंद प्राप्त हो जाता है॥ १॥

ਖੇਮ ਭਇਆ ਕੁਸਲ ਘਰਿ ਆਏ ॥
खेम भइआ कुसल घरि आए ॥
चारों ओर खुशियाँ हो गई हैं तथा प्रसन्नता घर में आ गई है

ਭੇਟਤ ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਈ ਬਲਾਏ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥
संतों की सभा में रहने से तमाम मुसीबतें दूर हो गई हैं। ॥ १॥ रहाउ ॥||Pause||

ਨੇਤ੍ਰ ਪੁਨੀਤ ਪੇਖਤ ਹੀ ਦਰਸ ॥
नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥
गुरु जी के दर्शन करते ही नेत्र पुनीत हो जाते हैं।

ਧਨਿ ਮਸਤਕ ਚਰਨ ਕਮਲ ਹੀ ਪਰਸ ॥

धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥

गुरु जी के चरणों को स्पर्श करते ही मस्तक प्रशंसनीय हो जाता है।

ਗੋਬਿੰਦ ਕੀ ਟਹਲ ਸਫਲ ਇਹ ਕਾਂਇਆ ॥

गोबिंद की टहल सफल इह कांइआ ॥

यह शरीर गोविन्द की सेवा करने से फलदायक हो जाता है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥२॥
संतों की कृपा से मुझे परम पद (मोक्ष) मिल गया है॥ २॥

ਜਨ ਕੀ ਕੀਨੀ ਆਪਿ ਸਹਾਇ ॥
जन की कीनी आपि सहाइ ॥
अपने सेवकों की प्रभु स्वयं ही सहायता करता है।

ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਲਗਿ ਦਾਸਹ ਪਾਇ ॥
सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥
प्रभु के सेवकों के चरण स्पर्श करके मुझे सुख उपलब्ध हो गया है।

ਆਪੁ ਗਇਆ ਤਾ ਆਪਹਿ ਭਏ ॥
आपु गइआ ता आपहि भए ॥
जब अहंत्व चला जाता है तो मनुष्य स्वयं ही स्वामी हो जाता है

ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਾਨ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਏ ॥੩॥
क्रिपा निधान की सरनी पए ॥३॥
और दया के भण्डार प्रभु की शरण लेता है ॥ ३॥

ਜੋ ਚਾਹਤ ਸੋਈ ਜਬ ਪਾਇਆ ॥
जो चाहत सोई जब पाइआ ॥
जब मनुष्य भगवान को पा लेता है, जिसकी वह कामना करता रहता है,"

ਤਬ ਢੂੰਢਨ ਕਹਾ ਕੋ ਜਾਇਆ ॥
तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥
तब वह उसको ढूंढने के लिए किसी स्थान पर नहीं जाता।

ਅਸਥਿਰ ਭਏ ਬਸੇ ਸੁਖ ਆਸਨ ॥
असथिर भए बसे सुख आसन ॥
वह अमर हो जाता है और सुख के आसन में वास करता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਬਾਸਨ ॥੪॥੧੧੦॥
गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥४॥११०॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से वह प्रसन्नता के घर में दाखिल हो गया है॥ ४ ॥ ११० ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
उड़ी महला ५ ॥

ਕੋਟਿ ਮਜਨ ਕੀਨੋ ਇਸਨਾਨ ॥
कोटि मजन कीनो इसनान ॥
उसे मानो करोड़ों तीर्थों पर स्नान का और

ਲਾਖ ਅਰਬ ਖਰਬ ਦੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥
लाख अरब खरब दीनो दानु ॥
लाखों, अरबों एवं खरबों पुण्यदान करने का फल प्राप्त हो जाता है

ਜਾ ਮਨਿ ਵਸਿਓ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ॥੧॥
जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥१॥
जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में भगवान का नाम निवास कर लेता है ॥ १॥

ਸਗਲ ਪਵਿਤ ਗੁਨ ਗਾਇ ਗੁਪਾਲ ॥
सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥
जो व्यवित गोपाल की गुणस्तुति करते हैं, वे सभी पवित्र हैं।

ਪਾਪ ਮਿਟਹਿ ਸਾਧੂ ਸਰਨਿ ਦਇਆਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥
दयालु संतों का आश्रय लेने से पाप नाश हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਹੁਤੁ ਉਰਧ ਤਪ ਸਾਧਨ ਸਾਧੇ ॥
बहुतु उरध तप साधन साधे ॥
मानो उसने अधिकतर उल्टे लटककर अनेकों तपों के साधन साध लिए तथा

ਅਨਿਕ ਲਾਭ ਮਨੋਰਥ ਲਾਧੇ ॥
अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥
उसे अनेक तरह के लाभ प्राप्त हो गए और मनोकामनाएँ पूरी हो गयी है

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਨ ਆਰਾਧੇ ॥੨॥
हरि हरि नाम रसन आराधे ॥२॥
जो व्यक्ति अपनी रसना से हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करता रहता है॥ २॥

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਬਖਾਨੇ ॥
सिम्रिति सासत बेद बखाने ॥
मानो उसने स्मृतियां, शास्त्र एवं वेदों का बखान कर लिया है

ਜੋਗ ਗਿਆਨ ਸਿਧ ਸੁਖ ਜਾਨੇ ॥
जोग गिआन सिध सुख जाने ॥
और उसने योग, ज्ञान एवं सिद्धियों का सुख समझ लिया है

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਮਨ ਮਾਨੇ ॥੩॥
नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥३॥
जब मनुष्य प्रभु से संतुष्ट हो जाता है और उसका नाम-स्मरण करता है, ॥३॥

ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥
उस अगम्य, अपरंपार भगवान का ज्ञान अगाध है।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦੇ ਬੀਚਾਰੇ ॥
नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥
(अब नानक) नाम का जाप करता है और हरि के नाम का ही वह अपने हृदय में ध्यान करता है

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥੪॥੧੧੧॥
नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥४॥१११॥
नानक पर ईश्वर ने कृपा की है॥ ४ ॥ १११ ॥

ਗਉੜੀ ਮਃ ੫ ॥
गउड़ी मः ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥
भगवान का सिमरन करने से मुझे सुख प्राप्त हो गया है

ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰ ਰਿਦੈ ਬਸਾਇਆ ॥੧॥
चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥१॥
और गुरु के सुन्दर चरण कमल अपने हृदय में बसा लिए हैं।॥ १॥

ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪੂਰਾ ॥
गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥
पारब्रह्म, गुरु-गोबिन्द सर्वोपरि है।

ਤਿਸਹਿ ਅਰਾਧਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥
उसकी आराधना करने से मेरा मन धैर्यवान हो गया है ॥ रहाउ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਉ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਨਾਮ ॥
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥
मैं तो रात-दिन गुरु का नाम ही जपता रहता हूँ।

ਤਾ ਤੇ ਸਿਧਿ ਭਏ ਸਗਲ ਕਾਂਮ ॥੨॥
ता ते सिधि भए सगल कांम ॥२॥
जिसकी कृपा से मेरे तमाम कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।॥ २॥

ਦਰਸਨ ਦੇਖਿ ਸੀਤਲ ਮਨ ਭਏ ॥
दरसन देखि सीतल मन भए ॥
गुरु जी के दर्शन करके मेरा मन शीतल हो गया है

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਗਏ ॥੩॥
जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥
और मेरे जन्म-जन्मांतरों के पाप मिट गए हैं॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਹਾ ਭੈ ਭਾਈ ॥
कहु नानक कहा भै भाई ॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! मेरे लिए अब भय कहाँ है?

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪਿ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੪॥੧੧੨॥
अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥४॥११२॥
अपने सेवक की गुरु ने स्वयं ही लाज-प्रतिष्ठा रखी है ॥ ४ ॥ ११२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ॥
अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥
भगवान अपने सेवक का स्वयं ही सहायक होता है।

ਨਿਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੈ ਬਾਪ ਜੈਸੇ ਮਾਈ ॥੧॥
नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥१॥
वह नित्य ही ऐसे देखभाल करता है जैसे माता-पिता करते हैं। ॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨਿ ਉਬਰੈ ਸਭ ਕੋਇ ॥
प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥
प्रभु की शरण में आने से हरेक व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਪੂਰਨ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥
वह परमात्मा ही सबकुछ करता एवं जीवों से करवाता है, जो सदैव सत्य एवं सर्वव्यापक है। ॥ रहाउ ॥

ਅਬ ਮਨਿ ਬਸਿਆ ਕਰਨੈਹਾਰਾ ॥
अब मनि बसिआ करनैहारा ॥
अब मेरा मन उस जगत् के रचयिता प्रभु में वास करता है।

ਭੈ ਬਿਨਸੇ ਆਤਮ ਸੁਖ ਸਾਰਾ ॥੨॥
भै बिनसे आतम सुख सारा ॥२॥
जिससे सभी भय नाश हो गए हैं और आत्मा को सुख प्राप्त हो गया है ॥ २ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੇ ਜਨ ਰਾਖੇ ॥
करि किरपा अपने जन राखे ॥
अपने सेवकों को प्रभु ने कृपा धारण करके बचा लिया है।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਲਾਥੇ ॥੩॥
जनम जनम के किलबिख लाथे ॥३॥
उनके जन्म-जन्मांतरों के पाप निवृत्त हो गए हैं ॥ ३ ॥

ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥
प्रभु की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਸਰਨਾਈ ॥੪॥੧੧੩॥
नानक दास सदा सरनाई ॥४॥११३॥
हे नानक ! प्रभु के सेवक सदैव प्रभु की शरण में रहते हैं। ॥ ४॥ ११३॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦੇ ॥
रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे
रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਮ ਕੋ ਬਲੁ ਪੂਰਨ ਭਾਈ ॥
राम को बलु पूरन भाई ॥
हे भाई ! राम की शक्ति सर्वव्यापक है।

ਤਾ ਤੇ ਬ੍ਰਿਥਾ ਨ ਬਿਆਪੈ ਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ता ते ब्रिथा न बिआपै काई ॥१॥ रहाउ ॥
राम की उस शक्ति के प्रभाव से कोई दुःख-क्लेश प्रभावित नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਜੋ ਚਿਤਵੈ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਮਾਈ ॥
जो जो चितवै दासु हरि माई ॥
हे मेरी माता! जो कुछ भी प्रभु का सेवक अपने मन में कल्पना करता है,"

ਸੋ ਸੋ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਕਰਾਈ ॥੧॥
सो सो करता आपि कराई ॥१॥
वह सब कुछ परमात्मा स्वयं ही करवा देता है॥ १॥

ਨਿੰਦਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
निंदक की प्रभि पति गवाई ॥
निन्दा करने वालों की प्रभु इज्जत गंवा देता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਨਿਰਭਉ ਗਾਈ ॥੨॥੧੧੪॥
नानक हरि गुण निरभउ गाई ॥२॥११४॥
नानक निडर प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है। ॥ २॥ ११४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਭੁਜ ਬਲ ਬੀਰ ਬ੍ਰਹਮ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਗਰਤ ਪਰਤ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਅੰਗੁਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे भुजबल शूरवीर प्रभु ! हे सुखों के सागर! मैं (विकारों के) गड्ढे में गिर रहा हूँ, मुझे उंगली से पकड़ लीजिए॥ १॥ रहाउ॥

स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥
हे प्रभु ! मेरे कानों में तेरी महिमा सुनने की सूझ नहीं, मेरे नयन सुन्दर नहीं और मैं दुखी एवं लंगड़ा तेरे द्वार पर पुकारता हूँ (कि मुझे विकारों के गड्ढे से बचा लो)॥ १॥

दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥
दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥
हे दीनानाथ ! हे अनाथों पर करुणा करने वाले ! तू ही मेरा मित्र, सखा, पिता एवं माता है।

चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥
चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥
हे नानक ! प्रभु के चरण कमलों को अपने हृदय से लगा कर रख, जो अपने संतों को भयानक सागर से पार कर देता है। ॥ २ ॥ २ ॥ ११५ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी बैरागणि महला ५
रागु गउड़ी बैरागणि महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦਯ ਗੁਸਾਈ ਮੀਤੁਲਾ ਤੂੰ ਸੰਗਿ ਹਮਾਰੈ ਬਾਸੁ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥

हे दया के पुंज ! हे गुसाई ! तू मेरा प्रिय मित्र है और हमेशा ही मेरे साथ बसता रह॥ १॥ रहाउ॥

तुझ बिनु घरी न जीवना धि्रगु रहणा संसारि ॥

तुझ बिनु घरी न जीवना धि्रगु रहणा संसारि ॥

हे प्रभु ! तेरे बिना मैं एक क्षण भर के लिए भी जीवित नहीं रह सकता और तेरे बिना इस दुनिया में जीना धिक्कार योग्य है।

जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥

जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥

हे आत्मा, प्राण एवं सुख प्रदान करने वाले प्रभु ! हर क्षण मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

हसत अलंबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥

हसत अल्मबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥

हे गोपाल ! मुझे अपने हाथ का आश्रय दीजिए और मुझे गड्ढ़े में से बाहर निकालें

मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥२॥

मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥२॥

क्योंकि मैं निर्गुण एवं अल्पबुद्धि वाला हूँ लेकिन तू सदैव ही दीनदयाल है॥ २॥

किआ सुख तेरे संमला कवन बिधी बीचारु ॥

किआ सुख तेरे समला कवन बिधी बीचार ॥

तेरे दिए हुए कौन-कौन से सुख मैं स्मरण कर सकता हूँ और किस विधि से मैं तेरी आराधना कर सकता हूँ?

सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥

सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥

हे सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार प्रभु ! तू अपने सेवकों से प्रेम करता है और जो तेरा आश्रय लेते हैं, उनको अपने साथ लीन कर लेता है ॥ ३ ॥

सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥

सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥

हे भाई ! संसार के समस्त पदार्थ, आठों सिद्धियाँ, महा रस नाम के परम अमृत में विद्यमान हैं।

ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਭਏ ਕੇਸਵਾ ਸੇ ਜਨ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਹਿ ॥੪॥
सुप्रसंन भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥४॥
हे भाई ! जिन पर केशव सुप्रसन्न होता है, वे व्यक्ति प्रभु की गुणस्तुति करते रहते हैं। ॥ ४॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪੋ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥
मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥
हे प्राणों के आधार प्रभु ! तू ही मेरी माता, पिता, पुत्र, रिश्तेदार सब कुछ तू ही है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕੁ ਭਜੈ ਬਿਖੁ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥੫॥੧॥੧੧੬॥
साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥
संतों की संगति में नानक तेरा भजन करता है, जो तेरी स्तुति करता है वह विष से भरे संसार सागर से पार हो जाता है॥५ ॥१॥ ११६ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਰਹੋਏ ਕੇ ਛੰਤ ਕੇ ਘਰਿ ਮਃ ੫
गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५
गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹੈ ਕੋਈ ਰਾਮ ਪਿਆਰੋ ਗਾਵੈ ॥
है कोई राम पिआरो गावै ॥
कोई विरला व्यक्ति ही प्रिय राम का यश गायन करता है ?

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸੂਖ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥
वह सत्य, सर्व कल्याण एवं सुख प्राप्त कर लेता है॥ रहाउ॥

ਬਨੁ ਬਨੁ ਖੋਜਤ ਫਿਰਤ ਬੈਰਾਗੀ ॥
बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥
वैरागी अनेकों वनों में प्रभु की खोज हेतु जाता है।

ਬਿਰਲੇ ਕਾਹੂ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
बिरले काहू एक लिव लागी ॥
परन्तु कोई विरला पुरुष ही है जिसकी सुरति एक ईश्वर से लगती है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥੧॥
जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥१॥
जिन्होंने भगवान को पा लिया है, ऐसे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं।॥ १॥

ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ਸਨਕਾਦਿਕ ਚਾਹੈ ॥
ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥
ब्रह्मा इत्यादि देवते एवं सनक, सनन्दन एवं सनत कुमार भी भगवान को मिलने की लालसा करते हैं।

ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਸਿਧ ਹਰਿ ਆਹੈ ॥
जोगी जती सिध हरि आहै ॥
योगी, ब्रह्मचारी एवं सिद्ध पुरुष ईश्वर से मिलने की आशा करते रहते हैं।

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਸੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਹੈ ॥੨॥
जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥२॥
जिसको यह देन प्राप्त हुई है, वह ईश्वर की महिमा करता रहता है।॥ २॥

ਤਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਜਿਨ ਬਿਸਰਤ ਨਾਹੀ ॥
ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥
मैंने उनकी शरण ली है, जिनको ईश्वर नहीं भूलता।

ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮਿਲਾਹੀ ॥
वडभागी हरि संत मिलाही ॥
बड़ी किस्मत से ही हरि का संत मिलता है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਤਿਹ ਮੂਲੇ ਨਾਹੀ ॥੩॥
जनम मरण तिह मूले नाही ॥३॥
चूंकि वह जीवन-मृत्यु से वास्तव में मुक्त है। ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮਿਲੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ ॥
करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥
हे मेरे प्रियतम प्यारे ! कृपा करके मुझे दर्शन दीजिए।

ਬਿਨਉ ਸੁਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਊਚ ਅਪਾਰੇ ॥
बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥
हे मेरे सर्वोपरि एवं अपार प्रभु! मेरी एक प्रार्थना सुनो,

ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗਤੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥੪॥੧॥੧੧੭॥
नानकु मांगतु नामु अधारे ॥४॥१॥११७॥
नानक तेरे नाम का आधार ही मांगता है ॥ ४॥ १॥ ११७॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी पूरबी महला ५
रागु गउड़ी पूरबी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਵਨ ਗੁਨ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਮਿਲਉ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरी माता ! मैं कौन से गुण द्वारा प्राणपति प्रभु को मिल सकती हूँ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਰੂਪ ਹੀਨ ਬੁਧਿ ਬਲ ਹੀਨੀ ਮੋਹਿ ਪਰਦੇਸਨਿ ਦੂਰ ਤੇ ਆਈ ॥੧॥
रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥
मैं रूपहीन, बुद्धिहीन एवं बलहीन हूँ और मैं परदेसिन विभिन्न योनियो की यात्रा से गुजरकर दूर से आई हूँ॥ १॥

ਨਾਹਿਨ ਦਰਬੁ ਨ ਜੋਬਨ ਮਾਤੀ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਕੀ ਕਰਹੁ ਸਮਾਈ ॥੨॥
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥
मेरे पास न ही (नाम) धन है और न ही यौवन का गर्व है। हे प्रभु ! मुझ अनाथ को अपने साथ मिला लो॥ २॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਭਈ ਬੈਰਾਗਨਿ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨ ਕਉ ਹਉ ਫਿਰਤ ਤਿਸਾਈ ॥੩॥
खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥
ढूंढते-ढूंढते मैं बैरागन हो गई हूँ। प्रभु के दर्शनों हेतु मैं प्यासी होकर फिर रही हूँ॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮੇਰੀ ਜਲਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥੪॥੧॥੧੧੮॥
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥४॥१॥११८॥
नानक का कथन है कि हे दीनदयाल ! हे कृपा के घर प्रभु ! संतों की संगति ने मेरी यह जुदाई की जलन बुझा दी है॥ ४॥ १॥ ११८ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਬੇ ਕਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ॥
प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥
मेरे मन में प्रभु को मिलने के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है।

ਪਾਇ ਲਗਉ ਮੋਹਿ ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਕੋਊ ਸੰਤੁ ਮਿਲੈ ਬਡਭਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मुझे सौभाग्य से कोई गुरु-संत आकर मिल जाए, तो मैं उसके चरण स्पर्श करती हूँ और उसे विनती करती हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨੁ ਅਰਪਉ ਧਨੁ ਰਾਖਉ ਆਗੈ ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਮੋਹਿ ਸਗਲ ਤਿਆਗੀ ॥
मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥
मैं अपना मन उसको अर्पण करती हूँ, उसके समक्ष अपना धन अर्पित करती हूँ और मैंने अपने मन की मति सब त्याग दी है,

ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਾਵੈ ਅਨਦਿਨੁ ਫਿਰਉ ਤਿਸੁ ਪਿਛੈ ਵਿਰਾਗੀ ॥੧॥
जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥१॥
जो मुझे प्रभु की हरि-कथा सुनाता है, मैं वैराग्यवान होकर रात-दिन उसके आगे-पीछे फिरती हूँ॥ १ ॥

ਪੂਰਬ ਕਰਮ ਅੰਕੁਰ ਜਬ ਪ੍ਰਗਟੇ ਭੇਟਿਓ ਪੁਰਖੁ ਰਸਿਕ ਬੈਰਾਗੀ ॥
पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥
जब पूर्व जन्मों में किए शुभ कर्मों के अंकुर प्रकट हो गएं तो उसे सर्वव्यापक प्रभु मिल गया है जो समस्त प्राणियों में विराजमान होकर रस भोगने वाला है और जो रसों से निर्लिप्त भी है।

ਮਿਟਿਓ ਅੰਧੇਰੁ ਮਿਲਤ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਸੋਈ ਜਾਗੀ ॥੨॥੨॥੧੧੯॥
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९॥
हे नानक ! ईश्वर को मिल जाने से मेरा (अज्ञानता का) अंधेरा मिट गया है और जन्म-जन्मांतरों की

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਨਿਕਸੁ ਰੇ ਪੰਖੀ ਸਿਮਰਿ ਹਰਿ ਪਾਂਖ ॥
निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥
हे मेरे मन रूपी पक्षी ! भगवान के सिमरन को अपने पंख बनाकर संसार रूपी घोंसले से स्वयं को निकाल कर बचा ले।

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸਰਣਿ ਗਹੁ ਪੂਰਨ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਹੀਅਰੇ ਸੰਗਿ ਰਾਖੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥१॥ रहाउ ॥
संतों से मिलकर उनकी शरण ले और प्रभु के पूर्ण नाम-रत्न को अपने हृदय से लगाकर रख ॥ १॥ रहाउ ॥

ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਕੂਈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਰਸ ਪੰਕਜ ਅਤਿ ਤੀਖਜਣ ਮੋਹ ਕੀ ਫਾਸ ॥
भ्रम की कूई त्रिसना रस पंकज अति तीख्जण मोह की फास ॥
अंधविश्वास का एक लघु कुआँ है, हर्षोल्लास मनाने की तृष्णा इसका कीचड़ है और मोह की फाँसी अत्यंत तीक्ष्ण है।

ਕਾਟਨਹਾਰ ਜਗਤ ਗੁਰ ਗੋਬਿਦ ਚਰਨ ਕਮਲ ਤਾ ਕੇ ਕਰਹੁ ਨਿਵਾਸ ॥੧॥
काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥१॥
जगद्गुरु गोबिन्द उन बंधनों को काटने वाला है। उसके चरण कमलों में निवास करो ॥ १॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੋਬਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਸੁਨਹੁ ਅਰਦਾਸਿ ॥
करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥
हे गोबिन्द ! हे दीनानाथ ! हे मेरे प्रियतम प्रभु ! कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनो।

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੁਮਰੀ ਰਾਸਿ ॥੨॥੩॥੧੨੦॥
करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥२॥३॥१२०॥
हे नानक के स्वामी, मुझे हाथ से पकड़ ले, मेरी आत्मा और शरीर तमाम तेरी ही पूंजी है ॥ २॥ ३॥ १२०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਪੇਖਨ ਕਉ ਸਿਮਰਤ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥
हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥
मेरा मन भगवान के दर्शन करने के लिए उसका सिमरन करता रहता है।

ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਚਿਤਵਉ ਦਿਨੁ ਰੈਨੀ ਹੈ ਕੋਈ ਸੰਤੁ ਮਿਲਾਵੈ ਨੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥
अपने स्वामी को देखने की आशा एवं प्यास में मैं दिन-रात उसका चिंतन करती हूँ। क्या कोई ऐसा संत है, जो मुझे निकट से उससे मिला दे॥ १॥ रहाउ॥

ਸੇਵਾ ਕਰਉ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੀ ਅਨਿਕ ਭਾਂਤਿ ਤਿਸੁ ਕਰਉ ਨਿਹੋਰਾ ॥
सेवा करउ दास दासन की अनिक भांति तिसु करउ निहोरा ॥
मैं अपने स्वामी के सेवकों के सेवकों की सेवा करती हूँ और अनेक उपायों से उसके समक्ष निवेदन करती हूँ।

ਤੁਲਾ ਧਾਰਿ ਤੋਲੇ ਸੁਖ ਸਗਲੇ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਦਰਸ ਸਭੋ ਹੀ ਥੋਰਾ ॥੧॥
तुला धारि तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥१॥
मैंने तमाम सुख तराजू में रखकर तोले हैं, लेकिन ईश्वर के दर्शनों के बिना सभी थोड़े हैं॥ १॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਗਾਏ ਗੁਨ ਸਾਗਰ ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੋ ਜਾਤ ਬਹੋਰਾ ॥
संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥
संतों की कृपा से मैंने गुणों के सागर का यश गायन किया है और वह जन्म-जन्मांतरों के भटकते हुए को (जीवन-मृत्यु के चक्र में से) मोड़कर ले आता है।

ਆਨਦ ਸੂਖ ਭੇਟਤ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਜਨਮੁ ਕ੍ਰਿਤਾਰਥੁ ਸਫਲੁ ਸਵੇਰਾ ॥੨॥੪॥੧੨੧॥
आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु क्रितारथु सफलु सवेरा ॥२॥४॥१२१॥
हे नानक ! ईश्वर को मिलने से उसने आनंद एवं सुख प्राप्त कर लिए हैं और उसका जन्म कृतार्थ हो गया है तथा उसका सवेरा भी सफल हो गया है॥ २ ॥ ४ ॥ १२१ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी पूरबी महला ५
रागु गउड़ी पूरबी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ਗੁਸਾਈ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ॥
किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥
हे मेरे राम ! मैं किस विधि से अपने गोसाई प्रभु से मिल सकता हूँ?

ਕੋਈ ਐਸਾ ਸੰਤੁ ਸਹਜ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮੋਹਿ ਮਾਰਗੁ ਦੇਇ ਬਤਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई ॥१॥ रहाउ ॥

क्या कोई ऐसा सहज सुखदाता संत है जो मुझे प्रभु का मार्ग बता दे॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਅਲਖੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਵਿਚਿ ਪੜਦਾ ਹਉਮੈ ਪਾਈ ॥
अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥
अलक्ष्य परमेश्वर जीव के अन्तर्मन में ही है, किन्तु अंतर में पड़े हुए अहंकार के पर्दे के कारण वह देखा नहीं जा सकता।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਭੋ ਜਗੁ ਸੋਇਆ ਇਹੁ ਭਰਮੁ ਕਹਹੁ ਕਿਉ ਜਾਈ ॥੧॥
माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥१॥
सारी दुनिया मोह-माया में निद्रामग्न है। बताइये ? यह भ्रम किस प्रकार दूर हो सकता है॥ १॥

ਏਕਾ ਸੰਗਤਿ ਇਕਤੁ ਗ੍ਰਿਹਿ ਬਸਤੇ ਮਿਲਿ ਬਾਤ ਨ ਕਰਤੇ ਭਾਈ ॥
एका संगति इकतु ग्रिहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥
हे भाई ! आत्मा और परमात्मा की एक ही संगति है और इकट्ठे एक ही घर में वास करते हैं परन्तु वह एक दूसरे से बातचीत नहीं करते।

ਏਕ ਬਸਤੁ ਬਿਨੁ ਪੰਚ ਦੁਹੇਲੇ ਓਹ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਠਾਈ ॥੨॥
एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥२॥
ईश्वर नाम के एक पदार्थ के बिना पाँचों ज्ञानेन्द्रियां दुःखी हैं। वह पदार्थ अगोचर स्थान पर विद्यमान है॥ २॥

ਜਿਸ ਕਾ ਗ੍ਰਿਹੁ ਤਿਨਿ ਦੀਆ ਤਾਲਾ ਕੁੰਜੀ ਗੁਰ ਸਉਪਾਈ ॥
जिस का ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥
जिस भगवान का यह शरीर रूपी गृह है, उसने ही इसे मोह-माया का ताला लगा दिया है और कुंजी गुरु को सौंप दी है।

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਕਰੇ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥३॥
सतिगुरु की शरण लिए बिना दूसरे अनेक उपाय करने पर भी मनुष्य उस कुंजी को प्राप्त नहीं कर सकता ॥ ३॥

ਜਿਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਨ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥
जिनके मोह-माया के बंधन सतिगुरु ने काट दिए हैं। उन्होंने ही साधसंगत में अपनी सुरति लगाई है।

ਪੰਚ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੪॥
पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥
हे नानक ! उनकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों ने मिलकर मंगल गीत गाए हैं। हे भाई ! उनमें और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं रह गया॥ ४॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਰਾਇ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲੈ ਗੁਸਾਈ ॥
मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥
हे मेरे राम ! गोसाई प्रभु इस विधि से मिलता है।

ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਭ੍ਰਮੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਨਾਠਾ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧॥੧੨੨॥
सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२२॥
जिस व्यक्ति को सहज आनंद प्राप्त हो गया, उसकी दुविधा एक क्षण में ही दौड़ गई है और उसकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ १॥ १२२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਐਸੋ ਪਰਚਉ ਪਾਇਓ ॥
ऐसो परचउ पाइओ ॥
मेरी भगवान से ऐसी मैत्री पड़ गई है कि

ਕਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਦਇਆਲ ਬੀਠੁਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਝਹਿ ਬਤਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करी क्रिपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी कृपा करके दयालु विट्ठल प्रभु ने मुझे सतिगुरु का पता बता दिया है ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਤ ਕਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਤਤ ਤੁਮ ਹੀ ਮੋਹਿ ਇਹੁ ਬਿਸੁਆਸੁ ਹੋਇ ਆਇਓ ॥
जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ मैं तुझे ही पाता हूँ। अब मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया है।

ਕੈ ਪਹਿ ਕਰਉ ਅਰਦਾਸਿ ਬੇਨਤੀ ਜਉ ਸੁਨਤੋ ਹੈ ਰਘੁਰਾਇਓ ॥੧॥
कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥१॥
हे रघुराई ! मैं किसके पास विनती व प्रार्थना करूँ, जब तू सबकुछ स्वयं सुन रहा है॥ १॥

ਲਹਿਓ ਸਹਸਾ ਬੰਧਨ ਗੁਰਿ ਤੋਰੇ ਤਾਂ ਸਦਾ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ॥

लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे तां सदा सहज सुखु पाइओ ॥

गुरु ने जिस व्यक्ति के मोह-माया के बन्धन तोड़ दिए हैं, उसकी दुविधा समाप्त हो गई है और उसे हमेशा के लिए सहज सुख मिल गया है।

ਹੋਣਾ ਸਾ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਹੋਸੀ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਕਹਾ ਦਿਖਾਇਓ ॥੨॥

होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥२॥

ईश्वरेच्छा से दुनिया में जो कुछ भी होना है, अंतत अवश्य होगा। भगवान के हुक्म के सिवाय दुःख एवं सुख तब कहाँ देखा जा सकता है? ॥ २॥

ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਕਾ ਏਕੋ ਠਾਣਾ ਗੁਰਿ ਪਰਦਾ ਖੋਲਿ ਦਿਖਾਇਓ ॥

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुरि परदा खोलि दिखाइओ ॥

खण्डों और ब्रह्माण्डों का एक प्रभु ही सहारा है। अज्ञानता का पर्दा दूर करके गुरु जी ने मुझे यह दिखा दिया है।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਇਕ ਠਾਈ ਤਉ ਬਾਹਰਿ ਕੈਠੈ ਜਾਇਓ ॥੩॥

नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ॥३॥

नवनिधि एवं नाम रूपी भंडार एक स्थान (मन) में है। तब मनुष्य कौन से बाहरी स्थान को जाए?॥ ३॥

ਏਕੈ ਕਨਿਕ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਸਾਜੀ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰ ਰਚਾਇਓ ॥

एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥

जैसे एक सोने से सुनार ने आभूषणों की विभिन्न किस्मों की बनावट बना दी, उसी भाँति प्रभु ने अनेक किस्मों की यह सृष्टि-रचना की है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਰਮੁ ਗੁਰਿ ਖੋਈ ਹੈ ਇਵ ਤਤੈ ਤਤੁ ਮਿਲਾਇਓ ॥੪॥੨॥੧੨੩॥

कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥४॥२॥१२३॥

हे नानक ! गुरु ने जिसकी दुविधा निवृत्त कर दी है। जैसे सोने के आभूषण अंतत: सोना हो जाते हैं। उसी प्रकार प्रत्येक तत्व, मूल तत्व (ईश्वर) से मिल जाता है ॥ ४ ॥ २ ॥ १२३ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

ਅਉਧ ਘਟੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਾਰੇ ॥
अउध घटै दिनसु रैनारे ॥
तेरी जीवन-अवधि दिन-रात कम होती जा रही है अर्थात् तेरी उम्र बीतती जा रही है

ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! तू इस दुनिया में जिस मनोरथ हेतु आया है, गुरु से मिलकर अपना वह कार्य संवार ले ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥
करउ बेनंती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥
हे मेरे मित्र ! मैं एक प्रार्थना करता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो। साधुओं की सेवा करने का यह स्वर्णिम अवसर है।

ਈਹਾ ਖਾਟਿ ਚਲਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਆਗੈ ਬਸਨੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥
इहलोक में प्रभु-नाम का लाभ प्राप्त करके प्रस्थान कर, परलोक में तुझे सुन्दर निवास प्राप्त होगा ॥ १॥

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸਹਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਓ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥
इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥
यह दुनिया विकारों एवं (मोह-माया के) सन्देह से भरी हुई है तथा केवल ब्रह्मज्ञानी ही भवसागर से पार होता है।

ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਏ ਹਰਿ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥
जिसहि जगाइ पीआए हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥
भगवान जिस व्यक्ति को मोह-माया की निद्रा से जगा देता है, उसे ही वह हरि-रस का पान करवाता है और फिर वह अकथनीय प्रभु की कथा को समझ लेता है॥ २॥

ਜਾ ਕਉ ਆਏ ਸੋਈ ਵਿਹਾਝਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥
जा कउ आए सोई विहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥
हे जीव ! इस दुनिया में तू जिस नाम-पदार्थ का सौदा खरीदने के लिए आया है, उस नाम-पदार्थ को खरीद ले। गुरु की कृपा से प्रभु तेरे मन में निवास कर लेगा।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੋ ਫੇਰਾ ॥੩॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥
अपने हृदय घर में ही प्रभु को पाकर तुझे सहज सुख प्राप्त हो जाएगा एवं तुझे पुन: जन्म-मरण का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा ॥ ३॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
हे अन्तर्यामी विधाता ! मेरे मन की श्रद्धा पूरी करो।

ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਇਹੀ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੩॥੧੨੪॥
नानकु दासु इही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥३॥१२४॥
दास नानक यही सुख की कामना करता है कि मुझे अपने संतों की चरण-धूलि बना दे ॥४॥३॥१२४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰਾਖੁ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥
राखु पिता प्रभ मेरे ॥
हे मेरे पिता-परमेश्वर ! मुझ गुणहीन की रक्षा करें।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨੁ ਸਭ ਗੁਨ ਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥
समस्त गुण तुझ में ही विद्यमान हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਪੰਚ ਬਿਖਾਦੀ ਏਕੁ ਗਰੀਬਾ ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥
पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥
हे संरक्षक प्रभु ! मैं निर्धन अकेला हूँ और कामादिक मेरे पाँच शत्रु हैं। इसलिए मेरी रक्षा करें।

ਖੇਦੁ ਕਰਹਿ ਅਰੁ ਬਹੁਤੁ ਸੰਤਾਵਹਿ ਆਇਓ ਸਰਨਿ ਤੁਹਾਰੇ ॥੧॥
खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥१॥
वे मुझे बहुत दुःख देते हैं और अत्यंत तंग करते हैं, इसलिए मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ १॥

ਕਰਿ ਕਰਿ ਹਾਰਿਓ ਅਨਿਕ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਛੋਡਹਿ ਕਤਹੂੰ ਨਾਹੀ ॥
करि करि हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही ॥
मैं भरसक प्रयास करके हार गया हूँ, परन्तु ये किसी प्रकार भी मेरा पीछा नहीं छोड़ते।

ਏਕ ਬਾਤ ਸੁਨਿ ਤਾਕੀ ਓਟਾ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟਿ ਜਾਹੀ ॥੨॥
एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥२॥
मैंने एक बात सुनी है कि संतजनों की संगति में उनकी जड़ें उखड़ जाती हैं। इसलिए मैंने उनकी शरण ली है॥ २॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤ ਮਿਲੇ ਮੋਹਿ ਤਿਨ ਤੇ ਧੀਰਜੁ ਪਾਇਆ ॥
करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥
कृपा करके संत मुझे मिल गए हैं। उनसे मुझे धैर्य प्राप्त हो गया है।

ਸੰਤੀ ਮੰਤੁ ਦੀਓ ਮੋਹਿ ਨਿਰਭਉ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ॥੩॥
संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥३॥
संतों ने मुझे निर्भय प्रभु का मंत्र (नाम) प्रदान किया है और मैंने गुरु के शब्द की कमाई की है॥ ३॥

ਜੀਤਿ ਲਏ ਓਇ ਮਹਾ ਬਿਖਾਦੀ ਸਹਜ ਸੁਹੇਲੀ ਬਾਣੀ ॥
जीति लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥
सतिगुरु की आत्मिक स्थिरता एवं मधुर वाणी के प्रभाव से मैंने कामादिक झगड़ालू पाँचों शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਭਇਆ ਪਰਗਾਸਾ ਪਾਇਆ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੪॥੪॥੧੨੫॥
कहु नानक मनि भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥४॥४॥१२५॥
हे नानक ! मेरे मन में प्रभु ज्योति का प्रकाश हो गया है और मैंने निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है ॥ ४॥ ४॥ १२५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਰਾਇਆ ॥
ओहु अबिनासी राइआ ॥
हे मेरे प्रभु ! तुम एक वह राजा हो जो सदैव अनश्वर हो।

ਨਿਰਭਉ ਸੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਬਸਤੇ ਇਹੁ ਡਰਨੁ ਕਹਾ ਤੇ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निरभउ संगि तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥१॥ रहाउ ॥
हम (प्राणी) निडर होकर तेरे साथ निवास करते हैं। फिर यह भय कहाँ से आता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਏਕ ਮਹਲਿ ਤੂੰ ਹੋਹਿ ਅਫਾਰੋ ਏਕ ਮਹਲਿ ਨਿਮਾਨੋ ॥
एक महलि तूं होहि अफारो एक महलि निमानो ॥
एक शरीर में तुम ही अभिमानी हो। और एक दूसरे शरीर में तुम विनीत हो।

ਏਕ ਮਹਲਿ ਤੂੰ ਆਪੇ ਆਪੇ ਏਕ ਮਹਲਿ ਗਰੀਬਾਨੋ ॥੧॥
एक महलि तूं आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥१॥
एक शरीर में तुम सर्वाधिकारी हो और दूसरे शरीर में तुम बिल्कुल निर्धन हो ॥ १॥

ਏਕ ਮਹਲਿ ਤੂੰ ਪੰਡਿਤੁ ਬਕਤਾ ਏਕ ਮਹਲਿ ਖਲੁ ਹੋਤਾ ॥
एक महलि तूं पंडितु बकता एक महलि खलु होता ॥
एक शरीर में तुम विद्वान एवं वक्ता हो। एक शरीर में तुम मूर्ख हो।

ਏਕ ਮਹਲਿ ਤੂੰ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਗ੍ਰਾਹਜੁ ਏਕ ਮਹਲਿ ਕਛੂ ਨ ਲੇਤਾ ॥੨॥
एक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछू न लेता ॥२॥
एक शरीर में तुम सब कुछ संग्रह कर लेते हो और एक शरीर में तुम (विरक्त बनकर) कोई पदार्थ भी स्वीकार नहीं करते हो ॥ २॥

ਕਾਠ ਕੀ ਪੁਤਰੀ ਕਹਾ ਕਰੈ ਬਪੁਰੀ ਖਿਲਾਵਨਹਾਰੋ ਜਾਨੈ ॥
काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥
यह प्राणी बेचारा काठ की पुतली है, इसे खिलाने वाला (प्रभु) सब कुछ जानता है।

ਜੈਸਾ ਭੇਖੁ ਕਰਾਵੈ ਬਾਜੀਗਰੁ ਓਹੁ ਤੈਸੋ ਹੀ ਸਾਜੁ ਆਨੈ ॥੩॥
जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥३॥
बाजीगर (ईश्वर) जैसा वेष (स्वांग) रचाता है, वह प्राणी वैसा ही वेष (स्वांग) रचता है अर्थात् जैसी भूमिका (संसार में) प्रभु निभाने के लिए प्राणी को देता है, वैसे ही भूमिका प्राणी (संसार में) निभाता है॥ ३॥

ਅਨਿਕ ਕੋਠਰੀ ਬਹੁਤੁ ਭਾਤਿ ਕਰੀਆ ਆਪਿ ਹੋਆ ਰਖਵਾਰਾ ॥
अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥
ईश्वर ने (संसार में विभिन्न योनियों के प्राणियों की) अनेक (देहि) कोठड़ियाँ बना दी हैं और ईश्वर स्वयं ही सबका रक्षक बना हुआ है।

ਜੈਸੇ ਮਹਲਿ ਰਾਖੈ ਤੈਸੈ ਰਹਨਾ ਕਿਆ ਇਹੁ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥੪॥
जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इहु करै बिचारा ॥४॥
जैसे शरीर रूपी मन्दिर में प्रभु प्राणी को रखता है, वैसे ही वह वास करता है। यह प्राणी बेचारा क्या कर सकता है ? ॥ ४॥

ਜਿਨਿ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋਈ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਇਹ ਸਭ ਬਿਧਿ ਸਾਜੀ ॥
जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥
हे नानक ! जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, जिसने यह सारी क्रीड़ा बनाई है, वही उसके भेद को जानता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਕੀਮਤਿ ਅਪੁਨੇ ਕਾਜੀ ॥੫॥੫॥੧੨੬॥
कहु नानक अपर्मपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥५॥५॥१२६॥
वह प्रभु अपरंपार है। अपने कार्यों का मूल्य वह स्वयं ही जानता है॥ ५॥ ५॥ १२६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਛੋਡਿ ਛੋਡਿ ਰੇ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਰਸੂਆ ॥
छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥
हे प्राणी ! मोह-माया के स्वादों को त्याग दे।

ਉਰਝਿ ਰਹਿਓ ਰੇ ਬਾਵਰ ਗਾਵਰ ਜਿਉ ਕਿਰਖੈ ਹਰਿਆਇਓ ਪਸੂਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उरझि रहिओ रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मूर्ख प्राणी ! जैसे हरी-भरी फसल में पशु मस्त होता है वैसे ही तू (विकारों में) इन स्वादों में उलझा हुआ है ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਜਾਨਹਿ ਤੂੰ ਅਪੁਨੇ ਕਾਜੈ ਸੋ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਤੇਰੈ ਤਸੂਆ ॥
जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥
हे मूर्ख प्राणी ! जिस पदार्थ को तू अपने काम आने वाला समझता है, वह तनिकमात्र भी तेरे साथ नहीं जाता।

ਨਾਗੋ ਆਇਓ ਨਾਗ ਸਿਧਾਸੀ ਫੇਰਿ ਫਿਰਿਓ ਅਰੁ ਕਾਲਿ ਗਰਸੂਆ ॥੧॥
नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥१॥
हे प्राणी ! तू (जगत् में) नग्न आया था और नग्न ही (जगत् से) चला जाएगा। तू जन्म-मरण के चक्र में फँसकर योनियाँ काटेगा और मृत्यु का ग्रास हो जाएगा ॥ १॥

ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਰੇ ਕਸੁੰਭ ਕੀ ਲੀਲਾ ਰਾਚਿ ਮਾਚਿ ਤਿਨਹੂੰ ਲਉ ਹਸੂਆ ॥
पेखि पेखि रे कसुमभ की लीला राचि माचि तिनहूं लउ हसूआ ॥
हे प्राणी ! कुसुम के फूल की भाँति क्षणभंगुर सांसारिक खेलों को देख-देख कर तू उनमें कैसे मस्त हो रहा है और जब तक वह कायम है तू हंसता और खेलता है।

ਛੀਜਤ ਡੋਰਿ ਦਿਨਸੁ ਅਰੁ ਰੈਨੀ ਜੀਅ ਕੋ ਕਾਜੁ ਨ ਕੀਨੋ ਕਛੂਆ ॥੨॥
छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥२॥
तेरी अवस्था की डोरी दिन-रात क्षीण होती जा रही है। तूने अपनी आत्मा के काम आने वाला कोई भी कर्म नहीं किया॥ २॥

ਕਰਤ ਕਰਤ ਇਵ ਹੀ ਬਿਰਧਾਨੋ ਹਾਰਿਓ ਉਕਤੇ ਤਨੁ ਖੀਨਸੂਆ ॥
करत करत इव ही बिरधानो हारिओ उकते तनु खीनसूआ ॥
सांसारिक कर्म करता हुआ मनुष्य वृद्ध हो गया है। बुद्धि भी सुस्त हो गई है और शरीर भी दुर्बल हो गया है।

ਜਿਉ ਮੋਹਿਓ ਉਨਿ ਮੋਹਨੀ ਬਾਲਾ ਉਸ ਤੇ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਰੁਚ ਚਸੂਆ ॥੩॥
जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥३॥
जैसे तुझे उस माया ने बाल्यावस्था में मोहित कर लिया था, उस लोभ में अब तक तनिकमात्र भी कमी नहीं हुई॥ ३॥

ਜਗੁ ਐਸਾ ਮੋਹਿ ਗੁਰਹਿ ਦਿਖਾਇਓ ਤਉ ਸਰਣਿ ਪਰਿਓ ਤਜਿ ਗਰਬਸੂਆ ॥
जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥
हे नानक ! गुरु ने मुझे दिखा दिया है कि दुनिया का मोह ऐसा है तो मैंने अहंकार को त्याग कर संत (गुरु) की शरण ले ली।

ਮਾਰਗੁ ਪ੍ਰਭ ਕੋ ਸੰਤਿ ਬਤਾਇਓ ਦ੍ਰਿੜੀ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਜਸੂਆ ॥੪॥੬॥੧੨੭॥
मारगु प्रभ को संति बताइओ द्रिड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥४॥६॥१२७॥
उस संत ने मुझे प्रभु-मिलन का मार्ग बता दिया है तथा अब मैंने भगवान की भक्ति एवं भगवान का यश अपने मन में दृढ़ कर लिया है॥ ४॥ ६॥ १२७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਹਮਾਰਾ ॥
तुझ बिनु कवनु हमारा ॥
तेरे सिवाय हमारा अन्य कौन है ?

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्रियतम ! तू ही प्राणों का आधार है ! ॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰ ਕੀ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ਤੁਮ ਹੀ ਸਜਨ ਸੁਹੇਲੇ ॥
अंतर की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥
मेरे अन्तर्मन की दशा को केवल तुम ही जानते हो। तुम ही मेरे साजन एवं सुखदाता हो।

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਮੈ ਤੁਝ ਤੇ ਪਾਏ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਹ ਅਤੋਲੇ ॥੧॥
सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥१॥
हे मेरे ठाकुर ! हे मेरे अगम्य एवं अतुलनीय प्रभु ! तमाम सुख मैंने तुझ से ही प्राप्त किए हैं॥ १॥

ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਉ ਤੁਮਰੇ ਰੰਗਾ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥
बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥
हे गुणों के भण्डार ! हे सुखदाता ! मैं तेरे कौतुक वर्णन नहीं कर सकता।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਤੇ ॥੨॥
अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥२॥
अगम्य, अगोचर एवं अविनाशी प्रभु का पूर्ण गुरु के द्वारा बोध प्राप्त होता है॥ २॥

ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਕਾਟਿ ਕੀਏ ਨਿਹਕੇਵਲ ਜਬ ਤੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥
भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥
जब भी मैंने अपना अहंकार निवृत्त किया है, मेरी दुविधा एवं भय नाश करके प्रभु ने मुझे पवित्र कर दिया है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕੋ ਚੂਕੋ ਸਹਸਾ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਦਰਸਾਰੀ ॥੩॥
जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥३॥
हे ईश्वर ! तेरा दर्शन सत्संग में देखकर मेरी जन्म एवं मृत्यु की चिन्ता मिट गई है॥ ३॥

ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਕਰਉ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਬਾਰਿ ਜਾਉ ਲਖ ਬਰੀਆ ॥
चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥
मैं गुरु जी के चरण धोकर उनकी सेवा करता हूँ और लाखों बार उन पर कुर्बान जाता हूँ।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਇਹੁ ਭਉਜਲੁ ਤਰਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਿਅ ਸੰਗਿ ਮਿਰੀਆ ॥੪॥੭॥੧੨੮॥
जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥४॥७॥१२८॥
हे नानक ! जिनकी कृपा से उसने यह भयानक संसार सागर पार कर लिया है और वह अपने प्रियतम प्रभु में मिल गया है ॥ ४॥ ७ ॥ १२८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਰੀਝਾਵੈ ਤੋਹੀ ॥
तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥
हे प्रभु ! तेरे बिना तुझे कौन प्रसन्न कर सकता है?

ਤੇਰੋ ਰੂਪੁ ਸਗਲ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा सुन्दर रूप देखकर प्रत्येक व्यक्ति मुग्ध हो जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਰਗ ਪਇਆਲ ਮਿਰਤ ਭੂਅ ਮੰਡਲ ਸਰਬ ਸਮਾਨੋ ਏਕੈ ਓਹੀ ॥
सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो एकै ओही ॥
स्वर्ग, पाताल, मृत्युलोक एवं भूमण्डल में सर्वत्र एक ईश्वर ही समाया हुआ है।

ਸਿਵ ਸਿਵ ਕਰਤ ਸਗਲ ਕਰ ਜੋਰਹਿ ਸਰਬ ਮਇਆ ਠਾਕੁਰ ਤੇਰੀ ਦੋਹੀ ॥੧॥
सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥१॥
हे दयालु परमेश्वर ! समस्त प्राणी हाथ जोड़ कर 'शिव शिव' कहकर तेरा नाम उच्चारण करते हैं और तेरे द्वार पर सहायतार्थ पुकारते हैं॥ १॥

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਠਾਕੁਰ ਨਾਮੁ ਤੁਮਰਾ ਸੁਖਦਾਈ ਨਿਰਮਲ ਸੀਤਲੋਹੀ ॥
पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥
हे ठाकुर जी ! तुम्हारा नाम पतितपावन है, तुम जीवों को सुख प्रदान करने वाले हो, बड़े निर्मल एवं शांति के पुंज हो।

ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਨਾਨਕ ਵਡਿਆਈ ਸੰਤ ਤੇਰੇ ਸਿਉ ਗਾਲ ਗਲੋਹੀ ॥੨॥੮॥੧੨੯॥
गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥२॥८॥१२९॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! ज्ञान, ध्यान एवं मान-सम्मान तेरे संतजनों के साथ धार्मिक-वार्ता करने में बसते हैं।॥२॥८॥१२९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੇ ਜੀਆ ॥
मिलहु पिआरे जीआ ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मुझे आकर मिलो।

ਪ੍ਰਭ ਕੀਆ ਤੁਮਾਰਾ ਥੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! इस दुनिया में सब कुछ तेरा किया ही क्रियान्वित है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭ੍ਰਮਿਆ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥
अनेक जन्मों में अधिकतर योनियों में भटकते हुए मैंने बार-बार कष्ट सहन किया है।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹ ਪਾਈ ਹੈ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥
तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥१॥
हे मेरे हरि प्रभु ! तुम्हारी कृपा से अब मुझे मानव शरीर प्राप्त हुआ है। अतः अब मुझे दर्शन दीजिए॥ १॥

ਸੋਈ ਹੋਆ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਕੀਤਾ ॥
सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही कीता ॥
दुनिया में वही कुछ हुआ है, जो प्रभु को अच्छा लगा है। ईश्वरेच्छा के बिना दूसरा कोई कुछ भी नहीं कर सकता।

ਤੁਮਰੈ ਭਾਣੈ ਭਰਮਿ ਮੋਹਿ ਮੋਹਿਆ ਜਾਗਤੁ ਨਾਹੀ ਸੂਤਾ ॥੨॥
तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥२॥
हे ठाकुर ! तेरी इच्छा में मोह की दुविधा एवं माया में मुग्ध हुआ प्राणी निद्रामग्न है और जागता नहीं ॥ २॥

ਬਿਨਉ ਸੁਨਹੁ ਤੁਮ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਪਿਆਰੇ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਦਇਆਲਾ ॥
बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥
हे प्राणपति ! हे प्रियवर ! हे कृपा के भण्डार ! हे दया के घर ! तुम मेरी एक विनती सुनो।

ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਅਨਾਥਹ ਕਰਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੩॥
राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥३॥
हे मेरे पिता प्रभु ! मेरी रक्षा कीजिए और मुझ अनाथ की पालना करो ॥ ३॥

ਜਿਸ ਨੋ ਤੁਮਹਿ ਦਿਖਾਇਓ ਦਰਸਨੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਪਾਛੈ ॥
जिस नो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥
हे ईश्वर ! जिस व्यक्ति को भी तूने अपने दर्शन दिए हैं, संतों की संगति के सहारे ही दिए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧੂਰਿ ਦੇਹੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕੁ ਇਹੁ ਬਾਛੈ ॥੪॥੯॥੧੩੦॥
करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥४॥९॥१३०॥
हे प्रभु ! नानक तुझ से एक यही सुख की कामना करता है कि मुझे कृपा करके संतजनों की चरण-धूलि ही प्रदान करें ॥ ४॥ ९॥ १३०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਉ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
हउ ता कै बलिहारी ॥
मैं उन पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ,

ਜਾ ਕੈ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा कै केवल नामु अधारी ॥१॥ रहाउ ॥
जिनका आधार केवल ईश्वर का नाम ही है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਿਮਾ ਤਾ ਕੀ ਕੇਤਕ ਗਨੀਐ ਜਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥
महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते ॥
मैं उन संतजनों की महिमा कितनी गिन सकता हूँ, जो हमेशा पारब्रह्म के प्रेम-रंग में मग्न रहते हैं।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਤਿਨਾ ਸੰਗਿ ਉਨ ਸਮਸਰਿ ਅਵਰ ਨ ਦਾਤੇ ॥੧॥
सूख सहज आनंद तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥१॥
सहज सुख एवं आनंद उनकी संगति में रहने से ही मिलता है और उनके तुल्य दूसरा कोई दाता नहीं है॥ १॥

ਜਗਤ ਉਧਾਰਣ ਸੇਈ ਆਏ ਜੋ ਜਨ ਦਰਸ ਪਿਆਸਾ ॥
जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥
जिन संतजनों को भगवान के दर्शनों की तीव्र लालसा लगी हुई है, वहीं जगत् का उद्धार करने के लिए आए हैं।

ਉਨ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਰੈ ਸੋ ਤਰਿਆ ਸੰਤਸੰਗਿ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥੨॥
उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥२॥
जो भी प्राणी उनकी शरण में आता है, उसका इस संसार से कल्याण हो जाता है। संतों की संगति में रहने से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।॥ २॥

ਤਾ ਕੈ ਚਰਣਿ ਪਰਉ ਤਾ ਜੀਵਾ ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਲਾ ॥
ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥
यदि मैं उनके चरण स्पर्श कर लूं, तो ही मैं जीवित रहता हूँ। प्रभु के भक्तों की संगति में मैं सदैव प्रसन्न रहता हूँ।

ਭਗਤਨ ਕੀ ਰੇਨੁ ਹੋਇ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਹੋਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥੩॥

भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥३॥

हे प्रभु ! मुझ पर दयालु हो जाओ चूंकि मेरा मन तेरे भक्तों की चरण धूलि हो जाये ॥ ३॥

ਰਾਜੁ ਜੋਬਨੁ ਅਵਧ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਘਾਟਿਆ ॥

राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥

शासन, यौवन एवं आयु जो कुछ भी नश्वर संसार में दिखाई देता है, वह सब कुछ न्यून होता जा रहा है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਦ ਨਵਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਇਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟਿਆ ॥੪॥੧੦॥੧੩੧॥

नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥४॥१०॥१३१॥

ईश्वर के नाम का भण्डार सदैव ही नवीन एवं निर्मल है। नानक ने तो यह हरि नाम रूपी धन ही अर्जित किया है॥ ४॥ १०॥ १३१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਸੁਨਿ ਆਇਓ ਗੁਰ ਤੇ ॥
जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥
योग की युक्ति मैंने गुरु जी से सुन ली है।

ਮੋ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे सतिगुरु ने यह (युक्ति) अपनी वाणी द्वारा समझा दी है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਉ ਖੰਡ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਇਸੁ ਤਨ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥
नउ खंड प्रिथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥
मैं उस ईश्वर को पल-पल प्रणाम करता हूँ, जो पृथ्वी के नवखण्डों एवं इस शरीर में समाया हुआ है।

ਦੀਖਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਕਾਨੀ ਦ੍ਰਿੜਿਓ ਏਕੁ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥੧॥
दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी द्रिड़िओ एकु निरंकारा ॥१॥
गुरु की दीक्षा को अपने कानों की मुंदा बनाया है और एक निरंकार प्रभु को मैंने अपने हृदय में बसा लिया है॥ १॥

ਪੰਚ ਚੇਲੇ ਮਿਲਿ ਭਏ ਇਕਤ੍ਰਾ ਏਕਸੁ ਕੈ ਵਸਿ ਕੀਏ ॥
पंच चेले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥
पाँचों शिष्यों (पाँचों ज्ञानेन्द्रियों) को इकट्ठा मिलाकर मैंने उनको एक सर्वोच्च सुरति के अधीन कर दिया है।

ਦਸ ਬੈਰਾਗਨਿ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਤਬ ਨਿਰਮਲ ਜੋਗੀ ਥੀਏ ॥੨॥
दस बैरागनि आगिआकारी तब निरमल जोगी थीए ॥२॥
जब दस इन्दियाँ (पाँच ज्ञानेन्दियाँ और पाँच कर्म इन्दियाँ) मेरी आज्ञाकारी हो गई तो मैं निर्मल योगी बन गया॥ २॥

ਭਰਮੁ ਜਰਾਇ ਚਰਾਈ ਬਿਭੂਤਾ ਪੰਥੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਪੇਖਿਆ ॥
भरमु जराइ चराई बिभूता पंथु एकु करि पेखिआ ॥
मैंने अपनी दुविधा को जला दिया है और इसकी विभूति मैंने अपने शरीर से लगा ली है। मेरा योग धर्म यही है कि मैं ईश्वर को समूचे जगत् में मौजूद देखता हूँ।

ਸਹਜ ਸੂਖ ਸੋ ਕੀਨੀ ਭੁਗਤਾ ਜੋ ਠਾਕੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖਿਆ ॥੩॥
सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥३॥
उस सहज सुख को मैंने अपना भोजन बनाया है, जो कि ईश्वर ने मेरे लिए मेरे मस्तक पर लिखा हुआ था॥ ३॥

ਜਹ ਭਉ ਨਾਹੀ ਤਹਾ ਆਸਨੁ ਬਾਧਿਓ ਸਿੰਗੀ ਅਨਹਤ ਬਾਨੀ ॥
जह भउ नाही तहा आसनु बाधिओ सिंगी अनहत बानी ॥
जहाँ कोई भय मौजूद नहीं, मैंने वहाँ आसन लगाया है और भगवान की महिमा की श्रृंगी से अनहद वाणी बजा रहा हूँ।

ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ਡੰਡਾ ਕਰਿ ਰਾਖਿਓ ਜੁਗਤਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਨੀ ॥੪॥
ततु बीचारु डंडा करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥४॥
जगत् के मूल परमात्मा की महिमा का चिंतन करना ही योगियों वाला डण्डा बनाकर रख लिया है। भगवान का नाम-सिमरन करना ही यह युक्ति मेरे मन को उपयुक्त लगी है॥ ४॥

ਐਸਾ ਜੋਗੀ ਵਡਭਾਗੀ ਭੇਟੈ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ॥
ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥
ऐसा योगी किस्मत से ही मिलता है जो मोह-माया के बंधन दूर कर देता है।

ਸੇਵਾ ਪੂਜ ਕਰਉ ਤਿਸੁ ਮੂਰਤਿ ਕੀ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਪਗ ਚਾਟੈ ॥੫॥੧੧॥੧੩੨॥
सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥५॥११॥१३२॥
नानक ऐसे योगी महापुरुष की सेवा और पूजा करता तथा उसके चरण चाटता है॥ ५॥ ११॥ १३२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਅਨੂਪ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ਸੁਨਹੁ ਸਗਲ ਧਿਆਇਲੇ ਮੀਤਾ ॥
अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले मीता ॥
हे मित्रो ! ईश्वर का नाम एक अनूप धन है। सभी इसे सुनो एवं चिन्तन करो।

ਹਰਿ ਅਉਖਧੁ ਜਾ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਤਾ ਕੇ ਨਿਰਮਲ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु ने जिस व्यक्ति को भी हरि-नाम रूपी औषधि दी है, उसका मन निर्मल हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਧਕਾਰੁ ਮਿਟਿਓ ਤਿਹ ਤਨ ਤੇ ਗੁਰਿ ਸਬਦਿ ਦੀਪਕੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥

अंधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥

उस गुरु ने जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में अपने शब्द द्वारा ज्ञान का दीपक प्रज्वलित कर दिया है, उसके तन से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है।

ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਜਾਲੀ ਤਾ ਕੀ ਕਾਟੀ ਜਾ ਕਉ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਸ੍ਵਾਸਾ ॥੧॥

भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्वासा ॥१॥

जो व्यक्ति संतों की संगति में आस्था धारण करता है, उसका भ्रम का जाल कट जाता है॥ १॥

ਤਾਰੀਲੇ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰੂ ਬਿਖੜਾ ਬੋਹਿਥ ਸਾਧੂ ਸੰਗਾ ॥

तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥

तैरने हेतु विषम एवं भयानक संसार सागर संतों की संगति के जहाज द्वारा पार किया जाता है।

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਮਨ ਕੀ ਆਸਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਓ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥੨॥

पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रंगा ॥२॥

भगवान के रंग में मग्न रहने वाले गुरु से मिलकर मेरे मन की आशा पूरी हो गई है॥ २॥

ਨਾਮ ਖਜਾਨਾ ਭਗਤੀ ਪਾਇਆ ਮਨ ਤਨ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਏ ॥

नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपति अघाए ॥

जिन भक्तों ने नाम का खजाना प्राप्त किया है, उनका मन एवं तन तृप्त व संतुष्ट हो गए हैं।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤਾ ਕਉ ਦੇਵੈ ਜਾ ਕਉ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਏ ॥੩॥੧੨॥੧੩੩॥

नानक हरि जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥३॥१२॥१३३॥

हे नानक ! (यह नाम का खजाना) पूज्य प्रभु केवल उसे ही देता है, जिनसे प्रभु अपने हुक्म का पालन करवाता है ॥३॥१२॥१३३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

ਦਇਆ ਮਇਆ ਕਰਿ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਮੋਰੇ ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥
दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥
हे मेरे प्राणपति ! मुझ पर दया एवं कृपा करो। हे प्रभु ! मैं अनाथ तेरी ही शरण में हूँ।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਹੁ ਕਛੂ ਸਿਆਨਪ ਉਕਤਿ ਨ ਮੋਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥१॥ रहाउ ॥
अपना हाथ देकर इस अन्धे (मोह-माया के) कुएँ में से मुझे बाहर निकाल लीजिए। क्योंकि मेरी कोई भी अक्लमंदी एवं युक्ति सफल नहीं हो सकती ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਭ ਕਿਛੁ ਤੁਮ ਹੀ ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਨਾਹੀ ਅਨ ਹੋਰੀ ॥
करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥
हे मेरे परमेश्वर ! तुम स्वयं ही सबकुछ कर रहे हो और जीवों से करवा रहे हो। सब कुछ तुम ही हो, तू ही समर्थाशाली है। तेरे अलावा दूसरा कोई भी नहीं।

ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ਸੇ ਸੇਵਕ ਜਿਨ ਭਾਗ ਮਥੋਰੀ ॥੧॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥१॥
हे ईश्वर ! तेरी गति एवं विस्तार कैसा है ! इसका भेद केवल तू ही जानता है। केवल वही तेरे सेवक बनते हैं जिनके मस्तक पर शुभ कर्मों के कारण भाग्य रेखाएं विद्यमान हो।॥ १॥

ਅਪੁਨੇ ਸੇਵਕ ਸੰਗਿ ਤੁਮ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੇ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਭਗਤਨ ਸੰਗਿ ਜੋਰੀ ॥
अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन संगि जोरी ॥
हे प्रभु ! अपने सेवकों से तुम सदा प्रेम करते हो। जैसे ताने बाने में धागे मिले होते हैं, वैसे ही तुमने अपने भक्तों से प्रेम जोड़ा हुआ है।

ਪ੍ਰਿਉ ਪ੍ਰਿਉ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਦਰਸਨੁ ਚਾਹੈ ਜੈਸੇ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਓਹ ਚੰਦ ਚਕੋਰੀ ॥੨॥
प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे द्रिसटि ओह चंद चकोरी ॥२॥
तेरे भक्त ऐसे तुझे 'प्रिय प्रिय' कहकर तेरा नाम स्मरण करते हैं और तेरे दर्शनों के अभिलाषि बने रहते हैं, जैसे चकोर की दृष्टि चाँद की ओर रहती है। । ॥ २ ॥

ਰਾਮ ਸੰਤ ਮਹਿ ਭੇਦੁ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਏਕੁ ਜਨੁ ਕਈ ਮਹਿ ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ॥
राम संत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥
राम एवं उसके संत में कोई अन्तर नहीं, लाखों और करोड़ों ही प्राणियों में कोई एक विरला ही है,"

ਜਾ ਕੈ ਹੀਐ ਪ੍ਰਗਟੁ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਰਸਨ ਰਮੋਰੀ ॥੩॥

जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥३॥

जिसके हृदय में प्रभु प्रगट हुआ है, ऐसा व्यक्ति दिन-रात अपनी जिव्हा से उसका भजन करता रहता है॥ ३॥

ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਅਪਾਰ ਅਤਿ ਊਚੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧੋਰੀ ॥

तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥

हे मेरे प्राणों के आधार प्रभु ! तुम सर्वशक्तिमान, अपार, सर्वोपरि एवं सुखदाता हो।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਕੀਜੈ ਕਿਰਪਾ ਉਨ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੰਗੋਰੀ ॥੪॥੧੩॥੧੩੪॥

नानक कउ प्रभ कीजै किरपा उन संतन कै संगि संगोरी ॥४॥१३॥१३४॥

हे प्रभु ! नानक पर कृपा कीजिए चूंकि वह उन संतों की संगति में जुड़ा रहे ॥ ४॥ १३॥ १३४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤੁਮ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਾਤੇ ਸੰਤਹੁ ॥
तुम हरि सेती राते संतहु ॥
हे संतजनो ! तुम भगवान में मग्न हो।

ਨਿਬਾਹਿ ਲੇਹੁ ਮੋ ਕਉ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਓੜਿ ਪਹੁਚਾਵਹੁ ਦਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥१॥ रहाउ ॥
हे अकालपुरुष विधाता ! हे मेरे दाता ! मुझे भी (अपने प्रेम में) निभा ले और मुझे मेरी अंतिम मंजिल तक पहुँचा दे॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮਰਾ ਮਰਮੁ ਤੁਮਾ ਹੀ ਜਾਨਿਆ ਤੁਮ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥
तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥
तेरा भेद केवल तू ही जानता है। तू सर्वव्यापक अकालपुरुष विधाता है।

ਰਾਖਹੁ ਸਰਣਿ ਅਨਾਥ ਦੀਨ ਕਉ ਕਰਹੁ ਹਮਾਰੀ ਗਾਤੇ ॥੧॥
राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥१॥
मुझ दीन अनाथ को अपनी शरण में रखो और मुझे मोक्ष प्रदान करो ॥ १॥

ਤਰਣ ਸਾਗਰ ਬੋਹਿਥ ਚਰਣ ਤੁਮਾਰੇ ਤੁਮ ਜਾਨਹੁ ਅਪੁਨੀ ਭਾਤੇ ॥
तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥
हे प्रभु ! तेरे चरण संसार सागर से पार होने के लिए एक जहाज हैं। अपनी परम्परा को तू स्वयं ही जानता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਰਾਖਹੁ ਸੰਗੇ ਤੇ ਤੇ ਪਾਰਿ ਪਰਾਤੇ ॥੨॥
करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥२॥
वे तमाम (प्राणी) जिन्हें तू कृपा धारण करके अपने साथ रखते हो, संसारसागर से पार हो जाते हैं। ॥ २॥

ਈਤ ਊਤ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ ਸਮਰਥਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਮਰੈ ਹਾਥੇ ॥
ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥
हे ईश्वर ! इहलोक एवं परलोक में तुम सर्वशक्तिशाली हो। सब कुछ तेरे ही वश में है।

ਐਸਾ ਨਿਧਾਨੁ ਦੇਹੁ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਜਨ ਚਲੈ ਹਮਾਰੈ ਸਾਥੇ ॥੩॥
ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥३॥
हे प्रभु के भक्तजनों ! मुझे ऐसा नाम भण्डार प्रदान करो, जो परलोक में मेरे साथ जाए॥ ३॥

ਨਿਰਗੁਨੀਆਰੇ ਕਉ ਗੁਨੁ ਕੀਜੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਜਾਪੇ ॥
निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥
मुझ गुणहीन को ऐसा गुण प्रदान करो चूंकि मेरा मन प्रभु के नाम का ही जाप करता रहे।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭੇਟੇ ਮਨ ਤਨ ਸੀਤਲ ਧ੍ਰਾਪੇ ॥੪॥੧੪॥੧੩੫॥
संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल ध्रापे ॥४॥१४॥१३५॥
हे नानक ! संतों की कृपा से जिन्हें भगवान मिल जाता है, उनका मन एवं तन शीतल तथा संतुष्ट हो जाते हैं॥ ४ ॥ १४ ॥ १३५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਓ ਦੇਵ ॥
सहजि समाइओ देव ॥
मैं सहज ही ईश्वर में समा गया हूँ

ਮੋ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰ ਭਏ ਦਇਆਲ ਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥१॥ रहाउ ॥
हे देव, मुझ पर सतिगुरु जी दयालु हो गए हैं ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਟਿ ਜੇਵਰੀ ਕੀਓ ਦਾਸਰੋ ਸੰਤਨ ਟਹਲਾਇਓ ॥
काटि जेवरी कीओ दासरो संतन टहलाइओ ॥
गुरु जी ने मेरी मृत्यु का रस्सा काट कर मुझे अपना सेवक बना लिया है और संतों की सेवा में लगा दिया है।

ਏਕ ਨਾਮ ਕੋ ਥੀਓ ਪੂਜਾਰੀ ਮੋ ਕਉ ਅਚਰਜੁ ਗੁਰਹਿ ਦਿਖਾਇਓ ॥੧॥
एक नाम को थीओ पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥१॥
मैं केवल नाम का ही पुजारी बन गया हूँ और गुरु जी ने मुझे प्रभु का अदभुत रूप दिखा दिया है॥ १॥

ਭਇਓ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਸਰਬ ਉਜੀਆਰਾ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਮਨਹਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਓ ॥
भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥
गुरु जी ने मेरे मन में ही ज्ञान प्रगट कर दिया है और अब हर तरफ (ज्ञान का) प्रकाश एवं उजाला हो गया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਪੀਓ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਅਨਭੈ ਠਹਰਾਇਓ ॥੨॥
अम्रितु नामु पीओ मनु त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ ॥२॥
नाम अमृत का पान करने से मेरा मन तृप्त हो गया है और दूसरे भय दूर हट गए हैं। ॥ २॥

ਮਾਨਿ ਆਗਿਆ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਏ ਦੂਖਹ ਠਾਉ ਗਵਾਇਓ ॥
मानि आगिआ सरब सुख पाए दूखह ठाउ गवाइओ ॥
गुरु की आज्ञा मानकर मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं और दुःखों का आवास ध्वस्त कर दिया है।

ਜਉ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਠਾਕੁਰ ਸਭੁ ਆਨਦ ਰੂਪੁ ਦਿਖਾਇਓ ॥੩॥
जउ सुप्रसंन भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥३॥
जब प्रभु-परमेश्वर सुप्रसन्न हो गया तो उसने प्रत्येक पदार्थ मुझे आनंद के स्वरूप में दिखा दिया ॥ ३॥

ਨਾ ਕਿਛੁ ਆਵਤ ਨਾ ਕਿਛੁ ਜਾਵਤ ਸਭੁ ਖੇਲੁ ਕੀਓ ਹਰਿ ਰਾਇਓ ॥
ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥
न कुछ आता है और न ही कुछ जाता है। यह सारा खेल जगत् के मालिक प्रभु ने जारी किया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਗਮ ਅਗਮ ਹੈ ਠਾਕੁਰ ਭਗਤ ਟੇਕ ਹਰਿ ਨਾਇਓ ॥੪॥੧੫॥੧੩੬॥
कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ ॥४॥१५॥१३६॥
हे नानक ! वह ठाकुर प्रभु अगम्य एवं अपार है। उसके भक्तों को ईश्वर के नाम का ही सहारा है॥ ४ ॥ १५ ॥ १३६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਮਨ ਤਾ ਕੀ ਓਟ ਗਹੀਜੈ ਰੇ ॥

पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥

हे मेरे मन ! हमें उस पूर्ण पारब्रह्म-परमेश्वर की शरण ही ग्रहण करनी चाहिए,

ਜਿਨਿ ਧਾਰੇ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਖੰਡ ਹਰਿ ਤਾ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪੀਜੈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥१॥ रहाउ ॥

जिसने ब्रह्माण्ड एवं भू-मण्डलों को धारण किया हुआ है। अतः हमें उस ईश्वर का नाम ही जपना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਤਿਆਗਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਰੇ ॥

मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥

हे परमात्मा के सेवको ! मन की चतुरता को त्याग दीजिए। भगवान के हुक्म को समझने से ही सुख उपलब्ध हो सकता है।

ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਹੁ ਸੁਖਿ ਦੁਖਿ ਓਹੀ ਧਿਆਈਐ ਰੇ ॥੧॥

जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥१॥

हे भक्तजनों ! जो कुछ प्रभु करता है, उसको खुशी-खुशी स्वीकार करो। सुख एवं दुःख में उस ईश्वर का ध्यान करते रहना चाहिए॥ १॥

ਕੋਟਿ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰੇ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰਤੇ ਬਾਰ ਨ ਲਾਗੈ ਰੇ ॥

कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥

हे भक्तजनो ! करतार प्रभु करोड़ों ही पापियों का एक क्षण में ही उद्धार कर देता है और उसमें कोई देरी नहीं लगती।

ਦੀਨ ਦਰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸੁਆਮੀ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸਹਿ ਨਿਵਾਜੈ ਰੇ ॥੨॥

दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥२॥

हे दुख भंजन स्वामी ! तुम दीनों के दुख-दर्द नाश करने वाले हो। जिस पर तुम प्रसन्न होते हो, उसे सम्मान प्रदान करते हो ॥ २॥

ਸਭ ਕੋ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਰੇ ॥

सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥

हे भक्तजनो ! प्रभु समस्त प्राणियों की माता, पिता एवं पालनहार है। वह समस्तप्राणियों का प्राण दाता एवं सुख का सागर है।

ਦੇਂਦੇ ਤੋਟਿ ਨਾਹੀ ਤਿਸੁ ਕਰਤੇ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਰਤਨਾਗਰੁ ਰੇ ॥੩॥

देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥३॥

प्राणियों को देन देते वक्त ईश्वर के भण्डार में कमी नहीं आती। रत्नों की खान प्रभु सर्वव्यापक है॥ ३॥

ਜਾਚਿਕੁ ਜਾਚੈ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸੋਈ ਰੇ ॥

जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥

हे मेरे स्वामी ! भिखारी तेरे नाम का दान माँगता है। वह प्रभु सबके हृदय में समाया हुआ है।

ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਤਾ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ਜਾ ਤੇ ਬ੍ਰਿਥਾ ਨ ਕੋਈ ਰੇ ॥੪॥੧੬॥੧੩੭॥

नानकु दासु ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे ॥४॥१६॥१३७॥

दास नानक ने उस प्रभु की शरण ली हुई है, जिसके द्वार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता ॥ ४॥ १६ ॥ १३७ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी पूरबी महला ५
रागु गउड़ी पूरबी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਬਹੂ ਨ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੇ ॥
हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे ॥
हमें अपने मन से प्रभु-परमेश्वर को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिए।

ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਗਲ ਘਟਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि वह ईश्वर ही लोक एवं परलोक में प्राणियों का सुखदाता है और तमाम शरीरों का पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਕਸਟ ਕਾਟੈ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਚਿਤਾਰੇ ॥
महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे ॥
यदि मनुष्य की रसना भगवान के नाम का जाप करे तो वह एक क्षण में ही महाकष्ट निवृत कर देता है।

ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਸੁਖ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਜਲਤੀ ਅਗਨਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥੧॥
सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥१॥
प्रभु की शरण में शीतलता, शांति एवं सुख विद्यमान हैं और वह जलती अग्नि बुझा देता है॥ १॥

ਗਰਭ ਕੁੰਡ ਨਰਕ ਤੇ ਰਾਖੈ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥
गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे ॥
प्रभु मनुष्य को गर्भ के नरककुण्ड से बचाता है और उसको भवसागर से पार कर देता है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਰਾਧਤ ਮਨ ਮਹਿ ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਬਿਦਾਰੇ ॥੨॥
चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥२॥
प्रभु के सुन्दर चरणों की मन में आराधना करने से वह मृत्यु का भय दूर कर देता है॥ २ ॥

ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥
पारब्रह्म परमेश्वर सर्वव्यापक है, वह सर्वोपरि, अगम्य एवं अनन्त है।

ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਧਿਆਵਤ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਜੂਏ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੇ ॥੩॥
गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥३॥
सुखों के सागर प्रभु की महिमा-स्तुति एवं ध्यान करने से प्राणी अपना जन्म व्यर्थ नहीं गंवा कर जाता॥ ३॥

ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਮਨੁ ਲੀਨੋ ਨਿਰਗੁਣ ਕੇ ਦਾਤਾਰੇ ॥
कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥
हे निर्गुण के उदारचित दाता ! मेरा मन भोग-विलास, क्रोध, लालच एवं सांसारिक मोह में लीन है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੋ ਨਾਮੁ ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੪॥੧॥੧੩੮॥
करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥४॥१॥१३८॥
हे प्रभु ! कृपा करके अपने नाम का दान दीजिए। नानक तो सदैव ही तुझ पर कुर्बान जाता है ॥ ४॥ १॥ १३८ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी चेती महला ५
रागु गउड़ी चेती महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਰੇ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ॥
सुखु नाही रे हरि भगति बिना ॥
भगवान की भक्ति के बिना कोई सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਜੀਤਿ ਜਨਮੁ ਇਹੁ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲਕੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਜਪਿ ਇਕ ਖਿਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥१॥ रहाउ ॥
साधसंगत में रहकर एक क्षण भर के लिए भी प्रभु का चिन्तन करके मनुष्य जीवन का यह अनमोल रत्न जीत ले॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਤ ਸੰਪਤਿ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ॥
सुत स्मपति बनिता बिनोद ॥
हे प्राणी ! पुत्र, सम्पति, पत्नी का प्रेम,और

ਛੋਡਿ ਗਏ ਬਹੁ ਲੋਗ ਭੋਗ ॥੧॥
छोडि गए बहु लोग भोग ॥१॥
हर्षोल्लास भरे मनोरंजन एवं भोग को त्याग बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो चले गए हैं।॥ १॥

ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਰਾਜ ਰੰਗ ॥
हैवर गैवर राज रंग ॥
अपने कुशल घोड़े, हाथी एवं शासन के आनन्द को त्याग कर

ਤਿਆਗਿ ਚਲਿਓ ਹੈ ਮੂੜ ਨੰਗ ॥੨॥
तिआगि चलिओ है मूड़ नंग ॥२॥
मूर्ख मनुष्य नग्न ही अन्त में दुनिया से चला जाता है॥ २॥

ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਦੇਹ ਫੂਲਿਆ ॥
चोआ चंदन देह फूलिआ ॥
जिस शरीर पर इत्र तथा चन्दन लगाकर मनुष्य अभिमान करता था,

ਸੋ ਤਨੁ ਧਰ ਸੰਗਿ ਰੂਲਿਆ ॥੩॥
सो तनु धर संगि रूलिआ ॥३॥
वह शरीर (अन्त में) पार्थिव (मिट्टी) हो जाता है॥ ३॥

ਮੋਹਿ ਮੋਹਿਆ ਜਾਨੈ ਦੂਰਿ ਹੈ ॥
मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥
हे नानक ! दुनिया के मोह में मुग्ध हुआ मनुष्य ईश्वर को दूर समझता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ਹੈ ॥੪॥੧॥੧੩੯॥
कहु नानक सदा हदूरि है ॥४॥१॥१३९॥
परन्तु ईश्वर सदा ही प्राणी के आसपास रहता है ॥ ४ ॥ १ ॥ १३९ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਨ ਧਰ ਤਰਬੇ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨੋ ॥
मन धर तरबे हरि नाम नो ॥
हे प्राणी ! तू ईश्वर-नाम के आधार से संसार सागर से पार हो जाएगा।

ਸਾਗਰ ਲਹਰਿ ਸੰਸਾ ਸੰਸਾਰੁ ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਪਾਰ ਗਰਾਮਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥१॥ रहाउ ॥
संशय की लहरों से भरे हुए जगत् सागर से पार होने के लिए गुरु जी जहाज हैं॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਲਿ ਕਾਲਖ ਅੰਧਿਆਰੀਆ ॥
कलि कालख अंधिआरीआ ॥
कलियुग में गहरा अंधकार है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਦੀਪਕ ਉਜਿਆਰੀਆ ॥੧॥
गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥१॥
गुरु के दिए हुए ज्ञान का दीपक उजाला कर देता है॥ १॥

ਬਿਖੁ ਬਿਖਿਆ ਪਸਰੀ ਅਤਿ ਘਨੀ ॥
बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥
मोह-माया का विष अधिक मात्रा में फैला हुआ है।

ਉਬਰੇ ਜਪਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗੁਨੀ ॥੨॥
उबरे जपि जपि हरि गुनी ॥२॥
ईश्वर की निरन्तर आराधना करने से महापुरुष बच जाते हैं।॥ २॥

ਮਤਵਾਰੋ ਮਾਇਆ ਸੋਇਆ ॥
मतवारो माइआ सोइआ ॥
माया में मुग्ध हुआ मनुष्य (इस विष की मार से) सोया हुआ है।

ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਖੋਇਆ ॥੩॥
गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥३॥
लेकिन गुरु को मिलने से दुविधा एवं भय दूर हो जाते हैं॥३ ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥
कहु नानक एकु धिआइआ ॥
है नानक ! जिस व्यक्ति ने एक ईश्वर का ध्यान किया है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥੪॥੨॥੧੪੦॥
घटि घटि नदरी आइआ ॥४॥२॥१४०॥
उत्त व्यक्ति को ही भगवान कण-कण में मौजूद दिखाई दिया है॥ ४॥ २॥ १४०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਦੀਬਾਨੁ ਹਮਾਰੋ ਤੁਹੀ ਏਕ ॥
दीबानु हमारो तुही एक ॥
हे ईश्वर ! एक तू ही हमारा सहारा है।

ਸੇਵਾ ਥਾਰੀ ਗੁਰਹਿ ਟੇਕ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सेवा थारी गुरहि टेक ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की शरण में मैं तेरी ही सेवा करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥
अनिक जुगति नही पाइआ ॥
हे प्रभु ! अनेक युक्तियों द्वारा मैं तुझे प्राप्त न कर सका।

ਗੁਰਿ ਚਾਕਰ ਲੈ ਲਾਇਆ ॥੧॥
गुरि चाकर लै लाइआ ॥१॥
गुरु ने कृपा करके मुझे तेरी सेवा-भक्ति में लगा दिया है।॥ १ ॥

ਮਾਰੇ ਪੰਚ ਬਿਖਾਦੀਆ ॥
मारे पंच बिखादीआ ॥
मैंने पाँच दुष्टों (कामादि विकारों) का नाश कर दिया है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਦਲੁ ਸਾਧਿਆ ॥੨॥
गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥२॥
गुरु की कृपा से मैंने बुराई की सेना को पराजित कर दिया है॥ २॥

ਬਖਸੀਸ ਵਜਹੁ ਮਿਲਿ ਏਕੁ ਨਾਮ ॥
बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥
मुझे एक नाम प्रभु के दान के तौर पर प्राप्त हुआ है।

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥੩॥
सूख सहज आनंद बिस्राम ॥३॥
अब मेरा निवास सहज सुख एवं आनंद में है॥ ३॥

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਚਾਕਰ ਸੇ ਭਲੇ ॥
प्रभ के चाकर से भले ॥
हे नानक ! जो ईश्वर के सेवक हैं, वे भले हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ॥੪॥੩॥੧੪੧॥
नानक तिन मुख ऊजले ॥४॥३॥१४१॥
प्रभु के दरबार में उनके चेहरे उज्ज्वल हो जाते हैं।॥४॥ ३॥ १४१॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੀਅਰੇ ਓਲ੍ਹਹਾ ਨਾਮ ਕਾ ॥
जीअरे ओल्हा नाम का ॥
हे मेरे प्राण ! ईश्वर का नाम ही तेरा एकमात्र सहारा है।

ਅਵਰੁ ਜਿ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨੋ ਤਿਨ ਮਹਿ ਭਉ ਹੈ ਜਾਮ ਕਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥१॥ रहाउ ॥
दूसरा जो कुछ भी किया एवं करवाया जाता है, उनमें मृत्यु का भय बना रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਵਰ ਜਤਨਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥
अवर जतनि नही पाईऐ ॥
किसी दूसरे उपाय द्वारा ईश्वर प्राप्त नहीं होता।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥
वडै भागि हरि धिआईऐ ॥१॥
भगवान का ध्यान बड़ी किस्मत से ही किया जा सकता है॥ १॥

ਲਾਖ ਹਿਕਮਤੀ ਜਾਨੀਐ ॥
लाख हिकमती जानीऐ ॥
मनुष्य चाहे लाखों चतुराइयां जानता हो।

ਆਗੈ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੀਐ ॥੨॥
आगै तिलु नही मानीऐ ॥२॥
परन्तु तनिकमात्र भी ये (परलोक में) आगे कारगर नहीं होती ॥ २॥

ਅਹੰਬੁਧਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਨੇ ॥
अह्मबुधि करम कमावने ॥
अहंबुद्धि से किए गए धर्म-कर्म भी ऐसे बह जाते हैं

ਗ੍ਰਿਹ ਬਾਲੂ ਨੀਰਿ ਬਹਾਵਨੇ ॥੩॥
ग्रिह बालू नीरि बहावने ॥३॥
जैसे रेत का घर पानी में बह जाता है॥ ३॥

ਪ੍ਰਭੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
प्रभु क्रिपालु किरपा करै ॥
हे नानक ! कृपा का घर प्रभु जिस इन्सान पर अपनी कृपा कर देता है,

ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲੈ ॥੪॥੪॥੧੪੨॥
नामु नानक साधू संगि मिलै ॥४॥४॥१४२॥
उसे संतों की संगति में भगवान का नाम मिल जाता है॥ ४ ॥ ४ ॥ १४२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਬਾਰਨੈ ਬਲਿਹਾਰਨੈ ਲਖ ਬਰੀਆ ॥
बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥
हे सज्जन ! मैं ईश्वर के नाम पर लाखों बार कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਮੋ ਹੋ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥१॥ रहाउ ॥
जगत् के स्वामी-प्रभु का नाम ही जीवों के प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਤੁਹੀ ਏਕ ॥
करन करावन तुही एक ॥
हे ईश्वर ! एक तू ही जगत् में सब कुछ करता एवं जीवों से करवाता है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਕੀ ਤੁਹੀ ਟੇਕ ॥੧॥
जीअ जंत की तुही टेक ॥१॥
एक तू ही जीव-जन्तुओं का आसरा है॥ १॥

ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਪ੍ਰਭ ਤੂੰ ਧਨੀ ॥
राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥
हे मेरे प्रभु ! एक तू ही विश्व के शासन का स्वामी है और तू ही यौवन का स्वामी है।

ਤੂੰ ਨਿਰਗੁਨ ਤੂੰ ਸਰਗੁਨੀ ॥੨॥
तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥२॥
तू ही निर्गुण और तू ही सगुण है॥ २॥

ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੁਮ ਰਖੇ ॥
ईहा ऊहा तुम रखे ॥
हे ठाकुर ! लोक-परलोक में तुम ही मेरे रक्षक हो।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਕੋ ਲਖੇ ॥੩॥
गुर किरपा ते को लखे ॥३॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही तुझे समझता है॥ ३॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪ੍ਰਭ ਸੁਜਾਨੁ ॥
अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥
हे सर्वज्ञ एवं अन्तर्यामी प्रभु !

ਨਾਨਕ ਤਕੀਆ ਤੁਹੀ ਤਾਣੁ ॥੪॥੫॥੧੪੩॥
नानक तकीआ तुही ताणु ॥४॥५॥१४३॥
तू ही नानक का सहारा एवं शक्ति है॥ ४ ॥ ५ ॥ १४३ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧੀਐ ॥
हरि हरि हरि आराधीऐ ॥
हमेशा ही हरि-परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਭਉ ਸਾਧੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

संतसंगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥१॥ रहाउ ॥

संतों की सभा में ही हरि मन में आकर निवास करता है, जिससे भ्रम, मोह एवं भय दूर हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਭਨੇ ॥

बेद पुराण सिम्रिति भने ॥

वेद, पुराण एवं स्मृतियाँ पुकारते हैं कि

ਸਭ ਊਚ ਬਿਰਾਜਿਤ ਜਨ ਸੁਨੇ ॥੧॥

सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥१॥

प्रभु के सेवक सर्वोच्च आत्मिक निवास में बसते सुने जाते हैं।॥ १॥

ਸਗਲ ਅਸਥਾਨ ਭੈ ਭੀਤ ਚੀਨ ॥

सगल असथान भै भीत चीन ॥

दूसरे तमाम स्थान भयभीत देखे जाते हैं।

ਰਾਮ ਸੇਵਕ ਭੈ ਰਹਤ ਕੀਨ ॥੨॥

राम सेवक भै रहत कीन ॥२॥

लेकिन राम के भक्त भय रहित हैं॥ २॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜੋਨਿ ਫਿਰਹਿ ॥

लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥

प्राणी चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं

ਗੋਬਿੰਦ ਲੋਕ ਨਹੀ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ॥੩॥

गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥३॥

लेकिन गोविन्द के भक्त आवागमन (जीवन-मृत्यु के चक्र) से मुक्त रहते हैं।

ਬਲ ਬੁਧਿ ਸਿਆਨਪ ਹਉਮੈ ਰਹੀ ॥

बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥

बल, बुद्धि, चतुरता एवं अहंकार दूर हो गए हैं

ਹਰਿ ਸਾਧ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਗਹੀ ॥੪॥੬॥੧੪੪॥
हरि साध सरणि नानक गही ॥४॥६॥१४४॥
जब नानक ने हरि के संतों की शरण ली है ।॥ ४॥ ६॥ १४४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਨ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥
मन राम नाम गुन गाईऐ ॥
हे मेरे मन ! राम के नाम का गुणगान करते रहो।

ਨੀਤ ਨੀਤ ਹਰਿ ਸੇਵੀਐ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
सदैव ही प्रभु की सेवा करो एवं अपने श्वास-श्वास से प्रभु का ध्यान करते रहो॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤਸੰਗਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥
संतसंगि हरि मनि वसै ॥
संतों की संगति द्वारा ही ईश्वर मन में निवास करता है

ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਅਨੇਰਾ ਭ੍ਰਮੁ ਨਸੈ ॥੧॥
दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥१॥
और दुःख-दर्द, अज्ञानता का अंधेरा एवं दुविधा दौड़ जाते हैं।॥ १॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਜਾਪੀਐ ॥
संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥
संतों की कृपा से जो पुरुष प्रभु का जाप करते रहते हैं,

ਸੋ ਜਨੁ ਦੂਖਿ ਨ ਵਿਆਪੀਐ ॥੨॥
सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥२॥
ऐसे व्यक्ति कभी दुखी नहीं होते॥ २॥

ਜਾ ਕਉ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦੇ ॥
जा कउ गुरु हरि मंत्रु दे ॥
जिस व्यक्ति को गुरु हरि-नाम रूपी मंत्र देता है,

ਸੋ ਉਬਰਿਆ ਮਾਇਆ ਅਗਨਿ ਤੇ ॥੩॥
सो उबरिआ माइआ अगनि ते ॥३॥
ऐसा व्यक्ति माया की अग्नि से बच जाता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਮਇਆ ਕਰਿ ॥
नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥
हे ईश्वर ! मुझ नानक पर कृपा करो चूंकि

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਾਸੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ॥੪॥੭॥੧੪੫॥
मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥४॥७॥१४५॥
मेरे मन एवं तन में भगवान के नाम का निवास हो जाए॥ ४॥ ७॥ १४५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰਸਨਾ ਜਪੀਐ ਏਕੁ ਨਾਮ ॥
रसना जपीऐ एकु नाम ॥
अपनी रसना से एक परमेश्वर के नाम का ही जाप करना चाहिए।

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਨੰਦੁ ਘਨਾ ਆਗੈ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ईहा सुखु आनंदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥१॥ रहाउ ॥
परमेश्वर का नाम जपने से इहलोक में बड़ा सुख एवं आनंद उपलब्ध होता है और आगे परलोक में भी यह आत्मा के काम आता है और साथ रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਟੀਐ ਤੇਰਾ ਅਹੰ ਰੋਗੁ ॥
कटीऐ तेरा अहं रोगु ॥
हे जीव ! (परमात्मा का नाम जपने से) तेरा अहंकार का रोग निवृत हो जाएगा।

ਤੂੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਿ ਰਾਜ ਜੋਗੁ ॥੧॥
तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥१॥
गुरु की कृपा से तू सांसारिक एवं आत्मिक शासन करेगा ॥ १॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਚਾਖਿਆ ॥
हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥
जिस व्यक्ति ने भी हरि-रस का स्वाद चखा है,"

ਤਾ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਥੀਆ ॥੨॥
ता की त्रिसना लाथीआ ॥२॥
उसकी तृष्णा मिट गई है॥ २॥

ਹਰਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ਨਿਧਿ ਪਾਇਆ ॥
हरि बिस्राम निधि पाइआ ॥
जिसने सुख के भण्डार परमात्मा को पा लिया है,"

ਸੋ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤ ਹੀ ਧਾਇਆ ॥੩॥
सो बहुरि न कत ही धाइआ ॥३॥
वह दोबारा अन्य कहीं नहीं जाता॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਾ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति को गुरु ने हरि-परमेश्वर का नाम दिया है,"

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਾ ਭਉ ਗਇਆ ॥੪॥੮॥੧੪੬॥
नानक ता का भउ गइआ ॥४॥८॥१४६॥
उसका भय दूर हो गया है ॥४॥८॥१४६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਬਿਸਰੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਤਾਹੂ ਕਉ ਪੀਰ ॥
जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥
जिस व्यक्ति को राम का नाम भूल जाता है, ऐसे व्यक्ति को ही दुख-क्लेशों की पीड़ा लग जाती है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਵਹਿ ਸੇ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति संतों की संगति में मिलकर प्रभु का चिन्तन करते हैं, वहीं गुणवान एवं उदारचित हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਿਦੈ ਬੁਧਿ ॥
जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥
गुरु की प्रेरणा से जि
सके हृदय में ब्रह्म-ज्ञान विद्यमान है,

ਤਾ ਕੈ ਕਰ ਤਲ ਨਵ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥੧॥
ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥१॥
उसके हाथ की हथेली में नवनिधि एवं तमाम सिद्धियाँ विद्यमान हैं।॥ १॥

ਜੋ ਜਾਨਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ॥
जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥
जो व्यक्ति गुणों के स्वामी हरि-प्रभु को जान लेता है,

ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤਾ ਕੈ ਕਮੀ ॥੨॥
किछु नाही ता कै कमी ॥२॥
उसके घर में किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं रहती ॥२॥

ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥
करणैहारु पछानिआ ॥
जो सृष्टिकर्ता परमेश्वर की पहचान कर लेता है,

ਸਰਬ ਸੁਖ ਰੰਗ ਮਾਣਿਆ ॥੩॥
सरब सूख रंग माणिआ ॥३॥
वे सर्व सुख एवं आनंद प्राप्त करता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਵਸੈ ॥ ॥
हरि धनु जा कै ग्रिहि वसै ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय-घर में हरि नाम रूपी धन बसा रहता है,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸੰਗਿ ਦੁਖੁ ਨਸੈ ॥੪॥੯॥੧੪੭॥
कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥४॥९॥१४७॥
उसकी संगति में रहने से दुख नाश हो जाते हैं ॥४॥९॥१४७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗਰਬੁ ਬਡੋ ਮੂਲੁ ਇਤਨੋ ॥
गरबु बडो मूलु इतनो ॥
हे प्राणी ! तेरा अहंकार तो बहुत बड़ा है किन्तु इसका मूल तुच्छ मात्र ही है।

ਰਹਨੁ ਨਹੀ ਗਹੁ ਕਿਤਨੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रहनु नही गहु कितनो ॥१॥ रहाउ ॥
इस दुनिया में तेरा निवास अस्थाई है, जितना चाहे माया के प्रति आकर्षित रह ॥ १॥ रहाउ ॥

ਬੇਬਰਜਤ ਬੇਦ ਸੰਤਨਾ ਉਆਹੂ ਸਿਉ ਰੇ ਹਿਤਨੋ ॥
बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥
"(जिस माया के प्रति) वेदों एवं संतों ने तुझे वर्जित किया है, उसी से तेरा आकर्षण अधिक है।

ਹਾਰ ਜੂਆਰ ਜੂਆ ਬਿਧੇ ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਲੈ ਜਿਤਨੋ ॥੧॥
हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥१॥
जैसे जुए की बाजी पराजित जुआरी को भी अपने साथ सम्मिलित रखती है, वैसे ही भोग-इन्द्रिय तुझ पर विजय पा कर अपने वश में रखती है॥ १ ॥

ਹਰਨ ਭਰਨ ਸੰਪੂਰਨਾ ਚਰਨ ਕਮਲ ਰੰਗਿ ਰਿਤਨੋ ॥
हरन भरन स्मपूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥
हे प्राणी ! तू संहारक तथा पालनहार ईश्वर के सुन्दर चरणों के प्रेम से रिक्त है।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਮੈ ਦਿਤਨੋ ॥੨॥੧੦॥੧੪੮॥
नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥२॥१०॥१४८॥
हे नानक ! कृपा के भण्डार प्रभु ने मुझ नानक को संतों की संगति प्रदान की है, जिससे मैं भवसागर से पार हो गया हूँ ॥२॥१०॥१४८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮੋਹਿ ਦਾਸਰੋ ਠਾਕੁਰ ਕੋ ॥
मोहि दासरो ठाकुर को ॥
मैं अपने ठाकुर जी का तुच्छ मात्र दास हूँ।

ਧਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਖਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धानु प्रभ का खाना ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा जो कुछ भी मुझे (भोजन) देता है, मैं वहीं (भोजन) खाता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਐਸੋ ਹੈ ਰੇ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
ऐसो है रे खसमु हमारा ॥
हे सज्जन ! हमारा मालिक-प्रभु ऐसा है,

ਖਿਨ ਮਹਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੧॥
खिन महि साजि सवारणहारा ॥१॥
जो क्षण में ही सृष्टि-रचना करके उसे संवार देता है॥ १॥

ਕਾਮੁ ਕਰੀ ਜੇ ਠਾਕੁਰ ਭਾਵਾ ॥
कामु करी जे ठाकुर भावा ॥
मैं वही कार्य करता हूँ जो मेरे ठाकुर जी को लुभाता है।

ਗੀਤ ਚਰਿਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਾ ॥੨॥
गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥२॥
मैं प्रभु की गुणस्तुति एवं अदभुत कौतुकों के गीत गायन करता रहता हूँ॥ २ ॥

ਸਰਣਿ ਪਰਿਓ ਠਾਕੁਰ ਵਜੀਰਾ ॥
सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥
मैंने ठाकुर जी के मंत्री (गुरु जी) की शरण ली है।

ਤਿਨਾ ਦੇਖਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੩॥
तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥३॥
उनको देखकर मेरा हृदय धैर्यवान हो गया है॥ ३॥

ਏਕ ਟੇਕ ਏਕੋ ਆਧਾਰਾ ॥
एक टेक एको आधारा ॥
हे नानक ! (प्रभु के मंत्री का आश्रय लेकर), मैंने एक ईश्वर को ही आधार एवं सहारा बनाया है

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਲਾਗਾ ਕਾਰਾ ॥੪॥੧੧॥੧੪੯॥
जन नानक हरि की लागा कारा ॥४॥११॥१४९॥
और ईश्वर की सेवा (गुणस्तुति) में लगा हुआ हूँ॥ ४ ॥ ११ ॥ १४९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹੈ ਕੋਈ ਐਸਾ ਹਉਮੈ ਤੋਰੈ ॥
है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥
हे सज्जन ! क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने अहंत्व को चकनाचूर कर दे और

ਇਸੁ ਮੀਠੀ ਤੇ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹੋਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥१॥ रहाउ ॥
इस मीठी माया से अपने मन को वर्जित कर ले॥ १॥ रहाउ॥

ਅਗਿਆਨੀ ਮਾਨੁਖੁ ਭਇਆ ਜੋ ਨਾਹੀ ਸੋ ਲੋਰੈ ॥
अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥
अज्ञानी मनुष्य अपनी बुद्धि गंवा चुका है, क्योंकि जो नहीं है, उसी को खोजता रहता है।

ਰੈਣਿ ਅੰਧਾਰੀ ਕਾਰੀਆ ਕਵਨ ਜੁਗਤਿ ਜਿਤੁ ਭੋਰੈ ॥੧॥
रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥१॥
मनुष्य के हृदय में मोह-माया की काली अन्धेरी रात्रि है। वह कौन-सी विधि हो सकती है, जिस द्वारा इसके भीतर ज्ञान का दिन उदय हो सके॥ १॥

ਭ੍ਰਮਤੋ ਭ੍ਰਮਤੋ ਹਾਰਿਆ ਅਨਿਕ ਬਿਧੀ ਕਰਿ ਟੋਰੈ ॥
भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥
मैं अनेक विधियों से खोज करता-करता और घूमता एवं भटकता हुआ थक गया हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਨਿਧਿ ਮੋਰੈ ॥੨॥੧੨॥੧੫੦॥
कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥२॥१२॥१५०॥
हे नानक ! ईश्वर ने मुझ पर कृपा की है और मुझे संतों की संगति का भण्डार मिल गया है॥ २॥ १२॥ १५०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਚਿੰਤਾਮਣਿ ਕਰੁਣਾ ਮਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चिंतामणि करुणा मए ॥१॥ रहाउ ॥
हे करुणामय परमेश्वर ! तू ही वह चिंतामणि है जो तमाम प्राणियों की मनोकामना पूर्ण करती है॥ १॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥
दीन दइआला पारब्रहम ॥
हे पारब्रह्म ! तू ही वह दीनदयाल है,

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਸੁਖ ਭਏ ॥੧॥
जा कै सिमरणि सुख भए ॥१॥
जिसका सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है॥ १॥

ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧ ॥
अकाल पुरख अगाधि बोध ॥
हे अकालपुरुष ! तेरे स्वरूप का बोध अगाध है।

ਸੁਨਤ ਜਸੋ ਕੋਟਿ ਅਘ ਖਏ ॥੨॥
सुनत जसो कोटि अघ खए ॥२॥
तेरी महिमा सुनने से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं।॥ २॥

ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਪ੍ਰਭ ਮਇਆ ਧਾਰਿ ॥
किरपा निधि प्रभ मइआ धारि ॥
नानक का कथन है कि हे कृपानिधि प्रभु ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਲਏ ॥੩॥੧੩॥੧੫੧॥
नानक हरि हरि नाम लए ॥३॥१३॥१५१॥
मैं तेरे हरि-परमेश्वर नाम का सिमरन करता रहूं॥ ३॥ १३॥ १५१॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥
मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥
हे मेरे मन ! जो व्यक्ति ईश्वर की शरण में आता है, उसे ही सुख उपलब्ध होता है।

ਜਾ ਦਿਨਿ ਬਿਸਰੈ ਪ੍ਰਾਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੋ ਦਿਨੁ ਜਾਤ ਅਜਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥१॥ रहाउ ॥
जिस दिन प्राणपति, सुखों का दाता प्रभु भूल जाता है, वह दिन व्यर्थ बीत जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਏਕ ਰੈਣ ਕੇ ਪਾਹੁਨ ਤੁਮ ਆਏ ਬਹੁ ਜੁਗ ਆਸ ਬਧਾਏ ॥
एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥
हे जीव ! तुम एक रात्रिकाल के अतिथि के तौर पर दुनिया में आए हो परन्तु तुमने अनेक युग रहने की आशा बढ़ा ली है।

ਗ੍ਰਿਹ ਮੰਦਰ ਸੰਪੈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਜਿਉ ਤਰਵਰ ਕੀ ਛਾਏ ॥੧॥

ग्रिह मंदर स्मपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥१॥

घर, मन्दिर एवं धन-दौलत जो कुछ भी दृष्टिमान होता है, वह तो एक पेड़ की छाया की भाँति है॥ १॥

ਤਨੁ ਮੇਰਾ ਸੰਪੈ ਸਭ ਮੇਰੀ ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਸਭ ਜਾਏ ॥

तनु मेरा स्मपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥

मनुष्य कहता है कि यह तन मेरा है, यह धन-दौलत, बाग एवं संपत्ति सब कुछ मेरा है लेकिन अंततः सब कुछ समाप्त हो जाएँगे।

ਦੇਵਨਹਾਰਾ ਬਿਸਰਿਓ ਠਾਕੁਰੁ ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਤ ਪਰਾਏ ॥੨॥

देवनहारा बिसरिओ ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥२॥

हे मानव ! तू देने वाले दाता जगत् के ठाकुर प्रभु को भूल गया है। एक क्षण में सब कुछ पराया हो जाता है॥ २॥

ਪਹਿਰੈ ਬਾਗਾ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਲਾਏ ॥
पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥
हे मानव ! तुम नहा धोकर सफेद वस्त्र पहनते हो और अपने आपको चन्दन के इत्र से सुगंधित करते हो।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰ ਨਹੀ ਚੀਨਿਆ ਜਿਉ ਹਸਤੀ ਨਾਵਾਏ ॥੩॥
निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए ॥३॥
तुम निर्भय, निरंकार ईश्वर का चिन्तन नहीं करते, तेरा स्नान हाथी के नहाने जैसा है॥ ३॥

ਜਉ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ਸਭਿ ਸੁਖ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਏ ॥
जउ होइ क्रिपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥
जब ईश्वर कृपा के घर में आता है तो वह सतिगुरु से मिला देता है। संसार के तमाम सुख ईश्वर के नाम में वास करते हैं।

ਮੁਕਤੁ ਭਇਆ ਬੰਧਨ ਗੁਰਿ ਖੋਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੪॥੧੪॥੧੫੨॥
मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥४॥१४॥१५२॥
हे नानक ! गुरु ने उसके बन्धन खोलकर भवसागर से मुक्त कर दिया है और अब वह भगवान का ही गुणानुवाद करता रहता है ॥४॥१४॥१५२॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਦ ਕਰੀਐ ॥
मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥
हे मेरे मन ! हमेशा ही गुरु को याद करते रहना चाहिए।

ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਸਫਲੁ ਗੁਰਿ ਕੀਆ ਦਰਸਨ ਕਉ ਬਲਿਹਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जिस गुरु ने अमूल्य मानव-जन्म को सफल कर दिया है, उस गुरु के दर्शनों पर तन-मन से बलिहारी जाना चाहिए ॥१॥ रहाउ॥

ਜੇਤੇ ਸਾਸ ਗ੍ਰਾਸ ਮਨੁ ਲੇਤਾ ਤੇਤੇ ਹੀ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥
जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥
हे मेरे मन ! मनुष्य जितनी भी सांसें एवं ग्रास लेता है, उतनी वार ही भगवान की महिमा- स्तुति करनी चाहिए।

ਜਉ ਹੋਇ ਦੈਆਲੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਤਾ ਇਹ ਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈਐ ॥੧॥
जउ होइ दैआलु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईऐ ॥१॥
जब सतिगुरु दयालु हो जाते हैं, तो ही यह बुद्धि एवं सुमति प्राप्त होती है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਨਾਮਿ ਲਏ ਜਮ ਬੰਧ ਤੇ ਛੂਟਹਿ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਪਾਈਐ ॥
मेरे मन नामि लए जम बंध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईऐ ॥
हे मेरे मन ! यदि तू ईश्वर का नाम-सिमरन करता रहे तो यम के बन्धनों से तुझे मुक्ति मिल जाएगी (क्योंकि) ईश्वर के नाम का चिन्तन करने से सर्वसुखों में आत्मिक सुख उपलब्ध हो जाता है।

ਸੇਵਿ ਸੁਆਮੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮਨ ਬੰਛਤ ਫਲ ਆਈਐ ॥੨॥
सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बंछत फल आईऐ ॥२॥
जगत् के स्वामी प्रभु के नाम की देन देने वाले सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।॥ २॥

ਨਾਮੁ ਇਸਟੁ ਮੀਤ ਸੁਤ ਕਰਤਾ ਮਨ ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਚਾਲੈ ॥
नामु इसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥
हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम ही तेरा वास्तविक प्रिय मित्र एवं पुत्र है और यही तेरे साथ परलोक में जाएगा।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਾਲੈ ॥੩॥
करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥३॥
अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा कर, गुरु के द्वारा भगवान का नाम मिल जाता है॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾਲਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਬਿਨਸੇ ਸਰਬ ਅੰਦੇਸਾ ॥
गुरि किरपालि क्रिपा प्रभि धारी बिनसे सरब अंदेसा ॥
जब कृपालु गुरु, प्रभु ने मुझ पर कृपा की तो मेरे समस्त दुःख मिट गए।

ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਮਿਟਿਓ ਸਗਲ ਕਲੇਸਾ ॥੪॥੧੫॥੧੫੩॥
नानक सुखु पाइआ हरि कीरतनि मिटिओ सगल कलेसा ॥४॥१५॥१५३॥
हे नानक ! ईश्वर की महिमा करने से उसने सुख प्राप्त किया है और उसके तमाम क्लेश मिट गए हैं।॥४॥१५॥१५३॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी महला ५
रागु गउड़ी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬਿਰਲੇ ਹੀ ਕੀ ਬੁਝੀ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
त्रिसना बिरले ही की बुझी हे ॥१॥ रहाउ ॥
दुनिया में किसी विरले पुरुष की ही तृष्णा निवृत्त हुई है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕੋਟਿ ਜੋਰੇ ਲਾਖ ਕ੍ਰੋਰੇ ਮਨੁ ਨ ਹੋਰੇ ॥
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥
जीवन में मनुष्य करोड़ों कमाता है और लाखों-करोड़ों रुपए संग्रह करता है परन्तु फिर भी अपने मन पर अंकुश नहीं लगाता।

ਪਰੈ ਪਰੈ ਹੀ ਕਉ ਲੁਝੀ ਹੇ ॥੧॥
परै परै ही कउ लुझी हे ॥१॥
वह अधिकाधिक धन-दौलत जमा करने के लिए तृष्णाग्नि में जलता रहता है॥ १॥

ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ਅਨਿਕ ਪਰਕਾਰੀ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹ ਬਿਕਾਰੀ ॥
सुंदर नारी अनिक परकारी पर ग्रिह बिकारी ॥
वह अपनी सुन्दर नारी के साथ बहुत प्रेम करता है लेकिन फिर भी पराई नारी के साथ व्यभिचार करता है।

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨਹੀ ਸੁਝੀ ਹੇ ॥੨॥
बुरा भला नही सुझी हे ॥२॥
वह बुरे-भले की पहचान ही नहीं करता ॥ २॥

ਅਨਿਕ ਬੰਧਨ ਮਾਇਆ ਭਰਮਤੁ ਭਰਮਾਇਆ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਨਹੀ ਗਾਇਆ ॥
अनिक बंधन माइआ भरमतु भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ॥
ऐसा व्यक्ति मोह-माया के बन्धनों में फंसकर भटकता ही रहता है और गुणों के भण्डार परमेश्वर की महिमा-स्तुति नहीं करता। (क्योंकि)

ਮਨ ਬਿਖੈ ਹੀ ਮਹਿ ਲੁਝੀ ਹੇ ॥੩॥
मन बिखै ही महि लुझी हे ॥३॥
उसका मन नीच कर्मों में लीन रहता है॥ ३॥

ਜਾ ਕਉ ਰੇ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ਜੀਵਤ ਸੋਈ ਮਰੈ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਤਰੈ ॥

जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसंगि माइआ तरै ॥

जिस व्यक्ति पर परमात्मा दया धारण करता है, वह सांसारिक कर्म करता हुआ भी माया के मोह से दूर रहता है। वह सत्संग में रहकर माया के सागर से पार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਦਰਿ ਹਰਿ ਸਿਝੀ ਹੇ ॥੪॥੧॥੧੫੪॥

नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥४॥१॥१५४॥

हे नानक ऐसा व्यक्ति परमात्मा के दरबार में सफल हो जाता है॥ ४॥ १॥ १५४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

ਸਭਹੂ ਕੋ ਰਸੁ ਹਰਿ ਹੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सभहू को रसु हरि हो ॥१॥ रहाउ ॥

ईश्वर का नाम ही समस्त जीवों का रस है॥ १ ॥ रहाउ॥

ਕਾਹੂ ਜੋਗ ਕਾਹੂ ਭੋਗ ਕਾਹੂ ਗਿਆਨ ਕਾਹੂ ਧਿਆਨ ॥

काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥

हे सज्जन ! (ईश्वर नाम से विहीन होकर) किसी व्यक्ति को योग विद्या, किसी को सांसारिक पदार्थ भोगने का उत्साह है। किसी व्यक्ति को ज्ञान एवं किसी को ध्यान की लालसा है।

ਕਾਹੂ ਹੋ ਡੰਡ ਧਰਿ ਹੋ ॥੧॥

काहू हो डंड धरि हो ॥१॥

किसी व्यक्ति को डंडा धारी साधु होना पसंद है॥ १ ॥

ਕਾਹੂ ਜਾਪ ਕਾਹੂ ਤਾਪ ਕਾਹੂ ਪੂਜਾ ਹੋਮ ਨੇਮ ॥

काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥

किसी को जाप, किसी को तपस्या अच्छी लगती है। किसी व्यक्ति को पूजा-उपासना एवं किसी को हवन, धार्मिक संस्कार प्यारे लगते हैं।

ਕਾਹੂ ਹੋ ਗਉਨੁ ਕਰਿ ਹੋ ॥੨॥

काहू हो गउनु करि हो ॥२॥

किसी व्यक्ति को (महात्मा-संत बनकर) धरती पर भ्रमण वाला जीवन लुभाता है॥ २॥

ਕਾਹੂ ਤੀਰ ਕਾਹੂ ਨੀਰ ਕਾਹੂ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥
काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥
किसी व्यक्ति को नदी के तट से प्रेम है। किसी को जल से एवं किसी को वेदों का अध्ययन प्रिय है।

ਨਾਨਕਾ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਿਅ ਹੋ ॥੩॥੨॥੧੫੫॥
नानका भगति प्रिअ हो ॥३॥२॥१५५॥
परन्तु नानक को प्रभु-भक्ति ही प्रिय है॥ ३॥ २॥ १५५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਨ ਕੀਰਤਿ ਨਿਧਿ ਮੋਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुन कीरति निधि मोरी ॥१॥ रहाउ ॥
हे ईश्वर ! तेरी महिमा की कीर्ति करना ही मेरी निधि है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਤੂੰਹੀ ਰਸ ਤੂੰਹੀ ਜਸ ਤੂੰਹੀ ਰੂਪ ਤੂਹੀ ਰੰਗ ॥
तूंही रस तूंही जस तूंही रूप तूही रंग ॥
हे प्रभु ! तू ही मेरा रस है, तू ही मेरा यश है, तू ही मेरी सौन्दर्य एवं तू ही मेरा रंग है।

ਆਸ ਓਟ ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥੧॥
आस ओट प्रभ तोरी ॥१॥
हे ईश्वर ! तू ही मेरी आशा एवं शरण है॥ १॥

ਤੂਹੀ ਮਾਨ ਤੂੰਹੀ ਧਾਨ ਤੂਹੀ ਪਤਿ ਤੂਹੀ ਪ੍ਰਾਨ ॥
तूही मान तूंही धान तूही पति तूही प्रान ॥
हे प्रभु ! तू ही मेरा मान है, तू ही मेरा धन है। तू ही मेरी प्रतिष्ठा है और तू ही मेरे प्राण है।

ਗੁਰਿ ਤੂਟੀ ਲੈ ਜੋਰੀ ॥੨॥
गुरि तूटी लै जोरी ॥२॥
हे ठाकुर ! (मेरी टूटी हुई वृति को) तेरे साथ गुरु जी ने मुझे मिला दिया है, जिससे मैं अलग हो गया था ॥ २॥

ਤੂਹੀ ਗ੍ਰਿਹਿ ਤੂਹੀ ਬਨਿ ਤੂਹੀ ਗਾਉ ਤੂਹੀ ਸੁਨਿ ॥
तूही ग्रिहि तूही बनि तूही गाउ तूही सुनि ॥
हे ईश्वर ! तू ही मेरे हृदय गृह में मौजूद है। तू ही वन में है, तू ही गाँव में एवं तू ही उजाड़ स्थल में है।

ਹੈ ਨਾਨਕ ਨੇਰ ਨੇਰੀ ॥੩॥੩॥੧੫੬॥
है नानक नेर नेरी ॥३॥३॥१५६॥
हे नानक ! ईश्वर (प्रत्येक जीव-जन्तु के) अत्यन्त निकट वास करता है॥ ३ ॥ ३ ॥ १५६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਾਤੋ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਮਾਤੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मातो हरि रंगि मातो ॥१॥ रहाउ ॥
"(हे योगी !) मैं भी मतवाला हूँ, लेकिन ईश्वर की प्रेम-भक्ति की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਓ੍ਹੀ ਪੀਓ ਓ੍ਹੀ ਖੀਓ ਗੁਰਹਿ ਦੀਓ ਦਾਨੁ ਕੀਓ ॥
ओही पीओ ओही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥
मैं उस प्रेम की मदिरा का पान करता हूँ. उससे मैं मस्त हुआ हूँ। गुरु जी ने मुझे वह दान के तौर पर प्रदान की है।

ਉਆਹੂ ਸਿਉ ਮਨੁ ਰਾਤੋ ॥੧॥
उआहू सिउ मनु रातो ॥१॥
अब मेरा मन उस नाम-मद में ही मग्न है॥ १॥

ਓ੍ਹੀ ਭਾਠੀ ਓ੍ਹੀ ਪੋਚਾ ਉਹੀ ਪਿਆਰੋ ਉਹੀ ਰੂਚਾ ॥
ओही भाठी ओही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥
"(हे योगी !) ईश्वर का नाम ही अग्नि-कुण्ड है, प्रभु नाम ही शीतलदायक वस्त्र है, परमेश्वर का नाम ही प्याला है और नाम ही मेरी रुचि है!

ਮਨਿ ਓਹੋ ਸੁਖੁ ਜਾਤੋ ॥੨॥
मनि ओहो सुखु जातो ॥२॥
(हे योगी !) मेरा मन उसको ही सुख समझता है ॥२

ਸਹਜ ਕੇਲ ਅਨਦ ਖੇਲ ਰਹੇ ਫੇਰ ਭਏ ਮੇਲ ॥
सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥
हे नानक ! मैं प्रभु से ही आनंद प्राप्त करता और हर्षोल्लास में खेलता हूँ। मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है और मैं उस ईश्वर में लीन हो गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਰਾਤੋ ॥੩॥੪॥੧੫੭॥
नानक गुर सबदि परातो ॥३॥४॥१५७॥
वह गुरु के शब्द में लीन हो गया है॥ ३॥ ४॥ १५७ ॥

ਰਾਗੁ ਗੌੜੀ ਮਾਲਵਾ ਮਹਲਾ ੫
रागु गौड़ी मालवा महला ५
रागु गौड़ी मालवा महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੇਹੁ ਮੀਤਾ ਲੇਹੁ ਆਗੈ ਬਿਖਮ ਪੰਥੁ ਭੈਆਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पंथु भैआन ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मित्र ! परमेश्वर के नाम का भजन करो। जिस जीवन पथ पर तुम चल रहे हो, वह पथ वड़ा विषम एवं भयानक है ॥ १ ॥ रहाउ॥

ਸੇਵਤ ਸੇਵਤ ਸਦਾ ਸੇਵਿ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਕਾਲੁ ॥
सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥
परमेश्वर की सदैव पूजा-अर्चना, ध्यान एवं श्रद्धापूर्वक सेवा करो, क्योंकि काल (मृत्यु) तेरे सिर पर खड़ा है।

करि ਸੇਵਾ ਤੂੰ ਸਾਧ ਕੀ ਹੋ ਕਾਟੀਐ ਜਮ ਜਾਲੁ ॥੧॥
करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जालु ॥१॥
तू संतों की भरपूर सेवा कर, इस तरह मृत्यु का फँदा कट जाता है॥ १॥

ਹੋਮ ਜਗ ਤੀਰਥ ਕੀਏ ਬਿਚਿ ਹਉਮੈ ਬਧੇ ਬਿਕਾਰ ॥
होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥
हवन, यज्ञ एवं तीर्थ यात्रा करने के अहंकार में पापों में और भी वृद्धि होती है

ਨਰਕੁ ਸੁਰਗੁ ਦੁਇ ਭੁੰਚਨਾ ਹੋਇ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥੨॥
नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ॥२॥
प्राणी नरक-स्वर्ग दोनों भोगता है और बार-बार नश्वर संसार में जन्म लेता है ॥ २ ॥

ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਬ੍ਰਹਮ ਇੰਦ੍ਰ ਪੁਰੀ ਨਿਹਚਲੁ ਕੋ ਥਾਉ ਨਾਹਿ ॥
सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥
शिवलोक, ब्रह्मलोक एवं इन्द्रलोक इनमें से कोई भी लोक अटल नहीं।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਹੋ ਸਾਕਤ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥੩॥
बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥३॥
प्रभु की सेवा-भक्ति के बिना कोई सुख नहीं। (भगवान से टूटा हुआ) शाक्त मनुष्य आवागमन के चक्र में ही फँसा रहता है॥ ३॥

ਜੈਸੋ ਗੁਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਮੈ ਤੈਸੋ ਕਹਿਆ ਪੁਕਾਰਿ ॥
जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥
जैसे गुरु ने मुझे उपदेश प्रदान किया है, वैसे ही मैंने उच्च स्वर में कथन किया है।

ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਨਿ ਰੇ ਮਨਾ ਕਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥੪॥੧॥੧੫੮॥
नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥४॥१॥१५८॥
नानक कहता है हे मेरे मन ! ध्यानपूर्वक सुन, ईश्वर का भजन-कीर्तन करने से तेरी भवसागर से मुक्ति हो जाएगी ॥ ४ ॥ १ ॥ १५८ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी माला महला ५
रागु गउड़ी माला महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਾਇਓ ਬਾਲ ਬੁਧਿ ਸੁਖੁ ਰੇ ॥
पाइओ बाल बुधि सुखु रे ॥
हे बन्धु ! जिसने भी सुख प्राप्त किया है, उसने बालबुद्धि में ही प्राप्त किया है।

ਹਰਖ ਸੋਗ ਹਾਨਿ ਮਿਰਤੁ ਦੂਖ ਸੁਖ ਚਿਤਿ ਸਮਸਰਿ ਗੁਰ ਮਿਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु को मिलने से हर्ष, शोक, हानि, मृत्यु, दुःख-सुख मेरे हृदय को एक समान लगते हैं॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਉ ਲਉ ਹਉ ਕਿਛੁ ਸੋਚਉ ਚਿਤਵਉ ਤਉ ਲਉ ਦੁਖਨੁ ਭਰੇ ॥

जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥

जब तक मैं कुछ कल्पनाएँ एवं युक्तियों की बातें करता रहा, तब तक मैं दुःखों से भरा रहा।

ਜਉ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਤਉ ਆਨਦ ਸਹਜੇ ॥੧॥

जउ क्रिपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥१॥

लेकिन जब कृपा के घर पूर्ण गुरु जी मिल गए तो मुझे सहज ही प्रसन्नता प्राप्त हो गई॥ १॥

ਜੇਤੀ ਸਿਆਨਪ ਕਰਮ ਹਉ ਕੀਏ ਤੇਤੇ ਬੰਧ ਪਰੇ ॥

जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे ॥

जितने अधिक कर्म मैंने चतुराई द्वारा किए, उतने ही अधिकतर बंधन पड़ते गए।

ਜਉ ਸਾਧੂ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਰਿਓ ਤਬ ਹਮ ਮੁਕਤ ਭਏ ॥੨॥

जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ॥२॥

जब संतों (गुरु) ने अपना हाथ मेरे मस्तक पर रख दिया तो मैं मुक्त हो गया ॥ २ ॥

ਜਉ ਲਉ ਮੇਰੋ ਮੇਰੋ ਕਰਤੋ ਤਉ ਲਉ ਬਿਖੁ ਘੇਰੇ ॥

जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥

जब तक मैं कहता रहा कि 'यह (गृह) मेरा है, यह (धन) मेरा है'; तब तक मुझे (मोह-माया के) विष ने घेरे हुआ था।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਬੁਧਿ ਅਰਪੀ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਤਬ ਹਮ ਸਹਜਿ ਸੋਏ ॥੩॥

मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥३॥

जब मैंने अपना तन, मन एवं बुद्धि परमेश्वर को समर्पित कर दी, तो मैं सुख की नींद में सो गया ॥ ३॥

ਜਉ ਲਉ ਪੋਟ ਉਠਾਈ ਚਲਿਅਉ ਤਉ ਲਉ ਡਾਨ ਭਰੇ ॥

जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥

हे नानक ! जब तक मैं सांसारिक मोह की पोटली सिर पर उठा कर घूमता रहा, तो मैं (सांसारिक भय का) दण्ड भरता रहा।

ਪੋਟ ਡਾਰਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮਿਲਿਆ ਤਉ ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਏ ॥੪॥੧॥੧੫੯॥
पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ॥४॥१॥१५९॥
जब मैंने इस पोटली को फेंक दिया तो मुझे पूर्ण गुरु जी मिल गए और मैं निडर हो गया हूँ॥ ४॥ १॥ १५६॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਭਾਵਨੁ ਤਿਆਗਿਓ ਰੀ ਤਿਆਗਿਓ ॥
भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥
हे मेरी सखी ! मैंने अपनी इच्छाएँ त्याग दी हैं, सदा के लिए इसे छोड़ दिया है।

ਤਿਆਗਿਓ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਤਿਆਗਿਓ ॥
तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥
गुरु को मिलकर तमाम संकल्प-विकल्पों को मैंने त्याग दिया है।

ਸਰਬ ਸੁਖ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਰਸ ਮਾਨਿ ਗੋਬਿੰਦੈ ਆਗਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब सुख आनंद मंगल रस मानि गोबिंदै आगिओ ॥१॥ रहाउ ॥
गोविन्द की आज्ञा का पालन करके मैंने सर्वसुख, आनन्द, सौभाग्य एवं रस प्राप्त कर लिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਦੋਊ ਸਮਾਨੇ ਮਸਤਕੁ ਡਾਰਿ ਗੁਰ ਪਾਗਿਓ ॥
मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥
मेरे लिए मान-अभिमान दोनों एक समान हैं। अपना मस्तक मैंने गुरु के चरणों पर अर्पित कर दिया है।

ਸੰਪਤ ਹਰਖੁ ਨ ਆਪਤ ਦੂਖਾ ਰੰਗੁ ਠਾਕੁਰੈ ਲਾਗਿਓ ॥੧॥
स्मपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥१॥
मुझे धन-दौलत, हर्ष एवं विपदा दुखी नहीं करती क्योंकि मेरा प्रेम ठाकुर जी से हो गया है॥ १॥

ਬਾਸ ਬਾਸਰੀ ਏਕੈ ਸੁਆਮੀ ਉਦਿਆਨ ਦ੍ਰਿਸਟਾਗਿਓ ॥
बास बासरी एकै सुआमी उदिआन द्रिसटागिओ ॥
एक ईश्वर हृदय-गृह में वास करता है और उद्यान में भी दृष्टिगोचर होता है।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਸੰਤ ਭ੍ਰਮੁ ਡਾਰਿਓ ਪੂਰਨ ਸਰਬਾਗਿਓ ॥੨॥
निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥२॥
संतों ने मेरी दुविधा निवृत्त कर दी है और मैं निडर हो गया हूँ। सर्वज्ञ प्रभु सर्वत्र विद्यमान हो रहा है॥ २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਤੈ ਕਾਰਣੁ ਕੀਨੋ ਮਨਿ ਬੁਰੋ ਨ ਲਾਗਿਓ ॥
जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥
संयोगवश प्रभु जो भी करता है, मेरे हृदय को बुरा नहीं लगता।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਪਰਸਾਦਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸੋਇਓ ਮਨੁ ਜਾਗਿਓ ॥੩॥
साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ॥३॥
साधसंगत एवं संतों की कृपा से मेरा मोह-माया में सोया हुआ मन जाग गया है॥३॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਓੜਿ ਤੁਹਾਰੀ ਪਰਿਓ ਆਇਓ ਸਰਣਾਗਿਓ ॥
जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारी ओट में आकर पड़ गया हूँ और शरण में आ गया हूँ।

ਨਾਮ ਰੰਗ ਸਹਜ ਰਸ ਮਾਣੇ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਲਾਗਿਓ ॥੪॥੨॥੧੬੦॥
नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥४॥२॥१६०॥
अब वह नाम रंग में सहज ही आनंद भोगता है और अब उसे फिर से कोई दुख प्रभावित नहीं करता ॥ ४॥ २॥ १६०॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਪਾਇਆ ਲਾਲੁ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਪਾਇਆ ॥
पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥
मैंने अपने मन में ही लाल रत्न (माणिक जैसा प्रियतम) पा लिया है।

ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਥੀਆ ਸਤਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा तन शीतल हो गया है, मेरा मन भी शीतल हो गया है और मैं सतगुरु के शब्द में समा गया हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਲਾਥੀ ਭੂਖ ਤ੍ਰਿਸਨ ਸਭ ਲਾਥੀ ਚਿੰਤਾ ਸਗਲ ਬਿਸਾਰੀ ॥
लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥
मेरी मोह की भूख निवृत्त हो गई है, मेरी तमाम तृष्णाएँ खत्म हो गई हैं और मेरी सारी चिन्ता मिट गई है।

ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਧਰਿਓ ਮਨੁ ਜੀਤੋ ਜਗੁ ਸਾਰੀ ॥੧॥
करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी ॥१॥
पूर्ण गुरु ने अपना हाथ मेरे मस्तक पर रखा है और अपने मन पर विजय पाने से मैंने सम्पूर्ण संसार जीत लिया है॥ १॥

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ਰਹੇ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਡੋਲਨ ਤੇ ਅਬ ਚੂਕੇ ॥
त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥
अपने हृदय के भीतर मैं तृप्त एवं संतुष्ट रहता हूँ और अब मैं डांवाडोल नहीं होता।

ਅਖੁਟੁ ਖਜਾਨਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਤੋਟਿ ਨਹੀ ਰੇ ਮੂਕੇ ॥੨॥
अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥२॥
नाम रूपी अक्षय भण्डार सतिगुरु ने मुझे प्रदान किया है, न ही यह कम होता है और न ही यह समाप्त होता है॥ २॥

ਅਚਰਜੁ ਏਕੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਭਾਈ ਗੁਰਿ ਐਸੀ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥
अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥
हे भाई ! एक आश्चर्यजनक बात सुनो, गुरु ने मुझे ऐसा ज्ञान दिया है कि

ਲਾਹਿ ਪਰਦਾ ਠਾਕੁਰੁ ਜਉ ਭੇਟਿਓ ਤਉ ਬਿਸਰੀ ਤਾਤਿ ਪਰਾਈ ॥੩॥
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥३॥
जब पर्दा दूर हटाकर मैं अपने ईश्वर से मिला तो मुझे दूसरों से ईष्या करनी भूल गई। ३॥

ਕਹਿਓ ਨ ਜਾਈ ਏਹੁ ਅਚੰਭਉ ਸੋ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਚਾਖਿਆ ॥
कहिओ न जाई एहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥
यह एक आश्चर्य है, जो वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस व्यक्ति ने इसे चखा है, वही इसे जानता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਚ ਭਏ ਬਿਗਾਸਾ ਗੁਰਿ ਨਿਧਾਨੁ ਰਿਦੈ ਲੈ ਰਾਖਿਆ ॥੪॥੩॥੧੬੧॥
कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥४॥३॥१६१॥
हे नानक ! मेरे अन्तर्मन में सत्य का प्रकाश हो गया है। प्रभु-नाम रूपी धन गुरु जी से प्राप्त करके मैंने इसे अपने हृदय में बसा लिया है॥ ४ ॥ ३ ॥ १६१ ॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਉਬਰਤ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਕੀ ਸਰਣੀ ॥
उबरत राजा राम की सरणी ॥
विश्व के राजा राम की शरण में आकर जीव (मोह-माया से) बच जाता है।

ਸਰਬ ਲੋਕ ਮਾਇਆ ਕੇ ਮੰਡਲ ਗਿਰਿ ਗਿਰਿ ਪਰਤੇ ਧਰਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥१॥ रहाउ ॥
इहलोक, आकाश्लोक एवं पाताललोक के प्राणी माया के आकर्षण में ही फँसे हुए हैं। माया के आकर्षण के कारण ये उच्चस्तर से गिर गिर कर निम्नस्तर पर आ जाते हैं।॥१॥ रहाउ॥

ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ਮਹਾ ਪੁਰਖਨ ਇਉ ਕਹਿਆ ॥
सासत सिम्रिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥
शास्त्रों, स्मृतियों एवं वेदों ने यही विचार किया है और महापुरुषों ने भी यही कहा है कि

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਨਾਹੀ ਨਿਸਤਾਰਾ ਸੂਖੁ ਨ ਕਿਨਹੂੰ ਲਹਿਆ ॥੧॥
बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥१॥
भगवान के भजन के बिना भवसागर से उद्धार नहीं हो सकता और न ही किसी को सुख उपलब्ध हुआ है॥ १॥

ਤੀਨਿ ਭਵਨ ਕੀ ਲਖਮੀ ਜੋਰੀ ਬੂਝਤ ਨਾਹੀ ਲਹਰੇ ॥
तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥
चाहे मनुष्य तीनों लोकों की लक्ष्मी (दौलत) एकत्रित कर ले परन्तु उसके लोभ की लहरें मिटती नहीं।

a**ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਹਾ ਥਿਤਿ ਪਾਵੈ ਫਿਰਤੋ ਪਹਰੇ ਪਹਰੇ ॥੨॥**
बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥२॥
भगवान की भक्ति के बिना मन को स्थिरता कहीं प्राप्त हो सकती है और प्राणी हमेशा ही माया को आकर्षण में भटकता रहता है। २॥

ਅਨਿਕ ਬਿਲਾਸ ਕਰਤ ਮਨ ਮੋਹਨ ਪੂਰਨ ਹੋਤ ਨ ਕਾਮਾ ॥
अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥
मनुष्य मन को आकर्षित करने वाले विलासों में लिप्त होता है परन्तु उसकी तृष्णाएँ तृप्त नहीं होती।

ਜਲਤੋ ਜਲਤੋ ਕਬਹੂ ਨ ਬੂਝਤ ਸਗਲ ਬ੍ਰਿਥੇ ਬਿਨੁ ਨਾਮਾ ॥੩॥
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिनु नामा ॥३॥
वह सदा तृष्णाग्नि में जलता रहता है और कदापि शांत नहीं होता। प्रभु के नाम बिना सबकुछ व्यर्थ हैं। ३॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਇਹੈ ਸਾਰ ਸੁਖੁ ਪੂਰਾ ॥
हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥
हे मेरे मित्र ! भगवान के नाम का जाप करो, यह पूर्ण सुख का सार है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰੈ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਾ ॥੪॥੪॥੧੬੨॥
साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥४॥४॥१६२॥
हे नानक ! संतों की संगति में जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है और वह प्रभु के सेवकों की धूलि हो जाता है॥ ४॥ ४॥ १६२॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਮੋ ਕਉ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਸਮਝਾਵੈ ॥
मो कउ इह बिधि को समझावै ॥
हे मान्यवर ! मुझे यह विधि कौन समझा सकता है?

ਕਰਤਾ ਹੋਇ ਜਨਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करता होइ जनावै ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मनुष्य करने वाला हो, तो ही वह कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਜਾਨਤ ਕਿਛੁ ਇਨਹਿ ਕਮਾਨੋ ਜਪ ਤਪ ਕਛੂ ਨ ਸਾਧਾ ॥
अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥
यह मनुष्य अज्ञानता में सब कुछ करता है, परन्तु वह आराधना एवं तपस्या कुछ भी नहीं करता।

ਦਹ ਦਿਸਿ ਲੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਦਉਰਾਇਓ ਕਵਨ ਕਰਮ ਕਰਿ ਬਾਧਾ ॥੧॥
दह दिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन करम करि बाधा ॥१॥
तृष्णा में वह अपने इस मन को दसों दिशाओं में भगाता है। वह कौन-से कर्म द्वारा फँसा पड़ा है ? ॥ १॥

ਮਨ ਤਨ ਧਨ ਭੂਮਿ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਹਉ ਇਸ ਕਾ ਇਹੁ ਮੇਰਾ ॥
मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का इहु मेरा ॥
प्राणी यह कहता है कि मैं अपने मन, तन, धन एवं भूमि का स्वामी हूँ। मैं इनका हूँ और यह मेरे हैं।

ਭਰਮ ਮੋਹ ਕਛੁ ਸੂਝਸਿ ਨਾਹੀ ਇਹ ਪੈਖਰ ਪਏ ਪੈਰਾ ॥੨॥
भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥२॥
भ्रम एवं मोहवश उसको कुछ भी दिखाई नहीं देता। मोह-माया की जंजीर उसके पैरों को पड़ी हुई है॥ २॥

ਤਬ ਇਹੁ ਕਹਾ ਕਮਾਵਨ ਪਰਿਆ ਜਬ ਇਹੁ ਕਛੁ ਨ ਹੋਤਾ ॥
तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥
तब यह मनुष्य क्या कर्म करता था, जब इसका अस्तित्व ही नहीं था ?

ਜਬ ਏਕ ਨਿਰੰਜਨ ਨਿਰੰਕਾਰ ਪ੍ਰਭ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪਹਿ ਕਰਤਾ ॥੩॥
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥३॥
जब निरंजन एवं निरंकार प्रभु स्वयं ही था, तब वह सब कुछ स्वयं ही करता था॥ ३॥

ਅਪਨੇ ਕਰਤਬ ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇਆ ॥
अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥
जिस परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की है, अपनी लीलाओं को वह स्वयं ही जानता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਰਣਹਾਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੪॥੫॥੧੬੩॥
कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥५॥१६३॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करने वाला है। सतिगुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है। ४॥ ५॥ १६३॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰ ਕ੍ਰਿਆ ਬਿਰਥੇ ॥
हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥
भगवान के सिमरन के सिवाय अन्य सभी कार्य व्यर्थ हैं।

ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਕਰਮ ਕਮਾਣੇ ਇਹਿ ਓਰੈ ਮੂਸੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जप तप संजम करम कमाणे इहि ओरै मूसे ॥१॥ रहाउ ॥
आडम्बरपूर्ण जाप, तपस्या, संयम एवं दूसरे संस्कारों का करना यह सब निकट ही छीन लिए जाते हैं। १॥ रहाउ ॥

ਬਰਤ ਨੇਮ ਸੰਜਮ ਮਹਿ ਰਹਤਾ ਤਿਨ ਕਾ ਆਢੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥

बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥

प्राणी व्रतों एवं संयमों के नियम में क्रियाशील रहता है परन्तु उन प्रयासों का फल उसे एक कौड़ी भी नहीं मिलता।

ਆਗੈ ਚਲਣੁ ਅਉਰੁ ਹੈ ਭਾਈ ਊਂਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥

आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥१॥

हे सज्जन ! प्राणी के साथ परलोक निभाने वाला पदार्थ दूसरा है, व्रत, नियम एवं संयम में से कोई भी परलोक में काम नहीं आता ॥ १॥

ਤੀਰਥਿ ਨਾਇ ਅਰੁ ਧਰਨੀ ਭ੍ਰਮਤਾ ਆਗੈ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵੈ ॥

तीरथि नाइ अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥

जो व्यक्ति तीर्थों पर स्नान करता है और धरती पर भ्रमण करता रहता है, उसको भी परलोक में कोई सुख का निवास नहीं मिलता।

ਊਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਇਹ ਬਿਧਿ ਓਹੁ ਲੋਗਨ ਹੀ ਪਤੀਆਵੈ ॥੨॥

ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोगन ही पतीआवै ॥२॥

वहाँ यह विधि काम नहीं आती। इससे वह केवल लोगों को ही धार्मिक होने की भ्रान्ति ही कराता है॥ २ ॥

ਚਤੁਰ ਬੇਦ ਮੁਖ ਬਚਨੀ ਉਚਰੈ ਆਗੈ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥

चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥

चारों ही वेदों का मौखिक पाठ करने से मनुष्य आगे प्रभु के दरबार को प्राप्त नहीं होता।

ਬੂਝੈ ਨਾਹੀ ਏਕੁ ਸੁਧਾਖਰੁ ਓਹੁ ਸਗਲੀ ਝਾਖ ਝਖਾਈਐ ॥੩॥

बूझै नाही एकु सुधाखरु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥३॥

जो मनुष्य प्रभु के पवित्र नाम का बोध नहीं करता, वह सब व्यर्थ की बकवास करता है॥ ३॥

ਨਾਨਕੁ ਕਹਤੋ ਇਹੁ ਬੀਚਾਰਾ ਜਿ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਪਾਰ ਗਰਾਮੀ ॥

नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥

नानक यह एक विचार की बात व्यक्त करता है, जो इस बात पर अनुसरण करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है।

ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਅਰੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਤਿਆਗਹੁ ਮਨਹੁ ਗੁਮਾਨੀ ॥੪॥੬॥੧੬੪॥
गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥४॥६॥१६४॥
वह बात यह है कि गुरु की सेवा करो और प्रभु के नाम का ध्यान करो तथा अपने मन का अहंत्व त्याग दो॥ ४॥ ६॥ १६४॥

ਗਉੜੀ ਮਾਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माला ५ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥

ਮਾਧਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਕਹੀਐ ॥
माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥
हे माधो ! हे हरि-परमेश्वर ! ऐसी कृपा करो कि हम अपने मुख से तेरा हरिनाम ही उच्चरित करते रहें।

ਹਮ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਸੁਆਮੀ ਜਿਉ ਰਾਖਹੁ ਤਿਉ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हे जगत् के स्वामी ! हम से कुछ भी नहीं हो सकता। जैसे तू हम जीवों को रखता है, वैसे ही हम रहते हैं। १॥ रहाउ ॥

ਕਿਆ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਕਿ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ਕਿਆ ਇਸੁ ਹਾਥਿ ਬਿਚਾਰੇ ॥
किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥
प्राणी बेचारा क्या कर सकता है, वह क्या करने योग्य है और इस विनीत प्राणी के वश में क्या है?

ਜਿਤੁ ਤੁਮ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਪੂਰਨ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥
जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥१॥
हे हमारे सर्वव्यापक मालिक ! प्राणी उस तरफ लगा रहता है, जिस तरफ तू उसे लगा देता है॥ १॥

ਕਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਰਬ ਕੇ ਦਾਤੇ ਏਕ ਰੂਪ ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ॥
करहु क्रिपा सरब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥
हे समस्त जीवों के दाता! मुझ पर कृपा करो और केवल अपने स्वरूप के साथ ही मेरी वृति लगाओ।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀ ਹਰਿ ਪਹਿ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥੨॥੭॥੧੬੫॥
नानक की बेनंती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥२॥७॥१६५॥
मुझ नानक की भगवान के समक्ष यही विनती है कि हे प्रभु! मुझसे अपने नाम का जाप करवाओ ॥ २ ॥ ७ ॥ १६५ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी माझ महला ५
रागु गउड़ी माझ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਦਮੋਦਰ ਰਾਇਆ ਜੀਉ ॥
दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥
हे दीनदयाल ! हे पूज्य दमोदर !

ਕੋਟਿ ਜਨਾ ਕਰਿ ਸੇਵ ਲਗਾਇਆ ਜੀਉ ॥
कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥
तूने करोड़ों ही लोगों को अपनी भक्ति सेवा में लगाया हुआ है।

ਭਗਤ ਵਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ਰਖਾਇਆ ਜੀਉ ॥
भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥
तेरा विरद् भक्तवत्सल है अर्थात तुम अपने भक्तों के प्रिय हो और यहीं विरद तूने धारण किया हुआ है।

ਪੂਰਨ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
पूरन सभनी जाई जीउ ॥१॥
हे प्रभु ! तू सर्वव्यापक है॥ १॥

ਕਿਉ ਪੇਖਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਕਵਣ ਸੁਕਰਣੀ ਜੀਉ ॥
किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥
मैं अपने प्रियतम को किस तरह देखेंगी ? वह कौन-सा शुभ कर्म है?

ਸੰਤਾ ਦਾਸੀ ਸੇਵਾ ਚਰਣੀ ਜੀਉ ॥
संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥
संतों की दासी बनकर उनके चरणों की सेवा कर।

ਇਹੁ ਜੀਉ ਵਤਾਈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥
इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥
में अपनी यह आत्मा उन पर न्योछावर करती हूँ और तन-मन से उन पर बलिहारी जाती हूँ।

ਤਿਸੁ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਉ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥੨॥
तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥२॥
मैं झुक-झुक कर उनके चरण स्पर्श करती हूँ॥ २॥

ਪੋਥੀ ਪੰਡਿਤ ਬੇਦ ਖੋਜੰਤਾ ਜੀਉ ॥
पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥
पण्डित ग्रंथों एवं वेदों का अध्ययन करता है।

ਹੋਇ ਬੈਰਾਗੀ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵੰਤਾ ਜੀਉ ॥
होइ बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥
कोई व्यक्ति त्यागी होकर तीर्थ-स्थान पर स्नान करता है।

ਗੀਤ ਨਾਦ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵੰਤਾ ਜੀਉ ॥
गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥
कोई गीत एवं मधुर भजन का गायन करता है।

ਹਰਿ ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥३॥
किन्तु मैं निर्भय हरि के नाम का ही ध्यान करती हूँ॥ ३॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਜੀਉ ॥
भए क्रिपाल सुआमी मेरे जीउ ॥
मेरा प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है।

ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਲਗਿ ਗੁਰ ਕੇ ਪੈਰੇ ਜੀਉ ॥
पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ॥
गुरु जी के चरण स्पर्श करके मैं पतित से पवित्र हो गई हूँ।

ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਕਾਟਿ ਕੀਏ ਨਿਰਵੈਰੇ ਜੀਉ ॥
भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ ॥
गुरु ने मेरी दुविधा एवं भय निवृत्त करके मुझे निर्वैर कर दिया है।

ਗੁਰ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪੂਰਾਈ ਜੀਉ ॥੪॥
गुर मन की आस पूराई जीउ ॥४॥
गुरु ने मेरे मन की आशा पूर्ण कर दी है॥ ४॥

ਜਿਨਿ ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਸੋ ਧਨਵੰਤਾ ਜੀਉ ॥
जिनि नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ ॥
जिन्होंने नाम-धन प्राप्त किया है, वह धनवान बन गया है।

ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਸੁ ਸੋਭਾਵੰਤਾ ਜੀਉ ॥
जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावंता जीउ ॥
जिन्होंने अपने प्रभु का ध्यान किया है, वह शोभायमान बन गया है।

ਜਿਸੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਿਸੁ ਸਭ ਸੁਕਰਣੀ ਜੀਉ ॥
जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति संतों की संगति में रहता है, उसके तमाम कर्म श्रेष्ठ हैं

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਜੀਉ ॥੫॥੧॥੧੬੬॥
जन नानक सहजि समाई जीउ ॥५॥१॥१६६॥
और ऐसा व्यक्ति सहज ही सत्य में समा गया है ॥५॥१॥१६६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ਮਾਝ ॥
गउड़ी महला ५ माझ ॥
गउड़ी महला ५ माझ ॥

ਆਉ ਹਮਾਰੈ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਜੀਉ ॥
आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥
हे मेरे प्रिय राम जी ! आओ, हमारे हृदय में आकर निवास कर लो ।

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰੇ ਜੀਉ ॥
ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰੇ ਜੀਉ ॥
रात-दिन श्वास-श्वास से तेरा ही चिंतन करती रहती हूँ।

ਸੰਤ ਦੇਉ ਸੰਦੇਸਾ ਪੈ ਚਰਣਾਰੇ ਜੀਉ ॥
संत देउ संदेसा पै चरणारे जीउ ॥
हे संतजनो ! मैं आपके चरण स्पर्श करती हूँ। मेरा यह सन्देश प्रभु को पहुँचा देना,

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਤਰੀਐ ਜੀਉ ॥੧॥
तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ ॥१॥
तेरे अलावा मेरा किस तरह भवसागर से कल्याण हो सकता है॥ १॥

ਸੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਮੈ ਕਰੇ ਅਨੰਦਾ ਜੀਉ ॥
संगि तुमारै मै करे अनंदा जीउ ॥
मैं तेरी संगति में आनन्द प्राप्त करती हूँ।

ਵਣਿ ਤਿਣਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਸੁਖ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ਜੀਉ ॥
वणि तिणि त्रिभवणि सुख परमानंदा जीउ ॥
हे प्रभु ! तुम वन, वनस्पति एवं तीनों लोकों में विद्यमान हो। तुम सुख एवं परम आनन्द प्रदान करते हो।

ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਬਿਗਸੰਦਾ ਜੀਉ ॥
सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ ॥
तेरे साथ मुझे यह सेज सुन्दर लगती है एवं मेरा यह मन कृतार्थ हो जाता है।

ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਲਹੀਐ ਜੀਉ ॥੨॥
पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ ॥२॥
हे स्वामी ! तेरे दर्शन करने से मुझे यह सुख प्राप्त होता है।॥ २॥

ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਕਰੀ ਨਿਤ ਸੇਵਾ ਜੀਉ ॥
चरण पखारि करी नित सेवा जीउ ॥
हे नाथ ! मैं तेरे सुन्दर चरण धोती और प्रतिदिन तेरी श्रद्धापूर्वक सेवा करती हूँ।

ਪੂਜਾ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ ਦੇਵਾ ਜੀਉ ॥
पूजा अरचा बंदन देवा जीउ ॥
हे देव ! मैं तेरी पूजा-अर्चना एवं वन्दना करती हूँ।

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਲੇਵਾ ਜੀਉ ॥
दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥
हे स्वामी ! मैं तेरे दासों की दास हूँ और तेरे नाम का भजन करती हूँ।

ਬਿਨਉ ਠਾਕੁਰ ਪਹਿ ਕਹੀਐ ਜੀਉ ॥੩॥
बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ ॥३॥
हे संतजनों ! मेरी यह प्रार्थना मेरे ठाकुर जी के पास वर्णन कर देना॥ ३॥

ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿਆ ਜੀਉ ॥
इछ पुंनी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥
मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है और मेरा मन एवं तन प्रफुल्लित हो गए हैं।

ਦਰਸਨ ਪੇਖਤ ਸਭ ਦੁਖ ਪਰਹਰਿਆ ਜੀਉ ॥
दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ ॥
प्रभु के दर्शन करने से मेरे तमाम दुःख दूर हो गए हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਜਪਿ ਤਰਿਆ ਜੀਉ ॥
हरि हरि नामु जपे जपि तरिआ जीउ ॥
हरि-परमेश्वर के नाम का जाप जपने से मैं भवसागर से पार हो गई हूँ।

ਇਹੁ ਅਜਰੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਸਹੀਐ ਜੀਉ ॥੪॥੨॥੧੬੭॥
इहु अजरु नानक सुखु सहीऐ जीउ ॥४॥२॥१६७॥
हे नानक ! उसने प्रभु दर्शनों के इस अक्षुण्ण सुख को सहन कर लिया है॥ ४॥ २॥ १६७॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ माझ ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਮਨ ਮਿਤ ਪਿਆਰੇ ਜੀਉ ॥
सुणि सुणि साजन मन मित पिआरे जीउ ॥
हे मेरे प्रिय साजन ! हे मेरे मन के मीत ! मेरी विनती ध्यानपूर्वक सुनो।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਤੇਰਾ ਇਹੁ ਜੀਉ ਭਿ ਵਾਰੇ ਜੀਉ ॥
मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥
हे प्रभु ! मेरा मन एवं तन सब कुछ तेरा है और यह प्राण भी तुझ पर न्योछावर हैं।

ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੇ ਜੀਉ ॥
विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥
हे स्वामी ! मैं तुझे कभी भी विस्मृत न करूँ, तुम मेरे प्राणों का आधार हो।

ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਜੀਉ ॥੧॥
सदा तेरी सरणाई जीउ ॥१॥
हे ठाकुर ! मैं हमेशा ही तेरी शरण में रहती हूँ॥ १॥

ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਐ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਭਾਈ ਜੀਉ ॥
जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ ॥
हे भाई ! जिसको मिलने से मेरा मन जीवित हो जाता है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਈ ਜੀਉ ॥
गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥
गुरु की कृपा से मैंने उस हरि-परमेश्वर को प्राप्त कर लिया है।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀਆ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥
सभ किछु प्रभ का प्रभ कीआ जाई जीउ ॥
समस्त पदार्थ परमेश्वर के हैं और परमेश्वर के ही सर्वत्र स्थान हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ ਜੀਉ ॥੨॥
प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥२॥
मैं अपने प्रभु पर सदैव ही कुर्बान जाती हूँ॥ २॥

ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਪੈ ਵਡਭਾਗੀ ਜੀਉ ॥
एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥
कोई भाग्यशाली ही इस नाम के भण्डार का भजन करता है।

ਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਜੀਉ ॥
नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ ॥
वह एक पवित्र प्रभु के नाम से वृति लगाता है।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ਜੀਉ ॥
गुरु पूरा पाइआ सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥
जिसे पूर्ण गुरु मिल जाता है, उसके तमाम दुःख मिट जाते हैं।

ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਜੀਉ ॥੩॥
आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥३॥
मैं आठ पहर अपने प्रभु का यश गायन करता रहता हूँ॥ ३॥

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਜੀਉ ॥
रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥
हे प्रभु ! तेरा नाम रत्नों का खजाना है

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਭਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਜੀਉ ॥
तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥
तू सच्चा साहूकार है और तेरा भक्त तेरे नाम का व्यापारी है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰਾ ਜੀਉ ॥
हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥
जिस व्यक्ति के पास हरि नाम रूपी धन है उसका व्यापार ही सच्चा है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ਜੀਉ ॥੪॥੩॥੧੬੮॥
जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥४॥३॥१६८॥
जन नानक सदैव ही प्रभु पर बलिहारी जाता है ॥४॥३॥१६८॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी माझ महला ५
रागु गउड़ी माझ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ਕਰਤੇ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ॥
तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु ॥
हे सृष्टिकर्ता ! मैं तुझ पर बड़ा गर्व करता हूँ, क्योंकि तू ही मेरा स्वाभिमान है।

ਜੋਰਿ ਤੁਮਾਰੈ ਸੁਖਿ ਵਸਾ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥

तेरी समर्था द्वारा मैं सुखपूर्वक निवास करता हूँ। तेरा सत्य नाम ही मेरा पथ प्रदर्शक है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਭੇ ਗਲਾ ਜਾਤੀਆ ਸੁਣਿ ਕੈ ਚੁਪ ਕੀਆ ॥

सभे गला जातीआ सुणि कै चुप कीआ ॥

मनुष्य सबकुछ जानता है परन्तु सुनकर वह चुप ही रहता है।

ਕਦ ਹੀ ਸੁਰਤਿ ਨ ਲਧੀਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੜਿਆ ॥੧॥

कद ही सुरति न लधीआ माइआ मोहड़िआ ॥१॥

माया में मोहित हुआ वह कदापि ध्यान नहीं देता ॥ १॥

ਦੇਇ ਬੁਝਾਰਤ ਸਾਰਤਾ ਸੇ ਅਖੀ ਡਿਠੜਿਆ ॥

देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥

पहेलियां एवं संकेत दिए गए हैं। उनको प्राणी अपने नयनों से देखता है।

ਕੋਈ ਜਿ ਮੂਰਖੁ ਲੋਭੀਆ ਮੂਲਿ ਨ ਸੁਣੀ ਕਹਿਆ ॥੨॥
कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥२॥
परन्तु मूर्ख एवं लोभी मनुष्य इस कथन को बिल्कुल ही नहीं सुनता ॥ २॥

ਇਕਸੁ ਦੁਹੁ ਚਹੁ ਕਿਆ ਗਣੀ ਸਭ ਇਕਤੁ ਸਾਦਿ ਮੁਠੀ ॥
इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥
हे भाई ! किसी एक, दो अथवा चार प्राणियों की बात क्या बताऊं ? सारी दुनिया को उतना ही सांसारिक स्वादों ने ठगा हुआ है।

ਇਕੁ ਅਧੁ ਨਾਇ ਰਸੀਅੜਾ ਕਾ ਵਿਰਲੀ ਜਾਇ ਵੁਠੀ ॥੩॥
इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥३॥
कोई विरला व्यक्ति ही प्रभु के नाम का रसिया है और कोई विरला स्थान ही प्रफुल्लित रह गया है॥ ३॥

ਭਗਤ ਸਚੇ ਦਰਿ ਸੋਹਦੇ ਅਨਦ ਕਰਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥
भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥
प्रभु के भक्त सत्य के दरबार में सुन्दर लगते हैं। वे दिन-रात आनन्द प्राप्त करते हैं।

ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਪਰਮੇਸਰੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਤ ॥੪॥੧॥੧੬੯॥
रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥४॥१॥१६९॥
हे नानक ! जो व्यक्ति परमेश्वर के प्रेम रंग में मग्न रहते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥ १॥ १६६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ਮਾਂਝ ॥
गउड़ी महला ५ मांझ ॥
गउड़ी महला ५ मांझ ॥

ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਜੀ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ॥
दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥
हे भगवान ! तेरा नाम दुखों का नाश करने वाला है।

ਆਠ ਪਹਰ ਆਰਾਧੀਐ ਪੂਰਨ ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥

आठों प्रहर नाम की आराधना करनी चाहिए, पूर्ण सतिगुरु का यही ज्ञान है (जो ईश्वर से मिला सकता है)॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਵਸੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋਈ ਸੁਹਾਵਾ ਥਾਉ ॥

जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥

जिस के अन्तर्मन में पारब्रह्म निवास करता है, वह सुन्दर स्थान है।

ਜਮ ਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਈ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੧॥

जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥१॥

जो व्यक्ति अपनी जिव्हा से प्रभु की गुणस्तुति करता है, यमदूत उसके निकट नहीं आता ॥ १॥

ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਨ ਜਾਣੀਆ ਨਾ ਜਾਪੈ ਆਰਾਧਿ ॥

सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥

मैंने प्रभु की सेवा में सावधान रहने के मूल्य को नहीं समझा और न ही मैंने उसकी आराधना को अनुभव किया है।

ਓਟ ਤੇਰੀ ਜਗਜੀਵਨਾ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ॥੨॥

ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥

हे जगजीवन ! हे मेरे अगम्य एवं अगाध ठाकुर ! अब तू ही मेरा सहारा है।॥ २॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੁਸਾਈਆ ਨਠੇ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪ ॥

भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥

जिस व्यक्ति पर गुसाई कृपा के घर में आ जाता है, उसका शोक एवं संताप दूर हो जाते हैं।

ਤਤੀ ਵਾਉ ਨ ਲਗਈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਖੇ ਆਪਿ ॥੩॥

तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥३॥

उसे किसी प्रकार का दुःख स्पर्श नहीं करता, जिसकी सतिगुरु स्वयं रक्षा करते हैं।॥ ३॥

ਗੁਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਦਯੁ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥

गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥

गुरु ही नारायण हैं, गुरु ही दया का घर ईश्वर एवं गुरु ही सत्यस्वरूप करतार हैं।

ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ॥੪॥੨॥੧੭੦॥
गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥१७०॥
जब गुरु प्रसन्न हो जाता है तो सब कुछ मिल जाता है। हे नानक ! मैं गुरु पर हमेशा ही तन-मन से न्यौछावर हूँ ॥ ४॥ २॥ १७०॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥

ਹਰਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮਾ ॥
हरि राम राम राम रामा ॥
हे जिज्ञासु ! हरि-राम-राम-राम का

ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जपि पूरन होए कामा ॥१॥ रहाउ ॥
लगातार जाप करने से सभी कार्य संवर जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਮ ਗੋਬਿੰਦ ਜਪੇਦਿਆ ਹੋਆ ਮੁਖੁ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ॥
राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥
राम गोविन्द का जाप करने से मुख पवित्र हो जाता है।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਣੀਐ ਜਿਸ ਤੇ ਸੋਈ ਭਾਈ ਮਿਤ੍ਰੁ ॥੧॥
हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥१॥
जो व्यक्ति मुझे भगवान का यश सुनाता है, वही मेरा मित्र एवं भाई है॥ १॥

ਸਭਿ ਪਦਾਰਥ ਸਭਿ ਫਲਾ ਸਰਬ ਗੁਣਾ ਜਿਸੁ ਮਾਹਿ ॥
सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥
जिस गोबिन्द के वश में समस्त पदार्थ, समस्त फल एवं सर्वगुण हैं

ਕਿਉ ਗੋਬਿੰਦੁ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥
किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥२॥
हम अपने मन में से गोविन्द को क्यों विस्मृत करें, जिसका सिमरन करने से तमाम दुःख निवृत्त हो जाते हैं ।॥ २॥

ਜਿਸੁ ਲੜਿ ਲਗਿਐ ਜੀਵੀਐ ਭਵਜਲੁ ਪਈਐ ਪਾਰਿ ॥
जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥
हे जिज्ञासु ! उस भगवान का ही सिमरन करना चाहिए, जिसके दामन के साथ जुड़ने से मनुष्य को जीवन मिलता है और जीव भवसागर से पार हो जाता है।

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੁ ਹੋਇ ਮੁਖ ਊਜਲ ਦਰਬਾਰਿ ॥੩॥
मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥३॥
संतों की संगति में रहने से प्राणी का उद्धार हो जाता है और प्रभु के दरबार में उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ ३॥

ਜੀਵਨ ਰੂਪ ਗੋਪਾਲ ਜਸੁ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥
जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥
सृष्टि के पालनहार गोपाल का यश जीवन का सारांश एवं संतजनों की पूंजी है।

ਨਾਨਕ ਉਬਰੇ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਾਬਾਸਿ ॥੪॥੩॥੧੭੧॥
नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥४॥३॥१७१॥
हे नानक ! प्रभु के नाम का भजन करने से संतों का उद्धार हो जाता है और सत्य के दरबार में उनकी बड़ी शोभा मिलती है ॥ ४॥ ३॥१७१॥

ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥

ਮੀਠੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ਜਿੰਦੂ ਤੂੰ ਮੀਠੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥
हे मेरे प्राण ! तू भगवान के मीठे गुण गाता जा, उसका ही गुणानुवाद कर।

ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਮਿਲਿਆ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
सत्यस्वरूप ईश्वर के साथ मग्न रहने से निराश्रय को भी आश्रय प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਹੋਰਿ ਸਾਦ ਸਭਿ ਫਿਕਿਆ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫਿਕਾ ਹੋਇ ॥
होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥
दूसरे तमाम स्वाद फीके हैं और उन से तन-मन फीके हो जाते हैं।

ਵਿਣੁ ਪਰਮੇਸਰ ਜੋ ਕਰੇ ਫਿਟੁ ਸੁ ਜੀਵਣੁ ਸੋਇ ॥੧॥
विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥१॥
परमेश्वर का नाम स्मरण छोड़ कर मनुष्य जो कुछ भी करता है, उसका जीवन धिक्कार योग्य है॥ १॥

ਅੰਚਲੁ ਗਹਿ ਕੈ ਸਾਧ ਕਾ ਤਰਣਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥
हे मेरे प्राण ! संतों का दामन पकड़ने से इस भवसागर से पार हुआ जा सकता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਆਰਾਧੀਐ ਉਧਰੈ ਸਭ ਪਰਵਾਰੁ ॥੨॥
पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥
हमें परब्रह्म की आराधना करनी चाहिए, क्योंकि आराधना करने वाले का समूचा परिवार भी भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥

ਸਾਜਨੁ ਬੰਧੁ ਸੁਮਿਤ੍ਰੁ ਸੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਦੇਇ ॥
साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥
वही मेरा साजन, बन्धु एवं प्रिय मित्र है, जो प्रभु के नाम को मेरे हृदय में स्थापित करता है।

ਅਉਗਣ ਸਭਿ ਮਿਟਾਇ ਕੈ ਪਰਉਪਕਾਰੁ ਕਰੇਇ ॥੩॥
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥३॥
वह मेरे तमाम अवगुणों को मिटा देता है और मुझ पर बड़ा परोपकार करता है॥ ३ ॥

ਮਾਲੁ ਖਜਾਨਾ ਥੇਹੁ ਘਰੁ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਨਿਧਾਨ ॥
मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥
ईश्वर के चरण ही (तमाम पदार्थों के) भण्डार हैं, वही धन, भण्डार एवं प्राणी के लिए वास्तविक निवास है।

ਨਾਨਕੁ ਜਾਚਕੁ ਦਰਿ ਤੇਰੈ ਪ੍ਰਭ ਤੁਧਨੋ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ॥੪॥੪॥੧੭੨॥
नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मंगै दानु ॥४॥४॥१७२॥
हे प्रभु ! याचक नानक तेरे द्वार पर खड़ा है और तुझे ही अपने दान के तौर पर माँगता है॥ ४॥ ४॥ १७२॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

रागु गउड़ी महला ९ ॥
रागु गउड़ी महला ९ ॥
रागु गउड़ी महला ९ ॥

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
साधो मन का मानु तिआगउ ॥
हे संतजनो ! अपने मन का अभिमान त्याग दो।

कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥
काम, क्रोध एवं दुर्जन लोगों की संगति से दिन-रात दूर रहो ॥ १॥ रहाउ॥

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
जो इन्सान सुख-दुख एवं मान-सम्मान को एक समान समझता है

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥
और जो हर्ष एवं शोक से पृथक रहता है, वह जगत् में जीवन के तथ्य को पहचान लेता है॥ १॥

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
मनुष्य को किसी की प्रशंसा एवं निन्दा करना दोनों ही त्यागने योग्य हैं और उसके लिए मुक्ति पद को ढूंढना न्यायोचित है।

जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥
हे दास नानक ! यह खेल कठिन है। गुरु की प्रेरणा से किसी विरले को ही इसका ज्ञान होता है॥ २ ॥ १ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਸਾਧੋ ਰਚਨਾ ਰਾਮ ਬਨਾਈ ॥
साधो रचना राम बनाई ॥
हे संतजनो ! राम ने (एक अद्भुत) सृष्टि की रचना की है।

ਇਕਿ ਬਿਨਸੈ ਇਕ ਅਸਥਿਰੁ ਮਾਨੈ ਅਚਰਜੁ ਲਖਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
एक व्यक्ति अपने प्राण त्याग देता है और एक अपने आपको अनश्वर समझता है। यह एक अदभुत लीला है जिसका बोध नहीं होता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮੋਹ ਬਸਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਹਰਿ ਮੂਰਤਿ ਬਿਸਰਾਈ ॥
काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥
नश्वर प्राणी कामवासना, क्रोध एवं सांसारिक मोह के वश में है और वह प्रभु के व्यक्तित्व को भूल गया है।

ਝੂਠਾ ਤਨੁ ਸਾਚਾ ਕਰ�ि ਮਾਨਿਓ ਜਿਉ ਸੁਪਨਾ ਰੈਨਾਈ ॥੧॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥
मानव देहि जो रात्रि के स्वप्न की भाँति मिथ्या है, मनुष्य उसे सत्य समझता है॥ १ ॥

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੈ ਜਿਉ ਬਾਦਰ ਕੀ ਛਾਈ ॥
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
जो कुछ भी दिखाई देता है, वह बादल की छाया की भाँति समस्त लुप्त हो जाएगा।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਗੁ ਜਾਨਿਓ ਮਿਥਿਆ ਰਹਿਓ ਰਾਮ ਸਰਨਾਈ ॥੨॥੨॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति संसार को मिथ्या समझता है, वह राम की शरण में रहता है॥ २ ॥ २॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਉ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥
प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
नश्वर प्राणी भगवान के यश को अपने हृदय में नहीं बसाता।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਮਗਨੁ ਰਹੈ ਮਾਇਆ ਮੈ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥
वह दिन-रात माया के मोह में ही मग्न रहता है। बताइए, फिर वह किस तरह प्रभु की महिमा गायन कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਪੂਤ ਮੀਤ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਸਿਉ ਇਹ ਬਿਧਿ ਆਪੁ ਬੰਧਾਵੈ ॥
पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥
इस विधि से वह अपने आपको बच्चों, मित्र-बन्धुओं, माया एवं अहंत्व के साथ बांध लेता है।

ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਿਉ ਝੂਠੋ ਇਹੁ ਜਗ ਦੇਖਿ ਤਾਸਿ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥੧॥
म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥
मृगतृष्णा की भाँति यह नश्वर संसार मिथ्या है। फिर भी उसको देखकर प्राणी इसके पीछे भागता है॥ १॥

ਭੁਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਕਾ ਕਾਰਨੁ ਸੁਆਮੀ ਮੂੜ ਤਾਹਿ ਬਿਸਰਾਵੈ ॥
भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥
परमात्मा भुक्ति (संसार के भोगों) एवं मुक्ति का स्वामी है। लेकिन मूर्ख मनुष्य उस परमात्मा को विस्मृत रखता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੋਟਨ ਮੈ ਕੋਊ ਭਜਨੁ ਰਾਮ ਕੋ ਪਾਵੈ ॥੨॥੩॥
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥
हे नानक ! करोड़ों में से कोई विरला ही व्यक्ति है, जो राम के भजन को प्राप्त करता है॥ २॥ ३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਸਾਧੋ ਇਹੁ ਮਨੁ ਗਹਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥
साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
हे संतजनो ! यह मन वश में नहीं किया जा सकता।

ਚੰਚਲ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸੰਗਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਯਾ ਤੇ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि यह चंचल मन तृष्णा के साथ निवास करता है। इसलिए यह स्थिर होकर नहीं रहता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਠਨ ਕਰੋਧ ਘਟ ਹੀ ਕੇ ਭੀਤਰਿ ਜਿਹ ਸੁਧਿ ਸਭ ਬਿਸਰਾਈ ॥
कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
प्रचण्ड क्रोध हृदय के भीतर है, जो समस्त चेतना को विस्मृत कर देता है।

ਰਤਨੁ ਗਿਆਨੁ ਸਭ ਕੋ ਹਿਰਿ ਲੀਨਾ ਤਾ ਸਿਉ ਕਛੁ ਨ ਬਸਾਈ ॥੧॥
रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥
इस क्रोध ने प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञान-रत्न छीन लिया है। इसके समक्ष किसी का भी वश नहीं चलता ॥ १॥

ਜੋਗੀ ਜਤਨ ਕਰਤ ਸਭਿ ਹਾਰੇ ਗੁਨੀ ਰਹੇ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥
जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥
बहुत सारे योगी यत्न करते हुए पराजित हो गए हैं। विद्वान पुरुष प्रभु की स्तुति करते हुए थक गए हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ਤਉ ਸਭ ਬਿਧਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥੨॥੪॥
जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥
हे दास नानक ! जब ईश्वर दयालु हो जाता है तो प्रत्येक कोशिश सफल हो जाती है। ॥२॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਸਾਧੋ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
हे संतजनो ! सृष्टि के स्वामी गोविन्द की गुणस्तुति करते रहो।

ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਪਾਇਓ ਬਿਰਥਾ ਕਾਹਿ ਗਵਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥
आपको अनमोल मनुष्य जीवन मिला है। इसको व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो ॥ १॥ रहाउ॥

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਦੀਨ ਬੰਧ ਹਰਿ ਸਰਨਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਆਵਉ ॥
पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥
ईश्वर पापियों को पवित्र करने वाला एवं निर्धनों का संबंधी है। आप लोग उस भगवान की शरण में आओ।

ਗਜ ਕੋ ਤ੍ਰਾਸੁ ਮਿਟਿਓ ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਤੁਮ ਕਾਹੇ ਬਿਸਰਾਵਉ ॥੧॥
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥
आप लोग उस भगवान को क्यों विस्मृत करते हो, जिसका सिमरन करने से हाथी का भय मिट गया था ॥ १ ॥

ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਫੁਨਿ ਭਜਨ ਰਾਮ ਚਿਤੁ ਲਾਵਉ ॥
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
अभिमान, मोह एवं माया को त्याग दीजिए और राम के भजन को अपने मन के साथ लगाओ।

ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਮੁਕਤਿ ਪੰਥ ਇਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਤੁਮ ਪਾਵਉ ॥੨॥੫॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥
नानक कहते हैं-मोह-माया से मुक्त होने का यही मार्ग है। लेकिन गुरु का आश्रय लेकर ही तुम यह मार्ग प्राप्त कर सकते हो ॥२॥५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਕੋਊ ਮਾਈ ਭੂਲਿਓ ਮਨੁ ਸਮਝਾਵੈ ॥
कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥
हे मेरी माता ! मुझे कोई ऐसा महापुरुष मिल जाए जो मेरे भटकते हुए मन को सुमति प्रदान करे।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਾਧ ਮਗ ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਨਿਮਖ ਨ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥
मनुष्य वेद-पुराण एवं संतों-महापुरुषों के उपदेश को सुनता रहता है, परन्तु फिर भी वह एक क्षण भर के लिए भी प्रभु का गुणानुवाद नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥

ਦੁਰਲਭ ਦੇਹ ਪਾਇ ਮਾਨਸ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਵੈ ॥
दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥
दुर्लभ मानव देहि प्राप्त करके वह जीवन को व्यर्थ ही गंवा रहा है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਮਹਾ ਸੰਕਟ ਬਨ ਤਾ ਸਿਉ ਰੁਚ ਉਪਜਾਵੈ ॥੧॥
माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥
यह दुनिया मोह-माया का संकट से भरा हुआ वन है तो भी मनुष्य उससे ही रुचि उत्पन्न करता है॥ १॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤਾ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਨ ਲਾਵੈ ॥
अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥
प्रभु हृदय के भीतर व बाहर सदैव ही प्राणी के साथ रहता है। परन्तु प्राणी प्रभु में वृति नहीं लगाता।

ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨਹੁ ਜਿਹ ਘਟਿ ਰਾਮੁ ਸਮਾਵੈ ॥੨॥੬॥
नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥
हे नानक ! उस व्यक्ति को ही मुक्ति मिली समझो, जिसके हृदय में राम वास कर रहा है॥ २ ॥ ६ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਸਾਧੋ ਰਾਮ ਸਰਨਿ ਬਿਸਰਾਮਾ ॥
साधो राम सरनि बिसरामा ॥
हे संतजनो ! राम की शरण में आने से ही सुख उपलब्ध होता है।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਪੜੇ ਕੋ ਇਹ ਗੁਨ ਸਿਮਰੇ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥

वेदों एवं पुराणों के अध्ययन का लाभ यही है कि प्राणी भगवान के नाम का सिमरन करता रहे॥ १॥ रहाउ॥

ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਫੁਨਿ ਅਉ ਬਿਖਿਅਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥

लालच, मोह, माया,ममता, विषयो की सेवा एवं

ਹਰਖ ਸੋਗ ਪਰਸੈ ਜਿਹ ਨਾਹਨਿ ਸੋ ਮੂਰਤਿ ਹੈ ਦੇਵਾ ॥੧॥

हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥

फिर हर्ष एवं शोक जिसे स्पर्श नहीं करते, वह पुरुष प्रभु का स्वरुप है॥ १॥

ਸੁਰਗ ਨਰਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਿਖੁ ਏ ਸਭ ਤਿਉ ਕੰਚਨ ਅਰੁ ਪੈਸਾ ॥

सुरग नरक अम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥

जिस व्यक्ति को स्वर्ग-नरक, अमृत एवं विष एक जैसे प्रतीत होते हैं और जिस इन्सान को सोना एवं तांबा ये सभी एक समान प्रतीत होते हैं।

ਉਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਏ ਸਮ ਜਾ ਕੈ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਫੁਨਿ ਤੈਸਾ ॥੨॥

उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥

जिसके हृदय में प्रशंसा व निन्दा एक समान हैं, जिसके हृदय में लोभ तथा मोह कोई प्रभावित नहीं करते॥ २॥

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਏ ਬਾਧੇ ਜਿਹ ਨਾਹਨਿ ਤਿਹ ਤੁਮ ਜਾਨਉ ਗਿਆਨੀ ॥

दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥

जिसे कोई सुख अथवा दुख बन्धन में बांध नहीं सकता। आप उसको ज्ञानी समझो।

ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਮਾਨਉ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਜੋ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੩॥੭॥

नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥

हे नानक ! उस प्राणी को मोक्ष मिला समझो, जो प्राणी इस जीवन-आचरण वाला है॥ ३ ॥ ७ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

ਮਨ ਰੇ ਕਹਾ ਭਇਓ ਤੈ ਬਉਰਾ ॥
मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
हे मेरे मन ! तू क्यों बावला हो रहा है?

ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਉਧ ਘਟੈ ਨਹੀ ਜਾਨੈ ਭਇਓ ਲੋਭ ਸੰਗਿ ਹਉਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥
तू क्यों नहीं समझता कि तेरी जीवन-अवधि दिन-रात कम होती जा रही है। लोभ के साथ तू तुच्छ हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਤਨੁ ਤੈ ਅਪਨੋ ਕਰਿ ਮਾਨਿਓ ਅਰੁ ਸੁੰਦਰ ਗ੍ਰਿਹ ਨਾਰੀ ॥
जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
"(हे मन !) वह तन एवं घर की सुन्दर नारी जिन्हें तुम अपना समझते हो,

ਇਨ ਮੈਂ ਕਛੁ ਤੇਰ ਰੇ ਨਾਹਨਿ ਦੇਖੋ ਸੋਚ ਬਿਚਾਰੀ ॥੧॥
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥
इनमें तेरा कुछ नहीं, देख और ध्यानपूर्वक सोच-विचार कर ॥ १॥

ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਅਪਨੋ ਤੈ ਹਾਰਿਓ ਗੋਬਿੰਦ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥
रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥
तुम ने अपना अनमोल मनुष्य जीवन गंवा लिया है और सृष्टि के स्वामी गोबिन्द की गति को नहीं जाना।

ਨਿਮਖ ਨ ਲੀਨ ਭਇਓ ਚਰਨਨ ਸਿਉ ਬਿਰਥਾ ਅਉਧ ਸਿਰਾਨੀ ॥੨॥
निमख न लीन भइओ चरनन सिउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥
एक क्षण भर के लिए भी तू प्रभु के चरणों में नहीं समाया। तेरी अवस्था व्यर्थ ही बीत गई है॥ २॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਨਰੁ ਸੁਖੀਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥
कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
हे नानक ! वही व्यक्ति सुखी है, जो राम नाम का यश गायन करता रहता है।

ਅਉਰ ਸਗਲ ਜਗੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਨਿਰਭੈ ਪਦੁ ਨਹੀ ਪਾਵੈ ॥੩॥੮॥
अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥
दूसरे तमाम लोग माया ने मुग्ध किए हुए हैं और वह निर्भय-पद को प्राप्त नहीं होते॥ ३॥ ८ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
गउड़ी महला ९ ॥
गउड़ी महला ९ ॥

ਨਰ ਅਚੇਤ ਪਾਪ ਤੇ ਡਰੁ ਰੇ ॥
नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
हे चेतनाहीन प्राणी ! तू पापों से भय कर,

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਸਗਲ ਭੈ ਭੰਜਨ ਸਰਨਿ ਤਾਹਿ ਤੁਮ ਪਰੁ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥
उस दीनदयाल एवं समस्त भय नाश करने वाले प्रभु की शरण ले॥ १॥ रहाउ॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਜਾਸ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤਾ ਕੋ ਨਾਮੁ ਹੀਐ ਮੋ ਧਰੁ ਰੇ ॥
बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥
अपने ह्रदय में उस प्रभु के नाम को बसा कर रख, जिसकी महिमा वेद एवं पुराण भी गायन करते हैं।

ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਜਗਤਿ ਮੈ ਹਰਿ ਕੋ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਕਸਮਲ ਸਭ ਹਰੁ ਰੇ ॥੧॥
पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥
ईश्वर का नाम इस संसार में पवित्र-पावन है। इसका भजन सिमरन करने से तू अपने तमाम पाप निवृत कर ले॥ १॥

ਮਾਨਸ ਦੇਹ ਬਹੁਰਿ ਨਹ ਪਾਵੈ ਕਛੂ ਉਪਾਉ ਮੁਕਤਿ ਕਾ ਕਰੁ ਰੇ ॥
मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
हे प्राणी ! मानव देहि दोबारा तुझे प्राप्त नहीं होनी। इसलिए अपनी मुक्ति हेतु कुछ उपाय कर ले।

ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਗਾਇ ਕਰੁਨਾ ਮੈ ਭਵ ਸਾਗਰ ਕੈ ਪਾਰਿ ਉਤਰੁ ਰੇ ॥੨॥੯॥੨੫੧॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥
नानक कहते हैं, हे जीव ! करुणानिधि परमेश्वर का भजन गायन कर के भवसागर से पार हो जा ॥२॥६॥२५१॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ
रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी
रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥
नवनिधि एवं (अठारह) सिद्धियाँ पवित्र नाम के चिंतन में हैं।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਬਿਖੁ ਮਾਰਿ ॥
पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥
माया के विष का नाश करके मनुष्य परमात्मा को सर्वव्यापक देखता है।

ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਛੂਟੀ ਬਿਮਲ ਮਝਾਰਿ ॥
त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥
पवित्र प्रभु में वास करने से मैंने तीनों गुणों से मुक्ति प्राप्त कर ली है।

ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਜੀਇ ਆਈ ਕਾਰਿ ॥੧॥
गुर की मति जीइ आई कारि ॥१॥
गुरु जी का उपदेश ही मेरे मन के लिए लाभदायक (सिद्धियों) हैं।॥ १॥

ਇਨ ਬਿਧਿ ਰਾਮ ਰਮਤ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
इन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥
इस विधि से राम के नाम का जाप करने से मेरा मन संतुष्ट हो गया है।

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
ज्ञान के सुरमे को मैंने गुरु के शब्द द्वारा पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਇਕੁ ਸੁਖੁ ਮਾਨਿਆ ਸਹਜਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ ॥
मैं अब एक सहज सुख को भोगता हूँ और प्रभु में लीन हो गया हूँ।

ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
निरमल बाणी भरमु चुकाइआ ॥
पवित्र वाणी द्वारा मेरी शंका निवृत हो गई है।

ਲਾਲ ਭਏ ਸੂਹਾ ਰੰਗੁ ਮਾਇਆ ॥
लाल भए सूहा रंगु माइआ ॥
मोहिनी के लाल रंग के स्थान पर मैंने ईश्वर के नाम का गहरा लाल रंग धारण कर लिया है।

ਨਦਰਿ ਭਈ ਬਿਖੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਇਆ ॥੨॥
नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥२॥
जब प्रभु अपनी कृपा दृष्टि धारण करता है तो बुराई का विष नष्ट हो जाता है॥ २॥

ਉਲਟ ਭਈ ਜੀਵਤ ਮਰਿ ਜਾਗਿਆ ॥
उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥
मेरी वृति मोह-माया से पृथक हो गई है, सांसारिक कर्म करते हुए ही मेरा मन मर गया है और मैं आत्मिक तौर पर जागृत हो गया हूँ।

ਸਬਦਿ ਰਵੇ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਲਾਗਿਆ ॥
सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ ॥
नाम का उच्चारण करने से मेरा मन प्रभु के साथ जुड़ गया है।

ਰਸੁ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਬਿਖੁ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗਿਆ ॥
रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥
माया के विष को त्याग कर मैंने प्रभु के अमृतरस का संग्रह किया है।

ਭਾਇ ਬਸੇ ਜਮ ਕਾ ਭਉ ਭਾਗਿਆ ॥੩॥
भाइ बसे जम का भउ भागिआ ॥३॥
प्रभु के प्रेम में वास करने से मेरा मृत्यु का भय भाग गया है॥ ३॥

ਸਾਦ ਰਹੇ ਬਾਦੰ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
साद रहे बादं अहंकारा ॥
मेरे सांसारिक रस, विवाद एवं अहंकार मिट गए हैं।

ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਾਤਾ ਹੁਕਮਿ ਅਪਾਰਾ ॥
चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा ॥
अनंत ईश्वर के हुक्म द्वारा मेरा मन ईश्वर के साथ मग्न हो गया है।

ਜਾਤਿ ਰਹੇ ਪਤਿ ਕੇ ਆਚਾਰਾ ॥
जाति रहे पति के आचारा ॥
मेरे लोक व्यवहार के कार्य जाते रहे हैं।

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਭਈ ਸੁਖੁ ਆਤਮ ਧਾਰਾ ॥੪॥
द्रिसटि भई सुखु आतम धारा ॥४॥
जब ईश्वर ने मुझ पर कृपा-दृष्टि की तो मैंने अलौकिक सुख को अपने हृदय में बसा लिया॥ ४॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਦੇਖਉ ਮੀਤੁ ॥
तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥
हे नाथ ! तेरे बिना मैं अपना मित्र किसी को नहीं समझता।

ਕਿਸੁ ਸੇਵਉ ਕਿਸੁ ਦੇਵਉ ਚੀਤੁ ॥
किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥
किसी दूसरे की मैं क्यों सेवा करूँ और किस को अपनी आत्मा समर्पित करूं ?

ਕਿਸੁ ਪੂਛਉ ਕਿਸੁ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥
किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥
मैं किससे पूछू और किसके चरण स्पर्श करूँ ?

ਕਿਸੁ ਉਪਦੇਸਿ ਰਹਾ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੫॥
किसु उपदेसि रहा लिव लाइ ॥५॥
किसके उपदेश द्वारा मैं प्रभु के प्रेम में लीन रह सकता हूँ?॥ ५॥

ਗੁਰ ਸੇਵੀ ਗੁਰ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥
गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥
मैं गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करता हूँ और गुरु के ही चरण स्पर्श करता हूँ।

ਭਗਤਿ ਕਰੀ ਰਾਚਉ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
भगति करी राचउ हरि नाइ ॥
मैं प्रभु की भक्ति करता हुआ उसके नाम में समाया हुआ हूँ।

ਸਿਖਿਆ ਦੀਖਿਆ ਭੋਜਨ ਭਾਉ ॥
सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥
प्रभु की प्रीति मेरे लिए उपदेश, प्रभु दीक्षा एवं भोजन है।

ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਜਾਉ ॥੬॥
हुकमि संजोगी निज घरि जाउ ॥६॥
प्रभु के हुक्म से जुड़कर मैंने अपने आत्मस्वरूप में प्रवेश कर लिया है॥ ६॥

ਗਰਬ ਗਤੰ ਸੁਖ ਆਤਮ ਧਿਆਨਾ ॥
गरब गतं सुख आतम धिआना ॥
अहंकार की निवृति द्वारा आत्मा को सुख एवं ध्यान प्राप्त हो जाते हैं।

ਜੋਤਿ ਭਈ ਜੋਤੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥
जोति भई जोती माहि समाना ॥
ईश्वरीय ज्योत उदय हो गई है और मेरे प्राण परम ज्योती में लीन हो गए हैं।

ਲਿਖਤੁ ਮਿਟੈ ਨਹੀ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨਾ ॥
लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥
अनन्त लिखित मिटाई नहीं जा सकती और मेने प्रभु के नाम की मोहर प्राप्त कर ली है।

ਕਰਤਾ ਕਰਣਾ ਕਰਤਾ ਜਾਨਾ ॥੭॥
करता करणा करता जाना ॥७॥
मैंने सृजनहार प्रभु को ही कर्तार एवं रचयिता जाना है। ७॥

ਨਹ ਪੰਡਿਤੁ ਨਹ ਚਤੁਰੁ ਸਿਆਨਾ ॥
नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥
अपने आप मनुष्य न विद्वान, चतुर अथवा बुद्धिमान है,

ਨਹ ਭੂਲੋ ਨਹ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥
नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥
न ही मार्ग से भटका हुआ, न ही भ्रम का गुमराह किया हुआ है।

ਕਥਉ ਨ ਕਥਨੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥
कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥
मैं व्यर्थ बातें नहीं करता, परन्तु हरि के हुक्म को पहचानता हूँ।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨਾ ॥੮॥੧॥
नानक गुरमति सहजि समाना ॥८॥१॥
हे नानक ! गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रभु में लीन हो गया है॥ ८॥ १॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥

ਮਨੁ ਕੁੰਚਰੁ ਕਾਇਆ ਉਦਿਆਨੈ ॥
मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥
काया रूपी उद्यान में मन रूपी एक हाथी है।

ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨੈ ॥
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥
गुरु जी अंकुश है, जब हाथी पर सत्यनाम का चिन्ह पड़ जाता है तो

ਰਾਜ ਦੁਆਰੈ ਸੋਭ ਸੁ ਮਾਨੈ ॥੧॥
राज दुआरै सोभ सु मानै ॥१॥
यह प्रभु के दरबार में मान सन्मान प्राप्त करता है॥ १॥

ਚਤੁਰਾਈ ਨਹ ਚੀਨਿਆ ਜਾਇ ॥
चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥
किसी चतुराई से परमेश्वर का बोध नहीं हो सकता।

ਬਿਨੁ ਮਾਰੇ ਕਿਉ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु मारे किउ कीमति पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मन पर विजय पाने के बिना परमेश्वर का मूल्य किस तरह पाया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਘਰ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਸਕਰੁ ਲੇਈ ॥
घर महि अम्रितु तसकरु लेई ॥
नाम अमृत मनुष्य के हृदय घर में ही विद्यमान है, जिसे चोर लिए जा रहे हैं।

ਨੰਨਾਕਾਰੁ ਨ ਕੋਇ ਕਰੇਈ ॥
नंनाकारु न कोइ करेई ॥
कोई भी उनको मना नहीं करता।

ਰਾਖੈ ਆਪਿ ਵਡਿਆਈ ਦੇਈ ॥੨॥
राखै आपि वडिआई देई ॥२॥
यदि मनुष्य अमृत की रक्षा करे तो ईश्वर स्वयं उसको सम्मान प्रदान करता है॥ २॥

ਨੀਲ ਅਨੀਲ ਅਗਨਿ ਇਕ ਠਾਈ ॥
नील अनील अगनि इक ठाई ॥
हजारों, अरबों एवं असंख्य इच्छाओं की अग्नियां हृदय में विद्यमान हैं,
ਜਲਿ ਨਿਵਰੀ ਗੁਰਿ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥
जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥
गुरु जी के विदित किए हुए ज्ञान रूपी जल से वह बुझ जाती हैं।

ਮਨੁ ਦੇ ਲੀਆ ਰਹਸਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੩॥
मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥३॥
अपनी आत्मा अर्पित करके मैंने ज्ञान प्राप्त किया है और अब मैं प्रसन्नतापूर्वक ईश्वर का यश गायन करता हूँ॥ ३॥

ਜੈਸਾ ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੋ ਤੈਸਾ ॥
जैसा घरि बाहरि सो तैसा ॥
जैसे प्रभु हृदय-घर में है, वैसे ही वह बाहर है।

ਬੈਸਿ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਆਖਉ ਕੈਸਾ ॥
बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥
गुफा में बैठकर मैं उसको किस तरह वर्णन कर सकता हूँ।

ਸਾਗਰਿ ਡੂਗਰਿ ਨਿਰਭਉ ਐਸਾ ॥੪॥
सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥४॥
निडर प्रभु सागरों एवं पहाड़ों में वैसा ही है॥ ४॥

ਮੂਏ ਕਉ ਕਹੁ ਮਾਰੇ ਕਉਨੁ ॥
मूए कउ कहु मारे कउनु ॥
बताइए, उसको कौन मार सकता है, जो आगे ही मृत है?

ਨਿਡਰੇ ਕਉ ਕੈਸਾ ਡਰੁ ਕਵਨੁ ॥
निडरे कउ कैसा डरु कवनु ॥
कौन-सा भय, एवं कौन-सा पुरुष निडर को डरा सकता है।

ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੈ ਤੀਨੇ ਭਉਨ ॥੫॥
सबदि पछानै तीने भउन ॥५॥
वह तीनों ही लोकों में प्रभु को पहचानता है॥ ५ ॥

ਜਿਨਿ ਕਹਿਆ ਤਿਨਿ ਕਹਨੁ ਵਖਾਨਿਆ ॥
जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥
जो केवल कहता ही है, वह केवल एक प्रसंग ही वर्णन करता है।

ਜਿਨਿ ਬੂਝਿਆ ਤਿਨਿ ਸਹਜਿ ਪਛਾਨਿਆ ॥
जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥
जो वास्तविक समझता है, वह प्रभु को अनुभव कर लेता है।

ਦੇਖਿ ਬੀਚਾਰਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੬॥
देखि बीचारि मेरा मनु मानिआ ॥६॥
वास्तविकता को देखने एवं सोच-विचार करने से मेरा मन प्रभु के साथ मिल गया है॥ ६॥

ਕੀਰਤਿ ਸੂਰਤਿ ਮੁਕਤਿ ਇਕ ਨਾਈ ॥
कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥
शोभा, सौन्दर्य एवं मुक्ति एक नाम में है।

ਤਹੀ ਨਿਰੰਜਨੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
तही निरंजनु रहिआ समाई ॥
उस नाम में ही निरंजन परमात्मा लीन रहता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਨਿਜ ਠਾਈ ॥੭॥

निज घरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥७॥

प्रभु अपने आत्म-स्वरूप एवं अपने स्थान नाम में निवास करता है॥ ७ ॥

ਉਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਕੇਤੇ ਮੁਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥

उसतति करहि केते मुनि प्रीति ॥

अनेक मुनिजन प्रेमपूर्वक उसकी प्रशंसा करते हैं।

ਤਨਿ ਮਨਿ ਸੁਚੈ ਸਾਚੁ ਸੁ ਚੀਤਿ ॥
तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥
उस सत्यनाम को हृदय में बसाने से उनका तन-मन पवित्र हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨੀਤਾ ਨੀਤਿ ॥੮॥੨॥
नानक हरि भजु नीता नीति ॥८॥२॥
हे नानक ! तू नित्य परमेश्वर का भजन करता रह॥ ८॥ २॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥

ਨਾ ਮਨੁ ਮਰੈ ਨ ਕਾਰਜੁ ਹੋਇ ॥
ना मनु मरै न कारजु होइ ॥
मनुष्य का मन कामादिक विकारों के वश में होने के कारण मरता नहीं। इसलिए जीवन का मनोरथ सम्पूर्ण नहीं होता।

ਮਨੁ ਵਸਿ ਦੂਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਦੋਇ ॥
मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥
मन दुष्कर्मों, मंदबुद्धि एवं द्वैतभाव के वश में है।

ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਗੁਰ ਤੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ॥੧॥
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥१॥
गुरु से ज्ञान प्राप्त करके मन तृप्त हो जाता है और ईश्वर से एकरूप हो जाता है।॥ १॥

ਨਿਰਗੁਣ ਰਾਮੁ ਗੁਣਹ ਵਸਿ ਹੋਇ ॥
निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥
निर्गुण राम गुणों के वश में है।

ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਬੀਚਾਰੇ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपु निवारि बीचारे सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति अपने अहंकार को मिटा देता है, वह प्रभु का चिन्तन करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨੁ ਭੂਲੋ ਬਹੁ ਚਿਤੈ ਵਿਕਾਰੁ ॥
मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥
भटका हुआ मन अधिकतर विकारों का ध्यान करता है।

ਮਨੁ ਭੂਲੋ ਸਿਰਿ ਆਵੈ ਭਾਰੁ ॥
मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥
जब तक मन कुमार्ग चलता रहता है, तब तक पापों का बोझ उसके सिर पर पड़ता है।

ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਹਰਿ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੨॥
मनु मानै हरि एकंकारु ॥२॥
जब मन की संतुष्टि हो जाती है, तो वह केवल एक ईश्वर को अनुभव करता है॥ २॥

ਮਨੁ ਭੂਲੋ ਮਾਇਆ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥
मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥
भटका हुआ मन पापों के गृह में प्रवेश करता है।

ਕਾਮਿ ਬਿਰੂਧਉ ਰਹੈ ਨ ਠਾਇ ॥
कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥
कामग्रस्त मन उचित स्थान पर नहीं रहता।

ਹਰਿ ਭਜੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਰਸਨ ਰਸਾਇ ॥੩॥
हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥३॥
हे नश्वर प्राणी ! प्रेमपूर्वक अपनी जिव्हा से प्रभु के नाम का भजन कर ॥ ३॥

ਗੈਵਰ ਹੈਵਰ ਕੰਚਨ ਸੁਤ ਨਾਰੀ ॥
गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥
हाथी, घोड़े, सोना, पुत्र एवं पत्नी

ਬਹੁ ਚਿੰਤਾ ਪਿੜ ਚਾਲੈ ਹਾਰੀ ॥
बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥
प्राप्त करने की अधिकतर चिन्ता में प्राणी (जीवन) खेल हार जाता है और कूच कर जाता है।

ਜੂਐ ਖੇਲਣੁ ਕਾਚੀ ਸਾਰੀ ॥੪॥
जूऐ खेलणु काची सारी ॥४॥
शतरंज की खेल में उसका मोहरा चलता नहीं ॥ ४॥

ਸੰਪਉ ਸੰਚੀ ਭਏ ਵਿਕਾਰ ॥
सम्पउ संची भए विकार ॥
जैसे-जैसे मनुष्य धन संग्रह करता है। उससे विकार उत्पन्न हो जाता है

ਹਰਖ ਸੋਕ ਉਭੇ ਦਰਵਾਰਿ ॥
हरख सोक उभे दरवारि ॥
और हर्ष एवं शोक उसके द्वार पर खड़े रहते हैं।

ਸੁਖੁ ਸਹਜੇ ਜਪਿ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰਿ ॥੫॥
सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥५॥
हृदय में परमात्मा का जाप करने से सहज ही सुख प्राप्त हो जाता है।॥ ५॥

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥
नदरि करे ता मेलि मिलाए ॥
जब प्रभु दया के घर में आता है, तब वह मनुष्य को गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है।

ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਅਉਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥
ऐसा मनुष्य गुरु की शरण में रहकर गुणों का संग्रह करता है और गुरु के उपदेश द्वारा अपने अवगुणों को जला देता है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਏ ॥੬॥
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥६॥
और गुरु के समक्ष होकर नाम-धन प्राप्त कर लेता है॥ ६ ॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਦੂਖ ਨਿਵਾਸੁ ॥
बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥
प्रभु के नाम बिना समस्त दुख निवास करते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਮਾਇਆ ਚਿਤ ਵਾਸੁ ॥
मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥
मूर्ख स्वेच्छाचारी व्यक्ति के मन का निवास माया में ही होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆਸੁ ॥੭॥
गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥७॥
पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के कारण भाग्य की बदौलत मनुष्य गुरु से ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ ७ ॥

ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਧਾਵਤੁ ਫੁਨਿ ਧਾਵੈ ॥
मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥
चंचल मन अस्थिर पदार्थों के पीछे बार-बार भागता है।

ਸਾਚੇ ਸੂਚੇ ਮੈਲੁ ਨ ਭਾਵੈ ॥
साचे सूचे मैलु न भावै ॥
सत्यस्वरूप एवं पवित्र प्रभु मलिनता को पसन्द नहीं करता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੮॥੩॥
नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥८॥३॥
हे नानक ! गुरमुख ईश्वर की महिमा गायन करता रहता है ॥८॥३॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥

ਹਉਮੈ ਕਰਤਿਆ ਨਹ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥
अहंकार करने से सुख प्राप्त नहीं होता।

ਮਨਮਤਿ ਝੂਠੀ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
मनमति झूठी सचा सोइ ॥
मन की बुद्धि झूठी है। लेकिन वह प्रभु ही सत्य है।

ਸਗਲ ਬਿਗੂਤੇ ਭਾਵੈ ਦੋਇ ॥
सगल बिगूते भावै दोइ ॥
जो व्यक्ति द्वैत भाव से प्रेम करते हैं, वह सभी बर्बाद हो जाते हैं।

ਸੋ ਕਮਾਵੈ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇ ॥੧॥
सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥१॥
विधाता द्वारा जो प्राणी के भाग्य में लिखा होता है, उसी के अनुसार वह कर्म करता है। १॥

ਐਸਾ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਜੂਆਰੀ ॥
ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥
मैंने संसार को जुए का खेल खेलते देखा है

ਸਭਿ ਸੁਖ ਮਾਗੈ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥१॥ रहाउ ॥
जो प्रभु के नाम को विस्मृत करके सर्वसुखों की याचना करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਦਿਸਟੁ ਦਿਸੈ ਤਾ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥
अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥
यदि अदृश्य प्रभु देख लिया जाए केवल तभी वह वर्णन किया जा सकता है।

ਬਿਨੁ ਦੇਖੇ ਕਹਣਾ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥
बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥
बिना देखे उसका वर्णन निरर्थक है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੀਸੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥
गुरु के समक्ष रहने वाले को प्रभु सहज ही दिखाई देता है।

ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥२॥
हे प्राणी ! अपनी वृति एक ईश्वर की सेवा एवं प्रेम के साथ लगा॥ २॥

ਸੁਖੁ ਮਾਂਗਤ ਦੁਖੁ ਆਗਲ ਹੋਇ ॥
सुखु मांगत दुखु आगल होइ ॥
सुख माँगने से मनुष्य का दुख बढ़ता है।

ਸਗਲ ਵਿਕਾਰੀ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ॥
सगल विकारी हारु परोइ ॥
चूंकी इन्सान अपने गले में विकारों की माला पहन लेता है।

ਏਕ ਬਿਨਾ ਝੂਠੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥
झूठे मोह में ग्रस्त हुए इन्सान को एक परमेश्वर के नाम बिना मुक्ति नहीं मिलती।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਦੇਖੈ ਸੋਇ ॥੩॥
करि करि करता देखै सोइ ॥३॥
परमात्मा खुद ही सृष्टि-रचना करके इस खेल को देखता रहता है। ३॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਏ ॥
त्रिसना अगनि सबदि बुझाए ॥
ईश्वर का नाम तृष्णाग्नि को बुझा देता है।

ਦੂਜਾ ਭਰਮੁ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
दूजा भरमु सहजि सुभाए ॥
तब द्वैत-भाव एवं सन्देह सहज ही मिट जाते हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ॥
गुरमती नामु रिदै वसाए ॥
गुरु के उपदेश से नाम हृदय में वास करता है।

ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੪॥
साची बाणी हरि गुण गाए ॥४॥
सच्ची वाणी द्वारा मनुष्य प्रभु का यशोगान करता है॥ ४॥

ਤਨ ਮਹਿ ਸਾਚੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਉ ॥
तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु उसके मन में निवास करता है, जो गुरु के समक्ष रहकर उसके लिए प्रेम धारण करता है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਨਿਜ ਠਾਉ ॥
नाम बिना नाही निज ठाउ ॥
नाम के बिना मनुष्य अपने आत्मस्वरूप को प्राप्त नहीं करता।

ਪ੍ਰੇਮ ਪਰਾਇਣ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਉ ॥
प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥
प्रियतम पातशाह प्रेम परायण हुआ है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਬੂਝੈ ਨਾਉ ॥੫॥
नदरि करे ता बूझै नाउ ॥५॥
यदि प्रभु दया करे तो मनुष्य उसके नाम को समझ लेता है ॥५॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲਾ ॥
माइआ मोहु सरब जंजाला ॥
माया का मोह तमाम बन्धन ही है।

ਮਨਮੁਖ ਕੁਚੀਲ ਕੁਛਿਤ ਬਿਕਰਾਲਾ ॥
मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥
स्वेच्छाचारी जीव मलिन, कुत्सित एवं भयानक है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਚੂਕੈ ਜੰਜਾਲਾ ॥
सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥
सतिगुरु की सेवा से विपदा मिट जाती है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਨਾਲਾ ॥੬॥
अम्रित नामु सदा सुखु नाला ॥६॥
प्रभु के नाम अमृत से मनुष्य सदैव सुख में रहता है॥ ६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝੈ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥
गुरमुख व्यक्ति प्रभु को समझ लेता है, वह अपनी वृति एक ईश्वर में ही लगाता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥
निज घरि वासै साचि समाए ॥
वह सदैव ही अपने आत्म-स्वरूप में रहता है और सत्य में ही समाया रहता है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
जमणु मरणा ठाकि रहाए ॥
उसका आवागमन (जन्म-मरण का चक्र) मिट जाता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਇਹ ਮਤਿ ਪਾਏ ॥੭॥
पूरे गुर ते इह मति पाए ॥७॥
किन्तु यह ज्ञान उसे पूर्ण गुरु से ही मिलता है॥ ७॥

ਕਥਨੀ ਕਥਉ ਨ ਆਵੈ ਓਰੁ ॥
कथनी कथउ न आवै ओरु ॥
जिस भगवान की महिमा का कथन नहीं किया जा सकता, मैं तो उसकी ही महिमा करता हूँ।

ਗੁਰੁ ਪੁਛਿ ਦੇਖਿਆ ਨਾਹੀ ਦਰੁ ਹੋਰੁ ॥
गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥
मैंने गुरु से पूछ कर देख लिया है कि भगवान के बिना दूसरा सुख का द्वार नहीं।

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭਾਣੈ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥
दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥
दुःख एवं सुख उसके हुक्म एवं इच्छा में है।

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੮॥੪॥
नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥८॥४॥
विनीत नानक कहता है – हे प्राणी ! तू प्रभु के साथ वृति लगा ॥ ८ ॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਦੂਜੀ ਮਾਇਆ ਜਗਤ ਚਿਤ ਵਾਸੁ ॥
दूजी माइआ जगत चित वासु ॥
द्वैतवाद उत्पन्न करने वाली माया दुनिया के लोगों के मन में निवास करती है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਹੰਕਾਰ ਬਿਨਾਸੁ ॥੧॥
काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥१॥
कामवासना, क्रोध एवं अहंकार ने दुनिया के लोगों का जीवन नष्ट कर दिया है॥ १ ॥

ਦੂਜਾ ਕਉਣੁ ਕਹਾ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥
दूजा कउणु कहा नही कोई ॥
मैं दूसरा किसे कहूँ, जब प्रभु के सिवाय दूसरा कोई है ही नहीं ?

ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥१॥ रहाउ ॥
समस्त प्राणियों में वह एक पवित्र प्रभु ही मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੂਜੀ ਦੁਰਮਤਿ ਆਖੈ ਦੋਇ ॥
दूजी दुरमति आखै दोइ ॥
द्वैतवाद उत्पन्न करने वाली माया ही इन्सान की खोटी बुद्धि को कहती रहती है कि उसका अस्तित्व परमात्मा से अलग है।

ਆਵੈ ਜਾਇ ਮਰਿ ਦੂਜਾ ਹੋਇ ॥੨॥
आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥२॥
जिसके फलस्वरूप इन्सान दुनिया में जन्मता-मरता रहता है जो द्वैतवाद की प्रीति धारण करता

ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਨਹ ਦੇਖਉ ਦੋਇ ॥
धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥
धरती एवं अम्बर पर मुझे दूसरा कोई दिखाई नहीं देता।

ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਸਬਾਈ ਲੋਇ ॥੩॥
नारी पुरख सबाई लोइ ॥३॥
तमाम नारियों एवं पुरुषों में ईश्वर की ज्योति मौजूद है॥३॥

ਰਵਿ ਸਸਿ ਦੇਖਉ ਦੀਪਕ ਉਜਿਆਲਾ ॥
रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥
मैं सूर्य, चन्द्रमा एवं दीपकों में ईश्वर का प्रकाश देखता हूँ।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਬਾਲਾ ॥੪॥
सरब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥४॥
प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर में मेरा यौवन सम्पन्न प्रियतम प्रभु ही दिखाई दे रहा है॥ ४॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥
अपनी कृपा करके गुरु ने मेरा मन प्रभु के साथ लगा दिया है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਏਕੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥੫॥
सतिगुरि मो कउ एकु बुझाइआ ॥५॥
सतिगुरु ने मुझे एक ईश्वर दिखा दिया है॥ ५॥

ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥
एकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥
गुरमुख एक निरंजन को ही जानता है।

ਦੂਜਾ ਮਾਰਿ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥੬॥
दूजा मारि सबदि पछाता ॥६॥
सांसारिक मोह को मिटा कर वह प्रभु को पहचान लेता है ॥६॥

ਏਕੋ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਲੋਈ ॥
एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥
ईश्वर का हुक्म ही समस्त लोकों में क्रियाशील है।

ਤੇ ਸਭ ਓਪਤਿ ਹੋਈ ॥੭॥
एकसु ते सभ ओपति होई ॥७॥
एक ईश्वर से ही सभी उत्पन्न हुए हैं॥ ७॥

ਰਾਹ ਦੋਵੈ ਖਸਮੁ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥
राह दोवै खसमु एको जाणु ॥
"(मनमुख एवं गुरमुख) मार्ग दो हैं परन्तु सबका मालिक एक है, उसे ही समझो।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੮॥
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥८॥
गुरु के शब्द द्वारा उसके हुक्म को पहचान ॥ ८ ॥

ਸਗਲ ਰੂਪ ਵਰਨ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
सगल रूप वरन मन माही ॥
जो तमाम रूपों, रंगों एवं ह्रदयों में व्यापक है,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਸਾਲਾਹੀ ॥੯॥੫॥
कहु नानक एको सालाही ॥९॥५॥
हे नानक ! मैं एक ईश्वर की प्रशंसा करता हूँ ॥ ६ ॥ ५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਅਧਿਆਤਮ ਕਰਮ ਕਰੇ ਤਾ ਸਾਚਾ ॥
अधिआतम करम करे ता साचा ॥
यदि मनुष्य आध्यात्मिक कर्म करे तो ही वह सत्यवादी है।

ਮੁਕਤਿ ਭੇਦੁ ਕਿਆ ਜਾਣੈ ਕਾਚਾ ॥੧॥
मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥१॥
झूठा मनुष्य मोक्ष के भेद को क्या समझ सकता है ? ॥ १॥

ਐਸਾ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਬੀਚਾਰੈ ॥
ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥
ऐसा मनुष्य ही योगी है, जो प्रभु के मिलन-मार्ग का विचार करता है

ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਸਾਚੁ ਉਰਿ ਧਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पंच मारि साचु उरि धारै ॥१॥ रहाउ ॥
तथा पाँच कट्टर शत्रुओं (कामादिक विकारों) का वध करके सत्य (परमेश्वर) को अपने हृदय से लगाकर रखता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਵਸਾਵੈ ॥
जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥
ईश्वर जिसके हृदय में सत्य को बसाता है।

ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਵੈ ॥੨॥
जोग जुगति की कीमति पावै ॥२॥
वह उसके साथ योग युक्ति (मिलन मार्ग) के मूल्य को अनुभव कर लेता है॥ २॥

ਰਵਿ ਸਸਿ ਏਕੋ ਗ੍ਰਿਹ ਉਦਿਆਨੈ ॥
रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै ॥
एक ईश्वर को वह सूर्य, चन्द्रमा, गृह एवं वन में देखता है।

ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਸਮਾਨੈ ॥੩॥
करणी कीरति करम समानै ॥३॥
ईश्वर का यश रूपी कर्म उसकी सामान्य करनी है॥ ३ ॥

ऐक सबद इक भिखिआ मागै ॥
एक सबद इक भिखिआ मागै ॥
वह केवल नाम का भजन करता है और एक ही ईश्वर के नाम का दान माँगता है।

गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥४॥
गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥४॥
वह ज्ञान, ध्यान, जीवन युक्ति एवं सत्य में ही जागृत रहता है॥ ४॥

भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥
भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥
वह ईश्वर के भय में लीन रहता है और कदापि उस भय से बाहर नहीं होता।

कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥५॥
कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥५॥
वह प्रभु की वृति में लीन रहता है। ऐसे योगी का मूल्य कौन पा सकता है॥ ५॥

आपे मेले भरमु चुकाए ॥
आपे मेले भरमु चुकाए ॥
ईश्वर उसकी दुविधा दूर कर देता है और उसे अपने साथ मिला लेता है।

गुर परसादि परम पदु पाए ॥६॥
गुर परसादि परम पदु पाए ॥६॥
गुरु की कृपा से वह परम पद प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥
गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥
वह गुरु की सेवा करता और शब्द का चिंतन करता रहता है।

हउमै मारे करणी सारु ॥७॥
हउमै मारे करणी सारु ॥७॥
वह अपने अहंकार को मिटाकर शुभ कर्म करता है॥ ७ ॥

जप तप संजम पाठ पुराणु ॥
जप तप संजम पाठ पुराणु ॥
जाप, तपस्या, संयम एवं पुराणों का पाठ

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਪਰੰਪਰ ਮਾਨੁ ॥੮॥੬॥
कहु नानक अपर्मपर मानु ॥८॥६॥
हे नानक ! अपरंपार ईश्वर में आस्था धारण करना ही है॥ ८॥ ६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਖਿਮਾ ਗਹੀ ਬ੍ਰਤੁ ਸੀਲ ਸੰਤੋਖੰ ॥
खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
क्षमा कर देने का स्वभाव धारण करना मेरे लिए उपवास, उत्तम आचरण एवं संतोष है।

ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਨਾ ਜਮ ਦੋਖੰ ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥
इसलिए न रोग और न ही मृत्यु की पीड़ा मुझे तंग करती है।

ਮੁਕਤ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਰੂਪ ਨ ਰੇਖੰ ॥੧॥
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥१॥
मैं रूपरेखा रहित ईश्वर में लीन होकर मुक्त हो गया हूँ॥ १॥

ਜੋਗੀ ਕਉ ਕੈਸਾ ਡਰੁ ਹੋਇ ॥
जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥
उस योगी को कैसा भय हो सकता है,

ਰੂਖਿ ਬਿਰਖਿ ਗ੍ਰਿਹਿ ਬਾਹਰਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
जब वह प्रभु पेड़-पौधों एवं घर के भीतर एवं बाहर सर्वत्र व्यापक है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਿਰਭਉ ਜੋਗੀ ਨਿਰੰਜਨੁ ਧਿਆਵੈ ॥
निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥
निर्भय योगी निरंजन प्रभु का ध्यान करता रहता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥
अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥
वह रात-दिन मोह-माया से जाग्रत रहता है और सत्य नाम के साथ वृति लगाता है।

ਸੋ ਜੋਗੀ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੨॥
सो जोगी मेरै मनि भावै ॥२॥
ऐसा योगी मेरे मन को भला लगता है॥ २॥

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਬ੍ਰਹਮ ਅਗਨੀ ਜਾਰੇ ॥
कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥
मृत्यु के जाल को वह ब्रह्म (के तेज) की अग्नि से जला देता है।

ਜਰਾ ਮਰਣ ਗਤੁ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥
जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥
वह बुढापे एवं मृत्यु के भय को निवृत्त कर देता है और अपने अहंकार को मिटा देता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਪਿਤਰੀ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥
आपि तरै पितरी निसतारे ॥३॥
ऐसा योगी स्वयं तो भवसागर पार हो जाता है और अपने पूर्वजों को भी बचा लेता है ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਜੋਗੀ ਹੋਇ ॥
सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥
वही व्यक्ति योगी है, जो सतिगुरु की सेवा करता है।

ਭੈ ਰਚਿ ਰਹੈ ਸੁ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ॥
भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥
जो ईश्वर के भय में लीन रहता है, वह निडर हो जाता है।

ਜੈਸਾ ਸੇਵੈ ਤੈਸੋ ਹੋਇ ॥੪॥
जैसा सेवै तैसो होइ ॥४॥
प्राणी जैसे प्रभु की सेवा करता है, वैसा ही आप बन जाता है॥ ४॥

ਨਰ ਨਿਹਕੇਵਲ ਨਿਰਭਉ ਨਾਉ ॥
नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥
प्राणी निर्भय प्रभु का नाम स्मरण करके पवित्र एवं निडर हो जाता है।

ਅਨਾਥਹ ਨਾਥ ਕਰੇ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥
प्रभु निराश्रितों को आश्रयवान बना देता है। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ।

ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨਾਹੀ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੫॥
पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥५॥
उसकी गुणस्तुति करने से मनुष्य इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेता॥ ५॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥
अंतरि बाहरि एको जाणै ॥
जो भीतर एवं बाहर एक ईश्वर को पहचानता है

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦੇ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥
गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥
और जो गुरु के शब्द द्वारा अपने आपको समझता है,

ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਦਰਿ ਨੀਸਾਣੈ ॥੬॥
साचै सबदि दरि नीसाणै ॥६॥
प्रभु के दरबार में उस पर सत्यनाम का चिन्ह विद्यमान होता है॥ ६॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਿਸੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥
सबदि मरै तिसु निज घरि वासा ॥
जो शब्द पर मरता है, उसका निवास सदा ही आत्मस्वरूप में रहता है।

ਆਵੈ ਨ ਜਾਵੈ ਚੂਕੈ ਆਸਾ ॥
आवै न जावै चूकै आसा ॥
उसकी तृष्णा मिट जाती है और वह जीवन-मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ता।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥੭॥
गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥७॥
गुरु के शब्द द्वारा उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है॥ ७ ॥

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਆਸ ਨਿਰਾਸਾ ॥
जो दीसै सो आस निरासा ॥
जो कोई भी दिखाई देता है, वह आशा, निराशा,

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਭੂਖ ਪਿਆਸਾ ॥
काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥
कामचेष्टा, क्रोध, माया की भूख का प्यासा है।

ਨਾਨਕ ਬਿਰਲੇ ਮਿਲਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥੮॥੭॥
नानक बिरले मिलहि उदासा ॥८॥७॥
हे नानक ! कोई विरला जगत् का त्यागी ही प्रभु को मिलता है॥ ८ ॥ ७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਐਸੋ ਦਾਸੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥
ऐसे सेवक को मिलने से सुख प्राप्त होता है एवं

ਦੁਖੁ ਵਿਸਰੈ ਪਾਵੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੧॥
दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥१॥
दुख दूर हो जाता है, जिसने सत्य स्वरूप ईश्वर को पा लिया है ॥ १॥

ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਭਈ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ॥
दरसनु देखि भई मति पूरी ॥
उसके दर्शन करने से मेरी बुद्धि पूर्ण हो गई है।

ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਚਰਨਹ ਧੂਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥१॥ रहाउ ॥
उसकी चरण-धूलि अठसठ तीर्थों का स्नान है॥ १॥ रहाउ॥

ਨੇਤ੍ਰ ਸੰਤੋਖੇ ਏਕ ਲਿਵ ਤਾਰਾ ॥
नेत्र संतोखे एक लिव तारा ॥
एक ईश्वर में सुरति लगाने से मेरे नेत्र संतुष्ट हो गए हैं।

ਜਿਹਵਾ ਸੂਚੀ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਰਾ ॥੨॥
जिहवा सूची हरि रस सारा ॥२॥
हरि रस से मेरी जिव्हा शुद्ध हो गई है॥ २॥

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਸੇਵਾ ॥
सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥
मेरी करनी सत्य है और मेरे हृदय में प्रभु की सेवा विद्यमान है।

ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਿਆ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੩॥
मनु त्रिपतासिआ अलख अभेवा ॥३॥
अलक्ष्य तथा अकल्पनीय प्रभु से मेरा मन संतुष्ट हो गया है। ३॥

ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਤਹ ਸਾਚਾ ॥
जह जह देखउ तह तह साचा ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहीं मैं सत्य स्वरूप ईश्वर के दर्शन करता हूँ।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਝਗਰਤ ਜਗੁ ਕਾਚਾ ॥੪॥
बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥४॥
प्रभु की सूझ के बिना मिथ्या संसार विवाद करता है॥ ४ ॥

ਗੁਰੁ ਸਮਝਾਵੈ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
गुरु समझावै सोझी होई ॥
जब गुरु उपदेश प्रदान करते हैं तो सूझ प्राप्त हो जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥੫॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥५॥
कोई विरला गुरमुख ही प्रभु को पहचानता है॥ ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਰਖਵਾਲੇ ॥
करि किरपा राखहु रखवाले ॥
हे रखवाले प्रभु ! कृपा करके हमारी रक्षा करो।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਪਸੂ ਭਏ ਬੇਤਾਲੇ ॥੬॥
बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥६॥
प्रभु की सूझ बिना प्राणी पशु एवं प्रेत वृति हो रहे हैं।॥ ६॥

ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਦੂਜਾ ॥
गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥
गुरु जी ने कहा है, ईश्वर बिना दूसरा कोई नहीं।

ਕਿਸੁ ਕਹੁ ਦੇਖਿ ਕਰਉ ਅਨ ਪੂਜਾ ॥੭॥
किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥७॥
बताइये दूसरा किस को देखें और किस की पूजा करू॥ ७॥

ਸੰਤ ਹੇਤਿ ਪ੍ਰਭਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਧਾਰੇ ॥
संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥
संतजनों हेतु ईश्वर ने तीन लोक स्थापित किए हैं।

ਆਤਮੁ ਚੀਨੈ ਸੁ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੮॥
आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥८॥
जो अपने आत्म-स्वरूप को समझता है, वह वास्तविकता को समझ लेता है ॥८॥

ਸਾਚੁ ਰਿਦੈ ਸਚੁ ਪ੍ਰੇਮ ਨਿਵਾਸ ॥
साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥
जिसके हृदय में सत्य निवास करता है, ईश्वर का प्रेम उसके हृदय में ही रहता है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਹਮ ਤਾ ਕੇ ਦਾਸ ॥੯॥੮॥
प्रणवति नानक हम ता के दास ॥९॥८॥
नानक प्रार्थना करता है - मैं भी उसका दास हूँ ॥६॥८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਬ੍ਰਹਮੈ ਗਰਬੁ ਕੀਆ ਨਹੀ ਜਾਨਿਆ ॥
ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥
ब्रह्मा ने अभिमान किया (कि मैं महान हूँ फिर कमल नाभि से कैसे पैदा हो सकता हूँ) उसने भगवान की महिमा को नहीं समझा।

बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥
बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥
जब उसका घमंड तोड़ने के लिए उस पर वेदों के चुराए जाने की विपदा पड़ी तो उसने पश्चाताप किया।

जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥
जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥
जब उसने ईश्वर को स्मरण किया तो उसे आस्था हुई कि ईश्वर ही महान है। १॥

ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥
ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥
दुनिया में अहंकार का विकार बहुत बुरा है।

जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे गुरु जी मिल जाते हैं, वह उसका अहंकार दूर कर देते हैं॥ १॥ रहाउ॥

बलि राजा माइआ अहंकारी ॥
बलि राजा माइआ अहंकारी ॥
राजा बलि को धन-दौलत का बहुत अभिमान था।

जगन करै बहु भार अफारी ॥
जगन करै बहु भार अफारी ॥
उसने बहुत सारे यज्ञ किए, अहंकारवश बड़ा घमंडी हो गया।

बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥२॥
बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥२॥
अपने गुरु शुक्राचार्य से पूछे बिना ही उसने विष्णु अवतार भगवान वामन को दान देना स्वीकार कर लिया था। जिसके कारण उसको पाताल में जाना पड़ा ॥ २॥

ਹਰੀਚੰਦੁ ਦਾਨੁ ਕਰੈ ਜਸੁ ਲੇਵੈ ॥
हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥
राजा हरिश्चन्द्र ने बहुत दान किया और बड़ा यश प्राप्त किया।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇ ਅਭੇਵੈ ॥
बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥
लेकिन गुरु के बिना उसको ईश्वर के अन्त का पता न लगा।

ਆਪਿ ਭੁਲਾਇ ਆਪੇ ਮਤਿ ਦੇਵੈ ॥੩॥
आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥३॥
प्रभु स्वयं ही गुमराह करता है और स्वयं ही ज्ञान प्रदान करता है॥ ३॥

ਦੁਰਮਤਿ ਹਰਣਾਖਸੁ ਦੁਰਾਚਾਰੀ ॥
दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥
दुर्बुद्धि हिरण्यकशिपु बड़ा अत्याचारी शासक था।

ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਗਰਬ ਪ੍ਰਹਾਰੀ ॥
प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥
नारायण स्वयं ही अहंकारियों का अहंकार नाश करने वाला है।

ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਉਧਾਰੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੪॥
प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥४॥
कृपा के घर नारायण ने नृसिंह अवतार धारण करके अपने भक्त प्रहलाद का उद्धार किया था॥ ४॥

ਭੂਲੋ ਰਾਵਣੁ ਮੁਗਧੁ ਅਚੇਤਿ ॥
भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥
मूर्ख एवं चेतना रहित रावण ने प्रभु को विस्मृत कर दिया।

ਲੂਟੀ ਲੰਕਾ ਸੀਸ ਸਮੇਤਿ ॥
लूटी लंका सीस समेति ॥
उसकी सोने की लंका लुट गई और उसका सिर भी कट गया।

ਗਰਬਿ ਗਇਆ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਹੇਤਿ ॥੫॥
गरबि गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥५॥
अहंकारवश गुरु की शरण लिए बिना रावण का विनाश हुआ था॥ ५ ॥

ਸਹਸਬਾਹੁ ਮਧੁ ਕੀਟ ਮਹਿਖਾਸਾ ॥
सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥
हजार भुजाओं वाले सहस्त्रबाहु का परशुराम ने वध किया, मधु तथा कैटभ का विष्णु ने वध किया, महिषासुर का माता दुर्गा के हाथों वध हुआ,

ਹਰਣਾਖਸੁ ਲੇ ਨਖਹੁ ਬਿਧਾਸਾ ॥
हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥
हिरण्यकशिपु का नृसिंह भगवान ने नाखुनों से वध किया।

ਦੈਤ ਸੰਘਾਰੇ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਅਭਿਆਸਾ ॥੬॥
दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥६॥
ये समस्त दानव-राक्षस प्रभु की भक्ति से विहीन होने के कारण मारे गए॥ ६ ॥

ਜਰਾਸੰਧਿ ਕਾਲਜਮੁਨ ਸੰਘਾਰੇ ॥
जरासंधि कालजमुन संघारे ॥
जरासंध तथा कालयवन प्रभु द्वारा नष्ट किए गए।

ਰਕਤਬੀਜੁ ਕਾਲੁਨੇਮੁ ਬਿਦਾਰੇ ॥
रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥
रक्तबीज (माता दुर्गा के हाथों) मारा गया तथा कालनेमि भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से मारा गया

ਦੈਤ ਸੰਘਾਰਿ ਸੰਤ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੭॥
दैत संघारि संत निसतारे ॥७॥
ईश्वर ने राक्षसों का वध करके ऋषि-मुनियों की रक्षा की।॥ ७ ॥

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥
आपे सतिगुरु सबदु बीचारे ॥
ईश्वर स्वयं ही गुरु रूप होकर अपने नाम की आराधना करता है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੈਤ ਸੰਘਾਰੇ ॥
दूजै भाइ दैत संघारे ॥
ईश्वर ने द्वैतभाव के कारण मोह-माया में फँसे राक्षसों का विनाश कर दिया।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਭਗਤਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੮॥
गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥८॥
उनकी सच्ची सेवा-भक्ति के कारण प्रभु ने गुरु के समक्ष आई पवित्र आत्माओं का कल्याण कर दिया ॥ ८॥

ਬੂਡਾ ਦੁਰਜੋਧਨੁ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥
अहंकार में डूबकर दुर्योधन ने अपनी प्रतिष्ठा गंवा दी।

ਰਾਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥
रामु न जानिआ करता सोई ॥
अहंकारवश उसने सर्वव्यापक प्रभु करतार को स्मरण न किया।

ਜਨ ਕਉ ਦੂਖਿ ਪਚੈ ਦੁਖੁ ਹੋਈ ॥੯॥
जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥९॥
जो ईश्वर के सेवक को दुख देता है, वह स्वयं पीड़ा में दुखी होता है॥ ६॥

ਜਨਮੇਜੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥
जनमेजै गुर सबदु न जानिआ ॥
राजा जन्मेजय ने अपने गुरु के शब्द को न समझा।

ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਿਆ ॥
किउ सुखु पावै भरमि भुलानिआ ॥
भ्रम में कुमार्गगामी होकर वह सुख किस तरह पा सकता था।

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਭੂਲੇ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਨਿਆ ॥੧੦॥
इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिआ ॥१०॥
ईश्वर को थोड़ी देर के लिए भूलकर मनुष्य बाद में पश्चाताप करता है॥ १० ॥

ਕੰਸੁ ਕੇਸੁ ਚਾਂਡੂਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
कंसु केसु चांडूरु न कोई ॥
मथुरा का राजा कंस, केशी एवं चांडूर के तुल्य कोई नहीं था।

ਰਾਮੁ ਨ ਚੀਨਿਆ ਅਪਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥
परन्तु अहंकारवश ईश्वर को समझे बिना उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा गंवा दी।

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਨ ਰਾਖੈ ਕੋਈ ॥੧੧॥
बिनु जगदीस न राखै कोई ॥११॥
सृष्टिकर्ता जगदीश के अलावा कोई भी प्राणी को बचा नहीं सकता॥ ११॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਰਬੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਇ ॥
बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥
गुरु के बिना अहंत्व मिटाया नहीं जा सकता।

ਗੁਰਮਤਿ ਧਰਮੁ ਧੀਰਜੁ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
गुरमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥
गुरु की शिक्षा द्वारा धर्म, धैर्य एवं परमेश्वर का नाम प्राप्त होते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧੨॥੯॥
नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥१२॥९॥
हे नानक ! ईश्वर की महिमा गायन करने से ही नाम प्राप्त होता है।॥ १२॥ ९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ ਅੰਕਿ ਚੜਾਵਉ ॥
चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥
यद्यपि मैं चन्दन का इत्र अपनी देह पर लगा लूं,

ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਪਹਿਰਿ ਹਢਾਵਉ ॥
पाट पट्मबर पहिरि हढावउ ॥
अपनी देहि पर रेशम एवं रेशमी वस्त्र पहन लू तो भी

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਉ ॥੧॥
बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ ॥१॥
ईश्वर के नाम बिना कहाँ सुख प्राप्त कर सकता हूँ? ॥ १॥

ਕਿਆ ਪਹਿਰਉ ਕਿਆ ਓਢਿ ਦਿਖਾਵਉ ॥
किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥
मैं क्या पहनूं और कौन-सी परिधान में अपने आपको प्रकट करूँ ?

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
सृष्टि के स्वामी जगदीश के बिना में कैसे सुख प्राप्त कर सकता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਨੀ ਕੁੰਡਲ ਗਲਿ ਮੋਤੀਅਨ ਕੀ ਮਾਲਾ ॥
कानी कुंडल गलि मोतीअन की माला ॥
यदि मैं कानों में कुण्डल पहन लू और गले में मोतियों की माला हो।

ਲਾਲ ਨਿਹਾਲੀ ਫੂਲ ਗੁਲਾਲਾ ॥
लाल निहाली फूल गुलाला ॥
मेरे पास चाहे लाल पलंग पोश एवं पुष्प गुलाल बिखेरा हो।

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ ਸੁਖੁ ਭਾਲਾ ॥੨॥
बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥२॥
फिर भी जगत् के रचयिता जगदीश के सिवाय मुझे कहाँ सुख प्राप्त हो सकता है॥ २॥

ਨੈਨ ਸਲੋਨੀ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ॥
नैन सलोनी सुंदर नारी ॥
मेरे पास चाहे सुन्दर नयनों वाली रूपवती नारी हो,

ਖੋੜ ਸੀਗਾਰ ਕਰੈ ਅਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥
खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥
वह सोलह प्रकार का हार-श्रृंगार लगाए और अपने आपको परम मनमोहिनी बना ले।

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਭਜੇ ਨਿਤ ਖੁਆਰੀ ॥੩॥
बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥३॥
फिर भी परमात्मा के भजन के बिना नित्य दुख ही मिलता है॥ ३॥

ਦਰ ਘਰ ਮਹਲਾ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ॥
दर घर महला सेज सुखाली ॥
अपने घर द्वार के मन्दिर में मनुष्य के पास चाहे सुखदायक पलंग हो,

ਅਹਿਨਿਸਿ ਫੂਲ ਬਿਛਾਵੈ ਮਾਲੀ ॥
अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥
उस पर माली रात-दिन फूल बिखेरता रहे किन्तु

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸੁ ਦੇਹ ਦੁਖਾਲੀ ॥੪॥
बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥४॥
फिर भी प्रभु के नाम सिमरन बिना उसका शरीर दुखी ही होगा ॥ ४॥

ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਨੇਜੇ ਵਾਜੇ ॥
हैवर गैवर नेजे वाजे ॥
यदि मेरे पास कुशल घोड़े, बढ़िया हाथी, नेजे, बाजे,

ਲਸਕਰ ਨੇਬ ਖਵਾਸੀ ਪਾਜੇ ॥
लसकर नेब खवासी पाजे ॥
सेना, द्वारपाल, सरकारी कर्मचारी हों, यह सारा आडम्बर हो,

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਝੂਠੇ ਦਿਵਾਜੇ ॥੫॥
बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥५॥
फिर भी जगत् के स्वामी जगदीश के भजन बिना ये सब आडम्बर व्यर्थ हैं॥ ५॥

ਸਿਧੁ ਕਹਾਵਉ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਬੁਲਾਵਉ ॥
सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥
यदि मैं अपने आपको करामाती सिद्ध कहलवाऊँ एवं ऋद्धियों-सिद्धियों को अपने पास बुला लूं,

ਤਾਜ ਕੁਲਹ ਸਿਰਿ ਛਤ੍ਰ ਬਨਾਵਉ ॥
ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥
अपने सीस के लिए मैं चाहे राजसी मुकुट एवं शाही छत्र झुला हैं,

ਬਿਨੁ ਜਗਦੀਸ ਕਹਾ ਸਚੁ ਪਾਵਉ ॥੬॥
बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥६॥
फिर भी जगदीश के भजन बिना मैं कहाँ सत्य प्राप्त कर सकता हूँ॥ ६॥

ਖਾਨੁ ਮਲੂਕੁ ਕਹਾਵਉ ਰਾਜਾ ॥
खानु मलूकु कहावउ राजा ॥
यदि मैं अपने आपको सरदार, शहंशाह एवं राजा बनकर कहलवाऊँ,

ਅਬੇ ਤਬੇ ਕੂੜੇ ਹੈ ਪਾਜਾ ॥
अबे तबे कूड़े है पाजा ॥
अहंकार में सरकारी कर्मियों को डांट झिड़क भी सकूं, परन्तु यह सब कुछ झूठा आडम्बर है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਸਵਰਸਿ ਕਾਜਾ ॥੭॥
बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥७॥
गुरु के शब्द बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता ॥ ७॥

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਸਾਰੀ ॥
हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥
अहंकार एवं अहंत्व को मैंने गुरु के शब्द से भुला दिया है।

ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਨਿਆ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰੀ ॥
गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥
गुरु की शिक्षा से मुरारी प्रभु को अपने हृदय में मैंने जान लिया है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੮॥੧੦॥
प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥८॥१०॥
नानक वन्दना करता है- हे प्रभु ! मैं तुम्हारी ही शरण में हूँ॥ ८॥ १०

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਸੇਵਾ ਏਕ ਨ ਜਾਨਸਿ ਅਵਰੇ ॥
सेवा एक न जानसि अवरे ॥
हे भाई ! जो व्यक्ति एक ईश्वर की सेवा-भक्ति करता है, वह ईश्वर के सिवाय किसी दूसरे को नहीं जानता।

ਪਰਪੰਚ ਬਿਆਧਿ ਤਿਆਗੈ ਕਵਰੇ ॥
परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥
वह कड़वे सांसारिक (कामादिक) विकारों को त्याग देता है।

ਭਾਇ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਸਾਚੈ ਸਚੁ ਰੇ ॥੧॥
भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥१॥
ईश्वर के प्रेम एवं सत्य द्वारा वह सत्यस्वरूप प्रभु में मिल जाता है॥ १॥

ਐਸਾ ਰਾਮ ਭਗਤੁ ਜਨੁ ਹੋਈ ॥
ऐसा राम भगतु जनु होई ॥
ऐसा व्यक्ति ही राम का भक्त होता है,

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮਿਲੈ ਮਲੁ ਧੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुण गाइ मिलै मलु धोई ॥१॥ रहाउ ॥
जो अपनी मलिनता को धो देता है और प्रभु की गुणस्तुति करके प्रभु में ही मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਊਂਧੋ ਕਵਲੁ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੈ ॥
ऊंधो कवलु सगल संसारै ॥
सारी दुनिया का हृदय कंवल विपरीत है।

ਦੁਰਮਤਿ ਅਗਨਿ ਜਗਤ ਪਰਜਾਰੈ ॥
दुरमति अगनि जगत परजारै ॥
दुर्बुद्धि की अग्नि संसार को जला रही है।

ਸੋ ਉਬਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥੨॥
सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥२॥
वही प्राणी बच जाता है, जो गुरु के शब्द का ध्यान करता है ॥ २ ॥

ਭ੍ਰਿੰਗ ਪਤੰਗੁ ਕੁੰਚਰੁ ਅਰੁ ਮੀਨਾ ॥
भ्रिंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥
भँवरा, परवाना, हाथी, मछली एवं मृग

ਮਿਰਗੁ ਮਰੈ ਸਹਿ ਅਪੁਨਾ ਕੀਨਾ ॥
मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥
अपने किए कर्मों का फल प्राप्त करते हैं और फिर मर जाते हैं।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਰਾਚਿ ਤਤੁ ਨਹੀ ਬੀਨਾ ॥੩॥
त्रिसना राचि ततु नही बीना ॥३॥
तृष्णा में लीन होकर वे वास्तविकता को नहीं देखते ॥ ३॥

ਕਾਮੁ ਚਿਤੈ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥
कामु चितै कामणि हितकारी ॥
कामिनी (नारी) का प्रेमी भोग-विलास का ध्यान करता है।

ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਿਨਾਸੈ ਸਗਲ ਵਿਕਾਰੀ ॥
क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥
क्रोध सभी विकारियों को नष्ट कर देता है।

ਪਤਿ ਮਤਿ ਖੋਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥੪॥
पति मति खोवहि नामु विसारी ॥४॥
प्रभु-नाम को विस्मृत करके मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा एवं बुद्धि गंवा देता है॥ ४॥

ਪਰ ਘਰਿ ਚੀਤੁ ਮਨਮੁਖਿ ਡੋਲਾਇ ॥
पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥
स्वेच्छाचारी इन्सान का मन पराई नारी की लालसा करता है।

ਗਲਿ ਜੇਵਰੀ ਧੰਧੈ ਲਪਟਾਇ ॥
गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥
उसकी गर्दन पर मृत्यु का फँदा होता है और वह सांसारिक विवादों में फंसा रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟਸਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੫॥
गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥५॥
गुरमुख की ईश्वर की गुणस्तुति करने से मुक्ति हो जाती है॥ ५॥

ਜਿਉ ਤਨੁ ਬਿਧਵਾ ਪਰ ਕਉ ਦੇਈ ॥
जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥
जिस प्रकार एक आचरणहीन नारी, जो अपना तन पराए पुरुष को अर्पित कर देती हैं

ਕਾਮਿ ਦਾਮਿ ਚਿਤੁ ਪਰ ਵਸਿ ਸੇਈ ॥
कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥
और भोगविलास अथवा धन की खातिर जिसका मन दूसरे के वश में हो जाता है,

ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਕਬਹੂੰ ਹੋਈ ॥੬॥
बिनु पिर त्रिपति न कबहूं होई ॥६॥
उसे अपने पति बिना संतोष नहीं होता। द्वैत भाव वाला मनुष्य वैसा ही है॥ ६॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੋਥੀ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪਾਠਾ ॥
पड़ि पड़ि पोथी सिम्रिति पाठा ॥
प्राणी ग्रंथों का अध्ययन करता है, स्मृतियों का पाठ करता है

ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ ਪੜੈ ਸੁਣਿ ਥਾਟਾ ॥
बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥
और वेदों, पुराणों एवं दूसरी रचनाओं का अध्ययन करता उसे सुनता है।

ਬਿਨੁ ਰਸ ਰਾਤੇ ਮਨੁ ਬਹੁ ਨਾਟਾ ॥੭॥
बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥७॥
परन्तु नाम-रस के साथ अनुरक्त हुए बिना मन बहुत डोलता है॥ ७ ॥

ਜਿਉ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਜਲ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਸਾ ॥
जिउ चात्रिक जल प्रेम पिआसा ॥
जैसे चात्रिक का वर्षा की बूंदों के साथ प्रेम एवं उल्लास है,"

ਜਿਉ ਮੀਨਾ ਜਲ ਮਾਹਿ ਉਲਾਸਾ ॥
जिउ मीना जल माहि उलासा ॥
जैसे मछली जल में प्रसन्न होती है,

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਾ ॥੮॥੧੧॥
नानक हरि रसु पी त्रिपतासा ॥८॥११॥
वैसे ही नानक हरि रस का पान करके तृप्त हो गया है॥ ८॥ ११॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਹਠੁ ਕਰਿ ਮਰੈ ਨ ਲੇਖੈ ਪਾਵੈ ॥
हठु करि मरै न लेखै पावै ॥
जो व्यक्ति हठ करके मरता है, वह स्वीकार नहीं होता,

ਵੇਸ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਸਮ ਲਗਾਵੈ ॥
वेस करै बहु भसम लगावै ॥
चाहे वह धार्मिक वेशभूषा पहन ले अथवा अपने शरीर पर अधिकतर विभूति लगा ले।

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ॥੧॥
नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥१॥
प्रभु नाम को विस्मृत करके वह अंततः पश्चाताप करता है॥ १॥

ਤੂੰ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੂੰ ਮਨਿ ਸੁਖ ॥
तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥
हे भाई ! तू पारब्रह्म प्रभु की आराधना कर और अपने मन में आत्मिक सुख प्राप्त कर।

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਸਹਹਿ ਜਮ ਦੂਖ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु के नाम को विस्मृत करके तू मृत्यु का कष्ट सहन करेगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਅਗਰ ਕਪੂਰਿ ॥
चोआ चंदन अगर कपूरि ॥
चन्दन, अगर, कपूर, इत्र इत्यादि सुगन्धियां एवं

ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਪਰਮ ਪਦੁ ਦੂਰਿ ॥
माइआ मगनु परम पदु दूरि ॥
सांसारिक पदार्थों की मस्ती मनुष्य को परम पद से बहुत दूर ले जाती है।

ਨਾਮਿ ਬਿਸਾਰਿਐ ਸਭੁ ਕੂੜੋ ਕੂਰਿ ॥੨॥
नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥२॥
प्रभु नाम को विस्मृत करके वह तमाम झूठों का झूठा अर्थात् व्यर्थ हो जाता है॥ २॥

ਨੇਜੇ ਵਾਜੇ ਤਖਤਿ ਸਲਾਮੁ ॥
नेजे वाजे तखति सलामु ॥
नेजे, बैंड बाजे, राजसिंघासन एवं दूसरों से नमस्कारे

ਅਧਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਵਿਆਪੈ ਕਾਮੁ ॥
अधकी त्रिसना विआपै कामु ॥
लालसा को बढ़ाते हैं और प्राणी कामवासना में लीन हो जाता है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜਾਚੇ ਭਗਤਿ ਨ ਨਾਮੁ ॥੩॥
बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥३॥
भगवान के दर से मांगे बिना उसकी भक्ति एवं नाम प्राप्त नहीं होते ॥ ३॥

ਵਾਦਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਾ ॥
वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥
वाद-विवाद एवं अहंकार के कारण प्रभु से मिलन नहीं होता।

ਮਨੁ ਦੇ ਪਾਵਹਿ ਨਾਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥
मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥
अपने मन को प्रभु के समक्ष अर्पित करने से मनुष्य सुखदायक नाम को प्राप्त कर लेता है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਅਗਿਆਨੁ ਦੁਹੇਲਾ ॥੪॥
दूजै भाइ अगिआनु दुहेला ॥४॥
अज्ञानता द्वारा प्राणी दूसरे की चाहत में उलझ जाता है, जो उसे बहुत दुखी कर देती है॥ ४ ॥

ਬਿਨੁ ਦਮ ਕੇ ਸਉਦਾ ਨਹੀ ਹਾਟ ॥
बिनु दम के सउदा नही हाट ॥
जैसे मूल्य बिना दुकान से सौदा प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਬਿਨੁ ਬੋਹਿਥ ਸਾਗਰ ਨਹੀ ਵਾਟ ॥
बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥
जैसे जहाज के बिना सागर की यात्रा नहीं की जा सकती।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਘਾਟੇ ਘਾਟਿ ॥੫॥
बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥५॥
वैसे ही गुरु की सेवा बिना आत्मिक पूंजी की दृष्टि से नुक्सान ही नुक्सान होता है॥ ५ ॥

ਤਿਸ ਕਉ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ ਵਾਟ ਦਿਖਾਵੈ ॥
तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥
"(हे भाई !) वह गुरु धन्य, धन्य है, जो सही जीवन मार्ग दिखाता है।

ਤਿਸ ਕਉ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥
तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥
वह गुरु धन्य, धन्य है, जो मुझे शब्द सुनाता है।

ਤਿਸ ਕਉ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੬॥
तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥६॥
"(हे भाई !) धन्य, धन्य है उसको जो मुझे ईश्वर के मिलन में मिलाता है॥ ६॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਕਉ ਜਿਸ ਕਾ ਇਹੁ ਜੀਉ ॥
वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥
धन्य, धन्य है उसको जिसका यह अमूल्य जीवन है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਥਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਉ ॥
गुर सबदी मथि अम्रितु पीउ ॥
गुरु के शब्द से नाम अमृत का जाप एवं पान कर।

ਨਾਮ ਵਡਾਈ ਤੁਧੁ ਭਾਣੈ ਦੀਉ ॥੭॥
नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥७॥
हे प्रभु ! नाम की शोभा तेरी इच्छा द्वारा प्रदान होती है।॥ ७॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕਿਉ ਜੀਵਾ ਮਾਇ ॥
नाम बिना किउ जीवा माइ ॥
हे मेरी माता ! प्रभु नाम के बिना मैं किस तरह जीवित रह सकता हूँ।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਤੁ ਰਹਉ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਇ ॥
अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥
हे प्रभु ! रात-दिन मैं नाम-स्मरण करता हूँ और तेरी शरणागत रहता हूँ।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥੮॥੧੨॥
नानक नामि रते पति पाइ ॥८॥१२॥
हे नानक ! प्रभु नाम में मग्न होने से मनुष्य मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है॥ ८ ॥ १२ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਹਉਮੈ ਕਰਤ ਭੇਖੀ ਨਹੀ ਜਾਨਿਆ ॥
हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥
अहंकार में प्रवृत्त होने से मनुष्य ईश्वर को नहीं जानता, चाहे वह कोई धार्मिक वेष धारण कर ले।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਵਿਰਲੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥
गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥१॥
कोई विरला पुरुष ही है, जिसका मन गुरु के आश्रय द्वारा प्रभु की भक्ति करने से तृप्त हुआ है॥ १॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਨਹੀ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ॥
हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥
अहंत्व (मैं, मेरी) की करनी से सत्य (ईश्वर) प्राप्त नहीं होता।

ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जब मनुष्य का अहंकार निवृत्त हो जाता है तो उसे परम पद प्राप्त हो जाता है। १॥ रहाउ॥

ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਰਾਜੇ ਬਹੁ ਧਾਵਹਿ ॥
हउमै करि राजे बहु धावहि ॥
राजा (अपनी शक्ति का) बहुत अहंकार करते हैं और इसलिए दूसरे राज्यों पर आक्रमण करते हैं।

ਹਉਮੈ ਖਪਹਿ ਜਨਮਿ ਮਰਿ ਆਵਹਿ ॥੨॥
हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥२॥
अहंकारवश वे बर्बाद हो जाते हैं और परिणामस्वरूप जन्म-मरण के चक्र में पड़कर पुनः (संसार में) उत्पन्न होते हैं।॥ २॥

ਹਉਮੈ ਨਿਵਰੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੈ ॥
हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥
गुरु के शब्द का चिन्तन करने से (मनुष्य का) अहंकार निवृत्त हो जाता है।

ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਤਿਆਗੈ ਪੰਚ ਸੰਘਾਰੈ ॥੩॥
चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥३॥
ऐसा व्यक्ति अपने चंचल मन पर अंकुश लगाता है और पाँच (कामादिक) विकारों का संहार करता है॥ ३॥

ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਸਹਜ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ॥
अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य नाम विद्यमान है, वह सहज घर में पहुँच जाता है।

ਰਾਜਨੁ ਜਾਣਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥੪॥
राजनु जाणि परम गति पावहि ॥४॥
प्रभु पातशाह को समझकर वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥
सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥
गुरु जी उसकी दुविधा दूर कर देते हैं, जिसके कर्म शुभ (सच्चे) हैं।

ਨਿਰਭਉ ਕੈ ਘਰਿ ਤਾੜੀ ਲਾਵੈ ॥੫॥
निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥५॥
वह निर्भय ईश्वर के चरणों में अपनी वृति लगाता है॥ ५ ॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਿ ਮਰਣਾ ਕਿਆ ਪਾਵੈ ॥
हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥
जो (मैं, मैं) अभिमान एवं घमण्ड करता हुआ प्राण त्याग देता है, वह क्या कर्म करता है ?

ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਸੋ ਝਗਰੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥੬॥
पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥६॥
लेकिन जो पूर्ण गुरु से मिलता है, वह अपने तमाम वाद-विवाद मिटा लेता है॥ ६॥

ਜੇਤੀ ਹੈ ਤੇਤੀ ਕਿਹੁ ਨਾਹੀ ॥
जेती है तेती किहु नाही ॥
जो कुछ भी है, वह वास्तव में कुछ भी नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨ ਭੇਟਿ ਗੁਣ ਗਾਹੀ ॥੭॥
गुरमुखि गिआन भेटि गुण गाही ॥७॥
गुरमुख ज्ञान प्राप्त करके ईश्वर की गुणस्तुति करते रहते हैं॥ ७॥

ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਬੰਧਿ ਭਵਾਵੈ ॥
हउमै बंधन बंधि भवावै ॥
अहंकार मनुष्य को बंधनों में जकड़ लेता है और उसको (जन्म-मरण के चक्र) आवागमन में भटकाता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧੩॥
नानक राम भगति सुखु पावै ॥८॥१३॥
हे नानक ! राम की भक्ति करने से ही सुख उपलब्ध होता है॥ ८॥ १३ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ਕਾਲੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥
प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥
सर्वप्रथम ब्रह्मा ही (इस संसार में) काल (मृत्यु) के वश में आया।

ਬ੍ਰਹਮ ਕਮਲੁ ਪਇਆਲਿ ਨ ਪਾਇਆ ॥
ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥
ब्रह्मा (जिस नाभिकमल से उत्पन्न हुआ था उसका रहस्य जानने के लिए) दुविधा में पड़कर कमल में प्रवेश कर गया और पाताल की खोज करके भी उसको कमल (ईश्वर) के अन्त का पता न चला।

ਆਗਿਆ ਨਹੀ ਲੀਨੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥੧॥
आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥१॥
उसने प्रभु की आज्ञा को स्वीकार न किया और कुमार्गगामी होकर भटकता रहा ॥ १॥

ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਕਾਲਿ ਸੰਘਾਰਿਆ ॥
जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥
इस दुनिया में जिस व्यक्ति ने भी जन्म लिया है, काल (मृत्यु) ने उसका नाश कर दिया है।

ਹਮ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥
ईश्वर ने मेरी रक्षा की है, क्योंकि मैंने गुरु के शब्द का चिंतन किया है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੇ ਦੇਵੀ ਸਭਿ ਦੇਵਾ ॥
माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥
माया ने समस्त देवी-देवताओं को मुग्ध किया हुआ है।

ਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥
कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥
गुरु की सेवा-भक्ति के बिना मृत्यु किसी को भी नहीं छोड़ती।

ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੨॥
ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥२॥
केवल ईश्वर ही अमर, अदृश्य एवं अभेद है॥ २॥

ਸੁਲਤਾਨ ਖਾਨ ਬਾਦਿਸਾਹ ਨਹੀ ਰਹਨਾ ॥
सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥
"(इस संसार में) महाराजा, सरदार एवं बादशाह कदापि नहीं रहेंगे (क्योंकि काल अटल है)।

ਨਾਮਹੁ ਭੂਲੈ ਜਮ ਕਾ ਦੁਖੁ ਸਹਨਾ ॥
नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥
प्रभु के नाम को विस्मृत करके वह काल (मृत्यु) का दुःख सहन करेंगे।

ਮੈ ਧਰ ਨਾਮੁ ਜਿਉ ਰਾਖਹੁ ਰਹਨਾ ॥੩॥
मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥३॥
हे प्रभु ! मेरा सहारा (केवल) नाम है, जैसे तुम मुझे (सुख-दुख में) रखते हो, मैं वैसे ही रहता हूँ॥ ३॥

ਚਉਧਰੀ ਰਾਜੇ ਨਹੀ ਕਿਸੈ ਮੁਕਾਮੁ ॥
चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥
चाहे चौधरी हो अथवा राजा हो किसी का भी इस संसार में स्थाई निवास नहीं।

ਸਾਹ ਮਰਹਿ ਸੰਚਹਿ ਮਾਇਆ ਦਾਮ ॥
साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥
साहूकार धन-दौलत संग्रह करके प्राण त्याग देते हैं।

ਮੈ ਧਨੁ ਦੀਜੈ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ॥੪॥
मै धनु दीजै हरि अम्रित नामु ॥४॥
हे प्रभु ! मुझे अपने अमृतमयी नाम का धन प्रदान कीजिए॥ ४॥

ਰਯਤਿ ਮਹਰ ਮੁਕਦਮ ਸਿਕਦਾਰੈ ॥
रयति महर मुकदम सिकदारै ॥
प्रजा, सामन्त, प्रधान एवं चौधरी कोई भी

ਨਿਹਚਲੁ ਕੋਇ ਨ ਦਿਸੈ ਸੰਸਾਰੈ ॥
निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥
नश्वर संसार में स्थिर दिखाई नहीं देता।

ਅਫਰਿਉ ਕਾਲੁ ਕੂੜੁ ਸਿਰਿ ਮਾਰੈ ॥੫॥
अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥५॥
अनिवार्य मृत्यु मोह-माया में लिप्त झूठे प्राणियों के सिर पर प्रहार करती है॥ ५॥

ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥
निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥
केवल परम सत्य प्रभु ही सदा स्थिर रहने वाला है,

ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਸਾਜੀ ਤਿਨਹਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥
जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥
जिसने इस सृष्टि की रचना की है, वही तमाम जीव-जन्तुओं सहित सृष्टि का विनाश करता है।

ਓਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ਤਾਂ ਪਤਿ ਹੋਈ ॥੬॥
ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥६॥
जब गुरु के आश्रय में आकर मनुष्य प्रभु को जान लेता है तो ही उसे शोभा प्राप्त होती है।॥ ६॥

ਕਾਜੀ ਸੇਖ ਭੇਖ ਫਕੀਰਾ ॥
काजी सेख भेख फकीरा ॥
काजी, शेख एवं धार्मिक परिधान में फकीर

ਵਡੇ ਕਹਾਵਹਿ ਹਉਮੈ ਤਨਿ ਪੀਰਾ ॥
वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥
अपने आपको महान कहलवाते हैं, किन्तु अहंकारवश उनके शरीर में पीड़ा विद्यमान है।

ਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡੈ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਧੀਰਾ ॥੭॥
कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥७॥
सतिगुरु के आश्रय बिना काल (मृत्यु) उन्हें नहीं छोड़ता ॥ ७ ॥

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਿਹਵਾ ਅਰੁ ਨੈਣੀ ॥
कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥
मृत्यु का फँदा मनुष्य की जिव्हा व नेत्रों पर है।

ਕਾਨੀ ਕਾਲੁ ਸੁਣੈ ਬਿਖੁ ਬੈਣੀ ॥
कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥
मृत्यु उसके कानों पर विद्यमान है जब वह विषैली बातचीत श्रवण करता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਮੂਠੇ ਦਿਨੁ ਰੈਣੀ ॥੮॥
बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥८॥
प्रभु नाम के बिना मनुष्य दिन-रात (आत्मिक गुणों से) लुटता जा रहा है॥ ८॥

ਹਿਰਦੈ ਸਾਚੁ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
हिरदै साचु वसै हरि नाइ ॥
जिस प्राणी के हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है और जो प्रभु का यशोगान करता है,

ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹਿ ਸਕੈ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
कालु न जोहि सकै गुण गाइ ॥
मृत्यु उसे कदापि दिखाई नहीं देती, जो हरि के गुण गाता है

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥੯॥੧੪॥
नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥९॥१४॥
हे नानक ! गुरमुख शब्द में ही समा जाता है॥ ६॥ १४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਬੋਲਹਿ ਸਾਚੁ ਮਿਥਿਆ ਨਹੀ ਰਾਈ ॥
बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥
वह व्यक्ति सदैव सत्य ही बोलता है और उसमें तनिक मात्र भी झूठ विद्यमान नहीं होता।

ਚਾਲਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ॥
चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥
जो गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के हुक्म अनुसार चलता है।

ਰਹਹਿ ਅਤੀਤ ਸਚੇ ਸਰਣਾਈ ॥੧॥
रहहि अतीत सचे सरणाई ॥१॥
ऐसा व्यक्ति सत्य (परमेश्वर) की शरण में ही निर्लिप्त रहता है।॥ १॥

ਸਚ ਘਰਿ ਬੈਸੈ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹੈ ॥
सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥
वह सत्य के गृह में वास करता है और मृत्यु उसे स्पर्श नहीं करती।

ਮਨਮੁਖ ਕਉ ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਦੁਖੁ ਮੋਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन स्वेच्छाचारी व्यक्ति जगत् में जन्मता-मरता रहता है और सांसारिक मोह की पीड़ा सहन करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਪਿਉ ਪੀਅਉ ਅਕਥੁ ਕਥਿ ਰਹੀਐ ॥
अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ ॥
नाम अमृत का पान करके तथा अनन्त ईश्वर की महिमा-स्तुति करके ही आत्म-स्वरूप में स्थिर रहा जा सकता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਬੈਸਿ ਸਹਜ ਘਰੁ ਲਹੀਐ ॥
निज घरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥
उस आत्मस्वरूप में बैठकर प्रसन्नता का गृह प्राप्त किया जा सकता है,

ਹਰਿ ਰਸਿ ਮਾਤੇ ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਕਹੀਐ ॥੨॥
हरि रसि माते इहु सुखु कहीऐ ॥२॥
यह प्रसन्नता उसको प्राप्त हुई कही जाती है, जो प्रभु के अमृत से अनुरक्त है॥ २॥

ਗੁਰਮਤਿ ਚਾਲ ਨਿਹਚਲ ਨਹੀ ਡੋਲੈ ॥
गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥
गुरु की शिक्षा अनुसार जीवन-आचरण करने से स्थिर हुआ जा सकता है और कदापि डांवाडोल नहीं होना पड़ता।

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚਿ ਸਹਜਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥
गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥
गुरु की शिक्षा से वह सहज ही प्रभु के सत्य नाम का उच्चारण करता है।

ਪੀਵੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਤੁ ਵਿਰੋਲੈ ॥੩॥
पीवै अम्रितु ततु विरोलै ॥३॥
वह अमृत पान करता है और वास्तविकता को खोजकर अलग निकाल लेता है। ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਖਿਆ ਦੀਖਿਆ ਲੀਨੀ ॥
सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥
सतिगुरु के दर्शन करके मैंने उनसे दीक्षा प्राप्त की है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿਓ ਅੰਤਰ ਗਤਿ ਕੀਨੀ ॥
मनु तनु अरपिओ अंतर गति कीनी ॥
मैंने अपना मन एवं तन गुरु को अर्पित करके अपने अंतःकरण की खोज कर ली है।

ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਈ ਆਤਮੁ ਚੀਨੀ ॥੪॥
गति मिति पाई आतमु चीनी ॥४॥
अपने आपको समझने से मैंने मुक्ति का मूल्य अनुभव कर लिया है॥ ४ ॥

ਭੋਜਨੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਸਾਰੁ ॥
भोजनु नामु निरंजन सारु ॥
जो व्यक्ति निरंजन प्रभु के नाम को अपना भोजन बना लेता है,

ਪਰਮ ਹੰਸੁ ਸਚੁ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
परम हंसु सचु जोति अपार ॥
वह परमहंस बन जाता है और उसके अन्तर्गन में सत्यस्वरूप परमात्मा की ज्योति प्रज्वलित हो जाती है।

ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੫॥
जह देखउ तह एकंकारु ॥५॥
वह जहाँ कहीं भी देखता है वहाँ वह एक ईश्वर को पाता है॥ ५॥

ਰਹੈ ਨਿਰਾਲਮੁ ਏਕਾ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ॥
रहै निरालमु एका सचु करणी ॥
ऐसा व्यक्ति (मोह-माया से) निर्लिप्त रहता है और केवल शुभ कर्म करता है,

ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ॥
परम पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥
वह परम पद प्राप्त कर लेता है और गुरु के चरणों की सेवा करता है।

ਮਨ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਚੂਕੀ ਅਹੰ ਭ੍ਰਮਣੀ ॥੬॥
मन ते मनु मानिआ चूकी अहं भ्रमणी ॥६॥
मन से ही उसके मन की संतुष्टि हो जाती है और उसका अहंकार में भटकना मिट जाता है।॥ ६॥

ਇਨ ਬਿਧਿ ਕਉਣੁ ਕਉਣੁ ਨਹੀ ਤਾਰਿਆ ॥
इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥
इस विधि से किस- किस को प्रभु ने (संसार सागर से) पार नहीं किया।

ਹਰਿ ਜਸਿ ਸੰਤ ਭਗਤ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥
हरि जसि संत भगत निसतारिआ ॥
प्रभु के यश ने उसके संतों एवं भक्तों का कल्याण कर दिया है।

ਪ੍ਰਭ ਪਾਏ ਹਮ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਰਿਆ ॥੭॥
प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥७॥
एक ईश्वर को मैंने पा लिया है और अब मैं किसी दूसरे को नहीं ढूंढता॥ ७॥

ਸਾਚ ਮਹਲਿ ਗੁਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥
साच महलि गुरि अलखु लखाइआ ॥
गुरु जी ने मुझे अदृश्य प्रभु के सत्य मन्दिर में दर्शन करवा दिए हैं।

ਨਿਹਚਲ ਮਹਲੁ ਨਹੀ ਛਾਇਆ ਮਾਇਆ ॥
निहचल महलु नही छाइआ माइआ ॥
प्रभु का यह मन्दिर अटल है। यह मोहिनी का प्रतिबिम्ब नहीं।

ਸਾਚਿ ਸੰਤੋਖੇ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੮॥
साचि संतोखे भरमु चुकाइआ ॥८॥
सच्चाई द्वारा संतोष आ जाता है और दुविधा दूर हो जाती है॥ ८ ॥

ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥
जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥
जिसके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा निवास करता है,

ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥
तिन की संगति गुरमुखि होई ॥
उनकी संगति में प्राणी धर्मात्मा बन जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਮਲੁ ਖੋਈ ॥੯॥੧੫॥
नानक साचि नामि मलु खोई ॥९॥१५॥
हे नानक ! सत्य नाम (विकारों की) मलिनता स्वच्छ कर देता है॥ ९॥ १५ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਰਾਮਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਰਾਪੈ ਜਾ ਕਾ ॥
रामि नामि चितु रापै जा का ॥
जिस व्यक्ति का हृदय राम के नाम में मग्न रहता है,

ਉਪਜੰਪਿ ਦਰਸਨੁ ਕੀਜੈ ਤਾ ਕਾ ॥੧॥
उपज्मपि दरसनु कीजै ता का ॥१॥
उसके दर्शन प्रात:काल उठते ही करने चाहिए॥ १॥

ਰਾਮ ਨ ਜਪਹੁ ਅਭਾਗੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
राम न जपहु अभागु तुमारा ॥
हे भाई ! यदि तुम राम का भजन-सिमरन नहीं करते तो यह तुम्हारा दुर्भाग्य है।

ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥
युग-युगों से हमारा प्रभु राम हमें नियामतें देता आ रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੁ ਜਪੈ ਜਨੁ ਪੂਰਾ ॥
गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥
जो व्यक्ति गुरु की मति द्वारा राम का नाम जपता रहता है, वही व्यक्ति पूर्ण बन जाता है।

ਤਿਤੁ ਘਟ ਅਨਹਤ ਬਾਜੇ ਤੂਰਾ ॥੨॥
तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥२॥
ऐसे पूर्ण व्यक्ति के हृदय में अनहद मधुर बाजे बजते रहते हैं।॥ २॥

ਜੋ ਜਨ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਪਿਆਰਿ ॥
जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥
जो व्यक्ति राम एवं राम की भक्ति से प्रेम करते हैं,

ਸੇ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੩॥
से प्रभि राखे किरपा धारि ॥३॥
उनको ईश्वर कृपा करके भवसागर से बचा लेता है॥ ३॥

ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥
जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥
जिन लोगों के हृदय में हरि-परमेश्वर वास करता है,

ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸੁ ਪਰਸਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੪॥
तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥४॥
उनके दर्शन करने से आत्मिक सुख प्राप्त होता है॥ ४॥

ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਹਿ ਏਕੋ ਰਵੈ ॥
सरब जीआ महि एको रवै ॥
समस्त जीवों के अन्तर में एक ईश्वर मौजूद है।

ਮਨਮੁਖਿ ਅਹੰਕਾਰੀ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਭਵੈ ॥੫॥
मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥५॥
अहंकारी पुरुष अंततः योनियों में भटकता रहता है॥ ५॥

ਸੋ ਬੂਝੈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਏ ॥
सो बूझै जो सतिगुरु पाए ॥
जिसे सतिगुरु मिल जाता है, उसे ज्ञान हो जाता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਪਾਏ ॥੬॥
हउमै मारे गुर सबदे पाए ॥६॥
ऐसा प्राणी अपना अहंत्व निवृत्त करके गुरु के शब्द में लीन होकर ईश्वर को प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

ਅਰਧ ਉਰਧ ਕੀ ਸੰਧਿ ਕਿਉ ਜਾਨੈ ॥
अरध उरध की संधि किउ जानै ॥
आत्मा के परमात्मा से मिलन बारे इन्सान किस तरह जान सकता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੰਧਿ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥੭॥
गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥७॥
गुरु की संगति एवं मन के संतोष द्वारा जीवात्मा प्रभु के मिलन में मिल जाता है॥ ७॥

ਹਮ ਪਾਪੀ ਨਿਰਗੁਣ ਕਉ ਗੁਣੁ ਕਰੀਐ ॥
हम पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥
हे प्रभु! हम जीव गुणविहीन एवं पापी हैं, और हमें कृपा करके गुणवान बना दो।

ਪ੍ਰਭ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਤਰੀਐ ॥੮॥੧੬॥
प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥८॥१६॥
हे नानक ! जब प्रभु दया के घर में आ जाता है तो जीव भवसागर से पार हो जाता है।॥८॥१६॥

ਸੋਲਹ ਅਸਟਪਦੀਆ ਗੁਆਰੇਰੀ ਗਉੜੀ ਕੀਆ ॥
सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥
सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੧
गउड़ी बैरागणि महला १
गउड़ी बैरागणि महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਿਉ ਗਾਈ ਕਉ ਗੋਇਲੀ ਰਾਖਹਿ ਕਰਿ ਸਾਰਾ ॥
जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥
जैसे एक ग्वाला अपनी गायों की देखभाल करता है,

ਅਹਿਨਿਸਿ ਪਾਲਹਿ ਰਾਖਿ ਲੇਹਿ ਆਤਮ ਸੁਖੁ ਧਾਰਾ ॥੧॥
अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥१॥
वैसे ही प्रभु प्राणियों का दिन-रात पोषण एवं रक्षा करता है और उनके हृदय में आत्मिक सुख स्थापित करता है॥ १॥

ਇਤ ਉਤ ਰਾਖਹੁ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
इत उत राखहु दीन दइआला ॥
हे दीन दयालु ईश्वर ! इहलोक एवं परलोक में मेरी रक्षा कीजिए।

ਤਉ ਸਰਣਾਗਤਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तउ सरणागति नदरि निहाला ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु! मैं तेरी शरण में आया हूँ। इसलिए मुझ पर कृपा-दृष्टि कीजिए॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਰਖੁ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ॥
जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥
हे रक्षक प्रभु! जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ तुम सर्वव्यापक हो। मेरी रक्षा कीजिए।

ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਤੂੰਹੈ ਤੂੰ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰਾ ॥੨॥
तूं दाता भुगता तूंहै तूं प्राण अधारा ॥२॥
हे ईश्वर ! तू देन देने वाला दाता है, तू ही भोगने वाला है और तू ही मेरे प्राणों का आधार है॥ २॥

ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਅਧ ਊਰਧੀ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰਾ ॥
किरतु पइआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥
ज्ञान को सोचने विचारने के बिना प्राणी अपने कर्मों अनुसार नीचे गिरता अथवा उच्च हो जाता है।

ਬਿਨੁ ਉਪਮਾ ਜਗਦੀਸ ਕੀ ਬਿਨਸੈ ਨ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥੩॥
बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥३॥
सृष्टि के स्वामी जगदीश की उपमा के बिना (मोह-माया का) अंधकार दूर नहीं होता ॥ ३॥

ਜਗੁ ਬਿਨਸਤ ਹਮ ਦੇਖਿਆ ਲੋਭੇ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥
लालच एवं अभिमान में फँसकर मैंने जगत् का विनाश होते देखा है।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥
गुर सेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥४॥
गुरु की सेवा द्वारा परमेश्वर एवं मोक्ष का सच्चा द्वार प्राप्त होता है। ४॥

ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਅਪਾਰ ਕੋ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੋਈ ॥
निज घरि महलु अपार को अपर्मपरु सोई ॥
अनन्त परमेश्वर का आत्मस्वरूप प्राणी के अपने हृदय गृह में विद्यमान है और वह परमेश्वर अपरम्पार है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਥਿਰੁ ਕੋ ਨਹੀ ਬੂਝੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੫॥
बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥५॥
प्रभु नाम के बिना कुछ भी स्थिर नहीं। ईश्वर के बोध द्वारा आत्मिक सुख प्राप्त होता है।॥ ५॥

ਕਿਆ ਲੈ ਆਇਆ ਲੇ ਜਾਇ ਕਿਆ ਫਾਸਹਿ ਜਮ ਜਾਲਾ ॥
किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥
हे भाई ! इस जगत् में तुम क्या लेकर आए थे और जब तुझे मृत्यु का फँदा लगा तो क्या लेकर जाओगे ?

ਡੋਲੁ ਬਧਾ ਕਸਿ ਜੇਵਰੀ ਆਕਾਸਿ ਪਤਾਲਾ ॥੬॥

डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥६॥

रस्सी के साथ बंधे हुए कुएँ के डोल की भाँति कभी तुम आकाश में होते हो और कभी पाताल में होते हो।॥ ६॥

ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਹਜੇ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ॥

गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥

यदि गुरु के उपदेश से प्राणी प्रभु नाम को विस्मृत न करे तो वह सहज ही शोभा पा लेता है।

ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਮਿਲਿ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥੭॥

अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥७॥

मनुष्य के अन्तर्मन में ही प्रभु नाम का खजाना है, परन्तु यह (खजाना) अपने अहंकार को दूर करने से ही मिलता है॥ ७॥

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਗੁਣ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵੈ ॥

नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥

यदि ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करे तो प्राणी गुणवान बनकर परमात्मा की गोद में जाकर लीन होता है।

ਨਾਨਕ ਮੇਲੁ ਨ ਚੂਕਈ ਲਾਹਾ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧॥੧੭॥

नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥८॥१॥१७॥

हे नानक ! यह मिलन टूटता नहीं और सच्चा लाभ प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ १॥ १७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी महला १ ॥
गउड़ी महला १ ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੂਝਿ ਲੇ ਤਉ ਹੋਇ ਨਿਬੇਰਾ ॥
गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥
हे जिज्ञासु ! यदि गुरु की कृपा से प्राणी ईश्वर की महिमा को समझ ले तो उसे आवागमन से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

ਘਰਿ ਘਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨਾ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥
घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥१॥
हे प्राणी ! जिसका नाम निरंजन (पवित्र) है और उसका नाम प्रत्येक हृदय में समा रहा है, वही मेरा ठाकुर है॥ १॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਛੂਟੀਐ ਦੇਖਹੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥
बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥
गुरु के शब्द बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं होती। इस बात का विचार करके देख ले।

ਜੇ ਲਖ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥
मनुष्य चाहे लाखों धर्म-कर्म कर ले परन्तु गुरु के ज्ञान बिना अन्धेरा ही अन्धेरा है॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਧੇ ਅਕਲੀ ਬਾਹਰੇ ਕਿਆ ਤਿਨ ਸਿਉ ਕਹੀਐ ॥
अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥
हम उन्हें क्या कह सकते हैं जो ज्ञान से अंधे एवं बुद्धि से विहीन हैं?

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪੰਥੁ ਨ ਸੂਝਈ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਨਿਰਬਹੀਐ ॥੨॥
बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥२॥
गुरु के बिना सत्य मार्ग दिखाई नहीं देता, तब मनुष्य का किस तरह निर्वाह चले ? ॥ २॥

ਖੋਟੇ ਕਉ ਖਰਾ ਕਹੈ ਖਰੇ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ॥
खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥
नकली को मनुष्य असली कहता है और असली का यह मूल्य ही नहीं पहचानता।

ਅੰਧੇ ਕਾ ਨਾਉ ਪਾਰਖੂ ਕਲੀ ਕਾਲ ਵਿਡਾਣੈ ॥੩॥

अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥३॥

यह कलियुग का समय आश्चर्यजनक है कि ज्ञानहीन मनुष्य को अक्लमंद कहा जा रहा है॥ ३॥

ਸੂਤੇ ਕਉ ਜਾਗਤੁ ਕਹੈ ਜਾਗਤ ਕਉ ਸੂਤਾ ॥

सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥

बड़ी अदभुत बात है कि दुनिया अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए इन्सान को जागता कह रही है और जो इन्सान भगवान की भक्ति में जाग्रत रहता है उसे दुनिया सोया हुआ कह रही है।

ਜੀਵਤ ਕਉ ਮੂਆ ਕਹੈ ਮੂਏ ਨਹੀ ਰੋਤਾ ॥੪॥

जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥४॥

जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में मग्न रहता है, उसे दुनिया मृत कहती है और लेकिन वास्तव में मृतकों के लिए विलाप नहीं करता ॥ ४ ॥

ਆਵਤ ਕਉ ਜਾਤਾ ਕਹੈ ਜਾਤੇ ਕਉ ਆਇਆ ॥

आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥

जो आ रहा है, वह कहता है जा रहा है और जो गया हुआ है उसको आया कहता है।

ਪਰ ਕੀ ਕਉ ਅਪੁਨੀ ਕਹੈ ਅਪੁਨੋ ਨਹੀ ਭਾਇਆ ॥੫॥

पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥५॥

मनुष्य पराए को अपना कहता है और अपने को पसंद नहीं करता ॥ ५ ॥

ਮੀਠੇ ਕਉ ਕਉੜਾ ਕਹੈ ਕੜੂਏ ਕਉ ਮੀਠਾ ॥

मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥

जो मीठा है, उसको वह कड़वा कहता है और कड़वे को वह मीठा बताता है।

ਰਾਤੇ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਐਸਾ ਕਲਿ ਮਹਿ ਡੀਠਾ ॥੬॥

राते की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥६॥

भगवान की भक्ति में मग्न हुए भक्त की दुनिया निन्दा करती है। दुनिया में ऐसा तमाशा मैंने कलियुग में देखा है॥ ६॥

ਚੇਰੀ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਨਹੀ ਦੀਸੈ ॥

चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥

मनुष्य दासी (माया) की सेवा करता है परन्तु ठाकुर को वह देखता ही नहीं।

ਪੋਖਰੁ ਨੀਰੁ ਵਿਰੋਲੀਐ ਮਾਖਨੁ ਨਹੀ ਰੀਸੈ ॥੭॥
पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥७॥
तालाब का जल मथने से मक्खन नहीं निकलता ॥ ७ ॥

ਇਸੁ ਪਦ ਜੋ ਅਰਥਾਇ ਲੇਇ ਸੋ ਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ॥
इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू हमारा ॥
जो इस परम अवस्था के अर्थ को समझता है, वह मेरा गुरु है।

ਨਾਨਕ ਚੀਨੈ ਆਪ ਕਉ ਸੋ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ॥੮॥
नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥८॥
हे नानक ! जो अपने आत्म-स्वरूप को समझता है, वह अनन्त एवं अपार है॥ ८॥

ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਭਰਮਾਇਆ ॥
सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥
परमेश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही प्राणियों को कुमार्गगामी करता है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬੂਝੀਐ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ਸਮਾਇਆ ॥੯॥੨॥੧੮॥
गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥९॥२॥१८॥
गुरु की कृपा से मनुष्य यह समझता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है॥ ९ ॥ २ ॥ १८ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਨ ਕਾ ਸੂਤਕੁ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ॥
मन का सूतकु दूजा भाउ ॥
ईश्वर को विस्मृत करके माया से मोह ही मन का सूतक (अपवित्रता) है।

ਭਰਮੇ ਭੂਲੇ ਆਵਉ ਜਾਉ ॥੧॥
भरमे भूले आवउ जाउ ॥१॥
दुविधा के कारण मोह-माया में ग्रस्त हुआ मनुष्य आवागमन के चक्र में पड़कर संसार में जन्मता-मरता रहता है॥ १॥

ਮਨਮੁਖਿ ਸੂਤਕੁ ਕਬਹਿ ਨ ਜਾਇ ॥
मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥
स्वेच्छाचारी जीव के मन का सूतक (अपवित्रता) तब तक निवृत्त नहीं होता,

ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ ਨ ਭੀਜੈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जब तक वह गुरु के उपदेश अनुसार ईश्वर के नाम में तल्लीन नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥

ਸਭੋ ਸੂਤਕੁ ਜੇਤਾ ਮੋਹੁ ਆਕਾਰੁ ॥
सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥
इस संसार का मोह जो कुछ भी दृष्टिमान है, यह तमाम सूतक का मूल है।

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥੨॥
मरि मरि जमै वारो वार ॥२॥
परिणामस्वरूप प्राणी पुनः पुनः मर मर कर जन्म लेता है॥ २॥

ਸੂਤਕੁ ਅਗਨਿ ਪਉਣੈ ਪਾਣੀ ਮਾਹਿ ॥
सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥
सूतक अग्नि, पवन एवं जल में विद्यमान है।

ਸੂਤਕੁ ਭੋਜਨੁ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਖਾਹਿ ॥੩॥
सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥३॥
तमाम भोजन जो हम सेवन करते हैं, उसमें भी सूतक विद्यमान है॥ ३॥

ਸੂਤਕਿ ਕਰਮ ਨ ਪੂਜਾ ਹੋਇ ॥
सूतकि करम न पूजा होइ ॥
मनुष्य के कर्मों में भी सूतक विद्यमान है, क्योंकि वह प्रभु की पूजा-अर्चना नहीं करता।

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੪॥
नामि रते मनु निरमलु होइ ॥४॥
प्रभु के नाम में मग्न हो जाने से मन पवित्र हो जाता है॥ ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਸੂਤਕੁ ਜਾਇ ॥
सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥
सतिगुरु की सेवा करने से सूतक दूर हो जाता है।

ਮਰੈ ਨ ਜਨਮੈ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੫॥
मरै न जनमै कालु न खाइ ॥५॥
गुरु की शरण में आने से न मनुष्य मरता है, न ही पुनः संसार में जन्म लेता है। न ही मृत्यु उसे निगलती है॥ ५॥

ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸੋਧਿ ਦੇਖਹੁ ਕੋਇ ॥
सासत सिम्रिति सोधि देखहु कोइ ॥
(बेशक) कोई व्यक्ति शास्त्रों एवं स्मृतियों का अध्ययन करके देख ले।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥੬॥
विणु नावै को मुकति न होइ ॥६॥
ईश्वर नाम के सिवाय कोई भी मुक्त नहीं होता ॥ ६॥

ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਨਾਮੁ ਉਤਮੁ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥
जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥
चारों युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग) में नाम एवं शब्द का चिन्तन सर्वश्रेष्ठ पदार्थ है।

ਕਲਿ ਮਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰਿ ॥੭॥
कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥७॥
लकिन कलियुग में केवल गुरमुख का ही उद्धार होता है॥ ७ ॥

ਸਾਚਾ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
साचा मरै न आवै जाइ ॥
सत्यस्वरूप परमेश्वर अनश्वर है और आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੮॥੧॥
नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥८॥१॥
हे नानक ! गुरमुख सत्य में ही समाया रहता है॥ ८ ॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥
गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥
भगवान की भक्ति ही गुरमुख के प्राणों का आधार है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਰਾਖਹੁ ਹਿਰਦੈ ਉਰ ਧਾਰਾ ॥
हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥
अतः पूज्य परमेश्वर को ही अपने हृदय एवं अन्तर्मन में बसाकर रखो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਭਾ ਸਾਚ ਦੁਆਰਾ ॥੧॥
गुरमुखि सोभा साच दुआरा ॥१॥
गुरमुख को सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त होती है॥ १॥

ਪੰਡਿਤ ਹਰਿ ਪੜੁ ਤਜਹੁ ਵਿਕਾਰਾ ॥
पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ॥
हे पण्डित ! भगवान की महिमा का चिन्तन कर और विकारों को त्याग दे।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਉਜਲੁ ਉਤਰਹੁ ਪਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि भउजलु उतरहु पारा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुख भयानक संसार सागर से पार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥
गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥
गुरमुख के मन से अहंकार निकल जाता है ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥
गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥
गुरमुख के मन को विकारों की मैल नहीं लगती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥२॥
गुरमुख के मन में भगवान का नाम आकर बस जाता है॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਚਿ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि करम धरम सचि होई ॥
गुरमुख का प्रत्येक कर्म-धर्म सत्य ही होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਹੰਕਾਰੁ ਜਲਾਏ ਦੋਈ ॥
गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई ॥
गुरमुख अहंकार एवं द्वेष को जला देता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੩॥
गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥३॥
गुरमुख भगवान के नाम में मग्न रहकर ही सुखी होता है॥ ३॥

ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧਹੁ ਬੂਝਹੁ ਸੋਈ ॥
आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥
अपने मन को जागृत कर और परमेश्वर का बोध कर।

ਲੋਕ ਸਮਝਾਵਹੁ ਸੁਣੇ ਨ ਕੋਈ ॥
लोक समझावहु सुणे न कोई ॥
अन्यथा जितना भी चाहे तू लोगों को उपदेश देता रह, कोई भी तेरी बात नहीं सुनेगा।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਮਝਹੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੪॥
गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥४॥
गुरु के माध्यम से जीवन-मार्ग को समझो जिससे तुझे सदैव सुख प्राप्त होगा ॥ ४॥

ਮਨਮੁਖਿ ਡੰਫੁ ਬਹੁਤੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥
मनमुखि ड्मफु बहुतु चतुराई ॥
स्वेच्छाचारी जीव बड़ा पाखंडी और चतुर होता है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥
जो कुछ भी कर्म वह करता है, वह (प्रभु के दरबार में) स्वीकार नहीं होता।

ਆਵੈ ਜਾਵੈ ਠਉਰ ਨ ਕਾਈ ॥੫॥
आवै जावै ठउर न काई ॥५॥
वह जीवन-मृत्यु के बन्धन में पड़कर संसार में जन्मता-मरता रहता है और उसे सुख का कोई भी स्थान नहीं मिलता ॥ ५॥

ਮਨਮੁਖ ਕਰਮ ਕਰੇ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥
मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥
स्वेच्छाचारी अपना प्रत्येक कर्म बड़े अहंकार में करता है।

ਬਗ ਜਿਉ ਲਾਇ ਬਹੈ ਨਿਤ ਧਿਆਨਾ ॥
बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥
बगले की भाँति वह सदैव ही ध्यान लगाकर बैठता है।

ਜਮਿ ਪਕੜਿਆ ਤਬ ਹੀ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੬॥
जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥६॥
जब यमदूत उसे पकड़ता है तो वह बड़ा पश्चाताप करता है॥ ६॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥
इसलिए (संसार में) सतिगुरु की सेवा बिना मुक्ति नहीं मिलती।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥
गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥
गुरु की दया से वह प्रभु को मिल जाता है।

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਹੋਈ ॥੭॥
गुरु दाता जुग चारे होई ॥७॥
चारों ही युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर, कलियुग) में गुरु नाम देने वाले दाता हैं।॥ ७॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥
गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥
ईश्वर का नाम गुरमुख की जाति, सम्मान एवं शोभा है।

ਸਾਇਰ ਕੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਬਿਦਾਰਿ ਗਵਾਈ ॥
साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥
समुद्र की कन्या माया को उन्होंने पीट-पीट कर मार दिया है।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਝੂਠੀ ਚਤੁਰਾਈ ॥੮॥੨॥
नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥८॥२॥
हे नानक ! नाम के बिना समस्त चतुराई झूठी है॥ ८ ॥ २॥

ਗਉੜੀ ਮਃ ੩ ॥
गउड़ी मः ३ ॥
गउड़ी मः ३ ॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਕਾ ਧਰਮੁ ਪੜਹੁ ਤੁਮ ਭਾਈ ॥
इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥
हे भाई ! आप लोग इस युग के धर्म (परमेश्वर नाम) का चिन्तन करो।

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥
क्योंकि पूर्ण गुरु ने मुझे सारी सूझ बता दी है।

ਐਥੈ ਅਗੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥੧॥
ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥१॥
इस लोक एवं परलोक में ईश्वर का नाम ही प्राणी का सहारा है॥ १॥

ਰਾਮ ਪੜਹੁ ਮਨਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥
(हे भाई !) राम के नाम का भजन करो और अपने हृदय में उसके गुणों का विचार करो।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੈਲੁ ਉਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादी मैलु उतारु ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से अपनी विकारों की मैल को साफ कर लो ॥१॥ रहाउ॥

ਵਾਦਿ ਵਿਰੋਧਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥
वाद-विवाद एवं विरोध से प्रभु प्राप्त नहीं होता।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਫੀਕਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥
मोह-माया की लगन से मन-तन फीके हो जाते हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥२॥
इसलिए गुरु के शब्द द्वारा सत्य परमेश्वर में वृत्ति लगा ॥ २॥

ਹਉਮੈ ਮੈਲਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥
हउमै मैला इहु संसारा ॥
अहंकार के कारण सारा जगत् मैला हो गया है।

ਨਿਤ ਤੀਰਥਿ ਨਾਵੈ ਨ ਜਾਇ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥
प्रतिदिन तीर्थों का स्नान करने से अहंकार दूर नहीं होता।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰਾ ॥੩॥
बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥३॥
गुरु के मिलन बिना काल (मृत्यु) मनुष्य को बड़ा तंग करता है॥ ३॥

ਸੋ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ਜਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੈ ॥
सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥
वही मनुष्य सत्यवादी है जो अपने अहंकार को मिटा देता है

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪੰਚ ਸੰਘਾਰੈ ॥
गुर कै सबदि पंच संघारै ॥
और गुरु के शब्द द्वारा पाँच विकारों का संहार कर देता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੈ ॥੪॥
आपि तरै सगले कुल तारै ॥४॥
ऐसा मनुष्य स्वयं भी बच जाता है और अपने समूचे वंश का भी उद्धार कर लेता है॥ ४॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਨਟਿ ਬਾਜੀ ਪਾਈ ॥
माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥
कलाकार (प्रभु) ने माया का मोह प्राणियों हेतु एक खेल रचा है।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਰਹੇ ਲਪਟਾਈ ॥
मनमुख अंध रहे लपटाई ॥
ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीव मोह-माया से लिपटे रहते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਿਪਤ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥
गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥५॥
लेकिन गुरमुख इससे निर्लिप्त रहकर ईश्वर से वृति लगाते हैं॥ ५॥

ਬਹੁਤੇ ਭੇਖ ਕਰੈ ਭੇਖਧਾਰੀ ॥
बहुते भेख करै भेखधारी ॥
कपटी इन्सान अनेकों वेष धारण करता है।

ਅੰਤਰਿ ਤਿਸਨਾ ਫਿਰੈ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥
उसके भीतर तृष्णा विद्यमान है और वह अभिमानी होकर विचरता है।

ਆਪੁ ਨ ਚੀਨੈ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੬॥
आपु न चीनै बाजी हारी ॥६॥
कपटी इन्सान अपने आपको समझता नहीं और जीवन की बाजी हार जाता है॥ ६॥

ਕਾਪੜ ਪਹਿਰਿ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥
कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥
धार्मिक वेष धारण करके कई लोग चतुरता करते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਅਤਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥
माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥
माया के मोह एवं दुविधा ने उनको बहुत कुमार्गगामी किया हुआ है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥੭॥
बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥७॥
गुरु की सेवा-भक्ति के बिना वह बहुत कष्ट सहन करते हैं।॥ ७ ॥

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਬੈਰਾਗੀ ॥
नामि रते सदा बैरागी ॥
जो व्यक्ति ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही (मोह माया से) निर्लिप्त रहते हैं।

ਗ੍ਰਿਹੀ ਅੰਤਰਿ ਸਾਚਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
नामि रते सदा बैरागी ॥
जो व्यक्ति ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही (मोह माया से) निर्लिप्त रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥੮॥੩॥
नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥८॥३॥
हे नानक ! वे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जो सतिगुरु की सेवा करते हैं। ॥८॥ ३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਬ੍ਰਹਮਾ ਮੂਲੁ ਵੇਦ ਅਭਿਆਸਾ ॥
ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥
ब्रह्मा वेदों के अध्ययन का रचयिता है।

ਤਿਸ ਤੇ ਉਪਜੇ ਦੇਵ ਮੋਹ ਪਿਆਸਾ ॥
तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥
सांसारिक मोह एवं तृष्णा में फँसे हुए देवते उसी से उत्पन्न हुए है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਭਰਮੇ ਨਾਹੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥੧॥
त्रै गुण भरमे नाही निज घरि वासा ॥१॥
वे तीन गुणों में भटकते रहे और उन्हें ईश्वर के चरणों में स्थान न मिला ॥ १॥

ਹਮ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਇਆ ॥

हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥

हमें ईश्वर ने (मोह-माया से) बचा लिया है और सतिगुरु जी से मिला दिया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अनदिनु भगति हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥

रात-दिन भगवान की भक्ति एवं ईश्वर का नाम गुरु जी ने सुदृढ़ कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

त्रै ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮ ਜੰਜਾਲਾ ॥

त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला ॥

ब्रह्मा की रचित वाणी लोगों को (माया के) तीन गुणों के जंजाल में फँसा देती है।

ਪੜਿ ਵਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ ਜਮਕਾਲਾ ॥

पड़ि वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥

उसका अध्ययन करके पण्डित वाद-विवाद करते हैं और यमदूत उनके सिर पर प्रहार करता है।

ਤਤੁ ਨ ਚੀਨਹਿ ਬੰਨਹਿ ਪੰਡ ਪਰਾਲਾ ॥੨॥
ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला ॥२॥
वह वास्तविकता को नहीं समझते और घास-फूस की गठरी सिर पर बांधते हैं।॥ २॥

ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨਿ ਕੁਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥
मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥
अज्ञानी स्वेच्छाचारी जीव कुमार्ग ही पड़ा रहता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਆ ਬਹੁ ਕਰਮ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥
हरि नामु बिसारिआ बहु करम द्रिड़ाए ॥
वह ईश्वर के नाम को विस्मृत कर देता है और (मोह-माया के) अनेकों कर्म दृढ़ करता है।

ਭਵਜਲਿ ਡੂਬੇ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ॥੩॥
भवजलि डूबे दूजै भाए ॥३॥
ऐसे स्वेच्छाचारी द्वैतवाद के कारण भयानक संसार सागर में डूब जाते हैं।॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਕਾ ਮੁਹਤਾਜੁ ਪੰਡਿਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥
माइआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥
धन-दौलत का अभिलाषी अपने आपको पण्डित कहलवाता है।

ਬਿਖਿਆ ਰਾਤਾ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥
पापों में अनुरक्त हुआ वे बड़े कष्ट सहन करता है।

ਜਮ ਕਾ ਗਲਿ ਜੇਵੜਾ ਨਿਤ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਵੈ ॥੪॥
जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥४॥
यमदूत की रस्सी उसकी गर्दन के निकट है और मृत्यु हमेशा ही उसको पीड़ित करती है॥ ४॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਮਕਾਲੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥
लेकिन गुरमुख के निकट यमदूत नहीं आता।

ਹਉਮੈ ਦੂਜਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਵੈ ॥
हउमै दूजा सबदि जलावै ॥
ईश्वर का नाम उनके अहंकार एवं द्वैतवाद को जला देता है।

ਨਾਮੇ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੫॥
नामे राते हरि गुण गावै ॥५॥
गुरमुख नाम में मग्न होकर प्रभु की महिमा करता रहता है॥ ५॥

ਮਾਇਆ ਦਾਸੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥
माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥
माया प्रभु के भक्तों की सेविका है और उनकी भरपूर सेवा करती है।

ਚਰਣੀ ਲਾਗੈ ਤਾ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ॥
चरणी लागै ता महलु पावै ॥
यदि मनुष्य भक्तों के चरण-स्पर्श करता है तो उसे प्रभु का स्वरुप मिल जाता है।

ਸਦ ਹੀ ਨਿਰਮਲੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥੬॥
सद ही निरमलु सहजि समावै ॥६॥
ऐसा व्यक्ति सदैव ही पवित्र है और सहज ही सत्य में समा जाता है॥ ६ ॥

ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਹਿ ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਦਿਸਹਿ ਜੁਗ ਮਾਹੀ ॥
हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥
जो व्यक्ति हरि कथा सुनता है, वह इस संसार में धनवान दिखाई देता है।

ਤਿਨ ਕਉ ਸਭਿ ਨਿਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਪੂਜ ਕਰਾਹੀ ॥
तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥
सभी उसको प्रणाम करते हैं और लोग दिन-रात उसकी पूजा-अर्चना करते हैं।

ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਰਵਹਿ ਸਾਚੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੭॥
सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥७॥
वह अपने हृदय में सहज ही सत्य परमेश्वर का यश गायन करते हैं।॥ ७ ॥

ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
पूर्ण सतिगुरु जी ने अपना उपदेश सुनाया है,

त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥
त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥
जिससे (माया के) तीन गुणों का प्रभाव लुप्त हो गया है और मनुष्य का मन आत्मिक अवस्था से जुड़ गया है।

नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥८॥४॥
नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥८॥४॥
हे नानक ! अपना अहंकार निवृत्त करके वह ब्रह्म में मिल गया है ॥८॥४॥

गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥
ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥
पण्डित ब्रह्मा के रचित वेदों का अध्ययन करता है और वाद-विवाद वर्णन करता है।

अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥
अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥
उसकी अंतरात्मा में क्रोध विद्यमान है, जिससे वह अपने आपको नहीं समझता।

ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥१॥
ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥१॥
यदि वह गुरु के शब्द का बखान करे तभी उसे परमात्मा प्राप्त हो सकता है॥ १॥

गर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥
गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥
हे भाई ! गुरु की सेवा करो, तब तुझे मृत्यु अपना ग्रास नहीं बनाएगी।

मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि माया-मोह की लगन ने स्वेच्छाचारियों को निगल लिया है ॥१॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਅਪਰਾਧੀ ਸੀਧੇ ॥
गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥
गुरु के आश्रय में आने से पापी पुरुष भी पवित्र-पावन हो गए हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜਿ ਰੀਧੇ ॥
गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥
गुरु के शब्द से आत्मा परमात्मा से जुड़ जाती है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਧੇ ॥੨॥
मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥२॥
गुरु के शब्द से मनुष्य सुधर जाता है और मेरे प्रभु को पा लेता है ॥२॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥
सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥
ईश्वर उनको अपने साथ मिला लेता है, जिन्हें सतिगुरु जी मिलाना चाहते हैं।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥
मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥
वे मेरे सत्यस्वरूप ईश्वर के हृदय को अच्छे लगने लगते हैं।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੩॥
हरि गुण गावहि सहजि सुभाए ॥३॥
वह सहज ही प्रभु की गुणस्तुति करते हैं॥ ३॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਾਚੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥
बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ॥
गुरु के बिना प्राणी दुविधा में भूले हुए हैं।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੇ ਸਦਾ ਬਿਖੁ ਖਾਏ ॥
मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ॥
ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी पुरुष सदैव ही (मोह-माया का) विष सेवन करते हैं।

ਜਮ ਡੰਡੁ ਸਹਹਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੪॥
जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए ॥४॥
वे यमदूत का दण्ड सहन करते हैं और सदैव ही दुखी होते हैं।॥ ४॥

ਜਮੂਆ ਨ ਜੋਹੈ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥
जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥
लेकिन यदि मनुष्य परमेश्वर की शरण प्राप्त कर ले तो यमदूत उसे दुखी नहीं करता।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
हउमै मारि सचि लिव लाई ॥
अपने अहंत्व को निवृत्त करने से मनुष्य की वृति प्रभु के साथ लग जाती है।

ਸਦਾ ਰਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥
सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥५॥
वह सदैव ही अपनी वृति ईश्वर नाम के साथ लगाकर रखता है॥ ५॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਪਵਿਤਾ ॥
सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥
जो पुरुष सतिगुरु की सेवा करते हैं, वही पुरुष पवित्र एवं पावन हैं।

ਮਨ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਿਲਾਇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਜੀਤਾ ॥
मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥
अपने मन को गुरु के मन के साथ जोड़ने से वे सारे जगत् पर विजय पा लेते हैं।

ਇਨ ਬਿਧਿ ਕੁਸਲੁ ਤੇਰੈ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥੬॥
इन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥६॥
हे मेरे मित्र ! इस विधि से तुझे भी आनन्द प्राप्त होगा।॥ ६॥

ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵੇ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरू सेवे सो फलु पाए ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की निष्ठापूर्वक सेवा करता है, वह फल प्राप्त कर लेता है।

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
हिरदै नामु विचहु आपु गवाए ॥
उसके हृदय में नाम विद्यमान है और उसके भीतर से अहंकार दूर हो जाता है।

ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਵਜਾਏ ॥੭॥
अनहद बाणी सबदु वजाए ॥७॥
उसके लिए अनहद वाणी का शब्द गूंजता रहता है॥ ७॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਕਵਨੁ ਕਵਨੁ ਨ ਸੀਧੋ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! कौन-कौन सा व्यक्ति सतिगुरु की शरण में नहीं सुधरा ?

ਭਗਤੀ ਸੀਧੇ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥
प्रभु की भक्ति द्वारा वह उसके दरबार में शोभा पाते हैं

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੮॥੫॥
नानक राम नामि वडिआई ॥८॥५॥
हे नानक ! राम के नाम से बड़ी प्रशंसा मिलती है ॥८॥५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਵਖਾਣੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇ ॥
त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥
जो व्यक्ति त्रिगुणात्मक माया का बखान करता है, उसका भ्रम दूर नहीं होता।

ਬੰਧਨ ਨ ਤੂਟਹਿ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਇ ॥
बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ॥
उसके मोह-माया के बंधन समाप्त नहीं होते और उसे मुक्ति नहीं मिलती।

ਮੁਕਤਿ ਦਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੁਗ ਮਾਹਿ ॥੧॥
मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥१॥
इस युग में मुक्ति देने वाला सतिगुरु ही है॥ १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇ ॥
गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥
गुरमुख प्राणी का भ्रम दूर हो जाता है।

ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥
परमेश्वर के साथ वृति लगाने से सहज ध्वनि उत्पन्न हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਕਾਲੈ ਕੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰਾ ॥

त्रै गुण कालै की सिरि कारा ॥

जो व्यक्ति त्रिगुणात्मक (माया) में वास करते हैं, वे मृत्यु की प्रजा हैं।

ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹਿ ਉਪਾਵਣਹਾਰਾ ॥
नामु न चेतहि उपावणहारा ॥
वे सृजनहार प्रभु के नाम को स्मरण नहीं करते।

ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਫਿਰਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥੨॥
मरि जमहि फिरि वारो वारा ॥२॥
इसलिए वह बार-बार जीवन मृत्यु के चक्र में फँसकर जन्म लेते और मरते हैं।॥ २॥

ਅੰਧੇ ਗੁਰੂ ਤੇ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥
अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥
अज्ञानी गुरु द्वारा दुविधा निवृत्त नहीं होती।

ਮੂਲੁ ਛੋਡਿ ਲਾਗੇ ਦੂਜੈ ਭਾਈ ॥
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥
संसार के मूल सृष्टिकर्ता को त्याग कर प्राणी द्वैतवाद से जुड़े हुए हैं।

ਬਿਖੁ ਕਾ ਮਾਤਾ ਬਿਖੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਈ ॥੩॥
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥३॥
माया के विष में मग्न हुआ जीव माया के विष में ही समा जाता है॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਕਰਿ ਮੂਲੁ ਜੰਤ੍ਰ ਭਰਮਾਏ ॥
माइआ करि मूलु जंत्र भरमाए ॥
माया को मूल सहारा जानकर प्राणी भटकते फिरते हैं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਵਿਸਰਿਆ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ॥
हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥
माया के मोह में उन्होंने पूज्य परमेश्वर को विस्मृत कर दिया है।

ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥੪॥
जिसु नदरि करे सो परम गति पाए ॥४॥
ईश्वर जिस प्राणी पर कृपा-दृष्टि करता है, वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४ ॥

ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਬਾਹਰਿ ਸਾਚੁ ਵਰਤਾਏ ॥
अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए ॥
जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, वह बाहर भी सत्य ही बांटता है।

ਸਾਚੁ ਨ ਛਪੈ ਜੇ ਕੋ ਰਖੈ ਛਪਾਏ ॥
साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥
सत्य छिपा नहीं रहता चाहे मनुष्य इसको छिपा कर ही रखे।

ਗਿਆਨੀ ਬੂਝਹਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੫॥
गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥५॥
ज्ञानी सहज ही सत्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
गुरमुखि साचि रहिआ लिव लाए ॥
गुरुमुख सत्य में वृति लगाकर रखता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
हउमै माइआ सबदि जलाए ॥
ऐसा व्यक्ति अहंकार एवं माया का मोह ईश्वर के नाम से जला देता है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੬॥
मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥६॥
मेरा सत्यस्वरूप परमेश्वर उसको अपने मिलाप में मिला लेता है॥ ६॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥
सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥
नाम की देन देने वाला सतिगुरु अपना शब्द ही सुनाता है।

ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥
वह माया के पीछे भागते मन पर विराम लगाकर उसे नियंत्रित करता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥੭॥
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥७॥
पूर्ण गुरु से प्राणी ज्ञान प्राप्त करता है ॥७॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਿਰਜਿ ਜਿਨਿ ਗੋਈ ॥
आपे करता स्रिसटि सिरजि जिनि गोई ॥
सृजनहार प्रभु स्वयं सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही इसका विनाश भी करता है।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥
उस प्रभु के बिना दूसरा कोई नहीं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥੮॥੬॥
नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥८॥६॥
हे नानक ! कोई गुरमुख ही इस तथ्य को समझता है ॥८॥ ६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ॥
नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥
परमेश्वर का अमूल्य नाम गुरमुख ही प्राप्त करता है।

ਨਾਮੋ ਸੇਵੇ ਨਾਮਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ॥
नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥
वह नाम की सेवा करता रहता है और नाम में सहज ही समा जाता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਰਸਨਾ ਨਿਤ ਗਾਵੈ ॥
अम्रितु नामु रसना नित गावै ॥
वह नित्य ही अपनी जिव्हा से अमृतमयी नाम का गुणानुवाद करता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੋ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥
जिस नो क्रिपा करे सो हरि रसु पावै ॥१॥
जिस पर भगवान अपनी कृपा करता है, वही व्यक्ति हरि रस प्राप्त करता है॥१॥

ਅਨਦਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਜਪਉ ਜਗਦੀਸਾ ॥
अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥
हे जिज्ञासु ! अपने मन में रात-दिन सृष्टि के स्वामी जगदीश का जाप करो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵਉ ਪਰਮ ਪਦੁ ਸੂਖਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के माध्यम से तुझे परम पद अवस्था प्राप्त होगी॥ १॥ रहाउ॥

ਹਿਰਦੈ ਸੂਖੁ ਭਇਆ ਪਰਗਾਸੁ ॥
हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥
उस गुरमुख के मन में प्रसन्नता प्रकट हो जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਹਿ ਸਚੁ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥
जो व्यक्ति गुणों के भण्डार सत्यस्वरूप परमेश्वर का भजन करते है,

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਨਿਤ ਹੋਵਹਿ ਦਾਸੁ ॥
दासनि दास नित होवहि दासु ॥
वह सदा अपने ईश्वर के सेवकों के सेवकों का सेवक बना रहता है।

ਗ੍ਰਿਹ ਕੁਟੰਬ ਮਹਿ ਸਦਾ ਉਦਾਸੁ ॥੨॥
ग्रिह कुट्मब महि सदा उदासु ॥२॥
वह अपने गृह एवं परिवार में हमेशा निर्लिप्त रहता है॥ २॥

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋ ਹੋਈ ॥
जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥
कोई विरला गुरमुख ही जीवन में मोह-माया के बन्धनों से मुक्त होता है।

ਪਰਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਵੈ ਸੋਈ ॥
परम पदारथु पावै सोई ॥
केवल यही नाम पदार्थ को प्राप्त करता है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮੇਟੇ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥
त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥
वह माया के त्रिगुणों को मिटा कर पवित्र हो जाता है।

ਸਹਜੇ ਸਾਚਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੩॥
सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥३॥
वह सहज ही उस सत्यस्वरूप परमेश्वर में लीन हो जाता है॥ ३ ॥

ਮੋਹ ਕੁਟੰਬ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
मोह कुट्मब सिउ प्रीति न होइ ॥
उसका अपने परिवार से मोह एवं प्रेम नहीं रहता।

ਜਾ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य का निवास हो जाता है,"

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥
गुरमुख का मन भगवान की भक्ति में लग जाता है और वह स्थिर रहता है।

ਹਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਬੂਝੈ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੪॥
हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥४॥
जो प्रभु के हुक्म को पहचानता है, वह सत्य को समझ लेता है॥ ४॥

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
तूं करता मै अवरु न कोइ ॥
हे प्रभु ! तू स्रष्टा हैं, मैं किसी दूसरे को नहीं जानता।

ਤੁਝੁ ਸੇਵੀ ਤੁਝ ਤੇ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥
हे नाथ ! मैं तेरी ही सेवा करता हूँ और तेरे द्वारा ही मैं शोभा पाता हूँ।

ਕਿਰਪਾ ਕਰਹਿ ਗਾਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥
यदि वह प्रभु दया करे तो मैं उसका यश गायन करता हूँ।

ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ ਲੋਇ ॥੫॥
नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥५॥
समूचे जगत् में (प्रभु के) नाम रत्न का ही प्रकाश है॥ ५॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਾਣੀ ਮੀਠੀ ਲਾਗੀ ॥
गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥
गुरुमुख को वाणी बहुत मीठी लगती है।

ਅੰਤਰੁ ਬਿਗਸੈ ਅਨਦਿਨੁ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥
उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और रात-दिन उसकी वृति इस पर केन्द्रित हुई रहती है।

ਸਹਜੇ ਸਚੁ ਮਿਲਿਆ ਪਰਸਾਦੀ ॥
सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥
गुरु की कृपा से सत्य नाम सहज ही मिल जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਪੂਰੈ ਵਡਭਾਗੀ ॥੬॥
सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥६॥
पूर्ण किस्मत से प्राणी को सतिगुरु मिलता है ॥६॥

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਦੁਖ ਨਾਸੁ ॥
हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥
अहंकार, मोह, दुर्बुद्धि एवं दुख नाश हो जाते हैं,"

ਜਬ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥
जब गुणों के सागर प्रभु का नाम हृदय में बसता है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਧਿ ਪ੍ਰਗਟੀ ਪ੍ਰਭ ਜਾਸੁ ॥
गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥
जब प्रभु के चरण हृदय में बस जाते है,

ਜਬ ਹਿਰਦੈ ਰਵਿਆ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸੁ ॥੭॥
जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥७॥
ईश्वर का भजन एवं उसका यश गायन करने से गुरमुख की बुद्धि जाग जाती है।॥७॥

ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥
जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥
जिसे प्रभु नाम प्रदान करता है, केवल वही पुरुष ही इसको पाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲੇ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥
जो गुरु के माध्यम से अपने अहंकार को त्याग देते हैं, उनको प्रभु अपने साथ मिला लेता है।

ਹਿਰਦੈ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
हिरदै साचा नामु वसाए ॥
अपने हृदय में वह सत्य नाम को बसा लेते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥੮॥੭॥
नानक सहजे साचि समाए ॥८॥७॥
हे नानक ! वे सहज ही सत्य में समा जाते हैं ॥८॥७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਮਨ ਹੀ ਮਨੁ ਸਵਾਰਿਆ ਭੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
मन ही मनु सवारिआ भै सहजि सुभाइ ॥
जिस व्यक्ति ने ईश्वर के भय में सहज स्वभाव ही मन को संवार लिया है,

ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਰੰਗਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥
उसका मन नाम में मग्न रहता है और वह प्रभु में सुरति लगाकर रखता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਰਜਾਇ ॥੧॥
निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥१॥
प्रभु की इच्छा से वह अपने आत्मस्वरूप में ही रहता है।॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਜਾਇ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥
सतिगुरु की सेवा करने से अभिमान दूर हो जाता है एवं

ਗੋਵਿਦੁ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ रहाउ ॥
गुणों का भण्डार गोविन्द प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਜਾ ਸਬਦਿ ਭਉ ਖਾਇ ॥
मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥
जब मनुष्य का मन प्रभु का भय धारण कर लेता है तो वह इच्छा रहित हो जाता है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਮਲਾ ਸਭ ਤੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥
मेरा निर्मल प्रभु सर्वत्र व्यापक हो रहा है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥२॥
गुरु की कृपा से प्राणी प्रभु मिलन में मिल जाता है॥ २॥

ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੋ ਦਾਸੁ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥
ईश्वर के सेवकों का सेवक आत्मिक सुख प्राप्त करता है।

ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਇਨ ਬਿਧਿ ਪਾਇਆ ਜਾਏ ॥
मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥
मेरा प्रभु-परमेश्वर इस विधि से प्राप्त होता है।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੩॥
हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥३॥
परमेश्वर की कृपा से मनुष्य राम की गुणस्तुति करता है॥ ३॥

ਧ੍ਰਿਗੁ ਬਹੁ ਜੀਵਣੁ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
ध्रिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥
ऐसे लम्बे जीवन पर धिक्कार है जिसमें प्रभु के नाम से प्रेम नहीं होता।

ਧ੍ਰਿਗੁ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕਾਮਣਿ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰੁ ॥
ध्रिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥
सुन्दर स्त्री की सुखदायक सेज भी धिक्कार योग्य है जिससे मोह का अन्धेरा बना रहता है।

ਤਿਨ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥੪॥
तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥४॥
उनका जीवन ही फलदायक है, जिन्हें नाम का सहारा प्राप्त है ॥४॥

ਧ੍ਰਿਗੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਗ੍ਰਿਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
ध्रिगु ध्रिगु ग्रिहु कुट्मबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥
ऐसा गृहस्थ-जीवन एवं परिवार भी धिक्कार योग्य है, जिसके कारण प्रभु से प्रेम नहीं होता।

ਸੋਈ ਹਮਾਰਾ ਮੀਤੁ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋਇ ॥
सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥
केवल वही मेरा मित्र है, जो उस ईश्वर का यश गायन करता है।

ਹਰਿ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੫॥
हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ ॥५॥
प्रभु के नाम बिना मेरा दूसरा कोई नहीं ॥ ५॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਮ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥
सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥
सतिगुरु से मैंने मुक्ति एवं शोभा प्राप्त की है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਦੂਖੁ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈ ॥
हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥
भगवान के नाम का ध्यान करने से सभी दुःख मिट गए हैं।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੬॥
सदा अनंदु हरि नामि लिव लाई ॥६॥
भगवान के नाम में वृति लगाने से सदैव आनंद प्राप्त हो गया है ॥६॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਕਉ ਸਰੀਰ ਸੁਧਿ ਭਈ ॥
गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥
गुरु को मिलने से हमारा शरीर शुद्ध हो गया है।

ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸਭ ਅਗਨਿ ਬੁਝਈ ॥
हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥
जिससे अहंकार एवं तृष्णा की अग्नि समस्त बुझ गए हैं।

ਬਿਨਸੇ ਕ੍ਰੋਧ ਖਿਮਾ ਗਹਿ ਲਈ ॥੭॥
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥७॥
मेरा क्रोध मिट गया है और मैंने सहनशीलता धारण कर ली है॥ ७॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ॥
हरि आपे क्रिपा करे नामु देवै ॥
भगवान स्वयं ही कृपा करके अपना नाम प्रदान करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਤਨੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਲੇਵੈ ॥
गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥
कोई विरला गुरमुख ही नाम-रत्न को प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਅਲਖ ਅਭੇਵੈ ॥੮॥੮॥
नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥८॥८॥
हे नानक ! वह तो अलक्ष्य तथा अभेद परमेश्वर की ही गुणस्तुति करता है ॥८॥८॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥
रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹ ਫੇਰੇ ਤੇ ਵੇਮੁਖ ਬੁਰੇ ਦਿਸੰਨਿ ॥
सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥
जो इन्सान गुरु से मुँह फेर लेते हैं, ऐसे विमुख इन्सान बड़े बुरे दिखाई देते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਨਿ ਫਿਰਿ ਵੇਲਾ ਨਾ ਲਹੰਨਿ ॥੧॥
अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि ॥१॥
ऐसे व्यक्ति बन्धनों में फँसकर दिन-रात दुख भोगते रहते हैं और फिर उन्हें बन्धनों से बचने का अवसर प्राप्त नहीं होता ॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰਿ ॥
हरि हरि राखहु क्रिपा धारि ॥
हे प्रभु-परमेश्वर ! कृपा धारण करके हमारी रक्षा करें।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮੇਲਾਇ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥१॥ रहाउ ॥
हे ईश्वर ! मुझे सत्संग में मिला दो, चूंकि मैं अपने मन में प्रभु-परमेश्वर के गुणों को स्मरण करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੇ ਭਗਤ ਹਰਿ ਭਾਵਦੇ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਇ ਚਲੰਨਿ ॥
से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि ॥
भगवान को वही भक्त अच्छे लगते हैं, जो गुरु की इच्छानुसार चलते हैं।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸੇਵਾ ਕਰਨਿ ਜੀਵਤ ਮੁਏ ਰਹੰਨਿ ॥੨॥
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥२॥
वे अपना अहंकार त्यागकर प्रभु की सेवा-भक्ति करते हैं और संसार का कर्म करते हुए भी माया के मोह से मृत रहते हैं।॥ २॥

ਜਿਸ ਦਾ ਪਿੰਡੁ ਪਰਾਣ ਹੈ ਤਿਸ ਕੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰ ॥
जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥
जिस प्रभु का दिया हुआ यह शरीर और यह प्राण है, उसकी ही सरकार है अर्थात् उसका हुकम सब पर सक्रिय है।

ਓਹੁ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਹਰਿ ਰਖੀਐ ਹਿਰਦੈ ਧਾਰਿ ॥੩॥

ओहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥३॥

उसको अपने हृदय से किसी भी अवस्था में क्यों विस्मृत करें ? हमें ईश्वर को अपने हृदय से लगाकर रखना चाहिए॥ ३॥

ਨਾਮਿ ਮਿਲਿਐ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਨਾਮਿ ਮੰਨਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥

नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥

यदि नाम प्राप्त हो जाए तो ही मनुष्य को मान-सम्मान मिलता है और नाम में आस्था रखने से उसको आत्मिक सुख मिलता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੪॥

सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥४॥

सतिगुरु से ही नाम प्राप्त होता है। उसकी अपनी कृपा से ही वह प्रभु पाया जाता है॥ ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹੁ ਫੇਰੇ ਓਇ ਭ੍ਰਮਦੇ ਨਾ ਟਿਕੰਨਿ ॥

सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे ना टिकंनि ॥

जो व्यक्ति सतिगुरु से मुँह फेर लेते हैं, वह (संसार में) भटकते ही रहते है और उन्हें शांति नहीं मिलती।

ਧਰਤਿ ਅਸਮਾਨੁ ਨ ਝਲਈ ਵਿਚਿ ਵਿਸਟਾ ਪਏ ਪਚੰਨਿ ॥੫॥

धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥५॥

गुरु से विमुख होने वाले लोगों को धरती एवं गगन भी सहारा नहीं देते। विष्ठा में गिरे हुए वह वहाँ गल-सड़ जाते हैं।॥ ५॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਮੋਹ ਠਗਉਲੀ ਪਾਇ ॥

इहु जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाइ ॥

माया ने इस संसार को दुविधा में डालकर मोह की बूटी खिलाकर कुमार्गगामी बना दिया है

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਤਿਨ ਨੇੜਿ ਨ ਭਿਟੈ ਮਾਇ ॥੬॥

जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥६॥

लेकिन जिन्हें सतिगुरु जी मिल जाते हैं, माया उनके निकट नहीं आती॥ ६ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਸੋ ਸੋਹਣੇ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਗਵਾਇ ॥

सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु गवाइ ॥

जो व्यक्ति सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वह अति सुन्दर हैं। वह अपने अहंकार की मलिनता को दूर फेंक देते हैं।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਚਲਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੭॥
सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥७॥
वही व्यक्ति निर्मल हैं जो गुरु के शब्द में मग्न रहते हैं। वह सतिगुरु के निर्देशानुसार अनुसरण करते हैं।॥७॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਤੂੰ ਤੂੰ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇ ॥
हरि प्रभ दाता एकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥
हे मेरे प्रभु-परमेश्वर ! एक तू ही दाता है, तू स्वयं ही प्राणियों को क्षमादान करके अपने साथ मिला लेता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਛਡਾਇ ॥੮॥੧॥੯॥
जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥८॥१॥९॥
हे ईश्वर ! नानक ने तेरी शरण ली है। जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही उसको तू मुक्ति प्रदान कर ॥८॥१॥९॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ਕਰਹਲੇ
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਰਹਲੇ ਮਨ ਪਰਦੇਸੀਆ ਕਿਉ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਮਾਇ ॥
करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥
हे मेरे ऊँट समान परदेसी मन ! तू किस तरह अपनी माता समान प्रभु से मिल सकता है ?

ਗੁਰੁ ਭਾਗਿ ਪੂਰੈ ਪਾਇਆ ਗਲਿ ਮਿਲਿਆ ਪਿਆਰਾ ਆਇ ॥੧॥
गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥१॥
जब पूर्ण सौभाग्य से गुरु मिल जाए तो ही प्रियतम (प्रभु) आलिंगन करके मिल सकता है॥ १॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! महापुरुष सतिगुरु का ध्यान करता रह॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਿਆਇ ॥
मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥
हे मेरे विचारवान भटकते मन ! तू हरि राम के नाम का ध्यान कर।

ਜਿਥੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਹਰਿ ਆਪੇ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੨॥
जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ॥२॥
जिस स्थान पर कर्मों का लेखा-जोखा माँगा जाएगा, ईश्वर स्वयं तेरी मुक्ति करा देगा ॥ २॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲਾ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਹਉਮੈ ਆਇ ॥
मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥
हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! कभी तुम अत्यंत निर्मल होते थे लेकिन अब तुझे अहंकार की मैल आकर लग गई है।

ਪਰਤਖਿ ਪਿਰੁ ਘਰਿ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰਾ ਵਿਛੁੜਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥੩॥
परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥३॥
प्रियतम प्रभु तेरे हृदय गृह में तेरे सामने ही प्रत्यक्ष है। उससे जुदा होकर तुम चोटें खा रहे हो॥ ३॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਭਾਲਿ ਭਾਲਾਇ ॥
मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥
हे मेरे प्यारे मन ! कोशिश कर और अपने हृदय में ईश्वर की भलीभाँति खोज कर।

ਉਪਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਲਭਈ ਗੁਰੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਦੇਖਾਇ ॥੪॥
उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥४॥
किसी भी उपाय से वह मिल नहीं सकता, गुरु जी तेरे हृदय में ही तुझे ईश्वर के दर्शन करवा देंगे॥ ४॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥
हे मेरे मन ! दिन-रात प्रभु के चरणों में वृति लगा।

ਘਰੁ ਜਾਇ ਪਾਵਹਿ ਰੰਗ ਮਹਲੀ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇ ॥੫॥

घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥५॥

इस प्रकार प्रियतम के महल में जाकर अपना स्थान प्राप्त कर लोगे। लेकिन गुरु ही तुझे प्रियतम प्रभु से मिला सकता है ॥५॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਤੂੰ ਮੀਤੁ ਮੇਰਾ ਪਾਖੰਡੁ ਲੋਭੁ ਤਜਾਇ ॥

मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडु लोभु तजाइ ॥

हे मेरे मन ! तुम मेरे मित्र हो, इसलिए तू पाखण्ड एवं लोभ को त्याग दे।

ਪਾਖੰਡਿ ਲੋਭੀ ਮਾਰੀਐ ਜਮ ਡੰਡੁ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੬॥

पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥६॥

क्योंकि पाखण्डी एवं लोभी की खूब पिटाई होती है, अपनी छड़ी से मृत्यु उनको दण्ड देती है॥ ६॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਤੂੰ ਮੈਲੁ ਪਾਖੰਡੁ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇ ॥

मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥

हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! तुम मेरे प्राण हो, तू पाखण्ड एवं दुविधा की मैल त्याग दे।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤੀ ਮਲੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥੭॥

हरि अम्रित सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥७॥

हरि नाम रूपी अमृत का सरोवर पूर्ण गुरु ने भरा हुआ है। अत: सत्संग में मिलने से विकारों की मैल दूर हो जाती है॥ ७॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਇਕ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣਾਇ ॥

मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥

हे मेरे परदेसी मन ! एक गुरु की सीख सुन।

ਇਹੁ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਪਸਰਿਆ ਅੰਤਿ ਸਾਥਿ ਨ ਕੋਈ ਜਾਇ ॥੮॥

इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥८॥

माया का यह मोह अत्याधिक फैला हुआ है। अन्त में प्राणी के साथ कुछ भी नहीं जाता॥ ८ ॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਸਾਜਨਾ ਹਰਿ ਖਰਚੁ ਲੀਆ ਪਤਿ ਪਾਇ ॥

मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥

हे स्वेच्छाचारी मन ! हे मेरे साजन ! ईश्वर के नाम को अपनी यात्रा खर्च के तौर पर प्राप्त करके शोभा पा।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਇਆ ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਇਆ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥੯॥
हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥९॥
ईश्वर के दरबार में तुझे मान-सम्मान की पोशाक पहनाई जाएगी और ईश्वर स्वयं तुझे अपने आलिंगन लगाएगा ॥९॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਗੁਰਿ ਮੰਨਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥
हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! जो गुरु का आदेश मानता है, वह गुरु जी के उपदेश से प्रभु की सेवा करता है।

ਗੁਰ ਆਗੈ ਕਰਿ ਜੋਦੜੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇ ॥੧੦॥੧॥
गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥१०॥१॥
हे नानक ! गुरु के समक्ष प्रार्थना कर, वह तुझे ईश्वर के साथ मिला देंगे॥ १०॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी महला ४ ॥
गउड़ी महला ४ ॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ਵੀਚਾਰਿ ਦੇਖੁ ਸਮਾਲਿ ॥
मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥
हे मेरे विचारशील मन ! विचार करके ध्यानपूर्वक देख।

ਬਨ ਫਿਰਿ ਥਕੇ ਬਨ ਵਾਸੀਆ ਪਿਰੁ ਗੁਰਮਤਿ ਰਿਦੈ ਨਿਹਾਲਿ ॥੧॥
बन फिरि थके बन वासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥१॥
वनों में रहने वाले वनवासी वनों में भटकते थक गए हैं। गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु-पति को अपने हृदय में ही देख॥ १॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! गुरु गोबिन्द को स्मरण कर ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵੀਚਾਰੀਆ ਮਨਮੁਖ ਫਾਥਿਆ ਮਹਾ ਜਾਲਿ ॥
मन करहला वीचारीआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥
हे मेरे विचारवान मन ! स्वेच्छाचारी (मोह-माया के) भारी जाल में फँसे हुए हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥

गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥२॥

गुरमुख प्राणी मोह-माया के बन्धनों से मुक्त है चूंकि वह हरि-परमेश्वर का नाम-ही याद करता रहता है।॥ २॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਲਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਲੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥੩॥

सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥३॥

संतों की संगति में रहकर भगवान के नाम का ध्यान करता रह, क्योंकि भगवान का नाम ही तेरे साथ (परलोक में) जाएगा ॥ ३॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵਡਭਾਗੀਆ ਹਰਿ ਏਕ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥

मन करहला वडभागीआ हरि एक नदरि निहालि ॥

हे भटकते मन ! जिस व्यक्ति पर भगवान अपनी एक कृपा-दृष्टि कर देता है, वह भाग्यशाली हो जाता है।

ਆਪਿ ਛਡਾਏ ਛੁਟੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਸਮਾਲਿ ॥੪॥
आपि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥४॥
यदि ईश्वर तुझे स्वयं मुक्त करे, तुम मुक्त हो जाओगे। सतिगुरु के चरणों की तू उपासना कर॥ ४॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰਿਆ ਵਿਚਿ ਦੇਹੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਲਿ ॥
मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति समालि ॥
हे मेरे प्रिय मन ! देहि में मौजूद ज्योति को ध्यानपूर्वक रख।

ਗੁਰਿ ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਵਿਖਾਲਿਆ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰੀ ਦਇਆਲਿ ॥੫॥
गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥५॥
गुरु जी ने नाम के नौ भण्डार दिखा दिए हैं। दयालु ईश्वर ने यह देन प्रदान कर दी है॥ ५॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਤੂੰ ਚੰਚਲਾ ਚਤੁਰਾਈ ਛਡਿ ਵਿਕਰਾਲਿ ॥
मन करहला तूं चंचला चतुराई छडि विकरालि ॥
हे मेरे चंचल मन ! अपनी विकराल चतुराई को त्याग दे।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਹਰਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰੇ ਅੰਤ ਕਾਲਿ ॥੬॥
हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे अंत कालि ॥६॥
प्रभु-परमेश्वर के नाम का तू भजन कर। अंतिम समय ईश्वर का नाम तेरा कल्याण करेगा ॥ ६॥

ਮਨ ਕਰਹਲਾ ਵਡਭਾਗੀਆ ਤੂੰ ਗਿਆਨੁ ਰਤਨੁ ਸਮਾਲਿ ॥
मन करहला वडभागीआ तूं गिआनु रतनु समालि ॥
हे मेरे स्वेच्छाचारी मन ! यदि तू ज्ञान रुपी रत्न की सँभाल कर ले तो तू बड़ा सौभाग्यशाली होगा।

ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਖੜਗੁ ਹਥਿ ਧਾਰਿਆ ਜਮੁ ਮਾਰਿਅੜਾ ਜਮਕਾਲਿ ॥੭॥
गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ जमु मारिअड़ा जमकालि ॥७॥
अपने हाथ में मृत्यु का वध करने वाली गुरु के ज्ञान की तलवार पकड़ कर तू यमदूत का संहार कर दे ॥ ७ ॥

ਅੰਤਰਿ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਭ੍ਰਮਿ ਭਵਹਿ ਬਾਹਰਿ ਭਾਲਿ ॥
अंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥
हे स्वेच्छाचारी मन ! तेरे भीतर नाम का भण्डार है, तू इसे ढूंढता हुआ दुविधा में बाहर भटकता फिरता है।

ਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧੜਾ ਨਾਲਿ ॥੮॥
गुरु पुरखु पूरा भेटिआ हरि सजणु लधड़ा नालि ॥८॥
महापुरुष गुरु जी जब तुझे मिलेंगे तो मित्र प्रभु को अपने साथ ही पा लोगे॥ ८ ॥

ਰੰਗਿ ਰਤੜੇ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥
रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥
हे मेरे भटकते मन ! तू सांसारिक ऐश्वर्य-वैभव में लीन है। प्रभु के प्रेम को तू सदैव धारण कर।

ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਕਦੇ ਨ ਉਤਰੈ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲਿ ॥੯॥
हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥९॥
गुरु की सेवा करने और नाम-स्मरण द्वारा प्रभु का रंग फीका नहीं होता ॥९॥

ਹਮ ਪੰਖੀ ਮਨ ਕਰਹਲੇ ਹਰਿ ਤਰਵਰੁ ਪੁਰਖੁ ਅਕਾਲਿ ॥
हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥
हे मेरे भटकते मन ! हम पक्षी हैं, प्रभु-परमेश्वर एक अमर वृक्ष है।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧੦॥੨॥
वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥१०॥२॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से भाग्यशाली ही नाम रूपी वृक्ष को प्राप्त करते हैं और नाम का चिंतन करते रहते हैं।॥ १०॥ २ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ਜਬ ਇਹੁ ਮਨ ਮਹਿ ਕਰਤ ਗੁਮਾਨਾ ॥
जब इहु मन महि करत गुमाना ॥
जब इन्सान अपने मन में घमण्ड करता है

ਤਬ ਇਹੁ ਬਾਵਰੁ ਫਿਰਤ ਬਿਗਾਨਾ ॥
तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥
तो वह पागल व पराया होकर भटकता रहता है।

ਜਬ ਇਹੁ ਹੂਆ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
जब इहु हूआ सगल की रीना ॥
परन्तु जब यह सब की चरण-धूलि हो जाता है

ਤਾ ਤੇ ਰਮਈਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨਾ ॥੧॥
ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥१॥
तो वह राम के प्रत्येक हृदय में दर्शन कर लेता है॥ १॥

ਸਹਜ ਸੁਹੇਲਾ ਫਲੁ ਮਸਕੀਨੀ ॥
सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥
विनम्रता का फल प्राकृतिक तौर पर सुहावना है।

ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੈ ਮੋਹਿ ਦਾਨੁ ਦੀਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥१॥ रहाउ ॥
यह देन मेरे सतिगुरु ने मुझे दान की है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਬ ਕਿਸ ਕਉ ਇਹੁ ਜਾਨਸਿ ਮੰਦਾ
जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥
जब तक मनुष्य दूसरों को बुरा समझता है तो

ਤਬ ਸਗਲੇ ਇਸੁ ਮੇਲਹਿ ਫੰਦਾ ॥
तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥
सभी उसको (बेईमानी के) जाल में फँसाते हैं।

ਮੇਰ ਤੇਰ ਜਬ ਇਨਹਿ ਚੁਕਾਈ ॥
मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥
जब वह भेदभाव के अर्थों में ख्याल करने से हट जाता है

ਤਾ ਤੇ ਇਸੁ ਸੰਗਿ ਨਹੀ ਬੈਰਾਈ ॥੨॥
ता ते इसु संगि नही बैराई ॥२॥
तो उससे कोई भी शत्रुता नहीं करता ॥२॥

ਜਬ ਇਨਿ ਅਪੁਨੀ ਅਪਨੀ ਧਾਰੀ ॥
जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥
जब वह मेरी अपनी का स्वार्थ रखता है तो

ਤਬ ਇਸ ਕਉ ਹੈ ਮੁਸਕਲੁ ਭਾਰੀ ॥
तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥
उस पर भारी विपदा टूट पड़ती है।

ਜਬ ਇਨਿ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਤਾ ॥
जब इनि करणैहारु पछाता ॥
लेकिन जब वह अपने प्रभु को पहचान लेता है

ਤਬ ਇਸ ਨੋ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਤਾਤਾ ॥੩॥
तब इस नो नाही किछु ताता ॥३॥
तो इसे कोई भी जलन नहीं होती। ३॥

ਜਬ ਇਨਿ ਅਪੁਨੋ ਬਾਧਿਓ ਮੋਹਾ ॥
जब इनि अपुनो बाधिओ मोहा ॥
जब मनुष्य अपने आपको सांसारिक मोह में उलझा लेता है,

ਆਵੈ ਜਾਇ ਸਦਾ ਜਮਿ ਜੋਹਾ ॥
आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥
तो वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है और सदा मृत्यु की दृष्टि में होता है।

ਜਬ ਇਸ ਤੇ ਸਭ ਬਿਨਸੇ ਭਰਮਾ ॥
जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥
जब समस्त दुविधाएँ उससे निवृत्त हो जाती हैं तो

ਭੇਦੁ ਨਾਹੀ ਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਾ ॥੪॥
भेदु नाही है पारब्रहमा ॥४॥
इसमें पारब्रह्म प्रभु के बीच कोई अन्तर नहीं रहता॥ ४॥

ਜਬ ਇਨਿ ਕਿਛੁ ਕਰਿ ਮਾਨੇ ਭੇਦਾ ॥
जब इनि किछु करि माने भेदा ॥
जब से मनुष्य ने कुछ भेदभाव नियत किया है,

ਤਬ ਤੇ ਦੂਖ ਡੰਡ ਅਰੁ ਖੇਦਾ ॥
तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥
तब से वह दुःख, दण्ड एवं विपदा सहन करता है।

ਜਬ ਇਨਿ ਏਕੋ ਏਕੀ ਬੂਝਿਆ ॥
जब इनि एको एकी बूझिआ ॥
जब से यह केवल एक ईश्वर को जानने लग जाता है,

ਤਬ ਤੇ ਇਸ ਨੋ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂਝਿਆ ॥੫॥
तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥५॥
तब से उसको सर्वस्व का ज्ञान हो जाता है। ५॥

ਜਬ ਇਹੁ ਧਾਵੈ ਮਾਇਆ ਅਰਥੀ ॥
जब इहु धावै माइआ अरथी ॥
जब वह धन-दौलत हेतु भाग-दौड़ करता है तो

ਨਹ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ਨਹ ਤਿਸ ਲਾਥੀ ॥
नह त्रिपतावै नह तिस लाथी ॥
वह संतुष्ट नहीं होता और न ही उसकी प्यास बुझती है।

ਜਬ ਇਸ ਤੇ ਇਹੁ ਹੋਇਓ ਜਉਲਾ ॥
जब इस ते इहु होइओ जउला ॥
जब वह इससे भाग जाता है तो

ਪੀਛੈ ਲਾਗਿ ਚਲੀ ਉਠਿ ਕਉਲਾ ॥੬॥
पीछै लागि चली उठि कउला ॥६॥
लक्ष्मी उठकर उसके पीछे लग जाती है। ६॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਓ ॥
करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिओ ॥
जब मनुष्य को कृपा करके सतिगुरु जी मिल जाते हैं

ਮਨ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਦੀਪਕੁ ਜਲਿਓ ॥
मन मंदर महि दीपकु जलिओ ॥
तो मनुष्य के मन-मन्दिर में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो जाता है।

ਜੀਤ ਹਾਰ ਕੀ ਸੋਝੀ ਕਰੀ ॥
जीत हार की सोझी करी ॥
जब मनुष्य विजय एवं पराजय की अनुभूति कर लेता है तो

ਤਉ ਇਸੁ ਘਰ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਪਰੀ ॥੭॥
तउ इसु घर की कीमति परी ॥७॥
वह इस घर के मूल्य को जान लेता है॥ ७॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਏਕੈ ॥
करन करावन सभु किछु एकै ॥
एक परमेश्वर सब कुछ करता और जीवों से करवाता है।

ਆਪੇ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰਿ ਬਿਬੇਕੈ ॥
आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥
वह स्वयं ही बुद्धि, विचार एवं विवेक है।

ਦੂਰਿ ਨ ਨੇਰੈ ਸਭ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥
दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥
वह कहीं दूर नहीं अपितु सबके निकट एवं पास ही है।

ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥੮॥੧॥
सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥८॥१॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमेश्वर की प्रेमपूर्वकं प्रशंसा कर ॥ ८ ॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਨਾਮੇ ਲਾਗਾ ॥
गुर सेवा ते नामे लागा ॥
गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से ही मनुष्य नाम के साथ लग जाता है।

ਤਿਸ ਕਉ ਮਿਲਿਆ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗਾ ॥
तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥
जिसके मस्तक पर भाग्यरेखाएँ विद्यमान हों केवल वहीं व्यक्ति नाम को प्राप्त करता है।

ਤਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਰਵਿਆ ਸੋਇ ॥
तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥
वह प्रभु उसके हृदय में निवास करता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਨਿਹਚਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥
मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥१॥
(प्रभु के निवास से) मनुष्य का मन एवं तन शीतल तथा स्थिर हो जाते हैं।॥ १॥

ਐਸਾ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर का ऐसा भजन गायन कर,

ਈਹਾ ਊਹਾ ਜੋ ਕਾਮਿ ਤੇਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥
जो लोक तथा परलोक में तेरे काम आएगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਭਉ ਅਪਦਾ ਜਾਇ ॥
जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से भय एवं विपदा दूर हो जाते हैं

ਧਾਵਤ ਮਨੂਆ ਆਵੈ ਠਾਇ ॥
धावत मनूआ आवै ठाइ ॥
और भटकता हुआ मन स्थिर हो जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से पीड़ा दोबारा नहीं आती।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਹਉਮੈ ਭਾਗੈ ॥੨॥
जासु जपत इह हउमै भागै ॥२॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से यह अहंकार भाग जाता है॥ २॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਵਸਿ ਆਵਹਿ ਪੰਚਾ ॥
जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से पाँच विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार) वश में आ जाते हैं।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਰਿਦੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੰਚਾ ॥
जासु जपत रिदै अम्रितु संचा ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से हरि-रस हृदय में संचित हो जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
जासु जपत इह त्रिसना बुझै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से यह तृष्णा मिट जाती है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਿਝੈ ॥੩॥
जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥३॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से प्रभु के दरबार में मनुष्य स्वीकार हो जाता है॥ ३॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕੋਟਿ ਮਿਟਹਿ ਅਪਰਾਧ ॥
जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਹੋਵਹਿ ਸਾਧ ॥
जासु जपत हरि होवहि साध ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से मनुष्य हरि का संत बन जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਵੈ ॥
जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से मन शीतल हो जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਵੈ ॥੪॥
जासु जपत मलु सगली खोवै ॥४॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से तमाम (मोह-माया की) मैल साफ हो जाती है॥ ४ ॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ॥
जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से हरि रत्न प्राप्त हो जाता है।

ਬਹੁਰਿ ਨ ਛੋਡੈ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹਿਲੈ ॥
बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥
मनुष्य दोबारा प्रभु को नहीं छोड़ता और उसके साथ घुलमिल जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕਈ ਬੈਕੁੰਠ ਵਾਸੁ ॥
जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से अधिकतर स्वर्ग में निवास पा लेते हैं।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੫॥
जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥५॥
जिसका भजन करने से मनुष्य सहज ही आत्मिक सुख में निवास करता है। ५॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਅਗਨਿ ਨ ਪੋਹਤ ॥
जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से यह अग्नि प्रभावित नहीं करती।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹੁ ਕਾਲੁ ਨ ਜੋਹਤ ॥
जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥
जिसका भजन करने से यह मृत्यु दृष्टि नहीं करती।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਤੇਰਾ ਨਿਰਮਲ ਮਾਥਾ ॥
जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से तेरा मस्तक निर्मल हो जाएगा।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸਗਲਾ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ॥੬॥
जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥६॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से तमाम दुःख- क्लेश दूर हो जाता है॥ ६॥

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਮੁਸਕਲੁ ਕਛੁ ਨ ਬਨੈ ॥
जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से मनुष्य पर कोई विपदा पेश नहीं आती।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਸੁਣਿ ਅਨਹਤ ਧੁਨੈ ॥
जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से मनुष्य अनहद ध्वनि श्रवण करता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਇਹ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥
जासु जपत इह निरमल सोइ ॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से प्राणी का जीवन पवित्र हो जाता है।

ਜਾਸੁ ਜਪਤ ਕਮਲੁ ਸੀਧਾ ਹੋਇ ॥੭॥
जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥७॥
जिसकी महिमा-स्तुति करने से हृदय कमल सीधा (सरल) हो जाता है॥ ७ ॥

ਗੁਰਿ ਸੁਭ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਊਪਰਿ ਕਰੀ ॥
गुरि सुभ द्रिसटि सभ ऊपरि करी ॥
गुरु जी ने अपनी शुभ दृष्टि उन सब पर की है,"

ਜਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦੇ ਹਰੀ ॥
जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥
जिनके हृदय में ईश्वर ने अपना नाम (मंत्र) प्रदान किया है।

ਅਖੰਡ ਕੀਰਤਨੁ ਤਿਨਿ ਭੋਜਨੁ ਚੂਰਾ ॥
अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥
वह प्रभु के अखंड कीर्तन को अपना आहार व सुन्दर भोजन मानते हैं

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੮॥੨॥
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥
हे नानक ! जिनके पूर्ण सतिगुरु जी मार्गदर्शक हैं। ॥८॥२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥
गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥
जो व्यक्ति गुरु के शब्द को अपने हृदय में धारण कर लेता है,

ਪੰਚ ਜਨਾ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥
पंच जना सिउ संगु निवारै ॥
वह पाँच विकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से अपना संबंध तोड़ लेता है

ਦਸ ਇੰਦ੍ਰੀ ਕਰਿ ਰਾਖੈ ਵਾਸਿ ॥
दस इंद्री करि राखै वासि ॥
और दसों इन्द्रियों (पाँच ज्ञान व पाँच कर्म) को अपने वश में कर लेता है।

ਤਾ ਕੈ ਆਤਮੈ ਹੋਇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
ता कै आतमै होइ परगासु ॥१॥
उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है ॥१॥

ਐਸੀ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਤਾ ਕੈ ਹੋਇ ॥
ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ ॥
केवल उसे ही ऐसा आत्मबल प्राप्त होता है,

ਜਾ ਕਉ ਦਇਆ ਮਇਆ ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिस इन्सान पर प्रभु की दया एवं कृपा होती है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਜਨੁ ਦੁਸਟੁ ਜਾ ਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨੈ ॥
साजनु दुसटु जा कै एक समानै ॥
ऐसे इन्सान के लिए मित्र एवं शत्रु एक समान हैं।

ਜੇਤਾ ਬੋਲਣੁ ਤੇਤਾ ਗਿਆਨੈ ॥
जेता बोलणु तेता गिआनै ॥
जो कुछ वह बोलता है, वह ज्ञान ही कहता है।

ਜੇਤਾ ਸੁਨਣਾ ਤੇਤਾ ਨਾਮੁ ॥
जेता सुनणा तेता नामु ॥
जो कुछ वह सुनता है, वह प्रभु का नाम ही सुनता रहता है।

ਜੇਤਾ ਪੇਖਨੁ ਤੇਤਾ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥
जेता पेखनु तेता धिआनु ॥२॥
जो कुछ वह दृष्टिगोचर करता है, उस सब में ईश्वर की अनुभूति है॥ २॥

ਸਹਜੇ ਜਾਗਣੁ ਸਹਜੇ ਸੋਇ ॥
सहजे जागणु सहजे सोइ ॥
वह सुख में जागता है और सुख में ही सोता है।

ਸਹਜੇ ਹੋਤਾ ਜਾਇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
सहजे होता जाइ सु होइ ॥
जो कुछ प्राकृतिक होना है, वह उसके होने पर प्रसन्न रहता है।

ਸਹਜਿ ਬੈਰਾਗੁ ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਸਨਾ ॥
सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥
सहज ही वह वैराग्यवान होता है और सहज ही मुस्कराता है।

ਸਹਜੇ ਚੁਪ ਸਹਜੇ ਹੀ ਜਪਨਾ ॥੩॥
सहजे चूप सहजे ही जपना ॥३॥
सुख में ही वह खामोश रहता है और सुख में ही प्रभु के नाम का जाप करता है॥ ३॥

ਸਹਜੇ ਭੋਜਨੁ ਸਹਜੇ ਭਾਉ ॥
सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥
सहज ही वह भोजन करता है और सहज ही वह प्रभु से प्रेम करता है।

ਸਹਜੇ ਮਿਟਿਓ ਸਗਲ ਦੁਰਾਉ ॥
सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥
उसका अज्ञानता का पर्दा सहज ही सब निवृत्त हो जाता है।

ਸਹਜੇ ਹੋਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥
सहजे होआ साधू संगु ॥
वह सहज ही संतों की संगति में मिल जाता है।

ਸਹਜਿ ਮਿਲਿਓ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਸੰਗੁ ॥੪॥
सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु ॥४॥
सहज ही उसे पारब्रह्म प्रभु प्रत्यक्ष रूप से मिल जाता है। ४ ॥

ਸਹਜੇ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਸਹਜਿ ਉਦਾਸੀ ॥
सहजे ग्रिह महि सहजि उदासी ॥
आत्मिक स्थिरता में वह घर में रहता है और आत्मिक स्थिरता में ही वह निर्लिप्त रहता है।

ਸਹਜੇ ਦੁਬਿਧਾ ਤਨ ਕੀ ਨਾਸੀ ॥
सहजे दुबिधा तन की नासी ॥
सहज ही उसके शरीर की दुविधा नाश हो जाती है।

ਜਾ ਕੈ ਸਹਜਿ ਮਨਿ ਭਇਆ ਅਨੰਦੁ ॥
जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु ॥
जिसके पास सहज है, प्रसन्नता उसके हृदय में उदय हो जाती है।

ਤਾ ਕਉ ਭੇਟਿਆ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ॥੫॥
ता कउ भेटिआ परमानंदु ॥५॥
उसको परमानन्द प्रभु मिल जाता है।॥५॥

ਸਹਜੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਓ ਨਾਮੁ ॥
सहजे अम्रितु पीओ नामु ॥
सहज ही वह नाम-अमृत का पान करता है।

ਸਹਜੇ ਕੀਨੋ ਜੀਅ ਕੋ ਦਾਨੁ ॥
सहजे कीनो जीअ को दानु ॥
सहज ही वह आवश्यकतामंद प्राणियों को दान देता है।

ਸਹਜ ਕਥਾ ਮਹਿ ਆਤਮੁ ਰਸਿਆ ॥
सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥
प्रभु की कथा में उसकी आत्मा स्वाद प्राप्त करती है।

ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਵਸਿਆ ॥੬॥
ता कै संगि अबिनासी वसिआ ॥६॥
उसके साथ अनश्वर परमात्मा वास करता है॥ ६॥

ਸਹਜੇ ਆਸਣੁ ਅਸਥਿਰੁ ਭਾਇਆ ॥
सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥
सहज ही उसको आसन अच्छा लगने लग जाता है।

ਸਹਜੇ ਅਨਹਤ ਸਬਦੁ ਵਜਾਇਆ ॥
सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥
सहज ही उसके हृदय में अनहद शब्द गूंजने लगता है।

ਸਹਜੇ ਰੁਣ ਝੁਣਕਾਰੁ ਸੁਹਾਇਆ ॥
सहजे रुण झुणकारु सुहाइआ ॥
भीतर के आत्मिक आनन्द की मधुर ध्वनि सहज ही उसको शोभायमान कर देती है।

ਤਾ ਕੈ ਘਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਮਾਇਆ ॥੭॥
ता कै घरि पारब्रहमु समाइआ ॥७॥
उसके हृदय-घर में पारब्रह्म प्रभु निवास करता है॥ ७॥

ਸਹਜੇ ਜਾ ਕਉ ਪਰਿਓ ਕਰਮਾ ॥
सहजे जा कउ परिओ करमा ॥
जिसके भाग्य में प्रभु को मिलने का विधान लिखा हुआ है,

ਸਹਜੇ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਓ ਸਚੁ ਧਰਮਾ ॥
सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा ॥
वह सहज ही सच्चे धर्म वाले गुरु जी से मिल जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ॥
जा कै सहजु भइआ सो जाणै ॥
केवल वही ईश्वर की अनुभूति करता है, जिसे सहज की देन प्राप्त हुई है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਾ ਕੈ ਕੁਰਬਾਣੈ ॥੮॥੩॥
नानक दास ता कै कुरबाणै ॥८॥३॥
दास नानक उस पर कुर्बान जाता है॥ ८ ॥ ३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਗਰਭ ਵਾਸ ਤੇ ਟਰਿਆ ॥
प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥
सर्वप्रथम मनुष्य गर्भ (की पीड़ा) निवास से मुक्ति पाकर बाहर आता है।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਕੁਟੰਬ ਸੰਗਿ ਜੁਰਿਆ ॥
पुत्र कलत्र कुट्मब संगि जुरिआ ॥
तदुपरांत वह अपने आपको पुत्र, पत्नी एवं परिवार के मोह में फंसा लेता है।

ਭੋਜਨੁ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਬਹੁ ਕਪਰੇ ॥
भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥
अनेक प्रकार के भोजन एवं अनेक प्रकार के वस्त्र,"

ਸਰਪਰ ਗਵਨੁ ਕਰਹਿਗੇ ਬਪੁਰੇ ॥੧॥
सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥१॥
निश्चित ही चले जाएँगे रे; हे विनीत मनुष्य ! ॥ १ ॥

ਕਵਨੁ ਅਸਥਾਨੁ ਜੋ ਕਬਹੁ ਨ ਟਰੈ ॥
कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥
कौन-सा निवास है जो कदाचित नाश नहीं होता।

ਕਵਨੁ ਸਬਦੁ ਜਿਤੁ ਦੁਰਮਤਿ ਹਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥१॥ रहाउ ॥
वह कौन-सी वाणी है, जिससे मंदबुद्धि दूर हो जाती है ॥१॥ रहाउ ॥

ਇੰਦ੍ਰ ਪੁਰੀ ਮਹਿ ਸਰਪਰ ਮਰਣਾ ॥
इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥
इन्द्रलोक में मृत्यु निश्चित एवं अनिवार्य है।

ਬ੍ਰਹਮ ਪੁਰੀ ਨਿਹਚਲੁ ਨਹੀ ਰਹਣਾ ॥
ब्रहम पुरी निहचलु नही रहणा ॥
ब्रह्मा का लोक भी स्थिर नहीं रहना।

ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਕਾ ਹੋਇਗਾ ਕਾਲਾ ॥
सिव पुरी का होइगा काला ॥
शिवलोक का भी नाश हो जाएगा।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਬਿਨਸਿ ਬਿਤਾਲਾ ॥੨॥
त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला ॥२॥
तीन गुणों वाली माया एवं दानव लुप्त हो जाएँगे ॥२॥

ਗਿਰਿ ਤਰ ਧਰਣਿ ਗਗਨ ਅਰੁ ਤਾਰੇ ॥
गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥
पहाड़, वृक्ष, धरती, आकाश और सितारे,

ਰਵਿ ਸਸਿ ਪਵਣੁ ਪਾਵਕੁ ਨੀਰਾਰੇ ॥
रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥
सूर्य, चन्द्रमा, पवन, अग्नि,

ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਬਰਤ ਅਰੁ ਭੇਦਾ ॥
दिनसु रैणि बरत अरु भेदा ॥
दिन, रात, उपवास एवं उनके भेद,

ਸਾਸਤ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬਿਨਸਹਿਗੇ ਬੇਦਾ ॥੩॥
सासत सिम्रिति बिनसहिगे बेदा ॥३॥
शास्त्र, स्मृतियां एवं वेद समस्त नाश हो जाएँगे।॥ ३॥

ਤੀਰਥ ਦੇਵ ਦੇਹੁਰਾ ਪੋਥੀ ॥
तीरथ देव देहुरा पोथी ॥
तीर्थ स्थान, देवते, मन्दिर एवं ग्रंथ,

ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਸੋਚ ਪਾਕ ਹੋਤੀ ॥
माला तिलकु सोच पाक होती ॥
माला, तिलक, चिन्तनशील, पवित्र, एवं हवन करने वाले,

ਧੋਤੀ ਡੰਡਉਤਿ ਪਰਸਾਦਨ ਭੋਗਾ ॥
धोती डंडउति परसादन भोगा ॥
धोती, दण्डवत-नमस्कार, अन्नदान व भोग-विलास,

ਗਵਨੁ ਕਰੈਗੋ ਸਗਲੋ ਲੋਗਾ ॥੪॥
गवनु करैगो सगलो लोगा ॥४॥
ये तमाम पदार्थ एवं सारा संसार ही कूच कर जाएगा ॥४॥

ਜਾਤਿ ਵਰਨ ਤੁਰਕ ਅਰੁ ਹਿੰਦੂ ॥
जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥
जाति, वर्ण, मुसलमान एवं हिंदू,

ਪਸੁ ਪੰਖੀ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਿੰਦੂ ॥
पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥
पशु, पक्षी, अनेक योनियों के प्राणी,

ਸਗਲ ਪਾਸਾਰੁ ਦੀਸੈ ਪਾਸਾਰਾ ॥
सगल पासारु दीसै पासारा ॥
सारा जगत् एवं रचना जो दृष्टिगोचर होता है,

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇਗੋ ਸਗਲ ਆਕਾਰਾ ॥੫॥
बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥५॥
ये तमाम नष्ट हो जाएँगे ॥५॥

ਸਹਜ ਸਿਫਤਿ ਭਗਤਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨਾ ॥
सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥
प्रभु की प्रशंसा, उसकी भक्ति एवं यथार्थ ज्ञान द्वारा

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਥਾਨਾ ॥
सदा अनंदु निहचलु सचु थाना ॥
मनुष्य सदैव सुख एवं अटल सच्चा निवास पा लेता है।

ਤਹਾ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਗੁਣ ਰਸੈ ॥
तहा संगति साध गुण रसै ॥
वहाँ सत्संग में वह प्रेमपूर्वक ईश्वर की गुणस्तुति करता है।

ਅਨਭਉ ਨਗਰੁ ਤਹਾ ਸਦ ਵਸੈ ॥੬॥
अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥६॥
वहाँ वह सदैव भयरहित नगर में रहता है॥ ६ ॥

ਤਹ ਭਉ ਭਰਮਾ ਸੋਗੁ ਨ ਚਿੰਤਾ ॥
तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥
वहाँ कोई भय, दुविधा, शोक एवं चिन्ता नहीं।

ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਮਿਰਤੁ ਨ ਹੋਤਾ ॥
आवणु जावणु मिरतु न होता ॥
वहाँ जीवन में आना जाना और पुनः मरना नहीं होता

ਤਹ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ਅਨਹਤ ਆਖਾਰੇ ॥
तह सदा अनंद अनहत आखारे ॥
वहाँ हमेशा प्रसन्नता एवं सहज कीर्त्तन के मंच हैं।

ਭਗਤ ਵਸਹਿ ਕੀਰਤਨ ਆਧਾਰੇ ॥੭॥
भगत वसहि कीरतन आधारे ॥७॥
प्रभु के भक्त वहाँ रहते हैं और ईश्वर का यश गायन करना उनका आधार है॥ ७ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥
पारब्रहम का अंतु न पारु ॥
सर्वोपरि परमेश्वर का कोई अन्त एवं सीमा नहीं।

ਕਉਣੁ ਕਰੈ ਤਾ ਕਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥
कउणु करै ता का बीचारु ॥
सृष्टि में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं जो उसके गुणों का अन्त पाने का विचार कर सके।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
कहु नानक जिसु किरपा करै ॥
हे नानक ! जिस पर प्रभु कृपा धारण करता है,

ਨਿਹਚਲ ਥਾਨੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਰੈ ॥੮॥੪॥
निहचल थानु साधसंगि तरै ॥८॥४॥
वह संतों की संगति द्वारा भवसागर से पार हो जाता है और अटल निवास को प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ ४ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਸੂਰਾ ॥
जो इसु मारे सोई सूरा ॥
वही व्यक्ति शूरवीर है, जो इस अहंत्व का नाश कर देता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਪੂਰਾ ॥
जो इसु मारे सोई पूरा ॥
जो व्यक्ति इस अहंत्व को मार देता है, वही पूर्ण है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥
जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥
जो व्यक्ति इस अहंत्व को समाप्त कर देता है, वही यश प्राप्त कर लेता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਾ ਦੁਖੁ ਜਾਈ ॥੧॥
जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥१॥
जो इस अहंत्व को मार देता है, वह दुखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਐਸਾ ਕੋਇ ਜਿ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਗਵਾਵੈ ॥
ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥
कोई विरला ही ऐसा पुरुष है, जो अपने द्वैतवाद को मारकर दूर फैंकता है।

ਇਸਹਿ ਮਾਰਿ ਰਾਜ ਜੋਗੁ ਕਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥१॥ रहाउ ॥
इस अहंत्व को खत्म करके वह राजयोग प्राप्त करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਉ ਭਉ ਨਾਹਿ ॥
जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥
जो इस दुविधा का नाश कर देता है, उसको कोई भय नहीं रहता।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਨਾਮਿ ਸਮਾਹਿ ॥
जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥
जो इस दुविधा का संहार कर देता है, वह नाम में लीन हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
जो इसु मारे तिस की त्रिसना बुझै ॥
जो व्यक्ति इस अहंत्व को समाप्त कर देता है, उसकी तृष्णा मिट जाती है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਦਰਗਹ ਸਿਝੈ ॥੨॥
जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥२॥
जो व्यक्ति इस अहंत्व का विनाश करता है, वह प्रभु के दरबार में स्वीकार हो जाता है॥ २॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਧਨਵੰਤਾ ॥
जो इसु मारे सो धनवंता ॥
जो व्यक्ति दुविधा को मार देता है, वह धनवान हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਪਤਿਵੰਤਾ ॥
जो इसु मारे सो पतिवंता ॥
जो इस दुविधा का संहार कर देता है, वह आदरणीय हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਜਤੀ ॥
जो इसु मारे सोई जती ॥
जो इस अहंत्व का नाश कर देता है, वह ब्रह्मचारी हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸੁ ਹੋਵੈ ਗਤੀ ॥੩॥
जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥३॥
जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕਾ ਆਇਆ ਗਨੀ ॥
जो इसु मारे तिस का आइआ गनी ॥
जो इस अहंत्व का संहार कर देता है, उसका (संसार में) आगमन सफल हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਨਿਹਚਲੁ ਧਨੀ ॥
जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥
जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वही स्थिर एवं धनी है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋ ਵਡਭਾਗਾ ॥
जो इसु मारे सो वडभागा ॥
जो इस अहंत्व का नाश कर देता है, वह बड़ा सौभाग्यशाली है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਾ ॥੪॥
जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥४॥
जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वह रात-दिन सतर्क रहता है॥ ४॥

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਾ ॥
जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥
जो इस (तेरे-मेरे) का नाश कर देता है, वह जीवित ही मुक्त हो जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਤਿਸ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਜੁਗਤਾ ॥
जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥
जो प्राणी इस अहंत्व का संहार करता है, उसका जीवन-आचरण पवित्र बन जाता है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੋਈ ਸੁਗਿਆਨੀ ॥
जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥
जो इस दुविधा को तबाह कर देता है, वह ब्रह्मज्ञानी है।

ਜੋ ਇਸੁ ਮਾਰੇ ਸੁ ਸਹਜ ਧਿਆਨੀ ॥੫॥
जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥५॥
जो इस अहंत्व का विनाश करता है, वह प्रभु का विचारवान है॥ ५॥

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਥਾਇ ਨ ਪਰੈ ॥
इसु मारी बिनु थाइ न परै ॥
इस अहंत्व के मोह का नाश किए बिना मनुष्य सफल नहीं होता,

ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਜਾਪ ਤਪ ਕਰੈ ॥
कोटि करम जाप तप करै ॥
चाहे वह करोड़ों ही कर्म-धर्म, पूजा एवं तपस्या करता रहे।

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜਨਮੁ ਨ ਮਿਟੈ ॥
इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥
इस दुविधा का विनाश किए बिना प्राणी का जीवन-मृत्यु का चक्र समाप्त नहीं होता।

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਛੁਟੈ ॥੬॥
इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥६॥
इस (अहंत्व) का विनाश किए बिना मनुष्य मृत्यु से नहीं बच सकता ॥ ६॥

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥
इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥
इस अहंत्व का नाश किए बिना मनुष्य को (प्रभु बारे) ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਜੂਠਿ ਨ ਧੋਈ ॥
इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥
इस दुविधा का नाश किए बिना मनुष्य की अशुद्धता दूर नहीं होती।

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈਲਾ ॥
इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥
इस दुविधा का विनाश किए बिना सब कुछ मलिन रहता है।

ਇਸੁ ਮਾਰੀ ਬਿਨੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਉਲਾ ॥੭॥
इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥७॥
इस अहंत्व का नाश किए बिना संसार के प्रत्येक पदार्थ बंधन रूप हैं॥ ७॥

ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ॥
जा कउ भए क्रिपाल क्रिपा निधि ॥
जिस मनुष्य पर कृपा का भण्डार प्रभु कृपालु हो जाता है,

ਤਿਸੁ ਭਈ ਖਲਾਸੀ ਹੋਈ ਸਗਲ ਸਿਧਿ ॥
तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥
उसकी मुक्ति हो जाती है और वह पूर्णता सफल हो जाता है।

ਗੁਰਿ ਦੁਬਿਧਾ ਜਾ ਕੀ ਹੈ ਮਾਰੀ ॥
गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥
जिसकी दुविधा गुरु ने नाश कर दी है

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੀ ॥੮॥੫॥
कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥८॥५॥
हे नानक ! वह प्रभु का चिन्तन करने वाला है ॥८॥५॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਸਭੁ ਕੋ ਮੀਤੁ ॥
हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥
यदि इन्सान अपने मन को भगवान के साथ अनुरक्त कर ले तो हरेक व्यक्ति उसका मित्र बन जाता है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਨਿਹਚਲੁ ਚੀਤੁ ॥
हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु ॥
यदि इन्सान अपने मन को परमेश्वर के साथ जोड़ ले तो उसका मन स्थिर हो जाता है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਨ ਵਿਆਪੈ ਕਾੜ੍ਹਾ ॥
हरि सिउ जुरै न विआपै काड़्हा ॥
फिर वह चिन्ता एवं फिक्र से मुक्त हो जाता है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੁਰੈ ਤ ਹੋਇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੧॥
हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥१॥
यदि इन्सान ईश्वर के साथ अनुरक्त हो जाए तो उसका भवसागर से उद्धार हो जाता है।॥ १॥

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂੰ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੋਰੁ ॥
रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥
हे मेरे मन ! तू अपने आपको ईश्वर के साथ अनुरक्त कर ले।

ਕਾਜਿ ਤੁਹਾਰੈ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काजि तुहारै नाही होरु ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि इसके अलावा कोई दूसरा यत्न तेरे लाभ में नहीं आना ॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਡੇ ਵਡੇ ਜੋ ਦੁਨੀਆਦਾਰ ॥
वडे वडे जो दुनीआदार ॥
बड़े-बड़े एवं ऊँचे दुनिया के लोग

ਕਾਹੂ ਕਾਜਿ ਨਾਹੀ ਗਾਵਾਰ ॥
काहू काजि नाही गावार ॥
किसी काम के नहीं; हे अज्ञानी मनुष्य !

ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਨੀਚ ਕੁਲੁ ਸੁਣਹਿ ॥
हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥
चाहे प्रभु का सेवक निम्न कुल में सुना जाता हो।

ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਉਧਰਹਿ ॥੨॥
तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥२॥
परन्तु उसकी संगति में तेरा एक क्षण में ही कल्याण हो जाएगा ॥२॥

ਕੋਟਿ ਮਜਨ ਜਾ ਕੈ ਸੁਣਿ ਨਾਮ ॥
कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥
जिस (प्रभु) का नाम सुनने से करोड़ों ही स्नानों का फल मिल जाता है।

ਕੋਟਿ ਪੂਜਾ ਜਾ ਕੈ ਹੈ ਧਿਆਨ ॥
कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥
जिस (प्रभु) की आराधना करोड़ों ही पूजा के समान है।

ਕੋਟਿ ਪੁੰਨ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
कोटि पुंन सुणि हरि की बाणी ॥
परमेश्वर की वाणी को सुनना ही करोड़ों दान पुण्यों के तुल्य है।

ਕੋਟਿ ਫਲਾ ਗੁਰ ਤੇ ਬਿਧਿ ਜਾਣੀ ॥੩॥
कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥३॥
गुरु जी से प्रभु के मार्ग का बोध करोड़ों ही फलों के समान है॥ ३॥

ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਮਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਚੇਤ ॥
मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥
अपने हृदय में बार-बार ईश्वर को स्मरण कर।

ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਹੇਤ ॥
बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥
तेरा माया का मोह नाश हो जाएगा।

ਹਰਿ ਅਬਿਨਾਸੀ ਤੁਮਰੈ ਸੰਗਿ ॥
हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥
अनश्वर ईश्वर तेरे साथ है।

ਮਨ ਮੇਰੇ ਰਚੁ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੪॥
मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥४॥
हे मेरे मन ! तू राम के प्रेम में लीन हो जा॥ ४॥

ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਉਤਰੈ ਸਭ ਭੂਖ ॥
जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥
जिसकी सेवा करने से सारी भूख दूर हो जाती है।

ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਜੋਹਹਿ ਦੂਤ ॥
जा कै कामि न जोहहि दूत ॥
जिसकी सेवा-भक्ति में यमदूत नहीं देखते।

ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਤੇਰਾ ਵਡ ਗਮਰੁ ॥
जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥
जिसकी सेवा करने से तुम महान उच्चपद प्राप्त कर लोगे ।

ਜਾ ਕੈ ਕਾਮਿ ਹੋਵਹਿ ਤੂੰ ਅਮਰੁ ॥੫॥
जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥५॥
जिसकी सेवा से तुम अमर हो जाओगे ॥ ५॥

ਜਾ ਕੇ ਚਾਕਰ ਕਉ ਨਹੀ ਡਾਨ ॥
जा के चाकर कउ नही डान ॥
जिसके सेवक को दण्ड नहीं मिलता,

ਜਾ ਕੇ ਚਾਕਰ ਕਉ ਨਹੀ ਬਾਨ ॥
जा के चाकर कउ नही बान ॥
जिसका सेवक किसी बन्धन में नहीं पड़ता।

ਜਾ ਕੈ ਦਫਤਰਿ ਪੁਛੈ ਨ ਲੇਖਾ ॥
जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥
जिसके दरबार में उससे लेखा-जोखा नहीं माँगा जाता।

ਤਾ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਕਰਹੁ ਬਿਸੇਖਾ ॥੬॥
ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥६॥
हे मनुष्य ! उसकी सेवा-भक्ति तू भली भांति कर॥ ६॥

ਜਾ ਕੈ ਊਨ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਬਾਤ ॥
जा कै ऊन नाही काहू बात ॥
जिसके घर में किसी वस्तु की कमी नहीं।

ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਅਨੇਕਹਿ ਭਾਤਿ ॥
एकहि आपि अनेकहि भाति ॥
अनेकों स्वरूपों में दिखने के बावजूद ईश्वर स्वयं केवल एक ही है।

ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਹੋਇ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥
जा की द्रिसटि होइ सदा निहाल ॥
जिसकी कृपा-दृष्टि से तुम सदा प्रसन्न रहोगे।

ਮਨ ਮੇਰੇ ਕਰਿ ਤਾ ਕੀ ਘਾਲ ॥੭॥
मन मेरे करि ता की घाल ॥७॥
हे मेरे मन ! तू उसकी सेवा-भक्ति करता रह॥ ७॥

ਨਾ ਕੋ ਚਤੁਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੂੜਾ ॥
ना को चतुरु नाही को मूड़ा ॥
अपने आप न कोई बुद्धिमान है और न ही कोई मूर्ख है।

ਨਾ ਕੋ ਹੀਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋ ਸੂਰਾ ॥
ना को हीणु नाही को सूरा ॥
अपने आप न कोई कायर है और न ही शूरवीर।

ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ॥
जितु को लाइआ तित ही लागा ॥
जिसके साथ प्रभु प्राणी को लगाता है, उसके साथ वह लग जाता है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਾਗਾ ॥੮॥੬॥
सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥८॥६॥
हे नानक ! प्रभु का सेवक केवल वही व्यक्ति बनता है जो भाग्यशाली है ॥८॥६॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਜੈਸੇ ਸਰਪ ਆਰਜਾਰੀ ॥
बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी ॥
भगवान के सिमरन के बिना जैसे मनुष्य का जीवन सर्प जैसा है।

ਤਿਉ ਜੀਵਹਿ ਸਾਕਤ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰੀ ॥੧॥
तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥१॥
वैसे ही (भगवान से टूटा हुआ) शाक्त इन्सान नाम को भुलाकर जीवन बिताता है॥ १ ॥

ਏਕ ਨਿਮਖ ਜੋ ਸਿਮਰਨ ਮਹਿ ਜੀਆ ॥
एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥
जो व्यक्ति एक पल भर के लिए भी भगवान के सिमरन में समय बिताता है,

ਕੋਟਿ ਦਿਨਸ ਲਾਖ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਥੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसा व्यक्ति समझो लाखों, करोड़ों दिनों सदा के लिए स्थिर हो जाता है। १॥ रहाउ॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਧ੍ਰਿਗੁ ਕਰਮ ਕਰਾਸ ॥
बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥
भगवान के सिमरन बिना अन्य सांसारिक कर्म करने धिक्कार योग्य हैं।

ਕਾਗ ਬਤਨ ਬਿਸਟਾ ਮਹਿ ਵਾਸ ॥੨॥
काग बतन बिसटा महि वास ॥२॥
जिस तरह कौए की चोंच विष्ठा में होती है, वैसे ही स्वेच्छाचारी का निवास विष्ठा में होता है॥ २॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਭਏ ਕੂਕਰ ਕਾਮ ॥
बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥
भगवान के सिमरन बिना मनुष्य के कर्म कुत्ते जैसे हो जाते हैं।

ਸਾਕਤ ਬੇਸੁਆ ਪੂਤ ਨਿਨਾਮ ॥੩॥
साकत बेसुआ पूत निनाम ॥३॥
शाक्त इन्सान वेश्या के पुत्र की भाँति बदनाम हो जाते हैं। ३॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਜੈਸੇ ਸੀਙ ਛਤਾਰਾ ॥
बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥
भगवान के सिमरन बिना प्राणी सींगों वाले मेंढे(भेड़) की तरह है।

ਬੋਲਹਿ ਕੂਰੁ ਸਾਕਤ ਮੁਖੁ ਕਾਰਾ ॥੪॥
बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥४॥
शाक्त इन्सान झूठ व्यक्त करता है और जिस कारण दुनिया में उसका मुँह काला किया जाता है॥ ४॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਗਰਧਭ ਕੀ ਨਿਆਈ ॥
बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥
भगवान के सिमरन के बिना शाक्त इन्सान गधे की भाँति

ਸਾਕਤ ਥਾਨ ਭਰਿਸਟ ਫਿਰਾਹੀ ॥੫॥
साकत थान भरिसट फिराही ॥५॥
अष्ट स्थानों पर भटकता रहता है॥५॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਕੂਕਰ ਹਰਕਾਇਆ ॥
बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥
भगवान के सिमरन बिना इन्सान पागल कुते की तरह भौंकता रहता है।

ਸਾਕਤ ਲੋਭੀ ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੬॥
साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥६॥
शाक्त इन्सान लोभ में फंसकर बन्धनों में ही पड़ा रहता है॥ ६॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਹੈ ਆਤਮ ਘਾਤੀ ॥
बिनु सिमरन है आतम घाती ॥
भगवान के सिमरन बिना मनुष्य आत्मघाती है।

ਸਾਕਤ ਨੀਚ ਤਿਸੁ ਕੁਲੁ ਨਹੀ ਜਾਤੀ ॥੭॥
साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥७॥
भगवान से टूटा हुआ इन्सान नीच है और उसकी कोई कुल अथवा जाति नहीं होती ॥७॥

ਜਿਸੁ ਭਇਆ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਤਿਸੁ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ॥
जिस व्यक्ति पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उसको वह संतों की संगति में मिला देता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥੮॥੭॥
कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥८॥७॥
हे नानक ! गुरु जी ने समूचे संसार का कल्याण कर दिया है ॥८॥७॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਮੋਹਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥
गुर कै बचनि मोहि परम गति पाई ॥
गुरु के वचन से मुझे परमगति मिल गई है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਰੀ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੧॥
गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥१॥
पूर्ण गुरु ने मेरा मान-सम्मान रख लिया है॥ १॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਧਿਆਇਓ ਮੋਹਿ ਨਾਉ ॥
गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥
गुरु के वचन से मैंने भगवान के नाम का ध्यान किया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮੋਹਿ ਮਿਲਿਆ ਥਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से मुझे आत्मिक सुख का निवास प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਸੁਣਿ ਰਸਨ ਵਖਾਣੀ ॥
गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥
मैं गुरु का वचन ही सुनता और अपनी जिव्हा से उच्चरित करता रहता हूँ।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥੨॥
गुर किरपा ते अम्रित मेरी बाणी ॥२॥
गुरु की कृपा से मेरी वाणी अमृत समान मधुर हो गई है॥ २॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਮਿਟਿਆ ਮੇਰਾ ਆਪੁ ॥
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥
गुरु के वचन से मेरा अहंकार दूर हो गया है।

ਗੁਰ ਕੀ ਦਇਆ ਤੇ ਮੇਰਾ ਵਡ ਪਰਤਾਪੁ ॥੩॥
गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥३॥
गुरु की कृपा से मेरा दुनिया में बड़ा प्रताप हो गया है॥ ३॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਮਿਟਿਆ ਮੇਰਾ ਭਰਮੁ ॥
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥
गुरु के वचन से मेरा भ्रम मिट गया है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਪੇਖਿਓ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮੁ ॥੪॥
गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥४॥
गुरु के वचन से मैंने सर्वव्यापक परमात्मा के दर्शन कर लिए हैं।॥ ४॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਕੀਨੋ ਰਾਜੁ ਜੋਗੁ ॥
गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥
गुरु के वचन से मुझे राजयोग प्राप्त हुआ है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰਿਆ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥੫॥
गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥५॥
गुरु की संगति करने से बहुत सारे लोग भवसागर से पार हो गए हैं।॥५॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਮੇਰੇ ਕਾਰਜ ਸਿਧਿ ॥
गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥
गुरु के वचन से मेरे तमाम कार्य सफल हो गए हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਪਾਇਆ ਨਾਉ ਨਿਧਿ ॥੬॥
गुर कै बचनि पाइआ नाउ निधि ॥६॥
गुरु के वचन से मुझे नाम का भण्डार मिल गया है॥ ६॥

ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਕੀਨੀ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਆਸਾ ॥
जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥
जिस किसी व्यक्ति ने भी मेरे गुरु पर आस्था धारण की है,

ਤਿਸ ਕੀ ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ॥੭॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥७॥
उसकी मृत्यु का बन्धन कट गया है॥ ७॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਜਾਗਿਆ ਮੇਰਾ ਕਰਮੁ ॥
गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥
गुरु के वचन से ही मेरे भाग्य जाग गए हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥੮॥੮॥
नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥८॥८॥
हे नानक ! गुरु को मिलने से ही भगवान प्राप्त हो गया है ॥८॥८॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਸਿਮਰਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ॥
तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥
उस गुरु को मैं श्वास-श्वास से याद करता रहता हूँ।

ਗੁਰੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु मेरे प्राणों का आधार है, यह सतिगुरु ही मेरी जीवन-पूंजी हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਜੀਵਾ ॥
गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥
मैं गुरु के दर्शन करके ही जीवित रहता हूँ।

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪੀਵਾ ॥੧॥
गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥१॥
मैं गुरु के चरण धो-धोकर उस चरणामृत का पान करता हूँ॥ १ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਰੇਣੁ ਨਿਤ ਮਜਨੁ ਕਰਉ ॥
गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥
मैं गुरु की चरण धूल में प्रतिदिन स्नान करता हूँ।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਹਰਉ ॥੨॥
जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥२॥
यूं मैंने जन्म-जन्मांतरों के अहंकार की मैल को धो दिया है॥ २॥

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਝੁਲਾਵਉ ਪਾਖਾ ॥
तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥
उस गुरु को मैं पंखा करता हूँ।

ਮਹਾ ਅਗਨਿ ਤੇ ਹਾਥੁ ਦੇ ਰਾਖਾ ॥੩॥
महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥३॥
अपना हाथ देकर गुरु ने मुझे मोह-माया की महा अग्नि से बचा लिया है॥ ३॥

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਢੋਵਉ ਪਾਣੀ ॥
तिसु गुर कै ग्रिहि ढोवउ पाणी ॥
मैं उस गुरु के घर के लिए जल ढोता हूँ,

ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਤੇ ਅਕਲ ਗਤਿ ਜਾਣੀ ॥੪॥
जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥४॥
जिन से मैंने ज्ञान का मार्ग समझा है॥ ४॥

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਪੀਸਉ ਨੀਤ ॥
तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥
उस गुरु के घर के लिए मैं सदा ही चक्की पीसता हूँ

ਜਿਸੁ ਪਰਸਾਦਿ ਵੈਰੀ ਸਭ ਮੀਤ ॥੫॥

जिसु परसादि वैरी सभ मीत ॥५॥

जिसकी दया से मेरे तमाम शत्रु मित्र बन गए हैं।॥ ५॥

ਜਿਨਿ ਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਦੀਨਾ ਜੀਉ ॥
जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥
जिस गुरु ने मुझे जीवन दिया है,

ਆਪੁਨਾ ਦਾਸਰਾ ਆਪੇ ਮੁਲਿ ਲੀਉ ॥੬॥
आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥६॥
उसने मुझे स्वयं खरीद लिया है और अपना सेवक बना लिया है ॥६॥

ਆਪੇ ਲਾਇਓ ਅਪਨਾ ਪਿਆਰੁ ॥
आपे लाइओ अपना पिआरु ॥
गुरु ने मुझे स्वयं प्रेम की देन प्रदान की है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਕਰੀ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੭॥
सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥७॥
सदा-सदा मैं उस गुरु को प्रणाम करता रहता हूँ॥ ७॥

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਭੈ ਭ੍ਰਮ ਦੁਖ ਲਾਥਾ ॥
कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥
मेरे झगड़े, क्लेश, भय, भ्रम एवं तमाम दुःख दूर हो गए हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਸਮਰਾਥਾ ॥੮॥੯॥
कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥८॥९॥
हे नानक ! मेरा गुरदेव ऐसा शूरवीर है॥ ८॥ ९॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਗੋਬਿੰਦ ਅਪਨਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥
मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥
हे मेरे गोबिन्द ! मुझे दर्शन देकर अपना नाम प्रदान करो।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਧ੍ਰਿਗੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਅਸਨੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥१॥ रहाउ ॥
नामविहीन सांसारिक प्रेम को धिक्कार है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੋ ਪਹਿਰੈ ਖਾਇ ॥
नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥
भगवान के नाम बिना इन्सान जो कुछ पहनता एवं खाता रहता है,

ਜਿਉ ਕੂਕਰੁ ਜੂਠਨ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥੧॥
जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥१॥
वह उस कुत्ते की तरह है जो जूठे पत्तलों में मुँह मारता रहता है।॥ १॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੇਤਾ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥
नाम बिना जेता बिउहारु ॥
भगवान के नाम की स्मृति बिना समस्त कार्य-व्यवहार

ਜਿਉ ਮਿਰਤਕ ਮਿਥਿਆ ਸੀਗਾਰੁ ॥੨॥
जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥२॥
मृतक के हार-श्रृंगार की तरह व्यर्थ है ॥२॥

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਕਰੇ ਰਸ ਭੋਗ ॥
नामु बिसारि करे रस भोग ॥
जो व्यक्ति नाम को भुलाकर भोग-विलास में पड़ता है,

ਸੁਖੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਤਨ ਮਹਿ ਰੋਗ ॥੩॥
सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥३॥
उसको स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता और उसका शरीर रोगी हो जाता है ॥३॥

ਨਾਮੁ ਤਿਆਗਿ ਕਰੇ ਅਨ ਕਾਜ ॥
नामु तिआगि करे अन काज ॥
प्रभु के नाम को त्याग कर यदि मनुष्य दूसरे काम धन्धे करता है,

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਝੂਠੇ ਸਭਿ ਪਾਜ ॥੪॥
बिनसि जाइ झूठे सभि पाज ॥४॥
तो उसके झूठे आडम्बर सब के सब नाश हो जाते हैं।॥ ४ ॥

ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਲਾਵੈ ॥
नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥
जो इन्सान अपने हृदय में प्रभु का प्रेम नहीं लगाता,

ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਕਰਤੋ ਨਰਕਿ ਜਾਵੈ ॥੫॥
कोटि करम करतो नरकि जावै ॥५॥
ऐसा व्यक्ति नरक में जाता है, चाहे वह करोड़ों ही कर्म-धर्म करता रहे ॥५॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਿਨਿ ਮਨਿ ਨ ਆਰਾਧਾ ॥
हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥
जो व्यक्ति अपने हृदय में परमेश्वर के नाम की आराधना नहीं करता,

ਚੋਰ ਕੀ ਨਿਆਈ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧਾ ॥੬॥
चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥६॥
वह यमलोक में चोर की भाँति पकड़ा जाता है। ६॥

ਲਾਖ ਅਡੰਬਰ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥
लाख अड्मबर बहुतु बिसथारा ॥
लाखों ही आडम्बर एवं अनेक प्रसार,

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਝੂਠੇ ਪਾਸਾਰਾ ॥੭॥
नाम बिना झूठे पासारा ॥७॥
प्रभु के नाम बिना ये सब झुठे दिखावे हैं॥ ५॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਲੇਇ ॥
हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥
हे नानक वो ही व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है,

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ॥੮॥੧੦॥
करि किरपा नानक जिसु देइ ॥८॥१०॥
जिस व्यक्ति को भगवान कृपा-दृष्टि करके देता है ॥८॥१०॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਆਦਿ ਮਧਿ ਜੋ ਅੰਤਿ ਨਿਬਾਹੈ ॥
आदि मधि जो अंति निबाहै ॥
जो सृष्टि के आदि, मध्य, अंतकाल में जीव का साथ निभाता है,

ਸੋ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਚਾਹੈ ॥੧॥
सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥१॥
मेरा मन तो उस साजन-परमात्मा से मिलने का ही इच्छुक बना हुआ है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਚਾਲੈ ॥
हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥
ईश्वर का प्रेम सदा प्राणी के साथ जाता है।

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥१॥ रहाउ ॥
सर्वव्यापक एवं दया का घर परमात्मा समस्त जीव-जन्तुओं का पालन पोषण करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਿਨਸਤ ਨਾਹੀ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥
बिनसत नाही छोडि न जाइ ॥
प्रभु न ही कभी मरता है और न ही अपने प्राणियों को छोड़कर कहीं जाता है।

ਜਹ ਪੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੨॥
जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥२॥
जहाँ कहीं मैं देखता हूँ, वहाँ ईश्वर मौजूद है॥ २॥

ਸੁੰਦਰੁ ਸੁਘੜੁ ਚਤੁਰੁ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ॥
सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥
ईश्वर अति सुन्दर, बुद्धिमान, चतुर एवं प्राणदाता है।

ਭਾਈ ਪੂਤੁ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮਾਤਾ ॥੩॥
भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥३॥
वह ही मेरा भाई, पुत्र, पिता एवं माता है॥ ३॥

ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ਮੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥
जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥
वह मेरा जीवन एवं प्राणों का आधार है और वही मेरी जीवन पूँजी है।

ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਕਰਿ ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸਿ ॥੪॥
प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥४॥
मेरे हृदय में निवास करके प्रभु ने मेरे साथ प्रीति लगाई है ॥४॥

ਮਾਇਆ ਸਿਲਕ ਕਾਟੀ ਗੋਪਾਲਿ ॥
माइआ सिलक काटी गोपालि ॥
सृष्टि के पालनहार गोपाल ने मेरा माया का बन्धन काट दिया है।

ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਲੀਨੋ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੫॥
करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥५॥
मेरी ओर कृपा-दृष्टि से देखकर प्रभु ने मुझे अपना बना लिया है ॥५॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਕਾਟੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥
सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥
उसका सिमरन करने से तमाम रोग (दुःख) दूर हो गए हैं।

ਚਰਣ ਧਿਆਨ ਸਰਬ ਸੁਖ ਭੋਗ ॥੬॥
चरण धिआन सरब सुख भोग ॥६॥
उसके चरणों में वृत्ति लगा कर सर्व सुख प्राप्त कर लिए जाते हैं।॥ ६॥

ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਨਵਤਨੁ ਨਿਤ ਬਾਲਾ ॥
पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥
सर्वव्यापक प्रभु सदा नवांगतुक एवं यौवन सम्पन्न है।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਰਖਵਾਲਾ ॥੭॥
हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥७॥
भीतर एवं बाहर ईश्वर ही मेरा रखवाला है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੀਨ ॥
कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥
हे नानक ! जो प्रभु-परमेश्वर के महान पद की अनुभूति करता है,

ਸਰਬਸੁ ਨਾਮੁ ਭਗਤ ਕਉ ਦੀਨ ॥੮॥੧੧॥
सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥८॥११॥
उस भक्त को वह दुनिया का सर्वस्व अपने नाम के रूप में दे देता है ॥८॥११॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਮਾਝ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी माझ महला ५
रागु गउड़ी माझ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਖੋਜਤ ਫਿਰੇ ਅਸੰਖ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੀਆ ॥
खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥
असंख्य प्राणी भगवान को खोजते रहे हैं लेकिन किसी प्राणी को भी भगवान की महिमा का अन्त प्राप्त नहीं हुआ।

ਸੇਈ ਹੋਏ ਭਗਤ ਜਿਨਾ ਕਿਰਪਾਰੀਆ ॥੧॥
सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥१॥
जिन पर भगवान की कृपा-दृष्टि हो जाती है, ऐसे व्यक्ति ही भगवान के भक्त बनते हैं॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀਆ ਹਰਿ ਵਾਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ वारीआ हरि वारीआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्रभु ! मैं तुझ पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਪੰਥੁ ਡਰਾਉ ਬਹੁਤੁ ਭੈਹਾਰੀਆ ॥
सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥
भवसागर भयानक मार्ग बारे सुन-सुन कर मैं अत्यंत भयभीत हो गया हूँ।

ਮੈ ਤਕੀ ਓਟ ਸੰਤਾਹ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੀਆ ॥੨॥
मै तकी ओट संताह लेहु उबारीआ ॥२॥
अंतः मैंने संतों का सहारा लिया है। हे प्रभु के प्रिय जनो ! आप मेरी रक्षा कीजिए॥ २॥

ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਅਨੂਪ ਸਰਬ ਸਾਧਾਰੀਆ ॥
मोहन लाल अनूप सरब साधारीआ ॥
हे मन को मुग्ध करने वाले अनूप प्रभु! हे मोहन ! तू समस्त जीवों को सहारा देने वाला है।

ਗੁਰ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ਦੇਹੁ ਦਿਖਾਰੀਆ ॥੩॥
गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥३॥
मैं झुक-झुक कर गुरु के चरण स्पर्श करता हूँ। हे मेरे सतिगुरु ! मुझे ईश्वर के दर्शन कराओ ॥३॥

ਮੈ ਕੀਏ ਮਿਤ੍ਰ ਅਨੇਕ ਇਕਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥
मै कीए मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥
मैंने अनेक मित्र बनाए हैं, लेकिन मैं केवल एक पर ही कुर्बान जाता हूँ।

ਸਭ ਗੁਣ ਕਿਸ ਹੀ ਨਾਹਿ ਹਰਿ ਪੂਰ ਭੰਡਾਰੀਆ ॥੪॥
सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीआ ॥४॥
किसी में भी तमाम गुण विद्यमान नहीं। लेकिन भगवान गुणों का परिपूर्ण भण्डार है॥ ४॥

ਚਹੁ ਦਿਸਿ ਜਪੀਐ ਨਾਉ ਸੂਖਿ ਸਵਾਰੀਆ ॥
चहु दिसि जपीऐ नाउ सूखि सवारीआ ॥
हे नानक ! चारों ही दिशाओं में प्रभु के नाम का यश होता है। उसका यश करने वाले प्रसन्नता से सुशोभित होते हैं।

ਮੈ ਆਹੀ ਓੜਿ ਤੁਹਾਰਿ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥੫॥
मै आही ओड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥५॥
(हे प्रभु!) मैंने तेरा ही सहारा देखा है और मैं (नानक) तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ ५॥

ਗੁਰਿ ਕਾਢਿਓ ਭੁਜਾ ਪਸਾਰਿ ਮੋਹ ਕੂਪਾਰੀਆ ॥
गुरि काढिओ भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥
अपनी भुजा आगे बढ़ाकर गुरु ने मुझे सांसारिक मोह के कुएँ में से बाहर निकाल लिया है।

ਮੈ ਜੀਤਿਓ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰੁ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹਾਰੀਆ ॥੬॥
मै जीतिओ जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥६॥
मैंने अनमोल मनुष्य जीवन विजय कर लिया है, जिसे मैं दुबारा नहीं हारूंगा॥ ६॥

ਮੈ ਪਾਇਓ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨੁ ਅਕਥੁ ਕਥਾਰੀਆ ॥
मै पाइओ सरब निधानु अकथु कथारीआ ॥
मैंने सर्व भण्डार ईश्वर को पा लिया है, जिसकी कथा वर्णन से बाहर है।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾਵੰਤ ਬਾਹ ਲੁਡਾਰੀਆ ॥੭॥
हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीआ ॥७॥
ईश्वर के दरबार में शोभायमान होकर मैं प्रसन्नतापूर्वक अपनी भुजा लहराऊँगा ॥ ७ ॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਰਤਨੁ ਅਮੋਲੁ ਅਪਾਰੀਆ ॥
जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥
नानक को अनन्त एवं अमूल्य रत्न मिल गया है कि

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਭਉਜਲੁ ਤਰੀਐ ਕਹਉ ਪੁਕਾਰੀਆ ॥੮॥੧੨॥
गुर सेवा भउजलु तरीऐ कहउ पुकारीआ ॥८॥१२॥
गुरु की सेवा द्वारा भयानक संसार सागर पार किया जाता है। मैं सबको ऊँचा बोलकर यही बताता हूँ ॥८॥१२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫
गउड़ी महला ५
गउड़ी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਾਰਾਇਣ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰੰਗੋ ॥
नाराइण हरि रंग रंगो ॥
हे जीव ! अपने मन को नारायण प्रभु के प्रेम में रंग ले।

ਜਪਿ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਏਕ ਮੰਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जपि जिहवा हरि एक मंगो ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी जिव्हा से ईश्वर के नाम का जाप करता रह और केवल उसे ही मांग ॥ १॥ रहाउ॥

ਤਜਿ ਹਉਮੈ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਭਜੋ ॥
तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥
अपना अहंकार त्यागकर गुरु के ज्ञान का चिन्तन करता रह।

ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਧੁਰਿ ਕਰਮ ਲਿਖਿਓ ॥੧॥
मिलि संगति धुरि करम लिखिओ ॥१॥
आदि से जिस मनुष्य के भाग्य में लिखा होता है, केवल वही संतों की संगति में मिलता है। १॥

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਸੰਗਿ ਨ ਗਇਓ ॥
जो दीसै सो संगि न गइओ ॥
जो कुछ भी दृष्टिगोचर होता है, वह मनुष्य के साथ नहीं जाता।

ਸਾਕਤੁ ਮੂੜੁ ਲਗੇ ਪਚਿ ਮੁਇਓ ॥੨॥
साकतु मूड़ु लगे पचि मुइओ ॥२॥
भगवान से टूटा हुआ मूर्ख मनुष्य गल-सड़ कर मर जाता है॥ २॥

ਮੋਹਨ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਰਵਿ ਰਹਿਓ ॥
मोहन नामु सदा रवि रहिओ ॥
मुग्ध करने वाले मोहन का नाम सदा के लिए मौजूद है।

ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹਿਓ ॥੩॥
कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिओ ॥३॥
करोड़ों में कोई विरला ही गुरु के माध्यम से नाम को प्राप्त करता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਸੰਤਨ ਕਰਿ ਨਮੋ ਨਮੋ ॥
हरि संतन करि नमो नमो ॥
हे जीव ! संतजनों को नमन करते रहो।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਵਹਿ ਅਤੁਲੁ ਸੁਖੋ ॥੪॥
नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥४॥
इस तरह तुझे नौ भण्डार एवं अनन्त सुख प्राप्त हो जाएगा ॥४॥

ਨੈਨ ਅਲੋਵਉ ਸਾਧ ਜਨੋ ॥
नैन अलोवउ साध जनो ॥
अपने नयनों से संतजनों के दर्शन करो।

ਹਿਰਦੈ ਗਾਵਹੁ ਨਾਮ ਨਿਧੋ ॥੫॥
हिरदै गावहु नाम निधो ॥५॥
अपने हृदय में नाम-भण्डार का यश गायन करो ॥५॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਤਜੋ ॥
काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥
हे जीव ! कामवासना, क्रोध, लालच एवं सांसारिक मोह को त्याग दे।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਹੁ ਤੇ ਰਹਿਓ ॥੬॥
जनम मरन दुहु ते रहिओ ॥६॥
इस तरह जन्म-मरन दोनों के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।॥६ ॥

ਦ੍ਰੁਖੁ ਅੰਧੇਰਾ ਘਰ ਤੇ ਮਿਟਿਓ ॥
द्रुखु अंधेरा घर ते मिटिओ ॥
तेरे हृदय घर से दुख का अन्धेरा निवृत हो जाएगा

ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਓ ਦੀਪ ਬਲਿਓ ॥੭॥
गुरि गिआनु द्रिड़ाइओ दीप बलिओ ॥७॥
जब तेरे हृदय में गुरु ने ज्ञान दृढ़ कर दिया और प्रभु ज्योत प्रज्वलित कर दी ॥ ७॥

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਰਿਓ ॥
जिनि सेविआ सो पारि परिओ ॥
हे नानक ! जिन्होंने भगवान की सेवा-भक्ति की है, वे भवसागर से पार हो गए हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਗਤੁ ਤਰਿਓ ॥੮॥੧॥੧੩॥
जन नानक गुरमुखि जगतु तरिओ ॥८॥१॥१३॥
गुरु के माध्यम से जगत् ही पार हो जाता है ॥८॥१॥१३॥

ਮਹਲਾ ੫ ਗਉੜੀ ॥
महला ५ गउड़ी ॥
महला ५ गउड़ी ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤ ਭਰਮ ਗਏ ॥
हरि हरि गुरु गुरु करत भरम गए ॥
हरि-परमेश्वर का सिमरन एवं गुरु को याद करते हुए मेरे भ्रम दूर हो गए हैं।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरै मनि सभि सुख पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे मन ने सभी सुख प्राप्त कर लिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਬਲਤੋ ਜਲਤੋ ਤਉਕਿਆ ਗੁਰ ਚੰਦਨੁ ਸੀਤਲਾਇਓ ॥੧॥
बलतो जलतो तउकिआ गुर चंदनु सीतलाइओ ॥१॥
(कामादिक विकारों से) मेरे सुलगते एवं दुग्ध मन पर गुरु जी ने (वाणी का) जल छिड़क दिया है। गुरु जी चन्दन की भाँति शीतल हैं ॥१॥

ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰਾ ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਦੀਪਾਇਓ ॥੨॥
अगिआन अंधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥२॥
गुरु के ज्ञान की ज्योति से मेरा अज्ञानता का अँधेरा मिट गया है॥ २॥

ਪਾਵਕੁ ਸਾਗਰੁ ਗਹਰੋ ਚਰਿ ਸੰਤਨ ਨਾਵ ਤਰਾਇਓ ॥੩॥
पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइओ ॥३॥
"(विकारों का) यह अग्नि सागर बहुत गहरा है, नाम की नैया पर सवार होकर सन्तजनों ने मेरा कल्याण कर दिया है॥ ३॥

ਨਾ ਹਮ ਕਰਮ ਨ ਧਰਮ ਸੁਚ ਪ੍ਰਭਿ ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਆਪਾਇਓ ॥੪॥
ना हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा आपाइओ ॥४॥
हमारे पास शुभ कर्म, धर्म तथा पवित्रता नहीं। लेकिन फिर भी परमेश्वर ने भुजा से पकड़ कर मुझे अपना बना लिया है ॥४॥

ਭਉ ਖੰਡਨੁ ਦੁਖ ਭੰਜਨੋ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਹਰਿ ਨਾਇਓ ॥੫॥
भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइओ ॥५॥
भगवान का नाम भय को नाश करने वाला, दुःख नाश करने वाला और भक्तवत्सल है ॥५॥

ਅਨਾਥਹ ਨਾਥ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦੀਨ ਸੰਮ੍ਰਿਥ ਸੰਤ ਓਟਾਇਓ ॥੬॥
अनाथह नाथ क्रिपाल दीन सम्रिथ संत ओटाइओ ॥६॥
परमेश्वर अनाथों का नाथ, दीनदयालु, सर्वशक्तिमान एवं संतजनों का सहारा है ॥६॥

ਨਿਰਗੁਨੀਆਰੇ ਕੀ ਬੇਨਤੀ ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਹਰਿ ਰਾਇਓ ॥੭॥
निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥७॥
हे प्रभु पातशाह ! मुझ गुणविहीन की यही प्रार्थना है कि मुझे अपने दर्शन दीजिए ॥७॥

ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਤੁਹਾਰੀ ਠਾਕੁਰ ਸੇਵਕੁ ਦੁਆਰੈ ਆਇਓ ॥੮॥੨॥੧੪॥
नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ ॥८॥२॥१४॥
हे ठाकुर जी ! नानक तेरी शरण में है और तेरा सेवक (नानक) तेरे द्वार पर आया है ॥८॥२॥१४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਰੰਗ ਸੰਗਿ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਭੋਗਾ ਇਨ ਸੰਗਿ ਅੰਧ ਨ ਜਾਨੀ ॥੧॥
रंग संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥१॥
इन्सान दुनिया के विषय-विकारों के आनंद भोगने में डूब गया है तथा ज्ञानहीन (इन्सान) इन भोगों की संगति में फंसकर भगवान को नहीं जानता॥ १॥

ਹਉ ਸੰਚਉ ਹਉ ਖਾਟਤਾ ਸਗਲੀ ਅਵਧ ਬਿਹਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥
वह कहता है कि ""मैं माया एकत्र करता हूँ, मैं माया प्राप्त करता हूँ।"" ऐसे ही उसकी सारी आयु बीत जाती है॥ रहाउ॥

ਹਉ ਸੂਰਾ ਪਰਧਾਨੁ ਹਉ ਕੋ ਨਾਹੀ ਮੁਝਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥੨॥
हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥२॥
वह कहता है, ""मैं शूरवीर हूँ, मैं प्रधान हूँ, मेरे समान दूसरा कोई नहीं ॥ २॥

ਜੋਬਨਵੰਤ ਅਚਾਰ ਕੁਲੀਨਾ ਮਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਗੁਮਾਨੀ ॥੩॥
जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥३॥
वह कहता है, ""मैं यौवन सम्पन्न, शुभ आचरण वाला एवं उच्च जाति का हूँ।"" अपने हृदय में वह इस तरह अभिमानी बना हुआ है॥ ३॥

ਜਿਉ ਉਲਝਾਇਓ ਬਾਧ ਬੁਧਿ ਕਾ ਮਰਤਿਆ ਨਹੀ ਬਿਸਰਾਨੀ ॥੪॥
जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥४॥
झूठी बुद्धि वाला इन्सान मोह-माया में फँसा रहता है, मृत्यु काल के समय भी वह अहंकार को नहीं भूलता ॥ ४॥

ਭਾਈ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਸਖੇ ਪਾਛੇ ਤਿਨਹੂ ਕਉ ਸੰਪਾਨੀ ॥੫॥
भाई मीत बंधप सखे पाछे तिनहू कउ स्मपानी ॥५॥
वह मरने के पश्चात अपने भाई, मित्र, सगे-संबंधी एवं साथियों को ही अपनी दौलत-सम्पत्ति सौंप देता है।॥५॥

ਜਿਤੁ ਲਾਗੋ ਮਨੁ ਬਾਸਨਾ ਅੰਤਿ ਸਾਈ ਪ੍ਰਗਟਾਨੀ ॥੬॥
जितु लागो मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥६॥
जिस वासना से मन जुड़ा हुआ है, मृत्यु के समय आकर प्रकट होती है॥ ६॥

ਅਹੰਬੁਧਿ ਸੁਚਿ ਕਰਮ ਕਰਿ ਇਹ ਬੰਧਨ ਬੰਧਾਨੀ ॥੭॥
अह्मबुधि सुचि करम करि इह बंधन बंधानी ॥७॥
मनुष्य अहंबुद्धि से शुभ कर्म करता है। फिर वह इन बन्धनों में फँसा रहता है॥ ७॥

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਨੀ ॥੮॥੩॥੧੫॥੪੪॥ ਜੁਮਲਾ
दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥८॥३॥१५॥४४॥ जुमला
नानक का कथन है कि हे दयालु अकालपुरुष ! मुझ पर अपनी कृपा करो और अपने दासों का दास बना लो ॥८॥३॥१५॥४४॥ जुमला

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥

ਮੁੰਧ ਰੈਣਿ ਦੁਹੇਲੜੀਆ ਜੀਉ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ॥
मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥
पति-प्रभु की जुदाई में जीव-स्त्री के लिए रात्रि बड़ी दुखदायक है। अपने प्रियतम के वियोग में उसे नींद नहीं आती।

ਸਾ ਧਨ ਦੁਬਲੀਆ ਜੀਉ ਪਿਰ ਕੈ ਹਾਵੈ ॥
सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥
अपने पति-प्रभु के विरह की वेदना में जीव-स्त्री कमजोर हो गई है।

ਧਨ ਥੀਈ ਦੁਬਲਿ ਕੰਤ ਹਾਵੈ ਕੇਵ ਨੈਣੀ ਦੇਖਏ ॥
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥
वह अपने पति-प्रभु के वियोग में यह कहती हुई कमजोर हो गई है,""मैं प्रियतम को अपने नेत्रों से किस तरह देखूंगी ""?

ਸੀਗਾਰ ਮਿਠ ਰਸ ਭੋਗ ਭੋਜਨ ਸਭੁ ਝੂਠੁ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਏ ॥
सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥
उसके लिए हार शृंगार, मीठे रस, काम-भोग एवं भोजन सभी झूठे हैं और किसी गणना में नहीं""।

ਮੈ ਮਤ ਜੋਬਨਿ ਗਰਬਿ ਗਾਲੀ ਦੁਧਾ ਥਣੀ ਨ ਆਵਏ ॥

मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥

यौवन के अभिमान की मदिरा से मस्त हुई वह बर्वाद हो गई है। चोए हुए दुग्ध के दोबारा स्तनों में न आने की तरह उसको दोबारा अवसर नहीं मिलना।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਨੀਦ ਨ ਆਵਏ ॥੧॥

नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥१॥

हे नानक ! जीव-स्त्री अपने प्रभु-पति से तभी मिल सकती है, यदि वह उसको अपने साथ मिलाता है। प्रभु-पति के बिना उसको नींद नहीं आती॥ १॥

ਮੁੰਧ ਨਿਮਾਨੜੀਆ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਧਨੀ ਪਿਆਰੇ ॥

मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥

अपने प्रियतम प्रभु के बिना जीव-स्त्री आदरहीन है।

ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈਗੀ ਬਿਨੁ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥

किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥

उसको अपने हृदय के साथ लगाए बिना वह सुख-शांति किस तरह प्राप्त कर सकती है ?

ਨਾਹ ਬਿਨੁ ਘਰ ਵਾਸੁ ਨਾਹੀ ਪੁਛਹੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਆ ॥

नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥

पति-प्रभु के बिना घर रहने के योग्य नहीं चाहे अपनी सखियों-सहेलियों से पूछ लो।

ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ਨਾਹੀ ਵਸਹਿ ਸਾਚਿ ਸੁਹੇਲੀਆ ॥

बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥

नाम के बिना कोई प्रीति एवं स्नेह नहीं। अपने सच्चे स्वामी के साथ वह सुख में वास करती है।

ਸਚੁ ਮਨਿ ਸਜਨ ਸੰਤੋਖਿ ਮੇਲਾ ਗੁਰਮਤੀ ਸਹੁ ਜਾਣਿਆ ॥

सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥

सत्य एवं संतोष द्वारा मित्र (प्रभु) का मिलन प्राप्त होता है और गुरु के उपदेश द्वारा पति-परमेश्वर समझा जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡੈ ਸਾ ਧਨ ਨਾਮਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀਆ ॥੨॥

नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥२॥

हे नानक ! जो दुल्हन (जीव-स्त्री) नाम को नही त्यागती, वह नाम के द्वारा प्रभु में लीन हो जाती है ॥२॥

ਮਿਲੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੜੀਹੋ ਹਮ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇਹਾ ॥
मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥
आओ मेरी सखियो एवं सहेलियों ! हम अपने प्रियतम प्रभु का यश करें।

ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਲਿਖਉਗੀ ਜੀਉ ਸਬਦਿ ਸਨੇਹਾ ॥
गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥
मैं अपने गुरदेव से पूछूगी और उनके उपदेश को अपने सन्देश के तौर पर लिखूगी।

ਸਬਦੁ ਸਾਚਾ ਗੁਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ਮਨਮੁਖੀ ਪਛੁਤਾਣੀਆ ॥
सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥
सच्चा शब्द गुरु ने मुझे दिखा दिया है लेकिन स्वेच्छाचारी पश्चाताप करेंगे।

ਨਿਕਸਿ ਜਾਤਉ ਰਹੈ ਅਸਥਿਰੁ ਜਾਮਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥
निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥
जब मैंने सत्य को पहचान लिया तो मेरा दौड़ता मन स्थिर हो गया है।

ਸਾਚ ਕੀ ਮਤਿ ਸਦਾ ਨਉਤਨ ਸਬਦਿ ਨੇਹੁ ਨਵੇਲਓ ॥
साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ ॥
सत्य का बोध हमेशा नवीन होता है और सत्य नाम का प्रेम सदैव नवीन रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਸਹਜਿ ਸਾਚਾ ਮਿਲਹੁ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀਹੋ ॥੩॥
नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥३॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमेश्वर की कृपा-दृष्टि से सुख-शांति प्राप्त होती है। मेरी सखियों एवं सहेलियों ! उससे मिलो ॥३॥

ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੁਨੀ ਜੀਉ ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਜਨੁ ਆਇਆ ॥
मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥
मेरी कामना पूरी हो गई है और मेरा साजन प्रभु मेरे (मन के) घर में आ गया है।

ਮਿਲਿ ਵਰੁ ਨਾਰੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥
मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥
पति व पत्नी के मिलन पर मंगल गीत गायन किया गया।

ਗੁਣ ਗਾਇ ਮੰਗਲੁ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਹਸੀ ਮੁੰਧ ਮਨਿ ਓਮਾਹਓ ॥
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥
पति-प्रभु की महिमा एवं प्रेम में मंगल (खुशी के) गीत गायन करने से जीव-स्त्री की आत्मा प्रसन्न हो गई है।

ਸਾਜਨ ਰਹੰਸੇ ਦੁਸਟ ਵਿਆਪੇ ਸਾਚੁ ਜਪਿ ਸਚੁ ਲਾਹਓ ॥

साजन रहंसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥

मित्र प्रसन्न हैं और शत्रु (विकार) अप्रसन्न हैं। सद्पुरुष का भजन करने से सच्चा लाभ प्राप्त होता है।

ਕਰ ਜੋੜਿ ਸਾ ਧਨ ਕਰੈ ਬਿਨਤੀ ਰੈਣਿ ਦਿਨੁ ਰਸਿ ਭਿੰਨੀਆ ॥

कर जोड़ि सा धन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिंनीआ ॥

जीव-स्त्री हाथ जोड़कर विनती करती है कि रात-दिन वह अपने प्रभु के प्रेम में लीन रहे।

ਨਾਨਕ ਪਿਰੁ ਧਨ ਕਰਹਿ ਰਲੀਆ ਇਛ ਮੇਰੀ ਪੁੰਨੀਆ ॥੪॥੧॥

नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥४॥१॥

हे नानक ! अब प्रियतम प्रभु एवं उसकी पत्नी (जीवात्मा) मिलकर आत्मिक आनन्द भोगते हैं और मेरी कामना पूर्ण हो गई है ॥४॥ १॥

ਗਉੜੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गउड़ी छंत महला १ ॥
गउड़ी छंत महला १ ॥

ਸੁਣਿ ਨਾਹ ਪ੍ਰਭੂ ਜੀਉ ਏਕਲੜੀ ਬਨ ਮਾਹੇ ॥
सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥
हे मेरे पूज्य परमेश्वर ! सुनो, मैं (जीवात्मा) इस वीराने (संसार) में अकेली हूँ।

ਕਿਉ ਧੀਰੈਗੀ ਨਾਹ ਬਿਨਾ ਪ੍ਰਭ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ॥
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥
हे मेरे बेपरवाह प्रभु ! मैं तेरे बिना किस तरह धैर्य कर सकती हूँ?

ਧਨ ਨਾਹ ਬਾਝਹੁ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਬਿਖਮ ਰੈਣਿ ਘਣੇਰੀਆ ॥
धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥
जीव-स्त्री अपने पति (प्रभु) के बिना नहीं रह सकती। उसके लिए रात्रि बड़ी विषम है।

ਨਹ ਨੀਦ ਆਵੈ ਪ੍ਰੇਮੁ ਭਾਵੈ ਸੁਣਿ ਬੇਨੰਤੀ ਮੇਰੀਆ ॥
नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ ॥
हे मेरे प्रियतम पति ! आप मेरी प्रार्थना सुनो, मुझे (आपके बिना) नींद नहीं आती।

ਬਾਝਹੁ ਪਿਆਰੇ ਕੋਇ ਨ ਸਾਰੇ ਏਕਲੜੀ ਕੁਰਲਾਏ ॥
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥
मेरा प्रियतम ही मुझे लुभाता है। हे मेरे प्रियतम ! तेरे अलावा कोई भी मुझे नहीं पूछता। वीराने (संसार) में मैं अकेली रोती हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੧॥
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥१॥
हे नानक ! अपने प्रियतम के बिना जीव-स्त्री बड़े कष्ट सहन करती है। वह उसको केवल तभी मिलती है, जब वह अपने साथ मिलाता है॥ १ ॥

ਪਿਰਿ ਛੋਡਿਅੜੀ ਜੀਉ ਕਵਣੁ ਮਿਲਾਵੈ ॥
पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥
पति की त्यागी हुई नारी को उसके स्वामी से कौन मिला सकता है?

ਰਸਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਮਿਲੀ ਜੀਉ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੈ ॥
रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥
प्रभु-प्रेम एवं सुन्दर नाम का स्वाद लेने से वह अपने पूज्य पति को मिल जाती है।

ਸਬਦੇ ਸੁਹਾਵੈ ਤਾ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ਦੀਪਕ ਦੇਹ ਉਜਾਰੈ ॥
सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥
जब जीव-स्त्री नाम से श्रृंगारी जाती है, तो वह अपने पति को पा लेती है और उसकी काया ज्ञान के दीपक से उज्जवल हो जाती है।

ਸੁਣਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਸਾਚਿ ਸੁਹੇਲੀ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੈ ॥
सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥
हे मेरी सखी-सहेली ! सुन, अपने सत्यस्वरूप स्वामी एवं सच्चे की महानताएँ स्मरण करके जीव-स्त्री सुखी हो जाती है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਤਾ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ ਬਿਗਸੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अम्रित बाणी ॥
जब सतिगुरु ने अपनी वाणी में मिलाया तो प्रभु-पति ने उसे चरण-कवलों में मिला लिया। अमृतमयी वाणी से वह प्रफुल्लित हो गई है।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਤਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਜਾ ਤਿਸ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥੨॥
नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥२॥
हे नानक ! प्रियतम अपनी पत्नी को तभी प्रेम करता है, जब उसके हृदय को वह लुभाती है॥ २॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਨੀਘਰੀਆ ਜੀਉ ਕੂੜਿ ਮੁਠੀ ਕੂੜਿਆਰੇ ॥
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥
मोहित करने वाली मोहिनी ने उसको बेघर कर दिया है। झूठी को झूठ ने ठग लिया है।

ਕਿਉ ਖੁਲੈ ਗਲ ਜੇਵੜੀਆ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥
किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥
परम प्रिय गुरु के बिना उसकी गर्दन के पास वाला फँदा किस तरह खुल सकता है?

ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੇ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ਤਿਸ ਹੀ ਕਾ ਸੋ ਹੋਵੈ ॥
हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥
जो प्रिय प्रभु को प्रेम करता एवं उसके नाम का भजन करता है, वह उसका हो जाता है।

ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਅਨੇਕ ਨਾਵਣ ਕਿਉ ਅੰਤਰ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ॥
पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥
दान-पुण्य करने एवं अधिकतर तीर्थों पर स्नान अन्तर्मन की मलिनता को किस तरह धो सकते हैं

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਗਤਿ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ਹਠਿ ਨਿਗ੍ਰਹਿ ਬੇਬਾਣੈ ॥
नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥
नाम के बिना किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता। दुः साध्य इन्द्रियों को रोकने का प्रयत्न एवं वीराने में निवास का कोई लाभ नहीं।

ਨਾਨਕ ਸਚ ਘਰੁ ਸਬਦਿ ਸਿਞਾਪੈ ਦੁਬਿਧਾ ਮਹਲੁ ਕਿ ਜਾਣੈ ॥੩॥
नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥३॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा का दरबार गुरु की वाणी द्वारा पहचाना जाता है। दुविधा से यह दरबार किस तरह जाना जा सकता है ? ॥ ३॥

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਜੀਉ ਸਬਦੁ ਸਚਾ ਵੀਚਾਰੋ ॥
तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तेरा नाम सत्य है और तेरे नाम का भजन सत्य है।

ਤੇਰਾ ਮਹਲੁ ਸਚਾ ਜੀਉ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਵਾਪਾਰੋ ॥
तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥
हे प्रभु ! तेरा दरबार सत्य है, तेरे नाम का व्यापार भी सत्य है।

ਨਾਮ ਕਾ ਵਾਪਾਰੁ ਮੀਠਾ ਭਗਤਿ ਲਾਹਾ ਅਨਦਿਨੋ ॥
नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥
हे ईश्वर ! तेरे नाम का व्यापार बहुत मधुर है। तेरे भक्त दिन-रात इससे लाभ प्राप्त करते हैं।

ਤਿਸੁ ਬਾਝੁ ਵਖਰੁ ਕੋਇ ਨ ਸੂਝੈ ਨਾਮੁ ਲੇਵਹੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੋ ॥
तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥
इसके अलावा मैं किसी और सौदे का ख्याल नहीं कर सकता। क्षण-क्षण प्रभु के नाम का भजन करो।

ਪਰਖਿ ਲੇਖਾ ਨਦਰਿ ਸਾਚੀ ਕਰਮਿ ਪੂਰੈ ਪਾਇਆ ॥
परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥
सत्यस्वरूप परमेश्वर की दया एवं पूर्ण सौभाग्य से प्राणी ऐसे हिसाब की जांच करके प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥
नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥४॥२॥
हें नानक ! नाम अमृत का महारस बड़ा मीठा है और पूर्ण गुरु के द्वारा ही सत्य प्राप्त होता है॥ ४॥ २

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੩
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

ਸਾ ਧਨ ਬਿਨਉ ਕਰੇ ਜੀਉ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥
सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥
जीवात्मा अपने परमेश्वर के आगे विनती करती एवं उसके गुणों को स्मरण करती है।

ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥
खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥
जीवात्मा एक क्षण-पल मात्र भी अपने प्रियतम प्रभु के बिना नहीं रह सकती।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥
बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥
अपने प्रियतम प्रभु के दर्शनों बिना जीवात्मा नहीं रह सकती। गुरु जी के बिना उसे प्रभु का मन्दिर प्राप्त नहीं होता।

ਜੋ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਸੋਈ ਪਰੁ ਕੀਜੈ ਤਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਈਐ ॥
जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥
गुरु जी जो कुछ भी वर्णन करते हैं, वह उसको निश्चित ही करना चाहिए। क्योंकि तृष्णा की अग्नि तभी बुझ सकती है।

ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਬਿਨੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਏ ॥
हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ॥
एक ईश्वर ही सत्य है और उसके अलावा दूसरा कोई नहीं। प्रभु की सेवा-भक्ति के बिना सुख प्राप्त नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੧॥
नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए ॥१॥
हे नानक ! वहीं जीवात्मा गुरु की मिलाई हुई परमात्मा से मिल सकती है, जिसे परमात्मा स्वयं कृपा करके अपने साथ मिलाता है॥ १॥

ਧਨ ਰੈਣਿ ਸੁਹੇਲੜੀਏ ਜੀਉ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
धन रैणि सुहेलड़ीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥
उस जीवात्मा की रात्रि सुन्दर हो जाती है, जो ईश्वर से अपने मन को जोड़ती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਭਾਉ ਕਰੇ ਜੀਉ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥
वह सतिगुरु की प्रेमपूर्वक सेवा करती है। वह अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को निवृत्त कर देती है।

ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗਾ ਭਾਓ ॥
विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥
अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को दूर करके और ईश्वर की गुणस्तुति करके वह दिन रात प्रभु से प्रेम करती है।

ਸੁਣਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਜੀਅ ਕੀ ਮੇਲੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਓ ॥
सुणि सखी सहेली जीअ की मेली गुर कै सबदि समाओ ॥
हे मेरी सखी सहेली ! हे मेरे मन की संगिनी ! तू गुरु के शब्द में लीन हो जा।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰੀ ਤਾ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਨਾਮੇ ਧਰੀ ਪਿਆਰੋ ॥
हरि गुण सारी ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥
यदि तू प्रभु के गुणों को स्मरण करेगी तो तू अपने पति की प्रिया हो जाओगी और तेरा प्रेम नाम के साथ हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗਲਿ ਹਾਰੋ ॥੨॥
नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥२॥
हे नानक ! जिस जीवात्मा के गले में राम के नाम की माला विद्यमान है, वह अपने पति-प्रभु की प्रियतमा है॥ २॥

ਧਨ ਏਕਲੜੀ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ॥
धन एकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥
अपने प्रियतम पति के बिना जीवात्मा बिल्कुल अकेली है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਮੁਠੀ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਕਰਾਰੇ ॥
द्रजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥
कारगर (इष्ट फलप्रद) गुरु के शब्द के बिना वह द्वैतवाद के प्रेम कारण ठगी गई है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦ ਪਿਆਰੇ ਕਉਣੁ ਦੁਤਰੁ ਤਾਰੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਖੁਆਈ ॥
बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥
शब्द के बिना उसको विषम सागर से कौन पार कर सकता है? माया के मोह ने उसको कुमार्गगामी कर दिया है।

ਕੂੜਿ ਵਿਗੁਤੀ ਤਾ ਪਿਰਿ ਮੁਤੀ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਈ ॥
कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥
जब झूठ ने उसको नष्ट कर दिया तो पति-प्रभु ने उसको त्याग दिया। फिर जीवात्मा प्रभु का महल प्राप्त नहीं करती।

ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਸਮਾਏ ॥
र सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाए ॥
लेकिन जो जीवात्मा गुरु के शब्द में अनुरक्त है, वह प्रभु के प्रेम में मतवाली हो जाती है और दिन-रात उस में लीन रहती है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਜੀਉ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੩॥
नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाए ॥३॥
हे नानक ! जो जीवात्मा उसके प्रेम में सदा अनुरक्त रहती है, पूज्य परमेश्वर उस कामिनी (जीवात्मा) को अपने साथ मिला लेता है ॥ ३॥

ਤਾ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਜੀਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਵਣੁ ਮਿਲਾਏ ॥
ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥
यदि ईश्वर अपने साथ मिलाए तो ही हम उसको मिल सकते हैं। ईश्वर के बिना कौन हमें उससे मिला सकता है ?

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਆਪਣੇ ਜੀਉ ਕਉਣੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥
बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥
अपने प्रियतम गुरु के बिना हमारी दुविधा कौन दूर कर सकता है ? गुरु के द्वारा दुविधा निवृत्त हो जाती है।

ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ਇਉ ਮਿਲੀਐ ਮਾਏ ਤਾ ਸਾ ਧਨ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
गुरु भरमु चुकाए इउ मिलीऐ माए ता सा धन सुखु पाए ॥
हे मेरी माता ! यह है विधि ईश्वर से मिलने की और इस तरह दुल्हन (जीवात्मा) सुख प्राप्त करती है।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਗੁ ਨ ਪਾਏ ॥
गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥
गुरु-की सेवा के अलावा घनघोर अन्धकार है। गुरु के (मार्गदर्शन) बिना मार्ग नहीं मिलता।

ਕਾਮਣਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥
कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥
जो जीवात्मा प्रभु रंग में लीन है, वह गुरु के शब्द का चिन्तन करती है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੧॥
नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥४॥१॥
हे नानक ! प्रियतम गुरु से प्रेम पाकर जीवात्मा ने प्रभु को अपने पति के तौर पर पा लिया है॥ ४ ॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਖਰੀ ਨਿਮਾਣੀ ਜੀਉ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਿਉ ਜੀਵਾ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥
किस तरह जीवित रह सकती हूँ?

ਪਿਰ ਬਿਨੁ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਜੀਉ ਕਾਪੜੁ ਤਨਿ ਨ ਸੁਹਾਈ ॥
पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥
अपने पति के बिना मुझे नींद नहीं आती और कोई वस्त्र मेरे शरीर को शोभा नहीं देता।

ਕਾਪਰੁ ਤਨਿ ਸੁਹਾਵੈ ਜਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਗੁਰਮਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥
जब मैं अपने पति-प्रभु को अच्छी लगती हूँ तो मेरे शरीर पर वस्त्र बहुत शोभा देते हैं, गुरु के उपदेश से मेरा चित उससे एक ताल में हो गया है।

ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਗੁਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਈਐ ॥
सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ॥
यदि वह सतिगुरु की श्रद्धा से सेवा करे तो सदा सुहागिन हो जाती है और गुरु जी के अंक में लीन हो जाती है।

ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਮੇਲਾ ਤਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੀ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥
गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥
यदि वह गुरु के शब्द द्वारा अपने प्रियतम से मिल जाए तो वह उसको प्रेम करता है। इस संसार में केवल नाम ही एक लाभदायक काम है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਜਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥੧॥
नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥१॥
हे नानक ! जब जीवात्मा प्रभु की गुणस्तुति करती है तो वह अपने प्रभु-पति को अच्छी लगने लग जाती है॥ १॥

ਸਾ ਧਨ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਜੀਉ ਆਪਣੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥
सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥
अपने प्रियतम के साथ पत्नी (जीवात्मा) उसके प्रेम का आनन्द प्राप्त करती है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਜੀਉ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥
अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥
वह दिन-रात उसके प्रेम में अनुरक्त हुई, गुरु के शब्द का चिन्तन करती है।

ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੇ ॥
गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥
वह गुरु के शब्द का ध्यान करती है, तथा अपने अहंत्व को मिटा देती है और यूं अपने प्रियतम प्रभु से मिल जाती है।

सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥
सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥
जो जीवात्मा मधुर सत्यनाम के प्रेम में सदैव ही अनुरक्त है, वह अपने पति-प्रभु की प्रियतमा हो जाती है।

अपुने गुर मिलि रहीऐ अंम्रितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥
अपुने गुर मिलि रहीऐ अम्रितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥
अपने गुरु की संगति में रहने से हम नाम अमृत को ग्रहण कर लेते हैं और अपनी दुविधा का नाश करते हैं।

नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥२॥
नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर को अपने पति के तौर पर प्राप्त करके दुल्हन को तमाम दुःख भूल गए हैं।॥ २॥

कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥
कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥
माया के मोह एवं लगाव के कारण पत्नी (जीवात्मा) अपने प्रियतम पति को भूल गई है।

झूठी झूठि लगी जीउ कुड़ि मुठी कुड़िआरे ॥
झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥
झूठी पत्नी (जीवात्मा) झूठ,से जुड़ी हुई है। कपटी नारी कपट ने छल ली है।

कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥
कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥
जो जीवात्मा असत्य त्याग देती है और गुरु के उपदेश पर अनुसरण करती है, वह अपने जीवन को जुए में नहीं हारती।

गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥
गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥
जो जीवात्मा गुरु के शब्द का चिन्तन करती है, वह अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को दूर कर के सत्य में लीन हो जाती है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ਐਸਾ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੋ ॥
हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ॥
"(हे जीवात्मा !) प्रभु के नाम को अपने हृदय में बसा, तू ऐसा हार-श्रृंगार कर।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ਜਿਸੁ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੋ ॥੩॥
नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥३॥
हे नानक ! जिस दुल्हन का सहारा सत्य-नाम है, वह सहज ही स्वामी में लीन हो जाती है। ३॥

ਮਿਲੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਜੀਉ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਖਰੀ ਨਿਮਾਣੀ ॥
मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥
हे मेरे प्रियतम ! मुझे दर्शन दीजिए। तेरे बिना मैं बहुत ही बेइज्जत हूँ।

ਮੈ ਨੈਣੀ ਨੀਦ ਨ ਆਵੈ ਜੀਉ ਭਾਵੈ ਅੰਨੁ ਨ ਪਾਣੀ ॥
मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ॥
मेरे नयनों में नींद नहीं आती और भोजन व जल मुझे अच्छे नहीं लगते

ਪਾਣੀ ਅੰਨੁ ਨ ਭਾਵੈ ਮਰੀਐ ਹਾਵੈ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥
पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥
भोजन व जल मुझे अच्छे नहीं लगते और मैं उसके विरह के शोक से मर रही हूँ। अपने प्रियतम पति के बिना सुख किस तरह मिल सकता है?

ਗੁਰ ਆਗੈ ਕਰਉ ਬਿਨੰਤੀ ਜੇ ਗੁਰ ਭਾਵੈ ਜਿਉ ਮਿਲੈ ਤਿਵੈ ਮਿਲਾਈਐ ॥
गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥
मैं गुरु के समक्ष विनती करती हूँ यदि उनको अच्छा लगे। जैसे भी वह मिला सकता है, मुझे अपने साथ मिला ले।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸੁਖਦਾਤਾ ਆਪਿ ਮਿਲਿਆ ਘਰਿ ਆਏ ॥
आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ॥
सुखों के दाता, प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है और वह स्वयं ही मेरे हृदय घर में आकर मुझे मिल गया है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾ ਪਿਰੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥੪॥੨॥
नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए ॥४॥२॥
हे नानक ! ऐसी जीव-स्त्री हमेशा के लिए अपने पति-प्रभु की सौभाग्यवती है। प्रियतम प्रभु न कभी मरता है और न ही अलग होता है।॥४॥२॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਰਸਿ ਬੇਧੀ ਜੀਉ ਹਰਿ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ॥
जीव-स्त्री सहज-स्वभाव ही हरि-रस में बिंध गई है।

ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਜੀਉ ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥
मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥
मनमोहन प्रभु ने उसको मुग्ध कर दिया है और उसकी दुविधा सहज ही नाश हो गई है।

ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ਕਾਮਣਿ ਵਰੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥
दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए ॥
जीव-स्त्री सहज ही अपनी दुविधा निवृत करके और अपने पति-प्रभु को प्राप्त होकर गुरु के उपदेश द्वारा आनन्द प्राप्त करती है।

ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਕੂੜਿ ਕੁਸਤਿ ਭਰਿਆ ਗਲ ਤਾਈ ਪਾਪ ਕਮਾਏ ॥
इहु सरीरु कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥
यह शरीर गले तक झूठ एवं असत्य से भरा हुआ है और पाप करता रहता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜਿਤੁ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਏ ॥
गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥
गुरु के माध्यम से भक्ति करने से ही सहज ध्वनि उत्पन्न होती है। प्रभु की भक्ति के बिना (विकारों की) मैल दूर नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਪਿਰਹਿ ਪਿਆਰੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੧॥
नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए ॥१॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्री अपने अहंकार को अपनी अन्तरात्मा से निकाल देती है, वह अपने प्रियतम की प्रिया हो जाती है॥ १॥

ਕਾਮਣਿ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਜੀਉ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥
कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥
गुरु की प्रीति एवं प्रेम द्वारा पत्नी ने अपना प्रियतम स्वामी प्राप्त कर लिया है।

ਰੈਣਿ ਸੁਖਿ ਸੁਤੀ ਜੀਉ ਅੰਤਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥
रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥
गुरु को अपनी अन्तरात्मा एवं हृदय से लगाने से वह रात को सुख से सोती है।

ਅੰਤਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ਮਿਲੀਐ ਪਿਆਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਦੁਖੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥
अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥
गुरु को अपनी अन्तरात्मा एवं हृदय में रात-दिन टिकाने से वह अपने प्रियतम से मिल जाती है और उसके दुःख दूर हो जाते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਮਹਲੁ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਕਾਮਣਿ ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰੇ ॥
अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥
गुरु के उपदेश का चिन्तन करने से अपने हृदय-मंदिर में दुल्हन अपने दूल्हे (प्रभु) का प्रेम पाती है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਪੀਆ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਨਿਵਾਰੇ ॥
अम्रितु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ॥
दिन-रात वह नाम अमृत का पान करती है और अपनी दुविधा का नाश करती है।

ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਮਿਲੀ ਸੋਹਾਗਣਿ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੇ ॥੨॥
नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥२॥
हे नानक ! गुरु के अनन्त प्रेम द्वारा सौभाग्यवती पत्नी अपने सत्यस्वरूप स्वामी को मिल जाती है ॥२॥

ਆਵਹੁ ਦਇਆ ਕਰੇ ਜੀਉ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥
आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ॥
हे मेरे प्रियतम ! अपनी दया करो और मुझे अपने दर्शन प्रदान करें।

ਕਾਮਣਿ ਬਿਨਉ ਕਰੇ ਜੀਉ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੇ ॥
कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे ॥
उसको सत्य नाम से सुशोभित करने के लिए पत्नी (जीवात्मा) तुझे प्रार्थना करती है।

ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ॥
सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे ॥
सत्य नाम से श्रृंगारी हुई जीव-स्त्री अपने अहंकार को मिटा देती है और गुरु के माध्यम से उसके काम संवर जाते हैं।

ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਈ ਬੂਝੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੇ ॥
जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥
युग-युगों में वह एक प्रभु ही सत्य है और गुरु के प्रदान किए हुए विचार द्वारा वह जाना जाता है।

ਮਨਮੁਖਿ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੀ ਮੋਹਿ ਸੰਤਾਪੀ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਜਾਇ ਪੁਕਾਰੇ ॥
मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥
स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री कामवासना के विलास में लीन एवं सांसारिक मोह की पीड़ित की हुई है। वह किसके समक्ष जाकर पुकार करे ?

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਥਾਉ ਨ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੩॥
नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥३॥
हे नानक ! परम प्यारे गुरु के बिना स्वेच्छाचारी नारी को कोई सुख का ठिकाना नहीं मिलता ॥३॥

ਮੁੰਧ ਇਆਣੀ ਭੋਲੀ ਨਿਗੁਣੀਆ ਜੀਉ ਪਿਰੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥
जीव-स्त्री मूर्ख, भोली एवं गुणविहीन है। पति-प्रभु अगम्य एवं अनन्त है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲੀਐ ਜੀਉ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰਾ ॥
आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥
ईश्वर स्वयं ही अपने मिलन में मिलाता है और स्वयं ही क्षमाशील है।

ਅਵਗਣ ਬਖਸਣਹਾਰਾ ਕਾਮਣਿ ਕੰਤੁ ਪਿਆਰਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥
जीव-स्त्री का प्रियतम पति दोषों को क्षमा करने वाला है और कण-कण में मौजूद है।

ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਾਇ ਭਗਤੀ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥
प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥
गुरु ने मुझे यह बोध विदित कर दिया है कि प्रभु प्रेम, प्रीति एवं भक्ति द्वारा पाया जाता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
सदा अनंदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥
जो जीव-स्त्री अपने पति के स्नेह में रात-दिन लीन रहती है, वह रात-दिन प्रसन्न रहती है।

ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਸਾ ਧਨ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੪॥੩॥
नानक सहजे हरि वरु पाइआ सा धन नउ निधि पाई ॥४॥३॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्री नाम के नौ भण्डार (नवनिधि) प्राप्त कर लेती है, वह सहज ही ईश्वर को अपने पति के तौर पर पा लेती है॥ ४ ॥ ३ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਮਾਇਆ ਸਰੁ ਸਬਲੁ ਵਰਤੈ ਜੀਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਦੁਤਰੁ ਤਰਿਆ ਜਾਇ ॥
माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥
माया का सागर अत्याधिक हलचल मचा रहा है, भयानक जगत् सागर किस तरह पार किया जा सकता है?

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਬੋਹਿਥਾ ਜੀਉ ਸਬਦੁ ਖੇਵਟੁ ਵਿਚਿ ਪਾਇ ॥
राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥
(हे प्राणी !) ईश्वर के नाम का जहाज बना और गुरु के शब्द को नाविक (मल्लाह) के तौर पर इसमें रख

ਸਬਦੁ ਖੇਵਟੁ ਵਿਚਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਘਾਏ ਇਨ ਬਿਧਿ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ॥
सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥
जब गुरु के शब्द का नाविक (मल्लाह) उसमें रख लिया जाता है तो ईश्वर स्वयं भवसागर से पार कर देता है। इस विधि से अगम्य सागर पार किया जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਜੀਵਤਿਆ ਇਉ ਮਰੀਐ ॥
गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥
गुरु के माध्यम से ही प्रभु की भक्ति प्राप्त होती है और इस तरह मनुष्य जीवित ही मोह-माया से मृत रहता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੇ ਭਏ ਪਵਿਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥

खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥

एक क्षण में ही राम का नाम उसके पाप मिटा देता है और उसका शरीर पवित्र हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਕੰਚਨ ਭਏ ਮਨੂਰਾ ॥੧॥

नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥१॥

हे नानक ! राम के नाम द्वारा उद्धार हो जाता है और मन शुद्ध हो जाता है। १॥

ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਖ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੇ ਜੀਉ ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀ ॥
इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥
स्त्री एवं पुरुष भोग-विलास में फँसे हुए हैं और राम के नाम का भजन करने की विधि नहीं जानते।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਭਾਈ ਖਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜੀਉ ਡੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ॥
मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥
माता, पिता, पुत्र एवं भाई सर्वप्रिय हैं और वह जल के बिना ही (मोह में) डूबकर मरते हैं।

ਡੂਬਿ ਮੁਏ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀ ਹਉਮੈ ਧਾਤੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥
डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥
जो प्राणी मोक्ष के मार्ग को नहीं जानते और अहंकार में जगत् के अन्दर भटकते रहते हैं, वे जल के बिना ही डूबकर प्राण त्याग देते हैं।

ਜੋ ਆਇਆ ਸੋ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਸੀ ਉਬਰੇ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰੇ ॥
जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥
जो कोई भी इस संसार में आए हैं, वे सभी चले जाएँगे। लेकिन जो गुरु जी का चिन्तन करते हैं, उनका उद्धार हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ॥
गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥
जो व्यक्ति गुरमुख बनकर राम के नाम का भजन करता है, ऐसा व्यक्ति स्वयं पार हो जाता है और अपने समूचे वंश का भी उद्धार कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮਤਿ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥२॥
हे नानक ! नाम उसकी अन्तरात्मा में वास कर जाता है और गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रियतम से मिल जाता है॥ २॥

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕੋ ਥਿਰੁ ਨਾਹੀ ਜੀਉ ਬਾਜੀ ਹੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥
राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥
राम के नाम बिना कुछ भी स्थिर नहीं यह संसार एक लीला ही है।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਭਗਤਿ ਸਚੀ ਜੀਉ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥
द्रिड़ु भगति सची जीउ राम नामु वापारा ॥
भगवान की भक्ति को अपने हृदय में सुदृढ़ कर और केवल राम के नाम का ही व्यापार कर।

ਰਮ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ਗੁਰਮਤੀ ਧਨੁ ਪਾਈਐ ॥
राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥
राम के नाम का व्यापार अगम्य एवं अनन्त है। गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु नाम रूपी धन प्राप्त हो जाता है।

ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਭਗਤਿ ਇਹ ਸਾਚੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥
सेवा सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥
भगवान की सेवा, भगवान में सुरति लगाना और भगवान की भक्ति ही सत्य है, जिससे हम अपने अन्तर्मन से अहंत्व को दूर कर सकते हैं।

ਹਮ ਮਤਿ ਹੀਣ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਅੰਧੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥
हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए ॥
हम जीव बुद्धिहीन, मूर्ख, बेवकूफ, माया-मोह में अन्धे हैं। सतिगुरु ने हमें सन्मार्ग दिखा दिया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੩॥
नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाए ॥३॥
हे नानक ! गुरुमुख ही शब्द से सुन्दर बने हैं और वे हमेशा ही भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते है ॥३॥

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਜੀਉ ਆਪੇ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥
आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥
प्रभु स्वयं ही करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही मनुष्य को अपने नाम से संवारता है।

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪਿ ਸਬਦੁ ਜੀਉ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ॥
आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥
ईश्वर स्वयं सतिगुरु है और स्वयं ही शब्द है। युग-युग में प्रभु के भक्त उसके प्रिय हैं।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਆਪੇ ਭਗਤੀ ਲਾਏ ॥
जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥
युग-युग में वह अपने प्रिय भक्तों को स्वयं शोभायमान करता है। वह स्वयं ही उनको अपनी भक्ति में लगाता है।

ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥
आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ॥
वह स्वयं ही परम बुद्धिमान और स्वयं ही सब कुछ देखने वाला है। वह स्वयं ही मनुष्य से अपनी भक्ति करवाता है।

ਆਪੇ ਗੁਣਦਾਤਾ ਅਵਗੁਣ ਕਾਟੇ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥
प्रभु स्वयं ही गुणों का दाता है और बुराईयों का नाश करता है। अपने नाम को वह स्वयं ही मनुष्य के हृदय में बसाता है।

ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਚੇ ਵਿਟਹੁ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥੪॥੪॥
नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥४॥४॥
हे नानक ! मैं उस सत्य के पुंज ईश्वर पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है॥ ४॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गउड़ी महला ३ ॥
गउड़ी महला ३ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥
गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥
हे मेरे प्रिय मन ! गुरु की सेवा और भगवान के नाम का ध्यान करते रहो।

ਮੰਞਹੁ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਹਿ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥
मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए ॥
हे मेरे प्रिय मन ! मुझसे दूर मत जाना और हृदय-घर में बैठकर ही तू अपने ईश्वर को प्राप्त कर ले।

ਘਰਿ ਬੈਠਿਆ ਹਰਿ ਪਾਏ ਸਦਾ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਸਹਜੇ ਸਤਿ ਸੁਭਾਏ ॥
घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥
सहज ही सत्य से हमेशा प्रभु से अपनी वृति लगाने से तू अपने हृदय-घर में बसता हुआ उसे प्राप्त कर लेगा।

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਖਰੀ ਸੁਖਾਲੀ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥
गुरु की सेवा बड़ी सुखदायक है। गुरु की सेवा केवल वही व्यक्ति करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है।

ਨਾਮੋ ਬੀਜੇ ਨਾਮੋ ਜੰਮੈ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
नामो बीजे नामो जमै नामो मंनि वसाए ॥
वह नाम को बोता है, नाम उसके भीतर अंकुरित होता है और नाम को ही वह अपने हृदय में बसा लेता है।

ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਏ ॥੧॥
नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥१॥
हे नानक ! सत्य नाम से ही शोभा प्राप्त होती है। मनुष्य वही प्राप्त करता है, जो विधाता के विधान द्वारा उसके लिए लिखा होता है ॥१॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਜਾ ਚਾਖਹਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए ॥
हे मेरे प्रिय मन ! ईश्वर का नाम मधुर है। (लेकिन यह बोध तभी तुझे होगा) जब तू चित्त से लगा कर इसे (नाम-रस) चखोगे।

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੁ ਮੁਏ ਜੀਉ ਅਨ ਰਸ ਸਾਦ ਗਵਾਏ ॥
रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥
हे प्राणघातक ! अपनी जिव्हा से हरि रस चख और दूसरे रसों के आस्वादन त्याग दे।

ਸਦਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਏ ਜਾ ਹਰਿ ਭਾਏ ਰਸਨਾ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ॥
सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए ॥
जब प्रभु को अच्छा लगेगा, तू हरि-रस को सदैव के लिए पा लोगे और तेरी जिव्हा उसके नाम से सुहावनी हो जाएगी।

ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਨਾਮਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥
जो व्यक्ति नाम का ध्यान करता है और अपनी वृति नाम पर केन्द्रित रखता है, वह सदैव सुख पा लेता है।

ਨਾਮੇ ਉਪਜੈ ਨਾਮੇ ਬਿਨਸੈ ਨਾਮੇ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥
नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥
प्रभु की इच्छा से प्राणी संसार में जन्म लेता है, उसकी इच्छा से ही वह प्राण त्याग देता है और उसकी इच्छा से ही वह सत्य में समा जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤੀ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਲਏ ਲਵਾਏ ॥੨॥
नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए ॥२॥
हे नानक ! नाम गुरु की शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है। अपने नाम से वह स्वयं ही मिलाता है॥ २॥

ਏਹ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਧਨ ਛੋਡਿ ਪਰਦੇਸਿ ਸਿਧਾਏ ॥
एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥
हे प्रिय मन ! किसी दूसरे की सेवा बुरी है। पत्नी को त्याग कर तुम परदेस चले गए हो।

ਦੂਜੈ ਕਿਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਓ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਬਿਖਿਆ ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਏ ॥
दूजै किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥
हे प्रिय मन ! द्वैतवाद में कभी किसी ने सुख नहीं पाया। तुम पाप एवं लालच की तृष्णा करते हो।

ਬਿਖਿਆ ਲੋਭਿ ਲੁਭਾਏ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ਓਹੁ ਕਿਉ ਕਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥
जो विष एवं लोभ के बहकाए हुए हैं और भ्रम में कुमार्गगामी हो गए हैं, वह किस तरह सुख पा सकते हैं?

ਚਾਕਰੀ ਵਿਡਾਣੀ ਖਰੀ ਦੁਖਾਲੀ ਆਪੁ ਵੇਚਿ ਧਰਮੁ ਗਵਾਏ ॥
चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥
किसी दूसरे की सेवा बहुत पीड़ादायक है। उसमें प्राणी अपने आपको बेच देता है और अपना धर्म गंवा लेता है।

ਮਾਇਆ ਬੰਧਨ ਟਿਕੈ ਨਾਹੀ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਦੁਖੁ ਸੰਤਾਏ ॥
माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥
माया के बन्धन में जकड़ा हुआ मन स्थिर नहीं रहता। क्षण-क्षण पीड़ा उसको पीड़ित करती है।

ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਾ ਦੁਖੁ ਤਦੇ ਚੂਕੈ ਜਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੩॥
नानक माइआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥३॥
हे नानक ! सांसारिक माया का दुख केवल तभी दूर होता है, जब मनुष्य अपने मन को गुरु के शब्द में मिला लेता है ॥३॥

ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਗਾਵਾਰੁ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਸਬਦੁ ਮਨਿ ਨ ਵਸਾਏ ॥
मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए ॥
हे मेरे प्रिय मन ! स्वेच्छाचारी जीव मूर्ख एवं अनाड़ी हैं। प्रभु के नाम को तुम अपने हृदय में नहीं बसाते।

ਮਾਇਆ ਕਾ ਭ੍ਰਮੁ ਅੰਧੁ ਪਿਰਾ ਜੀਉ ਹਰਿ ਮਾਰਗੁ ਕਿਉ ਪਾਏ ॥
माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥
माया के भ्रम कारण तुम (ज्ञान से) अन्धे हो गए हो। हे मेरे प्रिय मन ! तुम प्रभु का मार्ग किस तरह प्राप्त कर सकते हो ?

ਕਿਉ ਮਾਰਗੁ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ਮਨਮੁਖਿ ਆਪੁ ਗਣਾਏ ॥
किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥
जब तक सतिगुरु को अच्छा नहीं लगता, तुझे मार्ग किस तरह मिल सकता है? स्वेच्छाचारी अपने अहंत्व को प्रकट करता है।

ਹਰਿ ਕੇ ਚਾਕਰ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाए ॥
प्रभु के सेवक भक्त सदैव ही सुखी हैं। वह अपने मन को गुरु के चरणों से लगाते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਜੀਉ ਕਰੇ ਕਿਰਪਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥
ईश्वर जिस व्यक्ति पर अपनी कृपा करता है, वह सदैव प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਜਗਿ ਲਾਹਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥੪॥੫॥੭॥
नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाए ॥४॥५॥७॥
हे नानक ! इस संसार में केवल नाम के रत्न का ही लाभ है। गुरमुखों को प्रभु स्वयं यह सूझ प्रदान करता है ॥४॥५॥७॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫
रागु गउड़ी छंत महला ५
रागु गउड़ी छंत महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਇਆ ਜੀਉ ਕਿਉ ਦੇਖਾ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥
मेरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥
मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है। मैं किस तरह अपने दाता प्रभु के दर्शन करूं ?

ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਸਖਾ ਹਰਿ ਜੀਉ ਗੁਰ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ॥
मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥
पूज्य परमेश्वर, सर्वशक्तिमान विधाता ही मेरा मित्र एवं सखा है।

ਪੁਰਖੋ ਬਿਧਾਤਾ ਏਕੁ ਸ੍ਰੀਧਰੁ ਕਿਉ ਮਿਲਹ ਤੁਝੈ ਉਡੀਣੀਆ ॥
पुरखो बिधाता एकु स्रीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥
हे भाग्य विधाता ! हे श्रीधर ! मैं व्याकुल तुझे किस तरह मिल सकता हूँ?

ਕਰ ਕਰਹਿ ਸੇਵਾ ਸੀਸੁ ਚਰਣੀ ਮਨਿ ਆਸ ਦਰਸ ਨਿਮਾਣੀਆ ॥
कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥
हे प्रभु ! मेरे हाथ तेरी सेवा-भक्ति करते हैं। मेरा सिर तेरे चरणों पर झुका हुआ है और मेरे विनीत मन में तेरे दर्शनों की अभिलाषा है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨ ਘੜੀ ਵਿਸਰੈ ਪਲੁ ਮੂਰਤੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ॥
सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥
हे ईश्वर ! श्वास-श्वास और एक घड़ी भर के लिए मैं तुझे विस्मृत नहीं करता। हर क्षण, मुहूर्त एवं दिन-रात मैं तुझे स्मरण करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਜਿਉ ਪਿਆਸੇ ਕਿਉ ਮਿਲੀਐ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥੧॥
नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥१॥
हे नानक ! हे दाता प्रभु ! हम जीव पपीहे की भाँति प्यासे हैं। तुझ से किस तरह मिलेंगे ? ॥ १॥

ਇਕ ਬਿਨਉ ਕਰਉ ਜੀਉ ਸੁਣਿ ਕੰਤ ਪਿਆਰੇ ॥
इक बिनउ करउ जीउ सुणि कंत पिआरे ॥
हे मेरे प्रिय प्राणनाथ ! मैं एक विनती करती हूँ, इसे सुनिए।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੋਹਿ ਲੀਆ ਜੀਉ ਦੇਖਿ ਚਲਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥
मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥
तेरी अद्भुत लीलाएँ देखकर मेरा मन एवं तन मुग्ध हो गए हैं। तेरी आश्चर्यजनक लीलाएँ देखकर मैं मुग्ध हो गई हूँ।

ਚਲਤਾ ਤੁਮਾਰੇ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ਉਦਾਸ ਧਨ ਕਿਉ ਧੀਰਏ ॥
चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥
लेकिन अब मैं तेरी (लीलाओं से) उदास हो गई हूँ, (तेरे मिलन बिना) मुझे धैर्य नहीं मिलता।

ਗੁਣਵੰਤ ਨਾਹ ਦਇਆਲੁ ਬਾਲਾ ਸਰਬ ਗੁਣ ਭਰਪੂਰਏ ॥
गुणवंत नाह दइआलु बाला सरब गुण भरपूरए ॥
हे गुणों के स्वामी ! तू बड़ा दयालु, यौवन-सम्पन्न एवं समस्त गुणों से परिपूर्ण है।

ਪਿਰ ਦੋਸੁ ਨਾਹੀ ਸੁਖਹ ਦਾਤੇ ਹਉ ਵਿਛੁੜੀ ਬੁਰਿਆਰੇ ॥
पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥
हे सुखों के दाता ! तू दोष-रहित हैं। अपने पापों से मैं तुझ से जुदा हो गई हूँ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਇਆ ਧਾਰਹੁ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥
बिनवंति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥२॥
नानक विनती करते हैं, हे मेरे प्रिय पति ! दया करो और मेरे हृदय घर में आ बसो॥ २॥

ਹਉ ਮਨੁ ਅਰਪੀ ਸਭੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀ ਅਰਪੀ ਸਭਿ ਦੇਸਾ ॥
हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥
मैं अपनी आत्मा समर्पित करता हूँ, मैं अपना समूचा शरीर समर्पित करता हूँ एवं अपनी समस्त भूमि समर्पित करता हूँ।

ਹਉ ਸਿਰੁ ਅਰਪੀ ਤਿਸੁ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਦੇਇ ਸਦੇਸਾ ॥
हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥
मैं अपना शीश उस प्रिय मित्र को अर्पित करता हूँ, जो मुझे मेरे प्रभु का सन्देश दे।

ਅਰਪਿਆ ਤ ਸੀਸੁ ਸੁਥਾਨਿ ਗੁਰ ਪਹਿ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਖਾਇਆ ॥
अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइआ ॥
परम प्रतिष्ठित निवास वाले गुरु जी को मैंने अपना शीश समर्पित किया है और उन्होंने प्रभु को मेरे साथ ही दिखा दिया है।

ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਸਗਲਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਿਆ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਇਆ ॥
खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइआ ॥
एक क्षण में मेरे तमाम दुख दूर हो गए हैं और सब कुछ जो मेरे हृदय की लालसा है, मुझे प्राप्त हो गया है।

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਰਲੀਆ ਕਰੈ ਕਾਮਣਿ ਮਿਟੇ ਸਗਲ ਅੰਦੇਸਾ ॥
दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा ॥
दिन-रात अब जीवात्मा आनन्द प्राप्त करती है और उसकी तमाम चिन्ताएँ मिट गई हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਆ ਲੋੜਤੇ ਹਮ ਜੈਸਾ ॥੩॥
बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥३॥
नानक वन्दना करते हैं कि उनको अपना मनपसन्द पति प्राप्त हो गया है॥ ३ ॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਜੀਉ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥
मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥
मेरे हृदय में आनंद विद्यमान है और बधाइयां मिल रही हैं।

ਘਰਿ ਲਾਲੁ ਆਇਆ ਪਿਆਰਾ ਸਭ ਤਿਖਾ ਬੁਝਾਈ ॥
घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥
मेरा प्रियतम मेरे हृदय घर में आ गया है और मेरी प्यास बुझ गई है।

ਮਿਲਿਆ ਤ ਲਾਲੁ ਗੁਪਾਲੁ ਠਾਕੁਰੁ ਸਖੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥
मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥
मैं गोपाल ठाकुर जी को मिल गई हूँ और मेरी सखियों ने मंगल गीत गायन किए हैं।

ਸਭ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਹਰਖੁ ਉਪਜਿਆ ਦੂਤ ਥਾਉ ਗਵਾਇਆ ॥
सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥
मेरे समस्त मित्र एवं सगे-संबंधी आनंदपूर्वक हैं और मेरे कट्टर (कामादिक) शत्रुओं का नामोनिशान मिट गया है।

ਅਨਹਤ ਵਾਜੇ ਵਜਹਿ ਘਰ ਮਹਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਸੇਜ ਵਿਛਾਈ ॥
अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥
अब मेरे हृदय में अनहद भजन गूंज रहा है और मेरे तथा मेरे प्रियतम हेतु सेज बिछाई गई है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਹਜਿ ਰਹੈ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਕੰਤੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥੪॥੧॥
बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥४॥१॥
नानक वन्दना करते हैं कि अब मैं सहज में रहता हूँ। मेरा सुखों का दाता पति-परमेश्वर मुझे मिल गया है॥ ४॥ १॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਅਪਾਰਾ ॥
मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥
हे मेरे मोहन ! तेरे मन्दिर बहुत ऊँचे हैं और तेरा महल अनन्त है।

ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਸੋਹਨਿ ਦੁਆਰ ਜੀਉ ਸੰਤ ਧਰਮ ਸਾਲਾ ॥
मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥
हे मोहन ! तेरे द्वार अति सुन्दर हैं। वे साधु-संतों के लिए पूजा-स्थल हैं।

ਧਰਮ ਸਾਲ ਅਪਾਰ ਦੈਆਰ ਠਾਕੁਰ ਸਦਾ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਵਹੇ ॥
धरम साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥
तेरे मन्दिर में संत जन सदैव ही अनन्त एवं दयावान प्रभु का भजन गायन करते रहते हैं।

ਜਹ ਸਾਧ ਸੰਤ ਇਕਤ੍ਰ ਹੋਵਹਿ ਤਹਾ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਵਹੇ ॥
जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥
जहाँ साधु एवं संतों की सभा होती है, वहाँ वह तेरी ही आराधना करते हैं।

ਕਰਿ ਦਇਆ ਮਇਆ ਦਇਆਲ ਸੁਆਮੀ ਹੋਹੁ ਦੀਨ ਕ੍ਰਿਪਾਰਾ ॥
करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥
हे दयालु स्वामी ! दया एवं कृपा करो तथा दीनों पर कृपालु हो जाओ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਪਿਆਸੇ ਮਿਲਿ ਦਰਸਨ ਸੁਖੁ ਸਾਰਾ ॥੧॥
बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥१॥
नानक विनती करता है - मैं तेरे दर्शनों हेतु प्यासा हूँ। तेरे दर्शन करके मैं तमाम सुख प्राप्त कर लेता हूँ॥ १॥

ਮੋਹਨ ਤੇਰੇ ਬਚਨ ਅਨੂਪ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ ॥
मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥
हे मोहन ! तेरी वाणी बड़ी अनूप है और तेरी चाल (मर्यादा) बड़ी अनोखी है।

ਮੋਹਨ ਤੂੰ ਮਾਨਹਿ ਏਕੁ ਜੀ ਅਵਰ ਸਭ ਰਾਲੀ ॥
मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥
हे मोहन ! तू एक ईश्वर में ही आस्था रखता है, तेरे लिए शेष समस्त धूल के तुल्य है।

ਮਾਨਹਿ ਤ ਏਕੁ ਅਲੇਖੁ ਠਾਕੁਰੁ ਜਿਨਹਿ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀਆ ॥
मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥
हे मोहन ! तुम एक परमात्मा की आराधना करते हो, जो अपनी अपार शक्ति द्वारा सृष्टि को सहारा दे रहा है।

ਤੁਧੁ ਬਚਨਿ ਗੁਰ ਕੈ ਵਸਿ ਕੀਆ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥
तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥
हे मोहन ! गुरु के उपदेश द्वारा तूने आदिपुरुष सृजनहार के हृदय को जीत लिया है।

ਤੂੰ ਆਪਿ ਚਲਿਆ ਆਪਿ ਰਹਿਆ ਆਪਿ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀਆ ॥
तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥
हे मोहन ! तू स्वयं ही (आयु भोगकर) चलते हो, स्वयं ही स्थिर व्यापक हो और स्वयं ही सृष्टि में अपनी सत्ता व्याप्त की हुई है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਸਭ ਸੇਵਕ ਸਰਨਿ ਤੁਮਾਰੀਆ ॥੨॥
बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है - (हे प्रभु !) मेरी मान-प्रतिष्ठा की रक्षा कीजिए! तेरे समस्त सेवक तेरी शरण ढूंढते हैं॥ २॥

ਮੋਹਨ ਤੁਧੁ ਸਤਸੰਗਤਿ ਧਿਆਵੈ ਦਰਸ ਧਿਆਨਾ ॥
मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥
हे मोहन ! साधु-संतों की संगति (सत्संग) तेरा भजन करती है और तेरे दर्शनों का ध्यान करती है।

ਮੋਹਨ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ਤੁਧੁ ਜਪਹਿ ਨਿਦਾਨਾ ॥
मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥
हे चितचोर मोहन ! जो प्राणी अन्तिम समय आपको स्मरण करते हैं, यमदूत उसके निकट नहीं आता।

ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਨ ਕਉ ਲਗੈ ਨਾਹੀ ਜੋ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਵਹੇ ॥
जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥
यमकाल (मृत्यु का समय) उसे स्पर्श नहीं कर सकता, जो प्राणी एक हृदय से प्रभु का भजन करता है।

ਮਨਿ ਬਚਨਿ ਕਰਮਿ ਜਿ ਤੁਧੁ ਅਰਾਧਹਿ ਸੇ ਸਭੇ ਫਲ ਪਾਵਹੇ ॥
मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥
हे मोहन ! जो पुरुष अपने मन, वचन एवं कर्म द्वारा तेरी आराधना करता है, वह समस्त फल प्राप्त कर लेता है।

ਮਲ ਮੂਤ ਮੂੜ ਜਿ ਮੁਗਧ ਹੋਤੇ ਸਿ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਗਿਆਨਾ ॥
मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥
जो प्राणी मल-मूत्र की भाँति गन्दे, मूर्ख एवं बेवकूफ हैं, वह तेरे दर्शन करके श्रेष्ठ ज्ञानी हो जाते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਰਾਜੁ ਨਿਹਚਲੁ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨਾ ॥੩॥
बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है - हे मेरे पूर्ण सर्वव्यापक भगवान ! तेरी सत्ता सदैव स्थिर है॥ ३॥

ਮੋਹਨ ਤੂੰ ਸੁਫਲੁ ਫਲਿਆ ਸਣੁ ਪਰਵਾਰੇ ॥
मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥
हे मोहन ! तुम (संसार रूपी) बड़े परिवार से फलित विधि से प्रफुल्लित हुए हो।

ਮੋਹਨ ਪੁਤ੍ਰ ਮੀਤ ਭਾਈ ਕੁਟੰਬ ਸਭਿ ਤਾਰੇ ॥
मोहन पुत्र मीत भाई कुट्मब सभि तारे ॥
हे मोहन ! तुमने पुत्र, मित्र एवं कुटुंब सहित सबका कल्याण कर दिया है।

ਤਾਰਿਆ ਜਹਾਨੁ ਲਹਿਆ ਅਭਿਮਾਨੁ ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥
तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥
हे मोहन ! तुमने समस्त विश्व का कल्याण कर दिया है। जिन्होंने तेरे दर्शन किए तूने उनका अभिमान त्याग दिया है।

ਜਿਨੀ ਤੁਧਨੋ ਧੰਨੁ ਕਹਿਆ ਤਿਨ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਇਆ ॥
जिनी तुधनो धंनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥
हे मोहन ! जो तुझे धन्य कहते हैं अर्थात् गुणस्तुति करते हैं, यमदूत उनके कदापि निकट नहीं आता।

ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕਥੇ ਨ ਜਾਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖ ਮੁਰਾਰੇ ॥
बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥
हे मुरारी ! हे सच्चे गुरु ! तेरे गुण अनन्त हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਰਾਖੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੇ ॥੪॥੨॥
बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥४॥२॥
नानक वन्दना करता है-(हे प्रभु !) मैंने वह सहारा पकड़ा है, जिससे जुड़कर समूचे जगत् का उद्धार हो जाता है॥ ४॥ २ ॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਪਤਿਤ ਅਸੰਖ ਪੁਨੀਤ ਕਰਿ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਬਲਿਹਾਰ ॥
पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥
हे प्रभु ! असंख्य पापियों को तुम पवित्र पावन करते हो, मैं तुम पर बार-बार कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਪਾਵਕੋ ਤਿਨ ਕਿਲਬਿਖ ਦਾਹਨਹਾਰ ॥੧॥
नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥१॥
हे नानक ! राम नाम के भजन की अग्नि पापों को जला देने वाली है॥ १॥

ਛੰਤ ॥
छंत ॥
छंद॥

ਜਪਿ ਮਨਾ ਤੂੰ ਰਾਮ ਨਰਾਇਣੁ ਗੋਵਿੰਦਾ ਹਰਿ ਮਾਧੋ ॥
जपि मना तूं राम नराइणु गोविंदा हरि माधो ॥
हे मेरे मन ! तू राम, नारायण, गोविन्द, हरि का भजन कर, जो सृष्टि का रक्षक एवं माया का पति है।

ਧਿਆਇ ਮਨਾ ਮੁਰਾਰਿ ਮੁਕੰਦੇ ਕਟੀਐ ਕਾਲ ਦੁਖ ਫਾਧੋ ॥
धिआइ मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥
हे मेरे मन ! तू मुकुंद मुरारी का चिन्तन कर, जो दुखदायक मृत्यु की फाँसी को काट देता है।

ਦੁਖਹਰਣ ਦੀਨ ਸਰਣ ਸ੍ਰੀਧਰ ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਰਾਧੀਐ ॥
दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥
हे प्राणी ! प्रभु के सुन्दर चरणों की आराधना कर, जो दुखों का नाशक, निर्धनों का सहारा एवं लक्ष्मी का स्वामी श्रीधर है।

ਜਮ ਪੰਥੁ ਬਿਖੜਾ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਨਿਮਖ ਸਿਮਰਤ ਸਾਧੀਐ ॥
जम पंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥
एक क्षण भर के लिए प्रभु को स्मरण करने से मृत्यु के विषम मार्ग एवं अग्नि के सागर से उद्धार हो जाता है।

ਕਲਿਮਲਹ ਦਹਤਾ ਸੁਧੁ ਕਰਤਾ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਅਰਾਧੋ ॥

कलिमलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥

हे प्राणी ! दिन-रात प्रभु का चिन्तन कर, जो कल्पना को नाश करने वाला एवं विकारों की मैल को पवित्र पावन करने वाला है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਮਾਧੋ ॥੧॥

बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥१॥

नानक प्रार्थना करता है - हे सृष्टि के पालनहार गोपाल ! हे गोबिन्द ! हे माधव ! मुझ पर कृपा करो।॥ १॥

ਸਿਮਰਿ ਮਨਾ ਦਾਮੋਦਰੁ ਦੁਖਹਰੁ ਭੈ ਭੰਜਨੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥

सिमरि मना दामोदरु दुखहरु भै भंजनु हरि राइआ ॥

हे मेरे मन ! उस परमात्मा दामोदर को स्मरण कर, जो दुख दूर करने वाला और भय का नाश करने वाला है।

ਸ੍ਰੀਰੰਗੋ ਦਇਆਲ ਮਨੋਹਰੁ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਬਿਰਦਾਇਆ ॥

स्रीरंगो दइआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइआ ॥

हे बन्धु ! अपने स्वभाव अनुसार दयालु प्रभु लक्ष्मीपति, मन को चुराने वाला मनोहर एवं भक्तवत्सल है।

ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਮਨਹਿ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਈਐ ॥
भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥
हे मन ! पूर्ण परमेश्वर भक्तवत्सल है, उससे मनवांछित मनोकामनाएँ प्राप्त होती हैं।

ਤਮ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਉਧਾਰੈ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈਐ ॥
तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥
प्रभु मनुष्य को अन्धकूप से बाहर निकाल लेता है। उसके नाम को अपने हृदय में बसाओ।

ਸੁਰ ਸਿਧ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਮੁਨਿ ਜਨ ਗੁਣ ਅਨਿਕ ਭਗਤੀ ਗਾਇਆ ॥
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन गुण अनिक भगती गाइआ ॥
हे प्रभु ! देवते, सिद्ध पुरुष, देवगण, गन्धर्व, मुनिजन एवं भक्त तेरी ही भक्ति का यशोगान करते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੨॥
बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइआ ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है - हे मेरे पारब्रह्म ! हे हरि बादशाह ! मुझ पर कृपा करो। २॥

ਚੇਤਿ ਮਨਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਸਰਬ ਕਲਾ ਜਿਨਿ ਧਾਰੀ ॥
चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब कला जिनि धारी ॥
हे मेरे मन ! उस पारब्रह्म परमेश्वर का भजन कर, जो सर्वकला सम्पूर्ण है।

ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਸਮਰਥੁ ਸੁਆਮੀ ਘਟ ਘਟ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੀ ॥
करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥
प्रभु समर्थावान एवं दया का पुंज है। वह प्रत्येक हृदय के प्राणों का आधार है।

ਪ੍ਰਾਣ ਮਨ ਤਨ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਬੇਅੰਤ ਅਗਮ ਅਪਾਰੋ ॥
प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥
अनन्त, अगम्य, अपार प्रभु प्राण, मन एवं तन का दाता है।

ਸਰਣਿ ਜੋਗੁ ਸਮਰਥੁ ਮੋਹਨੁ ਸਰਬ ਦੋਖ ਬਿਦਾਰੋ ॥
सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥
शरण में आने वाले की रक्षा करने वाला, समर्थावान एवं मन चुराने वाला मोहन तमाम दुख निवृत्त कर देता है।

ਰੋਗ ਸੋਗ ਸਭਿ ਦੋਖ ਬਿਨਸਹਿ ਜਪਤ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥
हे मन ! मुरारी प्रभु के नाम का भजन करने से समस्त रोग, शोक एवं दोष नाश हो जाते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਸਮਰਥ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥੩॥
बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है - हे समर्थावान प्रभु ! तू सर्वकला सम्पूर्ण हैं, मुझ पर भी कृपा करो।॥ ३॥

ਗੁਣ ਗਾਉ ਮਨਾ ਅਚੁਤ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਦਇਆਲਾ ॥
गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइआला ॥
हे मेरे मन ! जो सदा अटल रहने वाला, अनश्वर है एवं जो सर्वोपरि है, उस दया के घर परमात्मा की महिमा-स्तुति करते रहो।

ਬਿਸੰਭਰੁ ਦੇਵਨ ਕਉ ਏਕੈ ਸਰਬ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
बिस्मभरु देवन कउ एकै सरब करै प्रतिपाला ॥
केवल विश्वंभर ही दुनिया को देन देने वाला है और वह समस्त जीव-जन्तुओं का पोषण करता है।

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਮਹਾ ਦਇਆਲ ਦਾਨਾ ਦਇਆ ਧਾਰੇ ਸਭ ਕਿਸੈ ॥
प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥
परम दयालु एवं बुद्धिमान सृष्टि का पालनहार सब पर दया करता है।

ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਨਾਸੈ ਜੀਅ ਜਾ ਕੈ ਪ੍ਰਭੁ ਬਸੈ ॥
कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥
जिस इन्सान के हृदय में प्रभु आ बसता है, दुखदायक काल, लोभ, मोह उससे भाग जाते हैं।

ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਦੇਵਾ ਸਫਲ ਸੇਵਾ ਭਈ ਪੂਰਨ ਘਾਲਾ ॥
सुप्रसंन देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥
हे मन ! जिस पर प्रभु देवा सुप्रसन्न हो जाता है, उसकी सेवा फलदायक एवं परिश्रम सम्पूर्ण हो जाता है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਇਛ ਪੁਨੀ ਜਪਤ ਦੀਨ ਦੈਆਲਾ ॥੪॥੩॥
बिनवंत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥४॥३॥
नानक प्रार्थना करता है-दीनदयाल ईश्वर का भजन करने से प्रत्येक इच्छा पूर्ण हो जाती है ॥४॥३॥

ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी महला ५ ॥
गउड़ी महला ५ ॥

ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਮਿਲਿ ਉਦਮੁ ਕਰੇਹਾ ਮਨਾਇ ਲੈਹਿ ਹਰਿ ਕੰਤੈ ॥
सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंतै ॥
हे मेरी सत्संगी सखी ! सुन, हम मिलकर (भजन) उपाय करके अपने पति-परमेश्वर को प्रसन्न करें।

ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਿ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਠਗਉਰੀ ਮੋਹਹ ਸਾਧੂ ਮੰਤੈ ॥
मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥
अपना अहंकार त्यागकर भक्ति को ठगबूटी बनाकर और संतों (गुरु) के मन्त्र (वाणी) द्वारा आओ हम मिलकर उसे (पति) मुग्ध कर लें।

ਸਖੀ ਵਸਿ ਆਇਆ ਫਿਰਿ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਇਹ ਰੀਤਿ ਭਲੀ ਭਗਵੰਤੈ ॥
सखी वसि आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवंतै ॥
हे मेरी सत्संगी सखी ! यदि वह एक बार हमारे वश में हो जाए तो वह फिर हमें त्याग कर नहीं जाएगा। उस भगवान की यही सुन्दर मर्यादा है।

ਨਾਨਕ ਜਰਾ ਮਰਣ ਭੈ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਪੁਨੀਤ ਕਰੈ ਤਿਸੁ ਜੰਤੈ ॥੧॥
नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥१॥
हे नानक ! (जो उसकी शरण में आता है) परमेश्वर उस प्राणी का बुढ़ापा, मृत्यु एवं नरक का भय दूर कर देता है और वह प्रसन्न होकर उसको पवित्र कर देता है ॥१॥

ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਇਹ ਭਲੀ ਬਿਨੰਤੀ ਏਹੁ ਮਤਾਂਤੁ ਪਕਾਈਐ ॥
सुणि सखीए इह भली बिनंती एहु मतांतु पकाईऐ ॥
हे मेरी सखियों ! इस भली प्रार्थना की तरफ ध्यान दो। आओ हम मिलकर सुदृढ़ फैसला करें।

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਉਪਾਧਿ ਰਹਤ ਹੋਇ ਗੀਤ ਗੋਵਿੰਦਹਿ ਗਾਈਐ ॥
सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविंदहि गाईऐ ॥
रोगों से रहित होकर आओ हम सहज ही गोविन्द का यश गायन करें।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟਹਿ ਭ੍ਰਮ ਨਾਸਹਿ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ॥
कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥
इससे (हमारे विकारों का) क्लेश एवं लड़ाई झगड़े निवृत्त हो जाएँगे। दुविधा मिट जाएगी और हम मनोवांछित फल प्राप्त कर लेंगे।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੨॥
पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥२॥
हे नानक ! आओ हम पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर के नाम का ध्यान करें ॥ २॥

ਸਖੀ ਇਛ ਕਰੀ ਨਿਤ ਸੁਖ ਮਨਾਈ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੁਜਾਏ ॥

सखी इछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥

हे मेरी सत्संगी सखी ! मैं सदैव उसकी इच्छा करती हूँ और उससे सुख माँगती हूँ। प्रभु मेरी आशा पूर्ण करे।

ਚਰਨ ਪਿਆਸੀ ਦਰਸ ਬੈਰਾਗਨਿ ਪੇਖਉ ਥਾਨ ਸਬਾਏ ॥

चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥

मैं प्रभु के चरणों की प्यासी हूँ और उसके दर्शनों की इच्छा करती हूँ। उसको में सर्वव्यापक देखती है।

ਖੋਜਿ ਲਹਉ ਹਰਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਸੰਗੁ ਸੰਮ੍ਰਿਥ ਪੁਰਖ ਮਿਲਾਏ ॥

खोजि लहउ हरि संत जना संगु सम्रिथ पुरख मिलाए ॥

(हे सखी !) ईश्वर को खोज कर मैं संतों की संगति प्राप्त करती हूँ। (क्योंकि) साधु-संत ही प्राणी को समर्थावान प्रभु से मिला देते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਸੁਰਿਜਨੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਮਾਏ ॥੩॥

नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माए ॥३॥

हे नानक ! हे माता! वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं जिन्हें देवलोक का स्वामी एवं सुखों का दाता प्रभु मिल जाता है ॥३॥

ਸਖੀ ਨਾਲਿ ਵਸਾ ਅਪੁਨੇ ਨਾਹ ਪਿਆਰੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹਿਲਿਆ ॥

सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥

हे मेरी सत्संगी सखी ! अब मैं प्रियतम पति के साथ रहती हूँ। मेरा मन एवं तन प्रभु के साथ एक हो गया है।

ਸੁਣਿ ਸਖੀਏ ਮੇਰੀ ਨੀਦ ਭਲੀ ਮੈ ਆਪਨੜਾ ਪਿਰੁ ਮਿਲਿਆ ॥

सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥

हे मेरी सत्संगी सखी ! सुनो, मेरी नींद भली है, क्योंकि मुझे अपना प्रियतम पति मिल गया है।

ਭ੍ਰਮੁ ਖੋਇਓ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜਿ ਸੁਆਮੀ ਪਰਗਾਸੁ ਭਇਆ ਕਉਲੁ ਖਿਲਿਆ ॥

भ्रमु खोइओ सांति सहजि सुआमी परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥

मेरी दुविधा दूर हो गई है। मुझे शांति एवं सुख प्राप्त हो गए हैं। प्रभु का मेरे भीतर प्रकाश हो गया है और मेरा कमल रूपी हृदय प्रफुल्लित हो गया है।

ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਨਾਨਕ ਸੋਹਾਗੁ ਨ ਟਲਿਆ ॥੪॥੪॥੨॥੫॥੧੧॥

वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥४॥४॥२॥५॥११॥

हे नानक ! अन्तर्यामी प्रभु को मैंने वर के रूप में पा लिया है, मेरा सुहाग कभी समाप्त नही होगा ॥४॥४॥२॥५॥११॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥
गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥
गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥

सलोकु ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥
गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥
गुरु ही माता है, गुरु ही पिता है और गुरु ही जगत् का स्वामी परमेश्वर है।

गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥
गुरु अज्ञानता का अन्धकार नाश करने वाला साथी है और गुरु ही संबंधी एवं भाई है।

गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥
गुरु परमात्मा के नाम का दाता और उपदेशक है और गुरु ही अचूक मन्त्र है।

गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥
गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥
गुरु सुख-शांति, सत्य एवं बुद्धि की मूरत है। गुरु ऐसा पारस है, जिसको स्पर्श करने से प्राणी का उद्धार हो जाता है।

गुरदेव तीरथु अंम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥
गुरदेव तीरथु अम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपर्मपरा ॥
गुरु ही तीर्थ एवं अमृत का सरोवर है। गुरु के ज्ञान में स्नान करने से मनुष्य अनन्त प्रभु को मिल जाता है।

ਗੁਰਦੇਵ ਕਰਤਾ ਸਭਿ ਪਾਪ ਹਰਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਕਰਾ ॥
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥
गुरु ही कर्तार एवं समस्त पापों को नाश करने वाला हैं। गुरु ही पतित को पवित्र पावन करने वाला है।

ਗੁਰਦੇਵ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਉਧਰਾ ॥
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥
गुरु आदि, युगों के आरम्भ से एवं युग-युग में विद्यमान हैं। गुरु हरि के नाम का मंत्र है, जिसका भजन करने से प्राणी का भवसागर से उद्धार हो जाता है

ਗੁਰਦੇਵ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਮ ਮੂੜ ਪਾਪੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਾ ॥
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥
हे मेरे प्रभु ! कृपा करके मुझ मूर्ख एवं पापी को गुरुदेव की संगति में मिला दो, जिससे मिलकर मैं जीवन के विषम सागर से पार हो जाऊँ।

ਗੁਰਦੇਵ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗੁਰਦੇਵ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਮਸਕਰਾ ॥੧॥
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥
हे नानक ! गुरु ही सतिगुरु एवं पारब्रह्म परमेश्वर है और उस गुरुदेव हरि को नमस्कार है॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਆਪਹਿ ਕੀਆ ਕਰਾਇਆ ਆਪਹਿ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥
आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥
परमात्मा ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और वह स्वयं ही इसे करने में समर्थ है।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਦੂਸਰ ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥੧॥
नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥१॥
हे नानक ! एक परमेश्वर ही सारी सृष्टि में मौजूद है और उसके सिवाय न कोई है और न ही कोई होगा।॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਓਅੰ ਸਾਧ ਸਤਿਗੁਰ ਨਮਸਕਾਰੰ ॥
ओअं साध सतिगुर नमसकारं ॥
मैं उस एक ईश्वर संत स्वरूप सतिगुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਆਦਿ ਮਧਿ ਅੰਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰੰ ॥
आदि मधि अंति निरंकारं ॥
निरंकार प्रभु संसार के प्रारंभ में भी स्वयं ही था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी स्वयं ही मौजूद रहेगा।

ਆਪਹਿ ਸੁੰਨ ਆਪਹਿ ਸੁਖ ਆਸਨ ॥
आपहि सुंन आपहि सुख आसन ॥
प्रभु स्वयं ही शून्य अवस्था में होता है और स्वयं ही सुख आसन (शांत समाधि) में होता है।

ਆਪਹਿ ਸੁਨਤ ਆਪ ਹੀ ਜਾਸਨ ॥
आपहि सुनत आप ही जासन ॥
वह स्वयं ही अपना यश सुनता है।

ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਹਿ ਉਪਾਇਓ ॥
आपन आपु आपहि उपाइओ ॥
अपना प्रत्यक्ष रूप उसने स्वयं ही उत्पन्न किया है।

ਆਪਹਿ ਬਾਪ ਆਪ ਹੀ ਮਾਇਓ ॥
आपहि बाप आप ही माइओ ॥
वह स्वयं ही अपना पिता है और स्वयं ही अपनी माता है।

ਆਪਹਿ ਸੂਖਮ ਆਪਹਿ ਅਸਥੂਲਾ ॥
आपहि सूखम आपहि असथूला ॥
वह स्वयं ही प्रत्यक्ष है और स्वयं ही अप्रत्यक्ष है।

ਲਖੀ ਨ ਜਾਈ ਨਾਨਕ ਲੀਲਾ ॥੧॥
लखी न जाई नानक लीला ॥१॥
हे नानक ! उस ईश्वर की लीला कथन नहीं की जा सकती।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥
हे दीनदयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा करो

ਤੇਰੇ ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਨੁ ਹੋਇ ਰਵਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ रहाउ ॥
चूंकि मेरा मन तेरे संतों की चरण-धूलि बन जाए॥ रहाउ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਨਿਰੰਕਾਰ ਆਕਾਰ ਆਪਿ ਨਿਰਗੁਨ ਸਰਗੁਨ ਏਕ ॥
निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥
निरंकार परमेश्वर स्वयं ही (सृष्टि) आकार की रचना करता है। वह स्वयं ही निर्गुण और सगुण है।

ਏਕਹਿ ਏਕ ਬਖਾਨਨੋ ਨਾਨਕ ਏਕ ਅਨੇਕ ॥੧॥
एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥१॥
हे नानक ! यही बखान किया जा सकता है कि निरंकार ईश्वर अकेला स्वयं ही है चूंकि एक ईश्वर अनेक रूप बना लेता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਓਅੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਓ ਅਕਾਰਾ ॥
ओअं गुरमुखि कीओ अकारा ॥
एक ईश्वर ने गुरमुख बनने के लिए संसार की रचना की है।

ਏਕਹਿ ਸੂਤਿ ਪਰੋਵਨਹਾਰਾ ॥
एकहि सूति परोवनहारा ॥
इस रचना में समस्त जीव-जन्तुओं को अपने एक ही सूत्र में पिरोया हुआ है।

ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਬਿਸਥਾਰੰ ॥
भिंन भिंन त्रै गुण बिसथारं ॥
माया के तीन लक्षणों का उसने भिन्न-भिन्न प्रसार कर दिया है।

ਨਿਰਗੁਨ ਤੇ ਸਰਗੁਨ ਦ੍ਰਿਸਟਾਰੰ ॥
निरगुन ते सरगुन द्रिसटारं ॥
निर्गुण से वह सगुण दृष्टिमान होता है।

ਸਗਲ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ਕਰਹਿ ਉਪਾਇਓ ॥
सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥
कर्तार ने अनेक प्रकार की संसार की रचना की है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਮਨ ਮੋਹੁ ਬਢਾਇਓ ॥
जनम मरन मन मोहु बढाइओ ॥
जन्म-मरण का मूल सांसारिक मोह ईश्वर ने प्राणी के मन में खुद ही बढ़ाया हुआ है।

दुहू भाति ते आपि निरारा ॥
दुहू भाति ते आपि निरारा ॥
लेकिन दोनों (जन्म-मरण) प्रकार से वह स्वयं अलग है।

नानक अंतु न पारावारा ॥२॥
नानक अंतु न पारावारा ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर के आर-पार का अन्त नहीं मिल सकता॥ २॥

सलोकु ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

सेई साह भगवंत से सचु संपै हरि रासि ॥
सेई साह भगवंत से सचु स्मपै हरि रासि ॥
वहीं व्यक्ति शाह एवं भाग्यवान है जिनके पास सत्य की संपत्ति एवं प्रभु के नाम की पूंजी है।

नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥१॥
नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥१॥
हे नानक ! उन संतजनों के पास से ही सत्य (नाम) एवं पवित्रता की प्राप्त होती है।॥ १॥

पवड़ी ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ससा सति सति सति सोऊ ॥
ससा सति सति सति सोऊ ॥
स-वह परमात्मा सदैव सत्य, सत्यस्वरूप एवं सत्य का पुंज है।

सति पुरख ते भिंन न कोऊ ॥
सति पुरख ते भिंन न कोऊ ॥
कोई भी सत्यस्वरूप प्रभु से अलग नहीं।

ਸੋਊ ਸਰਨਿ ਪਰੈ ਜਿਹ ਪਾਯੰ ॥
सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥
जिस प्राणी को ईश्वर अपनी शरण में लेता है, केवल वही प्राणी उसकी शरण में आता है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਸੁਨਾਯੰ ॥
सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायं ॥
ऐसा प्राणी प्रभु की महिमा-स्तुति ही करता रहता है और दूसरों को भी उसकी महिमा सुनाता रहता है।

ਸੰਸੈ ਭਰਮੁ ਨਹੀ ਕਛੁ ਬਿਆਪਤ ॥
संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥
ऐसे प्राणी को दुविधा एवं भ्रम कदाचित प्रभाव नहीं डालते।

ਪ੍ਰਗਟ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਤਾਹੂ ਕੋ ਜਾਪਤ ॥
प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥
उस प्राणी को प्रभु का प्रताप प्रत्यक्ष ही दिखाई देता है।

ਸੋ ਸਾਧੂ ਇਹ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ॥
सो साधू इह पहुचनहारा ॥
केवल वही संत है, जो इस आत्मिक अवस्था को प्राप्त करता है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ॥੩॥
नानक ता कै सद बलिहारा ॥३॥
हे नानक ! मैं उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ ॥३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਧਨੁ ਧਨੁ ਕਹਾ ਪੁਕਾਰਤੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸਭ ਕੂਰ ॥
धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥
(हे जीव !) तू हर वक्त धन की लालसा के लिए क्यों चिल्लाता रहता है। क्योंकि माया का मोह बिल्कुल मिथ्या है।

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨੇ ਨਾਨਕਾ ਹੋਤ ਜਾਤ ਸਭੁ ਧੂਰ ॥੧॥
नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥१॥
हे नानक ! नामविहीन सभी इन्सान धूलि होते जा रहे हैं।॥ १॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਧਧਾ ਧੂਰਿ ਪੁਨੀਤ ਤੇਰੇ ਜਨੂਆ ॥
धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥
ध-हे प्रभु ! तेरे सन्तों-भक्तों की चरण-धूलि पवित्र पावन है।

ਧਨਿ ਤੇਊ ਜਿਹ ਰੁਚ ਇਆ ਮਨੂਆ ॥
धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥
जिनके हृदय में इस धूलि की इच्छा है, वे भाग्यशाली हैं।

ਧਨੁ ਨਹੀ ਬਾਛਹਿ ਸੁਰਗ ਨ ਆਛਹਿ ॥
धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥
ऐसे लोग धन को नहीं चाहते और स्वर्ग की भी चाहत नहीं रखते।

ਅਤਿ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਾਧ ਰਜ ਰਾਚਹਿ ॥
अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥
क्योंकि वह प्रिय प्रभु के प्रेम एवं संतों की चरण-धूलि में मग्न रहते हैं।

ਧੰਧੇ ਕਹਾ ਬਿਆਪਹਿ ਤਾਹੂ ॥
धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥
सांसारिक माया का बन्धन उन पर प्रभाव नहीं डाल सकता,

ਜੋ ਏਕ ਛਾਡਿ ਅਨ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਹੂ ॥
जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥
जो लोग ईश्वर का सहारा त्याग कर कहीं ओर नहीं जाते।

ਜਾ ਕੈ ਹੀਐ ਦੀਓ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮ ॥
जा कै हीऐ दीओ प्रभ नाम ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय में प्रभु ने अपना नाम बसा दिया है,

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨ ॥੪॥
नानक साध पूरन भगवान ॥४॥
वही व्यक्ति भगवान के पूर्ण संत हैं॥ ४॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਅਨਿਕ ਭੇਖ ਅਰੁ ਛਿਆਨ ਧਿਆਨ ਮਨਹਠਿ ਮਿਲਿਅਉ ਨ ਕੋਇ ॥
अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मनहठि मिलिअउ न कोइ ॥
अनेक धार्मिक वेश धारण करने एवं ज्ञान, ध्यान एवं मन के हठ से भगवान में सुरति लगाने से कोई भी पुरुष ईश्वर से नहीं मिल सकता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਭਗਤੁ ਛਿਆਨੀ ਸੋਇ ॥੧॥
कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइ ॥१॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा हो जाती है, वही भक्त एवं ज्ञानी है॥ १ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਙੰਙਾ ਛਿਆਨੁ ਨਹੀ ਮੁਖ ਬਾਤਉ ॥
ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥
ङ-ज्ञान केवल मौखिक बातों से प्राप्त नहीं होता।

ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਕਰਿ ਭਾਤਉ ॥
अनिक जुगति सासत्र करि भातउ ॥
शास्त्रों की बताई हुई अनेकों विधियों की युक्तियों द्वारा भी प्राप्त नहीं होता।

ਛਿਆਨੀ ਸੋਇ ਜਾ ਕੈ ਦ੍ਰਿੜ ਸੋਊ ॥
ङिआनी सोइ जा कै द्रिड़ सोऊ ॥
केवल वही ज्ञानी है, जिसके हृदय में प्रभु बसा हुआ है।

ਕਹਤ ਸੁਨਤ ਕਛੁ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਊ ॥
कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥
कहने एवं सुनने से मनुष्य मूल रूप से ही योग्य नहीं होता।

ਗ੍ਯਾਨੀ ਰਹਤ ਆਗਿਆ ਦ੍ਰਿੜੁ ਜਾ ਕੈ ॥
ग्यानी रहत आगिआ द्रिड़ु जा कै ॥
जो मनुष्य प्रभु की आज्ञा मानने में तत्पर रहता है, वही ईश्वर का वास्तविक ज्ञानी है।

ਉਸਨ ਸੀਤ ਸਮਸਰਿ ਸਭ ਤਾ ਕੈ ॥
उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥
गर्मी और सर्दी (दुःख-सुख) सभी उसके लिए एक समान हैं।

ਗ੍ਯਾਨੀ ਤਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥
ग्यानी ततु गुरमुखि बीचारी ॥
हे नानक ! ज्ञानी वहीं है, जो गुरु की शरण में प्रभु का भजन करता है

ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੫॥
नानक जा कउ किरपा धारी ॥५॥
और जिस पर वह अपनी कृपा करता है॥ ५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਆਵਨ ਆਏ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਮਹਿ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਪਸੁ ਢੋਰ ॥
आवन आए स्रिसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥
आने वाले सृष्टि में आते हैं परन्तु जीवन का सन्मार्ग समझे बिना वे जानवर एवं पशुओं की भाँति ही रहे हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋ ਬੁਝੈ ਜਾ ਕੈ ਭਾਗ ਮਥੋਰ ॥੧॥
नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥१॥
हे नानक ! गुरु की शरण में केवल वही प्रभु को समझता है, जिसके मस्तक पर भाग्यरेखाएँ विद्यमान होती हैं॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਯਾ ਜੁਗ ਮਹਿ ਏਕਹਿ ਕਉ ਆਇਆ ॥
या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥
इस जगत् में मनुष्य ने प्रभु का भजन करने के लिए जन्म लिया है

ਜਨਮਤ ਮੋਹਿਓ ਮੋਹਨੀ ਮਾਇਆ ॥
जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥
लेकिन जन्म काल से ही मोह लेने वाली माया ने उसको मुग्ध कर लिया है।

ਗਰਭ ਕੁੰਟ ਮਹਿ ਉਰਧ ਤਪ ਕਰਤੇ ॥
गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥
माता के गर्भ में विपरीत लटका हुआ प्राणी तपस्या करता था।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭੁ ਰਹਤੇ ॥
सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥
वहाँ वह अपनी हर सांस से प्रभु की आराधना करता रहता था।

ਉਰਝਿ ਪਰੇ ਜੋ ਛੋਡਿ ਛਡਾਨਾ ॥
उरझि परे जो छोडि छडाना ॥
वह उस माया से उलझ गया है, जिसे उसने अवश्य छोड़ जाना है।

ਦੇਵਨਹਾਰੁ ਮਨਹਿ ਬਿਸਰਾਨਾ ॥
देवनहारु मनहि बिसराना ॥
दाता प्रभु को वह अपने हृदय से विस्मृत कर देता है।

ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸਹਿ ਗੁਸਾਈ ॥
धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥
हे नानक ! गोसाई जिस व्यक्ति पर कृपा धारण करता है,

ਇਤ ਉਤ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਿਸਰਹੁ ਨਾਹੀ ॥੬॥
इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥६॥
वह लोक-परलोक में उसे नहीं भूलते ॥६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਆਵਤ ਹੁਕਮਿ ਬਿਨਾਸ ਹੁਕਮਿ ਆਗਿਆ ਭਿੰਨ ਨ ਕੋਇ ॥
आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिंन न कोइ ॥
इन्सान ईश्वर के हुक्म से दुनिया में जन्म लेता है, उसके हुक्म से वह मृत्यु प्राप्त करता है। कोई भी इन्सान ईश्वर के हुक्म का विरोध नहीं कर सकता।

ਆਵਨ ਜਾਨਾ ਤਿਹ ਮਿਟੈ ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੧॥
आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥१॥
हे नानक ! जिस इन्सान के हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है, उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਏਊ ਜੀਅ ਬਹੁਤੁ ਗ੍ਰਭ ਵਾਸੇ ॥
एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥
ये प्राणी अनेक योनियों में वास करते हैं।

ਮੋਹ ਮਗਨ ਮੀਠ ਜੋਨਿ ਫਾਸੇ ॥
मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥
मीठे मोह में मस्त होकर प्राणी योनियों के चक्र में फंस जाते हैं।

ਇਨਿ ਮਾਇਆ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਬਸਿ ਕੀਨੇ ॥
इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥
इस मोहिनी ने (प्राणियों को) अपने तीन गुणों के वश में किया हुआ है।

ਆਪਨ ਮੋਹ ਘਟੇ ਘਟਿ ਦੀਨੇ ॥
आपन मोह घटे घटि दीने ॥
इस मोहिनी ने प्रत्येक प्राणी के हृदय में अपना मोह टिका दिया है।

ਏ ਸਾਜਨ ਕਛੁ ਕਹਹੁ ਉਪਾਇਆ ॥
ए साजन कछु कहहु उपाइआ ॥
हे मित्र ! मुझे कोई ऐसा उपाय बता,

ਜਾ ਤੇ ਤਰਉ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਇਆ ॥
जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥
जिससे मैं मोहिनी के विषम सागर से पार हो जाऊँ ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥
करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति पर ईश्वर कृपा दृष्टि करके सत्संग में मिलाता है,"

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਮਾਏ ॥੭॥
नानक ता कै निकटि न माए ॥७॥
माया उसके निकट नहीं आती॥ ७ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਕਿਰਤ ਕਮਾਵਨ ਸੁਭ ਅਸੁਭ ਕੀਨੇ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ॥
किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥
ईश्वर स्वयं (प्राणी में विद्यमान होकर) उससे शुभ-अशुभ कर्म करवाता है।

ਪਸੁ ਆਪਨ ਹਉ ਹਉ ਕਰੈ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਹਾ ਕਮਾਤਿ ॥੧॥
पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥१॥
लेकिन इस बात का मूर्ख मनुष्य अहंकार एवं अभिमान करता है। लेकिन हे नानक ! भगवान के अलावा प्राणी कुछ भी करने में सक्षम नहीं॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਕਰਾਵਨਹਾਰਾ ॥
एकहि आपि करावनहारा ॥
एक ईश्वर ही प्राणियों से कर्म करवाता है।

ਆਪਹਿ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥
आपहि पाप पुंन बिसथारा ॥
वह स्वयं पाप एवं पुण्य का प्रसार करता है।

ਇਆ ਜੁਗ ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਆਪਹਿ ਲਾਇਓ ॥
इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥
इस मनुष्य जन्म में प्रभु जिस-जिस ओर स्वयं लगाता है, उधर ही प्राणी लगते हैं।

ਸੋ ਸੋ ਪਾਇਓ ਜੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਇਓ ॥
सो सो पाइओ जु आपि दिवाइओ ॥
जो कुछ ईश्वर स्वयं प्रदान करता है, वह वही कुछ प्राप्त करते हैं।

ਉਆ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਊ ॥
उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥
उस ईश्वर का अन्त कोई भी नहीं जानता।

ਜੋ ਜੋ ਕਰੈ ਸੋਊ ਫੁਨਿ ਹੋਊ ॥
जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥
जो कुछ प्रभु (संसार में) करता है, आखिरकार वही कुछ होता है।

ਏਕਹਿ ਤੇ ਸਗਲਾ ਬਿਸਥਾਰਾ ॥
एकहि ते सगला बिसथारा ॥
इस जगत् का प्रसार केवल ईश्वर द्वारा ही हुआ है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਸਵਾਰਨਹਾਰਾ ॥੮॥
नानक आपि सवारनहारा ॥८॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही जीवों का जीवन संवारने वाला है ॥८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਰਾਚਿ ਰਹੇ ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਕੁਸਮ ਰੰਗ ਬਿਖ ਸੋਰ ॥
राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥
मनुष्य नारियों एवं ऐश्वर्य-विलासों में लीन रहता है। विषय-विकारों का शोर-शराबा कुसुंभे के फूल की तरह क्षणभंगुर है।

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਸਰਨੀ ਪਰਉ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਮੈ ਮੋਰ ॥੧॥
नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥१॥
हे नानक ! मैं तो उस ईश्वर की शरण लेता हूँ, जिसकी कृपा से अहंकार एवं मोह दूर हो जाते हैं।॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਰੇ ਮਨ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜਹ ਰਚਹੁ ਤਹ ਤਹ ਬੰਧਨ ਪਾਹਿ ॥
रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥
हे मेरे मन ! परमेश्वर के अलावा जिस किसी (मोह) में भी तू प्रवृत्त होता है, वहाँ ही तुझे बन्धन जकड़ लेते हैं।

ਜਿਹ ਬਿਧਿ ਕਤਹੂ ਨ ਛੂਟੀਐ ਸਾਕਤ ਤੇਊ ਕਮਾਹਿ ॥
जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥
शाक्त इन्सान वही कर्म करता है, जिससे उसको कभी मुक्ति नहीं मिल सकती।

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤੇ ਕਰਮ ਰਤ ਤਾ ਕੋ ਭਾਰੁ ਅਫਾਰ ॥
हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥
कर्मों के प्रेमी अपने शुभ-अशुभ कर्मों का अहंकार करते रहते हैं, इस अहंकार का असह्य बोझ उन्हें ही सहन करना पड़ता है।

ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਜਉ ਨਾਮ ਸਿਉ ਤਉ ਏਊ ਕਰਮ ਬਿਕਾਰ ॥
प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥
जब प्रभु के नाम से प्रेम नहीं तो यह कर्म विकार भरे हैं।

ਬਾਧੇ ਜਮ ਕੀ ਜੇਵਰੀ ਮੀਠੀ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ॥
बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥
जो मधुर माया से प्रेम करते हैं, वे मृत्यु की फाँसी में फँसे हुए हैं।

ਭ੍ਰਮ ਕੇ ਮੋਹੇ ਨਹ ਬੁਝਹਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਹੂ ਸੰਗ ॥
भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु सदहू संग ॥
दुविधा में फँसे हुए प्राणी समझते नहीं कि ईश्वर सदैव उनके साथ है।

ਲੇਖੈ ਗਣਤ ਨ ਛੂਟੀਐ ਕਾਚੀ ਭੀਤਿ ਨ ਸੁਧਿ ॥
लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥
जब उनके कुकर्मों का लेखा-जोखा किया जाता है उनको मुक्ति नहीं मिलती। गारे की कच्ची दीवार कभी स्वच्छ नहीं हो सकती।

ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਨਾਨਕਾ ਤਿਹ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲ ਬੁਧਿ ॥੯॥
जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥९॥
हे नानक ! जिस मनुष्य को प्रभु स्वयं सूझ प्रदान करता है, उस गुरमुख की बुद्धि निर्मल हो जाती है।॥९॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਟੂਟੇ ਬੰਧਨ ਜਾਸੁ ਕੇ ਹੋਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ॥
टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥
जिस जीव के (माया के) बन्धन कट जाते हैं, उसे संतों की संगति मिल जाती है।

ਜੋ ਰਾਤੇ ਰੰਗ ਏਕ ਕੈ ਨਾਨਕ ਗੂੜਾ ਰੰਗੁ ॥੧॥
जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥१॥
हे नानक ! जो जीव एक ईश्वर के प्रेम रंग में मग्न रहते हैं, उनका रंग बहुत गहरा होता है, जो कभी उतरता नहीं॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਰਾਰਾ ਰੰਗਹੁ ਇਆ ਮਨੁ ਅਪਨਾ ॥
रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥
र – अपने इस मन को प्रभु के प्रेम से रंग लो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਰਸਨਾ ॥
हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥
अपनी रसना से प्रभु-परमेश्वर के नाम का बार-बार भजन करो।

ਰੇ ਰੇ ਦਰਗਹ ਕਹੈ ਨ ਕੋਊ ॥
रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥
प्रभु के दरबार में तुझे कोई निरादर के शब्द नहीं बोलेगा।

ਆਉ ਬੈਠੁ ਆਦਰੁ ਸੁਭ ਦੇਊ ॥
आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥
सभी यह संबोधन करके तेरा स्वागत करेंगे, ""आइए पधारिए""।

ਉਆ ਮਹਲੀ ਪਾਵਹਿ ਤੂ ਬਾਸਾ ॥
उआ महली पावहि तू बासा ॥
प्रभु के उस दरबार में तुझे निवास मिलेगा।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਨਹ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸਾ ॥
जनम मरन नह होइ बिनासा ॥
प्रभु के दरबार में कोई जन्म, मृत्यु एवं विनाश नहीं।

ਮਸਤਕਿ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਓ ਧੁਰਿ ਜਾ ਕੈ ॥
मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥
हे नानक ! जिसके माथे पर शुम कर्मों द्वारा कृपा का लेख लिखा होता है,

ਹਰਿ ਸੰਪੈ ਨਾਨਕ ਘਰਿ ਤਾ ਕੈ ॥੧੦॥
हरि स्मपै नानक घरि ता कै ॥१०॥
उसी व्यक्ति के हृदय-घर में हरि-नाम रूपी संपत्ति होती हैं। ॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮੋਹ ਬਿਆਪਤ ਮੂੜੇ ਅੰਧ ॥
लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति लालच, झूठ, पाप, सांसारिक मोह के बन्धनों में फंस जाते हैं, उन ज्ञानहीन मूर्खों को ये विकार दबाव डालते रहते हैं।

ਲਾਗਿ ਪਰੇ ਦੁਰਗੰਧ ਸਿਉ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਬੰਧ ॥੧॥
लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥१॥
माया में फँसे हुए वे कुकर्मों में ही लगे रहते हैं॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਲਲਾ ਲਪਟਿ ਬਿਖੈ ਰਸ ਰਾਤੇ ॥
लला लपटि बिखै रस राते ॥
ल - मनुष्य पाप से भरे विकारों में लिपटे रहते हैं।

ਅਹੰਬੁਧਿ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਾਤੇ ॥
अह्मबुधि माइआ मद माते ॥
वह अहंबुद्धि एवं माया के नशे में मग्न रहते हैं।

ਇਆ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਜਨਮਹਿ ਮਰਨਾ ॥
इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥
इस मोहिनी के जाल में फँसकर प्राणी (जन्म-मरण के चक्र में पड़कर) संसार में आते-जाते रहते हैं

ਜਿਉ ਜਿਉ ਹੁਕਮੁ ਤਿਵੈ ਤਿਉ ਕਰਨਾ ॥
जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥
"(लेकिन प्राणी के वश में कुछ नहीं) जैसे जैसे ईश्वर की आज्ञा होती है, वैसे ही प्राणी करते हैं।

ਕੋਊ ਊਨ ਨ ਕੋਊ ਪੂਰਾ ॥
कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥
कोई भी प्राणी अधूरा नहीं और कोई पूर्ण भी नहीं।

ਕੋਊ ਸੁਘਰੁ ਨ ਕੋਊ ਮੂਰਾ ॥
कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥
अपने आप न कोई चतुर है और न ही कोई मूर्ख।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਨਾ ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
जहाँ कहीं भी प्रभु प्राणी को लगाता है, वहीं वह लग जाता है।

ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਸਦਾ ਅਲਿਪਨਾ ॥੧੧॥
नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥११॥
हे नानक ! ईश्वर हमेशा (माया के प्रभाव से) निर्लिप्त रहता है॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਲਾਲ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਅਥਾਹ ॥
लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर ग्मभीर अथाह ॥
वह गोविन्द गोपाल हम सबका प्रिय है। मेरा प्रियतम प्रभु सर्वज्ञाता, धैर्यवान एवं विशाल हृदय वाला तथा अथाह है।

ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਅਵਰ ਕੋ ਨਾਨਕ ਬੇਪਰਵਾਹ ॥੧॥
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥१॥
हे नानक ! उस जैसा दूसरा कोई नहीं। वह बिल्कुल बेपरवाह है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਲਲਾ ਤਾ ਕੈ ਲਵੈ ਨ ਕੋਊ ॥
लला ता कै लवै न कोऊ ॥
ल - उसके समान दूसरा कोई नहीं।

ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਅਵਰ ਨਹ ਹੋਊ ॥
एकहि आपि अवर नह होऊ ॥
वह ईश्वर एक है, उस जैसा दूसरा कोई होगा भी नहीं।

ਹੋਵਨਹਾਰੁ ਹੋਤ ਸਦ ਆਇਆ ॥
होवनहारु होत सद आइआ ॥
वह अब भी अस्तित्व में है, वही होगा और सदा होता आया है।

ਉਆ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਕਾਹੂ ਪਾਇਆ ॥
उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥
उसका अन्त कभी किसी को भी नहीं मिला।

ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਮਹਿ ਪੂਰ ਸਮਾਨੇ ॥
कीट हसति महि पूर समाने ॥
चींटी से लेकर हाथी तक सब में प्रभु मौजूद है।

ਪ੍ਰਗਟ ਪੁਰਖ ਸਭ ਠਾਊ ਜਾਨੇ ॥
प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥
सर्वव्यापक परमेश्वर हर तरफ प्रत्यक्ष गोचर है।

ਜਾ ਕਉ ਦੀਨੋ ਹਰਿ ਰਸੁ ਅਪਨਾ ॥
जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥
हे नानक ! जिस किसी को भी प्रभु अपना हरि-रस प्रदान करता है,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਿਹ ਜਪਨਾ ॥੧੨॥
नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥१२॥
वह गुरु के आश्रय द्वारा हरि-परमेश्वर का भजन करता रहता है ॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਆਤਮ ਰਸੁ ਜਿਹ ਜਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰੰਗ ਸਹਜੇ ਮਾਣੁ ॥
आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥
जो व्यक्ति प्रभु के अमृत के स्वाद को जानता है, वह सहज ही हरि के प्रेम का आनंद लेता है।

ਨਾਨਕ ਧਨਿ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ਜਨ ਆਏ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥੧॥
नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥१॥
हे नानक ! वे व्यक्ति भाग्यशाली हैं एवं उनका इस संसार में जन्म लेना सफल है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਆਇਆ ਸਫਲ ਤਾਹੂ ਕੋ ਗਨੀਐ ॥
आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥
उसका इस जगत् में आगमन सफल गिना जाता है

ਜਾਸੁ ਰਸਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਭਨੀਐ ॥
जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥
जिसकी जिव्हा प्रभु-परमेश्वर की महिमा करती रहती है।

ਆਇ ਬਸਹਿ ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗੇ ॥
आइ बसहि साधू कै संगे ॥
वह (संसार में) आकर संतों से संगति करता है

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਰੰਗੇ ॥
अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥
और रात-दिन प्रेमपूर्वक नाम का ध्यान करता है।

ਆਵਤ ਸੋ ਜਨੁ ਨਾਮਹਿ ਰਾਤਾ ॥
आवत सो जनु नामहि राता ॥
उस जीव का जन्म सफल है, जो प्रभु के नाम में मग्न हुआ है

ਜਾ ਕਉ ਦਇਆ ਮਇਆ ਬਿਧਾਤਾ ॥
जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥
और जिस पर विधाता की दया एवं कृपा हुई है।

ਏਕਹਿ ਆਵਨ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਇਆ ॥
एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥
ऐसा जीव (संसार में) एक बार ही जन्म लेता है और पुनः योनि के चक्र में नहीं पड़ता।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਸਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੩॥
नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥१३॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति प्रभु के दर्शनों में ही समा जाता है॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
शलोक॥

ਯਾਸੁ ਜਪਤ ਮਨਿ ਹੋਇ ਅਨੰਦੁ ਬਿਨਸੈ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ॥
यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥
हे नानक ! जिस ईश्वर का भजन करने से मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, द्वैतवाद का मोह मिट जाता है

ਦੂਖ ਦਰਦ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਉ ॥੧॥
दूख दरद त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥१॥
एवं दुःख, दर्द व सांसारिक तृष्णा का नाश हो जाता है, उसके नाम में समा जाओ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਯਯਾ ਜਾਰਉ ਦੁਰਮਤਿ ਦੋਊ ॥
ययया जारउ दुरमति दोऊ ॥
य - अपनी दुर्बुद्धि एवं द्वैतवाद को जला दो।=

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਸੋਊ ॥
तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥
इनको त्याग कर सहज सुख में निद्रा करो।

ਯਯਾ ਜਾਇ ਪਰਹੁ ਸੰਤ ਸਰਨਾ ॥
ययया जाइ परहु संत सरना ॥
य - जाकर उन संतों की शरण में पड़ जाओ,

ਜਿਹ ਆਸਰ ਇਆ ਭਵਜਲੁ ਤਰਨਾ ॥
जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥
जिनकी सहायता से भवसागर से पार हुआ जा सकता है।

ਯਯਾ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ਸੋਊ ॥
ययया जनमि न आवै सोऊ ॥
य - वह व्यक्ति बार-बार संसार में जन्म नहीं लेता

ਏਕ ਨਾਮ ਲੇ ਮਨਹਿ ਪਰੋਊ ॥
एक नाम ले मनहि परोऊ ॥
जिस ने एक ईश्वर का नाम अपने मन में पिरो लिया है।

ਯਯਾ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੀਐ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਟੇਕ ॥
ययया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥
य - पूर्ण गुरु के आश्रय से अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ नहीं जाता।

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਾ ਕੈ ਹੀਅਰੈ ਏਕ ॥੧੪॥
नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥१४॥
हे नानक ! जिसके हृदय में एक परमेश्वर ही विद्यमान है, वह आत्मिक सुख प्राप्त कर लेता है ॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਅੰਤਰਿ ਮਨ ਤਨ ਬਸਿ ਰਹੇ ਈਤ ਊਤ ਕੇ ਮੀਤ ॥
अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥
जो इस लोक एवं परलोक में जीव का मित्र है, वह उसके मन-तन में रहता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਉਪਦੇਸਿਆ ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਨੀਤ ॥੧॥
गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥१॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु ने मुझे हमेशा प्रभु का भजन करने का उपदेश प्रदान किया है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰਹੁ ਤਾਸੁ ਕਉ ਜੋ ਅੰਤਿ ਸਹਾਈ ਹੋਇ ॥
अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥
रात-दिन उसका सिमरन करो, जो अन्तिम समय में जीव का सहायक बनता है।

ਇਹ ਬਿਖਿਆ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਛਿਅ ਛਾਡਿ ਚਲਿਓ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥
मोह-माया का यह विष केवल चार अथवा छ : दिनों का ही है। सभी इसे छोड़कर चले जाते हैं।

ਕਾ ਕੋ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਧੀਆ ॥
का को मात पिता सुत धीआ ॥
माता, पिता, पुत्र एवं पुत्री कोई भी किसी का संगी नहीं है।

ਗ੍ਰਿਹ ਬਨਿਤਾ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਲੀਆ ॥
ग्रिह बनिता कछु संगि न लीआ ॥
कोई भी इन्सान घर, पत्नी एवं अन्य पदार्थ कुछ भी साथ लेकर नहीं जाता।

ਐਸੀ ਸੰਚਿ ਜੁ ਬਿਨਸਤ ਨਾਹੀ ॥
ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥
इसलिए ऐसा नाम-धन संचित करो जो कभी नाश नहीं होता

ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਅਪੁਨੈ ਘਰਿ ਜਾਹੀ ॥
पति सेती अपुनै घरि जाही ॥
और जो सम्मानपूर्वक अपने घर (परलोक) में जा सके।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਲਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇਆ ॥
साधसंगि कलि कीरतनु गाइआ ॥
हे नानक ! जो लोग अपने जीवन में सत्संग में प्रभु का भजन गायन करते हैं,

ਨਾਨਕ ਤੇ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧੫॥
नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥१५॥
वह पुनः जन्म-मरण के चक्र में फँसकर इस संसार में नहीं आते॥ १५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਕੁਲੀਨ ਚਤੁਰ ਮੁਖਿ ਙਿਆਨੀ ਧਨਵੰਤ ॥
अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥
यदि कोई व्यक्ति अति सुन्दर, कुलीन, चतुर एवं उच्चकोटि का ज्ञानी एवं धनवान हो तो भी

ਮਿਰਤਕ ਕਹੀਅਹਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿਹ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਭਗਵੰਤ ॥੧॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥१॥
हे नानक ! जिनके हृदय में भगवान की प्रीति नहीं है वे मृतक ही कहलाए जाएँगे ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਙੰਙਾ ਖਟੁ ਸਾਸਤ੍ਰ ਹੋਇ ਙਿਆਤਾ ॥
ङंङा खटु सासत्र होइ ङिआता ॥
ङ - कोई व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता हो,

ਪੂਰਕੁ ਕੁੰਭਕ ਰੇਚਕ ਕਰਮਾਤਾ ॥
पूरकु कुमभक रेचक करमाता ॥
वह (योगी की भाँति) श्वास अन्दर खींचने, बाहर निकालने एवं टिकाने का कर्म करता हो,

ਗ੍ਯਾਨ ਧਿਆਨ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੀ ॥
ग्यान धिआन तीरथ इसनानी ॥
वह ज्ञान (धार्मिक) चर्चा, मनन, तीर्थ यात्रा एवं स्नान करता हो,

ਸੋਮਪਾਕ ਅਪਰਸ ਉਦਿਆਨੀ ॥
सोमपाक अपरस उदिआनी ॥
वह अपना भोजन स्वयं पकाता हो, किसी के साथ न लगता हो एवं जंगल में रहता हो,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਮਨਿ ਨਹੀ ਹੇਤਾ ॥
राम नाम संगि मनि नही हेता ॥
यदि उसके हृदय में प्रभु के नाम से प्रीति नहीं

ਜੋ ਕਛੁ ਕੀਨੋ ਸੋਊ ਅਨੇਤਾ ॥
जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥
तो सब कुछ जो वह करता है, वह नाशवान है।

ਊਆ ਤੇ ਊਤਮੁ ਗਨਉ ਚੰਡਾਲਾ ॥
ऊआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥
हे नानक ! उससे उत्तम उस चंडाल को समझो,

ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਮਨਿ ਬਸਹਿ ਗੁਪਾਲਾ ॥੧੬॥
नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥१६॥
जिसके मन में गोपाल निवास करता है ॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਕੁੰਟ ਚਾਰਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭ੍ਰਮੇ ਕਰਮ ਕਿਰਤਿ ਕੀ ਰੇਖ ॥
कुंट चारि दह दिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥
मनुष्य अपने किए कर्मों के संस्कारों के अनुसार संसार के चारों कुण्ट एवं दसों दिशाओं में भटकता रहता है।

ਸੂਖ ਦੂਖ ਮੁਕਤਿ ਜੋਨਿ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਓ ਲੇਖ ॥੧॥
सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥१॥
हे नानक ! सुख-दुःख, मोक्ष एवं योनि (आवागमन) लिखी हुई किस्मत अनुसार ही मिलता है॥१॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਕਕਾ ਕਾਰਨ ਕਰਤਾ ਸੋਊ ॥
कका कारन करता सोऊ ॥
क - परमात्मा स्वयं ही संयोग बनाने वाला है।

ਲਿਖਿਓ ਲੇਖੁ ਨ ਮੇਟਤ ਕੋਊ ॥
लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥
कोई भी प्राणी विधाता के विधान को मिटा नहीं सकता।

ਨਹੀ ਹੋਤ ਕਛੁ ਦੋਊ ਬਾਰਾ ॥
नही होत कछु दोऊ बारा ॥
ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जो उसे फिर से करना पड़े,

ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਨ ਭੂਲਨਹਾਰਾ ॥
करनैहारु न भूलनहारा ॥
परमात्मा कभी भूल नहीं करता।

ਕਾਹੂ ਪੰਥੁ ਦਿਖਾਰੈ ਆਪੈ ॥
काहू पंथु दिखारै आपै ॥
कुछ जीवों को वह स्वयं ही सन्मार्ग दिखा देता है।

ਕਾਹੂ ਉਦਿਆਨ ਭ੍ਰਮਤ ਪਛੁਤਾਪੈ ॥
काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥
कुछ जीवों को वह भयानक जंगल में भटकाता रहता है।

ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪ ਹੀ ਕੀਨੋ ॥
आपन खेलु आप ही कीनो ॥
यह समूचा जगत्-खेल भगवान ने स्वयं ही रचा है।

ਜੋ ਜੋ ਦੀਨੋ ਸੁ ਨਾਨਕ ਲੀਨੋ ॥੧੭॥
जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥१७॥
हे नानक ! जो कुछ भी प्रभु प्राणियों को देता है, वही उन्हें मिल जाता है॥ १७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਬਿਲਛਤ ਰਹੇ ਟੂਟਿ ਨ ਜਾਹਿ ਭੰਡਾਰ ॥
खात खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भंडार ॥
"(प्रभु के खजाने को) मनुष्य खाते, खर्च करते और भोगते रहते हैं परन्तु प्रभु का खजाना कभी समाप्त नहीं होता।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਅਨੇਕ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰ ॥੧॥
हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥१॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर के नाम का अनेकों ही मनुष्य भजन करते रहते हैं, जो कि गणना से परे है॥ १ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਖਖਾ ਖੂਨਾ ਕਛੁ ਨਹੀ ਤਿਸੁ ਸੰਮ੍ਰਥ ਕੈ ਪਾਹਿ ॥
खखा खूना कछु नही तिसु सम्रथ कै पाहि ॥
ख - परमात्मा जो समस्त शक्तियों का स्वामी है, उसके घर में किसी वस्तु की कोई कमी नहीं।

ਜੋ ਦੇਨਾ ਸੋ ਦੇ ਰਹਿਓ ਭਾਵੈ ਤਹ ਤਹ ਜਾਹਿ ॥
जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥
जो कुछ प्रभु ने देना है, वह देता जा रहा है। मनुष्य चाहे जहाँ मन करता है, वहाँ चलता रहे।

ਖਰਚੁ ਖਜਾਨਾ ਨਾਮ ਧਨੁ ਇਆ ਭਗਤਨ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥
खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥
नाम-धन भक्तों के पास खर्च करने के लिए भण्डार है। यह उनकी राशि-पूंजी है।

ਖਿਮਾ ਗਰੀਬੀ ਅਨਦ ਸਹਜ ਜਪਤ ਰਹਹਿ ਗੁਣਤਾਸ ॥
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥
सहनशीलता, नम्रता, आनंद एवं सहजता से वह गुणों के भण्डार प्रभु का जाप करते जाते हैं।

ਖੇਲਹਿ ਬਿਗਸਹਿ ਅਨਦ ਸਿਉ ਜਾ ਕਉ ਹੋਤ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥
परमेश्वर जिन पर कृपा करता है, वह आनंदपूर्वक जीवन का खेल खेलते हैं और सदैव प्रसन्न रहते हैं।

ਸਦੀਵ ਗਨੀਵ ਸੁਹਾਵਨੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗ੍ਰਿਹਿ ਮਾਲ ॥
सदीव गनीव सुहावने राम नाम ग्रिहि माल ॥
जिनके हृदय घर में राम के नाम का पदार्थ है, वह सदैव ही धनवान एवं सुन्दर हैं।

ਖੇਦੁ ਨ ਦੂਖੁ ਨ ਡਾਨੁ ਤਿਹ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੀ ॥
खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥
ईश्वर जिन पर कृपा-दृष्टि करता है, उनको न ही कोई कष्ट होता है, न ही कोई पीड़ा एवं दण्ड मिलता है।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ਪੂਰੀ ਤਿਨਾ ਪਰੀ ॥੧੮॥
नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी ॥१८॥
हे नानक ! जो प्रभु को भले लगते हैं, वह पूर्णतया सफल हो जाते हैं।॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਗਨਿ ਮਿਨਿ ਦੇਖਹੁ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ਸਰਪਰ ਚਲਨੋ ਲੋਗ ॥
गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥
"(हे जिज्ञासु !) अपने चित्त में भलीभाँति विचार कर देख लो, कि लोगों ने इस दुनिया से निश्चित ही चले जाना है।

ਆਸ ਅਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਟੈ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਰੋਗ ॥੧॥
आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥१॥
हे नानक ! क्षणभंगुर पदार्थों की तृष्णा गुरु की शरण लेने से ही मिटती है। केवल भगवान के नाम में ही अरोग्यता है ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਗਗਾ ਗੋਬਿਦ ਗੁਣ ਰਵਹੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਜਪਿ ਨੀਤ ॥
गगा गोबिद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥
ग - (हे जिज्ञासु !) अपने प्रत्येक श्वास से गोविन्द की गुणस्तुति करते रहो और नित्य उसका भजन करो।

ਕਹਾ ਬਿਸਾਸਾ ਦੇਹ ਕਾ ਬਿਲਮ ਨ ਕਰਿਹੋ ਮੀਤ ॥
कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥
शरीर के ऊपर क्या विश्वास किया जा सकता है ? हे मेरे मित्र ! देरी न कर।

ਨਹ ਬਾਰਿਕ ਨਹ ਜੋਬਨੈ ਨਹ ਬਿਰਧੀ ਕਛੁ ਬੰਧੁ ॥
नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥
चाहे बचपन हो, जवानी हो, बुढ़ापा हो, मृत्यु को आने से किसी समय भी रुकावट नहीं है।

ਓਹ ਬੇਰਾ ਨਹ ਬੂਝੀਐ ਜਉ ਆਇ ਪਰੈ ਜਮ ਫੰਧੁ ॥
ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥
उस वक्त का पता नहीं लग सकता कि कब यमराज का रस्सा गले में आ पड़ता है।

ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਚਤੁਰ ਪੇਖਿ ਰਹਨੁ ਨਹੀ ਇਹ ਠਾਇ ॥
गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥
यह बात समझ लो चाहे कोई ज्ञानी हो, चाहे कोई ध्यानी हो, चाहे कोई चतुर हो, किसी ने भी दुनिया में सदा नहीं रहना।

छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥
छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥
मूर्ख ही उन वस्तुओं की प्राप्ति में लगते हैं, जिन्हें समूचा जगत् त्याग गया है।

गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥
गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥
जिसके माथे पर शुभ भाग्य लिखा हुआ है, वह गुरु की कृपा से प्रभु का भजन करता रहता है।

नानक आऐ सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥१९॥
नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥१९॥
हे नानक ! जिन्हें प्रियतम प्रभु का सौभाग्य प्राप्त है, उनका ही इस संसार में आगमन सफल है॥ १६॥

सलोकु ॥
लोकु ॥
श्लोक॥

घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥
घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥
मैंने समस्त शास्त्र एवं वेद अध्ययन करके देख लिए हैं। कोई भी यह नहीं बताता किं भगवान के अलावा कोई अन्य भी हमेशा रहने वाला है।

आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥१॥
आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥१॥
हे नानक ! एक परमेश्वर ही सृष्टि के आदि में, युगों के आरम्भ में था, अब है और हमेशा ही रहने वाला है॥ १॥

पउड़ी ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਘਘਾ ਘਾਲਹੁ ਮਨਹਿ ਏਹ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਦੂਸਰ ਨਾਹਿ ॥
घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥
घ - अपने मन में यह बात दृढ़ कर लो कि प्रभु के अलावा कोई नहीं।

ਨਹ ਹੋਆ ਨਹ ਹੋਵਨਾ ਜਤ ਕਤ ਓਹੀ ਸਮਾਹਿ ॥
नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥
न कोई था और न ही आगे कोई होगा। वह प्रभु सर्वव्यापक हो रहा है।

ਘੂਲਹਿ ਤਉ ਮਨ ਜਉ ਆਵਹਿ ਸਰਨਾ ॥
घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥
हे मन ! यदि तू प्रभु की शरण लेगा तो ही प्रभु में लीन होगा।

ਨਾਮ ਤਤੁ ਕਲਿ ਮਹਿ ਪੁਨਹਚਰਨਾ ॥
नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥
इस कलियुग में प्रभु का नाम ही वास्तविक प्रायश्चित कर्म है।

ਘਾਲਿ ਘਾਲਿ ਅਨਿਕ ਪਛੁਤਾਵਹਿ ॥
घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥
दुविधा में मेहनत-परिश्रम करके अनेकों पश्चाताप करते हैं।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਹਾ ਥਿਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥
भगवान की भक्ति के सिवाय कैसे शांति मिल सकती हैं ?

ਘੋਲਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਿਹ ਪੀਆ ॥
घोलि महा रसु अम्रितु तिह पीआ ॥
हे नानक ! वह इसे घोलकर पान करता है

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰਿ ਜਾ ਕਉ ਦੀਆ ॥੨੦॥
नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥२०॥
जिसे हरि रूप गुरु जी महारस अमृत प्रदान करते हैं॥ २०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਙਣਿ ਘਾਲੇ ਸਭ ਦਿਵਸ ਸਾਸ ਨਹ ਬਢਨ ਘਟਨ ਤਿਲੁ ਸਾਰ ॥
ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥
समस्त दिवस एवं श्वास प्रभु ने गिन कर ही मनुष्य में डाले हैं। वह एक तिलमात्र भी न अधिक होते हैं और न ही कम होते हैं।

जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥१॥
जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति भ्रम एवं मोह में जिंदगी जीना चाहते हैं, ऐसे व्यक्ति मूर्ख हैं।॥ १॥

पउड़ी ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥
ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥
ङ - काल (मृत्यु) उसे अपना ग्रास बना लेता है, जिसे प्रभु ने नास्तिक बना दिया है।

अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥
अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥
जो व्यक्ति राम को अनुभव नहीं करते, वे अनेकों योनियों में जन्मते-मरते रहते हैं।

ञिआन धिआन ताहू कउ आए ॥
ञिआन धिआन ताहू कउ आए ॥
केवल वही व्यक्ति ज्ञान एवं ध्यान को प्राप्त करता है,

करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥
करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥
जिस पर ईश्वर स्वयं कृपा करके देता है।

ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥
ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥
कर्मों का लेखा पता करने से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता।

काची गागरि सरपर फूटै ॥
काची गागरि सरपर फूटै ॥
यह शरीर मिट्टी की कच्ची गागर है जिस ने निश्चित ही टूट जाना है,

ਸੋ ਜੀਵਤ ਜਿਹ ਜੀਵਤ ਜਪਿਆ ॥
सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥
केवल वही जीवित है, जो जीवित ही प्रभु का भजन करता है।

ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਨਾਨਕ ਨਹ ਛਪਿਆ ॥੨੧॥
प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥२१॥
हे नानक ! भगवान का सिमरन करने वाला मनुष्य छिपा नहीं रहता अपितु जगत् में प्रसिद्ध हो जाता है।॥२१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਉ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਊਧ ਕਵਲ ਬਿਗਸਾਂਤ ॥
चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत ॥
अपने चित्त में प्रभु के सुन्दर चरणों का चिन्तन करने से मेरा विपरीत मन कमल की भाँति प्रफुल्लित हो गया है।

ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਆਪਹਿ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਮਤਾਂਤ ॥੧॥
प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥१॥
हे नानक ! संतजनों के उपदेश से गोविन्द स्वयं ही प्रकट हो जाता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਚਚਾ ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰ ਲਾਗਾ ॥
चचा चरन कमल गुर लागा ॥
च – जब गुरु के सुन्दर चरणों में मन लगा,

ਧਨਿ ਧਨਿ ਉਆ ਦਿਨ ਸੰਜੋਗ ਸਭਾਗਾ ॥
धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥
वह दिन बड़ा शुभ है, वह संयोग भी भाग्यशाली है ।

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਓ ॥
चारि कुंट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥
मैं चारों तरफ एवं दस दिशाओं से भटक कर आया हूँ।

ਭਈ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤਬ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਓ ॥
भई क्रिपा तब दरसनु पाइओ ॥
जब प्रभु ने कृपा की तो ही मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए।

ਚਾਰ ਬਿਚਾਰ ਬਿਨਸਿਓ ਸਭ ਦ੍ਵੈਆ ॥
चार बिचार बिनसिओ सभ द्वैआ ॥
भगवान की महिमा का विचार करने से समूह द्वैतवाद नाश हो गया है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹ੍ਵੈਆ ॥
साधसंगि मनु निरमल हूआ ॥
संतों की संगति में मेरा मन निर्मल हो गया है।

ਚਿੰਤ ਬਿਸਾਰੀ ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥
हे नानक ! वह चिन्ता को भूल जाता है और वह एक ईश्वर के दर्शन कर लेता है,

ਨਾਨਕ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਜਿਹ ਨੇਤ੍ਰਾ ॥੨੨॥
नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥२२॥
जिसके नेत्रों में ज्ञान का सुरमा पड़ जाता है ॥२२॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਛਾਤੀ ਸੀਤਲ ਮਨੁ ਸੁਖੀ ਛੰਤ ਗੋਬਿਦ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥
छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥
गोविन्द की महिमा के छंद गायन करने से छाती शीतल एवं मन सुखी हो जाता है।

ਐਸੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਇ ॥੧॥
ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥१॥
नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे प्रभु! मुझ पर ऐसी कृपा-दृष्टि करो कि मैं तेरे दासों का दास बन जाऊँ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਛਛਾ ਛੋਹਰੇ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ॥
छछा छोहरे दास तुमारे ॥
छ - मैं तेरा दास बालक हूँ।

ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੇ ਪਾਨੀਹਾਰੇ ॥
दास दासन के पानीहारे ॥
मैं तेरे दासों के दासों का जल भरने वाला हूँ।

ਛਛਾ ਛਾਰੁ ਹੋਤ ਤੇਰੇ ਸੰਤਾ ॥
छछा छारु होत तेरे संता ॥
छ - मैं तेरे संतों की चरण-धूलि बन जाऊँ,"

ਅਪਨੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਭਗਵੰਤਾ ॥
अपनी क्रिपा करहु भगवंता ॥
हे भगवान ! मुझ पर अपनी ऐसी कृपा कर दो ।

ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਬਹੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥
छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥
मैंने अपनी अधिकतर बुद्धिमत्ता एवं चतुरता त्याग दी है

ਸੰਤਨ ਕੀ ਮਨ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥
संतन की मन टेक टिकाई ॥
और अपने मन को संतों के आसरे टिका दिया है।

ਛਾਰੁ ਕੀ ਪੁਤਰੀ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥
छारु की पुतरी परम गति पाई ॥
हे नानक ! यह देहि चाहे मिट्टी का पुतला है, वह वह परमगति प्राप्त कर लेता है,"

ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ॥੨੩॥
नानक जा कउ संत सहाई ॥२३॥
संत जिस व्यक्ति की मदद करते हैं ॥२३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਜੋਰ ਜੁਲਮ ਫੂਲਹਿ ਘਨੋ ਕਾਚੀ ਦੇਹ ਬਿਕਾਰ ॥
जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥
मासूम लोगों पर अत्याचार एवं जुल्म करके मनुष्य बड़ा ही अभिमान करता है और अपने नश्वर शरीर से पाप करता है।

ਅਹੰਬੁਧਿ ਬੰਧਨ ਪਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਛੁਟਾਰ ॥੧॥
अह्मबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥१॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति अहंबुद्धि के कारण बंधनों में फंस जाता है लेकिन उस व्यक्ति की परमेश्वर के नाम से ही मुक्ति होती है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਜਾ ਜਾਨੈ ਹਉ ਕਛੁ ਹੂਆ ॥
जजा जानै हउ कछु हूआ ॥
ज - यदि कोई मनुष्य यह सोचता है कि मैं कुछ बन गया हूँ,"

ਬਾਧਿਓ ਜਿਉ ਨਲਿਨੀ ਭ੍ਰਮਿ ਸੂਆ ॥
बाधिओ जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥
वह इस अभिमान में यूं फंस जाता है जिस तरह कोई तोता (दाने के) भ्रम में कमलिनी के साथ फँस जाता है।

ਜਉ ਜਾਨੈ ਹਉ ਭਗਤੁ ਗਿਆਨੀ ॥
जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥
यदि कोई व्यक्ति अपने आपको भक्त एवं ज्ञानी समझता है

ਆਗੈ ਠਾਕੁਰਿ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੀ ॥
आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥
तो परलोक में प्रभु उसको थोड़ा-सा भी सम्मान नहीं देता।

ਜਉ ਜਾਨੈ ਮੈ ਕਥਨੀ ਕਰਤਾ ॥
जउ जानै मै कथनी करता ॥
यदि कोई व्यक्ति अपने आपको धार्मिक प्रचारक समझाता है

ਬਿਆਪਾਰੀ ਬਸੁਧਾ ਜਿਉ ਫਿਰਤਾ ॥
बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥
तो वह फेरी वाले व्यापारी की भाँति धरती पर भटकता रहता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਿਹ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥
साधसंगि जिह हउमै मारी ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति संतों को संगति में अपने अहंकार का नाश कर देता है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਉ ਮਿਲੇ ਮੁਰਾਰੀ ॥੨੪॥
नानक ता कउ मिले मुरारी ॥२४॥
उसे मुरारी प्रभु मिल जाता है।॥२४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਝਾਲਾਘੇ ਉਠਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਆਰਾਧਿ ॥
झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥
नानक का कथन है कि (हे जीव !) प्रातःकाल उठकर ईश्वर का नाम जप और रात-दिन उसकी आराधना कर।

ਕਾਰ੍ਹਾ ਤੁਝੈ ਨ ਬਿਆਪਈ ਨਾਨਕ ਮਿਟੈ ਉਪਾਧਿ ॥੧॥
कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥१॥
फिर तुझे कोई चिन्ता फिक्र प्रभावित नहीं करेगी और मुसीबत लुप्त हो जाएगी ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਝਝਾ ਝੂਰਨੁ ਮਿਟੈ ਤੁਮਾਰੋ ॥
झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥
झ - हे भाई तेरा पश्चाताप मिट जाएगा,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਿਉ ਕਰਿ ਬਿਉਹਾਰੋ ॥
राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥
अगर तू परमेश्वर के नाम का व्यापार करेगा ।

ਝੂਰਤ ਝੂਰਤ ਸਾਕਤ ਮੂਆ ॥
झूरत झूरत साकत मूआ ॥
शाक्त मनुष्य बड़ी चिन्ता एवं दुःख से मर जाता है

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਹੋਤ ਭਾਉ ਬੀਆ ॥
जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥
जिसके हृदय में मोह-माया की प्रीति है।

ਝਰਹਿ ਕਸੰਮਲ ਪਾਪ ਤੇਰੇ ਮਨੂਆ ॥
झरहि कसमल पाप तेरे मनूआ ॥
हे मेरे मन ! तेरे समस्त पाप-विकार एवं दोष मिट जाएँगे

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਥਾ ਸੰਤਸੰਗਿ ਸੁਨੂਆ ॥
अम्रित कथा संतसंगि सुनूआ ॥
जो तू संतों की संगति में अमृत कथा सुनें ।

ਝਰਹਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਦ੍ਰੁਸਟਾਈ ॥
झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥
हे नानक ! उसके काम-क्रोध इत्यादि समूचे दुष्ट नाश हो जाते हैं

ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਗੁਸਾਈ ॥੨੫॥
नानक जा कउ क्रिपा गुसाई ॥२५॥
जिस व्यक्ति पर परमात्मा कृपा कर देता है ॥२५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਵਤਨ ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਅਨਿਕ ਬਿਧਿ ਰਹਨੁ ਨ ਪਾਵਹੁ ਮੀਤ ॥
जतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥
हे मेरे मित्र ! चाहे तू अनेक प्रकार के उपाय कर ले, परन्तु दुनिया में सदा के लिए नहीं रह सकेगा।

ਜੀਵਤ ਰਹਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥
जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥१॥
हे नानक ! यदि हरि-परमेश्वर का भजन करोगे और नाम से प्रेम करोगे तो सदा के लिए आत्मिक जीवन प्राप्त हो जाएगा ॥१॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਵੰਞਾ ਵਾਣਹੁ ਦ੍ਰਿੜੁ ਸਹੀ ਬਿਨਸਿ ਜਾਤ ਏਹ ਹੇਤ ॥
ञंजा जाणहु द्रिड़ु सही बिनसि जात एह हेत ॥
ञ - यह बात निश्चित तौर पर समझ ले कि यह दुनिया का मोह नाश हो जाएगा। |

ਗਣਤੀ ਗਣਉ ਨ ਗਣਿ ਸਕਉ ਊਠਿ ਸਿਧਾਰੇ ਕੇਤ ॥
गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥
चाहे मैं गणना करता रहूँ किन्तु मैं गिन नहीं सकता कि कितने प्राणी संसार त्याग कर चले गए हैं ?

ਵੋ ਪੇਖਉ ਸੋ ਬਿਨਸਤਉ ਕਾ ਸਿਉ ਕਰੀਐ ਸੰਗੁ ॥
जो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥
जिस किसी को भी मैं देखता हूँ, वह नाश होने वाला है। इसलिए मैं किससे संगति करूं ?

ਵਾਣਹੁ ਇਆ ਬਿਧਿ ਸਹੀ ਚਿਤ ਝੂਠਉ ਮਾਇਆ ਰੰਗੁ ॥
जाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥
इस प्रकार अपने मन में उचित समझ ले कि दुनिया के पदार्थों की प्रीति झूठी है।

ਵਾਣਤ ਸੋਈ ਸੰਤੁ ਸੁਇ ਭ੍ਰਮ ਤੇ ਕੀਚਿਤ ਭਿੰਨ ॥
जाणत सोई संतु सुइ भ्रम ते कीचित भिंन ॥
इस तथ्य को वही जानता है और वही संत है, जिसको प्रभु ने दुविधा से खाली किया है।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਤਿਹ ਕਢਹੁ ਜਿਹ ਹੋਵਹੁ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसंन ॥
हे ईश्वर ! जिस मनुष्य पर तुम सुप्रसन्न होते हो, उसे तुम अन्धे कुएँ से बाहर निकाल लेते हो।

ਵਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ਸਮਰਥ ਤੇ ਕਾਰਨ ਕਰਨੈ ਜੋਗ ॥
जा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥
जिसका हाथ सामथ्र्य है, वह संसार के संयोग बनाने के योग्य है।

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਉਸਤਤਿ ਕਰਉ ਵਾਹੂ ਕੀਓ ਸੰਜੋਗ ॥੨੬॥
नानक तिह उसतति करउ जाहू कीओ संजोग ॥२६॥
हे नानक ! उस प्रभु की गुणस्तुति करते रहो, जो संयोग बनाने वाला है ॥२६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਟੂਟੇ ਬੰਧਨ ਜਨਮ ਮਰਨ ਸਾਧ ਸੇਵ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥
टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥
संतों की निष्काम सेवा करने से जन्म-मरण के चक्र मिट जाते हैं और सुख उपलब्ध हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਮਨਹੁ ਨ ਬੀਸਰੈ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗੋਬਿਦ ਰਾਇ ॥੧॥
नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥१॥
हे नानक ! गुणों का भण्डार गोविन्द-प्रभु उसके मन से कभी भी विस्मृत न हो ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਟਹਲ ਕਰਹੁ ਤਉ ਏਕ ਕੀ ਜਾ ਤੇ ਬ੍ਰਿਥਾ ਨ ਕੋਇ ॥
टहल करहु तउ एक की जा ते ब्रिथा न कोइ ॥
ट - उस एक ईश्वर की सेवा करते रहो, जिसके दरबार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹੀਐ ਬਸੈ ਜੋ ਚਾਹਹੁ ਸੋ ਹੋਇ ॥
मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥
यदि प्रभु तेरे मन, शरीर, मुख एवं हृदय में बस जाए तो जो कुछ भी तुम चाहते हो, वही मिल जाएगा।

ਟਹਲ ਮਹਲ ਤਾ ਕਉ ਮਿਲੈ ਜਾ ਕਉ ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध क्रिपाल ॥
जिन पर संत कृपा के घर में हैं, उन्हें भगवान की सेवा का मौका मिल जाता है।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਉ ਬਸੈ ਜਉ ਆਪਨ ਹੋਹਿ ਦਇਆਲ ॥
धू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥
संतों की संगति में मनुष्य तभी निवास करता है, जब ईश्वर स्वयं दयाल होता है।

ਟੋਹੇ ਟਾਹੇ ਬਹੁ ਭਵਨ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥
टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥
मैंने अनेकों लोक ढूंढ लिए हैं परन्तु ईश्वर के नाम बिना सुख-शांति नहीं।

ਟਲਹਿ ਜਾਮ ਕੇ ਦੂਤ ਤਿਹ ਜੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਹਿ ॥
टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥
जो व्यक्ति संतों की संगति में बसता है, यमदूत उससे दूर हट जाते हैं।

ਬਾਰਿ ਬਾਰਿ ਜਾਉ ਸੰਤ ਸਦਕੇ ॥
बारि बारि जाउ संत सदके ॥
हे नानक ! मैं बार-बार संतों पर कुर्बान जाता हूँ,

ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਬਿਨਾਸੇ ਕਦਿ ਕੇ ॥੨੭॥
नानक पाप बिनासे कदि के ॥२७॥
जिनके द्वारा मेरे कई जन्मों के किए अशुभ कर्मों के पाप नाश हो गए हैं ॥२७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਠਾਕ ਨ ਹੋਤੀ ਤਿਨਹੁ ਦਰਿ ਜਿਹ ਹੋਵਹੁ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
ठाक न होती तिनहु दरि जिह होवहु सुप्रसंन ॥
हे ईश्वर ! जिन पर तुम सुप्रसन्न हो जाते हो, उनके मार्ग में तेरे दर पर पहुँचते हुए कोई रुकावट नहीं आती।

ਜੋ ਜਨ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੇ ਕਰੇ ਨਾਨਕ ਤੇ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ॥੧॥
जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥१॥
हे नानक ! वह पुरुष भाग्यशाली हैं, जिनको ईश्वर ने अपना बना लिया है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਠਠਾ ਮਨੂਆ ਠਾਹਹਿ ਨਾਹੀ ॥
ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥
ठ - वह किसी के भी मन को दुःख नहीं पहुँचाते

ਜੋ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਏਕਹਿ ਲਪਟਾਹੀ ॥
जो सगल तिआगि एकहि लपटाही ॥
जो सब कुछ त्याग कर एक ईश्वर से जुड़े हुए हैं।

ਠਹਕਿ ਠਹਕਿ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਮੂਏ ॥
ठहकि ठहकि माइआ संगि मूए ॥
जो लोग सांसारिक माया से उलझे हुए हैं, वह मृत हैं

ਉਆ ਕੈ ਕੁਸਲ ਨ ਕਤਹੂ ਹੂਏ ॥
उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥
और उनको कहीं भी प्रसन्नता नहीं मिलती।

ਠਾਂਢਿ ਪਰੀ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਬਸਿਆ ॥
ठांढि परी संतह संगि बसिआ ॥
जो व्यक्ति संतों की संगति में वास करता है, उसका मन शीतल हो जाता है

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤਹਾ ਜੀਅ ਰਸਿਆ ॥
अम्रित नामु तहा जीअ रसिआ ॥
और नाम अमृत उसके हृदय को बड़ा मीठा लगता है।

ਠਾਕੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜੋ ਜਨੁ ਭਾਇਆ ॥
ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति अपने ईश्वर को भला लगता है,

ਨਾਨਕ ਉਆ ਕਾ ਮਨੁ ਸੀਤਲਾਇਆ ॥੨੮॥
नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥२८॥
उसका मन शीतल हो जाता है ॥ २८ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਡੰਡਉਤਿ ਬੰਦਨ ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਸਰਬ ਕਲਾ ਸਮਰਥ ॥
डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥
हे नानक ! (इस तरह वन्दना कर-) हे सर्वकला सम्पूर्ण प्रभु ! मैं अनेक बार तुझे प्रणाम करता हूँ।

ਡੋਲਨ ਤੇ ਰਾਖਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਕਰਿ ਹਥ ॥੧॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥१॥
मुझे अपना हाथ देकर माया के मोह में विचलित होने से बचा ले॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਡਡਾ ਡੇਰਾ ਇਹੁ ਨਹੀ ਜਹ ਡੇਰਾ ਤਹ ਜਾਨੁ ॥
डडा डेरा इहु नही जह डेरा तह जानु ॥
ड - (हे जीव !) यह जगत् तेरा निवास नहीं, उस स्थान को पहचान, जहाँ तेरा वास्तविक घर है।

ਉਆ ਡੇਰਾ ਕਾ ਸੰਜਮੋ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੁ ॥
उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥
गुरु के शब्द द्वारा तू उस निवास में पहुँचने की विधि पहचान ले

ਇਆ ਡੇਰਾ ਕਉ ਸ੍ਰਮੁ ਕਰਿ ਘਾਲੈ ॥
इआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥
संसार के इस निवास हेतु मनुष्य कड़ा परिश्रम करके साधना करता है,

ਜਾ ਕਾ ਤਸੂ ਨਹੀ ਸੰਗਿ ਚਾਲੈ ॥
जा का तसू नही संगि चालै ॥
किन्तु मृत्यु आने पर इसका थोड़ा-सा भी इसके साथ नहीं जाता।

ਉਆ ਡੇਰਾ ਕੀ ਸੋ ਮਿਤਿ ਜਾਨੈ ॥
उआ डेरा की सो मिति जानै ॥
उस निवास-स्थान की मर्यादा वही जानता है,

ਜਾ ਕਉ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨੈ ॥
जा कउ द्रिसटि पूरन भगवानै ॥
जिस पर पूर्ण भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है।

ਡੇਰਾ ਨਿਹਚਲੁ ਸਚੁ ਸਾਧਸੰਗ ਪਾਇਆ ॥
डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥
यह निवास स्थान निश्चित एवं सच्चा है और यह सत्संग द्वारा ही प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਨਹ ਡੋਲਾਇਆ ॥੨੯॥
नानक ते जन नह डोलाइआ ॥२९॥
हे नानक ! वह सेवक जो इस शाश्वत निवास को संतों की संगति द्वारा प्राप्त कर लेते हैं, उनका हृदय विचलित नहीं होता। ॥२९ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਢਾਹਨ ਲਾਗੇ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕਿਨਹਿ ਨ ਘਾਲਿਓ ਬੰਧ ॥
ढाहन लागे धरम राइ किनहि न घालिओ बंध ॥
जब यमराज ध्वस्त करने लगता है तो कोई भी उसके मार्ग में रुकावट नहीं डाल सकता।

ਨਾਨਕ ਉਬਰੇ ਜਪਿ ਹਰੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਨਬੰਧ ॥੧॥
नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति सत्संग में संबंध जोड़ कर ईश्वर की आराधना करते हैं, उनका भवसागर से उद्धार हो जाता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਢਢਾ ਢੂਢਤ ਕਹ ਫਿਰਹੁ ਢੂਢਨੁ ਇਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥
ढ - तुम परमात्मा को ढूंढने के लिए कहाँ फिर रहे हो ? खोज-तलाश तो इस हृदय में ही करनी है।

ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਬਸੈ ਬਨੁ ਬਨੁ ਕਹਾ ਫਿਰਾਹਿ ॥
संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥
ईश्वर तेरे साथ ही रहता है, तुम वन-वन में क्यों भटकते फिरते हो ?

ਢੇਰੀ ਢਾਹਹੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਹੰਬੁਧਿ ਬਿਕਰਾਲ ॥
ढेरी ढाहहु साधसंगि अह्मबुधि बिकराल ॥
सत्संग में अपनी अहंबुद्धि के विकराल ढेर को गिरा दो।

ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਸਹਜੇ ਬਸਹੁ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥
सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥
ऐसे तुझे सुख प्राप्त होगा और सुख-शांति में वास करोगे तथा प्रभु के दर्शन करके प्रसन्न होगे।

ਢੇਰੀ ਜਾਮੈ ਜਮਿ ਮਰੈ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਦੁਖ ਪਾਇ ॥
ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइ ॥
जिसके भीतर अहंकार का यह अम्बार विद्यमान है, वह जन्मता-मरता है और गर्भयोनि का कष्ट सहन करता है।

ਮੋਹ ਮਗਨ ਲਪਟਤ ਰਹੈ ਹਉ ਹਉ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥
जो व्यक्ति दुनिया के मोह में मस्त हुआ है और अहंकार एवं अहंत्व में फँसा है, वह जगत् में जन्मता-मरता रहता है।

ਢਹਤ ਢਹਤ ਅਬ ਢਹਿ ਪਰੇ ਸਾਧ ਜਨਾ ਸਰਨਾਇ ॥
ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥
मैं अब शनेः शनेः साधु-संतों की शरण में आ गिरा हूँ।

ਦੁਖ ਕੇ ਫਾਹੇ ਕਾਟਿਆ ਨਾਨਕ ਲੀਏ ਸਮਾਇ ॥੩੦॥
दुख के फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥३०॥
हे नानक ! ईश्वर ने मेरे दुःख-क्लेश के फंदे काट दिए हैं और मुझे अपने में लीन कर लिया है॥ ३०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਜਹ ਸਾਧੂ ਗੋਬਿਦ ਭਜਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਨਾਨਕ ਨੀਤ ॥
जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥
हे नानक ! जहाँ संत-महांपुरुष प्रतिदिन गोबिन्द के नाम का भजन-कीर्त्तन करते रहते हैं।

ਨਾ ਹਉ ਨਾ ਤੂੰ ਨਹ ਛੁਟਹਿ ਨਿਕਟਿ ਨ ਜਾਈਅਹੁ ਦੂਤ ॥੧॥
णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥१॥
यमराज संबोधन करता है, ""हे दूतो ! उस निवास के निकट मत जाना, अन्यथा न ही मेरा और न ही तुम्हारा बचाव होगा"" ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਨਾਨਾ ਰਣ ਤੇ ਸੀਝੀਐ ਆਤਮ ਜੀਤੈ ਕੋਇ ॥
णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइ ॥
ण - यदि कोई व्यक्ति अपने मन को वश में कर लेता है, तो वह जीवन के युद्ध को विजय कर लेता है।

ਹਉਮੈ ਅਨ ਸਿਉ ਲਰਿ ਮਰੈ ਸੋ ਸੋਭਾ ਦੂ ਹੋਇ ॥
हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभा दू होइ ॥
जो व्यक्ति अपने अहंत्व एवं द्वैतवाद के साथ लड़ता मर जाता है, वही योद्धा है।

ਮਣੀ ਮਿਟਾਇ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਉਪਦੇਸ ॥
मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥
जो व्यक्ति अपने अहंत्व को त्याग देता है, वह गुरु के उपदेश द्वारा जीवित ही मोह-माया से मरा रहता है।

ਮਨੂਆ ਜੀਤੈ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਤਿਹ ਸੂਰਤਣ ਵੇਸ ॥
मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥
वह अपने मन को जीत कर ईश्वर से मिल जाता है और उसकी वीरता के लिए उसको सम्मान की वेशभूषा मिलती है।

ਨਾ ਕੋ ਜਾਣੈ ਆਪਣੋ ਏਕਹਿ ਟੇਕ ਅਧਾਰ ॥
णा को जाणै आपणो एकहि टेक अधार ॥
किसी पदार्थ को भी वह अपना नहीं समझता। एक ईश्वर ही उसका सहारा एवं आसरा होता है।

ਰੈਣਿ ਦਿਣਸੁ ਸਿਮਰਤ ਰਹੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰ ॥
रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥
वह रात-दिन अनन्त ईश्वर की आराधना करता रहता है।

ਰੇਣ ਸਗਲ ਇਆ ਮਨੁ ਕਰੈ ਏਊ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
रेण सगल इआ मनु करै एऊ करम कमाइ ॥
वह अपने इस मन को सबकी चरण धूलि बना देता है, ऐसे कर्म वह करता है।

ਹੁਕਮੈ ਬੂਝੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇ ॥੩੧॥
हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥३१॥
हे नानक ! ईश्वर के हुक्म को समझ कर वह सदैव सुख प्राप्त करता है और जो कुछ उसके भाग्य में लिखा होता है, उसको प्राप्त कर लेता है ॥३१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਰਪਉ ਤਿਸੈ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਵੈ ਮੋਹਿ ॥
तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥
मैं अपना तन, मन एवं धन उसको समर्पित करता हूँ, जो मुझे मेरे प्रभु से मिला दे।

ਨਾਨਕ ਭ੍ਰਮ ਭਉ ਕਾਟੀਐ ਚੂਕੈ ਜਮ ਕੀ ਜੋਹ ॥੧॥
नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥१॥
हे नानक ! चूंकि प्रभु-मिलाप से ही दुविधा एवं भय नाश हो जाते हैं और मृत्यु का आतंक भी दूर हो जाता है॥१ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤਤਾ ਤਾ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗੋਬਿਦ ਰਾਇ ॥
तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥
त - उस परमात्मा से प्रीति करो जो गुणों का भण्डार एवं सृष्टि का स्वामी है।

ਫਲ ਪਾਵਹਿ ਮਨ ਬਾਛਤੇ ਤਪਤਿ ਤੁਹਾਰੀ ਜਾਇ ॥
फल पावहि मन बाछते तपति तुहारी जाइ ॥
तुझे अपने मनोवांछित फल प्राप्त होंगे और तृष्णा मिट जाएगी।

ਤ੍ਰਾਸ ਮਿਟੈ ਜਮ ਪੰਥ ਕੀ ਜਾਸੁ ਬਸੈ ਮਨਿ ਨਾਉ ॥
त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥
जिसके हृदय में नाम निवास करता है, उसको मृत्यु का मार्ग एवं भय नहीं सताता।

ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ਮਤਿ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸ ਮਹਲੀ ਪਾਵਹਿ ਠਾਉ ॥
गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥
वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है और उसकी मति उज्जवल हो जाती है और उसको स्वामी के आत्मस्वरूप में निवास मिल जाता है।

ਤਾਹੂ ਸੰਗਿ ਨ ਧਨੁ ਚਲੈ ਗ੍ਰਿਹ ਜੋਬਨ ਨਹ ਰਾਜ ॥
ताहू संगि न धनु चलै ग्रिह जोबन नह राज ॥
अन्तकाल जीव के साथ न ही धन साथ जाता है, न ही घर, जवानी एवं राज्य साथ जाता है।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਸਿਮਰਤ ਰਹਹੁ ਇਹੈ ਤੁਹਾਰੈ ਕਾਜ ॥
संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥
हे जीव ! संतों की संगति में ईश्वर का भजन करता रह, केवल वही परलोक में तेरे काम आएगा।

ਤਾਤਾ ਕਛੂ ਨ ਹੋਈ ਹੈ ਜਉ ਤਾਪ ਨਿਵਾਰੈ ਆਪ ॥
ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥
जब ईश्वर स्वयं तेरे ताप का निवारण करेगा तो तुझे निश्चित ही कोई जलन नहीं होगी।

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਨਾਨਕ ਹਮਹਿ ਆਪਹਿ ਮਾਈ ਬਾਪ ॥੩੨॥
प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बाप ॥३२॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही हमारा पालन-पोषण करता है, वह हमारी माता एवं पिता है।॥ ३२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਥਾਕੇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਘਾਲਤੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਥ ॥
थाके बहु बिधि घालते त्रिपति न त्रिसना लाथ ॥
स्वेच्छाचारी जीव अनेक विधियों से परिश्रम करके हार-थक गए हैं। उनकी तृप्ति नहीं हुई और न ही उनकी तृष्णा मिटी है।

ਸੰਚਿ ਸੰਚਿ ਸਾਕਤ ਮੂਏ ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਨ ਸਾਥ ॥੧॥
संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥१॥
हे नानक ! शाक्त जीव धन संचित करते-करते मर जाते हैं परन्तु धन-दौलत उनके साथ नहीं जाता ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਥਥਾ ਥਿਰੁ ਕੋਊ ਨਹੀ ਕਾਇ ਪਸਾਰਹੁ ਪਾਵ ॥
थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥
थ- कोई भी जीव स्थिर नहीं, तुम क्यों अपने चरण फैलाते हो ?

ਅਨਿਕ ਬੰਚ ਬਲ ਛਲ ਕਰਹੁ ਮਾਇਆ ਏਕ ਉਪਾਵ ॥
अनिक बंच बल छल करहु माइआ एक उपाव ॥
केवल धन के प्रयास की खातिर तुम बहुत धोखे एवं छल-कपट करते हो।

ਥੈਲੀ ਸੰਚਹੁ ਸ੍ਰਮੁ ਕਰਹੁ ਥਾਕਿ ਪਰਹੁ ਗਾਵਾਰ ॥
थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥
हे मूर्ख ! तुम थैली भरने के लिए परिश्रम करते हो और फिर हार-थक कर गिर जाते हो।

ਮਨ ਕੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਈ ਅੰਤੇ ਅਉਸਰ ਬਾਰ ॥
मन कै कामि न आवई अंते अउसर बार ॥
यह अन्तिम अवसर तेरी आत्मा के किसी काम नहीं आना।

ਥਿਤਿ ਪਾਵਹੁ ਗੋਬਿਦ ਭਜਹੁ ਸੰਤਹ ਕੀ ਸਿਖ ਲੇਹੁ ॥
थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥
इसलिए गोविन्द का भजन करने एवं संतों के उपदेश का अनुसरण करने से तुझे स्थिरता प्राप्त हो जाएगी।

ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਹੁ ਸਦ ਏਕ ਸਿਉ ਇਆ ਸਾਚਾ ਅਸਨੇਹੁ ॥
प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥
सदैव एक ईश्वर से प्रेम करो। यही (तेरा) सच्चा प्रेम है।

ਕਾਰਨ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨੋ ਸਭ ਬਿਧਿ ਏਕੈ ਹਾਥ ॥
कारन करन करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥
ईश्वर सब कुछ करने वाला एवं जीव से कराने वाला है। समस्त युक्तियों केवल उसके वश में है।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਹਿ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਅਨਾਥ ॥੩੩॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत अनाथ ॥३३॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जीव तो असहाय एवं विवश हैं, चूंकि जीवों को तुम जहां-जहां भी लगा देते हो, वे उस तरफ ही लग जाते हैं ॥३३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਦਾਸਹ ਏਕੁ ਨਿਹਾਰਿਆ ਸਭੁ ਕਛੁ ਦੇਵਨਹਾਰ ॥
दासह एकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥
उसके दासों ने एक ईश्वर को देखा है, जो सब कुछ देने वाला है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਤ ਰਹਹਿ ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਅਧਾਰ ॥੧॥
सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥१॥
हे नानक ! वह श्वाश-श्वाश से ईश्वर का चिन्तन करते जाते हैं और उसके दर्शन ही उनके जीवन का आघार है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਦਦਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਸਭ ਕਉ ਦੇਵਨਹਾਰ ॥
ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥
द- एक परमात्मा ही वह दाता है जो समस्त जीवों को भोजन-पदार्थ देने वाला है।

ਦੇਂਦੇ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਅਗਨਤ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥
देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥
जीवों को देते वक्त उसकी देन में कोई कमी नहीं आती, क्योंकि उसके अक्षय भण्डार भरपूर हैं।

ਦੈਨਹਾਰੁ ਸਦ ਜੀਵਨਹਾਰਾ ॥
दैनहारु सद जीवनहारा ॥
वह देने वाला सदैव जीवित है।

ਮਨ ਮੂਰਖ ਕਿਉ ਤਾਹਿ ਬਿਸਾਰਾ ॥
मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥
हे मूर्ख मन ! तू उस देने वाले दाता को क्यों भूल रहा है ?

ਦੋਸੁ ਨਹੀ ਕਾਹੂ ਕਉ ਮੀਤਾ ॥
दोसु नही काहू कउ मीता ॥
हे मेरे मित्र ! इसमें किसी का दोष नहीं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਬੰਧੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਤਾ ॥
माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥
क्योंकि माया-मोह के बन्धन ईश्वर ने ही रचे हैं।

ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਹਿ ਜਾ ਕੇ ਆਪੇ ॥
दरद निवारहि जा के आपे ॥
हे नानक ! जिस गुरमुख का वह स्वयं दुःख दूर कर देता है,

ਨਾਨਕ ਤੇ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧ੍ਰਾਪੇ ॥੩੪॥
नानक ते ते गुरमुखि ध्रापे ॥३४॥
वह कृतार्थ हो जाता है।॥ ३४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਧਰ ਜੀਅਰੇ ਇਕ ਟੇਕ ਤੂ ਲਾਹਿ ਬਿਡਾਨੀ ਆਸ ॥
धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥
हे मेरे मन ! तू एक ईश्वर का सहारा ले तथा किसी दूसरे की आशा को त्याग दे।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਕਾਰਜੁ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੧॥
नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥१॥
हे नानक ! भगवान के नाम का ध्यान करने से समस्त कार्य संवर जाते हैं॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਧਧਾ ਧਾਵਤ ਤਉ ਮਿਟੈ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹੋਇ ਬਾਸੁ ॥
धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥
ध- यदि संतों-महापुरुषों की संगति में निवास हो जाए तो मन की भटकना मिट जाती है।

ਧੁਰ ਤੇ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਆਪਿ ਤਉ ਹੋਇ ਮਨਹਿ ਪਰਗਾਸੁ ॥
धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥
यदि ईश्वर स्वयं आदि से ही कृपा करे तो मन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।

ਧਨੁ ਸਾਚਾ ਤੇਊ ਸਚ ਸਾਹਾ ॥
धनु साचा तेऊ सच साहा ॥
जिनके पास सच्चा नाम-धन है, वही सच्चे साहूकार हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਪੂੰਜੀ ਨਾਮ ਬਿਸਾਹਾ ॥
हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥
हरि-परमेश्वर का नाम उनकी जीवन-पूंजी होती है और वह उसके नाम का व्यापार करते रहते हैं।

ਧੀਰਜੁ ਜਸੁ ਸੋਭਾ ਤਿਹ ਬਨਿਆ ॥
धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥
वही आदमी धैर्यवान होता है और उसे बड़ा यश एवं शोभा मिलती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸ੍ਰਵਨ ਜਿਹ ਸੁਨਿਆ ॥
हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥
जो आदमी अपने कानों से हरि-परमेश्वर का नाम सुनता रहता है,

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਹ ਘਟਿ ਰਹੇ ਸਮਾਈ ॥
गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥
हे नानक ! जिस गुरमुख के अन्तर्मन में भगवान का नाम निवास कर लेता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਜਨ ਮਿਲੀ ਵਡਾਈ ॥੩੫॥
नानक तिह जन मिली वडाई ॥३५॥
उसे ही दुनिया में ख्याति प्राप्त होती है॥ ३५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਾਮੁ ਜਪੁ ਜਪਿਆ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥
नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥
हे नानक ! जो व्यक्ति भीतर एवं बाहर एकाग्रचित होकर ईश्वर के नाम का जाप करता रहता है,

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਉਪਦੇਸਿਆ ਨਰਕੁ ਨਾਹਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ॥੧॥
गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि ॥१॥
पूर्ण गुरु से उपदेश प्राप्त करता है और संतों की सभा में शामिल होता है, ऐसा व्यक्ति कभी नरक में नहीं जाता ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨੰਨਾ ਨਰਕਿ ਪਰਹਿ ਤੇ ਨਾਹੀ ॥
नंना नरकि परहि ते नाही ॥
न- वह नरक में नहीं पड़ता,

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਬਸਾਹੀ ॥
जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥
जिस व्यक्ति के मन एवं तन में भगवान का नाम निवास करता है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਜਪਤੇ ॥
नामु निधानु गुरमुखि जो जपते ॥
जो गुरमुख नाम-भण्डार का भजन करते रहते हैं,

ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਨਾ ਓਇ ਖਪਤੇ ॥
बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥
वे माया के विष में नष्ट नहीं होते।

ਨੰਨਾਕਾਰੁ ਨ ਹੋਤਾ ਤਾ ਕਹੁ ॥
नंनाकारु न होता ता कहु ॥
उनके जीवन-मार्ग में कोई बाधा नहीं आती,

ਨਾਮੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਜਾ ਕਹੁ ॥
नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥
जिन जिज्ञासुओं को गुरु ने नाम-मंत्र दिया है।

Pages 258

ਨਿਧਿ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪੂਰੇ ॥
निधि निधान हरि अम्रित पूरे ॥
हे नानक ! जिनके अन्तर्मन सर्वगुणों के भण्डार हरि-नाम के अमृत से भरे रहते हैं,

ਤਹ ਬਾਜੇ ਨਾਨਕ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੩੬॥
तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥३६॥
उनके भीतर एक ऐसा आनन्द कायम रहता है, जिस तरह लगातार अनहद ध्वनि के सर्व प्रकार के संगीत मिले-जुले स्वर में गूंज रहे हों। ३६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਪਤਿ ਰਾਖੀ ਗੁਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਜਿ ਪਰਪੰਚ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ॥
पति राखी गुरि पारब्रहम तजि परपंच मोह बिकार ॥
जिस पुरुष का मान-सम्मान गुरु पारब्रह्म ने बचाया है, ऐसे पुरुष ने छल, मोह एवं पाप सब कुछ छोड़ दिए हैं।

ਨਾਨਕ ਸੋਊ ਆਰਾਧੀਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥੧॥
नानक सोऊ आराधीऐ अंतु न पारावारु ॥१॥
हे नानक ! हमें उस पारब्रह्म-प्रभु की आराधना करनी चाहिए, जिसकी महिमा का अंत नहीं मिल सकता तथा जिसके अस्तित्व का ओर-छोर भी प्राप्त नहीं हो सकता ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪਪਾ ਪਰਮਿਤਿ ਪਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
पपा परमिति पारु न पाइआ ॥
प- परमेश्वर अपरंपार है और उसका अंत नहीं पाया जा सकता।

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਅਗਮ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
पतित पावन अगम हरि राइआ ॥
हरि-परमेश्वर अगम्य एवं पतितपावन है।

ਹੋਤ ਪੁਨੀਤ ਕੋਟ ਅਪਰਾਧੂ ॥
होत पुनीत कोट अपराधू ॥
ऐसे करोड़ों ही अपराधी पवित्र हो जाते हैं,

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਜਪਹਿ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ॥
अम्रित नामु जपहि मिलि साधू ॥
जो संतों की संगति में मिलकर भगवान के अमृत नाम का जाप करते रहते हैं।

ਪਰਪਚ ਧ੍ਰੋਹ ਮੋਹ ਮਿਟਨਾਈ ॥
परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥
उसका छल-कपट, धोखा एवं सांसारिक मोह मिट जाते हैं,

ਜਾ ਕਉ ਰਾਖਹੁ ਆਪਿ ਗੁਸਾਈ ॥
जा कउ राखहु आपि गुसाई ॥
हे गुसाई ! जिसकी तुम स्वयं रक्षा करते हो।

ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਛਤ੍ਰ ਸਿਰ ਸੋਊ ॥
पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥
हे नानक ! ईश्वर सर्वोपरि बादशाह है, वहीं वास्तविक छत्रधारी है,

ਨਾਨਕ ਦੂਸਰ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਊ ॥੩੭॥
नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥३७॥
कोई दूसरा उसकी समानता करने योग्य नहीं है॥ ३७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਫਾਹੇ ਕਾਟੇ ਮਿਟੇ ਗਵਨ ਫਤਿਹ ਭਈ ਮਨਿ ਜੀਤ ॥
फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥
हे नानक ! यदि मन को जीत लिया जाए तो वासनाओं पर विजय हासिल हो जाती है और मोह-माया के बन्धन मिट जाते हैं एवं मोहिनी के पीछे की शंका नष्ट हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਥਿਤ ਪਾਈ ਫਿਰਨ ਮਿਟੇ ਨਿਤ ਨੀਤ ॥੧॥
नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥१॥
जिस व्यक्ति को गुरु द्वारा मन की स्थिरता प्राप्त हो जाती है, उस व्यक्ति के जन्म-मरण के चक्र हमेशा के लिए मिट जाते हैं॥ १ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਫਫਾ ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਤੂ ਆਇਆ ॥
फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥
फ - (हे जीव !) तू कितनी ही योनियों में भटकता आया है

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥
दुलभ देह कलिजुग महि पाइआ ॥
तथा इस कलियुग में तुझे दुर्लभ मनुष्य देह प्राप्त हुई है।

ਫਿਰਿ ਇਆ ਅਉਸਰੁ ਚਰੈ ਨ ਹਾਥਾ ॥
फिरि इआ अउसरु चरै न हाथा ॥
यदि तू मोह-माया के बन्धनों में फँसा रहा तो ऐसा सुनहरी अवसर दुबारा नहीं मिलेगा।

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਤਉ ਕਟੀਅਹਿ ਫਾਸਾ ॥
नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥
ईश्वर के नाम की स्तुति करता रह, मृत्यु का बन्धन कट जाएगा।

ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥
फिरि फिरि आवन जानु न होई ॥
तेरा बार-बार जन्म-मरण का चक्र मिट जाएगा

ਏਕਹਿ ਏਕ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਸੋਈ ॥
एकहि एक जपहु जपु सोई ॥
केवल एक ईश्वर के नाम का चिन्तन कर।

ਕਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭ ਕਰਨੈਹਾਰੇ ॥
करहु क्रिपा प्रभ करनैहारे ॥
हे सृष्टिकर्ता प्रभु ! अपनी कृपा धारण करो

ਮੇਲਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਬੇਚਾਰੇ ॥੩੮॥
मेलि लेहु नानक बेचारे ॥३८॥
नानक का कथन है कि बेचारे जीव को अपने साथ मिला लो ॥३८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਬਿਨਉ ਸੁਨਹੁ ਤੁਮ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਗੁਪਾਲ ॥
बिनउ सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइआल गुपाल ॥
हे दीनदयाल ! हे गोपाल ! हे पारब्रह्म ! तुम मेरी एक विनती सुनो।

ਸੁਖ ਸੰਪੈ ਬਹੁ ਭੋਗ ਰਸ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਰਵਾਲ ॥੧॥
सुख स्मपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥१॥
हे नानक ! संतजनों की चरण धूल ही विभिन्न सुखों, धन-पदार्थों एवं अनेक रसों के भोग के समान है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਬਾ ਬ੍ਰਹਮੁ ਜਾਨਤ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ॥
बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥
ब - जो ब्रह्म को समझता है, वही वास्तविक ब्राह्मण है।

ਬੈਸਨੋ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਚ ਧਰਮਾ ॥
बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥
वैष्णव वही है जो गुरु का सान्निध्य लेकर आत्मिक शुद्धता के धर्म का पालन करता है।

ਬੀਰਾ ਆਪਨ ਬੁਰਾ ਮਿਟਾਵੈ ॥
बीरा आपन बुरा मिटावै ॥
जो व्यक्ति अपनी बुराई का नाश कर देता है, वही शूरवीर होता है

ਤਾਹੂ ਬੁਰਾ ਨਿਕਟਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥
ताहू बुरा निकटि नही आवै ॥
तथा फिर बुराई उसके निकट नहीं आती।

ਬਾਧਿਓ ਆਪਨ ਹਉ ਹਉ ਬੰਧਾ ॥
बाधिओ आपन हउ हउ बंधा ॥
मनुष्य स्वयं ही अहंकार के बन्धनों में फँसा हुआ है।

ਦੋਸੁ ਦੇਤ ਆਗਹ ਕਉ ਅੰਧਾ ॥
दोसु देत आगह कउ अंधा ॥
परन्तु ज्ञानहीन मनुष्य दूसरों पर दोष लगाता है।

ਬਾਤ ਚੀਤ ਸਭ ਰਹੀ ਸਿਆਨਪ ॥
बात चीत सभ रही सिआनप ॥
बातचीत एवं चतुरता किसी योग्य नहीं।

ਜਿਸਹਿ ਜਨਾਵਹੁ ਸੋ ਜਾਨੈ ਨਾਨਕ ॥੩੯॥
जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥३९॥
हे नानक ! जिसको ईश्वर सूझ प्रदान करता है, वही उसको समझता है॥ ३६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਭੈ ਭੰਜਨ ਅਘ ਦੂਖ ਨਾਸ ਮਨਹਿ ਅਰਾਧਿ ਹਰੇ ॥
भै भंजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥
"(हे जीव !) अपने मन में उस भगवान की आराधना कर, जो भय को नष्ट करने वाला और सर्व प्रकार के पाप एवं दु:खों का नाश करने वाला है।

ਸੰਤਸੰਗ ਜਿਹ ਰਿਦ ਬਸਿਓ ਨਾਨਕ ਤੇ ਨ ਭ੍ਰਮੇ ॥੧॥
संतसंग जिह रिद बसिओ नानक ते न भ्रमे ॥१॥
हे नानक ! संतों की संगति में रहकर जिन लोगों के हृदय में प्रभु आ बसता है, उनके हर प्रकार के भ्रम समाप्त हो जाते है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਭਭਾ ਭਰਮੁ ਮਿਟਾਵਹੁ ਅਪਨਾ ॥
भभा भरमु मिटावहु अपना ॥
भ-अपना भ्रम मिटा दो,

ਇਆ ਸੰਸਾਰੁ ਸਗਲ ਹੈ ਸੁਪਨਾ ॥
इआ संसारु सगल है सुपना ॥
क्योंकि यह समूचे संसार का साथ स्वप्न के तुल्य है।

ਭਰਮੇ ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ॥
भरमे सुरि नर देवी देवा ॥
स्वर्ग निवासी पुरुष और देवी-देवते भी भ्रम में पड़ते रहे हैं।

ਭਰਮੇ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਬ੍ਰਹਮੇਵਾ ॥
भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥
सिद्ध, साधक एवं ब्रह्मा भी भ्रम में भटकाए हुए हैं।

ਭਰਮਿ ਭਰਮਿ ਮਾਨੁਖ ਡਹਕਾਏ ॥
भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥
भटक-भटक कर मनुष्य नष्ट हो गए हैं।

ਦੁਤਰ ਮਹਾ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਏ ॥
दुतर महा बिखम इह माए ॥
यह माया का सागर बड़ा विषम एवं तैरने के लिए कठिन है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਮੋਹ ਮਿਟਾਇਆ ॥
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ॥
हे नानक ! जिसने गुरु की शरण में अपना भ्रम, भय एवं सांसारिक मोह को नष्ट कर दिया है,

ਨਾਨਕ ਤੇਹ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥੪੦॥
नानक तेह परम सुख पाइआ ॥४०॥
वह परम सुख प्राप्त कर लेता है ॥४०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਮਾਇਆ ਡੋਲੈ ਬਹੁ ਬਿਧੀ ਮਨੁ ਲਪਟਿਓ ਤਿਹ ਸੰਗ ॥
माइआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिओ तिह संग ॥
इन्सान का चंचल मन बहुत प्रकार से माया हेतु डगमगाता रहता है और माया से ही लिपटता रहता है।

ਮਾਗਨ ਤੇ ਜਿਹ ਤੁਮ ਰਖਹੁ ਸੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮਹਿ ਰੰਗ ॥੧॥
मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥१॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! जिसे तुम माया माँगने से रोकते हो, उसका नाम से प्रेम हो जाता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਮਮਾ ਮਾਗਨਹਾਰ ਇਆਨਾ ॥
ममा मागनहार इआना ॥
म - माँगने वाला जीव मूर्ख है।

ਦੇਨਹਾਰ ਦੇ ਰਹਿਓ ਸੁਜਾਨਾ ॥
देनहार दे रहिओ सुजाना ॥
देने वाला दाता देन देता जा रहा है।

ਜੋ ਦੀਨੋ ਸੋ ਏਕਹਿ ਬਾਰ ॥
जो दीनो सो एकहि बार ॥
जो कुछ भी प्रभु ने देना होता है, वह उसको एक बार ही दे देता है।

ਮਨ ਮੂਰਖ ਕਹ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰ ॥
मन मूरख कह करहि पुकार ॥
हे मूर्ख मन ! तुम क्यों ऊँची-ऊँची पुकार कर रहे हो ?

ਜਉ ਮਾਗਹਿ ਤਉ ਮਾਗਹਿ ਬੀਆ ॥
जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥
जब कभी भी तुम माँगते हो, तब तुम सांसारिक पदार्थ ही माँगते हो,

ਜਾ ਤੇ ਕੁਸਲ ਨ ਕਾਹੂ ਥੀਆ ॥
जा ते कुसल न काहू थीआ ॥
जिन से किसी को भी प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई।

ਮਾਗਨਿ ਮਾਗ ਤ ਏਕਹਿ ਮਾਗ ॥
मागनि माग त एकहि माग ॥
नानक का कथन है कि हे मूर्ख मन ! यदि तूने दात ही माँगनी है तो एक ईश्वर के नाम की माँग,

ਨਾਨਕ ਜਾ ਤੇ ਪਰਹਿ ਪਰਾਗ ॥੪੧॥
नानक जा ते परहि पराग ॥४१॥
जिससे तेरा संसार सागर से कल्याण हो जाएगा ॥ ४१ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਪਰਧਾਨ ਤੇ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਮਨ ਮੰਤ ॥
मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत ॥
जिनके मन में पूर्ण गुरु का मंत्र विद्यमान हो जाता है, उनकी बुद्धि पूर्ण हो जाती है और वे विख्यात हो जाते हैं।

ਜਿਹ ਜਾਨਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੁਨਾ ਨਾਨਕ ਤੇ ਭਗਵੰਤ ॥੧॥
जिह जानिओ प्रभु आपुना नानक ते भगवंत ॥१॥
हे नानक ! वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं, जो अपने प्रभु को जान लेते हैं।॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਮਮਾ ਜਾਹੂ ਮਰਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥
ममा जाहू मरमु पछाना ॥
म-जिसने ईश्वर का भेद पा लिया है,

ਭੇਟਤ ਸਾਧਸੰਗ ਪਤੀਆਨਾ ॥
भेटत साधसंग पतीआना ॥
वह संतों की संगति में मिलकर तृप्त हो जाता है।

ਦੁਖ ਸੁਖ ਉਆ ਕੈ ਸਮਤ ਬੀਚਾਰਾ ॥
दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥
ऐसा व्यक्ति दुःख-सुख को एक समान समझता है।

ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਰਹਤ ਅਉਤਾਰਾ ॥
नरक सुरग रहत अउतारा ॥
वह नरक-स्वर्ग में फँसने से बच जाता है।

ਤਾਹੂ ਸੰਗ ਤਾਹੂ ਨਿਰਲੇਪਾ ॥
ताहू संग ताहू निरलेपा ॥
वह संसार के साथ रहता है, लेकिन फिर भी इससे निर्लिप्त रहता है।

ਪੂਰਨ ਘਟ ਘਟ ਪੁਰਖ ਬਿਸੇਖਾ ॥
पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥
वह श्रेष्ठ प्रभु प्रत्येक हृदय में परिपूर्ण दिखता है।

ਉਆ ਰਸ ਮਹਿ ਉਆਹੂ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
उआ रस महि उआहू सुखु पाइआ ॥
हे नानक ! ईश्वर के उस प्रेम में ही उसे सुख प्राप्त होता है

ਨਾਨਕ ਲਿਪਤ ਨਹੀ ਤਿਹ ਮਾਇਆ ॥੪੨॥
नानक लिपत नही तिह माइआ ॥४२॥
और माया उसको प्रभावित नहीं कर सकती ॥ ४२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਯਾਰ ਮੀਤ ਸੁਨਿ ਸਾਜਨਹੁ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਛੂਟਨੁ ਨਾਹਿ ॥
यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥
हे मित्रो, हे सज्जनों एवं दोस्तो ! ध्यानपूर्वक सुनो। भगवान के सिमरन बिना किसी को भी मुक्ति प्राप्त नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਬੰਧਨ ਕਟੇ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਨੀ ਪਾਹਿ ॥੧॥
नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥१॥
हे नानक ! जो लोग गुरु के चरण-स्पर्श करते हैं, उनके (मोह-माया के) बन्धन मिट जाते हैं ॥ १॥

ਪਵੜੀ ॥
पवड़ी ॥
पउड़ी॥

ਯਯਾ ਜਤਨ ਕਰਤ ਬਹੁ ਬਿਧੀਆ ॥
यया जतन करत बहु बिधीआ ॥
य - इन्सान (मोक्ष की प्राप्ति हेतु) अनेक प्रकार के यत्न करता रहता है

ਏਕ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਹ ਲਉ ਸਿਧੀਆ ॥
एक नाम बिनु कह लउ सिधीआ ॥
किन्तु भगवान का नाम-सिमरन किए बिना उसे कामयाबी नहीं मिलती।

ਯਾਹੂ ਜਤਨ ਕਰਿ ਹੋਤ ਛੁਟਾਰਾ ॥
याहू जतन करि होत छुटारा ॥
जिन यत्नों द्वारा मोक्ष मिल सकता है,

ਉਆਹੂ ਜਤਨ ਸਾਧ ਸੰਗਾਰਾ ॥
उआहू जतन साध संगारा ॥
वह यत्न यही है कि संतों की संगति की जाए।

ਯਾ ਉਬਰਨ ਧਾਰੈ ਸਭੁ ਕੋਊ ॥
या उबरन धारै सभु कोऊ ॥
चाहे हरेक व्यक्ति मोक्ष का ख्याल धारण किए बैठा है

ਉਆਹਿ ਜਪੇ ਬਿਨੁ ਉਬਰ ਨ ਹੋਊ ॥
उआहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥
परन्तु उस ईश्वर को स्मरण किए बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

ਯਾਹੂ ਤਰਨ ਤਾਰਨ ਸਮਰਾਥਾ ॥
याहू तरन तारन समराथा ॥
इस भवसागर को पार करने के लिए ईश्वर ही जहाज के समान है।

ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਿਰਗੁਨ ਨਰਨਾਥਾ ॥
राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥
हे प्रभु ! गुणविहीन प्राणियों की रक्षा कीजिए।

ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਜਿਹ ਆਪਿ ਜਨਾਈ ॥
मन बच क्रम जिह आपि जनाई ॥
हे नानक ! जिन लोगों के मन, कर्म, वचन में ईश्वर स्वयं सूझ उत्पन्न कर देता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਮਤਿ ਪ੍ਰਗਟੀ ਆਈ ॥੪੩॥
नानक तिह मति प्रगटी आई ॥४३॥
उनकी मति उज्जवल हो जाती है ॥४३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਰੋਸੁ ਨ ਕਾਹੂ ਸੰਗ ਕਰਹੁ ਆਪਨ ਆਪੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥
रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥
(हे मानव !) किसी अन्य पर क्रोध मत करो और अपने आप पर विचार करो।

ਹੋਇ ਨਿਮਾਨਾ ਜਗਿ ਰਹਹੁ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਰਿ ॥੧॥
होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥१॥
हे नानक ! यदि तू दुनिया में नम्रता सहित रहे तो ईश्वर की कृपा से तेरा भवसागर से उद्धार हो जाएगा ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਰਾਰਾ ਰੇਨ ਹੋਤ ਸਭ ਜਾ ਕੀ ॥ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਛੁਟੈ ਤੇਰੀ ਬਾਕੀ ॥
रारा रेन होत सभ जा की ॥तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥
र - सारा विश्व जिस गुरु की चरण-धूलि होता है,तू भी उसके समक्ष अपना अभिमान त्याग दे और तेरे सुपुर्द जो (विकारों का) बकाया है, वह खत्म हो जाएगा।

ਰਣਿ ਦਰਗਹਿ ਤਉ ਸੀਝਹਿ ਭਾਈ ॥
रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥
हे भाई ! इस संसार-रूपी रणभूमि में एवं ईश्वर के दरबार में तभी तुझे कामयाबी मिल सकती है,

ਜਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥
यदि गुरु के सान्निध्य में रहकर ईश्वर के नाम में वृत्ति लगाएगा।

ਰਹਤ ਰਹਤ ਰਹਿ ਜਾਹਿ ਬਿਕਾਰਾ ॥
रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥
तेरे पाप धीरे-धीरे मिट जाएँगे

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਾ ॥
गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥
पूर्ण गुरु के अपार शब्द (के चिंतन) द्वारा ।

ਰਾਤੇ ਰੰਗ ਨਾਮ ਰਸ ਮਾਤੇ ॥
राते रंग नाम रस माते ॥
हे नानक ! वे नाम के प्रेम में मग्न रहते हैं और ईश्वर नाम के रस में मस्त हो जाते हैं ।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕੀਨੀ ਦਾਤੇ ॥੪੪॥
नानक हरि गुर कीनी दाते ॥४४॥
जिन लोगों को गुरु ने ईश्वर-नाम की देन प्रदान की है ॥४४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ਇਆ ਦੇਹੀ ਮਹਿ ਬਾਸ ॥
लालच झूठ बिखै बिआधि इआ देही महि बास ॥
इस तन में लोभ, झूठ एवं पापों-विकारों के रोग वास करते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੀਆ ਨਾਨਕ ਸੂਖਿ ਨਿਵਾਸ ॥੧॥
हरि हरि अम्रितु गुरमुखि पीआ नानक सूखि निवास ॥१॥
हे नानक ! जिस गुरमुख ने हरि-परमेश्वर के नाम का अमृत पान किया है, वह सुखपूर्वक निवास करता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਲਲਾ ਲਾਵਉ ਅਉਖਧ ਜਾਹੂ ॥
लला लावउ अउखध जाहू ॥
ल - हे ईश्वर ! जिसे भी तुम अपने नाम की औषधि लगाते हो,

ਦੂਖ ਦਰਦ ਤਿਹ ਮਿਟਹਿ ਖਿਨਾਹੂ ॥
दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥
एक क्षण में ही उसके दुःख-दर्द समाप्त हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਅਉਖਧੁ ਜਿਹ ਰਿਦੈ ਹਿਤਾਵੈ ॥
नाम अउखधु जिह रिदै हितावै ॥
जो व्यक्ति अपने हृदय में ईश्वर के नाम की औषधि से प्रेम करता है,

ਤਾਹਿ ਰੋਗੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥
ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥
स्वप्न में भी रोग उसको नहीं सताते।

ਹਰਿ ਅਉਖਧੁ ਸਭ ਘਟ ਹੈ ਭਾਈ ॥
हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥
हे भाई ! ईश्वर के नाम की औषधि प्रत्येक हृदय में विद्यमान है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਬਿਨੁ ਬਿਧਿ ਨ ਬਨਾਈ ॥
गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥
पूर्ण गुरु के अलावा किसी को भी इसे तैयार करने की विधि नहीं आती।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੰਜਮੁ ਕਰਿ ਦੀਆ ॥
गुरि पूरै संजमु करि दीआ ॥
हे नानक ! जब पूर्ण गुरु संयमं दशा कि औषधि देते हैं,

ਨਾਨਕ ਤਉ ਫਿਰਿ ਦੂਖ ਨ ਥੀਆ ॥੪੫॥
नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥४५॥
मनुष्य पुनः दुखी नही होता॥ ४५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਵਾਸੁਦੇਵ ਸਰਬਤ੍ਰ ਮੈ ਊਨ ਨ ਕਤਹੂ ਠਾਇ ॥
वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥
हे नानक ! वासुदेव तो प्रत्येक स्थान पर मौजूद है, ऐसा कोई भी स्थान नहीं है, जहाँ वह मौजूद न हो।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹੈ ਨਾਨਕ ਕਾਇ ਦੁਰਾਇ ॥੧॥
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥१॥
समस्त प्राणियों के भीतर एवं बाहर ईश्वर है, उससे क्या छिपाया जा सकता है।॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਵਵਾ ਵੈਰੁ ਨ ਕਰੀਐ ਕਾਹੂ ॥
ववा वैरु न करीऐ काहू ॥
व - किसी से भी वैर मत करो।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਹੂ ॥
घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ॥
"(क्योकि) परमात्मा कण-कण में प्रत्येक हृदय में विद्यमान है,

ਵਾਸੁਦੇਵ ਜਲ ਥਲ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ॥
वासुदेव जल थल महि रविआ ॥
वासुदेव सागर एवं धरती में व्यापक है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਵਿਰਲੈ ਹੀ ਗਵਿਆ ॥
गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही उसका यशोगान करता है।

ਵੈਰ ਵਿਰੋਧ ਮਿਟੇ ਤਿਹ ਮਨ ਤੇ ॥
वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥
उनके मन से वैर-विरोध मिट जाते हैं।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਸੁਨਤੇ ॥
हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥
जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहकर भगवान का भजन-कीर्तन सुनते हैं,

ਵਰਨ ਚਿਹਨ ਸਗਲਹ ਤੇ ਰਹਤਾ ॥
वरन चिहन सगलह ते रहता ॥
हे नानक ! वे जात-पात एवं रूपरेखा से मुक्त हो जाते हैं

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋ ਕਹਤਾ ॥੪੬॥
नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥४६॥
जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का चिन्तन करते हैं। ४६ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬਿਹਾਨੀਆ ਸਾਕਤ ਮੁਗਧ ਅਜਾਨ ॥
हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥
शाक्त, मूर्ख एवं नासमझ इन्सान अहंकार करता हुआ अपनी आयु बिता देता है।

ੜੜਕਿ ਮੁਏ ਜਿਉ ਤ੍ਰਿਖਾਵੰਤ ਨਾਨਕ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਨ ॥੧॥
ड़ड़कि मुए जिउ त्रिखावंत नानक किरति कमान ॥१॥
हे नानक ! दुःख में वह प्यासे पुरुष की भाँति मर जाता है और अपने किए कर्मों का फल भोगता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ੜਾੜਾ ੜਾੜਿ ਮਿਟੈ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ॥
ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥
ड़ - संतजनों की संगति करने से मनुष्य के हर प्रकार के झगड़े समाप्त हो जाते हैं।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਤਤੁ ਨਾਮ ਅਰਾਧੂ ॥
करम धरम ततु नाम अराधू ॥
भगवान के नाम की आराधना करनी ही कर्म एवं धर्म का मूल है।

ਰੂੜੋ ਜਿਹ ਬਸਿਓ ਰਿਦ ਮਾਹੀ ॥
रूड़ो जिह बसिओ रिद माही ॥
जिसके हृदय में सुन्दर प्रभु निवास करता है,

ਉਆ ਕੀ ੜਾੜਿ ਮਿਟਤ ਬਿਨਸਾਹੀ ॥
उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥
उसका झगड़ा नाश हो जाता है।

ੜਾੜਿ ਕਰਤ ਸਾਕਤ ਗਾਵਾਰਾ ॥
ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥
भगवान से टूटे हुए मूर्ख व्यक्ति के हृदय में अहंबुद्धि का पाप निवास करता है

ਜੇਹ ਹੀਐ ਅਹੰਬੁਧਿ ਬਿਕਾਰਾ ॥
जेह हीऐ अह्मबुधि बिकारा ॥
और वह विवाद उत्पन्न कर लेता है।

ਝਾੜਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਝਾੜਿ ਮਿਟਾਈ ॥
झ़ाड़ा गुरमुखि झ़ाड़ि मिटाई ॥
हे नानक ! गुरमुख का एक क्षण में ही झगड़ा मिट जाता है

ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਨਾਨਕ ਸਮਝਾਈ ॥੪੭॥
निमख माहि नानक समझाई ॥४७॥
और उसे सुख उपलब्ध हो जाता है ॥४७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਸਾਧੂ ਕੀ ਮਨ ਓਟ ਗਹੁ ਉਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਤਿਆਗੁ ॥
साधू की मन ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥
हे मेरे मन ! अपनी युक्ति एवं चतुराई को त्याग कर संतों की शरण ले।

ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਜਿਹ ਮਨਿ ਬਸੈ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥੧॥
गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥१॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय में गुरु-उपदेश का वास हो जाता है, उसके माथे पर भाग्य उदय हो जाता है ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਸਾ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਅਬ ਹਾਰੇ ॥
ससा सरनि परे अब हारे ॥
स-हे परमात्मा ! अब हारकर तेरी शरण में आए हैं।

ਸਾਸਤ੍ਰ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਪੁਕਾਰੇ ॥
सासत्र सिम्रिति बेद पूकारे ॥
विद्वान लोग शास्त्र, स्मृतियों का उच्च स्वर में अध्ययन करते हैं,

ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥
सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥
जांच-पड़ताल एवं निर्णय करने से अनुभव कर लिया है कि

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਜਨ ਨਹੀ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥
बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥
भगवान के भजन के अलावा मनुष्य को मुक्ति नहीं मिलती।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਹਮ ਭੂਲਨਹਾਰੇ ॥
सासि सासि हम भूलनहारे ॥
हम श्वास-श्वास से भूल करते रहते हैं।

ਤੁਮ ਸਮਰਥ ਅਗਨਤ ਅਪਾਰੇ ॥
तुम समरथ अगनत अपारे ॥
हे प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान, गणना-रहित एवं अनन्त हो।

ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖੁ ਦਇਆਲਾ ॥
सरनि परे की राखु दइआला ॥
हे दया के घर ! शरण में आए हुओं की रक्षा करो।

ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੪੮॥
नानक तुमरे बाल गुपाला ॥४८॥
नानक का कथन है कि हे गोपाल ! हम तो तेरी ही संतान हैं॥ ४८ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਖੁਦੀ ਮਿਟੀ ਤਬ ਸੁਖ ਭਏ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਅਰੋਗ ॥
खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
जब अहंकार मिट जाता है तो सुख-शांति उत्पन्न हो जाती है और मन एवं तन स्वस्थ हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਆਇਆ ਉਸਤਤਿ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥੧॥
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥१॥
हे नानक ! अहंकार के मिटने से ही प्राणी को प्रभु दिखाई देता है, जो सत्य ही महिमा-स्तुति का हकदार है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਖਖਾ ਖਰਾ ਸਰਾਹਉ ਤਾਹੂ ॥
खखा खरा सराहउ ताहू ॥
ख - उस परमात्मा की एकाग्रचित होकर प्रशंसा करते रहो,

ਜੋ ਖਿਨ ਮਹਿ ਊਨੇ ਸੁਭਰ ਭਰਾਹੂ ॥
जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥
जो एक क्षण में ही उन हृदयों को शुभ गुणों से भरपूर कर देता है, जो पहले गुणों से शून्य थे।

ਖਰਾ ਨਿਮਾਨਾ ਹੋਤ ਪਰਾਨੀ ॥
खरा निमाना होत परानी ॥
जब प्राणी भली प्रकार से विनीत हो जाता है

ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਪੈ ਪ੍ਰਭ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥
अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥
तो वह रात-दिन निर्मल प्रभु का भजन करता रहता है।

ਭਾਵੈ ਖਸਮ ਤ ਉਆ ਸੁਖੁ ਦੇਤਾ ॥
भावै खसम त उआ सुखु देता ॥
यदि ईश्वर को भला लगे तो वह सुख प्रदान करता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਐਸੋ ਆਗਨਤਾ ॥
पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥
पारब्रह्म प्रभु ऐसा अनन्त है।

ਅਸੰਖ ਖਤੇ ਖਿਨ ਬਖਸਨਹਾਰਾ ॥
असंख खते खिन बखसनहारा ॥
वह असंख्य पाप एक क्षण में क्षमा कर देता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਸਦਾ ਦਇਆਰਾ ॥੪੯॥
नानक साहिब सदा दइआरा ॥४९॥
हे नानक प्रभु सदैव ही दया का घर है ॥४९॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸਤਿ ਕਹਉ ਸੁਨਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਰਨਿ ਪਰਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥
हे मेरे मन ! मैं तुझे सत्य कहता हूँ, जरा ध्यानपूर्वक सुन। हरि-परमेश्वर की शरण में आओ।

ਉਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਨਾਨਕ ਲਏ ਸਮਾਇ ॥੧॥
उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लए समाइ ॥१॥
हे नानक ! अपनी समस्त युक्तियाँ एवं चतुरता त्याग दे, फिर ईश्वर तुझे अपने भीतर लीन कर लेगा ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਸਾ ਸਿਆਨਪ ਛਾਡੁ ਇਆਨਾ ॥
ससा सिआनप छाडु इआना ॥
स - हे मूर्ख प्राणी ! अपनी चतुरता को त्याग दे।

ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮਿ ਨ ਪ੍ਰਭੁ ਪਤੀਆਨਾ ॥
हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥
ईश्वर चतुराइयों एवं हुक्म (उपदेश) करने से प्रसन्न नहीं होता।

ਸਹਸ ਭਾਤਿ ਕਰਹਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥
सहस भाति करहि चतुराई ॥
चाहे तू हजारों प्रकार की चतुरता भी करे परन्तु

ਸੰਗਿ ਤੁਹਾਰੈ ਏਕ ਨ ਜਾਈ ॥
संगि तुहारै एक न जाई ॥
एक चतुराई भी तेरा साथ नहीं देगी।

ਸੋਊ ਸੋਊ ਜਪਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥
सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥
हे मेरे मन ! उस ईश्वर को ही दिन-रात स्मरण करता रह,

ਰੇ ਜੀਅ ਚਲੈ ਤੁਹਾਰੈ ਸਾਥੀ ॥
रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥
ईश्वर की याद ने ही तेरे साथ जाना है।

ਸਾਧ ਸੇਵਾ ਲਾਵੈ ਜਿਹ ਆਪੈ ॥
साध सेवा लावै जिह आपै ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति को ईश्वर स्वयं संतों की सेवा में लगाता है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਉ ਦੂਖੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥੫੦॥
नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥५०॥
उसे कोई भी मुसीबत प्रभावित नहीं करती ॥ ५० ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਖ ਤੇ ਬੋਲਨਾ ਮਨਿ ਵੂਠੈ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥
हरि-परमेश्वर के नाम को मुख से बोलने एवं इसको हृदय में बसाने से सुख प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਸਭ ਮਹਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनंतरि सोइ ॥१॥
हे नानक ! प्रभु सर्वव्यापक है और प्रत्येक स्थान के भीतर वह मौजूद है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹੇਰਉ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਗਲ ਕੈ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਭਗਵਾਨ ॥
हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥
देखो ! भगवान सबके हृदय में परिपूर्ण हो रहा है।

ਹੋਵਤ ਆਏ ਸਦ ਸਦੀਵ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ॥
होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥
ईश्वर सदैव अस्तित्व वाला चलायमान है, वह प्राणियों के दुःख नष्ट करने वाला है तथा यह सूझ गुरु का ज्ञान प्रदान करता है।

ਹਉ ਛੁਟਕੈ ਹੋਇ ਅਨੰਦੁ ਤਿਹ ਹਉ ਨਾਹੀ ਤਹ ਆਪਿ ॥

हउ छुटकै होइ अनंदु तिह हउ नाही तह आपि ॥

अपना अहंकार नष्ट करने से मनुष्य प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है।जहाँ अहंकार नहीं वहाँ ईश्वर स्वयं मौजूद है।

ਹਤੇ ਦੂਖ ਜਨਮਹ ਮਰਨ ਸੰਤਸੰਗ ਪਰਤਾਪ ॥

हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥

संतों की संगति के प्रताप द्वारा जन्म-मरण की पीड़ा निवृत्त हो जाती है।

ਹਿਤ ਕਰਿ ਨਾਮ ਦ੍ਰਿੜੈ ਦਇਆਲਾ ॥

हित करि नाम द्रिड़ै दइआला ॥

दया का घर ईश्वर उन पर कृपालु हो जाता है जो लोग

ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਹੋਤ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥

संतह संगि होत किरपाला ॥

संतों की संगति में रहकर प्रभु के नाम को प्रेमपूर्वक अपने हृदय में स्थित करते हैं,

ਓਰੈ ਕਛੁ ਨ ਕਿਨਹੂ ਕੀਆ ॥
औरै कछू न किनहू कीआ ॥
यहाँ (इहलोक में) किसी ने कुछ भी स्वयं सम्पूर्ण नहीं किया।

ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਛੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੂਆ ॥੫੧॥
नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥५१॥
हे नानक ! प्रभु ने ही यह सृष्टि रचना की हुई है॥ ५१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਲੇਖੈ ਕਤਹਿ ਨ ਛੂਟੀਐ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਭੂਲਨਹਾਰ ॥
लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥
हे नानक ! यदि हम जीवों के कर्मों का हिसाब किया जाए तो हमें मुक्ति नहीं मिल सकती, क्योंकि हम हर समय भूल ही करते रहते हैं।

ਬਖਸਨਹਾਰ ਬਖਸਿ ਲੈ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰ ॥੧॥
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥१॥
हे क्षमाशील ईश्वर ! तुम स्वयं ही हमारी भूल क्षमा करके हमें भवसागर से पार कर दो ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ ਗੁਨਹਗਾਰ ਬੇਗਾਨਾ ਅਲਪ ਮਤਿ ॥
लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥
मूर्ख एवं अल्पबुद्धि वाला जीव नमकहराम एवं गुनहगार है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸੁਖ ਦੀਏ ਤਾਹਿ ਨ ਜਾਨਤ ਤਤ ॥
जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥
जिस प्रभु ने उसे यह आत्मा, शरीर एवं सुख प्रदान किया है, उससे वह अपरिचित ही रहता है, उसे पहचानता ही नहीं।

ਲਾਹਾ ਮਾਇਆ ਕਾਰਨੇ ਦਹ ਦਿਸਿ ਢੂਢਨ ਜਾਇ ॥
लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाइ ॥
माया की खातिर वह दसों दिशाओं में खोज करने हेतु जाता है

ਦੇਵਨਹਾਰ ਦਾਤਾਰ ਪ੍ਰਭ ਨਿਮਖ ਨ ਮਨਹਿ ਬਸਾਇ ॥
देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥
लेकिन सब कुछ देने वाले दाता-प्रभु को वह क्षण भर के लिए भी अपने हृदय में नहीं बसाता।

ਲਾਲਚ ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮੋਹ ਇਆ ਸੰਪੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
लालच झूठ बिकार मोह इआ स्मपै मन माहि ॥
लालच, झूठ, विकार एवं सांसारिक मोह इनको वह अपने हृदय में एकत्र करता है।

ਲੰਪਟ ਚੋਰ ਨਿੰਦਕ ਮਹਾ ਤਿਨਹੂ ਸੰਗਿ ਬਿਹਾਇ ॥
ल्मपट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइ ॥
जो बड़े विषयी, तस्कर एवं निन्दक हैं, उनके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करता है।

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਖੋਟੇ ਸੰਗਿ ਖਰੇ ॥
तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥
हे परमात्मा ! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो तुम स्वयं ही बुरे लोगों को भले लोगों की संगति में रखकर क्षमा कर देते हो।

ਨਾਨਕ ਭਾਵੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਾਹਨ ਨੀਰਿ ਤਰੇ ॥੫੨॥
नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥५२॥
हे नानक ! यदि पारब्रह्म प्रभु को उपयुक्त लगे तो पत्थर भी जल में तैरने लग जाता है॥ ५२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਖਾਤ ਪੀਤ ਖੇਲਤ ਹਸਤ ਭਰਮੇ ਜਨਮ ਅਨੇਕ ॥
खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! हम प्राणी माया से संबंधित पदार्थ ही खाते-पीते एवं माया के विलासों में ही हंसते-खेलते कितनी ही योनियों में भटकते आ रहे हैं।

ਭਵਜਲ ਤੇ ਕਾਢਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ॥੧॥
भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥१॥
हे प्रभु ! हम जीवों को भवसागर से बाहर निकाल, क्योंकि हमें तो तेरा ही सहारा है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਖੇਲਤ ਖੇਲਤ ਆਇਓ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਦੁਖ ਪਾਇ
खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥
जीव माया के विलासों में मन लगाता, अनगिनत योनियों से गुजरता हुआ, दुःख सहन करता आता है।

ਖੇਦ ਮਿਟੇ ਸਾਧੂ ਮਿਲਤ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਸਮਾਇ ॥
खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥
संतों को मिलने एवं सतिगुरु के उपदेश में लीन होने से दुःख-क्लेश नष्ट हो जाते हैं।

ਖਿਮਾ ਗਹੀ ਸਚੁ ਸੰਚਿਓ ਖਾਇਓ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮ ॥
खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अम्रितु नाम ॥
सहनशीलता को धारण करने और सत्य को एकत्र करने से मनुष्य नाम रूपी अमृत का सेवन करता है।

ਖਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਠਾਕੁਰ ਭਈ ਅਨਦ ਸੂਖ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥
जब प्रभु अपनी कृपा करता है तो हमें आनन्द एवं प्रसन्नता में सुख का निवास मिल जाता है।

ਖੇਪ ਨਿਬਾਹੀ ਬਹੁਤੁ ਲਾਭ ਘਰਿ ਆਏ ਪਤਿਵੰਤ ॥
खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवंत ॥
जिस पुरुष ने (गुरु जी से विधि सीखकर गुणस्तुति का) व्यापार समस्त आयु निभाया, उसने लाभ प्राप्त किया है, और वह (दुविधा से बचकर) आदर-सत्कार पाता है।

ਖਰਾ ਦਿਲਾਸਾ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਆਇ ਮਿਲੇ ਭਗਵੰਤ ॥
खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवंत ॥
गुरु ने उसे भारी धैर्य प्रदान किया है और वह भगवान के चरणों में मिला है।

ਆਪਨ ਕੀਆ ਕਰਹਿ ਆਪਿ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਆਪਿ ॥
आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥
हे ईश्वर ! यह सारी लीला तूने ही रची है, अब भी तुम स्वयं ही सब कुछ कर रहे हो। लोक-परलोक में प्राणियों के रक्षक तुम स्वयं हो।

ਨਾਨਕ ਸੋਊ ਸਰਾਹੀਐ ਜਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਬਿਆਪਿ ॥੫੩॥
नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥५३॥
हे नानक ! केवल उस भगवान की महिमा-स्तुति करते रहो, जो प्रत्येक हृदय में समाया हुआ है॥ ५३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਆਏ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਾਗਤੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਦਇਆਲ ॥
आए प्रभ सरनागती किरपा निधि दइआल ॥
हे कृपा के भण्डार, हे दया के घर प्रभु ! हम जीव तुम्हारी ही शरण में आए हैं।

ਏਕ ਅਖਰੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਬਸਤ ਨਾਨਕ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲ ॥੧॥
एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥१॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में एक अनश्वर परमात्मा मौजूद है, वह कृतार्थ हो जाता है॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਅਖਰ ਮਹਿ ਤ੍ਰਿਭਵਨ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੇ ॥
अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे ॥
तीनों लोकों की रचना ईश्वर ने अपने हुक्म में की है।

ਅਖਰ ਕਰਿ ਕਰਿ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥
अखर करि करि बेद बीचारे ॥
ईश्वर के हुक्मानुसार वेद रचे गए और अध्ययन किए गए।

ਅਖਰ ਸਾਸਤ੍ਰ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪੁਰਾਨਾ ॥
अखर सासत्र सिम्रिति पुराना ॥
समस्त शास्त्र, स्मृतियां एवं पुराण भगवान के हुक्म का प्रकट रूप हैं।

ਅਖਰ ਨਾਦ ਕਥਨ ਵਖ੍ਯਾਨਾ ॥
अखर नाद कथन वख्याना ॥
इन पुराणों, शास्त्रों एवं स्मृतियों के भजन, कथन एवं व्याख्या भी भगवान के हुक्म का ही प्रकाश है।

ਅਖਰ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਭੈ ਭਰਮਾ ॥
अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥
संसार के भय एवं दुविधा से मुक्ति पाना भी भगवान के हुक्म का प्रकाश है।

ਅਖਰ ਕਰਮ ਕਿਰਤਿ ਸੁਚ ਧਰਮਾ ॥
अखर करम किरति सुच धरमा ॥
धार्मिक संस्कारों, सांसारिक कर्मो, पवित्रता एवं धर्म का वर्णन भी भगवान का हुक्म हैं।

ਦ੍ਰਿਸਟਿਮਾਨ ਅਖਰ ਹੈ ਜੇਤਾ ॥
द्रिसटिमान अखर है जेता ॥
हे नानक ! जितना भी यह दृष्टिगोचर जगत् है,

ਨਾਨਕ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰਲੇਪਾ ॥੫੪॥
नानक पारब्रहम निरलेपा ॥५४॥
इसमें अनश्वर प्रभु का हुक्म सक्रिय है, फिर भी पारब्रह्म प्रभु निर्लिप्त है॥ ५४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਹਥਿ ਕਲੰਮ ਅਗੰਮ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਾਵਤੀ ॥
हथि कलम अगम मसतकि लिखावती ॥
उस अगम्य ईश्वर के हाथ में (हुक्म-रूपी) कलम है। वह समस्त जीवों के मस्तक पर कर्मों के अनुसार भाग्य लिख रहा है।

ਉਰਝਿ ਰਹਿਓ ਸਭ ਸੰਗਿ ਅਨੂਪ ਰੂਪਾਵਤੀ ॥
उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥
अनूप सुन्दरता वाला प्रभु समस्त प्राणियों के साथ मिला हुआ है।

ਉਸਤਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਮੁਖਹੁ ਤੁਹਾਰੀਆ ॥
उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तेरी महिमा मैं अपने मुख से व्यक्त नहीं कर सकता।

ਮੋਹੀ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥੧॥
मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥
तेरे दर्शन करके मैं मुग्ध हो गया हूँ और तुझ पर न्योछावर हो रहा हूँ॥ १॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹੇ ਅਚੁਤ ਹੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਘਨਾਸ ॥
हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघनास ॥
नानक का कथन है कि हे अच्युत ! हे परब्रह्म ! हे अविनाशी ! हे पापनाशक !

ਹੇ ਪੂਰਨ ਹੇ ਸਰਬ ਮੈ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਗੁਣਤਾਸ ॥
हे पूरन हे सरब मै दुख भंजन गुणतास ॥
हे सर्वव्यापक ! हे दुःखनाशक ! हे गुणों के भण्डार !

ਹੇ ਸੰਗੀ ਹੇ ਨਿਰੰਕਾਰ ਹੇ ਨਿਰਗੁਣ ਸਭ ਟੇਕ ॥
हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥
हे निरंकार प्रभु ! हे निर्गुण ! हे समस्त प्राणियों के सहारे !

ਹੇ ਗੋਬਿਦ ਹੇ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਜਾ ਕੈ ਸਦਾ ਬਿਬੇਕ ॥
हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥
हे गोबिन्द ! हे गुणों के खजाने ! तेरे पास सदैव विवेक है।

ਹੇ ਅਪਰੰਪਰ ਹਰਿ ਹਰੇ ਹਹਿ ਭੀ ਹੋਵਨਹਾਰ ॥
हे अपर्मपर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥
हे अपरम्पार प्रभु ! तुम अब भी मौजूद हो, तुम सदा सत्यस्वरूप हो।

ਹੇ ਸੰਤਹ ਕੈ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਨਿਧਾਰਾ ਆਧਾਰ ॥
हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥
हे संतों के सदा सहायक ! तू ही निराश्रितो का आश्रय है।

ਹੇ ਠਾਕੁਰ ਹਉ ਦਾਸਰੋ ਮੈ ਨਿਰਗੁਨ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥
हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ ॥
हे ठाकुर ! मैं तेरा छोटा-सा (निम्न) सेवक हूँ। मैं गुणविहीन हूँ, मुझ में कोई भी गुण मौजूद नहीं।

ਨਾਨਕ ਦੀਜੈ ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਰਾਖਉ ਹੀਐ ਪਰੋਇ ॥੫੫॥
नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥५५॥
मुझे अपने नाम का दान प्रदान कीजिए चूंकि जो मैं इसे अपने हृदय में पिरोकर रखूं ॥५५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਗੁਰਦੇਵ ਮਾਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਿਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਸੁਆਮੀ ਪਰਮੇਸੁਰਾ ॥
गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥
गुरु ही माता है, गुरु ही पिता है और गुरु ही जगत् का स्वामी परमेश्वर है।

ਗੁਰਦੇਵ ਸਖਾ ਅਗਿਆਨ ਭੰਜਨੁ ਗੁਰਦੇਵ ਬੰਧਿਪ ਸਹੋਦਰਾ ॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥
गुरु ही अज्ञानता का अँधेरा नाश करने वाला मित्र है। गुरु ही रिश्तेदार एवं भाई है।

ਗੁਰਦੇਵ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਪਦੇਸੈ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਨਿਰੋਧਰਾ ॥
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥
गुरु ही दाता एवं हरि नाम का उपदेशक है और गुरु ही मेरा अचूक मन्त्र है।

ਗੁਰਦੇਵ ਸਾਂਤਿ ਸਤਿ ਬੁਧਿ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਵ ਪਾਰਸ ਪਰਸ ਪਰਾ ॥
गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥
गुरु सुख-शांति, सत्य एवं बुद्धि की मूर्ति है। गुरु ही ऐसा पारस है, जिसे स्पर्श करके प्राणी का भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਗੁਰਦੇਵ ਤੀਰਥੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੋਵਰੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਮਜਨੁ ਅਪਰੰਪਰਾ ॥
गुरदेव तीरथु अम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपर्मपरा ॥
गुरु ही तीर्थ एवं अमृत का सरोवर है। गुरु के ज्ञान में स्नान करने से मनुष्य अपरम्पार प्रभु को मिल जाता है।

ਗੁਰਦੇਵ ਕਰਤਾ ਸਭਿ ਪਾਪ ਹਰਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਕਰਾ ॥
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥
गुरु ही सृष्टिकर्ता एवं समूचे पापों का नाश करने वाले हैं और गुरु पतितों को पवित्र-पावन करने वाले हैं।

ਗੁਰਦੇਵ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਗੁਰਦੇਵ ਮੰਤੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਉਧਰਾ ॥
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥
जब से संसार की रचना हुई है, गुरु आदिकाल से ही हरेक युग में है। गुरु ईश्वर के नाम का मंत्र है, जिसका जाप करने से प्राणी का उद्धार हो जाता है।

ਗੁਰਦੇਵ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਮ ਮੂੜ ਪਾਪੀ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਾ ॥
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥
हे प्रभु ! कृपा करके हमें गुरु की संगति प्रदान करो तांकि हम मूर्ख एवं पापी उसकी संगति में रहकर भवसागर से पार हो जाएँ।

ਗੁਰਦੇਵ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗੁਰਦੇਵ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਮਸਕਰਾ ॥੧॥
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥
गुरु स्वयं ही पारब्रह्म एवं परमेश्वर है। हे नानक ! भगवान के रूप गुरु की वन्दना करनी चाहिए॥ १॥

ਏਹੁ ਸਲੋਕੁ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਪੜਣਾ ॥
एहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥
यह श्लोक शुरु से लेकर अंत तक पढ़ना है।

ਗਉੜੀ ਸੁਖਮਨੀ ਮਃ ੫ ॥
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
सलोकु ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
आदि गुरए नमह ॥
मैं आदि गुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਜੁਗਾਦਿ ਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
जुगादि गुरए नमह ॥
मैं पहले युगों के गुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰਏ ਨਮਹ ॥
सतिगुरए नमह ॥
मैं सतिगुरु को प्रणाम करता हूँ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰਦੇਵਏ ਨਮਹ ॥੧॥
स्री गुरदेवए नमह ॥१॥
मैं श्री गुरुदेव जी को प्रणाम करता हूँ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਿਮਰਉ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਉ ॥
सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
परमात्मा का नाम सिमरन करो और नाम-सिमरन करके सुख हासिल करो।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਤਨ ਮਾਹਿ ਮਿਟਾਵਉ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥
इस तन में जो दुःख-क्लेश हैं, उन्हें मिटा लो।

ਸਿਮਰਉ ਜਾਸੁ ਬਿਸੁੰਭਰ ਏਕੈ ॥
सिमरउ जासु बिसुमभर एकै ॥
केवल, एक जगत् के पालनहार प्रभु के यश को स्मरण करो।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਅਗਨਤ ਅਨੇਕੈ ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥
असंख्य लोग प्रभु के अनेक नामों का जाप करते हैं।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸੁਧਾਖ੍ਰਰ ॥
बेद पुरान सिम्रिति सुधाख्यर ॥
पवित्र अक्षर वाले वेद, पुराण एवं स्मृतियां

ਕੀਨੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਇਕ ਆਖ੍ਰਰ ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥
प्रभु के नाम के एक अक्षर की रचना है।

ਕਿਨਕਾ ਏਕ ਜਿਸੁ ਜੀਅ ਬਸਾਵੈ ॥ਤਾ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਗਨੀ ਨ ਆਵੈ ॥
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ता की महिमा गनी न आवै ॥
जिसके हृदय में राम का नाम थोड़ा-सा भी वास करता है,उसकी महिमा व्यक्त नहीं की जा सकती।

कांखी एकै दरस तुहारो ॥नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥
कांखी एकै दरस तुहारो ॥नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥
हे प्रभु ! जो लोग तेरे दर्शनों के अभिलाषी हैं, उनकी संगति में रखकर मुझ नानक का भी उद्धार कर दो ॥१॥

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु ॥
सुखमनी प्रभु का सुख रूपी अमृत नाम है।

भगत जना कै मनि बिस्रामु ॥ रहाउ ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥
जिसका भक्तजनों के मन में निवास होता है। रहाउ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभु को स्मरण करने से प्राणी गर्भ में नहीं आता।

प्रभ कै सिमरनि दुखु जमु नसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥
प्रभु को स्मरण करने से दुःख एवं मृत्यु का भय निवृत्त हो जाता है।

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभु का सिमरन करने से काल भी दूर हो जाता है।

प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभु को स्मरण करने से शत्रु टल जाता है।

प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभु को स्मरण करने से कोई विघ्न नहीं पड़ता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥
प्रभु को स्मरण करने से मनुष्य रात-दिन जाग्रत रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਭਉ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभु को स्मरण करने से भय प्रभावित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦੁਖੁ ਨ ਸੰਤਾਪੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥
प्रभु को स्मरण करने से दुःख-क्लेश प्रभावित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
ईश्वर को स्मरण करने से संतों की संगति प्राप्त होती है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੨॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥
हे नानक ! समस्त निधियाँ ईश्वर की प्रीति में है॥ २ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਉ ਨਿਧਿ ॥
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभु के सिमरन में ऋद्धि, सिद्धि एवं नौ निधियाँ हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਤਤੁ ਬੁਧਿ ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभु के सिमरन से ही मनुष्य ज्ञान, ध्यान, दिव्यदृष्टि एवं बुद्धि का सार प्राप्त करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਜਪ ਤਪ ਪੂਜਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभु के सिमरन में ही, जप, तपस्या एवं पूजा है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਬਿਨਸੈ ਦੂਜਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभु को स्मरण करने से द्वैतभाव दूर हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभु को स्मरण करने से तीर्थ स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभु को स्मरण करने से प्राणी उसके दरबार में मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਹੋਇ ਸੁ ਭਲਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभु को स्मरण करने से प्राणी उसकी इच्छा को मीठा (भला) मानता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
प्रभु को स्मरण करने से मनुष्य-जन्म का मनोरथ सफल हो जाता है।

ਸੇ ਸਿਮਰਹਿ ਜਿਨ ਆਪਿ ਸਿਮਰਾਏ ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
केवल वही जीव उसे स्मरण करते हैं, जिन्हें वह स्वयं स्मरण करवाता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਏ ॥੩॥
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥
हे नानक ! मैं उन सिमरन करने वाले महापुरुषों के चरण-स्पर्श करता हूँ॥ ३॥

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभु का सिमरन सबसे ऊँचा है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਉਧਰੇ ਮੂਚਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभु का सिमरन करने से अनेक प्राणियों का उद्धार हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभु का सिमरन करने से तृष्णा मिट जाती है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੁਝੈ ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभु का सिमरन करने से सब कुछ सूझ जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਾਹੀ ਜਮ ਤ੍ਰਾਸਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभु का सिमरन करने से यम (मृत्यु) का भय निवृत हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥
प्रभु का सिमरन करने से अभिलाषा पूरी हो जाती है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮਨ ਕੀ ਮਲੁ ਜਾਇ ॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
प्रभु का सिमरन करने से मन की मैल उतर जाती है

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥
अम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥
और भगवान का अमृत नाम हृदय में समा जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਬਸਹਿ ਸਾਧ ਕੀ ਰਸਨਾ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
पूजनीय प्रभु अपने संत पुरुषों की रसना में निवास करते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਾ ਦਾਸਨਿ ਦਸਨਾ ॥੪॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥
हे नानक ! मैं गुरमुखों के दासों का दास हूँ॥ ४॥

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਧਨਵੰਤੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति ही धनवान हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪਤਿਵੰਤੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वही व्यक्ति इज्जतदार हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਨ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
जो लोग प्रभु को स्मरण करते हैं, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत होते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਧਾਨ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, वे जगत् में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਿ ਬੇਮੁਹਤਾਜੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
जो पुरुष प्रभु का सिमरन करते हैं, वे किसी के आश्रित नहीं रहते।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਿ ਸਰਬ ਕੇ ਰਾਜੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वे सब के सम्राट हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਸੁਖਵਾਸੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, वह सुख में निवास करते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥
जो प्रभु को स्मरण करते हैं, वे अमर हो जाते हैं।

ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਲਾਗੇ ਜਿਨ ਆਪਿ ਦਇਆਲਾ ॥
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥
जिन पर ईश्वर दयालु होता है, केवल वही व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੀ ਮੰਗੈ ਰਵਾਲਾ ॥੫॥
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥
हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों की चरणधूलि ही मांगता हूँ॥ ५॥

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति परोपकारी बन जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, मैं उन पर हमेशा ही कुर्बान जाता हूँ।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਮੁਖ ਸੁਹਾਵੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, उनके मुख अति सुन्दर हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਸੂਖਿ ਬਿਹਾਵੈ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥
जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, वह अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वह अपने मन को जीत लेते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਾ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥
जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, उनका जीवन-आचरण पावन हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਤਿਨ ਅਨਦ ਘਨੇਰੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥
जो प्रभु का सिमरन करते हैं, उन्हें अनेक खुशियाँ एवं हर्षोल्लास ही प्राप्त होते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਿਮਰਹਿ ਬਸਹਿ ਹਰਿ ਨੇਰੇ ॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥
जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वह ईश्वर के निकट वास करते हैं।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਿ ॥
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥
संतों की कृपा से वह रात-दिन जाग्रत रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਨੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥੬॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥
हे नानक ! प्रभु-सिमरन की देन भाग्य से ही प्राप्त होती है। ६॥

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਾਰਜ ਪੂਰੇ ॥
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभु का सिमरन करने से समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਬਹੁ ਨ ਝੂਰੇ ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभु का सिमरन करने से प्राणी कभी चिन्ता-क्लेश के वश में नहीं पड़ता।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਬਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य भगवान की गुणस्तुति की वाणी करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨੀ ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य सहज ही परमात्मा में लीन हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਨਿਹਚਲ ਆਸਨੁ ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा वह अटल आसन प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸਨੁ ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य का हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਨਹਦ ਝੁਨਕਾਰ ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा दिव्य भजन गूंजता है।

ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਨ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰ ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥
प्रभु के सिमरन द्वारा सुख का कोई अन्त अथवा पार नहीं।

ਸਿਮਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਜਿਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਮਇਆ ॥
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥
जिन प्राणियों पर प्रभु की कृपा होती है, वह उसका सिमरन करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਜਨ ਸਰਨੀ ਪਇਆ ॥੭॥
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥
हे नानक ! (कोई किस्मत वाला ही) उन प्रभु-स्मरण करने वालों की शरण लेता है॥ ७ ॥

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿ ਭਗਤ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ॥
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
भगवान का सिमरन करके भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਲਗਿ ਬੇਦ ਉਪਾਏ ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
भगवान के सिमरन में ही सम्मिलित होकर वेद (इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) रचे गए।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਭਏ ਸਿਧ ਜਤੀ ਦਾਤੇ ॥
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
भगवान के सिमरन द्वारा ही मनुष्य सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं दानवीर बन जाते हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਨੀਚ ਚਹੁ ਕੁੰਟ ਜਾਤੇ ॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥
भगवान के सिमरन द्वारा नीच पुरुष चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हो गए।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਧਾਰੀ ਸਭ ਧਰਨਾ ॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
भगवान के सिमरन ने ही सारी धरती को धारण किया हुआ है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਹਰਿ ਕਾਰਨ ਕਰਨਾ ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥
हे जिज्ञासु ! संसार के कर्ता परमेश्वर को सदा स्मरण करते रहो।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਕੀਓ ਸਗਲ ਅਕਾਰਾ ॥
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
प्रभु ने अपने सिमरन हेतु सृष्टि की रचना की है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਮਹਿ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥
जहाँ प्रभु का सिमरन होता है, उस स्थान पर स्वयं निरंकार विद्यमान है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਇਆ ॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
हे नानक ! भगवान जिसे कृपा करके सिमरन की सूझ प्रदान करता है,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥੮॥੧॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥
गुरु के माध्यम से ऐसे व्यक्ति को भगवान के सिमरन की देन मिल जाती है॥ ८॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਦੀਨ ਦਰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਾਥ ਅਨਾਥ ॥
दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥
हे दीनों के दर्द एवं दुःख का नाश करने वाले प्रभु ! हे प्रत्येक शरीर में व्यापक स्वामी । हे अनाथों के नाथ परमात्मा !

ਸਰਣਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਆਇਓ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਥ ॥੧॥
सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥
मैं तेरी शरण में आया हूँ, आप प्रभु मेरे (नानक के) साथ हो।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਹ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਨ ਭਾਈ ॥
जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥
जहाँ माता, पिता, पुत्र, मित्र एवं भाई, कोई (सहायक) नहीं,

ਮਨ ਊਹਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥
वहाँ हे मेरे मन ! ईश्वर का नाम तेरे साथ सहायक होगा।

ਜਹ ਮਹਾ ਭਇਆਨ ਦੂਤ ਜਮ ਦਲੈ ॥
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥
जहाँ महा भयानक यमदूत तुझे कुचलेगा,

ਤਹ ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਤੇਰੈ ਚਲੈ ॥
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥
वहाँ केवल प्रभु का नाम ही तेरे साथ जाएगा।

ਜਹ ਮੁਸਕਲ ਹੋਵੈ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥
जह मुसकल होवै अति भारी ॥
जहाँ बहुत भारी मुश्किल होगी ,

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਉਧਾਰੀ ॥
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥
वहाँ ईश्वर का नाम एक क्षण में ही तेरी रक्षा करेगा।

ਅਨਿਕ ਪੁਨਹਚਰਨ ਕਰਤ ਨਹੀ ਤਰੈ ॥
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
अनेकों धार्मिक कर्म करने से भी मनुष्य की पापों से मुक्ति नहीं होती,

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਪਰਹਰੈ ॥
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥
परन्तु ईश्वर का नाम करोड़ों ही पापों का नाश कर देता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥
हे मेरे मन ! गुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु के नाम का जाप कर।

ਨਾਨਕ ਪਾਵਹੁ ਸੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥੧॥
नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥
हे नानक ! ऐसे तुझे बहुत सुख प्राप्त होगा ॥१॥

ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕੋ ਰਾਜਾ ਦੁਖੀਆ ॥
सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥
सारे संसार का राजा (बनकर भी मनुष्य) दुखी होता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹੋਇ ਸੁਖੀਆ ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लेकिन ईश्वर का नाम-स्मरण करने से सुखी हो जाता है।

ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ਬੰਧੁ ਨ ਪਰੈ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥
चाहे मनुष्य लाखों-करोड़ बन्धनों में फँसा हो, (किन्तु)

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਨਿਸਤਰੈ ॥
हरि का नामु जपत निसतरै ॥
प्रभु के नाम का जाप करने से वह मुक्त हो जाता है।

ਅਨਿਕ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਤਿਖ ਨ ਬੁਝਾਵੈ ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥
धन-दौलत की अत्याधिक खुशियाँ मनुष्य की तृष्णा को नहीं मिटा सकते। (लेकिन)

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਆਘਾਵੈ ॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
ईश्वर का नाम-स्मरण करने से वह तृप्त हो जाता है।

ਜਿਹ ਮਾਰਗਿ ਇਹੁ ਜਾਤ ਇਕੇਲਾ ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥
जिस (यम) मार्ग पर प्राणी अकेला जाता है,

ਤਹ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਹੋਤ ਸੁਹੇਲਾ ॥
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
वहाँ ईश्वर का नाम सुखदायक होता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
हे मेरे मन ! ऐसा नाम सदा स्मरण करो,

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ॥੨॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥
हे नानक ! गुरु की शरण में नाम-स्मरण करने से परमगति प्राप्त हो जाती है॥ २॥

ਛੂਟਤ ਨਹੀ ਕੋਟਿ ਲਖ ਬਾਹੀ ॥
छूटत नही कोटि लख बाही ॥
जहाँ लाखों-करोड़ों भुजाओं के होते हुए भी मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਹ ਪਾਰਿ ਪਰਾਹੀ ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
वहाँ नाम-स्मरण करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है।

ਅਨਿਕ ਬਿਘਨ ਜਹ ਆਇ ਸੰਘਾਰੈ ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
जहाँ अनेक विघ्न (विपत्तियाँ) आकर मनुष्य को नष्ट करती हैं,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
वहाँ प्रभु का नाम तत्काल उसकी रक्षा करता है।

ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਜਨਮੈ ਮਰਿ ਜਾਮ ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
जो व्यक्ति अनेक योनियों में जन्मता-मरता रहता है,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਾਵੈ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥
वह प्रभु के नाम का जाप करने से सुख प्राप्त कर लेता है।

ਹਉ ਮੈਲਾ ਮਲੁ ਕਬਹੁ ਨ ਧੋਵੈ ॥
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
अहंकार से मैला हुआ प्राणी कभी यह मैल धो नहीं सकता,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਪਾਪ ਖੋਵੈ ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
(परन्तु) ईश्वर का नाम करोड़ों पापों को नाश कर देता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਰੰਗਿ ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
हे मेरे मन ! ईश्वर के ऐसे नाम को प्रेमपूर्वक स्मरण करो।

ਨਾਨਕ ਪਾਈਐ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥੩॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥
हे नानक ! ईश्वर का नाम संतों की संगति में ही प्राप्त होता है॥ ३॥

ਜਿਹ ਮਾਰਗ ਕੇ ਗਨੇ ਜਾਹਿ ਨ ਕੋਸਾ ॥
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
जिस (जीवन रूपी) मार्ग के कोस इत्यादि गिने नहीं जा सकते,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਊਹਾ ਸੰਗਿ ਤੋਸਾ ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
ईश्वर का नाम वहाँ तेरे साथ राशि-पूंजी होगा।

ਜਿਹ ਪੈਡੈ ਮਹਾ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
जिस मार्ग में घोर-अंधकार है,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸੰਗਿ ਉਜੀਆਰਾ ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
यहाँ ईश्वर का नाम तेरे साथ प्रकाश होगा।

ਜਹਾ ਪੰਥਿ ਤੇਰਾ ਕੋ ਨ ਸਿਞਾਨੂ ॥
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
जिस मार्ग पर तेरा कोई जानकार नहीं,

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਤਹ ਨਾਲਿ ਪਛਾਨੂ ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
वहाँ ईश्वर का नाम तेरे साथ जानने वाला (जानकार) होगा।

ਜਹ ਮਹਾ ਭਇਆਨ ਤਪਤਿ ਬਹੁ ਘਾਮ ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
जहाँ अत्याधिक भयानक गर्मी एवं अत्याधिक धूप है,

ਤਹ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤੁਮ ਊਪਰਿ ਛਾਮ ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
वहाँ ईश्वर के नाम की तुझ पर छाया होगी।

ਜਹਾ ਤ੍ਰਿਖਾ ਮਨ ਤੁਝੁ ਆਕਰਖੈ ॥
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥
हे प्राणी ! जहाँ (माया की) प्यास तुझे खींचती है,

ਤਹ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਰਖੈ ॥੪॥
तह नानक हरि हरि अम्रितु बरखै ॥४॥
वहाँ हे नानक ! हरि-परमेश्वर के नाम के अमृत की वर्षा होती है॥ ४ ॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਬਰਤਨਿ ਨਾਮੁ ॥
भगत जना की बरतनि नामु ॥
ईश्वर का नाम भक्तजनों हेतु व्यावहारिक सामग्री है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
ईश्वर का नाम संतजनों के मन को सुख विश्राम देता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਦਾਸ ਕੀ ਓਟ ॥
हरि का नामु दास की ओट ॥
ईश्वर का नाम उसके सेवक का सहारा है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਜਨ ਕੋਟਿ ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
ईश्वर के नाम द्वारा करोड़ों ही प्राणियों का कल्याण हो गया है।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਰਤ ਸੰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
संतजन दिन-रात हरि का यशोगान करते रहते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਉਖਧੁ ਸਾਧ ਕਮਾਤਿ ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
संत हरि-परमेश्वर के नाम को अपनी औषधि के रूप में उपयोग करते हैं।

ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥
ईश्वर का नाम ईश्वर के सेवक का खजाना है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਨ ਕੀਨੋ ਦਾਨ ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
पारब्रह्म ने उसे यह दान किया है।

ਮਨ ਤਨ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਰੰਗ ਏਕੈ ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
जो मन एवं तन से एक ईश्वर के प्रेम में रंगे हुए हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਬਿਰਤਿ ਬਿਬੇਕੈ ॥੫॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥
हे नानक ! उन दासों की वृत्ति ज्ञान वाली हुई है॥ ५ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਉ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ॥
हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
भगवान का नाम ही भक्त हेतु मुक्ति का साधन है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਕਉ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਭੁਗਤਿ ॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥
भगवान का भक्त उसके नाम-भोजन से तृप्त हो जाता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਾ ਰੂਪ ਰੰਗੁ ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
भगवान का नाम उसके भक्त का सौन्दर्य एवं हर्ष है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਬ ਪਰੈ ਨ ਭੰਗੁ ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥
भगवान के नाम का जाप करने से मनुष्य को कभी बाधा नहीं पड़ती।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
भगवान का नाम उसके भक्त की मान-प्रतिष्ठा है।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਜਨ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
भगवान के नाम द्वारा उसके भक्त को दुनिया में शोभा प्राप्त होती है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕਉ ਭੋਗ ਜੋਗ ॥
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
भगवान का नाम ही भक्त के लिए योग (साधन) एवं गृहस्थी का माया-भोग है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ਬਿਓਗੁ ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥
भगवान के नाम का जाप करने से उसे कोई दुःख-क्लेश नहीं होता।

ਜਨੁ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
भगवान का भक्त उसके नाम की सेवा में ही मग्न रहता है।

ਨਾਨਕ ਪੂਜੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦੇਵਾ ॥੬॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥
हे नानक ! (भक्त सदैव) प्रभुदेवा परमेश्वर की ही पूजा करता है॥ ६ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਮਾਲੁ ਖਜੀਨਾ ॥
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि-परमेश्वर का नाम भक्त के लिए धन का भण्डार है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਨ ਕਉ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭਿ ਦੀਨਾ ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि नाम रूपी धन प्रभु ने स्वयं अपने भक्त को दिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਕੈ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि-परमेश्वर का नाम उसके भक्त का सशक्त सहारा है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਜਨ ਅਵਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
हरि के प्रताप से भक्तजन किसी दूसरे को नहीं जानता।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਜਨ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
ताने-बाने की भाँति प्रभु का भक्त हरि-रस में मग्न रहता है।

ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਨਾਮ ਰਸ ਮਾਤੇ ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥
शून्य समाधि में लीन वह नाम-रस में मस्त रहता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ॥
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
भक्त दिन के आठ पहर हरि-परमेश्वर के नाम का ही जाप करता रहता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਭਗਤੁ ਪ੍ਰਗਟ ਨਹੀ ਛਪੈ ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरि का भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है, छिपा नहीं रहता।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੁਕਤਿ ਬਹੁ ਕਰੇ ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
भगवान की भक्ति अनेकों को मोक्ष प्रदान करती है।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਸੰਗਿ ਕੇਤੇ ਤਰੇ ॥੭॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥
हे नानक ! भक्तों की संगति में कितने ही भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ७ ॥

ਪਾਰਜਾਤੁ ਇਹੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥
पारजातु इहु हरि को नाम ॥
हरि का नाम ही कल्पवृक्ष है।

ਕਾਮਧੇਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
हरि-परमेश्वर के नाम का यशोगान करना ही कामधेनु है।

ਸਭ ਤੇ ਊਤਮ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
हरि की कथा सबसे उत्तम है।

ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਦਰਦ ਦੁਖ ਲਥਾ ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
भगवान का नाम सुनने से दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਸੰਤ ਰਿਦ ਵਸੈ ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
नाम की महिमा संतों के हृदय में निवास करती है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਦੁਰਤੁ ਸਭੁ ਨਸੈ ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संतों के तेज प्रताप से समस्त पाप नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕਾ ਸੰਗੁ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संतों की संगति सौभाग्य से ही प्राप्त होती है।

ਸੰਤ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
संतों की सेवा से नाम-सिमरन किया जाता है।

ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਕਛੁ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਇ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
ईश्वर के नाम के तुल्य कोई दूसरा नहीं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੮॥੨॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥
हे नानक ! कोई विरला गुरमुख ही नाम को प्राप्त करता है॥ ८ ॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਬਹੁ ਸਾਸਤ੍ਰ ਬਹੁ ਸਿਮ੍ਰਿਤੀ ਪੇਖੇ ਸਰਬ ਢਢੋਲਿ ॥
बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥
बहुत सारे शास्त्र एवं बहुत सारी स्मृतियाँ देखी हैं और उन सबकी (भलीभाँति) खोज की है।

ਪੂਜਸਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਮੋਲ ॥੧॥
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥
(लेकिन) यह ईश्वर के नाम की बराबरी नहीं कर सकते। हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम अमूल्य है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਗਿਆਨ ਸਭਿ ਧਿਆਨ ॥
जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
जप, तपस्या, समस्त ज्ञान एवं ध्यान,

ਖਟ ਸਾਸਤ੍ਰ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਵਖਿਆਨ ॥
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥
छ : शास्त्रों के ग्रंथ एवं स्मृतियों का बखान,

ਜੋਗ ਅਭਿਆਸ ਕਰਮ ਧ੍ਰਮ ਕਿਰਿਆ ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
योग का साधन एवं धार्मिक कर्म-काण्डों का करना,

ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਬਨ ਮਧੇ ਫਿਰਿਆ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
प्रत्येक वस्तु को त्याग देना एवं वन में भटकना,

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਏ ਬਹੁ ਜਤਨਾ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
अनेक प्रकार के बहुत यत्न करे,

ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਹੋਮੇ ਬਹੁ ਰਤਨਾ ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
दान-पुण्य, होम यज्ञ एवं अत्याधिक दान करना,

ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਇ ਹੋਮੈ ਕਰਿ ਰਾਤੀ ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥
शरीर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना एवं उनकी अग्नि में आहुति देना,

ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ॥
वरत नेम करै बहु भाती ॥
अनेक प्रकार के व्रत एवं नियमों की पालना,

ਨਹੀ ਤੁਲਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬੀਚਾਰ ॥
नही तुलि राम नाम बीचार ॥
लेकिन यह सभी राम के नाम की आराधना के तुल्य नहीं हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਇਕ ਬਾਰ ॥੧॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥
हे नानक ! (चाहे) यह नाम एक बार ही गुरु की शरण में जपा जाए॥ १॥

ਨਉ ਖੰਡ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਫਿਰੈ ਚਿਰੁ ਜੀਵੈ ॥
नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥
इन्सान चाहे पृथ्वी के नौ खण्डों पर भ्रमण करे, चिरकाल (लम्बी आयु) तक जीता रहे,

ਮਹਾ ਉਦਾਸੁ ਤਪੀਸਰੁ ਥੀਵੈ ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
वह महा निर्वाण एवं तपस्वी हो जाए और

ਅਗਨਿ ਮਾਹਿ ਹੋਮਤ ਪਰਾਨ ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
अपने शरीर को अग्नि में होम कर दे,

ਕਨਿਕ ਅਸ੍ਵ ਹੈਵਰ ਭੂਮਿ ਦਾਨ ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
वह सोना, घोड़े एवं भूमिदान कर दें,

ਨਿਉਲੀ ਕਰਮ ਕਰੈ ਬਹੁ ਆਸਨ ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
वह निउली कर्म (योगासन का रूप) और बहुत सारे योगासन करें,

ਜੈਨ ਮਾਰਗ ਸੰਜਮ ਅਤਿ ਸਾਧਨ ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
वह जैनियों के मार्ग पर चलकर अत्यंत कठिन साधन तथा तपस्या करें,

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਕਰਿ ਸਰੀਰੁ ਕਟਾਵੈ ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
वह अपने शरीर को छोटा-छोटा करके कटना दे,

ਤਉ ਭੀ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਵੈ ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
तो भी उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती।

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਸਮਸਰਿ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ॥
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
भगवान के नाम के बराबर कोई वस्तु नहीं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का जाप करने से इन्सान को मुक्ति मिल जाती है।॥ २॥

ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥ ਦੇਹ ਛੁਟੈ ॥
मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
कुछ लोगों की मनोकामना होती है कि किसी तीर्थ-स्थान पर शरीर त्यागा जाए

ਗਰਬੁ ਗੁਮਾਨੁ ਨ ਮਨ ਤੇ ਹੁਟੈ ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
परन्तु (फिर भी) मनुष्य का अहंकार एवं अभिमान मन से दूर नहीं होते।

ਸੋਚ ਕਰੈ ਦਿਨਸੁ ਅਰੁ ਰਾਤਿ ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥
चाहे मनुष्य दिन-रात पवित्रता करता है

ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਤਨ ਤੇ ਜਾਤਿ ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥
परन्तु मन की मैल उसके शरीर से दूर नहीं होती।

ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਕਉ ਬਹੁ ਸਾਧਨਾ ਕਰੈ ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
चाहे मनुष्य अपने शरीर से बहुत संयम-साधना करता है,

ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਖਿਆ ਟਰੈ ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥
फिर भी माया के बुरे विकार उसके मन को नहीं त्यागते।

ਜਲਿ ਧੋਵੈ ਬਹੁ ਦੇਹ ਅਨੀਤਿ ॥
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
चाहे मनुष्य इस नश्वर शरीर को कई बार पानी से साफ करता है,

ਸੁਧ ਕਹਾ ਹੋਇ ਕਾਚੀ ਭੀਤਿ ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
तो भी (यह शरीर रूपी) कच्ची दीवार कहीं पवित्र हो सकती हैं?

ਮਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਊਚ ॥
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
हे मेरे मन ! हरि के नाम की महिमा बहुत ऊँची है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਰੇ ਪਤਿਤ ਬਹੁ ਮੂਚ ॥੩॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥
हे नानक ! (प्रभु के) नाम से बहुत सारे पापी मुक्त हो गए हैं॥ ३॥

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਜਮ ਕਾ ਭਉ ਬਿਆਪੈ ॥
बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अधिक चतुराई के कारण मनुष्य को मृत्यु का भय आ दबोचता है।

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨ ਨਾ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥
अनेक यत्न करने से भी तृष्णा नहीं बुझती।

ਭੇਖ ਅਨੇਕ ਅਗਨਿ ਨਹੀ ਬੁਝੈ ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
अनेकों धार्मिक वेष बदलने से (तृष्णा की) अग्नि नहीं बुझती।

ਕੋਟਿ ਉਪਾਵ ਦਰਗਹ ਨਹੀ ਸਿਝੈ ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
(ऐसे) करोड़ों ही उपायों द्वारा मनुष्य प्रभु के दरबार में मुक्त नहीं होता।

ਛੁਟਸਿ ਨਾਹੀ ਊਭ ਪਇਆਲਿ ॥
छुटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
वह चाहे आकाश में चले जाएँ अथवा पाताल में चले जाएँ, उनकी मुक्ति नहीं होती,

ਮੋਹਿ ਬਿਆਪਹਿ ਮਾਇਆ ਜਾਲਿ ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
जो व्यक्ति मोह के कारण माया के जाल में फँसते हैं।

ਅਵਰ ਕਰਤੂਤਿ ਸਗਲੀ ਜਮੁ ਡਾਨੈ ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
मनुष्य की दूसरी सब करतूतों पर यमराज उन्हें दण्ड देता है।

ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਮਾਨੈ ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
(लेकिन) गोविन्द के भजन के बिना मृत्यु तनिकमात्र भी परवाह नहीं करती।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥
भगवान के नाम का जाप करने से हर प्रकार के दुःख दूर हो जाते हैं

ਨਾਨਕ ਬੋਲੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੪॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥
नानक सहज स्वभाव यही बोलता है ।॥ ४॥

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਜੇ ਕੋ ਮਾਗੈ ॥
चारि पदारथ जे को मागै ॥
यदि कोई व्यक्ति चार पदार्थों-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अभिलाषी हो

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਗੈ ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
तो उसे संतजनों की सेवा में लगना चाहिए।

ਜੇ ਕੋ ਆਪੁਨਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਵੈ ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
यदि कोई व्यक्ति अपना दुःख मिटाना चाहता है तो

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਗਾਵੈ ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
उसे अपने हृदय में हरि-परमेश्वर का नाम सदैव स्मरण करना चाहिए।

ਜੇ ਕੋ ਅਪੁਨੀ ਸੋਭਾ ਲੋਰੈ ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
यदि कोई व्यक्ति अपनी शोभा चाहता हो तो

ਸਾਧਸੰਗਿ ਇਹ ਹਉਮੈ ਛੋਰੈ ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥
वह संतों की संगति में रहकर इस अहंकार को त्याग दे।

ਜੇ ਕੋ ਜਨਮ ਮਰਣ ਤੇ ਡਰੈ ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
यदि कोई व्यक्ति जन्म-मरण के दुःख से डरता है,

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੈ ॥
साध जना की सरनी परै ॥
तो उसे संतजनों की शरण लेनी चाहिए।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਸਾ ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
जिस व्यक्ति को परमात्मा के दर्शनों की तीव्र लालसा है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਸਾ ॥੫॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥
हे नानक ! मैं उस पर सदा कुर्बान जाता हूँ॥ ५॥

ਸਗਲ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ॥
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
समस्त पुरुषों में वहीं पुरुष प्रधान है

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥
जिस पुरुष का सत्संग में रहकर अभिमान मिट जाता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਜੋ ਜਾਣੈ ਨੀਚਾ ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
जो पुरुष अपने आपको निम्न (विनीत) जानता है,

ਸੋਊ ਗਨੀਐ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
वह सबसे भला (ऊँचा) समझा जाता है।

ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
जिस पुरुष का मन सबके चरणों की धूलि बन जाता है,

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨਾ ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
वह हरि-परमेश्वर के नाम को प्रत्येक हृदय में देखता है।

ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਤੇ ਬੁਰਾ ਮਿਟਾਨਾ ॥
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
जो अपने मन से बुराई को मिटा देता है,

ਪੇਖੈ ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਜਨਾ ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥
वह सारी सृष्टि को अपना मित्र देखता है।

ਸੂਖ ਦੂਖ ਜਨ ਸਮ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥
हे नानक ! जो पुरुष सुख-दुःख को एक समान देखता है,

ਨਾਨਕ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਨਹੀ ਲੇਪਾ ॥੬॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥
वह पाप-पुण्य से निर्लिप्त रहता है॥ ६॥

ਨਿਰਧਨ ਕਉ ਧਨੁ ਤੇਰੋ ਨਾਉ ॥
निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
हे नाथ ! निर्धन के लिए तेरा नाम ही धन-दौलत है।

ਨਿਥਾਵੇ ਕਉ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਥਾਉ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निराश्रित को तेरा नाम ही आश्रय है।

ਨਿਮਾਨੇ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੋ ਮਾਨੁ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
हे प्रभु ! निरादरों का तू आदर है।

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਉ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
तू ही समस्त प्राणियों को दान देता है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
हे जगत् के स्वामी ! तुम स्वयं ही सब कुछ करते एवं स्वयं ही जीवो से करवाते हो।

ਸਗਲ ਘਟਾ ਕੇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
तू बड़ा अन्तर्यामी है।

ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪੇ ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
हे ठाकुर ! अपनी गति एवं अपनी मर्यादा तुम स्वयं ही जानते हो।

ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੇ ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
हे प्रभु ! अपने आप से तुम स्वयं ही रंगे हुए हो।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਉਸਤਤਿ ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
हे ईश्वर ! अपनी महिमा केवल तुम ही कर सकते हो।

ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਸਿ ਕੋਇ ॥੭॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥
हे नानक ! कोई दूसरा तेरी महिमा को नहीं जानता॥ ७॥

ਸਰਬ ਧਰਮ ਮਹਿ ਸ੍ਰੇਸਟ ਧਰਮੁ ॥
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
समस्त धर्मों में सर्वोपरि धर्म है की

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮੁ ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
ईश्वर के नाम का जाप करना एवं पवित्र कर्म करना।

ਸਗਲ ਕ੍ਰਿਆ ਮਹਿ ਊਤਮ ਕਿਰਿਆ ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
समस्त धार्मिक क्रियाओं में सर्वश्रेष्ठ क्रिया है की

ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰਿਆ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सत्संग में मिलकर दुर्बुद्धि की मैल को धो फेंकना।

ਸਗਲ ਉਦਮ ਮਹਿ ਉਦਮੁ ਭਲਾ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
समस्त प्रयासों में उत्तम प्रयास यही है कि

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਜੀਅ ਸਦਾ ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सदा मन में हरि के नाम का जाप करते रहो।

ਸਗਲ ਬਾਨੀ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੀ ॥
सगल बानी महि अम्रित बानी ॥
समस्त वाणियों में अमृत वाणी है की

ਹਰਿ ਕੋ ਜਸੁ ਸੁਨਿ ਰਸਨ ਬਖਾਨੀ ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
ईश्वर की महिमा सुनो एवं इसको जिव्हा से उच्चारण करो ।

ਸਗਲ ਥਾਨ ਤੇ ਓਹੁ ਊਤਮ ਥਾਨੁ ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
हे नानक ! समस्त स्थानों में वह स्थान उत्तम है,

ਨਾਨਕ ਜਿਹ ਘਟਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੮॥੩॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥
जिसमें ईश्वर का नाम निवास करता है॥ ८ ॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਇਆਨਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥
निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥
हे गुणविहीन एवं मूर्ख जीव ! उस ईश्वर को सदैव स्मरण कर।

ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਸੁ ਚੀਤਿ ਰਖੁ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਨਾਲਿ ॥੧॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥
हे नानक ! जिसने तुझे उत्पन्न किया है, उसको अपने ह्रदय में बसा, केवल ईश्वर ही तेरा साथ देगा ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਰਮਈਆ ਕੇ ਗੁਨ ਚੇਤਿ ਪਰਾਨੀ ॥
रमईआ के गुन चेति परानी ॥
हे नश्वर प्राणी ! सर्वव्यापक राम के गुण स्मरण कर।

ਕਵਨ ਮੂਲ ਤੇ ਕਵਨ ਦ੍ਰਿਸਟਾਨੀ ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥
तेरा क्या मूल है और तू कैसा दिखाई देता हे।

ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿ ਸੀਗਾਰਿਆ ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥
जिसने तुझे रचा, संवारा एवं सुशोभित किया है,

ਗਰਭ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਜਿਨਹਿ ਉਬਾਰਿਆ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥
जिसने तेरी गर्भ की अग्नि में रक्षा की है,

ਬਾਰ ਬਿਵਸਥਾ ਤੁਝਹਿ ਪਿਆਰੈ ਦੂਧ ॥
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
जिसने तुझे बाल्यावस्था में पीने के लिए दूध दिया है,

ਭਰਿ ਜੋਬਨ ਭੋਜਨ ਸੁਖ ਸੂਧ ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
जिसने तुझे यौवन में भोजन, सुख एवं सूझ दी

ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਊਪਰਿ ਸਾਕ ਸੈਨ ॥
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
और जिसने जब तू बूढ़ा हुआ तो, सगे-संबंधी एवं मित्र

ਮੁਖਿ ਅਪਿਆਉ ਬੈਠ ਕਉ ਦੈਨ ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
बैठे ही मुँह में भोजन डालने के लिए -तेरी सेवा के लिए दिए हैं।

ਇਹੁ ਨਿਰਗੁਨੁ ਗੁਨੁ ਕਛੂ ਨ ਬੂਝੈ ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
यह गुणविहीन मनुष्य किए हुए उपकारों की कुछ भी कद्र नहीं करता।

ਬਖਸਿ ਲੇਹੁ ਤਉ ਨਾਨਕ ਸੀਝੈ ॥੧॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! यदि तू उसको क्षमा कर दे तो ही वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है॥ १॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਧਰ ਊਪਰਿ ਸੁਖਿ ਬਸਹਿ ॥
जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥
(हे प्राणी !) जिसकी कृपा से तू धरती पर सुखपूर्वक रहता है

ਸੁਤ ਭ੍ਰਾਤ ਮੀਤ ਬਨਿਤਾ ਸੰਗਿ ਹਸਹਿ ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥
और अपने पुत्र, भाई, मित्र एवं पत्नी के साथ हँसता खेलता है,

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੀਵਹਿ ਸੀਤਲ ਜਲਾ ॥
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
जिसकी कृपा से तू शीतल जल पीता है

ਸੁਖਦਾਈ ਪਵਨੁ ਪਾਵਕੁ ਅਮੁਲਾ ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥
और तुझे प्रसन्न करने वाली सुखदायक वायु एवं अमूल्य अग्नि मिली है,

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭੋਗਹਿ ਸਭਿ ਰਸਾ ॥
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
जिसकी कृपा से तुम तमाम रस भोगते हो

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਸੰਗਿ ਸਾਥਿ ਬਸਾ ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥
और समस्त पदार्थों के साथ तुम रहते हो,

ਦੀਨੇ ਹਸਤ ਪਾਵ ਕਰਨ ਨੇਤ੍ਰ ਰਸਨਾ ॥
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
जिसने तुझे हाथ, पैर, कान, आंख एवं जीभ प्रदान किए हैं,

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਰਚਨਾ ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥
(हे प्राणी !) तुम उस ईश्वर को भुलाकर दूसरों के साथ प्रेम करते हो।

ਐਸੇ ਦੋਖ ਮੂੜ ਅੰਧ ਬਿਆਪੇ ॥
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
ऐसे दोष ज्ञानहीन मूर्ख के साथ फँसे हुए हैं।

ਨਾਨਕ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪੇ ॥੨॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु! इनकी तुम स्वयं ही रक्षा करो ॥ २॥

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਜੋ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥
आदि अंति जो राखनहारु ॥
जो परमात्मा आदि से लेकर अंत तक (जन्म से मृत्यु तक) सबका रक्षक है,

ਤਿਸ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਕਰੈ ਗਵਾਰੁ ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥
मूर्ख पुरुष उससे प्रेम नहीं करता।

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
जिसकी सेवा से उसको नौ निधियाँ मिलती हैं,

ਤਾ ਸਿਉ ਮੂੜਾ ਮਨੁ ਨਹੀ ਲਾਵੈ ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥
उसे मूर्ख जीव अपने हृदय से नहीं लगाता।

ਜੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸਦ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
जो ठाकुर सदैव ही प्रत्यक्ष है,

ਤਾ ਕਉ ਅੰਧਾ ਜਾਨਤ ਦੂਰੇ ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥
उसको ज्ञानहीन जीव दूर जानता है।

ਜਾ ਕੀ ਟਹਲ ਪਾਵੈ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ॥
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
जिसकी सेवा-भक्ति से उसने प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त होती है,

ਤਿਸਹਿ ਬਿਸਾਰੈ ਮੁਗਧੁ ਅਜਾਨੁ ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
मूर्ख एवं अज्ञानी पुरुष उस ईश्वर को भुला देता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਹੁ ਭੂਲਨਹਾਰੁ ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥
नश्वर प्राणी हमेशा ही भूल करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ॥੩॥
नानक राखनहारु अपारु ॥३॥
हे नानक ! केवल अनन्त ईश्वर ही रक्षक है॥ ३॥

ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਿ ਕਉਡੀ ਸੰਗਿ ਰਚੈ ॥
रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥
नाम-रत्न को त्याग कर मनुष्य माया रूपी कौड़ी के संग खुश रहता है।

ਸਾਚੁ ਛੋਡਿ ਝੂਠ ਸੰਗਿ ਮਚੈ ॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
वह सत्य को त्यागकर झूठ के साथ प्रसन्न होता है।

ਜੋ ਛਡਨਾ ਸੁ ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥
जिस दुनिया के पदार्थों को उसने त्याग जाना है, उसको वह सदैव स्थिर जानता है।

ਜੋ ਹੋਵਨੁ ਸੋ ਦੂਰਿ ਪਰਾਨੈ ॥
जो होवनु सो दूरि परानै ॥
जो कुछ होना है, उसको वह दूर समझता है।

ਛੋਡਿ ਜਾਇ ਤਿਸ ਕਾ ਸ੍ਰਮੁ ਕਰੈ ॥
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥
जिसे उसे छोड़ जाना है, उसके लिए वह कष्ट उठाता है।

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਤਿਸੁ ਪਰਹਰੈ ॥
संगि सहाई तिसु परहरै ॥
वह उस सहायक (प्रभु) को त्यागता है, जो सदैव उसके साथ है।

ਚੰਦਨ ਲੇਪੁ ਉਤਾਰੈ ਧੋਇ ॥ਗਰਧਬ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਸਮ ਸੰਗਿ ਹੋਇ ॥
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
वह चन्दन के लेप को धोकर उतार देता है।गधे का केवल भस्म (राख) से ही प्रेम है।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਪਤਿਤ ਬਿਕਰਾਲ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
मनुष्य भयंकर अंधेरे कुएँ में गिरा पड़ा है।

ਨਾਨਕ ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਇਆਲ ॥੪॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥
नानक की प्रार्थना है कि हे दया के घर ईश्वर ! इन्हें तुम अन्धेरे कुएँ से बाहर निकाल लो॥ ४॥

ਕਰਤੂਤਿ ਪਸੂ ਕੀ ਮਾਨਸ ਜਾਤਿ ॥
करतूति पसू की मानस जाति ॥
जाति मनुष्य की है, लेकिन कर्म पशुओं वाले हैं।

ਲੋਕ ਪਚਾਰਾ ਕਰੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥
इन्सान रात-दिन लोगों के लिए आडम्बर करता रहता है।

ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਮਾਇਆ ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
बाहर (देहि में) वह धार्मिक वेष धारण करता है परन्तु उसके मन में माया की मैल है।

ਛਪਸਿ ਨਾਹਿ ਕਛੁ ਕਰੈ ਛਪਾਇਆ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
चाहे जितना दिल करे वह छिपाए परन्तु वह अपनी असलियत को छिपा नहीं सकता।

ਬਾਹਰਿ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਇਸਨਾਨ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
वह ज्ञान, ध्यान एवं स्नान करने का दिखावा करता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਿਆਪੈ ਲੋਭੁ ਸੁਆਨੁ ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
परन्तु उसके मन को लालच रूपी कुत्ता दबाव डाल रहा है।

ਅੰਤਰਿ ਅਗਨਿ ਬਾਹਰਿ ਤਨੁ ਸੁਆਹ ॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
उसके शरीर में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है और बाहर शरीर पर वैराग्य की भस्म विद्यमान है।

ਗਲਿ ਪਾਥਰ ਕੈਸੇ ਤਰੈ ਅਥਾਹ ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥
अपनी गर्दन पर वासना रूपी पत्थर के साथ वह अति गहरे सागर से किस तरह पार हो सकता है ?

ਜਾ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਬਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
हे नानक ! जिसके हृदय में ईश्वर स्वयं निवास करता है

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਹਜਿ ਸਮਾਤਿ ॥੫॥
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥
ऐसा व्यक्ति सहज ही प्रभु में समा जाता है॥ ५॥

ਸੁਨਿ ਅੰਧਾ ਕੈਸੇ ਮਾਰਗੁ ਪਾਵੈ ॥
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
केवल सुनने से ही अन्धा पुरुष किस तरह मार्ग ढूंढ सकता है ?

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਓੜਿ ਨਿਬਹਾਵੈ ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥
उसका हाथ पकड़ लो (चूंकि यह) अन्त तक प्रेम का निर्वाह कर सके।

ਕਹਾ ਬੁਝਾਰਤਿ ਬੂਝੈ ਡੋਰਾ ॥
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
बहरा पुरुष बात किस तरह समझ सकता है ?

ਨਿਸਿ ਕਹੀਐ ਤਉ ਸਮਝੈ ਭੋਰਾ ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥
जब हम रात कहते हैं तो वह दिन समझता है।

ਕਹਾ ਬਿਸਨਪਦ ਗਾਵੈ ਗੁੰਗ ॥
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥
गूंगा पुरुष किस तरह बिसनपद गा सकता है?

ਜਤਨ ਕਰੈ ਤਉ ਭੀ ਸੁਰ ਭੰਗ ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥
यदि वह कोशिश भी करे तो भी उसका स्वर भंग हो जाता है।

ਕਹ ਪਿੰਗੁਲ ਪਰਬਤ ਪਰ ਭਵਨ ॥
कह पिंगुल परबत पर भवन ॥
लंगड़ा किस तरह पहाड़ पर चक्कर काट सकता है ?

ਨਹੀ ਹੋਤ ਊਹਾ ਉਸੁ ਗਵਨ ॥
नही होत ऊहा उसु गवन ॥
उसका वहाँ जाना संभव नहीं।

ਕਰਤਾਰ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਦੀਨੁ ਬੇਨਤੀ ਕਰੈ ॥
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥
हे नानक ! हे करुणामय ! हे करतार ! (यह) दीन सेवक प्रार्थना करता है कि

ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਕਿਰਪਾ ਤਰੈ ॥੬॥
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥
तेरी कृपा से ही जीव भवसागर से पार हो सकता है॥ ६॥

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਸੁ ਆਵੈ ਨ ਚੀਤਿ ॥
संगि सहाई सु आवै न चीति ॥
जो परमात्मा जीव का साथी एवं सहायक है, वह उसे अपने चित्त में याद नहीं करता।

ਜੋ ਬੈਰਾਈ ਤਾ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥
अपितु वह उससे प्रेम करता है, जो उसका शत्रु है।

ਬਲੂਆ ਕੇ ਗ੍ਰਿਹ ਭੀਤਰਿ ਬਸੈ ॥
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥
वह बालू (रेत) के घर में ही रहता है।

ਅਨਦ ਕੇਲ ਮਾਇਆ ਰੰਗਿ ਰਸੈ ॥
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥
वह आनंद के खेल एवं धन के रंग (खुशी) भोगता है।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਮਨਹਿ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ॥
द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥
वह इन रंगरलियों का भरोसा मन में दृढ़ समझता है।

ਕਾਲੁ ਨ ਆਵੈ ਮੂੜੇ ਚੀਤਿ ॥
कालु न आवै मूड़े चीति ॥
लेकिन मूर्ख जीव अपने मन में काल (मृत्यु) को स्मरण ही नहीं करता।

ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮੋਹ ॥
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
वैर, विरोध, कामवासना, क्रोध, मोह,

ਝੂਠ ਬਿਕਾਰ ਮਹਾ ਲੋਭ ਧ੍ਰੋਹ ॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥
झूठ, पाप, महालोभ एवं छल-कपट की

ਇਆਹੂ ਜੁਗਤਿ ਬਿਹਾਨੇ ਕਈ ਜਨਮ ॥
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
युक्तियों में मनुष्य ने अनेकों जन्म व्यतीत कर दिए हैं।

ਨਾਨਕ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਆਪਨ ਕਰਿ ਕਰਮ ॥੭॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥
नानक की विनती है कि हे प्रभु ! अपनी कृपा धारण करके जीव को भवसागर से बचा ले॥ ७॥

ਤੂ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਮ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥
(हे ईश्वर !) तू हमारा ठाकुर है और हमारी तुझ से ही प्रार्थना है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੀ ਰਾਸਿ ॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥
यह आत्मा एवं शरीर सब तेरी ही पूंजी है।

ਤੁਮ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੇਰੇ ॥
म मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुम हमारे माता-पिता हो और हम तेरे बालक हैं।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਮਹਿ ਸੂਖ ਘਨੇਰੇ ॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥
तेरी कृपा में बहुत सारे सुख हैं।

ਕੋਇ ਨ ਜਾਨੈ ਤੁਮਰਾ ਅੰਤੁ ॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
हे प्रभु ! तेरा अन्त कोई भी नहीं जानता।

ਊਚੇ ਤੇ ਊਚਾ ਭਗਵੰਤ ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
तू सर्वोपरि भगवान है।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਤੁਮਰੈ ਸੂਤ੍ਰਿ ਧਾਰੀ ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
समूचा जगत् तेरे सूत्र (धागे) में पिरोया हुआ है।

ਤੁਮ ਤੇ ਹੋਇ ਸੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
जो कुछ (सृष्टि) तुझ से उत्पन्न हुआ है, वह तेरा आज्ञाकारी है।

ਤੁਮਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
तेरी गति एवं मर्यादा को केवल तू ही जानता है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੮॥੪॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥
हे नानक ! तेरा सेवक सदा ही तुझ पर कुर्बान जाता है॥ ८॥ ४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਦੇਨਹਾਰੁ ਪ੍ਰਭ ਛੋਡਿ ਕੈ ਲਾਗਹਿ ਆਨ ਸੁਆਇ ॥
देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥
देने वाले दाता प्रभु को त्याग कर प्राणी दूसरे स्वादों में लगता है, (परन्तु)

ਨਾਨਕ ਕਹੂ ਨ ਸੀਝਈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥
हे नानक ! ऐसा प्राणी कदापि सफल नहीं होता, क्योंकि प्रभु के नाम के बिना मान-सम्मान नहीं रहता॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਦਸ ਬਸਤੂ ਲੇ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥
दस बसतू ले पाछै पावै ॥
मनुष्य (ईश्वर से) दस वस्तुएँ लेकर पीछे सँभाल लेता है।

ਏਕ ਬਸਤੁ ਕਾਰਨਿ ਬਿਖੋਟਿ ਗਵਾਵੈ ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
(परन्तु) एक वस्तु की खातिर वह अपना विश्वास गंवा लेता है।

ਏਕ ਭੀ ਨ ਦੇਇ ਦਸ ਭੀ ਹਿਰਿ ਲੇਇ ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
यदि प्रभु एक वस्तु भी न देवे और दस भी छीन ले

ਤਉ ਮੂੜਾ ਕਹੁ ਕਹਾ ਕਰੇਇ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
तो बताओ यह मूर्ख क्या कर सकता है ?

ਜਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਸਿਉ ਨਾਹੀ ਚਾਰਾ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
जिस ठाकुर के समक्ष कोई जोर नहीं चल सकता,

ਤਾ ਕਉ ਕੀਜੈ ਸਦ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥
उसके समक्ष सदैव प्रणाम करना चाहिए।

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
जिसके मन को प्रभु मीठा लगता है,

ਸਰਬ ਸੂਖ ਤਾਹੂ ਮਨਿ ਵੂਠਾ ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
समस्त सुख उसके मन में वास करते हैं।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਅਪਨਾ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਆ ॥
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
हे नानक ! जिस पुरुष से परमेश्वर अपने हुक्म का पालन करवाता है,

ਸਰਬ ਥੋਕ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥
संसार के समस्त पदार्थ उसने पा लिए हैं॥ १॥

ਅਗਨਤ ਸਾਹੁ ਅਪਨੀ ਦੇ ਰਾਸਿ ॥
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
साहूकार प्रभु प्राणी को (पदार्थों की) असंख्य पूँजी प्रदान करता है।

ਖਾਤ ਪੀਤ ਬਰਤੈ ਅਨਦ ਉਲਾਸਿ ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
प्राणी इसको आनंद एवं उल्लास से खाता-पीता एवं उपयोग करता है।

ਅਪੁਨੀ ਅਮਾਨ ਕਛੁ ਬਹੁਰਿ ਸਾਹੁ ਲੇਇ ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥
यदि साहूकार प्रभु अपनी धरोहर में से कुछ वापिस ले ले,

ਅਗਿਆਨੀ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਕਰੇਇ ॥
अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥
तो मूर्ख व्यक्ति अपने मन में क्रोध करता है।

ਅਪਨੀ ਪਰਤੀਤਿ ਆਪ ਹੀ ਖੋਵੈ ॥
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
इस तरह वह अपना विश्वास स्वयं ही गंवा लेता है।

ਬਹੁਰਿ ਉਸ ਕਾ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥
प्रभु दोबारा उस पर विश्वास नहीं करता।

ਜਿਸ ਕੀ ਬਸਤੁ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਰਾਖੈ ॥
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
जिसकी वस्तु है, उसके समक्ष (स्वयं ही खुशी से) रख देनी चाहिए

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨੈ ਮਾਥੈ ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
और प्रभु की आज्ञा उसके लिए सहर्ष मानने योग्य है।

ਉਸ ਤੇ ਚਉਗੁਨ ਕਰੈ ਨਿਹਾਲੁ ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥
प्रभु उसे पहले की अपेक्षा चौगुणा कृतार्थ कर देता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ॥੨॥
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर सदैव ही दयालु है॥ २॥

ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਹੇਤ ॥ਸਰਪਰ ਹੋਵਤ ਜਾਨੁ ਅਨੇਤ ॥
अनिक भाति माइआ के हेत ॥सरपर होवत जानु अनेत ॥
माया के मोह अनेक प्रकार के हैं,परन्तु यह तमाम अन्त में नाश हो जाने वाले समझो।

ਬਿਰਖ ਕੀ ਛਾਇਆ ਸਿਉ ਰੰਗੁ ਲਾਵੈ ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
मनुष्य वृक्ष की छाया से प्रेम करता है। (परन्तु)

ਓਹ ਬਿਨਸੈ ਉਹੁ ਮਨਿ ਪਛੁਤਾਵੈ ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जब वह नाश होता है तो वह अपने मन में पश्चाताप करता है।

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਚਾਲਨਹਾਰੁ ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥
दृष्टिगोचर जगत् क्षणभंगुर है,

ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਤਹ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰੁ ॥
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥
इस जगत् से ज्ञानहीन इन्सान अपनत्व बनाए बैठा है।

ਬਟਾਊ ਸਿਉ ਜੋ ਲਾਵੈ ਨੇਹ ॥
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
जो भी पुरुष यात्री से प्रेम लगाता है,

ਤਾ ਕਉ ਹਾਥਿ ਨ ਆਵੈ ਕੇਹ ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥
आखिरकार उसके हाथ कुछ नहीं आता।

ਮਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੁਖਦਾਈ ॥
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥
हे मेरे मन ! भगवान के नाम का प्रेम सुखदायक है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਲਏ ਲਾਈ ॥੩॥
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥
हे नानक ! भगवान उनको अपने साथ लगाता है, जिन पर वह कृपा धारण करता है॥ ३ ॥

ਮਿਥਿਆ ਤਨੁ ਧਨੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸਬਾਇਆ ॥
मिथिआ तनु धनु कुट्मबु सबाइआ ॥
यह शरीर, धन-दौलत एवं परिवार सब झूठा है।

ਮਿਥਿਆ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥
अहंकार, ममता एवं माया भी झूठे हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਧਨ ਮਾਲ ॥
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
राज्य, यौवन, धन एवं सम्पति सब कुछ मिथ्या हैं।

ਮਿਥਿਆ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਕਰਾਲ ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥
काम एवं विकराल क्रोध सब नश्वर हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਥ ਹਸਤੀ ਅਸ੍ਵ ਬਸਤ੍ਰਾ ॥
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥
सुन्दर रथ, हाथी, घोड़े एवं सुन्दर वस्त्र ये सभी नश्वर (मिथ्या) हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰੰਗ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਪੇਖਿ ਹਸਤਾ ॥
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥
धन-दौलत संग्रह करने की प्रीति, जिसे देख कर मनुष्य हँसता है, यह भी मिथ्या है।

ਮਿਥਿਆ ਧ੍ਰੋਹ ਮੋਹ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥
छल-कपट, सांसारिक मोह एवं अभिमान भी क्षणभंगुर हैं।

ਮਿਥਿਆ ਆਪਸ ਊਪਰਿ ਕਰਤ ਗੁਮਾਨੁ ॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥
अपने ऊपर घमण्ड करना झूठा है।

ਅਸਥਿਰੁ ਭਗਤਿ ਸਾਧ ਕੀ ਸਰਨ ॥
असथिरु भगति साध की सरन ॥
भगवान की भक्ति एवं संतों की शरण अटल है।

ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ॥੪॥
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥
हे नानक ! भगवान के चरणों को ही जप कर प्राणी वास्तविक जीवन जीता है। ४॥

ਮਿਥਿਆ ਸ੍ਰਵਨ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਸੁਨਹਿ ॥
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
इन्सान के वे कान झूठे हैं जो पराई निन्दा सुनते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਹਸਤ ਪਰ ਦਰਬ ਕਉ ਹਿਰਹਿ ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
वे हाथ भी झूठे हैं जो पराया धन चुराते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਨੇਤ੍ਰ ਪੇਖਤ ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਰੂਪਾਦ ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
वे नेत्र मिथ्या हैं, जो पराई नारी का सौंदर्य रूप देखते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਰਸਨਾ ਭੋਜਨ ਅਨ ਸ੍ਵਾਦ ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
वह जिव्हा भी मिथ्या है, जो पकवान एवं दूसरे स्वाद भोगती है।

ਮਿਥਿਆ ਚਰਨ ਪਰ ਬਿਕਾਰ ਕਉ ਧਾਵਹਿ ॥
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
वे चरण झूठे हैं, जो दूसरों का बुरा करने के लिए दौड़ते हैं।

ਮਿਥਿਆ ਮਨ ਪਰ ਲੋਭ ਲੁਭਾਵਹਿ ॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥
वह मन भी झूठा है जो पराए धन का लोभ करता है।

ਮਿਥਿਆ ਤਨ ਨਹੀ ਪਰਉਪਕਾਰਾ ॥
मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
वे शरीर मिथ्या है, जो परोपकार नहीं करता।

ਮਿਥਿਆ ਬਾਸੁ ਲੇਤ ਬਿਕਾਰਾ ॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥
वह नाक व्यर्थ है, जो विषय-विकारों की गंध सूंघ रही है।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਮਿਥਿਆ ਸਭ ਭਏ ॥
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥
ऐसी समझ के बिना प्रत्येक अंग नश्वर है।

ਸਫਲ ਦੇਹ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਲਏ ॥੫॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥
हे नानक ! वह शरीर सफल है, जो हरि-परमेश्वर का नाम जपता रहता है।॥ ५॥

ਬਿਰਥੀ ਸਾਕਤ ਕੀ ਆਰਜਾ ॥
बिरथी साकत की आरजा ॥
शाक्त इन्सान का जीवन व्यर्थ है।

ਸਾਚ ਬਿਨਾ ਕਹ ਹੋਵਤ ਸੂਚਾ ॥
साच बिना कह होवत सूचा ॥
सत्य के बिना वह कैसे शुद्ध हो सकता है?

ਬਿਰਥਾ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਤਨੁ ਅੰਧ ॥
बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥
नाम के बिना अज्ञानी पुरुष का शरीर व्यर्थ है। (क्योंकि)

ਮੁਖਿ ਆਵਤ ਤਾ ਕੈ ਦੁਰਗੰਧ ॥
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥
उसके मुख से बदबू आती है।

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਬ੍ਰਿਥਾ ਬਿਹਾਇ ॥
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥
प्रभु के सिमरन के बिना दिन और रात व्यर्थ गुजर जाते हैं,

ਮੇਘ ਬਿਨਾ ਜਿਉ ਖੇਤੀ ਜਾਇ ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥
जिस तरह वर्षा के बिना फसल नष्ट हो जाती है।

ਗੋਬਿਦ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਬ੍ਰਿਥੇ ਸਭ ਕਾਮ ॥
गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥
गोविन्द के भजन बिना तमाम कार्य व्यर्थ हैं,

ਜਿਉ ਕਿਰਪਨ ਕੇ ਨਿਰਾਰਥ ਦਾਮ ॥
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥
जैसे कंजूस पुरुष की दौलत व्यर्थ है।

ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਤੇ ਜਨ ਜਿਹ ਘਟਿ ਬਸਿਓ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
वह इन्सान बड़ा भाग्यशाली है, जिसके हृदय में भगवान का नाम वास करता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੬॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥
हे नानक ! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥ ६॥

ਰਹਤ ਅਵਰ ਕਛੁ ਅਵਰ ਕਮਾਵਤ ॥
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनुष्य कहता कुछ है और करता बिल्कुल ही कुछ और है।

ਮਨਿ ਨਹੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮੁਖਹੁ ਗੰਢ ਲਾਵਤ ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥
उसके हृदय में (प्रभु के प्रति) प्रेम नहीं लेकिन मुख से व्यर्थ बातें करता है।

ਜਾਨਨਹਾਰ ਪ੍ਰਭੂ ਪਰਬੀਨ ॥
जाननहार प्रभू परबीन ॥
सब कुछ जानने वाला प्रभु बड़ा चतुर है,

ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਨ ਕਾਹੂ ਭੀਨ ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥
(वह कभी) किसी के बाहरी वेष से खुश नहीं होता।

ਅਵਰ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪਿ ਨ ਕਰੈ ॥
अवर उपदेसै आपि न करै ॥
जो दूसरों को उपदेश देता है और स्वयं उस पर अनुसरण नहीं करता,

ਆਵਤ ਜਾਵਤ ਜਨਮੈ ਮਰੈ ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥
वह (जगत् में) आता-जाता एवं जन्मता-मरता रहता है।

ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
जिस पुरुष के हृदय में निरंकार वास करता है,

ਤਿਸ ਕੀ ਸੀਖ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥
उसके उपदेश से समूचा जगत् (विकारों से) बच जाता है।

ਜੋ ਤੁਮ ਭਾਨੇ ਤਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
हे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, केवल वही तुझे जान सकते हैं।

ਨਾਨਕ ਉਨ ਜਨ ਚਰਨ ਪਰਾਤਾ ॥੭॥
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥
हे नानक ! मैं ऐसे भक्तों के चरण-स्पर्श करता हूँ॥ ७॥

ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਭੁ ਜਾਨੈ ॥
करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥
मैं उस परब्रह्म के समक्ष प्रार्थना करता हूँ, जो सब कुछ जानता है।

ਅਪਨਾ ਕੀਆ ਆਪਹਿ ਮਾਨੈ ॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥
अपने उत्पन्न किए प्राणी को वह स्वयं ही सम्मान प्रदान करता है।

ਆਪਹਿ ਆਪ ਆਪਿ ਕਰਤ ਨਿਬੇਰਾ ॥
आपहि आप आपि करत निबेरा ॥
ईश्वर स्वयं ही (प्राणियों के कर्मों के अनुसार) न्याय करता है।

ਕਿਸੈ ਦੂਰਿ ਜਨਾਵਤ ਕਿਸੈ ਬੁਝਾਵਤ ਨੇਰਾ ॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥
किसी को यह सूझ प्रदान करता है कि ईश्वर हमारे समीप है और किसी को लगता है कि ईश्वर कहीं दूर है।

ਉਪਾਵ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲ ਤੇ ਰਹਤ ॥
उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥
समस्त कोशिशों एवं चतुराईयों से ईश्वर परे है।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਜਾਨੈ ਆਤਮ ਕੀ ਰਹਤ ॥
सभु कछु जानै आतम की रहत ॥
(क्योंकि) वह मनुष्य के मन की अवस्था भलीभाँति समझता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਲੜਿ ਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥
वह उसको अपने साथ मिला लेता है, जो उसको भला लगता है।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥
प्रभु समस्त स्थानों एवं स्थानों की दूरी पर सर्वव्यापक हो रहा है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ॥
सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥
जिस पर ईश्वर कृपा धारण करता है, वही उसका सेवक है।

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਹਰੀ ॥੮॥੫॥
निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥
हे नानक ! क्षण-क्षण हरि का जाप करते रहो ॥ ८॥ ५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
सलोकु ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਰੁ ਲੋਭ ਮੋਹ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅਹੰਮੇਵ ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहमेव ॥
हे ईश्वर ! मेरा काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार निवृत्त हो जाए

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਗੁਰਦੇਵ ॥੧॥
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥
मैं तेरी शरण में आया हूँ. हे गुरुदेव ! मुझ पर ऐसी कृपा करें ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਛਤੀਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖਾਹਿ ॥
जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥
"(हे जीव !) जिसकी कृपा से तू छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन खाता है,

ਤਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਰਖੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥
उस प्रभु को अपने मन में याद कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਗੰਧਤ ਤਨਿ ਲਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥
जिसकी कृपा से तुम अपने शरीर पर सुगंधियाँ लगाते हो,

ਤਿਸ ਕਉ ਸਿਮਰਤ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥
उसका भजन करने से तुझे परमगति मिल जाएगी।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਸਹਿ ਸੁਖ ਮੰਦਰਿ ॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
जिसकी कृपा से तुम महलों में सुख से रहते हो,

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਇ ਸਦਾ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥
अपने मन में हमेशा उसका ध्यान करो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਗ੍ਰਿਹ ਸੰਗਿ ਸੁਖ ਬਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥
जिसकी कृपा से तुम अपने घर में सुखपूर्वक रहते हो,

ਆਠ ਪਹਰ ਸਿਮਰਹੁ ਤਿਸੁ ਰਸਨਾ ॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥
अपनी जिव्हा से आठ पहर उसका सिमरन करो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਰੰਗ ਰਸ ਭੋਗ ॥
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
हे नानक ! जिस की कृपा से रंग तमाशे, स्वादिष्ट व्यंजन एवं पदार्थ प्राप्त होते हैं,

ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਧਿਆਵਨ ਜੋਗ ॥੧॥
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥
उस याद करने योग्य ईश्वर का सदैव ध्यान करना चाहिए॥ १॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਹਢਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि पाट पट्मबर हढावहि ॥
जिसकी कृपा से तुम रेशमी वस्त्र पहनते हो,

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਕਤ ਅਵਰ ਲੁਭਾਵਹਿ ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥
उसे भुलाकर क्यों दूसरों में मस्त हो रहे हो।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸੇਜ ਸੋਈਜੈ ॥
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
जिसकी कृपा से तुम सुखपूर्वक सेज पर सोते हो।

ਮਨ ਆਠ ਪਹਰ ਤਾ ਕਾ ਜਸੁ ਗਾਵੀਜੈ ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥
हे मेरे मन ! उस प्रभु का आठों प्रहर यशोगान करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁਝੁ ਸਭੁ ਕੋਊ ਮਾਨੈ ॥
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
जिसकी कृपा से प्रत्येक व्यक्ति तेरा आदर-सत्कार करता है,

ਮੁਖਿ ਤਾ ਕੋ ਜਸੁ ਰਸਨ ਬਖਾਨੈ ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥
अपने मुँह एवं जिव्हा से उसका यश सदैव बखान कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੋ ਰਹਤਾ ਧਰਮੁ ॥
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥
जिसकी कृपा से तेरा धर्म कायम रहता है,

ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥
हे मेरे मन ! तू हमेशा उस परब्रह्म का ध्यान कर।

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਜਪਤ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ਪਾਵਹਿ ॥
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
पूज्य परमेश्वर की आराधना करने से तू उसके दरबार में शोभा प्राप्त करेगा।

ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਵਹਿ ॥੨॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥
हे नानक ! इस तरह तुम प्रतिष्ठा सहित अपने धाम (परलोक) जाओगे॥ २॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਰੋਗ ਕੰਚਨ ਦੇਹੀ ॥
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
हे मन ! जिसकी कृपा से तुझे सोने जैसा सुन्दर शरीर मिला है,

ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ਤਿਸੁ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
उस प्रियतम राम से वृति लगा।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਓਲਾ ਰਹਤ ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
जिसकी कृपा से तेरा पर्दा रहता है,

ਮਨ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤ ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥
उस प्रभु-परमेश्वर की स्तुति करने से तुम सुख प्राप्त कर लोगे।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਸਗਲ ਛਿਦ੍ਰ ਢਾਕੇ ॥
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
जिसकी कृपा से तेरे तमाम पाप छिप जाते हैं।

ਮਨ ਸਰਨੀ ਪਰੁ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕੈ ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥
हे मन ! उस प्रभु-परमेश्वर की शरण ले।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੁਝੁ ਕੋ ਨ ਪਹੂਚੈ ॥
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
जिसकी कृपा से कोई तेरे बराबर नहीं पहुँचता,

ਮਨ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਊਚੇ ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥
हे मेरे मन ! अपने श्वास-श्वास से सर्वोपरि प्रभु को याद कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਈ ਦ੍ਰੁਲਭ ਦੇਹ ॥
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
जिसकी कृपा से तुझे दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹ ॥੩॥
नानक ता की भगति करेह ॥३॥
हे नानक ! उस भगवान की भक्ति किया कर ॥ ३॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਭੂਖਨ ਪਹਿਰੀਜੈ ॥
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
जिसकी कृपा से आभूषण पहने जाते हैं,

ਮਨ ਤਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਕਿਉ ਆਲਸੁ ਕੀਜੈ ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥
हे मन ! उसकी आराधना करते हुए आलस्य क्यों किया जाए?

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਅਸ੍ਵ ਹਸਤਿ ਅਸਵਾਰੀ ॥
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
जिसकी कृपा से तुम घोड़ों एवं हाथियों की सवारी करते हो,

ਮਨ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਕਬਹੂ ਨ ਬਿਸਾਰੀ ॥
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥
हे मन ! उस ईश्वर को कभी विस्मृत न कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਾਗ ਮਿਲਖ ਧਨਾ ॥
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥
जिसकी कृपा से उद्यान, धरती एवं धन प्राप्त हुए हैं,

ਰਾਖੁ ਪਰੋਇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨੇ ਮਨਾ ॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥
उस ईश्वर को अपने मन में पिरोकर रख।

ਜਿਨਿ ਤੇਰੀ ਮਨ ਬਨਤ ਬਨਾਈ ॥
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
हे मन ! जिस ईश्वर ने तेरी रचना की है,

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸਦ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਈ ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥
उठते-बैठते हर वक्त उसका ध्यान करते रहना चाहिए।

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਇ ਜੋ ਏਕ ਅਲਖੈ ॥
तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥
हे नानक ! उस एक अदृश्य प्रभु का चिन्तन कर।

ਈਹਾ ਊਹਾ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਰਖੈ ॥੪॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥
वह लोक-परलोक दोनों में तेरी रक्षा करेगा ॥ ४ ॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਹਿ ਪੁੰਨ ਬਹੁ ਦਾਨ ॥
जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥
जिसकी कृपा से तुम बड़ा दान-पुण्य करते हो,

ਮਨ ਆਠ ਪਹਰ ਕਰਿ ਤਿਸ ਕਾ ਧਿਆਨ ॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥
हे मन ! आठों पहर उसका ही ध्यान करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
जिसकी कृपा से तू धार्मिक संस्कार एवं सांसारिक कर्म करता है,

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰੀ ॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥
अपने श्वास-श्वास से उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਸੁੰਦਰ ਰੂਪੁ ॥
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
जिसकी कृपा से तेरा सुन्दर रूप है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਹੁ ਸਦਾ ਅਨੂਪੁ ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
उस अनुपम प्रभु का हमेशा सिमरन करना चाहिए।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਨੀਕੀ ਜਾਤਿ ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
जिसकी दया से तुझे उच्च (मनुष्य) जाति मिली है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥
सदा उस प्रभु का दिन-रात चिन्तन कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੀ ਪਤਿ ਰਹੈ ॥
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
जिसकी कृपा से तेरी प्रतिष्ठा बरकरार रही है,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਜਸੁ ਕਹੈ ॥੫॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से उसकी महिमा किया कर ॥५॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਨਹਿ ਕਰਨ ਨਾਦ ॥
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिसकी दया से तू कानों से शब्द सुनता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੇਖਹਿ ਬਿਸਮਾਦ ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिसकी दया से तू आश्चर्यजनक कौतुक देखता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि बोलहि अम्रित रसना ॥
जिसकी दया से तू अपनी जिव्हा से मीठे वचन बोलता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜੇ ਬਸਨਾ ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिसकी कृपा से तू सहज ही सुखपूर्वक रहता है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਸਤ ਕਰ ਚਲਹਿ ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिसकी दया से तेरे हाथ हिलते और काम करते हैं।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੰਪੂਰਨ ਫਲਹਿ ॥
जिह प्रसादि स्मपूरन फलहि ॥
जिसकी दया से तेरे सम्पूर्ण काम सफल होते हैं।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥
जिसकी दया से तुझे परमगति मिलती है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥
जिसकी दया से तुम सहज सुख में लीन हो जाओगे,

ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਕਤ ਲਾਗਹੁ ॥
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
ऐसे प्रभु को छोड़कर तुम क्यों किसी दूसरे से लग रहे हो ?

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਜਾਗਹੁ ॥੬॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से अपने मन को ईश्वर की ओर जाग्रत कर ॥६॥

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂੰ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸੰਸਾਰਿ ॥
जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
जिसकी कृपा से तू दुनिया में लोकप्रिय हुआ है,

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਮੂਲਿ ਨ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿ ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
उस प्रभु को कभी अपने हृदय से न भुला।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰਾ ਪਰਤਾਪੁ ॥
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥
जिसकी कृपा से तेरा तेज-प्रताप बना है,

ਰੇ ਮਨ ਮੂੜ ਤੂ ਤਾ ਕਉ ਜਾਪੁ ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
हे मेरे मूर्ख मन ! तू उसकी आराधना करता रह।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੇਰੇ ਕਾਰਜ ਪੂਰੇ ॥
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
जिसकी दया से तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं,

ਤਿਸਹਿ ਜਾਨੁ ਮਨ ਸਦਾ ਹਜੂਰੇ ॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥
अपने हृदय में उसको सदा निकट समझ।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂੰ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੁ ॥
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥
जिसकी दया से तुझे सत्य प्राप्त होता है,

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂੰ ਤਾ ਸਿਉ ਰਾਚੁ ॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
हे मेरे मन ! तू उससे प्रेम कर।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
जिसकी कृपा से सबकी गति हो जाती है,

ਨਾਨਕ ਜਾਪੁ ਜਪੈ ਜਪੁ ਸੋਇ ॥੭॥

नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥

हे नानक ! उस प्रभु के नाम का एक रस जाप करना चाहिए ॥ ७ ॥

ਆਪਿ ਜਪਾਏ ਜਪੈ ਸੋ ਨਾਉ ॥

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥

वही पुरुष ईश्वर का नाम जपता है, जिससे वह स्वयं जपाता है।

ਆਪਿ ਗਾਵਾਏ ਸੁ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥

आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥

केवल वही ईश्वर का यशोगान करता है, जिससे वह स्वयं गुणगान करवाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभु की कृपा से प्रकाश होता है।

ਪ੍ਰਭੂ ਦਇਆ ਤੇ ਕਮਲ ਬਿਗਾਸੁ ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभु की कृपा से हृदय-कमल प्रफुल्लित होता है।

ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਬਸੈ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥
जब प्रभु सुप्रसन्न होता है, तो वह मनुष्य के हृदय में आ निवास करता है।

ਪ੍ਰਭ ਦਇਆ ਤੇ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥
प्रभु की दया से मनुष्य की बुद्धि उत्तम हो जाती है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਮਇਆ ॥
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
हे प्रभु ! समस्त खजाने तेरी दया में हैं।

ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਕਿਨਹੂ ਲਇਆ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥
अपने आप किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਲਗਹਿ ਹਰਿ ਨਾਥ ॥
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
हे हरि-परमेश्वर ! तुम जहाँ प्राणियों को लगाते हो, वे उधर ही लग जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਇਨ ਕੈ ਕਛੂ ਨ ਹਾਥ ॥੮॥੬॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥
हे नानक ! इन प्राणियों के वश में कुछ नहीं है ॥८॥६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੋਇ ॥
अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
वह पारब्रह्म प्रभु अगम्य एवं अनन्त है।

ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੁ ਮੁਕਤਾ ਹੋਇ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
जो कोई भी उसके नाम का जाप करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਸੁਨਿ ਮੀਤਾ ਨਾਨਕੁ ਬਿਨਵੰਤਾ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
नानक प्रार्थना करता है, हे मेरे मित्र ! ध्यानपूर्वक सुन,

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਅਚਰਜ ਕਥਾ ॥੧॥
साध जना की अचरज कथा ॥१॥
साधुओं की कथा बड़ी अद्भुत है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਤ ॥
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साधुओं की संगति करने से मुख उज्ज्वल हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਲੁ ਸਗਲੀ ਖੋਤ ॥
साधसंगि मलु सगली खोत ॥
साधुओं की संगति करने से विकारों की तमाम मैल दूर हो जाती है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साधुओं की संगति करने से अभिमान मिट जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਗਟੈ ਸੁਗਿਆਨੁ ॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥
साधुओं की संगति करने से आत्म-ज्ञान प्रगट हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਬੁਝੈ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साधुओं की संगति करने से प्रभु निकट ही रहता हुआ प्रतीत होता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਭੁ ਹੋਤ ਨਿਬੇਰਾ ॥
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥
साधुओं की संगति करने से तमाम विवाद निपट जाते हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਏ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साधुओं की संगति करने से नाम-रत्न प्राप्त हो जाता है

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਊਪਰਿ ਜਤਨੁ ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य केवल एक ईश्वर हेतु ही प्रयास करता है।

ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬਰਨੈ ਕਉਨੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
कौन-सा प्राणी साधुओं की महिमा का वर्णन कर सकता है ?

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਪ੍ਰਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥੧॥
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥
हे नानक ! साधुओं की शोभा प्रभु (की महिमा) में ही लीन हुई है॥ १॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਅਗੋਚਰੁ ਮਿਲੈ ॥
साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साधुओं की संगति करने से अगोचर प्रभु मिल जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਪਰਫੁਲੈ ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी सदा प्रफुल्लित रहता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਆਵਹਿ ਬਸਿ ਪੰਚਾ ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साधुओं की संगति करने से पाँच शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) वश में आ जाते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਭੁੰਚਾ ॥
साधसंगि अम्रित रसु भुंचा ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य अमृत रूप नाम का रस चख लेता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਇ ਸਭ ਕੀ ਰੇਨ ॥
साधसंगि होइ सभ की रेन ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य सबकी धूलि बन जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਨੋਹਰ ਬੈਨ ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साधुओं की संगति करने से वाणी मनोहर हो जाती है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਤਹੂੰ ਧਾਵੈ ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साधुओं की संगति करने से मन कहीं नहीं जाता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਸਥਿਤਿ ਮਨੁ ਪਾਵੈ ॥
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥
साधुओं की संगति करने से मन स्थिरता प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਤੇ ਭਿੰਨ ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साधुओं की संगति में यह माया से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥੨॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥
हे नानक ! साधुओं की संगति में रहने से प्रभु सुप्रसन्न हो जाता है॥ २॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਸਮਨ ਸਭਿ ਮੀਤ ॥
साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥
साधु की संगति करने से सभी दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਹਾ ਪੁਨੀਤ ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥
साधु की संगति करने से मनुष्य महापवित्र हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਕਿਸ ਸਿਉ ਨਹੀ ਬੈਰੁ ॥
साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥
साधुओं की संगति करने से वह किसी से वैर नहीं करता।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬੀਗਾ ਪੈਰੁ ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य कुमार्ग की ओर चरण नहीं करता।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੰਦਾ ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साधु की संगति करने से कोई बुरा दिखाई नहीं देता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਾਨੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
साधसंगि जाने परमानंदा ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य महान सुख के मालिक ईश्वर को ही जानता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਹਉ ਤਾਪੁ ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य के अहंकार का ताप उतर जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਜੈ ਸਭੁ ਆਪੁ ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य तमाम अहंत्व को त्याग देता है।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਸਾਧ ਬਡਾਈ ॥
आपे जानै साध बडाई ॥
ईश्वर स्वयं ही साधुओं की महिमा को जानता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭੂ ਬਨਿ ਆਈ ॥੩॥
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥
हे नानक ! साधु एवं परमेश्वर का प्रेम परिपक्व हो जाता है॥ ३ ॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਕਬਹੂ ਧਾਵੈ ॥
साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साधु की संगति करने से प्राणी का मन कभी नहीं भटकता।

साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साधु की संगति करने से वह सदा सुख प्राप्त करता है।

साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधुओं की संगति करने से नाम रूपी अगोचर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य शिथिल न होने वाली शक्ति को सहन कर लेता है।

साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी सर्वोच्च स्थान में निवास करता है।

साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य आत्मस्वरूप में पहुँच जाता है।

साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी का धर्म पूरी तरह सुदृढ़ हो जाता है।

साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य केवल पारब्रह्म की ही आराधना करता है।

साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य नाम रूपी खजाना प्राप्त कर लेता है।

नानक साधू कै कुरबान ॥४॥
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥
हे नानक ! मैं उन साधुओं पर तन-मन से न्यौछावर हूँ॥ ४॥

साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य के समूचे वंश का उद्धार हो जाता है।

साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥
साधसंगि साजन मीत कुट्मब निसतारै ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य के मित्र-सज्जन एवं परिवार का भवसागर से उद्धार हो जाता है।

साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
साधुओं की संगति में रहने से वह धन प्राप्त हो जाता है,

जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥
जिस धन से हरेक पुरुष लाभ प्राप्त करता है और तृप्त हो जाता है।

साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साधुओं की संगति में रहने से यमराज भी सेवा करता है।

साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥
जो साधुओं की संगति में रहता है, देवदूत एवं देवते भी उसका यशोगान करते हैं।

साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साधुओं की संगति करने से समूचे पाप नाश हो जाते हैं।

साधसंगि अंम्रित गुन गाइन ॥
साधसंगि अम्रित गुन गाइन ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य अमृतमयी नाम का यश गायन करता है।

साध कै संगि सूब थान गंमि ॥
साध कै संगि सब थान गमि ॥
साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य की समस्त स्थानों पर पहुँच हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਫਲ ਜਨੰਮ ॥੫॥
नानक साध कै संगि सफल जनम ॥५॥
हे नानक ! साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है॥ ५॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਘਾਲ ॥
साध कै संगि नही कछु घाल ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य को मेहनत नहीं करनी पड़ती।

ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲ ॥
दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साधुओं के दर्शनमात्र एवं भेंट से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਕਲੁਖਤ ਹਰੈ ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य के तमाम पाप नाश हो जाते हैं।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਰਕ ਪਰਹਰੈ ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य नरक से बच जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸੁਹੇਲਾ ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साधुओं की संगति करने से प्राणी लोक-परलोक में सुखी हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਛੁਰਤ ਹਰਿ ਮੇਲਾ ॥
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥
साधुओं की संगति करने से जो ईश्वर से जुदा हुए हैं, वे उससे मिल जाते हैं।

ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साधुओं की संगति करने से मनुष्य जिस फल का वह इच्छुक होता है, उसे मिल जाता है

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਬਿਰਥਾ ਜਾਵੈ ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
साधुओं की संगति करने से वह खाली हाथ नहीं जाता।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਾਧ ਰਿਦ ਬਸੈ ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥
पारब्रह्म-प्रभु साधुओं के हृदय में निवास करता है।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੈ ਸਾਧ ਸੁਨਿ ਰਸੈ ॥੬॥
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥
हे नानक ! साधुओं की जिव्हा से ईश्वर का नाम सुनकर जीव पार हो जाता है॥ ६॥

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸੁਨਉ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साधु की संगति में रहकर भगवान का नाम सुनो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥
साधुओं की संगति में ईश्वर का गुणानुवाद करो।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰੈ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य प्रभु को अपने हृदय से नहीं भुलाता।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਰਪਰ ਨਿਸਤਰੈ ॥
साधसंगि सरपर निसतरै ॥
साधुओं की संगति में उसका निश्चित ही भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਲਗੈ ਪ੍ਰਭੁ ਮੀਠਾ ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य को प्रभु मीठा लगने लगता है।

ਸਾਧੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਡੀਠਾ ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साधुओं की संगति में ईश्वर प्रत्येक हृदय में दिखाई देता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਏ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
साधसंगि भए आगिआकारी ॥
साधुओं की संगति में मनुष्य ईश्वर का आज्ञाकारी हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥
साधसंगि गति भई हमारी ॥
साधुओं की संगति में हमारी गति हो गई है।

ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
साधुओं की संगति में रहने से तमाम रोग मिट जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਭੇਟੇ ਸੰਜੋਗ ॥੭॥
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥
हे नानक ! संयोग से ही साधु मिलते हैं।॥ ७॥

ਸਾਧ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬੇਦ ਨ ਜਾਨਹਿ ॥
साध की महिमा बेद न जानहि ॥
साधु की महिमा वेद भी नहीं जानते।

ਜੇਤਾ ਸੁਨਹਿ ਤੇਤਾ ਬਖਿਆਨਹਿ ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
वे उनके बारे जितना सुनते हैं, उतना ही बखान करते हैं।

ਸਾਧ ਕੀ ਉਪਮਾ ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साधु की उपमा (माया के) तीनों ही गुणों से दूर है।

ਸਾਧ ਕੀ ਉਪਮਾ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰਿ ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥
साधु की उपमा सर्वव्यापक है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਾ ਨਾਹੀ ਅੰਤ ॥
साध की सोभा का नाही अंत ॥
साधु की शोभा का कोई अन्त नहीं।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਦਾ ਬੇਅੰਤ ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साधु की शोभा सदैव ही अनन्त है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਊਚ ਤੇ ਊਚੀ ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साधु की शोभा उच्च -सर्वोच्च है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਮੂਚ ਤੇ ਮੂਚੀ ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साधु की शोभा महानों में बड़ी महान है।

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਸਾਧ ਬਨਿ ਆਈ ॥
साध की सोभा साध बनि आई ॥
साधु की शोभा केवल साधु को ही उपयुक्त लगती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਪ੍ਰਭ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੮॥੭॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥
नानक का कथन है कि हे मेरे भाई ! साधु एवं प्रभु में कोई भेद नहीं ॥ ८ ॥ ७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
जिसके मन में सत्य है और मुँह में भी वही सत्य है

ਅਵਰੁ ਨ ਪੇਖੈ ਏਕਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
और जो एक परमात्मा के अलावा किसी दूसरे को नहीं देखता,

ਨਾਨਕ ਇਹ ਲਛਣ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥
हे नानक ! यह गुण ब्रह्मज्ञानी के होते हैं।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪ ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा निर्लिप्त रहता है,

ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲ ਅਲੇਪ ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥
जैसे जल में कमल का फूल स्वच्छ होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਨਿਰਦੋਖ ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥
ब्रह्मज्ञानी सदा निर्दोष है,

ਜੈਸੇ ਸੂਰੁ ਸਰਬ ਕਉ ਸੋਖ ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
जैसे सूर्य समस्त (रसों को) सुखा देता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਮਾਨਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
ब्रह्मज्ञानी सबको एक आँख से देखता है,

ਜੈਸੇ ਰਾਜ ਰੰਕ ਕਉ ਲਾਗੈ ਤੁਲਿ ਪਵਾਨ ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
जैसे हवा राजा और कंगाल को एक समान लगती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਧੀਰਜੁ ਏਕ ॥
ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
ब्रह्मज्ञानी की सहनशीलता एक समान होती है,

ਜਿਉ ਬਸੁਧਾ ਕੋਊ ਖੋਦੈ ਕੋਊ ਚੰਦਨ ਲੇਪ ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
जैसे कोई धरती को खोदता है और कोई चन्दन का लेप करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਇਹੈ ਗੁਨਾਉ ॥
ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
ब्रह्मज्ञानी का यही गुण है।

ਨਾਨਕ ਜਿਉ ਪਾਵਕ ਕਾ ਸਹਜ ਸੁਭਾਉ ॥੧॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥
हे नानक ! जैसे अग्नि का सहज स्वभाव होता है। १॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਨਿਰਮਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
ब्रह्मज्ञानी निर्मल से भी परम निर्मल है,

ਜੈਸੇ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਜਲਾ ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥
जैसे जल को मैल नहीं लगती।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਨਿ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
ब्रह्मज्ञानी के मन में यूं प्रकाश होता है जैसे

ਜੈਸੇ ਧਰ ਊਪਰਿ ਆਕਾਸੁ ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥
पृथ्वी के ऊपर आकाश ।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਿਤ੍ਰ ਸਤ੍ਰੁ ਸਮਾਨਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रह्मज्ञानी के लिए मित्र एवं शत्रु एक समान होते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਹੀ ਅਭਿਮਾਨ ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥
ब्रह्मज्ञानी में थोड़ा-सा भी अभिमान नहीं होता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
ब्रह्मज्ञानी उच्च -सर्वोच्च है।

ਮਨਿ ਅਪਨੈ ਹੈ ਸਭ ਤੇ ਨੀਚਾ ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
परन्तु अपने मन में वह सबसे निम्न होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੇ ਜਨ ਭਏ ॥
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
हे नानक ! केवल वही पुरुष ब्रह्मज्ञानी बनता है,

ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥
जिन्हें परमेश्वर स्वयं बनाता है ॥२॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥
ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
ब्रह्मज्ञानी सबकी चरण-धूलि है।

ਆਤਮ ਰਸੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਚੀਨਾ ॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥
ब्रह्मज्ञानी आत्मिक आनन्द को अनुभव करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਸਭ ਊਪਰਿ ਮਇਆ ॥
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रह्मज्ञानी सब पर कृपा करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਤੇ ਕਛੁ ਬੁਰਾ ਨ ਭਇਆ ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
ब्रह्मज्ञानी के पास कोई बुराई नहीं होती और वह कुछ भी बुरा नहीं करता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਸਮਦਰਸੀ ॥
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रह्मज्ञानी सदैव समदर्शी होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਰਸੀ ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥
ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि से अमृत बरसता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬੰਧਨ ਤੇ ਮੁਕਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रह्मज्ञानी बन्धनों से मुक्त रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਜੁਗਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रह्मज्ञानी का जीवन-आचरण बड़ा पवित्र है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਭੋਜਨੁ ਗਿਆਨ ॥
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन
ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान होता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਬ੍ਰਹਮ ਧਿਆਨੁ ॥੩॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी भगवान के ध्यान में ही मग्न रहता है॥ ३॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਏਕ ਊਪਰਿ ਆਸ ॥
ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रह्मज्ञानी की एक ईश्वर पर ही आशा होती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸ ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥
ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਗਰੀਬੀ ਸਮਾਹਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रह्मज्ञानी नम्रता में ही टिका रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਪਰਉਪਕਾਰ ਉਮਾਹਾ ॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥
ब्रह्मज्ञानी को परोपकार करने का उत्साह बना रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਹੀ ਧੰਧਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रह्मज्ञानी सांसारिक विवादों से परे होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਲੇ ਧਾਵਤੁ ਬੰਧਾ ॥
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥
ब्रह्मज्ञानी अपने भागते मन को नियंत्रण में कर लेता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਹੋਇ ਸੁ ਭਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रह्मज्ञानी के कर्म श्रेष्ठ हैं, वह जो भी करता है, भला ही करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੁਫਲ ਫਲਾ ॥
ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥
ब्रह्मज्ञानी भलीभाँति सफल होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੰਗਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥
ब्रह्मज्ञानी की संगति में रहने से सबका उद्धार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਪੈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥੪॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥
हे नानक ! सारी दुनिया ब्रह्मज्ञानी की प्रशंसा करती है॥ ४॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਏਕੈ ਰੰਗ ॥
ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रह्मज्ञानी केवल एक ईश्वर से ही प्रेम करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਬਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੰਗ ॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ईश्वर ब्रह्मज्ञानी के साथ-साथ रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥
ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का आधार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਨਾਮੁ ਪਰਵਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥
ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का परिवार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦਾ ਸਦ ਜਾਗਤ ॥
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा जाग्रत रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਅਹੰਬੁਧਿ ਤਿਆਗਤ ॥
ब्रहम गिआनी अह्मबुधि तिआगत ॥
ब्रह्मज्ञानी अपनी अहंबुद्धि को त्याग देता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਮਨਿ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रह्मज्ञानी के हृदय में परमानन्द वास करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਘਰਿ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥
ब्रह्मज्ञानी के हृदय-रूपी घर में सदा आनंद बना रहता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੁਖ ਸਹਜ ਨਿਵਾਸ ॥
ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥
ब्रह्मज्ञानी हमेशा सहज सुख में निवास करता है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸ ॥੫॥
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता।॥५॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ज्ञाता होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਏਕ ਸੰਗਿ ਹੇਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रह्मज्ञानी एक ईश्वर से ही प्रेम करता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਹੋਇ ਅਚਿੰਤ ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रह्मज्ञानी के हृदय में हमेशा बेफ्रिक्री रहती है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रह्मज्ञानी का मंत्र पवित्र करने वाला होता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਿਸੁ ਕਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रह्मज्ञानी वही होता है, जिसे ईश्वर स्वयं लोकप्रिय बनाता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਬਡ ਪਰਤਾਪ ॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥
ब्रह्मज्ञानी का बड़ा प्रताप है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਦਰਸੁ ਬਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रह्मज्ञानी के दर्शन किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रह्मज्ञानी पर हमेशा बलिहारी जाना चाहिए।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਖੋਜਹਿ ਮਹੇਸੁਰ ॥
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
ब्रह्मज्ञानी को शिवशंकर भी खोजते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਆਪਿ ਪਰਮੇਸੁਰ ॥੬॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥
हे नानक ! परमेश्वर स्वयं ही ब्रह्मज्ञानी है॥ ६ ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾਹਿ ॥
ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रह्मज्ञानी के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੈ ਸਗਲ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥
सब गुण ब्रह्मज्ञानी के हृदय में विद्यमान हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਕਉਨ ਜਾਨੈ ਭੇਦੁ ॥
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहाज्ञानी के भेद को कौन जान सकता है ?

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਸਦਾ ਅਦੇਸੁ ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥
ब्रह्मज्ञानी को सदैव प्रणाम करना चाहिए।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਕਥਿਆ ਨ ਜਾਇ ਅਧਾਖ੍ਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्रु ॥
ब्रह्मज्ञानी की महिमा का एक आधा अक्षर भी वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਰਬ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रह्मज्ञानी समस्त जीवों का पूज्य स्वामी है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਮਿਤਿ ਕਉਨੁ ਬਖਾਨੈ ॥
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रह्मज्ञानी का अनुमान कौन लगा सकता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਗਤਿ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਾਨੈ ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥
केवल ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्मज्ञानी की गति को जानता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
ब्रह्मज्ञानी के गुणों का कोई आर-पार नहीं।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੭॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी को हमेशा ही प्रणाम करते रहो ॥ ७ ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਕਰਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रह्मज्ञानी सारी दुनिया का कर्तार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਦ ਜੀਵੈ ਨਹੀ ਮਰਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रह्मज्ञानी सदैव ही जीवित रहता है और मरता नहीं।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਮੁਕਤਿ ਜੁਗਤਿ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रह्मज्ञानी जीवों को मुक्ति, युक्ति एवं जीवन देने वाला दाता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥
ब्रह्मज्ञानी पूर्ण पुरुष विधाता है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਅਨਾਥ ਕਾ ਨਾਥੁ ॥
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रह्मज्ञानी अनाथों का नाथ है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਸਭ ਊਪਰਿ ਹਾਥੁ ॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रह्मज्ञानी का रक्षक हाथ समस्त मानव जाति पर है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕਾ ਸਗਲ ਅਕਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
यह सारा जगत्-प्रसार ब्रह्मज्ञानी का ही है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥
ब्रह्मज्ञानी स्वयं ही निरंकार है।

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਸੋਭਾ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਬਨੀ ॥
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥
ब्रह्मज्ञानी की शोभा केवल ब्रह्मज्ञानी को ही बनती है।

ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਰਬ ਕਾ ਧਨੀ ॥੮॥੮॥
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥
हे नानक ! ब्रह्मज्ञानी सबका मालिक है॥ ८ ॥ ८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਉਰਿ ਧਾਰੈ ਜੋ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ॥
उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
जो व्यक्ति अपने हृदय में भगवान के नाम को बसाता है,

ਸਰਬ ਮੈ ਪੇਖੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥
जो सब में भगवान के दर्शन करता है और

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਠਾਕੁਰ ਨਮਸਕਾਰੈ ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
क्षण-क्षण प्रभु को प्रणाम करता है,

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਅਪਰਸੁ ਸਗਲ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੧॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥
हे नानक ! ऐसा सत्यवादी निर्लिप्त महापुरुष समस्त प्राणियों का भवसागर से उद्धार कर देता है। १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਮਿਥਿਆ ਨਾਹੀ ਰਸਨਾ ਪਰਸ ॥
मिथिआ नाही रसना परस ॥
जो व्यक्ति जिव्हा से झूठ नहीं बोलता,

ਮਨ ਮਹਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਿਰੰਜਨ ਦਰਸ ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
जिसके हृदय में पवित्र प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है,

ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਰੂਪੁ ਨ ਪੇਖੈ ਨੇਤ੍ਰ ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
जिसके नेत्र पराई नारी के सौन्दर्य को नहीं देखते,

ਸਾਧ ਕੀ ਟਹਲ ਸੰਤਸੰਗਿ ਹੇਤ ॥
साध की टहल संतसंगि हेत ॥
जो साधुओं की श्रद्धापूर्वक सेवा करता है और संतों की संगति से प्रेम करता है,

ਕਰਨ ਨ ਸੁਨੈ ਕਾਹੂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
जो अपने कानों से किसी की निन्दा नहीं सुनता,

ਸਭ ਤੇ ਜਾਨੈ ਆਪਸ ਕਉ ਮੰਦਾ ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
जो अपने आपको बुरा (निम्न) समझता है,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬਿਖਿਆ ਪਰਹਰੈ ॥
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
जो गुरु की कृपा से बुराई को त्याग देता है,

ਮਨ ਕੀ ਬਾਸਨਾ ਮਨ ਤੇ ਟਰੈ
मन की बासना मन ते टरै ॥
जो अपने मन की वासना अपने मन से दूर कर देता है

ਇੰਦ੍ਰੀ ਜਿਤ ਪੰਚ ਦੋਖ ਤੇ ਰਹਤ ॥
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
और जो अपनी ज्ञान-इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है और पाँचों ही विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से बचा रहता है,

ਨਾਨਕ ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਐਸਾ ਅਪਰਸ ॥੧॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥
हे नानक ! करोड़ों में से कोई ऐसा विरला पुरुष 'अपरस' (पवित्र-पावन) होता है।॥ १॥ ||1||

ਬੈਸਨੋ ਸੋ ਜਿਸੁ ਊਪਰਿ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
जिस व्यक्ति पर परमात्मा प्रसन्न है, वही वैष्णय है।

ਬਿਸਨ ਕੀ ਮਾਇਆ ਤੇ ਹੋਇ ਭਿੰਨ ॥
बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥
वह विष्णु की माया से अलग रहता है

ਕਰਮ ਕਰਤ ਹੋਵੈ ਨਿਹਕਰਮ ॥
करम करत होवै निहकरम ॥
और शुभकर्म करता हुआ निष्कर्मी ही रहता है।

ਤਿਸੁ ਬੈਸਨੋ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਧਰਮ ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
उस वैष्णव का धर्म भी पवित्र है।

ਕਾਹੂ ਫਲ ਕੀ ਇਛਾ ਨਹੀ ਬਾਛੈ ॥
काहू फल की इछा नही बाछै ॥
वह किसी फल की इच्छा नहीं करता।

ਕੇਵਲ ਭਗਤਿ ਕੀਰਤਨ ਸੰਗਿ ਰਾਚੈ ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
वह केवल प्रभु-भक्ति एवं उसके कीर्तन में ही समाया रहता है।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਸਿਮਰਨ ਗੋਪਾਲ ॥
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
उसकी आत्मा एवं शरीर में सृष्टि के पालनहार गोपाल का सिमरन ही होता है।

ਸਭ ਊਪਰਿ ਹੋਵਤ ਕਿਰਪਾਲ ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
वह समस्त जीवों पर कृपालु होता है।

ਆਪਿ ਦ੍ਰਿੜੈ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥
वह स्वयं ईश्वर का नाम अपने मन में बसाता है और दूसरों से नाम का जाप करवाता है।

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਬੈਸਨੋ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥੨॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥
हे नानक ! ऐसा वैष्णव परमगति प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਭਗਉਤੀ ਭਗਵੰਤ ਭਗਤਿ ਕਾ ਰੰਗੁ ॥
भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
जिसके चित्त में भगवान की भक्ति का प्रेम होता है, वही भगवान का वास्तविक भक्त है।

ਸਗਲ ਤਿਆਗੈ ਦੁਸਟ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥
वह समस्त दुष्टों की संगति त्याग देता है

ਮਨ ਤੇ ਬਿਨਸੈ ਸਗਲਾ ਭਰਮੁ ॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
और उसके मन से हर प्रकार की दुविधा मिट जाती है।

ਕਰਿ ਪੂਜੈ ਸਗਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
वह पारब्रह्म को हर जगह मौजूद समझता है और केवल उसकी ही पूजा करता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਪਾ ਮਲੁ ਖੋਵੈ ॥
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥
जो साधुओं-संतों की संगति में रहकर पापों की मैल मन से निवृत कर देता है,

ਤਿਸੁ ਭਗਉਤੀ ਕੀ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਵੈ ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥
ऐसे भक्त की बुद्धि उत्तम हो जाती है।

ਭਗਵੰਤ ਕੀ ਟਹਲ ਕਰੈ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
वह अपने भगवान की नित्य सेवा करता रहता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪੈ ਬਿਸਨ ਪਰੀਤਿ ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
वह अपना मन एवं तन अपने प्रभु के प्रेम में समर्पित कर देता है।

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵੈ ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥
वह भगवान के चरण अपने हृदय में बसाता है।

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਭਗਉਤੀ ਭਗਵੰਤ ਕਉ ਪਾਵੈ ॥੩॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥
हे नानक ! ऐसा भक्त ही भगवान को प्राप्त करता है॥ ३॥

ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਜੋ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧੈ ॥
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
पण्डित वही है, जो अपने मन को उपदेश प्रदान करता है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਤਮ ਮਹਿ ਸੋਧੈ ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
वह राम के नाम को अपने हृदय में खोजता है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਾਰੁ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
जो राम-नाम का मीठा रस सेवन करता है।

ਉਸੁ ਪੰਡਿਤ ਕੈ ਉਪਦੇਸਿ ਜਗੁ ਜੀਵੈ ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
उस पण्डित के उपदेश द्वारा सारा जगत् जीता है,

ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵੈ ॥
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
जो पण्डित हरि की कथा को अपने हृदय में बसाता है,

ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵੈ ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
ऐसा पण्डित दोबारा योनियों में प्रवेश नहीं करता।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਬੂਝੈ ਮੂਲ ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
वह वेद, पुराणों एवं स्मृतियों के मूल तत्व का विचार करता है,

ਸੂਖਮ ਮਹਿ ਜਾਨੈ ਅਸਥੂਲੁ ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
वह दृष्टिगोचर संसार को अदृश्य प्रभु में अनुभव करता है

ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਕਉ ਦੇ ਉਪਦੇਸੁ ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
और चारों ही वर्णो (जातियों) को उपदेश देता है।

ਨਾਨਕ ਉਸੁ ਪੰਡਿਤ ਕਉ ਸਦਾ ਅਦੇਸੁ ॥੪॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥
हे नानक ! उस पण्डित को सदैव ही प्रणाम है॥ ४ ॥

ਬੀਜ ਮੰਤ੍ਰ ਸਰਬ ਕੋ ਗਿਆਨੁ ॥
बीज मंत्र सरब को गिआनु ॥
समस्त मंत्रों का बीज मंत्र ज्ञान है।

ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਮਹਿ ਜਪੈ ਕੋਊ ਨਾਮੁ ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
चारों ही वर्णो में कोई भी पुरुष नाम का जाप करे।

ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਤਿਸ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
जो जो नाम जपता है, उसकी गति हो जाती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥
कोई पुरुष ही इसे सत्संगति में रहकर प्राप्त करता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅੰਤਰਿ ਉਰ ਧਾਰੈ ॥
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥
यदि प्रभु अपनी कृपा से हृदय में नाम बसा दे

ਪਸੁ ਪ੍ਰੇਤ ਮੁਘਦ ਪਾਥਰ ਕਉ ਤਾਰੈ ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
तो पशु, प्रेत, मूर्ख, पत्थर दिल भी पार हो जाते हैं।

ਸਰਬ ਰੋਗ ਕਾ ਅਉਖਦੁ ਨਾਮੁ ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥
ईश्वर का नाम समस्त रोगों की औषधि है।

ਕਲਿਆਣ ਰੂਪ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥
भगवान की गुणस्तुति करना कल्याण एवं मुक्ति का रूप है।

ਕਾਹੂ ਜੁਗਤਿ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਈਐ ਧਰਮਿ ॥
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
किसी युक्ति अथवा किसी धर्म-कर्म द्वारा ईश्वर का नाम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ॥੫॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥
हे नानक ! भगवान का नाम उस इन्सान को ही मिलता हैं, जिसकी किस्मत में आदि से ही लिखा होता है॥ ५॥

ਜਿਸ ਕੈ ਮਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਨਿਵਾਸੁ ॥
जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥
जिसके मन में भगवान का निवास है,"

ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥
तिस का नामु सति रामदासु ॥
उसका नाम सत्य ही रामदास है।

ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਤਿਸੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥
आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥
उसे अपने अन्तर में ही राम दिखाई दे गया है।

ਦਾਸ ਦਸੰਤਣ ਭਾਇ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥
सेवकों का सेवक होने के स्वभाव से उसने ईश्वर को पाया है।

ਸਦਾ ਨਿਕਟਿ ਨਿਕਟਿ ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥
जो हमेशा ही भगवान को अपने निकट समझता है,

ਸੋ ਦਾਸੁ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥
सो दासु दरगह परवानु ॥
वह सेवक प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਆਪਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
ईश्वर अपने सेवक पर स्वयं कृपा-दृष्टि करता है

ਤਿਸੁ ਦਾਸ ਕਉ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਰੈ ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥
और उस सेवक को समूचा ज्ञान हो जाता है।

ਸਗਲ ਸੰਗਿ ਆਤਮ ਉਦਾਸੁ ॥
सगल संगि आतम उदासु ॥
समूचे परिवार में (रहता हुआ भी) वह मन से निर्लिप्त रहता है,

ਐਸੀ ਜੁਗਤਿ ਨਾਨਕ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥੬॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥
हे नानक ! ऐसी जीवन-युक्ति वाला रामदास होता है॥ ६॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਆਤਮ ਹਿਤਾਵੈ ॥
प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जो प्रभु की आज्ञा को सच्चे मन से मानता है,

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਸੋਊ ਕਹਾਵੈ ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
वही जीवन मुक्त कहलाता है।

ਤੈਸਾ ਹਰਖੁ ਤੈਸਾ ਉਸੁ ਸੋਗੁ ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
उसके लिए सुख एवं दुःख एक समान होते हैं।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਤਹ ਨਹੀ ਬਿਓਗੁ ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
उसे हमेशा ही आनंद मिलता है और कोई वियोग नहीं होता।

ਤੈਸਾ ਸੁਵਰਨੁ ਤੈਸੀ ਉਸੁ ਮਾਟੀ ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
सोना तथा मिट्टी भी उस पुरुष के लिए एक समान हैं,

ਤੈਸਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤੈਸੀ ਬਿਖੁ ਖਾਟੀ ॥
तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
उसके लिए अमृत एवं खट्टा विष भी एक समान है।

ਤੈਸਾ ਮਾਨੁ ਤੈਸਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
उसके लिए मान एवं अभिमान भी एक समान है।

ਤੈਸਾ ਰੰਕੁ ਤੈਸਾ ਰਾਜਾਨੁ ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
रंक तथा राजा भी उसकी नजर में बराबर हैं।

ਜੋ ਵਰਤਾਏ ਸਾਈ ਜੁਗਤਿ ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
जो भगवान करता है, वही उसकी जीवन-युक्ति होती है।

ਨਾਨਕ ਓਹੁ ਪੁਰਖੁ ਕਹੀਐ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ॥੭॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥
हे नानक ! वह पुरुष ही जीवन मुक्त कहा जाता है॥ ७ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸਗਲੇ ਠਾਉ ॥
पारब्रहम के सगले ठाउ ॥
परमात्मा के ही समस्त स्थान हैं।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਰਾਖੈ ਤੈਸਾ ਤਿਨ ਨਾਉ ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥
जिस-जिस स्थान पर ईश्वर प्राणियों को रखता है, वैसा ही वह नाम धारण कर लेते हैं।

ਆਪੇ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਜੋਗੁ ॥
आपे करन करावन जोगु ॥
भगवान स्वयं ही सब कुछ करने और (प्राणियों से) करवाने में समर्थ है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਹੋਗੁ ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥
जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है

ਪਸਰਿਓ ਆਪਿ ਹੋਇ ਅਨਤ ਤਰੰਗ ॥
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
परमात्मा ने अपने आपको अनन्त लहरों में मौजूद होकर फैलाया हुआ है।

ਲਖੇ ਨ ਜਾਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਰੰਗ ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥
परमात्मा के कौतुक जाने नहीं जा सकते।

ਜੈਸੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ਤੈਸਾ ਪਰਗਾਸ ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
परमात्मा जैसी बुद्धि प्रदान करता है, वैसा ही प्रकाश होता है

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਤਾ ਅਬਿਨਾਸ ॥
पारब्रहमु करता अबिनास ॥
सृष्टिकर्ता परमात्मा अनश्वर है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਇਆਲ ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥
ईश्वर हमेशा ही दयालु है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੮॥੯॥
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥
हे नानक ! उस परमात्मा का सिमरन करके कितने ही जीव कृतार्थ हो गए हैं। ८॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਉਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਅਨੇਕ ਜਨ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
बहुत सारे मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति करते रहते हैं, परन्तु परमात्मा के गुणों का कोई ओर-छोर नहीं मिलता।

ਨਾਨਕ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਭਿ ਰਚੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥੧॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा ने जो यह सृष्टि-रचना की है, वह अनेक प्रकार की होने के कारण बहुत सारी विधियों से रची है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਹੋਏ ਪੂਜਾਰੀ ॥
कई कोटि होए पूजारी ॥
कई करोड़ जीव उसकी पूजा करने वाले हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥
कई करोड़ धार्मिक एवं सांसारिक आचरण-व्यवहार करने वाले हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਤੀਰਥ ਵਾਸੀ ॥
कई कोटि भए तीरथ वासी ॥
कई करोड़ जीव तीर्थों के निवासी हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬਨ ਭ੍ਰਮਹਿ ਉਦਾਸੀ ॥
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
कई करोड़ जीव वैरागी बनकर जंगलों में भटकते रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੇਦ ਕੇ ਸ੍ਰੋਤੇ ॥
कई कोटि बेद के स्रोते ॥
कई करोड़ वेदों के श्रोता हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਤਪੀਸੁਰ ਹੋਤੇ ॥
कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई करोड़ तपस्वी बने हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਆਤਮ ਧਿਆਨੁ ਧਾਰਹਿ ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई करोड़ अपनी आत्मा में प्रभु-ध्यान को धारण करने वाले हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕਬਿ ਕਾਬਿ ਬੀਚਾਰਹਿ ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई करोड़ कवि काव्य-रचनाओं द्वारा विचार करते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਵਤਨ ਨਾਮ ਧਿਆਵਹਿ ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
कई करोड़ पुरुष नित्य नवीन नाम का ध्यान करते रहते हैं,

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥੧॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥
तो भी हे नानक ! उस परमात्मा का कोई भेद नहीं पा सकते॥ १॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥
कई कोटि भए अभिमानी ॥
इस दुनिया में कई करोड़ (पुरुष) अभिमानी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨੀ ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई करोड़ (पुरुष) अन्धे अज्ञानी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕਿਰਪਨ ਕਠੋਰ ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई करोड़ (पुरुष) पत्थर दिल व् कंजूस हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਭਿਗ ਆਤਮ ਨਿਕੋਰ ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥
कई करोड़ (मनुष्य) शुष्क एवं संवेदनहीन हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰ ਦਰਬ ਕਉ ਹਿਰਹਿ ॥
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों का धन चुराते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰ ਦ੍ਰੂਖਨਾ ਕਰਹਿ ॥
कई कोटि पर द्रूखना करहि ॥
कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों की निन्दा करते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਇਆ ਸ੍ਰਮ ਮਾਹਿ ॥
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई करोड़ (पुरुष) धन संग्रह करने हेतु श्रम में लगे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਰਦੇਸ ਭ੍ਰਮਾਹਿ ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
कई करोड़ दूसरे देशों में भटक रहे हैं।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਵਹੁ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗਨਾ ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
हे प्रभु ! जहाँ कहीं तुम जीवों को (काम में) लगाते हो, वहाँ-वहाँ वे लग जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀ ਜਾਨੈ ਕਰਤਾ ਰਚਨਾ ॥੨॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥
हे नानक ! कर्ता-प्रभु की सृष्टि रचना (का भेद) कर्ता-प्रभु ही जानता है॥ २ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਸਿਧ ਜਤੀ ਜੋਗੀ ॥
कई कोटि सिध जती जोगी ॥
दुनिया में कई करोड़ सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं योगी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਰਾਜੇ ਰਸ ਭੋਗੀ ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई करोड़ रस भोगने वाले राजा हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪੰਖੀ ਸਰਪ ਉਪਾਏ ॥
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई करोड़ पक्षी एवं साँप परमात्मा ने पैदा किए हैं,

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਥਰ ਬਿਰਖ ਨਿਪਜਾਏ ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥
कई करोड़ पत्थर एवं वृक्ष उगाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰ ॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई करोड़ हवाएँ, जल एवं अग्नियां हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦੇਸ ਭੂ ਮੰਡਲ ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥
कई करोड़ देश एवं भूमण्डल हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖ੍ਯਤ੍ਰ ॥
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥
कई करोड़ चन्द्रमा, सूर्य एवं तारे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਇੰਦ੍ਰ ਸਿਰਿ ਛਤ੍ਰ ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥
कई करोड़ देवते, राक्षस एवं इन्द्र हैं, जिनके सिर पर छत्र हैं।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਅਪਨੈ ਸੂਤਿ ਧਾਰੈ ॥
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
ईश्वर ने सारी सृष्टि को अपने (हुक्म के) धागे में पिरोया हुआ है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੩॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥
हे नानक ! जो जो परमात्मा को भला लगता है, उसे ही वह भवसागर से पार कर देता है॥ ३ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਰਾਜਸ ਤਾਮਸ ਸਾਤਕ ॥
कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई करोड़ रजोगुणी, तमोगुणी एवं सतोगुणी जीव हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਅਰੁ ਸਾਸਤ ॥
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥
कई करोड़ वेद, पुराण, स्मृतियां एवं शास्त्र हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਰਤਨ ਸਮੁਦ ॥
कई कोटि कीए रतन समुद ॥
कई करोड़ समुद्रो में रत्न पैदा कर दिए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਨਾ ਪ੍ਰਕਾਰ ਜੰਤ ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥
कई करोड़ विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਚਿਰ ਜੀਵੇ ॥
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥
करोड़ों प्राणी लम्बी आयु वाले बनाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਗਿਰੀ ਮੇਰ ਸੁਵਰਨ ਥੀਵੇ ॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥
(परमात्मा के हुक्म द्वारा) कई करोड़ ही सोने के सुमेर पर्वत बन गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਖ੍ ਕਿੰਨਰ ਪਿਸਾਚ ॥
कई कोटि जख्ख किंनर पिसाच ॥
कई करोड़ यक्ष, किन्नर एवं पिशाच हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭੂਤ ਪ੍ਰੇਤ ਸੂਕਰ ਮ੍ਰਿਗਾਚ ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥
कई करोड़ ही भूत-प्रेत, सूअर एवं शेर हैं।

ਸਭ ਤੇ ਨੇਰੈ ਸਭਹੂ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥
ईश्वर सबके निकट और सबके ही दूर है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੪॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥
हे नानक ! ईश्वर हरेक में परिपूर्ण हो रहा है, जबकि वह स्वयं निर्लिप्त रहता है॥ ४ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਤਾਲ ਕੇ ਵਾਸੀ ॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई करोड़ जीव पाताल के निवासी हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਨਿਵਾਸੀ ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई करोड़ जीव नरकों तथा स्वर्गों में रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਜਨਮਹਿ ਜੀਵਹਿ ਮਰਹਿ ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
कई करोड़ जीव जन्मते, जीते और मरते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਫਿਰਹਿ ॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई करोड़ जीव अनेक योनियों में भटक रहे हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਬੈਠਤ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई करोड़ (व्यर्थ) बैठकर खाते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਘਾਲਹਿ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
करोड़ों ही जीव परिश्रम से थककर टूट जाते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਏ ਧਨਵੰਤ ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई करोड़ जीव धनवान बनाए गए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਇਆ ਮਹਿ ਚਿੰਤ ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
करोड़ों ही जीव धन-दौलत की चिन्ता में लीन हैं।

ਜਹ ਜਹ ਭਾਣਾ ਤਹ ਤਹ ਰਾਖੇ ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
ईश्वर जहाँ कहीं चाहता है, वहाँ ही वह जीवों को रखता है।

ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਹਾਥੇ ॥੫॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥
हे नानक ! सब कुछ ईश्वर के अपने हाथ में है॥ ५ ॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਭਏ ਬੈਰਾਗੀ ॥
कई कोटि भए बैरागी ॥
इस दुनिया में कई करोड़ जीव वैराग्यवान बने हुए हैं

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਤਿਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥
और राम के नाम से उनकी वृत्ति लगी हुई है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਖੋਜੰਤੇ ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
करोड़ों ही जीव परमात्मा को खोजते रहते हैं

ਆਤਮ ਮਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਲਹੰਤੇ ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
और अपनी आत्मा में ही भगवान को पा लेते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਸ ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
करोड़ों ही प्राणियों को ईश्वर के दर्शनों की प्यास (अभिलाषा) लगी रहती है,

ਤਿਨ ਕਉ ਮਿਲਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸ ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
उन्हें अनश्वर प्रभु मिल जाता है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਮਾਗਹਿ ਸਤਸੰਗੁ ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
कई करोड़ प्राणी सत्संगति की माँग करते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਤਿਨ ਲਾਗਾ ਰੰਗੁ ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
वे भगवान के प्रेम में ही मग्न रहते हैं।

ਜਿਨ ਕਉ ਹੋਏ ਆਪਿ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
हे नानक ! जिन पर ईश्वर स्वयं सुप्रसन्न होता है,

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਸਦਾ ਧਨਿ ਧੰਨਿ ॥੬॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥
ऐसे व्यक्ति हमेशा ही भाग्यवान हैं।॥ ६॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਖਾਣੀ ਅਰੁ ਖੰਡ ॥
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
धरती के नौ खण्डों एवं (चार) दिशाओं में करोड़ों ही प्राणी पैदा हुए हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਅਕਾਸ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥
कई करोड़ आकाश एवं ब्रह्माण्ड हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਹੋਏ ਅਵਤਾਰ ॥
कई कोटि होए अवतार ॥
करोड़ों ही अवतार हो चुके हैं।

ਕਈ ਜੁਗਤਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰ ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥
कई युक्तियों से ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है।

ਕਈ ਬਾਰ ਪਸਰਿਓ ਪਾਸਾਰ ॥
कई बार पसरिओ पासार ॥
इस सृष्टि का कई बार प्रसार हुआ है

ਸਦਾ ਸਦਾ ਇਕੁ ਏਕੰਕਾਰ ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥
लेकिन परमात्मा हमेशा से एक ही है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਕੀਨੇ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
कई करोड़ जीव ईश्वर ने अनेक विधियों के बनाए हैं।

ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਤਿ ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
परमेश्वर से वे (जीव) उत्पन्न हुए हैं और परमेश्वर में ही समा गए हैं।

ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥
उसके अन्त को कोई नहीं जानता।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੭॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥
हे नानक ! वह परमेश्वर सब कुछ आप ही है ॥ ७॥

ਕਈ ਕੋਟਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਦਾਸ ॥
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
इस दुनिया में कई करोड़ जीव परमात्मा के दास हैं

ਤਿਨ ਹੋਵਤ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸ ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
और उनकी आत्मा में प्रकाश हो जाता है।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਤਤ ਕੇ ਬੇਤੇ ॥
कई कोटि तत के बेते ॥
कई करोड़ जीव तत्त्वज्ञाता हैं,

ਸਦਾ ਨਿਹਾਰਹਿ ਏਕੋ ਨੇਤ੍ਰੇ ॥
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥
और अपने नेत्रों से वे सदैव एक ईश्वर के दर्शन करते रहते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪੀਵਹਿ ॥
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥
कई करोड़ जीव नाम-रस पीते रहते हैं,

ਅਮਰ ਭਏ ਸਦ ਸਦ ਹੀ ਜੀਵਹਿ ॥
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥
जो अमर होकर हमेशा ही जीते हैं।

ਕਈ ਕੋਟਿ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ॥
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥
करोड़ों ही जीव नाम का यशोगान करते रहते हैं।

ਆਤਮ ਰਸਿ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਹਿ ॥
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥
वे आत्म-रस के सुख में सहज ही समा जाते हैं।

ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੇ ॥
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥
अपने भक्तों की प्रभु श्वास-श्वास से देखभाल करता है।

ਨਾਨਕ ਓਇ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੇ ਪਿਆਰੇ ॥੮॥੧੦॥
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥
हे नानक ! ऐसे भक्त ही परमेश्वर के प्रिय होते हैं ॥८॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
एक ईश्वर ही सृष्टि का मूल कारण (सर्जक) है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥
हे नानक ! मैं उस ईश्वर पर कुर्बान जाता हूँ, जो जल, धरती, पाताल एवं आकाश में विद्यमान है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥
करन करावन करनै जोगु ॥
हर कार्य करने और जीवों से कराने वाला एक ईश्वर सब कुछ करने में समर्थ है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਹੋਗੁ ॥
जो तिसु भावै सोई होगु ॥
जो कुछ उसे भला लगता है, वही होता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ॥
खिन महि थापि उथापनहारा ॥
वह क्षण भर में इस सृष्टि को उत्पन्न करने एवं नाश भी करने वाला (प्रभु) है।

ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥
अंतु नही किछु पारावारा ॥
उसकी ताकत का कोई ओर-छोर नहीं।

ਹੁਕਮੇ ਧਾਰਿ ਅਧਰ ਰਹਾਵੈ ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥
अपने हुक्म द्वारा उसने धरती की स्थापना की है और बिना किसी सहारे के उसने (टिकाया) रखा हुआ है।

ਹੁਕਮੇ ਉਪਜੈ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥
जो कुछ उसके हुक्म द्वारा उत्पन्न हुआ है, अन्त में उसके हुक्म में लीन हो जाता है।

ਹੁਕਮੇ ਊਚ ਨੀਚ ਬਿਉਹਾਰ ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
भले तथा बुरे कर्म उसकी इच्छा (रज़ा) अनुसार हैं।

ਹੁਕਮੇ ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਪਰਕਾਰ ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥
उसके हुक्म द्वारा अनेकों प्रकार के खेल-तमाशे हो रहे हैं।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਅਪਨੀ ਵਡਿਆਈ ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
सृष्टि-रचना करके वह अपनी महिमा को देखता रहता है।

ਨਾਨਕ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥
हे नानक ! ईश्वर समस्त जीवों में समा रहा है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਮਾਨੁਖ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥
प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਾਥਰ ਤਰਾਵੈ ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो पत्थर को भी पार कर देता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਾਸ ਤੇ ਰਾਖੈ ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो श्वासों के बिना भी प्राणी को (मृत्यु से) बचाकर रखता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਭਾਖੈ ॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰੈ ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
यदि प्रभु को भला लगे तो वह पापियों का भी उद्धार कर देता है।

ਆਪਿ ਕਰੈ ਆਪਨ ਬੀਚਾਰੈ ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥
ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही विचार करता है।

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਕਾ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ॥
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥
ईश्वर स्वयं ही लोक-परलोक का स्वामी है।

ਖੇਲੈ ਬਿਗਸੈ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥
अंतर्यामी प्रभु जगत्-खेल खेलता रहता है और (इसे देखकर) खुश होता है।

ਜੋ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਾਰ ਕਰਾਵੈ ॥
जो भावै सो कार करावै ॥
जो कुछ प्रभु को लुभाता है, वही काम मनुष्य से करवाता है।

ਨਾਨਕ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਅਵਰੁ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥
नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥
हे नानक ! उस जैसा दूसरा कोई नजर नहीं आता ॥ २ ॥

ਕਹੁ ਮਾਨੁਖ ਤੇ ਕਿਆ ਹੋਇ ਆਵੈ ॥
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
बताओ, मनुष्य से कौन-सा काम हो सकता है?

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਾਵੈ ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥
जो ईश्वर को भला लगता है, वही (काम) प्राणी से करवाता है।

ਇਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ਹੋਇ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਲੇਇ ॥
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
यदि मनुष्य के वश में हो तो वह हरेक पदार्थ सँभाल ले।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰੇਇ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
जो कुछ परमात्मा को उपयुक्त लगता है, वह वही कुछ करता है।

ਅਨਜਾਨਤ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਰਚੈ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
ज्ञान न होने के कारण मनुष्य विषय-विकारों में मग्न रहता है।

ਜੇ ਜਾਨਤ ਆਪਨ ਆਪ ਬਚੈ ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥
यदि वह जानता हो तो वह अपने आपको (विकारों से) बचा ले।

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵੈ ॥
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥
भ्रम में भूला हुआ उसका मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है।

ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ॥
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
चारों कोनों में चक्कर काट कर वह एक क्षण में वापिस लौट आता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਅਪਨੀ ਭਗਤਿ ਦੇਇ ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥
जिसे कृपा करके प्रभु अपनी भक्ति प्रदान करता है।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਜਨ ਨਾਮਿ ਮਿਲੇਇ ॥੩॥
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥
हे नानक ! वह पुरुष नाम में लीन हो जाता है॥ ३॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਨੀਚ ਕੀਟ ਕਉ ਰਾਜ ॥
खिन महि नीच कीट कउ राज ॥
क्षण में ही ईश्वर कीड़े समान निम्न (पुरुष) को (राज्य प्रदान करके) राजा बना देता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ॥
पारब्रहम गरीब निवाज ॥
भगवान गरीबों पर दया करने वाला है।

ਜਾ ਕਾ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਛੂ ਨ ਆਵੈ ॥
जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥
जिस प्राणी का कोई गुण दिखाई नहीं देता,

ਤਿਸੁ ਤਤਕਾਲ ਦਹ ਦਿਸ ਪ੍ਰਗਟਾਵੈ ॥
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥
उसे क्षण भर में तुरन्त ही दसों दिशाओं में लोकप्रिय कर देता है।

ਜਾ ਕਉ ਅਪੁਨੀ ਕਰੈ ਬਖਸੀਸ ॥
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥
विश्व का स्वामी जगदीश जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि कर देता है,

ਤਾ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨ ਗਨੈ ਜਗਦੀਸ ॥
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥
वह उसके कर्मों का लेखा-जोखा नहीं गिनता।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਤਿਸ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥
यह आत्मा एवं शरीर सब उसकी दी हुई पूंजी है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥
पूर्ण ब्रह्म का प्रत्येक हृदय में प्रकाश है।

ਅਪਨੀ ਬਣਤ ਆਪਿ ਬਨਾਈ ॥
अपनी बणत आपि बनाई ॥
यह सृष्टि-रचना उसने स्वयं ही रची है।

ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਦੇਖਿ ਬਡਾਈ ॥੪॥
नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥
हे नानक ! मैं उसकी महिमा को देखकर जी रहा हूँ ॥४॥

ਇਸ ਕਾ ਬਲੁ ਨਾਹੀ ਇਸੁ ਹਾਥ ॥
इस का बलु नाही इसु हाथ ॥
इस जीव का बल इसके अपने हाथ में नहीं है क्योंकि

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਰਬ ਕੋ ਨਾਥ ॥
करन करावन सरब को नाथ ॥
सबका मालिक एक परमात्मा ही सब कुछ करने एवं जीव से कराने वाला है,

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਬਪੁਰਾ ਜੀਉ ॥
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
बेचारा जीव तो परमात्मा का आज्ञाकारी है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਫੁਨਿ ਥੀਉ ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
जो कुछ ईश्वर को भला लगता है, अंतः वही होता है।

ਕਬਹੂ ਊਚ ਨੀਚ ਮਹਿ ਬਸੈ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
मनुष्य कभी उच्च जातियों एवं कभी निम्न जातियों में बसता है।

ਕਬਹੂ ਸੋਗ ਹਰਖ ਰੰਗਿ ਹਸੈ ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥
कभी वह दुःख में दुखी होता है और कभी खुशी में प्रसन्नता से हंसता है।

ਕਬਹੂ ਨਿੰਦ ਚਿੰਦ ਬਿਉਹਾਰ ॥
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कभी निन्दा करना ही उसका व्यवसाय होता है।

ਕਬਹੂ ਊਭ ਅਕਾਸ ਪਇਆਲ ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कभी वह आकाश में होता है और कभी पाताल में।

ਕਬਹੂ ਬੇਤਾ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰ ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
कभी वह ब्रह्म विचार का ज्ञाता होता है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰ ॥੫॥
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥
हे नानक ! ईश्वर मनुष्य को अपने साथ मिलाने वाला स्वयं ही है॥ ५॥

ਕਬਹੂ ਨਿਰਤਿ ਕਰੈ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
कबहू निरति करै बहु भाति ॥
यह जीव कभी अनेक प्रकार के नृत्य कर रहा है।

ਕਬਹੂ ਸੋਇ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कभी वह दिन-रात सोया रहता है।

ਕਬਹੂ ਮਹਾ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਕਰਾਲ ॥
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥
कभी वह अपने महाक्रोध में भयानक हो जाता है।

ਕਬਹੂੰ ਸਰਬ ਕੀ ਹੋਤ ਰਵਾਲ ॥
कबहूं सरब की होत रवाल ॥
कभी वह सब की चरण-धूलि बना रहता है।

ਕਬਹੂ ਹੋਇ ਬਹੈ ਬਡ ਰਾਜਾ ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥
कभी वह महान राजा बन बैठता है।

ਕਬਹੁ ਭੇਖਾਰੀ ਨੀਚ ਕਾ ਸਾਜਾ ॥
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥
कभी वह नीच भिखारी का वेष धारण कर लेता है।

ਕਬਹੂ ਅਪਕੀਰਤਿ ਮਹਿ ਆਵੈ ॥
कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कभी वह अपकीर्ति (बदनामी) में आ जाता है।

ਕਬਹੂ ਭਲਾ ਭਲਾ ਕਹਾਵੈ ॥
कबहू भला भला कहावै ॥
कभी वह बहुत भला कहलवाता है।

ਜਿਉ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖੈ ਤਿਵ ਹੀ ਰਹੈ ॥
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥
जिस तरह प्रभु उसको रखता है, वैसे ही जीव रहता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕਹੈ ॥੬॥
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥
गुरु की कृपा से नानक सत्य ही कहता है॥ ६॥

ਕਬਹੂ ਹੋਇ ਪੰਡਿਤੁ ਕਰੇ ਬਖ੍ਯਾਨੁ ॥
कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥
कभी मनुष्य पण्डित बनकर उपदेश देता है।

ਕਬਹੂ ਮੋਨਿਧਾਰੀ ਲਾਵੈ ਧਿਆਨੁ ॥
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥
कभी वह मौनधारी साधु बनकर ध्यान लगाए बैठा है।

ਕਬਹੂ ਤਟ ਤੀਰਥ ਇਸਨਾਨ ॥
कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कभी वह तीर्थों के किनारे जाकर स्नान करता है।

ਕਬਹੂ ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਮੁਖਿ ਗਿਆਨ ॥
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥
कभी वह सिद्ध, साधक बनकर मुख से ज्ञान करता है।

ਕਬਹੂ ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਪਤੰਗ ਹੋਇ ਜੀਆ ॥
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
कभी मनुष्य कीड़ा, हाथी अथवा पतंगा बना रहता है

ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭਰਮੈ ਭਰਮੀਆ ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
और अनेक योनियों में लगातार भटकता रहता है।

ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਜਿਉ ਸ੍ਵਾਗੀ ਦਿਖਾਵੈ ॥
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
बहुरूपिए की भाँति वह अत्याधिक रूप धारण करता हुआ भी दिखाई देता है।

ਜਿਉ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਨਚਾਵੈ ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥
जिस तरह प्रभु को उपयुक्त लगता है, वैसे ही नचाता है

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਹੋਇ ॥
जो तिसु भावै सोई होइ ॥
जैसे उसको अच्छा लगता है, वही होता है।

ਨਾਨਕ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੭॥
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥
हे नानक ! उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं ॥ ७॥

ਕਬਹੂ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਇਹੁ ਪਾਵੈ ॥
कबहू साधसंगति इहु पावै ॥
यह जीव कभी सत्संगति को पाता है तो

ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਤੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵੈ ॥
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥
उस (पवित्र) स्थान से दोबारा वह लौटकर नहीं आता।

ਅੰਤਰਿ ਹੋਇ ਗਿਆਨ ਪਰਗਾਸੁ ॥
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है।

ਉਸੁ ਅਸਥਾਨ ਕਾ ਨਹੀ ਬਿਨਾਸੁ ॥
उसु असथान का नही बिनासु ॥
उस निवास का कभी विनाश नहीं होता।

ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਇਕ ਰੰਗਿ ॥
मन तन नामि रते इक रंगि ॥
जिसका मन एवं तन ईश्वर के नाम एवं प्रेम में मग्न रहता हैं।

ਸਦਾ ਬਸਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥
यह हमेशा ही परमात्मा के संग बसता है।

ਜਿਉ ਜਲ ਮਹਿ ਜਲੁ ਆਇ ਖਟਾਨਾ ॥
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
जैसे जल आकर जल में ही मिल जाता है,

ਤਿਉ ਜੋਤੀ ਸੰਗਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨਾ ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥
वैसे ही उसकी ज्योति परम ज्योति में लीन हो जाती है।

ਮਿਟਿ ਗਏ ਗਵਨ ਪਾਏ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥
उसका आवागमन (जन्म-मरण) मिट जाता है और वह सुख पा लेता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨ ॥੮॥੧੧॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥
हे नानक ! ऐसे प्रभु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ ॥८॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸੁਖੀ ਬਸੈ ਮਸਕੀਨੀਆ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰਿ ਤਲੇ ॥
सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
विनम्र स्वभाव वाला पुरुष सुख में रहता है। वह अपने अहंकार को त्याग कर विनीत हो जाता है।

ਬਡੇ ਬਡੇ ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਨਾਨਕ ਗਰਬਿ ਗਲੇ ॥੧॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥
(परन्तु) हे नानक ! बड़े-बड़े अहंकारी इन्सान अपने अहंकार में ही नाश हो जाते हैं।॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਿਸ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਰਾਜ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में शासन का अभिमान होता है,

ਸੋ ਨਰਕਪਾਤੀ ਹੋਵਤ ਸੁਆਨੁ ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥
ऐसा व्यक्ति नरक में पड़ने वाला कुत्ता होता है।

ਜੋ ਜਾਨੈ ਮੈ ਜੋਬਨਵੰਤੁ ॥
जो जानै मै जोबनवंतु ॥
जो पुरुष अहंकार में अपने आपको अति सुन्दर (यौवन सम्पन्न) समझता है,

ਸੋ ਹੋਵਤ ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਜੰਤੁ ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥
वह विष्ठा का कीड़ा होता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਕਰਮਵੰਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जो व्यक्ति स्वयं को शुभकर्मों वाला कहलाता है,

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਵੈ ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
वह जन्म-मरण के चक्र में फंसकर अधिकतर योनियों में भटकता रहता है।

ਧਨ ਭੂਮਿ ਕਾ ਜੋ ਕਰੈ ਗੁਮਾਨੁ ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
जो प्राणी अपने धन एवं भूमि का घमण्ड करता है,

ਸੋ ਮੂਰਖੁ ਅੰਧਾ ਅਗਿਆਨੁ ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
वह मूर्ख, अन्धा एवं अज्ञानी है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਗਰੀਬੀ ਬਸਾਵੈ ॥
करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
जिस इन्सान के हृदय में प्रभु कृपा करके विनम्रता बसा देता है,

ਨਾਨਕ ਈਹਾ ਮੁਕਤੁ ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥
हे नानक ! ऐसा इन्सान इहलोक में मोक्ष तथा परलोक में सुख प्राप्त करता है॥ १॥

ਧਨਵੰਤਾ ਹੋਇ ਕਰਿ ਗਰਬਾਵੈ ॥
धनवंता होइ करि गरबावै ॥
जो आदमी धनवान होकर अपने धन का अभिमान करता है,

ਤ੍ਰਿਣ ਸਮਾਨਿ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਵੈ ॥
त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥
एक तिनके के बराबर भी कुछ उसके साथ नहीं जाता।

ਬਹੁ ਲਸਕਰ ਮਾਨੁਖ ਊਪਰਿ ਕਰੇ ਆਸ ॥
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
जो आदमी बहुत बड़ी सेना एवं लोगों पर आशा लगाए रखता है,

ਪਲ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਕਾ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸ ॥
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥
उसका एक क्षण में ही नाश हो जाता है।

ਸਭ ਤੇ ਆਪ ਜਾਨੈ ਬਲਵੰਤੁ ॥
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
जो आदमी अपने आपको सबसे शक्तिशाली समझता है,

ਖਿਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ਜਾਇ ਭਸਮੰਤੁ ॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥
वह एक क्षण में भस्म हो जाता है।

ਕਿਸੈ ਨ ਬਦੈ ਆਪਿ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
जो आदमी अपने अहंकार में किसी की भी परवाह नहीं करता,

ਧਰਮ ਰਾਇ ਤਿਸੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੀ ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥
यमराज अन्त में उसे बड़ा दुःख देता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਾ ਕਾ ਮਿਟੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से जिस इन्सान का अभिमान मिट जाता है,

ਸੋ ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥
ऐसा इन्सान ही प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है॥ २॥

ਕੋਟਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਹਉ ਧਾਰੇ ॥
कोटि करम करै हउ धारे ॥
यदि व्यक्ति करोड़ों शुभ कर्म करता हुआ अभिमान करे,

ਸ੍ਰਮੁ ਪਾਵੈ ਸਗਲੇ ਬਿਰਥਾਰੇ ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
तो वह दुःख ही उठाता है, उसके तमाम कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

ਅਨਿਕ ਤਪਸਿਆ ਕਰੇ ਅਹੰਕਾਰ ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
जो व्यक्ति अनेक तपस्या करके अहंकार करता है,

ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
वह पुनः पुनः नरक-स्वर्ग में जन्म लेता रहता है।

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਆਤਮ ਨਹੀ ਦ੍ਰਵੈ ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
जिसका हृदय अधिकतर यत्न करने के बावजूद भी विनम्र नहीं होता,

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਗਵੈ ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
तो बताओ, वह पुरुष भगवान के दरबार में कैसे जा सकता है?

ਆਪਸ ਕਉ ਜੋ ਭਲਾ ਕਹਾਵੈ ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
जो पुरुष अपने आपको भला कहलाता है,

ਤਿਸਹਿ ਭਲਾਈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
भलाई उसके निकट नहीं आती।

ਸਰਬ ਕੀ ਰੇਨ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
हे नानक ! जिसका मन सबकी चरण-धूलि बन जाता है,

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥੩॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥
उसकी निर्मल शोभा होती है॥ ३॥

ਜਬ ਲਗੁ ਜਾਨੈ ਮੁਝ ਤੇ ਕਛੁ ਹੋਇ ॥
जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
जब तक इन्सान यह समझने लगता है कि मुझे से कुछ हो सकता है,

ਤਬ ਇਸ ਕਉ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥
तब तक उसको कोई सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਜਬ ਇਹ ਜਾਨੈ ਮੈ ਕਿਛੁ ਕਰਤਾ ॥
जब इह जानै मै किछु करता ॥
जब तक इन्सान यह समझने लगता है कि मैं कुछ करता हूँ,

ਤਬ ਲਗੁ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਫਿਰਤਾ ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥
तब तक वह गर्भ की योनियों में भटकता रहता है।

ਜਬ ਧਾਰੈ ਕੋਊ ਬੈਰੀ ਮੀਤੁ ॥
जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥
जब तक इन्सान किसी को शत्रु एवं किसी को मित्र समझता है,

ਤਬ ਲਗੁ ਨਿਹਚਲੁ ਨਾਹੀ ਚੀਤੁ ॥
तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥
तब तक उसका मन स्थिर नहीं होता।

ਜਬ ਲਗੁ ਮੋਹ ਮਗਨ ਸੰਗਿ ਮਾਇ ॥
जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥
जब तक इन्सान माया के मोह में मग्न रहता है,

ਤਬ ਲਗੁ ਧਰਮ ਰਾਇ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥
तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥
तब तक यमराज उसको दण्डित करता रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਬੰਧਨ ਤ੍ਰੁਟੈ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥
प्रभु की कृपा से इन्सान के बन्धन टूट जाते हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਹਉ ਛੂਟੈ ॥੪॥
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से अहंकार मिट जाता है॥ ४॥

ਸਹਸ ਖਟੇ ਲਖ ਕਉ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
इन्सान हजारों कमा कर भी लाखों के लिए भाग-दौड़ करता है।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਆਵੈ ਮਾਇਆ ਪਾਛੈ ਪਾਵੈ ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
धन-दौलत की तलाश में उसकी तृप्ति नहीं होती।

ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਕਰੈ ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
इन्सान अधिकतर विषय-विकारों के भोग में लगा रहता है,

ਨਹ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮਰੈ ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
परन्तु वह तृप्त नहीं होता और उसकी अभिलाषा करता हुआ मर मिटता है।

ਬਿਨਾ ਸੰਤੋਖ ਨਹੀ ਕੋਊ ਰਾਜੈ ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
संतोष के बिना किसी को तृप्ति नहीं होती।

ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਬ੍ਰਿਥੇ ਸਭ ਕਾਜੈ ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
उसके सब कार्य स्वप्न के मनोरथ की भाँति व्यर्थ हैं।

ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਸਰਬ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
भगवान के नाम रंग द्वारा सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਬਡਭਾਗੀ ਕਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥
किसी भाग्यशाली इन्सान को ही नाम की प्राप्ति होती है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
करन करावन आपे आपि ॥
प्रभु स्वयं सब कुछ करने तथा जीवों से कराने में समर्थ है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੫॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥
हे नानक ! हरि के नाम का जाप सदैव करो ॥५॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
करन करावन करनैहारु ॥
केवल परमात्मा ही करने एवं कराने वाला है।

ਇਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੁ ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
विचार कर देख लो, प्राणी के वश में कुछ नहीं।

ਜੈਸੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ॥
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥
जैसी दृष्टि परमात्मा धारण करता है, मनुष्य वैसा ही हो जाता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥
वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਨੋ ਸੁ ਅਪਨੈ ਰੰਗਿ ॥
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥
जो कुछ उसने किया है, वह उसकी इच्छा के अनुकूल है।

ਸਭ ਤੇ ਦੂਰਿ ਸਭਹੂ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥
वह सबसे दूर है, फिर भी सबके साथ है।

ਬੁਝੈ ਦੇਖੈ ਕਰੈ ਬਿਬੇਕ ॥
बूझै देखै करै बिबेक ॥
वह समझता, देखता और निर्णय करता है।

ਆਪਹਿ ਏਕ ਆਪਹਿ ਅਨੇਕ ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
परमात्मा स्वयं ही एक है और स्वयं ही अनेक रूप है।

ਮਰੈ ਨ ਬਿਨਸੈ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
परमात्मा न ही मरता है और न ही नाश होता है, वह न ही आता है और न ही जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਦ ਹੀ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥
हे नानक ! परमात्मा सदा सब में समाया हुआ है ॥६॥

ਆਪਿ ਉਪਦੇਸੈ ਸਮਝੈ ਆਪਿ ॥
आपि उपदेसै समझै आपि ॥
वह स्वयं ही उपदेश देता है और स्वयं ही समझता है।

ਆਪੇ ਰਚਿਆ ਸਭ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
परमात्मा स्वयं ही सबके साथ मिला हुआ है।

ਆਪਿ ਕੀਨੋ ਆਪਨ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
अपना विस्तार उसने स्वयं ही किया है।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਉਸ ਕਾ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥
प्रत्येक वस्तु उसकी है, वह सृजनहार है।

ਉਸ ਤੇ ਭਿੰਨ ਕਹਹੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥
बताओ, उससे अलग कुछ हो सकता है?

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਏਕੈ ਸੋਇ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
एक ईश्वर स्थानों एवं उनकी सीमाओं पर सर्वत्र मौजूद है।

ਅਪੁਨੇ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਣੈਹਾਰ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
अपनी लीलाओं को वह स्वयं ही करने वाला है।

ਕਉਤਕ ਕਰੈ ਰੰਗ ਆਪਾਰ ॥
कउतक करै रंग आपार ॥
वह कौतुक रचता है और उसके रंग अनन्त हैं।

ਮਨ ਮਹਿ ਆਪਿ ਮਨ ਅਪੁਨੇ ਮਾਹਿ ॥
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
"(जीवों के) मन में स्वयं वास कर रहा है, (जीवों को) अपने मन में स्थिर किए बैठा है।

ਨਾਨਕ ਕੀਮਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥੭॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥
हे नानक ! उस (परमात्मा) का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ ७॥

ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਆਮੀ ॥
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
जगत् का स्वामी परमात्मा सदैव सत्य है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਖਿਆਨੀ ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥
यह बात गुरु की कृपा से किसी विरले ने ही बखान की है।

ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਭੁ ਕੀਨਾ ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
परमात्मा जिसने सबकी रचना की है, वह भी सत्य है।

ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕਿਨੈ ਬਿਰਲੈ ਚੀਨਾ ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
करोड़ों में कोई विरला ही उसको जानता है।

ਭਲਾ ਭਲਾ ਭਲਾ ਤੇਰਾ ਰੂਪ ॥
भला भला भला तेरा रूप ॥
हे प्रभु ! तेरा रूप कितना भला-सुन्दर है।

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਅਪਾਰ ਅਨੂਪ ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥
हे ईश्वर ! तुम अत्यंत सुन्दर, अपार एवं अनूप हो।

ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥
निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥
हे परमात्मा ! तेरी वाणी अति पवित्र, निर्मल एवं मधुर है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੁਨੀ ਸ੍ਰਵਨ ਬਖ੍ਯਾਣੀ ॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
प्रत्येक व्यक्ति इसको कानों से सुनता एवं व्याख्या करता है।

ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪੁਨੀਤ ॥
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
वह पवित्र पावन हो जाता है

ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੮॥੧੨॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति अपने मन में प्रेम से भगवान के नाम का जाप करता है। ॥ ८ ॥ १२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
शलोक॥

ਸੰਤ ਸਰਨਿ ਜੋ ਜਨੁ ਪਰੈ ਸੋ ਜਨੁ ਉਧਰਨਹਾਰ ॥
संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥
जो व्यक्ति संतों की शरण में आता है, उस व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਅਵਤਾਰ ॥੧॥
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥
हे नानक ! संतों की निन्दा करने से प्राणी पुनः पुनः जन्म लेता रहता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਆਰਜਾ ਘਟੈ ॥
संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य की आयु कम हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਛੁਟੈ ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत को दुःखी करने से मनुष्य यमदूतों से नहीं बच सकता।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸੁਖੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य के समस्त सुख नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਨਰਕ ਮਹਿ ਪਾਇ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य नरक में जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਮਤਿ ਹੋਇ ਮਲੀਨ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥
संत को दुखी करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸੋਭਾ ਤੇ ਹੀਨ ॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य की शोभा समाप्त हो जाती है।

ਸੰਤ ਕੇ ਹਤੇ ਕਉ ਰਖੈ ਨ ਕੋਇ ॥
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥
संत से तिरस्कृत पुरुष की कोई भी रक्षा नहीं कर सकता।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਥਾਨ ਭ੍ਰਸਟੁ ਹੋਇ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत को दुखी करने से स्थान भ्रष्ट हो जाता है।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜੇ ਕਰੈ ॥
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥
यदि कृपा के घर संत स्वयं कृपा करे तो

ਨਾਨਕ ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਿੰਦਕੁ ਭੀ ਤਰੈ ॥੧॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥
हे नानक ! सत्संगति में निंदक भी (भवसागर से) पार हो जाता है॥ १॥

ਸੰਤ ਕੇ ਦੂਖਨ ਤੇ ਮੁਖੁ ਭਵੈ ॥
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संत को दुखी करने से मुख अष्ट हो जाता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਕਾਗ ਜਿਉ ਲਵੈ ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥
संत को दुखी करने वाला पुरुष कौए के समान निन्दा करता रहता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸਰਪ ਜੋਨਿ ਪਾਇ ॥
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य सर्पयोनि में पड़ता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤ੍ਰਿਗਦ ਜੋਨਿ ਕਿਰਮਾਇ ॥
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥
संत को दुखी करने वाला मनुष्य कीड़े इत्यादि की त्रिगद योनि में भटकता है।

ਸੰਤਨ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਹਿ ਜਲੈ ॥
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥
संत को दुखी करने वाला मनुष्य तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਸਭੁ ਕੋ ਛਲੈ ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत को दुखी करने वाला सबके साथ छल-कपट करता रहता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਤੇਜੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य का सारा तेज-प्रताप नाश हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੂਖਨਿ ਨੀਚੁ ਨੀਚਾਇ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत को दुखी करने से मनुष्य नीचों का महानीच हो जाता है।

ਸੰਤ ਦੋਖੀ ਕਾ ਥਾਉ ਕੋ ਨਾਹਿ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
संत के दोषी का कोई सुख का सहारा नहीं रहता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਓਇ ਭੀ ਗਤਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो निंदक भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ २ ॥

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਅਤਤਾਈ ॥
संत का निंदकु महा अततई ॥
संत की निन्दा करने वाला सबसे बुरे कर्म करने वाला महानीच है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਖਿਨੁ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਈ ॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥
संत की निन्दा करने वाले को क्षण भर भी सुख नहीं मिलता।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਮਹਾ ਹਤਿਆਰਾ ॥
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥
संत की निन्दा करने वाला महा हत्यारा है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਮਾਰਾ ॥
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥
संत की निन्दा करने वाला परमेश्वर की ओर से तिरस्कृत होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਰਾਜ ਤੇ ਹੀਨੁ ॥
संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत की निन्दा करने वाला शासन से रिक्त रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਨਿੰਦਕੁ ਦੁਖੀਆ ਅਰੁ ਦੀਨੁ ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
संत की निन्दा करने वाला दुखी तथा निर्धन हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਉ ਸਰਬ ਰੋਗ ॥
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥
संत की निन्दा करने वाले को सर्व रोग लग जाते हैं।

ਸੰਤ ਕੇ ਨਿੰਦਕ ਕਉ ਸਦਾ ਬਿਜੋਗ ॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥
संत की निन्दा करने वाला सदा वियोग में रहता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਦੋਖ ਮਹਿ ਦੋਖੁ ॥
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥
संत की निंदा दोषों का भी दोष महापाप है।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਉਸ ਕਾ ਭੀ ਹੋਇ ਮੋਖੁ ॥੩॥
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो उसकी भी मुक्ति हो जाती है।॥ ३॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਅਪਵਿਤੁ ॥
संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोषी सदैव अपवित्र है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਸੈ ਕਾ ਨਹੀ ਮਿਤੁ ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥
संत का दोषी किसी भी मनुष्य का मित्र नहीं होता।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਡਾਨੁ ਲਾਗੈ ॥
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोषी को (धर्मराज से) दण्ड मिलता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਸਭ ਤਿਆਗੈ ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥
संत के दोषी को सभी त्याग देते हैं।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਮਹਾ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोषी महा अहंकारी होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਬਿਕਾਰੀ ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥
संत का दोषी सदैव पापी होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਜਨਮੈ ਮਰੈ ॥
संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत का दोषी जन्मता-मरता रहता है।

ਸੰਤ ਕੀ ਦੂਖਨਾ ਸੁਖ ਤੇ ਟਰੈ ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥
संत का निन्दक सुख से खाली हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ॥
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥
संत के दोषी को कोई रहने का स्थान नहीं मिलता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥
नानक ! यदि संत को लुभाए तो वह उसको अपने साथ मिला लेता है ॥४॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅਧ ਬੀਚ ਤੇ ਟੂਟੈ ॥
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोषी बीच में टूट जाता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਕਿਤੈ ਕਾਜਿ ਨ ਪਹੂਚੈ ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥
संत का दोषी किसी काम में सफल नहीं होता।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਉਦਿਆਨ ਭ੍ਰਮਾਈਐ ॥
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥
संत का दोषी भयानक जंगलों में भटकता रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਉਝੜਿ ਪਾਈਐ ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥
संत का दोषी कुमार्ग में डाल दिया जाता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਅੰਤਰ ਤੇ ਥੋਥਾ ॥
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
संत का दोषी वैसे ही भीतर से खाली होता है,

ਜਿਉ ਸਾਸ ਬਿਨਾ ਮਿਰਤਕ ਕੀ ਲੋਥਾ ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥
जैसे मृतक व्यक्ति का शव श्वास के बिना होता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਜੜ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
संत के दोषी की जड़ बिल्कुल ही नहीं होती।

ਆਪਨ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਹਿ ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥
जो कुछ उसने बोया है, वह स्वयं ही खाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਅਵਰੁ ਨ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ॥
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥
संत के दोषी का कोई भी रक्षक नहीं हो सकता।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਉਬਾਰਿ ॥੫॥
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥
हे नानक ! यदि संत को भला लगे तो वह उसको बचा लेता है ॥५॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਇਉ ਬਿਲਲਾਇ ॥
संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
संत का दोषी यूं विलाप करता है,

ਜਿਉ ਜਲ ਬਿਹੂਨ ਮਛੁਲੀ ਤੜਫੜਾਇ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥
जैसे जल के बिना मछली दुःख में तड़पती है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਭੂਖਾ ਨਹੀ ਰਾਜੈ ॥
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
संत का दोषी हमेशा भूखा ही रहता है और तृप्त नहीं होता,

ਜਿਉ ਪਾਵਕੁ ਈਧਨਿ ਨਹੀ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥
जैसे अग्नि ईंधन से तृप्त नहीं होती।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਛੁਟੈ ਇਕੇਲਾ ॥
संत का दोखी छुटै इकेला ॥
संत का दोषी वैसे ही अकेला पड़ा रहता है,

ਜਿਉ ਬੂਆੜੁ ਤਿਲੁ ਖੇਤ ਮਾਹਿ ਦੁਹੇਲਾ ॥
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥
जैसे भीतर से जला हुआ तिल का पौधा खेत में व्यर्थ पड़ा रहता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਧਰਮ ਤੇ ਰਹਤ ॥
संत का दोखी धरम ते रहत ॥
संत का दोषी धर्म से भ्रष्ट होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦ ਮਿਥਿਆ ਕਹਤ ॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥
संत का दोषी सदा झूठ बोलता रहता है।

ਕਿਰਤੁ ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਧੁਰਿ ਹੀ ਪਇਆ ॥
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥
निन्दक का भाग्य आदि से ही ऐसा लिखा हुआ है।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥਿਆ ॥੬॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥
हे नानक ! जो कुछ प्रभु को भला लगता है, वही होता है॥ ६॥

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਬਿਗੜ ਰੂਪੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥
संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
संत का दोषी बदसूरत रूप वाला हो जाता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕਉ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥
संत पर दोष लगाने वाला ईश्वर के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਸਦਾ ਸਹਕਾਈਐ ॥
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
संत का दोषी सदा मृत्यु-निकट होता है।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਨ ਮਰੈ ਨ ਜੀਵਾਈਐ ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥
संत का दोषी जीवन एवं मृत्यु के बीच लटकता है।

ਸੰਤ ਕੇ ਦੋਖੀ ਕੀ ਪੁਜੈ ਨ ਆਸਾ ॥
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥
संत के दोषी की आशा पूर्ण नहीं होती।

ਸੰਤ ਕਾ ਦੋਖੀ ਉਠਿ ਚਲੈ ਨਿਰਾਸਾ ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥
संत का दोषी निराश चला जाता है।

ਸੰਤ ਕੈ ਦੋਖਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਟੈ ਕੋਇ ॥
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥
संत को दोषी को स्थिरता प्राप्त नहीं होती।

ਜੈਸਾ ਭਾਵੈ ਤੈਸਾ ਕੋਈ ਹੋਇ ॥
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥
जैसे ईश्वर की इच्छा होती है, वैसा ही मनुष्य हो जाता है।

ਪਇਆ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਇ ॥
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥
कोई भी व्यक्ति पूर्व जन्म के कर्मों को मिटा नहीं सकता।

ਨਾਨਕ ਜਾਨੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥੭॥
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥
हे नानक ! वह सच्चा प्रभु सब कुछ जानता है॥ ७ ॥

ਸਭ ਘਟ ਤਿਸ ਕੇ ਓਹੁ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥
समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के हैं।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਤਿਸ ਕਉ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥
उसको हमेशा प्रणाम करते रहो।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
भगवान का गुणानुवाद दिन-रात करते रहो।

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ही ध्यान करते रहो।

ਸਭੁ ਕਛੁ ਵਰਤੈ ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ॥
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
सब कुछ उस (परमात्मा) का किया ही होता है।

ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਕੋ ਥੀਆ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
ईश्वर जैसे मनुष्य को बनाता है, वैसा ही वह बन जाता है।

ਅਪਨਾ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
अपनी खेल का वह स्वयं ही निर्माता है।

ਦੂਸਰ ਕਉਨੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
दूसरा कौन उसका विचार कर सकता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੈ ਤਿਸੁ ਆਪਨ ਨਾਮੁ ਦੇਇ ॥
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
परमात्मा जिस पर अपनी कृपा करता है, उसे ही अपना नाम दे देता है।

ਬਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕ ਜਨ ਸੇਇ ॥੮॥੧੩॥
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली है॥ ८ ॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਤਜਹੁ ਸਿਆਨਪ ਸੁਰਿ ਜਨਹੁ ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
हे भद्रपुरुषो ! अपनी चतुराई त्याग कर हरि-परमेश्वर का सिमरन करो।

ਏਕ ਆਸ ਹਰਿ ਮਨਿ ਰਖਹੁ ਨਾਨਕ ਦੂਖੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਜਾਇ ॥੧॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥
अपने मन में भगवान की आशा रखो। हे नानक ! इस तरह दुख, भ्रम एवं भय दूर हो जाएँगे ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਟੇਕ ਬ੍ਰਿਥੀ ਸਭ ਜਾਨੁ ॥
मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥
(हे प्राणी !) किसी मनुष्य पर भरोसा रखना सब व्यर्थ है।

ਦੇਵਨ ਕਉ ਏਕੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥
एक भगवान ही सब को देने वाला है।

ਜਿਸ ਕੈ ਦੀਐ ਰਹੈ ਅਘਾਇ ॥
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
जिसके देने से ही तृप्ति होती है

ਬਹੁਰਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥
और फिर तृष्णा आकर नहीं लगती।

ਮਾਰੈ ਰਾਖੈ ਏਕੋ ਆਪਿ ॥
मारै राखै एको आपि ॥
एक ईश्वर स्वयं ही मारता है और रक्षा करता है।

ਮਾਨੁਖ ਕੈ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਹਾਥਿ ॥
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥
मनुष्य के वश में कुछ भी नहीं है।

ਤਿਸ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥
उसका हुक्म समझने से सुख उपलब्ध होता है।

ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਖੁ ਕੰਠਿ ਪਰੋਇ ॥
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥
सके नाम को पिरोकर अपने कण्ठ में डालकर रखो।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥
हे नानक ! उस प्रभु को हमेशा स्मरण करते रहो,

ਨਾਨਕ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥
कोई विघ्न नहीं आएगा ॥ १॥

ਉਸਤਤਿ ਮਨ ਮਹਿ ਕਰਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
उसतति मन महि करि निरंकार ॥
अपने मन में परमात्मा की महिमा-स्तुति करो।

ਕਰਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿ ਬਿਉਹਾਰ ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥
हे मेरे मन ! सत्य का कार्य-व्यवहार कर।

ਨਿਰਮਲ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਉ ॥
निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥
नाम का अमृत पान करने से तेरी जिव्हा पवित्र हो जाएगी

ਸਦਾ ਸੁਹੇਲਾ ਕਰਿ ਲੇਹਿ ਜੀਉ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
और तू अपनी आत्मा को हमेशा के लिए सुखदायक बना लेगा।

ਨੈਨਹੁ ਪੇਖੁ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਰੰਗੁ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
अपने नेत्रों से ईश्वर का कौतुक देख।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਬਿਨਸੈ ਸਭ ਸੰਗੁ ॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥
सत्संगति में मिलने से दूसरे तमाम मेल-मिलाप लुप्त हो जाते हैं।

ਚਰਨ ਚਲਉ ਮਾਰਗਿ ਗੋਬਿੰਦ ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
अपने चरणों से गोबिन्द के मार्ग पर चलो।

ਮਿਟਹਿ ਪਾਪ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਬਿੰਦ ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
एक क्षण भर के लिए भी हरि का जाप करने से पाप मिट जाते हैं।

ਕਰ ਹਰਿ ਕਰਮ ਸ੍ਰਵਨਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
प्रभु की सेवा करो और कानों से हरि कथा सुनो।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਨਾਨਕ ਊਜਲ ਮਥਾ ॥੨॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥
हे नानक ! (इस प्रकार) प्रभु के दरबार में तेरा मस्तक उज्जवल हो जाएगा ॥ २॥

ਬਡਭਾਗੀ ਤੇ ਜਨ ਜਗ ਮਾਹਿ ॥
बडभागी ते जन जग माहि ॥
दुनिया में वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं,

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਹਿ ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥
जो हमेशा भगवान की महिमा गाते रहते हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜੋ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰ ॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
जो व्यक्ति राम के नाम का चिन्तन करते रहते हैं,

ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਗਨੀ ਸੰਸਾਰ ॥
से धनवंत गनी संसार ॥
वही व्यक्ति जगत् में धनवान गिने जाते हैं।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹਿ ਹਰਿ ਮੁਖੀ ॥
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥
जो व्यक्ति अपने मन, तन एवं मुख से परमेश्वर के नाम का उच्चारण करते हैं,

ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਨਹੁ ਤੇ ਸੁਖੀ ॥
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
समझ लीजिए कि वे हमेशा सुखी हैं।

ਏਕੋ ਏਕੁ ਏਕੁ ਪਛਾਨੈ ॥
एको एकु एकु पछानै ॥
जो पुरुष केवल एक प्रभु को ही पहचानता है,

ਇਤ ਉਤ ਕੀ ਓਹੁ ਸੋਝੀ ਜਾਨੈ ॥
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥
उसे इहलोक एवं परलोक का ज्ञान हो जाता है।

ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਜਿਸ ਕਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥
हे नानक ! जिसका मन ईश्वर के नाम में मिल जाता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਨਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਾਨਿਆ ॥੩॥
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥
वह प्रभु को पहचान लेता है॥ ३॥

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਆਪਨ ਆਪੁ ਸੁਝੈ ॥
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
गुरु की कृपा से जो व्यक्ति अपने आपको समझ लेता है,

ਤਿਸ ਕੀ ਜਾਨਹੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ॥
तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥
जान लीजिए कि उसकी तृष्णा मिट गई है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਹਤ ॥
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
जो व्यक्ति संतों की संगति में हरि-परमेश्वर का यश करता रहता है,

ਸਰਬ ਰੋਗ ਤੇ ਓਹੁ ਹਰਿ ਜਨੁ ਰਹਤ ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥
वह प्रभु भक्त तमाम रोगों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਕੇਵਲ ਬਖ੍ਯਾਨੁ ॥
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
जो व्यक्ति रात-दिन केवल ईश्वर का भजन ही बखान करता है,

ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਮਹਿ ਸੋਈ ਨਿਰਬਾਨੁ ॥
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥
वह अपने गृहस्थ में ही निर्लिप्त रहता है।

ਏਕ ਊਪਰਿ ਜਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਆਸਾ ॥
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
जिस मनुष्य ने एक ईश्वर पर आशा रखी है,

ਤਿਸ ਕੀ ਕਟੀਐ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥
उसके लिए मृत्यु का फँदा कट जाता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਭੂਖ ॥
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
जिसके मन में पारब्रह्म की भूख है,

ਨਾਨਕ ਤਿਸਹਿ ਨ ਲਾਗਹਿ ਦੂਖ ॥੪॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥
हे नानक ! उसको कोई दुख नहीं लगता ॥ ४ ॥

ਜਿਸ ਕਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ॥
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥
जिसको हरि-प्रभु मन में याद आता है,

ਸੋ ਸੰਤੁ ਸੁਹੇਲਾ ਨਹੀ ਡੁਲਾਵੈ ॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥
वह संत सुखी है और उसका मन कभी नहीं डगमगाता।

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
जिस पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करता है,

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਕਹੁ ਕਿਸ ਤੇ ਡਰੈ ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
कहो वह सेवक किससे डर सकता है?

ਜੈਸਾ ਸਾ ਤੈਸਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
जैसा ईश्वर है, वैसा ही उसको दिखाई देता है।

ਅਪੁਨੇ ਕਾਰਜ ਮਹਿ ਆਪਿ ਸਮਾਇਆ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
अपनी रचना में प्रभु स्वयं ही समाया हुआ है।

ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੋਧਤ ਸੀਝਿਆ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
अनेक बार विचार करके विचार लिया है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤਤੁ ਸਭੁ ਬੂਝਿਆ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
गुरु की कृपा से समस्त वास्तविकता को समझ लिया है।

ਜਬ ਦੇਖਉ ਤਬ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੂਲੁ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
जब मैं देखता हूँ तो सब कुछ परमात्मा ही है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੂਖਮੁ ਸੋਈ ਅਸਥੂਲੁ ॥੫॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥
हे नानक ! वह स्वयं ही सूक्ष्म और स्वयं ही अस्थूल है॥ ५॥

ਨਹ ਕਿਛੁ ਜਨਮੈ ਨਹ ਕਿਛੁ ਮਰੈ ॥
नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
न कुछ जन्मता है, न कुछ मरता है।

ਆਪਨ ਚਲਿਤੁ ਆਪ ਹੀ ਕਰੈ ॥
आपन चलितु आप ही करै ॥
भगवान अपनी लीला स्वयं ही करता है।

ਆਵਨੁ ਜਾਵਨੁ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਅਨਦ੍ਰਿਸਟਿ ॥
आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥
जन्म-मरण, गोचर(दृश्य) एवं अगोचर(अद्रश्य)-"

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਧਾਰੀ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ॥
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥
यह समूचा जगत् उसने अपने आज्ञाकारी बनाए हुए हैं।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਗਲ ਮਹਿ ਆਪਿ ॥
आपे आपि सगल महि आपि ॥
सब कुछ वह अपने आप से ही है। वह स्वयं ही सब (जीव-जन्तुओं) में विद्यमान है।

ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਰਚਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥
अनेक युक्तियों द्वारा वह सृष्टि की रचना करता एवं उसका नाश भी करता है।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਖੰਡ ॥
अबिनासी नाही किछु खंड ॥
लेकिन अनश्वर परमात्मा का कुछ भी नाश नहीं होता।

ਧਾਰਣ ਧਾਰਿ ਰਹਿਓ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥
वह ब्रह्माण्ड को सहारा दे रहा है।

ਅਲਖ ਅਭੇਵ ਪੁਰਖ ਪਰਤਾਪ ॥
अलख अभेव पुरख परताप ॥
प्रभु का तेज-प्रताप अलक्ष्य एवं भेद रहित है।

ਆਪਿ ਜਪਾਏ ਤ ਨਾਨਕ ਜਾਪ ॥੬॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥
हे नानक ! यदि वह अपना जाप मनुष्य से स्वयं करवाए तो ही वह जाप करता है ॥६॥

ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ਸੁ ਸੋਭਾਵੰਤ ॥
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
जो प्रभु को जानते हैं, वे शोभायमान हैं।

ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਉਧਰੈ ਤਿਨ ਮੰਤ ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥
समूचा जगत् उनके मंत्र (उपदेश) द्वारा बच जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸਗਲ ਉਧਾਰਨ ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभु के सेवक सबका कल्याण कर देते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਦੂਖ ਬਿਸਾਰਨ ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥
प्रभु के सेवकों की संगति द्वारा दुःख भूल जाता है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਕਿਰਪਾਲ ॥
आपे मेलि लए किरपाल ॥
कृपालु प्रभु उनको अपने साथ मिला लेता है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਜਪਿ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥
गुरु के शब्द का जाप करने से वह कृतार्थ हो जाते हैं।

ਉਨ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋਈ ਲਾਗੈ ॥
उन की सेवा सोई लागै ॥
केवल वही सौभाग्यशाली उनकी सेवा में लगता है,

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਬਡਭਾਗੈ ॥
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥
जिस पर प्रभु कृपा धारण करता है।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਪਾਵਹਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥
जो प्रभु के नाम का जाप करते हैं, वे सुख पाते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਪੁਰਖ ਕਉ ਊਤਮ ਕਰਿ ਮਾਨੁ ॥੭॥
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥
हे नानक ! उन पुरुषों को महान समझो ॥ ७॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥
वह जो कुछ करता है, प्रभु की रजा में करता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਬਸੈ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ॥
सदा सदा बसै हरि संगि ॥
वह हमेशा के लिए प्रभु के साथ बसता है।

ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਹੋਵੈ ਸੋ ਹੋਇ ॥
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥
जो कुछ होता है, वह सहज स्वभाव ही होता है।

ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਣੈ ਸੋਇ ॥
करणैहारु पछाणै सोइ ॥
वह उस सृजनहार प्रभु को ही पहचानता है।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਕੀਆ ਜਨ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥
प्रभु का किया उसके सेवकों को मीठा लगता है।

ਜੈਸਾ ਸਾ ਤੈਸਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਨਾ ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥
जैसा प्रभु है, वैसा ही उसको दिखाई देता है।

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜੇ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ॥
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥
वह उसमें लीन हो जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था।

ਓਇ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਉਨਹੂ ਬਨਿ ਆਏ ॥
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥
वह सुखों का भण्डार है। यह प्रतिष्ठा केवल उसको ही शोभा देती है।

ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਿ ਦੀਨੋ ਮਾਨੁ ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
अपने सेवक को प्रभु ने स्वयं ही शोभा प्रदान की है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਜਨੁ ਏਕੋ ਜਾਨੁ ॥੮॥੧੪॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥
हे नानक ! समझो कि प्रभु एवं उसका सेवक एक समान ही हैं ॥८॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਥਾ ਜਾਨਨਹਾਰ ॥
सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥
प्रभु सर्वकला सम्पूर्ण है और हमारे दु:खों को जानने वाला है।

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਉਧਰੀਐ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰ ॥੧॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥
हे नानक ! जिसका सिमरन करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਟੂਟੀ ਗਾਢਨਹਾਰ ਗੋਪਾਲ ॥
टूटी गाढनहार गोपाल ॥
जगतपालक गोपाल टूटों को जोड़ने वाला है।

ਸਰਬ ਜੀਆ ਆਪੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥
वह स्वयं ही समस्त प्राणियों का पालन-पोषण करता है।

ਸਗਲ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਜਿਸੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥
जिसके मन में सब की चिन्ता है,

ਤਿਸ ਤੇ ਬਿਰਥਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥
उससे कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता।

ਰੇ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥
हे मेरे मन ! सदा ही परमात्मा का जाप कर।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
अनश्वर प्रभु सब कुछ स्वयं ही है।

ਆਪਨ ਕੀਆ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ॥
आपन कीआ कछू न होइ ॥
प्राणी के अपने करने से कुछ नहीं हो सकता,

ਜੇ ਸਉ ਪ੍ਰਾਨੀ ਲੋਚੈ ਕੋਇ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
चाहे वह सैकड़ों बार इसकी इच्छा करे।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਤੇਰੈ ਕਿਛੁ ਕਾਮ ॥
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
उसके अतिरिक्त कुछ भी तेरे काम का नहीं।

ਗਤਿ ਨਾਨਕ ਜਪਿ ਏਕ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥੧॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥
हे नानक ! एक ईश्वर के नाम का जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है ॥१॥

ਰੂਪਵੰਤੁ ਹੋਇ ਨਾਹੀ ਮੋਹੈ ॥
रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
यदि प्राणी अति सुन्दर है तो अपने आप वह दूसरों को मोहित नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਜੋਤਿ ਸਗਲ ਘਟ ਸੋਹੈ ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
प्रभु की ज्योति ही समस्त शरीरों में सुन्दर लगती है।

ਧਨਵੰਤਾ ਹੋਇ ਕਿਆ ਕੋ ਗਰਬੈ ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
धनवान होकर कोई पुरुष क्या अभिमान करे,

ਜਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਦੀਆ ਦਰਬੈ ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
जब समस्त धन उसका दिया हुआ है।

ਅਤਿ ਸੂਰਾ ਜੇ ਕੋਊ ਕਹਾਵੈ ॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
यदि कोई पुरुष अपने आपको महान शूरवीर कहलवाता हो,

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਕਲਾ ਬਿਨਾ ਕਹ ਧਾਵੈ ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
प्रभु की कला (शक्ति) बिना वह क्या प्रयास कर सकता है?

ਜੇ ਕੋ ਹੋਇ ਬਹੈ ਦਾਤਾਰੁ ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥
यदि कोई पुरुष दानी बन बैठे

ਤਿਸੁ ਦੇਨਹਾਰੁ ਜਾਨੈ ਗਾਵਾਰੁ ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
तो दाता प्रभु उसको मूर्ख समझता है।

ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤੂਟੈ ਹਉ ਰੋਗੁ ॥
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
गुरु की कृपा से जिसके अहंकार का रोग दूर होता है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਸਦਾ ਅਰੋਗੁ ॥੨॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥
हे नानक ! वह मनुष्य सदैव स्वस्थ है॥ २ ॥

ਜਿਉ ਮੰਦਰ ਕਉ ਥਾਮੈ ਥੰਮਨੁ ॥
जिउ मंदर कउ थामै थमनु ॥
जैसे मन्दिर को एक खम्भा सहारा देता है,

ਤਿਉ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨਹਿ ਅਸਥੰਮਨੁ ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथमनु ॥
वैसे ही गुरु का शब्द मन को सहारा देता है।

ਜਿਉ ਪਾਖਾਣੁ ਨਾਵ ਚੜਿ ਤਰੈ ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
जैसे नाव में रखा पत्थर पार हो जाता है,

ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਗਤੁ ਨਿਸਤਰੈ ॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥
वैसे ही प्राणी गुरु के चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है।

ਜਿਉ ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਕ ਪਰਗਾਸੁ ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
जैसे दीपक अन्धेरे में प्रकाश कर देता है,

ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਹੋਇ ਬਿਗਾਸੁ ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
वैसे ही गुरु के दर्शन करके मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ਜਿਉ ਮਹਾ ਉਦਿਆਨ ਮਹਿ ਮਾਰਗੁ ਪਾਵੈ ॥
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
जैसे मनुष्य को महा जंगल में पथ मिल जाता है,

ਤਿਉ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਟਾਵੈ ॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥
वैसे ही सत्संगति में रहने से प्रभु की ज्योति मनुष्य के भीतर प्रकट हो जाती है।

ਤਿਨ ਸੰਤਨ ਕੀ ਬਾਛਉ ਧੂਰਿ ॥
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
मैं उन संतों के चरणों की धूलि मांगता हूँ।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਹਰਿ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ॥੩॥
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥
हे ईश्वर ! नानक की आकांक्षा पूर्ण करो॥ ३॥

ਮਨ ਮੂਰਖ ਕਾਹੇ ਬਿਲਲਾਈਐ ॥
मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
हे मूर्ख मन ! क्यों विलाप करते हो !

ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਿਖਿਆ ਪਾਈਐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥
तुझे वह कुछ मिलेगा, जो तेरे पूर्व जन्म के कर्मों द्वारा लिखा हुआ है।

ਦੂਖ ਸੂਖ ਪ੍ਰਭ ਦੇਵਨਹਾਰੁ ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
प्रभु दुःख एवं सुख देने वाला है।

ਅਵਰ ਤਿਆਗਿ ਤੂ ਤਿਸਹਿ ਚਿਤਾਰੁ ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
अन्य सब कुछ छोड़कर तू उसकी ही आराधना कर।

ਜੋ ਕਛੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਮਾਨੁ ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
परमात्मा जो कुछ करता है, उसको सुख समझ।

ਭੂਲਾ ਕਾਹੇ ਫਿਰਹਿ ਅਜਾਨ ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥
हे मूर्ख ! तुम क्यों भटकते फेिरते हो।

ਕਉਨ ਬਸਤੁ ਆਈ ਤੇਰੈ ਸੰਗ ॥
कउन बसतु आई तेरै संग ॥
कौन-सी वस्तु तेरे साथ आई है।

ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਰਸਿ ਲੋਭੀ ਪਤੰਗ ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥
हे लालची परवाने ! तुम सांसारिक ऐश्वर्य-भोग में मस्त हो रहे हो ?

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪਿ ਹਿਰਦੇ ਮਾਹਿ ॥
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
तू अपने मन में राम के नाम का जाप कर।

ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਹਿ ॥੪॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥
हे नानक ! इस तरह तुम सम्मानपूर्वक अपने धाम (परलोक) को जाओगे ॥ ४॥

ਜਿਸੁ ਵਖਰ ਕਉ ਲੈਨਿ ਤੂ ਆਇਆ ॥
जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
"(हे जीव !) जिस सौदे को लेने लिए तू दुनिया में आया है,"

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
वह राम नाम रूपी सौदा संतों के घर से मिलता है।

ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਲੇਹੁ ਮਨ ਮੋਲਿ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
अपने अभिमान को त्याग दे,

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੇ ਮਹਿ ਤੋਲਿ ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
राम का नाम अपने हृदय में तोल और अपने मन से इसे खरीद।

ਲਾਦਿ ਖੇਪ ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਚਾਲੁ ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अपना सौदा लाद ले और संतों के संग चल।

ਅਵਰ ਤਿਆਗਿ ਬਿਖਿਆ ਜੰਜਾਲ ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥
माया के दूसरे जंजाल त्याग दे।

ਧੰਨਿ ਧੰਨਿ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
हरेक तुझे धन्य ! धन्य ! कहेगा।

ਮੁਖ ਊਜਲ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਇ ॥
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥
उस प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा।

ਇਹੁ ਵਾਪਾਰੁ ਵਿਰਲਾ ਵਾਪਾਰੈ ॥
इहु वापारु विरला वापारै ॥
यह व्यापार कोई विरला व्यापारी ही करता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ॥੫॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥
हे नानक ! मैं ऐसे व्यापारी पर सदा बलिहारी जाता हूँ॥ ५ ॥

ਚਰਨ ਸਾਧ ਕੇ ਧੋਇ ਧੋਇ ਪੀਉ ॥
चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
(हे जीव !) साधुओं के चरण धो-धोकर पी।

ਅਰਪਿ ਸਾਧ ਕਉ ਅਪਨਾ ਜੀਉ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥
साधुओं पर अपनी आत्मा भी अर्पण कर दे,"

ਸਾਧ ਕੀ ਧੂਰਿ ਕਰਹੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥
साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साधुओं के चरणों की धूलि से स्नान कर।

ਸਾਧ ਊਪਰਿ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥
साधु पर कुर्बान हो जाना चाहिए।

ਸਾਧ ਸੇਵਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साधु की सेवा सौभाग्य से ही मिलती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
साधु की संगति में हरि का भजन गान करना चाहिए।

ਅਨਿਕ ਬਿਘਨ ਤੇ ਸਾਧੂ ਰਾਖੈ ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
साधु अनेक विघ्नों से मनुष्य की रक्षा करता है।

ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ॥
हरि गुन गाइ अम्रित रसु चाखै ॥
जो प्रभु की गुणस्तुति करता है, वह अमृत रस को चखता है।

ਓਟ ਗਹੀ ਸੰਤਹ ਦਰਿ ਆਇਆ ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
जिसने संतों का सहारा पकड़ा है और उनके द्वार पर आ गिरा है,

ਸਰਬ ਸੂਖ ਨਾਨਕ ਤਿਹ ਪਾਇਆ ॥੬॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥
हे नानक ! वह सर्व सुख प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

ਮਿਰਤਕ ਕਉ ਜੀਵਾਲਨਹਾਰ ॥
मिरतक कउ जीवालनहार ॥
परमात्मा मृतक प्राणी को भी जीवित करने वाला है।

ਭੂਖੇ ਕਉ ਦੇਵਤ ਅਧਾਰ ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥
वह भूखे को भी भोजन प्रदान करता है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਮਾਹਿ ॥
सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥
तमाम खजाने उसकी दृष्टि में हैं।

ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਣਾ ਪਾਹਿ ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
(परन्तु प्राणी) अपने पूर्व जन्म के किए कर्मों का फल भोगते हैं।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਓਹੁ ਕਰਨੈ ਜੋਗੁ ॥
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
सबकुछ उस परमात्मा का ही है और वही सब कुछ करने में समर्थावान है।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਸਰ ਹੋਆ ਨ ਹੋਗੁ ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
उसके अलावा कोई दूसरा न ही था और न ही होगा।

ਜਪਿ ਜਨ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣੀ ॥
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
हे जीव ! दिन-रात सदैव उसकी आराधना कर।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਨਿਰਮਲ ਇਹ ਕਰਣੀ ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
यह जीवन-आचरण सबसे ऊँचा एवं पवित्र है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਕਉ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ॥
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
जिस पुरुष पर परमात्मा ने कृपा धारण करके अपना नाम प्रदान किया है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਆ ॥੭॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥
हे नानक ! वह पवित्र हो जाता है॥ ७ ॥

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ॥
जा कै मनि गुर की परतीति ॥
जिसके मन में गुरु जी पर आस्था है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੀਤਿ ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
वह मनुष्य हरि-प्रभु को स्मरण करने लग जाता है।

ਭਗਤੁ ਭਗਤੁ ਸੁਨੀਐ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध भक्त हो जाता है

ਜਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਏਕੋ ਹੋਇ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥
जिसके हृदय में एक ईश्वर विद्यमान होता है।

ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਚੁ ਤਾ ਕੀ ਰਹਤ ॥
सचु करणी सचु ता की रहत ॥
उसका कर्म सत्य है और जीवन-मर्यादा भी सत्य है।

ਸਚੁ ਹਿਰਦੈ ਸਤਿ ਮੁਖਿ ਕਹਤ ॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥
उसके मन में सत्य है और वह अपने मुख से सत्य ही बोलता है।

ਸਾਚੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਚਾ ਆਕਾਰੁ ॥
साची द्रिसटि साचा आकारु ॥
उसकी दृष्टि सत्य है और उसका स्वरूप भी सत्य है।

ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਸਾਚਾ ਪਾਸਾਰੁ ॥
सचु वरतै साचा पासारु ॥
वह सत्य बांटता है और सत्य ही फैलाता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਤਾ ॥
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
हे नानक ! जो पुरुष परब्रह्म को सत्य समझता है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਜਨੁ ਸਚਿ ਸਮਾਤਾ ॥੮॥੧੫॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥
वह पुरुष सत्य में ही समा जाता है ॥८॥१५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਨ ਰੰਗੁ ਕਿਛੁ ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣ ਤੇ ਪ੍ਰਭ ਭਿੰਨ ॥
रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
परमेश्वर का न कोई रूप अथवा चिन्ह है और न ही कोई रंग है। वह माया के तीनों गुणों से परे है।

ਤਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ॥੧॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा स्वयं उस पुरुष को समझाता है, जिस पर स्वयं प्रसन्न होता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖੁ ॥
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
(हे जीव !) अपने मन में अनश्वर प्रभु को याद रख

ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਤੂ ਪ੍ਰੀਤਿ ਤਿਆਗੁ ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
और मनुष्य का प्रेम (मोह) त्याग दे।

ਤਿਸ ਤੇ ਪਰੈ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਕੋਇ ॥
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
उससे परे कोई वस्तु नहीं।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
वह एक ईश्वर समस्त जीव-जन्तुओं के भीतर मौजूद है।

ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ॥
आपे बीना आपे दाना ॥
वह स्वयं सब कुछ देखने वाला और स्वयं ही सब कुछ जानने वाला है।

ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਗਹੀਰੁ ਸੁਜਾਨਾ ॥
गहिर ग्मभीरु गहीरु सुजाना ॥
प्रभु अथाह गम्भीर, गहरा एवं परम बुद्धिमान है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
वह पारब्रह्म, परमेश्वर एवं गोबिन्द

ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਾਨ ਦਇਆਲ ਬਖਸੰਦ ॥
क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥
कृपा का भण्डार, बड़ा दयालु एवं क्षमाशील है।

ਸਾਧ ਤੇਰੇ ਕੀ ਚਰਨੀ ਪਾਉ ॥
साध तेरे की चरनी पाउ ॥
हे प्रभु ! तेरे साधुओं के चरणों पर नतमस्तक होवे

ਨਾਨਕ ਕੈ ਮਨਿ ਇਹੁ ਅਨਰਾਉ ॥੧॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥
नानक के मन में यही अभिलाषा है ॥ १॥

ਮਨਸਾ ਪੂਰਨ ਸਰਨਾ ਜੋਗ ॥
मनसा पूरन सरना जोग ॥
भगवान मनोकामना पूर्ण करने वाला एवं शरण देने योग्य है।

ਜੋ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਸੋਈ ਹੋਗੁ ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥
जो कुछ ईश्वर ने अपने हाथ से लिख दिया है, वही होता है।

ਹਰਨ ਭਰਨ ਜਾ ਕਾ ਨੇਤ੍ਰ ਫੋਰੁ ॥ਤਿਸ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ਹੋਰੁ ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
वह पलक झपकते ही सृष्टि की रचना एवं विनाश कर देता है। दूसरा कोई उसके भेद को नहीं जानता।

ਅਨਦ ਰੂਪ ਮੰਗਲ ਸਦ ਜਾ ਕੈ ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
वह प्रसन्नता का रूप है एवं उसके मन्दिर में सदैव मंगल-खुशियाँ हैं।

ਸਰਬ ਥੋਕ ਸੁਨੀਅਹਿ ਘਰਿ ਤਾ ਕੈ ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥
मैंने सुना है कि समस्त पदार्थ उसके घर में मौजूद हैं।

ਰਾਜ ਮਹਿ ਰਾਜੁ ਜੋਗ ਮਹਿ ਜੋਗੀ ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
राजाओं में वह महान राजा एवं योगीयों में महायोगी है।

ਤਪ ਮਹਿ ਤਪੀਸਰੁ ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਮਹਿ ਭੋਗੀ ॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥
तपस्वियों में वह महान तपस्वी है और गृहस्थियों में भी स्वयं ही गृहस्थी है।

ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਭਗਤਹ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
उस एक ईश्वर का ध्यान करने से भक्तजनों ने सुख प्राप्त कर लिया है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਪੁਰਖ ਕਾ ਕਿਨੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥
हे नानक ! उस परमात्मा का किसी ने भी अन्त नहीं पाया ॥ २ ॥

ਜਾ ਕੀ ਲੀਲਾ ਕੀ ਮਿਤਿ ਨਾਹਿ ॥
जा की लीला की मिति नाहि ॥
जिस भगवान की (सृष्टि-रूपी) लीला का कोई अंत नहीं,

ਸਗਲ ਦੇਵ ਹਾਰੇ ਅਵਗਾਹਿ ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥
उसे खोज-खोजकर देवता भी थक चुके हैं।

ਪਿਤਾ ਕਾ ਜਨਮੁ ਕਿ ਜਾਨੈ ਪੂਤੁ ॥
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
चूंकि अपने पिता के जन्म बारे पुत्र क्या जानता है ?

ਸਗਲ ਪਰੋਈ ਅਪੁਨੈ ਸੂਤਿ ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सारी सृष्टि ईश्वर ने अपने (हुक्म रूपी) धागे में पिरोई हुई है।

ਸੁਮਤਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਜਿਨ ਦੇਇ ॥ਜਨ ਦਾਸ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਸੇਇ ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥
जिन्हें प्रभु सुमति, ज्ञान एवं ध्यान प्रदान करता है, उसके सेवक एवं दास उसका ही ध्यान करते रहते हैं।

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਜਾ ਕਉ ਭਰਮਾਏ ॥
तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥
जिसको प्रभु माया के तीन गुणों में भटकाता है,

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
वह जन्मता-मरता रहता है और आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है।

ਊਚ ਨੀਚ ਤਿਸ ਕੇ ਅਸਥਾਨ ॥
ऊच नीच तिस के असथान ॥
ऊँच-नीच सब उसके ही स्थान हैं।

ਜੈਸਾ ਜਨਾਵੈ ਤੈਸਾ ਨਾਨਕ ਜਾਨ ॥੩॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥
हे नानक ! जैसी सूझ वह देता है, वैसे ही सूझ वाला प्राणी बन जाता है ॥३॥

ਨਾਨਾ ਰੂਪ ਨਾਨਾ ਜਾ ਕੇ ਰੰਗ ॥
नाना रूप नाना जा के रंग ॥
ईश्वर के अनेक रूप हैं और अनेक उसके रंग हैं।

ਨਾਨਾ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਇਕ ਰੰਗ ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
अनेक वेष धारण करते हुए वह फिर भी एक ही रहता है।

ਨਾਨਾ ਬਿਧਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
उसने विभिन्न विधियों से अपनी सृष्टि का प्रसार किया हुआ है।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥
अनश्वर प्रभु जो एक ही है,

ਨਾਨਾ ਚਲਿਤ ਕਰੇ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ॥
नाना चलित करे खिन माहि ॥
एक क्षण में वह विभिन्न खेल रच देता है।

ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪੂਰਨੁ ਸਭ ਠਾਇ ॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥
पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों में समा रहा है।

ਨਾਨਾ ਬਿਧਿ ਕਰਿ ਬਨਤ ਬਨਾਈ ॥
नाना बिधि करि बनत बनाई ॥
अनेक विधियों से उसने सृष्टि-रचना की है।

ਅਪਨੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਈ ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥
अपना मूल्यांकन उसने स्वयं ही पाया है।

ਸਭ ਘਟ ਤਿਸ ਕੇ ਸਭ ਤਿਸ ਕੇ ਠਾਉ ॥
सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥
समस्त हृदय उसके हैं और उसके ही समस्त स्थान हैं।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੪॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥
हे नानक ! मैं हरि का नाम जप-जप कर ही जीता हूँ ॥४॥

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਗਲੇ ਜੰਤ ॥
नाम के धारे सगले जंत ॥
ईश्वर नाम ने ही समस्त जीव-जन्तुओं को सहारा दिया हुआ है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
धरती के खण्ड एवं ब्रह्माण्ड ईश्वर नाम ने ही टिकाए हुए हैं।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥
ईश्वर के नाम ने ही स्मृतियों, वेदों एवं पुराणों को सहारा दिया हुआ है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸੁਨਨ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के सहारे द्वारा प्राणी ज्ञान एवं मनन बारे सुनते हैं।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਆਗਾਸ ਪਾਤਾਲ ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
परमेश्वर का नाम ही आकाशों एवं पातालों का सहारा है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਸਗਲ ਆਕਾਰ ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
ईश्वर का नाम समस्त शरीरों का सहारा है।

ਨਾਮ ਕੇ ਧਾਰੇ ਪੁਰੀਆ ਸਭ ਭਵਨ ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
तीनों भवन एवं चौदह लोक ईश्वर के नाम ने टिकाए हुए हैं।

ਨਾਮ ਕੈ ਸੰਗਿ ਉਧਰੇ ਸੁਨਿ ਸ੍ਰਵਨ ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
नाम की संगति करने एवं कानों से इसको श्रवण करने से मनुष्य पार हो गए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਨੈ ਨਾਮਿ ਲਾਏ ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
जिस पर प्रभु कृपा धारण करके अपने नाम के साथ मिलाता है,

ਨਾਨਕ ਚਉਥੇ ਪਦ ਮਹਿ ਸੋ ਜਨੁ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥੫॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥
हे नानक ! वह मनुष्य चतुर्थ स्थान में पहुँचकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

ਰੂਪੁ ਸਤਿ ਜਾ ਕਾ ਸਤਿ ਅਸਥਾਨੁ ॥
रूपु सति जा का सति असथानु ॥
जिस भगवान का रूप सत्य है, उसका निवास भी सत्य है।

ਪੁਰਖੁ ਸਤਿ ਕੇਵਲ ਪਰਧਾਨੁ ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥
केवल वह सद्पुरुष ही प्रधान है।

ਕਰਤੂਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਜਾ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੀ ॥
करतूति सति सति जा की बाणी ॥सति पुरख सभ माहि समाणी ॥
उसके करतब सत्य हैं और उसकी वाणी सत्य है। सत्यस्वरूप प्रभु सब में समाया हुआ है।

ਸਤਿ ਕਰਮੁ ਜਾ ਕੀ ਰਚਨਾ ਸਤਿ ॥
सति करमु जा की रचना सति ॥
उसके कर्म सत्य हैं और उसकी सृष्टि भी सत्य है।

ਮੂਲੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਉਤਪਤਿ ॥
मूलु सति सति उतपति ॥
उसका मूल सत्य है एवं जो कुछ उससे उत्पन्न होता है, वह भी सत्य है।

ਸਤਿ ਕਰਣੀ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲੀ ॥
सति करणी निरमल निरमली ॥
उसकी करनी सत्य है और पवित्र से भी पवित्र है।

ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਤਿਸਹਿ ਸਭ ਭਲੀ ॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥
भगवान जिसे समझाता है, उसे सब भला ही लगता है।

ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸੁਖਦਾਈ ॥
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
प्रभु का सत्यनाम सुख देने वाला है।

ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਸਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ॥੬॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥
हे नानक ! (प्राणी को) यह सच्चा विश्वासगुरु से मिलता है॥ ६ ॥

ਸਤਿ ਬਚਨ ਸਾਧੂ ਉਪਦੇਸ ॥
सति बचन साधू उपदेस ॥
साधु का उपदेश सत्य वचन हैं।

ਸਤਿ ਤੇ ਜਨ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਪ੍ਰਵੇਸ ॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥
वे पुरुष सत्य हैं, जिनके हृदय में सत्य प्रवेश करता है।

ਸਤਿ ਨਿਰਤਿ ਬੂਝੈ ਜੇ ਕੋਇ ॥
सति निरति बूझै जे कोइ ॥
यदि कोई व्यक्ति सत्य को समझे और प्रेम करे,

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
नामु जपत ता की गति होइ ॥
तो नाम जपने से उसकी गति हो जाती है।

ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ ॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
प्रभु स्वयं सत्यस्वरूप है और उसका किया सब सत्य है।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਅਪਨੀ ਮਿਤਿ ਗਤਿ ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ॥
वह स्वयं ही अपने अनुमान एवं अवस्था को जानता है।

ਜਿਸ ਕੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸੁ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ॥
जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥
जिसकी यह सृष्टि है, वही उसका सृजनहार है।

ਅਵਰ ਨ ਬੂਝਿ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥
कोई दूसरा उसको नहीं समझता, चाहे वह कैसे विचार करे।

ਕਰਤੇ ਕੀ ਮਿਤਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੀਆ ॥
करते की मिति न जानै कीआ ॥
करतार का विस्तार, उसका उत्पन्न किया हुआ जीव नहीं जान सकता।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਵਰਤੀਆ ॥੭॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥
हे नानक ! जो कुछ उसे लुभाता है, केवल वही होता है। ७॥

ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦ ॥
बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
प्रभु के अद्भुत, आश्चर्यजनक कौतुक देखकर मैं चकित हो गया हूँ।

ਜਿਨਿ ਬੂਝਿਆ ਤਿਸੁ ਆਇਆ ਸ੍ਵਾਦ ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥
जो प्रभु की महिमा को समझता है, वही आनन्द प्राप्त करता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਾਚਿ ਜਨ ਰਹੇ ॥
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
प्रभु के सेवक उसके प्रेम में लीन रहते हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਪਦਾਰਥ ਲਹੇ ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह (नाम) पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं।

ਓਇ ਦਾਤੇ ਦੁਖ ਕਾਟਨਹਾਰ ॥
ओइ दाते दुख काटनहार ॥
वह दानी एवं दुःख दूर करने वाले हैं।

ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰ ॥
जा कै संगि तरै संसार ॥
उनकी संगति में संसार का कल्याण हो जाता है।

ਜਨ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ॥
जन का सेवकु सो वडभागी ॥
ऐसे सेवकों का सेवक सौभाग्यशाली है।

ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
जन कै संगि एक लिव लागी ॥
उसके सेवक की संगति में मनुष्य की वृति एक ईश्वर से लग जाती है।

ਗੁਨ ਗੋਬਿਦ ਕੀਰਤਨੁ ਜਨੁ ਗਾਵੈ ॥
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥
प्रभु का सेवक उसकी गुणस्तुति एवं भजन गायन करता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ॥੮॥੧੬॥
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से वह फल प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ १६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥
आदि सचु जुगादि सचु ॥
भगवान सृष्टि-रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य था,

ਹੈ ਭਿ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭਿ ਸਚੁ ॥੧॥
है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥
अब वर्तमान में उसी का अस्तित्व है। हे नानक ! भविष्य में भी उस सत्यस्वरूप भगवान का अस्तित्व होगा ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी॥

ਚਰਨ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪਰਸਨਹਾਰ ॥
चरन सति सति परसनहार ॥
प्रभु के चरण सत्य हैं और सत्य है वह जो उसके चरण-स्पर्श करता है।

ਪੂਜਾ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸੇਵਦਾਰ ॥
पूजा सति सति सेवदार ॥
उसकी पूजा सत्य है एवं उसकी पूजा करने वाला भी सत्य है।

ਦਰਸਨੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪੇਖਨਹਾਰ ॥
दरसनु सति सति पेखनहार ॥
उसके दर्शन सत्य हैं और दर्शन करने वाला भी सत्य है।

ਨਾਮੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਧਿਆਵਨਹਾਰ ॥
नामु सति सति धिआवनहार ॥
उसका नाम सत्य है और वह भी सत्य है जो इसका ध्यान करता है।

ਆਪਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਭ ਧਾਰੀ ॥
आपि सति सति सभ धारी ॥
वह स्वयं सत्यस्वरूप है, सत्य है वह प्रत्येक वस्तु जिसे उसने सहारा दिया हुआ है।

ਆਪੇ ਗੁਣ ਆਪੇ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥
वह स्वयं ही गुण है और स्वयं ही गुणकारी है।

ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਬਕਤਾ ॥
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
प्रभु की वाणी सत्य है और वह सत्य वक्ता है।

ਸੁਰਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਜਸੁ ਸੁਨਤਾ ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥
वह कान सत्य हैं जो सद्पुरुष का यशोगान सुनते हैं।

ਬੁਝਨਹਾਰ ਕਉ ਸਤਿ ਸਭ ਹੋਇ ॥
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
जो प्रभु को समझता है, उसके लिए सब सत्य ही है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿ ਸਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥
हे नानक ! वह प्रभु सदा सर्वदा सत्य है॥ १॥
॥1॥

ਸਤਿ ਸਰੂਪੁ ਰਿਦੈ ਜਿਨਿ ਮਾਨਿਆ ॥
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥
जो मनुष्य अपने हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा पर आस्था धारण करता है,

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਤਿਨਿ ਮੂਲੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥
वह सब कुछ करने वाले एवं कराने वाले (सृष्टि के) मूल को समझ लेता है।

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ॥
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
जिसके हृदय में प्रभु का विश्वास प्रवेश कर गया है,

ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥
उसके मन में तत्व ज्ञान प्रत्यक्ष होता है।

ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਬਸਾਨਾ ॥
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥
डर को त्याग कर वह निडर होकर बसता है

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਤਿਸੁ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨਾ ॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥
और जिससे वह उत्पन्न हुआ था, उस में ही समा जाता है।

ਬਸਤੁ ਮਾਹਿ ਲੇ ਬਸਤੁ ਗਡਾਈ ॥ ਤਾ ਕਉ ਭਿੰਨ ਨ ਕਹਨਾ ਜਾਈ ॥
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिंन न कहना जाई ॥
जब एक वस्तु अपनी प्रकार की दूसरी वस्तु से मिल जाती है तो वह इससे भिन्न नहीं कही जा सकती।

ਬੂਝੈ ਬੂਝਨਹਾਰੁ ਬਿਬੇਕ ॥
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥
इस विचार को कोई सूझवान ही समझता है।

ਨਾਰਾਇਨ ਮਿਲੇ ਨਾਨਕ ਏਕ ॥੨॥
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥
हे नानक ! जो प्राणी नारायण से मिल चुके हैं, वे उसके साथ एक हो चुके हैं।॥ २॥

ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਆਗਿਆਕਾਰੀ ॥
ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥
भगवान का सेवक उसका आज्ञाकारी होता है।

ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸਦਾ ਪੂਜਾਰੀ ॥
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥
भगवान का सेवक सदा उसकी ही पूजा करता रहता है।

ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੈ ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ॥
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥
ईश्वर के सेवक के मन में आस्था होती है।

ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥
ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥
प्रभु के सेवक का जीवन-आचरण पवित्र होता है।

ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਸੇਵਕੁ ਜਾਨੈ ਸੰਗਿ ॥
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥
प्रभु का सेवक जानता है कि उसका स्वामी सदैव उसके साथ है।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਨਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥
परमेश्वर का सेवक उसके नाम की प्रीति में बसता है।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਪਾਲਨਹਾਰਾ ॥
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥
अपने सेवक का प्रभु पालन-पोषणहार है।

ਸੇਵਕ ਕੀ ਰਾਖੈ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
सेवक की राखै निरंकारा ॥
निरंकार प्रभु अपने सेवक की प्रतिष्ठा रखता है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਿਸੁ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੈ ॥
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥
वही सेवक है, जिस पर प्रभु दया करता है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਰੈ ॥੩॥
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥
हे नानक ! वह सेवक प्रत्येक श्वास से ईश्वर को स्मरण करता रहता है ॥ ३ ॥

ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਾ ਪਰਦਾ ਢਾਕੈ ॥
अपुने जन का परदा ढाकै ॥
परमात्मा अपने सेवक का पद रखता है।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸਰਪਰ ਰਾਖੈ ॥
अपने सेवक की सरपर राखै ॥
वह अपने सेवक की निश्चित ही प्रतिष्ठा रखता है।

ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ॥
अपने दास कउ देइ वडाई ॥
प्रभु अपने सेवक को मान-सम्मान प्रदान करता है।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਨਾਮੁ ਜਪਾਈ ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥
अपने सेवक से वह अपने नाम का जाप करवाता है।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪਿ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ॥
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
अपने सेवक की वह स्वयं ही लाज रखता है।

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕੋਇ ਨ ਲਾਖੈ ॥
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥
उसकी गति एवं अनुमान को कोई नहीं जानता।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਕੋ ਨ ਪਹੁਚੈ ॥
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
कोई भी व्यक्ति प्रभु के सेवक की बराबरी नहीं कर सकता।

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਊਚ ਤੇ ਊਚੇ ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥
ईश्वर के सेवक सर्वोच्च हैं।

ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੀ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
प्रभु जिसको अपनी सेवा में लगाता है,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਦਹ ਦਿਸਿ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥੪॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥
हे नानक ! वह सेवक दसों दिशाओं में लोकप्रिय हो जाता है ॥४॥

ਨੀਕੀ ਕੀਰੀ ਮਹਿ ਕਲ ਰਾਖੈ ॥
नीकी कीरी महि कल राखै ॥
यदि प्रभु छोटी-सी चींटी में शक्ति भर दे तो

ਭਸਮ ਕਰੈ ਲਸਕਰ ਕੋਟਿ ਲਾਖੈ ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥
वह लाखों, करोड़ों लश्करों को भस्म बना सकती है।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾਸੁ ਨ ਕਾਢਤ ਆਪਿ ॥
जिस का सासु न काढत आपि ॥
जिस प्राणी का श्वास परमेश्वर स्वयं नहीं निकालता,

ਤਾ ਕਉ ਰਾਖਤ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥ ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
उसको वह अपना हाथ देकर बचा लेता है।

ਮਾਨਸ ਜਤਨ ਕਰਤ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
मनुष्य अनेक विधियों से यत्न करता है,

ਤਿਸ ਕੇ ਕਰਤਬ ਬਿਰਥੇ ਜਾਤਿ ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
परन्तु उसके काम असफल हो जाते हैं।

ਮਾਰੈ ਨ ਰਾਖੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਾ ਰਾਖਾ ਸੋਇ ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥
ईश्वर के अलावा दूसरा कोई मार अथवा बचा नहीं सकता। समस्त जीव-जन्तुओं का परमात्मा ही रखवाला है।

ਕਾਹੇ ਸੋਚ ਕਰਹਿ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
हे नश्वर प्राणी ! तुम क्यों चिन्ता करते हो ?

ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਅਲਖ ਵਿਡਾਣੀ ॥੫॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥
हे नानक ! अलक्ष्य एवं आश्चर्यजनक परमात्मा को स्मरण कर॥ ५ ॥

ਬਾਰੰ ਬਾਰ ਬਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਪੀਐ ॥
बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥
बार-बार ईश्वर के नाम का जाप करना चाहिए।

ਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਧ੍ਰਪੀਐ ॥
पी अम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम-अमृत पीकर यह मन एवं शरीर तृप्त हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
जिस गुरमुख को नाम-रत्न प्राप्त हुआ है,

ਤਿਸੁ ਕਿਛੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥
वह ईश्वर के अलावा किसी दूसरे को नहीं देखता।

ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਾਮੋ ਰੂਪੁ ਰੰਗੁ ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
नाम उसका धन है और नाम ही उसका रूप, रंग है।

ਨਾਮੋ ਸੁਖੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥
नाम उसका सुख है और हरि का नाम ही उसका साथी होता है।

ਨਾਮ ਰਸਿ ਜੋ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੇ ॥
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥
जो मनुष्य नाम-अमृत से तृप्त हो जाते हैं,

ਮਨ ਤਨ ਨਾਮਹਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਨੇ ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
उनकी आत्मा एवं शरीर केवल नाम में ही लीन हो जाते हैं।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਨਾਮ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੈ ਸਦ ਕਾਮ ॥੬॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥
हे नानक ! उठते-बैठते, सोते हुए सदैव ईश्वर का नाम-स्मरण ही सेवकों का काम होता है॥ ६ ॥

ਬੋਲਹੁ ਜਸੁ ਜਿਹਬਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
अपनी जिव्हा से दिन-रात परमेश्वर की गुणस्तुति करो।

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਜਨ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
यह देन परमेश्वर ने अपने सेवक को प्रदान की है।

ਕਰਹਿ ਭਗਤਿ ਆਤਮ ਕੈ ਚਾਇ ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
वह मन के उत्साह से भक्ति करता है

ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਸਿਉ ਰਹਹਿ ਸਮਾਇ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
और अपने प्रभु में ही लीन रहता है।

ਜੋ ਹੋਆ ਹੋਵਤ ਸੋ ਜਾਨੈ ॥ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੈ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥
वह जो कुछ हो रहा है, भगवान की इच्छा से सहर्ष जानता है और अपने प्रभु के हुक्म को पहचानता है।

ਤਿਸ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਉਨ ਬਖਾਨਉ ॥
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥
उसकी महिमा कौन वर्णन कर सकता है ?

ਤਿਸ ਕਾ ਗੁਨੁ ਕਹਿ ਏਕ ਨ ਜਾਨਉ ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥
उसकी एक प्रशंसा को भी मैं वर्णन करना नहीं जानता।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਬਸਹਿ ਹਜੂਰੇ ॥ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ॥੭॥
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥
जो सारा दिन प्रभु की उपस्थिति में बसते हैं, हे नानक ! वह पूर्ण पुरुष हैं।॥ ७ ॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਤਿਨ ਕੀ ਓਟ ਲੇਹਿ ॥
मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥
हे मेरे मन ! तू उनकी शरण ले।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਨਾ ਤਿਨ ਜਨ ਦੇਹਿ ॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥
अपना मन एवं तन उन पुरुषों को समर्पित कर दे।

ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਅਪਨਾ ਪ੍ਰਭੂ ਪਛਾਤਾ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਸਰਬ ਥੋਕ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥
जिस पुरुष ने अपने प्रभु को पहचान लिया है, वह मनुष्य समस्त वस्तुएँ देने वाला है।

ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ॥
तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥
उसकी शरण में तुम्हें सर्व सुख मिल जाएँगे।

ਤਿਸ ਕੈ ਦਰਸਿ ਸਭ ਪਾਪ ਮਿਟਾਵਹਿ ॥
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥
उसके दर्शन द्वारा समस्त पाप नाश हो जाएँगे।

ਅਵਰ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਛਾਡੁ ॥
अवर सिआनप सगली छाडु ॥
दूसरी चतुराई त्याग कर

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਤੂ ਸੇਵਾ ਲਾਗੁ ॥
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥
प्रभु के उस सेवक की सेवा में स्वयं को लगा ले।

ਆਵਨੁ ਜਾਨੁ ਨ ਹੋਵੀ ਤੇਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੇ ਪੂਜਹੁ ਸਦ ਪੈਰਾ ॥੮॥੧੭॥
आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥
तेरा आवागमन मिट जाएगा। हे नानक ! सदैव ही उस सेवक के चरणों की पूजा करो ॥ ८ ॥ १७ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਜਿਨਿ ਜਾਨਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਿਸ ਕਾ ਨਾਉ ॥
सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
जिसने सत्य स्वरूप परमात्मा को जान लिया है, उसका नाम सतिगुरु है।

ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਿਖੁ ਉਧਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੧॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥
हे नानक ! उसकी संगति में ईश्वर की गुणस्तुति करने से उसका शिष्य भी पार हो जाता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੀ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
सतिगुरु अपने शिष्य का पालन-पोषण करता है।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਗੁਰੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲ ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
अपने सेवक पर गुरु जी हमेशा दयालु रहते हैं।

ਸਿਖ ਕੀ ਗੁਰੁ ਦੁਰਮਤਿ ਮਲੁ ਹਿਰੈ ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुरु अपने शिष्य की मंदबुद्धि रूपी मैल को साफ कर देते हैं।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਚਰੈ ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह हरि के नाम का जाप करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੈ ॥
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
सतिगुरु अपने शिष्य के बन्धन काट देते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਹਾਟੈ ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥
गुरु का शिष्य विकारों से हट जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਉ ਨਾਮ ਧਨੁ ਦੇਇ ॥
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
सतिगुरु अपने शिष्य को ईश्वर-नाम रूपी धन प्रदान करते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਿਖੁ ਵਡਭਾਗੀ ਹੇ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥
गुरु का शिष्य बड़ा भाग्यशाली है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਾ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰੈ ॥
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
सतिगुरु अपने शिष्य का इहलोक एवं परलोक संवार देते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਿਖ ਕਉ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ਸਮਾਰੈ ॥੧॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु अपने शिष्य को अपने हृदय से लगाकर रखता है ॥ १ ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਸੇਵਕੁ ਜੋ ਰਹੈ ॥
गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥
जो सेवक गुरु के घर में रहता है,

ਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਨ ਮਹਿ ਸਹੈ ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥
वह गुरु की आज्ञा सहर्ष मन में स्वीकार करता है।

ਆਪਸ ਕਉ ਕਰਿ ਕਛੁ ਨ ਜਨਾਵੈ ॥
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
वह अपने आपको बड़ा नहीं जतलाता।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵੈ ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥
वह अपने हृदय में हमेशा ही हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है।

ਮਨੁ ਬੇਚੈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
जो अपना मन सतिगुरु के समक्ष बेच देता है,

ਤਿਸੁ ਸੇਵਕ ਕੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸਿ ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥
उस सेवक के तमाम कार्य संवर जाते हैं।

ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਹੋਇ ਨਿਹਕਾਮੀ ॥
सेवा करत होइ निहकामी ॥
जो सेवक निष्काम भावना से गुरु की सेवा करता है,

ਤਿਸ ਕਉ ਹੋਤ ਪਰਾਪਤਿ ਸੁਆਮੀ ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
वह प्रभु को पा लेता है।

ਅਪਨੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
हे नानक ! जिस पर गुरु जी स्वयं कृपा करते हैं,

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਲੇਇ ॥੨॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥
वह सेवक गुरु की शिक्षा प्राप्त करता है॥ २॥

ਬੀਸ ਬਿਸਵੇ ਗੁਰ ਕਾ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सेवक अपने गुरु का मन पूर्णतया जीत लेता है,

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੀ ਗਤਿ ਜਾਨੈ ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
वह परमेश्वर की गति को जान लेता है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
सतिगुरु वही है, जिसके हृदय में हरि का नाम है।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਗੁਰ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
मैं अनेक बार अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
गुरु जी प्रत्येक पदार्थ के खजाने एवं जीवन प्रदान करने वाले हैं।

ਆਠ ਪਹਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
वह आठ प्रहर ही पारब्रह्म के रंग में मग्न रहते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਮਹਿ ਜਨੁ ਜਨ ਮਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
भक्त ब्रह्म में बसता है और पारब्रह्म भक्त में बसता है।

ਏਕਹਿ ਆਪਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਭਰਮੁ ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
प्रभु केवल एक ही है इसमें कोई सन्देह नहीं।

ਸਹਸ ਸਿਆਨਪ ਲਇਆ ਨ ਜਾਈਐ ॥
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
हे नानक ! हजारों ही चतुराइयों द्वारा गुरु प्राप्त नहीं होता,

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਗੁਰੁ ਬਡਭਾਗੀ ਪਾਈਐ ॥੩॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥
ऐसा गुरु बड़े भाग्य से ही मिलता है॥ ३ ॥

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਪੁਨੀਤ ॥
सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
गुरु का दर्शन फल प्रदान करने वाला है तथा दर्शन-मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है।

ਪਰਸਤ ਚਰਨ ਗਤਿ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥
उनके चरण स्पर्श करने से मनुष्य की अवस्था एवं जीवन-आचरण निर्मल हो जाते हैं।

ਭੇਟਤ ਸੰਗਿ ਰਾਮ ਗੁਨ ਰਵੇ ॥
भेटत संगि राम गुन रवे ॥
गुरु की संगति करने से प्राणी राम की गुणस्तुति करता है

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਦਰਗਹ ਗਵੇ ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥
और परब्रह्म के दरबार में पहुँच जाता है।

ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਬਚਨ ਕਰਨ ਆਘਾਨੇ ॥
सुनि करि बचन करन आघाने ॥
गुरु के वचन सुनने से कान तृप्त हो जाते हैं तथा

ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਆਤਮ ਪਤੀਆਨੇ ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥
मन में संतोष आ जाता है और आत्मा तृप्त हो जाती है।

ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਅਖਉ ਜਾ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰ ॥
रा गुरु अख्अओ जा का मंत्र ॥
गुरु पूर्ण पुरुष हैं और उनका मंत्र सदैव अटल है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪੇਖੈ ਹੋਇ ਸੰਤ ॥
अम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥
जिसे वह अपनी अमृत दृष्टि से देखते हैं, वह संत बन जाता है।

ਗੁਣ ਬਿਅੰਤ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਇ ॥
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
गुरु के गुण अनन्त हैं, जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੪॥
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥
हे नानक ! ईश्वर को जो प्राणी अच्छा लगता है, उसे वह गुरु से मिला देता है। ४॥

ਜਿਹਬਾ ਏਕ ਉਸਤਤਿ ਅਨੇਕ ॥
जिहबा एक उसतति अनेक ॥
जिव्हा एक है परन्तु ईश्वर के गुण अनन्त हैं।

ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਬਿਬੇਕ ॥
सति पुरख पूरन बिबेक ॥
वह सद्पुरुष पूर्ण विवेक वाला है।

ਕਾਹੂ ਬੋਲ ਨ ਪਹੁਚਤ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥
किसी भी वचन द्वारा प्राणी ईश्वर के गुणों तक पहुँच नहीं सकता।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥
प्रभु अगम्य, अगोचर एवं पवित्र पावन है।

ਨਿਰਾਹਾਰ ਨਿਰਵੈਰ ਸੁਖਦਾਈ ॥
निराहार निरवैर सुखदाई ॥
प्रभु को भोजन की आवश्यकता नहीं, वह वैर-रहित एवं सुख प्रदान करने वाला है।

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥
ता की कीमति किनै न पाई ॥
कोई भी प्राणी उसका मूल्यांकन नहीं कर पाया।

ਅਨਿਕ ਭਗਤ ਬੰਦਨ ਨਿਤ ਕਰਹਿ ॥
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥
अनेकों भक्त नित्य उसकी वन्दना करते रहते हैं।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਸਿਮਰਹਿ ॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥
उसके चरण कमलों को वह अपने हृदय में स्मरण करते हैं।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ॥
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
हे नानक ! अपने सतिगुरु पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ,

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਐਸਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜਪਨੇ ॥੫॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥
जिनकी कृपा से वह ऐसे प्रभु का नाम-स्मरण करता है॥ ५ ॥

ਇਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
यह हरि रस किसी विरले पुरुष को ही प्राप्त होता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਅਮਰੁ ਸੋ ਹੋਇ ॥
अम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥
जो इस अमृत का पान करता है, वह अमर हो जाता है।

ਉਸੁ ਪੁਰਖ ਕਾ ਨਾਹੀ ਕਦੇ ਬਿਨਾਸ ॥
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
उस पुरुष का कभी नाश नहीं होता,

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਨਤਾਸ ॥
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥
जिसके हृदय में गुणों का भण्डार प्रकट हो जाता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲੇਇ ॥
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥
आठ पहर ही वह हरि का नाम लेता है और

ਸਚੁ ਉਪਦੇਸੁ ਸੇਵਕ ਕਉ ਦੇਇ ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥
अपने सेवक को सच्चा उपदेश प्रदान करता है।

ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨ ਲੇਪੁ ॥
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥
मोह-माया के साथ उसका कभी मेल नहीं होता।

ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਏਕੁ ॥
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥
वह अपने हृदय में एक हरि-परमेश्वर को ही बसाता है।

ਅੰਧਕਾਰ ਦੀਪਕ ਪਰਗਾਸੇ ॥
अंधकार दीपक परगासे ॥
अज्ञानता रूपी अन्धेरे में उसके लिए नाम रूपी दीपक रौशन हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਮੋਹ ਦੁਖ ਤਹ ਤੇ ਨਾਸੇ ॥੬॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥
हे नानक ! दुविधा, मोह एवं दुःख उससे दूर भाग जाते हैं।॥ ६॥

ਤਪਤਿ ਮਾਹਿ ਠਾਢਿ ਵਰਤਾਈ ॥
तपति माहि ठाढि वरताई ॥
गुरु के पूर्ण उपदेश ने मोह-माया की अग्नि में शीतलता प्रविष्ट करा दी है,

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ਭਾਈ ॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥
प्रसन्नता उत्पन्न हो गई है व दुःख दूर हो गया है

ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੇ ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸੇ ॥
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
जन्म-मरण का भय मिट गया है।

ਸਾਧੂ ਕੇ ਪੂਰਨ ਉਪਦੇਸੇ ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥
गुरु के पूर्ण उपदेश से

ਭਉ ਚੂਕਾ ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਬਸੇ ॥
भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥
भय नाश हो गया है और निडर रहते हैं।

ਸਗਲ ਬਿਆਧਿ ਮਨ ਤੇ ਖੈ ਨਸੇ ॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥
तमाम रोग नष्ट होकर मन से लुप्त हो गए हैं।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥
जिस गुरु के थे, उसने कृपा की है,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥
सत्संगति में यह मुरारी के नाम का जाप करता है।

ਥਿਤਿ ਪਾਈ ਚੂਕੇ ਭ੍ਰਮ ਗਵਨ ॥
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥
भय एवं दुविधा मिट गए हैं।

ਸੁਨਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸ੍ਰਵਨ ॥੭॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर की महिमा कानों से सुनकर शांति मिल गई है ॥७॥

ਨਿਰਗੁਨੁ ਆਪਿ ਸਰਗੁਨੁ ਭੀ ਓਹੀ ॥
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥
वह स्वयं निर्गुण स्वामी है और वह ही सर्गुण है,

ਕਲਾ ਧਾਰਿ ਜਿਨਿ ਸਗਲੀ ਮੋਹੀ ॥
कला धारि जिनि सगली मोही ॥
जिसने अपनी कला (शक्ति) प्रकट करके समूचे विश्व को मुग्ध किया हुआ है।

ਅਪਨੇ ਚਰਿਤ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਬਨਾਏ ॥
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥
अपने कौतुक प्रभु ने स्वयं ही रचे हैं।

ਅਪੁਨੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਏ ॥
अपुनी कीमति आपे पाए ॥
अपना मूल्यांकन वह स्वयं ही जानता है।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥
ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
सबके भीतर वह अकाल पुरुष स्वयं ही मौजूद है।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਰਵਿਆ ਰੂਪ ਰੰਗ ॥
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥
ताने-बाने की तरह वह तमाम रूप-रंगों में समा रहा है।

ਭਏ ਪ੍ਰਗਾਸ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗ ॥
भए प्रगास साध कै संग ॥
संतों की संगति करने से वह प्रगट हो जाता है।

ਰਚਿ ਰਚਨਾ ਅਪਨੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥
रचि रचना अपनी कल धारी ॥
सृष्टि की रचना करके प्रभु ने अपनी सत्ता टिकाई है।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੮॥੧੮॥
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥
हे नानक ! मैं अनेक बार उस (प्रभु) पर कुर्बान जाता हूँ ॥८॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਬਿਖਿਆ ਸਗਲੀ ਛਾਰੁ ॥
साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥
हे प्राणी ! भगवान के भजन के सिवाय कुछ भी साथ नहीं जाता, सभी विषय-विकार धूल समान हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਾਵਨਾ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਧਨੁ ਸਾਰੁ ॥੧॥
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥
हे नानक ! हरि-परमेश्वर के नाम-स्मरण की कमाई करना ही अति उत्तम धन है॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲਿ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
संत जना मिलि करहु बीचारु ॥
संतजनों की संगति में मिलकर यही विचार करो।

ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮ ਆਧਾਰੁ ॥
एकु सिमरि नाम आधारु ॥
एक ईश्वर को स्मरण करो और नाम का सहारा लो।

ਅਵਰਿ ਉਪਾਵ ਸਭਿ ਮੀਤ ਬਿਸਾਰਹੁ ॥
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥
हे मेरे मित्र ! दूसरे तमाम प्रयास भुला दो।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਿਦ ਮਹਿ ਉਰਿ ਧਾਰਹੁ ॥
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥
ईश्वर के चरण कमल अपने मन एवं हृदय में बसाओ।

ਕਰਨ ਕਾਰਨ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਮਰਥੁ ॥
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥
वह ईश्वर तमाम कार्य करने व जीव से करवाने में सामर्थ्य रखता है।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਗਹਹੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਵਥੁ ॥
द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥
ईश्वर के नाम रूपी वस्तु को दृढ़ करके पकड़ लो।

ਇਹੁ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਹੋਵਹੁ ਭਗਵੰਤ ॥
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥
इस (प्रभु के नाम रूपी) धन को एकत्रित करो और भाग्यशाली बन जाओ।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਮੰਤ ॥
संत जना का निरमल मंत ॥
संतजनों का मंत्र पवित्र-पावन है।

ਏਕ ਆਸ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
एक आस राखहु मन माहि ॥
एक ईश्वर की आशा अपने मन में रखो !

ਸਰਬ ਰੋਗ ਨਾਨਕ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥
हे नानक ! इस तरह तेरे तमाम रोग मिट जाएँगे।॥ १ ॥

ਜਿਸੁ ਧਨ ਕਉ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਉਠਿ ਧਾਵਹਿ ॥
जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥
"(हे मित्र !) जिस धन हेतु तू चारों ओर भागता-फिरता है,

ਸੋ ਧਨੁ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਤੇ ਪਾਵਹਿ ॥
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
वह धन तुझे ईश्वर की सेवा से प्राप्त होगा।

ਜਿਸੁ ਸੁਖ ਕਉ ਨਿਤ ਬਾਛਹਿ ਮੀਤ ॥
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
हे मेरे मित्र ! जिस सुख की तू नित्य इच्छा करता है,

ਸੋ ਸੁਖੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਰੀਤਿ ॥
सो सुखु साधू संगि परीति ॥
वह सुख तुझे संतों की संगति में प्रेम करने से मिलेगा।

ਜਿਸੁ ਸੋਭਾ ਕਉ ਕਰਹਿ ਭਲੀ ਕਰਨੀ ॥
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
जिस शोभा के लिए तू शुभ कर्म करता है,

ਸਾ ਸੋਭਾ ਭਜੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਨੀ ॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
वह शोभा भगवान की शरण में जाने से मिलती है।

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵੀ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
जो रोग अनेक प्रयासों से नहीं मिटता,

ਰੋਗੁ ਮਿਟੈ ਹਰਿ ਅਵਖਧੁ ਲਾਇ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
वह रोग हरि नाम रूपी औषधि लेने से मिट जाता है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਮਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥
सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥
तमाम खजानों में ईश्वर का नाम सर्वश्रेष्ठ खजाना है।

ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਦਰਗਹਿ ਪਰਵਾਨੁ ॥੨॥
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥
हे नानक ! उसके नाम का जाप कर, ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाओगे ॥२॥

ਮਨੁ ਪਰਬੋਧਹੁ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥
मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
अपने मन को भगवान के नाम द्वारा जगाओ।

ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਤ ਆਵੈ ਠਾਇ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥
दसों दिशाओं में भटकता हुआ यह मन इस तरह अपने गृह आ जाएगा।

ਤਾ ਕਉ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥
उसे कोई संकट नहीं आता

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਬਸੈ ਹਰਿ ਸੋਇ ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥
जिसके हृदय में वह ईश्वर बसता है,

ਕਲਿ ਤਾਤੀ ਠਾਂਢਾ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥
यह कलियुग गर्म (अग्नि) है और हरि का नाम शीतल है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖ ਪਾਉ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥
उसे सदैव स्मरण करो एवं सुख पाओ।

ਭਉ ਬਿਨਸੈ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਆਸ ॥
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
नाम-सिमरन से भय नाश हो जाता है और आशा पूर्ण हो जाती है।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸ ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
प्रभु की भक्ति के साथ प्रेम करने से आत्मा उज्ज्वल हो जाती है।

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਇ ਬਸੈ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
जो नाम-स्मरण करता है, उसके हृदय-घर में अनश्वर प्रभु आ बसता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਾਟੀ ਜਮ ਫਾਸੀ ॥੩॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥
हे नानक ! (नाम का जाप करने से) यम की फाँसी कट जाती है॥ ३॥

ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ਕਹੈ ਜਨੁ ਸਾਚਾ ॥
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
वो ही सच्चा मनुष्य है, जो सार-तत्व के स्मरण का उपदेश देता है।

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਸੋ ਕਾਚੋ ਕਾਚਾ ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
वह बिल्कुल कच्चा (झूठा) है, जो आवागमन (जन्म-मरण के चक्र) में पड़ता है।

ਆਵਾ ਗਵਨੁ ਮਿਟੈ ਪ੍ਰਭ ਸੇਵ ॥
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥
प्रभु की सेवा से आवागमन मिट जाता है।

ਆਪੁ ਤਿਆਗਿ ਸਰਨਿ ਗੁਰਦੇਵ ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
अपना अहंत्व त्याग दे और गुरुदेव की शरण ले।

ਇਉ ਰਤਨ ਜਨਮ ਕਾ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
इस तरह अनमोल जीवन का उद्धार हो जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਆਧਾਰੁ ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
हरि-परमेश्वर की आराधना कर, जो तेरे प्राणों का आधार है।

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਨ ਛੂਟਨਹਾਰੇ ॥
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
अनेक उपाय करने से छुटकारा नहीं होता।

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥
चाहे स्मृतियों, शास्त्रों व वेदों का विचार करके देख लो।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇ ॥
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मन लगाकर केवल भगवान की भक्ति ही करो।

ਮਨਿ ਬੰਛਤ ਨਾਨਕ ਫਲ ਪਾਇ ॥੪॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥
हे नानक ! (जो भक्ति करता है) उसे मनोवांछित फल मिलता है॥४॥

ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਸਿ ਤੇਰੈ ਧਨਾ ॥
संगि न चालसि तेरै धना ॥
धन-दौलत तेरे साथ नहीं जाने वाला,

ਤੂੰ ਕਿਆ ਲਪਟਾਵਹਿ ਮੂਰਖ ਮਨਾ ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
फिर हे मूर्ख मन ! तू क्यों इससे लिपटा हुआ है।

ਸੁਤ ਮੀਤ ਕੁਟੰਬ ਅਰੁ ਬਨਿਤਾ ॥
सुत मीत कुट्मब अरु बनिता ॥
पुत्र, मित्र, परिवार एवं पत्नी -

ਇਨ ਤੇ ਕਹਹੁ ਤੁਮ ਕਵਨ ਸਨਾਥਾ ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
इन में से तू बता कौन तेरा सहायक है ?

ਰਾਜ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਬਿਸਥਾਰ ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
राज्य, रंगरलियां एवं धन-दौलत का विस्तार

ਇਨ ਤੇ ਕਹਹੁ ਕਵਨ ਛੁਟਕਾਰ ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
इनमें से बता कौन कब बचा है ?

ਅਸੁ ਹਸਤੀ ਰਥ ਅਸਵਾਰੀ ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
अश्व, हाथी एवं रथों की सवारी करनी -

ਝੂਠਾ ਡੰਫੁ ਝੂਠੁ ਪਾਸਾਰੀ ॥
झूठा ड्मफु झूठु पासारी ॥
यह सब झूठा आडम्बर है।

ਜਿਨਿ ਦੀਏ ਤਿਸੁ ਬੁਝੈ ਨ ਬਿਗਾਨਾ ॥
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥
मूर्ख पुरुष उस परमात्मा को नहीं जानता, जिसने ये तमाम पदार्थ दिए हैं।

ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿ ਨਾਨਕ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੫॥
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥
हे नानक ! नाम को भुला कर प्राणी अन्त में पश्चाताप करता है॥ ५ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਤੂੰ ਲੇਹਿ ਇਆਨੇ ॥
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥
हे मूर्ख मनुष्य ! तू गुरु की शिक्षा ले।

ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ਬਹੁ ਡੂਬੇ ਸਿਆਨੇ ॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
प्रभु की भक्ति के बिना बड़े बुद्धिमान लोग भी डूब गए हैं।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਮਨ ਮੀਤ ॥
हरि की भगति करहु मन मीत ॥
हे मेरे मित्र ! अपने मन में भगवान की भक्ति कर,

ਨਿਰਮਲ ਹੋਇ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੋ ਚੀਤ ॥
निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥
उससे तेरा मन निर्मल हो जाएगा।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਾਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
प्रभु के चरण कमल अपने हृदय में बसा,

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਜਾਹਿ ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥
तेरे जन्म-जन्मांतर के पाप दूर हो जाएँगे।

ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
स्वयं ईश्वर के नाम का जाप कर और दूसरों से भी नाम का जाप करवा।

ਸੁਨਤ ਕਹਤ ਰਹਤ ਗਤਿ ਪਾਵਹੁ ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सुनने, कहने एवं इस आचरण में रहने से मुक्ति मिल जाएगी।

ਸਾਰ ਭੂਤ ਸਤਿ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥
सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सारभूत हरि का सत्य नाम है।

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਨਾਨਕ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੬॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥
नानक ! सहज स्वभाव से प्रभु की गुणस्तुति कर ॥ ६॥

ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਤੇਰੀ ਉਤਰਸਿ ਮੈਲੁ ॥
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
(हे जीव !) ईश्वर के गुण गाते हुए तेरी पापों की मैल उतर जाएगी

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਫੈਲੁ ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
एवं अहंकार-रूपी विष का विस्तार भी मिट जाएगा।

ਹੋਹਿ ਅਚਿੰਤੁ ਬਸੈ ਸੁਖ ਨਾਲਿ ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
वह बेफिक्र हो जाएगा और सुखपूर्वक बसेगा

ਸਾਸਿ ਗ੍ਰਾਸਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥
जो अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से हरि के नाम की आराधना करेगा ।

ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਸਗਲੀ ਮਨਾ ॥
छाडि सिआनप सगली मना ॥
हे मन ! अपनी तमाम चतुरता त्याग दे।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਵਹਿ ਸਚੁ ਧਨਾ ॥
साधसंगि पावहि सचु धना ॥
साध संगत करने से सच्चा धन मिल जाएगा।

ਹਰਿ ਪੂੰਜੀ ਸੰਚਿ ਕਰਹੁ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईश्वर के नाम की पूँजी संचित कर और उसका ही व्यापार कर।

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਦਰਗਹ ਜੈਕਾਰੁ ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥
इस तरह इस जीवन में सुख मिलेगा और प्रभु के दरबार में सत्कार होगा।

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਏਕੋ ਦੇਖੁ ॥
सरब निरंतरि एको देखु ॥
वह एक ईश्वर को सर्वत्र देखता है,"

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ॥੭॥
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥
हे नानक ! जिसके माथे पर भाग्य विद्यमान है ॥ ७ ॥

ਏਕੋ ਜਪਿ ਏਕੋ ਸਾਲਾਹਿ ॥
एको जपि एको सालाहि ॥
एक ईश्वर के नाम का जाप कर और केवल उसकी ही सराहना कर।

ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੋ ਮਨ ਆਹਿ ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एक ईश्वर का चिन्तन कर और केवल उसे ही अपने हृदय में बसा।

ਏਕਸ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ਅਨੰਤ ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
उस अनन्त एक ईश्वर के गुण गायन कर।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਜਾਪਿ ਏਕ ਭਗਵੰਤ ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
मन एवं तन से एक भगवान का जाप कर।

ਏਕੋ ਏਕੁ ਏਕੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
वह परमात्मा आप ही आप है।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਆਪਿ ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
जीवों में व्यापक होकर प्रभु सब ओर बस रहा है।

ਅਨਿਕ ਬਿਸਥਾਰ ਏਕ ਤੇ ਭਏ ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥
एक ईश्वर से अनेक प्रसार हुए हैं।

ਏਕੁ ਅਰਾਧਿ ਪਰਾਛਤ ਗਏ ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥
भगवान की आराधना करने से पाप मिट जाते हैं।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਏਕੁ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਤਾ ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
मेरा मन एवं शरीर एक प्रभु में मग्न हुए हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਜਾਤਾ ॥੮॥੧੯॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से उसने एक ईश्वर को ही जाना है ॥८॥१९॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਪ੍ਰਭ ਆਇਆ ਪਰਿਆ ਤਉ ਸਰਨਾਇ ॥
फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
हे पूज्य प्रभु ! मैं भटक-भटक कर तेरी ही शरण में आया हूँ।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਅਪਨੀ ਭਗਤੀ ਲਾਇ ॥੧॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥
हे प्रभु ! नानक एक यही विनती करता है कि मुझे अपनी भक्ति में लगा ले ॥१॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਜਾਚਕ ਜਨੁ ਜਾਚੈ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ॥
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
हे प्रभु ! मैं भिखारी तेरे नाम का दान माँगता हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥
हे हरि ! कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਮਾਗਉ ਧੂਰਿ ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥
मैं तो साधुओं के चरणों की धूली ही मांगता हूँ।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
हे पारब्रह्म ! मेरी श्रद्धा पूर्ण कीजिए।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
मैं हमेशा ही प्रभु का गुणानुवाद करता रहूँ।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਹਿ ਧਿਆਵਉ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
हे प्रभु ! प्रत्येक श्वास से मैं तेरी ही आराधना करूँ।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
प्रभु के चरणों से मेरा प्रेम पड़ा हुआ है।

ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਨਿਤ ਨੀਤਿ ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
मैं हमेशा ही प्रभु की भक्ति करता रहूँ।

ਏਕ ਓਟ ਏਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥
एक ओट एको आधारु ॥
हे भगवान ! तुम ही मेरी एक ओट तथा एक सहारा हो।

ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਸਾਰੁ ॥੧॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥
हे मेरे प्रभु ! नानक तेरे सर्वोत्तम नाम की याचना करता है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥
प्रभु की करुणा-दृष्टि से परम सुख उपलब्ध होता है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ਬਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही हरि-रस को पाता है।

ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੇ ॥
जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥
जो इसे चखते हैं, वे जीव तृप्त हो जाते हैं।

ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਨਹੀ ਡੋਲਾਨੇ ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥
वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं और कभी (माया में) डगमगाते नहीं।

ਸੁਭਰ ਭਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਰੰਗਿ ॥
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
वह प्रभु के प्रेम की मिठास एवं आनंद से पूर्णता भरे रहते हैं।

ਉਪਜੈ ਚਾਉ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥
साधुओं की संगति में उनके मन में आत्मिक चाव उत्पन्न हो जाता है।

ਪਰੇ ਸਰਨਿ ਆਨ ਸਭ ਤਿਆਗਿ ॥
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
अन्य सब कुछ त्याग कर वह प्रभु की शरण लेते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਅਨਦਿਨੁ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥
उनका हृदय उज्ज्वल हो जाता है और दिन-रात वह अपनी वृती ईश्वर में लगाते हैं।

ਬਡਭਾਗੀ ਜਪਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
भाग्यशाली पुरुषों ने ही प्रभु का जाप किया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥
हे नानक ! जो पुरुष प्रभु के नाम में मग्न रहते हैं, वे सुख पाते हैं।॥ २ ॥

ਸੇਵਕ ਕੀ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀ ਭਈ ॥
सेवक की मनसा पूरी भई ॥
सेवक की मनोकामना पूर्ण हो गई है,

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਨਿਰਮਲ ਮਤਿ ਲਈ ॥
सतिगुर ते निरमल मति लई ॥
जबसे सतिगुरु से निर्मल उपदेश लिया है ।

ਜਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇਓ ਦਇਆਲੁ ॥
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥
अपने सेवक पर प्रभु कृपालु हो गया है।

ਸੇਵਕੁ ਕੀਨੋ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲੁ ॥
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥
अपने सेवक को हमेशा के लिए उसने कृतार्थ कर दिया है।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮੁਕਤਿ ਜਨੁ ਭਇਆ ॥
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥
सेवक के (माया के) बन्धन कट गए हैं और उसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੂਖੁ ਭ੍ਰਮੁ ਗਇਆ ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥
उसका जन्म-मरण, दुःख एवं दुविधा दूर हो गए हैं।

ਇਛ ਪੁਨੀ ਸਰਧਾ ਸਭ ਪੂਰੀ ॥
इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥
उसकी इच्छा पूर्ण हो गई है और श्रद्धा भी पूरी हो गई है।

ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦ ਸੰਗਿ ਹਜੂਰੀ ॥
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥
भगवान हमेशा साथ बस रहा है।

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨਿ ਲੀਆ ਮਿਲਾਇ ॥
जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥
जिसका था, उसने अपने साथ मिला लिया है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
नानक भगती नामि समाइ ॥३॥
हे नानक ! प्रभु की भक्ति से सेवक नाम में लीन हो गया है।॥ ३ ॥

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਘਾਲ ਨ ਭਾਨੈ ॥
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥
उस भगवान को क्यों भुलाएँ, जो इन्सान की सेवा-भक्ति की उपेक्षा नहीं करता।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਕੀਆ ਜਾਨੈ ॥
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥
उस भगवान को क्यों भुलाएँ, जो किए को जानता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੀਆ ॥
सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥
वह ईश्वर क्यों विस्मृत हो, जिसने हमें सब कुछ दिया है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਜੀਵਨ ਜੀਆ ॥
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥
यह परमात्मा क्यों विस्मृत हो, जो जीवों के जीवन का आधार है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ॥
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥
उस अकालपुरुष को क्यों भुलाएँ, जो गर्भ की अग्नि में हमारी रक्षा करता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਬਿਰਲਾ ਲਾਖੈ ॥
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इसको देखता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਜਿ ਬਿਖੁ ਤੇ ਕਾਢੈ ॥
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥
उस ईश्वर को क्यों भुलाएँ, जो मनुष्य को पाप से बचाता है

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕਾ ਟੂਟਾ ਗਾਢੈ ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥
और स्वयं से जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़े हुए को अपने साथ मिला लेता है ?

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤਤੁ ਇਹੈ ਬੁਝਾਇਆ ॥
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे यह वास्तविकता समझाई है।

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧਿਆਇਆ ॥੪॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥
हे नानक ! उसने तो अपने प्रभु का ही ध्यान किया है ॥४॥

ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਕਰਹੁ ਇਹੁ ਕਾਮੁ ॥
साजन संत करहु इहु कामु ॥
हे सज्जन, संतजनों ! यह कार्य करो।

ਆਨ ਤਿਆਗਿ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥
अन्य सब कुछ छोड़कर भगवान के नाम का जाप करो।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖ ਪਾਵਹੁ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥
भगवान के नाम का सिमरन करके सुख पाओ।

ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥
आप भी नाम का जाप करो और दूसरों से भी नाम का जाप करवाओ।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਤਰੀਐ ਸੰਸਾਰੁ ॥
भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
प्रभु की भक्ति द्वारा यह संसार सागर पार किया जाता है।

ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥
भक्ति के बिना यह शरीर भस्म हो जाएगा।

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਸੂਖ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ॥
सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥
प्रभु का नाम सर्व कल्याण एवं सुखों का खजाना है,

ਬੂਡਤ ਜਾਤ ਪਾਏ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥
डूबता हुआ जीव भी इसमें सुख पा लेता है।

ਸਗਲ ਦੂਖ ਕਾ ਹੋਵਤ ਨਾਸੁ ॥
सगल दूख का होवत नासु ॥
समस्त दुखों का नाश हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਨਤਾਸੁ ॥੫॥
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥
हे नानक ! गुणों के भण्डार के नाम का जाप करते रहो ॥ ५॥

ਉਪਜੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਚਾਉ ॥
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
भगवान की प्रीति व प्रेम रस का चाव उत्पन्न हुआ है।

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਇਹੀ ਸੁਆਉ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥
मन-तन के भीतर यही स्वाद भर गया है।

ਨੇਤ੍ਰਹੁ ਪੇਖਿ ਦਰਸੁ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥
अपने नेत्रों से प्रभु के दर्शन करके मैं सुख पाता हूँ।

ਮਨੁ ਬਿਗਸੈ ਸਾਧ ਚਰਨ ਧੋਇ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥
संतों के चरण धोकर मेरा मन प्रसन्न हो गया है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰੰਗੁ ॥
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥
भक्तजनों की आत्मा एवं शरीर में प्रभु की प्रीति विद्यमान है।

ਬਿਰਲਾ ਕੋਊ ਪਾਵੈ ਸੰਗੁ ॥
बिरला कोऊ पावै संगु ॥
कोई विरला पुरुष ही उनकी संगति प्राप्त करता है।

ਏਕ ਬਸਤੁ ਦੀਜੈ ਕਰਿ ਮਇਆ ॥
एक बसतु दीजै करि मइआ ॥
हे ईश्वर ! दया करके हमें एक नाम-वस्तु प्रदान कीजिए (ताकि)

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਲਇਆ ॥
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥
गुरु की दया से तेरा नाम जप सकें।

ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
ता की उपमा कही न जाइ ॥
उसकी उपमा वर्णन नहीं की जा सकती

ਨਾਨਕ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥
हे नानक ! ईश्वर तो सर्वव्यापक है ॥ ६॥

ਪ੍ਰਭ ਬਖਸੰਦ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥
प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥
परमात्मा क्षमाशील एवं दीनदयालु है।

ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲ ॥
भगति वछल सदा किरपाल ॥
वह भक्तवत्सल एवं सदैव कृपालु है।

ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ॥
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥
वह गोविन्द, गोपाल अनाथों का नाथ है।

ਸਰਬ ਘਟਾ ਕਰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब घटा करत प्रतिपाल ॥
वह समस्त जीव-जन्तुओं का पोषण करता है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਕਾਰਣ ਕਰਤਾਰ ॥
आदि पुरख कारण करतार ॥
वह आदिपुरुष एवं सृष्टि का रचयिता है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥
भगत जना के प्रान अधार ॥
वह भक्तजनों के प्राणों का आधार है।

ਜੋ ਜੋ ਜਪੈ ਸੁ ਹੋਇ ਪੁਨੀਤ ॥
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥
जो कोई भी उसका जाप करता है, वह पवित्र-पावन हो जाता है।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਲਾਵੈ ਮਨ ਹੀਤ ॥
भगति भाइ लावै मन हीत ॥
वह अपने मन का प्रेम ईश्वर की भक्ति पर केंद्रित करता है।

ਹਮ ਨਿਰਗੁਨੀਆਰ ਨੀਚ ਅਜਾਨ ॥
हम निरगुनीआर नीच अजान ॥
हम गुणविहीन, नीच व मूर्ख है,"

ਨਾਨਕ ਤੁਮਰੀ ਸਰਨਿ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨ ॥੭॥
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥
नानक का कथन है कि हे सर्वशक्तिमान भगवान ! तुम्हारी शरण में आए हैं।॥ ७॥

ਸਰਬ ਬੈਕੁੰਠ ਮੁਕਤਿ ਮੋਖ ਪਾਏ ॥
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥
उसने तमाम स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त कर लिए हैं,"

ਏਕ ਨਿਮਖ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥
जिस जीव ने एक क्षण भर के लिए भी भगवान की महिमा-स्तुति की है।

ਅਨਿਕ ਰਾਜ ਭੋਗ ਬਡਿਆਈ ॥
अनिक राज भोग बडिआई ॥
वह अनेक राज्य, भोग-पदार्थ एवं उपलब्धियां प्राप्त करता है

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਕਥਾ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥
जिसके मन को हरि के नाम की कथा भली लगती है।

ਬਹੁ ਭੋਜਨ ਕਾਪਰ ਸੰਗੀਤ ॥
बहु भोजन कापर संगीत ॥
वह अनेक प्रकार के भोजन, वस्त्र एवं संगीत का आनंद प्राप्त करता है

ਰਸਨਾ ਜਪਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥
रसना जपती हरि हरि नीत ॥
जिसकी रसना सदैव हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करती रहती है।

ਭਲੀ ਸੁ ਕਰਨੀ ਸੋਭਾ ਧਨਵੰਤ ॥
भली सु करनी सोभा धनवंत ॥
उसके कर्म शुभ हैं, उसी को शोभा मिलती है और वही धनवान है

ਹਿਰਦੈ ਬਸੇ ਪੂਰਨ ਗੁਰ ਮੰਤ ॥
हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥
जिसके हृदय में पूर्ण गुरु का मंत्र बसता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਦੇਹੁ ਨਿਵਾਸ ॥
साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥
हे ईश्वर ! अपने संतों की संगति में स्थान दीजिए।

ਸਰਬ ਸੂਖ ਨਾਨਕ ਪਰਗਾਸ ॥੮॥੨੦॥
सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥
हे नानक ! सत्संगति में रहने से सर्व सुखों का आलोक हो जाता है ॥८॥२०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਸਰਗੁਨ ਨਿਰਗੁਨ ਨਿਰੰਕਾਰ ਸੁੰਨ ਸਮਾਧੀ ਆਪਿ ॥
सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥
निरंकार प्रभु स्वयं ही सर्गुण एवं निर्गुण है। वह स्वयं ही शून्य समाधि में रहता है।

ਆਪਨ ਕੀਆ ਨਾਨਕਾ ਆਪੇ ਹੀ ਫਿਰਿ ਜਾਪਿ ॥੧॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥
हे नानक ! निरंकार प्रभु ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और फिर स्वयं ही (जीवों द्वारा) जाप करता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।

ਜਬ ਅਕਾਰੁ ਇਹੁ ਕਛੁ ਨ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
जब इस सृष्टि का प्रसार कुछ भी दिखाई नहीं देता था,

ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਤਬ ਕਹ ਤੇ ਹੋਤਾ ॥
पाप पुंन तब कह ते होता ॥
तब पाप अथवा पुण्य किस (प्राणी) से हो सकता था ?

ਜਬ ਧਾਰੀ ਆਪਨ ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ॥
जब धारी आपन सुंन समाधि ॥
जब परमात्मा स्वयं शून्य समाधि में था,

ਤਬ ਬੈਰ ਬਿਰੋਧ ਕਿਸੁ ਸੰਗਿ ਕਮਾਤਿ ॥
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
तब वैर-विरोध कोई किससे करता था।

ਜਬ ਇਸ ਕਾ ਬਰਨੁ ਚਿਹਨੁ ਨ ਜਾਪਤ ॥
जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥
जब (दुनिया का) कोई वर्ण अथवा चिन्ह दिखाई नहीं देता था,

ਤਬ ਹਰਖ ਸੋਗ ਕਹੁ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥
बताओ तब हर्ष एवं शोक किसे स्पर्श कर सकते थे।

ਜਬ ਆਪਨ ਆਪ ਆਪਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥
जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
जब परब्रह्म स्वयं ही सब कुछ था,

ਤਬ ਮੋਹ ਕਹਾ ਕਿਸੁ ਹੋਵਤ ਭਰਮ ॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥
तब मोह कहाँ हो सकता था और दुविधा किसे हो सकती थी ?

ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਵਰਤੀਜਾ ॥
आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
हे नानक ! (सृष्टि रूपी) अपनी लीला अकाल पुरुष ने स्वयं ही रची है,

ਨਾਨਕ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ॥੧॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥
इसके अलावा दूसरा कोई रचयिता नहीं ॥ १॥

ਜਬ ਹੋਵਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇਵਲ ਧਨੀ ॥
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
जब जगत् का स्वामी परमात्मा केवल स्वयं ही था,

ਤਬ ਬੰਧ ਮੁਕਤਿ ਕਹੁ ਕਿਸ ਕਉ ਗਨੀ ॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
तब बताओ किसे बन्धनयुक्त एवं किसे बन्धनमुक्त गिना जाता था ?

ਜਬ ਏਕਹਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
जब केवल अगम्य एवं अपार हरि ही था,

ਤਬ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਕਹੁ ਕਉਨ ਅਉਤਾਰ ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
तब बताओ, नरकों तथा स्वर्गों में आने वाले कौन से प्राणी थे।

ਜਬ ਨਿਰਗੁਨ ਪ੍ਰਭ ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
जब निर्गुण परमात्मा अपने सहज स्वभाव सहित था,

ਤਬ ਸਿਵ ਸਕਤਿ ਕਹਹੁ ਕਿਤੁ ਠਾਇ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
तब बताओ शिव-शक्ति किस स्थान पर थे?

ਜਬ ਆਪਹਿ ਆਪਿ ਅਪਨੀ ਜੋਤਿ ਧਰੈ ॥
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
जब परमात्मा स्वयं ही अपनी ज्योति प्रज्वलित किए बैठा था,

ਤਬ ਕਵਨ ਨਿਡਰੁ ਕਵਨ ਕਤ ਡਰੈ ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
तब कौन निडर था और कौन किससे डरता था ?

ਆਪਨ ਚਲਿਤ ਆਪਿ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
हे नानक ! परमात्मा अगम्य एवं अपार है।

ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥੨॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥
अपने कौतुक स्वयं ही करने वाला है ॥२॥

ਅਬਿਨਾਸੀ ਸੁਖ ਆਪਨ ਆਸਨ ॥
अबिनासी सुख आपन आसन ॥
जब अमर परमात्मा अपने सुखदायक आसन पर विराजमान था,

ਤਹ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਹੁ ਕਹਾ ਬਿਨਾਸਨ ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥
बताओ तब जन्म-मरण और विनाश (काल) कहाँ थे?

ਜਬ ਪੂਰਨ ਕਰਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
जब पूर्ण अकाल पुरुष कर्तार ही था,

ਤਬ ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਕਹਹੁ ਕਿਸੁ ਹੋਇ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥
बताओ तब मृत्यु का भय किसे हो सकता था ?

ਜਬ ਅਬਿਗਤ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭ ਏਕਾ ॥
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
जब केवल अलक्ष्य एवं अगोचर परमात्मा ही था,

ਤਬ ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤ ਕਿਸੁ ਪੂਛਤ ਲੇਖਾ ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥
तब चित्रगुप्त किस से लेखा पूछते थे ?

ਜਬ ਨਾਥ ਨਿਰੰਜਨ ਅਗੋਚਰ ਅਗਾਧੇ ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
जब केवल निरंजन, अगोचर एवं अथाह नाथ (परमात्मा) ही था,

ਤਬ ਕਉਨ ਛੁਟੇ ਕਉਨ ਬੰਧਨ ਬਾਧੇ ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
तब कौन माया के बन्धन से मुक्त थे और कौन बन्धनों में फंसे हुए थे ?

ਆਪਨ ਆਪ ਆਪ ਹੀ ਅਚਰਜਾ ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
परमात्मा सब कुछ अपने आप से ही है, वह स्वयं ही अद्भुत है।

ਨਾਨਕ ਆਪਨ ਰੂਪ ਆਪ ਹੀ ਉਪਰਜਾ ॥੩॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥
हे नानक ! अपना रूप उसने स्वयं ही उत्पन्न किया है ॥३॥

ਜਹ ਨਿਰਮਲ ਪੁਰਖੁ ਪੁਰਖ ਪਤਿ ਹੋਤਾ ॥
जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥
जहां निर्मल पुरुष ही पुरुषों का पति होता था

ਤਹ ਬਿਨੁ ਮੈਲੁ ਕਹਹੁ ਕਿਆ ਧੋਤਾ ॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥
और वहाँ कोई मैल नहीं थी, बताओ ! तब वहाँ स्वच्छ करने को क्या था?

ਜਹ ਨਿਰੰਜਨ ਨਿਰੰਕਾਰ ਨਿਰਬਾਨ ॥
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥
जहाँ केवल निरंजन, निरंकार एवं निर्लिप्त परमात्मा ही था,

ਤਹ ਕਉਨ ਕਉ ਮਾਨ ਕਉਨ ਅਭਿਮਾਨ ॥
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥
वहाँ किसका मान एवं किसका अभिमान होता था ?

ਜਹ ਸਰੂਪ ਕੇਵਲ ਜਗਦੀਸ ॥
जह सरूप केवल जगदीस ॥
जहाँ केवल सृष्टि के स्वामी जगदीश का ही रूप था,

ਤਹ ਛਲ ਛਿਦ੍ਰ ਲਗਤ ਕਹੁ ਕੀਸ ॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥
बताओ, वहाँ छल-कपट एवं पाप किसको दुःखी करते थे ?

ਜਹ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੀ ਜੋਤਿ ਸੰਗਿ ਸਮਾਵੈ ॥
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥
जहाँ ज्योति स्वरूप अपनी ज्योति से ही समाया हुआ था,

ਤਹ ਕਿਸਹਿ ਭੂਖ ਕਵਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥
तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥
तब वहाँ किसे भूख लगती थी और किसे तृप्ति आती थी ?

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ॥
करन करावन करनैहारु ॥
सृष्टि का रचयिता करतार स्वयं ही सबकुछ करने वाला और प्राणियों से कराने वाला है।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਨਾਹਿ ਸੁਮਾਰੁ ॥੪॥
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥
हे नानक ! दुनिया का निर्माण करने वाले परमात्मा का कोई अन्त नहीं है ॥४॥

ਜਬ ਅਪਨੀ ਸੋਭਾ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਬਨਾਈ ॥
जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥
जब परमात्मा ने अपनी शोभा अपने साथ ही बनाई थी,

ਤਬ ਕਵਨ ਮਾਇ ਬਾਪ ਮਿਤ੍ਰ ਸੁਤ ਭਾਈ ॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥
तब माता-पिता, मित्र, पुत्र एवं भाई कौन थे ?

ਜਹ ਸਰਬ ਕਲਾ ਆਪਹਿ ਪਰਬੀਨ ॥
जह सरब कला आपहि परबीन ॥
जब वह स्वयं ही सर्वकला में पूरी तरह प्रवीण था,

ਤਹ ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਕਹਾ ਕੋਊ ਚੀਨ ॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥
तब वेद तथा कतेब को कहाँ कोई पहचानता था।

ਜਬ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ ਉਰਿ ਧਾਰੈ ॥
जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥
जब अकाल पुरुष अपने आपको अपने हृदय में ही धारण किए रखता था,

ਤਉ ਸਗਨ ਅਪਸਗਨ ਕਹਾ ਬੀਚਾਰੈ ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥
तब शगुन (शुभ) एवं अपशगुन (अशुभ लग्नों) का कौन सोचता था ?

ਜਹ ਆਪਨ ਊਚ ਆਪਨ ਆਪਿ ਨੇਰਾ ॥
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥
जहाँ परमात्मा स्वयं ही ऊँचा और स्वयं ही निकट था,

ਤਹ ਕਉਨ ਠਾਕੁਰੁ ਕਉਨੁ ਕਹੀਐ ਚੇਰਾ ॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥
वहाँ कौन स्वामी और कौन सेवक कहा जा सकता था ?

ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦ ॥
बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
मैं प्रभु के अदभुत कौतुक देखकर चकित हो रहा हूँ।

ਨਾਨਕ ਅਪਨੀ ਗਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪਿ ॥੫॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥
नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! अपनी गति तू स्वयं ही जानता है ॥५॥

ਜਹ ਅਛਲ ਅਛੇਦ ਅਭੇਦ ਸਮਾਇਆ ॥
जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
जहाँ छलरहित, अल्लेद एवं अभेद परमेश्वर अपने आप में लीन था,

ਊਹਾ ਕਿਸਹਿ ਬਿਆਪਤ ਮਾਇਆ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥
वहाँ माया किस पर प्रभाव करती थी ?

ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਹਿ ਆਦੇਸੁ ॥
आपस कउ आपहि आदेसु ॥
जब ईश्वर स्वयं अपने आपको प्रणाम करता था,

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਕਾ ਨਾਹੀ ਪਰਵੇਸੁ ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥
तब (माया के) त्रिगुणों का (जगत् में) प्रवेश नहीं हुआ था।

ਜਹ ਏਕਹਿ ਏਕ ਏਕ ਭਗਵੰਤਾ ॥
जह एकहि एक एक भगवंता ॥
जहाँ केवल एक आप ही भगवान था,

ਤਹ ਕਉਨੁ ਅਚਿੰਤੁ ਕਿਸੁ ਲਾਗੈ ਚਿੰਤਾ ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥
वहाँ कौन बेफिक्र था और किसे चिन्ता लगती थी ?

ਜਹ ਆਪਨ ਆਪੁ ਆਪਿ ਪਤੀਆਰਾ ॥
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥
जहाँ परमात्मा अपने आप से स्वयं संतुष्ट था,

ਤਹ ਕਉਨੁ ਕਥੈ ਕਉਨੁ ਸੁਨਨੈਹਾਰਾ ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥
वहां कौन कहने वाला और कौन सुनने वाला था?

ਬਹੁ ਬੇਅੰਤ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥
हे नानक ! परमात्मा बड़ा अनन्त एवं सर्वोपरि है,

ਨਾਨਕ ਆਪਸ ਕਉ ਆਪਹਿ ਪਹੂਚਾ ॥੬॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥
केवल वही अपने आप तक पहुँचता है॥ ६॥

ਜਹ ਆਪਿ ਰਚਿਓ ਪਰਪੰਚੁ ਅਕਾਰੁ ॥
जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
जब परमात्मा ने स्वयं सृष्टि का परपंच रच दिया

ਤਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਕੀਨੋ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
और माया के त्रिगुणों का प्रसार जगत् में कर दिया,

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਤਹ ਭਈ ਕਹਾਵਤ ॥

पापु पुंनु तह भई कहावत ॥

तो यह बात प्रचलित हो गई कि यह पाप है अथवा यह पुण्य है।

ਕੋਊ ਨਰਕ ਕੋਊ ਸੁਰਗ ਬੰਛਾਵਤ ॥
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥
कोई नरक में जाने लगा और कोई स्वर्ग की अभिलाषा करने लगा।

ਆਲ ਜਾਲ ਮਾਇਆ ਜੰਜਾਲ ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥
ईश्वर ने सांसारिक विवाद, धन-दौलत के जंजाल,

ਹਉਮੈ ਮੋਹ ਭਰਮ ਭੈ ਭਾਰ ॥
हउमै मोह भरम भै भार ॥
अहंकार, मोह, दुविधा एवं भय के भार बना दिए।

ਦੂਖ ਸੂਖ ਮਾਨ ਅਪਮਾਨ ॥
दूख सूख मान अपमान ॥
दुःख-सुख, मान-अपमान

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀਓ ਬਖ੍ਯਾਨ ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥
अनेक प्रकार से वर्णन होने प्रारम्भ हो गए।

ਆਪਨ ਖੇਲੁ ਆਪਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ॥
आपन खेलु आपि करि देखै ॥
अपनी लीला प्रभु स्वयं ही रचता और देखता हैं।

ਖੇਲੁ ਸੰਕੋਚੈ ਤਉ ਨਾਨਕ ਏਕੈ ॥੭॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥
हे नानक ! जब परमात्मा अपनी लीला को समेट लेता है तो केवल वही रह जाता है ॥७॥

ਜਹ ਅਬਿਗਤੁ ਭਗਤੁ ਤਹ ਆਪਿ ॥
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जहाँ पर अनन्त परमात्मा है, वहीं उसका भक्त है, जहाँ पर भक्त है, वहीं परमात्मा स्वयं है।

ਜਹ ਪਸਰੈ ਪਾਸਾਰੁ ਸੰਤ ਪਰਤਾਪਿ ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
जहाँ कहीं वह रचना का प्रसार करता है, वह उसके संत के प्रताप के लिए है।

ਦੁਹੂ ਪਾਖ ਕਾ ਆਪਹਿ ਧਨੀ ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
दोनों पक्षों का वह स्वयं ही मालिक है।

ਉਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਉਨਹੂ ਬਨੀ ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥
उसकी शोभा केवल उसी को ही शोभा देती है।

ਆਪਹਿ ਕਉਤਕ ਕਰੈ ਅਨਦ ਚੋਜ ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
भगवान स्वयं ही लीला एवं खेल करता है।

ਆਪਹਿ ਰਸ ਭੋਗਨ ਨਿਰਜੋਗ ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥
वह स्वयं ही आनंद भोगता है और फिर भी निर्लिप्त रहता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਆਪਨ ਨਾਇ ਲਾਵੈ ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिस किसी को वह चाहता है, उसको अपने नाम के साथ लगा लेता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਖੇਲ ਖਿਲਾਵੈ ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
जिस किसी को वह चाहता है, उसको संसार का खेल खिलाता है।

ਬੇਸੁਮਾਰ ਅਥਾਹ ਅਗਨਤ ਅਤੋਲੈ ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
नानक का कथन है कि हे अनन्त ! हे अथाह ! हे गणना-रहित, अतुलनीय परमात्मा !

ਜਿਉ ਬੁਲਾਵਹੁ ਤਿਉ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਬੋਲੈ ॥੮॥੨੧॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥
जैसे तुम बुलाते हो, वैसे ही यह दास बोलता है ॥८॥२१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਕੇ ਠਾਕੁਰਾ ਆਪੇ ਵਰਤਣਹਾਰ ॥
जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥
हे जीव-जन्तुओं के पालनहार परमेश्वर ! तू स्वयं ही सर्वव्यापक है।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਪਸਰਿਆ ਦੂਜਾ ਕਹ ਦ੍ਰਿਸਟਾਰ ॥੧॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥
हे नानक ! एक ईश्वर ही सर्वत्र व्यापक है। इसके अलावा दूसरा कोई कहाँ दिखाई देता है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਆਪਿ ਕਥੈ ਆਪਿ ਸੁਨਨੈਹਾਰੁ ॥
आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
वह स्वयं ही वक्ता है और स्वयं ही श्रोता है।

ਆਪਹਿ ਏਕੁ ਆਪਿ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥
वह स्वयं ही एक है और स्वयं ही उसका विस्तार है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਏ ॥
जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥
जब उसे भला लगता है तो वह सृष्टि की रचना कर देता है।

ਆਪਨੈ ਭਾਣੈ ਲਏ ਸਮਾਏ ॥
आपनै भाणै लए समाए ॥
अपनी इच्छानुसार वह इसे स्वयं में लीन कर देता है।

ਤੁਮ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥
हे परमात्मा ! तुम्हारे बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता।

ਆਪਨ ਸੂਤਿ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਪਰੋਇ ॥
आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥
तूने समूचे जगत् को एक सूत्र में पिरोया हुआ है।

ਜਾ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥
जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥
जिसे पूज्य परमेश्वर स्वयं ज्ञान देता है,

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ॥
सचु नामु सोई जनु पाए ॥
वह मनुष्य सत्यनाम प्राप्त कर लेता है।

ਸੋ ਸਮਦਰਸੀ ਤਤ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
सो समदरसी तत का बेता ॥
वह समदर्शी तथा तत्वज्ञाता है।

ਨਾਨਕ ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਜੇਤਾ ॥੧॥
नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥
हे नानक ! वह समूचे जगत् को विजयी करने वाला है ॥१॥

ਜੀਅ ਜੰਤ੍ਰ ਸਭ ਤਾ ਕੈ ਹਾਥ ॥
जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥
समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के वश में हैं।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਅਨਾਥ ਕੋ ਨਾਥੁ ॥
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥
वह दीनदयालु एवं अनाथों का नाथ है।

ਜਿਸੁ ਰਾਖੈ ਤਿਸੁ ਕੋਇ ਨ ਮਾਰੈ ॥
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥
जिसकी परमात्मा रक्षा करता है, उसे कोई भी मार नहीं सकता।

ਸੋ ਮੂਆ ਜਿਸੁ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰੈ ॥
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥
जिसे वह अपने हृदय से विस्मृत कर देता है, वह पूर्व ही मृत है।

ਤਿਸੁ ਤਜਿ ਅਵਰ ਕਹਾ ਕੋ ਜਾਇ ॥
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥
उसे छोड़कर कोई मनुष्य दूसरे के पास क्यों जाए?

ਸਭ ਸਿਰਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨ ਰਾਇ ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥
सबके सिर पर एक निरंजन प्रभु है।

ਜੀਅ ਕੀ ਜੁਗਤਿ ਜਾ ਕੈ ਸਭ ਹਾਥਿ ॥
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
जिसके वश में प्राणी की समस्त युक्तियां हैं

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਜਾਨਹੁ ਸਾਥਿ ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
समझ ले कि वह भीतर एवं बाहर तेरे साथ है।

ਗੁਨ ਨਿਧਾਨ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰ ॥
गुन निधान बेअंत अपार ॥
उस गुणों के भण्डार, अनंत एवं अपार परमात्मा पर

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰ ॥੨॥
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥
दास नानक सदैव बलिहारी जाता है॥ २॥

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਦਇਆਲ ॥
पूरन पूरि रहे दइआल ॥
दयालु परमात्मा हर जगह पर मौजूद है और

ਸਭ ਊਪਰਿ ਹੋਵਤ ਕਿਰਪਾਲ ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
समस्त जीवों पर कृपालु होता है।

ਅਪਨੇ ਕਰਤਬ ਜਾਨੈ ਆਪਿ ॥
अपने करतब जानै आपि ॥
अपनी लीला वह स्वयं ही जानता है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਰਹਿਓ ਬਿਆਪਿ ॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥
अन्तर्यामी प्रभु सबमें समाया हुआ है।

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਜੀਅਨ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ॥
प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥
वह अनेक विधियों से जीवों का पोषण करता है।

ਜੋ ਜੋ ਰਚਿਓ ਸੁ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਤਿ ॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥
जिस किसी की भी उसने उत्पत्ति की है, वह उसका ध्यान करता रहता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
जो कोई भी भगवान को भला लगता है, उसे वह अपने साथ मिला लेता है।

ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥
ऐसा भक्त हरि-प्रभु की भक्ति एवं गुणस्तुति करता है।

ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥
हे नानक ! जिसने मन में श्रद्धा धारण करके भगवान को माना है,

ਕਰਨਹਾਰੁ ਨਾਨਕ ਇਕੁ ਜਾਨਿਆ ॥੩॥
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥
उसने एक सृष्टिकर्ता प्रभु को ही जाना है॥ ३॥

ਜਨੁ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਏਕੈ ਨਾਇ ॥
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥
जो भक्त भगवान के एक नाम में लगा है,

ਤਿਸ ਕੀ ਆਸ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਇ ॥
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥
उसकी आशा व्यर्थ नहीं जाती।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਸੇਵਾ ਬਨਿ ਆਈ ॥
सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
सेवक को सेवा करनी ही शोभा देती है।

ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈ ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥
प्रभु के हुक्म का पालन करके वह परम पद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है।

ਇਸ ਤੇ ਊਪਰਿ ਨਹੀ ਬੀਚਾਰੁ ॥
इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥
उसे इससे ऊपर और कोई भी विचार नहीं आता

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਸਿਆ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥
जिसके हृदय में निरंकार प्रभु बसता है।

ਬੰਧਨ ਤੋਰਿ ਭਏ ਨਿਰਵੈਰ ॥
बंधन तोरि भए निरवैर ॥
वह अपने बन्धन तोड़कर निर्वैर हो जाता है

ਅਨਦਿਨੁ ਪੂਜਹਿ ਗੁਰ ਕੇ ਪੈਰ ॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥
और दिन-रात गुरु के चरणों की पूजा-अर्चना करता है।

ਇਹ ਲੋਕ ਸੁਖੀਏ ਪਰਲੋਕ ਸੁਹੇਲੇ ॥
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
वह इहलोक में सुखी एवं परलोक में आनंद-प्रसन्न होता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਹਿ ਮੇਲੇ ॥੪॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥
हे नानक ! हरि-प्रभु उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਕਰਹੁ ਅਨੰਦ ॥
साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
साध संगत में मिलकर आनंद करो

ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥
और परमानन्द प्रभु की गुणस्तुति करते रहो।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਤਤੁ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
राम-नाम के तत्व का विचार करो।

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਕਾ ਕਰਹੁ ਉਧਾਰੁ ॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥
इस तरह दुर्लभ मानव शरीर का कल्याण कर लो।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥
अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥
परमेश्वर की महिमा के अमृत वचन गायन करो।

ਪ੍ਰਾਨ ਤਰਨ ਕਾ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
अपनी आत्मा का कल्याण करने की यही विधि है।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖਹੁ ਨੇਰਾ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
आठ पहर प्रभु को निकट देखो।

ਮਿਟੈ ਅਗਿਆਨੁ ਬਿਨਸੈ ਅੰਧੇਰਾ ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
(इससे) अज्ञान मिट जाएगा और अन्धकार का नाश हो जाएगा।

ਸੁਨਿ ਉਪਦੇਸੁ ਹਿਰਦੈ ਬਸਾਵਹੁ ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
गुरु का उपदेश सुनकर इसे अपने हृदय में बसाओ।

ਮਨ ਇਛੇ ਨਾਨਕ ਫਲ ਪਾਵਹੁ ॥੫॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥
हे नानक ! इस तरह तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होगा ॥५॥

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੁਇ ਲੇਹੁ ਸਵਾਰਿ ॥
हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
लोक एवं परलोक दोनों को संवार लो

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅੰਤਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
राम के नाम को अपने हृदय में बसाओ ।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਪੂਰੀ ਦੀਖਿਆ ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
पूर्ण गुरु का पूर्ण उपदेश है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਤਿਸੁ ਸਾਚੁ ਪਰੀਖਿਆ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
जिसके हृदय में यह बसता है, वह सत्य का निरीक्षण कर लेता है।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
अपने मन एवं तन से वृति लगाकर प्रभु के नाम का जाप करो।

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਮਨ ਤੇ ਭਉ ਜਾਇ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
इस तरह दुःख-दर्द एवं भय मन से निवृत्त हो जाएँगे।

ਸਚੁ ਵਾਪਾਰੁ ਕਰਹੁ ਵਾਪਾਰੀ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
हे व्यापारी ! तू सच्चा व्यापार कर।

ਦਰਗਹ ਨਿਬਹੈ ਖੇਪ ਤੁਮਾਰੀ ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
तेरा सौदा ईश्वर के दरबार में सुरक्षित पहुँच जाएगा।

ਏਕਾ ਟੇਕ ਰਖਹੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
एक ईश्वर का सहारा अपने हृदय में कायम कर।

ਨਾਨਕ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥੬॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥
हे नानक ! तेरा आवागमन (जन्म-मरण का चक्र) पुनः नहीं होगा।॥ ६ ॥

ਤਿਸ ਤੇ ਦੂਰਿ ਕਹਾ ਕੋ ਜਾਇ ॥
तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उससे दूर कोई मनुष्य कहाँ जा सकता है ?

ਉਬਰੈ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਧਿਆਇ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥
रक्षक परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य बच जाता है।

ਨਿਰਭਉ ਜਪੈ ਸਗਲ ਭਉ ਮਿਟੈ ॥
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
उस निर्भय प्रभु का जाप करने से सब भय मिट जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਛੁਟੈ ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥
प्रभु की कृपा से जीव की मुक्ति हो जाती है।

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਰਾਖੈ ਤਿਸੁ ਨਾਹੀ ਦੂਖ ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
जिसकी ईश्वर रक्षा करता है, उसे कोई दुःख नहीं लगता।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨਿ ਹੋਵਤ ਸੂਖ ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥
नाम की आराधना करने से मन को सुख प्राप्त हो जाता है।

ਚਿੰਤਾ ਜਾਇ ਮਿਟੈ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
उससे चिन्ता दूर हो जाती है और अहंकार मिट जाता है।

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰੁ ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
उस प्रभु के भक्त की कोई समानता नहीं कर सकता।

ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਠਾਢਾ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ॥
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
हे नानक ! जिसके सिर पर शूरवीर गुरु खड़ा हो,

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੇ ਕਾਰਜ ਪੂਰਾ ॥੭॥
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥
उसके तमाम कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥७॥

ਮਤਿ ਪੂਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਾ ਕੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ॥
मति पूरी अम्रितु जा की द्रिसटि ॥
जिस (गुरु) की बुद्धि पूर्ण है और जिसकी दृष्टि से अमृत बरसता रहता है,

ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਉਧਰਤ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥
उनके दर्शन करके दुनिया का कल्याण हो जाता है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕੇ ਅਨੂਪ ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
उनके चरण कमल अनूप हैं।

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਸੁੰਦਰ ਹਰਿ ਰੂਪ ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
उनके दर्शन सफल हैं और परमेश्वर जैसा अति सुन्दर उनका रूप है।

ਧੰਨੁ ਸੇਵਾ ਸੇਵਕੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
उनकी सेवा धन्य है एवं उनका सेवक स्वीकृत है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਧਾਨੁ ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥
वह (गुरु) अंतर्यामी एवं प्रधान पुरुष है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲੁ ॥
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥
जिसके हृदय में गुरु निवास करते हैं, वह कृतार्थ हो जाता है।

ਤਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵਤ ਕਾਲੁ ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥
काल (मृत्यु) उसके निकट नहीं आता।

ਅਮਰ ਭਏ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥
वे अमर हो गए हैं और अमर पद प्राप्त कर लिया है

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੮॥੨੨॥
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥
हे नानक ! जिन्होंने साधुओं की संगति में भगवान का ध्यान किया है ॥ ८ ॥ २२ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰ ਬਿਨਾਸੁ ॥
गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
गुरु ने ज्ञान रूपी सुरमा प्रदान किया है, जिससे अज्ञान के अंधेरे का नाश हो गया है।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੰਤ ਭੇਟਿਆ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ॥੧॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥
हे नानक ! भगवान की कृपा से संत-गुरु मिला है, जिससे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी।॥

ਸੰਤਸੰਗਿ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ॥
संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
संतों की संगति में अन्तर्मन में ही प्रभु के दर्शन कर लिए हैं।

ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਾ ਲਾਗਾ ਮੀਠਾ ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
प्रभु का नाम मुझे मधुर मीठा लगा है।

ਸਗਲ ਸਮਿਗ੍ਰੀ ਏਕਸੁ ਘਟ ਮਾਹਿ ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
समस्त सृष्टि एक परमात्मा के स्वरूप में है,

ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਨਾਨਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਹਿ ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
जिसके विभिन्न प्रकार के अनेक रंग दिखाई दे रहे हैं।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਮੁ ॥
नउ निधि अम्रितु प्रभ का नामु ॥
प्रभु का अमृत नाम नवनिधि है।

ਦੇਹੀ ਮਹਿ ਇਸ ਕਾ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
मानव शरीर में ही इसका निवास है।

ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਅਨਹਤ ਤਹ ਨਾਦ ॥
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
वहाँ शून्य समाधि में अनहद शब्द होता है।

ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਅਚਰਜ ਬਿਸਮਾਦ ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥
इस आश्चर्यचकित एवं विस्माद का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਤਿਨਿ ਦੇਖਿਆ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਖਾਏ ॥
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥
जिसको ईश्वर स्वयं दिखाता है, वही इसको देखता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥੧॥
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥
हे नानक ! ऐसा पुरुष ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਸੋ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਬਾਹਰਿ ਅਨੰਤ ॥
सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
वह अनन्त परमात्मा अन्तर्मन में भी है और बाहर भी विद्यमान है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹਿਆ ਭਗਵੰਤ ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥
भगवान कण-कण में मौजूद है।

ਧਰਨਿ ਮਾਹਿ ਆਕਾਸ ਪਇਆਲ ॥
धरनि माहि आकास पइआल ॥
वह धरती, गगन एवं पाताल में मौजूद है।

ਸਰਬ ਲੋਕ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥
समस्त लोकों का वह पूर्ण पालनहार है।

ਬਨਿ ਤਿਨਿ ਪਰਬਤਿ ਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ॥
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥
पारब्रह्म-प्रभु वनों, तृणों एवं पर्वतों में व्यापक है।

ਜੈਸੀ ਆਗਿਆ ਤੈਸਾ ਕਰਮੁ ॥
जैसी आगिआ तैसा करमु ॥
जैसी उसकी आज्ञा होती है, वैसे ही जीव के कर्म हैं।

ਪਉਣ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰ ਮਾਹਿ ॥
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
भगवान पवन, जल एवं अग्नि में विद्यमान है।

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸੇ ਸਮਾਹਿ ॥
चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥
वह चारों तरफ और दसों दिशाओं में समाया हुआ है।

ਤਿਸ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨਹੀ ਕੋ ਠਾਉ ॥
तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥
उससे भिन्न कोई स्थान नहीं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਉ ॥੨॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२
गुरु की कृपा से नानक ने सुख पा लिया है॥ २॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਮਹਿ ਦੇਖੁ ॥
बेद पुरान सिम्रिति महि देखु ॥
उस भगवान को वेद, पुराण एवं स्मृतियों में देखो।

ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਨਖ੍ਯਤ੍ਰ ਮਹਿ ਏਕੁ ॥
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥
चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों में वही एक ईश्वर है।

ਬਾਣੀ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਭੁ ਕੋ ਬੋਲੈ ॥
बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
प्रत्येक जीव प्रभु की वाणी बोलता है।

ਆਪਿ ਅਡੋਲੁ ਨ ਕਬਹੂ ਡੋਲੈ ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥
वह अटल है और कभी विचलित नहीं होता।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਰਿ ਖੇਲੈ ਖੇਲ ॥
सरब कला करि खेलै खेल ॥
सर्व कला रचकर (सृष्टि का) खेल खेलता है।

ਮੋਲਿ ਨ ਪਾਈਐ ਗੁਣਹ ਅਮੋਲ ॥
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥
उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, (क्योंकि) उसके गुण अमूल्य हैं।

ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾ ਕੀ ਜੋਤਿ ॥
सरब जोति महि जा की जोति ॥
ईश्वर की ज्योति समस्त ज्योतियों में प्रज्वलित है।

ਧਾਰਿ ਰਹਿਓ ਸੁਆਮੀ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥
प्रभु ने संसार का ताना-बाना अपने वश में किया हुआ है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਭਰਮ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥
गुर परसादि भरम का नासु ॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से जिसके भ्रम का नाश हो जाता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਮਹਿ ਏਹੁ ਬਿਸਾਸੁ ॥੩॥
नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥
उसके भीतर यह दृढ़ विश्वास बन जाता है ॥३॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਾ ਪੇਖਨੁ ਸਭੁ ਬ੍ਰਹਮ ॥
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥
संतजन हर जगह पर भगवान को ही देखते हैं।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਭਿ ਧਰਮ ॥
संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
संतजनों के मन में सब धर्म ही होता है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਸੁਨਹਿ ਸੁਭ ਬਚਨ ॥
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
संतजन शुभ वचन सुनते हैं।

ਸਰਬ ਬਿਆਪੀ ਰਾਮ ਸੰਗਿ ਰਚਨ ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥
वे सर्वव्यापक राम में लीन रहते हैं।

ਜਿਨਿ ਜਾਤਾ ਤਿਸ ਕੀ ਇਹ ਰਹਤ ॥
जिनि जाता तिस की इह रहत ॥
जिस जिस संत-धर्मात्मा ने (ईश्वर को) समझ लिया है, उसका जीवन-आचरण ही यह बन जाता है।

ਸਤਿ ਬਚਨ ਸਾਧੂ ਸਭਿ ਕਹਤ ॥
सति बचन साधू सभि कहत ॥
साधु सदैव सत्य वचन करता है।

ਜੋ ਜੋ ਹੋਇ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ॥
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
जो कुछ भी होता है, वह इसे सुख मानता है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਨੈ ॥
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥
यह जानता है कि प्रभु समस्त कार्य करने वाला एवं कराने वाला है।

ਅੰਤਰਿ ਬਸੇ ਬਾਹਰਿ ਭੀ ਓਹੀ ॥
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
संतजनों हेतु ईश्वर भीतर-बाहर सर्वत्र बसता है।

ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਸਭ ਮੋਹੀ ॥੪॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥
हे नानक ! उसके दर्शन करके हरेक व्यक्ति मुग्ध हो जाता है ॥४॥

ਆਪਿ ਸਤਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਤਿ ॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
ईश्वर सत्य है और उसकी सृष्टि-रचना भी सत्य है।

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਸਗਲੀ ਉਤਪਤਿ ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
उस परमेश्वर से समूचा जगत् उत्पन्न हुआ है।

ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਕਰੇ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥
जब उसे भला लगता है तो वह सृष्टि का प्रसार कर देता है।

ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥
तिसु भावै ता एकंकारु ॥
यदि एक ईश्वर को उपयुक्त लगे तो वह स्वयं ही एक रूप हो जाता है।

ਅਨਿਕ ਕਲਾ ਲਖੀ ਨਹ ਜਾਇ ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥
उसकी अनेक कलाएँ (शक्तियां) हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
जिस किसी को वह चाहता है, उसे अपने साथ मिला लेता है।

ਕਵਨ ਨਿਕਟਿ ਕਵਨ ਕਹੀਐ ਦੂਰਿ ॥
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥
वह पारब्रह्म किसी से दूर एवं किसी से निकट कहा जा सकता है ?

ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪ ਭਰਪੂਰਿ ॥
आपे आपि आप भरपूरि ॥
लेकिन ईश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है।

ਅੰਤਰਗਤਿ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਜਨਾਏ ॥
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
हे नानक ! वह उस मनुष्य को (अपनी सर्वव्यापकता की) सूझ देता है,

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥੫॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥
जिसे (ईश्वर) स्वयं भीतरी उच्च अवस्था सुझा देता है ॥५॥

ਸਰਬ ਭੂਤ ਆਪਿ ਵਰਤਾਰਾ ॥
सरब भूत आपि वरतारा ॥
सारी दुनिया के लोगों में परमात्मा स्वयं ही मौजूद है।

ਸਰਬ ਨੈਨ ਆਪਿ ਪੇਖਨਹਾਰਾ ॥
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सर्व नयनों द्वारा वह स्वयं ही देख रहा है।

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਜਾ ਕਾ ਤਨਾ ॥
सगल समग्री जा का तना ॥
यह सारी सृष्टि-रचना उसका शरीर है।

ਆਪਨ ਜਸੁ ਆਪ ਹੀ ਸੁਨਾ ॥
आपन जसु आप ही सुना ॥
वह अपनी महिमा स्वयं ही सुनता है।

ਆਵਨ ਜਾਨੁ ਇਕੁ ਖੇਲੁ ਬਨਾਇਆ ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
लोगों का आवागमन (जन्म-मरण) ईश्वर ने एक खेल रचा है।

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਕੀਨੀ ਮਾਇਆ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥
माया को उसने अपना आज्ञाकारी बनाया हुआ है।

ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਅਲਿਪਤੋ ਰਹੈ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
सबके भीतर होता हुआ भी प्रभु निर्लिप्त रहता है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਸੁ ਆਪੇ ਕਹੈ ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
जो कुछ कहना होता है, वह स्वयं ही कहता है।

ਆਗਿਆ ਆਵੈ ਆਗਿਆ ਜਾਇ ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
उसकी आज्ञानुसार प्राणी (दुनिया में) जन्म लेता है और आज्ञानुसार प्राण त्याग देता है।

ਨਾਨਕ ਜਾ ਭਾਵੈ ਤਾ ਲਏ ਸਮਾਇ ॥੬॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥
हे नानक ! जब उसे लुभाता है तो वह प्राणी को अपने साथ मिला लेता है॥ ६॥

ਇਸ ਤੇ ਹੋਇ ਸੁ ਨਾਹੀ ਬੁਰਾ ॥
इस ते होइ सु नाही बुरा ॥
भगवान द्वारा जो कुछ भी होता है, दुनिया के लिए बुरा नहीं होता।

ਓਰੈ ਕਹਹੁ ਕਿਨੈ ਕਛੁ ਕਰਾ ॥
औरै कहहु किनै कछु करा ॥
कहो, उस भगवान के अलावा कभी किसी ने कुछ किया है ?

ਆਪਿ ਭਲਾ ਕਰਤੂਤਿ ਅਤਿ ਨੀਕੀ ॥
आपि भला करतूति अति नीकी ॥
ईश्वर स्वयं भला है और सबसे भले उसके कर्म हैं।

ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਅਪਨੇ ਜੀ ਕੀ ॥
आपे जानै अपने जी की ॥
अपने हृदय की बात वह स्वयं ही जानता है।

ਆਪਿ ਸਾਚੁ ਧਾਰੀ ਸਭ ਸਾਚੁ ॥
आपि साचु धारी सभ साचु ॥
वह स्वयं सत्य है और उसकी सृष्टि-रचना भी सत्य है।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਰਾਚੁ ॥
ओति पोति आपन संगि राचु ॥
ताने-वाने की भाँति उसने स्वयं सृष्टि को अपने साथ मिलाया हुआ है।

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
ता की गति मिति कही न जाइ ॥
उसकी गति एवं विस्तार व्यक्त नहीं किए जा सकते।

ਦੂਸਰ ਹੋਇ ਤ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥
यदि कोई दूसरा उस समान होता तो बह उसको समझ सकता।

ਤਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
तिस का कीआ सभु परवानु ॥
ईश्वर का किया हुआ लोगों को स्वीकार करना पड़ता है

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਜਾਨੁ ॥੭॥
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से यह तथ्य समझो ॥ ७ ॥

ਜੋ ਜਾਨੈ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
जो व्यक्ति ईश्वर को समझता है, उसे सदैव सुख मिलता है।

ਆਪਿ ਮਿਲਾਇ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥
वह ईश्वर उसे अपने साथ मिला लेता है।

ਓਹੁ ਧਨਵੰਤੁ ਕੁਲਵੰਤੁ ਪਤਿਵੰਤੁ ॥
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
वह धनवान, कुलवान एवं मान-प्रतिष्ठा वाला बन जाता है।

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਭਗਵੰਤੁ ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
जिस जीव के हृदय में भगवान बसता है, वह जीवित ही मुक्ति पा लेता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਜਨੁ ਆਇਆ ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
उस महापुरुष का दुनिया में जन्म लेना धन्य-धन्य है,

ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
जिसकी कृपा से सारे जगत् का उद्धार हो जाता है।

ਜਨ ਆਵਨ ਕਾ ਇਹੈ ਸੁਆਉ ॥
जन आवन का इहै सुआउ ॥
महापुरुष के आगमन का यही मनोरथ है कि

ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਨਾਉ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
उसकी संगति में रहकर दूसरे प्राणियों को ईश्वर का नाम-स्मरण आता है।

ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਮੁਕਤੁ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
ऐसा महापुरुष स्वयं मुक्त होकर संसार को भी मुक्त करा देता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥੮॥੨੩॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥
हे नानक ! ऐसे महापुरुष को हमारा सदैव प्रणाम है ॥८॥२३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਪੂਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਰਾਧਿਆ ਪੂਰਾ ਜਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥
पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥
उस पूर्ण नाम वाले पूर्ण प्रभु की आराधना की है।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਪੂਰੇ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਉ ॥੧॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥
हे नानक! मैंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है, तुम भी पूर्ण प्रभु की महिमा गाओ ॥ १॥

ਅਸਟਪਦੀ ॥
असटपदी ॥
अष्टपदी ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸੁਨਿ ਉਪਦੇਸੁ ॥
पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पूर्ण गुरु का उपदेश सुनो और

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਪੇਖੁ ॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
पारब्रह्म को निकट समझ कर देखो।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
अपनी प्रत्येक सांस से गोविन्द का सिमरन करो,

ਮਨ ਅੰਤਰ ਕੀ ਉਤਰੈ ਚਿੰਦ ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥
इससे तेरे मन के भीतर की चिन्ता मिट जाएगी।

ਆਸ ਅਨਿਤ ਤਿਆਗਹੁ ਤਰੰਗ ॥
आस अनित तिआगहु तरंग ॥
तृष्णाओं की तरंगों को त्याग कर

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਨ ਮੰਗ ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥
संतजनों की चरण धूलि की मन से याचना करो।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਬੇਨਤੀ ਕਰਹੁ ॥
आपु छोडि बेनती करहु ॥
अपना अहंकार त्याग कर प्रार्थना करो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਹੁ ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥
सत्संगति में रहकर (विकारों की) अग्नि के सागर से पार हो जाओ।

ਹਰਿ ਧਨ ਕੇ ਭਰਿ ਲੇਹੁ ਭੰਡਾਰ ॥
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
परमेश्वर के नाम-धन से अपने खजाने भरपूर कर ले

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਨਮਸਕਾਰ ॥੧॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु को प्रणाम करो ॥१॥

ਖੇਮ ਕੁਸਲ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ॥
खेम कुसल सहज आनंद ॥
तुझे मुक्ति, प्रसन्नता एवं सहज आनंद प्राप्त होंगे

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਜੁ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥
संतों की संगति में परमानंद प्रभु का भजन करो।

ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਿ ਉਧਾਰਹੁ ਜੀਉ ॥
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
इससे नरक में जाने से बच जाओगे और आत्मा पार हो जाएगी

ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪੀਉ ॥
गुन गोबिंद अम्रित रसु पीउ ॥
गोबिन्द की गुणस्तुति करके नाम-अमृत का रसपान करो।

ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਹੁ ਨਾਰਾਇਣ ਏਕ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥
अपने मन में एक नारायण का ध्यान करो,

ਏਕ ਰੂਪ ਜਾ ਕੇ ਰੰਗ ਅਨੇਕ ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥
जिसका रूप एक एवं रंग अनेक हैं।

ਗੋਪਾਲ ਦਾਮੋਦਰ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
वह गोपाल, दामोदर, दीनदयालु,

ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾਲ ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
दुःखनाशक एवं पूर्ण कृपालु है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਨਾਮੁ ਬਾਰੰ ਬਾਰ ॥
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥
हे नानक ! बार-बार उसके नाम का सिमरन करते रहो चूंकि

ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਕਾ ਇਹੈ ਅਧਾਰ ॥੨॥
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥
जीव का एकमात्र यही सहारा है॥ २ ॥

ਉਤਮ ਸਲੋਕ ਸਾਧ ਕੇ ਬਚਨ ॥
उतम सलोक साध के बचन ॥
साधु के वचन उत्तम श्लोक हैं।

ਅਮੁਲੀਕ ਲਾਲ ਏਹਿ ਰਤਨ ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥
यही अमूल्य रत्न एवं जवाहर है।

ਸੁਨਤ ਕਮਾਵਤ ਹੋਤ ਉਧਾਰ ॥
सुनत कमावत होत उधार ॥
जो व्यक्ति इन वचनों को सुनता और पालन करता है, उसका भवसागर से उद्धार हो जाता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਲੋਕਹ ਨਿਸਤਾਰ ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥
वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और दूसरे लोगों का भी कल्याण कर देता है।

ਸਫਲ ਜੀਵਨੁ ਸਫਲੁ ਤਾ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥
उसका जीवन सफल हो जाता है और उसकी संगति दूसरों की कामनाएँ पूर्ण करती हैं,

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥
जिसके हृदय में ईश्वर का प्रेम बन जाता है।

ਜੈ ਜੈ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ॥
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
उसकी जय, जय है, जिसके लिए अनहद ध्वनि होती है।

ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਅਨਦ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਗਾਜੈ ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥
जिसे सुनकर वह हर्षित होता है और प्रभु की महिमा की मुनादी करता है।

ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਮਹਾਂਤ ਕੈ ਮਾਥੇ ॥
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥
ऐसे महापुरुषों के मस्तक पर परमात्मा प्रगट होता है।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਤਿਨ ਕੈ ਸਾਥੇ ॥੩॥
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥
हे नानक ! ऐसे महापुरुष की संगति करने से बहुत सारे लोगों का उद्धार हो जाता है॥ ३॥

ਸਰਨਿ ਜੋਗੁ ਸੁਨਿ ਸਰਨੀ ਆਏ ॥
सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
हे भगवान ! यह सुनकर कि तू जीवों को शरण देने में समर्थ है, अतः हम तेरी शरण में आए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਪ ਮਿਲਾਏ ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
प्रभु ने दया करके हमें अपने साथ मिला लिया है।

ਮਿਟਿ ਗਏ ਬੈਰ ਭਏ ਸਭ ਰੇਨ ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अब हमारे वैर मिट गए हैं और हम सबकी चरण-धूलि हो गए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਲੈਨ ॥
अम्रित नामु साधसंगि लैन ॥
साध संगत से नाम-अमृत लेने वाले हुए हैं।

ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਭਏ ਗੁਰਦੇਵ ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
गुरुदेव हम पर सुप्रसन्न हो गए हैं और

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਕੀ ਸੇਵ ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
सेवक की सेवा सफल हो गई है।

ਆਲ ਜੰਜਾਲ ਬਿਕਾਰ ਤੇ ਰਹਤੇ ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
हम सांसारिक धंधों एवं विकारों से बच गए हैं,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੁਨਿ ਰਸਨਾ ਕਹਤੇ ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥
राम का नाम सुनकर और अपनी जीभ से इसको उच्चरित करने से।

ਕਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦੁ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
भगवान ने कृपा करके (हम पर) यह दया की है और

ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੀ ਖੇਪ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥
हे नानक ! हमारा किया हुआ परिश्रम प्रभु-दरबार में सफल हो गया है ॥४॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਸੰਤ ਮੀਤ ॥
प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
हे संत मित्रो ! प्रभु की महिमा-स्तुति

ਸਾਵਧਾਨ ਏਕਾਗਰ ਚੀਤ ॥
सावधान एकागर चीत ॥
सावधान एवं एकाग्रचित होकर करो।

ਸੁਖਮਨੀ ਸਹਜ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨ ਨਾਮ ॥
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
सुखमनी में सहज सुख एवं गोविन्द की महिमा एवं नाम है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁ ਹੋਤ ਨਿਧਾਨ ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥
जिसके मन में यह बसती है, वह धनवान बन जाता है।

ਸਰਬ ਇਛਾ ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ॥
सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
उसकी तमाम मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਗਟੁ ਸਭ ਲੋਇ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥
वह प्रधान पुरुष बन जाता है और सारी दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਪਾਏ ਅਸਥਾਨੁ ॥
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
वह सर्वोच्च निवास पा लेता है।

ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਵੈ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥
उसे पुनः जीवन-मृत्यु का चक्र नहीं पड़ता।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟਿ ਚਲੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
वह मनुष्य हरि नामरूपी धन प्राप्त करके दुनिया से चला जाता है

ਨਾਨਕ ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੫॥
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥
हे नानक ! जिस इन्सान को (सुखमनी) यह देन (ईश्वर से) मिलती है ॥५॥

ਖੇਮ ਸਾਂਤਿ ਰਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ॥
खेम सांति रिधि नव निधि ॥
सहज सुख, शांति, रिद्धियां, नवनिधियां,

ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਸਰਬ ਤਹ ਸਿਧਿ ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥
बुद्धि, ज्ञान एवं सर्व सिद्धियों उस प्राणी को मिलती हैं,

ਬਿਦਿਆ ਤਪੁ ਜੋਗੁ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਨੁ ॥
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
विद्या, तपस्या, योग, प्रभु का ध्यान,

ਗਿਆਨੁ ਸ੍ਰੇਸਟ ਊਤਮ ਇਸਨਾਨੁ ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥
श्रेष्ठ ज्ञान, उत्तम स्नान,

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਕਮਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), हृदय कमल का खिलना,

ਸਭ ਕੈ ਮਧਿ ਸਗਲ ਤੇ ਉਦਾਸ ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सब में रहते हुए सबसे तटस्थ रहना,

ਸੁੰਦਰੁ ਚਤੁਰੁ ਤਤ ਕਾ ਬੇਤਾ ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
सुन्दरता, बुद्धिमत्ता एवं तत्ववेत्ता,

ਸਮਦਰਸੀ ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟੇਤਾ ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
समदर्शी एवं एक दृष्टि से ईश्वर को देखना,

ਇਹ ਫਲ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਮੁਖਿ ਭਨੇ ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
हे नानक ! ये तमाम फल उसे मिलते हैं,

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਚਨ ਮਨਿ ਸੁਨੇ ॥੬॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥
जो अपने मुंह से (सुखमनी) सुखों की मणि का जाप करता है और गुरु के वचन तथा प्रभु के नाम की महिमा मन लगाकर सुनता है॥ ६॥

ਇਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਪੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥
इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
जो भी जीव इस गुणों के भण्डार का हृदय से जाप करता है,

ਸਭ ਜੁਗ ਮਹਿ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥
उसकी समस्त युगों में गति हो जाती है।

ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ ਧੁਨਿ ਬਾਣੀ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
यह वाणी गोबिन्द का यश एवं नाम की ध्वनि है,

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਬੇਦ ਬਖਾਣੀ ॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥
जिस बारे स्मृतियों, शास्त्र एवं वेद वर्णन करते हैं।

ਸਗਲ ਮਤਾਂਤ ਕੇਵਲ ਹਰਿ ਨਾਮ ॥
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥
समस्त मतों (धर्मों) का सारांश भगवान का नाम ही है।

ਗੋਬਿੰਦ ਭਗਤ ਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
इस नाम का निवास गोविन्द के भक्त के हृदय में होता है।

ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟੈ ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
करोड़ों ही अपराध संतों की संगति करने से नाश हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੈ ॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥
संतों की कृपा से जीव यमों से छूट जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਕਰਮ ਪ੍ਰਭਿ ਪਾਏ ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति के मस्तक पर ईश्वर ने भाग्य लिख दिया है,

ਸਾਧ ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਤੇ ਆਏ ॥੭॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥
वही व्यक्ति साधु की शरण में आता है ॥७॥

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਸੁਨੈ ਲਾਇ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
जिस पुरुष के हृदय में (सुखमनी) निवास करती है और जो इसे प्रेमपूर्वक सुनता है,

ਤਿਸੁ ਜਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੀਤਿ ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
वही हरि-प्रभु को स्मरण करता है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਤਾ ਕਾ ਦੂਖੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥
उसके जन्म-मरण के दुःख नाश हो जाते हैं।

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਤਤਕਾਲ ਉਧਾਰੈ ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥
वह इस दुर्लभ शरीर को तत्काल विकारों से बचा लेता है।

ਨਿਰਮਲ ਸੋਭਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤਾ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥
निरमल सोभा अम्रित ता की बानी ॥
उसकी शोभा निर्मल है एवं उसकी वाणी अमृत रूप होती है।

ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਮਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਨੀ ॥
एकु नामु मन माहि समानी ॥
एक ईश्वर का नाम ही उसके मन में समाया रहता है।

ਦੂਖ ਰੋਗ ਬਿਨਸੇ ਭੈ ਭਰਮ ॥
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥
दुःख, रोग, भय एवं दुविधा उससे दूर हो जाते हैं।

ਸਾਧ ਨਾਮ ਨਿਰਮਲ ਤਾ ਕੇ ਕਰਮ ॥
साध नाम निरमल ता के करम ॥
उसका नाम साधु हो जाता है और उसके कर्म पवित्र होते हैं।

ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਤਾ ਕੀ ਸੋਭਾ ਬਨੀ ॥
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥
उसकी शोभा सर्वोच्च हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਇਹ ਗੁਣਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਮਨੀ ॥੮॥੨੪॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥
हे नानक ! इन गुणों के कारण (ईश्वर की) इस वाणी का नाम सुखमनी है ॥८॥२४॥

ਥਿਤੀ ਗਉੜੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
थिती गउड़ी महला ५ ॥
थिती गउड़ी महला ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ॥
इस विश्व का रचयिता परमात्मा जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है।

ਅਨਿਕ ਭਾਂਤਿ ਹੋਇ ਪਸਰਿਆ ਨਾਨਕ ਏਕੰਕਾਰੁ ॥੧॥
अनिक भांति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ॥१॥
हे नानक ! सबका मालिक एक प्रभु अनेक प्रकार से सारे विश्व में फैला हुआ है ॥१॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਏਕਮ ਏਕੰਕਾਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਉ ਬੰਦਨਾ ਧਿਆਇ ॥
एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥
एकम- ईश्वर एक है और उस एक प्रभु की ही वंदना करो और उसे ही स्मरण करना चाहिए।

ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਿ ਪਰਉ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥
उस गोविन्द गोपाल का यशोगान करो एवं अकाल पुरुष की शरण लो।

ਤਾ ਕੀ ਆਸ ਕਲਿਆਣ ਸੁਖ ਜਾ ਤੇ ਸਭੁ ਕਛੁ ਹੋਇ ॥
ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥
मोक्ष एवं सुख पाने के लिए उसमें अपनी आशा रखो, जिसके हुक्म से सब कुछ होता है।

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਦਹ ਦਿਸਿ ਭ੍ਰਮਿਓ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
चारि कुंट दह दिसि भ्रमिओ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
मैंने चारों कोनों एवं दसों दिशाओं में भटक कर देख लिया है, उस (प्रभु-परमेश्वर) के अलावा दूसरा कोई (रक्षक) नहीं है।

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸੁਨੇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਰਉ ਬੀਚਾਰੁ ॥
बेद पुरान सिम्रिति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥
"(हे जीव !) वेद, पुराण एवं स्मृतियां सुनकर मैंने उन पर बहुत विधियों से विचार किया है।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਭੈ ਹਰਨ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥
केवल निरंकार परमात्मा ही पापियों का उद्धार करने वाला, भयनाशक एवं सुखों का सागर है।

ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਦੇਨਹਾਰੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਇ ॥
दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइ ॥
प्रभु ही दाता, भोगनहार एवं देन देने वाला है। उस (प्रभु) के अलावा दूसरा कोई नहीं।

ਜੋ ਚਾਹਹਿ ਸੋਈ ਮਿਲੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੧॥
जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा की गुणस्तुति करने से मनुष्य को सब कुछ मिल जाता है, जिसकी वह अभिलाषा करता है। ॥१॥

ਗੋਬਿੰਦ ਜਸੁ ਗਾਈਐ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥
गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥
हे मेरे मित्र ! नित्य ही गोविन्द की गुणस्तुति करनी चाहिए,"

ਮਿਲਿ ਭਜੀਐ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलि भजीऐ साधसंगि मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥
साधसंगति में मिलकर उस भगवान का भजन करना चाहिए ॥१॥ रहाउ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਕਰਉ ਬੰਦਨਾ ਅਨਿਕ ਵਾਰ ਸਰਨਿ ਪਰਉ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥
ईश्वर को अनेक बार प्रणाम कर और उस प्रभु की शरण में आओ।

ਭ੍ਰਮੁ ਕਟੀਐ ਨਾਨਕ ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਮਿਟਾਇ ॥੨॥
भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ ॥२॥
हे नानक ! साध संगत करने से दुनिया का मोह व द्वैतवाद मिट जाता है और तमाम भ्रम नाश हो जाते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਦੁਤੀਆ ਦੁਰਮਤਿ ਦੂਰਿ ਕਰਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਨੀਤ ॥
दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥
द्वितीय- अपनी मंदबुद्धि को त्याग कर सदैव ही गुरु की सेवा करनी चाहिए।

ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸੈ ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੀਤ ॥
राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥
हे मित्र ! काम, क्रोध एवं लालच त्याग देने से राम नाम रूपी रत्न तेरी आत्मा एवं शरीर में आ बसेगा।

ਮਰਣੁ ਮਿਟੈ ਜੀਵਨੁ ਮਿਲੈ ਬਿਨਸਹਿ ਸਗਲ ਕਲੇਸ ॥
मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि सगल कलेस ॥
तेरा मरण मिट जाएगा और जीवन मिल जाएगा तथा तेरे तमाम दुःख-क्लेश नाश हो जाएँगे।

ਆਪੁ ਤਜਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਹੁ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਪਰਵੇਸ ॥
आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥
अपना अहंकार त्यागकर गोविन्द का भजन करो, प्रभु की भक्ति मन में प्रवेश कर जाएगी।

ਲਾਭੁ ਮਿਲੈ ਤੋਟਾ ਹਿਰੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਤਿਵੰਤ ॥
लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवंत ॥
तुझे लाभ प्राप्त होगा और कोई नुक्सान नहीं होगा एवं ईश्वर के दरबार में मान-सम्मान मिलेगा।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਚਵੈ ਸਾਚ ਸਾਹ ਭਗਵੰਤ ॥
राम नाम धनु संचवै साच साह भगवंत ॥
जो व्यक्ति राम नाम रूपी धन एकत्र करता है वही व्यक्ति सच्चा साहूकार एवं भाग्यवान है।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਭਜਹੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਪਰੀਤਿ ॥
ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥
उठते-बैठते हरि का भजन करो एवं सत्संगति में प्रेम उत्पन्न करो।

ਨਾਨਕ ਦੁਰਮਤਿ ਛੁਟਿ ਗਈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬਸੇ ਚੀਤਿ ॥੨॥
नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति ॥२॥
हे नानक ! जब पारब्रह्म प्रभु मनुष्य के हृदय में बस जाता है तो उसकी दुर्बुद्धि नाश हो जाती है॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਤੀਨਿ ਬਿਆਪਹਿ ਜਗਤ ਕਉ ਤੁਰੀਆ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥
तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥
माया के तीण गुण दुनिया को बड़ा दुःखी कर रहे हैं, लेकिन कोई विरला पुरुष ही तुरीय अवस्था को पाता है।

ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਨਿਰਮਲ ਭਏ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੩॥
नानक संत निरमल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥३॥
हे नानक ! जिनके हृदय में प्रभु-परमेश्वर निवास करता है, वह संत पवित्र-पावन हो जाते हैं ॥३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਬਿਖੈ ਫਲ ਕਬ ਉਤਮ ਕਬ ਨੀਚੁ ॥
त्रितीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥
तृतीय- माया के तीन गुणों वाले मनुष्य (विषय-विकारों के) विष को फल के तौर पर एकत्रित करते हैं। कभी वे भले हैं और कभी वे बुरे हैं।

ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਭ੍ਰਮਤਉ ਘਣੋ ਸਦਾ ਸੰਘਾਰੈ ਮੀਚੁ ॥
नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥
वह नरक-स्वर्ग में अधिकतर भटकते हैं और मृत्यु सदैव ही उनका संहार करती है।

ਹਰਖ ਸੋਗ ਸਹਸਾ ਸੰਸਾਰੁ ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬਿਹਾਇ ॥
हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥
दुनिया के हर्ष, शोक एवं दुविधा के चक्र में फँसे हुए वह अपना अमूल्य जीवन अहंकार करते हुए बिता देते हैं।

ਜਿਨਿ ਕੀਏ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਚਿਤਵਹਿ ਅਨਿਕ ਉਪਾਇ ॥
जिनि कीए तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥
जिस ईश्वर ने उनको उत्पन्न किया है, उसे वे नहीं जानते और दूसरे अनेक उपाय सोचते रहते हैं।

ਆਧਿ ਬਿਆਧਿ ਉਪਾਧਿ ਰਸ ਕਬਹੁ ਨ ਤੂਟੈ ਤਾਪ ॥
आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥
लौकिक आस्वादनों के कारण प्राणी को मन एवं तन के रोग तथा दूसरे झंझट भी लगे रहते हैं, कभी इसके मन का दुःख क्लेश मिटता नहीं है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰਨ ਧਨੀ ਨਹ ਬੂਝੈ ਪਰਤਾਪ ॥
पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥
वह सर्वव्यापक पारब्रह्म-प्रभु के तेज-प्रताप को अनुभव नहीं करते।

ਮੋਹ ਭਰਮ ਬੂਡਤ ਘਣੋ ਮਹਾ ਨਰਕ ਮਹਿ ਵਾਸ ॥
मोह भरम बूडत घणो महा नरक महि वास ॥
मोह एवं दुविधा में अत्याधिक सांसारिक लोग डूब गए हैं और कुंभी नरक में वे निवास पाते हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥੩॥
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥३॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! कृपा करके मेरी रक्षा करो, चूंकि मुझे तेरी ही आशा है ॥३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਚਤੁਰ ਸਿਆਣਾ ਸੁਘੜੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ ਤਜਿਆ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥
जो मनुष्य अपना अभिमान त्याग देता है, वही चतुर, बुद्धिमान एवं गुणवान है।

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਸਟ ਸਿਧਿ ਭਜੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੪॥
चारि पदारथ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥४॥
हे नानक ! भगवान के नाम का भजन करने से संसार के चार उत्तम पदार्थ एवं आठ सिद्धियाँ मिल जाती हैं ॥४॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਚਤੁਰਥਿ ਚਾਰੇ ਬੇਦ ਸੁਨਿ ਸੋਧਿਓ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥
चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥
चतुर्थी- चारों वेद सुनकर और उनके यथार्थ को विचार कर मैंने निर्णय किया है कि

ਸਰਬ ਖੇਮ ਕਲਿਆਣ ਨਿਧਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਸਾਰੁ ॥
सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥
राम के नाम का भजन, तमाम हर्ष एवं सुखों का भण्डार है।

ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਦੁਖ ਹਰੈ ਤ੍ਰੁਟਹਿ ਅਨਿਕ ਕਲੇਸ ॥
नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥
परमेश्वर के भजन में लीन होने से नरक मिट जाता है। दुःख नाश हो जाता है और अनेक क्लेश नष्ट हो जाते हैं,

ਮੀਚੁ ਹੁਟੈ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਪਰਵੇਸ ॥
मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस ॥
आत्मिक मृत्यु मिट जाती है और प्राणी यमराज से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਭਉ ਬਿਨਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਸੈ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
भउ बिनसै अम्रितु रसै रंगि रते निरंकार ॥
निरंकार परमात्मा के प्रेम में मग्न होने से मनुष्य का भय नाश हो जाता है और वह अमृत रस पान करता है।

ਦੁਖ ਦਾਰਿਦ ਅਪਵਿਤ੍ਰਤਾ ਨਾਸਹਿ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥
दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥
ईश्वर नाम के सहारे से दुःख, दर्द एवं अपवित्रता नष्ट हो जाते हैं।

ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਖੋਜਤੇ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਗੋਪਾਲ ॥
सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥
देवते, मनुष्य एवं मुनिजन भी सुख के सागर गोपाल की खोज करते हैं।

ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਹੋਇ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਰਵਾਲ ॥੪॥
मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥४॥
हे नानक ! संतों की चरण-धूलि लेने से मन पवित्र एवं (लोक-परलोक में) मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ ४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਪੰਚ ਬਿਕਾਰ ਮਨ ਮਹਿ ਬਸੇ ਰਾਚੇ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ॥
पंच बिकार मन महि बसे राचे माइआ संगि ॥
जीव माया के मोह में ही मग्न रहता है, जिसके कारण पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) उसके हृदय में बसे रहते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲਾ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੫॥
साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥५॥
हे नानक ! किन्तु सत्संगति करने से जीव पवित्र हो जाता है और वह प्रभु के रंग में मग्न रहता है॥ ५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪੰਚਮਿ ਪੰਚ ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੇ ਜਿਹ ਜਾਨਿਓ ਪਰਪੰਚੁ ॥
पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिओ परपंचु ॥
पंचमी- संसार में वही महापुरुष सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं, जिन्होंने इस संसार के परपंच को समझ लिया है।

ਕੁਸਮ ਬਾਸ ਬਹੁ ਰੰਗੁ ਘਣੋ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਬਲਬੰਚੁ ॥
कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिआ बलबंचु ॥
पुष्पों की अधिक सुगन्धि एवं अनेक रंगों की भाँति समस्त छल-कपट झूठे हैं।

ਨਹ ਜਾਪੈ ਨਹ ਬੂਝੀਐ ਨਹ ਕਛੁ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ॥
नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥
मनुष्य देखता नहीं, वह यथार्थ को समझता नहीं, न ही वह थोड़ा-सा भी विचार करता है।

ਸੁਆਦ ਮੋਹ ਰਸ ਬੇਧਿਓ ਅਗਿਆਨਿ ਰਚਿਓ ਸੰਸਾਰੁ ॥
सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ संसारु ॥
दुनिया आस्वादनों, मोह, रस में बंधी रहती है और अज्ञान में लीन रहती है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਣ ਕੀਨੇ ਕਰਮ ਅਨੇਕ ॥
जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥
जो मनुष्य अनेक कर्म करते हैं वे जन्म मरण के चक्र में पड़ते हैं और अनेक योनियों में भटकते रहते हैं

ਰਚਨਹਾਰੁ ਨਹ ਸਿਮਰਿਓ ਮਨਿ ਨ ਬੀਚਾਰਿ ਬਿਬੇਕ ॥
रचनहारु नह सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥
परन्तु करतार की आराधना नहीं करते और जिनके हृदय में विचार कर (भले बुरे काम की) परख नहीं है ।

ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਲਿਪਤ ਨ ਰੰਚ ॥
भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥
जो व्यक्ति भगवान की भक्ति तथा भगवान में श्रद्धा धारण करते हैं, उनके साथ माया बिल्कुल लिप्त नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਬਿਰਲੇ ਪਾਈਅਹਿ ਜੋ ਨ ਰਚਹਿ ਪਰਪੰਚ ॥੫॥
नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥५॥
हे नानक ! दुनिया में विरले इन्सान ही मिलते हैं जो दुनिया के परपंच में नहीं फंसते ॥५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਖਟ ਸਾਸਤ੍ਰ ਊਚੌ ਕਹਹਿ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥

खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥

षट्शास्त्र उच्च स्वर से पुकारते हुए कहते हैं कि भगवान की महिमा का अन्त नहीं मिल सकता तथा उसके अस्तित्व का ओर-छोर नहीं पाया जा सकता।

ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਗੁਣ ਗਾਵਤੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਦੁਆਰ ॥੬॥

भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥६॥

हे नानक ! भगवान के भक्त भगवान के द्वार पर उसका गुणानुवाद करते हुए अति सुन्दर लगते हैं।॥ ६॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਖਸਟਮਿ ਖਟ ਸਾਸਤ੍ਰ ਕਹਹਿ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਕਥਹਿ ਅਨੇਕ ॥

खसटमि खट सासत्र कहहि सिम्रिति कथहि अनेक ॥

षष्ठी- षट्शास्त्र कहते हैं, अनेक स्मृतियाँ भी कथन करती हैं कि

ਊਤਮੁ ਊਚੌ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਣ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸੇਖ ॥
ऊतमु ऊचौ पारब्रहमु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥
भगवान बड़ा महान एवं सर्वोपरि है, जिसकी महिमा का अन्त अनेकों शेषनाग भी नहीं जान सकते।

ਨਾਰਦ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੁਕ ਬਿਆਸ ਜਸੁ ਗਾਵਤ ਗੋਬਿੰਦ ॥
नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥
नारद मुनि, मुनिजन, शुकदेव एवं व्यास भी गोविन्द की महिमा का गायन करते हैं।

ਰਸ ਗੀਧੇ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬੀਧੇ ਭਗਤ ਰਚੇ ਭਗਵੰਤ ॥
रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥
ईश्वर के भक्त उसके नाम-रस में भीगे रहते हैं, उसके स्मरण में ओत-प्रोत रहते हैं और भगवान के भजन में लीन रहते हैं।

ਮੋਹ ਮਾਨ ਭ੍ਰਮੁ ਬਿਨਸਿਓ ਪਾਈ ਸਰਨਿ ਦਇਆਲ ॥
मोह मान भ्रमु बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥
दया के घर भगवान की शरण लेने से मोह, अभिमान एवं दुविधा नाश हो जाते हैं।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸੇ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਲ ॥
चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥
जिनके मन तथा तन में ईश्वर के सुन्दर चरण बस गए, ईश्वर के दर्शन करके वे कृतार्थ हो जाते हैं।

ਲਾਭੁ ਮਿਲੈ ਤੋਟਾ ਹਿਰੈ ਸਾਧਸੰਗਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
लाभु मिलै तोटा हिरै साधसंगि लिव लाइ ॥
साध संगत द्वारा ईश्वर चरणों में सुरति लगाकर लाभ प्राप्त किया जाता है।

ਖਾਟਿ ਖਜਾਨਾ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਹਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੬॥
खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥६॥
हे नानक ! नाम का ध्यान करके गुणों के भण्डार भगवान का नाम रूपी भण्डार उपलब्ध कर लो ॥६॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਸੰਤ ਮੰਡਲ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਥਹਿ ਬੋਲਹਿ ਸਤਿ ਸੁਭਾਇ ॥
संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥
संतों की गण्डली हमेशा ही भगवान का यश कथन करती रहती है और सहज स्वभाव सत्य ही बोलती रहती है।

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖੀਐ ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੭॥
नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥७॥
हे नानक ! एक ईश्वर में सुरति लगाने से मन संतुष्ट हो जाता है।॥ ७॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਪਤਮਿ ਸੰਚਹੁ ਨਾਮ ਧਨੁ ਟੂਟਿ ਨ ਜਾਹਿ ਭੰਡਾਰ ॥
सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥
सप्तमी-प्रभु का नाम रूपी धन संचित करो, क्योंकि नाम-धन का भण्डार कभी समाप्त नहीं होता।

ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਪਾਈਐ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥
"(यह नाम धन) संतों की संगति करने से ही प्राप्त होता है, जिस प्रभु के गुणों का कोई अन्त नहीं, जिसके स्वरूप का ओर-छोर नहीं मिलता।

ਆਪੁ ਤਜਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਭਜਹੁ ਸਰਨਿ ਪਰਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥
हे जिज्ञासुओ ! अपना अहंकार त्याग कर भगवान का भजन करते रहो और उस प्रभु की शरण में ही आओ।

ਦੂਖ ਹਰੈ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥
दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥
भगवान की शरण में आने से दुख दूर हो जाते हैं, भवसागर भी पार हो जाता है तथा

ਆਠ ਪਹਰ ਮਨਿ ਹਰਿ ਜਪੈ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥
आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥
जो मनुष्य दिन-रात अपने मन में ईश्वर का नाम-सिमरन करता है, उसका जन्म सफल हो जाता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਕਰਨੈਹਾਰੁ ਪਛਾਣੁ ॥
अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥
जो परमेश्वर (प्रत्येक जीव के)भीतर -बाहर सदैव साथ है, वह कर्तार प्रभु उस मनुष्य का मित्र बन जाता है।

ਸੋ ਸਾਜਨੁ ਸੋ ਸਖਾ ਮੀਤੁ ਜੋ ਹਰਿ ਕੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥
सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥
हे जीव ! जो व्यक्ति (हमें) भगवान का नाम जपने का उपदेश देता है, वही हमारा वास्तविक मित्र, सखा एवं साथी है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇਇ ॥੭॥
नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥७॥
हे नानक ! जो पुरुष हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ ॥७॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਨ ਗਾਈਅਹਿ ਤਜੀਅਹਿ ਅਵਰਿ ਜੰਜਾਲ ॥
आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥
यदि हम आठों प्रहर भगवान की महिमा- स्तुति करते रहें और दूसरे तमाम बन्धन त्याग दें तो

ਜਮਕੰਕਰੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੂ ਦਇਆਲ ॥੮॥
जमकंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥८॥
हे नानक ! भगवान प्रसन्न होकर दया के घर में आ जाता है तथा यमदूत भी दृष्टि नहीं कर सकता ॥८॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਅਸਟਮੀ ਅਸਟ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ॥
असटमी असट सिधि नव निधि ॥
अष्टमी- आठ सिद्धियाँ, नौ निधियाँ,

ਸਗਲ ਪਦਾਰਥ ਪੂਰਨ ਬੁਧਿ ॥
सगल पदारथ पूरन बुधि ॥
समस्त बहुमूल्य पदार्थ, पूर्ण बुद्धि,

ਕਵਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ਸਦਾ ਆਨੰਦ ॥
कवल प्रगास सदा आनंद ॥
हृदय कमल का प्रकाश, सदैव आनंद,

ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ਨਿਰੋਧਰ ਮੰਤ ॥
निरमल रीति निरोधर मंत ॥
पवित्र जीवन आचरण, अचूक उपदेश,

ਸਗਲ ਧਰਮ ਪਵਿਤ੍ਰ ਇਸਨਾਨੁ ॥
सगल धरम पवित्र इसनानु ॥
समस्त धर्म (गुण), पवित्र स्नान एवं

ਸਭ ਮਹਿ ਊਚ ਬਿਸੇਖ ਗਿਆਨੁ ॥
सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥
सर्वोच्च तथा श्रेष्ठ ज्ञान,

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਨੁ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਸੰਗਿ ॥
हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥
पूर्ण गुरु की संगति करने से प्रभु-परमेश्वर के भजन द्वारा प्राप्त हो जाते हैं।

ਜਪਿ ਤਰੀਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੮॥
जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥८॥
हे नानक ! प्रेमपूर्वक ईश्वर का नाम-स्मरण करने से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है।॥८॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਨਾਰਾਇਣੁ ਨਹ ਸਿਮਰਿਓ ਮੋਹਿਓ ਸੁਆਦ ਬਿਕਾਰ ॥
नाराइणु नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥
जो व्यक्ति नारायण का नाम-सिमरन नहीं करता, ऐसे व्यक्ति को हमेशा विकारों के रसों ने मुग्ध किया हुआ है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਬਿਸਾਰਿਐ ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਅਵਤਾਰ ॥੯॥
नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥९॥
हे नानक ! यदि जीव भगवान का नाम भुला दे तो उसे बार-बार नरक-स्वर्ग में जन्म लेना पड़ता है॥९॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਨਉਮੀ ਨਵੇ ਛਿਦ੍ਰ ਅਪਵੀਤ ॥
नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥
नवमी- शरीर की नौ इन्द्रियाँ (नाक-कान इत्यादि) अपवित्र रहती हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਹਿ ਕਰਤ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥
हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥
जीव प्रभु का नाम स्मरण नहीं करते और विपरीत कर्म करते रहते हैं।

ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਰਮਹਿ ਬਕਹਿ ਸਾਧ ਨਿੰਦ ॥
पर त्रिअ रमहि बकहि साध निंद ॥
ईश्वर के नाम-स्मरण से विहीन मनुष्य पराई नारियाँ भोगते हैं और साधुओं की निन्दा करते रहते हैं और

ਕਰਨ ਨ ਸੁਨਹੀ ਹਰਿ ਜਸੁ ਬਿੰਦ ॥
करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥
अपने कानों से तनिक मात्र भी भगवान का यश नहीं सुनते।

ਹਿਰਹਿ ਪਰ ਦਰਬੁ ਉਦਰ ਕੈ ਤਾਈ ॥
हिरहि पर दरबु उदर कै ताई ॥
वे अपना पेट भरने के लिए पराया धन चुराते रहते हैं।

ਅਗਨਿ ਨ ਨਿਵਰੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨ ਬੁਝਾਈ ॥
अगनि न निवरै त्रिसना न बुझाई ॥
फिर भी उनकी लालच की अग्नि तृप्त नहीं होती और न ही उनकी तृष्णा दूर होती है।

ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ਏਹ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥
हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥
प्रभु की भक्ति के बिना उनके तमाम प्रयासों को ऐसे फल ही लगते हैं।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰਤ ਮਰਿ ਜਮਹਿ ਅਭਾਗੇ ॥੯॥
नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥९॥
हे नानक ! भगवान को भुलाकर भाग्यहीन लोग आवागमन के चक्र में फंसे रहते हैं ॥९॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਦਸ ਦਿਸ ਖੋਜਤ ਮੈ ਫਿਰਿਓ ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਸੋਇ ॥
दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥
मैं दसों दिशाओं में ही खोज रहा हूँ। लेकिन जिधर कहीं भी देखता हूँ, उधर ही भगवान को मैं पाता हूँ।

ਮਨੁ ਬਸਿ ਆਵੈ ਨਾਨਕਾ ਜੇ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾ ਹੋਇ ॥੧੦॥
मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥१०॥
हे नानक ! मनुष्य का मन वश में तभी आता है, यदि परमेश्वर उस पर पूर्ण कृपा करता है ॥१०॥"

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਦਸਮੀ ਦਸ ਦੁਆਰ ਬਸਿ ਕੀਨੇ ॥
दसमी दस दुआर बसि कीने ॥
दसमी- जो मनुष्य अपनी दसों इन्दियों (पाँच ज्ञान एवं पाँच कर्म इन्द्रियां) को वश में कर लेता है,

ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਨਾਮ ਜਪਿ ਲੀਨੇ ॥
मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥
परमात्मा का नाम जपने से उसके मन में संतोष उत्पन्न हो जाता है।

ਕਰਨੀ ਸੁਨੀਐ ਜਸੁ ਗੋਪਾਲ ॥
करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥
अपने कानों से गोपाल का यश सुनो।

ਨੈਨੀ ਪੇਖਤ ਸਾਧ ਦਇਆਲ ॥
नैनी पेखत साध दइआल ॥
अपने नेत्रों से दयालु संतों को देखो।

ਰਸਨਾ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਬੇਅੰਤ ॥
रसना गुन गावै बेअंत ॥
अपनी जिह्वा से अनन्त परमात्मा की गुणस्तुति करो।

ਮਨ ਮਹਿ ਚਿਤਵੈ ਪੂਰਨ ਭਗਵੰਤ ॥
मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥
अपने हृदय में पूर्ण भगवान का चिन्तन करो।

ਹਸਤ ਚਰਨ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕਮਾਈਐ ॥
हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥
अपने हाथों एवं चरणों से साधुओं की सेवा करो।

ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਸੰਜਮੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਪਾਈਐ ॥੧੦॥
नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥१०॥
हे नानक ! यह जीवन-आचरण ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होता है ॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਏਕੋ ਏਕੁ ਬਖਾਨੀਐ ਬਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ਸ੍ਵਾਦੁ ॥
एको एकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥
केवल एक ईश्वर की महिमा का ही बखान करना चाहिए, ऐसे स्वाद को कोई विरला पुरुष ही जानता है।

ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਜਾਣੀਐ ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥੧੧॥
गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभु बिसमादु ॥११॥
गोबिन्द की महिमा को जाना नहीं जा सकता। हे नानक ! वह तो बहुत अद्भुत रूप है ॥११॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਏਕਾਦਸੀ ਨਿਕਟਿ ਪੇਖਹੁ ਹਰਿ ਰਾਮੁ ॥
एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥
एकादशी-प्रभु-परमेश्वर को सदैव निकट देखी।

ਇੰਦ੍ਰੀ ਬਸਿ ਕਰਿ ਸੁਣਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥
इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥
अपनी इन्द्रियों को वश में करके प्रभु का नाम सुनो।

ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰਬ ਜੀਅ ਦਇਆ ॥
मनि संतोखु सरब जीअ दइआ ॥
जो व्यक्ति अपने मन में संतोष धारण करता है और समस्त जीवों के साथ दया करता है,

ਇਨ ਬਿਧਿ ਬਰਤੁ ਸੰਪੂਰਨ ਭਇਆ ॥
इन बिधि बरतु स्मपूरन भइआ ॥
इस विधि से उसका व्रत सफल हो जाता है।

ਧਾਵਤ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਇਕ ਠਾਇ ॥
धावत मनु राखै इक ठाइ ॥
ऐसा करके वह अपने भागते हुए मन को स्थिर करके रखता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੁਧੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
मनु तनु सुधु जपत हरि नाइ ॥
भगवान के नाम का जाप करने से मन एवं शरीर शुद्ध हो जाते हैं।

ਸਭ ਮਹਿ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥
सभ महि पूरि रहे पारब्रहम ॥
भगवान दुनिया में हर जगह मौजूद है,

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਿ ਅਟਲ ਏਹੁ ਧਰਮ ॥੧੧॥
नानक हरि कीरतनु करि अटल एहु धरम ॥११॥
इसलिए हे नानक ! भगवान का कीर्तन हरदम करते रहो चूंकि यही एक अटल धर्म है॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਦੁਰਮਤਿ ਹਰੀ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਭੇਟੇ ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल ॥
कृपा के घर संतों को मिलने एवं उनकी सेवा करने से दुर्मति मिट जाती है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਜੰਜਾਲ ॥੧੨॥
नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥१२॥
हे नानक ! जो लोग प्रभु के साथ मिले रहते हैं, उनके हर प्रकार के बन्धन नाश हो जाते हैं। १२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਦੁਆਦਸੀ ਦਾਨੁ ਨਾਮੁ ਇਸਨਾਨੁ ॥
दुआदसी दानु नामु इसनानु ॥
द्वादशी- दान-पुण्य करो, ईश्वर का नाम-सिमरन करो और जीवन पवित्र रखो।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਤਜਿ ਮਾਨੁ ॥
हरि की भगति करहु तजि मानु ॥
अपना अभिमान त्याग कर भगवान की भक्ति करते रहो।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਾਨ ਕਰਹੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ॥
हरि अम्रित पान करहु साधसंगि ॥
संतों की संगति में शामिल होकर हरि नाम रूपी अमृत का पान करो।

ਮਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੈ ਕੀਰਤਨ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ॥
मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रंगि ॥
प्रेमपूर्वक प्रभु का कीर्तन करने से मन तृप्त हो जाता है।

ਕੋਮਲ ਬਾਣੀ ਸਭ ਕਉ ਸੰਤੋਖੈ ॥
कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥
मधुर वाणी हर किसी को संतोष प्रदान करती है।

ਪੰਚ ਭੂ ਆਤਮਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਪੋਖੈ ॥
पंच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥
पंचभूतक आत्मा हरि-नाम रूपी रस से आनंदित हो जाती है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਏਹ ਨਿਹਚਉ ਪਾਈਐ ॥
गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ ॥
पूर्ण गुरु द्वारा यह निश्चय ही मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਰਮਤ ਫਿਰਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਈਐ ॥੧੨॥
नानक राम रमत फिरि जोनि न आईऐ ॥१२॥
हे नानक ! राम का नाम-सिमरन करने से जीव फिर से योनियों में नहीं आता ॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਮਹਿ ਬਿਆਪਿਆ ਪੂਰਨ ਹੋਤ ਨ ਕਾਮ ॥
तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥
दुनिया माया के तीन गुणों के दबाव में फँसी रहती है, इसलिए उसके कार्य पूर्ण नहीं होते।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੁ ਮਨਿ ਬਸੈ ਨਾਨਕ ਛੂਟੈ ਨਾਮ ॥੧੩॥
पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥१३॥
हे नानक ! वही प्राणी मोक्ष प्राप्त करता है, जिसके हृदय में पतितों का उद्धार करने वाला ईश्वर का नाम बस जाता है ॥१३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤ੍ਰਉਦਸੀ ਤੀਨਿ ਤਾਪ ਸੰਸਾਰ ॥
त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥
त्रयोदशी- यह संसार तीन गुणों के ताप से दुःखी पड़ा हुआ है।

ਆਵਤ ਜਾਤ ਨਰਕ ਅਵਤਾਰ ॥
आवत जात नरक अवतार ॥
जिससे यह जन्म-मरण के चक्र में पड़कर नरक में जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਜਨੁ ਨ ਮਨ ਮਹਿ ਆਇਓ ॥
हरि हरि भजनु न मन महि आइओ ॥
प्रभु-परमेश्वर का भजन इसके मन में प्रवेश नहीं करता।

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਮਖ ਨ ਗਾਇਓ ॥
सुख सागर प्रभु निमख न गाइओ ॥
सुखों के सागर प्रभु की महिमा मनुष्य एक क्षण भर के लिए भी नहीं करता।

ਹਰਖ ਸੋਗ ਕਾ ਦੇਹ ਕਰ�ि ਬਾਧਿਓ ॥
हरख सोग का देह करि बाधिओ ॥
हर्ष एवं शोक का यह शरीर पुतला है।

ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ਮਾਇਆ ਆਸਾਧਿਓ ॥
दीरघ रोगु माइआ आसाधिओ ॥
इसे माया का दीर्घ एवं असाध्य रोग लगा हुआ है।

ਦਿਨਹਿ ਬਿਕਾਰ ਕਰਤ ਸ੍ਰਮੁ ਪਾਇਓ ॥
दिनहि बिकार करत स्रमु पाइओ ॥
वह दिन रात विकारों का कार्य करता है और हार थक जाता है।

ਨੈਨੀ ਨੀਦ ਸੁਪਨ ਬਰੜਾਇਓ ॥
नैनी नीद सुपन बरड़ाइओ ॥
आँखों में नींद से वह स्वप्न में भी बातें करता है।

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਹੋਵਤ ਏਹ ਹਾਲ ॥
हरि बिसरत होवत एह हाल ॥
भगवान को भुला कर उसकी यह दशा हो जाती है।

ਸਰਨਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਦਇਆਲ ॥੧੩॥
सरनि नानक प्रभ पुरख दइआल ॥१३॥
नानक ने दया के घर प्रभु की शरण ली है ॥१३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਚਉਦਹ ਭਵਨ ਸਗਲ ਬਿਆਪਤ ਰਾਮ ॥
चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥
परमात्मा चारों दिशाओं एवं चौदह लोकों में हर जगह पर मौजूद है।

ਨਾਨਕ ਊਨ ਨ ਦੇਖੀਐ ਪੂਰਨ ਤਾ ਕੇ ਕਾਮ ॥੧੪॥
नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥१४॥
हे नानक ! उस ईश्वर के भण्डारों में कोई कमी नहीं देखी जाती, प्रभु द्वारा किए तमाम कार्य सफल होते हैं।॥१४॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਚਉਦਹਿ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਪ੍ਰਭ ਆਪ ॥
चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥
चौदश- चारों दिशाओं में ईश्वर स्वयं ही बस रहा है।

ਸਗਲ ਭਵਨ ਪੂਰਨ ਪਰਤਾਪ ॥
सगल भवन पूरन परताप ॥
सभी लोकों में उसका तेज-प्रताप चमक रहा है।

ਦਸੇ ਦਿਸਾ ਰਵਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ॥
दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥
दसों दिशाओं में एक प्रभु ही व्यापक है।

ਧਰਨਿ ਅਕਾਸ ਸਭ ਮਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪੇਖੁ ॥
धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥
धरती एवं आकाश हर स्थान पर ईश्वर को देखो।

ਜਲ ਥਲ ਬਨ ਪਰਬਤ ਪਾਤਾਲ ॥
जल थल बन परबत पाताल ॥
जल, धरती, वन, पहाड़ एवं पाताल-"

ਪਰਮੇਸ੍ਵਰ ਤਹ ਬਸਹਿ ਦਇਆਲ ॥
परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥
इन सब में दयालु परमेश्वर बस रहा है।

ਸੁਖਮ ਅਸਥੂਲ ਸਗਲ ਭਗਵਾਨ ॥
सूखम असथूल सगल भगवान ॥
गोचर एवं अगोचर समूचे जगत् में भगवान मौजूद है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਨ ॥੧੪॥
नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥१४॥
हे नानक ! गुरमुख ईश्वर को पहचान लेता है ॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ਗੁਰਮਤੀ ਗੁਣ ਗਾਏ ਗੋਬਿੰਦ ॥
आतमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥
गुरु के उपदेश द्वारा गोविन्द की गुणस्तुति करने से आत्मा को जीता जा सकता है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਭੈ ਮਿਟੇ ਨਾਨਕ ਬਿਨਸੀ ਚਿੰਦ ॥੧੫॥
संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥१५॥
हे नानक ! संतों की कृपा से भय मिट जाता है और संशय निवृत्त हो जाता है॥ १५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਅਮਾਵਸ ਆਤਮ ਸੁਖੀ ਭਏ ਸੰਤੋਖੁ ਦੀਆ ਗੁਰਦੇਵ ॥
अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥
अमावस्या-जिस व्यक्ति को गुरुदेव ने संतोष प्रदान किया है, उसकी आत्मा सुखी हो गई है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜ ਲਾਗਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸੇਵ ॥
मनु तनु सीतलु सांति सहज लागा प्रभ की सेव ॥
"(गुरु की कृपा से) वह ईश्वर की भक्ति में लग गया है, जिससे उसका मन तन शीतल हो गया, उसके भीतर शांति एवं सहज सुख उत्पन्न हो गया।

ਟੂਟੇ ਬੰਧਨ ਬਹੁ ਬਿਕਾਰ ਸਫਲ ਪੂਰਨ ਤਾ ਕੇ ਕਾਮ ॥
टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥
जो मनुष्य प्रभु का नाम-स्मरण करते हैं, उनके विकारों के बन्धन और अनेक पाप नाश हो जाते हैं।

ਦੁਰਮਤਿ ਮਿਟੀ ਹਉਮੈ ਛੁਟੀ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥
दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥
उसके तमाम कार्य सफल एवं सम्पूर्ण हो जाते हैं, उनकी दुर्बुद्धि नाश हो जाती है और उनका अहंकार निवृत्त हो जाता है।

ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਮਿਟਿਆ ਆਵਾ ਗਵਨ ॥
सरनि गही पारब्रहम की मिटिआ आवा गवन ॥
परब्रह्म की शरण लेने से मनुष्य का जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है।

ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਕੁਟੰਬ ਸਿਉ ਗੁਣ ਗੁਬਿੰਦ ਪ੍ਰਭ ਰਵਨ ॥
आपि तरिआ कुट्मब सिउ गुण गुबिंद प्रभ रवन ॥
गोबिन्द प्रभु की महिमा-स्तुति के कारण वह अपने कुटुंब सहित (भवसागर से) पार हो जाता है।

ਹਰਿ ਕੀ ਟਹਲ ਕਮਾਵਣੀ ਜਪੀਐ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਮੁ ॥
हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥
हे जीव ! ईश्वर की भक्ति ही करनी चाहिए और भगवान के नाम का जाप करना चाहिए।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਬਿਸ੍ਰਾਮੁ ॥੧੫॥
गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥१५॥
हे नानक ! सर्व सुखों का मूल वह परमात्मा पूर्ण गुरु के द्वारा मिलता है॥ १५॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਪੂਰਨੁ ਕਬਹੁ ਨ ਡੋਲਤਾ ਪੂਰਾ ਕੀਆ ਪ੍ਰਭ ਆਪਿ ॥
पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥
पूर्ण मनुष्य जिसे परमात्मा ने स्वयं पूर्ण किया है, वह कभी विचलित नहीं होता।

ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਚੜੈ ਸਵਾਇਆ ਨਾਨਕ ਹੋਤ ਨ ਘਾਟਿ ॥੧੬॥
दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥१६॥
हे नानक ! वह दिन-रात प्रगति करता रहता है और जीवन में असफल नहीं होता।॥१६॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪੂਰਨਮਾ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਏਕੁ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥
पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥
पूर्णिमा- केवल एक परमेश्वर ही पूर्ण है। वह सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖੁ ਸਭ ਊਪਰਿ ਜਾ ਕਾ ਹਥੁ ॥
जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥
सर्वव्यापक परमात्मा समस्त जीव-जन्तुओं पर दयालु रहता है, समस्त जीवों पर उसका रक्षा करने वाला हाथ है।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਰ ਕੀਆ ਜਾ ਕਾ ਹੋਇ ॥
गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥
गोविन्द जिसकी इच्छानुसार सब कुछ होता है, गुणों का भण्डार है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਜਾਨੁ ਅਲਖ ਨਿਰੰਜਨ ਸੋਇ ॥
अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥
वह बुद्धिमान, अदृश्य एवं निरंजन प्रभु अन्तर्यामी है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੋ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਨਣਹਾਰ ॥
पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥
पारब्रह्म-परमेश्वर समस्त विधियों को जानने वाला है।

ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਸਰਨਿ ਜੋਗੁ ਆਠ ਪਹਰ ਨਮਸਕਾਰ ॥
संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥
वह संतों का सहायक एवं शरण देने में समर्थ है। मैं सदैव उसको प्रणाम करता हूँ।

ਅਕਥ ਕਥਾ ਨਹ ਬੂਝੀਐ ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ॥

अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥

मैं हरि के सुन्दर चरणों की आराधना करता हूँ, जिसकी अकथनीय कथा जानी नहीं जा सकती।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨ ॥੧੬॥

पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥१६॥

हे नानक ! मैंने उस प्रभु की शरण ली है, जो पतितों का उद्धार करने वाला एवं अनाथों का नाथ है ॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ॥

सलोकु ॥

श्लोक॥

ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸਹਸਾ ਗਇਓ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥

दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥

जब से मैंने भगवान की शरण ली है, मेरा दुःख नाश हो गया है और दुविधा भाग गई है।

ਮਨਿ ਚਿੰਦੇ ਫਲ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥੧੭॥

मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥१७॥

हे नानक ! भगवान का यशोगान करने से मैंने मनोवांछित फल प्राप्त कर लिए हैं ॥१७॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਕੋਈ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸੁਣੈ ਕੋਈ ਕਰੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥

कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥

चाहे कोई मनुष्य भगवान के नाम का गायन करे,चाहे कोई मनुष्य भगवान का नाम सुने, चाहे कोई मनुष्य विचार करे,

ਕੋ ਉਪਦੇਸੈ ਕੋ ਦ੍ਰਿੜੈ ਤਿਸ ਕਾ ਹੋਇ ਉਧਾਰੁ ॥

को उपदेसै को द्रिड़ै तिस का होइ उधारु ॥

चाहे कोई मनुष्य उपदेश करे एवं चाहे कोई मनुष्य इसको अपने मन में दृढ़ करे, उसका उद्धार हो जाता है।

ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੈ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲਾ ਜਨਮ ਜਨਮ ਮਲੁ ਜਾਇ ॥
किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥
उसके पाप मिट जाते हैं, वह निर्मल हो जाता है और उसके जन्म-जन्मांतरों की मैल दूर हो जाती है।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਖੁ ਊਜਲਾ ਨਹ ਪੋਹੈ ਤਿਸੁ ਮਾਇ ॥
हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥
इस लोक एवं परलोक में उसका मुख उज्ज्वल होता है और माया उस पर प्रभाव नहीं करती।

ਸੋ ਸੁਰਤਾ ਸੋ ਬੈਸਨੋ ਸੋ ਗਿਆਨੀ ਧਨਵੰਤੁ ॥
सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥
वह बुद्धिमान मनुष्य है, वही वैष्णो, वही ज्ञानी एवं धनवान है,

ਸੋ ਸੂਰਾ ਕੁਲਵੰਤੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ ਭਜਿਆ ਭਗਵੰਤੁ ॥
सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥
वही शूरवीर एवं वही उच्च कुल का है, जिसने भगवान का भजन किया है।

ਖਤ੍ਰੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਸੂਦੁ ਬੈਸੁ ਉਧਰੈ ਸਿਮਰਿ ਚੰਡਾਲ ॥
खत्री ब्राहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥
क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य एवं चण्डाल जातियों वाले भी प्रभु का सिमरन करने से पार हो गए हैं।

ਜਿਨਿ ਜਾਨਿਓ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਨਾ ਨਾਨਕ ਤਿਸਹਿ ਰਵਾਲ ॥੧੭॥
जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥१७॥
नानक, उसके चरणों की धूलि है, जो अपने ईश्वर को जानता है॥ १७ ॥

ਗਉੜੀ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गउड़ी की वार महला ४ ॥
गउड़ी की वार महला ४ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਸਮਤੁ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥
महापुरुष सतिगुरु समस्त जीवों पर दयालु है, उसके लिए सभी जीव एक समान हैं।

ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰਿ ਦੇਖਦਾ ਮਨ ਭਾਵਨੀ ਤੇ ਸਿਧਿ ਹੋਇ ॥
एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥
वह सबको एक दृष्टि से देखता है परन्तु वह मन की श्रद्धा से ही पाया जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਉਤਮੁ ਹਰਿ ਪਦੁ ਸੋਇ ॥
सतिगुर विचि अम्रितु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥
सतिगुरु के भीतर नाम-अमृत बसता है। वह प्रभु की भाँति उत्तम है और हरि पद रखता है।

ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥१॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से ही भगवान का ध्यान किया जाता है, तथा विरले गुरमुख ही भगवान को प्राप्त करते हैं।॥१॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਸਭ ਬਿਖੁ ਹੈ ਨਿਤ ਜਗਿ ਤੋਟਾ ਸੰਸਾਰਿ ॥
हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥
अहंकार एवं माया समस्त विष है। उनके साथ लगकर मनुष्य इस दुनिया में सदैव नुक्सान प्राप्त करता है।

ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥
शब्द का चिन्तन करने से गुरमुख हरि-नाम रूपी धन का लाभ कमा लेता है।

ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਬਿਖੁ ਉਤਰੈ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अम्रितु हरि उर धारि ॥
हरि एवं हरि-अमृत को हृदय में वसाने से अहंकार की मैल का विष उतर जाता है।

ਸਭਿ ਕਾਰਜ ਤਿਨ ਕੇ ਸਿਧਿ ਹਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥
जिन गुरमुखों पर वह कृपा करता है, उनके तमाम कार्य सफल हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਧੁਰਿ ਮਿਲੇ ਸੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿ ॥੨॥
नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर को वही मेिले हैं, जो आदि से मिले हैं और जिन्हें दुनिया के रचयिता भगवान ने स्वयं मिलाया है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸਚਾ ਗੋਸਾਈ ॥
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥
हे मेरे सच्चे मालिक ! हे गुसाई ! तू सदैव सत्य है।

ਤੁਧੁਨੋ ਸਭ ਧਿਆਇਦੀ ਸਭ ਲਗੈ ਤੇਰੀ ਪਾਈ ॥
तुधुनो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥
सारी दुनिया तेरा ही ध्यान करती रहती है और तेरे समक्ष नतमस्तक होती है।

ਤੇਰੀ ਸਿਫਤਿ ਸੁਆਲਿਉ ਸਰੂਪ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਤਿਸੁ ਪਾਰਿ ਲਘਾਈ ॥
तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥
तेरी कीर्ति सुन्दर एवं सुन्दरता का घर है। जो भी तेरी सराहना करता है, उसे तू पार कर देता है।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਫਲੁ ਪਾਇਦਾ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥
गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥
गुरमुखों को तुम फल प्रदान करते हो और वह सत्यनाम में समा जाते हैं।

ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਵਡੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥
वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥१॥
हे मेरे महान मालिक ! तेरी महिमा महान है॥ १ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਸਲਾਹਣਾ ਸਭੁ ਬੋਲਣੁ ਫਿਕਾ ਸਾਦੁ ॥
विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥
भगवान के नाम के सिवाय केिसी अन्य की सराहना करना एवं तमाम बातचीत का स्वाद फीका है।

ਮਨਮੁਖ ਅਹੰਕਾਰੁ ਸਲਾਹਦੇ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਵਾਦੁ ॥
मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥
स्वेच्छाचारी जीव अपने अहंकार की प्रशंसा करते हैं परन्तु अहंत्व का मोह व्यर्थ है।

ਜਿਨ ਸਾਲਾਹਨਿ ਸੇ ਮਰਹਿ ਖਪਿ ਜਾਵੈ ਸਭੁ ਅਪਵਾਦੁ ॥
जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥
जिनकी वह सराहना करते हैं, वे मर जाते हैं। वह तमाम विवादों में नष्ट हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਰਮਾਨਾਦੁ ॥੧॥
जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥१॥
हे नानक ! परमानंद हरि-परमेश्वर की आराधना करके गुरमुख बच गए हैं।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦਸਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਮਨਿ ਹਰੀ ॥
सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥
हे सतिगुरु ! मुझे हरि-प्रभु की बातें सुनाइए, चूंकि मैं अपने मन में उसके नाम का ध्यान करूँ।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਵਿਤੁ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਸਭਿ ਦੁਖ ਪਰਹਰੀ ॥੨॥
नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥२॥
हे नानक ! भगवान का नाम बड़ा पावन है, इसलिए मेरी यही इच्छा है कि मैं अपने मुख से (हरि-नाम) बोलकर अपने सभी दुख समाप्त कर लूं ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੈ ਨਿਰੰਜਨ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥
हे निरंजन प्रभु ! तू स्वयं ही निरंकार है। हे सत्य परमेश्वर !

ਜਿਨੀ ਤੂ ਇਕ ਮਨਿ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕਾ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਗਵਾਇਆ ॥
जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥
जिन्होंने एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान किया है, तूने उनके तमाम दुःख नाश कर दिए हैं।

ਤੇਰਾ ਸਰੀਕੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ਜਿਸ ਨੋ ਲਵੈ ਲਾਇ ਸੁਣਾਇਆ ॥
तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥
तेरी बराबरी करने वाला कोई नहीं, जिसे पास बैठा कर मैं तेरा जिक्र करूँ।

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਤੂਹੈ ਨਿਰੰਜਨਾ ਤੂਹੈ ਸਚੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥
हे निरंजन प्रभु ! तेरे जैसा बड़ा दाता तू ही है और तू ही मेरे हृदय को प्रिय लगता है।

ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੇ ਸਚੁ ਨਾਇਆ ॥੨॥
सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥२॥
हे मेरे सच्चे मालिक ! तेरी महिमा सत्य है॥ २ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਹੈ ਭ੍ਰਮਿ ਭੂਲੇ ਮਨਮੁਖ ਦੁਰਜਨਾ ॥
मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥
जिनके अन्तर्मन में अहंकार का रोग विद्यमान है, ऐसे स्वेच्छाचारी दुर्जन जीव दुविधा में भटके हुए हैं।

ਨਾਨਕ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਧੂ ਸਜਨਾ ॥੧॥
नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥
हे नानक ! यह अहंकार का रोग सतिगुरु से मिलकर एवं साधु-सज्जनों की संगति करके निवृत किया जा सकता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਰੰਗ ਸਿਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥
गुरमुखों का मन एवं शरीर गुणों के भण्डार परमात्मा की प्रीति में मग्न रहते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਰਿ ਮੇਲੇ ਗੁਰ ਸਾਬਾਸਿ ॥੨॥
जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥२॥
हे नानक ! उसने भगवान की शरण ली है। वह गुरु धन्य हैं, जिन्होंने उसे ईश्वर से मिला दिया है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਕਿਸੁ ਨਾਲਿ ਤੂ ਵਡੀਐ ॥
तू करता पुरखु अगमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥
हे सर्वशक्तिशाली प्रभु ! तू अगम्य है, फिर मैं तेरी तुलना किससे करूं ?

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਹੋਇ ਸੁ ਆਖੀਐ ਤੁਧੁ ਜੇਹਾ ਤੂਹੈ ਪੜੀਐ ॥
तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥
यदि कोई तेरे जैसा महान हो तो मैं उसका नाम लुं। लेकिन तेरे जैसा केवल तू ही कहा जाता है।

ਤੂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗੜੀਐ ॥
तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥
"(हे नाथ !) तू प्रत्येक शरीर में मौजूद है, परन्तु यह बात उन पर प्रकट होती है जो सतिगुरु के समक्ष होते हैं।

ਤੂ ਸਚਾ ਸਭਸ ਦਾ ਖਸਮੁ ਹੈ ਸਭ ਦੂ ਤੂ ਚੜੀਐ ॥
तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥
हे प्रभु ! तू ही सत्य एवं हम सबका मालिक है और तू ही सर्वोपरि है।

ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਸਚੇ ਹੋਇਸੀ ਤਾ ਕਾਇਤੁ ਕੜੀਐ ॥੩॥
तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥३॥
हे सत्यरवरूप परमेश्वर ! यदि हमें यह विश्वस्त हो जाए कि जो कुछ तू करता है केवल वही होता है, तब हम क्यों अफसोस करें ? ॥ ३ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਪਿਰੰਮ ਕਾ ਅਠੇ ਪਹਰ ਲਗੰਨਿ ॥
मै मनि तनि प्रेमु पिरम का अठे पहर लगंनि ॥
मेरा मन एवं तन आठों प्रहर प्रियतम के प्रेम में मग्न रहे।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖਿ ਵਸੰਨਿ ॥੧॥
जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥१॥
हे नानक ! जिन पर भगवान अपनी कृपा धारण करता है, वे सतिगुरु के सुख में रहते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਰੰਮ ਕੀ ਜਿਉ ਬੋਲਨਿ ਤਿਵੈ ਸੋਹੰਨਿ ॥
जिन अंदरि प्रीति पिरम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥
जिनके अन्तर्मन में भगवान का प्रेम है, जब वह प्रभु का यशोगान करते हैं, तो वह बहुत सुन्दर लगते हैं।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜਾਣਦਾ ਜਿਨਿ ਲਾਈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਰੰਨਿ ॥੨॥
नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥
हे नानक ! जिस भगवान ने यह प्रेम लगाया है, वह स्वयं ही जानता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਹੈ ਭੁਲਣ ਵਿਚਿ ਨਾਹੀ ॥
तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥
हे विश्व के रचयिता प्रभु ! तू स्वयं अविस्मरणीय है, इसलिए कोई भूल नहीं करते।

ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਸਚੇ ਭਲਾ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਹੀ ॥
तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥
हे सच्चे ! जो कुछ तू करता है, वह शुभ करता है। गुरु के शब्द द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है।

ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥
हे प्रभु ! तू समस्त कार्य करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है। तेरे अलावा दूसरा कोई नहीं।

ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਅਗਮੁ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਧਿਆਹੀ ॥
तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही ॥
हे मेरे मालिक ! तू अगम्य एवं दया का घर है और सारी दुनिया तेरा ही ध्यान करती रहती है।

ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਸਭਸ ਦਾ ਤੂ ਸਭ ਛਡਾਹੀ ॥੪॥
सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥४॥
समस्त जीव-जन्तु तेरे हैं और तू सबका मालिक है। तू समस्त जीव-जन्तुओं को मुक्ति प्रदान करता है॥ ४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸੁਣਿ ਸਾਜਨ ਪ੍ਰੇਮ ਸੰਦੇਸਰਾ ਅਖੀ ਤਾਰ ਲਗੰਨਿ ॥
सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥
साजन प्रभु का प्रेम भरा सन्देश सुनकर जिनके नेत्र दर्शनों की आशा में लग जाते हैं,

ਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਸਜਣੁ ਮੇਲਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਵੰਨਿ ॥੧॥
गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥१॥
हे नानक ! गुरु ने प्रसन्न होकर उन्हें साजन प्रभु से मिला दिया है एवं वे सुखपूर्वक रहते हैं॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦਇਆ ਸਦਾ ਹੋਇ ॥
सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥
दाता सतिगुरु बड़े दयालु हैं। वह सदैव दया के घर में बसते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਅੰਦਰਹੁ ਨਿਰਵੈਰੁ ਹੈ ਸਭੁ ਦੇਖੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਇਕੁ ਸੋਇ ॥
सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥
सतिगुरु के हृदय में किसी के साथ शत्रुता नहीं, वह सर्वत्र एक ईश्वर को देखते रहते हैं।

ਨਿਰਵੈਰਾ ਨਾਲਿ ਜਿ ਵੈਰੁ ਚਲਾਇਦੇ ਤਿਨ ਵਿਚਹੁ ਤਿਸਟਿਆ ਨ ਕੋਇ ॥
निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥
जो प्राणी निर्वैर के साथ वैर करते हैं, उनमें से कोई सुखी नहीं होता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਭਨਾ ਦਾ ਭਲਾ ਮਨਾਇਦਾ ਤਿਸ ਦਾ ਬੁਰਾ ਕਿਉ ਹੋਇ ॥
सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥
सतिगुरु जी सबका भला चाहते हैं। उनका बुरा किस तरह हो सकता है ?

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਜੇਹਾ ਕੋ ਇਛਦਾ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ਕੋਇ ॥
सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥
जिस श्रद्धा भावना से कोई मनुष्य सतिगुरु के पास जाता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਜਿਦੂ ਕਿਛੁ ਗੁਝਾ ਨ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥२॥
हे नानक ! विश्व की रचना करने वाले परमात्मा से कोई बात छिपाई नहीं जा सकती, चूंकि वह सबकुछ जानता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਸ ਨੋ ਸਾਹਿਬੁ ਵਡਾ ਕਰੇ ਸੋਈ ਵਡ ਜਾਣੀ ॥
जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥
जिसे मालिक बड़ा महान करता है, उसे ही महान समझना चाहिए।

ਜਿਸੁ ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਬਖਸਿ ਲਏ ਸੋ ਸਾਹਿਬ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥
जिसे मालिक पसंद करता है, वह उसे क्षमा कर देता है और वह मालिक के मन में प्रिय लगता है।

ਜੇ ਕੋ ਓਸ ਦੀ ਰੀਸ ਕਰੇ ਸੋ ਮੂੜ ਅਜਾਣੀ ॥
जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥
वह (जीव-स्त्री) मूर्ख एवं बुद्धिहीन है, जो उससे तुलना करती है।

ਜਿਸ ਨੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੁ ਗੁਣ ਰਵੈ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥
जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥
जिसे सदगुरु प्रभु से मिलाते हैं वही मिलती है एवं प्रभु की गुणस्तुति करके दूसरों को सुनाती है।

ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਸਚੁ ਹੈ ਬੁਝਿ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥੫॥
नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥५॥
हे नानक ! परमात्मा सदैव सत्य है, जो इस तथ्य को समझता है, वह सत्य में ही समा जाता है। ॥ ५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਹਰਿ ਸਤਿ ਨਿਰੰਜਨ ਅਮਰੁ ਹੈ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥
भगवान सत्य है, माया से रहित है, अनश्वर, निडर, निर्वैर एवं निराकार है।

ਜਿਨ ਜਪਿਆ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਤਿਨ ਲਥਾ ਹਉਮੈ ਭਾਰੁ ॥
जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥
जो मनुष्य एकाग्रचित होकर उसका सिमरन करते हैं, वे अहंकार के भार से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥
जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥
जिन गुरमुखों ने भगवान की आराधना की है, ऐसे संतजनों को विश्व में बड़ी लोकप्रियता हासिल होती है।

ਕੋਈ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੀ ਤਿਸ ਨੋ ਫਿਟੁ ਫਿਟੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥
यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है तो उसको सारी दुनिया प्रताड़ित करती है।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਰਖਣਹਾਰੁ ॥
सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥
सतिगुरु के भीतर स्वयं भगवान बसता है और स्वयं ही उनका रक्षक है।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਗੁਣ ਗਾਵਦਾ ਤਿਸ ਨੋ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੁ ॥
धनु धंनु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥
वह गुरु धन्य ! धन्य ! है, जो प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है। उसको मैं सदैव प्रणाम करता हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕਉ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨ ਜਪਿਆ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੧॥
जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥१॥
हे नानक ! मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने सृजनहार परमेश्वर की आराधना की है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਅਨੁ ਆਪੇ ਆਕਾਸੁ ॥
आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥
ईश्वर ने स्वयं ही धरती बनाई और स्वयं ही आकाश बनाया।

ਵਿਚਿ ਆਪੇ ਜੰਤ ਉਪਾਇਅਨੁ ਮੁਖਿ ਆਪੇ ਦੇਇ ਗਿਰਾਸੁ ॥
विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु ॥
इस धरती में ईश्वर ने जीव-जन्तु उत्पन्न किए और स्वयं ही प्राणियों के मुख में भोजन दिया है।

ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਹੀ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥
अपने आप ही वह सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही गुणों का भण्डार है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਟੇ ਤਾਸੁ ॥੨॥
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु ॥२॥
हे नानक ! तू प्रभु के नाम की आराधना कर, वह तेरे तमाम पाप नाश कर देगा ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸਚੇ ਭਾਵੈ ॥
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥
हे सत्य के पुंज परमात्मा ! तू सदैव सत्य है। उस सत्य के पुंज को सत्य ही प्रिय लगता है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਦੇ ਤਿਨ ਜਮ ਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥
हे सत्यस्वरूप प्रभु ! जो जो प्राणी तेरी प्रशंसा करते हैं, यमदूत उनके निकट नहीं आता।

ਤਿਨ ਕੇ ਮੁਖ ਦਰਿ ਉਜਲੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਚਾ ਭਾਵੈ ॥
तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥
जिनके हृदय को सत्य प्रभु अच्छा लगता है, उनके मुख उसके दरबार में उज्ज्वल हो जाते हैं।

ਕੂੜਿਆਰ ਪਿਛਾਹਾ ਸਟੀਅਨਿ ਕੂੜੁ ਹਿਰਦੈ ਕਪਟੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥
झुठे पीछे धकेल दिए जाते हैं, मन में झूठ एवं छल-कपट होने के कारण वह महा कष्ट सहन करते हैं।

ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਕੂੜਿਆਰੀਆ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੋ ਹੋਇ ਜਾਵੈ ॥੬॥
मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥६॥
झूठों के मुख सत्य के दरबार में काले होते हैं। झूठे केवल झूठे ही रहते हैं।॥ ६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਰਤੀ ਧਰਮ ਹੈ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੇਹਾ ਕੋ ਬੀਜੇ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥
सतिगुरु धर्म की धरती है। उसमें जैसा कोई धीज बोता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है।

ਗੁਰਸਿਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੀਜਿਆ ਤਿਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥
गुरसिखी अम्रितु बीजिआ तिन अम्रित फलु हरि पाए ॥
गुरु के सिक्ख नाम-अमृत बोते हैं एवं ईश्वर को अपने अमृत फल के रूप में प्राप्त करते हैं।

ਓਨਾ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਓਇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਚੀ ਪੈਨਾਏ ॥
ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥
इस लोक एवं परलोक में उनके मुख उज्ज्वल होते हैं। प्रभु के सच्चे दरबार में उनको मान-सम्मान मिलता है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਅੰਦਰਿ ਖੋਟੁ ਨਿਤ ਖੋਟੁ ਕਮਾਵਹਿ ਓਹੁ ਜੇਹਾ ਬੀਜੇ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਖਾਏ ॥
इकन्हा अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥
कुछ लोगों के मन में कपट होता है और वह सदैव ही कपट कमाते हैं, जैसा वह बोते हैं, वैसा ही फल खाते हैं

ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਰਾਫੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸੁਆਵਗੀਰ ਸਭਿ ਉਘੜਿ ਆਏ ॥
जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आए ॥
(क्योंकि) जब सर्राफ सतिगुरु जी दूरदृष्टि से देखता है तो सभी स्वार्थी प्रकट हो जाते हैं।

ਓਇ ਜੇਹਾ ਚਿਤਵਹਿ ਨਿਤ ਤੇਹਾ ਪਾਇਨਿ ਓਇ ਤੇਹੋ ਜੇਹੇ ਦਯਿ ਵਜਾਏ ॥
ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥
जैसी उनके हृदय की भावना होती है, वैसा ही उन्हें फल मिलता है। प्रभु-परमेश्वर के द्वारा वे उसी तरह पुरस्कृत अथवा तिरस्कृत होते हैं।

ਨਾਨਕ ਦੁਹੀ ਸਿਰੀ ਖਸਮੁ ਆਪੇ ਵਰਤੈ ਨਿਤ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਚਲਤ ਸਬਾਏ ॥੧॥
नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाए ॥१॥
(किन्तु) हे नानक ! (प्राणी के क्या वश ?) ये तमाम कौतुक ईश्वर आप हमेशा करके देख रहा है और दोनों तरफ (गुरमुखों एवं स्वार्थियों में) स्वयं ही ईश्वर विद्यमान है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਇਕੁ ਮਨੁ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਜਿਤੁ ਲਗੈ ਸੋ ਥਾਇ ਪਾਇ ॥
इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥
हरेक मनुष्य में एक ईश्वर व्यापक हो रहा है। जिस किसी से वह जुड़ता है, उसमें वह सफल हो जाता है।

ਕੋਈ ਗਲਾ ਕਰੇ ਘਨੇਰੀਆ ਜਿ ਘਰਿ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਸਾਈ ਖਾਇ ॥
कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥
प्राणी चाहे अधिकतर बातें करें परन्तु वह वही चीज़ खाता है, जो उसके घर में विद्यमान हो।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੋਝੀ ਨਾ ਪਵੈ ਅਹੰਕਾਰੁ ਨ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकारु न विचहु जाइ ॥
सतिगुरु के अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त नहीं होता। न ही अहंकार भीतर से जाता है।

ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਨੋ ਦੁਖ ਭੁਖ ਹੈ ਹਥੁ ਤਡਹਿ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੰਗਾਇ ॥
अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइ ॥
अहंकारी जीवों को दुख एवं भूख सताते हैं। वह अपना हाथ फैला-फैलाकर द्वार-द्वार माँगते फिरते हैं।

ਕੂੜੁ ਠਗੀ ਗੁਝੀ ਨਾ ਰਹੈ ਮੁਲੰਮਾ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलमा पाजु लहि जाइ ॥
झुठ एवं छल छिपे नहीं रहते। उनका पाज का मुलम्मा उतर जाता है।

ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥
जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥
पूर्व कर्मों के अनुसार जिनके भले संस्कार लिखे हुए हैं, उन्हें पूर्ण सतिगुरु मिल जाते हैं।

ਜਿਉ ਲੋਹਾ ਪਾਰਸਿ ਭੇਟੀਐ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸੁਵਰਨੁ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥
जिउ लोहा पारसि भेटीऐ मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥
जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, वैसे ही गुरु की संगति से मिलकर मनुष्य अनमोल बन जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਤੂ ਧਣੀ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਇ ॥੨॥
जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥
हे नानक के प्रभु! (जीवों के वश में कुछ नहीं) तू सबका मालिक है। जैसे तुझे भला लगता है, वैसे ही तू जीवों को चलाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥
जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥
जिन प्राणियों ने हृदय में ईश्वर का सिमरन किया है, उन्हें ईश्वर अपने साथ मिला लेता है।

ਗੁਣ ਕੀ ਸਾਝਿ ਤਿਨ ਸਿਉ ਕਰੀ ਸਭਿ ਅਵਗਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
गुण की साझि तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥
मैं उनके साथ गुणों की सांझ करता हूँ और शब्द द्वारा अवगुणों को जलाता हूँ।

ਅਉਗਣ ਵਿਕਣਿ ਪਲਰੀ ਜਿਸੁ ਦੇਹਿ ਸੁ ਸਚੇ ਪਾਏ ॥
अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥
घास-फूस की भाँति पाप सस्ते खरीदे जाते हैं। केवल वही गुण प्राप्त करता है, जिसे वह सत्यस्वरूप परमात्मा प्रदान करता है।

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਅਉਗਣ ਮੇਟਿ ਗੁਣ ਪਰਗਟੀਆਏ ॥
बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥
मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने पाप मिटा कर मुझ में गुणों का प्रकाश कर दिया है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਕੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਲਾਏ ॥੭॥
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥७॥
जो प्राणी सतिगुरु के समक्ष होता है, वही महान प्रभु की महिमा-स्तुति करने लग जाता है। ॥ ७ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥
सतिगुरु में यही महान गुण है कि वह हर समय भगवान के नाम का ही ध्यान करता रहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਮਤ ਸੁਚ ਸੰਜਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥
हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही त्रिपतावै ॥
भगवान के नाम का जाप ही सतिगुरु की पवित्रता एवं संयम है। वह भगवान के नाम से ही तृप्त रहते हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਾਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਰਖ ਕਰਾਵੈ ॥
हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥
भगवान का नाम उनका बल है और भगवान का नाम ही उनकी सभा है। भगवान का नाम ही उनका रक्षक है।

ਜੋ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਪੂਜੇ ਗੁਰ ਮੂਰਤਿ ਸੋ ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਪਾਵੈ ॥
जो चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥
जो व्यक्ति श्रद्धा से गुरु-मूर्ति की पूजा करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है।

ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਤਿਸੁ ਕਰਤਾ ਮਾਰ ਦਿਵਾਵੈ ॥
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥
जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु की निंदा करता है, उसका कर्तार विनाश कर देता है।

ਫੇਰਿ ਓਹ ਵੇਲਾ ਓਸੁ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਓਹੁ ਆਪਣਾ ਬੀਜਿਆ ਆਪੇ ਖਾਵੈ ॥
फेरि ओह वेला ओसु हथि न आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥
वह अवसर उसे दोबारा नहीं मिलता। जो कुछ उसने बोया है, यह स्वयं ही सेवन करता है।

ਨਰਕਿ ਘੋਰਿ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਖੜਿਆ ਜਿਉ ਤਸਕਰੁ ਪਾਇ ਗਲਾਵੈ ॥
नरकि घोरि मुहि कालै खड़िआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥
जैसे चोर को गले में रस्सी डालकर ले जाया जाता है, वैसे ही मुँह काला करके उसे भयानक नरककुण्ड में डाला जाता है।

ਫਿਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣੀ ਪਵੈ ਤਾ ਉਬਰੈ ਜਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥
जब वह दोबारा सतिगुरु की शरण लेता है और भगवान का नाम-सिमरन करता है तो वह (भयानक नरक से) पार हो जाता है।

ਹਰਿ ਬਾਤਾ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਰਤੇ ਏਵੈ ਭਾਵੈ ॥੧॥
हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥१॥
नानक भगवान की महिमा की बातें कह कर सुनाता है। चूंकि विश्व के रचयिता भगवान को ऐसे ही भला लगता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४ ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਮੰਨੈ ਓਹੁ ਮਨਮੁਖੁ ਅਗਿਆਨੁ ਮੁਠਾ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ॥
पूरे गुर का हुकमु न मंनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥
जो मनुष्य गुरु के हुक्म की उल्लंघना करता है, वह स्वेच्छाचारी, अज्ञानी मनुष्य माया रूपी विष द्वारा ठग लिया गया है।

ਓਸੁ ਅੰਦਰਿ ਕੂੜੁ ਕੂੜੋ ਕਰਿ ਬੁਝੈ ਅਣਹੋਦੇ ਝਗੜੇ ਦਯਿ ਓਸ ਦੈ ਗਲਿ ਪਾਇਆ ॥
ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गलि पाइआ ॥
उसके हृदय में झूठ विद्यमान है और वह हरेक को झूठा ही समझता है। इसलिए ईश्वर ने व्यर्थ के विवाद उसके गले में डाल दिए हैं।

ਓਹੁ ਗਲ ਫਰੋਸੀ ਕਰੇ ਬਹੁਤੇਰੀ ਓਸ ਦਾ ਬੋਲਿਆ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਇਆ ॥
ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥
वह व्यर्थ बकवारा करता है, परन्तु जो कुछ वह करता है, वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

ਓਹੁ ਘਰਿ ਘਰਿ ਹੰਢੈ ਜਿਉ ਰੰਨ ਦੋਹਾਗਣਿ ਓਸੁ ਨਾਲਿ ਮੁਹੁ ਜੋੜੇ ਓਸੁ ਭੀ ਲਛਣੁ ਲਾਇਆ ॥
ओहु घरि घरि हंढै जिउ रंन दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥
वह दुहागिन नारी की भाँति घर-घर फिरता है। जो कोई भी उससे मेल-मिलाप करता है, उसे भी बुराई का तिलक (चिन्ह) लग जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਅਲਿਪਤੋ ਵਰਤੈ ਓਸ ਦਾ ਪਾਸੁ ਛਡਿ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ਬਹਿ ਜਾਇਆ ॥
गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर पासि बहि जाइआ ॥
जो गुरमुख होता है, वह मनमुख से अलग रहता है, वह स्वेच्छाचारी की संगति त्यागकर गुरु के समक्ष बैठता है।

ਜੋ ਗੁਰੁ ਗੋਪੇ ਆਪਣਾ ਸੁ ਭਲਾ ਨਾਹੀ ਪੰਚਹੁ ਓਨਿ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ ਸਭੁ ਗਵਾਇਆ ॥
जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥
हे संतजनों ! जो अपने गुरु की निंदा करता है, वह भला पुरुष नहीं। वह अपना मूल लाभ समस्त गंवा देता है।

ਪਹਿਲਾ ਆਗਮੁ ਨਿਗਮੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਉਪਰਿ ਆਇਆ ॥
पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥
नानक कहकर सुनाता है कि पहले लोग शास्त्रों एवं वेदों को पढ़ते एवं प्रचार करते थे परन्तु पूर्ण गुरु की वाणी उन सबमें सर्वोच्च प्रामाणिक है।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਵਡਿਆਈ ਭਾਵੈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਮਨਮੁਖਾ ਓਹ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਇਆ ॥੨॥
गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ ॥२॥
गुरु के सिक्खों को गुरु की प्रशंसा अच्छी लगती है। लेकिन स्वेच्छाचारी को यह अवसर प्राप्त नहीं होता ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਭ ਦੂ ਵਡਾ ਹੈ ਸੋ ਲਏ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਟਿਕੇ ॥
सचु सचा सभ दू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥
सत्यस्वरूप परमात्मा सर्वोपरि है। यह (प्रभु) उस मनुष्य को मिलता है, जिसे सतिगुरु तिलक (आशीर्वाद) दें।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿ ਸਚੁ ਧਿਆਇਦਾ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਇਕੇ ॥
सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥
सतिगुरु भी वही है जो सत्य का ध्यान-मनन करता है। यह सत्य है कि सत्यस्वरूप परमात्मा एवं सतिगुरु एक ही हैं।

ਸੋਈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਪੰਜੇ ਦੂਤ ਕੀਤੇ ਵਸਿ ਛਿਕੇ ॥
सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥
वही महापुरुष सतिगुरु है, जिसने (कामादिक) विकारों को अपने वश में किया हुआ है।

ਜਿ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਤਿਨ ਅੰਦਰਿ ਕੂੜੁ ਫਿਟੁ ਫਿਟੁ ਮੁਹ ਫਿਕੇ ॥
जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिटु फिटु मुह फिके ॥
जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा से विहीन रहते हैं और अपने आपको बड़ा कहलवाते हैं, उनके भीतर झूठ विद्यमान है।

ਓਇ ਬੋਲੇ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਵਨੀ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਚੁਕੇ ॥੮॥
ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥८॥
उनके रुक्ष चेहरे पर धिक्कार है। वह सतिगुरु से बिछुड़ा होता है, उसका मुख तिरस्कृत किया हुआ होता है और उसकी वार्तालाप किसी को भी अच्छी नहीं लगती ॥ ८ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਸਭੁ ਖੇਤੁ ਹੈ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕਿਰਸਾਣੀ ਲਾਇਆ ॥
हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥
सारी दुनिया भगवान का खेत है। भगवान स्वयं ही (जीवों से) कृषि करवाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਖਸਿ ਜਮਾਈਅਨੁ ਮਨਮੁਖੀ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇਆ ॥
गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥
गुरमुख प्रभु की कृपा की फसल पैदा करता है। लेकिन स्वेच्छाचारी अपना मूल भी गंवा देता है।

ਸਭੁ ਕੋ ਬੀਜੇ ਆਪਣੇ ਭਲੇ ਨੋ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋ ਖੇਤੁ ਜਮਾਇਆ ॥
सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइआ ॥
हरेक व्यक्ति अपने लाभ हेतु बोता है। लेकिन भगवान उस फसल को उगाता है, जो उसे अच्छी लगती है।

ਗੁਰਸਿਖੀ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੀਜਿਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਫਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਇਆ ॥
गुरसिखी हरि अम्रितु बीजिआ हरि अम्रित नामु फलु अम्रितु पाइआ ॥
गुरु का सिक्ख भगवान के नाम रूपी अमृत को बोता है और वह भगवान के अमृतमयी नाम को अपने अमृत फल के तौर पर प्राप्त करता है।

ਜਮੁ ਚੂਹਾ ਕਿਰਸ ਨਿਤ ਕੁਰਕਦਾ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਮਾਰਿ ਕਢਾਇਆ ॥
जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइआ ॥
मृत्यु रूपी चूहा प्रतिदिन फसल को कुतरता है परन्तु विश्व के रचयिता ईश्वर ने इसे पीट कर बाहर निकाल दिया है।

ਕਿਰਸਾਣੀ ਜੰਮੀ ਭਾਉ ਕਰਿ ਹਰਿ ਬੋਹਲ ਬਖਸ ਜਮਾਇਆ ॥
किरसाणी जमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥
इसलिए गुरमुखों की फसल प्रेम-पूर्वक उगती है और ईश्वर की दया से अनाज के दानों का अम्बार लग जाता है।

ਤਿਨ ਕਾ ਕਾੜਾ ਅੰਦੇਸਾ ਸਭੁ ਲਾਹਿਓਨੁ ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇਆ ॥
तिन का काड़ा अंदेसा सभु लाहिओनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥
जिन्होंने महापुरुष सतिगुरु का ध्यान किया है, ईश्वर ने उनकी तमाम चिंता एवं दुःख नष्ट कर दिए हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥੧॥
जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥१॥
हे नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम की आराधना करता है, वह स्वयं पार हो जाता है और सारे जगत् का भी कल्याण कर देता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਾਰਾ ਦਿਨੁ ਲਾਲਚਿ ਅਟਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਹੋਰੇ ਗਲਾ ॥
सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य सारा दिन लोभ में प्रवृत्त हुआ रहता है, चाहे बातें वह दूसरी ही करता है।

ਰਾਤੀ ਊਘੈ ਦਬਿਆ ਨਵੇ ਸੋਤ ਸਭਿ ਢਿਲਾ ॥
राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥
वह रात को नींद में घुट जाता है, उसकी तमाम इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं।

ਮਨਮੁਖਾ ਦੈ ਸਿਰਿ ਜੋਰਾ ਅਮਰੁ ਹੈ ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਭਲਾ ॥
मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि भला ॥
ऐसे स्वेच्छाचारी मनुष्यों पर स्त्रियों का हुक्म चलता है और वह उन्हें सदैव ही अच्छे-अच्छे पदार्थ लाकर देते हैं।

ਜੋਰਾ ਦਾ ਆਖਿਆ ਪੁਰਖ ਕਮਾਵਦੇ ਸੇ ਅਪਵਿਤ ਅਮੇਧ ਖਲਾ ॥
जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥
जो पुरुष स्त्रियों का कहना मानते हैं, वे अपवित्र, बुद्धिहीन एवं मूर्ख होते हैं।

ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੇ ਕੁਸੁਧ ਨਰ ਸੇ ਜੋਰਾ ਪੁਛਿ ਚਲਾ ॥
कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥
अशुद्ध पुरुष कामवासना में लीन रहते हैं, वह स्त्रियों से परामर्श लेते हैं और उसके आदेशानुसार चलते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਆਖਿਐ ਜੋ ਚਲੈ ਸੋ ਸਤਿ ਪੁਰਖੁ ਭਲ ਭਲਾ ॥
सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥
जो सतिगुरु के हुक्म अनुसार चलता है, वह पुरुष सच्चा तथा सर्वोत्कृष्ट है।

ਜੋਰਾ ਪੁਰਖ ਸਭਿ ਆਪਿ ਉਪਾਇਅਨੁ ਹਰਿ ਖੇਲ ਸਭਿ ਖਿਲਾ ॥
जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥
समस्त स्त्रियाँ एवं पुरुष ईश्वर ने स्वयं उत्पन्न किए हैं। ईश्वर ही तमाम खेलें खेलता है।

ਸਭ ਤੇਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਵਣੀ ਨਾਨਕ ਭਲ ਭਲਾ ॥੨॥
सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥२॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! सृष्टि की यह तमाम रचना तेरी रची हुई है, जो कुछ तूने किंया है, सब भला है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਅਥਾਹੁ ਹੈ ਅਤੁਲੁ ਕਿਉ ਤੁਲੀਐ ॥
तू वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥
हे मेरे मालिक ! तू बेपरवाह, अथाह एवं अतुलनीय है, फिर तुझे कैसे तोला जा सकता है?

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਦੇ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੀਐ ॥
से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥
हे गोविन्द ! जो तुझे याद करते हैं और जिन्हें सतिगुरु मिलता है, वे बड़े भाग्यशाली हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਗੁਰਬਾਣੀ ਬਣੀਐ ॥
सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥
सतिगुरु की वाणी सत्य स्वरूप है। गुरुवाणी द्वारा मनुष्य पूर्ण जाना जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਰੀਸੈ ਹੋਰਿ ਕਚੁ ਪਿਚੁ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੇ ਝੜਿ ਪੜੀਐ ॥
सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥
कई दूसरे झूठ के व्यापारी सतिगुरु की नकल करके अधकचरी वाणी उच्चरित करते हैं परन्तु हृदय में झूठ होने के कारण शीघ्र ही नाश हो जाते हैं।

ਓਨ੍ਹ੍ਹਾ ਅੰਦਰਿ ਹੋਰੁ ਮੁਖਿ ਹੋਰੁ ਹੈ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਨੋ ਝਖਿ ਮਰਦੇ ਕੜੀਐ ॥੯॥

ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥९॥

उनके हृदय में कुछ और होता है तथा मुँह में कुछ और, वे विष रूपी माया का संग्रह करने के लिए पीड़ित होते हैं और खप-खप कर मरते हैं॥ ६ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥

सलोक मः ४ ॥

श्लोक महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਿਰਮਲੀ ਨਿਰਮਲ ਜਨੁ ਹੋਇ ਸੁ ਸੇਵਾ ਘਾਲੇ ॥

सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जनु होइ सु सेवा घाले ॥

सतिगुरु की सेवा बड़ी निर्मल है, जो व्यक्ति निर्मल होता है, वही यह चुनौतीपूर्ण कार्य कर सकता है।

ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ ਝੂਠੁ ਓਇ ਆਪੇ ਸਚੈ ਵਖਿ ਕਢੇ ਜਜਮਾਲੇ ॥

जिन अंदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि कढे जजमाले ॥

जिनके अन्तर्मन में कपट, विकार एवं झूठ होता है, सत्यस्वरूप ईश्वर ने स्वयं ही उन कोढ़ियों को अलग कर दिया है।

ਸਚਿਆਰ ਸਿਖ ਬਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ਘਾਲਨਿ ਕੂੜਿਆਰ ਨ ਲਭਨੀ ਕਿਤੈ ਥਾਇ ਭਾਲੇ ॥
सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥
सत्यवादी सिक्ख सतिगुरु के पास बैठते हैं और उनकी सेवा करते हैं। झूठों को खोज-तलाश करते हुए कहीं भी स्थान नहीं मिलता।

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਆਖਿਆ ਸੁਖਾਵੈ ਨਾਹੀ ਤਿਨਾ ਮੁਹ ਭਲੇਰੇ ਫਿਰਹਿ ਦਯਿ ਗਾਲੇ ॥
जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥
जिन्हें सतिगुरु के वचन अच्छे नहीं लगते, उनके चेहरे तिरस्कृत हैं और ईश्वर से अपमानित हुए वे भटकते फिरते हैं।

ਜਿਨ ਅੰਦਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਸੇ ਕਿਚਰਕੁ ਵੇਰਾਈਅਨਿ ਮਨਮੁਖ ਬੇਤਾਲੇ ॥
जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥
जिनके हृदय में ईश्वर का प्रेम नहीं, उन स्वेच्छाचारी बेताल लोगों को कितनी देर तक दिलासा दिया जा सकता है?

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੈ ਸੁ ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਥਾਇ ਰਖੈ ਓਹੁ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਆਪਣੀ ਵਥੁ ਨਾਲੇ ॥
सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥
जो मनुष्य सतिगुरु को मिलता है, वह अपने मन को (विकारों से) अंकुश लगाकर रखता है। साथ ही, प्रभु के नाम की अपनी पूंजी का वह स्वयं ही इस्तेमाल करता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਇਕਨਾ ਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸੁਖੁ ਦੇਵੈ ਇਕਿ ਆਪੇ ਵਖਿ ਕਢੈ ਠਗਵਾਲੇ ॥੧॥
जन नानक इकना गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ॥१॥
हे नानक! (जीव के वश में कुछ नहीं) गुरु से मिलाकर कुछ लोगों को प्रभु सुख प्रदान करता है एवं कुछ कपट करने वालों को अलग कर देता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਕਾਜ ਦਯਿ ਆਦੇ ਰਾਸਿ ॥
जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥
जिनके अन्तर्मन में भगवान का नाम रूपी भण्डार है, उनके कार्य ईश्वर स्वयं संवार देता है।

ਤਿਨ ਚੂਕੀ ਮੁਹਤਾਜੀ ਲੋਕਨ ਕੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਗੁ ਕਰਿ ਬੈਠਾ ਪਾਸਿ ॥
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥
उन्हें दूसरे लोगों के सहारे की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि ईश्वर उनको अपना कर सदैव उनके साथ-साथ रहता है।

ਜਾਂ ਕਰਤਾ ਵਲਿ ਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਵਲਿ ਸਭਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਕਰਹਿ ਸਾਬਾਸਿ ॥
जां करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि साबासि ॥
सब लोग उनका दर्शन करके उनकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि जब सृजनहार परमात्मा स्वयं उनका पक्ष करता है तो प्रत्येक ही उनका पक्ष करेगा।

ਸਾਹੁ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭਿ ਜਨ ਕਉ ਆਇ ਕਰਹਿ ਰਹਰਾਸਿ ॥
साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥
भगवान के बनाए हुए राजे-महाराजे भी प्रभु के सेवक के समक्ष वन्दना करते हैं।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਵਡਾ ਸੇਵਿ ਅਤੁਲੁ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥
पूर्ण गुरु की महिमा महान है। महान ईश्वर की सेवा करने से अतुलनीय सुख प्राप्त होता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦਾਨੁ ਦੀਆ ਹਰਿ ਨਿਹਚਲੁ ਨਿਤ ਬਖਸੇ ਚੜੈ ਸਵਾਇਆ ॥
गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥
पूर्ण गुरु के द्वारा ईश्वर ने दान दिया है, वह समाप्त नहीं होता, क्योंकि ईश्वर सदैव ही दया किए जाता है और वह दान दिनों-दिन बढ़ता रहता है।

ਕੋਈ ਨਿੰਦਕੁ ਵਡਿਆਈ ਦੇਖਿ ਨ ਸਕੈ ਸੋ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਪਚਾਇਆ ॥
कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥
जो कोई निंदक (ऐसे प्रभु के सेवक की) महानता देखकर सहन नहीं कर सकता, उसे सृजनहार ने स्वयं ईष्याग्नि में पीड़ित किया है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਬੋਲੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਭਗਤਾ ਨੋ ਸਦਾ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥੨॥
जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥२॥
दास नानक विश्व के रचयिता परमात्मा की गुणस्तुति करता है, जो अपने भक्तो की सदैव रक्षा करता आया है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਅਗਮ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਵਡ ਦਾਤਾ ਦਾਣਾ ॥
तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥
हे मेरे मालिक ! तू अगम्य एवं दया का घर है, बड़ा दाता एवं चतुर है,

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਮੈ ਹੋਰੁ ਕੋ ਦਿਸਿ ਨ ਆਵਈ ਤੂਹੈਂ ਸੁਘੜੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥
तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई तूहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥
मुझे तेरे समान बड़ा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, तुम ही बुद्धिमान हो, जो मेरे मन को प्रिय लगे हो।

ਮੋਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਦਿਸਿ ਆਵਦਾ ਸਭੁ ਚਲਣਹਾਰਾ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥
मोहु कुट्मबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥
जो मोह रूपी कुटुम्ब दिखाई देता है, सब क्षणभंगुर है और जन्म-मरण के अधीन है।

ਜੋ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਹੋਰਤੁ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਸੇ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜਾ ਤਿਨ ਮਾਣਾ ॥
जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥
जो मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के अलावा किसी दूसरे से मन लगाते हैं, वह झूठ के व्यापारी हैं और उनका इस पर अभिमान भी झूठा है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਬਿਨੁ ਸਚੇ ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅਜਾਣਾ ॥੧੦॥
नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुए अजाणा ॥१०॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा का ध्यान कर, चूंकि सत्य (ईश्वर) से विहीन हुए मूर्ख जीव दुखी होकर मरते रहते हैं ॥१०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਅਗੋ ਦੇ ਸਤ ਭਾਉ ਨ ਦਿਚੈ ਪਿਛੋ ਦੇ ਆਖਿਆ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥
अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कमि न आवै ॥
स्वेच्छाचारी पुरुष पहले तो सतिगुरु को सम्मान नहीं देता, तत्पश्चात् उसकी शिक्षा का कोई फायदा नहीं होता,

ਅਧ ਵਿਚਿ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖੁ ਵੇਚਾਰਾ ਗਲੀ ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥
अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥
वह भाग्यहीन दुविधा में ही भटकता रहता है, यदि गुरु के प्रति श्रद्धा न हो तो सिर्फ बातों से कैसे सुख मिल सकता है ?

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੁ ਕੂੜੀ ਆਵੈ ਕੂੜੀ ਜਾਵੈ ॥
जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥
जिसके अन्तर्मन में सतिगुरु का प्रेम नहीं, वह दिखावे के लिए (गुरु-द्वार पर) आता जाता है।

ਜੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਦਰੀ ਆਵੈ ॥
जे क्रिपा करे मेरा हरि प्रभु करता तां सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥
यदि जगत् का रचयिता प्रभु-परमेश्वर दया करे तो दिखाई दे जाता है कि सतिगुरु भगवान का रूप है।

ਤਾ ਅਪਿਉ ਪੀਵੈ ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਕੇਰਾ ਸਭੁ ਕਾੜਾ ਅੰਦੇਸਾ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਵੈ ॥
ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥
वह तब गुरु का शब्द रूपी अमृत पान करता है और उसकी तमाम ईष्या, चिन्ता एवं दुविधा मिट जाते हैं।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥१॥
हे नानक ! वह दिन-रात सदैव ही प्रसन्न रहता है और सदा ही परमेश्वर की गुणस्तुति करता रहता है।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਜੋ ਸਿਖੁ ਅਖਾਏ ਸੁ ਭਲਕੇ ਉਠਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
जो मनुष्य सतिगुरु का (सच्चा) सिक्ख कहलाता है, वह प्रभातकाल उठकर ईश्वर के नाम का सिमरन करता है।

ਉਦਮੁ ਕਰੇ ਭਲਕੇ ਪਰਭਾਤੀ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਨਾਵੈ ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अम्रित सरि नावै ॥
वह प्रतिदिन सुबह उद्यम करता है, स्नान करता है और फिर नाम-रूपी अमृत के सरोवर में डुबकी लगाता है।

ਉਪਦੇਸਿ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਾਪੈ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਦੋਖ ਲਹਿ ਜਾਵੈ ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रभु-परमेश्वर के नाम का जाप जपता है और इस प्रकार उसके तमाम पाप दोष निवृत हो जाते हैं।

ਫਿਰਿ ਚੜੈ ਦਿਵਸੁ ਗੁਰਬਾਣੀ ਗਾਵੈ ਬਹਦਿਆ ਉਠਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥

फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥

फिर दिन निकलने पर गुरु की वाणी का कीर्त्तन करता है और उठते-बैठते प्रभु का नाम सिमरन करता रहता है।

ਜੋ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਧਿਆਏ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਗੁਰੂ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥

जो गुरु का सिक्ख अपनी हर सांस एवं ग्रास से मेरे हरि-परमेश्वर की आराधना करता है, वह गुरु के मन को अच्छा लगने लग जाता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਦਇਆਲੁ ਹੋਵੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖ ਗੁਰੂ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਾਵੈ ॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जिस पर मेरा स्वामी दयालु होता है, उस गुरसिक्ख को गुरु उपदेश देता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਧੂੜਿ ਮੰਗੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖ ਕੀ ਜੋ ਆਪਿ ਜਪੈ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥੨॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥२॥
नानक भी उस गुरसिक्ख की चरण-धूलि माँगता है, जो स्वयं नाम जपता है और दूसरों को जपाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਸਚੁ ਧਿਆਇਦੇ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਥੋੜੇ ॥
जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥
हे सत्यस्वरूप प्रभु ! वे बहुत थोड़े व्यक्ति हैं, जो तेरा ध्यान-मनन करते हैं।

ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਦੇ ਤਿਨ ਕੀ ਬਰਕਤਿ ਖਾਹਿ ਅਸੰਖ ਕਰੋੜੇ ॥
जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥
जो मनुष्य पूर्ण एकाग्रचित होकर एक ईश्वर की आराधना करते हैं, उनकी बरकत अनन्त जीव खाते हैं।

ਤੁਧੁਨੋ ਸਭ ਧਿਆਇਦੀ ਸੇ ਥਾਇ ਪਏ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਲੋੜੇ ॥
तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥
हे प्रभु! वैसे तो सारी सृष्टि तेरा चिन्तन करती है परन्तु स्वीकृत वही होते हैं, जिन्हें तुम पसन्द करते हो।

ਜੋ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਖਾਦੇ ਪੈਨਦੇ ਸੇ ਮੁਏ ਮਰਿ ਜੰਮੇ ਕੋੜ੍ਹੇ ॥
जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जमे कोड़्हे ॥
सतिगुरु की सेवा से विहीन रहकर जो मनुष्य खाने-पीने एवं पहनने के रसों में मग्न रहते हैं, वे कोढ़ी बार-बार जन्म लेते हैं।

ਓਇ ਹਾਜਰੁ ਮਿਠਾ ਬੋਲਦੇ ਬਾਹਰਿ ਵਿਸੁ ਕਢਹਿ ਮੁਖਿ ਘੋਲੇ ॥
ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥
ऐसे मनुष्य सामने तो मीठी बातें करते हैं परन्तु तत्पश्चात विष घोलकर निकालते हैं।

ਮਨਿ ਖੋਟੇ ਦਯਿ ਵਿਛੋੜੇ ॥੧੧॥
मनि खोटे दयि विछोड़े ॥११॥
ऐसे मन से खोटे पुरुषों को ईश्वर ने जुदा कर दिया है॥ ११॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਮਲੁ ਜੂਈ ਭਰਿਆ ਨੀਲਾ ਕਾਲਾ ਖਿਧੋਲੜਾ ਤਿਨਿ ਵੇਮੁਖਿ ਵੇਮੁਖੈ ਨੋ ਪਾਇਆ ॥
मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइआ ॥
उस विमुख ने दूसरे विमुख को जूओं से भरा हुआ नीला एवं काला पहरावा डाल दिया है।

ਪਾਸਿ ਨ ਦੇਈ ਕੋਈ ਬਹਣਿ ਜਗਤ ਮਹਿ ਗੂਹ ਪੜਿ ਸਗਵੀ ਮਲੁ ਲਾਇ ਮਨਮੁਖੁ ਆਇਆ ॥
पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥
इस जगत् में उसे कोई निकट नहीं बैठने देता, गन्दगी में पड़कर अपितु बहुत-सी मैल लगाकर मनमुख (वापिस) आया।

ਪਰਾਈ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਚੁਗਲੀ ਨੋ ਵੇਮੁਖੁ ਕਰਿ ਕੈ ਭੇਜਿਆ ਓਥੈ ਭੀ ਮੁਹੁ ਕਾਲਾ ਦੁਹਾ ਵੇਮੁਖਾ ਦਾ ਕਰਾਇਆ ॥
पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥
जो मनुष्य पराई निन्दा एवं चुगली करने के लिए परामर्श करके भेजा गया था, वहाँ भी दोनों का मुँह काला किया गया।

ਤੜ ਸੁਣਿਆ ਸਭਤੁ ਜਗਤ ਵਿਚਿ ਭਾਈ ਵੇਮੁਖੁ ਸਣੈ ਨਫਰੈ ਪਉਲੀ ਪਉਦੀ ਫਾਵਾ ਹੋਇ ਕੈ ਉਠਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥
तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ कै उठि घरि आइआ ॥
हे भाई ! जगत् में सब ओर एक-दम सुना गया कि विमुख को नौकर सहित जूतियाँ (खानी) पड़ीं और खूब हल्का होकर घर को उठ आया है।

ਅਗੈ ਸੰਗਤੀ ਕੁੜਮੀ ਵੇਮੁਖੁ ਰਲਣਾ ਨ ਮਿਲੈ ਤਾ ਵਹੁਟੀ ਭਤੀਜੀਂ ਫਿਰਿ ਆਣਿ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ॥
अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजीं फिरि आणि घरि पाइआ ॥
आगे संबंधियों में विमुख को बैठना मिले भी तो फिर पत्नी तथा भतीजों ने लाकर घर में स्थान दिया,

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੋਵੈ ਗਏ ਨਿਤ ਭੁਖਾ ਕੂਕੇ ਤਿਹਾਇਆ ॥
हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥
उसके लोक-परलोक दोनों व्यर्थ गए और अब भूखा तथा प्यासा रोता है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁਆਮੀ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਨਿਆਉ ਸਚੁ ਬਹਿ ਆਪਿ ਕਰਾਇਆ ॥
धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥
जगत् का स्वामी कर्ता पुरुष धन्य धन्य है, जिसने न्याय के आसन पर विराज कर स्वयं सच्चा न्याय करवाया है।

ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸੋ ਸਾਚੈ ਮਾਰਿ ਪਚਾਇਆ ॥
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥
जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है, उसको सच्चा स्वामी दण्ड देकर मार फेंकता है।

ਏਹੁ ਅਖਰੁ ਤਿਨਿ ਆਖਿਆ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਉਪਾਇਆ ॥੧॥
एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥१॥
यह न्याय का वचन उस ईश्वर ने स्वयं कहा है, जिसने इस सृष्टि की रचना की है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਜਿਸ ਕਾ ਨੰਗਾ ਭੁਖਾ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਦਾ ਨਫਰੁ ਕਿਥਹੁ ਰਜਿ ਖਾਏ ॥
साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥
जिसका स्वामी कंगाल है, उसका नोकर कहाँ पेट भर कर खा सकता है।

ਜਿ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਘਰਿ ਵਥੁ ਹੋਵੈ ਸੁ ਨਫਰੈ ਹਥਿ ਆਵੈ ਅਣਹੋਦੀ ਕਿਥਹੁ ਪਾਏ ॥
जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाए ॥
यदि स्वामी के घर में कोई वस्तु हो तो उसे उसका नौकर प्राप्त कर सकता है परन्तु यदि है ही नहीं तो उसे वह कहाँ से ले सकता है।

ਜਿਸ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਸਾ ਸੇਵਾ ਅਉਖੀ ਹੋਈ ॥
जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥
जिसकी सेवा करने पर भी लेखा माँगा जाना हो, वह सेवा कठिन और अनुपयोगी है।

ਨਾਨਕ ਸੇਵਾ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਫਲ ਦਰਸਨ ਕੀ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗੈ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥
नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥२॥
हे नानक ! जिस ईश्वर एवं गुरु का दर्शन (मानव जन्म को) सफल (करता) है, उसकी सेवा करो तांकि फिर कोई लेखा न माँगे ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨਾਨਕ ਵੀਚਾਰਹਿ ਸੰਤ ਜਨ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਕਹੰਦੇ ॥
नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे ॥
हे नानक ! संतजन विचार करते हैं और चारों वेद कहते हैं कि

ਭਗਤ ਮੁਖੈ ਤੇ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਵਚਨ ਹੋਵੰਦੇ ॥
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥
भक्तजन जो वचन मुँह से बोलते हैं, वे सत्य ही पूरे हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਗਟ ਪਹਾਰਾ ਜਾਪਦਾ ਸਭਿ ਲੋਕ ਸੁਣੰਦੇ ॥
प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥
भक्त समूचे जगत् में लोकप्रिय हो जाते हैं, उनकी शोभा सभी लोग सुनते हैं।

ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਨਿ ਮੁਗਧ ਨਰ ਸੰਤ ਨਾਲਿ ਖਹੰਦੇ ॥
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥
जो मूख लोग संतों से वैर-विरोध करते हैं, वे सुख नहीं पाते।

ਓਇ ਲੋਚਨਿ ਓਨਾ ਗੁਣੈ ਨੋ ਓਇ ਅਹੰਕਾਰਿ ਸੜੰਦੇ ॥
ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥
वे दोषी जलते तो अहंकार में हैं परन्तु संतजनों के गुणों को तरसते हैं।

ਓਇ ਵਿਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਜਾ ਭਾਗ ਧੁਰਿ ਮੰਦੇ ॥
ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥
इन दोषी मनुष्यों के वश में भी क्या है? चूंकि आदि काल से कुसंस्कार ही उनका भाग्य है।

ਜੋ ਮਾਰੇ ਤਿਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸੇ ਕਿਸੈ ਨ ਸੰਦੇ ॥
मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥
जिनका उस पारब्रह्म ने नाश किया है, वह किसी के भी मित्र नहीं।

ਵੈਰੁ ਕਰਹਿ ਨਿਰਵੈਰ ਨਾਲਿ ਧਰਮ ਨਿਆਇ ਪਚੰਦੇ ॥
वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे ॥
यह धर्म का न्याय है कि जो निर्वैर से वैर करते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं।

ਜੋ ਜੋ ਸੰਤਿ ਸਰਾਪਿਆ ਸੇ ਫਿਰਹਿ ਭਵੰਦੇ ॥
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥
जिन्हें संतों ने तिरस्कृत किया है, वे भटकते रहते हैं।

ਪੇਡੁ ਮੁੰਢਾਹੂੰ ਕਟਿਆ ਤਿਸੁ ਡਾਲ ਸੁਕੰਦੇ ॥੧੨॥
पेडु मुंढाहूं कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥१२॥
जब वृक्ष जड़ सहित उखाड़ दिया जाता है, उसकी टहनियाँ भी सूख जाती हैं।॥ १२॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
सलोक मः ४ ॥

ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੂ ਧਿਆਇਦਾ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥
अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥
गुरु की महिमा महान है, चूंकेि वह अपने अन्तर्मन में भगवान का ध्यान करता रहता है।

ਤੁਸਿ ਦਿਤੀ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਘਟੈ ਨਾਹੀ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਕਿਸੈ ਦੀ ਘਟਾਈ ॥
तुसि दिती पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥
परमात्मा ने खुश होकर यह महिमा प्रदान की है, इसलिए किसी के घटाने पर तिल मात्र भी कम नहीं होती।

ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੈ ਵਲਿ ਹੈ ਤਾਂ ਝਖਿ ਝਖਿ ਮਰੈ ਸਭ ਲੋਕਾਈ ॥
सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है तां झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥
जब सच्चा मालिक सतिगुरु के पक्ष में है तो सारी दुनिया के जितने भी लोग गुरु के विरुद्ध होते हैं, वे खप-खप कर मर जाते हैं।

ਨਿੰਦਕਾ ਕੇ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਕਰੇ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਵਧਾਈ ॥
निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥
सतिगुरु की महिमा कर्तार ने स्वयं बढ़ाई है और दोषियों के मुँह काले किए हैं।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਨਿੰਦਕ ਨਿੰਦ ਕਰਹਿ ਤਿਉ ਤਿਉ ਨਿਤ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥
जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥
ज्यों-ज्यों निंदक मनुष्य सतिगुरु की निंदा करते, त्यों-त्यों सतिगुरु की महिमा बढ़ती रहती है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨਿ ਪੈਰੀ ਆਣਿ ਸਭ ਪਾਈ ॥੧॥
जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु ने जिस ईश्वर का स्मरण किया है, उसने सारा संसार लाकर गुरु के चरणों में रख दिया है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਗਣਤ ਜਿ ਰਖੈ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਗਇਆ ॥
सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥
जो मनुष्य सतिगुरु के साथ वैर-विरोध करता है, उसका लोक-परलोक समूचे ही व्यर्थ जाते हैं।

ਨਿਤ ਝਹੀਆ ਪਾਏ ਝਗੂ ਸੁਟੇ ਝਖਦਾ ਝਖਦਾ ਝੜਿ ਪਇਆ ॥
नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥
उसका वश नहीं चलता इसलिए वह सदा क्षुब्ध होता है और दांत पीसता है।

ਨਿਤ ਉਪਾਵ ਕਰੈ ਮਾਇਆ ਧਨ ਕਾਰਣਿ ਅਗਲਾ ਧਨੁ ਭੀ ਉਡਿ ਗਇਆ ॥
नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥
धन एवं पदार्थ हेतु वह निरन्तर ही प्रयास करता है परन्तु उसका पहला पदार्थ भी समाप्त हो जाता है।

ਕਿਆ ਓਹੁ ਖਟੇ ਕਿਆ ਓਹੁ ਖਾਵੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਪਇਆ ॥
किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥
वह क्या कमाएगा और क्या खाएगा, जिसके हृदय में दुःख चिन्ता की पीड़ा है!

ਨਿਰਵੈਰੈ ਨਾਲਿ ਜਿ ਵੈਰੁ ਰਚਾਏ ਸਭੁ ਪਾਪੁ ਜਗਤੈ ਕਾ ਤਿਨਿ ਸਿਰਿ ਲਇਆ ॥
निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥
जो निर्वैर से शत्रुता करता है, वह संसार के तमाम पाप अपने सिर पर ले लेता है।

ਓਸੁ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਢੋਈ ਨਾਹੀ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਨਿੰਦਾ ਮੁਹਿ ਅੰਬੁ ਪਇਆ ॥
ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइआ ॥
जिसका मुँह उसके हृदय की निन्दा करता हो पर मुँह में मिठास हो, उसे लोक-परलोक में कोई सहारा नहीं देता।

ਜੇ ਸੁਇਨੇ ਨੋ ਓਹੁ ਹਥੁ ਪਾਏ ਤਾ ਖੇਹੂ ਸੇਤੀ ਰਲਿ ਗਇਆ ॥
जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥
ऐसा खोटा मनुष्य यदि सोने को हाथ डाले तो वह भी राख हो जाता है।

ਜੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣੀ ਫਿਰਿ ਓਹੁ ਆਵੈ ਤਾ ਪਿਛਲੇ ਅਉਗਣ ਬਖਸਿ ਲਇਆ ॥
जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥
फिर भी यदि वह गुरु की शरण ले तो उसके पहले पाप क्षमा हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਗਇਆ ॥੨॥
जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥२॥
हे नानक ! जो मनुष्य (गुरु की शरण लेकर) प्रतिदिन नाम-स्मरण करता है, ईश्वर का सिमरन करते हुए उसके अपराध मिट जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂਹੈ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤੂ ਸਭ ਦੂ ਉਪਰਿ ਤੂ ਦੀਬਾਣੁ ॥
तूहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥
हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! तू सदैव सत्य है। तेरी कचहरी सर्वोपरि है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਸਚੁ ਧਿਆਇਦੇ ਸਚੁ ਸੇਵਨਿ ਸਚੇ ਤੇਰਾ ਮਾਣੁ ॥
जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥
हे सत्य के पुंज ! जो तेरा ध्यान करते हैं, तेरी सेवा भक्ति करते हैं, उन्हें तेरा ही मान है।

ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਸਚੁ ਬੋਲਨਿ ਸਚੇ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥
ओना अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥
उनके हृदय में सत्य है इसलिए उनके चेहरे उज्ज्वल रहते हैं, वे सत्य बोलते हैं और हे सत्य प्रभु! तेरा ही उन्हें आश्रय है।

ਸੇ ਭਗਤ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥
से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥
जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान की सराहना करते हैं, वही सच्चे भक्त हैं और उनके पास सच्चा शब्द रूपी चिन्ह है।

ਸਚੁ ਜਿ ਸਚੇ ਸੇਵਦੇ ਤਿਨ ਵਾਰੀ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੧੩॥
सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥१३॥
मैं उन पर न्यौछावर हूँ, बलिहारी हैं, जो सत्यस्वरूप ईश्वर की सेवा-भक्ति करते रहते हैं।॥ १३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਧੁਰਿ ਮਾਰੇ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਈ ਹੁਣਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਾਰੇ ॥
धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥
जो आदि से ही पूर्ण सतिगुरु द्वारा शापित हुए हैं, वे अब पुन: सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत हो गए हैं,

ਜੇ ਮੇਲਣ ਨੋ ਬਹੁਤੇਰਾ ਲੋਚੀਐ ਨ ਦੇਈ ਮਿਲਣ ਕਰਤਾਰੇ ॥
जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥
यदि उन्हें गुरु के साथ मिलाप की तीव्र लालसा भी हो तो भी परमात्मा ऐसे शापितों को मिलने नहीं देता।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਢੋਈ ਨਾ ਲਹਨਿ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਗੁਰਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥
सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥
उन्हें सत्संगति में भी आश्रय नहीं मिलता। गुरु ने भी संगति में यही विचार किया है।

ਕੋਈ ਜਾਇ ਮਿਲੈ ਹੁਣਿ ਓਨਾ ਨੋ ਤਿਸੁ ਮਾਰੇ ਜਮੁ ਜੰਦਾਰੇ ॥
कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥
यदि कोई भी अब जाकर उनको मिलता है, उसे मृत्यु का निर्दयी यमदूत प्रताड़ित करता है।

ਗੁਰਿ ਬਾਬੈ ਫਿਟਕੇ ਸੇ ਫਿਟੇ ਗੁਰਿ ਅੰਗਦਿ ਕੀਤੇ ਕੂੜਿਆਰੇ ॥
गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥
जिन लोगों को गुरु नानक देव जी ने भी धिक्कार दिया, उन तिरस्कृत व्यक्तियों को गुरु अंगद देव ने भी झूठा घोषित किया।

ਗੁਰਿ ਤੀਜੀ ਪੀੜੀ ਵੀਚਾਰਿਆ ਕਿਆ ਹਥਿ ਏਨਾ ਵੇਚਾਰੇ ॥
गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥
उस समय तीसरी पीढ़ी वाले श्री गुरु अमरदास जी ने विचार किया कि इन निर्धन लोगों के वश में क्या है?

ਗੁਰੁ ਚਉਥੀ ਪੀੜੀ ਟਿਕਿਆ ਤਿਨਿ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਸਭਿ ਤਾਰੇ ॥
गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥
जिन सतिगुरु ने चौथे स्थान पर गुरु नियुक्त किया था, उन्होंने तमाम निंदक एवं दुष्टों का कल्याण कर दिया।

ਕੋਈ ਪੁਤੁ ਸਿਖੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੀ ਤਿਸੁ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰੇ ॥
कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥
कोई पुत्र अथवा सिक्ख जो कोई भी सतिगुरु की सेवा करता है, उसके सारे काम गुरु जी संवार देते हैं।

ਜੋ ਇਛੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ਪੁਤੁ ਧਨੁ ਲਖਮੀ ਖੜਿ ਮੇਲੇ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥
जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥
पुत्र, धन, लक्ष्मी जिस भी वस्तु की वह इच्छा करे, वही फल उसे मिलता है।सतिगुरु उसे ले जाकर ईश्वर से मिलाता है और ईश्वर उसे पार कर देता है।

ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਵਿਚਿ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥
सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥
जिस सतिगुरु के हृदय में भगवान का निवास है, उसमें सारे खजाने विद्यमान हैं।

ਸੋ ਪਾਏ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਰੇ ॥

सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥

केवल वही मनुष्य सतिगुरु को पाता है जिसके माथे पर पूर्वकृत शुभ कर्मों के संस्कार रूप लेख लिखे हुए हैं।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਗੈ ਧੂੜਿ ਤਿਨ ਜੋ ਗੁਰਸਿਖ ਮਿਤ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥

जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो गुरसिख मित पिआरे ॥१॥

नानक उनकी चरण-धूलि मांगता है, जो गुरसिक्ख मित्र प्यारे हैं।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਜਿਨ ਕਉ ਆਪਿ ਦੇਇ ਵਡਿਆਈ ਜਗਤੁ ਭੀ ਆਪੇ ਆਣਿ ਤਿਨ ਕਉ ਪੈਰੀ ਪਾਏ ॥
जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥
जिन्हें ईश्वर स्वयं शोभा देता है, उनके चरणों में सारे जगत् को भी डाल देता है।

ਡਰੀਐ ਤਾਂ ਜੇ ਕਿਛੁ ਆਪ ਦੂ ਕੀਚੈ ਸਭੁ ਕਰਤਾ ਆਪਣੀ ਕਲਾ ਵਧਾਏ ॥
डरीऐ तां जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥
केवल तभी हमें डरना चाहिए, यदि हम स्वयं कुछ करें। परमात्मा अपनी कला स्वयं बढ़ा रहा है।

ਦੇਖਹੁ ਭਾਈ ਏਹੁ ਅਖਾੜਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਚੇ ਕਾ ਜਿਨਿ ਆਪਣੈ ਜੋਰਿ ਸਭਿ ਆਣਿ ਨਿਵਾਏ ॥
देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥
हे भाई ! याद रखो, जिस ईश्वर ने अपने बल से जीवों को लाकर गुरु के समक्ष झुकाया है, उस सच्चे प्रियतम का यह जगत् एक अखाड़ा है,

ਆਪਣਿਆ ਭਗਤਾ ਕੀ ਰਖ ਕਰੇ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਨਿੰਦਕਾ ਦੁਸਟਾ ਕੇ ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਕਰਾਏ ॥
आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥
जिसमें जगत् का स्वामी प्रभु अपने भक्तों की रक्षा करता है और निंदक दुष्टों के मुँह काले कराता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਭਗਤਿ ਨਿਤ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥
सतिगुरु की शोभा दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है। ईश्वर अपने भक्तों को हमेशा अपना यश एवं भक्ति स्वयं ही करवाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਰਸਿਖਹੁ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਘਰੀ ਵਸਾਏ ॥
अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥
हे गुरसिक्खो ! दिन-रात नाम का जाप करो और सतिगुरु के द्वारा हरि कर्तार को अपने हृदय में बसाओ।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਤਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ਜਾਣਹੁ ਗੁਰਸਿਖਹੁ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਮੁਹਹੁ ਕਢਾਏ ॥
सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
हे गुरसिक्खो ! सतिगुरु की वाणी बिल्कुल सत्य समझो चूंकेि विश्व का रचयिता परमात्मा स्वयं यह वाणी सतिगुरु के मुख से कहलवाता है।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਮੁਹ ਉਜਲੇ ਕਰੇ ਹਰਿ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ਸੰਸਾਰਿ ਸਭਤੁ ਕਰਾਏ ॥
गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥
प्रियतम प्रभु गुरसिक्खों के मुख उज्ज्वल करता है और सारी दुनिया में गुरु की जय-जयकार करवाता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੀ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖਾਏ ॥੨॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥२॥
नानक हरि का दास है। हरि के दासों की हरि स्वयं ही लाज रखता है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਿ ਹੈ ਸਚੁ ਸਾਹ ਹਮਾਰੇ ॥
तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥
हे मेरे सच्चे शाह ! तू स्वयं ही सच्चा मालिक है।

ਸਚੁ ਪੂਜੀ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ਪ੍ਰਭ ਵਣਜਾਰੇ ਥਾਰੇ ॥
सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥
हे प्रभु ! हमें सत्य नाम रूपी पूँजी द्रढ़ करवाओ, चूंकि हम तेरे ही वणजारे हैं।

ਸਚੁ ਸੇਵਹਿ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿ ਲੈਹਿ ਗੁਣ ਕਥਹ ਨਿਰਾਰੇ ॥
सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥
जो व्यक्ति सत्य नाम को जपते हैं, सत्य नाम का व्यापार करते हैं, वह गुणों का कथन करते हैं, वे दुनिया से निराले हैं।

ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਸੇ ਜਨ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥
सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥
जिन्होंने गुरु के शब्द द्वारा मन को संवार लिया है, वही व्यक्ति सेवक भावना वाले बनकर परमात्मा से जा मिले हैं।

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਲਖਾਰੇ ॥੧੪॥
तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥१४॥
हे प्रभु ! तू सच्चा साहिब अलक्ष्य है (परन्तु) गुरु के शब्द द्वारा ही तेरी सूझ होती है॥ १४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਤਾਤਿ ਪਰਾਈ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਦਾ ਕਦੇ ਨ ਹੋਵੀ ਭਲਾ ॥
जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥
जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में दूसरों को दुखी करने की क्लेश -भावना होती है, उस व्यक्ति का कभी भला नहीं होता।

ਓਸ ਦੈ ਆਖਿਐ ਕੋਈ ਨ ਲਗੈ ਨਿਤ ਓਜਾੜੀ ਪੂਕਾਰੇ ਖਲਾ ॥
ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥
उस व्यक्ति को वचन पर कोई भरोसा नहीं करता, वह हमेशा उजाड़ में खड़ा पुकारता रहता है।

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਚੁਗਲੀ ਚੁਗਲੋ ਵਜੈ ਕੀਤਾ ਕਰਤਿਆ ਓਸ ਦਾ ਸਭੁ ਗਇਆ ॥
जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गइआ ॥
जिस मनुष्य के हृदय में चुगली होती है, वह चुगलखोर के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है, उसकी सारी की हुई कमाई निष्फल हो जाती है।

ਨਿਤ ਚੁਗਲੀ ਕਰੇ ਅਣਹੋਦੀ ਪਰਾਈ ਮੁਹੁ ਕਢਿ ਨ ਸਕੈ ਓਸ ਦਾ ਕਾਲਾ ਭਇਆ ॥
नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओस दा काला भइआ ॥
ऐसा व्यक्ति नित्य पराई झूठी चुगली करता है, इस लांछन के कारण वह किसी के सम्मुख भी नहीं जा सकता, फलस्वरूप उसका मुंह काला हो जाता है।

ਕਰਮ ਧਰਤੀ ਸਰੀਰੁ ਕਲਿਜੁਗ ਵਿਚਿ ਜੇਹਾ ਕੋ ਬੀਜੇ ਤੇਹਾ ਕੋ ਖਾਏ ॥
करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥
इस कलियुग में शरीर कर्म रूपी धरती है, इसमें जैसा बीज इन्सान बोता है, वैसा ही फल खाता है,

ਗਲਾ ਉਪਰਿ ਤਪਾਵਸੁ ਨ ਹੋਈ ਵਿਸੁ ਖਾਧੀ ਤਤਕਾਲ ਮਰਿ ਜਾਏ ॥
गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥
यूं ही बातों द्वारा कभी न्याय नहीं होता, यदि विष खाए तो तुरन्त मर जाता है।

ਭਾਈ ਵੇਖਹੁ ਨਿਆਉ ਸਚੁ ਕਰਤੇ ਕਾ ਜੇਹਾ ਕੋਈ ਕਰੇ ਤੇਹਾ ਕੋਈ ਪਾਏ ॥
भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥
हे भाई ! सच्चे परमात्मा का इन्साफ देखो, जैसे कोई कर्म करता है, वैसा ही उसका फल पाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ਹਰਿ ਦਰ ਕੀਆ ਬਾਤਾ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥੧॥
जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥१॥
नानक को प्रभु ने यह ज्ञान दिया है, और वह प्रभु के द्वार की ये बातें करके सुना रहा है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਹੋਦੈ ਪਰਤਖਿ ਗੁਰੂ ਜੋ ਵਿਛੁੜੇ ਤਿਨ ਕਉ ਦਰਿ ਢੋਈ ਨਾਹੀ ॥
होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥
जो व्यक्ति गुरु के समक्ष होते हुए भी बिछुड़ चुके हैं। उन्हें सत्य के दरबार में कोई सहारा नहीं मिलता।

ਕੋਈ ਜਾਇ ਮਿਲੈ ਤਿਨ ਨਿੰਦਕਾ ਮੁਹ ਫਿਕੇ ਥੁਕ ਥੁਕ ਮੁਹਿ ਪਾਹੀ ॥
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥
यदि कोई उन निंदकों को जाकर मिलता भी है, तो उसका भी मुँह फीका एवं काला होता है (अर्थात् लोक उसे तिरस्कृत करते हैं)

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰਿ ਫਿਟਕੇ ਸੇ ਸਭ ਜਗਤਿ ਫਿਟਕੇ ਨਿਤ ਭੰਭਲ ਭੂਸੇ ਖਾਹੀ ॥
जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भ्मभल भूसे खाही ॥
चूंकि जो लोग सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत हुए हैं, वे दुनिया में भी तिरस्कृत हुए हैं और वे हमेशा भटकते रहते हैं।

ਜਿਨ ਗੁਰੁ ਗੋਪਿਆ ਆਪਣਾ ਸੇ ਲੈਦੇ ਢਹਾ ਫਿਰਾਹੀ ॥
जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥
जो व्यक्ति गुरु की निन्दा करते हैं, वे हमेशा रोते फिरते हैं।

ਤਿਨ ਕੀ ਭੁਖ ਕਦੇ ਨ ਉਤਰੈ ਨਿਤ ਭੁਖਾ ਭੁਖ ਕੂਕਾਹੀ ॥
तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥
उनकी तृष्णा कभी नहीं बुझती और सदा भूख-भूख चिल्लाते हैं।

ਓਨਾ ਦਾ ਆਖਿਆ ਕੋ ਨਾ ਸੁਣੈ ਨਿਤ ਹਉਲੇ ਹਉਲਿ ਮਰਾਹੀ ॥
ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ॥
कोई उनकी बात पर भरोसा नहीं करता इसलिए वे सदा चिन्ता-फिक्र में ही खपते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵੇਖਿ ਨ ਸਕਨੀ ਓਨਾ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਥਾਉ ਨਾਹੀ ॥
सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही ॥
जो मनुष्य गुरु की महिमा सहन नहीं करते, उन्हें लोक-परलोक में स्थान नहीं मिलता।

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਾਰੇ ਤਿਨ ਜਾਇ ਮਿਲਹਿ ਰਹਦੀ ਖੁਹਦੀ ਸਭ ਪਤਿ ਗਵਾਹੀ ॥
जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥
गुरु से शापित हुए व्यक्तियों को जो मनुष्य जाकर मिलते हैं, वह भी अपनी थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं,

ਓਇ ਅਗੈ ਕੁਸਟੀ ਗੁਰ ਕੇ ਫਿਟਕੇ ਜਿ ਓਸੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਕੁਸਟੁ ਉਠਾਹੀ ॥
ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥
क्योंकि गुरु से शापित वे तो पहले ही कोढ़ी हैं। जो भी व्यक्ति ऐसे व्यक्ति का साथ करता है, उसे भी कोढ़ लग जाता है।

ਹਰਿ ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਨਾ ਕਰਹੁ ਜੋ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਚਿਤੁ ਲਾਹੀ ॥
हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥
हे जिज्ञासुओ ! भगवान के लिए उनके दर्शन भी मत करो, जो सतिगुरु को त्याग कर माया के मोह में लगते हैं।

ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ਤਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕਿਹੁ ਚਾਰਾ ਨਾਹੀ ॥
धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥
उनके साथ उन्हें कोई उपाय सफल नहीं होता। चूंकेि परमात्मा ने आदिकाल से ही उनके द्वारा किए कर्मो के अनुसार ऐसे द्वैतभाव के संस्कार ही लिख दिए हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਤੂ ਤਿਸੁ ਅਪੜਿ ਕੋ ਨ ਸਕਾਹੀ ॥
जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥
हे नानक ! तुम नाम की आराधना करो, चूंकि नाम की आराधना वाले की समानता कोई नहीं कर सकता,

ਨਾਵੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੈ ਨਿਤ ਸਵਾਈ ਚੜੈ ਚੜਾਹੀ ॥੨॥
नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥२॥
नाम की महिमा महान हैं जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਜਿ ਹੋਂਦੈ ਗੁਰੂ ਬਹਿ ਟਿਕਿਆ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੀ ਹੋਈ ॥
जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥
जिसे गुरु ने स्वयं बैठकर तिलक किया हो, उसकी बहुत शोभा होती है।

ਤਿਸੁ ਕਉ ਜਗਤੁ ਨਿਵਿਆ ਸਭੁ ਪੈਰੀ ਪਇਆ ਜਸੁ ਵਰਤਿਆ ਲੋਈ ॥
तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥
उसके समक्ष सारी दुनिया झुकती है और उसके चरण स्पर्श करती है। उसकी शोभा सारे विश्व में फैल जाती है।

ਤਿਸ ਕਉ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਨਮਸਕਾਰੁ ਕਰਹਿ ਜਿਸ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਹਥੁ ਧਰਿਆ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੋ ਪੂਰਾ ਹੋਈ ॥
तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥
जिस मस्तक पर पूर्ण गुरु ने हाथ रखा हो, वह समस्त गुणों में पूर्ण हो गया और समस्त खण्डों - ब्रह्माण्डों के जीव उसे प्रणाम करते हैं।

ਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ਅਪੜਿ ਕੋ ਨ ਸਕੋਈ ॥
गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥
गुरु की महिमा दिनों-दिन बढ़ती है, कोई मनुष्य उसकी समानता नहीं कर सकता,

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਬਹਿ ਟਿਕਿਆ ਆਪੇ ਪੈਜ ਰਖੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੩॥
जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥३॥
क्योंकि अपने सेवक नानक को सृजनहार प्रभु ने स्वयं मान दिया है इसलिए ईश्वर स्वयं ही उसकी लाज रखता है॥ ३ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਪਾਰੁ ਹੈ ਅੰਦਰਿ ਹਟਨਾਲੇ ॥
काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥
काया रूपी किला अपार है, जिसके भीतर इन्द्रियां रूपी बाज़ार है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਉਦਾ ਜੋ ਕਰੇ ਹਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲੇ ॥
गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥
जो गुरमुख इन्द्रियों रूपी बाजार में से नाम रूपी सौदा खरीदते हैं, वे भगवान की नाम रूपी वस्तु संभाल लेते हैं।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਵਣਜੀਐ ਹੀਰੇ ਪਰਵਾਲੇ ॥
नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥
काया रूपी किले में ही ईश्वर के नाम के खजाने का व्यापार किया जा सकता है, यही सौदे साथ-साथ निभने वाले हीरे तथा मूंगे हैं।

ਵਿਣੁ ਕਾਇਆ ਜਿ ਹੋਰ ਥੈ ਧਨੁ ਖੋਜਦੇ ਸੇ ਮੂੜ ਬੇਤਾਲੇ ॥
विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥
जो व्यक्ति इस सौदे को काया के बिना किसी दूसरे स्थान पर खोजते हैं, वे मूर्ख हैं और मनुष्य काया में आए हुए भूत-प्रेत हैं।

ਸੇ ਉਝੜਿ ਭਰਮਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਜਿਉ ਝਾੜ ਮਿਰਗੁ ਭਾਲੇ ॥੧੫॥
से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥१५॥
जैसे मृग कस्तूरी की सुगन्धि हेतु झाड़ियों को खोजता फिरता है, वैसे ही ऐसे मनुष्य भ्रम में फँसे हुए वनों में भटकते रहते हैं।॥ १५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸੁ ਅਉਖਾ ਜਗ ਮਹਿ ਹੋਇਆ ॥
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥
जो व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है, वह दुनिया में हमेशा दुखी रहता है।

ਨਰਕ ਘੋਰੁ ਦੁਖ ਖੂਹੁ ਹੈ ਓਥੈ ਪਕੜਿ ਓਹੁ ਢੋਇਆ ॥
नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकड़ि ओहु ढोइआ ॥
दुखों का कुओं रूपी जो घोर नरक है, उस निंदक को पकड़कर उसमें डाला जाता है,

ਕੂਕ ਪੁਕਾਰ ਕੋ ਨ ਸੁਣੇ ਓਹੁ ਅਉਖਾ ਹੋਇ ਹੋਇ ਰੋਇਆ ॥
कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥
जहाँ उसकी विनती कोई नहीं सुनता और वह दुखी होकर रोता है।

ਓਨਿ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਗਵਾਇਆ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ ਸਭੁ ਖੋਇਆ ॥
ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥
ऐसा व्यक्ति लोक-परलोक, नाम-रूपी लाभ एवं मानव जन्म रूपी मूल सब कुछ गंवा देता है।

ਓਹੁ ਤੇਲੀ ਸੰਦਾ ਬਲਦੁ ਕਰਿ ਨਿਤ ਭਲਕੇ ਉਠਿ ਪ੍ਰਭਿ ਜੋਇਆ ॥
ओहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥
अंत में ऐसा व्यक्ति तेली का बैल बनकर प्रतिदिन नए सूर्य की भाँति ईश्वर के आदेश में लगाया जाता है।

ਹਰਿ ਵੇਖੈ ਸੁਣੈ ਨਿਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਦੂ ਕਿਛੁ ਗੁਝਾ ਨ ਹੋਇਆ ॥
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥
प्रभु सदैव (यह) सब कुछ देखता एवं सुनता है, उससे कोई बात छिपी नहीं रह सकती।

ਜੈਸਾ ਬੀਜੇ ਸੋ ਲੁਣੈ ਜੇਹਾ ਪੁਰਬਿ ਕਿਨੈ ਬੋਇਆ ॥
जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥
जैसा बीज किसी इन्सान ने आदि से बोया है और जैसा वर्तमान में बो रहा है, वैसा ही फल खाता है।

ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣੀ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਧੋਇਆ ॥
जिसु क्रिपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥
जिस प्राणी पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह सतिगुरु के चरण धोता है।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਿਛੈ ਤਰਿ ਗਇਆ ਜਿਉ ਲੋਹਾ ਕਾਠ ਸੰਗੋਇਆ ॥
गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥
जैसे लोहा काठ के साथ तैरता है, उसी प्रकार सतिगुरु के दिशा-निर्देश पर चलकर भवसागर से पार हो जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇਆ ॥੧॥
जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥१॥
हे नानक ! तुम नाम की आराधना करो चूंकेि हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से ही सुख उपलब्ध होता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਵਡਭਾਗੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥
वे जीव-स्त्रियों बड़ी भाग्यवान एवं सुहागिन हैं, जिन्हें गुरु के माध्यम से हरि-प्रभु मिल गया है।

ਅੰਤਰ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੀਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥२॥
हे नानक ! ईश्वर की ज्योति ने उनका हृदय रोशन कर दिया है और वे उसके नाम में लीन हो गई हैं। २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਸਭੁ ਧਰਮੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਸਚੇ ਕੀ ਵਿਚਿ ਜੋਤਿ ॥
इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥
यह सारा शरीर धर्म है, इसमें सत्य (प्रभु) की ज्योति विद्यमान है।

ਗੁਹਜ ਰਤਨ ਵਿਚਿ ਲੁਕਿ ਰਹੇ ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕੁ ਕਢੈ ਖੋਤਿ ॥
गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥
इस (शरीर) में दिव्य रत्न छिपे हैं। कोई विरला गुरमुख सेवक ही इन्हें खोजकर निकालता है।

ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਤਾਂ ਇਕੁ ਰਵਿਆ ਇਕੋ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ॥

सभु आतम रामु पछाणिआ तां इकु रविआ इको ओति पोति ॥

जब प्राणी राम को अनुभव करता है तो वह एक ईश्वर को सर्वव्यापक विद्यमान हुआ ऐसे देखता है जैसे ताने-बाने में एक धागा होता है।

ਇਕੁ ਦੇਖਿਆ ਇਕੁ ਮੰਨਿਆ ਇਕੋ ਸੁਣਿਆ ਸ੍ਰਵਣ ਸਰੋਤਿ ॥

इकु देखिआ इकु मंनिआ इको सुणिआ स्रवण सरोति ॥

वह एक ईश्वर को ही देखता है, उस पर ही आस्था रखता है और अपने कानों से उसकी बातें सुनता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਸਚੁ ਸਚੇ ਸੇਵਾ ਤੇਰੀ ਹੋਤਿ ॥੧੬॥
जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥१६॥
हे नानक ! तुम प्रभु के नाम की महिमा-स्तुति करो, सचमुच तेरी यह सेवा ईश्वर के द्वार पर स्वीकृत होगी ॥ १६ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸਭਿ ਰਸ ਤਿਨ ਕੈ ਰਿਦੈ ਹਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥
जिनके मन में भगवान निवास करता है, तमाम रस (खुशिया) उनके भीतर मौजूद हैं।

ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਤਿਨ ਕਉ ਸਭਿ ਦੇਖਣ ਜਾਹਿ ॥
हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥
भगवान के दरबार में उनके मुख उज्ज्वल होते हैं और सभी उनके दर्शन हेतु जाते हैं।

ਜਿਨ ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਕਉ ਭਉ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥
जिन लोगों ने निर्भय परमेश्वर के नाम का ध्यान किया है, उन्हें कोई भय नहीं होता।

ਹਰਿ ਉਤਮੁ ਤਿਨੀ ਸਰੇਵਿਆ ਜਿਨ ਕਉ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਆਹਿ ॥
हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन कउ धुरि लिखिआ आहि ॥
जिनकी तकदीर में आदि से ही लिखा होता है, उन्होंने उत्तम परमात्मा का सिमरन किया है।

ਤੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹਿ ਪੈਨਾਈਅਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਵੁਠਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥
जिनके मन में भगवान निवास करता है, उन्हें उसके दरबार में ख्याति मिलती है।

ਓਇ ਆਪਿ ਤਰੇ ਸਭ ਕੁਟੰਬ ਸਿਉ ਤਿਨ ਪਿਛੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਛਡਾਹਿ ॥
ओइ आपि तरे सभ कुट्मब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥
वह अपने समूचे परिवार सहित भवसागर से पार हो जाते हैं और उनके पद्चिन्हों पर चलकर सारी दुनिया मुक्त हो जाती है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਜਨ ਤਿਨ ਵੇਖਿ ਵੇਖਿ ਹਮ ਜੀਵਾਹਿ ॥੧॥

जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥१॥

नानक का कथन है कि हे भगवान ! मुझे भी ऐसे महापुरुषों से मिला दे, जिन्हें देख-देख कर हम जीते रहें ॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥

मः ४ ॥

महला ४॥

ਸਾ ਧਰਤੀ ਭਈ ਹਰੀਆਵਲੀ ਜਿਥੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥

जिस धरती पर मेरा सतिगुरु आकर बैठा है, वह धरती समृद्ध हो गई है।

ਸੇ ਜੰਤ ਭਏ ਹਰੀਆਵਲੇ ਜਿਨੀ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਖਿਆ ਜਾਇ ॥

से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥

वे लोग भी कृतार्थ हो चुके हैं, जिन्होंने मेरे सतिगुरु के जाकर दर्शन प्राप्त किए हैं।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਪਿਤਾ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਕੁਲੁ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸੁ ਜਨਨੀ ਜਿਨਿ ਗੁਰੂ ਜਣਿਆ ਮਾਇ ॥

धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ॥

हे माँ! वह पिता बड़ा भाग्यशाली है, वह कुल भी भाग्यवान है, वह माँ बड़ी भाग्यवान है, जिसने गुरु को जन्म दिया है।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਜਿਨੀ ਡਿਠਾ ਤਿਨਾ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥

धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥

वह गुरु धन्य-धन्य है, जिसने भगवान के नाम की आराधना की है। यह स्वयं भी भवसागर से पार हुए हैं और जिन्होंने गुरु के दर्शन किए हैं, उन्हें भी गुरु ने भवसागर से मुक्त करवा दिया है।

ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਦਇਆ ਕਰਿ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਧੋਵੈ ਪਾਇ ॥੨॥

हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥२॥

हे हरि ! दया करके मुझे (ऐसे) गुरु से मिला दे, चूंकि नानक उनके चरण जल से धोए॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਮਰੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥

सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥

सत्य का पुंज सतिगुरु अमर है, जिसने ईश्वर को अपने हृदय में बसाया है।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਬਿਖੁ ਮਾਰਿਆ ॥
सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥
सत्य का पुंज सतिगुरु ऐसे महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने हृदय से काम-क्रोध रूपी विष को नाश कर दिया है।

जा डिठा पूरा सतिगुरू तां अंदरहु मनु साधारिआ ॥
जा डिठा पूरा सतिगुरू तां अंदरहु मनु साधारिआ ॥
जब पूर्ण सतिगुरु के दर्शन किए तो मुझ में धैर्य हो गया,"

बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥
(इसलिए) मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ और सदैव उन पर न्यौछावर हूँ।

गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥१७॥
गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥१७॥
गुरमुख ने मानव जन्म सफल कर लिया है और स्वेच्छाचारी ने मानव जन्म व्यर्थ गंवा दिया है॥ १७ ॥

सलोक मः ४ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥
करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥
भगवान ने कृपा करके जिस व्यक्ति को सतिगुरु से मिला दिया है, ऐसा गुरमुख अपने मुख से भगवान के नाम का ही ध्यान करता रहता है।

सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥
सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥
वह गुरमुख वही कार्य करता है, जो कार्य सतिगुरु को अच्छा लगता है। अत: पूर्ण गुरु उसे आत्मस्वरूप में बसाते हैं।

जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥
जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥
जिनके अन्तर्मन में नाम रूपी खजाना है, गुरु उसका तमाम भय निवृत्त कर देता है।

ਜਿਨ ਰਖਣ ਕਉ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੋਇ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਝਖਿ ਝਖਿ ਜਾਇਸੀ ॥
जिन रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥
जिनकी भगवान स्वयं रक्षा करता है, अनेकों ही उनको नुक्सान पहुँचाने के प्रयास में खप-खप कर मर जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਹਰਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਛੋਡਾਇਸੀ ॥੧॥
जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥१॥
हे नानक ! तुम भगवान के नाम का ध्यान करो। भगवान लोक तथा परलोक में मुक्त कर देगा ॥ १ ॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵਦੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥
सतिगुरु की महिमा गुरु के सिक्खों को बड़ी प्यारी लगती है।

ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੀ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥
हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥
भगवान स्वयं ही सतिगुरु की लाज-प्रतिष्ठा रखता है, इसलिए सतिगुरु की महिमा नित्य ही बढ़ती रहती है।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਮਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਛਡਾਈ ॥
गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥
सतिगुरु के हृदय में भगवान निवास कर रहा है, इसलिए भगवान स्वयं ही गुरु को दुष्टों से बचाता है।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਤਾਣੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹਰਿ ਤਿਨਿ ਸਭ ਆਣਿ ਨਿਵਾਈ ॥
गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥
भगवान ही गुरु का बल एवं सहारा है। उस भगवान ने सारी दुनिया लाकर गुरु के समक्ष झुका दी है।

ਜਿਨੀ ਡਿਠਾ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭਾਉ ਕਰਿ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭਿ ਪਾਪ ਗਵਾਈ ॥
जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥
जिन्होंने श्रद्धा से मेरे सतिगुरु के दर्शन किए हैं, उनके सभी पाप नाश हो गए हैं।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਬਹੁ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥
भगवान के दरबार में ऐसे लोगों के मुख उज्जवल हुए हैं और उन्होंने बड़ी शोभा प्राप्त की है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਧੂੜਿ ਤਿਨ ਜੋ ਗੁਰ ਕੇ ਸਿਖ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੨॥
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥२॥
नानक का कथन है कि मैं उनकी चरण-धूलि माँगता हूँ जो गुरु के सिक्ख मेरे भाई हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਉ ਆਖਿ ਸਲਾਹੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੁ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥
जिस सत्य के पुंज सच्चे परमात्मा की कीर्ति सारे विश्व में हो रही है, मैं उस सच्चे (परमात्मा) की अपने मुख से महिमा-स्तुति करता हूँ।

ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸਲਾਹ ਸਚੁ ਸਚੁ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈ ॥
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥
वह सच्चा परमात्मा जो हमेशा ही सराहनीय है, उस सच्चे का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਰਸੁ ਜਿਨੀ ਚਖਿਆ ਸੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਈ ॥
सचु सचा रसु जिनी चखिआ से त्रिपति रहे आघाई ॥
जिन्होंने सत्यनाम रूपी रस चखा है, ये तृप्त होकर शांत हो गए हैं।

ਇਹੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਸੇਈ ਜਾਣਦੇ ਜਿਉ ਗੂੰਗੈ ਮਿਠਿਆਈ ਖਾਈ ॥
इहु हरि रसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥
इस हरि-रस के आनंद को वहीं गुरमुख जानते हैं, जिन्होंने यह रस चखा है। जैसे गूंगे की खाई हुई मिठाई के स्वाद को वह गूंगा ही जानता है, अन्य कोई नहीं जान सकता।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਿਆ ਮਨਿ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥੧੮॥
गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥१८॥
जिन्होंने पूर्ण गुरु के द्वारा हरि-प्रभु की आराधना की है, उनके मन में आनंद की शुभकामनाएँ प्रगट हुई हैं।॥ १८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਉਮਰਥਲ ਸੇਈ ਜਾਣਨਿ ਸੂਲੀਆ ॥
जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥
जिस तरह जिनके शरीर में फोड़ा है, उसकी पीड़ा को वही व्यक्ति जानते हैं।

ਹਰਿ ਜਾਣਹਿ ਸੇਈ ਬਿਰਹੁ ਹਉ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਸਦ ਘੁਮਿ ਘੋਲੀਆ ॥
हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥
वैसे ही जिन जिज्ञासुओं के भीतर भगवान की जुदाई है, उस जुदाई की पीड़ा को वहीं जानते हैं। मैं उन पर हमेशा ही न्यौछावर हूँ, जो ईश्वर से जुदाई की पीड़ा को जानते हैं।

ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਜਣੁ ਪੁਰਖੁ ਮੇਰਾ ਸਿਰੁ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਤਲ ਰੋਲੀਆ ॥
हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥
हे प्रभु ! मुझे किसी ऐसे (गुरु) सज्जन महापुरुष से मिला दे। जिनके लिए मेरा सिर उनके पैरों के नीचे झुक जाए।

ਜੋ ਸਿਖ ਗੁਰ ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਹਉ ਗੁਲਮੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਗੋਲੀਆ ॥
जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥
जो सिक्ख गुरु की बताई हुई करनी करते हैं, मैं उनके गुलामों का गुलाम हूँ।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਜੋ ਰਤੇ ਤਿਨ ਭਿਨੀ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚੋਲੀਆ ॥
हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥
जिनके हृदय प्रभु नाम के गहरे रंग में रंगे हैं, उनके चोले (अर्थात् शरीर) प्रभु-प्रेम में भीगे हुए होते हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਮੇਲਿ ਗੁਰ ਪਹਿ ਸਿਰੁ ਵੇਚਿਆ ਮੋਲੀਆ ॥੧॥
करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥१॥
हे नानक ! भगवान ने दया करके उन्हें गुरु से मिलाया है और उन्होंने अपना सिर गुरु के समक्ष बेच दिया है॥ १॥
॥1॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਅਉਗਣੀ ਭਰਿਆ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਕਿਉ ਸੰਤਹੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥
हे संतजनों ! यह शरीर अवगुणों से भरा हुआ है, यह कैसे पवित्र हो सकता है?

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਵੇਹਾਝੀਅਹਿ ਮਲੁ ਹਉਮੈ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥
गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥
यदि गुरमुख बनकर गुण खरीदे जाएँ तो अहंकार रूपी मैल को निकाल कर यह शरीर निर्मल हो सकता है।

ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਰੰਗ ਸਿਉ ਸਚੁ ਸਉਦਾ ਹੋਇ ॥
सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥
जो मनुष्य प्रेम-पूर्वक सत्य को खरीदते हैं, इनका यह सौदा सदा साथ निभाता है,

ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵਈ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਸੋਇ ॥
तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥
"(इस सौदे में) घाटा कभी नहीं होता और जिस तरह प्रभु की इच्छा होती है, वह लाभ प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿਆ ਜਿਨਾ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥२॥
हे नानक ! सत्य नाम की खरीद वहीं मनुष्य करते हैं, जिनकी किस्मत में आदि से ही लिखा होता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਚੁ ਸਚਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਲੇ ॥
सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥
मैं उस सराहनीय सत्य प्रभु की महिमा-स्तुति करता हूँ। सत्यस्वरूप भगवान सत्य ही निराला है।

ਸਚੁ ਸੇਵੀ ਸਚੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਚੁ ਸਚਾ ਹਰਿ ਰਖਵਾਲੇ ॥
सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥
सद्पुरुष की सेवा करने से सत्य हृदय में बस जाता है। सत्य का पुंज हरि सबका रक्षक है।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ਸੇ ਜਾਇ ਰਲੇ ਸਚ ਨਾਲੇ ॥
सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥
जिन्होंने सचमुच सच्चे हरि की आराधना की है, वे उस सच्चे के साथ विलीन हो गए हैं।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਨ ਸੇਵਿਆ ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਬੇਤਾਲੇ ॥
सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥
जो सत्यस्वरूप हरि की सेवा नहीं करते, वे मनमुख मूर्ख एवं बेताल (भूत) हैं।

ਓਹ ਆਲੁ ਪਤਾਲੁ ਮੁਹਹੁ ਬੋਲਦੇ ਜਿਉ ਪੀਤੈ ਮਦਿ ਮਤਵਾਲੇ ॥੧੯॥
ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥१९॥
शराब पीकर धुत हुए शराबी की भाँति वे अपने मुख से बकवास करते हैं।॥ १९॥

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सलोक महला ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗਉੜੀ ਰਾਗਿ ਸੁਲਖਣੀ ਜੇ ਖਸਮੈ ਚਿਤਿ ਕਰੇਇ ॥
गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥
गउड़ी रागिनी तो ही सुलक्षणा है, यदि वह मालिक प्रभु को चित्त में बसा ले।

ਭਾਣੈ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੈ ਐਸਾ ਸੀਗਾਰੁ ਕਰੇਇ ॥
भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥
वह सतिगुरु की इच्छानुसार चले, ऐसा हार-श्रृंगार उसके लिए करना उचित है।

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਭਤਾਰੁ ਹੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਰਾਵੇਇ ॥
सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥
सच्चा शब्द प्राणी का कंत (पति) है, हमेशा उसे उसी का आनंद लेना चाहिए।

ਜਿਉ ਉਬਲੀ ਮਜੀਠੈ ਰੰਗੁ ਗਹਗਹਾ ਤਿਉ ਸਚੇ ਨੋ ਜੀਉ ਦੇਇ ॥
जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥
जैसे मजीठ उबाल सहन करती है एवं उसका रंग गहरा लाल हो जाता है, वैसे ही (जीव रूपी स्त्री) अपनी आत्मा कंत (पति) पर न्योछावर करे,

ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਅਤਿ ਰਤੀ ਸਚੇ ਸਿਉ ਲਗਾ ਨੇਹੁ ॥
रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥
तो उसका सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ प्रेम हो जाता है, वह (नाम के) गहरे रंग में रंग जाती है।

ਕੂੜੁ ਠਗੀ ਗੁਝੀ ਨਾ ਰਹੈ ਕੂੜੁ ਮੁਲੰਮਾ ਪਲੇਟਿ ਧਰੇਹੁ ॥
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलमा पलेटि धरेहु ॥
मिथ्या (रूपी) मुलम्मा (निसंदेह सत्य के साथ) लपेट कर रखो,

ਕੂੜੀ ਕਰਨਿ ਵਡਾਈਆ ਕੂੜੇ ਸਿਉ ਲਗਾ ਨੇਹੁ ॥
कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥
"(फिर भी) जो झूठ एवं ठगी है, वे छिपे नहीं रह सकते जिनका झूठ से प्रेम होता है। वह दुनिया की झूठी ही प्रशंसा करते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥
नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥१॥
हे नानक ! ईश्वर ही सत्य है और वह स्वयं ही अपनी कृपा की दृष्टि करता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਹਰਿ ਉਸਤਤਿ ਹੈ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰਿਆ ॥
सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥
सत्संग में प्रभु की गुणस्तुति होती है, (क्योंकि) संतों की संगति करने से ही प्रियतम मिलता है।

ਓਇ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਾਣੀ ਧੰਨਿ ਜਨ ਹਹਿ ਉਪਦੇਸੁ ਕਰਹਿ ਪਰਉਪਕਾਰਿਆ ॥
ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥
वे पुरुष-प्राणी भाग्यवान हैं (क्योंकि) वे परोपकार हेतु उपदेश करते हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਵਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਜਗੁ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥
हरि नामु द्रिड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥
ईश्वर के नाम में आस्था रखते हैं, ईश्वर का नाम ही सुनाते हैं और ईश्वर के नाम के द्वारा ही संसार का कल्याण करते हैं।

ਗੁਰ ਵੇਖਣ ਕਉ ਸਭੁ ਕੋਈ ਲੋਚੈ ਨਵ ਖੰਡ ਜਗਤਿ ਨਮਸਕਾਰਿਆ ॥
गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ ॥
हरेक जीव गुरु के दर्शनों की अभिलाषा करता है और संसार में नवखण्ड के जीव सतिगुरु के समक्ष प्रणाम करते हैं।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਆਪੁ ਰਖਿਆ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਗੁਰੁ ਆਪੇ ਤੁਧੁ ਸਵਾਰਿਆ ॥
तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥
हे भगवान ! तूने अपना आप सतिगुरु में छिपा रखा है और तूने स्वयं ही गुरु को सुन्दर बनाया है।

ਤੂ ਆਪੇ ਪੂਜਹਿ ਪੂਜ ਕਰਾਵਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥
तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥
हे सतिगुरु को पैदा करने वाले परमात्मा ! तुम स्वयं सतिगुरु की पूजा करते हो और दूसरों से उनकी पूजा करवाते हो।

ਕੋਈ ਵਿਛੁੜਿ ਜਾਇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪਾਸਹੁ ਤਿਸੁ ਕਾਲਾ ਮੁਹੁ ਜਮਿ ਮਾਰਿਆ ॥
कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥
यदि कोई मनुष्य सतिगुरु से बिछुड़ जाए, उसका मुंह काला होता है और यमराज से उसे बड़ी मार पड़ती है।

ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਢੋਈ ਨਾਹੀ ਗੁਰਸਿਖੀ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥
तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥
गुरु के सिक्खों ने अपने हृदय में विचार कर लिया है कि उसे लोक-परलोक में सहारा नहीं मिलता है।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਮਿਲੇ ਸੇਈ ਜਨ ਉਬਰੇ ਜਿਨ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥
जो मनुष्य सतिगुरु से जाकर मिलते हैं और अपने हृदय में नाम का चिंतन करते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਗੁਰਸਿਖ ਪੁਤਹਹੁ ਹਰਿ ਜਪਿਅਹੁ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰਿਆ ॥੨॥
जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥२॥
नानक के गुरसिक्ख पुत्रो ! ईश्वर का नाम जपो (क्योंकि) ईश्वर भवसागर से पार करवा देता है॥ २ ॥

ਮਹਲਾ ੩ ॥
महला ३ ॥
महला ३॥

ਹਉਮੈ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਇਆ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਖਿਆ ਬਿਕਾਰ ॥
हउमै जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार ॥
अहंकार ने सारी दुनिया को भटकाया हुआ है, इसलिए दुनिया दुर्मति के कारण विषय-विकारों में फँसती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਨਦਰਿ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਅੰਧਿਆਰ ॥
सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥
जिस मनुष्य को गुरु मिलता है, उस पर भगवान की कृपा-दृष्टि होती है, अन्यथा स्वेच्छाचारी मनुष्य के लिए अज्ञान रूपी अँधेरा ही बना रहता है।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਜਿਸ ਨੋ ਸਬਦਿ ਲਾਏ ਪਿਆਰੁ ॥੩॥
नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु ॥३॥
हे नानक ! प्रभु जिस मनुष्य का प्रेम 'शब्द' में लगाता है, उसे वह स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਹੈ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰੁ ਭਿਜੈ ॥
सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरु भिजै ॥
सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति सदैव स्थिर रहने वाली है, (यह गुणस्तुति) वही मनुष्य कर सकता है, जिसका हृदय भी प्रशंसा में भीगा हुआ हो।

ਜਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਕੰਧੁ ਨ ਕਬਹੂ ਛਿਜੈ ॥
जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥
जो मनुष्य एकाग्रचित होकर एक ईश्वर का स्मरण करते हैं, उनका शरीर कभी क्षीण नहीं होता।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਪੁਰਖ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਜਿਨ ਸਚੁ ਰਸਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਿਜੈ ॥
धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अम्रितु पिजै ॥
वह पुरुष धन्य -धन्य एवं उपमायोग्य हैं, जिनकी रसना सत्यनाम के अमृत को चखती है।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨ ਮਨਿ ਭਾਵਦਾ ਸੇ ਮਨਿ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਲਿਜੈ ॥
सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥
जिनके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा सचमुच प्रिय लगता है, वे सत्य के दरबार में सम्मानित होते हैं।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਜਨਮੁ ਸਚਿਆਰੀਆ ਮੁਖ ਉਜਲ ਸਚੁ ਕਰਿਜੈ ॥੨੦॥
धनु धंनु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥२०॥
सत्यवादियों का जन्म धन्य है जिनके चेहरे को सत्य उज्ज्वल कर देता है॥ २० ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਸਾਕਤ ਜਾਇ ਨਿਵਹਿ ਗੁਰ ਆਗੈ ਮਨਿ ਖੋਟੇ ਕੂੜਿ ਕੂੜਿਆਰੇ ॥
साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥
यदि शाक्त इन्सान गुरु के समक्ष जाकर झुक भी जाए तो भी वह मन में खोट होने के कारण झुठ का व्यापारी बना रहता है।

ਜਾ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਉਠਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਬਹਿ ਜਾਹਿ ਘੁਸਰਿ ਬਗੁਲਾਰੇ ॥
जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥
जब गुरु जी कहते है - 'हे मेरे भाइओ, सावधान हो जाओ। फिर यह शाक्त भी बगुलों के समान मिलकर बैठ जाते हैं।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਅੰਦਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਰਤੈ ਚੁਣਿ ਕਢੇ ਲਧੋਵਾਰੇ ॥
गुरसिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥
गुरसिक्खों के मन में सतिगुरु बसता है, इसलिए सिक्खों में मिलकर बैठे हुए भी शाक्त जांच-पड़ताल के समय चुनकर निकाल दिए जाते हैं।

ਓਇ ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਬਹਿ ਮੁਹੁ ਛਪਾਇਨਿ ਨ ਰਲਨੀ ਖੋਟੇਆਰੇ ॥
ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे ॥
वे आगे-पीछे होकर मुँह तो बहुत छिपाते हैं, लेकिन झूठ के व्यापारी सत्संगत में मिल नहीं सकते।

ਓਨਾ ਦਾ ਭਖੁ ਸੁ ਓਥੈ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ਕੂੜੁ ਲਹਨਿ ਭੇਡਾਰੇ ॥
ओना दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूड़ु लहनि भेडारे ॥
शाक्त लोगों का भोजन वहाँ (गुरमुखों के साथ में) नहीं होता, (इसलिए) भेड़ों के समान (किसी अन्य स्थान पर) जाकर झूठ को प्राप्त करते हैं।

ਜੇ ਸਾਕਤੁ ਨਰੁ ਖਾਵਾਈਐ ਲੋਚੀਐ ਬਿਖੁ ਕਢੈ ਮੁਖਿ ਉਗਲਾਰੇ ॥
जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥
यदि शाक्त मनुष्य को (नाम-रूपी) भला पदार्थ खिलाने की इच्छा भी करें तो भी वह मुंह से (निन्दा रूपी) विष ही उगलकर निकालता है।

ਹਰਿ ਸਾਕਤ ਸੇਤੀ ਸੰਗੁ ਨ ਕਰੀਅਹੁ ਓਇ ਮਾਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥
हरि साकत सेती संगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥
"(हे संतजनों !) शाक्त के साथ संगति मत करो, क्योंकि जगत् के रचयिता ने स्वयं उन्हें मृत कर दिया है,

ਜਿਸ ਕਾ ਇਹੁ ਖੇਲੁ ਸੋਈ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰੇ ॥੧॥
जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥१॥
जिस ईश्वर का यह खेल है, वह स्वयं इस खेल को रचकर देख रहा है। हे नानक ! तुम ईश्वर का नाम-सिमरन करते रहो ॥ १ ॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਹਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥
सतिगुरु पुरखु अगमु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥
महापुरुष सतिगुरु अगम्य है, जिसने अपने हृदय में भगवान को धारण किया हुआ है।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਅਪੜਿ ਕੋਇ ਨ ਸਕਈ ਜਿਸੁ ਵਲਿ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू नो अपड़ि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥
सतिगुरु की समानता कोई नहीं कर सकता, क्योंकि परमात्मा उसके पक्ष में है।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਾ ਖੜਗੁ ਸੰਜੋਉ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਜਿਤੁ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥
भगवान की भक्ति ही सतिगुरु का खड्ग और बख्तर है, जिससे उसने काल (रूपी) कंटक को मारकर दूर फॅक दिया है।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਾ ਰਖਣਹਾਰਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੈ ਪਿਛੈ ਹਰਿ ਸਭਿ ਉਬਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥
ईश्वर स्वयं सतिगुरु का रखवाला है। जो सतिगुरु के पद्चिन्हों पर चलते हैं, प्रभु उन सबको आप ही बचा लेता है।

ਜੋ ਮੰਦਾ ਚਿਤਵੈ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਾ ਸੋ ਆਪਿ ਉਪਾਵਣਹਾਰੈ ਮਾਰਿਆ ॥
जो मंदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥
जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु का बुरा सोचता है, उसे पैदा करने वाला प्रभु स्वयं ही नष्ट कर देता है।

ਏਹ ਗਲ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸਚੇ ਕੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਗਮੁ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥੨॥
एह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥२॥
यह न्याय भगवान के दरबार में होता है। हे नानक ! अगम्य हरि का सिमरन करने से यह सूझ पैदा होती है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਚੁ ਸੁਤਿਆ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ਜਾ ਉਠੇ ਤਾ ਸਚੁ ਚਵੇ ॥
सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥
जो व्यक्ति सोते समय भी सत्य की आराधना करते हैं और उठते समय भी सत्य-नाम का जाप करते हैं।

ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਜੁਗ ਮਹਿ ਜਾਣੀਅਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਰਵੇ ॥
से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥
ऐसे व्यक्ति कलियुग में विरले ही मिलते हैं, जो गुरमुख सत्य नाम में मग्न रहते हैं।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਲਵੇ ॥
हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥
मैं उन पर तन-मन से न्योछावर हूँ जो रात-दिन सत्यनाम उच्चरित करते रहते हैं।

ਜਿਨ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਚਾ ਭਾਵਦਾ ਸੇ ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਗਵੇ ॥
जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥
जिन लोगों के मन एवं तन में सत्य भला लगता है, वह सत्य के दरबार में पहुँच जाते हैं।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਦਾ ਨਵੇ ॥੨੧॥
जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥२१॥
दास नानक भी सत्य नाम बोलता रहता है। वह सत्य प्रभु सदैव ही नवीन है॥ २१ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਕਿਆ ਸਵਣਾ ਕਿਆ ਜਾਗਣਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥
किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥
क्या सोना और क्या जागना ? गुरमुखों के लिए तो सब कुछ स्वीकार्य है।

ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੇ ਪੂਰੇ ਪੁਰਖ ਪਰਧਾਨ ॥
जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान ॥
जिन्हें श्वास लेते और भोजन खाते समय एक क्षण भर के लिए भी भगवान का नाम विस्मृत नहीं होता, वही सर्वगुणसम्पन्न एवं प्रधान हैं।

ਕਰਮੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਲਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥
करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥
भगवान की कृपा से सतिगुरु (उन्हें) मिलता है और उनका ध्यान रात-दिन भगवान में लगा रहता है।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹਾ ਦਰਗਹ ਪਾਈ ਮਾਨੁ ॥
तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥
मैं भी उन गुरमुखों की संगति करुं ताकि भगवान के दरबार में सम्मान प्राप्त हो।

ਸਉਦੇ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਉਚਰਹਿ ਉਠਦੇ ਭੀ ਵਾਹੁ ਕਰੇਨਿ ॥
सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥
वे सोते और जागते वक्त ईश्वर की गुणस्तुति करते हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਜਿ ਨਿਤ ਉਠਿ ਸੰਮਾਲੇਨਿ ॥੧॥
नानक ते मुख उजले जि नित उठि समालेनि ॥१॥
हे नानक ! उनके चेहरे उज्ज्वल हैं जो प्रतिदिन सुबह जागकर ईश्वर को स्मरण करते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਆਪਣਾ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥
सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥
अपने सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य अपार नाम प्राप्त करता है।

ਭਉਜਲਿ ਡੁਬਦਿਆ ਕਢਿ ਲਏ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥
भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥
दाता गुरदेव ईश्वर के नाम की देन प्रदान करता है और डूबते हुए मनुष्य को भयानक संसार-सागर में से निकाल लेता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੇ ਸਾਹ ਹੈ ਜਿ ਨਾਮਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥
धंनु धंनु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥
वह शाह धन्य-धन्य हैं जो ईश्वर के नाम का व्यापार करते हैं।

ਵਣਜਾਰੇ ਸਿਖ ਆਵਦੇ ਸਬਦਿ ਲਘਾਵਣਹਾਰੁ ॥
वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥
सिक्ख व्यापारी आते हैं और सतिगुरु उन्हें शब्द द्वारा भवसागर से पार करवा देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਭਈ ਤਿਨ ਸੇਵਿਆ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੨॥
जन नानक जिन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥२॥
हे नानक ! सृजनहार प्रभु की सेवा-भक्ति वही मनुष्य करते हैं, जिस पर वह स्वयं कृपा करता है। २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੇ ਜਨ ਭਗਤ ਹਹਿ ਸਚੁ ਸਚਾ ਜਿਨੀ ਅਰਾਧਿਆ ॥
सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी अराधिआ ॥
जो सत्य के पुंज परमात्मा की सत्य ही भक्ति करते हैं, वही (परमात्मा) के भक्त है।

ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਢੰਢੋਲਿਆ ਤਿਨ ਅੰਦਰਹੁ ਹੀ ਸਚੁ ਲਾਧਿਆ ॥
जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ ॥
जो मनुष्य गुरु के समक्ष होकर खोजकर ढूंढते हैं, वे अपने हृदय में ही प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।

ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਜਿਨੀ ਸੇਵਿਆ ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰਿ ਤਿਨੀ ਸਾਧਿਆ ॥
सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥
जिन मनुष्यों ने सच्चे मालिक की सचमुच सेवा की है, उन्होंने दुःखदायक काल को मारकर नियंत्रित कर लिया है।

ਸਚੁ ਸਚਾ ਸਭ ਦੂ ਵਡਾ ਹੈ ਸਚੁ ਸੇਵਨਿ ਸੇ ਸਚਿ ਰਲਾਧਿਆ ॥
सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥
सत्य का पुंज परमात्मा महान है, उसकी सेवा-भक्ति जो मनुष्य करते हैं, वे सत्य में ही लीन हो जाते हैं।

ਸਚੁ ਸਚੇ ਨੋ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਸਚੁ ਸਚਾ ਸੇਵਿ ਫਲਾਧਿਆ ॥੨੨॥
सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥२२॥
वह सत्य का पुंज परमात्मा धन्य है, जो व्यक्ति सच्चे (परमात्मा) की भक्ति करते हैं, उन्हें उत्तम फल मिलता है॥ २२ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਮਨਮੁਖੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮੁਗਧੁ ਹੈ ਨਾਮਹੀਣ ਭਰਮਾਇ ॥
मनमुखु प्राणी मुगधु है नामहीण भरमाइ ॥
स्वेच्छाचारी प्राणी मुर्ख है, चूंकि ऐसा नामविहीन इन्सान भटकता ही रहता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਨੂਆ ਨਾ ਟਿਕੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਇ ॥
बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ ॥
गुरु के बिना उसका मन स्थिर नहीं होता और वह बार-बार गर्भ-योनि में पड़ता है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਦਇਆਲ ਹੋਹਿ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥
हरि प्रभु आपि दइआल होहि तां सतिगुरु मिलिआ आइ ॥
जब हरि-प्रभु स्वयं दया के घर में आता है तो इसे सतिगुरु आकर मिल जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੧॥
जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥१॥
(इसलिए) हे नानक ! तुम भी नाम की महिमा-स्तुति करो चूंकेि तेरा जन्म-मरण का दुःख मिट जाए ॥ १ ॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਗੁਰੁ ਸਾਲਾਹੀ ਆਪਣਾ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਰੰਗਿ ਸੁਭਾਇ ॥
गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ ॥
मैं अपने गुरु की बड़े प्रेम से अनेक विधियों से प्रशंसा करता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਰਤਾ ਰਖਿਆ ਬਣਤ ਬਣਾਇ ॥
सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥
मेरा मन गुरु के साथ मग्न है। गुरु जी ने मेरे मन को संवार दिया है।

ਜਿਹਵਾ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਜਈ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥
मेरी रसना प्रशंसा करके तृप्त नहीं होती और मन प्रियतम-प्रभु के साथ प्रेम करके तृप्त नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਕੀ ਮਨਿ ਭੁਖ ਹੈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਖਾਇ ॥੨॥
नानक नावै की मनि भुख है मनु त्रिपतै हरि रसु खाइ ॥२॥
हे नानक ! मन को नाम की भूख है और मन हरि-रस को पान करने से तृप्त होता है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਚੁ ਸਚਾ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਣੀਐ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਿਨਿ ਬਣਾਈਆ ॥
सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु जिसने दिन और रात बनाए हैं, वह सत्य का पुंज (इस) कुदरत से ही सचमुच बड़ी महानता वाला मालूम होता है।

ਸੋ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਚੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥
सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥
मैं सदैव उस सत्यस्वरूप परमात्मा की प्रशंसा करता हूँ और सच्चे (परमात्मा) की महिमा सत्य है।

ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸਲਾਹ ਸਚੁ ਸਚੁ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ ॥
प्रशंसनीय परमात्मा सत्य है और उसकी प्रशंसा भी सत्य है। सत्यस्वरूप परमात्मा का कोई भी मूल्यांकन नहीं जान सका।

ਜਾ ਮਿਲਿਆ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਤਾ ਹਾਜਰੁ ਨਦਰੀ ਆਈਆ ॥
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ ॥
जब पूर्ण सतिगुरु मिलता है तो परमात्मा प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

ਸਚੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਸਲਾਹਿਆ ਤਿਨਾ ਭੁਖਾ ਸਭਿ ਗਵਾਈਆ ॥੨੩॥
सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ ॥२३॥
जो गुरमुख सत्य का यश गाते हैं, उनकी तमाम भूख निवृत्त हो जाती है॥ २३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਮੈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਖੋਜਿ ਖੋਜੇਦਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਲਧਾ ਲੋੜਿ ॥
मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि ॥
अपने मन एवं तन में ही भलीभाँति खोज-खोजकर मैंने उस प्रभु को ढूंढ लिया है, जिसे मैं चाहता था।

ਵਿਸਟੁ ਗੁਰੂ ਮੈ ਪਾਇਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਦਿਤਾ ਜੋੜਿ ॥੧॥
विसटु गुरू मै पाइआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि ॥१॥
मुझे गुरु वकील मिल गया है, जिसने मुझे प्रभु-परमेश्वर से मिला दिया है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਾਇਆਧਾਰੀ ਅਤਿ ਅੰਨਾ ਬੋਲਾ ॥
माइआधारी अति अंना बोला ॥
मायाधारी बड़ा अन्धा एवं बहरा है।

ਸਬਦੁ ਨ ਸੁਣਈ ਬਹੁ ਰੋਲ ਘਚੋਲਾ ॥
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥
ऐसा व्यक्ति गुरु के शब्द को ध्यानपूर्वक नहीं सुनता और बड़ा शोर-शराबा करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुरमुखि जापै सबदि लिव लाइ ॥
गुरमुख शब्द में सुरति लगाने से ही जाना जाता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਮੰਨੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥
हरि नामु सुणि मंने हरि नामि समाइ ॥
वे ईश्वर के नाम को सुनते और उसमें आस्था रखते हैं और ईश्वर के नाम में ही वे समा जाते हैं।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥
जो तिसु भावै सु करे कराइआ ॥
"(परन्तु मायाधारी अथवा गुरमुख के क्या वश ?) जो कुछ उस ईश्वर को भला लगता है, (उसके अनुसार) यह जीव कराने से काम करता है।

ਨਾਨਕ ਵਜਦਾ ਜੰਤੁ ਵਜਾਇਆ ॥੨॥

नानक वजदा जंतु वजाइआ ॥२॥

हे नानक ! जीव रूपी बाजा वैसे बजता है, जैसे प्रभु उसे बजाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਜੋ ਜੀਆ ਅੰਦਰਿ ਵਰਤੈ ॥
तू करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अंदरि वरतै ॥
हे विश्व के रचयिता प्रभु ! तुम सबकुछ जानते हो, जो कुछ जीवों के हृदय में होता है।

ਤੂ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਅਗਣਤੁ ਹੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਵਿਚਿ ਗਣਤੈ ॥
तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि गणतै ॥
समूचा जगत् ही इस चिन्तना में है; हे परमात्मा ! एक तुम इससे परे हो

ਸਭੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤਦਾ ਸਭ ਤੇਰੀ ਬਣਤੈ ॥
सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥
"(क्योंकि) जो कुछ हो रहा है, सब तेरा किया हुआ हो रहा है, सारी (सृष्टि की) रचना ही तेरी बनाई हुई है।

ਤੂ ਘਟਿ ਘਟਿ ਇਕੁ ਵਰਤਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬ ਚਲਤੈ ॥
तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥
हे सच्चे मालिक ! तुम कण-कण में सर्वव्यापक हो, तेरे खेल अदभुत हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਮਿਲੇ ਸੁ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਪਰਤੈ ॥੨੪॥
सतिगुर नो मिले सु हरि मिले नाही किसै परतै ॥२४॥
जो मनुष्य सतिगुरु से मिला है, उसे ही भगवान प्राप्त हुआ है और किसी ने उन्हें भगवान की ओर से नहीं हटाया॥ २४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਰਖੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਈਐ ਚਿਤੁ ॥
इहु मनूआ द्रिड़ु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥
यह चंचल मन स्थिर करके वश में रखना चाहिए और गुरु के माध्यम से अपना चित परमात्मा में लगाना चाहिए।

ਕਿਉ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਵਿਸਾਰੀਐ ਬਹਦਿਆ ਉਠਦਿਆ ਨਿਤ ॥
किउ सासि गिरासि विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥
उठते-बैठते अपनी हरेक श्वास एवं ग्रास से हम क्यों उस प्रभु को कभी विस्मृत करें ?

ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਗਈ ਇਹੁ ਜੀਅੜਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਵਸਿ ॥
मरण जीवण की चिंता गई इहु जीअड़ा हरि प्रभ वसि ॥
अब जबकि यह आत्मा प्रभु-परमेश्वर के वश में कर दी है, इसलिए मेरी जन्म-मरण की चिन्ता मिट गई है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖੁ ਤੂ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਬਖਸਿ ॥੧॥
जिउ भावै तिउ रखु तू जन नानक नामु बखसि ॥१॥
(हे प्रभु !) जैसे तुझे अच्छा लगे वैसे (मुझे) नानक को नाम की देन प्रदान कर चूंकि नाम ही मन की चिन्ता को मिटा सकता है। १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖੁ ਅਹੰਕਾਰੀ ਮਹਲੁ ਨ ਜਾਣੈ ਖਿਨੁ ਆਗੈ ਖਿਨੁ ਪੀਛੈ ॥
मनमुखु अहंकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥
अहंकार में मस्त हुआ मनमुख इन्सान सतिगुरु के महल (अर्थात् सत्संग) को नहीं पहचानता और हर वक्त दुविधा में रहता है।

ਸਦਾ ਬੁਲਾਈਐ ਮਹਲਿ ਨ ਆਵੈ ਕਿਉ ਕਰਿ ਦਰਗਹ ਸੀਝੈ ॥
सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै ॥
हमेशा ही बुलाए जाने के बावजूद वह सतिगुरु के महल (सत्संग) में उपस्थित नहीं होता। प्रभु के दरबार में वह किस तरह स्वीकृत होगा ?

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਮਹਲੁ ਵਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ਸਦਾ ਰਹੈ ਕਰ ਜੋੜਿ ॥
सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥
कोई विरला पुरुष ही सतिगुरु के महल (सत्संग) को जानता है और जो जानता है, वह सदा हाथ जोड़कर खड़ा रहता है।

ਆਪਣੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਨਾਨਕ ਲਏ ਬਹੋੜਿ ॥੨॥
आपणी क्रिपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि ॥२॥
हे नानक ! यदि मेरा हरि अपनी कृपा करे तो वह मनुष्य को (मनमुखता से) मोड़ लेता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸਾ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਸਫਲ ਹੈ ਜਿਤੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਮਨੁ ਮੰਨੇ ॥
सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने ॥
जिस सेवा से सतिगुरु का मन प्रसन्न हो जाए, वहीं की हुई सेवा फलदायक है।

ਜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਮਨੁ ਮੰਨਿਆ ਤਾ ਪਾਪ ਕਸੰਮਲ ਭੰਨੇ ॥
जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसमल भंने ॥
"(क्योंकि) जब सतिगुरु का मन प्रसन्न हो जाए, तभी पाप-विकार भी दूर हो जाते हैं।

ਉਪਦੇਸੁ ਜਿ ਦਿਤਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੋ ਸੁਣਿਆ ਸਿਖੀ ਕੰਨੇ ॥
उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कंने ॥
सतिगुरु जो उपदेश सिक्खों को देते हैं, वे ध्यानपूर्वक उसे सुनते हैं।

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿਆ ਤਿਨ ਚੜੀ ਚਵਗਣਿ ਵੰਨੇ ॥
जिन सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वंने ॥
जो सिक्ख सतिगुरु की इच्छा को मानते हैं, उन्हें चौगुनी रंगत चढ़ जाती है।

ਇਹ ਚਾਲ ਨਿਰਾਲੀ ਗੁਰਮੁਖੀ ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਭਿੰਨੇ ॥੨੫॥
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिंने ॥२५॥
गुरमुखों का यह अदभुत जीवन-आचरण है कि गुरु का उपदेश सुनकर उनका मन प्रसन्न हो जाता है॥ २५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਜਿਨਿ ਗੁਰੁ ਗੋਪਿਆ ਆਪਣਾ ਤਿਸੁ ਠਉਰ ਨ ਠਾਉ ॥
जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥
जिस व्यक्ति ने अपने गुरु की निंदा की है, उसे कहीं भी स्थान नहीं मिलता।

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਦੋਵੈ ਗਏ ਦਰਗਹ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥
हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥
उसका लोक एवं परलोक दोनों व्यर्थ हो जाते हैं और प्रभु के दरबार में भी उसे स्थान नहीं मिलता।

ਓਹ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵਈ ਫਿਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਲਗਹਿ ਪਾਇ ॥
ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥
सतिगुरु के चरण-स्पर्श का यह सुनहरी अवसर फिर से प्राप्त नहीं होता। (क्योंकि)

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਗਣਤੈ ਘੁਸੀਐ ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥
सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुखि विहाइ ॥
सतिगुरु की निंदा करने में एक बार यदि पथभ्रष्ट हो जाए तो बिल्कुल दुखों में ही जीवन व्यतीत होता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਵੈਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਲਏ ਜਿਸੁ ਲਾਇ ॥
सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ॥
महापुरुष सतिगुरु की किसी से शत्रुता नहीं है। जिस किसी को वह चाहता है, वह अपने साथ मिला लेता है।

ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਜਿਨਾ ਵੇਖਾਲਿਓਨੁ ਤਿਨਾ ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥੧॥
नानक दरसनु जिना वेखालिओनु तिना दरगह लए छडाइ ॥१॥
हे नानक ! सत्य के दरबार में गुरु उनकी मुक्ति करवा देता है, जिन्हें वह प्रभु के दर्शन करवाता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨਮੁਖੁ ਅਗਿਆਨੁ ਦੁਰਮਤਿ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥
स्वेच्छाचारी पुरुष अज्ञानी, खोटी बुद्धि वाला एवं अहंकारी होता है,

ਅੰਤਰਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜੂਐ ਮਤਿ ਹਾਰੀ ॥
अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥
उसके मन में क्रोध ही होता है और वह जुए में बुद्धि गंवा देता है।

ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਓਹੁ ਪਾਪ ਕਮਾਵੈ ॥
कूड़ु कुसतु ओहु पाप कमावै ॥
वह छल-कपट तथा पाप के काम करता है (इसलिए)

ਕਿਆ ਓਹੁ ਸੁਣੈ ਕਿਆ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥
किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥
वह क्या सुन सकता है और दूसरों को क्या बता सकता है ?

ਅੰਨਾ ਬੋਲਾ ਖੁਇ ਉਝੜਿ ਪਾਇ ॥
अंना बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥
वह अन्धा और बहरा मनुष्य भटक गया है

ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
मनमुखु अंधा आवै जाइ ॥
और जन्मता-मरता रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਥਾਇ ਨ ਪਾਇ ॥
बिनु सतिगुर भेटे थाइ न पाइ ॥
सतिगुरु से साक्षात्कार हुए बिना वह परलोक में स्वीकार नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਇ ॥੨॥
नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥
हे नानक ! पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार जो उनकी किस्मत में लिखा होता है, वहीं उसे मिलता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਿਨ ਕੇ ਚਿਤ ਕਠੋਰ ਹਹਿ ਸੇ ਬਹਹਿ ਨ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥
जिनके हृदय कठोर होते हैं, वे सतिगुरु के पास नहीं बैठते।

ਓਥੈ ਸਚੁ ਵਰਤਦਾ ਕੂੜਿਆਰਾ ਚਿਤ ਉਦਾਸਿ ॥
ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥
वहाँ सत्य प्रवृत्त हो रहा है और झूठे लोग मानसिक तौर पर उदास रहते हैं।

ਓਇ ਵਲੁ ਛਲੁ ਕਰਿ ਝਤਿ ਕਢਦੇ ਫਿਰਿ ਜਾਇ ਬਹਹਿ ਕੂੜਿਆਰਾ ਪਾਸਿ ॥
ओइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥
वे छल-कपट करके समय बिताते हैं और दुबारा जाकर झूठों के पास बैठ जाते हैं।

ਵਿਚਿ ਸਚੇ ਕੂੜੁ ਨ ਗਡਈ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥
विचि सचे कूड़ु न गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥
सत्य में झूठ नहीं मिलता, हे मेरे मन ! तू निर्णय करके देख ले।

ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜਿਆਰੀ ਜਾਇ ਰਲੇ ਸਚਿਆਰ ਸਿਖ ਬੈਠੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥੨੬॥

कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ॥२६॥

झूठे जाकर झूठों से मिल जाते हैं तथा सत्यवादी सिक्ख सतिगुरु के पास बैठते हैं।॥ २६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਰਹਦੇ ਖੁਹਦੇ ਨਿੰਦਕ ਮਾਰਿਅਨੁ ਕਰਿ ਆਪੇ ਆਹਰੁ ॥
रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥
शेष बचे हुए निन्दकों को भगवान ने स्वयं ही (प्रयास करके) समाप्त कर दिया है।

ਸੰਤ ਸਹਾਈ ਨਾਨਕਾ ਵਰਤੈ ਸਭ ਜਾਹਰੁ ॥੧॥
संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥१॥
हे नानक ! संतजनों की सहायता करने वाला भगवान सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप में व्यापक हो रहा है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਮੁੰਢਹੁ ਭੁਲੇ ਮੁੰਢ ਤੇ ਕਿਥੈ ਪਾਇਨਿ ਹਥੁ ॥
मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइनि हथु ॥
जो पुरुष पहले से ही भगवान को भूल गए हैं, वे और किसका सहारा लें ? (क्योंकि)

ਤਿੰਨੈ ਮਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥੨॥
तिंनै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥२॥
हे नानक ! इनको उस प्रभु ने मारा हुआ है, जो जगत् का मूल प्रत्येक कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ੫ ॥
पउड़ी ५ ॥
पउड़ी ५ ॥

ਲੈ ਫਾਹੇ ਰਾਤੀ ਤੁਰਹਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥
लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥
मनुष्य रात को कमन्द लेकर चलते हैं परन्तु ईश्वर उन्हें जानता है,

ਤਕਹਿ ਨਾਰਿ ਪਰਾਈਆ ਲੁਕਿ ਅੰਦਰਿ ਠਾਣੀ ॥
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥
भीतर छिपकर पराई औरतों की ओर देखते हैं,

ਸੰਞੑੀ ਦੇਨ੍ਹਿ ਵਿਖੰਮ ਥਾਇ ਮਿਠਾ ਮਦੁ ਮਾਣੀ ॥
संञ्ही देन्हि विखम थाइ मिठा मदु माणी ॥
विषम स्थान पर सेंध लगाते हैं और मदिरा को मीठा मानते हैं।

ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਆਪੇ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥
आखिरकार आप अपने किए कर्मों के अनुसार स्वयं ही पश्चाताप करते हैं

ਅਜਰਾਈਲੁ ਫਰੇਸਤਾ ਤਿਲ ਪੀੜੇ ਘਾਣੀ ॥੨੭॥
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥२७॥
चूंकि अजराईल मृत्यु का फरिश्ता नीच कर्म करने वालों को ऐसे पीसता है, जैसे कोल्हू में तिल॥ २७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਸੇਵਕ ਸਚੇ ਸਾਹ ਕੇ ਸੇਈ ਪਰਵਾਣੁ ॥
सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥
जो व्यक्ति सच्चे शाह के सेवक होते हैं, वही सत्य के दरबार में स्वीकार होते हैं।

ਦੂਜਾ ਸੇਵਨਿ ਨਾਨਕਾ ਸੇ ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅਜਾਣ ॥੧॥
दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥१॥
हे नानक ! जो भगवान के अलावा किसी दूसरे की सेवा करते हैं, ऐसे मूर्ख व्यक्ति बहुत दुखी होकर मरते हैं ॥ १ ॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५ ॥

ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਟਣਾ ਨ ਜਾਇ ॥
जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥
परमात्मा ने आदि से जो लेख लिखा होता है, उसे मिटाया नहीं जा सकता।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਵਖਰੋ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ॥੨॥
राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइ ॥२॥
हे नानक ! राम नाम रूपी धन ही उत्तम पूंजी है, इसलिए हमेशा ही नाम का ध्यान करते रहना चाहिए॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ੫ ॥
पउड़ी ५ ॥
पउड़ी ५ ॥

ਨਾਰਾਇਣਿ ਲਇਆ ਨਾਠੁੰਗੜਾ ਪੈਰ ਕਿਥੈ ਰਖੈ ॥
नाराइणि लइआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥
जिस इन्सान को नारायण की ओर से ठोकर लगे, वह जीवन के सन्मार्ग पर स्थिर नहीं रह सकता।

ਕਰਦਾ ਪਾਪ ਅਮਿਤਿਆ ਨਿਤ ਵਿਸੋ ਚਖੈ ॥
करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥
ऐसा व्यक्ति बेशुमार पाप करता है और हमेशा ही विकार रूपी विष चखता है।

ਨਿੰਦਾ ਕਰਦਾ ਪਚਿ ਮੁਆ ਵਿਚਿ ਦੇਹੀ ਭਖੈ ॥
निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥
दूसरों की निंदा करता हुआ वह गल सड़कर मर जाता है। अपने शरीर में भी वह सड़ता रहता है।

ਸਚੈ ਸਾਹਿਬ ਮਾਰਿਆ ਕਉਣੁ ਤਿਸ ਨੋ ਰਖੈ ॥
सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥
जिसे सच्चे प्रभु ने मार दिया है, उसे कौन बचा सकता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਜੋ ਪੁਰਖੁ ਅਲਖੈ ॥੨੮॥
नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥२८॥
हे नानक ! उस अलक्ष्य परमात्मा की शरण प्राप्त करो।। २८ ।।

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਨਰਕ ਘੋਰ ਬਹੁ ਦੁਖ ਘਣੇ ਅਕਿਰਤਘਣਾ ਕਾ ਥਾਨੁ ॥
नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥
कृतघ्न लोगों का निवास घोर नरक में ही होता है, जहाँ उन्हें बहुत कष्टदायक दुख भोगने पड़ते हैं।

ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਹੋਇ ਹੋਇ ਮੁਏ ਹਰਾਮੁ ॥੧॥
तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥१॥
हे नानक ! प्रभु द्वारा मारे हुए ऐसे लोग बड़े दुखी होकर मरते हैं॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਅਵਖਧ ਸਭੇ ਕੀਤਿਅਨੁ ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਦਾਰੂ ਨਾਹਿ ॥
अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥
उस ईश्वर ने समस्त रोगों की औषधियाँ बनाई हैं परन्तु निंदकों का कोई उपचार नहीं।

ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਨਾਨਕਾ ਪਚਿ ਪਚਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥੨॥
आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥२॥
हे नानक ! जिन्हें ईश्वर स्वयं कुमार्गगामी करता है, ऐसे निन्दक इन्सान योनियों में गलते-सड़ते रहते हैं। २ ॥

ਪਉੜੀ ੫ ॥
पउड़ी ५ ॥
पउड़ी ५॥

ਤੁਸਿ ਦਿਤਾ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਚੁ ਅਖੁਟੁ ॥
तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥
जिस व्यक्ति को पूर्ण सतिगुरु ने प्रसन्न होकर हरि नाम रूपी सच्चा एवं अक्षय धन दिया है,

ਸਭਿ ਅੰਦੇਸੇ ਮਿਟਿ ਗਏ ਜਮ ਕਾ ਭਉ ਛੁਟੁ ॥
सभि अंदेसे मिटि गए जम का भउ छुटु ॥
उसके सभी संशय मिट जाते हैं एवं मृत्यु का भय भी समाप्त हो जाता है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬੁਰਿਆਈਆਂ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਤੁਟੁ ॥
काम क्रोध बुरिआईआं संगि साधू तुटु ॥
काम, क्रोध एवं बुराइयां संतों की संगति करने से मिट जाते हैं।

ਵਿਣੁ ਸਚੇ ਦੂਜਾ ਸੇਵਦੇ ਹੁਇ ਮਰਸਨਿ ਬੁਟੁ ॥
विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥
सच्चे प्रभु के अतिरिक्त जो दूसरों की सेवा करते हैं, वे निराश्रित होकर मर जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰਿ ਬਖਸਿਆ ਨਾਮੈ ਸੰਗਿ ਜੁਟੁ ॥੨੯॥
नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥२९॥
नानक को गुरु ने क्षमा कर दिया है और वह ईश्वर के नाम में प्रवृत्त हो गया है ॥२९॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਤਪਾ ਨ ਹੋਵੈ ਅੰਦ੍ਰਹੁ ਲੋਭੀ ਨਿਤ ਮਾਇਆ ਨੋ ਫਿਰੈ ਜਜਮਾਲਿਆ ॥
तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥
वह व्यक्ति तपस्वी नहीं हो सकता, जिसका मन लालची होता है और कोढ़ी की तरह नित्य धन के लिए भटकता रहता है।

ਅਗੋ ਦੇ ਸਦਿਆ ਸਤੈ ਦੀ ਭਿਖਿਆ ਲਏ ਨਾਹੀ ਪਿਛੋ ਦੇ ਪਛੁਤਾਇ ਕੈ ਆਣਿ ਤਪੈ ਪੁਤੁ ਵਿਚਿ ਬਹਾਲਿਆ ॥
अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ॥
जब इसे पहले निमंत्रण देकर बुलाया गया तो इसने सत्य की भिक्षा लेने से इन्कार कर दिया लेकिन तदुपरांत पश्चाताप करके उसने अपने पुत्र को लाकर संगत में बिठा दिया।

ਪੰਚ ਲੋਗ ਸਭਿ ਹਸਣ ਲਗੇ ਤਪਾ ਲੋਭਿ ਲਹਰਿ ਹੈ ਗਾਲਿਆ ॥
पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥
गांव के बड़े आदमी यह कह कर हँसने लग पडे कि लालच की लहर ने तपस्वी को नष्ट कर दिया है।

ਜਿਥੈ ਥੋੜਾ ਧਨੁ ਵੇਖੈ ਤਿਥੈ ਤਪਾ ਭਿਟੈ ਨਾਹੀ ਧਨਿ ਬਹੁਤੈ ਡਿਠੈ ਤਪੈ ਧਰਮੁ ਹਾਰਿਆ ॥
जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥
तपस्वी जहाँ कम धन-पदार्थ देखता है, उस स्थान के वह निकट नहीं जाता। अधिक धन देखकर तपस्वी अपना धर्म भी हार जाता है।

ਭਾਈ ਏਹੁ ਤਪਾ ਨ ਹੋਵੀ ਬਗੁਲਾ ਹੈ ਬਹਿ ਸਾਧ ਜਨਾ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥
भाई एहु तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ ॥
संतजनों ने बैठकर विचार किया है कि हे भाई ! यह तपस्वी नहीं है अपितु बगुला है।

ਸਤ ਪੁਰਖ ਕੀ ਤਪਾ ਨਿੰਦਾ ਕਰੈ ਸੰਸਾਰੈ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਵਿਚਿ ਹੋਵੈ ਏਤੁ ਦੋਖੈ ਤਪਾ ਦਯਿ ਮਾਰਿਆ ॥
सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥
तपस्वी महापुरुषों की निन्दा करता है और दुनिया की स्तुति गाता है। इस दोष के कारण ईश्वर ने उसे धिक्कार दिया है।

ਮਹਾ ਪੁਰਖਾਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਾ ਵੇਖੁ ਜਿ ਤਪੇ ਨੋ ਫਲੁ ਲਗਾ ਸਭੁ ਗਇਆ ਤਪੇ ਕਾ ਘਾਲਿਆ ॥
महा पुरखां की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥
देखो ! महापुरुषों की निन्दा करने का इसे यह फल मिला है कि इसकी सारी मेहनत निष्फल हो गई है।

ਬਾਹਰਿ ਬਹੈ ਪੰਚਾ ਵਿਚਿ ਤਪਾ ਸਦਾਏ ॥
बाहरि बहै पंचा विचि तपा सदाए ॥
वह बाहर मुखियों के पास बैठता है और तपस्वी कहलवाता है।

ਅੰਦਰਿ ਬਹੈ ਤਪਾ ਪਾਪ ਕਮਾਏ ॥
अंदरि बहै तपा पाप कमाए ॥
जब वह भीतर बैठता है तो नीच कर्म करता है।

ਹਰਿ ਅੰਦਰਲਾ ਪਾਪੁ ਪੰਚਾ ਨੋ ਉਘਾ ਕਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ॥
हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥
भगवान ने तपस्वी का भीतरी पाप को पंचों को प्रकट करके दिखा दिया है।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਮਕੰਕਰਾ ਨੋ ਆਖਿ ਛਡਿਆ ਏਸੁ ਤਪੇ ਨੋ ਤਿਥੈ ਖੜਿ ਪਾਇਹੁ ਜਿਥੈ ਮਹਾ ਮਹਾਂ ਹਤਿਆਰਿਆ ॥
धरम राइ जमकंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खड़ि पाइहु जिथै महा महां हतिआरिआ ॥
धर्मराज ने अपने यमदूतों को कह दिया है कि इस तपस्वी को ले जाकर उस स्थान पर डाल दो, जहाँ बड़े से बड़े महाहत्यारे डाले जाते हैं।

ਫਿਰਿ ਏਸੁ ਤਪੇ ਦੈ ਮੁਹਿ ਕੋਈ ਲਗਹੁ ਨਾਹੀ ਏਹੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹੈ ਫਿਟਕਾਰਿਆ ॥
फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥
यहाँ भी इसके मुँह कोई न लगे, क्योंकि यह तपस्वी सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत है।

ਹਰਿ ਕੈ ਦਰਿ ਵਰਤਿਆ ਸੁ ਨਾਨਕਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥
हरि कै दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइआ ॥
हे नानक ! जो कुछ यह ईश्वर के दरबार में हुआ है, उसे कहकर सुना दिया है,

ਸੋ ਬੂਝੈ ਜੁ ਦਯਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥੧॥
सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥१॥
इस तथ्य को वही इन्सान समझता है, जिसे परमात्मा ने संवारा हुआ है॥ १॥
॥1॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हरि भगतां हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥
भगवान के भक्त भगवान की आराधना करते हैं और भगवान की गुणस्तुति करते हैं।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਭਗਤ ਨਿਤ ਗਾਂਵਦੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥
हरि कीरतनु भगत नित गांवदे हरि नामु सुखदाई ॥
भक्त नित्य भगवान का भजन कीर्तन करते हैं। भगवान का नाम बड़ा सुखदायक है।

ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਨੋ ਨਿਤ ਨਾਵੈ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਬਖਸੀਅਨੁ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥
हरि भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥
अपने भक्तों को भगवान ने हमेशा के लिए नाम का गुण प्रदान किया है, जो दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है।

ਹਰਿ ਭਗਤਾਂ ਨੋ ਥਿਰੁ ਘਰੀ ਬਹਾਲਿਅਨੁ ਅਪਣੀ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥
हरि भगतां नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥
भगवान ने अपने विरद की लाज रखी है और उसने अपने भक्तों को आत्मस्वरूप स्थिर घर में बिठा दिया है।

ਨਿੰਦਕਾਂ ਪਾਸਹੁ ਹਰਿ ਲੇਖਾ ਮੰਗਸੀ ਬਹੁ ਦੇਇ ਸਜਾਈ ॥
निंदकां पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइ सजाई ॥
निन्दकों से भगवान लेखा माँगता है और बहुत कठोर दण्ड देता है।

ਜੇਹਾ ਨਿੰਦਕ ਅਪਣੈ ਜੀਇ ਕਮਾਵਦੇ ਤੇਹੋ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥
जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥
निन्दक जैसा अपने मन में कमाते हैं, वैसा ही फल उन्हें मिलता है। (क्योंकि)

ਅੰਦਰਿ ਕਮਾਣਾ ਸਰਪਰ ਉਘੜੈ ਭਾਵੈ ਕੋਈ ਬਹਿ ਧਰਤੀ ਵਿਚਿ ਕਮਾਈ ॥
अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥
भीतर बैठकर किया हुआ काम निश्चित ही प्रत्यक्ष हो जाता है चाहे कोई इसे धरती के नीचे करे।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਦੇਖਿ ਵਿਗਸਿਆ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥२॥
नानक भगवान की महिमा देखकर कृतार्थ हो रहा है॥ २॥
॥2॥

ਪਉੜੀ ਮਃ ੫ ॥
पउड़ी मः ५ ॥
पउड़ी महला ५॥

ਭਗਤ ਜਨਾਂ ਕਾ ਰਾਖਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਹੈ ਕਿਆ ਪਾਪੀ ਕਰੀਐ ॥
भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥
भगवान अपने भक्तों का स्वयं रखवाला है। पापी क्या कर सकता है?

ਗੁਮਾਨੁ ਕਰਹਿ ਮੂੜ ਗੁਮਾਨੀਆ ਵਿਸੁ ਖਾਧੀ ਮਰੀਐ ॥
गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥
मूर्ख घमण्डी इन्सान बड़ा घमण्ड करता है और (अहंकार-रूपी) विष खाकर मर जाता है।

ਆਇ ਲਗੇ ਨੀ ਦਿਹ ਥੋੜੜੇ ਜਿਉ ਪਕਾ ਖੇਤੁ ਲੁਣੀਐ ॥
आइ लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥
जीवन के थोड़े दिन जो उसने व्यतीत करने थे, समाप्त हो गए हैं और पकी हुई फसल की भाँति काट लिया जाएगा।

ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਤੇਵੇਹੋ ਭਣੀਐ ॥
जेहे करम कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥
मनुष्य जैसे जैसे करता है, (प्रभु के दरबार में भी) वैसे ही कहलवाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਾ ਖਸਮੁ ਵਡਾ ਹੈ ਸਭਨਾ ਦਾ ਧਣੀਐ ॥੩੦॥
जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥३०॥
नानक का मालिक प्रभु महान है, जो सारी दुनिया का ही मालिक है॥ ३०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੪ ॥
सलोक मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਮਨਮੁਖ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਿਆ ਵਿਚਿ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अहंकारु ॥
झूठ, लालच एवं अहंकार के कारण स्वेच्छाचारी इन्सान अपने मूल (भगवान) को ही भुला देते हैं।

ਝਗੜਾ ਕਰਦਿਆ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਦਰੈ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰਹਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥
उनके रात-दिन झगड़ा करते हुए ही बीत जाते हैं और वे शब्द का चिन्तन नहीं करते।

ਸੁਧਿ ਮਤਿ ਕਰਤੈ ਸਭ ਹਿਰਿ ਲਈ ਬੋਲਨਿ ਸਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥
परमात्मा ने उनकी सारी मति-बुद्धि छीन ली है और वह सब विकार ही बोलते हैं।

ਦਿਤੈ ਕਿਤੈ ਨ ਸੰਤੋਖੀਅਹਿ ਅੰਤਰਿ ਤਿਸਨਾ ਬਹੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧਾਰੁ ॥
दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंधारु ॥
वे किसी की देन से संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि उनके हृदय में तृष्णा एवं अज्ञानता का अँधेरा बना होता है।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਾ ਨਾਲੋ ਤੁਟੀ ਭਲੀ ਜਿਨ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥

नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ॥१॥

हे नानक ! ऐसे स्वेच्छाचारी लोगों से तो संबंधविच्छेद ही बेहतर है, जिनका मोह-माया से ही प्रेम होता है॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥

मः ४ ॥

महला ४॥

ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਹੈ ਤਿਨ੍ਹ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥

जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्हा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥

जिन लोगों के अन्तर्मन में द्वैत भावना से प्रेम होता है, वह गुरमुखों से प्रेम नहीं करते।

ਓਹੁ ਆਵੈ ਜਾਇ ਭਵਾਈਐ ਸੁਪਨੈ ਸੁਖੁ ਨ ਕੋਇ ॥

ओहु आवै जाइ भवाईऐ सुपनै सुखु न कोइ ॥

ऐसे व्यक्ति जन्मते-मरते और आवागमन में भटकते हैं, और उन्हें स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता।

ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ਕੂੜੁ ਉਚਰੈ ਕੂੜਿ ਲਗਿਆ ਕੂੜੁ ਹੋਇ ॥

कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइ ॥

वह झूठ का ही कार्य करते हैं, झूठ ही बोलते हैं और झूठ से जुड़कर वह झूठे हो जाते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਦੁਖਿ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਰੋਇ ॥

माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥

माया का मोह दुःख ही है। दुख द्वारा मनुष्य मरता है और दुख द्वारा ही वह विलाप करता है।

ਨਾਨਕ ਧਾਤੁ ਲਿਵੈ ਜੋੜੁ ਨ ਆਵਈ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥

नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइ ॥

हे नानक ! माया एवं ईश्वर का प्रेम शोभायमान नहीं हो सकता, चाहे हरेक मनुष्य इच्छा करे।

ਜਿਨ ਕਉ ਪੋਤੈ ਪੁੰਨੁ ਪਇਆ ਤਿਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥

जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुर सबदी सुखु होइ ॥२॥

जिनके खजाने में पुण्य हैं, वे गुरु के शब्द द्वारा सुख प्राप्त करते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ਮਃ ੫ ॥

पउड़ी मः ५ ॥

पउड़ी महला ५ ॥

ਨਾਨਕ ਵੀਚਾਰਹਿ ਸੰਤ ਮੁਨਿ ਜਨਾਂ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਕਹੰਦੇ ॥
नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ॥
हे नानक ! संत एवं मुनिजन विचार करते हैं और चारों वेद भी कहते हैं कि

ਭਗਤ ਮੁਖੈ ਤੇ ਬੋਲਦੇ ਸੇ ਵਚਨ ਹੋਵੰਦੇ ॥
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥
भक्तजन जो वचन मुख से बोलते हैं, वे (सत्य) पूरे हो जाते हैं।

ਪਰਗਟ ਪਾਹਾਰੈ ਜਾਪਦੇ ਸਭਿ ਲੋਕ ਸੁਣੰਦੇ ॥
परगट पाहारै जापदे सभि लोक सुणंदे ॥
भक्त सारी दुनिया में लोकप्रिय होते हैं और उनकी शोभा सभी लोग सुनते हैं।

ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਇਨਿ ਮੁਗਧ ਨਰ ਸੰਤ ਨਾਲਿ ਖਹੰਦੇ ॥
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥
जो मूर्ख मनुष्य संतों से वैर करते हैं, वे सुख नहीं पाते

ਓਇ ਲੋਚਨਿ ਓਨਾ ਗੁਣਾ ਨੋ ਓਇ ਅਹੰਕਾਰਿ ਸੜੰਦੇ ॥
ओइ लोचनि ओना गुणा नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥
वे दोषी जलते तो अहंकार में हैं परन्तु भक्तजनों के गुणों के लिए तरसते हैं।

ਓਇ ਵੇਚਾਰੇ ਕਿਆ ਕਰਹਿ ਜਾਂ ਭਾਗ ਧੁਰਿ ਮੰਦੇ ॥
ओइ वेचारे किआ करहि जां भाग धुरि मंदे ॥
इन दोषी मनुष्यों के वश में भी क्या है? क्योंकि आदि से (नीच कर्मों के कारण) नीच संस्कार ही उनका भाग्य है।

ਜੋ ਮਾਰੇ ਤਿਨਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸੇ ਕਿਸੈ ਨ ਸੰਦੇ ॥
जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥
जो मनुष्य पारब्रह्म द्वारा मृत हैं, वे किसी के (सगे) नहीं।

ਵੈਰੁ ਕਰਨਿ ਨਿਰਵੈਰ ਨਾਲਿ ਧਰਮਿ ਨਿਆਇ ਪਚੰਦੇ ॥
वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥
यह धर्म का न्याय है कि जो लोग निर्वैरों के साथ वैर करते हैं, वे बहुत दुखी होते हैं।

ਜੋ ਜੋ ਸੰਤਿ ਸਰਾਪਿਆ ਸੇ ਫਿਰਹਿ ਭਵੰਦੇ ॥
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥
जो व्यक्ति संतों से शापित हैं, वे योनियों में भटकते रहते हैं।

ਪੇੜੁ ਮੁੰਢਾਹੂ ਕਟਿਆ ਤਿਸੁ ਡਾਲ ਸੁਕੰਦੇ ॥੩੧॥
पेड़ु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥३१॥
जब वृक्ष जड़ से उखाड़ दिया जाता है तो इसकी टहनियाँ भी सूख जाती हैं।॥ ३१॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ॥५॥

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਭੰਨਣ ਘੜਣ ਸਮਰਥੁ ॥
गुर नानक हरि नामु द्रिड़ाइआ भंनण घड़ण समरथु ॥
हे नानक ! मेरे मन में गुरु ने उस भगवान का नाम दृढ़ किया है, जो सहज ही सृष्टि की रचना एवं सृष्टि का विनाश करने में समर्थ है।

ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਮਾਲਹਿ ਮਿਤ੍ਰ ਤੂ ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਆ ਲਥੁ ॥੧॥
प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥१॥
हे मित्र ! यदि तू भगवान को सदैव स्मरण करे तो तेरे तमाम दुःख निवृत्त हो जाएँ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਖੁਧਿਆਵੰਤੁ ਨ ਜਾਣਈ ਲਾਜ ਕੁਲਾਜ ਕੁਬੋਲੁ ॥
खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥
भूखा मनुष्य मान-अपमान तथा अपशब्दों की परवाह नहीं करता।

ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥
नानकु मांगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥२॥
हे हरि ! नानक तो तेरा नाम ही माँगता है, इसलिए कृपा करके ऐसा संयोग बना दे॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜੇਵੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦਾ ਤੇਵੇਹੇ ਫਲਤੇ ॥
जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते ॥
इन्सान जैसा कर्म करता है, उसका वैसा ही फल प्राप्त करता है।

ਚਬੇ ਤਤਾ ਲੋਹ ਸਾਰੁ ਵਿਚਿ ਸੰਘੈ ਪਲਤੇ ॥
चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥
यदि कोई इन्सान गर्म एवं कड़ा लोहा चबाए तो वह गले में चुभ जाता है।

ਘਤਿ ਗਲਾਵਾਂ ਚਾਲਿਆ ਤਿਨਿ ਦੂਤਿ ਅਮਲ ਤੇ ॥
घति गलावां चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥
उसके खोटे कर्मों के कारण यमदूत उसके गले में रस्सा डालकर आगे धकेल देता है।

ਕਾਈ ਆਸ ਨ ਪੁੰਨੀਆ ਨਿਤ ਪਰ ਮਲੁ ਹਿਰਤੇ ॥
काई आस न पुंनीआ नित पर मलु हिरते ॥
उसकी कोई भी आशा पूरी नहीं होती, वह हमेशा पराई मैल चोरी करता है।

ਕੀਆ ਨ ਜਾਣੈ ਅਕਿਰਤਘਣ ਵਿਚਿ ਜੋਨੀ ਫਿਰਤੇ ॥
कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥
कृतघ्न इन्सान भगवान के किए हुए उपकार का आभार व्यक्त नहीं करता, इसलिए योनियों में भटकता रहता है।

ਸਭੇ ਧਿਰਾਂ ਨਿਖੁਟੀਅਸੁ ਹਿਰਿ ਲਈਅਸੁ ਧਰ ਤੇ ॥
सभे धिरां निखुटीअसु हिरि लईअसु धर ते ॥
जब उसके समस्त सहारे समाप्त हो जाते हैं तो फल भोगने हेतु ईश्वर उसे दुनिया से उठा लेता है।

ਵਿਝਣ ਕਲਹ ਨ ਦੇਵਦਾ ਤਾਂ ਲਇਆ ਕਰਤੇ ॥
विझण कलह न देवदा तां लइआ करते ॥
वह लड़ाई की अग्नि यो बुझने नहीं देता था, इसलिए परमात्मा ने उसे समेट लिया है।

ਜੋ ਜੋ ਕਰਤੇ ਅਹੰਮੇਉ ਝੜਿ ਧਰਤੀ ਪੜਤੇ ॥੩੨॥
जो जो करते अहमेउ झड़ि धरती पड़ते ॥३२॥
जो जो लोग अभिमान करते हैं, वे ढह कर धरती पर ही गिरते हैं॥ ३२ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਬਿਬੇਕ ਬੁਧਿ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥
गुरमुख में ही ज्ञान तथा विवेक बुद्धि होती है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਿਰਦੈ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ॥
हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥
वह भगवान की महिमा-स्तुति करता है और अपने हृदय में उनकी माला पिरोता है।

ਪਵਿਤੁ ਪਾਵਨੁ ਪਰਮ ਬੀਚਾਰੀ ॥
पवितु पावनु परम बीचारी ॥
वह पवित्र-पावन एवं उच्च बुद्धि वाला होता है।

ਜਿ ਓਸੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥
जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥
जो व्यक्ति उसकी संगति करता है, वह उसे भी भवसागर से पार करवा देता है।

ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਾਸਨਾ ਸਮਾਣੀ ॥
अंतरि हरि नामु बासना समाणी ॥
उसके हृदय में प्रभु नाम (रूपी) सुगन्ध समाई होती है,

ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਭਾ ਮਹਾ ਉਤਮ ਬਾਣੀ ॥
हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥
वह भगवान के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है और उसकी वाणी सर्वोत्तम होती है,

ਜਿ ਪੁਰਖੁ ਸੁਣੈ ਸੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ॥
जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥
जो पुरुष उस वाणी को सुनता है, वह कृतार्थ हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥੧॥
नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु को मिलकर उसने यह नाम (रूपी) धन-सम्पति प्राप्त की है॥ १॥
॥1॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਜੀਅ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥
सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥
सतिगुरु के हृदय का भेद इन्सान की समझ में नहीं आ सकता कि सतिगुरु को क्या भला लगता है।

ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਅੰਦਰਿ ਸਤਿਗੁਰੂ ਵਰਤੈ ਜੋ ਸਿਖਾਂ ਨੋ ਲੋਚੈ ਸੋ ਗੁਰ ਖੁਸੀ ਆਵੈ ॥
गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥
परन्तु सतिगुरु गुरसिक्खों के हृदय में मौजूद है। जो मनुष्य उनकी (सेवा की) कामना करता है, वह गुरु की प्रसन्नता के दायरे में आ जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਖੈ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵਨਿ ਸੁ ਜਪੁ ਕਮਾਵਹਿ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਕੀ ਘਾਲ ਸਚਾ ਥਾਇ ਪਾਵੈ ॥
सतिगुरु आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥
"(क्योंकि) सतिगुरु जो आज्ञा देता है, वही काम गुरसिक्ख करते हैं। सत्य के घर में गुरु के सिक्खों की सेवा स्वीकार हो जाती है।

ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਹੁਕਮੈ ਜਿ ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਪਾਸਹੁ ਕੰਮੁ ਕਰਾਇਆ ਲੋੜੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖੁ ਫਿਰਿ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखां पासहु कमु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥
जो मनुष्य सतिगुरु की आज्ञा के विरुद्ध गुरसिक्खों के पास से काम कराना चाहे, गुरु का सिक्ख फिर उसके निकट नहीं जाता,

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਕੋ ਜੀਉ ਲਾਇ ਘਾਲੈ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥
गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥
"(परन्तु) जो मनुष्य सतिगुरु के दरबार में एकाग्रचित होकर सेवा करता है, गुरसिक्ख उसकी सेवा करता है।

ਜਿ ਠਗੀ ਆਵੈ ਠਗੀ ਉਠਿ ਜਾਇ ਤਿਸੁ ਨੇੜੈ ਗੁਰਸਿਖੁ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥
जो मनुष्य छल-कपट करने हेतु आता है और छल-कपट के ख्याल में चला जाता है, उसके निकट गुरु का सिक्ख कभी नहीं आता।

ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥
ब्रहमु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥
नानक यही ब्रह्म विचार कह कर सुनाता है कि

ਜਿ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਮਨੁ ਮੰਨੇ ਕੰਮੁ ਕਰਾਏ ਸੋ ਜੰਤੁ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥
जि विणु सतिगुर के मनु मंने कमु कराए सो जंतु महा दुखु पावै ॥२॥
जो व्यक्ति सतिगुरु के मन को प्रसन्न किए बिना कार्य कराता है, वह व्यक्ति बहुत दुख भोगता है॥ २॥
॥2॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਤਿ ਵਡਾ ਤੁਹਿ ਜੇਵਡੁ ਤੂੰ ਵਡ ਵਡੇ ॥
तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवडु तूं वड वडे ॥
हे परमात्मा ! तू ही सच्चा मालिक है जो सबसे महान है तथा तुझ जैसा तू स्वयं ही महान है, अन्य कोई नहीं।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਤੁਧੁ ਮਿਲੈ ਤੂੰ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਲੇਖਾ ਛਡੇ ॥
जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥
जिसे तू अपने साथ मिलाता है, वही तुझसे मिलता है। तू स्वयं ही उसका लेखा छोड़कर उसे क्षमा कर देता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂੰ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਮਨੁ ਗਡ ਗਡੇ ॥
जिस नो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥
जिसे तू आप मिलाता है, वही मन लगाकर सतिगुरु की सेवा करता है।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਸਭੁ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਚੰਮੁ ਤੇਰਾ ਹਡੇ ॥
तूं सचा साहिबु सचु तू सभु जीउ पिंडु चमु तेरा हडे ॥
हे प्रभु ! तू सत्य है, तू सच्चा मालिक है, जीवों का सब कुछ-प्राण, शरीर, त्वचा, अस्थि-तेरा ही दिया हुआ है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖੁ ਤੂੰ ਸਚਿਆ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਆਸ ਤੇਰੀ ਵਡ ਵਡੇ ॥੩੩॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

जिउ भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥३३॥१॥ सुधु ॥

हे सत्यस्वरूप परमात्मा ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही हमें रख लो, नानक के मन में तेरी ही आशा है॥ ३३॥ १॥ शुद्ध ॥

ਗਉੜੀ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੫ ਰਾਇ ਕਮਾਲਦੀ ਮੋਜਦੀ ਕੀ ਵਾਰ ਕੀ ਧੁਨਿ ਉਪਰਿ ਗਾਵਣੀ
गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी
गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੋ ਜਨੁ ਜਪੈ ਸੋ ਆਇਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥
जो व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, उसका दुनिया में जन्म लेना सफल है।

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਭਜਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ॥
तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥
जिस व्यक्ति ने निर्लेप प्रभु का भजन किया है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਹਰਿ ਭੇਟਿਆ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥
जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥
उसे सर्वज्ञ हरि मिल गया है, उसका जन्म-मरण का दुःख-क्लेश मिट गया है।

ਸੰਤ ਸੰਗਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਚਾ ਤਾਣੁ ॥੧॥
संत संगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥१॥
हे नानक ! उसे एक सत्यस्वरूप परमात्मा का ही सहारा है, उसने सत्संग में रहकर भवसागर पार कर लिया है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਭਲਕੇ ਉਠਿ ਪਰਾਹੁਣਾ ਮੇਰੈ ਘਰਿ ਆਵਉ ॥
भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥
यदि प्रातः काल उठकर कोई महापुरुष अतिथि मेरे घर आए,

ਪਾਉ ਪਖਾਲਾ ਤਿਸ ਕੇ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਿਤ ਭਾਵਉ ॥
पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥
मैं उस महापुरुष के चरण धोऊं और मेरे मन एवं तन को वह सदा प्यारा लगे।

ਨਾਮੁ ਸੁਣੇ ਨਾਮੁ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਨਾਮੇ ਲਿਵ ਲਾਵਉ ॥
नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥
वह महापुरुष नित्य नाम सुने, नाम-धन संचित करे और नाम में ही सुरति लगाकर रखे।

ਗ੍ਰਿਹੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਹੋਇ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਉ ॥
ग्रिहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥
उसके आगमन से मेरा सारा घर पवित्र हो जाए, मैं भी भगवान का गुणानुवाद करता रहूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵਉ ॥੨॥
हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥२॥
हे नानक ! ऐसा प्रभु के नाम का व्यापारी भाग्य से ही मिल सकता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ॥
जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥
हे परमात्मा ! जो कुछ तुझे भला लगता है, तेरा वही हुक्म भला है।

ਤੂ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਵਰਤਦਾ ਸਭ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣਾ ॥
तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥
तुम सब जीव-जन्तुओं में मौजूद हो, सब में समाए हुए हो।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜੀਅ ਅੰਦਰਿ ਜਾਣਾ ॥
थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥
हे प्रभु ! तुम सर्वव्यापक हो और समस्त प्राणियों में तुम ही जाने जाते हो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਪਾਈਐ ਮਨਿ ਸਚੇ ਭਾਣਾ ॥
साधसंगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥
परमात्मा की इच्छा को स्वीकार करने से वह सत्य प्रभु सत्संग में रहकर ही प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੧॥
नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥१॥
नानक तो उस ईश्वर की शरण में है और उस पर सदैव ही न्यौछावर है॥ १॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਚੇਤਾ ਈ ਤਾਂ ਚੇਤਿ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚਾ ਸੋ ਧਣੀ ॥
चेता ई तां चेति साहिबु सचा सो धणी ॥
यदि तुझे स्मरण है तो उस सच्चे साहिब को याद कर, जो सबका मालिक है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਚੜਿ ਬੋਹਿਥਿ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਉ ॥੧॥
नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु की सेवा रूपी जहाज पर सवार होकर भयानक संसार-सागर से पार हो जा ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਵਾਊ ਸੰਦੇ ਕਪੜੇ ਪਹਿਰਹਿ ਗਰਬਿ ਗਵਾਰ ॥
वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥
मूर्ख इन्सान सुन्दर सूक्ष्म वस्त्र बड़े अभिमान से पहनते हैं,

ਨਾਨਕ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲਨੀ ਜਲਿ ਬਲਿ ਹੋਏ ਛਾਰੁ ॥੨॥
नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥२॥
परन्तु हे नानक ! मरणोपरांत ये वस्त्र प्राणी के साथ नहीं जाते, यहाँ जलकर राख हो जाते हैं॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੇਈ ਉਬਰੇ ਜਗੈ ਵਿਚਿ ਜੋ ਸਚੈ ਰਖੇ ॥
सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥
केवल वही इन्सान इस दुनिया में बचे हैं, जिनकी सच्चे परमेश्वर ने रक्षा की है।

ਮੁਹਿ ਡਿਠੈ ਤਿਨ ਕੈ ਜੀਵੀਐ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਖੇ ॥
मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अम्रितु चखे ॥
ऐसे लोगों के दर्शन करके हरि-नाम रूपी अमृत चखा जा सकता है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧਾ ਭਖੇ ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥
संतों की संगति करने से काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਣੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਪਰਖੇ ॥
करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥
प्रभु स्वयं उनकी जांच-पड़ताल करता है, जिन पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है।

ਨਾਨਕ ਚਲਤ ਨ ਜਾਪਨੀ ਕੋ ਸਕੈ ਨ ਲਖੇ ॥੨॥
नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥२॥
हे नानक ! भगवान के कौतुक समझे नहीं जा सकते, कोई प्राणी समझ नहीं सकता ॥ २ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਦਿਨਸੁ ਸੁਹਾਵੜਾ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਵੈ ਚਿਤਿ ॥
नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥
हे नानक ! वही दिन शुभ एवं सुन्दर है, जिस दिन ईश्वर मन में याद आता |है।

ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਵਿਸਰੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਫਿਟੁ ਭਲੇਰੀ ਰੁਤਿ ॥੧॥
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥१॥
जिस दिन भगवान भूल जाता है, वह ऋतु अशुभ एवं धिक्कार योग्य है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਨਾਨਕ ਮਿਤ੍ਰਾਈ ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਿਸ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥
नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥
हे नानक ! उस (ईश्वर) के साथ मित्रता कर, जिसके वश में सब कुछ है।

ਕੁਮਿਤ੍ਰਾ ਸੇਈ ਕਾਂਢੀਅਹਿ ਇਕ ਵਿਖ ਨ ਚਲਹਿ ਸਾਥਿ ॥੨॥
कुमित्रा सेई कांढीअहि इक विख न चलहि साथि ॥२॥
जो एक कदम भी मनुष्य के साथ नहीं चलते, वे कुमित्र कहलाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਮਿਲਿ ਪੀਵਹੁ ਭਾਈ ॥
अम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥
हे भाई ! ईश्वर का नाम अमृत (रूपी) खजाना है, उस अमृत को सत्संग में मिलकर पियो।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸਭ ਤਿਖਾ ਬੁਝਾਈ ॥
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥
जिसका सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है और सारी तृष्णा मिट जाती है।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰ ਭੁਖ ਰਹੈ ਨ ਕਾਈ ॥
करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥
गुरु पारब्रह्म की सेवा करने से कोई भूख नहीं रहेगी।

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੁੰਨਿਆ ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਈ ॥
सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥
(नाम-सिमरन करने से) सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं और अमरपद प्राप्त हो जाता है।

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਤੂਹੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥
तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥३॥
हे पारब्रह्म ! तुझ जैसा तू ही है और नानक तेरी शरण में है॥ ३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
महला ५॥

ਡਿਠੜੋ ਹਭ ਠਾਇ ਊਣ ਨ ਕਾਈ ਜਾਇ ॥
डिठड़ो हभ ठाइ ऊण न काई जाइ ॥
मैंने हर जगह पर (भगवान को) देखा है, कोई भी स्थान उससे खाली नहीं है।

ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਤਿਨ ਸੁਆਉ ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ॥੧॥

नानक लधा तिन सुआउ जिना सतिगुरु भेटिआ ॥१॥

हे नानक ! जिन्हें सतिगुरु मिल गया है, उन्हें जीवन का आनंद मिल गया है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਦਾਮਨੀ ਚਮਤਕਾਰ ਤਿਉ ਵਰਤਾਰਾ ਜਗ ਖੇ ॥
दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥
दुनिया का व्यवहार वैसा है, जैसे दामिनी की चमक है।

ਵਥੁ ਸੁਹਾਵੀ ਸਾਇ ਨਾਨਕ ਨਾਉ ਜਪੰਦੋ ਤਿਸੁ ਧਣੀ ॥੨॥
वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥२॥
हे नानक ! केवल वही वस्तु सुन्दर है, जो उस मालिक-प्रभु का नाम जपना है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਸੋਧਿ ਸਭਿ ਕਿਨੈ ਕੀਮ ਨ ਜਾਣੀ ॥
सिम्रिति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥
मनुष्यों ने स्मृतियाँ, शास्त्र भली प्रकार देखे हैं परन्तु किसी ने भी ईश्वर का मूल्यांकन नहीं जाना।

ਜੋ ਜਨੁ ਭੇਟੈ ਸਾਧਸੰਗਿ ਸੋ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ॥
जो जनु भेटै साधसंगि सो हरि रंगु माणी ॥
जो पुरुष संतों की संगति के साथ मिलता है, वह प्रभु की प्रीति का आनंद भोगता है।

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਏਹ ਰਤਨਾ ਖਾਣੀ ॥
सचु नामु करता पुरखु एह रतना खाणी ॥
सृष्टि के रचयिता ईश्वर का सत्य नाम, रत्नों की खान है।

ਮਸਤਕਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪਰਾਣੀ ॥
मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥
जिसके मस्तक पर (शुभ कर्मों से) भाग्य हों, वही मनुष्य भगवान का चिन्तन करता है।

ਤੋਸਾ ਦਿਚੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਮਿਹਮਾਣੀ ॥੪॥
तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥४॥
हे स्वामी ! नानक का आतिथ्य-सत्कार यही है कि अपना सत्य नाम परलोक के लिए खर्च के रूप में दे ॥ ४ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਅੰਤਰਿ ਚਿੰਤਾ ਨੈਣੀ ਸੁਖੀ ਮੂਲਿ ਨ ਉਤਰੈ ਭੁਖ ॥
अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥
जिस पुरुष के मन में चिन्ता है, लेकिन नयनों से देखने से सुखी प्रतीत होता है, उसकी माया की भूख बिल्कुल नहीं मिटती।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਸੈ ਨ ਲਥੋ ਦੁਖੁ ॥੧॥
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥१॥
हे नानक ! सत्य नाम के अतिरिक्त किसी का भी दुःख दूर नहीं होता।। १ ।।

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਮੁਠੜੇ ਸੇਈ ਸਾਥ ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਨ ਲਦਿਆ ॥
मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदिआ ॥
उन (जीव-) व्यापारियों के समूह के समूह लुट गए (मानो) जिन्होंने ईश्वर का नाम-रूपी सौदा नहीं लादा।

ਨਾਨਕ ਸੇ ਸਾਬਾਸਿ ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਇਕੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥੨॥
नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥२॥
"(परन्तु) हे नानक ! जिन्होंने गुरु को मिलकर ईश्वर को पहचान लिया है, उनको शुभकामनाएँ मिलती हैं।॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਥੈ ਬੈਸਨਿ ਸਾਧ ਜਨ ਸੋ ਥਾਨੁ ਸੁਹੰਦਾ ॥
जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥
जहाँ साधुजन विराजमान होते हैं, वह स्थान अति सुन्दर है।

ਓਇ ਸੇਵਨਿ ਸੰਮ੍ਰਿਥੁ ਆਪਣਾ ਬਿਨਸੈ ਸਭੁ ਮੰਦਾ ॥
ओइ सेवनि सम्रिथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥
चूंकि ऐसे व्यक्ति अपने समर्थ प्रभु को स्मरण करते हैं, जिससे उनके मन से तमाम पाप (विकार) मिट जाते है

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੰਤ ਬੇਦੁ ਕਹੰਦਾ ॥
पतित उधारण पारब्रहम संत बेदु कहंदा ॥
हे पारब्रह्म ! तुम पतित प्राणियों का उद्धार करने वाले हो- यह बात संतजन और वेद भी कहते हैं।

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ਹੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਵਰਤੰਦਾ ॥
भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥
तेरा विरद् भक्तवत्सल है, जो युगों-युगांतरों में इस्तेमाल होता है।

ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭਾਵੰਦਾ ॥੫॥
नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावंदा ॥५॥
नानक एक तेरा ही नाम माँगता है, जो उसके मन एवं शरीर को भला लगता है।॥ ५ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਚਿੜੀ ਚੁਹਕੀ ਪਹੁ ਫੁਟੀ ਵਗਨਿ ਬਹੁਤੁ ਤਰੰਗ ॥
चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥
जब पौ फूटती है अर्थात् थोड़ा-सा उजाला होता है तो चिड़ियाँ चहकती हैं और उस समय भक्तो के हदय में स्मरण की लहरें उठती हैं।

ਅਚਰਜ ਰੂਪ ਸੰਤਨ ਰਚੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮਹਿ ਰੰਗ ॥੧॥
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥१॥
हे नानक ! जिन संतजनों का ईश्वर के नाम में प्रेम होता है, उन्होंने पौ फूटने के समय कौतुकमय रूप रचे होते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਘਰ ਮੰਦਰ ਖੁਸੀਆ ਤਹੀ ਜਹ ਤੂ ਆਵਹਿ ਚਿਤਿ ॥
घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥
हे ईश्वर ! उन घरों, मन्दिरों में ही हर्षोल्लास होता है, जहाँ तू याद आता है।

ਦੁਨੀਆ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਨਾਨਕ ਸਭਿ ਕੁਮਿਤ ॥੨॥
दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥२॥
हे नानक ! यदि ईश्वर भूल जाए तो दुनिया का तमाम ऐश्वर्य-वैभव खोटे मित्र समान है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਚੀ ਰਾਸਿ ਹੈ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜਾਤਾ ॥
हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥
हे भाइयो ! ईश्वर का नाम रूपी धन ही सच्ची पूँजी है। लेकिन किसी विरले पुरुष ने ही यह बात समझी है,

ਤਿਸੈ ਪਰਾਪਤਿ ਭਾਇਰਹੁ ਜਿਸੁ ਦੇਇ ਬਿਧਾਤਾ ॥
तिसै परापति भाइरहु जिसु देइ बिधाता ॥
केवल यह पूंजी उसे ही प्राप्त होती है, जिसे विधाता स्वयं प्रदान करता है।

ਮਨ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਮਉਲਿਆ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਜਨੁ ਰਾਤਾ ॥
मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥
ईश्वर का सेवक (जिसे नाम-राशि मिलती है) ईश्वर के रंग में मग्न हो जाता है, वह अपने तन-मन में कृतार्थ हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਸਭਿ ਦੋਖਹ ਖਾਤਾ ॥
साधसंगि गुण गाइआ सभि दोखह खाता ॥
सत्संग में वह भगवान की प्रशंसा करता है और इस प्रकार तमाम दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਜੀਵਿਆ ਜਿਨਿ ਇਕੁ ਪਛਾਤਾ ॥੬॥
नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥६॥
हे नानक ! केवल वही मनुष्य जीता है, जिसने एक ईश्वर को पहचान लिया है॥ ६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਖਖੜੀਆ ਸੁਹਾਵੀਆ ਲਗੜੀਆ ਅਕ ਕੰਠਿ ॥
खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥
आक के फूल तब तक सुन्दर हैं जब तक आक के साथ लगे हुए हैं,

ਬਿਰਹ ਵਿਛੋੜਾ ਧਣੀ ਸਿਉ ਨਾਨਕ ਸਹਸੈ ਗੰਠਿ ॥੧॥
बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥१॥
(परन्तु) हे नानक ! अपने मालिक से प्रीति टूटने पर उनके हजारों टुकड़े हो जाते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਵਿਸਾਰੇਦੇ ਮਰਿ ਗਏ ਮਰਿ ਭਿ ਨ ਸਕਹਿ ਮੂਲਿ ॥
विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥
ईश्वर को भुलाने वाले प्राणी प्राण त्याग गए हैं, परन्तु वे अच्छी प्रकार मर भी नहीं सके।

ਵੇਮੁਖ ਹੋਏ ਰਾਮ ਤੇ ਜਿਉ ਤਸਕਰ ਉਪਰਿ ਸੂਲਿ ॥੨॥
वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥२॥
जो राम से विमुख हुए हैं, वे इस प्रकार हैं जैसे सूली पर चढ़ाए गए चोर हों।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੁਖ ਨਿਧਾਨੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਹੈ ਅਬਿਨਾਸੀ ਸੁਣਿਆ ॥
सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥
एक ईश्वर ही सर्व सुखों का भण्डार है जो अविनाशी सुना जाता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਭਣਿਆ ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥
ईश्वर सागर, पृथ्वी, गगन हर जगह पर सर्वव्यापक है, वह तो कण-कण में मौजूद कहा जाता है,

ਊਚ ਨੀਚ ਸਭ ਇਕ ਸਮਾਨਿ ਕੀਟ ਹਸਤੀ ਬਣਿਆ ॥
ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥
वह ऊँचे-नीचे तमाम जीवों में एक समान विद्यमान है। कीड़े से लेकर हाथी तक सभी उस ईश्वर से ही बने हैं।

ਮੀਤ ਸਖਾ ਸੁਤ ਬੰਧਿਪੋ ਸਭਿ ਤਿਸ ਦੇ ਜਣਿਆ ॥
मीत सखा सुत बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥
मित्र, साथी, पुत्र, रिश्तेदार सभी उस ईश्वर के ही पैदा किए हुए हैं।

ਤੁਸਿ ਨਾਨਕੁ ਦੇਵੈ ਜਿਸੁ ਨਾਮੁ ਤਿਨਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਣਿਆ ॥੭॥
तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥७॥
हे नानक ! जिसे ईश्वर अपनी प्रसन्नता द्वारा अपना 'नाम' प्रदान करता है, वह उसकी प्रीति का आनंद प्राप्त करता है॥ ७ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾਂ ਮਨਿ ਮੰਤੁ ॥
जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामां मनि मंतु ॥
जिन लोगों को श्वास लेते एवं खाते समय कभी भी ईश्वर नहीं भूलता, जिनके हृदय में हरि नाम-रूपी मन्त्र है,

ਧੰਨੁ ਸਿ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਪੂਰਨੁ ਸੋਈ ਸੰਤੁ ॥੧॥
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥१॥
हे नानक ! ऐसे व्यक्ति ही भाग्यवान हैं और वही पूर्ण संत हैं॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਅਠੇ ਪਹਰ ਭਉਦਾ ਫਿਰੈ ਖਾਵਣ ਸੰਦੜੈ ਸੂਲਿ ॥
अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़ै सूलि ॥
जो व्यक्ति खाने के दुःख में दिन-रात भटकता फिरता है,

ਦੋਜਕਿ ਪਉਦਾ ਕਿਉ ਰਹੈ ਜਾ ਚਿਤਿ ਨ ਹੋਇ ਰਸੂਲਿ ॥੨॥
दोजकि पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥२॥
ऐसा व्यक्ति नरक में पड़ने से किस तरह बच सकता है, यदि वह अपने हृदय में गुरु-पैगम्बर के माध्यम से ईश्वर को ही स्मरण नहीं करता ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤਿਸੈ ਸਰੇਵਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀਹੋ ਜਿਸ ਦੈ ਨਾਉ ਪਲੈ ॥
तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥
हे प्राणियों ! उस गुरु की सेवा करो जिसके पास ईश्वर का नाम है।

ਐਥੈ ਰਹਹੁ ਸੁਹੇਲਿਆ ਅਗੈ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ॥
ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै नालि चलै ॥
इस तरह तुम इहलोक में सुखपूर्वक रहोगे तथा परलोक में भी नाम तुम्हारे साथ जाएगा।

ਘਰੁ ਬੰਧਹੁ ਸਚ ਧਰਮ ਕਾ ਗਡਿ ਥੰਮੁ ਅਹਲੈ ॥
घरु बंधहु सच धरम का गडि थमु अहलै ॥
सत्य धर्म का अटल स्तम्भ स्थापित करके भक्ति का घर बनाओ,

ਓਟ ਲੈਹੁ ਨਾਰਾਇਣੈ ਦੀਨ ਦੁਨੀਆ ਝਲੈ ॥
ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥
उस नारायण की ओट लो जो दीन एवं दुनिया को सहारा देता है।

ਨਾਨਕ ਪਕੜੇ ਚਰਣ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਦਰਗਹ ਮਲੈ ॥੮॥
नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥८॥
हे नानक ! जिस प्राणी ने ईश्वर के चरण पकड़े हैं, वह उसके दरबार को हमेशा के लिए प्राप्त कर लेता है॥ ८ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜਾਚਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰਿਆ ॥
जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥
हे मेरे प्रियतम ! मैं भिखारी दान माँगता हूँ, मुझे भीख दे।

ਦੇਵਣਹਾਰੁ ਦਾਤਾਰੁ ਮੈ ਨਿਤ ਚਿਤਾਰਿਆ ॥
देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥
देन देने वाले दाता मैं तुझे हमेशा याद करता हूँ।

ਨਿਖੁਟਿ ਨ ਜਾਈ ਮੂਲਿ ਅਤੁਲ ਭੰਡਾਰਿਆ ॥
निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥
(हे प्रभु !) तेरा खजाना अपरंपार व अतुलनीय है जो कभी समाप्त नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰੁ ਤਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸਾਰਿਆ ॥੧॥
नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥१॥
हे नानक ! शब्द अपार है, इस शब्द ने मेरा प्रत्येक कार्य संवार दिया है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਸਿਖਹੁ ਸਬਦੁ ਪਿਆਰਿਹੋ ਜਨਮ ਮਰਨ ਕੀ ਟੇਕ ॥
सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥
हे प्रिय सज्जनों ! शब्द की साधना करो चूंकि यह जीवन एवं मृत्यु दोनों का सहारा है।

ਮੁਖ ਊਜਲ ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਤ ਏਕ ॥੨॥
मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥२॥
हे नानक ! एक ईश्वर को याद करने से मुख उज्ज्वल हो जाते हैं और सदैव सुख उपलब्ध होता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਓਥੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੰਡੀਐ ਸੁਖੀਆ ਹਰਿ ਕਰਣੇ ॥
ओथै अम्रितु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥
वहाँ सत्संग में समस्त जीवों को सुखी करने वाला अमृत बाँटा जाता है।

ਜਮ ਕੈ ਪੰਥਿ ਨ ਪਾਈਅਹਿ ਫਿਰਿ ਨਾਹੀ ਮਰਣੇ ॥
जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥
वे यम के मार्ग पर नहीं डाले जाते, उन्हें पुनः मृत्यु का भय स्पर्श नहीं करता।

ਜਿਸ ਨੋ ਆਇਆ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਤਿਸੈ ਹੀ ਜਰਣੇ ॥
जिस नो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥
जिस पुरुष को हरि-नाम के प्रेम का स्वाद आता है, वह इस स्वाद को अपने भीतर टिकाता है।

ਬਾਣੀ ਉਚਰਹਿ ਸਾਧ ਜਨ ਅਮਿਉ ਚਲਹਿ ਝਰਣੇ ॥
बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥
साधुजन वाणी उच्चरित करते हैं, वहाँ अमृत के मानों झरने चल पड़ते हैं।

ਪੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਨਾਨਕੁ ਜੀਵਿਆ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਧਰਣੇ ॥੯॥
पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥९॥
नानक भी उन महापुरुषों के दर्शन करके जी रहा है, जिन्होंने हृदय में नाम को धारण किया हुआ है॥ ६ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੇਵਿਐ ਦੂਖਾ ਕਾ ਹੋਇ ਨਾਸੁ ॥
सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइ नासु ॥
पूर्ण सतिगुरु की सेवा करने से दुखों का नाश हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਅਰਾਧਿਐ ਕਾਰਜੁ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥੧॥
नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥१॥
हे नानक ! ईश्वर के नाम की आराधना करने से सभी कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੰਕਟ ਛੁਟਹਿ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥
जिस भगवान का सिमरन करने से संकट दूर हो जाते हैं और मनुष्य आनंद-मंगल में रहता है।

ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਉ ਨਾਮੁ ॥੨॥
नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥२॥
हे नानक ! उस भगवान के नाम का हमेशा ही जाप करना चाहिए और एक पल भर के लिए उसके नाम को भूलना नहीं चाहिए॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउडी॥

ਤਿਨ ਕੀ ਸੋਭਾ ਕਿਆ ਗਣੀ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਧਾ ॥
तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥
जिन महापुरुषों को भगवान मिल गया है, उनकी शोभा का बखान नहीं किया जा सकता।

ਸਾਧਾ ਸਰਣੀ ਜੋ ਪਵੈ ਸੋ ਛੁਟੈ ਬਧਾ ॥
साधा सरणी जो पवै सो छुटै बधा ॥
जो व्यक्ति संतों की शरण में आता है, वह माया के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਅਬਿਨਾਸੀਐ ਜੋਨਿ ਗਰਭਿ ਨ ਦਧਾ ॥
गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥
जो व्यक्ति अनश्वर परमात्मा के गुण गाता है, वह गर्भ-योनियों में नहीं पड़ता।

ਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹਰਿ ਪੜਿ ਬੁਝਿ ਸਮਧਾ ॥
गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पड़ि बुझि समधा ॥
जो पुरुष गुरु से मिलता है, वह ईश्वर के गुणों बारे पढ़ एवं समझकर समाधि स्थिर हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਸੋ ਧਣੀ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਧਾ ॥੧੦॥
नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥१०॥
हे नानक ! उसने अगम्य एवं अथाह हरि-प्रभु को प्राप्त कर लिया है॥ १० ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਕਾਮੁ ਨ ਕਰਹੀ ਆਪਣਾ ਫਿਰਹਿ ਅਵਤਾ ਲੋਇ ॥
कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइ ॥
इन्सान अपने जीवन का यथार्थ कार्य (भगवान का भजन) नहीं करता और दुनिया में स्वेच्छाचारी बनकर घूमता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਇ ਵਿਸਾਰਿਐ ਸੁਖੁ ਕਿਨੇਹਾ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक नाइ विसारिऐ सुखु किनेहा होइ ॥१॥
हे नानक ! भगवान के नाम को भुलाने से (उसे) कैसे सुख उपलब्ध हो सकता है?॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਬਿਖੈ ਕਉੜਤਣਿ ਸਗਲ ਮਾਹਿ ਜਗਤਿ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥
बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥
विष की कड़वाहट तमाम प्राणियों में है, जो संसार में सबको लिपटी हुई है।

ਨਾਨਕ ਜਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ ਮੀਠਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ॥੨॥
नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥२॥
हे नानक ! सेवक ने यही विचार किया है केि ईश्वर का नाम ही मीठा है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਇਹ ਨੀਸਾਣੀ ਸਾਧ ਕੀ ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਤਰੀਐ ॥
इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥
संत की निशानी यही है कि उसको मिलने से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है।

ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਈ ਫਿਰਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਮਰੀਐ ॥
जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥
यमदूत उसके निकट नहीं आता और बार-बार मरना नहीं पड़ता है।

ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਖੁ ਸੋ ਪਾਰਿ ਉਤਰੀਐ ॥
भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥
वह उस विषैले एवं भयानक भवसागर से पार हो जाता है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੁੰਫਹੁ ਮਨਿ ਮਾਲ ਹਰਿ ਸਭ ਮਲੁ ਪਰਹਰੀਐ ॥
हरि गुण गुमफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥
हे मानव ! हृदय में ईश्वर के गुणों की माया गूंथों, इससे हृदय की तमाम मैल दूर हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਰਹਰੀਐ ॥੧੧॥
नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रहम नरहरीऐ ॥११॥
हे नानक ! (जिन मनुष्यों ने यह माला गूंथी है) वे पारब्रह्म प्रभु में विलीन हुए रहते हैं ॥११॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਨਾਨਕ ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਵੁਠਾ ਚਿਤਿ ॥

नानक आए से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥

हे नानक ! उन लोगों का इस दुनिया में जन्म लेना सफल है, जिनके मन में भगवान आकर बस गया है।

ਗਾਲ੍ਹ੍ਹੀ ਅਲ ਪਲਾਲੀਆ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਮਿਤ ॥੧॥

गाल्ही अल पलालीआ कमि न आवहि मित ॥१॥

हे मित्र ! व्यर्थ बातें किसी काम नहीं आती ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥

मः ५ ॥

महला ५॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਦ੍ਰਿਸਟੀ ਆਇਆ ਪੂਰਨ ਅਗਮ ਬਿਸਮਾਦ ॥

पारब्रहमु प्रभु द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥

मुझे सर्वव्यापक, अगम्य एवं अदभुत पारब्रह्म-प्रभु नज़र आया है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਕੀਤਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥੨॥
नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥२॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु की कृपा से उसने राम के नाम को अपना धन बनाया है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਧੋਹੁ ਨ ਚਲੀ ਖਸਮ ਨਾਲਿ ਲਬਿ ਮੋਹਿ ਵਿਗੁਤੇ ॥
धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥
जगत् के मालिक प्रभु के साथ किसी प्रकार का धोखा सफल नहीं हो सकता। लोभ एवं मोह द्वारा प्राणी नष्ट हो जाता है।

ਕਰਤਬ ਕਰਨਿ ਭਲੇਰਿਆ ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਸੁਤੇ ॥
करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥
माया के नशे में सोए हुए मनुष्य नीच कर्म करते हैं

ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨਿ ਭਵਾਈਅਨਿ ਜਮ ਮਾਰਗਿ ਮੁਤੇ ॥
फिरि फिरि जूनि भवाईअनि जम मारगि मुते ॥
और वह बार-बार योनियों में धकेले जाते हैं तथा यमराज के मार्ग में छोड़ दिए जाते हैं।

ਕੀਤਾ ਪਾਇਨਿ ਆਪਣਾ ਦੁਖ ਸੇਤੀ ਜੁਤੇ ॥
कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥
दुःखों से बंधे हुए वह अपने कर्मों का फल पाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਇ ਵਿਸਾਰਿਐ ਸਭ ਮੰਦੀ ਰੁਤੇ ॥੧੨॥
नानक नाइ विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥१२॥
हे नानक ! यदि भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया जाए तो सभी ऋतु व्यर्थ ही हैं।॥ १२॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਉਠੰਦਿਆ ਬਹੰਦਿਆ ਸਵੰਦਿਆ ਸੁਖੁ ਸੋਇ ॥
उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥
उठते-बैठते, सोते समय हमेशा सुख बना रहता है

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਲਾਹਿਐ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥१॥
हे नानक ! भगवान के नाम की सराहना करने से मन एवं तन शीतल हो जाते हैं ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਲਾਲਚਿ ਅਟਿਆ ਨਿਤ ਫਿਰੈ ਸੁਆਰਥੁ ਕਰੇ ਨ ਕੋਇ ॥
लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥
प्राणी हमेशा लोभ में फँसा हुआ भटकता रहता है और कोई भी शुभ कर्म नहीं करता।

ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਨਾਨਕਾ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੨॥
जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइ ॥२॥
हे नानक ! जिस इन्सान को गुरु मिल जाता है, उसके हृदय में ईश्वर निवास कर जाता है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਭੇ ਵਸਤੂ ਕਉੜੀਆ ਸਚੇ ਨਾਉ ਮਿਠਾ ॥
सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥
संसार की समस्त वस्तुएँ कड़वी हो जाती हैं, लेकिन एक ईश्वर का नाम ही सदा मीठा रहता है।

ਸਾਦੁ ਆਇਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਜਨਾਂ ਚਖਿ ਸਾਧੀ ਡਿਠਾ ॥
सादु आइआ तिन हरि जनां चखि साधी डिठा ॥
"(परन्तु) यह स्वाद भगवान के उन भक्तों को आता है, जिन्होंने यह नाम-रस चखकर देखा है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਮਨਿ ਤਿਸੈ ਵੁਠਾ ॥
पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥
उसी मनुष्य के मन में यह नाम (रस) बसता है, जिसके लिए पारब्रह्म ने ऐसा लिख छोड़ा है।

ਇਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਾਉ ਦੁਯਾ ਕੁਠਾ ॥
इकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥
एक निरंजन प्रभु ही हर जगह पर दिखता है। (मनुष्य का) द्वैतभाव नष्ट हो जाता है।

ਹਰਿ ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਜੋੜਿ ਕਰ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਵੈ ਤੁਠਾ ॥੧੩॥
हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥१३॥
नानक भी दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर का नाम माँगता है, लेकिन ईश्वर जिस पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता है, उसे ही देता है॥ १३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜਾਚੜੀ ਸਾ ਸਾਰੁ ਜੋ ਜਾਚੰਦੀ ਹੇਕੜੋ ॥
जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥
वही याचना सर्वोत्तम है जो एक ईश्वर (के नाम) को माँगना है।

ਗਾਲ੍ਹ੍ਹੀ ਬਿਆ ਵਿਕਾਰ ਨਾਨਕ ਧਣੀ ਵਿਹੂਣੀਆ ॥੧॥
गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥१॥
हे नानक ! विश्व के मालिक परमेश्वर के नाम के सिवाय सब बातें व्यर्थ हैं॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਨੀਹਿ ਜਿ ਵਿਧਾ ਮੰਨੁ ਪਛਾਣੂ ਵਿਰਲੋ ਥਿਓ ॥
नीहि जि विधा मंनु पछाणू विरलो थिओ ॥
जिसका मन ईश्वर के प्रेम में बिंधा हो, ऐसा (प्रभु की) पहचान करने वाला कोई विरला पुरुष ही होता है।

ਜੋੜਣਹਾਰਾ ਸੰਤੁ ਨਾਨਕ ਪਾਧਰੁ ਪਧਰੋ ॥੨॥
जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥२॥
हे नानक ! संत भगवान से मिलाने में समर्थ होता है और प्रभु को मिलने हेतु सन्मार्ग दिखा देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸੋਈ ਸੇਵਿਹੁ ਜੀਅੜੇ ਦਾਤਾ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥
सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु ॥
हे मेरे मन ! उस ईश्वर को याद कर, जो सबका दाता एवं क्षमाशील है।

ਕਿਲਵਿਖ ਸਭਿ ਬਿਨਾਸੁ ਹੋਨਿ ਸਿਮਰਤ ਗੋਵਿੰਦੁ ॥
किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥
गोबिन्द का भजन करने से पापों का विनाश हो जाता है।

ਹਰਿ ਮਾਰਗੁ ਸਾਧੂ ਦਸਿਆ ਜਪੀਐ ਗੁਰਮੰਤੁ ॥
हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुरमंतु ॥
गुरु ने ईश्वर के मिलन का मार्ग बतलाया है।गुरु का मन्त्र सदैव याद करना चाहिए।

ਮਾਇਆ ਸੁਆਦ ਸਭਿ ਫਿਕਿਆ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਵੰਦੁ ॥
माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥
माया के तमाम रस फीके लगते हैं और केवल ईश्वर ही मन में प्रिय लगता है।

ਧਿਆਇ ਨਾਨਕ ਪਰਮੇਸਰੈ ਜਿਨਿ ਦਿਤੀ ਜਿੰਦੁ ॥੧੪॥
धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥१४॥
हे नानक ! जिस परमेश्वर ने यह प्राण दिए हैं, उसका हमेशा ही ध्यान करना चाहिए ॥ १४ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਵਤ ਲਗੀ ਸਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਜੋ ਬੀਜੇ ਸੋ ਖਾਇ ॥
वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥
सत्यनाम रूपी बीज बोने हेतु शुभ समय आया है, जो व्यक्ति नाम रूपी बीज बोता है, वही इसका फल सेवन करता है।

ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸ ਨੋ ਲਿਖਿਆ ਆਇ ॥੧॥
तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥१॥
हे नानक ! यह वस्तु उस पुरुष को ही प्राप्त होती है, जिसकी किस्मत में लिखा होता है। १ ।।
॥1॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਮੰਗਣਾ ਤ ਸਚੁ ਇਕੁ ਜਿਸੁ ਤੁਸਿ ਦੇਵੈ ਆਪਿ ॥
मंगणा त सचु इकु जिसु तुसि देवै आपि ॥
यदि इन्सान ने माँगना है तो उसे एक सत्य-नाम ही माँगना चाहिए। यह सत्य-नाम उसे ही मिलता है, जिसे ईश्वर स्वयं अपनी खुशी से प्रदान करता है।

ਜਿਤੁ ਖਾਧੈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੀਐ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਦਾਤਿ ॥੨॥
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ नानक साहिब दाति ॥२॥
हे नानक ! यह परमेश्वर की ही देन है, जिसे खाने से मन तृप्त हो जाता है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਲਾਹਾ ਜਗ ਮਹਿ ਸੇ ਖਟਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥
लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥
दुनिया में वहीं लोग लाभ प्राप्त करते हैं, जिनके पास हरि नाम-रूपी धन एवं पूंजी है।

ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਨ ਜਾਣਨੀ ਸਚੇ ਦੀ ਆਸ ॥
दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥
वे किसी दूसरे के साथ मोह करना नहीं जानते, उन्हें एक ईश्वर पर ही भरोसा होता है।

ਨਿਹਚਲੁ ਏਕੁ ਸਰੇਵਿਆ ਹੋਰੁ ਸਭ ਵਿਣਾਸੁ ॥
निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥
वे सारी दुनिया को नश्वर समझते हुए एक अटल परमेश्वर की ही भक्ति करते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਸੁ ਵਿਸਰੈ ਤਿਸੁ ਬਿਰਥਾ ਸਾਸੁ ॥
पारब्रहमु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥
जिस व्यक्ति को ईश्वर भूल जाता हैं, उसका प्रत्येक श्वास निष्फल हो जाता है।

ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਜਨ ਰਖਿਆ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਸੁ ॥੧੫॥
कंठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥१५॥
हे नानक ! जिस ईश्वर ने अपने सेवकों को स्वयं अपने गले से लगाकर बचाया है, मैं उस पर हमेशा ही न्यौछावर हूँ॥ १५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ਮੀਹੁ ਵੁਠਾ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा सहजि सुभाइ ॥
जब भगवान का हुक्म हुआ तो सहज स्वभाव ही बरसात होने लगी।

ਅੰਨੁ ਧੰਨੁ ਬਹੁਤੁ ਉਪਜਿਆ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਰਜੀ ਤਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ॥
अंनु धंनु बहुतु उपजिआ प्रिथमी रजी तिपति अघाइ ॥
इससे अधिक मात्रा में अन्न एवं घन उत्पन्न हुए और पृथ्वी भलीभांति तृप्त एवं संतुष्ट हो गई।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਣ ਉਚਰੈ ਦੁਖੁ ਦਾਲਦੁ ਗਇਆ ਬਿਲਾਇ ॥
सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥
साधु हमेशा ही प्रभु की महिमा उच्चरित करता है और उसके दुःख-दरिद्रता दूर हो गए हैं।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿਆ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥
पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥
इन्सान वही कुछ हासिल करता है, जो आदि से उसकी किस्मत में लिखा होता है और यह परमेश्वर की इच्छानुसार मिलता है।

ਪਰਮੇਸਰਿ ਜੀਵਾਲਿਆ ਨਾਨਕ ਤਿਸੈ ਧਿਆਇ ॥੧॥
परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥१॥
हे नानक ! जिसने यह अमूल्य जीवन प्रदान किया है, उस परमेश्वर को स्मरण कर ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜੀਵਨ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਇਕੋ ਸਿਮਰੀਐ ॥
जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥
निर्वाण अवस्था वाली जीवन पदवी पाने के लिए एक पवित्र प्रभु की आराधना करो।

ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਧੀਰੀਐ ॥
दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥
दूसरा कोई स्थान नहीं, (क्योंकि) किसी दूसरे से हमारी कैसे संतुष्टि हो सकती है?

ਡਿਠਾ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸੁਖੁ ਨ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ॥
डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु ॥
मैंने सारा संसार देख लिया है, ईश्वर के नाम के अलावा कोई सुख नहीं।

ਤਨੁ ਧਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ਜਨੁ ॥
तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥
यह तन एवं धन नष्ट हो जाएँगे परन्तु कोई विरला पुरुष ही इसे समझता है।

ਰੰਗ ਰੂਪ ਰਸ ਬਾਦਿ ਕਿ ਕਰਹਿ ਪਰਾਣੀਆ ॥
रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥
हे नश्वर प्राणी ! तुम क्या कर रहे हो ? रंग-रूप एवं रस सब व्यर्थ हैं।

ਜਿਸੁ ਭੁਲਾਏ ਆਪਿ ਤਿਸੁ ਕਲ ਨਹੀ ਜਾਣੀਆ ॥
जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥
"(परन्तु प्राणी के भी क्या वश ?) ईश्वर जिस पुरुष को स्वयं कुमार्गगामी करता है, वह उसकी शक्ति को नहीं समझता।

ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਿਰਬਾਣੁ ਸਚਾ ਗਾਵਹੀ ॥
रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥
जो मनुष्य पवित्र प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, वे सत्यनाम का गायन करते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਦੁਆਰਿ ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹੀ ॥੨॥
नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥२॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जो भी जीव तुझे अच्छे लगते हैं, वे तेरे द्वार पर शरण हेतु आ जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਤਿਨ੍ ਕਉ ਜੋ ਹਰਿ ਲੜਿ ਲਾਗੇ ॥
जमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे ॥
जो व्यक्ति ईश्वर का सहारा लेते हैं, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है।

ਜੀਵਤ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਜਾਗੇ ॥
जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे ॥
जो ईश्वर के भजन कीर्तन में सचेत रहते हैं, वे इस जीवन में सत्कृत हो जाते हैं।

ਸਾਧਸੰਗੁ ਜਿਨ ਪਾਇਆ ਸੇਈ ਵਡਭਾਗੇ ॥
साधसंगु जिन पाइआ सेई वडभागे ॥
जिन लोगों को संतों की संगति प्राप्त होती है, वे बड़े भाग्यवान हैं।

ਨਾਇ ਵਿਸਰਿਐ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣਾ ਤੂਟੇ ਕਚ ਧਾਗੇ ॥
नाइ विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे ॥
परन्तु यदि परमेश्वर का नाम भूल जाए तो यह जीवन धिक्कार योग्य है तथा यह कच्चे धागे की भाँति टूट जाता है।

ਨਾਨਕ ਧੂੜਿ ਪੁਨੀਤ ਸਾਧ ਲਖ ਕੋਟਿ ਪਿਰਾਗੇ ॥੧੬॥
नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥१६॥
हे नानक ! संतों की चरण-धूलि लाखों-करोड़ों प्रयागराज इत्यादि तीर्थों से अधिक पावन है॥ १६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਧਰਣਿ ਸੁਵੰਨੀ ਖੜ ਰਤਨ ਜੜਾਵੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪੁਰਖੁ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ॥
धरणि सुवंनी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥
जिस हृदय में हरि-परमेश्वर के प्रेम का निवास है, वह हृदय ऐसा है जैसे ओस-मोतियों से जड़ित घास वाली धरती सुन्दर रंग वाली हो जाती है।

ਸਭੇ ਕਾਜ ਸੁਹੇਲੜੇ ਥੀਏ ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ॥੧॥
सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा ॥१॥
हे नानक ! जिस पुरुष पर गुरु नानक प्रसन्न हो जाता है, उसके तमाम कार्य सहज ही (सफल) हो जाते हैं॥ १ ॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਫਿਰਦੀ ਫਿਰਦੀ ਦਹ ਦਿਸਾ ਜਲ ਪਰਬਤ ਬਨਰਾਇ ॥
फिरदी फिरदी दह दिसा जल परबत बनराइ ॥
दसों दिशाओं में नदियों, पर्वतों एवं जंगलों पर

ਜਿਥੈ ਡਿਠਾ ਮਿਰਤਕੋ ਇਲ ਬਹਿਠੀ ਆਇ ॥੨॥
जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ ॥२॥
उड़ती-उड़ती चील ने जहाँ शव देखा वहीं आ बैठी ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਸੁ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਫਲ ਲੋੜੀਅਹਿ ਸੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਉ ॥
जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥
मैं उस सत्य के पुंज ईश्वर का चिन्तन करूँ, जिससे सर्व सुख एवं फल माँगे जाते हैं।

ਨੇੜੈ ਦੇਖਉ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਉ ॥
नेड़ै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ ॥
उस पारब्रह्म को अपने साथ-साथ ही देखें और उसके नाम का ध्यान करता रहूँ।

ਹੋਇ ਸਗਲ ਕੀ ਰੇਣੁਕਾ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਮਾਵਉ ॥
होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥
मैं सबकी चरण-धूलि होकर उस ईश्वर में समा जाऊँ।

ਦੂਖੁ ਨ ਦੇਈ ਕਿਸੈ ਜੀਅ ਪਤਿ ਸਿਉ ਘਰਿ ਜਾਵਉ ॥
दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥
मैं किसी भी प्राणी को दुःख न दूँ और प्रतिष्ठा से अपने वास्तविक घर में जाऊँ।

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਾਵਉ ॥੧੭॥
पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥१७॥
हे नानक ! मैं दूसरों को भी सुनाता हूँ कि विश्व का रचयिता परमात्मा पतित जीवों को भी पवित्र करने वाला है॥ १७ ॥

ਸਲੋਕ ਦੋਹਾ ਮਃ ੫ ॥
सलोक दोहा मः ५ ॥
श्लोक दोहा महला ५॥

ਏਕੁ ਜਿ ਸਾਜਨੁ ਮੈ ਕੀਆ ਸਰਬ ਕਲਾ ਸਮਰਥੁ ॥
एकु जि साजनु मै कीआ सरब कला समरथु ॥
मैंने उस एक ईश्वर को अपना साजन बनाया है जो सर्वकला सम्पूर्ण है।

ਜੀਉ ਹਮਾਰਾ ਖੰਨੀਐ ਹਰਿ ਮਨ ਤਨ ਸੰਦੜੀ ਵਥੁ ॥੧॥
जीउ हमारा खंनीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु ॥१॥
मेरी आत्मा उस पर न्यौछायर है और वह परमेश्वर ही मेरे मन एवं तन की यथार्थ दौलत है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜੇ ਕਰੁ ਗਹਹਿ ਪਿਆਰੜੇ ਤੁਧੁ ਨ ਛੋਡਾ ਮੂਲਿ ॥
जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि ॥
हे मेरे प्रियतम ! यदि तू मेरा हाथ थाम ले तो मैं तुझे कभी भी छोड़ नहीं सकूंगा।

ਹਰਿ ਛੋਡਨਿ ਸੇ ਦੁਰਜਨਾ ਪੜਹਿ ਦੋਜਕ ਕੈ ਸੂਲਿ ॥੨॥
हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥२॥
जो मनुष्य ईश्वर को त्याग देते हैं, ऐसे दुर्जन इन्सान नरक की असहनीय पीड़ा में पड़ते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਘਰਿ ਜਿਸ ਦੈ ਹਰਿ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਵੈ ॥
सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥
सारे खजाने उस ईश्वर के घर में हैं। परमात्मा जो कुछ करता है, वही होता है।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਹਿ ਸੰਤ ਜਨ ਪਾਪਾ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ॥
जपि जपि जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥
संतजन उसका भजन-सिमरन करके जीते हैं, और वह उनके पापों की तमाम मैल स्वच्छ कर देता है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਵਸਹਿ ਸੰਕਟ ਸਭਿ ਖੋਵੈ ॥
चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥
ईश्वर के चरण-कमल हृदय में बसाने से तमाम संकट दूर हो जाते हैं।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਜਿਸੁ ਭੇਟੀਐ ਮਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਰੋਵੈ ॥
गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै ॥
जो मनुष्य पूर्ण गुरु से साक्षात्कार करता है, वह जन्म-मरण के चक्र में विलाप नहीं करता।

ਪ੍ਰਭ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਨਾਨਕ ਘਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ॥੧੮॥
प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥१८॥
नानकं को भी प्रभु के दर्शनों की तीव्र लालसा है लेकिन अपनी कृपा-दृष्टि से ही वह दर्शनों की देन प्रदान करता है॥ १८॥

ਸਲੋਕ ਡਖਣਾ ਮਃ ੫ ॥
सलोक डखणा मः ५ ॥
श्लोक डखणा महला ५॥

ਭੋਰੀ ਭਰਮੁ ਵਞਾਇ ਪਿਰੀ ਮੁਹਬਤਿ ਹਿਕੁ ਤੂ ॥
भोरी भरमु वञाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥
यदि तू थोड़ा-सा भी भ्रम दूर कर दे और अपने प्रियतम (परमात्मा) के साथ मुहब्बत करे

ਜਿਥਹੁ ਵੰਞੈ ਜਾਇ ਤਿਥਾਊ ਮਉਜੂਦੁ ਸੋਇ ॥੧॥
जिथहु वंञै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥१॥
तो जहाँ कहीं भी जाओगे, वहाँ ईश्वर तुझे मौजूद दिखेगा ॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५ ॥

ਚੜਿ ਕੈ ਘੋੜੜੈ ਕੁੰਦੇ ਪਕੜਹਿ ਖੁੰਡੀ ਦੀ ਖੇਡਾਰੀ ॥
चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी ॥
जो व्यक्ति साधारण खेल खेलना जानते हों (लेकिन) सुन्दर घोड़े पर सवार होकर बन्दूक के हत्थे पकड़ते हों

ਹੰਸਾ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਉਲਾਸਹਿ ਕੁਕੜ ਦੀ ਓਡਾਰੀ ॥੨॥
हंसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥२॥
(उन्हें ऐसा समझो कि) उड़ान तो मुर्गे की उड़ना जानते हों और हंसों के साथ उड़ने के लिए मन को उत्साह देते हों ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਰਸਨਾ ਉਚਰੈ ਹਰਿ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣੈ ਸੋ ਉਧਰੈ ਮਿਤਾ ॥
रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥
हे मित्र ! जो व्यक्ति अपनी रसना से भगवान के नाम का उच्चारण करता है और कानों से सुनता है, ऐसे व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਲਿਖਹਿ ਲਾਇ ਭਾਵਨੀ ਸੇ ਹਸਤ ਪਵਿਤਾ ॥
हरि जसु लिखहि लाइ भावनी से हसत पविता ॥
जो हाथ श्रद्धा से भगवान का यश लिखते हैं, वे बड़े पवित्र हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨਾ ਸਭਿ ਪੁੰਨ ਤਿਨਿ ਕਿਤਾ ॥
अठसठि तीरथ मजना सभि पुंन तिनि किता ॥
ऐसा पुरुष अठसठ तीर्थों के स्नान का फल पा लेता है और यह मान लिया जाता है कि उसने पुण्यकर्म कर लिए हैं।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤੇ ਉਧਰੇ ਬਿਖਿਆ ਗੜੁ ਜਿਤਾ ॥
संसार सागर ते उधरे बिखिआ गड़ु जिता ॥
वह संसार-सागर से पार हो जाता है और माया रूपी विकारों के किले को विजय कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਲੜਿ ਲਾਇ ਉਧਾਰਿਅਨੁ ਦਯੁ ਸੇਵਿ ਅਮਿਤਾ ॥੧੯॥
नानक लड़ि लाइ उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥१९॥
हे नानक ! ऐसे अनन्त परमात्मा का चिन्तन कर, जो अपने साथ लगाकर तुझे (संसार सागर से) पार कर देगा ॥ १६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਧੰਧੜੇ ਕੁਲਾਹ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਹੇਕੜੋ ॥
धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥
दुनिया के ऐसे धन्धे नुक्सानदायक हैं, जिनके कारण एक ईश्वर चित्त में नहीं आता।

ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਤੰਨ ਫੁਟੰਨਿ ਜਿਨਾ ਸਾਂਈ ਵਿਸਰੈ ॥੧॥
नानक सेई तंन फुटंनि जिना सांई विसरै ॥१॥
हे नानक ! वे शरीर विकारों से नाश हो जाते हैं, जिन्हें जगत् का मालिक परमात्मा भूल जाता है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਪਰੇਤਹੁ ਕੀਤੋਨੁ ਦੇਵਤਾ ਤਿਨਿ ਕਰਣੈਹਾਰੇ ॥
परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥
उस सृष्टि के रचयिता प्रभु ने प्रेत से देवता बना दिया है।

ਸਭੇ ਸਿਖ ਉਬਾਰਿਅਨੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥
सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥
ईश्वर ने गुरु के समस्त सिक्खों का उद्धार कर दिया है और उनके कार्य संवार दिए हैं।

ਨਿੰਦਕ ਪਕੜਿ ਪਛਾੜਿਅਨੁ ਝੂਠੇ ਦਰਬਾਰੇ ॥
निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥
झूठे निंदकों को पकड़कर ईश्वर ने धरती पर पटका कर मारा है और अपने दरबार में उनको झूठा घोषित कर दिया है।

ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਵਡਾ ਹੈ ਆਪਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰੇ ॥੨॥
नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥२॥
नानक का प्रभु महान है। वह स्वयं ही इन्सान को पैदा करता है और संवारता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਬੇਅੰਤੁ ਕਿਛੁ ਅੰਤੁ ਨਾਹਿ ਸਭੁ ਤਿਸੈ ਕਰਣਾ ॥
प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥
प्रभु अनन्त है, उसका कोई अन्त नहीं जाना जा सकता, सब कुछ वही करता है, उसने ही यह सृष्टि बनाई है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਸਾਹਿਬੋ ਜੀਆਂ ਕਾ ਪਰਣਾ ॥
अगम अगोचरु साहिबो जीआं का परणा ॥
अगम्य एवं अगोचर प्रभु समस्त जीवों का आधार है।

ਹਸਤ ਦੇਇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਭਰਣ ਪੋਖਣੁ ਕਰਣਾ ॥
हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥
अपना हाथ देकर वह सबकी रक्षा करता है। वह सब जीवों का भरण-पोषण करता है।

ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਬਖਸਿੰਦੁ ਆਪਿ ਜਪਿ ਸਚੇ ਤਰਣਾ ॥
मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥
वह स्वयं मेहरबान एवं क्षमाशील है। उस सच्चे मालिक का जाप करने से प्राणी (भवसागर) से पार हो जाता है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਰਣਾ ॥੨੦॥
जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥२०॥
नानक का कथन है, हे प्रभु! जो कुछ तुझे उपयुक्त लगता है, केवल वही भला है, हम प्राणी तेरी शरण में हैं।॥ २० ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਤਿੰਨਾ ਭੁਖ ਨ ਕਾ ਰਹੀ ਜਿਸ ਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਸੋਇ ॥
तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥
जिस व्यक्ति का सहारा वह परमात्मा आप है, उसे कोई भूख नहीं रहती।

ਨਾਨਕ ਚਰਣੀ ਲਗਿਆ ਉਧਰੈ ਸਭੋ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥१॥
हे नानक ! भगवान के चरणों में लगने से प्रत्येक प्राणी का उद्धार हो जाता है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५ ॥

ਜਾਚਿਕੁ ਮੰਗੈ ਨਿਤ ਨਾਮੁ ਸਾਹਿਬੁ ਕਰੇ ਕਬੂਲੁ ॥
जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥
जो पुरुष याचक बनकर प्रभु-परमेश्वर से नाम की देन माँगता है, उसकी प्रार्थना वह स्वीकार कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਪਰਮੇਸਰੁ ਜਜਮਾਨੁ ਤਿਸਹਿ ਭੁਖ ਨ ਮੂਲਿ ॥੨॥
नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥२॥
हे नानक ! जिस पुरुष का यजमान (स्वयं) परमात्मा है, उसे थोड़ी-सी भी भूख नहीं रहती ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਮਨੁ ਰਤਾ ਗੋਵਿੰਦ ਸੰਗਿ ਸਚੁ ਭੋਜਨੁ ਜੋੜੇ ॥
मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥
जिस व्यक्ति का मन गोविन्द के साथ मग्न हो जाता है, उसके लिए उसका नाम ही उत्तम भोजन एवं पहरावा बन जाता है।

ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਉ ਏ ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ॥
प्रीति लगी हरि नाम सिउ ए हसती घोड़े ॥
हरि के नाम के साथ उसका प्रेम बन जाता है, यही उसके लिए हाथी एवं घोड़े हैं।

ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਖੁਸੀਆ ਘਣੀ ਧਿਆਇ ਮੁਖੁ ਨ ਮੋੜੇ ॥
राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥
उसके लिए तो सहर्ष भगवान के नाम का ध्यान ही राज्य, सम्पति एवं अनन्त प्रसन्नता होती है।

ਢਾਢੀ ਦਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੰਗਣਾ ਦਰੁ ਕਦੇ ਨ ਛੋੜੇ ॥
ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥
ढाढी ने ईश्वर के द्वार की ही याचना करनी है, जो उसने कभी नहीं त्यागना।

ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਤਨਿ ਚਾਉ ਏਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਲੋੜੇ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ ਕੀਚੇ
नानक मनि तनि चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥२१॥१॥ सुधु कीचे
हे नानक ! उसके मन एवं शरीर में सदैव उमंग बनी रहती है, तथा वह हमेशा ईश्वर से मिलन की ही अभिलाषा करता है॥ २१॥ १॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ਬਾਣੀ
रागु गउड़ी भगतां की बाणी
रागु गउड़ी भगतां की बाणी

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ਚਉਪਦੇ ੧੪ ॥
गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥
गउड़ी गुआरेरी श्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਜਲਤ ਰਾਮ ਜਲੁ ਪਾਇਆ ॥
अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥
अब मुझ तृष्णा में जल रहेको राम नाम रूपी अमृत (जल) मिल गया है।

ਰਾਮ ਉਦਕਿ ਤਨੁ ਜਲਤ ਬੁਝਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
राम नाम रूपी अमृत (जल) ने मेरे जलते शरीर को शीतल कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨੁ ਮਾਰਣ ਕਾਰਣਿ ਬਨ ਜਾਈਐ ॥
मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥
कुछ लोग अपने मन को वश में करने के लिए वनों में जाते हैं

ਸੋ ਜਲੁ ਬਿਨੁ ਭਗਵੰਤ ਨ ਪਾਈਐ ॥੧॥
सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥१॥
परन्तु तृष्णाग्नि को बुझाने हेतु नाम रूपी अमृत (जल) भगवान के बिना नहीं मिलता ॥ १॥

ਜਿਹ ਪਾਵਕ ਸੁਰਿ ਨਰ ਹੈ ਜਾਰੇ ॥
जिह पावक सुरि नर है जारे ॥
जिस तृष्णा की अग्नि ने देवते एवं मनुष्य जला दिए हैं,"

ਰਾਮ ਉਦਕਿ ਜਨ ਜਲਤ ਉਬਾਰੇ ॥੨॥
राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥
राम नाम रूपी अमृत ने भक्तों को उस तृष्णाग्नि से बचा लिया है॥ २॥

ਭਵ ਸਾਗਰ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮਾਹੀ ॥
भव सागर सुख सागर माही ॥
भवसागर में ही एक सुखों का सागर है।

ਪੀਵਿ ਰਹੇ ਜਲ ਨਿਖੁਟਤ ਨਾਹੀ ॥੩॥
पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥
मैं नाम रूपी अमृत पान करता जाता हूँ परन्तु अमृत समाप्त नहीं होता॥ ३॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਭਜੁ ਸਾਰਿੰਗਪਾਨੀ ॥
कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥
कबीर जी कहते हैं - उस भगवान का ही भजन करो चूंकि

ਰਾਮ ਉਦਕਿ ਮੇਰੀ ਤਿਖਾ ਬੁਝਾਨੀ ॥੪॥੧॥
राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥
राम नाम रूपी अमृत ने मेरी तृष्णा मिटा दी है॥ ४॥ १॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਮਾਧਉ ਜਲ ਕੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥
माधउ जल की पिआस न जाइ ॥
हे माधव ! तेरे नाम रूपी अमृत के लिए मेरी प्यास नहीं मिटती।

ਜਲ ਮਹਿ ਅਗਨਿ ਉਠੀ ਅਧਿਕਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा नाम-अमृत पान करते हुए तीव्र लालसा उत्पन्न हो रही है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੂੰ ਜਲਨਿਧਿ ਹਉ ਜਲ ਕਾ ਮੀਨੁ ॥
तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥
हे ईश्वर ! तू जल की निधि है और मैं उस जल की एक मछली हूँ।

ਜਲ ਮਹਿ ਰਹਉ ਜਲਹਿ ਬਿਨੁ ਖੀਨੁ ॥੧॥
जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥
मैं (मछली) जल में ही रहती हूँ और जल के बिना नाश हो जाती हूँ॥ १॥

ਤੂੰ ਪਿੰਜਰੁ ਹਉ ਸੂਅਟਾ ਤੋਰ ॥
तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥
हे भगवान ! तू मेरा पिंजरा है और मैं तेरा तोता हूँ,

ਜਮੁ ਮੰਜਾਰੁ ਕਹਾ ਕਰੈ ਮੋਰ ॥੨॥
जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥
यम-रूपी विडाल मेरा क्या बिगाड़ सकता है ? ॥ २॥

ਤੂੰ ਤਰਵਰੁ ਹਉ ਪੰਖੀ ਆਹਿ ॥
तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥
हे प्रभु ! तू सुन्दर वृक्ष है और मैं एक पक्षी हूँ।

ਮੰਦਭਾਗੀ ਤੇਰੋ ਦਰਸਨੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥
मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥
(मुझ) भाग्यहीन को अब तक तेरे दर्शन नहीं हुए॥ ३॥

ਤੂੰ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹਉ ਨਉਤਨੁ ਚੇਲਾ ॥
तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥
हे मेरे मालिक ! तू सतिगुरु है और मैं तेरा नया चेला हूँ।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਿਲੁ ਅੰਤ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥੪॥੨॥
कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥
कबीर जी कहते हैं - हे प्रभु ! अब तो जीवन के अन्तिम क्षण हैं, अपने दर्शन प्रदान कीजिए॥ ४॥ २ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਬ ਹਮ ਏਕੋ ਏਕੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
जब हम एको एकु करि जानिआ ॥
जब मैंने यह जान लिया है कि एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है

ਤਬ ਲੋਗਹ ਕਾਹੇ ਦੁਖੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥
तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥
तो लोगों को इस बात का क्यों दुख अनुभव होता है।॥ १॥

ਹਮ ਅਪਤਹ ਅਪੁਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
हम अपतह अपुनी पति खोई ॥
मैं अपमानित हूँ और मैंने अपनी इज्जत गंवा दी है।

ਹਮਰੈ ਖੋਜਿ ਪਰਹੁ ਮਤਿ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए मेरे पीछे कोई न लगे ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਮ ਮੰਦੇ ਮੰਦੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
हम मंदे मंदे मन माही ॥
यदि मैं बुरा हूँ तो चित्त में ही बुरा हूँ।

ਸਾਝ ਪਾਤਿ ਕਾਹੂ ਸਿਉ ਨਾਹੀ ॥੨॥
साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥
मैंने किसी के साथ भी साझ (मेल मिलाप) नहीं रखी ॥ २ ॥

ਪਤਿ ਅਪਤਿ ਤਾ ਕੀ ਨਹੀ ਲਾਜ ॥
पति अपति ता की नही लाज ॥
मान एवं अपमान की मुझे कोई शर्म नहीं परन्तु

ਤਬ ਜਾਨਹੁਗੇ ਜਬ ਉਘਰੈਗੋ ਪਾਜ ॥੩॥
तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥
आपको तब पता लगेगा, जब आपका पर्दाफाश होगा ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪਤਿ ਹਰਿ ਪਰਵਾਨੁ ॥
कहु कबीर पति हरि परवानु ॥
कबीर जी कहते हैं - मान-प्रतिष्ठा उसी की है, जिसे ईश्वर स्वीकृत करता है।

ਸਰਬ ਤਿਆਗਿ ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਰਾਮੁ ॥੪॥੩॥
सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥
इसलिए सब कुछ त्यागकर केवल राम का भजन करो ॥ ४॥ ३॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਨਗਨ ਫਿਰਤ ਜੌ ਪਾਈਐ ਜੋਗੁ ॥
नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
यदि नग्न घूमने से ईश्वर से मिलन हो सकता है

ਬਨ ਕਾ ਮਿਰਗੁ ਮੁਕਤਿ ਸਭੁ ਹੋਗੁ ॥੧॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥
तो वन के सभी मृग मुक्त हो जाने चाहिएँ॥ १॥

ਕਿਆ ਨਾਗੇ ਕਿਆ ਬਾਧੇ ਚਾਮ ॥
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
तब तक तेरा नग्न रहने से क्या बनेगा तथा शरीर पर (मृग की) खाल लपेटने से क्या मेलिना है?

ਜਬ ਨਹੀ ਚੀਨਸਿ ਆਤਮ ਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥
"(हे जीव !) जब तक तुम राम को याद नहीं करते, ॥ १॥ रहाउ॥

ਮੂਡ ਮੁੰਡਾਏ ਜੌ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥
यदि सिर मुंडाने से सिद्धि मिल सकती है तो

ਮੁਕਤੀ ਭੇਡ ਨ ਗਈਆ ਕਾਈ ॥੨॥
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥
कोई भी भेड़ अब तक मुक्त क्यों नहीं हुई?॥ २॥

ਬਿੰਦੁ ਰਾਖਿ ਜੌ ਤਰੀਐ ਭਾਈ ॥
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥
हे भाई ! यदि ब्रह्मचारी बनने से भवसागर से पार हुआ जा सकता है तो

ਖੁਸਰੈ ਕਿਉ ਨ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੩॥
खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३॥
हिजड़े को क्यों परमगति नहीं मिली ? ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਨਰ ਭਾਈ ॥
कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥
कबीर जी कहते हैं- हे मेरे मानव भाईयो ! ध्यानपूर्वक सुनो,"

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥੪॥
राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥४॥४॥
राम नाम के बिना किसी को मुक्ति नहीं मिली है। ४॥ ४॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਸੰਧਿਆ ਪ੍ਰਾਤ ਇਸ੍ਨਾਨੁ ਕਰਾਹੀ ॥
संधिआ प्रात इस्नानु कराही ॥
जो व्यक्ति प्रातः काल एवं सायंकाल के समय स्नान ही करते हैं

ਜਿਉ ਭਏ ਦਾਦੁਰ ਪਾਨੀ ਮਾਹੀ ॥੧॥
जिउ भए दादुर पानी माही ॥१॥
तथा सोचते हैं कि हम पावन हो गए हैं, वे ऐसे हैं जैसे जल में मेंढक रहते हैं।॥ १॥

ਜਉ ਪੈ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਤਿ ਨਾਹੀ ॥
जउ पै राम राम रति नाही ॥
यदि उनके मन में राम के नाम का प्रेम नहीं है तो

ਤੇ ਸਭਿ ਧਰਮ ਰਾਇ ਕੈ ਜਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ते सभि धरम राइ कै जाही ॥१॥ रहाउ ॥
वह सभी अपने कर्मों का हिसाब देने हेतु धर्मराज के वश में पड़ते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਇਆ ਰਤਿ ਬਹੁ ਰੂਪ ਰਚਾਹੀ ॥
काइआ रति बहु रूप रचाही ॥
जो व्यक्ति अपनी काया से प्रेम करते हैं और अनेक रूप धारण करते हैं,

ਤਿਨ ਕਉ ਦਇਆ ਸੁਪਨੈ ਭੀ ਨਾਹੀ ॥੨॥
तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥२॥
वे कभी स्वप्न में भी दया अनुभव नहीं करते॥ २॥

ਚਾਰਿ ਚਰਨ ਕਹਹਿ ਬਹੁ ਆਗਰ ॥
चारि चरन कहहि बहु आगर ॥
अनेकों बुद्धिमान लोग एवं चार चरण (सत्य, तप, दया एवं दान) भी यहीं कहते हैं

ਸਾਧੂ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਕਲਿ ਸਾਗਰ ॥੩॥
साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥३॥
कि संतजन ही वास्तव में संसार-सागर में सुख पाते हैं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਬਹੁ ਕਾਇ ਕਰੀਜੈ ॥
कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥
हे कबीर ! हम इतने संस्कार क्यों करें ?

ਸਰਬਸੁ ਛੋਡਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੪॥੫॥
सरबसु छोडि महा रसु पीजै ॥४॥५॥
शेष सब कुछ छोड़कर केवल नाम के महारस का पान कीजिए॥ ४॥ ५॥

ਕਬੀਰ ਜੀ ਗਉੜੀ ॥
कबीर जी गउड़ी ॥
कबीर जी गउड़ी ॥

ਕਿਆ ਜਪੁ ਕਿਆ ਤਪੁ ਕਿਆ ਬ੍ਰਤ ਪੂਜਾ ॥
किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
उसका जप, तपस्या, व्रत एवं पूजा करने का कोई अभिप्राय नहीं

ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਭਾਉ ਹੈ ਦੂਜਾ ॥੧॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के सिवाय किसी दूसरे का प्रेम है ॥ १॥

ਰੇ ਜਨ ਮਨੁ ਮਾਧਉ ਸਿਉ ਲਾਈਐ ॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
हे भाई ! मन को भगवान के साथ लगाना चाहिए।

ਚਤੁਰਾਈ ਨ ਚਤੁਰਭੁਜੁ ਪਾਈਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ रहाउ ॥
किसी चतुराई से चतुर्भुज प्रभु प्राप्त नहीं होता। रहाउ॥

ਪਰਹਰੁ ਲੋਭੁ ਅਰੁ ਲੋਕਾਚਾਰੁ ॥
परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥
"(हे भाई !) लोभ एवं लोकाचार,

ਪਰਹਰੁ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥੨॥
परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥२॥
काम, क्रोध एवं अहंकार को त्याग दो॥ २॥

ਕਰਮ ਕਰਤ ਬਧੇ ਅਹੰਮੇਵ ॥
करम करत बधे अहमेव ॥
कर्मकाण्ड करने से मनुष्य अहंकार में फँस जाता है।

ਮਿਲਿ ਪਾਥਰ ਕੀ ਕਰਹੀ ਸੇਵ ॥੩॥
मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥
ऐसे मनुष्य मिलकर पत्थर की ही पूजा करते हैं।॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
हे कबीर ! भक्ति करने से ही भगवान मिल सकता है।

ਭੋਲੇ ਭਾਇ ਮਿਲੇ ਰਘੁਰਾਇਆ ॥੪॥੬॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥४॥६॥
भोलेपन से ही रघुराम मिलता है॥ ४॥ ६॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਗਰਭ ਵਾਸ ਮਹਿ ਕੁਲੁ ਨਹੀ ਜਾਤੀ ॥
गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
माँ के गर्भ में प्राणी को यह पता नहीं होता कि मैं किस कुल एवं जाति का हूँ

ਬ੍ਰਹਮ ਬਿੰਦੁ ਤੇ ਸਭ ਉਤਪਾਤੀ ॥੧॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
प्रभु के अंश से ही समस्त जीव-जन्तु उत्पन्न हुए हैं। ॥ १॥

ਕਹੁ ਰੇ ਪੰਡਿਤ ਬਾਮਨ ਕਬ ਕੇ ਹੋਏ ॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
हे पण्डित ! कहो, तुम ब्राह्मण कब से बन चुके हो ?

ਬਾਮਨ ਕਹਿ ਕਹਿ ਜਨਮੁ ਮਤ ਖੋਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥
अपने आपको ब्राह्मण कह-कहकर अपना अनमोल जीवन बर्बाद मत कर ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੌ ਤੂੰ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਬ੍ਰਹਮਣੀ ਜਾਇਆ ॥
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
यदि (हे पण्डित !) तुम सचमुच ब्राह्मण हो और तुमने ब्राह्मणी माता के गर्भ से जन्म लिया है

ਤਉ ਆਨ ਬਾਟ ਕਾਹੇ ਨਹੀ ਆਇਆ ॥੨॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तो किसी दूसरे मार्ग द्वारा क्यों नहीं उत्पन्न हुए ? ॥ २॥

ਤੁਮ ਕਤ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਹਮ ਕਤ ਸੂਦ ॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
(हे पण्डित !) तुम ब्राह्मण कैसे हो ? और हम किस तरह शूद्र हैं?

ਹਮ ਕਤ ਲੋਹੂ ਤੁਮ ਕਤ ਦੂਧ ॥੩॥

हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥

हमारे शरीर में कैसे रक्त ही है? तुम्हारे शरीर में किस प्रकार (रक्त के स्थान पर) दूध है ? ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥

कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥

हे कबीर ! जो ब्रहा का चिंतन करता है

ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਕਹੀਅਤੁ ਹੈ ਹਮਾਰੈ ॥੪॥੭॥

सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥

हम केवल उसी को ब्राह्मण कहते हैं ॥ ४ ॥ ७ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਅੰਧਕਾਰ ਸੁਖਿ ਕਬਹਿ ਨ ਸੋਈ ਹੈ ॥
अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥
भगवान को विस्मृत करके अज्ञानता रूपी अंधेरे में कभी सुखपूर्वक नहीं सोया जा सकता।

ਰਾਜਾ ਰੰਕੁ ਦੋਊ ਮਿਲਿ ਰੋਈ ਹੈ ॥੧॥
राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥१॥
राजा हो अथवा रंक हो, दोनों ही दुखी होकर रोते हैं।॥ १॥

ਜਉ ਪੈ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਨ ਕਹਿਬੋ ॥
जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥
"(हे जिज्ञासु !) जब तक मनुष्य की जिव्हा राम नाम को उच्चरित नहीं करती,

ਉਪਜਤ ਬਿਨਸਤ ਰੋਵਤ ਰਹਿਬੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥
तब तक वे जन्मते-मरते तथा रोते रहेंगे ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਸ ਦੇਖੀਐ ਤਰਵਰ ਕੀ ਛਾਇਆ ॥
जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥
जैसे पेड़ की छाया देखी जाती है,

ਪ੍ਰਾਨ ਗਏ ਕਹੁ ਕਾ ਕੀ ਮਾਇਆ ॥੨॥
प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥
"(वैसे ही इस माया का हाल है) जब मनुष्य के प्राण निकल जाते हैं तो कहो, यह माया किसकी होगी ? ॥ २ ॥

ਜਸ ਜੰਤੀ ਮਹਿ ਜੀਉ ਸਮਾਨਾ ॥
जस जंती महि जीउ समाना ॥
जैसे राग की ध्वनि वाद्ययन्त्र के बीच में समा जाती है, वैसे ही प्राण हैं।

ਮੂਏ ਮਰਮੁ ਕੋ ਕਾ ਕਰ ਜਾਨਾ ॥੩॥
मूए मरमु को का कर जाना ॥३॥
इसलिए मृतक इन्सान का रहस्य कोई प्राणी कैसे जान सकता है ? ॥ ३॥

ਹੰਸਾ ਸਰਵਰੁ ਕਾਲੁ ਸਰੀਰ ॥
हंसा सरवरु कालु सरीर ॥
जैसे राज हंस सरोवर के आसपास घूमता है, वैसे ही मृत्यु मनुष्य के शरीर पर मंडराती है।

ਰਾਮ ਰਸਾਇਨ ਪੀਉ ਰੇ ਕਬੀਰ ॥੪॥੮॥
राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥
इसलिए हे कबीर ! समस्त रसों में उत्तम राम रसायन का पान करो ॥ ४ ॥ ८ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜੋਤਿ ਕੀ ਜਾਤਿ ਜਾਤਿ ਕੀ ਜੋਤੀ ॥
जोति की जाति जाति की जोती ॥
भगवान द्वारा रचित सारी दुनिया के लोगों की बुद्धि में

ਤਿਤੁ ਲਾਗੇ ਕੰਚੂਆ ਫਲ ਮੋਤੀ ॥੧॥
तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥
कांच मोतियों के फल लगे हुए हैं।॥ १॥

ਕਵਨੁ ਸੁ ਘਰੁ ਜੋ ਨਿਰਭਉ ਕਹੀਐ ॥
कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥
वह कौन-सा घर है, जिसे भय से मुक्त कहा जा सकता है।

ਭਉ ਭਜਿ ਜਾਇ ਅਭੈ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जहाँ भय दूर हो जाता है और मनुष्य निडर होकर रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ ਨਹੀ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇ ॥
तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥
किसी पवित्र नदी के तट अथवा तीर्थ पर जाकर मन संतुष्ट नहीं होता,

ਚਾਰ ਅਚਾਰ ਰਹੇ ਉਰਝਾਇ ॥੨॥
चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥
वहाँ भी कुछ व्यक्ति पाप-पुण्य में अग्रसर हैं॥ २॥

ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਦੁਇ ਏਕ ਸਮਾਨ ॥
पाप पुंन दुइ एक समान ॥
लेकिन पाप एवं पुण्य दोनों ही एक समान हैं।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਪਾਰਸੁ ਤਜਹੁ ਗੁਨ ਆਨ ॥੩॥
निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥
"(हे मन !) तेरे हृदय घर के भीतर ही (काया-पलट देने वाला) पारस प्रभु है,इसलिए किसी दूसरे से गुण प्राप्त करने का ख्याल त्याग दे ॥ ३॥

ਕਬੀਰ ਨਿਰਗੁਣ ਨਾਮ ਨ ਰੋਸੁ ॥
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥
हे कबीर ! मोह-माया से सर्वोपरि प्रभु के नाम को विस्मृत मत कर एवं

ਇਸੁ ਪਰਚਾਇ ਪਰਚਿ ਰਹੁ ਏਸੁ ॥੪॥੯॥
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥९॥
अपने मन को (बहलाने में मत बहला और) नाम सिमरन में लगाकर नाम में मग्न रह॥४॥९॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜੋ ਜਨ ਪਰਮਿਤਿ ਪਰਮਨੁ ਜਾਨਾ ॥
जो जन परमिति परमनु जाना ॥
जो मनुष्य बेअंदाज एवं अगम्य प्रभु को नहीं जानता,

ਬਾਤਨ ਹੀ ਬੈਕੁੰਠ ਸਮਾਨਾ ॥੧॥
बातन ही बैकुंठ समाना ॥१॥
वह कोरी (व्यर्थ) बातों से ही स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है॥ १ ॥

ਨਾ ਜਾਨਾ ਬੈਕੁੰਠ ਕਹਾ ਹੀ ॥
ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥
मैं नहीं जानता कि स्वर्ग कहाँ है।

ਜਾਨੁ ਜਾਨੁ ਸਭਿ ਕਹਹਿ ਤਹਾ ਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥१॥ रहाउ ॥
हरेक मनुष्य कहता है कि वह वहाँ जाना एवं पहुँचना चाहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹਨ ਕਹਾਵਨ ਨਹ ਪਤੀਅਈ ਹੈ ॥
कहन कहावन नह पतीअई है ॥
व्यर्थ बातचीत से मनुष्य के मन की संतुष्टि नहीं होती।

ਤਉ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਜਾ ਤੇ ਹਉਮੈ ਜਈ ਹੈ ॥੨॥
तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥२॥
मन को संतुष्टि तभी होती है, जब अहंकार नष्ट हो जाता है॥ २॥

ਜਬ ਲਗੁ ਮਨਿ ਬੈਕੁੰਠ ਕੀ ਆਸ ॥
जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥
जब तक मनुष्य क हृदय में स्वर्ग की लालसा है,"

ਤਬ ਲਗੁ ਹੋਇ ਨਹੀ ਚਰਨ ਨਿਵਾਸੁ ॥੩॥
तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥३॥
तब तक उसका प्रभु के चरणों में निवास नहीं होता।॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਹ ਕਹੀਐ ਕਾਹਿ ॥
कहु कबीर इह कहीऐ काहि ॥
हे कबीर ! यह बात मैं किस तरह बताऊँ कि

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬੈਕੁੰਠੈ ਆਹਿ ॥੪॥੧੦॥
साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥१०॥
साधु-संतों की संगति ही स्वर्ग है॥ ४॥ १०॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਉਪਜੈ ਨਿਪਜੈ ਨਿਪਜਿ ਸਮਾਈ ॥
उपजै निपजै निपजि समाई ॥
जीव जन्म लेता है, वह बड़ा होता है और बड़ा होने के पश्चात् प्राण त्याग कर मर जाता है।

ਨੈਨਹ ਦੇਖਤ ਇਹੁ ਜਗੁ ਜਾਈ ॥੧॥
नैनह देखत इहु जगु जाई ॥१॥
हमारे नेत्रों के समक्ष ही यह जगत् आता-जाता (जन्मता-मरता) दिखता है॥ १॥

ਲਾਜ ਨ ਮਰਹੁ ਕਹਹੁ ਘਰੁ ਮੇਰਾ ॥
लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥
(हे जीव !) तू घर को अपना कहता हुआ लज्जा से नहीं मरता।

ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਨਹੀ ਕਛੁ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंत की बार नही कछु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥
अंतिम समय तेरा कुछ भी नहीं (अर्थात् जिस समय मृत्यु आएगी तब कोई भी वस्तु तेरी नहीं रहेगी) ॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਕਾਇਆ ਪਾਲੀ ॥
अनिक जतन करि काइआ पाली ॥
अनेक प्रयासों द्वारा इस शरीर का पालन पोषण किया जाता है

ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਅਗਨਿ ਸੰਗਿ ਜਾਲੀ ॥੨॥
मरती बार अगनि संगि जाली ॥२॥
लेकिन जब मृत्यु आती है, इसे अग्नि से जला दिया जाता है।॥ २॥

ਚੋਆ ਚੰਦਨੁ ਮਰਦਨ ਅੰਗਾ ॥
चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥
वह शरीर जिसके अंगों को इत्र एवं चन्दन लगाया जाता था।

ਸੋ ਤਨੁ ਜਲੈ ਕਾਠ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥੩॥
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥३॥
वह शरीर आखिरकार लकड़ियों से जला दिया जाता है॥ ३ ॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਗੁਨੀਆ ॥
कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥
कबीर का कथन है कि हे गुणवान पुरुष ! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन,

ਬਿਨਸੈਗੋ ਰੂਪੁ ਦੇਖੈ ਸਭ ਦੁਨੀਆ ॥੪॥੧੧॥
बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥४॥११॥
तेरी यह सुन्दरता नाश हो जाएगी, यह सारी दुनिया देखेगी॥ ४॥ ११॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਅਵਰ ਮੂਏ ਕਿਆ ਸੋਗੁ ਕਰੀਜੈ ॥
अवर मूए किआ सोगु करीजै ॥
जब कोई व्यक्ति मरता है तो उसकी मृत्यु पर शोक करने का क्या अभिप्राय ?

ਤਉ ਕੀਜੈ ਜਉ ਆਪਨ ਜੀਜੈ ॥੧॥
तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥१॥
वियोग तब करना चाहिए, यदि आप सदैव जीवित रहना हो ॥ १॥

ਮੈ ਨ ਮਰਉ ਮਰਿਬੋ ਸੰਸਾਰਾ ॥
मै न मरउ मरिबो संसारा ॥
मैं वैसे नहीं मरूंगा, जैसे जगत् मरता है,

ਅਬ ਮੋਹਿ ਮਿਲਿਓ ਹੈ ਜੀਆਵਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि अब मुझे जीवन देने वाला प्रभु मिल गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਇਆ ਦੇਹੀ ਪਰਮਲ ਮਹਕੰਦਾ ॥
इआ देही परमल महकंदा ॥
प्राणी इस शरीर को कई सुगन्धियाँ लगाकर महकाता है

ਤਾ ਸੁਖ ਬਿਸਰੇ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੨॥
ता सुख बिसरे परमानंदा ॥२॥
और इन सुखों में इसे परमानन्द प्रभु ही भूल जाता है।॥ २॥

ਕੂਅਟਾ ਏਕੁ ਪੰਚ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥
कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥
"(यह शरीर, मानो) एक छोटा-सा कुओं है (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मानो) पाँच वर्खियाँ हैं।

ਟੂਟੀ ਲਾਜੁ ਭਰੈ ਮਤਿ ਹਾਰੀ ॥੩॥
टूटी लाजु भरै मति हारी ॥३॥
मृत बुद्धि रस्सी के बिना जल भर रही है॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਕ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥
हे कबीर ! जब विचारों वाली बुद्धि भीतर जाग पड़ी तो

ਨਾ ਓਹੁ ਕੂਅਟਾ ਨਾ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥੪॥੧੨॥
ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥४॥१२॥
यह शारीरिक मोह नहीं रहा और न ही विकारों की ओर मुग्ध करने वाली इन्द्रियाँ रहीं ॥ ४॥ १२॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਅਸਥਾਵਰ ਜੰਗਮ ਕੀਟ ਪਤੰਗਾ ॥
असथावर जंगम कीट पतंगा ॥
हमने स्थावर, जंगम, कीट-पतंगे

ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਕੀਏ ਬਹੁ ਰੰਗਾ ॥੧॥
अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥१॥
यूं कई प्रकार के जन्म धारण किए हैं॥ १॥

ਐਸੇ ਘਰ ਹਮ ਬਹੁਤੁ ਬਸਾਏ ॥
ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥
उससे पहले मैंने ऐसे बहुत से शरीरों में निवास किया था॥

ਜਬ ਹਮ ਰਾਮ ਗਰਭ ਹੋਇ ਆਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब हम राम गरभ होइ आए ॥१॥ रहाउ ॥
हे राम ! जब मैं अपनी माता के गर्भ में डाला गया था १॥ रहाउ ॥

ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥
जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥
मैं कभी योगी, कभी यती, कभी तपस्वी एवं कभी ब्रह्मचारी बना और

ਕਬਹੂ ਰਾਜਾ ਛਤ੍ਰਪਤਿ ਕਬਹੂ ਭੇਖਾਰੀ ॥੨॥
कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥
कभी मैं छत्रपति राजा बना और कभी भिखारी बना॥ २॥

ਸਾਕਤ ਮਰਹਿ ਸੰਤ ਸਭਿ ਜੀਵਹਿ ॥
साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥
शाक्त इन्सान मर जाएँगे परन्तु साधु सभी जीवित रहेंगे

ਰਾਮ ਰਸਾਇਨੁ ਰਸਨਾ ਪੀਵਹਿ ॥੩॥
राम रसाइनु रसना पीवहि ॥३॥
और अपनी जिव्हा से राम-अमृत का पान करेंगे ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥ਹਾਰਿ ਪਰੇ ਅਬ ਪੂਰਾ ਦੀਜੈ ॥੪॥੧੩॥
कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥
कबीर का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो, अब मैं थक-टूट गया हूँ, अब मुझे पूर्ण ज्ञान दीजिए॥ ४ ॥ १३ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ ਨਾਲਿ ਰਲਾਇ ਲਿਖਿਆ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥
गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥

ਐਸੋ ਅਚਰਜੁ ਦੇਖਿਓ ਕਬੀਰ ॥
ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥
हे कबीर ! मैंने यह अदभुत कौतुक देखा है

ਦਧਿ ਕੈ ਭੋਲੈ ਬਿਰੋਲੈ ਨੀਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥
कि मनुष्य दहीं के अम में जल का मन्थन कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰੀ ਅੰਗੂਰੀ ਗਦਹਾ ਚਰੈ ॥
हरी अंगूरी गदहा चरै ॥
गधा हरी अंगूरी चरता है और

ਨਿਤ ਉਠਿ ਹਾਸੈ ਹੀਗੈ ਮਰੈ ॥੧॥
नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥
प्रतिदिन उठकर वह हँसता, हींगता रहता है आखिरकार मर जाता है (अर्थात् मूर्ख जीव मनभावन विकार भोगता है, इस प्रकार हैंसता तथा ही-ही करता रहता है अंतः जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाता है) ॥ १ ॥

ਮਾਤਾ ਭੈਸਾ ਅੰਮ੍ਰਹਾ ਜਾਇ ॥
माता भैसा अमुहा जाइ ॥
मतवाला भैसा अनियंत्रित होकर भागता फिरता है।

ਕੁਦਿ ਕੁਦਿ ਚਰੈ ਰਸਾਤਲਿ ਪਾਇ ॥੨॥
कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥२॥
वह नाचता, कूदता, खाता और आखिरकार नरक में पड़ जाता है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪਰਗਟੁ ਭਈ ਖੇਡ ॥
कहु कबीर परगटु भई खेड ॥
हे कबीर ! यह अदभुत खेल प्रकट हो गई है।

ਲੇਲੇ ਕਉ ਚੂਘੈ ਨਿਤ ਭੇਡ ॥੩॥
लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥
भेड़ हमेशा अपने लेले को चूंघती है।

ਰਾਮ ਰਮਤ ਮਤਿ ਪਰਗਟੀ ਆਈ ॥
राम रमत मति परगटी आई ॥
राम का नाम उच्चरित करने से मेरी बुद्धि उज्ज्वल हो गई है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਗੁਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੪॥੧॥੧੪॥
कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥
हे कबीर ! गुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है॥ ४॥ १॥ १४॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਪੰਚਪਦੇ ॥
गउड़ी कबीर जी पंचपदे ॥
गउड़ी कबीर जी पंचपदे ॥

ਜਿਉ ਜਲ ਛੋਡਿ ਬਾਹਰਿ ਭਇਓ ਮੀਨਾ ॥ ਪੂਰਬ ਜਨਮ ਹਉ ਤਪ ਕਾ ਹੀਨਾ ॥੧॥
जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥
जैसे मछली जल को त्यागकर बाहर निकल आती है (तो पीड़ित होकर प्राण त्याग देती है, वैसे ही) मैंने भी पूर्व जन्मों में तपस्या नहीं की थी।॥ १॥

ਅਬ ਕਹੁ ਰਾਮ ਕਵਨ ਗਤਿ ਮੋਰੀ ॥
अब कहु राम कवन गति मोरी ॥
हे मेरे राम ! अब बताओ, मेरी क्या गति होगी ?

ਤਜੀ ਲੇ ਬਨਾਰਸ ਮਤਿ ਭਈ ਥੋਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥
लोग मुझे कहते हैं कि जब मैं बनारस छोड़ गया तो मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई ?॥ १॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਜਨਮੁ ਸਿਵ ਪੁਰੀ ਗਵਾਇਆ ॥ ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਮਗਹਰਿ ਉਠਿ ਆਇਆ ॥੨॥
सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥ मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥
मैंने अपनी समस्त आयु शिवपुरी (काशी) में गंवा दी है। मृत्यु के समय (काशी) छोड़कर मगहर चला आया हूँ॥ २॥

ਬਹੁਤੁ ਬਰਸ ਤਪੁ ਕੀਆ ਕਾਸੀ ॥
हुतु बरस तपु कीआ कासी ॥
मैंने कई वर्ष काशी में रहकर तप किया।

ਮਰਨੁ ਭਇਆ ਮਗਹਰ ਕੀ ਬਾਸੀ ॥੩॥
मरनु भइआ मगहर की बासी ॥३॥
अब जब मृत्यु का समय आया तो मगहर आकर निवास कर लिया है॥ ३॥

ਕਾਸੀ ਮਗਹਰ ਸਮ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कासी मगहर सम बीचारी ॥
मैंने काशी और मगहर को एक समान समझ लिया है,

ਓਛੀ ਭਗਤਿ ਕੈਸੇ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰੀ ॥੪॥
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥
ओच्छी भक्ति से कोई किस प्रकार भवसागर से पार हो सकता है ?॥ ४॥

ਕਹੁ ਗੁਰ ਗਜ ਸਿਵ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਨੈ ॥
कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥
हे कबीर ! मेरा गुरु (रामानंद), गणेश एवं भगवान शिव सभी जानते हैं कि

ਮੁਆ ਕਬੀਰੁ ਰਮਤ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮੈ ॥੫॥੧੫॥
मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥
कबीर श्री राम के नाम का जाप करता हुआ मर गया ॥ ५॥ १५॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਮਰਦਨ ਅੰਗਾ ॥
चोआ चंदन मरदन अंगा ॥
जिस सुन्दर शरीर के अंगों पर इत्र एवं चन्दन मला जाता है,

ਸੋ ਤਨੁ ਜਲੈ ਕਾਠ ਕੈ ਸੰਗਾ ॥੧॥
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥१॥
वह आखिरकार लकड़ियों से जला दिया जाता है॥ १॥

ਇਸੁ ਤਨ ਧਨ ਕੀ ਕਵਨ ਬਡਾਈ ॥
इसु तन धन की कवन बडाई ॥
इस शरीर एवं धन पर क्या अभिमान करना हुआ ?

ਧਰਨਿ ਪਰੈ ਉਰਵਾਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धरनि परै उरवारि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
ये यहाँ पृथ्वी पर पड़े रह जाते हैं और प्राणी के साथ परलोक को नहीं जाते ॥ १॥ रहाउ ॥

ਰਾਤਿ ਜਿ ਸੋਵਹਿ ਦਿਨ ਕਰਹਿ ਕਾਮ ॥
राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥
जो व्यक्ति रात सोने में बिता देते हैं और दिन में काम करते हैं

ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਲੇਹਿ ਨ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮ ॥੨॥
इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥२॥
और एक क्षणमात्र भी भगवान का नाम याद नहीं करते॥ २॥

ਹਾਥਿ ਤ ਡੋਰ ਮੁਖਿ ਖਾਇਓ ਤੰਬੋਰ ॥
हाथि त डोर मुखि खाइओ त्मबोर ॥
जिनके हाथ में डोर है और मुख में पान चबा रहे हैं,

ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਕਸਿ ਬਾਧਿਓ ਚੋਰ ॥੩॥
मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥३॥
ऐसे व्यक्ति मृत्यु के समय चोरों की भाँति कसकर बाँधे जाते हैं।॥ ३॥

ਗੁਰਮਤਿ ਰਸਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥
गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥
जो इन्सान गुरु की मति लेकर प्रेमपूर्वक भगवान के गुण गाता है,

ਰਾਮੈ ਰਾਮ ਰਮਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੪॥
रामै राम रमत सुखु पावै ॥४॥
वह केवल प्रभु-परमेश्वर को ही याद करके सुख हासिल करता है॥ ४॥

ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਈ ॥
किरपा करि कै नामु द्रिड़ाई ॥
जिस व्यक्ति के भीतर कृपा धारण करके प्रभु अपना नाम बसा देता है,

ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਾਸੁ ਸੁਗੰਧ ਬਸਾਈ ॥੫॥
हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥५॥
वह हरि-परमेश्वर की महक एवं सुगन्ध को अपने हृदय में बसा लेता है॥ ५॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਚੇਤਿ ਰੇ ਅੰਧਾ ॥
कहत कबीर चेति रे अंधा ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे मूर्ख जीव ! (अपने परमेश्वर को) याद कर,

ਸਤਿ ਰਾਮੁ ਝੂਠਾ ਸਭੁ ਧੰਧਾ ॥੬॥੧੬॥
सति रामु झूठा सभु धंधा ॥६॥१६॥
चूंकि राम ही सत्य है और दुनिया के शेष धन्धे क्षणभंगुर हैं। ६॥ १६॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਤਿਪਦੇ ਚਾਰਤੁਕੇ ॥
गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥
गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥

ਜਮ ਤੇ ਉਲਟਿ ਭਏ ਹੈ ਰਾਮ ॥
जम ते उलटि भए है राम ॥
यम (मृत्यु) की तरफ जाने की बजाय अब मैंने राम का पक्ष ले लिया है।

ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਓ ਬਿਸਰਾਮ ॥
दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥
जिससे मेरे दुःख मिट गए हैं और मैं सुखपूर्वक विश्राम करता हूँ।

ਬੈਰੀ ਉਲਟਿ ਭਏ ਹੈ ਮੀਤਾ ॥
बैरी उलटि भए है मीता ॥
मेरे शत्रु भी बदलकर मेरे मित्र बन गए हैं।

ਸਾਕਤ ਉਲਟਿ ਸੁਜਨ ਭਏ ਚੀਤਾ ॥੧॥
साकत उलटि सुजन भए चीता ॥१॥
भगवान से टूटे हुए शाक्त पुरुष बदलकर भद्रपुरुष बन गए हैं।॥ १॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਸਰਬ ਕੁਸਲ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥
अब मुझे समस्त सुख एवं मंगल प्रतीत हो रहे हैं,

ਸਾਂਤਿ ਭਈ ਜਬ ਗੋਬਿਦੁ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सांति भई जब गोबिदु जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जब से मैंने गोविन्द को अनुभव किया है, मेरे भीतर सुख-शांति हो गई है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਨ ਮਹਿ ਹੋਤੀ ਕੋਟਿ ਉਪਾਧਿ ॥
तन महि होती कोटि उपाधि ॥
इस शरीर में करोड़ों ही रोग थे।

ਉਲਟਿ ਭਈ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ॥
उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥
ईश्वर का नाम-सिमरन करने से अब वे भी सहज सुख एवं समाधि में बदल गए हैं।

ਆਪੁ ਪਛਾਨੈ ਆਪੈ ਆਪ ॥
आपु पछानै आपै आप ॥
मेरे मन ने अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान लिया है,

ਰੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਤੀਨੌ ਤਾਪ ॥੨॥
रोगु न बिआपै तीनौ ताप ॥२॥
अब इसे ईश्वर ही ईश्वर दृष्टिमान हो रहा है, रोग एवं तीनों ताप प्रभावित नहीं कर सकते॥ २॥

ਅਬ ਮਨੁ ਉਲਟਿ ਸਨਾਤਨੁ ਹੂਆ ॥
अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥
अब मेरा मन हटकर सनातन (ईश्वर का रूप) हो गया है,

ਤਬ ਜਾਨਿਆ ਜਬ ਜੀਵਤ ਮੂਆ ॥
तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥
इस बात का तब ज्ञान होता है, जब यह मन माया में विचरण करता हुआ भी माया के मोह से सर्वोच्च हो गया।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਉ ॥
कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥
हे कबीर ! अब मैं सहज सुख में समा गया हूँ।

ਆਪਿ ਨ ਡਰਉ ਨ ਅਵਰ ਡਰਾਵਉ ॥੩॥੧੭॥
आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥३॥१७॥
इसलिए अब न मैं स्वयं किसी दूसरे से भयभीत होता हूँ और न ही किसी दूसरे को भयभीत करता हूँ॥ ३॥ १७॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਪਿੰਡਿ ਮੂਐ ਜੀਉ ਕਿਹ ਘਰਿ ਜਾਤਾ ॥
पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥
(प्रश्न) जब किसी महापुरुष का शरीर प्राण त्याग देता है तो आत्मा कहाँ चली जाती है?

ਸਬਦਿ ਅਤੀਤਿ ਅਨਾਹਦਿ ਰਾਤਾ ॥
सबदि अतीति अनाहदि राता ॥
(उत्तर-) यह पवित्रात्मा शब्द के प्रभाव से अमर प्रभु में लीन हो जाती है।

ਜਿਨਿ ਰਾਮੁ ਜਾਨਿਆ ਤਿਨਹਿ ਪਛਾਨਿਆ ॥
जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥
जो राम को समझता है, वही उसके स्वाद को अनुभव करता है,

ਜਿਉ ਗੂੰਗੇ ਸਾਕਰ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥
जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥१॥
जैसे गूंगे मनुष्य का मन शक्कर खाने से संतुष्ट हो जाता है॥ १॥

ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਕਥੈ ਬਨਵਾਰੀ ॥
ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥
ऐसा ज्ञान ईश्वर ही प्रकट करता है।

ਮਨ ਰੇ ਪਵਨ ਦ੍ਰਿੜ ਸੁਖਮਨ ਨਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन रे पवन द्रिड़ सुखमन नारी ॥१॥ रहाउ ॥
हे मन ! प्रत्येक श्वास से नाम-स्मरण कर, यही सुषुम्ना नाड़ी का अभ्यास है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੋ ਗੁਰੁ ਕਰਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਰਨਾ ॥
सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥
ऐसा गुरु धारण कर जो तुझे पुनः गुरु धारण करने की आवश्यकता न पड़े;

ਸੋ ਪਦੁ ਰਵਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਰਵਨਾ ॥
सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥
ऐसा शब्द उच्चारण कर चूंकि जो तुझे और उच्चारण न करना पड़े।

ਸੋ ਧਿਆਨੁ ਧਰਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਧਰਨਾ ॥
सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥
ऐसा ध्यान लगाओ कि फिर ध्यान लगाने की आवश्यकता ही न रहे।

ਐਸੇ ਮਰਹੁ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਮਰਨਾ ॥੨॥
ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥२॥
इस विधि से मरो कि तुझे जन्म-मरण के चक्र में न पड़ना पड़े॥ २ ॥

ਉਲਟੀ ਗੰਗਾ ਜਮੁਨ ਮਿਲਾਵਉ ॥
उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥
मैंने अपने मन का ध्यान बदल दिया है इस प्रकार मैं गंगा और यमुना को मिला रहा हूँ।

ਬਿਨੁ ਜਲ ਸੰਗਮ ਮਨ ਮਹਿ ਨ੍ਹ੍ਹਾਵਉ ॥
बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥
इस प्रकार (मैं उस मन-रूपी त्रिवेणी) संगम में स्नान कर रहा हूँ, जहाँ (गंगा, जमुना, सरस्वती वाला) जल नहीं है,

ਲੋਚਾ ਸਮਸਰਿ ਇਹੁ ਬਿਉਹਾਰਾ ॥
लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥
अब मैं इन नेत्रों से सबको एक समान देख रहा हूँ। यही मेरा जीवन-व्यवहार है।

ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿ ਕਿਆ ਅਵਰਿ ਬੀਚਾਰਾ ॥੩॥
ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥३॥
एक ईश्वर का चिन्तन कर, और चिन्तन की आवश्यकता नहीं॥ ३ ॥

ਅਪੁ ਤੇਜੁ ਬਾਇ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਆਕਾਸਾ ॥ ਐਸੀ ਰਹਤ ਰਹਉ ਹਰਿ ਪਾਸਾ ॥
अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥ ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥
ईश्वर के चरणों में लगकर मैं इस प्रकार का जीवन-आचरण कर रहा हूँ, जैसे जल, अग्नि, पवन, धरती एवं आकाश

ਕਹੈ ਕਬੀਰ ਨਿਰੰਜਨ ਧਿਆਵਉ ॥
कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥
कबीर जी कहते हैं कि तू निरंजन प्रभु का ध्यान कर,

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਉ ਜਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਉ ॥੪॥੧੮॥
तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥४॥१८॥
जिससे उस घर में पहुँच जहाँ से लौटकर न आना पड़े॥ ४॥ १८ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਤਿਪਦੇ ॥
गउड़ी कबीर जी तिपदे ॥
गउड़ी कबीर जी तिपदे ॥

ਕੰਚਨ ਸਿਉ ਪਾਈਐ ਨਹੀ ਤੋਲਿ ॥
कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥
अपने वजन जितना सोना दान देने से भगवान प्राप्त नहीं होता।

ਮਨੁ ਦੇ ਰਾਮੁ ਲੀਆ ਹੈ ਮੋਲਿ ॥੧॥
मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥
मैंने तो अपना मन मूल्य के रूप में देकर राम को प्राप्त किया है॥ १॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਰਾਮੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥
अब मुझे आस्था हो गई कि राम मेरा अपना ही है,

ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन सहज स्वभाव उससे प्रसन्न है॥ १॥ रहाउ॥

ਬ੍ਰਹਮੈ ਕਥਿ ਕਥਿ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥
जिस ईश्वर के गुण बतला-बतलाकर ब्रह्मा ने भी अन्त नहीं पाया,

ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਬੈਠੇ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੨॥
राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥
यह ईश्वर मेरी राम-भक्ति से मेरे हृदय (घर) में बैठ गया है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਤਿਆਗੀ ॥
कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥
हे कबीर ! मैंने अपनी चंचल मति त्याग दी है,"

ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਨਿਜ ਭਾਗੀ ॥੩॥੧॥੧੯॥
केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥
केवल राम की भक्ति ही मेरे अपने भाग्यों में आई है॥ ३॥ १॥ १९॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਿਹ ਮਰਨੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਸਿਆ ॥
जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥
जिस मृत्यु से सारी दुनिया भयभीत हुई रहती है,

ਸੋ ਮਰਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਗਾਸਿਆ ॥੧॥
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥
उस मृत्यु का यथार्थ गुरु के शब्द द्वारा प्रकट हो गया है (केि मृत्यु वास्तव में क्या है)॥ १॥

ਅਬ ਕੈਸੇ ਮਰਉ ਮਰਨਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥
अब मैं कैसे जन्म-मरण (के चक्र) में पड़ूंगा ?

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਾਤੇ ਜਿਨ ਰਾਮੁ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे मन ने मृत्यु को वश में कर लिया है। जो लोग राम को नहीं जानते, वे बार-बार जन्मते -मरते रहते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮਰਨੋ ਮਰਨੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥
दुनिया में प्रत्येक प्राणी मृत्यु 'मृत्यु' कह रहा है,

ਸਹਜੇ ਮਰੈ ਅਮਰੁ ਹੋਇ ਸੋਈ ॥੨॥
सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥
केवल वही (मनुष्य) अमर होता है, जो ज्ञान द्वारा मरता है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਮਨਿ ਭਇਆ ਅਨੰਦਾ ॥
कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥
हे कबीर ! मेरे मन में आनंद उत्पन्न हो गया है।

ਗਇਆ ਭਰਮੁ ਰਹਿਆ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੩॥੨੦॥
गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥
मेरी दुविधा का नाश हो गया है और परमानंद हृदय में स्थित है। ३॥ २० ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਕਤ ਨਹੀ ਠਉਰ ਮੂਲੁ ਕਤ ਲਾਵਉ ॥
कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥
इस शरीर में कोई (विशेष) स्थान नहीं मिला जहाँ आत्मा को पीड़ा होती है तो फिर मैं औषधि कहाँ इस्तेमाल करूं ?

ਖੋਜਤ ਤਨ ਮਹਿ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵਉ ॥੧॥
खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥
मैंने अपने शरीर की खोज कर ली है, परन्तु मुझे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला॥ १॥

ਲਾਗੀ ਹੋਇ ਸੁ ਜਾਨੈ ਪੀਰ ॥
लागी होइ सु जानै पीर ॥
जिसे पीड़ा अनुभव हुई है, वही इसे जानता है।

ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਅਨੀਆਲੇ ਤੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥
राम की भक्ति के बाण बड़े तीक्ष्ण हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਏਕ ਭਾਇ ਦੇਖਉ ਸਭ ਨਾਰੀ ॥
एक भाइ देखउ सभ नारी ॥
मैं समस्त नारियों (जीव-स्त्रियों) को एक दृष्टि से देखता हूँ

ਕਿਆ ਜਾਨਉ ਸਹ ਕਉਨ ਪਿਆਰੀ ॥੨॥
किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥
परन्तु मैं क्या जानूं कि कौन-सी नारी (जीव-स्त्री) पति-प्रभु की प्रिया है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥
कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥
हे कबीर ! जिस जीव-स्त्री के माथे पर शुभ भाग्य हैं,

ਸਭ ਪਰਹਰਿ ਤਾ ਕਉ ਮਿਲੈ ਸੁਹਾਗੁ ॥੩॥੨੧॥
सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥
पति-प्रभु सबको छोड़कर उसे आ मिलता है।॥ ३॥ २१॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਸਾ ਠਾਕੁਰੁ ਭਾਈ ॥
जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥
हे भाई ! जिसका भगवान जैसा ठाकुर मौजूद है,

ਮੁਕਤਿ ਅਨੰਤ ਪੁਕਾਰਣਿ ਜਾਈ ॥੧॥
मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥१॥
अनन्त मुक्तियाँ उसके समक्ष अपने आप न्योछावर होती हैं।॥ १॥

ਅਬ ਕਹੁ ਰਾਮ ਭਰੋਸਾ ਤੋਰਾ ॥
अब कहु राम भरोसा तोरा ॥
हे राम ! बताओ ! अब जब मुझे तेरा ही भरोसा है तो

ਤਬ ਕਾਹੂ ਕਾ ਕਵਨੁ ਨਿਹੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥
अब मुझे किसी दूसरे की खुशामद करने की आवश्यकता नहीं ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਜਾ ਕੈ ਹਹਿ ਭਾਰ ॥
तीनि लोक जा कै हहि भार ॥
प्रभु जो तीनों लोकों स्वर्ग लोक, पाताल लोक एवं मृत्युलोक का भार सहन कर रहा है,

ਸੋ ਕਾਹੇ ਨ ਕਰੈ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰ ॥੨॥
सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥
वह क्यों देखभाल नहीं करेगा ? ॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਇਕ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥
हे कबीर ! मैंने अपनी बुद्धि में इस बात पर ही विचार किया है कि

ਕਿਆ ਬਸੁ ਜਉ ਬਿਖੁ ਦੇ ਮਹਤਾਰੀ ॥੩॥੨੨॥
किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥
यदि माता ही अपनी संतान को विष देने लगे तो हम क्या कर सकते हैं ? ॥ ३ ॥ २२ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਬਿਨੁ ਸਤ ਸਤੀ ਹੋਇ ਕੈਸੇ ਨਾਰਿ ॥
बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥
हे पण्डित ! हृदय में सोच-विचार कर देख,

ਪੰਡਿਤ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰਿ ॥੧॥
पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥
ला पतिव्रता एवं सदाचारण के सिवाय कोई नारी कैसे सती बन सकती है ? ॥ १॥

ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਬਧੈ ਸਨੇਹੁ ॥
प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥
यदि पत्नी का प्रभु-पति से प्रेम नहीं तो प्रभु-पति का उससे प्रेम कैसे बढ़ सकता है ?

ਜਬ ਲਗੁ ਰਸੁ ਤਬ ਲਗੁ ਨਹੀ ਨੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥
जब तक सांसारिक मोह है, तब तक ईश्वरीय प्रीति नहीं हो सकती ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਹਨਿ ਸਤੁ ਕਰੈ ਜੀਅ ਅਪਨੈ ॥
साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥
जो व्यक्ति अपने हृदय में माया को सत्य समझता है,

ਸੋ ਰਮਯੇ ਕਉ ਮਿਲੈ ਨ ਸੁਪਨੈ ॥੨॥
सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥
वह राम को अपने स्वप्न में भी नहीं मिलता ॥ २॥

ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਗ੍ਰਿਹੁ ਸਉਪਿ ਸਰੀਰੁ ॥
तनु मनु धनु ग्रिहु सउपि सरीरु ॥
कबीर जी कहते हैं कि वही नारी सुहागिन व माग्यवान है,

ਸੋਈ ਸੁਹਾਗਨਿ ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੩॥
सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥
जो अपना तन, मन, धन, घर और शरीर अपने स्वामीं को अर्पण कर देती है॥ ३ ॥ २३ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਬਿਖਿਆ ਬਿਆਪਿਆ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ॥
बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥
सारी दुनिया ही माया के विकारों में फँसी हुई है।

ਬਿਖਿਆ ਲੈ ਡੂਬੀ ਪਰਵਾਰੁ ॥੧॥
बिखिआ लै डूबी परवारु ॥१॥
माया के विकारों ने परिवारों को (जीवों को) ही डुबो दिया है॥ १॥

ਰੇ ਨਰ ਨਾਵ ਚਉੜਿ ਕਤ ਬੋੜੀ ॥
रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥
हे नश्वर मनुष्य ! तूने (अपने जीवन की) नाव कहाँ नष्ट कर छोड़ी है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਤੋੜਿ ਬਿਖਿਆ ਸੰਗਿ ਜੋੜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥१॥ रहाउ ॥
तूने ईश्वर से प्रीति तोड़कर माया से सम्बन्ध कायम कर लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਰਿ ਨਰ ਦਾਧੇ ਲਾਗੀ ਆਗਿ ॥
सुरि नर दाधे लागी आगि ॥
सारी दुनिया में माया की तृष्णा की अग्नि लगी हुई है, देवता एवं मनुष्य (अग्नि में) जल रहे हैं।

ਨਿਕਟਿ ਨੀਰੁ ਪਸੁ ਪੀਵਸਿ ਨ ਝਾਗਿ ॥੨॥
निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥२॥
प्रभु का नाम-रूपी जल निकट ही है। बुरे-विकारों की झाग को दूर हटाकर पशु (जीव) इसका पान नहीं करता ॥ २॥

ਚੇਤਤ ਚੇਤਤ ਨਿਕਸਿਓ ਨੀਰੁ ॥
चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥
हे कबीर ! वह नाम रूपी जल निरन्तर स्मरण करते हुए ही प्रकट होता है,

ਸੋ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਕਥਤ ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੪॥
सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥३॥२४॥
वह जल बड़ा निर्मल होता है॥ ३ ॥ २४ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਿਹ ਕੁਲਿ ਪੂਤੁ ਨ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥
जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥
जिसके पुत्र को ज्ञान नहीं और जो प्रभु के नाम का चिन्तन नहीं करता,"

ਬਿਧਵਾ ਕਸ ਨ ਭਈ ਮਹਤਾਰੀ ॥੧॥
बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥
उस कुल की माता विधवा क्यों न हो गई ॥ १॥

ਜਿਹ ਨਰ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਨਹਿ ਸਾਧੀ ॥
जिह नर राम भगति नहि साधी ॥
जिस मनुष्य ने राम-भक्ति हेतु साधना नहीं की,

ਜਨਮਤ ਕਸ ਨ ਮੁਓ ਅਪਰਾਧੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमत कस न मुओ अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपराधी जन्म लेते ही क्यों न मर गया ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਮੁਚੁ ਮੁਚੁ ਗਰਭ ਗਏ ਕੀਨ ਬਚਿਆ ॥
मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥
"(सृष्टि में) कई गर्भ गिर जाते हैं, वह क्यों बच गया है।

ਬੁਡਭੁਜ ਰੂਪ ਜੀਵੇ ਜਗ ਮਝਿਆ ॥੨॥
बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥
भयानक आकृति वाला पुरुष जगत् में नीच जीवन व्यतीत कर रहा है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੈਸੇ ਸੁੰਦਰ ਸਰੂਪ ॥
कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥
हे कबीर ! जो पुरुष ईश्वर के नाम से विहीन हैं, वे चाहे देखने में सुन्दर रूप वाले हैं

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜੈਸੇ ਕੁਬਜ ਕੁਰੂਪ ॥੩॥੨੫॥
नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥
लेकिन वास्तव में कुबड़े तथा कुरूप हैं॥ ३॥ २५ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜੋ ਜਨ ਲੇਹਿ ਖਸਮ ਕਾ ਨਾਉ ॥
जो जन लेहि खसम का नाउ ॥
जो व्यक्ति जगत् के मालिक प्रभु का नाम लेते हैं

ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੧॥
तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥
मैं हमेशा उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥
सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥
जो व्यक्ति पवित्र पावन है, वे भगवान के निर्मल गुण ही गाते रहते हैं,

ਸੋ ਭਾਈ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥
वो भाई मेरे मन को बहुत प्रिय लगते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਹ ਘਟ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥
जिनके ह्रदय में राम मौजूद हो गया है,

ਤਿਨ ਕੀ ਪਗ ਪੰਕਜ ਹਮ ਧੂਰਿ ॥੨॥
तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥
मैं उनके कमल-पुष्प जैसे सुन्दर चरणों की धूलि हूँ॥ २॥

ਜਾਤਿ ਜੁਲਾਹਾ ਮਤਿ ਕਾ ਧੀਰੁ ॥ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਣ ਰਮੈ ਕਬੀਰੁ ॥੩॥੨੬॥
जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥
मैं जाति से जुलाहा हूँ और स्वभाव से धैर्यवान हूँ। कबीर धीरे-धीरे (सहज ही) राम की गुणस्तुति करता है॥ ३॥ २६॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਗਗਨਿ ਰਸਾਲ ਚੁਐ ਮੇਰੀ ਭਾਠੀ ॥
गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥
मेरी गगन-रूपी भट्ठी में से स्वादिष्ट अमृत टपक रहा है।

ਸੰਚਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਤਨੁ ਭਇਆ ਕਾਠੀ ॥੧॥
संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥१॥
अपने शरीर को लकड़ियों बनाकर मैंने प्रभु नाम के महारस को एकत्रित किया है॥ १ ॥

ਉਆ ਕਉ ਕਹੀਐ ਸਹਜ ਮਤਵਾਰਾ ॥
उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥
केवल वही सहज तौर पर मतवाला कहा जाता है।

ਪੀਵਤ ਰਾਮ ਰਸੁ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसने ज्ञान के विचार द्वारा राम रस का पान किया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਹਜ ਕਲਾਲਨਿ ਜਉ ਮਿਲਿ ਆਈ ॥
सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥
जब सहज अवस्था रूपी मदिरा पिलाने वाली आ मिलती है,

ਆਨੰਦਿ ਮਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਈ ॥੨॥
आनंदि माते अनदिनु जाई ॥२॥
तब दिन और रात आनंद में मस्त होकर बीतते हैं॥ २ ॥

ਚੀਨਤ ਚੀਤੁ ਨਿਰੰਜਨ ਲਾਇਆ ॥
चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥
हे कबीर ! जब स्मरण द्वारा मैंने अपना मन निरंजन से जोड़ लिया तो

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤੌ ਅਨਭਉ ਪਾਇਆ ॥੩॥੨੭॥
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥३॥२७॥
मुझे निर्भय प्रभु प्राप्त हो गया ॥ ३॥ २७ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਮਨ ਕਾ ਸੁਭਾਉ ਮਨਹਿ ਬਿਆਪੀ ॥

मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥

मन का स्वभाव है, मन के पीछे पड़ना और इसका सुधार करना।

ਮਨਹਿ ਮਾਰਿ ਕਵਨ ਸਿਧਿ ਥਾਪੀ ॥੧॥
मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥१॥
अपने मन को मार कर कौन सिद्ध बना है ? ॥ १॥

ਕਵਨੁ ਸੁ ਮੁਨਿ ਜੋ ਮਨੁ ਮਾਰੈ ॥
कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥
वह कौन-सा मुनि है, जिसने अपने मन को मार दिया है?

ਮਨ ਕਉ ਮਾਰਿ ਕਹਹੁ ਕਿਸੁ ਤਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥१॥ रहाउ ॥
कहो, मन को नष्ट करके वह किसका कल्याण करता है ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਬੋਲੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥
मन के द्वारा ही हरेक मनुष्य बोलता है।

ਮਨ ਮਾਰੇ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥
मन मारे बिनु भगति न होई ॥२॥
मन को मारे बिना प्रभु की भक्ति नहीं होती॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੋ ਜਾਨੈ ਭੇਉ ॥
कहु कबीर जो जानै भेउ ॥
हे कबीर ! जो पुरुष इस भेद को समझता है,

ਮਨੁ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਦੇਉ ॥੩॥੨੮॥
मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥३॥२८॥
वह अपने मन में ही तीन लोकों के स्वामी मधुसूदन के दर्शन कर लेता है॥ ३॥ २८

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਓਇ ਜੁ ਦੀਸਹਿ ਅੰਬਰਿ ਤਾਰੇ ॥
ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥
वे झिलमिलाते तारे जो अन्तरिक्ष में नजर आ रहे हैं,

ਕਿਨਿ ਓਇ ਚੀਤੇ ਚੀਤਨਹਾਰੇ ॥੧॥
किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥१॥
किस चित्रकार ने चित्रित किए हैं ? ॥ १॥

ਕਹੁ ਰੇ ਪੰਡਿਤ ਅੰਬਰੁ ਕਾ ਸਿਉ ਲਾਗਾ ॥
कहु रे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥
हे पण्डित ! बताओं, अन्तरिक्ष केिसके सहारे कायम है।

ਬੂਝੈ ਬੂਝਨਹਾਰੁ ਸਭਾਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥
इस बात को जानने वाला कोई भाग्यवान ही है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੂਰਜ ਚੰਦੁ ਕਰਹਿ ਉਜੀਆਰਾ ॥
सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥
सूर्य एवं चन्द्रमा (दुनिया में) उजाला करते हैं।

ਸਭ ਮਹਿ ਪਸਰਿਆ ਬ੍ਰਹਮ ਪਸਾਰਾ ॥੨॥
सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥२॥
इस सृष्टि में ईश्वर की ज्योति का ही प्रकाश फैला हुआ है।॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਾਨੈਗਾ ਸੋਇ ॥
कहु कबीर जानैगा सोइ ॥
हे कबीर ! (इस रहस्य को) केवल वही मनुष्य समझेगा,

ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਮੁਖਿ ਰਾਮੈ ਹੋਇ ॥੩॥੨੯॥
हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥३॥२९॥
जिसके हृदय में राम है और मुँह में भी केवल राम ही है॥ ३॥ २६॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਬੇਦ ਕੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭਾਈ ॥
बेद की पुत्री सिम्रिति भाई ॥
हे भाई ! यह स्मृति वेदों की पुत्री है।

ਸਾਂਕਲ ਜੇਵਰੀ ਲੈ ਹੈ ਆਈ ॥੧॥
सांकल जेवरी लै है आई ॥१॥
वह मनुष्यों हेतु (मानों कर्मकाण्ड की) जंजीरें एवं रस्सियों लेकर आई है॥ १॥

ਆਪਨ ਨਗਰੁ ਆਪ ਤੇ ਬਾਧਿਆ ॥
आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥
इसने स्वयं ही अपने नगर में श्रद्धालु कैद कर लिए हैं।

ਮੋਹ ਕੈ ਫਾਧਿ ਕਾਲ ਸਰੁ ਸਾਂਧਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोह कै फाधि काल सरु सांधिआ ॥१॥ रहाउ ॥
इसने मोह की फांसी में फँसाकर मृत्यु का तीर खिंचा हुआ है।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਟੀ ਨ ਕਟੈ ਤ੍ਰੁਟਿ ਨਹ ਜਾਈ ॥
कटी न कटै त्रुटि नह जाई ॥
यह स्मृति-रूपी रस्सी श्रद्धालुओं से काटने पर भी नहीं काटी जा सकती और न ही यह टूटती है।

ਸਾ ਸਾਪਨਿ ਹੋਇ ਜਗ ਕਉ ਖਾਈ ॥੨॥
सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥२॥
यह नागिन बनकर दुनिया को निगल रही है॥ २॥

ਹਮ ਦੇਖਤ ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਜਗੁ ਲੂਟਿਆ ॥
हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥
हे कबीर ! हमारी ऑखों के समक्ष देखते ही देखते इस स्मृति ने सारी दुनिया को लूट लिया है,

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਮੈ ਰਾਮ ਕਹਿ ਛੂਟਿਆ ॥੩॥੩੦॥
कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥
लेकिन मैं राम का सिमरन करके इससे छूट गया हूँ॥ ३॥ ३०॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਦੇਇ ਮੁਹਾਰ ਲਗਾਮੁ ਪਹਿਰਾਵਉ ॥
देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥
में अपने मन रूपी घोड़े को प्रशंसा-निंदा से वर्जित करने की पूंजी देकर प्यार की लगन की लगाम डालता हूँ

ਸਗਲ ਤ ਜੀਨੁ ਗਗਨ ਦਉਰਾਵਉ ॥੧॥
सगल त जीनु गगन दउरावउ ॥१॥
और ईश्वर को हर जगह समझना -यह कार्ती डालकर मन को भगवान के देश की उड़ान भरता हूँ॥ १॥

ਅਪਨੈ ਬੀਚਾਰਿ ਅਸਵਾਰੀ ਕੀਜੈ ॥
अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥
अपने स्वरूप के ज्ञान-रूपी घोड़े पर सवार हो जाओ तथा

ਸਹਜ ਕੈ ਪਾਵੜੈ ਪਗੁ ਧਰਿ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
बुद्धि-रूपी चरण को सहज के रकाब में रखो॥ १॥ रहाउ॥

ਚਲੁ ਰੇ ਬੈਕੁੰਠ ਤੁਝਹਿ ਲੇ ਤਾਰਉ ॥
चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥
हे मन रूपी घोड़े ! चल, तुझे स्वर्ग की सैर कराऊँ,

ਹਿਚਹਿ ਤ ਪ੍ਰੇਮ ਕੈ ਚਾਬੁਕ ਮਾਰਉ ॥੨॥
हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥२॥
यदि जिद्द करोगे तो मैं तुझे प्रेम की चाबुक मारूंगा॥ २॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਭਲੇ ਅਸਵਾਰਾ ॥
कहत कबीर भले असवारा ॥
हे कबीर ! ऐसे चतुर सवार,

ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਤੇ ਰਹਹਿ ਨਿਰਾਰਾ ॥੩॥੩੧॥
बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥३॥३१॥
वेदों एवं कतेब से तटस्थ रहते हैं॥ ३॥ ३१ ॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਿਹ ਮੁਖਿ ਪਾਂਚਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖਾਏ ॥
जिह मुखि पांचउ अम्रित खाए ॥
जिस मुख से पाँचों ही अमृत पदार्थ खाए जाते थे,

ਤਿਹ ਮੁਖ ਦੇਖਤ ਲੂਕਟ ਲਾਏ ॥੧॥
तिह मुख देखत लूकट लाए ॥१॥
(मरणोपरांत) उस मुख को अपने सामने ही लकड़ी जलाकर लगा दी जाती है।॥ १॥

ਇਕੁ ਦੁਖੁ ਰਾਮ ਰਾਇ ਕਾਟਹੁ ਮੇਰਾ ॥
इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥
हे मेरे राम ! मेरा यह दुःख दूर कर दो ,

ਅਗਨਿ ਦਹੈ ਅਰੁ ਗਰਭ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
यह जो तृष्णाग्नि जलाती है तथा बार-बार गर्भ का वास है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਇਆ ਬਿਗੂਤੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤੀ ॥
काइआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥
(मरणोपरांत) यह सुन्दर शरीर अनेकों ढंग एवं विधियों से खत्म किया जाता है।

ਕੋ ਜਾਰੇ ਕੋ ਗਡਿ ਲੇ ਮਾਟੀ ॥੨॥
को जारे को गडि ले माटी ॥२॥
कोई मनुष्य इसे अग्नि में जला देता है और कोई इसे मिट्टी में दफन कर देता है॥ २॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਹਰਿ ਚਰਣ ਦਿਖਾਵਹੁ ॥
कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे भगवान ! मुझे अपने चरणों के दर्शन करवा दीजिए,

ਪਾਛੈ ਤੇ ਜਮੁ ਕਿਉ ਨ ਪਠਾਵਹੁ ॥੩॥੩੨॥
पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥३॥३२॥
तदुपरांत चाहे यमराज को ही भेज देना॥ ३॥ ३२॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਆਪੇ ਪਾਵਕੁ ਆਪੇ ਪਵਨਾ ॥
आपे पावकु आपे पवना ॥
भगवान स्वयं ही अग्नि है और स्वयं ही वायु है।

ਜਾਰੈ ਖਸਮੁ ਤ ਰਾਖੈ ਕਵਨਾ ॥੧॥
जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥
यदि मालिक स्वयं ही (प्राणी को) जलाने लगे तो कौन रक्षा कर सकता है॥ १॥

ਰਾਮ ਜਪਤ ਤਨੁ ਜਰਿ ਕੀ ਨ ਜਾਇ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮ ਚਿਤੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
राम के नाम का जाप करते हुए चाहे नि:संदेह मेरा शरीर ही जल जाए? मेरा मन राम के नाम में मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾ ਕੋ ਜਰੈ ਕਾਹਿ ਹੋਇ ਹਾਨਿ ॥
का को जरै काहि होइ हानि ॥
न किसी का कुछ जलता है, न किसी का कोई नुक्सान होता है,

ਨਟ ਵਟ ਖੇਲੈ ਸਾਰਿਗਪਾਨਿ ॥੨॥
नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥
परमेश्वर स्वयं ही सर्वत्र नटखट खेल कर रहा है॥ २ ॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਖਰ ਦੁਇ ਭਾਖਿ ॥
कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥
हे कबीर ! तू ('राम' के) दो अक्षर उच्चरित कर,

ਹੋਇਗਾ ਖਸਮੁ ਤ ਲੇਇਗਾ ਰਾਖਿ ॥੩॥੩੩॥
होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥
यदि मेरा मालिक है तो मुझे भवसागर से बचा लेगा ॥ ३॥ ३३॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਦੁਪਦੇ ॥
गउड़ी कबीर जी दुपदे ॥
गउड़ी कबीर जी दुपदे ॥

ਨਾ ਮੈ ਜੋਗ ਧਿਆਨ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
ना मै जोग धिआन चितु लाइआ ॥
न ही मैंने योग विद्या की तरफ अपना ध्यान अथवा मन लगाया।

ਬਿਨੁ ਬੈਰਾਗ ਨ ਛੂਟਸਿ ਮਾਇਆ ॥੧॥
बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥१॥
फिर वैराग्य के बिना माया से मुक्ति नहीं हो सकती ॥ १॥

ਕੈਸੇ ਜੀਵਨੁ ਹੋਇ ਹਮਾਰਾ ॥
कैसे जीवनु होइ हमारा ॥
मेरा जीवन कैसे व्यतीत होगा,

ਜਬ ਨ ਹੋਇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
जब राम के नाम का आधार नहीं होगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਖੋਜਉ ਅਸਮਾਨ ॥
कहु कबीर खोजउ असमान ॥
हे कबीर ! मैं आकाश तक खोज कर चुका हूँ

ਰਾਮ ਸਮਾਨ ਨ ਦੇਖਉ ਆਨ ॥੨॥੩੪॥
राम समान न देखउ आन ॥२॥३४॥
परन्तु मुझे राम के तुल्य दूसरा कोई दिखाई नहीं दिया ॥ २॥ ३४॥

ਗਉੜੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
गउड़ी कबीर जी ॥
गउड़ी कबीर जी ॥

ਜਿਹ ਸਿਰਿ ਰਚਿ ਰਚਿ ਬਾਧਤ ਪਾਗ ॥
जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥
जिस सिर पर इन्सान संवार-संवार कर पगड़ी बाँधता है,

ਸੋ ਸਿਰੁ ਚੁੰਚ ਸਵਾਰਹਿ ਕਾਗ ॥੧॥
सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥१॥
(मरणोपरांत) उस सिर को कौए अपनी चोंचों से संवारते हैं॥ १॥

ਇਸੁ ਤਨ ਧਨ ਕੋ ਕਿਆ ਗਰਬਈਆ ॥
इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥
इस शरीर एवं धन पर क्या अहंकार किया जा सकता है?

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਾਹੇ ਨ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ੍ਹੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नामु काहे न द्रिड़्हीआ ॥१॥ रहाउ ॥
(हे प्राणी !) तू राम के नाम को क्यों याद नहीं करता ?॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥
कबीर जी कहते हैं-हे मेरे मन ! सुन,

ਇਹੀ ਹਵਾਲ ਹੋਹਿਗੇ ਤੇਰੇ ॥੨॥੩੫॥
इही हवाल होहिगे तेरे ॥२॥३५॥
जब मृत्यु आएगी तो तेरा भी यही हाल होगा॥ २॥ ३५॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਕੇ ਪਦੇ ਪੈਤੀਸ ॥
गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥
गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ਅਸਟਪਦੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ
रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की
रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੁਖੁ ਮਾਂਗਤ ਦੁਖੁ ਆਗੈ ਆਵੈ ॥ ਸੋ ਸੁਖੁ ਹਮਹੁ ਨ ਮਾਂਗਿਆ ਭਾਵੈ ॥੧॥
सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥ सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥
इन्सान सुख माँगता है, परन्तु उसे दुःख आकर मिलता है। "(इसलिए) मुझे उस सुख की कामना अच्छी नहीं लगती, जिस सुख से दुःख प्राप्त होता है॥ १॥

ਬਿਖਿਆ ਅਜਹੁ ਸੁਰਤਿ ਸੁਖ ਆਸਾ ॥
बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥
इन्सान की वृति माया के विकारों में लगी हुई है लेकिन वह सुख की अभिलाषा करता है।

ਕੈਸੇ ਹੋਈ ਹੈ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਨਿਵਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥
तो फेिर वह किस तरह राजा राम में निवास पाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸੁ ਸੁਖ ਤੇ ਸਿਵ ਬ੍ਰਹਮ ਡਰਾਨਾ ॥
इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥
इस (माया के) सुख से शिवजी एवं ब्रह्मा (जैसे देवते भी) भयभीत हैं।

ਸੋ ਸੁਖੁ ਹਮਹੁ ਸਾਚੁ ਕਰਿ ਜਾਨਾ ॥੨॥
सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥
इस सुख को मैं सत्य करके जानता हूँ॥ २॥

ਸਨਕਾਦਿਕ ਨਾਰਦ ਮੁਨਿ ਸੇਖਾ ॥
सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥
ह्म के चारों पुत्र सनकादिक, नारद मुनि एवं शेषनाग-"

ਤਿਨ ਭੀ ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੁ ਨਹੀ ਪੇਖਾ ॥੩॥
तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥
इन्होंने भी अपनी आत्मा को अपने शरीर में नहीं देखा ॥ ३॥

ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਕੋਈ ਖੋਜਹੁ ਭਾਈ ॥
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥
हे भाई ! कोई इस आत्मा की खोज करो केि

ਤਨ ਛੂਟੇ ਮਨੁ ਕਹਾ ਸਮਾਈ ॥੪॥
तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥
शरीर से जुदा होकर यह आत्मा कहाँ चली जाती है ? ॥ ४॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੈਦੇਉ ਨਾਮਾਂ ॥
गुर परसादी जैदेउ नामां ॥
गुरु की कृपा से जयदेव, नामदेव जैसे भक्तों ने भी

ਭਗਤਿ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਇਨ ਹੀ ਹੈ ਜਾਨਾਂ ॥੫॥
भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥५॥
इस रहस्य को प्रभु-भक्ति के चाव से जाना है॥ ५॥

ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਨਹੀ ਆਵਨ ਜਾਨਾ ॥
इसु मन कउ नही आवन जाना ॥
उसकी आत्मा जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ती ,

ਜਿਸ ਕਾ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਤਿਨਿ ਸਾਚੁ ਪਛਾਨਾ ॥੬॥
जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥
जिस व्यक्ति का भ्रम मिट जाता है, और वह सत्य को पहचान लेता है ॥ ६॥

ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਕਾਈ ॥
इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥
वास्तव में इस आत्मा का कोई स्वरूप अथवा चक्र-चिन्ह नहीं।

ਹੁਕਮੇ ਹੋਇਆ ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਸਮਾਈ ॥੭॥
हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥
प्रभु के हुक्म द्वारा ही इसकी रचना की गई थी और उसके हुक्म को समझ कर यह उसमें समा जाएगी॥ ७॥

ਇਸ ਮਨ ਕਾ ਕੋਈ ਜਾਨੈ ਭੇਉ ॥
इस मन का कोई जानै भेउ ॥
क्या कोई मनुष्य इस आत्मा के रहस्य को जानता है?

ਇਹ ਮਨਿ ਲੀਣ ਭਏ ਸੁਖਦੇਉ ॥੮॥
इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥
यह आत्मा अंत : सुखदाता प्रभु में ही समा जाती है॥ ८ ॥

ਜੀਉ ਏਕੁ ਅਰੁ ਸਗਲ ਸਰੀਰਾ ॥
जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥
आत्मा एक है लेकिन यह समस्त शरीरों में समाई हुई है।

ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਰਵਿ ਰਹੇ ਕਬੀਰਾ ॥੯॥੧॥੩੬॥
इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥
इस आत्मा (अर्थात् प्रभु) का ही कबीर चिन्तन कर रहा है॥ ६ ॥ १॥ ३६॥

ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ ॥
गउड़ी गुआरेरी ॥
गउड़ी गुआरेरी ॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਏਕ ਨਾਮ ਜੋ ਜਾਗੇ ॥ ਕੇਤਕ ਸਿਧ ਭਏ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥
उन लोगों में जो केवल नाम-सिमरन में ही दिन-रात जाग्रत रहते थे, बहुत सारे ऐसे व्यक्ति प्रभु के साथ वृत्ति लगाने से सिद्ध बन गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧਕ ਸਿਧ ਸਗਲ ਮੁਨਿ ਹਾਰੇ ॥
साधक सिध सगल मुनि हारे ॥
साधक, सिद्ध एवं मुनिजन हार गए हैं।

ਏਕ ਨਾਮ ਕਲਿਪ ਤਰ ਤਾਰੇ ॥੧॥
एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥
केवल एक ईश्वर का नाम ही कल्पवृक्ष है जो जीवों का (भवसागर से) उद्धार कर देता है॥ १॥

ਜੋ ਹਰਿ ਹਰੇ ਸੁ ਹੋਹਿ ਨ ਆਨਾ ॥
जो हरि हरे सु होहि न आना ॥
कबीर जी कहते हैं-जो व्यक्ति हरि का सिमरन करते हैं, उनका दुनिया में जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਨਾਮ ਪਛਾਨਾ ॥੨॥੩੭॥
कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥
वह केवल राम के नाम को ही पहचानते हैं॥ २ ॥ ३७ ॥

ਗਉੜੀ ਭੀ ਸੋਰਠਿ ਭੀ ॥
गउड़ी भी सोरठि भी ॥
गउड़ी भी सोरठि भी ॥

ਰੇ ਜੀਅ ਨਿਲਜ ਲਾਜ ਤੋਹਿ ਨਾਹੀ ॥
रे जीअ निलज लाज तोहि नाही ॥
हे निर्लज्ज जीव ! क्या तुझे शर्म नहीं आती ?

ਹਰਿ ਤਜਿ ਕਤ ਕਾਹੂ ਕੇ ਜਾਂਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि तजि कत काहू के जांही ॥१॥ रहाउ ॥
ईश्वर को छोड़कर तू कहाँ और किसके पास जाता है ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਊਚਾ ਹੋਈ ॥
जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥
जिसका मालिक सर्वोपरि होता है,"

ਸੋ ਜਨੁ ਪਰ ਘਰ ਜਾਤ ਨ ਸੋਹੀ ॥੧॥
सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥
वह पुरुष पराए घर को जाता शोभा नहीं पाता॥ १॥

ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥
वह प्रभु-परमेश्वर हर जगह मौजूद है।

ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਦੂਰਿ ॥੨॥
सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥
वह सदा हमारे साथ है और कभी भी दूर नहीं ॥ २॥

ਕਵਲਾ ਚਰਨ ਸਰਨ ਹੈ ਜਾ ਕੇ ॥
कवला चरन सरन है जा के ॥
जिसके चरणों की शरण धन की देवी लक्ष्मी भी लिए बैठी है,

ਕਹੁ ਜਨ ਕਾ ਨਾਹੀ ਘਰ ਤਾ ਕੇ ॥੩॥
कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥
हे भाई ! बता, उस श्री हरि के घर किस वस्तु की कमी है ? ॥ ३॥

ਸਭੁ ਕੋਊ ਕਹੈ ਜਾਸੁ ਕੀ ਬਾਤਾ ॥
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥
जिस परमात्मा की यश की बातें हरेक प्राणी कर रहा है,

ਸੋ ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਨਿਜ ਪਤਿ ਹੈ ਦਾਤਾ ॥੪॥
सो सम्रथु निज पति है दाता ॥४॥
वह सर्वशक्तिमान, अपने आप का स्वयं स्वामी और दाता है॥ ४॥

ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਪੂਰਨ ਜਗ ਸੋਈ ॥
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥
कबीर जी कहते हैं-इस दुनिया में केवल वही मनुष्य गुणवान है,

ਜਾ ਕੇ ਹਿਰਦੈ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥੩੮॥
जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥
जिसके हृदय में ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं बसता ॥ ५॥ ३८ ॥

ਕਉਨੁ ਕੋ ਪੂਤੁ ਪਿਤਾ ਕੋ ਕਾ ਕੋ ॥
कउनु को पूतु पिता को का को ॥
कौन कोई किसी का पुत्र है? कौन कोई किसी का पिता है? अर्थात् कोई किसी का रक्षक नहीं।

ਕਉਨੁ ਮਰੈ ਕੋ ਦੇਇ ਸੰਤਾਪੋ ॥੧॥
कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥
कौन कोई मरता है और कौन कोई किसी को दुःख देता है ? ॥ १॥

ਹਰਿ ਠਗ ਜਗ ਕਉ ਠਗਉਰੀ ਲਾਈ ॥
हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥
उस छलिया भगवान ने सारी दुनिया को मोहरूपी ठग बूटी लगा कर मुग्ध किया हुआ है।

ਹਰਿ ਕੇ ਬਿਓਗ ਕੈਸੇ ਜੀਅਉ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरी माँ! भगवान से बिछुड़कर मैं कैसे जीवित रहूँगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਉਨ ਕੋ ਪੁਰਖੁ ਕਉਨ ਕੀ ਨਾਰੀ ॥
कउन को पुरखु कउन की नारी ॥
कौन कोई किसी का पति है और कौन कोई किसी की पत्नी है?

ਇਆ ਤਤ ਲੇਹੁ ਸਰੀਰ ਬਿਚਾਰੀ ॥੨॥
इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥
इस यथार्थ को (हे भाई !) तू अपने शरीर में ही विचार कर॥ २॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਠਗ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥
कबीर जी कहते हैं कि छलिया भगवान से मेरा मन अब एक हो गया है।

ਗਈ ਠਗਉਰੀ ਠਗੁ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥੩॥੩੯॥
गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥
मेरी दुविधा दूर हो गई है और मैंने उस छलिया (भगवान) को पहचान लिया है॥ ३ ॥ ३९॥

ਅਬ ਮੋ ਕਉ ਭਏ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਸਹਾਈ ॥
अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥
इस दुनिया का राजा राम अब मेरा सहायक बन गया है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਟਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम मरन कटि परम गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जन्म-मरण की जंजीर काटकर मुझे परमगति मिल गई है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਦੀਓ ਰਲਾਇ ॥
साधू संगति दीओ रलाइ ॥
भगवान ने मुझे साधुओं की संगति में मिला दिया है

ਪੰਚ ਦੂਤ ਤੇ ਲੀਓ ਛਡਾਇ ॥
पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥
और (कामादिक) पाँच विकारों से उसने मुझे बचा लिया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਜਪਉ ਜਪੁ ਰਸਨਾ ॥
अम्रित नामु जपउ जपु रसना ॥
अपनी जीभ से मैं अमृत नाम रूपी जाप जपता हूँ।

ਅਮੋਲ ਦਾਸੁ ਕਰਿ ਲੀਨੋ ਅਪਨਾ ॥੧॥
अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥
भगवान ने मुझे बिना मूल्य के अपना सेवक बना लिया है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀਨੋ ਪਰਉਪਕਾਰੁ ॥
सतिगुर कीनो परउपकारु ॥
सतिगुरु ने मुझ पर बड़ा परोपकार किया है,

ਕਾਢਿ ਲੀਨ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰ ॥
काढि लीन सागर संसार ॥
उन्होंने मुझे भवसागर से बचा लिया है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥
अब प्रभु के सुन्दर चरणों से मेरा प्रेम बन गया है।

ਗੋਬਿੰਦੁ ਬਸੈ ਨਿਤਾ ਨਿਤ ਚੀਤ ॥੨॥
गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥
गोविन्द हर समय मेरे हृदय में बस रहा है॥ २ ॥

ਮਾਇਆ ਤਪਤਿ ਬੁਝਿਆ ਅੰਗਿਆਰੁ ॥
माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥
मोहिनी की दग्ध अग्नि बुझ गई है।

ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
मनि संतोखु नामु आधारु ॥
(ईश्वर के) नाम के आधार से अब मेरे मन में संतोष है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥
जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥
जगत् का स्वामी प्रभु समुद्र, धरती सर्वत्र मौजूद है।

ਜਤ ਪੇਖਉ ਤਤ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੩॥
जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहीं अन्तर्यामी प्रभु विद्यमान है॥ ३॥

ਅਪਨੀ ਭਗਤਿ ਆਪ ਹੀ ਦ੍ਰਿੜਾਈ ॥
अपनी भगति आप ही द्रिड़ाई ॥
ईश्वर ने अपनी भक्ति स्वयं ही मेरे मन में दृढ़ की है।

ਪੂਰਬ ਲਿਖਤੁ ਮਿਲਿਆ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! पूर्व जन्म के किए कर्मों का फल मुझे मिल गया है।

ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਪੂਰਨ ਸਾਜ ॥
जिसु क्रिपा करे तिसु पूरन साज ॥
वह जिस पर कृपा करता है, उसका संयोग सुन्दर बनाकर रख देता है।

ਕਬੀਰ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ॥੪॥੪੦॥
कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥
कबीर का स्वामी गरीब निवाज है॥ ४॥ ४०॥

ਜਲਿ ਹੈ ਸੂਤਕੁ ਥਲਿ ਹੈ ਸੂਤਕੁ ਸੂਤਕ ਓਪਤਿ ਹੋਈ ॥
जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति होई ॥
जल में सूतक (अपवित्रता) है, पृथ्वी में सूतक है और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें भी सूतक की उत्पति है।

ਜਨਮੇ ਸੂਤਕੁ ਮੂਏ ਫੁਨਿ ਸੂਤਕੁ ਸੂਤਕ ਪਰਜ ਬਿਗੋਈ ॥੧॥
जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥१॥
जीव के जन्म में सूतक है तथा मरने पर भी सूतक है। प्रभु की खलकत को सूतक ने नष्ट कर दिया है॥ १॥

कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥
कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥
हे पण्डित ! बता, (फिर) कौन पवित्र है ?

ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मित्र ! इस ज्ञान का ध्यानपूर्वक चिंतन कर ॥ १॥ रहाउ ॥

नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥
नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥
नयनों में सूतक है, बोलने में सूतक है, कानों में भी सूतक है।

ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥२॥
ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥२॥
उठते-बैठते हर समय प्राणी को सूतक लगता है। सूतक रसोई में भी प्रवेश करता है॥ २॥

फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छुटन की इकु कोई ॥
फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥
हरेक प्राणी (सूतक के भ्रमों में) फॅसने का ही ढंग जानता है परन्तु इससे मुक्ति पाने की सूझ किसी विरले को ही है।

कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥३॥४१॥
कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥३॥४१॥
कबीर जी कहते हैं - जो व्यक्ति अपने हृदय में राम को स्मरण करता है, उसे कोई सूतक नहीं लगता ॥ ३॥ ४१॥

गउड़ी ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

झगरा एकु निबेरहु राम ॥
झगरा एकु निबेरहु राम ॥
हे राम ! एक झगड़े का फैसला करो,

ਜਉ ਤੁਮ ਅਪਨੇ ਜਨ ਸੌ ਕਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तूने अपने सेवक से कोई सेवा लेनी है॥ १॥ रहाउ ॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਬਡਾ ਕਿ ਜਾ ਸਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥
क्या यह आत्मा महान है अथवा वह (प्रभु) जिससे यह आत्मा मिली हुई है।

ਰਾਮੁ ਬਡਾ ਕੈ ਰਾਮਹਿ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥
रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥१॥
क्या राम महान है अथवा वह महान जो राम को जानता है ? ॥ १॥

ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਡਾ ਕਿ ਜਾਸੁ ਉਪਾਇਆ ॥
ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥
क्या ब्रह्मा महान है अथवा वह जिसने उसे पैदा किया है?

ਬੇਦੁ ਬਡਾ ਕਿ ਜਹਾਂ ਤੇ ਆਇਆ ॥੨॥
बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥२॥
वेद महान है अथवा वह जिससे (यह ज्ञान) आया है ?॥ २॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਹਉ ਭਇਆ ਉਦਾਸੁ ॥
कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥
कबीर जी कहते हैं कि मैं इस बात से उदास हूँ

ਤੀਰਥੁ ਬਡਾ ਕਿ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ॥੩॥੪੨॥
तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥४२॥
कि तीर्थ-स्थल महान है अथवा भगवान का भक्त ॥ ३॥ ४२ ॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ॥
रागु गउड़ी चेती ॥
रागु गउड़ी चेती ॥

ਦੇਖੌ ਭਾਈ ਗ੍ਯਾਨ ਕੀ ਆਈ ਆਂਧੀ ॥
देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥
हे भाइयो ! देखो, ज्ञान की आँधी आई है।

ਸਭੈ ਉਡਾਨੀ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਟਾਟੀ ਰਹੈ ਨ ਮਾਇਆ ਬਾਂਧੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥१॥ रहाउ ॥

इस दुविधा के छप्पर को पूर्णतया उड़ा कर ले गई है और माया के बंधन तक भी शेष नहीं बचे ॥ १॥ रहाउ॥

ਦੁਚਿਤੇ ਕੀ ਦੁਇ ਥੂਨਿ ਗਿਰਾਨੀ ਮੋਹ ਬਲੇਡਾ ਟੂਟਾ ॥

दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥

द्वैतवाद के दोनों स्तम्भ गिर गए हैं और दुनिया का मोह-रूपी लकड़ी का डण्डा भी गिरकर टूट गया है।

ਤਿਸਨਾ ਛਾਨਿ ਪਰੀ ਧਰ ਊਪਰਿ ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਂਡਾ ਫੂਟਾ ॥੧॥

तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा ॥१॥

तृष्णा का छप्पर (लकड़ी टूटने पर) धरती पर आ गिरा है और दुर्मति का बर्तन फूट गया है॥ १॥

ਆਂਧੀ ਪਾਛੈ ਜੋ ਜਲੁ ਬਰਖੈ ਤਿਹਿ ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਭੀਨਾਂ ॥
आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥
ज्ञान की अन्धेरी के पश्चात जो (नाम की) वर्षा होती है, उसमें तेरा भक्त भीग जाता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨਿ ਭਇਆ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ਉਦੈ ਭਾਨੁ ਜਬ ਚੀਨਾ ॥੨॥੪੩॥
कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥२॥४३॥
कबीर जी कहते हैं- जब मैं सूर्य को उदय होता देखता हूँ तो मेरे हृदय में उजाला ही उजाला हो जाता है॥ २॥ ४३ ॥

ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ
गउड़ी चेती
गउड़ी चेती

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਹਿ ਨ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਹਿ ॥
हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥
कुछ लोग न कभी भगवान का यश सुनते हैं और न ही कभी भगवान के गुण गाते हैं,

ਬਾਤਨ ਹੀ ਅਸਮਾਨੁ ਗਿਰਾਵਹਿ ॥੧॥
बातन ही असमानु गिरावहि ॥१॥
परन्तु अपनी व्यर्थ बातों से ही (मानो) आसमान को गिरा लेते हैं। १ ॥

ਐਸੇ ਲੋਗਨ ਸਿਉ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ॥
ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥
ऐसे लोगों को उपदेश देने का कोई अभिप्राय नहीं,

ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੀਏ ਭਗਤਿ ਤੇ ਬਾਹਜ ਤਿਨ ਤੇ ਸਦਾ ਡਰਾਨੇ ਰਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जिन्हें भगवान ने अपनी भक्ति से वंचित रखा हुआ है, उनसे सदैव ही डरना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਨ ਦੇਹਿ ਚੁਰੂ ਭਰਿ ਪਾਨੀ ॥
आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥
वे लोग स्वयं तो अंजुलि भर जल भी नहीं देते परन्तु

ਤਿਹ ਨਿੰਦਹਿ ਜਿਹ ਗੰਗਾ ਆਨੀ ॥੨॥
तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥२॥
उनकी निंदा करते हैं, जिन्होंने गंगा बहा दी है॥ २॥

ਬੈਠਤ ਉਠਤ ਕੁਟਿਲਤਾ ਚਾਲਹਿ ॥
बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥
उठते-बैठते वे कुटिल चालें चलते हैं,

ਆਪੁ ਗਏ ਅਉਰਨ ਹੂ ਘਾਲਹਿ ॥੩॥
आपु गए अउरन हू घालहि ॥३॥
वे तो स्वयं नष्ट हो गए हैं और दूसरों को भी नष्ट करते हैं।॥ ३॥

ਛਾਡਿ ਕੁਚਰਚਾ ਆਨ ਨ ਜਾਨਹਿ ॥
छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥
व्यर्थ वाद-विवाद के बिना वह अन्य कुछ नहीं जानते।

ਬ੍ਰਹਮਾ ਹੂ ਕੋ ਕਹਿਓ ਨ ਮਾਨਹਿ ॥੪॥
ब्रहमा हू को कहिओ न मानहि ॥४॥
वह ब्रह्मा जी की बात भी नहीं मानते॥ ४॥

ਆਪੁ ਗਏ ਅਉਰਨ ਹੂ ਖੋਵਹਿ ॥
आपु गए अउरन हू खोवहि ॥
ऐसे लोग आप कुमार्गगामी हुए हैं और दूसरों को भी गुमराह ही करते हैं,

ਆਗਿ ਲਗਾਇ ਮੰਦਰ ਮੈ ਸੋਵਹਿ ॥੫॥
आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥५॥
वे मानो मन्दिर में आग लगाकर सो रहे हैं।॥ ५॥

ਅਵਰਨ ਹਸਤ ਆਪ ਹਹਿ ਕਾਂਨੇ ॥
अवरन हसत आप हहि कांने ॥
वे स्वयं तो एक ऑख वाले काने हैं लेकिन दूसरों की हँसी उड़ाते हैं।

ਤਿਨ ਕਉ ਦੇਖਿ ਕਬੀਰ ਲਜਾਨੇ ॥੬॥੧॥੪੪॥
तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥६॥१॥४४॥
हे कबीर ! ऐसे लोगों को देखकर मुझे लज्जा आती है॥ ६॥ १॥ ४४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਕਬੀਰ ਜੀ
रागु गउड़ी बैरागणि कबीर जी
रागु गउड़ी बैरागणि कबीर जी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੀਵਤ ਪਿਤਰ ਨ ਮਾਨੈ ਕੋਊ ਮੂਏਂ ਸਿਰਾਧ ਕਰਾਹੀ ॥
जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥
मनुष्य अपने पूर्वजों (माता-पिता) की उनके जीवित रहने तक तो सेवा नहीं करते परन्तु (उनके) मरणोपरांत पितरों का श्राद्ध करवाते हैं।

ਪਿਤਰ ਭੀ ਬਪੁਰੇ ਕਹੁ ਕਿਉ ਪਾਵਹਿ ਕਊਆ ਕੂਕਰ ਖਾਹੀ ॥੧॥
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥१॥
बताओ, बेचारे पितर भला श्राद्धों का भोजन कैसे पाएँगे ? इसे तो कौए-कुते खा जाते हैं।॥ १॥

ਮੋ ਕਉ ਕੁਸਲੁ ਬਤਾਵਹੁ ਕੋਈ ॥
मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥
कोई मुझे बताओ कि सुख-खुशी क्या है?

ਕੁਸਲੁ ਕੁਸਲੁ ਕਰਤੇ ਜਗੁ ਬਿਨਸੈ ਕੁਸਲੁ ਭੀ ਕੈਸੇ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥१॥ रहाउ ॥
सारी दुनिया (इसी दुविधा में) सुख-मंगल कहती मरती जा रही है (कि श्राद्ध कराने से घर में सुख मिलता है) आत्मिक सुख किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਾਟੀ ਕੇ ਕਰ�ि ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਜੀਉ ਦੇਹੀ ॥
माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥
लोग मिट्टी के देवी-देवता बनाकर उस देवी या देवता के समक्ष जीवों की बलि देते हैं।

ਐਸੇ ਪਿਤਰ ਤੁਮਾਰੇ ਕਹੀਅਹਿ ਆਪਨ ਕਹਿਆ ਨ ਲੇਹੀ ॥੨॥
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥२॥
"(हे भाई !) इसी प्रकार तुम्हारे मृत पितर कहे जाते हैं, जो कुछ वह लेना चाहते हैं, कह कर नहीं ले सकते॥ २॥

ਸਰਜੀਉ ਕਾਟਹਿ ਨਿਰਜੀਉ ਪੂਜਹਿ ਅੰਤ ਕਾਲ ਕਉ ਭਾਰੀ ॥
सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंत काल कउ भारी ॥
लोग जीवित जीवों को मारते हैं और निर्जीव (मिट्टी के बनाए हुए) देवताओं की पूजा करते हैं। अंतकाल (मृत्यु के समय) तुम्हें बहुत मुश्किल होगा।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ਭੈ ਡੂਬੇ ਸੰਸਾਰੀ ॥੩॥
राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥३॥
आप राम के नाम की गति नहीं जानते, (इससे) आप भयानक संसार सागर में डूब जाओगे ॥ ३॥

ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਪੂਜਹਿ ਡੋਲਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥
देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥
हे नश्वर प्राणी ! तुम लोग देवी-देवताओं की पूजा करते हो। अपने भरोसे में डावांडोल होते रहते हो और पारब्रह्म को नहीं समझते।

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਅਕੁਲੁ ਨਹੀ ਚੇਤਿਆ ਬਿਖਿਆ ਸਿਉ ਲਪਟਾਨਾ ॥੪॥੧॥੪੫॥
कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥४॥१॥४५॥
कबीर जी कहते हैं-आप लोग कुलरहित भगवान को याद नहीं करते और माया के विकारों में फंसे रहते हो ॥ ४ ॥ १॥ ४५ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਮਰੈ ਫੁਨਿ ਜੀਵੈ ਐਸੇ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਇਆ ॥
जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥
मनुष्य को विकारों की ओर से जीवित ही मरे रहना चाहिए और विकारों की ओर से मरकर प्रभु-नाम के द्वारा दोबारा जीना चाहिए। इस प्रकार वह निर्गुण प्रभु में लीन हो जाता है।

ਅੰਜਨ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਹੀਐ ਬਹੁੜਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥१॥
वह माया में रहता हुआ भी माया-रहित परमात्मा में रहकर दोबारा भयानक संसार-सागर में नहीं पड़ता॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਐਸਾ ਖੀਰੁ ਬਿਲੋਈਐ ॥
मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥
हे मेरे राम ! ऐसे दूध मंथन किया जा सकता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਰਾਖਹੁ ਇਨ ਬਿਧਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਓਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अम्रितु पीओईऐ ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु का उपदेश लेकर मन को स्थिर रख। इस विधि से प्रभु नाम का अमृत पान किया जा सकता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਬਾਣਿ ਬਜਰ ਕਲ ਛੇਦੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਪਦੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥

गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥

गुरु के बाण ने वज़ कलियुग को छेद दिया है और प्रकाश की अवस्था मुझ पर प्रकाशमान हुई है।

ਸਕਤਿ ਅਧੇਰ ਜੇਵੜੀ ਭ੍ਰਮੁ ਚੂਕਾ ਨਿਹਚਲੁ ਸਿਵ ਘਰਿ ਬਾਸਾ ॥੨॥

सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा ॥२॥

शक्ति के अंधेरे के कारण रस्सी को सॉप समझने की मेरी दुविधा दूर हो गई है और मैं अब प्रभु के निहचल मन्दिर में निवास करता हूँ॥ २॥

ਤਿਨਿ ਬਿਨੁ ਬਾਣੈ ਧਨਖੁ ਚਢਾਈਐ ਇਹੁ ਜਗੁ ਬੇਧਿਆ ਭਾਈ ॥

तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिआ भाई ॥

हे मेरे भाई ! उस माया ने तीर के बिना ही धनुष खींचा है और इस संसार को छेद दिया है।

ਦਹ ਦਿਸ ਬੂਡੀ ਪਵਨੁ ਝੁਲਾਵੈ ਡੋਰਿ ਰਹੀ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੩॥
दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥३॥
(माया के विकारों में) डूबा हुआ प्राणी हवा में दसों दिशाओं में झूलता है परन्तु मैं प्रभु की प्रीति के धागे से जुड़ा हुआ हूँ॥ ३॥

ਉਨਮਨਿ ਮਨੂਆ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਨਾ ਦੁਬਿਧਾ ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਗੀ ॥
उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥
उखड़ी हुई आत्मा ईश्वर में लीन हो गई है और दुविधा तथा दुर्बुद्धि भाग गए हैं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਅਨਭਉ ਇਕੁ ਦੇਖਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੨॥੪੬॥
कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥४६॥
हे कबीर ! राम के नाम से वृत्ति लगाकर मैंने निर्भय एक प्रभु को देख लिया है॥ ४ ॥ २ ॥ ४६॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਤਿਪਦੇ ॥
गउड़ी बैरागणि तिपदे ॥
गउड़ी बैरागणि तिपदे ॥

ਉਲਟਤ ਪਵਨ ਚਕ੍ਰ ਖਟੁ ਭੇਦੇ ਸੁਰਤਿ ਸੁੰਨ ਅਨਰਾਗੀ ॥
उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुंन अनरागी ॥
अपनी सोच को ईश्वर की तरफ जोड़कर मैंने शरीर के छः चक्रों को भेद दिया है और मेरा मन प्रभु पर मुग्ध हो गया है।

ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ਮਰੈ ਨ ਜੀਵੈ ਤਾਸੁ ਖੋਜੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥੧॥
आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥१॥
हे बैरागी ! उस प्रभु की खोज कर, जो न आता है, न जाता है, न मरता है, न जन्मता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਮਨ ਹੀ ਉਲਟਿ ਸਮਾਨਾ ॥
मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥
मेरा मन विकारों के प्रति मन की दौड़ को मोड़कर प्रभु में लीन हो गया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਕਲਿ ਭਈ ਅਵਰੈ ਨਾਤਰੁ ਥਾ ਬੇਗਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से मेरी बुद्धि विभिन्न हो गई है, अन्यथा मैं बिल्कुल ही अज्ञानी था ॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਿਵਰੈ ਦੂਰਿ ਦੂਰਿ ਫੁਨਿ ਨਿਵਰੈ ਜਿਨਿ ਜੈਸਾ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥
जो निकट था, वह दूर हो गया और दोबारा जो दूर था, वह निकट हो गया है। उसके लिए जो प्रभु को जैसा वह है, वैसा ही अनुभव करता है।

ਅਲਉਤੀ ਕਾ ਜੈਸੇ ਭਇਆ ਬਰੇਡਾ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਤਿਨਿ ਜਾਨਿਆ ॥੨॥
अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥२॥
जैसे मिश्री का शरबत हो तो उसका आनन्द उसी पुरुष ने जाना है, जिसने वह शरबत पान किया है॥ २॥

ਤੇਰੀ ਨਿਰਗੁਨ ਕਥਾ ਕਾਇ ਸਿਉ ਕਹੀਐ ਐਸਾ ਕੋਇ ਬਿਬੇਕੀ ॥
तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥
हे प्रभु ! तेरी निर्गुण कथा किसे बताऊँ ? क्या कोई ऐसा विवेकी पुरुष है ?

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਿਨਿ ਦੀਆ ਪਲੀਤਾ ਤਿਨਿ ਤੈਸੀ ਝਲ ਦੇਖੀ ॥੩॥੩॥੪੭॥
कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥३॥३॥४७॥
हे कबीर ! मनुष्य जैसी आत्मिक ज्ञान की चिंगारी लगाता है, वैसी ही ईश्वरीय झलक वह देख लेता है॥ ३ ॥ ३ ॥ ४७ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਤਹ ਪਾਵਸ ਸਿੰਧੁ ਧੂਪ ਨਹੀ ਛਹੀਆ ਤਹ ਉਤਪਤਿ ਪਰਲਉ ਨਾਹੀ ॥
तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥
वहाँ ईश्वर के पास कोई वर्षा, ऋतु, सागर, धूप एवं छाया नहीं। वहाँ उत्पत्ति अथवा प्रलय भी नहीं।

ਜੀਵਨ ਮਿਰਤੁ ਨ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਬਿਆਪੈ ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਦੋਊ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥੧॥
जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुंन समाधि दोऊ तह नाही ॥१॥
वहाँ जीवन-मृत्यु नहीं, न ही दुख-सुख अनुभव होता है। वहाँ केवल शून्य समाधि है तथा दुविधा नहीं ॥ १॥

ਸਹਜ ਕੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਹੈ ਨਿਰਾਰੀ ॥
सहज की अकथ कथा है निरारी ॥
सहज अवस्था की कथा अनुपम एवं अकथनीय है।

ਤੁਲਿ ਨਹੀ ਚਢੈ ਜਾਇ ਨ ਮੁਕਾਤੀ ਹਲੁਕੀ ਲਗੈ ਨ ਭਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥१॥ रहाउ ॥
यह न ही तोली जाती है और न ही समाप्त होती है। न ही यह हल्की लगती और न ही भारी लगती है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਰਧ ਉਰਧ ਦੋਊ ਤਹ ਨਾਹੀ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥
अरध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥
लोक अथवा परलोक दोनों ही वहाँ नहीं हैं। रात और दिन भी वहाँ नहीं।

ਜਲੁ ਨਹੀ ਪਵਨੁ ਪਾਵਕੁ ਫੁਨਿ ਨਾਹੀ ਸਤਿਗੁਰ ਤਹਾ ਸਮਾਹੀ ॥੨॥
जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥२॥
फिर वहाँ जल, पवन एवं अग्नि भी नहीं। सतिगुरु वहाँ समा रहा है॥ २॥

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਰਹੈ ਨਿਰੰਤਰਿ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਲਹੀਐ ॥
अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥
अगम्य एवं अगोचर परमात्मा वहाँ अपने आप में ही निवास करता है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा पाया जाता है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਬਲਿ ਜਾਉ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ॥੩॥੪॥੪੮॥
कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥३॥४॥४८॥
हे कबीर ! मैं अपने गुरु पर न्यौछावर हूँ, और सत्संगति में मिला रहता हूँ॥ ३॥ ४॥ ४८ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਦੁਇ ਬੈਲ ਬਿਸਾਹੇ ਪਵਨੁ ਪੂਜੀ ਪਰਗਾਸਿਓ ॥
पापु पुंनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥
पाप एवं पुण्य दोनों से शरीर रूपी बैल मूल्य लिया गया है और प्राण पूंजी के तौर पर प्रकट हुए हैं।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਗੂਣਿ ਭਰੀ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਇਨ ਬਿਧਿ ਟਾਂਡ ਬਿਸਾਹਿਓ ॥੧॥
त्रिसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टांड बिसाहिओ ॥१॥
इस विधि से बैल खरीदा गया है। बैल की पीठ पर हृदय की बोरी तृष्णाओं से भरी हुई है॥ १॥

ਐਸਾ ਨਾਇਕੁ ਰਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥
हमारा राम ऐसा धनी साहूकार है,

ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਕੀਓ ਬਨਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सगल संसारु कीओ बनजारा ॥१॥ रहाउ ॥

जिसने सारी दुनिया को अपना व्यापारी बनाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਦੁਇ ਭਏ ਜਗਾਤੀ ਮਨ ਤਰੰਗ ਬਟਵਾਰਾ ॥

कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥

काम और क्रोध दोनों (प्राणियों के पथ पर चुंगी वसूलने वाले हैं) अर्थात् श्वासों की पूंजी का कुछ भाग काम एवं क्रोध में फँसने से नष्ट होता जा रहा है और प्राणियों के मन की तरंगें लुटेरे हैं।

ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਦਾਨੁ ਨਿਬੇਰਹਿ ਟਾਂਡਾ ਉਤਰਿਓ ਪਾਰਾ ॥੨॥

पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥२॥

पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) मिलकर लूट के माल को आपस में बाँट लेते हैं। इस प्रकार बैल पार हो जाता है।॥ २॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਅਬ ਐਸੀ ਬਨਿ ਆਈ ॥

कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥

कबीर जी कहते हैं-हे संतजनों ! सुनो, अब ऐसी अवस्था आ बनी है कि

ਘਾਟੀ ਚਢਤ ਬੈਲੁ ਇਕੁ ਥਾਕਾ ਚਲੋ ਗੋਨਿ ਛਿਟਕਾਈ ॥੩॥੫॥੪੯॥

घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥३॥५॥४९॥

(प्रभु-स्मरण-रूपी) ऊँची पहाड़ी पर चढ़ते एक बैल थक गया है और तृष्णा का सौदा फॅककर वह अपनी यात्रा पर चलता बना है॥ ३॥ ५॥ ४६॥

ਗਉੜੀ ਪੰਚਪਦਾ ॥

गउड़ी पंचपदा ॥

गउड़ी पंचपदा ॥

ਪੇਵਕੜੈ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਹੈ ਸਾਹੁਰੜੈ ਜਾਣਾ ॥

पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥

जीव-स्त्री ने (इहलोक रूपी) पीहर में चार दिन ही रहना है तदुपरांत उसने (परलोक-रूपी) ससुराल ही जाना है

ਅੰਧਾ ਲੋਕੁ ਨ ਜਾਣਈ ਮੂਰਖੁ ਏਆਣਾ ॥੧॥

अंधा लोकु न जाणई मूरखु एआणा ॥१॥

मूर्ख, नादान एवं ज्ञानहीन दुनिया यह नहीं समझती ॥ १॥

ਕਹੁ ਡਡੀਆ ਬਾਧੈ ਧਨ ਖੜੀ ॥
कहु डडीआ बाधै धन खड़ी ॥
बताओ ! (यह क्या कौतुक है ?)पत्नी अभी लापरवाही से आधी धोती ही पहन कर खड़ी है

ਪਾਹੂ ਘਰਿ ਆਏ ਮੁਕਲਾਊ ਆਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पाहू घरि आए मुकलाऊ आए ॥१॥ रहाउ ॥
गौना लेकर जाने वाले अतिथि घर में पहुँच गए हैं और उसका पति उसे लेने के लिए आ गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਓਹ ਜਿ ਦਿਸੈ ਖੂਹੜੀ ਕਉਨ ਲਾਜੁ ਵਹਾਰੀ ॥
ओह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥
यह जो सुन्दर कुआँ है इसमें कौन-सी स्त्री रस्सी डाल रही है।

ਲਾਜੁ ਘੜੀ ਸਿਉ ਤੂਟਿ ਪੜੀ ਉਠਿ ਚਲੀ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥੨॥
लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥२॥
जिसकी रस्सी घड़े सहित टूट जाती है, वह जल भरने वाली इहलोक से उठकर परलोक को चली जाती है॥ २ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਅਪੁਨਾ ਕਾਰਜੁ ਸਵਾਰੇ ॥
साहिबु होइ दइआलु क्रिपा करे अपुना कारजु सवारे ॥
यदि मालिक दया के घर में आ जाए और अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो जीव-स्त्री अपने कार्य संवार लेगी।

ਤਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਾਣੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੩॥
ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥३॥
केवल तभी वह (जीव स्त्री) सौभाग्यवती समझी जाती है यदि वह गुरु के शब्द का चिन्तन करती है॥ ३ ॥

ਕਿਰਤ ਕੀ ਬਾਂਧੀ ਸਭ ਫਿਰੈ ਦੇਖਹੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥
किरत की बांधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥
(लेकिन हे भाई !) इसे क्या कहें ? यह बेचारी क्या कर सकती है ? अपने किए हुए कर्मों के कारण हरेक जीव-स्त्री भटक रही है।

ਏਸ ਨੋ ਕਿਆ ਆਖੀਐ ਕਿਆ ਕਰੇ ਵਿਚਾਰੀ ॥੪॥
एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥४॥
ऑखें खोलकर आप इस तरफ ध्यान दीजिए॥ ४॥

ਭਈ ਨਿਰਾਸੀ ਉਠਿ ਚਲੀ ਚਿਤ ਬੰਧਿ ਨ ਧੀਰਾ ॥
भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥
वह निराश होकर (दुनिया से) चली जाती है। उसके मन में कोई सहारा एवं धैर्य नहीं।

ਹਰਿ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ਭਜੁ ਸਰਣਿ ਕਬੀਰਾ ॥੫॥੬॥੫੦॥
हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥५॥६॥५०॥
हे कबीर ! भगवान के चरणों से लगा रह और उसकी शरण का भजन कर ॥ ५॥ ६ ॥ ५० ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਜੋਗੀ ਕਹਹਿ ਜੋਗੁ ਭਲ ਮੀਠਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਭਾਈ ॥
जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥
योगी कहता है-हे भाई ! योग (मार्ग) ही भला एवं मीठा है तथा अन्य कोई (उपयुक्त) नहीं।

ਰੁੰਡਿਤ ਮੁੰਡਿਤ ਏਕੈ ਸਬਦੀ ਏਇ ਕਹਹਿ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥
रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥१॥
कनफटे, संन्यासी एवं अवधूत- यही कहते हैं कि उन्होंने ही सिद्धि प्राप्त की है ॥१॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨੇ ਅੰਧਾ ॥
हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥
ज्ञानहीन इन्सान भगवान को विस्मृत करके दुविधा में फेंसे हुए हैं,

ਜਾ ਪਹਿ ਜਾਉ ਆਪੁ ਛੁਟਕਾਵਨਿ ਤੇ ਬਾਧੇ ਬਹੁ ਫੰਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए मैं जिनके पास अपने अहंत्व से मुक्ति कराने के लिए जाता हूँ, वे सभी स्वयं ही अहंत्व के अनेक बन्धनों में फँसे हुए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਤੇ ਉਪਜੀ ਤਹੀ ਸਮਾਨੀ ਇਹ ਬਿਧਿ ਬਿਸਰੀ ਤਬ ਹੀ ॥
जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥
जब मनुष्य इस प्रकार का अहंकार भूल जाता है तो आत्मा उसमें लीन हो जाती है, जहाँ यह उत्पन्न हुई थी।

ਪੰਡਿਤ ਗੁਣੀ ਸੂਰ ਹਮ ਦਾਤੇ ਏਹਿ ਕਹਹਿ ਬਡ ਹਮ ਹੀ ॥੨॥
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥२॥
पण्डित, गुणवान, शूरवीर एवं दानवीर-यही कहते हैं कि केवल हम ही महान हैं।॥ २॥

ਜਿਸਹਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋਈ ਬੂਝੈ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਕਿਉ ਰਹੀਐ ॥
जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ ॥
भगवान जिस व्यक्ति को स्वयं सूझ प्रदान करता है, वही समझता हैं तथा उसे समझे बिना जीवन ही व्यर्थ है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਧੇਰਾ ਚੂਕੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਾਣਕੁ ਲਹੀਐ ॥੩॥
सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥३॥
सतिगुरु को मिलने से अज्ञानता का अंधकार दूर हो जाता है। इस विधि से प्रभु नाम रूपी हीरा प्राप्त हो जाता है॥ ३ ॥

ਤਜਿ ਬਾਵੇ ਦਾਹਨੇ ਬਿਕਾਰਾ ਹਰਿ ਪਦੁ ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਰਹੀਐ ॥
तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु द्रिड़ु करि रहीऐ ॥
अपने बाएँ हाथ एवं दाएँ के पापों को छोड़कर ईश्वर के चरण पकड़ कर रखने चाहिएँ।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਗੂੰਗੈ ਗੁੜੁ ਖਾਇਆ ਪੂਛੇ ਤੇ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ॥੪॥੭॥੫੧॥
कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥४॥७॥५१॥
हे कबीर ! यदि गूंगे आदमी ने गुड़ खाया हो तो पूछे जाने पर वह क्या कह सकता है॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਕਬੀਰ ਜੀ ॥
रागु गउड़ी पूरबी कबीर जी ॥
रागु गउड़ी पूरबी कबीर जी ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਹ ਕਛੁ ਅਹਾ ਤਹਾ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਪੰਚ ਤਤੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥
जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥
जहाँ कुछ था, वहीं अब कुछ भी नहीं। पाँच तत्व भी वहाँ नहीं हैं।

ਇੜਾ ਪਿੰਗੁਲਾ ਸੁਖਮਨ ਬੰਦੇ ਏ ਅਵਗਨ ਕਤ ਜਾਹੀ ॥੧॥
इड़ा पिंगुला सुखमन बंदे ए अवगन कत जाही ॥१॥
हे मनुष्य ! इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ी अब ये किस तरह गिने जा सकते हैं।॥ १॥

ਤਾਗਾ ਤੂਟਾ ਗਗਨੁ ਬਿਨਸਿ ਗਇਆ ਤੇਰਾ ਬੋਲਤੁ ਕਹਾ ਸਮਾਈ ॥
तागा तूटा गगनु बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई ॥
(मोह का) धागा टूट गया है और बुद्धि नाश हो गई है। तेरा वचन कहीं लुप्त हो गया है।

ਏਹ ਸੰਸਾ ਮੋ ਕਉ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਆਪੈ ਮੋ ਕਉ ਕੋ ਨ ਕਹੈ ਸਮਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई ॥१॥ रहाउ ॥
यह दुविधा मुझे रात-दिन लगी रहती है। कोई मनुष्य इसे वर्णन करके मुझे समझा नहीं सकता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਬਰਭੰਡੁ ਪਿੰਡੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ਰਚਨਹਾਰੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ॥
जह बरभंडु पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥
जहाँ यह दुनिया है, शरीर वहाँ नहीं। इसका रचयिता भी वहाँ नहीं।

ਜੋੜਨਹਾਰੋ ਸਦਾ ਅਤੀਤਾ ਇਹ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਮਾਹੀ ॥੨॥
जोड़नहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही ॥२॥
जोड़ने वाला सदैव ही निर्लिप्त है। अब यह आत्मा किसके भीतर समाई हुई कही जा सकती है ? ॥ २॥

ਜੋੜੀ ਜੁੜੈ ਨ ਤੋੜੀ ਤੂਟੈ ਜਬ ਲਗੁ ਹੋਇ ਬਿਨਾਸੀ ॥
जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी ॥
मिलाने से मनुष्य तत्वों को मिला नहीं सकता। जब तक शरीर का नाश न हो, वह अलग करने से इनको अलग नहीं कर सकता।

ਕਾ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਕਾ ਕੋ ਸੇਵਕੁ ਕੋ ਕਾਹੂ ਕੈ ਜਾਸੀ ॥੩॥
का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी ॥३॥
आत्मा किंसकी मालिक है और किंसकी सेविका ? यह कहाँ एवं किसके पास जा सकती है ? ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਲਿਵ ਲਾਗਿ ਰਹੀ ਹੈ ਜਹਾ ਬਸੇ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥
कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती ॥
हे कबीर ! मेरी वृत्ति वहाँ लगी रहती है, जहाँ दिन-रात प्रभु निवास करता है।

ਉਆ ਕਾ ਮਰਮੁ ਓਹੀ ਪਰੁ ਜਾਨੈ ਓਹੁ ਤਉ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੪॥੧॥੫੨॥
उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी ॥४॥१॥५२॥
उसका रहस्य वह स्वयं ही जानता है और वह अमर, शाश्वत और अविनाशी है ॥४॥१॥५२॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਸੁਰਤਿ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਦੁਇ ਕੰਨੀ ਮੁੰਦਾ ਪਰਮਿਤਿ ਬਾਹਰਿ ਖਿੰਥਾ ॥
सुरति सिम्रिति दुइ कंनी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥
भगवान के चरणों में वृत्ति जोड़नी और नाम-सिमरन दोनों ही (मानों) मेरे कानों की दो मुद्राएँ हैं और भगवान का यथार्थ ज्ञान-यह मैंने अपने तन पर गुदड़ी ली हुई है।

ਸੁੰਨ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਆਸਣੁ ਬੈਸਣੁ ਕਲਪ ਬਿਬਰਜਿਤ ਪੰਥਾ ॥੧॥
सुंन गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥१॥
ध्यान अवस्था रूपी गुफा में मैं आसन लगाकर विराजमान हूँ और कल्पना का विवर्जित मेरा योग-मार्ग है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਰਾਜਨ ਮੈ ਬੈਰਾਗੀ ਜੋਗੀ ॥
मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥
हे मेरे राजन ! मैं ईश्वर की प्रीति से रंगा हुआ योगी हूँ।

ਮਰਤ ਨ ਸੋਗ ਬਿਓਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मरत न सोग बिओगी ॥१॥ रहाउ ॥
"(इसलिए) मुझे मृत्यु, शोक एवं वियोग स्पर्श नहीं कर सकते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਮਹਿ ਸਿੰਙੀ ਮੇਰਾ ਬਟੂਆ ਸਭੁ ਜਗੁ ਭਸਮਾਧਾਰੀ ॥

खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥

समूचे ब्रह्माण्ड में (भगवान के अस्तित्व का सबको सन्देश देना) यह, मानों मैं बाजा बजा रहा हूँ। सारी दुनिया को क्षणभंगुर समझना यह मेरा भस्म डालने वाला थैला है।

ताड़ी लागी त्रिपलु पलटीऐ छुटै होइ पसारी ॥२॥

ताड़ी लागी त्रिपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥२॥

तीन गुणों वाली माया से मुक्ति एवं संसार से मोक्ष मेरा समाधि लगाना है॥ २॥

मनु पवनु दुइ तूंबा करी है जुगा जुगा सारद साजी ॥

मनु पवनु दुइ तूमबा करी है जुग जुग सारद साजी ॥

अपने हृदय एवं श्वास को मैंने वीणा के दो तुंबे बनाया है और सभी युगों में विद्यमान प्रभु को मैंने इसकी डण्डी बनाया है।

ਥਿਰੁ ਭਈ ਤੰਤੀ ਤੂਟਸਿ ਨਾਹੀ ਅਨਹਦ ਕਿੰਗੁਰੀ ਬਾਜੀ ॥੩॥
थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥३॥
तार स्थिर हो गई है और टूटती नहीं तथा (मेरे भीतर) सहज ही अनहद किंगुरी बज रही है॥ ३॥

ਸੁਨਿ ਮਨ ਮਗਨ ਭਏ ਹੈ ਪੂਰੇ ਮਾਇਆ ਡੋਲ ਨ ਲਾਗੀ ॥
सुनि मन मगन भए है पूरे माइआ डोल न लागी ॥
इसको सुनने से मेरा मन मग्न हो जाता है और उसे मोहिनी का धक्का नहीं लगता।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਤਾ ਕਉ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨਹੀ ਖੇਲਿ ਗਇਓ ਬੈਰਾਗੀ ॥੪॥੨॥੫੩॥
कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥४॥२॥५३॥
हे कबीर ! जो प्रभु प्रीति वाला योगी ऐसा खेल-खेलकर जाता है, वह दोबारा जन्म नहीं लेता ॥ ४॥ २ ॥ ५३ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਗਜ ਨਵ ਗਜ ਦਸ ਗਜ ਇਕੀਸ ਪੁਰੀਆ ਏਕ ਤਨਾਈ ॥
गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥
नौ गज (गोलक), दस गज (नाड़ियों) और इक्कीस गजों का एक पूरा थान (ताना) बुन दे।

ਸਾਠ ਸੂਤ ਨਵ ਖੰਡ ਬਹਤਰਿ ਪਾਟੁ ਲਗੋ ਅਧਿਕਾਈ ॥੧॥
साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥१॥
साठ धागों (नाड़ियों के ताने) एवं बहतर पेटे (छोटी नाड़ियों) साथ नौ जोड़ (भाग) और मिला दे ॥ १॥

ਗਈ ਬੁਨਾਵਨ ਮਾਹੋ ॥ ਘਰ ਛੋਡਿਐ ਜਾਇ ਜੁਲਾਹੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गई बुनावन माहो ॥ घर छोडिऐ जाइ जुलाहो ॥१॥ रहाउ ॥
सूत बुनाने के लिए गई हुई आत्मा ने कहा। अपने पुराने घर (शरीर) को छोड़कर आत्मा जुलाहे के चुने हुए में चली जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਗਜੀ ਨ ਮਿਨੀਐ ਤੋਲਿ ਨ ਤੁਲੀਐ ਪਾਚਨੁ ਸੇਰ ਅਢਾਈ ॥
गजी न मिनीऐ तोलि न तुलीऐ पाचनु सेर अढाई ॥
शरीर गजों से मापा अथवा बाट से तोला नहीं जाता। इसकी खुराक ढाई सेर है।

ਜੌ ਕਰਿ ਪਾਚਨੁ ਬੇਗਿ ਨ ਪਾਵੈ ਝਗਰੁ ਕਰੈ ਘਰਹਾਈ ॥੨॥
जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥२॥
यदि शरीर को खुराक शीघ्र न मिले तो आत्मा झगड़ा करती है और शरीर का घर नष्ट हो जाता है।॥ २॥

ਦਿਨ ਕੀ ਬੈਠ ਖਸਮ ਕੀ ਬਰਕਸ ਇਹ ਬੇਲਾ ਕਤ ਆਈ ॥
दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥
हे प्रभु के प्रतिकूल आत्मा ! तूने कितने दिन यहाँ बैठे रहना है ? यह अवसर तुझे दोबारा कब मिलेगा ?

ਛੂਟੇ ਕੂੰਡੇ ਭੀਗੈ ਪੁਰੀਆ ਚਲਿਓ ਜੁਲਾਹੋ ਰੀਸਾਈ ॥੩॥
छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥३॥
बर्तन एवं गीली नलियों को छोड़कर जुलाही आत्मा क्रोध में चली जाती है॥ ३॥

ਛੋਛੀ ਨਲੀ ਤੰਤੁ ਨਹੀ ਨਿਕਸੈ ਨਤਰ ਰਹੀ ਉਰਝਾਈ ॥
छोछी नली तंतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥
श्वास का धागा खाली हवा की नाली में से नहीं निकलता। उलझ कर श्वास का धागा टूट गया है।

ਛੋਡਿ ਪਸਾਰੁ ਈਹਾ ਰਹੁ ਬਪੁਰੀ ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸਮਝਾਈ ॥੪॥੩॥੫੪॥
छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥४॥३॥५४॥
हे भाग्यहीन आत्मा ! यहाँ (इहलोक में) रहती हुई तू संसार को त्याग दे। तुझे यह ज्ञान देने के लिए कबीर यह कहता है॥ ४॥ ३॥ ५४॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਏਕ ਜੋਤਿ ਏਕਾ ਮਿਲੀ ਕਿੰਬਾ ਹੋਇ ਮਹੋਇ ॥
एक जोति एका मिली क्मबा होइ महोइ ॥
एक ज्योति परम ज्योति से मिल जाती है। क्या यह दोबारा अलग हो सकती है अथवा नहीं ?

ਜਿਤੁ ਘਟਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਪਜੈ ਫੂਟਿ ਮਰੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੧॥
जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥१॥
जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर का नाम अंकुरित नहीं होता, वह फूट-फूट कर दुखी होकर मरता है॥ १॥

ਸਾਵਲ ਸੁੰਦਰ ਰਾਮਈਆ ॥
सावल सुंदर रामईआ ॥
हे मेरे सांवले एवं सुन्दर राम !

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਤੋਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन तो तेरे चरणों से लगा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧੁ ਮਿਲੈ ਸਿਧਿ ਪਾਈਐ ਕਿ ਏਹੁ ਜੋਗੁ ਕਿ ਭੋਗੁ ॥
साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥
संतों को मिलने से सिद्धि प्राप्त होती है। क्या लाभ है इस योग-मार्ग का और क्या भोग का ?

ਦੁਹੁ ਮਿਲਿ ਕਾਰਜੁ ਊਪਜੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਜੋਗੁ ॥੨॥
दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥
जब गुरु (की वाणी) एवं सिक्ख (की वृति) दोनों आपस में मिल जाते हैं तो कार्य सफल हो जाता है और राम के नाम से संयोग कायम हो जाता है।॥ २॥

ਲੋਗੁ ਜਾਨੈ ਇਹੁ ਗੀਤੁ ਹੈ ਇਹੁ ਤਉ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰ ॥
लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥
लोग समझते हैं कि यह (गुरु का शब्द) एक गीत है परन्तु यह तो ब्रहा का चिन्तन है।

ਜਿਉ ਕਾਸੀ ਉਪਦੇਸੁ ਹੋਇ ਮਾਨਸ ਮਰਤੀ ਬਾਰ ॥੩॥
जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥३॥
यह उस उपदेश की भाँति है जो बनारस में मनुष्य को मरते समय दिया जाता है।॥ ३॥

ਕੋਈ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸੁਣੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥
जो भी व्यक्ति चित्त लगाकर भगवान के नाम को गायन करता अथवा सुनता है,

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੰਸਾ ਨਹੀ ਅੰਤਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਇ ॥੪॥੧॥੪॥੫੫॥
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥४॥१॥४॥५५॥
हे कबीर ! इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह अवश्य ही परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ १॥ ४॥ ५५ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਜੇਤੇ ਜਤਨ ਕਰਤ ਤੇ ਡੂਬੇ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਨਹੀ ਤਾਰਿਓ ਰੇ ॥
जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥
भगवान के सिमरन के बिना मनुष्य जितने भी यत्न करते हैं, वे भवसागर में डूब जाते हैं और पार नहीं होते हैं।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਕਰਤੇ ਬਹੁ ਸੰਜਮ ਅਹੰਬੁਧਿ ਮਨੁ ਜਾਰਿਓ ਰੇ ॥੧॥
करम धरम करते बहु संजम अह्मबुधि मनु जारिओ रे ॥१॥
जो व्यक्ति धर्म, कर्म एवं बहुत संयम करते हैं, अहंबुद्धि उनके मन को जला देती है॥ १॥

ਸਾਸ ਗ੍ਰਾਸ ਕੋ ਦਾਤੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਬਿਸਾਰਿਓ ਰੇ ॥
सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओ रे ॥
हे नश्वर प्राणी ! तूने उस ठाकुर को अपने हृदय में से क्यों भुला दिया है, जिसने तुझे जीवन एवं भोजन प्रदान किए हैं ?

ਹੀਰਾ ਲਾਲੁ ਅਮੋਲੁ ਜਨਮੁ ਹੈ ਕਉਡੀ ਬਦਲੈ ਹਾਰਿਓ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥१॥ रहाउ ॥
यह मनुष्य-जन्म (मानो) हीरा एवं अमूल्य लाल है, लेकिन तूने इसे कौड़ी के लिए गंवा दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਤ੍ਰਿਖਾ ਭੂਖ ਭ੍ਰਮਿ ਲਾਗੀ ਹਿਰਦੈ ਨਾਹਿ ਬੀਚਾਰਿਓ ਰੇ ॥
त्रिसना त्रिखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥
हे भाई ! तुझे तृष्णा की प्यास एवं दुविधा की भूख का दु:ख लगा हुआ है, क्योंकि अपने हृदय में तुम ईश्वर के नाम का चिंतन नहीं करते।

ਉਨਮਤ ਮਾਨ ਹਿਰਿਓ ਮਨ ਮਾਹੀ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਨ ਧਾਰਿਓ ਰੇ ॥੨॥
उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥२॥
धर्म-कर्म का नशा उनको ठग लेता है, जो गुरु का शब्द अपने हृदय में नहीं बसाते॥ २॥

ਸੁਆਦ ਲੁਭਤ ਇੰਦ੍ਰੀ ਰਸ ਪ੍ਰੇਰਿਓ ਮਦ ਰਸ ਲੈਤ ਬਿਕਾਰਿਓ ਰੇ ॥
सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥
ऐसे व्यक्ति पापी हैं जो दुनिया के स्वादों में आकर्षित हैं, जो विषय-भोग के रसों में लीन हैं और मदिरा का स्वाद लेते हैं।

ਕਰਮ ਭਾਗ ਸੰਤਨ ਸੰਗਾਨੇ ਕਾਸਟ ਲੋਹ ਉਧਾਰਿਓ ਰੇ ॥੩॥
करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥३॥
जो उत्तम भाग्य एवं किस्मत द्वारा संतों की संगति से जुड़ते हैं, वह लकड़ी से लगे लोहे की भाँति (भवसागर से) पार हो जाते हैं।॥ ३॥

ਧਾਵਤ ਜੋਨਿ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਥਾਕੇ ਅਬ ਦੁਖ ਕਰਿ ਹਮ ਹਾਰਿਓ ਰੇ ॥
धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओ रे ॥
भ्रम में फँसकर मैं अनेक योनियों के जन्मों में दौड़-दौड़कर भटकता हार गया हूँ। अब मैं इस दुःख से थक गया हूँ।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਗੁਰ ਮਿਲਤ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਨਿਸਤਾਰਿਓ ਰੇ ॥੪॥੧॥੫॥੫੬॥
कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥४॥१॥५॥५६॥
हे कबीर ! गुरु को मिलने से मुझे महा रस प्राप्त हुआ है और प्रेम-भक्ति ने मुझे (विकारों से) बचा लिया है॥ ४॥ १॥ ५॥ ५६ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਕਾਲਬੂਤ ਕੀ ਹਸਤਨੀ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਚਲਤੁ ਰਚਿਓ ਜਗਦੀਸ ॥
कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥
हे मूर्ख मन ! भगवान ने यह दुनिया एक लीला रची है, जैसे हाथी को पकड़ने हेतु लोग कालबूत की हथिनी बनाते हैं।

ਕਾਮ ਸੁਆਇ ਗਜ ਬਸਿ ਪਰੇ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਅੰਕਸੁ ਸਹਿਓ ਸੀਸ ॥੧॥
काम सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अंकसु सहिओ सीस ॥१॥
हे मूर्ख मन ! कामवासना के वशीभूत हाथी पकड़ में आ जाता है और अपने सिर पर महावत का अंकुश सहता है॥ १॥

ਬਿਖੈ ਬਾਚੁ ਹਰਿ ਰਾਚੁ ਸਮਝੁ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ॥
बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥
हे मूर्ख मन ! विषय-विकारों से बच, ईश्वर में लीन हो और यह उपदेश धारण कर !

ਨਿਰਭੈ ਹੋਇ ਨ ਹਰਿ ਭਜੇ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਗਹਿਓ ਨ ਰਾਮ ਜਹਾਜੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥१॥ रहाउ ॥
हे मूर्ख मन ! तूने निडर होकर भगवान का भजन नहीं किया और राम नाम रूपी जहाज पर सवार नहीं हुआ ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਰਕਟ ਮੁਸਟੀ ਅਨਾਜ ਕੀ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਲੀਨੀ ਹਾਥੁ ਪਸਾਰਿ ॥
मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥
हे मेरे मूर्ख मन ! अपना हाथ आगे फैलाकर बन्दर दानों की मुट्ठी भर लेता है।

ਛੂਟਨ ਕੋ ਸਹਸਾ ਪਰਿਆ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਨਾਚਿਓ ਘਰ ਘਰ ਬਾਰਿ ॥੨॥
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥२॥
हे मेरे मूर्ख मन ! मुक्ति पाने की चिन्ता धारण कर, उसे हरेक घर के द्वार पर नाचना पड़ता है॥ २॥

ਜਿਉ ਨਲਨੀ ਸੂਅਟਾ ਗਹਿਓ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਮਾਯਾ ਇਹੁ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥
जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥
हे मेरे मूर्ख मन ! जैसे तोता नलिनी पर बैठकर फँस जाता है, वैसे ही दुनिया की माया का प्रसार है और मनुष्य इसमें फँस जाता है।

ਜੈਸਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਤਿਉ ਪਸਰਿਓ ਪਾਸਾਰੁ ॥੩॥
जैसा रंगु कसुंभ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु ॥३॥
हे मूर्ख मन ! जैसे कसुभे का रंग थोड़े ही दिन का है वैसे ही दुनिया का प्रसार (चार दिन हेतु) बिखरा हुआ है।॥ ३॥

ਨਾਵਨ ਕਉ ਤੀਰਥ ਘਨੇ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਪੂਜਨ ਕਉ ਬਹੁ ਦੇਵ ॥
नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥
हे मूर्ख मन ! स्नान करने के लिए बहुत सारे धार्मिक तीर्थ हैं और पूजा करने के लिए अनेक देवी-देवता हैं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਛੂਟਨੁ ਨਹੀ ਮਨ ਬਉਰਾ ਰੇ ਛੂਟਨੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵ ॥੪॥੧॥੬॥੫੭॥

कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥४॥१॥६॥५७॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मूर्ख मन ! इस तरह तेरी मुक्ति नहीं होनी। मुक्ति केवल भगवान का सिमरन एवं भक्ति करने से ही मिलेगी ॥ ४॥ १॥ ६॥ ५७ ॥

ਗਉੜੀ ॥

गउड़ी ॥

गउड़ी ॥

ਅਗਨਿ ਨ ਦਹੈ ਪਵਨੁ ਨਹੀ ਮਗਨੈ ਤਸਕਰੁ ਨੇਰਿ ਨ ਆਵੈ ॥

अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥

इस नाम-धन को न अग्नि जला सकती है, न पवन उड़ाकर ले जा सकती है और इस धन के निकट चोर भी नहीं आता ।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਕਰਿ ਸੰਚਉਨੀ ਸੋ ਧਨੁ ਕਤ ਹੀ ਨ ਜਾਵੈ ॥੧॥

राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥१॥

(हे जीव !) राम नाम रूपी धन संचित कर; चूंकि यह धन कहीं नहीं जाता ॥ १॥

ਹਮਰਾ ਧਨੁ ਮਾਧਉ ਗੋਬਿੰਦੁ ਧਰਣੀਧਰੁ ਇਹੈ ਸਾਰ ਧਨੁ ਕਹੀਐ ॥

हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ ॥

हमारा धन तो माधव गोविन्द ही है, जो सारी धरती का सहारा है। इसी धन को सब धनों में सर्वोत्तम कहा जाता है।

ਜੋ ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਭ ਗੋਬਿੰਦ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਸੁਖੁ ਰਾਜਿ ਨ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥

जो सुख प्रभु गोविन्द के भजन में मिलता है, वह सुख राज्य-शासन में मी नहीं मिलता॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸੁ ਧਨ ਕਾਰਣਿ ਸਿਵ ਸਨਕਾਦਿਕ ਖੋਜਤ ਭਏ ਉਦਾਸੀ ॥

इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥

इस धन के लिए शिवजी एवं (ब्रह्मा के पुत्र) सनकादिक खोज करते-करते संसार से विरक्त हुए।

ਮਨਿ ਮੁਕੰਦੁ ਜਿਹਬਾ ਨਾਰਾਇਨੁ ਪਰੈ ਨ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੨॥

मनि मुकंदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥२॥

जिस जीव के हृदय में मुक्तिदाता ईश्वर रहता है, जिसकी जिह्म पर नारायण विद्यमान है, उसे यम की फांसी नहीं लग सकती॥ २ ॥

ਨਿਜ ਧਨੁ ਗਿਆਨੁ ਭਗਤਿ ਗੁਰਿ ਦੀਨੀ ਤਾਸੁ ਸੁਮਤਿ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥
भगवान की भक्ति एवं ज्ञान ही (जीव का) यथार्थ धन है। जिस सुमति वाले को गुरु ने यह देन प्रदान की है, उसका मन उस प्रभु में बसता है।

ਜਲਤ ਅੰਭ ਥੰਭਿ ਮਨੁ ਧਾਵਤ ਭਰਮ ਬੰਧਨ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥੩॥
जलत अंभ थ्मभि मनु धावत भरम बंधन भउ भागा ॥३॥
प्रभु का नाम (तृष्णा में) जलती हुई आत्मा हेतु जल है और भागते-दौड़ते मन हेतु स्तम्म है। उससे दुविधा के बन्धनों का भय दूर हो जाता है॥ ३॥

ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਮਦਨ ਕੇ ਮਾਤੇ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥
कबीर जी कहते हैं-हे कामवासना में लिप्त मानव ! अपने हृदय में सोच-विचार कर देख,

ਤੁਮ ਘਰਿ ਲਾਖ ਕੋਟਿ ਅਸ੍ਵ ਹਸਤੀ ਹਮ ਘਰਿ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੪॥੧॥੭॥੫੮॥
तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥४॥१॥७॥५८॥
यदि तेरे घर में लाखों-करोड़ों हाथी तथा घोड़े हैं तो मेरे हृदय-घर में एक मुरारी ही है॥ ४॥ १॥ ७॥ ५८ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਜਿਉ ਕਪਿ ਕੇ ਕਰ ਮੁਸਟਿ ਚਨਨ ਕੀ ਲੁਬਧਿ ਨ ਤਿਆਗੁ ਦਇਓ ॥
जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिआगु दइओ ॥
जैसे लालच कारण बन्दर अपने हाथ में (भुने हुए) चनों की मुट्टी को नहीं छोड़ता और इस कारण वह फंस जाता है,

ਜੋ ਜੋ ਕਰਮ ਕੀਏ ਲਾਲਚ ਸਿਉ ਤੇ ਫਿਰਿ ਗਰਹਿ ਪਰਿਓ ॥੧॥
जो जो करम कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिओ ॥१॥
वैसे ही जीव लालच के वशीभूत होकर जो-जो कर्म करता है, वे सभी दोबारा उसके गले में ही पड़ते हैं।॥ १॥

ਭਗਤਿ ਬਿਨੁ ਬਿਰਥੇ ਜਨਮੁ ਗਇਓ ॥
भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥
भगवान की भक्ति के बिना मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਕਹੀ ਨ ਸਚੁ ਰਹਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥
साधसंगत में भगवान का भजन किए बिना सत्य कहीं भी निवास नहीं करता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਉਦਿਆਨ ਕੁਸਮ ਪਰਫੁਲਿਤ ਕਿਨਹਿ ਨ ਘ੍ਰਾਉ ਲਇਓ ॥
जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइओ ॥
जैसे भयानक वन में खिले हुए फूलों की सुगन्धि कोई नहीं ले सकता,

ਤੈਸੇ ਭ੍ਰਮਤ ਅਨੇਕ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਕਾਲ ਹਇਓ ॥੨॥
तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइओ ॥२॥
वैसे ही प्रभु-वन्दना एवं भक्ति के बिना मनुष्य कई योनियों में भटकता है और मृत्यु उसे बार-बार नष्ट करती है॥ २॥

ਇਆ ਧਨ ਜੋਬਨ ਅਰੁ ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਪੇਖਨ ਕਉ ਜੁ ਦਇਓ ॥
इआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु दइओ ॥
यह धन, यौवन, पुत्र एवं पत्नी- जो प्रभु के दिए हुए हैं, केवल एक बीत जाने वाला दृश्य है।

ਤਿਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ਅਟਕਿ ਜੋ ਉਰਝੇ ਇੰਦ੍ਰੀ ਪ੍ਰੇਰਿ ਲਇਓ ॥੩॥
तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइओ ॥३॥
जो इनमें फँस और उलझ जाते हैं, उनको इन्द्रियाँ आकर्षित करके कुमार्गगामी कर देती हैं।॥ ३॥

ਅਉਧ ਅਨਲ ਤਨੁ ਤਿਨ ਕੋ ਮੰਦਰੁ ਚਹੁ ਦਿਸ ਠਾਟੁ ਠਇਓ ॥
अउध अनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाटु ठइओ ॥
आयु अग्नि है और शरीर तिनकों का घर है। चारों तरफ सर्वत्र यहीं बनावट बनी हुई है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਭੈ ਸਾਗਰ ਤਰਨ ਕਉ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਓਟ ਲਇਓ ॥੪॥੧॥੮॥੫੯॥
कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ ॥४॥१॥८॥५९॥
हे कबीर ! इस भयानक संसार-सागर से पार होने के लिए मैंने सतिगुरु की शरण ली है॥ ४॥ १॥ ८ ॥ ५९॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਪਾਨੀ ਮੈਲਾ ਮਾਟੀ ਗੋਰੀ ॥ ਇਸ ਮਾਟੀ ਕੀ ਪੁਤਰੀ ਜੋਰੀ ॥੧॥

पानी मैला माटी गोरी ॥ इस माटी की पुतरी जोरी ॥१॥

पिता के वीर्य की मलिन बूंद एवं माँ के रक्त से भगवान ने जीव का यह मिट्टी का शरीर बनाया है॥ १॥

ਮੈ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਆਹਿ ਨ ਮੋਰਾ ॥

मै नाही कछु आहि न मोरा ॥

हे मेरे गोविन्द ! मेरा कोई वजूद नहीं है और मेरे पास कुछ भी नहीं है।

ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਰਸੁ ਗੋਬਿੰਦ ਤੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥१॥ रहाउ ॥

यह शरीर, धन एवं यह आत्मा सब तेरे दिए हुए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸ ਮਾਟੀ ਮਹਿ ਪਵਨੁ ਸਮਾਇਆ ॥

इस माटी महि पवनु समाइआ ॥

इस मिट्टी के शरीर में प्राण डाल दिए गए हैं,

ਝੂਠਾ ਪਰਪੰਚੁ ਜੋਰਿ ਚਲਾਇਆ ॥੨॥
झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥२॥
लेकिन जीव सब झुठलाकर झूठा परपंच करके बैठ जाता है॥ २॥

ਕਿਨਹੂ ਲਾਖ ਪਾਂਚ ਕੀ ਜੋਰੀ ॥
किनहू लाख पांच की जोरी ॥
कई मनुष्यों ने पाँच लाख की सम्पति जोड़ ली है,

ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਗਗਰੀਆ ਫੋਰੀ ॥੩॥
अंत की बार गगरीआ फोरी ॥३॥
मृत्यु आने पर उनकी भी शरीर-रूपी गागर टूट जाती है॥ ३॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਇਕ ਨੀਵ ਉਸਾਰੀ ॥ ਖਿਨ ਮਹਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥੪॥੧॥੯॥੬੦॥
कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥४॥१॥९॥६०॥
कबीर जी कहते हैं--हे अभिमानी जीव ! तेरी जीवन की जो बुनियाद रखी गई है, वह एक पलक में ही नाश होने वाली है॥ ४॥ १॥ ९ ॥ ६०॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਰਾਮ ਜਪਉ ਜੀਅ ਐਸੇ ਐਸੇ ॥
राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥
हे मेरी आत्मा ! ऐसे राम का नाम जपो,

ਧ੍ਰੂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਜਪਿਓ ਹਰਿ ਜੈਸੇ ॥੧॥
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥१॥
जैसे धुव एवं भक्त प्रहलाद ने श्री हरि की आराधना की थी॥ १॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਭਰੋਸੇ ਤੇਰੇ ॥
दीन दइआल भरोसे तेरे ॥
हे दीनदयालु! तेरे भरोसे पर

ਸਭੁ ਪਰਵਾਰੁ ਚੜਾਇਆ ਬੇੜੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपना सारा परिवार ही तेरे नाम रूपी जहाज पर चढ़ा दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਵੈ ॥
जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥
जब प्रभु को अच्छा लगता है तो वह (इस सारे परिवार से) अपना हुक्म मनवाता है,

ਇਸ ਬੇੜੇ ਕਉ ਪਾਰਿ ਲਘਾਵੈ ॥੨॥
इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥२॥
और इस प्रकार परिवार सहित इस जहाज को विकारों की लहरों से पार कर देता है॥ २॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਐਸੀ ਬੁਧਿ ਸਮਾਨੀ ॥
गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥
गुरु की कृपा से मेरे भीतर ऐसी बुद्धि प्रकट हो गई है

ਚੂਕਿ ਗਈ ਫਿਰਿ ਆਵਨ ਜਾਨੀ ॥੩॥
चूकि गई फिरि आवन जानी ॥३॥
कि मेरा जन्म-मरण का चक्र ही मिट गया है। ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਭਜੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥
हे कबीर ! तू सारंगपाणि प्रभु का भजन कर,

ਉਰਵਾਰਿ ਪਾਰਿ ਸਭ ਏਕੋ ਦਾਨੀ ॥੪॥੨॥੧੦॥੬੧॥
उरवारि पारि सभ एको दानी ॥४॥२॥१०॥६१॥
इस लोक एवं परलोक में सर्वत्र केवल वही दाता है॥ ४॥ २ ॥ १० ॥ ६१॥

ਗਉੜੀ ੯ ॥
गउड़ी ९ ॥
गउड़ी ९ ॥

ਜੋਨਿ ਛਾਡਿ ਜਉ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਓ ॥
जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥
माँ का गर्भ छोड़कर जब प्राणी दुनिया में आता है तो

ਲਾਗਤ ਪਵਨ ਖਸਮੁ ਬਿਸਰਾਇਓ ॥੧॥
लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥१॥
(माया रूपी) हवा लगते ही मालिक-प्रभु को विस्मृत कर देता है॥ १॥

ਜੀਅਰਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨਾ ਗਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअरा हरि के गुना गाउ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! भगवान की महिमा-स्तुति कर॥ १॥ रहाउ॥

ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਉਰਧ ਤਪੁ ਕਰਤਾ ॥
गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥
(हे मन !) जब तू गर्भ योनि में उल्टा लटका हुआ तपस्या करता था

ਤਉ ਜਠਰ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਹਤਾ ॥੨॥
तउ जठर अगनि महि रहता ॥२॥
तो तू पेट की अग्नि में रहता था॥ २ ॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਓ ॥
लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ ॥
जीव चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ इस दुनिया में आया है।

ਅਬ ਕੇ ਛੁਟਕੇ ਠਉਰ ਨ ਠਾਇਓ ॥੩॥
अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥३॥
लेकिन दुनिया में भी खाली घूमते हुए फिर कोई स्थान नहीं मिलता ॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਭਜੁ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥
हे कबीर ! सारंगपाणि प्रभु का भजन कर,

ਆਵਤ ਦੀਸੈ ਜਾਤ ਨ ਜਾਨੀ ॥੪॥੧॥੧੧॥੬੨॥
आवत दीसै जात न जानी ॥४॥१॥११॥६२॥
जो न जन्मता दिखता है और न मरता हुआ सुना जाता है।॥ ४॥ १॥ ११॥ ६२॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ॥
गउड़ी पूरबी ॥
गउड़ी पूरबी ॥

ਸੁਰਗ ਬਾਸੁ ਨ ਬਾਛੀਐ ਡਰੀਐ ਨ ਨਰਕਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥
(हे जीव !) स्वर्ग में निवास के लिए कामना नहीं करनी चाहिए और न ही नरक में वास करने से डरना चाहिए।

ਹੋਨਾ ਹੈ ਸੋ ਹੋਈ ਹੈ ਮਨਹਿ ਨ ਕੀਜੈ ਆਸ ॥੧॥
होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥१॥
जो कुछ होना है, वह निश्चित ही होगा। इसलिए अपने मन में कोई आशा मत रख॥ १॥

ਰਮਈਆ ਗੁਨ ਗਾਈਐ ॥
रमईआ गुन गाईऐ ॥
"(हे जीव !) भगवान की महिमा-स्तुति करते रहना चाहिए,

ਜਾ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा ते पाईऐ परम निधानु ॥१॥ रहाउ ॥
इस प्रकार नाम रूपी सर्वश्रेष्ठ खजाना प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਿਆ ਜਪੁ ਕਿਆ ਤਪੁ ਸੰਜਮੋ ਕਿਆ ਬਰਤੁ ਕਿਆ ਇਸਨਾਨੁ ॥
किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥
क्या लाभ जप का, क्या तपस्या का, क्या संयम का, क्या व्रत का एवं क्या लाभ स्नान करने का।

ਜਬ ਲਗੁ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨੀਐ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਭਗਵਾਨ ॥੨॥
जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥२॥
जब तक भगवान के साथ प्रेम एवं उसकी भक्ति की युक्ति ही नहीं आती ? ॥ २॥

ਸੰਪੈ ਦੇਖਿ ਨ ਹਰਖੀਐ ਬਿਪਤਿ ਦੇਖਿ ਨ ਰੋਇ ॥
स्मपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥
संपति देखकर खुश नहीं होना चाहिए और न ही विपत्ति देखकर रोना चाहिए।

ਜਿਉ ਸੰਪੈ ਤਿਉ ਬਿਪਤਿ ਹੈ ਬਿਧ ਨੇ ਰਚਿਆ ਸੋ ਹੋਇ ॥੩॥
जिउ स्मपै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥३॥
जो कुछ भगवान करता है वही होता है, जैसे संपति है वैसे ही विपत्ति है॥ ३॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਅਬ ਜਾਨਿਆ ਸੰਤਨ ਰਿਦੈ ਮਝਾਰਿ ॥
कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥
कबीर जी कहते हैं-अब यह ज्ञान हुआ है (कि ईश्वर) संतों के हृदय में बसता है,

ਸੇਵਕ ਸੋ ਸੇਵਾ ਭਲੇ ਜਿਹ ਘਟ ਬਸੈ ਮੁਰਾਰਿ ॥੪॥੧॥੧੨॥੬੩॥
सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥४॥१॥१२॥६३॥
वही सेवक सेवा करते हुए भले लगते हैं, जिनके हृदय में ईश्वर बसता है॥ ४॥ १॥ १२ ॥ ६३॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਰੇ ਮਨ ਤੇਰੋ ਕੋਇ ਨਹੀ ਖਿੰਚਿ ਲੇਇ ਜਿਨਿ ਭਾਰੁ ॥
रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥
हे मन ! अंतकाल तेरा कोईसहायक नहीं बनेगा, चाहे (दूसरे रिश्तेदारों का) भार खींचकर अपने सिर पर ले ले।

ਬਿਰਖ ਬਸੇਰੋ ਪੰਖਿ ਕੋ ਤੈਸੋ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥੧॥
बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥१॥
जैसे पक्षियों का बसेरा वृक्षों पर होता है, वैसे ही इस दुनिया का निवास है॥ १॥

ਰਾਮ ਰਸੁ ਪੀਆ ਰੇ ॥
राम रसु पीआ रे ॥
हे भाई ! मैंने राम रस का पान किया है

ਜਿਹ ਰਸ ਬਿਸਰਿ ਗਏ ਰਸ ਅਉਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥१॥ रहाउ ॥
जिस रस से मुझे दूसरे रस (स्वाद) भूल गए हैं। ॥ रहाउ॥

ਅਉਰ ਮੁਏ ਕਿਆ ਰੋਈਐ ਜਉ ਆਪਾ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਇ ॥
अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥
किसी दूसरे की मृत्यु पर विलाप करने का क्या अभिप्राय, जब हमने आप ही सदा निवास नहीं करना।

ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਬਿਨਸਿ ਹੈ ਦੁਖੁ ਕਰਿ ਰੋਵੈ ਬਲਾਇ ॥੨॥
जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥२॥
जो-जो इन्सान जन्म लेता है, उसकी मृत्यु हो जाती है, फिर तो इस दुःख कारण मेरे भूत-प्रेत ही रोएँ॥ २ ॥

ਜਹ ਕੀ ਉਪਜੀ ਤਹ ਰਚੀ ਪੀਵਤ ਮਰਦਨ ਲਾਗ ॥
जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥
जब इन्सान महापुरुषों की संगति में लगता है और नाम-अमृत पान करता है तो उसकी आत्मा उसमें लीन हो जाती है, जिससे वह उत्पन्न हुई थी।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਚਿਤਿ ਚੇਤਿਆ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਬੈਰਾਗ ॥੩॥੨॥੧੩॥੬੪॥

कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥३॥२॥१३॥६४॥

कबीर जी कहते हैं-मैंने अपने हृदय में राम को स्मरण किया है और उसे ही प्रेमपूर्वक याद करता हूँ॥ ३॥ २॥ १३॥ ६४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ॥

रागु गउड़ी ॥

रागु गउड़ी ॥

ਪੰਥੁ ਨਿਹਾਰੈ ਕਾਮਨੀ ਲੋਚਨ ਭਰੀ ਲੇ ਉਸਾਸਾ ॥

पंथु निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥

आहें भरती और अश्रुओं से भरी ऑखों से जीव-स्त्री पति-प्रभु का मार्ग देखती है।

ਉਰ ਨ ਭੀਜੈ ਪਗੁ ਨਾ ਖਿਸੈ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਆਸਾ ॥੧॥
उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥१॥
उसका हृदय प्रसन्न नहीं और भगवान के दर्शनों की आशा में वह अपने चरण पीछे नहीं हटाती॥ १॥

ਉਡਹੁ ਨ ਕਾਗਾ ਕਾਰੇ ॥
उडहु न कागा कारे ॥
हे काले कौए ! उड़ जा,

ਬੇਗਿ ਮਿਲੀਜੈ ਅਪੁਨੇ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि जो मैं अपने प्रियतम प्रभु को शीघ्र मिल जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਜੀਵਨ ਪਦ ਕਾਰਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੀਜੈ ॥
कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥
कबीर जी कहते हैं जीवन पदवी प्राप्त करने के लिए भगवान की भक्ति करनी चाहिए।

ਏਕੁ ਆਧਾਰੁ ਨਾਮੁ ਨਾਰਾਇਨ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਰਵੀਜੈ ॥੨॥੧॥੧੪॥੬੫॥
एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥२॥१॥१४॥६५॥
नारायण के नाम का ही एकमात्र सहारा होना चाहिए और जिह्म से राम को ही स्मरण करना चाहिए॥ २ ॥ १॥ १४॥ ६५॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ੧੧ ॥
रागु गउड़ी ११ ॥
रागु गउड़ी ११ ॥

ਆਸ ਪਾਸ ਘਨ ਤੁਰਸੀ ਕਾ ਬਿਰਵਾ ਮਾਝ ਬਨਾ ਰਸਿ ਗਾਊਂ ਰੇ ॥
आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गाऊं रे ॥
जिस मुरली मनोहर के आसपास तुलसी के सघन पौधे थे तथा जो तुलसी के वन में प्रेमपूर्वक गाएँ चराता गा रहा था,

ਉਆ ਕਾ ਸਰੂਪੁ ਦੇਖਿ ਮੋਹੀ ਗੁਆਰਨਿ ਮੋ ਕਉ ਛੋਡਿ ਨ ਆਉ ਨ ਜਾਹੂ ਰੇ ॥੧॥
उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥१॥
उसका दर्शन करके गोकुल की ग्वालिनी मुग्ध हो गई और कहने लगी, हे प्रियवर! मुझे छोड़कर किसी अन्य स्थान पर मत जाना॥ १॥

ਤੋਹਿ ਚਰਨ ਮਨੁ ਲਾਗੋ ਸਾਰਿੰਗਧਰ ॥
तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर ॥
हे सारिंगधर प्रभु! मेरा मन तेरे चरणों से लगा हुआ है,

ਸੋ ਮਿਲੈ ਜੋ ਬਡਭਾਗੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो मिलै जो बडभागो ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन तुझे वही मिलता है जो भाग्यशाली होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਿੰਦ੍ਰਾਬਨ ਮਨ ਹਰਨ ਮਨੋਹਰ ਕ੍ਰਿਸਨ ਚਰਾਵਤ ਗਾਊ ਰੇ ॥
बिंद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥
वृंदावन मन को लुभाने वाला है, जहाँ मनोहर कृष्ण गौएँ चराता था।

ਜਾ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਹੀ ਸਾਰਿੰਗਧਰ ਮੋਹਿ ਕਬੀਰਾ ਨਾਊ ਰੇ ॥੨॥੨॥੧੫॥੬੬॥
जा का ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥२॥२॥१५॥६६॥
हे सारिंगधर ! मेरा नाम कबीर है, जिसका ठाकुर तू है॥ २ ॥ २ ॥ १५॥ ६६॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ੧੨ ॥
गउड़ी पूरबी १२ ॥
गउड़ी पूरबी १२ ॥

ਬਿਪਲ ਬਸਤ੍ਰ ਕੇਤੇ ਹੈ ਪਹਿਰੇ ਕਿਆ ਬਨ ਮਧੇ ਬਾਸਾ ॥
बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥
कुछ व्यक्ति अनेक प्रकार के वस्त्र पहनते हैं। जंगल में बसेरा करने की क्या लाभ ?

ਕਹਾ ਭਇਆ ਨਰ ਦੇਵਾ ਧੋਖੇ ਕਿਆ ਜਲਿ ਬੋਰਿਓ ਗਿਆਤਾ ॥੧॥
कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥१॥
यदि धूप इत्यादि जलाकर देवताओं की पूजा कर ली तो क्या लाभ हुआ ? और यदि अपने शरीर को (तीर्थो के) जल में डुबा लिया तो क्या लाभ हुआ ?॥ १॥

ਜੀਅਰੇ ਜਾਹਿਗਾ ਮੈ ਜਾਨਾਂ ॥
जीअरे जाहिगा मै जानां ॥
हे मन ! मैं जानता हूँ कि तुम (इस दुनिया से) चले जाओगे।

ਅਬਿਗਤ ਸਮਝੁ ਇਆਨਾ ॥
अबिगत समझु इआना ॥
हे मूर्ख प्राणी ! एक परमेश्वर को समझ।

ਜਤ ਜਤ ਦੇਖਉ ਬਹੁਰਿ ਨ ਪੇਖਉ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ਲਪਟਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जत जत देखउ बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥

जो कुछ भी प्राणी अब देखता है, वह उसे दोबारा नहीं देखेगा परन्तु तो भी वह माया से लिपटा हुआ है। १॥ रहाउ॥

ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਬਹੁ ਉਪਦੇਸੀ ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਗਲੋ ਧੰਧਾ ॥

गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥

कोई ज्ञान-चर्चा कर रहा है, कोई मनन कर रहा है, कोई दूसरों को उपदेश दे रहा है, लेकिन यह समूचा जगत् माया का जंजाल ही है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਇਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਇਆ ਜਗੁ ਮਾਇਆ ਅੰਧਾ ॥੨॥੧॥੧੬॥੬੭॥

कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥२॥१॥१६॥६७॥

कबीर जी कहते हैं-एक राम का नाम-सिमरन किए बिना यह दुनिया माया ने ज्ञानहीन बनाई हुई है॥ २॥ १॥ १६॥ ६७॥

ਗਉੜੀ ੧੨ ॥

गउड़ी १२ ॥

गउड़ी १२ ॥

ਮਨ ਰੇ ਛਾਡਹੁ ਭਰਮੁ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇ ਨਾਚਹੁ ਇਆ ਮਾਇਆ ਕੇ ਡਾਂਡੇ ॥

मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥

हे मेरे मन ! भ्रम छोड़ दे और प्रत्यक्ष तौर पर नृत्य कर। चूंकि यह सब माया के झगड़े हैं।

ਸੂਰੁ ਕਿ ਸਨਮੁਖ ਰਨ ਤੇ ਡਰਪੈ ਸਤੀ ਕਿ ਸਾਂਚੈ ਭਾਂਡੇ ॥੧॥

सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि सांचै भांडे ॥१॥

वह कैसा शूरवीर है जो आमने-सामने लड़ाई से डरता है और वह नारी सती नहीं हो सकती जो घर के बर्तन एकत्रित करने लग जाती है?॥ १॥

ਡਗਮਗ ਛਾਡਿ ਰੇ ਮਨ ਬਉਰਾ ॥

डगमग छाडि रे मन बउरा ॥

हे मूर्ख मन ! डगमगाना त्याग दे।

ਅਬ ਤਉ ਜਰੇ ਮਰੇ ਸਿਧਿ ਪਾਈਐ ਲੀਨੋ ਹਾਥਿ ਸੰਧਉਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि संधउरा ॥१॥ रहाउ ॥

जिस नारी ने हाथ में सिंदूर लगाया हुआ नारियल ले लिया उसे तो अब जल कर ही सिद्धि प्राप्त होगी॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਾਇਆ ਕੇ ਲੀਨੇ ਇਆ ਬਿਧਿ ਜਗਤੁ ਬਿਗੂਤਾ ॥
काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥
सारी दुनिया काम, क्रोध एवं माया में लीन है। इस तरह यह दुनिया नाश हो रही है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਨ ਛੋਡਉ ਸਗਲ ਊਚ ਤੇ ਊਚਾ ॥੨॥੨॥੧੭॥੬੮॥
कहि कबीर राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥२॥२॥१७॥६८॥
कबीर जी कहते हैं तू राजा राम को मत त्याग, जो सर्वोपरि है॥ २॥ २॥ १७ ॥ ६८ ॥

ਗਉੜੀ ੧੩ ॥
गउड़ी १३ ॥
गउड़ी १३ ॥

ਫੁਰਮਾਨੁ ਤੇਰਾ ਸਿਰੈ ਊਪਰਿ ਫਿਰਿ ਨ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰ ॥
फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥
हे भगवान ! तेरा हुक्म मुझे मंजूर है और पुनः इस पर विचार नहीं करता।

ਤੁਹੀ ਦਰੀਆ ਤੁਹੀ ਕਰੀਆ ਤੁਝੈ ਤੇ ਨਿਸਤਾਰ ॥੧॥
तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥१॥
हे प्रभु ! तू ही दरिया है और तू ही मल्लाह है। तुझ से ही मेरा कल्याण है॥ १॥

ਬੰਦੇ ਬੰਦਗੀ ਇਕਤੀਆਰ ॥
बंदे बंदगी इकतीआर ॥
हे मनुष्य ! प्रभु की भक्ति स्वीकार कर,

ਸਾਹਿਬੁ ਰੋਸੁ ਧਰਉ ਕਿ ਪਿਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥
चाहे तेरा मालिक तुझ पर क्रोधित होवे अथवा तुझ से प्रेम करे॥१ ॥ रहाउ ॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ਮੇਰਾ ਜਿਉ ਫੂਲੁ ਜਈ ਹੈ ਨਾਰਿ ॥
नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥
"(हे भगवान !) तेरा नाम ही मेरा ऐसे आधार है, जैसे फूल जल में खिला रहता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਗੁਲਾਮੁ ਘਰ ਕਾ ਜੀਆਇ ਭਾਵੈ ਮਾਰਿ ॥੨॥੧੮॥੬੯॥
कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥२॥१८॥६९॥
कबीर जी कहते हैं-मैं तेरे घर का गुलाम हूँ, चाहे जीवित रखो, चाहे जीवन लीला समाप्त कर दो ॥ २ ॥ १८ ॥ ६९॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜੀਅ ਜੋਨਿ ਮਹਿ ਭ੍ਰਮਤ ਨੰਦੁ ਬਹੁ ਥਾਕੋ ਰੇ ॥
लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत नंदु बहु थाको रे ॥
हे जिज्ञासु ! चौरासी लाख जीवों की योनियों में भटक-भटक कर (श्रीकृष्ण का पालनहार पिता) नन्द बहुत थक गया था।

ਭਗਤਿ ਹੇਤਿ ਅਵਤਾਰੁ ਲੀਓ ਹੈ ਭਾਗੁ ਬਡੋ ਬਪੁਰਾ ਕੋ ਰੇ ॥੧॥
भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो बपुरा को रे ॥१॥
उसकी भक्ति पर खुश होकर श्रीकृष्ण ने उसके घर अवतार धारण किया। तब उस बेचारे नन्द का भाग्य उदय हुआ।॥ १॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਰ ਜੁ ਕਹਤ ਹਉ ਨੰਦ ਕੋ ਨੰਦਨੁ ਨੰਦ ਸੁ ਨੰਦਨੁ ਕਾ ਕੋ ਰੇ ॥
तुम्ह्र जु कहत हउ नंद को नंदनु नंद सु नंदनु का को रे ॥
हे जिज्ञासु ! तुम कहते हो कि श्री कृष्ण नन्द का पुत्र था, वह नन्द स्वयं किसका पुत्र था ?

ਧਰਨਿ ਅਕਾਸੁ ਦਸੋ ਦਿਸ ਨਾਹੀ ਤਬ ਇਹੁ ਨੰਦੁ ਕਹਾ ਥੋ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नंदु कहा थो रे ॥१॥ रहाउ ॥
जब यह धरती, आकाश एवं दसों दिशाएँ नहीं होते थे, तब यह नन्द कहाँ था ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਕਟਿ ਨਹੀ ਪਰੈ ਜੋਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਜਾ ਕੋ ਰੇ ॥
संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥
हे जिज्ञासु ! सत्य यही है कि जिस भगवान का नाम निरंजन है, वह संकट में नहीं पड़ता और न ही कोई योनि धारण करता है।

ਕਬੀਰ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਐਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਜਾ ਕੈ ਮਾਈ ਨ ਬਾਪੋ ਰੇ ॥੨॥੧੬॥੭੦॥
कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥२॥१९॥७०॥
कबीर का स्वामी ऐसा ठाकुर है, जिसकी न कोई माता है और न ही पिता है ॥ २ ॥ १६॥ ७० ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਨਿੰਦਉ ਨਿੰਦਉ ਮੋ ਕਉ ਲੋਗੁ ਨਿੰਦਉ ॥
निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥
हे निन्दा करने वाले लोगो ! तुम लोग निन्दक बनकर जितनी चाहे मेरी निन्दा करो।

ਨਿੰਦਾ ਜਨ ਕਉ ਖਰੀ ਪਿਆਰੀ ॥
निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥
मुझ प्रभु के सेवक को निन्दा बड़ी मीठी एवं प्यारी लगती है।

ਨਿੰਦਾ ਬਾਪੁ ਨਿੰਦਾ ਮਹਤਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥ रहाउ ॥
निन्दा मेरा पिता है और निन्दा ही मेरी माता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਿੰਦਾ ਹੋਇ ਤ ਬੈਕੁੰਠਿ ਜਾਈਐ ॥
निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥
यदि लोग मेरी निन्दा करें तो ही मैं स्वर्ग जा सकता हूँ और

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਮਨਹਿ ਬਸਾਈਐ ॥
नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥
प्रभु का नाम रूपी धन मेरे मन में बस सकता है।

ਰਿਦੈ ਸੁਧ ਜਉ ਨਿੰਦਾ ਹੋਇ ॥
रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥
यदि हृदय शुद्ध होते हुए हमारी निन्दा हो तो

ਹਮਰੇ ਕਪਰੇ ਨਿੰਦਕੁ ਧੋਇ ॥੧॥
हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१॥
निंदक हमारे कपड़े धोता है अर्थात् हमें पवित्र करने में सहयोग देता है॥ १॥

ਨਿੰਦਾ ਕਰੈ ਸੁ ਹਮਰਾ ਮੀਤੁ ॥
निंदा करै सु हमरा मीतु ॥
जो मनुष्य हमारी निन्दा करता है, वह हमारा मित्र है,

ਨਿੰਦਕ ਮਾਹਿ ਹਮਾਰਾ ਚੀਤੁ ॥
निंदक माहि हमारा चीतु ॥
क्योंकि हमारी वृति अपने निंदक पर रहती है।

ਨਿੰਦਕੁ ਸੋ ਜੋ ਨਿੰਦਾ ਹੋਰੈ ॥
निंदकु सो जो निंदा होरै ॥
हमारा निंदक मनुष्य वह है जो हमारी बुराइयों को नष्ट होने से विराम लगाता है।

ਹਮਰਾ ਜੀਵਨੁ ਨਿੰਦਕੁ ਲੋਰੈ ॥੨॥
हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥
अपितु निंदक से तो हमारा जीवन भला बनता है। २॥

ਨਿੰਦਾ ਹਮਰੀ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥
निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥
मैं उससे प्रेम एवं स्नेह करता हूँ, जो मेरी निन्दा करता है।

ਨਿੰਦਾ ਹਮਰਾ ਕਰੈ ਉਧਾਰੁ ॥
निंदा हमरा करै उधारु ॥
निन्दा हमारा उद्धार करती है।

ਜਨ ਕਬੀਰ ਕਉ ਨਿੰਦਾ ਸਾਰੁ ॥
जन कबीर कउ निंदा सारु ॥
दास कबीर के लिए तो उसके अवगुणों का नाश होना सर्वोत्तम बात है।

ਨਿੰਦਕੁ ਡੂਬਾ ਹਮ ਉਤਰੇ ਪਾਰਿ ॥੩॥੨੦॥੭੧॥
निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥३॥२०॥७१॥
परन्तु निंदक (दूसरों की निन्दा करता स्वयं अवगुणों में) डूब जाता है और हम (अवगुणों से सचेत होकर) बच जाते हैं।॥ ३॥ २०॥ ७१॥

ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਤੂੰ ਐਸਾ ਨਿਰਭਉ ਤਰਨ ਤਾਰਨ ਰਾਮ ਰਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥१॥ रहाउ ॥

हे मेरे राजा राम ! तू बहुत ही निडर है। हे स्वामी राम ! जीवों को भवसागर से पार करवाने के लिए तू एक नैया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਬ ਹਮ ਹੋਤੇ ਤਬ ਤੁਮ ਨਾਹੀ ਅਬ ਤੁਮ ਹਹੁ ਹਮ ਨਾਹੀ ॥

जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥

हे प्रभु ! (तेरा कुछ अदभुत ही स्वभाव है) जब मैं अभिमानी था तुम मुझ में नहीं थे। अब जब तुम मुझ में हो, मैं अभिमानी नहीं हूँ।

ਅਬ ਹਮ ਤੁਮ ਏਕ ਭਏ ਹਹਿ ਏਕੈ ਦੇਖਤ ਮਨੁ ਪਤੀਆਹੀ ॥੧॥

अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥१॥

हे प्रभु ! अब तुम और हम एकरूप हो गए हैं, अब तुम्हें देखकर हमारा मन कृतार्थ हो गया है॥ १॥

ਜਬ ਬੁਧਿ ਹੋਤੀ ਤਬ ਬਲੁ ਕੈਸਾ ਅਬ ਬੁਧਿ ਬਲੁ ਨ ਖਟਾਈ ॥

जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥

"(हे स्वामी !) जब तक हम जीवों में अपनी बुद्धि (का अभिमान) होता है, तब तक हमारे भीतर कोई आत्मिक बल नहीं होता, लेकिन अब (जब तुम स्वयं हमारे भीतर प्रकट हुए हो) तब हमारी बुद्धि एवं बल का हमें अभिमान नहीं रहा।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਬੁਧਿ ਹਰਿ ਲਈ ਮੇਰੀ ਬੁਧਿ ਬਦਲੀ ਸਿਧਿ ਪਾਈ ॥੨॥੨੧॥੭੨॥

कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥२॥२१॥७२॥

कबीर जी कहते हैं - (हे राम !) तुमने मेरी (अहंकारग्रस्त) बुद्धि छीन ली है, अब वह बदल गई है और सिद्धि प्राप्त हो गई है। २॥ २१ ॥ ७२॥

ਗਉੜੀ ॥

गउड़ी ॥

गउड़ी ॥

ਖਟ ਨੇਮ ਕਰਿ ਕੋਠੜੀ ਬਾਂਧੀ ਬਸਤੁ ਅਨੂਪੁ ਬੀਚ ਪਾਈ ॥

खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥

भगवान ने षट्चक्र बनाकर (मानव शरीर-रूपी) छोटा-सा घर बना दिया है और इसमें उसने (अपनी ज्योति-रूपी) अनुपम वस्तु रख दी है!

ਕੁੰਜੀ ਕੁਲਫੁ ਪ੍ਰਾਨ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ਕਰਤੇ ਬਾਰ ਨ ਲਾਈ ॥੧॥
कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥१॥
ताला और चाबी की भाँति प्राणों को उसका रक्षक बनाया गया है। इस खेल को करने में परमात्मा ने कोई देरी नहीं की॥ १॥

ਅਬ ਮਨ ਜਾਗਤ ਰਹੁ ਰੇ ਭਾਈ ॥
अब मन जागत रहु रे भाई ॥
हे भाई ! अब तू अपनी आत्मा को जाग्रत रख।

ਗਾਫਲੁ ਹੋਇ ਕੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਓ ਚੋਰੁ ਮੁਸੈ ਘਰੁ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि लापरवाह होकर तूने अपना अनमोल मानव-जीवन गंवा दिया है। तेरा घर विकार रूपी चोर लूटते जा रहे हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਪੰਚ ਪਹਰੂਆ ਦਰ ਮਹਿ ਰਹਤੇ ਤਿਨ ਕਾ ਨਹੀ ਪਤੀਆਰਾ ॥
पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥
पाँच प्रहरी इस घर के द्वार पर पहरेदार खड़े हैं, परन्तु उन पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता।

ਚੇਤਿ ਸੁਚੇਤ ਚਿਤ ਹੋਇ ਰਹੁ ਤਉ ਲੈ ਪਰਗਾਸੁ ਉਜਾਰਾ ॥੨॥
चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥२॥
जब तक तुम अपने सुचेत मन में जागते हो, तुझे (प्रभु का) प्रकाश एवं उजाला प्राप्त होगा ॥ २॥

ਨਉ ਘਰ ਦੇਖਿ ਜੁ ਕਾਮਨਿ ਭੂਲੀ ਬਸਤੁ ਅਨੂਪ ਨ ਪਾਈ ॥
नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥
जो जीव-स्त्री शरीर के नौ घरों को देखकर भटक जाती है, उसे ईश्वर के नाम की अनूप वस्तु प्राप्त नहीं होती।

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰ ਨਵੈ ਘਰ ਮੂਸੇ ਦਸਵੈਂ ਤਤੁ ਸਮਾਈ ॥੩॥੨੨॥੭੩॥
कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥३॥२२॥७३॥=
कबीर जी कहते हैं-जब ये नौ ही बस यश में आ जाते हैं तो परमात्मा की ज्योति दसवें घर में समा जाती है॥ ३॥ २२ ॥ ७३ ॥

ਗਉੜੀ ॥
गउड़ी ॥
गउड़ी ॥

ਮਾਈ ਮੋਹਿ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਿਓ ਆਨਾਨਾਂ ॥
माई मोहि अवरु न जानिओ आनानां ॥
हे मेरी माता! मैं भगवान के अलावा किसी दूसरे को नहीं जानता,

सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मेरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥
सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥
क्योंकि मेरे प्राण तो उस (भगवान) में बस रहे हैं, जिसका यश एवं महिमा शिव और सनकादिक भी गाते हैं।॥ रहाउ॥

हिरदे प्रगासु गिआन गुर गंमित गगन मंडल महि धिआनानां ॥
हिरदे प्रगासु गिआन गुर गमित गगन मंडल महि धिआनानां ॥
गुरु को मिलने से ज्ञान का प्रकाश मेरे हृदय में प्रवेश कर गया है और मेरा ध्यान गगन मण्डल (दसम द्वार) में स्थिर हो गया है।

बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥१॥
बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥१॥
पाप का रोग, भय एवं दुनेिया के बन्धन दौड़ गए हैं और मेरी आत्मा ने अपने आत्मस्वरूप में ही सुख अनुभव कर लिया है॥ १॥

एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥
एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥
मेरी सुमति का प्रेम एक ईश्वर में ही बन गया है। एक ईश्वर को (सहारा) समझकर और उसमें विश्वस्त होकर किसी दूसरे को अब मन में नहीं लाता ।

चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥२॥
चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥२॥
मन की तृष्णाओं को त्यागकर चन्दन की सुगन्धि पैदा हो गई है और अहंकार मिट गया है॥ २॥

जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥
जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥
जो व्यक्ति ठाकुर जी का यश गाता है, उसका ध्यान करता है, उसके हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है।

तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥३॥
तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥३॥
जिसके हृदय में ईश्वर बस गया, उसकी किस्मत समझो, उसके माथे पर उत्तम भाग्य प्रकट हो गया॥ ३॥

ਕਾਟਿ ਸਕਤਿ ਸਿਵ ਸਹਜੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਓ ਏਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨਾਨਾ ॥

काटि सकति सिव सहजु प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥

शक्ति का प्रभाव दूर करके प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया तो सदैव पवित्र एक ईश्वर में मन लीन रहता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਗੁਰ ਭੇਟਿ ਮਹਾ ਸੁਖ ਭ੍ਰਮਤ ਰਹੇ ਮਨੁ ਮਾਨਾਨਾਂ ॥੪॥੨੩॥੭੪॥
कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानां ॥४॥२३॥७४॥
कबीर जी कहते हैं-गुरु को मिलकर मुझे महासुख प्राप्त हो गया है। मेरा मन दुविधा में भटकने से हटकर प्रसन्न हो गया है॥ ४॥ २३॥ ७४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਬਾਵਨ ਅਖਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੀ
रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की
रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

ਬਾਵਨ ਅਛਰ ਲੋਕ ਤ੍ਰੈ ਸਭੁ ਕਛੁ ਇਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥
बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥
तीनों लोकों (आकाश, पाताल एवं पृथ्वी) से लेकर सब कुछ जो पदार्थ हैं, वह इन बावन अक्षरों में ही हैं।

ਏ ਅਖਰ ਖਿਰਿ ਜਾਹਿਗੇ ਓਇ ਅਖਰ ਇਨ ਮਹਿ ਨਾਹਿ ॥੧॥
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥१॥
ये अक्षर नाश हो जाएँगे लेकिन वह अनश्वर परमात्मा इन अक्षरों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता ॥१॥

ਜਹਾ ਬੋਲ ਤਹ ਅਛਰ ਆਵਾ ॥
जहा बोल तह अछर आवा ॥
जहाँ बोल हैं, वहाँ अक्षर हैं।

ਜਹ ਅਬੋਲ ਤਹ ਮਨੁ ਨ ਰਹਾਵਾ ॥
जह अबोल तह मनु न रहावा ॥
जहाँ वचन (बोल) नहीं, वहाँ मन स्थिर नहीं रहता।

ਬੋਲ ਅਬੋਲ ਮਧਿ ਹੈ ਸੋਈ ॥
बोल अबोल मधि है सोई ॥
वचन एवं चुप (मौन) दोनों में वह प्रभु बसता है।

ਜਸ ਓਹੁ ਹੈ ਤਸ ਲਖੈ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥
जस ओहु है तस लखै न कोई ॥२॥
जैसा प्रभु है, वैसा उसे कोई समझ नहीं सकता ॥ २॥

ਅਲਹ ਲਹਉ ਤਉ ਕਿਆ ਕਹਉ ਕਹਉ ਤ ਕੋ ਉਪਕਾਰ ॥
अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥
अ-यदि मैं अल्लाह को प्राप्त कर भी लूं तो मैं उसका सही वर्णन नहीं कर सकता। उसका यशोगान करने से मैं दूसरों का क्या भला कर सकता हूँ?

ਬਟਕ ਬੀਜ ਮਹਿ ਰਵਿ ਰਹਿਓ ਜਾ ਕੋ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਬਿਸਥਾਰ ॥੩॥
बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥३॥
जिस परमेश्वर का प्रसार तीन लोकों में मौजूद है, वह (ऐसे व्याप्त है जैसे) बरगद के वृक्ष के बीज में व्यापक हो रहा है॥ ३॥

ਅਲਹ ਲਹੰਤਾ ਭੇਦ ਛੈ ਕਛੁ ਕਛੁ ਪਾਇਓ ਭੇਦ ॥
अलह लहंता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥
अ-जो अल्लाह को समझता है और उसके रहस्य को अल्पमात्र भी समझता है, उसके लिए जुदाई लुप्त हो जाती है।

ਉਲਟਿ ਭੇਦ ਮਨੁ ਬੇਧਿਓ ਪਾਇਓ ਅਭੰਗ ਅਛੇਦ ॥੪॥
उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥४॥
जब प्राणी दुनिया की ओर से पलट जाता है, उसका हृदय प्रभु के रहस्य से बिंध जाता है और वह अमर एवं अबोध प्रभु को पा लेता है॥ ४॥

ਤੁਰਕ ਤਰੀਕਤਿ ਜਾਨੀਐ ਹਿੰਦੂ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥
तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू बेद पुरान ॥
मुसलमान तरीकत द्वारा अल्लाह को समझता है और हिन्दु वेदों एवं पुराणों द्वारा भगवान को समझता है।

ਮਨ ਸਮਝਾਵਨ ਕਾਰਨੇ ਕਛੂਅਕ ਪੜੀਐ ਗਿਆਨ ॥੫॥
मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥५॥
अपने मन को सन्मार्ग पर लगाने के लिए मनुष्य को कुछ ज्ञान एवं विद्या का अध्ययन करना चाहिए॥ ५॥

ਓਅੰਕਾਰ ਆਦਿ ਮੈ ਜਾਨਾ ॥
ओअंकार आदि मै जाना ॥
ओ-जो ऑकार सबकी रचना करने वाला है, मैं केवल उस प्रभु को जानता हूँ।

ਲਿਖਿ ਅਰੁ ਮੇਟੈ ਤਾਹਿ ਨ ਮਾਨਾ ॥
लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥
मैं उस पर भरोसा नहीं रखता, जिसे प्रभु लिखता (रचना करता) और मिटा देता है।

ਓਅੰਕਾਰ ਲਖੈ ਜਉ ਕੋਈ ॥
ओअंकार लखै जउ कोई ॥
यदि कोई एक ईश्वर के दर्शन कर ले तो

ਸੋਈ ਲਖਿ ਮੇਟਣਾ ਨ ਹੋਈ ॥੬॥
सोई लखि मेटणा न होई ॥६॥
दर्शन करने से उसका नाश नहीं होता। ६॥

ਕਕਾ ਕਿਰਣਿ ਕਮਲ ਮਹਿ ਪਾਵਾ ॥
कका किरणि कमल महि पावा ॥
क-जब ज्ञान की किरणे हृदय-कमल में प्रवेश कर जाती हैं

ਸਸਿ ਬਿਗਾਸ ਸੰਪਟ ਨਹੀ ਆਵਾ ॥
ससि बिगास स्मपट नही आवा ॥
तो (माया रूपी) चन्द्रमा की चांदनी हृदय कमल में प्रवेश नहीं करती

ਅਰੁ ਜੇ ਤਹਾ ਕੁਸਮ ਰਸੁ ਪਾਵਾ ॥
अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥
और यदि मनुष्य वहाँ आत्मिक पुष्प के रस को प्राप्त कर ले तो वह उस अकथनीय स्वाद का कथन नहीं कर सकेगा।

ਅਕਹ ਕਹਾ ਕਹਿ ਕਾ ਸਮਝਾਵਾ ॥੭॥
अकह कहा कहि का समझावा ॥७॥
वर्णन करने से वह किसे इसका बोध करवा सकता है? ॥ ७ ॥

ਖਖਾ ਇਹੈ ਖੋੜਿ ਮਨ ਆਵਾ ॥
खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥
ख-यह आत्मा प्रभु की गुफा में प्रवेश कर गई है।

ਖੋੜੇ ਛਾਡਿ ਨ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਵਾ ॥
खोड़े छाडि न दह दिस धावा ॥
गुफा को त्याग कर यह आत्मा अब दसों दिशाओं में नहीं भटकती।

ਖਸਮਹਿ ਜਾਣਿ ਖਿਮਾ ਕਰਿ ਰਹੈ ॥
खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥
जब मालिक प्रभु को अनुभव करके मनुष्य दया में विचरता है तो

ਤਉ ਹੋਇ ਨਿਖਿਅਉ ਅਖੈ ਪਦੁ ਲਹੈ ॥੮॥
तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥८॥
वह अमर हो जाता है और अमर पदवी प्राप्त कर लेता है ॥ ८ ॥

ਗਗਾ ਗੁਰ ਕੇ ਬਚਨ ਪਛਾਨਾ ॥
गगा गुर के बचन पछाना ॥
ग-जो मनुष्य गुरु के वचन को पहचानता है,

ਦੂਜੀ ਬਾਤ ਨ ਧਰਈ ਕਾਨਾ ॥
दूजी बात न धरई काना ॥
वह दूसरी बातों की तरफ अपने कान ही नहीं करता।

ਰਹੈ ਬਿਹੰਗਮ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਈ ॥
रहै बिहंगम कतहि न जाई ॥
वह पक्षी की भाँति सदैव निर्लिप्त रहता है, कभी भी नहीं भटकता।

ਅਗਹ ਗਹੈ ਗਹਿ ਗਗਨ ਰਹਾਈ ॥੯॥
अगह गहै गहि गगन रहाई ॥९॥
जिस ईश्वर को संसार की मोहिनी प्रभावित नहीं कर सकती, उसे वह अपने हृदय में बसा लेता है, हृदय में बसाकर अपनी वृति को प्रभु-चरणों में टिकाए रखता है ॥९॥

ਘਘਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਨਿਮਸੈ ਸੋਈ ॥
घघा घटि घटि निमसै सोई ॥
घ-वह प्रभु कण-कण (हरेक हृदय) में वास करता है।

ਘਟ ਫੂਟੇ ਘਟਿ ਕਬਹਿ ਨ ਹੋਈ ॥
घट फूटे घटि कबहि न होई ॥
जब शरीर रूपी घड़ा टूट जाता है तो वह कभी कम नहीं होता।

ਤਾ ਘਟ ਮਾਹਿ ਘਾਟ ਜਉ ਪਾਵਾ ॥
ता घट माहि घाट जउ पावा ॥
जब उस हृदय में मनुष्य प्रभु-मार्ग प्राप्त कर लेता है तो

ਸੋ ਘਟੁ ਛਾਡਿ ਅਵਘਟ ਕਤ ਧਾਵਾ ॥੧੦॥
सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥१०॥
उस मार्ग को त्याग कर वह दूसरे विषम मार्ग की तरफ क्यों जाए ? ॥ १० ॥

ਙੰਙਾ ਨਿਗ੍ਰਹਿ ਸਨੇਹੁ ਕਰਿ ਨਿਰਵਾਰੋ ਸੰਦੇਹ ॥
ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥
ङ-हे भाई ! अपनी इन्दियों पर अंकुश लगा, अपने प्रभु से प्रेम कर और अपनी दुविधा दूर कर दे।

ਨਾਹੀ ਦੇਖਿ ਨ ਭਾਜੀਐ ਪਰਮ ਸਿਆਨਪ ਏਹ ॥੧੧॥
नाही देखि न भाजीऐ परम सिआनप एह ॥११॥
चाहे तुझे अपने प्रभु का मार्ग दिखाई नहीं देता तो (इस काम से) भागना नहीं चाहिए। यही बड़ी बुद्धिमानी है॥ ११॥

ਚਚਾ ਰਚਿਤ ਚਿਤ੍ਰ ਹੈ ਭਾਰੀ ॥
चचा रचित चित्र है भारी ॥
च-ईश्वर द्वारा रचित यह दुनिया एक बहुत बड़ा चित्र है।

ਤਜਿ ਚਿਤ੍ਰੈ ਚੇਤਹੁ ਚਿਤਕਾਰੀ ॥
तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥
हे प्राणी ! चित्रकारी (दुनिया) को त्याग कर चित्रकार (प्रभु) को स्मरण कर।

ਚਿਤ੍ਰ ਬਚਿਤ੍ਰ ਇਹੈ ਅਵਝੇਰਾ ॥
चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥
यह विचित्र चित्र (दुनिया) ही विवादों का मूल है।

ਤਜਿ ਚਿਤ੍ਰੈ ਚਿਤੁ ਰਾਖਿ ਚਿਤੇਰਾ ॥੧੨॥
तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥१२॥
चित्र छोड़कर चित्रकार (प्रभु) में अपने हृदय को पिरोकर रख॥ १२॥

ਛਛਾ ਇਹੈ ਛਤ੍ਰਪਤਿ ਪਾਸਾ ॥
छछा इहै छत्रपति पासा ॥
छ-छत्रपति प्रभु यहाँ तेरे साथ ही है।

ਛਕਿ ਕਿ ਨ ਰਹਹੁ ਛਾਡਿ ਕਿ ਨ ਆਸਾ ॥
छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥
हे मन! तू क्यों और किसके लिए तृष्णाएँ त्यागकर प्रसन्न नहीं रहता ?

ਰੇ ਮਨ ਮੈ ਤਉ ਛਿਨ ਛਿਨ ਸਮਝਾਵਾ ॥
रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥
हे मन ! क्षण-क्षण मैं तुझे उपदेश देता हूँ।

ਤਾਹਿ ਛਾਡਿ ਕਤ ਆਪੁ ਬਧਾਵਾ ॥੧੩॥
ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥१३॥
उसे (प्रभु को) त्याग कर तू क्यों अपने आपको माया के विकारों में फँसाते हो ? ॥ १३ ॥

ਜਜਾ ਜਉ ਤਨ ਜੀਵਤ ਜਰਾਵੈ ॥
जजा जउ तन जीवत जरावै ॥
ज-जब (कोई प्राणी) माया में रहता हुआ ही शरीर (की लालसाएँ) जला लेता है,

ਜੋਬਨ ਜਾਰਿ ਜੁਗਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈ ॥
जोबन जारि जुगति सो पावै ॥
वह मनुष्य यौवन जलाकर सन्मार्ग पा लेता है।

ਅਸ ਜਰਿ ਪਰ ਜਰਿ ਜਰਿ ਜਬ ਰਹੈ ॥
अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥
जब मनुष्य अपने धन के अहंकार को एवं पराई दौलत को जलाकर संयम में रहता है,

ਤਬ ਜਾਇ ਜੋਤਿ ਉਜਾਰਉ ਲਹੈ ॥੧੪॥
तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥१४॥
तो सर्वोच्च अवस्था में पहुँचकर ईश्वर की ज्योति का उजाला प्राप्त करता है॥ १४॥

ਝਝਾ ਉਰਝਿ ਸੁਰਝਿ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥
झझा उरझि सुरझि नही जाना ॥
झ-हे जीव ! तू दुनिया (के मोह) में उलझ गया है और अपने आपको इससे मुक्त करवाना नहीं जानता।

ਰਹਿਓ ਝਝਕਿ ਨਾਹੀ ਪਰਵਾਨਾ ॥
रहिओ झझकि नाही परवाना ॥
तुम संकोच कर रहे हो और ईश्वर को स्वीकृत नहीं हुए।

ਕਤ ਝਖਿ ਝਖਿ ਅਉਰਨ ਸਮਝਾਵਾ ॥
कत झखि झखि अउरन समझावा ॥
दूसरों को संतुष्ट करवाने के लिए तुम क्यों वाद-विवाद करते हो ?

ਝਗਰੁ ਕੀਏ ਝਗਰਉ ਹੀ ਪਾਵਾ ॥੧੫॥
झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥१५॥
क्योंकि झगड़ा करने से झगड़ा ही तुझे मिलेगा ॥ १५॥

ਞੰਞਾ ਨਿਕਟਿ ਜੁ ਘਟ ਰਹਿਓ ਦੂਰਿ ਕਹਾ ਤਜਿ ਜਾਇ ॥
ञंञा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥
ञ-वह परमात्मा तेरे निकट तेरे हृदय में बसता है, उसे छोड़कर तू दूर कहाँ जाता है ?

ਜਾ ਕਾਰਣਿ ਜਗੁ ਢੂਢਿਅਉ ਨੇਰਉ ਪਾਇਅਉ ਤਾਹਿ ॥੧੬॥
जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइअउ ताहि ॥१६॥
जिस प्रभु के लिए मैंने सारा जगत् खोजा है, उसे मैंने निकट ही प्राप्त कर लिया है॥ १६॥

ਟਟਾ ਬਿਕਟ ਘਾਟ ਘਟ ਮਾਹੀ ॥
टटा बिकट घाट घट माही ॥
ट-ईश्वर का कठिन मार्ग मनुष्य के हृदय में ही है।

ਖੋਲਿ ਕਪਾਟ ਮਹਲਿ ਕਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥
खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥
कपाट खोलकर तू क्यों उसके महल में नहीं पहुँचता ?

ਦੇਖਿ ਅਟਲ ਟਲਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਵਾ ॥
देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥
सदा स्थिर प्रभु को देखकर तुम डगमगा कर कहीं नहीं जाओगे।

ਰਹੈ ਲਪਟਿ ਘਟ ਪਰਚਉ ਪਾਵਾ ॥੧੭॥
रहै लपटि घट परचउ पावा ॥१७॥
तुम प्रभु से लिपटे रहोगे और तेरा हृदय प्रसन्न होगा ॥ १७ ॥

ਠਠਾ ਇਹੈ ਦੂਰਿ ਠਗ ਨੀਰਾ ॥
ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥
ठ-(हे जीव !) इस माया की मृगतृष्णा के जल से अपने आपको दूर रख।

ਨੀਠਿ ਨੀਠਿ ਮਨੁ ਕੀਆ ਧੀਰਾ ॥
नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥
बड़ी मुश्किल से मैंने अपने मन को धैर्यवान किया है।

ਜਿਨਿ ਠਗਿ ਠਗਿਆ ਸਗਲ ਜਗੁ ਖਾਵਾ ॥
जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥
जिस छलिए ने सारे जगत् को छल कर निगल लिया है।

ਸੋ ਠਗੁ ਠਗਿਆ ਠਉਰ ਮਨੁ ਆਵਾ ॥੧੮॥
सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥१८॥
मैंने उस छलिया (प्रभु) को छल लिया है, मेरा हृदय अब सुख में है॥ १८ ॥

ਡਡਾ ਡਰ ਉਪਜੇ ਡਰੁ ਜਾਈ ॥
डडा डर उपजे डरु जाई ॥
ड-जब प्रभु का डर उत्पन्न हो जाता है तो दूसरे डर निवृत्त हो जाते हैं।

ਤਾ ਡਰ ਮਹਿ ਡਰੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥
उस डर में दूसरे डर लीन रहते हैं।

ਜਉ ਡਰ ਡਰੈ ਤ ਫਿਰਿ ਡਰੁ ਲਾਗੈ ॥
जउ डर डरै त फिरि डरु लागै ॥
जब मनुष्य प्रभु के डर को त्याग देता है तो उसे दूसरे डर आकर लिपट जाते हैं।

ਨਿਡਰ ਹੂਆ ਡਰੁ ਉਰ ਹੋਇ ਭਾਗੈ ॥੧੯॥
निडर हूआ डरु उर होइ भागै ॥१९॥
यदि वह निडर हो जाए तो उसके मन के डर दौड़ जाते हैं।॥ १६ ॥

ਢਢਾ ਢਿਗ ਢੂਢਹਿ ਕਤ ਆਨਾ ॥
ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥
ढ-ईश्वर तो तेरे समीप ही है, तू उसे कहाँ ढूंढता है?

ਢੂਢਤ ਹੀ ਢਹਿ ਗਏ ਪਰਾਨਾ ॥
ढूढत ही ढहि गए पराना ॥
बाहर ढूंढते-ढूंढते तेरे प्राण भी थक गए हैं।

ਚੜਿ ਸੁਮੇਰਿ ਢੂਢਿ ਜਬ ਆਵਾ ॥
चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥
सुमेर पर्वत पर भी चढ़कर और ईश्वर को ढूंढते-ढूंढते जब मनुष्य अपने देहि में आता है (अर्थात् अपने भीतर देखता है),"

ਜਿਹ ਗੜੁ ਗੜਿਓ ਸੁ ਗੜ ਮਹਿ ਪਾਵਾ ॥੨੦॥
जिह गड़ु गड़िओ सु गड़ महि पावा ॥२०॥
तो वह ईश्वर इस (देहि रूपी) किले में ही मिल जाता है, जिसने यह देहि-रूपी किला रचा है॥ २० ॥

ਣਾਣਾ ਰਣਿ ਰੂਤਉ ਨਰ ਨੇਹੀ ਕਰੈ ॥
णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥
ण-रणभूमि में जूझता हुआ जो व्यक्ति विकारों को वश में करने की सामथ्र्य हासिल कर लेता है,

ਨਾ ਨਿਵੈ ਨਾ ਫੁਨਿ ਸੰਚਰੈ ॥
ना निवै ना फुनि संचरै ॥
जो न झुकता है और न ही विकारों से मेल करता है,

ਧੰਨਿ ਜਨਮੁ ਤਾਹੀ ਕੋ ਗਣੈ ॥
धंनि जनमु ताही को गणै ॥
संसार उसी व्यक्ति को तकदीर वाला मानता है,

ਮਾਰੈ ਏਕਹਿ ਤਜਿ ਜਾਇ ਘਣੈ ॥੨੧॥
मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥२१॥
क्योंकि वह मनुष्य एक मन को मारता है और इन अधिकतर विकारों को त्याग देता है॥ २१॥

ਤਤਾ ਅਤਰ ਤਰਿਓ ਨਹ ਜਾਈ ॥
तता अतर तरिओ नह जाई ॥
त-यह नश्वर दुनिया एक ऐसा सागर है, जिसे पार करना विषम है,

ਤਨ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਮਹਿ ਰਹਿਓ ਸਮਾਈ ॥
तन त्रिभवण महि रहिओ समाई ॥
जिसमें से पार हुआ नहीं जा सकता (क्योंकि) नेत्र, कान, नाक इत्यादि ज्ञानेन्द्रियाँ दुनिया के रसों में डूबे रहते हैं,

ਜਉ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਤਨ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵਾ ॥
जउ त्रिभवण तन माहि समावा ॥
परन्तु जब दुनिया के रस देहि के भीतर ही नाश हो जाते हैं

ਤਉ ਤਤਹਿ ਤਤ ਮਿਲਿਆ ਸਚੁ ਪਾਵਾ ॥੨੨॥
तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥२२॥
तब (प्राणी की) आत्मा परम ज्योति में लीन हो जाती है, तब सत्य स्वरुप परमात्मा मिल जाता है॥ २२ ॥

ਥਥਾ ਅਥਾਹ ਥਾਹ ਨਹੀ ਪਾਵਾ ॥
थथा अथाह थाह नही पावा ॥
थ-परमेश्वर अथाह है। उसकी गहराई जानी नहीं जा सकती।

ਓਹੁ ਅਥਾਹ ਇਹੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਵਾ ॥
ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥
प्रभु अनन्त है परन्तु यह शरीर स्थिर नहीं रहता (अर्थात् मिट्टी हो जाता है)

ਥੋੜੈ ਥਲਿ ਥਾਨਕ ਆਰੰਭੈ ॥
थोड़ै थलि थानक आर्मभै ॥
थोड़ी-सी भूमि पर मनुष्य नगर का निर्माण प्रारम्भ कर देता है।

ਬਿਨੁ ਹੀ ਥਾਭਹ ਮੰਦਿਰੁ ਥੰਭੈ ॥੨੩॥
बिनु ही थाभह मंदिरु थ्मभै ॥२३॥
स्तम्भों के बिना वह महल को तहराना चाहता है॥ २३ ॥

ਦਦਾ ਦੇਖਿ ਜੁ ਬਿਨਸਨਹਾਰਾ ॥
ददा देखि जु बिनसनहारा ॥
द-जो यह जगत् दिखाई दे रहा है, यह समूचा नाशवान है,

ਜਸ ਅਦੇਖਿ ਤਸ ਰਾਖਿ ਬਿਚਾਰਾ ॥
जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥
"(हे भाई !) तू सदा ईश्वर में वृति लगा, जो (इन नेत्रों से) दिखाई नहीं देता है।

ਦਸਵੈ ਦੁਆਰਿ ਕੁੰਚੀ ਜਬ ਦੀਜੈ ॥
दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥
लेकिन जब दसम द्वार में ज्ञान की कुंजी लगाई जाती है

ਤਉ ਦਇਆਲ ਕੋ ਦਰਸਨੁ ਕੀਜੈ ॥੨੪॥
तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥२४॥
तो दयालु ईश्वर के दर्शन किए जा सकते हैं।॥ २४॥

ਧਧਾ ਅਰਧਹਿ ਉਰਧ ਨਿਬੇਰਾ ॥ ਅਰਧਹਿ ਉਰਧਹ ਮੰਝਿ ਬਸੇਰਾ ॥
धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥
ध-यदि मनुष्य निम्न मण्डल से उच्च मण्डल को उड़ान भर ले तो सारी बात समाप्त हो जाती है।धरती एवं गगन में ईश्वर का बसेरा है।

ਅਰਧਹ ਛਾਡਿ ਉਰਧ ਜਉ ਆਵਾ ॥
अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥
जब धरती को त्याग आत्मा गगन में जाती है तो

ਤਉ ਅਰਧਹਿ ਉਰਧ ਮਿਲਿਆ ਸੁਖ ਪਾਵਾ ॥੨੫॥
तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥२५॥
आत्मा एवं परमात्मा मिल जाते हैं और सुख प्राप्त होता है॥ २५॥

ਨੰਨਾ ਨਿਸਿ ਦਿਨੁ ਨਿਰਖਤ ਜਾਈ ॥
नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥
न-प्रभु को देखते प्रतीक्षा में मेरी रात्रि एवं दिन गुजरते हैं।

ਨਿਰਖਤ ਨੈਨ ਰਹੇ ਰਤਵਾਈ ॥
निरखत नैन रहे रतवाई ॥
इस तरह देखने से (प्रतीक्षा में) मेरे नेत्र रक्त समान लाल हो गए हैं।

ਨਿਰਖਤ ਨਿਰਖਤ ਜਬ ਜਾਇ ਪਾਵਾ ॥
निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥
दर्शन की अभिलाषा करते-करते जब अंततः दर्शन होता है तो

ਤਬ ਲੇ ਨਿਰਖਹਿ ਨਿਰਖ ਮਿਲਾਵਾ ॥੨੬॥
तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥२६॥
वह इष्ट-प्रभु दर्शन के अभिलाषी अपने भक्त को अपने साथ मिला लेता है॥ २६॥

ਪਪਾ ਅਪਰ ਪਾਰੁ ਨਹੀ ਪਾਵਾ ॥
पपा अपर पारु नही पावा ॥
प-परमात्मा अपार है और उसका पार जाना नहीं जा सकता।

ਪਰਮ ਜੋਤਿ ਸਿਉ ਪਰਚਉ ਲਾਵਾ ॥
परम जोति सिउ परचउ लावा ॥
मैंने परम ज्योति (प्रभु) से प्रेम लगा लिया है।

ਪਾਂਚਉ ਇੰਦ੍ਰੀ ਨਿਗ੍ਰਹ ਕਰਈ ॥
पांचउ इंद्री निग्रह करई ॥
जो कोई मनुष्य अपनी पाँचों-ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर लेता है,

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਦੋਊ ਨਿਰਵਰਈ ॥੨੭॥
पापु पुंनु दोऊ निरवरई ॥२७॥
वह पाप एवं पुण्य दोनों से मुक्ति पा लेता है॥ २७॥

ਫਫਾ ਬਿਨੁ ਫੂਲਹ ਫਲੁ ਹੋਈ ॥
फफा बिनु फूलह फलु होई ॥
फ-फूल के बिना ही फल उत्पन्न हुआ है।

ਤਾ ਫਲ ਫੰਕ ਲਖੈ ਜਉ ਕੋਈ ॥
ता फल फंक लखै जउ कोई ॥
यदि कोई मनुष्य उस फल की फांक को देख ले और उस फांक का चिन्तन करता है,

ਦੂਣਿ ਨ ਪਰਈ ਫੰਕ ਬਿਚਾਰੈ ॥
दूणि न परई फंक बिचारै ॥
वह (जन्म-मरण) आवागमन में नहीं पड़ता।

ਤਾ ਫਲ ਫੰਕ ਸਭੈ ਤਨ ਫਾਰੈ ॥੨੮॥
ता फल फंक सभै तन फारै ॥२८॥
फल की वह फांक समस्त शरीरों को फाड़ देती है॥ २८ ॥

ਬਬਾ ਬਿੰਦਹਿ ਬਿੰਦ ਮਿਲਾਵਾ ॥
बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥
ब-जब बूंद से बूंद मिल जाती है तो

ਬਿੰਦਹਿ ਬਿੰਦਿ ਨ ਬਿਛੁਰਨ ਪਾਵਾ ॥
बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥
यह बूंदें पुनः अलग नहीं होती।

ਬੰਦਉ ਹੋਇ ਬੰਦਗੀ ਗਹੈ ॥
बंदउ होइ बंदगी गहै ॥
प्रभु का सेवक बनकर जो मनुष्य प्रेमपूर्वक प्रभु-भक्ति करता है,

ਬੰਦਕ ਹੋਇ ਬੰਧ ਸੁਧਿ ਲਹੈ ॥੨੯॥
बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥२९॥
वह (प्रभु के द्वार का) स्तुति करने वाला (माया-मोह के) बन्धनों का रहस्य पा लेता है॥२९॥

ਭਭਾ ਭੇਦਹਿ ਭੇਦ ਮਿਲਾਵਾ ॥
भभा भेदहि भेद मिलावा ॥
भ-दुविधा को भेदने (दूर करने) से मनुष्य का प्रभु से मिलन हो जाता है।

ਅਬ ਭਉ ਭਾਨਿ ਭਰੋਸਉ ਆਵਾ ॥
अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥
भय को नाश करके अब मेरी ईश्वर में श्रद्धा बन गई है।

ਜੋ ਬਾਹਰਿ ਸੋ ਭੀਤਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
जो बाहरि सो भीतरि जानिआ ॥
जिसे मैं अपने आप से बाहर ख्याल करता था, उसे अब मैं अपने भीतर समझता हूँ।

ਭਇਆ ਭੇਦੁ ਭੂਪਤਿ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥੩੦॥
भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥३०॥
जब मुझे इस भेद का ज्ञान हुआ तो मैंने जगत् के मालिक को पहचान लिया ॥ ३०॥

ਮਮਾ ਮੂਲ ਗਹਿਆ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥
ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥
म-यदि सृष्टि के मूल परमात्मा को अपने मन में बसा लिया जाए तो

ਮਰਮੀ ਹੋਇ ਸੁ ਮਨ ਕਉ ਜਾਨੈ ॥
मरमी होइ सु मन कउ जानै ॥
मन कुमार्गगामी होने से बच जाता है।

ਮਤ ਕੋਈ ਮਨ ਮਿਲਤਾ ਬਿਲਮਾਵੈ ॥
मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥
जो जीव यह रहस्य पा लेता है, वह मन को समझ लेता है। (इसलिए) कोई भी मनुष्य अपनी आत्मा को प्रभु के साथ सम्मिलित करने में देरी न करे।

ਮਗਨ ਭਇਆ ਤੇ ਸੋ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥੩੧॥
मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥३१॥
जो मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा को पा लेते हैं, वे प्रसन्नता में भीग जाते हैं।॥ ३१॥

ਮਮਾ ਮਨ ਸਿਉ ਕਾਜੁ ਹੈ ਮਨ ਸਾਧੇ ਸਿਧਿ ਹੋਇ ॥
ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥
जीवात्मा का काम अपने मन के साथ है। जो मन को वश में करता है, वह मनोरथ की सफलता पा लेता है।

ਮਨ ਹੀ ਮਨ ਸਿਉ ਕਹੈ ਕਬੀਰਾ ਮਨ ਸਾ ਮਿਲਿਆ ਨ ਕੋਇ ॥੩੨॥
मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥३२॥
कबीर जी कहते हैं-मेरा आदान-प्रदान केवल अपने मन से है। मुझे मन जैसा दूसरा कोई नहीं मिला ॥ ३२ ॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਸਕਤੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਸੀਉ ॥
इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥
यह मन शक्ति है। यह मन शिव है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਪੰਚ ਤਤ ਕੋ ਜੀਉ ॥
इहु मनु पंच तत को जीउ ॥
यह मन शरीर के पाँच तत्वों के प्राण हैं।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਲੇ ਜਉ ਉਨਮਨਿ ਰਹੈ ॥
इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥
अपने मन को वश में करके जब मनुष्य परम-प्रसन्नता की अवस्था में विचरता है

ਤਉ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਕੀ ਬਾਤੈ ਕਹੈ ॥੩੩॥
तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥३३॥
तो वह तीनों लोकों के रहस्य बता सकता है॥ ३३ ॥

ਯਯਾ ਜਉ ਜਾਨਹਿ ਤਉ ਦੁਰਮਤਿ ਹਨਿ ਕਰਿ ਬਸਿ ਕਾਇਆ ਗਾਉ ॥
यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ गाउ ॥
य-(हे भाई !) यदि तुम कुछ जानते हो तो अपनी दुर्बुद्धि का नाश कर दो और अपने शरीर रूपी गांव को वश में करो।

ਰਣਿ ਰੂਤਉ ਭਾਜੈ ਨਹੀ ਸੂਰਉ ਥਾਰਉ ਨਾਉ ॥੩੪॥
रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥३४॥
यदि तू इस युद्ध में लगकर पराजित नहीं होवोगे तो ही तेरा नाम शूरवीर हो सकता है॥ ३४ ॥

ਰਾਰਾ ਰਸੁ ਨਿਰਸ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
रारा रसु निरस करि जानिआ ॥
र-जिस प्राणी ने माया के स्वाद को फीका-सा समझ लिया है,

ਹੋਇ ਨਿਰਸ ਸੁ ਰਸੁ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥
होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥
उसने भौतिक आस्वादनों से बचे रहकर वह आत्मिक आनंद प्राप्त कर लिया है।

ਇਹ ਰਸ ਛਾਡੇ ਉਹ ਰਸੁ ਆਵਾ ॥
इह रस छाडे उह रसु आवा ॥
जिसने यह लौकिक आस्वादन त्याग दिए हैं, उसे वह (ईश्वर के नाम का आनन्द) प्राप्त हो गया है,

ਉਹ ਰਸੁ ਪੀਆ ਇਹ ਰਸੁ ਨਹੀ ਭਾਵਾ ॥੩੫॥
उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥३५॥
जिसने वह (नाम) रस पान किया है, उसे (यह माया वाला) आस्वादन अच्छा नहीं लगता ॥ ३५ ॥

ਲਲਾ ਐਸੇ ਲਿਵ ਮਨੁ ਲਾਵੈ ॥
लला ऐसे लिव मनु लावै ॥
ल-अपने मन में मनुष्य को प्रभु से ऐसा प्रेम लगाना चाहिए कि

ਅਨਤ ਨ ਜਾਇ ਪਰਮ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥
अनत न जाइ परम सचु पावै ॥
वह किसी दूसरे के पास मत जाए और सत्य को प्राप्त करे और

ਅਰੁ ਜਉ ਤਹਾ ਪ੍ਰੇਮ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥
अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥
यदि वहाँ, वह उसके लिए प्रेम एवं प्रीति उत्पन्न कर ले,

ਤਉ ਅਲਹ ਲਹੈ ਲਹਿ ਚਰਨ ਸਮਾਵੈ ॥੩੬॥
तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥३६॥
वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है और प्राप्त करके उसके चरणों में लीन हो जाता है।॥ ३६ ॥

ਵਵਾ ਬਾਰ ਬਾਰ ਬਿਸਨ ਸਮ੍ਹਾਰਿ ॥
ववा बार बार बिसन सम्हारि ॥
व-बार-बार अपने प्रभु को स्मरण कर।

ਬਿਸਨ ਸੰਮ੍ਹਾਰਿ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥
बिसन सम्हारि न आवै हारि ॥
प्रभु को स्मरण करने से तुझे जीवन रूपी बाजी में पराजित नहीं होना पड़ेगा।

ਬਲਿ ਬਲਿ ਜੇ ਬਿਸਨਤਨਾ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ॥
बलि बलि जे बिसनतना जसु गावै ॥
मैं उन भक्तजनों पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जो प्रभु का यश गाते हैं।

ਵਿਸਨ ਮਿਲੇ ਸਭ ਹੀ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ॥੩੭॥
विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥३७॥
प्रभु को मिलने से सत्य प्राप्त होता है॥ ३७॥

ਵਾਵਾ ਵਾਹੀ ਜਾਨੀਐ ਵਾ ਜਾਨੇ ਇਹੁ ਹੋਇ ॥
वावा वाही जानीऐ वा जाने इहु होइ ॥
व-(हे भाई !) उस परमेश्वर के साथ जान-पहचान करनी चाहिए। उसे अनुभव करने से यह जीव उस जैसा ही हो जाता है।

ਇਹੁ ਅਰੁ ਓਹੁ ਜਬ ਮਿਲੈ ਤਬ ਮਿਲਤ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥੩੮॥
इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥३८॥
जब यह जीव एवं वह प्रभु एकरूप हो जाते हैं तो इस मिलन को कोई नहीं समझ सकता ॥ ३८ ॥

ਸਸਾ ਸੋ ਨੀਕਾ ਕਰਿ ਸੋਧਹੁ ॥
ससा सो नीका करि सोधहु ॥
स-उस मन को पूर्णतया साध लो।

ਘਟ ਪਰਚਾ ਕੀ ਬਾਤ ਨਿਰੋਧਹੁ ॥
घट परचा की बात निरोधहु ॥
अपने आपको हरेक बात से रोको, जो मन को बहकाती है।

ਘਟ ਪਰਚੈ ਜਉ ਉਪਜੈ ਭਾਉ ॥
घट परचै जउ उपजै भाउ ॥
जब प्रभु का प्रेम उत्पन्न हो जाता है तो मन प्रसन्न हो जाता है।

ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਤਹ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਰਾਉ ॥੩੯॥
पूरि रहिआ तह त्रिभवण राउ ॥३९॥
वह तीन लोकों का राजा हर जगह मौजूद है॥३९॥

ਖਖਾ ਖੋਜਿ ਪਰੈ ਜਉ ਕੋਈ ॥
खखा खोजि परै जउ कोई ॥
ख-यदि कोई मनुष्य प्रभु की खोज में लग जाए

ਜੋ ਖੋਜੈ ਸੋ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਈ ॥
जो खोजै सो बहुरि न होई ॥
और उसे खोज कर पा लेता है तो वह दोबारा जन्मता-मरता नहीं।

ਖੋਜ ਬੂਝਿ ਜਉ ਕਰੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥
खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥
जब मनुष्य प्रभु को खोजता, समझता एवं उसका चिन्तन करता है तो

ਤਉ ਭਵਜਲ ਤਰਤ ਨ ਲਾਵੈ ਬਾਰਾ ॥੪੦॥
तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥४०॥
उसे भयानक संसार-सागर से पार होते देरी नहीं लगती॥ ४०॥

ਸਸਾ ਸੋ ਸਹ ਸੇਜ ਸਵਾਰੈ ॥
ससा सो सह सेज सवारै ॥
स-जिस जीव-स्त्री की सेज को कंत - प्रभु सुशोभित करता है,

ਸੋਈ ਸਹੀ ਸੰਦੇਹ ਨਿਵਾਰੈ ॥
सोई सही संदेह निवारै ॥
वह अपने संदेह को दूर कर देती है।

ਅਲਪ ਸੁਖ ਛਾਡਿ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਵਾ ॥
अलप सुख छाडि परम सुख पावा ॥
तुच्छ सुख को त्याग कर वह परम सुख को पा लेती है।

ਤਬ ਇਹ ਤ੍ਰੀਅ ਉਹੁ ਕੰਤੁ ਕਹਾਵਾ ॥੪੧॥
तब इह त्रीअ ओहु कंतु कहावा ॥४१॥
तब यह पत्नी कही जाती है और वह इसका पति कहलाता है॥ ४१ ॥

ਹਾਹਾ ਹੋਤ ਹੋਇ ਨਹੀ ਜਾਨਾ ॥
हाहा होत होइ नही जाना ॥
ह-ईश्वर कण-कण में विद्यमान है परन्तु मनुष्य उसके अस्तित्व को नहीं जानता।

ਜਬ ਹੀ ਹੋਇ ਤਬਹਿ ਮਨੁ ਮਾਨਾ ॥
जब ही होइ तबहि मनु माना ॥
जब वह उसके अस्तित्व को अनुभव कर लेता है, तो उसकी आत्मा विश्वस्त हो जाती है।

ਹੈ ਤਉ ਸਹੀ ਲਖੈ ਜਉ ਕੋਈ ॥
है तउ सही लखै जउ कोई ॥
ईश्वर तो अवश्य है लेकिन इस विश्वास का लाभ तब ही होता है जब कोई प्राणी इस बात को समझ ले।

ਤਬ ਓਹੀ ਉਹੁ ਏਹੁ ਨ ਹੋਈ ॥੪੨॥
तब ओही उहु एहु न होई ॥४२॥
तब यह प्राणी उस प्रभु का रूप हो जाता है, यह अलग अस्तित्व वाला नहीं रह जाता॥ ४२॥

ਲਿੰਉ ਲਿੰਉ ਕਰਤ ਫਿਰੈ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥
लिंउ लिंउ करत फिरै सभु लोगु ॥
समूचा संसार यही कहता फिरता है कि मैं (माया) सँभाल लूं, मैं (माया) एकत्रित कर लूं।

ਤਾ ਕਾਰਣਿ ਬਿਆਪੈ ਬਹੁ ਸੋਗੁ ॥
ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥
इस माया के कारण ही फिर प्राणी को बड़ी चिन्ता हो जाती है।

ਲਖਿਮੀ ਬਰ ਸਿਉ ਜਉ ਲਿਉ ਲਾਵੈ ॥
लखिमी बर सिउ जउ लिउ लावै ॥
परन्तु जब प्राणी लक्ष्मीपति प्रभु के साथ प्रीति लगाता है तो

ਸੋਗੁ ਮਿਟੈ ਸਭ ਹੀ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ॥੪੩॥
सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥४३॥
उसकी चिन्ता मिट जाती है और वह समस्त सुख प्राप्त कर लेता है॥ ४३॥

ਖਖਾ ਖਿਰਤ ਖਪਤ ਗਏ ਕੇਤੇ ॥
खखा खिरत खपत गए केते ॥
ख-अनेकों ही मनुष्य मरते-खपते नाश हो गए हैं।

ਖਿਰਤ ਖਪਤ ਅਜਹੂੰ ਨਹ ਚੇਤੇ ॥
खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥
इस तरह मरते-खपते आवागमन में पड़ा हुआ मनुष्य अभी तक प्रभु को स्मरण नहीं करता।

ਅਬ ਜਗੁ ਜਾਨਿ ਜਉ ਮਨਾ ਰਹੈ ॥
अब जगु जानि जउ मना रहै ॥
अब यदि संसार के यथार्थ को समझकर मन प्रभु में टिक जाए तो

ਜਹ ਕਾ ਬਿਛੁਰਾ ਤਹ ਥਿਰੁ ਲਹੈ ॥੪੪॥

जह का बिछुरा तह थिरु लहै ॥४४॥

जिस प्रभु से यह जुदा हुआ है, उसमें इसे बसेरा मिल सकता है॥ ४४ ॥

ਬਾਵਨ ਅਖਰ ਜੋਰੇ ਆਨਿ ॥
वन अखर जोरे आनि ॥
मनुष्य ने बावन अक्षर जोड़ लिए हैं।

ਸਕਿਆ ਨ ਅਖਰੁ ਏਕੁ ਪਛਾਨਿ ॥
सकिआ न अखरु एकु पछानि ॥
परन्तु वह ईश्वर के एक शब्द को नहीं पहचान सकता।

ਸਤ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਬੀਰਾ ਕਹੈ ॥
सत का सबदु कबीरा कहै ॥
कबीर सत्य वचन कहता है कि

ਪੰਡਿਤ ਹੋਇ ਸੁ ਅਨਭੈ ਰਹੈ ॥
पंडित होइ सु अनभै रहै ॥
पण्डित वही है, जो निडर होकर विचरता है।

ਪੰਡਿਤ ਲੋਗਹ ਕਉ ਬਿਉਹਾਰ ॥
पंडित लोगह कउ बिउहार ॥
अक्षरों को जोड़ना पण्डित पुरुषों का काम-धंधा है।

ਗਿਆਨਵੰਤ ਕਉ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰ ॥
गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥
ज्ञानवान ज्ञानी मनुष्य यथार्थ को सोचता-समझता है।

ਜਾ ਕੈ ਜੀਅ ਜੈਸੀ ਬੁਧਿ ਹੋਈ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਜਾਨੈਗਾ ਸੋਈ ॥੪੫॥
जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ कहि कबीर जानैगा सोई ॥४५॥
कबीर जी कहते हैं जैसी बुद्धि प्राणी के मन में है,वैसा ही वह समझता है॥ ४५ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਥਿਤੀਂ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀਂ ॥
रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥
रागु गउड़ी थित्तिं कबीर जी की ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਪੰਦ੍ਰਹ ਥਿਤੀਂ ਸਾਤ ਵਾਰ ॥
पंद्रह थितीं सात वार ॥
पन्द्रह तिथियाँ एवं सात सप्ताह के दिन हैं।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਉਰਵਾਰ ਨ ਪਾਰ ॥
कहि कबीर उरवार न पार ॥
कबीर कहता है-मैं उस ईश्वर का गुणानुवाद करता हूँ जो अनन्त है।

ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਲਖੈ ਜਉ ਭੇਉ ॥
साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥
साधक एवं सिद्ध जब प्रभु के रहस्य को समझ लेते हैं,

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਦੇਉ ॥੧॥
आपे करता आपे देउ ॥१॥
वह स्वयं सृजनहार-स्वरूप एवं स्वयं ही प्रभु रूप हो जाते हैं।॥ १॥

ਥਿਤੀਂ ॥
थितीं ॥
तिथि ॥

ਅੰਮਾਵਸ ਮਹਿ ਆਸ ਨਿਵਾਰਹੁ ॥
अमावस महि आस निवारहु ॥
अमावस्या के दिन अपनी अभिलाषाएँ त्याग कर

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਰਾਮੁ ਸਮਾਰਹੁ ॥
अंतरजामी रामु समारहु ॥
अन्तर्यामी राम को (अपने हृदय में) स्मरण करो।

ਜੀਵਤ ਪਾਵਹੁ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥
जीवत पावहु मोख दुआर ॥
इस प्रकार इसी जन्म में मोक्ष द्वार प्राप्त कर लोगे।

ਅਨਭਉ ਸਬਦੁ ਤਤੁ ਨਿਜੁ ਸਾਰ ॥੧॥
अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥१॥
"(इस स्मरण के प्रभाव से) तुम्हारा यथार्थ तत्व जाग जाएगा, गुरु का शब्द अनुभवी रूप में संचरित होगा।॥ १॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੋਬਿੰਦ ਰੰਗੁ ਲਾਗਾ ॥
चरन कमल गोबिंद रंगु लागा ॥
जिस प्राणी का प्रेम गोविन्द के सुन्दर चरणों के साथ बन जाता है और

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਮਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की कृपा से जिसका मन पवित्र हो जाता है, वह रात-दिन हरि का भजन करने में जागता रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਪਰਿਵਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰ ॥
परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥
एकम तिथि के दिन हे भाई ! प्रियतम प्रभु का चिन्तन करो।

ਘਟ ਮਹਿ ਖੇਲੈ ਅਘਟ ਅਪਾਰ ॥
घट महि खेलै अघट अपार ॥
अनन्त प्रभु हरेक हृदय में खेल रहा है।

ਕਾਲ ਕਲਪਨਾ ਕਦੇ ਨ ਖਾਇ ॥
काल कलपना कदे न खाइ ॥
मृत्यु का भय उसे कभी स्पर्श नहीं कर सकता

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥
आदि पुरख महि रहै समाइ ॥२॥
जो मनुष्य आदिपुरुष परमात्मा में लीन रहता है ॥ २॥

ਦੁਤੀਆ ਦੁਹ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਅੰਗ ॥
दुतीआ दुह करि जानै अंग ॥
द्वितीय-हे भाई ! समझ ले कि शरीर के अंग में (माया और ब्रह्म) दोनों खेल रहे हैं।

ਮਾਇਆ ਬ੍ਰਹਮ ਰਮੈ ਸਭ ਸੰਗ ॥
माइआ ब्रहम रमै सभ संग ॥
माया एवं ब्रह्म कण-कण से अभेद हुए हैं।

ਨਾ ਓਹੁ ਬਢੈ ਨ ਘਟਤਾ ਜਾਇ ॥
ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥
प्रभु न बढ़ता है और न ही घटता है

ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥੩॥
अकुल निरंजन एकै भाइ ॥३॥
वह अकुल, निरंजन एक ही है ॥ ३॥

ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਤੀਨੇ ਸਮ ਕਰਿ ਲਿਆਵੈ ॥
त्रितीआ तीने सम करि लिआवै ॥
तृतीय-यदि प्रभु की स्तुति करने वाला मनुष्य माया के तीनों गुणों को सहज अवस्था में समान रखता है,

ਆਨਦ ਮੂਲ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ॥
आनद मूल परम पदु पावै ॥
वह मनुष्य परम पद प्राप्त कर लेता है, जो आनंद का स्रोत है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਉਪਜੈ ਬਿਸ੍ਵਾਸ ॥
साधसंगति उपजै बिस्वास ॥
सत्संगति में रहकर मनुष्य के भीतर यह विश्वास पैदा होता है कि

ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥੪॥
बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥४॥
भीतर-बाहर सर्वत्र उस प्रभु का ही प्रकाश है॥ ४॥

ਚਉਥਹਿ ਚੰਚਲ ਮਨ ਕਉ ਗਹਹੁ ॥
चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥
चतुर्थी-हे प्राणी ! अपने चंचल मन को वश में करके रख और

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਸੰਗਿ ਕਬਹੁ ਨ ਬਹਹੁ ॥
काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥
काम, क्रोध की संगति में मत बैठ ।

ਜਲ ਥਲ ਮਾਹੇ ਆਪਹਿ ਆਪ ॥
जल थल माहे आपहि आप ॥
जो ईश्वर समुद, पृथ्वी में सर्वत्र आप ही मौजूद है,

ਆਪੈ ਜਪਹੁ ਆਪਨਾ ਜਾਪ ॥੫॥
आपै जपहु आपना जाप ॥५॥
वह स्वयं ही अपना जाप करता है॥ ५॥

ਪਾਂਚੈ ਪੰਚ ਤਤ ਬਿਸਥਾਰ ॥
पांचै पंच तत बिसथार ॥
पंचमी-यह संसार पाँच मूल अंशों का विस्तार है।

ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨੀ ਜੁਗ ਬਿਉਹਾਰ ॥
कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥
स्वर्ण (धन) एवं स्त्री की तलाश इसके दो धन्धे हैं।

ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਧਾ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਕੋਇ ॥
प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही प्रभु-प्रेम का सुधारस पान करता है।

ਜਰਾ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਫੇਰਿ ਨ ਹੋਇ ॥੬॥
जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥६॥
वह दोबारा बुढ़ापा एवं मृत्यु का दुःख सहन नहीं करता॥ ॥

ਛਠਿ ਖਟੁ ਚਕ੍ਰ ਛਹੁੰ ਦਿਸ ਧਾਇ ॥
छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइ ॥
षष्ठी-मनुष्य की पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ एवं छठा मन-यह सारा साथ संसार (के पदार्थों की लालसा) में भटकता फिरता है,

ਬਿਨੁ ਪਰਚੈ ਨਹੀ ਥਿਰਾ ਰਹਾਇ ॥
बिनु परचै नही थिरा रहाइ ॥
जब तक प्राणी ईश्वर के स्मरण में नहीं लगता, तब तक यह साथ (इन भटकावों में से) हटता नहीं।

ਦੁਬਿਧਾ ਮੇਟਿ ਖਿਮਾ ਗਹਿ ਰਹਹੁ ॥
दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥
हे बन्धु ! दुविधा मिटाकर सहनशीलता धारण करो और

ਕਰਮ ਧਰਮ ਕੀ ਸੂਲ ਨ ਸਹਹੁ ॥੭॥
करम धरम की सूल न सहहु ॥७॥
धर्म-कर्म का यह लम्बा विवाद त्याग दे ॥ ७ ॥

ਸਾਤੈਂ ਸਤਿ ਕਰਿ ਬਾਚਾ ਜਾਣਿ ॥
सातैं सति करि बाचा जाणि ॥
सप्तमी-हे भाई ! गुरु की वाणी में श्रद्धा धारण करो और

ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਲੇਹੁ ਪਰਵਾਣਿ ॥
आतम रामु लेहु परवाणि ॥
इसके द्वारा प्रभु (के नाम) को अपने हृदय में पिरो लो।

ਛੁਟੈ ਸੰਸਾ ਮਿਟਿ ਜਾਹਿ ਦੁਖ ॥
छुटै संसा मिटि जाहि दुख ॥
इस प्रकार दुविधा दूर हो जाएगी और दुःख-क्लेश मिट जाएँगे और

ਸੁੰਨ ਸਰੋਵਰਿ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ॥੮॥
सुंन सरोवरि पावहु सुख ॥८॥
वैकुंठी सरोवर का सुख प्राप्त करोगे॥ ८ ॥

ਅਸਟਮੀ ਅਸਟ ਧਾਤੁ ਕੀ ਕਾਇਆ ॥
असटमी असट धातु की काइआ ॥
अष्टमी-यह शरीर आठ धातुओं का बना हुआ है।

ਤਾ ਮਹਿ ਅਕੁਲ ਮਹਾ ਨਿਧਿ ਰਾਇਆ ॥
ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥
इसमें महानिधि अगाध प्रभु बस रहा है।

ਗੁਰ ਗਮ ਗਿਆਨ ਬਤਾਵੈ ਭੇਦ ॥
गुर गम गिआन बतावै भेद ॥
ज्ञान को जानने वाला गुरु यह रहस्य बतलाता है।

ਉਲਟਾ ਰਹੈ ਅਭੰਗ ਅਛੇਦ ॥੯॥
उलटा रहै अभंग अछेद ॥९॥
सांसारिक मोह से हटकर मनुष्य अमर प्रभु में बसता है॥ ९॥

ਨਉਮੀ ਨਵੈ ਦੁਆਰ ਕਉ ਸਾਧਿ ॥
नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥
नवमी-हे भाई ! शारीरिक इन्द्रियों को वश में रखो,

ਬਹਤੀ ਮਨਸਾ ਰਾਖਹੁ ਬਾਂਧਿ ॥
बहती मनसा राखहु बांधि ॥
इनसे उठती हुई तृष्णाओं पर अंकुश लगाओ।

ਲੋਭ ਮੋਹ ਸਭ ਬੀਸਰਿ ਜਾਹੁ ॥
लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥
लोभ तथा मोह इत्यादि विकार भुला दो।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਜੀਵਹੁ ਅਮਰ ਫਲ ਖਾਹੁ ॥੧੦॥
जुगु जुगु जीवहु अमर फल खाहु ॥१०॥
इस परिश्रम का ऐसा फल मिलेगा जो कभी खत्म नहीं होगा, ऐसा सुन्दर जीवन जियोगे जो सदा स्थिर रहेगा ॥ १०॥

ਦਸਮੀ ਦਹ ਦਿਸ ਹੋਇ ਅਨੰਦ ॥
दसमी दह दिस होइ अनंद ॥
दसमी-दसों दिशाओं में आनन्द ही आनन्द विद्यमान है।

ਛੁਟੈ ਭਰਮੁ ਮਿਲੈ ਗੋਬਿੰਦ ॥
छुटै भरमु मिलै गोबिंद ॥
दुविधा दूर हो जाती है और गोबिन्द मिल जाता है।

ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੀ ਤਤ ਅਨੂਪ ॥
जोति सरूपी तत अनूप ॥
ज्योति-स्वरूप का तत्व अनूप है।

ਅਮਲ ਨ ਮਲ ਨ ਛਾਹ ਨਹੀ ਧੂਪ ॥੧੧॥
अमल न मल न छाह नही धूप ॥११॥
वह पवित्र एवं मलिनता रहित है जहाँ यह बसता है, वहाँ कोई छाया अथवा धूप नहीं ॥ ११॥

ਏਕਾਦਸੀ ਏਕ ਦਿਸ ਧਾਵੈ ॥
एकादसी एक दिस धावै ॥
एकादशी-यदि इन्सान एक परमात्मा की स्मृति में लीन रहे तो

ਤਉ ਜੋਨੀ ਸੰਕਟ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵੈ ॥
तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥
वह दोबारा योनियों के संकट में नहीं आता,

ਸੀਤਲ ਨਿਰਮਲ ਭਇਆ ਸਰੀਰਾ ॥
सीतल निरमल भइआ सरीरा ॥
उसका शरीर शीतल एवं निर्मल हो जाता है।

ਦੂਰਿ ਬਤਾਵਤ ਪਾਇਆ ਨੀਰਾ ॥੧੨॥
दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥१२॥
प्रभु जो दूर कहा जाता है, उसे वह निकट ही पा लेता है॥१२॥

ਬਾਰਸਿ ਬਾਰਹ ਉਗਵੈ ਸੂਰ ॥
बारसि बारह उगवै सूर ॥
द्वादशी - आकाश में बारह सूर्य चढ़ जाते है

ਅਹਿਨਿਸਿ ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰ ॥
अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥
और दिन रात अनहद वाजे बजते है

ਦੇਖਿਆ ਤਿਹੂੰ ਲੋਕ ਕਾ ਪੀਉ ॥
देखिआ तिहूं लोक का पीउ ॥
तीनो लोकों के पिता-प्रभु को देख लेता है।

ਅਚਰਜੁ ਭਇਆ ਜੀਵ ਤੇ ਸੀਉ ॥੧੩॥
अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥१३॥
एक आश्चर्यजनक खेल बन जाता है कि वह मनुष्य साधारण पुरुष से प्रभु-रूप हो जाता है॥ १३॥

ਤੇਰਸਿ ਤੇਰਹ ਅਗਮ ਬਖਾਣਿ ॥
तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥
त्रयोदशी-धार्मिक ग्रंथ कहते हैं क

ਅਰਧ ਉਰਧ ਬਿਚਿ ਸਮ ਪਹਿਚਾਣਿ ॥
अरध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥
आकाश-पाताल दोनों में प्रभु की पहचान करो।

ਨੀਚ ਊਚ ਨਹੀ ਮਾਨ ਅਮਾਨ ॥
नीच ऊच नही मान अमान ॥
उसके लिए कोई ऊँचा अथवा निम्न और न ही आदर वाला अथवा निरादर वाला है।

ਬਿਆਪਿਕ ਰਾਮ ਸਗਲ ਸਾਮਾਨ ॥੧੪॥
बिआपिक राम सगल सामान ॥१४॥
सर्वव्यापक राम सबके भीतर एक समान समाया हुआ है॥ १४॥

ਚਉਦਸਿ ਚਉਦਹ ਲੋਕ ਮਝਾਰਿ ॥ ਰੋਮ ਰੋਮ ਮਹਿ ਬਸਹਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥
चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥
चतुदर्शी-चौदह लोकों एवंरोम-रोम में मुरारी प्रभु बसता है।

ਸਤ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਰਹੁ ਧਿਆਨ ॥
सत संतोख का धरहु धिआन ॥
हे भाई ! अपना ध्यान सत्य एवं संतोष में लगाओ।

ਕਥਨੀ ਕਥੀਐ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ॥੧੫॥
कथनी कथीऐ ब्रहम गिआन ॥१५॥
ब्रह्म-ज्ञान की कथा कथन करो ॥ १५॥

ਪੂਨਿਉ ਪੂਰਾ ਚੰਦ ਅਕਾਸ ॥
पूनिउ पूरा चंद अकास ॥
पूर्णिमा के दिन आकाश में पूर्ण चाँद होता है।

ਪਸਰਹਿ ਕਲਾ ਸਹਜ ਪਰਗਾਸ ॥
पसरहि कला सहज परगास ॥
इसकी किरणों की कला से सहज ही प्रकाश फैल जाता है।

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਧਿ ਹੋਇ ਰਹਿਆ ਥੀਰ ॥
आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥
आदि, अंत एवं मध्य में प्रभु पूर्णतया स्थिर हो रहा है।

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਰਮਹਿ ਕਬੀਰ ॥੧੬॥
सुख सागर महि रमहि कबीर ॥१६॥
कबीर सुखों के सागर में लीन हुआ है॥ १६ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਵਾਰ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ੭ ॥
रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥
राग गउड़ी सप्ताह के दिन कबीर जी के वार

ਬਾਰ ਬਾਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
बार बार हरि के गुन गावउ ॥
सप्ताह के सभी दिन हरि का गुणगान करो।

ਗੁਰ ਗਮਿ ਭੇਦੁ ਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਪਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई ! गुरु के चरणों में पहुँचकर ईश्वर का रहस्य प्राप्त करो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਆਦਿਤ ਕਰੈ ਭਗਤਿ ਆਰੰਭ ॥
आदित करै भगति आरंभ ॥
रविवार-प्रभु की भक्ति प्रारम्भ करो और

ਕਾਇਆ ਮੰਦਰ ਮਨਸਾ ਥੰਭ ॥
काइआ मंदर मनसा थ्मभ ॥
शरीर रूपी मन्दिर में ही तृष्णाओं को वश में करो।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਅਖੰਡ ਸੁਰਹੀ ਜਾਇ ॥
अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥
जब दिन-रात मनुष्य की वृति अखंड स्थान पर लगी रहती है तो

ਤਉ ਅਨਹਦ ਬੇਣੁ ਸਹਜ ਮਹਿ ਬਾਇ ॥੧॥
तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥१॥
बांसुरी सहज ही अनहद बजाती है॥ १॥

ਸੋਮਵਾਰਿ ਸਸਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਝਰੈ ॥
सोमवारि ससि अम्रितु झरै ॥
सोमवार-चन्द्रमा से अमृत टपकता है।

ਚਾਖਤ ਬੇਗਿ ਸਗਲ ਬਿਖ ਹਰੈ ॥
चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥
जब (यह अमृत) चखा जाता है तो यह तुरन्त ही सारे विष (विकारों) को दूर कर देता है।

ਬਾਣੀ ਰੋਕਿਆ ਰਹੈ ਦੁਆਰ ॥
बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥
गुरु की वाणी के प्रभाव से संयमित मन प्रभु के द्वार पर टिका रहता है और

ਤਉ ਮਨੁ ਮਤਵਾਰੋ ਪੀਵਨਹਾਰ ॥੨॥
तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥२॥
मतवाला मन उस अमृत का पान करता रहता है ॥ २ ॥

ਮੰਗਲਵਾਰੇ ਲੇ ਮਾਹੀਤਿ ॥
मंगलवारे ले माहीति ॥
मंगलवार-यथार्थ को देख और

ਪੰਚ ਚੋਰ ਕੀ ਜਾਣੈ ਰੀਤਿ ॥
पंच चोर की जाणै रीति ॥
कामादिक पाँच चोरों के आक्रमण करने के ढंग को समझ।

ਘਰ ਛੋਡੇਂ ਬਾਹਰਿ ਜਿਨਿ ਜਾਇ ॥
घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥
हे भाई ! अपने किले को छोड़कर बाहर कभी मत जाना (अर्थात् अपने मन को बाहर मत भटकने देना)

ਨਾਤਰੁ ਖਰਾ ਰਿਸੈ ਹੈ ਰਾਇ ॥੩॥
नातरु खरा रिसै है राइ ॥३॥
अन्यथा प्रभु बहुत ही कुद्ध होगा ॥ ३॥

ਬੁਧਵਾਰਿ ਬੁਧਿ ਕਰੈ ਪ੍ਰਗਾਸ ॥
बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥
बुधवार-मनुष्य अपनी बुद्धि से प्रभु-नाम का प्रकाश पैदा कर लेता है,"

ਹਿਰਦੈ ਕਮਲ ਮਹਿ ਹਰਿ ਕਾ ਬਾਸ ॥
हिरदै कमल महि हरि का बास ॥
हृदय कमल में प्रभु का निवास बना लेता है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਦੋਊ ਏਕ ਸਮ ਧਰੈ ॥ ਉਰਧ ਪੰਕ ਲੈ ਸੂਧਾ ਕਰੈ ॥੪॥
गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ उरध पंक लै सूधा करै ॥४॥
गुरु से मिलकर उसे सुख एवं दुःख दोनों को एक समान समझना चाहिए।अपने हृदय के उल्टे कमल को लेकर सीधा करना चाहिए॥ ४ ॥

ਬ੍ਰਿਹਸਪਤਿ ਬਿਖਿਆ ਦੇਇ ਬਹਾਇ ॥
ब्रिहसपति बिखिआ देइ बहाइ ॥
वृहस्पति-मनुष्य को अपने पाप धो देने चाहिए (अर्थात् विकार दूर कर देने चाहिए)

ਤੀਨਿ ਦੇਵ ਏਕ ਸੰਗਿ ਲਾਇ ॥
तीनि देव एक संगि लाइ ॥
तीन देवताओं को छोड़कर उसे एक ईश्वर से मन लगाना चाहिए।

ਤੀਨਿ ਨਦੀ ਤਹ ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਮਾਹਿ ॥
तीनि नदी तह त्रिकुटी माहि ॥
वह माया की त्रिगुणात्मक नदियों में ही गोते खाते हैं,

ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਸਮਲ ਧੋਵਹਿ ਨਾਹਿ ॥੫॥
अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥५॥
दिन-रात नीच कर्म करते हैं, गुणस्तुति से विहीन रहकर उन्हें धोते नहीं हैं॥ ५॥

ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਸਹਾਰੈ ਸੁ ਇਹ ਬ੍ਰਤਿ ਚੜੈ ॥
सुक्रितु सहारै सु इह ब्रति चड़ै ॥
शुक्रवार—उसका यह व्रत सफलता प्राप्त कर जाता है जो सहनशीलता की कमाई करता है,

ਅਨਦਿਨ ਆਪਿ ਆਪ ਸਿਉ ਲੜੈ ॥
अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥
और जो रात-दिन अपने आप से युद्ध करता है ।

ਸੁਰਖੀ ਪਾਂਚਉ ਰਾਖੈ ਸਬੈ ॥
सुरखी पांचउ राखै सबै ॥
यदि प्राणी अपनी पाँचों ही ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर ले तो

ਤਉ ਦੂਜੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਨ ਪੈਸੈ ਕਬੈ ॥੬॥
तउ दूजी द्रिसटि न पैसै कबै ॥६॥
किसी पर भी कभी उसकी मेर-तेर की दृष्टि नहीं पड़ती ॥ ६ ॥

ਥਾਵਰ ਥਿਰੁ ਕਰਿ ਰਾਖੈ ਸੋਇ ॥
थावर थिरु करि राखै सोइ ॥
शनिवार-जो मनुष्य प्रभु-ज्योति की बत्ती को स्थिर रखता है,

ਜੋਤਿ ਦੀ ਵਟੀ ਘਟ ਮਹਿ ਜੋਇ ॥
जोति दी वटी घट महि जोइ ॥
जो उसकी अन्तरात्मा में हैं,

ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਭਇਆ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥
बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥
वह भीतर से बाहर उज्ज्वल हो जाती है और

ਤਬ ਹੂਆ ਸਗਲ ਕਰਮ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੭॥

तब हूआ सगल करम का नासु ॥७॥

तब उसके तमाम दुष्कर्म मिट जाते हैं।॥ ७॥

ਜਬ ਲਗੁ ਘਟ ਮਹਿ ਦੂਜੀ ਆਨ ॥
जब लगु घट महि दूजी आन ॥
लेकिन जब तक मनुष्य के हृदय में सांसारिक मोह की वासना है,

ਤਉ ਲਉ ਮਹਲਿ ਨ ਲਾਭੈ ਜਾਨ ॥
तउ लउ महलि न लाभै जान ॥
तब तक वह प्रभु-चरणों की शरण में लग नहीं सकता।

ਰਮਤ ਰਾਮ ਸਿਉ ਲਾਗੋ ਰੰਗੁ ॥
रमत राम सिउ लागो रंगु ॥
कबीर जी कहते हैं-जब राम का सिमरन करते करते मनुष्य का प्रेम राम के साथ हो जाता है तो

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਤਬ ਨਿਰਮਲ ਅੰਗ ॥੮॥੧॥
कहि कबीर तब निरमल अंग ॥८॥१॥
उसका हृदय पावन हो जाता है॥ ८ ॥ १॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਚੇਤੀ ਬਾਣੀ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀਉ ਕੀ
रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की
रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੇਵਾ ਪਾਹਨ ਤਾਰੀਅਲੇ ॥
देवा पाहन तारीअले ॥
राम ने वे पत्थर भी सागर पर तार दिए हैं (जिन पर राम का नाम लिखा हुआ था)

ਰਾਮ ਕਹਤ ਜਨ ਕਸ ਨ ਤਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे नाम का जाप करने से मैं तेरा सेवक कैसे (संसार-सागर से) पार नहीं होऊंगा ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਤਾਰੀਲੇ ਗਨਿਕਾ ਬਿਨੁ ਰੂਪ ਕੁਬਿਜਾ ਬਿਆਧਿ ਅਜਾਮਲੁ ਤਾਰੀਅਲੇ ॥

तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥

हे प्रभु ! तुमने गनिका (वेश्या) को बचा लिया, तुमने कुरूप कुब्जा का कोढ़ दूर किया और पापों में ग्रस्त अजामल को पार कर दिया,

ਚਰਨ ਬਧਿਕ ਜਨ ਤੇਊ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ॥

चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥

(श्रीकृष्ण के) चरणों में निशाना लगाने वाले शिकारी तथा कई विकारी व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर गए।

ਹਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਿਨ ਰਾਮ ਕਹੇ ॥੧॥

हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥

जिन्होंने राम का नाम याद किया है, मैं उन पर तन-मन से बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

ਦਾਸੀ ਸੁਤ ਜਨੁ ਬਿਦਰੁ ਸੁਦਾਮਾ ਉਗ੍ਰਸੈਨ ਕਉ ਰਾਜ ਦੀਏ ॥

दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥

हे परमात्मा ! दासी-पुत्र विदुर तेरा भक्त लोकप्रिय हुआ; सुदामा (जिसका तूने दारिद्रय दूर किया), उग्रसेन को शासन प्रदान किया।

ਜਪ ਹੀਨ ਤਪ ਹੀਨ ਕੁਲ ਹੀਨ ਕ੍ਰਮ ਹੀਨ ਨਾਮੇ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਤੇਊ ਤਰੇ ॥੨॥੧॥

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥

हे नामदेव के स्वामी ! तेरी दया से वे (संसार-सागर रो) पार हो गए हैं, जिन्होंने कोई जप नहीं किया, कोई तपस्या नहीं की, जिनकी कोई उच्च जाति नहीं थी और जिनके कर्म भी शुभ नहीं थे॥ २॥ १॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੇ ਪਦੇ ਗਉੜੀ ਗੁਆਰੇਰੀ

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

ਮੇਰੀ ਸੰਗਤਿ ਪੋਚ ਸੋਚ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ॥

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥

हे प्रभु ! मुझे दिन-रात यह चिन्ता लगी रहती है कि मेरी संगति बुरी है (अर्थात् नीच लोगों के साथ मेरा रहन-सहन है),

ਮੇਰਾ ਕਰਮੁ ਕੁਟਿਲਤਾ ਜਨਮੁ ਕੁਭਾਂਤੀ ॥੧॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१॥
मेरे कर्म भी कुटिल हैं और मेरा जन्म भी नीच जाति में से है॥ १॥

ਰਾਮ ਗੁਸਈਆ ਜੀਅ ਕੇ ਜੀਵਨਾ ॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
हे मेरे राम ! हे गुसाई ! हे मेरे प्राणों के सहारे !

ਮੋਹਿ ਨ ਬਿਸਾਰਹੁ ਮੈ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे मत भुलाओ, मैं तेरा सेवक हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮੇਰੀ ਹਰਹੁ ਬਿਪਤਿ ਜਨ ਕਰਹੁ ਸੁਭਾਈ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥
हे प्रभु ! मेरी विपत्ति दूर कीजिए और मुझ सेवक को अपनी श्रेष्ठ प्रीति प्रदान कीजिए।

ਚਰਣ ਨ ਛਾਡਉ ਸਰੀਰ ਕਲ ਜਾਈ ॥੨
रण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥
मैं तेरे चरण नहीं छोडूंगा, चाहे भेरे शरीर की शक्ति भी चली जाए॥ २॥

ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਪਰਉ ਤੇਰੀ ਸਾਭਾ ॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
हे रविदास ! मैंने तेरी शरण ली है, हे प्रभु !

ਬੇਗਿ ਮਿਲਹੁ ਜਨ ਕਰਿ ਨ ਬਿਲਾਂਬਾ ॥੩॥੧॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३॥१॥
अपने सेवक को शीघ्र मिल एवं विलम्ब मत कर ॥ ३॥ १॥

ਬੇਗਮ ਪੁਰਾ ਸਹਰ ਕੋ ਨਾਉ ॥
बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
बेगमपुरा (उस) शहर का नाम है।

ਦੂਖੁ ਅੰਦੋਹੁ ਨਹੀ ਤਿਹਿ ਠਾਉ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
उस स्थान पर कोई दुःख एवं क्लेश नहीं।

ਨਾਂ ਤਸਵੀਸ ਖਿਰਾਜੁ ਨ ਮਾਲੁ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
वहाँ सांसारिक धन नहीं और न ही उस धन को चुंगी लगने का भय है।

ਖਉਫੁ ਨ ਖਤਾ ਨ ਤਰਸੁ ਜਵਾਲੁ ॥੧॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
वहाँ न कोई खौफ, न भूल, न ही प्यास और न ही कोई गिरावट है॥ १॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਖੂਬ ਵਤਨ ਗਹ ਪਾਈ ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
हे मेरे भाई ! मुझे वहीं वराने के लिए सुन्दर वतन मिल गया है।

ਊਹਾਂ ਖੈਰਿ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
वहाँ सदा सुख-मंगल ही है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਇਮੁ ਦਾਇਮੁ ਸਦਾ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
प्रभु की सत्ता दृढ, स्थिर एवं सदैव ही है।

ਦੋਮ ਨ ਸੇਮ ਏਕ ਸੋ ਆਹੀ ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
दूसरा अथवा तीसरा कोई नहीं, सब एक जैसे हैं,

ਆਬਾਦਾਨੁ ਸਦਾ ਮਸਹੂਰ ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
यह शहर हमेशा मशहूर है और समृद्ध है।

ਊਹਾਂ ਗਨੀ ਬਸਹਿ ਮਾਮੂਰ ॥੨॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
वहाँ धनवान एवं तृप्त लोग रहते हैं।॥ २॥

ਤਿਉ ਤਿਉ ਸੈਲ ਕਰਹਿ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
वे उस मालिक के मन्दिर के जानकार हैं, इसलिए उन्हें कोई नहीं रोकता।

ਮਹਰਮ ਮਹਲ ਨ ਕੋ ਅਟਕਾਵੈ ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
जिस तरह उनको भला लगता है, वैसे ही वहाँ विचरण करते हैं।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਖਲਾਸ ਚਮਾਰਾ ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
बैंधनों से मुक्त हुआ चमार रविदास कहता है-

ਜੋ ਹਮ ਸਹਰੀ ਸੁ ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ॥੩॥੨॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥
जो मेरे शहर का वासी है, वह मेरा मित्र है॥ ३ ॥ २ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਉ ॥
गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥
गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

ਘਟ ਅਵਘਟ ਡੂਗਰ ਘਣਾ ਇਕੁ ਨਿਰਗੁਣੁ ਬੈਲੁ ਹਮਾਰ ॥
घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥
प्रभु का मार्ग बड़ा विषम एवं पहाड़ी है और मेरा बैल निर्गुण (छोटा-सा) है।

ਰਮਈਏ ਸਿਉ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰੀ ਪੂੰਜੀ ਰਾਖੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥
रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥
प्रियतम प्रभु के समक्ष मेरी वन्दना है-हे मुरारी ! मेरी पूँजी की तुम स्वयं रक्षा करना॥ १॥

ਕੋ ਬਨਜਾਰੋ ਰਾਮ ਕੋ ਮੇਰਾ ਟਾਂਡਾ ਲਾਦਿਆ ਜਾਇ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥
क्या कोई राम का व्यापारी है, जो मेरे साथ मिलकर चले ? मेरा माल (नाम-धन) भी लदा हुआ जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉ ਬਨਜਾਰੋ ਰਾਮ ਕੋ ਸਹਜ ਕਰਉ ਬ੍ਯਾਪਾਰੁ ॥
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
मैं राम का व्यापारी हूँ और सहज ही ज्ञान का व्यापार करता हूँ।

ਮੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਲਾਦਿਆ ਬਿਖੁ ਲਾਦੀ ਸੰਸਾਰਿ ॥੨॥
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥
मैंने राम के नाम का पदार्थ लादा है परन्तु संसार ने माया-रूपी विष का व्यापार किया है ॥ २ ॥

ਉਰਵਾਰ ਪਾਰ ਕੇ ਦਾਨੀਆ ਲਿਖਿ ਲੇਹੁ ਆਲ ਪਤਾਲੁ ॥
उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥
प्राणियों के लोक--परलोक के सभी कर्म जानने वाले हे चित्रगुप्त ! मेरे बारे में जो तुम्हारा मन करे लिख लेना अर्थात् यमराज के पास उपस्थित करने हेतु मेरे कार्यों में तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा,

ਮੋਹਿ ਜਮ ਡੰਡੁ ਨ ਲਾਗਈ ਤਜੀਲੇ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥੩॥
मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥
क्योंकि ईश्वर की दया से मैंने समस्त जंजाल छोड़ दिए हुए हैं, इसलिए मुझे यम का दण्ड नहीं मिलेगा ॥ ३॥

ਜੈਸਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਤੈਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥
हे चमार रविदास ! कहो-जैसे जैसे मैं प्रभु-नाम का व्यापार कर रहा हूँ, मेरी आस्था हो रही है कि यह दुनिया ऐसे है जैसे कुसुंभड़े का रंग

ਮੇਰੇ ਰਮਈਏ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ਕਾ ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰ ॥੪॥੧॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥
और मेरे प्रियतम प्रभु का नाम रंग इस तरह है जिस तरह मजीठ का रंग॥ ४॥ १ ॥

ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਉ
गउड़ी पूरबी रविदास जीउ
गउड़ी पूरबी रविदास जीउ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕੂਪੁ ਭਰਿਓ ਜੈਸੇ ਦਾਦਿਰਾ ਕਛੁ ਦੇਸੁ ਬਿਦੇਸੁ ਨ ਬੂਝ ॥
कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
जैसे जल से भरे कुएँ के मेंढक को अपने देश एवं परदेस का कुछ भी पता नहीं होता,"

ਐਸੇ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਬਿਖਿਆ ਬਿਮੋਹਿਆ ਕਛੁ ਆਰਾ ਪਾਰੁ ਨ ਸੂਝ ॥੧॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥
वैसे ही मेरा मन माया (के कुएँ) में इतनी बुरी तरह फैसा हुआ है कि इस लोक-परलोक की कुछ भी सूक्ष नहीं ॥१॥

ਸਗਲ ਭਵਨ ਕੇ ਨਾਇਕਾ ਇਕੁ ਛਿਨੁ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਇ ਜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥
हे समस्त लोकों के मालिक ! मुझे एक क्षण भर के लिए ही दर्शन दीजिए॥ १॥ रहाउ॥

ਮਲਿਨ ਭਈ ਮਤਿ ਮਾਧਵਾ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਲਖੀ ਨ ਜਾਇ ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
हे माधव ! मेरी बुद्धि (विकारों से) मैली हो गई है और मुझे तेरी गति की समझ नहीं आती!

ਕਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਭ੍ਰਮੁ ਚੂਕਈ ਮੈ ਸੁਮਤਿ ਦੇਹੁ ਸਮਝਾਇ ॥੨॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥
मुझ पर दया करो चूंकेि मेरी दुविधा नाश हो जाए और मुझे सुमति प्रदान करो ॥ २॥

ਜੋਗੀਸਰ ਪਾਵਹਿ ਨਹੀ ਤੁਅ ਗੁਣ ਕਥਨੁ ਅਪਾਰ ॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
हे प्रभु ! महान योगी भी तेरे अनन्त गुणों का रहस्य नहीं पा सकते (पर)

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੈ ਕਾਰਣੈ ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰ ॥੩॥੧॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥
हे रविदास चमार ! तू ईश्वर की महिमा-स्तुति कर, चूकिं तुझे प्रेम-भक्ति की देन मिल जाए ॥ ३॥ १ ॥

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ
गउड़ी बैरागणि
गउड़ी बैरागणि

੧ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
१ॴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਤਜੁਗਿ ਸਤੁ ਤੇਤਾ ਜਗੀ ਦੁਆਪਰਿ ਪੂਜਾਚਾਰ ॥
सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥
सतियुग में सत्य (दान-पुण्य इत्यादि) प्रधान था, त्रेता युग यज्ञों में लीन रहा, द्वापर में देवीदेवताओं की पूजा प्रधान कर्म था,

ਤੀਨੌ ਜੁਗ ਤੀਨੌ ਦਿੜੇ ਕਲਿ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ॥੧॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥
तीनों युग इन तीन कर्मो-धर्मो पर बल देते हैं और कलियुग में केवल नाम का ही सहारा है। १॥

ਪਾਰੁ ਕੈਸੇ ਪਾਇਬੋ ਰੇ ॥
पारु कैसे पाइबो रे ॥
मैं किस तरह (संसार सागर से) पार होऊँगा ?

ਮੋ ਸਉ ਕੋਊ ਨ ਕਹੈ ਸਮਝਾਇ ॥
मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥
मुझे कोई इस तरह कहता और निश्चित नहीं करवाता,

ਜਾ ਤੇ ਆਵਾ ਗਵਨੁ ਬਿਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट जाए॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਧਰਮ ਨਿਰੂਪੀਐ ਕਰਤਾ ਦੀਸੈ ਸਭ ਲੋਇ ॥
बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥
धर्म के अनेकों स्वरूप वर्णन किए जाते हैं और सारा संसार उन पर अनुसरण करता दिखाई देता है।

ਕਵਨ ਕਰਮ ਤੇ ਛੂਟੀਐ ਜਿਹ ਸਾਧੇ ਸਭ ਸਿਧਿ ਹੋਇ ॥੨॥
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥
वह कौन-से कर्म हैं, जिन से मुझे मोक्ष प्राप्त हो जाए और जिनकी साधना से मुझे सिद्धि प्राप्त हो जाए॥ २॥

ਕਰਮ ਅਕਰਮ ਬੀਚਾਰੀਐ ਸੰਕਾ ਸੁਨਿ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ॥
करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥
यदि वेदों एवं पुराणों को सुन कर पाप-पुण्य का निर्णय किया जाए तो शंका पैदा हो जाती है।

ਸੰਸਾ ਸਦ ਹਿਰਦੈ ਬਸੈ ਕਉਨੁ ਹਿਰੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੩॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥
संशय हमेशा हृदय में रहता है। मेरे अभिमान को कौन दूर कर सकता है?॥ ३॥

ਬਾਹਰੁ ਉਦਕਿ ਪਖਾਰੀਐ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਬਿਬਿਧਿ ਬਿਕਾਰ ॥

बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥

मनुष्य अपने शरीर का बाहरी भाग (तीर्थों के) जल से धो लेता है परन्तु उसके मन में अनेक विकार विद्यमान हैं

ਸੁਧ ਕਵਨ ਪਰ ਹੋਇਬੋ ਸੁਚ ਕੁੰਚਰ ਬਿਧਿ ਬਿਉਹਾਰ ॥੪॥

सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥

वह किस तरह शुद्ध होगा ? उसका शुद्धता को प्राप्त करने का तरीका हाथी के स्नान-कर्म जैसा है॥ ४॥

ਰਵਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਰਜਨੀ ਜਥਾ ਗਤਿ ਜਾਨਤ ਸਭ ਸੰਸਾਰ ॥

रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥

जैसे सारी दुनिया यह बात जानती है कि सूर्योदय होने पर रात का अँधेरा समाप्त हो जाता है।

ਪਾਰਸ ਮਾਨੋ ਤਾਬੋ ਛੁਏ ਕਨਕ ਹੋਤ ਨਹੀ ਬਾਰ ॥੫॥

पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥५॥

यह बात भी स्मरणीय है कि तांबे के पारस द्वारा स्पर्श किए जाने पर उसके सोना बनने में देर नहीं लगती ॥ ५॥

ਪਰਮ ਪਰਸ ਗੁਰੁ ਭੇਟੀਐ ਪੂਰਬ ਲਿਖਤ ਲਿਲਾਟ ॥

परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥

इसी तरह यदि पूर्वकालीन भाग्य जागें तो गुरु मिल जाता है, जो समस्त पारसों से सर्वोपरि पारस है।

ਉਨਮਨ ਮਨ ਮਨ ਹੀ ਮਿਲੇ ਛੁਟਕਤ ਬਜਰ ਕਪਾਟ ॥੬॥

उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥

गुरु की कृपा से मन में प्रभु से मिलने की लालसा उत्पन्न हो जाती है, वह अन्तरात्मा में ही प्रभु को मिल जाता है और मन के वज्र (वज) कपाट खुल जाते हैं।॥ ६ ॥

ਭਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਮਤਿ ਸਤਿ ਕਰੀ ਭ੍ਰਮ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਬਿਕਾਰ ॥

भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥

जो मनुष्य प्रभु-भक्ति की युक्ति को अपने हृदय में दृढ़ करता है, उसके तमाम बन्धन एवं विकार मिट जाते हैं।

ਸੋਈ ਬਸਿ ਰਸਿ ਮਨ ਮਿਲੇ ਗੁਨ ਨਿਰਗੁਨ ਏਕ ਬਿਚਾਰ ॥੭॥

सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥

वह अपने मन को रोकता है, प्रसन्नता पाता है और केवल उस प्रभु का चिंतन करता है जो माया के तीनों गुणों से परे है॥ ७ ॥

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਨਿਗ੍ਰਹ ਕੀਏ ਟਾਰੀ ਨ ਟਰੈ ਭ੍ਰਮ ਫਾਸ ॥

अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥

मैंने अनेक यत्न करके देखे हैं परन्तु दूर हटाने से संदेह की फाँसी दूर नहीं हटाई जा सकती।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਨਹੀ ਊਪਜੈ ਤਾ ਤੇ ਰਵਿਦਾਸ ਉਦਾਸ ॥੮॥੧॥

प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥

कर्मकाण्ड के इन यत्नों से प्रभु की प्रेम-भक्ति मुझ से उत्पन्न नहीं हुई इसलिए रविदास उदास है ?॥ ८ ॥ १॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
१ ऑ- निरंकार वही एक है। सति नामु - उसका नाम सत्य है। करता - वह सृष्टि व उसके जीवों की रचने वाला है। पुरखु - वह यह सब कुछ करने में परिपूर्ण (शक्तिमान) है। निरभउ - उसमें किसी तरह का भय व्याप्त नहीं। अर्थात् - अन्य देव-दैत्यों तथा सांसारिक जीवों की भाँति उसमें द्वेष अथवा जन्म-मरण का भय नहीं है ; वह इन सबसे परे हैं। निरवैरु- वह वैर से रहित है। अकाल- वह काल (मृत्यु) से परे है; अर्थात्-वह अविनाशी है। मूरति - वह अविनाशी होने के कारण उसका अस्तित्व सदैव रहता है। अजूनी - वह कोई योनि धारण नहीं करता, क्योंकि वह आवागमन के चक्कर से रहित है। सैभं - वह स्वयं से प्रकाशमान हुआ है। गुर - अंधकार (अज्ञान) में प्रकाश (ज्ञान) करने वाला (गुरु)। प्रसादि- कृपा की बख्शिश। अर्थात्-गुरु की कृपा से यह सब उपलब्ध हो सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਸੋ ਦਰੁ ॥
रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥
रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥

ਸੋ ਦਰੁ ਤੇਰਾ ਕੇਹਾ ਸੋ ਘਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਬਹਿ ਸਰਬ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ॥
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले ॥
हे जगतपालक ! तेरा वह दर-घर कैसा है? जहाँ बैठकर तू सारी दुनिया की देखभाल व पोषण कर रहा है।

ਵਾਜੇ ਤੇਰੇ ਨਾਦ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖਾ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਵਾਵਣਹਾਰੇ ॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥
तेरे द्वार पर नाना प्रकार के असंख्य नाद गूंज रहे हैं और केितने ही उनको वजाने वाले विद्यमान हैं।

ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਰਾਗ ਪਰੀ ਸਿਉ ਕਹੀਅਹਿ ਕੇਤੇ ਤੇਰੇ ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥
कितने ही तेरे राग हैं, जो रागिनियों के संग वहाँ गान किए जा रहे हैं और उन रागों को गाने वाले गंधपिद रार्गी भी कितने ही हैं जो तेरा यश गा रहे हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਗਾਵੈ ਰਾਜਾ ਧਰਮ ਦੁਆਰੇ ॥
गावन्हि तुधनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे ॥
हे जग के रचयिता ! पवन, जल एवं अग्नि देव भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं तथा जीवों के कर्मों का विश्लेपक धर्मराज भी तेरे द्वार पर तेरी ही महिमा गा रहा है।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਚਿਤੁ ਗੁਪਤੁ ਲਿਖਿ ਜਾਣਨਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਧਰਮੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥
गावन्हि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
जीवों द्वारा किए जाने वाले कर्मों को लिखने वाले चित्र-गुप्त भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं तथा धर्मराज चित्र-गुप्त द्वारा लिखे जाने वाले शुभाशुभ कर्मों का विचार करता है।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਈਸਰੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਦੇਵੀ ਸੋਹਨਿ ਤੇਰੇ ਸਦਾ ਸਵਾਰੇ ॥
गावन्हि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥
हे परमेश्वर ! तेरे द्वारा प्रतिपादित शिव, ब्रह्मा व अनेकों देवियों जो शोभायमान हैं, तेरी ही महिमा गा रहे हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਇੰਦ੍ਰ ਇੰਦ੍ਰਾਸਣਿ ਬੈਠੇ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥
गावन्हि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर तेरे द्वार पर खड़ा तेरा ही यश गा रहा है।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਦਰਿ ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਸਾਧ ਬੀਚਾਰੇ ॥
गावन्हि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुधनो साध बीचारे ॥
अनेक सिद्ध लोग समाधियों में स्थित हुए तेरी ही महिमा गा रहे हैं और विचारवान साधु भी विवेक से तेरा ही यशोगान कर रहे हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਵੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥
गावन्हि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥
अनेक यति, सती एवं संतोषी भी तेरी ही महिमा-स्तुति गा रहे हैं और पराक्रमी योद्धा भी तेरी प्रशंसा के गीत गा रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਪੰਡਿਤ ਪੜੇ ਰਖੀਸੁਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਬੇਦਾ ਨਾਲੇ ॥
गावनि तुधनो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥
हे प्रभु ! दुनिया के समस्त विद्वान व महान जितेन्द्रिय ऋषि-मुनि युगों-युगों से वेदों को पढ़-पढ़ कर तेरा ही यशोगान कर रहे हैं।

ਗਾਵਨਿ ਤੁਧਨੋ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗੁ ਮਛੁ ਪਇਆਲੇ ॥
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥
मन को मुग्ध करने वाली सुन्दर अप्सराएँ स्वर्ग लोक, मृत्युलोक एवं पाताल लोक में तेरा ही गुणगान कर रही हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਰਤਨ ਉਪਾਏ ਤੇਰੇ ਜੇਤੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥

गावन्हि तुधनो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥

तेरे उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न, जगत के अड़सठ (६८) तीर्थ तथा उनमें विद्यमान संतजन भी तेरा यशोगान कर रहे हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰਾ ਗਾਵਨ੍ਹਿ **ਤੁਧਨੋ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥**

गावन्हि तुधनो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुधनो खाणी चारे ॥

बड़े-बड़े पराक्रमी योद्धा, महाबली एवं शूरवीर भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं, तथा उत्पत्ति के चारों स्रोत (अण्डज, जरायुज, स्वेदज व उदभिज्ज) भी तेरी ही उपमा गा रहे हैं।

ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਤੁਧਨੋ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥

गावन्हि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥

हे विधाता ! नवखण्ड, मण्डल एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जो तूने बना-बना कर धारण कर रखे हैं, वे भी तेरी ही महिमा-स्तुति गा रहे हैं।

ਸੇਈ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਗਾਵਨ੍ਹਿ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ ॥

सेई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥

वास्तव में वे ही तेरी कीर्ति को गा सकते हैं, जो तेरी भक्ति में लीन हैं, तेरे नाम के रसिया हैं और जो तुझे अच्छे लगते हैं।

ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਤੁਧਨੋ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਬੀਚਾਰੇ ॥

होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अनेकानेक और भी कई ऐसे जीव हैं जो मुझे स्मरण नहीं हो रहे, जो तेरा ही यशोगान करते हैं, मैं कहाँ तक उनका विचार करूँ, अर्थात् यशोगान करने वाले जीवों की गणना मैं कहाँ तक करूँ।

ਸੋਈ ਸੋਈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥

वह साहिब सच है, हमेशा के लिए सच है; वह सच है, और सत्य उसका नाम है।

ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥

वह सत्यस्वरूप परमात्मा भूतकाल में था, वही सद्गुणी परमेश्वर वर्तमान में भी है। वह जगत का रचयिता भविष्य में सदैव रहेगा, वह परमात्मा न जन्म लेता है और न ही उसका नाश होता है।

ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ॥

रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥

जिस सृष्टि रचयिता ईश्वर ने रंग-बिरंगी, तरह-तरह के आकार वाली एवं अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति अपनी माया द्वारा की है,"

ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਕੀਤਾ ਅਪਣਾ ਜਿਉ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥

करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥

अपनी इस सृष्टि-रचना को कर-करके वह अपनी रुचि अनुसार ही देखता है अर्थात् उनकी देखभाल अपनी इच्छानुसार ही करता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਫਿਰਿ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥

जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥

जगत के रचयिता को जो कुछ भी भला लगता है, वही कार्य वह करता है और भविष्य में भी करेगा, इसके प्रति उसको आदेश करने वाला उसके समान कोई नहीं है।

ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਤਿ ਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ ॥੧॥੧॥

सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥१॥

गुरु नानक जी का फुरमान है कि हे मानव ! वह परमात्मा शाहों का शाह अर्थात् सारे विश्व का शहंशाह है, इसलिए उसकी रजा में रहना ही उचित है॥१॥१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਸੋ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਅਗਮਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥
वह अकालपुरुष सृष्टि के समस्त जीवों में व्यापक है, फिर भी मायातीत है, अगम्य है तथा अनन्त है।

ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥
हे सत्यस्वरूप सृजनहार परमात्मा ! तुम्हारा ध्यान अतीत में भी सब करते थे, अब भी करते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे।

ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ਜੀ ਤੂੰ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾਰਾ ॥
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥
सृष्टि के समस्त जीव तुम्हारी ही रचना हैं और तुम ही सब जीवों के प्रतिभोग व मुक्ति दाता हो।

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜੀ ਸਭਿ ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰਾ ॥
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥
हे भक्त जनो ! उस निरंकार का सिमरन करो जो समस्त दुखों का नाश करके सुख प्रदान करता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਜੀ ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰਾ ॥੧॥
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥
निरंकार स्वयं स्वामी व स्वयं ही सेवक है, सो हे नानक ! मुझ दीन जीव की क्या योग्यता है कि मैं उस अकथनीय प्रभु का वर्णन कर सकूं ॥१॥

ਤੂੰ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜੀ ਹਰਿ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਸਮਾਣਾ ॥
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥
सर्वव्यापक निरंकार समस्त प्राणियों के हृदय में अभेद समा रहा है।

ਇਕਿ ਦਾਤੇ ਇਕਿ ਭੇਖਾਰੀ ਜੀ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥
संसार में कोई दाता बना हुआ है, किसी ने भिक्षु का रूप लिया हुआ है, हे परमात्मा ! यह सब तुम्हारा ही आश्चर्यजनक कौतुक है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਜੀ ਹਉ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ॥
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥
तुम स्वयं ही देने वाले हो और स्वयं ही भोक्ता हो, तुम्हारे बिना मैं किसी अन्य को नहीं जानता।

ਤੂੰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਬੇਅੰਤੁ ਜੀ ਤੇਰੇ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਾ ॥
तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥
तुम पारब्रह्म हो, तुम तीनों लोकों में अंतरहित हो, मैं तुम्हारे गुणों को मुख से कथन कैसे करूँ।

ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ੍ ਕੁਰਬਾਣਾ ॥੨॥
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥२॥
सतगुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव आप का अंतर्मन से सिमरन करते हैं, सेवा-भाव से समर्पित होते हैं उन पर मैं न्यौछावर होता हूँ॥ २॥

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਸੇ ਜਨ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੁਖ ਵਾਸੀ ॥
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥
हे निरंकार ! जो आपका मन व वाणी द्वारा ध्यान करते हैं, वो मानव-जीव युगों-युगों तक सुखों का भोग करते हैं।

ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਸੇ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀਉ ਤਿਨ ਟੂਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥
से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥
जिन्होंने आपका सिमरन किया है वे इस संसार से मुक्ति प्राप्त करते हैं और उनका यम-पाश टूट जाता है।

ਜਿਨ ਨਿਰਭਉ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਨਿਰਭਉ ਧਿਆਇਆ ਜੀਉ ਤਿਨ ਕਾ ਭਉ ਸਭੁ ਗਵਾਸੀ ॥
जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥
जिन्होंने भय से मुक्त होकर उस अभय स्वरूप अकाल पुरुष का ध्यान किया है उनके जीवन का समस्त (जन्म-मरण व यमादि का) भय वह समाप्त कर देता है।

ਜਿਨ੍ ਸੇਵਿਆ ਜਿਨ੍ ਸੇਵਿਆ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੂਪਿ ਸਮਾਸੀ ॥
जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥
जिन्होंने निरंकार का चिन्तन किया, सेवा-भाव से उस में लीन हुए, वे तुम्हारे दुखहर्ता रूप में ही विलीन हो गए।

ਸੇ ਧੰਨੁ ਸੇ ਧੰਨੁ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜੀਉ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਸੀ ॥੩॥
से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥
हे नानक ! जिन्होंने नारायण स्वरूप निरंकार का सिमरन किया, वे धन्य ही धन्य हैं, मैं उन पर कुर्बान होता हूँ॥ ३॥

ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਜੀ ਭਰੇ ਬੇਅੰਤ ਬੇਅੰਤਾ ॥
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥
हे अनंत स्वरूप ! तेरी भक्ति के खजाने भक्तों के हृदय में अनंतानंत भरे हुए हैं।

ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਸਲਾਹਨਿ ਤੁਧੁ ਜੀ ਹਰਿ ਅਨਿਕ ਅਨੇਕ ਅਨੰਤਾ ॥
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥
तेरे भक्त तीनों काल तेरी प्रशंसा के गीत गाते हैं कि हे परमेश्वर ! तू अनेकानेक व अनंत स्वरूप हैं।

ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਤੇਰੀ ਅਨਿਕ ਕਰਹਿ ਹਰਿ ਪੂਜਾ ਜੀ ਤਪੁ ਤਾਪਹਿ ਜਪਹਿ ਬੇਅੰਤਾ ॥
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥
संसार में तेरी नाना प्रकार से आराधना और जप-तपादि द्वारा साधना की जाती है।

ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਪੜਹਿ ਬਹੁ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਿਆ ਖਟੁ ਕਰਮ ਕਰੰਤਾ ॥
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥
अनेकानेक ऋषि-मुनि व विद्वान कई तरह के शास्त्र, स्मृतियों का अध्ययन करके तथा षट्-कर्म, यज्ञादि धर्म कार्यों द्वारा तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं।

ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਭਗਤ ਭਲੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਜੀ ਜੋ ਭਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਭਗਵੰਤਾ ॥੪॥
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥
हे नानक ! वे समस्त श्रद्धालु भक्त संसार में भले हैं जो निरंकार को अच्छे लगते हैं॥ ४॥

ਤੂੰ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਜੀ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तूं आदि पुरखु अपर्मपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
हे अकालपुरुष ! तुम अपरिमेय पारब्रह्म अनन्त स्वरूप हो, तुम्हारे समान अन्य कोई भी नहीं है।

ਤੂੰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੂੰ ਏਕੋ ਜੀ ਤੂੰ ਨਿਹਚਲੁ ਕਰਤਾ ਸੋਈ ॥
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥
युगों-युगों से तुम एक हो, सदा सर्वदा तुम अद्वितीय स्वरूप हो और तुम ही निश्चल रचयिता हो।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਵਰਤੈ ਜੀ ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈ ॥
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥
जो तुम्हें भला लगता है वही घटित होता है, जो तुम स्वेच्छा से करते हो वही कार्य होता है।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਉਪਾਈ ਜੀ ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਰਜਿ ਸਭ ਗੋਈ ॥
तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥
तुमने स्वयं ही इस सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही रच कर उसका संहार भी करते हो।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਕਰਤੇ ਕੇ ਜੀ ਜੋ ਸਭਸੈ ਕਾ ਜਾਣੋਈ ॥੫॥੨॥

जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥२॥

हे नानक ! मैं उस स्रष्टा प्रभु का गुणगान करता हूँ, जो समस्त सृष्टि का सृजक है अथवा जो समस्त जीवों के अन्तर्मन का ज्ञाता है॥ ५॥ २ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੨ ॥

रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥

रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥

ਸੁਣਿ ਵਡਾ ਆਖੈ ਸਭ ਕੋਈ ॥

सुणि वडा आखै सभ कोई ॥

हे निरंकार स्वरूप ! (शास्त्रों व विद्वानों से) सुन कर तो प्रत्येक कोई तुझे बड़ा कहता है।

ਕੇਵਡੁ ਵਡਾ ਡੀਠਾ ਹੋਈ ॥

केवडु वडा डीठा होई ॥

किंतु कितना बड़ा है, यह तो तभी कोई बता सकता है यदि किसी ने तुझे देखा हो अथवा तुम्हारे दर्शन किए हों।

ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥
वास्तव में उस सर्गुण स्वरूप परमात्मा की न तो कोई कीमत आंक सकता है और न ही उसका कोई अंत कह सकता है, क्योंकि वह अनन्त व असीम है।

ਕਹਣੈ ਵਾਲੇ ਤੇਰੇ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੧॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥
जिन्होंने तेरी महिमा का अंत पाया है अर्थात् तेरे सच्चिदानन्द स्वरूप को जाना है वे तुझ में ही अभेद हो जाते हैं॥ १॥

ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰਾ ॥
वडे मेरे साहिबा गहिर ग्मभीरा गुणी गहीरा ॥
हे मेरे अकालपुरुष ! तुम सर्वोच्च हो, स्वभाव में स्थिर व गुणों के निधान हो।

ਕੋਈ ਨ ਜਾਣੈ ਤੇਰਾ ਕੇਤਾ ਕੇਵਡੁ ਚੀਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारा कितना विस्तार है, इस तथ्य का ज्ञान किसी को भी नहीं है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਭਿ ਸੁਰਤੀ ਮਿਲਿ ਸੁਰਤਿ ਕਮਾਈ ॥
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥
समस्त ध्यान-मग्न होने वाले व्यक्तियों ने मिलकर अपनी वृति लगाई।

ਸਭ ਕੀਮਤਿ ਮਿਲਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥
समस्त विद्वानों ने मिलकर तुम्हारा अन्त जानने की कोशिश की।

ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਗੁਰ ਗੁਰ ਹਾਈ ॥
गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥
शास्त्रवेता, प्राणायामी, गुरु व गुरुओं के भी गुरु

ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਤੇਰੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥
तेरी महिमा का तिनका मात्र भी व्याख्यान नहीं कर सकते॥ २॥

ਸਭਿ ਸਤ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭਿ ਚੰਗਿਆਈਆ ॥
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥
सभी शुभ-गुण, सभी तप और सभी शुभ कर्म;"

ਸਿਧਾ ਪੁਰਖਾ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆਂ ॥
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं ॥
सिद्ध-पुरुषों सिद्धि समान महानता;

ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਸਿਧੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ॥
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥
तुम्हारी कृपा के बिना पूर्वोक्त गुणों की जो सिद्धियाँ हैं वे किसी ने भी प्राप्त नहीं की।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਨਾਹੀ ਠਾਕਿ ਰਹਾਈਆ ॥੩॥
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥
यदि परमेश्वर की कृपा से ये शुभ-गुण प्राप्त हो जाएँ तो फिर किसी के रोके रुक नहीं सकते ॥ | ३॥

ਆਖਣ ਵਾਲਾ ਕਿਆ ਬੇਚਾਰਾ ॥
आखण वाला किआ बेचारा ॥
यदि कोई कहे किं हे अकालपुरुष ! मैं तुम्हारी महिमा कथन कर सकता हूँ तो वह बेचारा क्या कह सकता है।

ਸਿਫਤੀ ਭਰੇ ਤੇਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥
क्योंकि हे परमेश्वर ! तेरी स्तुति के भण्डार तो वेदों, ग्रंथों व तेरे भक्तों के हृदय में भरे पड़े हैं।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਤਿਸੈ ਕਿਆ ਚਾਰਾ ॥
जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥
जिन को तुम अपनी स्तुति करने की बुद्धि प्रदान करते हो, उनके साथ किसी का क्या जोर चल सकता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੪॥੧॥
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥१॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही सबको शोभायमान करने वाला है॥ ४ ॥ १॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਆਖਾ ਜੀਵਾ ਵਿਸਰੈ ਮਰਿ ਜਾਉ ॥
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
जब मुझे यह नाम विरमृत हो जाता है तो मैं स्वयं को मृत समझता हूँ ; अर्थात् मैं प्रभु के नाम में ही-सुख अनुभव करता हूँ, वरन् मैं दुखी होता हूँ।

ਆਖਣਿ ਅਉਖਾ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
किंतु यह सत्य नाम कथन करना बहुत कठिन है।

ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਲਾਗੈ ਭੂਖ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
यदि प्रभु के सत्य नाम की (भूख) चाहत हो तो

ਤਿਤੁ ਭੂਖੈ ਖਾਇ ਚਲੀਅਹਿ ਦੂਖ ॥੧॥
तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥
वह चाहत ही समस्त दुखों को नष्ट कर देती है। ॥१॥

ਸੋ ਕਿਉ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
सो हे माता जी ! ऐसा नाम फिर मुझे विस्मृत क्यों हो।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह स्वामी सत्य है और उसका नाम भी सत्य है ॥१॥ रहाउ ॥

ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਕੀ ਤਿਲੁ ਵਡਿਆਈ ॥
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥
परमात्मा के सत्य नाम की तिनका मात्र महिमाः

ਆਖਿ ਥਕੇ ਕੀਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
आखि थके कीमति नही पाई ॥
"(व्यासादि मुनि) कह कर थक गए हैं, किंतु वे उसके महत्व को नहीं जान पाए हैं।

ਜੇ ਸਭਿ ਮਿਲਿ ਕੈ ਆਖਣ ਪਾਹਿ ॥
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
यदि सृष्टि के समस्त जीव मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने लगें तो

ਵਡਾ ਨ ਹੋਵੈ ਘਾਟਿ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥
वह स्तुति करने से न बड़ा होता है और न निन्दा करने से घटता है॥ २ ॥

ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥
वह निरंकार न तो कभी मरता है और न ही उसे कभी शोक होता है।

ਦੇਂਦਾ ਰਹੈ ਨ ਚੂਕੈ ਭੋਗੁ ॥
देंदा रहै न चूकै भोगु ॥
वह संसार के जीवों को खान-पान देता रहता है जो केि उसके भण्डार में कभी भी समाप्त नहीं होता।

ਗੁਣੁ ਏਹੋ ਹੋਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥
दानेश्वर परमात्मा जैसा गुण सिर्फ उसी में ही है, अन्य किसी में नहीं।

ਨਾ ਕੋ ਹੋਆ ਨਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥੩॥
ना को होआ ना को होइ ॥३॥
ऐसे परमेश्वर जैर्सा न पहले कभी हुआ है और न ही आगे कोई होगा ॥ ३॥

ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਤੇਵਡ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ॥
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥
जितना महान् परमात्मा स्वयं है उतनी ही महान् उसकी बख्शिश है।

ਜਿਨਿ ਦਿਨੁ ਕਰਿ ਕੈ ਕੀਤੀ ਰਾਤਿ ॥
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥
जिसने दिन बनाकर फिर रात की रचना की है।

ਖਸਮੁ ਵਿਸਾਰਹਿ ਤੇ ਕਮਜਾਤਿ ॥
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
ऐसे परमेश्वर को जो विस्मृत कर दे वह नीच है।

ਨਾਨਕ ਨਾਵੈ ਬਾਝੁ ਸਨਾਤਿ ॥੪॥੨॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥२॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना मनुष्य संकीर्ण जाति का होता है॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਜੇ ਦਰਿ ਮਾਂਗਤੁ ਕੂਕ ਕਰੇ ਮਹਲੀ ਖਸਮੁ ਸੁਣੇ ॥
जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥
यदि कोई भिखारी प्रभु के द्वार पर पुकार करे तो महल का मालिक प्रभु उसकी पुकार को सुन लेता है।

ਭਾਵੈ ਧੀਰਕ ਭਾਵੈ ਧਕੇ ਏਕ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੧॥
भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥१॥
हे प्रभु ! अपने भिखारी को एक सम्मान प्रदान कर अथवा आदर-धैर्य दे अथवा धक्के मार दे ॥ १॥

ਜਾਣਹੁ ਜੋਤਿ ਨ ਪੂਛਹੁ ਜਾਤੀ ਆਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥१॥ रहाउ ॥
सब जीवों में प्रभु ज्योति ही समाई हुई समझो और किसी को जाति-वर्ण बारे मत पूछो क्योंकि परलोक में कोई जाति नहीं है।॥१॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥
आपि कराए आपि करेइ ॥
ईश्वर स्वयं ही सबकुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है।

ਆਪਿ ਉਲਾਮ੍ਹੇ ਚਿਤਿ ਧਰੇਇ ॥
आपि उलाम्हे चिति धरेइ ॥
वह स्वयं ही भक्तों की शिकायत की ओर ध्यान देता है।

ਜਾ ਤੂੰ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
जा तूं करणहारु करतारु ॥
हे कर्तार ! जब तुम ही करने वाले हो तो

ਕਿਆ ਮੁਹਤਾਜੀ ਕਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥
किआ मुहताजी किआ संसारु ॥२॥
मैं संसार का मोहताज क्यों बनूं और किसके लिए होऊँ ? ॥ २॥

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥
आपि उपाए आपे देइ ॥
हे प्रभु ! तुम ने स्वयं जीवों को पैदा किया है और स्वयं ही सबकुछ देते हो।

ਆਪੇ ਦੁਰਮਤਿ ਮਨਹਿ ਕਰੇਇ ॥
आपे दुरमति मनहि करेइ ॥
हे ठाकुर ! तुम स्वयं ही दुर्मति को रोकते हो।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥
जब गुरु के प्रसाद से प्रभु आकर मनुष्य के हृदय में बसेरा कर लेता है

ਦੁਖੁ ਅਨ੍ਹੇਰਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥੩॥
दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥३॥
तो उसका दुःख एवं अन्धेरा भीतर से दौड़ जाते हैं।॥ ३॥

ਸਾਚੁ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਕਰੇਇ ॥
साचु पिआरा आपि करेइ ॥
वह स्वयं ही भीतर सत्य के लिए प्रेम उत्पन्न करता है।

ਅਵਰੀ ਕਉ ਸਾਚੁ ਨ ਦੇਇ ॥
अवरी कउ साचु न देइ ॥
दूसरों (स्वेच्छाचारी) को वह सत्य प्रदान नहीं करता।

ਜੇ ਕਿਸੈ ਦੇਇ ਵਖਾਣੈ ਨਾਨਕੁ ਆਗੈ ਪੂਛ ਨ ਲੇਇ ॥੪॥੩॥
जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥४॥३॥
हे नानक ! यदि वह किसी को सत्य प्रदान करता है, तो उससे बाद में कर्मों का हिसाब-किताब नहीं माँगता॥ ४ ॥ ३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਤਾਲ ਮਦੀਰੇ ਘਟ ਕੇ ਘਾਟ ॥
ताल मदीरे घट के घाट ॥
मन के संकल्प ताल एवं धुंघरुओं की भाँति हैं और

ਦੋਲਕ ਦੁਨੀਆ ਵਾਜਹਿ ਵਾਜ ॥
दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥
उनसे दुनिया का मोह रूपी ढोल रस बज रहा है।

ਨਾਰਦੁ ਨਾਚੈ ਕਲਿ ਕਾ ਭਾਉ ॥
नारदु नाचै कलि का भाउ ॥
कलियुग के प्रभाव से मन रूपी नारद नृत्य कर रहे हैं।

ਜਤੀ ਸਤੀ ਕਹ ਰਾਖਹਿ ਪਾਉ ॥੧॥
जती सती कह राखहि पाउ ॥१॥
फिर ब्रह्मचारी एवं सत्यवादी मनुष्य अपने पैर कहाँ रखें ? ॥ १॥

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥
हे नानक ! मैं प्रभु के नाम पर कुर्बान जाता हूँ।

ਅੰਧੀ ਦੁਨੀਆ ਸਾਹਿਬੁ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥
यह दुनिया (मोह-माया में फँसने के कारण) अन्धी (ज्ञानहीन) बनी हुई है परन्तु प्रभु सबकुछ जानने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰੂ ਪਾਸਹੁ ਫਿਰਿ ਚੇਲਾ ਖਾਇ ॥
गुरू पासहु फिरि चेला खाइ ॥
देखो, कैसी विपरीत रीति चल पड़ी है कि चेला ही गुरु से खाता है ?"

ਤਾਮਿ ਪਰੀਤਿ ਵਸੈ ਘਰਿ ਆਇ ॥
तामि परीति वसै घरि आइ ॥
वह रोटी खाने के लोभ में गुरु के घर आकर रहता है अर्थात् उसका चेला बन जाता है।

ਜੇ ਸਉ ਵਰ੍ਹਿਆ ਜੀਵਣ ਖਾਣੁ ॥
जे सउ वर्हिआ जीवण खाणु ॥
यदि मनुष्य सैंकड़ों वर्ष जीवन रहने तक भी खाता रहे तो

ਖਸਮ ਪਛਾਣੈ ਸੋ ਦਿਨੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥੨॥
खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥२॥
केवल वही दिन प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा, जब वह प्रभु को पहचानता है॥ २॥

ਦਰਸਨਿ ਦੇਖਿਐ ਦਇਆ ਨ ਹੋਇ ॥
दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥
निवेदन करने वाले मनुष्य के चेहरे को देखकर रिश्वतखोर हाकिम को उस पर दया नहीं आती।

ਲਏ ਦਿਤੇ ਵਿਣੁ ਰਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥
लए दिते विणु रहै न कोइ ॥
कोई भी ऐसा हाकिम नहीं है जो रिश्वत लेता अथवा न देता हो।

ਰਾਜਾ ਨਿਆਉ ਕਰੇ ਹਥਿ ਹੋਇ ॥
राजा निआउ करे हथि होइ ॥
राजा तब न्याय करता है, जब उसकी हथेली पर कुछ रख दिया जाता है

ਕਹੈ ਖੁਦਾਇ ਨ ਮਾਨੈ ਕੋਇ ॥੩॥
कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥३॥
और खुदा के नाम के वास्ते वह मानता नहीं ॥ ३॥

ਮਾਣਸ ਮੂਰਤਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ॥
माणस मूरति नानक नामु ॥
हे नानक ! मनुष्य केवल आकार और नाम में ही मनुष्य है।

ਕਰਣੀ ਕੁਤਾ ਦਰਿ ਫੁਰਮਾਨੁ ॥
करणी कुता दरि फुरमानु ॥
प्रभु के दरबार का यही आदेश है कि इन्सान अपने आचरण के कारण कुत्ता ही है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਜਾਣੈ ਮਿਹਮਾਨੁ ॥
गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥
गुरु की दया से यदि मनुष्य इस संसार में अपने आपको अतिथि समझ ले तो

ਤਾ ਕਿਛੁ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥੪॥੪॥
ता किछु दरगह पावै मानु ॥४॥४॥
वह प्रभु के दरबार में कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है॥ ४ ॥ ४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਜੇਤਾ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਧੁਨਿ ਤੇਤੀ ਜੇਤਾ ਰੂਪੁ ਕਾਇਆ ਤੇਰੀ ॥
जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥
हे परमेश्वर ! सुरति द्वारा सुनाई देने वाला जितना भी तेरा यह अनहद शब्द है, यह सारी तेरी ही पैदा की हुई ध्वनि है।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਰਸਨਾ ਆਪੇ ਬਸਨਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕਹਉ ਮਾਈ ॥੧॥
तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥१॥
जितनी भी यह दुनिया दिखाई देती है, यह सब तेरी ही काया है।

ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਏਕੋ ਹੈ ॥
साहिबु मेरा एको है ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं जिह्म है और स्वयं ही नाक है। हे मेरी माता! किसी दूसरे की बात ही मत कर॥ १॥

ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਈ ਏਕੋ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एको है भाई एको है ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई ! मेरा मालिक केवल एक ही है और एक वही मेरा स्वामी है॥१॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਆਪੇ ਲੇਵੈ ਦੇਇ ॥
आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥
वह स्वयं जीवों का नाश करता है और स्वयं ही मुक्त करता है। वह स्वयं जान लेता है और स्वयं ही प्राण देता है।

ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥
आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥२॥
वह स्वयं देखता है और स्वयं ही खुश होता है। वह स्वयं ही जीवों पर अपनी दया-दृष्टि धारण करता है॥ २ ॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥
जो कुछ उसने करना है, उसे वह कर रहा है। दूसरा कोई भी कुछ नहीं कर सकता।

ਜੈਸਾ ਵਰਤੈ ਤੈਸੋ ਕਹੀਐ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੩॥
जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥३॥
जैसे वह प्रभु करता है, वैसे ही मैं उसका वर्णन करता हूँ। हे प्रभु ! सब तेरी ही बड़ाई है॥ ३॥

ਕਲਿ ਕਲਵਾਲੀ ਮਾਇਆ ਮਦੁ ਮੀਠਾ ਮਨੁ ਮਤਵਾਲਾ ਪੀਵਤੁ ਰਹੈ ॥
कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥
कलियुग शराब की मटकी है। माया मीठी शराब है और मतवाला मन इसे पान करता जाता है।

ਆਪੇ ਰੂਪ ਕਰੇ ਬਹੁ ਭਾਂਤੀਂ ਨਾਨਕੁ ਬਪੁੜਾ ਏਵ ਕਹੈ ॥੪॥੫॥
आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥४॥५॥
(बेचारा) नानक यही कहता है कि प्रभु स्वयं अनेक प्रकार के रूप धारण करता है॥ ४॥ ५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਵਾਜਾ ਮਤਿ ਪਖਾਵਜੁ ਭਾਉ ॥
वाजा मति पखावजु भाउ ॥
(हे प्राणी !) बुद्धि को अपना बाजा और प्रीति को अपनी डफली बना।

ਹੋਇ ਅਨੰਦੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥
होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥
इनसे मन में आनंद एवं सदैव उमंग पैदा होती है।

ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਏਹੋ ਤਪ ਤਾਉ ॥
एहा भगति एहो तप ताउ ॥
यही प्रभु-भक्ति एवं यही तपस्या की साधना है।

ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੧॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥१॥
इस प्रेम में तू अपने चरणों से ताल भरकर नृत्य कर ॥ १ ॥

ਪੂਰੇ ਤਾਲ ਜਾਣੈ ਸਾਲਾਹ ॥
पूरे ताल जाणै सालाह ॥
प्रभु की प्रशंसा को अपना ताल-स्वर समझो;

ਹੋਰੁ ਨਚਣਾ ਖੁਸੀਆ ਮਨ ਮਾਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥१॥ रहाउ ॥
दूसरे नृत्य हृदय में भोग-विलास पैदा करते हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਵਜਹਿ ਦੁਇ ਤਾਲ ॥
सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥
सत्य एवं संतोष को अपने दो ताल (छैना एवं तबला) बना और इनकी कमाई कर।

ਪੈਰੀ ਵਾਜਾ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥
पैरी वाजा सदा निहाल ॥
प्रभु के सदैव दर्शन को अपने पैरों के धुंघरू बना।

ਰਾਗੁ ਨਾਦੁ ਨਹੀ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ॥
रागु नादु नही दूजा भाउ ॥
द्वैतभाव के नाश को अपना राग एवं गीत समझ।

ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੨॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥२॥
ऐसे प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर ॥ २॥

ਭਉ ਫੇਰੀ ਹੋਵੈ ਮਨ ਚੀਤਿ ॥
भउ फेरी होवै मन चीति ॥
अपने मन एवं हृदय में प्रभु के सदैव भय को अपने नृत्य में चक्र काटने बना।

ਬਹਦਿਆ ਉਠਦਿਆ ਨੀਤਾ ਨੀਤਿ ॥
बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥
यह बैठते-उठते, हर समय कर।

ਲੇਟਣਿ ਲੇਟਿ ਜਾਣੈ ਤਨੁ ਸੁਆਹੁ ॥
लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥
शरीर को भस्म जानना ही मिट्टी में मिलना है।

ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪਾਉ ॥੩॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥३॥
ऐसे प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर ॥ ३॥

ਸਿਖ ਸਭਾ ਦੀਖਿਆ ਕਾ ਭਾਉ ॥
सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥
दीक्षा (उपदेश) को प्रेम करने वाले शिष्य तेरी मण्डली होवे।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਣਣਾ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥
गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥
गुरुमुख बनकर भगवान के सत्य नाम को सुनता रह।

ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਵੇਰਾ ਵੇਰ ॥
नानक आखणु वेरा वेर ॥
हे नानक ! बार-बार प्रभु के नाम का जाप करो।

ਇਤੁ ਰੰਗਿ ਨਾਚਹੁ ਰਖਿ ਰਖਿ ਪੈਰ ॥੪॥੬॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥४॥६॥
इस प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर ॥ ४॥ ६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਪਉਣੁ ਉਪਾਇ ਧਰੀ ਸਭ ਧਰਤੀ ਜਲ ਅਗਨੀ ਕਾ ਬੰਧੁ ਕੀਆ ॥
पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥
भगवान ने पवन को उत्पन्न करके सारी धरती को स्थापित किया और जल एवं अग्नि को नियमबद्ध किया।

ਅੰਧੁਲੈ ਦਹਸਿਰਿ ਮੂੰਡੁ ਕਟਾਇਆ ਰਾਵਣੁ ਮਾਰਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਇਆ ॥੧॥
अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥१॥
दस सिरों वाले अन्धे अर्थात् मूर्ख (लंकापति) रावण ने अपने सिर कटवा लिए परन्तु उसको मारने से कौन-सी प्रशंसा पा ली ?॥ १॥

ਕਿਆ ਉਪਮਾ ਤੇਰੀ ਆਖੀ ਜਾਇ ॥
किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥
हे प्रभु ! तेरी कौन-कौन सी उपमा कही जा सकती है ?

ਤੂੰ ਸਰਬੇ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥

तू सर्वव्यापक है और सब जीवों में समा रहा है तथा सभी जीव तुझ में ही वृति लगाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਜੁਗਤਿ ਹਥਿ ਕੀਨੀ ਕਾਲੀ ਨਥਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਇਆ ॥

जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ ॥

हे प्रभु! जीवों को पैदा करके तूने उनकी जीवन-युक्ति अपने हाथ में पकड़ी हुई है। फिर कालिया नाग के नाक में नुकेल डाल कर कौन-सी महानता प्राप्त कर ली ?

ਕਿਸੁ ਤੂੰ ਪੁਰਖੁ ਜੋਰੂ ਕਉਣ ਕਹੀਐ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੨॥

किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥२॥

हे प्रभु ! तुम किसके पति हो ? कौन तेरी पत्नी कही जा सकती हैं? जबकि तुम सब जीवों में निरन्तर समा रहे हो ॥ २॥

ਨਾਲਿ ਕੁਟੰਬੁ ਸਾਥਿ ਵਰਦਾਤਾ ਬ੍ਰਹਮਾ ਭਾਲਣ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਗਇਆ ॥

नालि कुट्मबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण स्रिसटि गइआ ॥

वरदाता ब्रह्मा अपने कुटुंब सहित सृष्टि का विस्तार पता करने के लिए कमल की नलकी में गया।

ਆਗੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਓ ਤਾ ਕਾ ਕੰਸੁ ਛੇਦਿ ਕਿਆ ਵਡਾ ਭਇਆ ॥੩॥

आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥३॥

लेकिन आगे जाकर उसको उसके अन्त का पता न लगा। हे प्रभु ! तूने कंस का वध करके क्या महानता प्राप्त की ? ॥ ३॥

ਰਤਨ ਉਪਾਇ ਧਰੇ ਖੀਰੁ ਮਥਿਆ ਹੋਰਿ ਭਖਲਾਏ ਜਿ ਅਸੀ ਕੀਆ ॥

रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ ॥

देवताओं तथा दैत्यों द्वारा क्षीर सागर का मंथन किया गया और अमूल्य रत्न पदार्थ उत्पन्न करके बाहर निकाले गए। (इससे) देवते एवं दैत्य और क्रोध में चिल्लाने लगे कि हमने यह क्या किया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਛਪੈ ਕਿਉ ਛਪਿਆ ਏਕੀ ਏਕੀ ਵੰਡਿ ਦੀਆ ॥੪॥੭॥

कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥४॥७॥

हे नानक ! छिपाने से किस तरह छिपाया जा सकता है। एक-एक करके उसने तमाम रत्न (पदार्थ) बांट दिए थे॥४॥ ७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਰਮ ਕਰਤੂਤਿ ਬੇਲਿ ਬਿਸਥਾਰੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਫਲੁ ਹੂਆ ॥
करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥
शुभ कर्मों एवं नेक आचरण की लता फैली हुई है और उस लता को राम के नाम का फल लगा हुआ है।

ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜੈ ਸਬਦੁ ਨਿਰੰਜਨਿ ਕੀਆ ॥੧॥
तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥१॥
उस राम नाम का कोई स्वरूप अथवा रेखा नहीं। यह अनहद शब्द (सहज ही) गूंजता है। निरंजन ने इस शब्द को पैदा किया है॥ १॥

ਕਰੇ ਵਖਿਆਣੁ ਜਾਣੈ ਜੇ ਕੋਈ ॥
करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥
यदि कोई मनुष्य इस शब्द को समझ ले तो ही वह इसकी व्याख्या कर सकता है

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रितु पीवै सोई ॥१॥ रहाउ ॥
और केवल वही अमृत रस का पान करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ੍ ਪੀਆ ਸੇ ਮਸਤ ਭਏ ਹੈ ਤੂਟੇ ਬੰਧਨ ਫਾਹੇ ॥
जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥
जो मनुष्य अमृत को चखते हैं, वे मस्त हो जाते हैं। उनके बन्धन एवं फाँसी कट जाती है

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਛੋਡੇ ਮਾਇਆ ਕੇ ਲਾਹੇ ॥੨॥
जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥२॥
जब वे ज्योति ज्योत समा जाते हैं तो उनकी माया की तृष्णा मिट जाती है।॥ २॥

ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਰੂਪੁ ਤੇਰਾ ਦੇਖਿਆ ਸਗਲ ਭਵਨ ਤੇਰੀ ਮਾਇਆ ॥
सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥
हे प्रभु ! समस्त ज्योतियों में मैं तेरा ही रूप देखता हूँ। समस्त लोकों में तेरी ही माया विद्यमान है

ਰਾਰੈ ਰੂਪਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਬੈਠਾ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਵਿਚਿ ਛਾਇਆ ॥੩॥
रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥३॥
यह विवादों वाला जगत तेरा ही रूप है पर तू इसमें इन विवादों से निर्लिप्त बैठा है यह माया तेरी छाया है। तू मोह-माया में लीन जीवों पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ ३॥

ਬੀਣਾ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵੈ ਜੋਗੀ ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰਾ ॥
बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥
जो योगी शब्द की वीणा बजाता है, वह अनन्त सुन्दर स्वामी के दर्शन कर लेता है।

ਸਬਦਿ ਅਨਾਹਦਿ ਸੋ ਸਹੁ ਰਾਤਾ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਵਿਚਾਰਾ ॥੪॥੮॥
सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥४॥८॥
नानक यही विचार करता है कि वह योगी अनहद शब्द द्वारा अपने मालिक-प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है।॥ ४ ॥ ८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਮੈ ਗੁਣ ਗਲਾ ਕੇ ਸਿਰਿ ਭਾਰ ॥
मै गुण गला के सिरि भार ॥
मुझ में यही गुण है कि अपने सिर पर मैंने व्यर्थ बातों का बोझ उठाया हुआ है।

ਗਲੀ ਗਲਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ॥
गली गला सिरजणहार ॥
हे जग के रचयिता ! सब बातों में तेरी बातें ही उत्तम हैं।

ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਹਸਣਾ ਬਾਦਿ ॥
खाणा पीणा हसणा बादि ॥
तब तक खाना, पीना एवं हँसना निरर्थक है

ਜਬ ਲਗੁ ਰਿਦੈ ਨ ਆਵਹਿ ਯਾਦਿ ॥੧॥
जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥१॥
जब तक हृदय में प्रभु याद नहीं आता॥ १॥

ਤਉ ਪਰਵਾਹ ਕੇਹੀ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥
तउ परवाह केही किआ कीजै ॥
मनुष्यं किसलिए और क्यों किसी दूसरे की परवाह करे,"

ਜਨਮਿ ਜਨਮਿ ਕਿਛੁ ਲੀਜੀ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
यदि वह अपने समूचे जीवन में प्राप्त करने योग्य वस्तु नाम को एकत्रित करे ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨ ਕੀ ਮਤਿ ਮਤਾਗਲੁ ਮਤਾ ॥
मन की मति मतागलु मता ॥
मन की बुद्धि मदमत्त हाथी जैसी है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਬੋਲੀਐ ਸਭੁ ਖਤੋ ਖਤਾ ॥
जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥
जो कुछ हम बोलते हैं वह सब गलत ही है।

ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਲੈ ਕੀਚੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥
कौन-सा मुँह लेकर हम (प्रभु के समक्ष) वन्दना करें,"

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਦੁਇ ਸਾਖੀ ਪਾਸਿ ॥੨॥
पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥२॥
जबकि पाप एवं पुण्य दोनों साक्षी के तौर पर निकट ही हैं॥ २॥

ਜੈਸਾ ਤੂੰ ਕਰਹਿ ਤੈਸਾ ਕੋ ਹੋਇ ॥
जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥
हे प्रभु ! जैसा तुम किसी को बनाते हो, वैसा वह हो जाता है।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥
तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਜੇਹੀ ਤੂੰ ਮਤਿ ਦੇਹਿ ਤੇਹੀ ਕੋ ਪਾਵੈ ॥
जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥
जैसी सूझ बुद्धि तुम किसी को देते हो, वैसी ही वह प्राप्त करता है।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈ ॥੩॥
तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥३॥
जैसा तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तुम मनुष्य को चलाते हो।॥३॥

ਰਾਗ ਰਤਨ ਪਰੀਆ ਪਰਵਾਰ ॥
राग रतन परीआ परवार ॥
राग एवं रागिनियों का सारा परिवार एक उत्तम रत्न है

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਉਪਜੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰ ॥
तिसु विचि उपजै अम्रितु सार ॥
और इन में नाम रूपी अमृत तत्व उत्पन्न होता है।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕਾ ਇਹੁ ਧਨੁ ਮਾਲੁ ॥ ਜੇ ਕੋ ਬੂਝੈ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ॥੪॥੯॥
नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु बीचारु ॥४॥९॥
हे नानक ! यह सृजनहार प्रभु का धन एवं संपति है।क्या कोई ऐसा मनुष्य है जो इस विचार को समझता है॥ ४॥ ६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ਤਾ ਮਿਲਿ ਸਖੀਆ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ ॥
करि किरपा अपनै घरि आइआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ ॥
जब अपनी कृपा से कंत -प्रभु मेरे घर में आ गया तो मेरी सहेलियों (इन्द्रियों) ने मिलकर विवाह का प्रबंध किया।

ਖੇਲੁ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸਹੁ ਵੀਆਹਣ ਆਇਆ ॥੧॥
खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥१॥
इस खेल को देख कर मेरा मन प्रसन्न हो गया है। मेरा हरि-प्रभु दूल्हा मुझसे विवाह करने के लिए आया है। ॥१॥

ਗਾਵਹੁ ਗਾਵਹੁ ਕਾਮਣੀ ਬਿਬੇਕ ਬੀਚਾਰੁ ॥
गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥
हे स्त्रियो ! गाओ, विवेक एवं विचार के गीत गायन करो।

ਹਮਰੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਭਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे घर में जगजीवन मेरा कंत -प्रभु पधारा है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰੂ ਦੁਆਰੈ ਹਮਰਾ ਵੀਆਹੁ ਜਿ ਹੋਆ ਜਾਂ ਸਹੁ ਮਿਲਿਆ ਤਾਂ ਜਾਨਿਆ ॥

गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ ॥

सतिगुरु द्वारा मेरा विवाह हो गया। जब मैं अपने कंत -प्रभु से मिल गई तो मैंने उसे पहचान लिया।

ਤਿਹੁ ਲੋਕਾ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਰਵਿਆ ਹੈ ਆਪੁ ਗਇਆ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੨॥

तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥२॥

उसका अनहद शब्द रूपी नाम तीन लोकों में विद्यमान हो रहा है। जब मेरा अहंकार निवृत्त हो गया तो मेरा हृदय प्रसन्न हो गया।॥ २॥

ਆਪਣਾ ਕਾਰਜੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਹੋਰਨਿ ਕਾਰਜੁ ਨ ਹੋਈ ॥

आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥

अपना कार्य प्रभु स्वयं ही संवारता है। यह कार्य किसी दूसरे से संवर नहीं सकता अर्थात् सफल नहीं हो सकता।

ਜਿਤੁ ਕਾਰਜਿ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਦਇਆ ਧਰਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥੩॥

जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥३॥

कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को समझता है, कि इस विवाह कार्य के फलस्वरूप सत्य, संतोष, दयां, धर्म पैदा होते हैं।॥ ३॥

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪਿਰੁ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥

भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥

हे नानक ! एक प्रभु ही सब जीव-स्त्रियों का प्रिय है,"

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਹੋਇ ॥੪॥੧੦॥

जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥४॥१०॥

जिस पर वह अपनी दया-दृष्टि धारण करता है, वह सौभाग्यवती हो जाती हैं।॥ ४॥ १० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਗ੍ਰਿਹੁ ਬਨੁ ਸਮਸਰਿ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥

ग्रिहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥

जो मनुष्य सहजावस्था में रहता है, उसके लिए घर एवं जंगल एक समान हैं।

ਦੁਰਮਤਿ ਗਤੁ ਭਈ ਕੀਰਤਿ ਠਾਇ ॥
दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥
उसकी दुर्मति नाश हो जाती है और परमात्मा की कीर्ति उसका स्थान ले लेती है।

ਸਚ ਪਉੜੀ ਸਾਚਉ ਮੁਖਿ ਨਾਂਉ ॥
सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ॥
मुँह से सत्यनाम का जाप करना ईश्वर के पास पहुँचने के लिए सच्ची सीढ़ी है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਾਏ ਨਿਜ ਥਾਉ ॥੧॥
सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥१॥
सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य आत्मस्वरूप प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਮਨ ਚੂਰੇ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਜਾਣੁ ॥
मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥
अपने मन को जीतना ही षड्दर्शन का ज्ञान है।

ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਪੂਰਨ ਭਗਵਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब जोति पूरन भगवानु ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान की ज्योति सर्व जीव-जन्तुओं में परिपूर्ण हो रही है॥१॥ रहाउ ॥

ਅਧਿਕ ਤਿਆਸ ਭੇਖ ਬਹੁ ਕਰੈ ॥
अधिक तिआस भेख बहु करै ॥
माया की अधिकतर तृष्णा के कारण मनुष्य अधिकतर वेष धारण करता है।

ਦੁਖੁ ਬਿਖਿਆ ਸੁਖੁ ਤਨਿ ਪਰਹਰੈ ॥
दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥
दु:ख की पीड़ा शरीर के सुख को नष्ट कर देती है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅੰਤਰਿ ਧਨੁ ਹਿਰੈ ॥
कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥
काम वासना एवं क्रोध आत्मा के धन को चुरा कर ले जाते हैं।

ਦੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਰੈ ॥੨॥
दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥२॥
दुविधा को छोड़कर मनुष्य प्रभु के नाम का जाप करने से मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹਣੁ ਸਹਜ ਅਨੰਦ ॥
सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥
प्रभु की प्रशंसा एवं उपमा में ही सहज आनंद है।

ਸਖਾ ਸੈਨੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਗੋਬਿੰਦ ॥
सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥
गोबिन्द का प्रेम इन्सान का मित्र एवं संबंधी है।

ਆਪੇ ਕਰੇ ਆਪੇ ਬਖਸਿੰਦੁ ॥
आपे करे आपे बखसिंदु ॥
प्रभु स्वयं ही सबकुछ करने वाला और स्वयं ही क्षमाशील है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿ ਪਹਿ ਆਗੈ ਜਿੰਦੁ ॥੩॥
तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥३॥
मेरा तन, मन एवं जीवन परमेश्वर के समक्ष अर्पण है॥ ३॥

ਝੂਠ ਵਿਕਾਰ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਦੇਹ ॥
झूठ विकार महा दुखु देह ॥
झूठ एवं विकार बहुत दुःखं देते हैं।

ਭੇਖ ਵਰਨ ਦੀਸਹਿ ਸਭਿ ਖੇਹ ॥
भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥
समस्त भेष एवं वर्ण (जातियों) मिट्टी की भाँति दिखाई देते हैं।

ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
जो उपजै सो आवै जाइ ॥
जिसने जन्म लिया है, वह जन्मता-मरता रहता है अर्थात् जन्म मरण के चक्र में फँसा रहता है।

ਨਾਨਕ ਅਸਥਿਰੁ ਨਾਮੁ ਰਜਾਇ ॥੪॥੧੧॥
नानक असथिरु नामु रजाइ ॥४॥११॥
हे नानक ! केवल प्रभु की इच्छा ही अटल है॥ ४॥ ११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਏਕੋ ਸਰਵਰੁ ਕਮਲ ਅਨੂਪ ॥
एको सरवरु कमल अनूप ॥
एक सरोवर में अनुपम एवं सुन्दर कमल हैं।

ਸਦਾ ਬਿਗਾਸੈ ਪਰਮਲ ਰੂਪ ॥
सदा बिगासै परमल रूप ॥
यह सदैव ही खिले रहते हैं और सुन्दर रूप वाले एवं सुगन्धित हैं।

ਊਜਲ ਮੋਤੀ ਚੁਗਹਿ ਹੰਸ ॥
ऊजल मोती चूगहि हंस ॥
राजहंस उज्ज्वल मोती चुगता है।

ਸਰਬ ਕਲਾ ਜਗਦੀਸੈ ਅੰਸ ॥੧॥
सरब कला जगदीसै अंस ॥१॥
वह सर्वकला सम्पूर्ण जगदीश्वर का एक अंश है॥१॥

ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ॥
जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥
जो कोई दिखता है, वह जन्म-मरण के अधीन है।

ਬਿਨੁ ਜਲ ਸਰਵਰਿ ਕਮਲੁ ਨ ਦੀਸੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥१॥ रहाउ ॥
बिना जल के सरोवर में कमल नहीं दिखता ॥ १॥ रहाउ॥

ਬਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਪਾਵੈ ਭੇਦੁ ॥
बिरला बूझै पावै भेदु ॥
कोई विरला पुरुष ही इस रहस्य को जानता एवं समझता है।

ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਕਹੈ ਨਿਤ ਬੇਦੁ ॥
साखा तीनि कहै नित बेदु ॥
वेद सदा ही तीन शाखाओं का वर्णन करते हैं।

ਨਾਦ ਬਿੰਦ ਕੀ ਸੁਰਤਿ ਸਮਾਇ ॥
नाद बिंद की सुरति समाइ ॥
जो निर्गुण एवं सर्गुण प्रभु की वृति में लीन होता है,"

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇ ॥੨॥
सतिगुरु सेवि परम पदु पाइ ॥२॥
वह सतिगुरु की सेवा करके परम पदवी प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਮੁਕਤੋ ਰਾਤਉ ਰੰਗਿ ਰਵਾਂਤਉ ॥
मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥
जो मनुष्य प्रभु के प्रेम में अनुरक्त है और उसका नाम-स्मरण करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਰਾਜਨ ਰਾਜਿ ਸਦਾ ਬਿਗਸਾਂਤਉ ॥
राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥
वह राजाओं का महाराजा है और हमेशा खिला रहता है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥
हे प्रभु ! अपनी कृपा धारण करके जिसे तुम बचाते हो,"

ਬੂਡਤ ਪਾਹਨ ਤਾਰਹਿ ਤਾਰਿ ॥੩॥
बूडत पाहन तारहि तारि ॥३॥
चाहे वह डूबता हुआ पत्थर हो, उसे तुम पार कर देते हो।॥ ३॥

ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਮਹਿ ਜਾਣਿਆ ॥
त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥
हे प्रभु ! तीनों लोकों में तेरा प्रकाश है और मैं तुझे तीनों लोकों में व्यापक अनुभव करता हूँ।

ਉਲਟ ਭਈ ਘਰੁ ਘਰ ਮਹਿ ਆਣਿਆ ॥
उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥
जब मेरी सुरति माया से हट गई तो इसने मुझे शरीर रूपी घर में ही आत्म स्वरूप में स्थित कर दिया।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥
जो प्रेम में भीगा दिन-रात प्रभु की भक्ति करता है

ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗੈ ਪਾਇ ॥੪॥੧੨॥
नानकु तिन कै लागै पाइ ॥४॥१२॥
मैं नानक उसके चरण पकड़ता हूँ, ॥ ४॥ १२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚੀ ਹੁਜਤਿ ਦੂਰਿ ॥
गुरमति साची हुजति दूरि ॥
गुरु की सच्ची शिक्षा द्वारा मनुष्य का वाद-विवाद दूर हो जाता है।

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਲਾਗੈ ਧੂਰਿ ॥
बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥
अधिक चतुरता से प्राणी को पापों की धूल लग जाती है।

ਲਾਗੀ ਮੈਲੁ ਮਿਟੈ ਸਚ ਨਾਇ ॥
लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥
(लेकिन) प्रभु के सत्यनाम से लगी हुई मैल मिट जाती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੧॥
गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥१॥
गुरु की दया से जीव सत्यनाम के प्रेम में लीन रहता है। १॥

ਹੈ ਹਜੂਰਿ ਹਾਜਰੁ ਅਰਦਾਸਿ ॥
है हजूरि हाजरु अरदासि ॥
ईश्वर प्रत्यक्ष है उसकी उपस्थिति में प्रार्थना कर।

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਾਚੁ ਕਰਤੇ ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥१॥ रहाउ ॥
दुःख एवं सुख सत्यस्वरूप कर्तार प्रभु के पास हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥
कूड़ु कमावै आवै जावै ॥
जो मनुष्य झूठ की कमाई करता है, वह जन्म-मरण के चक्र में फंस जाता है।

ਕਹਣਿ ਕਥਨਿ ਵਾਰਾ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥
कहणि कथनि वारा नही आवै ॥
कहने एवं कथन करने से आवागमन (जन्म-मरण के चक्र) के अन्त का पता नहीं लगता।

ਕਿਆ ਦੇਖਾ ਸੂਝ ਬੂਝ ਨ ਪਾਵੈ ॥
किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥
उसे क्या दिखाई दे गया है ? वह कुछ भी सोच-समझ कर नहीं करता।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਨਿ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥
बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै ॥२॥
प्रभु-नाम के बिना मनुष्य के मन में तृप्ति नहीं होती ॥ २॥

ਜੋ ਜਨਮੇ ਸੇ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪੇ ॥
जो जनमे से रोगि विआपे ॥
जिन्होंने (मृत्युलोक में) जन्म लिया है, वह रोगों में ग्रस्त हैं और

ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਦੂਖਿ ਸੰਤਾਪੇ ॥
हउमै माइआ दूखि संतापे ॥
माया के अहंकार की पीड़ा से दुखी किए हुए हैं।

ਸੇ ਜਨ ਬਾਚੇ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ॥
से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥
जिन पुरुषों की परमात्मा स्वयं रक्षा करता है, वे (रोगों की पीड़ा से) बच जाते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖੇ ॥੩॥
सतिगुरु सेवि अम्रित रसु चाखे ॥३॥
सतिगुरु की सेवा करके वह अमृत रस चखते हैं॥ ३॥

ਚਲਤਉ ਮਨੁ ਰਾਖੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਾਖੈ ॥
चलतउ मनु राखै अम्रितु चाखै ॥
जो मनुष्य अपने चंचल मन पर अंकुश लगाता है,वह अमृत रस चखता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦੁ ਭਾਖੈ ॥
सतिगुर सेवि अम्रित सबदु भाखै ॥
वह सतिगुरु की सेवा करता है और अमृत वचन बोलता है।

ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੪॥੧੩॥
साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ नानक विचहु आपु गवाए ॥४॥१३॥
सच्चे शब्द के माध्यम से उसकी मुक्ति एवं गति हो जाती है।हे नानक ! ऐसे व्यक्ति के मन का अभिमान दूर हो जाता है॥ ४॥ १३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਜੋ ਤਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਸਚੁ ਥੀਆ ॥
जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥
परमात्मा ने जो कुछ भी किया है, वह सत्य हुआ है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
अम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥
प्रभु का अमृत नाम सतिगुरु ने दिया है।

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨਾਹੀ ਮਨਿ ਭੰਗੁ ॥
हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥
मनुष्य अपने हृदय में प्रभु-नाम होता है और मानसिक तौर पर उससे अलग नहीं होता

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ਸੰਗੁ ॥੧॥
अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥१॥
वह दिन-रात अपने प्रियतम-प्रभु की संगति में रहता है ॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਰਾਖਹੁ ਅਪਨੀ ਸਰਣਾਈ ॥
हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥
हे श्रीहरि ! मुझे अपनी शरण में रखें।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से मैंने हरि-रस प्राप्त किया है और नवनिधियाँ देने वाले नाम-पदार्थ को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਚੁ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥
करम धरम सचु साचा नाउ ॥
जिन मनुष्यों के कर्म एवं धर्म परमात्मा का सत्यनाम ही है,"

ਤਾ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥
उन पर मैं हमेशा बलिहारी जाता हूँ।

ਜੋ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जो हरि राते से जन परवाणु ॥
जो मनुष्य प्रभु में अनुरक्त रहते हैं, वे स्वीकृत हो जाते हैं।

ਤਿਨ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥੨॥
तिन की संगति परम निधानु ॥२॥
उनकी संगति में महान् धन प्राप्त होता है।॥ २ ॥

ਹਰਿ ਵਰੁ ਜਿਨਿ ਪਾਇਆ ਧਨ ਨਾਰੀ ॥
हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥
वह नारी धन्य है, जिसे प्रभु अपने पति के तौर पर प्राप्त हुआ है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਾਤੀ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥
हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥
वह शब्द का चिन्तन करती है और प्रभु में मिल जाती है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸੰਗਤਿ ਕੁਲ ਤਾਰੈ ॥
आपि तरै संगति कुल तारै ॥
वह न केवल स्वयं ही (संसार सागर से) पार हो जाती है, अपितु समुदाय को भी पार कर देती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੈ ॥੩॥
सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥३॥
वह सतिगुरु की सेवा करती है और परम तत्व को सोचती समझती है॥ ३॥

ਹਮਰੀ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥
हमरी जाति पति सचु नाउ ॥
प्रभु का सच्चा नाम मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੰਜਮੁ ਸਤ ਭਾਉ ॥
करम धरम संजमु सत भाउ ॥
सत्य का प्रेम ही मेरा कर्म, धर्म एवं संयम है।

ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਪੂਛ ਨ ਹੋਇ ॥
नानक बखसे पूछ न होइ ॥
हे नानक ! जिस मनुष्य को प्रभु क्षमा कर देता है, उससे (कर्मों का) कोई लेखा-जोखा नहीं लिया जाता।

ਦੂਜਾ ਮੇਟੇ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥੪॥੧੪॥
दूजा मेटे एको सोइ ॥४॥१४॥
एक वह प्रभु ही द्वैतवाद का नाश करता है॥ ४॥ १४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਇਕਿ ਆਵਹਿ ਇਕਿ ਜਾਵਹਿ ਆਈ ॥
इकि आवहि इकि जावहि आई ॥
कुछ मनुष्य दुनिया में जन्म लेते हैं और कुछ जन्म लेकर मर जाते हैं।

ਇਕਿ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਰਹਹਿ ਸਮਾਈ ॥
इकि हरि राते रहहि समाई ॥
भगवान में मग्न हुए कुछ मनुष्य उसमें ही समाए रहते हैं।

ਇਕਿ ਧਰਨਿ ਗਗਨ ਮਹਿ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵਹਿ ॥
इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥
कुछ मनुष्यों को धरती एवं गगन कोई सुख का स्थान नहीं मिलता।

ਸੇ ਕਰਮਹੀਣ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਧਿਆਵਹਿ ॥੧॥
से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥१॥
क्योंकि वह कर्महीन (बदकिस्मत) मनुष्य प्रभु के नाम का चिन्तन नहीं करते॥ १ ॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਈ ॥
गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥
पूर्ण गुरु से मुक्ति का मार्ग प्राप्त होता है।

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਖੁ ਵਤ ਅਤਿ ਭਉਜਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਲੰਘਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघाई ॥१॥ रहाउ ॥
यह संसार विष जैसा महा भयानक सागर है। गुरु के शब्द द्वारा परमात्मा जीव को भवसागर से पार कर देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ੍ ਕਉ ਆਪਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ॥
जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥
जिन्हें प्रभु अपने साथ मिला लेता है,

ਤਿਨ ਕਉ ਕਾਲੁ ਨ ਸਾਕੈ ਪੇਲਿ ॥
तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥
उनको मृत्यु भी कुचल नहीं सकती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲ ਰਹਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥
गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥
प्यारे गुरुमुख कमल की भाँति निर्मल रहते हैं

ਜਿਉ ਜਲ ਅੰਭ ਊਪਰਿ ਕਮਲ ਨਿਰਾਰੇ ॥੨॥
जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥२॥
जो जल के भीतर-एवं ऊपर निर्लिप्त विचरते हैं।॥ २॥

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਹੁ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ॥
बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥
बताओ, हम किसे बुरा अथवा भला कहें,"

ਦੀਸੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਲਹੀਐ ॥
दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥
जबकि प्रभु सबके भीतर नजर आता है। मैं गुरु के माध्यम से सत्य को जानता,"

ਅਕਥੁ ਕਥਉ ਗੁਰਮਤਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥
अकथनीय प्रभु को बयान करता और गुरु के उपदेश को सोचता-समझता हूँ।

ਮਿਲਿ ਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਪਾਵਉ ਪਾਰੁ ॥੩॥
मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥३॥
मैं गुरुं की संगति में मिलकर प्रभु के पार की खोज करता हूँ॥ ३॥

ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬਹੁ ਭੇਦ ॥
सासत बेद सिम्रिति बहु भेद ॥
शास्त्रों, वेदों एवं स्मृतियों के अधिकतर भेदों का ज्ञान

ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਰੇਦ ॥
अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥
एवं अड़सठ तीर्थों को स्नान, हरि रस का हृदय में निवास ही है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥
गुरुमुख बड़े पवित्र हैं क्योंकि उन्हें (विकारों की) कोई मैल नहीं लगती।

ਨਾਨਕ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਡੇ ਧੁਰਿ ਭਾਗੈ ॥੪॥੧੫॥
नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥४॥१५॥
हे नानक ! शुरु से ही जिनके भाग्य अच्छे लिखे हुए हों प्रभु का नाम उनके हृदय में ही बसता है॥ ४ ॥ १५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਪਾਇ ਲਗਉ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥
निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥
मैं झुक-झुक कर अपने गुरु के चरणों पर नतमस्तक होता हूँ, जिनकी दया से मैंने सर्वव्यापक राम को देख लिया है।

ਕਰਤ ਬੀਚਾਰੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਰਵਿਆ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖਿ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥੧॥
करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥१॥
हरि के गुणों का विचार करके मैं उसे ही याद कर रहा हूँ और अपने हृदय में हरि के दर्शन-करके इसके गुणों का विचार कर रहा हूँ॥ १॥

ਬੋਲਹੁ ਰਾਮੁ ਕਰੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥
बोलहु रामु करे निसतारा ॥
राम-राम बोलो, चूंकि राम का नाम भवसागर से मुक्त करवा देता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਲਾਭੈ ਮਿਟੈ ਅਗਿਆਨੁ ਹੋਇ ਉਜੀਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से प्रभु रूपी रत्न मिलता है, जिससे अज्ञान मिट जाता है और प्रभु-ज्योति का उजाला हो जाता है। १॥ रहाउ ॥

ਰਵਨੀ ਰਵੈ ਬੰਧਨ ਨਹੀ ਤੂਟਹਿ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥
रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥
केवल जिव्ह से उच्चारण करने से बन्धन नहीं टूटते और भीतर से अहंकार एवं दुविधा दूर नहीं होते।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਹਉਮੈ ਤੂਟੈ ਤਾ ਕੋ ਲੇਖੈ ਪਾਈ ॥੨॥
सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥२॥
जब मनुष्य का मिलन सतिगुरु से होता है तो उसकी दुविधा दूर हो जाती है। केवल तभी उसका मनुष्य जन्म सफल होता है॥ २॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥
हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥
जो व्यक्ति सुखों के सागर प्रियतम परमात्मा को अपने हृदय में बसाता है, उसका हरि-हरि नाम जपता है और उसकी भक्ति करता रहता है,"

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਮਤਿ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੩॥
भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥३॥
जो अपनी मति गुरुमत अनुसार रखता है, ऐसे भक्तजन को परमेश्वर भवसागर से पार कर देता है, चूंकि वह जग का जीवन, भक्तवत्सल एवं सबका दाता है॥ ३॥

ਮਨ ਸਿਉ ਜੂਝਿ ਮਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਏ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਏ ॥
मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥
जो जीव अपने मन से जूझता हुआ विकारों की ओर से मर जाता है, वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है, उसकी अभिलाषा मन में ही मिट जाती है।

ਨਾਨਕ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸਹਜ ਭਾਇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੪॥੧੬॥
नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥४॥१६॥
हे नानक ! यदि जगजीवन प्रभु कृपा धारण करे तो जीव की सहज ही उसमें वृति लगी रहती है॥ ४॥ १६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਿਸ ਕਉ ਕਹਹਿ ਸੁਣਾਵਹਿ ਕਿਸ ਕਉ ਕਿਸੁ ਸਮਝਾਵਹਿ ਸਮਝਿ ਰਹੇ ॥

किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥

किसे कुछ कहें, किसे कुछ सुनाएँ और किसे कुछ समझाएँ ताकि वह समझदार हो जाए ?"

ਕਿਸੈ ਪੜਾਵਹਿ ਪੜਿ ਗੁਣਿ ਬੂਝੈ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੰਤੋਖਿ ਰਹੇ ॥੧॥

किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझै सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥१॥

किसे पढ़ाए ताकी वह पढ़कर प्रभु के गुणों को समझ जाये और सच्चे गुरु शब्द द्वारा संतोष में बसा रहे॥ १॥

ਐਸਾ ਗੁਰਮਤਿ ਰਮਤੁ ਸਰੀਰਾ ॥ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮੇਰੇ ਮਨ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर ग्मभीरा ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! सतिगुरु के उपदेश से ऐसे हरि का भजन कर,"जो समस्त शरीरों में समाया हुआ और बहुत ही गहरा एवं गंभीर है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਤ ਤਰੰਗ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥
अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥
जिनके मन में प्रभु-भक्ति की अनंत लहरें उठती रहती हैं और हरि के प्रेम में मग्न रहते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਸੂਚੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੰਗਾ ॥
अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥
जिसे प्रभु की प्रशंसा की संगति प्राप्त है, वह दिन-रात ही पवित्र है।

ਮਿਥਿਆ ਜਨਮੁ ਸਾਕਤ ਸੰਸਾਰਾ ॥
मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥
इस संसार में शाक्त मनुष्य का जन्म निरर्थक है।

ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਜਨੁ ਰਹੈ ਨਿਰਾਰਾ ॥੨॥
राम भगति जनु रहै निरारा ॥२॥
राम की भक्ति करने वाला मनुष्य मोह-मांया से निर्लिप्त रहता है॥ २॥

ਸੂਚੀ ਕਾਇਆ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥
वही शरीर शुद्ध है-जो हरि के गुण गाता रहता है।

ਆਤਮੁ ਚੀਨਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥
आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥
अपने चित्त में ईश्वर को स्मरण करके यह (शरीर) उसकी प्रीति में लीन रहता है।

ਆਦਿ ਅਪਾਰੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਹੀਰਾ ॥
आदि अपारु अपर्मपरु हीरा ॥
प्रभु आदि, अनन्त, अपरम्पार एवं हीरा है।

ਲਾਲਿ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੩॥
लालि रता मेरा मनु धीरा ॥३॥
उस प्रियतम प्रभु से मेरा मन अनुरक्त एवं संतुष्ट हुआ है॥ ३॥

ਕਥਨੀ ਕਹਹਿ ਕਹਹਿ ਸੇ ਮੂਏ ॥
कथनी कहहि कहहि से मूए ॥
जो केवल मौखिक बातें ही कहते हैं, वह वास्तव में मृत हैं।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਰਿ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਤੂੰ ਹੈ ॥
सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥
वह प्रभु दूर नहीं। हे प्रभु ! तुम निकट ही हो।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਮਾਇਆ ਛਾਇਆ ॥
सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥
मैंने समूचा जगत देखा है, यह माया तो प्रभु की छाया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੪॥੧੭॥
नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥४॥१७॥
हे नानक ! गुरु के उपदेश से मैंनें प्रभु नाम का ध्यान किया॥ ४॥ १७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਤਿਤੁਕਾ ॥
आसा महला १ तितुका ॥
आसा महला १ तितुका ॥

ਕੋਈ ਭੀਖਕੁ ਭੀਖਿਆ ਖਾਇ ॥
कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥
कोई भिखारी है, जो भिक्षा लेकर खाता है

ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
कोई राजा रहिआ समाइ ॥
और कोई राजा है, जो राज के सुखों में लीन रहता है।

ਕਿਸ ਹੀ ਮਾਨੁ ਕਿਸੈ ਅਪਮਾਨੁ ॥
किस ही मानु किसै अपमानु ॥
किसी मनुष्य को मान मिलता है और किसी को अपमान।

ਢਾਹਿ ਉਸਾਰੇ ਧਰੇ ਧਿਆਨੁ ॥
ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥
प्रभु ही दुनिया का नाश करता है, रचना करता है और सबको अपने ध्यान में रखता है।

ਤੁਝ ਤੇ ਵਡਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
तुझ ते वडा नाही कोइ ॥
हे प्रभु ! तुझ से बड़ा कोई नहीं।

ਕਿਸੁ ਵੇਖਾਲੀ ਚੰਗਾ ਹੋਇ ॥੧॥
किसु वेखाली चंगा होइ ॥१॥
मैं किसे तेरे समक्ष उपस्थित करूँ, जो तुझसे अच्छा है?॥ १॥

ਮੈ ਤਾਂ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥
मै तां नामु तेरा आधारु ॥
हे प्रभु ! केवल तेरा नाम मेरे जीवन का आधार है।

ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਕਰਣਹਾਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तूं दाता करणहारु करतारु ॥१॥ रहाउ ॥
तू ही दाता, सबकुछ करने वाला जगत का करतार है॥ १॥ रहाउ॥

ਵਾਟ ਨ ਪਾਵਉ ਵੀਗਾ ਜਾਉ ॥
वाट न पावउ वीगा जाउ ॥
हे स्वामी ! मैं तेरे मार्ग नहीं चलता अपितु टेढ़े (पेचदार) मार्ग जाता हूँ।

ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥
दरगह बैसण नाही थाउ ॥
प्रभु के दरबार में मुझे बैठने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता।

ਮਨ ਕਾ ਅੰਧੁਲਾ ਮਾਇਆ ਕਾ ਬੰਧੁ ॥
मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥
मैं मन का अन्धा हूँ और माया में फँसा हुआ हूँ

ਖੀਨ ਖਰਾਬੁ ਹੋਵੈ ਨਿਤ ਕੰਧੁ ॥
खीन खराबु होवै नित कंधु ॥
और मेरे शरीर की दीवार नित्य ही क्षीण एवं कमजोर हो रही है।

ਖਾਣ ਜੀਵਣ ਕੀ ਬਹੁਤੀ ਆਸ ॥
खाण जीवण की बहुती आस ॥
तूने खाने और अधिक जीने की भारी आशा रखी हुई है

ਲੇਖੈ ਤੇਰੈ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ ॥੨॥
लेखै तेरै सास गिरास ॥२॥
परन्तु तुम जानते नहीं कि तुम्हारी सांस एवं ग्रास आगे गिने हुए हैं।॥ २॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਅੰਧੁਲੇ ਦੀਪਕੁ ਦੇਇ ॥
अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥
हे प्रभु ! (ज्ञान से) अन्धे मनुष्य को सदैव ही ज्ञान का दीपक प्रदान कर

ਭਉਜਲ ਡੁਬਤ ਚਿੰਤ ਕਰੇਇ ॥
भउजल डूबत चिंत करेइ ॥
और उसकी चिन्ता कर जो भयानक संसार-सागर में डूब रहा है।

ਕਹਹਿ ਸੁਣਹਿ ਜੋ ਮਾਨਹਿ ਨਾਉ ॥ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੈ ਤਾ ਕੈ ਜਾਉ ॥
कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥
जो मनुष्य नाम का जाप करता है, सुनता एवं आस्था रखता है,"मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਏਕ ਕਹੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
नानकु एक कहै अरदासि ॥
हे प्रभु ! नानक एक प्रार्थना करता है कि

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰੈ ਪਾਸਿ ॥੩॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥
उसकी आत्मा एवं शरीर तुझ पर अर्पित हैं॥ ३॥

ਜਾਂ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਜਪੀ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ॥
जां तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥
यदि तू प्रदान करे तो मैं तेरे नाम का जाप करूँगा।

ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਹੋਵੈ ਥਾਉ ॥
दरगह बैसण होवै थाउ ॥
इस तरह मैं सत्य के दरबार में बैठने के लिए स्थान प्राप्त कर लूंगा।

ਜਾਂ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਦੁਰਮਤਿ ਜਾਇ ॥
जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥
जब तुझे अच्छा लगता है तो दुर्बुद्धि दूर हो जाती है और

ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਆਇ ॥
गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥
ज्ञान रूपी रत्न आकर चित्त में बस जाता है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ॥
नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥
यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो सतिगुरु मिल जाता है

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥੪॥੧੮॥
प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥४॥१८॥
नानक प्रार्थना करते हैं और भवसागर से पार हो जाता है। ४॥ १८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪਦੇ ॥
आसा महला १ पंचपदे ॥
आसा महला १ पंचपदे ॥

ਦੁਧ ਬਿਨੁ ਧੇਨੁ ਪੰਖ ਬਿਨੁ ਪੰਖੀ ਜਲ ਬਿਨੁ ਉਤਭੁਜ ਕਾਮਿ ਨਾਹੀ ॥
दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥
हे प्रभु ! दूध के बिना गाय, पंखों के बिना पक्षी एवं जल के बिना वनस्पति किसी काम की नहीं।

ਕਿਆ ਸੁਲਤਾਨੁ ਸਲਾਮ ਵਿਹੂਣਾ ਅੰਧੀ ਕੋਠੀ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਨਾਹੀ ॥੧॥
किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥१॥
वह कैसा सुल्तान है, जिसे कोई सलाम ही न करे ? इसी तरह तेरे नाम के बिना आत्मा की कोठी में भयानक अन्धेरा है॥ १॥

ਕੀ ਵਿਸਰਹਿ ਦੁਖੁ ਬਹੁਤਾ ਲਾਗੈ ॥
की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥
हे प्रभु ! मैं तुझे क्यों विस्मृत करूँ, तुझे भुलाने से मुझे बहुत दुःख लगता है

ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਤੂੰ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥१॥ रहाउ ॥
बहुत दुःख लगता है प्रभु तो विस्मृत न हो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਜੀਭ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਕੰਨੀ ਪਵਣੁ ਨ ਵਾਜੈ ॥
अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै ॥
बुढ़ापा आने पर मनुष्य के नेत्रों की रोशनी कम हो जाती है, जिब का स्वाद खत्म हो जाता है और उसके कान आवाज़ नहीं सुनते।

ਚਰਣੀ ਚਲੈ ਪਜੂਤਾ ਆਗੈ ਵਿਣੁ ਸੇਵਾ ਫਲ ਲਾਗੇ ॥੨॥

चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥२॥

किसी के आगे सहारा दिए हुए ही वह पैर से चलता है। बिना सेवा के ऐसे फल-जीवन को लगते हैं ॥ २॥

ਅਖਰ ਬਿਰਖ ਬਾਗ ਭੁਇ ਚੋਖੀ ਸਿੰਚਿਤ ਭਾਉ ਕਰੇਹੀ ॥

अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥

अपने हृदय के बाग के खुले खेत में सतिगुरु के उपदेश का वृक्ष पैदा कर और इसे प्रभु के प्रेम से सीच।

ਸਭਨਾ ਫਲੁ ਲਾਗੈ ਨਾਮੁ ਏਕੋ ਬਿਨੁ ਕਰਮਾ ਕੈਸੇ ਲੇਹੀ ॥੩॥

सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥३॥

सभी वृक्षों को एक प्रभु के नाम का फल लगा हुआ है। उसकी दया बिना मनुष्य इसे किस तरह पा सकता है ?॥ ३॥

ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਤੇਤੇ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਵਿਣੁ ਸੇਵਾ ਫਲੁ ਕਿਸੈ ਨਾਹੀ ॥

जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥

जितने भी जीव-जन्तु हैं, सब तेरे ही हैं। सेवा के बिना किसी को भी फल प्राप्त नहीं होता।

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਭਾਣਾ ਤੇਰਾ ਹੋਵੈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਜੀਉ ਰਹੈ ਨਾਹੀ ॥੪॥

दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥४॥

दुख एवं सुख तेरी इच्छा में है। नाम के बिना जीवन नहीं रहता ॥ ४॥

ਮਤਿ ਵਿਚਿ ਮਰਣੁ ਜੀਵਣੁ ਹੋਰੁ ਕੈਸਾ ਜਾ ਜੀਵਾ ਤਾਂ ਜੁਗਤਿ ਨਾਹੀ ॥

मति विचि मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥

गुरु के उपदेश द्वारा मरना ही सत्य जीवन है। दूसरी प्रकार किस तरह जीवन हो सकता है ? यदि मैं दूसरी तरह जीता हूँ तो वह उपयुक्त युक्ति नहीं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜੀਵਾਲੇ ਜੀਆ ਜਹ ਭਾਵੈ ਤਹ ਰਾਖੁ ਤੁਹੀ ॥੫॥੧੯॥

कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥५॥१९॥

हे नानक ! प्रभु जीवों को अपनी इच्छानुसार जीवन प्रदान करता है। हे प्रभु ! मुझे वहाँ रख, जहाँ तुझे अच्छा लगता है। ॥५॥१९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਾਇਆ ਬ੍ਰਹਮਾ ਮਨੁ ਹੈ ਧੋਤੀ ॥
काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥
यह मानव शरीर ही पूजनीय ब्राह्मण है और मन इस ब्राह्मण की धोती है,"

ਗਿਆਨੁ ਜਨੇਊ ਧਿਆਨੁ ਕੁਸਪਾਤੀ ॥
गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥
ब्रह्म-ज्ञान इसका जनेऊ है और प्रभु का ध्यान इसकी कुशा है।

ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਜਸੁ ਜਾਚਉ ਨਾਉ ॥
हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥
तीर्थों पर स्नान की जगह मैं हरि का नाम एवं यश ही माँगता हूँ।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬ੍ਰਹਮਿ ਸਮਾਉ ॥੧॥
गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥१॥
गुरुं की दया से मैं प्रभु में विलीन हो जाऊँगा ॥ १॥

ਪਾਂਡੇ ਐਸਾ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥
पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥
हे पण्डित ! इस तरह ब्रह्म का विचार कर की

ਨਾਮੇ ਸੁਚਿ ਨਾਮੋ ਪੜਉ ਨਾਮੇ ਚਜੁ ਆਚਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥१॥ रहाउ ॥
उसका नाम तेरी पवित्रता, नाम तेरी बड़ाई तथा तेरी बुद्धिमता एवं जीवन-आचरण हो।॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਹਰਿ ਜਨੇਊ ਜਿਚਰੁ ਜੋਤਿ ਹੈ ਨਾਲਿ ॥
बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥
बाहरी जनेऊ तब तक रहता है, जब तक प्रभु-ज्योति तेरे भीतर विद्यमान है।

ਧੋਤੀ ਟਿਕਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
धोती टिका नामु समालि ॥
प्रभु का नाम-सिमरन किया कर, क्योंकि नाम ही तेरी धोती एवं तिलक है।

ਐਥੈ ਓਥੈ ਨਿਬਹੀ ਨਾਲਿ ॥
ऐथै ओथै निबही नालि ॥
यही लोक-परलोक में सहायक होगा।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰਿ ਕਰਮ ਨ ਭਾਲਿ ॥੨॥
विणु नावै होरि करम न भालि ॥२॥
नाम के अलावा दूसरे कर्मों की खोज मत कर ॥ २॥

ਪੂਜਾ ਪ੍ਰੇਮ ਮਾਇਆ ਪਰਜਾਲਿ ॥
पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥
प्रेम से भगवान की पूजा कर तथा माया की तृष्णा को जला दे।

ਏਕੋ ਵੇਖਹੁ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥
एको वेखहु अवरु न भालि ॥
केवल एक ईश्वर को हर जगह देख तथा किसी अन्य की तलाश मत कर।

ਚੀਨ੍ਹੈ ਤਤੁ ਗਗਨ ਦਸ ਦੁਆਰ ॥
चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥
दसम द्वार के आकाश पर तू यथार्थ को देख

ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਪਾਠ ਪੜੈ ਬੀਚਾਰ ॥੩॥
हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥३॥
और अपने मुख से हरि का पाठ पढ़ और इसका चिन्तन कर ॥ ३॥

ਭੋਜਨੁ ਭਾਉ ਭਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥
भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥
प्रभु-प्रेम के भोजन से दुविधा एवं भय भाग जाते हैं।

ਪਾਹਰੂਅਰਾ ਛਬਿ ਚੋਰੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥
यदि दबदबे वाला संतरी पहरा दे रहा हो तो चोर रात को सेंध नहीं लगाते।

ਤਿਲਕੁ ਲਿਲਾਟਿ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ॥
तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥
एक प्रभु का ज्ञान ही माथे के ऊपर का तिलक है।

ਬੂਝੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਅੰਤਰਿ ਬਿਬੇਕੁ ॥੪॥
बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥४॥
अपने हृदय में मौजूद परमात्मा को पहचानना ही असल ज्ञान है। ४ ।

ਆਚਾਰੀ ਨਹੀ ਜੀਤਿਆ ਜਾਇ ॥
आचारी नही जीतिआ जाइ ॥
कर्मकाण्डों द्वारा ईश्वर जीता नहीं जा सकता।

ਪਾਠ ਪੜੈ ਨਹੀ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇ ॥
पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥
न ही धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन द्वारा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।

ਅਸਟ ਦਸੀ ਚਹੁ ਭੇਦੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥
अठारह पुराण एवं चार वेद (भी) उसके रहस्य को नहीं जानते।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੫॥੨੦॥
नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥५॥२०॥
हे नानक ! सतिगुरु ने मुझे प्रभु दिखा दिया है ॥५॥१९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਸੇਵਕੁ ਦਾਸੁ ਭਗਤੁ ਜਨੁ ਸੋਈ ॥
सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥
असल में वही ठाकुर जी का सेवक, दास एवं भक्त है।

ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਦਾਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥
ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥
गुरमुख ही ठाकुर जी का दास होता है।

ਜਿਨਿ ਸਿਰਿ ਸਾਜੀ ਤਿਨਿ ਫੁਨਿ ਗੋਈ ॥
जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥
जिस प्रभु ने यह सृष्टि-रचना की है, वही अन्त में इसका नाश करता है।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੧॥
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥१॥
उसके अलावा अन्य कोई महान् नहीं ॥ १॥

ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥
गुरु के शब्द द्वारा गुरुमुख सत्यनाम की आराधना करता है और

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੇ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥१॥ रहाउ ॥
सत्य के दरबार में वह सत्यवादी माना जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚਾ ਅਰਜੁ ਸਚੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
सचा अरजु सची अरदासि ॥
भक्त की विनती एवं सच्ची अरदास को

ਮਹਲੀ ਖਸਮੁ ਸੁਣੇ ਸਾਬਾਸਿ ॥
महली खसमु सुणे साबासि ॥
सच्चा मालिक प्रभु अपने महल में बैठकर सुनता है और उसे शाबाश कहता है।

ਸਚੈ ਤਖਤਿ ਬੁਲਾਵੈ ਸੋਇ ॥
सचै तखति बुलावै सोइ ॥
वह उसे अपने सत्य के सिंहासन पर निमंत्रित करता है

ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥
दे वडिआई करे सु होइ ॥२॥
और उनको मान-सम्मान प्रदान करता है। जो कुछ वह करता है, वही होता है।॥ २॥

ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ਤੂਹੈ ਦੀਬਾਣੁ ॥
तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥
हे जग के रचयिता ! तू ही मेरा दरबार है और तू ही मेरी ताकत है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥
गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥
तेरे दरबार में जाने हेतु गुरु का शब्द ही मेरे पास सत्य का चिन्ह है।

ਮੰਨੇ ਹੁਕਮੁ ਸੁ ਪਰਗਟੁ ਜਾਇ ॥
मंने हुकमु सु परगटु जाइ ॥
जो मनुष्य प्रभु के हुक्म का पालन करता है, वह प्रत्यक्ष ही उसके पास चला जाता है।

ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੈ ਠਾਕ ਨ ਪਾਇ ॥੩॥
सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥३॥
सत्य के चिन्ह कारण उसे बाधा नहीं आती ॥ ३ ॥

ਪੰਡਿਤ ਪੜਹਿ ਵਖਾਣਹਿ ਵੇਦੁ ॥
पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥
पण्डित वेदों को पढ़ता एवं उनकी व्याख्या करता है।

ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਭੇਦੁ ॥
अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥
लेकिन वह अपने भीतर की उपयोगी वस्तु के रहस्य को नहीं समझता।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸੋਝੀ ਬੂਝ ਨ ਹੋਇ ॥
गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥
गुरु के बिना इस बात का कोई ज्ञान नहीं होता

ਸਾਚਾ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੪॥
साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥४॥
कि वह सच्चा प्रभु हर जगह मौजूद है॥ ४॥

ਕਿਆ ਹਉ ਆਖਾ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥
किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥
मैं क्या कहूँ और क्या बखान करूं ?

ਤੂੰ ਆਪੇ ਜਾਣਹਿ ਸਰਬ ਵਿਡਾਣੀ ॥
तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥
हे सर्वकला सम्पूर्ण परमात्मा ! तुम स्वयं ही सबकुछ जानते हो।

ਨਾਨਕ ਏਕੋ ਦਰੁ ਦੀਬਾਣੁ ॥
नानक एको दरु दीबाणु ॥
हे नानक ! न्यायकर्ता प्रभु का दरबार ही सबका सहारा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਤਹਾ ਗੁਦਰਾਣੁ ॥੫॥੨੧॥
गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥५॥२१॥
वहाँ सत्य द्वार में ही गुरुमुखों का बसेरा है॥ ५॥ २१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਾਚੀ ਗਾਗਰਿ ਦੇਹ ਦੁਹੇਲੀ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥
काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥
यह शरीर कच्ची गागर की तरह है और यह हमेशा ही दुखी रहती है। यह पैदा होती है, नाश हो जाती है और बहुत कष्ट सहन करती है।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਾਗਰੁ ਦੁਤਰੁ ਕਿਉ ਤਰੀਐ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਪਾਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥
इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥१॥
यह भयानक संसार सागर किस तरह पार किया जा सकता है? गुरु-परमेश्वर के बिना यह पार नहीं किया जा सकता ॥ १॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਹਰੇ ॥
तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मैं बार-बार यही कहता हूँ कि तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं है।

ਸਰਬੀ ਰੰਗੀ ਰੂਪੀ ਤੂੰਹੈ ਤਿਸੁ ਬਖਸੇ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥१॥ रहाउ ॥
सभी रंग-रूपों में तुम ही विद्यमान हो। प्रभु उसे क्षमा कर देता है, जिस पर वह स्वयं दयादृष्टि करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਸੁ ਬੁਰੀ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਨ ਦੇਵੈ ਪਿਰ ਸਿਉ ਮਿਲਣ ਨ ਦੇਇ ਬੁਰੀ ॥
सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥
(माया रूपी) मेरी सास बहुत बुरी है। वह मुझे अन्तर्मन रूपी घर में रहने नहीं देती। दुष्टा सास मुझे अपने प्रियतम प्रभु से मिलने नहीं देती।

ਸਖੀ ਸਾਜਨੀ ਕੇ ਹਉ ਚਰਨ ਸਰੇਵਉ ਹਰਿ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਦਰਿ ਧਰੀ ॥੨॥
सखी साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥२॥
मैं सखियों एवं सहेलियों के चरणों की सेवा करती हूँ। क्योंकि उनकी सत्संगति में गुरु की दया से हरि ने मेरी तरफ कृपापूर्वक देखा है॥ २॥

ਆਪੁ ਬੀਚਾਰਿ ਮਾਰਿ ਮਨੁ ਦੇਖਿਆ ਤੁਮ ਸਾ ਮੀਤੁ ਨ ਅਵਰੁ ਕੋਈ ॥
आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥
मैंने स्वयं विचार करके एवं अपने मन को नियन्त्रण में करके यह भलीभांति देखा है कि तेरे जैसा मित्र अन्य कोई नहीं।

ਜਿਉ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਵ ਹੀ ਰਹਣਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੇਵਹਿ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ॥੩॥
जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥३॥
"(हे प्रभु !) जैसे तू मुझे रखता है, मैं वैसे ही रहता हूँ। दुख-सुख प्रदान करने वाला तू ही है। जो तू करता है, वही होता है॥ ३॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਦੋਊ ਬਿਨਾਸਤ ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣ ਆਸ ਨਿਰਾਸ ਭਈ ॥
आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥
मैंने आशा एवं तृष्णा दोनों को मिटा दिया है और त्रिगुणात्मक माया की आशा भी छोड़ दी है।

ਤੁਰੀਆਵਸਥਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਸੰਤ ਸਭਾ ਕੀ ਓਟ ਲਹੀ ॥੪॥
तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥४॥
सत्संगति की शरण लेकर एवं गुरुमुख बनकर ही तुरीयावस्था प्राप्त होती है।॥ ४॥

ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਸਗਲੇ ਸਭਿ ਜਪ ਤਪ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥
गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥
जिसके हृदय में अलक्ष्य एवं भेद रहित प्रभु बसता है, उसके पास जप, तप, ज्ञान-ध्यान इत्यादि सबकुछ होता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਸਹਜ ਸੇਵਾ ॥੫॥੨੨॥
नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥५॥२२॥
हे नानक ! जिसका मन राम-नाम में मग्न है, वह गुरु की मति द्वारा प्रभु की सेवा करके सहजावरथा प्राप्त कर लेता है॥ ५॥ २२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪਦੇ ॥
आसा महला १ पंचपदे ॥
आसा महला १ पंचपदे ॥

ਮੋਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਮੋਹੁ ਸਭ ਕਾਰ ॥
मोहु कुट्मबु मोहु सभ कार ॥
मोह इन्सान के मन में परिवार के प्रति ममता पैदा करता है। मोह ही जगत का कार्य चला रहा है।

ਮੋਹੁ ਤੁਮ ਤਜਹੁ ਸਗਲ ਵੇਕਾਰ ॥੧॥
mohu tum tajahu sagal vekār ॥१॥
मोह मन में विकार पैदा करता है, इसलिए मोह को त्याग दीजिए ॥ १॥

ਮੋਹੁ ਅਰੁ ਭਰਮੁ ਤਜਹੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਬੀਰ ॥
mohu arु bharamु tajahu tumह bīr ॥
हे भाई ! मोह एवं दुविधा निवृत कर दो,"

ਸਾਚੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੇ ਰਵੈ ਸਰੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
sācu nāmु ridे ravै sarīr ॥१॥ rahāu ॥
तभी तुम्हारी आत्मा एवं शरीर में परमात्मा का सत्यनाम बसा रहेगा। १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਜਾ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥
sचु nāmु jā nव nidhि pāī ॥
जब मनुष्य सत्यनाम की नवनिधि प्राप्त कर लेता है

ਰੋਵੈ ਪੂਤੁ ਨ ਕਲਪੈ ਮਾਈ ॥੨॥
rोvै pūtु n kalapै māī ॥२॥
तो उसके बच्चे रोते नहीं और माता भी दु:खी नहीं होती ॥ २॥

ਏਤੁ ਮੋਹਿ ਡੂਬਾ ਸੰਸਾਰੁ ॥
etु mohि ḍūbā sंsāru ॥
इस मोह में समूचा जगत डूबा हुआ है और

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਉਤਰੈ ਪਾਰਿ ॥੩॥
gुrmुkhि koī utarै pāri ॥३॥
गुरुमुख बनकर ही कोई इससे पार उतर सकता है॥ ३ ॥

ਏਤੁ ਮੋਹਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਹਿ ॥
etु mohि firि jūnī pāhि ॥
इस मोह के कारण ही जीव बार-बार योनियों में आता है।

ਮੋਹੇ ਲਾਗਾ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥੪॥
mohे lāgā jam purि jāhि ॥४॥
मोह में लिप्त हुआ जीव यमपुरी को जाता है॥ ४॥

ਗੁਰ ਦੀਖਿਆ ਲੇ ਜਪੁ ਤਪੁ ਕਮਾਹਿ ॥
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥
जो व्यक्ति गुरु की दीक्षा प्राप्त करके भी जप एवं तप करता है,"

ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥५॥
ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥५॥
उसका न सांसारिक मोह टूटता है और न ही वह सत्य के दरबार में स्वीकृत होता है॥ ५ ॥

नदरि करे ता ऐहु मोहु जाइ ॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥
यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो यह मोह दूर हो जाता है।

नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥६॥२३॥
नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥६॥२३॥
हे नानक ! ऐसा जीव प्रभु में लीन हुआ रहता है॥ ६॥ २३॥

आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

आपि करे सचु अलख अपारु ॥
आपि करे सचु अलख अपारु ॥
अलक्ष्य एवं अपार सत्य का पुंज परमात्मा ही सबकुछ करता है।

हउ पापी तूं बखसणहारु ॥१॥
हउ पापी तूं बखसणहारु ॥१॥
हे प्रभु ! मैं तो पापी हूँ परन्तु तू क्षमाशील है॥ १॥

तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥
तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥
हे प्रभु ! तेरी इच्छा में ही सबकुछ होता है।

मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥१॥ रहाउ ॥
मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥१॥ रहाउ ॥
जो मनुष्य मन के हठ द्वारा कार्य करता है, वह अन्तः नष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨਮੁਖ ਕੀ ਮਤਿ ਕੂੜਿ ਵਿਆਪੀ ॥
मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥
मनमुख पुरुष की बुद्धि में सदा झूठ भरा रहता है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣ ਪਾਪਿ ਸੰਤਾਪੀ ॥੨॥
बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥२॥
हरि के सुमिरन के बिना वह पापों के कारण बहुत दुखी होता है॥ २॥

ਦੁਰਮਤਿ ਤਿਆਗਿ ਲਾਹਾ ਕਿਛੁ ਲੇਵਹੁ ॥
दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥
हे प्राणी ! दुर्मति को त्यागकर कुछ लाभ प्राप्त कर लो।

ਜੋ ਉਪਜੈ ਸੋ ਅਲਖ ਅਭੇਵਹੁ ॥੩॥
जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥३॥
जो भी पैदा हुआ है, वह अगाध, भेदरहित स्वामी के द्वारा ही हुआ है॥ ३॥

ਐਸਾ ਹਮਰਾ ਸਖਾ ਸਹਾਈ ॥
ऐसा हमरा सखा सहाई ॥
मेरा सखा ईश्वर ऐसा सहायक है कि

ਗੁਰ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਈ ॥੪॥
गुर हरि मिलिआ भगति द्रिड़ाई ॥४॥
वह गुरु रूप में मुझे मिला और उसने भक्ति भाव को मेरे हृदय में सुदृढ़ कर दिया है॥ ४॥

ਸਗਲੀਂ ਸਉਦੀਂ ਤੋਟਾ ਆਵੈ ॥
सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥
दूसरे सांसारिक सौदों में मनुष्य को घाटा ही पड़ता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੫॥੨੪॥
नानक राम नामु मनि भावै ॥५॥२४॥
हे नानक ! मेरे मन को राम का नाम ही अच्छा लगता है॥ ५ ॥ २४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਚਉਪਦੇ ॥
आसा महला १ चउपदे ॥
आसा महला १ चउपदे ॥

ਵਿਦਿਆ ਵੀਚਾਰੀ ਤਾਂ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ॥
विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥
यदि विद्या का विचार-मनन किया जाए तो ही परोपकारी बना जा सकता है।

ਜਾਂ ਪੰਚ ਰਾਸੀ ਤਾਂ ਤੀਰਥ ਵਾਸੀ ॥੧॥
जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥१॥
यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार को वश में कर लिया जाए तो ही इन्सान तीर्थ वासी कहा जा सकता है॥ १॥

ਘੁੰਘਰੂ ਵਾਜੈ ਜੇ ਮਨੁ ਲਾਗੈ ॥
घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥
यदि मेरा मन प्रभु-सिमरन में लगता है तो हृदय में धुंघरू जैसा अनहद शब्द बजता है।

ਤਉ ਜਮੁ ਕਹਾ ਕਰੇ ਮੋ ਸਿਉ ਆਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥१॥ रहाउ ॥
फिर परलोक में यमराज मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਆਸ ਨਿਰਾਸੀ ਤਉ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥
आस निरासी तउ संनिआसी ॥
जब मैंने सब आशाएँ त्याग दीं तो मैं संन्यासी बन गया।

ਜਾਂ ਜਤੁ ਜੋਗੀ ਤਾਂ ਕਾਇਆ ਭੋਗੀ ॥੨॥
जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥२॥
जब मैंने योगी वाला यतीत्व धारण कर लिया तो मैं अपनी काया को भोगने वाला अच्छा गृहस्थी बन गया ॥ २॥

ਦਇਆ ਦਿਗੰਬਰੁ ਦੇਹ ਬੀਚਾਰੀ ॥
दइआ दिग्मबरु देह बीचारी ॥
जब मैं अपने शरीर को विकारों से बचाने के बारे में विचार करता हूँ तो मैं जीवों पर दया करने वाला दिगम्बर हूँ।

ਆਪਿ ਮਰੈ ਅਵਰਾ ਨਹ ਮਾਰੀ ॥੩॥
आपि मरै अवरा नह मारी ॥३॥
जब मैं अपने अभिमान को खत्म करता हूँ तो मैं अहिंसक हूँ अर्थात् दूसरे जीवों को न मारने वाला हूँ ॥ ३॥

ਏਕੁ ਤੂ ਹੋਰਿ ਵੇਸ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥
एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥
हे प्रभु ! एक तू ही है और तेरे अनेक वेश हैं।

ਨਾਨਕੁ ਜਾਣੈ ਚੋਜ ਨ ਤੇਰੇ ॥੪॥੨੫॥
नानकु जाणै चोज न तेरे ॥४॥२५॥
नानक तेरे आश्चर्यजनक कौतुकों को नहीं जानता॥ ४॥ २५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਏਕ ਨ ਭਰੀਆ ਗੁਣ ਕਰਿ ਧੋਵਾ ॥
एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥
मैं किसी एक अवगुण से ही नहीं भरी हूँ, जो मैं अपने अन्तर्मन में गुण उत्पन्न करके उस एक अवगुण को धोकर स्वच्छ हो जाऊँगी अर्थात् मुझ में अनेक अवगुण भरे हुए हैं।

ਮੇਰਾ ਸਹੁ ਜਾਗੈ ਹਉ ਨਿਸਿ ਭਰਿ ਸੋਵਾ ॥੧॥
मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥१॥
मेरा प्रियतम-प्रभु जागता रहता है और मैं सारी रात (मोह निद्रा में) सोती रहती हूँ॥ १॥

ਇਉ ਕਿਉ ਕੰਤ ਪਿਆਰੀ ਹੋਵਾ ॥
इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥
इस तरह मैं अपने कांत-प्रभु की प्रियतमा कैसे हो सकती हूँ?

ਸਹੁ ਜਾਗੈ ਹਉ ਨਿਸ ਭਰਿ ਸੋਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा पति-प्रभु जागता रहता है और मैं सारी रात सोती रहती हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਆਸ ਪਿਆਸੀ ਸੇਜੈ ਆਵਾ ॥
आस पिआसी सेजै आवा ॥
अपने पति से मिलन की इच्छा एवं प्यास लेकर यदि मैं सेज पर आती भी हूँ तो

ਆਗੈ ਸਹ ਭਾਵਾ ਕਿ ਨ ਭਾਵਾ ॥੨॥
आगै सह भावा कि न भावा ॥२॥
मुझे पता नहीं है कि मैं प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगती हूँ कि नहीं ॥ २॥

ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਕਿਆ ਹੋਇਗਾ ਰੀ ਮਾਈ ॥
किआ जाना किआ होइगा री माई ॥
हे मेरी माता! मैं नहीं जानती कि क्या होगा ?

ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਬਿਨੁ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
परन्तु हरि के दर्शन बिना मैं रह नहीं सकती॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਚਾਖਿਆ ਮੇਰੀ ਤਿਸ ਨ ਬੁਝਾਨੀ ॥
प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥
मैंने प्रभुपति के प्रेम को नहीं चखा इसलिए मेरी प्यास नहीं बुझी और

ਗਇਆ ਸੁ ਜੋਬਨੁ ਧਨ ਪਛੁਤਾਨੀ ॥੩॥
गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥३॥
मेरी सुन्दर जवानी चली गई है और मैं पत्नी पश्चाताप करती हूँ॥ ३॥

ਅਜੈ ਸੁ ਜਾਗਉ ਆਸ ਪਿਆਸੀ ॥
अजै सु जागउ आस पिआसी ॥
अब भी मैं उससे मिलन की आशा में जागती रहती हूँ।

ਭਈਲੇ ਉਦਾਸੀ ਰਹਉ ਨਿਰਾਸੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भईले उदासी रहउ निरासी ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उदास हो गई हूँ और निराश रहती हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉਮੈ ਖੋਇ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੁ ॥
हउमै खोइ करे सीगारु ॥
यदि जीव-स्त्री अपना अहंकार त्याग दे और गुणों का हार-श्रृंगार करे तो ही

ਤਉ ਕਾਮਣਿ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਭਤਾਰੁ ॥੪॥
तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥४॥
पति-प्रभु जीव-स्त्री की सेज पर रमण करता है॥ ४॥

ਤਉ ਨਾਨਕ ਕੰਤੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥
तउ नानक कंतै मनि भावै ॥
हे नानक ! जीव स्त्री पति-प्रभु के मन को तभी भली लगती है,"

ਛੋਡਿ ਵਡਾਈ ਅਪਣੇ ਖਸਮ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੨੬॥
छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥१॥ रहाउ ॥२६॥
जब अहंत्व त्याग कर अपने पति की इच्छा में लीन हो जाती है॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਪੇਵਕੜੈ ਧਨ ਖਰੀ ਇਆਣੀ ॥
पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥
दुनिया के मोह में फँसकर जीव-स्त्री मूर्ख बनी रहती है और

ਤਿਸੁ ਸਹ ਕੀ ਮੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥੧॥
तिसु सह की मै सार न जाणी ॥१॥
उस पति-प्रभु की महत्ता नहीं समझ सकी।॥ १॥

ਸਹੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਦੂਜਾ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥
सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥
मेरा पति-परमेश्वर केवल एक है। वह अद्वितीय है, उस जैसा कोई नहीं।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਲਾਵਾ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नदरि करे मेलावा होई ॥१॥ रहाउ ॥
यदि वह करुणादृष्टि धारण करे तो मेरा उससे मिलन हो सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਹੁਰੜੈ ਧਨ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥
साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥
जो जीव-स्त्री संसार के मोह से निकल कर प्रभु-चरणों में लीन रहती है, वह उस सत्यस्वरूप ईश्वर (की महत्ता) पहचान लेती है और

ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਅਪਣਾ ਪਿਰੁ ਜਾਣਿਆ ॥੨॥
सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥२॥
सहज ही प्रेम में जुड़कर अपने प्रियतम-प्रभु से गहरे संबंध बना लेती है॥ २॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਐਸੀ ਮਤਿ ਆਵੈ ॥
गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥
जब गुरु की कृपा से (जीव स्त्री में) ऐसी बुद्धि आ जाती है तो

ਤਾਂ ਕਾਮਣਿ ਕੰਤੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੩॥
तां कामणि कंतै मनि भावै ॥३॥
वह अपने पति-परमेश्वर के मन को प्रिय लगने लगती है॥ ३॥

ਕਹਤੁ ਨਾਨਕੁ ਭੈ ਭਾਵ ਕਾ ਕਰੇ ਸੀਗਾਰੁ ॥
कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥
नानक का कथन है कि जो जीव-स्त्री प्रभु के भय एवं प्रेम का श्रृंगार करती है,"

ਸਦ ਹੀ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਭਤਾਰੁ ॥੪॥੨੭॥
सद ही सेजै रवै भतारु ॥४॥२७॥
वह अपने पति-परमेश्वर के साथ हमेशा सेज पर रमण करती है॥ ४ ॥ २७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਨ ਕਿਸ ਕਾ ਪੂਤੁ ਨ ਕਿਸ ਕੀ ਮਾਈ ॥
न किस का पूतु न किस की माई ॥
इस दुनिया में न कोई किसी का पुत्र है, न ही कोई किसी की माता है।

ਝੂਠੈ ਮੋਹਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥੧॥
झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥१॥
झूठे मोह के कारण दुनिया भ्रम में भटकती रहती है।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬ ਹਉ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ॥
मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥
हे मेरे मालिक ! मैं तेरी रचना हूँ।

ਜਾਂ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਜਪੀ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥१॥ रहाउ ॥
जब तुम मुझे अपना नाम देते हो तो मैं नाम का जाप करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਬਹੁਤੇ ਅਉਗਣ ਕੂਕੈ ਕੋਈ ॥
बहुते अउगण कूकै कोई ॥
यदि मनुष्य ने कितने ही पाप किए हुए हों फिर भी यदि कोई मनुष्य प्रार्थना करे

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਬਖਸੇ ਸੋਈ ॥੨॥
जा तिसु भावै बखसे सोई ॥२॥
परन्तु केवल तभी वह उसे क्षमा करेगा जब उसे अच्छा लगेगा।॥ २॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਈ ॥
गुर परसादी दुरमति खोई ॥
गुरु की कृपा से दुर्मति जड़ से उखड़ गई है।

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥੩॥
जह देखा तह एको सोई ॥३॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ वहाँ मैं प्रभु को पाता हूँ॥ ३॥

ਕਹਤ ਨਾਨਕ ਐਸੀ ਮਤਿ ਆਵੈ ॥
कहत नानक ऐसी मति आवै ॥
नानक कहते हैं कि जब जीव को ऐसी बुद्धि मिल जाती है,"

ਤਾਂ ਕੋ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੪॥੨੮॥
तां को सचे सचि समावै ॥४॥२८॥
तो वह परम सत्य में ही समा जाता है।॥ ४ ॥ २८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਦੁਪਦੇ ॥
आसा महला १ दुपदे ॥
आसा महला १ दुपदे ॥

ਤਿਤੁ ਸਰਵਰੜੈ ਭਈਲੇ ਨਿਵਾਸਾ ਪਾਣੀ ਪਾਵਕੁ ਤਿਨਹਿ ਕੀਆ ॥
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥
जीव का ऐसे भयंकर सरोवर में निवास है, जिसमें ईश्वर ने स्वयं ही जल के स्थान अग्नि उत्पन्न कर रखी है।

ਪੰਕਜੁ ਮੋਹ ਪਗੁ ਨਹੀ ਚਾਲੈ ਹਮ ਦੇਖਾ ਤਹ ਡੂਬੀਅਲੇ ॥੧॥

पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥

उस सरोवर में मोह रूपी कीचड़ विद्यमान है, जिससे पांव आगे की ओर नहीं चलते और देखते ही देखते अनेकों पुरुष उस सरोवर में डूबते चले जा रहे हैं।॥ १॥

ਮਨ ਏਕੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥

हे मूर्ख मन ! तू परमात्मा को स्मरण नहीं करता।

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥

तुम जैसे-जैसे परमात्मा को विस्मृत करते हो, तेरे गुण कम होते जा रहे हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾ ਹਉ ਜਤੀ ਸਤੀ ਨਹੀ ਪੜਿਆ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ॥

ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥

हे प्रभु! न मैं यति हूँ, न ही सती हूँ, न पढ़ा-लिखा हूँ, मेरा जीवन तो मूर्ख एवं अज्ञानियों जैसा बना हुआ है।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਤਿਨ੍ ਕੀ ਸਰਣਾ ਜਿਨ੍ ਤੂੰ ਨਾਹੀ ਵੀਸਰਿਆ ॥੨॥੨੯॥

प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥२॥२९॥

नानक वन्दना करता है - (हे प्रभु!) मुझे उन महापुरुषों की शरण में रख, जिन्होंने तुझे कभी नहीं भुलाया है ॥२॥२९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥

सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने-अपने तौर पर छः ही हैं।

ਗੁਰ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥

गुर गुरु एको वेस अनेक ॥१॥

किंतु इनका मूल तत्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं।॥ १॥

ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥

जै घरि करते कीरति होइ ॥

हे मनुष्य ! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो,"

ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਵਡਾਈ ਤੋਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सो घरु राखु वडाई तोहि ॥१॥ रहाउ ॥

उसका गुणगान हो, उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी ॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਿਸੁਏ ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਥਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਭਇਆ ॥

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥

काष्ठा, चरा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है।

ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ ਅਨੇਕ ॥

सूरजु एको रुति अनेक ॥

इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग-अलग अंश हैं।)

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕੇਤੇ ਵੇਸ ॥੨॥੩੦॥

नानक करते के केते वेस ॥२॥३०॥

वैसे ही हे नानक ! कर्ता-पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं॥ २॥ ३० ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਘਰੁ ੩ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा घरु ३ महला १ ॥
आसा घरु ३ महला १ ॥

ਲਖ ਲਸਕਰ ਲਖ ਵਾਜੇ ਨੇਜੇ ਲਖ ਉਠਿ ਕਰਹਿ ਸਲਾਮੁ ॥
लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥
"(हे बन्धु !) यदि लाखों की संख्या में तेरी फौज हो, लाखों वाद्य एवं लाखों नेजे से संयुक्त हों, लाखों ही उठकर रोज़ सलाम करने वाले हों,"

ਲਖਾ ਉਪਰਿ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਤੇਰੀ ਲਖ ਉਠਿ ਰਾਖਹਿ ਮਾਨੁ ॥
लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥
यदि लाखों लोगों पर तेरा हुक्म चलता हो और लाखों ही मान-सम्मान करने वाले हों

ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਸਭਿ ਨਿਰਾਫਲ ਕਾਮ ॥੧॥
जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम ॥१॥
परन्तु यदि यह प्रतिष्ठा ईश्वर की दृष्टि में स्वीकृत नहीं तो यह प्रपंच निरर्थक हैं अर्थात् समस्त कार्य ही व्यर्थ गए॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਜਗੁ ਧੰਧਾ ॥
हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥
हरि के नाम-स्मरण के बिना यह समूचा जगत एक झूठा धन्धा ही है।

ਜੇ ਬਹੁਤਾ ਸਮਝਾਈਐ ਭੋਲਾ ਭੀ ਸੋ ਅੰਧੋ ਅੰਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥१॥ रहाउ ॥
मूर्ख मनुष्य को चाहे कितना ही अधिकतर समझाया जाए वह फिर भी अन्धा (ज्ञानहीन) ही बना रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਲਖ ਖਟੀਅਹਿ ਲਖ ਸੰਜੀਅਹਿ ਖਾਜਹਿ ਲਖ ਆਵਹਿ ਲਖ ਜਾਹਿ ॥
लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥
यदि लाखों रुपए कमाए जाएँ, लाखों संग्रह किया जाए, लाखों खर्च किए जाएँ, लाखों आएँ और लाखों चले जाएँ किन्तु

ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਜੀਅ ਕਿਥੈ ਫਿਰਿ ਪਾਹਿ ॥੨॥

जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥२॥

यदि परमात्मा की दृष्टि में यह स्वीकृत नहीं तो वह प्राणी जहाँ मर्जी भटकता फिरे दुखी ही रहता है॥ २॥

ਲਖ ਸਾਸਤ ਸਮਝਾਵਣੀ ਲਖ ਪੰਡਿਤ ਪੜਹਿ ਪੁਰਾਣ ॥

लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥

लाखों शास्त्रों के माध्यम से व्याख्या की जाए और लाखों विद्वान पुराण आदि को पढ़ते रहें लेकिन

ਜਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਨਾ ਪਵੈ ਤਾਂ ਸਭੇ ਕੁਪਰਵਾਣ ॥੩॥

जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥३॥

यदि यह सब मान-प्रतिष्ठा ईश्वर को स्वीकृत नहीं तो यह सबकुछ कहीं भी स्वीकार नहीं होता।॥ ३॥

ਸਚ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਕਰਮਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥

सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥

सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में वृति लगाने से ही मान-सम्मान मिलता है और उस करतार के करम (कृपा) से ही उसका नाम प्राप्त होता है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਿਰਦੈ ਜੇ ਵਸੈ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਰੁ ॥੪॥੧॥੩੧॥

अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥४॥१॥३१॥

हे नानक ! यदि प्रभु का नाम हृदय में दिन-रात बसा रहे, तो उसकी करुणा-दृष्टि से मनुष्य संसार सागर से पार हो जाता है॥ ४॥ १॥ ३१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਦੀਵਾ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਦੁਖੁ ਵਿਚਿ ਪਾਇਆ ਤੇਲੁ ॥

दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥

एक ईश्वर का नाम ही मेरा दीपक है, उस दीपक में मैंने दुःख रूपी तेल डाला हुआ है।

ਉਨਿ ਚਾਨਣਿ ਓਹੁ ਸੋਖਿਆ ਚੂਕਾ ਜਮ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੧॥

उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥१॥

जैसे-जैसे नाम रूपी दीपक का आलोक होता है तो वह दुःख रूपी तेल सूखता चला जाता है और यमराज के साथ संबंधविच्छेद हो जाता है॥ १॥

ਲੋਕਾ ਮਤ ਕੋ ਫਕੜਿ ਪਾਇ ॥
लोका मत को फकड़ि पाइ ॥
हे लोगो ! मेरी आस्था को मिथ्या मत समझो।

ਲਖ ਮੜਿਆ ਕਰਿ ਏਕਠੇ ਏਕ ਰਤੀ ਲੇ ਭਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे लाखों मन लकड़ी एकत्रित करके थोड़ी-सी चिंगारी भी उसे भस्म कर देती है वैसे ही प्रभु-नाम पापों का नाश कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਪਿੰਡੁ ਪਤਲਿ ਮੇਰੀ ਕੇਸਉ ਕਿਰਿਆ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥
पतलों पर पिण्ड भरना (दान करना) मेरे लिए प्रभु (का नाम) ही है, मेरे लिए करतार का सत्य नाम हो किरिया-संस्कार है।

ਐਥੈ ਓਥੈ ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਏਹੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੨॥
ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥२॥
यह नाम लोक-परलोक में सर्वत्र मेरे जीवन का आधार है॥ २॥

ਗੰਗ ਬਨਾਰਸਿ ਸਿਫਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ਨਾਵੈ ਆਤਮ ਰਾਉ ॥
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥
हे परमेश्वर ! तेरी गुणस्तुति ही मेरे लिए गंगा (हरिद्वार तथा), काशी इत्यादि तीर्थों का स्नान है, तेरा गुणानुवाद ही मेरी आत्मा का स्नान है।

ਸਚਾ ਨਾਵਣੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾਂ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਗੈ ਭਾਉ ॥੩॥
सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥३॥
सच्चा स्नान तभी होता है, जब प्राणी दिन-रात ईश्वर-चरणों में प्रेम बनाकर मग्न रहे॥ ३॥

ਇਕ ਲੋਕੀ ਹੋਰੁ ਛਮਿਛਰੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਵਟਿ ਪਿੰਡੁ ਖਾਇ ॥
इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥
ब्राह्मण एक पिण्ड बनाकर देवताओं को अर्पण करता है और दूसरा पिण्ड पितरों को, पिण्ड बनाने के पश्चात् वह स्वयं खाता है (परन्तु)"

ਨਾਨਕ ਪਿੰਡੁ ਬਖਸੀਸ ਕਾ ਕਬਹੂੰ ਨਿਖੂਟਸਿ ਨਾਹਿ ॥੪॥੨॥੩੨॥
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥४॥२॥३२॥
हे नानक ! ब्राह्मण के माध्यम से दिया गया पिण्डदान कब तक अटल रह सकता है? हाँ, ईश्वर की कृपा का पिण्ड कभी खत्म नहीं होता ॥ ४॥ २॥ ३२॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੪ ਮਹਲਾ ੧
आसा घरु ४ महला १
आसा घरु ४ महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਸਨ ਕੈ ਤਾਈ ਦੂਖ ਭੂਖ ਤੀਰਥ ਕੀਏ ॥
देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥
हे जग के रचयिता ! तेरे दर्शन करने के लिए देवताओं ने भी दुख, भूख-प्यास को सहन किया तथा तीर्थों पर भ्रमण किया।

ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਜੁਗਤਿ ਮਹਿ ਰਹਤੇ ਕਰਿ ਕਰਿ ਭਗਵੇ ਭੇਖ ਭਏ ॥੧॥
जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥१॥
अनेक योगी एवं यति भी अपनी अपनी मर्यादा को निभाते हुए भगवे रंग के वस्त्र पहनते रहे॥ १॥

ਤਉ ਕਾਰਣਿ ਸਾਹਿਬਾ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ॥
तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥
हे मेरे मालिक ! तेरे मिलन हेतु अनेक पुरुष तेरे प्रेम में अनुरक्त रहते हैं।

ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਅਨੇਕਾ ਰੂਪ ਅਨੰਤਾ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਹੀ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਕੇਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे नाम अनेक हैं, अनन्त रूप हैं, अनन्त गुण हैं। ये किसी भी ओर से वर्णन नहीं किए जा सकते ॥ १॥ रहाउ ॥

ਦਰ ਘਰ ਮਹਲਾ ਹਸਤੀ ਘੋੜੇ ਛੋਡਿ ਵਿਲਾਇਤਿ ਦੇਸ ਗਏ ॥
दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥
तेरी खोज में कितने ही अपना घर-बार, महल, हाथी -घोड़े एवं अपना देशछोड़कर परदेसों में चले गए।

ਪੀਰ ਪੇਕਾਂਬਰ ਸਾਲਿਕ ਸਾਦਿਕ ਛੋਡੀ ਦੁਨੀਆ ਥਾਇ ਪਏ ॥੨॥
पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥२॥
कितने ही पीरों-पैगम्बरों, ज्ञानियों तथा आस्तिकों ने तेरे द्वार पर सत्कृत होने के लिए दुनिया छोड़ दी और तेरे दर पर स्वीकार हो गए॥ २॥

ਸਾਦ ਸਹਜ ਸੁਖ ਰਸ ਕਸ ਤਜੀਅਲੇ ਕਾਪੜ ਛੋਡੇ ਚਮੜ ਲੀਏ ॥

साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥

अनेक लोगों ने सुख-वैभव, स्वाद, सभी रस एवं वस्त्र इत्यादि त्याग दिए और वस्त्र त्याग कर केवल चमड़ा ही पहना।

ਦੁਖੀਏ ਦਰਦਵੰਦ ਦਰਿ ਤੇਰੈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਦਰਵੇਸ ਭਏ ॥੩॥

दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥३॥

अनेकों ही दुखी एवं गमों के मारे हुए तेरे नाम में लीन होकर तेरे द्वार पर खड़े रहने वाले दरवेश बन गए॥ ३॥

ਖਲੜੀ ਖਪਰੀ ਲਕੜੀ ਚਮੜੀ ਸਿਖਾ ਸੂਤੁ ਧੋਤੀ ਕੀਨ੍ਹੀ ॥

खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥

चमड़ा पहनने वाले, खप्पर में भिक्षा लेने वाले दण्डाधारी संन्यासी, मृगशाला पहनने वाले, चोटी, जनेऊ एवं धोती पहनने वाले अनेकों हैं (जो परमात्मा की तलाश हेतु मेरी भाँति स्वांग भरने वाले हैं)।

ਤੂੰ ਸਾਹਿਬੁ ਹਉ ਸਾਂਗੀ ਤੇਰਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਨਾਨਕੁ ਜਾਤਿ ਕੈਸੀ ॥੪॥੧॥੩੩॥

तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥४॥१॥३३॥

परन्तु नानक वन्दना करता है -हे प्रभु ! तू मेरा मालिक है, मैं केवल तेरा स्वांगी हूँ। किसी विशेष जाति में पैदा होने का मुझे कोई अभिमान नहीं है॥ ४॥ १॥ ३३॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੫ ਮਹਲਾ ੧
आसा घरु ५ महला १
आसा घरु ५ महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭੀਤਰਿ ਪੰਚ ਗੁਪਤ ਮਨਿ ਵਾਸੇ ॥
भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥
काम, कोध, लोभ, मोह एवं अहंकार ये पाँचों ही विकार मेरे मन में छिपकर रहते हैं और

ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਹਿ ਜੈਸੇ ਭਵਹਿ ਉਦਾਸੇ ॥੧॥
थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥१॥
वे स्थिर शांत नहीं रहते और भगौड़े की तरह उदासीन रहते हैं।॥ १॥

ਮਨੁ ਮੇਰਾ ਦਇਆਲ ਸੇਤੀ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹੈ ॥
मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥
मेरा मन दयालु ईश्वर के स्मरण में नहीं टिकता।

ਲੋਭੀ ਕਪਟੀ ਪਾਪੀ ਪਾਖੰਡੀ ਮਾਇਆ ਅਧਿਕ ਲਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥१॥ रहाउ ॥
यह मन लोभी, कपटी, पापी एवं पाखण्डी बन गया है और माया में लिप्त है॥ १॥ रहाउ ॥

ਫੂਲ ਮਾਲਾ ਗਲਿ ਪਹਿਰਉਗੀ ਹਾਰੋ ॥
फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥
मैं अपने कांत-प्रभु के गले में फूलों की माला पहनाऊँगी।

ਮਿਲੈਗਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਤਬ ਕਰਉਗੀ ਸੀਗਾਰੋ ॥੨॥
मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥२॥
जब मेरा प्रियतम-प्रभु मिलेगा तो मैं हार-श्रृंगार करूँगी॥ २॥

ਪੰਚ ਸਖੀ ਹਮ ਏਕੁ ਭਤਾਰੋ ॥
पंच सखी हम एकु भतारो ॥
मेरी पाँच सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) हैं और जीवात्मा इनका पति है।

ਪੇਡਿ ਲਗੀ ਹੈ ਜੀਅੜਾ ਚਾਲਣਹਾਰੋ ॥੩॥
पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥३॥
यह ज्ञानेन्द्रियाँ शरीर रूपी पेड़ पर लगी हुई टहनियाँ हैं। जीवात्मा ने अवश्य ही छोड़कर चले जाना है॥ ३॥

ਪੰਚ ਸਖੀ ਮਿਲਿ ਰੁਦਨੁ ਕਰੇਹਾ ॥
पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥
(विछोह के समय) पाँचों सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियॉ) विलाप करती हैं।

ਸਾਹੁ ਪਜੂਤਾ ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਲੇਖਾ ਦੇਹਾ ॥੪॥੧॥੩੪॥
साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥४॥१॥३४॥
नानक वन्दना करता है कि जब जीवात्मा पकड़ी जाती है तो उसे कर्मो का लेखा देना पड़ता है। ॥४॥१॥३४॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा घरु ६ महला १ ॥
आसा घरु ६ महला १ ॥

ਮਨੁ ਮੋਤੀ ਜੇ ਗਹਣਾ ਹੋਵੈ ਪਉਣੁ ਹੋਵੈ ਸੂਤ ਧਾਰੀ ॥
मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥
यदि जीवात्मा अपने मन को निर्मल मोती समान आभूषण बना ले, यदि प्रत्येक सांस धागा बने,"

ਖਿਮਾ ਸੀਗਾਰੁ ਕਾਮਣਿ ਤਨਿ ਪਹਿਰੈ ਰਾਵੈ ਲਾਲ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥१॥
यदि क्षमा अर्थात् सहनशीलता को वह श्रृंगार बनाकर अपनी देहि पर पहन ले तो वह पति-परमेश्वर की प्रियतमा होकर उसे मिल सकती है॥ १॥

ਲਾਲ ਬਹੁ ਗੁਣਿ ਕਾਮਣਿ ਮੋਹੀ ॥
लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥
हे प्रियतम ! मैं कामिनी तेरे गुणों पर आसक्त हो गई हूँ।

ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਹੋਹਿ ਨ ਅਵਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरे गुण होहि न अवरी ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रियतम ! तेरे गुण अन्य किसी में विद्यमान नहीं ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਕੰਠਿ ਲੇ ਪਹਿਰੈ ਦਾਮੋਦਰੁ ਦੰਤੁ ਲੇਈ ॥

हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥

यदि जीवात्मा परमेश्वर के नाम की माला अपने गले में डाल ले और प्रभु-स्मरण को अपने दांतों का मंजन बना ले।

ਕਰ ਕਰਿ ਕਰਤਾ ਕੰਗਨ ਪਹਿਰੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਚਿਤੁ ਧਰੇਈ ॥੨॥

कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥२॥

यदि वह सृजनहार प्रभु की भक्ति-सेवा को अपने हाथों का कगन बना कर धारण कर ले तो इस प्रकार उसका मन प्रभु-चरणों में टिका रहेगा ॥ २॥||2||

ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਕਰ ਮੁੰਦਰੀ ਪਹਿਰੈ ਪਰਮੇਸਰੁ ਪਟੁ ਲੇਈ ॥

मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥

यदि जीवात्मा मधुसूदन को अंगूठी बनाकर हाथ की उंगली में पहन ले और परमेश्वर को रेशमी वस्त्र के तौर पर प्राप्त करे,"

ਧੀਰਜੁ ਧੜੀ ਬੰਧਾਵੈ ਕਾਮਣਿ ਸ੍ਰੀਰੰਗੁ ਸੁਰਮਾ ਦੇਈ ॥੩॥

धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥३॥

कामिनी सहनशीलता की पट्टियाँ सजाने के लिए प्रयोग करे और श्रीरंग के नाम का सुरमा डाले॥ ३॥

ਮਨ ਮੰਦਰਿ ਜੇ ਦੀਪਕੁ ਜਾਲੇ ਕਾਇਆ ਸੇਜ ਕਰੇਈ ॥

मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥

यदि वह मन रूपी मंदिर में ज्ञान के दीपक को प्रज्वलित करे और अपनी काया को सेज बना लेतो

ਗਿਆਨ ਰਾਉ ਜਬ ਸੇਜੈ ਆਵੈ ਤ ਨਾਨਕ ਭੋਗੁ ਕਰੇਈ ॥੪॥੧॥੩੫॥

गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥४॥१॥३५॥

हे नानक ! (इस अवस्था में) जब ज्ञानदाता ईश्वर उसकी हृदय-सेज पर प्रकट होता है तो वह उससे रमण करता है॥ ४॥ १॥ ३५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਕੀਤਾ ਹੋਵੈ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ਤਿਸੁ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਭਾਈ ॥

कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥

हे भाई ! परमात्मा का पैदा किया हुआ जीव वही कुछ करता है जो कुछ वह उससे करवाता है। उस परमात्मा को क्या कहा जाए ?

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੋ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ਕੀਤੇ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥੧॥

जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥१॥

प्राणी की कोई चतुरता काम नहीं आती, जो कुछ परमात्मा करना चाहता है, वही कुछ कर रहा है॥ १॥

ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਭਲਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ॥

तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥

हे परमेश्वर ! तेरा यह हुक्म मुझे भला लगता है, जो तुझे उपयुक्त लगता है।

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਉ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ਸਾਚੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥१॥ रहाउ ॥

हे नानक ! केवल उस प्राणी को ही आदर-सम्मान मिलता है जो सत्यनाम में लीन रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਪਰਵਾਣਾ ਲਿਖਿਆ ਬਾਹੁੜਿ ਹੁਕਮੁ ਨ ਹੋਈ ॥

किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥

जैसी किसी जीव की किस्मत होती है, प्रभु ने वैसा ही हुक्म लिखा होता है। परमात्मा पुनः अन्य हुक्म नहीं करता अर्थात् उसके हुक्म को कोई भी टाल नहीं सकता।

ਜੈਸਾ ਲਿਖਿਆ ਤੈਸਾ ਪੜਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥੨॥

जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥२॥

फिर जैसा जीवन-लेख लिखा होता है उसके अनुसार जीवन चलता है। कोई भी इसे मिटा नहीं सकता॥ २॥

ਜੇ ਕੋ ਦਰਗਹ ਬਹੁਤਾ ਬੋਲੈ ਨਾਉ ਪਵੈ ਬਾਜਾਰੀ ॥

जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥

यदि कोई प्राणी सभा में अत्याधिक बोलता है तो वह बकवादी कहा जाता है।

ਸਤਰੰਜ ਬਾਜੀ ਪਕੈ ਨਾਹੀ ਕਚੀ ਆਵੈ ਸਾਰੀ ॥੩॥

सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥३॥

(जीवन की बाजी) शतरंज की बाजी है जो जीती नहीं जा सकेगी सारे कच्चे ही रहते हैं। पक्के होने वाले घर में चली जाती हैं।॥ ३॥

ਨਾ ਕੋ ਪੜਿਆ ਪੰਡਿਤੁ ਬੀਨਾ ਨਾ ਕੋ ਮੂਰਖੁ ਮੰਦਾ ॥

ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥

इस मार्ग में न किसी को विद्वान, पण्डित अथवा बुद्धिमान कहा जा सकता है, न कोई (अनपढ़) मूर्ख अथवा दुष्ट स्वीकृत किया जा सकता है।

ਬੰਦੀ ਅੰਦਰਿ ਸਿਫਤਿ ਕਰਾਏ ਤਾ ਕਉ ਕਹੀਐ ਬੰਦਾ ॥੪॥੨॥੩੬॥

बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥

जब वह दास भाव से प्रभु की गुणस्तुति करता है केवल तभी वह सही मनुष्य कहा जा सकता है॥ ४॥ २॥ ३६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਮਨੈ ਮਹਿ ਮੁੰਦ੍ਰਾ ਖਿੰਥਾ ਖਿਮਾ ਹਢਾਵਉ ॥

गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥

गुरु का शब्द मैंने अपने मन में बसाया हुआ है, यही मुद्राएँ हैं। मैं क्षमा का स्वभाव अर्थात् गुदड़ी पहनता हूँ।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਭਲਾ ਕਰਿ ਮਾਨਉ ਸਹਜ ਜੋਗ ਨਿਧਿ ਪਾਵਉ ॥੧॥

जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥१॥

परमात्मा जो कुछ करता है उसे मैं भला मानता हूँ। इस तरह मैं योग निधि को सहज ही प्राप्त कर लेता हूँ॥ १॥

ਬਾਬਾ ਜੁਗਤਾ ਜੀਉ ਜੁਗਹ ਜੁਗ ਜੋਗੀ ਪਰਮ ਤੰਤ ਮਹਿ ਜੋਗੰ ॥
बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥
हे बाबा ! असल में वही योगी है, जो युगों-युगांतर तक परम तत्व परमात्मा के योग में लीन रहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਪਾਇਆ ਗਿਆਨ ਕਾਇਆ ਰਸ ਭੋਗੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे निरंजन प्रभु का अमृत नाम प्राप्त हुआ है, उसका शरीर ब्रह्मज्ञान के रस का भोग करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿਵ ਨਗਰੀ ਮਹਿ ਆਸਣਿ ਬੈਸਉ ਕਲਪ ਤਿਆਗੀ ਬਾਦੰ ॥
सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥
वह तृष्णाओं एवं विवादों को त्याग देता है और शिव नगरी में ध्यानावस्था में आसन लगाता है।

ਸਿੰਙੀ ਸਬਦੁ ਸਦਾ ਧੁਨਿ ਸੋਹੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪੂਰੈ ਨਾਦੰ ॥੨॥
सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥२॥
सिंगी की आवाज से एक अनंत एवं सुन्दर ध्वनि उत्पन्न होती है। जो रात-दिन उसे दिव्य नाद से परिपूर्ण रखती है॥ २॥

ਪਤੁ ਵੀਚਾਰੁ ਗਿਆਨ ਮਤਿ ਡੰਡਾ ਵਰਤਮਾਨ ਬਿਭੂਤੰ ॥
पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥
ईश्वर के गुणों का चिंतन मेरा खप्पर है और ब्रह्मबोध सम्प्रदायी डण्डा है। प्रभु को सर्वव्यापक देखना शरीर पर मलने वाली विभूति है।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਰਹਰਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੰਥੁ ਅਤੀਤੰ ॥੩॥
हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥३॥
परमात्मा की गुणस्तुति मेरी मर्यादा है और गुरु के सम्मुख टिके रहना ही धर्म-मार्ग है जो माया से विरक्त रखता है॥ ३॥

ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਹਮਾਰੀ ਸੰਮਿਆ ਨਾਨਾ ਵਰਨ ਅਨੇਕੰ ॥
सगली जोति हमारी समिआ नाना वरन अनेकं ॥
नानक का कथन है कि - हे भर्तृहरि योगी ! सुनो, समस्त जीवों में विभिन्न वर्णो रूपों में ईश्वर की ज्योति को देखना ही वैराग्यवृत्ति है

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਜੋਗੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਲਿਵ ਏਕੰ ॥੪॥੩॥੩੭॥
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥४॥३॥३७॥
जो हमें प्रभु-चरणों में लीन होने के लिए बल प्रदान करती है॥ ४॥ ३॥ ३७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਗੁੜੁ ਕਰਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਰਿ ਧਾਵੈ ਕਰਿ ਕਰਣੀ ਕਸੁ ਪਾਈਐ ॥
गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥
(हे योगी !) तू ज्ञान को अपना गुड़ बना और प्रभु सुमिरन से महुए के फूल बना। उनमें शुभ कर्मो की कमाई को कोकर की छाल बनाकर मिला दे।

ਭਾਠੀ ਭਵਨੁ ਪ੍ਰੇਮ ਕਾ ਪੋਚਾ ਇਤੁ ਰਸਿ ਅਮਿਉ ਚੁਆਈਐ ॥੧॥
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥१॥
ईमान को अपनी भट्टी एवं प्रेम को अपना लेप बना। इस विधि से मीठा अमृत निकाला जाता है॥ १॥

ਬਾਬਾ ਮਨੁ ਮਤਵਾਰੋ ਨਾਮ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਸਹਜ ਰੰਗ ਰਚਿ ਰਹਿਆ ॥
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥
हे योगी ! नाम-अमृत का पान करने से मन मतवाला हो जाता है और प्रभु-रंग में सहज ही लीन रहता है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਬਨੀ ਪ੍ਰੇਮ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਸਬਦੁ ਅਨਾਹਦ ਗਹਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु-प्रेम में वृत्ति लगाने एवं अनहद शब्द को सुनने से रात-दिन सफल हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਪੂਰਾ ਸਾਚੁ ਪਿਆਲਾ ਸਹਜੇ ਤਿਸਹਿ ਪੀਆਏ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥
पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥
यह सत्य का प्याला, परमात्मा सहज ही उसे पीने के लिए देता है, जिस पर वह अपनी कृपा-दृष्टि धारण करता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਵਾਪਾਰੀ ਹੋਵੈ ਕਿਆ ਮਦਿ ਛੂਛੈ ਭਾਉ ਧਰੇ ॥੨॥
अम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥२॥
जो अमृत का व्यापारी है, वह तुच्छ मदिरा से कैसे प्रेम कर सकता है ? ॥ २॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਪੀਵਤ ਹੀ ਪਰਵਾਨੁ ਭਇਆ ॥
गुर की साखी अम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥
गुरु की शिक्षा अमृत वाणी है, जिसका पान करते ही मनुष्य प्रभु दरबार में स्वीकार हो जाता है।

ਦਰ ਦਰਸਨ ਕਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤਿ ਬੈਕੁੰਠੈ ਕਰੈ ਕਿਆ ॥੩॥
दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥३॥
जो मनुष्य प्रभु के दरबार एवं दर्शन का आकांक्षी होता है, वह मोक्ष एवं स्वर्ग की इच्छा नहीं करता ॥ ३ ॥

ਸਿਫਤੀ ਰਤਾ ਸਦ ਬੈਰਾਗੀ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੈ ॥
सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥
जो प्रभु की स्तुति में अनुरक्त है, वह सदैव ही वैरागी है और अपना जीवन जुए में नहीं हारता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਜੋਗੀ ਖੀਵਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰੈ ॥੪॥੪॥੩੮॥
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अम्रित धारै ॥४॥४॥३८॥
गुरु नानक का कथन है कि हे भर्तृहरि योगी ! सुन, मैं अमृत की नदिया से मतवाला हो चुका हूँ॥४॥४॥३८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਖੁਰਾਸਾਨ ਖਸਮਾਨਾ ਕੀਆ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੁ ਡਰਾਇਆ ॥
खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
खुरासान किसी अन्य को सौंपकर मुगल बादशाह बाबर ने हिन्दुस्तान को आक्रमण करके आ डराया।

ਆਪੈ ਦੋਸੁ ਨ ਦੇਈ ਕਰਤਾ ਜਮੁ ਕਰ�ि ਮੁਗਲੁ ਚੜਾਇਆ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
जग के रचयिता ने दोष अपने सिर पर तो नहीं लिया परन्तु मुगल बादशाह बाबर को यमराज बना कर हिन्दुस्तान भेज दिया।

ਏਤੀ ਮਾਰ ਪਈ ਕਰਲਾਣੇ ਤੈਂ ਕੀ ਦਰਦੁ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥
लोगों के साथ इतनी मारकाट हुई कि वे चीत्कार कर उठे परन्तु हे प्रभु ! क्या तुझे इन लोगों पर दया नहीं आई ? ॥ १ ॥

ਕਰਤਾ ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਈ ॥
करता तूं सभना का सोई ॥
हे सृष्टि के रचयिता ! एक तू ही सब जीवों का मालिक है।

ਜੇ ਸਕਤਾ ਸਕਤੇ ਕਉ ਮਾਰੇ ਤਾ ਮਨਿ ਰੋਸੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥
यदि एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली को मारे तो हृदय में क्रोध नहीं आता॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਕਤਾ ਸੀਹੁ ਮਾਰੇ ਪੈ ਵਗੈ ਖਸਮੈ ਸਾ ਪੁਰਸਾਈ ॥
सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥
यदि बलवान सिंह पशुओं के झुण्ड पर आक्रमण कर दे तो उस झुण्ड के स्वामी से पूछताछ तो अवश्य होती है कि वह क्या कर रहा था।

ਰਤਨ ਵਿਗਾੜਿ ਵਿਗੋਏ ਕੁਤੀਂ ਮੁਇਆ ਸਾਰ ਨ ਕਾਈ ॥
रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥
इन मुगल रूपी कुत्तों ने रत्न जैसे इस देश तथा लोगों को मार-मार कर नष्ट कर दिया है और मृतकों की कोई बात नहीं पूछता।

ਆਪੇ ਜੋੜਿ ਵਿਛੋੜੇ ਆਪੇ ਵੇਖੁ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥
हे परमेश्वर ! तुम स्वयं ही मिलाते और स्वयं ही जुदा करते हो। देखो, यह है तेरी बड़ाई॥ २॥

ਜੇ ਕੋ ਨਾਉ ਧਰਾਏ ਵਡਾ ਸਾਦ ਕਰੇ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥
जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥
यदि कोई मनुष्य अपने आपको बड़ा कहलवाए और अपने चित्त को अच्छे लगते स्वादों का आनंद भोगे तो

ਖਸਮੈ ਨਦਰੀ ਕੀੜਾ ਆਵੈ ਜੇਤੇ ਚੁਗੈ ਦਾਣੇ ॥
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥
परमेश्वर की दृष्टि में केवल दाने चुगने वाला अर्थात् भोग-विलास में मस्त रहने वाला वह मनुष्य एक कीड़े के समान ही दिखाई देता है।

ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੇ ॥੩॥੫॥੩੯॥
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥
हे नानक ! जो मनुष्य विकारों की ओर से अहंत्व मार कर जीता है और परमात्मा का नाम-स्मरण करता है, वही सबकुछ हासिल करता है॥३॥५॥३९॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੨ ਮਹਲਾ ੩
रागु आसा घरु २ महला ३
रागु आसा घरु २ महला ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵੈ ਵਡਭਾਗਿ ॥
हरि दरसनु पावै वडभागि ॥
श्रीहरि का दर्शन कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਬੈਰਾਗਿ ॥
गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥
गुरु के शब्द से सच्चा वैराग्य प्राप्त होता है।

ਖਟੁ ਦਰਸਨੁ ਵਰਤੈ ਵਰਤਾਰਾ ॥
खटु दरसनु वरतै वरतारा ॥
(संसार में) हिन्दुओं के षड्दर्शन प्रचलित हैं

ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥੧॥
गुर का दरसनु अगम अपारा ॥१॥
परन्तु गुरु का दर्शन (अर्थात् शास्त्र) अगम्य एवं अपार है॥ १॥

ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਮੁਕਤਿ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥
गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥
गुरु के दर्शन (शास्त्र) से मुक्ति एवं गति हो जाती है।

ਸਾਚਾ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साचा आपि वसै मनि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु स्वयं आकर मनुष्य के चित्त में बस जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਦਰਸਨਿ ਉਧਰੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥
गुर दरसनि उधरै संसारा ॥
गुरु के दर्शन (शास्त्र) से जगत का उद्धार हो जाता है,"

ਜੇ ਕੋ ਲਾਏ ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ॥
जे को लाए भाउ पिआरा ॥
यदि मनुष्य इससे प्रेम एवं प्रीति करे।

ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ਲਾਏ ਵਿਰਲਾ ਕੋਇ ॥
भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥
कोई विरला पुरुष ही गुरु के दर्शन से प्रेम करता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥
गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥२॥
गुरु के दर्शन से सदैव सुख प्राप्त होता है॥ २॥

ਗੁਰ ਕੈ ਦਰਸਨਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥
गुरु के दर्शन (शास्त्र) से मोक्ष द्वार मिल जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਪਰਵਾਰ ਸਾਧਾਰੁ ॥
सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥
सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य के परिवार का कल्याण हो जाता है।

ਨਿਗੁਰੇ ਕਉ ਗਤਿ ਕਾਈ ਨਾਹੀ ॥
निगुरे कउ गति काई नाही ॥
जो निगुरा है, उसे मुक्ति नहीं मिलती।

ਅਵਗਣਿ ਮੁਠੇ ਚੋਟਾ ਖਾਹੀ ॥੩॥
अवगणि मुठे चोटा खाही ॥३॥
ऐसे मनुष्य अवगुणों के कारण लूटे जाते हैं और चोटें खाते रहते हैं।॥ ३॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥
गुरु के शब्द से शरीर में सुख एवं शांति प्राप्त होती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਾ ਕਉ ਲਗੈ ਨ ਪੀਰ ॥
गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥
जो गुरुमुख बन जाता है, उसे कोई पीड़ा नहीं सताती।

ਜਮਕਾਲੁ ਤਿਸੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥
यमदूत भी उसके निकट नहीं आता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥੪॥੧॥੪੦॥
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥४॥१॥४०॥
हे नानक ! गुरुमुख सत्य में ही समा जाता है॥४॥१॥४०

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਬਦਿ ਮੁਆ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥
जिस व्यक्ति का मन गुरु के शब्द द्वारा विकारों की ओर से मृत हो जाता है, उसका आत्माभिमान समाप्त हो जाता है और

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥
सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥
एक तिलमात्र भी लालच के बिना सतिगुरु की सेवा करता है।

ਨਿਰਭਉ ਦਾਤਾ ਸਦਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥
निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥
उसके हृदय में सदैव ही दाता निडर प्रभु निवास करता है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਪਾਏ ਭਾਗਿ ਕੋਇ ॥੧॥
सची बाणी पाए भागि कोइ ॥१॥
सच्ची गुरुवाणी की देन किसी विरले भाग्यशाली को ही प्राप्त होती है॥ १॥

ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੁ ਵਿਚਹੁ ਅਉਗੁਣ ਜਾਹਿ ॥
गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥
(हे भाई !) गुणों का संग्रह कर चूंकि जो तेरे भीतर से अवगुण भाग जाएँ।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह तुम पूर्ण गुरु के शब्द में लीन हो जाओगे॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਣਾ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਵੈ ਸੋ ਗੁਣ ਜਾਣੈ ॥
गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥
जो प्राणी गुणों का ग्राहक होता है, वही गुणों की विशेषता समझता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥
अम्रित सबदि नामु वखाणै ॥
वह अमृत शब्द द्वारा नाम का उच्चारण करता है।

ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸੂਚਾ ਹੋਇ ॥
साची बाणी सूचा होइ ॥
सच्ची वाणी द्वारा मनुष्य पवित्र हो जाता है।

ਗੁਣ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥
गुण ते नामु परापति होइ ॥२॥
गुणों द्वारा प्रभु-नाम प्राप्त हो जाता है॥ २॥

ਗੁਣ ਅਮੋਲਕ ਪਾਏ ਨ ਜਾਹਿ ॥
गुण अमोलक पाए न जाहि ॥
ईश्वर के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਮਨਿ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥
मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥
निर्मल मन सच्चे शब्द में लीन हो जाता है।

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ੍ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥
जो मनुष्य नाम की आराधना करते हैं, वे बड़े भाग्यशाली हैं और

ਸਦਾ ਗੁਣਦਾਤਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥੩॥
सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥३॥
सदैव ही गुणदाता प्रभु को अपने चित्त में बसाते हैं।॥ ३॥

ਜੋ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਤਿਨ੍ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥
जो मनुष्य गुणों का संग्रह करते हैं, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ।

ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
दरि साचै साचे गुण गाउ ॥
मैं सत्य के दरबार पर सच्चे परमात्मा का गुणगान करता हूँ।

ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
आपे देवै सहजि सुभाइ ॥
वह प्रभु स्वयं सहज ही देन प्रदान करता है।

ਨਾਨਕ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੪॥੨॥੪੧॥
नानक कीमति कहणु न जाइ ॥४॥२॥४१॥
हे नानक ! ईश्वर के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ ४॥ २॥ ४१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥
सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥
हे बन्धु ! सतिगुरु का यह बहुत बड़ा बड़प्पन है कि

ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥
चिरी विछुंने मेलि मिलाई ॥
वह चिरकाल से बिछुड़े जीवों को प्रभु से मिला देता है।

ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥
आपे मेले मेलि मिलाए ॥
ईश्वर आप ही गुरु से मिलाकर प्राणी को अपने साथ मिला लेता है।

ਆਪਣੀ ਕੀਮਤਿ ਆਪੇ ਪਾਏ ॥੧॥
आपणी कीमति आपे पाए ॥१॥
वह अपना मूल्य स्वयं ही जानता है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਹੋਇ ॥
हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥
हे बन्धु ! किस विधि से मनुष्य हरि का मूल्यांकन कर सकता है?

ਹਰਿ ਅਪਰੰਪਰੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि अपर्मपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
हरि अपरंपार, अगम्य एवं अगोचर है, गुरु के शब्द द्वारा कोई विरला मनुष्य ही परमात्मा को मिलता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਮਤਿ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥
कोई गुरुमुख ही ईश्वर के नाम की महत्ता समझता है।

ਵਿਰਲੇ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
विरले करमि परापति होइ ॥
कोई विरला मनुष्य ही प्रभु के करम से नाम प्राप्त करता है।

ਊਚੀ ਬਾਣੀ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥
ऊची बाणी ऊचा होइ ॥
ऊँची वाणी से मनुष्य का जीवन आचरण ऊँचा हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਵਖਾਣੈ ਕੋਇ ॥੨॥
गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥२॥
कोई गुरुमुख ही नाम का सुमिरन करता है॥ २॥

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਦਰਦੁ ਸਰੀਰਿ ॥
विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥
नाम-स्मरण के बिना मनुष्य शरीर में दुख-दर्द उत्पन्न हुए रहते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਤਾ ਉਤਰੈ ਪੀਰ ॥
सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥
यदि सतिगुरु से भेंट हो जाए तो पीड़ा निवृत्त हो जाती है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਦੁਖੁ ਕਮਾਇ ॥
बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥
गुरु से भेंटवार्ता बिना दुख ही हासिल होता है,"

ਮਨਮੁਖਿ ਬਹੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੩॥
मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥
लेकिन मनमुख को कठोर दण्ड मिलता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਅਤਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ॥
हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥
हरि का नाम बहुत मीठा है और बहुत स्वादिष्ट है।

ਪੀਵਤ ਰਹੈ ਪੀਆਏ ਸੋਇ ॥
पीवत रहै पीआए सोइ ॥
जिसे वह प्रभु पिलाता है, केवल वही इसका पान करता है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਏ ॥
गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥
गुरु की कृपा से मनुष्य हरि रस प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗਤਿ ਪਾਏ ॥੪॥੩॥੪੨॥
नानक नामि रते गति पाए ॥४॥३॥४२॥
हे नानक ! प्रभु-नाम में मग्न होने से मनुष्य मोक्षं प्राप्त कर लेता है ॥ ४॥ ३॥ ४२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ॥
मेरा प्रभु साचा गहिर ग्मभीर ॥
हे बन्धु ! मेरा सच्चा प्रभु गहरा एवं गंभीर है।

ਸੇਵਤ ਹੀ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥
प्रभु की सेवा-भक्ति करने से शरीर को तुरंत ही सुख-शांति प्राप्त हो जाते हैं।

ਸਬਦਿ ਤਰੇ ਜਨ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥
शब्द द्वारा भक्त जन सहज ही संसार सागर से पार हो जाते हैं।

ਤਿਨ ਕੈ ਹਮ ਸਦ ਲਾਗਹ ਪਾਇ ॥੧॥
तिन कै हम सद लागह पाइ ॥१॥
इसलिए हम सदैव ही उनके चरण-स्पर्श करते हैं। १॥

ਜੋ ਮਨਿ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥
जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥
जिनका मन हरि-रंग में रंग जाता है,"

ਤਿਨ ਕਾ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ਤੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਮਿਲੇ ਸੁਭਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥
उनका जन्म-मरण के चक्र का दुख दूर हो जाता है और वह सहज ही प्रभु के दरबार में मिल जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਬਦੁ ਚਾਖੈ ਸਾਚਾ ਸਾਦੁ ਪਾਏ ॥
सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥
जो मनुष्य शब्द को चखता है, वह सच्चे स्वाद को पा लेता है और

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
हरि का नामु मंनि वसाए ॥
हरि के नाम को अपने मन में बसा लेता है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥
हरि-प्रभु सदा ही सर्वव्यापक है।

ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਆਪੇ ਦੂਰਿ ॥੨॥
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥२॥
वह स्वयं निकट है और स्वयं ही दूर है॥ २॥

ਆਖਣਿ ਆਖੈ ਬਕੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥
बातों द्वारा तो सभी मनुष्य कहते हैं और मुँह से बोल कर सुनाते भी हैं

ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋਇ ॥
आपे बखसि मिलाए सोइ ॥
परन्तु वह प्रभु स्वयं क्षमा करता और अपने साथ मिला लेता है।

ਕਹਣੈ ਕਥਨਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥
केवल कहने एवं उच्चारण करने से प्रभु प्राप्त नहीं होता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥
गुरु की दया से प्रभु आकर मनुष्य के चित्त में बस जाता है॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥
गुरुमुख अपने भीतर से अहंत्व दूर कर देता है।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇ ॥
हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥
वह मोह-माया को छोड़ कर प्रभु के प्रेम में रंगा हुआ है।

ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਵੀਚਾਰ ॥
अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥
वह गुरु के शब्द का चिन्तन करता है जो बड़ा निर्मल है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੪॥੪॥੪੩॥
नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥४३॥
हे नानक ! प्रभु का नाम मनुष्य का जीवन संवारने वाला है॥ ४ ॥ ४॥ ४३ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਲਗੇ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥
जो द्वैतभाव तथा मोह-माया में लीन हुए हैं, उन्होंने दुःख ही पाया है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥
शब्द के बिना उन्होंने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੈ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥
सतिगुरु की सेवा करने से सूझ प्राप्त हो जाती है और

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੧॥
दूजै भाइ न लागै कोइ ॥१॥
मनुष्य मोह-माया व द्वैतवाद के साथ नहीं लगता ॥ १॥

ਮੂਲਿ ਲਾਗੇ ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਣੁ ॥
मूलि लागे से जन परवाणु ॥
जो मनुष्य सृष्टि के मूल (कर्तार) से जुड़ते हैं, वे स्वीकृत हो जाते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਹਿਰਦੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥१॥ रहाउ ॥
अपने हृदय में हमेशा राम का नाम जपते रहो और गुरु के शब्द द्वारा एक परमात्मा को ही समझो॥ १॥ रहाउ॥

ਡਾਲੀ ਲਾਗੈ ਨਿਹਫਲੁ ਜਾਇ ॥
डाली लागै निहफलु जाइ ॥
जो व्यक्ति सृष्टि के मूल परमात्मा को छोड़कर उसकी माया रूपी डाली से लगता है, वह निष्फल हो जाता है।

ਅੰਧੀਂ ਕੰਮੀ ਅੰਧ ਸਜਾਇ ॥
अंधीं कमी अंध सजाइ ॥
ज्ञानहीन कर्मों के लिए अन्धा दण्ड ही पाता है।

ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧਾ ਠਉਰ ਨ ਪਾਇ ॥
मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥
अन्धे स्वेच्छाचारी मनुष्य को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता।

ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਕੀੜਾ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਪਚਾਇ ॥੨॥
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥२॥
वह विष्टा का कीड़ा है और विष्टा में ही गल-सड़ जाता है॥ २॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥
गुरु की सेवा करने से मनुष्य को सदा सुख मिलता है और

ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥
सत्संगति में मिलकर हरि की गुणस्तुति करता है।

ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
नामे नामि करे वीचारु ॥
जो मनुष्य प्रभु का नाम-सुमिरन करता है,"

ਆਪਿ ਤਰੈ ਕੁਲ ਉਧਰਣਹਾਰੁ ॥੩॥
आपि तरै कुल उधरणहारु ॥३॥
वह स्वयं संसार सागर से पार हो जाता है और अपनी कुल का भी उद्धार कर लेता है॥ ३॥

ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਨਾਮਿ ਵਜਾਏ ॥
गुर की बाणी नामि वजाए ॥
गुरु की वाणी द्वारा मन में प्रभु-नाम बजता है।

ਨਾਨਕ ਮਹਲੁ ਸਬਦਿ ਘਰੁ ਪਾਏ ॥
नानक महलु सबदि घरु पाए ॥
हे नानक ! शब्द गुरु के द्वारा मनुष्य अपने हृदय-घर में ही प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਸਤ ਸਰਿ ਹਰਿ ਜਲਿ ਨਾਇਆ ॥
गुरमति सत सरि हरि जलि नाइआ ॥
हे भाई ! गुरु की शिक्षा द्वारा तू सत्य के सरोवर पर हरि नाम रूपी जल में स्नान कर

ਦੁਰਮਤਿ ਮੈਲੁ ਸਭੁ ਦੁਰਤੁ ਗਵਾਇਆ ॥੪॥੫॥੪੪॥
दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥४॥५॥४४॥
इस तरह तेरी दुर्मति एवं पाप की सारी मैल साफ हो जाएगी।॥ ४॥ ५॥ ४४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਮਰਿ ਮਰਣੁ ਵਿਗਾੜਹਿ ॥
मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥
जब स्वेच्छाचारी मरते हैं तो इस तरह मरकर अपनी मृत्यु बिगाड़ लेते हैं,"

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਆਤਮ ਸੰਘਾਰਹਿ ॥
दूजै भाइ आतम संघारहि ॥
क्योंकि मोह-माया द्वारा वह अपना आत्म-संहार कर लेते हैं।

ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵਿਗੂਤਾ ॥
मेरा मेरा करि करि विगूता ॥
यह मेरा (परिवार) है, यह मेरा (धन-दौलत) है, कहते हुए वे नष्ट हो जाते हैं।

ਆਤਮੁ ਨ ਚੀਨੈ੍ ਭਰਮੈ ਵਿਚਿ ਸੂਤਾ ॥੧॥
आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥१॥
वह अपनी आत्मा की पहचान नहीं करते और भ्रम में सोये हुए हैं।॥ १॥

ਮਰੁ ਮੁਇਆ ਸਬਦੇ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥
मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥
जो शब्द द्वारा मरता है, वह यथार्थ मृत्यु मरता है।

ਉਸਤਤਿ ਨਿੰਦਾ ਗੁਰਿ ਸਮ ਜਾਣਾਈ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਜਪਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु ने जिसे यह ज्ञान दिया है कि स्तुति एवं निन्दा एक समान है, वह इस युग में हरि का सिमरन करके नाम रूपी लाभ प्राप्त करके ले जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮ ਵਿਹੂਣ ਗਰਭ ਗਲਿ ਜਾਇ ॥
नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥
जो मनुष्य नाम विहीन हैं, वे गर्भ में गल-सड़ जाते हैं।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਦੂਜੈ ਲੋਭਾਇ ॥
बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥
उसका जन्म निरर्थक है जो मोह-माया में फँसा रहता है।

ਨਾਮ ਬਿਹੂਣੀ ਦੁਖਿ ਜਲੈ ਸਬਾਈ ॥
नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥
नाम विहीन सारी दुनिया दुःख-संताप में जल रही है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥੨॥
सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥२॥
पूर्ण सतिगुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है॥ २॥

ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਬਹੁ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ॥
मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ॥
चंचल मन मोह-माया में भटक कर बहुत चोटें खाता है।

ਏਥਹੁ ਛੁੜਕਿਆ ਠਉਰ ਨ ਪਾਇ ॥
एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥
मनुष्य जन्म का यह सुनहरी अवसर गंवा कर उसे कोई सुख का स्थान नहीं मिलता।

ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਵਿਸਟਾ ਕਾ ਵਾਸੁ ॥
गरभ जोनि विसटा का वासु ॥
गर्भयोनि (जन्म मरण का चक्र) मानों विष्ठा का घर है।

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਮਨਮੁਖੁ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥੩॥
तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥३॥
ऐसे घर में स्वेच्छाचारी मनुष्य निवास करता है॥ ३॥

ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਸਦਾ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥
मैं अपने सतिगुरु पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥
गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥
गुरु के सम्मुख रहकर आत्म ज्योति परम-ज्योति में मिल जाती है।

ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥
निरमल बाणी निज घरि वासा ॥
निर्मल गुरुवाणी द्वारा मनुष्य अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਸਦਾ ਉਦਾਸਾ ॥੪॥੬॥੪੫॥
नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥
हे नानक ! जो मनुष्य अपना अहंत्व समाप्त कर देता है, वह सदैव निर्लिप्त है॥४॥६॥४५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਲਾਲੈ ਆਪਣੀ ਜਾਤਿ ਗਵਾਈ ॥
लालै आपणी जाति गवाई ॥
प्रभु का सेवक अपनी जाति गंवा देता है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥
तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥
वह अपना तन-मन सतिगुरु को अर्पण कर देता है और उनका आश्रय लेता है।

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हिरदै नामु वडी वडिआई ॥
उसकी बड़ी महानता यह है कि उसके हृदय में हरि का नाम विद्यमान है।

ਸਦਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੧॥
सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥१॥
प्रियतम-प्रभु सदैव ही उसका सखा-सहायक बना रहता है॥ १॥

ਸੋ ਲਾਲਾ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ॥
सो लाला जीवतु मरै ॥
हे बन्धु ! केवल वही प्रभु का सेवक है जो सांसारिक कार्य करता हुआ विषय-वासनाओं से निर्लिप्त रहता है।

ਸੋਗੁ ਹਰਖੁ ਦੁਇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਬਦਿ ਉਧਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥१॥ रहाउ ॥
वह सुख-दुख दोनों को एक समान समझता है और गुरु की कृपा से शब्द द्वारा उसका उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਈ ॥
करणी कार धुरहु फुरमाई ॥
परमात्मा ने आरम्भ से ही जीवों को शुभ कर्म करने का हुक्म किया हुआ है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਕੋ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥
शब्द-साधना के बिना जीवन सफल नहीं होता।

ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ ॥
करणी कीरति नामु वसाई ॥
प्रभु का यशोगान करने से नाम जीव के मन में बस जाता है।

ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਢਿਲ ਨ ਪਾਈ ॥੨॥
आपे देवै ढिल न पाई ॥२॥
ईश्वर स्वयं यशोगान की देन प्रदान करता है और यह देन में देरी नहीं करता॥ २॥

ਮਨਮੁਖਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य माया की दुविधा में फँसकर जगत में कुमार्गगामी हो जाता है।

ਬਿਨੁ ਰਾਸੀ ਕੂੜਾ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰੁ ॥
बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥
नाम-पूंजी के बिना वह झूठा व्यापार करता है।

ਵਿਣੁ ਰਾਸੀ ਵਖਰੁ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥
विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥
नाम-पूंजी के बिना सौदा प्राप्त नहीं होता।

ਮਨਮੁਖਿ ਭੁਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੩॥
मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥३॥
(माया की) दुविधा में पड़ा हुआ मनमुख व्यक्ति इस तरह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेता है॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੁ ਲਾਲਾ ਹੋਇ ॥
सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥
जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है यहू प्रभु का सेवक होता है।

ਊਤਮ ਜਾਤੀ ਊਤਮੁ ਸੋਇ ॥
ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥
उसकी जाति उत्तम है एवं उसकी मान-प्रतिष्ठा भी उत्तम है।

ਗੁਰ ਪਉੜੀ ਸਭ ਦੂ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥
गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥
गुरु की सीढ़ी का आश्रय लेकर वह सर्वोत्तम बन जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਵਡਾਈ ਹੋਇ ॥੪॥੭॥੪੬॥
नानक नामि वडाई होइ ॥४॥७॥४६॥
हे नानक ! ईश्वर के नाम-सुमिरन द्वारा प्रशंसा मिलती है॥ ४॥ ७॥ ४६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਝੂਠੋ ਝੂਠੁ ਕਮਾਵੈ ॥
मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥
स्वेच्छाचारी जीवात्मा केवल झूठ का ही आचरण करती है

ਖਸਮੈ ਕਾ ਮਹਲੁ ਕਦੇ ਨ ਪਾਵੈ ॥
खसमै का महलु कदे न पावै ॥
इसलिए उसे परमेश्वर का महल कदापि प्राप्त नहीं होता।

ਦੂਜੈ ਲਗੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਵੈ ॥
दूजै लगी भरमि भुलावै ॥
मोह-माया में फँसी हुई वह दुविधा में भटकती रहती है।

ਮਮਤਾ ਬਾਧਾ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥੧॥
ममता बाधा आवै जावै ॥१॥
मोह-ममता में फॅसी हुई वह जन्म-मरण के चक्र में पड़कर आती-जाती रहती है॥ १॥

ਦੋਹਾਗਣੀ ਕਾ ਮਨ ਦੇਖੁ ਸੀਗਾਰੁ ॥
दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥
हे मन ! दुहागिन अर्थात् परित्यक्ता नारी का हार-शृंगार देखो।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤਿ ਧਨਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ਝੂਠੁ ਮੋਹੁ ਪਾਖੰਡ ਵਿਕਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥१॥ रहाउ ॥
जो पुत्र, स्त्री, एवं माया-धन में चित्त लगाता है, वह झूठ, मोह, पाखंड एवं विकारों में ही फॅसा रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥
सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥
जो जीवात्मा प्रभु को अच्छी लगती है वह सदा सौभाग्यशालिनी है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਵੈ ॥
गुर सबदी सीगारु बणावै ॥
गुरु के शब्द को वह अपना हार-शृंगार बनाती है।

ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰਾਵੈ ॥
सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥
उसकी सेज सुखदायक है और रात-दिन वह अपने प्रभु-पति से रमण करती है।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥
मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥२॥
अपने प्रियतम-प्रभु से मिलकर वह सदा सुख पाती है।॥ २॥

ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਾਚੀ ਜਿਸੁ ਸਾਚਿ ਪਿਆਰੁ ॥
सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥
वह सुहागिन सच्ची है जो सत्यस्वरूप प्रभु से प्रेम करती है।

ਅਪਣਾ ਪਿਰੁ ਰਾਖੈ ਸਦਾ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥
अपने कंत -प्रभु को वह हमेशा अपने चित्त से लगाकर रखती है।

ਨੇੜੈ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ॥
नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥
वह उसको समीप ही नहीं अपितु सदा प्रत्यक्ष देखती है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥
मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥३॥
मेरा प्रभु हर जगह मौजूद है॥ ३॥

ਆਗੈ ਜਾਤਿ ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਇ ॥
आगै जाति रूपु न जाइ ॥
परलोक में जाति एवं सौन्दर्य मनुष्य के साथ नहीं जाते अपितु

ਤੇਹਾ ਹੋਵੈ ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥
जैसे कर्म मनुष्य करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है।

ਸਬਦੇ ਊਚੋ ਊਚਾ ਹੋਇ ॥
सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥
शब्द द्वारा मनुष्य ऊँचा हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੮॥੪੭॥
नानक साचि समावै सोइ ॥४॥८॥४७॥
हे नानक ! वह सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ ८॥ ४७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਭਗਤਿ ਰਤਾ ਜਨੁ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥
जो भक्त प्रभु-भक्ति के रंग में सहज ही रंगा रहता है,"

ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਸਾਚੈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥
गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥
वह गुरु के भय द्वारा निश्चित ही सत्य में समा जाता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥
बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥
पूर्ण गुरु के बिना प्रभु की भक्ति नहीं होती और

ਮਨਮੁਖ ਰੁੰਨੇ ਅਪਨੀ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥੧॥
मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥१॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा कर विलाप करते रहते हैं। १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਦਾ ਧਿਆਇ ॥
मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥
हे मेरे मन ! हरि का जाप कर और सदा उसका ध्यान कर।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
फिर तुझे दिन-रात सदैव ही आनंद बना रहेगा। जिस फल की इच्छा होगी, वही फल मिल जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪੂਰਾ ਪਾਏ ॥
गुर पूरे ते पूरा पाए ॥
पूर्ण गुरु के द्वारा पूर्ण गुणदाता प्रभु प्राप्त होता है।

ਹਿਰਦੈ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥
उसके हृदय में गुरु का शब्द और सत्यनाम बस जाता है।

ਅੰਤਰੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਨਾਏ ॥
अंतरु निरमलु अम्रित सरि नाए ॥
जो मनुष्य अमृत सरोवर में स्नान करता है उसका हृदय पवित्र हो जाता है।

ਸਦਾ ਸੂਚੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਏ ॥੨॥
सदा सूचे साचि समाए ॥२॥
सदा के लिए पवित्र होने के कारण वह सत्य में लीन हो जाता है॥ २ ॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵੇਖੈ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥
हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥
हरि प्रभु जीवों को सदा देखता रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥
गुरु की दया से जीव प्रभु को सर्वव्यापक पाता है।

ਜਹਾ ਜਾਉ ਤਹ ਵੇਖਾ ਸੋਇ ॥
जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥
जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, वहाँ मैं उस प्रभु को देखता हूँ।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੩॥
गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥३॥
गुरु के बिना अन्य कोई दाता नहीं ॥ ३॥

ਗੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਪੂਰਾ ਭੰਡਾਰ ॥
गुरु सागरु पूरा भंडार ॥
गुरु सागर है, उसका पूर्ण भण्डार

ਊਤਮ ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਅਪਾਰ ॥
ऊतम रतन जवाहर अपार ॥
अपार एवं बहुमूल्य रत्नों एवं जवाहरों से भरपूर है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
गुर परसादी देवणहारु ॥
प्रभु गुरु की कृपा से ही जीवों को देन देने वाला है।

ਨਾਨਕ ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੪॥੯॥੪੮॥
नानक बखसे बखसणहारु ॥४॥९॥४८॥
हे नानक ! क्षमाशील परमात्मा जीवों को क्षमा कर देता है॥ ४॥ ६॥ ४८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਗੁਰੁ ਸਾਇਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥
गुरु ही गुणों का सागर है और वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सतिगुरु है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥
पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥
पूर्ण भाग्य से ही गुरु की सेवा होती है।

ਸੋ ਬੂਝੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ॥
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥
जिसे ईश्वर सूझ प्रदान करता है, केवल वही मनुष्य इस भेद को समझता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੇਵ ਕਰਾਏ ॥੧॥
गुर परसादी सेव कराए ॥१॥
गुरु की कृपा से ही मनुष्य प्रभु की सेवा-भक्ति करता है॥ १॥

ਗਿਆਨ ਰਤਨਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥
गुरु के प्रदान किए हुए ज्ञान-रत्न से ही मनुष्य को पूर्ण सूझ प्राप्त होती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਗਿਆਨੁ ਬਿਨਾਸੈ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗੈ ਵੇਖੈ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के प्रसाद से अज्ञानता का नाश हो जाता है। मनुष्य रात-दिन सतर्क रहता है और सत्य प्रभु को देख लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੋਹੁ ਗੁਮਾਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥
गुरु के शब्द से मोह एवं अभिमान जल जाते हैं और

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥
पूर्ण गुरु से मनुष्य को सूझ प्राप्त होती है।

ਅੰਤਰਿ ਮਹਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥
अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥
गुरु के शब्द से मनुष्य अपने अन्तर्मन में आत्मस्वरूप को पहचान लेता है,"

ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਰਹੈ ਥਿਰੁ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ॥੨॥
आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥२॥
उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है, वह स्थिरचित होकर प्रभु नाम में समा जाता है॥ २॥

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
जमणु मरणा है संसारु ॥
यह संसार जन्म-मरण ही है परन्तु

ਮਨਮੁਖੁ ਅਚੇਤੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥
स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य माया-मोह के अन्धकार में फँसा हुआ है।

ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਬਹੁ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ॥
पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥
ऐसा स्वेच्छाचारी मनुष्य दूसरों की निन्दा करता हुआ हर प्रकार से झूठ का आचरण करता है।

ਵਿਸਟਾ ਕਾ ਕੀੜਾ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵੈ ॥੩॥
विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥३॥
वह विष्ठा का कीड़ा बनकर विष्ठा में ही समा जाता है॥ ३॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਸਭ ਸੋਝੀ ਪਾਏ ॥
सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर मनुष्य को पूर्ण सूझ प्राप्त हो जाती है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥
गुर का सबदु हरि भगति द्रिड़ाए ॥
गुरु का शब्द हरि की भक्ति को चित्त में दृढ़ कर देता है।

ਭਾਣਾ ਮੰਨੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
भाणा मंने सदा सुखु होइ ॥
जो प्रभु की इच्छा को मानता है, वह सदा सुखी रहता है।

ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੧੦॥੪੯॥
नानक सचि समावै सोइ ॥४॥१०॥४९॥
हे नानक ! ऐसा इन्सान सत्य में ही समा जाता है॥ ४ ॥ १० ॥ ४६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਪੰਚਪਦੇ ॥
आसा महला ३ पंचपदे ॥
आसा महला ३ पंचपदे ॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ॥
सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥
जो पुरुष प्रभु-शब्द में जुड़कर आत्माभिमान को मार देता है, वह सदा आनंद प्राप्त करता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥
सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥
वह सच्चे गुरु से मिलकर परमात्मा से मिल जाता है।

ਨਾ ਫਿਰਿ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥
फिर वह दोबारा मरता नहीं और जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
पूरे गुर ते साचि समाइ ॥१॥
पूर्ण गुरु के माध्यम से वह सत्य में ही समा जाता है॥ १॥

ਜਿਨ੍ ਕਉ ਨਾਮੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਲੇਖੁ ॥
जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥
जिनके माथे पर विधाता ने नाम-सुमिरन का लेख लिखा होता है,"

ਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਧਿਆਵਹਿ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਭਗਤਿ ਵਿਸੇਖੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥१॥ रहाउ ॥
वह पुरुष दिन-रात नाम सुमिरन करते हैं और पूर्ण गुरु के माध्यम से उन्हें प्रभुभक्ति की देन प्राप्त हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ੍ ਕਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥
जिन्हें हरि-प्रभु अपने साथ मिला लेता है,"

ਤਿਨ੍ ਕੀ ਗਹਣ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥
उनकी गहरी आत्मिक अवस्था कही नहीं जा सकती।

ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰ ਦਿਤੀ ਵਡਿਆਈ ॥
पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥
पूर्ण सतिगुरु ने उसे नाम की महानता प्रदान की है।

ਊਤਮ ਪਦਵੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈ ॥੨॥
ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥२॥
वह हरि नाम में लीन रहता है और उसने उत्तम पदवी पा ली है॥ २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
जो किछु करे सु आपे आपि ॥
प्रभु जो कुछ भी करता है, उसे वह आप ही करता है।

ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
एक घड़ी महि थापि उथापि ॥
एक घड़ी में वह उत्पादित करके नष्ट कर देता है।

ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹਣਾ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥
कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥
केवल बातें करते रहने एवं सुनाते रहने से

ਜੇ ਸਉ ਘਾਲੇ ਥਾਇ ਨ ਪਾਏ ॥੩॥
जे सउ घाले थाइ न पाए ॥३॥
सैंकड़ों बार से किया हुआ परिश्रम भी सत्य के दरबार में कबूल नहीं होता ॥ ३॥

ਜਿਨ੍ ਕੈ ਪੋਤੈ ਪੁੰਨੁ ਤਿਨ੍ਾ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥
जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए ॥
जिनके प्रारब्ध के भण्डार में पुण्य हैं, उन्हें गुरु ही मिलता है।

ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਗੁਰੁ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥
सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥
वे सच्ची वाणी एवं गुरु-शब्द सुनते हैं।

ਜਹਾਂ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਤਹਾਂ ਦੁਖੁ ਜਾਏ ॥
जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ॥
जहाँ नाम का निवास है, वहाँ से दुख दौड़ जाता है।

ਗਿਆਨਿ ਰਤਨਿ ਸਾਚੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥
गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥४॥
ज्ञान रत्न के माध्यम से मनुष्य सहज ही सत्य में समा जाता है।॥ ४॥

ਨਾਵੈ ਜੇਵਡੁ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥
प्रभु-नाम जैसा दूसरा कोई धन नहीं।

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥
परन्तु यह धन उसे ही प्राप्त होता है, जिसे सत्य प्रभु प्रदान करता है।

ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
पूरै सबदि मंनि वसाए ॥
पूर्ण शब्द द्वारा नाम चित्त में बसता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੫॥੧੧॥੫੦॥
नानक नामि रते सुखु पाए ॥५॥११॥५०॥
हे नानक ! नाम में अनुरक्त होने से मनुष्य सुख प्राप्त करता है। ॥५॥११॥५०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਨਿਰਤਿ ਕਰੇ ਬਹੁ ਵਾਜੇ ਵਜਾਏ ॥
निरति करे बहु वाजे वजाए ॥
जो मनुष्य नृत्य करता और अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बजाता है,"

ਇਹੁ ਮਨੁ ਅੰਧਾ ਬੋਲਾ ਹੈ ਕਿਸੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਏ ॥
इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥
उसका यह मन ज्ञानहीन एवं बहरा है। तब वह कहकर किसे सुना रहा है ?

ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਭਰਮੁ ਅਨਲ ਵਾਉ ॥
अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥
उसके अन्तर्मन में तृष्णा की अग्नि एवं भ्रम की हवा है।

ਦੀਵਾ ਬਲੈ ਨ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੧॥
दीवा बलै न सोझी पाइ ॥१॥
इसलिए ज्ञान का दीपक प्रज्वलित नहीं होता और न ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है॥ १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥
गुरुमुख के मन में भक्ति का प्रकाश होता है।

ਆਪੁ ਪਛਾਣਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने आत्मस्वरूप को पहचान कर ईश्वर से मिल जाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਤਿ ਹਰਿ ਲਾਗੈ ਭਾਉ ॥
गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥
गुरुमुख के लिए प्रभु से प्रेम करना ही नृत्य है और

ਪੂਰੇ ਤਾਲ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥
अन्तर्मन से अहंकार को मारना ही सुरताल को पूर्णतया कायम रखने के बराबर है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਆਪੇ ਜਾਣੁ ॥
मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥
मेरा सच्चा प्रभु स्वयं ही सबकुछ जानता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੨॥
गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥२॥
(हे भाई !) गुरु के शब्द द्वारा ब्रह्म को अन्तर्मन में ही पहचान लो॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੁ ॥
गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥
अन्तर्मन में ईश्वर हेतु प्रेम एवं प्रीति ही गुरुमुख की भक्ति है।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਹਜਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥
वह सहज ही गुरु के शब्द का चिन्तन करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥
गुरुमुख की भक्ति एवं जीवन-युक्ति सत्य ही है।

ਪਾਖੰਡਿ ਭਗਤਿ ਨਿਰਤਿ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ॥੩॥
पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥३॥
पाखण्डपूर्ण की भक्ति एवं नृत्य से दुख ही मिलता है।॥ ३॥

ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਜਨੁ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ॥
एहा भगति जनु जीवत मरै ॥
सच्ची भक्ति यह है कि परमात्मा का दास जीवन के अहंत्व के प्रति मर जाए।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥
गुर परसादी भवजलु तरै ॥
गुरु की कृपा से ऐसा दास संसार सागर से पार हो जाता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਭਗਤਿ ਥਾਇ ਪਾਇ ॥
गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ ॥
गुरु के वचन द्वारा की हुई भक्ति सफल हो जाती है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੪॥
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥४॥
पूज्य परमेश्वर स्वयं आकर हृदय में बस जाता है॥ ४॥

ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਏ ॥
हरि क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥
जब प्रभु कृपा धारण करता है तो वह मनुष्य को सतिगुरु से मिला देता है।

ਨਿਹਚਲ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥
तब उसकी भक्ति अटल हो जाती है और वह ईश्वर से अपना चित्त लगा लेता है।

ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਤਿਨ੍ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥
जो मनुष्य प्रभु की भक्ति में रंगे हुए हैं, उनकी शोभा भी सच्ची है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੫॥੧੨॥੫੧॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥५॥१२॥५१॥
हे नानक ! नाम में अनुरक्त होने से ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है। ॥५॥१२॥५१॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੩
आसा घरु ८ काफी महला ३
आसा घरु ८ काफी महला ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥
हरि की इच्छा से ही सतिगुरु मिलता है और सत्य की सूझ प्राप्त होती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਬੂਝੈ ਸੋਈ ॥੧॥
गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥१॥
गुरु की कृपा से जिसके हृदय में नाम निवास करता है, वह प्रभु को समझ लेता है॥ १॥

ਮੈ ਸਹੁ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਕੋਈ ॥
मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥
एक पति-प्रभु ही मेरा मालिक एवं दाता है और उसके सिवाय कोई नहीं।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से जब वह मन में निवास करता है तो सदा सुख मिलता है॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਨਿਰਭਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥
इस युग में निर्भय करने वाला हरि का नाम है और गुरु के विचार अर्थात् उपदेश द्वारा ही यह प्राप्त होता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਗਵਾਰਿ ॥੨॥
बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥२॥
नामविहीन मनुष्य यमदूत के वश में रहता है और ऐसे स्वेच्छाचारी मनुष्य को अन्धा एवं मूर्ख कहा जाता है।॥ २॥

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜਨੁ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ਬੂਝੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥
हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥
जो सेवक हरि की इच्छा मान कर सेवा करता है, वह सत्य को समझ लेता है।

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਾਲਾਹੀਐ ਭਾਣੈ ਮੰਨਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੩॥
हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥३॥
हरि की इच्छा में ही उसका ध्यान करना चाहिए, क्योंकि उसकी इच्छा मानने से सुख प्राप्त होता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਈ ॥
हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥
हरि की इच्छा में ही मानव-जन्म रूपी उत्तम पदार्थ मिलता है और बुद्धि भी श्रेष्ठ हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਤੂੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਤਿ ਹੋਈ ॥੪॥੩੯॥੧੩॥੫੨॥
नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥४॥३९॥१३॥५२॥
हे नानक ! तू प्रभु-नाम की स्तुति कर क्योंकि गुरुमुख बनकर ही गति प्राप्त होगी॥ ४॥ ३६ ॥ १३॥ ५२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨
आसा महला ४ घरु २
आसा महला ४ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਸਚਿਆਰੁ ਮੈਡਾ ਸਾਂਈ ॥
तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥
हे मालिक ! तू जगत का रचयिता है, तू सदैव सत्य है और

ਜੋ ਤਉ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਥੀਸੀ ਜੋ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਹਉ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जो तुझे अच्छा लगता है, केवल वही होता है। जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं वही प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਭ ਤੇਰੀ ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥
यह सारी दुनिया तेरी पैदा की हुई है और सब जीव तुझे ही याद करते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਤਿਨਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਪਾਇਆ ॥
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥
जिस पर तुम दया धारण करते हो, वह तेरे नाम-रत्न को पा लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਾਧਾ ਮਨਮੁਖਿ ਗਵਾਇਆ ॥
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥
गुरुमुख व्यक्ति नाम प्राप्त कर लेते हैं और स्वेच्छाचारी व्यक्ति इसे गंवा देते हैं।

ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਵਿਛੋੜਿਆ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥
सच तो यही है कि तूने स्वयं ही जीवों को खुद से जुदा किया है और स्वयं ही भक्तगणों को अपने साथ मिलाया है॥ १॥

ਤੂੰ ਦਰੀਆਉ ਸਭ ਤੁਝ ਹੀ ਮਾਹਿ ॥
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥
हे प्रभु ! तू दरिया है और सभी तुझ में समाए हुए हैं।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥
तेरे अलावा दूसरा कोई नहीं।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ॥
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥
(सृष्टि के) तमाम जीव-जन्तु तेरा ही खेल है।

ਵਿਜੋਗਿ ਮਿਲਿ ਵਿਛੁੜਿਆ ਸੰਜੋਗੀ ਮੇਲੁ ॥੨॥
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥
वियोग कर्मों के कारण मिला हुआ प्राणी बिछुड़ जाता है और संयोगवश पुन: प्रभु से मिलन प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂ ਜਾਣਾਇਹਿ ਸੋਈ ਜਨੁ ਜਾਣੈ ॥
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥
हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तुम गुरु द्वारा सुमति प्रदान करते हो वही मनुष्य तुझे समझता है और

ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦ ਹੀ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥
सदैव ही तेरी गुणस्तुति का बखान करता है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
जिस मनुष्य ने भी हरि की सेवाभंक्ति की है, उसे सुख प्राप्त हुआ है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥
वह सहज ही हरिनाम में समा गया है॥ ३॥

ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਹੋਇ ॥
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥
हे प्रभु ! तुम स्वयं ही रचयिता हो और संसार में सबकुछ तेरा किया ही होता है।

तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥
तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई बड़ा नहीं।

तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
हे प्रभु ! तुम ही सृष्टि की उत्पत्ति करके देखते एवं समझते हो।

जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥१॥५३॥
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥१॥५३॥
हे नानक ! यह भेद गुरुमुख के अन्दर ही प्रकाशमान होता है॥ ४ ॥ १॥ ५३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

रागु आसा घरु २ महला ४ ॥
रागु आसा घरु २ महला ४ ॥
रागु आसा घरु २ महला ४ ॥

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥
किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥
किसी ने अपने मित्र, पुत्र अथवा भाई के साथ रिश्ता बनाया हुआ है और

किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥
किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥
किसी ने अपने सगे-सम्बन्धी एवं दामाद के साथ रिश्ता बनाया हुआ है।

किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥
किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥
किसी मनुष्य ने स्वार्थपूर्ति हेतु सरदारों एवं चौधरियों से रिश्तेदारी की हुई है।

हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥
हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥
लेकिन मेरा रिश्ता सर्वव्यापक प्रभु के साथ है॥ १॥

हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥
हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥
मैंने हरि के साथ रिश्तेदारी की है और हरि ही मेरा सहारा है।

मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥१॥ रहाउ ॥
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥१॥ रहाउ ॥
हरि के बिना मेरा अन्य कोई भी पक्ष एवं नाता नहीं है। मैं हरि के असंख्य गुणों का ही यशोगान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

जिन् सिउ धड़े करहि से जाहि ॥
जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥
जिनके साथ रिश्तेदारी की जाती है, वह मर जाते हैं।

ਝੂਠੁ ਧੜੇ ਕਰਿ ਪਛੋਤਾਹਿ ॥
झूठु धड़े करि पछोताहि ॥
झूठा नाता बनाकर मनुष्य अंत : पश्चाताप करते हैं।

ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਹਿ ਮਨਿ ਖੋਟੁ ਕਮਾਹਿ ॥
थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥
जो मनुष्य झूठ का आचरण करते हैं, वे स्थिर नहीं रहते।

ਹਮ ਹਰਿ ਸਿਉ ਧੜਾ ਕੀਆ ਜਿਸ ਕਾ ਕੋਈ ਸਮਰਥੁ ਨਾਹਿ ॥੨॥
हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥२॥
मैंने हरि से नाता बनाया है, जिसके समान कोई भी समर्थशाली नहीं ॥ २॥

ਏਹ ਸਭਿ ਧੜੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥
एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥
यह तमाम रिश्तेदारियां माया के मोह का प्रसार है।

ਮਾਇਆ ਕਉ ਲੂਝਹਿ ਗਾਵਾਰੀ ॥
माइआ कउ लूझहि गावारी ॥
मूर्ख लोग माया के लिए लड़ते झगड़ते हैं।

ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥
जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥
वह जन्म-मरण के वश में हैं और जुए में अपनी जीवन बाजी हार जाते हैं।

ਹਮਰੈ ਹਰਿ ਧੜਾ ਜਿ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਸਵਾਰੀ ॥੩॥
हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥३॥
हरि से ही मेरा नाता है, जो मेरे लोक-परलोक सब संवार देता है॥ ३॥

ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਧੜੇ ਪੰਚ ਚੋਰ ਝਗੜਾਏ ॥
कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥
कलियुग में जितने भी रिश्ते हैं ये पाँच विकार-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अभिमान द्वारा उत्पन्न होते हैं।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ਵਧਾਏ ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥
परिणामस्वरूप काम, क्रोध,लोभ, मोह एवं अभिमान अधिकतर बढ़ गए हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਸਤਸੰਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥
जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥
जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सत्संगति में सम्मिलित कर देता है।

ਹਮਰਾ ਹਰਿ ਧੜਾ ਜਿਨਿ ਏਹ ਧੜੇ ਸਭਿ ਗਵਾਏ ॥੪॥
हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥४॥
मैं हरि के नाते में हूँ जिसने यह तमाम रिश्ते नाश कर दिए हैं।॥ ४॥

ਮਿਥਿਆ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਧੜੇ ਬਹਿ ਪਾਵੈ ॥
मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥
झूठे सांसारिक मोह के माध्यम से लोग बैठकर गुटबन्दी करते हैं।

ਪਰਾਇਆ ਛਿਦ੍ਰ ਅਟਕਲੈ ਆਪਣਾ ਅਹੰਕਾਰੁ ਵਧਾਵੈ ॥
पराइआ छिद्र अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥
वह दूसरों की कमजोरियों की निन्दा करते हैं और अपना अहंकार बढ़ाते हैं।

ਜੈਸਾ ਬੀਜੈ ਤੈਸਾ ਖਾਵੈ ॥
जैसा बीजै तैसा खावै ॥
वे जैसा बीज बोते हैं, वैसा ही फल खाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਾ ਹਰਿ ਧੜਾ ਧਰਮੁ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਜਿਣਿ ਆਵੈ ॥੫॥੨॥੫੪॥
जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥५॥२॥५४॥
नानक ने हरि से नातेदारी की है, यह धर्म का नाता समूचे जगत को जीत लेता है॥५॥२॥५४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਹਿਰਦੈ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭਾਇਆ ॥
हिरदै सुणि सुणि मनि अम्रितु भाइआ ॥
हृदय में सुन-सुनकर नामामृत मेरे मन को अच्छा लगने लग गया है।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥੧॥
गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥१॥
गुरुवाणी ने मुझे अदृश्य हरि के दर्शन करवा दिए हैं।॥ १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਭੈਨਾ ॥
गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥
हे मेरी सत्संगी बहनो ! गुरुमुख बनकर हरि का नाम सुनो।

ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹੁ ਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬੈਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अम्रित बैना ॥१॥ रहाउ ॥
अनन्त प्रभु प्रत्येक हृदय में समा रहा है। अपने मुख से तुम सब अमृत वचन गुरुवाणी का जाप करो ॥ १॥ रहाउ॥

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਮਹਾ ਬੈਰਾਗੁ ॥
मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥
मेरे मन एवं तन में प्रभु प्रेम एवं महा वैराग्य है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਵਡਭਾਗੁ ॥੨॥
सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥२॥
सौभाग्य से मुझे महापुरुष सतिगुरु मिल गया है॥ २॥

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਭਵਹਿ ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ॥ ਭਾਗਹੀਨ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥
दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥३॥
द्वैतभाव के कारण मनुष्य का मन विषैली माया के पीछे भटकता है |भाग्यहीन व्यक्ति को सतिगुरु नहीं मिलता।॥ ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਪੀਆਇਆ ॥
अम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥
परमात्मा स्वयं ही मनुष्य को अमृत रूपी हरि-रस का पान करवाता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੩॥੫੫॥
गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥४॥३॥५५॥
हे नानक ! पूर्ण गुरु के द्वारा मैंने ईश्वर को पा लिया है॥ ४॥ ३॥५५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥
मेरे मन एवं तन में हरि नाम का ही प्रेम बना हुआ है, जो मेरे जीवन का आधार है।

ਨਾਮੁ ਜਪੀ ਨਾਮੋ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥੧॥
नामु जपी नामो सुख सारु ॥१॥
मैं नाम का सुमिरन करता हूँ, क्योंकि हरि का नाम सुखों का सार-तत्व है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਸਾਜਨ ਸੈਨਾ ॥
नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥
हे मेरे मित्रो एवं सज्जनो ! हरि-नाम का जाप करो।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲੈਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥१॥ रहाउ ॥
हरि-नाम के बिना मेरे पास कुछ भी नहीं। बड़े सौभाग्य से मुझे गुरु के सम्मुख होकर हरि का नाम प्राप्त हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਜੀਵਿਆ ਜਾਇ ॥
नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥
नाम के बिना जीना असंभव है।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਇ ॥੨॥
वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥२॥
बड़े भाग्य से ही गुरु के माध्यम से ईश्वर प्राप्त होता है॥ २॥

ਨਾਮਹੀਨ ਕਾਲਖ ਮੁਖਿ ਮਾਇਆ ॥
नामहीन कालख मुखि माइआ ॥
नामहीन मनुष्य के मुख पर माया की कालिख है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਧ੍ਰਿਗੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਾਇਆ ॥੩॥
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥३॥
हरि नाम के बिना यह जीवन धिक्कार योग्य है॥ ३॥

ਵਡਾ ਵਡਾ ਹਰਿ ਭਾਗ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥
वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥
बड़ों से बड़ा हरि अहोभाग्य से ही प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਦਿਵਾਇਆ ॥੪॥੪॥੫੬॥
नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥४॥४॥५६॥
हे नानक ! हरि ने मुझे अपना नाम गुरु से दिलवाया है॥ ४॥ ४॥ ५६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਗੁਣ ਬੋਲੀ ਬਾਣੀ ॥
गुण गावा गुण बोली बाणी ॥
मैं हरि का गुणानुवाद करता हूँ और गुरुवाणी के माध्यम से हरि के गुणों का ही बखान करता हूँ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥੧॥
गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥१॥
गुरुमुख बनकर ही मैं हरि के गुणों का उच्चारण करता हूँ॥ १॥

ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਇਆ ਅਨੰਦਾ ॥
जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥
हरिनाम का जाप जपने से मेरे हृदय में आनंद आ गया है।

ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਇਆ ਰਸਿ ਗਾਏ ਗੁਣ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु का सच्चा नाम सतिगुरु ने मेरे अन्तर्मन में बसा दिया है। मैं स्वाद से परमानंद प्रभु का गुणगान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਜਨ ਲੋਗਾ ॥
हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥
हरि के भक्त हरि के ही गुण गाते रहते हैं।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਨਿਰਜੋਗਾ ॥੨॥
वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥२॥
सौभाग्य से ही निर्लिप्त प्रभु पाया जाता है॥ २॥

ਗੁਣ ਵਿਹੂਣ ਮਾਇਆ ਮਲੁ ਧਾਰੀ ॥
गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥
हे बन्धु ! गुणविहीन लोग माया-मोह की मैल अपने चित्त में टिकाए रखते हैं।

ਵਿਣੁ ਗੁਣ ਜਨਮਿ ਮੁਏ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥੩॥
विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥३॥
इसलिए गुणहीन अहंकारी लोग जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं।॥ ३॥

ਸਰੀਰਿ ਸਰੋਵਰਿ ਗੁਣ ਪਰਗਟਿ ਕੀਏ ॥
सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥
देहि रूपी सरोवर में से गुणों के मोती प्रकट होते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਥਿ ਤਤੁ ਕਢੀਏ ॥੪॥੫॥੫੭॥
नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥४॥५॥५७॥
हे नानक ! गुरु के सम्मुख होकर सरोवर का मन्थन करके ये तत्व निकाल लिए जाते हैं। ४॥ ५॥ ५७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਨਾਮੁ ਸੁਣੀ ਨਾਮੋ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥
नामु सुणी नामो मनि भावै ॥
मैं नाम सुनता हूँ और नाम ही मेरे मन को अच्छा लगता है।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥
वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥१॥
अहोभाग्य से गुरुमुख बनकर मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करता है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਾਸਾ ॥
नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥
"(हे बन्धु !) नाम का जाप करो, गुरुमुख बनने से अन्तर्मन में प्रकाश हो जाएगा।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮੈ ਧਰ ਨਹੀ ਕਾਈ ਨਾਮੁ ਰਵਿਆ ਸਭ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥

नाम के अलावा मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं। हरि का नाम ही मेरी सांसों एवं ग्रासों में समाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੈ ਸੁਰਤਿ ਸੁਨੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥

नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥

मेरी वृति नाम-सुमिरन में लगी रहती है और मेरे चित को यही लुभाता है।

ਜੋ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾਵੈ ਸੋ ਮੇਰਾ ਮੀਤੁ ਸਖਾਈ ॥੨॥

जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥२॥

जो मुझे हरि-नाम सुनाता है वही मेरा मीत एवं साथी है॥ २॥

ਨਾਮਹੀਣ ਗਏ ਮੂੜ ਨੰਗਾ ॥

नामहीण गए मूड़ नंगा ॥

नाम के बिना मूर्ख लोग नंगे लोगों की भाँति भटकते हैं।

ਪਚਿ ਪਚਿ ਮੁਏ ਬਿਖੁ ਦੇਖਿ ਪਤੰਗਾ ॥੩॥

पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥३॥

माया के विष को देखकर वह पतंगे की तरह गल सड़ कर मर जाते हैं।॥ ३॥

ਆਪੇ ਥਾਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ॥

आपे थापे थापि उथापे ॥

प्रभु स्वयं ही पैदा करता है और पैदा करके स्वयं ही नाश कर देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ॥੪॥੬॥੫੮॥

नानक नामु देवै हरि आपे ॥४॥६॥५८॥

हे नानक ! हरि आप ही हरि-नाम की देन प्रदान करता है॥ ४॥ ६॥ ५८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥

आसा महला ४ ॥

आसा महला ४ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਵੇਲਿ ਵਧਾਈ ॥

गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥

गुरुमुख ने हरि-प्रभु की बेल को दूसरों को सुख देने हेतु प्रफुल्लित किया है।

ਫਲ ਲਾਗੇ ਹਰਿ ਰਸਕ ਰਸਾਈ ॥੧॥
फल लागे हरि रसक रसाई ॥१॥
इस बेल को हरि-प्रभु का फल लगा है, और रसिक जन इसके रस का आनन्द प्राप्त करते हैं।॥१॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ॥
हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥
तू हरि-परमेश्वर के नाम का जाप कर जिसमें प्रसन्नता की अनन्त लहरें विद्यमान हैं।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਲਾਹੀ ਮਾਰਿਆ ਕਾਲੁ ਜਮਕੰਕਰ ਭੁਇਅੰਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की मति द्वारा नाम जपकर और प्रभु का गुणगान करके मैंने यमकाल रूपी सर्प का वध कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰ ਮਹਿ ਭਗਤਿ ਰਖਾਈ ॥
हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥
हे मेरे भाई ! हरि-प्रभु ने अपनी भक्ति गुरु के हृदय में स्थापित की है।

ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਸਿਖ ਦੇਵੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੨॥
गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥२॥
यदि गुरु प्रसन्न हो जाए तो यह भक्ति अपने शिष्य को प्रदान करता है॥ २॥

ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਿਛੁ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਣੈ ॥
हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥
जो मनुष्य अहंकार में धर्म-कर्म करता है, उसे कुछ भी ज्ञान नहीं होता।

ਜਿਉ ਕੁੰਚਰੁ ਨਾਇ ਖਾਕੁ ਸਿਰਿ ਛਾਣੈ ॥੩॥
जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥३॥
वह उसी प्रकार का मनुष्य है जैसे हाथी स्नान करके अपने सिर पर फिर मिट्टी डाल लेता है॥ ३॥

ਜੇ ਵਡ ਭਾਗ ਹੋਵਹਿ ਵਡ ਊਚੇ ॥
जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥
हे नानक ! यदि ऊँचे और उत्तम भाग्य हों तो

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਹਿ ਸਚਿ ਸੂਚੇ ॥੪॥੭॥੫੯॥
नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥४॥७॥५९॥
जीव सच्चे प्रभु का नाम जपकर सत्यवादी एवं शुद्ध हो जाता है॥ ४॥ ७ ॥ ५६

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਮਨਿ ਭੂਖ ਲਗਾਈ ॥
हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥
हे मेरे भाई ! हरि ने मेरे मन को हरि नाम की भूख लगा दी है।

ਨਾਮਿ ਸੁਨਿਐ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੧॥
नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥१॥
हरि-नाम सुनकर मेरा मन तृप्त हो जाता है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੇ ਗੁਰਸਿਖ ਮੀਤਾ ॥
नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥
हे मेरे गुरसिक्ख मित्रो ! प्रभु के नाम का जाप करो।

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਨਾਮੁ ਰਖਹੁ ਗੁਰਮਤਿ ਮਨਿ ਚੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥१॥ रहाउ ॥
नाम का जाप करो, प्रभु के नाम द्वारा सुख प्राप्त करो और गुरु की मति द्वारा नाम को अपने मन एवं चित्त में टिकाकर रखो॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ ਸੁਣੀ ਮਨੁ ਸਰਸਾ ॥
नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥
बार-बार प्रभु का नाम सुनने से मेरा चित्त सरस हो गया है।

ਨਾਮੁ ਲਾਹਾ ਲੈ ਗੁਰਮਤਿ ਬਿਗਸਾ ॥੨॥
नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥२॥
गुरु की मति से नाम का लाभ कमाकर मेरा चित्त खिल गया है॥ २॥

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੁਸਟੀ ਮੋਹ ਅੰਧਾ ॥
नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥
नाम के बिना मनुष्य कुष्ठी एवं मोह में अन्धा हो जाता है।

ਸਭ ਨਿਹਫਲ ਕਰਮ ਕੀਏ ਦੁਖੁ ਧੰਧਾ ॥੩॥
सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥३॥
उसके सभी कर्म निष्फल एवं दुखदायक धन्धा है॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਜਪੈ ਵਡਭਾਗੀ ॥
हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥
भाग्यशाली मनुष्य ही हरि-परमेश्वर की महिमा का जाप करते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੪॥੮॥੬੦॥
नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥४॥८॥६०॥
हे नानक ! गुरु की मति द्वारा ही प्रभु के नाम में लगन लगती है॥ ४॥ ८ ॥ ६० ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਹਲਾ ੪ ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਕੇ ੩ ॥
महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥
महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥

ਹਥਿ ਕਰਿ ਤੰਤੁ ਵਜਾਵੈ ਜੋਗੀ ਥੋਥਰ ਵਾਜੈ ਬੇਨ ॥
हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥
हे योगी ! तुम हाथ में वीणा लेकर तार बजाते हो परन्तु तेरी वीणा व्यर्थ ही बज रही है।

ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਬੋਲਹੁ ਜੋਗੀ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਭੇਨ ॥੧॥
गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥१॥
हे योगी ! गुरु की मति द्वारा हरि के गुण बोलो, तेरा यह मन हरि रंग में भीग जाएगा।॥ १॥

ਜੋਗੀ ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਉਪਦੇਸੁ ॥
जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥
हे योगी ! अपनी बुद्धि को हरि का उपदेश सुना।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਹਮ ਆਦੇਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥१॥ रहाउ ॥
एक हरि-परमेश्वर समस्त युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर, कलियुग) में व्यापक हो रहा है, उसके समक्ष मैं नमन करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਗਾਵਹਿ ਰਾਗ ਭਾਤਿ ਬਹੁ ਬੋਲਹਿ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖੇਲੈ ਖੇਲ ॥
गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥
तुम अनेक रागों में गाते एवं बहुत बोलतें हो परन्तु तेरा यह मन केवल खेल ही खेलता है।

ਜੋਵਹਿ ਕੂਪ ਸਿੰਚਨ ਕਉ ਬਸੁਧਾ ਉਠਿ ਬੈਲ ਗਏ ਚਰਿ ਬੇਲ ॥੨॥
जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥२॥
तुम धरती सींचने हेतु उन बैलों से कुआं जोड़ना चाहते हो जो आगे ही चरने हेतु बेल खा जाते हैं।॥ २॥

ਕਾਇਆ ਨਗਰ ਮਹਿ ਕਰਮ ਹਰਿ ਬੋਵਹੁ ਹਰਿ ਜਾਮੈ ਹਰਿਆ ਖੇਤੁ ॥
काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥
(हे योगी !) हरि की दया से काया रूपी नगर की भूमि में हरि नाम का बीज बोओ। तब हरिनाम ही अंकुरित होगा और तेरी काया रूपी फसल हरित हो जाएगी।

ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਬੈਲੁ ਮਨੁ ਜੋਵਹੁ ਹਰਿ ਸਿੰਚਹੁ ਗੁਰਮਤਿ ਜੇਤੁ ॥੩॥
मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥३॥
हे योगी ! इस चंचल मन की दुविधा पर अंकुश लगाओ, स्थिरचित रूपी बैल को जोड़ो एवं गुरु की मति से हरि-नाम रूपी जल को सींचो ॥ ३॥||3||

ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਤੁਮਰੀ ਜੋ ਦੇਹੁ ਮਤੀ ਤਿਤੁ ਚੇਲ ॥
जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥
हे प्रभु ! योगी, जंगम एवं सारी सृष्टि तेरी ही रचना है, जैसी सुमति तुम उनको प्रदान करते हो, वैसे ही वे चलते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਲਾਵਹੁ ਮਨੂਆ ਪੇਲ ॥੪॥੯॥੬੧॥
जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥४॥९॥६१॥
नानक के अन्तर्यामी प्रभु ! मेरे मन को प्रेरित करके हरि-नाम मे सम्मिलित कर लो॥ ४॥ ६॥ ६१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਕਬ ਕੋ ਭਾਲੈ ਘੁੰਘਰੂ ਤਾਲਾ ਕਬ ਕੋ ਬਜਾਵੈ ਰਬਾਬੁ ॥
कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥
कब तक कोई धुंघरू और ताल को ढूंढता फिरे ? कब तक कोई रबाब इत्यादि वाद्ययन्त्र बजाता रहे?

ਆਵਤ ਜਾਤ ਬਾਰ ਖਿਨੁ ਲਾਗੈ ਹਉ ਤਬ ਲਗੁ ਸਮਾਰਉ ਨਾਮੁ ॥੧॥
आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥१॥
आने-जाने में कुछ न कुछ देरी तो लग ही जाएगी, तब तक क्यों न मैं ईश्वर का नाम-स्मरण कर लूं ॥ १ ॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਐਸੀ ਭਗਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥
मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥
मेरे मन में प्रभु की ऐसी भक्ति बन गई है कि

ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ਜੈਸੇ ਜਲ ਬਿਨੁ ਮੀਨੁ ਮਰਿ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥१॥ रहाउ ॥

उसके बिना मैं एक क्षण एवं पल भर के लिए भी नहीं रह सकता जैसे जल के बिना मछली के प्राण पखेरू हो जाते हैं, वैसे ही मैं हरि के बिना नहीं रह सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਬ ਕੋਊ ਮੇਲੈ ਪੰਚ ਸਤ ਗਾਇਣ ਕਬ ਕੋ ਰਾਗ ਧੁਨਿ ਉਠਾਵੈ ॥

कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥

कब तक कोई गाने के लिंए पाँच तारें एवं सात सुर कहाँ तक मिलाता रहे ? कब तक कोई राग का स्वर उठाए ?

ਮੇਲਤ ਚੁਨਤ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਚਸਾ ਲਾਗੈ ਤਬ ਲਗੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥੨॥

मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥२॥

तार, सुर मिलाते हुए एवं स्वर उठाने में कुछ न कुछ देरी अवश्य लग जाती है। मेरा मन तो उतना समय भी राम के गुणगान में लगा रहेगा ॥ २॥

ਕਬ ਕੋ ਨਾਚੈ ਪਾਵ ਪਸਾਰੈ ਕਬ ਕੋ ਹਾਥ ਪਸਾਰੈ ॥

कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥

कब तक कोई नृत्य करेगा और अपने पैर चलाएगा ? कब तक कोई अपने हाथ घुमाए ?

ਹਾਥ ਪਾਵ ਪਸਾਰਤ ਬਿਲਮੁ ਤਿਲੁ ਲਾਗੈ ਤਬ ਲਗੁ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੈ ॥੩॥

हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥३॥

अपने हाथ-पैर घुमाने में थोड़ा-सा समय अवश्य लगता है, तब तक मेरा मन राम नाम का सुमिरन करता है॥ ३॥

ਕਬ ਕੋਊ ਲੋਗਨ ਕਉ ਪਤੀਆਵੈ ਲੋਕਿ ਪਤੀਣੈ ਨਾ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥

कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥

कब तक कोई लोगों को प्रसन्न करेगा ? यदि लोग प्रसन्न हो भी जाएँ तो भी (प्रभु-द्वार परं) मान-सम्मान नहीं मिलेगा।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵਹੁ ਤਾ ਜੈ ਜੈ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੪॥੧੦॥੬੨॥

जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥४॥१०॥६२॥

हे नानक ! अपने हृदय में सदैव ही प्रभु का सुमिरन करते रहो, तभी हर कोई जय-जयकार करेगा॥ ४॥ १०॥ ६२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥

आसा महला ४ ॥

आसा महला ४ ॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥
परमात्मा के साधुओं की पावन संगति में शामिल होना चाहिए और सत्संगति में शामिल होकर हरि का गुणगान करते रहो।

ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਬਲਿਆ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥੧॥
गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥१॥
(सत्संगति में) ज्ञान रूपी रत्न के आलोक से अज्ञानता का अन्धेरा मन से नष्ट हो जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਜਨ ਨਾਚਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ॥
हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥
हे हरि के भक्तो ! हरि-प्रभु का ध्यान करते हुए नृत्य करो।

ਐਸੇ ਸੰਤ ਮਿਲਹਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਹਮ ਜਨ ਕੇ ਧੋਵਹ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे भाई ! यदि मुझे ऐसे संतजन मिल जाएँ तो मैं उन प्रभु-भक्तों के चरण धोऊँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥
हे मेरे मन ! रात दिन ध्यान लगाकर हरि-परमेश्वर का नाम-स्मरण किया करो।

ਜੋ ਇਛਹੁ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਫਿਰਿ ਭੂਖ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥੨॥
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥२॥
जिस फल की इच्छा होगी वही फल तुझे मिलेगा और तुझे दोबारा कभी भूख नहीं लगेगी॥ २॥

ਆਪੇ ਹਰਿ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਬੋਲਿ ਬੁਲਾਇ ॥
आपे हरि अपर्मपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥
अपरंपार हरि स्वयं ही जगत का रचयिता है। हरि स्वयं ही बोलता एवं बुलवाता है।

ਸੇਈ ਸੰਤ ਭਲੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਜਿਨ੍ ਕੀ ਪਤਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਇ ॥੩॥
सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥३॥
वही संत भले हैं, जो तुझे अच्छे लगते हैं और जिनकी प्रतिष्ठा को तुम स्वीकार करते हो ॥ ३॥

ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਨ ਰਾਜੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਿਉ ਆਖੈ ਤਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥
नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥
नानक, हरि की गुणस्तुति करता हुआ तृप्त नहीं होता है, जितनी अधिक वह उसकी महिमा करता है, उतना अधिक वह सुख प्राप्त करता है।

ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਦੀਏ ਹਰਿ ਅਪੁਨੇ ਗੁਣ ਗਾਹਕੁ ਵਣਜਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥੪॥੧੧॥੬੩॥

भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥४॥११॥६३॥

हरि ने अपनी भक्ति के भण्डार (उपासक को) दिए हुए हैं और गुणों के व्यापारी उनको खरीद कर अपने घर (परलोक) में ले जाते हैं॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕੇ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु आसा घरु ८ के काफी महला ४ ॥
रागु आसा घरु ८ के काफी महला ४ ॥

ਆਇਆ ਮਰਣੁ ਧੁਰਾਹੁ ਹਉਮੈ ਰੋਈਐ ॥
आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥
हे भाई ! मृत्यु तो जन्म से ही लिखी हुई है। किसी की मृत्यु पर लोग अपने अहंकार के कारण ही रोते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਈਐ ॥੧॥
गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥१॥
गुरुमुख बनकर प्रभु का ध्यान करने से जीव सदैव अटल हो जाता है॥ १॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਸਾਬਾਸਿ ਚਲਣੁ ਜਾਣਿਆ ॥
गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥
पूर्ण गुरु को शाबाश है, जिनके द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है कि सभी ने यहाँ से चले जांना है (अर्थात् मृत्यु अटल है)"

ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸੁ ਸਾਰੁ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जो व्यक्ति उत्तम नाम का लाभ प्राप्त करते हैं वे ब्रह्म-शब्द में लीन हो जाते हैं। १॥ रहाउ॥

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖੇ ਡੇਹ ਸਿ ਆਏ ਮਾਇਆ ॥
पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥
हे मेरी माता ! पूर्व जन्म के लिखे कर्मो अनुसार जिन्हें जीवन के दिन प्राप्त होते हैं वे संसार में आते हैं।

ਚਲਣੁ ਅਜੁ ਕਿ ਕਲ੍ਹਿ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥੨॥
चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥२॥
आज अथवा कल मनुष्य ने अवश्य ही इहलोक से चले जाना है जैसा कि आदि से परमेश्वर का हुक्म है॥ २॥

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥
बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ ॥
जिन्होंने प्रभु-नाम को विस्मृत कर दिया है, उनका जन्म व्यर्थ है।

ਜੂਐ ਖੇਲਣੁ ਜਗਿ ਕਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਾਰਿਆ ॥੩॥
जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥३॥
उन्होंने संसार में जुए का खेल खेला और इस खेल में अपना मन पराजित कर दिया ॥ ३॥

ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ ॥
जिन मनुष्यों को गुरु प्राप्त हुआ है, वे जन्म-मरण में भी सुख की अनुभूति करते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੧੨॥੬੪॥
नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥४॥१२॥६४॥
हे नानक ! सत्यवादी जीव सत्य के कारण परम सत्य में ही समा जाते हैं।॥ ४॥ १२॥ ६४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥
जिसने बहुमूल्य मनुष्य जन्म प्राप्त करके प्रभु-नाम का ध्यान किया है,"

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਬੁਝਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧॥
गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥१॥
गुरु की कृपा से (मनुष्य-जन्म के) मनोरथ को समझकर वह सत्य में ही समा गया है॥ १॥

ਜਿਨ੍ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਤਿਨ੍ੀ ਨਾਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥
जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥
जिन मनुष्यों के आदि से ही मस्तक पर भाग्य लिखा हुआ है, उन्होंने प्रभु-नाम की कमाई की है।

ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
उन सत्यवादियों को सच्चे परमात्मा ने अपने महल में आमंत्रित कर लिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ॥
अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥
हमारे अन्तर्मन में नाम का खजाना विद्यमान है परन्तु यह गुरु के सम्मुख होकर ही मिलता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥੨॥
अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥२॥
रात-दिन हरि नाम का ध्यान करते रहना चाहिए और हरि का स्तुतिगान करना चाहिए॥ २॥

ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਅਨੇਕ ਮਨਮੁਖਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥
अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥
हमारी अन्तरात्मा में अनेक पदार्थ हैं परन्तु मनमुख मनुष्य को ये प्राप्त नहीं होते।

ਹਉਮੈ ਗਰਬੈ ਗਰਬੁ ਆਪਿ ਖੁਆਈਐ ॥੩॥
हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥३॥
अहंकार के कारण स्वेच्छाचारी मनुष्य अभिमान करता है और अपने आपको नष्ट कर लेता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਖੁਆਈਐ ॥
नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥
हे नानक ! अपने कर्मों के कारण मनुष्य अपने आप का नाश कर लेता है

ਗੁਰਮਤਿ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ਸਚਾ ਪਾਈਐ ॥੪॥੧੩॥੬੫॥
गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥४॥१३॥६५॥
लेकिन गुरु की मति से मन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और सत्य (परमेश्वर) मिल जाता है। ४॥ १३॥ ६५ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾਵਰੀ ਘਰੁ ੧੬ ਕੇ ੨ ਮਹਲਾ ੪ ਸੁਧੰਗ
रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग
रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਉ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਉ ॥
हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥
मैं निशदिन हरि-नाम का भजन करता रहता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਤਾਇਆ ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥१॥ रहाउ ॥

सतिगुरु ने मुझे हरि-नाम (का भेद) बताया है। (इसलिए) अब मैं हरि के बिना एक क्षण अथवा पल भर भी नहीं रह सकता॥ १॥ रहाउ॥

ਹਮਰੈ ਸ੍ਰਵਣੁ ਸਿਮਰਨੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ਹਉ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ॥

हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥

हरि का भजन सुनना और उसका सुमिरन करना ही मेरे पास है। हरि के बिना मैं एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता।

ਜੈਸੇ ਹੰਸੁ ਸਰਵਰ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਤੈਸੇ ਹਰਿ ਜਨੁ ਕਿਉ ਰਹੈ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਬਿਨੁ ॥੧॥

जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥१॥

जैसे राजहंस सरोवर के बिना नहीं रह सकता, वैसे ही हरि का भक्त हरि की भक्ति के बिना कैसे रह सकता है ?॥ १॥

ਕਿਨਹੂੰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਰਿਦ ਧਾਰਿ ਕਿਨਹੂੰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਮੋਹ ਅਪਮਾਨ ॥

किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥

कई मनुष्य द्वैतभाव से प्रेम करते तथा इसे अपने हृदय में बसाते हैं। कई मनुष्य मोह-माया एवं अभिमान से प्रीति लगाकर रखते हैं।

ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਹਰਿ ਨਿਰਬਾਣ ਪਦ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਵਾਨ ॥੨॥੧੪॥੬੬॥

हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥२॥१४॥६६॥

हरि का भक्त हरि के निर्वाण पद से प्रेम लगाकर रखता है लेकिन नानक तो श्रीहरि भगवान का ही सिमरन करता रहता है॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

आसावरी महला ४ ॥

आसावरी महला ४ ॥

ਮਾਈ ਮੋਰੋ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਾਮੁ ਬਤਾਵਹੁ ਰੀ ਮਾਈ ॥

माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥

हे मेरी माता! मुझे मेरे प्रियतम राम के बारे में कुछ बताओ।

ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ਜੈਸੇ ਕਰਹਲੁ ਬੇਲਿ ਰੀਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥१॥ रहाउ ॥

मैं वैसे ही हरि के बिना एक क्षण पल भर के लिए भी रह नहीं सकता, जैसे ऊँट बेलों को देखकर रीझता है और सदैव खुश होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਮਰਾ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗ ਬਿਰਕਤੁ ਭਇਓ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਮੀਤ ਕੈ ਤਾਈ ॥

हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥

हरि रूपी मित्र के दर्शन हेतु मेरा मन वैरागी एवं विरक्त हो गया है।

ਜੈਸੇ ਅਲਿ ਕਮਲਾ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਤੈਸੇ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥

जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥

जैसे भवराँ कमल के फूल बिना नहीं रह सकता वैसे ही हरि के बिना मैं भी रह नहीं सकता ॥ १॥

ਰਾਖੁ ਸਰਣਿ ਜਗਦੀਸੁਰ ਪਿਆਰੇ ਮੋਹਿ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ਹਰਿ ਗੁਸਾਈ ॥
राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥
हे प्यारे जगदीश्वर ! मुझे अपनी शरण में रखें। हे हरि गोसाई ! मेरी श्रद्धा पूर्ण करो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੈ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਹੋਤ ਹੈ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਨਿਮਖ ਦਿਖਾਈ ॥੨॥੩੯॥੧੩॥੧੫॥੬੭॥
जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥२॥३९॥१३॥१५॥६७॥
नानक का हृदय आनंद से भरपूर हो जाता है, जब एक क्षण भर के लिए भी हरि अपना दर्शन करवा देता है॥२॥३९॥१३॥१५॥६७॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੨ ਮਹਲਾ ੫
रागु आसा घरु २ महला ५
रागु आसा घरु २ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਿਨਿ ਲਾਈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸੋਈ ਫਿਰਿ ਖਾਇਆ ॥
जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥
जिसने भी माया के साथ प्रेम लगाया है, यह उसे ही अंततः खा गई है।

ਜਿਨਿ ਸੁਖਿ ਬੈਠਾਲੀ ਤਿਸੁ ਭਉ ਬਹੁਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥
जिसने इसे सुखपूर्वक बैठाया है, उसे ही इसने अत्यंत भयभीत किया है।

ਭਾਈ ਮੀਤ ਕੁਟੰਬ ਦੇਖਿ ਬਿਬਾਦੇ ॥
भाई मीत कुट्मब देखि बिबादे ॥
भाई, मित्र एवं कुटुंब के सदस्य इसे देखकर परस्पर विवाद एवं झगड़ा उत्पन्न करते हैं

ਹਮ ਆਈ ਵਸਗਤਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੇ ॥੧॥
हम आई वसगति गुर परसादे ॥१॥
परन्तु गुरु की कृपा से यह मेरे वश में आ गई है॥ १॥

ਐਸਾ ਦੇਖਿ ਬਿਮੋਹਿਤ ਹੋਏ ॥
ऐसा देखि बिमोहित होए ॥
इसे ऐसा मीठा देखकर सभी मुग्ध हो जाते हैं।

ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸੁਰਦੇਵ ਮਨੁਖਾ ਬਿਨੁ ਸਾਧੂ ਸਭਿ ਧ੍ਰੋਹਨਿ ਧ੍ਰੋਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥१॥ रहाउ ॥

इस ठगिनी माया ने गुरु के सिवाय साधक,सिद्ध, देवते एवं मनुष्य इत्यादि सबको ठग लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਇਕਿ ਫਿਰਹਿ ਉਦਾਸੀ ਤਿਨ੍ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪੈ ॥

इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥

कई उदासी बन कर भटकते फिरते हैं परन्तु कामवासना उन्हें दुखी करती है।

ਇਕਿ ਸੰਚਹਿ ਗਿਰਹੀ ਤਿਨ੍ ਹੋਇ ਨ ਆਪੈ ॥

इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥

कई गृहस्थी बनकर माया-धन को संचित करते हैं परन्तु यह उनकी अपनी नहीं बनती।

ਇਕਿ ਸਤੀ ਕਹਾਵਹਿ ਤਿਨ੍ ਬਹੁਤੁ ਕਲਪਾਵੈ ॥

इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥

जो अपने आपको दानी कहलवाते हैं यह उनको भी बहुत सताती है।

ਹਮ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਲਗਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਵੈ ॥੨॥

हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥२॥

लेकिन ईश्वर ने मुझे सतिगुरु के चरणों से लगाकर इससे बचा लिया है॥ २॥

ਤਪੁ ਕਰਤੇ ਤਪਸੀ ਭੂਲਾਏ ॥

तपु करते तपसी भूलाए ॥

तपस्यारत तपस्वी भी इसके कारण कुमार्गगामी हो जाते हैं।

ਪੰਡਿਤ ਮੋਹੇ ਲੋਭਿ ਸਬਾਏ ॥

पंडित मोहे लोभि सबाए ॥

समस्त पण्डित भी लोभ में फँसकर मोहित गए।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮੋਹੇ ਮੋਹਿਆ ਆਕਾਸੁ ॥

त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥

इस माया ने समस्त त्रैगुणी जीवों को भी आकर्षित किया हुआ है और आकाश निवासी ठगे गए हैं।

ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਰਾਖੇ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥੁ ॥੩॥

हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥३॥

(लेकिन) सतिगुरु ने अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है॥ ३॥

ਗਿਆਨੀ ਕੀ ਹੋਇ ਵਰਤੀ ਦਾਸਿ ॥
गिआनी की होइ वरती दासि ॥
यह माया ब्रह्मज्ञानी समक्ष दासी जैसा व्यवहार करती है।

ਕਰ ਜੋੜੇ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥
कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥
वह हाथ जोड़कर उनकी सेवा करती है और प्रार्थना करती कि

ਜੋ ਤੂੰ ਕਹਹਿ ਸੁ ਕਾਰ ਕਮਾਵਾ ॥
जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥
जो आप आज्ञा करेंगे मैं वही कार्य करूँगी।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਾ ॥੪॥੧॥
जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥४॥१॥
हे नानक ! माया कहती है कि मैं गुरुमुख के निकट नहीं आउंगी ॥ ४ ॥ १॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਸੂ ਤੇ ਪਿਰਿ ਕੀਨੀ ਵਾਖਿ ॥
ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥
पति-परमेश्वर ने माया रूपी सास से मुझे अलग कर दिया है।

ਦੇਰ ਜਿਠਾਣੀ ਮੁਈ ਦੂਖਿ ਸੰਤਾਪਿ ॥
देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥
मेरी देवरानी (आशा) एवं जेठानी (तृष्णा) दुख एवं संताप से मर गई हैं।

ਘਰ ਕੇ ਜਿਠੇਰੇ ਕੀ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ॥
घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥
घर के जेठ (धर्मराज) की भी मैंने मोहताजी छोड़ दी है।

ਪਿਰਿ ਰਖਿਆ ਕੀਨੀ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣਿ ॥੧॥
पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥१॥
मेरे चतुर एवं सर्वज्ञ पति-प्रभु ने मुझे बचा लिया है॥ १॥||1||

ਸੁਨਹੁ ਲੋਕਾ ਮੈ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥
सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥
हे लोगो ! सुनो, मुझे प्रेम रस प्राप्त हो गया है।

ਦੁਰਜਨ ਮਾਰੇ ਵੈਰੀ ਸੰਘਾਰੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿਵਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे सतिगुरु ने मुझे हरि का नाम दिलवाया है। मैंने दुर्जनों को मार दिया है और कामादिक शत्रुओं का भी संहार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਤਿਆਗੀ ਹਉਮੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥
सर्वप्रथम मैंने अहंकार का प्रेम त्याग दिया है।

ਦੁਤੀਆ ਤਿਆਗੀ ਲੋਗਾ ਰੀਤਿ ॥
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥
द्वितीय मैंने सांसारिक प्रपंचों की रस्मों को छोड़ दिया है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਤਿਆਗਿ ਦੁਰਜਨ ਮੀਤ ਸਮਾਨੇ ॥
त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥
त्रिगुणों का त्याग करने से अब दुष्ट एवं मित्र एक समान लगने लगे हैं।

ਤੁਰੀਆ ਗੁਣੁ ਮਿਲਿ ਸਾਧ ਪਛਾਨੇ ॥੨॥
तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥२॥
संत रूपी गुरु को मिलकर मैंने तुरीय अवस्था के गुणों को पहचान लिया है॥ २ ॥

ਸਹਜ ਗੁਫਾ ਮਹਿ ਆਸਣੁ ਬਾਧਿਆ ॥
सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥
मैंने परमानंद की गुफा में आसन लगा लिया है।

ਜੋਤਿ ਸਰੂਪ ਅਨਾਹਦੁ ਵਾਜਿਆ ॥
जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥
ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने अनहद नाद बजाया है।

ਮਹਾ ਅਨੰਦੁ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥
गुरु-शब्द का चिंतन करने से मुझे महा आनंद प्राप्त हुआ है।

ਪ੍ਰਿਅ ਸਿਉ ਰਾਤੀ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ॥੩॥
प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥३॥
जो जीव स्त्री अपने प्रियतम के प्रेम रंग में लीन हो गई है वह सुहागिन नारी धन्य है॥ ३॥

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ॥
जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥
नानक ब्रह्म विचार की बात कर रहा है,"

ਜੋ ਸੁਣੇ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਉਤਰੈ ਪਾਰਿ ॥
जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥
जो इसे श्रवण करेगा और इसकी साधना करेगा, वह संसार-सागर से पार हो जाएगा।

ਜਨਮਿ ਨ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਨ ਜਾਇ ॥
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥
न ही वह जन्मता है और न ही मरता है, वह (सृष्टि में बार-बार) न आता है और न ही जाता है।

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਓਹੁ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੪॥੨॥
हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥४॥२॥
वह सदैव हरि की स्मृति में लीन हुआ रहता है॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਿਜ ਭਗਤੀ ਸੀਲਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ॥
निज भगती सीलवंती नारि ॥
भगवान् की भक्ति वह शीलवान नारी है,"

ਰੂਪਿ ਅਨੂਪ ਪੂਰੀ ਆਚਾਰਿ ॥
रूपि अनूप पूरी आचारि ॥
जो अनुपम रूपवती एवं पूर्ण आचरणयुक्त है।

ਜਿਤੁ ਗ੍ਰਿਹਿ ਵਸੈ ਸੋ ਗ੍ਰਿਹੁ ਸੋਭਾਵੰਤਾ ॥
जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ॥
जिस घर में वह रहती है, वह घर शोभावान हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਜੰਤਾ ॥੧॥

गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥१॥

किसी विरले गुरुमुख को ही ऐसी नारी प्राप्त हुई है॥ १॥

ਸੁਕਰਣੀ ਕਾਮਨਿ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹਮ ਪਾਈ ॥

सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥

गुरु से मिलकर मुझे शुभ कर्मों वाली (भक्ति रूपी) नारी प्राप्त हुई

ਜਜਿ ਕਾਜਿ ਪਰਥਾਇ ਸੁਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जजि काजि परथाइ सुहाई ॥१॥ रहाउ ॥
पूजा, शादी-विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में सर्वत्र यह बहुत सुन्दर लगती है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਚਰੁ ਵਸੀ ਪਿਤਾ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥
जिचरु वसी पिता कै साथि ॥
जब तक भक्ति रूपी नारी अपने पिता अर्थात् गुरु के साथ रहती है,"

ਤਿਚਰੁ ਕੰਤੁ ਬਹੁ ਫਿਰੈ ਉਦਾਸਿ ॥
तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥
तब तक उसका जीव रूपी पति बहुत ही उदास होकर भटकता है।

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਇਆ ॥
करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥
जब जीव ने सेवा करके सद्पुरुष परमात्मा को प्रसन्न किया तो

ਗੁਰਿ ਆਣੀ ਘਰ ਮਹਿ ਤਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥੨॥
गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥२॥
गुरु ने जीव के हृदय घर में भक्ति रूपी नारी को लाकर बिठा दिया और इसने सर्व सुख प्राप्त कर लिए॥ २॥

ਬਤੀਹ ਸੁਲਖਣੀ ਸਚੁ ਸੰਤਤਿ ਪੂਤ ॥
बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥
यह भक्ति रूपी नारी लज्जा, नम्रता, दया, संतोष, सौन्दर्य एवं प्रेम इत्यादि बत्तीस शुभ लक्षणों वाली है, सत्य रूपी पुत्र इसकी संतान है।

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸੁਘੜ ਸਰੂਪ ॥
आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥
यह आज्ञाकारिणी, चतुर एवं रूपवती है,"

ਇਛ ਪੂਰੇ ਮਨ ਕੰਤ ਸੁਆਮੀ ॥
इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥
वह अपने कंत (स्वामी) की हरेक इच्छा पूरी करती है।

ਸਗਲ ਸੰਤੋਖੀ ਦੇਰ ਜੇਠਾਨੀ ॥੩॥
सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥
इसने अपनी देवरानी (आशा) एवं जेठानी (तृष्णा) को हर प्रकार से संतुष्ट कर लिया है॥ ३॥

ਸਭ ਪਰਵਾਰੈ ਮਾਹਿ ਸਰੇਸਟ ॥
सभ परवारै माहि सरेसट ॥
समूचे परिवार में भक्ति रूपी नारी श्रेष्ठ है।

ਮਤੀ ਦੇਵੀ ਦੇਵਰ ਜੇਸਟ ॥
मती देवी देवर जेसट ॥
वह अपने देवर एवं जेठ को सुमति देने वाली है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਗ੍ਰਿਹੁ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਗਟੀ ਆਇ ॥
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥
हृदय रूपी वह घर धन्य है, जहाँ वह प्रगट हुई है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖੇ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥੪॥੩॥
जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥४॥३॥
हे नानक ! जिस जीव के हृदय घर में प्रगट हुई है, उसका समय सुखी एवं हर्षपूर्वक व्यतीत होता है॥ ४ ॥ ३ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮਤਾ ਕਰਉ ਸੋ ਪਕਨਿ ਨ ਦੇਈ ॥
मता करउ सो पकनि न देई ॥
मैं जो भी संकल्प करता हूँ उसे माया सफल नहीं होने देती।

ਸੀਲ ਸੰਜਮ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਖਲੋਈ ॥
सील संजम कै निकटि खलोई ॥
शील एवं संयम के निकट यह हर समय खड़ी रहती है।

ਵੇਸ ਕਰੇ ਬਹੁ ਰੂਪ ਦਿਖਾਵੈ ॥
वेस करे बहु रूप दिखावै ॥
यह अनेक वेष धारण करती है और बहुत रूप दिखाती है।

ਗ੍ਰਿਹਿ ਬਸਨਿ ਨ ਦੇਈ ਵਖਿ ਵਖਿ ਭਰਮਾਵੈ ॥੧॥
ग्रिहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥१॥
यह मुझे हृदय घर में बसने नहीं देती और विभिन्न ढंगों से भटकाती रहती है॥ १॥

ਘਰ ਕੀ ਨਾਇਕਿ ਘਰ ਵਾਸੁ ਨ ਦੇਵੈ ॥
घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥
यह हदय घर की स्वामिनी बन बैठी है और मुझे घर में निवास नहीं करने देती।

ਜਤਨ ਕਰਉ ਉਰਝਾਇ ਪਰੇਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जतन करउ उरझाइ परेवै ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मैं रहने का प्रयास करता हूँ तो अधिकतर उलझनें उत्पन्न करती है॥ १॥ रहाउ॥

ਧੁਰ ਕੀ ਭੇਜੀ ਆਈ ਆਮਰਿ ॥
धुर की भेजी आई आमरि ॥
प्रभु-दरबार से यह माया सेविका बनाकर भेजी हुई आई है

ਨਉ ਖੰਡ ਜੀਤੇ ਸਭਿ ਥਾਨ ਥਨੰਤਰ ॥
नउ खंड जीते सभि थान थनंतर ॥
लेकिन इसने नवखण्डों वाली समूची पृथ्वी जीत ली है।

ਤਟਿ ਤੀਰਥਿ ਨ ਛੋਡੈ ਜੋਗ ਸੰਨਿਆਸ ॥
तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥
वह नदियों के तटों, धार्मिक स्थलों, योगियों एवं संन्यासियों को भी नहीं छोड़ती।

ਪੜਿ ਥਾਕੇ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬੇਦ ਅਭਿਆਸ ॥੨॥
पड़ि थाके सिम्रिति बेद अभिआस ॥२॥
स्मृतियाँ पढ़-पढ़कर एवं वेदों का अभ्यास करने वाले पण्डित भी माया के समक्ष नतमस्तक हो गए हैं।॥ २ ॥

ਜਹ ਬੈਸਉ ਤਹ ਨਾਲੇ ਬੈਸੈ ॥
जह बैसउ तह नाले बैसै ॥
जहाँ भी मैं विराजमान होता हूँ, वहाँ यह मेरे साथ बैठती है।

ਸਗਲ ਭਵਨ ਮਹਿ ਸਬਲ ਪ੍ਰਵੇਸੈ ॥
सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥
पृथ्वी, आकाश, पाताल समूचे भवनों में इसने सबल प्रवेश किया है।

ਹੋਛੀ ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਈ ॥
होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥
किसी तुच्छ की शरण लेने से मैं अपने आपको इससे बचा नहीं सकता।

ਕਹੁ ਮੀਤਾ ਹਉ ਕੈ ਪਹਿ ਜਾਈ ॥੩॥
कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥३॥
हे मेरे मित्र ! बता, शरण लेने हेतु में किसके पास जाऊँ॥ ३॥

ਸੁਣਿ ਉਪਦੇਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਹਿ ਆਇਆ ॥
सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥
सत्संगी मित्र से उपदेश सुनकर मैं सतिगुरु के पास आया हूँ।

ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੋਹਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥
गुरु ने हरि-नाम रूपी मंत्र मेरे अन्तर्मन में बसा दिया है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਨੰਤਾ ॥
निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥
अब मैं अपने आत्म-स्वरूप में रहता हूँ और अनंत प्रभु का गुणगान करता हूँ।

ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਓ ਨਾਨਕ ਭਏ ਅਚਿੰਤਾ ॥੪॥
प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥४॥
हे नानक ! अब मुझे ईश्वर मिल गया है और मैं निश्चिन्त हो गया हूँ॥ ४॥

ਘਰੁ ਮੇਰਾ ਇਹ ਨਾਇਕਿ ਹਮਾਰੀ ॥
घरु मेरा इह नाइकि हमारी ॥
अब मेरा अपना घर बन गया है और यह स्वामिनी माया भी हमारी बन गई है।

ਇਹ ਆਮਰਿ ਹਮ ਗੁਰਿ ਕੀਏ ਦਰਬਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੪॥੪॥
इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥
गुरु ने इसे मेरी सेविका बना दिया है और मुझे प्रभु का दरबारी बना दिया है॥ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਮਤਾ ਜਿ ਪਤ੍ਰੀ ਚਲਾਵਉ ॥
प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥
सर्वप्रथम मुझे यह सलाह दी गई कि हमला करने आ रहे सुलही खां को पत्र लिखकर भेजा जाए।

ਦੁਤੀਏ ਮਤਾ ਦੁਇ ਮਾਨੁਖ ਪਹੁਚਾਵਉ ॥
दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥
द्वितीय मुझे यह सलाह दी गई कि सन्धि करने के लिए दो व्यक्ति भेजे जाएँ।

ਤ੍ਰਿਤੀਏ ਮਤਾ ਕਿਛੁ ਕਰਉ ਉਪਾਇਆ ॥
त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥
तृतीय सलाह यह मिली कि कुछ उपाय कर लिया जाए।

ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਛੋਡਿ ਪ੍ਰਭ ਤੁਹੀ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥१॥
लेकिन, हे प्रभु ! सबकुछ छोड़कर मैंने तेरा ही ध्यान किया है॥ १॥

ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਅਚਿੰਤ ਸਹਜਾਇਆ ॥
महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥
सिमरन करने से मुझे महा आनंद प्राप्त हो गया है, मैं सहज ही चिंता रहित हो गया हूँ।

ਦੁਸਮਨ ਦੂਤ ਮੁਏ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
समस्त वैरी एवं शत्रु नाश हो गए हैं और मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਦੀਆ ਉਪਦੇਸੁ ॥
सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥
सतिगुरु ने मुझे यह उपदेश दिया है कि

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦੇਸੁ ॥
जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥
यह शरीर एवं प्राण ईश्वर का निवास स्थान है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੀ ਸੁ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥
जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥
इसलिए मैं जो कुछ भी करता हूँ, तेरा बल लेकर करता हूँ।

ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਓਟ ਤੂੰਹੈ ਦੀਬਾਣੁ ॥੨॥
तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु ॥२॥
हे प्रभु ! तू ही मेरी ओट एवं तू ही मेरा सहारा है॥ २॥

ਤੁਧਨੋ ਛੋਡਿ ਜਾਈਐ ਪ੍ਰਭ ਕੈਂ ਧਰਿ ॥
तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥
हे प्रभु ! तुझे छोड़कर मैं किसके पास जाऊँ ?

ਆਨ ਨ ਬੀਆ ਤੇਰੀ ਸਮਸਰਿ ॥
आन न बीआ तेरी समसरि ॥
क्योंकि दूसरा कोई भी तेरे बराबर नहीं है।

ਤੇਰੇ ਸੇਵਕ ਕਉ ਕਿਸ ਕੀ ਕਾਣਿ ॥
तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥
तेरा सेवक किसकी मोहताजी करे ?

ਸਾਕਤੁ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਬੇਬਾਣਿ ॥੩॥
साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥३॥
शाक्त मनुष्य कुमार्गगामी होकर भयानक जंगल में भटकता रहता है॥ ३॥

ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
तेरी वडिआई कही न जाइ ॥
हे प्रभु ! तेरी बड़ाई का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਜਹ ਕਹ ਰਾਖਿ ਲੈਹਿ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥
जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥
तुम मुझे सर्वत्र अपने गले लगाकर मेरी रक्षा करते हो।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥
नानक दास तेरी सरणाई ॥
दास नानक तो तेरी ही शरण में है (हे भाई !)

ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੀ ਪੈਜ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥੪॥੫॥
प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥४॥५॥
प्रभु ने मेरी मान-प्रतिष्ठा बचा ली है और मुझे शुभ कामनाएँ मिल रही हैं।॥ ४॥ ५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪਰਦੇਸੁ ਝਾਗਿ ਸਉਦੇ ਕਉ ਆਇਆ ॥
परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥
मैं परदेस में भटकने के पश्चात् बड़ी मुश्किल से तेरे द्वार पर नाम रूपी सौदा लेने हेतु आया हूँ।

ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਸੁਣੀ ਲਾਭਾਇਆ ॥
वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥
मैंने सुना है कि तेरे पास नाम एक अनूप एवं लाभदायक वस्तु है।

ਗੁਣ ਰਾਸਿ ਬੰਨਿ੍ ਪਲੈ ਆਨੀ ॥
गुण रासि बंन्हि पलै आनी ॥
हे गुरदेव ! गुणों की पूंजी अपने दामन से बाँधकर अपने साथ लाया हूँ।

ਦੇਖਿ ਰਤਨੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਪਟਾਨੀ ॥੧॥
देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥१॥
नाम-रत्न को देखकर मेरा यह मन मुग्ध हो गया है॥ १॥

ਸਾਹ ਵਾਪਾਰੀ ਦੁਆਰੈ ਆਏ ॥
साह वापारी दुआरै आए ॥
हे शाह ! तेरे द्वार पर जीव-व्यापारी आए हैं।

ਵਖਰੁ ਕਾਢਹੁ ਸਉਦਾ ਕਰਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
वखरु काढहु सउदा कराए ॥१॥ रहाउ ॥
तुम अपने भण्डार में से नाम का सौदा दिखाकर इन सब का सौदा कर दो॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਹਿ ਪਠਾਇਆ ਸਾਹੈ ਪਾਸਿ ॥
साहि पठाइआ साहै पासि ॥
शाह-परमेश्वर ने मुझे गुरु-साहूकार के पास भेजा है।

ਅਮੋਲ ਰਤਨ ਅਮੋਲਾ ਰਾਸਿ ॥
अमोल रतन अमोला रासि ॥
नाम-रत्न अनमोल है और गुणों की पूँजी अनमोल है।

ਵਿਸਟੁ ਸੁਭਾਈ ਪਾਇਆ ਮੀਤ ॥
विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥
मुझे विचौलिया गुरु मिल गया है जो मेरा सुशील भाई एवं मित्र है।

ਸਉਦਾ ਮਿਲਿਆ ਨਿਹਚਲ ਚੀਤ ॥੨॥
सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥२॥
उससे मुझे प्रभु-नाम का सौदा मिल गया है और मेरा मन लौकिक पदार्थों से निहचल हो गया है॥ २ ॥

ਭਉ ਨਹੀ ਤਸਕਰ ਪਉਣ ਨ ਪਾਨੀ ॥
भउ नही तसकर पउण न पानी ॥
इस नाम-रत्न को चोरों का भय नहीं, हवा अथवा पानी का भी डर नहीं।

ਸਹਜਿ ਵਿਹਾਝੀ ਸਹਜਿ ਲੈ ਜਾਨੀ ॥
सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥
सहज ही मैंने नाम का सौदा खरीदा है और सहज ही में यह सौदा अपने साथ ले जाऊँगा।

ਸਤ ਕੈ ਖਟਿਐ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥
सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥
मैंने सत्यनाम कमाया है और इसलिए मुझे दुख नहीं सहना पड़ेगा।

ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਘਰਿ ਲੈ ਆਇਆ ॥੩॥
सही सलामति घरि लै आइआ ॥३॥
यह नाम-सौदा कुशलतापूर्वक सँभालकर अपने हृदय-घर में ले आया हूँ॥ ३॥

ਮਿਲਿਆ ਲਾਹਾ ਭਏ ਅਨੰਦ ॥
मिलिआ लाहा भए अनंद ॥
हे गुरु-शाह ! तू धन्य हैं, तू कृपा का घर है,

ਧੰਨੁ ਸਾਹ ਪੂਰੇ ਬਖਸਿੰਦ ॥
धंनु साह पूरे बखसिंद ॥
जो तेरी अनुकंपा से मुझे नाम का लाभ प्राप्त हुआ है और मेरी अन्तरात्मा में आनंद उत्पन्न हो गया है।

ਇਹੁ ਸਉਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਪਾਇਆ ॥
इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥
हे बन्धु! किसी विरले भाग्यशाली ने ही गुरुमुख बनकर यह नाम-सौदा प्राप्त किया है।

ਸਹਲੀ ਖੇਪ ਨਾਨਕੁ ਲੈ ਆਇਆ ॥੪॥੬॥
सहली खेप नानकु लै आइआ ॥४॥६॥
नानक यह लाभदायक नाम-सौदा घर ले आया है॥ ४ ॥ ६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗੁਨੁ ਅਵਗਨੁ ਮੇਰੋ ਕਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰੋ ॥
गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥
मेरे मालिक-प्रभु ने मेरे गुण-अवगुणों का कुछ भी विचार नहीं किया।

ਨਹ ਦੇਖਿਓ ਰੂਪ ਰੰਗ ਸੀਂਗਾਰੋ ॥
नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥
न ही उसने मेरे रूप, रंग एवं शृंगार को देखा है।

ਚਜ ਅਚਾਰ ਕਿਛੁ ਬਿਧਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ॥
चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥
मैं शुभ गुणों एवं सदाचरण की कोई युक्ति भी नहीं जानती।

ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਪ੍ਰਿਅ ਸੇਜੈ ਆਨੀ ॥੧॥
बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥१॥
फिर भी मेरी बाँह पकड़कर प्रियतम-प्रभु अपनी सेज पर ले आए॥ १॥

ਸੁਨਿਬੋ ਸਖੀ ਕੰਤਿ ਹਮਾਰੋ ਕੀਅਲੋ ਖਸਮਾਨਾ ॥
सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥
हे मेरी सखियो ! सुनो, मेरे पति-परमेश्वर ने मुझे अपनाकर अपनी पत्नी बना लिया है।

ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿ ਰਾਖਿਓ ਕਰਿ ਅਪੁਨਾ ਕਿਆ ਜਾਨੈ ਇਹੁ ਲੋਕੁ ਅਜਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे मस्तक पर अपना हाथ रखकर मुझे अपना समझकर बचा लिया है। लेकिन यह मूर्ख संसार इस (भेद) को क्या समझे ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਹਾਗੁ ਹਮਾਰੋ ਅਬ ਹੁਣਿ ਸੋਹਿਓ ॥
सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥
अब मेरा सुहाग सुन्दर लग रहा है।

ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਓ ਮੇਰੋ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਜੋਹਿਓ ॥
कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥
मेरा कंत-प्रभु मुझे मिल गया है और उसने मेरे सभी दुःख-रोग सूक्ष्मता से देख लिए हैं।

ਆਂਗਨਿ ਮੇਰੈ ਸੋਭਾ ਚੰਦ ॥
आंगनि मेरै सोभा चंद ॥
मेरे हृदय-आंगन में चाँद जैसी शोभा है।

ਨਿਸਿ ਬਾਸੁਰ ਪ੍ਰਿਅ ਸੰਗਿ ਅਨੰਦ ॥੨॥
निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥२॥
रात-दिन मैं अपने प्रियतम-प्रभु से आनंदपूर्वक रमण करती हूँ॥ २॥

ਬਸਤ੍ਰ ਹਮਾਰੇ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲ ॥
बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥
मेरे वस्त्र भी लाल वर्ण के प्रेम-वस्त्र हो गए हैं।

ਸਗਲ ਆਭਰਣ ਸੋਭਾ ਕੰਠਿ ਫੂਲ ॥
सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥
सभी आभूषण और मेरे कण्ठ के फूलों का हार मुझे शोभा दे रहे हैं।

ਪ੍ਰਿਅ ਪੇਖੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪਾਏ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ॥
प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥
जब मेरे प्रियतम प्रभु ने मुझे प्रेम की नजर से देखा तो मुझे सभी निधान मिल गए।

ਦੁਸਟ ਦੂਤ ਕੀ ਚੂਕੀ ਕਾਨਿ ॥੩॥
दुसट दूत की चूकी कानि ॥३॥
अब कामादिक एवं दुष्ट यमदूतों की चिन्ता का भी नाश हो गया है॥ ३॥

ਸਦ ਖੁਸੀਆ ਸਦਾ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥
सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥
मुझे सदैव प्रसन्नता प्राप्त हुई है और मैं सदा आनंद में रहती हूँ।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੇ ॥
नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥
नौ निधियों के समान ईश्वर का नाम मेरे हृदय घर में आ बसने से मैं तृप्त हो गई हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਉ ਪਿਰਹਿ ਸੀਗਾਰੀ ॥
कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥
हे नानक ! जब प्रियतम ने मेरा शुभ-गुणों से श्रृंगार कर दिया तो मैं सुहागिन बन गई।

ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗਨਿ ਸੰਗਿ ਭਤਾਰੀ ॥੪॥੭॥
थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥४॥७॥
अब मैं स्थिरचित होकर अपने पति-प्रभु के साथ रहती हूँ॥ ४॥ ७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਕਰਿ ਪੂਜਾ ਕਰਨਾ ॥
दानु देइ करि पूजा करना ॥
लोग ढोंगी ब्राह्मणों को दान देकर उनकी पूजा-अर्चना करते हैं परन्तु

ਲੈਤ ਦੇਤ ਉਨ੍ ਮੂਕਰਿ ਪਰਨਾ ॥
लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥
ब्राह्मण सबकुछ लेकर भी मुकर जाते हैं अर्थात् दान लेना अपना अधिकार समझते हैं और धन्यवाद नहीं करते।

ਜਿਤੁ ਦਰਿ ਤੁਮ੍ਹ ਹੈ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਜਾਣਾ ॥
जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥
हे ब्राह्मण ! जिस ईश्वर के द्वार में तुझे जाना है

ਤਿਤੁ ਦਰਿ ਤੂੰਹੀ ਹੈ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੧॥
तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥१॥
वहाँ ही तुम पश्चाताप करोगे ॥ १॥

ਐਸੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਡੂਬੇ ਭਾਈ ॥
ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥
हे भाई ! ऐसे ब्राह्मणों को डूबे समझो,"

ਨਿਰਾਪਰਾਧ ਚਿਤਵਹਿ ਬੁਰਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निरापराध चितवहि बुरिआई ॥१॥ रहाउ ॥
जो निर्दोष लोगों का बुरा करने का सोचते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਫਿਰਹਿ ਹਲਕਾਏ ॥
अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥
उनकी अन्तरात्मा में लोभ विद्यमान है और वह पागल हुए भटकते हैं।

ਨਿੰਦਾ ਕਰਹਿ ਸਿਰਿ ਭਾਰੁ ਉਠਾਏ ॥
निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥
वह दूसरों की निन्दा करते हैं और अपने सिर पर पाप का बोझ लादते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੂਠਾ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ॥
माइआ मूठा चेतै नाही ॥
धन-दौलत में मस्त हुआ ब्राह्मण प्रभु को याद नहीं करता।

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਬਹੁਤੀ ਰਾਹੀ ॥੨॥
भरमे भूला बहुती राही ॥२॥
वह भ्रम के कारण अनेकों मार्गों में भटकता हुआ कष्ट सहन करता है॥ २॥

ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਘਨੇਰੇ ॥
बाहरि भेख करहि घनेरे ॥
लोगों को दिखाने के लिए वह बहुत सारे धार्मिक वेश धारण करता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਿਖਿਆ ਉਤਰੀ ਘੇਰੇ ॥
अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥
परन्तु उसकी अन्तरात्मा को विषय-विकारों ने घेरा हुआ है।

ਅਵਰ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪਿ ਨ ਬੂਝੈ ॥
अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥
वह दूसरों को उपदेश प्रदान करता है परन्तु अपने आपको सुमति नहीं देता।

ਐਸਾ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਕਹੀ ਨ ਸੀਝੈ ॥੩॥
ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥३॥
ऐसा ब्राह्मण किसी तरह भी मुक्त नहीं होता ॥ ३॥

ਮੂਰਖ ਬਾਮਣ ਪ੍ਰਭੂ ਸਮਾਲਿ ॥
मूरख बामण प्रभू समालि ॥
हे मूर्ख ब्राह्मण ! प्रभु का ध्यान कर।

ਦੇਖਤ ਸੁਨਤ ਤੇਰੈ ਹੈ ਨਾਲਿ ॥
देखत सुनत तेरै है नालि ॥
वह तेरी सारी करतूतों को देखता एवं तेरी बातों को सुनता है और तेरे साथ रहता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੇ ਹੋਵੀ ਭਾਗੁ ॥
कहु नानक जे होवी भागु ॥
नानक का कथन है कि यदि तेरे अहोभाग्य हैं तो

ਮਾਨੁ ਛੋਡਿ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੁ ॥੪॥੮॥
मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥४॥८॥
अपना अहंकार छोड़ कर गुरु-चरणों के साथ लग ॥४॥८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਦੂਖ ਰੋਗ ਭਏ ਗਤੁ ਤਨ ਤੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥
हरि-परमेश्वर का गुणानुवाद करने से मेरा मन निर्मल हो गया है और मेरे तन से दुःख-रोग मिट गए हैं।

ਭਏ ਅਨੰਦ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਅਬ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਕਤ ਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥
भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥१॥
साधु की संगति में शामिल होकर मैं आनंदित हो गया हूँ और अब मेरा मन कहीं भी नहीं भटकता ॥ १॥

ਤਪਤਿ ਬੁਝੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਾਇ ॥
तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥
हे मेरी माता ! गुरु-शब्द द्वारा मेरी जलन बुझ गई है।

ਬਿਨਸਿ ਗਇਓ ਤਾਪ ਸਭ ਸਹਸਾ ਗੁਰੁ ਸੀਤਲੁ ਮਿਲਿਓ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे तमाम दुख-क्लेश एवं संताप नाश हो गए हैं और अब मुझे शीतल सतिगुरु सहज स्वभाव मिल गया है। १॥ रहाउ॥

ਧਾਵਤ ਰਹੇ ਏਕੁ ਇਕੁ ਬੂਝਿਆ ਆਇ ਬਸੇ ਅਬ ਨਿਹਚਲੁ ਥਾਇ ॥
धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥
एक ईश्वर का बोध होने से मेरा भटकना खत्म हो गया है और अब मैं अटल स्थान पर रहता हूँ।

ਜਗਤੁ ਉਧਾਰਨ ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਰਹੇ ਅਘਾਇ ॥੨॥
जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥२॥
हे प्रभु ! तेरे साधु जगत का उद्धार करने वाले हैं। उनके दर्शन करके मैं तृप्त हो गया हूँ॥ २॥

ਜਨਮ ਦੋਖ ਪਰੇ ਮੇਰੇ ਪਾਛੈ ਅਬ ਪਕਰੇ ਨਿਹਚਲੁ ਸਾਧੂ ਪਾਇ ॥
जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥
अनेक जन्मों के दोषों से मेरी मुक्ति हो गई है और अब अटल साधु के चरण पकड़ लिए हैं।

ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਗਾਵੈ ਮੰਗਲ ਮਨੂਆ ਅਬ ਤਾ ਕਉ ਫੁਨਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੩॥

सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥३॥

अब मेरा मन सहज ही प्रभु के यश की धुनि का गायन करता है और अब काल इसे दोबारा नहीं खाएगा ॥ ३॥

ਕਰਨ ਕਾਰਨ ਸਮਰਥ ਹਮਾਰੇ ਸੁਖਦਾਈ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥

करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥

हे मेरे हरि परमेश्वर ! तू मुझे सुख देने वाला है और तू ही सबकुछ करने एवं कराने में समर्थावान है।

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕੁ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਮੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਇ ॥੪॥੯॥

नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥४॥९॥

नानक तेरा नाम जप-जप कर ही आत्मिक जीवन प्राप्त करता है, तुम मेरी सहायता करने वाले इस तरह हो जैसे ताने-याने में धागा मिला होता है वैसे ही मेरे संग रहते हो ॥ ४ ॥ ६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਅਰੜਾਵੈ ਬਿਲਲਾਵੈ ਨਿੰਦਕੁ ॥

अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥

(साधु-संतों की) निंदा करने वाला मनुष्य बहुत चीखता-चिल्लाता एवं विलाप करता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਿਸਰਿਆ ਅਪਣਾ ਕੀਤਾ ਪਾਵੈ ਨਿੰਦਕੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥१॥ रहाउ ॥

निंदक ने परब्रह्म-परमेश्वर को विस्मृत कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने किए कर्मों का फल भोग रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੇ ਕੋਈ ਉਸ ਕਾ ਸੰਗੀ ਹੋਵੈ ਨਾਲੇ ਲਏ ਸਿਧਾਵੈ ॥

जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥

(हे भाई !) यदि कोई पुरुष उस निंदक का संगी बने तो वह निंदक उसे भी अपने साथ (नरककुण्ड में) डूबो लेता है।

ਅਣਹੋਦਾ ਅਜਗਰੁ ਭਾਰੁ ਉਠਾਏ ਨਿੰਦਕੁ ਅਗਨੀ ਮਾਹਿ ਜਲਾਵੈ ॥੧॥

अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥१॥

निंदक अजगर के भार के समान अनन्त बोझ उठाए फिरता है और अपने आपको निन्दा की अग्नि में सदैव जलाता है॥ १॥

ਪਰਮੇਸਰ ਕੈ ਦੁਆਰੈ ਜਿ ਹੋਇ ਬਿਤੀਤੈ ਸੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥
परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥
जो कुछ परमेश्वर के द्वार पर होता है, नानक वही बात कहकर सुनाता है।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ਬਿਗਸਾਵੈ ॥੨॥੧੦॥
भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥२॥१०॥
भक्तजन हमेशा आनंद में रहते हैं। चूंकि हरि का कीर्ति-गान करने से वे सदा प्रसन्न रहते हैं।॥ २॥ १०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਉ ਮੈ ਕੀਓ ਸਗਲ ਸੀਗਾਰਾ ॥
जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥
मैंने बहुत सारे हार-श्रृंगार किए हैं

ਤਉ ਭੀ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਨ ਪਤੀਆਰਾ ॥
तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥
फिर भी मेरा मन तृप्त नहीं हुआ।

ਅਨਿਕ ਸੁਗੰਧਤ ਤਨ ਮਹਿ ਲਾਵਉ ॥
अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥
मैं अनेक सुगंधियाँ अपने शरीर पर लगाती हूँ परन्तु

ਓਹੁ ਸੁਖੁ ਤਿਲੁ ਸਮਾਨਿ ਨਹੀ ਪਾਵਉ ॥
ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥
उस सुख को मैं तिलमात्र भी प्राप्त नहीं करती हूँ।

ਮਨ ਮਹਿ ਚਿਤਵਉ ਐਸੀ ਆਸਾਈ ॥
मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥
हे मेरी माँ! मैंने अपने हृदय में ऐसी आशा धारण की है कि

ਪ੍ਰਿਅ ਦੇਖਤ ਜੀਵਉ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥੧॥
प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥१॥
अपने प्रियतम-प्रभु को देख कर मैं जीवित रहूँ॥ १॥

ਮਾਈ ਕਹਾ ਕਰਉ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨ ਧੀਰੈ ॥
माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥
हे मेरी माँ! मैं क्या करूं ? मेरा यह मन धैर्य धारण नहीं करता।

ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਮ ਬੈਰਾਗੁ ਹਿਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे प्रियतम-प्रभु का वैराग्य अर्थात् मिलन की तड़प मुझे आकर्षित कर रही है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਸਤ੍ਰ ਬਿਭੂਖਨ ਸੁਖ ਬਹੁਤ ਬਿਸੇਖੈ ॥ਓਇ ਭੀ ਜਾਨਉ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖੈ ॥
बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥
सुन्दर वस्त्र, आभूषण एवं बहुत सारे ऐश्वर्य-वैभव उनको भी में किसी हिसाब में नहीं जानती।

ਪਤਿ ਸੋਭਾ ਅਰੁ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ॥
पति सोभा अरु मानु महतु ॥
आदर, शोभा, महानता एवं मान-प्रतिष्ठा,"

ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥
आगिआकारी सगल जगतु ॥
सारा संसार मेरी आज्ञा में चले,"

ਗ੍ਰਿਹੁ ਐਸਾ ਹੈ ਸੁੰਦਰ ਲਾਲ ॥
ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल ॥
अति सुन्दर एवं अमूल्य घर मिले तो भी

ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ਤਾ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥੨॥
प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥२॥
सदैव प्रसन्न तभी रह सकती हूँ यदि प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगूं॥ २॥

ਬਿੰਜਨ ਭੋਜਨ ਅਨਿਕ ਪਰਕਾਰ ॥
बिंजन भोजन अनिक परकार ॥
यदि अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन-भोजन मिलें,"

ਰੰਗ ਤਮਾਸੇ ਬਹੁਤੁ ਬਿਸਥਾਰ ॥
रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥
विभिन्न प्रकार के रंग-तमाशे देखने को मिलें,"

ਰਾਜ ਮਿਲਖ ਅਰੁ ਬਹੁਤੁ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ॥
राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥
यदि राज्य मिले, धरती का प्रभुत्व प्राप्त हो और बहुत हुकूमत भी मिले तो भी

ਮਨੁ ਨਹੀ ਧ੍ਰਾਪੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨ ਜਾਇਸਿ ॥
मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि ॥
यह मन तृप्त नहीं होता और इसकी तृष्णा नहीं मिटती।

ਬਿਨੁ ਮਿਲਬੇ ਇਹੁ ਦਿਨੁ ਨ ਬਿਹਾਵੈ ॥
बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥
पति-परमेश्वर से मिले बिना यह दिन व्यतीत नहीं होता।

ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੂ ਤਾ ਸਭ ਸੁਖ ਪਾਵੈ ॥੩॥
मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥३॥
यदि पति-परमेश्वर मिल जाए तो सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं।॥ ३॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਸੁਨੀ ਇਹ ਸੋਇ ॥
खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥
खोजते-खोजते मुझे यह खबर मिली है कि

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨੁ ਤਰਿਓ ਨ ਕੋਇ ॥
साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥
सत्संगति के बिना कोई भी मनुष्य पार नहीं हो सका।

ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਤਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥
जिसके मस्तक पर भाग्य उदय हो, वह सतिगुरु को पा लेता है।

ਪੂਰੀ ਆਸਾ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਇਆ ॥
पूरी आसा मनु त्रिपताइआ ॥
फिर उसकी आशा पूर्ण हो जाती है और मन भी तृप्त हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਿਆ ਤਾ ਚੂਕੀ ਡੰਝਾ ॥
प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥
जब प्रभु मिल जाता है तो सारी जलन एवं प्यास बुझ जाती है।

ਨਾਨਕ ਲਧਾ ਮਨ ਤਨ ਮੰਝਾ ॥੪॥੧੧॥

नानक लधा मन तन मंझा ॥४॥११॥

हे नानक ! उस परब्रह्म-प्रभु को मैंने मन-तन में प्राप्त कर लिया है॥ ४ ॥ ११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦੇ ॥
आसा महला ५ पंचपदे ॥
आसा महला ५ पंचपदे ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਤੇਰੀ ਨੀਕੀ ਜਾਤਿ ॥
प्रथमे तेरी नीकी जाति ॥
हे जीव रूपी नारी ! सर्वप्रथम, तेरी जाति कुलीन है।

ਦੁਤੀਆ ਤੇਰੀ ਮਨੀਐ ਪਾਂਤਿ ॥
दुतीआ तेरी मनीऐ पांति ॥
द्वितीय, तेरा वंश भी महान् माना जाता है।

ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਤੇਰਾ ਸੁੰਦਰ ਥਾਨੁ ॥
त्रितीआ तेरा सुंदर थानु ॥
तृतीय, तेरा निवास स्थान अति सुन्दर है परन्तु

ਬਿਗੜ ਰੂਪੁ ਮਨ ਮਹਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੧॥
बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥१॥
तेरा रूप कुरूप ही रहा क्योंकि तेरे मन में अभिमान है॥ १॥

ਸੋਹਨੀ ਸਰੂਪਿ ਸੁਜਾਣਿ ਬਿਚਖਨਿ ॥
सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥
हे सुन्दर स्वरूप वाली, बुद्धिमान एवं चतुर नारी !"

ਅਤਿ ਗਰਬੈ ਮੋਹਿ ਫਾਕੀ ਤੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥१॥ रहाउ ॥
तू अत्यंत अहंकार एवं मोह-माया में फँसी हुई है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਤਿ ਸੂਚੀ ਤੇਰੀ ਪਾਕਸਾਲ ॥
अति सूची तेरी पाकसाल ॥
(हे जीव रूपी नारी !) तेरी पाकशाला अर्थात् रसोई बड़ी पावन है।

ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਪੂਜਾ ਤਿਲਕੁ ਲਾਲ ॥
करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥
तुम स्नान करके पूजा भी करती हो एवं माथे पर लाल तिलक लगाती हो।

ਗਲੀ ਗਰਬਹਿ ਮੁਖਿ ਗੋਵਹਿ ਗਿਆਨ ॥
गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥
अपने मुख से तुम ज्ञान की बातें करती हो परन्तु अभिमान ने तुझे नष्ट कर दिया है।

ਸਭ ਬਿਧਿ ਖੋਈ ਲੋਭਿ ਸੁਆਨ ॥੨॥
सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥२॥
यह भी सत्य है कि लालच रूपी कुते ने तेरी हर प्रकार की बड़ाई को बर्बाद कर दिया है॥ २॥

ਕਾਪਰ ਪਹਿਰਹਿ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ॥
कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥
तुम सुन्दर वस्त्र धारण करती हो, भोग-विलास करती हो।

ਆਚਾਰ ਕਰਹਿ ਸੋਭਾ ਮਹਿ ਲੋਗ ॥
आचार करहि सोभा महि लोग ॥
संसार में शोभा पाने के लिए धर्म-कर्म करती हो।

ਚੋਆ ਚੰਦਨ ਸੁਗੰਧ ਬਿਸਥਾਰ ॥
चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥
अपने शरीर पर इत्र, चन्दन एवं अन्य सुगन्धियां प्रयुक्त करती हो,"

ਸੰਗੀ ਖੋਟਾ ਕ੍ਰੋਧੁ ਚੰਡਾਲ ॥੩॥
संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥३॥
लेकिन चाण्डाल क्रोध तेरा सदा खोटा साथी बना हुआ है॥ ३॥

ਅਵਰ ਜੋਨਿ ਤੇਰੀ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥
अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
दूसरी तमाम योनियाँ तेरी दासी हैं।

ਇਸੁ ਧਰਤੀ ਮਹਿ ਤੇਰੀ ਸਿਕਦਾਰੀ ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥
इस धरती पर तेरा ही प्रभुत्व कायम है।

ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਤੁਝ ਪਹਿ ਦਾਮ ॥
सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥
तेरे पास सोना-चांदी इत्यादि धन पदार्थ हैं लेकिन

ਸੀਲੁ ਬਿਗਾਰਿਓ ਤੇਰਾ ਕਾਮ ॥੪॥
सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥४॥
कामवासना ने तेरा शील भ्रष्ट कर दिया है॥ ४॥

ਜਾ ਕਉ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਮਇਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
जा कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ ॥
जिस पर भगवान कृपादृष्टि करता है,"

ਸਾ ਬੰਦੀ ਤੇ ਲਈ ਛਡਾਇ ॥
सा बंदी ते लई छडाइ ॥
वह (विकारों की) कैद से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥
साधसंगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥
जो सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि-रस का आस्वादन करती है॥ ५॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਓਹ ਕਾਇਆ ॥੫॥
कहु नानक सफल ओह काइआ ॥५॥
हे नानक ! वही काया सफल है ||5||

ਸਭਿ ਰੂਪ ਸਭਿ ਸੁਖ ਬਨੇ ਸੁਹਾਗਨਿ ॥
सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥
हे जीव रूपी नारी ! तब तुम समस्त रूप एवं समस्त सुखों वाली सुहागिन बन जाओगी।

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰਿ ਬਿਚਖਨਿ ਤੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧੨॥
अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥
तब तुम सचमुच अत्यंत सुन्दर एवं चतुर बन जाओगी ॥ १॥ रहाउ दूसरा ॥ १२ ॥ ||12||

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਇਕਤੁਕੇ ੨ ॥
आसा महला ५ इकतुके २ ॥
आसा महला ५ इकतुके २ ॥

ਜੀਵਤ ਦੀਸੈ ਤਿਸੁ ਸਰਪਰ ਮਰਣਾ ॥
जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥
जो व्यक्ति (मोह-माया में फँसा) जीवित दिखाई देता है, उसने निश्चित ही मर जाना है।

ਮੁਆ ਹੋਵੈ ਤਿਸੁ ਨਿਹਚਲੁ ਰਹਣਾ ॥੧॥
मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥१॥
लेकिन जो व्यक्ति मोह-माया से निर्लिप्त है, वह सदैव ही स्थिर रहेगा।॥ १ ॥

ਜੀਵਤ ਮੁਏ ਮੁਏ ਸੇ ਜੀਵੇ ॥
जीवत मुए मुए से जीवे ॥
जो लोग अभिमान में जीवित रहते हैं दरअसल वे मरे हुए हैं और जो लोग अपना अभिमान समाप्त कर देते हैं, वास्तव में वही जिन्दा हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਵਖਧੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अम्रितु पीवे ॥१॥ रहाउ ॥
वे हरि-नाम की औषधि अपने मुँह में रखते हैं और गुरु-शब्द के माध्यमसे वह अमर करने वाले अमृत रस का पान करते हैं॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਚੀ ਮਟੁਕੀ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸਾ ॥
काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥
यह देहि रूपी कच्चा घड़ा अवश्य ही टूट जाएगा।

ਜਿਸੁ ਛੁਟੈ ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਤਿਸੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ॥੨॥
जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा ॥२॥
लेकिन जिस मनुष्य की रजो, तमो एवं सतो गुण की त्रिकुटी रूपी कैद से मुक्ति हो गई है, वह अपने आत्मस्वरूप में निवास करता है॥ २॥

ਊਚਾ ਚੜੈ ਸੁ ਪਵੈ ਪਇਆਲਾ ॥
ऊचा चड़ै सु पवै पइआला ॥
जो अत्यंत ऊँचा चढ़ता है अर्थात् अभिमान करता है, ऐसा अभिमानी आखिरकार पाताल में ही गिरता है।

ਧਰਨਿ ਪੜੈ ਤਿਸੁ ਲਗੈ ਨ ਕਾਲਾ ॥੩॥
धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥३॥
जो मनुष्य धरती पर गिरे हुए अर्थात् विनम्रतापूर्वक रहते हैं उन्हें काल स्पर्श नहीं कर सकता॥ ३॥

ਭ੍ਰਮਤ ਫਿਰੇ ਤਿਨ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
भ्रमत फिरे तिन किछु न पाइआ ॥
जो मनुष्य भटकते रहते हैं, उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

ਸੇ ਅਸਥਿਰ ਜਿਨ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ॥੪॥
से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥४॥
लेकिन जिन्होंने गुरु के शब्द का आचरण किया है, वे स्थिरचित रहते हैं।॥ ४॥ ||4||

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਲੁ ॥
जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥
हे नानक ! यह प्राण एवं शरीर सब ईश्वर का ही माल हैं,"

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਏ ਨਿਹਾਲ ॥੫॥੧੩॥
नानक गुर मिलि भए निहाल ॥५॥१३॥
गुरु से मिलकर मनुष्य आनंदित हो गए हैं॥ ५॥ १३॥
||5||13||

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪੁਤਰੀ ਤੇਰੀ ਬਿਧਿ ਕਰਿ ਥਾਟੀ ॥
पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥
हे मानव ! तेरी यह शरीर रूपी पुतली की संरचना अति बुद्धिमत्ता से हुई है परन्तु

ਜਾਨੁ ਸਤਿ ਕਰਿ ਹੋਇਗੀ ਮਾਟੀ ॥੧॥
जानु सति करि होइगी माटी ॥१॥
तू यह बात सत्य जान कि इसने (एक दिन) मिट्टी हो जाना है॥ १॥

ਮੂਲੁ ਸਮਾਲਹੁ ਅਚੇਤ ਗਵਾਰਾ ॥
मूलु समालहु अचेत गवारा ॥
हे मूर्ख गंवार ! अपने मूल परमात्मा को याद कर।

ਇਤਨੇ ਕਉ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਕਿਆ ਗਰਬੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इतने कउ तुम्ह्ह किआ गरबे ॥१॥ रहाउ ॥
अपने इस तुच्छ वजूद वाले शरीर का क्यों अभिमान करते हो।॥ १॥ रहाउ॥

ਤੀਨਿ ਸੇਰ ਕਾ ਦਿਹਾੜੀ ਮਿਹਮਾਨੁ ॥
तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥
तू इस दुनिया में एक अतिथि है, जिसे रोजाना तीन सेर अन्न खाने को मिलता है।

ਅਵਰ ਵਸਤੁ ਤੁਝ ਪਾਹਿ ਅਮਾਨ ॥੨॥
अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥२॥
अन्य सभी वस्तुएँ तेरे पास धरोहर रूप में रखी हुई हैं।॥ २॥

ਬਿਸਟਾ ਅਸਤ ਰਕਤੁ ਪਰੇਟੇ ਚਾਮ ॥
बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥
तुम विष्टा, हड्डियों, रक्त एवं चमड़ी में लपेटे हुए हो।

ਇਸੁ ਊਪਰਿ ਲੇ ਰਾਖਿਓ ਗੁਮਾਨ ॥੩॥
इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥३॥
लेकिन तुम इस पर ही घमण्ड कर रहे हो॥ ३॥

ਏਕ ਵਸਤੁ ਬੂਝਹਿ ਤਾ ਹੋਵਹਿ ਪਾਕ ॥
एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥
यदि तुम एक नाम रूपी वस्तु का बोध कर लोगे तो तुम पवित्र-जीवन वाले हो जाओगे।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਤੂੰ ਸਦਾ ਨਾਪਾਕ ॥੪॥
बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥४॥
प्रभु-नाम की सूझ बिना तुम सदैव ही नापाक हो।॥ ४॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕਉ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥
हे नानक ! मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ

ਜਿਸ ਤੇ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ॥੫॥੧੪॥
जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥५॥१४॥
जिसके माध्यम से सर्वज्ञ परमात्मा मिलता है।॥ ५॥ १४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਇਕਤੁਕੇ ਚਉਪਦੇ ॥
आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥
आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥

ਇਕ ਘੜੀ ਦਿਨਸੁ ਮੋ ਕਉ ਬਹੁਤੁ ਦਿਹਾਰੇ ॥
इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे ॥
परमेश्वर से वियोग की एक घड़ी भी दिन में मेरे लिए बहुत दिनों के समान है।

ਮਨੁ ਨ ਰਹੈ ਕੈਸੇ ਮਿਲਉ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥

मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥१॥

मेरा मन उसके बिना रह नहीं सकता। फिर मैं अपने प्रियतम से कैसे मिलूगी॥ १॥

ਇਕੁ ਪਲੁ ਦਿਨਸੁ ਮੋ ਕਉ ਕਬਹੁ ਨ ਬਿਹਾਵੈ ॥

इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै ॥

दिन में एक क्षण भी ईश्वर से जुदा होकर व्यतीत नहीं होता।

ਦਰਸਨ ਕੀ ਮਨਿ ਆਸ ਘਨੇਰੀ ਕੋਈ ਐਸਾ ਸੰਤੁ ਮੋ ਕਉ ਪਿਰਹਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे मन में उसके दर्शन की तीव्र अभिलाषा है। आशा है कि कोई ऐसा संत (सच्चा गुरु) मिल जाए, जो मेरा प्रियतम से मिलन करवा दे ॥ १॥ रहाउ ॥

ਚਾਰਿ ਪਹਰ ਚਹੁ ਜੁਗਹ ਸਮਾਨੇ ॥
चारि पहर चहु जुगह समाने ॥
दिन के चार प्रहर चार युगों के बराबर हैं।

ਰੈਣਿ ਭਈ ਤਬ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਨੇ ॥੨॥
रैणि भई तब अंतु न जाने ॥२॥
जब रात्रि होती है तो वह समाप्त होने में नहीं आती॥ २॥

ਪੰਚ ਦੂਤ ਮਿਲਿ ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੋੜੀ ॥
पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥
पाँच वैरियों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) ने मिलकर मुझे मेरे कत-प्रभु से जुदा किया है।

ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਰੋਵੈ ਹਾਥ ਪਛੋੜੀ ॥੩॥
भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥३॥
भटक-भटक कर मैं रोती और अपने हाथ पटकती हूँ॥ ३॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥
नानक को हरि ने अपना दर्शन करवा दिया है और

ਆਤਮੁ ਚੀਨ੍ਹਿ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੫॥
आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥४॥१५॥
अपने आत्मिक जीवन को अनुभव करके उसे परम सुख मिल गया है॥ ४॥ १५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਮਹਿ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ॥
हरि सेवा महि परम निधानु ॥
हे भाई ! हरि की सेवा में ही परम निधान हैं।

ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ॥੧॥
हरि सेवा मुखि अम्रित नामु ॥१॥
नामामृत को मुंह में जपना ही हरि की सेवाभक्ति है॥ १॥

ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਥੀ ਸੰਗਿ ਸਖਾਈ ॥
हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥
हरि मेरा साथी, संगी एवं सहायक है।

ਦੁਖਿ ਸੁਖਿ ਸਿਮਰੀ ਤਹ ਮਉਜੂਦੁ ਜਮੁ ਬਪੁਰਾ ਮੋ ਕਉ ਕਹਾ ਡਰਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥१॥ रहाउ ॥
जब भी मैं दुःख-सुख में उसको याद करता हूँ तो वह मौजूद होता है। फिर बेचारा यमदूत मुझे क्योंकर भयभीत कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਓਟ ਮੈ ਹਰਿ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥
हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥
हरि मेरी ओट है और मुझे हरि का ही बल है।

ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਖਾ ਮਨ ਮਾਹਿ ਦੀਬਾਣੁ ॥੨॥
हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥२॥
हरि मेरा मित्र है और मेरे मन में बसा हुआ है। २॥

ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਪੂੰਜੀ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਵੇਸਾਹੁ ॥
हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥
हरि मेरी पूंजी है और हरि ही मेरे लिए प्रेरक स्रोत है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਨੁ ਖਟੀ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਹੁ ॥੩॥
गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥३॥
गुरुमुख बनकर मैं नाम-धन कमाता हूँ और हरि ही मेरा शाह है॥ ३॥

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਇਹ ਮਤਿ ਆਵੈ ॥
गुर किरपा ते इह मति आवै ॥
गुरु की कृपा से यह सुमति प्राप्त होती है।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵੈ ॥੪॥੧੬॥
जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥४॥१६॥
नानक तो हरि के अंक (गोद) में समा गया है॥ ४॥ १६

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਤ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਈ ॥
प्रभु होइ क्रिपालु त इहु मनु लाई ॥
जब प्रभु कृपालु हुआ तो यह मन उसमें ही लग गया।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਭੈ ਫਲ ਪਾਈ ॥੧॥
सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥१॥
गुरु की सेवा करने से सभी फल मिल गए हैं।॥ १॥

ਮਨ ਕਿਉ ਬੈਰਾਗੁ ਕਰਹਿਗਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪੂਰਾ ॥
मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥
हे मन ! तू क्यों वैरागी होता है? मेरा सतिगुरु पूर्ण है।

ਮਨਸਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਸਭ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਸਦ ਹੀ ਭਰਪੂਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनसा का दाता सभ सुख निधानु अम्रित सरि सद ही भरपूरा ॥१॥ रहाउ ॥
मन की आकांक्षाओं के अनुरूप देन प्रदान करने वाला वह सर्व सुखों का कोष है और उसका अमृत का सरोवर सदैव ही भरा रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੇ ॥
चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥
जब प्रभु के चरण-कमल को अपने हृदय में बसाया तो

ਪ੍ਰਗਟੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੇ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥
प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥२॥
उसकी दिव्य ज्योति प्रगट हो गई और वह प्रिय राम मुझे मिल गया॥ २॥

ਪੰਚ ਸਖੀ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥
पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥
पाँच सहेलियों (ज्ञानेन्द्रियों) अब मिलकर मंगल गीत गाने लगी हैं और

ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ ਨਾਦੁ ਵਜਾਇਆ ॥੩॥
अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥३॥
अन्तर्मन में अनहद वाणी का नाद गूंज रहा है॥ ३॥

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥
गुरु नानक के प्रसन्न होने पर जगत का बादशाह प्रभु मिल गया है,"

ਸੁਖਿ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੪॥੧੭॥
सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥४॥१७॥
इसलिए अब जीवन रूपी रात्रि सहज स्वभाव ही सुखपूर्वक व्यतीत होती है॥ ४॥ १७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਪਰਗਟੀ ਆਇਆ ॥
करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥
भगवान अपनी कृपा करके स्वयं ही मेरे मन में प्रकट हो गया है।

ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਧਨੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥੧॥
मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥१॥
सतिगुरु से मिलकर मुझे पूर्ण नाम-धन प्राप्त हुआ है॥ १॥

ਐਸਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚੀਐ ਭਾਈ ॥
ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥
हे भाई ! ऐसा हरि नाम रूपी धन संचित करना चाहिए,"

ਭਾਹਿ ਨ ਜਾਲੈ ਜਲਿ ਨਹੀ ਡੂਬੈ ਸੰਗੁ ਛੋਡਿ ਕਰਿ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि इस नाम-धन को न ही अग्नि जलाती है, न ही जल डुबाता है और यह मनुष्य का साथ छोड़कर कहीं नहीं जाता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਨਿਖੁਟਿ ਨ ਜਾਇ ॥
तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥
हरि का नाम धन ऐसा है केि इसमें कभी कमी नहीं आती और न ही यह कभी समाप्त होता है।

ਖਾਇ ਖਰਚਿ ਮਨੁ ਰਹਿਆ ਅਘਾਇ ॥੨॥
खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥
इसे खर्च करते और खाते हुए मनुष्य का मन तृप्त रहता है॥ २॥

ਸੋ ਸਚੁ ਸਾਹੁ ਜਿਸੁ ਘਰਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚਾਣਾ ॥
सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥
वही सच्चा साहूकार है जो हरि के नाम-धन को अपने हृदय घर में संचित करता है।

ਇਸੁ ਧਨ ਤੇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਵਰਸਾਣਾ ॥੩॥
इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥३॥
इस नाम-धन से समूचा जगत लाभ प्राप्त करता है॥ ३॥

ਤਿਨਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਜਿਸੁ ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਣਾ ॥
तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥
केवल वही मनुष्य हरि नाम रूपी धन को प्राप्त करताहै जिसके भाग्य में इसकी प्राप्ति आदि से लिखी हुई है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਅੰਤਿ ਵਾਰ ਨਾਮੁ ਗਹਣਾ ॥੪॥੧੮॥
जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥४॥१८॥
हे नानक ! हरि का नाम-धन ही अन्तिम समय का आभूषण है॥ ४॥ १८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜੈਸੇ ਕਿਰਸਾਣੁ ਬੋਵੈ ਕਿਰਸਾਨੀ ॥
जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥
हे प्राणी ! जैसे कोई किसान अपनी फसल बोता है और

ਕਾਚੀ ਪਾਕੀ ਬਾਢਿ ਪਰਾਨੀ ॥੧॥
काची पाकी बाढि परानी ॥१॥
जब चाहे कच्ची अथवा पक्की हो उसे काट लेता है॥ १॥

ਜੋ ਜਨਮੈ ਸੋ ਜਾਨਹੁ ਮੂਆ ॥
जो जनमै सो जानहु मूआ ॥
वैसे ही समझ लो कि जिसने जन्म लिया है, एक न एक दिन उसने अवश्य मरना भी है।

ਗੋਵਿੰਦ ਭਗਤੁ ਅਸਥਿਰੁ ਹੈ ਥੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥१॥ रहाउ ॥
इस दुनिया में गोविंद का भक्त ही सदा स्थिरचित रहता है॥ १। रहाउ ॥

ਦਿਨ ਤੇ ਸਰਪਰ ਪਉਸੀ ਰਾਤਿ ॥
दिन ते सरपर पउसी राति ॥
दिन के पश्चात् रात्रि अवश्य ही होगी।

ਰੈਣਿ ਗਈ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਪਰਭਾਤਿ ॥੨॥
रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥२॥
जब रात्रि बीत जाती है तो फिर प्रभात अर्थात् सवेरा हो जाता है॥ २॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸੋਇ ਰਹੇ ਅਭਾਗੇ ॥
माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥
माया के स्रोह में भाग्यहीन मनुष्य सोये रहते हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਜਾਗੇ ॥੩॥
गुर प्रसादि को विरला जागे ॥३॥
गुरु की कृपा से कोई विरला मनुष्य ही मायावी निद्रा से जागता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਈਅਹਿ ਨੀਤ ॥
कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥
हे नानक ! नित्य ही भगवान के गुण गाने चाहिए,"

ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਇ ਨਿਰਮਲ ਚੀਤ ॥੪॥੧੯॥
मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥४॥१९॥
क्योंकि गुणगान करने से सत्य के दरबार में मुख उज्ज्वल तथा चित्त निर्मल हो जाता है।॥ ४॥ १६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਉ ਨਿਧਿ ਤੇਰੈ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ॥
नउ निधि तेरै सगल निधान ॥
हे जगत के मालिक ! तेरे घर में नवनिधियाँ एवं समस्त भण्डार हैं।

ਇਛਾ ਪੂਰਕੁ ਰਖੈ ਨਿਦਾਨ ॥੧॥
इछा पूरकु रखै निदान ॥१॥
तू जीवों की इच्छाएँ पूरी करने वाला है एवं अन्त में सबकी रक्षा करता है॥ १॥

ਤੂੰ ਮੇਰੋ ਪਿਆਰੋ ਤਾ ਕੈਸੀ ਭੂਖਾ ॥
तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥
जब तू मेरा प्रियतम है तो कैसी भूख रहेगी।

ਤੂੰ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਲਗੈ ਨ ਦੂਖਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥१॥ रहाउ ॥
जब तू मेरे हृदय में निवास करता है तो कोई भी दुःख मुझे स्पर्श नहीं कर सकता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਤੂੰ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जो तूं करहि सोई परवाणु ॥
जो कुछ तुम करते हो वही मुझे मंजूर है।

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਤੇਰਾ ਸਚੁ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥੨॥
साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥२॥
हे सच्चे साहिब ! तेरा हुक्म भी सच्चा है॥ २॥

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥
हे हरि ! जब तुझे अच्छा लगता है तो मैं तेरा गुणगान करता हूँ।

ਤੇਰੈ ਘਰਿ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹੈ ਨਿਆਉ ॥੩॥
तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥३॥
तेरे घर में सदैव ही न्याय है॥ ३॥

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਅਲਖ ਅਭੇਵ ॥
साचे साहिब अलख अभेव ॥
हे सच्चे मालिक ! तू अलक्ष्य एवं अपरंपार है।

ਨਾਨਕ ਲਾਇਆ ਲਾਗਾ ਸੇਵ ॥੪॥੨੦॥
नानक लाइआ लागा सेव ॥४॥२०॥
तेरे द्वारा प्रेरित नानक तेरी सेवा भक्ति में लगा हुआ है॥ ४ ॥ २०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਿਕਟਿ ਜੀਅ ਕੈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗਾ ॥
निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥
भगवान जीव के बिल्कुल निकट है और सदैव ही उसके साथ रहता है।

ਕੁਦਰਤਿ ਵਰਤੈ ਰੂਪ ਅਰੁ ਰੰਗਾ ॥੧॥
कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥१॥
उसकी कुदरत समस्त रूपों एवं रंगों में कार्यशील है॥ १॥

ਕਰ੍ਹੈ ਨ ਝੁਰੈ ਨਾ ਮਨੁ ਰੋਵਨਹਾਰਾ ॥
कर्है न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥
मेरा मन न तो दुखी होता है, न ही पश्चाताप करता और न ही रोता है क्योंकि

ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਵਿਗਤੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥
इसने उसे अपना मालिक मान लिया है जो अमर, अव्यक्त, अगोचर एवं सदेव कायम रहने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰੇ ਦਾਸਰੇ ਕਉ ਕਿਸ ਕੀ ਕਾਣਿ ॥
तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥
हे मेरे मालिक ! तेरे तुच्छ दास को किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।

ਜਿਸ ਕੀ ਮੀਰਾ ਰਾਖੈ ਆਣਿ ॥੨॥
जिस की मीरा राखै आणि ॥२॥
उसकी मान-प्रतिष्ठा की तू मालिक-प्रभु स्वयं रक्षा करता है॥ २॥

ਜੋ ਲਉਡਾ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਆ ਅਜਾਤਿ ॥
जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥
जिस सेवक को मालिक ने जाति-पाति के बन्धनों से रहित कर दिया है,"

ਤਿਸੁ ਲਉਡੇ ਕਉ ਕਿਸ ਕੀ ਤਾਤਿ ॥੩॥
तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥३॥
उस सेवक को किसी की इर्षा का डर नहीं रहता॥ ३॥

ਵੇਮੁਹਤਾਜਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥
वेमुहताजा वेपरवाहु ॥
जो बेमुहताज एवं बेपरवाह है,"

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਕਹਹੁ ਗੁਰ ਵਾਹੁ ॥੪॥੨੧॥
नानक दास कहहु गुर वाहु ॥४॥२१॥
हे नानक ! उस गुरु-परमात्मा को धन्य-धन्य कहते रहो॥ ४॥ २१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਛੋਡਿ ਹੋਛੈ ਰਸਿ ਮਾਤਾ ॥
हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥
इन्सान हरि-रस को त्यागकर तुच्छ रसों में मस्त रहता है।

ਘਰ ਮਹਿ ਵਸਤੁ ਬਾਹਰਿ ਉਠਿ ਜਾਤਾ ॥੧॥
घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥१॥
नाम रूपी वस्तु उसके हृदय-घर में ही व्याप्त है परन्तु उसे खोजने हेतु बाहर भागता रहता है॥ १॥

ਸੁਨੀ ਨ ਜਾਈ ਸਚੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾਥਾ ॥
सुनी न जाई सचु अम्रित काथा ॥
ऐसे इन्सान से सत्य की अमृत कथा सुनी नहीं जाती।

ਰਾਰਿ ਕਰਤ ਝੂਠੀ ਲਗਿ ਗਾਥਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रारि करत झूठी लगि गाथा ॥१॥ रहाउ ॥
वह तो झूठी कहानियों से जुड़कर झगड़ा करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਵਜਹੁ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਸੇਵ ਬਿਰਾਨੀ ॥
वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥
विकारी मनुष्य ऐसा है जो खाता तो परमात्मा का दिया हुआ परन्तु सेवा किसी दूसरे की करता है।

ਐਸੇ ਗੁਨਹ ਅਛਾਦਿਓ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੨॥
ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥२॥
ऐसे गुनाहों से प्राणी आच्छादित रहता है॥ २॥

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਲੂਕ ਜੋ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗੀ ॥
तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥
वह अपनी भूलें उससे छिपाता है, जो हमेशा ही उसके साथ है।

ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਸੋ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਮੰਗੀ ॥੩॥
कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥३॥
जो उसके किसी काम नहीं, उसकी वह बार-बार माँग करता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥
नानक का कथन है कि हे दीनदयाल प्रभु !

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਕਰਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੪॥੨੨॥
जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥४॥२२॥
जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरा पोषण करो॥ ४॥ २२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ॥
जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥
हरि का नाम ही मन तथा प्राणों हेतु सच्चा धन है।

ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥१॥
ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥१॥
लोक-परलोक में यही धन जीव के काम आता है॥ १॥

बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥
बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥
हरि के नाम बिना अन्य सबकुछ थोड़ा ही है क्योंकि

त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥
त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन हरि के दर्शन करने से तृप्त एवं संतुष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥
भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥
गुरुवाणी प्रभु-भक्ति के रत्नों का भण्डार है।

गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥
गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥
इसको गाने, सुनने एवं उसके अनुरूप आचरण करने से मनुष्य निहाल हो जाता है॥ २॥

चरण कमल सिउ लागो मानु ॥
चरण कमल सिउ लागो मानु ॥
मेरा मन तो हरि के चरण-कमल से ही लगा हुआ है।

सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥३॥
सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥३॥
अपनी प्रसन्नता द्वारा सतिगुरु ने मुझे यह दान दिया है॥ ३॥

नानक कउ गुरि दीखिआ दीन् ॥
नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥
नानक को गुरु ने यह दीक्षा दी है कि

ਪ੍ਰਭ ਅਬਿਨਾਸੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਚੀਨ੍ ॥੪॥੨੩॥
प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥४॥२३॥
उस अविनाशी प्रभु को प्रत्येक हृदय में देख॥ ४॥ २३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਭਰੇਪੁਰਿ ਧਾਰਿਆ ॥
अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥
संसार के समस्त कौतुक-तमाशे सर्वव्यापक प्रभु ने रचे हुए हैं।

ਅਪੁਨਾ ਕਾਰਜੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥੧॥
अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥१॥
वह अपना कार्य स्वयं ही संवारता है॥ १॥

ਪੂਰ ਸਮਗ੍ਰੀ ਪੂਰੇ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ॥
पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥
पूर्ण ठाकुर की यह सृष्टि रूपी सामग्री भी पूर्ण है।

ਭਰਿਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹੀ ਸੋਭ ਜਾ ਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥१॥ रहाउ ॥
उसकी शोभा दुनिया में भरपूर होकर हर जगह फैली हुई है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥
नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥
जिस परमात्मा की शोभा बड़ी निर्मल है, उसका नाम जीवों के लिए खजाना है।

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥
आपे करता अवरु न कोइ ॥२॥
प्रभु स्वयं ही दुनिया का रचयिता है, दूसरा कोई भी नहीं है॥ २॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥
जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥
सृष्टि के समस्त जीव-जन्तु उसके वश में हैं।

ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਸਭ ਕੈ ਸਾਥਿ ॥੩॥

रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥३॥

प्रभु सर्वव्यापी है और प्रत्येक जीव-जन्तु के साथ है॥ ३॥

ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥
पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥
पूर्ण गुरु-परमेश्वर ने जो कुछ भी रचा है वह पूर्ण है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੨੪॥
नानक भगत मिली वडिआई ॥४॥२४॥
हे नानक ! प्रभु-भक्तों को ही प्रशंसा मिली है॥ ४॥ २४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਬਨਾਵਹੁ ਇਹੁ ਮਨੁ ॥
गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥
हे बन्धु ! गुरु के शब्द में अपने मन को नेक बनाओ।

ਗੁਰ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਸੰਚਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ॥੧॥
गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥१॥
गुरु का दर्शन करो और हरि-नाम रूपी धन संचित करो ॥ १॥

ਊਤਮ ਮਤਿ ਮੇਰੈ ਰਿਦੈ ਤੂੰ ਆਉ ॥
ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥
हे उत्तम बुद्धि ! तू मेरे मन में प्रवेश कर

ਧਿਆਵਉ ਗਾਵਉ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦਾ ਅਤਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮੋਹਿ ਲਾਗੈ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे मैं गोविन्द का गुणगान एवं ध्यान करूँ और मुझे उसका नाम अत्यन्त प्रिय लगे ॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਵਨੁ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥
त्रिपति अघावनु साचै नाइ ॥
सत्यनाम द्वारा मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ।

ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਸੰਤ ਧੂਰਾਇ ॥੨॥
अठसठि मजनु संत धूराइ ॥२॥
संतों की चरण-धूलि मेरा अड़सठ तीर्थों का स्नान है॥ २ ॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜਾਨਉ ਕਰਤਾ ਏਕ ॥
सभ महि जानउ करता एक ॥
मैं एक ईश्वर को सबमें व्यापक हुआ अनुभव करता हूँ।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਬੁਧਿ ਬਿਬੇਕ ॥੩॥
साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥३॥
साध-संगति में मुझे विवेक बुद्धि मिली है॥ ३॥

ਦਾਸੁ ਸਗਲ ਕਾ ਛੋਡਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥
अभिमान को छोड़कर मैं सबका सेवक हो गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥੪॥੨੫॥
नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥४॥२५॥
नानक को गुरु ने सुमति का दान दिया है।॥ ४॥ २५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਬੁਧਿ ਪ੍ਰਗਾਸ ਭਈ ਮਤਿ ਪੂਰੀ ॥
बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥
गुरु की मति से मेरी बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो गया है।

ਤਾ ਤੇ ਬਿਨਸੀ ਦੁਰਮਤਿ ਦੂਰੀ ॥੧॥
ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥१॥
इससे मेरी दुर्मति नाश हो गई है, जो मुझे मेरे मालिक से दूर रखती थी।॥ १॥

ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈਅਲੇ ॥
ऐसी गुरमति पाईअले ॥
हे मेरे भाई ! गुरु की मति से मुझे ऐसी सूझ प्राप्त हुई है कि

ਬੂਡਤ ਘੋਰ ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਿ ਨਿਕਸਿਓ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
मैं घोर अंधकूप रूपी संसार में से डूबता हुआ बच गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਅਗਾਹ ਅਗਨਿ ਕਾ ਸਾਗਰੁ ॥
महा अगाह अगनि का सागरु ॥
यह जगत तृष्णा रूपी अग्नि का बहुत गहरा अथाह सागर है पर

ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਤਾਰੇ ਰਤਨਾਗਰੁ ॥੨॥
गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥२॥
रत्नागर गुरु रूपी जहाज मनुष्य को भवसागर से पार कर देता है॥ २॥

ਦੁਤਰ ਅੰਧ ਬਿਖਮ ਇਹ ਮਾਇਆ ॥
दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥
यह माया का सागर बड़ा अन्धा एवं विषम है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪਰਗਟੁ ਮਾਰਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੩॥
गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥३॥
इसे पार करने हेतु पूर्ण गुरु ने मार्ग प्रत्यक्ष तौर पर दिखा दिया है॥ ३॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਕਛੁ ਉਕਤਿ ਨ ਮੋਰੀ ॥
जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥
मेरे पास न कोई जाप है, न कोई तपस्या और न ही कोई उक्ति है।

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਸਰਣਾਗਤਿ ਤੋਰੀ ॥੪॥੨੬॥
गुर नानक सरणागति तोरी ॥४॥२६॥
हे गुरु ! नानक तेरी ही शरण में आया है॥ ४॥ २६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਤਿਪਦੇ ੨ ॥
आसा महला ५ तिपदे २ ॥
आसा महला ५ तिपदे २ ॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਤ ਸਦ ਹੀ ਰਾਤਾ ॥
हरि रसु पीवत सद ही राता ॥
हरि-रस पीने से इन्सान सदैव ही रंगा रहता है।

ਆਨ ਰਸਾ ਖਿਨ ਮਹਿ ਲਹਿ ਜਾਤਾ ॥
आन रसा खिन महि लहि जाता ॥
दूसरे तमाम स्वाद एक क्षण में मिट जाते हैं।

ਹਰਿ ਰਸ ਕੇ ਮਾਤੇ ਮਨਿ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ॥
हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥
हरि रस से मतवाला होकर वह अन्तर्मन से सदैव प्रसन्न रहता है

ਆਨ ਰਸਾ ਮਹਿ ਵਿਆਪੈ ਚਿੰਦ ॥੧॥
आन रसा महि विआपै चिंद ॥१॥
लेकिन लौकिक पदार्थों के आस्वादन में पड़ने से चिन्ता बनी रहती है॥ १॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵੈ ਅਲਮਸਤੁ ਮਤਵਾਰਾ ॥
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥
जो हरि रस पीता है वह अलमस्त एवं मतवाला हो जाता है।

ਆਨ ਰਸਾ ਸਭਿ ਹੋਛੇ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आन रसा सभि होछे रे ॥१॥ रहाउ ॥
हे इन्सान ! संसार के दूसरे सभी रस तुच्छ हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਰਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥
हरि रस का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਸਾਧੂ ਹਾਟਿ ਸਮਾਇ ॥
हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥
हरि रस साधु-संतों की दुकान (सत्संग) में लीन रहता है।

ਲਾਖ ਕਰੋਰੀ ਮਿਲੈ ਨ ਕੇਹ ॥
लाख करोरी मिलै न केह ॥
लाखों-करोड़ खर्च करने पर भी यह किसी को प्राप्त नहीं हो सकता।

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸ ਹੀ ਦੇਹਿ ॥੨॥
जिसहि परापति तिस ही देहि ॥२॥
जिस मनुष्य के भाग्य में इसे प्राप्त करना लिखा होता है परमात्मा उसे ही देता है॥ २॥

ਨਾਨਕ ਚਾਖਿ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦੁ ॥
नानक चाखि भए बिसमादु ॥
नानक इस हरि रस को चख कर चकित हो गया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਆਇਆ ਸਾਦੁ ॥
नानक गुर ते आइआ सादु ॥
हे नानक ! गुरु के माध्यम से इसका स्वाद प्राप्त हुआ है।

ਈਤ ਊਤ ਕਤ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥
ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥
इधर-उधर (लोक-परलोक में) इसे त्याग कर वह अन्य कहीं नहीं जाता।

ਨਾਨਕ ਗੀਧਾ ਹਰਿ ਰਸ ਮਾਹਿ ॥੩॥੨੭॥
नानक गीधा हरि रस माहि ॥३॥२७॥
नानक तो हरि रस पीने में ही मस्त रहता है॥ ३॥ २७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਮਿਟਾਵੈ ਛੁਟਕੈ ਦੁਰਮਤਿ ਅਪੁਨੀ ਧਾਰੀ ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥
यदि जीव-स्त्री अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह को मिटा दे, तो वह अपनी पदा की हुई मंदबुद्धि से छूट जाती है।

ਹੋਇ ਨਿਮਾਣੀ ਸੇਵ ਕਮਾਵਹਿ ਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹੋਵਹਿ ਮਨਿ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥
होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥१॥
यदि वह विनीत होकर अपने प्रभु की सेवा करे तो वह अपने प्रियतम के मन की प्रियतमा हो जाती है॥ १॥

ਸੁਣਿ ਸੁੰਦਰਿ ਸਾਧੂ ਬਚਨ ਉਧਾਰੀ ॥
सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥
हे सुन्दरी ! सुन, साधु के वचनों द्वारा तेरा उद्धारं हो जाएगा।

ਦੂਖ ਭੂਖ ਮਿਟੈ ਤੇਰੋ ਸਹਸਾ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਤੂੰ ਸੁਖਮਨਿ ਨਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा दुःख, भूख एवं भय सब मिट जाएंगे, हे नारी ! तू जो सुख पाना चाहती है, तुझे वह सुख प्राप्त हो जाएंगे॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਕਰਉ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਆਤਮ ਸੁਧੁ ਬਿਖੁ ਤਿਆਸ ਨਿਵਾਰੀ ॥

चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥

हे सुन्दरी ! गुरु के चरण धोने एवं उनकी सेवा करने से आत्मा शुद्ध हो जाती है और विषय-विकारों की प्यास बुझ जाती है।

ਦਾਸਨ ਕੀ ਹੋਇ ਦਾਸਿ ਦਾਸਰੀ ਤਾ ਪਾਵਹਿ ਸੋਭਾ ਹਰਿ ਦੁਆਰੀ ॥੨॥

दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥२॥

यदि तू प्रभु के सेवकों की दासी बन जाए तो तुझे प्रभु के द्वार में शोभा मिल जाएगी॥ २॥

ਇਹੀ ਅਚਾਰ ਇਹੀ ਬਿਉਹਾਰਾ ਆਗਿਆ ਮਾਨਿ ਭਗਤਿ ਹੋਇ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥

इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥

यही तेरा पुण्य-कर्म है, यही तेरा नित्य का आचरण-व्यवहार है कि तू प्रभु की आज्ञा का पालन करे। यही तेरी पूजा-भक्ति है।

ਜੋ ਇਹੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਕਮਾਵੈ ਨਾਨਕ ਸੋ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥੩॥੨੮॥

जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥३॥२८॥

जो इस मंत्र की कमाई करता है, हे नानक ! वह भवसागर से पार हो जाता है॥ ३ ॥ २८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦੇ ॥
आसा महला ५ दुपदे ॥
आसा महला ५ दुपदे ॥

ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹੁਰੀਆ ॥
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
हे मानव ! तुझे जो यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है।

ਗੋਬਿੰਦ ਮਿਲਣ ਕੀ ਇਹ ਤੇਰੀ ਬਰੀਆ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
यही तुम्हारा प्रभु को मिलने का शुभावसर है; अर्थात् प्रभु का नाम सिमरन करने हेतु ही यह मानव जन्म तुझे प्राप्त हुआ है।

ਅਵਰਿ ਕਾਜ ਤੇਰੈ ਕਿਤੈ ਨ ਕਾਮ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
इसके अतिरिक्त किए जाने वाले सांसारिक कार्य तुम्हारे किसी काम के नहीं हैं।

ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਭਜੁ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥੧॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥
सिर्फ तुम साधुओं-संतों का संग करके उस अकाल-पुरुष का चिन्तन ही करो।॥ १॥

ਸਰੰਜਾਮਿ ਲਾਗੁ ਭਵਜਲ ਤਰਨ ਕੈ ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
इसलिए इस संसार-सागर से पार उतरने के उद्यम में लग।

ਜਨਮੁ ਬ੍ਰਿਥਾ ਜਾਤ ਰੰਗਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥
अन्यथा माया के प्रेम में रत तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਧਰਮੁ ਨ ਕਮਾਇਆ ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥
हे मानव ! तुमने जप, तप व संयम नहीं किया और न ही कोई पुनीत कार्य करके धर्म कमाया है।

ਸੇਵਾ ਸਾਧ ਨ ਜਾਨਿਆ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥
साधु-संतों की सेवा नहीं की है तथा न ही परमेश्वर को स्मरण किया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਨੀਚ ਕਰੰਮਾ ॥
कहु नानक हम नीच करमा ॥
हे नानक ! हम मंदकर्मी जीव हैं।

ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਸਰਮਾ ॥੨॥੨੯॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥२९॥
मुझ शरणागत की लाज रखो॥ २॥ २६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਮੈ ਦੂਜਾ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥
हे जगत के मालिक ! तेरे बिना मेरा दूसरा कोई भी नहीं और तू ही मेरे मन में रहता है।

ਤੂੰ ਸਾਜਨੁ ਸੰਗੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਕਾਹੇ ਜੀਅ ਡਰਾਹੀ ॥੧॥
तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥१॥
हे प्रभु! जब तू मेरा साजन एवं साथी है तो फिर मेरे प्राण क्यों भयभीत हों ?॥ १॥

ਤੁਮਰੀ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ਆਸਾ ॥
तुमरी ओट तुमारी आसा ॥
हे नाथ ! तुम ही मेरी ओट एवं तुम ही मेरी आशा हो।

ਬੈਠਤ ਊਠਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਤੂੰ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥
बैठते-उठते, सोते-जागते, श्वास लेते अथवा खाते समय तुम मुझे कभी भी विस्मृत न हो।॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਵਿਕਰਾਲਾ ॥
राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥
हे प्रभु ! मुझे अपनी शरण में रखो, चूंकि यह दुनिया अग्नि का भयानक सागर है।

ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਖਦਾਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਹਮ ਤੁਮਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੨॥੩੦॥
नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥२॥३०॥
हे नानक के सुखदाता सतिगुरु ! हम तेरी ही संतान हैं।॥ २॥ ३०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਲੀਨੇ ਪ੍ਰਭੂ ਛਡਾਇ ॥
हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥
परमेश्वर ने अपने भक्तों को मोह-माया के जाल से बचा लिया है।

ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਉ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਾਪੁ ਮੁਆ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन प्रियतम-प्रभु के साथ मिल गया है और मेरा ताप विष सेवन करके मर गया है। ॥ १॥ रहाउ॥

ਪਾਲਾ ਤਾਊ ਕਛੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਨ ਗਾਇ ॥
पाला ताऊ कछु न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥
राम नाम का गुणगान करने से मुझे सर्दी एवं गर्मी प्रभावित नहीं करते।

ਡਾਕੀ ਕੋ ਚਿਤਿ ਕਛੁ ਨ ਲਾਗੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਨਾਇ ॥੧॥
डाकी को चिति कछु न लागै चरन कमल सरनाइ ॥१॥
प्रभु के चरण कमल का आश्रय प्राप्त करने से माया डायन का मेरे मन पर भी प्रभाव नहीं पड़ता ॥ १॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਹੋਏ ਆਪਿ ਸਹਾਇ ॥
संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥
संतों की कृपा से ईश्वर मुझ पर कृपालु हो गया है और स्वयं मेरा सहायक बन गया है।

ਗੁਨ ਨਿਧਾਨ ਨਿਤਿ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕੁ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਮਿਟਾਇ ॥੨॥੩੧॥
गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥२॥३१॥
नानक दुविधा एवं दुख को दूर करके गुणनिधान प्रभु के नित्य ही गुण गाता रहता है॥ २॥ ३१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਉਖਧੁ ਖਾਇਓ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥
अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥
हे भाई ! मैंने हरि-नाम रूपी औषधि खा ली है,"

ਸੁਖ ਪਾਏ ਦੁਖ ਬਿਨਸਿਆ ਥਾਉ ॥੧॥
सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥१॥
जिससे मेरे दु:ख का नाश हो गया है और आत्मिक सुख प्राप्त कर लिया है॥ १ ॥

ਤਾਪੁ ਗਇਆ ਬਚਨਿ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥
तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥
पूर्ण गुरु के वचन द्वारा मेरे मन का संताप नष्ट हो गया है।

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸਭਿ ਮਿਟੇ ਵਿਸੂਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी समस्त चिन्ताएँ मिट गई हैं और आनंद प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥੨॥੩੨॥
जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥२॥३२॥
हे नानक ! जिन्होंने अपने मन में परमात्मा को याद किया है,"उन सभी जीव-जंतुओं ने सुख ही पाया है॥ २॥ ३२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਬਾਂਛਤ ਨਾਹੀ ਸੁ ਬੇਲਾ ਆਈ ॥
बांछत नाही सु बेला आई ॥
(हे बन्धु !) मृत्यु का वह समय आ गया है जिसे कोई भी प्राणी पसन्द नहीं करता।

ਬਿਨੁ ਹੁਕਮੈ ਕਿਉ ਬੁਝੈ ਬੁਝਾਈ ॥੧॥
बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥१॥
प्रभु के हुक्म बिना मनुष्य कैसे समझ सकता है चाहे उसे कितना भी समझाया जाए॥ १॥

ਠੰਢੀ ਤਾਤੀ ਮਿਟੀ ਖਾਈ ॥
ठंढी ताती मिटी खाई ॥
हे भाई ! पार्थिव शरीर को जलप्रवाह किया जाता है, अग्नि में जलाया जाता है अथवा मिट्टी में दफनाया जाता है

ਓਹੁ ਨ ਬਾਲਾ ਬੂਢਾ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ओहु न बाला बूढा भाई ॥१॥ रहाउ ॥
परन्तु यह आत्मा न तो जवान होती है, न ही वृद्ध होती है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਾਧ ਸਰਣਾਈ ॥
नानक दास साध सरणाई ॥
दास नानक ने साधु-संतों की शरण ली है,"

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਉ ਪਾਰਿ ਪਰਾਈ ॥੨॥੩੩॥
गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥२॥३३॥
गुरु की कृपा से उसने मृत्यु के भय को पार कर लिया है॥ २॥ ३३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਤਮ ਪਰਗਾਸੁ ॥
सदा सदा आतम परगासु ॥
उस व्यक्ति के मन में हमेशा के लिए (प्रभु ज्योति का) प्रकाश हो जाता है

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸੁ ॥੧॥
साधसंगति हरि चरण निवासु ॥१॥
जो व्यक्ति साधु की संगति में मिलकर श्रीहरि के चरणों में निवास करता है ॥ १॥

ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤਿ ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ॥
राम नाम निति जपि मन मेरे ॥
हे मेरे मन ! तू प्रतिदिन राम के नाम का जाप कर।

ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਕਿਲਵਿਖ ਜਾਹਿ ਸਭੇ ਮਨ ਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह तुझे हमेशा के लिए शीतल, शांति एवं सुख प्राप्त होगे और तेरे दुःख-क्लेश सब विनष्ट हो जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕੇ ਪੂਰਨ ਕਰਮ ॥
कहु नानक जा के पूरन करम ॥
हे नानक ! जिस जीवात्मा के पूर्ण भाग्य उदय होते हैं,"

ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ॥੨॥੩੪॥
सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥२॥३४॥
उसे सच्चा गुरु मिल जाता है और (गुरु द्वारा) पूर्ण परब्रह्म भी मिल जाता है। २॥ ३४॥

ਦੂਜੇ ਘਰ ਕੇ ਚਉਤੀਸ ॥
दूजे घर के चउतीस ॥
दूसरे घर के चौंतीस ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਾ ਕਾ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਬੇਲੀ ॥
जा का हरि सुआमी प्रभु बेली ॥
जिस जीवात्मा का बेली जगत का स्वामी हरि-प्रभु है,"

ਪੀੜ ਗਈ ਫਿਰਿ ਨਹੀ ਦੁਹੇਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥१॥ रहाउ ॥
उसका दुख-दर्द दूर हो जाता है और फिर कभी दुःखी नहीं होती ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਚਰਨ ਸੰਗਿ ਮੇਲੀ ॥
करि किरपा चरन संगि मेली ॥
अपनी कृपा करके प्रभु उसे अपने चरणों से मिला लेता है और

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਸੁਹੇਲੀ ॥੧॥
सूख सहज आनंद सुहेली ॥१॥
वह सहज सुख एवं आनंद प्राप्त कर लेती है तथा सदा के लिए सुखी होती है॥ १॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਅਤੋਲੀ ॥
साधसंगि गुण गाइ अतोली ॥
साधसंगति के भीतर वह प्रभु का यशोगान करके अतुलनीय हो जाती है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਭਈ ਅਮੋਲੀ ॥੨॥੩੫॥
हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥२॥३५॥
हे नानक ! हरि का ध्यान करने से वह मूल्यवान हो जाती है। ॥२॥ ३५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਤਸਰ ਏ ਖੇਲਤ ਸਭਿ ਜੂਐ ਹਾਰੇ ॥
काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥
"(हे बन्धु!) काम, क्रोध, मोह-माया का अभिमान एवं ईष्या इत्यादि विकार मैंने जुए के खेल में हार दिए हैं।

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਦਇਆ ਧਰਮੁ ਸਚੁ ਇਹ ਅਪੁਨੈ ਗ੍ਰਿਹ ਭੀਤਰਿ ਵਾਰੇ ॥੧॥
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥१॥
सत्य, संतोष, दया, धर्म एवं सच्चाई को मैंने अपने हृदय घर में प्रविष्ट कर लिया है॥१ ॥

ਜਨਮ ਮਰਨ ਚੂਕੇ ਸਭਿ ਭਾਰੇ ॥
जनम मरन चूके सभि भारे ॥
इसलिए मेरे जन्म-मरण के तमाम बोझ उतर गए हैं।

ਮਿਲਤ ਸੰਗਿ ਭਇਓ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਲੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥१॥ रहाउ ॥
सत्संगति में शामिल होकर मेरा मन निर्मल हो गया है। पूर्ण गुरु ने एक क्षण में ही मेरा संसार-सागर से उद्धार कर दिया है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਸਭ ਕੀ ਰੇਨੁ ਹੋਇ ਰਹੈ ਮਨੂਆ ਸਗਲੇ ਦੀਸਹਿ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥
सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥
मेरा मन सबकी चरण-धूलि हो गया है। हर कोई अब मुझे अपना प्यारा मित्र दिखाई देता है।

ਸਭ ਮਧੇ ਰਵਿਆ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਦਾਨੁ ਦੇਤ ਸਭਿ ਜੀਅ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ॥੨॥
सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥२॥
मेरा ठाकुर प्रभु सब में बसा हुआ है। वह समस्त जीवों को दान देकर उनकी परवरिश करता है॥ २॥

ਏਕੋ ਏਕੁ ਆਪਿ ਇਕੁ ਏਕੈ ਏਕੈ ਹੈ ਸਗਲਾ ਪਾਸਾਰੇ ॥
एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥
प्रभु एक है और वह एक ही सब जीवों में बना रहता है। इस समूचे जगत का विस्तार उस एक ईश्वर का ही है।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਹੋਏ ਸਗਲ ਸਾਧ ਜਨ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਬਹੁਤੁ ਉਧਾਰੇ ॥੩॥
जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥३॥
प्रभु का जाप एवं ध्यान करके सभी साध पुरुष बन गए हैं। उस एक ईश्वर के नाम की आराधना करने से अनेकों का उद्धार हो गया है॥ ३॥

ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਬਿਅੰਤ ਗੁਸਾਈ ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰੇ ॥
गहिर ग्मभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥
सृष्टि का मालिक गहरा, गंभीर एवं अनन्त है। प्रभु के अन्त का पारावर नहीं पाया जा सकता।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕ ਧਿਆਇ ਧਿਆਇ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਨਮਸਕਾਰੇ ॥੪॥੩੬॥
तुम्हरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥४॥३६॥
हे प्रभु ! तेरी कृपा से नानक तेरा गुणगान करता है और बार-बार तेरा ध्यान करके वह तुझे प्रणाम करता है॥ ४॥ ३६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਤੂ ਬਿਅੰਤੁ ਅਵਿਗਤੁ ਅਗੋਚਰੁ ਇਹੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਆਕਾਰੁ ॥
तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥
हे सबके मालिक ! तू अनन्त, अव्यक्त एवं अगोचर है और यह समूचा जगत तेरा आकार है।

ਕਿਆ ਹਮ ਜੰਤ ਕਰਹ ਚਤੁਰਾਈ ਜਾਂ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੁਝੈ ਮਝਾਰਿ ॥੧॥
किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥१॥
हम जीव भला क्या चतुराई कर सकते हैं, जब सबकुछ तुझ में ही है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪਨੇ ਬਾਲਿਕ ਰਾਖਹੁ ਲੀਲਾ ਧਾਰਿ ॥
मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥
हे मेरे सतगुरु ! अपने बालक की अपनी जगत लीला के अनुसार रक्षा कीजिए।

ਦੇਹੁ ਸੁਮਤਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे अगम्य, अपार ठाकुर ! मुझे सुमति प्रदान कीजिए तांकि मैं सदा तेरा गुणगान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੈਸੇ ਜਨਨਿ ਜਠਰ ਮਹਿ ਪ੍ਰਾਨੀ ਓਹੁ ਰਹਤਾ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥
जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥
जैसे जननी के गर्भ में प्राणी रहता तो है किन्तु प्रभु-नाम के सहारे जीवित बना रहता है।

ਅਨਦੁ ਕਰੈ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੈ ਨਾ ਪੋਹੈ ਅਗਨਾਰਿ ॥੨॥
अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥२॥
वह गर्भ में आनन्द करता है और श्वास-श्वास से प्रभु को याद करता है और जठराग्नि उसे स्पर्श नहीं करती ॥ २॥

ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਦਾਰਾ ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਇਨ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨਿਵਾਰਿ ॥
पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥
हे प्राणी ! तू पराया-धन, पराई नारी एवं पराई निन्दा में लगाए हुए स्नेह को त्याग दे।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੇਵੀ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੈ ਆਧਾਰਿ ॥੩॥
चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥३॥
पूर्ण गुरु का सहारा लेकर अपने अन्तर में प्रभु के चरण कमल की उपासना कर ॥ ३॥

ਗ੍ਰਿਹੁ ਮੰਦਰ ਮਹਲਾ ਜੋ ਦੀਸਹਿ ਨਾ ਕੋਈ ਸੰਗਾਰਿ ॥
ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥
घर, मन्दिर महल जो कुछ भी दिखाई देता है, इनमें से कोई भी तेरे साथ नहीं जाना।

ਜਬ ਲਗੁ ਜੀਵਹਿ ਕਲੀ ਕਾਲ ਮਹਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰਿ ॥੪॥੩੭॥
जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥४॥३७॥
जब तक तू इस घनघोर कलियुग में जीवित है, हे नानक ! तू प्रभु के नाम का ध्यान करता रह॥ ४॥ ३७ ॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੩ ਮਹਲਾ ੫
आसा घरु ३ महला ५
आसा महला ५ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਜ ਮਿਲਕ ਜੋਬਨ ਗ੍ਰਿਹ ਸੋਭਾ ਰੂਪਵੰਤੁ ਜੋਆਨੀ ॥
राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जोआनी ॥
राज्य, सम्पति, यौवन, घर, शोभा, रूपवंत जवानी,"

ਬਹੁਤੁ ਦਰਬੁ ਹਸਤੀ ਅਰੁ ਘੋੜੇ ਲਾਲ ਲਾਖ ਬੈ ਆਨੀ ॥
बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥
अत्याधिक धन, हाथी, घोड़े और लाखों रुपयों के मूल्य वाले जवाहरात लाल इत्यादि

ਆਗੈ ਦਰਗਹਿ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਛੋਡਿ ਚਲੈ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥੧॥
आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥१॥
आगे ईश्वर के दरबार में किसी काम नहीं आते, अभिमानी मनुष्य इसे (इहलोक) यहीं छोड़कर चला जाता है।॥ १॥

ਕਾਹੇ ਏਕ ਬਿਨਾ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥
एक ईश्वर के अतिरिक्त तुम अपना मन क्यों किसी दूसरे के साथ लगाते हो ?

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਜਾਗਤ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
उठते-बैठते, सोते-जागते सदा सदा ही हरि का ध्यान करते रहना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਬਚਿਤ੍ਰ ਸੁੰਦਰ ਆਖਾੜੇ ਰਣ ਮਹਿ ਜਿਤੇ ਪਵਾੜੇ ॥
महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े ॥
यदि कोई मनुष्य महा विचित्र सुन्दर अखाड़े जीतता है, यदि वह रणभूमि में जाकर युद्ध जीतता है और

ਹਉ ਮਾਰਉ ਹਉ ਬੰਧਉ ਛੋਡਉ ਮੁਖ ਤੇ ਏਵ ਬਬਾੜੇ ॥
हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥
अपने मुँह से वह इस प्रकार व्यर्थ बकवास करता है कि मैं हर किसी को जान से मार, बांध एवं मुक्त कर सकता हूँ

ਆਇਆ ਹੁਕਮੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕਾ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਏਕ ਦਿਹਾੜੇ ॥੨॥
आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥२॥
परन्तु जब परमात्मा का हुक्म आता है तो वह सबकुछ छोड़कर एक दिन संसार से चला जाता है॥ २॥

ਕਰਮ ਧਰਮ ਜੁਗਤਿ ਬਹੁ ਕਰਤਾ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥
करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥
मनुष्य अनेक युक्तियों द्वारा कर्म-धर्म करता है परन्तु रचयिता प्रभु को नहीं जानता।

ਉਪਦੇਸੁ ਕਰੈ ਆਪਿ ਨ ਕਮਾਵੈ ਤਤੁ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਨੈ ॥
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥
वह दूसरों को उपदेश करता है परन्तु खुद अनुसरण नहीं करता, वह शब्द के रहस्य को नहीं पहचानता।

ਨਾਂਗਾ ਆਇਆ ਨਾਂਗੋ ਜਾਸੀ ਜਿਉ ਹਸਤੀ ਖਾਕੁ ਛਾਨੈ ॥੩॥
नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥३॥
वह नग्न ही इस जगत में आया था और नग्न ही चला जाएगा, उसका धर्म-कर्म हाथी स्नान की तरह व्यर्थ है जैसे हाथी (स्नान करने के पश्चात् अपने ऊपर) मिट्टी डाल लेता है॥ ३॥

ਸੰਤ ਸਜਨ ਸੁਨਹੁ ਸਭਿ ਮੀਤਾ ਝੂਠਾ ਏਹੁ ਪਸਾਰਾ ॥
संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥
हे संतजनो, हे सज्जनो ! हे मित्रो ! सभी सुन लो यह समूचा जगत प्रसार झूठा है।

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਡੂਬੇ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮੁਏ ਗਵਾਰਾ ॥
मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥
मेरा-मेरा करते हुए अनेक मनुष्य (संसार सागर में) डूब गए हैं और मूर्ख खप-खप कर मर गए हैं।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੧॥੩੮॥
गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥४॥१॥३८॥
हे नानक ! गुरु से मिलकर मैंने प्रभु नाम का ध्यान किया है और सत्यनाम द्वारा मेरा उद्धार हो गया है॥ ४॥ १॥ ३८ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੫ ਮਹਲਾ ੫
रागु आसा घरु ५ महला ५
रागु आसा घरु ५ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭ੍ਰਮ ਮਹਿ ਸੋਈ ਸਗਲ ਜਗਤ ਧੰਧ ਅੰਧ ॥
भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥
जगत के धन्धों में अन्धी हो चुकी दुनिया माया के भ्रम में सोई हुई है।

ਕੋਊ ਜਾਗੈ ਹਰਿ ਜਨੁ ॥੧॥
कोऊ जागै हरि जनु ॥१॥
लेकिन कोई विरला प्रभु का भक्त ही जागता है॥ १॥

ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਮਗਨ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥
महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥
दुनिया महा-मोहिनी माया के मोह में मग्न है और इसे माया का प्रेम अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

ਕੋਊ ਤਿਆਗੈ ਵਿਰਲਾ ॥੨॥
कोऊ तिआगै विरला ॥२॥
कोई विरला मनुष्य ही माया के आकर्षण को त्यागता है॥ २॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਨੂਪ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮੰਤ ॥
चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥
प्रभु के चरण कमल अनूप हैं और हरि के संतों का मंत्र भी सुन्दर है।

ਕੋਊ ਲਾਗੈ ਸਾਧੂ ॥੩॥
कोऊ लागै साधू ॥३॥
कोई विरला साधु ही उनके साथ संलग्न होता है।॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਜਾਗੇ ਗਿਆਨ ਰੰਗਿ ॥
नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥
हे नानक ! सत्संगति में आकर ज्ञान के रंग में रंगकर वह जागता रहता है

ਵਡਭਾਗੇ ਕਿਰਪਾ ॥੪॥੧॥੩੯॥
वडभागे किरपा ॥४॥१॥३९॥
यदि किसी भाग्यशाली पुरुष पर भगवान की कृपा हो जाए। ४॥ १॥ ३६ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੬ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥
रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਨਾ ਸੂਖੁ ਸਹਜੁ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥
जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥
हे स्वामी ! जो कुछ तुझे उपयुक्त लगता है, वही हमें मंजूर है और तेरी इच्छा ही हमारे हृदय में सहज सुख प्रदान करती है।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਅਪਾਰਾ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਰੇ ਕੋਈ ॥੧॥
करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥१॥
तू सबकुछ करने एवं करवाने में समर्थ है, हे प्रभु ! तेरे अलावा दूसरा समर्थ कोई नहीं ॥ १॥

ਤੇਰੇ ਜਨ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥
तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥
हे प्रभु ! तेरे सेवक प्रेम से तेरा गुणगान करते हैं।

ਮਸਲਤਿ ਮਤਾ ਸਿਆਣਪ ਜਨ ਕੀ ਜੋ ਤੂੰ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥१॥ रहाउ ॥
हे नाथ ! जो कुछ तुम करते अथवा करवाते हो, वही तेरे भक्तों हेतु सर्वोत्तम सलाह, इरादा एवं बुद्धिमत्ता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਪਿਆਰੇ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥
अम्रितु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥
हे मेरे प्रियतम ! तेरा नाम अमृत के तुल्य है और साधसंगति में मैंने इस अमृत रस को प्राप्त किया है।

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਇ ਸੇਈ ਜਨ ਪੂਰੇ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ॥੨॥
त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥२॥
जो जीव सुखनिधान हरि का गुणगान करते हैं वे पूर्ण होकर तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं।॥ २॥

ਜਾ ਕਉ ਟੇਕ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਕਉ ਨਾਹੀ ਚਿੰਤਾ ॥
जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥
हे स्वामी ! जिसे तेरा सहारा मिल गया है, उसे कोई चिन्ता नहीं रहती।

ਜਾ ਕਉ ਦਇਆ ਤੁਮਾਰੀ ਹੋਈ ਸੇ ਸਾਹ ਭਲੇ ਭਗਵੰਤਾ ॥੩॥
जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥३॥
हे भगवान् ! जिस पर तुम अपनी दया करते हो, वे (नाम-धन से) भले साहूकार एवं भाग्यशाली हैं।॥ ३॥

ਭਰਮ ਮੋਹ ਧ੍ਰੋਹ ਸਭਿ ਨਿਕਸੇ ਜਬ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥
भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥
हे दुनिया बनाने वाले ! जब से मैंने तेरे दर्शन किए हैं, (मेरी) दुविधा, मोह एवं छल-कपट सब नष्ट हो गए हैं।

ਵਰਤਣਿ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕੀਨਾ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਰੰਗਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੧॥੪੦॥
वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥४॥१॥४०॥
हे नानक ! मैंने सत्य नाम को अपनी दिनचर्या बना लिया है और में हरि नाम के रंग में समा गया हूँ॥ ४॥ १॥ ४०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ਪਰਾਈ ਆਪਣਾ ਕੀਤਾ ਪਾਵੈ ॥
जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥
निन्दक व्यक्ति दूसरों के जन्म-जन्मांतरों के विकारों की मैल धोता है और अपने किए कर्मों का फल भोगता है।

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਦਰਗਹ ਢੋਈ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਇ ਪਚਾਵੈ ॥੧॥
ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥१॥
यहाँ (इहलोक में) उसे सुख नहीं और न ही उसे प्रभु के दरबार में निवास मिलता है। उसे यमपुरी में पीड़ित किया जाता है॥ १॥

ਨਿੰਦਕਿ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥

निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥

निन्दा करने वाला अपना मूल्यवान मानव-जीवन व्यर्थ ही गंवा लेता है।

ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕਾਹੂ ਬਾਤੈ ਆਗੈ ਠਉਰ ਨ ਪਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥

वह किसी भी बात में सफल नहीं हो सकता और आगे भी उसे कोई स्थान नहीं मिलता॥ १॥ रहाउ॥

ਕਿਰਤੁ ਪਇਆ ਨਿੰਦਕ ਬਪੁਰੇ ਕਾ ਕਿਆ ਓਹੁ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥

किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥

बेचारे निन्दक को अपने किए पूर्व-जन्मों के कर्मो का फल मिलता है लेकिन बेचारे निन्दक के भी वश की बात नहीं।

ਤਹਾ ਬਿਗੂਤਾ ਜਹ ਕੋਇ ਨ ਰਾਖੈ ਓਹੁ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰਾ ॥੨॥

तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥२॥

वह वहाँ नष्ट हुआ है, जहाँ उसकी कोई रक्षा नहीं कर सकता। वह किसके समक्ष पुकार करे ? ॥२॥

ਨਿੰਦਕ ਕੀ ਗਤਿ ਕਤਹੂੰ ਨਾਹੀ ਖਸਮੈ ਏਵੈ ਭਾਣਾ ॥
निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥
निन्दक की कहीं भी गति नहीं होती, प्रभु की यही इच्छा है।

ਜੋ ਜੋ ਨਿੰਦ ਕਰੇ ਸੰਤਨ ਕੀ ਤਿਉ ਸੰਤਨ ਸੁਖੁ ਮਾਨਾ ॥੩॥
जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥३॥
ज्यों ज्यों संतों की निन्दा होती है, त्यों त्यों संत मन में सुख अनुभव करते हैं।॥ ३॥

ਸੰਤਾ ਟੇਕ ਤੁਮਾਰੀ ਸੁਆਮੀ ਤੂੰ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸਹਾਈ ॥
संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥
हे स्वामी ! संतों को तेरा ही सहारा है और तू ही संतों का सहायक है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਹਰਿ ਰਾਖੇ ਨਿੰਦਕ ਦੀਏ ਰੁੜਾਈ ॥੪॥੨॥੪੧॥
कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥४॥२॥४१॥
हे नानक ! संतों की प्रभु (स्वयं) रक्षा करता है और निन्दकों को निन्दा-की बाढ़ में बहा देता है॥ ४ ॥ २॥ ४१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਬਾਹਰੁ ਧੋਇ ਅੰਤਰੁ ਮਨੁ ਮੈਲਾ ਦੁਇ ਠਉਰ ਅਪੁਨੇ ਖੋਏ ॥
बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥
जो व्यक्ति बाहर से शरीर धो लेता है किन्तु भीतर से उसका मन मैला रहता है, वह लोक-परलोक दोनों गंवा लेता है।

ਈਹਾ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਆਗੈ ਮੁਸਿ ਮੁਸਿ ਰੋਏ ॥੧॥
ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥१॥
मृत्युलोक में वह काम, क्रोध एवं मोह में लीन रहता है और आगे परलोक में फूट-फूट कर अश्रु बहाता है॥ १॥

ਗੋਵਿੰਦ ਭਜਨ ਕੀ ਮਤਿ ਹੈ ਹੋਰਾ ॥
गोविंद भजन की मति है होरा ॥
गोविन्द के भजन की मति अन्य प्रकार की होती है।

ਵਰਮੀ ਮਾਰੀ ਸਾਪੁ ਨ ਮਰਈ ਨਾਮੁ ਨ ਸੁਨਈ ਡੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥१॥ रहाउ ॥

साँप का विष नष्ट करने से साँप नहीं मरता, बहरा मनुष्य प्रभु का नाम नहीं सुनता, चाहे कोई जोर-जोर से जपता रहे ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਾਇਆ ਕੀ ਕਿਰਤਿ ਛੋਡਿ ਗਵਾਈ ਭਗਤੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਨੈ ॥

माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥

वह जीवनयापन हेतु धन कमाने का उद्यम त्याग देता है और वह प्रभु भक्ति का महत्व भी नहीं जानता।

ਬੇਦ ਸਾਸਤ੍ਰ ਕਉ ਤਰਕਨਿ ਲਾਗਾ ਤਤੁ ਜੋਗੁ ਨ ਪਛਾਨੈ ॥੨॥

बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥२॥

वह वेदों एवं शास्त्रों के उपदेश को छोड़ने लग गया है और परम तत्व प्रभु-मिलाप की विधि को नहीं पहचानता॥ २॥

ਉਘਰਿ ਗਇਆ ਜੈਸਾ ਖੋਟਾ ਢਬੂਆ ਨਦਰਿ ਸਰਾਫਾ ਆਇਆ ॥

उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥

जब कोई खोटा सिक्का सर्राफों की दृष्टि में आता है तो उसका खोट स्पष्ट दिखाई देता है,"

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਨੈ ਉਸ ਤੇ ਕਹਾ ਛਪਾਇਆ ॥੩॥

अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥३॥

वैसे ही कोई प्राणी अपने भीतरी अवगुण छिपा नहीं सकता, अन्तर्यामी प्रभु सबकुछ जानता है॥ ३॥

ਕੂੜਿ ਕਪਟਿ ਬੰਚਿ ਨਿੰਮੁਨੀਆਦਾ ਬਿਨਸਿ ਗਇਆ ਤਤਕਾਲੇ ॥

कूड़ि कपटि बंचि निमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥

झूठ, कपट एवं छल में लीन बिना बुनियाद का मनुष्य तत्काल ही नष्ट हो जाता है।

ਸਤਿ ਸਤਿ ਸਤਿ ਨਾਨਕਿ ਕਹਿਆ ਅਪਨੈ ਹਿਰਦੈ ਦੇਖੁ ਸਮਾਲੇ ॥੪॥੩॥੪੨॥

सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥४॥३॥४२॥

(हे भाई) नानक ने यह सब सत्य ही कहा है। अपने हृदय में इस तथ्य को देख एवं स्मरण कर ॥ ४॥ ३॥ ४२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕਰਤ ਹੋਵੈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਚੈ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰੇ ॥

उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥

नाम-सिमरन का उद्यम करने से मन निर्मल हो जाता है और फिर मनुष्य अपना अहंकार छोड़कर प्रभु की रज़ा में चलने का नाच करता रहता है।

ਪੰਚ ਜਨਾ ਲੇ ਵਸਗਤਿ ਰਾਖੈ ਮਨ ਮਹਿ ਏਕੰਕਾਰੇ ॥੧॥

पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥१॥

ऐसा मनुष्य पाँच विकारों-काम, क्रोध,मोह, लोभ एवं अभिमान को वश में रखता है और अपने मन में एक ईश्वर को याद करता रहता है॥ १॥

ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਨਿਰਤਿ ਕਰੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ॥

तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥

हे प्रभु ! तेरा भक्त तेरी खुशी में नाचता एवं तेरा गुणगान करता है।

ਰਬਾਬੁ ਪਖਾਵਜ ਤਾਲ ਘੁੰਘਰੂ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਵਜਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥१॥ रहाउ ॥

वह प्रभु नाम के रबाब, पखावज, तबला, घुंघरू (इत्यादि वाद्ययंत्र) के माध्यम से अनहद शब्द (सुनता एवं) बजाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਮਨੁ ਪਰਬੋਧੈ ਅਪਨਾ ਪਾਛੈ ਅਵਰ ਰੀਝਾਵੈ ॥

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥

सर्वप्रथम, प्रभु-भक्त अपने मन को उपदेश देता है फिर दूसरों को समझा कर रिझाता है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਪੁ ਹਿਰਦੈ ਜਾਪੈ ਮੁਖ ਤੇ ਸਗਲ ਸੁਨਾਵੈ ॥੨॥

राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥२॥

वह अपने हृदय में राम नाम का जाप करता है और फिर मुख से दूसरों को वह जाप सुनाता है॥ २॥

ਕਰ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਚਰਨ ਪਖਾਰੈ ਸੰਤ ਧੂਰਿ ਤਨਿ ਲਾਵੈ ॥

कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥

वह संतों को मिलकर उनके चरण धोता है। संतों की चरण-धूलि वह अपने शरीर पर लगाता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰੇ ਗੁਰ ਆਗੈ ਸਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਵੈ ॥੩॥

मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥३॥

वह अपना मन-तन गुरु के समक्ष समर्पित कर देता है और सत्य (नाम) पदार्थ (धन) को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਜੋ ਜੋ ਸੁਨੈ ਪੇਖੈ ਲਾਇ ਸਰਧਾ ਤਾ ਕਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਭਾਗੈ ॥
जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥
जो भी मनुष्य श्रद्धापूर्वक गुरु के दर्शन करता है और उससे हरिनाम सुनता है, उसका जन्म-मरण का दुःख भाग जाता है।

ਐਸੀ ਨਿਰਤਿ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗੈ ॥੪॥੪॥੪੩॥
ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥४॥४॥४३॥
हे नानक ! ऐसा नृत्य नरक मिटा देता है और गुरुमुख हमेशा जागता रहता है॥ ४॥ ४॥ ४३ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਧਮ ਚੰਡਾਲੀ ਭਈ ਬ੍ਰਹਮਣੀ ਸੂਦੀ ਤੇ ਸ੍ਰੇਸਟਾਈ ਰੇ ॥
अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥
हे भाई ! नामामृत की अनुकंपा से अधम चाण्डाल वृति ब्राह्मणी बन गई है और एक शूद्र जाति से कुलीना बन गई है।

ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸੀ ਸਖਨੀ ਲਹਬਰ ਬੂਝੀ ਖਾਈ ਰੇ ॥੧॥
पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥१॥
मेरी लोभ वृति पहले जो पाताल से लेकर आकाश तक सारे जगत के पदार्थ लेकर भी भूखी रहती थी अब उसकी तृष्णाग्नि बुझ गई है॥ १॥

ਘਰ ਕੀ ਬਿਲਾਈ ਅਵਰ ਸਿਖਾਈ ਮੂਸਾ ਦੇਖਿ ਡਰਾਈ ਰੇ ॥
घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥
संतोषहीन वृति घर की बिल्ली को अब गुरु से अलग ही उपदेश मिला है और वह दुनिया के पदार्थों रूपी चूहे को देखकर भयभीत हो जाती है।

ਅਜ ਕੈ ਵਸਿ ਗੁਰਿ ਕੀਨੋ ਕੇਹਰਿ ਕੂਕਰ ਤਿਨਹਿ ਲਗਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु ने उसके अहंकार रूपी शेर को विनम्रता रूपी बकरी के अधीन कर दिया है। उसकी तमोगुणी इन्द्रियों रूपी कुत्तों को सतोगुणी दिशा में लगा दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਝੁ ਥੂਨੀਆ ਛਪਰਾ ਥਾਮ੍ਹ੍ਹਿਆ ਨੀਘਰਿਆ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਰੇ ॥
बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥
हे भाई ! प्रभु-भक्त का चित्त रूपी छप्पर सांसारिक पदार्थों की तृष्णाओं की टेक के बिना थम गया है। उसके भटकते चित ने (ईश्वर चरणों में) निवास प्राप्त कर लिया है।

ਬਿਨੁ ਜੜੀਏ ਲੈ ਜੜਿਓ ਜੜਾਵਾ ਥੇਵਾ ਅਚਰਜੁ ਲਾਇਆ ਰੇ ॥੨॥

बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥२॥

स्वर्णकारों के बिना ही चित का रत्न-जड़ित आभूषण तैयार हो गया तथा उस चित-आभूषण में प्रभु-नाम का अदभुत नग जड़ दिया गया है॥ २॥

ਦਾਦੀ ਦਾਦਿ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ਚੂਪੀ ਨਿਰਨਉ ਪਾਇਆ ਰੇ ॥

दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥

हे भाई ! शिकायतकर्ता न्याय कदापि प्राप्त नहीं कर सकता किन्तु अब प्रभु में लीन होने से शांतचित्त को न्याय मिलने लगा।

ਮਾਲਿ ਦੁਲੀਚੈ ਬੈਠੀ ਲੇ ਮਿਰਤਕੁ ਨੈਨ ਦਿਖਾਲਨੁ ਧਾਇਆ ਰੇ ॥੩॥

मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु धाइआ रे ॥३॥

ईश्वर नाम की अनुकंपा से मनुष्य को लौकिक पदार्थ अब ऐसे दिखने लगे हैं मानो वह मूल्यवान गलीचों पर बैठा हुआ मृतक है जो अब किसी को भी नेत्र नहीं दिखा सकता॥ ३॥

ਸੋਈ ਅਜਾਣੁ ਕਹੈ ਮੈ ਜਾਨਾ ਜਾਨਣਹਾਰੁ ਨ ਛਾਨਾ ਰੇ ॥
सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥
वह मूर्ख है जो कहता है कि मैं जानता हूँ। जानने वाला छिपा हुआ नहीं रहता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਅਮਿਉ ਪੀਆਇਆ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਬਿਗਸਾਨਾ ਰੇ ॥੪॥੫॥੪੪॥
कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥४॥५॥४४॥
हे नानक ! गुरु ने मुझे अमृतरस पिलवाया है। प्रभु के प्रेम-रस में भीगकर अब मैं आनंदित हो गया हूँ॥ ४॥ ५॥ ४४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਬਿਸਾਰੇ ਅਉਗਨ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰਿਆ ॥
बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥
परमात्मा ने मेरे (माया संबंधी) बन्धन काट दिए हैं, मेरे अवगुण भुला दिए हैं और इस प्रकार अपने विरद् की पालना की है।

ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਮਾਤ ਪਿਤ ਨਿਆਈ ਬਾਰਿਕ ਜਿਉ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਿਆ ॥੧॥
होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥१॥
वह माता-पिता की भाँति मुझ पर कृपालु हुए हैं और उन्होंने अपनी संतान की भाँति मेरा पालन-पोषण किया है॥ १॥

ਗੁਰਸਿਖ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਿ ॥
गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥
गुरु-परमेश्वर ने अपने सिक्खों की रक्षा की है और

ਕਾਢਿ ਲੀਏ ਮਹਾ ਭਵਜਲ ਤੇ ਅਪਨੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी दया-दृष्टि से देखकर उन्हें विषम संसार-सागर में से बाहर निकाल लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਜਮ ਤੇ ਛੁਟੀਐ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥
जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥
जिस परमात्मा का सुमिरन करने से हमें मृत्यु से मुक्ति मिल जाती है और लोक-परलोक में सुख मिलता है,"

ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਜਪਹੁ ਜਪੁ ਰਸਨਾ ਨੀਤ ਨੀਤ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥੨॥

सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥२॥

हे भाई ! प्रत्येक सांस एवं ग्रास द्वारा प्रभु नाम का रसना से जाप जपते रहना चाहिए और नित्य ही उसका गुणगान करना चाहिए॥ २॥

ਭਗਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸਾਧਸੰਗਿ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ॥

भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे ॥

प्रभु की प्रेम-भक्ति से मुझे परम पद मिल गया है और साधु की संगति से दुख दूर हो गए हैं।

ਛਿਜੈ ਨ ਜਾਇ ਕਿਛੁ ਭਉ ਨ ਬਿਆਪੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਗਾਠੇ ॥੩॥

छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥३॥

मैंने निर्मल हरि नाम रूपी धन अपनी गांठ में बांध लिया है। इस हरि नाम रूपी धन का कभी नाश नहीं होता, न ही यह कहीं गुम होता है और न ही इसे चोर इत्यादि का डर होता है॥ ३॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਸਹਾਈ ਇਤ ਉਤ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥

अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥

लोक-परलोक में रक्षा करने वाला प्रभु अन्तकाल तक सहायक होता है।

ਪ੍ਰਾਨ ਮੀਤ ਹੀਤ ਧਨੁ ਮੇਰੈ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੪॥੬॥੪੫॥

प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥४॥६॥४५॥

प्रभु ही मेरे प्राण, मित्र, शुभचिंतक एवं धन-दौलत है। हे नानक ! मैं सदा ही उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥ ६॥ ४५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਜਾ ਤੂੰ ਸਾਹਿਬੁ ਤਾ ਭਉ ਕੇਹਾ ਹਉ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥

जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥

हे परमपिता ! जब तू मेरा मालिक है तो फिर मुझे डर कैसा ? तेरे अलावा मैं किसकी स्तुति करूँ?

ਏਕੁ ਤੂੰ ਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਮੈ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ॥੧॥

एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥१॥

जब एक तू ही मेरा है, तो मेरे पास सब कुछ है तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई नहीं॥ १॥

ਬਾਬਾ ਬਿਖੁ ਦੇਖਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥
बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥
हे बाबा ! मैंने देख लिया है कि यह संसार विष रूप है।

ਰਖਿਆ ਕਰਹੁ ਗੁਸਾਈ ਮੇਰੇ ਮੈ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥१॥ रहाउ ॥
हे गुसाई ! मेरी रक्षा कीजिए, तेरा नाम ही मेरे जीवन का आधार है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾਣਹਿ ਬਿਰਥਾ ਸਭਾ ਮਨ ਕੀ ਹੋਰੁ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ॥
जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥
हे नाथ ! तुम मेरे मन की हरेक अवस्था जानते हो। इसलिए, मैं किसके पास जाकर इसे कहूँ एवं सुनाऊँ ?"

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਉਰਾਇਆ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥
विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥२॥
नाम के बिना समूचा जगत बावला हो गया है। यदि प्रभु नाम मिल जाए तो यह सुख पाता है॥ २॥

ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਕਿਸੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ਜਿ ਕਹਣਾ ਸੁ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਪਾਸਿ ॥
किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥
मैं क्या कहूँ? मैं अपनी अवस्था किसे बताऊँ ? जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ, वह मैं अपने प्रभु जी के पास कहता हूँ।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤੈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੇਰੀ ਆਸ ॥੩॥
सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥३॥
हे मालिक ! जो कुछ तुमने किया है, जगत में सब कुछ तेरा किया ही हो रहा है। मुझे सदैव ही तेरी आशा है॥ ३॥

ਜੇ ਦੇਹਿ ਵਡਿਆਈ ਤਾ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਇਤ ਉਤ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਉ ॥
जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥
यदि तुम मान-प्रतिष्ठा प्रदान करते हो तो यह तेरी मान-प्रतिष्ठा है। लोक-परलोक में मैं तुझे ही याद करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤੇ ਮੈ ਤਾਣੁ ਤੇਰਾ ਇਕੁ ਨਾਉ ॥੪॥੭॥੪੬॥
नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥४॥७॥४६॥
नानक का प्रभु सदैव ही सुखदाता है। मेरा बल एक तेरा ही नाम है॥ ४॥ ७॥ ४६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰਾ ਠਾਕੁਰ ਏਹੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਜਨਹਿ ਪੀਓ ॥
अम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥
हे मेरे ठाकुर ! तेरा नाम अमृत है और यह महा रस तेरे सेवक ने पान किया है।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਚੂਕੇ ਭੈ ਭਾਰੇ ਦੁਰਤੁ ਬਿਨਾਸਿਓ ਭਰਮੁ ਬੀਓ ॥੧॥
जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥१॥
मेरे जन्म-जन्मांतरों के पापों का भयानक बोझ नाश हो गया है और छैतवाद की दुविधा भी चली गई है॥ १॥

ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤ ਮੈ ਜੀਓ ॥
दरसनु पेखत मै जीओ ॥
हे मालिक ! तेरे दर्शन करके मैं जीवित रहता हूँ।

ਸੁਨਿ ਕਰਿ ਬਚਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨੁ ਤਨੁ ਮੇਰਾ ਠਾਰੁ ਥੀਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे सच्चे गुरु ! तेरे वचन सुनने से मेरा मन एवं तन शीतल हो गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਭਇਓ ਸਾਧਸੰਗੁ ਏਹੁ ਕਾਜੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਆਪਿ ਕੀਓ ॥
तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥
हे परमेश्वर ! तेरी कृपा से मुझे साधसंगत मिली है और यह शुभ कार्य तूने स्वयं ही किया है।

ਦਿੜੁ ਕਰਿ ਚਰਣ ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੇ ਸਹਜੇ ਬਿਖਿਆ ਭਈ ਖੀਓ ॥੨॥
दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥२॥
मैंने तेरे चरण कसकर पकड़ लिए हैं और माया का विष सहज ही दूर हो गया है॥ २॥

ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰਾ ਏਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਮੰਤ੍ਰੁ ਲੀਓ ॥
सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ ॥
हे प्रभु! तेरा नाम सुखों का भण्डार है। यह अमर मंत्र मैंने गुरदेव से प्राप्त किया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੋਹਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਤਾਪੁ ਸੰਤਾਪੁ ਮੇਰਾ ਬੈਰੁ ਗੀਓ ॥੩॥
करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥३॥
अपनी कृपा करके सतिगुरु ने मुझे यह (मंत्र) प्रदान किया है और मेरा ताप-संताप एवं शत्रु नाश हो गए हैं।॥ ३॥

ਧੰਨੁ ਸੁ ਮਾਣਸ ਦੇਹੀ ਪਾਈ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਮੇਲਿ ਲੀਓ ॥

धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥

यह मानव-शरीर जो मुझे मिला है वह धन्य है, क्योंकि इसकी बदौलत ही मेरे प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਕਲਿਜੁਗੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੀਓ ॥੪॥੮॥੪੭॥

धंनु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥४॥८॥४७॥

यह कलियुग का समय धन्य है जिसमें साधसंगत में प्रभु का भजन किया जाता है। हे नानक ! प्रभु का नाम ही मेरे हृदय का आधार है॥ ४ ॥ ८॥ ४७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਗੈ ਹੀ ਤੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੂਆ ਅਵਰੁ ਕਿ ਜਾਣੈ ਗਿਆਨਾ ॥
आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥
सबकुछ पहले से ही नियत (किया) हुआ है। सोच-विचार, ज्ञान के द्वारा इससे अधिक क्या जाना जा सकता है ?"

ਭੂਲ ਚੂਕ ਅਪਨਾ ਬਾਰਿਕੁ ਬਖਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਭਗਵਾਨਾ ॥੧॥
भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥१॥
परब्रह्म भगवान ने अपने बालक की भूल-चूक को क्षमा कर दिया है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਦਇਆਲਾ ਮੋਹਿ ਦੀਨ ਕਉ ਰਾਖਿ ਲੀਆ ॥
सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥
मेरा सतिगुरु मुझ पर सदैव ही दयालु है। उसने मुझ दीन को बचा लिया है।

ਕਾਟਿਆ ਰੋਗੁ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अम्रितु मुखि नामु दीआ ॥१॥ रहाउ ॥
उसने मेरा रोग काट दिया है और मेरे मुँह में हरि का नामामृत डाल दिया है जिससे मुझे महा सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਪਾਪ ਮੇਰੇ ਪਰਹਰਿਆ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ਮੁਕਤ ਭਏ ॥
अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥
"(हे बन्धु!) सतिगुरु ने मेरे अनेक पाप काट दिए हैं, मेरे (विकारों के) बन्धन काट दिए हैं और मुझे मोक्ष मिल गया है।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਮਹਾ ਘੋਰ ਤੇ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਗੁਰਿ ਕਾਢਿ ਲੀਏ ॥੨॥
अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥२॥
गुरु ने मेरी भुजा पकड़कर मुझे महा भयानक अंधकूप से बाहर निकाल लिया है॥ २॥

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਸਗਲ ਭਉ ਮਿਟਿਆ ਰਾਖੇ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥
निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥
मैं निडर हो गया हूँ, मेरे तमाम भय नाश हो गए हैं। सारी दुनिया की रक्षा करने वाले ने मुझे बचा लिया है।

ਐਸੀ ਦਾਤਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕਾਰਜ ਸਗਲ ਸਵਾਰੇ ॥੩॥
ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥३॥
हे मेरे प्रभु ! मुझ पर तेरी ऐसी अनुकंपा हुई है कि मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।॥ ३॥

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਸਾਹਿਬ ਮਨਿ ਮੇਲਾ ॥
गुण निधान साहिब मनि मेला ॥
हे नानक ! गुणनिधान प्रभु का मेरे हृदय में मिलन हो गया है और

ਸਰਣਿ ਪਇਆ ਨਾਨਕ ਸੋਹੇਲਾ ॥੪॥੯॥੪੮॥
सरणि पइआ नानक सोहेला ॥४॥९॥४८॥
उसकी शरण लेने से मैं सुखी हो गया हूँ॥ ४॥ ६॥ ४८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਤੂੰ ਵਿਸਰਹਿ ਤਾਂ ਸਭੁ ਕੋ ਲਾਗੁ ਚੀਤਿ ਆਵਹਿ ਤਾਂ ਸੇਵਾ ॥
तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥
हे जग के रचयिता ! जब तू भूल जाता है तो हर कोई मेरा शत्रु बन जाता है परन्तु जब मैं तेरा नाम याद करता हूँ तो सभी मेरी सेवा-सत्कार करते हैं।

ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਊ ਦੂਜਾ ਸੂਝੈ ਸਾਚੇ ਅਲਖ ਅਭੇਵਾ ॥੧॥
अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥१॥
हे सत्य के पुंज, अलक्ष्य, अभेद परमात्मा ! तेरे बिना मैं किसी को नहीं जानता ॥ १॥

ਚੀਤਿ ਆਵੈ ਤਾਂ ਸਦਾ ਦਇਆਲਾ ਲੋਗਨ ਕਿਆ ਵੇਚਾਰੇ ॥
चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥
हे साहिब ! जब मैं तुझे चित्त में याद करता हूँ तो तुझे हमेशा ही दयालु पाता हूँ। बेचारे लोग मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं ?

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਹੁ ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥१॥ रहाउ ॥
जब सभी जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं तो फिर बतलाओ मैं किसे बुरा अथवा किसे भला कह सकता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਤੇਰਾ ਆਧਾਰਾ ਹਾਥ ਦੇਇ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ॥
तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥
हे स्वामी ! तेरी ही टेक है, तू ही मेरा आधार है। अपना हाथ देकर तुम मेरी रक्षा करते हो।

ਜਿਸੁ ਜਨ ਊਪਰਿ ਤੇਰੀ ਕਿਰਪਾ ਤਿਸ ਕਉ ਬਿਪੁ ਨ ਕੋਊ ਭਾਖੈ ॥੨॥
जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥२॥
जिस भक्त पर तेरी कृपा है, उसे कोई दुःख-क्लेश निगल नहीं सकता॥ २॥

ਓਹੋ ਸੁਖੁ ਓਹਾ ਵਡਿਆਈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥
हे प्रभु जी ! जो बात तेरे अपने मन में अच्छी लगती है, वही मेरे लिए सुख है, वही मेरे लिए मान-प्रतिष्ठा है।

ਤੂੰ ਦਾਨਾ ਤੂੰ ਸਦ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ॥੩॥
तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥३॥
हे मालिक ! तुम चतुर हो, तुम सदैव ही मेहरबान हो। तेरा नाम प्राप्त करके मैं सुख भोगता हूँ॥ ३ ॥

ਤੁਧੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ॥
तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
तेरे समक्ष मेरी यही प्रार्थना है मेरे प्राण एवं शरीर सभी तेरी देन हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਕੋਈ ਨਾਉ ਨ ਜਾਣੈ ਮੇਰਾ ॥੪॥੧੦॥੪੯॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥४॥१०॥४९॥
नानक का कथन है कि हे मालिक ! सब तेरी बड़ाई है, मेरा तो कोई नाम तक नहीं जानता ॥ ४॥ १०॥ ४६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ॥
करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥
हे अन्तर्यामी प्रभु ! ऐसी कृपा करो तांकि साधसंगत में रहने से हरि मिल जाए।

ਖੋਲਿ ਕਿਵਾਰ ਦਿਖਾਲੇ ਦਰਸਨੁ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਈਐ ॥੧॥
खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥१॥
यदि अज्ञानता के कपाट खोलकर प्रभु अपना दर्शन कराता है तो प्राणी दोबारा जन्मों के चक्र में नहीं पड़ता॥ १॥

ਮਿਲਉ ਪਰੀਤਮ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੇ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਹਰਉ ਰੇ ॥
मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥
यदि प्रियतम स्वामी से मिलन हो जाए तो अपने सभी दुःख दूर कर लूं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਨਿ੍ ਰਿਦੈ ਅਰਾਧਿਆ ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤਰਉ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥१॥ रहाउ ॥
जिन्होंने अपने हृदय में परमात्मा की आराधना की है, उनकी संगति करने से शायद में भी भवसागर से पार हो जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਉਦਿਆਨ ਪਾਵਕ ਸਾਗਰ ਭਏ ਹਰਖ ਸੋਗ ਮਹਿ ਬਸਨਾ ॥
महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥
यह संसार एक महा भयानक जंगल एवं अग्नि का सागर है, जिसमें प्राणी हमेशा हर्ष-शोक में बसते हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿ ਭਇਆ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਪਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ॥੨॥
सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अम्रितु हरि रसना ॥२॥
सतिगुरु को मिलने से मन निर्मल हो गया है और रसना हरि-नामामृत का जाप करती है॥ २॥

ਤਨੁ ਧਨੁ ਥਾਪਿ ਕੀਓ ਸਭੁ ਅਪਨਾ ਕੋਮਲ ਬੰਧਨ ਬਾਂਧਿਆ ॥
तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ ॥
हे भाई ! इस तन एवं धन को अपना मानकर मनुष्य (मोह-माया के) मधुर-मीठे बन्धनों में बंधे रहते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਭਏ ਜਨ ਮੁਕਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ॥੩॥
गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥३॥
लेकिन जिन लोगों ने हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना की है, वे गुरु की दया से बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर गए हैं।॥ ३॥

ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖਨਹਾਰੈ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਭਾਣੇ ॥
राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥
रक्षक प्रभु उनकी रक्षा करता है, जो अपने प्रभु को भले लगते हैं।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰਾ ਦਾਤੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੇ ॥੪॥੧੧॥੫੦॥
जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥४॥११॥५०॥
नानक का कथन है कि हे दाता प्रभु ! यह आत्मा एवं शरीर सब तेरा दिया हुआ है, मैं तुझ पर सदैव कुर्बान हूँ॥ ४॥ ११॥ ५०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮੋਹ ਮਲਨ ਨੀਦ ਤੇ ਛੁਟਕੀ ਕਉਨੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਭਇਓ ਰੀ ॥
मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥
हे जीव रूपी नारी ! तुझ पर कौन-सी करुणा-दृष्टि हुई है कि तू मन को मैला करने वाली मोह की नींद से छूट गई है।

ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਤੁਧੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਤੇਰਾ ਆਲਸੁ ਕਹਾ ਗਇਓ ਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥१॥ रहाउ ॥
महा मोहिनी तुझे प्रभावित नहीं करती, तेरा आलस्य किधर चला गया है ? ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਗਾਖਰੋ ਸੰਜਮਿ ਕਉਨ ਛੁਟਿਓ ਰੀ ॥
कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥
किस संयम के माध्यम से तुझे दुखदायी काम, क्रोध एवं अहंकार से छुटकारा मिल गया है ?"

ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ਅਸੁਰ ਤ੍ਰੈ ਗੁਨੀਆ ਸਗਲੋ ਭਵਨੁ ਲੁਟਿਓ ਰੀ ॥੧॥
सुरि नर देव असुर त्रै गुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥१॥
हे बहन ! भद्रपुरुष, देव, दैत्य समस्त त्रिगुणात्मक जीव-समूचा संसार ही इन्होंने लूट लिया है॥ १॥

ਦਾਵਾ ਅਗਨਿ ਬਹੁਤੁ ਤ੍ਰਿਣ ਜਾਲੇ ਕੋਈ ਹਰਿਆ ਬੂਟੁ ਰਹਿਓ ਰੀ ॥
दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥
हे सखी ! जब जंगल को अग्नि लगती है तो बहुत सारा घास-फूस जल जाता है, कोई विरला ही हरित पौधा बचता है।

ਐਸੋ ਸਮਰਥੁ ਵਰਨਿ ਨ ਸਾਕਉ ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਜਾਤ ਨ ਕਹਿਓ ਰੀ ॥੨॥
ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥२॥
मेरा स्वामी ऐसा सामथ्र्य है कि में उसका वर्णन नहीं कर सकता। उसकी उपमा कोई कह नहीं सकता ॥ २॥

ਕਾਜਰ ਕੋਠ ਮਹਿ ਭਈ ਨ ਕਾਰੀ ਨਿਰਮਲ ਬਰਨੁ ਬਨਿਓ ਰੀ ॥
काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥
काजल भरी कोठरी में तू काली नहीं हुई। तेरा रंग अपितु पवित्र बन गया है।

ਮਹਾ ਮੰਤ੍ਰ ਗੁਰ ਹਿਰਦੈ ਬਸਿਓ ਅਚਰਜ ਨਾਮੁ ਸੁਨਿਓ ਰੀ ॥੩॥
महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥३॥
गुरु का महामंत्र (हरि-मंत्र) मेरे हृदय में बस गया है और मैंने आश्चर्यजनक नाम श्रवण किया है॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਨਦਰਿ ਅਵਲੋਕਨ ਅਪੁਨੈ ਚਰਣਿ ਲਗਾਈ ॥
करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥
प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझ पर दया-दृष्टि की है और मुझे अपने चरणों से लगा लिया है।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈ ॥੪॥੧੨॥੫੧॥
प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥४॥१२॥५१॥
हे नानक ! प्रेम भक्ति से मैंने साधुओं की संगति में बने रहने से सुख प्राप्त किया है॥ ४॥ १२॥ ५१॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਘਰੁ ੭ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥
रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥

ਲਾਲੁ ਚੋਲਨਾ ਤੈ ਤਨਿ ਸੋਹਿਆ ॥
लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥
तेरे शरीर पर लाल रंग का वस्त्र बड़ा सुन्दर लगता है।

ਸੁਰਿਜਨ ਭਾਨੀ ਤਾਂ ਮਨੁ ਮੋਹਿਆ ॥੧॥
सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥१॥
जब तू साजन प्रभु को अच्छी लगने लग गई तो उसका मन मोहित हो गया।॥ १॥

ਕਵਨ ਬਨੀ ਰੀ ਤੇਰੀ ਲਾਲੀ ॥
कवन बनी री तेरी लाली ॥
तेरे मुख पर यह लाली कैसे बन गई है ?

ਕਵਨ ਰੰਗਿ ਤੂੰ ਭਈ ਗੁਲਾਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥१॥ रहाउ ॥
किस रंग के प्रभाव से तू गुलाल के रंग की तरह लाल हो चुकी है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਹੀ ਸੁੰਦਰਿ ਤੁਮਹਿ ਸੁਹਾਗੁ ॥
तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥
तू बहुत सुन्दर है और तू ही सुहागिन है।

ਤੁਮ ਘਰਿ ਲਾਲਨੁ ਤੁਮ ਘਰਿ ਭਾਗੁ ॥੨॥
तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥२॥
तेरे हृदय घर में प्रियतम-प्रभु बस गया है और तेरे हृदय घर के भाग्य उदय हो गए हैं।॥ २॥

ਤੂੰ ਸਤਵੰਤੀ ਤੂੰ ਪਰਧਾਨਿ ॥
तूं सतवंती तूं परधानि ॥
तुम सत्यवती हो और तुम ही सर्वश्रेष्ठ हो।

ਤੂੰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਨੀ ਤੁਹੀ ਸੁਰ ਗਿਆਨਿ ॥੩॥
तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥३॥
तुम अपने प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगती हो और तुम सर्वश्रेष्ठ ज्ञान वाली हो।॥ ३॥

ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਨੀ ਤਾਂ ਰੰਗਿ ਗੁਲਾਲ ॥
प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥
(जीव रूपी नारी कहती है) मैं प्रियतम-प्रभु को भली लगती हूँ इसलिए मैं गहरे प्रेम रंग में रंग गई हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਭ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਨਿਹਾਲ ॥੪॥
कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥४॥
हे नानक ! परमेश्वर ने मुझे दया-दृष्टि से देखा है।

ਸੁਨਿ ਰੀ ਸਖੀ ਇਹ ਹਮਰੀ ਘਾਲ ॥
सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥
हे मेरी सखी ! सुन, केवल यही मेरी साधना है।

ਪ੍ਰਭ ਆਪਿ ਸੀਗਾਰਿ ਸਵਾਰਨਹਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧॥੫੨॥
प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥५२॥
प्रभु स्वयं ही श्रृंगारने वाला एवं संवारने वाला है॥ १॥ रहाउ दूसरा ॥ १॥ ५२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਦੂਖੁ ਘਨੋ ਜਬ ਹੋਤੇ ਦੂਰਿ ॥
दूखु घनो जब होते दूरि ॥
हे सखी ! जब मैं हरि-चरणों से दूर थी तो मुझे बहुत दुख होता था।

ਅਬ ਮਸਲਤਿ ਮੋਹਿ ਮਿਲੀ ਹਦੂਰਿ ॥੧॥
अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥१॥
अब मालिक की उपस्थिति में मुझे नाम का उपदेश मिला है॥ १॥

ਚੁਕਾ ਨਿਹੋਰਾ ਸਖੀ ਸਹੇਰੀ ॥ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਗੁਰਿ ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਮੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी सखियों एवं सहेलियों का शिकवा मिट गया है। मेरी दुविधा दूर हो गई है, गुरु ने मुझे मेरे प्रियतम-प्रभु से मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਿਕਟਿ ਆਨਿ ਪ੍ਰਿਅ ਸੇਜ ਧਰੀ ॥
निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥
मेरे प्रियतम-प्रभु ने समीप आकर मुझे सेज पर बिठा दिया है और

ਕਾਣਿ ਕਢਨ ਤੇ ਛੂਟਿ ਪਰੀ ॥੨॥
काणि कढन ते छूटि परी ॥२॥
मैं लोगों के आश्रय से मुक्त हो गई हूँ॥ २॥

ਮੰਦਰਿ ਮੇਰੈ ਸਬਦਿ ਉਜਾਰਾ ॥
मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥
मेरे मन मन्दिर में ब्रह्म-शब्द का उजाला है।

ਅਨਦ ਬਿਨੋਦੀ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੩॥
अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥३॥
मेरा पति-प्रभु आनंद विनोदी है॥ ३॥

ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਮੈ ਪਿਰੁ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥
मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥
मेरे माथे पर भाग्य होने के कारण मेरा पति-प्रभु मेरे हृदय-घर में आ गया है।

ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੫੩॥
थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥४॥२॥५३॥
हे नानक ! मुझे अटल सुहाग मिल गया है॥ ४॥ २॥ ५३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
साचि नामि मेरा मनु लागा ॥
मेरा मन सत्यनाम में लग गया है।

ਲੋਗਨ ਸਿਉ ਮੇਰਾ ਠਾਠਾ ਬਾਗਾ ॥੧॥
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥१॥
दुनिया के लोगों के साथ मेरा उतना ही मेल-मिलाप है जितने व्यवहार की जरुरत है॥ १॥

ਬਾਹਰਿ ਸੂਤੁ ਸਗਲ ਸਿਉ ਮਉਲਾ ॥
बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥
मेरा संबंध केवल देखने को ही है और सर्व के साथ प्रसन्न हूँ।

ਅਲਿਪਤੁ ਰਹਉ ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਉਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे कमल का फूल जल में निर्लिप्त रहता है वैसे ही मैं संसार से निर्लिप्त रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਮੁਖ ਕੀ ਬਾਤ ਸਗਲ ਸਿਉ ਕਰਤਾ ॥
मुख की बात सगल सिउ करता ॥
मुख द्वारा मैं सबके साथ बातचीत करता हूँ।

ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਧਰਤਾ ॥੨॥
जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥२॥
परन्तु अपने प्रभु को मैं अपने हृदय से लगाकर रखता हूँ॥ २॥

ਦੀਸਿ ਆਵਤ ਹੈ ਬਹੁਤੁ ਭੀਹਾਲਾ ॥
दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥
चाहे लोगों को मेरा मन शुष्क दिखाई देता है परन्तु

ਸਗਲ ਚਰਨ ਕੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਲਾ ॥੩॥
सगल चरन की इहु मनु राला ॥३॥
मेरा मन सबकी चरण-धूलि बना रहता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਜਨਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥
नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥
हे नानक ! इस सेवक को पूर्ण गुरु की प्राप्ति हो गई है।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥੪॥੩॥੫੪॥
अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥४॥३॥५४॥
भीतर एवं बाहर अब उन्होंने मुझे एक ईश्वर दिखा दिया है॥ ४॥ ३॥ ५४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪਾਵਤੁ ਰਲੀਆ ਜੋਬਨਿ ਬਲੀਆ ॥
पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥
जवानी के जोश में मनुष्य अनेक आनन्द भोगता है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਮਾਟੀ ਸੰਗਿ ਰਲੀਆ ॥੧॥
नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥
परन्तु प्रभु-नाम के बिना अन्त में मिट्टी के साथ मिल जाता है॥ १॥

ਕਾਨ ਕੁੰਡਲੀਆ ਬਸਤ੍ਰ ਓਢਲੀਆ ॥
कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥
(हे भाई!) मनुष्य कानों में कुण्डल एवं सुन्दर वस्त्र पहनता है।

ਸੇਜ ਸੁਖਲੀਆ ਮਨਿ ਗਰਬਲੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥१॥ रहाउ ॥
कोमल सुखदायक बिस्तरों पर सोता है परन्तु वह अपने चित्त में इन सुख के साधनों का अभिमान करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਲੈ ਕੁੰਚਰੀਆ ਸਿਰਿ ਕਨਿਕ ਛਤਰੀਆ ॥
तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥
मनुष्य के पास सवारी के लिए हाथी एवं सिर पर सोने का छत्र झूल रहा है परन्तु

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ਲੇ ਧਰਨਿ ਗਡਲੀਆ ॥੨॥
हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥
भगवान की भक्ति के बिना वह धरती के नीचे दफना दिया जाता है। २॥

ਰੂਪ ਸੁੰਦਰੀਆ ਅਨਿਕ ਇਸਤਰੀਆ ॥
रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥
इन्सान चाहे रूपवान सुन्दरियों एवं अनेक स्त्रियों के साथ भोग-विलास करता है

ਹਰਿ ਰਸ ਬਿਨੁ ਸਭਿ ਸੁਆਦ ਫਿਕਰੀਆ ॥੩॥
हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥
परन्तु हरि रस के बिना ये सभी आस्वादन फीके हैं॥३॥

ਮਾਇਆ ਛਲੀਆ ਬਿਕਾਰ ਬਿਖਲੀਆ ॥
माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥
यह माया तो धोखेबाज ही है और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि विकार विष समान हैं।

ਸਰਣਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਦਇਅਲੀਆ ॥੪॥੪॥੫੫॥
सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥४॥४॥५५॥
नानक का कथन है कि हे दया के सागर, हे सर्वशक्तिमान प्रभु ! मै तेरी ही शरण में हूँ॥ ४॥ ४॥ ५५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਏਕੁ ਬਗੀਚਾ ਪੇਡ ਘਨ ਕਰਿਆ ॥
एकु बगीचा पेड घन करिआ ॥
यह दुनिया एक बगीचा है जिसमें बहुत सारे पेड़ लगे हुए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤਹਾ ਮਹਿ ਫਲਿਆ ॥੧॥
अम्रित नामु तहा महि फलिआ ॥१॥
पेड़ों में नामामृत रूपी फल लगा हुआ है॥ १॥

ਐਸਾ ਕਰਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ਗਿਆਨੀ ॥
ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥
हे ज्ञानी ! कोई ऐसा विचार करो,"

ਜਾ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥
जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥
जिससे तुझे निर्वाण पद प्राप्त हो।

ਆਸਿ ਪਾਸਿ ਬਿਖੂਆ ਕੇ ਕੁੰਟਾ ਬੀਚਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਭਾਈ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अम्रितु है भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई !बगीचे के आसपास विष के कुण्ड हैं और इसके बीच अमृत भी मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿੰਚਨਹਾਰੇ ਏਕੈ ਮਾਲੀ ॥
सिंचनहारे एकै माली ॥
इसे सीचने वाला गुरु-परमात्मा रूपी एक बागबां है।

ਖਬਰਿ ਕਰਤੁ ਹੈ ਪਾਤ ਪਤ ਡਾਲੀ ॥੨॥
खबरि करतु है पात पत डाली ॥२॥
वह हरेक पते एवं डाल की रखवाली करता है॥२॥

ਸਗਲ ਬਨਸਪਤਿ ਆਣਿ ਜੜਾਈ ॥
सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥
यह बागवां सारी वनस्पति लाकर यहाँ लगाता है।

ਸਗਲੀ ਫੂਲੀ ਨਿਫਲ ਨ ਕਾਈ ॥੩॥
सगली फूली निफल न काई ॥३॥
सबको फल लगता है, कोई भी फल के बिना नहीं। ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਨਾਮੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ॥
अम्रित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥
हे दास नानक ! जिसने गुरु से नामामृत का फल प्राप्त किया है,"

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਰੀ ਤਿਨਿ ਮਾਇਆ ॥੪॥੫॥੫੬॥
नानक दास तरी तिनि माइआ ॥४॥५॥५६॥
वह माया रूपी भवसागर से पार हो गया है॥ ४ ॥ ५॥ ५६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਰਾਜ ਲੀਲਾ ਤੇਰੈ ਨਾਮਿ ਬਨਾਈ ॥
राज लीला तेरै नामि बनाई ॥
हे सत्य के पुंज ! तेरे नाम ने ही मुझे राज-सुख प्रदान किए हैं।

ਜੋਗੁ ਬਨਿਆ ਤੇਰਾ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈ ॥੧॥
जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥१॥
तेरा कीर्ति-गान करने से मुझे योग प्राप्त हो गया है॥ १॥

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਬਨੇ ਤੇਰੈ ਓਲ੍ਹੈ ॥ ਭ੍ਰਮ ਕੇ ਪਰਦੇ ਸਤਿਗੁਰ ਖੋਲ੍ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥१॥ रहाउ ॥
तेरी शरण में मुझे सर्व सुख हासिल होता है। सतिगुरु ने भ्रम के पर्दे खोल दिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਹੁਕਮੁ ਬੂਝਿ ਰੰਗ ਰਸ ਮਾਣੇ ॥
हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥
हे परमेश्वर ! तेरी रज़ा को समझकर मैं आत्मिक आनंद भोगता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਮਹਾ ਨਿਰਬਾਣੇ ॥੨॥
सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥२॥
सतगुरु की सेवा करने से मुझे महानिर्वाण पद प्राप्त हो गया है॥ २ ॥

ਜਿਨਿ ਤੂੰ ਜਾਤਾ ਸੋ ਗਿਰਸਤ ਉਦਾਸੀ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥
जो तुझे समझता है, वह चाहे गृहस्थी हो अथवा त्यागी तेरे द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है।

ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਸੋਈ ਨਿਰਬਾਣੁ ॥੩॥
नामि रता सोई निरबाणु ॥३॥
जो मनुष्य हरि-नाम में अनुरक्त है, वही संन्यासी है॥ ३॥

ਜਾ ਕਉ ਮਿਲਿਓ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨਾ ॥
जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥
नानक का कथन है कि हे मेरे मालिक ! जिसे तेरा नाम-भण्डार मिल गया है,"

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਾ ਪੂਰ ਖਜਾਨਾ ॥੪॥੬॥੫੭॥
भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥
उसके भण्डार सदैव भरे रहते हैं॥ ४॥ ६॥ ५७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਤੀਰਥਿ ਜਾਉ ਤ ਹਉ ਹਉ ਕਰਤੇ ॥
तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥
हे सज्जन ! यदि मैं किसी तीर्थ पर जाता हूँ तो वहाँ मुझे 'मैं' 'मैं अहंकार करते हुए बहुत सारे लोग मिलते हैं।

ਪੰਡਿਤ ਪੂਛਉ ਤ ਮਾਇਆ ਰਾਤੇ ॥੧॥
पंडित पूछउ त माइआ राते ॥१॥
यदि मैं पण्डितों बाबत पूछता हूँ तो वे भी माया में ही लीन देखता हूँ॥ १॥

ਸੋ ਅਸਥਾਨੁ ਬਤਾਵਹੁ ਮੀਤਾ ॥
सो असथानु बतावहु मीता ॥
हे मित्र ! मुझे वह पावन स्थान बताओ

ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਨੀਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥
जहाँ नित्य भगवान का भजन-कीर्तन होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਸਤ੍ਰ ਬੇਦ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਵੀਚਾਰ ॥
सासत्र बेद पाप पुंन वीचार ॥
शास्त्र एवं वेद पाप-पुण्य का विचार वर्णन करते हैं और कहते हैं कि

ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਅਉਤਾਰ ॥੨॥
नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥२॥
मनुष्य पाप-पुण्य कर्म करने से ही बार-बार नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ २॥

ਗਿਰਸਤ ਮਹਿ ਚਿੰਤ ਉਦਾਸ ਅਹੰਕਾਰ ॥
गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥
गृहस्थ जीवन में चिन्ता है और विरक्त में अहंकार है।

ਕਰਮ ਕਰਤ ਜੀਅ ਕਉ ਜੰਜਾਰ ॥੩॥
करम करत जीअ कउ जंजार ॥३॥
कर्मकाण्डों के संस्कार करना तो जीव हेतु एक जंजाल ही है॥३॥

ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਨੁ ਵਸਿ ਆਇਆ ॥
प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥
जिस मनुष्य का मन प्रभु की कृपा से वश में आ जाता है,"

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੀ ਤਿਨਿ ਮਾਇਆ ॥੪॥
नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥४॥
हे नानक ! वह गुरुमुख बनकर माया के सागर से पार हो जाता है॥ ४॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
सुसंगति में हरि का कीर्ति-गान करना चाहिए और\

ਇਹੁ ਅਸਥਾਨੁ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੭॥੫੮॥
इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥
यह स्थान गुरु द्वारा ही मिलता है। १॥ रहाउ दूसरा ॥ ७॥ ५८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਘਰ ਮਹਿ ਸੂਖ ਬਾਹਰਿ ਫੁਨਿ ਸੂਖਾ ॥
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥
मेरे हृदय-घर में सुख ही सुख है और घर के बाहर भी (दुनिया में निर्वाह करते हुए) सुख ही सुख है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੇ ਦੂਖਾ ॥੧॥
हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥१॥
हरि का सिमरन करने से सभी दुख-क्लेश नाश हो गए हैं।॥ १॥

ਸਗਲ ਸੂਖ ਜਾਂ ਤੂੰ ਚਿਤਿ ਆਵੈਂ ॥
सगल सूख जां तूं चिति आंवैं ॥
हे हरि ! जब तू मेरे मन में याद आता है तो मुझे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਸੋ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਜੋ ਜਨੁ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥१॥ रहाउ ॥
केवल वही उपासक हरि-नाम का जाप करता है जो तुझे भाता है॥ १॥ रहाउ॥=

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥
तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥
हे प्रभु ! तेरे नाम का जाप करने से तन-मन शीतल हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਢਹੈ ਦੁਖ ਡੇਰਾ ॥੨॥
हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥२॥
भगवान का ध्यान करने से दुखों का डेरा ही नष्ट हो जाता है॥ २॥

ਹੁਕਮੁ ਬੂਝੈ ਸੋਈ ਪਰਵਾਨੁ ॥
हुकमु बूझै सोई परवानु ॥
जो मनुष्य प्रभु की रज़ा को समझता है, वही सत्य के दरबार में स्वीकार होता है।

ਸਾਚੁ ਸਬਦੁ ਜਾ ਕਾ ਨੀਸਾਨੁ ॥੩॥
साचु सबदु जा का नीसानु ॥३॥
उस स्वीकृत मनुष्य पर सत्य शब्द का निशान अंकित होता है॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने मेरे मन में हरि का नाम बसा दिया है।

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੮॥੫੯॥
भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥४॥८॥५९॥
नानक का कथन है कि मेरे मन को प्रभु-नाम से सुख प्राप्त हुआ है॥ ४॥ ८॥ ५६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਹਾ ਪਠਾਵਹੁ ਤਹ ਤਹ ਜਾਈਂ ॥
जहा पठावहु तह तह जाईं ॥
हे प्रभु ! जहाँ कहीं भी तू मुझे भेजता है, वहीं मैं (सुखपूर्वक) जाता हूँ।

ਜੋ ਤੁਮ ਦੇਹੁ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਂ ॥੧॥
जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥१॥
जो कुछ तू मुझे देता है, उसमें ही मैं सुख मानता हूँ॥ १॥

ਸਦਾ ਚੇਰੇ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਸਾਈ ॥
सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥
हे गोविंद गोसाई ! मैं सदा तेरा चेला हूँ।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਈਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥१॥ रहाउ ॥
तेरी कृपा से मैं तृप्त एवं संतुष्ट रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮਰਾ ਦੀਆ ਪੈਨ੍ਹਉ ਖਾਈਂ ॥
तुमरा दीआ पैन्हउ खाईं ॥
हे प्रभु ! जो कुछ तुम मुझे देते हो, वही मैं पहनता और खाता हूँ।

ਤਉ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪ੍ਰਭ ਸੁਖੀ ਵਲਾਈਂ ॥੨॥
तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥२॥
तेरी कृपा से मैं सुखी जीवन बिता रहा हूँ॥ २॥

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਤੁਝੈ ਧਿਆਈਂ ॥
मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥
अपने मन एवं तन के भीतर मैं तुझे ही याद करता हूँ।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੈ ਲਵੈ ਨ ਕੋਊ ਲਾਈਂ ॥੩॥
तुम्हरै लवै न कोऊ लाईं ॥३॥
तेरे बराबर मैं किसी को नहीं समझता ॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਤ ਇਵੈ ਧਿਆਈਂ ॥
कहु नानक नित इवै धिआईं ॥
हे नानक ! मैं सदा ही इस तरह तुझे याद करता हूँ ।

ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਸੰਤਹ ਲਗਿ ਪਾਈਂ ॥੪॥੯॥੬੦॥
गति होवै संतह लगि पाईं ॥४॥९॥६०॥
संतों के चरणों से लगने पर शायद मेरी भी गति हो जाए ॥ ४॥ ६॥ ६०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸੋਵਤ ਧਿਆਈਐ ॥
ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥
हे भाई ! उठते-बैठते, सोते हर समय भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए।

ਮਾਰਗਿ ਚਲਤ ਹਰੇ ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥੧॥
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥
मार्ग में चलते समय भी हरि का यशोगान करना चाहिए॥ १॥

ਸ੍ਰਵਨ ਸੁਨੀਜੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਥਾ ॥
स्रवन सुनीजै अम्रित कथा ॥
अपने कानों से हरि की अमृत कथा सुननी चाहिए,"

ਜਾਸੁ ਸੁਨੀ ਮਨਿ ਹੋਇ ਅਨੰਦਾ ਦੂਖ ਰੋਗ ਮਨ ਸਗਲੇ ਲਥਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे सुनने से मन प्रसन्न हो जाता है एवं तमाम दुःख-रोग दूर हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਰਜਿ ਕਾਮਿ ਬਾਟ ਘਾਟ ਜਪੀਜੈ ॥
कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥
प्रत्येक कार्य करते हुए, मार्ग पर चलते हुए एवं घाट पार करते समय प्रभु का जाप करना चाहिए।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ॥੨॥
गुर प्रसादि हरि अम्रितु पीजै ॥२॥
गुरु की कृपा से हरि-नामामृत का पान करना चाहिए॥ २॥

ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
दिन-रात हरि-कीर्तन गाते रहना चाहिए,"

ਸੋ ਜਨੁ ਜਮ ਕੀ ਵਾਟ ਨ ਪਾਈਐ ॥੩॥
सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥३॥
क्योंकि कीर्तन गाने वाला भक्त मृत्यु के मार्ग में नहीं पड़ता ॥ ३॥

ਆਠ ਪਹਰ ਜਿਸੁ ਵਿਸਰਹਿ ਨਾਹੀ ॥
आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥
जो पुरुष आठों प्रहर परमात्मा को विस्मृत नहीं करता,"

ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਲਗਿ ਪਾਈ ॥੪॥੧੦॥੬੧॥
गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥४॥१०॥६१॥
हे नानक ! उसके चरण-स्पर्श करने से गति प्राप्त हो जाती है। ॥४॥१०॥६१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸੁਖ ਨਿਵਾਸੁ ॥
जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥
जिस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य सुख में निवास करता है,"

ਭਈ ਕਲਿਆਣ ਦੁਖ ਹੋਵਤ ਨਾਸੁ ॥੧॥
भई कलिआण दुख होवत नासु ॥१॥
उसका कल्याण हो जाता है और उसके दुःख का नाश हो जाता है। १॥

ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਹੁ ॥
अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥
(हे भाई !) प्रभु का गुणगान करो और आनंद प्राप्त करो।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ਸਦ ਸਦਾ ਮਨਾਵਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥१॥ रहाउ ॥
सदा-सर्वदा अपने गुरु को प्रसन्न करते रहो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਕਮਾਵਹੁ ॥
सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥
सतिगुरु के सच्चे शब्द को अपने अन्तर्मन में धारण करो।

ਥਿਰੁ ਘਰਿ ਬੈਠੇ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਪਾਵਹੁ ॥੨॥
थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥२॥
अपने हृदय घर में स्थिर बैठ कर अपने प्रभु को पा लो॥ २॥

ਪਰ ਕਾ ਬੁਰਾ ਨ ਰਾਖਹੁ ਚੀਤ ॥
पर का बुरा न राखहु चीत ॥
हे मित्र ! अपने हृदय में किसी का बुरा मत सोचो,"

ਤੁਮ ਕਉ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਭਾਈ ਮੀਤ ॥੩॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥३॥
इससे तुझे कोई दुःख नहीं होगा ॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੰਤੁ ਮੰਤੁ ਗੁਰਿ ਦੀਨ੍ਹਾ ॥
हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥
गुरु ने मुझे हरि नाम का तंत्र मंत्र प्रदान किया है।

ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਚੀਨ੍ਹਾ ॥੪॥੧੧॥੬੨॥
इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥४॥११॥६२॥
नानक रात-दिन हमेशा ही इस सुख को जानता है॥ ४॥ ११॥ ६२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਨੀਚ ਕਉ ਕੋਈ ਨ ਜਾਨੈ ॥
जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥
हे दीनदयाल ! जिस नीच मनुष्य को कोई नहीं जानता,"

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਉਹੁ ਚਹੁ ਕੁੰਟ ਮਾਨੈ ॥੧॥
नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥
तेरा नाम जपने से यह चारों दिशाओं में लोकप्रिय हो जाता है।॥ १॥

ਦਰਸਨੁ ਮਾਗਉ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੇ ॥
दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥
हे मेरे प्रियतम ! मैं तेरे दर्शन माँगता हूँ। मुझे दर्शन दीजिए।

ਤੁਮਰੀ ਸੇਵਾ ਕਉਨ ਕਉਨ ਨ ਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तेरी उपासना करने से कौन-कौन पार नहीं हुआ है? ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਕੋਈ ॥
जा कै निकटि न आवै कोई ॥
हे प्रभु ! जिस के निकट भी कोई नहीं आता था,"

ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਆ ਕੇ ਚਰਨ ਮਲਿ ਧੋਈ ॥੨॥
सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥
तेरा सेवक बनने से सारी सृष्टि उस (सेवक) के चरण मल-मल कर धोती है॥ २॥

ਜੋ ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਾਹੂ ਨ ਆਵਤ ਕਾਮ ॥
जो प्रानी काहू न आवत काम ॥
जो प्राणी किसी भी काम नहीं आता,"

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤਾ ਕੋ ਜਪੀਐ ਨਾਮ ॥੩॥
संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥३॥
यदि संत उस पर कृपादृष्टि धारण करें तो सभी उसके नाम को जपते हैं।॥ ३॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਨ ਸੋਵਤ ਜਾਗੇ ॥
साधसंगि मन सोवत जागे ॥
साधुओं की संगति में सोया हुआ मन (भी) जाग जाता है तब,"

ਤਬ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਮੀਠੇ ਲਾਗੇ ॥੪॥੧੨॥੬੩॥
तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥४॥१२॥६३॥
हे नानक ! प्रभु बड़ा मीठा लगता है॥ ४॥ १२॥ ६३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਏਕੋ ਏਕੀ ਨੈਨ ਨਿਹਾਰਉ ॥
एको एकी नैन निहारउ ॥
मैं अपने नयनों से एक परमात्मा को ही हर जगह मौजूद देखता हूँ।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰਉ ॥੧॥
सदा सदा हरि नामु सम्हारउ ॥१॥
मैं हमेशा ही हरि के नाम को याद करता हूँ॥ १॥

ਰਾਮ ਰਾਮਾ ਰਾਮਾ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
राम रामा रामा गुन गावउ ॥
मैं केवल राम जी के गुण गाता हूँ।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਉ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई ! संतों के प्रताप एवं गुरु की संगति में मिलकर मैं हरेि नाम का ध्यान करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਜਾ ਕੈ ਸੂਤਿ ਪਰੋਈ ॥
सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥
जिस परमात्मा के सूत्र में जगत की सारी सामग्री पिरोई हुई है,"

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿਆ ਸੋਈ ॥੨॥
घट घट अंतरि रविआ सोई ॥२॥
वह हरेक शरीर में मौजूद है॥ २॥

ਓਪਤਿ ਪਰਲਉ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰਤਾ ॥
ओपति परलउ खिन महि करता ॥
प्रभु एक क्षण में ही सृष्टि की उत्पति एवं प्रलय कर देता है।

ਆਪਿ ਅਲੇਪਾ ਨਿਰਗੁਨੁ ਰਹਤਾ ॥੩॥
आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥३॥
लेकिन निर्गुण प्रभु स्वयं निर्लिप्त रहता है। ३ ॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
करन करावन अंतरजामी ॥
अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ करने एवं जीवों से कराने में समर्थ है।

ਅਨੰਦ ਕਰੈ ਨਾਨਕ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੧੩॥੬੪॥
अनंद करै नानक का सुआमी ॥४॥१३॥६४॥
नानक का स्वामी सदैव आनंद में रहता है॥ ४॥ १३॥ ६४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਰਹੇ ਭਵਾਰੇ ॥
कोटि जनम के रहे भवारे ॥
अब मेरे करोड़ों जन्मों के चक्र नष्ट हो गए हैं।

ਦੁਲਭ ਦੇਹ ਜੀਤੀ ਨਹੀ ਹਾਰੇ ॥੧॥
दुलभ देह जीती नही हारे ॥१॥
दुर्लभ मानव-देहि को पाकर जीवन-बाजी को जीत लिया है। मैंने माया के हाथों यह बाजी हारी नहीं ॥ १॥

ਕਿਲਬਿਖ ਬਿਨਾਸੇ ਦੁਖ ਦਰਦ ਦੂਰਿ ॥
किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥
शुभ-आचरण से सारे पाप नष्ट होगए हैं और दुःख-दर्द दूर हो गए हैं।

ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भए पुनीत संतन की धूरि ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की चरण-धूलि से हम पावन हो गए हैं। ॥१॥रहाउ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੰਤ ਉਧਾਰਨ ਜੋਗ ॥
प्रभ के संत उधारन जोग ॥
प्रभु के संत दुनिया का उद्धार करने में समर्थ हैं।

ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗ ॥੨॥
तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥२॥
ऐसे संत उसे मिलते हैं, जिसे उनका संयोग प्रारम्भ से लिखा होता है॥ २॥

ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥
गुरु के दिए नाम-मंत्र से मन आनंदित हो गया है।

ਤ੍ਰਿਸਨ ਬੁਝੀ ਮਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਥੀਆ ॥੩॥
त्रिसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥३॥
तृष्णा बुझ गई है और मन स्थिर हो गया है॥ ३॥

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਉ ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਬੁਧਿ ॥੪॥੧੪॥੬੫॥
नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥४॥१४॥६५॥
हरि का नाम रूपी पदार्थ ही नवनिधियों एवं सिद्धियों के तुल्य है। हे नानक ! यह सुमति मुझे गुरु से प्राप्त हुई है॥ ४॥ १४॥ ६५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮਿਟੀ ਤਿਆਸ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰੇ ॥
मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥
अज्ञानता के अँधकार के कारण मेरे मन में पैदा हुई तृष्णा मिट गई है।

ਸਾਧ ਸੇਵਾ ਅਘ ਕਟੇ ਘਨੇਰੇ ॥੧॥
साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥१॥
संतों की सेवा करने से अनेक पाप मिट चुके हैं।॥ १॥

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦੁ ਘਨਾ ॥
सूख सहज आनंदु घना ॥
मुझे सहज सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त हो गया है।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की सेवा से मेरा मन निर्मल हो गया है। मैंने तो गुरु से श्रीहरि का 'हरि-हरि' नाम ही सुना है॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਿਨਸਿਓ ਮਨ ਕਾ ਮੂਰਖੁ ਢੀਠਾ ॥
बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥
मेरे मन की मूर्खता एवं ढीठता मिट गई है।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਭਾਣਾ ਲਾਗਾ ਮੀਠਾ ॥੨॥
प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥२॥
प्रभु की रज़ा मुझे बड़ी मीठी लगती है॥ २॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੇ ਚਰਣ ਗਹੇ ॥
गुर पूरे के चरण गहे ॥
मैंने पूर्ण गुरु के चरण पकड़ लिए हैं और

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਪਾਪ ਲਹੇ ॥੩॥
कोटि जनम के पाप लहे ॥३॥
मेरे करोड़ों जन्मों के पाप मिट गए हैं।॥ ३॥

ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਇਹੁ ਸਫਲ ਭਇਆ ॥
रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥
मेरा यह रत्न जैसा अमूल्य जन्म सफल हो गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਰੀ ਮਇਆ ॥੪॥੧੫॥੬੬॥
कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥४॥१५॥६६॥
हे नानक ! प्रभु ने मुझ पर दया धारण की है॥ ४॥ १५॥ ६६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ਸਦ ਸਦਾ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ॥
सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥
अपने सतिगुरु को हमेशा ही याद करते रहना चाहिए और

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਕੇਸ ਸੰਗਿ ਝਾਰੇ ॥੧॥
गुर के चरन केस संगि झारे ॥१॥
गुरु के चरणों को अपने बालों से झाड़ना चाहिए ॥ १॥

ਜਾਗੁ ਰੇ ਮਨ ਜਾਗਨਹਾਰੇ ॥
जागु रे मन जागनहारे ॥
हे मेरे जागने वाले मन ! मोह-माया की नींद में से जाग जाओ अर्थात् सचेत हो जाओ।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਆਵਸਿ ਕਾਮਾ ਝੂਠਾ ਮੋਹੁ ਮਿਥਿਆ ਪਸਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥१॥ रहाउ ॥
हरि के बिना तेरे कोई भी काम नहीं आएगा। परिवार का मोह झूठा है एवं माया का प्रसार नाशवान है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥
गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥
गुरु की वाणी से प्रेम लगाओ।

ਗੁਰੁ ਕਿਰਪਾਲੁ ਹੋਇ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥੨॥
गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥२॥
यदि गुरु कृपालु हो जाए तो दुःख दूर हो जाता है।॥ २॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥
गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥
गुरु के सिवाय दूसरा कोई स्थान सुखदायक नहीं। ३॥

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਦੇਵੈ ਨਾਉ ॥੩॥
गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥३॥
क्योंकेि गुरु दाता है और गुरु ही नाम प्रदान करता है॥

ਗੁਰੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਆਪਿ ॥
गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥
गुरु स्वयं ही परब्रह्म परमेश्वर हैं।

ਆਠ ਪਹਰ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਜਾਪਿ ॥੪॥੧੬॥੬੭॥
आठ पहर नानक गुर जापि ॥४॥१६॥६७॥
इसलिए हे नानक ! आठों प्रहर गुरु को जपते रहना चाहिए॥ ४॥ १६॥ ६७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਪੇ ਪੇਡੁ ਬਿਸਥਾਰੀ ਸਾਖ ॥
आपे पेडु बिसथारी साख ॥
प्रभु स्वयं ही पेड़ है और जगत रूपी शाखाएँ उसका विस्तार हैं।

ਅਪਨੀ ਖੇਤੀ ਆਪੇ ਰਾਖ ॥੧॥
अपनी खेती आपे राख ॥१॥
अपनी जगत रूपी फसल की वह स्वयं ही रक्षा करता है॥ १॥

ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਏਕੈ ਓਹੀ ॥
जत कत पेखउ एकै ओही ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, मुझे प्रभु ही नज़र आता है।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਆਪੇ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
घट घट अंतरि आपे सोई ॥१॥ रहाउ ॥
यह स्वयं ही प्रत्येक शरीर के भीतर मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਸੂਰੁ ਕਿਰਣਿ ਬਿਸਥਾਰੁ ॥
आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥
प्रभु स्वयं ही सूर्य है और यह जगत समझो उसकी किरणों का विस्तार है।

ਸੋਈ ਗੁਪਤੁ ਸੋਈ ਆਕਾਰੁ ॥੨॥
सोई गुपतु सोई आकारु ॥२॥
वह स्वयं ही अदृष्ट है और स्वयं ही साक्षात् है॥ २॥

ਸਰਗੁਣ ਨਿਰਗੁਣ ਥਾਪੈ ਨਾਉ ॥
सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥
निर्गुण एवं सगुण नाम इन दोनों रूपों ने

ਦੁਹ ਮਿਲਿ ਏਕੈ ਕੀਨੋ ਠਾਉ ॥੩॥
दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥३॥
मिलकर ईश्वर में ही स्थान बनाया हुआ है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਖੋਇਆ ॥
कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥
हे नानक ! गुरु ने मेरा भ्रम एवं डर दूर कर दिया है और

ਅਨਦ ਰੂਪੁ ਸਭੁ ਨੈਨ ਅਲੋਇਆ ॥੪॥੧੭॥੬੮॥
अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥४॥१७॥६८॥
मैं आनंद रूप परमेश्वर को ही अब अपने नयनों से हर जगह देखता हूँ॥ ४ ॥ १७ ॥ ६८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਉਕਤਿ ਸਿਆਨਪ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਨਾ ॥
उकति सिआनप किछू न जाना ॥
हे भगवान् ! मैं कोई उक्ति एवं चतुराई नहीं जानता।

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਾਨਾ ॥੧॥
दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥१॥
मैं दिन-रात तेरा ही नाम जपता रहता हूँ॥ १॥

ਮੈ ਨਿਰਗੁਨ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥
मैं निर्गुण हूँ, मुझमें कोई गुण नहीं।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करन करावनहार प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
यह प्रभु ही करने एवं जीवों से करवाने वाला है। १॥ रहाउ॥

ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਅਗਿਆਨ ਅਵੀਚਾਰੀ ॥
मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥
हे ईश्वर ! मैं मूर्ख, मूढ, अज्ञानी एवं विचारहीन हूँ।

ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਆਸ ਮਨਿ ਧਾਰੀ ॥੨॥
नाम तेरे की आस मनि धारी ॥२॥
मेरे मन में तेरे नाम की ही आशा है॥ २॥

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਮ ਨ ਸਾਧਾ ॥
जपु तपु संजमु करम न साधा ॥
मैंने कोई जप, तप, संयम एवं धर्म-कर्म नहीं किया

ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਾ ਮਨਹਿ ਅਰਾਧਾ ॥੩॥
नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥३॥
परन्तु अपने मन में केवल प्रभु के नाम की आराधना की है॥ ३॥

ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਨਾ ਮਤਿ ਮੇਰੀ ਥੋਰੀ ॥
किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥
मैं कुछ नहीं जानता, क्योंकि मुझ में अल्पबुद्धि विद्यमान है।

ਬਿਨਵਤਿ ਨਾਨਕ ਓਟ ਪ੍ਰਭ ਤੋਰੀ ॥੪॥੧੮॥੬੬॥
बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥४॥१८॥६६॥
नानक वन्दना करता है कि हे प्रभु ! मैंने तेरी ही ओट ली है॥ ४॥ १८॥ ६६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਖਰ ਦੁਇ ਇਹ ਮਾਲਾ ॥
हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥
'हरि-हरि' यह दो अक्षरों की मेरी माला है।

ਜਪਤ ਜਪਤ ਭਏ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥੧॥
जपत जपत भए दीन दइआला ॥१॥
'हरि-हरि' नाम की माला को जपने से भगवान् मुझ दीन पर दयालु हो गया है॥ १ ॥

ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੀ ॥
करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥
मैं अपने सतेिगुरु के समक्ष यही विनती करता हूँ कि

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖਹੁ ਸਰਣਾਈ ਮੋ ਕਉ ਦੇਹੁ ਹਰੇ ਹਰਿ ਜਪਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥१॥ रहाउ ॥
हे सतिगुरु ! कृपा करके मुझे अपनी शरण में रखो एवं मुझे हरि-नाम की माला प्रदान करो॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਮਾਲਾ ਉਰ ਅੰਤਰਿ ਧਾਰੈ ॥
हरि माला उर अंतरि धारै ॥
जो मनुष्य हरि-नाम की माला अपने हृदय में धारण करता है,"

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਦੂਖੁ ਨਿਵਾਰੈ ॥੨॥
जनम मरण का दूखु निवारै ॥२॥
वह जन्म-मरण के दु:ख से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ २ ॥

ਹਿਰਦੈ ਸਮਾਲੈ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ॥
हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥
जो मनुष्य अपने मुँह से हरि-हरि बोलता है और अपने हृदय में हरि-परमेश्वर को याद करता है,"

ਸੋ ਜਨੁ ਇਤ ਉਤ ਕਤਹਿ ਨ ਡੋਲੈ ॥੩॥
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥३॥
वह इधर-उधर (लोक-परलोक) में डांवाडोल नहीं होता।॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਰਾਚੈ ਨਾਇ ॥
कहु नानक जो राचै नाइ ॥
हे नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम में लीन रहता है,"

ਹਰਿ ਮਾਲਾ ਤਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਜਾਇ ॥੪॥੧੯॥੭੦॥
हरि माला ता कै संगि जाइ ॥४॥१९॥७०॥
हरि-नाम की माला उसके साथ परलोक में जाती है ॥ ४॥ १६॥ ७०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਹੋਇ ॥
जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥
जो भगवान् का उपासक बना रहता है, जिसका यह सब कुछ बनाया हुआ है,"

ਤਿਸੁ ਜਨ ਲੇਪੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਕੋਇ ॥੧॥
तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥१॥
उस मनुष्य पर मोह-माया का कोई असर नहीं होता।॥ १॥

ਹਰਿ ਕਾ ਸੇਵਕੁ ਸਦ ਹੀ ਮੁਕਤਾ ॥
हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥
भगवान् का सेवक हमेशा ही मोह-माया से मुक्त है,"

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੈ ਸੋਈ ਭਲ ਜਨ ਕੈ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲ ਦਾਸ ਕੀ ਜੁਗਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥१॥ रहाउ ॥
वह जो कुछ करता है, उसके सेवक को वह भला ही लगता है। भगवान् के सेवक का जीवन-आचरण बड़ा निर्मल होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥
सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥
जो सबकुछ छोड़कर श्रीहरि की शरण में आ गया है,"

ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥੨॥
तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥२॥
उस मनुष्य को मोहिनी कैसे प्रभावित कर सकती है॥ २॥

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਾ ਕੇ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
नामु निधानु जा के मन माहि ॥
जिस के मन में नाम का भण्डार है,"

ਤਿਸ ਕਉ ਚਿੰਤਾ ਸੁਪਨੈ ਨਾਹਿ ॥੩॥
तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥३॥
उसे स्वप्न में भी चिन्ता नहीं होती।॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ॥
कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥
हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है और

ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਸਗਲ ਬਿਨਸਾਇਆ ॥੪॥੨੦॥੭੧॥
भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥४॥२०॥७१॥
मेरा भ्रम एवं सांसारिक मोह सब नाश हो गए हैं।॥ ४॥ २० ॥ ७१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਉ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਹੋਇਓ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥
जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा ॥
जब मेरा भगवान् मुझ पर सुप्रसन्न हो गया है तो

ਤਾਂ ਦੂਖੁ ਭਰਮੁ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ਨੇਰਾ ॥੧॥
तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥१॥
बताओ दु:ख एवं भ्रम कैसे मेरे पास आ सकते हैं ? ॥१॥

ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਜੀਵਾ ਸੋਇ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥
सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥
हे भगवान् ! तेरी शोभा सुन-सुनकर मैं जीवित हूँ।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਨ ਕਉ ਲੇਹੁ ਉਧਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥१॥ रहाउ ॥
मुझ गुणहीन का संसार-सागर से उद्धार कर दो ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਦੂਖੁ ਬਿਸਾਰੀ ਚਿੰਤਾ ॥
मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥
मेरा दुःख मिट गया है और चिन्ता को मैंने भुला दिया है ।

ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਜਪਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੰਤਾ ॥੨॥
फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥२॥
सतिगुरु के दिए हुए मंत्र का जाप करने से मुझे फल मिल गया है॥ २॥

ਸੋਈ ਸਤਿ ਸਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
सोई सति सति है सोइ ॥
भगवान् ही सत्य है और उसकी शोभा भी सत्य है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਰਖੁ ਕੰਠਿ ਪਰੋਇ ॥੩॥
सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥३॥
उसके नाम को याद कर करके अपने हृदय में पिरो कर रखों॥३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਉਨ ਉਹ ਕਰਮਾ ॥
कहु नानक कउन उह करमा ॥
हे नानक ! वह कौन-सा कर्म है

ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥੪॥੨੧॥੭੨॥
जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥४॥२१॥७२॥
जिसे करने से मन में भगवान का नाम आ बसता है॥ ४ ॥ २१॥ ७२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਵਿਗੂਤੇ ॥
कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥
काम, क्रोध एवं अहंकार ने (मायाग्रस्त) जीवों को नष्ट कर दिया है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਛੂਟੇ ॥੧॥
हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥१॥
भगवान् का सिमरन करने से भक्तजन विकारों से छूट गए हैं।॥ १॥

ਸੋਇ ਰਹੇ ਮਾਇਆ ਮਦ ਮਾਤੇ ॥
सोइ रहे माइआ मद माते ॥
माया के नशे में मस्त हुए जीव अज्ञानता की नींद में सोए हुए हैं।

ਜਾਗਤ ਭਗਤ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जागत भगत सिमरत हरि राते ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान् के सिमरन में रंगे हुए भक्त मोह-माया से सचेत रहते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਮੋਹ ਭਰਮਿ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭਵਾਇਆ ॥
मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥
मोह की दुविधा में फँसकर मनुष्य अनेक योनियों में भटकते हैं।

ਅਸਥਿਰੁ ਭਗਤ ਹਰਿ ਚਰਣ ਧਿਆਇਆ ॥੨॥
असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥२॥
जिन भक्तों ने श्रीहरि के सुन्दर चरणों का ध्यान किया है वे अमर हो गए हैं॥२॥

ਬੰਧਨ ਅੰਧ ਕੂਪ ਗ੍ਰਿਹ ਮੇਰਾ ॥
बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा ॥
जो कहता है कि यह मेरा घर है, उसे माया के बन्धन घेर लेते हैं और वह मोह के अंधै कुँए में जा गिरता है।

ਮੁਕਤੇ ਸੰਤ ਬੁਝਹਿ ਹਰਿ ਨੇਰਾ ॥੩॥
मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥३॥
लेकिन वे संतजन माया के बंधनों से छूट जाते हैं जो भगवान् को अपने निकट ही बसता समझते हैं।॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥
कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥
हे नानक ! जो भगवान् की शरण में पड़ा रहता है,"

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥੨੨॥੭੩॥
ईहा सुखु आगै गति पाई ॥४॥२२॥७३॥
उसे यहाँ इहलोक में सुख मिलता है और परलोक में भी गति हो जाती है॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਤੂ ਮੇਰਾ ਤਰੰਗੁ ਹਮ ਮੀਨ ਤੁਮਾਰੇ ॥
तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥
हे भगवान् ! तू मेरी जल की तरंग है एवं हम तेरी मछलियाँ हैं।

ਤੂ ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਹਮ ਤੇਰੈ ਦੁਆਰੇ ॥੧॥
तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥१॥
तू मेरा ठाकुर है और हम तेरे द्वार पर आए हैं।॥ १॥

ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਕਰਤਾ ਹਉ ਸੇਵਕੁ ਤੇਰਾ ॥
तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥
हे हरि ! तू मेरा रचयिता है और मैं तेरा सेवक हूँ।

ਸਰਣਿ ਗਹੀ ਪ੍ਰਭ ਗੁਨੀ ਗਹੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥१॥ रहाउ ॥
हे गुणी गंभीर प्रभु ! मैंने तेरी ही शरण ली है॥ १ ॥ रहाउ॥

ਤੂ ਮੇਰਾ ਜੀਵਨੁ ਤੂ ਆਧਾਰੁ ॥
तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥
तू ही मेरा जीवन है और तू ही मेरा आधार है।

ਤੁਝਹਿ ਪੇਖਿ ਬਿਗਸੈ ਕਉਲਾਰੁ ॥੨॥
तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥२॥
तुझे देखने से मेरा हृदय कमल खिल जाता है॥ २॥

ਤੂ ਮੇਰੀ ਗਤਿ ਪਤਿ ਤੂ ਪਰਵਾਨੁ ॥
तू मेरी गति पति तू परवानु ॥
तू ही मेरी मुक्ति करने वाला, तू ही मेरी इज्जत रखने वाला है और तू ही मुझे स्वीकार करता है।

ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਮੈ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥੩॥
तू समरथु मै तेरा ताणु ॥३॥
हे गोविन्द ! तू सर्वकला समर्थ है और मुझे तेरा ही बल है। ३॥

ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਉ ਨਾਮ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥
अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥
हे गुणों के भण्डार परमात्मा ! मैं रात-दिन तेरा नाम ही जपता रहूँ

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥੪॥੨੩॥੭੪॥
नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥४॥२३॥७४॥
नानक की यही प्रार्थना है॥४॥२३॥७४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਰੋਵਨਹਾਰੈ ਝੂਠੁ ਕਮਾਨਾ ॥
रोवनहारै झूठु कमाना ॥
किसी की मृत्यु पर रोने वाला भी झूठा ही विलाप करता है।

ਹਸਿ ਹਸਿ ਸੋਗੁ ਕਰਤ ਬੇਗਾਨਾ ॥੧॥
हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥
अपरिचित मनुष्य हँस-हँस कर मरने वाले का शोक करता है॥ १॥

ਕੋ ਮੂਆ ਕਾ ਕੈ ਘਰਿ ਗਾਵਨੁ ॥
को मूआ का कै घरि गावनु ॥
दुनिया में हर्षशोक का चक्र चलायमान है, जहाँ कोई मरता है तो वहाँ शोक हो रहा है और किसी के घर में किसी हर्षोल्लास के कारण गाना-बजाना हो रहा है।

ਕੋ ਰੋਵੈ ਕੋ ਹਸਿ ਹਸਿ ਪਾਵਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
को रोवै को हसि हसि पावनु ॥१॥ रहाउ ॥
कोई विलाप करता है और कोई खिलखिला कर हँसता है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਲ ਬਿਵਸਥਾ ਤੇ ਬਿਰਧਾਨਾ ॥
बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥
बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक

ਪਹੁਚਿ ਨ ਮੂਕਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥੨॥
पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥२॥
मनुष्य अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचता और अंततः पश्चाताप करता है॥ २॥

ਤ੍ਰਿਹੁ ਗੁਣ ਮਹਿ ਵਰਤੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥
त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥
यह दुनिया माया के तीन गुणों अर्थात् रजो गुण, तमो गुण एवं सतो गुण के वश में है।

ਨਰਕ ਸੁਰਗ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਅਉਤਾਰਾ ॥੩॥
नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥३॥
इसलिए प्राणी बार-बार नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜੋ ਲਾਇਆ ਨਾਮ ॥
कहु नानक जो लाइआ नाम ॥
हे नानक ! जिसे प्रभु ने अपने नाम सिमरन के साथ लगाया है

ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਤਾ ਕਾ ਪਰਵਾਨ ॥੪॥੨੪॥੭੫॥
सफल जनमु ता का परवान ॥४॥२४॥७५॥
उस मनुष्य का जन्म सफल है और वही सत्य के दरबार में स्वीकार होता है ॥ ४॥ २४॥ ७५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸੋਇ ਰਹੀ ਪ੍ਰਭ ਖਬਰਿ ਨ ਜਾਨੀ ॥
सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥
हे सखी ! जीव रूपी नारी रात भर अज्ञानता की नींद में सोई रही और उसने अपने प्रभु-पति के सन्देश को नहीं जाना।

ਭੋਰੁ ਭਇਆ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਨੀ ॥੧॥
भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥१॥
जब सूर्योदय हुआ अर्थात् सारी उम्र बीत गई और चलने का समय आ गया तो वह पश्चाताप करती है॥ १॥

ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੇਮ ਸਹਜਿ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਧਰਉ ਰੀ ॥
प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥
हे जीव रूपी नारी ! अपने प्रियतम प्रभु के प्रेम द्वारा तुझे अपने मन में सहज ही सुख प्राप्त हो जाएगा।

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਬੇ ਕੀ ਲਾਲਸਾ ਤਾ ਤੇ ਆਲਸੁ ਕਹਾ ਕਰਉ ਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥१॥ रहाउ ॥
जब तेरी अन्तरात्मा में प्रभु-मिलन की लालसा है तो तू क्यों आलस्य करती है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਰ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਆਣਿ ਨਿਸਾਰਿਓ ॥
कर महि अम्रितु आणि निसारिओ ॥
उसके पति-प्रभु ने आकर उसके हाथ में अमृत दिया था

ਖਿਸਰਿ ਗਇਓ ਭੂਮ ਪਰਿ ਡਾਰਿਓ ॥੨॥
खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥२॥
परन्तु यह फिसल गया और भूमि पर गिर गया।॥ २॥

ਸਾਦਿ ਮੋਹਿ ਲਾਦੀ ਅਹੰਕਾਰੇ ॥
सादि मोहि लादी अहंकारे ॥
हे सखी ! जीव रूपी नारी स्वयं ही विषय विकारों के आस्वादन, मोह एवं अहंकार में दबी रहती है फिर

ਦੋਸੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਕਰਣੈਹਾਰੇ ॥੩॥
दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥३॥
इसमें जग के रचयिता प्रभु का कोई दोष नहीं है। ३॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਟੇ ਭਰਮ ਅੰਧਾਰੇ ॥
साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥
हे नानक ! सत्संगति में आकर जिसके भ्रम का अन्धकार मिट जाता है,"

ਨਾਨਕ ਮੇਲੀ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥੪॥੨੫॥੭੬॥
नानक मेली सिरजणहारे ॥४॥२५॥७६॥
रचयिता प्रभु उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ २५॥ ७६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਕੀ ਆਸ ਪਿਆਰੇ ॥
चरन कमल की आस पिआरे ॥
हे प्रिय प्रभु ! मुझे तेरे चरण-कमल की आशा है।

ਜਮਕੰਕਰ ਨਸਿ ਗਏ ਵਿਚਾਰੇ ॥੧॥
जमकंकर नसि गए विचारे ॥१॥
यमदूत बेचारे तो मेरे पास से भाग गए हैं।॥१॥

ਤੂ ਚਿਤਿ ਆਵਹਿ ਤੇਰੀ ਮਇਆ ॥
तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥
हे भगवान् ! तू मुझे याद आता रहता है, मुझ पर यही तेरी बड़ी कृपा है।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ ਸਗਲ ਰੋਗ ਖਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा नाम-सिमरन करने से तमाम दुःख-क्लेश मिट गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਦੂਖ ਦੇਵਹਿ ਅਵਰਾ ਕਉ ॥
अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥
हे प्रभु ! यमदूत दूसरों को अत्यंत पीड़ित करता है परन्तु

ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਾਕਹਿ ਜਨ ਤੇਰੇ ਕਉ ॥੨॥
पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥२॥
वे तेरे भक्त के समीप नहीं आ सकता॥ २॥

ਦਰਸ ਤੇਰੇ ਕੀ ਪਿਆਸ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ॥
दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥
हे वाहिगुरु ! मेरे मन में तेरे दर्शनों की प्यास लगी हुई है,"

ਸਹਜ ਅਨੰਦ ਬਸੈ ਬੈਰਾਗੀ ॥੩॥
सहज अनंद बसै बैरागी ॥३॥
इसलिए तेरे प्रेम में भीगकर सहज आनंद एवं वैराग्य में बसता हूँ॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਣੀਜੈ ॥
नानक की अरदासि सुणीजै ॥
हे परमेश्वर ! नानक की प्रार्थना सुनिए,"

ਕੇਵਲ ਨਾਮੁ ਰਿਦੇ ਮਹਿ ਦੀਜੈ ॥੪॥੨੬॥੭੭॥
केवल नामु रिदे महि दीजै ॥४॥२६॥७७॥
केवल अपना नाम ही हृदय में बसा दीजिए॥ ४॥ २६॥ ७७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੋ ਮਿਟੇ ਜੰਜਾਲ ॥
मनु त्रिपतानो मिटे जंजाल ॥
हे भाई ! मेरा मन तृप्त हो गया है और मेरे माया के जंजाल मिट गए हैं

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਹੋਇਆ ਕਿਰਪਾਲ ॥੧॥
प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥१॥
क्योकि मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है। १॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭਲੀ ਬਨੀ ॥
संत प्रसादि भली बनी ॥
संतों की दया से (भाग्योदय होने से) मेरा भला हो गया है।

ਜਾ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਪੂਰਨੁ ਸੋ ਭੇਟਿਆ ਨਿਰਭੈ ਧਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जा कै ग्रिहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उस निर्भय प्रभु से मिल गया हूँ जिसका घर तमाम पदार्थों से भरपूर है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਸਾਧ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ॥
नामु द्रिड़ाइआ साध क्रिपाल ॥
कृपालु संत ने मेरे अन्तर्मन में प्रभु का नाम बसा दिया है।

ਮਿਟਿ ਗਈ ਭੂਖ ਮਹਾ ਬਿਕਰਾਲ ॥੨॥
मिटि गई भूख महा बिकराल ॥२॥
अब मेरी महाविकराल भूख मिट गई है॥ २॥

ਠਾਕੁਰਿ ਅਪੁਨੈ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥
ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥
मेरे ठाकुर ने मुझे एक देन प्रदान की है

ਜਲਨਿ ਬੁਝੀ ਮਨਿ ਹੋਈ ਸਾਂਤਿ ॥੩॥
जलनि बुझी मनि होई सांति ॥३॥
जिसके फलस्वरुप मेरी जलन बुझ गई हैं और मन शांत हो गया है॥ ३ ॥

ਮਿਟਿ ਗਈ ਭਾਲ ਮਨੁ ਸਹਜਿ ਸਮਾਨਾ ॥
मिटि गई भाल मनु सहजि समाना ॥
मेरी खोज मिट गई है और मेरा मन सहज आनंद में लीन हो गया है।

ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਨਾਮ ਖਜਾਨਾ ॥੪॥੨੭॥੭੮॥
नानक पाइआ नाम खजाना ॥४॥२७॥७८॥
नानक को भगवान् के नाम का खजाना प्राप्त हो गया है॥ ४॥ २७ ॥ ७८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਠਾਕੁਰ ਸਿਉ ਜਾ ਕੀ ਬਨਿ ਆਈ ॥
ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥
जिन लोगों की ठाकुर जी के साथ प्रीति बन गई है,"

ਭੋਜਨ ਪੂਰਨ ਰਹੇ ਅਘਾਈ ॥੧॥
भोजन पूरन रहे अघाई ॥१॥
ये नाम रूपी अक्षय भोजन खाकर तृप्त रहते हैं। ॥१॥

ਕਛੂ ਨ ਥੋਰਾ ਹਰਿ ਭਗਤਨ ਕਉ ॥
कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥
हरि के भक्तजनों को किसी भी पदार्थ की कमी नहीं आती।

ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਬਿਲਛਤ ਦੇਵਨ ਕਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥१॥ रहाउ ॥
उनके पास खाने, खर्चने, आनंद प्राप्ति एवं देने हेतु बहुत कुछ है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕਾ ਧਨੀ ਅਗਮ ਗੁਸਾਈ ॥
जा का धनी अगम गुसाई ॥
जिसका मालिक अगम्य गुसाई है,"

ਮਾਨੁਖ ਕੀ ਕਹੁ ਕੇਤ ਚਲਾਈ ॥੨॥
मानुख की कहु केत चलाई ॥२॥
कहो-उस मनुष्य का कोई क्या बिगाड़ सकता है॥ २॥

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਦਸ ਅਸਟ ਸਿਧਾਈ ॥ ਪਲਕ ਦਿਸਟਿ ਤਾ ਕੀ ਲਾਗਹੁ ਪਾਈ ॥੩॥
जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥३॥
जिसकी सेवा अठारह सिद्धियाँ करती हैं, उसके चरणों में लगने की एक पल भर की देरी भी मत करो॥ ३॥

ਜਾ ਕਉ ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ॥
जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥
नानक का कथन है कि हे मेरे स्वामी ! जिस पर तुम दया करते हो,"

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਹੀ ਤਿਨ ਕਾਮੀ ॥੪॥੨੮॥੭੯॥
कहु नानक नाही तिन कामी ॥४॥२८॥७९॥
उसे किसी भी पदार्थ की कमी नहीं आती॥ ४॥ २८॥ ७६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਉ ਮੈ ਅਪੁਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥
जब से मैंने अपने सतिगुरु का ध्यान-मनन किया है,"

ਤਬ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥
तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥१॥
तब से मेरे मन को महा सुख प्राप्त हो गया है॥ १ ॥

ਮਿਟਿ ਗਈ ਗਣਤ ਬਿਨਾਸਿਉ ਸੰਸਾ ॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਜਨ ਭਏ ਭਗਵੰਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ नामि रते जन भए भगवंता ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा कर्मों का लेखा-जोखा मिट गया तथा मेरी दुविधा भी दूर हो गई है। प्रभु नाम में लीन होने वाले भक्तजन भाग्यवान हो गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਉ ਮੈ ਅਪੁਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਚੀਤਿ ॥
जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥
जब मैंने अपने मालिक को याद किया तो

ਤਉ ਭਉ ਮਿਟਿਓ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥੨॥
तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥२॥
हे मेरे मित्र ! मेरा भय मिट गया।॥ २॥

ਜਉ ਮੈ ਓਟ ਗਹੀ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ॥
जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥
हे प्रभु ! जब से मैंने तेरी शरण ली है,"

ਤਾਂ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਮਨਸਾ ਮੇਰੀ ॥੩॥
तां पूरन होई मनसा मेरी ॥३॥
मेरी अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ३॥

ਦੇਖਿ ਚਲਿਤ ਮਨਿ ਭਏ ਦਿਲਾਸਾ ॥
देखि चलित मनि भए दिलासा ॥
हे भगवान् ! तेरे आश्चर्यजनक खेल देख कर मेरे मन को धैर्य हो गया है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥੪॥੨੯॥੮੦॥
नानक दास तेरा भरवासा ॥४॥२९॥८०॥
दास नानक को तेरा ही भरोसा है॥ ४ ॥ २६ ॥ ८० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਮੂਸਾ ਲਾਜੁ ਟੁਕਾਈ ॥
अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥
यम रूपी चूहा रात-दिन जीवन रूपी रस्सी को कुतरता जा रहा है।

ਗਿਰਤ ਕੂਪ ਮਹਿ ਖਾਹਿ ਮਿਠਾਈ ॥੧॥
गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥१॥
माया रूपी कुएँ में गिरता हुआ प्राणी (विषय-विकारों की) मिठाई खा रहा है॥ १॥

ਸੋਚਤ ਸਾਚਤ ਰੈਨਿ ਬਿਹਾਨੀ ॥
सोचत साचत रैनि बिहानी ॥
सोचते-विचारते जीवन रूपी रात्रि बीतती जा रही है।

ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਕੇ ਚਿਤਵਤ ਕਬਹੂ ਨ ਸਿਮਰੈ ਸਾਰਿੰਗਪਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥१॥ रहाउ ॥
मनुष्य माया के अनेक रंग-तमाशों को सोचता रहता है परन्तु सारिंगपाणि प्रभु को कभी याद नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਦ੍ਰੁਮ ਕੀ ਛਾਇਆ ਨਿਹਚਲ ਗ੍ਰਿਹੁ ਬਾਂਧਿਆ ॥
द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ ॥
पेड़ की छाया को अटल सोचकर मनुष्य अपना घर इसके नीचे बनाता है।

ਕਾਲ ਕੈ ਫਾਂਸਿ ਸਕਤ ਸਰੁ ਸਾਂਧਿਆ ॥੨॥
काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥२॥
काल (मृत्यु) की फाँसी उसकी गर्दन नीचे है और माया ने मोह रूपी अपना तीर उस पर चलाया हुआ है॥ २॥

ਬਾਲੂ ਕਨਾਰਾ ਤਰੰਗ ਮੁਖਿ ਆਇਆ ॥
बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥
रेत का किनारा लहरों के मुंह में आ गया है।

ਸੋ ਥਾਨੁ ਮੂੜਿ ਨਿਹਚਲੁ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ॥੩॥
सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥३॥
लेकिन उस स्थान को मूर्ख मनुष्य अटल समझता है॥ ३॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਪਿਓ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥
साधु की संगति में मैंने जगत के बादशाह प्रभु का सिमरन किया है।

ਨਾਨਕ ਜੀਵੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੪॥੩੦॥੮੧॥
नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥४॥३०॥८१॥
हे नानक ! हरि का गुणगान करके जीवित रहता हूँ॥ ४॥ ३० ॥ ८१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਤੁਕੇ ੯ ॥
आसा महला ५ दुतुके ९ ॥
आसा महला ५ दुतुके ९ ॥

ਉਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੂ ਕਰਤੀ ਕੇਲ ॥
उन कै संगि तू करती केल ॥
हे मेरी काया ! उस आत्मा के साथ मिलकर तू अदभुत खेल खेलती है।

ਉਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਹਮ ਤੁਮ ਸੰਗਿ ਮੇਲ ॥
उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥
उसके साथ ही तेरा हरेक से मेल-मिलाप बना हुआ है।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੁਮ ਸਭੁ ਕੋਊ ਲੋਰੈ ॥
उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥
उसकी संगति में हर कोई तुझे चाहता है।

ਓਸੁ ਬਿਨਾ ਕੋਊ ਮੁਖੁ ਨਹੀ ਜੋਰੈ ॥੧॥
ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥१॥
उसके बिना कोई भी तुझे देखना नहीं चाहता ॥ १॥

ਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਕਹਾ ਸਮਾਏ ॥
ते बैरागी कहा समाए ॥
हे मेरी काया ! वह वैरागी आत्मा अब किधर समा गई है ?

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਤੁਹੀ ਦੁਹੇਰੀ ਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥१॥ रहाउ ॥
उसके बिना तू दयनीय अवस्था में है॥ १॥ रहाउ॥

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੂ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਮਾਹਰਿ ॥
उन्ह कै संगि तू ग्रिह महि माहरि ॥
उसके साथ तू घर में महारानी थी।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੂ ਹੋਈ ਹੈ ਜਾਹਰਿ ॥
उन्ह कै संगि तू होई है जाहरि ॥
उसके साथ ही जगत में तू प्रगट हुई थी।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੂ ਰਖੀ ਪਪੋਲਿ ॥
उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥
उसके साथ ही तुझे पाल-पोसकर रखा जाता था।

ਓਸੁ ਬਿਨਾ ਤੂੰ ਛੁਟਕੀ ਰੋਲਿ ॥੨॥
ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥२॥
जब आत्मा छोड़कर चली जाती है तो तुम मिट्टी में मिल जाती हो।॥ २॥

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੇਰਾ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ॥
उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥
(हे काया !) उसके साथ ही तेरा मान-सम्मान है।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੁਮ ਸਾਕੁ ਜਗਤੁ ॥
उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥
उसके साथ ही तेरा जगत में रिश्ता है।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੇਰੀ ਸਭ ਬਿਧਿ ਥਾਟੀ ॥
उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥
उसकी संगति में तुझे समस्त विधियों से श्रृंगारा जाता था।

ਓਸੁ ਬਿਨਾ ਤੂੰ ਹੋਈ ਹੈ ਮਾਟੀ ॥੩॥
ओसु बिना तूं होई है माटी ॥३॥
उसके बिना तुम मिट्टी हो गई हो।॥ ३॥

ਓਹੁ ਬੈਰਾਗੀ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥
ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥
वह निर्लिप्त आत्मा न कभी मरती है और न ही जन्म लेती है।

ਹੁਕਮੇ ਬਾਧਾ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
हुकमे बाधा कार कमाइ ॥
प्रभु के हुक्म में वह कार्य करती है।

ਜੋੜਿ ਵਿਛੋੜੇ ਨਾਨਕ ਥਾਪਿ ॥
जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥
हे नानक ! शरीर की रचना करके प्रभु आत्मा को इससे मिलाता और फिर इससे अलग कर देता है।

ਅਪਨੀ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਣੈ ਆਪਿ ॥੪॥੩੧॥੮੨॥
अपनी कुदरति जाणै आपि ॥४॥३१॥८२॥
परमात्मा अपनी कुदरत को आप ही जानता है॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਾ ਓਹੁ ਮਰਤਾ ਨਾ ਹਮ ਡਰਿਆ ॥
ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥
जीवात्मा कहती है कि परमात्मा न तो मरता है और न ही हम मृत्यु से भयभीत होते हैं।

ਨਾ ਓਹੁ ਬਿਨਸੈ ਨਾ ਹਮ ਕੜਿਆ ॥
ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥
वह परमात्मा न ही कभी नाश होता है, न ही हम मृत्यु के डर से दु:खी होते हैं।

ਨਾ ਓਹੁ ਨਿਰਧਨੁ ਨਾ ਹਮ ਭੂਖੇ ॥
ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥
भगवान न तो निर्धन है और न ही हम भूखे हैं।

ਨਾ ਓਸੁ ਦੂਖੁ ਨ ਹਮ ਕਉ ਦੂਖੇ ॥੧॥
ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥१॥
न उसे कोई दुख है और न ही हम दुखी होते हैं। ॥१॥

ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਊ ਮਾਰਨਵਾਰਾ ॥
अवरु न कोऊ मारनवारा ॥
भगवान के अलावा अन्य कोई मारने वाला नहीं।

ਜੀਅਉ ਹਮਾਰਾ ਜੀਉ ਦੇਨਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा जीवनदाता भगवान है, वह मुझे जीवन प्रदान करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾ ਉਸੁ ਬੰਧਨ ਨਾ ਹਮ ਬਾਧੇ ॥
ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥
उसे कोई बंधन नहीं और न ही हम बंधन में फंसे हुए हैं।

ਨਾ ਉਸੁ ਧੰਧਾ ਨਾ ਹਮ ਧਾਧੇ ॥
ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥
न ही उसे कोई कर्म का धंधा है, न ही हम किसी धन्धे में ग्रस्त हैं।

ਨਾ ਉਸੁ ਮੈਲੁ ਨ ਹਮ ਕਉ ਮੈਲਾ ॥
ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥
न ही उसे कोई मैल है और न ही हम मेले हैं।

ਓਸੁ ਅਨੰਦੁ ਤ ਹਮ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥੨॥
ओसु अनंदु त हम सद केला ॥२॥
वह सदैव आनन्द में है तो हम भी सदैव प्रसन्न हैं।॥ २॥

ਨਾ ਉਸੁ ਸੋਚੁ ਨ ਹਮ ਕਉ ਸੋਚਾ ॥
ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥
न उसे कोई फिक्र है और न ही हमें कोई फिक्र है।

ਨਾ ਉਸੁ ਲੇਪੁ ਨ ਹਮ ਕਉ ਪੋਚਾ ॥
ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥
उसमें कोई माया का लेप नहीं और न ही हम में कोई अवगुण है।

ਨਾ ਉਸੁ ਭੂਖ ਨ ਹਮ ਕਉ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ॥
ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना ॥
न ही कोई उसे भूख है और न ही हम में कोई तृष्णा है।

ਜਾ ਉਹੁ ਨਿਰਮਲੁ ਤਾਂ ਹਮ ਜਚਨਾ ॥੩॥
जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥३॥
जब वह निर्मल है तों हम भी उस जैसे निर्मल लगते हैं। ॥३॥

ਹਮ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਏਕੈ ਓਹੀ ॥
हम किछु नाही एकै ओही ॥
हम कुछ भी नहीं केवल वही सब कुछ है।

ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਏਕੋ ਸੋਈ ॥
आगै पाछै एको सोई ॥
वह परमात्मा ही वर्तमान काल से पूर्व भूतकाल में भी था और भविष्यकाल में भी एक वही होगा।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਖੋਏ ਭ੍ਰਮ ਭੰਗਾ ॥
नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥
हे नानक ! गुरु ने मेरे सारे भ्रम एवं भेदभाव दूर कर दिए हैं।

ਹਮ ਓਇ ਮਿਲਿ ਹੋਏ ਇਕ ਰੰਗਾ ॥੪॥੩੨॥੮੩॥
हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥४॥३२॥८३॥
वह और हम मिलकर एक ही रंग के हो चुके हैं।॥ ४॥ ३२॥ ८३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਨਿਕ ਭਾਂਤਿ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਕਰੀਐ ॥
अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥
अनेक प्रकार से भगवान की सेवा-भक्ति करनी चाहिए।

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨੁ ਆਗੈ ਧਰੀਐ ॥
जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥
अपने प्राण, आत्मा एवं धन को उसके समक्ष अर्पण कर देना चाहिए।

ਪਾਨੀ ਪਖਾ ਕਰਉ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥
अपना अभिमान त्याग कर जल एवं पंखे की सेवा करनी चाहिए।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਜਾਈਐ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੧॥
अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥१॥
अनेक बार उस पर कुर्बान होना चाहिए॥ १॥

ਸਾਈ ਸੁਹਾਗਣਿ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ॥
साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥
हे मेरी माता ! केवल वही सुहागिन है जो अपने प्राणनाथ प्रभु को अच्छी लगती है।

ਤਿਸ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਲਉ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उसकी संगति में उठती-बैठती हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੀ ਕੀ ਪਨਿਹਾਰਿ ॥
दासनि दासी की पनिहारि ॥
मैं उसकी दासों की दासी की पानी भरने वाली हूँ।

ਉਨ੍ ਕੀ ਰੇਣੁ ਬਸੈ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ॥
उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥
मैं अपने मन में उनकी चरण-धूलि प्रेमपूर्वक रखती हूँ।

ਮਾਥੈ ਭਾਗੁ ਤ ਪਾਵਉ ਸੰਗੁ ॥
माथै भागु त पावउ संगु ॥
यदि मेरे माथे पर भाग्योदय हो जाएँ तो मैं उनकी संगति को प्राप्त होती हूँ।

ਮਿਲੈ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੈ ਰੰਗਿ ॥੨॥
मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥२॥
अपनी प्रसन्नता द्वारा स्वामी मुझे मिल गया है॥ २ ॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਦੇਵਉ ਸਭ ਨੇਮਾ ॥
जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥
मैं सभी जप, तप एवं धार्मिक संस्कार उसे अर्पण करती हूँ।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਅਰਪਉ ਸਭ ਹੋਮਾ ॥
करम धरम अरपउ सभ होमा ॥
तमाम धर्म कर्म, यज्ञ एवं होम मैं उसको अर्पित करती हूँ।

ਗਰਬੁ ਮੋਹੁ ਤਜਿ ਹੋਵਉ ਰੇਨ ॥
गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥
अभिमान एवं मोह को त्याग कर मैं उसकी चरण-धूलि हो गई हूँ।

ਉਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਦੇਖਉ ਪ੍ਰਭੁ ਨੈਨ ॥੩॥
उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥३॥
मैं उनकी संगति में प्रभु को अपने नेत्रों से देखती हूँ॥३॥

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਏਹੀ ਆਰਾਧਉ ॥
निमख निमख एही आराधउ ॥
क्षण क्षण में इस तरह भगवान की आराधना करती हूँ।

ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਏਹ ਸੇਵਾ ਸਾਧਉ ॥
दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥
दिन-रात मैं इस तरह भगवान की सेवा करती हूँ।

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ॥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿੰਦ ॥੪॥੩੩॥੮੪॥
भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ साधसंगि नानक बखसिंद ॥४॥३३॥८४॥
अब गोपाल गोबिंद मुझ पर कृपाल हो गया है।हे नानक ! साधसंगत में वह जीव को क्षमा कर देता है ॥४॥ ३३॥ ८४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥
प्रभु की प्रीति से सदैव सुख मिलता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਦੁਖੁ ਲਗੈ ਨ ਕੋਇ ॥
प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥
इससे कोई दु:ख स्पर्श नहीं कर सकता।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਖੋਇ ॥
प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥
प्रभु की प्रीति से अहंत्व की मैल दूर हो जाती है और

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦ ਨਿਰਮਲ ਹੋਇ ॥੧॥
प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥१॥
मनुष्य सदैव निर्मल हो जाता है॥ १॥

ਸੁਨਹੁ ਮੀਤ ਐਸਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥
सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥
हे मित्र ! सुन, भगवान का प्रेम प्यार ऐसा है कि

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਘਟ ਘਟ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअ प्रान घट घट आधारु ॥१॥ रहाउ ॥
यह हरेक जीव के शरीर, जीवन एवं प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਭਏ ਸਗਲ ਨਿਧਾਨ ॥
प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥
प्रभु की प्रीति से समस्त भण्डार मिल जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਿਦੈ ਨਿਰਮਲ ਨਾਮ ॥
प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥
इससे निर्मल नाम मन में बस जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਦ ਸੋਭਾਵੰਤ ॥
प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥
प्रभु की प्रीति से मैं हमेशा के लिए शोभा वाला बन गया हूँ ।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਭ ਮਿਟੀ ਹੈ ਚਿੰਤ ॥੨॥
प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥२॥
प्रभु की प्रीति से सारी चिन्ता मिट गई है॥ २॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਇਹੁ ਭਵਜਲੁ ਤਰੈ ॥
प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥
प्रभु की प्रीति से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜਮ ਤੇ ਨਹੀ ਡਰੈ ॥
प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥
प्रभु की प्रीति से जीव मृत्यु से नहीं डरता।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੈ ॥
प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥
प्रभु की प्रीति सबका उद्धार कर देती है और

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਲੈ ਸੰਗਾਰੈ ॥੩॥
प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥३॥
परलोक में उनके साथ जाती है। ॥३॥

ਆਪਹੁ ਕੋਈ ਮਿਲੈ ਨ ਭੂਲੈ ॥
आपहु कोई मिलै न भूलै ॥
अपने आप न कोई मनुष्य (प्रभु-चरणों में) मिला रह सकता है और न कोई कुमार्गगामी होता है।

ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਤਿਸੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਘੂਲੈ ॥
जिसु क्रिपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥
जिस पर प्रभु कृपालु होता है, वह साधुओं की संगति में मिलता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੇਰੈ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ,"

ਸੰਤ ਓਟ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ਤਾਣੁ ॥੪॥੩੪॥੮੫॥
संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥४॥३४॥८५॥
तू ही संतों का सहारा एवं उनका बल है॥ ४॥ ३४॥ ८५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਭੂਪਤਿ ਹੋਇ ਕੈ ਰਾਜੁ ਕਮਾਇਆ ॥
भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥
किसी (इन्सान) ने राजा बनकर लोगों पर राज किया है और

ਕਰਿ ਕਰਿ ਅਨਰਥ ਵਿਹਾਝੀ ਮਾਇਆ ॥
करि करि अनरथ विहाझी माइआ ॥
बहुत सारे अनर्थ-जुल्म करके धन संचय किया है।

ਸੰਚਤ ਸੰਚਤ ਥੈਲੀ ਕੀਨ੍ਹੀ ॥
संचत संचत थैली कीन्ही ॥
उसने धन संचय करके खजाना भर लिया परन्तु

ਪ੍ਰਭਿ ਉਸ ਤੇ ਡਾਰਿ ਅਵਰ ਕਉ ਦੀਨ੍ਹੀ ॥੧॥
प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥१॥
आखिरकार परमात्मा ने उसकी धन-दौलत उससे छीनकर किसी दूसरे को दे दी है॥ १॥

ਕਾਚ ਗਗਰੀਆ ਅੰਭ ਮਝਰੀਆ ॥
काच गगरीआ अंभ मझरीआ ॥
यह मानव-शरीर कच्ची मिट्टी की गागर के समान है जो जल में ही गल जाता है।

ਗਰਬਿ ਗਰਬਿ ਉਆਹੂ ਮਹਿ ਪਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥१॥ रहाउ ॥
अभिमान एवं घमण्ड कर करके यह उस जल में ही डूब जाता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਿਰਭਉ ਹੋਇਓ ਭਇਆ ਨਿਹੰਗਾ ॥
निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥
मनुष्य मृत्यु के भय से निडर होकर निर्भीक बन जाता है लेकिन

ਚੀਤਿ ਨ ਆਇਓ ਕਰਤਾ ਸੰਗਾ ॥
चीति न आइओ करता संगा ॥
जगत के रचयिता परमात्मा को याद नहीं करता जो सदा उसके साथ है।

ਲਸਕਰ ਜੋੜੇ ਕੀਆ ਸੰਬਾਹਾ ॥
लसकर जोड़े कीआ स्मबाहा ॥
वह फौजें भर्ती करता और हथियार संग्रह करता है।

ਨਿਕਸਿਆ ਫੂਕ ਤ ਹੋਇ ਗਇਓ ਸੁਆਹਾ ॥੨॥
निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥२॥
जब उसके प्राण निकल जाते हैं तो वह राख बन जाता है॥ २॥

ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਅਰੁ ਰਾਨੀ ॥
ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥
उसके पास ऊँचे मन्दिर, महल, महारानियाँ,"

ਹਸਤਿ ਘੋੜੇ ਜੋੜੇ ਮਨਿ ਭਾਨੀ ॥
हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥
मन को लुभाने वाले हाथी-घोड़े, सुन्दर वस्त्र एवं

ਵਡ ਪਰਵਾਰੁ ਪੂਤ ਅਰੁ ਧੀਆ ॥
वड परवारु पूत अरु धीआ ॥
पुत्र व पुत्रियों का बड़ा परिवार था परन्तु

ਮੋਹਿ ਪਚੇ ਪਚਿ ਅੰਧਾ ਮੂਆ ॥੩॥
मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥३॥
उनके मोह में लीन हुआ ज्ञानहीन मनुष्य दुःखी होकर प्राण त्याग देता है॥ ३॥

ਜਿਨਹਿ ਉਪਾਹਾ ਤਿਨਹਿ ਬਿਨਾਹਾ ॥
जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥
जिस विधाता ने उसे पैदा किया था, उसने ही उसे मार दिया है।

ਰੰਗ ਰਸਾ ਜੈਸੇ ਸੁਪਨਾਹਾ ॥
रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥
भोगविलास एवं स्वाद स्वप्न की भांति है

ਸੋਈ ਮੁਕਤਾ ਤਿਸੁ ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਜਿਸੁ ਖਸਮੁ ਦਇਆਲੁ ॥੪॥੩੫॥੮੬॥
सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥४॥३५॥८६॥
उसे ही मोक्ष मिलता है तथा उसके पास ही शासन एवं धन-ऐश्वर्य है,"हे दास नानक ! जिस पर प्रभु दयालु होता है ॥ ४॥ ३५ ॥ ८६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਇਨ੍ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀ ਘਨੇਰੀ ॥
इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी ॥
आदमी इस माया (धन) से बहुत ज्यादा प्रेम करता है।

ਜਉ ਮਿਲੀਐ ਤਉ ਵਧੈ ਵਧੇਰੀ ॥
जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥
जैसे-जैसे यह (धन) मिलता जाता है वैसे ही इसके साथ मोह बढ़ता जाता है।

ਗਲਿ ਚਮੜੀ ਜਉ ਛੋਡੈ ਨਾਹੀ ॥
गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥
गले से चिपकी हुई यह माया किसी भी तरह आदमी को छोड़ती नहीं परन्तु

ਲਾਗਿ ਛੁਟੋ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਪਾਈ ॥੧॥
लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥१॥
सच्चे गुरु के चरण-स्पर्श करने से इससे छुटकारा मिल जाता है॥ १॥

ਜਗ ਮੋਹਨੀ ਹਮ ਤਿਆਗਿ ਗਵਾਈ ॥
जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥
जगत को मुग्ध करने वाली माया हमने त्याग कर खुद से दूर कर दी है।

ਨਿਰਗੁਨੁ ਮਿਲਿਓ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥१॥ रहाउ ॥
अब हमें निर्गुण प्रभु मिल गया है और सब ओर से शुभ कामनाएँ मिल रही है॥ १॥ रहाउ ॥

ਐਸੀ ਸੁੰਦਰਿ ਮਨ ਕਉ ਮੋਹੈ ॥
ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥
माया इतनी सुन्दर है कि यह मन को आकर्षित कर लेती है।

ਬਾਟਿ ਘਾਟਿ ਗ੍ਰਿਹਿ ਬਨਿ ਬਨਿ ਜੋਹੈ ॥
बाटि घाटि ग्रिहि बनि बनि जोहै ॥
यह मनुष्य के पथ, घाट, घर एवं वन-वन में दृष्टि लगाकर प्रभावित करती है।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਾਗੈ ਹੋਇ ਕੈ ਮੀਠੀ ॥
मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥
मन एवं तन को यह बहुत मीठी लगती है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੈ ਖੋਟੀ ਡੀਠੀ ॥੨॥
गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥२॥
गुरु की दया से मैंने देख लिया है कि यह माया बहुत खोटी है॥ २॥

ਅਗਰਕ ਉਸ ਕੇ ਵਡੇ ਠਗਾਊ ॥
अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥
उस माया के आगे काम करने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि विकार बड़े ठग हैं।

ਛੋਡਹਿ ਨਾਹੀ ਬਾਪ ਨ ਮਾਊ ॥
छोडहि नाही बाप न माऊ ॥
(और तो और) यह अपने माता-पिता को भी नहीं छोड़ते।

ਮੇਲੀ ਅਪਨੇ ਉਨਿ ਲੇ ਬਾਂਧੇ ॥
मेली अपने उनि ले बांधे ॥
अपने मेल-मुलाकात करने वाले लोगों को भी इन्होंने भलीभांति फँसा लिया है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮੈ ਸਗਲੇ ਸਾਧੇ ॥੩॥
गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥३॥
परन्तु गुरु की कृपा से मैंने उन सब ठगों को वश में कर लिया है॥ ३॥

ਅਬ ਮੋਰੈ ਮਨਿ ਭਇਆ ਅਨੰਦ ॥
अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥
अब मेरे हृदय में आनंद है।

ਭਉ ਚੂਕਾ ਟੂਟੇ ਸਭਿ ਫੰਦ ॥
भउ चूका टूटे सभि फंद ॥
मेरा भय मिट गया है और मेरे तमाम बन्धन कट गए हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥
हे नानक ! जब से मुझे सच्चा गुरु मिला है,"

ਘਰੁ ਸਗਲਾ ਮੈ ਸੁਖੀ ਬਸਾਇਆ ॥੪॥੩੬॥੮੭॥
घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥४॥३६॥८७॥
तब से मैंने अपना सारा घर सुखी बसा लिया है अर्थात् मेरे शरीर रूपी घर में बसने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ सुखी हो गई हैं॥ ४॥ ३६ ॥ ८७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ॥
आठ पहर निकटि करि जानै ॥
संतजन आठों प्रहर प्रभु को अपने निकट बसता समझते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਮਾਨੈ ॥
प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥
प्रभु के किए हरेक काम को मीठा समझकर मानते हैं।

ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਆਧਾਰੁ ॥
एकु नामु संतन आधारु ॥
प्रभु का एक नाम ही संतों के जीवन का आधार है और

ਹੋਇ ਰਹੇ ਸਭ ਕੀ ਪਗ ਛਾਰੁ ॥੧॥
होइ रहे सभ की पग छारु ॥१॥
सन्तजन सबकी चरण-धूलि बने रहते हैं।॥ १॥

ਸੰਤ ਰਹਤ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! संतों का जीवन-आचरण ध्यानपूर्वक सुनो।

ਉਆ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
उनकी महिमा कथन नहीं की जा सकती ॥ १॥ रहाउ॥

ਵਰਤਣਿ ਜਾ ਕੈ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ॥
वरतणि जा कै केवल नाम ॥
उनका कार्य-व्यवहार केवल प्रभु का नाम है।

ਅਨਦ ਰੂਪ ਕੀਰਤਨੁ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥
आनंद स्वरूप प्रभु का भजन-कीर्तन उनका सच्चा सुख विश्राम है।

ਮਿਤ੍ਰ ਸਤ੍ਰੁ ਜਾ ਕੈ ਏਕ ਸਮਾਨੈ ॥
मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥
मित्र एवं शत्रु उनके लिए एक समान हैं।

ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥੨॥
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥२॥
अपने प्रभु के बिना वह किसी को नहीं जानते॥ २॥

ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਅਘ ਕਾਟਨਹਾਰਾ ॥
कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥
संतजन करोड़ों ही पाप मिटाने वाले हैं।

ਦੁਖ ਦੂਰਿ ਕਰਨ ਜੀਅ ਕੇ ਦਾਤਾਰਾ ॥
दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥
वह जीवों के दुःख को निवृत्त कर देते हैं और मनुष्य को आत्मिक जीवन प्रदान करने में सक्षम हैं।

ਸੂਰਬੀਰ ਬਚਨ ਕੇ ਬਲੀ ॥
सूरबीर बचन के बली ॥
वे काम, क्रोध, इत्यादि विकारों को जीतने वाले शूरवीर एवं वचन के बली हैं।

ਕਉਲਾ ਬਪੁਰੀ ਸੰਤੀ ਛਲੀ ॥੩॥
कउला बपुरी संती छली ॥३॥
इस तुच्छ माया को भी संतों ने छल लिया है॥ ३॥

ਤਾ ਕਾ ਸੰਗੁ ਬਾਛਹਿ ਸੁਰਦੇਵ ॥
ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥
संतों की संगति देवते भी चाहते हैं।

ਅਮੋਘ ਦਰਸੁ ਸਫਲ ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ॥
अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥
उनके दर्शन बड़े सफल हैं और उनकी सेवा बड़ी फलदायक है।

ਕਰ ਜੋੜਿ ਨਾਨਕੁ ਕਰੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥
हाथ जोड़कर नानक एक यही प्रार्थना करता है कि

ਮੋਹਿ ਸੰਤਹ ਟਹਲ ਦੀਜੈ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੪॥੩੭॥੮੮॥
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥४॥३७॥८८॥
हे गुणों के भण्डार प्रभु ! मुझे संतों की सेवा की देन प्रदान कीजिए॥ ४॥ ३७॥ ८८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਗਲ ਸੁਖ ਜਪਿ ਏਕੈ ਨਾਮ ॥
सगल सूख जपि एकै नाम ॥
भगवान का एक नाम जपने से ही सर्व सुख मिल जाते हैं।

ਸਗਲ ਧਰਮ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥
सगल धरम हरि के गुण गाम ॥
श्रीहरि का गुणगान करने से तीर्थ, तप, दान-पुण्य एवं दया इत्यादि सभी धर्मों का फल भी मिल जाता है।

ਮਹਾ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸਾਧ ਕਾ ਸੰਗੁ ॥
महा पवित्र साध का संगु ॥
साधु की संगति महापवित्र है,"

ਜਿਸੁ ਭੇਟਤ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗੁ ॥੧॥
जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥१॥
जिसके मिलन से प्रभु से प्रेम हो जाता है॥ १॥

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਓਇ ਆਨੰਦ ਪਾਵੈ ॥
गुर प्रसादि ओइ आनंद पावै ॥
गुरु की कृपा से वह सुख पा लेता है।

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਮਨਿ ਹੋਇ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसका सिमरन करने से मन में प्रकाश हो जाता है, उसकी गति एवं अनुमान वर्णन नहीं किए जा सकते॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਰਤ ਨੇਮ ਮਜਨ ਤਿਸੁ ਪੂਜਾ ॥
वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥
उसकी पूजा करने से व्रत, नियम, तीर्थ-स्नान,"

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਤਿਨਿ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸੁਨੀਜਾ ॥
बेद पुरान तिनि सिम्रिति सुनीजा ॥
वेदों, पुराणों एवं स्मृतियों के सुनने का भी फल मिल जाता है।

ਮਹਾ ਪੁਨੀਤ ਜਾ ਕਾ ਨਿਰਮਲ ਥਾਨੁ ॥
महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥
उसका हृदय रूपी स्थान भी महापवित्र एवं निर्मल हो जाता है

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਜਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੨॥
साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥
जो व्यक्ति साधु की संगति करता है, उसके हृदय में परमात्मा का हरि-नाम बस जाता है ॥ २ ॥

ਪ੍ਰਗਟਿਓ ਸੋ ਜਨੁ ਸਗਲੇ ਭਵਨ ॥
प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥
ऐसा भक्तजन सारे विश्व में लोकप्रिय हो जाता है।

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਤਾ ਕੀ ਪਗ ਰੇਨ ॥
पतित पुनीत ता की पग रेन ॥
उसकी चरण-धूलि से पापी भी पवित्र हो जाते हैं।

ਜਾ ਕਉ ਭੇਟਿਓ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥
जिस मनुष्य को हरि-परमेश्वर बादशाह मिल गया है,"

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਇ ॥੩॥
ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥३॥
उसकी गति एवं महत्ता वर्णन नहीं किए जा सकते॥ ३॥

ਆਠ ਪਹਰ ਕਰ ਜੋੜਿ ਧਿਆਵਉ ॥
आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥
मैं निशदिन हाथ जोड़कर प्रभु का ध्यान करता हूँ और

ਉਨ ਸਾਧਾ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵਉ ॥
उन साधा का दरसनु पावउ ॥
उन संतों के दर्शन प्राप्त करता हूँ।

ਮੋਹਿ ਗਰੀਬ ਕਉ ਲੇਹੁ ਰਲਾਇ ॥
मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥
हे प्रभु ! मुझ गरीब को अपने साथ मिला लीजिए।

ਨਾਨਕ ਆਇ ਪਏ ਸਰਣਾਇ ॥੪॥੩੮॥੮੯॥
नानक आइ पए सरणाइ ॥४॥३८॥८९॥
नानक ने आकर तेरी शरण ले ली ॥४॥३८॥८९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਉਦਕ ਇਸਨਾਨੀ ॥
आठ पहर उदक इसनानी ॥
हे पण्डित जी ! तुम तो अपने शालग्राम को किसी-किसी समय ही स्नान कराते हो लेकिन हमारा शालग्राम आठों प्रहर ही जल में स्नान करने वाला है,"

ਸਦ ਹੀ ਭੋਗੁ ਲਗਾਇ ਸੁਗਿਆਨੀ ॥
सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥
मन को लुभाने वाला ज्ञानी हरि-शालग्राम सदैव भोग लगाता रहता है।

ਬਿਰਥਾ ਕਾਹੂ ਛੋਡੈ ਨਾਹੀ ॥
बिरथा काहू छोडै नाही ॥
वह किसी के भी दुःख-दर्द को नहीं रहने देता।

ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਤਿਸੁ ਲਾਗਹ ਪਾਈ ॥੧॥
बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥१॥
हम उस हरि शालग्राम के बार-बार चरण स्पर्श करते हैं। ॥१॥

ਸਾਲਗਿਰਾਮੁ ਹਮਾਰੈ ਸੇਵਾ ॥
सालगिरामु हमारै सेवा ॥
हमारे हृदय में प्रभु की सेवा ही शालग्राम की पूजा है।

ਪੂਜਾ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ ਦੇਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूजा अरचा बंदन देवा ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु का नाम-सुमिरन ही पूजा अर्चना एवं वन्दना है॥ १॥ रहाउ ॥

ਘੰਟਾ ਜਾ ਕਾ ਸੁਨੀਐ ਚਹੁ ਕੁੰਟ ॥
घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥
मेरे शालग्राम हरि की इच्छा का घण्टा चारों दिशाओं सारे विश्व में सुनाई देता है।

ਆਸਨੁ ਜਾ ਕਾ ਸਦਾ ਬੈਕੁੰਠ ॥
आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥
उसका आसन सदैव ही वैकुंठ में है।

ਜਾ ਕਾ ਚਵਰੁ ਸਭ ਊਪਰਿ ਝੂਲੈ ॥
जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥
उसका चंवर समस्त जीवों पर झूलता है और

ਤਾ ਕਾ ਧੂਪੁ ਸਦਾ ਪਰਫੁਲੈ ॥੨॥
ता का धूपु सदा परफुलै ॥२॥
जिसकी होम-सामग्री (धूप) सदैव महकती रहती है॥ २॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੰਪਟੁ ਹੈ ਰੇ ਜਾ ਕਾ ॥
घटि घटि स्मपटु है रे जा का ॥
हे पण्डित ! तू अपने शालग्राम को डिब्बे में रखता है लेकिन हमारे शालग्राम का डिब्बा प्रत्येक जीव का हृदय है।

ਅਭਗ ਸਭਾ ਸੰਗਿ ਹੈ ਸਾਧਾ ॥
अभग सभा संगि है साधा ॥
संतों की संगति उसकी अटल सभा है।

ਆਰਤੀ ਕੀਰਤਨੁ ਸਦਾ ਅਨੰਦ ॥
आरती कीरतनु सदा अनंद ॥
सदैव आनंद प्रदान करने वाला उसका कीर्तन ही उसकी आरती है।

ਮਹਿਮਾ ਸੁੰਦਰ ਸਦਾ ਬੇਅੰਤ ॥੩॥
महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥३॥
उसकी महिमा बहुत सुन्दर एवं सदैव ही अनन्त है॥ ३॥

ਜਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਸ ਹੀ ਲਹਨਾ ॥
जिसहि परापति तिस ही लहना ॥
जिसकी किस्मत में उसकी प्राप्ति का लेख लिखा होता है केवल वही शालग्राम प्रभु को पाता है

ਸੰਤ ਚਰਨ ਓਹੁ ਆਇਓ ਸਰਨਾ॥
संत चरन ओहु आइओ सरना ॥
वह मनुष्य संतों के चरणों की शरण में आता है ।

ਹਾਥਿ ਚੜਿਓ ਹਰਿ ਸਾਲਗਿਰਾਮੁ ॥
हाथि चड़िओ हरि सालगिरामु ॥
हरि शालग्राम मेरे हाथ में आ गया है अर्थात् मुझे मिल गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਕੀਨੋ ਦਾਨੁ ॥੪॥੩੯॥੯੦॥
कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥४॥३९॥९०॥
हे नानक ! गुरु ने मुझे यह दान किया है॥ ४॥ ३६ ॥ ६० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦਾ ॥
आसा महला ५ पंचपदा ॥
आसा महला ५ पंचपदा ॥

ਜਿਹ ਪੈਡੈ ਲੂਟੀ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥
जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥
जिस पथ पर विषय-विकारों में फँसी हुई पनिहारी जीवन की पूँजी लुटा बैठी है,"

ਸੋ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤਨ ਦੂਰਾਰੀ ॥੧॥
सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥
वह मार्ग संतजनों से दूर है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੈ ਸਾਚੁ ਕਹਿਆ ॥
सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥
पूर्ण सतिगुरु ने सत्य कहा है।

ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਮੁਕਤੇ ਬੀਥੀ ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਦੂਰਿ ਰਹਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! तेरा नाम मोक्ष का मार्ग है और यमदूतों का मार्ग इससे बहुत दूर रह जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਹ ਲਾਲਚ ਜਾਗਾਤੀ ਘਾਟ ॥
जह लालच जागाती घाट ॥
जहाँ पर लालची कर लेने वालों का घाट है,"

ਦੂਰਿ ਰਹੀ ਉਹ ਜਨ ਤੇ ਬਾਟ ॥੨॥
दूरि रही उह जन ते बाट ॥२॥
वह पथ भक्तजनों से दूर रह जाता है।॥ २॥

ਜਹ ਆਵਟੇ ਬਹੁਤ ਘਨ ਸਾਥ ॥
जह आवटे बहुत घन साथ ॥
जिस जीवन सफर में अनेकों ही काफिले पीड़ित होते रहते हैं,"

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੇ ਸੰਗੀ ਸਾਧ ॥੩॥
पारब्रहम के संगी साध ॥३॥
उस सफर में साधजन परब्रह्म के सत्संगी बने रहते हैं।॥ ३॥

ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤੁ ਸਭ ਲਿਖਤੇ ਲੇਖਾ ॥
चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥
चित्रगुप्त समस्त जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा लिखते रहते हैं परन्तु

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਨ ਪੇਖਾ ॥੪॥
भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥४॥
भक्तजनों की तरफ दृष्टि उठाकर भी नहीं देखते॥ ४॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥
हे नानक ! जिसका सतिगुरु पूर्ण है,"

ਵਾਜੇ ਤਾ ਕੈ ਅਨਹਦ ਤੂਰਾ ॥੫॥੪੦॥੬੧॥
वाजे ता कै अनहद तूरा ॥५॥४०॥९१॥
उसके लिए भगवान के गुणानुवाद के निरन्तर बाजे बजते रहते हैं॥ ५॥ ४० ॥ ६१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦਾ ੧ ॥
आसा महला ५ दुपदा १ ॥
आसा महला ५ दुपदा १ ॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਸਿਖਾਇਓ ਨਾਮੁ ॥
साधू संगि सिखाइओ नामु ॥
साधु की संगति ने मुझे भगवान का नाम-सिमरन सिखा दिया है,"

ਸਰਬ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥
सरब मनोरथ पूरन काम ॥
जिसके फलस्वरूप सारे मनोरथ एवं कार्य पूरे हो गए हैं।

ਬੁਝਿ ਗਈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਹਰਿ ਜਸਹਿ ਅਘਾਨੇ ॥
बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने ॥
हरि यश गाने से मेरी तृष्णा बुझ गई है और मैं तृप्त हो गया हूँ।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਸਾਰਿਗਪਾਨੇ ॥੧॥
जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥१॥
सारिंगपानि भगवान का नाम जप-जपकर मैं आत्मिक जीवन जीता हूँ॥ १॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਰਨਿ ਪਰਿਆ ॥
करन करावन सरनि परिआ ॥
सबकुछ करने एवं करवाने में समर्थ प्रभु की मैंने शरण ली है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਮਿਟਿਆ ਅੰਧੇਰਾ ਚੰਦੁ ਚੜਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से मुझे सहज घर मिल गया है, अन्धकार दूर हो गया है और ज्ञान का चन्द्रमा उदय हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਲਾਲ ਜਵੇਹਰ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥
लाल जवेहर भरे भंडार ॥
हीरे-जवाहरातों से मेरे भण्डार भरे हुए हैं।

ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
तोटि न आवै जपि निरंकार ॥
निरंकार प्रभु का जाप करने से वह कम नहीं होते।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਬਦੁ ਪੀਵੈ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
अम्रित सबदु पीवै जनु कोइ ॥
हे नानक ! कोई भक्तजन ही नाम-अमृत का पान करता है

ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੀ ਪਰਮ ਗਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥੪੧॥੯੨॥
नानक ता की परम गति होइ ॥२॥४१॥९२॥
उसकी परमगति हो जाती है॥ २॥ ४१ ॥ ६२ ॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੭ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा घरु ७ महला ५ ॥
आसा घरु ७ महला ५ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਨਿਤ ਧਿਆਈ ॥
हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥
मैं नित्य ही अपने हृदय में हरि का नाम स्मरण करता रहता हूँ।

ਸੰਗੀ ਸਾਥੀ ਸਗਲ ਤਰਾਂਈ ॥੧॥
संगी साथी सगल तरांई ॥१॥
इस तरह मैं अपने समस्त संगी-साथियों को बचा लेता हूँ॥ १॥

ਗੁਰੁ ਮੇਰੈ ਸੰਗਿ ਸਦਾ ਹੈ ਨਾਲੇ ॥
गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥
गुरु सदैव ही मेरे साथ एवं निकट है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उस भगवान को सदा याद करके अपने हृदय में बसाकर रखता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਲਾਗੈ ॥
तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हे भगवान् ! तेरा किया हुआ प्रत्येक कार्य मुझे मीठा लगता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਨਕੁ ਮਾਂਗੈ ॥੨॥੪੨॥੯੩॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥२॥४२॥९३॥
नानक तुझसे हरिनाम रूपी पदार्थ ही माँगता है॥ २॥ ४२॥ ६३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਤਿ ਤਰਿਆ ਸੰਸਾਰੁ ॥ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥
साधू संगति तरिआ संसारु ॥ हरि का नामु मनहि आधारु ॥१॥
साधु की संगति करने से सारी दुनिया ही भवसागर से पार हो चुकी है।हरि का नाम मन का सहारा है॥ १॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਗੁਰਦੇਵ ਪਿਆਰੇ ॥ ਪੂਜਹਿ ਸੰਤ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्यारे गुरुदेव ! तेरे चरण कमल बड़े कोमल हैं। हरि के संतजन बड़े प्रेम से तेरे चरणों की पूजा करते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਭਾਗੁ ॥
जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥
हे नानक ! जिसके मस्तक पर सौभाग्य लिखा हुआ है,"

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਾ ਕਾ ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ॥੨॥੪੩॥੯੪॥
कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥२॥४३॥९४॥
उसका सुहाग अटल है॥ २॥ ४३॥ ६४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮੀਠੀ ਆਗਿਆ ਪਿਰ ਕੀ ਲਾਗੀ ॥
मीठी आगिआ पिर की लागी ॥
प्राणनाथ प्रभु की आज्ञा मुझे बहुत मीठी लगती है।

ਸਉਕਨਿ ਘਰ ਕੀ ਕੰਤਿ ਤਿਆਗੀ ॥
सउकनि घर की कंति तिआगी ॥
मेरे पति-परमेश्वर ने मेरी सौतन (माया) को हृदय-घर से बाहर निकाल दिया है।

ਪ੍ਰਿਅ ਸੋਹਾਗਨਿ ਸੀਗਾਰਿ ਕਰੀ ॥
प्रिअ सोहागनि सीगारि करी ॥
मेरे प्रियवर ने मुझे सुहागिन बनाकर सुन्दर बना दिया है।

ਮਨ ਮੇਰੇ ਕੀ ਤਪਤਿ ਹਰੀ ॥੧॥
मन मेरे की तपति हरी ॥१॥
उसने मेरे मन की जलन को शीतल कर दिया है॥ १॥

ਭਲੋ ਭਇਓ ਪ੍ਰਿਅ ਕਹਿਆ ਮਾਨਿਆ ॥
भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ ॥
भला हुआ कि मैंने अपने प्रियतम प्रभु का कहना मान लिया।

ਸੁਖੁ ਸਹਜੁ ਇਸੁ ਘਰ ਕਾ ਜਾਨਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥
मैंने इस घर में सहज सुख की अनुभूति कर ली है ॥रहाउ ॥

ਹਉ ਬੰਦੀ ਪ੍ਰਿਅ ਖਿਜਮਤਦਾਰ ॥
हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥
मैं अपने प्रिय-प्रभु की दासी एवं सेविका हूँ।

ਓਹੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥
ओहु अबिनासी अगम अपार ॥
वह अविनाशी, अगम्य एवं अपार है।

ਲੇ ਪਖਾ ਪ੍ਰਿਅ ਝਲਉ ਪਾਏ ॥
ले पखा प्रिअ झलउ पाए ॥
मैं अपने हाथ में पंखा लेकर एवं उसके चरणों में बैठकर अपने प्रियतम को पंखा करती हूँ।

ਭਾਗਿ ਗਏ ਪੰਚ ਦੂਤ ਲਾਵੇ ॥੨॥
भागि गए पंच दूत लावे ॥२॥
मुझे काटने वाले पाँच शत्रु-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान भाग गए हैं।॥ २॥

ਨਾ ਮੈ ਕੁਲੁ ਨਾ ਸੋਭਾਵੰਤ ॥
ना मै कुलु ना सोभावंत ॥
न ही मैं उच्च वंश से हूँ और न ही शोभावान हूँ।

ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਕਿਉ ਭਾਨੀ ਕੰਤ ॥
किआ जाना किउ भानी कंत ॥
मैं क्या जानती हूँ कि मैं क्यों अपने प्राणनाथ को भली लगने लग गई हूँ।

ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਗਰੀਬ ਨਿਮਾਨੀ ॥ ਕੰਤ ਪਕਰਿ ਹਮ ਕੀਨੀ ਰਾਨੀ ॥੩॥
मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ कंत पकरि हम कीनी रानी ॥३॥
मैं अनाथ, गरीब एवं मानहीन हूँ।लेकिन पकड़ कर मेरे स्वामी ने मुझे अपनी रानी बना लिया है॥ ३॥

ਜਬ ਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਾਜਨੁ ਲਾਗਾ ॥
जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥
जब से मुझे मेरा साजन प्रीतम मिला है,"

ਸੂਖ ਸਹਜ ਮੇਰਾ ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਾ ॥
सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥
मुझे सहज सुख प्राप्त हो गया है और मेरा सुहाग धन्य हो गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੋਰੀ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥
हे नानक ! मेरी अभिलाषा पूर्ण हो गई है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲੀ ਪ੍ਰਭ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥੪॥੧॥੯੫॥
सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥४॥१॥९५॥
सतिगुरु ने मुझे गुणों के भण्डार प्रभु से मिला दिया है॥ ४ ॥ १॥ ६५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮਾਥੈ ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰੂਰਿ ॥
माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि ॥
उसके माथे पर त्रिकुटी और दृष्टि भी बहुत करुर है।

ਬੋਲੈ ਕਉੜਾ ਜਿਹਬਾ ਕੀ ਫੂੜਿ ॥
बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥
उसकी वाणी भी कड़वी है और जिव्हा भी फूहड़ है।

ਸਦਾ ਭੂਖੀ ਪਿਰੁ ਜਾਨੈ ਦੂਰਿ ॥੧॥
सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥१॥
वह सदैव भूखी रहती है और अपने प्रिय-प्रभु को दूर समझती है॥ १॥

ਐਸੀ ਇਸਤ੍ਰੀ ਇਕ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈ ॥
ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥
हे मेरे भाई !राम ने एक ऐसी माया रूपी स्त्री सृष्टि में उत्पन्न की है।

ਉਨਿ ਸਭੁ ਜਗੁ ਖਾਇਆ ਹਮ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥
उसने समूचा जगत निगल लिया लेकिन गुरु ने मेरी रक्षा की है॥ रहाउ॥

ਪਾਇ ਠਗਉਲੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਜੋਹਿਆ ॥
पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥
उस माया-स्त्री ने ठग-बूटी खिलाकर सारी दुनिया को वश में कर लिया है।

ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹਾਦੇਉ ਮੋਹਿਆ ॥
ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥
उसने ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव को भी अपने मोह में फँसाकर मोहित कर लिया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਲਗੇ ਸੇ ਸੋਹਿਆ ॥੨॥
गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥२॥
जो गुरुमुख प्रभु-नाम से संलग्न हुए हैं, वह सुन्दर दिखाई देते हैं।॥ २॥

ਵਰਤ ਨੇਮ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਪੁਨਹਚਰਨਾ ॥
वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥
मनुष्य व्रत, नियम एवं प्रायश्चित कर्म करते हुए थक चुके हैं।

ਤਟ ਤੀਰਥ ਭਵੇ ਸਭ ਧਰਨਾ ॥
तट तीरथ भवे सभ धरना ॥
वह समूचे जगत के पवित्र तीर्थों एवं तटों पर भटकते फिरते हैं।

ਸੇ ਉਬਰੇ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥੩॥
से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥३॥
जो सतिगुरु की शरण में आए हैं, वे भवसागर से पार हो गए हैं।॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਸਭੋ ਜਗੁ ਬਾਧਾ ॥
माइआ मोहि सभो जगु बाधा ॥
माया के मोह में सारा जगत फँसा हुआ है।

ਹਉਮੈ ਪਚੈ ਮਨਮੁਖ ਮੂਰਾਖਾ ॥
हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥
मनमुख मूर्ख मनुष्य अहंकार में दुखी होते हैं।

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਪਕਰਿ ਹਮ ਰਾਖਾ ॥੪॥੨॥੯੬॥
गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥४॥२॥९६॥
हे नानक ! गुरु ने बाँह से पकड़ कर मुझे बचा लिया है॥ ४॥ २॥ ६६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਰਬ ਦੂਖ ਜਬ ਬਿਸਰਹਿ ਸੁਆਮੀ ॥
सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥
जब मनुष्य को परमात्मा भूल जाता है तो हर प्रकार के दुख घेर लेते हैं।

ਈਹਾ ਊਹਾ ਕਾਮਿ ਨ ਪ੍ਰਾਨੀ ॥੧॥
ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥१॥
ऐसा प्राणी लोक-परलोक में किसी काम का नहीं ॥ १॥

ਸੰਤ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧ੍ਯਾਇ ॥
संत त्रिपतासे हरि हरि ध्याइ ॥
हरि-परमेश्वर का ध्यान करते हुए संतजन तृप्त हो गए हैं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੈ ਨਾਇ ਲਾਏ ਸਰਬ ਸੂਖ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੀ ਰਜਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥
हे स्वामी ! कृपा करके तुम जीवों को अपने नाम के साथ लगाते हो और जीवों को सर्व सुख तेरी रज़ा में ही प्राप्त होते हैं।॥ रहाउ॥

ਸੰਗਿ ਹੋਵਤ ਕਉ ਜਾਨਤ ਦੂਰਿ ॥
संगि होवत कउ जानत दूरि ॥
जो पुरुष करीब रहने वाले भगवान को दूर समझता है,"

ਸੋ ਜਨੁ ਮਰਤਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਝੂਰਿ ॥੨॥
सो जनु मरता नित नित झूरि ॥२॥
वह सदैव ही दुखी होता हुआ मर जाता है।॥ २॥

ਜਿਨਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੀਆ ਤਿਸੁ ਚਿਤਵਤ ਨਾਹਿ ॥
जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥
जिस भगवान ने सब कुछ दिया है, उसे मनुष्य याद नहीं करता।

ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਜਾਹਿ ॥੩॥
महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥३॥
उसके दिन-रात महाविष रूपी माया में लीन होकर बीत जाते हैं॥ ३ ॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਹੁ ਏਕ ॥
कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥
हे नानक ! केवल प्रभु का सुमिरन करो।

ਗਤਿ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਟੇਕ ॥੪॥੩॥੯੭॥
गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥४॥३॥९७॥
पूर्ण गुरु की टेक (शरण) लेने से गति प्राप्त हो जाती है॥ ४ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਹਰਿਆ ॥
नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥
भगवान का नाम जपने से मन-तन खिल गया है।

ਕਲਮਲ ਦੋਖ ਸਗਲ ਪਰਹਰਿਆ ॥੧॥
कलमल दोख सगल परहरिआ ॥१॥
उसके तमाम पाप एवं दोष दूर हो गए हैं।॥ १॥

ਸੋਈ ਦਿਵਸੁ ਭਲਾ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! वह दिन बड़ा शुभ है,"

ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥
जब भगवान का गुणगान करने से परमगति मिल जाती है॥ रहाउ॥

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੇ ਪੂਜੇ ਪੈਰ ॥
साध जना के पूजे पैर ॥
साधजनों के चरणों की पूजा करने से

ਮਿਟੇ ਉਪਦ੍ਰਹ ਮਨ ਤੇ ਬੈਰ ॥੨॥
मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥२॥
मन से हर प्रकार की मुसीबतें एवं वैर मिट गए हैं।॥ २॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਮਿਲਿ ਝਗਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥
पूर्ण गुरु को मिलने से विकारों का झगड़ा मिट गया है और

ਪੰਚ ਦੂਤ ਸਭਿ ਵਸਗਤਿ ਆਇਆ ॥੩॥
पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥३॥
सभी कामादिक पाँच शत्रु-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार वश में आ गए हैं।॥ ३॥

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ॥
जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥
जिसके मन में हरि का नाम निवास करता है

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਊਪਰਿ ਕੁਰਬਾਨ ॥੪॥੪॥੯੮॥
नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥४॥४॥९८॥
नानक उस पर कुर्बान जाता है ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗਾਵਿ ਲੇਹਿ ਤੂ ਗਾਵਨਹਾਰੇ ॥
गावि लेहि तू गावनहारे ॥
हे गवैये ! तू भगवान का गुणगान किया कर,"

ਜੀਅ ਪਿੰਡ ਕੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੇ ॥
जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥
जो सब की आत्मा, शरीर एवं प्राणों का आधार है।

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ॥
जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥
जिसकी सेवा करने से सर्व-सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਅਵਰ ਕਾਹੂ ਪਹਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਜਾਵਹਿ ॥੧॥
अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥१॥
तब तुझे किसी दूसरे के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।॥ १॥

ਸਦਾ ਅਨੰਦ ਅਨੰਦੀ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਨ ਨਿਧਾਨ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਾਪੀਐ ॥
सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥
मेरा मालिक सदैव आनंद में आनंदित रहता है। उस गुणों के भण्डार प्रभु का नित्य जाप करते रहना चाहिए।

ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਸੁ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਵਾਸੀਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥
मैं उस प्रिय संत पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी दया से प्रभु हृदय में निवास कर लेता है॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕਾ ਦਾਨੁ ਨਿਖੂਟੈ ਨਾਹੀ ॥
जा का दानु निखूटै नाही ॥
जिसका दिया हुआ दान कभी कम नहीं होता,"

ਭਲੀ ਭਾਤਿ ਸਭ ਸਹਜਿ ਸਮਾਹੀ ॥
भली भाति सभ सहजि समाही ॥
उसे याद करने वाले भलीभांति सहज सुख में लीन हो सकते हैं।

ਜਾ ਕੀ ਬਖਸ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਈ ॥
जा की बखस न मेटै कोई ॥
जिसके दान को कोई भी मिटा नहीं सकता,"

ਮਨਿ ਵਾਸਾਈਐ ਸਾਚਾ ਸੋਈ ॥੨॥
मनि वासाईऐ साचा सोई ॥२॥
उस सत्यस्वरूप प्रभु को अपने मन में बसाओ ॥ २॥

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਗ੍ਰਿਹ ਜਾ ਕੈ ਪੂਰਨ ॥
सगल समग्री ग्रिह जा कै पूरन ॥
जिसके घर में समस्त सामग्री भरपूर है,"

ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਸੇਵਕ ਦੂਖ ਨ ਝੂਰਨ ॥
प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥
उस प्रभु के सेवक कभी दु:ख में पश्चाताप नहीं करते।

ਓਟਿ ਗਹੀ ਨਿਰਭਉ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ॥
ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥
उसकी शरण लेने से निर्भय पद प्राप्त हो जाता है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸੋ ਗੁਨ ਨਿਧਿ ਗਾਈਐ ॥੩॥
सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥३॥
हे प्राणी ! श्वास-श्वास से उस गुणों के भण्डार प्रभु की स्तुति करनी चाहिए॥ ३॥

ਦੂਰਿ ਨ ਹੋਈ ਕਤਹੂ ਜਾਈਐ ॥
दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥
वह प्राणी से दूर नहीं और कहीं नहीं जाता।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ॥
नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥
यदि वह अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही हरि-परमेश्वर का नाम प्राप्त होता है।

ਅਰਦਾਸਿ ਕਰੀ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥
मैं पूर्ण गुरु के पास प्रार्थना करता हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ॥੪॥੫॥੬੬॥
नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥४॥५॥९९॥
नानक हरि-नाम रूपी धन की पूँजी माँगता है॥ ४॥ ५॥ ६६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪ੍ਰਥਮੇ ਮਿਟਿਆ ਤਨ ਕਾ ਦੂਖ ॥
प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥
सर्वप्रथम मेरे तन का दुःख मिटा है और

ਮਨ ਸਗਲ ਕਉ ਹੋਆ ਸੂਖੁ ॥
मन सगल कउ होआ सूखु ॥
तदुपरांत मन को सर्व सुख प्राप्त हो गया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰ ਦੀਨੋ ਨਾਉ ॥
करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥
गुरु ने कृपा करके मुझे हरि का नाम दिया है।

ਬਲਿ ਬਲਿ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਜਾਉ ॥੧॥
बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥१॥
मैं उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਓ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है।

ਰੋਗ ਸੋਗ ਸਭ ਦੂਖ ਬਿਨਾਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥
सच्चे गुरु की शरण लेने से मेरे तमाम रोग, शोक एवं दुःख विनष्ट हो गए हैं। रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਏ ॥
गुर के चरन हिरदै वसाए ॥
गुरु के चरण मैंने अपने हृदय में बसाए हैं और

ਮਨ ਚਿੰਤਤ ਸਗਲੇ ਫਲ ਪਾਏ ॥
मन चिंतत सगले फल पाए ॥
मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गए हैं।

ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਸਭ ਹੋਈ ਸਾਂਤਿ ॥
अगनि बुझी सभ होई सांति ॥
मेरी तृष्णाग्नि बुझ गई है और मेरे अन्तर्मन में सम्पूर्ण शांति है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰਿ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥੨॥
करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥२॥
गुरु ने कृपा करके मुझे प्रभु-नाम की देन प्रदान की है॥ २॥

ਨਿਥਾਵੇ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਥਾਨੁ ॥
निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥
गुरु ने निराश्रित को आश्रय दिया है।

ਨਿਮਾਨੇ ਕਉ ਗੁਰਿ ਕੀਨੋ ਮਾਨੁ ॥
निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥
मानहीन को गुरु ने सम्मान प्रदान किया है।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਸੇਵਕ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ॥
बंधन काटि सेवक करि राखे ॥
गुरु ने बन्धन काट कर अपने सेवक की हर प्रकार से रक्षा की है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੀ ਰਸਨਾ ਚਾਖੇ ॥੩॥
अम्रित बानी रसना चाखे ॥३॥
अमृत वाणी अब मैं अपनी रसना से चखता हूँ॥ ३॥

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਪੂਜ ਗੁਰ ਚਰਨਾ ॥
वडै भागि पूज गुर चरना ॥
अहोभाग्य से ही मैंने गुरु के चरणों की पूजा की है।

ਸਗਲ ਤਿਆਗਿ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭ ਸਰਨਾ ॥
सगल तिआगि पाई प्रभ सरना ॥
सब कुछ त्याग कर मैंने प्रभु की शरण ली है।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਭਇਆ ਦਇਆਲਾ ॥
गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥
हे नानक ! जिस पर गुरु दयालु हो गया है,"

ਸੋ ਜਨੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲਾ ॥੪॥੬॥੧੦੦॥
सो जनु होआ सदा निहाला ॥४॥६॥१००॥
वह मनुष्य सदैव प्रसन्नचित्त हो गया है॥ ४॥ ६ ॥ १०० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਚੈ ਦੀਆ ਭੇਜਿ ॥
सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥
मेरे सच्चे सतिगुरु नानक ने बालक हरिगोविन्द को मेरे घर में भेज दिया है।

ਚਿਰੁ ਜੀਵਨੁ ਉਪਜਿਆ ਸੰਜੋਗਿ ॥
चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥
यह बालक किसी पूर्व संयोग के कारण पैदा हुआ है, जो लम्बा जीवन पाएगा।

ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ਆਇ ਕੀਆ ਨਿਵਾਸੁ ॥
उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥
जब इस बालक ने आकर अपनी माता के उदर में निवास किया था तो

ਮਾਤਾ ਕੈ ਮਨਿ ਬਹੁਤੁ ਬਿਗਾਸੁ ॥੧॥
माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥१॥
उसकी माता के मन में बड़ा आनंद उत्पन्न हुआ था। १॥

ਜੰਮਿਆ ਪੂਤੁ ਭਗਤੁ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ॥
जमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥
जिस पुत्र ने हमारे घर जन्म लिया है, यह गोविन्द का भक्त है।

ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਸਭ ਮਹਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰ ਕਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥
जैसे प्रभु के दरबार से लिखा हुआ बालक का जन्म लेना जगत में सारे लोगों में प्रकट हो गया है। ॥ रहाउ ॥

ਦਸੀ ਮਾਸੀ ਹੁਕਮਿ ਬਾਲਕ ਜਨਮੁ ਲੀਆ ॥
दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥
जब प्रभु के हुक्म से दसवें महीने बालक हरिगोविंद ने जन्म लिया तो

ਮਿਟਿਆ ਸੋਗੁ ਮਹਾ ਅਨੰਦੁ ਥੀਆ ॥
मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥
सारी चिंता मिट गई और सर्वत्र महा आनंद (हर्षोंलास ही) हो गया।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਸਖੀ ਅਨੰਦੁ ਗਾਵੈ ॥
गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥
आनंद में सखियाँ गुरुवाणी द्वारा मंगल गान करती हैं।

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੨॥
साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥
यह वाणी सच्चे साहिब के मन को बहुत अच्छी लगती है। ॥२॥

ਵਧੀ ਵੇਲਿ ਬਹੁ ਪੀੜੀ ਚਾਲੀ ॥
वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥
बालक के जन्म लेने से हमारी पीढ़ी बढ़ने लग गई है और गुरुगही आगे चल पड़ी है।

ਧਰਮ ਕਲਾ ਹਰਿ ਬੰਧਿ ਬਹਾਲੀ ॥
धरम कला हरि बंधि बहाली ॥
प्रभु ने धर्म की कला बालक में दृढ़ तौर पर स्थापित कर दी है।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦਿਵਾਇਆ ॥
मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥
सतिगुरु ने मुझे मनोवांछित बालक प्रभु से दिलवाया है।

ਭਏ ਅਚਿੰਤ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥੩॥
भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥३॥
मैं निश्चित हो गया हूँ और मैंने अपनी लगन एक ईश्वर में लगा ली है। ॥३॥

ਜਿਉ ਬਾਲਕੁ ਪਿਤਾ ਊਪਰਿ ਕਰੇ ਬਹੁ ਮਾਣੁ ॥
जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥
जैसे बालक अपने पिता पर बहुत गर्व करता है वैसे ही

ਬੁਲਾਇਆ ਬੋਲੈ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣਿ ॥
बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥
मैं वह कुछ बोलता हूँ जो गुरु जी को मुझ से कहलवाना भला लगता है।

ਗੁਝੀ ਛੰਨੀ ਨਾਹੀ ਬਾਤ ॥
गुझी छंनी नाही बात ॥
यह कोई नुकी-छिपी बात नहीं।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥੪॥੭॥੧੦੧॥
गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥१०१॥
गुरु नानक ने प्रसन्नचित होकर मुझे यह बालक की देन प्रदान की है। ४ ॥ ७ ॥ १०१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਰਾਖਿਆ ਦੇ ਹਾਥ ॥
गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥
पूर्ण गुरु ने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया है।

ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਇਆ ਜਨ ਕਾ ਪਰਤਾਪੁ ॥੧॥
प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥१॥
अब उसके सेवक का प्रताप अर्थात् शोभा दुनिया में प्रगट हो गई है॥ १ ॥

ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਜਪੀ ਗੁਰੂ ਗੁਰੁ ਧਿਆਈ ॥
गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥
मैं गुरु-गुरु ही मुँह से जपता रहता हूँ और गुरु-गुरु नाम मन से याद करता रहता हूँ।

ਜੀਅ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਗੁਰੂ ਪਹਿ ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥
जिस पदार्थ हेतु मैं गुरु के समक्ष प्रार्थना करता हूँ वह मनोवांछित फल मैं गुरु से पा लेता हूँ॥ रहाउ॥

ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਸਾਚੇ ਗੁਰਦੇਵ ॥
सरनि परे साचे गुरदेव ॥
मैंने सच्चे गुरुदेव की शरण ली है।

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਸੇਵਕ ਸੇਵ ॥੨॥
पूरन होई सेवक सेव ॥२॥
उसके सेवक की सेवा पूरी हो गई है। ॥२॥

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਜੋਬਨੁ ਰਾਖੈ ਪ੍ਰਾਨ ॥
जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥
उसने मेरी आत्मा, शरीर, यौवन एवं प्राणों की रक्षा की है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕਉ ਕੁਰਬਾਨ ॥੩॥੮॥੧੦੨॥
कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥३॥८॥१०२॥
हे नानक ! में अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥ ८॥ १०२॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੫
आसा घरु ८ काफी महला ५
आसा घरु ८ काफी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੈ ਬੰਦਾ ਬੈ ਖਰੀਦੁ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ॥
मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥
हे प्रभु ! मैं तेरा मूल्य लिया हुआ बंदा हूँ और तू मेरा सच्चा मालिक है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਤੇਰਾ ॥੧॥
जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥१॥
मेरा मन एवं तन सब उसके दिए हुए हैं, मेरा जीवन इत्यादि सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है॥ १॥

ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ਤੂੰ ਧਣੀ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥
माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥
हे मालिक ! तू मानहीनों का सम्मान है और मुझे तेरा ही भरोसा है।

ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਅਨ ਟੇਕ ਹੈ ਸੋ ਜਾਣਹੁ ਕਾਚਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे सच्चे परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे का सहारा है, उसे कच्चा, अस्थिर ही समझो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਅਪਾਰ ਹੈ ਕੋਈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਏ ॥
तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥
हे वाहिगुरु ! तेरा हुक्म अपार है। कोई भी मनुष्य तेरे हुक्म का अन्त नहीं पा सकता।

ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਸੀ ਸੋ ਚਲੈ ਰਜਾਏ ॥੨॥
जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥२॥
जिस मनुष्य को पूर्ण गुरु मिल जाता है, वह तेरी रजानुसार चलता है॥ २॥

ਚਤੁਰਾਈ ਸਿਆਣਪਾ ਕਿਤੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਈਐ ॥
चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥
चतुराई एवं बुद्धिमत्ता किसी काम नहीं आती।

ਤੁਠਾ ਸਾਹਿਬੁ ਜੋ ਦੇਵੈ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੩॥
तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥३॥
मालिक-प्रभु खुशी से जो कुछ भी देता है, वही मेरा सुख है॥ ३॥

ਜੇ ਲਖ ਕਰਮ ਕਮਾਈਅਹਿ ਕਿਛੁ ਪਵੈ ਨ ਬੰਧਾ ॥
जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥
चाहे मनुष्य लाखों धर्म-कर्म कर ले परन्तु उसकी तृष्णा को अंकुश नहीं लगता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀਤਾ ਨਾਮੁ ਧਰ ਹੋਰੁ ਛੋਡਿਆ ਧੰਧਾ ॥੪॥੧॥੧੦੩॥
जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥४॥१॥१०३॥
दास नानक ने प्रभु-नाम को अपना सहारा बनाया है और शेष कार्य-व्यवहार छोड़ दिए हैं।॥४॥१॥१०३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਮੈ ਭਾਲਿਆ ਹਰਿ ਜੇਵਡੁ ਨ ਕੋਈ ॥
सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥
मैंने जगत के सर्व सुखों की खोज करके देख ली है परन्तु हरि जैसा सुख कहीं नहीं है।

ਗੁਰ ਤੁਠੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸੋਈ ॥੧॥
गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥१॥
यदि गुरु प्रसन्नचित्त हो जाए तो सच्चा मालिक मिल जाता है॥ १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥
बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥
मैं अपने गुरु पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਮੁ ਨ ਵਿਸਰਉ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਚਸਾ ਇਹੁ ਕੀਜੈ ਦਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मालिक ! मुझे यह दान प्रदान कीजिए कि मैं तेरे नाम को एक क्षण एवं निमेष मात्र भी विस्मृत न करूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਭਾਗਠੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ਹੈ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਅੰਤਰਿ ॥
भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि ॥
सच्चा धनवान वही है जिसके हृदय में हरि नाम का धन विद्यमान है।

ਸੋ ਛੂਟੈ ਮਹਾ ਜਾਲ ਤੇ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨਿਰੰਤਰਿ ॥੨॥
सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥२॥
जिसके अन्तर्मन में गुरु का शब्द मौजूद होता है केवल वही महाजाल से छूट सकता है॥ २॥

ਗੁਰ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਿਆ ਕਹਾ ਗੁਰੁ ਬਿਬੇਕ ਸਤ ਸਰੁ ॥
गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥
गुरु की महिमा मैं क्या वर्णन करूँ ? (क्योंकि) गुरु विवेक एवं सत्य का सरोवर है।

ਓਹੁ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਜੁਗਹ ਜੁਗੁ ਪੂਰਾ ਪਰਮੇਸਰੁ ॥੩॥
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥३॥
वह आदि, युगों के आरंभ एवं युगों-युगांतरों में पूर्ण परमेश्वर है॥ ३॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਸਦ ਸਦਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨੁ ਰੰਗੇ ॥
नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥
सदैव हरि-नाम का ध्यान करते रहो और अपने मन को प्रभु के प्रेम रंग में रंगो ।

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਣ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਨਾਨਕ ਕੈ ਸੰਗੇ ॥੪॥੨॥੧੦੪॥
जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥४॥२॥१०४॥
गुरु ही मेरी आत्मा, प्राण एवं धन है और वह सदा नानक के साथ रहता है॥ ४॥ २॥ १०४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਾਈ ਅਲਖੁ ਅਪਾਰੁ ਭੋਰੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ॥
साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥
हे मेरी माता ! यदि अलख एवं अपार मेरा मालिक प्रभु एक क्षण भर के लिए भी मेरे मन में बस जाए तो

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਰੋਗੁ ਮਾਇ ਮੈਡਾ ਹਭੁ ਨਸੈ ॥੧॥
दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥
मेरे दुःख, दर्द एवं रोग सब दूर हो जाते हैं।॥ १॥

ਹਉ ਵੰਞਾ ਕੁਰਬਾਣੁ ਸਾਈ ਆਪਣੇ ॥
हउ वंजा कुरबाणु साई आपणे ॥
मैं अपने मालिक पर कुर्बान जाती हूँ।

ਹੋਵੈ ਅਨਦੁ ਘਣਾ ਮਨਿ ਤਨਿ ਜਾਪਣੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥१॥ रहाउ ॥
उसका सुमिरन करने से मेरे मन-तन में बड़ा आनंद उत्पन्न होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਿੰਦਕ ਗਾਲ੍ਹਿ ਸੁਣੀ ਸਚੇ ਤਿਸੁ ਧਣੀ ॥
बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी ॥
उस सच्चे प्रभु के बारे में मैंने थोड़ी-सी बात सुनी है।

ਸੂਖੀ ਹੂੰ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ਮਾਇ ਨ ਕੀਮ ਗਣੀ ॥੨॥
सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥२॥
हे मेरी माता! मैं बहुत सुखी हूँ और सुख पाकर भी मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकती॥ २॥

ਨੈਣ ਪਸੰਦੋ ਸੋਇ ਪੇਖਿ ਮੁਸਤਾਕ ਭਈ ॥
नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥
वह प्राणनाथ प्रभु मेरे नयनों को बहुत अच्छा लगता है। उसके दर्शन करके मैं मुग्ध हो गई हूँ।

ਮੈ ਨਿਰਗੁਣਿ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ਆਪਿ ਲੜਿ ਲਾਇ ਲਈ ॥੩॥
मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥३॥
हे मेरी माता! मैं गुणहीन हूँ, (फिर भी) उसने स्वयंही मुझे अपने दामन के साथ लगा लिया है॥ ३॥

ਬੇਦ ਕਤੇਬ ਸੰਸਾਰ ਹਭਾ ਹੂੰ ਬਾਹਰਾ ॥
बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥
यह प्रभु वेद, कतेब एवं समूचे जगत से अलग है।

ਨਾਨਕ ਕਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਦਿਸੈ ਜਾਹਰਾ ॥੪॥੩॥੧੦੫॥
नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥४॥३॥१०५॥
नानक का पातशाह हर जगह प्रगट दिखाई देता है॥४॥३॥१०५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਲਾਖ ਭਗਤ ਆਰਾਧਹਿ ਜਪਤੇ ਪੀਉ ਪੀਉ ॥
लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥
हे भगवान ! तेरे लाखों ही भक्त तेरी आराधना करते रहले हैं और मुंह से प्रिय-प्रिय' जपते रहते हैं।

ਕਵਨ ਜੁਗਤਿ ਮੇਲਾਵਉ ਨਿਰਗੁਣ ਬਿਖਈ ਜੀਉ ॥੧॥
कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥१॥
फिर किस युक्ति से तुम मुझ गुणहीन एवं विकारी पुरुष को अपने साथ मिलाओगे॥ १॥

ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ॥
तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥
हे गोविन्द गोपाल ! हे दयालु प्रभु ! मुझे तेरी ही टेक है।

ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕੇ ਨਾਥ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तूं सभना के नाथ तेरी स्रिसटि सभ ॥१॥ रहाउ ॥
तू सब जीवों का मालिक है, सारी सृष्टि तेरी पैदा की हुई है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਸੰਤ ਪੇਖਹਿ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥
सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥
तू सदैव ही संतों का सहायक है, जो तुझे सदैव प्रत्यक्ष देखते हैं।

ਨਾਮ ਬਿਹੂਨੜਿਆ ਸੇ ਮਰਨ੍ਹਿ ਵਿਸੂਰਿ ਵਿਸੂਰਿ ॥੨॥
नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ॥२॥
जो नाम विहीन मनुष्य हैं, वे दुःख एवं प्रायश्चित करते मरते हैं॥ २॥

ਦਾਸ ਦਾਸਤਣ ਭਾਇ ਮਿਟਿਆ ਤਿਨਾ ਗਉਣੁ ॥
दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥
जो सेवक दास भावना से प्रभु की सेवा करते हैं, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है।

ਵਿਸਰਿਆ ਜਿਨ੍ਹਾ ਨਾਮੁ ਤਿਨਾੜਾ ਹਾਲੁ ਕਉਣੁ ॥੩॥
विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥३॥
जिन्होंने प्रभु नाम को भुला दिया है, उनका क्या हाल होगा ?॥ ३॥

ਜੈਸੇ ਪਸੁ ਹਰ੍ਹਿਆਉ ਤੈਸਾ ਸੰਸਾਰੁ ਸਭ ॥
जैसे पसु हर्हिआउ तैसा संसारु सभ ॥
जैसे पराए खेत में हरियाली खाने हेतु पशु जाता है और अपनी पिटाई करवाता है वैसे ही यह सारा संसार है।

ਨਾਨਕ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭ ॥੪॥੪॥੧੦੬॥
नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥
हे प्रभु ! नानक के बन्धन काट कर उसे अपने साथ मिला लो॥ ४ ॥ ४॥ १०६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਭੇ ਥੋਕ ਵਿਸਾਰਿ ਹਿਕੋ ਖਿਆਲੁ ਕਰਿ ॥
हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥
हे भाई ! दुनिया के समस्त पदार्थ भुलाकर एक ईश्वर का ही चिन्तन करो।

ਝੂਠਾ ਲਾਹਿ ਗੁਮਾਨੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰਿ ॥੧॥
झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥१॥
अपने झूठे अभिमान को छोड़कर अपना मन-तन प्रभु के समक्ष अर्पण कर दो॥ १॥

ਆਠ ਪਹਰ ਸਾਲਾਹਿ ਸਿਰਜਨਹਾਰ ਤੂੰ ॥
आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥
तू आठ प्रहर जग के रचयिता परमात्मा की स्तुति किया कर।

ਜੀਵਾਂ ਤੇਰੀ ਦਾਤਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਹੁ ਮੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मालिक ! मैं तेरी नाम की देन से जीवित हूँ, मुझ पर कृपा धारण कीजिए। १॥ रहाउ॥

ਸੋਈ ਕੰਮੁ ਕਮਾਇ ਜਿਤੁ ਮੁਖੁ ਉਜਲਾ ॥
सोई कमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥
हे भाई ! वही कर्म कर जिससे तेरा मुख लोक-परलोक मेंउस हृदय घर को सुन्दर बना,"

ਸੋਈ ਲਗੈ ਸਚਿ ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਅਲਾ ॥੨॥
सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥
जो कभी ध्वस्त नहीं होता।

ਜੋ ਨ ਢਹੰਦੋ ਮੂਲਿ ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਸਿ ਕਰਿ ॥
जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥
एक परमात्मा को अपने हृदय में बसाकर रख,"

ਹਿਕੋ ਚਿਤਿ ਵਸਾਇ ਕਦੇ ਨ ਜਾਇ ਮਰਿ ॥੩॥
हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥३॥
वह अमर है, जो कभी मरता नहीं ॥ ३॥

ਤਿਨ੍ਹ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮੁ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ॥
तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥
जो लोग प्रभु को अच्छे लगते हैं, उन्हें प्रभु प्यारा लगने लग जाता है

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਅਕਥੁ ਨਾਨਕਿ ਵਖਾਣਿਆ ॥੪॥੫॥੧੦੭॥
गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥४॥५॥१०७॥
गुरु की कृपा से ही नानक ने अकथनीय परमात्मा का वर्णन किया है ॥४॥५॥१०७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਿਨ੍ਹ ਨ ਵਿਸਰੈ ਨਾਮੁ ਸੇ ਕਿਨੇਹਿਆ ॥
जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥
जो प्रभु-नाम को कभी विस्मृत नहीं करते, वे लोग कैसे होते हैं ?"

ਭੇਦੁ ਨ ਜਾਣਹੁ ਮੂਲਿ ਸਾਂਈ ਜੇਹਿਆ ॥੧॥
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥१॥
वे मालिक-प्रभु जैसे ही होते हैं, उनमें तथा प्रभु में बिल्कुल ही कोई भेद मत समझो॥ १॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੁ ਤੁਮ੍ਹ ਸੰਗਿ ਭੇਟਿਆ ॥
मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥
हे प्रभु ! तुझे मिलने से मन-तन आनंदित हो जाते हैं।

ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਪਰਸਾਦਿ ਦੁਖੁ ਸਭੁ ਮੇਟਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु-भक्त की कृपा से मैंने सुख पाया है और उसने मेरा सारा दुख मिटा दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੇਤੇ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਉਧਾਰੇ ਤਿੰਨ੍ ਖੇ ॥
जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिंन्ह खे ॥
हे मालिक ! जितने भी खण्ड-ब्रह्मण्ड में तेरे भक्त रहते हैं, उनका तूने उद्धार कर दिया है।

ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਪਿ ਪੂਰੇ ਭਗਤ ਸੇ ॥੨॥
जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥२॥
जिनके मन में तू स्वयं निवास करता है, वही पूर्ण भक्त होते हैं।॥२॥

ਜਿਸ ਨੋ ਮੰਨੇ ਆਪਿ ਸੋਈ ਮਾਨੀਐ ॥
जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ ॥
हे साहिब ! जिसे तू स्वयं स्वीकार करता है, केवल उसे मान-सम्मान प्राप्त होता है।

ਪ੍ਰਗਟ ਪੁਰਖੁ ਪਰਵਾਣੁ ਸਭ ਠਾਈ ਜਾਨੀਐ ॥੩॥
प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥३॥
ऐसा स्वीकृत हुआ एवं प्रसिद्ध पुरुष सर्वत्र लोकप्रिय हो जाता है।॥ ३॥

ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਆਰਾਧਿ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ਸਾਹ ਸਾਹ ॥
दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥
दिन-रात तेरी आराधना करके तुम्हें श्वास-श्वास में बसाकर रखु

ਨਾਨਕ ਕੀ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੪॥੬॥੧੦੮॥
नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥४॥६॥१०८॥
हे सच्चे पातशाह ! नानक की यह इच्छा पूर्ण कीजिए ॥ ४॥ ६॥ १०८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸ੍ਰਬ ਠਾਇ ਹਮਾਰਾ ਖਸਮੁ ਸੋਇ ॥
पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥
हमारा मालिक प्रभु हर जगह पर मौजूद है।

ਏਕੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਰਿ ਛਤੁ ਦੂਜਾ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ॥੧॥
एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥१॥
सबका मालिक एक है, जिसके सिर पर स्वामित्व का छत्र झूलता है। उसके बराबर दूसरा कोई नहीं ॥ १॥

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਰਾਖਣਹਾਰਿਆ ॥
जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥
हे सबके रखवाले ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा कीजिए।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा अलावा अपने नेत्रों से मैंने किसी को नहीं देखा ॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਾਰੀਐ ॥
प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥
प्रभु स्वयं ही (जीवों का) पालन-पोषण करता है और सबके हृदय की देखभाल करता है।

ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਪਿ ਤਿਸੁ ਨ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥੨॥
जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥२॥
जिसके मन में वह स्वयं बसता है, उसे कभी विस्मृत नहीं करता ॥ २॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਆਪਿ ਆਪਣ ਭਾਣਿਆ ॥
जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥
जो कुछ भी परमात्मा कर रहा है, वह स्वयं अपनी इच्छा से कर रहा है।

ਭਗਤਾ ਕਾ ਸਹਾਈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਜਾਣਿਆ ॥੩॥
भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥३॥
युगों-युगांतरों से वह अपने भक्तों का सहायक जाना जाता है॥ ३॥

ਜਪਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਨ ਝੁਰੀਐ ॥
जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥
जो व्यक्ति हरदम हरि का नाम जपता रहता है, वह कभी दुखी नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਦਰਸ ਪਿਆਸ ਲੋਚਾ ਪੂਰੀਐ ॥੪॥੭॥੧੦੯॥
नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥४॥७॥१०९॥
हे प्रभु ! नानक को तेरे दर्शनों की प्यास है, इसलिए यह अभिलाषा पूरी कीजिए॥ ४॥ ७॥ १०६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਿਆ ਸੋਵਹਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਗਾਫਲ ਗਹਿਲਿਆ ॥
किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥
हे लापरवाह एवं गाफिल प्राणी ! तू प्रभु-नाम को भुलाकर क्यों अज्ञानता की नींद में सोया हुआ है।

ਕਿਤੀਂ ਇਤੁ ਦਰੀਆਇ ਵੰਞਨ੍ਹਿ ਵਹਦਿਆ ॥੧॥
कितीं इतु दरीआइ वंञन्हि वहदिआ ॥१॥
नाम से विहीन प्राणी इस जीवन की नदिया में बहे जा रहे हैं॥ १॥

ਬੋਹਿਥੜਾ ਹਰਿ ਚਰਣ ਮਨ ਚੜਿ ਲੰਘੀਐ ॥
बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥
हे मन ! हरि के सुन्दर चरणों रूपी जहाज पर सवार होकर संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਾਧੂ ਸੰਗੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
साधु की संगति में मिलकर आठ प्रहर भगवान के गुण गाते रहो ॥ १॥ रहाउ॥

ਭੋਗਹਿ ਭੋਗ ਅਨੇਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸੁੰਞਿਆ ॥
भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥
जो इन्सान अनेक भोग भोगता है वह प्रभु-नाम के बिना जगत से खाली हाथ चला जाता है।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਬਿਨਾ ਮਰਿ ਮਰਿ ਰੁੰਨਿਆ ॥੨॥
हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥२॥
हरि की भक्ति के बिना वह माया में खप-खपकर बहुत रोता और दुखी होता है॥ २॥

ਕਪੜ ਭੋਗ ਸੁਗੰਧ ਤਨਿ ਮਰਦਨ ਮਾਲਣਾ ॥
कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥
जो व्यक्ति सुन्दर वस्त्र पहनता, स्वादिष्ट भोजन खाता, अपने शरीर पर सुगन्धित इत्र लगाता है।

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਤਨੁ ਛਾਰੁ ਸਰਪਰ ਚਾਲਣਾ ॥੩॥
बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥३॥
प्रभु-सिमरन के बिना उसका शरीर राख बन जाता है और अन्ततः उसने निश्चित ही संसार से चले जाना है॥ ३॥

ਮਹਾ ਬਿਖਮੁ ਸੰਸਾਰੁ ਵਿਰਲੈ ਪੇਖਿਆ ॥
महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥
यह संसार-सागर पार करने के लिए महा विषम है और विरले पुरुष ही इसको अनुभव करते हैं।

ਛੁਟਨੁ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਿ ਲੇਖੁ ਨਾਨਕ ਲੇਖਿਆ ॥੪॥੮॥੧੧੦॥
छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥४॥८॥११०॥
हे नानक ! जीव का जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा हरि की शरण लेने से ही होता है, और मुक्त वही होता है, जिसकी किस्मत में लिखा होता है॥ ४॥ ८॥ ११० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਸੰਗਿ ਕਾਹੇ ਗਰਬੀਐ ॥
कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥
दुनिया में कोई किसी का साथी नहीं, इसलिए अपने संबंधियों का कोई क्यों अहंकार करे ?"

ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਭਉਜਲੁ ਤਰਬੀਐ ॥੧॥
एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥१॥
एक परमात्मा का नाम ही जीवन का आधार है, जिससे भयानक संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥

ਮੈ ਗਰੀਬ ਸਚੁ ਟੇਕ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥
मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥
हे मेरे पूर्ण सतिगुरु ! एक तू ही मुझ गरीब का सच्चा सहारा है।

ਦੇਖਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰਾ ਦਰਸਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे दर्शन करने से मेरा मन धैर्यवान हो जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਜੰਜਾਲੁ ਕਾਜਿ ਨ ਕਿਤੈ ਗਨੋ ॥
राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥
राज्य, धन-पदार्थ एवं जंजाल किसी काम के नहीं गिने जाते।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਆਧਾਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਏਹੁ ਧਨੋ ॥੨॥
हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥२॥
हरि का भजन ही मेरा आधार है और यह धन सदैव स्थिर है॥ २ ॥

ਜੇਤੇ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਤੇਤ ਪਛਾਵਿਆ ॥
जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥
माया के जितने भी रंग हैं, वे सब केवल परछाई समान हैं।

ਸੁਖ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਿਆ ॥੩॥
सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥३॥
परमात्मा का नाम सुखों का भण्डार है, गुरुमुख उसका यशोगान करते हैं।॥ ३॥

ਸਚਾ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੇ ॥
सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर ग्मभीरे ॥
हे प्रभु ! तू गहनगम्भीर एवं सच्चा गुणीनिधान है।

ਆਸ ਭਰੋਸਾ ਖਸਮ ਕਾ ਨਾਨਕ ਕੇ ਜੀਅਰੇ ॥੪॥੯॥੧੧੧॥
आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥४॥९॥१११॥
प्रभु की आशा एवं भरोसा नानक के मन में है॥ ४॥ ६ ॥ १११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥
जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥
जिसका सिमरन करने से दुख दूर हो जाते हैं और सहज सुख प्राप्त होता है,"

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਕਰ ਜੋੜਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥
रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥१॥
रात-दिन हाथ जोड़ कर उस हरि-प्रभु का ही ध्यान करना चाहिए॥ १॥

ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ਜਿਸ ਕਾ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥
नानक का प्रभु वही है जिसकी सारी सृष्टि है।

ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
केवल वह सच्चा परमात्मा ही सत्य है और वह सब जीवों में समाया हुआ है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਗਿਆਨ ਜੋਗੁ ॥
अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥
भीतर एवं बाहर वह मेरा साथी एवं सहायक है। वह ज्ञान प्राप्त किए जाने के योग्य है।

ਤਿਸਹਿ ਅਰਾਧਿ ਮਨਾ ਬਿਨਾਸੈ ਸਗਲ ਰੋਗੁ ॥੨॥
तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥२॥
हे मेरे मन ! उसकी ही आराधना कर, तेरे समस्त रोग मिट जाएँगे॥ २॥

ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਅਪਾਰੁ ਰਾਖੈ ਅਗਨਿ ਮਾਹਿ ॥

राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि ॥

सबकी रक्षा करने वाला प्रभु अपार है। वह माता के गर्भ की अग्नि में भी जीवों की रक्षा करता है।

ਸੀਤਲੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਤਪਤਿ ਜਾਇ ॥੩॥
सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥३॥
हरि-प्रभु का नाम बहुत शीतल है, इसका सुमिरन करने से जलन बुझ जाती है॥ ३॥

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਣਾ ਨਾਨਕ ਜਨ ਧੂਰਾ ॥
सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥
हे नानक ! जो मनुष्य संतजनों की चरण-धूलि हो जाता है, उसे सहज सुख एवं आनन्द प्राप्त हो जाता है।

ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਿਧਿ ਭਏ ਭੇਟਿਆ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੪॥੧੦॥੧੧੨॥
कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥४॥१०॥११२॥
पूर्ण गुरु को मिलने से तमाम कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ ४॥ १०॥ ११२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗੋਬਿੰਦੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ॥
गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥
जगत का मालिक गोबिंद गुणों का भण्डार है और उसे गुरु के समक्ष होकर ही जाना जाता है।

ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦਇਆਲੁ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀਐ ॥੧॥
होइ क्रिपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥१॥
जब दयालु प्रभु कृपालु हो जाता है तो जीव उसकी प्रीति का आनंद प्राप्त करता है॥ १॥

ਆਵਹੁ ਸੰਤ ਮਿਲਾਹ ਹਰਿ ਕਥਾ ਕਹਾਣੀਆ ॥
आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥
हे संतजनो ! आओ हम मिल बैठकर हरि की कथा-कहानियों का गुणगान करें।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰਹ ਨਾਮੁ ਤਜਿ ਲਾਜ ਲੋਕਾਣੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥१॥ रहाउ ॥
लोगों की नुक्ताचीनी को छोड़कर हम रात-दिन प्रभु-नाम का सुमिरन करें ॥ १॥

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਨਾਮੁ ਹੋਵੈ ਅਨਦੁ ਘਣਾ ॥
जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥
मैं प्रभु का नाम जप-जपकर ही जीवित रहता हूँ और इस तरह बड़ा आनंद प्राप्त होता है।

ਮਿਥਿਆ ਮੋਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਝੂਠਾ ਵਿਣਸਣਾ ॥੨॥
मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥२॥
इस संसार का मोह मिथ्या है, झूठा होने के कारण यह अति शीघ्र ही नष्ट हो जाता है॥ २॥

ਚਰਣ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਨੇਹੁ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਲਾਇਆ ॥
चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥
कुछ विरले पुरुष ही प्रभु के सुन्दर चरण कमलों से नेह लगाते हैं।

ਧੰਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਮੁਖੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੩॥
धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥३॥
वह मुख धन्य एवं सुहावना है, जो हरि का ध्यान करता है ॥ ३॥

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਕਾਲ ਸਿਮਰਤ ਮਿਟਿ ਜਾਵਈ ॥
जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥
भगवान का सिमरन करने से जन्म-मरण एवं काल (मृत्यु) का दुःख मिट जाता है।

ਨਾਨਕ ਕੈ ਸੁਖੁ ਸੋਇ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਈ ॥੪॥੧੧॥੧੧੩॥
नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥४॥११॥११३॥
जो प्रभु को भला लगता है, वही नानक के लिए सुख-आनंद है॥ ४॥ ११॥ ११३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਵਹੁ ਮੀਤ ਇਕਤ੍ਰ ਹੋਇ ਰਸ ਕਸ ਸਭਿ ਭੁੰਚਹ ॥
आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥
हे मित्रजनो ! आओ हम सब मिलकर हर प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ खाएँ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਹ ਮਿਲਿ ਪਾਪਾ ਮੁੰਚਹ ॥੧॥
अम्रित नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥१॥
हम मिलकर हरि-परमेश्वर के नामामृत का जाप करें एवं अपने पापों को मिटाएँ॥ १॥

ਤਤੁ ਵੀਚਾਰਹੁ ਸੰਤ ਜਨਹੁ ਤਾ ਤੇ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥
हे संतजनो ! परम तत्व का विचार करो, इससे कोई विघ्न पैदा नहीं होता।

ਖੀਨ ਭਏ ਸਭਿ ਤਸਕਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨੁ ਜਾਗੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुख जन हमेशा सचेत रहते हैं और कामादिक पाँच विकारों का नाश कर देते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਬੁਧਿ ਗਰੀਬੀ ਖਰਚੁ ਲੈਹੁ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਜਾਰਹੁ ॥
बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥
बुद्धि एवं विनम्रता को अपनी जीवन-यात्रा के खर्च के तौर पर प्राप्त करके अहंत्व के विष को जला दो।

ਸਾਚਾ ਹਟੁ ਪੂਰਾ ਸਉਦਾ ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰਹੁ ॥੨॥
साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥२॥
गुरु की दुकान सच्ची है, जहाँ नाम रूपी पूरा सौदा मिलता है। आप नाम रूपी सौदे का ही व्यापार करो ॥ २ ॥

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਧਨੁ ਅਰਪਿਆ ਸੇਈ ਪਤਿਵੰਤੇ ॥
जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥
जो अपने प्राण, शरीर एवं धन को गुरु के समक्ष अर्पण करते हैं, वे प्रतिष्ठित हैं।

ਆਪਨੜੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣਿਆ ਨਿਤ ਕੇਲ ਕਰੰਤੇ ॥੩॥
आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥३॥
ऐसे मनुष्य अपने प्रभु को भले लगते हैं, और सदैव आनंद प्राप्त करते हैं।॥ ३॥

ਦੁਰਮਤਿ ਮਦੁ ਜੋ ਪੀਵਤੇ ਬਿਖਲੀ ਪਤਿ ਕਮਲੀ ॥
दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥
जो लोग दुर्मति रूपी शराब को पीने लगते हैं, वे विकारग्रस्त होकर पागल हो जाते हैं।

ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਜੋ ਰਤੇ ਨਾਨਕ ਸਚ ਅਮਲੀ ॥੪॥੧੨॥੧੧੪॥
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥४॥१२॥११४॥
हे नानक ! जो मनुष्य राम नाम रूपी रस में मस्त रहते हैं, वही सच्चे नशेड़ी हैं॥ ४॥ १२ ॥ ११४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕੀਆ ਕਰਾਇਆ ਆਰੰਭੁ ਰਚਾਇਆ ॥
उदमु कीआ कराइआ आर्मभु रचाइआ ॥
मैंने नाम जपने का उद्यम किया है पर यह उद्यम गुरु ने करवाया है।

ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਜਪਿ ਜੀਵਣਾ ਗੁਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥੧॥
नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥१॥
गुरु ने मेरे शुभ कार्य की शुरुआत कर दी है। गुरु ने मुझे यही मंत्र दृढ़ करवाया है कि मैंने नाम जप-जपकर ही जीना है॥ १॥

ਪਾਇ ਪਰਹ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕੈ ਜਿਨਿ ਭਰਮੁ ਬਿਦਾਰਿਆ ॥
पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥
मैं अपने सतिगुरु के चरण स्पर्श करता हूँ, जिन्होंने मेरी दुविधा निवृत्त कर दी है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਣੀ ਸਚੁ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझे सत्य से संवार कर मेरा जीवन सुन्दर बना दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਆਪਣੇ ਸਚੁ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ॥
करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥
अपनी इच्छा से प्रभु ने मेरा हाथ पकड़कर अपने हुक्म से मुझे अपने चरणों में लीन कर लिया है।

ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਦਿਤੀ ਦਾਤਿ ਸਾ ਪੂਰਨ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥२॥
जो प्रभु ने मुझे नाम की देन प्रदान की है, वह मेरे लिए पूर्ण प्रशंसा है॥ २॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਈਅਹਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥
हे भाई ! प्रभु के नाम को जप कर मैं सदैव ही उसका गुणगान करता रहता हूँ।

ਨੇਮੁ ਨਿਬਾਹਿਓ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੩॥
नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥३॥
प्रभु ने मुझ पर कृपा की है और सतिगुरु की दया से मेरा संकल्प सम्पूर्ण हो गया है॥ ३॥

ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਗੁਣ ਗਾਉ ਲਾਭੁ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ॥
नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥
मैं नाम धन प्राप्त करने के लिए प्रभु के गुण गाता हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे नाम-धन का लाभ दिया है।

ਵਣਜਾਰੇ ਸੰਤ ਨਾਨਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਹੁ ਅਮਿਤਾ ॥੪॥੧੩॥੧੧੫॥
वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥४॥१३॥११५॥
हे नानक ! संतजन व्यापारी हैं और अनन्त प्रभु उनका साहूकार है॥ ४॥ १३॥ ११५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਾ ਕਾ ਠਾਕੁਰੁ ਤੁਹੀ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕੇ ਵਡਭਾਗਾ ॥
जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥
हे प्रभु ! जिस मनुष्य का एक तू ही ठाकुर है, वह बड़ा भाग्यशाली है।

ਓਹੁ ਸੁਹੇਲਾ ਸਦ ਸੁਖੀ ਸਭੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥੧॥
ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥१॥
वह जीवन में सदैव सुखी एवं प्रसन्नचित्त रहता है और उसका सब भ्रम एवं डर दूर हो जाता है॥ १॥

ਹਮ ਚਾਕਰ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ਭਾਰਾ ॥
हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥
"(हे बन्धु !) हम गोबिन्द के सेवक है, मेरा ठाकुर सबसे बड़ा है।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਗਲ ਬਿਧਿ ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥१॥ रहाउ ॥
जो समस्त विधियों से स्वयं ही करने वाला और कराने वाला है, वही हमारा सच्चा गुरु है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਅਉਰੁ ਕੋ ਤਾ ਕਾ ਭਉ ਕਰੀਐ ॥
दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीऐ ॥
सृष्टि में ईश्वर के बराबर दूसरा कोई नहीं, जिसका भय माना जाए।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਮਹਲੁ ਪਾਈਐ ਜਗੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਐ ॥੨॥
गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥२॥
गुरु की सेवा करने से (प्रभु-चरणों में) निवास मिल जाता है और इस विषम जगत-समुद्र से पार हुआ जाता है॥ २॥

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਤੇਰੀ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਮਨ ਮਾਹਿ ਨਿਧਾਨਾ ॥
द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥
हे भगवान् ! तेरी दया-दृष्टि से आत्मिक सुख उपलब्ध होता है और नाम का भण्डार हृदय में बस जाता है।

ਜਾ ਕਉ ਤੁਮ ਕਿਰਪਾਲ ਭਏ ਸੇਵਕ ਸੇ ਪਰਵਾਨਾ ॥੩॥
जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥३॥
जिस पर तू कृपालु हो जाता है वह सेवक स्वीकार हो जाता है।॥ ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੋ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਪੀਵੈ ॥
अम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥
हरि का कीर्तन अमृत रस है, पर कोई विरला ही इस रस को पीता है।

ਵਜਹੁ ਨਾਨਕ ਮਿਲੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ॥੪॥੧੪॥੧੧੬॥
वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥
हे नानक ! यदि मुझ गोविन्द के चाकर को वैतन के रूप में उसका एक नाम मिल जाए तो मैं अपने हृदय में नाम जप-जप कर जीवन जीता रहूँ॥ ४॥ १४॥ ११६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਉ ਚੇਰੁਲੀ ਸੋ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥
हे सखियो ! मैं जिस परमात्मा की सेविका हूँ वह सबसे ऊँचा है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਾ ਕਾ ਕਾਂਢੀਐ ਥੋਰਾ ਅਰੁ ਮੂਚਾ ॥੧॥
सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥१॥
मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत है, उसका दिया हुआ ही कहलाता है॥१॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮੇਰਾ ਧਨੋ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਮਨੀਆ ॥
जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥
हे सखियो ! यह शरीर, प्राण एवं धन इत्यादि मालिक प्रभु की दी हुई देन मानती हूँ।

ਨਾਮਿ ਜਿਸੈ ਕੈ ਊਜਲੀ ਤਿਸੁ ਦਾਸੀ ਗਨੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके नाम से मैं उज्ज्वल हुई हूँ, मैं खुद को उसकी सेविका ही गिनती हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਅਨੰਦ ਮੈ ਨਾਉ ਮਾਣਕ ਹੀਰਾ ॥
वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥
हे स्वामी ! तू बेपरवाह एवं आनंदमय है। तेरा नाम मेरे लिए माणिक एवं हीरा है।

ਰਜੀ ਧਾਈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਜਾ ਕਾ ਤੂੰ ਮੀਰਾ ॥੨॥
रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥२॥
जिस जीव-स्त्री का तू मालिक है, वह हमेशा संतुष्ट रहती है और सदा सुख मानती है॥२॥

ਸਖੀ ਸਹੇਰੀ ਸੰਗ ਕੀ ਸੁਮਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਵਉ ॥
सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ ॥
हे मेरी संगी सखी-सहेलियो ! मैं आपको एक सुमति समझाती हूँ।

ਸੇਵਹੁ ਸਾਧੂ ਭਾਉ ਕਰਿ ਤਉ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਪਾਵਉ ॥੩॥
सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥३॥
आप श्रद्धा से साधुओं की सेवा करो व नाम रूपी निधि हरि को पा लो॥ ३॥

ਸਗਲੀ ਦਾਸੀ ਠਾਕੁਰੈ ਸਭ ਕਹਤੀ ਮੇਰਾ ॥
सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥
सब जीव-स्त्रियों ठाकुर जी की दासियाँ हैं और सब उसे मेरा मालिक कहती हैं।

ਜਿਸਹਿ ਸੀਗਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਤਿਸੁ ਸੁਖਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥੪॥੧੫॥੧੧੭॥
जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥४॥१५॥११७॥
हे नानक ! परमेश्वर जिस जीवात्मा का जीवन सुन्दर बना देता है, उनका बसेरा सदैव सुखद है॥ ४॥ १५ ॥ ११७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸੰਤਾ ਕੀ ਹੋਇ ਦਾਸਰੀ ਏਹੁ ਅਚਾਰਾ ਸਿਖੁ ਰੀ ॥
संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥
हे सुन्दर आत्मा ! तू यह आचरण सीख ले कि तू संतजनों की दासी बनी रहे।

ਸਗਲ ਗੁਣਾ ਗੁਣ ਊਤਮੋ ਭਰਤਾ ਦੂਰਿ ਨ ਪਿਖੁ ਰੀ ॥੧॥
सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥१॥
समस्त गुणों में सर्वोत्तम गुण यही है कि तू अपने प्राणनाथ को कहीं दूर मत देख॥ १॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਸੁੰਦਰਿ ਆਪਣਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮਜੀਠੈ ਰੰਗਿ ਰੀ ॥
इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥
हे सुन्दरी ! तू अपने इस सुन्दर मन को मजीठ जैसे पक्के हरि-नाम के रंग से रंग ले।

ਤਿਆਗਿ ਸਿਆਣਪ ਚਾਤੁਰੀ ਤੂੰ ਜਾਣੁ ਗੁਪਾਲਹਿ ਸੰਗਿ ਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥ रहाउ ॥
अपने अन्तर्मन से बुद्धिमता एवं चतुराई को छोड़कर जगत पालक प्रभु को अपने साथ समझ ॥ १॥ रहाउ॥

ਭਰਤਾ ਕਹੈ ਸੁ ਮਾਨੀਐ ਏਹੁ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇ ਰੀ ॥
भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥
हे आत्मा ! प्राणनाथ प्रभु जो हुक्म करता है, उसे मानना चाहिए। इसे ही अपना श्रृंगार बना।

ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਵਿਸਾਰੀਐ ਏਹੁ ਤੰਬੋਲਾ ਖਾਇ ਰੀ ॥੨॥
दूजा भाउ विसारीऐ एहु त्मबोला खाइ री ॥२॥
प्रभु के अतिरिक्त दूसरा प्रेम भूल जा। तू यह पान खाया कर॥ २॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਰਿ ਦੀਪਕੋ ਇਹ ਸਤ ਕੀ ਸੇਜ ਬਿਛਾਇ ਰੀ ॥
गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥
हे आत्मा ! गुरु के शब्द को अपना दीपक बना। इस सत्य की सेज बिछा।

ਆਠ ਪਹਰ ਕਰ ਜੋੜਿ ਰਹੁ ਤਉ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਰਾਇ ਰੀ ॥੩॥
आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥३॥
जो जीव-स्त्री हाथ जोड़कर आठ पहर उसके सम्मुख खड़ी रहती है, उसे जगत का बादशाह हरि मिल जाता है।॥ ३॥

ਤਿਸ ਹੀ ਚਜੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਭੁ ਸਾਈ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰਿ ਰੀ ॥
तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥
केवल उसके पास ही शुभ-आचरण एवं सभी श्रृंगार हैं और वही अपार रूपवान है।

ਸਾਈ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਨਕਾ ਜੋ ਭਾਣੀ ਕਰਤਾਰਿ ਰੀ ॥੪॥੧੬॥੧੧੮॥
साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥१६॥११८॥
हे नानक ! वही जीवात्मा सुहागिन है, जो करतार को प्यारी लगती है॥ ४॥ १६ ॥ ११८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਡੀਗਨ ਡੋਲਾ ਤਊ ਲਉ ਜਉ ਮਨ ਕੇ ਭਰਮਾ ॥
डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥
जब तक मेरे मन में भ्रम बने रहे, तब तक विकारों में गिरता और मोह में फंसकर डावांडोल होता रहा।

ਭ੍ਰਮ ਕਾਟੇ ਗੁਰਿ ਆਪਣੈ ਪਾਏ ਬਿਸਰਾਮਾ ॥੧॥
भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥१॥
जब गुरु ने मेरे भ्रम निवृत्त कर दिए तो मुझे सुख उपलब्ध हो गया ॥ १॥

ਓਇ ਬਿਖਾਦੀ ਦੋਖੀਆ ਤੇ ਗੁਰ ਤੇ ਹੂਟੇ ॥
ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥
वे विवादास्पद कामादिक वैरी, सभी गुरु की कृपा से मुझ से दूर हो गए हैं।

ਹਮ ਛੂਟੇ ਅਬ ਉਨ੍ਹ ਤੇ ਓਇ ਹਮ ਤੇ ਛੂਟੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अब उनसे मुक्ति प्राप्त कर ली है, वे सब हमारा पीछा छोड़ गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮੇਰਾ ਤੇਰਾ ਜਾਨਤਾ ਤਬ ਹੀ ਤੇ ਬੰਧਾ ॥
मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥
जब तक मैं भेदभाव की वृति को अपनाता रहा तो विकारों के बन्धन में फँसता रहा।

ਗੁਰਿ ਕਾਟੀ ਅਗਿਆਨਤਾ ਤਬ ਛੁਟਕੇ ਫੰਧਾ ॥੨॥
गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥२॥
लेकिन जब गुरु ने अज्ञानता मिटा दी तो मोहिनी के बन्धनों से मुक्ति हो गई॥ २॥

ਜਬ ਲਗੁ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂਝਤਾ ਤਬ ਹੀ ਲਉ ਦੁਖੀਆ ॥
जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥
जब तक मैं प्रभु के हुक्म को नहीं समझता था, तब तक मैं बहुत दुखी होता रहा।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਤਬ ਹੀ ਤੇ ਸੁਖੀਆ ॥੩॥
gur mili hukamu pachhaaniaa tab hee te sukheeaa ॥३॥
जब से गुरु को मिलकर मैंने उसके हुक्म को पहचान लिया है, तब से मैं सुखी हूँ॥ ३॥

ਨਾ ਕੋ ਦੁਸਮਨੁ ਦੋਖੀਆ ਨਾਹੀ ਕੋ ਮੰਦਾ ॥
naa ko dusamanu dokheeaa naahee ko mandaa ॥
मेरा कोई दुश्मन अथवा बुरा चाहने वाला नहीं, न ही कोई बुरा है।

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੇਵਕੋ ਨਾਨਕ ਖਸਮੈ ਬੰਦਾ ॥੪॥੧੭॥੧੧੬॥
gur kee sevaa sevako naanak khasamai bandaa ॥४॥१७॥११६॥
हे नानक ! जो सेवक गुरु की श्रद्धा से सेवा करता है, वह प्रभु का बन्दा है॥ ४॥ १७ ॥ ११६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
aasaa mahalaa ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨਦੁ ਘਣਾ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਉ ॥
sookh sahaj aanadu ghanaa hari keeratanu gaau ॥
मैं हरि का भजन-कीर्तन गाता रहता हूँ, जिससे मेरे मन में सहज सुख एवं आनंद बना रहता है।

ਗਰਹ ਨਿਵਾਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੇ ਅਪਣਾ ਨਾਉ ॥੧॥
garah nivaare satiguroo de apanaa naau ॥१॥
गुरु ने अपना नाम देकर नौ ग्रहों के संकट को दूर कर दिया है॥ १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
balihaaree gur aapane sad sad bali jaau ॥
मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, सदैव उस पर कुर्बान हूँ।

ਗੁਰੂ ਵਿਟਹੁ ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਜਿਸੁ ਮਿਲਿ ਸਚੁ ਸੁਆਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिन से मिलकर मेरा सच्चा प्रभु मुझे मिल गया है। १॥ रहाउ॥

ਸਗੁਨ ਅਪਸਗੁਨ ਤਿਸ ਕਉ ਲਗਹਿ ਜਿਸੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥
सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥
जिसे प्रभु याद नहीं आता उसे ही शुभ-अशुभ शगुन प्रभावित करते हैं।

ਤਿਸੁ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਈ ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਭਾਵੈ ॥੨॥
तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥२॥
जो मनुष्य हरि-प्रभु को भला लगता है, यमदूत उसके निकट नहीं आता ॥ २॥

ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਜਪ ਤਪ ਜੇਤੇ ਸਭ ਊਪਰਿ ਨਾਮੁ ॥
पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥
दान-पुण्य, जप-तप इत्यादि जितने भी शुभ कर्म हैं, ईश्वर का नाम इनसे सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਜੋ ਜਪੈ ਤਿਸੁ ਪੂਰਨ ਕਾਮੁ ॥੩॥
हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥३॥
जो प्राणी अपनी रसना से परमेश्वर के नाम का जाप करता है उसके तमाम कार्य पूर्ण हो जाते हैं।॥ ३॥

ਭੈ ਬਿਨਸੇ ਭ੍ਰਮ ਮੋਹ ਗਏ ਕੋ ਦਿਸੈ ਨ ਬੀਆ ॥
भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥
उसका भय विनष्ट हो गया है, उसकी दुविधा एवं मोह भी भाग गए हैं और प्रभु के बिना वह किसी दूसरे को नहीं देखता।

ਨਾਨਕ ਰਾਖੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਥੀਆ ॥੪॥੧੮॥੧੨੦॥
नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥
हे नानक ! यदि परब्रह्म स्वं रक्षा करे तो फिर मनुष्य को कोई दुःख नहीं सताता ॥४॥१८॥१२०॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੯ ਮਹਲਾ ੫
आसा घरु ९ महला ५
आसा घरु ९ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਚਿਤਵਉ ਚਿਤਵਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਉ ਆਗੈ ਭਾਵਉ ਕਿ ਨ ਭਾਵਉ ॥
चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥
मैं अपने चित्त में प्रभु का सिमरन करता रहता हूँ और उसका सिमरन करके सर्व सुख पाता हूँ। मैं नहीं जानता कि आगे मैं उसको अच्छा लगूंगा अथवा नहीं।

ਏਕੁ ਦਾਤਾਰੁ ਸਗਲ ਹੈ ਜਾਚਿਕ ਦੂਸਰ ਕੈ ਪਹਿ ਜਾਵਉ ॥੧॥
एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥१॥
सब जीवों का दाता एक प्रभु ही है और शेष सभी उसके याचक हैं। प्रभु के अलावा मैं किसके पास माँगने के लिए जाऊँ॥ १॥

ਹਉ ਮਾਗਉ ਆਨ ਲਜਾਵਉ ॥
हउ मागउ आन लजावउ ॥
प्रभु के अतिरिक्त किसी दूसरे से माँगने पर मुझे लज्जा आती है।

ਸਗਲ ਛਤ੍ਰਪਤਿ ਏਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਕਉਨੁ ਸਮਸਰਿ ਲਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥१॥ रहाउ ॥
एक परमात्मा ही सृष्टि का छत्रपति राजा है, किसी दूसरे को उसके बराबर का सोच नहीं सकता ॥१॥ रहाउ ॥

ਊਠਉ ਬੈਸਉ ਰਹਿ ਭਿ ਨ ਸਾਕਉ ਦਰਸਨੁ ਖੋਜਿ ਖੋਜਾਵਉ ॥
ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥
उठते-बैठते मैं उसके बिना रह भी नहीं सकता, उसके दर्शनों हेतु मैं बार-बार खोज करता हूँ।

ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ਸਨਕਾਦਿਕ ਸਨਕ ਸਨੰਦਨ ਸਨਾਤਨ ਸਨਤਕੁਮਾਰ ਤਿਨ੍ ਕਉ ਮਹਲੁ ਦੁਲਭਾਵਉ ॥੨॥
ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥२॥
ब्रह्मा जैसे बड़े-बड़े देवते, सनक, सनंदन, सनातन एवं सनत कुमार जैसे ऋषि (जो ब्रह्मा के पुत्र कहलाए) प्रभु का महल तो उनके लिए भी दुर्लभ रहा ॥ २ ॥

ਅਗਮ ਅਗਮ ਆਗਾਧਿ ਬੋਧ ਕੀਮਤਿ ਪਰੈ ਨ ਪਾਵਉ ॥
अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥
प्रभु अगम्य, अनन्त एवं अगाध बोध वाला है। उसकी उपमा का मूल्यांकन नहीं हो सकता।

ਤਾਕੀ ਸਰਣਿ ਸਤਿ ਪੁਰਖ ਕੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਵਉ ॥੩॥
ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥३॥
मैंने उस सद्पुरुष की शरण ली है और उस महापुरुष सतगुरु को ही स्मरण करता हूँ॥ ३॥

ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦਇਆਲੁ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਕਾਟਿਓ ਬੰਧੁ ਗਰਾਵਉ ॥
भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥
मेरा ठाकुर-प्रभु मुझ पर कृपालु एवं दयालु हो गया है, उसने मेरे गले से मोह-माया की फाँसी काट दी है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਉ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਓ ਤਉ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵਉ ॥੪॥੧॥੧੨੧॥
कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥४॥१॥१२१॥
हे नानक ! अब जब मुझे साधु की संगति मिल गई है तो मैं फिर से जन्म नहीं लूंगा ॥ ४॥ १॥ १२१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅੰਤਰਿ ਗਾਵਉ ਬਾਹਰਿ ਗਾਵਉ ਗਾਵਉ ਜਾਗਿ ਸਵਾਰੀ ॥
अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥
मैं अपने हृदय-घर में प्रभु का गुणानुवाद करता रहता हूँ और हृदय-घर से बाहर भी उसका ही यशोगान करता हूँ। सोते-जागते भी मैं उसका ही गुणगान करता हूँ।

ਸੰਗਿ ਚਲਨ ਕਉ ਤੋਸਾ ਦੀਨ੍ਹਾ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ ਕੇ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥੧॥
संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥
मैं गोविन्द के नाम का व्यापारी हूँ। मेरे साथ चलने हेतु उसने मुझे अपने नाम का यात्रा-खर्च दिया है॥ १॥

ਅਵਰ ਬਿਸਾਰੀ ਬਿਸਾਰੀ ॥
अवर बिसारी बिसारी ॥
भगवान के अलावा दूसरी तमाम वस्तुएँ मैंने भुला दी हैं।

ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਓ ਮੈ ਏਹੋ ਆਧਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे प्रभु-नाम का दान दिया है और यह नाम ही मेरा जीवन का आधार है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੂਖਨਿ ਗਾਵਉ ਸੁਖਿ ਭੀ ਗਾਵਉ ਮਾਰਗਿ ਪੰਥਿ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥
दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥
दुःख में भी मैं प्रभु का गुणगान करता हूँ, सुख में भी मैं उसका ही यशोगान करता हूँ और मार्ग पर चलते हुए यात्रा में भी मैं उसको ही याद करता हूँ।

ਨਾਮ ਦ੍ਰਿੜੁ ਗੁਰਿ ਮਨ ਮਹਿ ਦੀਆ ਮੋਰੀ ਤਿਸਾ ਬੁਝਾਰੀ ॥੨॥
नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥
गुरु ने मेरे मन में नाम को बसा दिया है और मेरी प्यास बुझा दी है॥ २॥

ਦਿਨੁ ਭੀ ਗਾਵਉ ਰੈਨੀ ਗਾਵਉ ਗਾਵਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਰਸਨਾਰੀ ॥
दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥
मैं दिन में भी प्रभु की गुणस्तुति करता हूँ और रात को भी उसका ही गुणानुवाद करता हूँ और अपनी रसना से मैं उसको श्वास-श्वास से याद करता हूँ।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਬਿਸਾਸੁ ਹੋਇ ਹਰਿ ਜੀਵਤ ਮਰਤ ਸੰਗਾਰੀ ॥੩॥
सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥३॥
सत्संगति में रहने से यह विश्वास कायम हो जाता है कि प्रभु जीवन एवं मृत्यु में भी हमारे साथ रहता है ॥३॥

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਇਹੁ ਦਾਨੁ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪਾਵਉ ਸੰਤ ਰੇਨ ਉਰਿ ਧਾਰੀ ॥
जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥
हे प्रभु ! अपने दास नानक को यह दान दीजिए कि वह संतों की चरण-धूलि प्राप्त करके तेरी स्मृति को अपने मन में बसाकर रखे।

ਸ੍ਰਵਨੀ ਕਥਾ ਨੈਨ ਦਰਸੁ ਪੇਖਉ ਮਸਤਕੁ ਗੁਰ ਚਰਨਾਰੀ ॥੪॥੨॥੧੨੨॥
स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥४॥२॥१२२॥
मैं अपने कानों से तेरी ही कथा सुनु अपने नयनों से तेरे ही दर्शन करूँ और अपना माथा गुरु के चरणों पर रखूं ॥ ४॥२॥ १२२॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਘਰੁ ੧੦ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा घरु १० महला ५ ॥
आसा घरु १० महला ५ ॥

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂੰ ਅਸਥਿਰੁ ਕਰਿ ਮਾਨਹਿ ਤੇ ਪਾਹੁਨ ਦੋ ਦਾਹਾ ॥

जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥

हे मानव ! यह शरीर जिसे तू शाश्वत मानता है, वह तो केवल दो दिनों का अतिथि है।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਗ੍ਰਿਹ ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਅਸਨਾਹਾ ॥੧॥
पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥१॥
पुत्र, पत्नी, गृह एवं घर की सारी सामग्री इन सबका मोह झूठा है॥ १॥

रे मन किआ करहि है हा हा ॥
रे मन किआ करहि है हा हा ॥
हे मन ! तू क्यों खिलखिला कर मुस्कुराता हुआ आहा ! आहा! करता है?

द्रिसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥१॥ रहाउ ॥
द्रिसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥१॥ रहाउ ॥
अपने नेत्रों से देख कि यह वस्तुएँ तो राजा हरिचंद की नगर की भाँति हैं इसलिए एक राम के भजन का लाभ प्राप्त कर ले॥ १॥ रहाउ ॥

जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥
जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥
हे मन ! जैसे शरीर पर पहने हुए वस्त्र दो-चार दिनों में पुराने हो जाते हैं, वैसे ही यह शरीर है।

भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥२॥
भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥२॥
दीवार पर कहाँ तक भागा जा सकता है ? अन्ततः उसका अन्तिम छोर आ ही जाता है॥ २॥

जैसे अंभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥
जैसे अंभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥
हे मन ! जैसे कुण्ड में रखे हुए जल में गिर कर नमक गल जाता है, वैसे ही यह शरीर है।

आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥३॥
आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥३॥
जब परब्रह्म की आज्ञा आती है तो एक क्षण एवं पल में ही प्राणी दुनिया छोड़ कर चला जाता है॥ ३॥

रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥
रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥
हे मन ! तुम अपनी गिनी-चुनी सांसों के भीतर ही संसार में चलते-फिरते हो और भगवान के लिखे लेख अनुसार ही तुम सांस लेते हो।

ਸਦਾ ਕੀਰਤਿ ਕਰਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਉਬਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਓਟਾਹਾ ॥੪॥੧॥੧੨੩॥
सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥४॥१॥१२३॥
हे नानक ! सदैव ही भगवान की कीर्ति करो। जिन्होंने सच्चे गुरु की शरण ली है, वे भवसागर में डूबने से बच गए हैं।॥ ४॥ १॥ १२३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਪੁਸਟ ਬਾਤ ਤੇ ਭਈ ਸੀਧਰੀ ਦੂਤ ਦੁਸਟ ਸਜਨਈ ॥
अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥
अपुष्ट बात सीधी हो गई है और कट्टर कामादिक शत्रु भी सज्जन बन गए हैं।

ਅੰਧਕਾਰ ਮਹਿ ਰਤਨੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿਓ ਮਲੀਨ ਬੁਧਿ ਹਛਨਈ ॥੧॥
अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥१॥
मेरे मन के अज्ञानता रूपी अंधकार में ज्ञान रूपी रत्न आलोकित हो गया है और मलिन बुद्धि भी अब निर्मल हो गई है॥ १ ॥

ਜਉ ਕਿਰਪਾ ਗੋਬਿੰਦ ਭਈ ॥
जउ किरपा गोबिंद भई ॥
जब जगतपालक गोबिन्द कृपालु हो गया तो

ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਫਲ ਪਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुख स्मपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु से मिलकर मुझे सुख, सम्पति एवं हरि-नाम का फल प्राप्त हो गए॥ १॥ रहाउ॥

ਮੋਹਿ ਕਿਰਪਨ ਕਉ ਕੋਇ ਨ ਜਾਨਤ ਸਗਲ ਭਵਨ ਪ੍ਰਗਟਈ ॥
मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥
मुझ कृपण को कोई नहीं जानता था लेकिन अब मैं तमाम लोकों में लोकप्रिय हो गया हूँ।

ਸੰਗਿ ਬੈਠਨੋ ਕਹੀ ਨ ਪਾਵਤ ਹੁਣਿ ਸਗਲ ਚਰਣ ਸੇਵਈ ॥੨॥
संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥२॥
पहले कोई भी मुझे अपने पास बैठने नहीं देता था परन्तु अब सारा संसार मेरे चरणों की सेवा करता है॥ २॥

ਆਢ ਆਢ ਕਉ ਫਿਰਤ ਢੂੰਢਤੇ ਮਨ ਸਗਲ ਤ੍ਰਿਸਨ ਬੁਝਿ ਗਈ ॥
आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥
पहले मैं आधे-आधे पैसे की खोज में भटकता रहता था परन्तु अब मेरे मन की तृष्णा बुझ गई है।

ਏਕੁ ਬੋਲੁ ਭੀ ਖਵਤੋ ਨਾਹੀ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸੀਤਲਈ ॥੩॥
एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥३॥
पहले मैं किसी का एक कटु बचन भी सहन नहीं कर पाता था, पर अब सत्संगति के प्रभाव से सहनशील हो गया हूँ॥ ३॥

ਏਕ ਜੀਹ ਗੁਣ ਕਵਨ ਵਖਾਨੈ ਅਗਮ ਅਗਮ ਅਗਮਈ ॥
एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥
प्रभु के कौन-कौन से गुण एक जिव्हा से व्यक्त करूँ? क्योंकि वह तो अगम्य एवं अपरंपार है।

ਦਾਸੁ ਦਾਸ ਦਾਸ ਕੋ ਕਰੀਅਹੁ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਈ ॥੪॥੨॥੧੨੪॥
दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥४॥२॥१२४॥
नानक एक-यही प्रार्थना करता है कि हे हरि ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, इसलिए मुझे अपने दासों का दास बना दे ॥ ४ ॥ २ ॥ १२४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਰੇ ਮੂੜੇ ਲਾਹੇ ਕਉ ਤੂੰ ਢੀਲਾ ਢੀਲਾ ਤੋਟੇ ਕਉ ਬੇਗਿ ਧਾਇਆ ॥
रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥
हे मूर्ख ! अपने लाभ के लिए तू बहुत ही आलसी है परन्तु अपने नुक्सान हेतु तू शीघ्र ही भाग कर जाता है।

ਸਸਤ ਵਖਰੁ ਤੂੰ ਘਿੰਨਹਿ ਨਾਹੀ ਪਾਪੀ ਬਾਧਾ ਰੇਨਾਇਆ ॥੧॥
ससत वखरु तूं घिंनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥१॥
हे पापी ! तुम प्रभु नाम रूपी सस्ता सौदा नहीं लेते और विकारों के ऋण से बंधे हुए हो।॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇਰੀ ਆਸਾਇਆ ॥
सतिगुर तेरी आसाइआ ॥
हे मेरे सतिगुरु ! मुझे तेरी ही आशा है।

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮੈ ਏਹਾ ਓਟਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥

हे परब्रह्म ! तेरा नाम पतितों को पावन करने वाला है। केवल यही मेरी ओट है॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੰਧਣ ਵੈਣ ਸੁਣਹਿ ਉਰਝਾਵਹਿ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਅਲਕਾਇਆ ॥

गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥

हे मूर्ख ! अश्लील गीत सुनकर तुम मस्त हो जाते हो परन्तुं प्रभु का नाम-स्मरण करने में तुम आलस्य करते हो।

ਨਿੰਦ ਚਿੰਦ ਕਉ ਬਹੁਤੁ ਉਮਾਹਿਓ ਬੂਝੀ ਉਲਟਾਇਆ ॥੨॥

निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥२॥

किसी की निंदा की कल्पना से तुम बहुत प्रसन्न होते हो परन्तु तेरी यह बुद्धि विपरीत है॥ २॥

ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਤਨ ਪਰ ਤੀ ਨਿੰਦਾ ਅਖਾਧਿ ਖਾਹਿ ਹਰਕਾਇਆ ॥

पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥

हे मूर्ख ! तुम पराया धन, पराया तन, पराई स्त्री एवं परनिन्दा में उलझे हो एवं पागल हो गए हो इसलिए अभक्ष्य का भक्षण करते हो।

ਸਾਚ ਧਰਮ ਸਿਉ ਰੁਚਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ਸਤਿ ਸੁਨਤ ਛੋਹਾਇਆ ॥੩॥

साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥३॥

हे मूर्ख ! सच्चे धर्म के साथ तुम्हारी कोई रुचि नहीं और सत्य को सुनकर तुम क्रुद्ध हो जाते हो ॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਠਾਕੁਰ ਭਗਤ ਟੇਕ ਹਰਿ ਨਾਇਆ ॥

दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥

हे दीन दयालु ! हे कृपालु प्रभु-ठाकुर ! तेरे भक्तों को तेरे हरि नाम का ही सहारा है।

ਨਾਨਕ ਆਹਿ ਸਰਣ ਪ੍ਰਭ ਆਇਓ ਰਾਖੁ ਲਾਜ ਅਪਨਾਇਆ ॥੪॥੩॥੧੨੫॥

नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥४॥३॥१२५॥

हे प्रभु ! नानक ने बड़े चाव से तेरी शरण ली है, उसे अपना बनाकर उसकी लाज रख लो॥ ४॥ ३ ॥ १२५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਮਿਥਿਆ ਸੰਗਿ ਸੰਗਿ ਲਪਟਾਏ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਕਰਿ ਬਾਧੇ ॥
मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥
मनुष्य नश्वर पदार्थों तथा कुसंगति में लिपटा हुआ है। वह माया के मोह में फँसा रहता है।

ਜਹ ਜਾਨੋ ਸੋ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵੈ ਅਹੰਬੁਧਿ ਭਏ ਆਂਧੇ ॥੧॥
जह जानो सो चीति न आवै अह्मबुधि भए आंधे ॥१॥
जहाँ उसने जाना है, उसे वह स्मरण ही नहीं करता। वह अपनी अहंबुद्धि के कारण अन्धा बना रहता है॥ १॥

ਮਨ ਬੈਰਾਗੀ ਕਿਉ ਨ ਅਰਾਧੇ ॥
मन बैरागी किउ न अराधे ॥
हे मेरे वैरागी मन ! तू प्रभु का सिमरन क्यों नहीं करता ?

ਕਾਚ ਕੋਠਰੀ ਮਾਹਿ ਤੂੰ ਬਸਤਾ ਸੰਗਿ ਸਗਲ ਬਿਖੈ ਕੀ ਬਿਆਧੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥१॥ रहाउ ॥
तू काया रूपी कच्ची कोठरी में रहता है। तेरे साथ तमाम पापों के रोग लिपटे हुए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਬਿਹਾਵੈ ਪਲੁ ਖਿਨੁ ਛੀਜੈ ਅਰਜਾਧੇ ॥
मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥
मेरा-मेरा करते-करते दिन-रात बीत जाते हैं। प्रत्येक पल एवं क्षण तेरी उम्र बीतती जा रही है ।

ਜੈਸੇ ਮੀਠੈ ਸਾਦਿ ਲੋਭਾਏ ਝੂਠ ਧੰਧਿ ਦੁਰਗਾਧੇ ॥੨॥
जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥२॥
जैसे मीठे के आस्वादन में मक्खी फँस जाती है, वैसे ही भाग्यहीन मनुष्य झूठे धन्धे की दुर्गन्ध में फंसा रहता है॥ २॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਅਰੁ ਲੋਭ ਮੋਹ ਇਹ ਇੰਦ੍ਰੀ ਰਸਿ ਲਪਟਾਧੇ ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥
मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी विकारों के कारण इन्द्रियों के रस में मस्त रहता है।

ਦੀਈ ਭਵਾਰੀ ਪੁਰਖਿ ਬਿਧਾਤੈ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਜਨਮਾਧੇ ॥੩॥
दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥३॥
विधाता ने तुझे बार-बार योनियों में जन्म लेने की दुविधा दे दी है इसलिए तुम पुनःपुनः आवागमन में भटकते हो ॥ ३॥

ਜਉ ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਤਉ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸਭ ਸੁਖ ਲਾਧੇ ॥
जउ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥
जब गरीबों का दुःख दूर करने वाला प्रभु कृपालु होता है तो गुरु से मिलकर सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਧਿਆਵਉ ਮਾਰਿ ਕਾਢੀ ਸਗਲ ਉਪਾਧੇ ॥੪॥
कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥४॥
हे नानक ! में दिन-रात भगवान का ध्यान करता हूँ और उसने मेरे तमाम रोग पीट कर बाहर निकाल दिए हैं।॥ ४॥

ਇਉ ਜਪਿਓ ਭਾਈ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤੇ ॥
इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥
हे मेरे भाई ! इस तरह तुम्हें विधाता का सुमिरन करना चाहिए।

ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਲਾਥੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੪॥੪॥੧੨੬॥
भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥१२६॥
गरीबों के दुःख नाश करने वाला दयालु हो गया है और मेरा जन्म-मरण का दुःख दूर हो गया है॥ १॥ रहाउ दूसरा ॥ ४॥ ४॥ १२६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨਿਮਖ ਕਾਮ ਸੁਆਦ ਕਾਰਣਿ ਕੋਟਿ ਦਿਨਸ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥
निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥
इन्सान क्षण भर के काम-सुख के स्वाद के कारण करोड़ों दिन के दुख भोगता है।

ਘਰੀ ਮੁਹਤ ਰੰਗ ਮਾਣਹਿ ਫਿਰਿ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਵਹਿ ॥੧॥
घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥१॥
वह एक घड़ी, क्षण हेतु रमण करता है और तदुपरांत बार-बार पछताता है॥ १॥

ਅੰਧੇ ਚੇਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
अंधे चेति हरि हरि राइआ ॥
हे ज्ञानहीन प्राणी ! जगत के मालिक परमेश्वर को याद कर,"

ਤੇਰਾ ਸੋ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि तेरा वह मृत्यु का दिन समीप आ रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਪਲਕ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਦੇਖਿ ਭੂਲੋ ਆਕ ਨੀਮ ਕੋ ਤੂੰਮਰੁ ॥
पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तूमरु ॥
हे ज्ञानहीन प्राणी ! तुम एक क्षण भर के लिए अपनी आँखों से कड़वे पदार्थ अक, नीम को देखकर भूल गए हो।

ਜੈਸਾ ਸੰਗੁ ਬਿਸੀਅਰ ਸਿਉ ਹੈ ਰੇ ਤੈਸੋ ਹੀ ਇਹੁ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹੁ ॥੨॥
जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥२॥
जैसे विषैले सर्प का साथ होता है, वैसे ही पराई स्त्री का भोग-विलास है॥ २॥

ਬੈਰੀ ਕਾਰਣਿ ਪਾਪ ਕਰਤਾ ਬਸਤੁ ਰਹੀ ਅਮਾਨਾ ॥
बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥
वैर बढ़ाने वाली मोहिनी हेतु तू पाप करता रहता है और नाम रूपी वस्तु उसके पास अमानत ही पड़ी रहती है।

ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ ਤਿਨ ਹੀ ਸਿਉ ਸੰਗੀ ਸਾਜਨ ਸਿਉ ਬੈਰਾਨਾ ॥੩॥
छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥३॥
जो संगी तुझे छोड़ देते हैं उनके साथ तुम्हारा मेल-जोल है और अपने मित्रों से तुम्हारी शत्रुता है॥ ३॥

ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਇਹੈ ਬਿਧਿ ਬਿਆਪਿਓ ਸੋ ਉਬਰਿਓ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥

सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा ॥

समूचा जगत इस तरह माया-जाल में फँसा हुआ है, जिसका रखवाला पूर्ण गुरु बनता है केवल वही इससे बचकर निकलता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਓ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਸਰੀਰਾ ॥੪॥੫॥੧੨੭॥

कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥४॥५॥१२७॥

हे नानक ! ऐसा व्यक्ति भवसागर से पार हो गया है और उसका शरीर भी पवित्र हो गया है॥ ४॥ ५॥ १२७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦੇ ॥

आसा महला ५ दुपदे ॥

आसा महला ५ दुपदे ॥

ਲੂਕਿ ਕਮਾਨੋ ਸੋਈ ਤੁਮ੍ਹ ਪੇਖਿਓ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਮੁਕਰਾਨੀ ॥

लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी ॥

हे ईश्वर ! जो कर्म मनुष्य छिपकर करता है, उसे तुम देखते हो लेकिन मूर्ख एवं बेवकूफ मनुष्य इससे मुकरता है।

ਆਪ ਕਮਾਨੇ ਕਉ ਲੇ ਬਾਂਧੇ ਫਿਰਿ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤਾਨੀ ॥੧॥

आप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ॥१॥

अपने कृत कर्मों के कारण वह जकड़ लिया जाता है और तदुपरांत वह पश्चाताप करता है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਭ ਬਿਧਿ ਆਗੈ ਜਾਨੀ ॥

प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥

मेरा प्रभु मनुष्य की समस्त विधियों को पहले ही जान लेता है।

ਭ੍ਰਮ ਕੇ ਮੂਸੇ ਤੂੰ ਰਾਖਤ ਪਰਦਾ ਪਾਛੈ ਜੀਅ ਕੀ ਮਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥१॥ रहाउ ॥

हे भ्रम हाथों लुटे हुए जीव ! तुम अपने कर्मों पर पर्दा डालते हो परन्तु तदुपरांत तुझे अपने मन के भेदों को स्वीकार करना पड़ेगा।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਏ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਾਗੇ ਕਿਆ ਕੋ ਕਰੈ ਪਰਾਨੀ ॥

जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥

जिस ओर प्रभु जीवों को लगाता है, वह बेचारे उधर ही लग जाते हैं। कोई नश्वर प्राणी क्या कर सकता है ?"

ਬਖਸਿ ਲੈਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੨॥੬॥੧੨੮॥

बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥२॥६॥१२८॥

हे परब्रह्म स्वामी ! मुझे क्षमा कर दीजिए, नानक सदैव ही तुझ पर कुर्बान जाता है॥ २॥ ६॥ १२८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਅਪੁਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪੇ ਰਾਖੈ ਆਪੇ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ॥

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥

प्रभु स्वयं ही अपने सेवक की इज्जत रखता है और स्वयं ही उससे अपना नाम सिमरन करवाता है।

ਜਹ ਜਹ ਕਾਜ ਕਿਰਤਿ ਸੇਵਕ ਕੀ ਤਹਾ ਤਹਾ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥੧॥

जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥

जहाँ-कहीं भी उसके सेवक का कामकाज होता है वहाँ ही प्रभु शीघ्र पहुँच जाता है। १॥

ਸੇਵਕ ਕਉ ਨਿਕਟੀ ਹੋਇ ਦਿਖਾਵੈ ॥

सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥

अपने सेवक को प्रभु उसके समीपस्थ होकर दिखा देता है।

ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਠਾਕੁਰ ਪਹਿ ਸੇਵਕੁ ਤਤਕਾਲ ਹੋਇ ਆਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥१॥ रहाउ ॥

जो कुछ सेवक अपने स्वामी से कहता है, वह तत्काल ही पूरा हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਿਸੁ ਸੇਵਕ ਕੈ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜੋ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥

तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥

मैं उस सेवक पर बलिहारी जाता हूँ जो अपने प्रभु को अच्छा लगता है।

ਤਿਸ ਕੀ ਸੋਇ ਸੁਣੀ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਤਿਸੁ ਨਾਨਕ ਪਰਸਣਿ ਆਵੈ ॥੨॥੭॥੧੨੯॥

तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२९॥

उसकी शोभा सुनकर नानक का मन खिल गया है और उस सेवक के चरण-स्पर्श करने के लिए वह उसके पास जाता है॥ २ ॥ ७ ॥ १२६ ॥

ਆਸਾ ਘਰੁ ੧੧ ਮਹਲਾ ੫

आसा घरु ११ महला ५

आसा घरु ११ महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਟੂਆ ਭੇਖ ਦਿਖਾਵੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਜੈਸਾ ਹੈ ਓਹੁ ਤੈਸਾ ਰੇ ॥
नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥
नदुआ अनेक विधियों से स्वांग दिखाता है, परन्तु वह जैसा होता है, वैसा ही रहता है।

ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਿਓ ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਰਿ ਸੁਖਹਿ ਨਾਹੀ ਪਰਵੇਸਾ ਰੇ ॥੧॥
अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥१॥
इसी तरह जीव भ्रम में फंसकर अनेक योनियों में भटकता रहता है परन्तु सुख में उसका प्रवेश नहीं होता ॥ १॥

ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਹਮਾਰੇ ਮੀਤਾ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਨੀਤਾ ਰੇ ॥
साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥
हे मेरे सज्जनो ! मित्रो एवं संतजनो ! हरि-परमेश्वर के नाम के बिना सब कुछ नश्वर है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਇਹੁ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜੀਤਾ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥१॥ रहाउ ॥
जिस व्यक्ति ने भी साधु की संगति में मिलकर भगवान का गुणगान किया है उसने यह अमूल्य मानव जन्म जीत लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਕੀਨ੍ਹੀ ਕਹਹੁ ਕਵਨ ਬਿਧਿ ਤਰੀਐ ਰੇ ॥
त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥
त्रिगुणात्मक माया ब्रह्म ने उत्पादित की है बताओ, हे भाई ! किस युक्ति से इससे पार हुआ जा सकता है ?"

ਘੂਮਨ ਘੇਰ ਅਗਾਹ ਗਾਖਰੀ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਰਿ ਉਤਰੀਐ ਰੇ ॥੨॥
घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥२॥
इसमें विषय-विकारों के अनेक भैवर पड़ गए हैं। यह माया अथाह एवं विषम है। गुरु के शब्द द्वारा ही इससे पार हुआ जा सकता है॥ २॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਖੋਜਿ ਬੀਚਾਰਿਓ ਤਤੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਜਾਨਾ ਰੇ ॥
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥
हे नानक ! जिसने निरन्तर खोज, तलाश एवं चिन्तन करने से यह यथार्थ जान लिया है

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਮਨੁ ਮਾਣਕੁ ਪਤੀਆਨਾ ਰੇ ॥੩॥੧॥੧੩੦॥
सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥३॥१॥१३०॥
कि प्रभु का नाम तमाम गुणों का भण्डार है, जिसके तुल्य मोल का कोई पदार्थ नहीं, उसे सुमिरन करने से मन मोती जैसा हो जाता है और नाम-स्मरण में लीन हो जाता है। ३॥ १॥ १३० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦੇ ॥
आसा महला ५ दुपदे ॥
आसा महला ५ दुपदे ॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਜੋ ਮਾਗਉ ਸੋ ਪਾਵਉ ਰੇ ॥
गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥
गुरु की कृपा से प्रभु मेरे मन में बस गया है और जो कुछ मैं माँगता हूँ वही मुझे मिल जाता है।

ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨਾ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤਹੂੰ ਧਾਵਉ ਰੇ ॥੧॥
नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥१॥
नाम के रंग से यह मन तृप्त हो गया है और दोबारा कहीं ओर नहीं जाता॥ १॥

ਹਮਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਤਿਸੁ ਗਾਵਉ ਰੇ ॥
हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥
हमारा ठाकुर सबसे ऊँचा है। इसलिए मैं रात-दिन उसका ही गुणगान करता रहता हूँ।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ਤਿਸ ਤੇ ਤੁਝਹਿ ਡਰਾਵਉ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा प्रभु क्षण भर में उत्पन्न करके नाश करने की शक्ति रखने वाला है। मैं तुझे उसके भय में रखना चाहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਬ ਦੇਖਉ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸੁਆਮੀ ਤਉ ਅਵਰਹਿ ਚੀਤਿ ਨ ਪਾਵਉ ਰੇ ॥
जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥
जब मैं अपने प्रभु स्वामी को देख लेता हूँ तो किसी दूसरे को अपने हृदय में नहीं बसाता।

ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਪਹਿਰਾਇਆ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਮੇਟਿ ਲਿਖਾਵਉ ਰੇ ॥੨॥੨॥੧੩੧॥
नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥२॥२॥१३१॥
दास नानक को प्रभु ने स्वयं ही प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाई है। मैं अपना भ्रम एवं भय को मिटा कर प्रभु की महिमा लिख रहा हूँ॥ २॥ २॥ १३१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਚਾਰਿ ਬਰਨ ਚਉਹਾ ਕੇ ਮਰਦਨ ਖਟੁ ਦਰਸਨ ਕਰ ਤਲੀ ਰੇ ॥
चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥
हे बन्धु ! चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हैं परन्तु कामादिक विकार-काम, क्रोध, मोह लोभ एवं अभिमान इन चार वर्णो के लोगों का मर्दन करने वाले हैं। षट्दर्शन वाले साधुओं को भी हथेली पर नचाते हैं।

ਸੁੰਦਰ ਸੁਘਰ ਸਰੂਪ ਸਿਆਨੇ ਪੰਚਹੁ ਹੀ ਮੋਹਿ ਛਲੀ ਰੇ ॥੧॥
सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥१॥
सुन्दर, बांके, मनोहर एवं बुद्धिमान सब को कामादिक पाँचों विकारों ने मोहित करके छल लिया है॥ १ ॥

ਜਿਨਿ ਮਿਲਿ ਮਾਰੇ ਪੰਚ ਸੂਰਬੀਰ ਐਸੋ ਕਉਨੁ ਬਲੀ ਰੇ ॥
जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥
ऐसा महाबली कौन है ? जिसने पाँचों कामादिक शूरवीरों को मार लिया है।

ਜਿਨਿ ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਬਿਦਾਰਿ ਗੁਦਾਰੇ ਸੋ ਪੂਰਾ ਇਹ ਕਲੀ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥१॥ रहाउ ॥
वही मनुष्य इस कलियुग में पूर्ण है, जिसने पाँचों विकारों को मारकर टुकड़े-टुकड़े करके अपना जीवन बिताया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਡੀ ਕੋਮ ਵਸਿ ਭਾਗਹਿ ਨਾਹੀ ਮੁਹਕਮ ਫਉਜ ਹਠਲੀ ਰੇ ॥
वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥
कामादिक पाँचों विकारों का बड़ा शक्तिमान वंश है, ये न किसी के वश में आते हैं और न किसी से भयभीत होकर भागते हैं। इनकी सेना बड़ी सशक्त एवं दृढ़ इरादे वाली हठी है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਨਿਰਦਲਿਆ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਝਲੀ ਰੇ ॥੨॥੩॥੧੩੨॥
कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥२॥३॥१३२॥
हे नानक ! उस मनुष्य ने ही इन्हें प्रताड़ित करके कुचल दिया है, जिसने साधु की संगति में शरण ली है।॥ २॥ ३॥ १३२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨੀਕੀ ਜੀਅ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਊਤਮ ਆਨ ਸਗਲ ਰਸ ਫੀਕੀ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥१॥ रहाउ ॥
हरि की उत्तम कथा ही जीव के लिए सर्वोत्तम है, दूसरे तमाम स्वाद नीरस हैं ॥ १ ॥ रहाउ॥

ਬਹੁ ਗੁਨਿ ਧੁਨਿ ਮੁਨਿ ਜਨ ਖਟੁ ਬੇਤੇ ਅਵਰੁ ਨ ਕਿਛੁ ਲਾਈਕੀ ਰੇ ॥੧॥
बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥
अनेक गुणी, ज्ञानी, राग विद्या वाले लोग मुनिजन एवं षट्दर्शन के ज्ञाता हरि कथा के सिवाय अन्य पदार्थों को जीव के लिए लाभदायक नहीं समझते ॥ १॥

ਬਿਖਾਰੀ ਨਿਰਾਰੀ ਅਪਾਰੀ ਸਹਜਾਰੀ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਪੀਕੀ ਰੇ ॥੨॥੪॥੧੩੩॥
बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥२॥४॥१३३॥
हरि की यह कथा विषय-विकारों का नाश करने वाली, निराली, अनूप एवं सुखदायक है। हे नानक ! हरि कथा रूपी अमृत-धारा सत्संगति में ही पान की जा सकती है॥ २॥ ४॥ १३३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਮਾਰੀ ਪਿਆਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰੀ ਗੁਰਿ ਨਿਮਖ ਨ ਮਨ ਤੇ ਟਾਰੀ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हमारी पिआरी अम्रित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुवाणी मुझे बहुत मीठी लगती है। यह अमृत की धारा है। गुरु ने एक निमिष मात्र भी अमृत-धारा का बहना मेरे मन से दूर नहीं किया ॥ १॥ रहाउ॥

ਦਰਸਨ ਪਰਸਨ ਸਰਸਨ ਹਰਸਨ ਰੰਗਿ ਰੰਗੀ ਕਰਤਾਰੀ ਰੇ ॥੧॥
दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥१॥
इस वाणी द्वारा भगवान के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं, प्रभु चरणों का स्पर्श मिल जाता है, मुरझाया हुआ मन खिल जाता है और मन में आनंद पैदा हो जाता है। यह वाणी करतार प्रभु के प्रेम से रंगी हुई है॥ १॥

ਖਿਨੁ ਰਮ ਗੁਰ ਗਮ ਹਰਿ ਦਮ ਨਹ ਜਮ ਹਰਿ ਕੰਠਿ ਨਾਨਕ ਉਰਿ ਹਾਰੀ ਰੇ ॥੨॥੫॥੧੩੪॥
खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२॥५॥१३४॥
इस वाणी का एक क्षण भर भी पाठ करने से मनुष्य गुरु के चरणों तक पहुँच जाता है। हरदम इसका जाप करने से जीव यमदूत के जाल में नहीं फंसता। हरि ने नानक के कण्ठ एवं हृदय में गुरुवाणी का हार पहनाया है॥ २॥ ५ ॥ १३४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਨੀਕੀ ਸਾਧ ਸੰਗਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥
मनुष्य हेतु साधु की संगत अति शुभ है॥ रहाउ ॥

ਪਹਰ ਮੂਰਤ ਪਲ ਗਾਵਤ ਗਾਵਤ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਵਿੰਦ ਵਖਾਨੀ ॥੧॥
पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥
वहाँ आठ प्रहर, हर पल एवं घड़ी गोविन्द का ही गुणगान होता रहता है और गोविन्द की गुणस्तुति की बातें होती रहती हैं॥१॥

ਚਾਲਤ ਬੈਸਤ ਸੋਵਤ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਚਰਨ ਖਟਾਨੀ ॥੨॥
चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥२॥
उठते-बैठते एवं सोते समय वहाँ हरि का यशोगान होता है और उनके मन-तन में भगवान आ बसता है॥ २॥

ਹੰਉ ਹਉਰੋ ਤੂ ਠਾਕੁਰੁ ਗਉਰੋ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਪਛਾਨੀ ॥੩॥੬॥੧੩੫॥

हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥

नानक का कथन है कि हे ठाकुर जी ! मैं गुणविहीन हूँ पर तू मेरा गुण सम्पन्न स्वामी है और मैंने तेरी शरण लेनी ही उपयुक्त समझी है॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੨
रागु आसा महला ५ घरु १२
राग आसा महला ५ घरु १२

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤਿਆਗਿ ਸਗਲ ਸਿਆਨਪਾ ਭਜੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥
तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥
अपनी समस्त चतुराइयाँ त्यागकर निरंकार परब्रह्म का भजन करो।

ਏਕ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਬਾਝਹੁ ਸਗਲ ਦੀਸੈ ਛਾਰੁ ॥੧॥
एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥१॥
एक सत्य-नाम के बिना शेष सब कुछ धूल-मिट्टी ही दिखाई देता है॥ १॥

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੀਐ ਸਦ ਸੰਗਿ ॥
सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥
(हे बन्धु !) उस प्रभु को सदैव अपने साथ समझना चाहिए।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਬੂਝੀਐ ਏਕ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन गुरु की कृपा से ही एक हरि के प्रेम-रंग द्वारा ही इस तथ्य की सूझ मिलती है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਰਣਿ ਸਮਰਥ ਏਕ ਕੇਰੀ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ॥
सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥
एक ईश्वर की शरण ही ताकतवर है, उसकी शरण बिना अन्य कोई ठिकाना नहीं।

ਮਹਾ ਭਉਜਲੁ ਲੰਘੀਐ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੨॥
महा भउजलु लंघीऐ सदा हरि गुण गाउ ॥२॥
सदैव हरि का गुणगान करने से महाभयानक संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ २॥

ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨਿਵਾਰੀਐ ਦੁਖੁ ਨ ਜਮ ਪੁਰਿ ਹੋਇ ॥
जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥
भगवान का स्तुतिगान करने से जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है और मनुष्य को यमपुरी में दुःख नहीं सहन करना पड़ता।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸੋਈ ਪਾਏ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥੩॥
नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥३॥
जिस पर प्रभु कृपा करता है, वही मनुष्य नाम निधान को प्राप्त करता है॥ ३ ॥

ਏਕ ਟੇਕ ਅਧਾਰੁ ਏਕੋ ਏਕ ਕਾ ਮਨਿ ਜੋਰੁ ॥
एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥
एक ईश्वर ही मेरी टेक है और एक वही मेरा जीवन का आधार है। एक ईश्वर का ही मेरे मन में बल है।

ਨਾਨਕ ਜਪੀਐ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਰੁ ॥੪॥੧॥੧੩੬॥
नानक जपीऐ मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥४॥१॥१३६॥
हे नानक ! सत्संगति में मिलकर प्रभु का नाम जपना चाहिए, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं ॥ ४॥१॥१३६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਜੀਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਦੀਏ ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗ ॥
जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥
इंसान को यह आत्मा, मन, तन एवं प्राण ईश्वर के दिए हुए हैं। उसने ही समस्त स्वादिष्ट पदार्थ प्रदान किए हैं|"

ਦੀਨ ਬੰਧਪ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਸਰਣਿ ਰਾਖਣ ਜੋਗੁ ॥੧॥
दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥१॥
वह गरीबों का संबंधी एवं जीवनदाता है और शरण में आए अपने भक्तों की रक्षा करने में समर्थ है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥
हे मेरे मन ! हरि नाम का ध्यान करते रहो,"

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸਹਾਇ ਸੰਗੇ ਏਕ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि लोक-परलोक में वही सहायता करता है। इसलिए एक प्रभु से ही लगन लगा कर रखो॥१॥रहाउ ॥

ਬੇਦ ਸਾਸਤ੍ਰ ਜਨ ਧਿਆਵਹਿ ਤਰਣ ਕਉ ਸੰਸਾਰੁ ॥
बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥
लोग संसार-सागर से पार होने के लिए वेदों एवं शास्त्रों का ध्यान (चिन्तन) करते हैं।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਅਨੇਕ ਕਿਰਿਆ ਸਭ ਊਪਰਿ ਨਾਮੁ ਅਚਾਰੁ ॥੨॥
करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥२॥
धर्म-कर्म एवं अनेक पारम्परिक संस्कार हैं परन्तु नाम-सुमिरन का आचरण इन सब से सर्वोपरि है॥ २॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਬਿਨਸੈ ਮਿਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਵ ॥
कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥
गुरुदेव को मिलने से मनुष्य की कामवासना, क्रोध एवं अहंकार नष्ट हो जाते हैं।

ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਕੀ ਭਲੀ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸੇਵ ॥੩॥
नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥३॥
अपने अन्तर में प्रभु का नाम भली प्रकार बसाकर रखो, हरि की भक्ति करो; प्रभु की सेवा ही भला कर्म है॥ ३॥

ਚਰਣ ਸਰਣ ਦਇਆਲ ਤੇਰੀ ਤੂੰ ਨਿਮਾਣੇ ਮਾਣੁ ॥
चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥
हे मेरे दयालु प्रभु ! मैंने तेरे चरणों की शरण ली है। तू सम्मान हीनों का सम्मान है।

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੁ ਤੇਰਾ ਨਾਨਕ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਤਾਣੁ ॥੪॥੨॥੧੩੭॥
जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥४॥२॥१३७॥
हे प्रभु! तू ही मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है। तू ही नानक की शक्ति है॥ ४॥ २॥१३७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਡੋਲਿ ਡੋਲਿ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਬਿਨਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥
डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥
साधु की संगति किए बिना डगमगा कर अर्थात् श्रद्धाहीन होकर बहुत भारी दुःख पाया है।

ਖਾਟਿ ਲਾਭੁ ਗੋਬਿੰਦ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਇਕ ਰੰਗ ॥੧॥
खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥१॥
अब तू परब्रह्म प्रभु के प्रेम द्वारा हरि रस को पी तथा गोविंद के नाम का लाभ प्राप्त कर ॥ १॥

ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪੀਐ ਨੀਤਿ ॥
हरि को नामु जपीऐ नीति ॥
(हे बन्धु !) नित्य ही हरिनाम का जाप करते रहना चाहिए।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਇ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਪਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥१॥ रहाउ ॥
श्वास-श्वास से प्रभु का ध्यान करो और अन्य सब प्रेम त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜੀਅ ਦਾਤਾ ਆਪਿ ॥
करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥
प्रभु स्वयं करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है और स्वयं ही जीवनदाता है।

ਤਿਆਗਿ ਸਗਲ ਸਿਆਣਪਾ ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਿ ॥੨॥
तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥२॥
अपनी तमाम चतुराइयाँ त्याग कर आठ प्रहर प्रभु का जाप करो॥ २॥

ਮੀਤੁ ਸਖਾ ਸਹਾਇ ਸੰਗੀ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰੁ ॥
मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥
वह सर्वोच्च, अगम्य, अपार प्रभु तेरा मित्र, सखा, सहायक एवं साथीं बन जाएगा।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਬਸਾਇ ਹਿਰਦੈ ਜੀਅ ਕੋ ਆਧਾਰੁ ॥੩॥
चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥३॥
प्रभु के चरण-कमल अपने हृदय में बसा केवल वही जीवन का आधार है॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਣ ਤੇਰਾ ਜਸੁ ਗਾਉ ॥
करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥
हे मेरे परब्रह्म प्रभु ! मुझ पर कृपा करो, चूंकि तेरा गुणगान एवं यशोगान करूँ।

ਸਰਬ ਸੂਖ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਨਾਨਕੁ ਨਾਉ ॥੪॥੩॥੧੩੮॥
सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥४॥३॥१३८॥
प्रभु के नाम का सिमरन करने से जीवन व्यतीत करना नानक हेतु सर्व सुख एवं बड़ी बड़ाई है॥ ४॥ ३ ॥ १३८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥

आसा महला ५ ॥

आसा महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕਰਉ ਕਰਾਵਹੁ ਠਾਕੁਰ ਪੇਖਤ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ॥

उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥

हे ठाकुर जी ! मैं साधु की संगति में मिलकर तेरा दर्शन करता रहूँ। तुम मुझ से यही उद्यम कराते रहो, चूंकि मैं यह उद्यम करता रहूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚਰਾਵਹੁ ਰੰਗਨਿ ਆਪੇ ਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ॥੧॥

हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥१॥

हे मेरे प्रभु! मेरे मन पर हरि-हरि नाम का रंग चढ़ा दो, तुम स्वयं ही मुझे अपने नाम के रंग से रंग दो॥ १॥

ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਜਾਪਿ ॥

मन महि राम नामा जापि ॥

मैं अपने मन में राम नाम का जाप करता रहूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਵਸਹੁ ਮੇਰੈ ਹਿਰਦੈ ਹੋਇ ਸਹਾਈ ਆਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥१॥ रहाउ ॥

अपनी कृपा करके मेरे हृदय में आन बसो और स्वयं मेरा सहायक बनो॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖਨ ਕਾ ਚਾਉ ॥

सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तेरा नाम सुन-सुनकर तेरे दर्शनों का मुझे चाव उत्पन्न हो गया है।

ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਕਿਰਮ ਅਪੁਨੇ ਕਉ ਇਹੈ ਮਨੋਰਥੁ ਸੁਆਉ ॥੨॥
दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥२॥
अपने तुच्छ कीड़े पर दया करो, केवल यही मेरा मनोरथ एवं प्रयोजन है॥ २॥

ਤਨੁ ਧਨੁ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਹਮਰੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥
हे मेरे प्रभु ! तू मेरा मालिक है और मेरा तन एवं धन सब तेरे ही दिए हुए हैं। मेरे वश में कुछ भी नहीं है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਰਾਖਹਿ ਤਿਉ ਤਿਉ ਰਹਣਾ ਤੇਰਾ ਦੀਆ ਖਾਹਿ ॥੩॥
जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥३॥
जैसे तुम रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। मैं वही खाता हूँ जो तुम मुझे देते हो॥ ३॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੈ ਮਜਨੁ ਹਰਿ ਜਨ ਧੂਰਿ ॥
जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥
हरि के भक्तजनों की चरण-धूलि में किया हुआ स्नान जन्म-जन्मांतर के पाप काट देता है।

ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਭਰਮ ਭਉ ਨਾਸੈ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੪॥੪॥੧੩੬॥
भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३६॥
प्रभु की प्रेम-भक्ति के कारण दुविधा एवं भय नष्ट हो जाते हैं। हे नानक ! ईश्वर सदैव जीव के साथ ही रहता है॥ ४॥ ४॥ १३६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਦਰਸੁ ਤੇਰਾ ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ॥
अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥
हे परमपिता, तेरे दर्शन अगम्य और अगोचर हैं। इसलिए तेरे दर्शन वही करता है जिसके मस्तक पर भाग्य उदय हुआ हो।

ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬਖਸਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥
आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥१॥
कृपालु प्रभु ने स्वयं मुझ पर कृपा की है, इसलिए सतिगुरु ने मुझे हरि का नाम प्रदान किया है॥ १॥

ਕਲਿਜੁਗੁ ਉਧਾਰਿਆ ਗੁਰਦੇਵ ॥
कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥
गुरुदेव ने कलियुग का भी उद्धार कर दिया है।

ਮਲ ਮੂਤ ਮੂੜ ਜਿ ਮੁਘਦ ਹੋਤੇ ਸਭਿ ਲਗੇ ਤੇਰੀ ਸੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! मूर्ख एवं बेवकूफ जो मल-मूत्र की भाँति दूषित थे, सब तेरी सेवा में जुट गए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਤੂ ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਧਰਤਾ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥
तू जगत का रचयिता है, सारी सृष्टि को स्थापित करने वाला है और तू सब में समा रहा है।

ਧਰਮ ਰਾਜਾ ਬਿਸਮਾਦੁ ਹੋਆ ਸਭ ਪਈ ਪੈਰੀ ਆਇ ॥੨॥
धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥२॥
समूचा जगत तेरी चरण-सेवा में लगा हुआ है और यह देख कर धर्मराज आश्चर्यचकित हो गया है॥ २॥

ਸਤਜੁਗੁ ਤ੍ਰੇਤਾ ਦੁਆਪਰੁ ਭਣੀਐ ਕਲਿਜੁਗੁ ਊਤਮੋ ਜੁਗਾ ਮਾਹਿ ॥
सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥
सतियुग, त्रैता एवं द्वापर को भला युग कहा जाता है परन्तु कलियुग सब युगों से उत्तम है।

ਅਹਿ ਕਰੁ ਕਰੇ ਸੁ ਅਹਿ ਕਰੁ ਪਾਏ ਕੋਈ ਨ ਪਕੜੀਐ ਕਿਸੈ ਥਾਇ ॥੩॥
अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥३॥
क्योंकि इस युग में मनुष्य इस हाथ से जैसा कर्म करता है, उसे वैसे ही उस हाथ से फल मिलता है। कोई भी निर्दोष व्यक्ति दूसरे दोषी इन्सान के पापों के परिणामस्वरूप नहीं पकड़ा जाता॥ ३॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸੋਈ ਕਰਹਿ ਜਿ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਜਾਚਹਿ ਏਹੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ॥
हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥
हे पूजनीय हरि ! तुम वही करते हो जो तेरे भक्त तुझसे मांगते हैं। यही तेरा विरद् है।

ਕਰ ਜੋੜਿ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਮਾਗੈ ਅਪਣਿਆ ਸੰਤਾ ਦੇਹਿ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ॥੪॥੫॥੧੪੦॥
कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥४॥५॥१४०॥
हे हरि ! नानक भी हाथ जोड़कर तुझसे एक यही दान माँगता है कि मुझे अपने संतों के दर्शन प्रदान करो॥४॥५॥१४०॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੩
रागु आसा महला ५ घरु १३
रागु आसा महला ५ घरु १३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ॥ ਨਿਰਗੁਣ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥
हे सतगुरु ! तेरे वचनों ने निर्गुण जीव भी भवसागर से पार कर दिए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਹਾ ਬਿਖਾਦੀ ਦੁਸਟ ਅਪਵਾਦੀ ਤੇ ਪੁਨੀਤ ਸੰਗਾਰੇ ॥੧॥
महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥१॥
तेरी संगति में महा क्रूर, दुष्ट एवं अपवादी भी पवित्र-पावन बन गए हैं। १ ॥

ਜਨਮ ਭਵੰਤੇ ਨਰਕਿ ਪੜੰਤੇ ਤਿਨ੍ ਕੇ ਕੁਲ ਉਧਾਰੇ ॥੨॥
जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥२॥
जो मनुष्य योनियों में भटकते थे और नरक में डाले जाते थे, उनके वंश का भी तूने उद्धार कर दिया है।॥ २॥

ਕੋਇ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ਨ ਮਾਨੈ ਸੇ ਪਰਗਟੁ ਹਰਿ ਦੁਆਰੇ ॥੩॥
कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥३॥
जिन्हें कोई नहीं जानता था और जिनका कोई सम्मान नहीं करता था, वह हरि के द्वार पर लोकप्रिय हो गए हैं।॥ ३॥

ਕਵਨ ਉਪਮਾ ਦੇਉ ਕਵਨ ਵਡਾਈ ਨਾਨਕ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਵਾਰੇ ॥੪॥੧॥੧੪੧॥
कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥४॥१॥१४१॥
नानक का कथन है कि हे मेरे सतगुरु ! मैं कौन-सी उपमा एवं कौन-सी बड़ाई तुझ पर अर्पित करूँ, मैं क्षण-क्षण तुझ पर न्यौछावर होता हूँ॥ ४॥ १ ॥ १४१॥."

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਬਾਵਰ ਸੋਇ ਰਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बावर सोइ रहे ॥१॥ रहाउ ॥
बावले मनुष्य माया मोह की निद्रा में सो रहे हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮੋਹ ਕੁਟੰਬ ਬਿਖੈ ਰਸ ਮਾਤੇ ਮਿਥਿਆ ਗਹਨ ਗਹੇ ॥੧॥
मोह कुट्मब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥१॥
वे कुटुंब के मोह एवं विषय-विकारों के रसों में मस्त हुए हैं और झूठी उपलब्धियों प्राप्त करते हैं। १॥

ਮਿਥਨ ਮਨੋਰਥ ਸੁਪਨ ਆਨੰਦ ਉਲਾਸ ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਸਤਿ ਕਹੇ ॥੨॥
मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥
मिथ्या मनोरथ एवं स्वप्न के आनन्दों एवं उल्लासों को मनमुख मनुष्य सत्य कहते हैं। २॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਸੰਗੇ ਤਿਲੁ ਮਰਮੁ ਨ ਲਹੇ ॥੩॥
अम्रितु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥३॥
अमृत रूपी हरि-नाम ही सदैव साथ देने वाला पदार्थ है। लेकिन मनमुख मनुष्य हरि-नाम का भेद तिलमात्र भी नहीं समझते॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਾਖੇ ਸਤਸੰਗੇ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਆਹੇ ॥੪॥੨॥੧੪੨॥
करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥४॥२॥१४२॥
हे नानक ! परमात्मा ने अपनी कृपा करके जिन लोगों को सत्संगति में रखा हुआ है, वही उसकी शरण में आए हैं।॥ ४ ॥ २॥ १४२ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਤਿਪਦੇ ॥
आसा महला ५ तिपदे ॥
आसा महला ५ तिपदे ॥

ਓਹਾ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ओहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे तो उस प्रिय-प्रभु का ही प्रेम चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਕਨਿਕ ਮਾਣਿਕ ਗਜ ਮੋਤੀਅਨ ਲਾਲਨ ਨਹ ਨਾਹ ਨਹੀ ॥੧॥
कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥१॥
सोना, माणिक्य, गज मोती एवं लाल नहीं, नहीं मुझे नहीं चाहिए॥ १॥

ਰਾਜ ਨ ਭਾਗ ਨ ਹੁਕਮ ਨ ਸਾਦ ਨ ॥
राज न भाग न हुकम न साद न ॥
न राज्य, न धन-दौलत, न प्रभुसत्ता और न ही स्वाद

ਕਿਛੁ ਕਿਛੁ ਨ ਚਾਹੀ ॥੨॥
किछु किछु न चाही ॥२॥
इनमें से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए॥ २॥

ਚਰਨਨ ਸਰਨਨ ਸੰਤਨ ਬੰਦਨ ॥ ਸੁਖੋ ਸੁਖੁ ਪਾਹੀ ॥
चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥
प्रभु-चरणों की शरण एवं संतों की-वन्दना इनमें ही मैं सुखों का सुख अनुभव करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਤਪਤਿ ਹਰੀ ॥ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਰੀ ॥੩॥੩॥੧੪੩॥
नानक तपति हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥
हे नानक ! मेरी जलन बुझ गई है जबसे प्रियतम-प्रभु का प्रेम मिला है ।॥३॥३॥१४३॥
||3||3||143||

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਗੁਰਹਿ ਦਿਖਾਇਓ ਲੋਇਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरहि दिखाइओ लोइना ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु ने मुझे इन नेत्रों से भगवान के दर्शन करवा दिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਈਤਹਿ ਊਤਹਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਤੂੰਹੀ ਤੂੰਹੀ ਮੋਹਿਨਾ ॥੧॥
ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥१॥
हे मोहन ! लोक-परलोक, प्रत्येक शरीर एवं मन में सर्वत्र तू ही दिखाई दे रहा है॥ १॥

ਕਾਰਨ ਕਰਨਾ ਧਾਰਨ ਧਰਨਾ ਏਕੈ ਏਕੈ ਸੋਹਿਨਾ ॥੨॥
कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥२॥
हे सुन्दर स्वामी ! एक तू ही सृष्टि का मूल रचयिता है और एक तू ही समूचे जगत को आधार देने वाला है॥ २॥

ਸੰਤਨ ਪਰਸਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ਦਰਸਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸੁਖਿ ਸੋਇਨਾ ॥੩॥੪॥੧੪੪॥
संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥३॥४॥१४४॥
हे नानक ! मैं तेरे संतजनों के चरण स्पर्श करता हूँ, उनके दर्शनों पर कुर्बान जाता हूँ और पूर्ण सुखपूर्वक सोता हूँ॥ ३॥ ४ ॥ १४४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਾ ॥
हरि हरि नामु अमोला ॥
हरि-प्रभु का नाम बड़ा अनमोल है।

ਓਹੁ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ओहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे हरि-नाम मिल जाता है, वह सहज ही सुखपूर्वक रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਓਹੁ ਅਗਹ ਅਤੋਲਾ ॥੧॥
संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥१॥
भगवान का नाम सर्वदा उसके साथ रहता है और उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता। वह अथाह एवं अतुलनीय है॥ १॥

ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਭਾਈ ਬਾਪੁ ਮੋਰੋ ਮਾਈ ਭਗਤਨ ਕਾ ਓਲ੍ਹਾ ॥੨॥
प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥२॥
वह प्रभु ही मेरा प्रियतम, भाई, पिता एवं मेरी माता है और भक्तों (के जीवन) का आधार है॥ २॥

ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਹਰਿ ਕਾ ਚੋਲ੍ਹਾ ॥੩॥੫॥੧੪੫॥
अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥३॥५॥१४५॥
हे नानक ! मैंने यह नाम गुरु से पाया है और उसने मुझे अलख प्रभु दिखा दिया है। यह प्रभु का अद्भुत खेल है ॥३॥५॥१४५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਆਪੁਨੀ ਭਗਤਿ ਨਿਬਾਹਿ ॥ ਠਾਕੁਰ ਆਇਓ ਆਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइओ आहि ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी भक्ति को अंत तक निभा दो, हे ठाकुर जी ! मैं बड़ी आशा से तेरी शरण में आया हूँ ॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਹੋਇ ਸਕਾਰਥੁ ਹਿਰਦੈ ਚਰਨ ਬਸਾਹਿ ॥੧॥
नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥१॥
नाम-पदार्थ पाकर मेरा जन्म साकार हो जाए, अपने चरण-कमल मेरे हृदय में वसा दो॥ १॥

ਏਹ ਮੁਕਤਾ ਏਹ ਜੁਗਤਾ ਰਾਖਹੁ ਸੰਤ ਸੰਗਾਹਿ ॥੨॥
एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥२॥
मेरे लिए यही मोक्ष है और यही जीवन युक्ति है कि मुझे संत-महापुरुषों की संगति में रखो॥ २॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਉ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਉ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਹਿ ॥੩॥੬॥੧੪੬॥
नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥३॥६॥१४६॥
नानक वन्दना करता है कि हे हरि ! मैं तेरा नाम याद करता रहूँ और तेरा गुणगान करता हुआ सहज ही समाया रहूँ॥ ३॥ ६॥ १४६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਠਾਕੁਰ ਚਰਣ ਸੁਹਾਵੇ ॥
ठाकुर चरण सुहावे ॥
ठाकुर जी के चरण अति सुन्दर हैं।

ਹਰਿ ਸੰਤਨ ਪਾਵੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि संतन पावे ॥१॥ रहाउ ॥
हरि के संतजनों ने उन्हें प्राप्त किया है।॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਸੇਵ ਕਮਾਇਆ ਗੁਨ ਰਸਿ ਰਸਿ ਗਾਵੇ ॥੧॥
आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥१॥
वह अपना अहंत्व दूर कर देते हैं, प्रभु की सेवा करते हैं और प्रेम में भीगकर उसकी गुणस्तुति करते हैं। १॥

ਏਕਹਿ ਆਸਾ ਦਰਸ ਪਿਆਸਾ ਆਨ ਨ ਭਾਵੇ ॥੨॥
एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥२॥
उनको एक ईश्वर की ही आशा है, उनको उसके दर्शनों की प्यास है और अन्य कुछ भी उन्हें अच्छा नहीं लगता॥ २॥

ਦਇਆ ਤੁਹਾਰੀ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੀ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵੇ ॥੩॥੭॥੧੪੭॥
दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥
हे प्रभु! यह सब तेरी दया है। बेचारे जीवों के वश में क्या है? नानक तुझ पर बलिहारी जाता है॥ ३॥ ७॥ १४७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एकु सिमरि मन माही ॥१॥ रहाउ ॥
अपने मन में एक प्रभु को ही याद करते रहो॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਰਿਦੈ ਬਸਾਵਹੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੧॥
नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥
भगवान के नाम का ध्यान करो और उसे अपने हृदय में बसाओ, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਸਰਨੀ ਆਈਐ ਸਰਬ ਫਲ ਪਾਈਐ ਸਗਲੇ ਦੁਖ ਜਾਹੀ ॥੨॥
प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥२॥
प्रभु की शरण में आने से सर्व फल प्राप्त हो जाते हैं और सारे दुःख-संताप मिट जाते हैं।॥ २॥

ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਨਾਨਕ ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਹੀ ॥੩॥੮॥੧੪੮॥
जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥३॥८॥१४८॥
हे नानक ! विधाता सब जीवों का दाता है और प्रत्येक हृदय में मौजूद है॥ ३॥ ८ ॥ १४८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਸੋ ਮੂਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥ रहाउ ॥
जिस मनुष्य ने हरि को भुला दिया है वह मृतक है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਸਰਬ ਫਲ ਪਾਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਸੁਖੀਆ ਹੂਆ ॥੧॥
नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥१॥
जो नाम का ध्यान करता है, उसे सभी फल मिल जाते हैं और ऐसा व्यक्ति सुखी हो गया है॥ १॥

ਰਾਜੁ ਕਹਾਵੈ ਹਉ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਬਾਧਿਓ ਨਲਿਨੀ ਭ੍ਰਮਿ ਸੂਆ ॥੨॥
राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥
जो मनुष्य अहंकारवश अपने-आपको राजा कहलवाता है और अहंकारी कर्म करता है, उसे दुविधा ने यूं पकड़ लिया है जैसे दुविधावश तोता नलिनी से चिपटा रहता है॥ २॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਹਚਲੁ ਥੀਆ ॥੩॥੯॥੧੪੯॥
कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥
हे नानक ! जिस मनुष्य को सतिगुरु मिल जाता है, वह अटल हो जाता है ॥३॥६॥१४६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੪
आसा महला ५ घरु १४
आसा महला ५ घरु १४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਓਹੁ ਨੇਹੁ ਨਵੇਲਾ ॥
ओहु नेहु नवेला ॥
वह प्रेम सदैव ही नवीन है

ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਉ ਲਾਗਿ ਰਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥१॥ रहाउ ॥
जो प्रियतम प्रभु के साथ बना रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥
जो इन्सान प्रभु को भला लगता है, वह दोबारा जन्म नहीं लेता।

ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਰਚੈ ॥੧॥
हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥
वह हरि की प्रेम-भक्ति एवं उसकी प्रीति में लीन रहता है।॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਮਿਲੀਜੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ॥
प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥
अपना यह मन प्रभु के समक्ष अर्पण करने से ही उससे मिला जा सकता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਅਪਨੀ ਦਇਆ ਕਰਹੁ ॥੨॥੧॥੧੫੦॥
नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥२॥१॥१५०॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु जी ! अपनी दया करो ताकि मुझे तेरा नाम मिल जाए॥२॥१॥१५०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਮਿਲੁ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਤੁਮ ਬਿਨੁ ਧੀਰਜੁ ਕੋ ਨ ਕਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्यारे राम ! मुझे आकर मिलो, तेरे सिवाय मुझे कोई धैर्य नहीं दे सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੇ ਦਰਸ ਬਿਨੁ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ॥੧॥
सिम्रिति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥१॥
हे प्रभु! जिन लोगों ने स्मृतियाँ एवं शास्त्र पढ़े हैं और बहुत धर्म-कर्म किए हैं, उन्हें भी तेरे दर्शनों के बिना कोई सुख उपलब्ध नहीं हुआ ॥ १॥

ਵਰਤ ਨੇਮ ਸੰਜਮ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਸਰਨਿ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਵਸੈ ॥੨॥੨॥੧੫੧॥
वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥२॥२॥१५१॥
मनुष्य व्रत, संकल्प, संयम करते हुए थक गए हैं। हे नानक ! साधुओं की शरण में जाने से ही इन्सान प्रभु के साथ जा बसता है॥२॥२॥१५१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੫ ਪੜਤਾਲ
आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल
आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਬਿਕਾਰ ਮਾਇਆ ਮਾਦਿ ਸੋਇਓ ਸੂਝ ਬੂਝ ਨ ਆਵੈ ॥
बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥
मनुष्य विकारों एवं माया के नशे में सोया हुआ है और उसे कोई सूझबूझ नहीं आती।

ਪਕਰਿ ਕੇਸ ਜਮਿ ਉਠਾਰਿਓ ਤਦ ਹੀ ਘਰਿ ਜਾਵੈ ॥੧॥
पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥१॥
जब यमदूत उसे बालों से पकड़ कर उठाता है तो तभी उसे अपने असल घर की होश आती है॥ १॥

ਲੋਭ ਬਿਖਿਆ ਬਿਖੈ ਲਾਗੇ ਹਿਰਿ ਵਿਤ ਚਿਤ ਦੁਖਾਹੀ ॥
लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥
जो मनुष्य लोभ एवं विषय-विकारों के विष से लगा हुआ है, वह पराया धन चुराकर दूसरों के दिल को दुखाते हैं।

ਖਿਨ ਭੰਗੁਨਾ ਕੈ ਮਾਨਿ ਮਾਤੇ ਅਸੁਰ ਜਾਣਹਿ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥१॥ रहाउ ॥
एक क्षण में नाश होने वाले माया के नशे में असुर मस्त हुए हैं परन्तु प्रभु को नहीं जानते॥ १॥ रहाउ॥

ਬੇਦ ਸਾਸਤ੍ਰ ਜਨ ਪੁਕਾਰਹਿ ਸੁਨੈ ਨਾਹੀ ਡੋਰਾ ॥
बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥
वेद, शास्त्र एवं संतजन पुकार-पुकार कर उपदेश करते हैं परन्तु माया के नशे के कारण बहरा मनुष्य सुनता ही नहीं।

ਨਿਪਟਿ ਬਾਜੀ ਹਾਰਿ ਮੂਕਾ ਪਛੁਤਾਇਓ ਮਨਿ ਭੋਰਾ ॥੨॥
निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥२॥
जब जीवन की बाजी खत्म हो जाती है और इसे हार कर वह मर जाता है तो मूर्ख मनुष्य अपने मन में पश्चाताप करता है॥ २॥

ਡਾਨੁ ਸਗਲ ਗੈਰ ਵਜਹਿ ਭਰਿਆ ਦੀਵਾਨ ਲੇਖੈ ਨ ਪਰਿਆ ॥
डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥
सारा दण्ड उसने बिना कारण के ही भरा है। प्रभु के दरबार में यह स्वीकृत नहीं हुआ।

ਜੇਂਹ ਕਾਰਜਿ ਰਹੈ ਓਲ੍ਹਹਾ ਸੋਇ ਕਾਮੁ ਨ ਕਰਿਆ ॥੩॥
जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥३॥
जिस कर्म से उसके पापों पर पर्दा पड़ना था, वह कर्म उसने किया ही नहीं ॥ ३॥

ਐਸੋ ਜਗੁ ਮੋਹਿ ਗੁਰਿ ਦਿਖਾਇਓ ਤਉ ਏਕ ਕੀਰਤਿ ਗਾਇਆ ॥
ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥
जब गुरु ने मुझे ऐसा जगत दिखा दिया तो मैं एक ईश्वर का ही भजन-कीर्तन करने लग गया।

मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥४॥१॥१५२॥
मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥४॥१॥१५२॥
अपने गर्व एवं बल का अभिमान छोड़कर नानक ने प्रभु की शरण ली है॥ ४॥ १॥ १५२॥

आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

बापारि गोविंद नाए ॥
बापारि गोविंद नाए ॥
मैं गोविंद के नाम का व्यापार करता हूँ।

साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥१॥ रहाउ ॥
साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने साधु-संतों को मना लिया है अर्थात् प्रसन्न कर लिया है और अपने प्रिय-प्रभु को पा लिया है। मैं भगवान के गुण गाता रहता हूँ और मेरे मन में पाँच प्रकार के नाद गूंजते रहते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥
किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥
जब मुझ पर प्रभु की कृपा हुई तो मुझे सहज ही उसके दर्शन प्राप्त हो गए और अब मैं गोविंद के प्रेम से रंगा हुआ हूँ।

संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥१॥
संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥१॥
संतों की सेवा करने से मुझे अपने नाथ की प्रीति प्राप्त हो गई॥ १॥

गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥
गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥
मैंने गुरु के ज्ञान को अपने मन में बसा लिया है और मैं प्रसन्न हूँ कि मैं आवागमन में नहीं आऊँगा, मैंने सहज ही नाम का भंडार अपने मन में पा लिया है।

ਸਭ ਤਜੀ ਮਨੈ ਕੀ ਕਾਮ ਕਰਾ ॥
सभ तजी मनै की काम करा ॥
मैंने अपने मन की सभी कामनाओं को छोड़ दिया है।

ਚਿਰੁ ਚਿਰੁ ਚਿਰੁ ਚਿਰੁ ਭਇਆ ਮਨਿ ਬਹੁਤੁ ਪਿਆਸ ਲਾਗੀ ॥
चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥
बहुत देर हो गई है, जब से मेरे मन में प्रभु दर्शनों की बहुत प्यास लगी हुई है।

ਹਰਿ ਦਰਸਨੋ ਦਿਖਾਵਹੁ ਮੋਹਿ ਤੁਮ ਬਤਾਵਹੁ ॥
हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥
हे हरि ! मुझे अपने दर्शन दीजिए, आप स्वयं ही मेरा मार्गदर्शन कीजिए।

ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਸਰਣਿ ਆਏ ਗਲਿ ਲਾਏ ॥੨॥੨॥੧੫੩॥
नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥२॥२॥१५३॥
नानक का कथन है कि हम दीन तेरी शरण में आए हैं, हमें अपने गले से लगा लो ॥ २ ॥ २॥ १५३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕੋਊ ਬਿਖਮ ਗਾਰ ਤੋਰੈ ॥
कोऊ बिखम गार तोरै ॥
कोई विरला पुरुष ही मोह-माया के विषम किले को ध्वस्त करता है

ਆਸ ਪਿਆਸ ਧੋਹ ਮੋਹ ਭਰਮ ਹੀ ਤੇ ਹੋਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥१॥ रहाउ ॥
और अपने मन को आशा, प्यास, छल, मोह एवं भ्रम से रोकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮਾਨ ਇਹ ਬਿਆਧਿ ਛੋਰੈ ॥੧॥
काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥१॥
काम, क्रोध, लोभ, अभिमान के इस रोग को कोई विरला ही दूर कर सकता है॥ १॥

ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਗੁਨ ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਵਉ ॥
संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥
मैं संतों की संगति में मिलकर नाम-रंग में लीन होकर गोविंद के गुण गाता रहता हूँ।

ਅਨਦਿਨੋ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਵਉ ॥
अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥
मैं हर रोज प्रभु का ध्यान करता रहता हूँ ताकि

ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਜੀਤਿ ਮਿਟਾਵਉ ॥
भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥
भ्रम की दीवार को जीतकर मिटा दूँ।

ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਮੋਰੈ ॥੨॥੩॥੧੫੪॥
निधि नामु नानक मोरै ॥२॥३॥१५४॥
हे नानक ! इस भ्रम की दीवार को तोड़ने के पश्चात् नाम-निधि मेरी हो जाएगी ॥ २ ॥ ३॥ १५४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਤਿਆਗੁ ॥
कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥
"(हे भाई !) कामवासना, क्रोध एवं लालच को त्याग कर

ਮਨਿ ਸਿਮਰਿ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮ ॥
मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥
अपने मन में गोविन्द का नाम याद करते रहो।

ਹਰਿ ਭਜਨ ਸਫਲ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि भजन सफल काम ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का भजन करने से सारे कार्य सफल हो जाते हैं। १ ॥ रहाउ ॥

ਤਜਿ ਮਾਨ ਮੋਹ ਵਿਕਾਰ ਮਿਥਿਆ ਜਪਿ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ॥
तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥
अपना अभिमान, मोह, पाप एवं झूठ को छोड़कर राम-नाम का जाप किया करो।

ਮਨ ਸੰਤਨਾ ਕੈ ਚਰਨਿ ਲਾਗੁ ॥੧॥
मन संतना कै चरनि लागु ॥१॥
हे मन ! संतों के चरणों से लग जाओ॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਗੋਪਾਲ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਿਮਰਿ ਜਾਗੁ ॥
प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥
हे भाई ! गोपाल प्रभु बड़ा दीनदयालु, पतित पावन एवं परब्रह्म है। इसलिए निद्रा से जागकर हरि-चरणों की आराधना करो।

ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਭਾਗੁ ॥੨॥੪॥੧੫੫॥
करि भगति नानक पूरन भागु ॥२॥४॥१५५॥
हे नानक ! प्रभु की भक्ति करो, तेरा भाग्य पूर्ण उदय हो जायेगा ॥२॥४॥१५५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਹਰਖ ਸੋਗ ਬੈਰਾਗ ਅਨੰਦੀ ਖੇਲੁ ਰੀ ਦਿਖਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
आनन्द रूपी भगवान ने यह दुनिया बना कर एक खेल दिखाया है, जिसमें कोई इन्सान खुशियाँ मना रहा है, कोई शोक में डूबा हुआ है और कोई वैराग्यवान है॥ १॥ रहाउ॥

ਖਿਨਹੂੰ ਭੈ ਨਿਰਭੈ ਖਿਨਹੂੰ ਖਿਨਹੂੰ ਉਠਿ ਧਾਇਓ ॥
खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहूं उठि धाइओ ॥
एक क्षण में ही मनुष्य भयभीत हो जाता है, एक क्षण में ही निडर एवं एक क्षण में ही वह उठकर दौड़ जाता है।

ਖਿਨਹੂੰ ਰਸ ਭੋਗਨ ਖਿਨਹੂੰ ਖਿਨਹੂ ਤਜਿ ਜਾਇਓ ॥੧॥
खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइओ ॥१॥
एक क्षण में ही वह रस भोगता है और एक क्षण एवं पल में ही वह छोड़कर चला जाता है। १॥

ਖਿਨਹੂੰ ਜੋਗ ਤਾਪ ਬਹੁ ਪੂਜਾ ਖਿਨਹੂੰ ਭਰਮਾਇਓ ॥
खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइओ ॥
एक क्षण में ही योग, तपस्या एवं बहुत प्रकार की पूजा करता है और एक क्षण में ही वह भ्रम में भटकता है।

ਖਿਨਹੂੰ ਕਿਰਪਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਾਇਓ ॥੨॥੫॥੧੫੬॥
खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥२॥५॥१५६॥
हे नानक ! एक क्षण में ही प्रभु अपनी कृपा द्वारा मनुष्य को सत्संगति में रखकर अपने रंग में लगा लेता है॥ २ ॥ ५॥ १५६॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੭ ਆਸਾਵਰੀ
रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी
रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਕਰਿ ਹਾਂ ॥
गोबिंद गोबिंद करि हां ॥
हे मेरी सखी ! मैं गोबिंद-गोबिंद ही करती हूँ और

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਪਿਆਰਿ ਹਾਂ ॥
हरि हरि मनि पिआरि हां ॥
अपने मन में हरि-नाम से प्यार करती हूँ।

ਗੁਰਿ ਕਹਿਆ ਸੁ ਚਿਤਿ ਧਰਿ ਹਾਂ ॥
गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥
गुरु ने जो कुछ कहा है, उसे मैं अपने चित्त में धारण करती हूँ,

ਅਨ ਸਿਉ ਤੋਰਿ ਫੇਰਿ ਹਾਂ ॥
अन सिउ तोरि फेरि हां ॥
मैं दूसरों से अपने प्रेम को तोड़कर अपने मन को उनकी तरफ से हटा रही हूँ।

ਐਸੇ ਲਾਲਨੁ ਪਾਇਓ ਰੀ ਸਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह मैंने प्रियतम-प्रभु को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਪੰਕਜ ਮੋਹ ਸਰਿ ਹਾਂ ॥
पंकज मोह सरि हां ॥
संसार-सरोवर में मोह रूपी कीचड़ विद्यमान है।

ਪਗੁ ਨਹੀ ਚਲੈ ਹਰਿ ਹਾਂ ॥
पगु नही चलै हरि हां ॥
मनुष्य के चरण इसलिए हरि की ओर नहीं चलते।

ਗਹਡਿਓ ਮੂੜ ਨਰਿ ਹਾਂ ॥
गहडिओ मूड़ नरि हां ॥
मूर्ख मनुष्य इरा मोह के कीचड़ में फँसा हुआ है।

ਅਨਿਨ ਉਪਾਵ ਕਰਿ ਹਾਂ ॥
अनिन उपाव करि हां ॥
कोई दूसरा समाधान नहीं करता।

ਤਉ ਨਿਕਸੈ ਸਰਨਿ ਪੈ ਰੀ ਸਖੀ ॥੧॥
तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥१॥
हे सखी ! यदि मैं प्रभु की शरण में जाऊँगी तभी संसार-सरोवर के मोह रूपी कीचड़ से बाहर निकलूंगी॥ १॥

ਥਿਰ ਥਿਰ ਚਿਤ ਥਿਰ ਹਾਂ ॥
थिर थिर चित थिर हां ॥
इस तरह मेरा हृदय अटल एवं दृढ़ है।

ਬਨੁ ਗ੍ਰਿਹੁ ਸਮਸਰਿ ਹਾਂ ॥
बनु ग्रिहु समसरि हां ॥
जंगल एवं घर मेरे लिए एक समान हैं।

ਅੰਤਰਿ ਏਕ ਪਿਰ ਹਾਂ ॥
अंतरि एक पिर हां ॥
मेरे अन्तर्मन में एक प्रियतम प्रभु ही बसता है।

ਬਾਹਰਿ ਅਨੇਕ ਧਰਿ ਹਾਂ ॥
बाहरि अनेक धरि हां ॥
मैं अपने मन से अनेक सांसारिक धंधों को बाहर रखती हूँ।

ਰਾਜਨ ਜੋਗੁ ਕਰਿ ਹਾਂ ॥
राजन जोगु करि हां ॥
मैं राजयोग मानती हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਲੋਗ ਅਲੋਗੀ ਰੀ ਸਖੀ ॥੨॥੧॥੧੫੭॥
कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥२॥१॥१५७॥
नानक का कथन है कि हे सखी ! सुन, इस तरह लोगों के साथ रहती हुई भी मैं लोगों से निर्लिप्त रहती हूँ॥ २॥ १॥ १५७॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसावरी महला ५ ॥
आसावरी महला ५ ॥

ਮਨਸਾ ਏਕ ਮਾਨਿ ਹਾਂ ॥
मनसा एक मानि हां ॥
हे मन ! केवल एक ईश्वर की ही अभिलाषा करो।

ਗੁਰ ਸਿਉ ਨੇਤ ਧਿਆਨਿ ਹਾਂ ॥
गुर सिउ नेत धिआनि हां ॥
नित्य गुरु के चरणों में ध्यान लगाकर रखो।

ਦ੍ਰਿੜੁ ਸੰਤ ਮੰਤ ਗਿਆਨਿ ਹਾਂ ॥
द्रिड़ु संत मंत गिआनि हां ॥
संतों के मंत्र के ज्ञान को अपने हृदय में बसाओ।

ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਚਰਾਨਿ ਹਾਂ ॥
सेवा गुर चरानि हां ॥
गुरु के चरणों की श्रद्धापूर्वक सेवा करो।

ਤਉ ਮਿਲੀਐ ਗੁਰ ਕ੍ਰਿਪਾਨਿ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तउ मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! तभी गुरु की कृपा से तुम अपने स्वामी से मिल जाओगे ॥ १॥ रहाउ॥

ਟੂਟੇ ਅਨ ਭਰਾਨਿ ਹਾਂ ॥
टूटे अन भरानि हां ॥
मेरे सारे भ्रम समाप्त हो गए हैं।

ਰਵਿਓ ਸਰਬ ਥਾਨਿ ਹਾਂ ॥
रविओ सरब थानि हां ॥
अब मुझे हर जगह पर भगवान मौजूद दिखता है।

ਲਹਿਓ ਜਮ ਭਇਆਨਿ ਹਾਂ ॥
लहिओ जम भइआनि हां ॥
अब मौत का डर मेरे मन से दूर हो गया है।

ਪਾਇਓ ਪੇਡ ਥਾਨਿ ਹਾਂ ॥
पाइओ पेड थानि हां ॥
जब इस जगत रूपी पेड़ के मूल नाम को पा लिया

ਤਉ ਚੂਕੀ ਸਗਲ ਕਾਨਿ ॥੧॥
तउ चूकी सगल कानि ॥१॥
तो मेरी हर प्रकार की मोहताजी समाप्त हो गई ॥ १॥

ਲਹਨੋ ਜਿਸੁ ਮਥਾਨਿ ਹਾਂ ॥
लहनो जिसु मथानि हां ॥
केवल वही प्रभु नाम को पाता है जिस मनुष्य के मस्तक पर भाग्य उदय हो जाता है और

ਭੈ ਪਾਵਕ ਪਾਰਿ ਪਰਾਨਿ ਹਾਂ ॥
भै पावक पारि परानि हां ॥
वह भयानक अग्नि सागर से पार हो जाता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਿਸਹਿ ਥਾਨਿ ਹਾਂ ॥
निज घरि तिसहि थानि हां ॥
वह अपने आत्मस्वरूप में बसेरा प्राप्त कर लेता है और

ਹਰਿ ਰਸ ਰਸਹਿ ਮਾਨਿ ਹਾਂ ॥
हरि रस रसहि मानि हां ॥
हरि रस के रस का आनंद प्राप्त करता है।

ਲਾਥੀ ਤਿਸ ਭੁਖਾਨਿ ਹਾਂ ॥
लाथी तिस भुखानि हां ॥
उसकी भूख-प्यास मिट जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਓ ਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥੨॥੧੫੮॥
नानक सहजि समाइओ रे मना ॥२॥२॥१५८॥
नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! वह प्रभु में सहज ही समा जाता है॥ २॥ २॥ १५८ ॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसावरी महला ५ ॥
आसावरी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਨੀ ਹਾਂ ॥
हरि हरि हरि गुनी हां ॥
हे मेरे मन ! गुणों के भण्डार परमात्मा का नाम

ਜਪੀਐ ਸਹਜ ਧੁਨੀ ਹਾਂ ॥
जपीऐ सहज धुनी हां ॥
सहज ही मधुर ध्वनि में जपते रहना चाहिए।

ਸਾਧੂ ਰਸਨ ਭਨੀ ਹਾਂ ॥
साधू रसन भनी हां ॥
साधुओं की ही रसना प्रभु नाम का जाप करती रहती है।

ਛੂਟਨ ਬਿਧਿ ਸੁਨੀ ਹਾਂ ॥
छूटन बिधि सुनी हां ॥
मैंने सुना है कि मुक्ति पाने का एकमात्र यही मार्ग है।

ਪਾਈਐ ਵਡ ਪੁਨੀ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥
लेकिन बड़े पुण्य-कर्म करने से ही यह मार्ग प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਖੋਜਹਿ ਜਨ ਮੁਨੀ ਹਾਂ ॥
खोजहि जन मुनी हां ॥
मुनिजन भी उसे खोजते हैं।

ਸਭ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਧਨੀ ਹਾਂ ॥
सभ का प्रभ धनी हां ॥
प्रभु सबका मालिक है।

ਦੁਲਭ ਕਲਿ ਦੁਨੀ ਹਾਂ ॥
दुलभ कलि दुनी हां ॥
कलियुगी दुनिया में प्रभु को प्राप्त करना बड़ा दुर्लभ है।

ਦੂਖ ਬਿਨਾਸਨੀ ਹਾਂ ॥
दूख बिनासनी हां ॥
वह दुःख नाशक है।

ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਆਸਨੀ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥१॥
हे मेरे मन ! प्रभु सभी आशाएँ पूर्ण करने वाला है॥ १॥

ਮਨ ਸੋ ਸੇਵੀਐ ਹਾਂ ॥
मन सो सेवीऐ हां ॥
हे मेरे मन ! उस प्रभु की सेवा करो।

ਅਲਖ ਅਭੇਵੀਐ ਹਾਂ ॥
अलख अभेवीऐ हां ॥
वह अलख एवं भेद-रहित है।

ਤਾਂ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰਿ ਹਾਂ ॥
तां सिउ प्रीति करि हां ॥
उसके साथ तू अपना प्रेम लगा।

ਬਿਨਸਿ ਨ ਜਾਇ ਮਰਿ ਹਾਂ ॥
बिनसि न जाइ मरि हां ॥
उसका कभी नाश नहीं होता और वह जन्म-मरण से रहित है।

ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਨਿਆ ਹਾਂ ॥
गुर ते जानिआ हां ॥
नानक का कथन है कि हे मन ! गुरु के माध्यम से ही प्रभु जाना जाता है।

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥੩॥੧੫੯॥
नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५९॥
प्रभु के साथ मेरा मन संतुष्ट हो गया है॥२॥३॥१५९॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसावरी महला ५ ॥
आसावरी महला ५ ॥

ਏਕਾ ਓਟ ਗਹੁ ਹਾਂ ॥
एका ओट गहु हां ॥
हे मेरे मन ! एक ईश्वर की ओट लो,

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਹੁ ਹਾਂ ॥
गुर का सबदु कहु हां ॥
सदैव गुरु का शब्द उच्चारण करो।

ਆਗਿਆ ਸਤਿ ਸਹੁ ਹਾਂ ॥
आगिआ सति सहु हां ॥
भगवान की आज्ञा को सत्य मानकर सहर्ष स्वीकार करो।

ਮਨਹਿ ਨਿਧਾਨੁ ਲਹੁ ਹਾਂ ॥
मनहि निधानु लहु हां ॥
अपने मन में मौजूद नाम के भण्डार को प्राप्त करो।

ਸੁਖਹਿ ਸਮਾਈਐ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह तुम सहज सुख में समाहित हो जाओगे॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਵਤ ਜੋ ਮਰੈ ਹਾਂ ॥
जीवत जो मरै हां ॥
हे मेरे मन ! जो व्यक्ति सांसारिक कार्य करता हुआ मोह-माया से निर्लिप्त रहता है,

ਦੁਤਰੁ ਸੋ ਤਰੈ ਹਾਂ ॥
दुतरु सो तरै हां ॥
वह भयानक संसार सागर से पार हो जाता है।

ਸਭ ਕੀ ਰੇਨੁ ਹੋਇ ਹਾਂ ॥
सभ की रेनु होइ हां ॥
जो सबकी चरण-धूलि हो जाता है,

ਨਿਰਭਉ ਕਹਉ ਸੋਇ ਹਾਂ ॥
निरभउ कहउ सोइ हां ॥
तू उसे ही निर्भय कह।

ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸਿਆ ਹਾਂ ॥
मिटे अंदेसिआ हां ॥
तमाम फिक्र मिट जाते हैं

ਸੰਤ ਉਪਦੇਸਿਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
संत उपदेसिआ मेरे मना ॥१॥
संतों के उपदेश से, हे मेरे मन !।॥ १॥

ਜਿਸੁ ਜਨ ਨਾਮ ਸੁਖੁ ਹਾਂ ॥
जिसु जन नाम सुखु हां ॥
हे मेरे मन ! जिस मनुष्य के पास प्रभु नाम का सुख है,

ਤਿਸੁ ਨਿਕਟਿ ਨ ਕਦੇ ਦੁਖੁ ਹਾਂ ॥
तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥
उसके पास कोई दुख नहीं आता।

ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨੇ ਹਾਂ ॥
जो हरि हरि जसु सुने हां ॥
जो मनुष्य परमात्मा का यशोगान सुनते हैं,

ਸਭੁ ਕੋ ਤਿਸੁ ਮੰਨੇ ਹਾਂ ॥
सभु को तिसु मंने हां ॥
दुनिया के सभी लोग उसका मान-सन्मान करते हैं।

ਸਫਲੁ ਸੁ ਆਇਆ ਹਾਂ ॥ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਭਾਇਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥੪॥੧੬੦॥
सफलु सु आइआ हां ॥ नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥२॥४॥१६०॥
नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! इस संसार में उसका आगमन सफल है, जो प्रभु को अच्छा लगता है॥ २॥ ४ ॥ १६० ॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसावरी महला ५ ॥
आसावरी महला ५ ॥

ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਈਐ ਹਾਂ ॥
मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥
आओ हम मिलकर हरि का यशोगान करें

ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ਹਾਂ ॥
परम पदु पाईऐ हां ॥
एवं परम पद प्राप्त करें।

ਉਆ ਰਸ ਜੋ ਬਿਧੇ ਹਾਂ ॥
उआ रस जो बिधे हां ॥
जो इस रस को पाते हैं वे

ਤਾ ਕਉ ਸਗਲ ਸਿਧੇ ਹਾਂ ॥
ता कउ सगल सिधे हां ॥
समस्त ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਿਆ ਹਾਂ ॥
अनदिनु जागिआ हां ॥
जो इन्सान रात-दिन (विकारों से) सचेत रहता है,"

ਨਾਨਕ ਬਡਭਾਗਿਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नानक बडभागिआ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥
नानक का कथन है कि, हे मेरे मन ! वह बड़ा भाग्यशाली है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਪਗ ਧੋਈਐ ਹਾਂ ॥ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਈਐ ਹਾਂ ॥
संत पग धोईऐ हां ॥ दुरमति खोईऐ हां ॥
आओ, हम मिलकर संतों के चरण धोएं और अपनी दुर्मति को शुद्ध करें।

ਦਾਸਹ ਰੇਨੁ ਹੋਇ ਹਾਂ ॥ ਬਿਆਪੈ ਦੁਖੁ ਨ ਕੋਇ ਹਾਂ ॥
दासह रेनु होइ हां ॥ बिआपै दुखु न कोइ हां ॥
प्रभु के सेवकों की चरण-धूलि होने से मनुष्य को कोई दुःख नहीं सताता।

ਭਗਤਾਂ ਸਰਨਿ ਪਰੁ ਹਾਂ ॥ ਜਨਮਿ ਨ ਕਦੇ ਮਰੁ ਹਾਂ ॥
भगतां सरनि परु हां ॥ जनमि न कदे मरु हां ॥
भक्तजनों की शरण लेने से मनुष्य को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

ਅਸਥਿਰੁ ਸੇ ਭਏ ਹਾਂ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਿਨ੍ ਜਪਿ ਲਏ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
असथिरु से भए हां ॥ हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥१॥
हे मेरे मन ! जो मनुष्य हरि-नाम का जाप करते हैं वे स्थिर हो जाते हैं ।॥ १॥

ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਤੂੰ ਹਾਂ ॥
साजनु मीतु तूं हां ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तू ही मेरा साजन एवं मित्र है।

ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ਮੂੰ ਹਾਂ ॥
नामु द्रिड़ाइ मूं हां ॥
मेरे मन में अपना नाम बसा दो।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ਹਾਂ ॥ ਮਨਹਿ ਅਰਾਧਿ ਸੋਇ ਹਾਂ ॥
तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ मनहि अराधि सोइ हां ॥
उसके अलावा दूसरा कोई नहीं। इसलिए अपने मन में मैं उसकी आराधना करता हूँ।

ਨਿਮਖ ਨ ਵੀਸਰੈ ਹਾਂ ॥
निमख न वीसरै हां ॥
एक निमिष मात्र भी मैं उसे विस्मृत नहीं करता।

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਕਿਉ ਸਰੈ ਹਾਂ ॥
तिसु बिनु किउ सरै हां ॥
उसके अतिरिक्त मेरा किस तरह निर्वाह हो सकता है ?

ਗੁਰ ਕਉ ਕੁਰਬਾਨੁ ਜਾਉ ਹਾਂ ॥ ਨਾਨਕੁ ਜਪੇ ਨਾਉ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥੫॥੧੬੧॥
गुर कउ कुरबानु जाउ हां ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१॥
हे मेरे मन ! में अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ। नानक तो परमात्मा का नाम ही जपता रहता है। ॥२॥५॥१६१॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसावरी महला ५ ॥
आसावरी महला ५ ॥

ਕਾਰਨ ਕਰਨ ਤੂੰ ਹਾਂ ॥
कारन करन तूं हां ॥
हे प्रभु ! एक तू ही जग का रचयिता है,

ਅਵਰੁ ਨਾ ਸੁਝੈ ਮੂੰ ਹਾਂ ॥
अवरु ना सुझै मूं हां ॥
तेरे सिवाय मुझे अन्य कोई नहीं सूझता।

ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈਐ ਹਾਂ ॥
करहि सु होईऐ हां ॥
जो कुछ तू दुनिया में करता है, वही होता है।

ਸਹਜਿ ਸੁਖਿ ਸੋਈਐ ਹਾਂ ॥
सहजि सुखि सोईऐ हां ॥
मैं इसलिए सहज सुख में सोता हूँ।

ਧੀਰਜ ਮਨਿ ਭਏ ਹਾਂ ॥ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਦਰਿ ਪਏ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धीरज मनि भए हां ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! जब से मैंने प्रभु के द्वार की शरण ली है, मेरे मन में धैर्य हो गया है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਮੇ ਹਾਂ ॥
साधू संगमे हां ॥
मैं साधुओं की संगति से जुड़ गया हूँ,

ਪੂਰਨ ਸੰਜਮੇ ਹਾਂ ॥
पूरन संजमे हां ॥
मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ पूर्णतया मेरे वश में हैं।

ਜਬ ਤੇ ਛੂਟੇ ਆਪ ਹਾਂ ॥
जब ते छुटे आप हां ॥
जब से मैंने अहंत्व से छुटकारा पा लिया है,"

ਤਬ ਤੇ ਮਿਟੇ ਤਾਪ ਹਾਂ ॥
तब ते मिटे ताप हां ॥
तब से मेरे दुःख-संताप मिट गए हैं।

ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਆ ਹਾਂ ॥ ਪਤਿ ਰਖੁ ਬਨਵਾਰੀਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
किरपा धारीआ हां ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥१॥
हे मेरे मन ! प्रभु ने मुझ पर कृपा की है। हे जग के मालिक ! मुझ शरण में आए की लाज रखो॥ १॥

ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਜਾਨੀਐ ਹਾਂ ॥ ਹਰਿ ਕਰੇ ਸੁ ਮਾਨੀਐ ਹਾਂ ॥
इहु सुखु जानीऐ हां ॥ हरि करे सु मानीऐ हां ॥
हे मेरे मन ! भगवान जो कुछ करता है, उसे सहर्ष मानना चाहिए। केवल उसे ही सुख समझना चाहिए।

ਮੰਦਾ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ਹਾਂ ॥ ਸੰਤ ਕੀ ਰੇਨ ਹੋਇ ਹਾਂ ॥
मंदा नाहि कोइ हां ॥ संत की रेन होइ हां ॥
हे मन! जो मनुष्य संत जनों की चरण-धूल बनता है उसको (जगत में) कोई बुरा नहीं दिखता।

ਆਪੇ ਜਿਸੁ ਰਖੈ ਹਾਂ ॥ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੋ ਚਖੈ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੨॥
आपे जिसु रखै हां ॥ हरि अम्रितु सो चखै मेरे मना ॥२॥
हे मेरे मन ! जिस व्यक्ति की परमात्मा खुद रक्षा करता है, वही हरि नाम रूपी अमृत चखता है॥ २॥

ਜਿਸ ਕਾ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ਹਾਂ ॥
जिस का नाहि कोइ हां ॥
जिस मनुष्य का कोई नहीं,

ਤਿਸ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ਹਾਂ ॥
तिस का प्रभू सोइ हां ॥
उसका वह प्रभु है।

ਅੰਤਰਗਤਿ ਬੁਝੈ ਹਾਂ ॥
अंतरगति बुझै हां ॥
प्रभु सबके अन्तर्मन की अवस्था को समझता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸੁ ਸੁਝੈ ਹਾਂ ॥
सभु किछु तिसु सुझै हां ॥
वह तमाम बातों को जानता है।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਿ ਲੇਹੁ ਹਾਂ ॥ ਨਾਨਕ ਅਰਦਾਸਿ ਏਹੁ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੩॥੬॥੧੬੨॥
पतित उधारि लेहु हां ॥ नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥
हे मेरे मन ! ईश्वर के दरबार में यू वन्दना कर - हे प्रभु ! पतितों का उद्धार करो, नानक की यही वन्दना है॥ ३॥ ६ ॥ १६२॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਇਕਤੁਕਾ ॥
आसावरी महला ५ इकतुका ॥
आसावरी महला ५ इकतुका ॥

ਓਇ ਪਰਦੇਸੀਆ ਹਾਂ ॥
ओइ परदेसीआ हां ॥
हे जीव ! इस दुनिया में तू परदेसी है,

ਸੁਨਤ ਸੰਦੇਸਿਆ ਹਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुनत संदेसिआ हां ॥१॥ रहाउ ॥
यह सन्देश ध्यानपूर्वक सुन ॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਸਿਉ ਰਚਿ ਰਹੇ ਹਾਂ ॥
जा सिउ रचि रहे हां ॥
जिस माया के साथ तुम मोहित हुए हो,

ਸਭ ਕਉ ਤਜਿ ਗਏ ਹਾਂ ॥
सभ कउ तजि गए हां ॥
उसे सब लोग यहीं छोड़कर चले गए हैं।

ਸੁਪਨਾ ਜਿਉ ਭਏ ਹਾਂ ॥
सुपना जिउ भए हां ॥
यह वस्तुएं उसे स्वप्न की भाँति लगती हैं

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨਿ੍ ਲਏ ॥੧॥
हरि नामु जिन्हि लए ॥१॥
जो हरि का नाम-सुमिरन करता है। १॥

ਹਰਿ ਤਜਿ ਅਨ ਲਗੇ ਹਾਂ ॥
हरि तजि अन लगे हां ॥
हरि को छोड़कर जो विकारों में फँसे हुए हैं,

ਜਨਮਹਿ ਮਰਿ ਭਗੇ ਹਾਂ ॥
जनमहि मरि भगे हां ॥
वे जन्म-मरण की तरफ भाग कर जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨਿ ਲਹੇ ਹਾਂ ॥
हरि हरि जनि लहे हां ॥
जो भक्तजन परमात्मा को प्राप्त होते हैं,

ਜੀਵਤ ਸੇ ਰਹੇ ਹਾਂ ॥
जीवत से रहे हां ॥
वे आत्मिक तोर पर जीवित रहते हैं।

ਜਿਸਹਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹੋਇ ਹਾਂ ॥ ਨਾਨਕ ਭਗਤੁ ਸੋਇ ॥੨॥੭॥੧੬੩॥੨੩੨॥
जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ नानक भगतु सोइ ॥२॥७॥१६३॥२३२॥
हे नानक ! जिस पर भगवान कृपालु हो जाता है, वही उसका भक्त है॥२॥७॥१६३॥२३२॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੯ ॥
रागु आसा महला ९ ॥
रागु आसा महला ९ ॥

ਬਿਰਥਾ ਕਹਉ ਕਉਨ ਸਿਉ ਮਨ ਕੀ ॥
बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
(हे भाई !) मैं मन की हालत किसे वर्णन करूँ ?

ਲੋਭਿ ਗ੍ਰਸਿਓ ਦਸ ਹੂ ਦਿਸ ਧਾਵਤ ਆਸਾ ਲਾਗਿਓ ਧਨ ਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥
यह लोभ में ग्रस्त है और धन की आशा करके यह दसों दिशाओं की ओर भागता फिरता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੁਖ ਕੈ ਹੇਤਿ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਤ ਸੇਵ ਕਰਤ ਜਨ ਜਨ ਕੀ ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥
सुख की खातिर वह बहुत दुःख सहन करता है और जन-जन की सेवा खुशामद करता रहता है।

ਦੁਆਰਹਿ ਦੁਆਰਿ ਸੁਆਨ ਜਿਉ ਡੋਲਤ ਨਹ ਸੁਧ ਰਾਮ ਭਜਨ ਕੀ ॥੧॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥
वह कुत्ते की भाँति द्वार-द्वार पर भटकता रहता है और राम के भजन की सूझ ही नहीं होती ॥ १॥

ਮਾਨਸ ਜਨਮ ਅਕਾਰਥ ਖੋਵਤ ਲਾਜ ਨ ਲੋਕ ਹਸਨ ਕੀ ॥
मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥
वह अपना मूल्यवान मनुष्य-जन्म निरर्थक ही गंवा देता है और लोगों की तरफ से हो रहे हंसी-मजाक की उसे लज्जा नहीं।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਸੁ ਕਿਉ ਨਹੀ ਗਾਵਤ ਕੁਮਤਿ ਬਿਨਾਸੈ ਤਨ ਕੀ ॥੨॥੧॥੨੩੩॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥
नानक का कथन है कि (हे जीव !) तुम हरि का यश क्यों नहीं गाते, इससे तेरे तन की खोटी बुद्धि दूर हो जाएगी॥ २॥ १॥ २३३॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਉਤਰਿ ਅਵਘਟਿ ਸਰਵਰਿ ਨ੍ਹਾਵੈ ॥
उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥
मनुष्य को पाप की दुष्कर घाटी से उतर कर सत्संग रूपी गुणों के सरोवर में स्नान करना चाहिए।

ਬਕੈ ਨ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥
उसे व्यर्थ नहीं बोलना चाहिए और भगवान के गुण गाते रहना चाहिए।

ਜਲੁ ਆਕਾਸੀ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਵੈ ॥
जलु आकासी सुंनि समावै ॥
वायुमण्डल में जल की भाँति उसे प्रभु में लीन रहना चाहिए।

ਰਸੁ ਸਤੁ ਝੋਲਿ ਮਹਾ ਰਸੁ ਪਾਵੈ ॥੧॥
रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥१॥
सत्य की प्रसन्नता का मंथन करके उसे महा रस अमृत का पान करना चाहिए॥ १॥

ਐਸਾ ਗਿਆਨੁ ਸੁਨਹੁ ਅਭ ਮੋਰੇ ॥
ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥
हे मेरे मन ! ऐसा ज्ञान सुनो।

ਭਰਿਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਠਉਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु सर्वत्र व्यापक है और सबको सहारा दे रहा है। १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਬ੍ਰਤੁ ਨੇਮੁ ਨ ਕਾਲੁ ਸੰਤਾਵੈ ॥
सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥
जो मनुष्य सत्य को अपना व्रत एवं नियम बनाता है, काल उसे दुखी नहीं करता और

ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੋਧੁ ਜਲਾਵੈ ॥
सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥
सच्चे गुरु के शब्द से वह अपने क्रोध को जला देता है।

ਗਗਨਿ ਨਿਵਾਸਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਵੈ ॥
गगनि निवासि समाधि लगावै ॥
वह दसम द्वार(उच्चमण्डल) में निवास करता है और समाधि की अवस्था धारण कर लेता है।

ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥
पारसु परसि परम पदु पावै ॥२॥
वह गुरु रूपी पारस को स्पर्श करके परम पद प्राप्त कर लेता है॥ २ ॥

ਸਚੁ ਮਨ ਕਾਰਣਿ ਤਤੁ ਬਿਲੋਵੈ ॥
सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥
प्राणी को अपने मन की खातिर सत्य के तत्व का मंथन करना चाहिए और

ਸੁਭਰ ਸਰਵਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਧੋਵੈ ॥
सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥
अपनी मलिनता को धोने के लिए नामामृत के सरोवर में स्नान करना चाहिए।

ਜੈ ਸਿਉ ਰਾਤਾ ਤੈਸੋ ਹੋਵੈ ॥
जै सिउ राता तैसो होवै ॥
जिसके साथ वह रंग जाता है, मनुष्य उस जैसा हो जाता है।

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਵੈ ॥੩॥
आपे करता करे सु होवै ॥३॥
जो कुछ कर्ता प्रभु स्वयं करता है, वही होता है॥ ३॥

ਗੁਰ ਹਿਵ ਸੀਤਲੁ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਵੈ ॥
गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥
बर्फ जैसे शीतल हृदय वाले गुरु से मिलकर मनुष्य अपनी तृष्णाग्नि को बुझाए।

ਸੇਵਾ ਸੁਰਤਿ ਬਿਭੂਤ ਚੜਾਵੈ ॥
सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥
जो गुरु के द्वारा बतलाई सेवा में अपनी सुरति लगाता है, वह मानो यह विभूति अपने शरीर पर मलता है।

ਦਰਸਨੁ ਆਪਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥
दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥
सहज घर में बसना उसका धार्मिक वेष होवे और

ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਨਾਦੁ ਵਜਾਵੈ ॥੪॥
निरमल बाणी नादु वजावै ॥४॥
निर्मल वाणी उसका नाद बजाना॥ ४॥

ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਸਾਰਾ ॥
अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥
अन्तर्मन का ज्ञान श्रेष्ठ महा रस है।

ਤੀਰਥ ਮਜਨੁ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਾ ॥
तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥
गुरु-वाणी का विचार तीर्थ-स्थल का स्नान है।

ਅੰਤਰਿ ਪੂਜਾ ਥਾਨੁ ਮੁਰਾਰਾ ॥
अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥
अन्तर्मन में प्रभु का निवास ही पूजा है।

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥੫॥
जोती जोति मिलावणहारा ॥५॥
यह मनुष्य ज्योति को ईश्वरीय ज्योत से मिलाने वाला है॥ ५॥

ਰਸਿ ਰਸਿਆ ਮਤਿ ਏਕੈ ਭਾਇ ॥
रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥
जिस का मन नाम-रस में भीगा रहता है, जिसकी मति एक प्रभु के प्रेम में लगी रहती है।

ਤਖਤ ਨਿਵਾਸੀ ਪੰਚ ਸਮਾਇ ॥
तखत निवासी पंच समाइ ॥
ऐसा व्यक्ति राजसिंहासन पर विराजमान होने वाले प्रभु में समा जाता है।

ਕਾਰ ਕਮਾਈ ਖਸਮ ਰਜਾਇ ॥
कार कमाई खसम रजाइ ॥
परमात्मा की रज़ा में चलना ही उसकी प्रतिदिन की दिनचर्या एवं दैनिक कमाई हो जाती है।

ਅਵਿਗਤ ਨਾਥੁ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਇ ॥੬॥
अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥६॥
अविगत प्रभु जाना नहीं जा सकता ॥ ६॥

ਜਲ ਮਹਿ ਉਪਜੈ ਜਲ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥
जल महि उपजै जल ते दूरि ॥
जैसे कमल जल में से उत्पन्न होता है और जल से दूर रहता है,

ਜਲ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥
इसी तरह प्रभु की ज्योति समस्त जीवों में सर्वव्यापक है।

ਕਿਸੁ ਨੇੜੈ ਕਿਸੁ ਆਖਾ ਦੂਰਿ ॥
किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥
मैं किसे प्रभु के निकट एवं किसे दूर कहूँ?

ਨਿਧਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਦੇਖਿ ਹਦੂਰਿ ॥੭॥
निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥७॥
उस परमात्मा को सर्वव्यापक देखकर मैं गुणों के भण्डार का यशोगान करता हूँ॥ ७॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥
भीतर एवं बाहर प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਫੁਨਿ ਹੋਇ ॥
जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥
जो कुछ उसे अच्छा लगता है, संसार में वही होता है।

ਸੁਣਿ ਭਰਥਰਿ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥
हे भर्तृहरि योगी ! सुन, नानक तुझे विचार की बात कहता है,

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਆਧਾਰੁ ॥੮॥੧॥
निरमल नामु मेरा आधारु ॥८॥१॥
उस प्रभु का निर्मल नाम मेरे जीवन का सहारा है॥ ८ ॥ १॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਸਭਿ ਜਪ ਸਭਿ ਤਪ ਸਭ ਚਤੁਰਾਈ ॥
सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥
मनुष्य अधिकतर जप-तप एवं समस्त चतुराई के बावजूद

ਉਝੜਿ ਭਰਮੈ ਰਾਹਿ ਨ ਪਾਈ ॥
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥
बियावान में भटकता है और उसे प्रभु-प्राप्ति का मार्ग नहीं मिलता।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਕੋ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥
सत्य के बोध बिना कोई भी स्वीकार नहीं होता।

ਨਾਮ ਬਿਹੂਣੈ ਮਾਥੇ ਛਾਈ ॥੧॥
नाम बिहूणै माथे छाई ॥१॥
नामविहीन मनुष्य के सिर पर धूल ही पड़ती है॥ १॥

ਸਾਚ ਧਣੀ ਜਗੁ ਆਇ ਬਿਨਾਸਾ ॥
साच धणी जगु आइ बिनासा ॥
संसार जन्मता मरता रहता है लेकिन सृष्टि का स्वामी सत्यस्वरूप है।

ਛੂਟਸਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥१॥ रहाउ ॥
जो मनुष्य गुरु की शरणागत प्रभु का सेवक बनता है, वह जन्म-मरण से छूट जाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਗੁ ਮੋਹਿ ਬਾਧਾ ਬਹੁਤੀ ਆਸਾ ॥
जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥
यह जगत सांसारिक मोह एवं अनेक आशाओं में बंधा हुआ है।

ਗੁਰਮਤੀ ਇਕਿ ਭਏ ਉਦਾਸਾ ॥
गुरमती इकि भए उदासा ॥
लेकिन कई मनुष्य गुरमति के माध्यम से मोह से निर्लिप्त हो जाते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਾ ॥
अंतरि नामु कमलु परगासा ॥
उनके अन्तर्मन में नाम विद्यमान है और उनका हृदय कमल खिल जाता है।

ਤਿਨ੍ ਕਉ ਨਾਹੀ ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸਾ ॥੨॥
तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥२॥
उन्हें मृत्यु का कोई डर नहीं रहता ॥ २॥

ਜਗੁ ਤ੍ਰਿਅ ਜਿਤੁ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥
जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥
स्त्री के मोह ने सारे जगत को जीत लिया है और यह जगत नारी से मोह करता है।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਲਗਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥
पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥
पुत्रों एवं पत्नी के मोह में फँसकर मनुष्य ने प्रभु-नाम को भुला दिया है।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥
बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥
इस प्रकार मनुष्य जीवन निरर्थक गंवा देता है और जीवन की बाजी हार जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥੩॥
सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥३॥
सतिगुरु की सेवा सर्वश्रेष्ठ करनी है॥ ३॥

ਬਾਹਰਹੁ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥
बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥
जो खुले तौर पर अहंत्व के वचन बोलता है,

ਅੰਦਰਹੁ ਮੁਕਤੁ ਲੇਪੁ ਕਦੇ ਨ ਲਾਏ ॥
अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥
उसके हृदय को मोक्ष का लेपन कदाचित नहीं होता।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥
जो मनुष्य गुरु के शब्द में लीन होकर माया का मोह जला देता है,

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਸਦ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਏ ॥੪॥
निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥४॥
वह निर्मल नाम का सदैव ही हृदय में सुमिरन करता है॥ ४॥

ਧਾਵਤੁ ਰਾਖੈ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥
वह अपने भटकते हुए मन पर अंकुश लगाता है और इसे जकड़ कर बांधकर रखता है।

ਸਿਖ ਸੰਗਤਿ ਕਰਮਿ ਮਿਲਾਏ ॥
सिख संगति करमि मिलाए ॥
ऐसे शिष्य की संगति प्रभु के करम से ही प्राप्त होती है।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭੂਲੋ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥
गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥
गुरु के बिना मनुष्य कुमार्गगामी हो जाता है और जन्म मरण के चक्र में फँस जाता है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੰਜੋਗਿ ਮਿਲਾਏ ॥੫॥
नदरि करे संजोगि मिलाए ॥५॥
यदि प्रभु कृपा-दृष्टि करे तो वह मनुष्य को अपने संयोग में मिला लेता है॥ ५॥

ਰੂੜੋ ਕਹਉ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥
रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥
हे भगवान ! तू अति सुन्दर है लेकिन यदि मैं बताने का प्रयास करूँ तो उसका वर्णन नहीं कर सकता।

ਅਕਥ ਕਥਉ ਨਹ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥
अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥
यदि मैं अकथनीय प्रभु का कथन करूँ तो मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता।

ਸਭ ਦੁਖ ਤੇਰੇ ਸੂਖ ਰਜਾਈ ॥
सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥
हे प्रभु ! सभी दुख एवं सुख तेरी इच्छा अनुसार ही मिलते हैं।

ਸਭਿ ਦੁਖ ਮੇਟੇ ਸਾਚੈ ਨਾਈ ॥੬॥
सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥
सत्यनाम में सभी दुख मिट जाते हैं।॥ ६ ॥

ਕਰ ਬਿਨੁ ਵਾਜਾ ਪਗ ਬਿਨੁ ਤਾਲਾ ॥
कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥
जब शब्द की सूझ होती है तो प्राणी हाथों के बिना ही बाजा बजाता है और पैरों के बिना ही नृत्य किए ताल बना रहता है।

ਜੇ ਸਬਦੁ ਬੁਝੈ ਤਾ ਸਚੁ ਨਿਹਾਲਾ ॥
जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥
यदि वह शब्द के भेद को समझ ले तो सत्य को देख लेगा।

ਅੰਤਰਿ ਸਾਚੁ ਸਭੇ ਸੁਖ ਨਾਲਾ ॥
अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥
जब सच्चा परमात्मा अन्तर्मन में विद्यमान है तो सभी सुख मनुष्य के साथ हैं।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਰਾਖੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥੭॥
नदरि करे राखै रखवाला ॥७॥
अपनी दया करके सबका रखवाला प्रभु प्राणी की रक्षा करता है॥ ७॥

ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੂਝੈ ਆਪੁ ਗਵਾਵੈ ॥
त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥
जो मनुष्य अपना अहंत्व मिटा देता है, उसे तीन लोकों की सूझ हो जाती है।

ਬਾਣੀ ਬੂਝੈ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥
बाणी बूझै सचि समावै ॥
जो मनुष्य वाणी को समझता है, वह सत्य में समा जाता है।

ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ਏਕ ਲਿਵ ਤਾਰਾ ॥
सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥
हे प्राणी ! निरन्तर प्रीति के साथ एक शब्द का ध्यान करो।

ਨਾਨਕ ਧੰਨੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੮॥੨॥
नानक धंनु सवारणहारा ॥८॥२॥
हे नानक ! अपने भक्तों का जीवन संवारने वाला प्रभु धन्य है॥ ८ ॥ २॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਲੇਖ ਅਸੰਖ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਮਾਨੁ ॥
लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥
अनेकों ने भगवान के स्वरूप के अन्तर्गत असंख्य ही लेख लिखे हैं, लेकिन वह उसके स्वरूप का वर्णन नहीं कर सके। उन्होंने लेख लिख-लिख कर अपनी विद्वता का झूठा मान ही पाया है।

ਮਨਿ ਮਾਨਿਐ ਸਚੁ ਸੁਰਤਿ ਵਖਾਨੁ ॥
मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥
जब इन्सान का मन सच्चे से संतुष्ट हो जाता है तो ही वह सुरति द्वारा बखान करता है।

ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਪੜਿ ਪੜਿ ਭਾਰੁ ॥
कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥
केवल मुख की बातें एवं बार-बार पढ़ना एक व्यर्थ भार है।

ਲੇਖ ਅਸੰਖ ਅਲੇਖੁ ਅਪਾਰੁ ॥੧॥
लेख असंख अलेखु अपारु ॥१॥
असंख्य धार्मिक ग्रंथ हैं परन्तु अपार प्रभु अकथनीय ही रहता है॥ १॥

ਐਸਾ ਸਾਚਾ ਤੂੰ ਏਕੋ ਜਾਣੁ ॥
ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥
हे प्राणी ! तू समझ ले कि एक सत्यस्वरूप परमात्मा ही ऐसा है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥१॥ रहाउ ॥
यह जन्म-मरण भी उस प्रभु की रजा ही समझ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਜਗੁ ਬਾਧਾ ਜਮਕਾਲਿ ॥
माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥
इस दुनिया को मृत्यु ने माया के मोह में फँसा कर बांधा हुआ है।

ਬਾਂਧਾ ਛੂਟੈ ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲਿ ॥
बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥
नाम-सुमिरन करने से बन्धनों में फँसा हुआ मनुष्य मोह-माया से छूट सकता है।

ਗੁਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥
गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥
गुरु ही सुखों का दाता है इसलिए किसी अन्य की खोज मत कर।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਨਿਬਹੀ ਤੁਧੁ ਨਾਲਿ ॥੨॥
हलति पलति निबही तुधु नालि ॥२॥
इस लोक एवं परलोक में वह तेरा साथ निभाएगा ॥ २॥

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾਂ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥
यदि मनुष्य शब्द-गुरु द्वारा मोह-माया से निर्लिप्त हो जाए तो उसकी लगन एक ईश्वर से लग जाती है।

ਅਚਰੁ ਚਰੈ ਤਾਂ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ॥
अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥
यदि वह खाए न जाने वाले कामादिक को विनष्ट कर दे तो उसकी दुविधा निवृत्त हो जाती है।

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥
नाम को हृदय में बसाने से मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਤ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥੩॥
गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥३॥
यदि मनुष्य गुरुमुख बन जाए तो वह सत्य में समा जाता है॥ ३॥

ਜਿਨਿ ਧਰ ਸਾਜੀ ਗਗਨੁ ਅਕਾਸੁ ॥
जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥
जिसं प्रभु ने धरती, गगन, आकाश की सृजना की है और

ਜਿਨਿ ਸਭ ਥਾਪੀ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥
जिसने सारी दुनिया बनाई है, जो निर्माण करके स्वयं ही नाश कर देता है,

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
सरब निरंतरि आपे आपि ॥
वह रचयिता प्रभु स्वयं ही सवके भीतर व्यापक है।

ਕਿਸੈ ਨ ਪੂਛੇ ਬਖਸੇ ਆਪਿ ॥੪॥
किसै न पूछे बखसे आपि ॥४॥
वह किसी से परामर्श नहीं करता और स्वयं ही क्षमा कर देता है॥ ४॥

ਤੂ ਪੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਮਾਣਕ ਹੀਰੁ ॥
तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥
हे जग के रचयिता ! तू स्वयं ही भरपूर सागर है, तू स्वयं ही माणिक्य-हीरा है।

ਤੂ ਨਿਰਮਲੁ ਸਚੁ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥
तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥
तू बड़ा निर्मल, सदैव सत्य एवं गुणों का भण्डार है।

ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ਭੇਟੈ ਗੁਰ ਪੀਰੁ ॥
सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥
जिसे गुरु-पीर मिल जाता है, वह सदा सुख भोगता है।

ਏਕੋ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਵਜੀਰੁ ॥੫॥
एको साहिबु एकु वजीरु ॥५॥
एक परमात्मा ही दुनिया का बादशाह है और खुद ही अपना एक वजीर है॥ ५ ॥

ਜਗੁ ਬੰਦੀ ਮੁਕਤੇ ਹਉ ਮਾਰੀ ॥
जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥
यह समूचा जगत मोह-माया की कैद में है। जो अपना अभिमान मिटा देता है, वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਜਗਿ ਗਿਆਨੀ ਵਿਰਲਾ ਆਚਾਰੀ ॥
जगि गिआनी विरला आचारी ॥
जगत में कोई विरला ही ज्ञानी है, जिसका आचरण उस ज्ञान के अनुसार है।

ਜਗਿ ਪੰਡਿਤੁ ਵਿਰਲਾ ਵੀਚਾਰੀ ॥
जगि पंडितु विरला वीचारी ॥
जगत में पण्डित भी कोई विरला है, जो सही विचारक है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਸਭ ਫਿਰੈ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥੬॥
बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥६॥
सतिगुरु को मिले बिना सभी अहंकार में भटकते हैं।॥ ६॥

ਜਗੁ ਦੁਖੀਆ ਸੁਖੀਆ ਜਨੁ ਕੋਇ ॥
जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥
जगत दुखी है परन्तु कोई विरला पुरुष ही सुखी है।

ਜਗੁ ਰੋਗੀ ਭੋਗੀ ਗੁਣ ਰੋਇ ॥
जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥
जगत भोगी होने के कारण रोगी है और अपने गुणों को गंवा कर रोता है।

ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥
जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥
जगत जन्मता है और अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर यह मर जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਬੁਝੈ ਸੋਇ ॥੭॥
गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥७॥
जो गुरुमुख बन जाता है, वह इस तथ्य को समझ लेता है।७॥

ਮਹਘੋ ਮੋਲਿ ਭਾਰਿ ਅਫਾਰੁ ॥
महघो मोलि भारि अफारु ॥
प्रभु मूल्य में महंगा एवं भार में अनन्त है।

ਅਟਲ ਅਛਲੁ ਗੁਰਮਤੀ ਧਾਰੁ ॥
अटल अछलु गुरमती धारु ॥
हे प्राणी ! गुरु की मति से अटल एवं अछल प्रभु को अपने हृदय में धारण कर।

ਭਾਇ ਮਿਲੈ ਭਾਵੈ ਭਇਕਾਰੁ ॥
भाइ मिलै भावै भइकारु ॥
प्रेम द्वारा मनुष्य उससे मिल जाता है जो प्रभु के भय में कार्य करता है, वह उसे अच्छा लगने लग जाता है।

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥੮॥੩॥
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥८॥३॥
नानक यही विचारणीय बात कहता है॥ ८ ॥ ३ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਏਕੁ ਮਰੈ ਪੰਚੇ ਮਿਲਿ ਰੋਵਹਿ ॥
एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥
जब एक मरता है तो पाँचों संबंधी मिलकर रोते हैं।

ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਸਬਦਿ ਮਲੁ ਧੋਵਹਿ ॥
हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥
यह अहंत्व की मैल तब दूर होती है, जब इन्सान यह मैल शब्द द्वारा शुद्ध कर लेता है।

ਸਮਝਿ ਸੂਝਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਹੋਵਹਿ ॥
समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥
जो इस तथ्य को समझता है वह सहज घर में प्रवेश कर जाता है।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਸਗਲੀ ਪਤਿ ਖੋਵਹਿ ॥੧॥
बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥१॥
ज्ञान के बिना मनुष्य सारी प्रतिष्ठा गंवा लेता है॥ १॥

ਕਉਣੁ ਮਰੈ ਕਉਣੁ ਰੋਵੈ ਓਹੀ ॥
कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥
कौन मरता है और कौन उसे रोता है।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਭਸੈ ਸਿਰਿ ਤੋਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करण कारण सभसै सिरि तोही ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! एक तू ही जग का रचयिता है, तेरा हुक्म सबके सिर पर है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੂਏ ਕਉ ਰੋਵੈ ਦੁਖੁ ਕੋਇ ॥
मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥
यदि कोई मृतक को रोता है, वह वास्तव में दुख व्यक्त करता है।

ਸੋ ਰੋਵੈ ਜਿਸੁ ਬੇਦਨ ਹੋਇ ॥
सो रोवै जिसु बेदन होइ ॥
केवल रोता वही है जिस पर विपदा आ जाती है।

ਜਿਸੁ ਬੀਤੀ ਜਾਣੈ ਪ੍ਰਭ ਸੋਇ ॥
जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥
जिसके साथ बीतती है, उसकी दशा वह प्रभु ही जानता है।

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥
आपे करता करे सु होइ ॥२॥
जो कुछ कर्ता प्रभु स्वयं करता है, वही कुछ होता है॥ २॥

ਜੀਵਤ ਮਰਣਾ ਤਾਰੇ ਤਰਣਾ ॥
जीवत मरणा तारे तरणा ॥
अहंकार को मारकर जीना ही भवसागर से पार करने के लिए एक नाव का काम करता है।

ਜੈ ਜਗਦੀਸ ਪਰਮ ਗਤਿ ਸਰਣਾ ॥
जै जगदीस परम गति सरणा ॥
उस जगदीश की जय करो, जिसकी शरण लेने से परमगति प्राप्त होती है।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥
मैं सतिगुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ।

ਗੁਰੁ ਬੋਹਿਥੁ ਸਬਦਿ ਭੈ ਤਰਣਾ ॥੩॥
गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥३॥
गुरु जहाज है और उसके शब्द द्वारा भयानक संसार सागर से पार हुआ जा सकता है॥ ३॥

ਨਿਰਭਉ ਆਪਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ॥
निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥
प्रभु स्वयं निर्भय है और उसकी ज्योति सबमें विद्यमान रहती है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੂਤਕੁ ਜਗਿ ਛੋਤਿ ॥
बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥
नाम के बिना संसार में कहीं सूतक एवं कहीं छूत का वहम है।

ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਨਸੈ ਕਿਆ ਕਹਿ ਰੋਤਿ ॥
दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥
दुर्बुद्धि से मनुष्य नष्ट हो गया है इसलिए वह क्यों पुकार करता रोता है ?

ਜਨਮਿ ਮੂਏ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਸਰੋਤਿ ॥੪॥
जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥४॥
प्रभु-भक्ति एवं भजन सुने बिना मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में फँसकर आता-जाता रहता है।॥ ४ ॥

ਮੂਏ ਕਉ ਸਚੁ ਰੋਵਹਿ ਮੀਤ ॥ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਰੋਵਹਿ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥
मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥
मरे हुए को असल में सच्चे मित्र ही रोते हैं। तीन गुणों (रजो, सतो, तमो) वाले मनुष्य सदैव ही रोते रहते हैं।

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸਹਜਿ ਸੁਚੀਤ ॥
दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥
दुख-सुख को त्याग कर अपने हृदय में प्रभु को धारण करो।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਉਪਉ ਕ੍ਰਿਸਨ ਪਰੀਤਿ ॥੫॥
तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥५॥
अपना तन-मन भगवान के प्रेम में समर्पित कर दो ॥ ५॥

ਭੀਤਰਿ ਏਕੁ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖ ॥
भीतरि एकु अनेक असंख ॥
अनेक प्रकार के असंख्य ही जीव हैं पर सबके भीतर एक परमात्मा ही बसता है।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਬਹੁ ਸੰਖ ਅਸੰਖ ॥
करम धरम बहु संख असंख ॥
बहुत सारे कर्म धर्म हैं, जिनकी संख्या असंख्य है।

ਬਿਨੁ ਭੈ ਭਗਤੀ ਜਨਮੁ ਬਿਰੰਥ ॥
बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥
प्रभु के भय एवं भक्ति के बिना मनुष्य जन्म निरर्थक है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਮਿਲਿ ਪਰਮਾਰੰਥ ॥੬॥
हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥६॥
हरि का गुणगान करने से परमार्थ मिल जाता है।॥ ६॥

ਆਪਿ ਮਰੈ ਮਾਰੇ ਭੀ ਆਪਿ ॥
आपि मरै मारे भी आपि ॥
किसी प्राणी की मृत्यु में मानो वही मरता है और उस प्राणी को प्रभु ही मारता है।

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
आपि उपाए थापि उथापि ॥
प्रभु स्वयं पैदा करता है और पैदा करके वह स्वयं ही नाश कर देता है।

ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਈ ਜੋਤੀ ਤੂ ਜਾਤਿ ॥
स्रिसटि उपाई जोती तू जाति ॥
हे ज्योतिस्वरूप भगवान ! तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही अपनी ज्योति स्थापित कर दी है।

ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ਮਿਲਣੁ ਨਹੀ ਭ੍ਰਾਂਤਿ ॥੭॥
सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥७॥
जो शब्द का चिन्तन करता है, वह प्रभु से मिल जाता है, इसमें कोई भ्रांति नहीं ॥ ७॥

ਸੂਤਕੁ ਅਗਨਿ ਭਖੈ ਜਗੁ ਖਾਇ ॥
सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥
अग्नि में भी सूतक है, जब अग्नि भड़कती है तो वह जगत को भस्म कर देती है।

ਸੂਤਕੁ ਜਲਿ ਥਲਿ ਸਭ ਹੀ ਥਾਇ ॥
सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥
जल, धरती हर कहीं सूतक विद्यमान है।

ਨਾਨਕ ਸੂਤਕਿ ਜਨਮਿ ਮਰੀਜੈ ॥
नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥
हे नानक ! सूतक में प्राणी जन्मते-मरते रहते हैं,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੮॥੪॥
गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥८॥४॥
गुरु की कृपा से हरि रस का पान करते रहना चाहिए॥८॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु आसा महला १ ॥
रागु आसा महला १ ॥

ਆਪੁ ਵੀਚਾਰੈ ਸੁ ਪਰਖੇ ਹੀਰਾ ॥
आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥
जो मनुष्य आप विचार करता है वह नाम रूपी हीरे की परख कर लेता है।

ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਤਾਰੇ ਗੁਰ ਪੂਰਾ ॥
एक द्रिसटि तारे गुर पूरा ॥
पूर्ण गुरु अपनी एक कृपादृष्टि से ही मनुष्य का (संसार सागर से) उद्धार कर देता है।

ਗੁਰੁ ਮਾਨੈ ਮਨ ਤੇ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੧॥
गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥१॥
जो इन्सान सच्चे दिल से गुरु पर श्रद्धा धारण करता है, उसका मन चंचल नहीं होता ॥ १॥

ਐਸਾ ਸਾਹੁ ਸਰਾਫੀ ਕਰੈ ॥
ऐसा साहु सराफी करै ॥
गुरु ऐसा साहुकार है जो अपने शिष्यों को परखता है।

ਸਾਚੀ ਨਦਰਿ ਏਕ ਲਿਵ ਤਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साची नदरि एक लिव तरै ॥१॥ रहाउ ॥
उसकी अचूक दयादृष्टि से मनुष्य को प्रभु-प्रेम की देन मिल जाती है और उसका उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਸਾਰੁ ॥
पूंजी नामु निरंजन सारु ॥
निरंजन प्रभु के नाम की राशि-पूंजी सर्वोत्तम है।

ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚਿ ਰਤਾ ਪੈਕਾਰੁ ॥
निरमलु साचि रता पैकारु ॥
जो सत्य से रंगा हुआ है, वह महापुरुष पवित्र है।

ਸਿਫਤਿ ਸਹਜ ਘਰਿ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥
सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥२॥
उसकी प्रशंसा गान करने से वह गुरु-कर्तार को सहज ही अपने हृदय-घर में बसा लेता है॥ २॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
आसा मनसा सबदि जलाए ॥
जो अपनी आशा एवं तृष्णा को शब्द द्वारा जला देता है,

ਰਾਮ ਨਰਾਇਣੁ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥
राम नराइणु कहै कहाए ॥
वह राम-नारायण के नाम का स्वयं भजन करता है और दूसरों से भी भजन करवाता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਵਾਟ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਏ ॥੩॥
गुर ते वाट महलु घरु पाए ॥३॥
वह गुरु के माध्यम से प्रभु के महल एवं घर का मार्ग खोज लेता है॥ ३॥

ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਜੋਤਿ ਅਨੂਪੁ ॥
कंचन काइआ जोति अनूपु ॥
उसकी काया प्रभु की अनूप ज्योति से सोना हो जाती है और

त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥
त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥
वह सभी तीन लोकों में प्रभु का स्वरूप देख लेता है।

मै सो धनु पलै साचु अखुटु ॥४॥
मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥४॥
मेरे दामन में प्रभु नाम का सच्चा एवं अक्षय धन है॥ ४॥

पंच तीनि नव चारि समावै ॥
पंच तीनि नव चारि समावै ॥
प्रभु पाँच तत्वों, माया के तीन गुणों, नवखण्डों एवं चारों दिशाओं में व्यापक हुआ है।

धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥
धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥
अपनी सत्ता कायम करके वह धरती एवं गगन को सहारा दे रहा है।

बाहरि जातउ उलटि परावै ॥५॥
बाहरि जातउ उलटि परावै ॥५॥
प्रभु प्राणी के बाहर दौड़ते हुए मन को उल्ट कर सन्मार्ग पर ले आता है॥ ५ ॥

मूरखु होइ न आखी सूझै ॥
मूरखु होइ न आखी सूझै ॥
जो मूर्ख है, वह अपनी आत्मिक आँखों से नहीं देखता।

जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥
जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥
उसकी जिह्म रस नहीं देती और जो कुछ उसे कहा जाता है, वह उसे नहीं समझता।

बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥६॥
बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥६॥
वह विषैली माया में मस्त होकर दुनिया के साथ झगड़ता रहता है॥ ६॥

ਊਤਮ ਸੰਗਤਿ ਊਤਮੁ ਹੋਵੈ ॥
ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥
उत्तम संगति करने से इन्सान उत्तम बन जाता है।

ਗੁਣ ਕਉ ਧਾਵੈ ਅਵਗਣ ਧੋਵੈ ॥
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥
ऐसा मनुष्य गुणों के पीछे भागता है और अपने अवगुणों को मिटा देता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸਹਜੁ ਨ ਹੋਵੈ ॥੭॥
बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥७॥
गुरु की सेवा के बिना सहज सुख प्राप्त नहीं होता।॥ ७॥

ਹੀਰਾ ਨਾਮੁ ਜਵੇਹਰ ਲਾਲੁ ॥
हीरा नामु जवेहर लालु ॥
प्रभु का नाम हीरा, जवाहर एवं माणिक है।

ਮਨੁ ਮੋਤੀ ਹੈ ਤਿਸ ਕਾ ਮਾਲੁ ॥
मनु मोती है तिस का मालु ॥
इन्सान का मोती जैसा अनमोल मन उस स्वामी का धन है।

ਨਾਨਕ ਪਰਖੈ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੁ ॥੮॥੫॥
नानक परखै नदरि निहालु ॥८॥५॥
हे नानक ! प्रभु भक्तजनों की परख करता है और कृपादृष्टि से उन्हें कृतार्थ कर देता है॥ ८॥ ५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਮਨਿ ਮਾਨੁ ॥
गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥
गुरु के माध्यम से ही ज्ञान, ध्यान एवं मन को संतोष प्राप्त होते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਹਲੀ ਮਹਲੁ ਪਛਾਨੁ ॥
गुरमुखि महली महलु पछानु ॥
गुरु के समक्ष होकर ही प्रभु का महल पहचाना जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦੁ ਨੀਸਾਨੁ ॥੧॥
गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥१॥
गुरुमुख बनकर ही प्रभु का नाम मनुष्य की सुरति में प्रगट हो जाता है। १॥

ਐਸੇ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥
ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥
इस तरह प्रभु की प्रेम-भक्ति का चिन्तन किया जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुख बन कर ही मुरारी प्रभु का सत्यनाम प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿਰਮਲੁ ਥਾਨਿ ਸੁਥਾਨੁ ॥
अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥
जो गुरुमुख बनता है वह दिन-रात निर्मल रहता है और सुन्दर स्थान में बसता है।

ਤੀਨ ਭਵਨ ਨਿਹਕੇਵਲ ਗਿਆਨੁ ॥
तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥
उसे तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है।

ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਤੇ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਨੁ ॥੨॥
साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥२॥
सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु का हुक्म पहचाना जाता है॥ २॥

ਸਾਚਾ ਹਰਖੁ ਨਾਹੀ ਤਿਸੁ ਸੋਗੁ ॥
साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥
वह सच्ची प्रसन्नता प्राप्त करता है और उसे कोई दु:ख स्पर्श नहीं करता।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗਿਆਨੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਭੋਗੁ ॥
अम्रितु गिआनु महा रसु भोगु ॥
वह अमृत ज्ञान एवं महारस का आनंद प्राप्त करता है।

ਪੰਚ ਸਮਾਈ ਸੁਖੀ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ॥੩॥
पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥३॥
उसके कामादिक पाँचों विकार नष्ट हो जाते हैं और वह सारी दुनिया में सुखी हो जाता है॥ ३॥

ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
सगली जोति तेरा सभु कोई ॥
हे प्रभु ! तेरी ज्योति सब में मौजूद है और हर कोई तेरा ही है।

ਆਪੇ ਜੋੜਿ ਵਿਛੋੜੇ ਸੋਈ ॥
आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥
वह स्वयं ही मिलाता और स्वयं ही जुदा करता है।

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥੪॥
आपे करता करे सु होई ॥४॥
जो कुछ सृजनहार प्रभु स्वयं करता है, वही होता है॥ ४॥

ਢਾਹਿ ਉਸਾਰੇ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ॥
ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥
ईश्वर स्वयं ही सृष्टि को ध्वस्त करके स्वयं ही निर्मित करता है, उसके हुक्म अनुसार ही सृष्टि पुनः उसमें समा जाती है।

ਹੁਕਮੋ ਵਰਤੈ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ॥
हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥
जो कुछ उसे अच्छा लगता है, उसके हुक्म अनुसार हो जाता है।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਪੂਰਾ ਕੋਇ ਨ ਪਾਵੈ ॥੫॥
गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥५॥
गुरु के बिना कोई भी पूर्ण प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता ॥ ५॥

ਬਾਲਕ ਬਿਰਧਿ ਨ ਸੁਰਤਿ ਪਰਾਨਿ ॥
बालक बिरधि न सुरति परानि ॥
प्राणी को बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में कोई होश नहीं होती।

ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਬੂਡੈ ਅਭਿਮਾਨਿ ॥
भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥
भरपूर यौवन में वह अभिमान में डूब जाता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਲਹਸਿ ਨਿਦਾਨਿ ॥੬॥
बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥६॥
नाम के बिना वह मूर्ख क्या प्राप्त कर सकता है?॥ ६॥

ਜਿਸ ਕਾ ਅਨੁ ਧਨੁ ਸਹਜਿ ਨ ਜਾਨਾ ॥
जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥
मनुष्य उस प्रभु को नहीं जानता, जिसका दिया अन्न एवं धन वह इस्तेमाल करता है।

ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ॥
भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥
दुविधा में कुमार्गगामी होकर वह तदुपरांत पछताता है।

ਗਲਿ ਫਾਹੀ ਬਉਰਾ ਬਉਰਾਨਾ ॥੭॥
गलि फाही बउरा बउराना ॥७॥
परन्तु मूर्ख मनुष्य के गले में मोह की फाँसी पड़ी हुई है॥ ७॥

ਬੂਡਤ ਜਗੁ ਦੇਖਿਆ ਤਉ ਡਰਿ ਭਾਗੇ ॥
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥
इस संसार को (मोह-माया में) डूबता हुआ देखकर मनुष्य भयभीत होकर भाग जाते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਵਡਭਾਗੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਗੇ ॥੮॥੬॥
सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥८॥६॥
जिनकी सच्चे गुरु ने रक्षा की है, वे बड़े भाग्यशाली हैं। हे नानक ! वे गुरु के चरणों से लग जाते हैं।॥ ८॥ ६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਗਾਵਹਿ ਗੀਤੇ ਚੀਤਿ ਅਨੀਤੇ ॥
गावहि गीते चीति अनीते ॥
कुछ लोग भगवान के भजन गीत गाते हैं लेकिन उनके चित्त में बुरे विचार होते हैं।

ਰਾਗ ਸੁਣਾਇ ਕਹਾਵਹਿ ਬੀਤੇ ॥
राग सुणाइ कहावहि बीते ॥
वह राग सुना कर विद्वान कहलाते हैं,

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਨਿ ਝੂਠੁ ਅਨੀਤੇ ॥੧॥
बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥१॥
लेकिन नाम के बिना उनके मन में झूठ और बुरे विचार भरे रहते हैं।॥ १॥

ਕਹਾ ਚਲਹੁ ਮਨ ਰਹਹੁ ਘਰੇ ॥
कहा चलहु मन रहहु घरे ॥
हे मन ! तुम कहाँ जाते हो ? अपने हृदय घर में ही वास करो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਖੋਜਤ ਪਾਵਹੁ ਸਹਜਿ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुख राम के नाम से तृप्त हो जाते हैं और खोज करने से वह सहज ही प्रभु को ढूंढ लेते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਨਿ ਮੋਹੁ ਸਰੀਰਾ ॥
कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥
जिस व्यक्ति के मन में काम-क्रोध निवास करते हैं, उसे शरीर का मोह चिपका रहता है।

ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਸੁ ਪੀਰਾ ॥
लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥
लालच, लोभ एवं अहंकार उसके मन को बहुत दुखी करते हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਉ ਮਨੁ ਧੀਰਾ ॥੨॥
राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥२॥
राम के नाम बिना मन को धैर्य कैसे आ सकता है?॥ २॥

ਅੰਤਰਿ ਨਾਵਣੁ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥
अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥
जो मनुष्य अपने अन्तर्मन को नाम सरोवर में स्नान कराता है, वह सत्य को पहचान लेता है।

ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੈ ॥
अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥
गुरुमुख अपने अन्तर्मन की गति को स्वयं ही जानता है।

ਸਾਚ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਮਹਲੁ ਨ ਪਛਾਣੈ ॥੩॥
साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥३॥
सच्चे शब्द के बिना प्रभु का महल अनुभव नहीं किया जा सकता॥ ३॥

ਨਿਰੰਕਾਰ ਮਹਿ ਆਕਾਰੁ ਸਮਾਵੈ ॥
निरंकार महि आकारु समावै ॥
जो अपने आकार को निरंकार प्रभु में लीन कर देता है और

ਅਕਲ ਕਲਾ ਸਚੁ ਸਾਚਿ ਟਿਕਾਵੈ ॥
अकल कला सचु साचि टिकावै ॥
सर्वकला सम्पूर्ण सत्य में बसता है,

ਸੋ ਨਰੁ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥੪॥
सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥४॥
वह मनुष्य दोबारा योनियों में प्रवेश नहीं करता॥ ४॥

ਜਹਾਂ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਹ ਜਾਉ ॥
जहां नामु मिलै तह जाउ ॥
जहाँ नाम मिलता है, तुम वहीं जाओ।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕਰਮ ਕਮਾਉ ॥
गुर परसादी करम कमाउ ॥
गुरु की दया से शुभ कर्म करो।

ਨਾਮੇ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥੫॥
नामे राता हरि गुण गाउ ॥५॥
नाम में अनुरक्त होकर हरि का गुणगान करो।॥ ५॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਆਪੁ ਪਛਾਤਾ ॥
गुर सेवा ते आपु पछाता ॥
गुरु की सेवा से मैंने अपने आत्मस्वरूप को समझ लिया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
अम्रित नामु वसिआ सुखदाता ॥
सुखदाता नामामृत अब मेरे हृदय में बसता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਬਾਣੀ ਨਾਮੇ ਰਾਤਾ ॥੬॥
अनदिनु बाणी नामे राता ॥६॥
मैं रात-दिन गुरुवाणी एवं नाम में लीन रहता हूँ॥ ६॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਲਾਏ ਤਾ ਕੋ ਲਾਗੈ ॥
मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥
यदि मेरा प्रभु लगाए तो ही कोई उससे जुड़ सकता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਸਬਦੇ ਜਾਗੈ ॥
हउमै मारे सबदे जागै ॥
यदि मनुष्य अहंकार को नष्ट कर दे तो वह शब्द की तरफ जागता रहता है।

ਐਥੈ ਓਥੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ॥੭॥
ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥७॥
लोक-परलोक में वह सदैव सुख में रहता है॥ ७॥

ਮਨੁ ਚੰਚਲੁ ਬਿਧਿ ਨਾਹੀ ਜਾਣੈ ॥
मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥
चंचल मन युक्ति नहीं जानता।

ਮਨਮੁਖਿ ਮੈਲਾ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਣੈ ॥
मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥
मनमुख मैला व्यक्ति शब्द को नहीं समझता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥੮॥
गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥८॥
लेकिन गुरुमुख मनुष्य निर्मल नाम को उच्चरित करता हैं।॥ ८ ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਆਗੈ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥
मैं पूज्य परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि

ਸਾਧੂ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਹੋਇ ਨਿਵਾਸੁ ॥
साधू जन संगति होइ निवासु ॥
मुझे साधु जनों की संगति में निवास मिल जाए।

ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਕਾਟੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ॥੯॥
किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥९॥
हरि के नाम का प्रकाश पापों एवं दुखों को दूर कर देता है ॥९॥

ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੁ ਆਚਾਰੁ ਪਰਾਤਾ ॥
करि बीचारु आचारु पराता ॥
मैंने साधुओं से विचार करके शुभ-आचरण बना लिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨੀ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥
सतिगुर बचनी एको जाता ॥
सतिगुरु के वचनों द्वारा मैंने एक परमात्मा को समझ लिया है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੧੦॥੭॥
नानक राम नामि मनु राता ॥१०॥७॥
हे नानक ! राम के नाम से मेरा मन रंग गया है॥ १० ॥ ७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਮਨੁ ਮੈਗਲੁ ਸਾਕਤੁ ਦੇਵਾਨਾ ॥
मनु मैगलु साकतु देवाना ॥
यह मन शाक्त एवं पागल हाथी है।

ਬਨ ਖੰਡਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਹੈਰਾਨਾ ॥
बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥
यह मोह-माया के जंगल में आकर्षित हुआ भटकता रहता है।

ਇਤ ਉਤ ਜਾਹਿ ਕਾਲ ਕੇ ਚਾਪੇ ॥
इत उत जाहि काल के चापे ॥
काल के दबाव के कारण यह इधर-उधर जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਿ ਲਹੈ ਘਰੁ ਆਪੇ ॥੧॥
गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥१॥
लेकिन गुरुमुख इन्सान खोजकर अपने भीतर प्रभु का निवास प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਮਨੁ ਨਹੀ ਠਉਰਾ ॥
बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥
गुरु के शब्द बिना मन को सुख का स्थान नहीं मिलता।

ਸਿਮਰਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਅਤਿ ਨਿਰਮਲੁ ਅਵਰ ਤਿਆਗਹੁ ਹਉਮੈ ਕਉਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥१॥ रहाउ ॥
राम नाम को याद करो जो बहुत ही निर्मल है और कड़वा अहंकार त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੁਗਧੁ ਕਹਹੁ ਕਿਉ ਰਹਸੀ ॥
इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥
बताओ, यह मूर्ख मन कैसे बचाया जा सकता है ?"

ਬਿਨੁ ਸਮਝੇ ਜਮ ਕਾ ਦੁਖੁ ਸਹਸੀ ॥
बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥
बिना सोचे-समझे यह मृत्यु का दुख सहन करेगा।

ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ॥
आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥
प्रभु स्वयं ही क्षमा करता है और सतिगुरु से मिलाता है।

ਕਾਲੁ ਕੰਟਕੁ ਮਾਰੇ ਸਚੁ ਪੇਲੈ ॥੨॥
कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥२॥
सत्यस्वरूप प्रभु मृत्यु के कष्टों को कुचल कर मार फेंकता है॥ २॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਕਰਮਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਧਰਮਾ ॥
इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥
यह मन कर्म करता है और यह मन ही धर्म करता है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਪੰਚ ਤਤੁ ਤੇ ਜਨਮਾ ॥
इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥
इस मन का जन्म पाँच तत्वों से हुआ है।

ਸਾਕਤੁ ਲੋਭੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੂੜਾ ॥
साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥
यह लोभी मन शाक्त एवं मूर्ख है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਮਨੁ ਰੂੜਾ ॥੩॥
गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥३॥
गुरु के समक्ष होकर नाम का जाप करने से मन सुन्दर बन जाता है॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨੁ ਅਸਥਾਨੇ ਸੋਈ ॥
गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥
गुरु के माध्यम से ही यह मन सत्य के स्थान पर जा बसता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥
गुरु के माध्यम से ही इसे तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਜੋਗੀ ਭੋਗੀ ਤਪੁ ਤਾਪੈ ॥
इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥
यह मन योगी भोगी है और तपस्या-साधना करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਚੀਨ੍ਹੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੈ ॥੪॥
गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥४॥
गुरु के माध्यम से यह स्वयं ही हरि-प्रभु को समझ लेता है॥ ४॥

ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਹਉਮੈ ਤਿਆਗੀ ॥ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਨਸਾ ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੀ ॥
मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥
यह मन कभी अभिमान छोड़कर वैरागी और कभी त्यागी बन जाता है। हरेक शरीर को तृष्णा एवं दुविधा लगी हुई है।

ਰਾਮ ਰਸਾਇਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਾਖੈ ॥
राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥
जो मनुष्य गुरु के माध्यम से राम नाम रूपी अमृत का पान करता है,

ਦਰਿ ਘਰਿ ਮਹਲੀ ਹਰਿ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ॥੫॥
दरि घरि महली हरि पति राखै ॥५॥
उसकी हरि प्रभु अपने दरबार में प्रतिष्ठा रखता है॥ ५॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਸੂਰ ਸੰਗ੍ਰਾਮਿ ॥
इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥
यह मन राजा है और कभी संग्राम में शूरवीर है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਭਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ॥
इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥
गुरुमुख बनकर नाम की आराधना करने से यह मन निडर हो जाता है।

ਮਾਰੇ ਪੰਚ ਅਪੁਨੈ ਵਸਿ ਕੀਏ ॥
मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥
यह कामादिक पाँच विकारों को मारकर अपने वश में कर लेता है और

ਹਉਮੈ ਗ੍ਰਾਸਿ ਇਕਤੁ ਥਾਇ ਕੀਏ ॥੬॥
हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥६॥
अहंकार को अपनी पकड़ में लेकर मन इनको एक स्थान पर कैद कर देता है॥ ६॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਗ ਸੁਆਦ ਅਨ ਤਿਆਗੇ ॥
गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥
गुरुमुख बनकर मन तमाम राग एवं स्वादों को त्याग देता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਭਗਤੀ ਜਾਗੇ ॥
गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥
गुरु के सम्मुख होकर ही यह मन प्रभु-भक्ति में जाग्रत होता है।

ਅਨਹਦ ਸੁਣਿ ਮਾਨਿਆ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥
अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥
गुरु के शब्द एवं विचार को मानकर मन अनहद नाद सुनता है।

ਆਤਮੁ ਚੀਨ੍ਹਿ ਭਏ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ॥੭॥
आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥७॥
अपने आत्मस्वरूप को समझने से आत्मा निरंकार प्रभु की हो जाती है।॥ ७॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਦਰਿ ਘਰਿ ਸੋਈ ॥
इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥
उस प्रभु के दरबार एवं घर में यह मन निर्मल हो जाता है और

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਭਾਉ ਧੁਨਿ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥
गुरु के माध्यम से इसे प्रभु-भक्ति की प्रीति प्राप्त हो जाती है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ॥
अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥
गुरु की कृपा से मन दिन-रात हरि का यशोगान करता रहता है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ॥੮॥
घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥८॥
जो सृष्टि के आदि में था और युगों-युगांतरों में मौजूद है,जो हरेक शरीर में बसता दिखाई देता है॥ ८॥

ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਤਾ ॥
राम रसाइणि इहु मनु माता ॥
राम रसायण से यह मन मतवाला हुआ रहता है और

ਸਰਬ ਰਸਾਇਣੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ॥
सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥
गुरु के माध्यम से यह सभी रसों के घर प्रभु को अनुभव कर लेता है।

ਭਗਤਿ ਹੇਤੁ ਗੁਰ ਚਰਣ ਨਿਵਾਸਾ ॥
भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥
जब मन गुरु के चरणों में निवास कर लेता है तो प्रभु भक्ति का प्रेम जाग्रत हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਕੇ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ॥੯॥੮॥

नानक हरि जन के दासनि दासा ॥९॥८॥

हे नानक ! तब यह मन भक्तजनों का सेवक बन जाता है ॥९॥८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਤਨੁ ਬਿਨਸੈ ਧਨੁ ਕਾ ਕੋ ਕਹੀਐ ॥
तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥
जब इन्सान का तन नाश हो जाता है तो उसके द्वारा संचित धन किसका कहा जा सकता है ?

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਤ ਲਹੀਐ ॥
बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥
गुरु के बिना राम का नाम कैसे प्राप्त हो सकता है ?

ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਗਿ ਸਖਾਈ ॥
राम नाम धनु संगि सखाई ॥
राम नाम का धन ही सच्चा साथी एवं सहायक है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿਰਮਲੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੧॥
अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥१॥
जो मनुष्य दिन-रात अपनी वृत्ति हरि के साथ लगाकर रखता है, वह निर्मल है॥ १॥

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਵਨੁ ਹਮਾਰਾ ॥
राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥
राम के नाम बिना हमारा कौन है ?

ਸੁਖ ਦੁਖ ਸਮ ਕਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਛੋਡਉ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥१॥ रहाउ ॥
सुख-दुख को एक समान समझकर मैं नाम को नहीं छोड़ता। प्रभु क्षमा करके स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਨਿਕ ਕਾਮਨੀ ਹੇਤੁ ਗਵਾਰਾ ॥
कनिक कामनी हेतु गवारा ॥
मूर्ख मनुष्य सोने एवं सुन्दर नारी से प्रेम करता है।

ਦੁਬਿਧਾ ਲਾਗੇ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਾ ॥
दुबिधा लागे नामु विसारा ॥
दुविधा से जुड़कर उसने नाम को भुला दिया है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਬਖਸਹਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇ ॥
जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥
जिसे प्रभु क्षमा कर देता है, उससे वह अपने नाम का जाप करवाता है।

दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥२॥
दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥२॥
जो प्रभु के गुण गाता है, यमदूत उसे स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥

हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥
हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥
हे हरि ! हे गोपाल ! तू ही मेरा गुरु, दाता एवं राम है।

जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥
जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥
हे दयालु प्रभु ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तुम मेरी रक्षा करो।

गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥
गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥
गुरु के उपदेश से राम मेरे मन को भला लगा है।

रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥३॥
रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥३॥
राम द्वारा मेरे रोग मिट गए हैं और दुःख भी दूर हो गए हैं।॥ ३॥

अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥
अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥
रोगों से बचने के लिए नाम के सिवाय अन्य कोई औषधि, तंत्र एवं मंत्र नहीं।

हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥
हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥
हरि-प्रभु का सिमरन पापों का नाश कर देता है।

तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥
तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं जीवों को कुमार्गगामी करता है और वह तेरे नाम को भुला देते हैं।

ਤੂੰ ਆਪੇ ਰਾਖਹਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੪॥
तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥४॥
तू स्वयं ही अपनी कृपा करके अनेक जीवों की रक्षा करता है॥ ४॥

ਰੋਗੁ ਭਰਮੁ ਭੇਦੁ ਮਨਿ ਦੂਜਾ ॥
रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥
मन को दुविधा, भेदभाव एवं द्वैतवाद का रोग लगा हुआ है।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਭਰਮਿ ਜਪਹਿ ਜਪੁ ਦੂਜਾ ॥
गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥
गुरु के बिना जीव भ्रम में भटकता है और दूसरों का जाप जपता है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਗੁਰ ਦਰਸ ਨ ਦੇਖਹਿ ॥
आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥
उन्हें आदिपुरुष गुरु के दर्शन नहीं होते।

ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਸਬਦੈ ਜਨਮੁ ਕਿ ਲੇਖਹਿ ॥੫॥
विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥५॥
गुरु शब्द के बिना मनुष्य-जन्म कौन से लेखे जोखे में है। ५॥

ਦੇਖਿ ਅਚਰਜੁ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾਦਿ ॥
देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥
आश्चर्यजनक प्रभु को देखकर मैं बहुत चकित हुआ हूँ।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸੁਰ ਨਰ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ॥
घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥
सहज समाधि में वह सबके हृदय में देवताओं एवं मनुष्यों के भीतर समाया हुआ है।

ਭਰਿਪੁਰਿ ਧਾਰਿ ਰਹੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥
पूर्ण व्यापक प्रभु को मैंने अपने मन में बसाया है।

ਤੁਮ ਸਮਸਰਿ ਅਵਰੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੬॥
तुम समसरि अवरु को नाही ॥६॥
हे प्रभु ! तेरे बराबर का दूसरा कोई नहीं ॥ ६ ॥

ਜਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਹੇਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥ ਸੰਤ ਭਗਤ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਰਾਮੁ ॥
जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥
जो भक्ति से प्रेम करता है, उसके मुख में प्रभु का नाम है। संतों एवं भक्तों की संगति में राम का निवास है।

ਬੰਧਨ ਤੋਰੇ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥
बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥
अपने बंधन तोड़कर मनुष्य को प्रभु में सहज ही ध्यान लगाना चाहिए

ਛੂਟੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ॥੭॥
छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥७॥
गुरु-परमात्मा के ज्ञान द्वारा गुरुमुख मुक्त हो जाते हैं।॥ ७ ॥

ਨਾ ਜਮਦੂਤ ਦੂਖੁ ਤਿਸੁ ਲਾਗੈ ॥
ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥
उसे यमदूत एवं कोई भी दुख स्पर्श नहीं करता।

ਜੋ ਜਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਜਾਗੈ ॥
जो जनु राम नामि लिव जागै ॥
मनुष्य राम के नाम में ध्यान लगाकर जागता है,"

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਭਗਤਾ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ॥
भगति वछलु भगता हरि संगि ॥
भक्तवत्सल प्रभु अपने भक्तों के साथ रहता है।

ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੮॥੯॥
नानक मुकति भए हरि रंगि ॥८॥९॥
हे नानक ! हरि के प्रेम द्वारा भक्तजन जन्म-मरण के चक्र से छूट गए हैं।॥ ८ ॥ ९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਇਕਤੁਕੀ ॥
आसा महला १ इकतुकी ॥
आसा महला १ इकतुकी ॥

ਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਠਾਕੁਰ ਜਾਨੈ ॥
गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥
जो व्यक्ति गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करता है, वह ठाकुर जी को जान लेता है।

ਦੂਖੁ ਮਿਟੈ ਸਚੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਨੈ ॥੧॥
दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥१॥
वह शब्द द्वारा सत्य को पहचान लेता है और उसके तमाम दु:ख मिट जाते हैं।॥ १॥

ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ ਮੇਰੀ ਸਖੀ ਸਖੈਨੀ ॥
रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥
हे मेरी सखी-सहेली ! राम का नाम जपो।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਦੇਖਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਨੈਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु की सेवा के फलस्वरूप तुझे अपने नयनों से प्रभु के दर्शन प्राप्त होंगे॥ १॥ रहाउ ॥

ਬੰਧਨ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੰਸਾਰਿ ॥ ਬੰਧਨ ਸੁਤ ਕੰਨਿਆ ਅਰੁ ਨਾਰਿ ॥੨॥
बंधन मात पिता संसारि ॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥२॥
(नाम-सुमिरन के बिना) जगत में माता-पिता मोह के बंधन हैं। पुत्र, कन्या एवं नारी ये सभी मोह के बन्धन हैं।॥ २॥

ਬੰਧਨ ਕਰਮ ਧਰਮ ਹਉ ਕੀਆ ॥
बंधन करम धरम हउ कीआ ॥
अहंकारवश किए गए कर्म-धर्म भी बन्धन हैं।

ਬੰਧਨ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਮਨਿ ਬੀਆ ॥੩॥
बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥३॥
पुत्र, पत्नी एवं मन में किसी दूसरे का प्रेम भी बन्धन है॥ ३॥

ਬੰਧਨ ਕਿਰਖੀ ਕਰਹਿ ਕਿਰਸਾਨ ॥
बंधन किरखी करहि किरसान ॥
कृषकों द्वारा की गई कृषि भी बन्धन है।

ਹਉਮੈ ਡੰਨੁ ਸਹੈ ਰਾਜਾ ਮੰਗੈ ਦਾਨ ॥੪॥
हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥४॥
अपने अहंकार की खातिर मनुष्य दण्ड सहता है और राजा उससे कर माँगता है॥ ४॥

ਬੰਧਨ ਸਉਦਾ ਅਣਵੀਚਾਰੀ ॥
बंधन सउदा अणवीचारी ॥
भले-बुरे की विचार के बिना व्यापार एक बन्धन है।

ਤਿਪਤਿ ਨਾਹੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰੀ ॥੫॥
तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥५॥
माया-मोह के प्रसार से प्राणी तृप्त नहीं होता ॥ ५ ॥

ਬੰਧਨ ਸਾਹ ਸੰਚਹਿ ਧਨੁ ਜਾਇ ॥
बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥
साहूकार धन संचित करते हैं लेकिन यह धन भी अंतत: चला जाता है जो बन्धन ही है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਪਵਈ ਥਾਇ ॥੬॥
बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥६॥
हरि की भक्ति के बिना प्राणी स्वीकृत नहीं होता।॥ ६॥

ਬੰਧਨ ਬੇਦੁ ਬਾਦੁ ਅਹੰਕਾਰ ॥
बंधन बेदु बादु अहंकार ॥
वेद, धार्मिक वाद-विवाद एवं अहंकार बन्धन हैं।

ਬੰਧਨਿ ਬਿਨਸੈ ਮੋਹ ਵਿਕਾਰ ॥੭॥
बंधनि बिनसै मोह विकार ॥७॥
मोह एवं विकारों के बन्धनों द्वारा मनुष्य का नाश हो रहा है॥ ७॥

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਰਣਾਈ ॥
नानक राम नाम सरणाई ॥
नानक ने राम की शरण ली है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਬੰਧੁ ਨ ਪਾਈ ॥੮॥੧੦॥
सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥८॥१०॥
सतिगुरु ने उसकी रक्षा की है, अब उसे कोई बन्धन नहीं है॥ ८ ॥ १० ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੩
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਿਨ ਸਿਰਿ ਸੋਹਨਿ ਪਟੀਆ ਮਾਂਗੀ ਪਾਇ ਸੰਧੂਰੁ ॥
जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
जिन सुन्दर नारियों के सिर पर माँग में सिन्दूर एवं काले केशों की पट्टियाँ शोभायमान होती थीं,

ਸੇ ਸਿਰ ਕਾਤੀ ਮੁੰਨੀਅਨ੍ਹਿ ਗਲ ਵਿਚਿ ਆਵੈ ਧੂੜਿ ॥
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥
उनके सिर कैंची से काटे जा रहे हैं और मुँह में मिट्टी डाली जा रही है।

ਮਹਲਾ ਅੰਦਰਿ ਹੋਦੀਆ ਹੁਣਿ ਬਹਣਿ ਨ ਮਿਲਨ੍ਹਿ ਹਦੂਰਿ ॥੧॥
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥१॥
जो पहले सुन्दर महलों में बसती थीं, अब उन्हें महलों के निकट भी बैठने नहीं दिया जाता॥ १॥

ਆਦੇਸੁ ਬਾਬਾ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु बाबा आदेसु ॥
हे परमपिता ! तुझे शत-शत प्रणाम है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਕਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹਿ ਵੇਸ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥१॥ रहाउ ॥
हे आदिपुरुष ! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता, तू अनेक वेष हरदम रचता एवं अपनी लीला देखता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਦਹੁ ਸੀਆ ਵੀਆਹੀਆ ਲਾੜੇ ਸੋਹਨਿ ਪਾਸਿ ॥
जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥
जब इन सुन्दरियों का विवाह हुआ था, उनके दूल्हे उनके समीप अति सुन्दर लगते थे।

ਹੀਡੋਲੀ ਚੜਿ ਆਈਆ ਦੰਦ ਖੰਡ ਕੀਤੇ ਰਾਸਿ ॥
हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥
वे डोली में बैठकर आई थीं, इन्होंने हाथी दांत के सुन्दर चूड़े सजाए हुए थे।

ਉਪਰਹੁ ਪਾਣੀ ਵਾਰੀਐ ਝਲੇ ਝਿਮਕਨਿ ਪਾਸਿ ॥੨॥
उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥२॥
ससुराल आगमन पर स्वागत् के समय उन पर शगुनों का जल वार दिया था, झिलमिल करते पंखे उन पर फेरे जाते थे॥ २॥

ਇਕੁ ਲਖੁ ਲਹਨਿ੍ ਬਹਿਠੀਆ ਲਖੁ ਲਹਨਿ੍ ਖੜੀਆ ॥
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥
जब वह ससुराल में बैठी थीं तो लाखों रुपए उन्हें दिए गए थे और जब खड़ी हुई तो लाखों ही भेंट किए गए।

ਗਰੀ ਛੁਹਾਰੇ ਖਾਂਦੀਆ ਮਾਣਨਿ੍ ਸੇਜੜੀਆ ॥
गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥
वह गिरी छुहारे खाती थीं और सुन्दर सेज़ों पर शयन करती थीं।

ਤਿਨ੍ ਗਲਿ ਸਿਲਕਾ ਪਾਈਆ ਤੁਟਨਿ੍ ਮੋਤਸਰੀਆ ॥੩॥
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥३॥
अब उनके गले पर दुष्टों ने रस्सी डाली हुई हैं और उनकी मोतियों की माला टूट गई हैं।॥ ३॥

ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਦੁਇ ਵੈਰੀ ਹੋਏ ਜਿਨ੍ੀ ਰਖੇ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥
धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
धन एवं यौवन पर उनको बहुत गर्व था परन्तु आज दोनों ही उनके वैरी बन गए हैं।

ਦੂਤਾ ਨੋ ਫੁਰਮਾਇਆ ਲੈ ਚਲੇ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥
बाबर ने अपने क्रूर सिपाहियों को आदेश दिया हुआ है, जो उनकी इज्जत लूटकर उन्हें ले जा रहे हैं।

ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਜੇ ਭਾਵੈ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੪॥
जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥४॥
यदि ईश्वर को भला लगे तो वह आदर-सम्मान प्रदान करता है, यदि उसकी रज़ा हो तो वह दण्ड देता है॥ ४॥

ਅਗੋ ਦੇ ਜੇ ਚੇਤੀਐ ਤਾਂ ਕਾਇਤੁ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥
यदि इन्सान पहले ही प्रभु का नाम याद करता रहे, तो उसे दण्ड क्यों मिले?"

ਸਾਹਾਂ ਸੁਰਤਿ ਗਵਾਈਆ ਰੰਗਿ ਤਮਾਸੈ ਚਾਇ ॥
साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥
रंग-तमाशों एवं रंगरलियों में हाकिमों ने अपनी होश गंवा दी थी।

ਬਾਬਰਵਾਣੀ ਫਿਰਿ ਗਈ ਕੁਇਰੁ ਨ ਰੋਟੀ ਖਾਇ ॥੫॥
बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥५॥
जब बाबर के शासन का ढिंढोरा पिट गया तो किसी (पठान) शहजादे ने भोजन नहीं खाया ॥ ५॥

ਇਕਨਾ ਵਖਤ ਖੁਆਈਅਹਿ ਇਕਨ੍ਹਾ ਪੂਜਾ ਜਾਇ ॥
इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥
कई मुसलमानों के पाँच नमाजों के वक्त छिन गए हैं और कई हिन्दुओं का पूजा-पाठ का समय चला गया है।

ਚਉਕੇ ਵਿਣੁ ਹਿੰਦਵਾਣੀਆ ਕਿਉ ਟਿਕੇ ਕਢਹਿ ਨਾਇ ॥
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥
हिन्दु स्त्रियों न स्नान करके तिलक लगा सकती हैं, न ही उनके चौके पवित्र रह गए हैं।

ਰਾਮੁ ਨ ਕਬਹੂ ਚੇਤਿਓ ਹੁਣਿ ਕਹਣਿ ਨ ਮਿਲੈ ਖੁਦਾਇ ॥੬॥
रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥६॥
जिन हिन्दुओं ने कभी भी राम को याद नहीं किया था। अब उन्हें खुदा-खुदा कहना भी नहीं मिलता॥ ६॥

ਇਕਿ ਘਰਿ ਆਵਹਿ ਆਪਣੈ ਇਕਿ ਮਿਲਿ ਮਿਲਿ ਪੁਛਹਿ ਸੁਖ ॥
इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥
बाबर के बन्दीगृह से जो विरले पुरुष बचकर अपने घर आते हैं, वे परस्पर मिलकर कुशलक्षेम पूछते हैं।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਏਹੋ ਲਿਖਿਆ ਬਹਿ ਬਹਿ ਰੋਵਹਿ ਦੁਖ ॥
इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥
उनके भाग्य में यह मुसीबत पूर्वलिखित थी, वे एक दूसरे के पास बैठकर अपना-अपना दुःख रोते हैं।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਮਾਨੁਖ ॥੭॥੧੧॥
जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥७॥११॥
हे नानक ! बेचारे मनुष्य के वश में क्या है? जो कुछ परमात्मा को उपयुक्त लगता है, केवल वही होता है॥ ७॥ ११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕਹਾ ਸੁ ਖੇਲ ਤਬੇਲਾ ਘੋੜੇ ਕਹਾ ਭੇਰੀ ਸਹਨਾਈ ॥
कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥
अभी की बात है कि सैदपुर में खुशियाँ एवं रौनक ही थी लेकिन वे खेल, अस्तबल और घोड़े कहाँ हैं ? नगारे और शहनाई कहाँ है ?"

ਕਹਾ ਸੁ ਤੇਗਬੰਦ ਗਾਡੇਰੜਿ ਕਹਾ ਸੁ ਲਾਲ ਕਵਾਈ ॥
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥
कहाँ हैं पश्मीने के तेगबन्द और कहाँ है वे लाल वर्दियाँ ?

ਕਹਾ ਸੁ ਆਰਸੀਆ ਮੁਹ ਬੰਕੇ ਐਥੈ ਦਿਸਹਿ ਨਾਹੀ ॥੧॥
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥१॥
वह शीशे-जड़ित अंगूठियाँ एवं सुन्दर चेहरे कहाँ हैं ? वह अब यहाँ दिखाई नहीं देते ॥१॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਤੇਰਾ ਤੂ ਗੋਸਾਈ ॥
इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥
हे ईश्वर ! यह जगत तेरा पैदा किया हुआ है, तू सबका मालिक है।

ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੇ ਜਰੁ ਵੰਡਿ ਦੇਵੈ ਭਾਂਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥१॥ रहाउ ॥
इस सृष्टि की एक घड़ी में ही रचना करके इसे नष्ट भी कर देता है। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, तू बादशाहों का धन दूसरों को बाँट देता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਹਾਂ ਸੁ ਘਰ ਦਰ ਮੰਡਪ ਮਹਲਾ ਕਹਾ ਸੁ ਬੰਕ ਸਰਾਈ ॥
कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥
कहाँ है वह घर, दर, मण्डप एवं महल ? कहीं है वह सुन्दर सराय ?

ਕਹਾਂ ਸੁ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਕਾਮਣਿ ਜਿਸੁ ਵੇਖਿ ਨੀਦ ਨ ਪਾਈ ॥
कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥
कहाँ है सुन्दरी की वह सुखदायक सेज, जिसे देखकर रात को नींद नहीं आती थी ?

ਕਹਾ ਸੁ ਪਾਨ ਤੰਬੋਲੀ ਹਰਮਾ ਹੋਈਆ ਛਾਈ ਮਾਈ ॥੨॥
कहा सु पान त्मबोली हरमा होईआ छाई माई ॥२॥
कहाँ है पान और पान बेचने वाली स्त्रियाँ और कहाँ हैं पर्दे में रहने वाली नारियाँ ? सब कहीं लुप्त हो गई हैं। २॥

ਇਸੁ ਜਰ ਕਾਰਣਿ ਘਣੀ ਵਿਗੁਤੀ ਇਨਿ ਜਰ ਘਣੀ ਖੁਆਈ ॥
इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
इस धन के कारण बहुत तबाह हो गए हैं। इस धन ने अधिकतर को बर्बाद किया है।

ਪਾਪਾ ਬਾਝਹੁ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਮੁਇਆ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਈ ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
पापों के बिना यह धन एकत्रित नहीं होता और मृतकों के साथ यह नहीं जाता।

ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਖੁਆਏ ਕਰਤਾ ਖੁਸਿ ਲਏ ਚੰਗਿਆਈ ॥੩॥
जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥३॥
जिसे कर्ता प्रभु स्वयं नष्ट करता है पहले वह उससे अच्छाई छीन लेता है॥ ३॥

ਕੋਟੀ ਹੂ ਪੀਰ ਵਰਜਿ ਰਹਾਏ ਜਾ ਮੀਰੁ ਸੁਣਿਆ ਧਾਇਆ ॥
कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥
जब पठान हाकिमों ने सुना कि मीर बाबर हमला करने आ रहा है तो उन्होंने बहुत सारे पीर-पैगम्बरों को जादू-टोने के लिए रोके रखा।

ਥਾਨ ਮੁਕਾਮ ਜਲੇ ਬਿਜ ਮੰਦਰ ਮੁਛਿ ਮੁਛਿ ਕੁਇਰ ਰੁਲਾਇਆ ॥
थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥
मुगलों ने पठानों के घर, सुख के निवास एवं मजबूत महल जला दिए और टुकड़े-टुकड़े किए हुए शहजादों को मिट्टी में मिला दिया।

ਕੋਈ ਮੁਗਲੁ ਨ ਹੋਆ ਅੰਧਾ ਕਿਨੈ ਨ ਪਰਚਾ ਲਾਇਆ ॥੪॥
कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥४॥
कोई मुगल अन्धा न हुआ और किसी ने भी कोई करामात नहीं दिखाई॥ ४॥

ਮੁਗਲ ਪਠਾਣਾ ਭਈ ਲੜਾਈ ਰਣ ਮਹਿ ਤੇਗ ਵਗਾਈ ॥
मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥
मुगलों एवं पठानों के बीच भयंकर लड़ाई हुई और रणभूमि में खूब तलवार चलाई गई।

ਓਨ੍ੀ ਤੁਪਕ ਤਾਣਿ ਚਲਾਈ ਓਨ੍ੀ ਹਸਤਿ ਚਿੜਾਈ ॥
ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥
मुगलों ने अपनी बन्दूकों के निशाने लगा-लगाकर गोलियाँ चलाई और उन पठानों ने हाथियों से आक्रमण किया!

ਜਿਨ੍ ਕੀ ਚੀਰੀ ਦਰਗਹ ਪਾਟੀ ਤਿਨ੍ਾ ਮਰਣਾ ਭਾਈ ॥੫॥
जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥५॥
हे भाई ! प्रभु के दरबार से जिनकी आयु की चिट्ठी फाड़ दी जाती है, उन्हें अवश्य ही मरना पड़ता है॥ ५॥

ਇਕ ਹਿੰਦਵਾਣੀ ਅਵਰ ਤੁਰਕਾਣੀ ਭਟਿਆਣੀ ਠਕੁਰਾਣੀ ॥
इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥
क्या हिन्दू नारियाँ, क्या मुसलमान औरतें, क्या भाटों एवं ठाकुरों की स्त्रियां-

ਇਕਨ੍ਾ ਪੇਰਣ ਸਿਰ ਖੁਰ ਪਾਟੇ ਇਕਨ੍ਾ ਵਾਸੁ ਮਸਾਣੀ ॥
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥
कितनी ही औरतों के वस्त्र सिर से पैरों तक फटे हुए थे और कितनी ही औरतों का निवास श्मशान में हो गया था।

ਜਿਨ੍ ਕੇ ਬੰਕੇ ਘਰੀ ਨ ਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਕਿਉ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥੬॥
जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥६॥
जिनके सुन्दर पति घरों में नहीं आए, उनकी रात्रि कैसे बीती होगी॥ ६॥

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ॥
आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥
यह दर्द भरी दास्तान किसे कहकर सुनाई जाए ? क्योंकि कर्ता प्रभु स्वयं ही करता और जीवों से करवाता है।

दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥
दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥
हे जग के रचयिता ! जीवों को दुख-सुख तेरी रज़ा में ही होता है। तेरे सिवाय किसके पास जाकर अपना दुःख रोएं।

हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥
हे नानक ! अपने हुक्म का स्वामी परमात्मा अपने हुक्म में ही दुनिया का कार्य चलाता है और प्रसन्न होता है। इन्सान अपनी तकदीर में लिखे लेख अनुसार ही दुःख सुख भोगता है॥ ७॥ १२॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਕਾਫੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੮ ਅਸਟਪਦੀਆ ॥
आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥
आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥

ਜੈਸੇ ਗੋਇਲਿ ਗੋਇਲੀ ਤੈਸੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥
जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥
जिस प्रकार ग्वाला चरागाह में अल्प समय के लिए पशु लेकर आता है, वैसे ही इन्सान थोड़े समय के लिए संसार में आता है।

ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹਿ ਆਦਮੀ ਬਾਂਧਹਿ ਘਰ ਬਾਰਾ ॥੧॥
कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घर बारा ॥१॥
आदमी झूठ की कमाई करते हैं और अपना घर-द्वार निर्मित करते हैं।॥ १॥

ਜਾਗਹੁ ਜਾਗਹੁ ਸੂਤਿਹੋ ਚਲਿਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥१॥ रहाउ ॥
हे अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवो ! जागो, देखो कि वणजारा जीव दुनिया में से जा रहा है॥ १॥ रहाउ ॥

ਨੀਤ ਨੀਤ ਘਰ ਬਾਂਧੀਅਹਿ ਜੇ ਰਹਣਾ ਹੋਈ ॥
नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥
हमेशा रहने वाले घर तभी बनाने चाहिए, यदि दुनिया में सदैव जीवित रहना हो।

ਪਿੰਡੁ ਪਵੈ ਜੀਉ ਚਲਸੀ ਜੇ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥੨॥
पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥२॥
परन्तु यदि कोई विचार करे तो उसे ज्ञान हो जाएगा कि जब आत्मा चली जाती है तो शरीर भी पार्थिव हो जाता है॥ २॥

ਓਹੀ ਓਹੀ ਕਿਆ ਕਰਹੁ ਹੈ ਹੋਸੀ ਸੋਈ ॥
ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥
तुम क्यों क्यों हाय ! हाय !! करते हो। आत्मा तो अब भी है और सदैव रहेगी।

ਤੁਮ ਰੋਵਹੁਗੇ ਓਸ ਨੋ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਕਉ ਕਉਣੁ ਰੋਈ ॥੩॥
तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥३॥
यदि तुम किसी की मृत्यु पर रोते हो तो तुम्हें कौन रोएगा ॥ ३॥

ਧੰਧਾ ਪਿਟਿਹੁ ਭਾਈਹੋ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹੁ ॥
धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥
हे मेरे भाई ! तुम लोग सांसारिक धन्धों में ग्रस्त हुए हो और झूठ की कमाई करते हो।

ਓਹੁ ਨ ਸੁਣਈ ਕਤ ਹੀ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਲੋਕ ਸੁਣਾਵਹੁ ॥੪॥
ओहु न सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥४॥
वह मृतक बिल्कुल नहीं सुनता। तुम केवल दूसरे लोगों को ही अपना रोना सुनाते हो।॥ ४॥

ਜਿਸ ਤੇ ਸੁਤਾ ਨਾਨਕਾ ਜਾਗਾਏ ਸੋਈ ॥
जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥
हे नानक ! जिस मालिक ने अपने हुक्म से उसे सुलाया है, वही उसे जगाएगा।

ਜੇ ਘਰੁ ਬੂਝੈ ਆਪਣਾ ਤਾਂ ਨੀਦ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥
जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥५॥
यदि मनुष्य अपने असली घर को समझ ले उसे नींद नहीं आती॥ ५॥

ਜੇ ਚਲਦਾ ਲੈ ਚਲਿਆ ਕਿਛੁ ਸੰਪੈ ਨਾਲੇ ॥
जे चलदा लै चलिआ किछु स्मपै नाले ॥
यदि परलोक को जाता हुआ मनुष्य कुछ संपति साथ ले गया है

ਤਾ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਦੇਖਿ ਕੈ ਬੂਝਹੁ ਬੀਚਾਰੇ ॥੬॥
ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥६॥
तो तू भी धन संचित करके देख, सोच-समझ और विचार कर॥ ६॥

ਵਣਜੁ ਕਰਹੁ ਮਖਸੂਦੁ ਲੈਹੁ ਮਤ ਪਛੋਤਾਵਹੁ ॥
वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥
ऐसा नाम का व्यापार कर जिससे जीवन-मनोरथ का लाभ प्राप्त हो सके, अन्यथा पछताना पड़ेगा।

ਅਉਗਣ ਛੋਡਹੁ ਗੁਣ ਕਰਹੁ ਐਸੇ ਤਤੁ ਪਰਾਵਹੁ ॥੭॥
अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥
अवगुण छोड़कर गुण ग्रहण करो, इस तरह तुझे सच्ची कमाई प्राप्त होगी॥ ७॥

ਧਰਮੁ ਭੂਮਿ ਸਤੁ ਬੀਜੁ ਕਰਿ ਐਸੀ ਕਿਰਸ ਕਮਾਵਹੁ ॥
धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥
शरीर रूपी धर्मभूमि में सत्य का बीज बोओ। इस प्रकार की कृषि करो।

ਤਾਂ ਵਾਪਾਰੀ ਜਾਣੀਅਹੁ ਲਾਹਾ ਲੈ ਜਾਵਹੁ ॥੮॥
तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥८॥
यदि तुम लाभ प्राप्त करके ले जाओगे तो बुद्धिमान व्यापारी समझे जाओगे॥ ८॥

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਬੂਝੈ ਬੀਚਾਰਾ ॥
करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥
यदि प्रभु की मेहर हो तो जीव सतिगुरु से मिलता है और उसके उपदेश को समझता है।

ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ਸੁਣੇ ਨਾਮੁ ਨਾਮੇ ਬਿਉਹਾਰਾ ॥੯॥
नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥९॥
वह नाम उच्चरित करता है, नाम सुनता एवं नाम का ही व्यापार करता है॥ ६॥

ਜਿਉ ਲਾਹਾ ਤੋਟਾ ਤਿਵੈ ਵਾਟ ਚਲਦੀ ਆਈ ॥
जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥
जैसे नाम सुनने से लाभ है, वैसे ही नाम भुलाने से नुक्सान है। संसार की यह मर्यादा सदा से ही चली आ रही है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਸਾਈ ਵਡਿਆਈ ॥੧੦॥੧੩॥
जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥१०॥१३॥
हे नानक ! ईश्वर को जो कुछ भला लगता है वही होता है, यही उसकी महिमा है॥ १०॥ १३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਢੂਢੀਆ ਕੋ ਨੀਮ੍ਹ੍ਰੀ ਮੈਡਾ ॥
चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥
मैंने चारों दिशाओं में खोज की है परन्तु मेरा कोई भी हितैषी नहीं है।

ਜੇ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਹਿਬਾ ਤੂ ਮੈ ਹਉ ਤੈਡਾ ॥੧॥
जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥१॥
हे मेरे मालिक ! यदि तुझे अच्छा लगे तो तू मेरा रखवाला है और मैं तेरा सेवक हूँ॥ १॥

ਦਰੁ ਬੀਭਾ ਮੈ ਨੀਮ੍ਹ੍ਰਿ ਕੋ ਕੈ ਕਰੀ ਸਲਾਮੁ ॥
दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥
मेरे लिए तेरे बिना दूसरा कोई शरण-द्वार नहीं है, मैं किसे वन्दना करूँ ?"

ਹਿਕੋ ਮੈਡਾ ਤੂ ਧਣੀ ਸਾਚਾ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥१॥ रहाउ ॥
तू ही मेरा स्वामी है, तेरा सत्य नाम मेरे मुँह में हमेशा रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਿਧਾ ਸੇਵਨਿ ਸਿਧ ਪੀਰ ਮਾਗਹਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ॥
सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥
कुछ लोग सिद्धों एवं पीरों की सेवा करते हैं और उनसे ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ मांगते हैं।

ਮੈ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਬੁਧਿ ॥੨॥
मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर बुधि ॥२॥
मुझे एक परमात्मा का नाम न भूले, सतिगुरु ने मुझे यह सुमति प्रदान की है॥ २ ॥

ਜੋਗੀ ਭੋਗੀ ਕਾਪੜੀ ਕਿਆ ਭਵਹਿ ਦਿਸੰਤਰ ॥
जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥
योगी, भोगी एवं फटे-पुराने वस्त्र पहनने वाले फकीर निरर्थक ही परदेसों में भटकते रहते हैं।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਨ ਚੀਨ੍ਹੀ ਤਤੁ ਸਾਰੁ ਨਿਰੰਤਰ ॥੩॥
गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥३॥
वह गुरु के शब्द एवं निरन्तर श्रेष्ठ सच्चाई को नहीं खोजते ॥ ३ ॥

ਪੰਡਿਤ ਪਾਧੇ ਜੋਇਸੀ ਨਿਤ ਪੜ੍ਹਹਿ ਪੁਰਾਣਾ ॥
पंडित पाधे जोइसी नित पड़्हहि पुराणा ॥
पण्डित, प्रचारक एवं ज्योतिषी नित्यही पुराण इत्यादि ग्रंथों को पढ़ते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਣਨ੍ਹੀ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਲੁਕਾਣਾ ॥੪॥
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४॥
लेकिन वह अन्तर में नाम वस्तु को नहीं पहचानते, परब्रह्म हृदय में छिपा हुआ है॥ ४॥

ਇਕਿ ਤਪਸੀ ਬਨ ਮਹਿ ਤਪੁ ਕਰਹਿ ਨਿਤ ਤੀਰਥ ਵਾਸਾ ॥
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
कई तपस्वी वनों में तपस्या करते हैं और कई नित्य ही तीर्थों पर निवास करते हैं।

ਆਪੁ ਨ ਚੀਨਹਿ ਤਾਮਸੀ ਕਾਹੇ ਭਏ ਉਦਾਸਾ ॥੫॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५॥
वह तामसी पुरुष अपने आत्मस्वरूप को नहीं समझते, वह किसके लिए विरक्त हुए हैं ? ॥ ५॥

ਇਕਿ ਬਿੰਦੁ ਜਤਨ ਕਰਿ ਰਾਖਦੇ ਸੇ ਜਤੀ ਕਹਾਵਹਿ ॥
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
कई प्रयास करके वीर्य को संयमित करते हैं, इस प्रकार वे ब्रह्मचारी कहलाए जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਬਦ ਨ ਛੂਟਹੀ ਭ੍ਰਮਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ॥੬॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥
लेकिन फिर भी गुरु के शब्द बिना उनकी मुक्ति नहीं होती और भ्रम में पड़कर जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं।॥ ६॥

ਇਕਿ ਗਿਰਹੀ ਸੇਵਕ ਸਾਧਿਕਾ ਗੁਰਮਤੀ ਲਾਗੇ ॥
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
कई गृहस्थी, प्रभु के सेवक, साधक हैं और वह गुरु की मति अनुसार चलते हैं।

ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਦ੍ਰਿੜੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁ ਜਾਗੇ ॥੭॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥
वह नाम, दान, स्नान को सुदृढ़ करते हैं और प्रभु की भक्ति में सचेत रहते हैं।॥ ७॥

ਗੁਰ ਤੇ ਦਰੁ ਘਰੁ ਜਾਣੀਐ ਸੋ ਜਾਇ ਸਿਞਾਣੈ ॥
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥
गुरु के माध्यम से ही प्रभु का घर-द्वार जाना जाता है और मनुष्य उस स्थान को पहचान लेता है

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸਾਚੇ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥੮॥੧੪॥
नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥८॥१४॥
हे नानक ! उसे प्रभु का नाम कभी नहीं भूलता, उसका मन सत्य की स्मृति में रम गया है ॥८॥१४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਇਲੇ ਭਉਜਲੁ ਸਚਿ ਤਰਣਾ ॥
मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥
अपनी इच्छाओं को मन में ही नियंत्रित करके सत्य द्वारा भवसागर से पार हुआ जा सकता है।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਦਇਆਲੁ ਤੂ ਠਾਕੁਰ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥੧॥
आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥१॥
हे ठाकुर ! तू जगत के आदि युगों-युगान्तरों से ही सब पर दयालु है और मैं तेरी ही शरण में आया हूँ॥ १॥

ਤੂ ਦਾਤੌ ਹਮ ਜਾਚਿਕਾ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥
तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥
तू दाता है और मैं तेरे दर का भिखारी हूँ। हे हरि ! मुझे दर्शन देकर कृतार्थ करो।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮਨ ਮੰਦਰੁ ਭੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु के माध्यम से नाम का ध्यान करने से मन-मन्दिर हरि-नाम से भीग जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਕੂੜਾ ਲਾਲਚੁ ਛੋਡੀਐ ਤਉ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥
कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥
जब मनुष्य झूठे लालच को छोड़ देता है तो वह सत्य को पहचान लेता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਈਐ ਪਰਮਾਰਥੁ ਜਾਣੈ ॥੨॥
गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥२॥
गुरु के शब्द में समाया हुआ वह जीवन के परमार्थ को समझ लेता है॥ २॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਜਾ ਲੋਭੀਆ ਲੁਭਤਉ ਲੋਭਾਈ ॥
इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥
यह लोभी मन शरीर रूपी नगरी का बादशाह है जो सदैव लोभ में आकर्षित हुआ (मोहिनी का) लोभ करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੋਭੁ ਨਿਵਾਰੀਐ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬਣਿ ਆਈ ॥੩॥
गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥३॥
गुरु के माध्यम से लोभ दूर हो जाता है और मनुष्य का प्रभु से प्रेम बन जाता है॥ ३॥

ਕਲਰਿ ਖੇਤੀ ਬੀਜੀਐ ਕਿਉ ਲਾਹਾ ਪਾਵੈ ॥
कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥
बंजर भूमि में फसल बीज कर मनुष्य कैसे लाभ प्राप्त कर सकता है?

ਮਨਮੁਖੁ ਸਚਿ ਨ ਭੀਜਈ ਕੂੜੁ ਕੂੜਿ ਗਡਾਵੈ ॥੪॥
मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥४॥
मनमुख सत्य से खुश नहीं होता। ऐसा झूठा मनुष्य झूठ में फँसा रहता है। ४॥

ਲਾਲਚੁ ਛੋਡਹੁ ਅੰਧਿਹੋ ਲਾਲਚਿ ਦੁਖੁ ਭਾਰੀ ॥
लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥
हे अन्धे जीवो ! मोहिनी का लालच त्याग दो अन्यथा लालच का भारी दु:ख सहना पड़ेगा।

ਸਾਚੌ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਮਾਰੀ ॥੫॥
साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥५॥
यदि सत्यस्वरूप साहिब मन में बस जाए तो अहंकार का विष निवृत्त हो जाता है॥ ५॥

ਦੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਕੁਵਾਟੜੀ ਮੁਸਹੁਗੇ ਭਾਈ ॥
दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥
हे मेरे भाई ! दुविधा के कुमार्ग को त्याग दो अन्यथा लूटे जाओगे।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੬॥
अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥६॥
दिन-रात गुरु की शरण में नाम का स्तुतिगान करो ॥ ६ ॥

ਮਨਮੁਖ ਪਥਰੁ ਸੈਲੁ ਹੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਫੀਕਾ ॥
मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥
मनमुख (का हृदय) एक पत्थर एवं चट्टान है और उसका जीवन धिक्कार योग्य एवं नीरस है।

ਜਲ ਮਹਿ ਕੇਤਾ ਰਾਖੀਐ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਸੂਕਾ ॥੭॥
जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥७॥
पत्थर को कितनी ही देर तक पानी में रखा जाए तो भी अभ्यंतर से सूखा ही रहता है।॥ ७ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे हरि का नाम दिया है, जो गुणों का भण्डार है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਮਥਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆ ॥੮॥੧੫॥
नानक नामु न वीसरै मथि अम्रितु पीआ ॥८॥१५॥
हे नानक ! जिस व्यक्ति ने नाम रूपी अमृत को मंथन करके पी लिया है, वह नाम को कभी भी नहीं भूलता॥॥ ८॥१५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਚਲੇ ਚਲਣਹਾਰ ਵਾਟ ਵਟਾਇਆ ॥
चले चलणहार वाट वटाइआ ॥
जीव रूपी मुसाफिर सद्मार्ग से विचलित होकर कुमार्ग पर चल रहे हैं।

ਧੰਧੁ ਪਿਟੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਚੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥੧॥
धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥१॥
यह नश्वर संसार सांसारिक धन्धों में लीन है और सत्य से स्नेह नहीं करता ॥ १॥

ਕਿਆ ਭਵੀਐ ਕਿਆ ਢੂਢੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਦਿਖਾਇਆ ॥
किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥
जिस व्यक्ति को गुरु-शब्द ने सत्य (परमात्मा) दिखा दिया है, फिर वह इधर-उधर क्यों भटकता फिरे और क्यों खोज-तलाश करे।

ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਵਿਸਰਜਿਆ ਅਪਨੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥
अब वह ममता एवं मोह को त्याग कर अपने घर (प्रभु के पास) आ गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸਚਿਆਰੁ ਕੂੜਿ ਨ ਪਾਈਐ ॥
सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥
सत्यवादियों को ही सत्य (प्रभु) मिलता है। झूठ से यह पाया नहीं जाता।

ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਬਹੁੜਿ ਨ ਆਈਐ ॥੨॥
सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥२॥
सत्य के साथ चित्त लगाने से मनुष्य दोबारा जगत में नहीं आता॥ २॥

ਮੋਇਆ ਕਉ ਕਿਆ ਰੋਵਹੁ ਰੋਇ ਨ ਜਾਣਹੁ ॥
मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥
हे बन्धु ! तुम मृतक संबंधी हेतु क्यों रोते हो ? तुम्हें यथार्थ तौर पर रोना ही नहीं आता।

ਰੋਵਹੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਹੁ ॥੩॥
रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥३॥
सत्यस्वरूप प्रभु की सराहना करते हुए प्रेम में विलाप करो और उसके हुक्म को पहचानो ॥ ३॥

ਹੁਕਮੀ ਵਜਹੁ ਲਿਖਾਇ ਆਇਆ ਜਾਣੀਐ ॥
हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥
जिसके भाग्य में भगवान ने नाम के निर्वाह की प्राप्ति लिखी है, उसका आगमन सफल है।

ਲਾਹਾ ਪਲੈ ਪਾਇ ਹੁਕਮੁ ਸਿਞਾਣੀਐ ॥੪॥
लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥४॥
उसके हुक्म को अनुभव करने से प्राणी लाभ प्राप्त कर लेता है॥ ४॥

ਹੁਕਮੀ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ਦਰਗਹ ਭਾਣੀਐ ॥
हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥
यदि विधाता को भला लगे तो मनुष्य प्रतिष्ठा की पोशाक पहन कर उसके दरबार में जाता है।

ਹੁਕਮੇ ਹੀ ਸਿਰਿ ਮਾਰ ਬੰਦਿ ਰਬਾਣੀਐ ॥੫॥
हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥५॥
उसकी आज्ञा से ही यम प्राणी के सिर पर चोट करते हैं और उसे कैद में डाला जाता है॥ ५॥

ਲਾਹਾ ਸਚੁ ਨਿਆਉ ਮਨਿ ਵਸਾਈਐ ॥
लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥
सत्य एवं न्याय को अपने मन में बसाने से मनुष्य लाभ प्राप्त करता है।

ਲਿਖਿਆ ਪਲੈ ਪਾਇ ਗਰਬੁ ਵਞਾਈਐ ॥੬॥
लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥६॥
जो कुछ उसके भाग्य में लिखा हुआ है, मनुष्य उसे पा लेता है अतः इन्सान को अहंकार त्याग देना चाहिए ॥ ६॥

ਮਨਮੁਖੀਆ ਸਿਰਿ ਮਾਰ ਵਾਦਿ ਖਪਾਈਐ ॥
मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥
स्वेच्छाचारी लोगों की खूब पिटाई होती है और विवादों में नष्ट हो जाते हैं।

ਠਗਿ ਮੁਠੀ ਕੂੜਿਆਰ ਬੰਨਿ੍ ਚਲਾਈਐ ॥੭॥
ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥७॥
कपटियों को झूठ ने लूट लिया है। यमदूत उन्हें बांध कर आगे यमलोक ले जाते हैं।॥ ७ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਇ ਨ ਪਛੋਤਾਵਹੀ ॥
साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥
जो मालिक को अपने हृदय में बसाते हैं, उन्हें पश्चाताप नहीं करना पड़ेगा।

ਗੁਨਹਾਂ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ਸਬਦੁ ਕਮਾਵਹੀ ॥੮॥
गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥८॥
यदि मनुष्य गुरु के उपदेश पर अनुसरण करे तो प्रभु उसके गुनाह क्षमा कर देता है॥ ८॥

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਸਚੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਾਲੀਐ ॥
नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥
नानक सत्य ही माँगता है जो गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है।

ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ॥੯॥੧੬॥

मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥९॥१६॥

हे प्रभु ! तेरे बिना मेरा कोई सहारा नहीं, मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि करो ॥९॥१६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥

आसा महला १ ॥

आसा महला १ ॥

ਕਿਆ ਜੰਗਲੁ ਢੂਢੀ ਜਾਇ ਮੈ ਘਰਿ ਬਨੁ ਹਰੀਆਵਲਾ ॥

किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥

मैं जंगल में (भगवान को) ढूंढने हेतु क्यों जाऊँ, जबकि मेरा अपना घर (हृदय) ही एक हरा-भरा वन है अर्थात् इस में ही भगवान दृष्टि-मान होता है।

ਸਚਿ ਟਿਕੈ ਘਰਿ ਆਇ ਸਬਦਿ ਉਤਾਵਲਾ ॥੧॥

सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥१॥

शब्द द्वारा सत्य हृदय-घर में बस जाता है और खुद भी मिलने हेतु उत्सुक है॥ १॥

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਸੋਇ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣੀਐ ॥

जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥

जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ वहीं मेरा भगवान विद्यमान है। जग में उसके सिवाय कोई नहीं समझना चाहिए अर्थात् वह सारे जग में बसा हुआ है

ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ਮਹਲੁ ਪਛਾਣੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु की सेवा करने से प्रभु के महल की पहचान हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸਚੁ ਤਾ ਮਨਿ ਭਾਵਈ ॥

आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥

जब सत्य परमेश्वर - जीव को अपने साथ मिला लेता है तो वह जीव के मन में अच्छा लगने लग जाता है।

ਚਲੈ ਸਦਾ ਰਜਾਇ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵਈ ॥੨॥

चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥२॥

जो मनुष्य सदैव ही प्रभु की रज़ा अनुसार चलता है, वह उसकी गोद में लीन हो जाता है॥ २॥

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਸੋਈ ॥
सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥
सच्चा साहिब जिस प्राणी के हृदय में बस जाता है, उसे अपने हृदय में वही सत्य बसा हुआ दृष्टिगोचर होता है।

ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈਆ ਦੇ ਤੋਟਿ ਨ ਹੋਈ ॥੩॥
आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥३॥
भगवान स्वयं ही महानता प्रदान करता है। उसकी देनों में किसी पदार्थ की कमी नहीं ॥ ३॥

ਅਬੇ ਤਬੇ ਕੀ ਚਾਕਰੀ ਕਿਉ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ॥
अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥
किसी ऐरा गैरा की सेवा करके मनुष्य भगवान के दरबार को कैसे प्राप्त हो सकता है?

ਪਥਰ ਕੀ ਬੇੜੀ ਜੇ ਚੜੈ ਭਰ ਨਾਲਿ ਬੁਡਾਵੈ ॥੪॥
पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥४॥
यदि मनुष्य - पत्थर की नाव में सवार होकर जाए, वह इसके भार से ही डूब जाएगा ॥ ४ ॥

ਆਪਨੜਾ ਮਨੁ ਵੇਚੀਐ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਨਾਲੇ ॥
आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥
अपना मन गुरु के पास बेच देना चाहिए और अपना सिर भी साथ ही अर्पित कर देना चाहिए।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸਤੁ ਪਛਾਣੀਐ ਅਪਨਾ ਘਰੁ ਭਾਲੇ ॥੫॥
गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥५॥
फिर गुरु द्वारा ही नाम-पदार्थ पहचाना जाता है और मनुष्य को अपना हृदय घर मिल जाता है॥ ५॥

ਜੰਮਣ ਮਰਣਾ ਆਖੀਐ ਤਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕੀਆ ॥
जमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥
लोग जन्म-मरण की बातें करते हैं। यह सब कुछ उस विधाता ने किया है।

ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਮਰਿ ਰਹੇ ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਥੀਆ ॥੬॥
आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥६॥
जो अपना अहंकार गंवा कर मर जाते हैं, वे जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ते॥ ६॥

ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਧੁਰ ਕੀ ਫੁਰਮਾਈ ॥
साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥
मनुष्य को वही कार्य करना चाहिए, जिस बारे विधाता ने उसे हुक्म किया है।

ਜੇ ਮਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇ ਮਿਲੈ ਕਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥੭॥
जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥७॥
यदि मनुष्य सतिगुरु से मिलकर अपना मन उसको अर्पित कर दे तो उसका मूल्यांकन कौन पा सकता है ?॥ ७॥

ਰਤਨਾ ਪਾਰਖੁ ਸੋ ਧਣੀ ਤਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥
रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥
वह प्रभु स्वयं रत्नों की परख करता है और इनका मूल्यांकन करता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ॥੮॥੧੭॥
नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥८॥१७॥
हे नानक ! यदि मालिक-प्रभु मन में बस जाए तो यही मेरे लिए सच्ची बडाई है॥८॥१७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਜਿਨ੍ੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਦੂਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈ ॥
जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥
जिन लोगों ने भगवान के नाम को भुला दिया है, वे द्वैतवाद में फँसकर भ्रम में ही भटकते रहते हैं।

ਮੂਲੁ ਛੋਡਿ ਡਾਲੀ ਲਗੇ ਕਿਆ ਪਾਵਹਿ ਛਾਈ ॥੧॥
मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥१॥
जो मूल (भगवान) को त्यागकर पेड़ों की डालियों में लगे हैं, उन्हें जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होता।॥ १॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਉ ਛੂਟੀਐ ਜੇ ਜਾਣੈ ਕੋਈ ॥
बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥
नाम के बिना मनुष्य कैसे मुक्त हो सकता है ? अच्छा हो यदि कोई इसे समझ ले।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਤ ਛੂਟੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥१॥ रहाउ ॥
यदि गुरुमुख हो जाए तो वह जन्म-मरण से छूट जाता है लेकिन स्वेच्छाचारी अपनी इज्जत गंवा लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ੍ਹੀ ਏਕੋ ਸੇਵਿਆ ਪੂਰੀ ਮਤਿ ਭਾਈ ॥
जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥
हे भाई ! जो मनुष्य एक ईश्वर की सेवा भक्ति करते हैं, उनकी बुद्धि पूर्ण है।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਨਿਰੰਜਨਾ ਜਨ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥
आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥२॥
निरंजन परमात्मा जगत के आदि में और युगों के आदि में भी था, भक्तजन उस हरि की शरण में ही पड़े हुए हैं।॥ २॥

ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਹੈ ਅਵਰੁ ਨਹੀ ਭਾਈ ॥
साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥
हे भाई ! मेरा मालिक एक परमात्मा ही है, दूसरा कोई नहीं।

ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਾਚੇ ਪਰਥਾਈ ॥੩॥
किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥३॥
सच्चे परमात्मा की कृपा से मुझे सुख उपलब्ध हुआ है॥ ३॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਕੇਤੀ ਕਹੈ ਕਹਾਏ ॥
गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥
गुरु के बिना किसी को भी परमात्मा नहीं मिला चाहे कितनी ही दुनिया उसे पाने की अनेक विधियाँ बताती है।

ਆਪਿ ਦਿਖਾਵੈ ਵਾਟੜੀਂ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥੪॥
आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए ॥४॥
भगवान स्वयं मार्ग दिखाता है और सच्ची भक्ति मनुष्य के हृदय में दृढ़ करता है॥ ४॥

ਮਨਮੁਖੁ ਜੇ ਸਮਝਾਈਐ ਭੀ ਉਝੜਿ ਜਾਏ ॥
मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए ॥
यदि स्वेच्छाचारी को सद्मार्ग का उपदेश दिया जाए तो भी वह कुमार्ग ही जाता है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਛੂਟਸੀ ਮਰਿ ਨਰਕ ਸਮਾਏ ॥੫॥
बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥५॥
हरि के नाम बिना वह जन्म-मरण से छुटकारा नहीं पा सकता और मर कर वह नरक में ही पड़ा रहता है॥ ५॥

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਭਰਮਾਈਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵੈ ॥
जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥
जो मनुष्य हरि के नाम का सुमिरन नहीं करता, वह जन्म-मरण के चक्र में भटकता रहता है।

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵੈ ॥੬॥

ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥६॥

गुरु की सेवा किए बिना उसका मूल्य नहीं पाया जा सकता ॥ ६॥

ਜੇਹੀ ਸੇਵ ਕਰਾਈਐ ਕਰਣੀ ਭੀ ਸਾਈ ॥
जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥
भगवान जैसी सेवा मनुष्य से करवाता है, वह वैसा ही कार्य करता है। भगवान स्वयं ही करता है।

ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਵੇਖੈ ਵਡਿਆਈ ॥੭॥
आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥७॥
मैं किसका वर्णन करूँ वह अपनी महानता को आप ही देखता है॥ ७॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥
गुरु की सेवा वही मनुष्य करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है।

ਨਾਨਕ ਸਿਰੁ ਦੇ ਛੁਟੀਐ ਦਰਗਹ ਪਤਿ ਪਾਏ ॥੮॥੧੮॥
नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ॥८॥१८॥
हे नानक ! (गुरु के समक्ष) अपना सिर अर्पण करके मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है और प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करता है॥ ८ ॥ १८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਰੂੜੋ ਠਾਕੁਰ ਮਾਹਰੋ ਰੂੜੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ॥
रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥
मेरा ठाकुर सुन्दर एवं सर्वोपरि है और गुरुवाणी भी अत्यंत सुन्दर है।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਪਾਈਐ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੧॥
वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥१॥
पूर्ण सौभाग्य से ही सच्चा गुरु मिलता है, जिनके द्वारा निर्वाण पद मिलता है।॥ १॥

ਮੈ ਓਲ੍ਹਹਗੀਆ ਓਲ੍ਹਹਗੀ ਹਮ ਛੋਰੂ ਥਾਰੇ ॥
मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे ॥
हे मेरे भगवान ! मैं तेरे सेवकों का सेवक हूँ। मैं तेरा तुच्छ नौकर हूँ।

ਜਿਉ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਉ ਰਹਾ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥१॥ रहाउ ॥

जैसे तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ, तेरा नाम मेरे मुख में है॥ १॥ रहाउ ॥

ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸਾ ਘਣੀ ਭਾਣੈ ਮਨਿ ਭਾਈਐ ॥

दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥

हे स्वामी ! तेरे दर्शनों की मुझे तीव्र लालसा है।तेरी रज़ा में ही तू मन को भला लगने लग जाता है।

ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਾਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਭਾਣੈ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ॥੨॥

मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥२॥

मेरे ठाकुर के हाथ में सब उपलब्धियां हैं, उसकी इच्छा से ही सम्मान प्राप्त होता है॥ २॥

ਸਾਚਉ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣੀਐ ਅੰਤਰਿ ਹੈ ਸੋਈ ॥

साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥

सत्य को दूर नहीं समझना चाहिए, वह हरेक प्राणी के अन्तर्मन में विद्यमान है।

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਕਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਹੋਈ ॥੩॥

जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥३॥

मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, वही मैं अपने भगवान को व्यापक पाता हूँ। हे प्रभु ! तेरा मूल्यांकन मैं किस तरह कर सकता हूँ? ॥ ३॥

ਆਪਿ ਕਰੇ ਆਪੇ ਹਰੇ ਵੇਖੈ ਵਡਿਆਈ ॥

आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥

प्रभु स्वयं ही दुनिया की रचना करता है और स्वयं ही नाश कर देता है। वह अपनी महानता स्वयं ही देखता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਨਿਹਾਲੀਐ ਇਉ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥

गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥४॥

गुरुमुख बनकर ही प्रभु के दर्शन प्राप्त होते हैं, इस तरह उसका मूल्यांकन पाया जाता है॥ ४॥

ਜੀਵਦਿਆ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਗੁਰ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥

जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥

गुरु की सेवा करने से ही मनुष्य को जीवन में प्रभु नाम का लाभ मिलता है।

ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਵੈ ॥੫॥
पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥५॥
लेकिन सच्चा गुरु भी मनुष्य को तभी प्राप्त होता है यदि पूर्व जन्मों के किए शुभ कर्मों के संस्कार लिखे हुए हों।॥ ५॥

ਮਨਮੁਖ ਤੋਟਾ ਨਿਤ ਹੈ ਭਰਮਹਿ ਭਰਮਾਏ ॥
मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य के आत्मिक गुणों में नित्य कमी आती रहती है और वह दुविधा में भटकता रहता है।

ਮਨਮੁਖੁ ਅੰਧੁ ਨ ਚੇਤਈ ਕਿਉ ਦਰਸਨੁ ਪਾਏ ॥੬॥
मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥६॥
माया में अन्धा हुआ स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु को याद नहीं करता। फिर वह कैसे उसके दर्शन प्राप्त कर सकता है?॥ ६॥

ਤਾ ਜਗਿ ਆਇਆ ਜਾਣੀਐ ਸਾਚੈ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥
इस जगत में केवल तभी मनुष्य का जन्म सफल समझा जाता है, यदि वह सत्यस्वरूप प्रभु में ध्यान लगाता है।

ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਪਾਰਸੁ ਭਏ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਏ ॥੭॥
गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥७॥
गुरु से मिलकर मनुष्य पारस की भाँति बन जाता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में मिल जाती है॥ ७॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਹੈ ਨਿਰਾਲਮੋ ਕਾਰ ਧੁਰ ਕੀ ਕਰਣੀ ॥
अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥
वह दिन-रात निर्लेप होकर विचरता है और परमात्मा की रज़ानुसार कार्य करता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੀਆ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ॥੮॥੧੯॥
नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥८॥१९॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में संतुष्ट हो गए हैं, वह भगवान के चरणों में मग्न रहते हैं॥ ८॥ १६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਕੇਤਾ ਆਖਣੁ ਆਖੀਐ ਤਾ ਕੇ ਅੰਤ ਨ ਜਾਣਾ ॥
केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥
भगवान के गुणों का मैं जितना मन चाहे वर्णन करूँ परन्तु उसका अन्त नहीं जाना जा सकता।

ਮੈ ਨਿਧਰਿਆ ਧਰ ਏਕ ਤੂੰ ਮੈ ਤਾਣੁ ਸਤਾਣਾ ॥੧॥
मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥१॥
हे भगवान ! तुम ही निराश्रित के आश्रय हो, तुम ही बलहीनों के बल हो।॥ १॥

ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਹੈ ਸਚ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲਾ ॥
नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥
नानक की यही प्रार्थना है कि वह सत्य नाम में लीन होकर सुखी रहे।

ਆਪੁ ਗਇਆ ਸੋਝੀ ਪਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥१॥ रहाउ ॥
जब अहंकार मिट गया तो मुझे सुमति प्राप्त हो गई। गुरु-शब्द द्वारा मेरा परमात्मा से मिलाप हो गया।॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉਮੈ ਗਰਬੁ ਗਵਾਈਐ ਪਾਈਐ ਵੀਚਾਰੁ ॥
हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥
अहंकार एवं गर्व को त्याग कर मनुष्य विवेक प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਦੇ ਸਾਚੁ ਅਧਾਰੁ ॥੨॥
साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥२॥
जब मनुष्य का मन भगवान के साथ मिल जाता है तो वह उसे सत्यनाम का सहारा देता है॥ २॥

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮਿ ਸੰਤੋਖੀਆ ਸੇਵਾ ਸਚੁ ਸਾਈ ॥
अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥
दिन-रात नाम से संतुष्ट रहो, वही सच्ची सेवा है।

ਤਾ ਕਉ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗਈ ਚਾਲੈ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ॥੩॥
ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥३॥
जो प्राणी रज़ा के स्वामी भगवान के हुक्म अनुसार चलता है, उसे कोई विघ्न नहीं आता॥ ३॥

ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਜੋ ਚਲੈ ਸੋ ਪਵੈ ਖਜਾਨੈ ॥
हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥
जो प्राणी प्रभु के हुक्म को स्वीकार करता है, वह प्रभु-खजाने में डाला जाता है।

ਖੋਟੇ ਠਵਰ ਨ ਪਾਇਨੀ ਰਲੇ ਜੂਠਾਨੈ ॥੪॥
खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥४॥
खोटे लोगों को कोई स्थान नहीं मिलता, उनका झूठों के साथ मेल-मिलाप है॥ ४॥

ਨਿਤ ਨਿਤ ਖਰਾ ਸਮਾਲੀਐ ਸਚੁ ਸਉਦਾ ਪਾਈਐ ॥
नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥
यदि नित्य ही निर्मल नाम को याद किया जाए तो ही सत्य का सौदा खरीदा जाता है।

ਖੋਟੇ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਨੀ ਲੇ ਅਗਨਿ ਜਲਾਈਐ ॥੫॥
खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥५॥
प्रभु के खजाने में खोटे सिक्के दिखाई नहीं देते, वह पकड़ कर अग्नि में जला दिए जाते हैं।॥ ५॥

ਜਿਨੀ ਆਤਮੁ ਚੀਨਿਆ ਪਰਮਾਤਮੁ ਸੋਈ ॥
जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥
जो लोग अपने आत्मिक जीवन को परख लेते हैं, उन्हें परमात्मा की पहचान हो जाती है।

ਏਕੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਫਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੋਈ ॥੬॥
एको अम्रित बिरखु है फलु अम्रितु होई ॥६॥
एक ईश्वर अमृत का वृक्ष है, जिसे अमृत का फल लगा हुआ है॥ ६॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਜਿਨੀ ਚਾਖਿਆ ਸਚਿ ਰਹੇ ਅਘਾਈ ॥
अम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥
जो मनुष्य अमृत फल को चखते हैं, वे सत्य के साथ तृप्त रहते हैं।

ਤਿੰਨਾ ਭਰਮੁ ਨ ਭੇਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੭॥
तिंना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥७॥
जिनकी जिव्हा हरि रस को मानती है, उन्हें कोई भ्रम एवं भेद नहीं रहता॥ ७ ॥

ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਆਇਆ ਚਲੁ ਸਦਾ ਰਜਾਈ ॥
हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥
प्रभु के हुक्म एवं संयोग से ही जीव संसार में आया है इसलिए सदैव उसकी रजा में चलना चाहिए।

ਅਉਗਣਿਆਰੇ ਕਉ ਗੁਣੁ ਨਾਨਕੈ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ॥੮॥੨੦॥
अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥८॥२०॥
हे प्रभु ! मुझ गुणहीन नानक को गुण प्रदान करो, मुझे सत्य मिल जाए, मेरे लिए यही बड़ाई है॥ ८ ॥ २० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਮਨੁ ਰਾਤਉ ਹਰਿ ਨਾਇ ਸਚੁ ਵਖਾਣਿਆ ॥
मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥
जब से मेरा मन हरि नाम से रंगा है, तब से मैंने सत्य का ही बखान किया है।

ਲੋਕਾ ਦਾ ਕਿਆ ਜਾਇ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਣਿਆ ॥੧॥
लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥१॥
हे परमेश्वर ! लोगों का क्या बिगड़ता है, यदि मैं तुझे अच्छा लगने लग गया हूँ॥ १॥

ਜਉ ਲਗੁ ਜੀਉ ਪਰਾਣ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ॥
जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥
जब तक जीवन एवं प्राण हैं तब तक सत्य का ध्यान करते रहना चाहिए।

ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का गुणानुवाद करने से लाभ प्राप्त होता है और सुख उपलब्ध होता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕਾਰ ਦੇਹਿ ਦਇਆਲ ਤੂੰ ॥
सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥
हे दयालु स्वामी ! तेरी सेवा-भक्ति सत्य है, यह मुझे प्रदान कीजिए।

ਹਉ ਜੀਵਾ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹਿ ਮੈ ਟੇਕ ਅਧਾਰੁ ਤੂੰ ॥੨॥
हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥२॥
मैं तेरी स्तुति करके जीवन जीता हूँ, तू ही मेरी जीवन की टेक एवं आधार है॥ २॥

ਦਰਿ ਸੇਵਕੁ ਦਰਵਾਨੁ ਦਰਦੁ ਤੂੰ ਜਾਣਹੀ ॥
दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥
हे भगवान् ! मैं तेरा सेवक एवं तेरे द्वार पर द्वारपाल हूँ। तू ही मेरा दर्द जानता है।

ਭਗਤਿ ਤੇਰੀ ਹੈਰਾਨੁ ਦਰਦੁ ਗਵਾਵਹੀ ॥੩॥
भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥३॥
हे ठाकुर ! तेरी भक्ति आश्चर्यजनक है, जो सभी दर्द मिटा देती है॥ ३॥

ਦਰਗਹ ਨਾਮੁ ਹਦੂਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਸੀ ॥
दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥
गुरुमुख जानते हैं कि हरि के नाम का सुमिरन करने से वह उसके दरबार में स्वीकृत हो जाएँगे।

ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਪਰਵਾਣੁ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਸੀ ॥੪॥
वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥४॥
सत्य परमात्मा को इन्सान का वही जीवन समय मंजूर है, जब वह शब्द की पहचान करता है॥ ४॥

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਕਰਿ ਭਾਉ ਤੋਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੇਇ ॥
सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥
जो मनुष्य सत्य, संतोष एवं प्रेम की कमाई करते हैं, वह हरि नाम का यात्रा खर्च प्राप्त कर लेते हैं।

ਮਨਹੁ ਛੋਡਿ ਵਿਕਾਰ ਸਚਾ ਸਚੁ ਦੇਇ ॥੫॥
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥५॥
अपने मन से विकारों को छोड़ देना चाहिए, सद्पुरुष तुझे सत्य प्रदान करेगा ॥ ५॥

ਸਚੇ ਸਚਾ ਨੇਹੁ ਸਚੈ ਲਾਇਆ ॥
सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥
सत्यस्वरूप परमात्मा सत्यवादियों को अपना सच्चा प्रेम लगा देता है।

ਆਪੇ ਕਰੇ ਨਿਆਉ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਇਆ ॥੬॥
आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥६॥
प्रभु स्वयं ही न्याय करता है, जो उसे अच्छा लगता है॥ ६॥

ਸਚੇ ਸਚੀ ਦਾਤਿ ਦੇਹਿ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ॥
सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥
हे सत्य के पुंज ! तू बड़ा दयालु है, मुझे अपने नाम की सच्ची देन दीजिए।

ਤਿਸੁ ਸੇਵੀ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੁ ਹੈ ॥੭॥
तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥७॥
मैं दिन-रात उसकी सेवा (नाम-स्मरण) करता हूँ, जिसका नाम अमूल्य है॥ ७ ॥

ਤੂੰ ਉਤਮੁ ਹਉ ਨੀਚੁ ਸੇਵਕੁ ਕਾਂਢੀਆ ॥
तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ ॥
हे प्रभु ! तुम उत्तम हो और मैं विनीत हूँ परन्तु फिर भी मैं तेरा सेवक कहलाता हूँ।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇਹੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਵਾਂਢੀਆ ॥੮॥੨੧॥
नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥८॥२१॥
हे सत्यस्वरूप प्रभु ! मुझ नानक पर अपनी दया-दृष्टि धारण करो चूंकि मैं जो तेरे नाम से बिछुड़ा हुआ हूँ, तुझसे मिल जाऊँ॥ ८ ॥ २१ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਕਿਉ ਰਹੈ ਕਿਉ ਮੇਲਾ ਹੋਈ ॥
आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥
इन्सान का आवागमन कैसे मिट सकता है और कैसे वह प्रभु को मिल सकता है ?

ਜਨਮ ਮਰਣ ਕਾ ਦੁਖੁ ਘਣੋ ਨਿਤ ਸਹਸਾ ਦੋਈ ॥੧॥
जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥१॥
जन्म-मरण का दुख बहुत भारी है और दैतवाद मनुष्य को सदैव पीड़ित करते हैं।॥ १॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕਿਆ ਜੀਵਨਾ ਫਿਟੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਚਤੁਰਾਈ ॥
बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥
नाम के बिना इन्सान का जीना व्यर्थ है और उसकी चतुराई पर धिक्कार एवं लानत है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਧੁ ਨ ਸੇਵਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨ ਭਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिस प्राणी ने साधु सच्चे गुरु की सेवा नहीं की, उसे हरि की भक्ति कभी अच्छी नहीं लगती ॥ १॥ रहाउ ॥

ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਤਉ ਰਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥
आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥
जब प्राणी को पूर्ण गुरु मिल जाता है तो उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਦੇਇ ਬਿਨਸੈ ਭ੍ਰਮੁ ਕੂੜਾ ॥੨॥
राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥२॥
गुरु राम-नाम के धन की राशि प्रदान करता है, जिससे झूठा भ्रम नाश हो जाता है।॥ २॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕਉ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਧਨੁ ਧਨੁ ਜਸੁ ਗਾਏ ॥
संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥
जो संतजनों की संगति में रहता है वह भगवान को धन्य-धन्य कहता हुआ उसका यशोगान करता है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਏ ॥੩॥
आदि पुरखु अपर्मपरा गुरमुखि हरि पाए ॥३॥
आदि पुरुष, अपरम्पार प्रभु गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है॥ ३॥

ਨਟੂਐ ਸਾਂਗੁ ਬਣਾਇਆ ਬਾਜੀ ਸੰਸਾਰਾ ॥
नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा ॥
यह संसार रूपी खेल नटुए के स्वांग की भाँति सजा हुआ है।

ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਬਾਜੀ ਦੇਖੀਐ ਉਝਰਤ ਨਹੀ ਬਾਰਾ ॥੪॥
खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥४॥
एक क्षण एवं पल भर हेतु मनुष्य यह तमाशा देखता है। इसके नाश होते कोई समय नहीं लगता ॥ ४॥

ਹਉਮੈ ਚਉਪੜਿ ਖੇਲਣਾ ਝੂਠੇ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥
अभिमान की चौपड़ को घमण्डी मानव असत्य एवं अहंकार की गोटियों से खेल रहा है।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਹਾਰੈ ਸੋ ਜਿਣੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥੫॥
सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥५॥
सारा जगत पराजित हो जाता है लेकिन जो गुरु शब्द का चिन्तन करता है, वह जीवन बाजी जीत लेता है। ५ ॥

ਜਿਉ ਅੰਧੁਲੈ ਹਥਿ ਟੋਹਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੈ ॥
जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥
जैसे अन्धे मनुष्य के हाथ में डण्डी (सहारा) है वैसे ही हरि का नाम मेरे लिए (सहारा) है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਟੇਕ ਹੈ ਨਿਸਿ ਦਉਤ ਸਵਾਰੈ ॥੬॥
राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥६॥
दिन-रात एवं सुबह राम का नाम मेरी टेक है॥ ६॥

ਜਿਉ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਉ ਰਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮ ਅਧਾਰਾ ॥
जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥
हे प्रभु ! जैसे तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ, तेरा नाम मेरा आधार है।

ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਪਾਇਆ ਜਨ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ॥੭॥
अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥७॥
जो अन्तिम समय तक सहायता करने वाला एवं मोक्ष का द्वार है, उसे तेरे सेवक ने प्राप्त कर लिया है॥ ७ ॥

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਮੇਟਿਆ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥
जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥
मुरारी प्रभु के नाम का जाप करने से जन्म-मरण का दुःख मिट गया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਤਾਰੇ ॥੮॥੨੨॥
नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥८॥२२॥
हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु नाम को विस्मृत नहीं करता, पूर्ण गुरु उसका उद्धार कर देते हैं॥ ८॥ २२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨
आसा महला ३ असटपदीआ घरु २
आसा महला ३ असटपदीआ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਾਸਤੁ ਬੇਦੁ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਰੁ ਤੇਰਾ ਸੁਰਸਰੀ ਚਰਣ ਸਮਾਣੀ ॥
सासतु बेदु सिम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥
हे भगवान ! तेरे नाम-सरोवर में शास्त्र, वेद एवं स्मृतियाँ विद्यमान हैं और तेरे चरणों में गंगा समाई हुई है।

ਸਾਖਾ ਤੀਨਿ ਮੂਲੁ ਮਤਿ ਰਾਵੈ ਤੂੰ ਤਾਂ ਸਰਬ ਵਿਡਾਣੀ ॥੧॥
साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥१॥
हे आदिपुरुष ! तू इस जगत रूपी पेड़ का मूल अर्थात् जड़ है और त्रिगुणात्मक माया इस पेड़ की तीन शाखाएँ हैं। मेरी मति तेरी याद का आनंद प्राप्त करती है। तू सबमें बसा हुआ है, जो एक बड़ा कौतुक है॥ १॥

ਤਾ ਕੇ ਚਰਣ ਜਪੈ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अम्रित बाणी ॥१॥ रहाउ ॥
नानक उस परमात्मा के चरणों को याद करता रहता है और उसकी अमृत वाणी बोलता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਤੀਸ ਕਰੋੜੀ ਦਾਸ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੀ ॥
तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥
हे प्रभु ! तेतीस करोड़ देवी-देवता तेरे दास हैं, तू ही ऋद्धियों, सिद्धियों एवं प्राणों का आधार है।

ਤਾ ਕੇ ਰੂਪ ਨ ਜਾਹੀ ਲਖਣੇ ਕਿਆ ਕਰਿ ਆਖਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨॥
ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥२॥
उसके रूप जाने नहीं जा सकते, वर्णन करने एवं सोचने से मनुष्य क्या कर सकते हैं ? ॥ २॥

ਤੀਨਿ ਗੁਣਾ ਤੇਰੇ ਜੁਗ ਹੀ ਅੰਤਰਿ ਚਾਰੇ ਤੇਰੀਆ ਖਾਣੀ ॥
तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥
हे स्वामी ! इस सृष्टि में तीन गुण (रजो, तमो, सतो) तेरे द्वारा उत्पादित हैं। सृष्टि रचना के चार स्रोत तेरे द्वारा ही निर्मित हैं।

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਈਐ ਕਥੇ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੩॥
करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥३॥
यदि तुम दयालु हो जाओ तो ही मनुष्य परम पदवी प्राप्त करता है और तेरी अकथनीय कहानी को कथन करता है॥ ३॥

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਕਿਆ ਕੋ ਕਰੇ ਪਰਾਣੀ ॥
तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥
हे भगवान ! तू जग का रचयिता है। सब कुछ तेरा ही किया हुआ है, कोई प्राणी क्या कर सकता है?

ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤੂੰ ਅਪਣੀ ਸਾਈ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥੪॥
जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥४॥
हे परमेश्वर ! जिस मनुष्य पर तू कृपादृष्टि करता है केवल वही सत्य में समा जाता है॥ ४॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੋਈ ਲੇਤੁ ਹੈ ਜੇਤੀ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥
नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥
प्रत्येक जीव जो आता एवं जाता है अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में पड़ा है, वह तेरे नाम का जाप करता है।

ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਹੋਰ ਮਨਮੁਖਿ ਫਿਰੈ ਇਆਣੀ ॥੫॥
जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥५॥
यदि तुझे भला लगे तभी गुरुमुख तुझे समझता है। शेष स्वेच्छाचारी मूर्ख प्राणी भटकते ही रहते हैं।॥ ५॥

ਚਾਰੇ ਵੇਦ ਬ੍ਰਹਮੇ ਕਉ ਦੀਏ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥
चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥
चारों वेद (भगवान ने) ब्रह्मा जी को दे दिए लेकिन वह पढ़ पढ़ कर विचार ही करता रहता है।

ਤਾ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂਝੈ ਬਪੁੜਾ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਵਤਾਰੀ ॥੬॥
ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥६॥
प्रभु के हुक्म को बेचारा समझता ही नहीं और नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ ६॥

ਜੁਗਹ ਜੁਗਹ ਕੇ ਰਾਜੇ ਕੀਏ ਗਾਵਹਿ ਕਰਿ ਅਵਤਾਰੀ ॥
जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥
युग-युग में ईश्वर ने राम, कृष्ण इत्यादि राजा उत्पन्न किए जिन्हें लोग अवतार मान कर गुणस्तुति करते आ रहे हैं।

ਤਿਨ ਭੀ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ਤਾ ਕਾ ਕਿਆ ਕਰਿ ਆਖਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੭॥
तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥७॥
लेकिन वे भी उसका अन्त नहीं पा सके, फिर मैं क्या कहकर उसके गुणों का विचार कर सकता हूँ॥ ७ ॥

ਤੂੰ ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਸਾਚਾ ਦੇਹਿ ਤ ਸਾਚੁ ਵਖਾਣੀ ॥
तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥
तू सदैव सत्य है और तेरा पैदा किया हुआ सब कुछ भी सत्य है। यदि तुम मुझे सत्य प्रदान करो, तभी मैं इसका वर्णन करूँगा।

ਜਾ ਕਉ ਸਚੁ ਬੁਝਾਵਹਿ ਅਪਣਾ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥੮॥੧॥੨੩॥
जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥८॥१॥२३॥
हे भगवान ! जिस मनुष्य को तुम अपने सत्य की सूझ प्रदान करते हो, वह सहज ही तेरे नाम में समा जाता है॥ ८॥ १॥ २३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਹਮਰਾ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥
सच्चे गुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है;

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥
उसने हरि का निरंजन नाम मेरे मन में बसा दिया है।

ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧॥
सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥१॥
शब्द की पहचान करने से मुझे सदैव सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ॥
सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥
हे मेरे मन ! तू तत्व ज्ञान को सुन।

ਦੇਵਣ ਵਾਲਾ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥
देने वाला (परमात्मा) समस्त विधियाँ जानता है। गुरु की शरण में रहने से ही नाम का भण्डार प्राप्त होता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
सतिगुर भेटे की वडिआई ॥
सतिगुरु से भेंट करने की यह बड़ाई है कि

ਜਿਨਿ ਮਮਤਾ ਅਗਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝਾਈ ॥
जिनि ममता अगनि त्रिसना बुझाई ॥
उसने ममता एवं तृष्णाग्नि को बुझा दिया है और

ਸਹਜੇ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੨॥
सहजे माता हरि गुण गाई ॥२॥
मैं सहज अवस्था में रंगा हुआ हरि का गुणगान करता रहता हूँ॥ २॥

ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੋਇ ਨ ਜਾਣੀ ॥
विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥
पूर्ण गुरु के बिना कोई भी जीव प्रभु को नहीं जानता।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਦੂਜੈ ਲੋਭਾਣੀ ॥
माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥
क्योंकि मनुष्य माया-मोह एवं व्यर्थ के लोभ में फँसा हुआ है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਬਾਣੀ ॥੩॥
गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥३॥
गुरु के माध्यम से ही मनुष्य प्रभु का नाम एवं हरि की वाणी को पा लेता है॥ ३॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤਪਾਂ ਸਿਰਿ ਤਪੁ ਸਾਰੁ ॥
गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥
गुरु की सेवा समस्त तपस्याओं की महान् तपस्या एवं सार है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਭ ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ॥
हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥
तब पूज्य परमेश्वर मनुष्य के मन में बस जाता है और वह सारे दुःख दर्द को भुलाने वाला है।

ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਦੀਸੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥੪॥
दरि साचै दीसै सचिआरु ॥४॥
वह सत्य के दरबार में सत्यवादी दिखाई देता है॥ ४॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥
गुरु की सेवा करने से मनुष्य को तीन लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है और

ਆਪੁ ਪਛਾਣਿ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥
आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥
अपने आत्मस्वरूप को पहचान कर वह उस प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਮਹਲੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੫॥
साची बाणी महलु परापति होइ ॥५॥
सच्ची गुरुवाणी के माध्यम से प्राणी प्रभु के महल को प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸਭ ਕੁਲ ਉਧਾਰੇ ॥
गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥
गुरु की सेवा करने से मनुष्य अपनी कुल (वंश) का उद्धार कर लेता है और

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਰਖੈ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥
निरमल नामु रखै उरि धारे ॥
निर्मल नाम को अपने हृदय में बसा कर रखता है।

ਸਾਚੀ ਸੋਭਾ ਸਾਚਿ ਦੁਆਰੇ ॥੬॥
साची सोभा साचि दुआरे ॥६॥
सत्य के दरबार में वह सत्य की शोभा से शोभायमान होता है॥ ६॥

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿ ਗੁਰਿ ਸੇਵਾ ਲਾਏ ॥
से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥
वे पुरुष बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु अपनी सेवा में लगाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥
अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए ॥
वे दिन-रात प्रभु-भक्ति में प्रवृत्त रहते हैं और सत्य नाम को बसाकर रखते हैं।

ਨਾਮੇ ਉਧਰੇ ਕੁਲ ਸਬਾਏ ॥੭॥
नामे उधरे कुल सबाए ॥७॥
प्रभु-नाम के माध्यम से समूचे कुल का उद्धार हो जाता है॥ ७॥

ਨਾਨਕੁ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥
नानकु साचु कहै वीचारु ॥
नानक सत्य का विचार कहता है कि

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਰਖਹੁ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥
भगवान का नाम अपने हृदय में बसाकर रख।

ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੮॥੨॥੨੪॥
हरि भगती राते मोख दुआरु ॥८॥२॥२४॥
हरि की भक्ति में मग्न होने से मोक्ष द्वार प्राप्त हो जाता है॥ ८ ॥ २॥ २४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਆਸਾ ਆਸ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
आसा आस करे सभु कोई ॥
हर कोई इन्सान आशा एवं इच्छा ही करता रहता है लेकिन

ਹੁਕਮੈ ਬੂਝੈ ਨਿਰਾਸਾ ਹੋਈ ॥
हुकमै बूझै निरासा होई ॥
जो प्रभु के हुक्म को बूझ लेता है, वह इच्छा रहित हो जाता है।

ਆਸਾ ਵਿਚਿ ਸੁਤੇ ਕਈ ਲੋਈ ॥
आसा विचि सुते कई लोई ॥
बहुत सारे लोग आशा में सोए हुए हैं।

ਸੋ ਜਾਗੈ ਜਾਗਾਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥
सो जागै जागावै सोई ॥१॥
वही प्राणी जागता है, जिसे प्रभु स्वयं जगाता है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਬੁਝਾਇਆ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਭੁਖ ਨ ਜਾਈ ॥
सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥
सतिगुरु ने नाम का भेद बताया है। नाम के बिना भूख दूर नहीं होती।

ਨਾਮੇ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੈ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੈ ਰਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥१॥ रहाउ ॥
नाम के माध्यम से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। परमात्मा की रज़ा से ही नाम प्राप्त होता है। १॥ रहाउ॥

ਕਲਿ ਕੀਰਤਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਨੁ ॥
कलि कीरति सबदु पछानु ॥
कलियुग में प्रभु की कीर्ति करो और शब्द की पहचान करो।

ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਚੂਕੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
एहा भगति चूकै अभिमानु ॥
सच्ची भक्ति तो यही है कि अभिमान मिट जाए।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਨੁ ॥
सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥
सच्चे गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मनुष्य प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो जाता है।

ਜਿਨਿ ਆਸਾ ਕੀਤੀ ਤਿਸ ਨੋ ਜਾਨੁ ॥੨॥
जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥२॥
हे प्राणी ! तू उसको पहचान, जिसने तेरे भीतर आशा उत्पन्न की है॥ २॥

ਤਿਸੁ ਕਿਆ ਦੀਜੈ ਜਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥
तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥
तुम उसे क्या भेंट करोगे, जो तुझे शब्द सुनाता है और

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥
कृपा करके तेरे मन में नाम बसाता है।

ਇਹੁ ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥
अपना अहंत्व त्याग कर अपना यह सिर उसको अर्पित कर दो।

ਹੁਕਮੈ ਬੂਝੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੩॥
हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥३॥
जो मनुष्य प्रभु की रज़ा को समझता है, वह सदैव सुख प्राप्त करता है॥ ३॥

ਆਪਿ ਕਰੇ ਤੈ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥
आपि करे तै आपि कराए ॥
ईश्वर स्वयं सब कुछ करता है और स्वयं ही प्राणियों से करवाता है।

ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ॥
आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥
वह स्वयं ही गुरुमुख के हृदय में नाम बसाता है।

ਆਪਿ ਭੁਲਾਵੈ ਆਪਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥
आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥
वह स्वयं ही मनुष्य को कुमार्गगामी करता है और स्वयं ही सद्मार्ग प्रदान करता है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥੪॥
सचै सबदि सचि समाए ॥४॥
सच्चे शब्द द्वारा मनुष्य सत्य में समा जाता है॥ ४॥

ਸਚਾ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਹੈ ਬਾਣੀ ॥
सचा सबदु सची है बाणी ॥
शब्द सत्य है और बानी भी सत्य है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ॥
गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥
युग युग में गुरुमुख इसका कथन एवं व्याख्या करते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਮੋਹਿ ਭਰਮਿ ਭੋਲਾਣੀ ॥
मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥
लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य सांसारिक मोह एवं भ्रम में कुमार्गगामी हो गए हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਫਿਰੈ ਬਉਰਾਣੀ ॥੫॥
बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥५॥
नाम के बिना हर कोई पागल पुरुष की भाँति भटकता फिरता है॥ ५॥

ਤੀਨਿ ਭਵਨ ਮਹਿ ਏਕਾ ਮਾਇਆ ॥
तीनि भवन महि एका माइआ ॥
तीनों लोकों में एक माया का ही वर्चस्व है।

ਮੂਰਖਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ ॥
मूर्ख मनुष्य ने पढ़-पढ़कर द्वैतभाव ही सुदृढ़ किया है।

ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਦੁਖੁ ਸਬਾਇਆ ॥
बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥
वह बहुत धर्म-कर्म करता है परन्तु बहुत दुःख सहन करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੬॥
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥६॥
लेकिन सतिगुरु की सेवा करने से वह सदा सुख प्राप्त कर सकता है॥ ६॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੀਠਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਭੋਗੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ॥
अम्रितु मीठा सबदु वीचारि ॥अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥
शब्द का चिन्तन अमृत समान मीठा है।अपने अहंकार को मार कर जीव रात-दिन इसका भोग कर सकता है।

ਸਹਜਿ ਅਨੰਦਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
सहजि अनंदि किरपा धारि ॥
जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सहज आनंद प्राप्त होता है।

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਸਚਿ ਪਿਆਰਿ ॥੭॥
नामि रते सदा सचि पिआरि ॥७॥
वह नाम से अनुरक्त हो जाता है और सदैव सत्य से प्रेम करता है॥ ७॥

ਹਰਿ ਜਪਿ ਪੜੀਐ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥
गुरु के शब्द को विचार कर हरि बारे पढ़ना एवं जाप करना चाहिए।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਪੜੀਐ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ॥
हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥
हरि का जाप एवं उसके बारे में पढ़ने से मनुष्य का अहंकार निवृत हो जाता है।

ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਭਇ ਸਚਿ ਪਿਆਰਿ ॥
हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥
भगवान के भय-सम्मान में रहकर सत्य के प्रेम में मस्त होकर हरि नाम का सुमिरन करना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੮॥੩॥੨੫॥
नानक नामु गुरमति उर धारि ॥८॥३॥२५॥
हे नानक ! गुरु की मति द्वारा नाम अपने हृदय में बसाओ ॥ ८॥ ३॥ २५॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੮ ਕਾਫੀ ॥
रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥
रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥

ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਂਤਿ ਊਪਜੈ ਜਿਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥
गुर ते सांति ऊपजै जिनि त्रिसना अगनि बुझाई ॥
गुरु से ही शान्ति उत्पन्न होती है, जिसने तृष्णा की अग्नि को बुझा दिया है।

ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਈਐ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥
गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥१॥
गुरु द्वारा ही नाम मिलता है, जिससे दुनिया में बड़ी ख्याति प्राप्त होती है॥ १॥

ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਚੇਤਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
एको नामु चेति मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! प्रभु के एक नाम को ही याद करो।

ਜਗਤੁ ਜਲੰਦਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭਜਿ ਪਏ ਸਰਣਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥
इस जगत को (विषय-विकारों से) जलता देखकर मैं भागकर (गुरु की) शरण में आ गया हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰ ਤੇ ਗਿਆਨੁ ਊਪਜੈ ਮਹਾ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥
गुरु से ज्ञान की उत्पति होती है और जीव महा तत्व को विचारता है।

ਗੁਰ ਤੇ ਘਰੁ ਦਰੁ ਪਾਇਆ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥
गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥२॥
गुरु के द्वारा ही प्रभु के घर-दर को पा लिया है और मेरे भण्डार भक्ति से भर गए हैं।॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਬੂਝੈ ਵੀਚਾਰਾ ॥
गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥
गुरु के माध्यम से मनुष्य, नाम का ध्यान करता है और इस विचार को बूझ लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਲਾਹ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥੩॥
गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥३॥
गुरु के माध्यम से ही भक्ति एवं ईश्वर की गुणस्तुति होती है और उसके मन में अपार शब्द बस जाता है॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਦੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਹੋਈ ॥
गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥
गुरुमुख बनकर ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है और उसे कदाचित दु:ख नहीं होता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀਐ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥੪॥
गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥४॥
गुरुमुख बन कर ही अहंकार नष्ट हो जाता है और मन निर्मल हो जाता है॥ ४॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਆਪੁ ਗਇਆ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥
सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥
सतिगुरु से मिलकर मनुष्य का अहंत्व नाश हो जाता है और उसे तीन लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है।

ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਪਸਰਿ ਰਹੀ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੫॥
निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥५॥
तब वह प्रभु की निर्मल ज्योति को सर्वव्यापक देखता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में समा जाती है॥ ५॥

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਈ ॥
पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥
जब पूर्ण गुरु उपदेश प्रदान करता है तो बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है।

ਅੰਤਰੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ਨਾਮੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੬॥
अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥६॥
अन्तर्मन शीतल एवं शांत हो जाता है और प्रभु नाम द्वारा सुख प्राप्त होता है॥ ६ ॥

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾਂ ਮਿਲੈ ਜਾਂ ਨਦਰਿ ਕਰੇਈ ॥
पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई ॥
जब भगवान करुणा-दृष्टि धारण करता है तो पूर्ण सतिगुरु मिलता है।

ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਸਭ ਕਟੀਅਹਿ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥੭॥

किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥७॥

तब प्राणी के सब अपराध एवं पाप नाश हो जाते हैं और उसे फिर से कोई दुःख एवं विघ्न नहीं होता॥ ७॥

ਆਪਣੈ ਹਥਿ ਵਡਿਆਈਆ ਦੇ ਨਾਮੇ ਲਾਏ ॥
आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥
सब उपलब्धियाँ भगवान के हाथ हैं, वह स्वयं ही (सम्मान) देकर अपने नाम के साथ मिला लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ॥੮॥੪॥੨੬॥
नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥८॥४॥२६॥
हे नानक ! जिसके मन में नाम-निधान बस जाता है, वह जग में कीर्ति ही प्राप्त करता है॥ ८ ॥ ४॥ २६ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ਤੂੰ ਆਪੇ ਆਇ ਮਿਲੈ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥
हे मेरे मन ! तू (गुरु से) परमात्मा का नाम सुनकर उसे अपने अन्तर में बसा। हे मेरे भाई ! वह परमात्मा आप ही आकर मिल जाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਸਚੈ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥੧॥
अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥१॥
सच्चे में अपना चित्त लगाकर हर रोज सच्ची भक्ति करो॥ १॥

ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂੰ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! एक नाम का ध्यान करो, तुझे आत्मिक सुख प्राप्त होगा।

ਹਉਮੈ ਦੂਜਾ ਦੂਰਿ ਕਰਿ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥
अपना अहंकार एवं द्वैतवाद को दूर कर दे, इससे तेरी मान-प्रतिष्ठा बहुत बढ़ेगी॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸੁ ਭਗਤੀ ਨੋ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਲੋਚਦੇ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਈ ਨ ਜਾਇ ॥
इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥
हे भाई ! इस भक्ति को पाने के लिए देवता, मनुष्य एवं मुनि जन भी जिज्ञासा रखते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना यह प्राप्त नहीं होती।

ਪੰਡਿਤ ਪੜਦੇ ਜੋਤਿਕੀ ਤਿਨ ਬੂਝ ਨ ਪਾਇ ॥੨॥
पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥२॥
पण्डित एवं ज्योतिषी धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते रहे परन्तु उन्हें भी प्रभु-भक्ति का ज्ञान नहीं मिला।॥ २॥

ਆਪੈ ਥੈ ਸਭੁ ਰਖਿਓਨੁ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥
भगवान ने सब कुछ अपने वश में रखा हुआ है, अन्य कुछ कहा नहीं जा सकता।

ਆਪੇ ਦੇਇ ਸੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਿ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥੩॥
आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥३॥
गुरुदेव ने मुझे यह सूझ प्रदान की है कि भगवान जो कुछ हमें देता है, उसे ही हम प्राप्त करते हैं।॥ ३॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤਿਸ ਦੇ ਸਭਨਾ ਕਾ ਸੋਈ ॥
जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥
सब जीव-जन्तु भगवान के बनाए हुए हैं और वह सबका मालिक है।

ਮੰਦਾ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜੇ ਦੂਜਾ ਹੋਈ ॥੪॥
मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥४॥
हम बुरा किसे कह सकते हैं यदि भगवान के अलावा कोई दूसरा जीवों में निवास करता हो।॥ ४॥

ਇਕੋ ਹੁਕਮੁ ਵਰਤਦਾ ਏਕਾ ਸਿਰਿ ਕਾਰਾ ॥
इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥
भगवान का हुक्म ही इस सृष्टि में चल रहा है, प्रत्येक जीव को यही कार्य करना है जो उसकी ओर से उसके सिर पर लिखा गया है।

ਆਪਿ ਭਵਾਲੀ ਦਿਤੀਅਨੁ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰਾ ॥੫॥
आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥५॥
उसने स्वयं ही जीवों को कुमार्गगामी किया हुआ है, इसलिए उनके अन्तर्मन में लोभ एवं विकार निवास करते हैं॥ ५॥

ਇਕ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੀਤਿਅਨੁ ਬੂਝਨਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥
इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥
भगवान ने कुछ मनुष्यों को गुरुमुख बना दिया है और वे ज्ञान समझते और विचार करते हैं।

ਭਗਤਿ ਭੀ ਓਨਾ ਨੋ ਬਖਸੀਅਨੁ ਅੰਤਰਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥੬॥
भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥६॥
वह अपनी भक्ति भी उन्हें प्रदान करता है, जिनके अन्तर्मन में नाम धन के भण्डार भरे हुए हैं।॥ ६॥

ਗਿਆਨੀਆ ਨੋ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥
ज्ञानी पुरुष भी सत्य को ही समझते हैं और उन्हें सत्य का बोध प्राप्त होता है।

ਓਇ ਭੁਲਾਏ ਕਿਸੈ ਦੇ ਨ ਭੁਲਨ੍ਹੀ ਸਚੁ ਜਾਣਨਿ ਸੋਈ ॥੭॥
ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥७॥
वे केवल सत्यस्वरूप परमात्मा को ही जानते हैं और यदि कोई उन्हें कुमार्गगामी करना चाहे तो वे पथ-भ्रष्ट नहीं होते॥ ७॥

ਘਰ ਮਹਿ ਪੰਚ ਵਰਤਦੇ ਪੰਚੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥
घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥
उन ज्ञानी पुरुषों के अन्तर्मन में कामादिक पाँचों निवास करते हैं लेकिन पाँचों ही बुद्धिमता से पेश आते हैं।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਵਸਿ ਨ ਆਵਨ੍ਹੀ ਨਾਮਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੮॥੫॥੨੭॥
नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥८॥५॥२७॥
हे नानक ! सच्चे गुरु के बिना कामादिक पाँचों नियंत्रण में नहीं आते। नाम के माध्यम से अहंकार दूर हो जाता हैं ॥८॥५॥२७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਵਥੁ ਹੈ ਬਾਹਰਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥
घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥
हे भाई ! तेरे हृदय-घर में ही समस्त पदार्थ हैं, बाहर कुछ भी नहीं मिलता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟ ਖੁਲਾਹੀ ॥੧॥
गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥१॥
गुरु की कृपा से हरेक वस्तु प्राप्त हो जाती है और मन के किवाड़ खुल जाते हैं।॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ॥
सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥
हे भाई ! सतिगुरु द्वारा ही भगवान प्राप्त होता है।

ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥१॥ रहाउ ॥
मनुष्य के अन्तर्मन में नाम का भण्डार भरा हुआ है, पूर्ण सतिगुरु ने मुझे यह दिखा दिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਹੋਵੈ ਸੋ ਲਏ ਪਾਏ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥
हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥
जो मनुष्य हरि के नाम का ग्राहक है, वह इसे प्राप्त कर लेता है। लेकिन यह अमूल्य नाम रत्न इन्सान सिमरन द्वारा प्राप्त करता है।

ਅੰਦਰੁ ਖੋਲੈ ਦਿਬ ਦਿਸਟਿ ਦੇਖੈ ਮੁਕਤਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥
अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥
वह अपने अन्तर्मन को खोलता है और दिव्य-दृष्टि से मुक्ति के भण्डार को देखता है॥ २॥

ਅੰਦਰਿ ਮਹਲ ਅਨੇਕ ਹਹਿ ਜੀਉ ਕਰੇ ਵਸੇਰਾ ॥
अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥
शरीर के भीतर अनेक महल हैं और आत्मा उनके भीतर बसेरा करती है।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਨ ਫੇਰਾ ॥੩॥
मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥३॥
वह अपना मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और दोबारा जन्म-मरण के बन्धन में नहीं पड़ता॥ ३॥

ਪਾਰਖੀਆ ਵਥੁ ਸਮਾਲਿ ਲਈ ਗੁਰ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥
परख करने वाले लोग गुरु से नाम रूपी वस्तु प्राप्त करते हैं और उन्हें नाम रूपी वस्तु की सूझ गुरु से हुई है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਅਮੁਲੁ ਸਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੪॥
नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥
नाम-पदार्थ बड़ा अनमोल है, गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही इसे पाता है॥ ४॥

ਬਾਹਰੁ ਭਾਲੇ ਸੁ ਕਿਆ ਲਹੈ ਵਥੁ ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਭਾਈ ॥
बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥
हे मेरे भाई ! जो बाहर ढूंढता है, उसे क्या मिल सकता है? क्योंकि नाम-भण्डार मनुष्य के हृदय-घर में ही है।

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥੫॥
भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥५॥
सारा जगत भ्रम में कुमार्गगामी हुआ भटकता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं।॥ ५॥

ਘਰੁ ਦਰੁ ਛੋਡੇ ਆਪਣਾ ਪਰ ਘਰਿ ਝੂਠਾ ਜਾਈ ॥
घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥
झूठा मनुष्य अपना घर-द्वार छोड़कर पराए घर में जाता है।

ਚੋਰੈ ਵਾਂਗੂ ਪਕੜੀਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਚੋਟਾ ਖਾਈ ॥੬॥
चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥६॥
जहाँ वह चोर की भाँति पकड़ लिया जाता है और प्रभु-नाम के बिना वह चोटें खाता है॥ ६॥

ਜਿਨ੍ੀ ਘਰੁ ਜਾਤਾ ਆਪਣਾ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਭਾਈ ॥
जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥
हे मेरे भाई ! जो मनुष्य अपने हृदय घर को समझता है, वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।

ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੭॥
अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥७॥
गुरु की महानता से वह अपने अन्तर्मन में ब्रह्म को पहचान लेता है॥ ७ ॥

ਆਪੇ ਦਾਨੁ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁਝਾਈ ॥
आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥
भगवान स्वयं ही नाम दान करता है और स्वयं ही सूझ प्रदान करता है। फिर उसके अलावा मैं किसके समक्ष विनती करूँ ? यह सूझ प्रभु स्वयं ही देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂੰ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੮॥੬॥੨੮॥
नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥८॥६॥२८॥
हे नानक ! तू नाम का ध्यान कर, इस तरह तुझे सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त होगी॥ ८॥ ६॥ २८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਸਾਦੁ ਮੀਠਾ ਭਾਈ ॥
आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥
हे भाई ! जो मनुष्य अपने आप को पहचान लेता है, उसे मीठा हरि रस अच्छा लगता है।

ਹਰਿ ਰਸਿ ਚਾਖਿਐ ਮੁਕਤੁ ਭਏ ਜਿਨ੍ਹਾ ਸਾਚੋ ਭਾਈ ॥੧॥
हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥१॥
जो मनुष्य सत्य से प्रेम करते हैं, वे हरि रस को चख कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲਾ ਨਿਰਮਲ ਮਨਿ ਵਾਸਾ ॥
हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥
पूज्य परमेश्वर अत्यंत निर्मल है, वह निर्मल परमात्मा निर्मल मन में बसता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਸਾਲਾਹੀਐ ਬਿਖਿਆ ਮਾਹਿ ਉਦਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की शिक्षा पर चलकर परमात्मा की सराहना करके मनुष्य माया से निर्लिप्त रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਆਪੁ ਨ ਜਾਪਈ ਸਭ ਅੰਧੀ ਭਾਈ ॥
बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥
हे भाई ! शब्द - के बिना मनुष्य अपने आप को नहीं समझता, इसके बिना सारी दुनिया ज्ञानहीन है।

ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਨਾਮੁ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥੨॥
गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥२॥
गुरु की शिक्षा से ही मन में प्रकाश होता है और अन्तिम समय प्रभु-नाम ही मनुष्य का सहायक होता है॥ २॥

ਨਾਮੇ ਹੀ ਨਾਮਿ ਵਰਤਦੇ ਨਾਮੇ ਵਰਤਾਰਾ ॥
नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥
गुरुमुख मनुष्य सदा हरि नाम ही जपते रहते हैं और केवल नाम का ही व्यापार करते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਨਾਮੇ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥੩॥
अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥३॥
उनके अन्तर्मन में नाम ही बसा होता है, उनके मुँह में भी प्रभु का नाम ही होता है और शब्द-गुरु द्वारा वे नाम का ही चिन्तन करते हैं।॥ ३॥

ਨਾਮੁ ਸੁਣੀਐ ਨਾਮੁ ਮੰਨੀਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥
नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥
वह नाम सुनते हैं और नाम पर ही आस्था रखते हैं और नाम द्वारा उन्हें यश प्राप्त होता है।

ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਮੇ ਮਹਲੁ ਪਾਈ ॥੪॥
नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥४॥
वह सदा नाम की सराहना करते हैं और नाम के माध्यम से प्रभु के मन्दिर को सदैव के लिए प्राप्त कर लेते हैं।॥ ४॥

ਨਾਮੇ ਹੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਨਾਮੇ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥
नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥
नाम के द्वारा उनके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है और नाम द्वारा ही उन्हें लोक-परलोक में शोभा प्राप्त होती है।

ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਨਾਮੇ ਸਰਣਾਈ ॥੫॥
नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥५॥
नाम के द्वारा ही उन्हें सुख प्राप्त होता है, नाम द्वारा ही उन्होंने प्रभु की शरण ली है॥ ५॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋਇ ਨ ਮੰਨੀਐ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई ॥
नाम के बिना कोई भी मनुष्य प्रभु-दरबार में मंजूर नहीं होता। स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं।

ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਾਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥੬॥
जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥६॥
वह यमपुरी में जकड़ कर मारे जाते हैं और अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लेते हैं।॥ ६॥

ਨਾਮੈ ਕੀ ਸਭ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਬੁਝਾਈ ॥
नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥
सारा संसार प्रभु-नाम की सेवा करता है और नाम-सुमिरन की सूझ गुरु से प्राप्त होती है।

ਨਾਮਹੁ ਹੀ ਨਾਮੁ ਮੰਨੀਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥੭॥

नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥७॥

हे भाई ! केवल प्रभु-नाम की ही आराधना करो, क्योंकि नाम से ही लोक-परलोक में मान-प्रतिष्ठा मिलती है॥ ७॥

ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਬੁਝਾਈ ॥

जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥

लेकिन नाम उसे ही मिलता है, जिसे परमात्मा देता है। गुरु की शिक्षा से ही नाम की सूझ होती है।

ਨਾਨਕ ਸਭ ਕਿਛੁ ਨਾਵੈ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਕੋ ਪਾਈ ॥੮॥੭॥੨੯॥

नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥८॥७॥२९॥

हे नानक ! सब कुछ प्रभु-नाम के वश में है। कोई विरला मनुष्य ही पूर्ण भाग्य से प्रभु नाम को प्राप्त करता है॥ ८ ॥ ७ ॥२९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥

आसा महला ३ ॥

आसा महला ३ ॥

ਦੋਹਾਗਣੀ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇਨ੍ਹੀ ਨ ਜਾਣਨਿ ਪਿਰ ਕਾ ਸੁਆਉ ॥

दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥

दुहागिन जीव-स्त्री अपने पति-परमेश्वर के महल को नहीं प्राप्त कर सकती और न ही वह उसके मिलाप के स्वाद को जानती है।

ਫਿਕਾ ਬੋਲਹਿ ਨਾ ਨਿਵਹਿ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਸੁਆਉ ॥੧॥

फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥१॥

वह कटु वचन व्यक्त करती है और नम्रता नहीं जानती एवं द्वैतभाव का ही स्वाद लेती रहती है॥ १॥

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਕਿਉ ਕਰਿ ਵਸਿ ਆਵੈ ॥

इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥

यह मन कैसे वश में आ सकता है ?

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਠਾਕੀਐ ਗਿਆਨ ਮਤੀ ਘਰਿ ਆਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु की कृपा से ही इस पर अंकुश लगाया जा सकता है और ज्ञान की सुमति से यह घर में प्रवेश कर लेता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਆਪਿ ਸਵਾਰੀਓਨੁ ਲਾਇ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆਰੁ ॥
सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥
सुहागिन जीव-स्त्री को पति-प्रभु स्वयं ही अपना प्रेम लगाकर शोभायमान करता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਚਲਦੀਆ ਨਾਮੇ ਸਹਜਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥੨॥
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥२॥
वह सच्चे गुरु की रज़ा अनुसार चलती है और उसने सहज ही प्रभु नाम का श्रृंगार किया हुआ है॥ २॥

ਸਦਾ ਰਾਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੀ ਸੇਜ ਸੁਭਾਇ ॥
सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥
वह सदा अपने प्रियतम-प्रभु से रमण करती है और उसकी सेज सत्यता ही शोभायमान हुई है।

ਪਿਰ ਕੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਮੋਹੀਆ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੩॥
पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥३॥
अपने प्रियतम से मिलकर वह आत्मिक सुख प्राप्त करती है॥ ३॥

ਗਿਆਨ ਅਪਾਰੁ ਸੀਗਾਰੁ ਹੈ ਸੋਭਾਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ॥
गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥
अपार ज्ञान शोभावान नारी का श्रृंगार है।

ਸਾ ਸਭਰਾਈ ਸੁੰਦਰੀ ਪਿਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੪॥
सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥४॥
अपने पति-परमेश्वर के स्नेह एवं प्रेम द्वारा वह सुन्दरी एवं पटरानी है॥ ४॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਵਿਚਿ ਰੰਗੁ ਰਖਿਓਨੁ ਸਚੈ ਅਲਖਿ ਅਪਾਰਿ ॥
सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥
सुहागिन के भीतर सत्यस्वरूप, अलक्ष्य एवं अपार प्रभु ने अपना प्रेम भरा है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਸਚੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥੫॥
सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥५॥
वह सच्चे प्रेम से अपने सतिगुरु की सेवा करती है॥ ५॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇਆ ਗੁਣ ਕਾ ਗਲਿ ਹਾਰੁ ॥
सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥
सुहागिन जीव-स्त्री ने गुणों की माला अपने गले में पहनकर अपना श्रृंगार किया हुआ है।

ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਰਮਲੁ ਤਨਿ ਲਾਵਣਾ ਅੰਤਰਿ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥੬॥
प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥६॥
वह प्राणनाथ के प्रेम की सुगन्धि अपने तन पर लगाती है और उसके अन्तर्मन में नाम-चिन्तन रूपी रत्न होता है॥ ६॥

ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਸੇ ਊਤਮਾ ਜਤਿ ਪਤਿ ਸਬਦੇ ਹੋਇ ॥
भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥
जो मनुष्य प्रभु-भक्ति से रंगे हुए हैं, वे सर्वोत्तम हैं। शब्द से ही जाति एवं सम्मान उत्पन्न होते हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹੈ ਬਿਸਟਾ ਕਾ ਕੀੜਾ ਹੋਇ ॥੭॥
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥७॥
नाम के बिना हरेक मनुष्य नीच जाति का है और विष्ठा का कीड़ा होता है॥ ७॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਦੀ ਸਭ ਫਿਰੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਹਉ ਨ ਜਾਇ ॥
हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥
सारी दुनिया 'मैं-मेरी' का अहंकार करती फिरती रहती है परन्तु गुरु-शब्द के बिना अभिमान दूर नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਹਉਮੈ ਗਈ ਸਚੈ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੮॥੮॥੩੦॥
नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥८॥८॥३०॥
हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु-नाम से रंगे हुए हैं, उनका अभिमान दूर हो गया है और वे सत्य में समाए रहते हैं॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਚੇ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਸਦਾ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥
जो मनुष्य सत्य में लीन हैं, वे पवित्र पावन हैं और दुनिया में सदैव ही उनकी सच्ची कीर्ति होती है।

ਐਥੈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਜਾਪਦੇ ਆਗੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੧॥
ऐथै घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ ॥१॥
इस लोक में वह घर-घर में जाने जाते हैं और आगे भी वह सभी युगों-युगांतरों में लोकप्रिय होते हैं॥ १॥

ਏ ਮਨ ਰੂੜ੍ਹੇ ਰੰਗੁਲੇ ਤੂੰ ਸਚਾ ਰੰਗੁ ਚੜਾਇ ॥
ए मन रूड़्हे रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥
हे मेरे सुन्दर, रंगीले मन ! तू सच्चा रंग अपने ऊपर चढ़ा।

ਰੂੜੀ ਬਾਣੀ ਜੇ ਰਪੈ ਨਾ ਇਹੁ ਰੰਗੁ ਲਹੈ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तुम सुन्दर गुरु-वाणी से रंग जाओ तो यह रंग कभी नहीं उतरेगा और न ही कहीं जाएगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਮ ਨੀਚ ਮੈਲੇ ਅਤਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਵਿਕਾਰ ॥
हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥
हम जीव नीच, मैले एवं अति अभिमानी हैं और द्वैतभाव के कारण विकारों में फँसे हुए हैं।

ਗੁਰਿ ਪਾਰਸਿ ਮਿਲਿਐ ਕੰਚਨੁ ਹੋਏ ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥੨॥
गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार ॥२॥
गुरु पारस से मिलकर हम सोना बन जाते हैं और हमारे भीतर अपार प्रभु की निर्मल ज्योति उदित हो जाती है।॥ २॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕੋਇ ਨ ਰੰਗੀਐ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਰੰਗੁ ਚੜਾਉ ॥
बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥
गुरु के बिना कोई भी मनुष्य प्रभु प्रेम में नहीं रंगा गया। गुरु से मिलकर प्रभु का रंग चढ़ता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਭਾਇ ਜੋ ਰਤੇ ਸਿਫਤੀ ਸਚਿ ਸਮਾਉ ॥੩॥
गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥३॥
जो मनुष्य गुरु के भय एवं स्नेह में अनुरक्त है, वे प्रभु की कीर्ति द्वारा सत्य में समा जाते हैं।॥ ३॥

ਭੈ ਬਿਨੁ ਲਾਗਿ ਨ ਲਗਈ ਨਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥
प्रभु भय के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता और न ही मन निर्मल होता है।

ਬਿਨੁ ਭੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਝੂਠੇ ਠਾਉ ਨ ਕੋਇ ॥੪॥
बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥४॥
भय के बिना कर्मकाण्ड करने झूठे हैं और प्राणी को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता॥ ४॥

ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਰੰਗੇ ਸੁ ਰਪਸੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥
जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥
जिसे प्रभु स्वयं रंग देता है, वही असल में रंगा जाता है और वह सत्संगति में मिल जाता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਸਤਸੰਗਤਿ ਊਪਜੈ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸੁਭਾਇ ॥੫॥
पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥५॥
पूर्ण गुरु द्वारा ही सत्संगति प्राप्त होती है और मनुष्य सहज ही सत्य से मिल जाता है॥ ५॥

ਬਿਨੁ ਸੰਗਤੀ ਸਭਿ ਐਸੇ ਰਹਹਿ ਜੈਸੇ ਪਸੁ ਢੋਰ ॥
बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥
सत्संगति के बिना मनुष्य ऐसे हैं जैसे पशु ढोर इत्यादि रहते हैं।

ਜਿਨਿ੍ ਕੀਤੇ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣਨ੍ੀ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭਿ ਚੋਰ ॥੬॥
जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥६॥
जिस परमात्मा ने उन्हें पैदा किया है, वे उसे नहीं जानते, नाम के बिना सभी प्रभु के चोर हैं। ६॥

ਇਕਿ ਗੁਣ ਵਿਹਾਝਹਿ ਅਉਗਣ ਵਿਕਣਹਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥
गुरु के प्रदान किए हुए सहज-स्वभाव से ही कई मनुष्य गुणों को खरीदते एवं अवगुणों को बेचते हैं।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਵੁਠਾ ਅੰਦਰਿ ਆਇ ॥੭॥
गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥७॥
गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से ही नाम प्राप्त होता है और प्रभु आकर हृदय में आ बसता है॥ ७॥

ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇ ॥
सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ॥
एक ईश्वर ही सारी सृष्टि का दाता है, वह हरेक जीव को कामकाज में लगाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਲਾਇ ਸਵਾਰਿਅਨੁ ਸਬਦੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੮॥੯॥੩੧॥
नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ ॥८॥९॥३१॥
हे नानक ! प्रभु अपने नाम के साथ लगाकर मनुष्य का जीवन संवार देता है और गुरु के शब्द द्वारा उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ ६॥ ३१॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਭ ਨਾਵੈ ਨੋ ਲੋਚਦੀ ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥
सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥
सारी ही दुनिया नाम की अभिलाषा करती है परन्तु जिस पर भगवान कृपा करता है, उसे ही नाम प्राप्त होता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਸੁਖੁ ਤਿਸੁ ਜਿਸੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥੧॥
बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥१॥
प्रभु-नाम के बिना सभी दुःखी हैं। लेकिन सुखी वही है, जिसके मन में प्रभु अपना नाम बसा देता है॥ १॥

ਤੂੰ ਬੇਅੰਤੁ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥
तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥
हे ईश्वर ! तू बेअंत एवं दयालु है, मैं तेरी शरण में आया हूँ।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈਐ ਨਾਮੇ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु के माध्यम से ही प्रभु-नाम की शोभा मिलती है॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਹੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਈ ॥
अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि स्रिसटि उपाई ॥
सब जीवों के भीतर एवं बाहर एक ईश्वर ही विद्यमान है, जिसने अनेक विधियों की सृष्टि उत्पन्न की है।

ਹੁਕਮੇ ਕਾਰ ਕਰਾਇਦਾ ਦੂਜਾ ਕਿਸੁ ਕਹੀਐ ਭਾਈ ॥੨॥
हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥२॥
हे भाई ! अपने हुक्म अनुसार वह मनुष्य से कार्य करवाता है, दूसरा कौन है जिसका वर्णन किया जाए॥ २॥

ਬੁਝਣਾ ਅਬੁਝਣਾ ਤੁਧੁ ਕੀਆ ਇਹ ਤੇਰੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰ ॥
बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥
हे भगवान ! ज्ञान एवं अज्ञान तेरी रचना है, यह तेरा ही काम है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਬਖਸਿਹਿ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਇਕਿ ਦਰਗਹ ਮਾਰਿ ਕਢੇ ਕੂੜਿਆਰ ॥੩॥
इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥३॥
हे ईश्वर ! कईयों को तुम क्षमादान करके अपने साथ मिला लेते हो और कई झूठों को तुम मार-पीट कर अपने दरबार से बाहर निकाल देते हो।॥ ३॥

ਇਕਿ ਧੁਰਿ ਪਵਿਤ ਪਾਵਨ ਹਹਿ ਤੁਧੁ ਨਾਮੇ ਲਾਏ ॥
इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥
कई धुर (आदि) से ही पवित्र एवं पावन हैं, उनको तुमने अपने नाम स्मरण में लगाया हुआ है।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਏ ॥੪॥
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥४॥
गुरु की सेवा से ही सुख उत्पन्न होता है और सत्य नाम द्वारा मनुष्य प्रभु को समझ लेता है। ॥४॥

ਇਕਿ ਕੁਚਲ ਕੁਚੀਲ ਵਿਖਲੀ ਪਤੇ ਨਾਵਹੁ ਆਪਿ ਖੁਆਏ ॥
इकि कुचल कुचील विखली पते नावहु आपि खुआए ॥
कई कुटिल चाल वाले, मलिन एवं चरित्रहीन जीव हैं, उन्हें भगवान ने स्वयं अपने नाम से विहीन किया हुआ है।

ਨਾ ਓਨ ਸਿਧਿ ਨ ਬੁਧਿ ਹੈ ਨ ਸੰਜਮੀ ਫਿਰਹਿ ਉਤਵਤਾਏ ॥੫॥
ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥५॥
उनके पास न सिद्धि है, न सुबुद्धि है, न ही वह संयमी हैं। वह डावांडोल होकर भटकते रहते हैं।॥५॥

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਤਿਸ ਨੋ ਭਾਵਨੀ ਲਾਏ ॥
नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ॥
जिस पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसके भीतर नाम की श्रद्धा एवं आस्था उत्पन्न हो जाती है।

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਇਹ ਸੰਜਮੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥੬॥
सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥६॥
ऐसा मनुष्य निर्मल शब्द को सुनकर सत्यवादी, संतोषी एवं संयमी बन जाता है। ॥६॥

ਲੇਖਾ ਪੜਿ ਨ ਪਹੁਚੀਐ ਕਥਿ ਕਹਣੈ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇ ॥
लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥
प्रभु का लेखा-जोखा पढ़ने से मनुष्य उसके निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सकता। कथन एवं वर्णन द्वारा उसका अन्त नहीं मिलता।

ਗੁਰ ਤੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਈਐ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੭॥
गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥७॥
गुरु के माध्यम से प्रभु की कद्र का पता लगता है और सच्चे शब्द द्वारा उसकी सूझ प्राप्त होती है। ॥७॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਦੇਹੀ ਸੋਧਿ ਤੂੰ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥
हे भाई ! गुरु के शब्द द्वारा तू अपने इस मन एवं शरीर का शोधन कर ले।

ਨਾਨਕ ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਵਿਚਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੮॥੧੦॥੩੨॥
नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥८॥१०॥३२॥
हे नानक ! इस शरीर के भीतर नाम का खजाना विद्यमान है, जो गुरु की अपार कृपा द्वारा ही प्राप्त होता है। ॥८॥१०॥ ३२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਚਿ ਰਤੀਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥
सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥
जिन सुहागिनों ने गुरु के शब्द द्वारा अपने जीवन का श्रृंगार किया हुआ है, वे सत्य में लीन रहती हैं।

ਘਰ ਹੀ ਸੋ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥
घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥१॥
सच्चे शब्द का चिंतन करने से उन्हें अपने हृदय घर में प्रभु मिल गया है। १॥

ਅਵਗਣ ਗੁਣੀ ਬਖਸਾਇਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥
उन्होंने अपने गुणों द्वारा अपने अवगुणों को क्षमा करवा लिया है और हरि से लगन लगा ली है।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਕਾਮਣੀ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह जीव-स्त्री ने हरि-प्रभु को वर के रूप में प्राप्त कर लिया है और यह मिलन गुरु ने करवाया है। १ ॥रहाउ ॥

ਇਕਿ ਪਿਰੁ ਹਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣਨ੍ੀ ਦੂਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥
कुछ जीव-स्त्रियाँ पति-प्रभु को अपने आस-पास नहीं जानती और द्वैतभाव एवं दुविधा में पड़कर कुमार्गगामी हुई रहती हैं।

ਕਿਉ ਪਾਇਨ੍ਿ ਡੋਹਾਗਣੀ ਦੁਖੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਇ ॥੨॥
किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥२॥
दुहागिन कैसे अपने पति-प्रभु को मिल सकती है। उसकी जीवन रात्रि दुःख में ही व्यतीत हो जाती है। २ ।

ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥
जिनके मन में सत्य निवास करता है, वे सत्य की कमाई करती हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਹਿ ਸਹਜ ਸਿਉ ਸਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਇ ॥੩॥
अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥३॥
वह रात-दिन सहजता से प्रभु की सेवा करती रहती हैं और सत्य में समा जाती हैं॥ ३॥

ਦੋਹਾਗਣੀ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਈਆ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਹਿ ॥
दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥
दुहागिन जीव-स्त्रियाँ दुविधा में भटकती हैं और झूठ बोलकर माया के मोह का विष खाती हैं।

ਪਿਰੁ ਨ ਜਾਣਨਿ ਆਪਣਾ ਸੁੰਞੀ ਸੇਜ ਦੁਖੁ ਪਾਹਿ ॥੪॥
पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥४॥
वह अपने प्राणनाथ को नहीं जानती और सूनी सेज पर दुःख सहन करती हैं। ४ ।

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਹੈ ਮਤੁ ਮਨ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਹਿ ॥
सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥
हे मेरे मन ! सच्चा साहिब एक प्रभु ही है, इसलिए तुम दुविधा में कुमार्गगामी होकर भटक मत जाना।

ਗੁਰ ਪੂਛਿ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਸਚੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਹਿ ॥੫॥
गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥५॥
गुरु से पूछ कर अपने प्रभु की निष्ठा से सेवा करो और निर्मल सत्य नाम को अपने मन में बसाओ ॥ ५॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਹਉਮੈ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥
सुहागिन जीव-स्त्री सदा अपने पति-प्रभु को पा लेती है और अपने अहंकार एवं द्वैतवाद को दूर कर देती है।

ਪਿਰ ਸੇਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਗਹਿ ਰਹੀ ਸਚੀ ਸੇਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੬॥
पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥६॥
वह रात-दिन अपने पति-प्रभु से जुड़ी रहती है और सत्य की सेज पर सुख प्राप्त करती है॥ ६॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਗਏ ਪਲੈ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਇ ॥
मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥
जो इस दुनिया में यही कहते रहते हैं कि यह धन मेरा है, यह सम्पत्ति मेरी है, उनके पास कुछ भी नहीं रहता और बिना कुछ प्राप्त किए ही संसार से चले जाते हैं।

ਮਹਲੁ ਨਾਹੀ ਡੋਹਾਗਣੀ ਅੰਤਿ ਗਈ ਪਛੁਤਾਇ ॥੭॥
महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥७॥
दुहागिन जीव-स्त्री अपने प्रभु के महल को प्राप्त नहीं होती और अंततः पश्चाताप करती हुई चली जाती है। ७ ॥

ਸੋ ਪਿਰੁ ਮੇਰਾ ਏਕੁ ਹੈ ਏਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥
मेरा प्रियतम प्रभु केवल एक ही है और मैं सिर्फ एक से ही प्रेम करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਜੇ ਸੁਖੁ ਲੋੜਹਿ ਕਾਮਣੀ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ॥੮॥੧੧॥੩੩॥
नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥८॥११॥३३॥
हे नानक ! यदि जीव-स्त्री सुख चाहती है तो उसे हरि का नाम अपने मन में बसाना चाहिए। ॥८॥११॥३३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਿਨ੍ਹਾ ਚਖਾਇਓਨੁ ਰਸੁ ਆਇਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
अम्रितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥
जिन्हें भगवान ने नामामृत स्वयं चखाया है, उन्हें सहज स्वभाव ही स्वाद प्राप्त हुआ है।

ਸਚਾ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਤਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੧॥
सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥१॥
वह सच्चा पातशाह बेपरवाह है और उसे तिल मात्र भी लोभ-लालच नहीं ॥ १ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਚਾ ਵਰਸਦਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਮੁਖਿ ਪਾਇ ॥
अम्रितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥
भगवान का सच्चा अमृत सर्वत्र बरस रहा है लेकिन यह अमृत गुरुमुख लोगों के मुँह में पड़ रहा है।

ਮਨੁ ਸਦਾ ਹਰੀਆਵਲਾ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुखों का मन सदैव खिला रहता है और वे सहज ही भगवान का गुणगान करते रहते हैं। १॥ रहाउ ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਸਦਾ ਦੋਹਾਗਣੀ ਦਰਿ ਖੜੀਆ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥
मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥
मनमुख जीव-स्त्रियाँ सदा दुहागिन रहती हैं और भगवान के द्वार पर खड़ी विलाप करती रहती हैं।

ਜਿਨ੍ਹਾ ਪਿਰ ਕਾ ਸੁਆਦੁ ਨ ਆਇਓ ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਕਮਾਹਿ ॥੨॥
जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सो कमाहि ॥२॥
जिन्हें पति-परमेश्वर के मिलन का स्वाद नहीं मिला, वे वही कर्म करती रहती हैं, जो उनके लिए प्रारम्भ से लिखा हुआ है। २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਜੇ ਸਚੁ ਜਮੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੁ ॥
गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥
गुरुमुख हृदय रूपी खेत में सत्य नाम का बीज बोते हैं और जब यह अंकुरित हो जाता है तो वे केवल सत्यनाम का ही व्यापार करते हैं।

ਜੋ ਇਤੁ ਲਾਹੈ ਲਾਇਅਨੁ ਭਗਤੀ ਦੇਇ ਭੰਡਾਰ ॥੩॥
जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥३॥
जिन लोगों को भगवान ने इस लाभप्रद कार्य में लगाया है, उन्हें वह अपनी भक्ति का भण्डार प्रदान करता है| ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣੀ ਭੈ ਭਗਤਿ ਸੀਗਾਰਿ ॥
गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥
गुरुमुख जीव-स्त्री सदा सुहागिन है, उसने प्रभु-भय एवं भक्ति का श्रृंगार किया हुआ है।

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੁ ਰਖਹਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੪॥
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥४॥
वह रात-दिन अपने प्राणनाथ के साथ रमण करती है और सत्य को अपने हृदय के साथ लगाकर रखती है॥४॥

ਜਿਨ੍ਹਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਆ ਆਪਣਾ ਤਿਨ੍ਹਾ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥
में उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने अपने पति-प्रभु के साथ रमण किया है।

ਸਦਾ ਪਿਰ ਕੈ ਸੰਗਿ ਰਹਹਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੫॥
सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥५॥
अपने मन का अहंत्व नाश करके वह सदा अपने पति-परमेश्वर के साथ रहती हैं। ५ ।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਪਿਰ ਕੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥
तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥
अपने पति-परमेश्वर के प्रेम के कारण उनका तन-मन शीतल एवं मुख उज्ज्वल बना रहता है।

ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਪਿਰੁ ਰਵੈ ਹਉਮੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮਾਰਿ ॥੬॥
सेज सुखाली पिरु रवै हउमै त्रिसना मारि ॥६॥
वे अपना अहंकार एवं तृष्णा का नाश करके सुखदायक सेज पर अपने पति-प्रभु के साथ रमण करती हैं। ६॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥
करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥
गुरु के अपार प्रेम के कारण प्रभु कृपा धारण करके जीव-स्त्री के हृदय घर में आ जाता है।

ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਸੋਹਾਗਣੀ ਕੇਵਲ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੭॥
वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥७॥
सुहागिन जीव-स्त्री को एक मुरारी प्रभु वर के रूप में प्राप्त हो जाता है॥ ७॥

ਸਭੇ ਗੁਨਹ ਬਖਸਾਇ ਲਇਓਨੁ ਮੇਲੇ ਮੇਲਣਹਾਰਿ ॥
सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥
गुरु उसके सारे गुनाह क्षमा कर देता है और मिलाने वाला उसे अपने साथ मिला लेता है।

ਨਾਨਕ ਆਖਣੁ ਆਖੀਐ ਜੇ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੮॥੧੨॥੩੪॥
नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥८॥१२॥३४॥
हे नानक ! ऐसी स्तुतिगान की बात कहनी चाहिए, जिसे सुनकर तेरा स्वामी तुझसे प्रेम करने लग जाए। ॥ ८ ॥ १२॥ ३४॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਗੁਣ ਊਪਜੈ ਜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲੈ ਸੋਇ ॥
सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥
जब प्रभु हमें सच्चे गुरु से मिला देता है तो हम गुरु से गुण प्राप्त करते हैं।

ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਗਿਆਨੁ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੧॥
सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥१॥
सहजता से प्रभु नाम का ध्यान करने से ज्ञान प्रगट हो जाता है। १ ।

ਏ ਮਨ ਮਤ ਜਾਣਹਿ ਹਰਿ ਦੂਰਿ ਹੈ ਸਦਾ ਵੇਖੁ ਹਦੂਰਿ ॥
ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥
हे मेरे मन ! हरि की दूर मत समझ, अपितु उसे सदा अपने आसपास ही देख।

ਸਦ ਸੁਣਦਾ ਸਦ ਵੇਖਦਾ ਸਬਦਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु सदा सुनता है, सदा ही देखता है और गुरु के शब्द में वह सदा भरपूर रहता है। १ ॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ਤਿਨੀ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥
गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥
गुरुमुख जीव-स्त्रियाँ अपने आपको पहचानती हैं। चूंकि वह एक मन से प्रभु का ध्यान-मनन करती हैं।

ਸਦਾ ਰਵਹਿ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥२॥
वे सदैव ही अपने पति-परमेश्वर के साथ रमण करती हैं और सत्यनाम के कारण वे आत्मिक सुख प्राप्त करती हैं। ।।२।।

ਏ ਮਨ ਤੇਰਾ ਕੋ ਨਹੀ ਕਰਿ ਵੇਖੁ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥
हे मेरे मन ! प्रभु के सिवाय तेरा कोई (सखा) नहीं। गुरु के शब्द को विचार कर चाहे देख ले।

ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਉ ਪਾਇਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੩॥
हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥३॥
तू भाग कर हरि की शरण प्राप्त कर, तुझे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाएगा। ३॥

ਸਬਦਿ ਸੁਣੀਐ ਸਬਦਿ ਬੁਝੀਐ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥
तू गुरु के शब्द को सुन और शब्द के भेद को ही समझ तथा सत्य के साथ अपनी वृत्ति लगाकर रख।

ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀਐ ਸਚੈ ਮਹਲਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥੪॥
सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥४॥
गुरु के शब्द द्वारा अपना अहंकार मिटा कर प्रभु के महल में सुख प्राप्त कर ॥ ४॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੋਭਾ ਨਾਮ ਕੀ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੋਭ ਨ ਹੋਇ ॥
इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥
इस युग में प्रभु नाम की ही शोभा है। नाम के बिना मनुष्य को शोभा प्राप्त नहीं होती।

ਇਹ ਮਾਇਆ ਕੀ ਸੋਭਾ ਚਾਰਿ ਦਿਹਾੜੇ ਜਾਦੀ ਬਿਲਮੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥
इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥५॥
यह माया की शोभा सिर्फ चार दिन ही रहती है और लुप्त होते इसे देरी नहीं होती। ५॥

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਮੁਏ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥
जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥
जो लोग नाम को भूल जाते हैं, वे मरते हैं और मरते ही रहेंगे।

ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਓ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੬॥
हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥६॥
उन्हें हरि रस का स्वाद नहीं मिलता और विष्टा में ही नष्ट हो जाते हैं। ६ ।

ਇਕਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੇ ਲਾਇ ॥
इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥
कुछ जीवों को परमात्मा स्वयं रात-दिन नाम के साथ लगाकर रखता है और उन्हें क्षमादान करके अपने साथ मिला लेता है।

ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚਿ ਰਹਹਿ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੭॥
सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥७॥
वे सत्य की कमाई करते हैं, सत्य में ही रहते हैं और सत्यवादी होने के कारण सत्य में ही समा जाते हैं। ७ ।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸੁਣੀਐ ਨ ਦੇਖੀਐ ਜਗੁ ਬੋਲਾ ਅੰਨ੍ਹਾ ਭਰਮਾਇ ॥
बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंन्हा भरमाइ ॥
शब्द के बिना जगत को कुछ भी सुनाई एवं दिखाई नहीं देता। बहरे एवं अन्धे होने के कारण यह कुमार्गगामी होकर भटकता रहता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇਸੀ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥੮॥
बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥८॥
प्रभु नाम के बिना यह (जगत) दु:ख ही प्राप्त करता है क्योंकि प्रभु-नाम उसकी रज़ा से ही मिल सकता है। ८ ॥

ਜਿਨ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥
वे भक्तजन निर्मल एवं स्वीकृत हैं जो अपने चित्त को गुरु की वाणी के साथ लगाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਤਿਨ੍ਹਾ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਸੇ ਦਰਿ ਸਚੇ ਜਾਣੁ ॥੯॥੧੩॥੩੫॥
नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥९॥१३॥३५॥
हे नानक ! उन्हें नाम कदाचित विस्मृत नहीं होता जो सत्य के दरबार में सत्यवादी जाने जाते हैं। ॥ ६॥ १३॥ ३५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਸਬਦੌ ਹੀ ਭਗਤ ਜਾਪਦੇ ਜਿਨ੍ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਚੀ ਹੋਇ ॥
सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥
शब्द से ही भक्त विश्व में लोकप्रिय होते हैं और जिनकी वाणी भी सत्य ही होती है।

ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਇਆ ਨਾਉ ਮੰਨਿਆ ਸਚਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥੧॥
विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥१॥
उनके अन्तर से अहंत्व निवृत्त हो जाता है, वे नाम को ही मन से याद करते हैं और सत्य से उनका मिलन हो जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਨ ਕੀ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥
हरि-प्रभु के नाम से भक्तजनों को मान-सम्मान प्राप्त होता है।

ਸਫਲੁ ਤਿਨ੍ਹਾ ਕਾ ਜਨਮੁ ਹੈ ਤਿਨ੍ ਮਾਨੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
उनका इस संसार में जन्म सफल हो जाता है और हर कोई उनका आदर-सम्मान करता है॥ १॥रहाउ ॥

ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਜਾਤਿ ਹੈ ਅਤਿ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥
अहंकार, द्वैतवाद, अत्यंत क्रोध एवं अभिमान मनुष्य की जातियाँ हैं।

ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਤਾ ਜਾਤਿ ਜਾਇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੈ ਭਗਵਾਨੁ ॥੨॥
सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥२॥
यदि मनुष्य गुरु के शब्द में समा जाए तो वह इस जाति से मुक्ति प्राप्त कर लेता है और उसकी ज्योति भगवान की ज्योति के साथ मिल जाती है। २॥

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥
पूर्ण सतिगुरु को मिलने से हमारा जन्म सफल हो गया है।

ਨਾਮੁ ਨਵੈ ਨਿਧਿ ਪਾਇਆ ਭਰੇ ਅਖੁਟ ਭੰਡਾਰਾ ॥੩॥
नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥३॥
मुझे हरि नाम की नवनिधि प्राप्त हो गई है। हरि नाम के अनमोल धन से हमारे भण्डार भरे रहते हैं ॥३॥

ਆਵਹਿ ਇਸੁ ਰਾਸੀ ਕੇ ਵਾਪਾਰੀਏ ਜਿਨ੍ਹ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥
आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥
यहाँ इस नाम-धन के वही व्यापारी आते हैं, जिन्हें प्रभु नाम प्यारा लगता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਏ ਤਿਨ੍ਹ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥੪॥
गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥४॥
जो लोग गुरुमुख बन जाते हैं, वे इस नाम-धन को प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि उनके अन्तर्मन में शब्द का ही चिन्तन होता है।४ ॥

ਭਗਤੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨ੍ਹੀ ਮਨਮੁਖ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥
अहंकारी मनमुख व्यक्ति प्रभु-भक्ति का महत्व नहीं जानते।

ਧੁਰਹੁ ਆਪਿ ਖੁਆਇਅਨੁ ਜੂਐ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੫॥
धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥५॥
प्रभु ने उन्हें स्वयं ही कुमार्गगामी किया हुआ है, वह जुए में अपनी जीवन की बाजी हार जाते हैं। ।।५।।

ਬਿਨੁ ਪਿਆਰੈ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਸਰੀਰਿ ॥
बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥
यदि चित्त में प्रेम नहीं तो फिर भक्ति नहीं की जा सकती और न ही शरीर को सुख प्राप्त होता है।

ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰ ਭਗਤੀ ਮਨ ਧੀਰਿ ॥੬॥
प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥६॥
प्रेम का धन गुरु से ही मिलता है और प्रभु-भक्ति से मन धैर्यवान बन जाता है। ६॥

ਜਿਸ ਨੋ ਭਗਤਿ ਕਰਾਏ ਸੋ ਕਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦ ਵੀਚਾਰਿ ॥
जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥
गुरु के शब्द का चिन्तन करके वही प्राणी भगवान की भक्ति कर सकता है, जिससे वह स्वयं अपनी भक्ति करवाता है।

ਹਿਰਦੈ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ॥੭॥
हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥७॥
फिर उसके हृदय में एक ईश्वर का नाम ही निवास करता है और वह अपनी दुविधा एवं अहंत्व का नाश कर देता है। ७ ॥

ਭਗਤਾ ਕੀ ਜਤਿ ਪਤਿ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਹੈ ਆਪੇ ਲਏ ਸਵਾਰਿ ॥
भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥
एक परमात्मा का नाम ही भक्तजनों की जाति एवं मान-सम्मान है। वह स्वयं ही उन्हें संवार देता है।

ਸਦਾ ਸਰਣਾਈ ਤਿਸ ਕੀ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਿ ॥੮॥
सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि ॥८॥
वह सदा उसकी शरण में रहते हैं और जैसे उसे अच्छा लगता है, वैसे ही वह भक्तों के कार्य संवारता है। ८ ॥

ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ਅਲਾਹ ਦੀ ਜਾਪੈ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥
अल्लाह की भक्ति बड़ी निराली है जो गुरु के उपदेश द्वारा ही समझी जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਵਸੈ ਭੈ ਭਗਤੀ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਿ ॥੯॥੧੪॥੩੬॥
नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥९॥१४॥३६॥
हे नानक ! जिसके हृदय में परमात्मा का नाम बस जाता है वह प्रभु-भय एवं भक्ति द्वारा उसके नाम से अपना जीवन संवार लेता है॥ ६॥ १४॥ ३६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ॥
आसा महला ३ ॥
आसा महला ३ ॥

ਅਨ ਰਸ ਮਹਿ ਭੋਲਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਦੁਖ ਪਾਇ ॥
अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥
दूसरे पदार्थों के स्वादों में फँसकर मनुष्य भटकता ही रहता है और नाम के बिना बड़ा दुःख प्राप्त करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੇਟਿਓ ਜਿ ਸਚੀ ਬੂਝ ਬੁਝਾਇ ॥੧॥
सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥१॥
उसे सच्चे गुरु जैसा महापुरुष नहीं मिलता जो सत्य की सूझ प्रदान करता है। ॥ १ ॥

ਏ ਮਨ ਮੇਰੇ ਬਾਵਲੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਖਿ ਸਾਦੁ ਪਾਇ ॥
ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥
हे मेरे बावले मन ! हरि-रस को चखकर उसका स्वाद प्राप्त कर।

ਅਨ ਰਸਿ ਲਾਗਾ ਤੂੰ ਫਿਰਹਿ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥
दूसरे रसों से जुड़ कर तुम भटकते फिरते हो और अपना अनमोल जन्म व्यर्थ ही गंवा रहे हो। १॥ रहाउ ॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਗੁਰਮੁਖ ਨਿਰਮਲੇ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਰਹਹਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥
इस युग में गुरुमुख पवित्र-पावन है जो सत्यनाम में लगन लगाकर रखते हैं।

ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਨਹੀ ਕਿਆ ਕਰਿ ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥੨॥

विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥२॥

तकदीर के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता और इस बारे हम क्या कह अथवा कर सकते हैं ? ॥ २ ॥

ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ ਸਬਦਿ ਮਰਹਿ ਮਨਹੁ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥

आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥

जो अपने मन से विकारों को निकाल देता है और गुरु के शब्द द्वारा मर जाता है, वह अपने आपको पहचान लेता है।

ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਏ ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰ ॥੩॥

गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥३॥

जो गुरु की शरणागत भाग कर चले जाते है,उनको क्षमावान परमात्मा है क्षमा कर देता है ॥३॥

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਈਐ ਨਾ ਦੁਖੁ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥

बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥

नाम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता और न ही भीतर से दु:ख दूर होता है।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪਿਆ ਦੂਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥੪॥

इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥४॥

यह दुनिया माया के मोह में लिप्त है और द्वैतवाद एवं भ्रम में कुमार्गगामी हो गई है। ४ ।

ਦੋਹਾਗਣੀ ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਹੀ ਕਿਆ ਕਰਿ ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥

दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥

दुहागिन जीव-स्त्रियां अपने पति-प्रभु की कद्र को नहीं जानती।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਜਲਦੀਆ ਫਿਰਹਿ ਸੇਜੈ ਰਵੈ ਨ ਭਤਾਰੁ ॥੫॥

अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥५॥

वह श्रृंगार करके क्या करेंगी ! वह रात-दिन सदा (तृष्णाओं में) जलती रहती हैं और अपने पति-प्रभु के साथ सेज पर रमण नहीं करतीं। ॥५॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥

सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥

सुहागिन जीव-स्त्रियाँ अपने अहत्व को भीतर से दूर करके अपने प्रभु के महल को प्राप्त कर लेती हैं।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸੀਗਾਰੀਆ ਅਪਣੇ ਸਹਿ ਲਈਆ ਮਿਲਾਇ ॥੬॥
गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥६॥
गुरु के शब्द से उन्होंने श्रृंगार किया हुआ है और उनका प्राणनाथ उन्हें अपने साथ मिला लेता है। ६॥

ਮਰਣਾ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥
माया-मोह के अन्धकार में मनुष्य ने अपने मन में से मृत्यु को भुला दिया है।

ਮਨਮੁਖ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਭੀ ਮਰਹਿ ਜਮ ਦਰਿ ਹੋਹਿ ਖੁਆਰੁ ॥੭॥
मनमुख मरि मरि जमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥७॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य बार-बार मरते और यम के द्वार पर दुःखी होते हैं। ७ ।

ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਸੇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥
जिन्हें भगवान आप मिलाता है वह गुरु-शब्द का चिन्तन करके उससे मिल जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੮॥੨੨॥੧੫॥੩੭॥
नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥८॥२२॥१५॥३७॥
हे नानक ! जो प्रभु-नाम में समाए हुए हैं, उस सच्चे दरबार में उनके मुख उज्ज्वल हो जाते हैं ॥८॥२२॥१५॥३७॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਅਸਟਪਦੀਆ ਘਰੁ ੨
आसा महला ५ असटपदीआ घरु २
आसा महला ५ असटपदीआ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪੰਚ ਮਨਾਏ ਪੰਚ ਰੁਸਾਏ ॥
पंच मनाए पंच रुसाए ॥
सत्य, दया, धर्म, संतोष एवं ज्ञान-पाँचों गुणों को जब मैंने अपना मित्र बनाया तो कामादिक पांचो विकार - काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार, नाराज होकर मेरी अंतरात्मा से निकल कर भाग गए।

ਪੰਚ ਵਸਾਏ ਪੰਚ ਗਵਾਏ ॥੧॥
पंच वसाए पंच गवाए ॥१॥
इस तरह पाँचों गुण भीतर बसने लगे और पाँच विकार दूर हो गए। १॥

ਇਨ੍ ਬਿਧਿ ਨਗਰੁ ਵੁਠਾ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई! इस विधि से मेरा शरीर रूपी नगर बस गया।

ਦੁਰਤੁ ਗਇਆ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥
पाप-विकार दूर हो गए और गुरु ने मेरे भीतर ज्ञान दृढ़ कर दिया। १॥ रहाउ ।

ਸਾਚ ਧਰਮ ਕੀ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਵਾਰਿ ॥
साच धरम की करि दीनी वारि ॥
इस शरीर रूपी नगर के चारों ओर रक्षा हेतु सत्य धर्म की बाड़ लगा दी।

ਫਰਹੇ ਮੁਹਕਮ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੨॥
फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥२॥
गुरु प्रदत्त ज्ञान एवं मनन के मजबूत द्वार लगा दिए गए। २ ।

ਨਾਮੁ ਖੇਤੀ ਬੀਜਹੁ ਭਾਈ ਮੀਤ ॥
नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥
हे मेरे भाई! हे मित्र ! प्रभु-नाम की फसल बीज।

ਸਉਦਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਨੀਤ ॥੩॥
सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥३॥
नित्य गुरु की सेवा का सौदा करो। ३॥

ਸਾਂਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖ ਕੇ ਸਭਿ ਹਾਟ ॥
सांति सहज सुख के सभि हाट ॥
शांति एवं सहज सुख की सभी दुकानें भरी हुई हैं।

ਸਾਹ ਵਾਪਾਰੀ ਏਕੈ ਥਾਟ ॥੪॥
साह वापारी एकै थाट ॥४॥
गुरु शाह एवं शिष्य व्यापारी एक ही स्थान पर बसते हैं। ४ ॥

ਜੇਜੀਆ ਡੰਨੁ ਕੋ ਲਏ ਨ ਜਗਾਤਿ ॥
जेजीआ डंनु को लए न जगाति ॥
कोई यम जजिया, दण्ड एवं महसूल चुंगी नहीं लगते,"

ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਧੁਰ ਕੀ ਛਾਪ ॥੫॥
सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥५॥
क्योकि सतिगुरु ने प्रभु की मोहर लगा दी है ॥ ५ ॥

ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਲਦਿ ਖੇਪ ਚਲਾਵਹੁ ॥
वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥
हे भाई ! तुम भी नाम-सुमिरन का सौदा लादकर व्यापार किया करो।

ਲੈ ਲਾਹਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ॥੬॥
लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥६॥
इस तरह तुम गुरु की शिक्षा पर चलकर लाभ प्राप्त करके अपने घर आ जाओगे ॥ ६॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਸਿਖ ਵਣਜਾਰੇ ॥
सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥
सतिगुरु नाम धन का शाह है और उसके शिष्य व्यापारी हैं।

ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਲੇਖਾ ਸਾਚੁ ਸਮ੍ਹਾਰੇ ॥੭॥
पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥७॥
पूँजी प्रभु का ही नाम है और परमात्मा की आराधना लेखा-जोखा है। ७ ॥

ਸੋ ਵਸੈ ਇਤੁ ਘਰਿ ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸੇਵ ॥
सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥
हे नानक ! जो मनुष्य पूर्ण गुरु की सेवा करता है, वही इस घर में रहता है

ਅਬਿਚਲ ਨਗਰੀ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ॥੮॥੧॥
अबिचल नगरी नानक देव ॥८॥१॥
और प्रभु की नगरी अविचल (अटल) है॥ ८ ॥ १॥

ਆਸਾਵਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩
आसावरी महला ५ घरु ३
आसावरी महला ५ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਸਿਉ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥
मेरे मन का प्रेम हरि के साथ लग गया है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਤ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੀ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥१॥ रहाउ ॥
सत्संगति में हरि-प्रभु का नाम जपने से मेरी जीवन-मर्यादा सच्ची एवं निर्मल बन गई है। ।१। रहाउ ।

ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ਘਣੀ ਚਿਤਵਤ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ॥
दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥
हे भगवान ! मुझे तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा लगी हुई है और मैं अनेक प्रकार से तुझे याद करता रहता हूँ।

ਕਰਹੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥
करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥१॥
हे परब्रह्म ! हे मुरारि ! मुझ पर अनुग्रह करो। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो। १।

ਮਨੁ ਪਰਦੇਸੀ ਆਇਆ ਮਿਲਿਓ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥
मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥
यह परदेसी मन अनेक योनियों में भटकता हुआ इस दुनिया में आया है और आकर सत्संगति के साथ मिल गया है।

ਜਿਸੁ ਵਖਰ ਕਉ ਚਾਹਤਾ ਸੋ ਪਾਇਓ ਨਾਮਹਿ ਰੰਗਿ ॥੨॥
जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥२॥
जिस पदा र्थ की मुझमें आकांक्षा थी, वह प्रभु-नाम के रंग में रंग कर प्राप्त हो गया है। २॥

ਜੇਤੇ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਰਸ ਬਿਨਸਿ ਜਾਹਿ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ॥
जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥
जितने भी माया के रंग एवं रस हैं, वे एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं।

ਭਗਤ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਸਿਉ ਸੁਖੁ ਭੁੰਚਹਿ ਸਭ ਠਾਇ ॥੩॥
भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥३॥
हे प्रभु! तेरे भक्त तेरे नाम से अनुरक्त हैं और समस्त स्थानों पर वे सुख भोगते हैं। ३ ।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਚਲਤਉ ਪੇਖੀਐ ਨਿਹਚਲੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥
सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥
समूचा जगत नश्वर दिखाई देता है लेकिन हरि का नाम ही निश्चल है।

ਕਰਿ ਮਿਤ੍ਰਾਈ ਸਾਧ ਸਿਉ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਵਹਿ ਠਾਉ ॥੪॥
करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥४॥
हे भाई! तू साधुओं के साथ मित्रता (मैत्री) कर चूंकि तुझे निश्चल स्थान प्राप्त हो जाए। ४ ।

ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਸੁਤ ਬੰਧਪਾ ਕੋਊ ਹੋਤ ਨ ਸਾਥ ॥
मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥
मित्र, साजन, पुत्र एवं रिश्तेदार कोई भी तेरा साथी नहीं बना रहेगा।

ਏਕੁ ਨਿਵਾਹੂ ਰਾਮ ਨਾਮ ਦੀਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਥ ॥੫॥
एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥५॥
सदैव साथ निभाने वाला राम का नाम ही है। वह प्रभु दीनों का नाथ है॥ ५॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਬੋਹਿਥ ਭਏ ਲਗਿ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਓ ਤੇਹ ॥
चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥
प्रभु के चरण-कमल जहाज हैं। उनके साथ जुड़कर ही मैं संसार-सागर से पार हो गया हूँ।

ਭੇਟਿਓ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਾਚਾ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਨੇਹ ॥੬॥
भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥६॥
मुझे पूर्ण सतिगुरु मिल गया है और अब मेरा प्रभु से सच्चा प्रेम हो गया है। ६ ।

ਸਾਧ ਤੇਰੇ ਕੀ ਜਾਚਨਾ ਵਿਸਰੁ ਨ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥
साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥
हे भगवान ! तेरे साधु की विनती है कि एक श्वास एवं ग्रास के समय भी तेरा नाम विस्मृत न हो।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਤੇਰੈ ਭਾਣੈ ਕਾਰਜ ਰਾਸਿ ॥੭॥
जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥७॥
जो कुछ तुझे भला लगता है, वही अच्छा है। तेरी रज़ा से ही सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं। ७ ॥

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਿਲੇ ਉਪਜੇ ਮਹਾ ਅਨੰਦ ॥
सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥
सुखों का सागर प्रियतम प्रभु जब मिल जाता है तो बड़ा आनंद उत्पन्न होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਭ ਦੁਖ ਮਿਟੇ ਪ੍ਰਭ ਭੇਟੇ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥੮॥੧॥੨॥
कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥८॥१॥२॥
हे नानक ! परमानंद प्रभु को मिलने से सभी दु:ख-क्लेश मिट गए ॥८॥१॥२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਬਿਰਹੜੇ ਘਰੁ ੪ ਛੰਤਾ ਕੀ ਜਤਿ
आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति
आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ ਪਿਆਰੇ ਦਰਸਨ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੧॥
पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥१॥
हे प्यारे ! हमेशा परब्रह्म प्रभु को ही याद करना चाहिए। मैं उस भगवान् के दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ। १॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖ ਬੀਸਰਹਿ ਪਿਆਰੇ ਸੋ ਕਿਉ ਤਜਣਾ ਜਾਇ ॥੨॥
जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥२॥
जिस भगवान् का सिमरन करने से दु:ख-क्लेश भूल जाते हैं, उसे कैसे त्यागा जा सकता है। २॥

ਇਹੁ ਤਨੁ ਵੇਚੀ ਸੰਤ ਪਹਿ ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਦੇਇ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥
इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥३॥
अपना यह तन मैं उस संत के पास बेचने को तत्पर हूँ यदि वह मुझे मेरे प्रियतम प्रभु से मिला दे। ३॥

ਸੁਖ ਸੀਗਾਰ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਫੀਕੇ ਤਜਿ ਛੋਡੇ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥੪॥
सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥४॥
हे मेरी माता! विकारों से युक्त मोह-माया के सभी सुख-सौन्दर्य फीके मानते हुए मैंने त्याग दिए हैं॥ ४॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਤਜਿ ਗਏ ਪਿਆਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨੀ ਪਾਇ ॥੫॥
कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥५॥
सच्चे गुरु के चरणों में लगने से काम, क्रोध एवं लोभ मुझे छोड़कर चले गए हैं। ५॥

ਜੋ ਜਨ ਰਾਤੇ ਰਾਮ ਸਿਉ ਪਿਆਰੇ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਇ ॥੬॥
जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥६॥
जो लोग राम के साथ अनुरक्त हुए हैं, वे अन्य कहीं नहीं जाते। ६।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਜਿਨ੍ੀ ਚਾਖਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਇ ॥੭॥
हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥७॥
जिन्होंने हरि रस को चखा है, वे तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं। ७ ॥

ਅੰਚਲੁ ਗਹਿਆ ਸਾਧ ਕਾ ਨਾਨਕ ਭੈ ਸਾਗਰੁ ਪਾਰਿ ਪਰਾਇ ॥੮॥੧॥੩॥
अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥८॥१॥३॥
हे नानक ! जो साधु का आंचल पकड़ते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं। ॥८॥१॥३॥

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਕਟੀਐ ਪਿਆਰੇ ਜਬ ਭੇਟੈ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੧॥
जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥१॥
हे प्यारे ! जब जगत का बादशाह हरि मिल जाता है तो जन्म-मरण का दु:ख दूर हो जाता है। १॥

ਸੁੰਦਰੁ ਸੁਘਰੁ ਸੁਜਾਣੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਜੀਵਨੁ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਇ ॥੨॥
सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥२॥
मेरा प्रभु सुन्दर, चतुर, सुजान एवं मेरे जीवन का आधार है, जब उसके दर्शन होते हैं तो मानो प्राण दाखिल हो गए हैं। २ ।

ਜੋ ਜੀਅ ਤੁਝ ਤੇ ਬੀਛੁਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥੩॥
जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥३॥
हे प्यारे स्वामी ! जो जीव तुझ से बिछुड़े हैं, वे माया रूपी विष खाकर जन्मते-मरते रहते हैं। ३ ॥

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਮੇਲਹਿ ਸੋ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਤਿਸ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥੪॥
जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥४॥
हे प्यारे ! जिसे तू अपने साथ मिलाता है केवल वही तुझसे मिलता है। मैं उस भाग्यवान के चरण स्पर्श करता हूँ। ४ ।

ਜੋ ਸੁਖੁ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਤੇ ਪਿਆਰੇ ਮੁਖ ਤੇ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੫॥
जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥५॥
हे प्यारे ! तेरे दर्शन करने से जो सुख मिलता है, वह मुँह से मुझसे कहा नहीं जा सकता। ५ ।

ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੁਟਈ ਪਿਆਰੇ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਰਹੀ ਸਮਾਇ ॥੬॥

साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥६॥

हे प्यारे ! मेरी सच्ची प्रीति तुझसे कभी नहीं टूटती और मेरी यह प्रीति युगों-युगांतरों में मेरे हृदय में समाई रहती है। ६॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭਲਾ ਪਿਆਰੇ ਤੇਰੀ ਅਮਰੁ ਰਜਾਇ ॥੭॥
जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥७॥
हे प्यारे ! जो कुछ तुझे अच्छा लगता है, वही भला है। तेरा हुक्म अटल है। ७ ॥

ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਨਾਰਾਇਣੈ ਪਿਆਰੇ ਮਾਤੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੮॥੨॥੪॥
नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥८॥२॥४॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नारायण के प्रेम रंग में अनुरक्त रहते हैं, वे सहज ही उसके प्रेम में मस्त रहते हैं। ८ ॥ २ ॥ ४॥

ਸਭ ਬਿਧਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨਤੇ ਪਿਆਰੇ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਹਉ ਸੁਨਾਇ ॥੧॥
सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥१॥
हे प्यारे प्रभु! समस्त विधियाँ तुम ही जानते हो, मैं किसके पास इसे सुनाकर कहूँ॥ १॥

ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਜੀਆ ਸਭਨਾ ਕਾ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਪਹਿਰਹਿ ਖਾਇ ॥੨॥
तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥२॥
हे प्रभु! तू सब जीवों का दाता है, जो कुछ तू देता है, उसे ही वे खाते और पहनते हैं। २॥

ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਤੇਰੀ ਆਗਿਆ ਪਿਆਰੇ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥੩॥
सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥३॥
हे प्यारे ! सुख-दुख तेरे आज्ञाकारी हैं अर्थात् प्राणियों को प्रभु की आज्ञा से ही कभी सुख एवं दु:ख मिलता है। तेरे अलावा दूसरा कोई ठिकाना नहीं। ३॥

ਜੋ ਤੂੰ ਕਰਾਵਹਿ ਸੋ ਕਰੀ ਪਿਆਰੇ ਅਵਰੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥੪॥
जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥४॥
जो कुछ तू करवाता है, मैं वही करता हूँ। अन्य कुछ भी मैं कर नहीं सकता। ४ ।

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਸਭ ਸੁਹਾਵਣੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਤੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥੫॥
दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥५॥
सभी दिन-रात सुहावने हैं जब हरि का नाम सुमिरन किया जाता है। ५ ।

ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਪਿਆਰੇ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇ ॥੬॥
साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥६॥
जीव वही कर्म करता है, जो धुर से उसकी तकदीर का लेख उसके मस्तक पर लिखा हुआ है। ६॥

ਏਕੋ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੭॥
एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥७॥
एक ईश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और वह घट-घट में समाया हुआ है। ७ ।

ਸੰਸਾਰ ਕੂਪ ਤੇ ਉਧਰਿ ਲੈ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਇ ॥੮॥੩॥੨੨॥੧੫॥੨॥੪੨॥
संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥८॥३॥२२॥१५॥२॥४२॥
हे हरि प्रभु! नानक ने तेरी शरण ली है, इसलिए उसका संसार के कूप में से बाहर निकाल कर उद्धार कर दीजिए ॥ ८ ॥३॥ २२॥ १५॥ २॥ ४२ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਪਟੀ ਲਿਖੀ
रागु आसा महला १ पटी लिखी
रागु आसा महला १ पटी लिखी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਸੈ ਸੋਇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਜਿਨਿ ਸਾਜੀ ਸਭਨਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਭਇਆ ॥
ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥
स-जिसने यह सृष्टि-रचना की है, वह सबका मालिक एक परमात्मा ही है।

ਸੇਵਤ ਰਹੇ ਚਿਤੁ ਜਿਨ੍ ਕਾ ਲਾਗਾ ਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਕਾ ਸਫਲੁ ਭਇਆ ॥੧॥
सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥१॥
जिनका चित प्रभु की सेवा-भक्ति में लीन रहता है, उनका इस दुनिया में जन्म लेकर आना सफल हो गया है। १॥

ਮਨ ਕਾਹੇ ਭੂਲੇ ਮੂੜ ਮਨਾ ॥
मन काहे भूले मूड़ मना ॥
हे मेरे मूर्ख मन ! तू परमात्मा को क्यों भुला रहा है ?

ਜਬ ਲੇਖਾ ਦੇਵਹਿ ਬੀਰਾ ਤਉ ਪੜਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई! जब तुम अपने कर्मों का लेखा प्रदान करोगे तो तभी तुम विद्वान समझे जाओगे। १॥ रहाउ ॥

ਈਵੜੀ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਸਚਾ ਸੋਈ ॥
ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥
इ-आदिपुरुष ही समस्त जीवों का दाता है और वही सत्य है।

ਏਨਾ ਅਖਰਾ ਮਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਤਿਸੁ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੨

एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥२॥

इन अक्षरों के माध्यम से जो गुरुमुख बनकर भगवान को समझता है, उसके सिर पर कोई भी कर्मों का लेखा नहीं रहता। २॥

ਊੜੈ ਉਪਮਾ ਤਾ ਕੀ ਕੀਜੈ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥

ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥

उ-उपमा उस परमात्मा की करनी चाहिए, जिसका अंत नहीं पाया जा सकता।

ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਸੇਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਜਿਨ੍ੀ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥੩॥

सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥३॥

जो मनुष्य सेवा करते हैं और सत्य की साधना करते हैं उन्हें जीवन का फल मिल जाता है॥३॥

ਙੰਙੈ ਙਿਆਨੁ ਬੂਝੈ ਜੇ ਕੋਈ ਪੜਿਆ ਪੰਡਿਤੁ ਸੋਈ ॥

ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥

ङ-यदि कोई व्यक्ति असल में ज्ञान को जान लेता है तो वह पढ़ा लिखा विद्वान पण्डित बन जाता है।

ਸਰਬ ਜੀਆ ਮਹਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਤਾ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਈ ॥੪॥

सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥४॥

यदि कोई व्यक्ति समस्त जीवों में एक ईश्वर को बसा हुआ समझ ले तो वह अहंत्व की बात व्यक्त नहीं करता ॥ ४॥

ਕਕੈ ਕੇਸ ਪੁੰਡਰ ਜਬ ਹੂਏ ਵਿਣੁ ਸਾਬੂਣੈ ਉਜਲਿਆ ॥

ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥

क-जब आदमी के सिर के बाल सफेद हो जाते हैं तो वे साबुन के बिना ही चमकते रहते हैं।

ਜਮ ਰਾਜੇ ਕੇ ਹੇਰੂ ਆਏ ਮਾਇਆ ਕੈ ਸੰਗਲਿ ਬੰਧਿ ਲਇਆ ॥੫॥

जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥५॥

यमराज के भेजे हुए दूत जब आ जाते हैं तो वे उसे माया की जंजीर से बांधकर जकड़ लेते ॥ ५ ॥

ਖਖੈ ਖੁੰਦਕਾਰੁ ਸਾਹ ਆਲਮੁ ਕਰਿ ਖਰੀਦਿ ਜਿਨਿ ਖਰਚੁ ਦੀਆ ॥

खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥

ख-खुदा सारी दुनिया का बादशाह है, जो सारे आलम को अपना सेवक समझ कर रोजी प्रदान करता है।

ਬੰਧਨਿ ਜਾ ਕੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਾਧਿਆ ਅਵਰੀ ਕਾ ਨਹੀ ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ॥੬॥

बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥६॥

प्रभु ने समूचे जगत को बन्धनों में जकड़ा हुआ है। उस खुदा के अलावा किसी दूसरे का हुक्म जीवों पर नहीं चलता। ६॥

ਗਗੈ ਗੋਇ ਗਾਇ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਗਲੀ ਗੋਬਿਦੁ ਗਰਬਿ ਭਇਆ ॥

गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥

ग-जो मनुष्य गोविन्द का गुणानुवाद करना छोड़ देता है, वह गोविन्द की बातें करके ही घमण्डी हो जाता है। ॥

ਘੜਿ ਭਾਂਡੇ ਜਿਨਿ ਆਵੀ ਸਾਜੀ ਚਾੜਣ ਵਾਹੈ ਤਈ ਕੀਆ ॥੭॥

घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥७॥

गोविन्द ने जीव रूपी बर्तन बनाए हैं और सृष्टि रूपी भट्टी की रचना की है, उनको उसमें डालने हेतु समय नियत किया हुआ है। ७ ॥

ਘਘੈ ਘਾਲ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਘਾਲੈ ਸਬਦਿ ਗੁਰੂ ਕੈ ਲਾਗਿ ਰਹੈ ॥

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥

घ-यदि मनुष्य सेवक बनकर गुरु की अथक साधना करता रहे और गुरु के शब्द से जुड़ा रहे अर्थात् पूर्ण आस्था रखे,

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਜੇ ਸਮ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਇਨ ਬਿਧਿ ਸਾਹਿਬੁ ਰਮਤੁ ਰਹੈ ॥੮॥

बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥८॥

यदि वह दु:ख-सुख को एक समान समझता रहे तो वह इस विधि से प्रभु में लीन हो जाता है। ८ ॥

ਚਚੈ ਚਾਰਿ ਵੇਦ ਜਿਨਿ ਸਾਜੇ ਚਾਰੇ ਖਾਣੀ ਚਾਰਿ ਜੁਗਾ ॥

चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥

च-जिस प्रभु ने चारों वेद रचे हैं, जिसने चारों स्रोत (अंडज, जेरज, स्वदेज एवं उद्भज) एवं चारों युगों-सतयुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग की रचना की है,

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਜੋਗੀ ਖਾਣੀ ਭੋਗੀ ਪੜਿਆ ਪੰਡਿਤੁ ਆਪਿ ਥੀਆ ॥੯॥

जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ ॥९॥

सभी युगों में वह स्वयं ही व्यापक होकर योगी, जीवन के स्रोतों का आनंद प्राप्त करने वाला भोगी एवं विद्वान और पण्डित बना हुआ है॥ ६ ॥

ਛਛੈ ਛਾਇਆ ਵਰਤੀ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਭਰਮੁ ਹੋਆ ॥
छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥
छ-हे भगवान ! तेरी ही माया रूपी छाया समस्त जीवों के भीतर अग्रसर है। भ्रम तेरा ही बनाया हुआ है।

ਭਰਮੁ ਉਪਾਇ ਭੁਲਾਈਅਨੁ ਆਪੇ ਤੇਰਾ ਕਰਮੁ ਹੋਆ ਤਿਨ੍ ਗੁਰੂ ਮਿਲਿਆ ॥੧੦॥
भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥१०॥
भ्रम उत्पन्न करके तुम स्वयं ही जीवों को कुमार्गगामी करते हो। जिन पर तेरी मेहर है, उन्हें गुरु मिल जाता है। १० ॥

ਜਜੈ ਜਾਨੁ ਮੰਗਤ ਜਨੁ ਜਾਚੈ ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਭੀਖ ਭਵਿਆ ॥
जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥
ज-हे प्रभु! तेरा यह याचक जो चौरासी लाख योनियों में भीख माँगता था, तुझसे तेरा ज्ञान माँगता है।

ਏਕੋ ਲੇਵੈ ਏਕੋ ਦੇਵੈ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਮੈ ਸੁਣਿਆ ॥੧੧॥
एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥११॥
एक प्रभु ही (दान) ले जाता है और एक वही दान देता है। किसी दूसरे के बारे में मैंने अभी तक नहीं सुना। ॥११॥

ਝਝੈ ਝੂਰਿ ਮਰਹੁ ਕਿਆ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜੋ ਕਿਛੁ ਦੇਣਾ ਸੁ ਦੇ ਰਹਿਆ ॥
झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥
झ - हे प्राणी ! तुम क्यों संवेदनाओ से मर रहे हो। जो कुछ भगवान् ने हमें निर्वाह हेतु देना है, वह हमें देता जा रहा है।

ਦੇ ਦੇ ਵੇਖੈ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਜਿਉ ਜੀਆ ਕਾ ਰਿਜਕੁ ਪਇਆ ॥੧੨॥
दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥१२॥
जैसे-जैसे प्राणियों हेतु विधि के विधान अनुसार भोजन निश्चित है, भगवान सबको दे रहा है, वह सबका भरण-पोषण कर रहा है ॥ १२ ॥

ਞੰਞੈ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਾ ਦੇਖਾ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਨਾਹੀ ॥
ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥
ज-जब मैं अपनी दृष्टि से हर तरफ देखता हूँ तो मुझे भगवान के अलावा कोई भी दिखाई नहीं देता।

ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਥਾਈ ਏਕੁ ਵਸਿਆ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੧੩॥
एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥१३॥
एक ईश्वर समस्त स्थानों में मौजूद है और वही मन में बसता है। १३॥

ਟਟੈ ਟੰਚੁ ਕਰਹੁ ਕਿਆ ਪ੍ਰਾਣੀ ਘੜੀ ਕਿ ਮੁਹਤਿ ਕਿ ਉਠਿ ਚਲਣਾ ॥
टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥
ट-हे प्राणी! तुम क्यों छल-कपट कर रहे हो। इस दुनिया से तुम एक क्षण एवं पल भर में ही उठकर चले जाओगे अर्थात् प्राण त्याग दोगे।

ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰਹੁ ਅਪਣਾ ਭਾਜਿ ਪੜਹੁ ਤੁਮ ਹਰਿ ਸਰਣਾ ॥੧੪॥
जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥१४॥
अपने जन्म खेल को जुए में मत हारो और भाग कर हरि की शरण में चले जाओ। १४ ॥

ਠਠੈ ਠਾਢਿ ਵਰਤੀ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਜਿਨ੍ ਕਾ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥
ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥
ठ-जिनका चित्त हरि के चरणों से लग जाता है, उनके अन्तर्मन में सुख-शांति बस जाती है।

ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ਸੇਈ ਜਨ ਨਿਸਤਰੇ ਤਉ ਪਰਸਾਦੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੧੫॥
चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥१५॥
हे प्रभु! जिनका चित्त तुझसे जुड़ा हुआ है, वे मनुष्य संसार-सागर से पार हो जाते हैं और तेरी कृपा से उन्हें सुख प्राप्त होता है। १५॥

ਡਡੈ ਡੰਫੁ ਕਰਹੁ ਕਿਆ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜੋ ਕਿਛੁ ਹੋਆ ਸੁ ਸਭੁ ਚਲਣਾ ॥
डडै ड्मफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥
ड-हे नश्वर प्राणी ! तुम क्यों व्यर्थ के आडम्बर करते हो, सृष्टि में जो कुछ उत्पन्न हुआ है, वे सब नाशवान है।

ਤਿਸੈ ਸਰੇਵਹੁ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹੁ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੧੬॥
तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥१६॥
यदि प्रभु की भक्ति करोगे तभी तुझे आत्मिक सुख प्राप्त होगा। प्रभु समस्त जीवों में निरन्तर व्यापक है। १६ ॥

ਢਢੈ ਢਾਹਿ ਉਸਾਰੈ ਆਪੇ ਜਿਉ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਕਰੇ ॥
ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥
ढ-प्रभु स्वयं ही सृष्टि रचना को ध्वस्त करता है और स्वयं ही निर्मित करता है। जैसे उसको मंजूर है वह वैसे ही करता है।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਤਿਸੁ ਨਿਸਤਾਰੇ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧੭॥

करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥१७॥

सृष्टि की रचना करके वह देखता एवं अपना हुक्म जीवों पर लागू करता है। वह जिस जीव पर अपनी करुणा-दृष्टि करता है, उसे मुक्ति प्रदान कर देता है॥ १७ ॥

ਣਾਣੈ ਰਵਤੁ ਰਹੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸੋਈ ॥

णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥

ण-जिस प्राणी के अन्तर में प्रभु समाया हुआ है, वह हरि का गुणगान करता रहता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਕਰਤਾ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧੮॥

आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥

कर्ता प्रभु जिसे अपने साथ मिला लेता है, वह बार-बार जन्म नहीं लेता। १८ ॥

ਤਤੈ ਤਾਰੂ ਭਵਜਲੁ ਹੋਆ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥

ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ ॥

त-यह भयानक संसार-सागर बहुत गहरा है, इसका कोई भी अन्त (किनारा) नहीं पाया जा सकता।

ਨਾ ਤਰ ਨਾ ਤੁਲਹਾ ਹਮ ਬੂਡਸਿ ਤਾਰਿ ਲੇਹਿ ਤਾਰਣ ਰਾਇਆ ॥੧੯॥

ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥१९॥

हमारे पास न कोई नैया है और न ही कोई तुला है। हे तारनहार प्रभु ! मैं डूब रहा हूँ, मुझे पार कर दीजिए॥१९॥

ਥਥੈ ਥਾਨਿ ਥਾਨੰਤਰਿ ਸੋਈ ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਭੁ ਹੋਆ ॥

थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥

थ-समस्त स्थानों एवं हर जगह पर ईश्वर मौजूद है। उसका किया ही सृष्टि में सब कुछ होता है।

ਕਿਆ ਭਰਮੁ ਕਿਆ ਮਾਇਆ ਕਹੀਐ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਭਲਾ ॥੨੦॥

किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥२०॥

भ्रम क्या है? माया किसे कहते हैं ? जो कुछ उसे मंजूर है, वही भला है॥२०॥

ਦਦੈ ਦੋਸੁ ਨ ਦੇਊ ਕਿਸੈ ਦੋਸੁ ਕਰੰਮਾ ਆਪਣਿਆ ॥

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करमा आपणिआ ॥

द-हमें किसी पर दोष नहीं लगाना चाहिए क्योंकि दोष तो हमारे अपने कर्मो का है।

ਜੋ ਮੈ ਕੀਆ ਸੋ ਮੈ ਪਾਇਆ ਦੋਸੁ ਨ ਦੀਜੈ ਅਵਰ ਜਨਾ ॥੨੧॥

जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥२१॥

जो कुछ (अच्छा-बुरा) कर्म मैंने किया था, उसका फल मुझे मिल गया है। इसलिए मैं किसी दूसरे पर दोष नहीं लगाता ॥ २१ ॥

ਧਧੈ ਧਾਰਿ ਕਲਾ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਹਰਿ ਚੀਜੀ ਜਿਨਿ ਰੰਗ ਕੀਆ ॥

धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥

ध-जिस परमात्मा की कला (शक्ति) ने धरती को टिकाया एवं स्थापित किया हुआ है, जिसने प्रत्येक वस्तु को रंग (अस्तित्व) प्रदान किया है,

ਤਿਸ ਦਾ ਦੀਆ ਸਭਨੀ ਲੀਆ ਕਰਮੀ ਕਰਮੀ ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ॥੨੨॥

तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥२२॥

जिसका दिया सभी प्राप्त करते हैं और उसका हुक्म प्राणियों के कर्मो अनुसार क्रियाशील है॥२२॥

ਨੰਨੈ ਨਾਹ ਭੋਗ ਨਿਤ ਭੋਗੈ ਨਾ ਡੀਠਾ ਨਾ ਸੰਮ੍ਹਲਿਆ ॥

नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना सम्हलिआ ॥

न-मैं अपने मालिक-प्रभु के दिए पदार्थ नित्य भोगती रहती हूँ लेकिन मैंने आज तक उसे न कभी देखा है और न कभी याद किया है।

ਗਲੀ ਹਉ ਸੋਹਾਗਣਿ ਭੈਣੇ ਕੰਤੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਮੈ ਮਿਲਿਆ ॥੨੩॥

गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥२३॥

हे बहन ! बातों से तो कहने को मैं सुहागिन कही जाती हूँ परन्तु मेरा पति-प्रभु मुझे कभी नहीं मिला ॥२३॥

ਪਪੈ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਵੇਖਣ ਕਉ ਪਰਪੰਚੁ ਕੀਆ ॥

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥

प-पातशाह परमेश्वर ने सृष्टि की रचना अपने देखने के लिए की है।

ਦੇਖੈ ਬੂਝੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੨੪॥

देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥२४॥

प्रभु जीवों को देखता, समझता एवं सब कुछ जानता है। भीतर एवं बाहर वह सबमें समाया हुआ है॥ २४॥

ਫਫੈ ਫਾਹੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਾਸਾ ਜਮ ਕੈ ਸੰਗਲਿ ਬੰਧਿ ਲਇਆ ॥

फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ ॥

फ-समूचा जगत फाँसी में फँसा हुआ है और यम ने जंजीर से बांधा हुआ है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੇ ਨਰ ਉਬਰੇ ਜਿ ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤਿ ਭਜਿ ਪਇਆ ॥੨੫॥

गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥२५॥

गुरु के प्रसाद (कृपा) से वही नर पार होते हैं जो भागकर हरि की शरण लेते हैं।॥ २५॥

ਬਬੈ ਬਾਜੀ ਖੇਲਣ ਲਾਗਾ ਚਉਪੜਿ ਕੀਤੇ ਚਾਰਿ ਜੁਗਾ ॥

बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥

ब-चारों ही युगों को अपनी चौपड़ बनाकर प्रभु ने खेल खेलना शुरू कर दिया।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭ ਸਾਰੀ ਕੀਤੇ ਪਾਸਾ ਢਾਲਣਿ ਆਪਿ ਲਗਾ ॥੨੬॥
जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥२६॥
वह समस्त जीव-जन्तुओं को अपनी गोटियां बनाकर स्वयं ही गोटियां फॅक कर खेलने लग गया ॥ २६॥

ਭਭੈ ਭਾਲਹਿ ਸੇ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨ੍ ਕਉ ਭਉ ਪਇਆ ॥
भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥
भ-गुरु की कृपा से जिनके मन में प्रभु का भय टिक जाता है, वह खोजते हुए फल के तौर पर उसे पा लेते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਫਿਰਹਿ ਨ ਚੇਤਹਿ ਮੂੜੇ ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਫੇਰੁ ਪਇਆ ॥੨੭॥
मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥२७॥
स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य भटकते फिरते हैं और प्रभु को याद नहीं करते, परिणामस्वरूप वे चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं॥ २७ ॥

ਮੰਮੈ ਮੋਹੁ ਮਰਣੁ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਮਰਣੁ ਭਇਆ ਤਬ ਚੇਤਵਿਆ ॥
ममै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥
म-दुनिया के मोह के कारण जीव को मृत्यु एवं मधुसूदन याद नहीं आता लेकिन जब मृत्यु का समय आता है, तभी प्राणी में प्रभु स्मरण का विचार उत्पन्न होता है।

ਕਾਇਆ ਭੀਤਰਿ ਅਵਰੋ ਪੜਿਆ ਮੰਮਾ ਅਖਰੁ ਵੀਸਰਿਆ ॥੨੮॥
काइआ भीतरि अवरो पड़िआ ममा अखरु वीसरिआ ॥२८॥
जब तक काया में प्राण है, वह दूसरी बातें पढ़ता रहता है और 'म' अक्षर मृत्यु एवं मधुसूदन को विस्मृत कर देता है॥ २८ ॥

ਯਯੈ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਵੀ ਕਦ ਹੀ ਜੇ ਕਰਿ ਸਚੁ ਪਛਾਣੈ ॥
ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥
य-यदि मनुष्य सत्य को पहचान ले तो वह दोबारा कदाचित जन्म नहीं लेता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਖੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥੨੯॥
गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥२९॥
गुरुमुख बनकर ही प्रभु के बारे में कहा जा सकता है, गुरुमुख बनकर ही मनुष्य उसके भेद को समझता है और गुरुमुख ही एक ईश्वर को जानता है ॥२९॥

ਰਾਰੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਜੇਤੇ ਕੀਏ ਜੰਤਾ ॥
रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥
र-परमात्मा ने जितने भी जीव पैदा किए, वह सब जीवों के अन्तर में बस रहा है।

ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਧੰਧੈ ਸਭ ਲਾਏ ਕਰਮੁ ਹੋਆ ਤਿਨ ਨਾਮੁ ਲਇਆ ॥੩੦॥
जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥३०॥
प्रभु ने जीवों को उत्पन्न करके उन्हें जगत के कामकाज में लगा दिया है। जिन पर ईश्वर की करुणा होती है, वे उसका नाम-स्मरण करते हैं॥ ३० ॥

ਲਲੈ ਲਾਇ ਧੰਧੈ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਮੀਠਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਕੀਆ ॥
ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥
ल-प्रभु ने जीवों की उत्पत्ति करके उन्हें विभिन्न कार्यों में लगा दिया है, उसने उनके लिए माया का मोह मीठा बना दिया है।

ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਸਮ ਕਰਿ ਸਹਣਾ ਭਾਣੈ ਤਾ ਕੈ ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ॥੩੧॥
खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥३१॥
वह जीवों को खाने-पीने के पदार्थ देता है। उसकी रज़ा में उसका हुक्म क्रियान्वित होता है। इसलिए सुख-दुःख को एक समान समझना चाहिए॥ ३१॥

ਵਵੈ ਵਾਸੁਦੇਉ ਪਰਮੇਸਰੁ ਵੇਖਣ ਕਉ ਜਿਨਿ ਵੇਸੁ ਕੀਆ ॥
ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥
व-वासुदेव परमेश्वर ने देखने हेतु संसार रूपी वेष रचा है।

ਵੇਖੈ ਚਾਖੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੩੨॥
वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥३२॥
वह देखता, चखता एवं सब कुछ जानता है। यह जीवों के भीतर एवं बाहर व्यापक हो रहा है। ३२ ॥

ੜਾੜੈ ਰਾੜਿ ਕਰਹਿ ਕਿਆ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਜਿ ਅਮਰੁ ਹੋਆ ॥
ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥
ड़ - हे प्राणी ! तुम क्यों वाद - विवाद करते हो, इसका कोई लाभ नहीं इसलिए उस परमात्मा को याद करो जो अमर है।

ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹੁ ਓਸੁ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਕੀਆ ॥੩੩॥
तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥३३॥
उसका ध्यान - मनन करो और सत्य में समां जाओ और उस पर कुर्बान होवो।

ਹਾਹੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਜਿਨਿ ਰਿਜਕੁ ਦੀਆ ॥
हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥
ह-प्रभु के अलावा दूसरा कोई दाता नहीं जो जीवों को उत्पन्न करके उन्हें रोज़ी प्रदान करके उनका भरण-पोषण करता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਹੁ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੀਆ ॥੩੪॥
हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥३४॥
हरि-नाम का ध्यान करो, हरि के नाम में समा जाओ और रात-दिन हरि नाम का लाभ प्राप्त करो।। ३४ ।।

ਆਇੜੈ ਆਪਿ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਛੋਡੀ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥
आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥
जिस परमात्मा ने आप ही दुनिया की रचना की है, वह जो कुछ करना चाहता है, वही कुछ कर रहा है।

ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਨਾਨਕ ਸਾਇਰ ਇਵ ਕਹਿਆ ॥੩੫॥੧॥
करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥३५॥१॥
नानक कवि ने यही कहा है कि प्रभु खुद ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह सबकुछ जानता है॥ ३५॥ १॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਪਟੀ
रागु आसा महला ३ पटी
रागु आसा महला ३ पटी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਅਯੋ ਅੰਡੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਇਆ ਕਾਖੈ ਘੰਡੈ ਕਾਲੁ ਭਇਆ ॥
अयो अंडै सभु जगु आइआ काखै घंडै कालु भइआ ॥
अयो अंडै का अर्थ यह वर्णित किया गया है कि यह समूचा जगत परमात्मा के हुक्म से पैदा हुआ है, काखे घंडै का यह अर्थ बताया गया है कि यह जगत काल (मृत्यु) के वश में पड़ गया है।

ਰੀਰੀ ਲਲੀ ਪਾਪ ਕਮਾਣੇ ਪੜਿ ਅਵਗਣ ਗੁਣ ਵੀਸਰਿਆ ॥੧॥
रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥१॥
री री लली का अर्थ यह वर्णित है कि नश्वर प्राणी पाप कर्म करता जा रहा है और अवगुणों में फंसकर गुणों को विस्मृत किए जा रहा है॥ १॥

ਮਨ ਐਸਾ ਲੇਖਾ ਤੂੰ ਕੀ ਪੜਿਆ ॥
मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥
हे मेरे मन ! तूने भला ऐसा लेखा क्यों पढ़ा है,

ਲੇਖਾ ਦੇਣਾ ਤੇਰੈ ਸਿਰਿ ਰਹਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि तेरे सिर पर लेखा देना अभी भी शेष है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਿਧੰਛਾਇਐ ਸਿਮਰਹਿ ਨਾਹੀ ਨੰਨੈ ਨਾ ਤੁਧੁ ਨਾਮੁ ਲਇਆ ॥
सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥
सिघंडाइऐ - हे जीव ! तुम प्रभु को याद नहीं करते। न-न ही तुम उसका नाम लेते हो।

ਛਛੈ ਛੀਜਹਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਮੂੜੇ ਕਿਉ ਛੂਟਹਿ ਜਮਿ ਪਾਕੜਿਆ ॥੨॥
छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥२॥
छ - हे मूर्ख जीव ! तुम रात दिन नाश होते जा रहे हो अर्थात अपना गवां रहे हो। जब यमदूत ने तुझे पकड़ लिया तो फिर कैसे मुक्त होवोगे। ॥२॥

ਬਬੈ ਬੂਝਹਿ ਨਾਹੀ ਮੂੜੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਤੇਰਾ ਜਨਮੁ ਗਇਆ ॥
बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥
व-हे मूर्ख ! तुम सन्मार्ग नहीं समझते और भ्रम में कुमार्गगामी होकर तुम अपना जन्म व्यर्थ गंवा रहे हो।

ਅਣਹੋਦਾ ਨਾਉ ਧਰਾਇਓ ਪਾਧਾ ਅਵਰਾ ਕਾ ਭਾਰੁ ਤੁਧੁ ਲਇਆ ॥੩॥
अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥३॥
तुमने निरर्थक ही अपना नाम पण्डित (पांधा) रखवाया है, जबकि दूसरों का भार अपने सिर पर लादा हुआ है।॥ ३॥

ਜਜੈ ਜੋਤਿ ਹਿਰਿ ਲਈ ਤੇਰੀ ਮੂੜੇ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਹਿਗਾ ॥
जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥
ज-हे मूर्ख ! तेरी सुमति मोह-माया ने छीन ली है, अन्तिम समय जब संसार से गमन करोगे तो पश्चाताप करोगे।

ਏਕੁ ਸਬਦੁ ਤੂੰ ਚੀਨਹਿ ਨਾਹੀ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਆਵਹਿਗਾ ॥੪॥
एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥४॥
एक शब्द (अर्थात् परमात्मा के नाम) की तुम पहचान नहीं करते जिसके परिणामस्वरूप बार-बार योनियों में आते रहोगे ॥ ४ ॥

ਤੁਧੁ ਸਿਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਪੜੁ ਪੰਡਿਤ ਅਵਰਾ ਨੋ ਨ ਸਿਖਾਲਿ ਬਿਖਿਆ ॥

तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ ॥

हे पण्डित ! जो तेरे सिर पर तकदीर का लेख लिखा हुआ है, उसे पढ़ और दूसरों को विष रूपी माया का लेखा मत पढ़ा।

ਪਹਿਲਾ ਫਾਹਾ ਪਇਆ ਪਾਧੇ ਪਿਛੈ ਦੇ ਗਲਿ ਚਾਟੜਿਆ ॥੫॥
पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥५॥
क्योंकि पहले तो पण्डित के अपने गले में माया का फन्दा पड़ता है और तदुपरांत अपने शिष्यों के गले में भी वही फाँसी पड़ जाती है॥ ५॥

ਸਸੈ ਸੰਜਮੁ ਗਇਓ ਮੂੜੇ ਏਕੁ ਦਾਨੁ ਤੁਧੁ ਕੁਥਾਇ ਲਇਆ ॥
ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥
स-हे मूर्ख ! तूने अपना संयम गंवा दिया है। एक तो तूने अयोग्य दान ले लिया है।

ਸਾਈ ਪੁਤ੍ਰੀ ਜਜਮਾਨ ਕੀ ਸਾ ਤੇਰੀ ਏਤੁ ਧਾਨਿ ਖਾਧੈ ਤੇਰਾ ਜਨਮੁ ਗਇਆ ॥੬॥
साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥६॥
यजमान की पुत्री तेरी अपनी ही पुत्री है और उसका विवाह कराकर दान लेकर पाप किया है। इस धन को लेकर तूने अपने जन्म का सत्यनाश कर लिया है॥ ६॥

ਮੰਮੈ ਮਤਿ ਹਿਰਿ ਲਈ ਤੇਰੀ ਮੂੜੇ ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਪਇਆ ॥
ममै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥
म-हे मूर्ख ! तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, अहंकार का बड़ा रोग तुझे लग गया है।

ਅੰਤਰ ਆਤਮੈ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਚੀਨ੍ਹਿਆ ਮਾਇਆ ਕਾ ਮੁਹਤਾਜੁ ਭਇਆ ॥੭॥
अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥७॥
अपनी अन्तरात्मा में तुम ब्रह्म को नहीं पहचानते और माया के मोहताज बनकर रह गए हो ॥ ७ ॥

ਕਕੈ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਭਰਮਿਓਹੁ ਮੂੜੇ ਮਮਤਾ ਲਾਗੇ ਤੁਧੁ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ॥
ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥
क-हे मूर्ख ! तुम कामवासना एवं क्रोध में भटकते फिरते हो और सांसारिक ममता के साथ लग कर तूने हरि को भुला दिया है।

ਪੜਹਿ ਗੁਣਹਿ ਤੂੰ ਬਹੁਤੁ ਪੁਕਾਰਹਿ ਵਿਣੁ ਬੂਝੇ ਤੂੰ ਡੂਬਿ ਮੁਆ ॥੮॥
पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥८॥
तुम धार्मिक ग्रंथ पढ़ते रहते हो, उनके गुणों के बारे में सोचते रहते हो और बहुत ऊँची-ऊँची बोलकर दूसरों को सुनाते रहते हो। परन्तु ज्ञान को समझे बिना तुम डूब कर मर चुके हो॥ ८॥

ਤਤੈ ਤਾਮਸਿ ਜਲਿਓਹੁ ਮੂੜੇ ਥਥੈ ਥਾਨ ਭਰਿਸਟੁ ਹੋਆ ॥
ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥
त-हे मूर्ख ! क्रोधाग्नि ने तुझे जला कर रख दिया है। थ-जिस स्थान पर तुम रहते हो, वह भी भृष्ट हो गया है।

ਘਘੈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਫਿਰਹਿ ਤੂੰ ਮੂੜੇ ਦਦੈ ਦਾਨੁ ਨ ਤੁਧੁ ਲਇਆ ॥੯॥
घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥९॥
घ-हे मूर्ख (पण्डित) ! तुम घर-घर पर माँगते फिरते हो। द-प्रभु नाम का दान तूने अभी तक किसी गुरु से नहीं लिया।॥९॥

ਪਪੈ ਪਾਰਿ ਨ ਪਵਹੀ ਮੂੜੇ ਪਰਪੰਚਿ ਤੂੰ ਪਲਚਿ ਰਹਿਆ ॥
पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥
प-हे मूर्ख ! तुम दुनिया के प्रपंचों में इतने लिपटे हुए हो कि तुम्हारा भवसागर से पार उतारा नहीं होना।

ਸਚੈ ਆਪਿ ਖੁਆਇਓਹੁ ਮੂੜੇ ਇਹੁ ਸਿਰਿ ਤੇਰੈ ਲੇਖੁ ਪਇਆ ॥੧੦॥
सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥१०॥
सत्य (प्रभु) ने तुझे स्वयं मोह-माया में कुमार्गगामी किया है। हे मूर्ख ! तेरे सिर पर यही भाग्य लेख लिखा हुआ था ॥ १०॥

ਭਭੈ ਭਵਜਲਿ ਡੁਬੋਹੁ ਮੂੜੇ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਗਲਤਾਨੁ ਭਇਆ ॥
भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥
भ-हे मूर्ख ! तू माया में इतना लीन हो चुका है कि भवसागर में डूबता जा रहा है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥੧੧॥
गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥११॥
जो गुरु की कृपा से एक ईश्वर को समझता है, वह एक क्षण में ही भवसागर से पार हो जाता है॥ ११॥

ਵਵੈ ਵਾਰੀ ਆਈਆ ਮੂੜੇ ਵਾਸੁਦੇਉ ਤੁਧੁ ਵੀਸਰਿਆ ॥
ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥
व-हे मूर्ख ! किस्मत से तेरी अब मानव जन्म में गोविन्द मिलन की बारी आई है। लेकिन तूने वासुदेव को भुला दिया।

ਏਹ ਵੇਲਾ ਨ ਲਹਸਹਿ ਮੂੜੇ ਫਿਰਿ ਤੂੰ ਜਮ ਕੈ ਵਸਿ ਪਇਆ ॥੧੨॥
एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥१२॥
हे मूर्ख ! यह शुभावसर तुझे दोबारा प्राप्त नहीं होना, तुम यमदूतों के वश में आ जाओगे॥ १२ ॥

ਝਝੈ ਕਦੇ ਨ ਝੂਰਹਿ ਮੂੜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਿ ਤੂੰ ਵਿਖਾ ॥
झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥
झ-हे मूर्ख ! तुझे कभी दु:ख क्लेश नहीं होगा यदि तू सच्चे गुरु का उपदेश सुनकर देख ले।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝਹੁ ਗੁਰੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਨਿਗੁਰੇ ਕਾ ਹੈ ਨਾਉ ਬੁਰਾ ॥੧੩॥
सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥१३॥
सच्चे गुरु के बिना दूसरा कोई गुरु नहीं और निगुरे का नाम ही बुरा है॥ १३॥

ਧਧੈ ਧਾਵਤ ਵਰਜਿ ਰਖੁ ਮੂੜੇ ਅੰਤਰਿ ਤੇਰੈ ਨਿਧਾਨੁ ਪਇਆ ॥
धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तैरै निधानु पइआ ॥
ध-हे मूर्ख ! विषय-विकारों में भटकते हुए मन को अंकुश लगा क्योंकि तेरे अन्तर्मन में ही प्रभु नाम का खजाना है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਹਿ ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਹਿ ਪਇਆ ॥੧੪॥
गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥१४॥
यदि मनुष्य गुरुमुख बन जाए तो वह हरि रस का पान करता है और युग-युगांतरों तक वह इसका पान करता रहता है॥ १४॥

ਗਗੈ ਗੋਬਿਦੁ ਚਿਤਿ ਕਰਿ ਮੂੜੇ ਗਲੀ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥
गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥
ग-हे मूर्ख ! गोबिन्द को याद कर, केवल निरर्थक बातें करने से ही किसी ने कभी उसे प्राप्त नहीं किया।

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਇ ਮੂੜੇ ਪਿਛਲੇ ਗੁਨਹ ਸਭ ਬਖਸਿ ਲਇਆ ॥੧੫॥
गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥१५॥
हे मूर्ख ! गुरु के चरण अपने हृदय में बसा, वह तेरे पिछले गुनाह सब क्षमा कर देंगे॥ १५॥

ਹਾਹੈ ਹਰਿ ਕਥਾ ਬੂਝੁ ਤੂੰ ਮੂੜੇ ਤਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥
ह-हे मूर्ख ! हरि की कथा को समझ, तभी तुझे सदैव सुख प्राप्त होगा।

ਮਨਮੁਖਿ ਪੜਹਿ ਤੇਤਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੧੬॥
मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥१६॥
मनमुख जितना भी पढ़ते हैं उतना ही अधिक दु:ख प्राप्त करते हैं, सच्चे गुरु के बिना उनकी जीवन-मृत्यु से मुक्ति नहीं होती।॥ १६ ॥

ਰਾਰੈ ਰਾਮੁ ਚਿਤਿ ਕਰਿ ਮੂੜੇ ਹਿਰਦੈ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥
रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥
र-हे मूर्ख ! जिनके हृदय में राम बस रहा है, उनकी संगति करके तू राम को याद कर।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਿਨ੍ੀ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ਨਿਰਗੁਣ ਰਾਮੁ ਤਿਨ੍ੀ ਬੂਝਿ ਲਹਿਆ ॥੧੭॥
गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥१७॥
गुरु की कृपा से जिन्होंने राम को पहचान लिया है, उन्होंने समझकर निर्गुण राम को पा लिया है॥ १७ ॥

ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ਅਕਥੁ ਨ ਜਾਈ ਹਰਿ ਕਥਿਆ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥
हे प्रभु ! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता। अकथनीय हरि का कथन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਤਿਨ੍ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨਿਬੜਿਆ ॥੧੮॥੧॥੨॥
नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥१८॥१॥२॥
हे नानक ! जिन्हें सच्चा गुरु मिल गया है उनका (कर्मों का) लेखा मिट गया है॥ १८॥ १॥ २॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧
रागु आसा महला १ छंत घरु १
रागु आसा महला १ छंत घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੁੰਧ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲੜੀਏ ਮੇਰਾ ਪਿਰੁ ਰਲੀਆਲਾ ਰਾਮ ॥
मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥
हे मुग्धा यौवन बाला ! मेरा पिया राम बड़ा ही रंगीला आनंद विनोदी है।

ਧਨ ਪਿਰ ਨੇਹੁ ਘਣਾ ਰਸਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਦਇਆਲਾ ਰਾਮ ॥
धन पिर नेहु घणा रसि प्रीति दइआला राम ॥
यदि पति-पत्नी में बड़ा प्रेम हो जाए तो दयालु राम और भी प्रीति प्रदान करता है।

ਧਨ ਪਿਰਹਿ ਮੇਲਾ ਹੋਇ ਸੁਆਮੀ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ॥
धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥
स्वामी-प्रभु जब स्वयं कृपा करता है तो जीव-स्त्री का अपने पिया के साथ मिलन हो जाता है।

ਸੇਜਾ ਸੁਹਾਵੀ ਸੰਗਿ ਪਿਰ ਕੈ ਸਾਤ ਸਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਰੇ ॥
सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अम्रित भरे ॥
अपने पिया के साथ उसकी सेज सुहावनी हो जाती है, और उसके सातों सरोवर अर्थात् इन्द्रियाँ अमृत से भर जाती हैं।

ਕਰਿ ਦਇਆ ਮਇਆ ਦਇਆਲ ਸਾਚੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਿ ਗੁਣ ਗਾਵਓ ॥
करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥
हे दयालु सच्चे प्रभु ! मुझ पर दया एवं कृपा करो चूंकि संगत में मिलकर सच्चे शब्द द्वारा तेरा गुणगान करूँ।

ਨਾਨਕਾ ਹਰਿ ਵਰੁ ਦੇਖਿ ਬਿਗਸੀ ਮੁੰਧ ਮਨਿ ਓਮਾਹਓ ॥੧॥
नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥१॥
हे नानक ! अपने वर हरि को देखकर मुग्धा नारी फूल की तरह खिल गई है और उसके मन में उमंग उत्पन्न हो गई है॥ १॥

ਮੁੰਧ ਸਹਜਿ ਸਲੋਨੜੀਏ ਇਕ ਪ੍ਰੇਮ ਬਿਨੰਤੀ ਰਾਮ ॥
मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥
हे सहज सलोनी मुग्धा ! अपने राम के समक्ष एक प्रेम भरी विनती कर।

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਮਿ ਰਾਤੀ ਰਾਮ ॥
मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥
मेरे तन-मन को हरि अच्छा लगता है और मैं प्रभु राम के संगम पर मोहित हो गई हूँ।

ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਬਿਨੰਤੀ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਕੈ ਸੁਖਿ ਵਸੈ ॥
प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥
मैं प्रभु के प्रेम से रंग गई हूँ। हरि के समक्ष मैं विनती करती रहती हूँ और हरि के नाम द्वारा मैं सुखपूर्वक रहती हूँ।

ਤਉ ਗੁਣ ਪਛਾਣਹਿ ਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਹਿ ਗੁਣਹ ਵਸਿ ਅਵਗਣ ਨਸੈ ॥
तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥
यदि तुम उसके गुणों को पहचान लो तो तुम प्रभु को जान लोगे। इस तरह गुण तेरे भीतर प्रवेश कर जाएँगे और अवगुण नाश हो जाएँगे।

ਤੁਧੁ ਬਾਝੁ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕਾ ਕਹਣਿ ਸੁਨਣਿ ਨ ਧੀਜਏ ॥
तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥
हे प्रभु! तेरे बिना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकती, केवल सुनने एवं कहने से ही मुझे धैर्य नहीं होता।

ਨਾਨਕਾ ਪ੍ਰਿਉ ਪ੍ਰਿਉ ਕਰਿ ਪੁਕਾਰੇ ਰਸਨ ਰਸਿ ਮਨੁ ਭੀਜਏ ॥੨॥
नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥२॥
हे नानक ! जो जीव रूपी नारी प्रिय-प्रिय पुकार कर प्रभु को याद करती रहती है, उसका मन एवं जिव्हा प्रभु के अमृत से भीग जाते हैं॥ २॥

ਸਖੀਹੋ ਸਹੇਲੜੀਹੋ ਮੇਰਾ ਪਿਰੁ ਵਣਜਾਰਾ ਰਾਮ ॥
सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥
हे मेरी सखियों एवं सहेलियों ! मेरा पिया राम नाम का व्यापारी है।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਵਣੰਜੜਿਆ ਰਸਿ ਮੋਲਿ ਅਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥
हरि का नाम मैंने उससे खरीदा है अर्थात् उसके साथ नाम का व्यापार किया है। उस राम की मिठास अमूल्य है।

ਮੋਲਿ ਅਮੋਲੋ ਸਚ ਘਰਿ ਢੋਲੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਮੁੰਧ ਭਲੀ ॥
मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥
वह नाम प्राप्त करके मूल्य में अमूल्य बन गई है। वह अपने पिया के सत्य के घर में रहती है। यदि मुग्धा प्रियतम प्रभु को अच्छी लगने लग जाए तो वह प्रिय बन जाती है।

ਇਕਿ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੈ ਕਰਹਿ ਰਲੀਆ ਹਉ ਪੁਕਾਰੀ ਦਰਿ ਖਲੀ ॥
इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥
कई तो प्रभु के साथ आनंदपूर्वक रमण करती रहती हैं जबकि मैं उसके द्वार पर खड़ी पुकार करती रहती हूँ।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸ੍ਰੀਧਰ ਆਪਿ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਏ ॥
करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥
श्रीधर प्रभु सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है। वह स्वयं ही सभी कार्य सिद्ध कर देता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਬਦੁ ਅਭ ਸਾਧਾਰਏ ॥੩॥
नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥३॥
हे नानक ! अपने पति-प्रभु की कृपा-दृष्टि से जीव रूपी नारी सुहागिन बन गई है। शब्द ने उसके हृदय को सहारा दिया है॥ ३॥

ਹਮ ਘਰਿ ਸਾਚਾ ਸੋਹਿਲੜਾ ਪ੍ਰਭ ਆਇਅੜੇ ਮੀਤਾ ਰਾਮ ॥
हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥
मेरे हृदय घर में सत्य का स्तुतिगान है।चूंकि मेरा मित्र प्रभु राम मेरे हृदय घर में आकर बस गया है।

ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੜਿਆ ਮਨੁ ਲੀਅੜਾ ਦੀਤਾ ਰਾਮ ॥
रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥
प्रेम में अनुरक्त हुआ प्रभु मेरे साथ रमण करता है।उस राम का मन मैंने मोहित कर लिया है और अपना मन उसे अर्पित कर दिया है।

ਆਪਣਾ ਮਨੁ ਦੀਆ ਹਰਿ ਵਰੁ ਲੀਆ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਵਏ ॥
आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥
मैंने अपना मन अर्पित करके हरि वर के रूप में पा लिया है।जैसे उसे भला लगता है, वैसे ही वह मुझ से रमण करता है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਪਿਰ ਆਗੈ ਸਬਦਿ ਸਭਾਗੈ ਘਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲੁ ਪਾਵਏ ॥
तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अम्रित फलु पावए ॥
मैंने अपना यह तन-मन प्रियतम-प्रभु के समक्ष अर्पित किया है और नाम द्वारा सौभाग्यशाली बन गई हूँ।अपने हृदय घर में मैंने अमृत फल प्राप्त कर लिया है।

ਬੁਧਿ ਪਾਠਿ ਨ ਪਾਈਐ ਬਹੁ ਚਤੁਰਾਈਐ ਭਾਇ ਮਿਲੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥
बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥
बुद्धि, पूजा-पाठ एवं अधिक चतुरता द्वारा प्रभु प्राप्त नहीं होता।जो कुछ मन चाहता है, वह प्रेम भाव से प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ਹਮ ਨਾਹੀ ਲੋਕਾਣੇ ॥੪॥੧॥
नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥४॥१॥
हे नानक ! ठाकुर मेरा मित्र है।हम लोगों के नहीं अर्थात् प्रभु के हैं।॥ ४॥ १ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਅਨਹਦੋ ਅਨਹਦੁ ਵਾਜੈ ਰੁਣ ਝੁਣਕਾਰੇ ਰਾਮ ॥
अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥
मेरे मन में रुणझुन धुंघरुओं एवं वाद्य यन्त्रों की ध्वनि करने वाला अनहद शब्द निरन्तर बज रहा है।

ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਲਾਲ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥
मेरा मन अपने प्रियतम राम के प्रेम में रंग गया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤਾ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਸੁੰਨ ਮੰਡਲਿ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ॥
अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ ॥
वैरागी मन रात-दिन एक ईश्वर में लीन रहता है और शून्य मण्डल में बसेरा पा लेता है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਪਿਆਰਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥
आदि पुरखु अपर्मपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥
सतिगुरु ने मुझे अपरम्पार, अदृष्ट एवं प्यारा आदिपुरुष दिखा दिया है।

ਆਸਣਿ ਬੈਸਣਿ ਥਿਰੁ ਨਾਰਾਇਣੁ ਤਿਤੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਵੀਚਾਰੇ ॥
आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥
अपने आसन पर बैठने वाला नारायण सदैव स्थिर रहता है। मेरा मन उसके प्रेम में मग्न रहता है और उसका ही सिमरन करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਅਨਹਦ ਰੁਣ ਝੁਣਕਾਰੇ ॥੧॥
नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥१॥
हे नानक ! जो परमात्मा के नाम में मग्न रहते हैं, उनके मन में वैराग्य पैदा हो जाता है और उनके मन में अनहद शब्द की सुरीली रुणझुनकार होती रहती है॥ १॥

ਤਿਤੁ ਅਗਮ ਤਿਤੁ ਅਗਮ ਪੁਰੇ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਜਾਈਐ ਰਾਮ ॥
तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥
कहो, मैं अगम्य राम के उस अगम्य नगर में किस विधि से पहुँच सकता हूँ?"

ਸਚੁ ਸੰਜਮੋ ਸਾਰਿ ਗੁਣਾ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈਐ ਰਾਮ ॥
सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥
सत्य, संयम एवं प्रभु के गुणों को ग्रहण करके गुरु के शब्द को कमाना चाहिए।

ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ਪਾਈਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨਾ ॥
सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥
सत्य शब्द के अनुकूल आचरण बनाने से मनुष्य प्रभु के घर पहुँच जाता है और गुणों के भण्डार को प्राप्त कर लेता है।

ਤਿਤੁ ਸਾਖਾ ਮੂਲੁ ਪਤੁ ਨਹੀ ਡਾਲੀ ਸਿਰਿ ਸਭਨਾ ਪਰਧਾਨਾ ॥

तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥

उस भगवान का आश्रय लेने पर उसकी शाखाओं, डालियों, जड़ एवं पत्तों की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि वह खुद ही सबके सिर पर प्रधान स्वामी है।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਕਰਿ ਕਰਿ ਸੰਜਮ ਥਾਕੀ ਹਠਿ ਨਿਗ੍ਰਹਿ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥

जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥

लोग जप, तप एवं संयम करके थक गए हैं। हठ निग्रह द्वारा भी उन्हें भगवान प्राप्त नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ ਜਗਜੀਵਨ ਸਤਿਗੁਰ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈਐ ॥੨॥

नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥२॥

हे नानक ! सहजता में रहकर ही जगजीवन प्रभु मिलता है, पर इसकी सूझ सतगुरु से ही जानी जाती है॥ २॥

ਗੁਰੁ ਸਾਗਰੋ ਰਤਨਾਗਰੁ ਤਿਤੁ ਰਤਨ ਘਣੇਰੇ ਰਾਮ ॥

गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥

गुरु एक सागर एवं रतनागर हैं, जिसमें अनेक रत्न विद्यमान हैं।

ਕਰਿ ਮਜਨੋ ਸਪਤ ਸਰੇ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥
करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥
हे मेरे मन ! सात सागर रूपी गुरु की संगति का स्नान करने से मन निर्मल हो जाता है।

ਨਿਰਮਲ ਜਲਿ ਨ੍ਹਾਏ ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਾਏ ਪੰਚ ਮਿਲੇ ਵੀਚਾਰੇ ॥
निरमल जलि न्हाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥
जब प्रभु को अच्छा लगता है तो मनुष्य पवित्र जल में स्नान कर लेता है और जीभ एवं काया इत्यादि यह पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मन से मिलकर प्रभु के गुणों का विचार करते हैं।

ਕਾਮੁ ਕਰੋਧੁ ਕਪਟੁ ਬਿਖਿਆ ਤਜਿ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥
कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥
काम, क्रोध, कपट एवं विकारों को छोड़कर प्राणी सत्यनाम को अपने हृदय में पा लेता है।

ਹਉਮੈ ਲੋਭ ਲਹਰਿ ਲਬ ਥਾਕੇ ਪਾਏ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥
जब अहंकार, लोभ की लहर एवं मिथ्या इत्यादि मिट जाते हैं तो मनुष्य दीनदयालु प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਮਾਨਿ ਤੀਰਥੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥੩॥
नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥३॥
हे नानक ! गुरु के समान कोई तीर्थ स्थान नहीं, वह स्वयं ही गुरु गोपाल हैं।॥ ३॥

ਹਉ ਬਨੁ ਬਨੋ ਦੇਖਿ ਰਹੀ ਤ੍ਰਿਣੁ ਦੇਖਿ ਸਬਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हउ बनु बनो देखि रही त्रिणु देखि सबाइआ राम ॥
मैं वन-वन में देख रही हूँ और सारी वनस्पति को देख चुकी हूँ।

ਤ੍ਰਿਭਵਣੋ ਤੁਝਹਿ ਕੀਆ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਸਬਾਇਆ ਰਾਮ ॥
त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥
हे प्रभु ! तीनों लोक एवं सारा जगत तेरा ही बनाया हुआ है।

ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੀਆ ਤੂੰ ਥਿਰੁ ਥੀਆ ਤੁਧੁ ਸਮਾਨਿ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥
यह सब कुछ तेरा ही उत्पन्न किया है, केवल तुम ही सदैव स्थिर हो। तेरे समान कोई नहीं।

ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਸਭ ਜਾਚਿਕ ਤੇਰੇ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥
हे प्रभु ! तू दाता है और शेष सभी तेरे याचक हैं। तेरे बिना मैं किस का स्तुतिगान करूँ ?

ਅਣਮੰਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ ਦਾਤੇ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥
हे दाता ! तुम तो बिना माँगे ही दान दिए जाते हो, तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਵੀਚਾਰਾ ॥੪॥੨॥
राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥४॥२॥
नानक का विचार है कि राम नाम के बिना किसी जीव को मुक्ति प्राप्त नहीं होती।॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥
मेरा मन अपने प्यारे राम के प्रेम में रंग गया है।

ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੋ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੋ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
सचु साहिबो आदि पुरखु अपर्मपरो धारे राम ॥
वह सच्चा प्रभु सबका मालिक एवं अपरम्पार आदिपुरुष है। उसने सारी धरती को सहारा प्रदान किया हुआ है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਧਾਨੋ ॥
अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥
वह अगम्य, अगोचर, अपरंपार पारब्रह्म सारे विश्व का बादशाह है।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਅਵਰੁ ਝੂਠਾ ਸਭੁ ਮਾਨੋ ॥
आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥
परमात्मा युगों के आरम्भ में भी था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगा। शेष दुनिया को झूठा मानो !"

ਕਰਮ ਧਰਮ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੈ ਸੁਰਤਿ ਮੁਕਤਿ ਕਿਉ ਪਾਈਐ ॥
करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥
मनुष्य कर्म-धर्म की सार नहीं जानता। फिर वह सुरति एवं मुक्ति को कैसे प्राप्त कर सकता है?

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥१॥
हे नानक ! गुरुमुख केवल शब्द को ही जानता है और रात-दिन परमात्मा के नाम का ध्यान करता रहता है। १॥

ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਰਾਮ ॥
मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥
अब मेरे मन को आस्था हो चुकी है कि प्रभु का नाम ही लोक-परलोक में मनुष्य का सखा है।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮਾਇਆ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥
हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥
अहंत्व, ममता एवं माया मनुष्य के साथ नहीं जाती।

ਮਾਤਾ ਪਿਤ ਭਾਈ ਸੁਤ ਚਤੁਰਾਈ ਸੰਗਿ ਨ ਸੰਪੈ ਨਾਰੇ ॥
माता पित भाई सुत चतुराई संगि न स्मपै नारे ॥
माता, पिता, भाई, पुत्र, चतुराई, संपति एवं नारी उसका आगे साथ नहीं देते।

ਸਾਇਰ ਕੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗੀ ਚਰਣ ਤਲੈ ਵੀਚਾਰੇ ॥
साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥
प्रभु के सुमिरन द्वारा मैंने समुद्र की पुत्री लक्ष्मी अर्थात् माया को त्यागकर उसे अपने पैरों तले कुचल दिया है।

ਆਦਿ ਪੁਰਖਿ ਇਕੁ ਚਲਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਸੋਈ ॥
आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥
आदिपुरुष ने एक अलौकिक कौतुक दिखाया है कि जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ मैं उसे ही पाता हूँ।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਨ ਛੋਡਉ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਈ ॥੨॥
नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥२॥
हे नानक ! मैं हरि की भक्ति को नहीं छोडूंगा, सहज रूप में जो होना है वह होता रहे॥ २॥

ਮੇਰਾ ਮਨੋ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਾਚੁ ਸਮਾਲੇ ਰਾਮ ॥
मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥
मेरा मन उस सत्यस्वरूप राम के सुमिरन द्वारा निर्मल हो गया है।

ਅਵਗਣ ਮੇਟਿ ਚਲੇ ਗੁਣ ਸੰਗਮ ਨਾਲੇ ਰਾਮ ॥
अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥
मैंने अपने अवगुणों को मिटा दिया है, इसलिए गुण मेरे साथ चलते हैं और गुणों के फलस्वरूप मेरा प्रभु के साथ संगम हो गया है।

ਅਵਗਣ ਪਰਹਰਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੋ ॥
अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥
अवगुणों को त्यागकर मैं शुभ कर्म करता हूँ और सत्य के दरबार में सत्यवादी बन जाता हूँ।

ਆਵਣੁ ਜਾਵਣੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਤੁ ਵੀਚਾਰੋ ॥
आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो ॥
मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो गया है क्योंकि गुरुमुख बनकर मैंने परम तत्व प्रभु का चिन्तन किया है।

ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਸੁਜਾਣੁ ਸਖਾ ਤੂੰ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥
साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥
हे प्रभु ! तू ही मेरा साजन, मित्र, सुजान एवं सखा है। तेरे सत्य-नाम द्वारा मुझे बड़ाई मिलती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਐਸੀ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ॥੩॥
नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥३॥
हे नानक ! मुझे ऐसी गुरमति प्राप्त हुई है कि नाम-रत्न मेरे भीतर प्रकाशमान हो गया है॥ ३॥

ਸਚੁ ਅੰਜਨੋ ਅੰਜਨੁ ਸਾਰਿ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ॥
सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥
सत्य एक अंजन है और इस सत्य के अंजन को मैंने संभालकर अपने नयनों में लगा लिया है तथा मैं निरंजन प्रभु के साथ रंग गया हूँ।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜਗਜੀਵਨੋ ਦਾਤਾ ਰਾਮ ॥
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥
मेरे तन-मन के भीतर जगजीवन दाता राम बस रहा है।

ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਰਾਤਾ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮੇਲਾਇਆ ॥
जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥
मेरा मन जगजीवन दाता हरि के साथ लीन हुआ है और सहजता से मिलाने से ही मिलन हो गया है।

ਸਾਧ ਸਭਾ ਸੰਤਾ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਨਦਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥

साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥

साधुओं की सभा एवं संतों की संगति में मुझे प्रभु की कृपादृष्टि से ही सुख उपलब्ध हुआ है।

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਚੂਕੇ ਮੋਹ ਪਿਆਸਾ ॥

हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥

वैरागी पुरुष हरि की भक्ति में लीन रहते हैं तथा उनका मोह एवं तृष्णा मिट जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਪਤੀਣੇ ਵਿਰਲੇ ਦਾਸ ਉਦਾਸਾ ॥੪॥੩॥

नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥४॥३॥

हे नानक ! कोई विरला ही वैरागी प्रभु का दास है जो अपना अहंकार मिटाकर प्रसन्न रहता है॥ ४॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੁ ੨
रागु आसा महला १ छंत घरु २
रागु आसा महला १ छंत घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਜਿਥੈ ਹਉ ਜਾਈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਜੀਉ ॥
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥
हे सच्चे परमात्मा ! हे जग के रचयिता ! मैं जिधर भी जाता हूँ, तू हर जगह पर मुझे नजर आता है।

ਸਭਨਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਦੂਖ ਬਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ਜੀਉ ॥
सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥
तू सब जीवों का दाता, कर्मविधाता एवं दुःखों का नाश करने वाला है।

ਦੂਖ ਬਿਸਾਰਣਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ਕੀਤਾ ਜਾ ਕਾ ਹੋਵੈ ॥
दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥
जिसका किया हुआ सबकुछ दुनिया में होता है, वह दुनिया का स्वामी जीवों के सब दुःखों को दूर करने वाला है।

ਕੋਟ ਕੋਟੰਤਰ ਪਾਪਾ ਕੇਰੇ ਏਕ ਘੜੀ ਮਹਿ ਖੋਵੈ ॥
कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥
वह जीवों के करोड़ों ही पाप एक क्षण में ही नाश कर देता है।

ਹੰਸ ਸਿ ਹੰਸਾ ਬਗ ਸਿ ਬਗਾ ਘਟ ਘਟ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ਜੀਉ ॥
हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥
हे प्रभु ! तुम प्रत्येक हृदय के कर्मों की परख करते हो। हंस को हंस एवं बगुले को बगुला प्रगट कर देते हो अर्थात् जो महापुरुष है उसे हंस ही माना जाए और जो मूर्ख है उनके साथ बगुले की भाँति व्यवहार किया जाए।

ਤੂੰ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ਜਿਥੈ ਹਉ ਜਾਈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਜੀਉ ॥੧॥
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥१॥
हे दुनिया को बनाने वाले सच्चे परमात्मा ! मैं जिधर भी जाता हूँ, तू हर जगह पर बसा हुआ दिखाई देता है॥१॥

ਜਿਨ੍ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ਜੀਉ ॥
जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥
जिन्होंने एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान किया है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है। परन्तु इस संसार में ऐसे विरले ही हैं।

ਤਿਨ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਵੈ ਕਬਹੁ ਨ ਆਵਹਿ ਹਾਰਿ ਜੀਉ ॥
तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥
वे गुरु के शब्द की साधना करते हैं इसलिए यमदूत उनके निकट नहीं आता और वे कभी भी अपने जीवन की बाजी हारकर नहीं आते।

ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਹਾਰਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਾਰਹਿ ਤਿਨ੍ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥
जो हरि-प्रभु के गुणों का चिन्तन करते हैं, वह कभी भी हार नहीं खाते, इसलिए यमदूत उनके निकट नहीं आता।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਤਿਨ੍ਾ ਕਾ ਚੂਕਾ ਜੋ ਹਰਿ ਲਾਗੇ ਪਾਵੈ ॥
जमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥
जो हरि के चरणों से लग गए है, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट गया है।

ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹਰਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਰ ਧਾਰਿ ਜੀਉ ॥
गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥
उन्होंने गुरु की मति द्वारा परमात्मा के नाम को अपने हृदय में बसाकर भक्ति का फल हरि-रस पा लिया है।

ਜਿਨ੍ ਇਕ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ੍ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਵਿਰਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ਜੀਉ ॥੨॥
जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥२॥
जिन्होंने एकाग्रचित होकर भगवान का ध्यान किया है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है, लेकिन ऐसे व्यक्ति दुनिया में विरले ही हैं।॥ २॥

ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ਤਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥
जिस प्रभु ने इस जगत की रचना की है और जीवों को कार्यों में लगाया है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ।

ਤਾ ਕੀ ਸੇਵ ਕਰੀਜੈ ਲਾਹਾ ਲੀਜੈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਮਾਣੁ ਜੀਉ ॥
ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥
हे जीव ! उस प्रभु की सेवा कीजिए, इस जीवन का लाभ प्राप्त करो और हरि के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त करो।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਮਾਨੁ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਵੈ ਜੋ ਨਰੁ ਏਕੁ ਪਛਾਣੈ ॥
हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥
लेकिन हरि के दरबार में वही पुरुष मान-सम्मान प्राप्त करता है, जो एक ईश्वर को पहचानता है।

ਓਹੁ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਨਿਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥
ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥
जो मनुष्य गुरु की मति द्वारा हरि का ध्यान करता है और नित्य ही प्रभु का गुणगान करता रहता है, उसे नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਲੀਜੈ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਪੁਰਖੁ ਪਰਧਾਨੁ ਜੀਉ ॥
अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥
इसलिए रात-दिन उस प्रभु का नाम-सुमिरन करो, जो सर्वश्रेष्ठ, आदि पुरुष एवं सर्वव्यापक स्वामी है।

ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ਹਉ ਤਿਸੈ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਨੁ ਜੀਉ ॥੩॥
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥३॥
मैं उस प्रभु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने इस जगत की रचना करके जीवों को कामकाज में लगाया है॥ ३॥

ਨਾਮੁ ਲੈਨਿ ਸਿ ਸੋਹਹਿ ਤਿਨ ਸੁਖ ਫਲ ਹੋਵਹਿ ਮਾਨਹਿ ਸੇ ਜਿਣਿ ਜਾਹਿ ਜੀਉ ॥
नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥
जो मनुष्य प्रभु का नाम मुँह से लेते हैं, वही सुन्दर हैं, उन्हें आत्मिक सुख रूपी फल प्राप्त हो जाता है। जो प्रभु-नाम को मानते हैं, वे जीवन की बाजी जीत जाते हैं।

ਤਿਨ ਫਲ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਜੇ ਜੁਗ ਕੇਤੇ ਜਾਹਿ ਜੀਉ ॥
तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥
यदि उसे अच्छा लगे तो उन्हें प्रभु के फलों की कोई कमी नहीं आती चाहे अनेकों ही युग बीत जाएँ।

ਜੇ ਜੁਗ ਕੇਤੇ ਜਾਹਿ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨ ਫਲ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥
हे जगत के स्वामी ! चाहे कई युग बीत जाएँ लेकिन तेरी स्तुति करने वालों का फल कभी कम नहीं होता।

ਤਿਨ੍ ਜਰਾ ਨ ਮਰਣਾ ਨਰਕਿ ਨ ਪਰਣਾ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥
जो हरि-नाम का ध्यान करते हैं वह वृद्ध नहीं होते, न ही उनकी मृत्यु आती है और न ही नरक में जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਹਿ ਸਿ ਸੂਕਹਿ ਨਾਹੀ ਨਾਨਕ ਪੀੜ ਨ ਖਾਹਿ ਜੀਉ ॥
हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥
हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा का नाम-सिमरन करते हैं, वे कभी क्षीण नहीं होते और न ही वे कभी दु:ख से पीड़ित होते हैं।

ਨਾਮੁ ਲੈਨ੍ਹਿ ਸਿ ਸੋਹਹਿ ਤਿਨ੍ ਸੁਖ ਫਲ ਹੋਵਹਿ ਮਾਨਹਿ ਸੇ ਜਿਣਿ ਜਾਹਿ ਜੀਉ ॥੪॥੧॥੪॥
नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥४॥१॥४॥
जो मनुष्य परमात्मा का नाम याद करते हैं, वे शोभा पाते हैं और सुख रूपी फल को प्राप्त करते हैं। जो मनुष्य नाम को मानते हैं, वह जीवन की बाजी जीत लेते हैं॥ ४॥ १॥ ४॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ ਘਰੁ ੩ ॥
आसा महला १ छंत घरु ३ ॥
आसा महला १ छंत घरु ३ ॥

ਤੂੰ ਸੁਣਿ ਹਰਣਾ ਕਾਲਿਆ ਕੀ ਵਾੜੀਐ ਰਾਤਾ ਰਾਮ ॥
तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥
हे काले मृग रूपी मन ! तू मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन, तू इस सृष्टि रूपी उद्यान में क्यों मस्त हुआ जा रहा है?"

ਬਿਖੁ ਫਲੁ ਮੀਠਾ ਚਾਰਿ ਦਿਨ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਤਾਤਾ ਰਾਮ ॥
बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥
इस उद्यान का विषय-विकारों का फल सिर्फ चार दिनों के लिए ही मीठा होता है, फिर यह दुखदायक बन जाता है।

ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਤਾਤਾ ਖਰਾ ਮਾਤਾ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਪਰਤਾਪਏ ॥
फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥
जिस स्वाद के लिए तू इतना आकर्षित मस्त हुआ है, यह फल परमात्मा के नाम के बिना अंततः दुखदायी बन जाता है।

ਓਹੁ ਜੇਵ ਸਾਇਰ ਦੇਇ ਲਹਰੀ ਬਿਜੁਲ ਜਿਵੈ ਚਮਕਏ ॥
ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥
वह फल ऐसे है जैसे समुद्र की लहरें उत्पन्न होती हैं और बिजली की चमक की भाँति अस्थिर होता है।

ਹਰਿ ਬਾਝੁ ਰਾਖਾ ਕੋਇ ਨਾਹੀ ਸੋਇ ਤੁਝਹਿ ਬਿਸਾਰਿਆ ॥
हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥
हरि के अलावा दूसरा कोई रखवाला नहीं है और उसे तुमने भुला दिया है।

ਸਚੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਚੇਤਿ ਰੇ ਮਨ ਮਰਹਿ ਹਰਣਾ ਕਾਲਿਆ ॥੧॥
सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥१॥
हे काले मृग रूपो मन ! नानक तुझे सत्य कहता है, मेरी बात याद रख, भगवान को याद कर ले तेरी मृत्यु अटल है॥ १॥

ਭਵਰਾ ਫੂਲਿ ਭਵੰਤਿਆ ਦੁਖੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਰਾਮ ॥
भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥
हे भंवरे रूपी मन ! जैसे सुगन्धि लेने के लिए फूलों पर मंडराने पर भंवरे को बहुत दुख सहना पड़ता है, वैसे ही जगत-पदार्थों के स्वाद भोगने से तुझे भारी दुख भोगना पड़ेगा।

ਮੈ ਗੁਰੁ ਪੂਛਿਆ ਆਪਣਾ ਸਾਚਾ ਬੀਚਾਰੀ ਰਾਮ ॥
मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥
मैंने अपने गुरु से सत्य के ज्ञान के बारे में पूछा है।

ਬੀਚਾਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੁਝੈ ਪੂਛਿਆ ਭਵਰੁ ਬੇਲੀ ਰਾਤਓ ॥
बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥
मैंने गुरु से पूछा है कि यह मन-भवरा तो बेलों एवं फूलों पर आकर्षित हो रहा है।

ਸੂਰਜੁ ਚੜਿਆ ਪਿੰਡੁ ਪੜਿਆ ਤੇਲੁ ਤਾਵਣਿ ਤਾਤਓ ॥
सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥
"(गुरु ने मुझे बताया है कि) जब सूर्योदय होता है अर्थात जीवन की रात्रि बीत जाती है तो यह शरीर गिरकर मिट्टी बन जाता है एवं इसे उस तेल की भाँति तपाया जाता है, जिसे कड़ाही में गर्म किया जाता है।

ਜਮ ਮਗਿ ਬਾਧਾ ਖਾਹਿ ਚੋਟਾ ਸਬਦ ਬਿਨੁ ਬੇਤਾਲਿਆ ॥
जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥
यह भगवान के नाम के बिना बेताल बना हुआ जीव यम के मार्ग पर बांधा जाएगा और बहुत चोटें खाएगा।

ਸਚੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਚੇਤਿ ਰੇ ਮਨ ਮਰਹਿ ਭਵਰਾ ਕਾਲਿਆ ॥੨॥
सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥२॥
नानक सत्य कहता है, हे मन रूपी काले भैवरे ! प्रभु को याद कर ले अन्यथा तुम मर जाओगे॥ २॥

ਮੇਰੇ ਜੀਅੜਿਆ ਪਰਦੇਸੀਆ ਕਿਤੁ ਪਵਹਿ ਜੰਜਾਲੇ ਰਾਮ ॥
मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥
हे मेरी परदेसी जीवात्मा ! तू इस जगत के जंजाल में क्यों फँस रही है ?

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਕੀ ਫਾਸਹਿ ਜਮ ਜਾਲੇ ਰਾਮ ॥
साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥
जब सच्चा मालिक तेरे मन में बसता है तो तू क्यों यम के जाल में फँसेगी ?

ਮਛੁਲੀ ਵਿਛੁੰਨੀ ਨੈਣ ਰੁੰਨੀ ਜਾਲੁ ਬਧਿਕਿ ਪਾਇਆ ॥
मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ ॥
जब शिकारी जाल फैलाता है और मछली जाल में फँसकर जल से बिछुड़ जाती है तो आँखें भरकर रोती है।

ਸੰਸਾਰੁ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਮੀਠਾ ਅੰਤਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥
संसार को माया का मोह मीठा लगता है परन्तु अन्त में यह भ्रम दूर हो जाता है।

ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਹਰਿ ਸਿਉ ਛੋਡਿ ਮਨਹੁ ਅੰਦੇਸਿਆ ॥
भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥
हे मेरी आत्मा ! चित लगाकर हरि की भक्ति करो और अपने मन की चिन्ताएँ छोड़ दे।

ਸਚੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਚੇਤਿ ਰੇ ਮਨ ਜੀਅੜਿਆ ਪਰਦੇਸੀਆ ॥੩॥
सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥३॥
नानक तुझे सत्य कहता है - हे मेरी परदेसी आत्मा ! हे मन ! मेरी बात को याद रख और परमात्मा का ध्यान कर ॥ ३॥

ਨਦੀਆ ਵਾਹ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ਮੇਲਾ ਸੰਜੋਗੀ ਰਾਮ ॥
नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥
नदियों से बिछुड़े प्रवाह का मिलन संयोग से ही होता है।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਮੀਠਾ ਵਿਸੁ ਭਰੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਜੋਗੀ ਰਾਮ ॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥
युग-युग में माया का मोह जीवों को मीठा लगता है पर यह मोह विकारों के विष से भरा हुआ है। कोई विरला योगी ही इस तथ्य को समझता है।

ਕੋਈ ਸਹਜਿ ਜਾਣੈ ਹਰਿ ਪਛਾਣੈ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਿਨਿ ਚੇਤਿਆ ॥
कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥
जिसने सतिगुरु को याद किया होता है, ऐसा विरला इन्सान ही सहजावस्था को जानता है और भगवान को पहचानता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਪਚਹਿ ਮੁਗਧ ਅਚੇਤਿਆ ॥
बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥
हरि के नाम के बिना लापरवाह, मूर्ख इन्सान माया के भ्रम में पड़कर भटकते हैं और नष्ट हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਨ ਰਿਦੈ ਸਾਚਾ ਸੇ ਅੰਤਿ ਧਾਹੀ ਰੁੰਨਿਆ ॥
हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥
जो प्राणी हरिनाम याद नहीं करते, भगवान की भक्ति नहीं करते, अपने हृदय में सत्य को नहीं बसाते, वे अन्ततः फूट-फूटकर अश्रु बहाते हैं।

ਸਚੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਬਦਿ ਸਾਚੈ ਮੇਲਿ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥੪॥੧॥੫॥
सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥४॥१॥५॥
नानक सत्य कहता है कि शब्द द्वारा चिरकाल से बिछुड़े हुए प्राणी प्रभु के साथ मिल जाते हैं।॥ ४॥ १॥ ५॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧ ॥
आसा महला ३ छंत घरु १ ॥
आसा महला ३ छंत घरु १ ॥

ਹਮ ਘਰੇ ਸਾਚਾ ਸੋਹਿਲਾ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥
हमारे हृदय-घर में सत्य का स्तुतिगान हो रहा है और सच्चे शब्द द्वारा हमारा हृदय-घर सुहावना बन गया है।

ਧਨ ਪਿਰ ਮੇਲੁ ਭਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥
जीव-स्त्री का पति-परमेश्वर से मिलन हो गया है और यह प्रभु ने स्वयं ही मिलन किया है।

ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਸਚੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ਕਾਮਣਿ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ॥
प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥
जीव-स्त्री सहजता से मस्त हुई है, क्योंकि उसने सत्य अपने मन में बसाया है और प्रभु ने उसे अपने साथ मिला लिया है।

ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੀਗਾਰੀ ਸਚਿ ਸਵਾਰੀ ਸਦਾ ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥
गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥
गुरु के शब्द का उस जीव-स्त्री ने श्रृंगार किया है और सत्य ने उसे सुन्दर बनाया है और प्रेम के साथ रंग कर वह सदा अपने प्रियतम के साथ रमण करती है।

ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਏ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥
जब अपने अहंकार को मिटा कर उसने हरि को वर के रूप में पा लिया तब हरि रस उसके हृदय में बस गया।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੀ ਸਫਲਿਉ ਜਨਮੁ ਸਬਾਇਆ ॥੧॥
कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥१॥
हे नानक ! जो जीवात्मा गुरु के शब्द से संवरी हुई है, उसका समूचा जीवन सफल हो गया है॥ १॥

ਦੂਜੜੈ ਕਾਮਣਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲੀ ਹਰਿ ਵਰੁ ਨ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥
दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥
जो जीव-स्त्री द्वैतभाव एवं अहं में कुमार्गगामी हो जाती है, उसे हरि अपने वर के रूप में प्राप्त नहीं होता।

ਕਾਮਣਿ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ਰਾਮ ॥
कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥
जिस जीव-स्त्री में कोई भी गुण विद्यमान नहीं, वह अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लेती है।

ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ਮਨਮੁਖਿ ਇਆਣੀ ਅਉਗਣਵੰਤੀ ਝੂਰੇ ॥
बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥
स्वेच्छाचारिणी मूर्ख एवं अवगुणी नारी अपना जन्म व्यर्थ गंवा लेती है और अंतः अवगुणों से भरी रहने के कारण पीड़ित रहती है।

ਆਪਣਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਤਾ ਪਿਰੁ ਮਿਲਿਆ ਹਦੂਰੇ ॥
आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥
जब जीव-स्त्री अपने सतिगुरु की सेवा करती है तो उसे सदैव सुख प्राप्त होता है और तब उसका प्रियतम उसे प्रत्यक्ष ही मिल जाता है।

ਦੇਖਿ ਪਿਰੁ ਵਿਗਸੀ ਅੰਦਰਹੁ ਸਰਸੀ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ॥
देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥
अपने पति-प्रभु को देख कर वह फूल की तरह खिल जाती है और सच्चे शब्द द्वारा उसका हृदय सहज ही आनंद से भरपूर हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕਾਮਣਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੨॥
नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥२॥
हे नानक ! नाम के बिना जीव रूपी कामिनी भ्रम में पड़कर भटकती रहती है और तदुपरांत अपने प्रियतम से मिल कर सुख प्राप्त करती है॥ २॥

ਪਿਰੁ ਸੰਗਿ ਕਾਮਣਿ ਜਾਣਿਆ ਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਰਾਮ ॥
पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥
गुरु ने जिस जीव-स्त्री को अपनी संगति में मिला कर प्रभु से मिला दिया है, उसने जान लिया है कि उसका पति-प्रभु तो उसके साथ ही रहता है।

ਅੰਤਰਿ ਸਬਦਿ ਮਿਲੀ ਸਹਜੇ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ਰਾਮ ॥
अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥
वह शब्द द्वारा अन्तर में ही प्रभु से मिली रहती है और उसकी तृष्णा की अग्नि सहज ही बुझ गई है।

ਸਬਦਿ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਈ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥
सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥
शब्द द्वारा उसकी जलन बुझ गई है, अब उसकी अन्तरात्मा में शांति आ गई है और उसने सहज ही हरि रस को चख लिया है।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਪਣੇ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਖਿਆ ॥
मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥
अपने प्रियतम से मिलकर वह सदा उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करती है और सच्चे शब्द द्वारा सुन्दर वाणी बोलती है।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਮੋਨੀ ਥਾਕੇ ਭੇਖੀ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥
पण्डित पढ़-पढ़कर और मौन धारण करने वाले ऋषि-मुनि समाधि लगाकर थक गए हैं। धार्मिक वेष धारण करने वाले साधुओं ने मुक्ति प्राप्त नहीं की।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਈ ॥੩॥
नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥३॥
हे नानक ! प्रभु-भक्ति के बिना दुनिया बावली हो गई है। लेकिन सच्चे शब्द से जीव-स्त्री प्रभु से मिल जाती है॥ ३॥

ਸਾ ਧਨ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਹਰਿ ਜੀਉ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
सा धन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥
जिस जीव-स्त्री को हरि-प्रभु अपने चरणों में मिला लेता है तो उसके मन में आनंद उत्पन्न हो जाता है।

ਸਾ ਧਨ ਹਰਿ ਕੈ ਰਸਿ ਰਸੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰੇ ਰਾਮ ॥
सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥
गुरु के अपार शब्द द्वारा जीव-स्त्री हरि रस में लीन रहती है।

ਸਬਦਿ ਅਪਾਰੇ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ਸਦਾ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ਮਨਿ ਵਸੇ ॥
सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥
गुरु के अपार शब्द से वह अपने प्यारे-प्रभु से मिल जाती है और वह उसके गुणों को अपने मन में सदा याद करती एवं बसाती है।

ਸੇਜ ਸੁਹਾਵੀ ਜਾ ਪਿਰਿ ਰਾਵੀ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਵਗਣ ਨਸੇ ॥
सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥
जब प्रियतम-प्रभु उससे रमण करता है तो उसकी सेज सुहावनी हो जाती है और अपने प्रियतम से मिलकर उस जीव-स्त्री के अवगुण नाश हो जाते हैं।

ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਸੋਹਿਲੜਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ॥
जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥
जिस हृदय-घर में सदा हरि-नाम का सुमिरन होता है वहाँ चारों युगों में मंगल गीत गाए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਅਨਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ॥੪॥੧॥੬॥
नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥४॥१॥६॥
हे नानक ! प्रभु नाम में अनुरक्त होने से जीव हमेशा आनंद में रहता है। हरि-प्रभु को मिलने से उसके सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥ ४॥ १॥६॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੩ ਛੰਤ ਘਰੁ ੩ ॥
आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥
आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥

ਸਾਜਨ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਹੁ ਤੁਮ ਸਹ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰੇਹੋ ॥
साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥
हे मेरे प्रिय सज्जनो ! तुम भगवान की भक्ति करते रहो।

ਗੁਰੁ ਸੇਵਹੁ ਸਦਾ ਆਪਣਾ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਲੇਹੋ ॥
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥
हमेशा अपने गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करो एवं उससे नाम का धन प्राप्त करो।

ਭਗਤਿ ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਸਹੈ ਕੇਰੀ ਜੋ ਸਹ ਪਿਆਰੇ ਭਾਵਏ ॥
भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥
तुम अपने भगवान की ऐसी भक्ति करो, जो भक्ति प्रभु को अच्छी लगती है।

ਆਪਣਾ ਭਾਣਾ ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਤਾ ਫਿਰਿ ਸਹ ਖੁਸੀ ਨ ਆਵਏ ॥
आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥
यदि तुम अपनी मनमर्जी करोगे तो फिर प्रभु तुम पर खुश नहीं होगा।

ਭਗਤਿ ਭਾਵ ਇਹੁ ਮਾਰਗੁ ਬਿਖੜਾ ਗੁਰ ਦੁਆਰੈ ਕੋ ਪਾਵਏ ॥
भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥
इस भक्ति-भाव का मार्ग बहुत कठिन है, लेकिन गुरु के द्वार पर आने से कोई विरला पुरुष ही इसे पाता है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਸੁ ਕਰੇ ਕਿਰਪਾ ਸੋ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਚਿਤੁ ਲਾਵਏ ॥੧॥
कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥१॥
हे नानक ! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा करता है, वह हरि की भक्ति को अपने चित्त से लगाता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਬੈਰਾਗੀਆ ਤੂੰ ਬੈਰਾਗੁ ਕਰਿ ਕਿਸੁ ਦਿਖਾਵਹਿ ॥
मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥
हे मेरे वैरागी मन ! तुम वैरागी बन कर किसे दिखाते हो ?

ਹਰਿ ਸੋਹਿਲਾ ਤਿਨ੍ ਸਦ ਸਦਾ ਜੋ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥
हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥
जो मनुष्य हरि का गुणगान करते हैं, वे सदैव ही हरि की प्रसन्नता में रहते हैं।

ਕਰਿ ਬੈਰਾਗੁ ਤੂੰ ਛੋਡਿ ਪਾਖੰਡੁ ਸੋ ਸਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਏ ॥
करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥
इसलिए तू पाखंड को छोड़ कर वैराग्य धारण कर क्योंकि प्रभु सब कुछ जानता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਏਕੋ ਸੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਏ ॥
जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥
एक ईश्वर ही जल, थल, पृथ्वी एवं गगन में सर्वत्र बसा हुआ है, गुरुमुख मनुष्य प्रभु के हुक्म को पहचानते हैं।

ਜਿਨਿ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਤਾ ਹਰੀ ਕੇਰਾ ਸੋਈ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਏ ॥
जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥
जो व्यक्ति प्रभु के हुक्म को पहचानता है वही सर्व सुख प्राप्त करता है

ਇਵ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੋ ਬੈਰਾਗੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਵਏ ॥੨॥
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥२॥
नानक इस तरह कहता है कि दरअसल वैरागी वही है, जो रात-दिन हरि की लगन में लीन रहता है।॥ २॥

ਜਹ ਜਹ ਮਨ ਤੂੰ ਧਾਵਦਾ ਤਹ ਤਹ ਹਰਿ ਤੇਰੈ ਨਾਲੇ ॥
जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥
हे मेरे मन ! जहाँ-जहाँ तू दौड़ता है, वहाँ वहाँ ही हरि तेरे साथ है।

ਮਨ ਸਿਆਣਪ ਛੋਡੀਐ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥
मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥
हे मेरे मन ! तू अपनी चतुराई छोड़ दे और गुरु के शब्द का मनन कर।

ਸਾਥਿ ਤੇਰੈ ਸੋ ਸਹੁ ਸਦਾ ਹੈ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹੇ ॥
साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥
वह मालिक प्रभु सदैव तेरे साथ रहता है, इसलिए तू एक क्षण भर के लिए ही हरि का नाम याद कर लिया कर।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਤੇਰੇ ਪਾਪ ਕਟੇ ਅੰਤਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਵਹੇ ॥
जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥
तेरे जन्म-जन्मांतर के पाप मिट जाएँगे और अंततः परमगति प्राप्त हो जाएगी।

ਸਾਚੇ ਨਾਲਿ ਤੇਰਾ ਗੰਢੁ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥
साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥
गुरुमुख बनकर सदैव ही उसको याद कर, इस तरह तेरा सच्चे प्रभु के साथ अटूट प्रेम बन जाएगा।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਹ ਮਨ ਤੂੰ ਧਾਵਦਾ ਤਹ ਹਰਿ ਤੇਰੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥੩॥
इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥३॥
नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे मन ! जहाँ कहीं भी तू दौड़ता है, वहाँ हरि-प्रभु तेरे साथ रहता है॥ ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਧਾਵਤੁ ਥੰਮ੍ਹਿ੍ਹਆ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਆਏ ॥
सतिगुर मिलिऐ धावतु थम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥
यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो मोह-माया की ओर दौड़ता मन टिक जाता है और आकर अपने सच्चे घर प्रभु-चरणों में बस जाता है।

ਨਾਮੁ ਵਿਹਾਝੈ ਨਾਮੁ ਲਏ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਸਮਾਏ ॥

नामु विहाझै नामु लए नामि रहे समाए ॥

तब यह नाम को खरीदता है, नाम का जाप करता है और नाम में ही समाया रहता है।

ਧਾਵਤੁ ਥੰਮ੍ਹਿਆ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਦਸਵਾ ਦੁਆਰੁ ਪਾਇਆ ॥
धावतु थम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥
सच्चे गुरु से मिलकर दुविधाओं में भटकता हुआ मन टिक जाता है और दशम द्वार में प्रवेश कर लेता है।

ਤਿਥੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭੋਜਨੁ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਜਿਤੁ ਸਬਦਿ ਜਗਤੁ ਥੰਮ੍ਹਿ ਰਹਾਇਆ ॥
तिथै अम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थम्हि रहाइआ ॥
वहाँ अमृत भोजन का आनंद मिलता है और सहज ध्वनि उत्पन्न हो जाती है और गुरु के शब्द से संसार के आकर्षण को अंकुश लगाता है।

ਤਹ ਅਨੇਕ ਵਾਜੇ ਸਦਾ ਅਨਦੁ ਹੈ ਸਚੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥
तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥
वहाँ सदैव आनंद बना रहता है और अनेक प्रकार के बाजे बजते है, व्यक्ति की सुरति प्रभु में समाई रहती है।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਧਾਵਤੁ ਥੰਮ੍ਹਿਆ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਆਏ ॥੪॥
इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥४॥
नानक इस तरह कहता है कि सच्चे गुरु को मिलने से मोह-माया की दुविधाओं में भटकता मन टिक जाता है और आकर प्रभु-चरणों में निवास कर लेता है॥ ४॥

ਮਨ ਤੂੰ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਆਪਣਾ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣੁ ॥
मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
हे मेरे मन ! तू ज्योति स्वरूप है, इसलिए अपने मूल (प्रभु-ज्योति) को पहचान।

ਮਨ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ਹੈ ਗੁਰਮਤੀ ਰੰਗੁ ਮਾਣੁ ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
हे मेरे मन ! भगवान तेरे साथ रहता है, गुरु की मति द्वारा उसके प्रेम का आनंद प्राप्त कर।

ਮੂਲੁ ਪਛਾਣਹਿ ਤਾਂ ਸਹੁ ਜਾਣਹਿ ਮਰਣ ਜੀਵਣ ਕੀ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥
यदि तुम अपने मूल को पहचान लो तो तुम अपने प्रभु को जान लोगे और जीवन मृत्यु की तुझे सूझ हो जाएगी।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣਹਿ ਤਾਂ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਨ ਹੋਈ ॥
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥
गुरु की कृपा से यदि तुम एक ईश्वर को समझ लो तो तुम्हारी मोह-माया की अभिलाषा मिट जाएगी।

ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਤਾ ਹੋਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥
मेरे मन में शांति आ गई है और शुभकामना के वाद्ययन्त्र बजने लग गए हैं और मैं प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो गया हूँ।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਤੂੰ ਜੋਤਿ ਸਰੂਪੁ ਹੈ ਅਪਣਾ ਮੂਲੁ ਪਛਾਣੁ ॥੫॥
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥५॥
नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे मन ! तू ज्योति स्वरूप (भगवान का अंश) है और अपने मूल को पहचान ॥ ५ ॥

ਮਨ ਤੂੰ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ਗਾਰਬਿ ਲਦਿਆ ਜਾਹਿ ॥
मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥
हे मन ! तुम अहंकार से भरे हुए हो और अहंकार से भरे ही चले जाओगे।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਣੀ ਮੋਹਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਭਵਾਹਿ ॥
माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥
मोहिनी माया ने तुझे मुग्ध किया हुआ है और बार-बार तुम योनियों में भटकते रहते हो।

ਗਾਰਬਿ ਲਾਗਾ ਜਾਹਿ ਮੁਗਧ ਮਨ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਹੇ ॥
गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥
हे मूर्ख मन ! अहंकार से भरे हुए तुम चलते फिरते हो और अंत में संसार से जाते वक्त पश्चाताप करोगे।

ਅਹੰਕਾਰੁ ਤਿਸਨਾ ਰੋਗੁ ਲਗਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੇ ॥
अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥
तुझे अहंकार एवं तृष्णा का रोग लगा हुआ है और तुम अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा रहे हो।

ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਅਗੈ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਹੇ ॥
मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥
स्वेच्छाचारी मूर्ख प्रभु को याद नहीं करता और परलोक को जाते हुए पश्चाताप करता है।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਨ ਤੂੰ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ਗਾਰਬਿ ਲਦਿਆ ਜਾਵਹੇ ॥੬॥
इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥६॥
नानक इस तरह कहता है कि हे मन ! तुम अहंकार से भरे हुए हो और अहंकार से लदे ही चले जाओगे॥ ६॥

ਮਨ ਤੂੰ ਮਤ ਮਾਣੁ ਕਰਹਿ ਜਿ ਹਉ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਮਾਣਾ ਹੋਹੁ ॥
मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥
हे मन ! तुम इस बात का घमण्ड मत करना कि तुम कुछ जानते हो अपितु गुरुमुख एवं विनीत बन जाना।

ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਹਉ ਬੁਧਿ ਹੈ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਮਲੁ ਖੋਹੁ ॥
अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥
तेरे भीतर अज्ञानता एवं बुद्धि का अहंकार है इसलिए गुरु के सच्चे शब्द से इसकी मैल को स्वच्छ कर ले।

ਹੋਹੁ ਨਿਮਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਅਗੈ ਮਤ ਕਿਛੁ ਆਪੁ ਲਖਾਵਹੇ ॥
होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥
सच्चे गुरु के समक्ष विनीत बन और खुद पर गर्व मत करना कि मैं महान हूँ।

ਆਪਣੈ ਅਹੰਕਾਰਿ ਜਗਤੁ ਜਲਿਆ ਮਤ ਤੂੰ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਗਵਾਵਹੇ ॥
आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥
अपने अहंकार में यह जगत जल रहा है, इसलिए तू भी अपने आपको इस तरह नष्ट मत कर लेना।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਕਰਹਿ ਕਾਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ॥
सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥
सच्चे गुरु की इच्छानुसार अपना कार्य कर और सच्चे गुरु की इच्छा के साथ लगा रह।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਆਪੁ ਛਡਿ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮਨ ਨਿਮਾਣਾ ਹੋਇ ਰਹੁ ॥੭॥
इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥७॥
नानक इस तरह कहता है कि हे मन ! तू अपना अहंकार छोड़ दे और विनीत बना रहे, इस तरह तुझे सुख प्राप्त होगा।॥ ७॥

ਧੰਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥
धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥
वह समय बड़ा धन्य है, जब मुझे सच्चा गुरु मिला और मुझे परमात्मा याद आया।

ਮਹਾ ਅਨੰਦੁ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥
मेरे अन्तर्मन में सहज ही महा-आनंद अनुभव हुआ और मन-तन में सुख प्राप्त हो गया।

ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ਅਵਗਣ ਸਭਿ ਵਿਸਾਰੇ ॥
सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥
मैंने उस पति-प्रभु को याद किया है, उसे अपने मन में बसाया है और तमाम अवगुण भुला दिए हैं।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਗੁਣ ਪਰਗਟ ਹੋਏ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥
जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥
जब प्रभु को अच्छा लगा तो मुझ में गुण प्रगट हो गए, और सच्चे गुरु ने आप मुझे संवार दिया है।

ਸੇ ਜਨ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਜਿਨ੍ੀ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਦਿੜਿਆ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਚੁਕਾਇਆ ॥
से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥
जिन्होंने एक नाम को अपने मन में बसाया है और पराया मोह-प्यार त्याग दिया है, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो गए हैं।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਧੰਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋ ਸਹੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥੮॥
इउ कहै नानकु धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥८॥
नानक इस तरह कहता है कि वह समय धन्य है जब मुझे सच्चा गुरु मिला और उस प्रभु-पति को याद किया ॥ ८ ॥

ਇਕਿ ਜੰਤ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਤਿਨਿ ਸਹਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ॥
इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥
कुछ लोग मोह-माया की दुविधा में कुमार्गगामी हो गए हैं और उन्हें प्रभु-पति ने स्वयं ही कुमार्गगामी कर दिया है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਫਿਰਹਿ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए ॥
वे द्वैतभाव के प्रेम में भटकते हैं और अहंकार में अपना कर्म करते हैं।

ਤਿਨਿ ਸਹਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਏ ਕੁਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ਤਿਨ ਕਾ ਕਿਛੁ ਨ ਵਸਾਈ ॥
तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥
उनके वश में भी कुछ नहीं क्योंकि प्रभु ने स्वयं ही उन्हें भुलाकर कुमार्ग लगाया है।

ਤਿਨ ਕੀ ਗਤਿ ਅਵਗਤਿ ਤੂੰਹੈ ਜਾਣਹਿ ਜਿਨਿ ਇਹ ਰਚਨ ਰਚਾਈ ॥

तिन की गति अवगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥

हे परमपिता ! उन जीवों की अच्छी-बुरी गति तू ही जानता है, क्योंकि तूने खुद ही यह दुनिया की रचना रची है।

ਹੁਕਮੁ ਤੇਰਾ ਖਰਾ ਭਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਸੈ ਬੁਝਾਏ ॥

हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥

तेरे हुक्म पर अनुसरण करना बहुत कठिन है, लेकिन गुरुमुख बनकर कोई विरला पुरुष ही हुक्म को समझता है।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ॥੯॥

इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥९॥

नानक इस तरह कहता है कि हे प्रभु! जीव बेचारे क्या कर सकते हैं, जबकि तुम ने स्वयं ही उन्हें भ्रम में डालकर कुमार्गगामी किया हुआ है॥ ६॥

ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥
सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥
हे मेरे सच्चे साहिब ! तेरी महिमा सत्य है।

ਤੂੰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਬੇਅੰਤੁ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥
तू परब्रह्म बेअंत एवं जगत का स्वामी है, तेरी कुदरत व्यक्त नहीं की जा सकती।

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਕਉ ਤੁਧੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ਸਦਾ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥
सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥
तेरी महिमा सत्य है जिसके मन में तुम इसे बसा देते हो, वे सदा तेरे गुण गाता रहता है।

ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਜਾ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਵਹੇ ॥
तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥
जब तुझे प्राणी भले लगते हैं तो वे तेरा ही गुणगान करते हैं और सत्य के साथ ही अपना चित्त लगाते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂੰ ਆਪੇ ਮੇਲਹਿ ਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹੈ ਸਮਾਈ ॥
जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥
हे प्रभु! जिसे तू अपने साथ मिला लेता है, वह गुरुमुख बनकर तुझ में ही समाया रहता है।

ਇਉ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਚੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧੦॥੨॥੭॥੫॥੨॥੭॥
इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥१०॥२॥७॥५॥२॥७॥
नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे सच्चे साहिब ! तेरी महिमा सत्य है॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५॥ २ ॥ ७ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧
रागु आसा छंत महला ४ घरु १
रागु आसा छंत महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੀਵਨੋ ਮੈ ਜੀਵਨੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਏ ਰਾਮ ॥
जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥
हे भाई ! गुरु की रजा में मुझे जीवन में सही आत्मिक जीवन मिल गया है।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਾਨਿ ਵਸਾਏ ਰਾਮ ॥
हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥
गुरु के माध्यम से मुझे प्रभु प्रिय लगने लगा है, हर वक्त गुरु मुझे हरि का नाम देते हैं और मेरे प्राणों में उसने हरि नाम बसा दिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਪ੍ਰਾਨਿ ਵਸਾਏ ਸਭੁ ਸੰਸਾ ਦੂਖੁ ਗਵਾਇਆ ॥
हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥
गुरु ने जब से हरि का नाम मेरे प्राणों में बसा दिया है, तब से मेरे तमाम संशय एवं दुःख नाश हो गए हैं।

ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਧਿਆਇਆ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥
गुरु के शुभ वचन द्वारा मैंने अदृष्ट एवं अगोचर प्रभु का ध्यान करके पवित्र परम पद प्राप्त कर लिया है।

ਅਨਹਦ ਧੁਨਿ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਗਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਣੀ ॥
अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥
सच्चे गुरु की वाणी का गायन करने से नित्य ही अनहद ध्वनि गूंजती रहती है।

ਨਾਨਕ ਦਾਤਿ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭਿ ਦਾਤੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥੧॥
नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥१॥
हे नानक ! दाता प्रभु ने अब मुझ पर यह अनुकंपा की है कि मेरी ज्योति परम ज्योति में लीन रहती है॥ १॥

ਮਨਮੁਖਾ ਮਨਮੁਖਿ ਮੁਏ ਮੇਰੀ ਕਰਿ ਮਾਇਆ ਰਾਮ ॥
मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य 'मेरा धन मेरा धन' पुकारते हुए मनमुखता में ही मर जाते हैं।

ਖਿਨੁ ਆਵੈ ਖਿਨੁ ਜਾਵੈ ਦੁਰਗੰਧ ਮੜੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥
ये अपने चित्त को दुर्गन्धयुक्त शरीर में लगाए रखते हैं, जो एक क्षण भर हेतु आता है और क्षण भर में ही चला जाता है।

ਲਾਇਆ ਦੁਰਗੰਧ ਮੜੈ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ਜਿਉ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਦਿਖਾਇਆ ॥

लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुम्भ दिखाइआ ॥

स्वेच्छाचारी मनुष्य अपने चित्त को दुर्गन्धयुक्त देह से लगाते हैं, जैसे कुसुंभ के फूल का रंग दिखाई देता है, जो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

ਖਿਨੁ ਪੂਰਬਿ ਖਿਨੁ ਪਛਮਿ ਛਾਏ ਜਿਉ ਚਕੁ ਕੁਮ੍ਹਿਆਰਿ ਭਵਾਇਆ ॥

खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥

जैसे छाया कभी पूर्व दिशा की ओर होती है और कभी पश्चिम दिशा की ओर हो जाती है, वे कुम्हार के चाक की भाँति घूमते रहते हैं।

ਦੁਖੁ ਖਾਵਹਿ ਦੁਖੁ ਸੰਚਹਿ ਭੋਗਹਿ ਦੁਖ ਕੀ ਬਿਰਧਿ ਵਧਾਈ ॥

दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥

मनमुख व्यक्ति दुख सहन करते हैं, दुःख संचित करते हैं और दुःख ही भोगते रहते हैं, वे अपने जीवन में दुःखों की ही वृद्धि करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਬਿਖਮੁ ਸੁਹੇਲਾ ਤਰੀਐ ਜਾ ਆਵੈ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥

नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥२॥

हे नानक ! जब मनुष्य गुरु की शरण में आ जाता है तो वह विषम संसार सागर से सुखपूर्वक ही पार हो जाता है॥ २॥

ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੋ ਠਾਕੁਰੁ ਨੀਕਾ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ਰਾਮ ॥

मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥

मेरा ठाकुर प्रभु सुन्दर है लेकिन वह अगम्य एवं अथाह सागर की भाँति है।

ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਚਾਹੀ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥

हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥

हे मेरे साहूकार सतिगुरु ! मैं तुझसे हरि नाम की पूंजी माँगता हूँ। मैं हरि-नाम की पूँजी को खरीदता हूँ और हरि-नाम का व्यापार करता हूँ।

ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਚਾਹੀ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਹੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਭਾਵੈ ॥

हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥

मैं हरि के गुण ही गाता रहता हूँ और हरि के गुण ही मुझे भाते हैं।

ਨੀਦ ਭੂਖ ਸਭ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗੀ ਸੁੰਨੇ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਵੈ ॥

नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥

मैंने निद्रा एवं भूख सब कुछ त्याग दिया है परन्तु एकाग्रता के साथ निर्गुण प्रभु में समाया रहता हूँ।

ਵਣਜਾਰੇ ਇਕ ਭਾਤੀ ਆਵਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈ ਜਾਹੇ ॥
वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥
जब हरि-नाम के व्यापारी सत्संगति में बैठते हैं तो वे हरि-नाम का लाभ कमा कर ले जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਗੁਰ ਆਗੈ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਸੋ ਪਾਏ ॥੩॥
नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥३॥
हे नानक ! अपना मन-तन गुरु के समक्ष अर्पित कर दे, जिसकी किस्मत में इसकी प्राप्ति लिखी हुई है, वही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है॥ ३॥

ਰਤਨਾ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਬਹੁ ਸਾਗਰੁ ਭਰਿਆ ਰਾਮ ॥
रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥
यह मानव-शरीर एक सागर है जो अनेक रत्नों (गुणों) से भरा हुआ है।

ਬਾਣੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ਲਾਗੇ ਤਿਨ੍ ਹਥਿ ਚੜਿਆ ਰਾਮ ॥
बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥
जो मनुष्य गुरुवाणी से लगाव रखते हैं, उन्हें प्रभु-नाम की प्राप्ति हो जाती है।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਲਾਗੇ ਤਿਨ੍ ਹਥਿ ਚੜਿਆ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਰਤਨੁ ਅਪਾਰਾ ॥
गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥
जो लोग गुरुवाणी में लीन रहते हैं, उन्हें अपार प्रभु का अमूल्य नाम-रत्न प्राप्त हो जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਤੋਲਕੁ ਪਾਇਆ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥
हे हरि ! तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं और वे मनुष्य अमूल्य हरि-नाम प्राप्त कर लेते हैं।

ਸਮੁੰਦੁ ਵਿਰੋਲਿ ਸਰੀਰੁ ਹਮ ਦੇਖਿਆ ਇਕ ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਦਿਖਾਈ ॥
समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ॥
हे भाई ! गुरु की अनुकंपा से जब मैंने इस शरीर रूपी समुद्र का मंथन किया तो मुझे अनूप वस्तु दिखाई दी।

ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਨਾਨਕ ਭੇਦੁ ਨ ਭਾਈ ॥੪॥੧॥੮॥
गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥४॥१॥८॥
हे नानक ! गुरु गोविन्द है और गोविन्द ही गुरु है, हे भाई ! इन दोनों में कोई भेद (अन्तर) नही है॥ ४॥ १॥ ८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਝਿਮਿ ਝਿਮੇ ਝਿਮਿ ਝਿਮਿ ਵਰਸੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰਾ ਰਾਮ ॥

झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा राम ॥

हे राम ! रिमझिम रिमझिम करके तेरी अमृत की धारा बरस रही है।

ਗੁਰਮੁਖੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਰਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ॥
गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥
गुरुमुख की जीभ पर हर पल यह अमृत की धारा पड़ती रहती है। गुरु की कृपा-दृष्टि से गुरुमुख को राम नाम बहुत प्यारा लगता है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਜਗਤ ਨਿਸਤਾਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥
राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥
जगत का उद्धार करने वाला राम का नाम उसे प्रिय लगता है। संसार में राम नाम की ही शोभा है।

ਕਲਿਜੁਗਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਬੋਹਿਥਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਲਘਾਈ ॥
कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥
कलियुग में राम का नाम जहाज है और गुरु के सान्निध्य में रहने से मनुष्य पार हो जाता है।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥
हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥
यह लोक एवं परलोक राम के नाम से सुखी हो जाते हैं और गुरुमुख का जीवन-आचरण उत्तम हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਦਾਤਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰੀ ॥੧॥
नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥१॥
हे नानक ! जिस मनुष्य को प्रभु कृपा धारण करके अपने नाम का दान देता है, उसे राम नाम द्वारा भवसागर से पार कर देता है॥ १॥

ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਦੁਖ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥
रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥
मैंने राम-नाम का जाप किया है जिसने मेरे दुःख एवं पाप नाश कर दिए हैं।

ਗੁਰ ਪਰਚੈ ਗੁਰ ਪਰਚੈ ਧਿਆਇਆ ਮੈ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਰਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥
गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥
गुरु से मिलन द्वारा मैंने परमात्मा का ध्यान किया है और राम को अपने हृदय में बसाया है।

ਰਵਿਆ ਰਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਜਾ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਆਏ ॥
रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥
जब मैंने गुरु की शरण ली तो राम का नाम मेरे हृदय में बस गया और मुझे परमगति प्राप्त हो गई।

ਲੋਭ ਵਿਕਾਰ ਨਾਵ ਡੁਬਦੀ ਨਿਕਲੀ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦਿੜਾਏ ॥
लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥
जब सच्चे गुरु ने मेरे भीतर राम का नाम दृढ़ कर दिया तो लोभ-विकारों से भरी हुई मेरी डूबती नैया बाहर निकल आई।

ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਆ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥
पूर्ण गुरुदेव ने मुझे जीवन दान प्रदान किया और मैंने अपना चित राम नाम के साथ लगाया हुआ है।

ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਦੇਵੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਾਏ ॥੨॥
आपि क्रिपालु क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥२॥
हे नानक ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, कृपालु प्रभु आप ही नाम की देन देता है॥ २॥

ਬਾਣੀ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੁਣੀ ਸਿਧਿ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸੁਹਾਏ ਰਾਮ ॥
बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥
मैंने राम नाम की वाणी सुनी, जिससे सभी कार्य सुखद ही सम्पूर्ण हो गए हैं और सिद्धि प्राप्त हो गई है।

ਰੋਮੇ ਰੋਮਿ ਰੋਮਿ ਰੋਮੇ ਮੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਧਿਆਏ ਰਾਮ ॥
रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥
गुरुमुख बनकर अपने रोम-रोम से मैं राम का ध्यान करता हूँ।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਪਵਿਤੁ ਹੋਇ ਆਏ ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖਿਆ ਕਾਈ ॥
राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥
राम नाम का ध्यान करने से मैं पवित्र हो गया हूँ, राम का कोई रूप एवं रेखा नहीं,"

ਰਾਮੋ ਰਾਮੁ ਰਵਿਆ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਭ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੂਖ ਗਵਾਈ ॥
रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई ॥
राम का नाम मेरे अन्तर्मन में समाया हुआ है और मेरी तृष्णा एवं भूख सभी दूर हो गए हैं।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸੀਗਾਰੁ ਸਭੁ ਹੋਆ ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥
मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥
गुरु की मति द्वारा राम मेरे भीतर प्रकाशमान हो गया है और मेरा मन-तन शीतल एवं सारा श्रृंगार हो गया है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਕੀਆ ਹਮ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ॥੩॥

नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥३॥

हे नानक ! भगवान ने मुझ पर स्वयं अनुकंपा की है और तब से उसके दासों का दास बन गया हूँ॥ ३॥

ਜਿਨੀ ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਅਭਾਗੀ ਰਾਮ ॥

जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥

जिन्होंने राम और राम नाम को भुला दिया है, वे मनमुख मूर्ख एवं भाग्यहीन हैं।

ਤਿਨ ਅੰਤਰੇ ਮੋਹੁ ਵਿਆਪੈ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਮਾਇਆ ਲਾਗੀ ਰਾਮ ॥

तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥

उनके अन्तर्मन में मोह व्याप्त हुआ है और क्षण-क्षण उन्हें माया लगी रहती है।

ਮਾਇਆ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਮੂੜ ਭਏ ਅਭਾਗੀ ਜਿਨ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਹ ਭਾਇਆ ॥

माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥

जिन्हें राम का नाम अच्छा नहीं लगता, उन्हें माया की मैल लगी रहती है, ऐसे मूर्ख भाग्यहीन हैं।

ਅਨੇਕ ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਹਰਿ ਰਾਮੋ ਨਾਮੁ ਚੋਰਾਇਆ ॥

अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥

अभिमानी मनुष्य अनेक कर्मकाण्ड करते हैं परन्तु वह राम नाम का जाप करने से अपना मन चुराते हैं।

ਮਹਾ ਬਿਖਮੁ ਜਮ ਪੰਥੁ ਦੁਹੇਲਾ ਕਾਲੂਖਤ ਮੋਹ ਅੰਧਿਆਰਾ ॥

महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥

मोह के अंधेरे की कालिमा के कारण यम (मृत्यु) का मार्ग महा विषम एवं दुःखदायक है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥

नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥४॥

हे नानक ! यदि मनुष्य गुरुमुख बनकर प्रभु-नाम की आराधना कर ले तो उसे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो सकता है॥ ४॥

ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗੁਰੂ ਰਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖੇ ਜਾਣੈ ਰਾਮ ॥

रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥

राम का नाम ही गुरु है और गुरुमुख बनकर ही राम को जाना जाता है।

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਖਿਨੁ ਊਭ ਪਇਆਲੀ ਭਰਮਦਾ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੈ ਰਾਮ ॥

इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥

यह मन क्षण भर में आकाश में होता है और क्षण भर में पाताल में भटकता है। गुरु भटकते हुए मन को एक घर (प्रभु के पास) ले आते हैं।

ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣੈ ਸਭ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਣੈ ਹਰਿ ਰਾਮੋ ਨਾਮੁ ਰਸਾਏ ॥

मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥

जब मन एक घर (प्रभु के पास) में आता है तो मनुष्य अपनी गति एवं जीवन-मर्यादा को समझ लेता है और हरि-राम के नाम रस का पान करता है।

ਜਨ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਉਧਾਰਿ ਤਰਾਏ ॥

जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥

राम का नाम उसके भक्त की लाज रखता है जैसे उसने भक्त प्रहलाद की रक्षा करके उसका उद्धार किया था।

ਰਾਮੋ ਰਾਮੁ ਰਮੋ ਰਮੁ ਊਚਾ ਗੁਣ ਕਹਤਿਆ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥

रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥

राम का नाम ही दुनिया में ऊँचा है, इसलिए बार-बार राम को याद करते रहो। उसके गुणों का वर्णन करने से उसका अन्त नहीं पाया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਭੀਨੇ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥

नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥५॥

हे नानक ! राम का नाम सुनकर जिस व्यक्ति का मन आनंदित भाव-विभोर हो जाता है, वह राम के नाम में ही समा जाता है॥ ५ ॥

ਜਿਨ ਅੰਤਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਤਿਨ ਚਿੰਤਾ ਸਭ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥

जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥

जिन मनुष्यों के अन्तर्मन में राम का नाम निवास करता है, उनकी तमाम चिन्ताएँ मिट जाती हैं।

ਸਭਿ ਅਰਥਾ ਸਭਿ ਧਰਮ ਮਿਲੇ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥

सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥

उन्हें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी पदार्थ मिल जाते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰਾਮ ਨਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥

मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥

जो मनुष्य राम नाम का ध्यान करता है एवं राम नाम का गुणगान करता है, उसे मनोवांछित फल मिल जाता है।

ਦੁਰਮਤਿ ਕਬੁਧਿ ਗਈ ਸੁਧਿ ਹੋਈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਏ ॥

रमति कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥

फिर उसकी दुर्मति एवं कुबुद्धि दूर हो जाती है, उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वह राम नाम को अपने मन से लगा लेता है।

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਸਰੀਰੁ ਸਭੁ ਹੋਆ ਜਿਤੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ॥
सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥
जिसकी अन्तरात्मा में राम नाम का प्रकाश हो जाता है, उसका जन्म एवं शरीर सभी सफल हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਜੁ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਿਆ ॥੬॥
नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥६॥
हे नानक ! रात-दिन सदैव ही हरि का भजन करो और गुरुमुख बनकर ही मनुष्य अपने आत्मस्वरूप में निवास करता है॥ ६॥

ਜਿਨ ਸਰਧਾ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਗੀ ਤਿਨ੍ ਦੂਜੈ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥
जिनकी श्रद्धा राम के नाम में लगी है, उनका किसी अन्य पदार्थ में चित्त नहीं लगा।

ਜੇ ਧਰਤੀ ਸਭ ਕੰਚਨੁ ਕਰਿ ਦੀਜੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਅਵਰੁ ਨ ਭਾਇਆ ਰਾਮ ॥
जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥
यदि सम्पूर्ण धरती स्वर्ण बनाकर उन्हें दे दी जाए तो भी राम-नाम के बिना वे किसी अन्य पदार्थ से स्नेह नहीं करते।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਅੰਤਿ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਸਖਾਈ ॥
राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥
राम का नाम उनके मन को भाता है और इसी द्वारा उन्हें परम सुख प्राप्त होता है। अन्तिम क्षण संसार से कूच करते यह परलोक में भी उनका साथ देता है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਪੂੰਜੀ ਸੰਚੀ ਨਾ ਡੂਬੈ ਨਾ ਜਾਈ ॥
राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥
उन्होंने राम नाम रूपी धन-पूंजी संचित कर ली है, जो न जल में डूबती है और न ही साथ छोड़ कर जाती है।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਤੁਲਹਾ ਜਮਕਾਲੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥
राम का नाम ही इस युग में नाव का कार्य करता है और यमकाल इसके निकट नहीं आता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥੭॥
नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥७॥
हे नानक ! गुरुमुख बनकर ही राम को पहचाना जाता है। कृपा करके वह मनुष्य को अपने साथ मिला लेता है॥ ७॥

ਰਾਮੋ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਤੇ ਸਤਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣਿਆ ਰਾਮ ॥
रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥
राम का नाम ही सत्य है और गुरुमुख बनकर ही इसे जाना जाता है।

ਸੇਵਕੋ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਗਾ ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਚੜਾਇਆ ਰਾਮ ॥
सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥
प्रभु का सेवक वह है, जो गुरु की सेवा में लगता है, जिसने अपना तन-मन गुरु को अर्पण किया है, उसके मन में श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿਆ ਬਹੁਤੁ ਮਨਿ ਸਰਧਿਆ ਗੁਰ ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਮਿਲਾਏ ॥
मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥
जो सेवक अपना मन-तन अर्पण करता है और बहुत श्रद्धा रखता है, उसे गुरु सेवा-भाव के कारण प्रभु से मिला देता है।

ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਏ ॥
दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥
दीनानाथ एवं जीवों का दाता पूर्ण गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है।

ਗੁਰੂ ਸਿਖੁ ਸਿਖੁ ਗੁਰੂ ਹੈ ਏਕੋ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ਚਲਾਏ ॥
गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥
गुरु ही शिष्य है और शिष्य ही गुरु है अर्थात् दोनों एक रूप हैं। दोनों ही गुरु के उपदेश को प्रचलित करते हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਮੰਤੁ ਹਿਰਦੈ ਦੇਵੈ ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ ਸੁਭਾਏ ॥੮॥੨॥੯॥
राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥८॥२॥९॥
हे नानक ! गुरु राम-नाम का मंत्र शिष्य के हृदय में बसाता है और सहज ही उसका राम से मिलन हो जाता है॥ ८ ॥ २ ॥ ६ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨ ॥
आसा छंत महला ४ घरु २ ॥
आसा छंत महला ४ घरु २ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਦੂਖ ਬਿਨਾਸਨੁ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਉ ॥
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥
सृष्टि का रचयिता हरि दु:खों का नाश करने वाला है, हरि का नाम पतितों को पावन करने वाला है।

ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਭਾਈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਾਮੁ ਜੀਉ ॥
हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥
जिन्हें हरि की सेवा-भक्ति प्रिय लगती है, उन्हें परमगति प्राप्त हो जाती है, हरि का नाम-सुमिरन उत्तम कर्म है, इसलिए हरि की आराधना करनी चाहिए।

ਹਰਿ ਊਤਮੁ ਕਾਮੁ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਵੈ ॥
हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥
प्रत्येक दृष्टि से हरि-नाम का जाप उत्तम कर्म है, हरि का जाप करने से मनुष्य आत्मिक स्थिरता प्राप्त कर लेता है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੋਵੈ ਦੁਖ ਮੇਟੇ ਸਹਜੇ ਹੀ ਸੁਖਿ ਸੋਵੈ ॥
जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥
यह जन्म-मरण दोनों के दु:ख को मिटा देता है और सहज ही सुख में सोता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਹੁ ਠਾਕੁਰ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਜੀਉ ॥
हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥
हे हरि ! मुझ पर कृपा करो, हे हरि ठाकुर ! मैं अपनी आत्मा में तेरा ध्यान करता रहूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਦੂਖ ਬਿਨਾਸਨੁ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥१॥
जग का रचयिता परमात्मा दु:खों का नाश करने वाला है, हरि का नाम पतितों को पावन करने में समर्थ है॥ १॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਕਲਿਜੁਗਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਜੀਉ ॥
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥
कलियुग में हरि नाम उत्तम पदार्थ है, लेकिन सच्चे गुरु के प्रेम द्वारा ही हरि का नाम जपा जा सकता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪੜੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸੁਣੀਐ ਹਰਿ ਜਪਤ ਸੁਣਤ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥
गुरुमुख बनकर ही हरि-नाम का अध्ययन करना चाहिए, और गुरुमुख बन कर ही हरि-नाम को सुनना चाहिए, हरि-नाम का जाप करने एवं सुनने से दुःख दूर हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਦੁਖੁ ਬਿਨਸਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु परम सुखु पाइआ ॥
जिस व्यक्ति ने हरि-नाम जपा है, उसका दुख मिट गया है और उसने परम सुख देने वाला हरि नाम पा लिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬਲਿਆ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਗਵਾਇਆ ॥
सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में सतिगुरु का ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित हो गया है, उसके आलोक से उसका अज्ञानता का अँधेरा दूर हो गया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇ ਜੀਉ ॥
हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥
उन्होंने ही हरि-प्रभु के नाम की आराधना की है, जिनके मस्तक पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिखा हुआ है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਕਲਿਜੁਗਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥२॥
कलियुग में हरि-नाम उत्तम पदार्थ है, लेकिन सतिगुरु के प्रेम में लीन रहने से ही हरि का नाम जपा जा सकता है ॥ २॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥
हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥
जिस व्यक्ति के मन को हरि का नाम प्रिय लगा है, उसे ही परम सुख मिला है उसने हरि नाम रूपी लाभ प्राप्त कर लिया है और निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਭ੍ਰਮੁ ਚੂਕਾ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਜੀਉ ॥
हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥
उसने हरि (नाम) के साथ प्रीति लगाई है और हरि का नाम उसका सखा बन गया है, जिससे उसका भ्रम एवं जन्म-मरण का चक्र मिट गया है।

ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥
जब से उसने हरि का गुणगान किया है, उसका जन्म-मरणं का चक्र, दुविधा एवं भय नाश हो गया।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਉਤਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥
जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥
उसके जन्म-जन्मांतरों के पाप एवं दुःख मिट चुके हैं और वह परमेश्वर के नाम में समा गया है।

ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ਤਿਨ ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ਜੀਉ ॥
जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥
जिनके भाग्य में आदि से लेख लिखा हुआ है, वे हरि का ध्यान करते हैं, फिर उनका मनुष्य जन्म सफल हो जाता है और वे प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਜੀਉ ॥੩॥
हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥३॥
जिस मनुष्य के मन को हरि-प्रभु प्रिय लगा है, उसे परम सुख प्राप्त हुआ है और उसने लाभ में निर्वाण-पद प्राप्त किया है॥ ३॥

ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ਤੇ ਜਨ ਪਰਧਾਨਾ ਤੇ ਊਤਮ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲੋਗ ਜੀਉ ॥
जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥
जिन्हें हरि मीठा लगा है, वही पुरुष प्रधान हैं, हरि-प्रभु के लोग सर्वोत्तम हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗ ਜੀਉ ॥
हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥
हरि का नाम उनकी मान-प्रतिष्ठा है और हरि नाम उनका सखा है। गुरु के शब्द द्वारा वे हरि रस का भोग करते है।

ਹਰਿ ਰਸ ਭੋਗ ਮਹਾ ਨਿਰਜੋਗ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ॥
हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥
गुरु के हरि रस का आनंद प्राप्त करके वे निर्लिप्त रहते है और खुशकिस्मत ही हरि-रस को पाते हैं।

ਸੇ ਧੰਨੁ ਵਡੇ ਸਤ ਪੁਰਖਾ ਪੂਰੇ ਜਿਨ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
से धंनु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥
वे पूर्ण सद्पुरुष महान् एवं धन्य हैं, जो गुरमति द्वारा नाम का ध्यान करते हैं।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਰੇਣੁ ਮੰਗੈ ਪਗ ਸਾਧੂ ਮਨਿ ਚੂਕਾ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਜੀਉ ॥
जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥
नानक साधुओं की चरण-धूलि माँगता है, जिससे उसका मन शोक-वियोग से हो गया है।

ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ਤੇ ਜਨ ਪਰਧਾਨਾ ਤੇ ਊਤਮ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲੋਗ ਜੀਉ ॥੪॥੩॥੧੦॥
जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥४॥३॥१०॥
जिन्हें हरि मीठा लगता है, ये पुरुष प्रधान हैं और हरि-प्रभु के ऐसे लोग उत्तम है ॥४॥३॥१०॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਸਤਜੁਗਿ ਸਭੁ ਸੰਤੋਖ ਸਰੀਰਾ ਪਗ ਚਾਰੇ ਧਰਮੁ ਧਿਆਨੁ ਜੀਉ ॥
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥
सतियुग में सभी लोग संतोषी थे एवं प्रभु का ध्यान करते थे और धर्म चार पैरों पर टिका था।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਗਾਵਹਿ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਿਆਨੁ ਜੀਉ ॥
मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥
सतियुग में लोग तन-मन से भगवान का गुणगान करते थे और परम सुख प्राप्त करते थे, वह भगवान को अपने हृदय में याद करते थे और उन्हें हरि के गुणों का ज्ञान प्राप्त था।

ਗੁਣ ਗਿਆਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਰਤਾਰਥੁ ਸੋਭਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਈ ॥
गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥
भगवान के गुणों का ज्ञान उनका धन था, हरि-हरि नाम जपकर ही वे कृतार्थ होते थे और गुरुमुख लोगों की बहुत शोभा होती थी।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥
वे समझते थे कि उनके हृदय में और बाहर हर जगह एक ही परमात्मा बसता है और दूसरा उनके लिए कोई भी नहीं था।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ਜੀਉ ॥
हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥
वे हरि-नाम में लगन लगाकर रखते थे, हरि का नाम उनका सच्चा साथी था और हरि के दरबार में उनका बहुत मान-सम्मान होता था।

ਸਤਜੁਗਿ ਸਭੁ ਸੰਤੋਖ ਸਰੀਰਾ ਪਗ ਚਾਰੇ ਧਰਮੁ ਧਿਆਨੁ ਜੀਉ ॥੧॥
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥१॥
सतियुग में सभी लोग संतोषी एवं ध्यानी थे और धर्म चार पैरों पर टिका हुआ था॥ १॥

ਤੇਤਾ ਜੁਗੁ ਆਇਆ ਅੰਤਰਿ ਜੋਰੁ ਪਾਇਆ ਜਤੁ ਸੰਜਮ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਜੀਉ ॥
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥
फिर त्रेता युग आया तो ताकत ने जोर पकड़ कर मनुष्यों के मन को वश में कर लिया, लोग ब्रह्मचार्य, संयम एवं कर्मकाण्ड का आचरण करने लगे।

ਪਗੁ ਚਉਥਾ ਖਿਸਿਆ ਤ੍ਰੈ ਪਗ ਟਿਕਿਆ ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜਲਾਇ ਜੀਉ ॥
पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥
इस युग में धर्म का चौथा पैर खिसक गया, धर्म तीन पैरों पर ही टिक गया और लोगों के मन एवं ह्रदय में क्रोध जलने लगा।

ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਹਾ ਬਿਸਲੋਧੁ ਨਿਰਪ ਧਾਵਹਿ ਲੜਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥
फिर लोगों के मन एवं ह्रदय में क्रोध एक महा भयानक विष की भाँति विद्यमान हो गया, राजा-महाराजा आक्रमण करके युद्ध करने लगे और दुःख पाने लगे।

ਅੰਤਰਿ ਮਮਤਾ ਰੋਗੁ ਲਗਾਨਾ ਹਉਮੈ ਅਹੰਕਾਰੁ ਵਧਾਇਆ ॥
अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥
लोगों की अन्तरात्मा में ममता का रोग लग गया था और उनका अहंत्व एवं अहंकार अधिकतर बढ़ने लगा था।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰੀ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਬਿਖੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਹਿ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥
मेरे ठाकुर हरि-प्रभु ने जब कभी कृपा-दृष्टि की तो गुरमति एवं हरि नाम के माध्यम से क्रोध का विष दूर हो गया था।

ਤੇਤਾ ਜੁਗੁ ਆਇਆ ਅੰਤਰਿ ਜੋਰੁ ਪਾਇਆ ਜਤੁ ਸੰਜਮ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਜੀਉ ॥੨॥
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥२॥
त्रैता युग का आगमन हुआ और बाहुबल ने जोर पकड़ कर लोगों की अन्तरात्मा को वश में कर लिया, लोग ब्रह्मचार्य, संयम एवं कर्मकाण्ड का आचरण करने लगे ॥ २ ॥

ਜੁਗੁ ਦੁਆਪੁਰੁ ਆਇਆ ਭਰਮਿ ਭਰਮਾਇਆ ਹਰਿ ਗੋਪੀ ਕਾਨੁ ਉਪਾਇ ਜੀਉ ॥
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥
तदुपरांत द्वापर युग का आगमन हुआ, भगवान ने दुनिया को दुविधा एवं भ्रम में भटका दिया, उसने गोपियों एवं कान्हा (श्रीकृष्ण) को उत्पन्न किया।

ਤਪੁ ਤਾਪਨ ਤਾਪਹਿ ਜਗ ਪੁੰਨ ਆਰੰਭਹਿ ਅਤਿ ਕਿਰਿਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ਜੀਉ ॥
तपु तापन तापहि जग पुंन आर्मभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥
तपस्वी तप करते थे और धूनियां तपाने के दुःख सहने लगे, लोगों ने यज्ञ एवं दान-पुण्य का आरम्भ किया और वे अनेक धार्मिक कर्मकाण्ड एवं विधि-संस्कार करने लगे थे।

ਕਿਰਿਆ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ਪਗ ਦੁਇ ਖਿਸਕਾਇਆ ਦੁਇ ਪਗ ਟਿਕੈ ਟਿਕਾਇ ਜੀਉ ॥
किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥
धार्मिक कर्मकाण्ड एवं विधि संस्कार द्वारा धर्म का दूसरा पैर खिसक गया और अब द्वापर में धर्म दो पैरों पर ही टिक गया।

ਮਹਾ ਜੁਧ ਜੋਧ ਬਹੁ ਕੀਨੇ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਪਚੈ ਪਚਾਇ ਜੀਉ ॥
महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥
बहुत सारे योद्धाओं ने महा भयंकर युद्ध किए और अहंकार के कारण वे नष्ट हो गए तथा दूसरों को भी नष्ट कर दिया।

ਦੀਨ ਦਇਆਲਿ ਗੁਰੁ ਸਾਧੁ ਮਿਲਾਇਆ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮਲੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥
दीनदयालु प्रभु ने जीवों को साधु गुरु से मिलाया, सच्चे गुरु को मिलने से उनकी मलिनता दूर हो जाती थी।

ਜੁਗੁ ਦੁਆਪੁਰੁ ਆਇਆ ਭਰਮਿ ਭਰਮਾਇਆ ਹਰਿ ਗੋਪੀ ਕਾਨੁ ਉਪਾਇ ਜੀਉ ॥੩॥
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥३॥
द्वापर युग का आगमन हुआ तो प्रभु ने जगत को भ्रम में भटका दिया और उसने गोपियों एवं श्रीकृष्ण को उत्पन्न कर दिया॥ ३॥

ਕਲਿਜੁਗੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਪਗ ਤ੍ਰੈ ਖਿਸਕੀਆ ਪਗੁ ਚਉਥਾ ਟਿਕੈ ਟਿਕਾਇ ਜੀਉ ॥
कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥
तदनन्तर परमात्मा ने कलियुग बनाया, जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और धर्म एक पैर पर ही कायम रहा।

ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇਆ ਅਉਖਧੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਸਾਂਤਿ ਪਾਇ ਜੀਉ ॥
गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ ॥
इस युग के जीवों ने गुरु-शब्द की कमाई की और दुखों की औषधि हरि नाम पा लिया, हरि ने उसका कीर्तिगान करने वाले भक्तजनों के हृदय में शांति प्रदान की।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਰੁਤਿ ਆਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਖੇਤੁ ਜਮਾਇਆ ॥
हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥
कलियुग में हरि के भजन-कीर्तन की ऋतु आई और हरि-नाम की शोभा होने लगी, शरीर रूपी खेत में परमेश्वर के नाम को लोग बोने लगे।

ਕਲਿਜੁਗਿ ਬੀਜੁ ਬੀਜੇ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਲਾਹਾ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇਆ ॥
कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥
में यदि मनुष्य नाम के बिना कोई दूसरा बीज बोता है तो वह अपना सारा लाभ एवं मूल पूँजी गंवा लेता है।

ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਲਖਾਇ ਜੀਉ ॥
जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥
नानक ने पूर्ण गुरु को पा लिया है, जिसने उसके मन एवं हृदय में ही नाम प्रगट कर दिया है।

ਕਲਜੁਗੁ ਹਰਿ ਕੀਆ ਪਗ ਤ੍ਰੈ ਖਿਸਕੀਆ ਪਗੁ ਚਉਥਾ ਟਿਕੈ ਟਿਕਾਇ ਜੀਉ ॥੪॥੪॥੧੧॥
कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥४॥४॥११॥
परमात्मा ने कलियुग की रचना की, जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और धर्म (रूपी वैल) का चौथा पैर ही कायम रहा ॥ ४॥ ४॥ ११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਉ ॥
हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥
जिस व्यक्ति के मन में हरि की कीर्ति अच्छी लग गई है, उसने परमगति पा ली है, उसके मन-तन को परमात्मा मीठा लगने लग गया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ਪੁਰਾਨ ਜੀਉ ॥
हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥
जिसने गुरु की मति द्वारा भगवान का ध्यान किया है, उसने हरि रस पा लिया है, आदि से ही उसके मस्तक पर पूर्व लिखित भाग्य जाग गए हैं।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਗੁ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥
आदि से मस्तक पर लिखा उसका भाग्य उदय हो गया है और जब उसने हरि-नाम द्वारा भगवान का गुणगान किया तो हरि नाम द्वारा उसे सुहाग मिल गया।

ਮਸਤਕਿ ਮਣੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਹੁ ਪ੍ਰਗਟੀ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਸੋਹਾਇਆ ॥
मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥
अब उसके मस्तक पर प्रभु के प्रेम की मणि चमक उठी है और भगवान ने अपने हरि-नाम द्वारा उसे सुन्दर बना दिया है।

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨੂਆ ਮਾਨ ਜੀਉ ॥
जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥
उसकी ज्योति परम ज्योति से मिल गई है और उसने अपने प्रभु को पा लिया है, सच्चे गुरु को मिलने से उसका मन तृप्त हो गया है।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥१॥
हरि की कीर्ति-महिमा जिसके मन में भा गई है उसने परमगति पा ली है और उसके मन एवं तन को प्रभु मीठा लगने लग गया है॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਊਤਮ ਜਨ ਪਰਧਾਨ ਜੀਉ ॥
हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥
जिस व्यक्ति ने परमेश्वर का यशगान किया है, उसे परम पद प्राप्त हो गया है, वे लोग उत्तम एवं प्रधान हैं।

ਤਿਨ੍ ਹਮ ਚਰਣ ਸਰੇਵਹ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪਗ ਧੋਵਹ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨ ਜੀਉ ॥
तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥
जिन्हें हरि मीठा लगने लग गया है, हम उनके चरणों की सेवा करते हैं और क्षण-क्षण उनके चरण धोते हैं।

ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ਪਰਮ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਮੁਖਿ ਭਾਗਾ ਰਤੀ ਚਾਰੇ ॥
हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥
जिसे हरि मीठा लग गया है, उसे परम सुख प्राप्त हो गया है और उसका मुख भाग्यशाली एवं सुन्दर हो गया है।

ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ਹਰਿ ਹਾਰੁ ਉਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਕੰਠਿ ਧਾਰੇ ॥
गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥
गुरु के उपदेश द्वारा उसने प्रभु का गुणगान किया है, प्रभु को हार के रूप में हृदय में पहना है और हरि के नाम को अपनी जिव्हा एवं कण्ठ में धारण किया है।

ਸਭ ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਮਤੁ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਨ ਜੀਉ ॥
सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥
वे सभी को एक द्रष्टि से समान देखते है और सभी की अंतरात्मा में प्रभु का वास जानते है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਤੇ ਊਤਮ ਜਨ ਪਰਧਾਨ ਜੀਉ ॥੨॥
हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥२॥
जिस व्यक्ति ने परमेश्वर का यशगान किया है, उसे परम पद मिल गया है, वे लोग उत्तम एवं प्रधान हैं॥ २ ॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ਜੀਉ ॥
सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥
जिसके मन में सत्संगति अच्छी लगती है, वे हरि रस का आस्वादन करते हैं, सत्संगति में हरि का रस बसता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਿਆ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿਆ ਬੀਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥
हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥
वह हरि-परमेश्वर की आराधना करता है और गुरु के शब्द द्वारा प्रसन्न रहता है, प्रभु के अलावा वह किसी दूसरे को नहीं जानता।

ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੋਇ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਸੋ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ॥
अवरु न कोइ हरि अम्रितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥
उस हरि अमृत के अतिरिक्त दूसरा कोई अमृत नहीं, जो इसका पान करते हैं, वही इसकी विधि को जानते हैं।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਲਗਿ ਸੰਗਤਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥

धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥

पूर्ण गुरु धन्य-धन्य है, जिसके माध्यम से प्रभु प्राप्त होता है, सुसंगति में सम्मिलित होकर प्रभु-नाम को पहचाना जाता है।

ਨਾਮੋ ਸੇਵਿ ਨਾਮੋ ਆਰਾਧੈ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥

नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥

मैं नाम की पूजा करता हूँ, मैं नाम की ही आराधना करता हूँ एवं नाम के अलावा दूसरा कुछ भी नहीं।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ਵਿਚਿ ਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਹੋਇ ਜੀਉ ॥੩॥

सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥३॥

जिसके मन को सत्संगति प्यारी लगती है, वह हरि अमृत का स्वाद प्राप्त करता है, सत्संगति में ही प्रभु का नामामृत बसता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰਹੁ ਕਢਿ ਲੇਵਹੁ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ਜੀਉ ॥

हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥

हे हरि-प्रभु ! दया करो एवं हम पत्थरों को पार लगा दो, अपने शब्द द्वारा सहजता से हमें संसार के मोह से निकाल लो।

ਮੋਹ ਚੀਕੜਿ ਫਾਥੇ ਨਿਘਰਤ ਹਮ ਜਾਤੇ ਹਰਿ ਬਾਂਹ ਪ੍ਰਭੂ ਪਕਰਾਇ ਜੀਉ ॥

मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥

हम नश्वर प्राणी मोह के कीचड़ में फँसे हुए डूबते जा रहे हैं, हे हरि प्रभु ! हमें अपनी बांह पकड़ा दीजिए।

ਪ੍ਰਭਿ ਬਾਂਹ ਪਕਰਾਈ ਊਤਮ ਮਤਿ ਪਾਈ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਨੁ ਲਾਗਾ ॥

प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥

प्रभु ने जब बांह पकड़ा दी तो उत्तम बुद्धि प्राप्त हो गई और सेवक गुरु के चरणों में लग गया।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਆ ਆਰਾਧਿਆ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਸਭਾਗਾ ॥
हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥
जिस मनुष्य के मुख एवं मस्तक पर सौभाग्य लिखा हुआ है, वह हरि-परमेश्वर का नाम जपता एवं आराधना करता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੀਠਾ ਲਾਇ ਜੀਉ ॥
जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥
ईश्वर ने नानक पर कृपा धारण की है और उसके मन को हरि-प्रभु मीठा लगने लगा है।

ਹਰਿ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰਹੁ ਕਢਿ ਲੇਵਹੁ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ਜੀਉ ॥੪॥੫॥੧੨॥
हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥४॥५॥१२॥
हे हरि-प्रभु ! दया करो, हम पत्थरों को पार लगा दो और अपने शब्द द्वारा सहजता से हमें दुनिया के मोह से निकाल लो॥ ४॥ ५॥ १२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਨਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ਜੀਉ ॥
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥
भक्तजन अपने मन में भगवान का नाम जपते हैं, उन्हें भगवान का हरि-नाम मन में बहुत प्यारा लगता है, हरि के भक्तजनों में नाम जपने का ही चाव बना रहता है।

ਜੋ ਜਨ ਮਰਿ ਜੀਵੇ ਤਿਨ੍ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੇ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਗੁਰਮਤਿ ਭਾਉ ਜੀਉ ॥
जो जन मरि जीवे तिन्ह अम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥
जो लोग अहंत्व मिटाकर जीवन जीते हैं, वे अमृतपान करते हैं ,गुरमति द्वारा उनके मन में प्रभु से अनुराग हो जाता है।

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਾਉ ਗੁਰੁ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ਜੀਵਨ ਮੁਕਤੁ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥
जब गुरु अपनी कृपा करता है तो उनके मन में नाम से प्रेम हो जाता है, वह जीवन्मुक्त हो जाते हैं और उन्हें सुख प्राप्त हो जाता है।

ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹੇਲੇ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸੋਈ ॥
जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥
हरि के नाम द्वारा उनका जीवन मरण सुखी बन जाता है और उनके मन एवं हृदय में परमात्मा ही निवास करता है।

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸਿਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸ ਗਟਾਕ ਪੀਆਉ ਜੀਉ ॥
मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥
उनके हृदय में हरि-परमेश्वर का नाम बसता है, गुरु की शिक्षा द्वारा वे हरि का रस प्राप्त करते हैं, हरि-रस वे बड़े बड़े घूट भर कर पीते हैं।

ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਨਾ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ਜੀਉ ॥੧॥
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥१॥
भक्तजन तो अपने मन में भगवान का नाम ही जपते रहते हैं, उन्हें भगवान का हरि-नाम मन में बहुत भाता है, हरि के भक्तजनों में हरि-नाम जपने की तीव्र लालसा बनी रहती है॥ १॥

ਜਗਿ ਮਰਣੁ ਨ ਭਾਇਆ ਨਿਤ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ਮਤ ਜਮੁ ਪਕਰੈ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥
जगत में किसी भी प्राणी को मृत्यु अच्छी नहीं लगती, वे अपने आपको छिपाकर रखते हैं कि कहीं यमराज उन्हें पकड़ कर न ले जाए।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਇਹੁ ਜੀਅੜਾ ਰਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥
एक हरि-प्रभु जीवों के अन्तर में एवं बाहर दुनिया में हर जगह बसता है, यह प्राण उस प्रभु से छिपाकर नहीं रखे जा सकते।

ਕਿਉ ਜੀਉ ਰਖੀਜੈ ਹਰਿ ਵਸਤੁ ਲੋੜੀਜੈ ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਸੋ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥
मनुष्य अपने प्राणों को कैसे छिपाकर रख सकता है, जबकि भगवान इस वस्तु को लेना चाहता है? जिस भगवान की वस्तु होती है, वह उसे ले जाता है।

ਮਨਮੁਖ ਕਰਣ ਪਲਾਵ ਕਰਿ ਭਰਮੇ ਸਭਿ ਅਉਖਧ ਦਾਰੂ ਲਾਇ ਜੀਉ ॥
मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ ॥
मनमुख मनुष्य पीड़ित होकर चिल्लाता हुआ भटकता है एवं सर्व प्रकार की औषधि करता रहता है।

ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਪ੍ਰਭੁ ਲਏ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਉਬਰੇ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ਜੀਉ ॥
जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥
यह प्राण जिस भगवान की वस्तु है उसे ले जाता है, लेकिन भक्तजन शब्द की कमाई द्वारा संसार-सागर से पार हो जाते हैं।

ਜਗਿ ਮਰਣੁ ਨ ਭਾਇਆ ਨਿਤ ਆਪੁ ਲੁਕਾਇਆ ਮਤ ਜਮੁ ਪਕਰੈ ਲੈ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥੨॥
जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥२॥
जगत में किसी भी मनुष्य को मृत्यु अच्छी नहीं लगती, वह नित्य अपने आपको छिपाकर रखता है कि कहीं यमदूत उसे पकड़ कर न ले जाए॥ २॥

ਧੁਰਿ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਹਾਇਆ ਜਨ ਉਬਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਨਿ ਜੀਉ ॥
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥
गुरुमुखों को प्रारम्भ से लिखी हुई मृत्यु भी सुन्दरं लगी है, भक्तजन परमात्मा का ध्यान करके भवसागर में डूबने से बच गए हैं।

ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਜਾਨਿ ਜੀਉ ॥
हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥
उन्होंने हरि-नाम द्वारा हरि के दर पर शोभा एवं बड़ाई प्राप्त की है, उन्होंने हरि के दरबार में जाकर अपना जन्म सफल कर लिया है।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਸੀਧੇ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥
हरि-नाम द्वारा उन्होंने सुख पा लिया है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੋਵੈ ਦੁਖ ਮੇਟੇ ਹਰਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥
जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥
उनका जन्म-मरण दोनों का दुख मिट जाता है और वे परमात्मा के नाम में ही समा जाते हैं।

ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਰਲਿ ਏਕੋ ਹੋਏ ਹਰਿ ਜਨ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕ ਸਮਾਨਿ ਜੀਉ ॥
हरि जन प्रभु रलि एको होए हरि जन प्रभु एक समानि जीउ ॥
भक्तजन एवं प्रभु मिलकर एक रूप हो गए हैं, अतः भक्तजन एवं प्रभु एक समान ही हैं।

ਧੁਰਿ ਮਰਣੁ ਲਿਖਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋਹਾਇਆ ਜਨ ਉਬਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਨਿ ਜੀਉ ॥੩॥
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥३॥
गुरुमुखों को प्रारम्भ से लिखी हुई मृत्यु भी सुन्दर लगी है, भक्तजन परमात्मा का ध्यान करके भवसागर से बच गए हैं।॥ ३॥

ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸੈ ਲਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਇ ਜੀਉ ॥
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥
दुनिया उत्पन्न होती है और नाश हो जाती है और सदैव ही दुनिया का विनाश होता रहता है लेकिन गुरु द्वारा इन्सान स्थिर हो जाता है।

ਗੁਰੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਾਏ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਚੋਇ ਜੀਉ ॥
गुरु मंत्रु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥
गुरु नाम-मंत्र मनुष्य के मन में दृढ़ करता है और उसके मुख में हरिनामामृत दोहन करता है, सो वह हरिनामामृत का पान करता है।

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਮੁਆ ਜੀਵਾਇਆ ਫਿਰਿ ਬਾਹੁੜਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਈ ॥
हरि अम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥
प्रभु के अमर कर देने वाले अमृत रस को पाकर मृत प्राणी जीवित हो जाता है और वह फिर दोबारा नहीं मरता।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਮਰ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵੈ ਸੋਈ ॥
हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥
हरि-परमेश्वर के नाम से मनुष्य अमर पद प्राप्त कर लेता है और हरि के नाम में ही समा जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥
जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ ॥
परमात्मा का नाम ही नानक का जीवनाधार एवं टेक है और नाम के बिना उसका कोई भी सहारा नहीं।

ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਬਿਨਸਿ ਬਿਨਾਸੈ ਲਗਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਸਥਿਰੁ ਹੋਇ ਜੀਉ ॥੪॥੬॥੧੩॥
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥४॥६॥१३॥
जगत जन्मता एवं नाश हो जाता है और सदैव ही उसका विनाश होता रहता है, गुरु के सान्निध्य में रह कर इन्सान सदैव स्थिर हो जाता है॥ ४ ॥ ६॥ १३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਛੰਤ ॥
आसा महला ४ छंत ॥
आसा महला ४ छंत ॥

ਵਡਾ ਮੇਰਾ ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਆਦਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਜੀਉ ॥
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥
मेरा गोविन्द ही सबसे बड़ा है, वह अगम्य, अगोचर, जगत का आदि निरंजन निरंकार है।

ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ਅਮਿਤਿ ਵਡਿਆਈ ਮੇਰਾ ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰ ਜੀਉ ॥
ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥
उसकी गति कही नहीं जा सकती, उसका प्रताप अपरिमित है, मेरा गोविन्द अलक्ष्य एवं अपार है।

ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਲਖ ਅਪਾਰੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਆਪੁ ਆਪਣਾ ਜਾਣੈ ॥
गोविंदु अलख अपारु अपर्मपरु आपु आपणा जाणै ॥
अलक्ष्य, अपार, अपरंपार गोविंद स्वयं ही अपने आपको जानता है।

ਕਿਆ ਇਹ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ਕਹੀਅਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਆਖਿ ਵਖਾਣੈ ॥
किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥
हे भगवान ! ये बेचारे जीव भी क्या विचार उच्चारण करें, जो तेरी व्याख्या एवं वर्णन कर सकें।

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤੂੰ ਅਪਣੀ ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ਜੀਉ ॥
जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥
जिस पर तू अपनी करुणा-दृष्टि करता है, वही गुरु द्वारा तेरे बारे में कुछ विचार करता है।

ਵਡਾ ਮੇਰਾ ਗੋਵਿੰਦੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਆਦਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਜੀਉ ॥੧॥
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥१॥
मेरा गोविन्द ही सबसे बड़ा है, वह अगम्य, अगोचर, जगत का आदि, निरंजन निरंकार है॥ १॥

ਤੂੰ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਪਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥
तूं आदि पुरखु अपर्मपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥
हे मालिक ! तू आदिपुरुष, अपरंपार एवं जगत का रचयिता है और तेरा पार पाया नहीं जा सकता।

ਤੂੰ ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ਜੀਉ ॥
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥
हे प्रभु ! तू कण-कण एवं प्रत्येक शरीर में निरंतर मौजूद है, तू सब में समाया रहता है।

ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥
वह परब्रह्म-परमेश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, जिसका अंत नहीं पाया जा सकता।

ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਅਦਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਇਆ ॥
तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥
उसका कोई रूप एवं रेखा नहीं, वह अदृष्ट एवं अगोचर है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ਜੀਉ ॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥
गुरु ने जिस व्यक्ति को अलक्ष्य परमात्मा दिखा दिया है, वह दिन-रात सदा आनंदमय रहता है और सहज ही उसके नाम में समाया रहता है।

ਤੂੰ ਆਦਿ ਪੁਰਖੁ ਅਪਰੰਪਰੁ ਕਰਤਾ ਤੇਰਾ ਪਾਰੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ਜੀਉ ॥੨॥
तूं आदि पुरखु अपर्मपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥२॥
हे मालिक ! तू आदिपुरुष, अपरंपार एवं जगत का रचयिता है और तेरा पार नहीं पाया जा सकता ॥ २॥

ਤੂੰ ਸਤਿ ਪਰਮੇਸਰੁ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਜੀਉ ॥
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥
हे श्रीहरि ! तू सदैव सत्य परमेश्वर है एवं सदा अबिनाशी है, तू ही गुणों का भण्डार है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਤੂੰ ਆਪੇ ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ਜੀਉ ॥
हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥
हे हरि-प्रभु ! सारे विश्व में एक तू ही है और तेरे समान अन्य कोई नहीं है, तू आप ही एक चतुर पुरुष है।

ਪੁਰਖੁ ਸੁਜਾਨੁ ਤੂੰ ਪਰਧਾਨੁ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
हे चतुर पुरुष ! विश्व में तू ही प्रधान है और तेरे जैसा अन्य कोई बड़ा नहीं।

ਤੇਰਾ ਸਬਦੁ ਸਭੁ ਤੂੰਹੈ ਵਰਤਹਿ ਤੂੰ ਆਪੇ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈ ॥
तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥
हे प्रभु ! तेरा ही शब्द (हुक्म) सक्रिय है, तू सर्वव्यापक है, जो कुछ तू स्वयं करता है वही होता है।

ਹਰਿ ਸਭ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ਏਕੋ ਸੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਖਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਉ ॥
हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥
वह एक परमात्मा ही सबमें समाया हुआ है, गुरुमुख बनकर ही हरि का नाम जाना जाता है।

ਤੂੰ ਸਤਿ ਪਰਮੇਸਰੁ ਸਦਾ ਅਬਿਨਾਸੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਜੀਉ ॥੩॥
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥३॥
हे भगवान ! तू सदैव सत्य परमेश्वर है जो सदा अबिनाशी है, एक तू ही गुणों का भण्डार है॥ ३॥

ਸਭੁ ਤੂੰਹੈ ਕਰਤਾ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਇ ਜੀਉ ॥
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥
हे दुनिया बनाने वाले ! हर जगह तू ही है, संसार में चारों ओर तेरा ही प्रताप है, जैसे तुझे भाता है, वैसे ही दुनिया को चलाते हो।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵਹਿ ਸਭ ਤੇਰੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ਜੀਉ ॥
तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥
जैसे तुम्हें स्वयं पसंद है, वैसे ही तुम सृष्टि को चलाते हो, सभी जीव तेरे शब्द में ही समाए हुए हैं।

ਸਭ ਸਬਦਿ ਸਮਾਵੈ ਜਾਂ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤੇਰੈ ਸਬਦਿ ਵਡਿਆਈ ॥
सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥
यदि तुझे अच्छा लग जाए तो सभी तेरे शब्द में समा जाते हैं, मनुष्य तेरे शब्द द्वारा ही बड़ाई पा लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈਐ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ਸਬਦੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥
गुरुमुख बनकर ही मनुष्य बुद्धि प्राप्त करता है और अपना अहंकार मिटा कर प्रभु में समाया रहता है।

ਤੇਰਾ ਸਬਦੁ ਅਗੋਚਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ਜੀਉ ॥
तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥
हे प्रभु ! गुरुमुख बनकर ही तेरा अगोचर शब्द प्राप्त होता है, हे नानक ! मनुष्य नाम में समाया रहता है।

ਸਭੁ ਤੂੰਹੈ ਕਰਤਾ ਸਭ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਇ ਜੀਉ ॥੪॥੭॥੧੪॥
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥४॥७॥१४॥
हे विश्व को पैदा करने वाले ! सृष्टि में चारों ओर तेरा ही प्रताप है, जैसे तुझे मंजूर है, वैसे ही तू सृष्टि को चलाता है॥ ४॥ ७॥ १४॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਛੰਤ ਘਰੁ ੪ ॥
आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥
आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਿੰਨੇ ਲੋਇਣਾ ਮਨੁ ਪ੍ਰੇਮਿ ਰਤੰਨਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हरि अम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥
हरि के नामामृत से मेरे नेत्र भीग गए हैं और मेरा मन उसके प्रेम रंग में रंगा हुआ है।

ਮਨੁ ਰਾਮਿ ਕਸਵਟੀ ਲਾਇਆ ਕੰਚਨੁ ਸੋਵਿੰਨਾ ॥
मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥
मेरे राम ने मेरे मन को कसौटी पर परखा है और यह शुद्ध कंचन बन गया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਿਆ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੋ ਭਿੰਨਾ ॥
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥
गुरुमुख बनकर मेरा मन-तन प्रभु के प्रेम में भीग कर गहरा लाल हो गया है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਮੁਸਕਿ ਝਕੋਲਿਆ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਧਨੁ ਧੰਨਾ ॥੧॥
जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥१॥
नानक प्रभु की सुगन्धि में सुगन्धित हो गया है और उसका जन्म धन्य एवं सम्पूर्ण हो गया है॥ १॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਬਾਣੀ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਅਣੀਆਲੇ ਅਣੀਆ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥
हरि की प्रेम वाणी का तीक्ष्ण बाण मेरे हृदय को लगा है।

ਜਿਸੁ ਲਾਗੀ ਪੀਰ ਪਿਰੰਮ ਕੀ ਸੋ ਜਾਣੈ ਜਰੀਆ ॥
जिसु लागी पीर पिरम की सो जाणै जरीआ ॥
जिसे प्रेम की पीड़ा सताती है, वही जानता है कि इसे कैसे सहन किया जाना चाहिए।

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤਿ ਸੋ ਆਖੀਐ ਮਰਿ ਜੀਵੈ ਮਰੀਆ ॥
जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥
जो अपने अहंत्व को मारता है और मोह से अलग होकर जीवन व्यतीत करता है, वही जीवन्मुक्त कहा जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਜਗੁ ਦੁਤਰੁ ਤਰੀਆ ॥੨॥
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥
हे हरि ! नानक को सतिगुरु से मिला दीजिए चूंकि वह विषम संसार-सागर से पार हो जाए॥ २॥

ਹਮ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮਿਲੁ ਗੋਵਿੰਦ ਰੰਗਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥
हम मूर्ख एवं अज्ञानी तेरी शरण आए हैं, हे रंगीले गोविन्द ! हमें मिलो।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਇਕ ਮੰਗਾ ॥
गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥
पूर्ण गुरु के द्वारा हरि पाया जा सकता है, इसलिए मैं गुरु से हरि की भक्ति ही माँगता हूँ।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸਿਆ ਜਪਿ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ॥
मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥
मेरा मन एवं तन गुरु के शब्द से खिल गए हैं और मैं अनंत लहरों वाले प्रभु का सुमिरन करता हूँ।

ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਤਸੰਗਾ ॥੩॥
मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥
संतजनों से मिलकर नानक को सुसंगति में प्रभु की प्राप्ति हुई है॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥
हे दीनदयालु ! हे जगत के बादशाह ! मेरी विनती सुनो।

ਹਉ ਮਾਗਉ ਸਰਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥
हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥
मैं हरि-नाम की शरण माँगता हूँ, मैंने हरि-नाम अपने मुँह में डाल लिया है अर्थात् मैं अपने मुँह से हरि-नाम ही जपता रहता हूँ।

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਹੈ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਇਆ ॥
भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥
भक्तवत्सल होना हरि का प्रारम्भ से ही विरद् है, हरि ने मेरी लाज रख ली है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਇਆ ॥੪॥੮॥੧੫॥
जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥
नानक हरि की शरण में आ गया है और हरि-नाम ने उसे भवसागर से तार दिया है। ४॥ ८ ॥ १५ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਢੂੰਢਿ ਢੂਢੇਦਿਆ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥
गुरुमुख बनकर खोजते-खोजते मैंने हरि सज्जन ढूंढ लिया है।

ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਕੋਟ ਗੜ ਵਿਚਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਧਾ ॥
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥
मेरी कंचन काया के कोटगढ़ में हरि-प्रभु प्रगट हुआ है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੀਰਾ ਰਤਨੁ ਹੈ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਵਿਧਾ ॥
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥
हरि-परमेश्वर एक हीरा एवं रत्न है, जिससे मेरा मन एवं तन बिंध गया है।

ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਵਡੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਰਸਿ ਗੁਧਾ ॥੧॥
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥
हे नानक ! आदि से अहोभाग्य के कारण मैंने हरि को पा लिया है। मैं उसके अमृत रस में भीग गया हूँ॥ १॥

ਪੰਥੁ ਦਸਾਵਾ ਨਿਤ ਖੜੀ ਮੁੰਧ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲੀ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥
मैं सुन्दर कमसिन नारी नित्य खड़ी अपने प्रभु के पास जाने का मार्ग पूछती हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਚੇਤਾਇ ਗੁਰ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਚਾਲੀ ॥
हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥
हे गुरु ! मुझे हरि का नाम याद कराते रहो, जिससे मैं हरि के मार्ग पर चल सकूं।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਜਾਲੀ ॥
मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥
मेरे मन एवं तन को प्रभु-नाम का ही आधार है और मैंने अहंकार के विष को जला दिया है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਬਨਵਾਲੀ ॥੨॥
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥
हे हरि ! नानक को सच्चे गुरु से मिला दो, चूंकि जिसे भी ईश्वर मिला है, गुरु के माध्यम से ही मिला है॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਿਆਰੇ ਆਇ ਮਿਲੁ ਮੈ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥
हे प्रियतम प्रभु ! गुरु के द्वारा मुझे आकर मिलो क्योंकि मैं चिरकाल से तुझ से बिछुड़ा हुआ हूँ।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਬਹੁਤੁ ਬੈਰਾਗਿਆ ਹਰਿ ਨੈਣ ਰਸਿ ਭਿੰਨੇ ॥
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥
मेरा तन एवं मन बहुत वैराग्यवान हो गया है और मेरे नेत्र हरि के रस से भीगे हुए हैं।

ਮੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਿਆਰਾ ਦਸਿ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਮਨੁ ਮੰਨੇ ॥
मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥
हे गुरुदेव ! मुझे प्रियतम हरि-प्रभु के बारे में बता दो, तांकि उससे मिलकर मेरा मन प्रसन्न हो जाए।

ਹਉ ਮੂਰਖੁ ਕਾਰੈ ਲਾਈਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੰਮੇ ॥੩॥
हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कमे ॥३॥
हे नानक ! मुझ मूर्ख को हरि ने अपने नाम-सुमिरन के कार्य में लगा दिया है॥ ३॥

ਗੁਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਿੰਨੀ ਦੇਹੁਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬੁਰਕੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
गुर अम्रित भिंनी देहुरी अम्रितु बुरके राम राजे ॥
गुरु का शरीर हरि-नामामृत से भीगा हुआ है और उसने नामामृत मुझ पर छिड़क दिया है।

ਜਿਨਾ ਗੁਰਬਾਣੀ ਮਨਿ ਭਾਈਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਛਕਿ ਛਕੇ ॥
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अम्रिति छकि छके ॥
जिन लोगों को अपने मन में गुरु की वाणी अच्छी लगती है, वे अमृत का निरन्तर पान करते हैं।

ਗੁਰ ਤੁਠੈ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਚੂਕੇ ਧਕ ਧਕੇ ॥
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥
गुरु की कृपा-दृष्टि से मैंने प्रभु को पा लिया है और अब जन्म-मरण के धक्के नहीं लगेंगे।

ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੋਇਆ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਇਕੇ ॥੪॥੯॥੧੬॥
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥४॥९॥१६॥
प्रभु का सेवक परमेश्वर का रूप बन गया है। हे नानक ! प्रभु एवं उसका सेवक एक रूप ही हैं॥ ४॥ ६॥ १६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हरि अम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥
गुरु सतिगुरु के पास अमृतमयी हरि-भक्ति का भण्डार विद्यमान है।

ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਹੈ ਸਿਖ ਦੇਇ ਹਰਿ ਰਾਸੇ ॥
गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥
गुरु सतिगुरु सच्चा साहूकार है, वही अपने सिक्खों को हरि-नाम रूपी पूंजी प्रदान करता है।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ਵਣਜੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਸਾਬਾਸੇ ॥
धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥
व्यापारी सिक्ख एवं उसका व्यापार धन्य-धन्य है, गुरु साहूकार को शाबाश है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰੁ ਤਿਨ੍ਹੀ ਪਾਇਆ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਾਸੇ ॥੧॥
जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥
हे नानक ! गुरु को उन्होंने ही पाया है, जिनके मस्तक पर आदि से ही किस्मत का लेख लिखा होता है। १ ।

ਸਚੁ ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਤੂੰ ਧਣੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥

हे मेरे मालिक ! एक तू ही हमारा सच्चा साहूकार है। समूचा जगत तेरा व्यापारी है।

ਸਭ ਭਾਂਡੇ ਤੁਧੈ ਸਾਜਿਆ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਹਰਿ ਥਾਰਾ ॥

सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥

हे प्रभु ! सभी जीव रूपी बर्तन तेरे द्वारा ही उत्पादित हैं। इनके भीतर तेरी ही आत्मा व्यापक है।

ਜੋ ਪਾਵਹਿ ਭਾਂਡੇ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਸਾ ਨਿਕਲੈ ਕਿਆ ਕੋਈ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰਾ ॥

जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥

जिस वस्तु को तुम बर्तन में डालते हो, केवल वही बाहर निकलती है अर्थात् जो पदार्थ तुम शरीरों में डालते हो, वही प्रगट होता है। कोई जीव बेचारा क्या कर सकता है ?"

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਬਖਸਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥
जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥
हे हरि ! नानक को भी तूने अपनी भक्ति का भण्डार प्रदान किया है॥ २॥

ਹਮ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਵਿਥਰਹ ਸੁਆਮੀ ਤੂੰ ਅਪਰ ਅਪਾਰੋ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥
हे स्वामी ! हम तेरे कौन-से गुणों का वर्णन कर सकते हैं ? हे राजन प्रभु ! तू तो अपरंपार है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਾਲਾਹਹ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਏਹਾ ਆਸ ਆਧਾਰੋ ॥
हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥
मैं रात-दिन हरि-नाम की सराहना करता हूँ केवल यही मेरी आशा एवं आधार है।

ਹਮ ਮੂਰਖ ਕਿਛੂਅ ਨ ਜਾਣਹਾ ਕਿਵ ਪਾਵਹ ਪਾਰੋ ॥
हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥
हे प्रभु! हम मूर्ख हैं और कुछ भी नहीं जानते। हम तुम्हारा अन्त किस तरह पा सकते हैं ?

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਦਾਸ ਪਨਿਹਾਰੋ ॥੩॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥
नानक हरि का दास है, वास्तव में हरि के दासों का पनिहार है॥ ३॥

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖਿ ਲੈ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭ ਆਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥
हे प्रभु ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही हमें बचा लीजिए। हम तेरी शरण में आए हैं।

ਹਮ ਭੂਲਿ ਵਿਗਾੜਹ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਏ ॥
हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥
हम दिन-रात जीवन-पथ से भ्रष्ट होकर अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं। हे हरि ! हमारी मान प्रतिष्ठा रखें।

ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੂੰ ਗੁਰੁ ਪਿਤਾ ਹੈ ਦੇ ਮਤਿ ਸਮਝਾਏ ॥
हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥
हम तेरी संतान हैं तुम हमारे गुरु एवं पिता हो, हमें सुमति देकर सन्मार्ग लगाओ।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕਾਂਢਿਆ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖਾਏ ॥੪॥੧੦॥੧੭॥
जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥
हे प्रभु ! नानक हरि का दास कहलाता है, इसलिए उसकी मान-प्रतिष्ठा रखो ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਧੁਰਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥
जिन लोगों के मस्तक पर प्रारम्भ से ही हरि ने लेख लिखा है, उन्हें सच्चा गुरु मिल गया है।

ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਘਟਿ ਬਲਿਆ ॥
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥
गुरु ने उनके अज्ञान के अन्धेरे को मिटा दिया है और उनके अन्तर्मन में गुरु, ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो गया है।

ਹਰਿ ਲਧਾ ਰਤਨੁ ਪਦਾਰਥੋ ਫਿਰਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਚਲਿਆ ॥
हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥
उन्होंने हरि-नाम रूपी रत्न ढूंढ लिया है और वे दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं भटकते।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਆਰਾਧਿਆ ਆਰਾਧਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ॥੧॥
जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥
नानक ने नाम की आराधना की है और आराधना द्वारा वह हरि-प्रभु से मिल गया है ॥ १॥

ਜਿਨੀ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਕਾਹੇ ਜਗਿ ਆਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥
जिन्होंने ऐसे हरि के नाम को याद नहीं किया, वे इस जगत में क्यों आए हैं ?

ਇਹੁ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲੰਭੁ ਹੈ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਬਿਰਥਾ ਸਭੁ ਜਾਏ ॥
इहु माणस जनमु दुल्मभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥
यह मानव-जन्म बड़ा दुर्लभ है और प्रभु-नाम के बिना यह व्यर्थ ही चला जाता है।

ਹੁਣਿ ਵਤੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਬੀਜਿਓ ਅਗੈ ਭੁਖਾ ਕਿਆ ਖਾਏ ॥
हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥
अब जीवन रूपी योग्य ऋतु में मनुष्य हरि का नाम नहीं बोता तदुपरांत आगे (परलोक में) भूखा क्या खाएगा ?

ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਫਿਰਿ ਜਨਮੁ ਹੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਾਏ ॥੨॥
मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥
मनमुख मनुष्य बार-बार जन्म लेते हैं, हे नानक ! परमात्मा को यही मंजूर है ॥ २॥

ਤੂੰ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਸਭੁ ਕੋ ਸਭਿ ਤੁਧੁ ਉਪਾਏ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥
हे हरि ! तू समस्त जीवों का स्वामी है और यह सब कुछ तेरा ही है। तूने ही सब को पैदा किया है।

ਕਿਛੁ ਹਾਥਿ ਕਿਸੈ ਦੈ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਸਭਿ ਚਲਹਿ ਚਲਾਏ ॥
किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥
जीवों के वश में कुछ भी नहीं, जैसे तुम चलाते हो वैसे ही वे जीवन-आचरण करते हैं।

ਜਿਨ੍ ਤੂੰ ਮੇਲਹਿ ਪਿਆਰੇ ਸੇ ਤੁਧੁ ਮਿਲਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਏ ॥
जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥
हे मेरे प्रिय प्रभु ! वही जीव तुझसे मिलते हैं, जिन्हें तुम स्वयं मिलाते हो और जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਏ ॥੩॥
जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥
नानक की सतिगुरु से भेंट हो गई है, जिसने हरि के नाम द्वारा उसे भवसागर से पार कर दिया है॥ ३॥

ਕੋਈ ਗਾਵੈ ਰਾਗੀ ਨਾਦੀ ਬੇਦੀ ਬਹੁ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ਨਹੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭੀਜੈ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥
कुछ लोग अनेक प्रकार से राग गाकर, शंख बजाकर एवं वेदों के अध्ययन द्वारा भगवान का गुणगान करते हैं लेकिन इन विधियों से परमात्मा प्रसन्न नहीं होता।

ਜਿਨਾ ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਤਿਨਾ ਰੋਇ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥
जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥
जिनके मन में छल-कपट एवं विकार हैं, उनके विलाप करने का क्या अभिप्राय है ?

ਹਰਿ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਸਿਰਿ ਰੋਗ ਹਥੁ ਦੀਜੈ ॥
हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥
विश्व का रचयिता परमात्मा सब कुछ जानता है चाहे मनुष्य अपने पाप छिपाने का कितना ही प्रयास करता रहे।

ਜਿਨਾ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹੈ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਲੀਜੈ ॥੪॥੧੧॥੧੮॥
जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥
हे नानक ! जिन गुरुमुखों का हृदय शुद्ध है, वे हरि-भक्ति करके हरि को पा लेते हैं॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਤੇ ਜਨ ਸੁਘੜ ਸਿਆਣੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥
जिनके मन में भगवान का प्यार है, वे लोग सुघड़ एवं बुद्धिमान हैं।

ਜੇ ਬਾਹਰਹੁ ਭੁਲਿ ਚੁਕਿ ਬੋਲਦੇ ਭੀ ਖਰੇ ਹਰਿ ਭਾਣੇ ॥
जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥
यदि वे बाहर से बोलने में भूल चूक भी करते हैं तो भी वे भगवान को बहुत अच्छे लगते हैं।

ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਨੋ ਹੋਰੁ ਥਾਉ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ॥
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥
भगवान के संतजनों का उसके सिवाय दूसरा कोई स्थान नहीं। प्रभु ही मानविहीन लोगों का सम्मान है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹੈ ਹਰਿ ਤਾਣੁ ਸਤਾਣੇ ॥੧॥
जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥
हे नानक ! हरि का नाम ही संतों भक्तों का सहारा है और उसका बल ही उन्हें बलवान बनाता है॥ १॥

ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਬਹੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੋ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥
जहाँ भी जाकर मेरा सच्चा गुरु विराजमान होता है, वह स्थान अति सुन्दर है।

ਗੁਰਸਿਖੀਂ ਸੋ ਥਾਨੁ ਭਾਲਿਆ ਲੈ ਧੂਰਿ ਮੁਖਿ ਲਾਵਾ ॥
गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥
गुरु-सिक्ख उस स्थान को ढूंढ लेते हैं और उसकी धूलि लेकर अपने माथे पर लगाते हैं।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੀ ਘਾਲ ਥਾਇ ਪਈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਾ ॥
गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥
जो गुरु के सिक्ख हरि-नाम का ध्यान करते हैं, उनकी सेवा सफल हो जाती है।

ਜਿਨ੍ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਜਿਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਪੂਜ ਕਰਾਵਾ ॥੨॥
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥
हे नानक ! जिन्होंने सतिगुरु की पूजा की है, प्रभु उनकी पूजा दुनिया से करवाता है॥ २॥

ਗੁਰਸਿਖਾ ਮਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਹਰਿ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥

गुरु-सिक्खों के मन में परमात्मा के नाम से ही प्रेम हैं। हे प्रभु ! वह तुझे प्रेम करते हैं।

ਕਰਿ ਸੇਵਹਿ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਭੁਖ ਜਾਇ ਲਹਿ ਮੇਰੀ ॥
करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥
अपने हाथों से वे पूर्ण सच्चे गुरु की सेवा करते हैं और उनकी अहंत्व की भूख दूर हो जाती है।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੀ ਭੁਖ ਸਭ ਗਈ ਤਿਨ ਪਿਛੈ ਹੋਰ ਖਾਇ ਘਨੇਰੀ ॥
गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥
गुरु-सिक्खों की तमाम भूख दूर हो जाती है, उनकी संगति करके बहुत सारे लोग (नाम-स्मरण की) पेट-पूजा करते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪੁੰਨੁ ਬੀਜਿਆ ਫਿਰਿ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਪੁੰਨ ਕੇਰੀ ॥੩॥
जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥३॥
नानक ने हरि के नाम का पुण्य बोया है और दोबारा हरि के नाम के पुण्य-फल में कमी नहीं आती ॥ ३॥

ਗੁਰਸਿਖਾ ਮਨਿ ਵਾਧਾਈਆ ਜਿਨ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਡਿਠਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥
हे प्रभु ! गुरु के सिक्खों के मन में शुभकामनाएँ हैं, जिन्होंने मेरे सच्चे गुरु के दर्शन प्राप्त किए हैं।

ਕੋਈ ਕਰਿ ਗਲ ਸੁਣਾਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਸੋ ਲਗੈ ਗੁਰਸਿਖਾ ਮਨਿ ਮਿਠਾ ॥
कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥
यदि कोई उन्हें हरि-नाम की कथा सुनाए तो वह गुरु के सिक्खों के मन को मीठा लगता है।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਗੁਰਸਿਖ ਪੈਨਾਈਅਹਿ ਜਿਨ੍ਹਾ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ॥
हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥
गुरु के सिक्ख जिन पर मेरा सच्चा गुरु सुप्रसन्न है, प्रभु के दरबार में उन्हें सम्मान की पोशाक पहनाई जाती है।

ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹੋਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ॥੪॥੧੨॥੧੯॥
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१९॥
नानक खुद भी हरि का रूप बन गया है, चूंकि उसके मन में हरि बस गया है ॥४॥१२॥१९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
आसा महला ४ ॥
आसा महला ४ ॥

ਜਿਨ੍ਹ ਭੇਟਿਆ ਮੇਰਾ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਤਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ॥
जिन्होंने मेरे पूर्ण सतिगुरु से भेंट की है, गुरु उनके मन में हरि का नाम दृढ़ कर देता है।

ਤਿਸ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਉਤਰੈ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥
तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥
जो लोग हरि-नाम का ध्यान करते हैं, उनकी तृष्णा एवं माया की तमाम भूख दूर हो जाती है।

ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨ੍ ਜਮੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥
जो पुरुष हरि-नाम को याद करते हैं, उनके समीप यमदूत भी नहीं आता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਨਿਤ ਜਪੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਤਰਾਵੈ ॥੧॥
जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥
हे भगवान ! नानक पर कृपा करो, ताकि वह नित्य हरि नाम का जाप करता रहे और हरि नाम ही उसका उद्धार करता है॥ १ ॥

ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨਾ ਫਿਰਿ ਬਿਘਨੁ ਨ ਹੋਈ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥
जो मनुष्य गुरुमुख बनकर नाम का ध्यान करते हैं, उन्हें दोबारा जीवन मार्ग में कभी विघ्न नहीं आता।

ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਇਆ ਤਿਨ ਪੂਜੇ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥
जिन्होंने महापुरुष सच्चे गुरु को प्रसन्न कर लिया है, उनकी सारी दुनिया पूजा करती है।

ਜਿਨ੍ੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨ੍ਾ ਸੁਖੁ ਸਦ ਹੋਈ ॥
जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥
जिन्होंने अपने प्यारे सतिगुरु की सेवा की है, वे सदा सुखी रहते हैं।

ਜਿਨ੍ਾ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਤਿਨ੍ਾ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਸੋਈ ॥੨॥
जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥२॥
हे नानक ! जिन्हें सच्चा गुरु मिल गया है, उन्हें ही भगवान मिला है॥ २॥

ਜਿਨ੍ਾ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਤਿਨ੍ ਹਰਿ ਰਖਣਹਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥
जिन गुरुमुखों के हृदय में भगवान का प्रेम है, परमात्मा खुद ही उनका रखवाला है।

ਤਿਨ੍ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕੋਈ ਕਿਆ ਕਰੇ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥
तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥
कोई मनुष्य उनकी कैसे निन्दा कर सकता है, जिन्हें प्रभु का नाम प्यारा लगता है।

ਜਿਨ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਸਭ ਦੁਸਟ ਝਖ ਮਾਰਾ ॥
जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥
जिनका मन प्रभु के साथ रम जाता है, दुष्ट लोग उनकी निन्दा चारों ओर करने के लिए टक्करें मारते रहते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਰਖਣਹਾਰਾ ॥੩॥
जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥
नानक ने नाम का ध्यान किया है, भगवान खुद उसका रखवाला है॥ ३॥

ਹਰਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਭਗਤ ਉਪਾਇਆ ਪੈਜ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥
ईश्वर ने प्रत्येक युग में अपने भक्त उत्पन्न किए हैं और संकट के समय उनकी रक्षा करता आ रहा है।

ਹਰਣਾਖਸੁ ਦੁਸਟੁ ਹਰਿ ਮਾਰਿਆ ਪ੍ਰਹਲਾਦੁ ਤਰਾਇਆ ॥
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥
दुष्ट हिरण्यकशिपु का हरि ने संहार कर दिया और अपने भक्त प्रहलाद की रक्षा की।

ਅਹੰਕਾਰੀਆ ਨਿੰਦਕਾ ਪਿਠਿ ਦੇਇ ਨਾਮਦੇਉ ਮੁਖਿ ਲਾਇਆ ॥
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥
अहंकारी एवं निन्दकों को प्रभु ने पीठ देकर अपने भक्त नामदेव को दर्शन दिए।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਅੰਤਿ ਲਏ ਛਡਾਇਆ ॥੪॥੧੩॥੨੦॥
जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥
नानक ने भी ऐसे अपने भगवान की भक्ति की है कि अंतकाल वह उसे भी बचा लेगा ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ਛੰਤ ਘਰੁ ੫
आसा महला ४ छंत घरु ५
आसा महला ४ छंत घरु ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੇ ਮਨ ਪਰਦੇਸੀ ਵੇ ਪਿਆਰੇ ਆਉ ਘਰੇ ॥
मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥
हे मेरे प्यारे परदेसी मन ! तू अपने घर में लौट आ।

ਹਰਿ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਘਰਿ ਵਸੈ ਹਰੇ ॥
हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥
हे मेरे प्यारे ! हरि रूपी गुरु से मिल चूंकि प्रभु तेरे चित्त में बस जाए।

ਰੰਗਿ ਰਲੀਆ ਮਾਣਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ॥
रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥
हे मेरे प्यारे ! यदि प्रभु तुझ पर कृपा करे तो तू उसके प्रेम में मौज कर ।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਤੁਠਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲੇ ਹਰੇ ॥੧॥
गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥१॥
नानक का कथन है कि जब गुरु प्रसन्न हो जाता है तो वह ईश्वर से मिला देता है॥ १॥

ਮੈ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਚਾਖਿਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਭਾਉ ਕਰੇ ॥
मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥
हे मेरे प्यारे ! मैंने अपने प्रभु के प्रेम का स्वाद नहीं चखा

ਮਨਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨ ਬੁਝੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਆਸ ਕਰੇ ॥
मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥
क्योंकि मेरे मन की तृष्णा नहीं बुझी है। हे मेरे प्रियतम ! तुझे देखने की आशा मुझे सदैव लगी रहती है।

ਨਿਤ ਜੋਬਨੁ ਜਾਵੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਮੁ ਸਾਸ ਹਿਰੇ ॥
नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥
नित्य यौवन बीतता जा रहा है और मृत्यु मेरी सांसे चुरा रही है।

ਭਾਗ ਮਣੀ ਸੋਹਾਗਣਿ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥੨॥
भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥
नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! वही जीव-स्त्री भाग्यवान प्रभु को अपने हृदय में बसाए रखती है॥ २॥

ਪਿਰ ਰਤਿਅੜੇ ਮੈਡੇ ਲੋਇਣ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਬੂੰਦ ਜਿਵੈ ॥
पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥
हे मेरे प्यारे ! मेरी आँखे अपने प्रियतम के प्रेम में यूँ रंगी हुई है जैसे पपीहा स्वाति बूंद हेतु उत्सुक होता देखता है।

ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਬੂੰਦ ਪੀਵੈ ॥
मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥
हे प्यारे ! हरी नाम रूपी स्वाति बूंदो का पान करने से मेरा मन शीतल हो गया है।

ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਜਗਾਵੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨੀਦ ਨ ਪਵੈ ਕਿਵੈ ॥
तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥
हे मेरे प्यारे ! मेरे तन में उपजा हुआ जुदाई का दर्द मुझे जगाये रखता है और किसी तरह भी मुझे नींद नहीं आती।

ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਲਧਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਲਿਵੈ ॥੩॥
हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥३॥
हे मेरे प्यारे ! नानक की गुरु प्रेम से प्रभु प्राप्त हो गया है।

ਚੜਿ ਚੇਤੁ ਬਸੰਤੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਭਲੀਅ ਰੁਤੇ ॥
चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥
हे मेरे प्यारे ! चैत्र के माह में बसंत की सुहावनी ऋतू आ गयी है।

ਪਿਰ ਬਾਝੜਿਅਹੁ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਆਂਗਣਿ ਧੂੜਿ ਲੁਤੇ ॥
पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥
लेकिन प्रियतम प्रभु के बिना मेरे हृदय आँगन में धूल ही उड़ती है।

ਮਨਿ ਆਸ ਉਡੀਣੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਦੁਇ ਨੈਨ ਜੁਤੇ ॥
मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥
मेरे उदास मन में अभी भी आशा कायम है और मेरे दोनों नेत्र उस प्रियतम का इंतजार कर रहे है।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਦੇਖਿ ਵਿਗਸੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਉ ਮਾਤ ਸੁਤੇ ॥੪॥
गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥४॥
नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! अब गुरु को देखकर मेरा मन यूँ प्रसन्न हो गया है जैसे बालक अपनी माता को देखकर खिल जाता है॥ ४॥

ਹਰਿ ਕੀਆ ਕਥਾ ਕਹਾਣੀਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਣਾਈਆ ॥
हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥
हे मेरे प्यारे ! मेरे सच्चे गुरु ने मुझे हरि की कथा-कहानियाँ सुनाई हैं।

ਗੁਰ ਵਿਟੜਿਅਹੁ ਹਉ ਘੋਲੀ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਮੇਲਾਈਆ ॥
गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥
हे मेरे प्यारे ! मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रभु से मिला दिया है।

ਸਭਿ ਆਸਾ ਹਰਿ ਪੂਰੀਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥
हे मेरे प्यारे ! प्रभु ने मेरी सभी आशाएँ पूरी कर दी हैं और मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है।

ਹਰਿ ਤੁਠੜਾ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੫॥
हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥५॥
हे मेरे प्यारे ! जब प्रभु प्रसन्न हुआ तो नानक उसके नाम में समा गया है॥ ५॥

ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਖੇਲਸਾ ॥
पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥
हे प्यारे ! अपने प्रियतम प्रभु के अलावा में किसी दूसरे से प्रेम की खेल नहीं खेलूंगा।

ਕਿਉ ਪਾਈ ਗੁਰੁ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਪਿਆਰਾ ਦੇਖਸਾ ॥
किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥
मैं गुरु को कैसे प्राप्त करूँ, जिसके द्वारा प्रभु के दर्शन कर सकता हूँ?

ਹਰਿ ਦਾਤੜੇ ਮੇਲਿ ਗੁਰੂ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਸਾ ॥
हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥
हे दाता हरि ! मुझे गुरु से मिला दे। केवल गुरु के द्वारा ही मैं तुझसे मिल सकता हूँ।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲੇਖੁ ਸਾ ॥੬॥੧੪॥੨੧॥
गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥६॥१४॥२१॥
नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे ! मुझे गुरु प्राप्त हो गया है, क्योंकि आदि से ही माथे पर ऐसा लेख लिखा हुआ था॥ ६॥ १४॥ २१॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧ ॥
रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥
रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥

ਅਨਦੋ ਅਨਦੁ ਘਣਾ ਮੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ॥
अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥
मेरी अन्तरात्मा में आनंद ही आनंद हो गया है क्योंकि मैंने भगवान के दर्शन कर लिए हैं।

ਚਾਖਿਅੜਾ ਚਾਖਿਅੜਾ ਮੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ॥
चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥
मैंने भीठा हरि रस चख लिया है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਮਨ ਮਹਿ ਵੂਠਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੂਠਾ ਸਹਜੁ ਭਇਆ ॥
हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥
मीठा हरि रस मेरे मन में बरसा है जिससे सतिगुरु की प्रसन्नता द्वारा सहज भाव शांति मिल गई है।

ਗ੍ਰਿਹੁ ਵਸਿ ਆਇਆ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਪੰਚ ਦੁਸਟ ਓਇ ਭਾਗਿ ਗਇਆ ॥
ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥
मेरा हृदय-घर अब बस गया है और मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ मंगल गीत गा रही हैं क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार - पाँचों ही दुष्ट विकार भाग गए हैं।

ਸੀਤਲ ਆਘਾਣੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੇ ਸਾਜਨ ਸੰਤ ਬਸੀਠਾ ॥
सीतल आघाणे अम्रित बाणे साजन संत बसीठा ॥
अमृतमयी वाणी से मैं शीतल एवं तृप्त हो गया हूँ, साजन संत गुरुदेव मेरे वकील बने हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨੈਣੀ ਡੀਠਾ ॥੧॥
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥१॥
हे नानक ! मेरा मन ईश्वर के साथ लीन हो गया है और अपने नयनों से उसके दर्शन कर लिए हैं॥ १॥

ਸੋਹਿਅੜੇ ਸੋਹਿਅੜੇ ਮੇਰੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰੇ ਰਾਮ ॥
सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥
हे राम ! मेरे मन के सुन्दर द्वार शोभायमान हो गए हैं।

ਪਾਹੁਨੜੇ ਪਾਹੁਨੜੇ ਮੇਰੇ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥
मेरे प्यारे संत अतिथि बने हुए हैं।

ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਕਾਰਜ ਸਾਰੇ ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਿ ਲਗੇ ਸੇਵਾ ॥
संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥
जब मैं उन्हें प्रणाम करके उनकी सेवा में जुट गया तो उन्होंने मेरा विवाह कार्य सम्पूर्ण कर दिया।

ਆਪੇ ਜਾਞੀ ਆਪੇ ਮਾਞੀ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ਆਪਿ ਦੇਵਾ ॥
आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥
प्रभु स्वयं ही बराती है, स्वयं ही कन्या पक्ष, स्वयं ही स्वामी और स्वयं ही देवा है।

ਅਪਣਾ ਕਾਰਜੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ਆਪੇ ਧਾਰਨ ਧਾਰੇ ॥
अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥
वह अपना कार्य स्वयं ही संवारता है और स्वयं ही सृष्टि को सहारा प्रदान करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਹੁ ਘਰ ਮਹਿ ਬੈਠਾ ਸੋਹੇ ਬੰਕ ਦੁਆਰੇ ॥੨॥
कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥२॥
हे नानक ! पति-परमेश्वर मेरे हृदय-घर में विराजमान हो गया है और हृदय-घर के सुन्दर द्वार शोभा से युक्त हुए हैं।॥ २॥

ਨਵ ਨਿਧੇ ਨਉ ਨਿਧੇ ਮੇਰੇ ਘਰ ਮਹਿ ਆਈ ਰਾਮ ॥
नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥
हे राम ! मेरे हृदय घर में विश्व की नवनिधियों आ गई हैं।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਰਾਮ ॥
सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥
राम नाम का ध्यान करने से मैंने सब कुछ प्राप्त कर लिया है।

ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਸਦਾ ਸਖਾਈ ਸਹਜ ਸੁਭਾਈ ਗੋਵਿੰਦਾ ॥
नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥
सहज-स्वभाव से नाम का ध्यान करने से गोविन्द सदैव के लिए सखा बन गया है।

ਗਣਤ ਮਿਟਾਈ ਚੂਕੀ ਧਾਈ ਕਦੇ ਨ ਵਿਆਪੈ ਮਨ ਚਿੰਦਾ ॥
गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥
उसकी तमाम गणनाएँ मिट गई हैं, मन की दुविधा भी दूर हो गई है और उसके मन को कभी चिन्ता नहीं आती।

ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਜੇ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ਅਚਰਜ ਸੋਭ ਬਣਾਈ ॥
गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥
जब गोविन्द प्रगट हो जाता है तो अनहद नाद बजता है और आश्चर्यजनक शोभा का दृश्य बन जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਿਰੁ ਮੇਰੈ ਸੰਗੇ ਤਾ ਮੈ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੩॥
कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥३॥
हे नानक ! जब मेरा प्रियतम-प्रभु मेरे साथ है तो मुझे विश्व की नवनिधियाँ प्राप्त हो गई हैं।॥ ३॥

ਸਰਸਿਅੜੇ ਸਰਸਿਅੜੇ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਸਭ ਮੀਤਾ ਰਾਮ ॥
सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥
हे राम ! मेरे सभी भाई एवं मित्र सुप्रसन्न हो गए हैं।

ਬਿਖਮੋ ਬਿਖਮੁ ਅਖਾੜਾ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਜੀਤਾ ਰਾਮ ॥
बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥
गुरु से मिलकर मैंने विषम जगत रूपी अखाड़ा जीत लिया है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਜੀਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਤਾ ਤ੍ਰੁਟੀ ਭੀਤਾ ਭਰਮ ਗੜਾ ॥
गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥
मैंने यह जगत रूपी अखाड़ा गुरु से मिलकर जीत लिया है। जब मैंने परमात्मा का नाम याद किया तो मेरे मन में बनी भ्रम के किले की दीवार टूट गई।

ਪਾਇਆ ਖਜਾਨਾ ਬਹੁਤੁ ਨਿਧਾਨਾ ਸਾਣਥ ਮੇਰੀ ਆਪਿ ਖੜਾ ॥
पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥
मुझे अनेक खजानों की निधि (दौलत) प्राप्त हो गई है और प्रभु स्वयं मेरी सहायता के लिए खड़ा हुआ है।

ਸੋਈ ਸੁਗਿਆਨਾ ਸੋ ਪਰਧਾਨਾ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਕੀਤਾ ॥
सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥
वही पुरुष श्रेष्ठ ज्ञानी एवं सर्वोच्च है, जिसे प्रभु ने अपना बना लिया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਾਂ ਵਲਿ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਸਰਸੇ ਭਾਈ ਮੀਤਾ ॥੪॥੧॥
कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥४॥१॥
हे नानक ! जब स्वामी पक्षधर हो गया है तो उसके सभी मित्र एवं भाई भी खुश हो गए है॥ ४॥ १ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਅਕਥਾ ਹਰਿ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਿਛੁ ਜਾਇ ਨ ਜਾਣੀ ਰਾਮ ॥
अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥
हरि की कथा अकथनीय है और वह थोड़ी-सी भी जानी नहीं जा सकती।

ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸਹਜਿ ਵਖਾਣੀ ਰਾਮ ॥
सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥
देवताओं, मनुष्यों और मुनिजनों ने बड़ा सहजता से हरि-कथा का वर्णन किया है।

ਸਹਜੇ ਵਖਾਣੀ ਅਮਿਉ ਬਾਣੀ ਚਰਣ ਕਮਲ ਰੰਗੁ ਲਾਇਆ ॥
सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥
जिन्होंने भगवान के सुन्दर चरणों से प्रेम लगाया है, उन्होंने सहज ही अमृत वाणी का बखान किया है।

ਜਪਿ ਏਕੁ ਅਲਖੁ ਪ੍ਰਭੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥
एक अलक्ष्य एवं निरंजन प्रभु का जाप करने से उन्होंने मनोवांछित फल पा लिया है।

ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਵਿਕਾਰੁ ਦੂਜਾ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ॥
तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥
अभिमान, मोह, द्वैतभाव एवं विकारों को त्याग कर वे ज्योति ज्योत समा गए हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀ ॥੧॥
बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि गुरु की कृपा से वे सर्वदा हरि रंग का आनंद लेते रहते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਹਰਿ ਸੰਤ ਸਜਨ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਸਹਾਈ ਰਾਮ ॥
हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥
हरि के संतजन ही मेरे सज्जन, मित्र एवं साथी हैं।

ਵਡਭਾਗੀ ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਰਾਮ ॥
वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥
हे राम ! बड़े सौभाग्य से मुझे सत्संगति प्राप्त हुई है।

ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਲਾਥੇ ਦੂਖ ਸੰਤਾਪੈ ॥
वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥
अहोभाग्य से मुझे सत्संगति मिली है और मैंने प्रभु का नाम सुमिरन किया है तथा मेरे दुःख एवं संताप निवृत्त हो गए हैं।

ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੇ ਭ੍ਰਮ ਭਉ ਭਾਗੇ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ਆਪੈ ॥
गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥
मैं गुरु के चरणों से लगा हूँ, जिससे मेरा भ्रम एवं भय भाग गए हैं। परमात्मा ने स्वयं मेरा अहंत्व मिटा दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲੇ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਵਿਛੁੜਿ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਈ ॥
करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥
प्रभु ने कृपा-दृष्टि करके मुझे अपने साथ मिला लिया है और अब मैं न जुदा होऊँगा और न ही कहीं जाऊँगा।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥
बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥२॥
नानक वन्दना करता है कि हे हरि ! मैं तेरा दास हूँ और सदा अपनी शरण में रखो ॥ २॥

ਹਰਿ ਦਰੇ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥
हे हरि ! तेरे द्वार पर तेरे प्यारे भक्त शोभा देते हैं।

ਵਾਰੀ ਤਿਨ ਵਾਰੀ ਜਾਵਾ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ਰਾਮ ॥
वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥
हे राम ! मैं उन (भक्तों) पर सदा बलिहारी जाता हूँ।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ਕਰਿ ਨਮਸਕਾਰੇ ਜਿਨ ਭੇਟਤ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਤਾ ॥
सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥
मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ और सदा उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन से भेंट करने से मैंने भगवान को जान लिया है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭ ਥਾਈ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥
पूर्ण अकालपुरुष विधाता प्रत्येक हृदय में समाया हुआ है।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਜੂਐ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰੇ ॥
गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥
जिसने पूर्ण गुरु को पाकर परमात्मा का नाम स्मरण किया है, वह अपना जीवन जुए में नहीं हारता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਰਾਖੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥੩॥
बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है-हे प्रभु ! मैंने तेरी शरण ली है, कृपा करके मेरी रक्षा करो।॥ ३॥

ਬੇਅੰਤਾ ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਕੇਤਕ ਗਾਵਾ ਰਾਮ ॥
बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥
हे राम ! तेरे गुण बेअंत हैं। फिर उनमें से कौन-से गुणों का गायन करूँ ?

ਤੇਰੇ ਚਰਣਾ ਤੇਰੇ ਚਰਣ ਧੂੜਿ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਵਾ ਰਾਮ ॥
तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥
तेरे चरण एवं चरण-धूलि मुझे सौभाग्य से प्राप्त हुई है।

ਹਰਿ ਧੂੜੀ ਨ੍ਹਾਈਐ ਮੈਲੁ ਗਵਾਈਐ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਲਾਥੇ ॥
हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥
हरि की चरण-धूलि में स्नान करने से पापों की मैल धुल जाती है और जन्म-मरण का दुःख समाप्त हो जाता है।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਸਦਾ ਹਦੂਰੇ ਪਰਮੇਸਰੁ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਥੇ ॥
अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥
भीतर एवं बाहर परमेश्वर सदा जीव के साथ रहता है।

ਮਿਟੇ ਦੂਖ ਕਲਿਆਣ ਕੀਰਤਨ ਬਹੁੜਿ ਜੋਨਿ ਨ ਪਾਵਾ ॥
मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥
प्रभु का कीर्तन करने से कल्याण प्राप्त होता है, दुःख मिट जाते हैं और मनुष्य दोबारा योनियों के चक्र में नहीं आता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਸਰਣਿ ਤਰੀਐ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਾ ॥੪॥੨॥
बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥४॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि गुरु की शरण में आने से मनुष्य का संसार सागर से उद्धार हो जाता है और अपने प्रभु को वह प्रिय लगने लगता है॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪
आसा छंत महला ५ घरु ४
आसा छंत महला ५ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਕਿਛੁ ਆਨ ਨ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥
मेरा मन हरि के चरण-कमलों में बिंध गया है, इसलिए प्रभु के अलावा मुझे अन्य कुछ भी मीठा (अच्छा) नहीं लगता।

ਮਿਲਿ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਆਰਾਧਿਆ ਹਰਿ ਘਟਿ ਘਟੇ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

मिलि संतसंगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥

संतों की संगति में मिलकर मैंने हरि की आराधना की है और सबके हृदय में प्रभु के दर्शन करता हूँ।

ਹਰਿ ਘਟਿ ਘਟੇ ਡੀਠਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੋ ਵੂਠਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਨਾਠੇ ॥

हरि घटि घटे डीठा अम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥

मैं हरि को प्रत्येक हृदय में देखता हूँ और उसका नामामृत मुझ पर बरस गया है तथा जन्म-मरण का दुःख मिट गया है।

ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਇਆ ਸਭ ਦੂਖ ਮਿਟਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬਿਨਸੀ ਗਾਠੇ ॥

गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥

गुणों के भण्डार परमात्मा का गुणगान करने से मेरे सभी दुःख नाश हो गए हैं और मेरी अहंत्व की गांठ खुल गई है।

ਪ੍ਰਿਉ ਸਹਜ ਸੁਭਾਈ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਮਨਿ ਲਾਗਾ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠਾ ॥
प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥
मेरा प्रिय प्रभु अपने सहज-स्वभाव से मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता। मेरे मन को मजीठ की भाँति प्रभु का गहरा रंग लग गया है।

ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਬੇਧੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਕਿਛੁ ਆਨ ਨ ਮੀਠਾ ॥੧॥
हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥१॥
हे नानक ! हरि के चरण-कमलों ने मेरा मन बिंध दिया है और उसे अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता ॥ १ ॥

ਜਿਉ ਰਾਤੀ ਜਲਿ ਮਾਛੁਲੀ ਤਿਉ ਰਾਮ ਰਸਿ ਮਾਤੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥
जैसे मछली जल में मस्त रहती है, वैसे ही मैं राम रस से मस्त हुआ हूँ।

ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਉਪਦੇਸਿਆ ਜੀਵਨ ਗਤਿ ਭਾਤੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दिया है और मैं राम से प्रेम करता हूँ जिसने मुझे जीवन-मुक्ति की देन प्रदान की है।

ਜੀਵਨ ਗਤਿ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਆਪਿ ਲੀਏ ਲੜਿ ਲਾਏ ॥
जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥
जिन मनुष्यों को अंतर्यामी स्वामी अपने दामन के साथ लगा लेता है, वे जीवन में मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

ਹਰਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥੋ ਪਰਗਟੋ ਪੂਰਨੋ ਛੋਡਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਏ ॥
हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥
हरि अपना रत्न जैसा अमूल्य नाम अपने भक्तों के हृदय में प्रगट कर देता है। वह सब जीवों में समाया हुआ है और अपने भक्तों को छोड़कर कहीं नहीं जाता।

ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਘਰੁ ਸਰੂਪੁ ਸੁਜਾਨੁ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਕੀ ਮਿਟੈ ਨ ਦਾਤੇ ॥
प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥
जगत का स्वामी प्रभु सुन्दर स्वरूप एवं बुद्धिमान है, उसकी देन कभी समाप्त नहीं होती।

ਜਲ ਸੰਗਿ ਰਾਤੀ ਮਾਛੁਲੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮਾਤੇ ॥੨॥
जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥२॥
हे नानक ! जैसे मछली जल में लीन हुई है वैसे ही मैं प्रभु में समाया हुआ हूँ॥ २॥

ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਜਾਚੈ ਬੂੰਦ ਜਿਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥
जैसे चातक स्वाति-बूंद की लालसा करता है वैसे ही हरि मेरे प्राणों का आधार है।

ਮਾਲੁ ਖਜੀਨਾ ਸੁਤ ਭ੍ਰਾਤ ਮੀਤ ਸਭਹੂੰ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥
प्रभु मुझे धन-भण्डार, पुत्र, भाई एवं मित्र सबसे प्रिय है।

ਸਭਹੂੰ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਾਰਾ ਤਾ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਣੀਐ ॥
सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥
सबसे प्यारा एवं निराला आदिपुरुष मुझे सबसे प्रिय लगता है। उसकी गति कोई भी मनुष्य जान नहीं सकता।

ਹਰਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਬਿਸਰੈ ਕਬਹੂੰ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਰੰਗੁ ਮਾਣੀਐ ॥
हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥
प्रत्येक श्वास एवं ग्रास भर के लिए भी मैं हरि को विस्मृत नहीं करता। गुरु के शब्द द्वारा मैं उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करता हूँ।

ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਜਗਜੀਵਨੋ ਸੰਤ ਰਸੁ ਪੀਵਨੋ ਜਪਿ ਭਰਮ ਮੋਹ ਦੁਖ ਡਾਰਾ ॥
प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥
परमपुरुष प्रभु जगत का जीवन है। संतजन हरि-रस का पान करते हैं और उसका सुमिरन करके अपना भ्रम, मोह एवं दुःख दूर कर लेते हैं।

ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਜਾਚੈ ਬੂੰਦ ਜਿਉ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪਿਆਰਾ ॥੩॥
चात्रिकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥३॥
जैसे चातक स्वाति-बूंद की अभिलाषा करता है वैसे ही नानक को हरि प्यारा लगता है॥ ३॥

ਮਿਲੇ ਨਰਾਇਣ ਆਪਣੇ ਮਾਨੋਰਥੋ ਪੂਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥
अपने नारायण से मिलकर मेरे मनोरथ पूरे हो गए हैं।

ਢਾਠੀ ਭੀਤਿ ਭਰੰਮ ਕੀ ਭੇਟਤ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥
ढाठी भीति भरम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥
शूरवीर गुरु को मिलने से भ्रम की दीवार ध्वस्त हो गई है।

ਪੂਰਨ ਗੁਰ ਪਾਏ ਪੁਰਬਿ ਲਿਖਾਏ ਸਭ ਨਿਧਿ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥
पूर्ण गुरु उन्हें ही मिला है, जिन्होंने अपने पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार अपनी तकदीर में सर्व निधियाँ देने वाले दीन दयालु परमात्मा से शुभ लेख लिखाए हैं।

ਆਦਿ ਮਧਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ਸੁੰਦਰ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥
आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥
सुन्दर गुरु गोपाल प्रभु ही सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त तक विद्यमान है।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਨੇਰੇ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਸਾਧੂ ਧੂਰਾ ॥
सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥
साधुओं की चरण-धूलि पतितों को पावन कर देती है और बड़ा सुख एवं सहज आनंद प्रदान करती है।

ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਨਰਾਇਣ ਨਾਨਕਾ ਮਾਨੋਰਥੁ ਪੂਰਾ ॥੪॥੧॥੩॥
हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥४॥१॥३॥
नानक को नारायण मिल गया है और उसका मनोरथ पूरा हो गया है॥ ४॥ १॥ ३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੬
आसा महला ५ छंत घरु ६
आसा महला ५ छंत घरु ६

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक।

ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਈ ਜਪਾਤ ॥
जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥
जिन मनुष्यों पर प्रभु कृपालु हो जाता है, वे हरि-नाम ही जपते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਨ੍ ਰਾਮ ਸਿਉ ਭੇਟਤ ਸਾਧ ਸੰਗਾਤ ॥੧॥
नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥
हे नानक ! साधसंगत में मिलने से ही उनका प्रेम राम से लगा है॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਜਲ ਦੁਧ ਨਿਆਈ ਰੀਤਿ ਅਬ ਦੁਧ ਆਚ ਨਹੀ ਮਨ ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੇ ॥
जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥
हे मन ! ईश्वर से ऐसा प्रेम कर, जैसा प्रेम जल का दूध से है। जब दोनों को आग पर रखा जाता है तो जल दूध को आंच नहीं आने देता।

ਅਬ ਉਰਝਿਓ ਅਲਿ ਕਮਲੇਹ ਬਾਸਨ ਮਾਹਿ ਮਗਨ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਭੀ ਨਾਹਿ ਟਰੈ ॥
अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥
जैसे भैवरा कमल की सुगन्धि में मग्न होकर फंस जाता है तो एक क्षण भर को भी इससे दूर नहीं होता।

ਖਿਨੁ ਨਾਹਿ ਟਰੀਐ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੀਐ ਸੀਗਾਰ ਹਭਿ ਰਸ ਅਰਪੀਐ ॥
खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥
हे मन ! इस तरह एक क्षण भर के लिए प्रभु के प्रेम से पीछे नहीं हटना चाहिए। अपने सारे श्रृंगार एवं रस प्रभु को अर्पण कर देने चाहिए।

ਜਹ ਦੂਖੁ ਸੁਣੀਐ ਜਮ ਪੰਥੁ ਭਣੀਐ ਤਹ ਸਾਧਸੰਗਿ ਨ ਡਰਪੀਐ ॥
जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥
जहाँ दुःख सुना जाता और यम का मार्ग बताया जाता है, वहां सत्संगति के प्रभाव से कोई भय प्रभावित नहीं करता।

ਕਰਿ ਕੀਰਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣੀਐ ਸਗਲ ਪ੍ਰਾਛਤ ਦੁਖ ਹਰੇ ॥
करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥
गोविंद की कीर्ति का गुणगान करते रहो, इससे सब दुख एवं पाप दूर हो जाएँगे।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛੰਤ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ ਕੇ ਮਨ ਹਰਿ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ਐਸੀ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰੇ ॥੧॥
कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥१॥
नानक का कथन है की हे मन ! गोविन्द की महिमा के गीत गाता रह और हरी से प्रेम बनाये रख। हे मन ! ऐसा प्रेम बनाये रख ॥ १ ॥

ਜੈਸੀ ਮਛੁਲੀ ਨੀਰ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਭੀ ਨਾ ਧੀਰੇ ਮਨ ਐਸਾ ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ॥
जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥
जैसे मछली जल के बिना धैर्य नहीं करती, हे मन ! वैसे ही प्रभु से प्रेम कायम कर।

ਜੈਸੀ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਪਿਆਸ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਬੂੰਦ ਚਵੈ ਬਰਸੁ ਸੁਹਾਵੇ ਮੇਹੁ ॥
जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥
जैसे चातक को स्याति बून्द की प्यास रहती है और प्रत्येक क्षण कहता है हे सुन्दर मेघ ! वर्षा कर।

ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀਜੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਅਤਿ ਲਾਈਐ ਚਿਤੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥
वैसे ही तू अपने हरि से प्रीति कर। अपना यह मन उसको अर्पित कर देना चाहिए और अपना चित्त मुरारी लगाना चाहिए।

ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਸਰਣਿ ਪਰੀਜੈ ਦਰਸਨ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥
हे मन अहंकार नहीं करना चाहिए, प्रभु के शरण में आकर उस पर कुर्बान हो जाना चाहिए

ਗੁਰ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨੇ ਮਿਲੁ ਨਾਹ ਵਿਛੁੰਨੇ ਧਨ ਦੇਦੀ ਸਾਚੁ ਸਨੇਹਾ ॥
गुर सुप्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा ॥
जब गुरु सुप्रसन्न होता है तो जीव -स्त्री अपने सच्चे प्रेम का सन्देश भेजती है और उसका बिछड़ा हुआ प्रभु पति आकर उसे मिल जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛੰਤ ਅਨੰਤ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਹਰਿ ਸਿਉ ਕੀਜੈ ਨੇਹਾ ਮਨ ਐਸਾ ਨੇਹੁ ਕਰੇਹੁ ॥੨॥
कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥२॥
नानक का कथन है की हे मेरे मन ! तू अनंत ठाकुर की महिमा के गीत गायन कर, तू हरी से प्रेम कर तथा उससे तू ऐसा स्नेह कर ॥ २ ॥

ਚਕਵੀ ਸੂਰ ਸਨੇਹੁ ਚਿਤਵੈ ਆਸ ਘਣੀ ਕਦਿ ਦਿਨੀਅਰੁ ਦੇਖੀਐ ॥
चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥
चकवी का सूर्य से इतना स्नेह है कि वह रात को उसे याद करती रही है और उसे अत्यंत आशा बनी रहती है की कब दिन निकलेगा और कब सूर्य के दर्शन करेगी।

ਕੋਕਿਲ ਅੰਬ ਪਰੀਤਿ ਚਵੈ ਸੁਹਾਵੀਆ ਮਨ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਕੀਜੀਐ ॥
कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥
कोयल का आम से प्रेम है और वो मीठा गीत गाती है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਰੀਜੈ ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਇਕ ਰਾਤੀ ਕੇ ਹਭਿ ਪਾਹੁਣਿਆ ॥

हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥

है मेरे मन ! इस तरह तू भी हरि से प्रेम कर और प्रेम का अहंकार मत कर क्योंकि हम सभी एक रात्रि के अतिथि है।

ਅਬ ਕਿਆ ਰੰਗੁ ਲਾਇਓ ਮੋਹੁ ਰਚਾਇਓ ਨਾਗੇ ਆਵਣ ਜਾਵਣਿਆ ॥

अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥

अब तुम कोन से रंगरलियों में फँस कर मोह में लीन हो गए हो ? क्यों की जीव नंग्न ही दुनिया में आता और जाता है।

ਥਿਰੁ ਸਾਧੂ ਸਰਣੀ ਪੜੀਐ ਚਰਣੀ ਅਬ ਟੂਟਸਿ ਮੋਹੁ ਜੁ ਕਿਤੀਐ ॥

थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥

साधु की शरण लेने एवं उसके चरणों पर नतमस्तक होने से सांसारिक मोह जो तुम अब अनुभव करते हो, वह मिट जाएगा और तुम स्थिर अनुभव करोगे।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛੰਤ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਕੇ ਮਨ ਹਰਿ ਲਾਇ ਪਰੀਤਿ ਕਬ ਦਿਨੀਅਰੁ ਦੇਖੀਐ ॥੩॥

कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥३॥

नानक का कथन है कि हे मन ! दयालु परमात्मा की महिमा के गीत गायन कर और हरि से प्रीति लगा, अन्यथा तुम हरि रूपी सूर्य को कैसे देखोगे ? ॥ ३ ॥

ਨਿਸਿ ਕੁਰੰਕ ਜੈਸੇ ਨਾਦ ਸੁਣਿ ਸ੍ਰਵਣੀ ਹੀਉ ਡਿਵੈ ਮਨ ਐਸੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਜੈ ॥

निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥

हे मन ! तू प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसे रात को हिरण नाद सुनकर अपना हदय नाद को अर्पित कर देता है।

ਜੈਸੀ ਤਰੁਣਿ ਭਤਾਰ ਉਰਝੀ ਪਿਰਹਿ ਸਿਵੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਲ ਦੀਜੈ ॥

जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥

जैसे अपने पति के प्रेम में लीन हुई पत्नी अपने प्रियतम की सेवा करती है, वैसे ही तू यह मन अपने प्रिय-प्रभु को अर्पण कर दे।

ਮਨੁ ਲਾਲਹਿ ਦੀਜੈ ਭੋਗ ਕਰੀਜੈ ਹਭਿ ਖੁਸੀਆ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥

मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥

अपना मन अपने प्रियतम को दे दे और उसके साथ रमण कर। इस तरह तुझे समस्त खुशियाँ एवं आनंद प्राप्त हो जाएगा।

ਪਿਰੁ ਅਪਨਾ ਪਾਇਆ ਰੰਗੁ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ਅਤਿ ਮਿਲਿਓ ਮਿਤ੍ਰ ਚਿਰਾਣੇ ॥
पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥
मैंने अपने प्रियतम प्रभु को पा किया है और प्रेम का लाल रंग बना लिया है तथा चिरकाल से अपने मित्र हरि को मिला हूँ।

ਗੁਰੁ ਥੀਆ ਸਾਖੀ ਤਾ ਡਿਠਮੁ ਆਖੀ ਪਿਰ ਜੇਹਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ॥
गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥
जब गुरुदेव मध्यस्थ बने तो मैंने अपने नेत्रों से प्रियतम-प्रभु के दर्शन कर लिए तथा दूसरा कोई भी मुझे मेरे प्रियतम जैसा दिखाई नहीं देता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਛੰਤ ਦਇਆਲ ਮੋਹਨ ਕੇ ਮਨ ਹਰਿ ਚਰਣ ਗਹੀਜੈ ਐਸੀ ਮਨ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕੀਜੈ ॥੪॥੧॥੪॥
कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥४॥१॥४॥
नानक का कथन है कि हे मन ! तू दयालु एवं मोहन प्रभु की महिमा के गीत गाता रह, हरि के चरण पकड़ तथा अपने हृदय में ऐसा प्रेम बनाकर रख ॥ ४॥ १ ॥४ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਬਨੁ ਬਨੁ ਫਿਰਤੀ ਖੋਜਤੀ ਹਾਰੀ ਬਹੁ ਅਵਗਾਹਿ ॥
बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥
मैं ईश्वर को पाने के लिए वन-वन में भटकती और खोजती हुई बहुत थक गई हूँ।

ਨਾਨਕ ਭੇਟੇ ਸਾਧ ਜਬ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥
नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥१॥
हे नानक ! जब साधु से भेंट हुई तो मैंने अपने मन में ही भगवान को पा लिया ॥ १॥

ਛੰਤ ॥
छंत ॥
छंद॥

ਜਾ ਕਉ ਖੋਜਹਿ ਅਸੰਖ ਮੁਨੀ ਅਨੇਕ ਤਪੇ ॥
जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥
जिस प्रभु को असंख्य मुनि एवं अनेक तपस्वी खोजते हैं।

ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥
ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥
जिसकी करोड़ों ही ब्रह्मा आराधना करते और ज्ञानी जिसके नाम का जाप जपते हैं।

जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥
जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥
जिसकी प्राप्ति हेतु अनेक जप, तपस्या, संयम, क्रियाएं, पूजा-अर्चना, शुद्धिकरण एवं वन्दना होती रहती है।

करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥
करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥
जिस निरंजन प्रभु को मिलने हेतु लोग पृथ्वी पर रटन करते और तीर्थों पर स्नान करते हैं।

मानुख बनु तिनु पसु पंखी सगल तुझहि अराधते ॥
मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥
हे भगवान ! मनुष्य, वन, तृण, पशु-पक्षी सभी तेरी ही आराधना करते हैं।

दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥१॥
दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥१॥
हे नानक ! साधसंगति में सम्मिलित होने से वह दयालु, प्यारा गोविन्द मिल जाता है और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है॥ १॥

कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥
कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥
हे दयालु प्रभु ! करोड़ों ही विष्णु अवतार एवं जटाधारी शंकर

चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥
चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥
अपने मन एवं तन की अपार रुचि से तुझसे मिलने की तीव्र अभिलाषा करते हैं।

अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥
अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥
हे गोविंद ! तू अपरंपार, अगम्य एवं सबका ठाकुर है। तू सबमें समाया हुआ है और सबका मालिक है।

ਸੁਰ ਸਿਧ ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਧਿਆਵਹਿ ਜਖ ਕਿੰਨਰ ਗੁਣ ਭਨੀ ॥

सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥

देवता, सिद्धगण एवं गंधर्व सब तेरी ही आराधना करते हैं और यक्ष एवं किन्नर तेरा ही गुणगान करते रहते हैं।

ਕੋਟਿ ਇੰਦ੍ਰ ਅਨੇਕ ਦੇਵਾ ਜਪਤ ਸੁਆਮੀ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰ ॥

कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥

करोड़ों ही इन्द्र एवं अनेकों ही देवगण स्वामी का जाप एवं जय-जयकार करते हैं।

ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਦਇਆਲ ਨਾਨਕ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਉਧਾਰ ॥੨॥

अनाथ नाथ दइआल नानक साधसंगति मिलि उधार ॥२॥

हे नानक ! दयालु प्रभु अनाथों का नाथ है और साधसंगति में सम्मिलित होकर ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है ॥२॥

ਕੋਟਿ ਦੇਵੀ ਜਾ ਕਉ ਸੇਵਹਿ ਲਖਿਮੀ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ॥

कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥

करोड़ों ही देवियाँ एवं धन की देवी लक्ष्मी विभिन्न प्रकार से उसकी सेवा करती हैं।

ਗੁਪਤ ਪ੍ਰਗਟ ਜਾ ਕਉ ਅਰਾਧਹਿ ਪਉਣ ਪਾਣੀ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ॥
गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥
गुप्त एवं प्रगट सभी जीव, पवन, पानी दिन-रात उसकी आराधना करते हैं।

ਨਖਿਅਤ੍ਰ ਸਸੀਅਰ ਸੂਰ ਧਿਆਵਹਿ ਬਸੁਧ ਗਗਨਾ ਗਾਵਏ ॥
नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥
जिसकी नक्षत्र, चाँद एवं सूर्य वन्दना करते हैं और जिसकी स्तुति गगन एवं धरती गाते रहते हैं।

ਸਗਲ ਖਾਣੀ ਸਗਲ ਬਾਣੀ ਸਦਾ ਸਦਾ ਧਿਆਵਏ ॥
सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥
जिसकी तमाम उत्पत्ति के स्रोत एवं वाणियों सदैव ही सुमिरन करती रहती हैं।

ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਪੁਰਾਣ ਚਤੁਰ ਬੇਦਹ ਖਟੁ ਸਾਸਤ੍ਰ ਜਾ ਕਉ ਜਪਾਤਿ ॥
सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥
स्मृतियाँ, पुराण, चार वेद, छः शास्त्र जिसका जाप करते रहते हैं।

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਨਾਨਕ ਮਿਲੀਐ ਸੰਗਿ ਸਾਤਿ ॥੩॥
पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥३॥
हे नानक ! वह पतितपावन भक्तवत्सल प्रभु सत्संगति द्वारा ही मिलता है॥ ३॥

ਜੇਤੀ ਪ੍ਰਭੂ ਜਨਾਈ ਰਸਨਾ ਤੇਤ ਭਨੀ ॥
जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥
सृष्टि का जितना ज्ञान मुझे प्रभु ने प्रदान किया है, उतना मेरी जिव्हा ने वर्णन कर दिया है।

ਅਨਜਾਨਤ ਜੋ ਸੇਵੈ ਤੇਤੀ ਨਹ ਜਾਇ ਗਨੀ ॥
अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥
मेरे ज्ञान से बाहर जो तेरी सेवा करते हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती।

ਅਵਿਗਤ ਅਗਨਤ ਅਥਾਹ ਠਾਕੁਰ ਸਗਲ ਮੰਝੇ ਬਾਹਰਾ ॥
अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥
जगत का ठाकुर प्रभु अविगत, अगणित एवं अथाह है।सब जीवों में एवं बाहर प्रभु ही विद्यमान है।

ਸਰਬ ਜਾਚਿਕ ਏਕੁ ਦਾਤਾ ਨਹ ਦੂਰਿ ਸੰਗੀ ਜਾਹਰਾ ॥
सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥
हे प्रभु ! हम सभी भिखारी हैं और एक तू ही दाता है। तू कहीं दूर नहीं अपितु हमारे पास ही प्रत्यक्ष है।

ਵਸਿ ਭਗਤ ਥੀਆ ਮਿਲੇ ਜੀਆ ਤਾ ਕੀ ਉਪਮਾ ਕਿਤ ਗਨੀ ॥
वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥
वह प्रभु अपने भक्तों के वश में है। जो प्राणी प्रभु से मिल चुके हैं, उनकी उपमा मैं किस तरह कर सकता हूँ?"

ਇਹੁ ਦਾਨੁ ਮਾਨੁ ਨਾਨਕੁ ਪਾਏ ਸੀਸੁ ਸਾਧਹ ਧਰਿ ਚਰਨੀ ॥੪॥੨॥੫॥
इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥४॥२॥५॥
नानक की यही कामना है कि वह परमात्मा से यह दान एवं सम्मान प्राप्त करे कि वह अपना शीश साधुओं के चरणों पर रख दे ॥ ४॥ २॥ ५॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਉਦਮੁ ਕਰਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥
उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥
हे भाग्यशाली जीवो ! थोड़ा-सा उद्यम करो एवं जगत के मालिक परमात्मा को याद करो।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸਭ ਸੁਖ ਹੋਵਹਿ ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭ੍ਰਮੁ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥१॥
हे नानक ! उस प्रभु का सिमरन करने से सर्व सुख प्राप्त होते हैं तथा दुःख, दर्द एवं भ्रम दूर हो जाते हैं।॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗੋਬਿੰਦ ਨਹ ਅਲਸਾਈਐ ॥
नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥
गोविन्द का नाम जपने में आलस्य नहीं करना चाहिए।

ਭੇਟਤ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ਜਮ ਪੁਰਿ ਨਹ ਜਾਈਐ ॥
भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥
साधु की संगति में रहने से यमपुरी नहीं जाना पड़ता।

ਦੂਖ ਦਰਦ ਨ ਭਉ ਬਿਆਪੈ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਸਦ ਸੁਖੀ ॥
दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥
प्रभु का नाम याद करने से प्राणी सदा सुखी रहता है और उसे दुःख-दर्द एवं भय नहीं सताते।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਅਰਾਧਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਮੁਖੀ ॥
सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥
हे बन्धु ! हरेक श्वास के साथ हरि-परमेश्वर की आराधना करते रहो और मुख एवं मन से प्रभु को ही याद करो।

ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਰਸਾਲ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਕਰਿ ਦਇਆ ਸੇਵਾ ਲਾਈਐ ॥
क्रिपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ ॥
हे अमृत के घर ! हे गुणों के भण्डार ! हे कृपालु एवं दयालु प्रभु ! दया करके मुझे अपनी सेवा-भक्ति में लगाओ।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਚਰਣ ਜੰਪੈ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਗੋਬਿੰਦ ਨਹ ਅਲਸਾਈਐ ॥੧॥
नानकु पइअंपै चरण जमपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मैं तेरे चरणों में ही पड़ता हूँ और तेरे चरणों की ही पूजा करता हूँ। गोविन्द का नाम-जपने में आलस्य नहीं करना चाहिए॥ १॥

ਪਾਵਨ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥
पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥
निरंजन प्रभु का पुनीत नाम पतितों को पावन करने वाला है।

ਭਰਮ ਅੰਧੇਰ ਬਿਨਾਸ ਗਿਆਨ ਗੁਰ ਅੰਜਨਾ ॥
भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥
गुरु के ज्ञान का सुरमा भ्रम के अन्धेरे का विनाश कर देता है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨ ਪ੍ਰਭ ਨਿਰੰਜਨ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿਆ ॥
गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥
गुरु के ज्ञान का सुरमा यह ज्ञान प्रदान करता है कि निरंजन प्रभु जल, धरती एवं गगन में हर जगह समाया हुआ है।

ਇਕ ਨਿਮਖ ਜਾ ਕੈ ਰਿਦੈ ਵਸਿਆ ਮਿਟੇ ਤਿਸਹਿ ਵਿਸੂਰਿਆ ॥
इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥
जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु एक क्षण भर के लिए निवास कर लेता है, उसके दुःख-संताप मिट जाते हैं।

ਅਗਾਧਿ ਬੋਧ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬ ਕਾ ਭਉ ਭੰਜਨਾ ॥
अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना ॥
जगत का स्वामी प्रभु अगाध ज्ञान वाला है और वह सब कुछ करने में समर्थ है तथा सभी के भय नाश करने वाला है।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਚਰਣ ਜੰਪੈ ਪਾਵਨ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥੨॥
नानकु पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है और प्रभु-चरणों की पूजा करता है। निरंजन प्रभु का पुनीत नाम पतितों को पावन करने वाला है॥ २॥

ਓਟ ਗਹੀ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧੇ ॥
ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥
मैंने कृपानिधि दयालु गोपाल की ओट ली है।

ਮੋਹਿ ਆਸਰ ਤੁਅ ਚਰਨ ਤੁਮਾਰੀ ਸਰਨਿ ਸਿਧੇ ॥
मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥
हे प्रभु ! मुझे तेरे चरणों का सहारा है और तेरी ही शरण में मेरी सफलता है।

ਹਰਿ ਚਰਨ ਕਾਰਨ ਕਰਨ ਸੁਆਮੀ ਪਤਿਤ ਉਧਰਨ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥
हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥
सब कुछ करने एवं कराने वाले जगत के स्वामी हरि के चरणों में लगकर पतितों का उद्धार हो जाता है।

ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰ ਭਵ ਉਤਾਰ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਬਹੁ ਤਰੇ ॥
सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥
भगवान का नाम ही भयानक संसार-सागर से पार करने वाला है और उसका नाम-सुमिरन करके बहुत सारे जीव पार हो गए हैं।

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਬੇਅੰਤ ਖੋਜਹਿ ਸੁਨੀ ਉਧਰਨ ਸੰਤਸੰਗ ਬਿਧੇ ॥

आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥

आदि से अंत तक बेअंत लोग ईश्वर को खोजते रहे हैं लेकिन मैंने सुना है कि संतों की संगत ही मुक्ति का मार्ग है।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਚਰਨ ਜੰਪੈ ਓਟ ਗਹੀ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧੇ ॥੩॥

नानकु पइअंपै चरन जंपै ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥३॥

नानक वन्दना करता है कि मैं प्रभु-चरणों की आराधना करता हूँ और कृपानिधि, दयालु गोपाल प्रभु की ओट ली है॥ ३॥

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਆਪਿ ਬਨਾਇਆ ॥

भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥

भक्तवत्सल हरि ने अपना विरद् आप बनाया है।

ਜਹ ਜਹ ਸੰਤ ਅਰਾਧਹਿ ਤਹ ਤਹ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥

जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ ॥

जहाँ कहीं भी संतजन प्रभु की आराधना करते हैं, वह वही प्रगट हो जाता है।

ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਲੀਏ ਸਮਾਇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ਭਗਤ ਕਾਰਜ ਸਾਰਿਆ ॥

प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥

यह अपने भक्तों को सहज-स्वभाव ही अपने साथ मिला लेता है और उनके सभी कार्य सम्पूर्ण कर देता है।

ਆਨੰਦ ਹਰਿ ਜਸ ਮਹਾ ਮੰਗਲ ਸਰਬ ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥

आनंद हरि जस महा मंगल सरब दूख विसारिआ ॥

प्रभु के यश में वह आनंद एवं महा मंगल को पाते हैं और सभी दुःखों को भूल जाते हैं।

ਚਮਤਕਾਰ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਦਹ ਦਿਸ ਏਕੁ ਤਹ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ ॥
एक प्रभु का चमत्कार एवं प्रकाश वह दसों दिशाओं में देखते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਚਰਣ ਜੰਪੈ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਆਪਿ ਬਨਾਇਆ ॥੪॥੩॥੬॥
नानकु पइअंपै चरण जमपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥४॥३॥६॥
नानक वन्दना करता है कि मैं प्रभु के चरणों की आराधना करता हूँ।प्रभु ने भक्त वत्सल होने का अपना विरद् आप बनाया है॥ ४॥ ३॥ ६॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਥਿਰੁ ਸੰਤਨ ਸੋਹਾਗੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਵਏ ॥
थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥
संतजनों का सुहाग ईश्वर सदैव स्थिर है क्योंकि वह न ही मरता है और न ही कहीं जाता है।

ਜਾ ਕੈ ਗ੍ਰਿਹਿ ਹਰਿ ਨਾਹੁ ਸੁ ਸਦ ਹੀ ਰਾਵਏ ॥
जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥
जिसके हृदय घर में प्रभु-पति बसता है, वह सदा ही उसके साथ रमण करती है।

ਅਵਿਨਾਸੀ ਅਵਿਗਤੁ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਨਵਤਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ॥
अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥
वह प्रभु अविनाशी एवं अविगत है और वह सदैव नूतन एवं निर्मल है।

ਨਹ ਦੂਰਿ ਸਦਾ ਹਦੂਰਿ ਠਾਕੁਰੁ ਦਹ ਦਿਸ ਪੂਰਨੁ ਸਦ ਸਦਾ ॥
नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥
ठाकुर कहीं दूर नहीं अपितु सदा आसपास है और वह सदैव ही दसों दिशाओं में मौजूद है।

ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਗਤਿ ਮਤਿ ਜਾ ਤੇ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਭਾਵਏ ॥
प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥
उस प्राणपति से मुक्ति एवं सुमति प्राप्त होती है। मुझे प्रियतम की प्रीति प्रिय लगती है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਜਾਣੈ ਥਿਰੁ ਸੰਤਨ ਸੋਹਾਗੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਵਏ ॥੧॥
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥१॥
नानक वही बखान करता है जो उसने गुरु के वचन से समझा है। संतजनों का सुहाग (प्रभु) अटल है क्योंकि वह न ही मरता है और न ही कहीं जाता है॥ १॥

ਜਾ ਕਉ ਰਾਮ ਭਤਾਰੁ ਤਾ ਕੈ ਅਨਦੁ ਘਣਾ ॥
जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥
जिसका पति राम है, वह अत्यंत आनंद प्राप्त करती है।

ਸੁਖਵੰਤੀ ਸਾ ਨਾਰਿ ਸੋਭਾ ਪੂਰਿ ਬਣਾ ॥
सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥
वही नारी सुखवंती है और उसी की पूरी शोभा बनती है।

ਮਾਣੁ ਮਹਤੁ ਕਲਿਆਣੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੰਗਿ ਸੁਰਜਨੁ ਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ॥
माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥
हरि का यशगान करके वह आदर, सुख एवं कल्याण प्राप्त कर लेती है। वह चतुर प्रभु सदा उसके साथ है।

ਸਰਬ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਤਿਤੁ ਗ੍ਰਿਹਿ ਨਹੀ ਊਨਾ ਸਭੁ ਕਛੂ ॥
सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू ॥
सर्व सिद्धियाँ एवं नवनिधियाँ उसके पास हैं। उसके घर में कोई कमी नहीं अपितु सब कुछ उसके पास है।

ਮਧੁਰ ਬਾਨੀ ਪਿਰਹਿ ਮਾਨੀ ਥਿਰੁ ਸੋਹਾਗੁ ਤਾ ਕਾ ਬਣਾ ॥
मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥
प्रियतम-प्रभु द्वारा आदर दिए जाने के कारण उसकी मधुरवाणी हो जाती है और उसका सुहाग भी स्थिर रहता है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਜਾਣੈ ਜਾ ਕੋ ਰਾਮੁ ਭਤਾਰੁ ਤਾ ਕੈ ਅਨਦੁ ਘਣਾ ॥੨॥
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥२॥
नानक वही बखान करता है जो कुछ उसने गुरु के वचन द्वारा जाना है कि जिसका पति राम है, वह बड़ा आनन्द प्राप्त करती है॥ २॥

ਆਉ ਸਖੀ ਸੰਤ ਪਾਸਿ ਸੇਵਾ ਲਾਗੀਐ ॥
आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥
हे सखी ! आओ, हम संतों के पास सेवा में जुट जाएँ।

ਪੀਸਉ ਚਰਣ ਪਖਾਰਿ ਆਪੁ ਤਿਆਗੀਐ ॥
पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥
आओ, हम उसके दाने पीसें, उसके चरण धोएं और अपना अहंकार त्याग दें।

ਤਜਿ ਆਪੁ ਮਿਟੈ ਸੰਤਾਪੁ ਆਪੁ ਨਹ ਜਾਣਾਈਐ ॥
तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥
अपना अहंकार त्याग देने से दुःख-संताप मिट जाता है। अपने आप का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

ਸਰਣਿ ਗਹੀਜੈ ਮਾਨਿ ਲੀਜੈ ਕਰੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥
सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥
हे सखी ! आओ, हम संतों की शरण ले लें, उनकी आज्ञा का पालन करें और जो कुछ भी वह करते हैं, उससे सुखी रहें।

ਕਰਿ ਦਾਸ ਦਾਸੀ ਤਜਿ ਉਦਾਸੀ ਕਰ ਜੋੜਿ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਜਾਗੀਐ ॥
करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥
हमें खुद को दासों की दासी बनाकर मन की चिंता मिटाकर दोनों हाथ जोड़ कर दिन-रात उनकी सेवा में जागना चाहिए।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਜਾਣੈ ਆਉ ਸਖੀ ਸੰਤ ਪਾਸਿ ਸੇਵਾ ਲਾਗੀਐ ॥੩॥
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥३॥
नानक वही बखान करता है जो कुछ उसने गुरु के वचन से जाना है। हे सखी ! आओ, संतों के पास आकर हम उनकी सेवा में तत्पर हो जाएँ॥ ३॥

ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ਸਿ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥
जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥
जिसके माथे पर भाग्य लिखा हुआ है, उसे ही प्रभु अपनी सेवा में लगाता है।

ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਆਸ ਜਿਨ੍ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ॥
ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइआ ॥
जिन्हें सत्संगति की प्राप्ति होती है, उनकी आशा पूर्ण हो जाती है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਮਰਣ ਲਾਗਿਆ ॥
साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥
सत्संगति में जीव हरि के रंग में लीन हो जाता है और गोविन्द का सिमरन करने लग जाता है।

ਭਰਮੁ ਮੋਹੁ ਵਿਕਾਰੁ ਦੂਜਾ ਸਗਲ ਤਿਨਹਿ ਤਿਆਗਿਆ ॥
भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥
भ्रम, मोह, विकार एवं द्वैतवाद वह सब को त्याग देता है।

ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜੁ ਸੁਭਾਉ ਵੂਠਾ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥
मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥
जब उसने आनंद से हरि का मंगल गुणगान किया तो उसके मन में सहज स्वभाव शांति आ गई।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਜਾਣੈ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਸਿ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥੪॥੪॥੭॥
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भागु सि सेवा लाइआ ॥४॥४॥७॥
नानक वही वर्णन करता है, जो उसने गुरु के वचन से जाना है कि जिसके माथे पर भाग्य लिखा होता है, वही सेवा में लगता है॥ ४॥ ४॥ ७ ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੰਤਿਆ ਕਛੁ ਨ ਕਹੈ ਜਮਕਾਲੁ ॥
हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥
हरि-प्रभु का नाम जपने से यमदूत जीव को कुछ भी नहीं कहता।

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੁਖੀ ਹੋਇ ਅੰਤੇ ਮਿਲੈ ਗੋਪਾਲੁ ॥੧॥
नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥१॥
हे नानक ! नाम जपने से मन-तन सुखी हो जाता है और अंततः गोपाल प्रभु मिल जाता है॥ १॥

ਛੰਤ ॥
छंत ॥
छंद॥

ਮਿਲਉ ਸੰਤਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮੋਹਿ ਉਧਾਰਿ ਲੇਹੁ ॥
मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥
हे हरि ! संतजनों की संगति में मुझसे आकर मिलो और मेरा उद्धार कीजिए।

ਬਿਨਉ ਕਰਉ ਕਰ ਜੋੜਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥
बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥
मैं दोनों हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि तुम मुझे अपना अनमोल हरि-नाम प्रदान करो।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਾਗਉ ਚਰਣ ਲਾਗਉ ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਉ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਦਇਆ ॥
हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥
हे हरि ! मैं तेरा नाम माँगता हूँ और तेरे चरणों में लगता हूँ यदि तुम दया करते हो तो अपना अहंकार दूर करता हूँ।

ਕਤਹੂੰ ਨ ਧਾਵਉ ਸਰਣਿ ਪਾਵਉ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਪ੍ਰਭ ਕਰਿ ਮਇਆ ॥
कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥
हे करुणामय प्रभु ! मुझ पर मेहर करो तांकि मैं तेरी शरण में पड़ा रहूँ तथा कहीं और न दौड़ूं।

ਸਮਰਥ ਅਗਥ ਅਪਾਰ ਨਿਰਮਲ ਸੁਣਹੁ ਸੁਆਮੀ ਬਿਨਉ ਏਹੁ ॥
समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥
हे समर्थ ! अकथनीय, अपार एवं निर्मल स्वामी ! मेरी यह विनती सुनो।

ਕਰ ਜੋੜਿ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਮਾਗੈ ਜਨਮ ਮਰਣ ਨਿਵਾਰਿ ਲੇਹੁ ॥੧॥
कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥१॥
नानक दोनों हाथ जोड़कर यह दान माँगता है, कृपा-दृष्टि करके मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर दो ॥ १॥

ਅਪਰਾਧੀ ਮਤਿਹੀਨੁ ਨਿਰਗੁਨੁ ਅਨਾਥੁ ਨੀਚੁ ॥
अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥
हे भगवान ! मैं अपराधी, बुद्धिहीन, गुणहीन, अनाथ तथा नीच हूँ।

ਸਠ ਕਠੋਰੁ ਕੁਲਹੀਨੁ ਬਿਆਪਤ ਮੋਹ ਕੀਚੁ ॥
सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥
हे ठाकुर ! मैं मूर्ख, कठोर, कुलहीन मोह के कीचड़ में फँसा हुआ हूँ।

ਮਲ ਭਰਮ ਕਰਮ ਅਹੰ ਮਮਤਾ ਮਰਣੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵਏ ॥
मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥
भ्रम रूपी कर्मों की मैल एवं अहंत्व की ममता के कारण मृत्यु का ख्याल मेरे मन में याद नहीं आता।

ਬਨਿਤਾ ਬਿਨੋਦ ਅਨੰਦ ਮਾਇਆ ਅਗਿਆਨਤਾ ਲਪਟਾਵਏ ॥
बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥
अज्ञानता के कारण में स्त्री के विनोद एवं माया के आनंद में लिपटा हुआ हूँ।

ਖਿਸੈ ਜੋਬਨੁ ਬਧੈ ਜਰੂਆ ਦਿਨ ਨਿਹਾਰੇ ਸੰਗਿ ਮੀਚੁ ॥
खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥
मेरा यौवन खत्म होता जा रहा है और बुढ़ापा बढ़ता जा रहा है। मेरी साथी मृत्यु मेरे जीवन के दिन देख रही है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਆਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਰਾਖੁ ਨੀਚੁ ॥੨॥
बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है, हे प्रभु ! मुझे तेरी ही आशा है इसलिए मुझ नीच को साधु की शरण में रखो ॥ २॥

ਭਰਮੇ ਜਨਮ ਅਨੇਕ ਸੰਕਟ ਮਹਾ ਜੋਨ ॥
भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥
हे नाथ ! मैं अनेक जन्मों में भटका हूँ और योनियों में बहुत संकट उठाए हैं।

ਲਪਟਿ ਰਹਿਓ ਤਿਹ ਸੰਗਿ ਮੀਠੇ ਭੋਗ ਸੋਨ ॥
लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥
धन-दौलत एवं पदार्थों के भोग को मीठा समझते हुए मैं उन से लिपटा रहा हूँ।

ਭ੍ਰਮਤ ਭਾਰ ਅਗਨਤ ਆਇਓ ਬਹੁ ਪ੍ਰਦੇਸਹ ਧਾਇਓ ॥
भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥
पापों के बेअंत भार से मैं योनियों में भटकता हुआ संसार में आया हूँ और बहुत सारे प्रदेशों में भाग-दौड़ कर चुका हूँ।

ਅਬ ਓਟ ਧਾਰੀ ਪ੍ਰਭ ਮੁਰਾਰੀ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹਰਿ ਨਾਇਓ ॥
अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥
अब मैंने मुरारि प्रभु की शरण ली है और हरि के नाम द्वारा सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं।

ਰਾਖਨਹਾਰੇ ਪ੍ਰਭ ਪਿਆਰੇ ਮੁਝ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਆ ਹੋਨ ॥
राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥
हे रखवाले प्यारे प्रभु ! मुझ से न कुछ हुआ है और न ही होगा।

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਨਾਨਕ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇਰੀ ਤਰੈ ਭਉਨ ॥੩॥
सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरै भउन ॥३॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! अब मुझे सहज सुख एवं आनंद मिल गया है और तेरी कृपा से मैं भवसागरं से पार हो गया हूँ॥ ३॥

ਨਾਮ ਧਾਰੀਕ ਉਧਾਰੇ ਭਗਤਹ ਸੰਸਾ ਕਉਨ ॥
नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥
जो लोग नाममात्र के ही भक्त हैं, भगवान ने उन्हें भी बचा लिया है। सच्चे भक्तों को क्या संशय होना चाहिए ?

ਜੇਨ ਕੇਨ ਪਰਕਾਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਨਹੁ ਸ੍ਰਵਨ ॥
जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥
प्रत्येक यथायोग्य विधि से जैसे भी संभव हो, अपने कानों से हरि-परमेश्वर का यश सुनो।

ਸੁਨਿ ਸ੍ਰਵਨ ਬਾਨੀ ਪੁਰਖ ਗਿਆਨੀ ਮਨਿ ਨਿਧਾਨਾ ਪਾਵਹੇ ॥
सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥
हे ज्ञानी पुरुष ! उस प्रभु की वाणी को अपने कानों से सुनो और अपने मन में नाम के भण्डार को प्राप्त कर लो।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਪ੍ਰਭ ਬਿਧਾਤੇ ਰਾਮ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥
हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥
जो व्यवित हरि के रंग में रंग जाते हैं, वे विधाता प्रभु राम के ही गुण गाते रहते हैं।

ਬਸੁਧ ਕਾਗਦ ਬਨਰਾਜ ਕਲਮਾ ਲਿਖਣ ਕਉ ਜੇ ਹੋਇ ਪਵਨ ॥
बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥
यदि धरती कागज बन जाए, वनराज कलम बन जाए और पवन लिखने हेतु लेखक बन जाए

ਬੇਅੰਤ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਇ ਪਾਇਆ ਗਹੀ ਨਾਨਕ ਚਰਣ ਸਰਨ ॥੪॥੫॥੮॥
बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥४॥५॥८॥
तो भी बेअंत प्रभु का अन्त नहीं पाया जा सकता। हे नानक ! मैंने उस प्रभु के चरणों की शरण ली है॥ ४॥ ५ ॥ ८॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਪੁਰਖ ਪਤੇ ਭਗਵਾਨ ਤਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਗਹੀ ॥
पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥
भगवान सभी पुरुषों का मालिक है और मैंने उसकी शरण ली है।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਪਰਾਨ ਚਿੰਤਾ ਸਗਲ ਲਹੀ ॥
निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥
अब मेरे प्राण निडर हो गए हैं और मेरी सारी चिन्ता मिट गई है।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਸੁਰਿਜਨ ਇਸਟ ਬੰਧਪ ਜਾਣਿਆ ॥
मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥
मैं भगवान को ही अपना माता-पिता, पुत्र, मित्र, शुभ-चिन्तक, इष्ट एवं बंधु जानता हूँ।

ਗਹਿ ਕੰਠਿ ਲਾਇਆ ਗੁਰਿ ਮਿਲਾਇਆ ਜਸੁ ਬਿਮਲ ਸੰਤ ਵਖਾਣਿਆ ॥
गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥
गुरु ने मुझे उससे मिलाया है और उसने मुझे बांह से पकड़ कर गले से लगा लिया है, जिसका निर्मल यश संतजन उच्चरित करते हैं।

ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਅਨੇਕ ਮਹਿਮਾ ਕੀਮਤਿ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ਕਹੀ ॥
बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥
वह बेअंत है और उसमें अनेक गुण हैं, उसकी महिमा की कीमत आंकी नहीं जा सकती।

ਪ੍ਰਭ ਏਕ ਅਨਿਕ ਅਲਖ ਠਾਕੁਰ ਓਟ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗਹੀ ॥੧॥
प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥१॥
प्रभु एक है, जिसे अनेक प्रकार से अलक्ष्य ठाकुर कहा जाता है तथा नानक ने उसकी शरण ली है॥ १॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਨੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਹਾਈ ਆਪਿ ਭਏ ॥
अम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए ॥
जब भगवान स्वयं मेरा मददगार बन गया है तो संसार मेरे लिए अमृत का कुण्ड बन गया।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਉਰ ਹਾਰੁ ਬਿਖੁ ਕੇ ਦਿਵਸ ਗਏ ॥
राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥
राम के नाम की गले में पुष्पमाला पहनने से मेरे दुःख के दिवस मिट गए हैं।

ਗਤੁ ਭਰਮ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ਬਿਨਸੇ ਜੋਨਿ ਆਵਣ ਸਭ ਰਹੇ ॥
गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥
मेरे मन में से भ्रम चला गया है, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार एवं मोह रूपी विकार नष्ट हो गए हैं। मेरे योनियों के चक्र भी समाप्त हो गए हैं।

ਅਗਨਿ ਸਾਗਰ ਭਏ ਸੀਤਲ ਸਾਧ ਅੰਚਲ ਗਹਿ ਰਹੇ ॥
अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥
साधु का आंचल पकड़ने से तृष्णा रूपी अग्नि सागर शीतल हो गया है।

ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਪਾਲ ਦਇਆਲ ਸੰਮ੍ਰਿਥ ਬੋਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਜੈ ਜਏ ॥
गोविंद गुपाल दइआल सम्रिथ बोलि साधू हरि जै जए ॥
हे साधुओ ! गोविन्द, गोपाल, दयालु समर्थ हरि की जय-जयकार करो।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਪੂਰਨ ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਾਈ ਪਰਮ ਗਤੇ ॥੨॥
नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई परम गते ॥२॥
हे नानक ! साधु की संगति में मिलकर पूर्ण परमात्मा के नाम का ध्यान करके मैंने परमगति पा ली है॥ २॥

ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਸੰਗਿ ਏਕੋ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥
जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥
मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ मैं वहाँ ही उसे अपने साथ व्यापक पाता हूँ।

ਘਟ ਘਟ ਵਾਸੀ ਆਪਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਲਹਿਆ ॥
घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥
एक परमात्मा ही सब जीवों में बसा हुआ है। वह स्वयं ही प्रत्येक हृदय में मौजूद है लेकिन कोई विरला पुरुष ही इसे अनुभव करता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿ ਪੂਰਨ ਕੀਟ ਹਸਤਿ ਸਮਾਨਿਆ ॥
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥
वह जल, धरती, गगन में हर जगह मौजूद है और चींटी एवं हाथी में भी एक समान समाया हुआ है।

ਆਦਿ ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਸੋਈ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥
आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥
परमात्मा जगत-रचना के प्रारम्भ में भी था, जगत के अन्त में भी होगा और वह अब भी मौजूद है और गुरु की दया से ही वह जाना जाता है।

ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਰਿਆ ਬ੍ਰਹਮ ਲੀਲਾ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਜਨਿ ਕਹਿਆ ॥
ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥
हर तरफ ब्रह्म का ही प्रसार है और यह जगत प्रसार ब्रह्म की रचित लीला हो रही है। भक्तजन उस गोविंद को गुणों का भण्डार कहते हैं।

ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਏਕੁ ਨਾਨਕ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ॥੩॥
सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥३॥
हे नानक ! अन्तर्यामी स्वामी की आराधना करो; एक प्रभु ही सर्वव्यापी है॥ ३॥

ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਸੁਹਾਵੜੀ ਆਈ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਹਰੇ ॥
दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे ॥
हरि का नाम-सिमरन करने से दिन-रात सुहावने आ गए हैं।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਲਮਲ ਪਾਪ ਟਰੇ ॥
चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥
प्रभु के चरण-कमल के साथ प्रेम करने से बुराइयाँ एवं पाप नष्ट हो चुके हैं।

ਦੂਖ ਭੂਖ ਦਾਰਿਦ੍ ਨਾਠੇ ਪ੍ਰਗਟੁ ਮਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥
फिर दुःख, भूख एवं दारिद्रता भाग गए हैं और सन्मार्ग प्रत्यक्ष दिखाई दिया है।

ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਮਨਿ ਲੋੜੀਦਾ ਪਾਇਆ ॥
मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर प्रभु-नाम से रंग गया हूँ और मेरी मनोकामना पूरी हो गई है।

ਹਰਿ ਦੇਖਿ ਦਰਸਨੁ ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਕੁਲ ਸੰਬੂਹਾ ਸਭਿ ਤਰੇ ॥
हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल स्मबूहा सभि तरे ॥
हरि के दर्शन करके मेरी इच्छा पूरी हो गई है और समस्त वंशावलि भी पार हो गई है।

ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਅਨੰਦ ਅਨਦਿਨੁ ਸਿਮਰੰਤ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੪॥੬॥੯॥
दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥४॥६॥९॥
हे नानक ! दिन-रात सदैव ही हरि-परमेश्वर का भजन करने से आनंद बना रहता है॥४॥६॥९॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੭
आसा महला ५ छंत घरु ७
आसा महला ५ छंत घरु ७

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਸੁਭ ਚਿੰਤਨ ਗੋਬਿੰਦ ਰਮਣ ਨਿਰਮਲ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥
मैं शुभ चिंतन करता रहूँ, गोविंद का नाम याद करता रहूँ और साधु की निर्मल संगति करता रहूँ।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵਿਸਰਉ ਇਕ ਘੜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਵੰਤ ॥੧॥
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥१॥
नानक की प्रार्थना है कि हे भगवान ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं एक क्षण भर के लिए भी तेरा नाम न भूलूं।॥ १॥

ਛੰਤ ॥
छंत ॥
छंद॥

ਭਿੰਨੀ ਰੈਨੜੀਐ ਚਾਮਕਨਿ ਤਾਰੇ ॥
भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥
जब ओस से भीगी हुई रात्रि में तारे चमकते हैं

ਜਾਗਹਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ॥
जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥
तो मेरे राम के प्यारे संतजन इस सुहावनी रात्रि को जागते रहते हैं।

ਰਾਮ ਪਿਆਰੇ ਸਦਾ ਜਾਗਹਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਹਿ ਅਨਦਿਨੋ ॥
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥
वे राम के प्यारे संतजन सदैव ही जागते हैं और नित्य ही नाम को याद करते रहते हैं।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਧਿਆਨੁ ਹਿਰਦੈ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਇਕੁ ਖਿਨੋ ॥
चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥
वे अपने हृदय में प्रभु के चरण-कमल का ध्यान करते हैं और एक क्षण भर के लिए भी उसे विस्मृत नहीं करते।

ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਬਿਕਾਰੁ ਮਨ ਕਾ ਕਲਮਲਾ ਦੁਖ ਜਾਰੇ ॥
तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥
वे मन का अहंकार, मोह, विकार इत्यादि बुराइयों को त्याग कर दु:खों को नाश कर देते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਜਾਗਹਿ ਹਰਿ ਦਾਸ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥
बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥१॥
नानक वन्दना करता है कि हरि के दास प्यारे संतजन सदैव ही जागते रहते हैं॥ १ ॥

ਮੇਰੀ ਸੇਜੜੀਐ ਆਡੰਬਰੁ ਬਣਿਆ ॥
मेरी सेजड़ीऐ आड्मबरु बणिआ ॥
मेरे मन के सेज की भव्य सजावट हो गई है।

ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਵਤ ਸੁਣਿਆ ॥
मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥
जब से मैंने सुना है कि मेरा प्रभु आ रहा है तो मेरे मन में आनंद उत्पन्न हो गया है।

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਚਾਵ ਮੰਗਲ ਰਸ ਭਰੇ ॥
प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥
स्वामी प्रभु को मिलकर मैं सुखी हो गई हूँ और चाव, मंगल के रस से भर गई हूँ।

ਅੰਗ ਸੰਗਿ ਲਾਗੇ ਦੂਖ ਭਾਗੇ ਪ੍ਰਾਣ ਮਨ ਤਨ ਸਭਿ ਹਰੇ ॥
अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥
प्रभु मेरे अंग-संग लग गया है, जिससे दुःख भाग गए हैं और मेरा मन-तन फूल की तरह खिल गया है।

ਮਨ ਇਛ ਪਾਈ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਈ ਸੰਜੋਗੁ ਸਾਹਾ ਸੁਭ ਗਣਿਆ ॥
मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥
प्रभु का ध्यान करने से मेरी मनोकामना पूरी हो गई है, मैं अपने विवाह संयोग के समय को शुभ मानती हूँ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਿਲੇ ਸ੍ਰੀਧਰ ਸਗਲ ਆਨੰਦ ਰਸੁ ਬਣਿਆ ॥੨॥
बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥२॥
नानक वन्दना करता है कि श्रीधर प्रभु से मिलकर मुझे समस्त खुशियों का रस प्राप्त हो गया है॥ २॥

ਮਿਲਿ ਸਖੀਆ ਪੁਛਹਿ ਕਹੁ ਕੰਤ ਨੀਸਾਣੀ ॥
मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥
मेरी सखियाँ मुझसे मिलकर पूछती हैं कि हमें अपने प्रियतम-पति की कोई निशानी बताओ।

ਰਸਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਰੀ ਕਛੁ ਬੋਲਿ ਨ ਜਾਣੀ ॥
रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥
उसके प्रेम के रस से मैं इतनी भर गई थी कि मैं कुछ भी कह न सकी।

ਗੁਣ ਗੂੜ ਗੁਪਤ ਅਪਾਰ ਕਰਤੇ ਨਿਗਮ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਵਹੇ ॥
गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥
जगत-रचयिता प्रभु के गुण गहन, गुप्त एवं अपार हैं और वेद भी उसका अन्त नहीं पा सकते।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਧਿਆਇ ਸੁਆਮੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੇ ॥
भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥
मैं भक्ति-भाव से ज्ञान से पूर्ण होने के कारण मैं अपने प्रभु को अच्छी लगने लग गई हूँ।

ਸਗਲ ਗੁਣ ਸੁਗਿਆਨ ਪੂਰਨ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣੀ ॥
सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥
सभी गुणों और आध्यात्मिक ज्ञान से भरी हुई , मैं अपने भगवान को प्रसन्न हो गई हूँ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਪ੍ਰੇਮ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥੩॥
बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥३॥
नानक विनती करता है कि वह प्रभु के प्रेम रंग में रंगी हुई है और सहज ही उसमें समा गई है॥ ३॥

ਸੁਖ ਸੋਹਿਲੜੇ ਹਰਿ ਗਾਵਣ ਲਾਗੇ ॥
सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥
जब मैं भगवान की खुशी के गीत गाने लग गया तो

ਸਾਜਨ ਸਰਸਿਅੜੇ ਦੁਖ ਦੁਸਮਨ ਭਾਗੇ ॥
साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥
मेरे सज्जन-सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि प्रसन्न हो गए मेरे दुश्मन-काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि दुःख भाग गए।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਰਸੇ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਹਸੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਆ ॥
सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥
मेरी खुशी एवं सुख बढ़ गए, मैं प्रभु के नाम में आनंद प्राप्त करने लगा क्योंकि भगवान ने स्वयं मुझ पर कृपा की है।

ਹਰਿ ਚਰਣ ਲਾਗੇ ਸਦਾ ਜਾਗੇ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰਭ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥
हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥
मैं हरि के सुन्दर चरणों से जुड़ गया हूँ और सदा सावधान रहने के कारण मैं बनवारी प्रभु से मिल गया हूँ।

ਸੁਭ ਦਿਵਸ ਆਏ ਸਹਜਿ ਪਾਏ ਸਗਲ ਨਿਧਿ ਪ੍ਰਭ ਪਾਗੇ ॥
सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥
अब शुभ दिन आ गए हैं और मैंने सहज सुख प्राप्त कर लिया है। प्रभु के चरणों की सेवा करने से मुझे निधियाँ मिल गई हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਨ ਤਾਗੇ ॥੪॥੧॥੧੦॥
बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥४॥१॥१०॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे जगत के स्वामी ! भक्तजन सदैव ही तेरी शरण चाहते हैं॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਉਠਿ ਵੰਞੁ ਵਟਾਊੜਿਆ ਤੈ ਕਿਆ ਚਿਰੁ ਲਾਇਆ ॥
उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥
हे पथिक ! उठ और यहाँ से चल दे, तू देरी क्यों कर रहा है ?

ਮੁਹਲਤਿ ਪੁੰਨੜੀਆ ਕਿਤੁ ਕੂੜਿ ਲੋਭਾਇਆ ॥
मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥
तेरे जीवन का नियत समय पूरा हो गया है, फिर तुम झूठे लोभ में क्यों फंसे हुए हो ?"

ਕੂੜੇ ਲੁਭਾਇਆ ਧੋਹੁ ਮਾਇਆ ਕਰਹਿ ਪਾਪ ਅਮਿਤਿਆ ॥
कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥
झूठे लोभ में फँस कर तुम माया के छल के कारण असंख्य पाप करते जा रहे हो।

ਤਨੁ ਭਸਮ ਢੇਰੀ ਜਮਹਿ ਹੇਰੀ ਕਾਲਿ ਬਪੁੜੈ ਜਿਤਿਆ ॥
तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥
यह तन तो भस्म की ढेरी है जिस पर यम ने दृष्टि कर ली है तथा काल ने बेचारे प्राणी को जीत लिया है।

ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ ਛੋਡਿ ਵੈਸੀ ਰਹਿਓ ਪੈਨਣੁ ਖਾਇਆ ॥
मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥
धन-दौलत एवं यौवन को छोड़कर तुम चले जाओगे तथा तेरा खाना पहनना भी खत्म हो गया है।

ਨਾਨਕ ਕਮਾਣਾ ਸੰਗਿ ਜੁਲਿਆ ਨਹ ਜਾਇ ਕਿਰਤੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥
नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥१॥
नानक का कथन है कि तेरे कर्म तेरे साथ जाएँगे, कर्मो का प्रभाव मिटाया नहीं जा सकता॥ १॥

ਫਾਥੋਹੁ ਮਿਰਗ ਜਿਵੈ ਪੇਖਿ ਰੈਣਿ ਚੰਦ੍ਰਾਇਣੁ ॥
फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥
हे जीव ! जिस तरह हिरण रात्रि में शिकारी द्वारा किए गए चंद्रायण जैसे प्रकाश को देखकर उसके जाल में फंस जाता है, वैसे ही तू झूठी माया के मोह में फँसा हुआ है।

ਸੂਖਹੁ ਦੂਖ ਭਏ ਨਿਤ ਪਾਪ ਕਮਾਇਣੁ ॥
सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥
पाप करने से सुख से हटकर नित्य दुःख उत्पन्न होते हैं।

ਪਾਪਾ ਕਮਾਣੇ ਛਡਹਿ ਨਾਹੀ ਲੈ ਚਲੇ ਘਤਿ ਗਲਾਵਿਆ ॥
पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥
तेरे किए हुए पाप तेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे, यमदूत तेरे गले में फँदा डालकर तुझे आगे ले चले हैं।

ਹਰਿਚੰਦਉਰੀ ਦੇਖਿ ਮੂਠਾ ਕੂੜੁ ਸੇਜਾ ਰਾਵਿਆ ॥
हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥
राजा हरिचंद की नगरी जैसी झूठी माया को देखकर तू धोखा खा रहा है और अपनी सेज पर तू मोहिनी रूपी झूठी नारी से भोग कर रहा है।

ਲਬਿ ਲੋਭਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਮਾਤਾ ਗਰਬਿ ਭਇਆ ਸਮਾਇਣੁ ॥
लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥
लोभ, लालच एवं अहंकार से तुम मस्त हो गए हो और अभिमान से भर गए हो।

ਨਾਨਕ ਮ੍ਰਿਗ ਅਗਿਆਨਿ ਬਿਨਸੇ ਨਹ ਮਿਟੈ ਆਵਣੁ ਜਾਇਣੁ ॥੨॥
नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥२॥
हे नानक ! जिस तरह मृग अज्ञानता में फँस कर नष्ट हो रहा है वैसे ही तेरा भी जन्म-मरण का चक्र नहीं मिटता॥ २ ॥

ਮਿਠੈ ਮਖੁ ਮੁਆ ਕਿਉ ਲਏ ਓਡਾਰੀ ॥
मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥
मक्खी मीठे में फँसकर ही मर जाती है और उड़ नहीं पाती।

ਹਸਤੀ ਗਰਤਿ ਪਇਆ ਕਿਉ ਤਰੀਐ ਤਾਰੀ ॥
हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥
हाथी गड्ढे में गिर जाए तो तैर कर निकल नहीं सकता।

ਤਰਣੁ ਦੁਹੇਲਾ ਭਇਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਖਸਮੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਇਓ ॥
तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥
जिस जीव-स्त्री को अपना पति-प्रभु एक क्षण भर के लिए भी याद नहीं आया, उसका संसार-सागर से पार होना कठिन हो गया।

ਦੂਖਾ ਸਜਾਈ ਗਣਤ ਨਾਹੀ ਕੀਆ ਅਪਣਾ ਪਾਇਓ ॥
दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥
उसके दुःख एवं दण्ड गणना से बाहर हैं, वह अपने कर्मों का फल भोगती है।

ਗੁਝਾ ਕਮਾਣਾ ਪ੍ਰਗਟੁ ਹੋਆ ਈਤ ਉਤਹਿ ਖੁਆਰੀ ॥
गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥
छिपकर किए गए पाप कर्म भी प्रगट हो जाते हैं और लोक-परलोक में वह तबाह हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਬਾਝੁ ਮੂਠਾ ਮਨਮੁਖੋ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥੩॥
नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥३॥
हे नानक ! सच्चे गुरु के बिना स्वेच्छाचारिणीरी जीव-स्त्री ठगी जाती है॥ ३॥

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਜੀਵੇ ਲਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਚਰਣੀ ॥
हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥
हरि के दास प्रभु-चरणों से लगकर आत्मिक जीवन जीते हैं।

ਕੰਠਿ ਲਗਾਇ ਲੀਏ ਤਿਸੁ ਠਾਕੁਰ ਸਰਣੀ ॥
कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥
जो ठाकुर जी की शरण लेते हैं, वह उन्हें अपने गले लगा लेता है।

ਬਲ ਬੁਧਿ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਅਪਣਾ ਆਪਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ ॥
बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥
वह उन्हें बल, बुद्धि, ज्ञान एवं ध्यान प्रदान करता है और स्वयं ही उनसे अपने नाम का जाप करवाता है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਆਪਿ ਹੋਆ ਆਪਿ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ॥
साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥
प्रभु स्वयं ही सत्संगति है और स्वयं ही संसार का उद्धार कर देता है।

ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਰਖਣਹਾਰੈ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਕਰਣੀ ॥
राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥
जिन मनुष्यों के कर्म सदा निर्मल होते हैं, रक्षक प्रभु उनकी रक्षा करता है।

ਨਾਨਕ ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਹਿ ਕਬਹੂੰ ਹਰਿ ਸੰਤ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣੀ ॥੪॥੨॥੧੧॥
नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥४॥२॥११॥
हे नानक ! हरि के संत हरि की शरण में ही रहते हैं और कभी नरक में नहीं जाते ॥ ४ ॥ २ ॥ ११॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਵੰਞੁ ਮੇਰੇ ਆਲਸਾ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ਬੇਨੰਤੀ ॥
वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥
हे मेरे आलस्य ! मुझसे दूर हो जा, मैंने अपने प्रभु के पास प्रार्थना करनी है।

ਰਾਵਉ ਸਹੁ ਆਪਨੜਾ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗਿ ਸੋਹੰਤੀ ॥
रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥
मैं अपने कांत-प्रभु से रमण करती हूँ और प्रभु की संगति में ही सुन्दर लगती हूँ।

ਸੰਗੇ ਸੋਹੰਤੀ ਕੰਤ ਸੁਆਮੀ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣੀ ਰਾਵੀਐ ॥
संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥
मैं अपने कांत-स्वामी की संगति में सुन्दर लगती हूँ और रात-दिन उससे रमण करती हूँ।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਚਿਤਾਰਿ ਜੀਵਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੀਐ ॥
सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥
मैं श्वास-श्वास से प्रभु को याद करके उसके दर्शन करके जीवित रहती हूँ, मैं हरि का गुणगान करती रहती हूँ।

ਬਿਰਹਾ ਲਜਾਇਆ ਦਰਸੁ ਪਾਇਆ ਅਮਿਉ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਿੰਚੰਤੀ ॥
बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती ॥
विरहा लज्जा करता है, क्योंकि मैंने अपने पति-प्रभु के दर्शन कर लिए हैं और उसकी अमृत से भरी हुई दृष्टि मेरे स्नेह को सींचती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਮਿਲੇ ਜਿਸੁ ਖੋਜੰਤੀ ॥੧॥
बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥१॥
नानक वन्दना करता है कि मेरी इच्छा पूरी हो गई है, जिस पति-प्रभु को मैं खोजता था, वह मुझे मिल गया है॥ १॥

ਨਸਿ ਵੰਞਹੁ ਕਿਲਵਿਖਹੁ ਕਰਤਾ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥
नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥
हे महा पापो ! यहाँ से दौड़ जाओ, क्योंकि जगत का रचयिता प्रभु मेरे हृदय-घर में आया है।

ਦੂਤਹ ਦਹਨੁ ਭਇਆ ਗੋਵਿੰਦੁ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ॥
दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥
जब गोविंद मेरे हृदय में प्रगट हुआ तो मेरे भीतर के पाँचों दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) जल गए।

ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਲਾਲਨ ਸਾਧਸੰਗਿ ਵਖਾਣਿਆ ॥
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥
जब मैंने साधसंगत में शामिल होकर स्तुतिगान किया तो प्यारा गोविंद गोपाल मेरे हृदय में प्रगट हो गया।

ਆਚਰਜੁ ਡੀਠਾ ਅਮਿਉ ਵੂਠਾ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਜਾਣਿਆ ॥
आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥
मैंने अदभुत प्रभु के दर्शन कर लिए हैं, वह मुझ पर अमृत बरसा रहा है तथा गुरु की दया से मैंने उसे जान लिया है।

ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਨਹ ਅੰਤੁ ਜਾਈ ਪਾਇਆ ॥
मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥
मेरे मन में अब शांति आई है और खुशी के वाद्य-यन्त्रों से मुझे शुभ कामनाएँ मिल रही हैं, प्रभु का अन्त पाया नहीं जा सकता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਮੇਲਾ ਪ੍ਰਭੂ ਆਪਿ ਬਣਾਇਆ ॥੨॥
बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥२॥
नानक वन्दना करता है कि सहज सुख का मेल प्रभु ने आप बनाया है॥ २॥

ਨਰਕ ਨ ਡੀਠੜਿਆ ਸਿਮਰਤ ਨਾਰਾਇਣ ॥
नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥
नारायण का सिमरन करने वाले इन्सान को कभी नरक नहीं देखना पड़ा।

ਜੈ ਜੈ ਧਰਮੁ ਕਰੇ ਦੂਤ ਭਏ ਪਲਾਇਣ ॥
जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥
धर्मराज स्वयं उसकी जय-जयकार करता है और यमदूत भाग जाते हैं।

ਧਰਮ ਧੀਰਜ ਸਹਜ ਸੁਖੀਏ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਭਜੇ ॥
धरम धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥
साधसंगति में हरि का भजन करने से मनुष्य को धर्म, धैर्य, सहज सुख प्राप्त हो जाता है।

ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਰਾਖਿ ਲੀਨੇ ਮੋਹ ਮਮਤਾ ਸਭ ਤਜੇ ॥
करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥
अपनी अनुकंपा करके प्रभु ने उनका संसार-सागर से उद्धार कर दिया है, जिन्होंने मोह, ममता एवं अहंत्व को त्याग दिया है।

ਗਹਿ ਕੰਠਿ ਲਾਏ ਗੁਰਿ ਮਿਲਾਏ ਗੋਵਿੰਦ ਜਪਤ ਅਘਾਇਣ ॥
गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥
गुरु ने उनको प्रभुसे मिला दिया है और प्रभु ने उन्हें अपने गले से लगा लिया है, गोविन्द का भजन करने से वे तृप्त हो गए हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸਗਲ ਆਸ ਪੁਜਾਇਣ ॥੩॥
बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥३॥
नानक वन्दना करता है कि प्रभु की आराधना करने से समस्त आशाएँ पूरी हो जाती हैं।॥ ३॥

ਨਿਧਿ ਸਿਧਿ ਚਰਣ ਗਹੇ ਤਾ ਕੇਹਾ ਕਾੜਾ ॥
निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥
यदि निधियों, सिद्धियों के स्वामी प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं तो अब कैसी चिंता हो सकती है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਵਸਿ ਜਿਸੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅਸਾੜਾ ॥
सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥
जिसके वश में सब कुछ है वही मेरा प्रभु है।

ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੇ ਨਾਮ ਦੀਨੇ ਕਰੁ ਧਾਰਿ ਮਸਤਕਿ ਰਾਖਿਆ ॥
गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥
मुझे भुजा से पकड़ कर उसने अपना नाम प्रदान किया है और मेरे माथे पर अपना हाथ रखकर मेरी रक्षा की है।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰੁ ਨਹ ਵਿਆਪੈ ਅਮਿਉ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥
संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥
यह संसार-सागर मुझे प्रभावित नहीं करता, क्योंकि मैंने अमृत समान हरि रस चखा है।

ਸਾਧਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਰਣੁ ਜੀਤਿ ਵਡਾ ਅਖਾੜਾ ॥
साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥
सत्संगति एवं नाम के प्रेम द्वारा मैंने संसार की रणभूमि का बड़ा युद्ध जीत लिया है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਬਹੁੜਿ ਜਮਿ ਨ ਉਪਾੜਾ ॥੪॥੩॥੧੨॥
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥४॥३॥१२॥
नानक प्रार्थना करता है कि जगत के स्वामी प्रभु की शरण लेने से यमदूत दोबारा पीड़ित नहीं करते॥ ४॥ ३॥ १२॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
आसा महला ५ ॥
आसा महला ५ ॥

ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਕਮਾਇਅੜੋ ਸੋ ਆਇਓ ਮਾਥੈ ॥
दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥
मनुष्य दिन-रात जो भी शुभाशुभ कर्म करता है, वह उसके माथे पर लेख बन जाता है।

ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ ਲੁਕਾਇਦੜੋ ਸੋ ਵੇਖੀ ਸਾਥੈ ॥
जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥
जिस परमात्मा से वह पापों को छिपाता है, वह उसके साथ ही बैठा उसके कर्मों को देख रहा है।

ਸੰਗਿ ਦੇਖੈ ਕਰਣਹਾਰਾ ਕਾਇ ਪਾਪੁ ਕਮਾਈਐ ॥
संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥
विश्व का रचयिता प्रभु उसके साथ है और उसके कर्मों को देखता है, फिर, वह क्यों पाप कर्म करता है ?

ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਕੀਜੈ ਨਾਮੁ ਲੀਜੈ ਨਰਕਿ ਮੂਲਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥
सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥
यदि हम शुभ कर्म करें, प्रभु का नाम स्मरण करें तो कदापि नरक में नहीं जाएँगे।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਹੁ ਚਲੈ ਤੇਰੈ ਸਾਥੇ ॥
आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥
हे मानव ! आठ प्रहर हरि के नाम का भजन करते रहो, क्योंकि यही तेरे साथ जाएगा।

ਭਜੁ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਮਿਟਹਿ ਦੋਖ ਕਮਾਤੇ ॥੧॥
भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥
हे नानक ! सत्संगति में सदा प्रभु का भजन करते रहो, तेरे किए हुए पाप कर्म मिट जाएँगे।॥ १॥

ਵਲਵੰਚ ਕਰਿ ਉਦਰੁ ਭਰਹਿ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰਾ ॥
वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥
हे मूर्ख गंवार ! तू छल-कपट करके अपना पेट भरता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੇ ਰਹਿਆ ਹਰਿ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥
सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥
दाता प्रभु तुझे सब कुछ दिए जा रहा है।

ਦਾਤਾਰੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਸੁਆਮੀ ਕਾਇ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥
दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥
सबका दाता स्वामी सदा ही दयालु है, फिर हम अपने मन से उसे क्यों विस्मृत करें ?

ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗੇ ਭਜੁ ਨਿਸੰਗੇ ਕੁਲ ਸਮੂਹਾ ਤਾਰੀਐ ॥
मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥
साधु की संगति में मिलकर निर्भय होकर प्रभु का भजन करते रहो, इस तरह तेरी समूह कुल का उद्धार हो जाएगा।

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਦੇਵ ਮੁਨਿ ਜਨ ਭਗਤ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥
सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥
प्रभु-नाम ही सिद्ध, साधक, देवतों, मुनिजन एवं भक्तों का आधार है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਭਜੀਐ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥੨॥
बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि एक प्रभु ही सृष्टि का रचयिता है इसलिए सदा उसी का भजन करना चाहिए॥ २॥

ਖੋਟੁ ਨ ਕੀਚਈ ਪ੍ਰਭੁ ਪਰਖਣਹਾਰਾ ॥
खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥
हे जीव ! किसी से छल-कपट मत कर, क्योंकि प्रभु ही परख करने वाला है।

ਕੂੜੁ ਕਪਟੁ ਕਮਾਵਦੜੇ ਜਨਮਹਿ ਸੰਸਾਰਾ ॥
कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥
जो झूठ एवं कपट के कर्म करते हैं, वे इस संसार में दोबारा जन्म लेते हैं।

ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਤਰਿਆ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥
संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥
जिसने एक ईश्वर का सुमिरन किया है, वह इस संसार-सागर से पार हो गया है।

ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਨਿੰਦ ਨਿੰਦਾ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ਆਇਆ ॥
तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥
वह काम, क्रोध एवं अनिंद लोगों की निन्दा करना त्याग कर प्रभु की शरण में आ गया है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿਆ ਸੁਆਮੀ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥
सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार दुनिया का मालिक जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਜਨ ਕੀ ਚਰਣ ਕਮਲ ਅਧਾਰਾ ॥੩॥
बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि ईश्वर अपने भक्तजनों की टेक है और उसके चरण-कमल ही उनका आधार है॥ ३॥

ਪੇਖੁ ਹਰਿਚੰਦਉਰੜੀ ਅਸਥਿਰੁ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ॥
पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥
हे प्राणी ! देख, यह जगत एक राजा हरिचंद की नगरी के समान है और कोई भी वस्तु स्थिर नहीं।

ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਜੇਤੇ ਸੇ ਸੰਗਿ ਨ ਜਾਹੀ ॥
माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥
जितने भी माया के रंग हैं, वे प्राणी के संग नहीं जाते।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਾਥੀ ਸਦਾ ਤੇਰੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਿ ਸਮਾਲੀਐ ॥
हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥
केवल हरि ही तेरा साथी है जो सदा तेरे साथ है, इसलिए दिन-रात उसका भजन करते रहो।

ਹਰਿ ਏਕ ਬਿਨੁ ਕਛੁ ਅਵਰੁ ਨਾਹੀ ਭਾਉ ਦੁਤੀਆ ਜਾਲੀਐ ॥
हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥
हरि के बिना दूसरा कोई भी तेरा नहीं, इसलिए तुझे द्वैतभाव को जला देना चाहिए।

ਮੀਤੁ ਜੋਬਨੁ ਮਾਲੁ ਸਰਬਸੁ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥
अपने मन में समझ ले कि एक प्रभु ही तेरा मित्र, तेरा यौवन, तेरा धन एवं सर्वस्व है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਵਡਭਾਗਿ ਪਾਈਐ ਸੂਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਹੀ ॥੪॥੪॥੧੩॥
बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥४॥४॥१३॥
नानक प्रार्थना करता है कि किस्मत से जो मनुष्य प्रभु को पा लेता है, वह सहज सुख में समा जाता है॥ ४॥ ४॥ १३॥

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੮
आसा महला ५ छंत घरु ८
आसा महला ५ छंत घरु ८

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਮਲਾ ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਕਮਲਾ ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਹੇ ਤੀਖਣ ਮਦ ਬਿਪਰੀਤਿ ਹੇ ਅਵਧ ਅਕਾਰਥ ਜਾਤ ॥
कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥
कमला (माया) भ्रम की दीवार है, यह भ्रम की दीवार बड़ी तीक्ष्ण है और इसका नशा विपरीत करने वाला है, इससे जुड़ कर मानव-जन्म व्यर्थ ही चला जाता है।

ਗਹਬਰ ਬਨ ਘੋਰ ਗਹਬਰ ਬਨ ਘੋਰ ਹੇ ਗ੍ਰਿਹ ਮੂਸਤ ਮਨ ਚੋਰ ਹੇ ਦਿਨਕਰੋ ਅਨਦਿਨੁ ਖਾਤ ॥
गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे ग्रिह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥
यह माया घना और भयंकर वन है, मन रूपी चोर घर को लूटते जा रहे हैं और दिनकर (सूर्य) हमारी आयु नित्य खाए जा रहा है।

ਦਿਨ ਖਾਤ ਜਾਤ ਬਿਹਾਤ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਰੁਣਾ ਪਤੇ ॥

दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥

जीवन के दिन बीतते जा रहे हैं और इस तरह प्रभु के बिना जीवन गुजरता जा रहा है, हे करुणापति प्रभु ! मुझे मिलो।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਅਨੇਕ ਬੀਤੇ ਪ੍ਰਿਅ ਸੰਗ ਬਿਨੁ ਕਛੁ ਨਹ ਗਤੇ ॥
जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥
मेरे अनेक जन्म-मरण बीत गए हैं परन्तु प्रिय के संग बिना गति नहीं होती।

ਕੁਲ ਰੂਪ ਧੂਪ ਗਿਆਨਹੀਨੀ ਤੁਝ ਬਿਨਾ ਮੋਹਿ ਕਵਨ ਮਾਤ ॥
कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥
मैं कुल, रूप, शोभा एवं ज्ञान से विहीन हूँ, हे प्रभु ! तेरे अलावा मेरा कौन है।

ਕਰ ਜੋੜਿ ਨਾਨਕੁ ਸਰਣਿ ਆਇਓ ਪ੍ਰਿਅ ਨਾਥ ਨਰਹਰ ਕਰਹੁ ਗਾਤ ॥੧॥
कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥१॥
हे प्रिय नाथ ! नानक हाथ जोड़कर तेरी शरण में आया है, मेरी मुक्ति करो।॥ १॥

ਮੀਨਾ ਜਲਹੀਨ ਮੀਨਾ ਜਲਹੀਨ ਹੇ ਓਹੁ ਬਿਛੁਰਤ ਮਨ ਤਨ ਖੀਨ ਹੇ ਕਤ ਜੀਵਨੁ ਪ੍ਰਿਅ ਬਿਨੁ ਹੋਤ ॥
मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥
जैसे मछली पानी के बिना बिछुड़ कर तन-मन से क्षीण हो जाती है वैसे ही प्रिय-पति प्रभु के बिना मेरा जीवन कैसे कायम रह सकता है ?

ਸਨਮੁਖ ਸਹਿ ਬਾਨ ਸਨਮੁਖ ਸਹਿ ਬਾਨ ਹੇ ਮ੍ਰਿਗ ਅਰਪੇ ਮਨ ਤਨ ਪ੍ਰਾਨ ਹੇ ਓਹੁ ਬੇਧਿਓ ਸਹਜ ਸਰੋਤ ॥
सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे म्रिग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥
मृग शिकारी के सन्मुख होकर उसका बाण सहता है और मधुर नाद (ध्वनि) से बिंधा हुआ वह अपना मन, तन एवं प्राण अर्पित कर देता है।

ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਗੀ ਮਿਲੁ ਬੈਰਾਗੀ ਖਿਨੁ ਰਹਨੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਤਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ॥
प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥
अपने प्रिय से मेरी प्रीति हो गई है, उससे मिलने हेतु मैं वैरागी हो गया हूँ, उस तन को धिक्कार है जो प्रिय प्रभु के बिना एक क्षण भी रहता है।

ਪਲਕਾ ਨ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੇਮ ਪਾਗੈ ਚਿਤਵੰਤਿ ਅਨਦਿਨੁ ਪ੍ਰਭ ਮਨਾ ॥
पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥
अपने प्रिय के प्रेम में इतनी मग्न हो गई हूँ कि मेरी पलकें बन्द ही नहीं होती, मेरा मन रात-दिन प्रभु को याद करता है।

ਸ੍ਰੀਰੰਗ ਰਾਤੇ ਨਾਮ ਮਾਤੇ ਭੈ ਭਰਮ ਦੁਤੀਆ ਸਗਲ ਖੋਤ ॥

स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥

श्रीरंग प्रभु के रंग में रंगकर और उसके नाम में मस्त होकर मैंने सभी भय, भ्रम, दुविधा निवृत्त कर दिए हैं।

ਕਰਿ ਮਇਆ ਦਇਆ ਦਇਆਲ ਪੂਰਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਨਕ ਮਗਨ ਹੋਤ ॥੨॥

करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥२॥

नानक प्रार्थना करता है कि हे दयालु एवं पूर्ण हरि ! अपनी दया एवं कृपा करो तांकि मैं तेरे प्रेम में मग्न हो जाऊँ॥ २॥

ਅਲੀਅਲ ਗੁੰਜਾਤ ਅਲੀਅਲ ਗੁੰਜਾਤ ਹੇ ਮਕਰੰਦ ਰਸ ਬਾਸਨ ਮਾਤ ਹੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਕਮਲ ਬੰਧਾਵਤ ਆਪ ॥

अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥

भंवरा फूल पर गूंजता रहता है, फूलों के रस, सुगन्धि, एवं शहद से मस्त हुआ कमल के प्रेम के कारण यह अपने आपको फंसा लेता है।

ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਚਿਤ ਪਿਆਸ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਚਿਤ ਪਿਆਸ ਹੇ ਘਨ ਬੂੰਦ ਬਚਿਤ੍ਰਿ ਮਨਿ ਆਸ ਹੇ ਅਲ ਪੀਵਤ ਬਿਨਸਤ ਤਾਪ ॥

चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥

चातक के चित्त में स्वाति बूंद की प्यास है, इसका चित्त मेघ की विचित्र बूंदों हेतु तरसता है, जिनका पान करने से चातक का ताप नाश हो जाता है।

ਤਾਪਾ ਬਿਨਾਸਨ ਦੂਖ ਨਾਸਨ ਮਿਲੁ ਪ੍ਰੇਮੁ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅਤਿ ਘਨਾ ॥

तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥

हे ताप दूर करने वाले ! हे दुःखों का नाश करने वाले हरि ! मुझे मिलो मेरे तन-मन में अत्यंत ही घना प्रेम है।

ਸੁੰਦਰੁ ਚਤੁਰੁ ਸੁਜਾਨ ਸੁਆਮੀ ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਭਨਾ ॥

सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥

हे सुन्दर, चतुर, सुजान स्वामी ! मैं कौन-सी जिह्व से तेरे गुणों का गायन करूँ ?

ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੇਵਹੁ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਧਾਰਤ ਮਿਟਤ ਪਾਪ ॥

गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रिसटि धारत मिटत पाप ॥

हे स्वामी ! मेरी भुजा पकड़ लीजिए और अपना नाम प्रदान करें, जिस पर तू दया-दृष्टि करता है, उसके पाप मिट जाते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਜੰਪੈ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਹਰਿ ਦਰਸੁ ਪੇਖਤ ਨਹ ਸੰਤਾਪ ॥੩॥

नानकु ज्मपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥३॥

नानक का कथन है कि मैं तो पतितपावन हरि का ही नाम जपता रहता हूँ और हरि-दर्शन करने से अब मुझे कोई दुख नहीं लगता ॥ ३॥

ਚਿਤਵਉ ਚਿਤ ਨਾਥ ਚਿਤਵਉ ਚਿਤ ਨਾਥ ਹੇ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਸਰਣਿ ਅਨਾਥ ਹੇ ਮਿਲੁ ਚਾਉ ਚਾਈਲੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥

चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥

मैं अपने चित्त में नाथ को ही याद करता हूँ, हे नाथ ! मुझ अनाथ को अपनी शरण में रखो, तुझे मिलकर मुझे बहुत चाव होता है और मेरे प्राणों को तेरी ही चाहत है।

ਸੁੰਦਰ ਤਨ ਧਿਆਨ ਸੁੰਦਰ ਤਨ ਧਿਆਨ ਹੇ ਮਨੁ ਲੁਬਧ ਗੋਪਾਲ ਗਿਆਨ ਹੇ ਜਾਚਿਕ ਜਨ ਰਾਖਤ ਮਾਨ ॥

सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥

हे प्रभु ! तेरे सुन्दर तन पर ही मेरा ध्यान लगा हुआ है, हे गोपाल ! तेरे ज्ञान ने मेरा मन मोहित कर दिया है, तुम ही अपने याचक सेवकों का मान-सम्मान बरकरार रखते हो।

ਪ੍ਰਭ ਮਾਨ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਬਿਦੀਰਨ ਸਗਲ ਇਛ ਪੁਜੰਤੀਆ ॥

प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥

हे प्रभु ! तुम ही पूर्ण मान-सम्मान प्रदान करते हो, दु:खों का भी तुम नाश करते हो, मेरी समस्त इच्छाएँ तुमने पूरी कर दी हैं।

ਹਰਿ ਕੰਠਿ ਲਾਗੇ ਦਿਨ ਸਭਾਗੇ ਮਿਲਿ ਨਾਹ ਸੇਜ ਸੋਹੰਤੀਆ ॥

हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥

वह दिन बड़ा भाग्यवान था, जब प्रभु ने मुझे अपने गले से लगाया, अपने कांत प्रभु को मिलने से मेरी हृदय रूपी सेज सुन्दर हो गई है।

ਪ੍ਰਭ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਧਾਰੀ ਮਿਲੇ ਮੁਰਾਰੀ ਸਗਲ ਕਲਮਲ ਭਏ ਹਾਨ ॥

प्रभ द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥

जब प्रभु ने कृपा-दृष्टि धारण की तो वह मुरारि प्रभु मुझे आ मिला और तब मेरे सभी पाप नष्ट हो गए।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਆਸ ਪੂਰਨ ਮਿਲੇ ਸ੍ਰੀਧਰ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ॥੪॥੧॥੧੪॥

बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥४॥१॥१४॥

नानक वन्दना करता है कि मेरी आशा पूर्ण हो गई है क्योंकि गुणों के भण्डार श्रीधर प्रभु मुझे मिल गए हैं॥ ४॥ १॥ १४ ॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
सबका मालिक वह परमपिता एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला है। वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं, वस्तुतः सब पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
आसा महला १ ॥
आसा महला १ ॥

ਵਾਰ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ ਸਲੋਕ ਭੀ ਮਹਲੇ ਪਹਿਲੇ ਕੇ ਲਿਖੇ ਟੁੰਡੇ ਅਸ ਰਾਜੈ ਕੀ ਧੁਨੀ ॥
वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥
वार श्लोकों सहित। श्लोक भी महला पहला के लिखे गए हैं। पौड़ियां ढूंढे असराज की ध्वनि पर गायन करना |

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਦਿਉਹਾੜੀ ਸਦ ਵਾਰ ॥
बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
मैं अपने उस गुरु पर दिन में सौ बार बलिहारी जाता हूँ,"

ਜਿਨਿ ਮਾਣਸ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਕੀਏ ਕਰਤ ਨ ਲਾਗੀ ਵਾਰ ॥੧॥
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥
जिसने मनुष्य को देवता बनाने में कोई विलम्ब नहीं किया ॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਜੇ ਸਉ ਚੰਦਾ ਉਗਵਹਿ ਸੂਰਜ ਚੜਹਿ ਹਜਾਰ ॥
जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
यदि सौ चन्द्रमा उदित हो जाएँ और हजारों ही सूर्य का उजाला हो जाए तो भी

ਏਤੇ ਚਾਨਣ ਹੋਦਿਆਂ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰ ॥੨॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥
संसार में इतना प्रकाश होते हुए भी गुरु के बिना घोर अंधकार ही होगा ॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਨ ਚੇਤਨੀ ਮਨਿ ਆਪਣੈ ਸੁਚੇਤ ॥
नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥
हे नानक ! जो मनुष्य अपने गुरु को याद नहीं करते और अपने मन में चतुर होने का दावा करते हैं,

ਛੁਟੇ ਤਿਲ ਬੂਆੜ ਜਿਉ ਸੁੰਞੇ ਅੰਦਰਿ ਖੇਤ ॥
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥
वे निरर्थक तिलों की भाँति व्यर्थ समझकर सूने खेतों में, फेंक दिए जाते हैं।

ਖੇਤੈ ਅੰਦਰਿ ਛੁਟਿਆ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਉ ਨਾਹ ॥
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥
गुरु नानक कहते हैं कि वे निरर्थक तिल खेत में छोड़ दिए जाते हैं और उनके सौ स्वामी बन जाते हैं।

ਫਲੀਅਹਿ ਫੁਲੀਅਹਿ ਬਪੁੜੇ ਭੀ ਤਨ ਵਿਚਿ ਸੁਆਹ ॥੩॥
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥
वे बेचारे फलते-फूलते हैं परन्तु फिर भी उनके तन में राख ही होती है।॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਆਪੀਨੈ੍ ਆਪੁ ਸਾਜਿਓ ਆਪੀਨੈ੍ ਰਚਿਓ ਨਾਉ ॥
आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
भगवान स्वयंभू है, उसने स्वयं ही अपने आपको बनाया तथा स्वयं ही उसने अपना नाम रचा है।

ਦੁਯੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਾਜੀਐ ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਉ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
दूसरा उसने कुदरत की रचना की और इसमें आसन करके वह चाव से अपना जगत प्रसार देखता है।

ਦਾਤਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਤੂੰ ਤੁਸਿ ਦੇਵਹਿ ਕਰਹਿ ਪਸਾਉ ॥
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥
हे भगवान ! तू स्वयं ही दाता एवं जग का रचयिता है, तू प्रसन्न होकर जीवों को देन देता है एवं अपनी कुदरत का प्रसार करता है।

ਤੂੰ ਜਾਣੋਈ ਸਭਸੈ ਦੇ ਲੈਸਹਿ ਜਿੰਦੁ ਕਵਾਉ ॥
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥
हे प्रभु ! तू सबको जानने वाला है, अपनी रज़ा में ही तू जीवों को प्राण देता एवं प्राण लेता है।

ਕਰਿ ਆਸਣੁ ਡਿਠੋ ਚਾਉ ॥੧॥
करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥
अपनी कुदरत का कौतुक तू उसी में आसन करके चाव से देख रहा है॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਖੰਡ ਸਚੇ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ॥
सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
हे प्रभु ! तेरी रचना के समस्त खंड-ब्रह्माण्ड सत्य हैं।

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਲੋਅ ਸਚੇ ਆਕਾਰ ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
तेरी रचना के चौदह लोक सत्य हैं और तेरी कुदरत के आकार (सूर्य, चन्द्रमा, तारे) भी सत्य हैं।

ਸਚੇ ਤੇਰੇ ਕਰਣੇ ਸਰਬ ਬੀਚਾਰ ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
तेरे समस्त कार्य एवं सर्व विचार सत्य हैं।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਅਮਰੁ ਸਚਾ ਦੀਬਾਣੁ ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
तेरा हुक्म और तेरा दरबार सत्य है।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਸਚਾ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥
तेरा आदेश और तेरा फुरमान सत्य है।

ਸਚਾ ਤੇਰਾ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥
हे प्रभु ! तेरा करम सत्य है और नाम रूपी परवाना भी सत्य है।

ਸਚੇ ਤੁਧੁ ਆਖਹਿ ਲਖ ਕਰੋੜਿ ॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥
लाखों-करोड़ों ही तुझे सत्य कहते हैं।

ਸਚੈ ਸਭਿ ਤਾਣਿ ਸਚੈ ਸਭਿ ਜੋਰਿ ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सत्य (प्रभु) में ही समस्त बल एवं समस्त शक्ति है।

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਸਿਫਤਿ ਸਚੀ ਸਾਲਾਹ ॥
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥
तेरी महिमा और तेरी शोभा सत्य है।

ਸਚੀ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਚੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
हे सच्चे पातशाह ! तेरी यह कुदरत सत्य है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਇਨਿ ਸਚੁ ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
हे नानक ! जो परम सत्य प्रभु का ध्यान करते हैं, वे भी सत्य हैं।

ਜੋ ਮਰਿ ਜੰਮੇ ਸੁ ਕਚੁ ਨਿਕਚੁ ॥੧॥
जो मरि जमे सु कचु निकचु ॥१॥
लेकिन जो जीव जन्मते और मरते रहते हैं वे बिल्कुल कच्चे हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਵਡਾ ਨਾਉ ॥
वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
उस परमात्मा की महिमा बहुत बड़ी है, जिसका नाम सारे विश्व में बहुत बड़ा है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਸਚੁ ਨਿਆਉ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
भगवान की उपमा बहुत बड़ी है, जिसका न्याय सत्य है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਨਿਹਚਲ ਥਾਉ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
उस मालिक की बड़ाई इसलिए भी बड़ी है, क्योंकि उसका आसन अटल है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾਣੈ ਆਲਾਉ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
उसकी महानता इसलिए भी बड़ी है क्योंकि वह अपने भक्तों की बात को जानता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਬੁਝੈ ਸਭਿ ਭਾਉ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
प्रभु का बड़प्पन इसलिए भी बड़ा है क्योंकि वह समस्त लोगों की प्रेम-भावना बूझ लेता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਪੁਛਿ ਨ ਦਾਤਿ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥
प्रभु की प्रशंसा बहुत बड़ी है क्योंकि वह किसी से परामर्श किए बिना अपनी देन प्रदान करता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਜਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥
उसकी बड़ाई इसलिए भी बड़ी है क्योंकि सब कुछ वह आप ही है।

ਨਾਨਕ ਕਾਰ ਨ ਕਥਨੀ ਜਾਇ ॥
नानक कार न कथनी जाइ ॥
हे नानक ! उस प्रभु के कार्यों की व्याख्या नहीं की जा सकती।

ਕੀਤਾ ਕਰਣਾ ਸਰਬ ਰਜਾਇ ॥੨॥
कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥
जो कुछ परमात्मा ने किया है, कर रहा है अथवा जो कुछ करेगा सब उसकी अपनी रज़ा है॥ २॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਚੈ ਕੀ ਹੈ ਕੋਠੜੀ ਸਚੇ ਕਾ ਵਿਚਿ ਵਾਸੁ ॥
इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
यह जगत सच्चे प्रभु का घर है और उस परम सत्य का ही इसमें निवास है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਇ ਲਏ ਇਕਨ੍ਹਾ ਹੁਕਮੇ ਕਰੇ ਵਿਣਾਸੁ ॥
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥
कुछ जीवों को वह अपने हुक्म द्वारा स्वयं में लीन कर लेता है और कई जीवों का अपने हुक्म द्वारा नाश कर देता है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਭਾਣੈ ਕਢਿ ਲਏ ਇਕਨ੍ਹਾ ਮਾਇਆ ਵਿਚਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥
अपनी रज़ा से कुछ जीवों को वह माया से बाहर निकाल लेता है और कुछ लोगों का माया के जंजाल में निवास कर देता है।

ਏਵ ਭਿ ਆਖਿ ਨ ਜਾਪਈ ਜਿ ਕਿਸੈ ਆਣੇ ਰਾਸਿ ॥
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥
यह भी कहा नहीं जा सकता कि वह किसे संवार देगा।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਕਉ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੩॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥
हे नानक ! यह भेद गुरु द्वारा ही जाना जाता है, जिसे परमात्मा खुद ज्ञान का प्रकाश करता है॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨਾਨਕ ਜੀਅ ਉਪਾਇ ਕੈ ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥
नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥
हे नानक ! ईश्वर ने जीवों को उत्पन्न करके उनको कर्मो का लेखा-जोखा करने के लिए धर्मराज को नियुक्त किया है।

ਓਥੈ ਸਚੇ ਹੀ ਸਚਿ ਨਿਬੜੈ ਚੁਣਿ ਵਖਿ ਕਢੇ ਜਜਮਾਲਿਆ ॥
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥
वहाँ धर्मराज के समक्ष सत्यानुसार ही निर्णय होता है और दुष्ट पापियों को चुनकर अलग कर दिया जाता है।

ਥਾਉ ਨ ਪਾਇਨਿ ਕੂੜਿਆਰ ਮੁਹ ਕਾਲ੍ਹੈ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ॥
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥
झूठों को वहाँ स्थान नहीं मिलता और मुँह काला करके उन्हें नरक में धकेल दिया जाता है।

ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਰਤੇ ਸੇ ਜਿਣਿ ਗਏ ਹਾਰਿ ਗਏ ਸਿ ਠਗਣ ਵਾਲਿਆ ॥
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥
हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरे नाम में अनुरक्त हैं, वे जीत जाते हैं और जो ठग हैं वे हार जाते हैं।

ਲਿਖਿ ਨਾਵੈ ਧਰਮੁ ਬਹਾਲਿਆ ॥੨॥
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥
प्रभु ने धर्मराज को जीवों के कर्मों का लेखा लिखने हेतु नियुक्त किया है।॥ २॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਦ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵੇਦ ॥
विसमादु नाद विसमादु वेद ॥
हे प्रभु ! तेरे पैदा किए हुए नाद एवं तेरे रचे हुए वेद आश्चर्यजनक हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਜੀਅ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੇਦ ॥
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥
तेरे पैदा किए हुए जीव एवं जीवों में पैदा किए भेद भी विचित्र हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੂਪ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੰਗ ॥
विसमादु रूप विसमादु रंग ॥
विभिन्न प्रकार के रूप एवं रंग बड़े अदभुत हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਗੇ ਫਿਰਹਿ ਜੰਤ ॥
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥
वे जीव जो नग्न घूमते हैं, सब विस्मयबोधी हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਉਣੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਾਣੀ ॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥
पवन और जल भी विस्मय का कारण है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਅਗਨੀ ਖੇਡਹਿ ਵਿਡਾਣੀ ॥
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥
बड़ी हैरानी है कि अनेक प्रकार की अग्नियाँ अदभुत खेलें खेलती हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਧਰਤੀ ਵਿਸਮਾਦੁ ਖਾਣੀ ॥
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥
धरती का वजूद भी हैरानी का विषय है और जीवों की उत्पत्ति के चारों स्रोत भी हैरान कर रहे हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਦਿ ਲਗਹਿ ਪਰਾਣੀ ॥
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥
जीव जिन पदार्थों के स्वाद में लगे हुए हैं, ये भी विस्मयकारक हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥
संयोग और वियोग भी विचित्र हैं।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੁਖ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੋਗੁ ॥
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
संसार की भूख एवं भोग-विलास भी हैरानी का कारण बनी हुई है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਿਫਤਿ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਲਾਹ ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥
भगवान की महिमा-स्तुति भी आश्चर्यजनक है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਉਝੜ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰਾਹ ॥
विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥
इन्सान का कुमार्गगामी होना और सन्मार्ग पर आ जाना भी विचित्र है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਨੇੜੈ ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੂਰਿ ॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥
यह एक बड़ा ही विस्मय का विषय है कि परमात्मा जीवों के पास भी है और उनसे दूर भी है।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੇਖੈ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ॥
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥
वे भक्त अदभुत हैं जो परमात्मा को अपने नेत्रों से प्रत्यक्ष देखते हैं।

ਵੇਖਿ ਵਿਡਾਣੁ ਰਹਿਆ ਵਿਸਮਾਦੁ ॥
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥
नानक का कथन है कि हे मालिक ! तेरी कुदरत का बड़ा विस्मय देखकर मैं आश्चर्यचकित हो रहा हूँ।

ਨਾਨਕ ਬੁਝਣੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥੧॥
नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥
तेरी कुदरत के इस अदभुत कौतुक को पूर्ण भाग्यवान ही समझ सकता है। १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਕੁਦਰਤਿ ਦਿਸੈ ਕੁਦਰਤਿ ਸੁਣੀਐ ਕੁਦਰਤਿ ਭਉ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥
कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥
जो कुछ दिखाई देता है और सुना जा रहा है, यह सब कुदरत के अन्तर्गत ही है, कुदरत अनुसार ही भय एवं सुख का सार है।

ਕੁਦਰਤਿ ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸੀ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਆਕਾਰੁ ॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥
आकाश, पाताल में कुदरत ही मौजूद है और यह सारी सृष्टि रचना कुदरत के अनुरूप ही है।

ਕੁਦਰਤਿ ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਕਤੇਬਾ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥
कुदरत द्वारा ही वेद, पुराण, शरीयत इत्यादि धार्मिक ग्रंथ हैं और कुदरत अनुसार ही सर्व विचार हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਪੈਨ੍ਹਣੁ ਕੁਦਰਤਿ ਸਰਬ ਪਿਆਰੁ ॥
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥
कुदरत अनुसार ही खाना, पीना एवं पहनना है, कुदरत द्वारा ही हर तरफ प्रेम-भावना है।

ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਰੰਗੀ ਕੁਦਰਤਿ ਜੀਅ ਜਹਾਨ ॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥
कुदरत अनुसार ही जगत के जीवों में जातियाँ, रंग एवं प्रकार हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਨੇਕੀਆ ਕੁਦਰਤਿ ਬਦੀਆ ਕੁਦਰਤਿ ਮਾਨੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥
कुदरत अनुसार ही अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ हैं, कुदरत अनुसार ही मान एवं अभिमान है।

ਕੁਦਰਤਿ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਕੁਦਰਤਿ ਧਰਤੀ ਖਾਕੁ ॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥
कुदरत अनुसार ही पवन, पानी एवं अग्नि है, कुदरत अनुसार ही धरती एवं मिट्टी है।

ਸਭ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਤੂੰ ਕਾਦਿਰੁ ਕਰਤਾ ਪਾਕੀ ਨਾਈ ਪਾਕੁ ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥
हे प्रभु! यह सब तेरी कुदरत है, तू अपनी कुदरत का मालिक एवं रचयिता है और अपने पावन नाम के कारण तेरी बड़ी महिमा है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਵੇਖੈ ਵਰਤੈ ਤਾਕੋ ਤਾਕੁ ॥੨॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥
हे नानक ! प्रभु अपने हुक्म अनुसार अपनी सृष्टि को देखता एवं क्रियाशील है, वह सर्वव्यापक है एवं अपने विधान अनुसार ही सबकुछ करता है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਪੀਨੈ੍ ਭੋਗ ਭੋਗਿ ਕੈ ਹੋਇ ਭਸਮੜਿ ਭਉਰੁ ਸਿਧਾਇਆ ॥
आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥
मनुष्य जगत में अपने भोग भोगकर मरणोपरांत ढेरी हो जाता है अर्थात् आत्मा चली जाती है।

ਵਡਾ ਹੋਆ ਦੁਨੀਦਾਰੁ ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥
जब मनुष्य दुनिया के धंधों में बड़ा मानकर चला जाता है तो उसकी गर्दन में जंजीर डाल दी जाती है और उसे आगे धकेल दिया जाता है।

ਅਗੈ ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਵਾਚੀਐ ਬਹਿ ਲੇਖਾ ਕਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥
वहाँ उसके कर्मो का विचार किया जाता है और उसे बिठा कर उसका लेखा समझाया जाता है।

ਥਾਉ ਨ ਹੋਵੀ ਪਉਦੀਈ ਹੁਣਿ ਸੁਣੀਐ ਕਿਆ ਰੂਆਇਆ ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
जब उसे दण्ड मिलता है तो उसे कोई स्थान नहीं मिलता, अब उसका रोना भी कौन सुनेगा ?

ਮਨਿ ਅੰਧੈ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੩॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥
ज्ञानहीन मनुष्य ने अपना दुर्लभ जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर लिया ॥ ३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਭੈ ਵਿਚਿ ਪਵਣੁ ਵਹੈ ਸਦਵਾਉ ॥
भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
प्रभु के भय में अनेक प्रकार की पवन हमेशा चलती रहती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਚਲਹਿ ਲਖ ਦਰੀਆਉ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
परमात्मा के भय में ही लाखों दरिया बहते हैं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਅਗਨਿ ਕਢੈ ਵੇਗਾਰਿ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
उसके भय में ही अग्नि अपना कार्य करती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਦਬੀ ਭਾਰਿ ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥
भय में ही घरती भार के नीचे दबी रहती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਇੰਦੁ ਫਿਰੈ ਸਿਰ ਭਾਰਿ ॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
परमेश्वर के आदेश में ही इन्द्र बादल बनकर सिर पर बोझ लिए चलता फिरता है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਰਾਜਾ ਧਰਮ ਦੁਆਰੁ ॥
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥
भय में ही धर्मराज उसके द्वार पर खड़ा है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਸੂਰਜੁ ਭੈ ਵਿਚਿ ਚੰਦੁ ॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥
प्रभु के भय में ही सूर्य एवं चंद्रमा सक्रिय हैं।

ਕੋਹ ਕਰੋੜੀ ਚਲਤ ਨ ਅੰਤੁ ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥
करोड़ों कोस चलते रहने के पश्चात् भी उनकी यात्रा का कोई अन्त नहीं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਸਿਧ ਬੁਧ ਸੁਰ ਨਾਥ ॥
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥
सिद्ध, बुद्ध, देवते एवं नाथ-योगी ईश्वर के भय में ही विचरण करते हैं।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਡਾਣੇ ਆਕਾਸ ॥
भै विचि आडाणे आकास ॥
भय में ही आकाश चारों ओर फैला हुआ है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰ ॥
भै विचि जोध महाबल सूर ॥
प्रभु के भय में ही बड़े-बड़े योद्धा, महाबली एवं शूरवीर क्रियाशील हैं

ਭੈ ਵਿਚਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਪੂਰ ॥
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥
प्रभु के भय में ही झुण्ड के झुण्ड जन्मते-मरते रहते हैं।

ਸਗਲਿਆ ਭਉ ਲਿਖਿਆ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
प्रभु ने अपने भय में ही सबका भाग्य निश्चित कर रखा है।

ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਸਚੁ ਏਕੁ ॥੧॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥
हे नानक ! एक सत्यस्वरूप निरंकार परमात्मा ही निर्भय है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਨਕ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਰਾਮ ਰਵਾਲ ॥
नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
हे नानक ! एक निरंकार प्रभु ही निडर है, अन्य तो राम जैसे कितने ही उसके चरणों की धूल हैं।

ਕੇਤੀਆ ਕੰਨ੍ ਕਹਾਣੀਆ ਕੇਤੇ ਬੇਦ ਬੀਚਾਰ ॥
केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
कृष्ण-कन्हैया की लीला की अनेक कहानियों दुनिया में प्रचलित हैं और कितने ही पण्डित वेदों का उच्चारण करने वाले हैं।

ਕੇਤੇ ਨਚਹਿ ਮੰਗਤੇ ਗਿੜਿ ਮੁੜਿ ਪੂਰਹਿ ਤਾਲ ॥
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥
अनेक भिखारी नाचने वाले हैं और बार-बार ताल पर झूमते हैं।

ਬਾਜਾਰੀ ਬਾਜਾਰ ਮਹਿ ਆਇ ਕਢਹਿ ਬਾਜਾਰ ॥
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥
रासधारी बाजार में आते हैं और झूठी रास दिखाते हैं।

ਗਾਵਹਿ ਰਾਜੇ ਰਾਣੀਆ ਬੋਲਹਿ ਆਲ ਪਤਾਲ ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥
वे राजे-रानियाँ बनकर गाते हैं और उल्ट-पुल्ट बोलते हैं।

ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਮੁੰਦੜੇ ਲਖ ਟਕਿਆ ਕੇ ਹਾਰ ॥
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥
वे लाखों रुपए के कानों के कुण्डल एवं लाखों रुपए के हार पहनते हैं।

ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਪਾਈਅਹਿ ਨਾਨਕਾ ਸੇ ਤਨ ਹੋਵਹਿ ਛਾਰ ॥
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥
हे नानक ! जिन शरीरों पर वे आभूषण पहनते हैं, वह शरीर तो राख बन जाते हैं।

ਗਿਆਨੁ ਨ ਗਲੀਈ ਢੂਢੀਐ ਕਥਨਾ ਕਰੜਾ ਸਾਰੁ ॥
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥
ज्ञान की प्राप्ति केवल बातों से नहीं होती, इसका कथन करना लोहे की भाँति कठिन है।

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਪਾਈਐ ਹੋਰ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮੁ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥
यदि भगवान की मेहर हो जाए तो ही ज्ञान प्राप्त होता है, अन्य चतुराई एवं छल-कपट तो नाश करने वाले हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਨਦਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
यदि दयालु प्रभु करुणा-दृष्टि धारण करे तो उसकी कृपा से सच्चे गुरु की लब्धि होती है।

ਏਹੁ ਜੀਉ ਬਹੁਤੇ ਜਨਮ ਭਰੰਮਿਆ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
यह जीवात्मा अनेक जन्मों में भटकती रही, परन्तु सतिगुरु की शरण में आने से उसे सतिगुरु ने शब्द का भेद सुनाया।

ਸਤਿਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਕੋ ਨਹੀ ਸਭਿ ਸੁਣਿਅਹੁ ਲੋਕ ਸਬਾਇਆ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
हे संसार के सब लोगो ! ध्यान से सुनो, सतिगुरु जैसा बड़ा कोई दाता नहीं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जो मनुष्य अपने मन से अहंत्व मिटा देता है उसे सतिगुरु मिलता है और सच्चे गुरु के माध्यम से सत्य की प्राप्ति होती है।

ਜਿਨਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥੪॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥
सच्चा गुरु ही सत्य के रहस्य को समझाता है॥ ४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਘੜੀਆ ਸਭੇ ਗੋਪੀਆ ਪਹਰ ਕੰਨ੍ਹ ਗੋਪਾਲ ॥
घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥
"(जैसे रासधारी रास करते हैं, वैसे ही परमात्मा की भी रासलीला हो रही है।) इस रासलीला में घड़ियों नृत्य करने वाली गोपियाँ हैं और सारे प्रहर कान्हा-गोपाल है।

ਗਹਣੇ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਅਵਤਾਰ ॥
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥
पवन, पानी एवं अग्नि इस रास लीला के पात्रों के आभूषण हैं और सूर्य एवं चाँद स्वांग धारण करने वाले नट हैं।

ਸਗਲੀ ਧਰਤੀ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਵਰਤਣਿ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥
सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥
समस्त धरती नाटक करने वालों का माल, धन है परन्तु ये सभी जंजाल ही हैं।

ਨਾਨਕ ਮੁਸੈ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਖਾਇ ਗਇਆ ਜਮਕਾਲੁ ॥੧॥
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥
हे नानक ! ज्ञान से विहीन दुनिया इस नाटक में लुट जाती है और यमदूत उसे अपना ग्रास बना लेता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਵਾਇਨਿ ਚੇਲੇ ਨਚਨਿ ਗੁਰ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
(समाज की अदभुत विडम्बना है कि) चेले ताल बजाते हैं और उनके गुरु नाचते हैं।

ਪੈਰ ਹਲਾਇਨਿ ਫੇਰਨ੍ਹਿ ਸਿਰ ॥
पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥
वह धुंघरु बांधकर अपने पैर हिलाते हैं और मस्त होकर अपना सिर घुमाते हैं।

ਉਡਿ ਉਡਿ ਰਾਵਾ ਝਾਟੈ ਪਾਇ ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
उनके सिर के बालों पर उड़-उड़कर धूल पड़ती है।

ਵੇਖੈ ਲੋਕੁ ਹਸੈ ਘਰਿ ਜਾਇ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
यह तमाशा देखकर लोग हँसते हैं और घर को चले जाते हैं।

ਰੋਟੀਆ ਕਾਰਣਿ ਪੂਰਹਿ ਤਾਲ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
रोटी के कारण वे ताल मिलाते हैं

ਆਪੁ ਪਛਾੜਹਿ ਧਰਤੀ ਨਾਲਿ ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
वह अपने आपको धरती पर पछाड़ते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਗੋਪੀਆ ਗਾਵਨਿ ਕਾਨ੍ ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
(संसार के मंच पर नाटक करने वाले जीव) गोपियों एवं कान्हा बनकर गाते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਸੀਤਾ ਰਾਜੇ ਰਾਮ ॥
गावनि सीता राजे राम ॥
सीता, राजा राम बनकर गाते हैं।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
किन्तु निर्भय, निरंकार प्रभु का ही नाम सत्य है

ਜਾ ਕਾ ਕੀਆ ਸਗਲ ਜਹਾਨੁ ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
जिसने समूची सृष्टि की रचना की है।

ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਕਰਮਿ ਚੜਾਉ ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
जिन सेवकों का भाग्य उदय होता है, वे प्रभु की सेवा करते हैं।

ਭਿੰਨੀ ਰੈਣਿ ਜਿਨ੍ਹ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥
भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥
जिनके मन में प्रभु प्रेम का चाव है उनकी रात्रि सुहावनी हो जाती है।

ਸਿਖੀ ਸਿਖਿਆ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
जिन्होंने गुरु विचारधारा द्वारा यह शिक्षा सीख ली है,

ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਲਘਾਏ ਪਾਰਿ ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
दयालु स्वामी अपनी कृपा-दृष्टि से ही उन्हें मुक्ति प्रदान कर देता है।

ਕੋਲੂ ਚਰਖਾ ਚਕੀ ਚਕੁ ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
अनेकों ही कोल्हू, चरखा, चक्कियों एवं चाक हैं।

ਥਲ ਵਾਰੋਲੇ ਬਹੁਤੁ ਅਨੰਤੁ ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
मारूथल के बवन्डर भी अनन्त हैं।

ਲਾਟੂ ਮਾਧਾਣੀਆ ਅਨਗਾਹ ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
अनेकों ही लट्टू, मधानियाँ एवं अन्न निकालने के यन्त्र हैं।

ਪੰਖੀ ਭਉਦੀਆ ਲੈਨਿ ਨ ਸਾਹ ॥
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥
पक्षी घूमते हुए दम नहीं लेते।

ਸੂਐ ਚਾੜਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਜੰਤ ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥
कई यंत्र लोहे के शूल पर चढ़ाकर घुमाए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਭਉਦਿਆ ਗਣਤ ਨ ਅੰਤ ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥
हे नानक ! घूमने वाले एवं यंत्रों की गणना का कोई अन्त नहीं।

ਬੰਧਨ ਬੰਧਿ ਭਵਾਏ ਸੋਇ ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥
जो प्राणी माया के बन्धनों में फंस जाते हैं, उन्हें धर्मराज ऐसे ही कर्मों के अनुसार घुमाता है।

ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਨਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥
अपने किए कर्मों अनुसार ही प्रत्येक जीव नृत्य करता है।

ਨਚਿ ਨਚਿ ਹਸਹਿ ਚਲਹਿ ਸੇ ਰੋਇ ॥
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥
जगत की मोहिनी में फँसकर जो नाच-नाचकर हँसता है वह मृत्यु के समय रोता है।

ਉਡਿ ਨ ਜਾਹੀ ਸਿਧ ਨ ਹੋਹਿ ॥
उडि न जाही सिध न होहि ॥
वे उड़कर भी बच नहीं सका और न ही कोई सिद्धि हासिल कर सकता है।

ਨਚਣੁ ਕੁਦਣੁ ਮਨ ਕਾ ਚਾਉ ॥
नचणु कुदणु मन का चाउ ॥
नाचना एवं कूदना मन का चाव है।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਭਉ ਤਿਨ੍ਾ ਮਨਿ ਭਾਉ ॥੨॥
नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥
हे नानक ! जिनके हृदय में प्रभु का भय विद्यमान है, उनके हृदय में ही उसका प्रेम है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੈ ਨਾਇ ਲਇਐ ਨਰਕਿ ਨ ਜਾਈਐ ॥
नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥
हे प्रभु ! तेरा नाम निरंकार है और तेरा नाम याद करने रो मनुष्य नरक में नहीं जाता।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਦਾ ਦੇ ਖਾਜੈ ਆਖਿ ਗਵਾਈਐ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥
प्राण एवं तन उस प्रभु के दिए हुए हैं, जो कुछ वह देता है, जीव वही कुछ खाता है। अन्य कुछ कहना निरर्थक है।

ਜੇ ਲੋੜਹਿ ਚੰਗਾ ਆਪਣਾ ਕਰਿ ਪੁੰਨਹੁ ਨੀਚੁ ਸਦਾਈਐ ॥
जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥
हे प्राणी ! यदि तू अपना भला चाहता है तो पुण्य कर्म कर और नीच (विनीत) कहलवा अर्थात् विनीत रहना चाहिए।

ਜੇ ਜਰਵਾਣਾ ਪਰਹਰੈ ਜਰੁ ਵੇਸ ਕਰੇਦੀ ਆਈਐ ॥

जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥

यदि कोई जोरावर इन्सान बुढ़ापे को दूर रखना चाहे तो भी बुढ़ापा अपना वेष धारण करके आ ही जाता है।

ਕੋ ਰਹੈ ਨ ਭਰੀਐ ਪਾਈਐ ॥੫॥

को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥

जब मनुष्य के जीवन की घड़ियाँ पूरी हो जाती हैं तो दुनिया में कोई नहीं रह सकता अर्थात् आयु पूर्ण होने के बाद मृत्यु ही प्राप्त होती है।॥ ५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥

सलोक मः १ ॥

श्लोक महला १॥

ਮੁਸਲਮਾਨਾ ਸਿਫਤਿ ਸਰੀਅਤਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥

मुसलमानों को शरीअत की प्रशंसा सबसे अच्छी लगती है और वे उसे पढ़-पढ़कर विचार करते हैं (अर्थात् शरीअत को ऊँचा मानते हुए उसे ही कानून समझते हैं)।

ਬੰਦੇ ਸੇ ਜਿ ਪਵਹਿ ਵਿਚਿ ਬੰਦੀ ਵੇਖਣ ਕਉ ਦੀਦਾਰੁ ॥

बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥

मुसलमानों का यही मानना है कि खुदा का प्यारा बन्दा वही है जो अल्लाह के दर्शन-दीदार करने हेतु शरीअत की बन्दिश में पड़ता है।

ਹਿੰਦੂ ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਨਿ ਦਰਸਨਿ ਰੂਪਿ ਅਪਾਰੁ ॥

हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥

हिन्दू शास्त्र द्वारा प्रशंसनीय भगवान की स्तुति करते हैं, जिसका रूप बेअंत सुन्दर है।

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਹਿ ਅਰਚਾ ਪੂਜਾ ਅਗਰ ਵਾਸੁ ਬਹਕਾਰੁ ॥

तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥

वे तीर्थ-स्थानों पर स्नान करते, देवताओं की मूर्तियों की पूजा-अर्चना करते हैं और चन्दन की सुगन्धि का प्रयोग करते हैं।

ਜੋਗੀ ਸੁੰਨਿ ਧਿਆਵਨ੍ਹਿ ਜੇਤੇ ਅਲਖ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ॥

जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥

योगी समाधि लगाकर निर्गुण प्रभु का ध्यान करते हैं और करतार को 'अलख' नाम से पुकारते हैं।

ਸੂਖਮ ਮੂਰਤਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਕਾਇਆ ਕਾ ਆਕਾਰੁ ॥
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥
अलक्ष्य प्रभु का रूप सूक्ष्म है, उसका नाम निरंजन है और यह दुनिया ही उसका शरीर है।

ਸਤੀਆ ਮਨਿ ਸੰਤੋਖੁ ਉਪਜੈ ਦੇਣੈ ਕੈ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥
दानी के मन में संतोष उत्पन्न होता है और वह दान देने के बारे में विचार करते हैं।

ਦੇ ਦੇ ਮੰਗਹਿ ਸਹਸਾ ਗੂਣਾ ਸੋਭ ਕਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥
परन्तु दिए दान के फलस्वरूप हजारों गुणा माँगता है और अभिलाषा करता है कि संसार उसकी शोभा करता रहे।

ਚੋਰਾ ਜਾਰਾ ਤੈ ਕੂੜਿਆਰਾ ਖਾਰਾਬਾ ਵੇਕਾਰ ॥
चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥
चोर, व्यभिचारी तथा झूठे आचरण वाले पापी विकारी ऐसे लोग भी हैं,

ਇਕਿ ਹੋਦਾ ਖਾਇ ਚਲਹਿ ਐਥਾਊ ਤਿਨਾ ਭਿ ਕਾਈ ਕਾਰ ॥
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥
जो कुछ उनके पास था, कर्म-फल भोगकर यहाँ से खाली ही चले जाते हैं। क्या उन्होंने कोई शुभ-कर्म किया ?"

ਜਲਿ ਥਲਿ ਜੀਆ ਪੁਰੀਆ ਲੋਆ ਆਕਾਰਾ ਆਕਾਰ ॥
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥
समुद्र, धरती, देवताओं की पुरियों, लोकों, सूर्य, चन्द्रमा एवं तारों वाले इस जगत में बेअंत जीव रहते हैं।

ਓਇ ਜਿ ਆਖਹਿ ਸੁ ਤੂੰਹੈ ਜਾਣਹਿ ਤਿਨਾ ਭਿ ਤੇਰੀ ਸਾਰ ॥
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
हे प्रभु ! यह जीव जो कुछ कहते हैं, तू उन्हें जानता है। तू ही उनका भरण-पोषण करता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਭੁਖ ਸਾਲਾਹਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥
हे नानक ! भक्तों को परमात्मा की महिमा-स्तुति करने की भूख लगी रहती है और उसका सत्य नाम ही उनका आधार है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਣਵੰਤਿਆ ਪਾ ਛਾਰੁ ॥੧॥
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥
वे गुणवान पवित्र-पुरुषों के चरणों की धूल बनकर रात-दिन सदा आनंद में रहते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਮਿਟੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੀ ਪੇੜੈ ਪਈ ਕੁਮ੍ਹਿਆਰ ॥
मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
मुसलमान जब मरता है तो उसे दफनाया जाता है और उसका शरीर मिट्टी बन जाता है लेकिन जब वह मिट्टी कुम्हार के पास आती है तो

ਘੜਿ ਭਾਂਡੇ ਇਟਾ ਕੀਆ ਜਲਦੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
वह इससे बर्तन एवं ईंटें बनाता है, यह जलती हुई मिट्टी चीखती-चिल्लाती है।

ਜਲਿ ਜਲਿ ਰੋਵੈ ਬਪੁੜੀ ਝੜਿ ਝੜਿ ਪਵਹਿ ਅੰਗਿਆਰ ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
बेचारी मिट्टी जल-जलकर रोती है और जलते हुए अंगारे उस पर गिरते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥੨॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥
गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जिस कर्ता प्रभु ने यह संसार बनाया है, वही इसका भेद जानता है कि जलाना भला है अथवा दफन करना ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सच्चे गुरु के बिना किसी भी मनुष्य को प्रभु प्राप्त नहीं हुआ और ना कभी होगा क्योंकि

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਆਪੁ ਰਖਿਓਨੁ ਕਰਿ ਪਰਗਟੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਇਆ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥
सतिगुरु के अन्तर्मन में प्रभु ने खुद को रखा हुआ है, मैंने यह तथ्य प्रत्यक्ष तौर पर कहकर सबको सुना दिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥
जिन्होंने अपने अन्तर से सांसारिक मोह को मिटा दिया है, वे सतिगुरु से मिलकर मुक्त हो गए हैं।

ਉਤਮੁ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥੬॥
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥
उत्तम विचार यही है केि जिसने अपना चित्त सत्य से लगा लिया है,उसने जगत का जीवनदाता प्रभु पा लिया है॥ ६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਹਉ ਵਿਚਿ ਆਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥
हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥
मनुष्य अहंकार में जगत में आया है और अहंकार में ही जगत से चला गया है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਜੰਮਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਮੁਆ ॥
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ ॥
उसने अहंकार में जन्म लिया था और अहंकार में ही मर गया है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਦਿਤਾ ਹਉ ਵਿਚਿ ਲਇਆ ॥
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥
अहंकार में ही उसने किसी को कुछ दिया था और अहंकार में ही किसी से कुछ लिया था।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਖਟਿਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਗਇਆ ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥
अहंकार में ही मनुष्य ने धन कमाया था और अहंकारवश ही वह गंवा गया था।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਚਿਆਰੁ ਕੂੜਿਆਰੁ ॥
हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥
अहंकारवश ही वह सत्यवादी और झूठा बन जाता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਵੀਚਾਰੁ ॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥
अहंकार में ही वह पाप एवं पुण्य का विचार करता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਨਰਕਿ ਸੁਰਗਿ ਅਵਤਾਰੁ ॥
हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥
अहंकार में ही मनुष्य नरक अथवा स्वर्ग में जन्म लेता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਹਸੈ ਹਉ ਵਿਚਿ ਰੋਵੈ ॥
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥
अहंकार में ही वह कभी हँसता है और अहंकारवश ही वह कभी रोता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਭਰੀਐ ਹਉ ਵਿਚਿ ਧੋਵੈ ॥
हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥
अहंत्व में उसकी मति पापों से भर जाती है और अहंत्व में ही अपने पापों को तीर्थ-स्नान द्वारा शुद्ध करता फिरता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਜਾਤੀ ਜਿਨਸੀ ਖੋਵੈ ॥
हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥
वह अहंत्व में अपनी जाति-पाति भी गंवा लेता है।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਮੂਰਖੁ ਹਉ ਵਿਚਿ ਸਿਆਣਾ ॥
हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥
अहंकार में ही मनुष्य मूर्ख एवं बुद्धिमान बनता है।

ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ॥
मोख मुकति की सार न जाणा ॥
लेकिन वह मोक्ष एवं मुक्ति के सार (रहस्य) को नहीं जानता।

ਹਉ ਵਿਚਿ ਮਾਇਆ ਹਉ ਵਿਚਿ ਛਾਇਆ ॥
हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥
वह अभिमान में ही माया को सत्य समझता है और अभिमान में ही इसे पेड़ की छाया की तरह झूठी समझता है।

ਹਉਮੈ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜੰਤ ਉਪਾਇਆ ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥
अहंकारवश ही प्राणी बार-बार योनियों में जन्म लेता है।

ਹਉਮੈ ਬੂਝੈ ਤਾ ਦਰੁ ਸੂਝੈ ॥
हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
यदि अहंकार दूर हो जाए तभी प्रभु का द्वार सूझता है।

ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣਾ ਕਥਿ ਕਥਿ ਲੂਝੈ ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥
अन्यथा ज्ञान-विहीन मनुष्य वाद-विवादों में ही उलझा रहता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੀ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੁ ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
हे नानक ! प्रभु के हुक्मानुसार मनुष्य की किस्मत का लेख लिखा जाता है।

ਜੇਹਾ ਵੇਖਹਿ ਤੇਹਾ ਵੇਖੁ ॥੧॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥
मनुष्य जैसी विचारधारा रखता है, वैसा ही सत्य को मानने लगता है॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਹਉਮੈ ਏਹਾ ਜਾਤਿ ਹੈ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
अहंकार का यह स्वभाव है कि मनुष्य अहंकार में ही कर्म करता है।

ਹਉਮੈ ਏਈ ਬੰਧਨਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹਿ ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
यह अहंकार जीव के बंधनों का कारण है, इसलिए जीव बार-बार योनियों में पड़ता है।

ਹਉਮੈ ਕਿਥਹੁ ਊਪਜੈ ਕਿਤੁ ਸੰਜਮਿ ਇਹ ਜਾਇ ॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
वास्तव में यह अहंकार कहाँ से उत्पन्न होता है और किस युक्ति द्वारा इस पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है।

ਹਉਮੈ ਏਹੋ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਫਿਰਾਹਿ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
प्रभु की रजा यह है कि अहंकार के कारण मनुष्य अपने पूर्व कर्मों के अनुसार भटकता रहे।

ਹਉਮੈ ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ਹੈ ਦਾਰੂ ਭੀ ਇਸੁ ਮਾਹਿ ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
अहंकार एक दीर्घ रोग है परन्तु इसका उपचार भी शामिल है।

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
यदि प्रभु कृपा-दृष्टि धारण करे तो मनुष्य गुरु के शब्द अनुसार कर्म करता है (यही इस रोग का उपचार है)।

ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਹੁ ਜਨਹੁ ਇਤੁ ਸੰਜਮਿ ਦੁਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥
नानक का कथन है कि हे लोगो ! सुनो, संयम द्वारा यह अहंकार दुःख का रोग निवृत्त हो जाता है।(संयम मुक्त भोग और पूर्ण त्याग के मध्य आत्मनियंत्रण की स्थिति है।) ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੇਵ ਕੀਤੀ ਸੰਤੋਖੀਈਂ ਜਿਨ੍ੀ ਸਚੋ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ॥
सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
जिन्होंने एक परम सत्य का ही ध्यान किया है, उन संतोषी व्यक्तियों ने ही परमात्मा की सेवा-भक्ति की है।

ਓਨ੍ਹੀ ਮੰਦੈ ਪੈਰੁ ਨ ਰਖਿਓ ਕਰਿ ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਧਰਮੁ ਕਮਾਇਆ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
वे कुमार्ग पर अपना पैर नहीं रखते और शुभ कर्म एवं धर्म कमाते हैं।

ਓਨ੍ਹੀ ਦੁਨੀਆ ਤੋੜੇ ਬੰਧਨਾ ਅੰਨੁ ਪਾਣੀ ਥੋੜਾ ਖਾਇਆ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
वे दुनिया के बन्धनों को तोड़ देते हैं और थोड़ा अन्न-पानी खाते हैं।

ਤੂੰ ਬਖਸੀਸੀ ਅਗਲਾ ਨਿਤ ਦੇਵਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
हे ईश्वर ! तू ही महान् दाता है, जो नित्य ही देनें देते रहता है।

ਵਡਿਆਈ ਵਡਾ ਪਾਇਆ ॥੭॥
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥
महान् प्रभु की गुणस्तुति करते हुए मनुष्य कीर्ति प्राप्त कर लेता है॥ ७ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਪੁਰਖਾਂ ਬਿਰਖਾਂ ਤੀਰਥਾਂ ਤਟਾਂ ਮੇਘਾਂ ਖੇਤਾਂਹ ॥
पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥
हे नानक ! पुरुषों, वृक्षों. तीर्थों, तटों, मेघों, खेतों,"

ਦੀਪਾਂ ਲੋਆਂ ਮੰਡਲਾਂ ਖੰਡਾਂ ਵਰਭੰਡਾਂਹ ॥
दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥
द्वीपों, लोकों, मृण्डलों, खण्डों-ब्रह्मण्डों,

ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਭੁਜਾਂ ਖਾਣੀ ਸੇਤਜਾਂਹ ॥
अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥
अंडज, जेरज, स्वेदज एवं उदभिज, ,"

ਸੋ ਮਿਤਿ ਜਾਣੈ ਨਾਨਕਾ ਸਰਾਂ ਮੇਰਾਂ ਜੰਤਾਹ ॥
सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥
सरोवर, पहाड़ों में रहने वाले सब जीवों की गणना परमात्मा ही जानता है कि कितनी है।

ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਸੰਮਾਲੇ ਸਭਨਾਹ ॥
नानक जंत उपाइ कै समाले सभनाह ॥
हे नानक ! भगवान ही जीवों को पैदा करके उनका भरण-पोषण करता है।

ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਚਿੰਤਾ ਭਿ ਕਰਣੀ ਤਾਹ ॥
जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥
जिस कर्ता ने सृष्टि-रचना की है वही इसकी चिन्ता एवं देखभाल करता है।

ਸੋ ਕਰਤਾ ਚਿੰਤਾ ਕਰੇ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ਜਗੁ ॥
सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥
वह कर्ता जिसने जगत की रचना की है, वह इसकी चिन्ता भी खुद ही करता है।

ਤਿਸੁ ਜੋਹਾਰੀ ਸੁਅਸਤਿ ਤਿਸੁ ਤਿਸੁ ਦੀਬਾਣੁ ਅਭਗੁ ॥
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥
वह भगवान कल्याणकारी है, उसे मेरा शत्-शत् प्रणाम है। उसका दरबार अटल है।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਆ ਟਿਕਾ ਕਿਆ ਤਗੁ ॥੧॥
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥
हे नानक ! सत्य नाम के सिमरन बिना तिलक एवं जनेऊ पहनने का क्या अभिप्राय है॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਲਖ ਨੇਕੀਆ ਚੰਗਿਆਈਆ ਲਖ ਪੁੰਨਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥
लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥
चाहे लाखों ही नेकियाँ, अच्छाइयों, लाखों ही पुण्य स्वीकृत हुए हों, चाहे लाखों ही श्रुतियों में सुरति, लाखों ही ज्ञान-ध्यान एवं पुराणों के पाठ पढ़े हों, तो भी सब व्यर्थ है।

ਲਖ ਤਪ ਉਪਰਿ ਤੀਰਥਾਂ ਸਹਜ ਜੋਗ ਬੇਬਾਣ ॥
लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥
चाहे तीर्थों पर लाखों ही तप किए हों तथा वनों में जाकर सहज योग किया हो,

ਲਖ ਸੂਰਤਣ ਸੰਗਰਾਮ ਰਣ ਮਹਿ ਛੁਟਹਿ ਪਰਾਣ ॥
लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥
चाहे लाखों ही बाहुबल-शूरवीरता संग्राम में दिखाई हो तथा रणभूमि में वीरगति प्राप्त की हो,

ਲਖ ਸੁਰਤੀ ਲਖ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਪੜੀਅਹਿ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥
चाहे लाखों ही श्रुतियों में सुरति, लाखों ही ज्ञान-ध्यान एवं पुराणों के पाठ पढ़े हों, तो भी सब व्यर्थ है।

ਜਿਨਿ ਕਰਤੈ ਕਰਣਾ ਕੀਆ ਲਿਖਿਆ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥
जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥
चूंकि जिस परमात्मा ने यह जगत बनाया है, उसने ही जीवों का जन्म-मरण निर्धारित किया है।

ਨਾਨਕ ਮਤੀ ਮਿਥਿਆ ਕਰਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥
हे नानक ! प्रभु का करम (मेहर) ही सत्य का चिन्ह है, शेष सभी चतुर चाल झूठी हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਤੂੰ ਜਿਨਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਵਰਤਾਇਆ ॥
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥
हे भगवान ! एक तू ही सच्चा मालिक है, जिसने परम सत्य का प्रसार किया हुआ है।

ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਤਾ ਤਿਨੀ ਸਚੁ ਕਮਾਇਆ ॥
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥
जिसे तू (सत्य) देता है, वही सत्य को प्राप्त करता है और वह सत्य का कर्म करता है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਸਚੁ ਵਸਾਇਆ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥
जिस जीव को सतिगुरु मिल जाता है, उसे सत्य की प्राप्ति होती है। सच्चा गुरु उनके हृदय में सत्य को बसा देता है।

ਮੂਰਖ ਸਚੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਮਨਮੁਖੀ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥
लेकिन मूर्ख व्यक्ति सत्य को नहीं जानता, मनमुख होने के फलस्वरूप व्यर्थ ही जन्म गंवा लेता है।

ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਕਾਹੇ ਆਇਆ ॥੮॥
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥
ऐसे लोग इस दुनिया में क्यों आए हैं।॥ ८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਗਡੀ ਲਦੀਅਹਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਭਰੀਅਹਿ ਸਾਥ ॥
पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥
चाहे गाड़ियाँ लादकर भी पुस्तकें पढ़ ली जाएँ, पुस्तकों के तमाम समुदाय अध्ययन कर लिए जाएँ।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਬੇੜੀ ਪਾਈਐ ਪੜਿ ਪੜਿ ਗਡੀਅਹਿ ਖਾਤ ॥
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥
चाहे पढ़-पढ़कर पुस्तकें नाव भर ली जाएँ, चाहे पढ़-पढ़कर खड़े भर लिए जाएँ।

ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਬਰਸ ਬਰਸ ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਮਾਸ ॥
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥
चाहे बरसों तक पढ़ाई की जाए चाहे जितने भी महीने पढ़े जाएँ।

ਪੜੀਐ ਜੇਤੀ ਆਰਜਾ ਪੜੀਅਹਿ ਜੇਤੇ ਸਾਸ ॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
चाहे सारी उम्र पढ़ते रहो, जीवन की सांसें रहने तक पढ़ते रहो।

ਨਾਨਕ ਲੇਖੈ ਇਕ ਗਲ ਹੋਰੁ ਹਉਮੈ ਝਖਣਾ ਝਾਖ ॥੧॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥
परन्तु हे नानक ! एक ही बात सत्य के दरबार में मंजूर है, प्रभु का नाम-सुमिरन ही मनुष्य के कर्मलेख में है, शेष सबकुछ तो अहंकार में बकवाद करना है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਪੜਿਆ ॥ ਤੇਤਾ ਕੜਿਆ ॥
लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥
जितना अधिक मनुष्य पढ़ता-लिखता है,"उतना अधिक वह दुख में जलता रहता है।

ਬਹੁ ਤੀਰਥ ਭਵਿਆ ॥ ਤੇਤੋ ਲਵਿਆ ॥
बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥
जितना अधिक वह तीर्थों पर भटकता है,उतना अधिक वह निरर्थक बोलता है।
ਬਹੁ ਭੇਖ ਕੀ

ਆ ਦੇਹੀ ਦੁਖੁ ਦੀਆ ॥
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥
जितना अधिक मनुष्य धार्मिक वेष धारण करता है, वह उतना ही अधिक शरीर को दुःखी करता है।

सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥
सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥
हे जीव ! अब तू अपने कर्मों का फल भोग।

ਅੰਨੁ ਨ ਖਾਇਆ ਸਾਦੁ ਗਵਾਇਆ ॥
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
जो मनुष्य अन्न नहीं खाता, वह जीवन का स्वाद गंवा लेता है।

ਬਹੁ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦੂਜਾ ਭਾਇਆ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
द्वैतभाव में पड़कर मनुष्य बहुत दुःखी होता है।

ਬਸਤ੍ਰ ਨ ਪਹਿਰੈ ॥ ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਹਰੈ ॥
बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
जो वस्त्र नहीं पहनता,वह दिन-रात दुःखी होता है।

ਮੋਨਿ ਵਿਗੂਤਾ ॥ ਕਿਉ ਜਾਗੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸੂਤਾ ॥
मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥
मौन धारण करने से मनुष्य नष्ट हो जाता है।गुरु के बिना मोह-माया में सोया हुआ कैसे जाग सकता है।

ਪਗ ਉਪੇਤਾਣਾ ॥ ਅਪਣਾ ਕੀਆ ਕਮਾਣਾ ॥
पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥
जो मनुष्य नंगे पैर चलता है,"वह अपने कर्मो का फल भोगता है।

ਅਲੁ ਮਲੁ ਖਾਈ ਸਿਰ�ि ਛਾਈ ਪਾਈ ॥
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥
जो मनुष्य अभक्ष्य गंदगी खाता है और सिर पर राख डलवाता है,

ਮੂਰਖਿ ਅੰਧੈ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
मूरखि अंधै पति गवाई ॥
वह मूर्ख अन्धा अपना मान-सम्मान गंवा लेता है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕਿਛੁ ਥਾਇ ਨ ਪਾਈ ॥
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥
सत्य नाम के बिना कोई भी वस्तु मंजूर नहीं होती।

ਰਹੈ ਬੇਬਾਣੀ ਮੜੀ ਮਸਾਣੀ ॥
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥
वह जंगलों, कब्रिस्तान एवं श्मशान घाट में रहता है।

ਅੰਧੁ ਨ ਜਾਣੈ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਣੀ ॥
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥
अन्धा मनुष्य प्रभु को नहीं जानता एवं तत्पश्चात् पश्चाताप करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਸੋ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥
जो सतगुरु से मिलता है, उसे सुख प्राप्त होता है

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
हरि का नामु मंनि वसाए ॥
और हरि का नाम वह अपने मन में बसा लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥
नानक नदरि करे सो पाए ॥
हे नानक ! प्रभु की कृपा-दृष्टि से सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

ਆਸ ਅੰਦੇਸੇ ਤੇ ਨਿਹਕੇਵਲੁ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥੨॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥
आशा-चिंता से वह निर्लिप्त हो जाता है और ब्रह्म-शब्द द्वारा वह अहंकार को जला देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਭਗਤ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ ਕੀਰਤਿ ਗਾਵਦੇ ॥
भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥
हे प्रभु ! तेरे मन को भक्त बहुत प्यारे लगते हैं, जो तेरे द्वार पर भजन-कीर्तन गाते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं।

ਨਾਨਕ ਕਰਮਾ ਬਾਹਰੇ ਦਰਿ ਢੋਅ ਨ ਲਹਨ੍ਹੀ ਧਾਵਦੇ ॥
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥
हे नानक ! भाग्यहीन लोगों को प्रभु की कृपा-दृष्टि के बिना उसके दर पर शरण नहीं मिलती और वे भटकते रहते हैं।

ਇਕਿ ਮੂਲੁ ਨ ਬੁਝਨ੍ਹਿ ਆਪਣਾ ਅਣਹੋਦਾ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ॥
इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥
कुछ लोग अपने मूल (प्रभु) को नहीं पहचानते और व्यर्थ ही अपना अहंकार दिखाते हैं।

ਹਉ ਢਾਢੀ ਕਾ ਨੀਚ ਜਾਤਿ ਹੋਰਿ ਉਤਮ ਜਾਤਿ ਸਦਾਇਦੇ ॥
हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥
मैं निम्न जाति का तुच्छ ढाढी हूँ, शेष अपने आपको उत्तम जाति के कहलवाते हैं।

ਤਿਨ੍ ਮੰਗਾ ਜਿ ਤੁਝੈ ਧਿਆਇਦੇ ॥੯॥
तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥९॥
हे प्रभु! मैं उनकी संगति माँगता हूँ, जो तेरा ध्यान-मनन करते हैं।॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਕੂੜੁ ਰਾਜਾ ਕੂੜੁ ਪਰਜਾ ਕੂੜੁ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
राजा झूठ है, प्रजा झूठ है यह सारा संसार ही झूठ है,

ਕੂੜੁ ਮੰਡਪ ਕੂੜੁ ਮਾੜੀ ਕੂੜੁ ਬੈਸਣਹਾਰੁ ॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥
राजाओं के मंडप और महल झूठ एवं छल ही हैं,

ਕੂੜੁ ਸੁਇਨਾ ਕੂੜੁ ਰੁਪਾ ਕੂੜੁ ਪੈਨ੍ਣਹਾਰੁ ॥
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥
सोना-चांदी झूठा है और इसे पहनने वाला कपट ही है।

ਕੂੜੁ ਕਾਇਆ ਕੂੜੁ ਕਪੜੁ ਕੂੜੁ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੁ ॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥
यह काया, वस्त्र एवं अपार रूप सभी झूठे हैं।

ਕੂੜੁ ਮੀਆ ਕੂੜੁ ਬੀਬੀ ਖਪਿ ਹੋਏ ਖਾਰੁ ॥
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥
पति और पत्नी झूठ रूप ही है, क्योंकि दोनों ही वासनाओं में फंसकर खराब होते हैं।

ਕੂੜਿ ਕੂੜੈ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਵਿਸਰਿਆ ਕਰਤਾਰੁ ॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥
झूठा मनुष्य झूठ से प्रेम करता है और करतार प्रभु को विस्मृत कर देता है।

ਕਿਸੁ ਨਾਲਿ ਕੀਚੈ ਦੋਸਤੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥
मैं किसके साथ दोस्ती करूं ? क्योंकि यह संसार नाशवान है।

ਕੂੜੁ ਮਿਠਾ ਕੂੜੁ ਮਾਖਿਉ ਕੂੜੁ ਡੋਬੇ ਪੂਰੁ ॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥
झुठ मीठा गुड़ है, झूठ मीठा मधु है, झूठ ही झुण्डों के झुण्ड जीवों को नरक में डुबो रहा है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਤੁਧੁ ਬਾਝੁ ਕੂੜੋ ਕੂੜੁ ॥੧॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥
नानक प्रभु के समक्ष प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे परम-सत्य ! तेरे बिना यह सारा संसार झूठा ही है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
सत्य तो तभी जाना जाता है यदि सत्य मनुष्य के हृदय में हो।

ਕੂੜ ਕੀ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਤਨੁ ਕਰੇ ਹਛਾ ਧੋਇ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥
उसकी झूठ की मैल उतर जाती है और वह अपने तन को शुद्ध कर लेता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥
सत्य तो ही जाना जाता है यदि मनुष्य सत्य (प्रभु) से प्रेम करे।

ਨਾਉ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
जब प्रभु नाम को सुनकर मन प्रसन्न हो जाता है तो जीव मोक्ष द्वार प्राप्त कर लेता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਜੁਗਤਿ ਜਾਣੈ ਜੀਉ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥
सत्य का बोध तभी होता है यदि मनुष्य प्रभु-मिलन की युक्ति समझ लेता है।

ਧਰਤਿ ਕਾਇਆ ਸਾਧਿ ਕੈ ਵਿਚਿ ਦੇਇ ਕਰਤਾ ਬੀਉ ॥
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥
शरीर रूपी धरती को संवार कर वह इसमें कर्ता प्रभु के नाम का बीज बो देता है।

ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਿਖ ਸਚੀ ਲੇਇ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥
सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह सच्ची शिक्षा प्राप्त करता है।

ਦਇਆ ਜਾਣੈ ਜੀਅ ਕੀ ਕਿਛੁ ਪੁੰਨੁ ਦਾਨੁ ਕਰੇਇ ॥
दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥
वह जीवों पर दया करता है ओर यथाशक्ति अनुसार दान-पुण्य करता है।

ਸਚੁ ਤਾਂ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਆਤਮ ਤੀਰਥਿ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥
सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह अपनी आत्मा के तीर्थ-स्थान में निवास करता हो।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨੋ ਪੁਛਿ ਕੈ ਬਹਿ ਰਹੈ ਕਰੇ ਨਿਵਾਸੁ ॥
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥
वह सतिगुरु से पूछकर, उपदेश प्राप्त करके, बैठता एवं निवास करता है।

ਸਚੁ ਸਭਨਾ ਹੋਇ ਦਾਰੂ ਪਾਪ ਕਢੈ ਧੋਇ ॥
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
सत्य सबके लिए एक औषधि है, यह पाप को साफ करके बाहर निकाल देता है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਬੇਨਤੀ ਜਿਨ ਸਚੁ ਪਲੈ ਹੋਇ ॥੨॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥
नानक उनके समक्ष विनती करता है, जिनके दामन में सत्य विद्यमान है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਦਾਨੁ ਮਹਿੰਡਾ ਤਲੀ ਖਾਕੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤ ਮਸਤਕਿ ਲਾਈਐ ॥
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥
मेरा मन संतों की चरण-धूल का दान मांगता है,यदि यह मिल जाए तो मैं इसे अपने मस्तक पर लगाऊँ।

ਕੂੜਾ ਲਾਲਚੁ ਛਡੀਐ ਹੋਇ ਇਕ ਮਨਿ ਅਲਖੁ ਧਿਆਈਐ ॥
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥
झूठा लालच छोड़कर हमें एक मन होकर भगवान का ध्यान करना चाहिए।

ਫਲੁ ਤੇਵੇਹੋ ਪਾਈਐ ਜੇਵੇਹੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਐ ॥
फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥
जैसा कर्म हम करते हैं वैसा ही फल हमें प्राप्त होता है।

ਜੇ ਹੋਵੈ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਾ ਧੂੜਿ ਤਿਨ੍ਹਾ ਦੀ ਪਾਈਐ ॥
जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥
यदि प्रारम्भ से ऐसा कर्म लिखा हो तो मनुष्य को संतों की चरणों की धूल प्राप्त हो जाती है।

ਮਤਿ ਥੋੜੀ ਸੇਵ ਗਵਾਈਐ ॥੧੦॥
मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥
अल्पबुद्धि के फलस्वरूप हम सेवा के फल को गंवा लेते हैं॥ १० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸਚਿ ਕਾਲੁ ਕੂੜੁ ਵਰਤਿਆ ਕਲਿ ਕਾਲਖ ਬੇਤਾਲ ॥
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥
अब सत्य का अकाल पड़ गया है अर्थात् सत्य लुप्त हो गया है एवं झूठ का प्रसार प्रचलित है, इस कलियुग की कालिख ने लोगों को बेताल बना दिया है।

ਬੀਉ ਬੀਜਿ ਪਤਿ ਲੈ ਗਏ ਅਬ ਕਿਉ ਉਗਵੈ ਦਾਲਿ ॥
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥
जिन्होंने प्रभु-नाम का बीज बोया था वह मान-प्रतिष्ठा से (जगत से) गए हैं, परन्तु अब टूटा हुआ (नाम का) बीज कैसे अंकुरित हो सकता है ?

ਜੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ਤ ਉਗਵੈ ਰੁਤੀ ਹੂ ਰੁਤਿ ਹੋਇ ॥
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥
यदि बीज सम्पूर्ण हो और ऋतु भी सुहावनी हो तो यह अंकुरित हो सकता है।

ਨਾਨਕ ਪਾਹੈ ਬਾਹਰਾ ਕੋਰੈ ਰੰਗੁ ਨ ਸੋਇ ॥
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥
हे नानक ! यदि लाग का प्रयोग न किया जाए तो नवीन वस्त्र रंगा नहीं जा सकता।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਖੁੰਬਿ ਚੜਾਈਐ ਸਰਮੁ ਪਾਹੁ ਤਨਿ ਹੋਇ ॥
भै विचि खुमबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥
यदि शरीर पर लज्जा की लाग लगा दी जाए तो यह प्रभु के भय में पापों से धुलकर उज्ज्वल हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤੀ ਜੇ ਰਪੈ ਕੂੜੈ ਸੋਇ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥
हे नानक ! यदि मनुष्य प्रभु-भक्ति से रंगा जाए तो झूठ इसे निकट भी स्पर्श नहीं कर सकता ॥१॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਲਬੁ ਪਾਪੁ ਦੁਇ ਰਾਜਾ ਮਹਤਾ ਕੂੜੁ ਹੋਆ ਸਿਕਦਾਰੁ ॥
लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥
लोभ एवं पाप दोनों ही राजा तथा मंत्री हैं और झूठ चौधरी बना बैठा है।

ਕਾਮੁ ਨੇਬੁ ਸਦਿ ਪੁਛੀਐ ਬਹਿ ਬਹਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
लोग बैठ कर बुरे दांव पेच सोचते हैं।

ਅੰਧੀ ਰਯਤਿ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਭਾਹਿ ਭਰੇ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
अन्धी प्रजा ज्ञान से विहीन है और मृतक की भाँति चुपचाप अन्याय सहती है।

ਗਿਆਨੀ ਨਚਹਿ ਵਾਜੇ ਵਾਵਹਿ ਰੂਪ ਕਰਹਿ ਸੀਗਾਰੁ ॥
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ज्ञानी नृत्य करते हैं, बाजे बजाते और अनेक प्रकार के रूप धारण करके श्रृंगार करते हैं।

ਊਚੇ ਕੂਕਹਿ ਵਾਦਾ ਗਾਵਹਿ ਜੋਧਾ ਕਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥
वे ऊँची आवाज़ में पुकारते हैं एवं युद्ध काव्य एवं शूरवीरों की शूरवीरता की कहानियाँ गाते हैं।

ਮੂਰਖ ਪੰਡਿਤ ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਜਤਿ ਸੰਜੈ ਕਰਹਿ ਪਿਆਰੁ ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥
मूर्ख पण्डित अपनी चतुराई एवं हुज्जत द्वारा धन-संग्रह करता है, उसका केवल धन से ही प्रेम है।

ਧਰਮੀ ਧਰਮੁ ਕਰਹਿ ਗਾਵਾਵਹਿ ਮੰਗਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥
धर्मी लोग धर्म का कर्म करते हैं और मोक्ष की माँग करते हैं।

ਜਤੀ ਸਦਾਵਹਿ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਣਹਿ ਛਡਿ ਬਹਹਿ ਘਰ ਬਾਰੁ ॥
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥
परन्तु उसके प्रभाव से वंचित हो जाते हैं क्योंकि स्वार्थवश वो यती कहलवाने वाले जीवन की युक्ति को नहीं समझते और व्यर्थ ही घर-बार छोड़ देते है।

ਸਭੁ ਕੋ ਪੂਰਾ ਆਪੇ ਹੋਵੈ ਘਟਿ ਨ ਕੋਈ ਆਖੈ ॥
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥
सभी अपने आप को पूर्ण भक्त साबित करते है कोई स्वयं को कम नहीं समझता

ਪਤਿ ਪਰਵਾਣਾ ਪਿਛੈ ਪਾਈਐ ਤਾ ਨਾਨਕ ਤੋਲਿਆ ਜਾਪੈ ॥੨॥
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥
हे नानक ! यदि इज्जत का तराजू पिछले पलड़े में डाल दिया जाए तो ही मनुष्य भली भांति तुला हुआ मालूम होता है॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਵਦੀ ਸੁ ਵਜਗਿ ਨਾਨਕਾ ਸਚਾ ਵੇਖੈ ਸੋਇ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥
हे नानक ! बुराई भली प्रकार उजागर हो जाती है क्योंकि वह सत्य-परमशेवर सब कुछ देखता है।

ਸਭਨੀ ਛਾਲਾ ਮਾਰੀਆ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥
हरेक ने जगत में आगे बढ़ने हेतु छलांग लगाई है परन्तु जो कुछ जगत का रचयिता करता है, वही होता है।

ਅਗੈ ਜਾਤਿ ਨ ਜੋਰੁ ਹੈ ਅਗੈ ਜੀਉ ਨਵੇ ॥
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
परलोक में जाति एवं बाहुबल का कोई मूल्य नहीं क्योंकि वहाँ तो जीव नवीन होते हैं।

ਜਿਨ ਕੀ ਲੇਖੈ ਪਤਿ ਪਵੈ ਚੰਗੇ ਸੇਈ ਕੇਇ ॥੩॥
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥
जिन्हें कर्मों का लेखा-जोखा होने पर सम्मान प्राप्त होता है, वही भले कहे जा सकते हैं। ३ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਜਿਨਾ ਕਉ ਤੁਧੁ ਪਾਇਆ ਤਾ ਤਿਨੀ ਖਸਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥
हे विधाता ! तूने आरम्भ से ही जिन जीवों का अच्छा भाग्य लिख दिया है तो ही उन्होंने अपने मालिक-प्रभु को याद किया है।

ਏਨਾ ਜੰਤਾ ਕੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਤੁਧੁ ਵੇਕੀ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ॥
एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥
इन जीवों के वश में कुछ भी नहीं, यह विभिन्न प्रकार का जगत तूने ही उत्पन्न किया है।

ਇਕਨਾ ਨੋ ਤੂੰ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਇਕਿ ਆਪਹੁ ਤੁਧੁ ਖੁਆਇਆ ॥
इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥
हे प्रभु ! कुछ जीवों को तू अपने साथ मिला लेता है और कुछ जीवों को स्वयं ही दूर करके ख्वार करता रहता है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਜਾਣਿਆ ਜਿਥੈ ਤੁਧੁ ਆਪੁ ਬੁਝਾਇਆ ॥
गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥
जहाँ तूने खुद ही किसी को अपनी सूझ प्रदान की है, गुरु की कृपा से उसने ही तुझे जाना है

ਸਹਜੇ ਹੀ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੧੧॥
सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥
और वह सहज ही सत्य में समा गया है॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਦੁਖੁ ਦਾਰੂ ਸੁਖੁ ਰੋਗੁ ਭਇਆ ਜਾ ਸੁਖੁ ਤਾਮਿ ਨ ਹੋਈ ॥
दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥
दुःख औषधि है और सुख रोग है, क्योंकि जब सुख मिल जाता है तो जीव को प्रभु-स्मरण ही नहीं होता।

ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਕਰਣਾ ਮੈ ਨਾਹੀ ਜਾ ਹਉ ਕਰੀ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥
हे प्रभु ! तू सृष्टि रचयिता है, मैं कुछ भी नहीं कर सकता। यदि मैं कुछ करने का प्रयास भी करूं तो भी कुछ नहीं होता।॥ १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਵਸਿਆ ॥
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
हे जगत-रचयिता ! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तू अपनी कुदरत में निवास कर रहा है,

ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥
और तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾਤਿ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਮਹਿ ਜਾਤਾ ਅਕਲ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ॥

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥

हे प्रभु ! जीवों में ही तेरी ज्योति विद्यमान है और जीव तेरी ज्योति में विद्यमान हैं। हे सर्वकला सम्पूर्ण ! तू सर्वव्यापक है। तू सच्चा मालिक हैं।

ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਫਤਿ ਸੁਆਲ੍ਹਿਉ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਸੋ ਪਾਰਿ ਪਇਆ ॥

तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥

तेरी महिमा अत्यंत सुन्दर है, जो तेरी स्तुति करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀਆ ਬਾਤਾ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਣਾ ਸੁ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥੨॥

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

हे नानक ! यह तो जगत-रचयिता की ही सब लीला है, जो कुछ प्रभु ने करना है, उसे वह किए जा रहा है॥ २॥

ਮਃ ੨ ॥

मः २ ॥

महला २ ॥

ਜੋਗ ਸਬਦੰ ਗਿਆਨ ਸਬਦੰ ਬੇਦ ਸਬਦੰ ਬ੍ਰਾਹਮਣਹ ॥

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥

योगियों का धर्म ज्ञान प्राप्त करना है और ब्राह्मण का धर्म वेदों का अध्ययन करना है।

ਖਤ੍ਰੀ ਸਬਦੰ ਸੂਰ ਸਬਦੰ ਸੂਦ੍ਰ ਸਬਦੰ ਪਰਾ ਕ੍ਰਿਤਹ ॥

खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥

क्षत्रियों का धर्म शूरवीरता के कार्य करना है और शूद्रों का धर्म दूसरों की सेवा करना है।

ਸਰਬ ਸਬਦੰ ਏਕ ਸਬਦੰ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਉ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਉ ॥੩॥

सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥

परन्तु सभी का धर्म एक ईश्वर का सुमिरन करना है।यदि कोई इस रहस्य को जानता है तो नानक उसका दास है और वह पुरुष स्वयं ही निरंजन प्रभु है॥ ३॥

ਮਃ ੨ ॥

मः २ ॥

महला २॥

ਏਕ ਕ੍ਰਿਸਨੰ ਸਰਬ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ਦੇਵਾ ਤ ਆਤਮਾ ॥
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
एक कृष्ण ही सभी देवताओं का देव है। वह उन देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव सब की भी आत्मा है।

ਆਤਮਾ ਬਾਸੁਦੇਵਸ੍ਯ ਜੇ ਕੋ ਜਾਣੈ ਭੇਉ ॥ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਸੋਈ ਨਿਰੰਜਨ ਦੇਉ ॥੪॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥
सब जीवों में बसने वाला वासुदेव स्वयं ही इनकी आत्मा है, यदि कोई इस रहस्य को समझता हो,नानक उसका दास है, वह स्वयं ही निरंजन प्रभु है॥ ४॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਕੁੰਭੇ ਬਧਾ ਜਲੁ ਰਹੈ ਜਲ ਬਿਨੁ ਕੁੰਭੁ ਨ ਹੋਇ ॥
कुमभे बधा जलु रहै जल बिनु कुमभु न होइ ॥
जैसे घड़े में बंधा हुआ जल टिका रहता है वैसे ही जल के बिना घड़ा भी नहीं बन सकता।

ਗਿਆਨ ਕਾ ਬਧਾ ਮਨੁ ਰਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਇ ॥੫॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥
इसी तरह (गुरु के) ज्ञान का वश में किया हुआ मन टिका रहता है परन्तु गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता॥ ५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਪੜਿਆ ਹੋਵੈ ਗੁਨਹਗਾਰੁ ਤਾ ਓਮੀ ਸਾਧੁ ਨ ਮਾਰੀਐ ॥
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥
यदि पढ़ा-लिखा विद्वान व्यक्ति गुनहगार हो तो अनपढ़ इन्सान को डरना नहीं चाहिए क्योंकि नेक होने के कारण उस अनपढ़ को दण्ड नहीं मिलता।

ਜੇਹਾ ਘਾਲੇ ਘਾਲਣਾ ਤੇਵੇਹੋ ਨਾਉ ਪਚਾਰੀਐ ॥
जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥
मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसा ही उसका नाम दुनिया में गूंजता है।

ਐਸੀ ਕਲਾ ਨ ਖੇਡੀਐ ਜਿਤੁ ਦਰਗਹ ਗਇਆ ਹਾਰੀਐ ॥

ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥

हमें ऐसी जीवन की खेल नहीं खेलनी चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के दरबार में पहुँचने पर हारना पड़े।

ਪੜਿਆ ਅਤੈ ਓਮੀਆ ਵੀਚਾਰੁ ਅਗੈ ਵੀਚਾਰੀਐ ॥

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥

विद्वान एवं अनपढ़ के कर्मों का लेखा-जोखा परलोक में होगा,

ਮੁਹਿ ਚਲੈ ਸੁ ਅਗੈ ਮਾਰੀਐ ॥੧੨॥

मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

स्वेच्छाचारी मनुष्य को परलोक में कर्मों का दण्ड अवश्य मिलता है॥ १२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਨਾਨਕ ਮੇਰੁ ਸਰੀਰ ਕਾ ਇਕੁ ਰਥੁ ਇਕੁ ਰਥਵਾਹੁ ॥
नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥
हे नानक ! चौरासी लाख योनियों में सुमेरु पर्वत समान मानव-शरीर सर्वोच्च है। इस शरीर का एक रथ एवं एक रथवान है।

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਫੇਰਿ ਵਟਾਈਅਹਿ ਗਿਆਨੀ ਬੁਝਹਿ ਤਾਹਿ ॥
जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥
युग-युग के पश्चात् ये बदलते रहते हैं और ज्ञानी पुरुष ही इस भेद को समझते हैं।

ਸਤਜੁਗਿ ਰਥੁ ਸੰਤੋਖ ਕਾ ਧਰਮੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥
सतियुग में मानव-शरीर का रथ संतोष का था और धर्म रथवान था।

ਤ੍ਰੈਤੈ ਰਥੁ ਜਤੈ ਕਾ ਜੋਰੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
त्रैतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥
त्रैता युग में (मानव-शरीर का) रथ यतीत्व का था और बाहुबल रथवान था।

ਦੁਆਪੁਰਿ ਰਥੁ ਤਪੈ ਕਾ ਸਤੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥
दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥
द्वापर युग में (मानव-शरीर का) रथ तपस्या का था और सत्य रथवान था।

ਕਲਜੁਗਿ ਰਥੁ ਅਗਨਿ ਕਾ ਕੂੜੁ ਅਗੈ ਰਥਵਾਹੁ ॥੧॥
कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥
कलियुग में (मानव शरीर का) रथ तृष्णा रूपी अग्नि का रथ है और झूठ इसका रथवान है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਸਾਮ ਕਹੈ ਸੇਤੰਬਰੁ ਸੁਆਮੀ ਸਚ ਮਹਿ ਆਛੈ ਸਾਚਿ ਰਹੇ ॥ ਸਭੁ ਕੋ ਸਚਿ ਸਮਾਵੈ ॥

साम कहै सेतमबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥

सामवेद कहता है कि जगत का स्वामी प्रभु श्वेत-वस्त्रों वाला है। सतियुग में प्रत्येक मनुष्य सत्य को चाहता था, सत्य में विचरता था और सत्य में ही समा जाता था।

ਰਿਗੁ ਕਹੈ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਦੇਵਾ ਮਹਿ ਸੂਰੁ ॥

रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥

ऋग्वेद कहता है कि प्रभु सर्वव्यापक है और सभी देवताओं में परमात्मा का राम नाम सर्वश्रेष्ठ है।

ਨਾਇ ਲਇਐ ਪਰਾਛਤ ਜਾਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਤਉ ਮੋਖੰਤਰੁ ਪਾਹਿ ॥

नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥

राम नाम के सुमिरन द्वारा प्रायश्चित हो जाता है अर्थात् पाप निवृत हो जाते हैं।हे नानक ! राम नाम लेने से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

ਜੁਜ ਮਹਿ ਜੋਰਿ ਛਲੀ ਚੰਦ੍ਰਾਵਲਿ ਕਾਨ੍ ਕ੍ਰਿਸਨੁ ਜਾਦਮੁ ਭਇਆ ॥

जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥

यजुर्वेद के समय (द्वापर में) यादव वंश के कृष्ण-कन्हैया हुए, जिन्होंने अपने बाहुबल से चंद्रावलि को छल लिया था।

ਪਾਰਜਾਤੁ ਗੋਪੀ ਲੈ ਆਇਆ ਬਿੰਦ੍ਰਾਬਨ ਮਹਿ ਰੰਗੁ ਕੀਆ ॥

पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥

श्रीकृष्ण अपनी गोपी (सत्यभामा) हेतु इन्द्र के उद्यान से पारिजात (कल्पवृक्ष) ले आए थे और वृन्दावन में कौतुक रचे तथा आनंद मनाते रहे।

ਕਲਿ ਮਹਿ ਬੇਦੁ ਅਥਰਬਣੁ ਹੂਆ ਨਾਉ ਖੁਦਾਈ ਅਲਹੁ ਭਇਆ ॥

कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥

कलयुग में अथर्ववेद प्रसिद्ध हुआ तथा उसके अनुसार प्रभु का नाम 'अल्लाह एवं 'खुदा' विख्यात हो गया।

ਨੀਲ ਬਸਤ੍ਰ ਲੇ ਕਪੜੇ ਪਹਿਰੇ ਤੁਰਕ ਪਠਾਣੀ ਅਮਲੁ ਕੀਆ ॥

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥

लोगों ने नीले रंग के वस्त्र पहने तथा तुकों एवं मुगलों का शासन हो गया।

ਚਾਰੇ ਵੇਦ ਹੋਏ ਸਚਿਆਰ ॥

चारे वेद होए सचिआर ॥

इस तरह चारों वेद-सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद सच्चे कहे गए।

ਪੜਹਿ ਗੁਣਹਿ ਤਿਨ੍ ਚਾਰ ਵੀਚਾਰ ॥
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥
उनको पढ़ने एवं अध्ययन करने से मनुष्य उनमें चार सिद्धांत प्राप्त करता है।

ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਨੀਚੁ ਸਦਾਏ ॥ ਤਉ ਨਾਨਕ ਮੋਖੰਤਰੁ ਪਾਏ ॥੨॥
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥
हे नानक ! यदि मनुष्य प्रभु की भक्ति करके अपने आपको विनीत कहलवाए तो ही वह मोक्ष प्राप्त करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਖਸਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥
सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥
मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनके मिलन से भगवान का सिमरन किया है।

ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਦੀਆ ਇਨ੍ੀ ਨੇਤ੍ੀ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥
जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥
जिसने मुझे उपदेश देकर ज्ञान का सुरमा प्रदान किया है और इन नेत्रों से मैंने जगत के सत्य को देख लिया है।

ਖਸਮੁ ਛੋਡਿ ਦੂਜੈ ਲਗੇ ਡੁਬੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥
जो व्यापारी (प्राणी) अपने प्रभु-पति को त्यागकर द्वैतवाद में लीन हुए, वे डूब गए हैं।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥
सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥
सतिगुरु संसार-सागर में से पार करवाने वाला एक जहाज है, कुछ विरले पुरुष ही इसे अनुभव करते है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਆ ॥੧੩॥
करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥
अपनी कृपा करके वह उनको संसार-सागर से पार कर देता है।॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸਿੰਮਲ ਰੁਖੁ ਸਰਾਇਰਾ ਅਤਿ ਦੀਰਘ ਅਤਿ ਮੁਚੁ ॥
सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥
सेमल का वृक्ष बड़ा सीधा, अत्यंत ऊँचा एवं बहुत मोटा होता है।

ਓਇ ਜਿ ਆਵਹਿ ਆਸ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ਨਿਰਾਸੇ ਕਿਤੁ ॥
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥
कितने ही पक्षी उसका फल खाने की आशा करके इसके पास आते हैं परन्तु निराश होकर चले जाते हैं।

ਫਲ ਫਿਕੇ ਫੁਲ ਬਕਬਕੇ ਕੰਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਪਤ ॥
फल फिके फुल बकबके कमि न आवहि पत ॥
चूंकि इसके फल बहुत फीके, फूल बकबके एवं पते किसी काम के नहीं होते।

ਮਿਠਤੁ ਨੀਵੀ ਨਾਨਕਾ ਗੁਣ ਚੰਗਿਆਈਆ ਤਤੁ ॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
हे नानक ! नम्रता बड़ी मीठी होती है और यह सब गुणों एवं अच्छाइयों का निचोड़ है अर्थात् सर्वोत्तम गुण है।

ਸਭੁ ਕੋ ਨਿਵੈ ਆਪ ਕਉ ਪਰ ਕਉ ਨਿਵੈ ਨ ਕੋਇ ॥
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥
हरेक मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु झुकता है परन्तु दूसरों की भलाई हेतु कोई नहीं झुकता।

ਧਰਿ ਤਾਰਾਜੂ ਤੋਲੀਐ ਨਿਵੈ ਸੁ ਗਉਰਾ ਹੋਇ ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥
यदि कोई वस्तु तराजू पर रख कर तौली जाए तो तराजू का जो पलड़ा झुकता है, वही भारी होता है।

ਅਪਰਾਧੀ ਦੂਣਾ ਨਿਵੈ ਜੋ ਹੰਤਾ ਮਿਰਗਾਹਿ ॥
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
मृग के शिकारी की भाँति अपराधी दुगुना झुकता है परन्तु

ਸੀਸਿ ਨਿਵਾਇਐ ਕਿਆ ਥੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਕੁਸੁਧੇ ਜਾਹਿ ॥੧॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥
सिर झुकाने से क्या प्राप्त हो सकता है जब मनुष्य हृदय से ही मैला हो जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਪੜਿ ਪੁਸਤਕ ਸੰਧਿਆ ਬਾਦੰ ॥
पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
पण्डित (वेद इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) पुस्तकें पढ़ता है, सन्ध्या-वन्दन एवं वाद-विवाद करता है।

ਸਿਲ ਪੂਜਸਿ ਬਗੁਲ ਸਮਾਧੰ ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
वह पत्थरों की पूजा करता है और बगुलों की भाँति समाधि लगाता है।

ਮੁਖਿ ਝੂਠ ਬਿਭੂਖਣ ਸਾਰੰ ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥
वह अपने मुख से झूठ बोलता है और सुन्दर आभूषणों की तरह दिखाता है।

ਤ੍ਰੈਪਾਲ ਤਿਹਾਲ ਬਿਚਾਰੰ ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
वह दिन में तीन बार गायत्री मंत्र का पाठ करता है।

ਗਲਿ ਮਾਲਾ ਤਿਲਕੁ ਲਿਲਾਟੰ ॥
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥
गले में माला और माथे पर तिलक धारण करता है।

ਦੁਇ ਧੋਤੀ ਬਸਤ੍ਰ ਕਪਾਟੰ ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
दुहरी धोती पहनता और सिर पर वस्त्र भी रखता है।

ਜੇ ਜਾਣਸਿ ਬ੍ਰਹਮੰ ਕਰਮੰ ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥
परन्तु यदि यह पण्डित ब्रह्म का कर्म जानता हो तो

ਸਭਿ ਫੋਕਟ ਨਿਸਚਉ ਕਰਮੰ ॥
सभि फोकट निसचउ करमं ॥
उसे पता लगेगा कि यह सभी निश्चय कर्म व्यर्थ के आडम्बर हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਉ ਧਿਆਵੈ ॥
कहु नानक निहचउ धिआवै ॥
हे नानक ! श्रद्धा धारण करके भगवान का ध्यान करना चाहिए।

ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਟ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥
विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥
सतिगुरु के मार्गदर्शन के बिना नाम-सिमरन का मार्ग नहीं मिलता ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਕਪੜੁ ਰੂਪੁ ਸੁਹਾਵਣਾ ਛਡਿ ਦੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਜਾਵਣਾ ॥
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥
इस शरीर रूपी सुन्दर वस्त्र एवं सौन्दर्य को इस दुनिया में ही छोड़कर जीव ने जाना है।

ਮੰਦਾ ਚੰਗਾ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕੀਤਾ ਪਾਵਣਾ ॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
जीव ने स्वयं अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना है।

ਹੁਕਮ ਕੀਏ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਰਾਹਿ ਭੀੜੈ ਅਗੈ ਜਾਵਣਾ ॥
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥
मनुष्य इहलोक में चाहे मन लुभावने हुक्म लागू करता रहे परन्तु परलोक में उसे कठिन मार्ग में से गुजरना होगा।

ਨੰਗਾ ਦੋਜਕਿ ਚਾਲਿਆ ਤਾ ਦਿਸੈ ਖਰਾ ਡਰਾਵਣਾ ॥
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥
जब वह नग्न ही नरक को जाता है तो वह सचमुच ही बड़ा भयानक लगता है।

करि अउगण पछੋਤਾਵਣਾ ॥੧੪॥
करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥
वह अपने किए हुए अवगुणों पर पश्चाताप करता है॥ १४ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਦਇਆ ਕਪਾਹ ਸੰਤੋਖੁ ਸੂਤੁ ਜਤੁ ਗੰਢੀ ਸਤੁ ਵਟੁ ॥
दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
हे पण्डित ! दया की कपास हो, संतोष का धागा हो, यतीत्व की गांठ हो और सत्य द्वारा बल डाला हो,

ਏਹੁ ਜਨੇਊ ਜੀਅ ਕਾ ਹਈ ਤ ਪਾਡੇ ਘਤੁ ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
यह ही आत्मा का जनेऊ है, हे पण्डित ! यदि तेरे पास ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहना दे।

ਨਾ ਏਹੁ ਤੁਟੈ ਨ ਮਲੁ ਲਗੈ ਨਾ ਏਹੁ ਜਲੈ ਨ ਜਾਇ ॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
ऐसा आत्मा का जनेऊ न ही टूटता है, न इसे मैल लगती है, न ही यह जलता है और न ही यह गुम होता है।

ਧੰਨੁ ਸੁ ਮਾਣਸ ਨਾਨਕਾ ਜੋ ਗਲਿ ਚਲੇ ਪਾਇ ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥
हे नानक ! वह मनुष्य धन्य हैं जिन्होंने ऐसा जनेऊ अपने गले में पहन लिया है।

ਚਉਕੜਿ ਮੁਲਿ ਅਣਾਇਆ ਬਹਿ ਚਉਕੈ ਪਾਇਆ ॥
चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥
हे पण्डित ! यह जनेऊ तो तुमने चार कौड़ियाँ मूल्य देकर मंगवा लिया और विशिष्ट अनुष्ठान पर अपने यजमान के चौके में बैठकर उसके गले में पहना दिया,

ਸਿਖਾ ਕੰਨਿ ਚੜਾਈਆ ਗੁਰੁ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਥਿਆ ॥
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥
फिर तुम उसे कान में उपदेश देते हो कि आज से तेरा गुरु ब्राह्मण हो गया।

ਓਹੁ ਮੁਆ ਓਹੁ ਝੜਿ ਪਇਆ ਵੇਤਗਾ ਗਇਆ ॥੧॥
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥
परन्तु कुछ समय उपरांत वह यजमान जब प्राण त्याग देता है तो वह जनेऊ उसके पार्थिव शरीर सहित जल जाता है और आत्मा धागे के बिना ही दुनिया से चली जाती है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਲਖ ਚੋਰੀਆ ਲਖ ਜਾਰੀਆ ਲਖ ਕੂੜੀਆ ਲਖ ਗਾਲਿ ॥
लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥
इन्सान लाखों ही चोरियाँ, लाखों ही व्यभिचार करता है और लाखों ही झूठ एवं लाखों ही मंदे वचन बोलता है।

ਲਖ ਠਗੀਆ ਪਹਿਨਾਮੀਆ ਰਾਤਿ ਦਿਨਸੁ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ॥
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥
वह दिन-रात लाखों ही ठगियों एवं गोपनीय पाप प्राणों के साथ बनाए रखता है।

ਤਗੁ ਕਪਾਹਹੁ ਕਤੀਐ ਬਾਮ੍ਹ੍ਹਣੁ ਵਟੇ ਆਇ ॥
तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥
कपास को कातकर धागा बनाया जाता है और ब्राह्मण आकर इसे बल देकर पहना देता है।

ਕੁਹਿ ਬਕਰਾ ਰਿੰਨ੍ਹਿ ਖਾਇਆ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਪਾਇ ॥
कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥
घर आए हुए अतिथियों को बकरा मार कर पकाया एवं खिलाया जाता है। सभी लोग कहते हैं कि जनेऊ पहना दो।

ਹੋਇ ਪੁਰਾਣਾ ਸੁਟੀਐ ਭੀ ਫਿਰਿ ਪਾਈਐ ਹੋਰੁ ॥
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥
जब जनेऊ पुराना हो जाता है तो इसे फॅककर नया जनेऊ पहना दिया जाता है।

ਨਾਨਕ ਤਗੁ ਨ ਤੁਟਈ ਜੇ ਤਗਿ ਹੋਵੈ ਜੋਰੁ ॥੨॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥
हे नानक ! यदि धागे में दया, संतोष एवं सत्य का बल हो तो आत्मा का यह धागा कभी टूटता नहीं ॥ २ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਇ ਮੰਨਿਐ ਪਤਿ ਊਪਜੈ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸੂਤੁ ॥
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥
यदि श्रद्धा से प्रभु का नाम-सिमरन किया जाए तो ही सम्मान उत्पन्न होता है।

ਦਰਗਹ ਅੰਦਰਿ ਪਾਈਐ ਤਗੁ ਨ ਤੂਟਸਿ ਪੂਤ ॥੩॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥
प्रभु की गुणस्तुति ही सच्चा जनेऊ है। ऐसा पवित्र धागा प्रभु के दरबार में पहनाया जाता है और यह कभी टूटता नहीं ॥ ३॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १ ॥

ਤਗੁ ਨ ਇੰਦ੍ਰੀ ਤਗੁ ਨ ਨਾਰੀ ॥
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥
मनुष्य की इन्द्रिय हेतु कोई धागा नहीं और नारी के लिए भी कोई धागा नहीं अर्थात् स्त्री-पुरुष के भोग-विलास के अंगों पर कोई बन्धन नहीं।

ਭਲਕੇ ਥੁਕ ਪਵੈ ਨਿਤ ਦਾੜੀ ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥
इनके कारण मनुष्य की दाढ़ी (मुँह) पर नित्य ही अपमान का थूक जाता है अर्थात् भोग-विलास के कारण बेइज्जत होता है।

ਤਗੁ ਨ ਪੈਰੀ ਤਗੁ ਨ ਹਥੀ ॥
तगु न पैरी तगु न हथी ॥
पैरों के लिए कोई धागा नहीं जो मंदे स्थान पर जाते हैं और न ही कोई हाथों के लिए धागा है जो मंदे कर्म करते हैं।

ਤਗੁ ਨ ਜਿਹਵਾ ਤਗੁ ਨ ਅਖੀ ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
धागा जीभ के लिए भी नहीं जो पराई निंदा करती है और न ही नेत्रों के लिए कोई धागा है जो पराया रूप देखते हैं।

ਵੇਤਗਾ ਆਪੇ ਵਤੈ ॥ ਵਟਿ ਧਾਗੇ ਅਵਰਾ ਘਤੈ ॥
वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥
सत्यता के धागे के बिना ब्राह्मण स्वयं भटकता रहता है।दूसरों को धागे वह बंट-बंट कर पहनाता है।

ਲੈ ਭਾੜਿ ਕਰੇ ਵੀਆਹੁ ॥
लै भाड़ि करे वीआहु ॥
विवाह करवाने का वह भाड़ा लेता है और

ਕਢਿ ਕਾਗਲੁ ਦਸੇ ਰਾਹੁ ॥
कढि कागलु दसे राहु ॥
पत्री निकाल कर वह मार्ग दिखाता है।

ਸੁਣਿ ਵੇਖਹੁ ਲੋਕਾ ਏਹੁ ਵਿਡਾਣੁ ॥
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥
हे लोगो ! सुनो और देखो, यह कितनी आश्चर्यचकित बात है कि

ਮਨਿ ਅੰਧਾ ਨਾਉ ਸੁਜਾਣੁ ॥੪॥
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥
आत्मिक तौर पर अन्धा होता हुआ भी पण्डित अपना नाम (बुद्धिमान) सुजान कहलवाता है॥ ४ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਾਹਿਬੁ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਰਾਇਸੀ ॥
साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥
जब प्रभु दयालु होता है तो कृपा करके वह जीवों से कर्म करवाता है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਇਸੀ ॥
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥
वही सेवक उसकी सेवा-भक्ति करता है, जिसे वह हुक्म का भेद बताकर मनवा लेता है।

ਹੁਕਮਿ ਮੰਨਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ਤਾ ਖਸਮੈ ਕਾ ਮਹਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
प्रभु का हुक्म मानने से मनुष्य स्वीकृत हो जाता है और तब वह सत्य के महल को पा लेता है।

ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਮਨਹੁ ਚਿੰਦਿਆ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਇਸੀ ॥
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
जो कुछ प्रभु-पति को अच्छा लगता है, वही कुछ वह (पालन) करता है, जब उसकी सेवा सफल हो जाती है तो उसे मनोवांछित फल मिल जाता है।

ਤਾ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇਸੀ ॥੧੫॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥
वह तब मान-सम्मान सहित प्रभु के दरबार में जाता है॥ १५ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਗਊ ਬਿਰਾਹਮਣ ਕਉ ਕਰੁ ਲਾਵਹੁ ਗੋਬਰਿ ਤਰਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
हे भाई ! गाय एवं ब्राह्मण पर तो तुम कर लगाते हो। गाय के गोबर ने तुझे मोक्ष प्रदान नहीं करना।

ਧੋਤੀ ਟਿਕਾ ਤੈ ਜਪਮਾਲੀ ਧਾਨੁ ਮਲੇਛਾਂ ਖਾਈ ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
एक तरफ धोती, तिलक एवं माला धारण करते हो लेकिन दूसरी तरफ मुसलमानों से धन-धान्य खाते हो, जिन्हें मलेच्छ कह कर पुकारते हो।

ਅੰਤਰਿ ਪੂਜਾ ਪੜਹਿ ਕਤੇਬਾ ਸੰਜਮੁ ਤੁਰਕਾ ਭਾਈ ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
हे भाई ! अपने घर के अन्दर तुम पूजा-अर्चना करते हो लेकिन बाहर मुसलमानों से डर कर पाखंड करके कुरान पढ़ते एवं मुसलमानों की भाँति जीवन-आचरण धारण करते हो।

ਛੋਡੀਲੇ ਪਾਖੰਡਾ ॥
छोडीले पाखंडा ॥
हे भाई ! यह पाखण्ड त्याग दो।

ਨਾਮਿ ਲਇਐ ਜਾਹਿ ਤਰੰਦਾ ॥੧॥
नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥
प्रभु का नाम-सुमिरन करने से ही तुझे मोक्ष प्राप्त होगा ॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਮਾਣਸ ਖਾਣੇ ਕਰਹਿ ਨਿਵਾਜ ॥
माणस खाणे करहि निवाज ॥
मानव-भक्षी मुसलमान पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ते हैं।

ਛੁਰੀ ਵਗਾਇਨਿ ਤਿਨ ਗਲਿ ਤਾਗ ॥
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
दूसरी तरफ अत्याचार की छुरी चलाते हैं, उनके गले में धागा है।

ਤਿਨ ਘਰਿ ਬ੍ਰਹਮਣ ਪੂਰਹਿ ਨਾਦ ॥
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥
उनके घर में ब्राह्मण शंख बजाते हैं।

ਉਨ੍ਹਾ ਭਿ ਆਵਹਿ ਓਈ ਸਾਦ ॥
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥
उनको भी वही स्वाद आता है।

ਕੂੜੀ ਰਾਸਿ ਕੂੜਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
उनकी पूंजी झूठी है और उनका व्यापार झूठा है।

ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਕਰਹਿ ਆਹਾਰੁ ॥
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥
झुठ बोलकर वह भोजन ग्रहण करते हैं।

ਸਰਮ ਧਰਮ ਕਾ ਡੇਰਾ ਦੂਰਿ ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥
लज्जा एवं धर्म का बसेरा उनसे कहीं दूर है।

ਨਾਨਕ ਕੂੜੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥
हे नानक ! झूठ उन सभी को भरपूर कर रहा है।

ਮਥੈ ਟਿਕਾ ਤੇੜਿ ਧੋਤੀ ਕਖਾਈ ॥
मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥
वे माथे पर तिलक लगाते हैं और कमर के साथ भगवां धोती पहनते हैं।

ਹਥਿ ਛੁਰੀ ਜਗਤ ਕਾਸਾਈ ॥
हथि छुरी जगत कासाई ॥
उनके हाथ में छुरी है और जगत पर कसाइयों की भाँति अत्याचार कर रहे हैं।

ਨੀਲ ਵਸਤ੍ਰ ਪਹਿਰਿ ਹੋਵਹਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥
ब्राह्मण नीले वस्त्र पहन कर मुसलमानों की नजर में स्वीकृत होना चाहते हैं।

ਮਲੇਛ ਧਾਨੁ ਲੇ ਪੂਜਹਿ ਪੁਰਾਣੁ ॥
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
मुसलमानों से धन-धान्य लेते हैं, जिन्हें मलेच्छ कहते हैं और पुराणों की फिर भी पूजा करते हैं।

ਅਭਾਖਿਆ ਕਾ ਕੁਠਾ ਬਕਰਾ ਖਾਣਾ ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥
एक तरफ अभाषा अरबी-फारसी का कलमा पढकर हलाल किया बकरा खाते हैं

ਚਉਕੇ ਉਪਰਿ ਕਿਸੈ ਨ ਜਾਣਾ ॥
चउके उपरि किसै न जाणा ॥
परन्तु दूसरी तरफ अपनी रसोई के भीतर किसी को दाखिल नहीं होने देते।

ਦੇ ਕੈ ਚਉਕਾ ਕਢੀ ਕਾਰ ॥
दे कै चउका कढी कार ॥
वे रसोई की लिपाई करके उसके गिर्द रेखा लगाते हैं और

ਉਪਰਿ ਆਇ ਬੈਠੇ ਕੂੜਿਆਰ ॥
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥
चौकी रसोई में वे झूठे आकर बैठ जाते हैं।

ਮਤੁ ਭਿਟੈ ਵੇ ਮਤੁ ਭਿਟੈ ॥ ਇਹੁ ਅੰਨੁ ਅਸਾਡਾ ਫਿਟੈ ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥
दूसरों को वे कहते हैं कि, "रसोई (चौकी) के निकट मत आना, हमारी चौकी को स्पर्श मत करना,अन्यथा हमारा भोजन भ्रष्ट हो जाएगा।"

ਤਨਿ ਫਿਟੈ ਫੇੜ ਕਰੇਨਿ ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥
भ्रष्ट मलिन शरीर से वे दुष्कर्म करते हैं।

ਮਨਿ ਜੂਠੈ ਚੁਲੀ ਭਰੇਨਿ ॥
मनि जूठै चुली भरेनि ॥
अपवित्र मन से वे जूठन की चुल्लू करते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਧਿਆਈਐ ॥
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
हे नानक ! सत्य का ध्यान करने से

ਸੁਚਿ ਹੋਵੈ ਤਾ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥
जब मन शुद्ध हो जाता है तो सत्य (प्रभु) प्राप्त हो जाता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਚਿਤੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਵੇਖਿ ਨਦਰੀ ਹੇਠਿ ਚਲਾਇਦਾ ॥
चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥
परमात्मा सब जीवों को अपने चित्त में याद रखता है और वह सबको देखकर अपनी निगाह में रखकर अपनी इच्छा से चलाता है।

ਆਪੇ ਦੇ ਵਡਿਆਈਆ ਆਪੇ ਹੀ ਕਰਮ ਕਰਾਇਦਾ ॥
आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥
वह खुद ही जीवों को प्रशंसा प्रदान करता है और खुद ही उन से कर्म करवाता है।

ਵਡਹੁ ਵਡਾ ਵਡ ਮੇਦਨੀ ਸਿਰੇ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇਦਾ ॥
वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥
बड़ों से बड़ा प्रभु महान है और उसकी सृष्टि भी अनन्त है। वह हरेक को कामकाज में लगाता है।

ਨਦਰਿ ਉਪਠੀ ਜੇ ਕਰੇ ਸੁਲਤਾਨਾ ਘਾਹੁ ਕਰਾਇਦਾ ॥
नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥
यदि प्रभु कोप-दृष्टि धारण कर ले तो वह राजाओं-महाराजाओं को भी घास के तृण की तरह कंगाल बना देता है।

ਦਰਿ ਮੰਗਨਿ ਭਿਖ ਨ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥
चाहे वे द्वार-द्वार माँगते रहें परन्तु उन्हें भिक्षा नहीं मिलती॥ १६ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਜੇ ਮੋਹਾਕਾ ਘਰੁ ਮੁਹੈ ਘਰੁ ਮੁਹਿ ਪਿਤਰੀ ਦੇਇ ॥
जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥
यदि कोई चोर पराया धर लूट ले और पराए घर की लूट पितरों के नमित श्राद्ध करे तो

ਅਗੈ ਵਸਤੁ ਸਿਞਾਣੀਐ ਪਿਤਰੀ ਚੋਰ ਕਰੇਇ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
परलोक में वस्तु पहचानी जाती है। इस तरह वह पितरों को चोर बना देती है। (अर्थात् पित्तरों को दण्ड मिलता और चोरी की वस्तु से पुण्य नहीं मिलता)

ਵਢੀਅਹਿ ਹਥ ਦਲਾਲ ਕੇ ਮੁਸਫੀ ਏਹ ਕਰੇਇ ॥
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥
प्रभु आगे यह न्याय करता है कि जो ब्राहाण अपने यजमान से वह चोरी की वस्तु पितरों नमित्त दान करवाता है, उस दलाल ब्राहाण के हाथ काट दिए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਅਗੈ ਸੋ ਮਿਲੈ ਜਿ ਖਟੇ ਘਾਲੇ ਦੇਇ ॥੧॥
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥
हे नानक ! आगे परलोक में केवल यही प्राप्त होता है, जो मनुष्य अपने परिश्रम से कम कर देता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਜਿਉ ਜੋਰੂ ਸਿਰਨਾਵਣੀ ਆਵੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥
जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥
जैसे स्त्री को बार-बार मासिक-धर्म होता है,

ਜੂਠੇ ਜੂਠਾ ਮੁਖਿ ਵਸੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥
वैसे झूठे इन्सान के मुँह में झूठ ही बना रहता है। ऐसा इन्सान सदैव ही दुःखी होता है।

ਸੂਚੇ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਬਹਨਿ ਜਿ ਪਿੰਡਾ ਧੋਇ ॥
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥
ऐसे इन्सान पवित्र नहीं कहे जाते, जो अपने शरीर को शुद्ध करके बैठ जाते हैं।

ਸੂਚੇ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ॥੨॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥
हे नानक ! पवित्र लोग वही हैं, जिनके मन में प्रभु निवास करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਤੁਰੇ ਪਲਾਣੇ ਪਉਣ ਵੇਗ ਹਰ ਰੰਗੀ ਹਰਮ ਸਵਾਰਿਆ ॥
तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥
जिन लोगों के पास पवन-वेग की तरह तेज चलने वाले सुन्दर काठीधारी घोड़े हैं,

ਕੋਠੇ ਮੰਡਪ ਮਾੜੀਆ ਲਾਇ ਬੈਠੇ ਕਰਿ ਪਾਸਾਰਿਆ ॥
कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥
जिन्होंने अपनी रानियों के रनिवास को हर प्रकार के रंगों से सजाया है, जो मकानों, मंडपों एवं ऊँचे मन्दिरों में रहते हैं और आडम्बर करते रहते हैं।

ਚੀਜ ਕਰਨਿ ਮਨਿ ਭਾਵਦੇ ਹਰਿ ਬੁਝਨਿ ਨਾਹੀ ਹਾਰਿਆ ॥
चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥
जो अपनी मन लुभावनी बातें करते हैं, परन्तु प्रभु को नहीं जानते इसलिए उन्होंने अपने जीवन की बाजी हार दी है।

ਕਰਿ ਫੁਰਮਾਇਸਿ ਖਾਇਆ ਵੇਖਿ ਮਹਲਤਿ ਮਰਣੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥
करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥
जिन व्यक्तियों ने दूसरों पर हुक्म चला कर भोजन खाया है और अपने महलों को देखकर मृत्यु को भुला दिया है

ਜਰੁ ਆਈ ਜੋਬਨਿ ਹਾਰਿਆ ॥੧੭॥
जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥
जब उन पर बुढ़ापा आ गया तो उसके आगे उनका यौवन हार गया अर्थात् बुढ़ापे ने उनका यौवन नष्ट कर दिया ॥ १७ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਜੇ ਕਰਿ ਸੂਤਕੁ ਮੰਨੀਐ ਸਭ ਤੈ ਸੂਤਕੁ ਹੋਇ ॥
जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥
यदि सूतक रूपी वहम को सत्य मान लिया जाए तो सूतक सब में होता है।

ਗੋਹੇ ਅਤੈ ਲਕੜੀ ਅੰਦਰਿ ਕੀੜਾ ਹੋਇ ॥
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥
गोबर एवं लकड़ी में भी कीड़ा होता है।

ਜੇਤੇ ਦਾਣੇ ਅੰਨ ਕੇ ਜੀਆ ਬਾਝੁ ਨ ਕੋਇ ॥
जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥
जितने भी अनाज के दाने इस्तेमाल किए जाते हैं, कोई भी दाना जीव के बिना नहीं।

ਪਹਿਲਾ ਪਾਣੀ ਜੀਉ ਹੈ ਜਿਤੁ ਹਰਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
सर्वप्रथम जल ही जीवन है, जिससे सब कुछ हरा-भरा (ताजा) होता है।

ਸੂਤਕੁ ਕਿਉ ਕਰਿ ਰਖੀਐ ਸੂਤਕੁ ਪਵੈ ਰਸੋਇ ॥
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥
सूतक किस तरह दूर रखा जा सकता है ? यह सूतक हमारी पाकशाला (रसोई) में भी रहता है।

ਨਾਨਕ ਸੂਤਕੁ ਏਵ ਨ ਉਤਰੈ ਗਿਆਨੁ ਉਤਾਰੇ ਧੋਇ ॥੧॥
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥
हे नानक ! भ्रमों के कारण पड़ा सूतक इस तरह कभी दूर नहीं होता, इसे ज्ञान द्वारा ही शुद्ध करके दूर किया जा सकता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਮਨ ਕਾ ਸੂਤਕੁ ਲੋਭੁ ਹੈ ਜਿਹਵਾ ਸੂਤਕੁ ਕੂੜੁ ॥
मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥
मन का सूतक लोभ है अर्थात् लोभ रूपी सूतक मन को चिपकता है और जीभ का सूतक झूठ है अर्थात् झुठ रूपी सूतक जीभ से लगता है।

ਅਖੀ ਸੂਤਕੁ ਵੇਖਣਾ ਪਰ ਤ੍ਰਿਅ ਪਰ ਧਨ ਰੂਪੁ ॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥
आंखों का सूतक पराई नारी, पराया-धन एवं रूप-यौवन को देखना है।

ਕੰਨੀ ਸੂਤਕੁ ਕੰਨਿ ਪੈ ਲਾਇਤਬਾਰੀ ਖਾਹਿ ॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥
कानों का सूतक कानों से पराई निन्दा सुनना है।

ਨਾਨਕ ਹੰਸਾ ਆਦਮੀ ਬਧੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਜਾਹਿ ॥੨॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥
हे नानक ! इन सूतकों के कारण मनुष्य की आत्मा जकड़ी हुई यमपुरी जाती है॥ २॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਸਭੋ ਸੂਤਕੁ ਭਰਮੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥
यह जीवन-मृत्यु वाला सूतक सिर्फ भ्रम ही है, जो द्वैतभाव के कारण सबको लगा हुआ है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਭਾਣੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
जमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥
जन्म एवं मरण प्रभु का हुक्म है और उसकी रज़ा द्वारा ही मनुष्य जन्म लेता और प्राण त्यागता है।

ਖਾਣਾ ਪੀਣਾ ਪਵਿਤ੍ਰੁ ਹੈ ਦਿਤੋਨੁ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥
खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु स्मबाहि ॥
खाना-पीना पवित्र है, क्योंकि प्रभु ने सभी जीवों को भोजन दिया है।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ੍ੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝਿਆ ਤਿਨ੍ਾ ਸੂਤਕੁ ਨਾਹਿ ॥੩॥
नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥
हे नानक ! जो गुरुमुख बनकर इस भेद को समझ लेता है, उसे सूतक नहीं लगता॥ ३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿਸੁ ਵਿਚਿ ਵਡੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ॥
सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥
जिस सतगुरु में महान् गुण मौजूद हैं, उसे बड़ा मानकर उसी की स्तुति करनी चाहिए।

ਸਹਿ ਮੇਲੇ ਤਾ ਨਦਰੀ ਆਈਆ ॥
सहि मेले ता नदरी आईआ ॥
भगवान की कृपा से सतगुरु मिल जाए तो वह सतगुरु की बड़ाई को देखता है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਣਾ ਤਾ ਮਨਿ ਵਸਾਈਆ ॥
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥
जब उसे अच्छा लगता है तो वह मनुष्य के मन में बसा देता है।

ਕਰਿ ਹੁਕਮੁ ਮਸਤਕਿ ਹਥੁ ਧਰਿ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ਕਢੀਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ॥
करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥
ईश्वर का हुक्म हो तो सतगुरु मनुष्य के मस्तक पर हाथ रखकर तमाम बुराइयाँ निकाल कर फेंक देता है।

ਸਹਿ ਤੁਠੈ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈਆ ॥੧੮॥
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥
जब प्रभु प्रसन्न हो जाए तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं॥ १८ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १ ॥

ਪਹਿਲਾ ਸੁਚਾ ਆਪਿ ਹੋਇ ਸੁਚੈ ਬੈਠਾ ਆਇ ॥
पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥
पहले ब्राह्मण आप निर्मल होकर पवित्र चौके पर बैठ जाता है।

ਸੁਚੇ ਅਗੈ ਰਖਿਓਨੁ ਕੋਇ ਨ ਭਿਟਿਓ ਜਾਇ ॥
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥
शुद्ध भोजन जिसे किसी ने स्पर्श नहीं किया होता, उसके समक्ष लाकर परोसा जाता है।

ਸੁਚਾ ਹੋਇ ਕੈ ਜੇਵਿਆ ਲਗਾ ਪੜਣਿ ਸਲੋਕੁ ॥
सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥
इस तरह पवित्र होकर वह भोजन ग्रहण करता है और तब श्लोक पढ़ने लग जाता है।

ਕੁਹਥੀ ਜਾਈ ਸਟਿਆ ਕਿਸੁ ਏਹੁ ਲਗਾ ਦੋਖੁ ॥
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥
उसने पवित्र भोजन को अपने पेट में अशुद्ध स्थान में डाल लिया, यह दोष किसे लगा है ?

ਅੰਨੁ ਦੇਵਤਾ ਪਾਣੀ ਦੇਵਤਾ ਬੈਸੰਤਰੁ ਦੇਵਤਾ ਲੂਣੁ ਪੰਜਵਾ ਪਾਇਆ ਘਿਰਤੁ ॥ ਤਾ ਹੋਆ ਪਾਕੁ ਪਵਿਤੁ ॥
अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥
अन्न, जल, अग्नि एवं नमक चारों ही देवता अर्थात् पवित्र पदार्थ हैं। जब पाँचवां पदार्थ घी डाल दिया जाता है तो शुद्ध एवं पवित्र भोजन बन जाता है।

ਪਾਪੀ ਸਿਉ ਤਨੁ ਗਡਿਆ ਥੁਕਾ ਪਈਆ ਤਿਤੁ ॥
पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥
देवताओं की तरह पवित्र भोजन पापी तन के संयोग से अपवित्र हो जाता है और उस पर फिर थूका जाता है।

ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਚਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਰਸ ਖਾਹਿ ॥
जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥
हे नानक ! वह मुँह जो नाम का उच्चारण नहीं करता और नाम के बिना रसों का भोग करता है,

ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਤਿਤੁ ਮੁਖਿ ਥੁਕਾ ਪਾਹਿ ॥੧॥
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥
यूं समझ लीजिए कि उस मुँह पर थूक ही पड़ता है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ ਵੀਆਹੁ ॥
भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
नारी जन्मदाती है, उसी के माध्यम से मनुष्य गर्भ में से जन्म लेता है, उसी के माध्यम से प्राणी का शरीर बनता है। नारी से ही उसकी सगाई एवं विवाह होता है।

ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
नारी से ही मनुष्य दोस्ती करता है और नारी द्वारा ही दुनिया की उत्पत्ति का मार्ग जारी रहता है।

ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
यदि किसी मनुष्य की पत्नी मर जाती है तो वह दूसरी स्त्री की खोज करता है। नारी से ही उसका दूसरों से रिश्ता बनता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान ॥
फिर उस नारी को क्यों बुरा कहें ? जिसने बड़े-बड़े राजा महाराजा एवं महापुरुषों को जन्म दिया है।

ਭੰਡਹੁ ਹੀ ਭੰਡੁ ਊਪਜੈ ਭੰਡੈ ਬਾਝੁ ਨ ਕੋਇ ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नारी से ही नारी पैदा होती है और नारी के बिना कोई भी पैदा नहीं हो सकता।

ਨਾਨਕ ਭੰਡੈ ਬਾਹਰਾ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
किन्तु हे नानक ! केवल एक परमात्मा ही नारी के बिना अयोनि में है।

ਜਿਤੁ ਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਭਾਗਾ ਰਤੀ ਚਾਰਿ ॥
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
जिस मुख से सदा ही प्रभु की गुणस्तुति होती है, वह भाग्यशाली एवं सुन्दर है।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਊਜਲੇ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੨॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥
हे नानक ! वह मुख उस सत्य प्रभु के दरबार में उज्ज्वल होता है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਆਪਣਾ ਜਿਸੁ ਨਾਹੀ ਸੋ ਚੁਣਿ ਕਢੀਐ ॥
सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥
हे प्रभु ! सभी तुझे अपना मालिक कहते हैं लेकिन जिसका तू नहीं है, उसे चुनकर बाहर निकाल दिया जाता है।

ਕੀਤਾ ਆਪੋ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਲੇਖਾ ਸੰਢੀਐ ॥
कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥
हर किसी प्राणी ने अपने कर्मों का फल भोगना है और अपना लेखा-जोखा चुकाना है।

ਜਾ ਰਹਣਾ ਨਾਹੀ ਐਤੁ ਜਗਿ ਤਾ ਕਾਇਤੁ ਗਾਰਬਿ ਹੰਢੀਐ ॥
जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥
यदि मनुष्य ने इस जगत में सदा नहीं रहना तो वह क्यों अभिमान करे।

ਮੰਦਾ ਕਿਸੈ ਨ ਆਖੀਐ ਪੜਿ ਅਖਰੁ ਏਹੋ ਬੁਝੀਐ ॥ ਮੂਰਖੈ ਨਾਲਿ ਨ ਲੁਝੀਐ ॥੧੯॥
मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥
किसी को भी बुरा मत कहो और विद्या पढ़कर इस बात को समझना चाहिए। मूर्खों से कदापि झगड़ा नहीं करना चाहिए ॥१९॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਨਾਨਕ ਫਿਕੈ ਬੋਲਿਐ ਤਨੁ ਮਨੁ ਫਿਕਾ ਹੋਇ ॥
नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥
हे नानक ! फीका बोलने से तन-मन दोनों ही फीके (शुष्क) हो जाते हैं।

ਫਿਕੋ ਫਿਕਾ ਸਦੀਐ ਫਿਕੇ ਫਿਕੀ ਸੋਇ ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥
कड़वा बोलने वाला दुनिया में कटुभाषी ही मशहूर हो जाता है और लोग भी उसके कड़वे वचनों से ही याद करते हैं।

ਫਿਕਾ ਦਰਗਹ ਸਟੀਐ ਮੁਹਿ ਥੁਕਾ ਫਿਕੇ ਪਾਇ ॥
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
कड़वे स्वभाव वाला जीव प्रभु के दरबार में दुत्कार दिया जाता है और कटुभाषी के मुँह पर थूक ही पड़ता है।

ਫਿਕਾ ਮੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਪਾਣਾ ਲਹੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥
कटुभाषी मनुष्य मूर्ख कहा जाता है और उसे दण्ड के तौर पर जूते पड़ते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਅੰਦਰਹੁ ਝੂਠੇ ਪੈਜ ਬਾਹਰਿ ਦੁਨੀਆ ਅੰਦਰਿ ਫੈਲੁ ॥
अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥
मन से झूठे पर बाहर से सत्यवादी होने का दिखावा करने वाले दुनिया में पाखण्ड ही बनाए रखते हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਜੇ ਨਾਵਹਿ ਉਤਰੈ ਨਾਹੀ ਮੈਲੁ ॥
अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥
चाहे वे अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लें परन्तु फिर भी उनकी मन की मैल दूर नहीं होती।

ਜਿਨ੍ ਪਟੁ ਅੰਦਰਿ ਬਾਹਰਿ ਗੁਦੜੁ ਤੇ ਭਲੇ ਸੰਸਾਰਿ ॥
जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥
इस दुनिया में वही लोग भले हैं, जिनके मन में रेशम की तरह कोमलता है, चाहे बाहर से उन्होंने शरीर पर फटे-पुराने ही कपड़े पहने हुए हैं।

ਤਿਨ੍ ਨੇਹੁ ਲਗਾ ਰਬ ਸੇਤੀ ਦੇਖਨ੍ ਵੀਚਾਰਿ ॥
तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥
उनका भगवान से बहुत प्रेम है और उसके दर्शनों का ध्यान धारण करते हैं।

ਰੰਗਿ ਹਸਹਿ ਰੰਗਿ ਰੋਵਹਿ ਚੁਪ ਭੀ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ॥
रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
प्रभु के प्रेम में वे हँसते हैं, प्रेम में ही रोते हैं और चुप भी हो जाते हैं।

ਪਰਵਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ਬਾਝੁ ਸਚੇ ਨਾਹ ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥
वह अपने सत्यस्वरूप परमेश्वर के अलावा किसी की भी परवाह नहीं करते।

ਦਰਿ ਵਾਟ ਉਪਰਿ ਖਰਚੁ ਮੰਗਾ ਜਬੈ ਦੇਇ ਤ ਖਾਹਿ ॥
दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥
भु-द्वार के मार्ग पर बैठे हुए वह भोजन की याचना करते हैं और जब वह देता है तो ही खाते ।

ਦੀਬਾਨੁ ਏਕੋ ਕਲਮ ਏਕਾ ਹਮਾ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾ ਮੇਲੁ ॥
दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥
परमात्मा की कचहरी एक है और एक ही उसकी जीवों की तकदीर लिखने की कलम है। हमारा और तुम्हारा वहाँ मेल होता है अर्थात् छोटे-बड़े का मेल होता है।

ਦਰਿ ਲਏ ਲੇਖਾ ਪੀੜਿ ਛੁਟੈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਉ ਤੇਲੁ ॥੨॥

दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥

प्रभु के दरबार में कर्मों का लेखा-जोखा किया जाता है। हे नानक ! अपराधी मनुष्य कोल्हू में तेल वाले बीजों की तरह पीसे जाते हैं। २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਹੀ ਕਰਣਾ ਕੀਓ ਕਲ ਆਪੇ ਹੀ ਤੈ ਧਾਰੀਐ ॥
आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥
हे परमात्मा ! तू स्वयं ही सृष्टि रचयिता है और स्वयं ही सत्ता को धारण किया हुआ है।

ਦੇਖਹਿ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਧਰਿ ਕਚੀ ਪਕੀ ਸਾਰੀਐ ॥
देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥
तू अपनी रचना एवं कच्ची-पक्की गोटियों (अच्छे-बुरे जीवों) को धरती पर देखता है।

ਜੋ ਆਇਆ ਸੋ ਚਲਸੀ ਸਭੁ ਕੋਈ ਆਈ ਵਾਰੀਐ ॥
जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥
जो भी जीव इस दुनिया में आया है, वह चला जाएगा। अपनी बारी आने पर सभी ने जाना ही होता है।

ਜਿਸ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣ ਹਹਿ ਕਿਉ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ॥
जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥
अपने मन में से हम उस प्रभु को क्यों विस्मृत करें, जिसने हमें जीवन एवं प्राण दिए हुए हैं?

ਆਪਣ ਹਥੀ ਆਪਣਾ ਆਪੇ ਹੀ ਕਾਜੁ ਸਵਾਰੀਐ ॥੨੦॥
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥
आओ, अपने हाथों से हम स्वयं ही अपने कार्य सम्पूर्ण करें अर्थात् शुभ कर्मों द्वारा भगवान को प्रसन्न करके अपना जीवन कार्य संवार ले ॥ २० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक महला २ ॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਆਸਕੀ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
यह कैसी आशिकी है, जो भगवान को छोड़कर द्वैतवाद से लगती है।

ਨਾਨਕ ਆਸਕੁ ਕਾਂਢੀਐ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
हे नानक ! सच्चा आशिक वही कहलाता है, जो सदा प्रभु के प्रेम में ही समाया रहता है।

ਚੰਗੈ ਚੰਗਾ ਕਰਿ ਮੰਨੇ ਮੰਦੈ ਮੰਦਾ ਹੋਇ ॥
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥
जो व्यक्ति अपने किए शुभ कर्म के दिए फल सुख को अच्छा मानता है और अपने किए बुरे कर्म के दिए फल दुख को बुरा मानता है,

ਆਸਕੁ ਏਹੁ ਨ ਆਖੀਐ ਜਿ ਲੇਖੈ ਵਰਤੈ ਸੋਇ ॥੧॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥
उसे भगवान का आशिक नहीं कहा जा सकता। वह तो अच्छे एवं बुरे के लेखे में पड़कर प्रेम का हिसाब-किताब करता है। प्रभु जो कुछ करता है, ऐसा जीव उसमें सहमत नहीं रहता ॥ १ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २ ॥

ਸਲਾਮੁ ਜਬਾਬੁ ਦੋਵੈ ਕਰੇ ਮੁੰਢਹੁ ਘੁਥਾ ਜਾਇ ॥
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
जो मनुष्य अपने प्रभु के हुक्म को कभी प्रणाम करता है और कभी उसके किए पर संशय (ऐतराज) करता है, वह आदि से ही कुमार्गगामी हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਦੋਵੈ ਕੂੜੀਆ ਥਾਇ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥
हे नानक ! उसके दोनों ही कार्य झूठे हैं और प्रभु के दरबार में उसको कोई स्थान नहीं मिलता॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੀਐ ॥
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जिसकी सेवा करने से सुख मिलता है, सदैव उस प्रभु को याद करते रहना चाहिए।

ਜਿਤੁ ਕੀਤਾ ਪਾਈਐ ਆਪਣਾ ਸਾ ਘਾਲ ਬੁਰੀ ਕਿਉ ਘਾਲੀਐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
जब अपने किए कर्मों का आप ही भोगना है तो फिर हम बुरे कर्म क्यों करें ?

ਮੰਦਾ ਮੂਲਿ ਨ ਕੀਚਈ ਦੇ ਲੰਮੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लमी नदरि निहालीऐ ॥
बुरा कर्म कदापि नहीं करना चाहिए, दूर-दृष्टि से नतीजे का ध्यान रखना चाहिए।

ਜਿਉ ਸਾਹਿਬ ਨਾਲਿ ਨ ਹਾਰੀਐ ਤੇਵੇਹਾ ਪਾਸਾ ਢਾਲੀਐ ॥
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
हमें कर्मो का ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के समक्ष हमें लज्जित होना पड़े, अर्थात् शुभ कर्म ही करने चाहिए।

ਕਿਛੁ ਲਾਹੇ ਉਪਰਿ ਘਾਲੀਐ ॥੨੧॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥
मनुष्य जन्म में ऐसी सेवा-भक्ति करो, जिससे लाभ प्राप्त हो।॥ २१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक महला २ ॥

ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ ਚਾਕਰੀ ਨਾਲੇ ਗਾਰਬੁ ਵਾਦੁ ॥
चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
यदि कोई सेवक अपने मालिक की सेवा करता है और साथ ही अभिमानी, विवादास्पद झगड़ालू है।

ਗਲਾ ਕਰੇ ਘਣੇਰੀਆ ਖਸਮ ਨ ਪਾਏ ਸਾਦੁ ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
यदि वह अधिकतर बातें बनाता है तो वह अपने मालिक की प्रसन्नता का पात्र नहीं होता।

ਆਪੁ ਗਵਾਇ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਤਾ ਕਿਛੁ ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
लेकिन यदि वह अपना अहंकार मिटाकर सेवा करे तो कुछ मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਲਗਾ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਲਗਾ ਸੋ ਪਰਵਾਨੁ ॥੧॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥
हे नानक ! वह मनुष्य अपने उस मालिक से मिल जाता है, जिसकी सेवा में जुटा हुआ है, उसकी लगन स्वीकृत हो जाती है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २ ॥

ਜੋ ਜੀਇ ਹੋਇ ਸੁ ਉਗਵੈ ਮੁਹ ਕਾ ਕਹਿਆ ਵਾਉ ॥
जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥
जो (संकल्प) दिल में होता है, वह (कर्मों के रूप में) प्रगट हो जाता है। मुंह से कही बात तो हवा की तरह महत्वहीन होती है।

ਬੀਜੇ ਬਿਖੁ ਮੰਗੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੇਖਹੁ ਏਹੁ ਨਿਆਉ ॥੨॥
बीजे बिखु मंगै अम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥
मनुष्य विष बोता है परन्तु अमृत,माँगता है। देखो ! यह कैसा न्याय है ॥ २ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ ਦੋਸਤੀ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥
नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥
मूर्ख के साथ मित्रता कदापि ठीक नहीं होती।

ਜੇਹਾ ਜਾਣੈ ਤੇਹੋ ਵਰਤੈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥
जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥
जैसा वह जानता है, वैसा ही वह करता है। चाहे कोई इसका निर्णय करके देख ले।

ਵਸਤੂ ਅੰਦਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਵੈ ਦੂਜੀ ਹੋਵੈ ਪਾਸਿ ॥
वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥
किसी वस्तु में दूसरी वस्तु तभी समा सकती है, यद्यपि पहले पड़ी हुई वस्तु को निकाल दिया जाए।

ਸਾਹਿਬ ਸੇਤੀ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੈ ਕਹੀ ਬਣੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥
प्रभु के समक्ष हुक्म करना सफल नहीं होता, अपितु उसके समक्ष तो विनम्र प्रार्थना ही करनी चाहिए।

ਕੂੜਿ ਕਮਾਣੈ ਕੂੜੋ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤਿ ਵਿਗਾਸਿ ॥੩॥
कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥
हे नानक ! छल-कपट की कमाई करने से छल-कपट ही हासिल होता है। लेकिन प्रभु का यशोगान करने से प्राणी प्रसन्न हो जाता है।॥ ३ ॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਨਾਲਿ ਇਆਣੇ ਦੋਸਤੀ ਵਡਾਰੂ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ॥
नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥
अज्ञानी व्यक्ति के साथ मित्रता एवं बड़े आदमी के साथ प्रेम

ਪਾਣੀ ਅੰਦਰਿ ਲੀਕ ਜਿਉ ਤਿਸ ਦਾ ਥਾਉ ਨ ਥੇਹੁ ॥੪॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥
जल में लकीर की भाँति है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहता॥ ४॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਹੋਇ ਇਆਣਾ ਕਰੇ ਕੰਮੁ ਆਣਿ ਨ ਸਕੈ ਰਾਸਿ ॥
होइ इआणा करे कमु आणि न सकै रासि ॥
यदि एक नासमझ व्यक्ति कोई कार्य करे तो वह इसे सम्पूर्ण नहीं कर सकता।

ਜੇ ਇਕ ਅਧ ਚੰਗੀ ਕਰੇ ਦੂਜੀ ਭੀ ਵੇਰਾਸਿ ॥੫॥
जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥
यदि एकाध भला काम कर भी ले तो वह दूसरा बिगाड़ देता है॥ ५॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਚਾਕਰੁ ਲਗੈ ਚਾਕਰੀ ਜੇ ਚਲੈ ਖਸਮੈ ਭਾਇ ॥
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥
जो सेवक अपने स्वामी की इच्छानुसार चले तो ही मानो कि वह अपने स्वामी की नौकरी कर रहा है,

ਹੁਰਮਤਿ ਤਿਸ ਨੋ ਅਗਲੀ ਓਹੁ ਵਜਹੁ ਭਿ ਦੂਣਾ ਖਾਇ ॥
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥
इससे एक तो उसे बड़ा मान-सम्मान मिलेगा, दूसरा वेतन भी स्वामी से दुगुना प्राप्त करेगा।

ਖਸਮੈ ਕਰੇ ਬਰਾਬਰੀ ਫਿਰਿ ਗੈਰਤਿ ਅੰਦਰਿ ਪਾਇ ॥
खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥
यदि वह अपने स्वामी की बराबरी करता है तो वह मन में लज्जित ही होता है।

ਵਜਹੁ ਗਵਾਏ ਅਗਲਾ ਮੁਹੇ ਮੁਹਿ ਪਾਣਾ ਖਾਇ ॥
वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥
परिणामस्वरूप अपनी पहली कमाई भी गंवा लेता है और सदा जूते खाता है।

ਜਿਸ ਦਾ ਦਿਤਾ ਖਾਵਣਾ ਤਿਸੁ ਕਹੀਐ ਸਾਬਾਸਿ ॥
जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥
जिसका दिया हम खाते हैं, उसका हमें कोटि-कोटि आभार व्यक्त करना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲਈ ਨਾਲਿ ਖਸਮ ਚਲੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥੨੨॥
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥
हे नानक ! प्रभु के समक्ष हुक्म नहीं सफल होता अपितु उसके समक्ष विनम्र प्रार्थना ही कारगर होती है।॥ २२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਹਲਾ ੨ ॥
सलोकु महला २ ॥
श्लोक महला २॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਦਾਤਿ ਆਪਸ ਤੇ ਜੋ ਪਾਈਐ ॥
एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥
यह कैसी देन है, जो हम स्वयं मांग कर प्राप्त करते हैं ?

ਨਾਨਕ ਸਾ ਕਰਮਾਤਿ ਸਾਹਿਬ ਤੁਠੈ ਜੋ ਮਿਲੈ ॥੧॥
नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥
हे नानक ! अदभुत देन वह है, जो प्रभु की कृपा-दृष्टि होने पर प्राप्त होती है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਏਹ ਕਿਨੇਹੀ ਚਾਕਰੀ ਜਿਤੁ ਭਉ ਖਸਮ ਨ ਜਾਇ ॥
एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
यह कैसी चाकरी (सेवा) है, जिससे स्वामी का भय दूर नहीं होता ?

ਨਾਨਕ ਸੇਵਕੁ ਕਾਢੀਐ ਜਿ ਸੇਤੀ ਖਸਮ ਸਮਾਇ ॥੨॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥
हे नानक ! सच्चा सेवक वही कहलवाता है, जो अपने स्वामी में समा जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨਾਨਕ ਅੰਤ ਨ ਜਾਪਨ੍ਹੀ ਹਰਿ ਤਾ ਕੇ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥
हे नानक ! परमात्मा का अन्त जाना नहीं जाता। उसका ओर-छोर कोई नहीं, वह अनन्त है।

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸਾਖਤੀ ਫਿਰਿ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਮਾਰ ॥
आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥
वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही अपनी रचित सृष्टि का नाश कर देता है।

ਇਕਨ੍ਹਾ ਗਲੀ ਜੰਜੀਰੀਆ ਇਕਿ ਤੁਰੀ ਚੜਹਿ ਬਿਸੀਆਰ ॥
इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥
कुछ जीवों के गले पर जंजीरें पड़ी हुई हैं अर्थात् बन्धनों में जकड़े हुए हैं और कई असंख्य घोड़ों पर सवार होकर आनंद प्राप्त करते हैं।

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹਉ ਕੈ ਸਿਉ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥
आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥
वह प्रभु स्वयं ही लीला करता है और स्वयं ही जीव से करवाता है। मैं किसके पास फरियाद कर सकता हूँ?

ਨਾਨਕ ਕਰਣਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਫਿਰਿ ਤਿਸ ਹੀ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥੨੩॥
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥
हे नानक ! जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वही फिर उसकी देखरेख करता है॥ २३ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਆਪੇ ਭਾਂਡੇ ਸਾਜਿਅਨੁ ਆਪੇ ਪੂਰਣੁ ਦੇਇ ॥
आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥
भगवान ने स्वयं ही जीव रूपी बर्तन बनाए हैं एवं वह स्वयं ही उनके शरीर में गुण-अवगुण, सुख-दुख डालता है।

ਇਕਨ੍ਹੀ ਦੁਧੁ ਸਮਾਈਐ ਇਕਿ ਚੁਲ੍ਹੈ ਰਹਨ੍ਹਿ ਚੜੇ ॥
इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥
कुछ जीव रूपी बर्तनों में दूध भरा रहता है अर्थात् सद्गुण विद्यमान रहते हैं और कई चूल्हे पर ताप सहते रहते हैं।

ਇਕਿ ਨਿਹਾਲੀ ਪੈ ਸਵਨ੍ਹਿ ਇਕਿ ਉਪਰਿ ਰਹਨਿ ਖੜੇ ॥
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥
कुछ भाग्यशाली बिस्तरों पर निश्चित होकर विश्राम करते हैं और कई उनकी सेवा में खड़े होकर पहरा देते हैं।

ਤਿਨ੍ਹਾ ਸਵਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ੍ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧॥
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥
हे नानक ! भगवान उन मनुष्यों का जीवन सुन्दर बना देता है, जिन पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੨ ॥
महला २ ॥
महला २॥

ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਕਰੇ ਆਪਿ ਜਾਣੀ ਭਿ ਰਖੈ ਆਪਿ ॥
आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥
भगवान स्वयं ही दुनिया बनाता और स्वयं ही सबकुछ करता है। वह स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करता है।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕੈ ਦੇਖੈ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਿ ॥
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥
वह दुनिया में जीवों को उत्पन्न करके उनके जन्म-मरण को देखता रहता है।

ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਨਾਨਕਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ॥੨॥
किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥
हे नानक ! भगवान के अतिरिक्त किसके समक्ष प्रार्थना कर सकते हैं, जबकि वह स्वयं ही सब कुछ करता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਵਡੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥
महान प्रभु की महिमा एवं बड़प्पन का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਸੋ ਕਰਤਾ ਕਾਦਰ ਕਰੀਮੁ ਦੇ ਜੀਆ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹਿ ॥
सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु स्मबाहि ॥
वह विश्व का रचयिता, अपनी कुदरत को बनाने वाला तथा स्वयं जीवों पर कृपा-दृष्टि करने वाला है। वह समस्त जीवों को रोजी प्रदान करता है।

ਸਾਈ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਧੁਰਿ ਛੋਡੀ ਤਿੰਨੈ ਪਾਇ ॥
साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥
जीव वही कर्म करता है, जो उसने आदि से ही भाग्य में लिख दिया है।

ਨਾਨਕ ਏਕੀ ਬਾਹਰੀ ਹੋਰ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥
हे नानक ! उस एक प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई शरण का स्थान नहीं।

ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥੨੪॥੧॥ ਸੁਧੁ
सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु
वह वही कुछ करता है, जो उसे मंजूर होता है॥ २४॥ १॥ शुद्ध॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला है। वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं, वस्तुतः सब पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ॥
रागु आसा बाणी भगता की ॥
रागु आसा बाणी भगता की ॥

ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀਉ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਉ ॥
कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥
कबीर जी नामदेउ जी रविदास जी ॥

ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ॥
आसा स्री कबीर जीउ ॥
आसा श्री कबीर जी ॥

ਗੁਰ ਚਰਣ ਲਾਗਿ ਹਮ ਬਿਨਵਤਾ ਪ੍ਰਛਤ ਕਹ ਜੀਉ ਪਾਇਆ ॥
गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥
मैं अपने गुरु के चरणों में लगकर विनती करता हूँ एवं पूछता हूँ कि मनुष्य क्यों उत्पन्न किया गया है ?

ਕਵਨ ਕਾਜਿ ਜਗੁ ਉਪਜੈ ਬਿਨਸੈ ਕਹਹੁ ਮੋਹਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥੧॥
कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥१॥
यह जगत किसलिए उत्पन्न होता है और क्यों इसका विनाश हो जाता है? ॥ १॥

ਦੇਵ ਕਰਹੁ ਦਇਆ ਮੋਹਿ ਮਾਰਗਿ ਲਾਵਹੁ ਜਿਤੁ ਭੈ ਬੰਧਨ ਤ੍ਰੁਟੈ ॥
देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥
हे गुरुदेव ! मुझ पर दया करो और सन्मार्ग लगाओ, जिससे मेरे भय के बन्धन टूट जाएँ।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਫੇੜ ਕਰਮ ਸੁਖ ਜੀਅ ਜਨਮ ਤੇ ਛੂਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥१॥ रहाउ ॥
मुझ पर ऐसी सुख की कृपा करो कि मेरे पूर्व जन्म के जन्म-मरण के दु:ख नाश हो जाएँ और मेरी आत्मा जन्मों के चक्र से छूट जाए॥ १॥ रहाउ॥

.

ਮਾਇਆ ਫਾਸ ਬੰਧ ਨਹੀ ਫਾਰੈ ਅਰੁ ਮਨ ਸੁੰਨਿ ਨ ਲੂਕੇ ॥
माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥
मन माया की फाँसी के बन्धन को नहीं तोड़ता और इसलिए वह शून्य समाधि में लीन नहीं होता।

ਆਪਾ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਣੁ ਨ ਚੀਨ੍ਹਿਆ ਇਨ ਬਿਧਿ ਅਭਿਉ ਨ ਚੂਕੇ ॥੨॥
आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥२॥
वह अपने अहंत्व एवं मोक्ष के पद की पहचान नहीं करता। इस विधि से उसकी जन्म-मरण की दुविधा दूर नहीं होती ॥ २ ॥

ਕਹੀ ਨ ਉਪਜੈ ਉਪਜੀ ਜਾਣੈ ਭਾਵ ਅਭਾਵ ਬਿਹੂਣਾ ॥
कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥
आत्मा कभी भी पैदा नहीं होती चाहे मनुष्य समझते हैं कि यह पैदा होती है।

ਉਦੈ ਅਸਤ ਕੀ ਮਨ ਬੁਧਿ ਨਾਸੀ ਤਉ ਸਦਾ ਸਹਜਿ ਲਿਵ ਲੀਣਾ ॥੩॥
उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥३॥
यह तो जन्म-मरण से रहित है। जब मन का जन्म-मरण का ख्याल निवृत्त हो जाता है तो सदैव ही प्रभु की वृति में समाया रहता है॥ ३॥

ਜਿਉ ਪ੍ਰਤਿਬਿੰਬੁ ਬਿੰਬ ਕਉ ਮਿਲੀ ਹੈ ਉਦਕ ਕੁੰਭੁ ਬਿਗਰਾਨਾ ॥
जिउ प्रतिब्मबु ब्मिब कउ मिली है उदक कुमभु बिगराना ॥
जैसे जल के घड़े में पड़ने वाला प्रतिबंब घड़े के फूटने से वस्तु में मिल जाता है,

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਐਸਾ ਗੁਣ ਭ੍ਰਮੁ ਭਾਗਾ ਤਉ ਮਨੁ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਨਾਂ ॥੪॥੧॥
कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥४॥१॥
वैसे ही हे कबीर ! जब गुण के माध्यम से दुविधा भाग जाती है तो मन प्रभु में समा जाता है॥ ४॥ १॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਗਜ ਸਾਢੇ ਤੈ ਤੈ ਧੋਤੀਆ ਤਿਹਰੇ ਪਾਇਨਿ ਤਗ ॥
गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥
जो व्यक्ति साढ़े तीन-तीन गज लम्बी धोती और त्रिसूती जनेऊ पहनते हैं।

ਗਲੀ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਜਪਮਾਲੀਆ ਲੋਟੇ ਹਥਿ ਨਿਬਗ ॥
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥
जिनके गले में जपमाला तथा हाथों में चमचमाते लोटे होते हैं।

ਓਇ ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਬਾਨਾਰਸਿ ਕੇ ਠਗ ॥੧॥
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥१॥
दरअसल ऐसे लोग हरि के संत नहीं कहलवाते अपितु वे तो बनारस के ठग हैं।॥ १ ॥

ਐਸੇ ਸੰਤ ਨ ਮੋ ਕਉ ਭਾਵਹਿ ॥
ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥
ऐसे संत मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते।

ਡਾਲਾ ਸਿਉ ਪੇਡਾ ਗਟਕਾਵਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥१॥ रहाउ ॥
वे तो पेड़ों को डालियों सहित निगल जाते हैं अर्थात् लोगों को परिवार सहित लूटकर मार डालते हैं।॥ १ ॥ रहाउ॥

ਬਾਸਨ ਮਾਂਜਿ ਚਰਾਵਹਿ ਊਪਰਿ ਕਾਠੀ ਧੋਇ ਜਲਾਵਹਿ ॥
बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥
वे अपने बर्तन को भली भांति रगड़कर साफ करके चूल्हे पर रखते हैं,

ਬਸੁਧਾ ਖੋਦਿ ਕਰਹਿ ਦੁਇ ਚੂਲ੍ਹ੍ਹੇ ਸਾਰੇ ਮਾਣਸ ਖਾਵਹਿ ॥੨॥
बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥२॥
लकड़ी को धोकर जलाते हैं भूमि खोदकर दुहरे चूल्हे बनाते हैं और समूचे मनुष्य को निगलने में कोई संकोच नहीं करते॥ २॥

ਓਇ ਪਾਪੀ ਸਦਾ ਫਿਰਹਿ ਅਪਰਾਧੀ ਮੁਖਹੁ ਅਪਰਸ ਕਹਾਵਹਿ ॥
ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥
वे पापी सदा अपराधों में भटकते रहते हैं और अपने आपको मुख से यूं कहलवाते हैं कि हम माया को स्पर्श नहीं करते, अपितु अस्पृष्ट हैं।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਫਿਰਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ਸਗਲ ਕੁਟੰਬ ਡੁਬਾਵਹਿ ॥੩॥
सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुट्मब डुबावहि ॥३॥
वे अभिमानी सदैव भटकते रहते हैं और अपने कुटुंब को भी डुबो देते हैं।॥ ३॥

ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਤੈਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ॥
जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥
मनुष्य उसी से लगा हुआ है, जिससे प्रभु ने उसे लगाया है और वह वैसे ही कर्म करता है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੈ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥੪॥੨॥
कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥४॥२॥
हे कबीर ! सत्य तो यही है कि जिसका मिलन सतगुरु से हो जाता है, वह दुनिया में बार-बार जन्म नहीं लेता॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਬਾਪਿ ਦਿਲਾਸਾ ਮੇਰੋ ਕੀਨ੍ਹ੍ਹਾ ॥ ਸੇਜ ਸੁਖਾਲੀ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਦੀਨ੍ਹ੍ਹਾ ॥
बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अम्रितु दीन्हा ॥
मेरे पिता-परमेश्वर ने मुझे धैर्य-दिलासा दिया है।उसने नाम रूपी अमृत मेरे मुँह में डाल दिया है, जिससे मेरी हृदय रूपी सेज सुखदायी हो गई है।

ਤਿਸੁ ਬਾਪ ਕਉ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥
तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥
उस परमपिता को मैं अपने मन में से कैसे भुला सकता हूँ।

ਆਗੈ ਗਇਆ ਨ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੧॥
आगै गइआ न बाजी हारी ॥१॥
जब मैं परलोक में जाऊँगा तो अपनी जीवन बाजी नहीं हारूंगा ॥ १॥

ਮੁਈ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ਹਉ ਖਰਾ ਸੁਖਾਲਾ ॥
मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥
मेरी माया रूपी माता मर गई है और मैं बहुत सुखी हो गया हूँ।

ਪਹਿਰਉ ਨਹੀ ਦਗਲੀ ਲਗੈ ਨ ਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥१॥ रहाउ ॥
अब मैं गुदड़ी नहीं पहनता और न ही मुझे सर्दी लगती है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਲਿ ਤਿਸੁ ਬਾਪੈ ਜਿਨਿ ਹਉ ਜਾਇਆ ॥
बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥
मैं उस परमपिता पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे जन्म दिया है।

ਪੰਚਾ ਤੇ ਮੇਰਾ ਸੰਗੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥
उसने पाँच विकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से मेरी संगति समाप्त कर दी है।

ਪੰਚ ਮਾਰਿ ਪਾਵਾ ਤਲਿ ਦੀਨੇ ॥
पंच मारि पावा तलि दीने ॥
मैंने पाँचों विकारों को मार कर अपने पैरों के नीचे कुचल दिया है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਨਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭੀਨੇ ॥੨॥
हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥२॥
अब मेरा मन एवं तन भगवान के सिमरन में लीन रहता है॥ २ ॥

ਪਿਤਾ ਹਮਾਰੋ ਵਡ ਗੋਸਾਈ ॥
पिता हमारो वड गोसाई ॥
मेरा पिता संसार का बड़ा मालिक है।

ਤਿਸੁ ਪਿਤਾ ਪਹਿ ਹਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਜਾਈ ॥
तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥
फिर उस पिता के पास मैं किस तरह जा सकता हूँ?

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲੇ ਤ ਮਾਰਗੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥
जब मुझे सच्चा गुरु मिला तो उसने मार्गदर्शन प्रदान किया।

ਜਗਤ ਪਿਤਾ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੩॥
जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥३॥
जगत का पिता मेरे मन को अच्छा लगता है ॥३॥

ਹਉ ਪੂਤੁ ਤੇਰਾ ਤੂੰ ਬਾਪੁ ਮੇਰਾ ॥
हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥
हे ईश्वर ! मैं तेरा पुत्र हूँ और तू मेरा पिता है।

ਏਕੈ ਠਾਹਰ ਦੁਹਾ ਬਸੇਰਾ ॥
एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥
हम दोनों का बसेरा भी एक ही स्थान पर है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨਿ ਏਕੋ ਬੂਝਿਆ ॥
कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥
हे कबीर ! सेवक केवल एक प्रभु को ही जानता है और

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂਝਿਆ ॥੪॥੩॥
गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥४॥३॥
गुरु की कृपा से मैंने सब कुछ समझ लिया है॥ ४ ॥ ३ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਇਕਤੁ ਪਤਰਿ ਭਰਿ ਉਰਕਟ ਕੁਰਕਟ ਇਕਤੁ ਪਤਰਿ ਭਰਿ ਪਾਨੀ ॥
इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥
वाममार्गी मनुष्य एक ही बर्तन में पकाया हुआ मुर्गा परोसते हैं तथा एक पात्र में शराब रख लेते हैं।

ਆਸਿ ਪਾਸਿ ਪੰਚ ਜੋਗੀਆ ਬੈਠੇ ਬੀਚਿ ਨਕਟ ਦੇ ਰਾਨੀ ॥੧॥
आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥१॥
इनके इर्द-गिर्द पाँच कामादिक योगी बैठ जाते हैं तथा मध्य में नकटी माया भी बैठी होती है॥१॥

ਨਕਟੀ ਕੋ ਠਨਗਨੁ ਬਾਡਾ ਡੂੰ ॥
नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥
नकटी माया का घंटा दोनों लोकों में बज रहा है।

ਕਿਨਹਿ ਬਿਬੇਕੀ ਕਾਟੀ ਤੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किनहि बिबेकी काटी तूं ॥१॥ रहाउ ॥
कोई विवेकी पुरुष ही इसके बन्धनों को काट देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਮਾਹਿ ਨਕਟੀ ਕਾ ਵਾਸਾ ਸਗਲ ਮਾਰਿ ਅਉਹੇਰੀ ॥

सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥

सभी जीवों के मन में निर्लज्ज नकटी माया का निवास है। वह सभी को मारकर उनको निहारती है।

ਸਗਲਿਆ ਕੀ ਹਉ ਬਹਿਨ ਭਾਨਜੀ ਜਿਨਹਿ ਬਰੀ ਤਿਸੁ ਚੇਰੀ ॥੨॥

सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥२॥

वह रानी कहती है कि, "मैं सभी की बहन एवं भांजी हूँ परन्तु मैं उसकी दासी हूँ, जिसने मेरे साथ विवाह कर लिया है अर्थात् मुझे वश में कर लिया है"॥ २॥

ਹਮਰੋ ਭਰਤਾ ਬਡੋ ਬਿਬੇਕੀ ਆਪੇ ਸੰਤੁ ਕਹਾਵੈ ॥

हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥

वह कहती है, हमारा पति बड़ा विवेकी है और पूर्ण संत कहलवाता है।

ਓਹੁ ਹਮਾਰੈ ਮਾਥੈ ਕਾਇਮੁ ਅਉਰੁ ਹਮਰੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ॥੩॥

ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥३॥

वह हमारे माथे पर कायम रहता है तथा कोई दूसरा हमारे निकट नहीं आता॥ ३॥

ਨਾਕਹੁ ਕਾਟੀ ਕਾਨਹੁ ਕਾਟੀ ਕਾਟਿ ਕੂਟਿ ਕੈ ਡਾਰੀ ॥

नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥

हे कबीर ! संतजनों ने निर्लज्ज माया के नाक एवं कान काट दिए हैं और उसे भली भांति काट-पीटकर व्यर्थ करके बाहर निकाल दिया है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਸੰਤਨ ਕੀ ਬੈਰਨਿ ਤੀਨਿ ਲੋਕ ਕੀ ਪਿਆਰੀ ॥੪॥੪॥

कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥४॥४॥

वह निर्लज्ज माया संतजनों की शत्रु है परन्तु तीन लोक उसे बहुत प्रेम करते हैं और उनकी वह प्रिया है॥ ४ ॥ ४ ॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਸੰਨਿਆਸੀ ਬਹੁ ਤੀਰਥ ਭ੍ਰਮਨਾ ॥

जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥

चाहे कोई योगी, ब्रह्मचारी, तपस्वी एवं संन्यासी बन जाए, चाहे बहुत सारे तीर्थ-स्थानों पर भ्रमण करता रहे।

ਲੁੰਜਿਤ ਮੁੰਜਿਤ ਮੋਨਿ ਜਟਾਧਰ ਅੰਤਿ ਤਊ ਮਰਨਾ ॥੧॥

लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥१॥

चाहे कोई जड़ से बालों को उखाड़ने वाला जैनी, साधु, वैरागी, मौन व्रत करने वाले मुनि एवं जटाधर दरवेश ही बन जाए। लेकिन फिर भी इन सभी ने अंततः मरना ही है॥ १॥

ਤਾ ਤੇ ਸੇਵੀਅਲੇ ਰਾਮਨਾ ॥

ता ते सेवीअले रामना ॥

इसलिए भला यही है कि राम-नाम का भजन करना चाहिए।

ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਤੁ ਜਾ ਕੈ ਕਹਾ ਕਰੈ ਜਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥१॥ रहाउ ॥

जिसकी रसना राम के नाम से प्रेम करती है, उसका यमदूत कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता ॥ १ ॥ रहाउ॥

ਆਗਮ ਨਿਰਗਮ ਜੋਤਿਕ ਜਾਨਹਿ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਆਕਰਨਾ ॥

आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥

चाहे कोई शास्त्रों एवं वेदों का ज्ञाता है, ज्योतिष-विद्या एवं अनेक प्रकार की व्याकरण को जानता है,

ਤੰਤ ਮੰਤ੍ਰ ਸਭ ਅਉਖਧ ਜਾਨਹਿ ਅੰਤਿ ਤਊ ਮਰਨਾ ॥੨॥
तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥२॥
जो तंत्र, मंत्र एवं समस्त औषधियों को जानता है, आखिरकार सबकी मृत्यु आनी है॥ २॥

राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥
राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥
राज को भोगने वाले, सिंहासन पर छत्र धारण करने वाले, अनेक सुन्दर नारियों से रमण करने वाले,

पान कपुर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥
पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥
पान, कपूर तथा चन्दन की सुगन्धियों का आनंद लेने वाले भी अंततः प्राण त्याग देंगे ॥ ३॥

बेद पुरान सिंमृति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥
बेद पुरान सिम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥
चाहे कोई वेद, पुराण एवं स्मृतियों को खोज ले फिर भी उसका जन्म-मरण के चक्र से बचाव नहीं होना।

कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥
कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥
हे कबीर ! इसलिए राम नाम का भजन-सुमिरन करने से ही जन्म-मरण का चक्र मिट सकता है॥ ४॥ ५ ॥

आसा ॥
आसा ॥
आसा ॥

फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥
फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥
मन रूपी हाथी सुन्दर वीणा बजाने वाला बन गया है। बैल वृत्ति पखावज बजाने लगी है और कौए वाला स्वभाव ताल बजा रहा है।

पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥
पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥
मन के गधे वाला जिद्दी स्वभाव प्रेम रूपी चोला पहनकर नृत्य कर रहा है और मन का भैसा जैसा स्वभाव भक्ति में मग्न है॥ १॥

ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਕਕਰੀਆ ਬਰੇ ਪਕਾਏ ॥

राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥

मेरे राजा राम ने आक के आम समान फलों को रसदायक आम बना दिया है अर्थात् मन के कड़वे एवं कटु स्वभाव में मिठास भर गई है।

ਕਿਨੈ ਬੂਝਨਹਾਰੈ ਖਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

किनै बूझनहारै खाए ॥१॥ रहाउ ॥

परन्तु इस रस का स्वाद किसी विरले विवेकी पुरुष ने ही चखा है॥ १॥ रहाउ ॥

ਬੈਠਿ ਸਿੰਘੁ ਘਰਿ ਪਾਨ ਲਗਾਵੈ ਘੀਸ ਗਲਉਰੇ ਲਿਆਵੈ ॥

बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥

मन रूपी निर्दयी शेर अपने घर में बैठकर पान का बीड़ा तैयार कर रहा है तथा मन रूपी छघूंदर तृष्णा सुपारी लाती है, अर्थात् सेवा में लीन है।

ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੁਸਰੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਵਹਿ ਕਛੂਆ ਸੰਖੁ ਬਜਾਵੈ ॥੨॥

घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥२॥

मेरी इन्द्रियाँ रूपी चुहियाँ मंगलगान गा रही हैं और मन रूपी कछुआ जो सत्संगति से भयभीत होकर बैठा था, अब शंख बजाता है॥ २॥

ਬੰਸ ਕੋ ਪੂਤੁ ਬੀਆਹਨ ਚਲਿਆ ਸੁਇਨੇ ਮੰਡਪ ਛਾਏ ॥

बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥

बांझ स्त्री माया का पुत्र विवाह करवाने हेतु चल दिया है तथा सोने के मंडप सजाए गए हैं।

ਰੂਪ ਕੰਨਿਆ ਸੁੰਦਰਿ ਬੇਧੀ ਸਸੈ ਸਿੰਘ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੩॥

रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥३॥

अब मन ने प्रभु से जुड़ी वृत्ति रूपवान एवं सुन्दर कन्या से विवाह कर लिया है और खरगोश एवं शेर प्रभु का स्तुतिगान कर रहे हैं।॥ ३॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਕੀਟੀ ਪਰਬਤੁ ਖਾਇਆ ॥

कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥

कबीर कहता है कि हे संतजनो ! मेरी बात ध्यान से सुनो, मन की विनम्रता चींटी ने अभिमान रूपी पर्वत को निगल लिया है।

ਕਛੂਆ ਕਹੈ ਅੰਗਾਰ ਭਿ ਲੋਰਉ ਲੂਕੀ ਸਬਦੁ ਸੁਨਾਇਆ ॥੪॥੬॥

कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥४॥६॥

अब मन रूपी कछुआ मानवीय महानुभूति रूपी अंगार का अभिलाषी बन गया है तथा उसका अज्ञान अब ज्ञान में परिवर्तन होकर गुरु का शब्द सुना रहा है॥ ४॥ ६॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਬਟੂਆ ਏਕੁ ਬਹਤਰਿ ਆਧਾਰੀ ਏਕੋ ਜਿਸਹਿ ਦੁਆਰਾ ॥
बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥
यह शरीर एक बटुआ है जो बहतर शारीरिक नाड़ियों से तैयार हुआ है परन्तु इसका एक ही द्वार दशमद्वार है।

ਨਵੈ ਖੰਡ ਕੀ ਪ੍ਰਿਥਮੀ ਮਾਗੈ ਸੋ ਜੋਗੀ ਜਗਿ ਸਾਰਾ ॥੧॥
नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥१॥
इस जगत में केवल वही सच्चा योगी है जो एक ईश्वर के नाम की भिक्षा मांगता है, जिस नाम ने नवखण्डों वाली पृथ्वी को धारण किया हुआ है॥ १॥

ਐਸਾ ਜੋਗੀ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥
ऐसा जोगी नउ निधि पावै ॥
ऐसा योगी ही नवनिधियाँ प्राप्त कर लेता है।

ਤਲ ਕਾ ਬ੍ਰਹਮੁ ਲੇ ਗਗਨਿ ਚਰਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपनी आत्मा को तल से उठाकर गगनमण्डल में ले जाता है ॥१॥ रहाउ॥

ਖਿੰਥਾ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਕਰਿ ਸੂਈ ਸਬਦੁ ਤਾਗਾ ਮਥਿ ਘਾਲੈ ॥
खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥
वह ज्ञान-गुदड़ी को प्रभु-ध्यान की सुई में ब्रह्म शब्द के मजबूत धागे से टांकता है

ਪੰਚ ਤਤੁ ਕੀ ਕਰਿ ਮਿਰਗਾਣੀ ਗੁਰ ਕੈ ਮਾਰਗਿ ਚਾਲੈ ॥੨॥
पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥२॥
और वह पाँच इन्द्रियों को अपनी मृगशाला बनाकर अपने गुरु के मार्ग चल देता है॥ २॥

ਦਇਆ ਫਾਹੁਰੀ ਕਾਇਆ ਕਰਿ ਧੂਈ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕੀ ਅਗਨਿ ਜਲਾਵੈ ॥
दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥
वह दया को अपनी फावड़ी एवं अपने शरीर को धूनी बनाता है और प्रभु-दृष्टि की वह अग्नि जलाता है।

ਤਿਸ ਕਾ ਭਾਉ ਲਏ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਚਹੁ ਜੁਗ ਤਾੜੀ ਲਾਵੈ ॥੩॥
तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥३॥
उसके प्रेम को वह अपने हृदय में बसाता है और चारों ही युगों में वह समाधि अवस्था में लीन रहता है॥३॥

ਸਭ ਜੋਗਤਣ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਸ ਕਾ ਪਿੰਡੁ ਪਰਾਨਾ ॥
सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥
समूचा योगीपन राम का नाम जपने में है जिसके दिए हुए यह शरीर एवं प्राण हैं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੈ ਦੇਇ ਸਚਾ ਨੀਸਾਨਾ ॥੪॥੭॥
कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥४॥७॥
हे कबीर ! यदि प्रभु कृपा धारण करे तो वह मनुष्य को सत्य का चिन्ह प्रदान करता है॥ ४॥ ७॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਹਿੰਦੂ ਤੁਰਕ ਕਹਾ ਤੇ ਆਏ ਕਿਨਿ ਏਹ ਰਾਹ ਚਲਾਈ ॥
हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥
हिन्दू तथा मुसलमान कहाँ से आए हैं ? धर्म के अलग-अलग यह दो मार्ग किसने चलाए हैं ?

ਦਿਲ ਮਹਿ ਸੋਚਿ ਬਿਚਾਰਿ ਕਵਾਦੇ ਭਿਸਤ ਦੋਜਕ ਕਿਨਿ ਪਾਈ ॥੧॥
दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥१॥
हे झगड़ालू काजी ! अपने दिल में अच्छी तरह सोच-विचार कर, कौन स्वर्ग एवं कौन नरक को प्राप्त करता है ? ॥ १॥

ਕਾਜੀ ਤੈ ਕਵਨ ਕਤੇਬ ਬਖਾਨੀ ॥
काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
हे काजी ! तूने कौन-सा किताब पढ़ा है ?

ਪੜ੍ਹਤ ਗੁਨਤ ਐਸੇ ਸਭ ਮਾਰੇ ਕਿਨਹੂੰ ਖਬਰਿ ਨ ਜਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पड़्हत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे जैसे किताब पढ़ने एवं विचार करने वाले सभी नष्ट हो गए हैं। लेकिन किसी को भी ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਕਤਿ ਸਨੇਹੁ ਕਰਿ ਸੁੰਨਤਿ ਕਰੀਐ ਮੈ ਨ ਬਦਉਗਾ ਭਾਈ ॥

सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥

मुसलमानों में स्त्री से आसक्ति-प्रेम के कारण सुन्नत करवाई जाती है लेकिन इसका संबंध अल्लाह के मिलन से नहीं। हे भाई ! इसलिए मैं (सुन्नत पर) विश्वास नहीं करता।

ਜਉ ਰੇ ਖੁਦਾਇ ਮੋਹਿ ਤੁਰਕੁ ਕਰੈਗਾ ਆਪਨ ਹੀ ਕਟ�ि ਜਾਈ ॥੨॥

जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२॥

यदि अल्लाह ने मुझे मुसलमान बनाना था तो अपने आप ही सुन्नत जन्मजात हो जाती ॥ २॥

ਸੁੰਨਤਿ ਕੀਏ ਤੁਰਕੁ ਜੇ ਹੋਇਗਾ ਅਉਰਤ ਕਾ ਕਿਆ ਕਰੀਐ ॥

सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥

यदि सुन्नत करने से कोई मुसलमान बनता है तो औरत का क्या होगा ?

ਅਰਧ ਸਰੀਰੀ ਨਾਰਿ ਨ ਛੋਡੈ ਤਾ ਤੇ ਹਿੰਦੂ ਹੀ ਰਹੀਐ ॥੩॥

अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥३॥

नारी तो अधागिनी है, जो मनुष्य के शरीर का आधा भाग है, उसे छोड़ा नहीं जा सकता। इसलिए हिन्दू बने रहना ही बेहतर है (सुन्नत का पाखण्ड नहीं करना चाहिए) ॥ ३॥

ਛਾਡਿ ਕਤੇਬ ਰਾਮੁ ਭਜੁ ਬਉਰੇ ਜੁਲਮ ਕਰਤ ਹੈ ਭਾਰੀ ॥

छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥

हे मूर्ख प्राणी ! किताबों को छोड़कर राम नाम का भजन कर। निरर्थक विवादों में फँसकर तू भारी अत्याचार कर रहा है।

ਕਬੀਰੈ ਪਕਰੀ ਟੇਕ ਰਾਮ ਕੀ ਤੁਰਕ ਰਹੇ ਪਚਿਹਾਰੀ ॥੪॥੮॥

कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥४॥८॥

कबीर ने एक राम की टेक ही पकड़ी है तथा मुसलमान बुरी तरह ख्वार हो रहे हैं।॥ ४॥ ८॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਜਬ ਲਗੁ ਤੇਲੁ ਦੀਵੇ ਮੁਖਿ ਬਾਤੀ ਤਬ ਸੂਝੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥

जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥

जब तक अन्तरात्मा रूपी दीपक में प्राण रूपी तेल रहता है, इस दीपक के मुँह में सुरति रूपी बाती जलती रहती है, तब तक जीवात्मा को शरीर रूपी मंदिर में हर वस्तु की सूझ होती है।

ਤੇਲ ਜਲੇ ਬਾਤੀ ਠਹਰਾਨੀ ਸੂੰਨਾ ਮੰਦਰੁ ਹੋਈ ॥੧॥
तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥१॥
जब प्राण रूपी तेल जल जाता है अर्थात शरीर में से प्राण निकल जाते हैं तो सुरति रूपी बाती बुझ जाती है। चारों ओर अंधेरा होने से शरीर रूपी मंदिर सुनसान हो जाता है॥ १॥

रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥
रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥
हे बावरे मनुष्य ! तेरे प्राण पखेरू होने के उपरांत तुझे एक घड़ी भर के लिए भी कोई रखने को तैयार नहीं होता।

तुं रामु नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥
तूं रामु नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए तू राम-नाम का भजन-सुमिरन कर ले॥ १॥ रहाउ ॥

का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥
का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥
बता ! कौन किसकी माता है और कौन किसका पिता है? कौन किसी पुरुष की पत्नी है?

घट फुटे कोऊ बात न पुछै काढहु काढहु होई ॥२॥
घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥२॥
जब प्राणी रूपी घड़ा फूट जाता है अर्थात् देहांत होने पर कोई बात नहीं पूछता। हर कोई यही कहता है मृतक शरीर को घर से शीघ्र ही बाहर निकाल दो॥ २॥

देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥
देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥
देहुरी पर बैठी हुई माता रोती है और भाई अर्थी उठाकर श्मशान घाट ले जाते हैं।

लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥३॥
लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥३॥
अपने बाल खिलार कर मृतक की पत्नी फूट-फूट कर रोती है और आत्मा अकेली ही चली जाती है।॥ ३॥

कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनों ! इस भवसागर संबंधी सुन लो।

ਇਸੁ ਬੰਦੇ ਸਿਰਿ ਜੁਲਮੁ ਹੋਤ ਹੈ ਜਮੁ ਨਹੀ ਹਟੈ ਗੁਸਾਈ ॥੪॥੯॥
इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥४॥९॥
हे गुसाई ! यह मनुष्य अपने कर्मों के कारण बहुत अत्याचार सहन करता है और यमदूत उसका पीछा नहीं छोड़ते ॥ ४॥ ६ ॥

ਦੁਤੁਕੇ
दुतुके
दुतुके

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ਚਉਪਦੇ ਇਕਤੁਕੇ ॥
आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥
आसा श्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥

ਸਨਕ ਸਨੰਦ ਅੰਤੁ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ॥
सनक सनंद अंतु नही पाइआ ॥
ब्रह्मा के चार पुत्रों सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनत कुमार ने बड़े ज्ञानी होते हुए भी प्रभु का अन्त नहीं पाया।

ਬੇਦ ਪੜੇ ਪੜ�ि ਬ੍ਰਹਮੇ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥੧॥
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥१॥
वेदों के ज्ञाता ब्रह्मा ने भी वेद पढ़-पढ़ कर अपना अमूल्य जन्म गंवा लिया। अर्थात् वह भी भगवान का अन्त न पा सका।॥१॥

ਹਰਿ ਕਾ ਬਿਲੋਵਨਾ ਬਿਲੋਵਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! हरि का बिलोना बिलोवो अर्थात् जैसे दूध का मंथन किया जाता है, वैसे ही बार-बार हरि का जाप करो।

ਸਹਜਿ ਬਿਲੋਵਹੁ ਜੈਸੇ ਤਤੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे दूध का धीरे-धीरे मंथन करने से मक्खन दूध में नहीं मिलता, वैसे ही सहज अवस्था में हरि का नाम जपो, चूंकि सिमरन का फल परम तत्व प्रभु प्राप्त हो जाए॥ १॥ रहाउ ॥

ਤਨੁ ਕਰਿ ਮਟੁਕੀ ਮਨ ਮਾਹਿ ਬਿਲੋਈ ॥
तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥
अपने तन को मटकी बनाओ और उसमें अपने मन की मधानी से मंथन करो।

ਇਸੁ ਮਟੁਕੀ ਮਹਿ ਸਬਦੁ ਸੰਜੋਈ ॥੨॥
इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥२॥
इस मटकी के भीतर शब्द रूपी दही को संचित करो ॥ २॥

ਹਰਿ ਕਾ ਬਿਲੋਵਨਾ ਮਨ ਕਾ ਬੀਚਾਰਾ ॥
हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥
हरि नाम का मंथन मन से उसका सुमिरन करना है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਵੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰਾ ॥੩॥
गुर प्रसादि पावै अम्रित धारा ॥३॥
गुरु की कृपा से मनुष्य नाम रूपी अमृत धारा को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜੇ ਮੀਂਰਾ ॥
कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥
हे कबीर ! यदि प्रभु-बादशाह दया-दृष्टि धारण करे तो

ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਗਿ ਉਤਰੇ ਤੀਰਾ ॥੪॥੧॥੧੦॥
राम नाम लगि उतरे तीरा ॥४॥१॥१०॥
मनुष्य राम के नाम से लगकर भवसागर से पार होकर किनारे पहुँच जाता है॥ ४॥ १॥ १०॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਬਾਤੀ ਸੂਕੀ ਤੇਲੁ ਨਿਖੂਟਾ ॥
बाती सूकी तेलु निखूटा ॥
शरीर रूपी दीपक में से प्राण रूपी तेल खत्म हो गया है अर्थात् शरीर में से प्राण पखेरू हो गए हैं। सुरति रूपी बाती सूख गई है अर्थात् जीव की सुरति नष्ट हो गई है।

ਮੰਦਲੁ ਨ ਬਾਜੈ ਨਟੁ ਪੈ ਸੂਤਾ ॥੧॥
मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥१॥
जीव रूपी नट सदा की नींद सो गया है और अब ढोल-मंजीरा भी नहीं बज रहा अर्थात् जीव का सारा कामकाज बंद हो गया है॥ १॥

ਬੁਝਿ ਗਈ ਅਗਨਿ ਨ ਨਿਕਸਿਓ ਧੂੰਆ ॥
बुझि गई अगनि न निकसिओ धूंआ ॥
तृष्णा रूपी अग्नि बुझ गई है और संकल्प-विकल्प रूपी धुंआ नहीं निकल रहा।

रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥१॥ रहाउ ॥
रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥१॥ रहाउ ॥
एक प्रभु ही सारे जगत में बसा हुआ है, दूसरा अन्य कोई भी नहीं ॥ १॥ रहाउ ॥

टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥
टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥
तार टूट गई है तथा वीणा बज नहीं रही अर्थात् परमात्मा से जीव की वृत्ति टूट गई है।

भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥२॥
भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥२॥
भूल से मनुष्य ने अपना कार्य बिगाड़ लिया है॥ २॥

कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥३॥
कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥३॥
जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है तो वह उपदेश देना, डींगे मारना, विवाद करना (अर्थात् मौखिक बातें जो कहने-सुनने की थी)" तथा गाना-बजाना भूल जाता है॥ ३॥

कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥४॥२॥११॥
कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥४॥२॥११॥
कबीर जी कहते हैं कि जो मनुष्य कामादिक पाँच विकार नष्ट कर देता है,उससे परम पदवी (मोक्ष की प्राप्ति) दूर नहीं होती॥ ४॥ २॥ ११॥

आसा ॥
आसा ॥
आसा ॥

सुतु अपराध करत है जेते ॥
सुतु अपराध करत है जेते ॥
पुत्र जितने भी अपराध करता है,

जननी चीति न राखसि तेते ॥१॥
जननी चीति न राखसि तेते ॥१॥
माता उसे अपने चित्त में नहीं रखती॥ १॥

ਰਾਮਈਆ ਹਉ ਬਾਰਿਕੁ ਤੇਰਾ ॥
रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥
हे मेरे राम ! मैं तेरा नादान बालक हूँ,

ਕਾਹੇ ਨ ਖੰਡਸਿ ਅਵਗਨੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥
तू मेरे अवगुणों को नष्ट क्यों नहीं करता ?॥ १॥ रहाउ॥

ਜੇ ਅਤਿ ਕ੍ਰੋਪ ਕਰੇ ਕਰਿ ਧਾਇਆ ॥
जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥
यदि नासमझ पुत्र अत्यंत क्रोध में अपनी माता को मारने के लिए भाग कर भी आए

ਤਾ ਭੀ ਚੀਤਿ ਨ ਰਾਖਸਿ ਮਾਇਆ ॥੨॥
ता भी चीति न राखसि माइआ ॥२॥
तो भी माता उसके इतने बड़े अपराध को अपने चित्त में नहीं रखती ॥ २ ॥

ਚਿੰਤ ਭਵਨਿ ਮਨੁ ਪਰਿਓ ਹਮਾਰਾ ॥
चिंत भवनि मनु परिओ हमारा ॥
मेरा मन चिन्ता-फिक्र के भंवर में पड़ गया है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਕੈਸੇ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰਾ ॥੩॥
नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥३॥
प्रभु नाम के बिना यह कैसे पार हो सकता है? ॥ ३॥

ਦੇਹਿ ਬਿਮਲ ਮਤਿ ਸਦਾ ਸਰੀਰਾ ॥
देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥
हे प्रभु ! मेरे शरीर को सदैव निर्मल बुद्धि प्रदान कर चूंकि

ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਨ ਰਵੈ ਕਬੀਰਾ ॥੪॥੩॥੧੨॥
सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥
सहज-सहज कबीर तेरा गुणगान करता रहे॥ ४॥ ३॥ १२॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਹਜ ਹਮਾਰੀ ਗੋਮਤੀ ਤੀਰ ॥
हज हमारी गोमती तीर ॥
हमारा हज्ज गोमती-किनारे चले जाने से हो जाता है,

ਜਹਾ ਬਸਹਿ ਪੀਤੰਬਰ ਪੀਰ ॥੧॥
जहा बसहि पीत्मबर पीर ॥१॥
जहाँ पीताम्बर पीर (परमात्मा) बसता है॥ १॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਿਆ ਖੂਬੁ ਗਾਵਤਾ ਹੈ ॥
वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥
वाह ! वाह! मेरा मन कितना खूब गाता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਤਾ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का नाम मेरे मन को बहुत लुभाता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾਰਦ ਸਾਰਦ ਕਰਹਿ ਖਵਾਸੀ ॥
नारद सारद करहि खवासी ॥
नारद मुनि हो अथवा सरस्वती देवी, सभी उस हरि की सेवा-भक्ति में लीन हैं।

ਪਾਸਿ ਬੈਠੀ ਬੀਬੀ ਕਵਲਾ ਦਾਸੀ ॥੨॥
पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥२॥
हरि के पास उसकी दासी देवी लक्ष्मी भी विराजमान है। २ ॥

ਕੰਠੇ ਮਾਲਾ ਜਿਹਵਾ ਰਾਮੁ ॥
कंठे माला जिहवा रामु ॥
जिव्हा में राम का नाम ही मेरी गले की माला है,

ਸਹੰਸ ਨਾਮੁ ਲੈ ਲੈ ਕਰਉ ਸਲਾਮੁ ॥੩॥
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥३॥
जिससे मैं उसके हजारों ही नाम उच्चरित करके उसे प्रणाम करता हूँ॥ ३॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
कहत कबीर राम गुन गावउ ॥
कबीर जी कहते हैं कि मैं राम का गुणगान करता हूँ एवं

ਹਿੰਦੂ ਤੁਰਕ ਦੋਊ ਸਮਝਾਵਉ ॥੪॥੪॥੧੩॥
हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥४॥४॥१३॥
हिन्दू-मुसलमान दोनों को भी यही उपदेश देता हूँ॥४॥४॥१३॥

ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ਪੰਚਪਦੇ ੯ ਦੁਤੁਕੇ ੫
आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५
आसा श्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਾਤੀ ਤੋਰੈ ਮਾਲਿਨੀ ਪਾਤੀ ਪਾਤੀ ਜੀਉ ॥
पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥
हे मालिन ! तू पूजा-अर्चना हेतु पते तोड़ती है लेकिन समस्त फूल-पत्तों में प्राण हैं।

ਜਿਸੁ ਪਾਹਨ ਕਉ ਪਾਤੀ ਤੋਰੈ ਸੋ ਪਾਹਨ ਨਿਰਜੀਉ ॥੧॥
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥
किन्तु जिस पत्थर की मूर्ति हेतु तू पत्ते तोड़ती है वह पत्थर की मूर्ति तो निर्जीव है॥ १॥

ਭੂਲੀ ਮਾਲਨੀ ਹੈ ਏਉ ॥
भूली मालनी है एउ ॥
हे मालिन ! इस तरह तू भूल कर रही है

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਾਗਤਾ ਹੈ ਦੇਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि सच्चा गुरु ही सजीव देव है॥ ॥१॥रहाउ ॥

ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਾਤੀ ਬਿਸਨੁ ਡਾਰੀ ਫੂਲ ਸੰਕਰਦੇਉ ॥
ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥
हे मालिन ! पूजा-अर्चना हेतु जो तू पते, डाली एवं फल तोड़ती है वह पते ब्रह्मा, विष्णु डालियाँ एवं शंकर देव फूल हैं।

ਤੀਨਿ ਦੇਵ ਪ੍ਰਤਖਿ ਤੋਰਹਿ ਕਰਹਿ ਕਿਸ ਕੀ ਸੇਉ ॥੨॥
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥
इस तरह तू प्रत्यक्ष तौर पर त्रिदेवों-ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर को तोड़ती है। फिर तू किस की सेवा करती है ? ॥ २॥

ਪਾਖਾਨ ਗਢਿ ਕੈ ਮੂਰਤਿ ਕੀਨ੍ਹ੍ਹੀ ਦੇ ਕੈ ਛਾਤੀ ਪਾਉ ॥
पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥
पत्थर को गढ़कर मूर्तिकार-मूर्ति बनाता है और गढ़ते हुए वह उसकी छाती पर अपने पांव भी रख देता है।

ਜੇ ਏਹ ਮੂਰਤਿ ਸਾਚੀ ਹੈ ਤਉ ਗੜ੍ਹਣਹਾਰੇ ਖਾਉ ॥੩॥
जे एह मूरति साची है तउ गड़्हणहारे खाउ ॥३॥
यदि यह मूर्ति सच्ची है तो उसे पहले गढ़नेवाले मूर्तिकार को खाना चाहिए॥ ३॥

ਭਾਤੁ ਪਹਿਤਿ ਅਰੁ ਲਾਪਸੀ ਕਰਕਰਾ ਕਾਸਾਰੁ ॥
भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥
भात (चावल), दाल, हलवा, माल-पूडे एवं पंजीरी इत्यादि स्वादिष्ट पदार्थों का भोग तो

ਭੋਗਨਹਾਰੇ ਭੋਗਿਆ ਇਸੁ ਮੂਰਤਿ ਕੇ ਮੁਖ ਛਾਰੁ ॥੪॥
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥४॥
मूर्ति का सहारा लेकर भोगने वाला पुजारी ही कर लेता है तथा इस मूर्ति के मुख में तो कुछ भी नहीं जाता॥ ४॥

ਮਾਲਿਨਿ ਭੂਲੀ ਜਗੁ ਭੁਲਾਨਾ ਹਮ ਭੁਲਾਨੇ ਨਾਹਿ ॥
मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥
मालिन भूली हुई है और समूचा जगत भी भूला हुआ है लेकिन हम भूले हुए नहीं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਹਮ ਰਾਮ ਰਾਖੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇ ॥੫॥੧॥੧੪॥
कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥
कबीर जी कहते हैं कि अपनी कृपा धारण करके भगवान ने हमें सन्मार्ग दिखाकर भ्रम से बचा लिया है॥ ५ ॥ १॥ १४ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਬਾਰਹ ਬਰਸ ਬਾਲਪਨ ਬੀਤੇ ਬੀਸ ਬਰਸ ਕਛੁ ਤਪੁ ਨ ਕੀਓ ॥
बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥
इन्सान की आयु के पहले बारह वर्ष तो बाल्यावस्था में ही बीत जाते हैं तथा अगले बीस वर्ष कोई तपस्या नहीं करता।

ਤੀਸ ਬਰਸ ਕਛੁ ਦੇਵ ਨ ਪੂਜਾ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਨਾ ਬਿਰਧਿ ਭਇਓ ॥੧॥
तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥
अन्य तीस वर्ष वह कोई देव-पूजा भी नहीं करता तथा जब वृद्धावस्था आ जाती है तो वह पश्चाताप करता है।॥ १॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤੇ ਜਨਮੁ ਗਇਓ ॥
मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥
उसका सारा जीवन मेरी-मेरी करते ही व्यतीत हो जाता है और

ਸਾਇਰੁ ਸੋਖਿ ਭੁਜੰ ਬਲਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥१॥ रहाउ ॥
शरीर रूपी सरोवर सूखने पर भुजबल भी नाश हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੂਕੇ ਸਰਵਰਿ ਪਾਲਿ ਬੰਧਾਵੈ ਲੂਣੈ ਖੇਤਿ ਹਥ ਵਾਰਿ ਕਰੈ ॥
सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥
इस अवस्था में पहुँचने पर वह अपने हाथों से सूखे हुए सरोवर के इर्द-गिर्द बांध बनाता है और कटे खेत के पास बाड़ करता है।

ਆਇਓ ਚੋਰੁ ਤੁਰੰਤਹ ਲੇ ਗਇਓ ਮੇਰੀ ਰਾਖਤ ਮੁਗਧੁ ਫਿਰੈ ॥੨॥
आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥२॥
जब मृत्यु रूपी चोर आता है तो वह तुरंत ही उसे ले जाता है, जिसे मूर्ख मनुष्य अपने प्राण समझकर सँभालता फिरता था॥ २॥

ਚਰਨ ਸੀਸੁ ਕਰ ਕੰਪਨ ਲਾਗੇ ਨੈਨੀ ਨੀਰੁ ਅਸਾਰ ਬਹੈ ॥
चरन सीसु कर क्मपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥
बुढ़ापे में पैर, सिर एवं हाथ कांपने लग जाते हैं और नयनों से असार जल बहता है।

ਜਿਹਵਾ ਬਚਨੁ ਸੁਧੁ ਨਹੀ ਨਿਕਸੈ ਤਬ ਰੇ ਧਰਮ ਕੀ ਆਸ ਕਰੈ ॥੩॥
जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥३॥
जीभ से शुद्ध वचन नहीं निकलते। हे मूर्ख जीव ! तब तुम धर्म की आशा करते हो॥ ३॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੈ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੀਓ ॥
हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥
यदि पूज्य परमेश्वर कृपा धारण करे तो मनुष्य की उससे वृत्ति लग जाती है और वह हरि-नाम का लाभ प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਇਓ ਅੰਤੇ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਚਲਿਓ ॥੪॥
गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥४॥
गुरु की कृपा से उसे हरि-नाम का धन मिल जाता है, जो अंततः परलोक को जाते समय उसके साथ जाता है॥ ४॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਅਨੁ ਧਨੁ ਕਛੂਐ ਲੈ ਨ ਗਇਓ ॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो ! सुनो, कोई भी मनुष्य मृत्यु के समय अपना अन्न-धन साथ नहीं लेकर गया।

ਆਈ ਤਲਬ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਕੀ ਮਾਇਆ ਮੰਦਰ ਛੋਡਿ ਚਲਿਓ ॥੫॥੨॥੧੫॥
आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥५॥२॥१५॥
जब भगवान का बुलावा आ जाता है तो वह धन-दौलत एवं मंदिरों को छोड़कर चला जाता ॥५॥२॥१५॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਕਾਹੂ ਦੀਨ੍ਹੇ ਪਾਟ ਪਟੰਬਰ ਕਾਹੂ ਪਲਘ ਨਿਵਾਰਾ ॥

काहू दीन्हे पाट पट्मबर काहू पलघ निवारा ॥

भगवान ने किसी को रेशमी वस्त्र प्रदान किए हुए हैं तथा किसी को निवार वाले पलंग दिए हुए हैं।

ਕਾਹੂ ਗਰੀ ਗੋਦਰੀ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਖਾਨ ਪਰਾਰਾ ॥੧॥

काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥१॥

लेकिन किसी को जीर्ण गुदड़ी भी नहीं मिली तथा किसी के पास घास-फूस की झोंपड़ी है॥ १॥

ਅਹਿਰਖ ਵਾਦੁ ਨ ਕੀਜੈ ਰੇ ਮਨ ॥

अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥

हे मेरे मन ! किसी से ईर्ष्या एवं विवाद मत करो।

ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਕਰਿ ਕਰਿ ਲੀਜੈ ਰੇ ਮਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥१॥ रहाउ ॥

शुभ कर्म करने से ही कुछ (सुख) प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕੁਮ੍ਹਾਰੈ ਏਕ ਜੁ ਮਾਟੀ ਗੂੰਧੀ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਬਾਨੀ ਲਾਈ ॥

कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥

कुम्हार एक जैसी मिट्टी गूंधता है और अनेक विधियों से बर्तनों को रंग देता है।

ਕਾਹੂ ਮਹਿ ਮੋਤੀ ਮੁਕਤਾਹਲ ਕਾਹੂ ਬਿਆਧਿ ਲਗਾਈ ॥੨॥

काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥२॥

किसी में वह मोती एवं मोतियों की माला डाल देता है और दूसरों में वह व्याधि वाली शराब डाल देता है॥ २॥

ਸੁਮਹਿ ਧਨੁ ਰਾਖਨ ਕਉ ਦੀਆ ਮੁਗਧੁ ਕਹੈ ਧਨੁ ਮੇਰਾ ॥

सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥

कंजूस आदमी को प्रभु ने धन संभालने हेतु अमानत के तौर पर दिया है परन्तु वह मूर्ख कहता है कि यह धन तो मेरा अपना है।

ਜਮ ਕਾ ਡੰਡੁ ਮੂੰਡ ਮਹਿ ਲਾਗੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰੈ ਨਿਬੇਰਾ ॥੩॥
जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥३॥
जब यम का दण्ड उसके सिर पर पड़ता है तो एक क्षण में ही निर्णय हो जाता है अर्थात् जब मनुष्य का देहांत हो जाता है तो धन वही रह जाता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਜਨੁ ਊਤਮੁ ਭਗਤੁ ਸਦਾਵੈ ਆਗਿਆ ਮਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥
हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥
हरि का सेवक उत्तम भक्त कहलवाता है और वह हरि की आज्ञा मानकर सुख प्राप्त करता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਭਾਣਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥੪॥
जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥४॥
जो हरि को अच्छा लगता है, वह सत्य मानकर स्वीकृत करता है और ईश्वरेच्छा को वह अपने मन में बसाता है॥ ४॥

ਕਹੈ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਝੂਠੀ ॥
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो ! सुनो, यह मैं-मेरी की रट झूठी है क्योंकि

ਚਿਰਗਟ ਫਾਰਿ ਚਟਾਰਾ ਲੈ ਗਇਓ ਤਰੀ ਤਾਗਰੀ ਛੂਟੀ ॥੫॥੩॥੧੬॥
चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥५॥३॥१६॥
मृत्यु (जीवात्मा रूपी) पक्षी के पिंजरे (रूपी शरीर) को फाड़कर आत्मा को ले जाती है और निर्जीव शरीर रूपी धागे वहीं टूट जाते हैं।॥ ५॥ ३॥ १६॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਹਮ ਮਸਕੀਨ ਖੁਦਾਈ ਬੰਦੇ ਤੁਮ ਰਾਜਸੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥
हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥
हे काजी ! हम मसकीन उस खुदा के पैदा किए हुए बंदे हैं। तुझे अपने चित्त की हकूमत भली लगती है अर्थात् तुझे उस पर बड़ा अभिमान है लेकिन

ਅਲਹ ਅਵਲਿ ਦੀਨ ਕੋ ਸਾਹਿਬੁ ਜੋਰੁ ਨਹੀ ਫੁਰਮਾਵੈ ॥੧॥
अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥१॥
अव्वल अल्लाह दीन धर्म का मालिक है और वह किसी पर जुल्म करने की आज्ञा नहीं देता॥ १॥

ਕਾਜੀ ਬੋਲਿਆ ਬਨਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥
हे काजी ! तेरे मुंह से निकली बातें अच्छी नहीं लगतीं ॥ १॥

ਰੋਜਾ ਧਰੈ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰੈ ਕਲਮਾ ਭਿਸਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥
रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥
रोजा रखने, नमाज पढ़ने और कलमा पढ़ने से जन्नत (स्वर्ग) नहीं मिलती।

ਸਤਰਿ ਕਾਬਾ ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਜੇ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਕੋਈ ॥੨॥
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥२॥
अल्लाह का घर काबा तो तेरे अन्तर्मन के भीतर ही मौजूद है परन्तु मिलता तभी है यदि कोई इस भेद को जान ले ॥ २ ॥

ਨਿਵਾਜ ਸੋਈ ਜੋ ਨਿਆਉ ਬਿਚਾਰੈ ਕਲਮਾ ਅਕਲਹਿ ਜਾਨੈ ॥
निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥
जो न्याय का विचार करता है, वही सच्ची नमाज पढ़ता है। यदि कोई अल्लाह को पहचानता है तो वही उसका कलमा है।

ਪਾਚਹੁ ਮੁਸਿ ਮੁਸਲਾ ਬਿਛਾਵੈ ਤਬ ਤਉ ਦੀਨੁ ਪਛਾਨੈ ॥੩॥
पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥३॥
जो मनुष्य पांच विकारों को मारकर वश में करता है तो नमाज का मुसल्ला (आसन) बिछाता है और धर्म को पहचानता है॥ ३॥

ਖਸਮੁ ਪਛਾਨਿ ਤਰਸ ਕਰਿ ਜੀਅ ਮਹਿ ਮਾਰਿ ਮਣੀ ਕਰਿ ਫੀਕੀ ॥
खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥
हे काजी ! अपने मालिक-खुदा को पहचान और अपने मन में तरस धारण कर तू अपने अहंत्व को मिटाकर फीका कर दे।

ਆਪੁ ਜਨਾਇ ਅਵਰ ਕਉ ਜਾਨੈ ਤਬ ਹੋਇ ਭਿਸਤ ਸਰੀਕੀ ॥੪॥
आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥४॥
जब मनुष्य अपने आपको समझा कर दूसरों को अपने जैसा समझता है तो वह जन्नत (स्वर्ग) का हकदार बन जाता है।॥ ४॥

ਮਾਟੀ ਏਕ ਭੇਖ ਧਰਿ ਨਾਨਾ ਤਾ ਮਹਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਨਾ ॥
माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥
मिट्टी तो एक ही है परन्तु इसने अनेक स्वरूप धारण किए हुए हैं। मैं उन सभी में एक परमात्मा को ही पहचानता हूँ।

ਕਹੈ ਕਬੀਰਾ ਭਿਸਤ ਛੋਡਿ ਕਰਿ ਦੋਜਕ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਾ ॥੫॥੪॥੧੭॥
कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥५॥४॥१७॥
कबीर जी कहते हैं कि हे काजी ! तूने तो जन्नत (स्वर्ग) के मार्ग को त्याग कर अपना मन जानबूझ कर दोजख (नरक) से जोड़ लिया है॥ ५ ॥ ४॥ १७॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਗਗਨ ਨਗਰਿ ਇਕ ਬੂੰਦ ਨ ਬਰਖੈ ਨਾਦੁ ਕਹਾ ਜੁ ਸਮਾਨਾ ॥
गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥
दशम द्वार रूपी गगन नगरी में अब एक बूंद भी नहीं बरसती। कहाँ है वह नाद जो इसके भीतर समाया हुआ था।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਮਾਧੋ ਪਰਮ ਹੰਸੁ ਲੇ ਸਿਧਾਨਾ ॥੧॥
पारब्रहम परमेसुर माधो परम हंसु ले सिधाना ॥१॥
ब्रहा-परमेश्वर आत्मा रुपी परमहंस को ले गया है॥ १॥

ਬਾਬਾ ਬੋਲਤੇ ਤੇ ਕਹਾ ਗਏ ਦੇਹੀ ਕੇ ਸੰਗਿ ਰਹਤੇ ॥
बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥
हे बाबा ! जो आत्मा बातें करती एवं शरीर के साथ रहती थी, वह कहाँ चली गई है ?

ਸੁਰਤਿ ਮਾਹਿ ਜੋ ਨਿਰਤੇ ਕਰਤੇ ਕਥਾ ਬਾਰਤਾ ਕਹਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥१॥ रहाउ ॥
वह आत्मा मन में नृत्य करती थी और कथा-वात करती थी ॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਜਾਵਨਹਾਰੋ ਕਹਾ ਗਇਓ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਮੰਦਰੁ ਕੀਨ੍ਹਾ ॥
बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा ॥
वह बजाने वाला आत्मा कहाँ चला गया है जिसने इस शरीर रूपी मन्दिर को अपना बनाया हुआ था ?

ਸਾਖੀ ਸਬਦੁ ਸੁਰਤਿ ਨਹੀ ਉਪਜੈ ਖਿੰਚਿ ਤੇਜੁ ਸਭੁ ਲੀਨ੍ਹਾ ॥੨॥
साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्हा ॥२॥
कोई साखी, शब्द, चेतना पैदा नहीं होती। प्रभु ने समूचा तेज-बल खींच लिया है॥ २॥

ਸ੍ਰਵਨਨ ਬਿਕਲ ਭਏ ਸੰਗਿ ਤੇਰੇ ਇੰਦ੍ਰੀ ਕਾ ਬਲੁ ਥਾਕਾ ॥
स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥
तेरे संगी कान बलहीन हो गए हैं तेरी काम-वासना का बल भी क्षीण हो गया है।

ਚਰਨ ਰਹੇ ਕਰ ਢਰਕਿ ਪਰੇ ਹੈ ਮੁਖਹੁ ਨ ਨਿਕਸੈ ਬਾਤਾ ॥੩॥
चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥३॥
तेरे पैर भी चलने में असमर्थ हैं, हाथ भी शिथिल हो गए हैं तथा तेरे मुँह से कोई बात भी नहीं निकलती॥ ३॥

ਥਾਕੇ ਪੰਚ ਦੂਤ ਸਭ ਤਸਕਰ ਆਪ ਆਪਣੈ ਭ੍ਰਮਤੇ ॥
थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥
तेरे कामादिक पाँचों विकार थक गए हैं तथा वे सभी चोर अपने-आप भटकने से हट गए हैं।

ਥਾਕਾ ਮਨੁ ਕੁੰਚਰ ਉਰੁ ਥਾਕਾ ਤੇਜੁ ਸੂਤੁ ਧਰਿ ਰਮਤੇ ॥੪॥
थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥४॥
मन रूपी हाथी भी हार-थक गया है और सूत्रधार हृदय जिसके द्वारा शरीर की इन्द्रियाँ चलती-फिरती थीं, वे भी थक गई हैं।॥ ४॥

ਮਿਰਤਕ ਭਏ ਦਸੈ ਬੰਦ ਛੂਟੇ ਮਿਤ੍ਰ ਭਾਈ ਸਭ ਛੋਰੇ ॥
मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥
मृत्यु होने के पश्चात् दसों ही द्वारों के बन्धन टूट गए हैं तथा वह अपने मित्रों एवं भाईयों को छोड़ गया है।

ਕਹਤ ਕਬੀਰਾ ਜੋ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਜੀਵਤ ਬੰਧਨ ਤੋਰੇ ॥੫॥੫॥੧੮॥
कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥५॥५॥१८॥
कबीर जी कहते हैं कि जो मनुष्य भगवान का ध्यान करता है, वह जीवित ही तमाम बन्धनों को तोड़ देता हैं ॥५॥५॥१८॥

ਆਸਾ ਇਕਤੁਕੇ ੪ ॥
आसा इकतुके ४ ॥
आसा ॥

ਸਰਪਨੀ ਤੇ ਊਪਰਿ ਨਹੀ ਬਲੀਆ ॥
सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥
सारे विश्व में माया रूपी सर्पिणी से अधिकतर कोई बलशाली नहीं,

ਜਿਨਿ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹਾਦੇਉ ਛਲੀਆ ॥੧॥
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥१॥
जिसने (त्रिदेवों) ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव को भी छल लिया है॥ १॥

ਮਾਰੁ ਮਾਰੁ ਸ੍ਰਪਨੀ ਨਿਰਮਲ ਜਲਿ ਪੈਠੀ ॥
मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥
हर तरफ मारा-मार करती हुई माया रूपी सर्पिणी अब सत्संगति रूपी निर्मल जल में बैठ गई है।

ਜਿਨਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਡਸੀਅਲੇ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਡੀਠੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥१॥ रहाउ ॥
जिस माया रूपी सर्पिणी ने त्रिभवनों अर्थात् समूचा जगत डस लिया था, उसे मैंने गुरु की कृपा से देख लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸ੍ਰਪਨੀ ਸ੍ਰਪਨੀ ਕਿਆ ਕਹਹੁ ਭਾਈ ॥
स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥
हे भाई ! तुम यह माया को सर्पिणी-सर्पिणी कहकर क्यों शोर मचा रहे हो ?

ਜਿਨਿ ਸਾਚੁ ਪਛਾਨਿਆ ਤਿਨਿ ਸ੍ਰਪਨੀ ਖਾਈ ॥੨॥
जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥२॥
जो सत्य को पहचान लेता है वह माया रूपी सर्पिणी को निगल जाता है॥ २॥

ਸ੍ਰਪਨੀ ਤੇ ਆਨ ਛੂਛ ਨਹੀ ਅਵਰਾ ॥
स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥
सिमरन करने वालों के बिना अन्य कोई भी इस सर्पिणी से नहीं बचा है।

ਸ੍ਰਪਨੀ ਜੀਤੀ ਕਹਾ ਕਰੈ ਜਮਰਾ ॥੩॥
स्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥३॥
जिसने माया रूपी सर्पिणी को जीत लिया है, यमराज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता॥ ३॥

ਇਹ ਸ੍ਰਪਨੀ ਤਾ ਕੀ ਕੀਤੀ ਹੋਈ ॥
इह स्रपनी ता की कीती होई ॥
यह माया रूपी सर्पिणी तो उस प्रभु की पैदा की हुई है,

ਬਲੁ ਅਬਲੁ ਕਿਆ ਇਸ ਤੇ ਹੋਈ ॥੪॥
बलु अबलु किआ इस ते होई ॥४॥
अपने आप उसमें कौन-सा बल अथवा अबल है॥ ४॥

ਇਹ ਬਸਤੀ ਤਾ ਬਸਤ ਸਰੀਰਾ ॥
इह बसती ता बसत सरीरा ॥
जितनी देर तक माया रूपी सर्पिणी मनुष्य के मन में निवास करती है, तब तक वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਹਜਿ ਤਰੇ ਕਬੀਰਾ ॥੫॥੬॥੧੯॥
गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥५॥६॥१९॥
गुरु की अनुकंपा से कबीर सहज ही पार हो गया है॥ ५॥ ६ ॥ १६ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਕਹਾ ਸੁਆਨ ਕਉ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸੁਨਾਏ ॥
कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ॥
कुते (अर्थात् लालची आदमी) को स्मृतियाँ पढ़कर सुनाने का क्या अभिप्राय है ?

ਕਹਾ ਸਾਕਤ ਪਹਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੧॥
कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥१॥
वैसे ही शाक्त के पास हरि का गुणगान करने का क्या लाभ है ?॥ १॥

ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਮੇ ਰਮਿ ਰਹੀਐ ॥
राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥
हे भाई ! राम नाम में पूर्णतया लीन रहना चाहिए तथा

ਸਾਕਤ ਸਿਉ ਭੂਲਿ ਨਹੀ ਕਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
भूलकर भी शाक्त इन्सान को उपदेश नहीं करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਕਊਆ ਕਹਾ ਕਪੂਰ ਚਰਾਏ ॥
कऊआ कहा कपूर चराए ॥
कौए को कपूर खिलाने से कोई लाभ नहीं (क्योंकि कौए की विष्ठा-भक्षी चोंच में अन्तर नहीं आएगा)

ਕਹ ਬਿਸੀਅਰ ਕਉ ਦੂਧੁ ਪੀਆਏ ॥੨॥
कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥२॥
इसी तरह विषधर सांप को दूध पिलाने का भी कोई लाभ नहीं (क्योंकि डंक मारने से वह हटेगा नहीं) ॥ २॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਬਿਬੇਕ ਬੁਧਿ ਹੋਈ ॥
सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥
सत्संगति में सम्मिलित होने से विवेक-बुद्धि की प्राप्ति होती है,

ਪਾਰਸੁ ਪਰਸਿ ਲੋਹਾ ਕੰਚਨੁ ਸੋਈ ॥੩॥
पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥३॥
जैसे पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण बन जाता है॥ ३॥

ਸਾਕਤੁ ਸੁਆਨੁ ਸਭੁ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥
साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥
शाक्त एवं कुत्ता सब कुछ वही करते हैं, जो प्रभु उनसे करवाता है।

ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ ॥੪॥
जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥४॥
जो शुरु से किस्मत में लिखा हुआ है, वह वही कर्म करते हैं।॥ ४॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੈ ਲੈ ਨੀਮੁ ਸਿੰਚਾਈ ॥
अम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ॥
कबीर जी कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य अमृत लेकर भी नीम की सिंचाई करे

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਉਆ ਕੋ ਸਹਜੁ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥੭॥੨੦॥
कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥५॥७॥२०॥
तो भी उसका कड़वा स्वभाव दूर नहीं होता।॥ ५॥ ७॥ २०॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਲੰਕਾ ਸਾ ਕੋਟੁ ਸਮੁੰਦ ਸੀ ਖਾਈ ॥
लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥
जिस महाबली रावण का लंका जैसा मजबूत किला था और समुद्र जैसी किले की रक्षा हेतु खाई थी,

ਤਿਹ ਰਾਵਨ ਘਰ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥
तिह रावन घर खबरि न पाई ॥१॥
उस रावण के घर की आज कोई खबर नहीं अर्थात् कोई वजूद नहीं मिलता ॥ १ ॥

ਕਿਆ ਮਾਗਉ ਕਿਛੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ॥
किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥
मैं परमात्मा से क्या माँगूं, क्योंकि कुछ भी स्थिर नहीं रहता अर्थात् सब कुछ नाशवान है।

ਦੇਖਤ ਨੈਨ ਚਲਿਓ ਜਗੁ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे नयनों के देखते-देखते ही समूचा जगत चला जा रहा है अर्थात् नाश हो रहा है॥ १॥ रहाउ ॥

ਇਕੁ ਲਖੁ ਪੂਤ ਸਵਾ ਲਖੁ ਨਾਤੀ ॥
इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥
जिस रावण के एक लाख पुत्र एवं सवा लाख नाती-पोते थे,

ਤਿਹ ਰਾਵਨ ਘਰ ਦੀਆ ਨ ਬਾਤੀ ॥੨॥
तिह रावन घर दीआ न बाती ॥२॥
उस रावण के घर में आज न दीया और न ही बती है॥ २॥

ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਜਾ ਕੇ ਤਪਤ ਰਸੋਈ ॥
चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥
रावण इतना बलशाली था कि चन्द्रमा एवं सूर्य देवता उसकी रसोई तैयार करते थे

ਬੈਸੰਤਰੁ ਜਾ ਕੇ ਕਪਰੇ ਧੋਈ ॥੩॥
बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥३॥
और अग्नि देवता उसके वस्त्र धोता था॥ ३॥

ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮੈ ਨਾਮਿ ਬਸਾਈ ॥
गुरमति रामै नामि बसाई ॥
जो गुरु की मति द्वारा राम के नाम को अपने हृदय में बसाता है,

ਅਸਥਿਰੁ ਰਹੈ ਨ ਕਤਹੂੰ ਜਾਈ ॥੪॥
असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥४॥
वह स्थिर रहता है और कहीं भी नहीं भटकता ॥ ४ ॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਈ ॥
कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे लोगो ! जरा ध्यान से सुनो,

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੫॥੮॥੨੧॥
राम नाम बिनु मुकति न होई ॥५॥८॥२१॥
राम के नाम बिना जीव की मुक्ति नहीं होती ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਪਹਿਲਾ ਪੂਤੁ ਪਿਛੈਰੀ ਮਾਈ ॥
पहिला पूतु पिछैरी माई ॥
पहले (भगवान का अंश जीव) पुत्र था और तदुपरांत उसकी माता बन बैठी माया उत्पन्न हुई।

ਗੁਰੁ ਲਾਗੋ ਚੇਲੇ ਕੀ ਪਾਈ ॥੧॥
गुरु लागो चेले की पाई ॥१॥
वह जीव स्वयं गुरु के सादृश्य था परन्तु मन रूपी चेले की आज्ञा का पालन करने लगा ॥

ਏਕੁ ਅਚੰਭਉ ਸੁਨਹੁ ਤੁਮ੍ਹ ਭਾਈ ॥
एकु अच्मभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥
हे भाई ! एक अदभुत बात सुनो

ਦੇਖਤ ਸਿੰਘੁ ਚਰਾਵਤ ਗਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देखत सिंघु चरावत गाई ॥१॥ रहाउ ॥
मैं निडर जीवात्मा रूपी सिंह को अब इन्द्रियों रूपी गायों को चराते देख रहा हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਲ ਕੀ ਮਛੁਲੀ ਤਰਵਰਿ ਬਿਆਈ ॥
जल की मछुली तरवरि बिआई ॥
भगवान के अमृत जल में निवसित (आत्मा रूपी) मछली जल त्यागकर विकारों के पेड़ पर प्रसूत हो रही है अर्थात् सांसारिक बन्धनों में उलझ गई है।

ਦੇਖਤ ਕੁਤਰਾ ਲੈ ਗਈ ਬਿਲਾਈ ॥੨॥
देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥२॥
तृष्णा रूपी बिल्ली को संतोष रूपी कुत्ते को उठाकर भागते देखा है॥ २ ॥

ਤਲੈ ਰੇ ਬੈਸਾ ਊਪਰਿ ਸੂਲਾ ॥
तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥
जीव के गुणों की टहनियाँ नीचे दब गई हैं तथा कांटे ऊपर उठ आए हैं।

ਤਿਸ ਕੈ ਪੇਡਿ ਲਗੇ ਫਲ ਫੂਲਾ ॥੩॥
तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥३॥
उस पेड़ के तने को विकारों के फल-फूल लगे हुए हैं। ३॥

ਘੋਰੈ ਚਰਿ ਭੈਸ ਚਰਾਵਨ ਜਾਈ ॥
घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥
प्राण रूपी घोड़े पर सवार होकर वासना की भैंस जीवात्मा को चराने (भोग भोगने) हेतु ले जाती है।

ਬਾਹਰਿ ਬੈਲੁ ਗੋਨਿ ਘਰਿ ਆਈ ॥੪॥
बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥४॥
धैर्य रूपी बैल अभी बाहर है जबकि वासनाओं का बोझ जीव के घर में आ गया है॥ ४ ॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਜੁ ਇਸ ਪਦ ਬੂਝੈ ॥
कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥
कबीर जी कहते हैं कि जो इस पद को समझ लेता है,

ਰਾਮ ਰਮਤ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ॥੫॥੯॥੨੨॥
राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥५॥९॥२२॥
उसे राम नाम का भजन करने से सब कुछ सूझ हो जाती है और वह माया के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ५ ॥ ६ ॥ २२ ॥

ਬਾਈਸ ਚਉਪਦੇ ਤਥਾ ਪੰਚਪਦੇ ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ਤਿਪਦੇ ੮ ਦੁਤੁਕੇ ੭ ਇਕਤੁਕਾ ੧
बाईस चउपदे तथा पंचपदे आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १
बाईस चउपदे तथा पंचपदे आसा श्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਬਿੰਦੁ ਤੇ ਜਿਨਿ ਪਿੰਡੁ ਕੀਆ ਅਗਨਿ ਕੁੰਡ ਰਹਾਇਆ ॥

बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥

भगवान ने पिता के वीर्य-बिन्दु से तेरे शरीर को बना दिया और गर्भ रूपी अंग्निकुण्ड में तेरी रक्षा की।

ਦਸ ਮਾਸ ਮਾਤਾ ਉਦਰਿ ਰਾਖਿਆ ਬਹੁਰਿ ਲਾਗੀ ਮਾਇਆ ॥੧॥

दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥१॥

दस महीने उसने माता के उदर में बचाकर रखा और जगत में जन्म लेकर तुझे माया ने आकर्षित कर लिया।॥ १॥

ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਾਹੇ ਕਉ ਲੋਭਿ ਲਾਗੇ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਖੋਇਆ ॥

प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥

हे प्राणी ! लोभ में फँसकर तूने हीरे जैसा अनमोल जीवन क्यों गंवाया है?

ਪੂਰਬ ਜਨਮਿ ਕਰਮ ਭੂਮਿ ਬੀਜੁ ਨਾਹੀ ਬੋਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥१॥ रहाउ ॥

पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के कारण मिली इस शरीर रूपी कर्मभूमि में नाम रूपी बीज को तूने अभी तक बोया ही नहीं है॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਰਿਕ ਤੇ ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਹੋਨਾ ਸੋ ਹੋਇਆ ॥

बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥

अब बालक से तू वृद्ध हो गया है और जो कुछ होना था, वह हो गया है।

ਜਾ ਜਮੁ ਆਇ ਝੋਟ ਪਕਰੈ ਤਬਹਿ ਕਾਹੇ ਰੋਇਆ ॥੨॥

जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥२॥

जब यमदूत आकर तुझे बालों से पकड़ता है तो तू क्यों विलाप करता है ?

ਜੀਵਨੈ ਕੀ ਆਸ ਕਰਹਿ ਜਮੁ ਨਿਹਾਰੈ ਸਾਸਾ ॥
जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥
तू अधिक जीवन जीने की आशा करता है परन्तु यम तेरी सांसें देख रहा है।

ਬਾਜੀਗਰੀ ਸੰਸਾਰੁ ਕਬੀਰਾ ਚੇਤਿ ਢਾਲਿ ਪਾਸਾ ॥੩॥੧॥੨੩॥
बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥३॥१॥२३॥
हे कबीर ! यह दुनिया तो बाजीगर का खेल है इसलिए सोच-समझकर जीवन बाजी जीतने के लिए प्रभु-सिमरन की चाल चल ॥ ३ ॥ १॥ २३ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਤਨੁ ਰੈਨੀ ਮਨੁ ਪੁਨ ਰਪਿ ਕਰਿ ਹਉ ਪਾਚਉ ਤਤ ਬਰਾਤੀ ॥
तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥
अपने तन को मैंने रंगने वाला पात्र बनाया है और फिर मन को शुभ गुणों से रंगा है। पाँच मूल तत्वों को मैंने अपना बराती बनाया है।

ਰਾਮ ਰਾਇ ਸਿਉ ਭਾਵਰ�ि ਲੈਹਉ ਆਤਮ ਤਿਹ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥੧॥
राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥
राम जी से मैं अपने विवाह के फेरे ले रही हूँ और मेरी आत्मा उसके प्रेम में लीन हो गई है॥ १॥

ਗਾਉ ਗਾਉ ਰੀ ਦੁਲਹਨੀ ਮੰਗਲਚਾਰਾ ॥
गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥
हे दुल्हन सखियो ! तुम विवाह के मंगल गीत गायन करो।

ਮੇਰੇ ਗ੍ਰਿਹ ਆਏ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਭਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे घर में राजा राम दूल्हा बन कर आए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾਭਿ ਕਮਲ ਮਹਿ ਬੇਦੀ ਰਚਿ ਲੇ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ਉਚਾਰਾ ॥
नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥
अपनी नाभि कमल में मैंने वेदी बनाई है और ब्रह्म-ज्ञान रूपी मंत्र उच्चरित किया है।

ਰਾਮ ਰਾਇ ਸੋ ਦੂਲਹੁ ਪਾਇਓ ਅਸ ਬਡਭਾਗ ਹਮਾਰਾ ॥੨॥
राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥२॥
मैं बड़ी भाग्यशालिनी हूँ जो राम जी को मैंने अपने दूल्हे (वर) के रूप में पाया है॥ २॥

ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਕਉਤਕ ਆਏ ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਉਜਾਨਾਂ ॥
सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥
सुर, नर, मुनिजन एवं तेतीस करोड़ देवता अपने विमानों में सवार होकर इस आश्चर्यजनक विवाह का कौतुक देखने हेतु पधारे हैं।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮੋਹਿ ਬਿਆਹਿ ਚਲੇ ਹੈ ਪੁਰਖ ਏਕ ਭਗਵਾਨਾ ॥੩॥੨॥੨੪॥
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥३॥२॥२४॥
कबीर जी कहते हैं कि एक आदिपुरुष भगवान मुझे ब्याह कर ले चले हैं।॥ ३॥ २॥ २४॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਸਾਸੁ ਕੀ ਦੁਖੀ ਸਸੁਰ ਕੀ ਪਿਆਰੀ ਜੇਠ ਕੇ ਨਾਮਿ ਡਰਉ ਰੇ ॥
सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥
मैं अपनी माया रूपी सास द्वारा बहुत दुःखी हूँ तथा अपने ससुर की प्यारी हूँ लेकिन अपने जेठ मृत्यु के नाम से मैं डरती हूँ।

ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਨਨਦ ਗਹੇਲੀ ਦੇਵਰ ਕੈ ਬਿਰਹਿ ਜਰਉ ਰੇ ॥੧॥
सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥१॥
हे मेरी सखी सहेलियो ! मेरी अज्ञानता (इन्द्रियों) रूपी ननद ने मुझे पकड़ लिया है। अपने देवर (विवेक बुद्धि) के विरह में अत्यंत जल रही हूँ॥ १॥

ਮੇਰੀ ਮਤਿ ਬਉਰੀ ਮੈ ਰਾਮੁ ਬਿਸਾਰਿਓ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਰਹਨਿ ਰਹਉ ਰੇ ॥
मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥
मेरी बुद्धि बावली हो गई है, क्योंकि मैंने राम को भुला दिया है। अब मैं कैसे उपयुक्त जीवन बिता सकती हूँ।

ਸੇਜੈ ਰਮਤੁ ਨੈਨ ਨਹੀ ਪੇਖਉ ਇਹੁ ਦੁਖੁ ਕਾ ਸਉ ਕਹਉ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा पति-परमात्मा मेरी सेज में विराजमान है परन्तु मेरे नयनों से वह मुझे दिखाई नहीं देता। यह दुःख मैं किससे व्यक्त करूं ॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਪੁ ਸਾਵਕਾ ਕਰੈ ਲਰਾਈ ਮਾਇਆ ਸਦ ਮਤਵਾਰੀ ॥
बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥
मेरा सौतेला पिता मुझ से झगड़ा करता है और माया मोहिनी सदैव नशे में मस्त रहती है।

ਬਡੇ ਭਾਈ ਕੈ ਜਬ ਸੰਗਿ ਹੋਤੀ ਤਬ ਹਉ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ॥੨॥
बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥२॥
जब मैं बड़े भाई (ध्यान-मनन) की संगति करती थी तो मैं अपने प्रियतम की प्यारी थी। २॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਪੰਚ ਕੋ ਝਗਰਾ ਝਗਰਤ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥
कबीर जी कहते हैं कि कामादिक पाँचों विकारों से झगड़ा झगड़ते ही मेरा जीवन नष्ट हो गया है।

ਝੂਠੀ ਮਾਇਆ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਾਧਿਆ ਮੈ ਰਾਮ ਰਮਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥੩॥੨੫॥
झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥३॥३॥२५॥
झुठी माया ने सारे जगत को बाँध लिया है परन्तु राम के नाम का भजन-सुमिरन करने से मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ ३॥ ३॥ २५ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਹਮ ਘਰਿ ਸੂਤੁ ਤਨਹਿ ਨਿਤ ਤਾਨਾ ਕੰਠਿ ਜਨੇਊ ਤੁਮਾਰੇ ॥
हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥
हे ब्राह्मण ! हमारे घर में प्रतिदिन सूत का ताना ही तनता है परन्तु तुम्हारे गले में केवल सूत का जनेऊ ही है।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਤਉ ਬੇਦ ਪੜਹੁ ਗਾਇਤ੍ਰੀ ਗੋਬਿੰਦੁ ਰਿਦੈ ਹਮਾਰੇ ॥੧॥
तुम्ह्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥१॥
तुम गायत्री-मंत्र का जाप एवं वेदों का अध्ययन करते रहते हो लेकिन हमारे हृदय में गोबिन्द निवास करता है॥ १॥

ਮੇਰੀ ਜਿਹਬਾ ਬਿਸਨੁ ਨੈਨ ਨਾਰਾਇਨ ਹਿਰਦੈ ਬਸਹਿ ਗੋਬਿੰਦਾ ॥
मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥
मेरी जिव्हा में विष्णु, नयनों में नारायण एवं हृदय में गोविन्द बसता है।

ਜਮ ਦੁਆਰ ਜਬ ਪੂਛਸਿ ਬਵਰੇ ਤਬ ਕਿਆ ਕਹਸਿ ਮੁਕੰਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥१॥ रहाउ ॥

हे मुकुंद ब्राह्मण ! जब यम द्वार पर कर्मों का लेखा जोखा पूछा जाएगा तो बावले तब तुम क्या कहोगे॥ १॥ रहाउ॥

ਹਮ ਗੋਰੂ ਤੁਮ ਗੁਆਰ ਗੁਸਾਈ ਜਨਮ ਜਨਮ ਰਖਵਾਰੇ ॥

हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥

हम गौएं हैं और तुम ब्राह्मण हमारे ग्वाले बने हुए हो और जन्म-जन्म से हमारी रक्षा कर रहे हो।

ਕਬਹੂੰ ਨ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿ ਚਰਾਇਹੁ ਕੈਸੇ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥੨॥

कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥२॥

परन्तु तुम कभी भी हमें चराने हेतु पार उतार नहीं लेकर गए अर्थात् कोई ब्रह्म-ज्ञान प्रदान नहीं किया। फिर तुम हमारे कैसे स्वामी हो ? ॥ २॥

ਤੂੰ ਬਾਮ੍ਹ੍ਰਨੁ ਮੈ ਕਾਸੀਕ ਜੁਲਹਾ ਬੂਝਹੁ ਮੋਰ ਗਿਆਨਾ ॥

तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥

तुम ब्राह्मण हो तथा मैं काशी का जुलाहा हूँ। मेरी ज्ञान की बात को समझकर उसका सही उत्तर दो।

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਤਉ ਜਾਚੇ ਭੂਪਤਿ ਰਾਜੇ ਹਰਿ ਸਉ ਮੋਰ ਧਿਆਨਾ ॥੩॥੪॥੨੬॥

तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥३॥४॥२६॥

तुम जाकर राजाओं-महाराजाओं से दान मांगते फिरते हो किन्तु मेरा ध्यान हरि के चरणों में ही लीन रहता है॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਜਗਿ ਜੀਵਨੁ ਐਸਾ ਸੁਪਨੇ ਜੈਸਾ ਜੀਵਨੁ ਸੁਪਨ ਸਮਾਨੰ ॥

जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥

जगत में जीवन ऐसा है, जैसे कि एक स्वप्न होता है। यह जीवन एक स्वप्न के समान है

ਸਾਚੁ ਕਰਿ ਹਮ ਗਾਠਿ ਦੀਨੀ ਛੋਡਿ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੰ ॥੧॥

साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥१॥

परन्तु इसे सत्य मानकर हमने पकड़ लिया है और प्रभु नाम के परम खजाने को छोड़ दिया है। १॥

ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਹਿਤੁ ਕੀਨ੍ ॥
बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥
हे बाबा ! हम उस माया-मोह से इतना स्नेह करते हैं

ਜਿਨਿ ਗਿਆਨੁ ਰਤਨੁ ਹਿਰਿ ਲੀਨ੍ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥
जिसने हमारा ज्ञान-रत्न छीन लिया है। १॥ रहाउ॥

ਨੈਨ ਦੇਖਿ ਪਤੰਗੁ ਉਰਝੈ ਪਸੁ ਨ ਦੇਖੈ ਆਗਿ ॥
नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥
नयनों से देखता हुआ पतंगा भी दीपक की लौ से उलझ जाता है। मूर्ख कीड़ा अग्नि को नहीं देखता।

ਕਾਲ ਫਾਸ ਨ ਮੁਗਧੁ ਚੇਤੈ ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨਿ ਲਾਗਿ ॥੨॥
काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥२॥
मूर्ख मनुष्य सोने एवं कामिनी (स्त्री) में मुग्ध होकर मृत्यु के फंदे का ख्याल ही नहीं करता॥ २॥

ਕਰਿ ਬਿਚਾਰੁ ਬਿਕਾਰ ਪਰਹਰਿ ਤਰਨ ਤਾਰਨ ਸੋਇ ॥
करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥
हे प्राणी ! तू सोच-विचार कर विकारों को त्याग दे, भगवान तुझे संसार-सागर से पार करवाने हेतु एक जहाज है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਜਗਜੀਵਨੁ ਐਸਾ ਦੁਤੀਅ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੩॥੫॥੨੭॥
कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥३॥५॥२७॥
कबीर जी कहते हैं कि जगत का जीवन प्रभु इतना महान् एवं सर्वोपरि है कि उस जैसा दूसरा कोई नहीं ॥ ३॥ ५॥ २७ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਜਉ ਮੈ ਰੂਪ ਕੀਏ ਬਹੁਤੇਰੇ ਅਬ ਫੁਨਿ ਰੂਪੁ ਨ ਹੋਈ ॥
जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥
चाहे मैंने अनेक रूप (जन्म) धारण किए हैं। परन्तु अब मैं दोबारा अन्य रूप (जन्म) धारण नहीं करूंगा।

ਤਾਗਾ ਤੰਤੁ ਸਾਜੁ ਸਭੁ ਥਾਕਾ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਸਿ ਹੋਈ ॥੧॥
तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥१॥
वाद्ययन्त्र एवं उसकी तार-तन्त्रिका सभी थक गए हैं और अब मेरा मन राम नाम के वश में हो गया है॥ १॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਨਾਚਨੋ ਨ ਆਵੈ ॥
अब मोहि नाचनो न आवै ॥
अब मुझे माया अधीन नृत्य करना नहीं आता।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਮੰਦਰੀਆ ਨ ਬਜਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन अब जिंदगी का ढोल नहीं बजाता॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਮਾਇਆ ਲੈ ਜਾਰੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਗਾਗਰਿ ਫੂਟੀ ॥
कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥
मैंने काम, क्रोध एवं माया का नाश कर दिया है और मेरी तृष्णा की गागर फूट गई है।

ਕਾਮ ਚੋਲਨਾ ਭਇਆ ਹੈ ਪੁਰਾਨਾ ਗਇਆ ਭਰਮੁ ਸਭੁ ਛੂਟੀ ॥੨॥
काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥२॥
मेरी कामवासना का पहरावा पुराना हो गया है और मेरे सभी भ्रम निवृत्त हो गए हैं।॥ २॥

ਸਰਬ ਭੂਤ ਏਕੈ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ਚੂਕੇ ਬਾਦ ਬਿਬਾਦਾ ॥
सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥
सारी दुनिया के लोगों को मैं एक समान समझता हूँ और मेरे वाद-विवाद मिट गए हैं।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮੈ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਭਏ ਰਾਮ ਪਰਸਾਦਾ ॥੩॥੬॥੨੮॥
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥३॥६॥२८॥
कबीर जी कहते हैं कि राम की कृपा होने से मैंने पूर्ण परमात्मा पा लिया है॥ ३॥ ६॥ २८ ॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਰੋਜਾ ਧਰੈ ਮਨਾਵੈ ਅਲਹੁ ਸੁਆਦਤਿ ਜੀਅ ਸੰਘਾਰੈ ॥

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥

हे काजी ! तू अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए रोज़े (व्रत) रखता है और अपने स्वाद के लिए जीवों का भी संहार करता है।

ਆਪਾ ਦੇਖਿ ਅਵਰ ਨਹੀ ਦੇਖੈ ਕਾਹੇ ਕਉ ਝਖ ਮਾਰੈ ॥੧॥

आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥१॥

तू अपना मतलब ही देखता है, दूसरों का ध्यान नहीं रखता। तू क्यों निरर्थक ही भाग-दौड़ करता फिरता है ? ॥ १॥

ਕਾਜੀ ਸਾਹਿਬੁ ਏਕੁ ਤੋਹੀ ਮਹਿ ਤੇਰਾ ਸੋਚਿ ਬਿਚਾਰਿ ਨ ਦੇਖੈ ॥

काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥

हे काजी ! सबका मालिक एक है, वह खुदा तेरे मन में भी मौजूद है लेकिन तू सोच-विचार कर उसे देखता नहीं।

ਖਬਰਿ ਨ ਕਰਹਿ ਦੀਨ ਕੇ ਬਉਰੇ ਤਾ ਤੇ ਜਨਮੁ ਅਲੇਖੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥१॥ रहाउ ॥

हे कट्टरवादी धर्म के बावले ! तू उसका पता नहीं करता, इसलिए तेरा जीवन किसी लेखे में नहीं अर्थात् व्यर्थ है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਚੁ ਕਤੇਬ ਬਖਾਨੈ ਅਲਹੁ ਨਾਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥

साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥

तेरा कतेब (कुरान) तुझे बताता है कि अल्लाह सत्य है और वह कोई नारी अथवा पुरुष नहीं।

ਪਢੇ ਗੁਨੇ ਨਾਹੀ ਕਛੁ ਬਉਰੇ ਜਉ ਦਿਲ ਮਹਿ ਖਬਰਿ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥

पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥२॥

हे बावले ! यदि दिल में कोई समझ न आई हो तो तेरा पढ़ने-विचारने का कोई अभिप्राय नहीं ॥ २ ॥

ਅਲਹੁ ਗੈਬੁ ਸਗਲ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਹਿਰਦੈ ਲੇਹੁ ਬਿਚਾਰੀ ॥

अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥

अल्लाह सबके मन में निवास करता है, अपने हृदय में इस बात को धारण कर।

ਹਿੰਦੂ ਤੁਰਕ ਦੁਹੂੰ ਮਹਿ ਏਕੈ ਕਹੈ ਕਬੀਰ ਪੁਕਾਰੀ ॥੩॥੭॥੨੯॥
हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥३॥७॥२९॥
कबीर पुकार कर यही कहता है कि हिन्दु एवं मुसलमानों दोनों में एक वही खुदा परमात्मा ही बसता है ॥३॥७॥२९॥

ਆਸਾ ॥ ਤਿਪਦਾ ॥ ਇਕਤੁਕਾ ॥
आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥
आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥

ਕੀਓ ਸਿੰਗਾਰੁ ਮਿਲਨ ਕੇ ਤਾਈ ॥
कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥
मैंने अपने प्रभु-पति से मिलन के लिए यह श्रृंगार अर्थात् धर्म-कर्म किया है

ਹਰਿ ਨ ਮਿਲੇ ਜਗਜੀਵਨ ਗੁਸਾਈ ॥੧॥
हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥१॥
परन्तु जगत का जीवन, ईश्वर मुझे नहीं मिला ॥ १॥

ਹਰਿ ਮੇਰੋ ਪਿਰੁ ਹਉ ਹਰਿ ਕੀ ਬਹੁਰੀਆ ॥
हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥
हरि मेरा पति है और मैं हरि की पत्नी हूँ।

ਰਾਮ ਬਡੇ ਮੈ ਤਨਕ ਲਹੁਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा राम बहुत महान् है परन्तु मैं उनके समक्ष बालिका हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਧਨ ਪਿਰ ਏਕੈ ਸੰਗਿ ਬਸੇਰਾ ॥
धन पिर एकै संगि बसेरा ॥
वर (प्रभु) एवं वधु (जीवात्मा) एक ही स्थान पर बसेरा करते हैं।

ਸੇਜ ਏਕ ਪੈ ਮਿਲਨੁ ਦੁਹੇਰਾ ॥੨॥
सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥२॥
वह एक ही सेज पर लेटते हैं परन्तु उनका मिलन मुश्किल है॥ २॥

ਧੰਨਿ ਸੁਹਾਗਨਿ ਜੋ ਪੀਅ ਭਾਵੈ ॥
धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥
वह सुहागिन धन्य हैं जो अपने प्रिय प्रभु को भाती है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵੈ ॥੩॥੮॥੩੦॥
कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥३॥८॥३०॥
कबीर जी कहते हैं कि फिर वह दोबारा जन्म नहीं लेती अर्थात् जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ ८॥ ३०॥

ਆਸਾ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕੇ ਦੁਪਦੇ
आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे
आसा श्री कबीर जीउ के दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹੀਰੈ ਹੀਰਾ ਬੇਧਿ ਪਵਨ ਮਨੁ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥
जब प्रभु रूपी हीरे ने आत्मा रूपी हीरे को बीध दिया तो पवन जैसा चंचल मन सहज ही उसमें समा गया।

ਸਗਲ ਜੋਤਿ ਇਨਿ ਹੀਰੈ ਬੇਧੀ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮੈ ਪਾਈ ॥੧॥
सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥१॥
यह प्रभु हीरा सभी को अपनी ज्योति से भरपूर कर देता है। सच्चे गुरु के उपदेश से मैंने यह ज्ञान प्राप्त किया है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਅਨਾਹਦ ਬਾਨੀ ॥
हरि की कथा अनाहद बानी ॥
हरि की कथा एक अनाहत वाणी है।

ਹੰਸੁ ਹੁਇ ਹੀਰਾ ਲੇਇ ਪਛਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥१॥ रहाउ ॥
राजहंस अर्थात् संत बनकर मनुष्य प्रभु रूपी हीरे को पहचान लेता है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਹੀਰਾ ਅਸ ਦੇਖਿਓ ਜਗ ਮਹ ਰਹਾ ਸਮਾਈ ॥
कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥
कबीर जी कहते हैं कि मैंने एक अदभुत हीरा देखा है जो सारी सृष्टि में समाया हुआ है।

ਗੁਪਤਾ ਹੀਰਾ ਪ੍ਰਗਟ ਭਇਓ ਜਬ ਗੁਰ ਗਮ ਦੀਆ ਦਿਖਾਈ ॥੨॥੧॥੩੧॥
गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥२॥१॥३१॥
गुप्त हुआ हीरा प्रगट हो गया है, गुरुदेव ने मुझे यह दिखा दिया है॥ २॥ १॥ ३१॥

ਆਸਾ ॥

आसा ॥

आसा ॥

ਪਹਿਲੀ ਕਰੂਪਿ ਕੁਜਾਤਿ ਕੁਲਖਨੀ ਸਾਹੁਰੈ ਪੇਈਐ ਬੁਰੀ ॥

पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥

मेरी पहली पत्नी (स्वेच्छाचरिणी कुबुद्धि) कुरूप, जातिहीन एवं कुलक्षिणी थी और ससुराल एवं पीहर दोनों जगह बुरी थी।

ਅਬ ਕੀ ਸਰੂਪਿ ਸੁਜਾਨਿ ਸੁਲਖਨੀ ਸਹਜੇ ਉਦਰਿ ਧਰੀ ॥੧॥

अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥१॥

लेकिन अब ब्याही हुई पत्नी सुन्दर, रूपवान, सुजान (बुद्धिमान) एवं सुलक्षिणी है और सहज ही वह मेरे मन में बस गई है॥ १॥

ਭਲੀ ਸਰੀ ਮੁਈ ਮੇਰੀ ਪਹਿਲੀ ਬਰੀ ॥

भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥

भला हुआ जो मेरी पहली पत्नी मर गई है,

ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਜੀਵਉ ਮੇਰੀ ਅਬ ਕੀ ਧਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥१॥ रहाउ ॥

भगवान करे मेरी अब व्याही हुई पत्नी युग-युग तक जीती रहे॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਬ ਲਹੁਰੀ ਆਈ ਬਡੀ ਕਾ ਸੁਹਾਗੁ ਟਰਿਓ ॥

कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥

कबीर जी कहते हैं कि जब छोटी दुल्हन आ गई है तो बड़ी पत्नी (कुबुद्धि) का सुहाग चला गया है।

ਲਹੁਰੀ ਸੰਗਿ ਭਈ ਅਬ ਮੇਰੈ ਜੇਠੀ ਅਉਰੁ ਧਰਿਓ ॥੨॥੨॥੩੨॥

लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ ॥२॥२॥३२॥

अब छोटी दुल्हन मेरे साथ बसती है और बड़ी (कुलक्षिणी) ने दूसरा पति धारण कर लिया है ॥२॥२॥३२॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਮੇਰੀ ਬਹੁਰੀਆ ਕੋ ਧਨੀਆ ਨਾਉ ॥
मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥
(कबीर की माता कहती है कि) मेरी बहू का नाम धनीआ (धनवन्ती) था

ਲੇ ਰਾਖਿਓ ਰਾਮ ਜਨੀਆ ਨਾਉ ॥੧॥
ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥१॥
परन्तु (साधु-संतों के प्रभाव से) अब उसका नाम राम-जनिया (राम की सेविका) रख दिया गया है॥ १॥

ਇਨ੍ ਮੁੰਡੀਅਨ ਮੇਰਾ ਘਰੁ ਧੁੰਧਰਾਵਾ ॥
इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥
इन साधु-संतों ने मेरा घर बर्बाद कर दिया है।

ਬਿਟਵਹਿ ਰਾਮ ਰਮਊਆ ਲਾਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥१॥ रहाउ ॥
उन्होंने मेरे बेटे कबीर को राम नाम का भजन करने में लगा दिया है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे मेरी माता ! सुनो, (इनकी आलोचना मत करो)

ਇਨ੍ ਮੁੰਡੀਅਨ ਮੇਰੀ ਜਾਤਿ ਗਵਾਈ ॥੨॥੩॥੩੩॥
इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥२॥३॥३३॥
इन साधु-संतों ने तो मेरी नीच जाति खत्म कर दी है॥ २॥ ३॥ ३३

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਰਹੁ ਰਹੁ ਰੀ ਬਹੁਰੀਆ ਘੂੰਘਟੁ ਜਿਨਿ ਕਾਢੈ ॥
रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥
हे बहू! अरे ठहर, रुक जा, जो तू घूंघट निकालती है,

ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਲਹੈਗੀ ਨ ਆਢੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंत की बार लहैगी न आढै ॥१॥ रहाउ ॥
अन्तिम समय इसका कौड़ी भर भी मूल्य नहीं अर्थात् कोई लाभ नहीं होगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਘੂੰਘਟੁ ਕਾਢਿ ਗਈ ਤੇਰੀ ਆਗੈ ॥
घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥
तुझसे पहले वाली (पूर्व पत्नी) भी घूंघट निकाला करती थी (जो प्राण त्याग गई है)

ਉਨ ਕੀ ਗੈਲਿ ਤੋਹਿ ਜਿਨਿ ਲਾਗੈ ॥੧॥
उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥१॥
तू उसके पद्चिन्हों पर अनुसरण मत कर ॥ १॥

ਘੂੰਘਟ ਕਾਢੇ ਕੀ ਇਹੈ ਬਡਾਈ ॥
घूंघट काढे की इहै बडाई ॥
घूंघट निकालने की केवल यही बड़ाई है कि

ਦਿਨ ਦਸ ਪਾਂਚ ਬਹੂ ਭਲੇ ਆਈ ॥੨॥
दिन दस पांच बहू भले आई ॥२॥
पाँच अथवो दस दिन के लिए लोग कहते हैं, ''बड़ी नेक एवं अच्छी बहू आई हैं।॥ २ ॥

ਘੂੰਘਟੁ ਤੇਰੋ ਤਉ ਪਰਿ ਸਾਚੈ ॥
घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥
तेरा घूंघट तभी सच्चा होगा,

ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਇ ਕੂਦਹਿ ਅਰੁ ਨਾਚੈ ॥੩॥
हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥३॥
यदि तू हरि का गुणगान करती हुई कूदती और नाचती रहोगी॥ ३॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਬਹੂ ਤਬ ਜੀਤੈ ॥
कहत कबीर बहू तब जीतै ॥
कबीर जी कहते हैं कि बहू तभी जीवनबाजी जीत सकती है यदि

ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਜਨਮੁ ਬਿਤੀਤੈ ॥੪॥੧॥੩੪॥
हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥४॥१॥३४॥
उसका जीवन हरि का गुणगान करते हुए व्यतीत हो ॥ ४॥ १॥ ३४॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਕਰਵਤੁ ਭਲਾ ਨ ਕਰਵਟ ਤੇਰੀ ॥
करवतु भला न करवट तेरी ॥
हे स्वामी ! तुम्हारा करवट बदलने से तो मुझे बदन पर आरा चलवा लेना अधिक अच्छा लगता है।

ਲਾਗੁ ਗਲੇ ਸੁਨੁ ਬਿਨਤੀ ਮੇਰੀ ॥੧॥
लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥१॥
मेरी विनती सुनो एवं मुझे गले से लगा लो॥ १॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਮੁਖੁ ਫੇਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥
हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥
हे प्रिय ! मेरी ओर मुख कीजिए, मैं तुझ पर कुर्बान जाती हूँ।

ਕਰਵਟੁ ਦੇ ਮੋ ਕਉ ਕਾਹੇ ਕਉ ਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥१॥ रहाउ ॥
मुझसे करवट बदल कर तुम मुझे क्यों मार रहे हो॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਉ ਤਨੁ ਚੀਰਹਿ ਅੰਗੁ ਨ ਮੋਰਉ ॥
जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥
हे स्वामी ! यदि तुम मेरा तन चीर भी दो तो भी मैं अपना अंग नहीं मोडूंगी।

ਪਿੰਡੁ ਪਰੈ ਤਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਤੋਰਉ ॥੨॥
पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥२॥
चाहे मेरा शरीर नष्ट हो जाए तो भी मैं तुझ से अपनी प्रीति नहीं तोडूंगी॥ २॥

ਹਮ ਤੁਮ ਬੀਚੁ ਭਇਓ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥
हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥
हमारे और तुम्हारे बीच दूसरा कोई मध्यस्थ नहीं।

ਤੁਮਹਿ ਸੁ ਕੰਤ ਨਾਰਿ ਹਮ ਸੋਈ ॥੩॥
तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥३॥
हे स्वामी ! तुम मेरे पति हो और मैं तुम्हारी पत्नी हूँ॥ ३॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਈ ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे लोगो ! सुनो,

ਅਬ ਤੁਮਰੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੪॥੨॥੩੫॥
अब तुमरी परतीति न होई ॥४॥२॥३५॥
अब हमें तुम पर भरोसा नहीं होता॥ ४॥ २॥ ३५॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਕੋਰੀ ਕੋ ਕਾਹੂ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾਂ ॥
कोरी को काहू मरमु न जानां ॥
कोई भी मनुष्य उस जुलाहे रूपी ईश्वर के भेद को नहीं जानता।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਨਿ ਤਨਾਇਓ ਤਾਨਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु ने समूचे जगत में (जीव-जन्तुओं को उत्पन्न करके) ताना-गाना बनाया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਬ ਤੁਮ ਸੁਨਿ ਲੇ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨਾਂ ॥
जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥
जब तक तुम वेद-पुराणों को सुनते हो,

ਤਬ ਹਮ ਇਤਨਕੁ ਪਸਰਿਓ ਤਾਨਾਂ ॥੧॥
तब हम इतनकु पसरिओ तानां ॥१॥
तब हम ताना-घाना तान लेते हैं।॥ १॥

ਧਰਨਿ ਅਕਾਸ ਕੀ ਕਰਗਹ ਬਨਾਈ ॥
धरनि अकास की करगह बनाई ॥
उस प्रभु रूपी जुलाहे ने धरती एवं आकाश को अपनी फरधी बनाया है।

ਚੰਦੁ ਸੂਰਜੁ ਦੁਇ ਸਾਥ ਚਲਾਈ ॥੨॥
चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥
उसके भीतर उसने चाँद एवं सूर्य की दो नलकियाँ चलाई हैं।॥ २॥

ਪਾਈ ਜੋਰਿ ਬਾਤ ਇਕ ਕੀਨੀ ਤਹ ਤਾਂਤੀ ਮਨੁ ਮਾਨਾਂ ॥
पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥
अपने पैर जोड़कर मैंने एक बात की है, उस जुलाहे रुपी प्रभु से मेरा मन संयुयत हो गया है।

ਜੋਲਾਹੇ ਘਰੁ ਅਪਨਾ ਚੀਨ੍ਹ੍ਹਾਂ ਘਟ ਹੀ ਰਾਮੁ ਪਛਾਨਾਂ ॥੩॥
जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥३॥
कबीर-जुलाहे ने अपने वास्तविक घर को समझ लिया है और अपने अंतर्मन में राम को पहचान लिया है॥ ३॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਕਾਰਗਹ ਤੋਰੀ ॥
कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥
कबीर जी कहते हैं कि जब शरीर रूपी करघा टूटता है तो

ਸੂਤੈ ਸੂਤ ਮਿਲਾਏ ਕੋਰੀ ॥੪॥੩॥੩੬॥
सूतै सूत मिलाए कोरी ॥४॥३॥३६॥
प्रभु रूपी जुलाहा मेरे धागे (ज्योति) को अपने धागे (ज्योति) के साथ मिला लेता है॥ ४॥ ३॥ ३६॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਜੇ ਤੀਰਥ ਨਾਵੈ ਤਿਸੁ ਬੈਕੁੰਠ ਨ ਜਾਨਾਂ ॥
अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में पापों की मैल भरी हुई हो, यदि वह तीर्थों पर जाकर स्नान कर भी ले तो भी उसे वैकुण्ठ प्राप्त नहीं हो सकता।

ਲੋਕ ਪਤੀਣੇ ਕਛੂ ਨ ਹੋਵੈ ਨਾਹੀ ਰਾਮੁ ਅਜਾਨਾ ॥੧॥
लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥
दिखावे के तौर पर लोगों को प्रसन्न करने से कुछ नहीं बनता, क्योंकि राम कोई नादान नहीं वह तो सर्वज्ञाता है॥ १॥

ਪੂਜਹੁ ਰਾਮੁ ਏਕੁ ਹੀ ਦੇਵਾ ॥
पूजहु रामु एकु ही देवा ॥
केवल एक राम को ही इष्टदेव मानकर उसकी श्रद्धा से पूजा करो।

ਸਾਚਾ ਨਾਵਣੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साचा नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की सेवा ही असल में सच्चा तीर्थ स्नान है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਲ ਕੈ ਮਜਨਿ ਜੇ ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮੇਂਡੁਕ ਨਾਵਹਿ ॥
जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥
यदि जल में स्नान करने से मोक्ष मिलता है तो मेंढक तो प्रतिदिन ही जल में नहाता है (अर्थात् मेंढक की गति हो गई होती)

ਜੈਸੇ ਮੇਂਡੁਕ ਤੈਸੇ ਓਇ ਨਰ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਆਵਹਿ ॥੨॥
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥
जैसे मेंढक है वैसे ही मनुष्य है जो बार-बार योनियों में आता है॥ २ ॥

ਮਨਹੁ ਕਠੋਰੁ ਮਰੈ ਬਾਨਾਰਸਿ ਨਰਕੁ ਨ ਬਾਂਚਿਆ ਜਾਈ ॥
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ॥
यदि कठोर मन का व्यक्ति बनारस में प्राण त्याग देता है तो वह नरक में जाने से नहीं बच सकता।

ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਤੁ ਮਰੈ ਹਾੜੰਬੈ ਤ ਸਗਲੀ ਸੈਨ ਤਰਾਈ ॥੩॥
हरि का संतु मरै हाड़मबै त सगली सैन तराई ॥३॥
लेकिन यदि हरि का संत मगहर में प्राण त्याग देता है तो वह अपने सगे-संबंधियों को भी पार करवा देता है॥ ३॥

ਦਿਨਸੁ ਨ ਰੈਨਿ ਬੇਦੁ ਨਹੀ ਸਾਸਤ੍ਰ ਤਹਾ ਬਸੈ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥
जहाँ दिन अथवा रात नहीं, न ही वेद अथवा शास्त्र हैं, वहाँ निरंकार प्रभु निवास करता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਨਰ ਤਿਸਹਿ ਧਿਆਵਹੁ ਬਾਵਰਿਆ ਸੰਸਾਰਾ ॥੪॥੪॥੩੭॥
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥४॥४॥३७॥
कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! यह सारा संसार तो बावला है, इसका मोह छोड़कर भगवान का ध्यान करो।॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਨਾਮਦੇਉ ਜੀ ਕੀ
आसा बाणी स्री नामदेउ जी की
आसा बाणी श्री नामदेउ जी की

ਏਕ ਅਨੇਕ ਬਿਆਪਕ ਪੂਰਕ ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਸੋਈ ॥
एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥
एक ईश्वर ही अनेक रूपों में सर्वव्यापक है और जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर ही प्रभु का प्रसार दिखाई देता है।

ਮਾਇਆ ਚਿਤ੍ਰ ਬਚਿਤ੍ਰ ਬਿਮੋਹਿਤ ਬਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥੧॥
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥१॥
सारी दुनिया को आकर्षित करने वाली माया का रूप बड़ा विचित्र है और इसे कोई विरला मनुष्य ही समझता है।

ਸਭੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹੈ ਸਭੁ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹੈ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥
सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥
जगत में सब कुछ गोविन्द ही गोविन्द है तथा गोबिन्द के बिना कुछ भी नहीं।

ਸੂਤੁ ਏਕੁ ਮਣਿ ਸਤ ਸਹੰਸ ਜੈਸੇ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥
एक सूत्र में जैसे सैंकड़ों एवं हजारों मणियाँ पिरोई होती हैं वैसे ही प्रभु ने संसार को ताने-बाने की तरह पिरोया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਲ ਤਰੰਗ ਅਰੁ ਫੇਨ ਬੁਦਬੁਦਾ ਜਲ ਤੇ ਭਿੰਨ ਨ ਹੋਈ ॥
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥
जैसे जल तरंगें, झाग एवं बुलबुले जल से अलग नहीं होते

ਇਹੁ ਪਰਪੰਚੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੀ ਲੀਲਾ ਬਿਚਰਤ ਆਨ ਨ ਹੋਈ ॥੨॥
इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥२॥
वैसे ही यह प्रपंच सारी सृष्टि परब्रह्म की एक लीला है। विचार करने पर मनुष्य इसे अलग नहीं पाता॥ २॥

ਮਿਥਿਆ ਭਰਮੁ ਅਰੁ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਸਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਜਾਨਿਆ ॥
मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥
मिथ्या भ्रम एवं स्वप्न की वस्तुओं को मनुष्य सत्य पदार्थ समझता है।

ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਮਨਸਾ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੀ ਜਾਗਤ ਹੀ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੩॥
सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥३॥
गुरु ने मुझे शुभ कर्म करने की मंशा धारण का उपदेश दिया है और मेरे जाग्रत मन ने इसे स्वीकार कर लिया है॥ ३॥

ਕਹਤ ਨਾਮਦੇਉ ਹਰਿ ਕੀ ਰਚਨਾ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥
नामदेव जी कहते हैं कि हे भाई ! अपने मन में विचार कर देख लो यह सारी जगत-रचना हरि की रची हुई है।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਕੇਵਲ ਏਕ ਮੁਰਾਰੀ ॥੪॥੧॥
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥४॥१॥
घट-घट में और सभी के भीतर केवल एक मुरारि प्रभु ही मौजूद है॥ ४॥ १॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਆਨੀਲੇ ਕੁੰਭ ਭਰਾਈਲੇ ਊਦਕ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਇਸਨਾਨੁ ਕਰਉ ॥
आनीले कुमभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥
मैं घड़ा लाकर उसे जल से भरकर यदि ठाकुर जी को स्नान कराऊँ तो

ਬਇਆਲੀਸ ਲਖ ਜੀ ਜਲ ਮਹਿ ਹੋਤੇ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਉ ॥੧॥
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥
यह स्वीकृत नहीं क्योंकि बयालीस लाख जीव इस जल में रहते हैं, फिर विट्ठल भगवान को उस जल से कैसे स्नान करवा सकता हूँ॥ १ ॥

ਜਤ੍ਰ ਜਾਉ ਤਤ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ॥
जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥
जहाँ कहीं भी जाता हूँ, उधर ही विठ्ठल भगवान मौजूद है।

ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਕਰੇ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥
वह विठ्ठल महा आनंद में सदा लीला करता रहता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਆਨੀਲੇ ਫੂਲ ਪਰੋਈਲੇ ਮਾਲਾ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਹਉ ਪੂਜ ਕਰਉ ॥
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥
यदि मैं फूल लाकर उन्हें माला में पिरोकर ठाकुर जी की पूजा करूँ,

ਪਹਿਲੇ ਬਾਸੁ ਲਈ ਹੈ ਭਵਰਹ ਬੀਠਲ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਉ ॥੨॥
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥
क्योंकि पहले उन फूलों से भंवरे ने सुगन्धि ले ली है और वे जूठे हो गए हैं फिर मैं कैसे विठ्ठल भगवान की पूजा कर सकता हूँ॥ २॥

ਆਨੀਲੇ ਦੂਧੁ ਰੀਧਾਈਲੇ ਖੀਰੰ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਨੈਵੇਦੁ ਕਰਉ ॥
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥
दूध लाकर खीर बनाकर नैवेद्य कैसे अपने ठाकुर को भेंट करूँ ?

ਪਹਿਲੇ ਦੂਧੁ ਬਿਟਾਰਿਓ ਬਛਰੈ ਬੀਠਲੁ ਭੈਲਾ ਕਾਇ ਕਰਉ ॥੩॥
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥
क्योंकि पहले बछड़े ने दूध को पीकर जूठा कर दिया है, इससे मैं बिठ्ठल को कैसे भोग लगा सकता हूँ॥ ३॥

ਈਭੈ ਬੀਠਲੁ ਊਭੈ ਬੀਠਲੁ ਬੀਠਲ ਬਿਨੁ ਸੰਸਾਰੁ ਨਹੀ ॥
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
यहाँ भी विठ्ठल भगवान है, वहाँ भी विठ्ठल भगवान है। बिट्टल के बिना संसार का अस्तित्व नहीं।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਤੂੰ ਸਰਬ ਮਹੀ ॥੪॥੨॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥२॥
नामदेव प्रार्थना करता है, हे विठ्ठल भगवान ! विश्व के कोने-कोने में हर जगह तू ही सब में बस रहा है॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਮਨੁ ਮੇਰੋ ਗਜੁ ਜਿਹਬਾ ਮੇਰੀ ਕਾਤੀ ॥
मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥
मेरा मन गज है और जिह्व मेरी कॅची है।

ਮਪਿ ਮਪਿ ਕਾਟਉ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੧॥
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥
मैं माप-माप कर कैंची से यम की फांसी को काट रहा हूँ॥ १॥

ਕਹਾ ਕਰਉ ਜਾਤੀ ਕਹ ਕਰਉ ਪਾਤੀ ॥
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥
मैं जाति-पाति को क्या करूँ ?

ਰਾਮ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਉ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥
दिन-रात में तो राम नाम का ही जाप करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਂਗਨਿ ਰਾਂਗਉ ਸੀਵਨਿ ਸੀਵਉ ॥
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥
मैं प्रभु के रंग में अपने आपको रंगता हूँ एवं जीविका हेतु वस्त्रों की सिलाई भी करता रहता हूँ।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਘਰੀਅ ਨ ਜੀਵਉ ॥੨॥
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥२॥
राम नाम के बिना मैं एक घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता॥ २॥

ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥
भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥
मैं हरि की भक्ति करता हूँ तथा उसका ही गुणगान करता रहता हूँ।

ਆਠ ਪਹਰ ਅਪਨਾ ਖਸਮੁ ਧਿਆਵਉ ॥੩॥
आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥३॥
आठ प्रहर मैं अपने मालिक को याद करता रहता हूँ॥ ३॥

ਸੁਇਨੇ ਕੀ ਸੂਈ ਰੁਪੇ ਕਾ ਧਾਗਾ ॥
सुइने की सूई रुपे का धागा ॥
मेरे पास सोने की सुई एवं चांदी का धागा है और

ਨਾਮੇ ਕਾ ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਸਉ ਲਾਗਾ ॥੪॥੩॥
नामे का चितु हरि सउ लागा ॥४॥३॥
इस प्रकार नामदेव का चित्त हरि के साथ सिल गया है॥ ४॥ ३ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਸਾਪੁ ਕੁੰਚ ਛੋਡੈ ਬਿਖੁ ਨਹੀ ਛਾਡੈ ॥
सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥
जैसे सॉप अपनी केंचुली तो छोड़ देता है परन्तु अपना विष नहीं छोड़ता।

ਉਦਕ ਮਾਹਿ ਜੈਸੇ ਬਗੁ ਧਿਆਨੁ ਮਾਡੈ ॥੧॥
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥१॥
जैसे मछलियाँ एवं मेंढक खाने के लिए जल में बगुला समाधि लगाता है। वैसे ही पाखण्डी लोग बाहर से दिखावा भक्तों वाला करते हैं मगर मन से खोटे ही होते हैं।॥ १॥

ਕਾਹੇ ਕਉ ਕੀਜੈ ਧਿਆਨੁ ਜਪੰਨਾ ॥
काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥
हे भाई ! तुम क्यों ध्यान एवं जाप कर रहे हो ?

ਜਬ ਤੇ ਸੁਧੁ ਨਾਹੀ ਮਨੁ ਅਪਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥१॥ रहाउ ॥
जबकि तेरा अपना मन ही शुद्ध नहीं (अर्थात् मन अशुद्ध होने पर ध्यान एवं जाप का कोई लाभ नहीं) ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿੰਘਚ ਭੋਜਨੁ ਜੋ ਨਰੁ ਜਾਨੈ ॥
सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥
जो पुरुष सिंह जैसे भोजन खाता है अर्थात् हिंसा एवं लूटमार करके खाता है,

ਐਸੇ ਹੀ ਠਗਦੇਉ ਬਖਾਨੈ ॥੨॥
ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥२॥
ऐसे पुरुष को दुनिया महा ठग कहती है॥ २॥

ਨਾਮੇ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਲਾਹਿ ਲੇ ਝਗਰਾ ॥
नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥
नामदेव के स्वामी (प्रभु) ने सारा झगड़ा ही निपटा दिया है।

ਰਾਮ ਰਸਾਇਨ ਪੀਓ ਰੇ ਦਗਰਾ ॥੩॥੪॥
राम रसाइन पीओ रे दगरा ॥३॥४॥
हे दगावाज ! राम-नाम रूपी अमृत का पान कर॥ ३॥ ४॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿ ਚੀਨ੍ਸੀ ਆਸਾ ਤੇ ਨ ਭਾਵਸੀ ॥
पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥
जो आदमी पारब्रह्म को पहचान लेता है, उसे अन्य आशाएँ अच्छी नहीं लगती।

ਰਾਮਾ ਭਗਤਹ ਚੇਤੀਅਲੇ ਅਚਿੰਤ ਮਨੁ ਰਾਖਸੀ ॥੧॥
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥
जो भक्त राम की भक्ति को मन में याद करता है, राम उसे चिंता से बचाकर रखता है॥ १॥

ਕੈਸੇ ਮਨ ਤਰਹਿਗਾ ਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਬਿਖੈ ਕੋ ਬਨਾ ॥
कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥
हे मेरे मन ! तुम विषय-विकारों के जल से भरे हुए संसार-सागर को कैसे पार करोगे ?

ਝੂਠੀ ਮਾਇਆ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭੂਲਾ ਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मन ! मिथ्या सांसारिक पदार्थों को देख कर तुम कुमार्गगामी हो गए हो।॥ १॥ रहाउ॥

ਛੀਪੇ ਕੇ ਘਰਿ ਜਨਮੁ ਦੈਲਾ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ਭੈਲਾ ॥
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥
हे प्रभु ! तूने चाहे मुझे छीपी के घर में जन्म प्रदान किया है परन्तु गुरु का उपदेश मुझे मिल गया है।

ਸੰਤਹ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਭੇਟੁਲਾ ॥੨॥੫॥
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥
संतजनों की कृपा से नामदेव को हरि मिल गया है॥ २ ॥ ५ ॥

ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਉ ਕੀ
आसा बाणी स्री रविदास जीउ की
आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮ੍ਰਿਗ ਮੀਨ ਭ੍ਰਿੰਗ ਪਤੰਗ ਕੁੰਚਰ ਏਕ ਦੋਖ ਬਿਨਾਸ ॥
म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
मृग , मछली, भँवरा, पतंगा एवं हाथी सभी का एक दोष के फलस्वरुप विनाश हो जाता है।

ਪੰਚ ਦੋਖ ਅਸਾਧ ਜਾ ਮਹਿ ਤਾ ਕੀ ਕੇਤਕ ਆਸ ॥੧॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥
जिस व्यक्ति के भीतर पाँच असाध्य दोष विद्यमान हैं, उसकी क्या आशा की जा सकती है? ॥१॥

ਮਾਧੋ ਅਬਿਦਿਆ ਹਿਤ ਕੀਨ ॥
माधो अबिदिआ हित कीन ॥
हे माधो ! मनुष्य का प्रेम अविद्या से है।

ਬਿਬੇਕ ਦੀਪ ਮਲੀਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
उसके विवेक का दीपक मैला हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰਿਗਦ ਜੋਨਿ ਅਚੇਤ ਸੰਭਵ ਪੁੰਨ ਪਾਪ ਅਸੋਚ ॥
त्रिगद जोनि अचेत स्मभव पुंन पाप असोच ॥
तिर्यग्योनि तो अचेत (विचारहीन) है तथा पुण्य एवं पाप के बारे में सोचना उनके लिए संभव नहीं।

ਮਾਨੁਖਾ ਅਵਤਾਰ ਦੁਲਭ ਤਿਹੀ ਸੰਗਤਿ ਪੋਚ ॥੨॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥
मानव जन्म बहुत दुर्लभ है परन्तु इसकी संगति भी नीच है अर्थात् वह कामादिक विकारों से संलग्न रहता है॥ २॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਜਹਾ ਜਹਾ ਲਗੁ ਕਰਮ ਕੇ ਬਸਿ ਜਾਇ ॥
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥
जीव-जन्तु जहाँ कहीं भी हैं, वे अपने पूर्व जन्म के कर्मो अनुसार जन्म लेते हैं।

ਕਾਲ ਫਾਸ ਅਬਧ ਲਾਗੇ ਕਛੁ ਨ ਚਲੈ ਉਪਾਇ ॥੩॥
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥
काल की फाँसी अचूक है, उससे बचने का कोई उपाय नहीं ॥ ३॥

ਰਵਿਦਾਸ ਦਾਸ ਉਦਾਸ ਤਜੁ ਭ੍ਰਮੁ ਤਪਨ ਤਪੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥
हे दास रविदास ! तू विरक्त होकर अपना भ्रम त्याग दे और गुरु के ज्ञान की तपस्या कर।

ਭਗਤ ਜਨ ਭੈ ਹਰਨ ਪਰਮਾਨੰਦ ਕਰਹੁ ਨਿਦਾਨ ॥੪॥੧॥
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥
हे भक्तजनों के भय नाश करने वाले परमानंद प्रभु ! आप ही कुछ निदान कीजिए॥ ४॥ १॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਸੰਤ ਤੁਝੀ ਤਨੁ ਸੰਗਤਿ ਪ੍ਰਾਨ ॥
संत तुझी तनु संगति प्रान ॥
हे देवाधिदेव ! संतजन तेरा तन है और उनकी संगति प्राण है।

ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨ ਜਾਨੈ ਸੰਤ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ॥੧॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥
सतिगुरु के ज्ञान द्वारा मैंने उन संतजनों को जान लिया है॥ १॥

ਸੰਤ ਚੀ ਸੰਗਤਿ ਸੰਤ ਕਥਾ ਰਸੁ ॥ ਸੰਤ ਪ੍ਰੇਮ ਮਾਝੈ ਦੀਜੈ ਦੇਵਾ ਦੇਵ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत ची संगति संत कथा रसु ॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥
संतजनों की संगति, संतजनों की कथा का रस एवं संतजनों का प्रेम प्रदान कीजिए, हे देवों के देव ! ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਆਚਰਣ ਸੰਤ ਚੋ ਮਾਰਗੁ ਸੰਤ ਚ ਓਲ੍ਹਗ ਓਲ੍ਹਗਣੀ ॥੨॥
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥२॥
हे देवाधिदेव ! संतजनों का आचरण, संतजनों का मार्ग एवं संतजनों के सेवकों की सेवा मुझे प्रदान कीजिए॥ २॥

ਅਉਰ ਇਕ ਮਾਗਉ ਭਗਤਿ ਚਿੰਤਾਮਣਿ ॥
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥
हे प्रभु ! मैं तुझसे एक अन्य दान मांगता हूँ। दया करके मुझे भक्ति की चिंतामणि प्रदान करें।

ਜਣੀ ਲਖਾਵਹੁ ਅਸੰਤ ਪਾਪੀ ਸਣਿ ॥੩॥
जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥
मुझे दुष्ट एवं पापी लोगों के दर्शन मत करवाना॥ ३॥

ਰਵਿਦਾਸੁ ਭਣੈ ਜੋ ਜਾਣੈ ਸੋ ਜਾਣੁ ॥
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥
रविदास कहता है कि वास्तव में बुद्धिमान-ज्ञानी वही है जो जानता है कि

ਸੰਤ ਅਨੰਤਹਿ ਅੰਤਰੁ ਨਾਹੀ ॥੪॥੨॥
संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥
संत एवं भगवान में कोई अन्तर नहीं ॥ ४॥ २॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਤੁਮ ਚੰਦਨ ਹਮ ਇਰੰਡ ਬਾਪੁਰੇ ਸੰਗਿ ਤੁਮਾਰੇ ਬਾਸਾ ॥
तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
हे परमात्मा ! तुम चंदन हो और हम बेचारे एरंड का पेड़ हैं परन्तु तुम्हारी संगति में रहते हैं,

ਨੀਚ ਰੂਖ ਤੇ ਊਚ ਭਏ ਹੈ ਗੰਧ ਸੁਗੰਧ ਨਿਵਾਸਾ ॥੧॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
जिससे एक नीच पेड़ से ऊँचे (श्रेष्ठ) हो गए हैं। तेरी मीठी सुगन्ध हमारे भीतर निवास करती है॥ १॥

ਮਾਧਉ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਰਨਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हे माधव ! हमने तेरी सत्संगति की शरण ली है।

ਹਮ ਅਉਗਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਉਪਕਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥
हम अवगुणी हैं और तुम उपकारी हो॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਮਖਤੂਲ ਸੁਪੇਦ ਸਪੀਅਲ ਹਮ ਬਪੁਰੇ ਜਸ ਕੀਰਾ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
तुम सफेद एवं पीले रेशम का धागा हो और हम बेचारे कीड़े की भाँति हैं।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀਐ ਮਾਧਉ ਜੈਸੇ ਮਧੁਪ ਮਖੀਰਾ ॥੨॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥
हे माधव ! हम सत्संगति में ऐसे मिले रहें जैसे मधुमक्खियाँ शहद के छते से मिली रहती हैं।॥ २॥

ਜਾਤੀ ਓਛਾ ਪਾਤੀ ਓਛਾ ਓਛਾ ਜਨਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
हमारी जाति-पाति ओछी (नीच) है और जन्म भी ओछा (नीच) है।

ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰਾ ॥੩॥੩॥
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥
रविदास चमार कहता है कि सब कुछ ओछा (नीच) होने के साथ ही हमने राजा राम की सेवा-भक्ति भी नहीं की॥ ३॥ ३॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਕਹਾ ਭਇਓ ਜਉ ਤਨੁ ਭਇਓ ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ॥
कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
हे प्रभु ! तो क्या हुआ ? यदि मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े भी हो जाएँ, मुझे कोई भय नहीं।

ਪ੍ਰੇਮੁ ਜਾਇ ਤਉ ਡਰਪੈ ਤੇਰੋ ਜਨੁ ॥੧॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥
तेरे सेवक को तो यही भय है कि कहीं तेरा प्रेम दूर न हो जाए॥ १॥

ਤੁਝਹਿ ਚਰਨ ਅਰਬਿੰਦ ਭਵਨ ਮਨੁ ॥
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
तेरे चरण-कमल ही मेरे मन का भवन है।

ਪਾਨ ਕਰਤ ਪਾਇਓ ਪਾਇਓ ਰਾਮਈਆ ਧਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे नामामृत का पान करने से मुझे राम-धन प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਪਤਿ ਬਿਪਤਿ ਪਟਲ ਮਾਇਆ ਧਨੁ ॥
सम्पति बिपति पटल माइआ धनु ॥
संपति, विपत्ति, माया एवं धन इत्यादि सभी छल-कपट ही हैं।

ਤਾ ਮਹਿ ਮਗਨ ਹੋਤ ਨ ਤੇਰੋ ਜਨੁ ॥੨॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥
तेरा सेवक इनके भीतर मग्न नहीं होता॥ २॥

ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਜੇਵਰੀ ਬਾਧਿਓ ਤੇਰੋ ਜਨ ॥
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
रविदास कहते हैं कि हे प्रभु ! तेरा सेवक तेरी प्रेम की रस्सी से बंधा हुआ है,

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਛੂਟਿਬੋ ਕਵਨ ਗੁਨ ॥੩॥੪॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥
फिर इससे छूटने का क्या अभिप्राय है॥ ३॥ ४॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
"'हरि हरि' 'हरि-हरि', नाम मंत्र का ही जाप करो।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਜਨ ਗਏ ਨਿਸਤਰਿ ਤਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का सिमरन करने से भक्तजन भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर गए हैं। १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕਬੀਰ ਉਜਾਗਰ ॥
हरि के नाम कबीर उजागर ॥
हरि के नाम-स्मरण से ही कबीर दुनिया में विख्यात हुआ और

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਾਟੇ ਕਾਗਰ ॥੧॥
जनम जनम के काटे कागर ॥१॥
उसका जन्म-जन्मांतर का कर्मलेख मिट गया ॥ १॥

ਨਿਮਤ ਨਾਮਦੇਉ ਦੂਧੁ ਪੀਆਇਆ ॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
नामदेव ने भक्ति के निमित्त प्रभु को दूध पिलाया,

ਤਉ ਜਗ ਜਨਮ ਸੰਕਟ ਨਹੀ ਆਇਆ ॥੨॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२॥
जिसके फलस्वरूप वह जगत के जन्म संकट में नहीं आया ॥ २॥

ਜਨ ਰਵਿਦਾਸ ਰਾਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥
सेवक रविदास राम के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुआ।

ਇਉ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਨਰਕ ਨਹੀ ਜਾਤਾ ॥੩॥੫॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥
इस तरह वह गुरु की कृपा से नरक में नहीं जाएगा ॥ ३ ॥ ५ ॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਮਾਟੀ ਕੋ ਪੁਤਰਾ ਕੈਸੇ ਨਚਤੁ ਹੈ ॥
माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
आदमी मिट्टी का पुतला है लेकिन फिर भी (सांसारिक मोह में फंसकर) कैसे व्यंग्यपूर्ण नाचता है।

ਦੇਖੈ ਦੇਖੈ ਸੁਨੈ ਬੋਲੈ ਦਉਰਿਓ ਫਿਰਤੁ ਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
बह बार-बार देखता, सुनता, बोलता और दौड़ता ही रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਬ ਕਛੁ ਪਾਵੈ ਤਬ ਗਰਬੁ ਕਰਤੁ ਹੈ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
जब वह कुछ उपलब्धि करता है तो उस उपलब्धि का बड़ा अहंकार करता है।

ਮਾਇਆ ਗਈ ਤਬ ਰੋਵਨੁ ਲਗਤੁ ਹੈ ॥੧॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
लेकिन जब धन-दौलत इत्यादि उसकी चली जाती है तो फूट-फूट कर रोने लगता है॥ १॥

ਮਨ ਬਚ ਕ੍ਰਮ ਰਸ ਕਸਹਿ ਲੁਭਾਨਾ ॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
मन, वचन एवं कर्मों के कारण वह मीठे एवं लुभावने सांसारिक पदार्थों में मग्न रहता है।

ਬਿਨਸਿ ਗਇਆ ਜਾਇ ਕਹੂੰ ਸਮਾਨਾ ॥੨॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
लेकिन जब उसके जीवन का अंत हो जाता है तो पता नहीं चलता कि वह किस स्थान में जाकर समा जाता है॥ २ ॥

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਬਾਜੀ ਜਗੁ ਭਾਈ ॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
रविदास जी कहते हैं कि हे भाई ! यह जीवन एक बाजी है तथा

ਬਾਜੀਗਰ ਸਉ ਮੋਹਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥੩॥੬॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥
बाजीगर प्रभु से मेरी प्रीति बन गई है॥ ३॥ ६॥

ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਧੰਨੇ ਜੀ ਕੀ
आसा बाणी भगत धंने जी की
आसा बाणी भगत धंने जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭ੍ਰਮਤ ਫਿਰਤ ਬਹੁ ਜਨਮ ਬਿਲਾਨੇ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਨਹੀ ਧੀਰੇ ॥
भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
अनेक जन्म आवागमन के चक्र में भटकते हुए व्यतीत हो गए लेकिन तन, मन, धन तीनों ही स्थिर नहीं रहते।

ਲਾਲਚ ਬਿਖੁ ਕਾਮ ਲੁਬਧ ਰਾਤਾ ਮਨਿ ਬਿਸਰੇ ਪ੍ਰਭ ਹੀਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥
लालच एवं कामवासना के विष में लुब्ध होकर इस मन ने प्रभु रूपी हीरे को विस्मृत कर दिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਿਖੁ ਫਲ ਮੀਠ ਲਗੇ ਮਨ ਬਉਰੇ ਚਾਰ ਬਿਚਾਰ ਨ ਜਾਨਿਆ ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
बावले मन को विषय-विकारों का फल मीठा लगता है तथा सुन्दर विचारों को जाना नहीं है।

ਗੁਨ ਤੇ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਢੀ ਅਨ ਭਾਂਤੀ ਜਨਮ ਮਰਨ ਫਿਰਿ ਤਾਨਿਆ ॥੧॥
गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥
शुभ गुणों के विपरीत पापों की अनेक भ्रांतियों से उसका प्रेम अधिकतर बढ़ गया है और वह दोबारा जन्म-मरण का ताना-बाना बना रहता है।॥ १॥

ਜੁਗਤਿ ਜਾਨਿ ਨਹੀ ਰਿਦੈ ਨਿਵਾਸੀ ਜਲਤ ਜਾਲ ਜਮ ਫੰਧ ਪਰੇ ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
उस प्रभु मिलन की युक्ति को नहीं जानता जो हृदय में निवास करता है। मोह के जाल में जलता हुआ वह मृत्यु के फंदे में फंस गया है।

ਬਿਖੁ ਫਲ ਸੰਚਿ ਭਰੇ ਮਨ ਐਸੇ ਪਰਮ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਮਨ ਬਿਸਰੇ ॥੨॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥
हे मेरे मन ! इस तरह तूने विष रूपी फल संचित करके अपने हृदय-घर में भर लिए हैं और परमपुरुष प्रभु भूल गया है॥ २॥

ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਵੇਸੁ ਗੁਰਹਿ ਧਨੁ ਦੀਆ ਧਿਆਨੁ ਮਾਨੁ ਮਨ ਏਕ ਮਏ ॥
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥
जब गुरु ने मुझे नाम-धन दिया तो मन में ज्ञान का प्रवेश हो गया। ध्यान लगाने से मेरा मन प्रभु से एकाकार हो गया।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਾਨੀ ਸੁਖੁ ਜਾਨਿਆ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਨੇ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ॥੩॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३॥
प्रभु की प्रेम-भक्ति को धारण करने से मन को आत्मिक सुख की अनुभूति हो गई है और इस तरह मन तृप्त एवं संतुष्ट होने से मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो गई॥ ३॥

ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ਸਮਾਨੀ ਜਾ ਕੈ ਅਛਲੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਹਿਚਾਨਿਆ ॥
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥
जिस मनुष्य के भीतर सर्वव्यापक परमात्मा की ज्योति समाई है, उसने निश्चल भगवान को पहचान लिया है।

ਧੰਨੈ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਧਰਣੀਧਰੁ ਮਿਲਿ ਜਨ ਸੰਤ ਸਮਾਨਿਆ ॥੪॥੧॥
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥१॥
धन्ना जी का कथन है कि उसने धरणीधर प्रभु को अमूल्य धन के रूप में प्राप्त कर लिया है तथा संतों की संगति में मिलकर वह उसमें समा गया है॥ ४॥ १॥

ਮਹਲਾ ੫ ॥
महला ५ ॥
महला ५ ॥

ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਸੰਗਿ ਨਾਮਦੇਉ ਮਨੁ ਲੀਣਾ ॥
गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
गोविंद का नाम जपने से नामदेव का मन गोविंद में ही लीन हुआ था,

ਆਢ ਦਾਮ ਕੋ ਛੀਪਰੋ ਹੋਇਓ ਲਾਖੀਣਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके फलस्वरूप वह दो कौड़ी का छीपी लखपति बन गया ॥ १॥ रहाउ॥

ਬੁਨਨਾ ਤਨਨਾ ਤਿਆਗਿ ਕੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਕਬੀਰਾ ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
कबीर जी ने बुनने तथा तानने के कार्य को छोड़कर ईश्वर के चरणों में प्रीति लगाई थी,

ਨੀਚ ਕੁਲਾ ਜੋਲਾਹਰਾ ਭਇਓ ਗੁਨੀਯ ਗਹੀਰਾ ॥੧॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥
जिसके फलस्वरूप वह नीच कुल का जुलाहा गुणों का सागर बन गया ॥ १॥

ਰਵਿਦਾਸੁ ਢੁਵੰਤਾ ਢੋਰ ਨੀਤਿ ਤਿਨਿ ਤਿਆਗੀ ਮਾਇਆ ॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
रविदास जी जो प्रतिदिन मृत पशु ढोते थे, उन्होंने भी सांसारिक माया को त्याग दिया तो

ਪਰਗਟੁ ਹੋਆ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥
वह साधुओं की संगति में रहकर सुविख्यात हो गए और उन्हें हरि के दर्शन प्राप्त हुए॥ २॥

ਸੈਨੁ ਨਾਈ ਬੁਤਕਾਰੀਆ ਓਹੁ ਘਰਿ ਘਰਿ ਸੁਨਿਆ ॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
सैन नाई छोटे-मोटे सामान्य कार्य लोगों के यहाँ करने वाला सुना जाता था लेकिन

ਹਿਰਦੇ ਵਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਭਗਤਾ ਮਹਿ ਗਨਿਆ ॥੩॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥
जब उसके चित्त में भगवान निवसित हो गया तो वह भी भक्तजनों में गिना जाने लगा।॥ ३॥

ਇਹ ਬਿਧਿ ਸੁਨਿ ਕੈ ਜਾਟਰੋ ਉਠਿ ਭਗਤੀ ਲਾਗਾ ॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
इस तरह की कथाएँ सुनकर धन्ना जाट भी प्रेरित होकर भगवान की भक्ति करने लगा।

ਮਿਲੇ ਪ੍ਰਤਖਿ ਗੁਸਾਈਆ ਧੰਨਾ ਵਡਭਾਗਾ ॥੪॥੨॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥२॥
धन्ना जाट भाग्यवान हो गया है, जो उसे साक्षात् गोसाई के दर्शन प्राप्त हुए॥ ४॥ २॥

ਰੇ ਚਿਤ ਚੇਤਸਿ ਕੀ ਨ ਦਯਾਲ ਦਮੋਦਰ ਬਿਬਹਿ ਨ ਜਾਨਸਿ ਕੋਈ ॥
रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥
हे मेरे चित! तू दयालु दामोदर भगवान को याद क्यों नहीं करता ? भगवान के सिवाय किसी अन्य सहारे की उम्मीद मत रखो।

ਜੇ ਧਾਵਹਿ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਖੰਡ ਕਉ ਕਰਤਾ ਕਰੈ ਸੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तू खंडों-ब्रह्माण्डों पर भी भागता-फिरता रहेगा, फिर भी वही होगा जो कर्ता-प्रभु को मंजूर होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਨਨੀ ਕੇਰੇ ਉਦਰ ਉਦਕ ਮਹਿ ਪਿੰਡੁ ਕੀਆ ਦਸ ਦੁਆਰਾ ॥
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥
भगवान ने जननी के उदर-जल में हमारा दसों द्वारों वाला शरीर बनाया।

ਦੇਇ ਅਹਾਰੁ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਰਾਖੈ ਐਸਾ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥१॥
हमारा मालिक प्रभु ऐसा है कि वह गर्भ में ही आहार देकर गर्भ की अग्नि से रक्षा करता है॥ १॥

ਕੁੰਮੀ ਜਲ ਮਾਹਿ ਤਨ ਤਿਸੁ ਬਾਹਰਿ ਪੰਖ ਖੀਰੁ ਤਿਨ ਨਾਹੀ ॥
कुमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥
कछुआ जल में रहता है लेकिन उसके बच्चे जल से बाहर रहते हैं। उनकी रक्षा न ही माता के पंखों से होती है और न ही उनकी पालना उसके दूध से होती है।

ਪੂਰਨ ਪਰਮਾਨੰਦ ਮਨੋਹਰ ਸਮਝਿ ਦੇਖੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੨॥
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥
फिर भी अपने मन में सोच-समझ एवं देख कि पूर्ण परमानंद मनोहर उनका भरण-पोषण करता है॥ २॥

ਪਾਖਣਿ ਕੀਟੁ ਗੁਪਤੁ ਹੋਇ ਰਹਤਾ ਤਾ ਚੋ ਮਾਰਗੁ ਨਾਹੀ ॥
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥
पत्थर में कीट छिपा हुआ रहता है। उसके लिए बाहर आने-जाने का कोई मार्ग नहीं होता।

ਕਹੈ ਧੰਨਾ ਪੂਰਨ ਤਾਹੂ ਕੋ ਮਤ ਰੇ ਜੀਅ ਡਰਾਂਹੀ ॥੩॥੩॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥३॥३॥
धन्ना कहता है कि फिर भी प्रभु उसका पालनहार है। हे जीव ! तू भय मत कर ॥ ३॥ ३॥

ਆਸਾ ਸੇਖ ਫਰੀਦ ਜੀਉ ਕੀ ਬਾਣੀ
आसा सेख फरीद जीउ की बाणी
आसा सेख फरीद जीउ की बाणी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦਿਲਹੁ ਮੁਹਬਤਿ ਜਿੰਨ੍ ਸੇਈ ਸਚਿਆ ॥
दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥
जो लोग दिल से खुदा से मोहब्बत करते हैं, वही उसके सच्चे आशिक हैं।

ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਹੋਰੁ ਮੁਖਿ ਹੋਰੁ ਸਿ ਕਾਂਢੇ ਕਚਿਆ ॥੧॥
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥१॥
जिन लोगों के मन में कुछ और है तथा मुँह में कुछ और है, वे कच्चे तथा झूठे कहे जाते हैं।॥ १॥

ਰਤੇ ਇਸਕ ਖੁਦਾਇ ਰੰਗਿ ਦੀਦਾਰ ਕੇ ॥
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
जो लोग खुदा के इश्क में रंगे हुए हैं, वे उसके दर्शन-दीदार के रंग में मस्त रहते हैं।

ਵਿਸਰਿਆ ਜਿਨ੍ ਨਾਮੁ ਤੇ ਭੁਇ ਭਾਰੁ ਥੀਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥१॥ रहाउ ॥
जो लोग खुदा के नाम को भुला देते हैं, वे धरती पर बोझ बनकर ही रह जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਲੀਏ ਲੜਿ ਲਾਇ ਦਰਿ ਦਰਵੇਸ ਸੇ ॥
आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥
जिन लोगों को अल्लाह अपने दामन (शरण) से मिला लेता है, वही उसके द्वार पर सच्चे दरवेश हैं।

ਤਿਨ ਧੰਨੁ ਜਣੇਦੀ ਮਾਉ ਆਏ ਸਫਲੁ ਸੇ ॥੨॥
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥२॥
उनको जन्म देने वाली माता धन्य है और उनका इस दुनिया में आगमन सफल है॥ २॥

ਪਰਵਦਗਾਰ ਅਪਾਰ ਅਗਮ ਬੇਅੰਤ ਤੂ ॥
परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥
हे परवदगार ! तू अपार, अगम्य एवं बेअंत है।

ਜਿਨਾ ਪਛਾਤਾ ਸਚੁ ਚੁੰਮਾ ਪੈਰ ਮੂੰ ॥੩॥
जिना पछाता सचु चुमा पैर मूं ॥३॥
जिन्होंने सत्य को पहचान लिया है, मैं उनके पैर चूमता हूँ॥ ३॥

ਤੇਰੀ ਪਨਹ ਖੁਦਾਇ ਤੂ ਬਖਸੰਦਗੀ ॥
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥
हे बक्शणहारे खुदा ! मैं तेरी पनाह में रहु।

ਸੇਖ ਫਰੀਦੈ ਖੈਰੁ ਦੀਜੈ ਬੰਦਗੀ ॥੪॥੧॥
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥
शेख फरीद को बंदगी (भक्ति) की खैर (दान) प्रदान॥४॥१॥

ਆਸਾ ॥
आसा ॥
आसा ॥

ਬੋਲੈ ਸੇਖ ਫਰੀਦੁ ਪਿਆਰੇ ਅਲਹ ਲਗੇ ॥
बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥
शेख फरीद जी कहते हैं हे प्यारे ! उस अल्लाह के साथ लग।

ਇਹੁ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਖਾਕ ਨਿਮਾਣੀ ਗੋਰ ਘਰੇ ॥੧॥
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥१॥
यह तन एक दिन मिट्टी हो जाएगा तथा इसका निवास बेचारी कब्र में होगा।॥ १॥

ਆਜੁ ਮਿਲਾਵਾ ਸੇਖ ਫਰੀਦ ਟਾਕਿਮ ਕੂੰਜੜੀਆ ਮਨਹੁ ਮਚਿੰਦੜੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे शेख फरीद ! तेरा खुदा से मिलाप आज ही हो सकता है, यदि तू अपने मन को चंचल करने वाली इन्द्रियों पर अंकुश लगा दे ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੇ ਜਾਣਾ ਮਰਿ ਜਾਈਐ ਘੁਮਿ ਨ ਆਈਐ ॥
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥
यदि यह पता है कि अन्तः मृत्यु के वश में ही होना है और दोबारा वापिस नहीं आना तो

झੂठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥२॥
झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥२॥
इस झूठी दुनिया में लिप्त होकर अपने आपको बर्बाद नहीं करना चाहिए॥ २॥

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
सत्य तथा धर्म ही बोलना चाहिए तथा झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए।

जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥३॥
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥३॥
गुरु जो मार्ग दिखाता है, मुरीदों को उसी मार्ग पर चलना चाहिए॥ ३॥

छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥
छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥
छैल-छबीले नवयुवकों को पार होते देखकर सुन्दर युवती के मन में भी धैर्य हो जाता है।

कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥
कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥
जो लोग सोने की झलक की तरफ मुड़ते हैं, वे नरक में आरे से चीरे जाते हैं।॥ ४॥

सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥
सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥
हे शेख ! किसी भी मनुष्य का जीवन इस दुनिया में स्थिर नहीं रहता।

जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥५॥
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥५॥
जिस आसन पर अभी हम बैठे हैं, अनेकों ही इस पर बैठ कर चले गए हैं।॥ ५ ॥

कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥
कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥
जैसे कार्तिक के मास में कुंजों का उड़ना, चैत्र महीने में दावाग्नि, श्रावण महीने में बिजली चमकती दिखाई देती है तथा

ਸੀਆਲੇ ਸੋਹੰਦੀਆਂ ਪਿਰ ਗਲਿ ਬਾਹੜੀਆਂ ॥੬॥

सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥६॥

शीतकाल (सर्दियों) में सुन्दर पत्नी की बाहें पति-प्रियतम के गले में शोभा देती हैं।॥ ६॥

ਚਲੇ ਚਲਣਹਾਰ ਵਿਚਾਰਾ ਲੇਇ ਮਨੋ ॥

चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥

वैसे ही संसार से चले जाने वाले मनुष्य शरीर चले जा रहे हैं। अपने मन में इसे सोच-समझ लो।

ਗੰਢੇਦਿਆਂ ਛਿਅ ਮਾਹ ਤੁੜੰਦਿਆ ਹਿਕੁ ਖਿਨੋ ॥੭॥

गंढेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥७॥

प्राणी को बनाने में छ: महीने लगते हैं लेकिन उसे तोड़ने (खत्म करने) में एक क्षण भर लगता है॥ ७ ॥

ਜਿਮੀ ਪੁਛੈ ਅਸਮਾਨ ਫਰੀਦਾ ਖੇਵਟ ਕਿੰਨਿ ਗਏ ॥

जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥

हे फरीद ! जमीन आसमान से पूछती है कि जीव रूपी खेवट कहाँ चले गए हैं ?

ਜਾਲਣ ਗੋਰਾਂ ਨਾਲਿ ਉਲਾਮੇ ਜੀਅ ਸਹੇ ॥੮॥੨॥

जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ॥८॥२॥

आसमान जवाब देता है कि कई लोगों के शरीर कब्रों में पड़े गल-सड़ रहे हैं परन्तु उनके कर्मों के दोष आत्मा सहन कर रही ॥८॥२॥

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
वह परब्रह्म परमेश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला सर्वशक्तिमान है, उसका किसी से वैर नहीं, वह निर्वैर है, वस्तुतः सब जीवों पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत है, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वयं ही प्रकट हुआ है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥
रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥
रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਕਰੀ ਚਨਣਾਠੀਆ ਜੇ ਮਨੁ ਉਰਸਾ ਹੋਇ ॥
तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥
हे परमात्मा ! यदि मेरा मन शिला बन जाए तो मैं तेरे नाम को चन्दन बनाकर उस पर घिसूं ।

ਕਰਣੀ ਕੁੰਗੂ ਜੇ ਰਲੈ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਪੂਜਾ ਹੋਇ ॥੧॥
करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥१॥
यदि शुभ कर्मों का केसर उससे मिला दिया जाए तभी मेरे हृदय के भीतर तेरी सच्ची पूजा होती रहेगी॥ १॥

ਪੂਜਾ ਕੀਚੈ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪੂਜ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा का नाम-सुमिरन करने से ही सच्ची पूजा होती है क्योंकि नाम के बिना कोई पूजा नहीं ॥ १॥ रहाउ॥

ਬਾਹਰਿ ਦੇਵ ਪਖਾਲੀਅਹਿ ਜੇ ਮਨੁ ਧੋਵੈ ਕੋਇ ॥
बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥
बाहर से लोग देव-मूर्तियों को धोते हैं, यदि इसी तरह अपने मन को धो लें तो

ਜੂਠਿ ਲਹੈ ਜੀਉ ਮਾਜੀਐ ਮੋਖ ਪਇਆਣਾ ਹੋਇ ॥੨॥
जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥२॥
उनकी विकारों की जूठन दूर हो जाएगी, उनकी आत्मा पवित्र हो जाएगी तथा मोक्ष को प्रस्थान करेगी॥ २ ॥

ਪਸੂ ਮਿਲਹਿ ਚੰਗਿਆਈਆ ਖੜੁ ਖਾਵਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਦੇਹਿ ॥
पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अम्रितु देहि ॥
पशुओं के पास भी गुण मिलते हैं जो घास चरते हैं और अमृत-समान दूध देते हैं लेकिन

ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਆਦਮੀ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣ ਕਰਮ ਕਰੇਹਿ ॥੩॥
नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥३॥
नाम-विहीन आदमी का जीवन एवं कर्म दोनों ही धिक्कार योग्य हैं चूंकि वह नाम को छोड़कर व्यर्थ कार्य करता रहता है॥ ३॥

ਨੇੜਾ ਹੈ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣਿਅਹੁ ਨਿਤ ਸਾਰੇ ਸੰਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ॥
नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे सम्हाले ॥
हे प्राणी ! परमात्मा निकट ही है, उसे दूर मत समझो। वह प्रतिदिन दुनिया का भरण-पोषण कर रहा है।

ਜੋ ਦੇਵੈ ਸੋ ਖਾਵਣਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਹੇ ॥੪॥੧॥
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥४॥१॥
गुरु नानक का कथन है कि जो कुछ वह देता है, वही हम खाते हैं केवल वही सत्य है॥ ४॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गूजरी महला १ ॥
गूजरी महला १ ॥

ਨਾਭਿ ਕਮਲ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ਉਪਜੇ ਬੇਦ ਪੜਹਿ ਮੁਖਿ ਕੰਠਿ ਸਵਾਰਿ ॥
नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥
विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ और अपने चारों मुख एवं कण्ठ को संवारकर वेदों का अध्ययन करने लगा।

ਤਾ ਕੋ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਈ ਲਖਣਾ ਆਵਤ ਜਾਤ ਰਹੈ ਗੁਬਾਰਿ ॥੧॥
ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥१॥
लेकिन ब्रह्मा भी ईश्वर का अन्त नहीं जान सका तथा आवागमन के अन्धेरे में पड़ा रहा ॥ १॥

ਪ੍ਰੀਤਮ ਕਿਉ ਬਿਸਰਹਿ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰ ॥
प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥
मैं अपने प्रियतम-प्रभु को क्यों विस्मृत करूँ ? जो कि मेरे प्राणों का आधार है।

ਜਾ ਕੀ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਜਨ ਪੂਰੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵਹਿ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥

जिसकी भक्ति पूर्ण पुरुष भी करते हैं और मुनिजन भी गुरु के उपदेशानुसार सेवा-भक्ति करते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਰਵਿ ਸਸਿ ਦੀਪਕ ਜਾ ਕੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥

रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥

दुनिया में रोशनी करने के लिए सूर्य एवं चन्द्रमा उसके दीपक हैं, तीनों लोकों में एक उसी मुरारी की ज्योति प्रज्वलित हो रही है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਿਰਮਲੁ ਮਨਮੁਖਿ ਰੈਣਿ ਅੰਧਾਰਿ ॥੨॥

गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥२॥

गुरुमुख मनुष्य रात-दिन मन में निर्मल रहता है तथा मनमुख लोग रात के अन्धेरे में भटकते रहते हैं।॥ २॥

ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਕਰਹਿ ਨਿਤ ਝਗਰਾ ਦੁਹੁ ਲੋਚਨ ਕਿਆ ਹੇਰੈ ॥

सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥

सिद्ध पुरुष अपनी समाधि में सदैव अपने साथ ही झगड़ा करता हुआ प्रभु की खोज करते रहते हैं। परन्तु अपने दोनों नयनों से वह क्या देख सकते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਸਬਦੁ ਧੁਨਿ ਜਾਗੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਝਗਰੁ ਨਿਬੇਰੈ ॥੩॥

अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥३॥

जिसके हृदय में प्रभु ज्योति विद्यमान है। वह शब्द की ध्वनि से जाग जाता है और सच्चा गुरु उसके विवाद निपटा देता है॥ ३॥

ਸੁਰਿ ਨਰ ਨਾਥ ਬੇਅੰਤ ਅਜੋਨੀ ਸਾਚੈ ਮਹਲਿ ਅਪਾਰਾ ॥

सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥

हे अनंत, अयोनि प्रभु ! तुम देवताओं एवं मनुष्यों के नाथ हो, तुम्हारा सच्चा मन्दिर अपार है।

ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਮਿਲੇ ਜਗਜੀਵਨ ਨਦਰਿ ਕਰਹੁ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੪॥੨॥

नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥४॥२॥

हे जगजीवन प्रभु ! नानक को सहजता प्रदान कर तथा अपनी दया-दृष्टि से उसका उद्धार कर दो ॥ ४॥ २॥

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧
रागु गूजरी महला ३ घरु १
रागु गूजरी महला ३ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਧ੍ਰਿਗੁ ਇਵੇਹਾ ਜੀਵਣਾ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਪਾਇ ॥
ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥
ऐसे जीवन को तो धिक्कार है, जिसमें हरि के साथ प्रीति नहीं लगती।

ਜਿਤੁ ਕੰਮਿ ਹਰਿ ਵੀਸਰੈ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥੧॥
जितु कमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥१॥
ऐसे कार्य को भी धिक्कार है जिसमें हरि भूल जाता है तथा मन द्वैतभाव के साथ लग जाता है।॥ १॥

ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਮਨਾ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਗੋਵਿਦ ਪ੍ਰੀਤਿ ਊਪਜੈ ਅਵਰ ਵਿਸਰਿ ਸਭ ਜਾਇ ॥
ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥
हे मन ! ऐसे सतगुरु की श्रद्धा से सेवा करनी चाहिए, जिसकी निष्काम सेवा करने से गोविन्द से प्रीति उत्पन्न हो जाए एवं शेष सब कुछ भूल हो जाए।

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਗਹਿ ਰਹੈ ਜਰਾ ਕਾ ਭਉ ਨ ਹੋਵਈ ਜੀਵਨ ਪਦਵੀ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥
इस प्रकार चित्त ईश्वर के साथ लगा रहेगा एवं वृद्धावस्था का भय नहीं रहेगा और जीवन का मनोरथ मुक्ति मिल जाएगी॥ १॥ रहाउ॥

ਗੋਬਿੰਦ ਪ੍ਰੀਤਿ ਸਿਉ ਇਕੁ ਸਹਜੁ ਉਪਜਿਆ ਵੇਖੁ ਜੈਸੀ ਭਗਤਿ ਬਨੀ ॥
गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥
गोविंद के प्रेम से मेरे मन में एक ऐसा सहज सुख पैदा हो गया है कि मेरी भक्ति आनंदमय बन गई है।

ਆਪ ਸੇਤੀ ਆਪੁ ਖਾਇਆ ਤਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਈ ॥੨॥
आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥२॥
जब मैंने अपने अहंत्व को मार दिया तो मेरा मन पावन हो गया और मेरी ज्योति परम-ज्योति में समा गई॥ २॥

ਬਿਨੁ ਭਾਗਾ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਪਾਈਐ ਜੇ ਲੋਚੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥
अहोभाग्य के बिना ऐसा सतगुरु प्राप्त नहीं हो सकता, जितनी चाहे सभी अभिलाषा कर लें।

कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥३॥
कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥३॥
यदि झूठ का पर्दा भीतर से दूर हो जाए तो सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ३॥

नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥
नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥
हे नानक ! ऐसे सतगुरु की वह सेवक क्या सेवा कर सकता है ? केवल गुरु के समक्ष उसे अपना मन एवं जीवन अर्पित कर देना ही सच्ची सेवा है।

सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥४॥१॥३॥
सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥४॥१॥३॥
यदि वह सतगुरु की रज़ा को याद रखे तो वह स्वयं ही उस पर कृपा-दृष्टि कर देता है॥ ४ ॥ १॥ ३॥

गूजरी महला ३ ॥
गूजरी महला ३ ॥
गूजरी महला ३ ॥

हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥
हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥
हे भाई ! तुम हरि की ही सेवा -भक्ति करो तथा उसके अतिरिक्त किसी दूसरे की सेवा मत करो।

हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥
हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥
हरि की सेवा-भक्ति करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है परन्तु किसी दूसरे की सेवा करने से अमूल्य मानव-जन्म व्यर्थ ही चला जाता है॥ १॥

हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥
हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥
हे भाई ! हरि ही मेरा प्रेम एवं जीवन-आचरण है तथा हरि ही मेरी कथा एवं कहानी है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਏਹਾ ਸੇਵ ਬਨੀ ਜੀਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की दया से मेरा मन प्रभु-प्रेम में भीग गया है, यही मेरी सेवा-भक्ति बनी है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਸਤ੍ਰ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਬੰਧਪੁ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਭਾਈ ॥
हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥
हे भाई ! हरि ही मेरी स्मृति, मेरा शास्त्र, संबंधी एवं मेरा भाई है।

ਹਰਿ ਕੀ ਮੈ ਭੂਖ ਲਾਗੈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਸਾਕੁ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥੨॥
हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥२॥
हरि की मुझे भूख लगी रहती है और हरि के नाम से मेरा मन जाता है। हरेि ही मेरा रिश्तेदार है और वही मेरा अंतिमकाल का सखा है॥ २॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹੋਰ ਰਾਸਿ ਕੂੜੀ ਹੈ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਜਾਈ ॥
हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥
हरि के बिना दूसरी सब पूंजी झूठी है। जब प्राणी संसार से कूच करता है तो यह उसके साथ नहीं जाती।

ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਧਨੁ ਮੇਰੈ ਸਾਥਿ ਚਾਲੈ ਜਹਾ ਹਉ ਜਾਉ ਤਹ ਜਾਈ ॥੩॥
हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥३॥
हरि मेरा अमूल्य धन है जो मेरे साथ (परलोक में) चलेगा, जहाँ किधर भी मैं जाऊँगा, वंही यह साथ जाएगा ॥ ३॥

ਸੋ ਝੂਠਾ ਜੋ ਝੂਠੇ ਲਾਗੈ ਝੂਠੇ ਕਰਮ ਕਮਾਈ ॥
सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥
जो झूठ से लगा हुआ है, वह झूठा है और जो कर्म वह करता है, वे भी झूठे हैं।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਹੋਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੨॥੪॥
कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥२॥४॥
नानक कहते हैं कि दुनिया में सब कुछ हरि की इच्छानुसार ही होता है। नश्वर प्राणी का इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं ॥ ४॥ २॥ ४

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गूजरी महला ३ ॥
गूजरी महला ३ ॥

ਜੁਗ ਮਾਹਿ ਨਾਮੁ ਦੁਲੰਭੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
जुग माहि नामु दुल्मभु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥
इस कलियुग में भगवान का नाम बड़ा दुर्लभ है तथा गुरु की शरण लेने से ही इसकी प्राप्ति होती है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਵਿਉਪਾਇ ॥੧॥
बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥१॥
नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं होती, चाहे कोई जितना भी उपाय करके देख लो॥ १॥

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥
मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, सदैव ही उन पर न्यौछावर हूँ।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
सच्चे गुरु को मिलने से हरि-प्रभु मन में बस जाता है और तब वह सहज ही उसमें समाया रहता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਾਂ ਭਉ ਪਾਏ ਆਪਣਾ ਬੈਰਾਗੁ ਉਪਜੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥
जब हरि का भय मन में उत्पन्न होता है तो जीव संसार से वैरागी हो जाता है।

ਬੈਰਾਗੈ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥२॥
वैराग्य द्वारा ही हरि-प्रभु प्राप्त होता है तथा जीव हरि के साथ समाया रहता है।॥ २॥

ਸੇਇ ਮੁਕਤ ਜਿ ਮਨੁ ਜਿਣਹਿ ਫਿਰਿ ਧਾਤੁ ਨ ਲਾਗੈ ਆਇ ॥
सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥
वही जीव मुक्त होते हैं, जो अपने मन को जीत लेते हैं और माया उनके साथ दोबारा नहीं लगती।

ਦਸਵੈ ਦੁਆਰਿ ਰਹਤ ਕਰੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੩॥
दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥३॥
वे दशम द्वार में रहते हैं और उन्हें तीनों लोकों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਗੁਰੁ ਹੋਇਆ ਵੇਖਹੁ ਤਿਸ ਕੀ ਰਜਾਇ ॥

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥

गुरु नानक की कृपा-दृष्टि से भाई लहना गुरु अंगद बन गया, उस परमात्मा की आश्चर्यजनक रज़ा देखो।

ਇਹੁ ਕਾਰਣੁ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੩॥੫॥
इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥४॥३॥५॥
सृजनहार प्रभु ने यह कार्य सम्पूर्ण किया है तथा लहने की ज्योति नानक की ज्योति में समा गई॥ ४॥ ३ ॥ ५ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गूजरी महला ३ ॥
गूजरी महला ३ ॥

ਰਾਮ ਰਾਮ ਸਭੁ ਕੋ ਕਹੈ ਕਹਿਐ ਰਾਮੁ ਨ ਹੋਇ ॥
राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥
जीभ से 'राम-राम' तो सभी लोग कहते हैं लेकिन इस तरह कहने से राम प्राप्त नहीं होता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਰਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥੧॥
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥१॥
यदि गुरु की कृपा से किसी के मन में राम बस जाए तो तभी कोई राम-नाम जपने का फल प्राप्त करता है॥ १॥

ਅੰਤਰਿ ਗੋਵਿੰਦ ਜਿਸੁ ਲਾਗੈ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥
जिस मनुष्य के हृदय में गोविंद से प्रीति लग गई है,

ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰਹਿ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥
वह प्रभु को कदाचित विस्मृत नहीं करता और सदैव ही मन एवं चित्त से हरि-हरि करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਿਰਦੈ ਜਿਨ੍ ਕੈ ਕਪਟੁ ਵਸੈ ਬਾਹਰਹੁ ਸੰਤ ਕਹਾਹਿ ॥
हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥
जिनके हृदय में कपट निवास करता है परन्तु बाहर से संत कहलवाते हैं,

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਮੂਲਿ ਨ ਚੁਕਈ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥੨॥
त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥२॥
उनकी तृष्णा कभी खत्म नहीं होती और अंतः वह पछताते हुए संसार से चले जाते हैं।॥ २॥

ਅਨੇਕ ਤੀਰਥ ਜੇ ਜਤਨ ਕਰੈ ਤਾ ਅੰਤਰ ਕੀ ਹਉਮੈ ਕਦੇ ਨ ਜਾਇ ॥
अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥
चाहे मनुष्य अनेक तीर्थ स्थलों पर स्नान का यत्न करता रहे परन्तु उसके मन का अहंकार कभी दूर नहीं होता।

ਜਿਸੁ ਨਰ ਕੀ ਦੁਬਿਧਾ ਨ ਜਾਇ ਧਰਮ ਰਾਇ ਤਿਸੁ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੩॥
जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरम राइ तिसु देइ सजाइ ॥३॥
जिस मनुष्य की दुविधा दूर नहीं होती, धर्मराज उसे दण्डित करता है॥ ३॥

ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਈ ॥
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥
जिस व्यक्ति पर प्रभु की अनुकंपा हो जाती है, वही उसे प्राप्त करता है। कोई गुरुमुख बनकर ही सत्य को समझता है।

ਨਾਨਕ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਮਾਰੇ ਤਾਂ ਹਰਿ ਭੇਟੈ ਸੋਈ ॥੪॥੪॥੬॥
नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥४॥४॥६॥
हे नानक ! यदि मनुष्य अपने भीतर से अपना अहंकार नष्ट कर दे तो वह प्रभु से मिल जाता है॥ ४॥ ४॥ ६॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
गूजरी महला ३ ॥
गूजरी महला ३ ॥

ਤਿਸੁ ਜਨ ਸਾਂਤਿ ਸਦਾ ਮਤਿ ਨਿਹਚਲ ਜਿਸ ਕਾ ਅਭਿਮਾਨੁ ਗਵਾਏ ॥
तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥
ईश्वर जिस इन्सान का अभिमान दूर कर देता है, उसे शांति प्राप्त हो जाती है तथा उसकी बुद्धि सदैव निश्चल रहती है।

ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੧॥
सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥१॥
वह मनुष्य निर्मल है जो गुरु के उपदेश द्वारा सत्य को समझता है तथा अपने चित्त को हरि-चरणों से लगाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਅਚੇਤ ਮਨਾ ਜੋ ਇਛਹਿ ਸੋ ਫਲੁ ਹੋਈ ॥
हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥
हे मेरे अचेत मन ! भगवान को याद कर, तुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵਹਿ ਪੀਵਤ ਰਹਹਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु की कृपा से तुझे हरि-रस प्राप्त होगा, जिसे पान करने से सदैव सुख की उपलब्धि होगी॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਤਾ ਪਾਰਸੁ ਹੋਵੈ ਪਾਰਸੁ ਹੋਇ ਤ ਪੂਜ ਕਰਾਏ ॥

सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥

जब मनुष्य की सतिगुरु से भेंट होती है तो वह पारस बन जाता है। जय वह पारस (महान्) बन जाता है तो प्रभु जीवों से उसकी पूजा करवाता है,

ਜੋ ਉਸੁ ਪੂਜੇ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਏ ਦੀਖਿਆ ਦੇਵੈ ਸਾਚੁ ਬੁਝਾਏ ॥੨॥

जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥२॥

जो कोई उसकी पूजा करता है, वह फल प्राप्त कर लेता है। दूसरों को दीक्षा देकर वह उनको सत्य-मार्ग पर प्रेरित करता है॥ २॥

ਵਿਣੁ ਪਾਰਸੈ ਪੂਜ ਨ ਹੋਵਈ ਵਿਣੁ ਮਨ ਪਰਚੇ ਅਵਰਾ ਸਮਝਾਏ ॥

विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥

पारस (महान्) बने बिना मनुष्य पूजा के योग्य नहीं होता। अपने मन को समझाने के बिना वह दूसरों को समझाता है।

ਗੁਰੂ ਸਦਾਏ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧਾ ਕਿਸੁ ਓਹੁ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥੩॥

गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥३॥

अज्ञानी अंधा मनुष्य अपने आपको गुरु कहलवाता है लेकिन क्या वह किसी को मार्गदर्शन कर सकता है ?॥३॥

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਦਰੀ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਈਐ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ॥

नानक विणु नदरी किछु न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥

हे नानक ! प्रभु की दया के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य पर भगवान दया-दृष्टि धारण करता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਅਪਣਾ ਸਬਦੁ ਵਰਤਾਏ ॥੪॥੫॥੭॥

गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥४॥५॥७॥

गुरु की कृपा से प्रभु प्रशंसा प्रदान करता है और अपने शब्द का चारों ओर प्रसार करता है ॥ ४॥ ५॥ ७ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਪੰਚਪਦੇ ॥

गूजरी महला ३ पंचपदे ॥

गूजरी महला ३ पंचपदे ॥

ਨਾ ਕਾਸੀ ਮਤਿ ਊਪਜੈ ਨਾ ਕਾਸੀ ਮਤਿ ਜਾਇ ॥
ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥
न ही काशी में जाने से बुद्धि उत्पन्न होती है और न ही काशी में बुद्धि दूर होती है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਮਤਿ ਊਪਜੈ ਤਾ ਇਹ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੧॥
सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥१॥
सतिगुरु को मिलने से बुद्धि उत्पन्न होती है और तब मनुष्य को यह समझ प्राप्त हो जाती है॥ १॥

ਹਰਿ ਕਥਾ ਤੂੰ ਸੁਣਿ ਰੇ ਮਨ ਸਬਦੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ॥
हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥
हे मन ! तू श्रद्धा से हरि कथा सुन तथा उसके नाम को अपने हृदय में बसा।

ਇਹ ਮਤਿ ਤੇਰੀ ਥਿਰੁ ਰਹੈ ਤਾਂ ਭਰਮੁ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तेरी यह बुद्धि स्थिर रहे तो भीतर से सारा भ्रम निवृत्त हो जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਰਿਦੈ ਵਸਾਇ ਤੂ ਕਿਲਵਿਖ ਹੋਵਹਿ ਨਾਸੁ ॥
हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥
"(हे मन !) हरि के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसा, तेरे समस्त पाप नाश हो जाएँगे।

ਪੰਚ ਭੂ ਆਤਮਾ ਵਸਿ ਕਰਹਿ ਤਾ ਤੀਰਥ ਕਰਹਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੨॥
पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥२॥
यदि तुम अपने पाँच सूक्ष्म तत्वों से बनी आत्मा को वश में कर लो तो तुम्हारा निवास सत्य के तीर्थ में हो जाएगा।॥ २॥

ਮਨਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮੁਗਧੁ ਹੈ ਸੋਝੀ ਕਿਛੁ ਨ ਪਾਇ ॥
मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछु न पाइ ॥
मनमुख व्यक्ति का यह मन मूर्ख है और इसे कुछ सूझ प्राप्त नहीं होती।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਬੁਝਈ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਇ ॥੩॥
हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥३॥
मूर्ख मन हरि के नाम को नहीं जानता और अंततः पछताता हुआ दुनिया से चला जाता है॥ ३॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਕਾਸੀ ਸਭਿ ਤੀਰਥ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ॥
इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥
सच्चे गुरु ने मुझे यह समझा दिया है कि यह मन ही काशी, सभी तीर्थ-स्नान एवं स्मृतियाँ हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਰਹਹਿ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੪॥

अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥४॥

जिनके हृदय में हरि समाया रहता है, उनके साथ अड़सठ तीर्थ सदा रहते हैं।॥ ४॥

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝਿਆ ਏਕੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥

नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥

हे नानक ! सतिगुरु को मिलने से प्रभु का हुकम जान लिया जाता है और एक ईश्वर आकर मनुष्य के हृदय में बसेरा कर लेता है।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੫॥੬॥੮॥

जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ ॥५॥६॥८॥

हे सच्चे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वे सभी सत्य हैं और वे सत्य में ही समाए रहते हैं।॥ ५॥ ६॥ ८॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਤੀਜਾ ॥
गूजरी महला ३ तीजा ॥
गूजरी महला ३ तीजा ॥

ਏਕੋ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਪੰਡਿਤ ਸੁਣਿ ਸਿਖੁ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥
एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥
हे पण्डित ! जरा ध्यान से सुन, एक ईश्वर का नाम ही अक्षय खजाना है, इसे ही सत्य समझकर सीख।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਜੇਤਾ ਪੜਹਿ ਪੜਤ ਗੁਣਤ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਹੋਈ ॥੧॥
दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥१॥
जो कुछ भी तू द्वैतभाव के द्वारा पढ़ता है, ऐसे पढ़ने एवं चिन्तन करने से तुझे सदा दुःख मिलता है॥१॥

ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਤੂੰ ਲਾਗਿ ਰਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸੋਝੀ ਹੋਈ ॥
हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥
तू हरि के चरणों से लगा रह, गुरु के शब्द द्वारा तुझे सूझ मिल जाएगी।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਰਸਨਾ ਚਾਖੁ ਤੂੰ ਤਾਂ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी जिव्हा से तू हरि-रस का पान कर, तेरा मन निर्मल हो जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖੀਐ ਤਾ ਫਿਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੂਖ ਨ ਹੋਇ ॥
सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि त्रिसना भूख न होइ ॥
सतिगुरु को मिलने से मन संतोषी हो जाता है और फिर तृष्णा एवं भूख नहीं सताती।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਪਾਇਆ ਪਰ ਘਰਿ ਜਾਇ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥
नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥२॥
नाम के खजाने को प्राप्त करके कोई भी मनुष्य पराए घर में नहीं जाता॥ २॥

ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਜੇ ਕਰੇ ਮਨਮੁਖਿ ਬੂਝ ਨ ਹੋਇ ॥
कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥
यदि मनमुख अपने मुँह द्वारा केवल बातें ही करता रहे तो उसे नाम-धन की सूझ नहीं होती।

ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਚਾਨਣਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਾਵੈ ਸੋਇ ॥੩॥
गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥३॥
गुरु की मति द्वारा जिसके हृदय में ज्ञान रूपी आलोक हो जाता है, वह हरि-नाम को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

ਸੁਣਿ ਸਾਸਤ੍ਰ ਤੂੰ ਨ ਬੁਝਹੀ ਤਾ ਫਿਰਹਿ ਬਾਰੋ ਬਾਰ ॥
सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥
तू शास्त्रों को सुनकर भी नाम-धन को नहीं समझता, इसलिए बार-बार इधर-उधर भटकता रहता है।

ਸੋ ਮੂਰਖੁ ਜੋ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣਈ ਸਚਿ ਨ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥੪॥
सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥४॥
वह मनुष्य मूर्ख है, जो अपने आत्मस्वरूप को नहीं पहचानता और सत्य से प्रेम नहीं करता॥ ४॥

ਸਚੈ ਜਗਤੁ ਡਹਕਾਇਆ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥
सत्यस्वरूप प्रभु ने इस जगत को कुमार्गगामी किया हुआ है और मनुष्य का इसमें कुछ कहने का साहस नहीं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿਉ ਤਿਸ ਕੀ ਰਜਾਇ ॥੫॥੭॥੯॥
नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥५॥७॥९॥
हे नानक ! जो कुछ परमात्मा को मंजूर है, अपनी इच्छानुसार वही कुछ करता है॥ ५॥ ७॥ ६॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੧ ॥
रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥
रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਜਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਤ ਪੁਰਖਾ ਹਉ ਬਿਨਉ ਕਰਉ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥
हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥
हे परमात्मा स्वरूप ! हे सतगुरु सद्पुरुष जी ! मेरी आप से यही विनती है कि

ਹਮ ਕੀਰੇ ਕਿਰਮ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਕਰਿ ਦਇਆ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੧॥

हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥

मुझ तुच्छ जीव ने तेरी शरण ली है। सो हे सतगुरु जी ! कृपा करके मेरे मन में हरि-नाम का प्रकाश कर दो॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮੀਤ ਗੁਰਦੇਵ ਮੋ ਕਉ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥

मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥

हे मेरे मीत गुरुदेव ! मेरे मन में राम नाम का प्रकाश कर दो।

ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਨ ਸਖਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਮਰੀ ਰਹਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु उपदेशानुसार बताया परमात्मा का नाम मेरे प्राणों का सखा है और हरि की कीर्ति करना ही हमारी रीतेि है॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਕੇ ਵਡਭਾਗ ਵਡੇਰੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਧਾ ਹਰਿ ਪਿਆਸ ॥

हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥

हरि के भक्तों का बड़ा सौभाग्य है, जिनकी हरि-नाम में अगाध श्रद्धा है और जिन्हें हरि-नाम जपने की तीव्र लालसा है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਹਿ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿ ॥੨॥

हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥

हरि-प्रभु के नाम को प्राप्त करके वे तृप्त हो जाते हैं तथा सत्संगति में मिलने से उनके मन में हरि के गुणों रूपी प्रकाश हो जाता है॥ २॥

ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਤੇ ਭਾਗਹੀਣ ਜਮ ਪਾਸਿ ॥

जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥

जिन्होंने हरि के हरि हरि नाम रस को नहीं चखा, वे भाग्यहीन हैं तथा यम के पाश में फँसे रहते हैं।

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਿ ਸੰਗਤਿ ਨਹੀ ਆਏ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵੇ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਾਸਿ ॥੩॥

जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥

जो मनुष्य सतिगुरु की शरण एवं संगति में नहीं आते, उनके विमुख व्यक्तियों के जीवन को धिक्कार है तथा भविष्य में उनके जीने पर भी धिक्कार है॥ ३॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਪਾਈ ਤਿਨ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖਾਸਿ ॥

जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥

जिन हरि-भक्तों को सतिगुरु की संगति प्राप्त हुई है, उनके मस्तक पर परमात्मा द्वारा जन्म से पूर्व ही ऐसा भाग्य लिखा होता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸਤਸੰਗਤਿ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਮਿਲਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਿ ॥੪॥੧॥
धंनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥४॥१॥
हे नानक ! वह सत्संगति धन्य-धन्य है जहाँ हरि रस की उपलब्धि होती है और परमात्मा के भक्तों को उसके नाम का ज्ञान-प्रकाश मिलता है। इसलिए हे सतगुरु जी ! मुझे तो सिर्फ परमात्मा के नाम की देन प्रदान करो॥ ४॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गूजरी महला ४ ॥
गूजरी महला ४ ॥

ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਮੋਹੈ ॥
गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥
दुनिया का मालिक गोविंद मेरा प्रियतम है और मुझे मेरा प्रियतम मन में बहुत प्रिय है। सत्संगति में शब्द द्वारा वह मेरे मन को मोह लेता है।

ਜਪਿ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਧਿਆਈਐ ਸਭ ਕਉ ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਓਹੈ ॥੧॥
जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥१॥
गोविन्द का नाम जप कर गोविन्द का ही ध्यान करते रहना चाहिए। चूंकि वह प्रभु ही सब जीवों को दान देता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਜਨਾ ਮੋ ਕਉ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਮਨੁ ਮੋਹੈ ॥
मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥
हे मेरे भक्तजनो भाइयों ! गोविंद-गोविंद नाम जपने से गोविंद मेरे मन को मोह लेता है।

ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਵਿੰਦ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਮਿਲਿ ਗੁਰ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਜਨੁ ਸੋਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥१॥ रहाउ ॥
में गोविंद-गोविंद कहकर गोविंद का गुणगान करता रहता हूँ। गुरु से मिलकर साधसंगति में तेरा भक्त बड़ा सुन्दर लगता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਗੁਰਮਤਿ ਕਉਲਾ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਲਾਗੈ ਪਗਿ ਓਹੈ ॥
सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥
हरि की भक्ति सुखों का सागर है। गुरु के उपदेश द्वारा लक्ष्मी, रिधि-सिद्धियों उसके चरणों में आ लगती हैं।

ਜਨ ਕਉ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਸੋਹੈ ॥੨॥
जन कउ राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥२॥
राम का नाम उसके सेवक के जीवन का आधार है। वह हरि का नाम जपता रहता है और हरि-नाम से ही सुन्दर लगता है॥ २॥

ਦੁਰਮਤਿ ਭਾਗਹੀਨ ਮਤਿ ਫੀਕੇ ਨਾਮੁ ਸੁਨਤ ਆਵੈ ਮਨਿ ਰੋਹੈ ॥
दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥
दुर्मति, भाग्यहीन एवं तुच्छ बुद्धि वाले लोगों को प्रभु का नाम सुनकर ही मन में क्रोध आ जाता है।

ਕਊਆ ਕਾਗ ਕਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਵਿਸਟਾ ਖਾਇ ਮੁਖਿ ਗੋਹੈ ॥੩॥
कऊआ काग कउ अम्रित रसु पाईऐ त्रिपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥३॥
कौए के समक्ष चाहे स्वादिष्ट भोजन रखा जाए तो भी वह अपने मुँह से विष्ठा एवं गोबर खा कर ही तृप्त होता है॥ ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਤਿਵਾਦੀ ਜਿਤੁ ਨਾਤੈ ਕਊਆ ਹੰਸੁ ਹੋਹੈ ॥
अम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥
सत्यवादी सतगुरु जी अमृत का सरोवर हैं, जिसमें स्नान करने से कौआ भी हंस बन जाता है।

ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਵਡੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ੍ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਮਲੁ ਧੋਹੈ ॥੪॥੨॥
नानक धनु धंनु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥४॥२॥
हे नानक ! वे इन्सान धन्य-धन्य एवं बड़े भाग्यवान हैं, जो अपने मन की मैल को गुरु उपदेशानुसार प्रभु-नाम से धो देते हैं। ४॥ २ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गूजरी महला ४ ॥
गूजरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਊਤਮ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਮੁਖਿ ਬੋਲਹਿ ਪਰਉਪਕਾਰੇ ॥
हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥
हरि के भक्त उत्तम हैं, उनकी वाणी बड़ी उत्तम होती है तथा वे अपने सुख से परोपकार के लिए ही वाणी बोलते हैं।

ਜੋ ਜਨੁ ਸੁਣੈ ਸਰਧਾ ਭਗਤਿ ਸੇਤੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥
जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥१॥
जो लोग श्रद्धा एवं भक्ति-भाव से उनकी वाणी सुनते हैं, हरि कृपा करके उनकी मुक्ति कर देता है॥ १॥

ਰਾਮ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਜਨ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥
राम मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥
हे राम ! मुझे प्यारे भक्तों की संगति से मिला दे।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਹਮ ਪਾਪੀ ਗੁਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु सतिगुरु मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है। गुरुदेव ने मुझ पापी को भी मोक्ष प्रदान किया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਡਭਾਗੀ ਵਡਭਾਗੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥
गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥
गुरुमुख बड़े भाग्यशाली हैं, और बे भी बड़े भाग्यवान हैं, हरि नाम ही जिनके जीवन का आधार बन गया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਵਹਿ ਗੁਰਮਤਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰੇ ॥੨॥
हरि हरि अम्रितु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥२॥
वे हरिनामामृत एवं हरि रस का पान करते हैं तथा गुरु उपदेश द्वारा उनकी भक्ति के भण्डार भरे रहते हैं।॥ २॥

ਜਿਨ ਦਰਸਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਤ ਪੁਰਖ ਨ ਪਾਇਆ ਤੇ ਭਾਗਹੀਣ ਜਮਿ ਮਾਰੇ ॥
जिन दरसनु सतिगुर सत पुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥
परन्तु जिन्होंने सद्पुरुष सतिगुरु के दर्शन प्राप्त नहीं किए. वे भाग्यहीन हैं तथा उनको यमदूत नष्ट कर देता है।

ਸੇ ਕੂਕਰ ਸੂਕਰ ਗਰਧਭ ਪਵਹਿ ਗਰਭ ਜੋਨੀ ਦਯਿ ਮਾਰੇ ਮਹਾ ਹਤਿਆਰੇ ॥੩॥
से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥३॥
ऐसे मनुष्य कुत्ते, सूअर अथवा गधे जैसी गर्भ-योनियों के (जन्म-मरण के) चक्र में पीड़ित होते हैं तथा उन महा हत्यारों को भगवान मार देता है॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਹੋਹੁ ਜਨ ਊਪਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੇ ॥
दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥
हे दीन दयालु ! अपने सेवकों पर दया करो और अपनी कृपा-दृष्टि करके उनका उद्धार करो।

ਨਾਨਕ ਜਨ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥੪॥੩॥
नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥४॥३॥
नानक ने हरि की शरण ली है, जब हरि को उपयुक्त लगेगा तो वह उसका उद्धार कर देगा ॥ ४ ॥ ३ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गूजरी महला ४ ॥
गूजरी महला ४ ॥

ਹੋਹੁ ਦਇਆਲ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਵਹੁ ਹਉ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਧਿਆਈ ॥

होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥

हे मेरे राम ! मुझ पर दयालु हो जाओ और मेरा मन भक्ति में लगा दो चूंकि मैं सर्वदा ही तेरे नाम का ध्यान करता रहूँ।

ਸਭਿ ਸੁਖ ਸਭਿ ਗੁਣ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਜਿਤੁ ਜਪਿਐ ਦੁਖ ਭੁਖ ਸਭ ਲਹਿ ਜਾਈ ॥੧॥

सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥१॥

परमात्मा सभी सुखों, सभी गुणों एवं समस्त निधियों का भण्डार है, जिसका नाम जपने से ही सभी दुख एवं भूख मिट जाते हैं।॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਖਾ ਹਰਿ ਭਾਈ ॥

मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥

हे मेरे मन ! राम का नाम मेरा सखा एवं भाई है।

ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਸੁ ਗਾਵਾ ਅੰਤਿ ਬੇਲੀ ਦਰਗਹ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु की मति द्वारा मैं राम-नाम का यश गाता रहता हूँ। अन्तिम समय यह मेरा साथी होगा और प्रभु-दरगाह में मुझे छुड़ा लेगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੂੰ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੋਚ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਲਾਈ ॥

तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥

हे प्रभु ! तू स्वयं ही दाता एवं अन्तर्यामी है, स्वयं ही कृपा करके मेरे मन में मिलन की तीव्र लालसा लगाई है।

ਮੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲੋਚ ਲਗੀ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਪ੍ਰਭਿ ਲੋਚ ਪੂਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥

मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥२॥

अब मेरे मन एवं तन में हरि के लिए तीव्र लालसा लगी है। प्रभु ने मुझे सतगुरु की शरण में डालकर मेरी लालसा पूरी कर दी है॥ २॥

ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਪੁੰਨਿ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਧ੍ਰਿਗੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਈ ॥

माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥

अमूल्य मानव-जन्म पुण्य करने से ही प्राप्त होता है। प्रभु-नाम के बिना यह धिक्कार योग्य है तथा व्यर्थ ही जाता है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਰਸ ਕਸ ਦੁਖੁ ਖਾਵੈ ਮੁਖੁ ਫੀਕਾ ਥੁਕ ਥੂਕ ਮੁਖਿ ਪਾਈ ॥੩॥

नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥३॥

प्रभु-नाम के बिना विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ भी दुःख रूप हैं। उसका मुँह फीका ही रहता है और उसके चेहरे पर थूक ही पड़ता है। ३॥

ਜੋ ਜਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਣਾ ਤਿਨ ਦਰਗਹ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥
जो लोग हरि-प्रभु की शरण लेते हैं, उन्हें हरि अपनी दरगाह में मान-सम्मान प्रदान करता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸਾਬਾਸਿ ਕਹੈ ਪ੍ਰਭੁ ਜਨ ਕਉ ਜਨ ਨਾਨਕ ਮੇਲਿ ਲਏ ਗਲਿ ਲਾਈ ॥੪॥੪॥
धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥४॥४॥
हे नानक ! अपने सेवक को प्रभु धन्य-धन्य एवं शाबाश कहता है। वह उसे गले लगा लेता है और अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ ४॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गूजरी महला ४ ॥
गूजरी महला ४ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਮੇਰੀ ਮੋ ਕਉ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਜੀਵਾਇਆ ॥
गुरमुखि सखी सहेली मेरी मो कउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥
हे मेरी गुरुमुख सखी-सहेलियो ! मुझे हरेि नाम का दान दीजिए, जो मेरे प्राणों का जीवन है।

ਹਮ ਹੋਵਹ ਲਾਲੇ ਗੋਲੇ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪੁਰਖੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥१॥
मैं उन गुरुसिक्खों का सेवक एवं दास हूँ जो रात-दिन हरि-प्रभु का ही ध्यान करते रहते हैं।॥१॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਿਰਹੁ ਗੁਰਸਿਖ ਪਗ ਲਾਇਆ ॥
मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥
भगवान ने मेरे मन एवं तन में गुरु सिक्खों के चरणों के लिए प्रेम पैदा कर दिया है।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਸਖਾ ਗੁਰ ਕੇ ਸਿਖ ਭਾਈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਹੁ ਉਪਦੇਸੁ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मो कउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे गुरु के सिक्खो ! तुम मेरे प्राण, मेरे मित्र एवं मेरे भाई हो। मुझे उपदेश करो चूंकि आपका मिलाया हुआ मैं प्रभु से मिल सकता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲੇ ਜਿਨ੍ ਵਚਨ ਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥
जब हरि-प्रभु को अच्छा लगता है तो वह गुरुमुखों से मिला देता है, जिनके मन को गुरु-सतगुरु की वाणी बड़ी मधुर लगती है।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਕੇ ਸਿਖ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਨਿਰਬਾਣੀ ਨਿਰਬਾਣ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥२॥
गुरु के प्यारे सिक्ख भाग्यवान हैं, जो निर्वाणी प्रभु के द्वारा निर्वाण-पद प्राप्त कर लेते हैं।॥ २॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਗੁਰ ਕੀ ਹਰਿ ਪਿਆਰੀ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥
गुरु की सत्संगति हरि की प्यारी है, जिन्हें हरि-प्रभु का नाम मीठा एवं मधुर लगता है।

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸੰਗਤਿ ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਇਆ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਪਾਪੀ ਜਮਿ ਖਾਇਆ ॥੩॥
जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥३॥
जिन्हें सतिगुरु की संगति एवं साथ प्राप्त नहीं हुआ, उन भाग्यहीन पापियों को यमदूत निगल जाता है॥ ३॥

ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਾਰੇ ਹਰਿ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇਆ ॥
आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥
यदि कृपालु प्रभु स्वयं कृपा धारण करे तो गुरुमुखों के मिलाने से प्राणी ईश्वर से मिल पाता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਬੋਲੇ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੫॥
जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥४॥५॥
नानक भी गुणों वाली वाणी (गुरुवाणी) ही बोलता है। गुरुवाणी के माध्यम से जीव हरि के नाम में समा जाता है॥ ४॥ ५॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
गूजरी महला ४ ॥
गूजरी महला ४ ॥

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਵੈ ॥
जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मो कउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥
मेरी कामना है कि जिसने महापुरुष सतगुरु, हरि-प्रभु को पा लिया है, वह मुझे भी उपदेश देकर हरि से मेरा प्रेम लगा दे।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਭ ਹਰਿਆ ਹੋਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥੧॥

मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥१॥

जो भाग्यवान इन्सान हरि के नाम का ध्यान करता है, उसका मन एवं तन शीतल हो जाता है और उसका मुरझाया हुआ सारा शरीर ही प्रसन्न हो जाता है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਮੋ ਕਉ ਕੋਈ ਆਇ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ॥

भाई रे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ॥

हे मेरे भाई ! मेरी कामना है कि कोई ऐसा संत आकर मुझे मिले, जो मेरे अन्तर्मन में हरि का नाम बसा दे।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਦੇਵਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥१॥ रहाउ ॥

जो मुझे मेरे प्रभु की हरि कथा सुनाएगा, मैं अपने प्राण, मन एवं तन उस प्रीतम को अर्पित कर दूंगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਧੀਰਜੁ ਧਰਮੁ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਨਿਤ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਵੈ ॥

धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥

गुरु के उपदेश द्वारा मुझे धैर्य, धर्म एवं हरि-प्रभु प्राप्त हुए हैं। हरि-नाम द्वारा मैं अपना चित्त हरि से लगाए रखता हूँ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜੋ ਬੋਲੈ ਸੋ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਵੈ ॥੨॥

अम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अम्रितु पावै ॥२॥

सतिगुरु की वाणी अमृत वचन हैं, जो मनुष्य वाणी उच्चरित करता है, उसके मुँह में अमृत टपकता है॥ २॥

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਜਿਤੁ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਲਿਵ ਲਾਵੈ ॥

निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥

हरि का नाम बड़ा पावन है, जिसका सिमरन करने से मन को अहंत्व की मैल नहीं लगती। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश से प्रभु-नाम का जाप करता है, उसकी वृति प्रभु-चरणों में लगी रहती है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਜਿਨ ਨਰ ਨਹੀ ਪਾਇਆ ਸੇ ਭਾਗਹੀਣ ਮੁਏ ਮਰਿ ਜਾਵੈ ॥੩॥

नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥३॥

जिस मनुष्यको प्रभु के नाम का पदार्थ प्राप्त नहीं हुआ, वह भाग्यहीन है और बार-बार मरता रहता है॥ ३॥

ਆਨਦ ਮੂਲੁ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ਸਭ ਜਨ ਕਉ ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ॥
आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥
हे जगजीवन दाता ! तू आनंद का स्रोत है। जो हरि का नाम-सुमिरन करते हैं, वह अपने सभी सेवकों को आनंदित कर देता है।

तुँ दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥४॥६॥
तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥४॥६॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तू सब जीवों का दाता है और सब जीव तेरे पैदा किए हुए हैं। तू अपने जीवों को गुरु के माध्यम से क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ ४ ॥ ६ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੩ ॥
गूजरी महला ४ घरु ३ ॥
गूजरी महला ४ घरु ३ ॥

ਮਾਈ ਬਾਪ ਪੁਤ੍ਰ ਸਭਿ ਹਰਿ ਕੇ ਕੀਏ ॥
माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥
माता, पिता एवं पुत्र इत्यादि सभी हरि ने बनाए हुए हैं।

ਸਭਨਾ ਕਉ ਸਨਬੰਧੁ ਹਰਿ ਕਰਿ ਦੀਏ ॥੧॥
सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥१॥
हरि ने स्वयं सभी के परस्पर संबंध कायम किए हैं॥ १॥

ਹਮਰਾ ਜੋਰੁ ਸਭੁ ਰਹਿਓ ਮੇਰੇ ਬੀਰ ॥
हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥
हे मेरे भाई ! ईश्वर के समक्ष हमारा कोई भी जोर नहीं चल सकता।

ਹਰਿ ਕਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਭੁ ਹਰਿ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਰੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥१॥ रहाउ ॥
हमारे यह तन-मन सभी हरि के हैं और यह समूचा शरीर उसके वश में है॥ १॥ रहाउ॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਸਰਧਾ ਆਪਿ ਹਰਿ ਲਾਈ ॥
भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥
हरि आप ही भक्तजनों में अपनी श्रद्धा लगाता है और

ਵਿਚੇ ਗ੍ਰਿਸਤ ਉਦਾਸ ਰਹਾਈ ॥੨॥
विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥२॥
भक्तजन गृहस्थ जीवन में निर्लेप बने रहते हैं।॥ २ ॥

ਜਬ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬਨਿ ਆਈ ॥
जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥
जब हरि के साथ हृदय में प्रेम बन जाता है तो

ਤਬ ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰੇ ਸੁ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ॥੩॥
तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥३॥
जो कुछ भी जीव करता है वह मेरे हरि-प्रभु को भला लगता है॥ ३॥

ਜਿਤੁ ਕਾਰੈ ਕੰਮਿ ਹਮ ਹਰਿ ਲਾਏ ॥
जितु कारै कमि हम हरि लाए ॥
जिस कार्य एवं काम में हरि ने हमें लगाया है,

ਸੋ ਹਮ ਕਰਹ ਜੁ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ॥੪॥
सो हम करह जु आपि कराए ॥४॥
हम वही कार्य करते हैं जो वह हमसे करवाता है॥ ४॥

ਜਿਨ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ॥
जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥
हे नानक ! जिनकी भक्ति मेरे प्रभु को लुभाती है,

ਤੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੫॥੧॥੭॥੧੬॥
ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥५॥१॥७॥१६॥
वे पुरुष अपना ध्यान राम नाम के साथ लगाकर रखते हैं॥ ५ ॥ १॥ ७ ॥ १६ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੧
गूजरी महला ५ चउपदे घरु १
गूजरी महला ५ चउपदे घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਾਹੇ ਰੇ ਮਨ ਚਿਤਵਹਿ ਉਦਮੁ ਜਾ ਆਹਰਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਪਰਿਆ ॥
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥
हे मन ! तू किसलिए सोचता है, जबकि समस्त सृष्टि के प्रबन्ध का उद्यम तो स्वयं अकालपुरुष कर रहा है।

ਸੈਲ ਪਥਰ ਮਹਿ ਜੰਤ ਉਪਾਏ ਤਾ ਕਾ ਰਿਜਕੁ ਆਗੈ ਕਰ�ि ਧਰਿਆ ॥੧॥
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥
चट्टानों एवं पत्थरों में जिन जीवों को निरंकार ने पैदा किया है, उनका भोजन भी उसने पहले ही तैयार करके रखा है॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਾਧਉ ਜੀ ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੇ ਸਿ ਤਰਿਆ ॥
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥
हे निरंकार ! जो भी संतों की संगति में जाकर बैठा है वह भव-सागर से पार उतर गया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸੂਕੇ ਕਾਸਟ ਹਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥
उसने गुरु की कृपा से परमपद (मोक्ष) प्राप्त किया है और उसका हृदय मानो यूं हो गया जैसे कोई सूखी लकड़ी हरी हो जाती है।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਨਨਿ ਪਿਤਾ ਲੋਕ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਕੀ ਧਰਿਆ ॥
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥
जीवन में माता, पिता, पुत्र, पत्नी व अन्य सम्बन्धीजन में से कोई भी किसी जगह आश्रय नहीं होता।

ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹੇ ਠਾਕੁਰੁ ਕਾਹੇ ਮਨ ਭਉ ਕਰਿਆ ॥੨॥
सिरि सिरि रिजकु स्मबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥
प्रत्येक जीव को सृष्टि में पैदा करके निरंकार स्वयं भोग पदार्थ पहुँचाता हे, फिर हे मन ! तू भय किस लिए करता है ॥ २॥

ਊਡੈ ਊਡਿ ਆਵੈ ਸੈ ਕੋਸਾ ਤਿਸੁ ਪਾਛੈ ਬਚਰੇ ਛਰਿਆ ॥
ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥
कूजों का समूह उड़ कर सैंकड़ों मील दूर चला आता हे और अपने बच्चों को वह पीछे (अपने घोंसले में ही) छोड़ आता है।

ਉਨ ਕਵਨੁ ਖਲਾਵੈ ਕਵਨੁ ਚੁਗਾਵੈ ਮਨ ਮਹਿ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਿਆ ॥੩॥
उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥
उनको पीछे कोन खाना खिलाता है, कौन खेल खिलाता है, अर्थात् उनका पोषण उनकी माता के बिना कौन करता है, (उत्तर में कहा) उनकी माता के हृदय में अपने बच्चों का स्मरण होता है, वही उनके पोषण का साधन बन जाता है ॥३॥

ਸਭ ਨਿਧਾਨ ਦਸ ਅਸਟ ਸਿਧਾਨ ਠਾਕੁਰ ਕਰ ਤਲ ਧਰਿਆ ॥
सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥
"(पदम्-शंखादि) समस्त नौ निधियों, (महापुराण श्री मद्भागवत में अंकित) अठ्ठारह सिद्धियाँ निरंकार ने अपनी हथेली पर रखी हुई हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਬਲਿ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਰਿਆ ॥੪॥੧॥
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥१॥
हे नानक ! ऐसे अकाल-पुरुष पर मैं सदा-सर्वदा बलिहार जाता हूँ, असीम निरंकार का कोई पारावार व अंत नहीं है ॥ ४ ॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਚਉਪਦੇ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ५ चउपदे घरु २
गूजरी महला ५ चउपदे घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਰਿਆਚਾਰ ਕਰਹਿ ਖਟੁ ਕਰਮਾ ਇਤੁ ਰਾਤੇ ਸੰਸਾਰੀ ॥
किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥
दुनिया के लोग जीवन में कर्मकाण्ड एवं षट्कर्म करते रहते हैं,

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਹਉਮੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੧॥
अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥१॥
लेकिन उनके अन्तर से अहंकार की मेल दूर नहीं होती। गुरु के बिना वे अपने जीवन की बाजी हार जाते हैं। १॥

ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥
हे मेरे ठाकुर ! कृपा करके मुझे बचा लो।

ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਸੇਵਕੁ ਹੋਰਿ ਸਗਲੇ ਬਿਉਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥१॥ रहाउ ॥
करोड़ों में से कोई विरला पुरुष ही प्रभु का सेवक है, शेष सभी सांसारिक व्यापारी ही हैं।॥ १ ॥ रहाउ॥

ਸਾਸਤ ਬੇਦ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਸਭਿ ਸੋਧੇ ਸਭ ਏਕਾ ਬਾਤ ਪੁਕਾਰੀ ॥
सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥
शास्त्र, वेद, स्मृतियाँ इत्यादि ग्रंथों का विश्लेषण किया है, वे सभी एक ही बात सत्य बताते हैं कि

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੁਕਤਿ ਨ ਕੋਊ ਪਾਵੈ ਮਨਿ ਵੇਖਹੁ ਕਰਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੨॥
बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥२॥
गुरु के बिना किसी को भी मोक्ष नहीं मिल सकता चाहे अपने मन में विचार करके देख लो ॥ २ ॥

ਅਠਸਠਿ ਮਜਨੁ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ਭ੍ਰਮਿ ਆਏ ਧਰ ਸਾਰੀ ॥
अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥
यदि कोई मनुष्य चाहे अड़सठ तीर्थों पर स्नान कर ले, चाहे सारी धरती पर भ्रमण कर ले तथा

ਅਨਿਕ ਸੋਚ ਕਰਹਿ ਦਿਨ ਰਾਤੀ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਅੰਧਿਆਰੀ ॥੩॥
अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥३॥
यदि वह दिन-रात अनेक शारीरिक पवित्रता के साधन कर ले परन्तु सच्चे गुरु के बिना मोह-माया का अन्धकार दूर नहीं होगा ॥ ३॥

ਧਾਵਤ ਧਾਵਤ ਸਭੁ ਜਗੁ ਧਾਇਓ ਅਬ ਆਏ ਹਰਿ ਦੁਆਰੀ ॥
धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी ॥
समूचे जगत में भटकते-भटकते अब हम हरि के द्वार आए हैं।

ਦੁਰਮਤਿ ਮੇਟਿ ਬੁਧਿ ਪਰਗਾਸੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਾਰੀ ॥੪॥੧॥੨॥
दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥४॥१॥२॥
प्रभु ने मेरी दुर्मति मिटाकर बुद्धि को उज्जवल कर दिया है। हे नानक ! गुरु के माध्यम से भगवान ने मुझे भवसागर से तार दिया है॥ ४॥ १॥ २॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਪ ਹਰਿ ਧਨੁ ਤਾਪ ਹਰਿ ਧਨੁ ਭੋਜਨੁ ਭਾਇਆ ॥
हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥
हरि का नाम धन ही मेरा जाप, मेरी तपस्या तथा मेरा मनपसंद भोजन है, यह नाम-धन मुझे बहुत भाया है।

ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਉ ਮਨ ਤੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥१॥
एक क्षण भर के लिए भी मैं परमात्मा को अपने मन से विस्मृत नहीं करता, जिसे मैंने साधुओं की संगति में रहकर पाया है॥ १॥

ਮਾਈ ਖਾਟਿ ਆਇਓ ਘਰਿ ਪੂਤਾ ॥
माई खाटि आइओ घरि पूता ॥
हे मेरी माता ! तेरा पुत्र नाम-धन का लाभ कमा कर घर आया है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਚਲਤੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਬੈਸੇ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜਾਗਤ ਸੂਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥१॥ रहाउ ॥
अब में चलते, बैठते, जागते एवं सोते समय भी हरि-नाम धन ही कमाता रहता हूँ॥१॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਧਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਲਾਇ ਧਿਆਨਾ ॥
हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥
हरि का नाम धन ही मेरा तीर्थ स्नान एवं ज्ञान है और हरि के साथ ही मैंने अपना ध्यान केन्द्रित किया हुआ है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਤੁਲਹਾ ਹਰਿ ਧਨੁ ਬੇੜੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਾਰਿ ਪਰਾਨਾ ॥੨॥
हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥२॥
हरि के नाम का धन मेरी तुलहा एवं नाव है और हरि-प्रभु ही मुझे संसार-सागर से पार करवाने हेतु जहाज है॥ २॥

ਹਰਿ ਧਨ ਮੇਰੀ ਚਿੰਤ ਵਿਸਾਰੀ ਹਰਿ ਧਨਿ ਲਾਹਿਆ ਧੋਖਾ ॥
हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥
हरि के नाम-धन द्वारा मेरी चिन्ता मिट गई है तथा हरि के नाम-धन द्वारा मेरा धोखा दूर हो गया है।

ਹਰਿ ਧਨ ਤੇ ਮੈ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਹਾਥਿ ਚਰਿਓ ਹਰਿ ਥੋਕਾ ॥੩॥
हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥३॥
हरि के नाम-धन से मुझे नवनिधियों प्राप्त हुई हैं और हरि-नाम-धन सार वस्तु मेरे हाथ लग गया है॥ ३॥

ਖਾਵਹੁ ਖਰਚਹੁ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਹਲਤ ਪਲਤ ਕੈ ਸੰਗੇ ॥
खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥
इस नाम रूपी धन को खाने एवं खर्च करने से भी यह कम नहीं होता तथा आगे लोक-परलोक में भी सदा साथ रहता है।

ਲਾਦਿ ਖਜਾਨਾ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਦੀਆ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰੰਗੇ ॥੪॥੨॥੩॥
लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥
इस खजाने को लाद कर गुरुदेव ने नानक को दिया है और उसका मन हरि के रंग में रंग गया है॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸਹਿ ਪਿਤਰੀ ਹੋਇ ਉਧਾਰੋ ॥
जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥
जिसका सिमरन करने से सभी पाप-विकार नाश हो जाते हैं और पूर्वजों-पितरों का भी उद्धार हो जाता है,

ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਸਦ ਹੀ ਜਾਪਹੁ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰੋ ॥੧॥
सो हरि हरि तुम्ह्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥
उस हरि-परमेश्वर का तू सदैव ही जाप कर, जिसका कोई अन्त (ओर-छोर) एवं पारावार नहीं ॥ १॥

ਪੂਤਾ ਮਾਤਾ ਕੀ ਆਸੀਸ ॥
पूता माता की आसीस ॥
हे पुत्र ! माता की तुझे यही आशीष है कि

ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਉ ਤੁਮ੍ਹ ਕਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਭਜਹੁ ਜਗਦੀਸ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥
एक क्षण भर के लिए भी तुझे भगवान विस्मृत न हो तथा तुम सदैव ही जगदीश का भजन करते रहो।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਤੁਮ੍ਹ ਕਉ ਹੋਇ ਦਇਆਲਾ ਸੰਤਸੰਗਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥
सतिगुरु जी तुझ पर दयालु रहें तथा संतों की संगति में तेरी प्रीति बनी रहे।

ਕਾਪੜੁ ਪਤਿ ਪਰਮੇਸਰੁ ਰਾਖੀ ਭੋਜਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਨੀਤਿ ॥੨॥
कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥
परमेश्वर का तेरी मान-प्रतिष्ठा को बचाना तेरा वस्त्र होवे तथा उसका भजन-कीर्तन करना तेरा प्रतिदिन का भोजन हो। ॥२ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਹੁ ਸਦਾ ਚਿਰੁ ਜੀਵਹੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਅਨਦ ਅਨੰਤਾ ॥
अम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥
सदैव ही प्रभु के नाम का अमृतपान करता रहे। ईश्वर करे तुम चिरंजीव रहो तथा हरि का सिमरन तुझे अनंत आनन्द प्रदान करे।

ਰੰਗ ਤਮਾਸਾ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ਕਬਹਿ ਨ ਬਿਆਪੈ ਚਿੰਤਾ ॥੩॥
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥
जीवन में सदा हर्षोल्लास बना रहे, सभी आशाएँ पूर्ण हों एवं कोई चिन्ता कभी तंग न करे ॥ ३ ॥

ਭਵਰੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹੋਵਉ ਹਰਿ ਚਰਣਾ ਹੋਹੁ ਕਉਲਾ ॥
भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥
तुम्हारा यह मन भंवरा होवे तथा हरि के सुन्दर चरण कमल के फूल हों।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਉਨ ਸੰਗਿ ਲਪਟਾਇਓ ਜਿਉ ਬੂੰਦਹਿ ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਮਉਲਾ ॥੪॥੩॥੪॥
नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥४॥३॥४॥
हे नानक ! तू हरि-चरणों से यूं लिपटा रह, जैसे चातक स्वाति-बूँद का पान करके खिल जाता है ॥४॥३॥४॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਮਤਾ ਕਰੈ ਪਛਮ ਕੈ ਤਾਈ ਪੂਰਬ ਹੀ ਲੈ ਜਾਤ ॥
मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥
इन्सान पश्चिम की तरफ जाने की सलाह बनाता है परन्तु भगवान उसे पूर्व की तरफ ले जाता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ਆਪਨ ਹਾਥਿ ਮਤਾਤ ॥੧॥
खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥१॥
एक क्षण भर में ही-भगवान रचना करने एवं विनाश करने में समर्थ है। सब फैसले परमात्मा के वश में हैं।

ਸਿਆਨਪ ਕਾਹੂ ਕਾਮਿ ਨ ਆਤ ॥
सिआनप काहू कामि न आत ॥
इन्सान की बुद्धिमत्ता किसी काम में नहीं आती।

ਜੋ ਅਨਰੂਪਿਓ ਠਾਕੁਰਿ ਮੇਰੈ ਹੋਇ ਰਹੀ ਉਹ ਬਾਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥१॥ रहाउ ॥
जो कुछ मेरा ठाकुर अनुरूप समझता है केवल वही बात हो रही है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੇਸੁ ਕਮਾਵਨ ਧਨ ਜੋਰਨ ਕੀ ਮਨਸਾ ਬੀਚੇ ਨਿਕਸੇ ਸਾਸ ॥
देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥
देश पर विजय प्राप्त करने तथा धन जोड़ने की इस इच्छा में ही मनुष्य के प्राण पखेरू हो जाते हैं।

ਲਸਕਰ ਨੇਬ ਖਵਾਸ ਸਭ ਤਿਆਗੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਊਠਿ ਸਿਧਾਸ ॥੨॥
लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥२॥
वह सेनाएँ, नायब, नौकर इत्यादि सभी को छोड़ देता है और उठकर यमपुरी को चला जाता है।॥ २॥

ਹੋਇ ਅਨੰਨਿ ਮਨਹਠ ਕੀ ਦ੍ਰਿੜਤਾ ਆਪਸ ਕਉ ਜਾਨਾਤ ॥
होइ अनंनि मनहठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात ॥
इन्सान अनन्य भाव होने पर मन की जिद के कारण अपने आत्माभिमान को जाहिर करता है

ਜੋ ਅਨਿੰਦੁ ਨਿੰਦੁ ਕਰਿ ਛੋਡਿਓ ਸੋਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਖਾਤ ॥੩॥
जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥३॥
जो अनिन्द्य वस्तु है, उसी की निन्दा करके त्याग देता है और विवश होकर बार-बार उसी को खाता है॥ ३॥

ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਕਾਟੀ ਫਾਸ ॥
सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥
जिस पर प्रभु सहज स्वभाव ही कृपालु हो जाता है, उस इन्सान के समस्त पाश कट जाते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ਗਿਰਸਤ ਉਦਾਸ ॥੪॥੪॥੫॥
कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥४॥४॥५॥
हे नानक ! चाहे गृहस्थी हो अथवा वैरागी जो इन्सान पूर्ण गुरु से मिलता है, वह परमेश्वर के दरबार में स्वीकृत हो जाता ॥४॥४॥५॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਜਪਿਓ ਤਿਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ॥
नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥
परमात्मा का नाम सुखों का भण्डार है। जिन्होंने भी नाम का जाप किया है, प्रभु ने उनके मोह-माया के बन्धन काट दिए हैं।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਾਇਆ ਬਿਖੁ ਮਮਤਾ ਇਹ ਬਿਆਧਿ ਤੇ ਹਾਟੇ ॥੧॥
काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥१॥
काम, क्रोध, विषैली माया तथा ममता इत्यादि रोगों से वे मुक्ति प्राप्त कर गए हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਜਸੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਗਾਇਓ ॥
हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥
जिसने भी सुसंगति में निलकर हरि का यश किया है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਭਇਓ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਪਾਇਅਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से उसका मन निर्मल हो गया है और उसने सर्व सुख पा लिए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕੀਓ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨੈ ਐਸੀ ਭਗਤਿ ਕਮਾਨੀ ॥
जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥
प्रभु जो कुछ भी करता है, वह उसे भला लगता है। ऐसी भक्ति उसने की है।

ਮਿਤ੍ਰ ਸਤ੍ਰੁ ਸਭ ਏਕ ਸਮਾਨੇ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਨੀਸਾਨੀ ॥੨॥

मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥२॥

मित्र एवं शत्रु सभी उसके लिए एक समान हैं और यही प्रभु के मिलन हेतु योग युक्ति की निशानी है॥२॥

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸ੍ਰਬ ਥਾਈ ਆਨ ਨ ਕਤਹੂੰ ਜਾਤਾ ॥

पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न कतहूं जाता ॥

वह जानता है कि प्रभु सर्वत्र मौजूद है, इसलिए वह कहीं और नहीं जाता।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਰੰਗਿ ਰਵਿਓ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥੩॥

घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥३॥

प्रभु प्रत्येक हृदय में समस्त स्थानों में समा रहा है। वह उसकी प्रीति में रमा हुआ उसके प्रेम से ही रंग गया है॥ ३॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਗੁਪਾਲਾ ਤਾ ਨਿਰਭੈ ਕੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥

भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥

जब परमात्मा कृपालु एवं दयालु हो गया, तो वह निर्भय प्रभु के मन्दिर में आ गया।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇਆ ॥੪॥੫॥੬॥
कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥४॥५॥६॥
हे नानक ! एक क्षण में ही उसके भीतर से दुःख-कलेश मिट गए और वह सहज ही सत्य में समा गया ॥ ४॥ ५ ॥ ६॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਜਿਸੁ ਮਾਨੁਖ ਪਹਿ ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਸੋ ਅਪਨੈ ਦੁਖਿ ਭਰਿਆ ॥
जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥
जिस मनुष्य के पास भी मैं (अपने दुःख की) विनती करता हूँ, वह पहले ही दुःखों से भरा मिलता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਿਨਿ ਰਿਦੈ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨਿ ਭਉ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ॥੧॥
पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥१॥
जिस मनुष्य ने अपने हृदय में परब्रह्म की आराधना की है, वही भवसागर से पार हुआ है॥ १॥

ਗੁਰ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨ ਬ੍ਰਿਥਾ ਦੁਖੁ ਕਾਟੈ ॥
गुर हरि बिनु को न ब्रिथा दुखु काटै ॥
गुरु-हरि के बिना दूसरा कोई भी व्यथा एवं दुःख को दूर नहीं कर सकता।

ਪ੍ਰਭੁ ਤਜਿ ਅਵਰ ਸੇਵਕੁ ਜੇ ਹੋਈ ਹੈ ਤਿਤੁ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਜਸੁ ਘਾਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मनुष्य प्रभु को छोड़कर किसी दूसरे का सेवक बन जाए तो उसकी मान-प्रतिष्ठा, महत्ता एवं यश कम हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਾਇਆ ਕੇ ਸਨਬੰਧ ਸੈਨ ਸਾਕ ਕਿਤ ਹੀ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ॥
माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥
सांसारिक संबंधी, रिश्तेदार एवं भाई-बन्धु किसी काम नहीं आते।

ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਨੀਚ ਕੁਲੁ ਊਚਾ ਤਿਸੁ ਸੰਗਿ ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥੨॥
हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥२॥
नीच कुल का हरि का दास इन सबसे उत्तम है, उसकी संगति में मनोवांछित फल पाया है॥ २ ॥

ਲਾਖ ਕੋਟਿ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਬਿੰਜਨ ਤਾ ਮਹਿ ਤ੍ਰਿਸਨ ਨ ਬੂਝੀ ॥
लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि त्रिसन न बूझी ॥
मनुष्य के पास विषय-विकारों के लाखों-करोड़ों ही व्यंजन हों परन्तु उनमें से उसकी तृष्णा निवृत्त नहीं होती।

ਸਿਮਰਤ ਨਾਮੁ ਕੋਟਿ ਉਜੀਆਰਾ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਸੂਝੀ ॥੩॥
सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥३॥
नाम-सिमरन करने से मेरे मन में प्रभु-ज्योति का इतना उजाला हो गया है जितना करोड़ों सूर्य का उजाला होता है एवं मुझे अगोचर वस्तु की सूझ हो गई है अर्थात् प्रभु-दर्शन हो गए हैं।॥ ३॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੈ ਦੁਆਰਿ ਆਇਆ ਭੈ ਭੰਜਨ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥
हे भयभंजन परमेश्वर ! मैं भटकता-भटकता तेरे द्वार पर आया हूँ।

ਸਾਧ ਕੇ ਚਰਨ ਧੂਰਿ ਜਨੁ ਬਾਛੈ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੬॥੭॥
साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥४॥६॥७॥
नानक का कथन है कि मैं साधुओं के चरणों की धूलि की ही कामना करता हूँ और मैंने यही सुख पाया है॥ ४॥ ६॥ ७॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦਾ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २
गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪ੍ਰਥਮੇ ਗਰਭ ਮਾਤਾ ਕੈ ਵਾਸਾ ਊਹਾ ਛੋਡਿ ਧਰਨਿ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥
प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥
सर्वप्रथम जीव ने माता के गर्भ में आकर निवास किया है, तदुपरांत उसे छोड़कर कर वह धरती में आया है।

ਚਿਤ੍ਰ ਸਾਲ ਸੁੰਦਰ ਬਾਗ ਮੰਦਰ ਸੰਗਿ ਨ ਕਛਹੂ ਜਾਇਆ ॥੧॥
चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥१॥
चित्रशाला, सुन्दर बाग एवं मन्दिर वह अन्तकाल कुछ भी साथ नहीं लेकर जाता॥ १॥

ਅਵਰ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਲੋਭ ਲਬੀ ॥
अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥
दूसरे सभी लोभ एवं लालच झूठे हैं।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਓ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਜੀਅ ਕਉ ਏਹਾ ਵਸਤੁ ਫਬੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने (मुझे) हरि का नाम प्रदान किया है यही एकमात्र वस्तु है जो (मेरी) आत्मा हेतु सुयोग्य है॥ १॥ रहाउ॥

ਇਸਟ ਮੀਤ ਬੰਧਪ ਸੁਤ ਭਾਈ ਸੰਗਿ ਬਨਿਤਾ ਰਚਿ ਹਸਿਆ ॥
इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥
जीव अपने इष्ट मित्र, संबंधी, पुत्र, भाई एवं पत्नी के साथ प्रेम लगाकर हँसता-खेलता है।

ਜਬ ਅੰਤੀ ਅਉਸਰੁ ਆਇ ਬਨਿਓ ਹੈ ਉਨ੍ ਪੇਖਤ ਹੀ ਕਾਲਿ ਗ੍ਰਸਿਆ ॥੨॥
जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥२॥
परन्तु जब अन्तिम समय आता है तो उनके देखते ही देखते मृत्यु उसे निगल लेती है॥ २॥

ਕਰਿ ਕਰਿ ਅਨਰਥ ਬਿਹਾਝੀ ਸੰਪੈ ਸੁਇਨਾ ਰੂਪਾ ਦਾਮਾ ॥
करि करि अनरथ बिहाझी स्मपै सुइना रूपा दामा ॥
जीव अनर्थ कर करके धन-संपति, सोना, चांदी एवं रुपए संचित करता है परन्तु

ਭਾੜੀ ਕਉ ਓਹੁ ਭਾੜਾ ਮਿਲਿਆ ਹੋਰੁ ਸਗਲ ਭਇਓ ਬਿਰਾਨਾ ॥੩॥
भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥३॥
भाड़े के टट्टू को तो केवल उसका भाड़ा (किराया) ही मिलता है, शेष सब कुछ दूसरों के पास चला जाता है॥ ३॥

ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਰਥ ਸੰਬਾਹੇ ਗਹੁ ਕਰਿ ਕੀਨੇ ਮੇਰੇ ॥
हैवर गैवर रथ स्मबाहे गहु करि कीने मेरे ॥
वह सुन्दर घोड़े, हाथी एवं रथ संग्रह करता है और पूरे ध्यान से इनको अपना बना लेता है।

ਜਬ ਤੇ ਹੋਈ ਲਾਂਮੀ ਧਾਈ ਚਲਹਿ ਨਾਹੀ ਇਕ ਪੈਰੇ ॥੪॥
जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥४॥
परन्तु जब वह लम्बी यात्रा पर चलता है अर्थात् देहांत होता है तो उसके साथ कोई भी एक पैर तक नहीं चलता अर्थात् कोई साथ नहीं जाता॥ ४॥

ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਸੁਖ ਰਾਜਾ ਨਾਮੁ ਕੁਟੰਬ ਸਹਾਈ ॥
नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुट्मब सहाई ॥
हरि का नाम जीव का सच्चा धन है, नाम ही सुख का राजा है और हरि का नाम ही कुंटुब एवं साथी है।

ਨਾਮੁ ਸੰਪਤਿ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਦੀਈ ਓਹ ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੫॥੧॥੮॥
नामु स्मपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥५॥१॥८॥
गुरु ने नानक को हरि नाम रूपी संपत्ति प्रदान की है, वह (नाम) न ही नाश होता है और न ही कहाँ आता एवं जाता है। ॥५॥ १ ॥ ८ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਤਿਪਦੇ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ५ तिपदे घरु २
गूजरी महला ५ तिपदे घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖ ਕੀਆ ਨਿਵਾਸਾ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਲਨਿ ਬੁਝਾਈ ॥
दुख बिनसे सुख कीआ निवासा त्रिसना जलनि बुझाई ॥
दु:ख नष्ट हो गए हैं, सर्व सुखों का निवास हो गया है तथा तृष्णा की जलन भी बुझ गई है,

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਬਿਨਸਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥੧॥
नामु निधानु सतिगुरू द्रिड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥१॥
क्योंकि प्रभु-नाम का खजाना सच्चे गुरु ने दृढ़ कर दिया है, जो न ही नाश होता है और न ही कहीं जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਜਪਿ ਮਾਇਆ ਬੰਧਨ ਤੂਟੇ ॥
हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥
हरि का जाप करने से माया के बन्धन टूट गए हैं।

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਛੂਟੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु एवं दयालु हो गया है एवं साधुओं की संगति में मिलकर बन्धनों से छूट गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਿ ਮਾਤਾ ॥
आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥
मैं आठ प्रहर हरि का गुणगान करता रहता हूँ एवं प्रेम-भक्ति द्वारा हरि रस में मस्त रहता हूँ।

ਹਰਖ ਸੋਗ ਦੁਹੁ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਲਾ ਕਰਣੈਹਾਰੁ ਪਛਾਤਾ ॥੨॥
हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥२॥
हर्ष एवं शोक दोनों में निर्लेप रहता हूँ तथा अपने रचयिता को पहचान लिया है॥ २॥

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨ ਹੀ ਰਖਿ ਲੀਆ ਸਗਲ ਜੁਗਤਿ ਬਣਿ ਆਈ ॥
जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥
मैं जिस प्रभु का सेवक बना था, उतने ही मेरी रक्षा की है और मेरी सभी युक्तियाँ सम्पन्न हो गई हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਦਇਆਲਾ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੩॥੧॥੯॥
कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥३॥१॥९॥
हे नानक ! उस दयालु प्रभु (की दयालता) का मूल्यांकन नहीं बताया जा सकता ॥३॥१॥९॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਪਦੇ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ५ दुपदे घरु २
गूजरी महला ५ दुपदे घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਲੀਏ ਕਰਿ ਅਪੁਨੇ ਸਗਲ ਕਰਤ ਨਮਸਕਾਰੋ ॥
पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥
ईश्वर ने पतितों को भी पवित्र-पावन करके अपना बना लिया है और सारी दुनिया उन्हें प्रणाम करती है।

ਬਰਨੁ ਜਾਤਿ ਕੋਊ ਪੂਛੈ ਨਾਹੀ ਬਾਛਹਿ ਚਰਨ ਰਵਾਰੋ ॥੧॥
बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥१॥
अब कोई भी उनके वर्ण एवं जाति के बारे में नहीं पूछता, लोग उनकी चरण-धूलि के अभिलाषी बने हुए हैं।॥ १॥

ਠਾਕੁਰ ਐਸੋ ਨਾਮੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੋ ॥
ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥
हे ठाकुर ! तेरे नाम का ऐसा तेज-प्रताप है कि

ਸਗਲ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕੋ ਧਨੀ ਕਹੀਜੈ ਜਨ ਕੋ ਅੰਗੁ ਨਿਰਾਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥१॥ रहाउ ॥
तू समूची सृष्टि का मालिक कहलवाता है तथा अपने भक्तजनों का निराला ही पक्ष करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਆਧਾਰੋ ॥
साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥
सत्संगति में नानक को बुद्धि प्राप्त हो गई है और हरि का भजन-कीर्तन करना उसका जीवन का आधार है।

ਨਾਮਦੇਉ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨੁ ਕਬੀਰ ਦਾਸਰੋ ਮੁਕਤਿ ਭਇਓ ਚੰਮਿਆਰੋ ॥੨॥੧॥੧੦॥
नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चमिआरो ॥२॥१॥१०॥
हरि-कीर्तन से ही नामदेव, त्रिलोचन, कबीरदास एवं रविदास चमार भी मुक्ति प्राप्त कर गए हैं। २॥ १॥ १० ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५

ਹੈ ਨਾਹੀ ਕੋਊ ਬੂਝਨਹਾਰੋ ਜਾਨੈ ਕਵਨੁ ਭਤਾ ॥
है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥
उस परमात्मा को बूझने वाला कोई भी नहीं, उसकी युक्तियों को कौन जान सकता है।

ਸਿਵ ਬਿਰੰਚਿ ਅਰੁ ਸਗਲ ਮੋਨਿ ਜਨ ਗਹਿ ਨ ਸਕਾਹਿ ਗਤਾ ॥੧॥
सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥१॥
शिव, ब्रह्मा तथा मुनिजन भी उसकी गति को समझ नहीं सकते॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਕਥਾ ॥
प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥
प्रभु की कथा अगम्य एवं अगाध है.

ਸੁਨੀਐ ਅਵਰ ਅਵਰ ਬਿਧਿ ਬੁਝੀਐ ਬਕਨ ਕਥਨ ਰਹਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥१॥ रहाउ ॥
यह सुनने में कुछ और है परन्तु समझने में कुछ और ही तरह की है। यह वर्णन एवं कथन करने से परे है॥ १॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਭਗਤਾ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ਆਪਨ ਸੰਗਿ ਰਤਾ ॥
आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥
परमात्मा स्वयं ही भक्त है और स्वयं ही स्वामी है। यह अपने आप से ही आसक्त रहता है।

ਨਾਨਕ ਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਹੈ ਪੇਖਿਓ ਜਤ੍ਰ ਕਤਾ ॥੨॥੨॥੧੧॥
नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥२॥२॥११॥
नानक का प्रभु सारे विश्व में बसा हुआ है और वह उसे सर्वत्र देखता है ॥२॥२॥११॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਮਤਾ ਮਸੂਰਤਿ ਅਵਰ ਸਿਆਨਪ ਜਨ ਕਉ ਕਛੂ ਨ ਆਇਓ ॥
मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥
प्रभु के सेवक को कोई सलाह-मशविरा एवं चतुराई कुछ भी नहीं आता।

ਜਹ ਜਹ ਅਉਸਰੁ ਆਇ ਬਨਿਓ ਹੈ ਤਹਾ ਤਹਾ ਹਰਿ ਧਿਆਇਓ ॥੧॥
जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥१॥
जहां-कहीं भी संकट का अवसर बनता है, वहाँ वह हरि का ध्यान करता है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੋ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਬਿਰਦਾਇਓ ॥
प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥
भक्त-वत्सल होना प्रभु का विरद् है।

ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ਬਾਰਿਕ ਕੀ ਨਿਆਈ ਜਨ ਕਉ ਲਾਡ ਲਡਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने सेवकों का बालक की तरह भरण-पोषण करता है और अपने बच्चों की तरह उन्हें लाड लडाता है। ॥ रहाउ ॥

ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਕਰਮ ਧਰਮ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਜਨਿ ਗਾਇਓ ॥
जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥
सेवक ने हरि-कीर्तन गाया है और हरि का कीर्तन ही उसके जप, तप, संयम एवं धर्म-कर्म हैं।

ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਨਾਨਕ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਅਭੈ ਦਾਨੁ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ॥੨॥੩॥੧੨॥
सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥२॥३॥१२॥
हे नानक ! सेवक अपने ठाकुर जी की शरण में पड़ा है और उसने उससे अभयदान का सुख पाया है॥ २॥ ३॥ १२॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਆਰਾਧਹੁ ਪਿਆਰੋ ਨਿਮਖ ਨ ਕੀਜੈ ਢੀਲਾ ॥
दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥
हे प्रिय भक्तजनो ! दिन-रात भगवान की आराधना करो तथा क्षण भर के लिए भी विलम्ब मत करो।

ਸੰਤ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਭਾਵਨੀ ਲਾਈਐ ਤਿਆਗਿ ਮਾਨੁ ਹਾਠੀਲਾ ॥੧॥
संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥१॥
अपने अभिमान एवं हठ को त्याग कर श्रद्धा से संतों की सेवा करो।॥ १॥

ਮੋਹਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਮਾਨ ਰਾਗੀਲਾ ॥
मोहनु प्रान मान रागीला ॥
मोहन प्रभु बड़ा रंगीला है जो मेरे प्राण एवं मान-सम्मान है।

ਬਾਸਿ ਰਹਿਓ ਹੀਅਰੇ ਕੈ ਸੰਗੇ ਪੇਖਿ ਮੋਹਿਓ ਮਨੁ ਲੀਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥१॥ रहाउ ॥
वह मेरे हृदय के साथ बसता है और उसकी लीला देखकर मेरा मन मुग्ध हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਮਨਿ ਹੋਤ ਅਨੰਦਾ ਉਤਰੈ ਮਨਹੁ ਜੰਗੀਲਾ ॥
जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥
जिस का सुमिरन करने से मन में आनंद होता है और मन (की जंग) मैल उतर जाती है,

ਮਿਲਬੇ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਉ ਨਾਨਕ ਪਰੈ ਪਰੀਲਾ ॥੨॥੪॥੧੩॥
मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥२॥४॥१३॥
ऐसे प्रभु के मिलन की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। हे नानक ! उसकी महिमा अनुमान से परे अनंत है॥ २॥ ४॥ १३॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਮੁਨਿ ਜੋਗੀ ਸਾਸਤ੍ਰਗਿ ਕਹਾਵਤ ਸਭ ਕੀਨੇ੍ ਬਸਿ ਅਪਨਹੀ ॥
मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥
जो स्वयं को मुनि, योगी एवं शास्त्रों के ज्ञाता कहलवाते हैं, माया ने उन सभी को अपने वश में किया हुआ है।

ਤੀਨਿ ਦੇਵ ਅਰੁ ਕੋੜਿ ਤੇਤੀਸਾ ਤਿਨ ਕੀ ਹੈਰਤਿ ਕਛੁ ਨ ਰਹੀ ॥੧॥
तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥१॥
माया की इतनी प्रबलता देखकर त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और तेतीस करोड़ देवी-देवताओं की आश्चर्य की कोई सीमा न रही।॥ १॥

ਬਲਵੰਤਿ ਬਿਆਪਿ ਰਹੀ ਸਭ ਮਹੀ ॥
बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥
यह बलवान माया सभी के भीतर वास कर रही है।

ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਨਸਿ ਕੋਊ ਮਰਮਾ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਲਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥१॥ रहाउ ॥
उसका मर्म (भेद) गुरु की कृपा से ही पाया जाता है, दूसरा कोई भी इसे नहीं जानता ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਤਿ ਜੀਤਿ ਜੀਤੇ ਸਭਿ ਥਾਨਾ ਸਗਲ ਭਵਨ ਲਪਟਹੀ ॥
जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥
यह प्रबल माया सदैव से सभी स्थान विजय करती आ रही है तथा वह समूचे जगत से लिपटी हुई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਾਧ ਤੇ ਭਾਗੀ ਹੋਇ ਚੇਰੀ ਚਰਨ ਗਹੀ ॥੨॥੫॥੧੪॥
कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥२॥५॥१४॥
हे नानक ! परन्तु वह प्रबल माया साधु के पास से दूर भाग गई है और दासी बनकर उसने साधु के चरण पकड़ लिए हैं।॥ २॥ ५॥ १४॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਦੁਇ ਕਰ ਜੋੜਿ ਕਰੀ ਬੇਨੰਤੀ ਠਾਕੁਰੁ ਅਪਨਾ ਧਿਆਇਆ ॥
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥
मैंने अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और अपने ठाकुर जी का ध्यान किया है।

ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਪਰਮੇਸਰਿ ਸਗਲਾ ਦੁਰਤੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥
हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥
परमेश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है तथा मेरे समस्त कष्ट मिटा दिए हैं।॥ १॥

ਠਾਕੁਰ ਹੋਏ ਆਪਿ ਦਇਆਲ ॥
ठाकुर होए आपि दइआल ॥
ठाकुर आप दयालु हुआ है।

ਭਈ ਕਲਿਆਣ ਆਨੰਦ ਰੂਪ ਹੁਈ ਹੈ ਉਬਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥
चारों ओर कल्याण एवं हर्षोल्लास हो गया है। उसने अपने बालकों (जीवों) का उद्धार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਮਿਲਿ ਵਰ ਨਾਰੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥
मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥
अपने वर (प्रभु-पति) से मिलकर नारी (जीव-स्त्री) मंगल गीत गा रही है और अपने ठाकुर का जय-जयकार कर रही है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਨਿ ਸਭ ਕਾ ਕੀਆ ਉਧਾਰੁ ॥੨॥੬॥੧੫॥
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥
हे नानक ! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने सबका उद्धार कर दिया है। २॥ ६ ॥ १५ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਤਿਨ ਕਾ ਬਲੁ ਹੈ ਥੋਰਾ ॥
मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥
इन्सान को अपने माता-पिता, भाई, पुत्र एवं संबंधियों का बल थोड़ा ही मिलता है।

ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਮਾਇਆ ਕੇ ਪੇਖੇ ਕਿਛੁ ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਭੋਰਾ ॥੧॥
अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥
मैंने माया के अनेक रंग देखे हैं परन्तु अल्पमात्र कुछ भी इन्सान के साथ नहीं जाता ॥ १॥

ਠਾਕੁਰ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਆਹਿ ਨ ਮੋਰਾ ॥
ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥
हे मेरे ठाकुर ! तुम्हारे बिना मेरा कोई भी नहीं है।

ਮੋਹਿ ਅਨਾਥ ਨਿਰਗੁਨ ਗੁਣੁ ਨਾਹੀ ਮੈ ਆਹਿਓ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰਾ ਧੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥१॥ रहाउ ॥
मैं गुणहीन अनाथ हूँ, मुझ में कोई गुण मौजूद नहीं और मुझे तुम्हारा ही सहारा चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਬਲਿ ਚਰਣ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰਾ ਜੋਰਾ ॥
बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥
मैं तेरे चरणों पर बार-बार बलिहारी एवं कुर्बान जाता हूँ। लोक-परलोक में तुम्हारा ही जोर है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਦਰਸੁ ਪਾਇਓ ਬਿਨਸਿਓ ਸਗਲ ਨਿਹੋਰਾ ॥੨॥੭॥੧੬॥
साधसंगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥२॥७॥१६॥
हे नानक ! सत्संगति में मैंने प्रभु के दर्शन कर लिए हैं तथा दूसरों का अनुग्रह खत्म हो गया है॥ २॥ ७ ॥ १६ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਆਲ ਜਾਲ ਭ੍ਰਮ ਮੋਹ ਤਜਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਸੇਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਈ ॥
आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥
संत घर के जाल, भ्रम एवं मोह से मुक्त करा देता है और जीव का प्रभु से प्रेम डाल देता है।

ਮਨ ਕਉ ਇਹ ਉਪਦੇਸੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ਸਹਜਿ ਸਹਜਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥੧॥
मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥१॥
वह मन को यह उपदेश दृढ़ करता है कि सहज-सहज प्रभु का गुणगान करते रहो॥ १॥

ਸਾਜਨ ਐਸੋ ਸੰਤੁ ਸਹਾਈ ॥
साजन ऐसो संतु सहाई ॥
हे साजन ! संत जी ऐसे सहायक हैं कि

ਜਿਸੁ ਭੇਟੇ ਤ੍ਰੁਟਹਿ ਮਾਇਆ ਬੰਧ ਬਿਸਰਿ ਨ ਕਬਹੂੰ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिनके दर्शन मात्र से ही माया के बन्धन कट जाते हैं और मनुष्य प्रभु को कदाचित विस्मृत नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਰਤ ਕਰਤ ਅਨਿਕ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਨੀਕੀ ਇਹ ਠਹਰਾਈ ॥
करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥
अनेक प्रकार के कर्म एवं विधियाँ करते हुए अंततः यही निष्कर्ष अच्छा लगा है कि

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਨਾਨਕ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਰਾਈ ॥੨॥੮॥੧੭॥
मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥२॥८॥१७॥
हे नानक ! जो मनुष्य साधु से मिलकर हरि का यशगान पकड़ता है, यह भयसागर से पार हो जाता है। २॥ ८ ॥ १७ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰਾ ਕੀਮਤਿ ਜਾਇ ਨ ਕਰੀ ॥
खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥
भगवान एक क्षण में ही पैदा करने तथा ध्वस्त (नाश) करने में सक्षम है। इसलिए उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਰਾਜਾ ਰੰਕੁ ਕਰੈ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਨੀਚਹ ਜੋਤਿ ਧਰੀ ॥੧॥
राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥१॥
एक क्षण में ही वह राजा को रंक बना देता है और नीच कहलवाने वालों के अन्तर में अपनी ज्योति प्रज्वलित कर देता है॥ १॥

ਧਿਆਈਐ ਅਪਨੋ ਸਦਾ ਹਰੀ ॥
धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥
सदैव ही अपने हरि का ध्यान करना चाहिए।

ਸੋਚ ਅੰਦੇਸਾ ਤਾ ਕਾ ਕਹਾ ਕਰੀਐ ਜਾ ਮਹਿ ਏਕ ਘਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥१॥ रहाउ ॥
जिस जीवन में इन्सान ने एक घड़ी भर अर्थात् थोड़ी देर के लिए ही रहना है, उस बारे चिंता एवं फिक्र क्यों किया जाए॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਟੇਕ ਪੂਰੇ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮਨ ਸਰਨਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੈ ਪਰੀ ॥
तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥
हे मेरे पूर्ण सतगुरु ! हमें तुम्हारी ही टेक है और मेरे मन ने तेरी शरण ली है।

ਅਚੇਤ ਇਆਨੇ ਬਾਰਿਕ ਨਾਨਕ ਹਮ ਤੁਮ ਰਾਖਹੁ ਧਾਰਿ ਕਰੀ ॥੨॥੯॥੧੮॥
अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥९॥१८॥
हे नानक ! हम ज्ञानहीन एवं नासमझ बालक हैं, अपना हाथ देकर आप हमारी रक्षा कीजिए॥ २॥ ६ ॥ १८ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਤੂੰ ਦਾਤਾ ਜੀਆ ਸਭਨਾ ਕਾ ਬਸਹੁ ਮੇਰੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥
हे परमात्मा ! तू सभी जीवों का दाता है, मेरे मन में भी आकर बस जाओ।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਰਿਦ ਮਾਹਿ ਸਮਾਏ ਤਹ ਭਰਮੁ ਅੰਧੇਰਾ ਨਾਹੀ ॥੧॥

चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥१॥

जिस हृदय में तेरे सुन्दर कमल-चरण बस जाते हैं, वहाँ कोई भ्रम एवं अज्ञानता का अन्धेरा नहीं रहता ॥ १॥

ਠਾਕੁਰ ਜਾ ਸਿਮਰਾ ਤੂੰ ਤਾਹੀ ॥

ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥

हे मेरे ठाकुर ! मैं जहाँ कहीं भी तुझे याद करता हूँ, वहाँ ही तुझे पाता हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਰਬ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥१॥ रहाउ ॥

हे समस्त जीवों के पालनहार प्रभु ! मुझ पर कृपा करो चूंकि मैं सदैव ही तुम्हारा स्तुतिगान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਉ ਤੁਮ ਹੀ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਆਹੀ ॥

सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥

हे प्रभु ! मैं श्वास-श्वास से तुम्हारा नाम-स्मरण करता हूँ तथा सदैव तेरे मिलन की अभिलाषा करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਟੇਕ ਭਈ ਕਰਤੇ ਕੀ ਹੋਰ ਆਸ ਬਿਡਾਣੀ ਲਾਹੀ ॥੨॥੧੦॥੧੯॥

नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥२॥१०॥१९॥

हे नानक ! मुझे केवल सृष्टिकर्ता प्रभु का ही सहारा है और मैंने अन्य समस्त पराई आशा त्याग दी है॥ २ ॥ १० ॥ १६ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪਨਾ ਦਰਸੁ ਦੀਜੈ ਜਸੁ ਗਾਵਉ ਨਿਸਿ ਅਰੁ ਭੋਰ ॥
करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥
हे परमेश्वर ! कृपा करके मुझे अपने दर्शन दीजिए, मैं दिन-रात तेरा ही यशोगान करता रहूँ।

ਕੇਸ ਸੰਗਿ ਦਾਸ ਪਗ ਝਾਰਉ ਇਹੈ ਮਨੋਰਥ ਮੋਰ ॥੧॥
केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥१॥
अपने केशों से मैं तेरे सेवकों के चरण साफ करूँ अर्थात् उनकी सेवा करता रहूँ, यही मेरे जीवन का मनोरथ है॥ १॥

ਠਾਕੁਰ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਬੀਆ ਨ ਹੋਰ ॥
ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥
हे ठाकुर ! तेरे बिना अन्य दूसरा कोई मेरा नहीं।

ਚਿਤਿ ਚਿਤਵਉ ਹਰਿ ਰਸਨ ਅਰਾਧਉ ਨਿਰਖਉ ਤੁਮਰੀ ਓਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥१॥ रहाउ ॥
हे हरि ! मैं अपने चित्त में तुझे ही याद करता हूँ एवं अपनी जिव्हा से तेरी ही आराधना करता हूँ तथा अपने नेत्रों से मैं तुझे ही देखता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਸਰਬ ਕੇ ਠਾਕੁਰ ਬਿਨਉ ਕਰਉ ਕਰ ਜੋਰਿ ॥
दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥
हे दयालु अकालपुरुष ! तुम सभी के ठाकुर हो और हाथ जोड़ कर मैं तेरे समक्ष विनती करता हूँ।

ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਤੁਮਰੋ ਉਧਰਸਿ ਆਖੀ ਫੋਰ ॥੨॥੧੧॥੨੦॥
नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥२॥११॥२०॥
तेरा दास नानक तेरे नाम का जाप करता रहे और पलक झपकने मात्र के समय में उसका उद्धार हो जाए॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਬ੍ਰਹਮ ਲੋਕ ਅਰੁ ਰੁਦ੍ਰ ਲੋਕ ਆਈ ਇੰਦ੍ਰ ਲੋਕ ਤੇ ਧਾਇ ॥
ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥
माया ब्रह्मलोक, रुद्रलोक और इन्द्रलोक को प्रभावित करती हुई (इहलोक में) दौड़ी आई है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਉ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵੈ ਪਾਇ ॥੧॥
साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥१॥
परन्तु यह साधु की संगति को स्पर्श तक नहीं कर सकती एवं साधुओं के चरणों को मल-मल कर भली भांति धोती है॥ १॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਆਇ ਪਰਿਓ ਸਰਨਾਇ ॥
अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥
अब मैं गुरु की शरण में आ गया हूँ।

ਗੁਹਜ ਪਾਵਕੋ ਬਹੁਤੁ ਪ੍ਰਜਾਰੈ ਮੋ ਕਉ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਓ ਹੈ ਬਤਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुहज पावको बहुतु प्रजारै मो कउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥१॥ रहाउ ॥
सतगुरु ने मुझे यह बता दिया है कि माया की इस गुप्त अग्नि ने अनेकों को बुरी तरह जला दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਅਰੁ ਜਖ੍ ਕਿੰਨਰ ਨਰ ਰਹੀ ਕੰਠਿ ਉਰਝਾਇ ॥
सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ ॥
यह प्रचंड माया सिद्ध, साधक, यक्ष, किन्नर तथा मनुष्यों के गले से लिपटकर उलझी हुई है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਅੰਗੁ ਕੀਆ ਪ੍ਰਭਿ ਕਰਤੈ ਜਾ ਕੈ ਕੋਟਿ ਐਸੀ ਦਾਸਾਇ ॥੨॥੧੨॥੨੧॥
जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥२॥१२॥२१॥
हे नानक ! उस जगत-रचयिता ने मेरा ही पक्ष लिया है, जिस प्रभु की करोड़ों ही ऐसी दासियाँ हैं।॥ २॥ १२॥ २१॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਅਪਜਸੁ ਮਿਟੈ ਹੋਵੈ ਜਗਿ ਕੀਰਤਿ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ ਪਾਈਐ ॥
अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥
भगवान का सिमरन करने से अपयश मिट जाता है, जगत में कीर्ति हो जाती है तथा सत्य के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त हो जाता है।

ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਨਾਸ ਹੋਇ ਖਿਨ ਮਹਿ ਸੁਖ ਅਨਦ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਈਐ ॥੧॥

जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥१॥

मृत्यु का भय क्षण में नाश हो जाता है और मनुष्य सुख एवं आनंद से सच्चे घर को जाता है।॥ १॥

ਜਾ ਤੇ ਘਾਲ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਈਐ ॥

जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥

इसलिए उसकी नाम-सिमरन की सेवा व्यर्थ नहीं जाती।

ਆਠ ਪਹਰ ਸਿਮਰਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਮਨਿ ਤਨਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥

आठों प्रहर अपने प्रभु का सुमिरन करो और अपने मन एवं तन से सदैव उसका ध्यान करो।॥ १॥ रहाउ॥

ਮੋਹਿ ਸਰਨਿ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਤੂੰ ਦੇਹਿ ਸੋਈ ਪ੍ਰਭ ਪਾਈਐ ॥

मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥

हे दीनों के दु:ख भंजक ! मैं तेरी शरण में आया हूँ और मैं केवल वही प्राप्त करता हूँ जो तू मुझे देता है।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਨਾਨਕ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਹਰਿ ਦਾਸਹ ਪੈਜ ਰਖਾਈਐ ॥੨॥੧੩॥੨੨॥

चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥२॥१३॥२२॥

तेरे चरण-कमल की प्रीति से नानक अनुरक्त हो गया है। हे हरि ! तू ही अपने सेवकों की लाज रखता है॥ २॥ १३॥ २२ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गूजरी महला ५ ॥

गूजरी महला ५ ॥

ਬਿਸ੍ਵੰਭਰ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥

बिस्वंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥

ईश्वर सब जीवों का दाता है और उसकी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं।

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨਿਫਲ ਨ ਹੋਵਤ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰੇ ਉਧਾਰ ॥੧॥

जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥१॥

उसकी सेवा-भक्ति कभी निष्फल नहीं होती और एक क्षण में ही वह जीव का उद्धार कर देता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਰਾਚੁ ॥
मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥
हे मन ! तू प्रभु के चरण-कमल के संग लीन रह।

ਸਗਲ ਜੀਅ ਜਾ ਕਉ ਆਰਾਧਹਿ ਤਾਹੂ ਕਉ ਤੂੰ ਜਾਚੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥१॥ रहाउ ॥
समस्त जीव उसकी ही आराधना करते हैं, तू उससे ही याचना कर॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਕਰਤੇ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥
नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥
हे सृष्टिकर्ता ! नानक तुम्हारी शरण में आया है। हे प्रभु ! इसलिए तू मेरे प्राणों का आधार है।

ਹੋਇ ਸਹਾਈ ਜਿਸੁ ਤੂੰ ਰਾਖਹਿ ਤਿਸੁ ਕਹਾ ਕਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥੨॥੧੪॥੨੩॥
होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥२॥१४॥२३॥
संसार उसका क्या बिगाड़ सकता है, जिसकी तू सहायक बन कर स्वयं रक्षा करता है ॥ २ ॥ १४॥ २३ ।।

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਜਨ ਕੀ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ਆਪ ॥
जन की पैज सवारी आप ॥
प्रभु ने स्वयं अपने सेवक की लाज रखी है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਗੁਰਿ ਅਵਖਧੁ ਉਤਰਿ ਗਇਓ ਸਭੁ ਤਾਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु ने हरि-नाम की औषधि प्रदान की है और सारा ताप दूर हो गया है॥ १॥

ਹਰਿਗੋਬਿੰਦੁ ਰਖਿਓ ਪਰਮੇਸਰਿ ਅਪੁਨੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥
परमेश्वर ने अपनी कृपा धारण करके हरिगोविन्द (छठी पातशाही) की रक्षा की है।

ਮਿਟੀ ਬਿਆਧਿ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸਦਾ ਬੀਚਾਰਿ ॥੧॥
मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥१॥
उसकी सारी व्याधि मिट गई है और सर्व सुख हो गया। हम सदैव हरि के गुणों का चिंतन करते रहते हैं।॥ १॥

ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਓ ਮੇਰੈ ਕਰਤੈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥
यह पूर्णगुरु की बड़ाई है कि मेरे सृजनहार प्रभु ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की है।

ਅਬਿਚਲ ਨੀਵ ਧਰੀ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਿਤ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥੨॥੧੫॥੨੪॥
अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥२॥१५॥२४॥
गुरु नानक देव ने धर्म की अटल नींव रखी है, जो नित्य ही प्रगति कर रहा है॥ २ ॥ १५ ॥ २४ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਕਬਹੂ ਹਰਿ ਸਿਉ ਚੀਤੁ ਨ ਲਾਇਓ ॥
कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥
हे मानव ! तूने कभी भी भगवान के साथ अपना चित्त नहीं लगाया।

ਧੰਧਾ ਕਰਤ ਬਿਹਾਨੀ ਅਉਧਹਿ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਨ ਗਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
दुनिया के कामकाज करते हुए धन की खातिर तेरा समूचा जीवन बीत गया है और कभी गुणों के भण्डार नाम का स्तुतिगान नहीं किया ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਉਡੀ ਕਉਡੀ ਜੋਰਤ ਕਪਟੇ ਅਨਿਕ ਜੁਗਤਿ ਕਰਿ ਧਾਇਓ ॥
कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥
तू जीवन में कपटता से कौड़ी-कौड़ी करके धन संचित करता है तथा धन के लिए अनेक युक्तियों का प्रयोग करता है।

ਬਿਸਰਤ ਪ੍ਰਭ ਕੇਤੇ ਦੁਖ ਗਨੀਅਹਿ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਖਾਇਓ ॥੧॥
बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥१॥
प्रभु का नाम विस्मृत करने से तुझे अनेकों ही दु:ख पीड़ित करते हैं जो गिने नहीं जा सकते और प्रबल महा मोहिनी ने तुझे निगल लिया है। १॥

ਕਰਹੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਗਨਹੁ ਨ ਮੋਹਿ ਕਮਾਇਓ ॥
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥
हे स्वामी ! अनुग्रह करो और मेरे कर्मों को मत गिन।

ਗੋਬਿੰਦ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਰਣਾਇਓ ॥੨॥੧੬॥੨੫॥
गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥२॥१६॥२५॥
हे गोविन्द ! तू बड़ा दयालु, कृपालु एवं सुखों का सागर है। नानक की यही प्रार्थना है कि हे हरि ! मैं तेरी शरण में आया हूँ ॥२॥१६॥२५॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਰਾਮ ਰਵੰਤ ॥
रसना राम राम रवंत ॥
हे भाई ! अपनी रसना से राम-राम ही जपो।

ਛੋਡਿ ਆਨ ਬਿਉਹਾਰ ਮਿਥਿਆ ਭਜੁ ਸਦਾ ਭਗਵੰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥१॥ रहाउ ॥
तू अन्य मिथ्या व्यवसाय छोड़कर सदा ही भगवान का भजन कर ॥१॥ रहाउ ॥

ਨਾਮੁ ਏਕੁ ਅਧਾਰੁ ਭਗਤਾ ਈਤ ਆਗੈ ਟੇਕ ॥
नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥
एक ईश्वर का नाम उसके भक्तों के जीवन का आधार है और इहलोक एवं परलोक में यही उनका सहारा है।

करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥
करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥
गोविन्द ने कृपा करके गुरु-ज्ञान एवं विवेक-बुद्धि प्रदान की है ॥१॥

करण कारण समरथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥
करण कारण सम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥
सब कुछ करने कराने में समर्थ श्रीधर प्रभु की ही मैंने शरण ली है।

मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥
मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥
मुक्ति एवं युक्ति साधुओं की चरण-धूलि में है और नानक को हरि की यह निधि प्राप्त हुई है ॥२॥१७॥२६॥

गुजरी महला ५ घरु ४ चउपदे
गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे
गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥
छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥
अपनी समस्त चतुराइयाँ छोड़ कर साधुओं की शरण में आओ और

पारब्रहम परमेसरो प्रभु के गुण गाउ ॥१॥
पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥१॥
ब्रहा परमेश्वर प्रभु का गुणगान करो ॥१॥

रे चित चरण कमल अराधि ॥
रे चित चरण कमल अराधि ॥
हे मेरे मन ! भगवान के चरण-कमल की आराधना कर।

ਸਰਬ ਸੁਖ ਕਲਿਆਣ ਪਾਵਹਿ ਮਿਟੈ ਸਗਲ ਉਪਾਧਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥१॥ रहाउ ॥

आराधना करने से तुझे सर्व सुख एवं कल्याण की प्राप्ति होगी और तमाम दुःख-क्लेश मिट जाएँगे ॥१॥ रहाउ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਮੀਤ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥

मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥

परमात्मा के बिना यह माता-पिता, पुत्र, मित्र एवं भाई-कोई भी तेरा सहायक नहीं है।

ਈਤ ਊਤ ਜੀਅ ਨਾਲਿ ਸੰਗੀ ਸਰਬ ਰਵਿਆ ਸੋਇ ॥੨॥

ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥२॥

जो ईश्वर सर्वव्यापक है, वही इहलोक एवं परलोक में आत्मा का साथी है ॥२॥

ਕੋਟਿ ਜਤਨ ਉਪਾਵ ਮਿਥਿਆ ਕਛੁ ਨ ਆਵੈ ਕਾਮਿ ॥

कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥

करोड़ों ही यत्न एवं उपाय निष्फल हैं और किसी काम नहीं आते।

ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਨਿਰਮਲਾ ਗਤਿ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਨਾਮਿ ॥੩॥

सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥३॥

लेकिन साधुओं की शरण में आने से प्राणी निर्मल हो जाता है और प्रभु के नाम द्वारा उसकी गति हो जाती है ॥३॥

ਅਗਮ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭੂ ਊਚਾ ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਜੋਗੁ ॥

अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥

प्रभु अगम्य, दयालु एवं सर्वोपरि है, वह साधुओं को शरण देने में समर्थ है।

ਤਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸੁ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ॥੪॥੧॥੨੭॥

तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥४॥१॥२७॥

हे नानक ! केवल उसे ही ईश्वर की प्राप्ति होती है, जिसके लिए जन्म से पूर्व ही उसका संयोग लिखा होता है ॥४॥१॥२७॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गूजरी महला ५ ॥

गूजरी महला ५ ॥

ਆਪਨਾ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦ ਹੀ ਰਮਹੁ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ॥

आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥

अपने गुरुदेव की सदा ही सेवा करो तथा गोबिन्द का गुणानुवाद करते रहो।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਅਰਾਧਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਹਿ ਜਾਇ ਮਨ ਕੀ ਚਿੰਦ ॥੧॥

सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥१॥

श्वास-श्वास से भगवान की आराधना करने से मन की चिंता दूर हो जाती है।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਾਪਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਉ ॥

मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥

हे मेरे मन ! प्रभु के नाम का जाप कर;

ਸੂਖ ਸਹਜ ਅਨੰਦ ਪਾਵਹਿ ਮਿਲੀ ਨਿਰਮਲ ਥਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥१॥ रहाउ ॥

इससे तुझे सहज सुख एवं आनंद की उपलब्धि होगी और निर्मल स्थान मिल जाएगा।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਉਧਾਰਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਆਠ ਪਹਰ ਆਰਾਧਿ ॥

साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥

साधु की संगति में रहकर अपने इस मन का उद्धार कर और आठ प्रहर परमेश्वर की आराधना कर।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਬਿਨਸੈ ਮਿਟੈ ਸਗਲ ਉਪਾਧਿ ॥੨॥

कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥२॥

तेरा काम, क्रोध एवं अहंकार नष्ट हो जाएँगे और तमाम रोग मिट जाएँगे ॥२॥

ਅਟਲ ਅਛੇਦ ਅਭੇਦ ਸੁਆਮੀ ਸਰਣਿ ਤਾ ਕੀ ਆਉ ॥

अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥

हे मन ! तुम उस स्वामी की शरण में आओ, जो अटल, अछेद एवं अभेद है।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਅਰਾਧਿ ਹਿਰਦੈ ਏਕ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਉ ॥੩॥

चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥३॥

उसके चरण-कमल को अपने हृदय में आराधना करो और एक ईश्वर से ही ध्यान लगाओ ॥३ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਪ੍ਰਭਿ ਦਇਆ ਧਾਰੀ ਬਖਸਿ ਲੀਨੇ ਆਪਿ ॥

पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥

परब्रह्म-प्रभु ने दया करके स्वयं ही मुझे क्षमा कर दिया है।

ਸਰਬ ਸੁਖ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਿ ॥੪॥੨॥੨੮॥

सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥४॥२॥२८॥

हे नानक ! परमात्मा ने सर्व सुखों का भण्डार अपना हरि-नाम मुझे दिया है और तू भी उस प्रभु का जाप कर ॥ ४॥ २॥ २८ ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਇਆ ਗਈ ਸੰਕਾ ਤੂਟਿ ॥
गुर प्रसादी प्रभु धिआइआ गई संका तूटि ॥
गुरु की कृपा से प्रभु का ध्यान करने से मेरी शंका मिट गई है।

ਦੁਖ ਅਨੇਰਾ ਭੈ ਬਿਨਾਸੇ ਪਾਪ ਗਏ ਨਿਖੂਟਿ ॥੧॥
दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥१॥
मेरे दु:ख, अज्ञानता का अंधेरा एवं भय विनष्ट हो गए हैं और मेरे पाप भी नाश हो गए हैं। १ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕੀ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥
मेरे मन में हरि-नाम की प्रीति लगी हुई है।

ਮਿਲਿ ਸਾਧ ਬਚਨ ਗੋਬਿੰਦ ਧਿਆਏ ਮਹਾ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥
साधुओं को मिलकर उनके उपदेश से मैं गोविंद का ध्यान करता रहता हूँ, यही मेरी जीवन की निर्मल रीति हो गई है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਅਨੇਕ ਕਰਣੀ ਸਫਲ ਸਿਮਰਤ ਨਾਮ ॥
जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥
नाम-सिमरन से जन्म सफल हो जाता है और यह कर्म ही अनेक प्रकार के जप एवं तपस्या है।

ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਆਪਿ ਰਾਖੇ ਭਏ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੨॥
करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥२॥
प्रभु ने स्वयं ही अनुग्रह करके मेरी रक्षा की है और मेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।॥ २॥

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨ ਬਿਸਰੁ ਕਬਹੂੰ ਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਸਮਰਥ ॥
सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥
मैं श्वास-श्वास से समर्थ ब्रह्म का सिमरन करता रहूँ और उसे कभी भी विस्मृत न करूँ।

ਗੁਣ ਅਨਿਕ ਰਸਨਾ ਕਿਆ ਬਖਾਨੈ ਅਗਨਤ ਸਦਾ ਅਕਥ ॥੩॥
गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥३॥
उस प्रभु के अनंत गुण हैं और रसना किस प्रकार उनका वर्णन कर सकती है? उसके गुण बेशुमार एवं सदा अकथनीय हैं।॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਿ ਤਾਰਣ ਦਇਆਲ ਕਿਰਪਾ ਕਰਣ ॥
दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥
हे प्रभु ! तू गरीबों के दर्द दूर करने वाला, मुक्तिदाता, दयालु, एवं कृपा करने वाला है।

ਅਟਲ ਪਦਵੀ ਨਾਮ ਸਿਮਰਣ ਦ੍ਰਿੜੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਰਣ ॥੪॥੩॥੨੯॥
अटल पदवी नाम सिमरण द्रिड़ु नानक हरि हरि सरण ॥४॥३॥२९॥
नाम-सिमरन करने से अटल पदवी प्राप्त हो जाती है। हे नानक ! हरि-परमेश्वर की शरण दृढ़ करो॥४॥३॥२९॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
गूजरी महला ५ ॥
गूजरी महला ५ ॥

ਅਹੰਬੁਧਿ ਬਹੁ ਸਘਨ ਮਾਇਆ ਮਹਾ ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ॥
अह्मबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥
अहंबुद्धि एवं माया से सघन प्रेम महा दीर्घ रोग है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਉਖਧੁ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਨੋ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਜੋਗੁ ॥੧॥
हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥१॥
इस रोग की औषधि हरि-नाम है। करने एवं करवाने में समर्थ हरि-नाम गुरु ने मुझे दिया है॥ १॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਾਛੀਐ ਜਨ ਧੂਰਿ ॥
मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥
अपने मन-तन से हमें संतों की चरण-धूलि की अभिलाषा करनी चाहिए,

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਲਹਹਿ ਪਾਤਿਕ ਗੋਬਿੰਦ ਲੋਚਾ ਪੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥१॥ रहाउ ॥
उससे करोड़ों जन्मों के पाप मिट जाते हैं। हे गोविन्द ! मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए॥ १॥ रहाउ॥

ਆਦਿ ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਆਸਾ ਕੂਕਰੀ ਬਿਕਰਾਲ ॥
आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥
आशा रूपी विकराल कुतिया जीवन के आदि, मध्य एवं अन्तिम समय तक अर्थात् बचपन, जबानी एवं बुढ़ापे तक इन्सान के साथ लगी रहती है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਕੀਰਤਨ ਗੋਬਿੰਦ ਰਮਣੰ ਕਾਟੀਐ ਜਮ ਜਾਲ ॥੨॥
गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥२॥
गुरु के ज्ञान द्वारा प्रभु का कीर्ति-गान करने से मृत्यु का जाल कट जाता है॥ २॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮੋਹ ਮੂਠੇ ਸਦਾ ਆਵਾ ਗਵਣ ॥
काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥
जिस प्राणी को काम, क्रोध, लोभ एवं मोह ने छल लिया है, वह सदा जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਗੁਪਾਲ ਸਿਮਰਣ ਮਿਟਤ ਜੋਨੀ ਭਵਣ ॥੩॥
प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥३॥
प्रभु की प्रेम-भक्ति एवं उसके सुमिरन से मनुष्य का योनियों का चक्र मिट जाता है॥ ३॥

ਮਿਤ੍ਰ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਸੁਰ ਰਿਦ ਤੀਨਿ ਤਾਪ ਜਲੰਤ ॥
मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलंत ॥
मानव के मित्र, पुत्र, पत्नी एवं शुभचिंतक तीन तापों (आधि, व्याधि एवं उपाधि) में जल रहे हैं।

ਜਪਿ ਰਾਮ ਰਾਮਾ ਦੁਖ ਨਿਵਾਰੇ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਜਨ ਸੰਤ ॥੪॥
जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥४॥
जो व्यक्ति हरि के भक्तजनों एवं संतजनों से मिल जाते हैं, वे राम नाम जपकर अपने दुःख दूर कर लेते हैं।॥ ४॥

ਸਰਬ ਬਿਧਿ ਭ੍ਰਮਤੇ ਪੁਕਾਰਹਿ ਕਤਹਿ ਨਾਹੀ ਛੋਟਿ ॥
सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥
लोग सब विधियों द्वारा हर तरफ भटकते रहते हैं और दुखी होकर विलाप करते हैं लेकिन कहीं भी उनका छुटकारा नहीं होता।

ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰਣ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਦ੍ਰਿੜੁ ਗਹੀ ਨਾਨਕ ਓਟ ॥੫॥੪॥੩੦॥
हरि चरण सरण अपार प्रभ के द्रिड़ु गही नानक ओट ॥५॥४॥३०॥
हे नानक ! मैंने हरि-चरणों की शरण ली है और अपार प्रभु की ओट भली भांति पकड़ ली है॥ ५॥ ४॥ ३० ॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪ ਦੁਪਦੇ
गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे
गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਰਾਧਿ ਸ੍ਰੀਧਰ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਜੋਗੁ ॥

आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥

भगवान की आराधना करो, उसके दर्शन जीवन को सफल कर देते हैं, वह करने-कराने में सम्पूर्ण समर्थ है।

ਗੁਣ ਰਮਣ ਸ੍ਰਵਣ ਅਪਾਰ ਮਹਿਮਾ ਫਿਰਿ ਨ ਹੋਤ ਬਿਓਗੁ ॥੧॥

गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥१॥

उसका गुणानुवाद करने एवं अपार महिमा श्रवण करने से फिर कभी वियोग नहीं होता। १॥

ਮਨ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਉਪਾਸ ॥

मन चरणारबिंद उपास ॥

हे मन ! ईश्वर के 'चरणारविंद की उपासना करो।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੰਤ ਸਿਮਰਣਿ ਕਾਟਿ ਜਮਦੂਤ ਫਾਸ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥१॥ रहाउ ॥

उसके सिमरन से तमाम दुःख-क्लेश मिट जाते हैं और यमदूत के बन्धन कट जाते हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਤ੍ਰੁ ਦਹਨ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਹਨ ਅਵਰ ਕਛੁ ਨ ਉਪਾਉ ॥

सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥

हरि-नाम का जाप ही शत्रु के दहन हेतु एक साधन है तथा दूसरा कोई उपाय नहीं।

ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਮੇਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਸੁਆਉ ॥੨॥੧॥੩੧॥

करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥२॥१॥३१॥

नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे प्रभु ! मुझ पर अनुग्रह करो चूंकि तेरे नाम का स्वाद प्राप्त हो सके। ॥२॥१॥३१॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

गूजरी महला ५ ॥

गूजरी महला ५ ॥

ਤੂੰ ਸਮਰਥੁ ਸਰਨਿ ਕੋ ਦਾਤਾ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਸੁਖ ਰਾਇ ॥

तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥

हे दाता ! तू सर्व कला समर्थ है, अपने भक्तों को शरण देने वाला है एवं दुःखों का नाश करने वाला सुखों का राजा है।

ਜਾਹਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਭੈ ਭਰਮਾ ਨਿਰਮਲ ਗੁਣ ਪ੍ਰਭ ਗਾਇ ॥੧॥

जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥१॥

प्रभु का निर्मल गुणानुवाद करने से दुःख क्लेश दूर हो जाते हैं और भय-भ्रम मिट जाते हैं।॥ १॥

ਗੋਵਿੰਦ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਠਾਉ ॥

गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥

हे गोविन्द ! तेरे अलावा मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਜਪੀ ਤੁਮਾਰਾ ਨਾਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥

करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥

हे परब्रह्म स्वामी ! मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि तुम्हारे नाम का जाप करता रहूँ॥ रहाउ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਲਗੇ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥

सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥

सतिगुरु की सेवा से मैं हरि के चरणों में लग गया हूँ और अहोभाग्य से प्रभु से लगन लग गई है।

ਕਵਲ ਪ੍ਰਗਾਸ ਭਏ ਸਾਧਸੰਗੇ ਦੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਤਿਆਗੀ ॥੨॥
कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥२॥
साधु की संगति करने से हृदय कमल खिल गया है और खोटी बुद्धि त्याग दी है॥ २॥

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਿਮਰੈ ਦੀਨ ਦੈਆਲਾ ॥
आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥
जो प्राणी आठों प्रहर हरि का गुणगान करता है और दीनदयालु का सिमरन करता है तो

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸੰਗਤਿ ਸਭ ਉਧਰੈ ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਜੰਜਾਲਾ ॥੩॥
आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥३॥
वह स्वयं भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है और संगति में आने वालों का भी उद्धार कर देता है तथा उनके समस्त बंधन कट जाते हैं। ३॥

ਚਰਣ ਅਧਾਰੁ ਤੇਰਾ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਥਿ ॥
चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥
हे प्रभु स्वामी ! तेरे चरणों का ही मुझे आधार है। तू ताने-बाने की भाँति लोक-परलोक में सहायक है।

ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੀ ਦੇ ਰਾਖਿਓ ਹਰਿ ਹਾਥ ॥੪॥੨॥੩੨॥
सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥४॥२॥३२॥
हे प्रभु ! नानक ने तेरी शरण ली है, अपना हाथ देकर हरि ने उसे बचा लिया है॥ ४॥ २॥ ३२॥

ਗੂਜਰੀ ਅਸਟਪਦੀਆ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧
गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १
गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਏਕ ਨਗਰੀ ਪੰਚ ਚੋਰ ਬਸੀਅਲੇ ਬਰਜਤ ਚੋਰੀ ਧਾਵੈ ॥
एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥
शरीर रूपी एक नगरी में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पाँच चोर निवास करते हैं। वर्जित करने पर भी वे शुभ गुणों को चोरी करने के लिए दौड़ते रहते हैं।

ਤ੍ਰਿਹਦਸ ਮਾਲ ਰਖੈ ਜੋ ਨਾਨਕ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਸੋ ਪਾਵੈ ॥੧॥
त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥१॥
हे नानक ! जो प्राणी तीन गुणों एवं दस इन्द्रियों से अपने आत्मिक गुणों का सामान बचाकर रखता है, वह मोक्ष पा लेता है॥ १॥

चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥
चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥
हे भाई ! वासुदेव को हमेशा याद करो।

रामु रिदै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥
रामु रिदै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥
राम को हृदय में बसाना ही जपमाला है॥ १॥ रहाउ॥

उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥
उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥
जिसकी जड़ें ऊपर को हैं तथा शाखाएँ नीचे लटकती हैं और उसके पते चार वेद जुड़े हुए हैं,

सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥२॥
सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥२॥
हे नानक ! जो जीव परब्रह्म की वृति में सावधान रहता है, वह सहज ही परब्रह्म रूपी पेड़ के पास पहुँच जाता है।॥ २॥

पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥
पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥
भगवान रूपी पारिजात वृक्ष मेरे घर के आंगन में है तथा ज्ञान रूप इसके पुष्प, पते एवं टहनियों हैं।

सरब जोति निरंजन संभु छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥
सरब जोति निरंजन स्मभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥
हे भाई ! उस स्वयंभू निरंजन परमात्मा की ज्योति सब में समाई हुई है, अतः दुनिया के जंजाल छोड़ दो॥ ३॥

सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥
सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥
हे शिक्षा के अभिलाषी ! सुनो, नानक विनती करता है कि यह सांसारिक माया-जाल त्याग दो ।

ਮਨਿ ਬੀਚਾਰਿ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨ ਕਾਲਾ ॥੪॥

मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥४॥

अपने मन में विचार कर ले कि एक ईश्वर से ध्यान लगाने से बार-बार के जन्म-मरण के चक्र में नहीं आना पड़ेगा ॥ ४॥

ਸੋ ਗੁਰੂ ਸੋ ਸਿਖੁ ਕਥੀਅਲੇ ਸੋ ਵੈਦੁ ਜਿ ਜਾਣੈ ਰੋਗੀ ॥

सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥

वही गुरु कहलवाता है, वही शिष्य कहलवाता है और वही वैद्य है जो रोगी के रोग को जानकर उसका उपचार कर सके।

ਤਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਕੰਮੁ ਨ ਧੰਧਾ ਨਾਹੀ ਧੰਧੈ ਗਿਰਹੀ ਜੋਗੀ ॥੫॥

तिसु कारणि कमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥५॥

वह सांसारिक काम-धंधे में लिप्त नहीं होता और गृहस्थी में ही कर्म करता हुआ प्रभु से जुड़ा रहता है॥ ५॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ਤਜੀਅਲੇ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਤਿਸ ਮਾਇਆ ॥

कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥

वह काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह एवं माया को त्याग देता है।

ਮਨਿ ਤਤੁ ਅਵਿਗਤੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ॥੬॥

मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥६॥

अपने मन में वह सत्यस्वरूप एवं अविगत प्रभु का ध्यान करता है और गुरु की कृपा से उसे प्राप्त कर लेता है॥ ६ ॥

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਸਭ ਦਾਤਿ ਕਥੀਅਲੇ ਸੇਤ ਬਰਨ ਸਭਿ ਦ੍ਰੁਤਾ ॥

गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि द्रुता ॥

ज्ञान-ध्यान समस्त देन ईश्वर द्वारा उसे मिली कही जाती है। सभी कामादिक विकार उसके समक्ष सतोगुणी हो जाते हैं।

ਬ੍ਰਹਮ ਕਮਲ ਮਧੁ ਤਾਸੁ ਰਸਾਦੰ ਜਾਗਤ ਨਾਹੀ ਸੂਤਾ ॥੭॥

ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥७॥

वह ब्रह्म रूपी कमल के शहद का पान करता है और सदैव जाग्रत रहता है तथा माया की निद्रा का शिकार नहीं होता। ७॥

ਮਹਾ ਗੰਭੀਰ ਪਤ੍ਰ ਪਾਤਾਲਾ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਜੁਆਇਆ ॥

महा ग्मभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥

ब्रह्म रूपी कमल महा गंभीर है तथा इसके पत्ते पाताल हैं। हे नानक ! वह सारी सृष्टि से जुड़ा हुआ है।

ਉਪਦੇਸ ਗੁਰੂ ਮਮ ਪੁਨਹਿ ਨ ਗਰਭੰ ਬਿਖੁ ਤਜਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆਇਆ ॥੮॥੧॥
उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अम्रितु पीआइआ ॥८॥१॥
गुरु के उपदेश के फलस्वरूप मैं पुनः गर्भ में प्रवेश नहीं करूँगा, क्योंकि मैंने सांसारिक विष को त्याग कर नामामृत का पान किया है॥ ८ ॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गूजरी महला १ ॥
गूजरी महला १ ॥

ਕਵਨ ਕਵਨ ਜਾਚਹਿ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ਤਾ ਕੇ ਅੰਤ ਨ ਪਰਹਿ ਸੁਮਾਰ ॥
कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥
उस दाता प्रभु के समक्ष कौन-कौन मांगते हैं ? उनका कोई अंत नहीं एवं उनकी गिनती नहीं की जा सकती।

ਜੈਸੀ ਭੂਖ ਹੋਇ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਤੂੰ ਸਮਰਥੁ ਸਚੁ ਦੇਵਣਹਾਰ ॥੧॥
जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥१॥
जैसी लालसा किसी के हृदय में होती है, हे सत्यस्वरूप प्रभु ! तू वैसे ही देने में समर्थ है॥ १॥

ਐ ਜੀ ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚੁ ਅਧਾਰ ॥
ऐ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥
हे प्रभु जी ! तेरे सत्यनाम का आधार ही मेरा जप, तपस्या एवं संयम है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे अपना हरि-हरि नाम प्रदान करो चूंकि मैं सुख प्राप्त कर लूं। तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੁੰਨ ਸਮਾਧਿ ਰਹਹਿ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ਏਕਾ ਏਕੀ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰ ॥
सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥
तू शून्य समाधि लगाकर अपनी वृति में लीन रहता था।

ਜਲੁ ਥਲੁ ਧਰਣਿ ਗਗਨੁ ਤਹ ਨਾਹੀ ਆਪੇ ਆਪੁ ਕੀਆ ਕਰਤਾਰ ॥੨॥
जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥२॥
जब करतार ने खुद ही अपने स्वरूप की रचना की थी तो तब न जल था, न थल था, न धरती थी और न ही गगन था॥ २ ॥

ਨਾ ਤਦਿ ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਨ ਛਾਇਆ ਨਾ ਸੂਰਜ ਚੰਦ ਨ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥

ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥

तब न माया की मस्ती, न ही अज्ञानता की छाया, न सूर्य और न ही चन्द्रमा था और तब परमात्मा की अपार ज्योति ही थी।

ਸਰਬ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਲੋਚਨ ਅਭ ਅੰਤਰਿ ਏਕਾ ਨਦਰਿ ਸੁ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸਾਰ ॥੩॥

सरब द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥३॥

सबको देखने वाली आंखें परमात्मा के हृदय में ही हैं। वह अपनी एक कृपा-दृष्टि से ही पाताल, पृथ्वी एवं आकाश-तीनों लोकों की संभाल करता है॥ ३॥

ਪਵਣੁ ਪਾਣੀ ਅਗਨਿ ਤਿਨਿ ਕੀਆ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸ ਅਕਾਰ ॥
पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥
उस ईश्वर ने ही पवन, पानी, अग्नि की रचना की है और ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश उसी की रचना हैं।

ਸਰਬੇ ਜਾਚਿਕ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਅਪੁਨੈ ਬੀਚਾਰ ॥੪॥
सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥४॥
हे प्रभु ! तू दाता हैं शेष सभी याचक हैं तथा अपनी रज़ा अनुसार यथायोग्य दान देता है॥ ४॥

ਕੋਟਿ ਤੇਤੀਸ ਜਾਚਹਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਇਕ ਦੇਦੇ ਤੋਟਿ ਨਾਹੀ ਭੰਡਾਰ ॥
कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥
तेतीस करोड़ देवता भी उस नायक प्रभु से याचना करते हैं, जिसके भण्डार में दान की कोई कभी नहीं आती।

ਊਂਧੈ ਭਾਂਡੈ ਕਛੁ ਨ ਸਮਾਵੈ ਸੀਧੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਰੈ ਨਿਹਾਰ ॥੫॥
ऊंधै भांडै कछु न समावै सीधै अम्रितु परै निहार ॥५॥
उल्टे रखे बर्तन में कुछ भी डाला नहीं जा सकता और सीधे बर्तन में अमृत भरा दिखाई देता है॥ ५॥

ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਤਰਿ ਜਾਚਹਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਜਾਚਿ ਕਰਹਿ ਜੈਕਾਰ ॥
सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥
सिद्ध लोग अपनी समाधि में लीन होकर प्रभु से ऋद्धियों-सिद्धियों का दान माँगते हैं और उसकी जय-जयकार करते हैं।

ਜੈਸੀ ਪਿਆਸ ਹੋਇ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਤੈਸੋ ਜਲੁ ਦੇਵਹਿ ਪਰਕਾਰ ॥੬॥
जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥६॥
हे प्रभु ! मनुष्य के हृदय में जैसी प्यास होती है, वैसे ही प्रकार का जल तुम उसे देते हो॥ ६॥

ਬਡੇ ਭਾਗ ਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਅਪੁਨਾ ਭੇਦੁ ਨਾਹੀ ਗੁਰਦੇਵ ਮੁਰਾਰ ॥
बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥
अहोभाग्य से ही अपने गुरु की सेवा होती है तथा गुरुदेव एवं प्रभु के बीच कोई भेद नहीं।

ਤਾ ਕਉ ਕਾਲੁ ਨਾਹੀ ਜਮੁ ਜੋਹੈ ਬੂਝਹਿ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰ ॥੭॥
ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥७॥
जो प्राणी अपने अन्तर्मन में शब्द पर विचार करते हैं, उन्हें यमदूत की कुदृष्टि भी नाश नहीं कर सकती ॥ ७॥

ਅਬ ਤਬ ਅਵਰੁ ਨ ਮਾਗਉ ਹਰਿ ਪਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਦੀਜੈ ਪਿਆਰਿ ॥
अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥
हे हरि ! मुझे अपने निरंजन नाम का प्रेम प्रदान करो, अब मैं तुझ से अन्य कुछ भी नहीं माँगता।

ਨਾਨਕ ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਜਲੁ ਮਾਗੈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਦੀਜੈ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੮॥੨॥
नानक चात्रिकु अम्रित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥८॥२॥
नानक रूपी चातक तेरे अमृत जल की अभिलाषा करता है, कृपा करके उसे अपने हरियश का दान दीजिए ॥८॥२॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गूजरी महला १ ॥
गूजरी महला १ ॥

ਐ ਜੀ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਆਵੈ ਫੁਨਿ ਜਾਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਤਿ ਨਹੀ ਕਾਈ ॥
ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥
हे प्रिय ! जीव जन्मता-मरता और बार-बार जगत में आता-जाता रहता है। किन्तु गुरु के बिना किसी की गति नहीं होती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਾਣੀ ਨਾਮੇ ਰਾਤੇ ਨਾਮੇ ਗਤਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੧॥
गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥१॥
गुरुमुख व्यक्ति प्रभु-नाम में रंगे रहते हैं और नाम के माध्यम से ही वह गति एवं मान-सम्मान प्राप्त करते हैं। १ ॥

ਭਾਈ ਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਈ ॥
भाई रे राम नामि चितु लाई ॥
हे भाई ! अपना चित्त राम-नाम के साथ लगाओ।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਜਾਚੇ ਐਸੀ ਨਾਮ ਬਡਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥१॥ रहाउ ॥
नाम की ऐसी महिमा है कि मनुष्य गुरु की कृपा से केवल हरि-प्रभु को ही माँगता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਐ ਜੀ ਬਹੁਤੇ ਭੇਖ ਕਰਹਿ ਭਿਖਿਆ ਕਉ ਕੇਤੇ ਉਦਰੁ ਭਰਨ ਕੈ ਤਾਈ ॥
ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥
हे महोदय ! कितने ही लोग अपना पेट भरने के लिए भिक्षा मांगने के लिए अनेक वेष धारण करते हैं।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਨਾਹੀ ਸੁਖੁ ਪ੍ਰਾਨੀ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਰਬੁ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥

बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥२॥

हे प्राणी ! हरि की भक्ति के बिना कहीं सुख नहीं और गुरु के बिना अभिमान दूर नहीं होता ॥ २॥

ਐ ਜੀ ਕਾਲੁ ਸਦਾ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਠਾਢੇ ਜਨਮਿ ਜਨਮਿ ਵੈਰਾਈ ॥

ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥

हे जिज्ञासु ! काल सदा प्राणी के सिर पर खड़ा है और वह जन्म-जन्मांतरों से उसका वैरी है।

ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਬਾਚੇ ਸਤਿਗੁਰ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥੩॥

साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥३॥

सच्चे गुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है जो प्राणी सत्यनाम में लीन होते हैं, वे बच जाते हैं। ३॥

ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਦੂਤੁ ਨ ਸਕੈ ਸੰਤਾਈ ॥

गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥

गुरु की शरण में आने से यमदूत प्राणी को दु:खी नहीं कर सकता, अपितु उसकी ओर दृष्टि भी नहीं कर सकता।

ਅਵਿਗਤ ਨਾਥ ਨਿਰੰਜਨਿ ਰਾਤੇ ਨਿਰਭਉ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੪॥

अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥४॥

मैं अविगत एवं निरंजन नाथ में लीन हो गया हूँ और निर्भय प्रभु के साथ मैंने वृति लगा ली है॥ ४॥

ਐ ਜੀਉ ਨਾਮੁ ਦਿੜਹੁ ਨਾਮੇ ਲਿਵ ਲਾਵਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਟੇਕ ਟਿਕਾਈ ॥

ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥

हे जीव ! प्रभु-नाम को अपने भीतर दृढ़ करो, नाम के साथ ही वृति लगाओ और सच्चे गुरु की शरण में आओ।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਕਿਰਤੁ ਨ ਮੇਟਿਆ ਜਾਈ ॥੫॥

जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥५॥

जो कुछ परमात्मा को भला लगता है, वह वही करता है। उसके किए हुए को कोई भी मिटा नहीं सकता ॥ ५ ॥

ਐ ਜੀ ਭਾਗਿ ਪਰੇ ਗੁਰ ਸਰਣਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਮੈ ਅਵਰ ਨ ਦੂਜੀ ਭਾਈ ॥

ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥

हे मेरे गुरुदेव ! मैं दौड़कर तेरी शरण में आ गया हूँ, क्योंकि किसी अन्य की शरण मुझे अच्छी नहीं लगती।

ਅਬ ਤਬ ਏਕੋ ਏਕੁ ਪੁਕਾਰਉ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਸਖਾਈ ॥੬॥
अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥६॥
मैं सदैव उस एक ईश्वर को ही पुकारता हूँ, जो युग-युग से मेरा सहायक है॥ ६॥

ਐ ਜੀ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਨਾਮ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਤੁਝ ਹੀ ਸਿਉ ਬਨਿ ਆਈ ॥
ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥
हे प्रभु जी ! तुम अपने नाम की लाज रखना, तेरे साथ ही मेरी प्रीति बनी हुई है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਵਹੁ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥੭॥
करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥७॥
हे गुरुदेव ! कृपा करके मुझे अपने दर्शन दीजिए क्योंकि नाम द्वारा मैंने अपना अहंकार जला दिया है॥ ७॥

ਐ ਜੀ ਕਿਆ ਮਾਗਉ ਕਿਛੁ ਰਹੈ ਨ ਦੀਸੈ ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ਜਾਈ ॥
ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥
हे प्रभु जी ! मैं क्या माँगूं? क्योंकि इस सृष्टि में सब कुछ नश्वर है। जो कोई भी इस दुनिया में आया है, वह चला जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਦੀਜੈ ਹਿਰਦੈ ਕੰਠਿ ਬਣਾਈ ॥੮॥੩॥
नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥८॥३॥
हे स्वामी ! नानक को नाम-पदार्थ प्रदान दीजिए, अपने हृदय एवं गले से इसे श्रृंगार बना कर स्मरण करूंगा ॥ ८ ॥ ३॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
गूजरी महला १ ॥
गूजरी महला १ ॥

ਐ ਜੀ ਨਾ ਹਮ ਉਤਮ ਨੀਚ ਨ ਮਧਿਮ ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤਿ ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗ ॥
ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥
हे प्रिय ! न हम उत्तम हैं, न ही नीच एवं न ही मध्यम श्रेणी के हैं। हम तो हरि की शरणागत, हरि के सेवक हैं।

ਨਾਮ ਰਤੇ ਕੇਵਲ ਬੈਰਾਗੀ ਸੋਗ ਬਿਜੋਗ ਬਿਸਰਜਿਤ ਰੋਗ ॥੧॥
नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥
हम तो केवल हरि-नाम में लीन होने के कारण वैरागी हैं और हमने शोक, वियोग एवं रोग को विसर्जित कर दिया है॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਭਗਤਿ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ॥

भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥

हे भाई ! गुरु की कृपा से ही ठाकुर जी की भक्ति होती है।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਾਕਿ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾ ਜਮ ਕਾਣਿ ਨ ਜਮ ਕੀ ਬਾਕੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥१॥ रहाउ ॥

सतगुरु की वाणी द्वारा मैंने निर्मल हरि को अपने हृदय में बसा लिया है, अब मुझे न ही यम की अधीनता रही है और न ही यमराज का लेखा-जोखा देना है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਸਨ ਰਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਸੰਗੇ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸਹਜਿ ਹਰੀ ॥

हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥

में अपनी जिव्हा से हरि का गुणगान करता रहता हूँ और प्रभु भी मेरे साथ रहता है। हरि सहज ही वही कुछ करता है जो कुछ उसे उपयुक्त लगता है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਬ੍ਰਿਥਾ ਜਗਿ ਜੀਵਨੁ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਨਿਹਫਲ ਮੇਕ ਘਰੀ ॥੨॥

बिनु हरि नाम ब्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥२॥

हरि-नाम के बिना इस जगत में मनुष्य का जीवन व्यर्थ है और हरि-भजन के बिना एक क्षण भी व्यतीत करना निष्फल है ॥२॥

ਐ ਜੀ ਖੋਟੇ ਠਉਰ ਨਾਹੀ ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਨਿੰਦਕ ਗਤਿ ਨਹੀ ਕਾਈ ॥

ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥

हे मान्यवर ! खोटे लोगों के लिए घर एवं बाहर कोई स्थान नहीं और निन्दक की तो कहाँ गति नहीं होती।

ਰੋਸੁ ਕਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਬਖਸ ਨ ਮੇਟੈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥੩॥

रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥३॥

चाहे वह रोष प्रगट करता है परन्तु प्रभु अपनी अनुकंपा बन्द नहीं करता, जो नित्य ही बढ़ती जाती है ॥३॥

ਐ ਜੀ ਗੁਰ ਕੀ ਦਾਤਿ ਨ ਮੇਟੈ ਕੋਈ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਆਪਿ ਦਿਵਾਈ ॥

ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥

हे मान्यवर ! गुरु की दात को कोई भी मिटा नहीं सकता क्योंकि मेरे ठाकुर ने ही यह देन स्वयं दिलवाई होती है।

ਨਿੰਦਕ ਨਰ ਕਾਲੇ ਮੁਖ ਨਿੰਦਾ ਜਿਨ੍ ਗੁਰ ਕੀ ਦਾਤਿ ਨ ਭਾਈ ॥੪॥

निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥४॥

जिन्हें गुरु की देन अच्छी नहीं लगती, उन निन्दकों का मुख कलंकित ही रहता है॥ ४॥

ਐ ਜੀ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਪ੍ਰਭੁ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਵੈ ਬਿਲਮ ਨ ਅਧੂਆ ਰਾਈ ॥
ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥
हे जिज्ञासु ! जो प्रभु की शरण में आते हैं, वह उनको क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है और आधी राई भर भी वह विलम्ब नहीं करता।

ਆਨਦ ਮੂਲੁ ਨਾਥੁ ਸਿਰਿ ਨਾਥਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥੫॥
आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥५॥
वह नाथों का नाथ प्रभु आनंद का स्रोत है, जो सच्चे गुरु के संपर्क में आने से मिल जाता है ॥५॥

ਐ ਜੀ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਦਇਆ ਕਰਿ ਰਵਿਆ ਗੁਰਮਤਿ ਭ੍ਰਮਨਿ ਚੁਕਾਈ ॥
ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥
हे जिज्ञासु ! प्रभु सदा दयालु है और सर्वदा ही अपने भक्तों पर दया करता रहता है। गुरु उपदेश द्वारा सभी भ्रम मिट जाते हैं।

ਪਾਰਸੁ ਭੇਟਿ ਕੰਚਨੁ ਧਾਤੁ ਹੋਈ ਸਤਸੰਗਤਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੬॥
पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥६॥
पारस रूपी गुरु के स्पर्श से साधारण (धातु) मनुष्य सोने की भाँति बन जाता है। ऐसी सत्संगति की बड़ाई है ॥६॥

ਹਰਿ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਮਨੁ ਇਸਨਾਨੀ ਮਜਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭਾਈ ॥
हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥
हरि का नाम निर्मल जल है और सतगुरु को निर्मल मन को इसमें स्नान करवाना ही भाया है।

ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨਾਹੀ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਈ ॥੭॥
पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥७॥
हरि के दास की संगति करने से मनुष्य दोबारा जन्म नहीं लेता और उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है।॥७॥

ਤੂੰ ਵਡ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮ ਤਰੋਵਰੁ ਹਮ ਪੰਖੀ ਤੁਝ ਮਾਹੀ ॥
तूं वड पुरखु अगम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥
हे सर्वेश्वर ! तू अगम्य वृक्ष है और हम पक्षी तेरे संरक्षण में हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨ ਦੀਜੈ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ॥੮॥੪॥
नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥८॥४॥
हे प्रभु ! नानक को अपना निरंजन नाम प्रदान कीजिए चूंकि वह सभी युगों में शब्द द्वारा तेरा स्तुतिगान करता रहे ॥८॥४॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪
गूजरी महला १ घरु ४
गूजरी महला १ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭਗਤਿ ਪ੍ਰੇਮ ਆਰਾਧਿਤੰ ਸਚੁ ਪਿਆਸ ਪਰਮ ਹਿਤੰ ॥
भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥
जो व्यक्ति प्रेम-भक्ति द्वारा सच्चे परमात्मा की आराधना करते हैं, उन्हें नाम-सिमरन की ही प्यास लगी रहती है और वे बड़े प्रेम से नाम जपते रहते हैं।

ਬਿਲਲਾਪ ਬਿਲਲ ਬਿਨੰਤੀਆ ਸੁਖ ਭਾਇ ਚਿਤ ਹਿਤੰ ॥੧॥
बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥१॥
वह विलाप भरी प्रभु के समक्ष विनती करते हैं और अपने चित्त के लिए सुख एवं प्रेम की कामना करते रहते हैं।॥१॥

ਜਪਿ ਮਨ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ॥
जपि मन नामु हरि सरणी ॥
हे मन ! भगवान का नाम जपो तथा उसकी शरण लो।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤਾਰਿ ਤਾਰਣ ਰਮ ਨਾਮ ਕਰਿ ਕਰਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥१॥ रहाउ ॥
राम का नाम संसार सागर से पार होने के लिए एक जहाज है, इसलिए ऐसा जीवन-आचरण धारण करो।॥१॥ रहाउ ॥

ਏ ਮਨ ਮਿਰਤ ਸੁਭ ਚਿੰਤੰ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਰਮਣੰ ॥
ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥
हे मन ! यदि हम गुरु के शब्द द्वारा प्रभु का भजन करें तो मृत्यु भी शुभचिंतक बन जाती है।

ਮਤਿ ਤਤੁ ਗਿਆਨੰ ਕਲਿਆਣ ਨਿਧਾਨੰ ਹਰਿ ਨਾਮ ਮਨਿ ਰਮਣੰ ॥੨॥
मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥२॥
मन से प्रभु नाम का सिमरन करने से मनुष्य के हृदय को ज्ञान एवं कल्याण का खजाना प्राप्त हो जाता है।॥२॥

ਚਲ ਚਿਤ ਵਿਤ ਭ੍ਰਮਾ ਭ੍ਰਮੰ ਜਗੁ ਮੋਹ ਮਗਨ ਹਿਤੰ ॥
चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥
चंचल मन धन-दौलत के पीछे भटकता एवं दौड़ता रहता है और जगत के मोह एवं प्रेम में मग्न है।

ਥਿਰੁ ਨਾਮੁ ਭਗਤਿ ਦਿੜੰ ਮਤੀ ਗੁਰ ਵਾਕਿ ਸਬਦ ਰਤੰ ॥੩॥
थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥३॥
गुरु की वाणी एवं उपदेश में लीन होकर प्रभु का नाम एवं उसकी भक्ति मनुष्य के मन में दृढ़ता से स्थापित हो जाते हैं।॥ ३॥

ਭਰਮਾਤਿ ਭਰਮੁ ਨ ਚੂਕਈ ਜਗੁ ਜਨਮਿ ਬਿਆਧਿ ਖਪੰ ॥
भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥
तीर्थों पर रटन करने से भ्रम दूर नहीं होता और संसार जन्म-मरण के रोग से नष्ट हो रहा है।

ਅਸਥਾਨੁ ਹਰਿ ਨਿਹਕੇਵਲੰ ਸਤਿ ਮਤੀ ਨਾਮ ਤਪੰ ॥੪॥
असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥४॥
हरि-स्थान ही इस रोग से मुक्त है, हरि-नाम का तप ही सच्ची मति है॥ ४॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਮੋਹ ਹੇਤ ਬਿਆਪਿਤੰ ਦੁਖੁ ਅਧਿਕ ਜਨਮ ਮਰਣੰ ॥
इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥
यह जगत माया-मोह के पाश में फँसा हुआ है और जन्म-मरण का भारी दुःख सहता है।

ਭਜੁ ਸਰਣਿ ਸਤਿਗੁਰ ਊਬਰਹਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦ ਰਮਣੰ ॥੫॥
भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥५॥
इसलिए प्रभु-भजन करो तथा सच्चे गुरु की शरण में आओ, हरि का नाम हृदय में बसने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है ॥५॥

ਗੁਰਮਤਿ ਨਿਹਚਲ ਮਨਿ ਮਨੁ ਮਨੰ ਸਹਜ ਬੀਚਾਰੰ ॥
गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥
गुरु-मतानुसार प्रभु का चिन्तन करने से मनुष्य का मन निश्चल हो जाता है।

ਸੋ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਜਿਤੁ ਸਾਚੁ ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਸਾਰੰ ॥੬॥
सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥६॥
जिस अन्तर्मन में सत्य एवं ज्ञान-रत्न विद्यमान है, वह मन निर्मल है ॥६॥

ਭੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਤਰੁ ਭਵਜਲੁ ਮਨਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ॥

भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥

हे मन ! प्रभु के भय तथा भक्ति भाव से इस भवसागर को पार कर लो तथा हरि के सुन्दर चरणों में अपना चित्त लगाओ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਿਰਦੈ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਾਵਨੁ ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਤਉ ਸਰਣੀ ॥੭॥
हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥७॥
हे हरि ! मेरा यह शरीर तेरी शरण में है और तेरा पवित्र पावन नाम मेरे हृदय में बसता है ॥७ ॥

ਲਬ ਲੋਭ ਲਹਰਿ ਨਿਵਾਰਣੰ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਾਸਿ ਮਨੰ ॥
लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥
हरि-नाम की पूँजी मन में आने से लोभ-लालच की लहरें नाश हो जाती हैं।

ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਤੁਹੀ ਨਿਰੰਜਨਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕਾ ਸਰਨੰ ॥੮॥੧॥੫॥
मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥८॥१॥५॥
गुरु नानक का कथन है कि हे निरंजन प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, तू ही मेरे मन को वशीभूत कर दे ॥८॥१॥५॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧
गूजरी महला ३ घरु १
गूजरी महला ३ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਿਰਤਿ ਕਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਨਚਾਈ ॥
निरति करी इहु मनु नचाई ॥
मैं नृत्य करता हूँ परन्तु अपने इस मन को नचाता हूँ।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ॥
गुर परसादी आपु गवाई ॥
गुरु की कृपा से मैंने अपना अहंकार मिटा दिया है।

ਚਿਤੁ ਥਿਰੁ ਰਾਖੈ ਸੋ ਮੁਕਤਿ ਹੋਵੈ ਜੋ ਇਛੀ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥੧॥
चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥१॥
जो अपने मन को हरि-चरणों में स्थिर रखता है, उसकी मुक्ति हो जाती है तथा जैसी इच्छा करता है, वैसा ही मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है॥ १॥

ਨਾਚੁ ਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਕੈ ਆਗੈ ॥
नाचु रे मन गुर कै आगै ॥
हे मन ! अपने गुरु के समक्ष श्रद्धा से नृत्य कर।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਨਾਚਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਅੰਤੇ ਜਮ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥
यदि तुम गुरु की रज़ा अनुसार नृत्य करो तो तुझे सुख की प्राप्ति होगी और अन्तिम समय मृत्यु का भय भी तुझ से भाग जाएगा॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਨਚਾਏ ਸੋ ਭਗਤੁ ਕਹੀਐ ਆਪਣਾ ਪਿਆਰੁ ਆਪਿ ਲਾਏ ॥
आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥
जिसे प्रभु स्वयं नचाता है, वही भक्त कहलवाता है। अपने प्रेम से प्रभु उसे स्वयं ही अपने चरणों में शरण देता है।

ਆਪੇ ਗਾਵੈ ਆਪਿ ਸੁਣਾਵੈ ਇਸੁ ਮਨ ਅੰਧੇ ਕਉ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ॥੨॥
आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥२॥
ईश्वर स्वयं ही गाता है और स्वयं ही सुनाता है तथा अन्धे ज्ञानहीन मन को सन्मार्ग पर लगाता है॥ २॥

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਚੈ ਸਕਤਿ ਨਿਵਾਰੈ ਸਿਵ ਘਰਿ ਨੀਦ ਨ ਹੋਈ ॥
अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥
जो दिन-रात नृत्य करता है और माया शक्ति पर अंकुश लगा देता है, वह प्रभु के मन्दिर में प्रविष्ट हो जाता है, जहाँ मोह-माया की निद्रा नहीं होती।

ਸਕਤੀ ਘਰਿ ਜਗਤੁ ਸੂਤਾ ਨਾਚੈ ਟਾਪੈ ਅਵਰੋ ਗਾਵੈ ਮਨਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥੩॥
सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥३॥
माया के घर में सोया हुआ जगत नाचता-टापता एवं द्वैतवाद को गाता है। स्वेच्छाचारी पुरुष प्रभु-भक्ति नहीं कर सकता ॥३॥

ਸੁਰਿ ਨਰ ਵਿਰਤਿ ਪਖਿ ਕਰਮੀ ਨਾਚੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਗਿਆਨ ਬੀਚਾਰੀ ॥
सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥
देवते, मनुष्य, विरक्त, कर्मकाण्डी, मुनिजन, ज्ञानी तथा चिंतक भी ईश्वर की कृपा से नृत्य करते हैं।

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਨਾਚੇ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਧਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥੪॥
सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥४॥
सिद्ध, साधक पुरुष गुरु की शरणागत उत्तम बुद्धि प्राप्त करके विचारवान बन जाते हैं तथा प्रभु में सुरति लगाकर नृत्य करते हैं।॥४॥

ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਨਾਚੇ ਜਿਨ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਲਿਵ ਤੁਮਾਰੀ ॥

खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥

हे प्रभु ! खण्ड, ब्रह्माण्ड में रहने वाले त्रिगुणात्मक जीव जिन्होंने तेरे साथ ध्यान लगाया हुआ है, वे तेरी रज़ा में नृत्य कर रहे हैं।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭੇ ਹੀ ਨਾਚੇ ਨਾਚਹਿ ਖਾਣੀ ਚਾਰੀ ॥੫॥

जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥५॥

जीव-जन्तु एवं जीवन के चारों स्रोत प्रभु-इच्छा में नृत्य कर रहे हैं।॥ ५॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇਈ ਨਾਚਹਿ ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥

जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥

हे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं केवल वही नाचते हैं तथा जो गुरुमुख शब्द से ध्यान लगाते हैं, वह भी क्रियाशील हैं।

ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਤਤੁ ਗਿਆਨੀ ਜਿਨ ਕਉ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਏ ॥੬॥

से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥६॥

जिन से प्रभु अपने हुक्म की पालना करवाता है वही भक्त एवं तत्व ज्ञानी है॥ ६॥

ਏਹਾ ਭਗਤਿ ਸਚੇ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ਬਿਨੁ ਸੇਵਾ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਈ ॥

एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥

यही भक्ति है कि मनुष्य प्रभु में ध्यान लगाए। सेवा के बिना भक्ति नहीं हो सकती।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਤਾ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰੈ ਤਾ ਸਚੁ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੭॥

जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥७॥

जब मनुष्य सांसारिक कार्य करता हुआ माया के मोह से मर जाए तो वह गुर-शब्द का चिन्तन करता है तथा तब वह सत्य को प्राप्त कर सकता है॥ ७॥

ਮਾਇਆ ਕੈ ਅਰਥਿ ਬਹੁਤੁ ਲੋਕ ਨਾਚੇ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥

माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥

धन-दौलत की प्राप्ति हेतु बहुत सारे लोग नाचते हैं। लेकिन कोई विरला पुरुष ही तत्व ज्ञान का बोध करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੋਈ ਜਨੁ ਪਾਏ ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੁਮਾਰੀ ॥੮॥

गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥८॥

हे स्वामी ! जिस मनुष्य पर तुम कृपा-दृष्टि करते हो, वह गुरु की दया से तुझे पा लेता है॥ ८॥

ਇਕੁ ਦਮੁ ਸਾਚਾ ਵੀਸਰੈ ਸਾ ਵੇਲਾ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥
इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥
यदि मैं एक क्षण भर भी सत्य (परमात्मा) को विस्मृत करूँ तो वह समय व्यर्थ बीत जाता है।

ਸਾਹਿ ਸਾਹਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੀਐ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੯॥
साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥९॥
हे भाई ! प्रत्येक श्वास से तू सदा प्रभु को हृदय में धारण कर, वह अपनी इच्छानुसार तुझे स्वयं ही क्षमा कर देगा ॥९॥

ਸੇਈ ਨਾਚਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਹਿ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੀ ॥
सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥
हे प्रभु ! केवल वही नाचते हैं जो तुझे अच्छे लगते हैं और जो गुरुमुख बनकर शब्द का चिन्तन करते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੇ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧੦॥੧॥੬॥
कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥१०॥१॥६॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जिन पर तुम्हारी दया-दृष्टि है, असल में वही सहजता से आत्मिक सुख की अनुभूति करते हैं।॥ १०॥ १॥ ६॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ४ घरु २
गूजरी महला ४ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਜੀਅਰਾ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜਿਉ ਬਾਲਕੁ ਖੀਰ ਅਧਾਰੀ ॥
हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥
भगवान के बिना मेरा यह मन (जीवित) रह नहीं सकता, जैसे दूध के आधार पर रहने वाला बालक दूध के बिना नहीं रह सकता।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥
अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥१॥
अगम्य, अगोचर प्रभु गुरु के माध्यम से ही पाया जा सकता है। इसलिए मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਤਰੁ ਤਾਰੀ ॥

मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥

हे मन ! हरि की यश-कीर्ति संसार-सागर से पार होने के लिए एक जहाज है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਜਲੁ ਪਾਈਐ ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੁਮਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥

गुरमुखि नामु अम्रित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥

हे प्रभु ! जिन पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि होती है, वह गुरु की शरण में नाम रूपी अमृत-जल को प्राप्त कर लेते हैं। रहाउ॥

ਸਨਕ ਸਨੰਦਨ ਨਾਰਦ ਮੁਨਿ ਸੇਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਤ ਰਹਹਿ ਬਨਵਾਰੀ ॥
सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥
सनक, सनंदन एवं नारद मुनि इत्यादि बनवारी प्रभु की सेवा-उपासना करते हैं और रात-दिन प्रभु-नाम का जाप करने में मग्न हैं।

ਸਰਣਾਗਤਿ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਜਨ ਆਏ ਤਿਨ ਕੀ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੨॥
सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥२॥
हे प्रभु ! जब भक्त प्रहलाद तेरी शरण में आया था तो तूने उसकी लाज रख ली थी॥ २॥

ਅਲਖ ਨਿਰੰਜਨੁ ਏਕੋ ਵਰਤੈ ਏਕਾ ਜੋਤਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥
अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥
अलख निरंजन एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है तथा एक उसकी ज्योति ही समूची सृष्टि में प्रज्वलित हो रही है।

ਸਭਿ ਜਾਚਿਕ ਤੂ ਏਕੋ ਦਾਤਾ ਮਾਗਹਿ ਹਾਥ ਪਸਾਰੀ ॥੩॥
सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥३॥
हे प्रभु ! एक तू ही दाता है, शेष सभी याचक हैं, अपना हाथ फैलाकर सभी तुझसे दान मांगते हैं।॥ ३॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਗਾਵਹਿ ਅਕਥ ਕਥਾ ਨਿਤ ਨਿਆਰੀ ॥
भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥
भक्तजनों की वाणी सर्वोत्तम है। वे सदा प्रभु की निराली एवं अकथनीय कथा गायन करते रहते हैं।

ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ਤਿਨ ਕੇਰਾ ਆਪਿ ਤਰੇ ਕੁਲ ਤਾਰੀ ॥੪॥
सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥४॥
उनका जन्म सफल हो जाता है, वे स्वयं संसार-सागर से पार हो जाते हैं और अपनी कुल का भी उद्धार कर लेते हैं।॥ ४॥

ਮਨਮੁਖ ਦੁਬਿਧਾ ਦੁਰਮਤਿ ਬਿਆਪੇ ਜਿਨ ਅੰਤਰਿ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰੀ ॥
मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥
स्वेच्छाचारी लोग दुविधा एवं दुर्मति में फँसे हुए हैं। उनके भीतर सांसारिक मोह का अन्धेरा है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਕਥਾ ਨ ਭਾਵੈ ਓਇ ਡੂਬੇ ਸਣੁ ਪਰਵਾਰੀ ॥੫॥
संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥५॥
उन्हें सन्तजनों की कथा पसंद नहीं आती। इसलिए वे अपने परिवार सहित संसार-सागर में डूब जाते हैं।॥ ५॥

ਨਿੰਦਕੁ ਨਿੰਦਾ ਕਰਿ ਮਲੁ ਧੋਵੈ ਓਹੁ ਮਲਭਖੁ ਮਾਇਆਧਾਰੀ ॥
निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥
निंदक निंदा करके दूसरों की मैल साफ करता है। वह मलभक्षी एवं मायाधारी है और

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਵਿਆਪੇ ਨਾ ਉਰਵਾਰਿ ਨ ਪਾਰੀ ॥੬॥
संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥६॥
संतजनों की निंदा करने में ही प्रवृत्त रहता है, इससे न वह इधर का होता है और न ही पार होता है॥ ६॥

ਏਹੁ ਪਰਪੰਚੁ ਖੇਲੁ ਕੀਆ ਸਭੁ ਕਰਤੈ ਹਰਿ ਕਰਤੈ ਸਭ ਕਲ ਧਾਰੀ ॥
एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥
यह समूचा जगत का प्रपंच खेल रचनाकार ने ही रचा है तथा रचनाकार प्रभु ने ही सभी के भीतर अपनी सत्ता कायम की है।

ਹਰਿ ਏਕੋ ਸੂਤੁ ਵਰਤੈ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ ਸੂਤੁ ਖਿੰਚੈ ਏਕੰਕਾਰੀ ॥੭॥
हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥७॥
एक हरि-प्रभु का धागा ही जगत में क्रियाशील है। जब वह धागे को खींच लेता है तो सृष्टि का नाश हो जाता है और केवल एक आकार प्रभु ही रह जाता है॥ ७ ॥

ਰਸਨਿ ਰਸਨਿ ਰਸਿ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਧਾਰੀ ॥
रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥
जो अपनी जीभ से स्वाद ले-लेकर हरि का गुणगान करते रहते हैं, उनकी जीभ हरि रस चखती रहती है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਮਾਗਉ ਹਰਿ ਰਸ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥੮॥੧॥੭॥
नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥८॥१॥७॥
हे नानक ! हरि के अलावा मैं कुछ भी नहीं माँगता, क्योंकि हरि-रस की प्रीति ही मुझे प्यारी लगती है॥ ८॥ १॥ ७॥

ਗੂਜਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨
गूजरी महला ५ घरु २
गूजरी महला ५ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਜਨ ਮਹਿ ਤੂੰ ਰਾਜਾ ਕਹੀਅਹਿ ਭੂਮਨ ਮਹਿ ਭੂਮਾ ॥
राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥
हे परमात्मा ! राजाओं में तुझे सबसे बड़ा राजा कहा जाता है तथा भूमि पतियों में तू सबसे बड़ा भूमिपति है।

ਠਾਕੁਰ ਮਹਿ ਠਕੁਰਾਈ ਤੇਰੀ ਕੋਮਨ ਸਿਰਿ ਕੋਮਾ ॥੧॥
ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥१॥
ठाकुरों में तुम्हारी ठकुराई का ही वर्चस्व है तथा कौमों में तुम्हारी सर्वोपरि कौम है॥ १ ॥

ਪਿਤਾ ਮੇਰੋ ਬਡੋ ਧਨੀ ਅਗਮਾ ॥
पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥
मेरा पिता-प्रभु बड़ा धनवान एवं अगम्य स्वामी है।

ਉਸਤਤਿ ਕਵਨ ਕਰੀਜੈ ਕਰਤੇ ਪੇਖਿ ਰਹੇ ਬਿਸਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥
हे कर्तार ! मैं तेरी कौन-सी स्तुति का वर्णन करूँ ? तेरी लीला देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਖੀਅਨ ਮਹਿ ਸੁਖੀਆ ਤੂੰ ਕਹੀਅਹਿ ਦਾਤਨ ਸਿਰਿ ਦਾਤਾ ॥
सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥
हे प्रभु ! सुखी लोगों में तू सबसे बड़ा सुखी कहलवाता है और दानियों में महान् दानी है।

ਤੇਜਨ ਮਹਿ ਤੇਜਵੰਸੀ ਕਹੀਅਹਿ ਰਸੀਅਨ ਮਹਿ ਰਾਤਾ ॥੨॥
तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥२॥
तेजबानों में तू सबसे बड़ा महातेजस्वी कहलवाता है और रसियों में तू सर्वोच्च रसिया है॥ २॥

ਸੂਰਨ ਮਹਿ ਸੂਰਾ ਤੂੰ ਕਹੀਅਹਿ ਭੋਗਨ ਮਹਿ ਭੋਗੀ ॥
सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥
हे स्वामी ! शूरवीरों में तू सबसे बड़ा शूरवीर कहलवाता है तथा भोगियों में तू महाभोगी है।

ਗ੍ਰਸਤਨ ਮਹਿ ਤੂੰ ਬਡੋ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਜੋਗਨ ਮਹਿ ਜੋਗੀ ॥੩॥
ग्रसतन महि तूं बडो ग्रिहसती जोगन महि जोगी ॥३॥
गृहस्थियों में तू महान् गृहस्थी है (तुझ समान दूसरा कोई नहीं) तथा योगियों में तू महान् योगी है ॥३॥

ਕਰਤਨ ਮਹਿ ਤੂੰ ਕਰਤਾ ਕਹੀਅਹਿ ਆਚਾਰਨ ਮਹਿ ਆਚਾਰੀ ॥

करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥

हे ईश्वर ! रचनहारों में तू सबसे बड़ा रचयिता कहलवाता है तथा कर्मकाण्ड में भी तू सर्वोपरि है।

ਸਾਹਨ ਮਹਿ ਤੂੰ ਸਾਚਾ ਸਾਹਾ ਵਾਪਾਰਨ ਮਹਿ ਵਾਪਾਰੀ ॥੪॥

साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥४॥

हे दाता ! साहूकारों में भी तुम सच्चे साहूकार हो तथा व्यापारियों में महान् व्यापारी हो।॥ ४॥

ਦਰਬਾਰਨ ਮਹਿ ਤੇਰੋ ਦਰਬਾਰਾ ਸਰਨ ਪਾਲਨ ਟੀਕਾ ॥

दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥

हे स्वामी ! दरबार लगाने वालों में भी तेरा ही सच्चा दरबार है तथा शरणागतों की प्रतिष्ठा रखने वालों में भी तुम सर्वोत्तम हो।

ਲਖਿਮੀ ਕੇਤਕ ਗਨੀ ਨ ਜਾਈਐ ਗਨਿ ਨ ਸਕਉ ਸੀਕਾ ॥੫॥

लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥५॥

तेरे पास कितनी लक्ष्मी-धन है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। तेरे पास कितने सिक्के हैं जो गणना से परे हैं।॥५॥

ਨਾਮਨ ਮਹਿ ਤੇਰੋ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮਾ ਗਿਆਨਨ ਮਹਿ ਗਿਆਨੀ ॥

नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥

हे सर्वेश्वर ! नामों में तेरा ही नाम श्रेष्ठ है (अर्थात् लोकप्रियता प्राप्त करने वालों में तुम्हारी ही लोकप्रियता है) तथा ज्ञानियों में तू महान् ज्ञानी है।

ਜੁਗਤਨ ਮਹਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਜੁਗਤਾ ਇਸਨਾਨਨ ਮਹਿ ਇਸਨਾਨੀ ॥੬॥

जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥६॥

समस्त युक्तियों में तुम्हारी ही युक्ति सर्वश्रेष्ठ है तथा सभी प्रकार के तीर्थ स्नानों में तुझ में किया हुआ स्नान महान् है॥ ६॥

ਸਿਧਨ ਮਹਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਸਿਧਾ ਕਰਮਨ ਸਿਰਿ ਕਰਮਾ ॥

सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥

हे प्रभु ! सिद्धियों में तुम्हारी सिद्धि ही सर्वश्रेष्ठ है तथा कर्मो में तेरा कर्म प्रधान है।

ਆਗਿਆ ਮਹਿ ਤੇਰੀ ਪ੍ਰਭ ਆਗਿਆ ਹੁਕਮਨ ਸਿਰਿ ਹੁਕਮਾ ॥੭॥

आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥७॥

हे प्रभु ! सभी आज्ञाओं में तेरी आज्ञा ही सर्वोपरि है और सभी हुक्मों में तेरा हुक्म सबसे ऊपर अग्रणी है ॥७॥

ਜਿਉ ਬੋਲਾਵਹਿ ਤਿਉ ਬੋਲਹ ਸੁਆਮੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਨ ਹਮਾਰੀ ॥
जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥
हे स्वामी ! जैसे तुम बुलाते हो, वैसे ही हम बोलते हैं, अन्यथा हमारी क्या समर्था है कि हम कुछ बोल सकें ?

साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥
साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥
सत्संगति में नानक ने वही यशोगान किया है, जो प्रभु को अत्यंत प्यारा है। ॥८॥१॥८॥

गुजरी महला ५ घरु ४
गूजरी महला ५ घरु ४
गूजरी महला ५ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਾਥ ਨਰਹਰ ਦੀਨ ਬੰਧਵ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਦੇਵ ॥
नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥
हे नाथ ! हे नरहरि (नृसिंह)! हे दीनबंधु! हे पतितपावन देव !

ਭੈ ਤ੍ਰਾਸ ਨਾਸ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਸਫਲ ਸੁਆਮੀ ਸੇਵ ॥੧॥
भै त्रास नास क्रिपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥१॥
हे भयनाशक ! हे कृपालु स्वामी ! हे गुणों के भण्डार ! तेरी सेवा-भक्ति बड़ी फलदायक है॥ १॥

ਹਰਿ ਗੋਪਾਲ ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ॥
हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥
हे हरि ! हे गोपाल ! हे गुर गोबिन्द !

ਚਰਣ ਸਰਣ ਦਇਆਲ ਕੇਸਵ ਤਾਰਿ ਜਗ ਭਵ ਸਿੰਧ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चरण सरण दइआल केसव तारि जग भव सिंध ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने तेरे सुन्दर चरणों की शरण ली है। हे दयालु केशव ! मुझे भयानक संसार-सागर से पार कर दो ॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਹਰਨ ਮਦ ਮੋਹ ਦਹਨ ਮੁਰਾਰਿ ਮਨ ਮਕਰੰਦ ॥
काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥
हे काम-क्रोध का नाश करने वाले ! हे मोह के नशे का दहन करने वाले मुरारि ! हे मन के मकरंद !

ਜਨਮ ਮਰਣ ਨਿਵਾਰਿ ਧਰਣੀਧਰ ਪਤਿ ਰਾਖੁ ਪਰਮਾਨੰਦ ॥੨॥
जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥२॥
हे धरणिधर! हे परमानंद ! मेरा जन्म-मरण का चक्र मिटाकर मेरी लाज रखें।॥ २॥

ਜਲਤ ਅਨਿਕ ਤਰੰਗ ਮਾਇਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਹਰਿ ਰਿਦ ਮੰਤ ॥
जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥
हे हरि ! माया-अग्नि की अनेक तरंगों में जलते हुए प्राणी के हृदय में गुरु-ज्ञान का मंत्र प्रदान करो।

ਛੇਦਿ ਅਹੰਬੁਧਿ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਚਿੰਤ ਮੇਟਿ ਪੁਰਖ ਅਨੰਤ ॥੩॥
छेदि अह्मबुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥३॥
हे करुणामय प्रभु ! हे अनंत अकालपुरुष ! मेरी अहंबुद्धि का छेदन करके मेरी चिंता मिटा दो ॥ ३॥

ਸਿਮਰਿ ਸਮਰਥ ਪਲ ਮਹੂਰਤ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਨੁ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ॥
सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥
हे प्राणी ! हर पल एवं मुहूर्त तू समर्थ प्रभु का सिमरन कर और उसके ध्यान में सहज समाधि लगा।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਸੰਨ ਪੂਰਨ ਜਾਚੀਐ ਰਜ ਸਾਧ ॥੪॥
दीन दइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥४॥
हे दीनदयालु ! हे पूर्ण प्रसन्न स्वामी ! मैं तुझ से साधुओं की चरण-धूलि माँगता हूँ ॥४॥

ਮੋਹ ਮਿਥਨ ਦੁਰੰਤ ਆਸਾ ਬਾਸਨਾ ਬਿਕਾਰ ॥
मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥
हे निरंकार हरि ! मिथ्या मोह, दुखदायक आशा, वासना एवं विकारों से मेरा धर्म बचा लीजिए तथा

ਰਖੁ ਧਰਮ ਭਰਮ ਬਿਦਾਰਿ ਮਨ ਤੇ ਉਧਰੁ ਹਰਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੫॥
रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥५॥
मेरे हृदय से भ्रम को दूर करके मेरा उद्धार कीजिए॥ ५ ॥

ਧਨਾਢਿ ਆਢਿ ਭੰਡਾਰ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਹੋਤ ਜਿਨਾ ਨ ਚੀਰ ॥
धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥
हे हरि ! जिनके पास वस्त्र मात्र भी नहीं, वह तेरी नाम-निधि प्राप्त करके धनवान एवं खजाने से भरपूर हो जाते हैं।

ਖਲ ਮੁਗਧ ਮੂੜ ਕਟਾਖ੍ ਸ੍ਰੀਧਰ ਭਏ ਗੁਣ ਮਤਿ ਧੀਰ ॥੬॥
खल मुगध मूड़ कटाख्ष स्रीधर भए गुण मति धीर ॥६॥
हे श्रीधर ! तेरी दयादृष्टि से महामूर्ख, दुर्जन एवं मूड़ भी गुणवान, बुद्धिमान एवं धैर्यवान बन जाते हैं।॥ ६॥

ਜੀਵਨ ਮੁਕਤ ਜਗਦੀਸ ਜਪਿ ਮਨ ਧਾਰਿ ਰਿਦ ਪਰਤੀਤਿ ॥
जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥
हे मन ! जीवन से मुक्ति देने वाले जगदीश की आराधना कर और अपने हृदय में उसकी प्रीति धारण कर।

ਜੀਅ ਦਇਆ ਮਇਆ ਸਰਬਤ੍ਰ ਰਮਣੰ ਪਰਮ ਹੰਸਹ ਰੀਤਿ ॥੭॥
जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परम हंसह रीति ॥७॥
जीवों पर दया एवं स्नेह करना तथा प्रभु को सर्वव्यापक अनुभव करना परमहंसों (गुरुमुखों) की जीवन-युक्ति है॥ ७॥

ਦੇਤ ਦਰਸਨੁ ਸ੍ਰਵਨ ਹਰਿ ਜਸੁ ਰਸਨ ਨਾਮ ਉਚਾਰ ॥
देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥
ईश्वर उन्हें ही अपने दर्शन देता है, जो उसका यश सुनते हैं और अपनी जिह्म से उसका नाम उच्चरित करते हैं।

ਅੰਗ ਸੰਗ ਭਗਵਾਨ ਪਰਸਨ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰ ॥੮॥੧॥੨॥੫॥੧॥੧॥੨॥੫੭॥
अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥८॥१॥२॥५॥१॥१॥२॥५७॥
वह भगवान को आस-पास समझ कर उसकी पूजा करते हैं। हे नानक ! प्रभु पतितों का भी उद्धार कर देता है ॥८॥१॥२॥५॥१॥१॥२॥५७॥

ਗੂਜਰੀ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੩ ਸਿਕੰਦਰ ਬਿਰਾਹਿਮ ਕੀ ਵਾਰ ਕੀ ਧੁਨੀ ਗਾਉਣੀ
गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी
गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਮਮਤਾ ਮੁਆ ਜੀਵਣ ਕੀ ਬਿਧਿ ਨਾਹਿ ॥
इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥
यह जगत ममता में फँसकर मर रहा है और इसे जीने की विधि का कोई ज्ञान नहीं।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਤਾਂ ਜੀਵਣ ਪਦਵੀ ਪਾਹਿ ॥
गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥
जो व्यक्ति गुरु की रज़ा अनुसार आचरण करता है, उसे जीवन पदवी की उपलिब्ध होती है।

ਓਇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਨ ਜੀਵਤੇ ਜੋ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਹਿ ॥
ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥
जो प्राणी हरि के चरणों में अपना चित्त लगाते हैं, वे सदैव जीवित रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਮਨਿ ਵਸੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥
नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥१॥
हे नानक ! अपनी करुणा-दृष्टि से प्रभु मन में निवास करता है तथा गुरुमुख सहज ही समा जाता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਅੰਦਰਿ ਸਹਸਾ ਦੁਖੁ ਹੈ ਆਪੈ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਮਾਰ ॥
अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥
जिन लोगों के मन में दुविधा एवं मोह-माया का दुख है, उन्होंने खुद ही दुनिया की उलझनों के साथ निपटना स्वीकार किया है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਸੁਤੇ ਕਬਹਿ ਨ ਜਾਗਹਿ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਿਆਰ ॥
दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर ॥
वे द्वैतभाव में सोए हुए कभी भी नहीं जागते, क्योंकि उनका माया से मोह एवं प्रेम बना हुआ है।

ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹਿ ਸਬਦੁ ਨ ਵੀਚਾਰਹਿ ਇਹੁ ਮਨਮੁਖ ਕਾ ਆਚਾਰੁ ॥
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु ॥
वह प्रभु-नाम को स्मरण नहीं करते और न ही शब्द-गुरु का चिंतन करते हैं। स्वेच्छाचारियों का ऐसा जीवन-आचरण है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਨਮੁ ਬਿਰਥਾ ਗਵਾਇਆ ਨਾਨਕ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੇ ਖੁਆਰ ॥੨॥
हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥२॥
हे नानक ! वे हरि के नाम को प्राप्त नहीं करते एवं अपना अनमोल जन्म व्यर्थ ही गंवा देते हैं, इसलिए यमदूत उन्हें दण्ड देकर अपमानित करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਤਦਹੁ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥
जब परमात्मा ने अपने आपको उत्पन्न किया, तब दूसरा कोई नहीं था।

ਮਤਾ ਮਸੂਰਤਿ ਆਪਿ ਕਰੇ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥
मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥
वह अपने आप से ही तब सलाह-मशवरा करता था। वह जो कुछ करता था, वही होता था।

ਤਦਹੁ ਆਕਾਸੁ ਨ ਪਾਤਾਲੁ ਹੈ ਨਾ ਤ੍ਰੈ ਲੋਈ ॥
तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥
तब न ही आकाश था, न ही पाताल था और न ही तीन लोक थे।

ਤਦਹੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੈ ਨਾ ਓਪਤਿ ਹੋਈ ॥
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥
तब केवल निराकार प्रभु आप ही विद्यमान था और कोई उत्पत्ति नहीं हुई थी।

ਜਿਉ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੧॥
जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥१॥
जैसे उसे अच्छा लगता था, वैसे ही वह करता था एवं उसके अलावा दूसरा कोई नहीं था ॥१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਹੈ ਦਿਸੈ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥
साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥
मेरा साहिब परमात्मा सदा अमर है लेकिन उसके दर्शन 'शब्द' की साधना से होते हैं।

ਓਹੁ ਅਉਹਾਣੀ ਕਦੇ ਨਾਹਿ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਇ ॥
ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥
वह अनश्वर है और जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता (अर्थात् न ही जन्म लेता है और न ही मरता है।)

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੋ ਸੇਵੀਐ ਜੋ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥
सदैव ही उस प्रभु का सिमरन करना चाहिए जो प्रत्येक हृदय में समा रहा है।

ਅਵਰੁ ਦੂਜਾ ਕਿਉ ਸੇਵੀਐ ਜੰਮੈ ਤੈ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥
अवरु दूजा किउ सेवीऐ जमै तै मरि जाइ ॥
किसी दूसरे की क्यों सेवा-भक्ति करें ? जो जन्मता और मर जाता है।

ਨਿਹਫਲੁ ਤਿਨ ਕਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿ ਖਸਮੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਆਪਣਾ ਅਵਰੀ ਕਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥
उनका जीवन निष्फल है जो अपने मालिक-प्रभु को नहीं जानते तथा अपना चित्त दूसरों में लगाते हैं।

ਨਾਨਕ ਏਵ ਨ ਜਾਪਈ ਕਰਤਾ ਕੇਤੀ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥੧॥
नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥१॥
हे नानक ! इस बात का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता कि विश्व का रचयिता उन्हें कितनी सजा देगा ? ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਸਭੋ ਵਰਤੈ ਸਚੁ ॥
सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥
परमेश्वर सर्वव्यापक है, इसलिए उस परम-सत्य का नाम-सिमरन करना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝਿ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਇ ਤਾ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ਸਚੁ ॥
नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥
हे नानक ! प्रभु का हुक्म समझने से मनुष्य उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है और तब उसे सत्य रूपी फल मिल जाता है।

ਕਥਨੀ ਬਦਨੀ ਕਰਤਾ ਫਿਰੈ ਹੁਕਮੈ ਮੂਲਿ ਨ ਬੁਝਈ ਅੰਧਾ ਕਚੁ ਨਿਕਚੁ ॥੨॥
कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥२॥
किन्तु जो लोग निरर्थक बातें ही करते रहते हैं, प्रभु के मूल हुक्म को नहीं बूझते, वे ज्ञानहीन हैं तथा झूठी बातें ही करने वाले हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਸ੍ਰਿਸਟੀ ਕਾ ਮੂਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥
संजोगु विजोगु उपाइओनु स्रिसटी का मूलु रचाइआ ॥
परमात्मा ने संयोग एवं वियोग का नियम बनाकर सृष्टि के मूल सिद्धांत की सृजना कर दी।

ਹੁਕਮੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਜੀਅਨੁ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
हुकमी स्रिसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥
अपने हुक्म-अनुसार उसने सृष्टि की रचना की और जीवों में अपनी ज्योति प्रज्वलित कर दी।

ਜੋਤੀ ਹੂੰ ਸਭੁ ਚਾਨਣਾ ਸਤਿਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
सच्चे गुरु ने यह शब्द सुनाया है कि ज्योति स्वरूप प्रभु की ज्योति से ही सारा प्रकाश उत्पन्न होता है।

ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਿਸਨੁ ਮਹੇਸੁ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥
परमात्मा ने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवजी की उत्पत्ति करके उन्हें त्रिगुणात्मक-(सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण) कार्यों में लगा दिया।

ਮਾਇਆ ਕਾ ਮੂਲੁ ਰਚਾਇਓਨੁ ਤੁਰੀਆ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥२॥
प्रभु ने संयोग-वियोग रूपी माया का मूल रच दिया है। इस माया में रहकर ही मनुष्य ने तुरीयावस्था में पहुँचकर सुख प्राप्त किया है॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸੋ ਜਪੁ ਸੋ ਤਪੁ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥
सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥
जो सच्चे गुरु को अच्छा लगता है, वही जप एवं वहीं तप है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਵਡਿਆਈ ਪਾਵੈ ॥
सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥
सतिगुरु की रज़ा अनुसार अनुसरण करने से जीव मान-सम्मान प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਗੁਰ ਮਾਹਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥
नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥१॥
हे नानक ! वह अभिमान को छोड़कर गुरु में ही समा जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਲੇਵੈ ॥
गुर की सिख को विरला लेवै ॥
गुरु की शिक्षा कोई विरला जीव ही ग्रहण करता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਵਡਿਆਈ ਦੇਵੈ ॥੨॥
नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥२॥
हे नानक ! गुरु-शिक्षा उसे ही प्राप्त होती है, जिसे प्रभु आप बड़ाई देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਅਗਿਆਨੁ ਹੈ ਬਿਖਮੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ॥
माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥
माया-मोह तथा अज्ञान का सागर अत्यंत भारी एवं विषम है।

ਪਥਰ ਪਾਪ ਬਹੁ ਲਦਿਆ ਕਿਉ ਤਰੀਐ ਤਾਰੀ ॥
पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥
यदि जीवन की नैया पाप रूपी पत्थरों से अत्याधिक लदी हुई है तो यह संसार-सागर से कैसे पार होगी ?

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤੀ ਰਤਿਆ ਹਰਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥
अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥
लेकिन जो दिन-रात भक्ति में मग्न रहते हैं, हरि उन्हें संसार-सागर से पार कर देता है।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ਹਉਮੈ ਛਡਿ ਵਿਕਾਰੀ ॥
गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥
गुरु के शब्द द्वारा यदि मनुष्य अभिमान एवं विकारों को छोड़ देता है तो मन निर्मल हो जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੀ ॥੩॥
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥३॥
परमात्मा का नाम-सिमरन करते रहना चाहिए, क्योंकि परमात्मा का नाम उद्धार करने वाला है ॥३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਕਬੀਰ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ਸੰਕੁੜਾ ਰਾਈ ਦਸਵੈ ਭਾਇ ॥
कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥
हे कबीर ! मुक्ति का द्वार राई के दाने के दसवें भाग के समान संकुचित है।

ਮਨੁ ਤਉ ਮੈਗਲੁ ਹੋਇ ਰਹਾ ਨਿਕਸਿਆ ਕਿਉ ਕਰਿ ਜਾਇ ॥
मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥
यह मन मस्त हाथी बना हुआ है, फिर यह कैसे उस में से निकल सकता है ?

ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੇ ਮਿਲੈ ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ॥
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥
यदि ऐसा सच्चा गुरु मिल जाए जो परम प्रसन्न होकर दया-दृष्टि कर दे तो

ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ਮੋਕਲਾ ਸਹਜੇ ਆਵਉ ਜਾਉ ॥੧॥
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥१॥
मुक्ति का द्वार बहुत खुला हो जाता है और सहज ही आया-जाया जा सकता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਨਾਨਕ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ਅਤਿ ਨੀਕਾ ਨਾਨ੍ਹਾ ਹੋਇ ਸੁ ਜਾਇ ॥

नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥

हे नानक ! मुक्ति का द्वार बहुत ही छोटा है परन्तु वही निकल सकता है जो बहुत छोटा अर्थात् विनीत हो जाए।

ਹਉਮੈ ਮਨੁ ਅਸਥੂਲੁ ਹੈ ਕਿਉ ਕਰਿ ਵਿਚੁ ਦੇ ਜਾਇ ॥

हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥

अहंकार करने से मन अस्थूल हो गया है फिर यह कैसे इसमें से गुजर सकता है ?

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਹਉਮੈ ਗਈ ਜੋਤਿ ਰਹੀ ਸਭ ਆਇ ॥

सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥

सतिगुरु को मिलने से अहंकार दूर हो जाता है और प्रभु की ज्योति प्राणी के भीतर आ जाती है।

ਇਹੁ ਜੀਉ ਸਦਾ ਮੁਕਤੁ ਹੈ ਸਹਜੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੨॥
इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥२॥
यह जीवात्मा तो सदा मुक्त है और सहज ही (प्रभु में) लीन रहती है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਪ੍ਰਭਿ ਸੰਸਾਰੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਵਸਿ ਆਪਣੈ ਕੀਤਾ ॥
प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥
प्रभु ने संसार पैदा करके इसे अपने वश में किया हुआ है।

ਗਣਤੈ ਪ੍ਰਭੁ ਨ ਪਾਈਐ ਦੂਜੈ ਭਰਮੀਤਾ ॥
गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥
प्रभु गणनाओं अर्थात् चतुराइयों से प्राप्त नहीं होता और मनुष्य तो द्वैतभाव में ही भटकता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਬੁਝਿ ਸਚਿ ਸਮੀਤਾ ॥
सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥
सतिगुरु को मिलने से मनुष्य जीवित ही (माया के त्याग से) मरा रहता है और इस रहस्य को समझने से वह सत्य में समा जाता है।

ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਖੋਈਐ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲੀਤਾ ॥
सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥
शब्द के माध्यम से अहंकार मिट जाता है और प्राणी हरि के मिलन में मिल जाता है।

ਸਭ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਕਰੇ ਆਪਿ ਆਪੇ ਵਿਗਸੀਤਾ ॥੪॥
सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥४॥
प्रभु स्वयं ही सब कुछ जानता है और सब कुछ आप ही करता है। अपनी रचना को देखकर वह स्वयं ही प्रसन्न होता है ॥४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਓ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸਿਓ ਮਨਿ ਆਇ ॥
सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥
जिस व्यक्ति ने सतगुरु से चित्त नहीं लगाया और न ही प्रभु के नाम ने मन में आकर निवास किया तो

ਧ੍ਰਿਗੁ ਇਵੇਹਾ ਜੀਵਿਆ ਕਿਆ ਜੁਗ ਮਹਿ ਪਾਇਆ ਆਇ ॥
धि्रगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥
उसके इस जीवन को धिक्कार है। इस जगत में आकर उसने क्या लाभ प्राप्त किया है।

ਮਾਇਆ ਖੋਟੀ ਰਾਸਿ ਹੈ ਏਕ ਚਸੇ ਮਹਿ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਇ ॥
माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥
माया एक खोटी पूँजी है और एक क्षण में ही इसका पाखण्ड प्रगट हो जाता है।

ਹਥਹੁ ਛੁੜਕੀ ਤਨੁ ਸਿਆਹੁ ਹੋਇ ਬਦਨੁ ਜਾਇ ਕੁਮਲਾਇ ॥
हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥
जब यह मनुष्य के हाथ से निकल जाती है तो इसका बदन काला हो जाता है और चेहरा मुरझा जाता है।

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਨ੍ ਸੁਖੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥
जिन्होंने अपना चित्त सतगुरु से लगाया है, उनके मन में सुख आकर बस जाता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਰੰਗ ਸਿਉ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥
वे हरि के नाम का प्रेमपूर्वक सिमरन करते रहते हैं और हरि के नाम में ही वे लीन रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਸੋ ਧਨੁ ਸਉਪਿਆ ਜਿ ਜੀਅ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥
हे नानक ! सतगुरु ने उन्हें वह नाम-धन सौंपा है, जो उनके मन में समाया रहता है।

ਰੰਗੁ ਤਿਸੈ ਕਉ ਅਗਲਾ ਵੰਨੀ ਚੜੈ ਚੜਾਇ ॥੧॥
रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ॥१॥
उन्हें प्रभु के प्रेम का गहरा रंग प्राप्त हुआ है, जिसका रंग दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਾਇਆ ਹੋਈ ਨਾਗਨੀ ਜਗਤਿ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥
माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥
माया एक ऐसी नागिन है, जिसने सारे जगत को अपनी लपेट में लिया हुआ है।

ਇਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ਜੋ ਕਰੇ ਤਿਸ ਹੀ ਕਉ ਫਿਰਿ ਖਾਇ ॥
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥
जो इसकी सेवा करता है, अन्ततः वह उसे ही निगल जाती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਈ ਗਾਰੜੂ ਤਿਨਿ ਮਲਿ ਦਲਿ ਲਾਈ ਪਾਇ ॥
गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥
कोई विरला ही गुरुमुख है जो इसके विष की औषधि रूपी मंत्र को जानता है। वह इसे मसल कर तथा कुचल कर अपने पैरों में डाल देता है।

ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਉਬਰੇ ਜਿ ਸਚਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥२॥
हे नानक ! इस माया-नागिन से वही बचते हैं जो सत्य के ध्यान में मग्न रहते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਢਾਢੀ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਣਾਇਸੀ ॥
ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥
जब ढाढी पुकार करता है तो प्रभु उसे सुनता है।

ਅੰਦਰਿ ਧੀਰਕ ਹੋਇ ਪੂਰਾ ਪਾਇਸੀ ॥
अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥
उसके मन में धैर्य होता है और वह पूर्ण-प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਲੇਖੁ ਸੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇਸੀ ॥
जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥
शुरू से जिसकी तकदीर में जैसा लेख लिखा होता है, मनुष्य वैसे ही कर्म करता है।

ਜਾ ਹੋਵੈ ਖਸਮੁ ਦਇਆਲੁ ਤਾ ਮਹਲੁ ਘਰੁ ਪਾਇਸੀ ॥
जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥
जब पति-प्रभु दयालु हो जाता है तो वह प्रभु के महल में ही अपना सच्चा घर प्राप्त कर लेता है।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਅਤਿ ਵਡਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਾਇਸੀ ॥੫॥
सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥५॥
वह मेरा प्रभु बहुत बड़ा है, जो गुरु के माध्यम से ही मिलता है॥ ५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਭਨਾ ਕਾ ਸਹੁ ਏਕੁ ਹੈ ਸਦ ਹੀ ਰਹੈ ਹਜੂਰਿ ॥
सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥
सबका मालिक एक ईश्वर ही है, जो सदा ही साथ रहता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਮੰਨਈ ਤਾ ਘਰ ਹੀ ਅੰਦਰਿ ਦੂਰਿ ॥
नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥
हे नानक ! यदि जीव-स्त्री उसका हुक्म नहीं मानती तो उसके हृदय-घर में रहता हुआ प्रभु कहीं दूर ही लगता है।

ਹੁਕਮੁ ਭੀ ਤਿਨ੍ਹਾ ਮਨਾਇਸੀ ਜਿਨ੍ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥
हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥
लेकिन जिन पर प्रभु दया-दृष्टि धारण करता है, वे उसके हुक्म का पालन करती हैं।

ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਹਾਗਣਿ ਹੋਇ ॥੧॥
हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥१॥
जिसने पति-प्रभु के हुक्म को मानकर सुख की प्राप्ति की है, वही जीवात्मा उसकी प्यारी सुहागिन बन गई है।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਰੈਣਿ ਸਬਾਈ ਜਲਿ ਮੁਈ ਕੰਤ ਨ ਲਾਇਓ ਭਾਉ ॥
रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥
जो जीवात्मा पति-प्रभु से प्रेम नहीं करती, वह रात भर विरह में जलती हुई मृत्यु को प्राप्त होती रहती है।

ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਵਸਨਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਿਨ੍ ਪਿਆਰਾ ਪੁਰਖੁ ਹਰਿ ਰਾਉ ॥੨॥
नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥२॥
हे नानक ! वही सुहागिन (जीव-स्त्रियाँ) सुख में रहती हैं, जो परमात्मा से सच्चा प्रेम कायम करके उसे ही प्राप्त करती है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰਿ ਮੈ ਦੇਖਿਆ ਹਰਿ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ॥
सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥
मैंने समूचा जगत घूमकर देख लिया है कि एक हरि ही सब जीवों का दाता है।

ਉਪਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥
उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥
किसी भी उपाय चतुराई इत्यादि से कर्मों का विधाता हरि पाया नहीं जा सकता।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਰਿ ਸਹਜੇ ਜਾਤਾ ॥
गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥
गुरु के शब्द द्वारा हरि-प्रभु मनुष्य के मन में निवास कर जाता है और सहज ही वह जाना जाता है।

ਅੰਦਰਹੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਨਾਤਾ ॥
अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अम्रित सरि नाता ॥
उसके भीतर से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है और वइ हरि नामामृत के सरोवर में स्नान कर लेता है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਵਡੇ ਕੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੋਲਾਤਾ ॥੬॥
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥६॥
उस महान् परमात्मा की बड़ी बड़ाई है कि वह अपनी गुणस्तुति भी गुरुमुखों से करवाता है॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਕਾਇਆ ਹੰਸ ਕਿਆ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਜਿ ਪਇਆ ਹੀ ਛਡਿ ਜਾਇ ॥

काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥

शरीर एवं आत्मा की कैसी प्रीति है जो अन्तकाल में इस पार्थिव शरीर को त्याग कर आत्मा चली जाती है।

ऐस नो कुड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥

एस नो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥

जब चलते समय यह शरीर साथ नहीं जाता तो इसे झूठ बोल-बोलकर क्यों खिलाया जाए अर्थात् झूठ बोल कर पालने का क्या लाभ ?

ਕਾਇਆ ਮਿਟੀ ਅੰਧੁ ਹੈ ਪਉਣੈ ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ॥
काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥
यह शरीर तो मिट्टी है, अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है।

ਹਉ ਤਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਆ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਾ ਜਾਇ ॥
हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥
यदि जीवात्मा से पूछा जाए तो जीवात्मा कहती है कि मुझे तो मोह-माया ने आकर्षित किया हुआ है, इसलिए मैं बार-बार संसार में आती-जाती रहती हूँ।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਤੋ ਖਸਮ ਕਾ ਜਿ ਰਹਾ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥१॥
हे नानक ! जीवात्मा संबोधन करती है कि मैं अपने पति-प्रभु के हुक्म को नहीं जानती, जिससे मैं सत्य में समा जाती ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਏਕੋ ਨਿਹਚਲ ਨਾਮ ਧਨੁ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥
एक ईश्वर का नाम-धन ही शाश्वत है, अन्य सांसारिक धन तो आता-जाता रहता है।

ਇਸੁ ਧਨ ਕਉ ਤਸਕਰੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਕਈ ਨਾ ਓਚਕਾ ਲੈ ਜਾਇ ॥
इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥
इस नाम-धन पर चोर कुदृष्टि नहीं रख सकता और न ही कोई उचक्का ले जा सकता है।

ਇਹੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਜੀਐ ਸੇਤੀ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਜੀਐ ਨਾਲੇ ਜਾਇ ॥
इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥
हरि का नाम रूपी यह धन आत्मा के साथ ही बसता है और आत्मा के साथ ही परलोक में जाता है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈਐ ਮਨਮੁਖਿ ਪਲੈ ਨ ਪਾਇ ॥
पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥
लेकिन यह अमूल्य नाम धन पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है तथा स्वेच्छाचारी लोगों को यह धन प्राप्त नहीं होता।

ਧਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਨਾਮ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਆਇ ॥੨॥
धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥२॥
हे नानक ! वे व्यापारी धन्य हैं, जिन्होंने संसार में आकर हरि के नाम-धन को अर्जित किया है।॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਤਿ ਵਡਾ ਸਚੁ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥
मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर ग्मभीरा ॥
मेरा परमेश्वर बड़ा महान् है, वह सदैव सत्य एवं गहन-गंभीर है।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਤਿਸ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਚੀਰਾ ॥
सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥
समूचा जगत उसके वश में है और सारी शक्ति उसी की है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਈਐ ਨਿਹਚਲੁ ਧਨੁ ਧੀਰਾ ॥
गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥
गुरु की कृपा से ही सदैव अटल एवं धैर्यवान हरि का नाम-धन प्राप्त होता है।

ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭੇਟੈ ਗੁਰੁ ਸੂਰਾ ॥
किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥
यदि शूरवीर गुरु से भेंट हो जाए तो उसकी कृपा से हरि प्राणी के मन में निवास कर जाता है।

ਗੁਣਵੰਤੀ ਸਾਲਾਹਿਆ ਸਦਾ ਥਿਰੁ ਨਿਹਚਲੁ ਹਰਿ ਪੂਰਾ ॥੭॥
गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥७॥
गुणवान लोग ही सदा अटल एवं पूर्ण हरि की सराहना करते हैं।॥ ७ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਧ੍ਰਿਗੁ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਦਾ ਜੀਵਿਆ ਜੋ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗਦੇ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਪਾਪ ਕਮਾਇ ॥
ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥
उन मनुष्यों के जीवन को धिक्कार है, जो हरि-नाम स्मरण के सुख को त्याग देते हैं और अभिमान में पाप करके दुःख भोगते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਤਿਨ੍ ਬੂਝ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥
मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥
अज्ञानी-मनमुख माया के मोह में फँसे रहतें हैं और उन्हें कोई सूझ नहीं आती।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਓਇ ਸੁਖੁ ਨ ਪਾਵਹਿ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਇ ॥
हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥
इस लोक एवं परलोक में उन्हें सुख उपलब्ध नहीं होता और अंततः पछताते हुए चले जाते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਿਸੁ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥
गुरु की कृपा से कोई विरला व्यक्ति ही नाम की आराधना करता है और उसके अन्तर्मन से अहंत्व दूर हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਆਇ ਪਾਇ ॥੧॥
नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥१॥
हे नानक ! जिसके भाग्य में शुरु से लिखा होता है, वह गुरु के चरणों में आ जाता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨਮੁਖੁ ਊਧਾ ਕਉਲੁ ਹੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਭਗਤਿ ਨ ਨਾਉ ॥
मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥
मनमुख इन्सान उलटा पड़ा हुआ कमल है, उसके पास न ही भक्ति है और न ही प्रभु का नाम है।

ਸਕਤੀ ਅੰਦਰਿ ਵਰਤਦਾ ਕੂੜੁ ਤਿਸ ਕਾ ਹੈ ਉਪਾਉ ॥
सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥
यह माया में ही क्रियाशील रहता है और झूठ ही उसका जीवन-मनोरथ होता है।

ਤਿਸ ਕਾ ਅੰਦਰੁ ਚਿਤੁ ਨ ਭਿਜਈ ਮੁਖਿ ਫੀਕਾ ਆਲਾਉ ॥
तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥
उस मनमुख का अन्तर्मन भी स्नेह से नहीं भीगता, उसके मुँह से निकले वचन भी फीके (निरर्थक) ही होते हैं।

ਓਇ ਧਰਮਿ ਰਲਾਏ ਨਾ ਰਲਨਿ੍ ਓਨਾ ਅੰਦਰਿ ਕੂੜੁ ਸੁਆਉ ॥
ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥
ऐसे लोग धर्म में मिलाने पर भी धर्म से दूर रहते हैं और उनके भीतर झूठ एवं मक्कारी विद्यमान होती है।

ਨਾਨਕ ਕਰਤੈ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ਮਨਮੁਖ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਡੁਬੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਉ॥੨॥
नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥२॥
हे नानक ! विश्व रचयिता प्रभु ने ऐसी रचना रची है कि मनमुख झूठ बोल-बोलकर डूब गए हैं और गुरुमुख हरिनाम का जाप करके संसार-सागर से पार हो गए है ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਵਡਾ ਫੇਰੁ ਪਇਆ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥
बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥
सत्य को समझे बिना आवागमन का लम्बा चक्र लगाना पड़ता है, मनुष्य पुनः पुनः योनियों के चक्र में संसार में आता-जाता रहता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਨ ਕੀਤੀਆ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥
सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥
वह गुरु की सेवा में तल्लीन नहीं होता, जिसके फलस्वरूप आखिर में पछताता हुआ जगत से चला जाता है।

ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਪਾਈਐ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ॥
आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥
जब परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो गुरु से मिलन हो जाता है और प्राणी का अहंत्व दूर हो जाता है।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਵਿਚਹੁ ਉਤਰੈ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥
त्रिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥
तब सांसारिक मोह की तृष्णा की भूख दूर हो जाती है और मन में आत्मिक सुख का निवास हो जाता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਹਿਰਦੈ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੮॥
सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥८॥
अपने हृदय में प्रभु से लगन लगाकर सदैव ही उसकी स्तुति करनी चाहिए ॥८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਜਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਣਾ ਤਿਸ ਨੋ ਪੂਜੇ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥
जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की श्रद्धा से सेवा करता है, सभी उसकी पूजा करते हैं।

ਸਭਨਾ ਉਪਾਵਾ ਸਿਰਿ ਉਪਾਉ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥
सभी उपायों में श्रेष्ठ उपाय यह है कि हरि के नाम की प्राप्ति हो जाए।

ਅੰਤਰਿ ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਵਸੈ ਜਪਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
अंतरि सीतल सांति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥
नाम का जाप करने से अन्तर्मन में शीतलता एवं शांति का निवास होता है और हृदय सदैव सुखी रहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਖਾਣਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੈਨਣਾ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਹੋਇ ॥੧॥
अम्रितु खाणा अम्रितु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥१॥
हे नानक। नामामृत ही उसका भोजन एवं उसका पहरावा बन जाता है, नाम से ही उसे जगत में कीर्ति प्राप्त होती है।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਏ ਮਨ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਪਾਵਹਿ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥
ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ॥
हे मेरे मन ! सच्चे गुरु की शिक्षा सुन, तुझे गुणों का भण्डार प्रभु प्राप्त हो जाएगा।

ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਵਸੈ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ਗੁਮਾਨੁ ॥
हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥
सुखों का दाता हरि मन में निवास कर जाएगा और अभिमान एवं घमण्ड नाश हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਤਾ ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥
नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥२॥
हे नानक ! जब प्रभु कृपा-दृष्टि करता है तो प्राणी का ध्यान रात-दिन सत्य में ही लगा रहता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸਭੁ ਸਚੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਵਿਤਾ ॥
सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥
गुरुमुख मनुष्य पवित्र-पावन है और सत्य एवं संतोष का रूप है उसे सब सत्य ही दिखाई देता है।

ਅੰਦਰਹੁ ਕਪਟੁ ਵਿਕਾਰੁ ਗਇਆ ਮਨੁ ਸਹਜੇ ਜਿਤਾ ॥
अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥
उसके अन्तर्मन से छल-कपट एवं विकार नाश हो जाते हैं और उसने सहज ही मन को जीत लिया होता है।

ਤਹ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਅਨੰਦ ਰਸੁ ਅਗਿਆਨੁ ਗਵਿਤਾ ॥
तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥
उसके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है, वह हरि रस का आनंद लेता रहता और उसका अज्ञान दूर हो जाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਰਵੈ ਗੁਣ ਪਰਗਟੁ ਕਿਤਾ ॥
अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥
वह नित्य ही हरि का गुणगान करता रहता है, जो गुण उसके भीतर हरि ने प्रगट कर दिए हैं।

ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਹੈ ਇਕੋ ਹਰਿ ਮਿਤਾ ॥੯॥
सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥९॥
सब जीवों का दाता एक परमात्मा ही सबका मित्र हे॥ ६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦੇ ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਕਹੀਐ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥
जो व्यक्ति ब्रह्म को जानता है, उसे ही ब्राह्मण कहा जाता है और वह रात-दिन परमात्मा में अपनी सुरति लगाकर रखता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਛੈ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਕਮਾਵੈ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਤਿਸੁ ਜਾਏ ॥
सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥
वह सतगुरु की सलाह अनुसार सत्य एवं संयम का आचरण करता है और उसका अहंकार का रोग नाश हो जाता है।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਏ ॥
हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥
वह हरि का गुणगान करता है, हरि का यश ही संग्रह करता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है।

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਜਿ ਹਉਮੈ ਮੇਟਿ ਸਮਾਏ ॥
इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥
इस जग में कोई विरला ही ब्रह्मज्ञानी है, जो अपना अहंकार मिटा कर प्रभु में विलीन होता है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਨੋ ਮਿਲਿਆ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਜਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ॥੧॥
नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥१॥
हे नानक ! उसे मिलने से सदैव सुख प्राप्त होता है, जो रात-दिन हरि-नाम की आराधना करता रहता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਅੰਤਰਿ ਕਪਟੁ ਮਨਮੁਖ ਅਗਿਆਨੀ ਰਸਨਾ ਝੂਠੁ ਬੋਲਾਇ ॥
अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥
अज्ञानी मनमुख के हृदय में छल-कपट है और अपनी जीभ से वह झूठ ही बोलता है।

ਕਪਟਿ ਕੀਤੈ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨ ਭੀਜੈ ਨਿਤ ਵੇਖੈ ਸੁਣੈ ਸੁਭਾਇ ॥
कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥
छल-कपट करने से परमात्मा खुश नहीं होता, क्योंकि वह सहज स्वभाव नित्य ही सभी को देखता एवं सुनता है।

दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥
दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य द्वैतभाव में फँसकर जगत को उपदेश देता है किन्तु आप विषैली माया के मोह एवं स्वाद में क्रियाशील रहता है।

इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ ॥
इतु कमाणै सदा दुखु पावै जमै मरै फिरि आवै जाइ ॥
ऐसा करने से वह सदा दुःख ही भोगता है और वह जन्मता-मरता एवं बार-बार योनियों में फँसकर इहलोक में आता-जाता रहता है।

सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥
सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥
उसकी दुविधा उसे बिल्कुल नहीं छोड़ती और विष्टा में ही वह गल-सड़ जाता है।

जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥
जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥
जिस पर मेरा स्वामी कृपा करता है, उसे गुरु की शिक्षा सुनवाता है।

हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥२॥
हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥२॥
फिर ऐसा मनुष्य हरि-नाम का ध्यान करता है, हरि-नाम का वह गुणगान करता है और हरि का नाम ही अंत में उसे मोक्ष प्रदान करता है ॥२॥

पउड़ी ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥
जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥
परमात्मा जिन से अपनी आज्ञा का पालन करवाता है, वही इस दुनिया में पूर्ण पुरुष हैं।

ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵਨ੍ਹਿ ਆਪਣਾ ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ॥
वह अपने मालिक की सेवा करते हैं और गुरु के पूर्ण शब्द का विचार करते हैं।

ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਪਿਆਰਿ ॥
हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥
वह हरि की उपासना करते हैं और सत्यनाम से प्रीति लगाते हैं।

ਹਰਿ ਕਾ ਮਹਲੁ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਪਾਇਆ ਜਿਨ੍ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰਿ ॥
हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥
जो मनुष्य अपने भीतर से अहंकार को नाश कर देते हैं, वे हरि के महल (दरबार) को प्राप्त कर लेते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੧੦॥
नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥१०॥
हे नानक ! हरि का नाम-सिमरन करने एवं उसे हृदय में धारण करने से गुरुमुख हरि से मिले रहते हैं।॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਨ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥
गुरुमुख व्यक्ति प्रभु का ध्यान करते हैं और उनकी अन्तरात्मा में सहज ध्वनि उत्पन्न होती है। वे अपना चित्त सत्यनाम के साथ ही लगाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥
गुरुमुख व्यक्ति रात-दिन प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त रहते हैं और हरि का नाम ही उनके मन को अच्छा लगता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਵੇਖਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲਹਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਹਜਿ ਰੰਗੁ ਲਾਇਆ ॥
गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥
गुरुमुख हरि को ही देखते हैं और हरि के बारे में ही बचन करते हैं और सहज स्वभाव प्रभु से प्रेम पाते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਤਿਮਰ ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥
हे नानक ! गुरुमुख मनुष्य को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है और उसका अज्ञान रूपी घोर अन्धकार नष्ट हो जाता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਰਮੁ ਹੋਵੈ ਧੁਰਿ ਪੂਰਾ ਤਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥१॥
जिस पर पूर्ण प्रभु की अनुकंपा होती है, वह गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि-नाम की आराधना करता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨਾ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸਬਦਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥
जो सतगुरु की सेवा नहीं करते, शब्द से प्रेम नहीं लगाते तथा

ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਨ ਧਿਆਇਆ ਕਿਤੁ ਆਇਆ ਸੰਸਾਰਿ ॥
सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥
सहजता में नाम की आराधना भी नहीं करते, फिर वे किसलिए इस संसार में आए हैं।

ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਈਐ ਵਿਸਟਾ ਸਦਾ ਖੁਆਰੁ ॥
फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥
ऐसे व्यक्ति पुनः पुनः योनियों के चक्र में पड़ते है और हमेशा ही विष्टा में खराब होते हैं।

ਕੂੜੈ ਲਾਲਚਿ ਲਗਿਆ ਨਾ ਉਰਵਾਰੁ ਨ ਪਾਰੁ ॥
कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ॥
वे तो झूठे लालच से लगे हुए हैं और वे न इस किनारे पर हैं और न ही पार हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਜਿ ਆਪਿ ਮੇਲੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥२॥
हे नानक ! गुरुमुख मनुष्य संसार सागर से पार हो जाते हैं, उन्हें करतार प्रभु अपने साथ मिला लेता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਭਗਤ ਸਚੈ ਦਰਿ ਸੋਹਦੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਹਾਏ ॥
भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥
भक्त सच्चे परमात्मा के द्वार पर बैठे बड़े शोभा देते हैं। वे सच्चे शब्द द्वारा ही स्थिर रहते हैं।

ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਤਿਨ ਊਪਜੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਕਸਾਏ ॥
हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥
हरि की प्रीति उनके भीतर उत्पन्न हो जाती है और हरि के प्रेम में आकर्षित रहते हैं।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਹਹਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਿਆਏ ॥
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥
वे हमेशा हरि के रंग में मग्न रहते हैं और उनकी जिव्हा हरि रस का पान करती है।

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਹਰਿ ਜੀਉ ਰਿਦੈ ਵਸਾਏ ॥
सफलु जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥
जो लोग गुरु की शरणागत पूज्य परमेश्वर को पहचानते हैं और उसे अपने हृदय में बसाते हैं, उनका जीवन सफल है।

ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਫਿਰੈ ਬਿਲਲਾਦੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਏ ॥੧੧॥
बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥११॥
गुरु के बिना दुनिया रोती फिरती है और मोह-माया में फँसकर नष्ट हो रही है॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਕਲਿਜੁਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਭਗਤੀ ਖਟਿਆ ਹਰਿ ਉਤਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥
कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥
इस कलियुग में भक्तों ने ही भगवान की भक्ति करके नाम-भण्डार प्राप्त किया है और प्रभु के उत्तम पद को पाया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥
सतिगुरु की सेवा करके उन्होंने हरि के नाम को अपने मन में बसा लिया है और रात-दिन नाम का ही ध्यान किया है।

ਵਿਚੇ ਗ੍ਰਿਹ ਗੁਰ ਬਚਨਿ ਉਦਾਸੀ ਹਉਮੈ ਮੋਹੁ ਜਲਾਇਆ ॥
विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥
अपने घर में ही वे गुरु के उपदेश द्वारा निर्लिप्त रहते हैं तथा अपने अहंत्व एवं मोह को जला दिया है।

ਆਪਿ ਤਰਿਆ ਕੁਲ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਆ ਧੰਨੁ ਜਣੇਦੀ ਮਾਇਆ ॥
आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी माइआ ॥
सतगुरु स्वयं संसार-सागर से पार हुआ है और उसने समूचे जगत को भी भवसागर से तार दिया है, वह माता धन्य है जिसने उन्हें जन्म दिया है।

ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੋਈ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥
ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥
ऐसा सतिगुरु उसे ही प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर प्रभु ने प्रारम्भ से ऐसा लेख लिख दिया है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਵਿਟਹੁ ਜਿਨਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭੁਲਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥१॥
नानक अपने गुरु पर बलिहारी है, जिसने दुविधा में भटके हुए को सन्मार्ग लगाया है। ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਵੇਖਿ ਭੁਲੇ ਜਿਉ ਦੇਖਿ ਦੀਪਕਿ ਪਤੰਗ ਪਚਾਇਆ ॥
त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥
त्रिगुणात्मक माया को देखकर मनुष्य ऐसे कुमार्गगामी हो जाता है जैसे दीपक को देखकर पतंगा नाश हो जाता है।

ਪੰਡਿਤ ਭੁਲਿ ਭੁਲਿ ਮਾਇਆ ਵੇਖਹਿ ਦਿਖਾ ਕਿਨੈ ਕਿਹੁ ਆਣਿ ਚੜਾਇਆ ॥
पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥
पण्डित बार-बार माया के लोभ में आकर्षित होकर देखता रहता है कि किसी ने उसके समक्ष कुछ भेंट रखी है अथवा नहीं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪੜਹਿ ਨਿਤ ਬਿਖਿਆ ਨਾਵਹੁ ਦਯਿ ਖੁਆਇਆ ॥
दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥
द्वैतभाव की प्रीति में पथभ्रष्ट हुआ वह नित्य पाप बारे पढ़ता है और प्रभु ने उसे अपने नाम से वंचित किया हुआ है।

ਜੋਗੀ ਜੰਗਮ ਸੰਨਿਆਸੀ ਭੁਲੇ ਓਨ੍ਹ੍ਹਾ ਅਹੰਕਾਰੁ ਬਹੁ ਗਰਬੁ ਵਧਾਇਆ ॥
जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥
योगी, जंगम एवं संन्यासी भी भूले हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपना अहंकार एवं गर्व बहुत बढ़ाया हुआ है।

ਛਾਦਨੁ ਭੋਜਨੁ ਨ ਲੈਹੀ ਸਤ ਭਿਖਿਆ ਮਨਹਠਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइआ ॥
वस्त्र एवं भोजन की सच्ची भिक्षा को वे स्वीकृत नहीं करते और अपने मन के हठ के कारण अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं।

ਏਤੜਿਆ ਵਿਚਹੁ ਸੋ ਜਨੁ ਸਮਧਾ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥
इनमें से केवल वही सेवक महान् है जो गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम का ध्यान करता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ਜਾ ਕਰਦੇ ਸਭਿ ਕਰਾਇਆ ॥੨॥
जन नानक किस नो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥२॥
हे नानक ! किसे कहकर पुकार करें, जबकि सबकुछ करने कराने वाला सृष्टिकर्ता ही है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਪਰੇਤੁ ਹੈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥
माया-मोह, काम, कोध एवं अहंकार इत्यादि भयानक प्रेत हैं।

ਏਹ ਜਮ ਕੀ ਸਿਰਕਾਰ ਹੈ ਏਨ੍ਹ੍ਹਾ ਉਪਰਿ ਜਮ ਕਾ ਡੰਡੁ ਕਰਾਰਾ ॥
एह जम की सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा ॥
ये सब यमराज की प्रजा हैं और इन पर यमराज का सख्त दण्ड कायम रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਜਮ ਮਗਿ ਪਾਈਅਨ੍ਹ੍ਹਿ ਜਿਨ੍ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਪਿਆਰਾ ॥
मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य जो मोह-माया से प्रेम करते हैं, वह यमराज के मार्ग पर धकेले जाते हैं।

ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਨਿ ਕੋ ਸੁਣੈ ਨ ਪੂਕਾਰਾ ॥
जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥
स्वेच्छाचारी यमपुरी में बंधे हुए पीटे जाते हैं और कोई भी उनकी पुकार नहीं सुनता।

ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥੧੨॥
जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥१२॥
जिस पर प्रभु कृपा करता है, उसे गुरु मिल जाता है और गुरु के सान्निध्य में रहकर प्राणी की मुक्ति हो जाती है ॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮੋਹਣੀ ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਗਈ ਖਾਇ ॥
हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥
अहंत्व एवं ममता पैदा करने वाली माया ऐसी मोहिनी है जो स्वेच्छाचारियों को निगल गई है।

ਜੋ ਮੋਹਿ ਦੂਜੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਤਿਨਾ ਵਿਆਪਿ ਰਹੀ ਲਪਟਾਇ ॥
जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥
जो अपना चित्त द्वैतवाद के मोह में लगाते हैं, यह माया उनके साथ लिपटकर उन्हें वश में कर लेती है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਰਜਾਲੀਐ ਤਾ ਏਹ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥
यदि गुरु के शब्द द्वारा इसे जला दिया जाए तो यह तभी अन्तर से निकलती है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਹੋਵੈ ਉਜਲਾ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥
इस प्रकार तन, मन उज्जवल हो जाते हैं और नाम आकर मन में निवास कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਮਾਇਆ ਕਾ ਮਾਰਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥੧॥

नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥१॥

हे नानक ! हरि का नाम इस माया का मारण है जो गुरु के माध्यम से प्राप्त हो सकता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३॥

ਇਹੁ ਮਨੁ ਕੇਤੜਿਆ ਜੁਗ ਭਰਮਿਆ ਥਿਰੁ ਰਹੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥

इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥

यह मन अनेक युगों में भटकता रहा है। यह स्थिर नहीं होता और जन्मता-मरता रहता है।

ਹਰਿ ਭਾਣਾ ਤਾ ਭਰਮਾਇਅਨੁ ਕਰਿ ਪਰਪੰਚੁ ਖੇਲੁ ਉਪਾਇ ॥

हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ॥

जब हरि को अच्छा लगता है तो वह मन को भटकाता है और उसने ही यह परपंच बनाकर यह खेल रचा है।

ਜਾ ਹਰਿ ਬਖਸੇ ਤਾ ਗੁਰ ਮਿਲੈ ਅਸਥਿਰੁ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥

जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ ॥

जब हरि मन को क्षमा कर देता है तो ही गुरु मिलता है और स्थिर होकर मन सत्य में विलीन हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾ ਕਿਛੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥
नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥२॥
हे नानक ! मन के द्वारा मन को आत्मिक सुख मिलता है और फिर न ही कुछ मरता है, न ही जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਪਾਰੁ ਹੈ ਮਿਲਣਾ ਸੰਜੋਗੀ ॥
काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥
मानव शरीर एक अपार किला है जो संयोग से ही प्राप्त होता है।

ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਆਪਿ ਵਸਿ ਰਹਿਆ ਆਪੇ ਰਸ ਭੋਗੀ ॥
काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥
इस शरीर में स्वयं प्रभु निवास कर रहा है और वह स्वयं ही रस भोगी है।

ਆਪਿ ਅਤੀਤੁ ਅਲਿਪਤੁ ਹੈ ਨਿਰਜੋਗੁ ਹਰਿ ਜੋਗੀ ॥
आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥
परमात्मा स्वयं अतीत एवं अलिप्त रहता है, वह योगी होने के बावजूद विरक्त है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ਹਰਿ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਗੀ ॥
जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥
जो उसे अच्छा लगता है, वह वही कुछ करता है और जो कुछ प्रभु करता है, वही होता है।

ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਲਹਿ ਜਾਹਿ ਵਿਜੋਗੀ ॥੧੩॥
हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥१३॥
गुरुमुख बनकर नाम की आराधना करने से प्रभु से विछोह मिट जाता है ॥१३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਆਪਿ ਅਖਾਇਦਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥
वह सत्यस्वरूप परमात्मा गुरु के शब्द द्वारा अपनी 'वाह-वाह' (महिमा) करवाता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਿਫਤਿ ਸਲਾਹ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥
वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥
कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को समझता है कि 'वाह-वाह' प्रभु की उस्तति-महिमा है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥
यह सच्ची वाणी भी 'वाह-वाह' है, जिससे मनुष्य सत्य (प्रभु) को मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥१॥
हे नानक ! वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हुए ही परमात्मा के करम (कृपा) से ही उसको पाया जा सकता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤੀ ਰਸਨਾ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਈ ॥
वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥
वाह-वाह (गुणानुवाद) करती हुई रसना गुरु-शब्द से सुन्दर लगती है।

ਪੂਰੈ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਆਈ ॥
पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥
पूर्ण शब्द-गुरु द्वारा प्रभु आकर मनुष्य को मिल जाता है।

ਵਡਭਾਗੀਆ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਮੁਹਹੁ ਕਢਾਈ ॥
वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥
भाग्यवान ही अपने मुख से भगवान की वाह-वाह (गुणगान) करते हैं।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਸੇਈ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਤਿਨ੍ ਕਉ ਪਰਜਾ ਪੂਜਣ ਆਈ ॥
वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥
वे सेवक सुन्दर हैं, जो परमेश्वर की वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हैं, प्रजा उनकी पूजा करने के लिए आती है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਨਾਨਕ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਈ ॥੨॥
वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥२॥
हे नानक ! करम से ही प्रभु की वाह-वाह (उस्तति) प्राप्त होती है और मनुष्य सच्चे द्वार पर शोभा पाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਕਾਇਆ ਗੜ੍ਹ ਭੀਤਰਿ ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥
बजर कपाट काइआ गड़्ह भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥
काया रूपी दुर्ग के भीतर झूठ, फरेब एवं अभिमान के वज कपाट लगे हुए हैं।

ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਨੀ ਮਨਮੁਖ ਅੰਧ ਅਗਿਆਨੀ ॥
भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥
भ्रम में भूले हुए अन्धे एवं अज्ञानी स्वेच्छाचारी उनको देखते ही नहीं।

ਉਪਾਇ ਕਿਤੈ ਨ ਲਭਨੀ ਕਰਿ ਭੇਖ ਥਕੇ ਭੇਖਵਾਨੀ ॥
उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥
वे किसी भी उपाय द्वारा कपाट ढूंढ नहीं पाते। भेषधारी भेष धारण कर-करके थक गए हैं।

ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਖੋਲਾਈਅਨਿ੍ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਨੀ ॥
गुर सबदी खोलाईअन्हि हरि नामु जपानी ॥
जो व्यक्ति हरि-नाम जपते हैं, गुरु के शब्द द्वारा उनके कपाट खुल जाते हैं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਿਰਖੁ ਹੈ ਜਿਨ ਪੀਆ ਤੇ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੀ ॥੧੪॥
हरि जीउ अम्रित बिरखु है जिन पीआ ते त्रिपतानी ॥१४॥
श्रीहरि अमृत का वृक्ष है, जो इस अमृत का पान करते हैं, वे तृप्त हो जाते हैं।॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਰੈਣਿ ਸੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥
वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥
वाह-वाह अर्थात् ईश्वर का गुणानुवाद करने से जीवन-रात्रि सुखद व्यतीत होती है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹੋਵੈ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥
वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥
हे मेरी माँ! ईश्वर का गुणगान करने से मनुष्य सदा आनंद में रहता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥
वाह-वाह (स्तुतिगान) करने से मनुष्य की सुरति हरि के साथ लगी रहती है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮੀ ਬੋਲੈ ਬੋਲਾਇ ॥
वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥
प्रभु की कृपा से ही मनुष्य 'वाह-वाह' की वाणी बोलता एवं बुलवाता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਸੋਭਾ ਪਾਇ ॥
वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥
वाह-वाह (प्रभु की उस्तति) करने से मनुष्य को लोक-परलोक में शोभा मिलती है।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਤਿ ਰਜਾਇ ॥੧॥
नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥१॥
नानक ! इन्सान सच्चे प्रभु की इच्छा में ही वाह-वाह (स्तुतिगान) करता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਧੀ ਭਾਲਿ ॥
वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥
वाह-वाह की वाणी सत्य है, जिसे गुरुमुख बनकर मनुष्य ढूंढ लेता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਬਦੇ ਉਚਰੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਲਿ ॥
वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥
वाह-वाह का उच्चारण गुरु के शब्द से हृदय से करना चाहिए।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਾਲਿ ॥
वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥
वाह-वाह करते हुए गुरुमुख अपनी खोज द्वारा सहज ही प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।

ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਨਕਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਿਦੈ ਸਮਾਲਿ ॥੨॥
से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥२॥
हे नानक ! वे व्यक्ति खुशकिस्मत हैं, जो भगवान को हृदय में स्मरण करते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਏ ਮਨਾ ਅਤਿ ਲੋਭੀਆ ਨਿਤ ਲੋਭੇ ਰਾਤਾ ॥
ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥
यह मन अत्यंत लोभी है जो नित्य ही लोभ में आसक्त रहता है।

ਮਾਇਆ ਮਨਸਾ ਮੋਹਣੀ ਦਹ ਦਿਸ ਫਿਰਾਤਾ ॥
माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥
मोहिनी माया की तृष्णा में मन दसों दिशाओं में भटकता फिरता है।

ਅਗੈ ਨਾਉ ਜਾਤਿ ਨ ਜਾਇਸੀ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਖਾਤਾ ॥
अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥
आगे परलोक में बड़ा नाम एवं जाति (कुलीनता) साथ नहीं जाते। मनमुख मनुष्य को दुःख ही निगल जाता है,

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਖਿਓ ਫੀਕਾ ਬੋਲਾਤਾ ॥
रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥
क्योंकि उसकी जिव्हा हरि-रस का पान नहीं करती और कटु वचन ही बोलती है।

ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਾਤਾ ॥੧੫॥
जिना गुरमुखि अम्रितु चाखिआ से जन त्रिपताता ॥१५॥
जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर नामामृत का पान करते हैं, वे सेवक तृप्त रहते हैं।॥१५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਸਚਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ॥
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर ग्मभीरु ॥
वाह-वाह उसे कहना चाहिए जो सत्यस्वरूप एवं गहन-गंभीर है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਗੁਣਦਾਤਾ ਮਤਿ ਧੀਰੁ ॥
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ॥
वाह-वाह उसे ही कहना चाहिए जो गुणदाता एवं धैर्य-बुद्धि प्रदान करने वाला है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥
हमें उसका ही गुणगान करना चाहिए जो सब जीवों में समाया हुआ है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਦੇਦਾ ਰਿਜਕੁ ਸਬਾਹਿ ॥
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥
जो हमें भोजन प्रदान करता है, उसे ही वाह-वाह कहना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਇਕੋ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਜਿ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥੧॥
नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥१॥
हे नानक ! वाह-वाह करके उस एक ईश्वर की ही प्रशंसा करनी चाहिए, जिसके सतिगुरु ने दर्शन करवाए हैं॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਮੁਖ ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਮਨਮੁਖ ਮਰਹਿ ਬਿਖੁ ਖਾਇ ॥
वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥
गुरुमुख व्यक्ति सदैव ही अपने प्रभु की वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हैं और मनमुख मोह-माया रूपी विष सेवन करके मर जाते हैं।

ਓਨਾ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਨ ਭਾਵਈ ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥
ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥
उन्हें वाह-वाह (स्तुतिगान) करना अच्छा नहीं लगता इसलिए उनका सारा जीवन दुख में ही व्यतीत होता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਣਾ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुरमुखि अम्रितु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥
गुरुमुख नामामृत पान करते हैं और अपनी सुरति लगाकर परमात्मा की स्तुति करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਨਿਰਮਲੇ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान की स्तुति करते हैं, वे निर्मल हो जाते हैं और उन्हें तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੇਵਾ ਭਗਤਿ ਬਨੀਜੈ ॥
हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥
परमात्मा की इच्छा से ही गुरु मिलता है और गुरु की सेवा करने से प्रभु-भक्ति की युक्ति बनती है।

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥
हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥
ईश्वरेच्छा से ही हरि प्राणी के मन में निवास करता है और सहज ही हरि-रस का पान करता है।

ਹਰਿ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਨਿਤ ਲੀਜੈ ॥
हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥
परमात्मा की मर्जी से ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है और नित्य ही नाम रूपी लाभ की उपलिब्ध होती है।

ਹਰਿ ਕੈ ਤਖਤਿ ਬਹਾਲੀਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਸਦਾ ਵਸੀਜੈ ॥
हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥
उस पवित्र पुरुष को हरि के राज सिंहासन पर विराजमान किया जाता है और वह सदा अपने घर में रहता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਭਾਣਾ ਤਿਨੀ ਮੰਨਿਆ ਜਿਨਾ ਗੁਰੂ ਮਿਲੀਜੈ ॥੧੬॥
हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥१६॥
ईश्वरेच्छा को वही सहर्ष स्वीकार करते हैं, जिन्हें गुरु मिल जाता है ॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸੇ ਜਨ ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਜਿਨ੍ ਕਉ ਆਪੇ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥
वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥
जिन्हें परमात्मा आप समझ प्रदान करता है, वे जीव सदा वाह-वाह (स्तुतिगान) करते रहते हैं।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਤਿਆ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥
भगवान का गुणगान करने से मन निर्मल हो जाता है और अन्तर्मन से अहंकार दूर हो जाता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਸਿਖੁ ਜੋ ਨਿਤ ਕਰੇ ਸੋ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇ ॥
वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥
गुरु का शिष्य जो नित्य ही प्रभु की स्तुति करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਹਿ ਸੇ ਜਨ ਸੋਹਣੇ ਹਰਿ ਤਿਨ੍ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇ ॥
वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥
जो हरि की स्तुति करते हैं, वे सेवक सुन्दर हैं। हे हरि ! मेरा मिलन उनसे करवा दे,

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਹਿਰਦੈ ਉਚਰਾ ਮੁਖਹੁ ਭੀ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰੇਉ ॥
वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥
ताकि मैं अपने हृदय में स्तुति करता रहूँ और अपने मुख से भी तेरा गुणगान ही उच्चरित करता रहूँ।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜੋ ਕਰਹਿ ਹਉ ਤਨੁ ਮਨੁ ਤਿਨ੍ ਕਉ ਦੇਉ ॥੧॥
नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा की प्रशंसा करते हैं, मैं अपना तन-मन उनको न्यौछावर करता हूँ ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਹੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥
वाहु वाहु साहिबु सचु है अम्रितु जा का नाउ ॥
मेरा सत्यस्वरूप मालिक धन्य-धन्य है, जिसका नाम अमृत रूप है।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥
जिन्होंने मेरे मालिक-प्रभु की सेवा-भक्ति की है, उन्हें नाम-फल की प्राप्ति हो गई है, मैं उन महापुरुषों पर बलिहारी जाता हूँ।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਸੁ ਖਾਇ ॥
वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥
ईश्वर गुणों का भण्डार है, जिसे वह यह भण्डार देता है, वही इसे चखता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਲਿ ਥਲਿ ਭਰਪੂਰੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥
परमात्मा जल एवं धरती में सर्वव्यापक है और गुरुमुख बनकर ही उसे पाया जाता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਸਿਖ ਨਿਤ ਸਭ ਕਰਹੁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਭਾਵੈ ॥
वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥
हे गुरु के शिष्यो ! नित्य ही सभी परमात्मा की स्तुति करो। पूर्ण गुरु को प्रभु की महिमा अच्छी लगती है।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜੋ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥੨॥
नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकंकरु नेड़ि न आवै ॥२॥
हे नानक ! जो मनुष्य अपने मन एवं चित्त से प्रभु का गुणगान करता है, उसके निकट यमदूत नहीं आता॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਚਾ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੀ ਗੁਰਬਾਣੀ ॥
हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥
पूज्य परमेश्वर परम-सत्य है तथा गुरु की सच्ची वाणी भी उसके यश में है।

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਸਚੁ ਪਛਾਣੀਐ ਸਚਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥
सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥
सतगुरु के माध्यम से सत्य की पहचान होती है और मनुष्य सहज ही सत्य में समा जाता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਹਿ ਨਾ ਸਵਹਿ ਜਾਗਤ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥
अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥
ऐसे पवित्र पुरुष रात-दिन जाग्रत रहते हैं, वे सोते नहीं और जागते ही उनकी जीवन-रात्रि व्यतीत होती है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸੇ ਪੁੰਨ ਪਰਾਣੀ ॥
गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी ॥
जो गुरु की शिक्षा द्वारा हरि रस को चखते हैं, वे प्राणी पुण्य के पात्र हैं।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਪਚਿ ਮੁਏ ਅਜਾਣੀ ॥੧੭॥
बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥१७॥
गुरु के बिना किसी को भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुआ और मूर्ख लोग खप-खप कर मर जाते है।

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਬਾਣੀ ਨਿਰੰਕਾਰ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥

उस निराकार परमात्मा की वाणी वाह ! वाह ! प्रशंसनीय है और उस जैसा महान् अन्य कोई नहीं।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹੁ ਹੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥

वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥

वह परम सत्य अगम्य एवं अथाह प्रभु धन्य ! धन्य ! है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ਹੈ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥

वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥

वह बेपरवाह है, जो कुछ वह करता है, वही होता है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਵੈ ਕੋਇ ॥

वाहु वाहु अम्रित नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥

उसका नाम अमृत रूप है, जिसकी प्राप्ति गुरुमुख को ही होती है।

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਕਰਮੀ ਪਾਈਐ ਆਪਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਦੇਇ ॥

वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ करि देइ ॥

प्रभु की स्तुति मनुष्य को अहोभाग्य से ही मिलती है और वह स्वयं ही दया करके इसे प्रदान करता है।

ਨਾਨਕ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਲਏਇ ॥੧॥
नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥१॥
हे नानक ! गुरुमुख बनकर ही वाह-वाह रूपी स्तुतिगान की देन प्राप्त होती है और जीव सदा परमात्मा का ही नाम जपता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਵਈ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥
सतगुरु की सेवा किए बिना मन को शान्ति नहीं आती और द्वैतभाव दूर नहीं होते।

ਜੇ ਬਹੁਤੇਰਾ ਲੋਚੀਐ ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥
मनुष्य चाहे कितनी ही अभिलाषा करे परन्तु प्रभु की कृपा के बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती।

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭ ਵਿਕਾਰੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥
जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥
जिनकी अन्तरात्मा में लोभ विकार हैं, उन्हें द्वैतभाव नष्ट कर देता है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਨ ਚੁਕਈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥
जमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥
इसलिए उनका जन्म-मरण का चक्र मिटता नहीं और अहंत्व में वे दुःख भोगते हैं।

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਸੁ ਖਾਲੀ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥
जिन्होंने सतगुरु से अपना चित्त लगाया है, उनमें कोई भी नाम की देन से खाली नहीं रहा।

ਤਿਨ ਜਮ ਕੀ ਤਲਬ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾ ਓਇ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥
यमदूत उन्हें नहीं बुलाता और न ही वे दुःख सहते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥२॥
हे नानक ! गुरुमुख पार हो जाते हैं और परम-सत्य परमात्मा में विलीन हो जाते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਢਾਢੀ ਤਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਿ ਖਸਮੈ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥
जो अपने मालिक से प्रेम करता है, उसे ही ढाढी कहा जाता है।

ਦਰਿ ਖੜਾ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥
प्रभु के द्वार पर खड़ा हुआ वह उसकी सेवा करता है और गुरु के शब्द द्वारा ईश्वर का चिन्तन करता है।

ਢਾਢੀ ਦਰੁ ਘਰੁ ਪਾਇਸੀ ਸਚੁ ਰਖੈ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥
ढाढी प्रभु के दरबार एवं मन्दिर को प्राप्त कर लेता है और सत्य को अपने हृदय से लगाकर रखता है।

ਢਾਢੀ ਕਾ ਮਹਲੁ ਅਗਲਾ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥
ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥
ढाढी की पदवी सर्वोच्च होती है क्योंकि हरि के नाम से उसका प्रेम है।

ਢਾਢੀ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰਿ ॥੧੮॥
ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥१८॥
ऐसे ढाढी की सेवा-चाकरी यही है कि वह हरि का नाम-सिमरन करता है और प्रभु उसे मोक्ष प्रदान कर देता है। ॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੂਜਰੀ ਜਾਤਿ ਗਵਾਰਿ ਜਾ ਸਹੁ ਪਾਏ ਆਪਣਾ ॥
गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥
गूजरी की जाति गंवार है परन्तु उसने भी अपना पति प्राप्त कर लिया है क्योंकि

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਾਪਣਾ ॥
गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥
वह गुरु के शब्द का चिंतन करती है और रात-दिन प्रभु के नाम का जाप जपती है।

ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਭਉ ਪਵੈ ਸਾ ਕੁਲਵੰਤੀ ਨਾਰਿ ॥
जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥
जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है, वह प्रभु-भय में रहती है और वही नारी कुलीन बन जाती है।

ਸਾ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ਕੰਤ ਕਾ ਜਿਸ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਤੀ ਕਰਤਾਰਿ ॥
सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो क्रिपा कीती करतारि ॥
जिस पर करतार कृपा करता है, वह अपने पति-प्रभु के हुक्म को पहचान लेती है।

ਓਹ ਕੁਚਜੀ ਕੁਲਖਣੀ ਪਰਹਰਿ ਛੋਡੀ ਭਤਾਰਿ ॥
ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥
जो जीव-स्त्री मूर्ख एवं कुलक्षणी होती है, उसे पति-प्रभु त्याग देता है।

ਭੈ ਪਇਐ ਮਲੁ ਕਟੀਐ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਸਰੀਰੁ ॥
भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥
प्रभु का भय धारण करने से मन की मैल शुद्ध हो जाती है और शरीर पवित्र हो जाता है।

ਅੰਤਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਮਤਿ ਊਤਮ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਜਪਿ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰੁ ॥
अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥
गुणों के समुद्र प्रभु का सुमिरन करने से आत्मा आलोकित एवं बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਬੈਸੈ ਭੈ ਰਹੈ ਭੈ ਵਿਚਿ ਕਮਾਵੈ ਕਾਰ ॥
भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥
जो प्रभु-भय में बैठता है, भय में रहता है और भय में ही अपना कार्य करता है,

ਐਥੈ ਸੁਖੁ ਵਡਿਆਈਆ ਦਰਗਹ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ॥
ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥
वह इहलोक में सुख एवं प्रशंसा तथा प्रभु के दरबार में मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेता है।

ਭੈ ਤੇ ਨਿਰਭਉ ਪਾਈਐ ਮਿਲਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥
भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥
प्रभु-भय द्वारा ही निर्भय प्रभु पाया जाता है और प्राणी की ज्योति अपार प्रभु में विलीन हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ਸਾ ਭਲੀ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥
नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥१॥
हे नानक ! जिसे करतार आप क्षमा कर देता है, वही जीव-स्त्री भली है जो अपने पति-प्रभु को अच्छी लगती है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਚੇ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥
सदैव ही सत्यस्वरूप परमात्मा की प्रशंसा करनी चाहिए, में उस परम-सत्य पर सर्वदा बलिहारी जाता हूँ।

ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਛੋਡਿ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਸਾ ਜਿਹਵਾ ਜਲਿ ਜਾਉ ॥੨॥
नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥२॥
हे नानक ! जो एक ईश्वर को छोड़कर किसी दूसरे के गुणानुवाद में लगती है, वह जिव्हा जल जानी चाहिए ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਅੰਸਾ ਅਉਤਾਰੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਕੀਆ ॥
अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥
परमात्मा ने अंशावतारों की उत्पत्ति की और माया का मोह भी स्वयं ही उत्पन्न किया।

ਜਿਉ ਰਾਜੇ ਰਾਜੁ ਕਮਾਵਦੇ ਦੁਖ ਸੁਖ ਭਿੜੀਆ ॥
जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥
ये अंशावतार भी राजाओं की भाँति राज्य करते रहे तथा दुःख-सुख हेतु भिड़ने लगे।

ਈਸਰੁ ਬ੍ਰਹਮਾ ਸੇਵਦੇ ਅੰਤੁ ਤਿਨ੍ੀ ਨ ਲਹੀਆ ॥
ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ही न लहीआ ॥
शिवजी एवं ब्रह्मा भी एक परमात्मा का सिमरन करते हैं लेकिन उन्हें भी उसका भेद नहीं मिला।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਗਟੀਆ ॥
निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥
वह निर्भय, निराकार एवं अलक्ष्य है और गुरुमुख के अन्तर में ही प्रगट होता है।

ਤਿਥੈ ਸੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਨ ਵਿਆਪਈ ਅਸਥਿਰੁ ਜਗਿ ਥੀਆ ॥੧੯॥
तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥१९॥
उस अवस्था में शोक एवं वियोग का प्रभाव नहीं होता और वह दुनिया में सदा स्थिर हो जाता है॥ १६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਏਹੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਹੈ ਜੇਤਾ ਹੈ ਆਕਾਰੁ ॥
एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥
जितना यह संसार दृष्टिगोचर है, सब नाशवान है।

ਜਿਨਿ ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਸੋ ਹੋਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥
जो इस लेखे (बात) को समझता है, वह स्वीकार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਜੇ ਕੋ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦਾ ਸੋ ਮੂਰਖੁ ਗਾਵਾਰੁ ॥੧॥
नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥१॥
हे नानक ! यदि कोई अपने आपको महान् कहलवाता है, वह मूर्ख एवं गंवार है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨੁ ਕੁੰਚਰੁ ਪੀਲਕੁ ਗੁਰੂ ਗਿਆਨੁ ਕੁੰਡਾ ਜਹ ਖਿੰਚੇ ਤਹ ਜਾਇ ॥
मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥
यह मन हाथी है, गुरु महावत एवं ज्ञान अंकुश है, जहाँ कहीं भी गुरु ले जाता है, वहाँ ही मन जाता है।

ਨਾਨਕ ਹਸਤੀ ਕੁੰਡੇ ਬਾਹਰਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਉਝੜਿ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥२॥
हे नानक ! ज्ञान रूपी अंकुश के बिना मन रूपी हाथी बार-बार उजाड़ में भटकता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥
तिसु आगै अरदासि जिनि उपाइआ ॥
मेरी उस परमात्मा के समक्ष प्रार्थना है, जिसने सारा जगत पैदा किया है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਣਾ ਸੇਵਿ ਸਭ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥
सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥
अपने सतिगुरु की सेवा करके मैंने सभी फल प्राप्त कर लिए हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ਸਦਾ ਧਿਆਇਆ ॥
अम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥
मैं सदा ही हरि के नामामृत का ध्यान करता हूँ।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਦੁਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥
संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥
संतजनों की संगति में रहकर मैंने अपने दुःख मिटा लिए हैं।

ਨਾਨਕ ਭਏ ਅਚਿੰਤੁ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਿਹਚਲਾਇਆ ॥੨੦॥
नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥२०॥
हे नानक ! हरि का निश्चल धन प्राप्त करके मैं निश्चिंत हो गया हूँ ॥२०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਖੇਤਿ ਮਿਆਲਾ ਉਚੀਆ ਘਰੁ ਉਚਾ ਨਿਰਣਉ ॥
खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥
जिस तरह किसान ऊँचे बादल देखकर खेत की मेंढ ऊँची कर देता है,

ਮਹਲ ਭਗਤੀ ਘਰਿ ਸਰੈ ਸਜਣ ਪਾਹੁਣਿਅਉ ॥
महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥
वैसे ही जीव-स्त्री के हृदय-घर में साजन प्रभु प्रवेश कर जाता है और भक्ति के कारण अतिथि बना रहता है।

ਬਰਸਨਾ ਤ ਬਰਸੁ ਘਨਾ ਬਹੁੜਿ ਬਰਸਹਿ ਕਾਹਿ ॥
बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥
हे मेध रूपी गुरुदेव ! यद्यपि हरि-नाम की वर्षा करनी है तो करो क्योंकि आयु बीतने पर फिर बरसने का क्या अभिप्राय ?

ਨਾਨਕ ਤਿਨ੍ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨ੍ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥੧॥
नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥१॥
हे नानक ! जिन्होंने गुरुमुख बनकर परमात्मा को मन में प्राप्त कर लिया है, मैं उनसे बलिहारी जाता हूँ ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਿਠਾ ਸੋ ਜੋ ਭਾਵਦਾ ਸਜਣੁ ਸੋ ਜਿ ਰਾਸਿ ॥
मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥
मीठा वही होता है, जो अच्छा लगता है और सच्चा मित्र वही है जो दुख-सुख में साथ निभाने वाला हो।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਕਉ ਆਪਿ ਕਰੇ ਪਰਗਾਸੁ ॥੨॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥२॥
हे नानक ! जिसके मन में भगवान आप प्रकाश करता है, वही गुरुमुख जाना जाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਪ੍ਰਭ ਪਾਸਿ ਜਨ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਂਈ ॥
प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥
प्रभु के पास सेवक की प्रार्थना है, हे प्रभु ! तू ही मेरा सच्चा साँई है।

ਤੂ ਰਖਵਾਲਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਉ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ॥
तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥
तू सदैव ही मेरा रखवाला है, मैं तेरी ही आराधना करता हूँ।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਿਆ ਤੂ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥
जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥
सारे जीव-जन्तु तेरे ही पैदा किए हुए हैं, तू सबमें समा रहा है।

ਜੋ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰੇ ਤਿਸੁ ਮਾਰਿ ਪਚਾਈ ॥
जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥
जो तेरे दास की निन्दा करता है, उसे तुम कुचल कर नष्ट कर देते हो।

ਚਿੰਤਾ ਛਡਿ ਅਚਿੰਤੁ ਰਹੁ ਨਾਨਕ ਲਗਿ ਪਾਈ ॥੨੧॥
चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥२१॥
हे नानक ! प्रभु के चरण-स्पर्श कर तथा चिन्ता छोड़कर अचिंत रह ॥२१॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਆਸਾ ਕਰਤਾ ਜਗੁ ਮੁਆ ਆਸਾ ਮਰੈ ਨ ਜਾਇ ॥
आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥
सारा जगत आशा करता हुआ मर मिट जाता है परन्तु आशा नहीं मरती।

ਨਾਨਕ ਆਸਾ ਪੂਰੀਆ ਸਚੇ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੧॥
नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥१॥
हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ चित्त लगाने से सब आशाएँ पूरी हो जाती हैं।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਮਰਿ ਜਾਇਸੀ ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਸੋ ਲੈ ਜਾਇ ॥
आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥
आशा-अभिलाषा तब मिट जाएँगी, जब इन्हें पैदा करने वाला भगवान इनका विनाश कर देगा।

ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਲੁ ਕੋ ਨਹੀ ਬਾਝਹੁ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ॥੨॥
नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥२॥
हे नानक ! हरि के नाम के अलावा कोई भी वस्तु अनश्वर नहीं ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਕਰਿ ਪੂਰਾ ਥਾਟੁ ॥
आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥
भगवान ने स्वयं ही पूर्ण ढांचा बनाकर जगत की रचना की है।

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਹਰਿ ਹਾਟੁ ॥
आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥
वह स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही व्यापारी एवं स्वयं ही हाट बाजार है।

ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਆਪੇ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਹੀ ਖੇਵਾਟੁ ॥
आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥
वह आप ही सागर, आप ही जहाज और आप ही खेवट है।

ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਚੇਲਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਦਸੇ ਘਾਟੁ ॥
आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥
वह आप ही गुरु एवं आप ही चेला है और आप ही घाट दिखाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੁ ॥੨੨॥੧॥ ਸੁਧੁ
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥२२॥१॥ सुधु
हे नानक ! तू उस परमात्मा का नाम-स्मरण कर और अपने सारे पाप दूर कर ले ॥२२॥१॥ शुद्ध।

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੫
रागु गूजरी वार महला ५
रागु गूजरी वार महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਅੰਤਰਿ ਗੁਰੁ ਆਰਾਧਣਾ ਜਿਹਵਾ ਜਪਿ ਗੁਰ ਨਾਉ ॥
अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥
अपने अन्तर्मन में गुरु की आराधना करो और जीभ से गुरु के नाम का जाप करो।

ਨੇਤ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੇਖਣਾ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਨਣਾ ਗੁਰ ਨਾਉ ॥
नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥
अपने नेत्रों से सच्चे गुरु के दर्शन करो तथा कानों से गुरु का नाम सुनो।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਦਰਗਹ ਪਾਈਐ ਠਾਉ ॥
सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥
सतिगुरु के प्रेम में रंग जाने से तुझे प्रभु के दरबार में आश्रय मिल जाएगा।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਏਹ ਵਥੁ ਦੇਇ ॥
कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥
हे नानक ! जिस पर प्रभु-कृपा करता है, उसे ही यह अमूल्य वस्तु देता है।

ਜਗ ਮਹਿ ਉਤਮ ਕਾਢੀਅਹਿ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥੧॥
जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥१॥
कुछ विरले ही व्यक्ति होते हैं जो इस जगत में उत्तम कहलाते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਰਖੇ ਰਖਣਹਾਰਿ ਆਪਿ ਉਬਾਰਿਅਨੁ ॥
रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥
रक्षक प्रभु ने मेरी रक्षा की है और उसने स्वयं ही बचाकर मेरा कल्याण कर दिया है।

ਗੁਰ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਇ ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਅਨੁ ॥
गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥
गुरु के चरणों में लगने से मेरे कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।

ਹੋਆ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵਿਸਾਰਿਅਨੁ ॥
होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥
जब प्रभु स्वयं दयालु हो गया है तो में अपने मन से उसे विस्मृत नहीं करता।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਭਵਜਲੁ ਤਾਰਿਅਨੁ ॥
साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥
संतजनों की संगति में रहकर भवसागर से पार हो गया हूँ।

ਸਾਕਤ ਨਿੰਦਕ ਦੁਸਟ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਬਿਦਾਰਿਅਨੁ ॥
साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥
शाक्त, निन्दकों एवं दुष्टों का प्रभु ने क्षण में ही नाश कर दिया है।

ਤਿਸੁ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਮਨੈ ਮਾਹਿ ॥
तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥
नानक के मन में उस मालिक की टेक है,

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਜਾਹਿ ॥੨॥
जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥
जिसकी आराधना करने से सुख प्राप्त होता है और सभी दुःख दूर हो जाते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਪੁਰਖੁ ਅਗਮੁ ਅਪਾਰੀਐ ॥
अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥
परमात्मा कुल रहित, मायातीत, सर्वशक्तिमान, अगम्य एवं अपार है।

ਸਚੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸਚੁ ਨਿਹਾਰੀਐ ॥
सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥
वास्तव में सत्य का पुंज, परम-सत्य परमात्मा सत्य का रूप बनकर ही दिखाई देता है।

ਕੂੜੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿਛੁ ਤੇਰੀ ਧਾਰੀਐ ॥
कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥
हे प्रभु ! यह सृष्टि तेरी पैदा की हुई है मगर कोई भी वस्तु काल्पनिक नहीं लगती।

ਸਭਸੈ ਦੇ ਦਾਤਾਰੁ ਜੇਤ ਉਪਾਰੀਐ ॥
सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥
वह दाता सभी को भोजन देता है, जिन्हें उसने पैदा किया है और

ਇਕਤੁ ਸੂਤਿ ਪਰੋਇ ਜੋਤਿ ਸੰਜਾਰੀਐ ॥
इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥
सभी को एक ही हुक्म रूपी धागे में पिरोकर उसने उनके भीतर अपनी ज्योति प्रकाशमान की है।

ਹੁਕਮੇ ਭਵਜਲ ਮੰਝਿ ਹੁਕਮੇ ਤਾਰੀਐ ॥
हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥
उसके हुक्म से कई भवसागर में डूब जाते हैं और कई पार हो जाते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਤੁਧੁ ਧਿਆਏ ਸੋਇ ਜਿਸੁ ਭਾਗੁ ਮਥਾਰੀਐ ॥
प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥
हे पूज्य प्रभु ! जिसके मस्तक पर भाग्य होता है, वही मनुष्य तुझे याद करता है।

ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਲਖੀ ਨ ਜਾਇ ਹਉ ਤੁਧੁ ਬਲਿਹਾਰੀਐ ॥੧॥
तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥१॥
तेरी गति एवं अनुमान (शक्ति) जाने नहीं जा सकते, इसलिए मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ ॥१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜਾ ਤੂੰ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸਹਿ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥
हे मेहरबान परमात्मा ! यदि तू खुश हो जाए तो अचिंत ही हमारे मन में निवास कर लेता है।

ਜਾ ਤੂੰ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਨਉ ਨਿਧਿ ਘਰ ਮਹਿ ਪਾਹਿ ॥
जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥
हे मेहरबान ! यदि तू खुश हो जाए तो हमारे हृदय रूपी घर में ही नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

ਜਾ ਤੂੰ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਮੰਤ੍ਰੁ ਕਮਾਹਿ ॥
जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥
हे दयालु प्रभु ! यदि तू प्रसन्न हो जाए तो मैं गुरु के मंत्र की साधना करता हूँ।

ਜਾ ਤੂੰ ਤੁਸਹਿ ਮਿਹਰਵਾਨ ਤਾ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੧॥
जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे मेहरबान ! जब तू प्रसन्न हो जाता है तो मैं सत्य में ही समा जाता हूँ ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਕਿਤੀ ਬੈਹਨ੍ਹਿ ਬੈਹਣੇ ਮੁਚੁ ਵਜਾਇਨਿ ਵਜ ॥
किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥
कितने ही राज सिंहासन पर बैठते हैं और उनके लिए अनेक वाद्ययन्त्र बजते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਵਿਣੁ ਕਿਸੈ ਨ ਰਹੀਆ ਲਜ ॥੨॥
नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥२॥
हे नानक ! सत्यनाम के बिना किसी की भी मान-प्रतिष्ठा नहीं बची ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਨ੍ਹ੍ਹਿ ਬੇਦ ਕਤੇਬਾ ਸਣੁ ਖੜੇ ॥
तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥
हे स्वामी ! वेद तथा कतेब साथ खड़े तेरी स्तुति कर रहे हैं।

ਗਣਤੀ ਗਣੀ ਨ ਜਾਇ ਤੇਰੈ ਦਰਿ ਪੜੇ ॥
गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥
जो तेरे द्वार पर नतमस्तक पड़े हुए हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती।

ਬ੍ਰਹਮੇ ਤੁਧੁ ਧਿਆਇਨ੍ਹ੍ਹਿ ਇੰਦ੍ਰ ਇੰਦ੍ਰਾਸਣਾ ॥
ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा ॥
ब्रह्मा भी तेरी वन्दना करता है तथा इन्द्रासन पर विराजमान इन्द्र भी तुझे याद करता है।

ਸੰਕਰ ਬਿਸਨ ਅਵਤਾਰ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮੁਖਿ ਭਣਾ ॥
संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥
शंकर, विष्णु अवतार अपने मुख से हरि यश करते हैं।

ਪੀਰ ਪਿਕਾਬਰ ਸੇਖ ਮਸਾਇਕ ਅਉਲੀਏ ॥
पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥
हे प्रभु ! पीर-पैगम्बरं, शेख और औलिया तुझे ही स्मरण करते हैं।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਉਲੀਏ ॥
ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥
हे निराकार परमात्मा ! ताने-पेटे की भाँति हरेक जीव में तू ओत-प्रोत है।

ਕੂੜਹੁ ਕਰੇ ਵਿਣਾਸੁ ਧਰਮੇ ਤਗੀਐ ॥
कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥
झूठ के कारण मानव का विनाश हो जाता है तथा धर्म के मार्ग पर वह प्रफुल्लित होता है।

ਜਿਤੁ ਜਿਤੁ ਲਾਇਹਿ ਆਪਿ ਤਿਤੁ ਤਿਤੁ ਲਗੀਐ ॥੨॥
जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥२॥
जहाँ-कहीं भी परमात्मा जीव को लगाता है, उधर ही वह लग जाता है ॥२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਚੰਗਿਆਈਂ ਆਲਕੁ ਕਰੇ ਬੁਰਿਆਈਂ ਹੋਇ ਸੇਰੁ ॥
चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥
अज्ञानी मानव (शुभ कर्म) अच्छाई करने में आलस्य करता है लेकिन बुरा करने में शेर बन जाता है।

ਨਾਨਕ ਅਜੁ ਕਲਿ ਆਵਸੀ ਗਾਫਲ ਫਾਹੀ ਪੇਰੁ ॥੧॥
नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥१॥
हे नानक ! आज अथवा कल मृत्यु ने आना ही है और मूर्ख मनुष्य के पैर में मौत का फंदा पड़ना ही है ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਕਿਤੀਆ ਕੁਢੰਗ ਗੁਝਾ ਥੀਐ ਨ ਹਿਤੁ ॥
कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥
हमारे अनेक दुष्कर्मों का हित तुम से छिपा हुआ नहीं।

ਨਾਨਕ ਤੈ ਸਹਿ ਢਕਿਆ ਮਨ ਮਹਿ ਸਚਾ ਮਿਤੁ ॥੨॥
नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥२॥
हे नानक के परमेश्वर ! तुम ही हमारे मन में सच्चे मित्र हो और तूने ही हमारी बुराइयों को ढंका हुआ है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਉ ਮਾਗਉ ਤੁਝੈ ਦਇਆਲ ਕਰਿ ਦਾਸਾ ਗੋਲਿਆ ॥
हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥
हे दयालु परमेश्वर ! मैं तुझसे यह दान माँगता हूँ कि मुझे अपने दासों का सेवक बना दो।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਰਾਜੁ ਜੀਵਾ ਬੋਲਿਆ ॥
नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥
हे दाता ! तेरा नाम-स्मरण करने से ही मैं जीवित हूँ और नवनिधियाँ एवं राज प्राप्त करता हूँ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦਾਸਾ ਘਰਿ ਘਣਾ ॥
अम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा ॥
प्रभु के दासों के घर में अमृत नाम का भारी भण्डार है,

ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸ੍ਰਵਣੀ ਜਸੁ ਸੁਣਾ ॥
तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥
उनकी संगति में विराज कर मैं अपने कानों से तेरा यश सुनकर आनंदित हो जाता हूँ।

ਕਮਾਵਾ ਤਿਨ ਕੀ ਕਾਰ ਸਰੀਰੁ ਪਵਿਤੁ ਹੋਇ ॥
कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥
उनकी सेवा करने से मेरा शरीर पवित्र हो गया है।

ਪਖਾ ਪਾਣੀ ਪੀਸਿ ਬਿਗਸਾ ਪੈਰ ਧੋਇ ॥
पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥
मैं उनके लिए पंखा करता हूँ, उनके लिए जल लाता हूँ, उनके लिए चक्की पीसता हूँ और उनके चरण धोकर खुश होता हूँ।

ਆਪਹੁ ਕਛੂ ਨ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੀਐ ॥
आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥
हे प्रभु! मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि कर दीजिए, चूंकि अपने आप मैं कुछ भी नहीं कर सकता।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਦਿਚੈ ਥਾਉ ਸੰਤ ਧਰਮ ਸਾਲੀਐ ॥੩॥
मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥३॥
मुझ निर्गुण को संतों की धर्मशाला में शरण दीजिए ॥३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਸਾਜਨ ਤੇਰੇ ਚਰਨ ਕੀ ਹੋਇ ਰਹਾ ਸਦ ਧੂਰਿ ॥
साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥
हे मेरे साजन ! मैं सदा ही तेरे चरणों की धूलि बना रहूँ।

ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਹਾਰੀਆ ਪੇਖਉ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥੧॥
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥
नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु जी ! मैंने तेरी ही शरण ली है और मैं हमेशा ही तुझे अपने पास देखता रहूँ ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਅਸੰਖ ਹੋਹਿ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗ ॥
पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥
हरि के चरणों में अपने मन को लगाकर असंख्य पतित जीव पवित्र-पावन हो गए हैं।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਜਿਸੁ ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗ ॥੨॥
अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥२॥
हे नानक ! प्रभु का नाम ही अड़सठ तीर्थ (के समान) है लेकिन यह उसे ही प्राप्त होता है जिसके मस्तक पर भाग्य लिखा होता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਨਿਤ ਜਪੀਐ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨਾਉ ਪਰਵਦਿਗਾਰ ਦਾ ॥
नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥
अपनी प्रत्येक सांस एवं ग्रास से परवरदिगार का नाम जपना चाहिए।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਰੇ ਰਹੰਮ ਤਿਸੁ ਨ ਵਿਸਾਰਦਾ ॥
जिस नो करे रहम तिसु न विसारदा ॥
जिस पर वह रहम करता है, वह उसे नहीं भुलाता।

ਆਪਿ ਉਪਾਵਣਹਾਰ ਆਪੇ ਹੀ ਮਾਰਦਾ ॥
आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥
वह स्वयं ही दुनिया की रचना करने वाला है और स्वयं ही विनाशक है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ਬੁਝਿ ਵੀਚਾਰਦਾ ॥
सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥
जाननहार प्रभु सब कुछ जानता है एवं समझ कर अपनी रचना की तरफ ध्यान देता है।

ਅਨਿਕ ਰੂਪ ਖਿਨ ਮਾਹਿ ਕੁਦਰਤਿ ਧਾਰਦਾ ॥
अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥
वह अपनी कुदरत द्वारा एक क्षण में ही अनेक रूप धारण कर लेता है और

ਜਿਸ ਨੋ ਲਾਇ ਸਚਿ ਤਿਸਹਿ ਉਧਾਰਦਾ ॥
जिस नो लाइ सचि तिसहि उधारदा ॥
जिसे सत्य के साथ लगाता है, उसका उद्धार कर देता है।

ਜਿਸ ਦੈ ਹੋਵੈ ਵਲਿ ਸੁ ਕਦੇ ਨ ਹਾਰਦਾ ॥
जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥
जिसके पक्ष में वह परमात्मा है, वह कदाचित नहीं हारता।

ਸਦਾ ਅਭਗੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹੈ ਹਉ ਤਿਸੁ ਨਮਸਕਾਰਦਾ ॥੪॥
सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥४॥
उसका दरबार सदा अटल है, मैं उसे कोटि-कोटि नमन करता हूँ ॥४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਛੋਡੀਐ ਦੀਜੈ ਅਗਨਿ ਜਲਾਇ ॥
कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥
हे नानक ! काम, क्रोध एवं लोभ को छोड़कर उन्हें अग्नि में जला देना चाहिए।

ਜੀਵਦਿਆ ਨਿਤ ਜਾਪੀਐ ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ॥੧॥
जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥१॥
जब तक प्राण हैं, तब तक नित्य सत्यनाम का सुमिरन करना चाहिए ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਸਿਮਰਤ ਸਿਮਰਤ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਣਾ ਸਭ ਫਲ ਪਾਏ ਆਹਿ ॥
सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥
अपने प्रभु का सिमरन करने से मैंने सभी फल प्राप्त कर लिए हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਆ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਦੀਆ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥२॥
हे नानक ! मैंने नाम की आराधना की है और पूर्ण गुरु ने मुझे परमात्मा से मिला दिया है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੋ ਮੁਕਤਾ ਸੰਸਾਰਿ ਜਿ ਗੁਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ॥
सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥
जिसे भी गुरु ने उपदेश दिया है, वह इस संसार में मोह-माया के बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर गया है।

ਤਿਸ ਕੀ ਗਈ ਬਲਾਇ ਮਿਟੇ ਅੰਦੇਸਿਆ ॥
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥
उसकी विपदा दूर हो गई है तथा उसकी चिंता भी मिट गई है।

ਤਿਸ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਲੁ ਹੋਇ ॥
तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥
उसके दर्शन करके जगत प्रसन्न हो जाता है।

ਜਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਲੁ ਪਾਪਾ ਮੈਲੁ ਧੋਇ ॥
जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥
प्रभु के सेवक की संगति में रहकर प्राणी आनंदित हो जाता है और उसके पापों की मैल साफ हो जाती है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ਓਥੈ ਜਾਪੀਐ ॥
अम्रितु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥
अमृत रूपी सत्य नाम का वहाँ जाप किया जाता है।

ਮਨ ਕਉ ਹੋਇ ਸੰਤੋਖੁ ਭੁਖਾ ਧ੍ਰਾਪੀਐ ॥
मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥
मन को संतोष प्राप्त होता है और भूख से मन तृप्त हो जाता है।

ਜਿਸੁ ਘਟਿ ਵਸਿਆ ਨਾਉ ਤਿਸੁ ਬੰਧਨ ਕਾਟੀਐ ॥
जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥
जिसके हृदय में नाम निवास करता है, उसके बन्धन कट जाते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਖਾਟੀਐ ॥੫॥
गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥५॥
गुरु की कृपा से कोई विरला व्यक्ति हरि धन का लाभ प्राप्त करता है ॥५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਮਨ ਮਹਿ ਚਿਤਵਉ ਚਿਤਵਨੀ ਉਦਮੁ ਕਰਉ ਉਠਿ ਨੀਤ ॥
मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥
मैं अपने मन में सोचता रहता हूँ कि नित्य प्रभातकाल उठ कर हरि-कीर्तन का उद्यम करूँ।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਕਾ ਆਹਰੋ ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਮੀਤ ॥੧॥
हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥१॥
हे नानक के मित्र प्रभु ! मुझे हरि-कीर्तन करने का उद्यम प्रदान कीजिए॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਧਾਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖਿਆ ਮਨੁ ਤਨੁ ਰਤਾ ਮੂਲਿ ॥
द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥
अपनी दया-दृष्टि धारण करके प्रभु ने मेरी रक्षा की है और मेरा मन एवं तन सत्य में लीन रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਣੀਆ ਮਰਉ ਵਿਚਾਰੀ ਸੂਲਿ ॥੨॥
नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥२॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्रियां अपने प्रभु को अच्छी लगती हैं, उनके हृदय की वेदना नाश हो जाती है।॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜੀਅ ਕੀ ਬਿਰਥਾ ਹੋਇ ਸੁ ਗੁਰ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ਕਰਿ ॥
जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥
अपने मन की पीड़ा संबंधी अपने गुरु के समक्ष प्रार्थना करो।

ਛੋਡਿ ਸਿਆਣਪ ਸਗਲ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਧਰਿ ॥
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥
अपनी समस्त चतुराइयाँ त्याग कर अपना मन-तन गुरु को अर्पित कर दो।

ਪੂਜਹੁ ਗੁਰ ਕੇ ਪੈਰ ਦੁਰਮਤਿ ਜਾਇ ਜਰਿ ॥
पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥
गुरु के चरणों की पूजा करो चूंकि तेरी दुर्मति नष्ट हो जाए।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਭਵਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਤਰਿ ॥
साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥
संतजनों की संगति में रहकर विषम संसार-सागर से पार हो जाओ।

ਸੇਵਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਵ ਅਗੈ ਨ ਮਰਹੁ ਡਰਿ ॥
सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥
अपने देव रूप सच्चे गुरु की श्रद्धा से सेवा करो, तदुपरांत परलोक में भयभीत होकर नहीं मरोगे।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰੇ ਨਿਹਾਲੁ ਊਣੇ ਸੁਭਰ ਭਰਿ ॥
खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥
गुरुदेव एक क्षण में ही तुझे प्रसन्न कर देंगे और तेरे शून्य मन को गुणों से भरपूर कर देंगे।

ਮਨ ਕਉ ਹੋਇ ਸੰਤੋਖੁ ਧਿਆਈਐ ਸਦਾ ਹਰਿ ॥
मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥
सदा हरि का ध्यान-मनन करने से मन को संतोष प्राप्त होता है।

ਸੋ ਲਗਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵ ਜਾ ਕਉ ਕਰਮੁ ਧੁਰਿ ॥੬॥
सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥६॥
लेकिन सतिगुरु की सेवा में वही जुटता है, जिस पर प्रभु की मेहर हुई है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਲਗੜੀ ਸੁਥਾਨਿ ਜੋੜਣਹਾਰੈ ਜੋੜੀਆ ॥
लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥
मेरा मन प्रेम पावन स्थान प्रभु-चरणों में लग गया है और मिलाप कराने वाले प्रभु ने स्वयं मिलाया है।

ਨਾਨਕ ਲਹਰੀ ਲਖ ਸੈ ਆਨ ਡੁਬਣ ਦੇਇ ਨ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੧॥
नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥१॥
हे नानक ! इस संसार-सागर में लाखों लहरें उठ रही हैं परन्तु मेरा प्रियतम-प्रभु उन लहरों में मुझे डूबने नहीं देता ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਬਨਿ ਭੀਹਾਵਲੈ ਹਿਕੁ ਸਾਥੀ ਲਧਮੁ ਦੁਖ ਹਰਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥
बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥
इस जगत रूपी भयानक वन में हरि-नाम रूपी साथी मिल गया है, जो दु:खों का नाशक है।

ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਕਾਮਾਂ ॥੨॥
बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥२॥
हे नानक ! मैं प्यारे संतों पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण कर दिए हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਪਾਈਅਨਿ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਤੇਰੈ ਰੰਗਿ ਰਤਿਆ ॥
पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥
हे प्रभु! तेरे प्रेम में रंग जाने से सभी भण्डार प्राप्त हो जाते हैं और

ਨ ਹੋਵੀ ਪਛੋਤਾਉ ਤੁਧ ਨੋ ਜਪਤਿਆ ॥
न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥
तेरा सुमिरन करने से जीव को पश्ताचाप नहीं होता।

ਪਹੁਚਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਜਨ ॥
पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥
कोई भी उसकी समानता नहीं कर सकता, तेरे सेवक को तेरा ही सहारा है

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸੁਖ ਲਹਾ ਚਿਤਾਰਿ ਮਨ ॥
गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥
पूर्ण गुरुदेव को वाह ! वाह! कहता हूँ और अपने मन में उनको याद करके मैं सुख प्राप्त करता हूँ।

ਗੁਰ ਪਹਿ ਸਿਫਤਿ ਭੰਡਾਰੁ ਕਰਮੀ ਪਾਈਐ ॥
गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥
गुरुदेव के पास प्रभु की महिमा का भण्डार है जो तकदीर से ही पाया जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ਬਹੁੜਿ ਨ ਧਾਈਐ ॥
सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥
यदि सतिगुरु कृपा-दृष्टि कर दें तो प्राणी दोबारा नहीं भटकता।

ਰਖੈ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਕਰਿ ਦਾਸਾ ਆਪਣੇ ॥
रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥
दया का सागर प्रभु प्राणी को अपना दास बनाकर स्वयं उसकी रक्षा करता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜੀਵਾ ਸੁਣਿ ਸੁਣੇ ॥੭॥
हरि हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥७॥
मैं परमात्मा का 'हरि-हरि' नाम सुन-सुन कर जीवित हूँ। ॥७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਪ੍ਰੇਮ ਪਟੋਲਾ ਤੈ ਸਹਿ ਦਿਤਾ ਢਕਣ ਕੂ ਪਤਿ ਮੇਰੀ ॥
प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥
हे मेरे मालिक ! तूने मेरी लाज बचाने के लिए अपने प्रेम का रेशमी वस्त्र दिया है।

ਦਾਨਾ ਬੀਨਾ ਸਾਈ ਮੈਡਾ ਨਾਨਕ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਾ ਤੇਰੀ ॥੧॥
दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥
नानक का कथन है कि हे मेरे साँई ! तू बड़ा चतुर एवं प्रवीण है किन्तु मैं तेरी महिमा नहीं जानता ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਤੈਡੈ ਸਿਮਰਣਿ ਹਭੁ ਕਿਛੁ ਲਧਮੁ ਬਿਖਮੁ ਨ ਡਿਠਮੁ ਕੋਈ ॥
तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥
हे ईश्वर ! तेरा नाम-सुमिरन करने से मुझे सब कुछ मिल गया है तथा मुझे कोई मुश्किल नहीं आई।

ਜਿਸੁ ਪਤਿ ਰਖੈ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥੨॥
जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥२॥
हे नानक ! जिसकी प्रतिष्ठा की रक्षा सच्चा मालिक परमात्मा करता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹੋਵੈ ਸੁਖੁ ਘਣਾ ਦਯਿ ਧਿਆਇਐ ॥
होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥
भगवान का ध्यान करने से मनुष्य को महासुख मिलता है।

ਵੰਞੈ ਰੋਗਾ ਘਾਣਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਐ ॥
वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥
हरि का गुणगान करने से हर प्रकार के रोग लुप्त हो जाते हैं।

ਅੰਦਰਿ ਵਰਤੈ ਠਾਢਿ ਪ੍ਰਭਿ ਚਿਤਿ ਆਇਐ ॥
अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥
यदि प्रभु चित्त में आ जाए तो अन्तर्मन में ठंडक आ जाती है।

ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ ਆਸ ਨਾਇ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਐ ॥
पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥
नाम को मन में बसाने से आशा पूर्ण हो जाती है।

ਕੋਇ ਨ ਲਗੈ ਬਿਘਨੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਐ ॥
कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥
यदि जीव अपना अहंत्व मिटा दे तो उसे कोई विघ्न नहीं आता।

ਗਿਆਨ ਪਦਾਰਥੁ ਮਤਿ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਇਐ ॥
गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥
ज्ञान रूपी पदार्थ एवं बुद्धि गुरु से प्राप्त होते हैं।

ਤਿਨਿ ਪਾਏ ਸਭੇ ਥੋਕ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਦਿਵਾਇਐ ॥
तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥
जिसे प्रभु स्वयं देता है, वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है।

ਤੂੰ ਸਭਨਾ ਕਾ ਖਸਮੁ ਸਭ ਤੇਰੀ ਛਾਇਐ ॥੮॥
तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥८॥
हे परमेश्वर ! तू सबका मालिक है और सभी तेरी छत्रछाया में हैं ॥८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਨਦੀ ਤਰੰਦੜੀ ਮੈਡਾ ਖੋਜੁ ਨ ਖੁੰਭੈ ਮੰਝਿ ਮੁਹਬਤਿ ਤੇਰੀ ॥
नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुमभै मंझि मुहबति तेरी ॥
हे परमेश्वर ! जगत रूपी नदिया तैरते हुए मेरा पैर नहीं धंसता, क्योंकि मेरी तुझ से ही मोहब्बत है।

ਤਉ ਸਹ ਚਰਣੀ ਮੈਡਾ ਹੀਅੜਾ ਸੀਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਤੁਲਹਾ ਬੇੜੀ ॥੧॥
तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥१॥
तेरे चरणों में मेरा मन सिला हुआ है, जगत रूपी नदिया पार करने के लिए तू ही नानक की तुलहा एवं नाव है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਦਿਸੰਦੜਿਆ ਦੁਰਮਤਿ ਵੰਞੈ ਮਿਤ੍ਰ ਅਸਾਡੜੇ ਸੇਈ ॥
जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥
जिनके दर्शन करने से दुर्मति नाश हो जाती है, वही हमारे मित्र हैं।

ਹਉ ਢੂਢੇਦੀ ਜਗੁ ਸਬਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ॥੨॥
हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥२॥
हे नानक ! मैंने सारा जगत खोज लिया परन्तु ऐसे विरले ही पुरुष मिलते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਵੈ ਸਾਹਿਬੁ ਚਿਤਿ ਤੇਰਿਆ ਭਗਤਾ ਡਿਠਿਆ ॥
आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥
हे मालिक ! तेरे भक्तों के दर्शन करने से तुम स्वयं ही हमारे मन में आ जाते हो।

ਮਨ ਕੀ ਕਟੀਐ ਮੈਲੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਵੁਠਿਆ ॥
मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥
साधसंगति में रहने से मन की मैल दूर हो जाती है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਉ ਕਟੀਐ ਜਨ ਕਾ ਸਬਦੁ ਜਪਿ ॥
जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥
भक्तजनों के शब्द को जपने से जन्म-मरण का डर दूर हो जाता है।

ਬੰਧਨ ਖੋਲਨ੍ਹ੍ਹਿ ਸੰਤ ਦੂਤ ਸਭਿ ਜਾਹਿ ਛਪਿ ॥
बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥
संत माया संबंधी तमाम बन्धन खोल देते हैं, जिसके फलस्वरूप माया के दूत-काम, क्रोध, लोभ मोह इत्यादि लुप्त हो जाते हैं।

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਲਾਇਨ੍ਹ੍ਹਿ ਰੰਗੁ ਜਿਸ ਦੀ ਸਭ ਧਾਰੀਆ ॥
तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥
संतजन उस ईश्वर के साथ हमारा प्रेम उत्पन्न कर देते हैं, जिसने इस सृष्टि की रचना की है।

ਊਚੀ ਹੂੰ ਊਚਾ ਥਾਨੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰੀਆ ॥
ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥
उस परमात्मा का निवास स्थान सबसे ऊँचा है, जो अगम्य एवं अपार है।

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਕਰ ਜੋੜਿ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਈਐ ॥
रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥
हाथ जोड़कर रात-दिन अपनी प्रत्येक सांस से उसका ध्यान करना चाहिए।

ਜਾ ਆਪੇ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਤਾਂ ਭਗਤ ਸੰਗੁ ਪਾਈਐ ॥੬॥
जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥९॥
जब परमेश्वर स्वयं दयालु होता है तो भक्तों की संगति प्राप्त होती है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਬਾਰਿ ਵਿਡਾਨੜੈ ਹੁੰਮਸ ਧੁੰਮਸ ਕੂਕਾ ਪਈਆ ਰਾਹੀ ॥
बारि विडानड़ै हुमस धुमस कूका पईआ राही ॥
इस आश्चर्यजनक जगत रूपी जंगल में कोलाहल एवं मार्ग में लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं।

ਤਉ ਸਹ ਸੇਤੀ ਲਗੜੀ ਡੋਰੀ ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਸੇਤੀ ਬਨੁ ਗਾਹੀ ॥੧॥
तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥१॥
हे मेरे पति-परमेश्वर ! मुझ नानक के चित्त की डोर तुझसे लगी हुई है, इसलिए मैं आनंद से जगत जंगल को पार कर रहा हूँ ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਸਚੀ ਬੈਸਕ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਸੰਗਿ ਜਿਨ ਸੰਗਿ ਜਪੀਐ ਨਾਉ ॥
सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥
उनकी संगति सच्ची है, जिनके साथ बैठकर भगवान का नाम-सिमरन किया जाता है।

ਤਿਨ੍ ਸੰਗਿ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਚਈ ਨਾਨਕ ਜਿਨਾ ਆਪਣਾ ਸੁਆਉ ॥੨॥
तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥२॥
हे नानक ! उनके साथ कदापि संगति नहीं करनी चाहिए, जिन्हें अपना ही कोई स्वार्थ होता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਾ ਵੇਲਾ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਤੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ॥
सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥
वही समय स्वीकार होता है, जब सच्चे गुरु से भेंट होती है।

ਹੋਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਫਿਰਿ ਦੂਖ ਨ ਤੇਟਿਆ ॥
होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥
यदि मनुष्य साधु से संगति कर ले तो उसे दुःख नहीं लगते।

ਪਾਇਆ ਨਿਹਚਲੁ ਥਾਨੁ ਫਿਰਿ ਗਰਭਿ ਨ ਲੇਟਿਆ ॥
पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥
यदि मनुष्य को निश्चित स्थान मिल जाए तो वह दोबारा गर्भयोनि में नहीं आता।

ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਇਕੁ ਸਗਲ ਬ੍ਰਹਮੇਟਿਆ ॥
नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥
उसे एक ब्रह्म ही सर्वत्र दिखाई देता है और

ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਲਾਇ ਧਿਆਨੁ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸਮੇਟਿਆ ॥
ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ ॥
सब ओर से दृष्टि समेटकर वह अपना ध्यान तत्व-ज्ञान से लगाता है।

ਸਭੋ ਜਪੀਐ ਜਾਪੁ ਜਿ ਮੁਖਹੁ ਬੋਲੇਟਿਆ ॥
सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥
जो कुछ भी वह मुँह से बोलता है, वह सब प्रभु का ही जाप जपता है।

ਹੁਕਮੇ ਬੁਝਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸੁਖਿ ਸੁਖੇਟਿਆ ॥
हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥
प्रभु के हुक्म को समझ कर मनुष्य आनंदित हो जाता है और सुखपूर्वक रहता है।

ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਏ ਸੇ ਬਹੁੜਿ ਨ ਖੋਟਿਆ ॥੧੦॥
परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥१०॥
जिन्हें परखकर परमात्मा ने अपने भण्डार में डाल दिया है, वे दोबारा खोटे घोषित नहीं होते।

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਵਿਛੋਹੇ ਜੰਬੂਰ ਖਵੇ ਨ ਵੰਞਨਿ ਗਾਖੜੇ ॥
विछोहे ज्मबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥
विरह की पीड़ा जंबूर की भाँति इतनी असह्य है कि सहन नहीं की जा सकती।

ਜੇ ਸੋ ਧਣੀ ਮਿਲੰਨਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸੰਬੂਹ ਸਚੁ ॥੧॥
जे सो धणी मिलंनि नानक सुख स्मबूह सचु ॥१॥
हे नानक ! यदि मालिक-प्रभु मिल जाए तो सारे सच्चे सुख मिल जाते हैं।॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜਿਮੀ ਵਸੰਦੀ ਪਾਣੀਐ ਈਧਣੁ ਰਖੈ ਭਾਹਿ ॥
जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥
जमीन पानी में रहती है और लकड़ी अपने भीतर अग्नि को टिकाकर रखती है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਸਹੁ ਆਹਿ ਜਾ ਕੈ ਆਢਲਿ ਹਭੁ ਕੋ ॥੨॥
नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥२॥
हे नानक ! उस मालिक की कामना कर, जो सभी जीवों का आधार है। ॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੇਰੇ ਕੀਤੇ ਕੰਮ ਤੁਧੈ ਹੀ ਗੋਚਰੇ ॥
तेरे कीते कम तुधै ही गोचरे ॥
हे स्वामी ! तेरे किए हुए कार्य तुझ पर ही निर्भर हैं।

ਸੋਈ ਵਰਤੈ ਜਗਿ ਜਿ ਕੀਆ ਤੁਧੁ ਧੁਰੇ ॥
सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥
इस दुनिया में वही कुछ हो रहा है जो तू अपने हुक्म से करवा रहा है।

ਬਿਸਮੁ ਭਏ ਬਿਸਮਾਦ ਦੇਖਿ ਕੁਦਰਤਿ ਤੇਰੀਆ ॥
बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥
मैं तेरी आश्चर्यजनक कुदरत को देखकर चकित हो गया हूँ।

ਸਰਣਿ ਪਰੇ ਤੇਰੀ ਦਾਸ ਕਰਿ ਗਤਿ ਹੋਇ ਮੇਰੀਆ ॥
सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥
तेरे दास तेरी शरण में आ गए हैं, यदि तुम कृपा-दृष्टि धारण करो तो मेरी भी गति हो जाएगी।

ਤੇਰੈ ਹਥਿ ਨਿਧਾਨੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਦੇਹਿ ॥
तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥
तेरे हाथ में नाम का भण्डार है, जो तुझे अच्छा लगता है, उसे तुम यह भण्डार दे देते हो।

ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੇਇ ਲੇਹਿ ॥
जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥
जिस व्यक्ति पर तू दयालु होता है, वही हरि-नाम का भण्डार प्राप्त करता है।

ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਬੇਅੰਤ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥
अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥
हे अगम्य, अगोचर एवं अनन्त प्रभु ! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता।

ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਹਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਸੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧੧॥
जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥११॥
जिस पर तू कृपालु होता है वही तेरे नाम का ध्यान करता है ॥११॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਕੜਛੀਆ ਫਿਰੰਨ੍ਹਿ ਸੁਆਉ ਨ ਜਾਣਨ੍ਹਿ ਸੁਚੀਆ ॥
कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुजीआ ॥
कड़छीआ भोजन के बर्तन पर चलती हैं परन्तु वह भोजन के स्वाद को नहीं जानती और स्वाद से खाली ही रहती हैं।

ਸੇਈ ਮੁਖ ਦਿਸੰਨ੍ਹਿ ਨਾਨਕ ਰਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਿ ॥੧॥
सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥१॥
हे नानक ! वही मुख सुन्दर दिखाई देते हैं, जो प्रभु के प्रेम रस में लीन रहते हैं।॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਖੋਜੀ ਲਧਮੁ ਖੋਜੁ ਛਡੀਆ ਉਜਾੜਿ ॥
खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥
खोजी गुरु के द्वारा मैंने उनकी खोज कर ली है, जिन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारों ने मेरी हृदय रूपी फसल बर्बाद कर दी थी।

ਤੈ ਸਹਿ ਦਿਤੀ ਵਾੜਿ ਨਾਨਕ ਖੇਤੁ ਨ ਛਿਜਈ ॥੨॥
तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥२॥
नानक का कथन है कि हे पति-प्रभु ! तूने गुरु रूपी बाड़ कर दी है और अब फसल नष्ट नहीं होगी ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਆਰਾਧਿਹੁ ਸਚਾ ਸੋਇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਿਸੁ ਪਾਸਿ ॥
आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥
हे भाई ! उस परमात्मा की आराधना करो, जिसके पास सबकुछ है।

ਦੁਹਾ ਸਿਰਿਆ ਖਸਮੁ ਆਪਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਕਰੇ ਰਾਸਿ ॥
दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥
वह स्वयं ही दोनों किनारों का मालिक है और एक क्षण में ही कार्य संवार देता है।

ਤਿਆਗਹੁ ਸਗਲ ਉਪਾਵ ਤਿਸ ਕੀ ਓਟ ਗਹੁ ॥
तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥
तू सभी उपाय त्याग दे और उसकी ओट ले।

ਪਉ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਸੁਖੀ ਹੂੰ ਸੁਖ ਲਹੁ ॥
पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥
भागकर उसकी शरण में जा और सर्वोत्तम सुख प्राप्त कर।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ਸੰਤਾ ਸੰਗੁ ਹੋਇ ॥
करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥
शुभ कर्म, धर्म एवं तत्व ज्ञान संतजनों की संगति में प्राप्त होते हैं।

ਜਪੀਐ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਗੈ ਕੋਇ ॥
जपीऐ अम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥
अमृत नाम जपने से प्राणी को कोई विघ्न नहीं आता।

ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਵੁਠਿਆ ॥
जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥
जिस पर परमात्मा आप दयालु है, उसके मन में ही वह बसता है और

ਪਾਈਅਨ੍ਹਿ ਸਭਿ ਨਿਧਾਨ ਸਾਹਿਬਿ ਤੁਠਿਆ ॥੧੨॥
पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥१२॥
उसकी प्रसन्नता से सभी खजाने प्राप्त हो जाते हैं ॥१२॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਲਧਮੁ ਲਭਣਹਾਰੁ ਕਰਮੁ ਕਰੰਦੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥
लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥
जब मेरे प्रियतम ने मुझ पर कृपा की तो खोजने योग्य ईश्वर को मैंने खोज लिया।

ਇਕੋ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਨਾਨਕ ਬਿਆ ਨ ਪਸੀਐ ॥੧॥
इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥१॥
हे नानक ! एक ईश्वर ही जगत का रचयिता है, उसके सिवाय मुझे दूसरा कोई नजर नहीं आता ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਪਾਪੜਿਆ ਪਛਾੜਿ ਬਾਣੁ ਸਚਾਵਾ ਸੰਨ੍ਹਿ ਕੈ ॥
पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥
सत्य का बाण तान कर दुर्जन पापों को पछाड़ दे।

ਗੁਰ ਮੰਤ੍ਰੜਾ ਚਿਤਾਰਿ ਨਾਨਕ ਦੁਖੁ ਨ ਥੀਵਈ ॥੨॥
गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥२॥
हे नानक ! गुरु के मंत्र को याद करो, कोई दु:ख नहीं सताएगा ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਪਾਈਅਨੁ ਠਾਢਿ ਆਪਿ ॥
वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥
वह विश्व का निर्माता प्रभु धन्य-धन्य है, जिसने स्वयं हृदय शीतल कर दिया है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ਤਿਸ ਨੋ ਸਦਾ ਜਾਪਿ ॥
जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥
उस ईश्वर का सदैव जाप करना चाहिए जो जीव-जन्तुओं पर मेहरबान है,

ਦਇਆ ਧਾਰੀ ਸਮਰਥਿ ਚੁਕੇ ਬਿਲ ਬਿਲਾਪ ॥
दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥
उस समर्थ प्रभु ने मुझ पर दया की है और मेरे सभी दुःख-क्लेश मिट गए हैं।

ਨਠੇ ਤਾਪ ਦੁਖ ਰੋਗ ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਪ੍ਰਤਾਪਿ ॥
नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥
पूर्ण गुरु के प्रताप से मेरे संताप, दुःख एवं रोग सभी भाग गए हैं।

ਕੀਤੀਅਨੁ ਆਪਣੀ ਰਖ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜਿ ਥਾਪਿ ॥
कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥
गरीब निवाज परमात्मा ने स्वयं मेरी रक्षा करके मुझे स्थापित किया है और

ਆਪੇ ਲਇਅਨੁ ਛਡਾਇ ਬੰਧਨ ਸਗਲ ਕਾਪਿ ॥
आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥
सभी बंधन काट कर उसने आप ही मुझे मुक्त कर दिया है।

ਤਿਸਨ ਬੁਝੀ ਆਸ ਪੁੰਨੀ ਮਨ ਸੰਤੋਖਿ ਧ੍ਰਾਪਿ ॥
तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि ॥
मेरी तृष्णा मिट गई है, आशा पूर्ण हो गई है और मेरा मन संतोषी एवं प्रसन्न हो गया है।

ਵਡੀ ਹੂੰ ਵਡਾ ਅਪਾਰ ਖਸਮੁ ਜਿਸੁ ਲੇਪੁ ਨ ਪੁੰਨਿ ਪਾਪਿ ॥੧੩॥
वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥१३॥
वह मालिक प्रभु सबसे बड़ा और अपार है जो पुण्य एवं पाप से अलिप्त है ॥१३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਈ ਜਪਾਤ ॥
जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥
जिन पर प्रभु कृपालु हो जाता है, वे हरि-नाम ही जपते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਨ ਰਾਮ ਸਿਉ ਭੇਟਤ ਸਾਧ ਸੰਗਾਤ ॥੧॥
नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥
हे नानक ! सत्संगति में मिलने से जीव की प्रीति राम से लग जाती है॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਰਾਮੁ ਰਮਹੁ ਬਡਭਾਗੀਹੋ ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਸੋਇ ॥
रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥
हे भाग्यशाली जीवो ! उस राम का नाम-सिमरन करो, जो जल, धरती एवं गगन में हर जगह मौजूद है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਅਰਾਧਿਐ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੨॥
नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥२॥
हे नानक ! नाम की आराधना करने से जीव को कोई संकट नहीं आता ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਭਗਤਾ ਕਾ ਬੋਲਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਦਰਗਹ ਪਵੈ ਥਾਇ ॥
भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥
भक्तों का बोला हुआ हर वचन (भगवान को) मंजूर होता है और आगे सत्य के दरबार में काम आता है।

ਭਗਤਾ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਰਤੇ ਸਚਿ ਨਾਇ ॥
भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥
हे प्रभु ! भक्तों को तेरा ही सहारा है और वे तो सत्यनाम में ही लीन रहते हैं।

ਜਿਸ ਨੋ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਤਿਸ ਕਾ ਦੂਖੁ ਜਾਇ ॥
जिस नो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥
जिस पर तू कृपालु हो जाता है, उसका दुःख-संताप नष्ट हो जाता है।

ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਦਇਆਲ ਓਨ੍ਹਾ ਮਿਹਰ ਪਾਇ ॥
भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥
हे दयानिधि ! ये भक्त तेरे ही हैं, उन पर अपनी मेहर कर।

ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਵਡ ਰੋਗੁ ਨ ਪੋਹੇ ਤਿਸੁ ਮਾਇ ॥
दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥
दुःख, दर्द, बड़ा रोग एवं माया उनको स्पर्श नहीं कर सकती।

ਭਗਤਾ ਏਹੁ ਅਧਾਰੁ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਗਾਇ ॥
भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ ॥
गोविन्द का गुणगान ही भक्तों के जीवन का आधार है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਿਨੁ ਰੈਣਿ ਇਕੋ ਇਕੁ ਧਿਆਇ ॥
सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥
वे सदा-सर्वदा दिन-रात एक ईश्वर का ही ध्यान करते रहते हैं और

ਪੀਵਤਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਜਨ ਨਾਮੇ ਰਹੇ ਅਘਾਇ ॥੧੪॥
पीवति अम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥१४॥
अमृत-नाम का पान करके नाम में ही तृप्त रहते हैं।॥ १४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਤਿਸੁ ਲਾਗਤੇ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਨਾਉ ॥
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥
जिसे ईश्वर का नाम भूल जाता है, उसे (पथ में) करोड़ों ही विघ्न लग जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਲਪਤੇ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਉ ॥੧॥
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥१॥
हे नानक ! ऐसे लोग रात-दिन यूं रोते-चिल्लाते हैं जैसे सूने घर में कौआ कांव-कांव करता है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਪਿਰੀ ਮਿਲਾਵਾ ਜਾ ਥੀਐ ਸਾਈ ਸੁਹਾਵੀ ਰੁਤਿ ॥
पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥
वही ऋतु सुन्दर है, जब प्रियतम-प्रभु से मिलन होता है।

ਘੜੀ ਮੁਹਤੁ ਨਹ ਵੀਸਰੈ ਨਾਨਕ ਰਵੀਐ ਨਿਤ ॥੨॥
घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥२॥
हे नानक ! उसे नित्य ही याद करते रहना चाहिए और एक घड़ी एवं मुहूर्त भर के लिए भी भुलाना नहीं चाहिए॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੂਰਬੀਰ ਵਰੀਆਮ ਕਿਨੈ ਨ ਹੋੜੀਐ ॥
सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥
काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इतने शूरवीर एवं पराक्रमी हैं कि इन्होंने शक्तिशाली एवं हठीली सेना एकत्र कर ली है।

ਫਉਜ ਸਤਾਣੀ ਹਾਠ ਪੰਚਾ ਜੋੜੀਐ ॥
फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥
ये पाँचों विकार किसी के रोकने पर भी नहीं रुकते।

ਦਸ ਨਾਰੀ ਅਉਧੂਤ ਦੇਨਿ ਚਮੋੜੀਐ ॥
दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥
दस इन्द्रियाँ अवधूत पुरुषों को भी विषयों विकारों में लगाए रखती हैं।

ਜਿਣਿ ਜਿਣਿ ਲੈਨ੍ਹਿ ਰਲਾਇ ਏਹੋ ਏਨਾ ਲੋੜੀਐ ॥
जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥
सभी पर विजय पाकर ये अपने साथ मिलाते जाते हैं और ये इसी बात की लालसा करते हैं।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਇਨ ਕੈ ਵਸਿ ਕਿਨੈ ਨ ਮੋੜੀਐ ॥
त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥
त्रिगुणात्मक दुनिया उनके वश में है और कोई भी उनसे संघर्ष नहीं कर सकता।

ਭਰਮੁ ਕੋਟੁ ਮਾਇਆ ਖਾਈ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਤੋੜੀਐ ॥
भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥
भ्रम रूपी किला एवं माया की खाई को बताओ किस विधि से तोड़ा जा सकता है?

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧਿ ਬਿਖਮ ਦਲੁ ਫੋੜੀਐ ॥
गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥
पूर्ण गुरु की आराधना करने से यह भयानक दल फोड़ा जा सकता है इसलिए

ਹਉ ਤਿਸੁ ਅਗੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਰਹਾ ਕਰ ਜੋੜੀਐ ॥੧੫॥
हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥१५॥
मैं रात-दिन उस गुरु के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा रहता हूँ॥ १५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਕਿਲਵਿਖ ਸਭੇ ਉਤਰਨਿ ਨੀਤ ਨੀਤ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥
नित्य ही परमात्मा का गुणगान करने से सभी पाप उतर जाते हैं।

ਕੋਟਿ ਕਲੇਸਾ ਊਪਜਹਿ ਨਾਨਕ ਬਿਸਰੈ ਨਾਉ ॥੧॥
कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥१॥
हे नानक ! यदि परमात्मा का नाम भूल जाए तो करोड़ों ही दुःख-क्लेश उत्पन्न हो जाते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਪੂਰੀ ਹੋਵੈ ਜੁਗਤਿ ॥
नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हे नानक ! सच्चे गुरु से भेंट होने पर जीवन से मुक्ति पाने की युक्ति मिल जाती है और

ਹਸੰਦਿਆ ਖੇਲੰਦਿਆ ਪੈਨੰਦਿਆ ਖਾਵੰਦਿਆ ਵਿਚੇ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤਿ ॥੨॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥२॥
फिर हँसते, खेलते, पहनते, खाते-पीते हुए भी मुक्ति हो जाती है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਜਿਨਿ ਭਰਮ ਗੜੁ ਤੋੜਿਆ ॥
सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥
वह सतगुरु धन्य-धन्य है, जिसने भ्रम का दुर्ग ध्वस्त कर दिया है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸਿਉ ਜੋੜਿਆ ॥
सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥
वह सतगुरु स्तुति-योग्य है, जिसने मुझे भगवान से मिला दिया है।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਅਖੁਟੁ ਗੁਰੁ ਦੇਇ ਦਾਰੂਓ ॥
नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ ॥
प्रभु-नाम का अक्षय भण्डार गुरु ने मुझे औषधि के रूप में दिया है और

ਮਹਾ ਰੋਗੁ ਬਿਕਰਾਲ ਤਿਨੈ ਬਿਦਾਰੂਓ ॥
महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ ॥
उसने इस औषधि से महाविकराल रोग दूर कर दिया है।

ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਬਹੁਤੁ ਖਜਾਨਿਆ ॥
पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥
मुझे प्रभु नाम-धन रूपी बहुत बड़ा खजाना हासिल हो गया है

ਜਿਤਾ ਜਨਮੁ ਅਪਾਰੁ ਆਪੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥
जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥
जिससे अपार जन्म का महत्व पहचान लिया है।

ਮਹਿਮਾ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ਗੁਰ ਸਮਰਥ ਦੇਵ ॥
महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥
सर्वकला समर्थ गुरुदेव की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती क्योंकि

ਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਅਪਰੰਪਰ ਅਲਖ ਅਭੇਵ ॥੧੬॥
गुर पारब्रहम परमेसुर अपर्मपर अलख अभेव ॥१६॥
गुरू आप ही परब्रह्म-परमेश्वर अपरंपार, अलक्ष्य एवं अभेद सत्य का रूप है ॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥
सलोकु मः ५ ॥
श्लोक महला ५ ॥

ਉਦਮੁ ਕਰੇਦਿਆ ਜੀਉ ਤੂੰ ਕਮਾਵਦਿਆ ਸੁਖ ਭੁੰਚੁ ॥
उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
हे जीव ! तू नाम-सिमरन का उद्यम करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर, इस साधना से तू सुख भोगेगा।

ਧਿਆਇਦਿਆ ਤੂੰ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਉਤਰੀ ਚਿੰਤ ॥੧॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥१॥
हे नानक ! नाम की आराधना करने से प्रभु मिल जाएगा और तेरी चिंता दूर हो जाएगी॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਸੁਭ ਚਿੰਤਨ ਗੋਬਿੰਦ ਰਮਣ ਨਿਰਮਲ ਸਾਧੂ ਸੰਗ ॥
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥
हे गोविन्द ! मुझे शुभ चिंतन, सुमिरन एवं निर्मल साधु-संगति की देन प्रदान कीजिए।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਵਿਸਰਉ ਇਕ ਘੜੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਭਗਵੰਤ ॥੨॥
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥२॥
हे भगवान ! नानक पर ऐसी कृपा करो कि वह तेरे नाम को एक घड़ी भर के लिए भी न भूले ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੇਰਾ ਕੀਤਾ ਹੋਇ ਤ ਕਾਹੇ ਡਰਪੀਐ ॥
तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥
हे स्वामी ! जब सब कुछ तेरा किया ही घटित होता है तो हम क्यों डर अनुभव करें?

ਜਿਸੁ ਮਿਲਿ ਜਪੀਐ ਨਾਉ ਤਿਸੁ ਜੀਉ ਅਰਪੀਐ ॥
जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ ॥
जिसके साथ मिलकर नाम-सुमिरन किया जाता है उसे अपने प्राण अर्पण कर देने चाहिए।

ਆਇਐ ਚਿਤਿ ਨਿਹਾਲੁ ਸਾਹਿਬ ਬੇਸੁਮਾਰ ॥
आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥
उस बेशुमार मालिक को मन में याद करने से जीव आनंदित हो जाता है।

ਤਿਸ ਨੋ ਪੋਹੇ ਕਵਣੁ ਜਿਸੁ ਵਲਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥
तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥
जिसके साथ निरंकार परमात्मा है, उसे कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕੈ ਵਸਿ ਨ ਕੋਈ ਬਾਹਰਾ ॥
सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥
सब कुछ उसके वश में है और कोई भी उसके हुक्म से बाहर नहीं।

ਸੋ ਭਗਤਾ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਸਚਿ ਸਮਾਹਰਾ ॥
सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥
वह परम-सत्य प्रभु भक्तों के मन में निवास करता है और उनकी अन्तरात्मा में समा जाता है।

ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਧਿਆਇਨਿ ਤੁਧੁ ਤੂੰ ਰਖਣ ਵਾਲਿਆ ॥
तेरे दास धिआइनि तुधु तूं रखण वालिआ ॥
हे भगवान ! तेरे दास तेरा ही ध्यान करते हैं और तू ही उनका रखवाला है।

ਸਿਰਿ ਸਭਨਾ ਸਮਰਥੁ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥੧੭॥
सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥१७॥
तू ही सभी जीवों के ऊपर समर्थ मालिक है और अपनी कृपा-दृष्टि से सबको कृतार्थ कर देता है ॥१७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਮਦ ਲੋਭ ਮੋਹ ਦੁਸਟ ਬਾਸਨਾ ਨਿਵਾਰਿ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥
हे मेरे ईश्वर ! काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह तथा दुष्ट वासना का नाश करके मेरी रक्षा करो।

ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਆਪਣੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ॥੧॥
राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥१॥
नानक सदैव ही तुझ पर बलिहारी जाता है ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਖਾਂਦਿਆ ਖਾਂਦਿਆ ਮੁਹੁ ਘਠਾ ਪੈਨੰਦਿਆ ਸਭੁ ਅੰਗੁ ॥
खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥
(स्वादिष्ट व्यंजन) खाते-खाते मुँह घिस गया है और शरीर के सभी अंग पहनते-पहनते क्षीण हो गए हैं।

ਨਾਨਕ ਧ੍ਰਿਗੁ ਤਿਨਾ ਦਾ ਜੀਵਿਆ ਜਿਨ ਸਚਿ ਨ ਲਗੋ ਰੰਗੁ ॥੨॥
नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥२॥
हे नानक ! उनका जीवन धिक्कार योग्य है, जिनका सत्य के साथ प्रेम नहीं लगा ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਉ ਜਿਉ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮੁ ਤਿਵੈ ਤਿਉ ਹੋਵਣਾ ॥
जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! जैसे-जैसे तेरा हुक्म होता है, वैसे ही दुनिया में होता है।

ਜਹ ਜਹ ਰਖਹਿ ਆਪਿ ਤਹ ਜਾਇ ਖੜੋਵਣਾ ॥
जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥
जहाँ कहीं भी तू मुझे रखता है, वहाँ ही जाकर मैं खड़ा हो जाता हूँ।

ਨਾਮ ਤੇਰੈ ਕੈ ਰੰਗਿ ਦੁਰਮਤਿ ਧੋਵਣਾ ॥
नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥
तेरे नाम के रंग से मैं अपनी दुर्मति को धोता हूँ।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਤੁਧੁ ਨਿਰੰਕਾਰ ਭਰਮੁ ਭਉ ਖੋਵਣਾ ॥
जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥
हे निराकार प्रभु ! तेरा नाम जप-जप कर मेरी दुविधा एवं भय दूर हो गए हैं।

ਜੋ ਤੇਰੈ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਸੇ ਜੋਨਿ ਨ ਜੋਵਣਾ ॥
जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥
जो जीव तेरे प्रेम-रंग में लीन हैं, वे योनियों में नहीं भटकते।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਇਕੁ ਨੈਣ ਅਲੋਵਣਾ ॥
अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥
अपने नेत्रों से अन्दर-बाहर वे एक ईश्वर को ही देखते हैं।

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਪਛਾਤਾ ਹੁਕਮੁ ਤਿਨ੍ ਕਦੇ ਨ ਰੋਵਣਾ ॥
जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥
जो प्रभुहुक्म को पहचानते हैं, वे कदाचित विलाप नहीं करते।

ਨਾਉ ਨਾਨਕ ਬਖਸੀਸ ਮਨ ਮਾਹਿ ਪਰੋਵਣਾ ॥੧੮॥
नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥१८॥
हे नानक ! उन्हें प्रभु नाम का दान प्राप्त होता है, जिसे वह मन में पिरो लेते हैं।॥ १८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਜੀਵਦਿਆ ਨ ਚੇਤਿਓ ਮੁਆ ਰਲੰਦੜੋ ਖਾਕ ॥
जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥
जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में भगवान को कभी याद नहीं किया लेकिन जब प्राण त्याग गया तो मिट्टी में मिल गया।

ਨਾਨਕ ਦੁਨੀਆ ਸੰਗਿ ਗੁਦਾਰਿਆ ਸਾਕਤ ਮੂੜ ਨਪਾਕ ॥੧॥
नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥१॥
हे नानक ! उस मूर्ख एवं नापाक शाक्त इन्सान ने दुनिया के साथ आसक्त होकर अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ १॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਜੀਵੰਦਿਆ ਹਰਿ ਚੇਤਿਆ ਮਰੰਦਿਆ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥
जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥
जिसने जीवन में हरि को याद किया और मृत्यु के समय भी हरि के प्रेम में लीन रहा,

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਤਾਰਿਆ ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ॥੨॥
जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥२॥
हे नानक ! ऐसे व्यक्ति ने अपना अनमोल जीवन साधु की संगती में सफल कर लिया है।

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਆਪਿ ਰਖਣ ਵਾਲਿਆ ॥
आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥
परमात्मा आप ही युगों-युगान्तरों से हम जीवों की रक्षा करने वाला है।

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾਰੁ ਸਚੁ ਪਸਾਰਿਆ ॥
सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥
हे करतार ! तेरा नाम सत्य है और तेरे सत्य-नाम का ही सृष्टि के चारों ओर प्रसार है।

ਊਣਾ ਕਹੀ ਨ ਹੋਇ ਘਟੇ ਘਟਿ ਸਾਰਿਆ ॥
ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥
तू किसी जीव के भीतर भी कम नहीं तथा कण-कण में मौजूद है।

ਮਿਹਰਵਾਨ ਸਮਰਥ ਆਪੇ ਹੀ ਘਾਲਿਆ ॥
मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥
तू बड़ा मेहरबान है, सब कुछ करने में समर्थ है और तू स्वयं ही जीव से अपनी सेवा करवाता है।

ਜਿਨ੍ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਪਿ ਸੇ ਸਦਾ ਸੁਖਾਲਿਆ ॥
जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥
जिनके मन में तू निवास करता है, वे सदा सुखी रहते हैं।

ਆਪੇ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇ ਆਪੇ ਹੀ ਪਾਲਿਆ ॥
आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥
तू आप ही दुनिया बनाकर आप ही उसका पालन-पोषण करता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਬੇਅੰਤ ਅਪਾਰਿਆ ॥
सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥
हे अनंत एवं अपार प्रभु ! सब कुछ तू आप ही है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਟੇਕ ਨਾਨਕ ਸੰਮ੍ਹ੍ਹਾਲਿਆ ॥੧੯॥
गुर पूरे की टेक नानक सम्हालिआ ॥१९॥
हे नानक ! मैं पूर्ण गुरु का सहारा लेकर नाम-स्मरण ही करता रहता हूँ ॥१६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਆਦਿ ਮਧਿ ਅਰੁ ਅੰਤਿ ਪਰਮੇਸਰਿ ਰਖਿਆ ॥
आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥
आदि, मध्य तथा अन्त में सदा ही परमेश्वर ने हमारी रक्षा की है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਖਿਆ ॥
सतिगुरि दिता हरि नामु अम्रितु चखिआ ॥
सच्चे गुरु ने मुझे हरिनामामृत दिया है, जिसको मैंने बड़े स्वाद से चखा है।

ਸਾਧਾ ਸੰਗੁ ਅਪਾਰੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਵੈ ॥
साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥
साधुओं की संगति में रात-दिन अपार हरि का गुणानुवाद करता रहता हूँ,

ਪਾਏ ਮਨੋਰਥ ਸਭਿ ਜੋਨੀ ਨਹ ਭਵੈ ॥
पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥
जिसके फलस्वरूप जीवन के सभी मनोरथ प्राप्त हो गए हैं और अब मैं योनियों के चक्र में नहीं भटकूंगा।

सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥
सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥
सब कुछ कर्तार के हाथ में है, जो खुद ही सब कारण बनाता है।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਸੰਤਾ ਧੂਰਿ ਤਰੈ ॥੧॥
नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥१॥
नानक तो संतों की चरण-धूलि का ही दान माँगता है, जिससे वह भवसागर से तर जाएगा ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਤਿਸ ਨੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ਜਿਨਿ ਉਪਾਇਆ ॥
तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥
हे मानव ! अपने मन में उसे ही बसा, जिसने तुझे उत्पन्न किया है।

ਜਿਨਿ ਜਨਿ ਧਿਆਇਆ ਖਸਮੁ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥
जिस व्यक्ति ने भी भगवान का ध्यान किया है, उसे सुख ही उपलब्ध हुआ है।

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਇਆ ॥
सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥
गुरुमुख का आगमन ही स्वीकार्य है तथा उसी का जन्म सफल है।

ਹੁਕਮੈ ਬੁਝਿ ਨਿਹਾਲੁ ਖਸਮਿ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥
हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥
मालिक-प्रभु ने जो हुक्म दिया, उस हुक्म को समझकर वह कृतार्थ हो गया है।

ਜਿਸੁ ਹੋਆ ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਸੁ ਨਹ ਭਰਮਾਇਆ ॥
जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ ॥
जिस पर परमात्मा आप कृपालु होता है, वह कभी भटकता नहीं।

ਜੋ ਜੋ ਦਿਤਾ ਖਸਮਿ ਸੋਈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥
जो कुछ भी मालिक-प्रभु उसे देता है, उसमें ही वह सुख की अनुभूति करता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸਹਿ ਦਇਆਲੁ ਬੁਝਾਏ ਹੁਕਮੁ ਮਿਤ ॥
नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥
हे नानक ! जिस पर भी मित्र प्रभु दयालु होता है, उसे अपने हुक्म की सूझ प्रदान कर देता है।

ਜਿਸਹਿ ਭੁਲਾਏ ਆਪਿ ਮਰਿ ਮਰਿ ਜਮਹਿ ਨਿਤ ॥੨॥
जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥२॥
लेकिन जिसे वह आप कुमार्गी करता है, वह नित्य ही मर-मर कर जन्मता रहता है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਨਿੰਦਕ ਮਾਰੇ ਤਤਕਾਲਿ ਖਿਨੁ ਟਿਕਣ ਨ ਦਿਤੇ ॥
निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥
ईश्वर निंदक मनुष्यों की जीवन लीला तत्काल ही समाप्त कर देता है और उन्हें क्षण मात्र भी टिकने नहीं देता।

ਪ੍ਰਭ ਦਾਸ ਕਾ ਦੁਖੁ ਨ ਖਵਿ ਸਕਹਿ ਫੜਿ ਜੋਨੀ ਜੁਤੇ ॥
प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते ॥
वह अपने दास का दुःख सहन नहीं कर सकता लेकिन निन्दकों को पकड़ कर योनियों में डाल देता है।

ਮਥੇ ਵਾਲਿ ਪਛਾੜਿਅਨੁ ਜਮ ਮਾਰਗਿ ਮੁਤੇ ॥
मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥
वह निन्दकों को सिर के केशों से पकड़ कर पछाड़कर उन्हें यम के मार्ग में धकेल देता है।

ਦੁਖਿ ਲਗੈ ਬਿਲਲਾਣਿਆ ਨਰਕਿ ਘੋਰਿ ਸੁਤੇ ॥
दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥
वह उन्हें घोर नरक में भेज देता है, जहाँ वे दुःखी होकर रोते-चिल्लाते हैं।

ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਦਾਸ ਰਖਿਅਨੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਤੇ ॥੨੦॥
कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥२०॥
हे नानक ! (लेकिन) अपने दासों को गले से लगाकर सच्चा हरि उनकी रक्षा करता है॥ २० ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੫ ॥
सलोक मः ५ ॥
श्लोक महला ५॥

ਰਾਮੁ ਜਪਹੁ ਵਡਭਾਗੀਹੋ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰਨੁ ਸੋਇ ॥
रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥
हे भाग्यशाली प्राणियो ! राम का नाम जपो, क्योंकि वह जल एवं धरती में पूर्ण तौर पर मौजूद है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਧਿਆਇਐ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੧॥
नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥१॥
हे नानक ! प्रभु-नाम का ध्यान करने से जीव को कोई विघ्न नहीं आता ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਤਿਸੁ ਲਾਗਤੇ ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਨਾਉ ॥
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥
जिस जीव को भगवान का नाम भूल जाता है, उसे करोड़ों ही विघ्न घेर लेते हैं।

ਨਾਨਕ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਲਪਤੇ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਉ ॥੨॥
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥२॥
हे नानक ! वे रात-दिन ऐसे रोते रहते हैं जैसे सूने घर में कौआ कांव-कांव करता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਦਾਤਾਰੁ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਿਆ ॥
सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥
दातार प्रभु का सिमरन करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਮਨਿ ਆਸ ਗਏ ਵਿਸੂਰਿਆ ॥
इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ ॥
मेरे मन की इच्छा एवं आशा पूर्ण हो गई है तथा सर्व प्रकार के दुःख-संताप नष्ट हो गए हैं।

ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਿਸ ਨੋ ਭਾਲਦਾ ॥
पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥
जिसे खोजता रहता था, उस प्रभु नाम रूपी भण्डार को प्राप्त कर लिया है।

ਜੋਤਿ ਮਿਲੀ ਸੰਗਿ ਜੋਤਿ ਰਹਿਆ ਘਾਲਦਾ ॥
जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥
मेरी ज्योति परम-ज्योत में लीन हो गई है और मेरी साधना खत्म हो गई है।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਵੁਠੇ ਤਿਤੁ ਘਰਿ ॥
सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥
मैं अब उस घर में रहता हूँ, जहाँ सहज सुख एवं आनंद प्रवृत्त हो रहे हैं।

ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਜਨਮੁ ਨ ਤਹਾ ਮਰਿ ॥
आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥
मेरा आवागमन भी मिट गया है क्योंकि वहाँ जन्म-मरण नहीं होता।

ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵਕੁ ਇਕੁ ਇਕੁ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥
स्वामी एवं सेवक एकरूप ही हो गए हैं और दोनों एक समान ही दृष्टिगत होते हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੨੧॥੧॥੨॥ ਸੁਧੁ
गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥२१॥१॥२॥ सुधु
हे नानक ! गुरु की कृपा से मैं सत्य में समा गया हूँ ॥२१॥१॥२॥शुद्ध ॥

ਰਾਗੁ ਗੂਜਰੀ ਭਗਤਾ ਕੀ ਬਾਣੀ
रागु गूजरी भगता की बाणी
रागु गूजरी भगता की बाणी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਜੀਉ ਕਾ ਚਉਪਦਾ ਘਰੁ ੨ ਦੂਜਾ ॥
स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥
श्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥

ਚਾਰਿ ਪਾਵ ਦੁਇ ਸਿੰਗ ਗੁੰਗ ਮੁਖ ਤਬ ਕੈਸੇ ਗੁਨ ਗਈਹੈ ॥
चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥
हे जीव ! पशु योनि में आकर जब तू चार पैर, दो सीग एवं मुँह से गूंगा बन जाएगा तो फिर कैसे ईश्वर का गुणगान करेगा?

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਠੇਗਾ ਪਰਿਹੈ ਤਬ ਕਤ ਮੂਡ ਲੁਕਈਹੈ ॥੧॥
ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥१॥
उठते-बैठते तुझे डण्डे से मार पड़ेगी, तब तू अपना सिर कहाँ छिपा सकेगा? ॥१॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਬੈਲ ਬਿਰਾਨੇ ਹੁਈਹੈ ॥
हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥
हरि-नाम के बिना तू उधारी बैल बन जाएगा,

ਫਾਟੇ ਨਾਕਨ ਟੂਟੇ ਕਾਧਨ ਕੋਦਉ ਕੋ ਭੁਸੁ ਖਈਹੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसका नाक फटा हुआ तथा कन्धा टूटा हुआ होता है और जो भूसा ही खाता रहता है॥१॥ रहाउ ॥

ਸਾਰੋ ਦਿਨੁ ਡੋਲਤ ਬਨ ਮਹੀਆ ਅਜਹੁ ਨ ਪੇਟ ਅਘਈਹੈ ॥
सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥
हे जीव ! सारा दिन वन में भटकने के पश्चात् भी तेरा पेट नहीं भरेगा।

ਜਨ ਭਗਤਨ ਕੋ ਕਹੋ ਨ ਮਾਨੋ ਕੀਓ ਅਪਨੋ ਪਈਹੈ ॥੨॥
जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥२॥
तूने भक्तजनों का कहना तो माना नहीं, परिणामस्वरूप अपने कर्मों का फल अवश्य पाओगे॥ २॥

ਦੁਖ ਸੁਖ ਕਰਤ ਮਹਾ ਭ੍ਰਮਿ ਬੂਡੋ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭਰਮਈਹੈ ॥
दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥
अब जीव दुःख-सुख भोगता तथा महा दुविधा में डूबा हुआ अनेक योनियों के चक्र में भटकेगा।

ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਖੋਇਓ ਪ੍ਰਭੁ ਬਿਸਰਿਓ ਇਹੁ ਅਉਸਰੁ ਕਤ ਪਈਹੈ ॥੩॥
रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥३॥
हे जीव ! प्रभु को भुला कर तूने हीरे जैसा अनमोल मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है, ऐसा अवसर तुझे अब कहाँ प्राप्त होगा? ॥३॥

ਭ੍ਰਮਤ ਫਿਰਤ ਤੇਲਕ ਕੇ ਕਪਿ ਜਿਉ ਗਤਿ ਬਿਨੁ ਰੈਨਿ ਬਿਹਈਹੈ ॥
भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥
हे जीव ! तेली के बैल एवं बन्दर की तरह भटकते हुए तेरी जीवन रूपी रात्रि मुक्ति प्राप्त किए बिना ही व्यतीत हो जाएगी।

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੂੰਡ ਧੁਨੇ ਪਛੁਤਈਹੈ ॥੪॥੧॥
कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥४॥१॥
कबीर जी का कथन है कि हे जीव ! राम नाम के बिना तू अपना सिर पटक पटक कर पछताएगा।॥४॥१॥

ਗੂਜਰੀ ਘਰੁ ੩ ॥
गूजरी घरु ३ ॥
गूजरी घरु ३ ॥

ਮੁਸਿ ਮੁਸਿ ਰੋਵੈ ਕਬੀਰ ਕੀ ਮਾਈ ॥
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥
कबीर की माता सुबक-सुबक रोती है और

ਏ ਬਾਰਿਕ ਕੈਸੇ ਜੀਵਹਿ ਰਘੁਰਾਈ ॥੧॥
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥
निवेदन करती है कि हे रघुराई ! ये (कबीर के) बच्चे किस तरह जीवित रह सकेंगे।॥१॥

ਤਨਨਾ ਬੁਨਨਾ ਸਭੁ ਤਜਿਓ ਹੈ ਕਬੀਰ ॥
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥
क्योंकि कबीर ने कातना एवं बुनना सभी छोड़ दिया है तथा

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲਿਖਿ ਲੀਓ ਸਰੀਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥१॥ रहाउ ॥
हरि का नाम अपने शरीर पर लिख लिया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਬ ਲਗੁ ਤਾਗਾ ਬਾਹਉ ਬੇਹੀ ॥
जब लगु तागा बाहउ बेही ॥
कबीर अपनी माता से कहता है कि जितनी देर मैं नली के छेद में धागा पिरोता हूँ,

ਤਬ ਲਗੁ ਬਿਸਰੈ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥੨॥
तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥
उतनी देर तक तो मुझे अपना स्नेही राम भूल जाता है ॥२॥

ਓਛੀ ਮਤਿ ਮੇਰੀ ਜਾਤਿ ਜੁਲਾਹਾ ॥
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥
मैं जाति का जुलाहा हूँ तथा मेरी बुद्धि ओछी (छोटी) है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਲਹਿਓ ਮੈ ਲਾਹਾ ॥੩॥
हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥३॥
हरि के नाम का लाभ मैंने प्राप्त कर लिया है॥३॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे मेरी माता ! जरा ध्यान से सुनो,

ਹਮਰਾ ਇਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਰਘੁਰਾਈ ॥੪॥੨॥
हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥४॥२॥
मेरा और इन बच्चों का दाता तो एक परमात्मा ही है ॥४॥२॥

ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਰੀ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੇ ਪਦੇ ਘਰੁ ੧
गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १
गूजरी श्री नामदेव जी के पदे घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੌ ਰਾਜੁ ਦੇਹਿ ਤ ਕਵਨ ਬਡਾਈ ॥
जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥
हे परमेश्वर ! यदि तू मुझे साम्राज्य भी दे दो तो इसमें मेरी कौन-सी बड़ाई है ?

ਜੌ ਭੀਖ ਮੰਗਾਵਹਿ ਤ ਕਿਆ ਘਟਿ ਜਾਈ ॥੧॥
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥
यदि तू मुझे भिखारी बनाकर भिक्षा मंगवा ले तो भी इसमें मेरा क्या कम हो जाएगा ? ॥ १॥

ਤੂੰ ਹਰਿ ਭਜੁ ਮਨ ਮੇਰੇ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨੁ ॥
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥
हे मेरे मन ! तू हरि का भजन कर, तुझे मोक्ष की पदवी प्राप्त हो जाएगी।

ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇ ਤੇਰਾ ਆਵਨ ਜਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह तेरा इस दुनिया में दोबारा जन्म-मरण नहीं होगा।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਭ ਤੈ ਉਪਾਈ ਭਰਮ ਭੁਲਾਈ ॥
सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥
हे प्रभु ! सारी सृष्टि तूने स्वयं ही उत्पन्न की हुई है तथा स्वयं ही इसे भ्रम में भटकाया हुआ है।

ਜਿਸ ਤੂੰ ਦੇਵਹਿ ਤਿਸਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥੨॥
जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥
जिसे तू सुमति प्रदान करता है, वही तुझे समझता है॥ २ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਸਹਸਾ ਜਾਈ ॥
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥
जब सतगुरु मिल जाता है तो मन की दुविधा नष्ट हो जाती है।

ਕਿਸੁ ਹਉ ਪੂਜਉ ਦੂਜਾ ਨਦਰਿ ਨ ਆਈ ॥੩॥
किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥
हे भगवान ! तेरे सिवाय मैं किसकी पूजा करूं? क्योंकि मुझे अन्य कोई गुणदाता दिखाई ही नहीं देता ॥३॥

ਏਕੈ ਪਾਥਰ ਕੀਜੈ ਭਾਉ ॥
एकै पाथर कीजै भाउ ॥
बड़ी हैरानी है कि एक पत्थर (मूर्ति बनाकर) श्रद्धा से पूजा जाता है और

ਦੂਜੈ ਪਾਥਰ ਧਰੀਐ ਪਾਉ ॥
दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥
दूसरा पत्थर पैर से लताड़ा जाता है।

ਜੇ ਓਹੁ ਦੇਉ ਤ ਓਹੁ ਭੀ ਦੇਵਾ ॥
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥
यदि एक पत्थर देवता है तो दूसरा भी देवता ही है।

ਕਹਿ ਨਾਮਦੇਉ ਹਮ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥੪॥੧॥
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥
नामदेव का कथन है कि हम तो (मूर्ति पूजा को छोड़कर केवल) परमात्मा की ही सेवा करते हैं।॥ ४॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ਘਰੁ ੧ ॥
गूजरी घरु १ ॥
गूजरी घरु १ ॥

ਮਲੈ ਨ ਲਾਛੈ ਪਾਰ ਮਲੋ ਪਰਮਲੀਓ ਬੈਠੋ ਰੀ ਆਈ ॥
मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥
हे बहन ! उस ईश्वर में मोह-माया की मैल का लेशमात्र भी चिन्ह नहीं, वह तो मैल से परे है अर्थात् पवित्र-पावन है तथा चन्दन की सुगन्धि के समान सबके हृदय में आकर बसा हुआ है।

ਆਵਤ ਕਿਨੈ ਨ ਪੇਖਿਓ ਕਵਨੈ ਜਾਣੈ ਰੀ ਬਾਈ ॥੧॥
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥
उस ईश्वर को कभी किसी ने आते हुए नहीं देखा, इसलिए उसे कौन जान सकता है कि उसका स्वरूप कैसा है?॥ १॥

ਕਉਣੁ ਕਹੈ ਕਿਣਿ ਬੂਝੀਐ ਰਮਈਆ ਆਕੁਲੁ ਰੀ ਬਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥
हे बहन ! सर्वव्यापक प्रभु के गुणों के बारे में कौन वर्णन कर सकता है और उसके स्वरूप को कौन समझ सकता है? वह तो कुल रहित है ॥१॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਆਕਾਸੈ ਪੰਖੀਅਲੋ ਖੋਜੁ ਨਿਰਖਿਓ ਨ ਜਾਈ ॥
जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥
जैसे आकाश में पक्षी उड़ता है किन्तु उसका रास्ता नजर नहीं आ सकता,

ਜਿਉ ਜਲ ਮਾਝੈ ਮਾਛਲੋ ਮਾਰਗੁ ਪੇਖਣੋ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥
जैसे जल में मछली तैरती है किन्तु उसका भी रास्ता दिखाई नहीं दे सकता॥ २॥

ਜਿਉ ਆਕਾਸੈ ਘੜੂਅਲੋ ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭਰਿਆ ॥
जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥
जैसे आकाश में मृगतृष्णा की भाँति जल से भरा घड़ा दिखाई दे किन्तु उसका निश्चित स्थान नहीं मिलता अर्थात् वैसे ही परमात्मा का निश्चित ठिकाना प्राप्त नहीं हो सकता।

ਨਾਮੇ ਚੇ ਸੁਆਮੀ ਬੀਠਲੋ ਜਿਨਿ ਤੀਨੈ ਜਰਿਆ ॥੩॥੨॥
नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥
नामदेव का स्वामी विठ्ठल भगवान तो ऐसे है, जिसने तीनों संताप नाश कर दिए हैं ॥३॥२॥

ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੇ ਪਦੇ ਘਰੁ ੩
गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३
गूजरी श्री रविदास जी के पदे घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੂਧੁ ਤ ਬਛਰੈ ਥਨਹੁ ਬਿਟਾਰਿਓ ॥
दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
दूध तो गाय के थनों में ही बछड़े ने जूठा कर दिया है,

ਫੂਲੁ ਭਵਰਿ ਜਲੁ ਮੀਨਿ ਬਿਗਾਰਿਓ ॥੧॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥
फूलों को भंवरे ने सूंघा हुआ है तथा जल मछली ने अशुद्ध कर दिया है॥ १॥

ਮਾਈ ਗੋਬਿੰਦ ਪੂਜਾ ਕਹਾ ਲੈ ਚਰਾਵਉ ॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥
हे मेरी माता ! गोविन्द की पूजा-अर्चना करने के लिए मैं कौन-सी भेंट-सामग्री अर्पित करूँ ?

अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे कोई अन्य अनूप सुन्दर फूल नहीं मिल सकता, क्या इसके अभाव से प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकूंगा ?॥ १॥ रहाउ॥

मैलागर बेरै है भुइअंगा ॥
मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥
जहरीले साँपों ने चन्दन के पेड़ को लपेटा हुआ है।

बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥२॥
बिखु अम्रितु बसहि इक संगा ॥२॥
विष एवं अमृत सागर में साथ-साथ ही बसते हैं।॥ २॥

धूप दीप नईबेदहि बासा ॥
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥
हे प्रभु! धूप, दीप, नैवेद्य एवं सुगन्धियों से

कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥
कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥
तेरा सेवक कैसे पूजा कर सकता है ? क्योंकि वे भी अशुद्ध ही हैं।॥ ३॥

तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥
अपना तन-मन भगवान को अर्पण करके पूजा की जाए तो

गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥
गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥
गुरु की कृपा से निरंजन प्रभु को पाया जा सकता है॥ ४॥

पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
रविदास का कथन है कि हे ईश्वर ! यदि मुझसे तेरी पूजा-अर्चना नहीं हो सकी तो

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਕਵਨ ਗਤਿ ਮੋਰੀ ॥੫॥੧॥
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥१॥
फिर आगे मेरी क्या गति होगी ॥५॥१॥

ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਰੀ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨ ਜੀਉ ਕੇ ਪਦੇ ਘਰੁ ੧
गूजरी स्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १
गूजरी श्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਅੰਤਰੁ ਮਲਿ ਨਿਰਮਲੁ ਨਹੀ ਕੀਨਾ ਬਾਹਰਿ ਭੇਖ ਉਦਾਸੀ ॥
अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥
यदि अन्तर मैला है और उसे निर्मल नहीं किया तथा बाहर से चाहे उदासीन का वेष धारण किया हुआ है तो इसका क्या अभिप्राय है ?

ਹਿਰਦੈ ਕਮਲੁ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨ ਚੀਨ੍ਹ੍ਹਾ ਕਾਹੇ ਭਇਆ ਸੰਨਿਆਸੀ ॥੧॥
हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥
हे भाई ! अपने हृदय कमल में ब्रह्मा को न पहचान कर क्यों संन्यासी बने हुए हो ? ॥१॥

ਭਰਮੇ ਭੂਲੀ ਰੇ ਜੈ ਚੰਦਾ ॥
भरमे भूली रे जै चंदा ॥
हे जय चन्द ! सारा संसार भ्रम में पड़कर कुमार्गगामी हो गया है और

ਨਹੀ ਨਹੀ ਚੀਨ੍ਹਿਆ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥
इसने परमानंद प्रभु को अनुभव नहीं किया ॥ १॥ रहाउ॥

ਘਰਿ ਘਰਿ ਖਾਇਆ ਪਿੰਡੁ ਬਧਾਇਆ ਖਿੰਥਾ ਮੁੰਦਾ ਮਾਇਆ ॥
घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥
घर-घर से भिक्षा लेकर खा-खाकर पेट को मोटा कर लिया है और माया की लालसा में गुदड़ी एवं कानों में कुण्डल धारण करके घूमते फिरते हो।

ਭੂਮਿ ਮਸਾਣ ਕੀ ਭਸਮ ਲਗਾਈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਤਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥
तूने अपने शरीर पर श्मशानघाट की भस्म लगाई हुई है किन्तु गुरु के बिना तुझे सत्य का पता नहीं लगा ॥२॥

ਕਾਇ ਜਪਹੁ ਰੇ ਕਾਇ ਤਪਹੁ ਰੇ ਕਾਇ ਬਿਲੋਵਹੁ ਪਾਣੀ ॥
काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥
किसे जप रहे हो, कैसी तपस्या-साधना में मगन हो और क्यों जल का मंथन कर रहे हो ?

ਲਖ ਚਉਰਾਸੀਹ ਜਿਨ੍ਹਿ ਉਪਾਈ ਸੋ ਸਿਮਰਹੁ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੩॥
लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥
उस निर्लिप्त परमात्मा का सिमरन कर, जिसने चौरासी लाख योनियों को पैदा किया है।॥३॥

ਕਾਇ ਕਮੰਡਲੁ ਕਾਪੜੀਆ ਰੇ ਅਠਸਠਿ ਕਾਇ ਫਿਰਾਹੀ ॥
काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥
हे भगवा वेषधारी योगी ! तू क्यों हाथ में कमंडल लेकर अड़सठ तीर्थों पर भटक रहा है ?

ਬਦਤਿ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨੁ ਸੁਨੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਣ ਬਿਨੁ ਗਾਹੁ ਕਿ ਪਾਹੀ ॥੪॥੧॥
बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥
त्रिलोचन का कथन है कि हे नश्वर जीव ! ध्यानपूर्वक सुन, यदि अन्न के दाने नहीं हैं तो इसे गहाने का कोई अभिप्राय नहीं ॥ ४॥ १॥

ਗੂਜਰੀ ॥
गूजरी ॥
गूजरी ॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਲਛਮੀ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥
अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥
जो व्यक्ति अन्तकाल लक्ष्मी (धन-दौलत) को याद करता है और इसी चिन्ता में डूबकर (लोभ विकार के बस मे) प्राण त्याग देता है तो

ਸਰਪ ਜੋਨਿ ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਉਤਰੈ ॥੧॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥१॥
मरकर बार-बार सर्पयोनि में आता रहता है॥ १॥

ਅਰੀ ਬਾਈ ਗੋਬਿਦ ਨਾਮੁ ਮਤਿ ਬੀਸਰੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥
अरी बहन ! मुझे गोबिन्द का नाम कदापि न भूले॥ रहाउ॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਇਸਤ੍ਰੀ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥
अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥
जो व्यक्ति मृत्यु के समय स्त्री को याद करता रहता है और इसी चिन्ता में (काम विकार के बस मे) उसके प्राण पखेरू हो जाते हैं तो

ਬੇਸਵਾ ਜੋਨਿ ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਉਤਰੈ ॥੨॥
बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥२॥
वह बार-बार वेश्या की योनि में जन्म लेता रहता है ॥२॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਲੜਿਕੇ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥
अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥
जिन्दगी के अन्तिम क्षणों में जो व्यक्ति अपने पुत्रों को ही याद करता रहता है और इसी स्मृति में (मोह विकार के बस मे) मर जाता है तो

ਸੂਕਰ ਜੋਨਿ ਵਲਿ ਵਲਿ ਅਉਤਰੈ ॥੩॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥
वह बार-बार सूअर की योनि में जन्म लेता रहता है।॥ ३॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਜੋ ਮੰਦਰ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥

अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

जीवन के अन्तिम क्षणों में जो व्यक्ति घर-महल में ही ध्यान लगाए रखता है और इसी चिंता में (अहंकार विकार के बस मे) प्राण त्याग देता है तो

प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥

प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥

वह बार-बार प्रेत योनि में अवतरित होता है।॥ ४॥

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ਸਿਮਰੈ ਐਸੀ ਚਿੰਤਾ ਮਹਿ ਜੇ ਮਰੈ ॥

अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

अन्तकाल (मृत्यु के क्षणों में) जो मनुष्य नारायण का सिमरन करता है और इसी स्मृति में (भक्ति के बस मे) प्राण त्याग देता है तो

ਬਦਤਿ ਤਿਲੋਚਨੁ ਤੇ ਨਰ ਮੁਕਤਾ ਪੀਤੰਬਰੁ ਵਾ ਕੇ ਰਿਦੈ ਬਸੈ ॥੫॥੨॥

बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीत्मबरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥

त्रिलोचन का कथन है कि वह मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है तथा उसके हृदय में आकर ईश्वर निवास कर लेता है ॥५॥२॥

ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਰੀ ਜੈਦੇਵ ਜੀਉ ਕਾ ਪਦਾ ਘਰੁ ੪

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४

गूजरी श्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਰਮਾਦਿ ਪੁਰਖਮਨੋਪਿਮੰ ਸਤਿ ਆਦਿ ਭਾਵ ਰਤੰ ॥

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥

आदिपुरुष परमात्मा परम पवित्र है, वह उपमा से रहित है, वह सदैव सत्य एवं सर्वगुण सम्पन्न है।

ਪਰਮਦਭੁਤੰ ਪਰਕ੍ਰਿਤਿ ਪਰੰ ਜਦਿਚਿੰਤਿ ਸਰਬ ਗਤੰ ॥੧॥

परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥१॥

वह परम अदभुत परमात्मा प्रकृति से परे है, जिसका चिन्तन करने से सभी परमगति प्राप्त कर लेते हैं, वह सर्वव्यापक है॥ १॥

ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਨਾਮ ਮਨੋਰਮੰ ॥
केवल राम नाम मनोरमं ॥
केवल राम के सुन्दर नाम का सुमिरन करो जो

ਬਦਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤਤ ਮਇਅੰ ॥
बदि अम्रित तत मइअं ॥
अमृत से भरपूर एवं परम तत्व यथार्थ का स्वरूप है।

ਨ ਦਨੋਤਿ ਜਸਮਰਣੇਨ ਜਨਮ ਜਰਾਧਿ ਮਰਣ ਭਇਅੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥१॥ रहाउ ॥
जिसका सिमरन करने से जन्म-मरण, बुढ़ापा, चिन्ता एवं मृत्यु का डर दुःखी नहीं करता ॥ १॥ रहाउ॥

ਇਛਸਿ ਜਮਾਦਿ ਪਰਾਭਯੰ ਜਸੁ ਸ੍ਵਸਤਿ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਕ੍ਰਿਤੰ ॥
इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥
यदि यमदूत इत्यादि को पराजित करना चाहते हो, तो स्वरित स्वरूप प्रभु का यशोगान करने के शुभ कर्म करता जा।

ਭਵ ਭੂਤ ਭਾਵ ਸਮਬ੍ਯਿਅੰ ਪਰਮੰ ਪ੍ਰਸੰਨਮਿਦੰ ॥੨॥
भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥२॥
प्रभु वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्य काल में सदैव ही पूर्ण रूप से व्यापक एवं परम प्रसन्न स्वरूप है ॥२॥

ਲੋਭਾਦਿ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹੰ ਜਦਿਬਿਧਿ ਆਚਰਣੰ ॥
लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥
यदि शुभ आचरण का मार्ग पाना चाहते हो तो लोभ एवं पराए घर पर दृष्टि रखना त्याग दो।

ਤਜਿ ਸਕਲ ਦੁਹਕ੍ਰਿਤ ਦੁਰਮਤੀ ਭਜੁ ਚਕ੍ਰਧਰ ਸਰਣੰ ॥੩॥
तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥३॥
सभी दुष्कर्म एवं दुर्मति को त्याग दो और चक्रधर प्रभु की शरण में आ जाओ।॥ ३॥

ਹਰਿ ਭਗਤ ਨਿਜ ਨਿਹਕੇਵਲਾ ਰਿਦ ਕਰਮਣਾ ਬਚਸਾ ॥
हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥
हरि के प्रिय भक्त मन, वचन एवं कर्म से पावन होते हैं इसलिए मन, वचन एवं कर्म द्वारा हरि की भक्ति करो।

ਜੋਗੇਨ ਕਿੰ ਜਗੇਨ ਕਿੰ ਦਾਨੇਨ ਕਿੰ ਤਪਸਾ ॥੪॥

जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥४॥

योग-तपस्या, दान-पुण्य एवं यज्ञ इत्यादि का इस दुनिया में क्या अभिप्राय है॥ ४॥

ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਬਿੰਦੇਤਿ ਜਪਿ ਨਰ ਸਕਲ ਸਿਧਿ ਪਦੰ ॥

गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥

हे मानव ! गोविन्द का ही नाम-सुमिरन एवं जाप करो क्योंकि वही सर्व सिद्धियों का श्रेष्ठ स्थान है।

ਜੈਦੇਵ ਆਇਉ ਤਸ ਸਫੁਟੰ ਭਵ ਭੂਤ ਸਰਬ ਗਤੰ ॥੫॥੧॥

जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥५॥१॥

जयदेव भी उस प्रभु की शरण में आया है जो वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्यकाल में सब की मुक्ति करने वाला है॥ ५॥ १॥

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
ओअंकार एक है, उसका नाम सत्य है, वह सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, वह निडर है, उसकी किसी से कोई शत्रुता नहीं, वह कालातीत, वह जन्म-मरण के चक्र से रहित है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है और उसकी लब्धि गुरु-कृपा से होती है।

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥
रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥
रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥

ਸੇਵਕ ਜਨ ਬਨੇ ਠਾਕੁਰ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥
सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥
जो लोग ठाकुर जी के सेवक बन गए हैं, उनकी लगन उसमें ही लग गई है।

ਜੋ ਤੁਮਰਾ ਜਸੁ ਕਹਤੇ ਗੁਰਮਤਿ ਤਿਨ ਮੁਖ ਭਾਗ ਸਭਾਗੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मालिक ! जो व्यक्ति गुरु-उपदेश द्वारा तेरा यश गाते हैं, उनके मुख भाग्यवान बन गए हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਟੂਟੇ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧਨ ਫਾਹੇ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਗੇ ॥
टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥
परमेश्वर के नाम में लगन लगाने से मोह-माया के बन्धन-जाल कट जाते हैं।

ਹਮਰਾ ਮਨੁ ਮੋਹਿਓ ਗੁਰ ਮੋਹਨਿ ਹਮ ਬਿਸਮ ਭਈ ਮੁਖਿ ਲਾਗੇ ॥੧॥
हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥१॥
मन को मुग्ध करने वाले गुरु ने हमारा मन मोह लिया है तथा उसके दर्शन करके हम आश्चर्यचकित हो गए हैं॥ १॥

ਸਗਲੀ ਰੈਨਿ ਸੋਈ ਅੰਧਿਆਰੀ ਗੁਰ ਕਿੰਚਤ ਕਿਰਪਾ ਜਾਗੇ ॥
सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥
मैं अपनी जीवन रूपी सारी रात्रि में मोह-माया के अन्धकार में ही सोई रही किन्तु गुरु की थोड़ी-सी कृपा से अब जाग चुकी हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁੰਦਰ ਸੁਆਮੀ ਮੋਹਿ ਤੁਮ ਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਲਾਗੇ ॥੨॥੧॥
जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥२॥१॥
हे नानक के प्रभु सुन्दर स्वामी ! मुझे तुझ जैसा कोई नजर नहीं आता ॥ २ ॥ १॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮੇਰੋ ਸੁੰਦਰੁ ਕਹਹੁ ਮਿਲੈ ਕਿਤੁ ਗਲੀ ॥
मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥
हे हरि के संतजनो ! मुझे बताओ, मेरा सुन्दर प्रभु किस गली में मिलेगा ?

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਬਤਾਵਹੁ ਮਾਰਗੁ ਹਮ ਪੀਛੈ ਲਾਗਿ ਚਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मार्गदर्शन करो, ताकि मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चलती जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਿਅ ਕੇ ਬਚਨ ਸੁਖਾਨੇ ਹੀਅਰੈ ਇਹ ਚਾਲ ਬਨੀ ਹੈ ਭਲੀ ॥
प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥
मेरे प्रिय प्रभु के वचन मन को मीठे लगते हैं, अब यही युक्ति भली बनी है।

ਲਟੁਰੀ ਮਧੁਰੀ ਠਾਕੁਰ ਭਾਈ ਓਹ ਸੁੰਦਰਿ ਹਰਿ ਢੁਲਿ ਮਿਲੀ ॥੧॥
लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥१॥
चाहे वह लटूरी हो चाहे छोटे कद की हो यदिं प्रभु को भाती हो तो वह सुन्दर बन जाती है, वह विनम्र होकर पति-प्रभु से मिल जाती है॥ १॥

ਏਕੋ ਪ੍ਰਿਉ ਸਖੀਆ ਸਭ ਪ੍ਰਿਅ ਕੀ ਜੋ ਭਾਵੈ ਪਿਰ ਸਾ ਭਲੀ ॥
एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥
प्रियतम प्रभु तो एक ही है किन्तु उस प्रियतम की अनेक सखियाँ (जीव-स्त्रियाँ) हैं, जो प्रियतम को अच्छी लगती है वही भाग्यशालिनी है।

ਨਾਨਕੁ ਗਰੀਬੁ ਕਿਆ ਕਰੈ ਬਿਚਾਰਾ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਰਾਹਿ ਚਲੀ ॥੨॥੨॥
नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥२॥२॥
नानक गरीब बेचारा क्या कर सकता है ? जो परमात्मा को अच्छा लगता है, वह उस मार्ग पर चल देता है॥ २॥ २ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀਐ ॥
मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥
हे मेरे मन ! मुख से हरि का 'हरि-हरि' नाम ही बोलना चाहिए।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭੀਨੀ ਚੋਲੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुख बनकर हरि-प्रेम में रंग गई हूँ और हरि-प्रेम में ही हृदय रूपी मेरी चोली भोगी हुई है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉ ਫਿਰਉ ਦਿਵਾਨੀ ਆਵਲ ਬਾਵਲ ਤਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਹਰਿ ਢੋਲੀਐ ॥
हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥
उस प्रियतम हरि के मिलन हेतु मैं दीवानी बावली होकर फिर रही हूँ।

ਕੋਈ ਮੇਲੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਿਆਰਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੀ ਗੁਲ ਗੋਲੀਐ ॥੧॥
कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥१॥
जो कोई भी मुझे मेरे प्रियतम प्यारे से मिलाएगा, मैं उसकी दासियों की दासी बनी रहूँगी॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਵਹੁ ਅਪੁਨਾ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀ ਝੋਲੀਐ ॥
सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अम्रितु पी झोलीऐ ॥
अपने सतिगुरु महापुरुष को प्रसन्न कर लो और हरि-नाम रूपी अमृत का पान करके झूमो।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਲਾਧਾ ਦੇਹ ਟੋਲੀਐ ॥੨॥੩॥
गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥२॥३॥
गुरु की कृपा से नानक ने अपनी देहि में ही हरि को खोज कर प्राप्त कर लिया है ॥२॥३॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਅਬ ਹਮ ਚਲੀ ਠਾਕੁਰ ਪਹਿ ਹਾਰਿ ॥
अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥
अब मैं हर प्रकार से हार कर अपने ठाकुर जी के पास आ गई हूँ।

ਜਬ ਹਮ ਸਰਣਿ ਪ੍ਰਭੂ ਕੀ ਆਈ ਰਾਖੁ ਪ੍ਰਭੂ ਭਾਵੈ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि ॥१॥ रहाउ ॥
अब जब मैं प्रभु की शरण में आ गई हूँ तो हे प्रभु ! आप चाहे मुझे मार दे अथवा बचा लीजिए ॥ १॥ रहाउ ॥

ਲੋਕਨ ਕੀ ਚਤੁਰਾਈ ਉਪਮਾ ਤੇ ਬੈਸੰਤਰਿ ਜਾਰਿ ॥
लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥
लोगों की चतुराई एवं उपमा को मैंने अग्नि में जला दिया है।

ਕੋਈ ਭਲਾ ਕਹਉ ਭਾਵੈ ਬੁਰਾ ਕਹਉ ਹਮ ਤਨੁ ਦੀਓ ਹੈ ਢਾਰਿ ॥੧॥
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥१॥
अब कोई चाहे मुझे भला कहे अथवा बुरा कहे, मैंने तो अपना तन प्रभु को न्यौछावर कर दिया है ॥१॥

ਜੋ ਆਵਤ ਸਰਣਿ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭੁ ਤੁਮਰੀ ਤਿਸੁ ਰਾਖਹੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥
जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥
हे ठाकुर प्रभु ! जो कोई भी तेरी शरण में आता है, कृपा धारण करके तुम उसकी रक्षा करो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਹਰਿ ਜੀਉ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਮੁਰਾਰਿ ॥੨॥੪॥
जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥२॥४॥
हे पूज्य परमेश्वर ! दास नानक ने तेरी ही शरण ली है, तू उसकी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखना ॥ २॥ ४॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਉ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥
जो हरि का गुणगान करता है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ।

ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਜੀਵਾ ਸਾਧ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਜਿਸੁ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उस साधु गुरुदेव के दर्शन देख-देखकर जीवित हूँ, जिसके हृदय में परमात्मा का नाम बसा हुआ है ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਪਵਿਤ੍ਰ ਪਾਵਨ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਕਿਉ ਕਰਿ ਮਿਲਹ ਜੂਠਾਰੀ ॥
तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥
हे स्वामी-प्रभु ! तुम पवित्र-पावन सद्पुरुष हो लेकिन मैं अपवित्र तुझे कैसे मिल सकता हूँ?

ਹਮਰੈ ਜੀਇ ਹੋਰੁ ਮੁਖਿ ਹੋਰੁ ਹੋਤ ਹੈ ਹਮ ਕਰਮਹੀਣ ਕੂੜਿਆਰੀ ॥੧॥
हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥१॥
हमारे अन्तर्मन में कुछ और ही होता है तथा मुँह में कुछ और ही होता है, हम कर्महीन एवं असत्यवादी हैं।॥ १॥

ਹਮਰੀ ਮੁਦ੍ਰ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਦੁਸਟ ਦੁਸਟਾਰੀ ॥
हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥
हे मेरे स्वामी हरि ! बाहरी दिखावे के तौर पर मैं तेरा नाम-सिमरन करता हूँ परन्तु अपने हृदय के भीतर मैंने दुष्टों जैसी दुष्टता धारण की हुई है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥੨॥੫॥
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥२॥५॥
हे स्वामी ! नानक ने तेरी ही शरण ली है, जैसे तुझे भाता है, वैसे ही उसकी रक्षा करो ॥ २॥ ५ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸੁੰਦਰਿ ਹੈ ਨਕਟੀ ॥
हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥
हरि-नाम के बिना सुन्दर व्यक्ति भी नकटा अथवा निर्लज्ज कहलाता है।

ਜਿਉ ਬੇਸੁਆ ਕੇ ਘਰਿ ਪੂਤੁ ਜਮਤੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਨਾਮੁ ਪਰਿਓ ਹੈ ਧ੍ਰਕਟੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे एक वेश्या के घर कोई पुत्र जन्म लेता है तो उसका नाम धिक्कार योग्य नाजायज या हरामजादा पड़ जाता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਹਿ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤੇ ਬਿਗੜ ਰੂਪ ਬੇਰਕਟੀ ॥
जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥
जिनके हृदय में हरि-स्वामी का निवास नहीं, वे कुरूप एवं कोढ़ी हैं।

ਜਿਉ ਨਿਗੁਰਾ ਬਹੁ ਬਾਤਾ ਜਾਣੈ ਓਹੁ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਹੈ ਭ੍ਰਸਟੀ ॥੧॥
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥१॥
जैसे निगुरा पुरुष बहुत बातें जानता है, लेकिन हरि के दरबार में दुराचारी ही है॥ १॥

ਜਿਨ ਕਉ ਦਇਆਲੁ ਹੋਆ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਨਾ ਸਾਧ ਜਨਾ ਪਗ ਚਕਟੀ ॥
जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥
मेरा स्वामी जिन पर दयालु हो जाता है, वे साधुजनों के चरण-स्पर्श करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਛੈ ਛੁਕਟੀ ॥੨॥੬॥ ਛਕਾ ੧

नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥२॥६॥ छका १

हे नानक ! सत्संगति में मिलकर पतित मनुष्य भी पवित्र पावन बन जाते हैं और सच्चे गुरु के मार्गदर्शन पर चलकर जन्म-मरण से छूट जाते हैं।॥ २॥ ६॥ छका १॥ (छः पंक्तियों का जोड़)

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨

देवगंधारी महला ५ घरु २

देवगंधारी महला ५ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਾਈ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥

माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥

हे मेरी माता ! सदा गुरु-चरणों में चित्त लगाना चाहिए।

ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥

जब प्रभु कृपालु हो जाता है तो हृदय कमल खिल जाता है, हमें सदा-सर्वदा ही हरि का ध्यान करते रहना चाहिए ॥ १॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਏਕੋ ਬਾਹਰਿ ਏਕੋ ਸਭ ਮਹਿ ਏਕੁ ਸਮਾਈਐ ॥

अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥

एक परमात्मा ही जीवों के मन में रहता है और वही सारी दुनिया में निवास करता है, सत्य तो यही है कि एक ईश्वर ही सबके हृदय में समाया हुआ है।

ਘਟਿ ਅਵਘਟਿ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਹਰਿ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਈਐ ॥੧॥

घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥१॥

घर में एवं घर से बाहर हर जगह सर्वव्यापक पूर्ण ब्रह्म हरि ही दृष्टिगत होता है।॥ १॥

ਉਸਤਤਿ ਕਰਹਿ ਸੇਵਕ ਮੁਨਿ ਕੇਤੇ ਤੇਰਾ ਅੰਤੁ ਨ ਕਤਹੂ ਪਾਈਐ ॥

उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥

हे प्रभु! बहुत सारे सेवक एवं मुनिजन भी तेरी ही स्तुति करते हैं परन्तु कोई भी तेरा अन्त नहीं जानता।

ਸੁਖਦਾਤੇ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ॥੨॥੧॥
सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥२॥१॥
हे सुखों के दाता ! हे दुखनाशक स्वामी ! नानक सदैव ही तुझ पर बलिहारी जाता है॥ २॥ १॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮਾਈ ਹੋਨਹਾਰ ਸੋ ਹੋਈਐ ॥
माई होनहार सो होईऐ ॥
हे मेरी माता! जो कुछ दुनिया में होता है, परमात्मा के हुक्म अनुसार ही होता है।

ਰਾਚਿ ਰਹਿਓ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨੀ ਕਹਾ ਲਾਭੁ ਕਹਾ ਖੋਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु अपनी जगत-रचना में सक्रिय है, वह मानव को कहीं लाभ पहुँचा रहा है और किसी से कुछ छीन रहा है अर्थात् मानव के अपने कर्मों का ही लेन-देन है॥ १ ॥ रहाउ॥

ਕਹ ਫੂਲਹਿ ਆਨੰਦ ਬਿਖੈ ਸੋਗ ਕਬ ਹਸਨੋ ਕਬ ਰੋਈਐ ॥
कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥
किसी समय मानव आनंद में प्रफुल्लित रहता है व किसी समय वह विषयादि विकारों से दुखी होता है, कभी वह हँसता है और कभी वह रुदन करता है।

ਕਬਹੂ ਮੈਲੁ ਭਰੇ ਅਭਿਮਾਨੀ ਕਬ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਧੋਈਐ ॥੧॥
कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥१॥
कभी अभिमानी मानव अभिमान की मैल से भरा हुआ होता है और कभी वह सत्संगति में शामिल होकर मैल को धोकर पावन हो जाता है।॥१॥

ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਕੀਆ ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਅਲੋਈਐ ॥
कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥
ईश्वर के किए हुए को कोई भी जीव मिटा नहीं सकता, मुझे उस ईश्वर के समान कोई दूसरा दिखाई नहीं देता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੀ ਜਿਹ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁਖਿ ਸੋਈਐ ॥੨॥੨॥
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥२॥२॥
हे नानक ! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी कृपा से सुखपूर्वक रहा जा सकता है॥ २॥ २॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮਾਈ ਸੁਨਤ ਸੋਚ ਭੈ ਡਰਤ ॥
माई सुनत सोच भै डरत ॥
हे मेरी माता ! जब मैं काल (मृत्यु) के बारे में सुनता एवं सोचता हूँ तो मेरा मन घबरा कर डर जाता है।

ਮੇਰ ਤੇਰ ਤਜਉ ਅਭਿਮਾਨਾ ਸਰਨਿ ਸੁਆਮੀ ਕੀ ਪਰਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥१॥ रहाउ ॥
अब मेरे-तेरे का अभिमान छोड़कर मैं स्वामी की शरण में आ गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਉ ਨਾਹਿ ਨ ਕਾ ਬੋਲ ਕਰਤ ॥
जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥
जो कुछ भी स्वामी कहता है, उसे मैं भला मानता हूँ, जो कुछ भी वह बोलता है, मैं उसे मना नहीं कर सकता।

ਨਿਮਖ ਨ ਬਿਸਰਉ ਹੀਏ ਮੋਰੇ ਤੇ ਬਿਸਰਤ ਜਾਈ ਹਉ ਮਰਤ ॥੧॥
निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥१॥
हे मालिक ! तू निमिष मात्र भी मेरे हृदय से विस्मृत न होना क्योंकि तुझे भुला कर मैं जीवित नहीं रह सकता ॥ १॥

ਸੁਖਦਾਈ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰਤਾ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤੁ ਇਆਨਪ ਜਰਤ ॥
सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥
सृष्टि का रचयिता पूर्ण प्रभु सुख प्रदान करने वाला है, वह मेरी बहुत सारी मूर्खता को सहन करता रहता है।

ਨਿਰਗੁਨਿ ਕਰੂਪਿ ਕੁਲਹੀਣ ਨਾਨਕ ਹਉ ਅਨਦ ਰੂਪ ਸੁਆਮੀ ਭਰਤ ॥੨॥੩॥
निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥२॥३॥
हे नानक ! मैं गुणहीन, कुरूप एवं कुलहीन हूँ परन्तु मेरा स्वामी-पति आनंद का प्रत्यक्ष रूप है॥ २॥ ३॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮਨ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਿ ਸਦਹੂੰ ॥
मन हरि कीरति करि सदहूं ॥
हे मन ! सदैव ही हरि का कीर्ति-गान किया कर।

ਗਾਵਤ ਸੁਨਤ ਜਪਤ ਉਧਾਰੈ ਬਰਨ ਅਬਰਨਾ ਸਭਹੂੰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु का यश गाने, उसकी महिमा सुनने एवं नाम-जपने से सभी जीव चाहे वे उच्च कुल से हो अथवा निम्न कुल से प्रभु सबका उद्धार कर देता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਤੇ ਉਪਜਿਓ ਤਹੀ ਸਮਾਇਓ ਇਹ ਬਿਧਿ ਜਾਨੀ ਤਬਹੂੰ ॥
जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥
जब जीव यह विधि समझ लेता है तो वह उस में ही समा जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था।

ਜਹਾ ਜਹਾ ਇਹ ਦੇਹੀ ਧਾਰੀ ਰਹਨੁ ਨ ਪਾਇਓ ਕਬਹੂੰ ॥੧॥
जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ॥१॥
जहाँ कहीं भी यह देहि धारण की गई थी, किसी समय भी यह आत्मा वहाँ टिकने नहीं दी गई ॥१॥

ਸੁਖੁ ਆਇਓ ਭੈ ਭਰਮ ਬਿਨਾਸੇ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਹੂਏ ਪ੍ਰਭ ਜਬਹੂ ॥
सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपाल हूए प्रभ जबहू ॥
जब प्रभु कृपालु हो गया तो मन में सुख का निवास हो गया और भय एवं भ्रम नष्ट हो गए।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ ਮਨੋਰਥ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤਜਿ ਲਬਹੂੰ ॥੨॥੪॥
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥२॥४॥
हे नानक ! साधसंगत में लोभ को छोड़ने से मेरे सभी मनोरथ पूरे हो गए है ॥२॥४॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਮਨ ਜਿਉ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਉ ॥
मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥
हे मेरे मन ! जैसे भी हो सके, अपने प्रभु को अच्छा लगने लगूं,

ਨੀਚਹੁ ਨੀਚੁ ਨੀਚੁ ਅਤਿ ਨਾਨ੍ਹਾ ਹੋਇ ਗਰੀਬੁ ਬੁਲਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए मैं नीचों से भी नीच, विनम्र एवं अत्यन्त गरीब बन कर प्रभु को पुकारता हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਅਡੰਬਰ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬਿਰਥੇ ਤਾ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਘਟਾਵਉ ॥
अनिक अड्मबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥
माया के अनेक आडम्बर व्यर्थ हैं और इनसे मैं अपनी प्रीति कम करता हूँ।

ਜਿਉ ਅਪੁਨੋ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖੁ ਮਾਨੈ ਤਾ ਮਹਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਉ ॥੧॥
जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥१॥
जैसा मेरा स्वामी सुख की अनुभूति करता है, मैं उसी में शोभा प्राप्त करता हूँ॥ १॥

ਦਾਸਨ ਦਾਸ ਰੇਨੁ ਦਾਸਨ ਕੀ ਜਨ ਕੀ ਟਹਲ ਕਮਾਵਉ ॥
दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥
मैं तो प्रभु के दासानुदास की चरण-धूलि हूँ और दासों की श्रद्धा से सेवा करता हूँ।

ਸਰਬ ਸੂਖ ਬਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਜੀਵਉ ਮੁਖਹੁ ਬੁਲਾਵਉ ॥੨॥੫॥
सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥२॥५॥
हे नानक ! मैं अपने मुँह से प्रभु का नाम बोलते हुए ही जीवित रहता हूँ, इसलिए अब मुझे सर्व सुख एवं बड़ाई मिल गए हैं।॥ २ ॥ ५॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥
देवगंधारी ॥
देवगंधारी ॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤਉ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਭ੍ਰਮੁ ਡਾਰਿਓ ॥
प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥
हे प्रभु जी ! तेरी कृपा से मैंने अपने भ्रम को मिटा दिया है।

ਤੁਮਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਸਭੁ ਕੋ ਅਪਨਾ ਮਨ ਮਹਿ ਇਹੈ ਬੀਚਾਰਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपने मन में यही विचार किया है कि तुम्हारी कृपा से सभी मेरे अपने हैं कोई पराया नहीं ॥१॥ रहाउ॥

ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟੇ ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ ਦਰਸਨਿ ਦੂਖੁ ਉਤਾਰਿਓ ॥
कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥
हे परमेश्वर ! तेरी सेवा-भक्ति से करोड़ों ही अपराध मिट जाते हैं और तेरे दर्शन दुःख दूर कर देते हैं।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ਚਿੰਤਾ ਰੋਗੁ ਬਿਦਾਰਿਓ ॥੧॥

नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥१॥

तेरे नाम का जाप करने से मैंने महा सुख प्राप्त कर लिया है और मेरी चिंता एवं रोग मिट गए हैं॥ १॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਝੂਠੁ ਨਿੰਦਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਬਿਸਾਰਿਓ ॥

कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥

साधसंगत में रहकर मैं काम, क्रोध, लोभ, झूठ एवं निन्दा इत्यादि को भूल गया हूँ।

ਮਾਇਆ ਬੰਧ ਕਾਟੇ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਉਧਾਰਿਓ ॥੨॥੬॥

माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥२॥६॥

हे नानक ! कृपानिधि परमेश्वर ने आप मेरे माया के बन्धन काट कर मुझे मुक्त कर दिया है ॥२॥६॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ॥

देवगंधारी ॥

देवगंधारी ॥

ਮਨ ਸਗਲ ਸਿਆਨਪ ਰਹੀ ॥

मन सगल सिआनप रही ॥

मेरे मन की तमाम चतुराईयाँ समाप्त हो गई हैं।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਓਟ ਗਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥१॥ रहाउ ॥

हे नानक ! मेरा स्वामी प्रभु ही सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है, इसलिए मैंने उसकी ओट ली है ॥१॥ रहाउ॥

ਆਪੁ ਮੇਟਿ ਪਏ ਸਰਣਾਈ ਇਹ ਮਤਿ ਸਾਧੂ ਕਹੀ ॥

आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥

अहंत्व को मिटाकर मैं प्रभु की शरण में आ गया हूँ, यह सुमति मुझे साधु ने कही है।

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਆਗਿਆ ਮਾਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਭਰਮੁ ਅਧੇਰਾ ਲਹੀ ॥੧॥

प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥१॥

प्रभु की आज्ञा का पालन करके मैंने सुख प्राप्त कर लिया है और मेरा भ्रम का अंधेरा दूर हो गया है॥ १॥

ਜਾਨ ਪ੍ਰਬੀਨ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਅਹੀ ॥
जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥
हे मेरे स्वामी प्रभु ! तुझे सर्वगुण सम्पन्न एवं प्रवीण समझ कर मैंने तेरी शरण की अभिलाषा की है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਨਹਾਰੇ ਕੁਦਰਤਿ ਕੀਮ ਨ ਪਹੀ ॥੨॥੭॥
खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥२॥७॥
हे क्षण भर में बनाने एवं विनाश करने वाले परमात्मा ! तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ २॥ ७॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਭੂ ਸੁਖਦਾਤੇ ॥
हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥
परमात्मा ही प्राण एवं सुखदाता है,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਾਹੂ ਜਾਤੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर प्रसादि काहू जाते ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इस सत्य को समझता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਤੁਮਾਰੇ ਤੁਮਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਿਨ ਕਉ ਕਾਲ ਨ ਖਾਤੇ ॥
संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥
हे प्रियतम प्रभु ! तेरे संत तुझे अति प्रिय हैं और उन्हें काल नहीं निगलता।

ਰੰਗਿ ਤੁਮਾਰੈ ਲਾਲ ਭਏ ਹੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਸਿ ਮਾਤੇ ॥੧॥
रंगि तुमारै लाल भए है राम नाम रसि माते ॥१॥
वे तेरे प्रेम-रंग में लाल हो गए हैं तथा राम-नाम के रस में ही मस्त रहते हैं।॥१॥

ਮਹਾ ਕਿਲਬਿਖ ਕੋਟਿ ਦੋਖ ਰੋਗਾ ਪ੍ਰਭ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਤੁਹਾਰੀ ਹਾਤੇ ॥
महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥
हे प्रभु ! तेरी करुणा-दृष्टि से भारी अपराध, करोड़ों दोष एवं रोग नाश हो जाते हैं।

ਸੋਵਤ ਜਾਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਇਆ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਚਰਨ ਪਰਾਤੇ ॥੨॥੮॥
सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥२॥८॥
हे नानक ! मैं गुरु के चरणों में आकर सोते-जागते सदैव हरि-परमेश्वर का यशोगान करता रहता हूँ॥ २॥ ८॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਿਓ ਨੈਣੀ ॥
सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥
उस प्रभु को मैंने अपने नयनों से हर जगह देखा है।

ਸੁਖਦਾਈ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਜਾ ਕੀ ਬੈਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुखदाई जीअन को दाता अम्रितु जा की बैणी ॥१॥ रहाउ ॥
वह सुख प्रदान करने वाला जीवों का दाता है तथा उसकी वाणी अमृत समान मधुर है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰਾ ਸੰਤੀ ਕਾਟਿਆ ਜੀਅ ਦਾਨੁ ਗੁਰ ਦੈਣੀ ॥
अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥
संतों ने मेरा अज्ञान का अन्धेरा मिटा दिया है और गुरु ने मुझे जीवनदान दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਲੀਨੋ ਅਪੁਨਾ ਜਲਤੇ ਸੀਤਲ ਹੋਣੀ ॥੧॥
करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥१॥
उसने अपनी कृपा धारण करके मुझे अपना बना लिया है, जिसके फलस्वरूप तृष्णाग्नि में जलता हुआ मेरा मन शीतल हो गया है॥ १॥

ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਕਿਛੁ ਉਪਜਿ ਨ ਆਇਓ ਨਹ ਉਪਜੀ ਨਿਰਮਲ ਕਰਣੀ ॥
करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥
मुझ में कुछ भी शुभ कर्म एवं धर्म उत्पन्न नहीं हुए और न ही मुझ में निर्मल आचरण प्रगट हुआ है।

ਛਾਡਿ ਸਿਆਨਪ ਸੰਜਮ ਨਾਨਕ ਲਾਗੋ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ॥੨॥੯॥
छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥२॥९॥
हे नानक ! चतुरता एवं संयम को छोड़कर मैं गुरु के चरणों में विराज गया हूँ ॥२॥६॥

देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

हरि राम नामु जपि लाहा ॥
हरि राम नामु जपि लाहा ॥
हे मानव ! परमेश्वर के नाम का जाप करो, इसी में तेरी (अमूल्य मानव-जन्म की) उपलब्धि है।

गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥१॥ रहाउ ॥
गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥१॥ रहाउ ॥
इस प्रकार तुझे मोक्ष, सहज सुख एवं आनंद की प्राप्ति हो जाएगी और मृत्यु की फाँसी कट जाएगी ॥१॥ रहाउ॥

खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥
खोजते-खोजते एवं विचार करते हुए मुझे ज्ञान हुआ है कि हरि का नाम संतजनों के पास है।

तिन्ा परापति एहु निधाना जिन् कै करमि लिखाहा ॥१॥
तिन्हा परापति एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥१॥
लेकिन जिनके भाग्य में लिखा होता है उन्हें ही इस नाम-भण्डार की उपलब्धि होती है॥ १॥

से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥
से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥
हे नानक ! वही भाग्यशाली हैं, वही प्रतिष्ठित, वही पूर्ण साहूकार हैं और

सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन् हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥
सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥
वही सुन्दर, बुद्धिमान एवं मनोरम हैं, जिन्होंने परमेश्वर के नाम को खरीदा है ॥२॥१०॥

देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਮਨ ਕਹ ਅਹੰਕਾਰਿ ਅਫਾਰਾ ॥
मन कह अहंकारि अफारा ॥
हे मन ! क्यों अहंकार में अकड़कर फूले हुए हो ?

ਦੁਰਗੰਧ ਅਪਵਿਤ੍ਰ ਅਪਾਵਨ ਭੀਤਰਿ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਛਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे तन के भीतर अपवित्र, अपावन दुर्गन्ध मौजूद है और जो कुछ भी दृष्टिमान होता है, सब नश्वर है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਿਸੁ ਸਿਮਰਿ ਪਰਾਨੀ ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਨ ਜਿਨਿ ਧਾਰਾ ॥
जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥
हे प्राणी ! तू उस प्रभु की आराधना कर, जिसने तुझे पैदा किया है और जो जीवन एवं प्राणों का सहारा है।

ਤਿਸਹਿ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਲਪਟਾਵਹਿ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰਾ ॥੧॥
तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥१॥
प्रभु को त्याग कर मूर्ख गंवार प्राणी सांसारिक पदार्थों से लिपटा हुआ है जिसके फलस्वरूप वह जन्मता-मरता रहता है॥ १॥

ਅੰਧ ਗੁੰਗ ਪਿੰਗੁਲ ਮਤਿ ਹੀਨਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ॥
अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥
हे रखवाले प्रभु ! मैं तो अन्धा, गूंगा, पिंगुला (अपंग) एवं बुद्धिहीन हूँ, कृपा करके मेरी रक्षा कीजिए।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸਮਰਥਾ ਕਿਆ ਨਾਨਕ ਜੰਤ ਬਿਚਾਰਾ ॥੨॥੧੧॥
करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥२॥११॥
हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही करने एवं करवाने में समर्थ है, किन्तु जीव बेचारा कितना विवश है॥ २ ॥ ११॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰੈ ਹੂ ਤੇ ਨੇਰੈ ॥
सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥
हे प्राणी ! वह प्रभु तेरे निकट और करीब ही है।

ਸਿਮਰਿ ਧਿਆਇ ਗਾਇ ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਸਾਝ ਸਵੇਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए दिन-रात, प्रातःकाल-सायंकाल उस गोबिंद का ध्यान-सुमिरन कर और उसका गुणानुवाद करता जा॥ १॥ रहाउ॥

ਉਧਰੁ ਦੇਹ ਦੁਲਭ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇਰੈ ॥
उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥
हे प्राणी ! साधसंगत में रहकर हरि-नाम का जाप करके अपने दुर्लभ शरीर का उद्धार कर ले।

ਘਰੀ ਨ ਮੁਹਤੁ ਨ ਚਸਾ ਬਿਲੰਬਹੁ ਕਾਲੁ ਨਿਤਹਿ ਨਿਤ ਹੇਰੈ ॥੧॥
घरी न मुहतु न चसा बिल्मबहु कालु नितहि नित हेरै ॥१॥
तू एक घड़ी, मुहूर्त एवं पल भर का भी (सिमरन करने में) विलम्ब मत कर, क्योंकि मृत्यु तुझे नित्य ही देख रही है॥ १॥

ਅੰਧ ਬਿਲਾ ਤੇ ਕਾਢਹੁ ਕਰਤੇ ਕਿਆ ਨਾਹੀ ਘਰਿ ਤੇਰੈ ॥
अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥
हे जग के रचयिता ! मुझे दुनिया की अन्धी विल से बाहर निकाल ले, तेरे घर में किसी पदार्थ का अभाव नही।

ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਕਉ ਆਨਦ ਸੂਖ ਘਨੇਰੈ ॥੨॥੧੨॥ ਛਕੇ ੨ ॥
नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥२॥१२॥ छके २ ॥
हे परमात्मा ! नानक को अपने नाम का आधार दीजिए, चूंकि नाम में परम सुख एवं आनंद विद्यमान है ॥२॥१२॥ छके २॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿਓ ॥
मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥
हे मन ! तूने गुरु से मिलकर परमात्मा के नाम की आराधना की है,

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਰਸ ਜੀਵਨ ਕਾ ਮੂਲੁ ਬਾਧਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥१॥ रहाउ ॥
इस तरह तूने सहज सुख, आनंद, हर्षोल्लास एवं जीवन की अच्छी बुनियाद रख ली है॥१॥ रहाउ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਦਾਸੁ ਕੀਨੋ ਕਾਟੇ ਮਾਇਆ ਫਾਧਿਓ ॥
करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥
परमात्मा ने अपनी कृपा करके तुझे अपना दास बना लिया है और तेरे माया के बन्धन समाप्त कर दिए हैं।

ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਗਾਇ ਗੁਣ ਗੋਬਿਦ ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਸਾਧਿਓ ॥੧॥
भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥१॥
तूने गोविन्द के गुण गाकर प्रेम-भक्ति से मृत्यु का मार्ग जीत लिया है ॥१॥

ਭਇਓ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਮਿਟਿਓ ਮੋਰਚਾ ਅਮੋਲ ਪਦਾਰਥੁ ਲਾਧਿਓ ॥
भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥
तुझ पर प्रभु की कृपा हो गई है, तेरी अहंकार की मैल उतर गई है और तुझे अमूल्य नाम-पदार्थ मिल गया है।

ਬਲਿਹਾਰੈ ਨਾਨਕ ਲਖ ਬੇਰਾ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿਓ ॥੨॥੧੩॥
बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥२॥१३॥
नानक का कथन है कि हे मेरे अगम्य अपार ठाकुर जी ! मैं तुझ पर लाखों बार बलिहारी जाता हूँ ॥२॥१३॥

देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

माई जो प्रभ के गुन गावै ॥
माई जो प्रभ के गुन गावै ॥
हे माँ! जो व्यक्ति प्रभु के गुण गाता है,

सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥
सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥
उसका दुनिया में जन्म लेना सफल है,उसे जीवन का फल प्राप्त हो जाता है और वह परब्रह्म में लगन लगाता है ॥१॥ रहाउ॥

सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥
सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥
जो व्यक्ति साध संगत प्राप्त करता है, वह सुन्दर, बुद्धिमान, शूरवीर तथा ज्ञानवान है।

नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥१॥
नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥१॥
अपनी रसना से वह हरि के नाम को उच्चरित करता है तथा दोबारा योनियों में नहीं भटकता ॥१॥

पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥
पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥
उसके मन एवं तन में पूर्ण ब्रह्म बसा रहता है और उसके अलावा उसे कोई दिखाई नहीं देता।

नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥२॥१४॥
नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥२॥१४॥
हे नानक ! जिसे प्रभु अपने साथ मिला लेता है, उसे संतजनों की संगति करने से नरक का रोग नहीं लगता ॥२॥१४॥

देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

ਚੰਚਲੁ ਸੁਪਨੈ ਹੀ ਉਰਝਾਇਓ ॥
चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥
यह चंचल मन स्वप्न (रूपी जगत) में ही उलझा हुआ है।

ਇਤਨੀ ਨ ਬੂਝੈ ਕਬਹੂ ਚਲਨਾ ਬਿਕਲ ਭਇਓ ਸੰਗਿ ਮਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥१॥ रहाउ ॥
यह इतनी बात भी नहीं बूझता कि किसी दिन उसने दुनिया से चल देना है, किन्तु माया में मोह लगा कर परेशान हो गया है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕੁਸਮ ਰੰਗ ਸੰਗ ਰਸਿ ਰਚਿਆ ਬਿਖਿਆ ਏਕ ਉਪਾਇਓ ॥
कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥
यह कुसुम के रंग वाली माया के साथ प्रेम लगाकर उसके आस्वादन में लीन है और विषय-विकारों में ही प्रयासरत रहता है।

ਲੋਭ ਸੁਨੈ ਮਨਿ ਸੁਖੁ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ਬੇਗਿ ਤਹਾ ਉਠਿ ਧਾਇਓ ॥੧॥
लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥१॥
जहाँ-कहीं भी वह कोई लोभ की बात सुनता है तो अपने मन में सुख की अनुभूति करता है और तुरंत ही उधर दौड़कर जाता है।॥ १॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਬਹੁਤੁ ਸ੍ਰਮੁ ਪਾਇਓ ਸੰਤ ਦੁਆਰੈ ਆਇਓ ॥
फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥
फिरते-फिरते इसने बहुत पीड़ा सहन की है और अब संत के द्वार में आ गया है।

ਕਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸੁਆਮੀ ਨਾਨਕ ਲੀਓ ਸਮਾਇਓ ॥੨॥੧੫॥
करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥२॥१५॥
हे नानक ! परब्रह्म स्वामी ने कृपा करके इसे अपने साथ मिला लिया है ॥२॥१५॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਗੁਰ ਚਰਨਾ ॥
सरब सुखा गुर चरना ॥
सर्व सुख गुरु के चरणों में मौजूद हैं।

ਕਲਿਮਲ ਡਾਰਨ ਮਨਹਿ ਸਧਾਰਨ ਇਹ ਆਸਰ ਮੋਹਿ ਤਰਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१॥ रहाउ ॥

यह पापों का नाश कर देते हैं, मन को आधार देते हैं और इनके सहारे मैंने संसार-सागर से पार हो जाना है ॥१॥ रहाउ ॥

ਪੂਜਾ ਅਰਚਾ ਸੇਵਾ ਬੰਦਨ ਇਹੈ ਟਹਲ ਮੋਹਿ ਕਰਨਾ ॥

पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥

में केवल यही सेवा करता हूँ, गुरु-चरणों की सेवा ही मेरी पूजा-अर्चना, भक्ति एवं वंदना है।

ਬਿਗਸੈ ਮਨੁ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸਾ ਬਹੁਰਿ ਨ ਗਰਭੈ ਪਰਨਾ ॥੧॥

बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥

इन में मेरा मन खिलकर आलोकित हो जाता है, जिसके फलस्वरूप मुझे गर्भ-योनि में नहीं जाना पड़ेगा ॥ १॥

ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਪਰਸਉ ਸੰਤਨ ਕੀ ਇਹੈ ਧਿਆਨਾ ਧਰਨਾ ॥

सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥

अपने मन में मैंने यही ध्यान धारण किया है कि संत रूपी गुरु के सफल दर्शन की प्राप्ति करूँ।

ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਠਾਕੁਰੁ ਨਾਨਕ ਕਉ ਪਰਿਓ ਸਾਧ ਕੀ ਸਰਨਾ ॥੨॥੧੬॥

भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥२॥१६॥

जगत का ठाकुर परमात्मा नानक पर कृपालु हो गया है और अब वह साधु (रूपी गुरु) की शरण में पड़ गया है॥ २॥ १६ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

देवगंधारी ५ ॥

ਅਪੁਨੇ ਹਰਿ ਪਹਿ ਬਿਨਤੀ ਕਹੀਐ ॥

अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥

हे जीव ! अपने भगवान से ही विनती करनी चाहिए।

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਨਿਧਿ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸਿਧਿ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥

विनती करने से चार पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आनंद, खुशी का खजाना, सहज सुख एवं सिद्धियां मिल जाती हैं।॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਾਨੁ ਤਿਆਗਿ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਲਾਗਉ ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਅੰਚਲੁ ਗਹੀਐ ॥
मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥
अपना अहंकार त्याग कर हरि के चरणों में लग जाओ और उस प्रभु का आंचल (आश्रय) जकड़ कर पकड़ लो।

आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥१॥
आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥१॥
यदि जगत के स्वामी की शरण की कामना की जाए तो माया रूपी अग्नि सागर की आँच नहीं लगती ॥ १॥

कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥
कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥
प्रभु इतना दयावान है कि वह महा कृतघ्न लोगों के करोड़ों ही अपराध बार-बार सहन करता है।

करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥
करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥
हे नानक ! करुणामय पूर्ण परमेश्वर की शरणागत (हमें) जाना चाहिए ॥२॥१७॥

देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

गुर के चरन रिदै परवेसा ॥
गुर के चरन रिदै परवेसा ॥
गुरु के सुन्दर चरण हृदय में बसाने से

रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥
रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥
रोग, शोक एवं सभी दुःख विनष्ट हो जाते हैं तथा सभी क्लेश-संताप मिट जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥

जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥
जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥
इससे जन्म-जन्मांतरों के पाप मिट जाते हैं एवं करोड़ों ही तीर्थों पर स्नान एवं डुबकी लगाने का फल मिल जाता है।

नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥१॥
नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥१॥
नाम के भण्डार गोविन्द के गुण गाते हुए मनुष्य का ध्यान सहज ही उस में लग जाता है॥ १॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਦਾਸੁ ਕੀਨੋ ਬੰਧਨ ਤੋਰਿ ਨਿਰਾਰੇ ॥

करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥

प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना दास बना लिया है और मेरे बन्धन तोड़ कर मुझे मुक्त कर दिया है।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਜੀਵਾ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੨॥੧੮॥ ਛਕੇ ੩ ॥

जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥२॥१८॥ छके ३ ॥

हे प्रभु ! तेरा नाम जप-जपकर एवं तेरी वाणी उच्चरित करने से मैं जीवित हूँ, दास नानक तुझ पर बलिहारी जाता है ॥२॥१८॥छके ३॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

ਮਾਈ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਚਰਨ ਨਿਹਾਰਉ ॥

माई प्रभ के चरन निहारउ ॥

हे माता ! मैं सदा प्रभु के चरण ही देखता रहूँ।

ਕਰਹੁ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤੇ ਕਬਹੁ ਨ ਡਾਰਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे स्वामी ! मुझ पर अनुग्रह कीजिए चूंकि अपने मन से तुझे कभी भी न भुलाऊँ ॥१॥ रहाउ॥

ਸਾਧੂ ਧੂਰਿ ਲਾਈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਜਾਰਉ ॥
साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥
साधु की चरण-धूलि अपने चेहरे एवं मस्तक पर लगाकर काम, क्रोध जैसे विष को जला दूँ।

ਸਭ ਤੇ ਨੀਚੁ ਆਤਮ ਕਰਿ ਮਾਨਉ ਮਨ ਮਹਿ ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਧਾਰਉ ॥੧॥
सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥१॥
मैं अपने आपको सबसे निम्न वर्ग का समझता हूँ और मन में यही सुख धारण करता हूँ॥ १॥

ਗੁਨ ਗਾਵਹ ਠਾਕੁਰ ਅਬਿਨਾਸੀ ਕਲਮਲ ਸਗਲੇ ਝਾਰਉ ॥
गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥
मैं अबिनाशी ठाकुर का गुणानुवाद करता हुआ अपने समस्त पाप दूर करता हूँ।

ਨਾਮ ਨਿਧਾਨੁ ਨਾਨਕ ਦਾਨੁ ਪਾਵਉ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਉਰਿ ਧਾਰਉ ॥੨॥੧੯॥
नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥२॥१९॥
हे नानक ! मैं नाम के भण्डार का दान प्राप्त करता हूँ और इसे अपने गले से लगाकर हृदय में धारण करता हूँ ॥२॥१६॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਪੇਖਉ ਦਰਸੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥
हे प्रभु जी ! मैं हमेशा तेरे दर्शन करने की अभिलाषा रखता हूँ।

ਸੁੰਦਰ ਧਿਆਨੁ ਧਾਰੁ ਦਿਨੁ ਰੈਨੀ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥
मैं दिन-रात तेरे सुन्दर दर्शन का ध्यान धारण करता हूँ और तेरे दर्शन मुझे अपनी आत्मा एवं प्राणों से भी प्रिय हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਸਤ੍ਰ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਅਵਿਲੋਕੇ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥

सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा ॥

मैंने शास्त्र, वेद, पुराण एवं स्मृतियों को पढ़कर देखा तथा तत्व पर विचार किया है कि

ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਪੂਰਨ ਭਵਜਲ ਉਧਰਨਹਾਰਾ ॥੧॥

दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥१॥

हे दीनानाथ ! हे प्राणपति ! हे पूर्ण प्रभु ! एक तू ही जीवों को भवसागर से पार करवाने में समर्थ है॥ १॥

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਭਗਤ ਜਨ ਸੇਵਕ ਤਾ ਕੀ ਬਿਖੈ ਅਧਾਰਾ ॥

आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥

हे प्रभु ! जगत के आदि एवं युगों के प्रारम्भ से तू ही भक्तजनों एवं सेवकों का विषय-विकारों से बचने हेतु आधार बना हुआ है।

ਤਿਨ ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਬਾਛੈ ਨਿਤ ਨਾਨਕੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਦੇਵਨਹਾਰਾ ॥੨॥੨੦॥

तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥२॥२०॥

नानक नित्य ही उन भक्तजनों की चरण-धूलि की कामना करता है और परमेश्वर ही इस देन को देने वाला है॥ २॥ २०॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਰਾਮ ਰਸਾਇਣਿ ਮਾਤਾ ॥

तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥

हे राम ! तेरा भक्त तेरे नाम-रसायन का पान करके मस्त बना हुआ है।

ਪ੍ਰੇਮ ਰਸਾ ਨਿਧਿ ਜਾ ਕਉ ਉਪਜੀ ਛੋਡਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥१॥ रहाउ ॥

जिसे प्रेम-रस की निधि प्राप्त होती है, वह इसे छोड़कर कहीं नहीं जाता॥ १॥ रहाउ॥

ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੋਵਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਤਾ ॥

बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥

ऐसा भक्तजन बैठते हुए हरि-हरि ही जपता है और सोते समय भी हरि-हरि का चिन्तन करता है और हरि-रस को भोजन के रूप में खाता है।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨੁ ਕੀਨੋ ਸਾਧੂ ਧੂਰੀ ਨਾਤਾ ॥੧॥
अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥१॥
वह साधु की चरण-धूलि में नहाना ही अड़सठ तीर्थों के स्नान के बराबर समझता है॥ १॥

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਹਰਿ ਜਨ ਕਾ ਉਪਜਿਆ ਜਿਨਿ ਕੀਨੋ ਸਉਤੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥
हरि के भक्त का जन्म लेना सफल है जिसने विधाता को पुत्रवान बना दिया है।

ਸਗਲ ਸਮੂਹ ਲੈ ਉਧਰੇ ਨਾਨਕ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥੨॥੨੧॥
सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥२॥२१॥
हे नानक ! जिसने पूर्ण ब्रह्म को पहचान लिया है, वह अपने संगी-साथियों को साथ लेकर भवसागर से पार हो गया है ॥ २ ॥ २१ ॥

ਮਾਈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਈਐ ॥
माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥
हे माँ ! गुरु के बिना ज्ञान की लब्धि नहीं होती।

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਫਿਰਤ ਬਿਲਲਾਤੇ ਮਿਲਤ ਨਹੀ ਗੋਸਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
प्राणी अनेक प्रकार के साधन करके रोता-चिल्लाता हुआ भटकता रहता है परन्तु दुनिया का मालिक प्रभु उसे नहीं मिलता ॥ १॥ रहाउ॥

ਮੋਹ ਰੋਗ ਸੋਗ ਤਨੁ ਬਾਧਿਓ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਭਰਮਾਈਐ ॥
मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥
मानव-शरीर मोह, रोग एवं शोक इत्यादि से जकड़ा हुआ है, इसलिए वह अनेक योनियों में भटकता रहता है।

ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਵੈ ਬਿਨੁ ਸਤਸੰਗਤਿ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਜਾਇ ਰੁਆਈਐ ॥੧॥
टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥१॥
साधसंगत के बिना उसे कहीं भी आश्रय नहीं मिलता, फिर किस के समक्ष जाकर अपने दुःखों का विलाप कर सकता है ?॥ १॥

ਕਰੈ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ ਸਾਧ ਚਰਨ ਚਿਤੁ ਲਾਈਐ ॥
करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥
जब मेरा स्वामी अनुग्रह करता है तो प्राणी का साधु-चरणों में चित्त लग जाता है।

ਸੰਕਟ ਘੋਰ ਕਟੇ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਦਰਸਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨॥੨੨॥
संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥२॥२२॥
हे नानक ! उसके घोर संकट क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं और वह हरि-दर्शन में ही लीन हुआ रहता है॥ २॥ २२॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਠਾਕੁਰ ਹੋਏ ਆਪਿ ਦਇਆਲ ॥
ठाकुर होए आपि दइआल ॥
जगत का ठाकुर आप दयालु हुआ है।

ਭਈ ਕਲਿਆਣ ਅਨੰਦ ਰੂਪ ਹੋਈ ਹੈ ਉਬਰੇ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥
मेरा कल्याण हो गया है और मेरा मन आनंद का रूप बन गया है, पिता-परमेश्वर ने अपने बालक (जीव) का संसार-सागर से उद्धार कर दिया है॥ रहाउ॥

ਦੁਇ ਕਰ ਜੋੜਿ ਕਰੀ ਬੇਨੰਤੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥
जब मैंने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और अपने मन में परब्रह्म का ध्यान किया तो

ਹਾਥੁ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਸਗਲਾ ਦੁਰਤੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥
हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥
अपना हाथ देकर परमेश्वर ने मेरी रक्षा की है और मेरे सारे पाप-विकार मिटा दिए॥ १॥

ਵਰ ਨਾਰੀ ਮਿਲਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ॥
वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥
वर-वधु मिलकर मंगल गीत गायन करते हैं और ठाकुर की जय-जयकार करते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਈਐ ਜੋ ਸਭਨਾ ਕਰੇ ਉਧਾਰੁ ॥੨॥੨੩॥
कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥२॥२३॥
हे नानक ! मैं प्रभु के सेवक पर बलिहारी जाता हूँ, जो सभी का उद्धार कर देता है॥ २॥ २३॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥
अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥
जब मैंने अपने सच्चे गुरु के पास विनती की तो

भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥
भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥
दुःखनाशक परमात्मा दयालु एवं कृपालु हो गया और मेरे सभी डर मिट गए॥ रहाउ॥

हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥
हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥
हे प्राणी ! हम कितने पापी, पाखंडी एवं लोभी हैं किन्तु फिर भी दयावान प्रभु हमारे गुण-अवगुण सभी सहन करता है।

करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥१॥
करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥१॥
प्रभु ने (हमें रचकर) अपना हाथ हमारे मस्तक पर रखकर गौरव प्रदान किया है, जो दुष्ट हमें मारना चाहते थे, स्वयं ही मर गए हैं ॥१॥

परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥
परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥
परमात्मा बड़ा परोपकारी एवं सभी को आधार देने वाला है, उसके दर्शन ही फलदायक हैं जो शांति का पुंज है।

कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥२॥२४॥
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥२॥२४॥
हे नानक ! परमात्मा निर्गुणों का भी दाता है, उसके चरण-कमल मैंने हृदय में बसाए हुए है॥ २॥ २४॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਪ੍ਰਭ ਹਮਾਰੇ ॥
अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥
हे मेरे प्रभु ! तू अनाथो का नाथ है।

ਸਰਨਿ ਆਇਓ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥
हे दुनिया के रखवाले ! मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ रहाउ॥

ਸਰਬ ਪਾਖ ਰਾਖੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥
सरब पाख राखु मुरारे ॥
हे मुरारि प्रभु! हर तरफ से मेरी रक्षा करो,

ਆਗੈ ਪਾਛੈ ਅੰਤੀ ਵਾਰੇ ॥੧॥
आगै पाछै अंती वारे ॥१॥
लोक परलोक एवं जिन्दगी के अन्तिम क्षण तक मेरी रक्षा करते रहना ॥ १॥

ਜਬ ਚਿਤਵਉ ਤਬ ਤੁਹਾਰੇ ॥
जब चितवउ तब तुहारे ॥
हे मालिक ! जब भी तुझे याद करता हूँ तो तेरे गुण ही याद करता हूँ।

ਉਨ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਸਧਾਰੇ ॥੨॥
उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥२॥
उन गुणों को धारण करने से मेरा मन शुद्ध हो जाता है॥ २॥

ਸੁਨਿ ਗਾਵਉ ਗੁਰ ਬਚਨਾਰੇ ॥
सुनि गावउ गुर बचनारे ॥
मैं गुरु के वचनों को सुनकर तेरे ही गुण गाता रहता हूँ तथा

ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ਸਾਧ ਦਰਸਾਰੇ ॥੩॥
बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥३॥
साधु (रूपी गुरु) के दर्शनों पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥

ਮਨ ਮਹਿ ਰਾਖਉ ਏਕ ਅਸਾਰੇ ॥
मन महि राखउ एक असारे ॥
मेरे मन में एक ईश्वर का ही सहारा है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਕਰਨੈਹਾਰੇ ॥੪॥੨੫॥
नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥४॥२५॥
हे नानक ! मेरा प्रभु ही सबका रचयिता है॥ ४॥ २५॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਇਹੈ ਮਨੋਰਥੁ ਮੇਰਾ ॥
प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥
हे प्रभु ! मेरा केवल यही मनोरथ है कि

ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਾਨ ਦਇਆਲ ਮੋਹਿ ਦੀਜੈ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕਾ ਚੇਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥
हे कृपानिधि ! हे दीनदयाल ! मुझे अपने संतजनों का सेवक बना दीजिए॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਾਤਹਕਾਲ ਲਾਗਉ ਜਨ ਚਰਨੀ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਦਰਸੁ ਪਾਵਉ ॥
प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥
मैं प्रातः काल संतजनों के चरण स्पर्श करता रहूँ और रात-दिन उनके दर्शन प्राप्त करता रहूँ।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਅਰਪਿ ਕਰਉ ਜਨ ਸੇਵਾ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥੧॥
तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥१॥
अपना तन-मन अर्पित करके मैं संतजनों की श्रद्धा से सेवा करता रहूँ और अपनी जिह्म से तेरा गुणानुवाद करता रहूँ॥ १॥

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰਉ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸੰਤਸੰਗਿ ਨਿਤ ਰਹੀਐ ॥
सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥
मैं श्वास-श्वास से अपने प्रभु का सिमरन करता रहूँ और नित्य ही संतों की संगत में मिला रहूँ।

ਏਕੁ ਅਧਾਰੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਮੋਰਾ ਅਨਦੁ ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਲਹੀਐ ॥੨॥੨੬॥
एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥२॥२६॥
हे नानक ! ईश्वर का नाम-धन ही मेरा जीवन का एकमात्र आधार है और इससे ही मैं आत्मिक आनंद प्राप्त करता रहूँ॥ २॥ २६॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੀਤਾ ਐਸੇ ਹਰਿ ਜੀਉ ਪਾਏ ॥
मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥
मैंने मित्र रूपी ऐसा भगवान पा लिया है,

ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗੇ ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਗਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥१॥ रहाउ ॥
जो मुझे छोड़कर नहीं जाता और हमेशा ही मेरे साथ रहता है, गुरु से मिलकर मैं रात-दिन उसका यशोगान करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਿਲਿਓ ਮਨੋਹਰੁ ਸਰਬ ਸੁਖੈਨਾ ਤਿਆਗਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਏ ॥
मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥
मुझे सर्व सुख देने वाला मनोहर प्रभु मिल गया है और वह मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता।

ਅਨਿਕ ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਬਹੁ ਪੇਖੇ ਪ੍ਰਿਅ ਰੋਮ ਨ ਸਮਸਰਿ ਲਾਏ ॥੧॥
अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥१॥
मैंने विविधि प्रकार के लोग देखे हैं किन्तु वे मेरे प्रिय-प्रभु के एक रोम की समानता भी नहीं कर सकते॥१॥

ਮੰਦਰਿ ਭਾਗੁ ਸੋਭ ਦੁਆਰੈ ਅਨਹਤ ਰੁਣੁ ਝੁਣੁ ਲਾਏ ॥
मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥
उसका मन्दिर बड़ा कीर्तिमान तथा द्वार बहुत शोभावान है, जिसमें मधुर अनहद ध्वनि गूंजती रहती है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਗ੍ਰਿਹ ਪ੍ਰਿਅ ਥੀਤੇ ਸਦ ਥਾਏ ॥੨॥੧॥੨੭॥
कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥२॥१॥२७॥
हे नानक ! मैं सदा आनंद भोगता हूँ, क्योंकि प्रिय-प्रभु के घर में मुझे सदैव स्थिर स्थान मिल गया है॥ २ ॥ १॥ २७ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

ਦਰਸਨ ਨਾਮ ਕਉ ਮਨੁ ਆਛੈ ॥
दरसन नाम कउ मनु आछै ॥
मेरा मन प्रभु के दर्शन एवं नाम का अभिलाषी है और

ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਓ ਹੈ ਸਗਲ ਥਾਨ ਰੇ ਆਹਿ ਪਰਿਓ ਸੰਤ ਪਾਛੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥१॥ रहाउ ॥
सभी स्थानों पर भटक कर अब संतों के चरणों में लग गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਿਸੁ ਹਉ ਸੇਵੀ ਕਿਸੁ ਆਰਾਧੀ ਜੋ ਦਿਸਟੈ ਸੋ ਗਾਛੈ ॥
किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥
में किसकी सेवा करूँ और किसकी आराधना करूँ, क्योंकि जो कुछ भी नजर आ रहा है, वह नाशवान है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਰੀਐ ਚਰਣ ਰੇਨੁ ਮਨੁ ਬਾਛੈ ॥੧॥
साधसंगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥१॥
इसलिए साधसंगत की शरण में ही आना चाहिए और मेरा मन उनकी ही चरण-धूलि की कामना करता है॥ १॥

ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨਾ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਮਹਾ ਦੁਤਰੁ ਮਾਇ ਆਛੈ ॥
जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥
न ही मैं कोई युक्ति जानता हूँ और न ही मुझ में कोई गुण विद्यमान है, इस माया रूपी जगत सागर से पार होना बहुत दुर्गम है।

ਆਇ ਪਇਓ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਤਉ ਉਤਰੀ ਸਗਲ ਦੁਰਾਛੈ ॥੨॥੨॥੨੮॥
आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥२॥२॥२८॥
हे नानक ! अब जब मैं गुरु-चरणों में आ गया हूँ तो मेरी दुर्वासना का नाश हो गया है॥ ॥२॥२॥२८॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰਿਅ ਬਚਨ ਤੁਹਾਰੇ ॥
अम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥
हे प्रिय ! तुम्हारे वचन अमृत की तरह हैं।

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਮਨਮੋਹਨ ਪਿਆਰੇ ਸਭਹੂ ਮਧਿ ਨਿਰਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्यारे प्रभु ! तू बहुत ही सुन्दर है और मन को मुग्ध करने वाला है, तू सब में बसता है और सबसे निराला है॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਜੁ ਨ ਚਾਹਉ ਮੁਕਤਿ ਨ ਚਾਹਉ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਚਰਨ ਕਮਲਾਰੇ ॥
राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥
हे प्रभु ! न ही मुझे राज की चाहत है और न ही मुझ में मुक्ति की अभिलाषा है, मेरे मन को तो केवल तेरे सुन्दर चरण-कमल के प्रेम की ही तीव्र लालसा बनी हुई है।

ਬ੍ਰਹਮ ਮਹੇਸ ਸਿਧ ਮੁਨਿ ਇੰਦ੍ਰਾ ਮੋਹਿ ਠਾਕੁਰ ਹੀ ਦਰਸਾਰੇ ॥੧॥

ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥१॥

दुनिया के लोग तो ब्रह्मा, महेश, सिद्ध, मुनि एवं इन्द्र देव के दर्शनों की आशा करते होंगे किन्तु मैं तो इन सबके मालिक एक ईश्वर के दर्शनों का अभिलाषी हूँ॥ १॥

ਦੀਨੁ ਦੁਆਰੈ ਆਇਓ ਠਾਕੁਰ ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਸੰਤ ਹਾਰੇ ॥

दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥

हे ठाकुर जी ! मैं दीन तेरे द्वार पर आया हूँ तथा हार-थक कर तेरे संतों की शरण में आया हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਮਨੋਹਰ ਮਨੁ ਸੀਤਲ ਬਿਗਸਾਰੇ ॥੨॥੩॥੨੯॥

कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥२९॥

हे नानक ! मुझे मनोहर प्रभु मिल गया है जिसके फलस्वरूप मेरा मन शीतल हो गया है एवं फूल की तरह खिल गया है॥ २॥ ३॥ २६ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਜਪਿ ਸੇਵਕੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਓ ॥

हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥

हरि का नाम जप कर उसका सेवक भवसागर से मुक्त हो गया है।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਭਏ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਬਹੁੜਿ ਜਨਮਿ ਨਹੀ ਮਾਰਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥१॥ रहाउ ॥

दीनदयालु परमात्मा जब (सेवक का) अपना बन जाता है तो वह बार-बार जन्म-मरण के चक्र में नहीं डालता ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਾਧਸੰਗਮਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਕੇ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਨਹੀ ਹਾਰਿਓ ॥

साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥

जो साधसंगत में हरि का गुणगान करता है, वह अपना हीरे जैसा अमूल्य-जन्म नहीं हारता।

ਪ੍ਰਭ ਗੁਨ ਗਾਇ ਬਿਖੈ ਬਨੁ ਤਰਿਆ ਕੁਲਹ ਸਮੂਹ ਉਧਾਰਿਓ ॥੧॥

प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥१॥

प्रभु का यशगान करने से वह विषय-विकारों के सागर से पार हो जाता है और अपनी वंशावली का भी उद्धार कर लेता है॥१॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਸਿਆ ਰਿਦ ਭੀਤਰਿ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਉਚਾਰਿਓ ॥
चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥
प्रभु के चरण-कमल उसके हृदय में बसते हैं और अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से वह प्रभु-नाम का उच्चारण करता है।

ਨਾਨਕ ਓਟ ਗਹੀ ਜਗਦੀਸੁਰ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਬਲਿਹਾਰਿਓ ॥੨॥੪॥੩੦॥
नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥४॥३०॥
हे नानक ! मैंने तो उस जगदीश्वर की शरण ली है और पुनः पुनः उस पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ ४॥ ३०॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਰਤ ਫਿਰੇ ਬਨ ਭੇਖ ਮੋਹਨ ਰਹਤ ਨਿਰਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥१॥ रहाउ ॥
बहुत सारे लोग अनेक वेष धारण करके (भगवान के लिए) वन में भटकते रहते हैं किन्तु मोहन-प्रभु सबसे अलग ही रहता है।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਥਨ ਸੁਨਾਵਨ ਗੀਤ ਨੀਕੇ ਗਾਵਨ ਮਨ ਮਹਿ ਧਰਤੇ ਗਾਰ ॥੧॥
कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥१॥
वे कथन करते एवं उपदेश सुनाते हैं तथा मधुर गीत गायन करते हैं किन्तु उनके मन में विकारों की मैल व्याप्त है॥ १॥

ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਬਹੁ ਚਤੁਰ ਸਿਆਨੇ ਬਿਦਿਆ ਰਸਨਾ ਚਾਰ ॥੨॥
अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥२॥
असल में जो व्यक्ति विद्या के फलस्वरुप मधुरभाषी एवं सूक्ष्म वक्ता है, वही अति सुन्दर, बहुत चतुर एवं बुद्धिमान है ॥२॥

ਮਾਨ ਮੋਹ ਮੇਰ ਤੇਰ ਬਿਬਰਜਿਤ ਏਹੁ ਮਾਰਗੁ ਖੰਡੇ ਧਾਰ ॥੩॥
मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडे धार ॥३॥
अभिमान, मोह एवं अपना-पराया से विवर्जित रहने का मार्ग कृपाण की धार की तरह दुर्गम है॥ ३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨਿ ਭਵਜਲੁ ਤਰੀਅਲੇ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਸੰਤ ਸੰਗਾਰ ॥੪॥੧॥੩੧॥
कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥४॥१॥३१॥
हे नानक ! प्रभु की कृपा से जो व्यक्ति संतों की संगत में रहते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ४ ॥ १॥ ३१ ॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੫
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੈ ਪੇਖਿਓ ਰੀ ਊਚਾ ਮੋਹਨੁ ਸਭ ਤੇ ਊਚਾ ॥
मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥
हे सखी ! उस मोहन प्रभु को मैंने सबसे ऊँचा ही देखा है।

ਆਨ ਨ ਸਮਸਰਿ ਕੋਊ ਲਾਗੈ ਢੂਢਿ ਰਹੇ ਹਮ ਮੂਚਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥१॥ रहाउ ॥
मैं बहुत ढूंढता रहा, लेकिन दुनिया में उसकी तुलना दूसरा कोई भी नहीं कर सकता ॥ १॥ रहाउ॥

ਬਹੁ ਬੇਅੰਤੁ ਅਤਿ ਬਡੋ ਗਾਹਰੋ ਥਾਹ ਨਹੀ ਅਗਹੂਚਾ ॥
बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥
वह प्रभु बेअंत, बहुत बड़ा गहरा तथा अथाह है, वह पहुँच से परे ऊँचा है।

ਤੋਲਿ ਨ ਤੁਲੀਐ ਮੋਲਿ ਨ ਮੁਲੀਐ ਕਤ ਪਾਈਐ ਮਨ ਰੂਚਾ ॥੧॥
तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥१॥
वह तोलने में अतुलनीय है तथा उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, फिर मन में मनोहर प्रभु को कैसे पाया जा सकता है ? ॥ १॥

ਖੋਜ ਅਸੰਖਾ ਅਨਿਕ ਤਪੰਥਾ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨਹੀ ਪਹੂਚਾ ॥
खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥
अनेक मार्गों द्वारा असंख्य ही उसे खोजते फिरते हैं किन्तु गुरु के बिना कोई भी उस तक नहीं पहुँच सकता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਰਪਾ ਕਰੀ ਠਾਕੁਰ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਰਸ ਭੁੰਚਾ ॥੨॥੧॥੩੨॥

कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूंचा ॥२॥१॥३२॥

हे नानक ! ठाकुर जी ने मुझ पर कृपा की है और साधु से मिलकर अब हरि-रस का ही आनंद प्राप्त करता हूँ॥ २॥ १॥ ३२॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਮੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਪੇਖਿਓ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਰੀ ਕੋਊ ॥
मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥
हे बहन ! मैंने अनेक विधियों से देखा है, किन्तु उस भगवान जैसा दूसरा कोई नहीं है।

ਖੰਡ ਦੀਪ ਸਭ ਭੀਤਰਿ ਰਵਿਆ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਭ ਲੋਊ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥१॥ रहाउ ॥
विश्व के समस्त खण्डों एवं द्वीपों में वह ही समाया हुआ है और सभी लोकों में केवल वही मौजूद है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਗਮ ਅਗੰਮਾ ਕਵਨ ਮਹਿੰਮਾ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਸੁਨਿ ਸੋਊ ॥
अगम अगमा कवन महिमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥
वह अगम्य से भी अगम्य है, उसकी महिमा कौन उच्चरित कर सकता है ? मेरा मन तो उसकी शोभा सुनकर ही जीवित है।

ਚਾਰਿ ਆਸਰਮ ਚਾਰਿ ਬਰੰਨਾ ਮੁਕਤਿ ਭਏ ਸੇਵਤੋਊ ॥੧॥
चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेवतोऊ ॥१॥
हे भगवान ! चारों आश्रम एवं चारों वर्ण के लोग तेरी भक्ति करके मुक्त हो गए हैं।॥ १॥

ਗੁਰਿ ਸਬਦੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਦੁਤੀਅ ਗਏ ਸੁਖ ਹੋਊ ॥
गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥
गुरु ने मन में अपना शब्द बसा दिया है, जिससे परम पद की उपलब्धि हो गई है, हमारी दुविधा मिट गई है तथा सुख ही सुख हो गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਸਹਜੋਊ ॥੨॥੨॥੩੩॥
कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥२॥२॥३३॥
हे नानक ! हरि-नाम की निधि प्राप्त करने से मैं सहज ही भवसागर से पार हो गया हूँ ॥२॥ २॥ ३३ ॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਏਕੈ ਰੇ ਹਰਿ ਏਕੈ ਜਾਨ ॥
एकै रे हरि एकै जान ॥
परमात्मा एक ही है और उस एक को ही सबका मालिक समझो।

ਏਕੈ ਰੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
एकै रे गुरमुखि जान ॥१॥ रहाउ ॥
गुरुमुख बनकर उसे एक ही समझो।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਹੇ ਭ੍ਰਮਤ ਹਉ ਤੁਮ ਭ੍ਰਮਹੁ ਨ ਭਾਈ ਰਵਿਆ ਰੇ ਰਵਿਆ ਸ੍ਰਬ ਥਾਨ ॥੧॥
काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥१॥
हे मेरे भाई ! क्यों भटक रहे हो ? तुम मत भटको, ईश्वर तो सारे विश्व में मौजूद है॥ १॥

ਜਿਉ ਬੈਸੰਤਰੁ ਕਾਸਟ ਮਝਾਰਿ ਬਿਨੁ ਸੰਜਮ ਨਹੀ ਕਾਰਜ ਸਾਰਿ ॥
जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥
जैसे लकड़ी में अग्नि किसी युक्ति के बिना कार्य नहीं संवारती, वैसे ही

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਨ ਪਾਵੈਗੋ ਹਰਿ ਜੀ ਕੋ ਦੁਆਰ ॥
बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥
गुरु के बिना परमेश्वर का द्वार प्राप्त नहीं हो सकता।

ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਤਜਿ ਅਭਿਮਾਨ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪਾਏ ਹੈ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨ ॥੨॥੧॥੩੪॥
मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥२॥१॥३४॥
हे नानक ! गुरु की संगति में मिलकर अपना अभिमान त्याग दो, इस तरह नाम रूपी परम खजाना प्राप्त हो जाएगा ॥ २॥ १॥ ३४ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ੫ ॥
देवगंधारी ५ ॥
देवगंधारी ५ ॥

ਜਾਨੀ ਨ ਜਾਈ ਤਾ ਕੀ ਗਾਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जानी न जाई ता की गाति ॥१॥ रहाउ ॥
उस भगवान की गति समझी नहीं जा सकती।॥ १॥ रहाउ॥

ਕਹ ਪੇਖਾਰਉ ਹਉ ਕਰਿ ਚਤੁਰਾਈ ਬਿਸਮਨ ਬਿਸਮੇ ਕਹਨ ਕਹਾਤਿ ॥੧॥
कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥१॥
किसी चतुराई के माध्यम से उसकी गति को कैसे दिखा सकता हूँ? उसकी गति का कथन करने वाले भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं।॥ १॥

ਗਣ ਗੰਧਰਬ ਸਿਧ ਅਰੁ ਸਾਧਿਕ ॥
गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥
देवगण, गंधर्व, सिद्धपुरुष, साधक,

ਸੁਰਿ ਨਰ ਦੇਵ ਬ੍ਰਹਮ ਬ੍ਰਹਮਾਦਿਕ ॥
सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥
देवते, नर, देव, ब्रह्मर्षि, ब्रह्मा इत्यादि तथा

ਚਤੁਰ ਬੇਦ ਉਚਰਤ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥
चारों वेद दिन-रात यही उच्चरित करते हैं कि

ਅਗਮ ਅਗਮ ਠਾਕੁਰੁ ਆਗਾਧਿ ॥
अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥
परमात्मा अगम्य, अनन्त तथा अगाध है।

ਗੁਨ ਬੇਅੰਤ ਬੇਅੰਤ ਭਨੁ ਨਾਨਕ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਪਰੈ ਪਰਾਤਿ ॥੨॥੨॥੩੫॥
गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥२॥२॥३५॥
हे नानक ! उस परमेश्वर के गुण अनन्त एवं अपार हैं और उसके गुणों की अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, क्योंकि वे पहुँच से पूर्णतया परे है॥ २॥ २॥ ३५ ॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥
देवगंधारी महला ५ ॥

ਧਿਆਏ ਗਾਏ ਕਰਨੈਹਾਰ ॥
धिआए गाए करनैहार ॥
जो व्यक्ति विश्व रचयिता परमात्मा का नामस्मरण तथा गुणगान करता है,

ਭਉ ਨਾਹੀ ਸੁਖ ਸਹਜ ਅਨੰਦਾ ਅਨਿਕ ਓਹੀ ਰੇ ਏਕ ਸਮਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥१॥ रहाउ ॥

वह निडर हो जाता है और उसे सहज सुख एवं आत्मिक आनंद उपलब्ध हो जाता है। इसलिए उस मालिक का नाम ही हृदय में धारण करना चाहिए, जिसके अनेक रूप हैं परन्तु फिर भी वह एक ही है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰੁ ਮੇਰੈ ਮਾਥੈ ॥

सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥

जिस गुरु के दर्शन करने से जीवन सफल हो जाता है, उसने अपना हाथ मेरे माथे पर रखा हुआ है।

ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਤਤ ਤਤ ਸਾਥੈ ॥

जत कत पेखउ तत तत साथै ॥

मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही मैं भगवान को अपने साथ ही पाता हूँ।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰ ॥੧॥

चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥१॥

प्रभु के सुन्दर चरण-कमल मेरे प्राणों का आधार हैं॥१॥

ਸਮਰਥ ਅਥਾਹ ਬਡਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥

समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥

मेरा प्रभु सर्वकला समर्थ, अथाह एवं महान् है।

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਨੇਰਾ ॥

घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥

वह कण-कण में (प्रत्येक हृदय में) रहता है और बहुत ही समीप है।

ਤਾ ਕੀ ਸਰਨਿ ਆਸਰ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥੨॥੩॥੩੬॥

ता की सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥२॥३॥३६॥

नानक ने उस परमात्मा की शरण में आश्रय लिया है, जिसका कोई अन्त तथा ओर-छोर प्राप्त नहीं हो सकता ॥ २ ॥ ३॥ ३६॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

देवगंधारी महला ५ ॥

ਉਲਟੀ ਰੇ ਮਨ ਉਲਟੀ ਰੇ ॥
उलटी रे मन उलटी रे ॥
हे मेरे मन ! अपनी आदत को शीघ्र ही बदल दे तथा

ਸਾਕਤ ਸਿਉ ਕਰਿ ਉਲਟੀ ਰੇ ॥
साकत सिउ करि उलटी रे ॥
शाक्त इन्सान का साथ छोड़ दे।

ਝੂਠੈ ਕੀ ਰੇ ਝੂਠੁ ਪਰੀਤਿ ਛੁਟਕੀ ਰੇ ਮਨ ਛੁਟਕੀ ਰੇ ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਨ ਛੁਟਕੀ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥१॥ रहाउ ॥
हे मन ! परमात्मा से विमुख झूठे लोगों की प्रीति झूठी ही समझ और इन्हें त्याग दे, क्योंकि उनकी संगति में रहने से तुझे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਕਾਜਰ ਭਰਿ ਮੰਦਰੁ ਰਾਖਿਓ ਜੋ ਪੈਸੈ ਕਾਲੂਖੀ ਰੇ ॥
जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥
जैसे कोई व्यक्ति कालिख से भरे हुए घर में प्रविष्ट होता है तो काला ही हो जाता है।

ਦੂਰਹੁ ਹੀ ਤੇ ਭਾਗਿ ਗਇਓ ਹੈ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਛੁਟਕੀ ਤ੍ਰਿਕੁਟੀ ਰੇ ॥੧॥
दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥१॥
जो सच्चे गुरु से मिल जाता है उसके माथे की त्रिकुटी मिट जाती है और वह दुर्जन लोगों की संगति से दूर से ही भाग जाता है॥ १॥

ਮਾਗਉ ਦਾਨੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਮੇਰਾ ਮੁਖੁ ਸਾਕਤ ਸੰਗਿ ਨ ਜੁਟਸੀ ਰੇ ॥
मागउ दानु क्रिपाल क्रिपा निधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥
हे कृपा के भण्डार ! हे कृपालु परमात्मा ! मैं तुझ से एक यही दान माँगता हूँ कि मेरा चेहरा शाक्त मनुष्य के सामने मत करना अर्थात् उससे मुझे दूर ही रखना।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਾਸ ਕੋ ਕਰੀਅਹੁ ਮੇਰਾ ਮੂੰਡੁ ਸਾਧ ਪਗਾ ਹੇਠਿ ਰੁਲਸੀ ਰੇ ॥੨॥੪॥੩੭॥
जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥२॥४॥३७॥
नानक को दासानुदास बना दो, चूंकि उसका सिर साधुओं के चरणों में विद्यमान रहे॥ २॥ ४॥ ३७ ॥

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਭ ਦਿਨ ਕੇ ਸਮਰਥ ਪੰਥ ਬਿਠੁਲੇ ਹਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥
हे सभी दिनों के समर्थ एवं पथ-प्रदर्शक प्रभु ! मैं तुझ पर करोड़ों बार बलिहारी जाता हूँ।

ਗਾਵਨ ਭਾਵਨ ਸੰਤਨ ਤੋਰੈ ਚਰਨ ਉਵਾ ਕੈ ਪਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे संतजन प्रेमपूर्वक तेरी गुणस्तुति करते हैं, जो तुझे बहुत अच्छे लगते हैं और मैं उनके ही चरण स्पर्श करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਾਸਨ ਬਾਸਨ ਸਹਜ ਕੇਲ ਕਰੁਣਾ ਮੈ ਏਕ ਅਨੰਤ ਅਨੂਪੈ ਠਾਉ ॥੧॥
जासन बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥१॥
हे दयास्वरूप ! तुझे अपना यश सुनने की कोई लालसा नहीं और तू सहज ही कौतुक करने वाला है। हे करुणामय एवं अद्वितीय परमात्मा ! तेरा स्थान अनंत एवं अनूप है॥१॥

ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਿਧਿ ਕਰ ਤਲ ਜਗਜੀਵਨ ਸ੍ਰਬ ਨਾਥ ਅਨੇਕੈ ਨਾਉ ॥
रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥
हे जगजीवन ! ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं निधियाँ सब तेरी हथेली पर मौजूद हैं, हे सबके मालिक ! तेरे अनेकों ही नाम हैं।

ਦਇਆ ਮਇਆ ਕਿਰਪਾ ਨਾਨਕ ਕਉ ਸੁਨਿ ਸੁਨਿ ਜਸੁ ਜੀਵਾਉ ॥੨॥੧॥੩੮॥੬॥੪੪॥
दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥२॥१॥३८॥६॥४४॥
हे दयानिधि ! नानक पर अपनी कृपा करो ताकि तुम्हारा यश सुन-सुनकर जीवित रहे ॥२॥१॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
रागु देवगंधारी महला ९ ॥
रागु देवगंधारी महला ९ ॥

ਯਹ ਮਨੁ ਨੈਕ ਨ ਕਹਿਓ ਕਰੈ ॥
यह मनु नैक न कहिओ करै ॥
यह मन मेरी बात का अंश मात्र भी पालन नहीं करता।

ਸੀਖ ਸਿਖਾਇ ਰਹਿਓ ਅਪਨੀ ਸੀ ਦੁਰਮਤਿ ਤੇ ਨ ਟਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी तरफ से मैं इसे बहुत शिक्षा प्रदान कर चुका हूँ किन्तु यह दुर्मति से हटता ही नहीं ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਭਇਓ ਬਾਵਰੋ ਹਰਿ ਜਸੁ ਨਹਿ ਉਚਰੈ ॥
मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥
यह माया के नशे में बावला हो गया है तथा हरि का यशगान उच्चरित नहीं करता।

ਕਰਿ ਪਰਪੰਚੁ ਜਗਤ ਕਉ ਡਹਕੈ ਅਪਨੋ ਉਦਰੁ ਭਰੈ ॥੧॥
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥
यह अनेक छल-कपट (प्रपंच) करके दुनिया को ठगता रहता है तथा अपना पेट भरता है॥ १॥

ਸੁਆਨ ਪੂਛ ਜਿਉ ਹੋਇ ਨ ਸੂਧੋ ਕਹਿਓ ਨ ਕਾਨ ਧਰੈ ॥
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥
यह मन कुते की पूंछ की भाँति कदापि सीधा नहीं होता और जो उपदेश देता हूँ, उस ओर कान नहीं करता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਜਾ ਤੇ ਕਾਜੁ ਸਰੈ ॥੨॥੧॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥
नानक का कथन है कि हे अज्ञानी मन ! राम नाम का नित्य ही भजन करो, जिससे तेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाएँगे ॥२॥१॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
देवगंधारी महला ९ ॥
देवगंधारी महला ९ ॥

ਸਭ ਕਿਛੁ ਜੀਵਤ ਕੋ ਬਿਵਹਾਰ ॥
सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
सब जीवित रहने तक ही अपना संबंध-व्यवहार बनाए रखते हैं,

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਅਰੁ ਫੁਨਿ ਗ੍ਰਿਹ ਕੀ ਨਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥
फिर वह चाहे माता-पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार तथा घर की नारी (पत्नी) के सम्बन्ध हो। ॥१॥ रहाउ॥

ਤਨ ਤੇ ਪ੍ਰਾਨ ਹੋਤ ਜਬ ਨਿਆਰੇ ਟੇਰਤ ਪ੍ਰੇਤਿ ਪੁਕਾਰਿ ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
जब शरीर से प्राण निकल जाते हैं तो सभी संबंधी रोते-चिल्लाते हुए मृतक देह को प्रेत कहकर पुकारते हैं।

ਆਧ ਘਰੀ ਕੋਊ ਨਹਿ ਰਾਖੈ ਘਰ ਤੇ ਦੇਤ ਨਿਕਾਰਿ ॥੧॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥
आधी घड़ी मात्र भी कोई (मृतक देह को) नहीं रखना चाहता और घर से बाहर निकाल देते हैं ॥१॥

ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਿਉ ਜਗ ਰਚਨਾ ਯਹ ਦੇਖਹੁ ਰਿਦੈ ਬਿਚਾਰਿ ॥
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
अपने हृदय में सोच-विचार कर देख लो, यह जगत-रचना मृगतृष्णा की भाँति है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਤ ਜਾ ਤੇ ਹੋਤ ਉਧਾਰ ॥੨॥੨॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥
नानक का कथन है कि हे नश्वर प्राणी ! नित्य ही राम-नाम का भजन करो, ताकि तेरा संसार-सागर से उद्धार हो जाए ॥२॥२॥

ਦੇਵਗੰਧਾਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
देवगंधारी महला ९ ॥
देवगंधारी महला ९ ॥

ਜਗਤ ਮੈ ਝੂਠੀ ਦੇਖੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
इस जगत में मैंने झूठा ही प्रेम देखा है।

ਅਪਨੇ ਹੀ ਸੁਖ ਸਿਉ ਸਭ ਲਾਗੇ ਕਿਆ ਦਾਰਾ ਕਿਆ ਮੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥

सभी लोग अपने सुख में ही लगे हुए हैं चाहे वह पत्नी हो अथवा घनिष्ठ मित्र ही क्यों न हो॥ १॥ रहाउ॥

ਮੇਰਉ ਮੇਰਉ ਸਭੈ ਕਹਤ ਹੈ ਹਿਤ ਸਿਉ ਬਾਧਿਓ ਚੀਤ ॥

मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥

सभी लोग 'मेरा-मेरा' ही पुकारते रहते हैं तथा अपने हित के लिए अपना मन जोड़ते हैं।

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਸੰਗੀ ਨਹ ਕੋਊ ਇਹ ਅਚਰਜ ਹੈ ਰੀਤਿ ॥੧॥

अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥

जीवन के अंतिम क्षणों में कोई भी साथी नहीं बनता, यह संसार की आश्चर्यजनक रीति है॥ १॥

ਮਨ ਮੂਰਖ ਅਜਹੂ ਨਹ ਸਮਝਤ ਸਿਖ ਦੈ ਹਾਰਿਓ ਨੀਤ ॥

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥

हे मूर्ख मन ! तू अभी भी नहीं समझ रहा, मैं नित्य ही इसे शिक्षा देकर पराजित हो गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਰੈ ਜਉ ਗਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਗੀਤ ॥੨॥੩॥੬॥੩੮॥੪੭॥

नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

हे नानक ! जो जीव प्रभु की महिमा के गीत गाता है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥ ३॥ ६ ॥ ३८॥ ४७ ॥

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है। वह संसार का रचयिता सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसका किसी से वैर नहीं, वह कालातीत, जन्म-मरण से रहित एवं स्वयंभू है और उसकी लब्धि केवल गुरु-कृपा से ही होती है।

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਚਉਪਦੇ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥
रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥
रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥

ਦੂਤਨ ਸੰਗਰੀਆ ॥
दूतन संगरीआ ॥
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि दुष्टों के साथ निवास करना

ਭੁਇਅੰਗਨਿ ਬਸਰੀਆ ॥
भुइअंगनि बसरीआ ॥
विषैले साँपों के साथ रहने के समान है।

ਅਨਿਕ ਉਪਰੀਆ ॥੧॥
अनिक उपरीआ ॥१॥
इन्हें छोड़ने के लिए मैंने अनेक उपाय किए हैं॥ १॥

ਤਉ ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰੀਆ ॥
तउ मै हरि हरि करीआ ॥
तब मैंने परमेश्वर के नाम का भजन किया तो

ਤਉ ਸੁਖ ਸਹਜਰੀਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तउ सुख सहजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥
मुझे सहज सुख उपलब्ध हो गया ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਿਥਨ ਮੋਹਰੀਆ ॥ ਅਨ ਕਉ ਮੇਰੀਆ ॥
मिथन मोहरीआ ॥ अन कउ मेरीआ ॥
सांसारिक पदार्थों का मोह मिथ्या है, जो झूठा मोह प्राणी को अपना लगता है

ਵਿਚਿ ਘੁਮਨ ਘਿਰੀਆ ॥੨॥
विचि घूमन घिरीआ ॥२॥
वही उसे आवागमन के भंवर में डाल देता है॥ २॥

ਸਗਲ ਬਟਰੀਆ ॥
सगल बटरीआ ॥
सारे प्राणी यात्री हैं,

ਬਿਰਖ ਇਕ ਤਰੀਆ ॥
बिरख इक तरीआ ॥
जो दुनिया के वृक्ष के नीचे आ विराजते हैं।

ਬਹੁ ਬੰਧਹਿ ਪਰੀਆ ॥੩॥
बहु बंधहि परीआ ॥३॥
किन्तु अनेक मायावी बन्धनों में फंसे हुए हैं।॥ ३॥

ਥਿਰੁ ਸਾਧ ਸਫਰੀਆ ॥
थिरु साध सफरीआ ॥
केवल साधु मुसाफिर ही अटल हैं

ਜਹ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰੀਆ ॥
जह कीरतनु हरीआ ॥
जो हरि-नाम का कीर्तिगान करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਰਨਰੀਆ ॥੪॥੧॥
नानक सरनरीआ ॥४॥१॥
इसलिए नानक ने साधुओं की ही शरण ली है॥ ४॥ १॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੯ ॥
रागु बिहागड़ा महला ९ ॥
रागु बिहागड़ा महला ९ ॥

ਹਰਿ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹਿ ਕੋਊ ਜਾਨੈ ॥
हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
भगवान की गति कोई भी नहीं जानता।

ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਪਚਿ ਹਾਰੇ ਅਰੁ ਬਹੁ ਲੋਗ ਸਿਆਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥
योगी, ब्रह्मचारी, तपस्वी और बहुत सारे बुद्धिमान-विद्वान लोग भी बुरी तरह विफल हो गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਛਿਨ ਮਹਿ ਰਾਉ ਰੰਕ ਕਉ ਕਰਈ ਰਾਉ ਰੰਕ ਕਰਿ ਡਾਰੇ ॥
छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
ईश्वर एक क्षण में राजा को रंक (भिखारी) बना देता है और रंक (भिखारी) को राजा बना देता है।

ਰੀਤੇ ਭਰੇ ਭਰੇ ਸਖਨਾਵੈ ਯਹ ਤਾ ਕੋ ਬਿਵਹਾਰੇ ॥੧॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥
उसका ऐसा व्यवहार है कि वह खाली वस्तुओं को भी भरपूर कर देता है और जो भरपूर हैं, उसे शून्य करके रख देता है॥ १॥

ਅਪਨੀ ਮਾਇਆ ਆਪਿ ਪਸਾਰੀ ਆਪਹਿ ਦੇਖਨਹਾਰਾ ॥
अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
अपनी माया का उसने आप ही प्रसार किया हुआ है और वह स्वयं ही जगत लीला को देख रहा है।

ਨਾਨਾ ਰੂਪੁ ਧਰੇ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਸਭ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਆਰਾ ॥੨॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥
वह अनेक रूप धारण करता है और अनेक लीलाएँ खेलता है किन्तु फिर भी सबसे न्यारा ही रहता है॥ २॥

ਅਗਨਤ ਅਪਾਰੁ ਅਲਖ ਨਿਰੰਜਨ ਜਿਹ ਸਭ ਜਗੁ ਭਰਮਾਇਓ ॥
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
वह निरंजन प्रभु गुण गणना से परे, अपार तथा अलक्ष्य है, जिसने समूचे जगत को भ्रम में डाला हुआ है।

ਸਗਲ ਭਰਮ ਤਜਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਰਨਿ ਤਾਹਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਓ ॥੩॥੧॥੨॥
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥
नानक का कथन है कि हे प्राणी ! अपने मोह-माया के सभी भ्रम त्याग दे और अपना चित्त प्रभु-चरणों में लगा॥ ३॥ १॥ २॥

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧
रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १
रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲੇ ਰਾਮ ॥
हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि-परमेश्वर के नाम का नित्य ही ध्यान करते रहना चाहिए, लेकिन गुरुमुख बनकर ही हरि का अमूल्य नाम प्राप्त होता है।

ਹਰਿ ਰਸਿ ਬੀਧਾ ਹਰਿ ਮਨੁ ਪਿਆਰਾ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰਸਿ ਨਾਮਿ ਝਕੋਲੇ ਰਾਮ ॥
हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥
मेरा मन हरि के नाम-रस में बिंध गया है और मन को हरि ही प्रिय लगता है, हरि के नाम-रस से भीगकर यह मन पावन हो गया है।

ਗੁਰਮਤਿ ਮਨੁ ਠਹਰਾਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ ਡੋਲੇ ਰਾਮ ॥
गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु उपदेशानुसार अपने मन को टिकाना चाहिए, फिर यह दोबारा किसी अन्य स्थान पर नहीं भटकता।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਣ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਬੋਲੇ ਰਾਮ ॥੧॥
मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति हरि-प्रभु के गुणों की वाणी उच्चरित करता है, उसे मनोवांछित फल मिल जाता है।॥ १॥

ਗੁਰਮਤਿ ਮਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੁਠੜਾ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬੈਣ ਅਲਾਏ ਰਾਮ ॥
गुरमति मनि अम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अम्रित बैण अलाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु उपदेशानुसार अमृत नाम प्राणी के हृदय में निवास कर जाता है और तब वह अपने मुखारबिंद से अमृत वचन बोलता रहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਨਿ ਸੁਣੀਐ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ਰਾਮ ॥
अम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! प्रभु के भक्तजनों की वाणी अमृत समान मधुर है, उसे चित्त लगाकर सुनने से प्राणी की हरि से सुरति लग जाती है।

ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗਲਿ ਮਿਲਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ਰਾਮ ॥
चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥
चिरकाल से बिछुड़ा हुआ हरि-प्रभु मुझे प्राप्त हो गया है और उसने सहज-स्वभाव ही मुझे अपने गले लगाया है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਅਨਹਤ ਸਬਦ ਵਜਾਏ ਰਾਮ ॥੨॥
जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥२॥
हे मेरी आत्मा ! दास नानक के हृदय में आनंद उत्पन्न हो गया है और उसके भीतर अनहद शब्द गूंज रहा है॥ २॥

ਸਖੀ ਸਹੇਲੀ ਮੇਰੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਕੋਈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਰਾਮ ॥
सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥
हे मेरी आत्मा ! मेरी कोई सखी-सहेली आकर मुझे मेरे हरि-प्रभु से मिला दे।

ਹਉ ਮਨੁ ਦੇਵਉ ਤਿਸੁ ਆਪਣਾ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਵੈ ਰਾਮ ॥
हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥
मैं अपना मन उसे अर्पित करता हूँ, जो मुझे प्रभु की हरि-कथा सुनाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਅਰਾਧਿ ਹਰਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरुमुख बनकर तू सदैव ही हरि की आराधना कर, तुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਭਜੁ ਹਰਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਵਡਭਾਗੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਰਾਮ ॥੩॥
नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! हरि की शरणागत आकर उसका भजन कर, क्योंकि भाग्यशाली ही राम के नाम का ध्यान करते हैं।॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਆਇ ਮਿਲੁ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸੇ ਰਾਮ ॥
करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥
हे मेरे प्रभु ! अपनी कृपा करके मुझे आन मिलो, ताकि गुरु की मतानुसार मेरे मन में नाम का प्रकाश हो जाए।

ਹਉ ਹਰਿ ਬਾਝੁ ਉਡੀਣੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਉ ਜਲ ਬਿਨੁ ਕਮਲ ਉਦਾਸੇ ਰਾਮ ॥
हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि के बिना मैं ऐसे हतोत्साहित हूँ, जैसे जल के बिना कमल उदासीन होता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੇਲਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਸੇ ਰਾਮ ॥
गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! पूर्ण गुरु ने सज्जन हरि से मिला दिया है, वह हरि-प्रभु आस-पास मेरे साथ ही रहता है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਦਸਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਬਿਗਾਸੇ ਰਾਮ ॥੪॥੧॥
धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥४॥१॥
हे मेरी आत्मा ! वह गुरुदेव धन्य-धन्य है जिसने मुझे हरि के बारे में बताया है, जिसके नाम से दास नानक फूल की तरह खिल गया है॥ ४॥ १ ॥

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु बिहागड़ा महला ४ ॥
रागु बिहागड़ा महला ४ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥
अम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अम्रितु गुरमति पाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमेश्वर का नाम अमृत समान है, पर यह अमृत गुरु के उपदेश से ही प्राप्त होता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਇਆ ਬਿਖੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਬਿਖੁ ਲਹਿ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥
हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥
यह अहंकार माया रूपी विष है, हे मेरी आत्मा ! हरि के नामामृत द्वारा यह विष उतर जाता है।

ਮਨੁ ਸੁਕਾ ਹਰਿਆ ਹੋਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਰਾਮ ॥
मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि के नाम का ध्यान करने से मेरा सूखा हुआ मन हरा-भरा हो गया है।

ਹਰਿ ਭਾਗ ਵਡੇ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ਰਾਮ ॥੧॥
हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥१॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! मेरी किस्मत में आदि से लिखे हुए अच्छे भाग्य से मैंने भगवान को पा लिया है और मैं राम-नाम में समा गया हूँ॥ १॥

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਉ ਬਾਲਕ ਲਗਿ ਦੁਧ ਖੀਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! मेरा चित्त हरि के साथ ऐसे जुड़ा हुआ है, जैसे नवजात बालक का चित्त दूध से लगा होता है।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਸਾਂਤਿ ਨ ਪਾਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਉ ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਜਲ ਬਿਨੁ ਟੇਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! जैसे चातक वर्षा की बूंदों के बिना पुकारता रहता है वैसे ही हरि के बिना मुझे शांति प्राप्त नहीं होती।

ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਣੀ ਜਾਇ ਪਉ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਣ ਦਸੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੇ ਰਾਮ ॥
सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! सच्चे गुरु की शरण में पड़ो, वहाँ तुझे भगवान के गुणों के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮੇਲਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਘਰਿ ਵਾਜੇ ਸਬਦ ਘਣੇਰੇ ਰਾਮ ॥੨॥
जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥२॥
हे मेरी आत्मा ! दास नानक को हरि ने अपने साथ मिला लिया है और उसके घर में अनेक शब्द गूंज रहे हैं।॥२॥

ਮਨਮੁਖਿ ਹਉਮੈ ਵਿਛੁੜੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਬਿਖੁ ਬਾਧੇ ਹਉਮੈ ਜਾਲੇ ਰਾਮ ॥

मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥

हे मेरी आत्मा ! अहंत्व ने स्वेच्छाचारी लोगों को प्रभु से जुदा कर दिया है और वे विषैले पापों से बंधे अहंकार की अग्नि में जल रहे हैं।

ਜਿਉ ਪੰਖੀ ਕਪੋਤਿ ਆਪੁ ਬਨ੍ਹਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਉ ਮਨਮੁਖ ਸਭਿ ਵਸਿ ਕਾਲੇ ਰਾਮ ॥

जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥

हे मेरी आत्मा ! जैसे पक्षी कबूतर आप ही दाने के लोभ के कारण जाल में फंस जाता है, वैसे ही सभी स्वेच्छाचारी मृत्यु के वश में आ जाते हैं।

ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਬਿਤਾਲੇ ਰਾਮ ॥

जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥

हे मेरी आत्मा ! जो मोह-माया में चित लगाते हैं, वे स्वेच्छाचारी मूर्ख तथा पिशाच हैं।

ਜਨ ਤ੍ਰਾਹਿ ਤ੍ਰਾਹਿ ਸਰਣਾਗਤੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਖਵਾਲੇ ਰਾਮ ॥੩॥
जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के दास त्राहि-त्राहि करते हुए उसकी शरण में आते हैं और गुरु परमात्मा उनके रक्षक बन जाते हैं।॥ ३॥

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਲਿਵ ਉਬਰੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਵਡੇ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के भक्तजन उस में सुरति लगाने से संसार-सागर पार कर लेते हैं, प्रारम्भ से ही अहोभाग्य से वे अपने परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪੋਤੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਖੇਵਟ ਸਬਦਿ ਤਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमात्मा का नाम एक जहाज है और गुरु खेवट अपने शब्द के माध्यम से जीव को उस नाम द्वारा भवसागर से पार कर देते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਮੀਠ ਲਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमात्मा सर्वशक्तिमान तथा बड़ा दयालु है और गुरु सतगुरु की कृपा से वह मनुष्य को मीठा लगने लग जाता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸੁਣਿ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰਾਮ ॥੪॥੨॥
करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥४॥२॥
हे परमात्मा ! कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनो, चूंकि नानक ने तेरे नाम की ही आराधना की है। ४॥ २ ॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥

ਜਗਿ ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਕੀਰਤਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਮਨਿ ਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के नाम का यशगान करना ही इस दुनिया में एक सुकर्म है, परमात्मा की कीर्ति करने से ही वह मन में बस जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमेश्वर का नाम बड़ा पवित्र है, उसके नाम का जाप करने से जीव का उद्धार हो जाता है।

ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਦੁਖ ਕਟਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਲੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਉਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥
सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के नाम से सभी किल्विष, पाप एवं दुःख नाश हो जाते हैं और गुरु ने परमात्मा के नाम से हमारी अहंत्व की मैल उतार दी है।

ਵਡ ਪੁੰਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਮ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਨਿਸਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥੧॥
वड पुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥१॥
नानक का कथन है कि बड़े पुण्य-कर्म से ही हरि के नाम की आराधना की है और इस तरह हम जैसे मूर्ख एवं अज्ञानियों का उद्धार हुआ है॥१॥

ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨਾ ਪੰਚੇ ਵਸਗਤਿ ਆਏ ਰਾਮ ॥
जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! जो व्यक्ति हरि के नाम का ध्यान-चिंतन करते हैं, कामादिक विकार उनके वश में आ जाते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਲਖੁ ਲਖਾਏ ਰਾਮ ॥
अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! अन्तरात्मा में ही हरि के नाम की नवनिधि है, किन्तु इस अलक्ष्य को गुरु-सतिगुरु दिखा देता है।

ਗੁਰਿ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪੂਰੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥
गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु ने हमारी आशा एवं मंशा पूरी कर दी है, प्रभु को मिलने से सारी भूख मिट जाती है।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਰਾਮ ॥੨॥
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥२॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! भगवान ने प्रारम्भ से ही जिनके माथे पर भाग्य लिख दिया है, वही हरि का गुणगान करते हैं।॥ २॥

ਹਮ ਪਾਪੀ ਬਲਵੰਚੀਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਪਰਦ੍ਰੋਹੀ ਠਗ ਮਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हम अज्ञानी पापी एवं छल-कपटी हैं तथा दूसरों से द्रोह करने वाले और (पराया) धन ठगने वाले ठग हैं।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! सौभाग्य से ही गुरु प्राप्त हुआ है और पूर्ण गुरु के माध्यम से गति (मोक्ष) का मार्ग प्राप्त हुआ है।

ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਚੋਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਫਿਰਿ ਮਰਦਾ ਬਹੁੜਿ ਜੀਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥
गुरि अम्रितु हरि मुखि चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु ने हरिनामामृत मेरे मुख में डाल दिया है और फिर मेरी मृतक आत्मा दुबारा जीवित हो गई है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਜੋ ਮਿਲੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭ ਦੁਖ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥੩॥
जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! जो सच्चे गुरु को मिले हैं, उनके सारे दुःख नष्ट हो गए हैं।॥ ३॥

ਅਤਿ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਤੁ ਜਪਿਐ ਪਾਪ ਗਵਾਤੇ ਰਾਮ ॥
अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि का नाम अति उत्तम है, जिसकी आराधना करने से पाप नाश हो जाते हैं।

ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਗੁਰਿ ਹਰਿ ਕੀਏ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਚਹੁ ਕੁੰਡੀ ਚਹੁ ਜੁਗਿ ਜਾਤੇ ਰਾਮ ॥
पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु-हरि ने पतितों को भी पवित्र कर दिया है और वे चारों दिशाओं एवं चारों ही युगों में प्रख्यात हो गए हैं।

ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਸਭ ਉਤਰੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਹਰਿ ਸਰਿ ਨਾਤੇ ਰਾਮ ॥
हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अम्रिति हरि सरि नाते राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि-नामामृत के सरोवर में स्नान करने से मनुष्य की अहंकार की सारी मैल दूर हो गई है।

ਅਪਰਾਧੀ ਪਾਪੀ ਉਧਰੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਖਿਨੁ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ਰਾਮ ॥੪॥੩॥
अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥४॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! एक क्षण भर के लिए भी हरि के नाम में लीन होने से अपराधी पापी जीवों का भवसागर से उद्धार हो गया है ॥४॥३॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ੍ ਕਉ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਨ੍ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੋ ਰਾਮ ॥
हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम ॥
हे मेरी आत्मा ! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने परमेश्वर के नाम को अपने जीवन का आधार बनाया हुआ है।

ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਬਿਖੁ ਭਉਜਲੁ ਤਾਰਣਹਾਰੋ ਰਾਮ ॥
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥
हे मेरी आत्मा ! गुरु-सतगुरु ने मेरे मन में परमात्मा का नाम बसा दिया है और उन्होंने मुझे भवसागर से पार कर दिया है।

ਜਿਨ ਇਕ ਮਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੈਕਾਰੋ ਰਾਮ ॥
जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम ॥
हे मेरी आत्मा ! जिन्होंने एकाग्रचित होकर ईश्वर का ध्यान किया है, उन संतजनों की मैं जय-जयकार करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸਭਿ ਦੂਖ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰੋ ਰਾਮ ॥੧॥
नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥१॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! हरि का जाप करने से सुख की उपलब्धि होती है, क्योंकि वह सर्व दुःख नाशक है॥ १॥

सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥
सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! वह रसना धन्य-धन्य है जो भगवान का यशोगान करती रहती है।

ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥
ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥
वे कान भी भले तथा अति सुन्दर हैं जो भगवान का भजन-कीर्तन सुनते रहते हैं।

सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥
सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥
वह सिर भी भला तथा पवित्र-पावन है जो गुरु के चरणों में जाकर लगता है।

गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥
गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥
हे मेरी आत्मा ! नानक उस गुरु पर न्यौछावर होता है, जिन्होंने भगवान का नाम याद करवाया है॥ २॥

ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥
ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥
वे नेत्र भी शुभ एवं (सत्य के दरबार में) स्वीकार हैं जो साधु सतिगुरु के दर्शन करते हैं।

ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥
ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥
वे हाथ भी पुनीत एवं पवित्र हैं जो हरि यश एवं हरि-हरि नाम लिखते रहते हैं।

तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥
तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥
उस भक्त के चरणों की नित्य ही पूजा करनी चाहिए, जो धर्म-मार्ग का अनुसरण करता रहता है।

ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨੇਸਹਿ ਰਾਮ ॥੩॥
नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥३॥
हे मेरी आत्मा ! नानक उन पर न्यौछावर होता है, जो हरि-यश सुनते हैं और उसके नाम पर आस्था धारण करते हैं।॥ ३॥

ਧਰਤਿ ਪਾਤਾਲੁ ਆਕਾਸੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸਭ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਰਾਮ ॥
धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥
हे मेरी आत्मा ! धरती, पाताल तथा आकाश सभी परमात्मा के नाम की आराधना करते हैं।

ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੋ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਨਿਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਰਾਮ ॥
पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥
पवन, पानी एवं अग्नि नित्य ही परमेश्वर का यश गाते रहते हैं।

ਵਣੁ ਤ੍ਰਿਣੁ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਰਾਮ ॥
वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥
वन, तृण तथा सारा जगत ही अपने मुख से ईश्वर के नाम का सुमिरन करते हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਹਰਿ ਦਰਿ ਪੈਨ੍ਹਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲਾਵੈ ਰਾਮ॥੪॥੪॥
नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥४॥४॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! जो व्यक्ति गुरुमुख बनकर परमात्मा की भक्ति को मन में धारण करते हैं, उन्हें सत्य के दरबार में ऐश्वर्य-परिधान पहनाकर प्रतिष्ठित किया जाता है॥ ४॥ ४ ॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤੇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਇਆਣੇ ਰਾਮ ॥
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! जिन्होंने प्रभु के नाम को कभी याद नहीं किया, वे स्वेच्छाचारी जीव विमूढ़ तथा नासमझ हैं।

ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸੇ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਣੇ ਰਾਮ ॥
जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥
जो व्यक्ति अपना चित्त मोह-माया में लगाते हैं, हे मेरी आत्मा ! वे अंतकाल में मृत्युलोक से पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए चले जाते हैं।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਢੋਈ ਨਾ ਲਹਨ੍ਹਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜੋ ਮਨਮੁਖ ਪਾਪਿ ਲੁਭਾਣੇ ਰਾਮ ॥
हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥
जो स्वेच्छाचारी जीव पापों में अनुरक्त बने हुए हैं, उन्हें हरि के दरबार में सहारा नहीं मिलता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਉਬਰੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਰਾਮ ॥੧॥
जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥१॥
नानक कथन करते हैं कि हे मेरी आत्मा ! गुरु को मिलने से जीव का भवसागर से उद्धार हो जाता है तथा प्रभु के नाम का चिंतन करते हुए जीव नाम में ही समा जाता है॥ १॥

ਸਭਿ ਜਾਇ ਮਿਲਹੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਉ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ਰਾਮ ॥
सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम ॥
हे मेरी आत्मा ! तुम सभी जाकर सच्चे गुरु से मिलो, जो हरि का नाम चित्त में बसाता है।

ਹਰਿ ਜਪਦਿਆ ਖਿਨੁ ਢਿਲ ਨ ਕੀਜਈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਤੁ ਕਿ ਜਾਪੈ ਸਾਹੁ ਆਵੈ ਕਿ ਨ ਆਵੈ ਰਾਮ ॥
हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥
हरि का नाम-स्मरण करने में क्षण भर के लिए भी देरी मत करो चूंकि क्या पता कि अग्रिम श्वास जीव को आएगा अथवा आएगा ही नहीं।

ਸਾ ਵੇਲਾ ਸੋ ਮੂਰਤੁ ਸਾ ਘੜੀ ਸੋ ਮੁਹਤੁ ਸਫਲੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਮੇਰਾ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ਰਾਮ ॥
सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥
हे मेरी आत्मा ! वह समय, मुहूर्त, घड़ी तथा पल शुभ हैं, जब मेरा परमात्मा चित्त में आ जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ਰਾਮ ॥੨॥
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥२॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! जिसने परमात्मा के नाम का सुमिरन किया है, यमदूत उसके निकट नहीं आता ॥ २॥

ਹਰਿ ਵੇਖੈ ਸੁਣੈ ਨਿਤ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸੋ ਡਰੈ ਜਿਨਿ ਪਾਪ ਕਮਤੇ ਰਾਮ ॥
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥
हे मेरी आत्मा ! भगवान नित्य ही सब कुछ देखता एवं सुनता है, जो लोग पाप करते रहते हैं, उन्हें ही डर लगता है।

ਜਿਸੁ ਅੰਤਰੁ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨਿ ਜਨਿ ਸਭਿ ਡਰ ਸੁਟਿ ਘਤੇ ਰਾਮ ॥
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥
जिस मनुष्य का हृदय शुद्ध है, वह अपने सभी भय दूर फ़ेंक देता है।

ਹਰਿ ਨਿਰਭਉ ਨਾਮਿ ਪਤੀਜਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸਭਿ ਝਖ ਮਾਰਨੁ ਦੁਸਟ ਕੁਪਤੇ ਰਾਮ ॥

हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥

हे मेरी आत्मा ! जिस जीव का निर्भय परमेश्वर के नाम पर निश्चय है, उसके विरुद्ध सभी कामादिक दुष्ट झख मारने लगते हैं।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਨਾਨਕਿ ਸੇਵਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਨਿ ਪੈਰੀ ਆਣਿ ਸਭਿ ਘਤੇ ਰਾਮ ॥੩॥
गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥३॥
नानक ने अपने पूर्ण गुरु की श्रद्धा से सेवा की है, हे मेरी आत्मा ! जिसने सभी को लाकर उसके चरणों में डाल दिया है॥ ३॥

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਨਿਤ ਸੇਵੀਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜੋ ਸਭ ਦੂ ਸਾਹਿਬੁ ਵਡਾ ਰਾਮ ॥
सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥
हे मेरी आत्मा ! सो नित्य ही ऐसे परमेश्वर की भक्ति करनी चाहिए, जो सभी जीवों का बड़ा मालिक है।

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਨਾ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਦੀ ਕਿਛੁ ਚਡਾ ਰਾਮ ॥
जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥
जो लोग एक मन से एक परमात्मा की आराधना करते हैं, वे किसी भी व्यक्ति के मोहताज नहीं होते।

ਗੁਰ ਸੇਵਿਐ ਹਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਝਖ ਮਾਰਨੁ ਸਭਿ ਨਿੰਦਕ ਘੰਡਾ ਰਾਮ ॥
गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥
गुरु की सेवा करने से हरि का मन्दिर (आत्मस्वरूप) प्राप्त हो जाता है,

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਛਡਾ ਰਾਮ ॥੪॥੫॥
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥४॥५॥
हे मेरी आत्मा ! उन्होंने ही हरि-नाम का चिंतन किया है, जिनके मस्तक पर जन्म से पूर्व प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने लेख लिख दिया है॥ ४ ॥ ५ ॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥

ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂੰ ਵਰਤਦਾ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੂੰ ਜਾਣਹਿ ਜੋ ਜੀਇ ਕਮਾਈਐ ਰਾਮ ॥
सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥
हे मेरे हरि-प्रभु ! सभी जीव तेरे पैदा किए हुए हैं और सब के भीतर तू ही मौजूद है, ये जीव जो भी कर्म करते हैं, इस संबंध में तू सब कुछ जानता है।

ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਨਾਲਿ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸਭ ਵੇਖੈ ਮਨਿ ਮੁਕਰਾਈਐ ਰਾਮ ॥
हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि भीतर एवं बाहर सभी के साथ है तथा सब कुछ देखता है किन्तु अज्ञानी मानव अपने मन में किए पाप कर्मों से मुकर जाता है।

ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਹਰਿ ਦੂਰਿ ਹੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸਭ ਬਿਰਥੀ ਘਾਲ ਗਵਾਈਐ ਰਾਮ ॥
मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥
हे मेरी आत्मा ! स्वेच्छाचारी लोगों से भगवान दूर ही रहता है तथा उनका तमाम परिश्रम निष्फल हो जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਿਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਹਰਿ ਹਾਜਰੁ ਨਦਰੀ ਆਈਐ ਰਾਮ ॥੧॥
जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥१॥
हे मेरी आत्मा ! नानक ने गुरुमुख बनकर हरि की आराधना की है तथा वह हरि को हर तरफ प्रत्यक्ष ही देखता है॥ १॥

ਸੇ ਭਗਤ ਸੇ ਸੇਵਕ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ਰਾਮ ॥
से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! वही सच्चे भक्त तथा सेवक हैं जो मेरे प्रभु के चित्त को लुभाते हैं।

ਸੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਅਹਿਨਿਸਿ ਸਾਚਿ ਸਮਾਣੇ ਰਾਮ ॥
से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! हरि के दरबार में ऐसे सच्चे भक्तों एवं सेवकों को प्रतिष्ठा का वस्त्र पहनाया जाता है और वे रात-दिन सत्य में ही समाए रहते हैं।

ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਨਦਰਿ ਨੀਸਾਣੇ ਰਾਮ ॥
तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥
हे मेरी आत्मा ! उनकी संगति में रहने से विकारों की मैल उतर जाती है, जो प्राणी परमेश्वर के प्रेम-रंग में रंग जाता है और उस पर उसकी कृपा का चिन्ह अंकित हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਅਘਾਣੇ ਰਾਮ ॥੨॥
नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥२॥
हे मेरी आत्मा ! नानक की प्रभु से विनती है कि वह साधुओं की संगति में रहकर तृप्त हो जाए॥ २॥

ਹੇ ਰਸਨਾ ਜਪਿ ਗੋਬਿੰਦੋ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਜਾਏ ਰਾਮ ॥
हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम ॥
हे मेरी रसना ! परमात्मा का भजन कर, परमात्मा का भजन करने से तृष्णा मिट जाती है।

ਜਿਸੁ ਦਇਆ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਤਿਸੁ ਮਨਿ ਨਾਮੁ ਵਸਾਏ ਰਾਮ ॥
जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥
हे मेरी आत्मा ! मेरा परब्रह्म जिस जीव पर भी दया करता है, वह उसके मन में अपने नाम को बसा देता है।

ਜਿਸੁ ਭੇਟੇ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਸੋ ਹਰਿ ਧਨੁ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥
जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥
जो व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु से मिलता है, उसे हरि धन रूपी निधि प्राप्त हो जाती है।

ਵਡਭਾਗੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਰਾਮ ॥੩॥
वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! सौभाग्य से ही सद्पुरुषों की संगति मिलती है, जहाँ भगवान का यशोगान होता रहता है।॥ ३॥

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ਰਾਮ ॥
थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥
हे मेरी आत्मा ! परब्रह्म-प्रभु सब जीवों का दाता विश्व के कोने-कोने में बस रहा है,

ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਈਐ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਰਾਮ ॥
ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥
उसका अन्त नहीं पाया जा सकता है क्योंकि वह पूर्ण अकालपुरुष विधाता है।

ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਿਉ ਬਾਲਕ ਪਿਤ ਮਾਤਾ ਰਾਮ ॥
सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥
हे मेरी आत्मा ! वह सब जीवों का ऐसे भरण-पोषण करता है जैसे माता-पिता अपने बालक की परवरिश करते हैं।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪ ਨਹ ਮਿਲੈ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦੁੜੀਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਰਾਮ ॥੪॥੬॥ ਛਕਾ ੧ ॥
सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥४॥६॥ छका १ ॥
हे मेरी आत्मा ! हजारों चतुराईयों का प्रयोग करने पर भी परमात्मा नहीं मिलता किन्तु नानक ने गुरुमुख बनकर ईश्वर को समझ लिया है॥ ४॥ ६॥ छका १॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧
बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १
बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਏਕੁ ਅਚੰਭਉ ਦੇਖਿਆ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਧਰਮ ਨਿਆਏ ਰਾਮ ॥
हरि का एकु अच्मभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥
हे मेरे प्यारे ! ईश्वर का मैंने एक अद्भुत कौतुक देखा है कि वह जो कुछ भी करता है, वह धर्म अनुसार ही न्याय करता है।

ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਅਖਾੜਾ ਪਾਇਓਨੁ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਸਬਾਏ ਰਾਮ ॥
हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥
ईश्वर ने इस सृष्टि को एक ऐसा रंगभवन अथवा अखाड़ा बनाया हुआ है, जहाँ सभी जीवों का जन्म-मरण अटल किया हुआ है अर्थात् इस सृष्टि में प्राणी जन्म के रूप में आते तथा मृत्यु के रूप में चले जाते हैं।

ਆਵਣੁ ਤ ਜਾਣਾ ਤਿਨਹਿ ਕੀਆ ਜਿਨਿ ਮੇਦਨਿ ਸਿਰਜੀਆ ॥
आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥
जिस ने पृथ्वी की रचना की है, उसने ही जीवों के जन्म-मरण का चक्र नियत किया हुआ है।

ਇਕਨਾ ਮੇਲਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੂਲੇ ਫਿਰਦਿਆ ॥
इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥
परमात्मा कुछ जीवों को सतगुरु से मिलाकर उन्हें अपने दरबार में बुला लेता है, किन्तु कई जीव दुविधा में फँसकर भटकते रहते हैं।

ਅੰਤੁ ਤੇਰਾ ਤੂੰਹੈ ਜਾਣਹਿ ਤੂੰ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥
अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥
हे दुनिया के मालिक ! अपना अन्त केवल तू ही जानता है, तू समस्त जीवों में समाया हुआ है।

ਸਚੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਵਰਤੈ ਧਰਮ ਨਿਆਏ ॥੧॥
सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥१॥
हे संतजनों ! ध्यानपूर्वक सुनो, नानक सत्य ही कहता है कि ईश्वर धर्म अनुसार न्याय में क्रियाशील है॥ १॥

ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧੇ ਰਾਮ ॥
आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥
हे मेरी सखियों, आकर मुझे मिलो, ताकि हम मिलकर परमेश्वर के नाम की आराधना करें।

ਕਰਿ ਸੇਵਹੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਸਾਧੇ ਰਾਮ ॥
करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥
हे मेरे प्यारे ! आओ, हम मिलकर पूर्ण सतिगुरु की सेवा करें तथा यम का मार्ग संवार लें।

ਮਾਰਗੁ ਬਿਖੜਾ ਸਾਧਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਸੋਭਾ ਪਾਈਐ ॥
मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥
गुरुमुख बनकर इस विषम मार्ग को सहज बनाकर हम परमेश्वर के दरबार में शोभा प्राप्त करें।

ਜਿਨ ਕਉ ਬਿਧਾਤੈ ਧੁਰਹੁ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਰੈਣਿ ਦਿਨੁ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥
जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥
जिनके लिए विधाता ने जन्म से पूर्व प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिख दिया है, वे रात-दिन उससे वृति लगाते हैं।

ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਛੁਟਾ ਜਾ ਸੰਗਿ ਮਿਲਿਆ ਸਾਧੇ ॥
हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥
जब प्राणी संतों की सभा में शामिल हो जाता है तो उसके अहंकार, ममता एवं मोह का नाश हो जाता है।

ਜਨੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮੁਕਤੁ ਹੋਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧੇ ॥੨॥
जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥२॥
सेवक नानक कहता है कि जो जीव परमेश्वर के नाम की आराधना करता है, वह संसार-सागर से मुक्त हो जाता है।॥२॥

ਕਰ ਜੋੜਿਹੁ ਸੰਤ ਇਕਤ੍ਰ ਹੋਇ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪੂਜੇਹਾ ਰਾਮ ॥
कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥
हे संतजनो ! आओ हम इकट्ठे होकर हाथ जोड़कर अविनाशी परमात्मा की पूजा करें।

ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਪੂਜਾ ਖੋਜੀਆ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਅਰਪੇਹਾ ਰਾਮ ॥
बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥
हे मेरे प्यारे ! मैंने पूजा करने की अनेक प्रकार की विधि की खोज की है किन्तु सच्ची पूजा यही है कि हम अपना यह मन-तन सब कुछ उसे अर्पण कर दें।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕੇਰਾ ਕਿਆ ਕੋ ਪੂਜ ਚੜਾਵਏ ॥
मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥
यह मन, तन, धन सभी प्रभु के हैं, फिर कोई पूजा के तौर पर उसे क्या भेंट कर सकता है?

ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦਇਆਲੁ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭ ਅੰਕਿ ਸਮਾਵਏ ॥
जिसु होइ क्रिपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥
जिस पर दुनिया का स्वामी हरि कृपालु तथा दयालु होता है, वही जीव उसकी गोद में लीन होता है।

ਭਾਗੁ ਮਸਤਕਿ ਹੋਇ ਜਿਸ ਕੈ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਨਾਲਿ ਸਨੇਹਾ ॥
भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥
जिसके मस्तक पर ऐसा भाग्य लिखा होता है, उसका गुरु के साथ स्नेह हो जाता है।

ਜਨੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪੂਜੇਹਾ ॥੩॥
जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥३॥
नानक कथन करता है कि आओ हम संतों की सभा में मिलकर परमेश्वर के नाम की पूजा करें ॥ ३॥

ਦਹ ਦਿਸ ਖੋਜਤ ਹਮ ਫਿਰੇ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਹਰਿ ਪਾਇਅੜਾ ਘਰਿ ਆਏ ਰਾਮ ॥
दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥
हे मेरे प्यारे ! हम दस-दिशाओं में प्रभु की खोज करते रहें किन्तु वह तो हमारे हृदय-घर में ही प्राप्त हो गया है।

ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਾਜਿਆ ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਜੀਉ ਹਰਿ ਤਿਸੁ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ਰਾਮ ॥
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥
पूज्य हरि ने मानव-शरीर को ही हरि-मंदिर बनाया हुआ है, जिसमें वह निवास कर रहा है।

ਸਰਬੇ ਸਮਾਣਾ ਆਪਿ ਸੁਆਮੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇਆ ॥
सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥
जगत का स्वामी हरि ही सभी जीवों में समाया हुआ है और वह गुरु द्वारा मेरे हृदय-घर में प्रगट हो गया है।

ਮਿਟਿਆ ਅਧੇਰਾ ਦੂਖੁ ਨਾਠਾ ਅਮਿਉ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚੋਇਆ ॥
मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥
मेरे मन में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है और दुःख-क्लेश भाग गए हैं और अमृत जैसा मीठा हरि-रस टपकने लग गया है।

ਜਹਾ ਦੇਖਾ ਤਹਾ ਸੁਆਮੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸਭ ਠਾਏ ॥
जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥
जहाँ-कहीं भी देखता हूँ, उधर ही परब्रह्म स्वामी सर्वव्यापक है।

ਜਨੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਾਇਆ ਹਰਿ ਪਾਇਅੜਾ ਘਰਿ ਆਏ ॥੪॥੧॥
जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥४॥१॥
नानक का कथन है कि सतिगुरु ने मुझे परमात्मा से मिला दिया है, जिसे मैंने अपने हृदय-घर में ही पा लिया है॥ ४॥ १॥

ਰਾਗੁ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु बिहागड़ा महला ५ ॥
रागु बिहागड़ा महला ५ ॥

ਅਤਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਮਨ ਮੋਹਨਾ ਘਟ ਸੋਹਨਾ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ਰਾਮ ॥
अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥
मेरा भगवान बहुत प्यारा, मन को मुग्ध करने वाला, सब शरीरों में शोभा देने वाला तथा सब के प्राणों का आधार है।

ਸੁੰਦਰ ਸੋਭਾ ਲਾਲ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਕੀ ਅਪਰ ਅਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥
उस दयालु लाल गोपाल की बड़ी सुन्दर शोभा है, जो अपरंपार है।

ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ਗੋਬਿੰਦ ਲਾਲਨ ਮਿਲਹੁ ਕੰਤ ਨਿਮਾਣੀਆ ॥
गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥
हे दयालु गोपाल ! हे प्रियतम गोबिन्द ! हे पति-परमेश्वर ! मुझ विनीत जीव-स्त्री को भी दर्शन दीजिए।

ਨੈਨ ਤਰਸਨ ਦਰਸ ਪਰਸਨ ਨਹ ਨੀਦ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਣੀਆ ॥
नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥
मेरे नेत्र तेरे दर्शन-दीदार हेतु तरस रहे हैं, मेरी जीवन रूपी रात्रि व्यतीत होती जा रही है किन्तु मुझे नींद नहीं आती।

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨ ਨਾਮ ਬਿੰਜਨ ਭਏ ਸਗਲ ਸੀਗਾਰਾ ॥
गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥
मैंने ज्ञान का सुरमा अपने नेत्रों में लगाया है और प्रभु के नाम को अपना भोजन बनाया है, इस प्रकार सभी श्रृंगार किए हुए हैं।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਸੰਤ ਜੰਪੈ ਮੇਲਿ ਕੰਤੁ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥
नानकु पइअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥१॥
नानक संतों के चरण स्पर्श करता है एवं प्रार्थना करता है कि मुझे पति-परमेश्वर से मिला दो॥ १॥

ਲਾਖ ਉਲਾਹਨੇ ਮੋਹਿ ਹਰਿ ਜਬ ਲਗੁ ਨਹ ਮਿਲੈ ਰਾਮ ॥
लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥
जब तक मेरा परमेश्वर नहीं मिलता, तब तक लोगों के लाखों उलाहने सहन करने पड़ते हैं।

ਮਿਲਨ ਕਉ ਕਰਉ ਉਪਾਵ ਕਿਛੁ ਹਮਾਰਾ ਨਹ ਚਲੈ ਰਾਮ ॥
मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥
मैं प्रभु-मिलन हेतु उपाय करता हूँ किन्तु मेरा कोई भी उपाय सार्थक नहीं होता।

ਚਲ ਚਿਤ ਬਿਤ ਅਨਿਤ ਪ੍ਰਿਅ ਬਿਨੁ ਕਵਨ ਬਿਧੀ ਨ ਧੀਜੀਐ ॥
चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ ॥
यह धन-सम्पति नश्वर है, प्रिय प्रभु के बिना किसी विधि से भी मुझे धैर्य नहीं मिलता।

ਖਾਨ ਪਾਨ ਸੀਗਾਰ ਬਿਰਥੇ ਹਰਿ ਕੰਤ ਬਿਨੁ ਕਿਉ ਜੀਜੀਐ ॥
खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥
मेरा खानपान तथा सभी श्रृंगार व्यर्थ हैं, अपने पति-प्रभु के बिना जीना असंभव है।

ਆਸਾ ਪਿਆਸੀ ਰੈਨਿ ਦਿਨੀਅਰੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੀਐ ਇਕੁ ਤਿਲੈ ॥
आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥
मैं रात-दिन उसके दर्शनों की आशा में प्यासी रहती हूँ, उसके बिना मैं क्षण भर के लिए भी नहीं रह सकती।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਸੰਤ ਦਾਸੀ ਤਉ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮੇਰਾ ਪਿਰੁ ਮਿਲੈ ॥੨॥
नानकु पइअ्मपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे संत जनो ! मैं आपकी दासी हूँ, मेरा प्रियतम-प्रभु आपकी कृपा से ही मिल सकता है॥ २॥

ਸੇਜ ਏਕ ਪ੍ਰਿਉ ਸੰਗਿ ਦਰਸੁ ਨ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ॥
सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥
अपने प्रिय प्रभु के साथ ही मेरी सेज है किन्तु फिर भी उनके दर्शनों की प्राप्ति नहीं होती।

ਅਵਗਨ ਮੋਹਿ ਅਨੇਕ ਕਤ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਈਐ ਰਾਮ ॥
अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥
मुझमें अनेक अवगुण विद्यमान हैं, जिसके फलस्वरूप मेरा पति-प्रभु अपने दरबार में कैसे आमंत्रित कर सकता है ?

ਨਿਰਗੁਨਿ ਨਿਮਾਣੀ ਅਨਾਥਿ ਬਿਨਵੈ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧੇ ॥
निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥
निर्गुण, विनीत तथा अनाथ जीवात्मा विनती करती है कि हे कृपानिधि ! मुझे दर्शन देकर कृतार्थ कीजिए।

ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਖੋਈਐ ਸਹਜਿ ਸੋਈਐ ਪ੍ਰਭ ਪਲਕ ਪੇਖਤ ਨਵ ਨਿਧੇ ॥
भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥
एक पल भर के लिए भी नवनिधि के स्वामी प्रभु के दर्शन करने से भ्रम की दीवार ध्वस्त हो जाती है और मैं सहज सुख में सोती हूँ।

ਗ੍ਰਿਹਿ ਲਾਲੁ ਆਵੈ ਮਹਲੁ ਪਾਵੈ ਮਿਲਿ ਸੰਗਿ ਮੰਗਲੁ ਗਾਈਐ ॥
ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥
यदि मेरा प्रियतम प्रभु मेरे हृदय-घर में आ जाए तो वहाँ टिक कर मैं उसके साथ मिलकर मंगल गीत गायन करूँगी।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਸੰਤ ਸਰਣੀ ਮੋਹਿ ਦਰਸੁ ਦਿਖਾਈਐ ॥੩॥
नानकु पइअ्मपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥३॥
नानक संतों के चरण छूता है और उनकी शरण में पड़ता है, हे संतजनो ! मुझे प्रभु के दर्शन करा दो ॥ ३॥

ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥
संतजनों की अपार कृपा से मैंने भगवान को पा लिया है।

ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਤਪਤਿ ਬੁਝਾਇਆ ਰਾਮ ॥
इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥
मेरी इच्छा पूर्ण हो गई है, मन को शांति मिलने से तृष्णा की जलन बुझ गई है।

ਸਫਲਾ ਸੁ ਦਿਨਸ ਰੈਣੇ ਸੁਹਾਵੀ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਰਸੁ ਘਨਾ ॥
सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥
वह दिन बड़ा शुभ है, वह रात भी सुहावनी है, आनंद, मंगल तथा हर्षोल्लास अधिकतर है,

ਪ੍ਰਗਟੇ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਲਾਲਨ ਕਵਨ ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਭਨਾ ॥
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥
जब प्रियतम गोपाल गोबिन्द मेरे हृदय में प्रगट हुआ है, किस रसना से मैं उसके गुणों का उच्चारण कर सकती हूँ?

ਭ੍ਰਮ ਲੋਭ ਮੋਹ ਬਿਕਾਰ ਥਾਕੇ ਮਿਲਿ ਸਖੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ॥
भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥
मेरा भ्रम, लोभ, मोह तथा विकार नष्ट हो गए हैं तथा अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी सखियों के साथ मिलकर मंगल गीत गाती हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਪਇਅੰਪੈ ਸੰਤ ਜੰਪੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਜੋਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੪॥੨॥
नानकु पइअ्मपै संत ज्मपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥४॥२॥
नानक उन संतों के चरणों में पड़ता है और उनके समक्ष प्रार्थना करता है, जिन्होंने संयोग बनाकर उसे भगवान से मिला दिया है ॥४॥२॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪੂਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ਰਾਮ ॥
करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥
हे मेरे पूर्ण गुरु परब्रह्म ! मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि रात-दिन तेरा नाम ही याद करता रहूँ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਉਚਰਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਿਠਾ ਲਾਗੈ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਰਾਮ ॥
अम्रित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥
मैं अमृत वाणी उच्चरित करूँ और हरि-यश द्वारा तेरी रज़ा मुझे मीठी लगे।

ਕਰਿ ਦਇਆ ਮਇਆ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਕੋਇ ਨਾਹੀ ਤੁਝ ਬਿਨਾ ॥
करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥
हे गोपाल गोबिन्द ! मुझ पर दया एवं कृपा करो, क्योंकि तेरे बिना मेरा कोई भी आधार नहीं।

ਸਮਰਥ ਅਗਥ ਅਪਾਰ ਪੂਰਨ ਜੀਉ ਤਨੁ ਧਨੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਮਨਾ ॥
समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह्र मना ॥
हे सर्वशक्तिमान, अकथनीय, अपार तथा सर्वव्यापक परमेश्वर ! मेरे प्राण, तन, धन एवं मन सभी तेरे ही दिए हैं।

ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਅਨਾਥ ਚੰਚਲ ਬਲਹੀਨ ਨੀਚ ਅਜਾਣਾ ॥
मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥
मैं मूर्ख, विमूढ़, अनाथ, चंचल, बलहीन, तुच्छ तथा नासमझ जीव हूँ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥੧॥
बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥१॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! मैंने तेरी ही शरण ली है, मेरी जन्म-मरण के चक्र से रक्षा करो ॥ १॥

ਸਾਧਹ ਸਰਣੀ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਜੀਉ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਨੀਤਾ ਰਾਮ ॥
साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥
साधुओं की शरण में आने से परमेश्वर की लब्धि हो जाती है, जहाँ नित्य ही परमेश्वर का गुणगान किया जाता है।

ਧੂਰਿ ਭਗਤਨ ਕੀ ਮਨਿ ਤਨਿ ਲਗਉ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਭ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤਾ ਰਾਮ ॥
धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! यदि तेरे भक्तों की चरण-धूलि मन एवं तन को लग जाए तो सभी पतित जीव पावन हो जाते हैं।

ਪਤਿਤਾ ਪੁਨੀਤਾ ਹੋਹਿ ਤਿਨ੍ ਸੰਗਿ ਜਿਨ੍ ਬਿਧਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥
पतिता पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥
जिन्होंने अपने विधाता को प्राप्त कर लिया है, उनकी संगति करने से पतित व्यक्ति पावन हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਰਾਤੇ ਜੀਅ ਦਾਤੇ ਨਿਤ ਦੇਹਿ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥
परमेश्वर के नाम में अनुरक्त हुए वे भक्तजन जीवों को नित्य ही आध्यात्मिक दान देते रहते हैं और उनका दान प्रतिदिन बढ़ता रहता है।

ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਿਨੀ ਆਤਮੁ ਜੀਤਾ ॥
रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥
जो प्राणी हरि नाम का जाप करते हुए अपने मन को जीत लेते हैं, उन्हें ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं नवनिधियों मिल जाती हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਵਡਭਾਗਿ ਪਾਈਅਹਿ ਸਾਧ ਸਾਜਨ ਮੀਤਾ ॥੨॥
बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥२॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि अहोभाग्य से ही साधु रूपी साजन तथा मित्र मिलते हैं।॥ २॥

ਜਿਨੀ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿਆ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸੇ ਪੂਰੇ ਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥
जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥
हे प्रभु जी ! जो तेरे सत्य-नाम का व्यापार करते हैं, वही पूर्ण साहूकार हैं।

ਬਹੁਤੁ ਖਜਾਨਾ ਤਿੰਨ ਪਹਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਲਾਹਾ ਰਾਮ ॥
बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥
हे श्रीहरि ! उनके पास तेरे नाम का अपार खजाना है और वे हरि-कीर्तन का लाभ प्राप्त करते हैं।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨ ਲੋਭੁ ਬਿਆਪੈ ਜੋ ਜਨ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਰਾਤਿਆ ॥
कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥
जो व्यक्ति प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुए हैं, वे काम, क्रोध तथा लोभ से दूर ही रहते हैं।

ਏਕੁ ਜਾਨਹਿ ਏਕੁ ਮਾਨਹਿ ਰਾਮ ਕੈ ਰੰਗਿ ਮਾਤਿਆ ॥

एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥

वे केवल एक परमेश्वर को ही जानते हैं, उस एक पर ही आस्था धारण करते हैं और उसके रंग में मग्न रहते हैं।

ਲਗਿ ਸੰਤ ਚਰਣੀ ਪੜੇ ਸਰਣੀ ਮਨਿ ਤਿਨਾ ਓਮਾਹਾ ॥

लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥

वे संतों के चरण-स्पर्श करते हैं, उनकी शरण लेते हैं तथा उनके मन में उमंग होती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਨਾਮੁ ਪਲੈ ਸੇਈ ਸਚੇ ਸਾਹਾ ॥੩॥

बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥३॥

नानक प्रार्थना करता है कि जिनके पास परमात्मा का नाम है, वही सच्चे साहूकार हैं।॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਸੋਈ ਸਿਮਰੀਐ ਹਰਿ ਜੀਉ ਜਾ ਕੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥

नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥

हे नानक ! उस पूज्य परमेश्वर की ही आराधना करनी चाहिए, जिसकी शक्ति समूचे जगत में क्रियाशील है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਹਰਿ ਜੀਉ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਮੁਰਾਰੀ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥
गुरुमुख व्यक्ति अपने मन से जगत के रचयिता श्री हरि, मुरारि को विस्मृत नहीं करते।

ਦੂਖੁ ਰੋਗੁ ਨ ਭਉ ਬਿਆਪੈ ਜਿਨ੍ੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥
जिन्होंने परमेश्वर का ध्यान किया है, उन्हें कोई दुःख, रोग तथा भय नहीं लगता।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਤਰੇ ਭਵਜਲੁ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥
संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥
संतों की अपार कृपा से वे भयानक संसार-सागर से तर जाते हैं तथा जो उनके लिए परमात्मा ने प्रारम्भ से लिखा होता है, उन्हें प्राप्त हो जाता है।

ਵਜੀ ਵਧਾਈ ਮਨਿ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ਮਿਲਿਆ ਪੁਰਖੁ ਅਪਾਰੀ ॥
वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥
अपार परमात्मा को मिलने से उन्हें शुभकामनाएं मिलती हैं तथा मन को शांति प्राप्त होती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥੩॥
बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥४॥३॥
नानक विनती करते हैं कि भगवान की आराधना करने से हमारी मनोकामना पूरी हो गई है॥ ४॥ ३॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨
बिहागड़ा महला ५ घरु २
बिहागड़ा महला ५ घरु २

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु गुरप्रसादि ॥
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

ਵਧੁ ਸੁਖੁ ਰੈਨੜੀਏ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ॥
वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥
हे सुखदायिनी रात्रि ! तू बहुत लम्बी हो जा, चूंकि प्रिय प्रभु के संग मेरा अपार प्रेम लग चुका है।

ਘਟੁ ਦੁਖ ਨੀਦੜੀਏ ਪਰਸਉ ਸਦਾ ਪਗਾ ॥
घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥
हे दुखदायी निंद्रा ! तू छोटी हो जा ताकि मैं नित्य ही प्रभु चरणों में लीन रहूं।

ਪਗ ਧੂਰਿ ਬਾਂਛਉ ਸਦਾ ਜਾਚਉ ਨਾਮ ਰਸਿ ਬੈਰਾਗਨੀ ॥
पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥
में सदा परमात्मा की चरण धूलि की कामना करती हूँ एवं उसके नाम दान की अभिलाषा करती हूँ, जिस हेतु मैं वैरागिन बनी हूँ।

ਪ੍ਰਿਅ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜ ਮਾਤੀ ਮਹਾ ਦੁਰਮਤਿ ਤਿਆਗਨੀ ॥
प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥
अपने प्रिय प्रभु के प्रेम रंग में अनुरक्त होकर सहजता में मतवाली होकर मैंने महादुर्गति त्याग दी है।

ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨ੍ਹੀ ਪ੍ਰੇਮ ਭੀਨੀ ਮਿਲਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਚ ਮਗਾ ॥
गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥
मुझ प्रेम-रस में भीगी हुई की भुजा प्रिय प्रभु ने पकड़ ली है और प्रियतम का मिलन ही सच्चा-मार्ग है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਰਹਉ ਚਰਣਹ ਸੰਗਿ ਲਗਾ ॥੧॥
बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥१॥
नानक विनय करता है कि हे ईश्वर ! मुझ पर अपनी कृपा धारण करो ताकि मैं तेरे चरणों के संग सदैव लगा रहूं ॥ १ ॥

ਮੇਰੀ ਸਖੀ ਸਹੇਲੜੀਹੋ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਚਰਣਿ ਲਗਹ ॥
मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥
हे मेरी सखी-सहेलियों ! आओ, हम मिलकर हरि परमात्मा के चरणों में लीन रहें।

ਮਨਿ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੇਮੁ ਘਣਾ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਮੰਗਹ ॥
मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥
मन में प्रियतम प्रभु हेतु अत्यंत प्रेम है, आओ, हम मिलकर हरि की भक्ति की कामना करें।

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਜਾਇ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਜਨਾ ॥
हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥
हरि-भक्ति प्राप्त करके प्रभु का ध्यान करें और जाकर भक्तों से मिलें।

ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਬਿਕਾਰੁ ਤਜੀਐ ਅਰਪਿ ਤਨੁ ਧਨੁ ਇਹੁ ਮਨਾ ॥
मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥
आओ, हम मान, मोह, एवं विकारो को छोड़कर अपना यह तन, मन धन परमात्मा को अर्पित कर दें।

ਬਡ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਗੁਣ ਸੰਪੂਰਨ ਭ੍ਰਮ ਭੀਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿ ਭਗਹ ॥
बड पुरख पूरन गुण स्मपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥
परमेश्वर बड़ा महान, सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक तथा सर्वगुणसम्पनं है, जिसे मिलने से भृम की दीवार ध्वस्त हो जाती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਸਖੀਏ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਨਿਤ ਨਿਤ ਜਪਹ ॥੨॥
बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥२॥
नानक विनय करता है की हे सखियों ! मेरा उपदेश ध्यानपूर्वक सुनो, हमने नित्य निशदिन ही हरि-नाम का जप करते रहना है।२ ॥

ਹਰਿ ਨਾਰਿ ਸੁਹਾਗਣੇ ਸਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣੇ ॥
हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥
हरि की पत्नी सदैव ही सुहागिन रहती है, वह सर्व प्रकार से ऐश्वर्य-सुख भोगती है।

ਰਾਂਡ ਨ ਬੈਸਈ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰਖ ਚਿਰਾਣੇ ॥
रांड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥
वह कभी विधवा होकर नहीं बैठती चूंकि उसका स्वामी प्रभु चिरजीवी है।

ਨਹ ਦੂਖ ਪਾਵੈ ਪ੍ਰਭ ਧਿਆਵੈ ਧੰਨਿ ਤੇ ਬਡਭਾਗੀਆ ॥
नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥
वह पति प्रभु को याद करती रहती है और कोई भी दु:ख प्राप्त नहीं करती, ऐसी जीव-स्त्री धन्य एवं भाग्यशाली है।

ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸੋਵਹਿ ਕਿਲਬਿਖ ਖੋਵਹਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਰੰਗਿ ਜਾਗੀਆ ॥
सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥
वह सहज सुख में विश्राम करती है और उसके तमाम दु:ख-क्लेश नष्ट हो जाते हैं, वह तो नाम रस में रंगकर जागती है।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਹਣਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗਹਣਾ ਪ੍ਰਿਅ ਬਚਨ ਮੀਠੇ ਭਾਣੇ ॥
मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥
यह उसके प्रेम में लीन रहती है और हरि का नाम उसका अमूल्य आभूषण है, प्रियतम प्रभु के वचन उसे बड़े मीठे तथा भले लगते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਨ ਇਛ ਪਾਈ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਪੁਰਖ ਚਿਰਾਣੇ ॥੩॥
बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है, क्योंकि मुझे चिरजीवी पति-परमेश्वर मिल गया है ।३ ।

ਤਿਤੁ ਗ੍ਰਿਹਿ ਸੋਹਿਲੜੇ ਕੋਡ ਅਨੰਦਾ ॥
तितु ग्रिहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥
उस घर हृदय में बड़े मंगल गीत, कौतुक तथा आनंद उल्लास हैं,

ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਪ੍ਰਭ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥
जिस मन, तन में परमानंद प्रभु निवास करता है।

ਹਰਿ ਕੰਤ ਅਨੰਤ ਦਇਆਲ ਸ੍ਰੀਧਰ ਗੋਬਿੰਦ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੋ ॥
हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥
मेरा हरि-कांत अनंत दयालु है, हे श्रीधर ! हे गोविन्द! तू पतित जीवों का उद्धार करने वाला है।

ਪ੍ਰਭਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰੀ ਹਰਿ ਮੁਰਾਰੀ ਭੈ ਸਿੰਧੁ ਸਾਗਰ ਤਾਰਣੋ ॥
प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥
प्रभु सब पर कृपा करने वाला है और वह हरि मुरारी भयानक संसार सागर से जीवों को पार करने वाला है।

ਜੋ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਤਿਸੁ ਕੰਠਿ ਲਾਵੈ ਇਹੁ ਬਿਰਦੁ ਸੁਆਮੀ ਸੰਦਾ ॥
जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥
यह उस स्वामी का विरद है कि जो कोई भी उसकी शरण में आता है, वह उसे अपने गले से लगा लेता है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੰਤੁ ਮਿਲਿਆ ਸਦਾ ਕੇਲ ਕਰੰਦਾ ॥੪॥੧॥੪॥
बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥४॥१॥४॥
नानक विनय करता है कि मेरा कांत (पति) हरि मुझे मिल गया है जो सदा ही आनंद-क्रीड़ा में क्रियाशील है ॥४॥१॥४॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰੋਵਰ ਤਹ ਕਰਹੁ ਨਿਵਾਸੁ ਮਨਾ ॥

हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥

हे मेरे मन ! भगवान के चरण पावन सरोवर हैं, यहां पर अपना निवास करो।

ਕਰਿ ਮਜਨੁ ਹਰਿ ਸਰੇ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਨਾਸੁ ਮਨਾ ॥
करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥
हे मेरे मन ! भगवान के पावन सरोवर में स्नान करो, क्योंकि वहाँ पर तेरे सभी दुःख संताप नाश हो जाएँगे।

ਕਰਿ ਸਦਾ ਮਜਨੁ ਗੋਬਿੰਦ ਸਜਨੁ ਦੁਖ ਅੰਧੇਰਾ ਨਾਸੇ ॥
करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥
उस गोविन्द-साजन के नाम-सरोवर में सदा स्नान करो, जिससे दुःख के अँधेरे का नाश हो जाता है।

ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਇ ਤਿਸ ਕਉ ਕਟੈ ਜਮ ਕੇ ਫਾਸੇ ॥
जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥
जीव की जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति हो जाती है, क्योंकि प्रभु उसकी यम (मृत्यु) की फाँसी काट देता है।

ਮਿਲੁ ਸਾਧਸੰਗੇ ਨਾਮ ਰੰਗੇ ਤਹਾ ਪੂਰਨ ਆਸੋ ॥
मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥
संतों की सभा में शामिल होकर नाम-रंग में लीन रहो, यहाँ हर आशा पूर्ण हो जाएगी।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਨਿਵਾਸੋ ॥੧॥
बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि ! कृपा धारण करके मुझे अपने सुन्दर चरण-कमल में निवास दीजिये ॥ १ ॥

ਤਹ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਸਦਾ ਅਨਹਦ ਝੁਣਕਾਰੋ ਰਾਮ ॥
तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥
वँहा पर सदा आनंद तथा हर्षोल्लास है और अनहद शब्द गूंजता रहता है।

ਮਿਲਿ ਗਾਵਹਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਜੈਕਾਰੋ ਰਾਮ ॥
मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥
संतजन मिलकर प्रभु का यशोगान करते हैं तथा उसकी जय-जयकार करते रहते हैं।

ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਗਾਵਹਿ ਖਸਮ ਭਾਵਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਰੰਗਿ ਭਿੰਨੀਆ ॥
मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिंनीआ ॥
संतजन अपने मालिक को लुभाते हैं, वे अपने स्वामी की गुणस्तुति करते हैं तथा उसके प्रेम-रस के रंग में भीगे रहते है।

ਹਰਿ ਲਾਭੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ਮਿਲੇ ਚਿਰੀ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥
हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥
वे अपने स्वामी की गुणस्तुति करते है तथा उसके प्रेम रस के रंग से जुदा हुए उससे मिल जाते हैं।

ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੇ ਦਇਆ ਕੀਨੇ੍ ਪ੍ਰਭ ਏਕ ਅਗਮ ਅਪਾਰੋ ॥
गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥
एक अगम्य एवं अपार प्रभु उन पर अपनी दया-दृष्टि करता है और उन्हें अपनी भुजा से पकड़ कर अपना बना लेता है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਰੁਣ ਝੁਣਕਾਰੋ ॥੨॥
बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि उनके मन में सदैव निर्मल सच्चा अनहद शब्द रुनझुन-झंकार करता रहता है ॥ २ ॥

ਸੁਣਿ ਵਡਭਾਗੀਆ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਰਾਮ ॥
सुणि वडभागीआ हरि अम्रित बाणी राम ॥
हे भाग्यशाली ! परमात्मा की अमृत वाणी सुनो।

ਜਿਨ ਕਉ ਕਰਮਿ ਲਿਖੀ ਤਿਸੁ ਰਿਦੈ ਸਮਾਣੀ ਰਾਮ ॥
जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥
जिनकी किस्मत में यह अमृत वाणी लिखी होती है, उनके हृदय में यह प्रविष्ट हो जाती है।

ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ਤਿਨੀ ਜਾਣੀ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ॥
अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥
जिस पर प्रभु आप कृपा करता है, उसे ही उसकी अकथनीय कथा का ज्ञान होता है।

ਅਮਰੁ ਥੀਆ ਫਿਰਿ ਨ ਮੂਆ ਕਲਿ ਕਲੇਸਾ ਦੁਖ ਹਰੇ ॥
अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥
ऐसा जीव अमर हो जाता है और फिर मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, उसके सभी दुख-क्लेश तथा संताप विनष्ट हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਸਰਣਿ ਪਾਈ ਤਜਿ ਨ ਜਾਈ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਭਾਣੀ ॥
हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥
वह भगवान की शरण प्राप्त कर लेता है जो उसे त्याग कर कहीं नहीं जाता और प्रभु की प्रीति उसके मन-तन को लुभाती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਗਾਈਐ ਪਵਿਤ੍ਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥੩॥
बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अम्रित बाणी ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे जीव ! हमें सदैव ही पवित्र अमृत-बाणी का गुणानुवाद करते रहना चाहिए॥ ३ ॥

ਮਨ ਤਨ ਗਲਤੁ ਭਏ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥
मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥
परमात्मा की अमृत-वाणी में मन तथा तन इतना लीन हो जाता है कि कुछ कथन नहीं किया जा सकता।

ਜਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਅੜਾ ਤਿਨਿ ਲੀਆ ਸਮਾਈ ਰਾਮ ॥
जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥
जिस (परमेश्वर) ने प्राणी को पैदा किया था, वह उसी में लीन हो जाता है।

ਮਿਲਿ ਬ੍ਰਹਮ ਜੋਤੀ ਓਤਿ ਪੋਤੀ ਉਦਕੁ ਉਦਕਿ ਸਮਾਇਆ ॥
मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥
वह ब्रह्म ज्योति में ताने-पेटे की भांति ऐसे विलीन हो जाता है जैसे जल, जल में ही मिल जाता है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਏਕੁ ਰਵਿਆ ਨਹ ਦੂਜਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਇਆ ॥
जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा द्रिसटाइआ ॥
एक परमात्मा ही जल, धरती एवं गगन में मौजूद है, दूसरा कोई दृष्टिगोचर नहीं होता।

ਬਣਿ ਤ੍ਰਿਣਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਪੂਰਿ ਪੂਰਨ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
बणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥
वह वन, तृण एवं तीनों लोकों में परिपूर्ण व्यापक है तथा उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਜਾਣੈ ਜਿਨਿ ਏਹ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥੪॥੨॥੫॥
बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥४॥२॥५॥
नानक प्रार्थना करता है कि जिस परमात्मा ने यह सृष्टि-रचना की है वह स्वयं ही इस संबंध में सब कुछ जानता है। ॥४॥२॥५॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥
बिहागड़ा महला ५ ॥

ਖੋਜਤ ਸੰਤ ਫਿਰਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥
संतजन उस भगवान को खोजते रहते हैं, जो हम सभी के प्राणों का मूल आधार है।

ਤਾਣੁ ਤਨੁ ਖੀਨ ਭਇਆ ਬਿਨੁ ਮਿਲਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥
अपने प्रियतम प्रभु के मिलन बिना उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है।

ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਹੁ ਪਿਆਰੇ ਮਇਆ ਧਾਰੇ ਕਰਿ ਦਇਆ ਲੜਿ ਲਾਇ ਲੀਜੀਐ ॥
प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥
हे प्रियतम प्रभु! कृपा करके मुझे आकर मिलो तथा दया करके अपने दामन के साथ मुझे मिला लीजिए।

ਦੇਹਿ ਨਾਮੁ ਅਪਨਾ ਜਪਉ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਦਰਸ ਪੇਖੇ ਜੀਜੀਐ ॥
देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥
हे मेरे स्वामी ! कृपा-दृष्टि करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिये जिससे मैं तेरी आराधना करता रहूँ और तेरे दर्शन करके ही मैं जीवित रह सकता हूँ।

ਸਮਰਥ ਪੂਰਨ ਸਦਾ ਨਿਹਚਲ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥
हे दुनिया के मालिक ! तू सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सदा अटल सर्वोपरि अगम्य तथा अपार है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮਿਲਹੁ ਪ੍ਰਾਨ ਪਿਆਰੇ ॥੧॥
बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है की है प्राण प्रिय परमेश्वर ! कृपा करके मुझे आकर मिलो ॥ १ ॥

ਜਪ ਤਪ ਬਰਤ ਕੀਨੇ ਪੇਖਨ ਕਉ ਚਰਣਾ ਰਾਮ ॥
जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥
हे राम ! तेरे चरणों के दर्शनों हेतु मैंने अनेक ही जप, तपस्या एवं व्रत इत्यादि किए हैं

ਤਪਤਿ ਨ ਕਤਹਿ ਬੁਝੈ ਬਿਨੁ ਸੁਆਮੀ ਸਰਣਾ ਰਾਮ ॥
तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥
परन्तु तेरी शरण के बिना मन की तृष्णा कदाचित नहीं बुझती।

ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਿ ਤੇਰੀ ਕਾਟਿ ਬੇਰੀ ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਤਾਰੀਐ ॥
प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥
हे प्रभु! मैं तेरी शरण में आया हूँ, मेरी विकारों की बेड़ियाँ काट दीजिए और इस संसार-सागर से पार कर दें।

ਅਨਾਥ ਨਿਰਗੁਨਿ ਕਛੁ ਨ ਜਾਨਾ ਮੇਰਾ ਗੁਨੁ ਅਉਗਨੁ ਨ ਬੀਚਾਰੀਐ ॥

अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥

मैं अनाथ तथा निर्गुण हूँ, मैं कुछ भी नहीं जानता, इसलिए तुम मेरे गुण-अवगुण पर विचार मत करना।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਗੋਪਾਲ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਮਰਥ ਕਾਰਣ ਕਰਣਾ ॥

दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥

प्रियतम गोपाल बड़ा दीनदयालु सर्वशक्तिमान तथा करने कराने वाला है,

ਨਾਨਕ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਹਰਿ ਬੂੰਦ ਮਾਗੈ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਰਣਾ ॥੨॥

नानक चात्रिक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥२॥

नानक रूपी चातक हरि रूपी नाम बून्द माँगता है तथा हरी के चरणों का जाप करते हुए जीवित रहता है।॥२॥

ਅਮਿਅ ਸਰੋਵਰੋ ਪੀਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਰਾਮ ॥
अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥
हे जीव ! हरि अमृत का सरोवर है, उस हरिनामामृत का पान करो।

ਸੰਤਹ ਸੰਗਿ ਮਿਲੈ ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਕਾਮਾ ਰਾਮ ॥
संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥
संतजनों की सभा में ही परमेश्वर मिलता है और उसकी आराधना करने से सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।

ਸਭ ਕਾਮ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਬਿਦੀਰਨ ਹਰਿ ਨਿਮਖ ਮਨਹੁ ਨ ਬੀਸਰੈ ॥
सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥
वह सभी कार्य सम्पूर्ण करने वाला तथा दुःखों का विदीर्ण करने वाला है, इसलिए अपने मन में हमें उसे एक पल भी विस्मृत नहीं करना चाहिए।

ਆਨੰਦ ਅਨਦਿਨੁ ਸਦਾ ਸਾਚਾ ਸਰਬ ਗੁਣ ਜਗਦੀਸਰੈ ॥
आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥
सर्वगुणसम्पन्न जगदीश्वर रात-दिन आनंद में तथा सदा सत्यस्वरूप है,

ਅਗਣਤ ਊਚ ਅਪਾਰ ਠਾਕੁਰ ਅਗਮ ਜਾ ਕੋ ਧਾਮਾ ॥
अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥
वह ठाकुर अनंत, सर्वोच्च तथा अपार है, जिसका धाम अगम्य है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮੇਰੀ ਇਛ ਪੂਰਨ ਮਿਲੇ ਸ੍ਰੀਰੰਗ ਰਾਮਾ ॥੩॥
बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है, क्योंकि मुझे ईश्वर मिल गया है।। ३।।

ਕਈ ਕੋਟਿਕ ਜਗ ਫਲਾ ਸੁਣਿ ਗਾਵਨਹਾਰੇ ਰਾਮ ॥
कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥
प्रभु का यश सुनने एवं गाने वालों को कई करोड़ यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕੁਲ ਸਗਲੇ ਤਾਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥
परमात्मा के नाम का जाप करने वालों की सारी वंशावली ही संसार-सागर से पार हो जाती है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੋਹੰਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਾ ਕੀ ਮਹਿਮਾ ਕਿਤ ਗਨਾ ॥
हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥
हरि के नाम का जाप करने से प्राणी शोभावान बन जाता है, जिसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਹਰਿ ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਾਨ ਪਿਆਰੇ ਚਿਤਵੰਤਿ ਦਰਸਨੁ ਸਦ ਮਨਾ ॥
हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥
हे प्राण प्यारे परमेश्वर ! मैं तुझे नहीं भुला सकता क्योंकि मेरे मन को सदैव ही तेरे दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है।

ਸੁਭ ਦਿਵਸ ਆਏ ਗਹਿ ਕੰਠਿ ਲਾਏ ਪ੍ਰਭ ਊਚ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥
सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥
वह बड़ा शुभ दिवस आया है, जब सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार प्रभु ने अपने गले से हमें लगाया है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਫਲੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲੇ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੪॥੩॥੬॥
बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥४॥३॥६॥
नानक प्रार्थना करता है कि जब अत्यंत प्रिय प्रभु मिल जाता है, सब कुछ सफल हो जाता है। ४॥ ३॥ ६॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥

ਅਨ ਕਾਏ ਰਾਤੜਿਆ ਵਾਟ ਦੁਹੇਲੀ ਰਾਮ ॥
अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥
हे मानव जीव ! क्यों निरर्थक पदार्थों के मोह में फंसे हुए हो ? क्योकि यह जीवन मार्ग बड़ा मुश्किल है।

ਪਾਪ ਕਮਾਵਦਿਆ ਤੇਰਾ ਕੋਇ ਨ ਬੇਲੀ ਰਾਮ ॥
पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥
हे पाप कमाने वाले ! दुनिया में तेरा कोई भी साथी नहीं।

ਕੋਏ ਨ ਬੇਲੀ ਹੋਇ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਪਛੋਤਾਵਹੇ ॥
कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥
यदि कोई भी तेरा साथी नहीं होगा तो अपने किये कर्मो पर सदा पश्चाताप ही करता रहेगा।

ਗੁਨ ਗੁਪਾਲ ਨ ਜਪਹਿ ਰਸਨਾ ਫਿਰਿ ਕਦਹੁ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵਹੇ ॥

गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥

तू अपनी रसना से दुनिया के मालिक गोपाल के गुणों का जाप नहीं करता यह जीवन का शुभावसर दोबारा फिर तुझे कब मिलेगा?

ਤਰਵਰ ਵਿਛੁੰਨੇ ਨਹ ਪਾਤ ਜੁੜਤੇ ਜਮ ਮਗਿ ਗਉਨੁ ਇਕੇਲੀ ॥

तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥

जिस प्रकार वृक्ष से टूटे हुए पत्ते पुनः वृक्ष से नहीं जुड़ सकते, वैसे ही जीवात्मा मृत्यु के मार्ग पर अकेले ही चल देती है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਸਦਾ ਫਿਰਤ ਦੁਹੇਲੀ ॥੧॥

बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥१॥

नानक प्रार्थना करता है कि हरि के नाम के बिना जीवात्मा सदैव ही दुःख संताप में भटकती रहती है।॥१॥

ਤੂੰ ਵਲਵੰਚ ਲੂਕਿ ਕਰਹਿ ਸਭ ਜਾਣੈ ਜਾਣੀ ਰਾਮ ॥

तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥

हे जीव ! तू छिप-छिपकर बड़े छल कपट करता रहता है किन्तु प्रभु सब कुछ जानता है।

ਲੇਖਾ ਧਰਮ ਭਇਆ ਤਿਲ ਪੀੜੇ ਘਾਣੀ ਰਾਮ ॥

लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥

जब परलोक में धर्मराज तेरे कर्मों का लेखा-जोखा करेगा तो दुष्कर्मों के कारण तुम तिलों की भाँति घानी में पिसे जाओगे।

ਕਿਰਤ ਕਮਾਣੇ ਦੁਖ ਸਹੁ ਪਰਾਣੀ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਾਇਆ ॥

किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥

हे नश्वर प्राणी ! अपने किए हुए कर्मों का दुःख रूपी दण्ड तुझे भोगना ही पड़ेगा तथा तुम अनेक योनियों के चक्र में पड़कर भटकते रहोगे।

ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਸੰਗਿ ਰਾਤਾ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥

महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥

महा मोहिनी के आकर्षण में फंसकर प्राणी अपना हीरे जैसा अनमोल मनुष्य जीवन गंवा देता है।

ਇਕਸੁ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਾਝਹੁ ਆਨ ਕਾਜ ਸਿਆਣੀ ॥

इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥

एक परमेश्वर के नाम के अतिरिक्त जीवात्मा सभी कार्यों में कुशल एवं चतुर है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਲੇਖੁ ਲਿਖਿਆ ਭਰਮਿ ਮੋਹਿ ਲੁਭਾਣੀ ॥੨॥
बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि जिनके कर्म-लेख में ऐसा लिखा हुआ है, यह दुविधा तथा सांसारिक मोह में लीन रहते हैं।॥२॥

ਬੀਚੁ ਨ ਕੋਇ ਕਰੇ ਅਕ੍ਰਿਤਘਣੁ ਵਿਛੁੜਿ ਪਇਆ ॥
बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥
कृतघ्न मनुष्य परमेश्वर से जुदा ही रहता है और कोई भी उसका मध्यस्थ नहीं होता।

ਆਏ ਖਰੇ ਕਠਿਨ ਜਮਕੰਕਰਿ ਪਕੜਿ ਲਇਆ ॥
आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥
कठिन यमदूत आकर उसे पकड़ लेते है और

ਪਕੜੇ ਚਲਾਇਆ ਅਪਣਾ ਕਮਾਇਆ ਮਹਾ ਮੋਹਨੀ ਰਾਤਿਆ ॥
पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥
उसके दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप यमदूत उसे आगे लगा लेते है, क्योंकि वह महामोहिनी में लीन रहा था।

ਗੁਨ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨ ਜਪਿਆ ਤਪਤ ਥੰਮ੍ਹ ਗਲਿ ਲਾਤਿਆ ॥
गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थम्ह गलि लातिआ ॥
जो मनुष्य गुरमुख बनकर परमात्मा का गुणगान नहीं करता, वह तपते हुए स्तम्भ से लगा दिया जाता है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਮੂਠਾ ਖੋਇ ਗਿਆਨੁ ਪਛੁਤਾਪਿਆ ॥
काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥
जीव काम, क्रोध एवं अहंकार में लीन होकर सब कुछ गंवा देता है और ज्ञान से विहीन होकर पश्चाताप करता रहता है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਸੰਜੋਗਿ ਭੂਲਾ ਹਰਿ ਜਾਪੁ ਰਸਨ ਨ ਜਾਪਿਆ ॥੩॥
बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि कर्मों के फलस्वरूप ही मनुष्य संयोग कारन प्रभु को विस्मृत करके कुमार्गगामी बना है, इसलिए यह अपनी रसना से श्रीहरि के नाम का जाप नहीं जपता ॥३॥

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ਰਾਮ ॥
तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥
है प्रभु ! तेरे सिवाय हमारा कोई भी रखवाला नहीं हैं।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਤੁਮਾਰਾ ਰਾਮ ॥
पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥
है श्रीहरि ! पतित लोगो का उद्धार करना तेरा विरद है।

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਸਰਨਿ ਸੁਆਮੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਦਇਆਲਾ ॥
पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि दइआला ॥
हे पतितों का उद्धार करने वाले स्वामी ! हे कृपानिधि ! हे दया के घर ! मैं तेरी शरण में (आया) हूँ।

ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਉਧਰੁ ਕਰਤੇ ਸਗਲ ਘਟ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥
हे जगत के रचयिता ! मेरा नश्वर जगत रूपी अन्धकूप से उद्धार करो तू सब जीवों का भरण-पोषण करने वाला है।

ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ ਕਟਿ ਮਹਾ ਬੇੜੀ ਇਕੁ ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਅਧਾਰਾ ॥
सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥
मैं तेरी शरण में आया हूँ कृपा करके मेरी सांसारिक महा बेड़ियाँ काट दीजिये और नाम का आधार प्रदान कीजिये।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਕਰ ਦੇਇ ਰਾਖਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਦੀਨ ਦਇਆਰਾ ॥੪॥
बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥४॥
नानक प्रार्थना है की है दीनदयाल गोविन्द! अपनी कृपा का हाथ रखकर मेरी रक्षा कीजिए।४ ॥

ਸੋ ਦਿਨੁ ਸਫਲੁ ਗਣਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥
वह दिन बड़ा शुभ गिना जाता है जब परमात्मा से मिलन होता है।

ਸਭਿ ਸੁਖ ਪਰਗਟਿਆ ਦੁਖ ਦੂਰਿ ਪਰਾਇਆ ਰਾਮ ॥
सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥
सभी सुख ऐश्वर्य प्रत्यक्ष हो गए है तथा दुःख मुझ से दूर हो गए हैं।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਅਨਦ ਬਿਨੋਦ ਸਦ ਹੀ ਗੁਨ ਗੁਪਾਲ ਨਿਤ ਗਾਈਐ ॥
सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥
नित्य ही जगत पालक गोपाल का गुणगान करने से सदैव सहज सुख एवं आनंद-विनोद की उपलब्धि होती है।

ਭਜੁ ਸਾਧਸੰਗੇ ਮਿਲੇ ਰੰਗੇ ਬਹੁੜਿ ਜੋਨਿ ਨ ਧਾਈਐ ॥
भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥
संतों की सभा में शामिल होकर मैं प्रभु के नाम का भजन करता हैं, जिसके फलस्वरूप मुझे दोबारा योनियों में नहीं भटकना पड़ेगा।

ਗਹਿ ਕੰਠਿ ਲਾਏ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ਆਦਿ ਅੰਕੁਰੁ ਆਇਆ ॥
गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥
परमात्मा ने सहज-स्वभाव ही मुझे अपने गले से लगा लिया है और मेरे पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का अंकुर अंकुरित हो गया है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਿਆ ਬਹੁੜਿ ਕਤਹੂ ਨ ਜਾਇਆ ॥੫॥੪॥੭॥
बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥५॥४॥७॥
नानक प्रार्थना करता है कि भगवान स्वयं ही मुझे मिल गया है और वह कदाचित मुझसे दोबारा दूर नहीं जाता ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥

ਸੁਨਹੁ ਬੇਨੰਤੀਆ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥
सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम ॥
हे मेरे स्वामी ! मेरा निवेदन सुनो,

ਕੋਟਿ ਅਪ੍ਰਾਧ ਭਰੇ ਭੀ ਤੇਰੇ ਚੇਰੇ ਰਾਮ ॥
कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥
हम जीवों में चाहे करोड़ों ही अपराध भरे हुए हैं किन्तु फिर भी हम तेरे ही सेवक हैं।

ਦੁਖ ਹਰਨ ਕਿਰਪਾ ਕਰਨ ਮੋਹਨ ਕਲਿ ਕਲੇਸਹ ਭੰਜਨਾ ॥
दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥
हे दुःखनाशक ! हे कृपा करने वाले मोहन ! हे कलह-क्लेश के नाशक !

ਸਰਨਿ ਤੇਰੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਮੇਰੀ ਸਰਬ ਮੈ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥
सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥
हे सर्वव्यापक निरंजन ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, दया करके मेरी लाज प्रतिष्ठा रखे।

ਸੁਨਤ ਪੇਖਤ ਸੰਗਿ ਸਭ ਕੈ ਪ੍ਰਭ ਨੇਰਹੂ ਤੇ ਨੇਰੇ ॥
सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥
प्रभु सभी को सुनता एवं देखता है, वह हम सभी के साथ है और निकट से अति निकट है।

ਅਰਦਾਸਿ ਨਾਨਕ ਸੁਨਿ ਸੁਆਮੀ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਘਰ ਕੇ ਚੇਰੇ ॥੧॥
अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥१॥
स्वामी ! नानक की प्रार्थना सुन लो और मुझे अपने घर के सेवक की तरह रख लो॥ १॥

ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਸਦਾ ਹਮ ਦੀਨ ਭੇਖਾਰੀ ਰਾਮ ॥
तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥
हे राम ! तू सदैव सर्वशक्तिमान है परन्तु हम जीव तो दीन भिखारी है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮਗਨੁ ਕਢਿ ਲੇਹੁ ਮੁਰਾਰੀ ਰਾਮ ॥
माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥
हे मुरारी प्रभु ! मैं माया के मोह में मग्न हूँ, दया करके मुझे माया से निकाल लीजिए।

ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਬਿਕਾਰਿ ਬਾਧਿਓ ਅਨਿਕ ਦੋਖ ਕਮਾਵਨੇ ॥
लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥
लोभ, मोह एवं विकारों में फंसकर मैंने अनेक दोष कमाए हैं।

ਅਲਿਪਤ ਬੰਧਨ ਰਹਤ ਕਰਤਾ ਕੀਆ ਅਪਨਾ ਪਾਵਨੇ ॥
अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥
जीव अपने किए हुए शुभाशुभ कर्मों का फल भोगता रहता है।

ਕਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਬਹੁ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮਤੇ ਹਾਰੀ ॥
करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥
हे पतितपावन ! मुझ पर अनुग्रह करो, क्योंकि मैं अनेक योनियों में भटकता हुआ हार गया हूँ ।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰੀ ॥੨॥
बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि मैं परमात्मा का सेवक हूँ और यह मेरी आत्मा एवं प्राणो का आधार है।॥ २ ॥

ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਵਡਾ ਮੇਰੀ ਮਤਿ ਥੋਰੀ ਰਾਮ ॥
तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥
हे राम ! तू सर्वकला समर्थ एवं बहुत बड़ा है किन्तु मेरी बुद्धि बड़ी तुछ है,

ਪਾਲਹਿ ਅਕਿਰਤਘਨਾ ਪੂਰਨ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ॥
पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥
तू कृतघ्न जीवों का भी पालन पोषण करता है और सब जीवों पर तेरी पूर्ण कृपा-दृष्टि है।

ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਅਪਾਰ ਕਰਤੇ ਮੋਹਿ ਨੀਚੁ ਕਛੂ ਨ ਜਾਨਾ ॥
अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥
हे जग के रचयिता ! तू अपार है और तेरा ज्ञान अनन्त है किन्तु मैं नीच जीव कुछ भी नहीं जानता।

ਰਤਨੁ ਤਿਆਗਿ ਸੰਗ੍ਰਹਨ ਕਉਡੀ ਪਸੂ ਨੀਚੁ ਇਆਨਾ ॥
रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥
मैं तो पशु समान विमूढ़ एवं नीच हूँ जो तेरे अमूल्य नाम-रत्न को त्याग कर कौड़ियाँ एकत्रित की हैं।

ਤਿਆਗਿ ਚਲਤੀ ਮਹਾ ਚੰਚਲਿ ਦੋਖ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜੋਰੀ ॥
तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥
हे प्रभु! मैंने दोष कर करके यह माया अर्जित की है, जो महा चंचल है और जीव को त्याग कर चली जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਮੋਰੀ ॥੩॥
नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥३॥
नानक का कथन है कि हे सर्वकला समर्थ प्रभु! मैं तेरी शरण में हूँ, दया करके मेरी लाज रखो ॥ ३ ॥

ਜਾ ਤੇ ਵੀਛੁੜਿਆ ਤਿਨਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥
जिस परमात्मा से जुदा हुआ था, उसने स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਮੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥
साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥
संतों की सभा में सम्मिलित होकर श्री हरि का गुणगान किया है |

ਗੁਣ ਗਾਇ ਗੋਵਿਦ ਸਦਾ ਨੀਕੇ ਕਲਿਆਣ ਮੈ ਪਰਗਟ ਭਏ ॥
गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥
उस जगतपालक की गुणस्तुति करने से कल्याणस्वरूप ईश्वर प्रत्यक्ष हो गया है।

ਸੇਜਾ ਸੁਹਾਵੀ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਿ ਲਏ ॥
सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥
प्रभु के संग मेरी हृदय-सेज सुहावनी हो गई है और उसने मुझे अपना बना लिया है।

ਛੋਡਿ ਚਿੰਤ ਅਚਿੰਤ ਹੋਏ ਬਹੁੜਿ ਦੂਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥
मैं चिन्ता को त्याग कर निश्चित हो गया हूँ और मैंने पुनः कोई दुःख प्राप्त नहीं किया |

ਨਾਨਕ ਦਰਸਨੁ ਪੇਖਿ ਜੀਵੇ ਗੋਵਿੰਦ ਗੁਣ ਨਿਧਿ ਗਾਇਆ ॥੪॥੫॥੮॥
नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥४॥५॥८॥
नानक कथन है की वह तो परमात्मा के दर्शन करके ही जीवित रहता है एवं गुणों के भण्डार प्रभु का यशोगान करता रहता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

ਬਿਹਾਗੜਾ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥

ਬੋਲਿ ਸੁਧਰਮੀੜਿਆ ਮੋਨਿ ਕਤ ਧਾਰੀ ਰਾਮ ॥
बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥
हे सुधर्मी मानव जीव ! बोल, क्यों मौन धारण किया हुआ है ?

ਤੂ ਨੇਤ੍ਰੀ ਦੇਖਿ ਚਲਿਆ ਮਾਇਆ ਬਿਉਹਾਰੀ ਰਾਮ ॥
तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥
अपने नेत्रों से तूने माया का व्यव्हार करने वाले देख लिए है जो सभी नाशवान है।

ਸੰਗਿ ਤੇਰੈ ਕਛੁ ਨ ਚਾਲੈ ਬਿਨਾ ਗੋਬਿੰਦ ਨਾਮਾ ॥
संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥
है मानव जीव ! गोविन्द के नाम के अतिरिक्त तेरे साथ कुछ भी नहीं जाना।

ਦੇਸ ਵੇਸ ਸੁਵਰਨ ਰੂਪਾ ਸਗਲ ਊਣੇ ਕਾਮਾ ॥
देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥
देश, वस्त्र, स्वर्ण तथा चांदी ये सभी कार्य व्यर्थ हैं।

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਨ ਸੰਗਿ ਸੋਭਾ ਹਸਤ ਘੋਰਿ ਵਿਕਾਰੀ ॥
पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥
पुत्र, पत्नी, दुनिया की शोभा जीव का साथ नहीं देते एवं हाथी-घोड़े तथा अन्य आकर्षण विकारों की तरफ प्रेरित करते रहते है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਾਧਸੰਗਮ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਸੰਸਾਰੀ ॥੧॥
बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ संसारी ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि संतो की संगति के बिना सारा जगत मिथ्या है ॥ १ ॥

ਰਾਜਨ ਕਿਉ ਸੋਇਆ ਤੂ ਨੀਦ ਭਰੇ ਜਾਗਤ ਕਤ ਨਾਹੀ ਰਾਮ ॥
राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥
हे राजन! क्यों गहरी निद्रा में सोया हुआ है और ज्ञान द्वारा क्यों जाग्रत नहीं हो रहा ?

ਮਾਇਆ ਝੂਠੁ ਰੁਦਨੁ ਕੇਤੇ ਬਿਲਲਾਹੀ ਰਾਮ ॥
माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥
धन-दौलत हेतु रुदन करना झूठ ही है और कितने ही जीव धन-हेतु बिलखते रहते हैं।

ਬਿਲਲਾਹਿ ਕੇਤੇ ਮਹਾ ਮੋਹਨ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ॥
बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥
कितने ही जीव महामोहिनी माया हेतु रोते चिल्लाते रहते हैं किन्तु हरि के अमूल्य नाम के अतिरिक्त कोई सुख नहीं।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪ ਉਪਾਵ ਥਾਕੇ ਜਹ ਭਾਵਤ ਤਹ ਜਾਹੀ ॥
सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥
मानव जीव हजारों ही चतुराइयों तथा उपाय करके थक जाता है किन्तु जहाँ ईश्वर को भाता है, वह उधर ही जाता है।

ਆਦਿ ਅੰਤੇ ਮਧਿ ਪੂਰਨ ਸਰਬਤ੍ਰ ਘਟਿ ਘਟਿ ਆਹੀ ॥
आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥
एक परमात्मा ही आदि, मध्य एवं अन्त में सर्वव्यापक है और समस्त जीवों के हृदय में यही समाया हुआ है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਸਾਧਸੰਗਮੁ ਸੇ ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਜਾਹੀ ॥੨॥
बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है जो जीव संतों की सभा में सम्मिलित होता है यह अपने शाश्वत घर प्रभु के पास आदर सहित जाता है।॥२॥

ਨਰਪਤਿ ਜਾਣਿ ਗ੍ਰਹਿਓ ਸੇਵਕ ਸਿਆਣੇ ਰਾਮ ॥
नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥
हे नरेश ! तू अपने घर के सेवकों को चतुर समझकर उनके मोह में फँस गया है।

ਸਰਪਰ ਵੀਛੁੜਣਾ ਮੋਹੇ ਪਛੁਤਾਣੇ ਰਾਮ ॥
सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥
लेकिन तेरा उनसे जुदा होना अटल है, उनसे मोह में तुझे पछताना पड़ेगा।

ਹਰਿਚੰਦਉਰੀ ਦੇਖਿ ਭੂਲਾ ਕਹਾ ਅਸਥਿਤਿ ਪਾਈਐ ॥
हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥
काल्पनिक हरिचंद राजे की नगरी को देख कर तुम कुमार्गगामी हो चुके हों और उस में तुझे स्थिरता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥
बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥
परमेश्वर के नाम के बिना सृष्टि रचना के अन्य पदार्थों में आकर्षित होने से अनमोल मानव-जन्म व्यर्थ ही जाता है।

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨ ਬੂਝੈ ਨਹ ਕਾਂਮ ਪੂਰਨ ਗਿਆਨੇ ॥
हउ हउ करत न त्रिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥
अहंकार करने से जीव की तृष्णा नहीं बुझती, न ही उसकी इच्छाओं की पूर्ति होती है और न ही उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਕੇਤਿਆ ਪਛੁਤਾਨੇ ॥੩॥
बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि परमात्मा यो नाम से वंचित होकर कितने ही जीव पछताते हुए दुनिया से चले गए हैं ॥३॥

ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੋ ਅਪਨਾ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ਰਾਮ ॥
धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥
परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझे अपना बना लिया है।

ਭੁਜਾ ਗਹਿ ਕਾਢਿ ਲੀਓ ਸਾਧੂ ਸੰਗੁ ਦੀਨਾ ਰਾਮ ॥
भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥
उसने बाँह से पकड़कर मुझे मोह-माया के कीचड़ से निकाल लिया है और साधु पुरुषों की संगति की देन प्रदान की है।

ਸਾਧਸੰਗਮਿ ਹਰਿ ਅਰਾਧੇ ਸਗਲ ਕਲਮਲ ਦੁਖ ਜਲੇ ॥
साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥
साधुओं की सभा में ईश्वर की आराधना करने से मेरे सभी पाप एवं दुख-संताप जल गए हैं।

ਮਹਾ ਧਰਮ ਸੁਦਾਨ ਕਿਰਿਆ ਸੰਗਿ ਤੇਰੈ ਸੇ ਚਲੇ ॥
महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥
प्रभु की भक्ति ही महाधर्म एवं नाम-दान ही शुभ कर्म है, जो परलोक में तेरे साथ जाएँगे।

ਰਸਨਾ ਅਰਾਧੈ ਏਕੁ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭੀਨਾ ॥
रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥
मेरी रसना एक परमेश्वर के नाम की आराधना करती है और नाम से मेरा मन एवं तन भीग गया है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਹਰਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋ ਸਰਬ ਗੁਣ ਪਰਬੀਨਾ ॥੪॥੬॥੯॥
नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥४॥६॥९॥
हे नानक ! जिस जीव को हरि अपने साथ मिला लेता है, यह सर्वगुणों में प्रवीण हो जाता है।॥४॥६॥९॥

ਬਿਹਾਗੜੇ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪
बिहागड़े की वार महला ४
बिहागड़े की वार महला ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹੋਰ ਥੈ ਸੁਖੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥
गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥
हे मानव जीव! गुरु की सेवा करने से ही सुख उपलब्ध होता है, इसलिए किसी अन्य स्थान पर सुख की तलाश मत कर।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਭੇਦੀਐ ਸਦਾ ਵਸੈ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ॥
गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥
यदि गुरु के शब्द द्वारा मन विंध जाए तो ईश्वर सर्वदा जीव के साथ रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਤਿਨਾ ਕਉ ਮਿਲੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੧॥
नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥
हे नानक ! नाम उन जीव को ही मिलता है, जिन्हे परमेशर दया-दृष्टि से देखता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਸਿਫਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖਸ ਹੈ ਜਿਸੁ ਬਖਸੈ ਸੋ ਖਰਚੈ ਖਾਇ ॥
सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥
परमेश्वर का स्तुतिगान का भण्डार उसकी एक दात (देन) है, जिस जीव को वह दया करके प्रदान करता है, वही इसे खर्चता एवं खाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਬਿਨੁ ਹਥਿ ਨ ਆਵਈ ਸਭ ਥਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥
किन्तु यह भण्डार सच्चे गुरु के बिना जीव को उपलब्ध नहीं होता और सभी इसकी उपलब्धि हेतु कर्म करते हुए हार-थक गए हैं।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖੁ ਜਗਤੁ ਧਨਹੀਣੁ ਹੈ ਅਗੈ ਭੁਖਾ ਕਿ ਖਾਇ ॥੨॥
नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥२॥
हे नानक ! स्वेच्छाचारी जगत भगवान के नाम रूपी धन से वंचित है, आगे जब परलोक में भूख लगेगी तो यह क्या खा सकेगा ? ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭ ਤੇਰੀ ਤੂ ਸਭਸ ਦਾ ਸਭ ਤੁਧੁ ਉਪਾਇਆ ॥
सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥
हे ईश्वर ! यह सारी जगत रचना तेरी ही है और तू सबका मालिक है सभी जीवो को तूने ही उत्पन्न किया है।

ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਤੂ ਵਰਤਦਾ ਤੂ ਸਭਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥
सभी प्राणियों में तू बसा हुआ है और सभी तेरी ही आराधना में क्रियाशील हैं।

ਤਿਸ ਦੀ ਤੂ ਭਗਤਿ ਥਾਇ ਪਾਇਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥
हे परमेश्वर ! जो प्राणी तेरे मन को लुभाता है, उसकी भक्ति को तू स्वीकार कर लेता है।

ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਸਭਿ ਕਰਨਿ ਤੇਰਾ ਕਰਾਇਆ ॥
जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥
जो कुछ भगवान को अच्छा लगता है, यही होता है, हे हरि ! जीव वही करते हैं जो तुम उन से करवाते हो अर्थात् सृष्टि में परमेश्वर का ही सब कुछ किया-कराया हो रहा है।

ਸਲਾਹਿਹੁ ਹਰਿ ਸਭਨਾ ਤੇ ਵਡਾ ਜੋ ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥੧॥

सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥१॥

हे मानव जीव ! उस सर्वेश्वर एवं महान् प्रभु की स्तुति करो, जो युगों-युगांतरों से ही संतजनों की लाज-प्रतिष्ठा रखता आया है ॥१॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥

सलोक मः ३ ॥

श्लोक महला ३ ॥

ਨਾਨਕ ਗਿਆਨੀ ਜਗੁ ਜੀਤਾ ਜਗਿ ਜੀਤਾ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥

नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥

हे नानक ! ज्ञानी व्यक्ति ने इस दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है किन्तु इस दुनिया ने प्रत्येक जीव-जन्तु सहित सबको विजय कर लिया है।

ਨਾਮੇ ਕਾਰਜ ਸਿਧਿ ਹੈ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਇ ॥

नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥

परमात्मा के नाम द्वारा सभी कार्य सिद्ध सफल हो जाते हैं, जो कुछ भी होता है, वह सहज ही ईश्वर की इच्छानुसार होता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਮਤਿ ਅਚਲੁ ਹੈ ਚਲਾਇ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥

गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥

गुरु की मति पर चलने से प्राणी की बुद्धि निश्चल हो जाती है और कोई भी उसे व्यर्थ नहीं कर सकता।

ਭਗਤਾ ਕਾ ਹਰਿ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰੇ ਕਾਰਜੁ ਸੁਹਾਵਾ ਹੋਇ ॥

भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥

भगवान अपने भक्तों का अंगीकार है अर्थात् उनका पक्ष निभाता रहता है तथा उनका हरेक कार्य सुहावना हो जाता है।

ਮਨਮੁਖ ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਾਇਅਨੁ ਵਿਚਿ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥
स्वेच्छाचारी जीव आदि काल से ही कुमार्गगामी हुआ है, चूंकि उसके अंदर लालच, लोभ एवं अहंकार भरा हुआ है।

झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥
झगड़ा करते हुए ही उसके रात-दिन गुजर जाते हैं और वह शब्द का चिंतन नहीं करता।

सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥
सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥
रचयिता प्रभु ने उसकी शुद्ध बुद्धि छीन ली है, सो उसके सभी वचन विकारों से भरे हुए होते हैं।

दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥
दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥
ऐसे लोगों को चाहे जितना भी दे दिया जाए, वे संतोषवान नहीं होते, क्योंकि उनके अन्तर्मन में तृष्णा तथा अत्याधिक अज्ञान का अंधकार होता है।

नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥१॥
नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥१॥
हे नानक ! इन स्वेच्छाचारी जीवों से तो संबंध विच्छेद ही भला है, जिन्हें माया-मोह से भरपूर प्रेम है ॥१॥

मः ३ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

तिन् भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥
तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥
जिन सेवकों का सतगुरु करतार रखवाला है, उन्हें भय एवं संशय क्या प्रभावित कर सकते हैं?

धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥
धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥
आदिकाल से आप ही रक्षक परमात्मा उनकी लाज बचाता रहा है।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥
वे सच्चे शब्द का चिंतन करते है और अपने प्रियतम से मिलकर सुख की अनुभूति करते है।

ਨਾਨਕ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸੇਵਿਆ ਆਪੇ ਪਰਖਣਹਾਰੁ ॥੨॥
नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥२॥
है नानक ! हमने उस सुखदाता परमात्मा की उपासना की है, जो आप ही परख करने वाला (पारखी) है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਤੇਰਿਆ ਤੂ ਸਭਨਾ ਰਾਸਿ ॥
जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥
हे ईश्वर ! यह सभी जीव-जन्तु तेरे ही हैं और तू इन सबकी पूंजी है।

ਜਿਸ ਨੋ ਤੂ ਦੇਹਿ ਤਿਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮਿਲੈ ਕੋਈ ਹੋਰੁ ਸਰੀਕੁ ਨਾਹੀ ਤੁਧੁ ਪਾਸਿ ॥
जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥
जिसे भी तू अपनी देन देता है, उसे सब कुछ मिल जाता है और तेरे बराबर का कोई प्रतिद्वंदी नहीं।

ਤੂ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਸਭਸ ਦਾ ਹਰਿ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥
हे हरि ! हमारी तुझसे ही प्रार्थना है, तू ही सब जीवों का एक दाता है।

ਜਿਸ ਦੀ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸ ਦੀ ਤੂ ਮੰਨਿ ਲੈਹਿ ਸੋ ਜਨੁ ਸਾਬਾਸਿ ॥
जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥
जिसकी प्रार्थना तुझे अच्छी लगती है, तुम उसकी प्रार्थना मंजूर कर लेते हो और ऐसा भक्त बड़ा भाग्यशाली है।

ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਚੋਜੁ ਵਰਤਦਾ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਤੁਧੁ ਪਾਸਿ ॥੨॥
सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥२॥
हे स्वामी ! हर जगह तेरा ही कौतुक हो रहा है, हम जीवों का दुःख सुख तेरे ही सम्मुख है॥ २ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੈ ਭਾਵਦੇ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰ ॥

गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥

गुरुमुख मनुष्य सच्चे परमात्मा को बहुत अच्छे लगते हैं एवं सत्य के दरबार में उन्हें सत्यवादी माना जाता है।

ਸਾਜਨ ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ਹੈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰ ॥

साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥

ऐसे सज्जन के मन में आनंद बना रहता है वे हमेशा गुरु के शब्द पर विचार करते रहते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਵਸਾਇਆ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਚਾਨਣੁ ਕੀਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥

अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥

वे अपने अन्तर्मन में शब्द को बसाते हैं, जिससे उनका दुःख दूर हो जाता है और करतार उनके भीतर ज्ञान का प्रकाश कर देता है।

ਨਾਨਕ ਰਖਣਹਾਰਾ ਰਖਸੀ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥

नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥१॥

हे नानक ! सारी दुनिया का रखवाला परमात्मा अपनी कृपा धारण करके उनकी रक्षा करता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३ ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਭੈ ਰਚਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥

गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥

गुरु की सेवा-चाकरी उसके भय में रहकर ही करनी चाहिए।

ਜੇਹਾ ਸੇਵੈ ਤੇਹੋ ਹੋਵੈ ਜੇ ਚਲੈ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ ॥

जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥

जो अपने गुरु की रज़ा में चलता है, वह वैसा ही हो जाता है, जैसी वह सेवा करता है।

ਨਾਨਕ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪਿ ਹੈ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜੀ ਜਾਇ ॥੨॥

नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥२॥

है नानक ! परमात्मा आप ही सब कुछ है और उसके अलावा दूसरा कोई आश्रय-स्थल जाने के लिए नहीं है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ਤੂਹੈ ਜਾਣਦਾ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
हे ईश्वर! अपनी बड़ाई को तू खुद ही जानता है और तुझ जैसा बड़ा दूसरा कोई नहीं।

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਹੋਰੁ ਸਰੀਕੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਆਖੀਐ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਤੂਹੈ ਹੋਈ ॥
तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥
तुझ जैसा अन्य बराबर का कोई हो तो हम कहें लेकिन तुझ जैसा बड़ा तू आप ही है।

ਜਿਨਿ ਤੂ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹੋਰੁ ਤਿਸ ਦੀ ਰੀਸ ਕਰੇ ਕਿਆ ਕੋਈ ॥
जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥
हे प्रभु! जिन्होंने भी तेरी उपासना की है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है, अन्य कौन उसकी क्या बराबरी कर सकता है ?

ਤੂ ਭੰਨਣ ਘੜਣ ਸਮਰਥੁ ਦਾਤਾਰੁ ਹਹਿ ਤੁਧੁ ਅਗੈ ਮੰਗਣ ਨੋ ਹਥ ਜੋੜਿ ਖਲੀ ਸਭ ਹੋਈ ॥
तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥
हे दाता, तू निर्माण एवं विनाश करने में सर्वशक्तिमान है और तेरे समक्ष सारी दुनिया हाथ जोड़कर माँगने हेतु खड़ी हुई है।

ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾਰੁ ਮੈ ਕੋਈ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਈ ਤੁਧੁ ਸਭਸੈ ਨੋ ਦਾਨੁ ਦਿਤਾ ਖੰਡੀ ਵਰਭੰਡੀ ਪਾਤਾਲੀ ਪੁਰਈ ਸਭ ਲੋਈ ॥੩॥
तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥३॥
तुझ जैसा दानवीर मुझे कोई नजर नहीं आता, तूने ही खण्डों, ग्रहाण्डों, पातालों, पुरियों, सभी लोकों तथा समस्त जीवों को दान प्रदान किया हुआ है॥३॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३।

ਮਨਿ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਈਆ ਸਹਜਿ ਨ ਲਗੋ ਭਾਉ ॥
मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥
हे जीव ! यदि तेरे मन में प्रभु के प्रति आस्था नहीं तो सहजावस्था में तुम उससे स्नेह नहीं करते।

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਇਓ ਮਨਹਠਿ ਕਿਆ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥
तूने शब्द के स्वाद को प्राप्त नहीं किया, फिर मन के हठ से प्रभु का क्या यशोगान करोगे?

ਨਾਨਕ ਆਇਆ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥१॥
हे नानक ! इस दुनिया में उस जीव का आगमन सफल है जो गुरुमुख बनकर सत्य में समा जाता है॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਨ ਪਛਾਣੈ ਮੂੜਾ ਅਵਰਾ ਆਖਿ ਦੁਖਾਏ ॥
आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥
विमूढ़ जीव अपने आप (अहं) की पहचान नहीं करता किन्तु अन्य लोगों को मंदे वचनों द्वारा दुखी करता रहता है।

ਮੁੰਢੈ ਦੀ ਖਸਲਤਿ ਨ ਗਈਆ ਅੰਧੇ ਵਿਛੁੜਿ ਚੋਟਾ ਖਾਏ ॥
मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥
विमूढ़ जीव का मूल स्वभाव नहीं बदला और परमात्मा से जुदा होकर वह दण्ड भोगता रहता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਭੰਨਿ ਨ ਘੜਿਓ ਰਹੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥
सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै अंकि समाए ॥
सच्चे गुरु के भय द्वारा उसने अपने स्वभाव को बदलकर सुधार नहीं किया जिससे वह प्रभु की गोद में लीन हुआ रहे।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਸਾ ਕਦੇ ਨ ਚੂਕੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥
अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥
रात-दिन उसका संदेह कदापि दूर नहीं होता और सतगुरु के शब्द के बिना दुःख पता है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਅੰਤਰਿ ਸਬਲਾ ਨਿਤ ਧੰਧਾ ਕਰਤ ਵਿਹਾਏ ॥
कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥
काम, क्रोध लोभ, इत्यादि प्रचंड विकार रहते हैं और उसकी आयु नित्य ही सांसारिक कार्य करते हुए व्यतीत हो जाती है।

ਚਰਣ ਕਰ ਦੇਖਤ ਸੁਣਿ ਥਕੇ ਦਿਹ ਮੁਕੇ ਨੇੜੈ ਆਏ ॥
चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥
उसके हाथ, पैर, नेत्र (देख देखकर) तथा कान (सुन-सुनकर) थक चुके हैं, उसके जीवन के दिन खत्म हो गए हैं और मृत्यु निकट आ गई है।

ਸਚਾ ਨਾਮੁ ਨ ਲਗੋ ਮੀਠਾ ਜਿਤੁ ਨਾਮਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਏ ॥
सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥
उसे परमात्मा का सच्चा नाम मीठा नहीं लगता जिस नाम से नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती है।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਮਰੈ ਫੁਨਿ ਜੀਵੈ ਤਾਂ ਮੋਖੰਤਰੁ ਪਾਏ ॥
जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए ॥
यदि वह जीवित ही अपने अहंत्व को नष्ट कर दे और अपने अहंत्व को मार कर नम्रता से जीवन बिताए तो वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਨ ਪਾਇਓ ਪਰਾਣੀ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿਆ ਪਾਏ ॥
धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥
यदि प्राणी को प्रभु का करम प्राप्त नहीं हुआ तो बिना करम से वह क्या प्राप्त कर सकता है?

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਮੂੜੇ ਗਤਿ ਮਤਿ ਸਬਦੇ ਪਾਏ ॥
गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥
हे विमूढ़ जीव ! तू गुरु के शब्द का मन में चिंतन कर, गुरु-शब्द द्वारा तुझे मोक्ष एवं सुमति प्राप्त हो जाएँगे।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਦ ਹੀ ਪਾਏ ਜਾਂ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੨॥
नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥२॥
हे नानक ! यदि जीव अपने अन्तर्मन से अहंकार को मिटा दे तो सच्चा गुरु तभी प्राप्त हो जाएगा ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਸ ਦੈ ਚਿਤਿ ਵਸਿਆ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਸ ਨੋ ਕਿਉ ਅੰਦੇਸਾ ਕਿਸੈ ਗਲੈ ਦਾ ਲੋੜੀਐ ॥
जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥
जिस के चित्त में मेरा स्वामी निवास कर गया है, उसे किसी बात की फ़िक्र नहीं करनी चाहिए।

ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਸਭਨਾ ਗਲਾ ਕਾ ਤਿਸ ਨੋ ਧਿਆਇਦਿਆ ਕਿਵ ਨਿਮਖ ਘੜੀ ਮੁਹੁ ਮੋੜੀਐ ॥
हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥
परमेश्वर समस्त पदार्थों का सुखदाता है, फिर उसकी आराधना करने में हम एक निमख एवं घड़ी भर भी मुँह क्यों मोड़ें?

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਤਿਸ ਨੋ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਹੋਏ ਨਿਤ ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਜਾਇ ਬਹੀਐ ਮੁਹੁ ਜੋੜੀਐ ॥
जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥
जिसने भी भगवान या ध्यान किया है, उसका सर्व कल्याण हुआ है, इसलिए हमें नित्य ही संतजनों की सभा में विराजमान होना चाहिए तथा मिलकर भगवान का गुणगान करना चाहिए।

ਸਭਿ ਦੁਖ ਭੁਖ ਰੋਗ ਗਏ ਹਰਿ ਸੇਵਕ ਕੇ ਸਭਿ ਜਨ ਕੇ ਬੰਧਨ ਤੋੜੀਐ ॥
सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥
परमेश्वर के सेवक के सारे दु:ख, भूख एवं रोग मिट गए हैं और उसके सभी बन्धन टूट गए हैं।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹੋਆ ਹਰਿ ਭਗਤੁ ਹਰਿ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਮੁਹਿ ਡਿਠੈ ਜਗਤੁ ਤਰਿਆ ਸਭੁ ਲੋੜੀਐ ॥੪॥
हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥४॥
हरि की कृपा से ही जीव हरि का भक्त बनता है तथा हरि के भक्तजनों के दर्शन मात्र से ही समूचा जगत पार हो जाता है और सब कुछ प्राप्त कर लेता है॥ ४॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਸਾ ਰਸਨਾ ਜਲਿ ਜਾਉ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਸੁਆਉ ਨ ਪਾਇਆ ॥
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥
वह रसना जल जाये जिसने हरी नाम का स्वाद प्राप्त नहीं किया।

ਨਾਨਕ ਰਸਨਾ ਸਬਦਿ ਰਸਾਇ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥੧॥

नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥१॥

हे नानक ! वही रसना हरी के नाम स्वाद का आनंद लेती है, जिसने मन में परमेश्वर को बसाया है।॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३ ॥

ਸਾ ਰਸਨਾ ਜਲਿ ਜਾਉ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਉ ਵਿਸਾਰਿਆ ॥

सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥

वह जुबान जल जाए, जिसने हरि का नाम भुला दिया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਜਪੈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿਆ ॥੨॥

नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥२॥

हे नानक ! गुरुमुख पुरुष की जीभ हरि के नाम का जाप करती है और हरि के नाम से प्रेम करती है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਸੇਵਕੁ ਭਗਤੁ ਹਰਿ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ॥

हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥

परमेश्वर आप ही मालिक, सेवक तथा भक्त है और आप ही सब कुछ करता एवं जीवों से करवाता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਲਾਏ ॥

हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥

वह आप ही देखता और आप ही प्रसन्न होता है, जैसे उसको भला लगता है, वैसे ही वह जीवों को लगाता है।

ਹਰਿ ਇਕਨਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਏ ਆਪੇ ਹਰਿ ਇਕਨਾ ਉਝੜਿ ਪਾਏ ॥

हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥

कुछ जीवों को वह स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है और कुछ जीवों को भयानक कुपथ प्रदान कर देता है।

ਹਰਿ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤਪਾਵਸੁ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਚਲਤ ਸਬਾਏ ॥
हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥
परमेश्वर सच्चा मालिक है तथा उसका न्याय भी सच्चा है, वह अपने कौतुकों की रचना करता और देखता रहता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਹੈ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੫॥
गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥५॥
गुरु की कृपा से नानक उसकी ही महिमा कहता हुआ उस सच्चे परमेश्वर के ही गुण गाता है।॥५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਦਰਵੇਸੀ ਕੋ ਜਾਣਸੀ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਦਰਵੇਸੁ ॥
दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥
कोई विरला दरवेश ही दरवेशी की महत्ता को जानता है।

ਜੇ ਘਰਿ ਘਰਿ ਹੰਢੈ ਮੰਗਦਾ ਧਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਧਿਗੁ ਵੇਸੁ ॥
जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥
यदि दरवेश बनकर कोई घर घर जाकर दान भिक्षा माँगता रहता है तो उसके जीवन एवं वेश को महा धिक्कार है।

ਜੇ ਆਸਾ ਅੰਦੇਸਾ ਤਜਿ ਰਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਿਖਿਆ ਨਾਉ ॥
जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥
यदि वह आशा एवं चिन्ता को छोड़ देता है और गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम की भिक्षा माँगता है तो,"

ਤਿਸ ਕੇ ਚਰਨ ਪਖਾਲੀਅਹਿ ਨਾਨਕ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੧॥
तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥१॥
हमें उसके चरणों को धोना चाहिए, हे नानक ! हम उस पर बलिहारी जाते है ॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਨਾਨਕ ਤਰਵਰੁ ਏਕੁ ਫਲੁ ਦੁਇ ਪੰਖੇਰੂ ਆਹਿ ॥
नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥
हे नानक ! यह दुनिया एक ऐसा पेड़ है, जिस पर मोह-माया रूपी एक फल लगा हुआ है, इस पेड़ पर गुरमुख तथा मनमुख रूपी दो पक्षी बैठे है,

ਆਵਤ ਜਾਤ ਨ ਦੀਸਹੀ ਨਾ ਪਰ ਪੰਖੀ ਤਾਹਿ ॥
आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥
जिसके पंख भी नहीं है, और आते-जाते समय नजर नहीं आते।

ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਰਸ ਭੋਗਿਆ ਸਬਦਿ ਰਹੈ ਨਿਰਬਾਣੁ ॥
बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥
मनमुख बहुरंगी रस भोगता रहता है किन्तु गुरुमुख शब्द में निलिप्त रहता है।

ਹਰਿ ਰਸਿ ਫਲਿ ਰਾਤੇ ਨਾਨਕਾ ਕਰਮਿ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੨॥
हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥२॥
हे नानक ! परमेश्वर के करन (प्रारब्ध) द्वारा जिसके ललाट पर सच्चा चिन्ह लगा है, वह हरि के नाम रस रुपी फल में लीन रहते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਆਪੇ ਹੈ ਰਾਹਕੁ ਆਪਿ ਜੰਮਾਇ ਪੀਸਾਵੈ ॥
आपे धरती आपे है राहकु आपि जमाइ पीसावै ॥
परमात्मा आप ही धरती है और आप ही उस धरती पर कृषि करने वाला कृषक है, वह आ ही अनाज को उगता है और आप ही पिसवाता है,

ਆਪਿ ਪਕਾਵੈ ਆਪਿ ਭਾਂਡੇ ਦੇਇ ਪਰੋਸੈ ਆਪੇ ਹੀ ਬਹਿ ਖਾਵੈ ॥
आपि पकावै आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥
वह आप ही अन्न को पकाता है; आप है ही बर्तन देकर उन (बर्तनों) पर भोजन परोसता है और आप ही बैठकर भोजन खाता है।

ਆਪੇ ਜਲੁ ਆਪੇ ਦੇ ਛਿੰਗਾ ਆਪੇ ਚੁਲੀ ਭਰਾਵੈ ॥
आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥
वह आप ही जल है, आप ही दांत कुरेदने वाला तिनका प्रदान करता है और आप ही चुल्ली करने को जान देता है।

ਆਪੇ ਸੰਗਤਿ ਸਦਿ ਬਹਾਲੈ ਆਪੇ ਵਿਦਾ ਕਰਾਵੈ ॥
आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥
वह आप ही मण्डली को आमंत्रित करके विराजमान और आप ही उसे विदा भी करता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾਲੁ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਤਿਸ ਨੋ ਹੁਕਮੁ ਮਨਾਵੈ ॥੬॥
जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥६॥
जिस जीव पर परमेश्वर आप कृपालु होता है, उसी से अपना हुक्म मनवाता है।६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਭਿ ਬੰਧਨਾ ਪਾਪ ਪੁੰਨ ਸਨਬੰਧੁ ॥
करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥
सभी कर्म-धर्म बन्धन ही हैं चूंकि इनका संबंध पाप-पुण्य से बना हुआ है।

ਮਮਤਾ ਮੋਹੁ ਸੁ ਬੰਧਨਾ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਸੁ ਧੰਧੁ ॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥
ममता एवं मोह भी बन्धन रूप ही हैं तथा पुत्र एवं पत्नी के स्नेह में किए हुए धन्धे संकट में डाल देते हैं।

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਜੇਵਰੀ ਮਾਇਆ ਕਾ ਸਨਬੰਧੁ ॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥
जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही सांसारिक मोह-माया के संबंध की फाँसी दिखाई देती है।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਵਰਤਣਿ ਵਰਤੈ ਅੰਧੁ ॥੧॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥१॥
हे नानक ! एक सच्चे नाम के सिवाय ज्ञानहीन दुनिया माया के अंधे व्यवहारों में क्रियाशील हैं ॥ १ ॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४ ॥

ਅੰਧੇ ਚਾਨਣੁ ਤਾ ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਰਜਾਇ ॥
अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥
ज्ञान से अंधे जीव को तभी ज्ञान का उजाला प्राप्त होता है, यदि परमात्मा की रज़ा अनुसार सच्चा गुरु मिल जाए।

ਬੰਧਨ ਤੋੜੈ ਸਚਿ ਵਸੈ ਅਗਿਆਨੁ ਅਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥
बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥
वह गुरु के सान्निध्य में रहकर बंधनों को तोड़ देता है और सत्य में वास करता है, जिससे उसका अज्ञान का अँधेरा मिट जाता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਦੇਖੈ ਤਿਸੈ ਕਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਤਨੁ ਸਾਜਿ ॥
सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥
जिस परमात्मा ने तन का निर्माण करके उत्पत्ति की है, वह उसी का सब कुछ देखता है।

ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਕਰਤਾਰ ਕੀ ਕਰਤਾ ਰਾਖੈ ਲਾਜ ॥੨॥
नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥२॥
नानक का कथन है कि वह करतार की शरण में है और कर्ता प्रभु ही उसकी लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਦਹੁ ਆਪੇ ਥਾਟੁ ਕੀਆ ਬਹਿ ਕਰਤੈ ਤਦਹੁ ਪੁਛਿ ਨ ਸੇਵਕੁ ਬੀਆ ॥
जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥
जब कर्ता-परमेश्वर ने स्वयं ही विराजमान होकर सृष्टि-रचना की तो उसने अपने किसी दूसरे सेवक से इस संदर्भ में विचार-विमर्श नहीं किया।

ਤਦਹੁ ਕਿਆ ਕੋ ਲੇਵੈ ਕਿਆ ਕੋ ਦੇਵੈ ਜਾਂ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕੀਆ ॥
तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ ॥
तब कोई क्या ले सकता है और कोई क्या दे सकता है, जब उसने कोई दूसरा अपने जैसा बनाया ही नहीं।

ਫਿਰਿ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਕਰਤੈ ਦਾਨੁ ਸਭਨਾ ਕਉ ਦੀਆ ॥
फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥
फिर परमेश्वर ने स्वयं ही जगत रचना करके सभी जीवो को दान (सर्वस्व) प्रदान किया।

ਆਪੇ ਸੇਵ ਬਣਾਈਅਨੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆ ॥
आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अम्रितु पीआ ॥
उसने स्वयं ही गुरु के द्वारा हमें अपनी सेवा-भक्ति का निर्देश किया और स्वयं ही नामामृत का पान किया।

ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਕਰੈ ਸੁ ਥੀਆ ॥੭॥
आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥७॥
निरंकार परमात्मा स्वयं ही अपने आपको जगत रूपी आकार में प्रगट करता है, जो वह स्वयं करता है, वही सृष्टि में हो रहा है ॥७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੇਵਹਿ ਸਦ ਸਾਚਾ ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਜਿ ਪਿਆਰਿ ॥
गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥
गुरुमुख मनुष्य हमेशा सच्चे प्रभु की उपासना करते रहते हैं और रात-दिन सहजावस्था में उसकी प्रेमा-भक्ति में मग्न रहते है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਸਾਚੇ ਅਰਧਿ ਉਰਧਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥
वे सत्यस्वरूप परमात्मा का सदा आनंद में यशोगान करते हैं और पृथ्वी-आकाश में सर्वव्यापक प्रभु को अपने हृदय में धारण करते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਵਸਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ ਕਰਤਾਰਿ ॥
अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥
करतार ने प्रारम्भ से ही उनकी ऐसी किस्मत लिख दी है कि उनकी अन्तरात्मा में प्रियतम प्रभु ही निवास करता है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਆਪੇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥
नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा आप ही कृपा धारण करके उन्हें अपने साथ मिला लेता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

ਕਹਿਐ ਕਥਿਐ ਨ ਪਾਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥
कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥
कहने एवं वर्णन करने से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती, उसकी प्राप्ति हेतु हमें रात-दिन हमेशा ही उसका गुणगान करना चाहिए।

ਵਿਣੁ ਕਰਮੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਭਉਕਿ ਮੁਏ ਬਿਲਲਾਇ ॥
विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥
भाग्य के बिना किसी को भी वह प्राप्त नहीं होता और प्रभु से वंचित प्राणी रोते-चिल्लाते हुए मर गए हैं।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਭਿਜੈ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥
जब गुरु के शब्द द्वारा मन-तन भीग जाता है तो यह स्वयं ही आकर मन में निवास कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥२॥
हे नानक ! यदि परमात्मा की दया-दृष्टि हो तो वो तभी जीव को मिलता है और आप ही उसे अपने साथ मिला लेता है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸਭਿ ਸਾਸਤ ਆਪਿ ਕਥੈ ਆਪਿ ਭੀਜੈ ॥
आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥
परमात्मा स्वयं ही वेद, पुराण तथा समस्त शास्त्रों का रचयिता है, वह स्वयं ही उनकी कथा करता और स्वयं ही सुनकर प्रसन्न होता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਬਹਿ ਪੂਜੇ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਪਰਪੰਚੁ ਕਰੀਜੈ ॥
आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥
वह स्वयं ही बैठकर उपासना करता है और स्वयं ही संसार की रचना करके उसका प्रसार करता है।

ਆਪਿ ਪਰਵਿਰਤਿ ਆਪਿ ਨਿਰਵਿਰਤੀ ਆਪੇ ਅਕਥੁ ਕਥੀਜੈ ॥
आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥
वह आप ही जगत के परपंच में क्रियाशील है और आप ही उससे निर्लिप्त भी रहता है, वह आप ही अकथनीय को कथन है।

ਆਪੇ ਪੁੰਨੁ ਸਭੁ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਆਪਿ ਅਲਿਪਤੁ ਵਰਤੀਜੈ ॥
आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥
वह खुद ही पुण्य है और सभी पुण्य-कर्म आप ही करवाता है, वह आप ही अलिप्त रहकर विचरण करता है।

ਆਪੇ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦੇਵੈ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰੀਜੈ ॥੮॥
आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥८॥
वह आप ही दुनिया को दुःख तथा सुख प्रदान करता है और आप ही सब पर मेहर करता है॥ ८ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਸੇਖਾ ਅੰਦਰਹੁ ਜੋਰੁ ਛਡਿ ਤੂ ਭਉ ਕਰਿ ਝਲੁ ਗਵਾਇ ॥
सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥
हे शेख ! तू अपने अन्तर्मन में से हठ छोड़ दे तथा अपना उन्मादपन मिटा कर गुरु-भय में निवास कर।

ਗੁਰ ਕੈ ਭੈ ਕੇਤੇ ਨਿਸਤਰੇ ਭੈ ਵਿਚਿ ਨਿਰਭਉ ਪਾਇ ॥
गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥
कितने ही मनुष्य गुरु के भय में जगत सागर से मुक्त हो गए हैं तथा गुरु भय में ही निरभउ (भय रहित) प्रभु को प्राप्त कर लिया है।

ਮਨੁ ਕਠੋਰੁ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਤੂੰ ਸਾਂਤਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ ॥
तू अपने कठोर मन को गुरु शब्द द्वारा भेद ले, इस प्रकार तेरे मन में शांति आकर निवास करेगी।

ਸਾਂਤੀ ਵਿਚਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਸਾ ਖਸਮੁ ਪਾਏ ਥਾਇ ॥
सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥
शांति में किए गए सांसारिक कार्यों को मालिक स्वीकार कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਿ ਕ੍ਰੋਧਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਪੁਛਹੁ ਗਿਆਨੀ ਜਾਇ ॥੧॥

नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥१॥

है नानक ! कामवासना एवं क्रोध द्वारा किसी भी जीव को परमेश्वर की प्राप्ति नहीं हुई, चाहे इस संदर्भ में किसी ज्ञानी महापुरुष से जाकर पूछ लो॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਹੈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥
स्वेच्छाचारी मनुष्य माया के मोह में लीन है, जिसके कारण वह परमात्मा के नाम से प्रेम नहीं लगाता।

ਕੂੜੁ ਕਮਾਵੈ ਕੂੜੁ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਕੂੜੁ ਕਰੇ ਆਹਾਰੁ ॥
कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥
वह झूठ ही कमाता है और झूठ ही संग्रह करता रहता है तथा झूठ को ही अपना भोजन बनाता है।

ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਧਨੁ ਸੰਚਿ ਮਰਹਿ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਭੁ ਛਾਰੁ ॥
बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥
यह विषैली माया-धन को संचित करता हुआ प्राण त्याग देता है और अंततः यह सब कुछ भस्म बन जाता है।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਸੁਚ ਸੰਜਮ ਕਰਹਿ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਵਿਕਾਰੁ ॥
करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥
वह आडम्बर के तौर पर कर्म-धर्म, पवित्रता तथा आत्म-संयम के कार्य करता रहता है किन्तु उसके मन में लोभ तथा विकार मौजूद होते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਿ ਮਨਮੁਖੁ ਕਮਾਵੈ ਸੁ ਥਾਇ ਨਾ ਪਵੈ ਦਰਗਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੨॥
नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥२॥
हे नानक ! जो कुछ भी स्वेच्छायारी मनुष्य करता है, वह स्वीकृत नहीं होता और परमात्मा के दरबार में ख्वार (नाश) ही होता है ।२।

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਖਾਣੀ ਆਪੇ ਬਾਣੀ ਆਪੇ ਖੰਡ ਵਰਭੰਡ ਕਰੇ ॥
आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥
हे ईश्वर ! तू आप ही चारों उत्पति के स्रोत है, आप ही वाणी है और आप ही खण्ड-ब्रह्माण्ड रचे हैं।

ਆਪਿ ਸਮੁੰਦੁ ਆਪਿ ਹੈ ਸਾਗਰੁ ਆਪੇ ਹੀ ਵਿਚਿ ਰਤਨ ਧਰੇ ॥
आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥
तू आप ही समुद्र है और आप ही सागर है तथा आप ही उसमें हीरे-मोती इत्यादि रत्न रखे हैं।

ਆਪਿ ਲਹਾਏ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪਾ ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰੇ ਹਰੇ ॥
आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥
वह जिस व्यक्ति पर भी कृपा धारण करके गुरुमुख बना देता है, उसे आप ही हीरे मोती इत्यादि रत्न दिलवा देता है

ਆਪੇ ਭਉਜਲੁ ਆਪਿ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਖੇਵਟੁ ਆਪਿ ਤਰੇ ॥
आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥
ईश्वर आप ही भयानक सागर है, आप ही जहाज है, आप ही खेवट और आप ही उससे पार होता है।

ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਤੁਝੈ ਸਰੇ ॥੯॥
आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥९॥
विश्व का रचयिता आप ही सब कुछ करता एवं जीवों से करवाता है, हे कर्ता ! तुझ जैसा बड़ा कोई भी नहीं ॥ ६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਫਲ ਹੈ ਜੇ ਕੋ ਕਰੇ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥
सतिगुरु की सेवा तभी सफल है, यदि कोई व्यक्ति इसे मन लगाकर श्रद्धा से करे।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥
इस प्रकार उसे परमात्मा का नाम रुपी बहुमूल्य धन प्राप्त हो जाता है और अचिंत ही परमात्मा उसके मन में आकर निवास कर लेता है।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖੁ ਕਟੀਐ ਹਉਮੈ ਮਮਤਾ ਜਾਇ ॥
जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥
उसके जन्म - मरण की पीड़ा नष्ट ह जाती है और अहंकार तथा ममता दूर हो जाती है।

ਉਤਮ ਪਦਵੀ ਪਾਈਐ ਸਚੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥
वह उत्तम पदवी प्राप्त कर लेता है और सत्य में ही समाया रहता है।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥੧॥
नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥१॥
हे नानक ! जिनके पूर्व के शुभकर्मों द्वारा भाग्य लिखा होता है, उन्हें सतिगुरु आकर मिल जाता है॥ १ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹੈ ਕਲਿਜੁਗ ਬੋਹਿਥੁ ਹੋਇ ॥
नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥
सतगुरु ही परमात्मा के नाम में लीन है, जो इस कलयुग में जीवो को पार कराने वाला एक जहाज है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਪਾਰਿ ਪਵੈ ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥
जो मनुष्य गुरुमुख बन जाता है एवं जिसके हृदय में सच्चा परमात्मा निवास करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ਨਾਮੁ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਨਾਮੇ ਹੀ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥
वही उसके नाम को हृदय में संभालता है और नाम को ही संग्रह करता है और परमात्मा के नाम द्वारा ही उसका मान - सम्मान होता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥२॥
हे नानक ! जिन्होंने सतिगुरु को पाया है, उन्हें प्रभु-कृपा से ही प्राप्त हुआ है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਪਾਰਸੁ ਆਪਿ ਧਾਤੁ ਹੈ ਆਪਿ ਕੀਤੋਨੁ ਕੰਚਨੁ ॥
आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥
परमात्मा स्वयं ही पारस है, स्वयं ही धातु है और वह स्वयं ही धातु को स्वर्ण बना देता है।

ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਸੇਵਕੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਹੀ ਪਾਪ ਖੰਡਨੁ ॥
आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥
वह स्वयं ही मालिक है स्वयं ही सेवक है और स्वयं ही पाप नाश करने वाला है।

ਆਪੇ ਸਭਿ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਸੁਆਮੀ ਆਪੇ ਹੀ ਸਭੁ ਅੰਜਨੁ ॥
आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥
वह स्वयं ही सबके हृदयो में व्याप्त होकर पदार्थो का भोग करने वाला मालिक है और और स्वयं ही माया रूप है।

ਆਪਿ ਬਿਬੇਕੁ ਆਪਿ ਸਭੁ ਬੇਤਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭੰਜਨੁ ॥
आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥
वह स्वयं ही विवेक है, स्वयं ही वेता है और स्वयं गुरुमुख होकर मोह-माया के बन्धन नाश करता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਾਲਾਹਿ ਨ ਰਜੈ ਤੁਧੁ ਕਰਤੇ ਤੂ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਵਡਨੁ ॥੧੦॥
जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥१०॥
हे जग के रचियता हरी ! नानक तेरा स्तुतिगान करता हुआ तृप्त नहीं होता, तू सबसे बड़ा सुखदाता है॥ १०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜੀਅ ਕੇ ਬੰਧਨਾ ਜੇਤੇ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥
सतगुरु की सेवा-चाकरी के बिना मानव जीव जितने भी कर्म करता है, वे उसके लिए बन्धन रूप हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਠਵਰ ਨ ਪਾਵਹੀ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥
बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जमहि आवहि जाहि ॥
गुरु की चाकरी के बिना मनुष्य को कहीं भी सुखद स्थान प्राप्त नहीं होता, जिसके कारन वह मरता और जन्मता रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਫਿਕਾ ਬੋਲਣਾ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥
गुरु के सेवा के बिना मनुष्य रसहीन फीका बोलता है, जिसके कारन परमात्मा का नाम आकर उसके मन में निवास नहीं करता।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਉਠਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥
नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु की सेवा-चाकरी के बिना मनुष्य काला मुँह करवाकर अर्थात् बेइज्जत होकर जगत से चल देता है और यमपुरी में बँधकर दण्ड भोगता रहता है| १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

ਇਕਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰਹਿ ਚਾਕਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥
कुछ लोग सतिगुरु की सेवा-चाकरी करते हैं और परमेश्वर के नाम से प्रेम लगाते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰਨਿ ਆਪਣਾ ਕੁਲ ਕਾ ਕਰਨਿ ਉਧਾਰੁ ॥੨॥
नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥२॥
हे नानक ! वे अपने अमूल्य जीवन को सांवर लेते हैं और अपनी समस्त वंशावलि का भी उद्धार पर लेते हैं। २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਚਾਟਸਾਲ ਆਪਿ ਹੈ ਪਾਧਾ ਆਪੇ ਚਾਟੜੇ ਪੜਣ ਕਉ ਆਣੇ ॥
आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥
परमात्मा स्वयं ही विद्या का मन्दिर है, स्वयं ही विद्या देने वाला शिक्षक है और स्वयं ही पड़ने हेतु विद्यार्थियों को लाता है।

ਆਪੇ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਬਾਲਕ ਕਰੇ ਸਿਆਣੇ ॥
आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥
वह आप ही पिता है और आप ही माता है वह स्वयं ही बालकों को विद्वान बना देता है।

ਇਕ ਥੈ ਪੜਿ ਬੁਝੈ ਸਭੁ ਆਪੇ ਇਕ ਥੈ ਆਪੇ ਕਰੇ ਇਆਣੇ ॥

इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥

एक तरफ वह आप ही सब कुछ पढ़ता और बोध करता है किन्तु दूसरी तरफ वह आप ही जीवों को नासमझ बना देता है।

ਇਕਨਾ ਅੰਦਰਿ ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਏ ਜਾ ਆਪਿ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਸਚੇ ਭਾਣੇ ॥

इकना अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥

हे सच्चे परमात्मा ! कुछ जीव जो आप तेरे मन को अच्छे लगते हैं, उन्हें अपने दरबार में आमंत्रित कर लेते हो।

ਜਿਨਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਸੇ ਜਨ ਸਚੀ ਦਰਗਹਿ ਜਾਣੇ ॥੧੧॥
जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥११॥
जिन लोगों को तुम गुरुमुख की बड़ाई प्रदान करते हो, वे तेरे सच्चे दरबार में विख्यात हो जाते हैं।॥११॥

ਸਲੋਕੁ ਮਰਦਾਨਾ ੧ ॥
सलोकु मरदाना १ ॥
श्लोक मरदाना १॥

ਕਲਿ ਕਲਵਾਲੀ ਕਾਮੁ ਮਦੁ ਮਨੂਆ ਪੀਵਣਹਾਰੁ ॥
कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥
यह कलियुग कामवासना की मदिरा से भरा हुआ मदिरालय है, जिसे मन पीने वाला है।

ਕ੍ਰੋਧ ਕਟੋਰੀ ਮੋਹਿ ਭਰੀ ਪੀਲਾਵਾ ਅਹੰਕਾਰੁ ॥
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥
क्रोध का कटोरा मोह से भरा हुआ है, जिसे अहंकार पिलाने वाला है।

ਮਜਲਸ ਕੂੜੇ ਲਬ ਕੀ ਪੀ ਪੀ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥
झूठे लोभ की महफिल में कामवासना की मदिरा पी-पीकर जीव बर्बाद हो रहा है।

ਕਰਣੀ ਲਾਹਣਿ ਸਤੁ ਗੁੜੁ ਸਚੁ ਸਰਾ ਕਰਿ ਸਾਰੁ ॥
करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥
इसलिए हे जीव ! शुभ कर्म तेरा पात्र और सत्य तेरा गुड़, इससे तू सत्यनाम की श्रेष्ठ मदिरा बना।

ਗੁਣ ਮੰਡੇ ਕਰਿ ਸੀਲੁ ਘਿਉ ਸਰਮੁ ਮਾਸੁ ਆਹਾਰੁ ॥
गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥
गुणों को अपनी रोटी, शीलता को अपना घी तथा लज्जा को खाने हेतु अपना मांसाहार बना।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਨਾਨਕਾ ਖਾਧੈ ਜਾਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥੧॥
गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥१॥
हे नानक ! ऐसा भोजन गुरुमुख बनने से ही प्राप्त होता है, जिसे खाने से सभी पाप-विकार मिट जाते हैं ॥१॥

ਮਰਦਾਨਾ ੧ ॥
मरदाना १ ॥
मरदाना १ ॥

ਕਾਇਆ ਲਾਹਣਿ ਆਪੁ ਮਦੁ ਮਜਲਸ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਧਾਤੁ ॥
काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥
मनुष्य का तन एक घड़ा है, अहंत्व मदिरा है और तृष्णा की एक महफ़िल है।

ਮਨਸਾ ਕਟੋਰੀ ਕੂੜਿ ਭਰੀ ਪੀਲਾਏ ਜਮਕਾਲੁ ॥
मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥
मन के मनोरथों - वासनाओ को कटोरी झूठ से भरपूर है और यमदूत कटोरी पिलाने वाला है।

ਇਤੁ ਮਦਿ ਪੀਤੈ ਨਾਨਕਾ ਬਹੁਤੇ ਖਟੀਅਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥
इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥
हे नानक ! इस मदिरा को पीने से जीव अत्याधिक पाप-विकार कमा लेता है।

ਗਿਆਨੁ ਗੁੜੁ ਸਾਲਾਹ ਮੰਡੇ ਭਉ ਮਾਸੁ ਆਹਾਰੁ ॥
गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥
ब्रह्म-ज्ञान को अपना गुड़, प्रभु-भजन को अपनी रोटी तथा प्रभु-भय को खाने के लिए अपना मांसाहार बना।

ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਭੋਜਨੁ ਸਚੁ ਹੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥੨॥
नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥२॥
हे नानक ! यह भोजन ही सत्य है, जिससे सत्यनाम ही मनुष्य के जीवन का आधार बनता है॥ २ ॥

ਕਾਂਯਾਂ ਲਾਹਣਿ ਆਪੁ ਮਦੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤਿਸ ਕੀ ਧਾਰ ॥
कांयां लाहणि आपु मदु अम्रित तिस की धार ॥
यदि यह शरीर घड़ा हो, आत्म-ज्ञान की मदिरा हो तो नामामृत उसकी धारा बन जाती है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਮੇਲਾਪੁ ਹੋਇ ਲਿਵ ਕਟੋਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਰੀ ਪੀ ਪੀ ਕਟਹਿ ਬਿਕਾਰ ॥੩॥
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥३॥
यदि सत्संगति से मिलाप हो, प्रभु में सुरति की कटोरी जो नामामृत से भरी हुई है, उसे पी-पीकर पाप-विकार मिट जाते हैं।॥३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਸੁਰਿ ਨਰ ਗਣ ਗੰਧਰਬਾ ਆਪੇ ਖਟ ਦਰਸਨ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥
आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥
परमात्मा स्वयं ही देवता, मानव, गण तथा गंधर्व है और स्वयं ही षड्दर्शन की बड़ी है।

ਆਪੇ ਸਿਵ ਸੰਕਰ ਮਹੇਸਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥
आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥
वह स्वयं ही शिवशंकर महेश है और स्वयं ही गुरमुख बनकर अकथनीय कहानी वर्णन करता है

ਆਪੇ ਜੋਗੀ ਆਪੇ ਭੋਗੀ ਆਪੇ ਸੰਨਿਆਸੀ ਫਿਰੈ ਬਿਬਾਣੀ ॥
आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥
वह स्वयं योगी स्वयं ही भोगी तथा स्वयं ही सन्यासी बनकर वनो में भ्रमण करता है।

ਆਪੈ ਨਾਲਿ ਗੋਸਟਿ ਆਪਿ ਉਪਦੇਸੈ ਆਪੇ ਸੁਘੜੁ ਸਰੂਪੁ ਸਿਆਣੀ ॥
आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥
परमात्मा अपने साथ ही ज्ञान-गोष्ठी करता है, स्वयं ही उपदेश देता रहता है और स्वयं ही सुघड़ सुन्दर स्वरूप एवं विद्वान है।

ਆਪਣਾ ਚੋਜੁ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਹੈ ਜਾਣੀ ॥੧੨॥
आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥१२॥
वह स्वयं ही अपनी जगत लीला रचकर स्वयं ही देखता रहता है और स्वयं ही सभी जीवों का ज्ञाता है।॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਏਹਾ ਸੰਧਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਚਿਤਿ ਆਵੈ ॥
एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥
वही संध्या की प्रार्थना स्वीकार है, जिस द्वारा मेरा हरि-प्रभु मन में याद आता हो।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਊਪਜੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਵੈ ॥
हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥
इससे परमेश्वर के साथ प्रीति उत्पन्न होती है और यह माया के मोह को नष्ट कर देती है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਦੁਬਿਧਾ ਮਰੈ ਮਨੂਆ ਅਸਥਿਰੁ ਸੰਧਿਆ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥
गुरु की कृपा से दुविधा का नाश हो जाता है, मन स्थिर हो जाता है और प्रभु-स्मरण को मनुष्य अपनी संध्या की प्रार्थना बना लेता है।

ਨਾਨਕ ਸੰਧਿਆ ਕਰੈ ਮਨਮੁਖੀ ਜੀਉ ਨ ਟਿਕੈ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥੧॥

नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जमै होइ खुआरु ॥१॥

हे नानक! जो स्वेछाचारी मनुष्य संध्या की प्रार्थना तो करते हैं,पर उनका चित्त स्थिर नहीं होता जिससे वे जन्म मरण के चक्र में फंसकर विनिष्ट होते रहते है ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३ ॥

ਪ੍ਰਿਉ ਪ੍ਰਿਉ ਕਰਤੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੀ ਮੇਰੀ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਇ ॥

प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥

प्रिय प्रिय पुकारती हुई में समूचे जगत में भ्रमण करती रही किन्तु मेरी प्यास नहीं बुझी।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਮੇਰੀ ਪਿਆਸ ਗਈ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਘਰਿ ਆਇ ॥੨॥

नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥२॥

हे नानक ! सतिगुरु को मिलकर मेरी प्यास बुझ गई है और अपने प्रिय-प्रभु को हृदय रूपी घर में ही पा लिया है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਆਪੇ ਤੰਤੁ ਪਰਮ ਤੰਤੁ ਸਭੁ ਆਪੇ ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਦਾਸੁ ਭਇਆ ॥

आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥

परमात्मा आप ही तत्य है और आप ही समस्त तत्वों का परम तत्त्व है, वह स्वयं ही मालिक है और स्वयं ही सेवक है।

ਆਪੇ ਦਸ ਅਠ ਵਰਨ ਉਪਾਇਅਨੁ ਆਪਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਆਪਿ ਰਾਜੁ ਲਇਆ ॥

आपे दस अठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥

उसने स्वयं ही संसार के अठारह वर्गों को उत्पन्न किया है और स्वयं ही रचयिता ब्रह्मा है, जो अपनी हुकूमत चला रहा है।

ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਕਰੇ ਦਇਆ ॥

आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥

यह खुद ही सबको मारता है, खुद ही मुक्त करता है और खुद ही दयावृष्टि धारण करके क्षमा प्रदान करता है।

ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਨ ਭੁਲੈ ਕਬ ਹੀ ਸਭੁ ਸਚੁ ਤਪਾਵਸੁ ਸਚੁ ਥਿਆ ॥

आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥

वह अचूक है और कदापि भूलता नहीं, सच्चे प्रभु का न्याय सम्पूर्णतया सत्य है तथा वह सत्य में ही विद्यमान है।

ਆਪੇ ਜਿਨਾ ਬੁਝਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਿਨ ਅੰਦਰਹੁ ਦੂਜਾ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ॥੧੩॥

आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥१३॥

जिन गुरुमुखों को वह स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, उनके अन्तर्मन से दुविधा एवं भ्रम निवृत्त हो जाते हैं।॥१३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੫ ॥

सलोकु मः ५ ॥

श्लोक महला ५ ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਸਿਮਰਹਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਤੈ ਤਨਿ ਉਡੈ ਖੇਹ ॥

हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥

जो संतों की सभा में परमात्मा का नाम याद नहीं करते, ये शरीर धूलि की भांति उड़ जाते है।

ਜਿਨਿ ਕੀਤੀ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣਈ ਨਾਨਕ ਫਿਟੁ ਅਲੂਣੀ ਦੇਹ ॥੧॥

जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह ॥१॥

हे नानक ! उस रसहीन देह को धिक्कार है, जो उस परमात्मा को नहीं जानती, जिसने उसे बनाया है ॥१॥

ਮਃ ੫ ॥
मः ५ ॥
महला ५॥

ਘਟਿ ਵਸਹਿ ਚਰਣਾਰਬਿੰਦ ਰਸਨਾ ਜਪੈ ਗੁਪਾਲ ॥
घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥
जिस मानव के अन्तर में भगवान के सुन्दर चरण कमल बसते हैं और उसकी जीभ गोपाल को जपती है।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ ਤਿਸੁ ਦੇਹੀ ਕਉ ਪਾਲਿ ॥੨॥
नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥२॥
हे नानक ! उस प्रभु को ही याद करना चाहिए, जो उस मानव देहि का पोषण करता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਕਰੇ ਇਸਨਾਨੁ ॥
आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥
सृष्टि पा रचयिता परमेश्वर आप ही अड़सठ तीर्थ है तथा आप ही उसमें स्नान करता है।

ਆਪੇ ਸੰਜਮਿ ਵਰਤੈ ਸ੍ਵਾਮੀ ਆਪਿ ਜਪਾਇਹਿ ਨਾਮੁ ॥
आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥
दुनिया का स्वामी आप ही संयम में क्रियाशील है और आप ही जीवों से अपना नाम जपाता है।

ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਭਉ ਖੰਡਨੁ ਆਪਿ ਕਰੈ ਸਭੁ ਦਾਨੁ ॥
आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥
भय नाशक परमात्मा आप ही दयालु होता है और आप ही सब कुछ दान करता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋ ਸਦ ਹੀ ਦਰਗਹਿ ਪਾਏ ਮਾਨੁ ॥
जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥
जिसे गुरु के द्वारा आप बोध प्रदान करता है, वह सदा उसके दरबार में शोभा प्राप्त करता है।

ਜਿਸ ਦੀ ਪੈਜ ਰਖੈ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਸਚਾ ਹਰਿ ਜਾਨੁ ॥੧੪॥
जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥१४॥
जिसकी लाज प्रतिष्ठा हरि-स्वामी रखता है, वह सच्चे परमेश्वर को ही जानता है ॥ १४ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟੇ ਜਗੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਅੰਧੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥
हे नानक ! सच्चे गुरु से भेंट के बिना यह जगत अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है और अंधे कर्म (दुष्कर्म) कर रहा है।

ਸਬਦੈ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਵਈ ਜਿਤੁ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥
यह जगत (उस) शब्द में चित नहीं लगाता, जिससे सुख मन में आकर निवास करता है।

ਤਾਮਸਿ ਲਗਾ ਸਦਾ ਫਿਰੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਜਲਤੁ ਬਿਹਾਇ ॥
तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥
यह जगत हमेशा ही क्रोध में लीन होकर भटकता है और इसके दिन-रात क्रोध में जलते हुए बीत जाते हैं।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥
जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥१॥
जो कुछ भी परमात्मा को अच्छा लगता है, वही होता है और इस संदर्भ में कुछ भी कहा नहीं जा सकता ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਫੁਰਮਾਇਆ ਕਾਰੀ ਏਹ ਕਰੇਹੁ ॥
सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥
सच्चे गुरु ने मुझे यह कार्य करने का फरमान किया है कि

ਗੁਰੂ ਦੁਆਰੈ ਹੋਇ ਕੈ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਮਾਲੇਹੁ ॥
गुरू दुआरै होइ कै साहिबु समालेहु ॥
गुरु के द्वार पर मालिक का नाम याद करते रहो।

ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਹੈ ਭਰਮੈ ਕੇ ਛਉੜ ਕਟਿ ਕੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਧਰੇਹੁ ॥

साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥

मालिक हमेशा करीब है अतः भ्रम के पर्दे को फाड़कर अंतर में उसकी ज्योति का ध्यान धारण करो।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹੈ ਦਾਰੂ ਏਹੁ ਲਾਏਹੁ ॥

हरि का नामु अम्रितु है दारू एहु लाएहु ॥

हरि का नाम अमृत है, यह औषधि द्वदय में धारण करो।

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਚਿਤਿ ਰਖਹੁ ਸੰਜਮੁ ਸਚਾ ਨੇਹੁ ॥

सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥

सच्चे गुरु की रज़ा अपने चित्त में धारण करो और सच्चे प्रेम को अपना संयम बनाओ।

ਨਾਨਕ ਐਥੈ ਸੁਖੈ ਅੰਦਰਿ ਰਖਸੀ ਅਗੈ ਹਰਿ ਸਿਉ ਕੇਲ ਕਰੇਹੁ ॥੨॥

नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥२॥

हे नानक ! इहलोक में सतगुरु तुझे सुखपूर्वक रखेगा और परलोक में परमेश्वर के साथ आनंद करो ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਆਪੇ ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਬਣਸਪਤਿ ਆਪੇ ਹੀ ਫਲ ਲਾਏ ॥

आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥

परमात्मा आप ही अठारह भार वनस्पति है और आप ही इसे फल लगाता है।

ਆਪੇ ਮਾਲੀ ਆਪਿ ਸਭੁ ਸਿੰਚੈ ਆਪੇ ਹੀ ਮੁਹਿ ਪਾਏ ॥

आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥

वह आप ही सृष्टि रूपी बाग का बागवां है, आप ही सभी पौधों को सींचता है और आप ही उनके फल को मुँह में डालता है।

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਆਪੇ ਦੇਇ ਦਿਵਾਏ ॥

आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥

परमात्मा आप ही निर्माता है और आप ही भोक्ता है, यह आप ही देता और दूसरों को दिलवाता है।

ਆਪੇ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪੇ ਹੈ ਰਾਖਾ ਆਪੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥
आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥
वह आप ही मालिक हैं, आप ही रक्षक है और आप ही अपनी सृष्टि रचना समाया हुआ है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕ ਵਡਿਆਈ ਆਖੈ ਹਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀ ਜਿਸ ਨੋ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਏ ॥੧੫॥
जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥१५॥
नानक तो उस जगत के रचयिता परमात्मा का ही स्तुतिगान कर रहा है, जिसे अपनी स्तुति करवाने में तिल मात्र भी लोभ नहीं ॥१५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਮਾਣਸੁ ਭਰਿਆ ਆਣਿਆ ਮਾਣਸੁ ਭਰਿਆ ਆਇ ॥
माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥
एक मनुष्य मदिरा से भरपूर बर्तन लेकर आता है और दूसरा मनुष्य आकर उसमें से प्याला भर लेता है।

ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਮਤਿ ਦੂਰਿ ਹੋਇ ਬਰਲੁ ਪਵੈ ਵਿਚਿ ਆਇ ॥
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
जिसका पान करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उन्मादपन दिमाग में आ जाता है,

ਆਪਣਾ ਪਰਾਇਆ ਨ ਪਛਾਣਈ ਖਸਮਹੁ ਧਕੇ ਖਾਇ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जिससे मनुष्य अपने व पराए की पहचान नहीं कर पाता और अपने मालिक प्रभु की ओर से धक्के खाता है।

ਜਿਤੁ ਪੀਤੈ ਖਸਮੁ ਵਿਸਰੈ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
जिस मदिरा को पीने से मालिक प्रभु विस्मृत हो जाता है और जीव को उसके दरबार में कठोर दण्ड मिलता है।

ਝੂਠਾ ਮਦੁ ਮੂਲਿ ਨ ਪੀਚਈ ਜੇ ਕਾ ਪਾਰਿ ਵਸਾਇ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
जहाँ तक तेरा वश चलता है, तू झूठी मदिरा का बिल्कुल पान मत कर।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਸਚੁ ਮਦੁ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਆਇ ॥
नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥
हे नानक ! जिसे सतिगुरु मिल जाता है, वह प्रभु की दया से सच्ची नाम-मदिरा को प्राप्त कर लेता है |

ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਹੈ ਮਹਲੀ ਪਾਵੈ ਥਾਉ ॥੧॥
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥
वह सदा परमेश्वर के प्रेम -रंग में लीन रहता है और उसके दरबार में स्थान प्राप्त कर लेता है। ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਹੁ ਜਗਤੁ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਜਾ ਇਸ ਨੋ ਸੋਝੀ ਹੋਇ ॥
इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥
जब परमात्मा ज्ञान प्रदान करता है तो यह जगत जीवित ही मरा रहता है अर्थात मोह-माया से निर्लिप्त रहता है।

ਜਾ ਤਿਨਿ੍ ਸਵਾਲਿਆ ਤਾਂ ਸਵਿ ਰਹਿਆ ਜਗਾਏ ਤਾਂ ਸੁਧਿ ਹੋਇ ॥
जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥
जब परमात्मा इसे मोह-माया की नींद सुला देता है तो वह निद्रामग्न ही रहता है, परन्तु जब वह इसे ज्ञान से जगा देता है तो इसे अपने जीवन-उद्देश्य की होश आती है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ਸੋਇ ॥
नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥
हे नानक यदि परमात्मा अपनी कृपा दृष्टि धारण करे तो वह मनुष्य की सतगुरु से भेंट करा देता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਤਾ ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਇ ॥੨॥
गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥२॥
गुरु की कृपा से यदि मनुष्य जीवित ही मरा रहे अर्थात् मोह-माया से निर्लिप्त रहे तो वह दोबारा नहीं मरता।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਿਸ ਦਾ ਕੀਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਨੋ ਪਰਵਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ॥

जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥

जिस परमात्मा का किया सब कुछ होता है, उसे किसी की कोई परवाह नहीं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਖਾਵੈ ਸਭ ਮੁਹਤਾਜੀ ਕਢੈ ਤੇਰੀ ॥

हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥

हे श्री हरि ! जीव तेरा दिया हुआ ही सब कुछ खाते हैं और सभी तेरी ही अनुसेवा करते हैं।

ਜਿ ਤੁਧ ਨੋ ਸਾਲਾਹੇ ਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਨਿਰੰਜਨ ਕੇਰੀ ॥
जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥
हे निरंजन परमेश्वर ! जो भी तेरी महिमा-स्तुति करता है एवं जिस पर तू कृपा के घर में आता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

ਸੋਈ ਸਾਹੁ ਸਚਾ ਵਣਜਾਰਾ ਜਿਨਿ ਵਖਰੁ ਲਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਤੇਰੀ ॥
सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥
हे भगवान! वास्तव में वही साहूकार और सत्य का व्यापारी है, जो तेरे नाम-धन का सौदा लाद लेता है।

ਸਭਿ ਤਿਸੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜਿਨਿ ਦੂਜੇ ਭਾਵ ਕੀ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰੀ ਢੇਰੀ ॥੧੬॥
सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥
हे संतजनो ! उस परमात्मा का स्तुतिगान करो, जिसने द्वैतभावना की ढ़ेरी को ध्वस्त कर दिया है ॥ १६ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਕਬੀਰਾ ਮਰਤਾ ਮਰਤਾ ਜਗੁ ਮੁਆ ਮਰਿ ਭਿ ਨ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥
कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥
हे कबीर ! यह जगत मरता मरता मर गया है किन्तु असल में कोई भी इंसान मरने का तरीका नहीं जानता।

ਐਸੀ ਮਰਨੀ ਜੋ ਮਰੈ ਬਹੁਰਿ ਨ ਮਰਨਾ ਹੋਇ ॥੧॥
ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥१॥
जो जीव ऐसी वास्तव मृत्यु मरता है, वह बार-बार नहीं मरता ॥ ५॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਕਿਵ ਮਰਹਗੇ ਕੈਸਾ ਮਰਣਾ ਹੋਇ ॥
किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥
हमें यह ज्ञान भी नहीं है कि हम किस प्रकार मरेंगे ? हमारी किस प्रकार की मृत्यु होगी?

ਜੇ ਕਰਿ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰੈ ਤਾ ਸਹਿਲਾ ਮਰਣਾ ਹੋਇ ॥
जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥
यदि मालिक हृदय से विस्मृत न हो तो हमारी मृत्यु सुगम होगी।

ਮਰਣੈ ਤੇ ਜਗਤੁ ਡਰੈ ਜੀਵਿਆ ਲੋੜੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥
सारी दुनिया मरने से डरती है और हरेक जीव जीने की ही आशा करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਹੁਕਮੈ ਬੂਝੈ ਸੋਇ ॥
गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥
गुरु की कृपा से जो व्यक्ति जीवित ही प्राण त्याग देता है, वह परमात्मा के हुक्म को बूझता है।

ਨਾਨਕ ਐਸੀ ਮਰਨੀ ਜੋ ਮਰੈ ਤਾ ਸਦ ਜੀਵਣੁ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति ऐसी मृत्यु मरता है, तो वह सर्वकाल ही जीवित रहता है।

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਾ ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤਾ ਆਪਣਾਂ ਨਾਉ ਹਰਿ ਆਪਿ ਜਪਾਵੈ ॥
जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥
जब हरि स्वामी आप कृपालु हो जाता है तो वह स्वयं ही अपना नाम प्राणियों से जपाता रहता है।

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸੁਖੁ ਦੇਵੈ ਆਪਣਾਂ ਸੇਵਕੁ ਆਪਿ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ॥
आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥
हरि आप ही सतिगुरु से मिलाप करवाकर सुख प्रदान करता है और अपना सेवक उसे आप ही अच्छा लगता है |

ਆਪਣਿਆ ਸੇਵਕਾ ਕੀ ਆਪਿ ਪੈਜ ਰਖੈ ਆਪਣਿਆ ਭਗਤਾ ਕੀ ਪੈਰੀ ਪਾਵੈ ॥
आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥
वह आप ही अपने सेवको की लाज प्रतिष्ठा रखता है और जीवों को अपने भक्तों के चरण-आश्रय में डाल देता है।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਹੈ ਹਰਿ ਕਾ ਕੀਆ ਹਰਿ ਜਨ ਸੇਵਕ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ॥
धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥
धर्मराज जो हरि-परमेश्वर ने बनाया हुआ है, यह (यमराज) भी हरि के भक्तों व् सेवकों के निकट नहीं आता।

ਜੋ ਹਰਿ ਕਾ ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪਿਆਰਾ ਹੋਰ ਕੇਤੀ ਝਖਿ ਝਖਿ ਆਵੈ ਜਾਵੈ ॥੧੭॥
जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥१७॥
जो हरि का प्यारा है, वह सब लोगों का प्यारा है, अन्य कितने ही जीव व्यर्थ ही दुनिया में जन्मते-मरते रहते हैं। १७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३।

ਰਾਮੁ ਰਾਮੁ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਫਿਰੈ ਰਾਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥
सारी दुनिया राम-राम पुकारती रहती है किन्तु राम ऐसे प्राप्त नहीं होता।

ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਤਿ ਵਡਾ ਅਤੁਲੁ ਨ ਤੁਲਿਆ ਜਾਇ ॥
अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥
वह अगम्य, अगोचर, बहुत महान एवं अतुलनीय है और उसके गुणों की तुलना नहीं की जा सकती।

ਕੀਮਤਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਈਆ ਕਿਤੈ ਨ ਲਇਆ ਜਾਇ ॥
कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥
उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जा सकता और किसी मूल्य से भी वह खरीदा नहीं जा सकता।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿਆ ਇਨ ਬਿਧਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥
केवल गुरु के शब्द द्वारा उसका भेद पाया जा सकता है, इस विधि से वह आकर जीव के मन में निवास कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਅਮੇਉ ਹੈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥
हे नानक ! राम अपरिमित है और गुरु की कृपा से चित्त में समाया रहता है।

ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਮਿਲਿ ਰਹਿਆ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਆਇ ॥੧॥
आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥१॥
वह आप ही आकर मनुष्य को मिलता है और मिलकर मिला रहता है। १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਏ ਮਨ ਇਹੁ ਧਨੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥
हे मन ! यह परमात्मा का नाम ऐसा धन है, जिससे सर्वदा सुख ही उपलब्ध होता है।

ਤੋਟਾ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵਈ ਲਾਹਾ ਸਦ ਹੀ ਹੋਇ ॥
तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥
इससे कदापि न्यूनता नहीं आती और मनुष्य को हमेशा लाभ ही मिलता है।

ਖਾਧੈ ਖਰਚਿਐ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਸਦਾ ਸਦਾ ਓਹੁ ਦੇਇ ॥
खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥
इसे खाने एवं खर्च करने से न्यूनता नहीं आती, क्योकि परमात्मा सर्वदा ही देता रहता है।

ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਹਾਣਤ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥
सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥
मनुष्य को बिल्कुल ही उसकी चिंता नहीं होती और कदापि हानि भी नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੨॥
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥२॥
हे नानक ! जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि धारण करता है, उसे गुरु के माध्यम से नाम-धन प्राप्त हो जाता है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਪੇ ਸਭ ਘਟ ਅੰਦਰੇ ਆਪੇ ਹੀ ਬਾਹਰਿ ॥
आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥
परमात्मा स्वयं ही सभी के हृदय में मौजूद है और बाहर भी जग में स्वयं ही मौजूद है।

ਆਪੇ ਗੁਪਤੁ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਹੀ ਜਾਹਰਿ ॥
आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥
वह आप ही गुप्त रूप में विचरन करता है और आप ही सबके अन्तर्मन में प्रत्यक्ष है।

ਜੁਗ ਛਤੀਹ ਗੁਬਾਰੁ ਕਰਿ ਵਰਤਿਆ ਸੁੰਨਾਹਰਿ ॥
जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि ॥
उस करतार ने स्वयं ही छतीस युगों तक घोर अन्धकार किया और शून्यावस्था में निवास करता रहा।

ਓਥੈ ਵੇਦ ਪੁਰਾਨ ਨ ਸਾਸਤਾ ਆਪੇ ਹਰਿ ਨਰਹਰਿ ॥
ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥
वहाँ तब वेद, पुराण एवं शास्त्र इत्यादि नहीं थे तथा लोगों का राजा परमेश्वर आप ही था।

ਬੈਠਾ ਤਾੜੀ ਲਾਇ ਆਪਿ ਸਭ ਦੂ ਹੀ ਬਾਹਰਿ ॥
बैठा ताड़ी लाइ आपि सभ दू ही बाहरि ॥
सभी से तटस्थ होकर वह आप ही शून्य-समाधि लगाकर बैठा था।

ਆਪਣੀ ਮਿਤਿ ਆਪਿ ਜਾਣਦਾ ਆਪੇ ਹੀ ਗਉਹਰੁ ॥੧੮॥
आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥१८॥
अपनी विस्तार सीमा वह स्वयं ही जानता है और आप ही गहरा समुद्र है ॥१८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜਗਤੁ ਮੁਆ ਮਰਦੋ ਮਰਦਾ ਜਾਇ ॥
हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥
समूचा विश्व अहंकार में मरा हुआ है और बार-बार मृत्यु को ही प्राप्त होता जा रहा है।

ਜਿਚਰੁ ਵਿਚਿ ਦੰਮੁ ਹੈ ਤਿਚਰੁ ਨ ਚੇਤਈ ਕਿ ਕਰੇਗੁ ਅਗੈ ਜਾਇ ॥
जिचरु विचि दमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥
जब तक शरीर में प्राण होते हैं, तब तक मनुष्य परमात्मा का नाम याद नहीं करता।

ਗਿਆਨੀ ਹੋਇ ਸੁ ਚੇਤੰਨੁ ਹੋਇ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥
गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥
फिर आगे परलोक में पहुँच कर क्या करेगा ? जो व्यक्ति ज्ञानवान है, वह चेतन होता है लेकिन अज्ञानी व्यक्ति अन्धे कर्मों में ही क्रियाशील रहता है।

ਨਾਨਕ ਏਥੈ ਕਮਾਵੈ ਸੋ ਮਿਲੈ ਅਗੈ ਪਾਏ ਜਾਇ ॥੧॥
नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥१॥
हे नानक ! इहलोक में मनुष्य जो भी कर्म करता है, वही मिलता है तथा परलोक में जाकर वही प्राप्त होता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
मः ३ ॥

ਧੁਰਿ ਖਸਮੈ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਪਇਆ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਚੇਤਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥
धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥
आदि से ही परमात्मा का अटल हुक्म है कि सच्चे गुरु के बिना उसका नाम-सुमिरन नहीं हो सकता।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਦਾ ਰਹਿਆ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥
सच्चा गुरु मिल जाए तो मनुष्य अपने मन में ही परमात्मा को व्यापक अनुभव करता है और हमेशा ही उसकी सुरति में समाया रहता है।

ਦਮਿ ਦਮਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲਦਾ ਦੰਮੁ ਨ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥
दमि दमि सदा समालदा दमु न बिरथा जाइ ॥
स-श्वास से सर्वदा वह उसे याद करता है और उसका कोई भी श्वास व्यर्थ नहीं जाता।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਾ ਭਉ ਗਇਆ ਜੀਵਨ ਪਦਵੀ ਪਾਇ ॥
जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥
भगवान का नाम याद करने से उसका जीवन-मृत्यु का आतंक नाश हो जाता है और वह अटल जीवन पदवी प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਰਤਬਾ ਤਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੨॥
नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥
हे नानक ! परमात्मा यह अमर पदवी उसे ही प्रदान करता है, जिसे अपनी रज़ा से कृपा धारण करता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਪੇ ਦਾਨਾਂ ਬੀਨਿਆ ਆਪੇ ਪਰਧਾਨਾਂ ॥
आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥
परमात्मा आप ही सर्वज्ञाता, त्रिकालदर्शी और आप ही प्रधान है।

ਆਪੇ ਰੂਪ ਦਿਖਾਲਦਾ ਆਪੇ ਲਾਇ ਧਿਆਨਾਂ ॥
आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥
वह आप ही अपने रूप का दर्शन करवाता है और आप ही मनुष्य को ध्यान-मनन में लगा देता है।

ਆਪੇ ਮੋਨੀ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਕਥੈ ਗਿਆਨਾਂ ॥
आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥
वह आप ही मौनावस्था में विचरन करता है और आप ही ब्रह्म-ज्ञान का कथन करता है।

ਕਉੜਾ ਕਿਸੈ ਨ ਲਗਈ ਸਭਨਾ ਹੀ ਭਾਨਾ ॥
कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥
वह किसी को कड़वा नहीं लगता और सभी को भला लगता है।

ਉਸਤਤਿ ਬਰਨਿ ਨ ਸਕੀਐ ਸਦ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੧੯॥
उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥१९॥
उसकी महिमा-स्तुति वर्णन नहीं की जा सकती और मैं उस पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ ॥१६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਕਲੀ ਅੰਦਰਿ ਨਾਨਕਾ ਜਿੰਨਾਂ ਦਾ ਅਉਤਾਰੁ ॥
कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु ॥
कलियुग में (नाम विहीन इन्सान) धरती में भूत-पिशाच ही पैदा हुए हैं।

ਪੁਤੁ ਜਿਨੂਰਾ ਧੀਅ ਜਿੰਨੂਰੀ ਜੋਰੂ ਜਿੰਨਾ ਦਾ ਸਿਕਦਾਰੁ ॥੧॥
पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु ॥१॥
पुत्र प्रेत है, पुत्री चुड़ैल और जोरू (पत्नी) इन प्रेत-चुडैलों की मालकिन है॥ १॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਹਿੰਦੂ ਮੂਲੇ ਭੂਲੇ ਅਖੁਟੀ ਜਾਂਹੀ ॥
हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥
हिन्दुओं ने तो मूल रूप से परमात्मा को विस्मृत ही कर दिया है और कुमार्गगामी होते जा रहे हैं।

ਨਾਰਦਿ ਕਹਿਆ ਸਿ ਪੂਜ ਕਰਾਂਹੀ ॥
नारदि कहिआ सि पूज करांही ॥
जैसे नारद मुनि ने कथन किया है वैसे ही मूर्ति-पूजा कर रहे हैं।

ਅੰਧੇ ਗੁੰਗੇ ਅੰਧ ਅੰਧਾਰੁ ॥
अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥
वे अन्धे, गूंगे एवं अन्धों के भी महा अंधे अन्धकार में अंधे हो चुके हैं।

ਪਾਥਰੁ ਲੇ ਪੂਜਹਿ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰ ॥
पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥
वे मूर्ख तथा गंवार पत्थरों की मूर्तियां लेकर उनकी पूजा करते हैं।

ਓਹਿ ਜਾ ਆਪਿ ਡੁਬੇ ਤੁਮ ਕਹਾ ਤਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥२॥
वे पत्थर जब स्वयं ही डूब जाते हैं, वे तुझे कैसे भवसागर से पार करवा सकते हैं ? ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਭੁ ਕਿਹੁ ਤੇਰੈ ਵਸਿ ਹੈ ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ॥
सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥
हे मालिक ! सब कुछ तेरे वश में है और तू ही एक सच्चा साहूकार है।

ਭਗਤ ਰਤੇ ਰੰਗਿ ਏਕ ਕੈ ਪੂਰਾ ਵੇਸਾਹੁ ॥
भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥
तेरे भक्तजन केवल तेरी ही प्रेमा-भक्ति में रंगे हुए हैं और एक तुझ पर ही उनकी पूर्ण आस्था है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭੋਜਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰਜਿ ਰਜਿ ਜਨ ਖਾਹੁ ॥
अम्रितु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥
हरिनामामृत ही उनका भोजन है, जिसे पेट भर-भर कर भक्तजन खाते रहते हैं।

ਸਭਿ ਪਦਾਰਥ ਪਾਈਅਨਿ ਸਿਮਰਣੁ ਸਚੁ ਲਾਹੁ ॥
सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥
परमात्मा का सिमरन ही सच्चा लाभ है, जिससे सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं।

ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਾਹੁ ॥੨੦॥
संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥२०॥
नानक का कथन है कि जो हरि अगम्य एवं अनन्त है, उस परब्रह्म-प्रभु को संतजन ही प्रिय लगते हैं।॥२०॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੁਕਮੇ ਆਵਦਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੁਕਮੇ ਜਾਇ ॥
सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥
सब कुछ परमात्मा के हुक्म अनुसार ही आता है और उसके हुक्म में ही सब कुछ चला जाता है।

ਜੇ ਕੋ ਮੂਰਖੁ ਆਪਹੁ ਜਾਣੈ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥
जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥
यदि कोई मूर्ख अपने आपको ही करने वाला जानता है तो वह अन्धा ही है और अंधे कर्म ही कर रहा है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੁ ਕੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝੈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੧॥
नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥१॥
हे नानक ! कोई विरला गुरुमुख ही परमात्मा के हुक्म को समझता है, जिस पर वह अपनी रज़ा से कृपा करता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸੋ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸ ਨੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥
जिसे गुरु के माध्यम से परमात्मा का नाम प्राप्त हुआ है, वही असल में योगी है और उसे ही सच्ची योग युक्ति प्राप्त होती है।

ਤਿਸੁ ਜੋਗੀ ਕੀ ਨਗਰੀ ਸਭੁ ਕੋ ਵਸੈ ਭੇਖੀ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਇ ॥
तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥
उस योगी के देहि रूपी नगर में सर्व प्रकार के गुण निवास करते हैं किन्तु योगी का वेष धारण करने से सच्चा योग प्राप्त नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਐਸਾ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਜੋਗੀ ਜਿਸੁ ਘਟਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥२॥
हे नानक ! ऐसा विरला ही कोई योगी है, जिसके अन्तर्मन में परमात्मा प्रगट होता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਆਪੇ ਜੰਤ ਉਪਾਇਅਨੁ ਆਪੇ ਆਧਾਰੁ ॥
आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥
भगवान ने खुद ही जीव उत्पन्न किए हैं और खुद ही उन सबका आधार है।

ਆਪੇ ਸੂਖਮੁ ਭਾਲੀਐ ਆਪੇ ਪਾਸਾਰੁ ॥
आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥
वह आप ही सूक्ष्म रूप में दिखाई देता है और आप ही उसका विश्व में प्रसार नजर आता है।

ਆਪਿ ਇਕਾਤੀ ਹੋਇ ਰਹੈ ਆਪੇ ਵਡ ਪਰਵਾਰੁ ॥
आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥
वह आप ही अकेला विचरन करता रहता है और आप ही दुनिया रूपी बड़े कुटुंब वाला है।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਸੰਤਾ ਰੇਨਾਰੁ ॥
नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥
नानक तो परमात्मा के संतों की चरण-धूलि का ही दान माँगता है।

ਹੋਰੁ ਦਾਤਾਰੁ ਨ ਸੁਝਈ ਤੂ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ ॥

होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥२१॥१॥ सुधु ॥

हे परमेश्वर ! तू ही जीवों को देने वाला है और तेरे सिवाय मुझे अन्य कोई भी दाता नजर नहीं आता ॥२१॥१॥ शुद्ध ॥

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
परमेश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह समूची सृष्टि-मानव जाति को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, वह निडर है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं अर्थात् प्रेम की मूर्ति है), वह कालातीत, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है और गुरु-कृपा से लब्धि होती है।

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥
रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥
रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥
अमली अमलु न अ्मबड़ै मछी नीरु न होइ ॥
यदि अमली (नशेड़ी) व्यक्ति को अमल (नशा) न मिले और मछली को जल न मिले तो उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥१॥
जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥१॥
लेकिन जो लोग अपने मालिक के प्रेम-रंग में रंगे हुए हैं, उन्हें सब कुछ अच्छा ही लगता है।॥१॥

हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥१॥ रहाउ ॥
हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे मालिक ! मैं तेरे नाम पर बलिहारी जाता हूँ, तेरे नाम पर टुकड़े-टुकड़े होता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंम्रितु जा का नाउ ॥
साहिबु सफलिओ रुखड़ा अम्रितु जा का नाउ ॥
मेरा मालिक-परमेश्वर एक फलदायक पेड़ है, जिसका फल नाम रूपी अमृत है।

जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥२॥
जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥२॥
जिन्होंने नामामृत का पान किया है, वे तृप्त हो चुके हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥२॥

मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥
मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥
तुम चाहे सभी प्राणियों के साथ निवास करते रहते हो किन्तु तुम मुझे नजर नहीं आते।

ਤਿਖਾ ਤਿਹਾਇਆ ਕਿਉ ਲਹੈ ਜਾ ਸਰ ਭੀਤਰਿ ਪਾਲਿ ॥੩॥
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥३॥
मुझ प्यासे की प्यारा कैसे बुझ सकती है, जबकि सरोवर और मेरे भीतर अहंकार रूपी दीवार है ॥३॥

ਨਾਨਕੁ ਤੇਰਾ ਬਾਣੀਆ ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਮੈ ਰਾਸਿ ॥
नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥
हे सच्चे मालिक ! नानक तेरा व्यापारी है और तू मेरी पूँजी है।

ਮਨ ਤੇ ਧੋਖਾ ਤਾ ਲਹੈ ਜਾ ਸਿਫਤਿ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥੪॥੧॥
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥४॥१॥
हे प्रभु ! मेरे मन से धोखा तभी निवृत्त हो सकता है, जब तेरी महिमा-स्तुति एवं तेरे समक्ष प्रार्थना करता रहूँ ॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
वडहंसु महला १ ॥
वडहंसु महला १ ॥

ਗੁਣਵੰਤੀ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ ਨਿਰਗੁਣਿ ਕੂਕੇ ਕਾਇ ॥
गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥
गुणवान जीवात्मा अपने पति-प्रभु के साथ आनंद प्राप्त करती है परन्तु निर्गुण जीवात्मा क्यों शोक कर रही है?

ਜੇ ਗੁਣਵੰਤੀ ਥੀ ਰਹੈ ਤਾ ਭੀ ਸਹੁ ਰਾਵਣ ਜਾਇ ॥੧॥
जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥१॥
यदि वह गुणवान बन जाए तो वह भी अपने पति-प्रभु के साथ आनंद करेगी ॥१॥

ਮੇਰਾ ਕੰਤੁ ਰੀਸਾਲੂ ਕੀ ਧਨ ਅਵਰਾ ਰਾਵੇ ਜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा पति-प्रभु प्रेम-रस का भण्डार है, फिर जीव-स्त्री क्यों किसी अन्य के साथ आनंद करे ? ॥१॥ रहाउ ॥

ਕਰਣੀ ਕਾਮਣ ਜੇ ਥੀਐ ਜੇ ਮਨੁ ਧਾਗਾ ਹੋਇ ॥
करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥
यदि जीव-स्त्री सदाचरण करे और अपने मन को धागा बना ले तो

ਮਾਣਕੁ ਮੁਲਿ ਨ ਪਾਈਐ ਲੀਜੈ ਚਿਤਿ ਪਰੋਇ ॥੨॥
माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥२॥
वह उसमें अपने पति-प्रभु के मन को हीरे की भाँति पिरो लेती है जो किसी भी मूल्य पर नहीं मिल सकता ॥२॥

ਰਾਹੁ ਦਸਾਈ ਨ ਜੁਲਾਂ ਆਖਾਂ ਅੰਮੜੀਆਸੁ ॥
राहु दसाई न जुलां आखां अमड़ीआसु ॥
मैं दूसरों से मार्ग पूछती हूँ परन्तु स्वयं उस पर नहीं चलती, फिर भी कहती हूँ कि मैं पहुँच गई हूँ।

ਤੈ ਸਹ ਨਾਲਿ ਅਕੂਅਣਾ ਕਿਉ ਥੀਵੈ ਘਰ ਵਾਸੁ ॥੩॥
तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥३॥
हे पति-परमेश्वर ! तेरे साथ तो वार्तालाप भी नहीं करती; फिर तेरे घर में मुझे कैसे निवास प्राप्त होगा।॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਏਕੀ ਬਾਹਰਾ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥
हे नानक ! एक परमेश्वर के अलावा दूसरा कोई नहीं।

ਤੈ ਸਹ ਲਗੀ ਜੇ ਰਹੈ ਭੀ ਸਹੁ ਰਾਵੈ ਸੋਇ ॥੪॥੨॥
तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥४॥२॥
यदि जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर के साथ अनुरक्त रहे तो वह तेरे संग आनंद प्राप्त करेगी ॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ॥
वडहंसु महला १ घरु २ ॥
वडहंसु महला १ घरु २ ॥

ਮੋਰੀ ਰੁਣ ਝੁਣ ਲਾਇਆ ਭੈਣੇ ਸਾਵਣੁ ਆਇਆ ॥
मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥
हे मेरी बहन ! सावन का महीना आया है, सावन की काली घटा देख कर मोर खुश होकर मधुर बोल गा रहे हैं।

ਤੇਰੇ ਮੁੰਧ ਕਟਾਰੇ ਜੇਵਡਾ ਤਿਨਿ ਲੋਭੀ ਲੋਭ ਲੁਭਾਇਆ ॥
तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥
हे प्रिय ! तेरे कटार जैसे नयन रस्सी की भाँति फंसाने वाले हैं, जिन्होंने मेरे लोभी मन को मुग्ध कर लिया है।

ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਵਿਟਹੁ ਖੰਨੀਐ ਵੰਞਾ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੋ ॥
तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥
हे स्वामी ! तेरे दर्शन हेतु मैं टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँ एवं तेरे नाम पर मैं सर्वदा न्यौछावर हूँ।

ਜਾ ਤੂ ਤਾ ਮੈ ਮਾਣੁ ਕੀਆ ਹੈ ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਕੇਹਾ ਮੇਰਾ ਮਾਣੋ ॥
जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥
अब जब तू मेरा है तो मैं तुझ पर ही गर्व करती हूँ, तेरे अतिरिक्त मेरा कैसा गर्व है?

ਚੂੜਾ ਭੰਨੁ ਪਲੰਘ ਸਿਉ ਮੁੰਧੇ ਸਣੁ ਬਾਹੀ ਸਣੁ ਬਾਹਾ ॥
चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥
हे मुग्धा नारी ! अपने पहने हुए चूड़े को पलंग सहित तोड़ दे,

ਏਤੇ ਵੇਸ ਕਰੇਦੀਏ ਮੁੰਧੇ ਸਹੁ ਰਾਤੋ ਅਵਰਾਹਾ ॥
एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥
हे मुग्धा नारी ! तेरे इतने हार-श्रृंगार करने के बावजूद भी तेरा पति-प्रभु किसी दूसरे की प्रीति में रंगा हुआ है।

ਨਾ ਮਨੀਆਰੁ ਨ ਚੂੜੀਆ ਨਾ ਸੇ ਵੰਗੁੜੀਆਹਾ ॥
ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥
तेरे पास न तो चूड़ियाँ पहनाने वाला मनिहार है, न ही सोने की चूड़ियाँ हैं और न ही कांच की चूड़ियाँ हैं।

ਜੋ ਸਹ ਕੰਠਿ ਨ ਲਗੀਆ ਜਲਨੁ ਸਿ ਬਾਹੜੀਆਹਾ ॥
जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥
जो बाँहें पति-प्रभु के गले के साथ नहीं लगती, वे बांहें जलन में जल जाती हैं।

ਸਭਿ ਸਹੀਆ ਸਹੁ ਰਾਵਣਿ ਗਈਆ ਹਉ ਦਾਧੀ ਕੈ ਦਰਿ ਜਾਵਾ ॥
सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥
मेरी सभी सखियाँ अपने पति-प्रभु के साथ आनंद करने के लिए गई हैं किन्तु मैं तुच्छ बदनसीब किसके द्वार पर जाऊँ ?

ਅੰਮਾਲੀ ਹਉ ਖਰੀ ਸੁਚਜੀ ਤੈ ਸਹ ਏਕਿ ਨ ਭਾਵਾ ॥
अमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥
हे मेरी सखी ! अपनी तरफ से तो मैं बहुत ही शुभ आचरण वाली हूँ किन्तु मेरे उस पति-परमेश्वर को मेरा एक भी शुभ कर्म भला नहीं लगता।

ਮਾਠਿ ਗੁੰਦਾਈਂ ਪਟੀਆ ਭਰੀਐ ਮਾਗ ਸੰਧੂਰੇ ॥
माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥
अपने बालों को संवारकर मैं चोटियाँ करती हूँ और अपनी माँग में सिंदूर भर लेती हूँ।

ਅਗੈ ਗਈ ਨ ਮੰਨੀਆ ਮਰਉ ਵਿਸੂਰਿ ਵਿਸੂਰੇ ॥
अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥
परन्तु जब मैं अपने पति-परमेश्वर के समक्ष जाती हूँ तो स्वीकार नहीं होती और अत्यंत शोक में मर जाती हूँ।

ਮੈ ਰੋਵੰਦੀ ਸਭੁ ਜਗੁ ਰੁਨਾ ਰੁੰਨੜੇ ਵਣਹੁ ਪੰਖੇਰੂ ॥
मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरू ॥
मैं पीड़ित होकर विलाप करती हूँ तो सारी दुनिया भी रोती है और मेरे साथ वन के पक्षी भी विलाप करते हैं।

ਇਕੁ ਨ ਰੁਨਾ ਮੇਰੇ ਤਨ ਕਾ ਬਿਰਹਾ ਜਿਨਿ ਹਉ ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੋੜੀ ॥
इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥
परन्तु एक मेरे तन की जुदा हुई आत्मा ही विलाप नहीं करती, जिसने मुझे मेरे प्रियतम से जुदा कर दिया है।

ਸੁਪਨੈ ਆਇਆ ਭੀ ਗਇਆ ਮੈ ਜਲੁ ਭਰਿਆ ਰੋਇ ॥
सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥
वह मेरे स्वप्न में मेरे पास आया भी और फिर चला गया, जिसके विरह के दुःख में मैं अश्रु भर कर रोई।

ਆਇ ਨ ਸਕਾ ਤੁਝ ਕਨਿ ਪਿਆਰੇ ਭੇਜਿ ਨ ਸਕਾ ਕੋਇ ॥
आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥
हे मेरे प्रियतम ! मैं तेरे पास नहीं आ सकती, न ही मैं किसी को भेज सकती हूँ।

ਆਉ ਸਭਾਗੀ ਨੀਦੜੀਏ ਮਤੁ ਸਹੁ ਦੇਖਾ ਸੋਇ ॥
आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥
हे मेरी भाग्यशालिनी निद्रा ! आओ, शायद मैं अपने उस स्वामी को पुनः स्वप्न में देख सकूं।

ਤੈ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਬਾਤ ਜਿ ਆਖੈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਆ ਦੀਜੈ ॥
तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥
नानक का कथन है कि जो मुझे मेरे मालिक की बात सुनाएगा, उसे मैं क्या भेट दूँगा ?

ਸੀਸੁ ਵਢੇ ਕਰਿ ਬੈਸਣੁ ਦੀਜੈ ਵਿਣੁ ਸਿਰ ਸੇਵ ਕਰੀਜੈ ॥
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥
अपने सिर को काटकर मैं उसे बैठने हेतु आसन पेश करूँगा तथा सिर के बिना ही उसकी सेवा करूँगा।

ਕਿਉ ਨ ਮਰੀਜੈ ਜੀਅੜਾ ਨ ਦੀਜੈ ਜਾ ਸਹੁ ਭਇਆ ਵਿਡਾਣਾ ॥੧॥੩॥
किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥१॥३॥
मैं क्यों नहीं प्राण त्याग देती और अपना जीवन क्यों नहीं देती, जबकि मेरा पति-परमेश्वर किसी दूसरे का हो चुका है ॥१॥३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧
वडहंसु महला ३ घरु १
वडहंसु महला ३ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਮੈਲਾ ਤਨਿ ਧੋਤੈ ਮਨੁ ਹਛਾ ਨ ਹੋਇ ॥
मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥
यदि जीव का मन मैला है तो सब कुछ मलिन है; शरीर को धोकर शुद्ध करने से मन निर्मल नहीं होता।

ਇਹ ਜਗਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥੧॥
इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥
यह दुनिया भ्रम में भूली हुई है किन्तु कोई विरला ही इस सत्य को बूझता है॥ १॥

ਜਪਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ॥
जपि मन मेरे तू एको नामु ॥
हे मेरे मन ! तू एक परमेश्वर के नाम का जाप कर,

ਸਤਗੁਰਿ ਦੀਆ ਮੋ ਕਉ ਏਹੁ ਨਿਧਾਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतगुरि दीआ मो कउ एहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि सतिगुरु ने मुझे यही नाम-भण्डार दिया है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਿਧਾ ਕੇ ਆਸਣ ਜੇ ਸਿਖੈ ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਸਿ ਕਰਿ ਕਮਾਇ ॥
सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥
यदि प्राणी सिद्ध महापुरुषों के आसन लगाना सीख ले तथा अपनी इन्द्रियों को काबू रखने का अभ्यास करे तो

ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥੨॥
मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥२॥
भी मन की मैल दूर नहीं होती और न ही उसकी अहंकार रूपी मलिनता निवृत्त होती है ॥२॥

ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਹੋਰੁ ਸੰਜਮੁ ਕੋ ਨਾਹੀ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਇ ॥
इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥
सच्चे गुरु की शरण के बिना इस मन को किसी अन्य साधन द्वारा पावन नहीं किया जा सकता।

ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਉਲਟੀ ਭਈ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਇ ॥੩॥
सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछु न जाइ ॥३॥
सतिगुरु से भेंट करने से मन का दृष्टिकोण बदल जाता है और कुछ कथन नहीं किया जा सकता ॥३॥

ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਮਿਲਦੋ ਮਰੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਫਿਰਿ ਜੀਵੈ ਕੋਇ ॥
ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਮਿਲਦੋ ਮਰੈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਫਿਰਿ ਜੀਵੈ ਕੋਇ ॥
नानक का कथन है कि यदि कोई जीव सतिगुरु से भेंट करके सांसारिक विषय-विकारों से तटस्थ होकर मर जाए और गुरु के शब्द द्वारा फिर जीवित हो जाए तो

ਮਮਤਾ ਕੀ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਛਾ ਹੋਇ ॥੪॥੧॥
ਮਮਤਾ ਕੀ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਇਹੁ ਮਨੁ ਹਛਾ ਹੋਇ ॥੪॥੧॥
उसकी सांसारिक मोह-ममता की मैल दूर हो जाती है और उसका यह मन निर्मल हो जाता है ॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਨਦਰੀ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਨਦਰੀ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥
ਨਦਰੀ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਨਦਰੀ ਸੇਵਾ ਹੋਇ ॥
भगवान की कृपा-दृष्टि द्वारा ही सतगुरु की सेवा हो सकती है और उसकी करुणा से ही सेवा होती है।

ਨਦਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਵਸਿ ਆਵੈ ਨਦਰੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥
ਨਦਰੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਵਸਿ ਆਵੈ ਨਦਰੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੧॥
उसकी करुणा-दृष्टि से यह मन वश में आता है और उसकी कृपा-दृष्टि से ही मन पावन होता है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਚੇਤਿ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
ਮੇਰੇ ਮਨ ਚੇਤਿ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
हे मेरे मन ! हमेशा ही सच्चे प्रभु को याद करते रहो।

ਏਕੋ ਚੇਤਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਮੂਲੇ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਏਕੋ ਚੇਤਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਦੂਖੁ ਨ ਮੂਲੇ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
यदि तू एक परमेश्वर का नाम-स्मरण करेगा तो तुझे सुख की उपलब्धि होगी और तुझे फिर कदापि दुःख नहीं होगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਨਦਰੀ ਮਰਿ ਕੈ ਜੀਵੀਐ ਨਦਰੀ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
ਨਦਰੀ ਮਰਿ ਕੈ ਜੀਵੀਐ ਨਦਰੀ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
भगवान की कृपा-दृष्टि से ही प्राणी मोहमाया से तटस्थ होकर मर कर पुनः जीवित हो जाता है और उसकी कृपादृष्टि से ही प्रभु-शब्द आकर मन में निवास कर लेता है।

ਨਦਰੀ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝੀਐ ਹੁਕਮੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥

नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥२॥

उसकी कृपा-दृष्टि द्वारा उसका हुक्म समझा जाता है और जीव उसके हुक्म में समाया रहता है।॥२॥

ਜਿਨਿ ਜਿਹਵਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਚਖਿਓ ਸਾ ਜਿਹਵਾ ਜਲਿ ਜਾਉ ॥

जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥

जिस जिह्म ने हरि-रस को नहीं चखा, वह जल जानी चाहिए।

ਅਨ ਰਸ ਸਾਦੇ ਲਗਿ ਰਹੀ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥੩॥

अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥३॥

यह दूसरे रसों के स्वाद में लगी हुई है और द्वैतभाव में फँसकर दुःख प्राप्त करती है॥ ३॥

ਸਭਨਾ ਨਦਰਿ ਏਕ ਹੈ ਆਪੇ ਫਰਕੁ ਕਰੇਇ ॥

सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ ॥

एक ईश्वर की सभी जीवों पर कृपा-दृष्टि एक समान ही है परन्तु कोई नेक बन जाता है और कोई बुरा बन जाता है, यह अन्तर भी प्रभु स्वयं ही बनाता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਦੇਇ ॥੪॥੨॥

नानक सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥४॥२॥

हे नानक ! सतगुरु को मिलने से ही फल प्राप्त होता है और जीव को गुरु द्वारा नाम से ही प्रशंसा प्राप्त होती है ॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਈ ॥
माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥
माया का मोह घोर अंधेरा है एवं गुरु के बिना ज्ञान का दीपक प्रज्वलित नहीं होता।

ਸਬਦਿ ਲਗੇ ਤਿਨ ਬੁਝਿਆ ਦੂਜੈ ਪਰਜ ਵਿਗੋਈ ॥੧॥
सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥
जो व्यक्ति शब्द-गुरु में लीन होते हैं, वही इस तथ्य को समझते हैं अन्यथा द्वैतभाव में फँसकर सारी दुनिया त्रस्त हो रही है ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰਮਤਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥
मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥
हे मेरे मन ! गुरु की मति द्वारा शुभ कर्मों का अनुसरण कर।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਹਿ ਤਾ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तू सर्वदा हरि-प्रभु की आराधना करता रहे तो तुझे मोक्ष का द्वार भी प्राप्त हो जाएगा ॥१॥ रहाउ ॥

ਗੁਣਾ ਕਾ ਨਿਧਾਨੁ ਏਕੁ ਹੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਤਾ ਕੋ ਪਾਏ ॥
गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥
एक परमात्मा ही सर्व गुणों का भण्डार है, यदि इस भण्डार को प्रभु स्वयं प्रदान करे तो ही कोई इसे प्राप्त कर सकता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭ ਵਿਛੁੜੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥
बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥२॥
नाम-सुमिरन के बिना सारी दुनिया भगवान से बिछुड़ी हुई है परन्तु गुरु के शब्द द्वारा प्रभु मिल जाता है ॥२॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਦੇ ਘਟਿ ਗਏ ਤਿਨਾ ਹਥਿ ਕਿਹੁ ਨ ਆਇਆ ॥
मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥
'मेरी-मेरी' अर्थात् अहंकार करते हुए लोग क्षीण हो गए हैं और उनके हाथ कुछ नहीं आया।

ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਚਿ ਮਿਲੇ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥
सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥३॥
सतिगुरु से भेंट करने पर ही जीव को सत्य मिलता है और जीव सत्य नाम में समाया रहता है॥ ३॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਏਹੁ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਜਗਾਏ ॥
आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥
यह नश्वर शरीर आशा और तृष्णा में फँसा रहता है और गुरु इसके अन्तर्मन में सत्य की ज्योति प्रज्वलित करता है।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਬੰਧੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਏ ॥੪॥੩॥
नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥४॥३॥
हे नानक ! स्वेच्छाचारी जीव जन्म-मरण के बन्धनों में कैद रहता है और गुरुमुख की परमात्मा मुक्ति कर देता है ॥४॥३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਦਾ ਮੁਖੁ ਉਜਲਾ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥
सुहागिन जीवात्मा का मुख सर्वदा उज्ज्वल है और गुरु के माध्यम से ही यह सहज स्वभाव वाली होती है।

ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵਹਿ ਆਪਣਾ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥
सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥१॥
वह अपने अंतर्मन से अपना अहंकार दूर करके सर्वदा अपने प्रियतम प्रभु के साथ रमण करती है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਤੂ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥
हे मेरे मन ! तू सर्वदा हरि-नाम की आराधना कर, क्योंकि

ਸਤਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइ ॥१॥ रहाउ ॥
सच्चे गुरु ने मुझे हरि-नाम स्मरण का ज्ञान प्रदान कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਦੋਹਾਗਣੀ ਖਰੀਆ ਬਿਲਲਾਦੀਆ ਤਿਨਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਇ ॥
दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥
दुहागिन जीवात्माएँ दुखी होकर विलाप करती हैं और उन्हें अपने पति-प्रभु के चरणों में स्थान प्राप्त नहीं होता।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਕਰੂਪੀ ਦੂਖੁ ਪਾਵਹਿ ਆਗੈ ਜਾਇ ॥੨॥
दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥२॥
मोह-माया में लीन हुई वे कुरूप ही दिखाई देती हैं और परलोक में जाकर वे दुःख ही प्राप्त करती हैं ॥२॥

ਗੁਣਵੰਤੀ ਨਿਤ ਗੁਣ ਰਵੈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇ ॥
गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥
गुणवान जीवात्मा अपने हृदय में परमात्मा के नाम को बसाकर नित्य ही उसका यशोगान करती हैं लेकिन

ਅਉਗਣਵੰਤੀ ਕਾਮਣੀ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਬਿਲਲਾਇ ॥੩॥
अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥३॥
अवगुण से भरी जीव-स्त्री दुःख भोगकर विलाप करती रहती है ॥३॥

ਸਭਨਾ ਕਾ ਭਤਾਰੁ ਏਕੁ ਹੈ ਸੁਆਮੀ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥
एक परमात्मा ही समस्त जीव-स्त्रियों का पति है और उस स्वामी की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਵੇਕ ਕੀਤਿਅਨੁ ਨਾਮੇ ਲਇਅਨੁ ਲਾਇ ॥੪॥੪॥
नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥४॥४॥
हे नानक ! कई जीवों को परमात्मा ने स्वयं ही अपने से अलग किया है और कई जीवों को स्वयं ही उसने नाम से लगाया हुआ है।॥ ४॥ ४॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਸਦ ਮੀਠਾ ਲਾਗਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ॥
अम्रित नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥
हरि का अमृत-नाम मुझे सर्वदा मीठा लगता है और गुरु के शब्द द्वारा ही इसका स्वाद आया है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ਹਰਿ ਜੀਉ ਮਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥੧॥

सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥१॥

सच्ची गुरु-वाणी के माध्यम से मैं सहजता में लीन रहता हूँ और परमेश्वर को मन में बसा लिया है ॥१॥

ਹਰਿ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥

हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥

परमेश्वर ने अपनी कृपा करके मुझे सतगुरु से मिलाया है और

ਪੂਰੈ ਸਤਗੁਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ रहाउ ॥

परिपूर्ण सतगुरु के द्वारा मैंने हरि-नाम का ध्यान किया है ॥१॥ रहाउ ॥

ਬ੍ਰਹਮੈ ਬੇਦ ਬਾਣੀ ਪਰਗਾਸੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਸਾਰਾ ॥

ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥

ब्रह्मा ने वेदों की वाणी का विधान रखा, लेकिन उसने भी माया-मोह का ही प्रसार किया।

ਮਹਾਦੇਉ ਗਿਆਨੀ ਵਰਤੈ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਤਾਮਸੁ ਬਹੁਤੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥੨॥

महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥२॥

महादेव बड़ा ज्ञानी है और अपने आप में ही लीन रहता है लेकिन उसके हृदय में भी बहुत क्रोध एवं अहंकार है ॥२॥

ਕਿਸਨੁ ਸਦਾ ਅਵਤਾਰੀ ਰੂਧਾ ਕਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥

किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥

विष्णु सर्वदा अवतार धारण करने में कार्यरत रहता है। फिर जगत का कल्याण किस की संगति से हो ?

ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨਿ ਰਤੇ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ ਚੂਕੈ ਮੋਹ ਗੁਬਾਰਾ ॥੩॥

गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥३॥

इस युग में गुरुमुख ब्रह्म-ज्ञान में लीन रहते हैं और वे सांसारिक मोह के अंधेरे से मुक्त हो जाते हैं।॥३॥

ਸਤਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਨਿਸਤਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਰੈ ਸੰਸਾਰਾ ॥

सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥

सच्चे गुरु की सेवा के फलस्वरूप ही मुक्ति प्राप्त होती है और गुरुमुख व्यक्ति संसार-सागर से तैर जाता है।

ਸਾਚੈ ਨਾਇ ਰਤੇ ਬੈਰਾਗੀ ਪਾਇਨਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥
साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥४॥
बैरागी परमात्मा के सत्य नाम में रंगे रहते हैं और वे मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेते हैं ॥४॥

ਏਕੋ ਸਚੁ ਵਰਤੈ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਸਭਨਾ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥
एक सत्य ही सभी जीवों के अन्तर्मन में विद्यमान है और वह सबका पालन-पोषण करता है।

ਨਾਨਕ ਇਕਸੁ ਬਿਨੁ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣਾ ਸਭਨਾ ਦੀਵਾਨੁ ਦਇਆਲਾ ॥੫॥੫॥
नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥५॥५॥
हे नानक ! एक सच्चे परमेश्वर के अलावा मैं किसी दूसरे को नहीं जानता, चूंकि वह सब जीवों का दयालु मालिक है ॥५॥५॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਚੁ ਸੰਜਮੁ ਤਤੁ ਗਿਆਨੁ ॥
गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥
गुरुमुख जीव को ही सत्य, संयम एवं तत्वज्ञान प्राप्त होता है और

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੇ ਲਗੈ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥
गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥१॥
गुरुमुख का ध्यान सच्चे परमेश्वर के साथ लगा रहता है॥१॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥
हे मेरे मन ! तू गुरु के माध्यम से परमात्मा के नाम की आराधना कर;

ਸਦਾ ਨਿਬਹੈ ਚਲੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥
वह सर्वदा ही तेरा साथ निभाएगा और परलोक में भी तेरे साथ चलेगा ॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਿ ਪਤਿ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥
वह सत्यस्वरूप परमेश्वर ही गुरुमुखों की जाति एवं मान-प्रतिष्ठा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਸਖਾਈ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ॥੨॥
गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥२॥
गुरुमुखों के अन्तर्मन में सहायता करने वाला प्रभु निवास करता है ॥२॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਕਰੇ ਸੋ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइ ॥
गुरुमुख भी वही बनता है, जिसे ईश्वर आप गुरुमुख बनाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਵਡਾਈ ਦੇਵੈ ਸੋਇ ॥੩॥
गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥३॥
वह स्वयं ही गुरुमुख को बड़ाई प्रदान करता है॥ ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਕਰਣੀ ਸਾਰੁ ॥
गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥
गुरुमुख सच्चे नाम का सिमरन एवं शुभ आचरण के कर्म करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਪਰਵਾਰੈ ਸਾਧਾਰੁ ॥੪॥੬॥
गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥४॥६॥
हे नानक ! गुरुमुख अपनी वंशावलि का भी उद्धार कर देता है ॥४॥६॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਸਾਦਿ ਲਗੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥
मेरी जीभ हरि-नाम के स्वाद में सहज-स्वभाव ही लगी है;

ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੧॥
मनु त्रिपतिआ हरि नामु धिआइ ॥१॥
हरि-नाम का ध्यान करके मेरा मन तृप्त हो गया है ॥१॥

ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥
सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥
सच्चे परमेश्वर का चिंतन करने से सर्वदा सुख प्राप्त होता है और

ਆਪਣੇ ਸਤਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਸਦਾ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥
अपने सतिगुरु पर मैं हमेशा ही बलिहारी जाता हूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਅਖੀ ਸੰਤੋਖੀਆ ਏਕ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥
एक परमात्मा के साथ लगन लगाकर मेरे नेत्र संतुष्ट हो गए हैं और

ਮਨੁ ਸੰਤੋਖਿਆ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਗਵਾਇ ॥੨॥
मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥२॥
द्वैतभाव को त्याग कर मेरे मन में संतोष आ गया है ॥२॥

ਦੇਹ ਸਰੀਰਿ ਸੁਖੁ ਹੋਵੈ ਸਬਦਿ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥
शब्द-गुरु द्वारा हरि-नाम की आराधना करने से शरीर में सुख हो गया है और

ਨਾਮੁ ਪਰਮਲੁ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥੩॥
नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥३॥
नाम की सुगन्धि मेरे हृदय में समाई हुई है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਮਸਤਕਿ ਜਿਸੁ ਵਡਭਾਗੁ ॥
नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥
हे नानक ! जिसके माथे पर अहोभाग्य लिखा होता है,

ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਸਹਜ ਬੈਰਾਗੁ ॥੪॥੭॥
गुर की बाणी सहज बैरागु ॥४॥७॥
वह गुरु की वाणी द्वारा सहज स्वभाव ही वैरागी बन जाता है।॥४॥७॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥
पूर्ण गुरु से ही परमेश्वर का नाम पाया जाता है और

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਚਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
सचै सबदि सचि समाइ ॥१॥
सच्चे शब्द के माध्यम से ही जीव सत्य में समा जाता है।॥१॥

ਏ ਮਨ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਤੂ ਪਾਇ ॥
ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥
हे मेरे मन ! तुझे नाम-भण्डार प्राप्त हो जाएगा यदि

ਆਪਣੇ ਗੁਰ ਕੀ ਮੰਨਿ ਲੈ ਰਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥
तू अपने गुरु की आज्ञा को स्वीकार कर ले ।॥१॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵਿਚਹੁ ਮੈਲੁ ਗਵਾਇ ॥
गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥
गुरु के शब्द द्वारा अन्तर्मन से मैल साफ हो जाती है और

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥
निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥२॥
परमात्मा का निर्मल नाम आकर मन में निवास कर लेता है।॥२॥

ਭਰਮੇ ਭੂਲਾ ਫਿਰੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥
भरमे भूला फिरै संसारु ॥
यह दुनिया भ्रम में भूली हुई भटक रही है, इसलिए

ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਜਮੁ ਕਰੇ ਖੁਆਰੁ ॥੩॥
मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥३॥
यह जन्म-मरण के चक्र में फँसी हुई है और यमदूत इसे नष्ट करता है ॥३॥

ਨਾਨਕ ਸੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइआ ॥
हे नानक ! वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने हरि-नाम का ध्यान-मनन किया है और

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥੪॥੮॥
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥४॥८॥
गुरु की कृपा से उन्होंने नाम को अपने मन में बसा लिया है ॥४॥८॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਹਉਮੈ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਵਿਰੋਧੁ ਹੈ ਦੁਇ ਨ ਵਸਹਿ ਇਕ ਠਾਇ ॥
हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥
अहंकार का परमात्मा के नाम से विरोध है और ये दोनों ही परस्पर एक स्थान पर निवास नहीं कर सकते।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸੇਵਾ ਨ ਹੋਵਈ ਤਾ ਮਨੁ ਬਿਰਥਾ ਜਾਇ ॥੧॥
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥१॥
अहंकार में परमात्मा की सेवा नहीं हो सकती, इसलिए मन व्यर्थ ही चला जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਚੇਤਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥
हे मेरे मन ! परमात्मा को याद कर और तू गुरु के शब्द की साधना कर।

ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਤਾ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥
यदि तू हुक्म का पालन करे तो ही परमेश्वर मिल सकता है और तभी तेरे भीतर से अहंकार दूर होगा।॥ रहाउ॥

ਹਉਮੈ ਸਭੁ ਸਰੀਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਓਪਤਿ ਹੋਇ ॥
हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥
समस्त शरीरों में अहंकार विद्यमान है और अहंकार द्वारा ही जीव पैदा होते हैं।

ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਗੁਬਾਰੁ ਹੈ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਬੁਝਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥੨॥
हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥२॥
अहंकार बड़ा घोर अन्धेरा है और अहंकार के कारण पुरुष कुछ भी नहीं समझ सकता॥ २॥

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੁਝਿਆ ਜਾਇ ॥
हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥
अहंकार में परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती और न ही उसके हुक्म को समझा जा सकता है।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਜੀਉ ਬੰਧੁ ਹੈ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥
हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥३॥
अहंकार में ग्रस्त होकर जीव बन्धनों में कैद हो जाता है और परमात्मा का नाम आकर हृदय में निवास नहीं करता ॥ ३ ॥

ਨਾਨਕ ਸਤਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਉਮੈ ਗਈ ਤਾ ਸਚੁ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥
हे नानक ! सतगुरु से भेंट करने पर जीव का अहंकार नाश हो जाता है और तब सत्य आकर हृदय में निवास कर लेता है।

ਸਚੁ ਕਮਾਵੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਸਚੇ ਸੇਵਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੯॥੧੨॥
सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥४॥९॥१२॥
इस तरह वह सत्य की ही कमाई करता है, सत्य में ही रहता है और सच्चे परमात्मा की आराधना करके सत्य में ही समा जाता है ॥४॥६॥१२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧
वडहंसु महला ४ घरु १
वडहंसु महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੇਜ ਏਕ ਏਕੋ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ॥
सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥
हृदय सेज एक है और सबका एक ठाकुर प्रभु ही उस हृदय-सेज पर विराजमान है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਾਵੇ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ॥੧॥

गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥

सुखों के सागर परमेश्वर में अनुरक्त होकर गुरुमुख जीवात्मा रमण करती रहती है॥ १॥

ਮੈ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਣ ਪ੍ਰੇਮ ਮਨਿ ਆਸਾ ॥

मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥

मेरे मन में प्रेम होने के फलस्वरूप प्रभुमिलन की ही आशा कायम है।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੇਲਾਵੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਹਉ ਵਾਰਿ ਵਾਰਿ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਕਉ ਜਾਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ही मुझे मेरे प्रियतम-प्रभु से मिलाता है और अपने गुरु पर मैं करोड़ों बार न्यौछावर होता हूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਮੈ ਅਵਗਣ ਭਰਪੂਰਿ ਸਰੀਰੇ ॥
मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥
मेरा यह शरीर अवगुणों से परिपूर्ण है,

ਹਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਮਿਲਾ ਅਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪੂਰੇ ॥੨॥
हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥२॥
फिर भला मैं अपने गुणों से भरपूर प्रियतम से कैसे मिलन कर सकती हूँ? ॥ २॥

ਜਿਨਿ ਗੁਣਵੰਤੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਾਇਆ ॥
जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥
हे मेरी माता! जिन गुणवानों ने मेरा प्रियतम-प्रभु प्राप्त कर लिया है,

ਸੇ ਮੈ ਗੁਣ ਨਾਹੀ ਹਉ ਕਿਉ ਮਿਲਾ ਮੇਰੀ ਮਾਇਆ ॥੩॥
से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥३॥
उनकी तरह तमाम गुण मुझमें विद्यमान नहीं, फिर मेरा मिलन कैसे हो ? ॥३॥

ਹਉ ਕਰਿ ਕਰਿ ਥਾਕਾ ਉਪਾਵ ਬਹੁਤੇਰੇ ॥
हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥
मैं अनेक उपाय करके थक चुका हूँ,

ਨਾਨਕ ਗਰੀਬ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ ਮੇਰੇ ॥੪॥੧॥
नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥४॥१॥
नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे हरि ! मुझ गरीब को अपनी शरण में रखो ॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४

ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁੰਦਰੁ ਮੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣੀ ॥
मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥
मेरा हरि-प्रभु बहुत सुन्दर है किन्तु मैं उसकी कद्र को नहीं जानती।

ਹਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਛੋਡਿ ਦੂਜੈ ਲੋਭਾਣੀ ॥੧॥
हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥१॥
मैं तो प्रभु को छोड़कर मोह-माया के आकर्षण में ही फंसी हुई हूँ॥ १॥

ਹਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਪਿਰ ਕਉ ਮਿਲਉ ਇਆਣੀ ॥
हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥
मैं विमूढ़ अपने पति-परमेश्वर को कैसे मिल सकती हूँ?

ਜੋ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਾਈ ਪਿਰ ਕਉ ਮਿਲੈ ਸਿਆਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥१॥ रहाउ ॥
जो जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर को अच्छी लगती है, वही सौभाग्यवती है और वही बुद्धिमान जीवात्मा अपने प्रियतम से मिलती है।॥ १॥ रहाउ॥

ਮੈ ਵਿਚਿ ਦੋਸ ਹਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਪਿਰੁ ਪਾਵਾ ॥
मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥
मुझमें अनेक दोष हैं, फिर मेरा प्रियतम-प्रभु से कैसे मिलन हो सकता है?

ਤੇਰੇ ਅਨੇਕ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਪਿਰ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਾ ॥੨॥
तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥२॥
हे प्रियतम-प्रभु ! तेरे तो अनेक ही प्रेमी हैं, मैं तो तुझे याद ही नहीं आती ॥२॥

ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਆ ਸਾ ਭਲੀ ਸੁਹਾਗਣਿ ॥
जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥
जो जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर के साथ रमण करती है, वही वास्तव में भली सौभाग्यवती है।

ਸੇ ਮੈ ਗੁਣ ਨਾਹੀ ਹਉ ਕਿਆ ਕਰੀ ਦੁਹਾਗਣਿ ॥੩॥
से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥३॥
वे गुण मुझमें विद्यमान नहीं है, फिर मैं दुहागिन जीवात्मा क्या करूँ ? ॥ ३॥

ਨਿਤ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਦਾ ਪਿਰੁ ਰਾਵੈ ॥
नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥
सौभाग्यवती जीवात्मा नित्य ही अपने पति-प्रभु के साथ सर्वदा रमण करती है।

ਮੈ ਕਰਮਹੀਣ ਕਬ ਹੀ ਗਲਿ ਲਾਵੈ ॥੪॥
मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥४॥
क्या मुझ कर्महीन को कभी मेरा पति-प्रभु अपने गले से लगाएगा ? ॥४॥

ਤੂ ਪਿਰੁ ਗੁਣਵੰਤਾ ਹਉ ਅਉਗੁਣਿਆਰਾ ॥
तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥
हे प्रियतम-प्रभु ! तू गुणवान है किन्तु मैं अवगुणों से भरी हुई हूँ।

ਮੈ ਨਿਰਗੁਣ ਬਖਸਿ ਨਾਨਕੁ ਵੇਚਾਰਾ ॥੫॥੨॥
मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥५॥२॥
मुझ निर्गुण एवं बेचारे नानक को क्षमा कर दो ॥५॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨
वडहंसु महला ४ घरु २
वडहंसु महला ४ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੈ ਮਨਿ ਵਡੀ ਆਸ ਹਰੇ ਕਿਉ ਕਰਿ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵਾ ॥
मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥
मेरे मन में बड़ी आशा है, फिर में कैसे हरि के दर्शन करूँ ?

ਹਉ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਅਪਨੇ ਸਤਗੁਰੈ ਗੁਰ ਪੁਛਿ ਮਨੁ ਮੁਗਧੁ ਸਮਝਾਵਾ ॥
हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥
मैं अपने सतिगुरु से जाकर पूछता हूँ और गुरु से पूछकर अपने विमूढ़ मन को समझाता हूँ।

ਭੂਲਾ ਮਨੁ ਸਮਝੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥
भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥
यह भूला हुआ मन गुरु के शब्द द्वारा ही समझता है और इस तरह दिन-रात हरि-परमेश्वर का ध्यान करता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੧॥
नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥१॥
हे नानक ! मेरा प्रियतम जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह हरि के सुन्दर चरणों में अपना चित्त लगाता है ॥१॥

ਹਉ ਸਭਿ ਵੇਸ ਕਰੀ ਪਿਰ ਕਾਰਣਿ ਜੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਭਾਵਾ ॥
हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥
अपने प्रियतम-प्रभु के लिए मैं विभिन्न प्रकार के सभी वेष धारण करती हूँ चूंकि जो मैं अपने सत्यस्वरूप हरि-प्रभु को अच्छी लगने लगूं।

ਸੋ ਪਿਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਨਦਰਿ ਨ ਦੇਖੈ ਹਉ ਕਿਉ ਕਰਿ ਧੀਰਜੁ ਪਾਵਾ ॥

सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥

लेकिन वह प्रियतम प्यारा मेरी तरफ कृपा-दृष्टि से नजर उठाकर भी नहीं देखता तो फिर मैं क्या कर धैर्य प्राप्त कर सकती हूँ?

ਜਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਹਉ ਸੀਗਾਰੁ ਸੀਗਾਰੀ ਸੋ ਪਿਰੁ ਰਤਾ ਮੇਰਾ ਅਵਰਾ ॥

जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥

जिसके कारण मैंने अनेक हार-श्रृंगारों से श्रृंगार किया है, वह मेरा पति-प्रभु दूसरों के प्रेम में लीन रहता है।

ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੋਹਾਗਣਿ ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਰਾਵਿਅੜਾ ਸਚੁ ਸਵਰਾ ॥੨॥

नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥२॥

हे नानक ! वह जीव-स्त्री धन्य-धन्य एवं सौभाग्यवती है, जिसने पति-प्रभु के साथ रमण किया है और इस सत्यस्वरूप सर्वश्रेष्ठ पति को ही बसाया हुआ है॥ २॥

ਹਉ ਜਾਇ ਪੁਛਾ ਸੋਹਾਗ ਸੁਹਾਗਣਿ ਤੁਸੀ ਕਿਉ ਪਿਰੁ ਪਾਇਅੜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥

हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥

मैं जाकर भाग्यशाली सुहागिन से पूछती हूँ कि आपने कैसे मेरे प्रभु (सुहाग) को प्राप्त किया है।

ਮੈ ਊਪਰਿ ਨਦਰਿ ਕਰੀ ਪਿਰਿ ਸਾਚੈ ਮੈ ਛੋਡਿਅੜਾ ਮੇਰਾ ਤੇਰਾ ॥

मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥

वह कहती है कि मैंने मेरे-तेरे के अन्तर को छोड़ दिया है, इसलिए मेरे सच्चे पति-परमेश्वर ने मुझ पर कृपा-दृष्टि की है।

ਸਭੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਉ ਕਰਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਇਤੁ ਮਾਰਗਿ ਭੈਣੇ ਮਿਲੀਐ ॥

सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥

हे मेरी बहन ! अपना मन, तन, प्राण एवं सर्वस्व हरि-प्रभु को अर्पित कर दे, यही उससे मिलन का सुगम मार्ग है।

ਆਪਨੜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਨਾਨਕ ਜੋਤਿ ਜੋਤੀ ਰਲੀਐ ॥੩॥

आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥३॥

हे नानक ! अपना प्रभु जिस पर कृपा-दृष्टि से देखता है, उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ ३॥

ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਮੈ ਦੇਇ ਸਨੇਹਾ ਤਿਸੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਪਣਾ ਦੇਵਾ ॥

जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥

जो कोई पुण्यात्मा मुझे मेरे हरि-प्रभु का सन्देश देती है, उसे मैं अपना तन-मन अर्पण करती हूँ।

ਨਿਤ ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਸੇਵ ਕਮਾਵਾ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਪਾਣੀ ਢੋਵਾਂ ॥
नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां ॥
मैं नित्य ही उसे पंखा फेरती हूँ, उसकी श्रद्धा से सेवा करती हूँ और उसके समक्ष जल लाती हूँ।

ਨਿਤ ਨਿਤ ਸੇਵ ਕਰੀ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਜੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਏ ॥
नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥
जो मुझे हरि की हरि-कथा सुनाता है, उस हरि के सेवक की मैं दिन-रात सर्वदा सेवा करती हूँ।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਆਸ ਪੁਜਾਏ ॥੪॥
धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥४॥
हे नानक ! मेरा पूर्ण गुरु-सतगुरु धन्य-धन्य है, जो मेरे मन की आशा पूरी करता है ॥४॥

ਗੁਰੁ ਸਜਣੁ ਮੇਰਾ ਮੇਲਿ ਹਰੇ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਾ ॥
गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥
हे हरि ! मुझे मेरा सज्जन गुरु मिला दो, जिससे मिलकर मैं हरि-नाम का ध्यान करता रहूँ।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਹੁ ਹਰਿ ਗੋਸਟਿ ਪੂਛਾਂ ਕਰਿ ਸਾਂਝੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਂ ॥
गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां ॥
मैं गुरु-सतगुरु से हरि की गोष्टि-वार्ता पूछू और उससे सांझ डालकर हरि का गुणगान करूँ।

ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਸਦ ਹਰਿ ਕੇ ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਤੇਰਾ ॥
गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥
हे हरि ! मैं नित्य-नित्य सर्वदा ही तेरा गुणगान करता रहूँ और तेरा नाम सुनकर मेरा मन आध्यात्मिक रूप से जीवित है।

ਨਾਨਕ ਜਿਤੁ ਵੇਲਾ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਤਿਤੁ ਵੇਲੈ ਮਰਿ ਜਾਇ ਜੀਉ ਮੇਰਾ ॥੫॥
नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥५॥
हे नानक ! जिस समय मुझे मेरा स्वामी प्रभु विस्मृत हो जाता है, उस समय मेरी आत्मा मर जाती है।॥५॥

ਹਰਿ ਵੇਖਣ ਕਉ ਸਭੁ ਕੋਈ ਲੋਚੈ ਸੋ ਵੇਖੈ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਵਿਖਾਲੇ ॥
हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥
हर कोई हरि-दर्शन की तीव्र लालसा करता है लेकिन हरि उसे ही अपने दर्शन देता है, जिसे वह अपने दर्शन स्वयं प्रदान करता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥
जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥
मेरा प्रियतम जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, वह सर्वदा ही परमेश्वर का सिमरन करता है।

ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ਜਿਸੁ ਸਤਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੇਰਾ ਮਿਲਿਆ ॥
सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥
जिसे मेरा पूर्ण सतगुरु मिल जाता है, वह सर्वदा ही हरि-नाम की आराधना करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਇਕੇ ਹੋਏ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰਲਿਆ ॥੬॥੧॥੩॥
नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥६॥१॥३॥
हे नानक ! हरि का सेवक एवं हरि एक ही रूप हो गए हैं।चूंकि हरि का जाप करने से हरि-सेवक भी हरि में ही समा गया है॥ ६ ॥ १॥ ३ ॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧
वडहंसु महला ५ घरु १
वडहंसु महला ५ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਅਤਿ ਊਚਾ ਤਾ ਕਾ ਦਰਬਾਰਾ ॥
अति ऊचा ता का दरबारा ॥
उस भगवान का दरबार अत्यंत ऊँचा है तथा

ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਕਿਛੁ ਪਾਰਾਵਾਰਾ ॥
अंतु नाही किछु पारावारा ॥
उसका कोई अन्त अथवा कोई ओर-छोर नहीं।

ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ਲਖ ਧਾਵੈ ॥
कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥
करोड़ों, करोड़ों, करोड़ों-लाखों ही जीव भागदौड़ करते हैं किन्तु

ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਤਾ ਕਾ ਮਹਲੁ ਨ ਪਾਵੈ ॥੧॥
इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥१॥
उसके यथार्थ निवास का भेद एक तिल मात्र भी नहीं पा सकते ॥१॥

ਸੁਹਾਵੀ ਕਉਣੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥१॥ रहाउ ॥
वह कौन-सा समय शुभ सुहावना है, जब प्रभु से मिलन होता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਲਾਖ ਭਗਤ ਜਾ ਕਉ ਆਰਾਧਹਿ ॥
लाख भगत जा कउ आराधहि ॥
जिस परमात्मा की लाखों ही भक्त आराधना करते हैं।

ਲਾਖ ਤਪੀਸਰ ਤਪੁ ਹੀ ਸਾਧਹਿ ॥
लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥
लाखों ही तपस्वी उसकी तपस्या करते हैं।

ਲਾਖ ਜੋਗੀਸਰ ਕਰਤੇ ਜੋਗਾ ॥
लाख जोगीसर करते जोगा ॥
लाखों ही योगेश्वर योग-साधना करते हैं।

ਲਾਖ ਭੋਗੀਸਰ ਭੋਗਹਿ ਭੋਗਾ ॥੨॥
लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥२॥
लाखों ही भोगी उसके भोगों को भोगते रहते हैं।॥ २॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਸਹਿ ਜਾਣਹਿ ਥੋਰਾ ॥
घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥
वह प्रत्येक हृदय में निवास करता है परन्तु बहुत थोड़े ही इसे जानते हैं।

ਹੈ ਕੋਈ ਸਾਜਣੁ ਪਰਦਾ ਤੋਰਾ ॥
है कोई साजणु परदा तोरा ॥
क्या कोई ऐसा सज्जन है, जो प्रभु और हमारे बीच बनी हुई झूठ की दीवार को तोड़ दे ?

ਕਰਉ ਜਤਨ ਜੇ ਹੋਇ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥
करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥
मैं कोई ऐसा प्रयास करता हूँ कि वह परमात्मा हम पर मेहरबान हो जाए और

ਤਾ ਕਉ ਦੇਈ ਜੀਉ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੩॥
ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥३॥
फिर मैं उस पर अपना जीवन न्योछावर कर दूँ॥ ३ ॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਸੰਤਨ ਪਹਿ ਆਇਆ ॥
फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥
प्रभु-खोज में भटकता-भटकता मैं संतों के पास आया हूँ और

ਦੂਖ ਭ੍ਰਮੁ ਹਮਾਰਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਇਆ ॥
दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥
उन्होंने मेरे सभी दुःख एवं भ्रम मिटा दिए हैं।

ਮਹਲਿ ਬੁਲਾਇਆ ਪ੍ਰਭ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭੂੰਚਾ ॥
महलि बुलाइआ प्रभ अम्रितु भूंचा ॥
नामामृत का पान करने के लिए प्रभु ने मुझे अपने चरणाश्रय में बुलाया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਊਚਾ ॥੪॥੧॥
कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥४॥१॥
हे नानक ! मेरा प्रभु सबसे बड़ा एवं सर्वोपरि है॥ ४॥ १॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५॥

ਧਨੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਜਿਤੁ ਦਰਸਨੁ ਕਰਣਾ ॥
धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥
वह समय बड़ा शुभ एवं धन्य है, जब परमात्मा के दर्शन प्राप्त होते हैं।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥੧॥
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥१॥
मैं अपने सतिगुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

ਜੀਅ ਕੇ ਦਾਤੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ॥
जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तुम हम सभी के प्राणदाता हो।

ਮਨੁ ਜੀਵੈ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮੁ ਚਿਤੇਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन तो प्रभु का नाम-स्मरण करने से ही जीवित है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਚੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਤੁਮਾਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
सचु मंत्रु तुमारा अम्रित बाणी ॥
हे सर्वेश्वर ! तुम्हारा नाम-मंत्र ही सत्य है और तुम्हारी वाणी अमृत है।

ਸੀਤਲ ਪੁਰਖ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਸੁਜਾਣੀ ॥੨॥
सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ॥२॥
तू शीतल शान्ति देने वाला है और तेरी दृष्टि त्रिकालदर्शी है ॥२॥

ਸਚੁ ਹੁਕਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਤਖਤਿ ਨਿਵਾਸੀ ॥
सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥
तुम्हारा हुक्म सत्य है और तुम ही सिंहासन पर विराजमान होने वाले हो।

ਆਇ ਨ ਜਾਵੈ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੩॥
आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥३॥
मेरा प्रभु अमर है और वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता ॥३॥

ਤੁਮ ਮਿਹਰਵਾਨ ਦਾਸ ਹਮ ਦੀਨਾ ॥
तुम मिहरवान दास हम दीना ॥
तुम हमारे मेहरबान मालिक हो और हम तेरे दीन सेवक हैं।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਭਰਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ॥੪॥੨॥
नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥४॥२॥
हे नानक ! सबका मालिक प्रभु सर्वव्यापक है॥ ४॥ २॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਤੂ ਬੇਅੰਤੁ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਜਾਣੈ ॥
तू बेअंतु को विरला जाणै ॥
हे हरि ! तू बेअंत है और कोई विरला ही इस रहस्य को जानता है।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੈ ॥੧॥
गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥१॥
गुरु की कृपा से कोई विरला ही शब्द की पहचान करता है॥ १॥

ਸੇਵਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਪਿਆਰੇ ॥
सेवक की अरदासि पिआरे ॥
हे प्रियतम ! तेरे सेवक की यही विनम्र प्रार्थना है कि

ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣ ਤੁਮਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारे चरणों में जाप करता हुआ ही जीवित रहूँ ॥१॥ रहाउ॥

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ॥
दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥
हे मेरे दाता प्रभु ! तू बड़ा दयालु एवं सर्वशक्तिमान है,

ਜਿਸਹਿ ਜਨਾਵਹੁ ਤਿਨਹਿ ਤੁਮ ਜਾਤੇ ॥੨॥
जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥२॥
वही तुझे जानता है, जिसे तू सूझ प्रदान करता है ॥२॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
सदा सदा जाई बलिहारी ॥
मैं सदा-सर्वदा ही तुझ पर बलिहारी जाता हूँ और

ਇਤ ਉਤ ਦੇਖਉ ਓਟ ਤੁਮਾਰੀ ॥੩॥
इत उत देखउ ओट तुमारी ॥३॥
लोक-परलोक में तुम्हारी ही ओट देखता हूँ॥ ३॥

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਗੁਣੁ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਤਾ ॥
मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥
हे मालिक ! मैं गुणहीन हूँ और मैं तेरे किसी भी उपकार को नहीं जान सका।

ਨਾਨਕ ਸਾਧੂ ਦੇਖਿ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥੪॥੩॥
नानक साधू देखि मनु राता ॥४॥३॥
नानक का कथन है कि साधु के दर्शन प्राप्त करके मेरा मन तेरे प्रेम-रंग में अनुरक्त हो गया है ॥४॥३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਃ ੫ ॥
वडहंसु मः ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪੂਰਾ ॥
अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥
वह सर्वशक्तिमान प्रभु बड़ा अंतर्यामी है।

ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਸਾਧੂ ਕੀ ਧੂਰਾ ॥੧॥
दानु देइ साधू की धूरा ॥१॥
हे प्रभु ! मुझे साधुओं की चरण-धूलि का दान प्रदान करो॥ १॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥
हे दीनदयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा करो।

ਤੇਰੀ ਓਟ ਪੂਰਨ ਗੋਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरी ओट पूरन गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥
हे सर्वज्ञ ! हे जगतपालक ! हमें तेरा ही आश्रय है॥ १॥ रहाउ ॥

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥
जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥
परमात्मा जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है।

ਨਿਕਟਿ ਵਸੈ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਰੇ ॥੨॥
निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥२॥
वह हमारे निकट ही निवास करता है और कहीं दूर नहीं है॥ २॥

ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਧਿਆਏ ॥
जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥
जिस पर वह कृपा-दृष्टि करता है, वही उसका ध्यान करता है और

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੩॥
आठ पहर हरि के गुण गाए ॥३॥
आठ प्रहर हरि का गुणगान करता रहता है॥ ३॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰੇ ॥
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥
वह सभी जीव-जन्तुओं का पालन-पोषण करता है और

ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਦੁਆਰੇ ॥੪॥੪॥
सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥४॥४॥
नानक ने तो हरि के द्वार की शरण ली है ॥४॥४॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਤੂ ਵਡ ਦਾਤਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
तू वड दाता अंतरजामी ॥
तू महान् दाता एवं अन्तर्यामी है।

ਸਭ ਮਹਿ ਰਵਿਆ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥
सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥१॥
हे मालिक प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है और सबमें समाया हुआ है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥
मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तुम्हारे नाम का ही मुझे सहारा है और

ਹਉ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਾ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥१॥ रहाउ ॥
मैं तेरा नाम सुन-सुनकर ही जीवित रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ ॥
तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥
हे मेरे पूर्ण सतगुरु ! मैं तेरी शरण में हूँ।

ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ਸੰਤਾ ਧੂਰੇ ॥੨॥
मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥२॥
संतों की चरण-धूलि से मन निर्मल हो जाता है।॥ २॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥
चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥
हे परमेश्वर ! अपने हृदय में तेरे सुन्दर चरण-कमलों को ही मैंने बसाया हुआ है और

ਤੇਰੇ ਦਰਸਨ ਕਉ ਜਾਈ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੩॥
तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥३॥
तेरे दर्शन पर मैं बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥
करि किरपा तेरे गुण गावा ॥
मुझ पर अपनी कृपा करो चूंकि मैं तेरा ही गुणगान करता रहूँ।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਵਾ ॥੪॥੫॥
नानक नामु जपत सुखु पावा ॥४॥५॥
हे नानक ! मैं परमात्मा के नाम का भजन करने से ही सुख प्राप्त करता हूँ॥ ४॥ ५ ॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਜੈ ॥
साधसंगि हरि अम्रितु पीजै ॥
संतों की सभा में रहकर हरिनामामृत का पान करना चाहिए।

ਨਾ ਜੀਉ ਮਰੈ ਨ ਕਬਹੂ ਛੀਜੈ ॥੧॥
ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥१॥
इसके फलस्वरूप जीवात्मा न कभी मरती है और न ही इसका कभी नाश होता है॥ १॥

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ॥
वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥
बड़े भाग्य से ही पूर्ण गुरु की प्राप्ति होती है और

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से ही प्रभु का ध्यान किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਹਰਿ ਮਾਣਕ ਲਾਲਾ ॥
रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥
हरि का नाम ही रत्न, जवाहर, माणिक एवं मोती है।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਨਿਹਾਲਾ ॥੨॥
सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥२॥
प्रभु का सिमरन करने से मैं कृतार्थ हो गया हूँ॥ २॥

ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਸਾਧੂ ਸਰਣਾ ॥
जत कत पेखउ साधू सरणा ॥
जहाँ-कहीं भी मैं देखता हूँ साधु के अतिरिक्त कोई शरण-स्थल नजर नहीं आता।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਨਿਰਮਲ ਮਨੁ ਕਰਣਾ ॥੩॥
हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥३॥
हरि का गुणगान करने से मन निर्मल हो जाता है॥ ३॥

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਮੇਰਾ ਸੁਆਮੀ ਵੂਠਾ ॥
घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥
सभी के हृदय में मेरा मालिक प्रभु ही निवास कर रहा है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਪ੍ਰਭੁ ਤੂਠਾ ॥੪॥੬॥
नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥४॥६॥
हे नानक ! जब परमात्मा प्रसन्न होता है तो ही जीव को नाम की देन मिलती है ॥४॥६॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਵਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥
हे दीनदयाल प्रभु ! सदा मेरी याद में रहो और मुझे कदापि न भूलो।

ਤੇਰੀ ਸਰਣਿ ਪੂਰਨ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥१॥ रहाउ ॥
हे पूर्ण कृपालु ! मैं तो तेरी शरण में ही आया हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਹ ਚਿਤਿ ਆਵਹਿ ਸੋ ਥਾਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ॥
जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥
हे प्रभु ! जहाँ कहीं भी तुम याद आते हो, वह स्थान सुहावना हो जाता है।

ਜਿਤੁ ਵੇਲਾ ਵਿਸਰਹਿ ਤਾ ਲਾਗੈ ਹਾਵਾ ॥੧॥
जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥१॥
जिस समय भी मैं तुझे भुला देता हूँ तो दुःखी होकर मुझे पछतावा होता है ॥ १॥

ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਤੂ ਸਦ ਹੀ ਸਾਥੀ ॥
तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥
ये सभी जीव तेरे ही हैं और तुम उनके सर्वदा ही साथी हो।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਤੇ ਕਢੁ ਦੇ ਹਾਥੀ ॥੨॥
संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥२॥
अपना हाथ देकर हमें भयानक संसार-सागर से बाहर निकाल दो ॥ २॥

ਆਵਣੁ ਜਾਣਾ ਤੁਮ ਹੀ ਕੀਆ ॥
आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥
यह जीवन-मृत्यु का बन्धन तुम्हारे द्वारा ही बनाया हुआ है।

ਜਿਸੁ ਤੂ ਰਾਖਹਿ ਤਿਸੁ ਦੂਖੁ ਨ ਥੀਆ ॥੩॥
जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥३॥
जिसकी तू स्वयं रक्षा करता है, उसे कोई दु:ख प्रभावित नहीं करता॥ ३ ॥

ਤੂ ਏਕੋ ਸਾਹਿਬੁ ਅਵਰੁ ਨ ਹੋਰਿ ॥
तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥
एक तू ही सबका मालिक है और (इस विश्व में) दूसरा कोई भी नहीं है,"

ਬਿਨਉ ਕਰੈ ਨਾਨਕੁ ਕਰ ਜੋਰਿ ॥੪॥੭॥
बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥४॥७॥
तेरे समक्ष नानक हाथ जोड़कर यही प्रार्थना करता है ॥४॥७॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਃ ੫ ॥
वडहंसु मः ५ ॥
वडहंसु मः ५ ॥

ਤੂ ਜਾਣਾਇਹਿ ਤਾ ਕੋਈ ਜਾਣੈ ॥
तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! जब तू ज्ञान प्रदान करता है तो ही कोई तुझे समझता है और

ਤੇਰਾ ਦੀਆ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥੧॥
तेरा दीआ नामु वखाणै ॥१॥
फिर वह तेरे प्रदान किए हुए नाम का जाप करता है॥ १॥

ਤੂ ਅਚਰਜੁ ਕੁਦਰਤਿ ਤੇਰੀ ਬਿਸਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

तू अचरजु कुदरति तेरी बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥

तू अद्भुत है और तेरी कुदरत भी आश्चर्यजनक है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਕਾਰਣੁ ਆਪੇ ਕਰਣਾ ॥
तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥
तू आप ही कारण और आप ही करने वाला है।

ਹੁਕਮੇ ਜੰਮਣੁ ਹੁਕਮੇ ਮਰਣਾ ॥੨॥
हुकमे जमणु हुकमे मरणा ॥२॥
तेरे हुक्म में ही जीवों का जन्म होता है और तेरे हुक्म में उनकी मृत्यु होती है॥ २॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਮਨ ਤਨ ਆਧਾਰੀ ॥
नामु तेरा मन तन आधारी ॥
तेरा नाम ही मेरे मन एवं तन का सहारा है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਬਖਸੀਸ ਤੁਮਾਰੀ ॥੩॥੮॥
नानक दासु बखसीस तुमारी ॥३॥८॥
दास नानक पर तो तुम्हारी ही बखशीश है॥ ३॥ ८ ॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨
वडहंसु महला ५ घरु २
वडहंसु महला ५ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੈ ਅੰਤਰਿ ਲੋਚਾ ਮਿਲਣ ਕੀ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਕਿਉ ਪਾਈ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ॥
मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥
हे प्रियतम प्रभु ! मेरे हृदय में तुझ से मिलने की प्रबल अभिलाषा है। मैं अपने पूर्ण गुरु को किस तरह प्राप्त कर सकता हूँ ?

ਜੇ ਸਉ ਖੇਲ ਖੇਲਾਈਐ ਬਾਲਕੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਬਿਨੁ ਖੀਰੇ ॥
जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥
चाहे बालक को सैकड़ों प्रकार के खेलों में लगाया जाए लेकिन वह दूध के बिना नहीं रह सकता।

ਮੇਰੈ ਅੰਤਰਿ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੈ ਅੰਮਾਲੀ ਜੇ ਸਉ ਭੋਜਨ ਮੈ ਨੀਰੇ ॥

मेरै अंतरि भुख न उतरै अमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥

हें मेरी सखी ! यदि मेरे लिए सैकड़ों प्रकार के स्वादिष्ट भोजन भी परोस दिए जाएँ, फिर भी मेरे हृदय की भूख दूर नहीं होती।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਪਿਰੰਮ ਕਾ ਬਿਨੁ ਦਰਸਨ ਕਿਉ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੧॥

मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥१॥

मेरे मन एवं तन में अपने प्रियतम प्रभु का ही प्रेम बसता है और उसके दर्शनों के बिना मेरे मन को कैसे धैर्य हो सकता है ? ॥ १॥

ਸੁਣਿ ਸਜਣ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਭਾਈ ਮੈ ਮੇਲਿਹੁ ਮਿਤ੍ਰੁ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥

सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥

हे मेरे सज्जन ! हे प्रीतम भाई ! ध्यानपूर्वक सुन, मेरा मिलन उस सुखों के दाता मित्र से करवा दो, क्योंकि

ਓਹੁ ਜੀਅ ਕੀ ਮੇਰੀ ਸਭ ਬੇਦਨ ਜਾਣੈ ਨਿਤ ਸੁਣਾਵੈ ਹਰਿ ਕੀਆ ਬਾਤਾ ॥

ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥

वह मेरे मन की समस्त पीड़ा-वेदना को जानता है और नित्य ही मुझे परमेश्वर की बातें सुनाता है।

ਹਉ ਇਕੁ ਖਿਨੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਾ ਜਿਉ ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਜਲ ਕਉ ਬਿਲਲਾਤਾ ॥

हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता ॥

मैं उसके बिना एक क्षण-मात्र भी नहीं रह सकता जैसे चातक स्वाति-बूंद हेतु रोता-कुरलाता रहता है, इसी प्रकार मैं भी उसके लिए कुरलाता हूँ।

ਹਉ ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੀ ਮੈ ਨਿਰਗੁਣ ਕਉ ਰਖਿ ਲੇਤਾ ॥੨॥

हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥२॥

हे परमेश्वर ! तेरे कौन से गुणों को याद करके अपने चित्त में धारण करूँ, तुम मुझ जैसे गुणहीन जीव की रक्षा करते रहते हो।॥ २॥

ਹਉ ਭਈ ਉਡੀਣੀ ਕੰਤ ਕਉ ਅੰਮਾਲੀ ਸੋ ਪਿਰੁ ਕਦਿ ਨੈਣੀ ਦੇਖਾ ॥

हउ भई उडीणी कंत कउ अमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥

हे मेरी प्यारी सखी ! अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती हुई मैं उदास हो गई हूँ।फिर मैं अपने उस पति-परमेश्वर को अपने नयनों से कब देखूंगी ?

ਸਭਿ ਰਸ ਭੋਗਣ ਵਿਸਰੇ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਿਤੈ ਨ ਲੇਖਾ ॥
सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥
पति-परमेश्वर के बिना मुझे समस्त रसों के भोग भूल गए हैं और वे किसी हिसाब में नहीं अर्थात् व्यर्थ ही हैं।

ਇਹੁ ਕਾਪੜੁ ਤਨਿ ਨ ਸੁਖਾਵਈ ਕਰਿ ਨ ਸਕਉ ਹਉ ਵੇਸਾ ॥
इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥
यह वस्त्र भी मेरे शरीर को अच्छे नहीं लगते, इसलिए इन वस्त्रों को भी नहीं पहन सकती।

ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਲਾਲੁ ਰਾਵਿਆ ਪਿਆਰਾ ਤਿਨ ਆਗੈ ਹਮ ਆਦੇਸਾ ॥੩॥
जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥३॥
जिन सखियों ने अपने प्रियतम प्रभु को प्रसन्न करके रमण किया है, मैं उनके समक्ष प्रणाम करती हूँ॥ ३॥

ਮੈ ਸਭਿ ਸੀਗਾਰ ਬਣਾਇਆ ਅੰਮਾਲੀ ਬਿਨੁ ਪਿਰ ਕਾਮਿ ਨ ਆਏ ॥
मै सभि सीगार बणाइआ अमाली बिनु पिर कामि न आए ॥
हे मेरी सखी ! मैंने सभी हार-श्रृंगार किए हैं परन्तु अपने प्रियतम के बिना ये किसी काम के नहीं अर्थात् व्यर्थ हैं।

ਜਾ ਸਹਿ ਬਾਤ ਨ ਪੁਛੀਆ ਅੰਮਾਲੀ ਤਾ ਬਿਰਥਾ ਜੋਬਨੁ ਸਭੁ ਜਾਏ ॥
जा सहि बात न पुछीआ अमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥
हे मेरी सखी ! जब मेरा स्वामी ही मेरी बात नहीं पूछता तो मेरा सारा यौवन व्यर्थ ही जा रहा है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਤੇ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅੰਮਾਲੀ ਜਿਨ ਸਹੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਏ ॥
धनु धनु ते सोहागणी अमाली जिन सहु रहिआ समाए ॥
हे मेरी सखी ! वे सुहागिन जीव-स्त्रियाँ धन्य-धन्य हैं, जिनके साथ उनका पति-प्रभु लीन हुआ रहता है।

ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਤਿਨ ਸੋਹਾਗਣੀ ਅੰਮਾਲੀ ਤਿਨ ਕੇ ਧੋਵਾ ਸਦ ਪਾਏ ॥੪॥
हउ वारिआ तिन सोहागणी अमाली तिन के धोवा सद पाए ॥४॥
हे मेरी सखी ! मैं उन सुहागिन जीव-स्त्रियों पर बलिहारी जाती हूँ और हमेशा ही उनके चरण धोती हूँ॥ ४॥

ਜਿਚਰੁ ਦੂਜਾ ਭਰਮੁ ਸਾ ਅੰਮਾਲੀ ਤਿਚਰੁ ਮੈ ਜਾਣਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਦੂਰੇ ॥
जिचरु दूजा भरमु सा अमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥
हे मेरी सखी ! जब तक मेरे भीतर द्वैतभाव का भ्रम था, तब तक मैंने अपने प्रभु को दूर ही जाना।

ਜਾ ਮਿਲਿਆ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਅੰਮਾਲੀ ਤਾ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਭ ਪੂਰੇ ॥
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥
हे मेरी सखी ! जब मुझे पूर्ण सतिगुरु मिल गया तो मेरी समस्त आशाएँ एवं अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई।

ਮੈ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ਅੰਮਾਲੀ ਪਿਰੁ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ॥
मै सरब सुखा सुख पाइआ अमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥
हे मेरी सखी ! मैंने सर्व-सुखों के सुख पति-प्रभु को प्राप्त कर लिया है, वह पति-परमेश्वर सबके हृदय में समाया हुआ है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿਆ ਅੰਮਾਲੀ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਲਗਿ ਪੈਰੇ ॥੫॥੧॥੯॥
जन नानक हरि रंगु माणिआ अमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥५॥१॥९॥
हे मेरी सखी ! गुरु-सतिगुरु के चरणों में लगकर नानक ने भी हरि के प्रेम-रंग का आनंद भोग लिया है ॥५॥१॥६॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਅਸਟਪਦੀਆ
वडहंसु महला ३ असटपदीआ
वडहंसु महला ३ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਧੁਨਿ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਾ ॥
सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥
वाणी सत्य है, अनहद ध्वनि सत्य है और शब्द का चिंतन सत्य है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਚੁ ਸਲਾਹਣਾ ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਡਭਾਗ ਹਮਾਰਾ ॥੧॥
अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥१॥
मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं हर वक्त सच्चे प्रभु का स्तुतिगान करता रहता हूँ॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਾਚੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥
हे मेरे मन ! सच्चे परमेश्वर के नाम पर न्योछावर हो जाओ।

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਹੋਇ ਰਹਹਿ ਤਾ ਪਾਵਹਿ ਸਚਾ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तू परमेश्वर का दासानुदास बन जाए तो तुझे सच्चा नाम प्राप्त हो जाएगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਹਵਾ ਸਚੀ ਸਚਿ ਰਤੀ ਤਨੁ ਮਨੁ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥
जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥
वह जिव्हा सच्ची है जो सत्य के साथ रंगी हुई है। इस तरह तन एवं मन भी सच्चे हो जाते हैं।

ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਹੋਰੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਜਾਸਹਿ ਜਨਮੁ ਸਭੁ ਖੋਇ ॥੨॥
बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥२॥
सच्चे परमेश्वर के अलावा किसी अन्य का यशोगान करने से मनुष्य अपना समूचा जीवन व्यर्थ ही गंवा कर चला जाता है॥ २॥

ਸਚੁ ਖੇਤੀ ਸਚੁ ਬੀਜਣਾ ਸਾਚਾ ਵਾਪਾਰਾ ॥
सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥
यदि सत्य की कृषि की जाए, सत्य का ही बीज बोया जाए और सच्चे परमेश्वर के नाम का ही व्यापार किया जाए तो

ਅਨਦਿਨੁ ਲਾਹਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥੩॥
अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥३॥
रात-दिन सत्यनाम का ही लाभ प्राप्त होता है और प्रभु-भक्ति के नाम-धन के भण्डार भरे रहते हैं।॥ ३॥

ਸਚੁ ਖਾਣਾ ਸਚੁ ਪੈਨਣਾ ਸਚੁ ਟੇਕ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥
सत्य का भोजन, सत्य का पहनावा एवं हरि-नाम का सच्चा सहारा

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਤਿਸੁ ਮਿਲੈ ਮਹਲੀ ਪਾਏ ਥਾਉ ॥੪॥
जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥४॥
उसे ही प्राप्त होता है, जिसे परमेश्वर स्वयं कृपा करके प्रदान करता है। ऐसे मनुष्य को परमात्मा के दरबार में स्थान प्राप्त हो जाता है॥ ४॥

ਆਵਹਿ ਸਚੇ ਜਾਵਹਿ ਸਚੇ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਮੂਲਿ ਨ ਪਾਹਿ ॥
आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥
ऐसे लोग सत्य में ही आते हैं, सत्य में चले जाते हैं और पुनः योनियों के चक्र में कदापि नहीं डाले जाते।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਚਿਆਰ ਹਹਿ ਸਾਚੇ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੫॥
गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥५॥
गुरुमुख परमेश्वर के सच्चे दरबार में सत्यवादी ही होते हैं और सत्य में ही समा जाते हैं।॥ ५॥

ਅੰਤਰੁ ਸਚਾ ਮਨੁ ਸਚਾ ਸਚੀ ਸਿਫਤਿ ਸਨਾਇ ॥
अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥
गुरुमुख भीतर से सच्चे हैं, उनका मन भी सच्चा है और वे परमेश्वर की सच्ची स्तुतिगान करते हैं।

ਸਚੈ ਥਾਨਿ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਸਤਿਗੁਰ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੬॥
सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥६॥
वे सच्चे स्थान पर विराजमान होकर सत्य की ही स्तुति करते हैं, मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ ६॥

ਸਚੁ ਵੇਲਾ ਮੂਰਤੁ ਸਚੁ ਜਿਤੁ ਸਚੇ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥
वह समय सत्य है और वह मुहूर्त भी सत्य है, जब मनुष्य का सच्चे परमेश्वर के साथ प्रेम होता है।

ਸਚੁ ਵੇਖਣਾ ਸਚੁ ਬੋਲਣਾ ਸਚਾ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ॥੭॥
सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥७॥
तब वह सत्य ही देखता है, सत्य ही बोलता है और सारी सृष्टि में सच्चा परमेश्वर ही उसे सर्वव्यापक अनुभव होता है॥ ७॥

ਨਾਨਕ ਸਚੈ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਿਲੇ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥
हे नानक ! जब परमेश्वर अपने साथ मिलाता है तो ही मनुष्य उसके साथ विलीन हो जाता है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖਸੀ ਆਪੇ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੮॥੧॥
जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥८॥१॥
जैसे प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे ही वह जीवों को रखता है और वह स्वयं ही अपनी इच्छानुसार करता है॥ ८॥ १॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਮਨੂਆ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਵਦਾ ਓਹੁ ਕੈਸੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
मनूआ दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥
मनुष्य का मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है तो फिर भला यह कैसे भगवान का यशोगान कर सकता है ?

ਇੰਦ੍ਰੀ ਵਿਆਪਿ ਰਹੀ ਅਧਿਕਾਈ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਨਿਤ ਸੰਤਾਵੈ ॥੧॥
इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥१॥
शरीर की इन्द्रियाँ अधिकतर दुष्कर्मों में लीन होती हैं और काम-क्रोध नित्य ही दुःखी करते हैं।॥ १॥

ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਸਹਜੇ ਗੁਣ ਰਵੀਜੈ ॥
वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥
उस परमात्मा की वाह-वाह करते हुए उसका ही सहज रूप में गुणगान करते रहना चाहिए।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਦੁਲਭੁ ਹੈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥
इस दुनिया में राम का नाम बड़ा दुर्लभ है और गुरु-उपदेश द्वारा ही हरि रस का पान करना चाहिए॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਬਦੁ ਚੀਨਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥
जब शब्द की पहचान करके मन निर्मल होता है तो वह भगवान का ही गुणगान करता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਤਾ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਵੈ ॥੨॥
गुरमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥२॥
जब गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य अपने आत्म स्वरूप को पहचान लेता है तो उसका प्रभु-चरणों में निवास हो जाता है॥ २॥

ਏ ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥
हे मेरे मन ! तू सर्वदा प्रेम-रंग में लीन रह और सदैव ही भगवान का गुणगान कर।

ਹਰਿ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਉ ॥੩॥
हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥३॥
निर्मल हरि सदैव ही सुख देने वाला है, उससे मनोवांछित फल पा लो॥ ३ ॥

ਹਮ ਨੀਚ ਸੇ ਊਤਮ ਭਏ ਹਰਿ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥
हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥
हरि की शरण में आकर हम नीच से उत्तम बन गए हैं।

ਪਾਥਰੁ ਡੁਬਦਾ ਕਾਢਿ ਲੀਆ ਸਾਚੀ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥
पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥४॥
उस सच्चे परमात्माका बड़ा बड़प्पन है, जिसने हम जैसे डूबते हुए पत्थरों को भी भवसागर से बचा लिया है॥ ४॥

ਬਿਖੁ ਸੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਏ ਗੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥
बिखु से अम्रित भए गुरमति बुधि पाई ॥
गुरु-उपदेश द्वारा निर्मल बुद्धि प्राप्त करके हम विष से अमृत बन गए हैं।

ਅਕਹੁ ਪਰਮਲ ਭਏ ਅੰਤਰਿ ਵਾਸਨਾ ਵਸਾਈ ॥੫॥
अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥५॥
आक से हम चंदन बन गए हैं और हमारे भीतर सुगंध का निवास हो गया है॥ ५॥

ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲੰਭੁ ਹੈ ਜਗ ਮਹਿ ਖਟਿਆ ਆਇ ॥
माणस जनमु दुल्मभु है जग महि खटिआ आइ ॥
यह मानव-जन्म बड़ा दुर्लभ है और इस जगत में आकर मैंने लाभ प्राप्त किया है।

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੬॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥६॥
जिसे पूर्ण भाग्य से सतगुरु मिलता है, वह हरि-नाम का सिमरन करता रहता है।॥ ६॥

ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ ਬਿਖੁ ਲਗੇ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥
मनमुख मनुष्य कुमार्गगामी होकर माया के विष में ही लीन रहता है तथा उसने अपना अमूल्य जन्म बेकार ही गंवा दिया है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਸਾਚਾ ਸਬਦੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥੭॥
हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥७॥
हरि का नाम सर्वदा ही सुखों का सागर है किन्तु मनमुख मनुष्य सच्चे नाम से प्रेम नहीं करता ॥ ७॥

ਮੁਖਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਕਰੈ ਵਿਰਲੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਇਆ ॥
मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥
अपने मुँह से सभी परमेश्वर का ही नाम उच्चरित करते हैं किन्तु विरले ही इसे अपने हृदय में बसाते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਵਸਿਆ ਮੋਖ ਮੁਕਤਿ ਤਿਨ੍ ਪਾਇਆ ॥੮॥੨॥
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥८॥२॥
हे नानक ! जिनके हृदय में हरि-नाम का निवास हुआ है, उन्हें मोक्ष एवं बन्धनों से मुक्ति प्राप्त हो गई है॥ ८ ॥ २॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ
वडहंसु महला १ छंत
वडहंसु महला १ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਾਇਆ ਕੂੜਿ ਵਿਗਾੜਿ ਕਾਹੇ ਨਾਈਐ ॥
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥
झूठ से दूषित किए हुए शरीर को स्नान करवाने का क्या अभिप्राय है ?

ਨਾਤਾ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਸਚੁ ਕਮਾਈਐ ॥
नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥
क्योंकि उस व्यक्ति का ही स्नान स्वीकार होता है जो सत्य की साधना करता है।

ਜਬ ਸਾਚ ਅੰਦਰਿ ਹੋਇ ਸਾਚਾ ਤਾਮਿ ਸਾਚਾ ਪਾਈਐ ॥
जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ ॥
जब हृदय में सत्य आ बसता है तो ही मनुष्य सच्चा हो जाता है और सच्चे परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है।

ਲਿਖੇ ਬਾਝਹੁ ਸੁਰਤਿ ਨਾਹੀ ਬੋਲਿ ਬੋਲਿ ਗਵਾਈਐ ॥
लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥
भाग्य के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और मनुष्य निरर्थक ही जुबानी बातें करता हुआ अपना जीवन नष्ट कर देता है।

ਜਿਥੈ ਜਾਇ ਬਹੀਐ ਭਲਾ ਕਹੀਐ ਸੁਰਤਿ ਸਬਦੁ ਲਿਖਾਈਐ ॥
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥
जहाँ भी जाकर हम बैठते हैं, वहाँ शुभ गुणों की बातें करनी चाहिए और परमात्मा के नाम को हृदय में अंकित करना चाहिए।

ਕਾਇਆ ਕੂੜਿ ਵਿਗਾੜਿ ਕਾਹੇ ਨਾਈਐ ॥੧॥
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥१॥
झूठ से दूषित किए हुए शरीर को स्नान करवाने का क्या अभिप्राय है ?॥ १॥

ਤਾ ਮੈ ਕਹਿਆ ਕਹਣੁ ਜਾ ਤੁਝੈ ਕਹਾਇਆ ॥
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥
हे हरि ! जब तूने मुझसे कहलाया तो ही मैंने तेरी नाम-महिमा का कथन किया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥
अम्रितु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥
हरि का अमृत नाम मेरे मन को अच्छा लगा है।

ਨਾਮੁ ਮੀਠਾ ਮਨਹਿ ਲਾਗਾ ਦੂਖਿ ਡੇਰਾ ਢਾਹਿਆ ॥
नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥
हरि-नाम मेरे मन को मधुर लगा है और इसने मेरे दु:खों के डेरे को ध्वस्त कर दिया है।

ਸੁਖੁ ਮਨ ਮਹਿ ਆਇ ਵਸਿਆ ਜਾਮਿ ਤੈ ਫੁਰਮਾਇਆ ॥
सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥
जब तूने फरमाया तो आत्मिक सुख मेरे मन में आकर निवास कर गया।

ਨਦਰਿ ਤੁਧੁ ਅਰਦਾਸਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਨਿ ਆਪੁ ਉਪਾਇਆ ॥
नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥
हे स्वयंभू, जब तेरी नदर हुई तो मेरी अरदास (प्रार्थना) हुई,

ਤਾ ਮੈ ਕਹਿਆ ਕਹਣੁ ਜਾ ਤੁਝੈ ਕਹਾਇਆ ॥੨॥
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥२॥
हे हरि ! जब तूने मुझसे कहलाया तो ही मैंने यह सब तेरी महिमा की है॥ २॥

ਵਾਰੀ ਖਸਮੁ ਕਢਾਏ ਕਿਰਤੁ ਕਮਾਵਣਾ ॥
वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥
शुभाशुभ कर्मों के अनुसार परमात्मा जीव को अमूल्य मनुष्य जन्म का अवसर देता है।

ਮੰਦਾ ਕਿਸੈ ਨ ਆਖਿ ਝਗੜਾ ਪਾਵਣਾ ॥
मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥
इसलिए किसी को भी बुरा कहकर झगड़ा नहीं खड़ा करना चाहिए।

ਨਹ ਪਾਇ ਝਗੜਾ ਸੁਆਮਿ ਸੇਤੀ ਆਪਿ ਆਪੁ ਵਞਾਵਣਾ ॥
नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥
अपने स्वामी से झगड़ा करके संकट उत्पन्न मत कर, क्योंकि इससे अपने आपको पूर्णतया बर्बाद करना ही है।

ਜਿਸੁ ਨਾਲਿ ਸੰਗਤਿ ਕਰਿ ਸਰੀਕੀ ਜਾਇ ਕਿਆ ਰੂਆਵਣਾ ॥
जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥
जिस मालिक के साथ रहना है, उससे बराबरी करने से फिर दुख आने पर उस पास जाकर रोने से तुझे क्या लाभ होना है ?

ਜੋ ਦੇਇ ਸਹਣਾ ਮਨਹਿ ਕਹਣਾ ਆਖਿ ਨਾਹੀ ਵਾਵਣਾ ॥
जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥
परमेश्वर जो सुख-दुख प्रदान करता है, उसे खुशी-खुशी मानना चाहिए और अपने मन को समझाना चाहिए कि निरर्थक ही डांवाडोल न हो।

ਵਾਰੀ ਖਸਮੁ ਕਢਾਏ ਕਿਰਤੁ ਕਮਾਵਣਾ ॥੩॥
वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥३॥
किए हुए शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही परमात्मा जीव को अमूल्य मनुष्य जन्म का अवसर प्रदान करता है॥ ३॥

ਸਭ ਉਪਾਈਅਨੁ ਆਪਿ ਆਪੇ ਨਦਰ�ि ਕਰੇ ॥
सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥
परमात्मा ने आप ही समूचे जगत का निर्माण किया है और आप ही सब पर कृपा-दृष्टि करता है।

ਕਉੜਾ ਕੋਇ ਨ ਮਾਗੈ ਮੀਠਾ ਸਭ ਮਾਗੈ ॥
कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥
कोई भी प्राणी दुःख नहीं माँगता और सभी सुख ही माँगते हैं।

ਸਭੁ ਕੋਇ ਮੀਠਾ ਮੰਗਿ ਦੇਖੈ ਖਸਮ ਭਾਵੈ ਸੋ ਕਰੇ ॥
सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥
हर कोई जीव चाहे सुख की ही अभिलाषा कर लें किन्तु मालिक वही करता है जो उसे मंजूर है।

ਕਿਛੁ ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਅਨੇਕ ਕਰਣੀ ਨਾਮ ਤੁਲਿ ਨ ਸਮਸਰੇ ॥
किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥
दान-पुण्य एवं अनेकों धर्म-कर्म परमेश्वर के नाम के बराबर भी नहीं।

ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਨਾਮੁ ਮਿਲਿਆ ਕਰਮੁ ਹੋਆ ਧੁਰਿ ਕਦੇ ॥
नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥
हे नानक ! जिन्हें नाम की देन प्राप्त हुई है, उन्हें प्रारम्भ से ही कभी उसका कर्म हुआ है।

ਸਭ ਉਪਾਈਅਨੁ ਆਪਿ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੪॥੧॥
सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥४॥१॥
परमात्मा ने आप ही सारी दुनिया को पैदा किया है और आप ही सब पर कृपा-दृष्टि करता है॥॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
वडहंसु महला १ ॥
वडहंसु महला १ ॥

ਕਰਹੁ ਦਇਆ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥
करहु दइआ तेरा नामु वखाणा ॥
हे परमात्मा ! मुझ पर दया करो, ताकि तेरे नाम का जाप करता रहूँ।

ਸਭ ਉਪਾਈਐ ਆਪਿ ਆਪੇ ਸਰਬ ਸਮਾਣਾ ॥
सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥
तूने स्वयं ही सारी दुनिया पैदा की है और तू स्वयं ही सब जीवों में समाया हुआ है।

ਸਰਬੇ ਸਮਾਣਾ ਆਪਿ ਤੂਹੈ ਉਪਾਇ ਧੰਧੈ ਲਾਈਆ ॥
सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥
तू खुद ही सब जीवों में समाया हुआ है और तूने ही उन्हें पैदा करके जगत के धंधों में लगाया हुआ है।

ਇਕਿ ਤੁਝ ਹੀ ਕੀਏ ਰਾਜੇ ਇਕਨਾ ਭਿਖ ਭਵਾਈਆ ॥
इकि तुझ ही कीए राजे इकना भिख भवाईआ ॥
किसी को तूने स्वयं ही बादशाह बनाया हुआ है और किसी को भिखारी बनाकर दर-दर पर भिक्षा माँगने के लिए भटका रहा है।

ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਤੁਝੁ ਕੀਆ ਮੀਠਾ ਏਤੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣਾ ॥
लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥
लोभ एवं मोह को रचकर इतना मीठा बना दिया है कि इस भ्रम में फँसकर दुनिया भटक रही है।

ਸਦਾ ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਅਪਣੀ ਤਾਮਿ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥੧॥
सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥१॥
हे प्रभु ! मुझ पर सर्वदा ही दया करो, चूंकि तेरे नाम का जाप करता रहूँ॥ १॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਹੈ ਸਾਚਾ ਸਦਾ ਮੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥
नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥
हे जग के रचयिता ! तेरा नाम सदा सत्य है और यह हमेशा ही मेरे मन को भला लगता है।

ਦੂਖੁ ਗਇਆ ਸੁਖੁ ਆਇ ਸਮਾਣਾ ॥
दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥
मेरा दुःख नाश हो गया है तथा सुख मेरे हृदय में आकर समा गया है।

ਗਾਵਨਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣਾ ॥
गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥
हे परमेश्वर ! देवते, मनुष्य, विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य तेरा ही गुणगान करते हैं।

ਸੁਰਿ ਨਰ ਸੁਘੜ ਸੁਜਾਣ ਗਾਵਹਿ ਜੋ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਵਹੇ ॥
सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥
जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं, वही देवते, नर, विद्वान एवं चतुर मनुष्य तेरा यशोगान करते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੇ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਵਹੇ ॥
माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥
माया के मोह में मुग्ध हुए व्यक्ति परमात्मा को याद नहीं करते और अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं।

ਇਕਿ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਨ ਚੇਤਹਿ ਮੂਲੇ ਜੋ ਆਇਆ ਤਿਸੁ ਜਾਣਾ ॥
इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा ॥
कुछ विमूढ़ एवं मूर्ख लोग कदापि ईश्वर को स्मरण नहीं करते उन्हें यह ध्यान नहीं कि जो जन्म लेकर दुनिया में आया है, उसने जीवन छोड़कर अवश्य चले जाना है।

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ਮੈ ਮਨਿ ਭਾਣਾ ॥੨॥
नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥२॥
हे जग के मालिक ! तेरा नाम सदैव सत्य है और वह मेरे मन की हमेशा मीठा लगता है ॥२॥

ਤੇਰਾ ਵਖਤੁ ਸੁਹਾਵਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥
तेरा वखतु सुहावा अम्रितु तेरी बाणी ॥
हे सच्चे परमेश्वर ! वह समय बहुत सुहावना है, जब तेरी आराधना की जाती है और तेरी वाणी अमृत समान है।

ਸੇਵਕ ਸੇਵਹਿ ਭਾਉ ਕਰਿ ਲਾਗਾ ਸਾਉ ਪਰਾਣੀ ॥
सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥
तेरे सेवक प्रेमपूर्वक तेरी सेवा-भक्ति करते हैं और उन प्राणियों को तेरी सेवा-भक्ति का स्वाद प्राप्त हुआ है।

ਸਾਉ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਨਾ ਲਾਗਾ ਜਿਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਇਆ ॥
साउ प्राणी तिना लागा जिनी अम्रितु पाइआ ॥
केवल वही प्राणी परमात्मा की सेवा-भक्ति का स्वाद प्राप्त करते हैं, जिन्हें नामामृत की देन प्राप्त हुई है।

ਨਾਮਿ ਤੇਰੈ ਜੋਇ ਰਾਤੇ ਨਿਤ ਚੜਹਿ ਸਵਾਇਆ ॥
नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ ॥
जो जीव तेरे नाम में लीन हैं, वे नित्य ही प्रफुल्लित होते रहते हैं।

ਇਕੁ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਨ ਹੋਇ ਸੰਜਮੁ ਜਾਮਿ ਨ ਏਕੁ ਪਛਾਣੀ ॥
इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥
कुछ लोग जो एक परमात्मा को नहीं पहचानते, उनसे कर्म-धर्म एवं संयम की साधना नहीं होती।

ਵਖਤੁ ਸੁਹਾਵਾ ਸਦਾ ਤੇਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ॥੩॥
वखतु सुहावा सदा तेरा अम्रित तेरी बाणी ॥३॥
हे परमेश्वर ! वह समय हमेशा सुहावना है, जब तेरी आराधना की जाती है और तेरी वाणी अमृत समान है॥ ३॥

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਾਚੇ ਨਾਵੈ ॥

हउ बलिहारी साचे नावै ॥

हे परमेश्वर ! मैं तेरे सत्य-नाम पर न्यौछावर हूँ।

ਰਾਜੁ ਤੇਰਾ ਕਬਹੁ ਨ ਜਾਵੈ ॥
राजु तेरा कबहु न जावै ॥
तेरा शासन कदापि नष्ट नहीं होता।

ਰਾਜੋ ਤ ਤੇਰਾ ਸਦਾ ਨਿਹਚਲੁ ਏਹੁ ਕਬਹੁ ਨ ਜਾਵਏ ॥
राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥
तेरा शासन सदैव अटल है यह कदापि नाश नहीं होता, अर्थात् अनश्वर है।

ਚਾਕਰੁ ਤ ਤੇਰਾ ਸੋਇ ਹੋਵੈ ਜੋਇ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਏ ॥
चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥
तेरा तो वही सच्चा सेवक है, जो सहज अवस्था में लीन रहता है।

ਦੁਸਮਨੁ ਤ ਦੂਖੁ ਨ ਲਗੈ ਮੂਲੇ ਪਾਪੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਏ ॥
दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥
कोई दुश्मन एवं दुःख मूल रूप से उसे स्पर्श नहीं करते और न ही पाप उसके निकट आते हैं।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਦਾ ਹੋਵਾ ਏਕ ਤੇਰੇ ਨਾਵਏ ॥੪॥
हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥४॥
हे परमेश्वर ! मैं एक तेरे नाम पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ ॥४॥

ਜੁਗਹ ਜੁਗੰਤਰਿ ਭਗਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥
हे हरि ! युग-युगान्तरों से तुम्हारे ही भक्त हुए हैं।

ਕੀਰਤਿ ਕਰਹਿ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੈ ਦੁਆਰੇ ॥
कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥
वे तेरे द्वार पर खड़े होकर तेरी ही कीर्ति करते रहे हैं।

ਜਪਹਿ ਤ ਸਾਚਾ ਏਕੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥
जपहि त साचा एकु मुरारे ॥
वे एक सत्यस्वरूप मुरारि का ही भजन करते हैं और

ਸਾਚਾ ਮੁਰਾਰੇ ਤਾਮਿ ਜਾਪਹਿ ਜਾਮਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਹੇ ॥
साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥
सच्चे मुरारि का तभी भजन करते हैं जब वे उसे अपने मन में बसा लेते हैं।

ਭਰਮੋ ਭੁਲਾਵਾ ਤੁਝਹਿ ਕੀਆ ਜਾਮਿ ਏਹੁ ਚੁਕਾਵਹੇ ॥
भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥
यह भ्रम का भुलावा जो तूने खुद ही पैदा किया है, तू इसे दूर कर देता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਕਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਜਮਹੁ ਉਬਾਰੇ ॥
गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥
गुरु की कृपा द्वारा मुझ पर भी कृपा करो और मुझे यम से बचा लो।

ਜੁਗਹ ਜੁਗੰਤਰਿ ਭਗਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥੫॥
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥५॥
हे हरि ! युगों-युगान्तरों से तुम्हारे ही भक्त तेरी महिमा कर रहे हैं।॥ ५ ॥

ਵਡੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥
वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥
हे मेरे सर्वोच्च परमेश्वर ! तू अलक्ष्य एवं अपार है।

ਕਿਉ ਕਰਿ ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀ ਹਉ ਆਖਿ ਨ ਜਾਣਾ ॥
किउ करि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥
मैं किस तरह तेरे समक्ष प्रार्थना करूँ ? मैं नहीं जानता कि मैं किस तरह प्रार्थना करूँ।

ਨਦਰਿ ਕਰਹਿ ਤਾ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਾ ॥
नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥
यदि तुम मुझ पर कृपा-दृष्टि करो तो ही मैं सत्य को पहचान सकता हूँ।

ਸਾਚੋ ਪਛਾਣਾ ਤਾਮਿ ਤੇਰਾ ਜਾਮਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਵਹੇ ॥
साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥
मैं तेरे सत्य को तभी समझ सकता हूँ, यदि तुम स्वयं मुझे सूझ प्रदान करोगे।

ਦੂਖ ਭੂਖ ਸੰਸਾਰਿ ਕੀਏ ਸਹਸਾ ਏਹੁ ਚੁਕਾਵਹੇ ॥
दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥
दु:ख एवं भूख तूने ही दुनिया में रचे हैं और इस चिन्ता-तनाव से मुझे मुक्त कीजिए।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਜਾਇ ਸਹਸਾ ਬੁਝੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਾ ॥
बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥
नानक प्रार्थना करता है कि मनुष्य की चिन्ता-तनाव तभी दूर होता है, यदि वह गुरु की शिक्षा को समझ ले।

ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਹੈ ਆਪਿ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥੬॥
वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥६॥
वह महान् परमात्मा आप ही अलक्ष्य एवं अनन्त है॥ ६॥

ਤੇਰੇ ਬੰਕੇ ਲੋਇਣ ਦੰਤ ਰੀਸਾਲਾ ॥
तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तेरे नयन अत्यन्त सुन्दर हैं और तेरे दाँत भी अनुपम हैं।

ਸੋਹਣੇ ਨਕ ਜਿਨ ਲੰਮੜੇ ਵਾਲਾ ॥
सोहणे नक जिन लमड़े वाला ॥
जिस परमात्मा के बड़े लम्बे केश हैं, उसकी नाक बहुत सुन्दर है।

ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਸੁਇਨੇ ਕੀ ਢਾਲਾ ॥
कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥
तेरी कंचन काया स्वर्ण रूप में ढली हुई है।

ਸੋਵੰਨ ਢਾਲਾ ਕ੍ਰਿਸਨ ਮਾਲਾ ਜਪਹੁ ਤੁਸੀ ਸਹੇਲੀਹੋ ॥
सोवंन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥
हे मेरी सहेलियों ! स्वर्ण में ढली हुई उसकी काया एवं कृष्ण (वर्ण जैसी) माला उसके पास है, उसकी आराधना करो।

ਜਮ ਦੁਆਰਿ ਨ ਹੋਹੁ ਖੜੀਆ ਸਿਖ ਸੁਣਹੁ ਮਹੇਲੀਹੋ ॥
जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥
हे सहेलियों ! यह उपदेश ध्यानपूर्वक सुनो कि उसकी आराधना करने से यमदूत तुम्हारे द्वार पर खड़ा नहीं होगा।

ਹੰਸ ਹੰਸਾ ਬਗ ਬਗਾ ਲਹੈ ਮਨ ਕੀ ਜਾਲਾ ॥
हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥
तुम्हारे मन की मैल निवृत्त हो जाएगी और साधारण हंस से सर्वश्रेष्ठ हंस बन जाओगे।

ਬੰਕੇ ਲੋਇਣ ਦੰਤ ਰੀਸਾਲਾ ॥੭॥
बंके लोइण दंत रीसाला ॥७॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तेरे नयन अत्यन्त सुन्दर हैं और तेरे दाँत बड़े रसदायक एवं अमूल्य हैं।॥ ७॥

ਤੇਰੀ ਚਾਲ ਸੁਹਾਵੀ ਮਧੁਰਾੜੀ ਬਾਣੀ ॥
तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥
हे प्रभु ! तेरी चाल बड़ी सुहावनी है और तेरी वाणी भी बड़ी मधुर है।

ਕੁਹਕਨਿ ਕੋਕਿਲਾ ਤਰਲ ਜੁਆਣੀ ॥
कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥
तुम कोयल की भाँति बोलते हो और तुम्हारा चंचल यौवन मदमस्त है।

ਤਰਲਾ ਜੁਆਣੀ ਆਪਿ ਭਾਣੀ ਇਛ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੀਏ ॥
तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥
तेरा मदमस्त चंचल यौवन तुझे ही अच्छा लगता है। इसका दर्शन मन की इच्छाओं को पूर्ण कर देता है।

ਸਾਰੰਗ ਜਿਉ ਪਗੁ ਧਰੈ ਠਿਮਿ ਠਿਮਿ ਆਪਿ ਆਪੁ ਸੰਧੂਰਏ ॥
सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥
तुम हाथी की भाँति आहिस्ता-आहिस्ता चरण रखते हो और अपने आप में मदमस्त रहते हो।

ਸ੍ਰੀਰੰਗ ਰਾਤੀ ਫਿਰੈ ਮਾਤੀ ਉਦਕੁ ਗੰਗਾ ਵਾਣੀ ॥
स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥
जो जीवात्मा अपने परमेश्वर के प्रेम में लीन है, वह मस्त होकर गंगा-जल की भाँति क्रीड़ाएँ करती है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਕਾ ਤੇਰੀ ਚਾਲ ਸੁਹਾਵੀ ਮਧੁਰਾੜੀ ਬਾਣੀ ॥੮॥੨॥
बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥८॥२॥
हरि का सेवक नानक विनती करता है कि हे हरि ! तेरी चाल बड़ी सुहावनी है और तेरी वाणी भी बड़ी मधुर-मीठी है॥ ८ ॥ २॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਛੰਤ
वडहंसु महला ३ छंत
वडहंसु महला ३ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਪਣੇ ਪਿਰ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਤੀ ਮੁਈਏ ਸੋਭਾਵੰਤੀ ਨਾਰੇ ॥
आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥
हे नाशवान् सुन्दर नारी ! तू अपने प्रिय-प्रभु के प्रेम-रंग में मग्न हो चुकी है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਿ ਰਹੀ ਮੁਈਏ ਪਿਰੁ ਰਾਵੇ ਭਾਇ ਪਿਆਰੇ ॥
सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥
तू सच्चे शब्द द्वारा अपने पति-प्रभु से मिल गई है और वह प्रेम-प्यार से तेरे साथ रमण करता है।

ਸਚੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੀ ਕੰਤਿ ਸਵਾਰੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਰਚਾਇਆ ॥
सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥
तू अपने प्रेम द्वारा सच्चे प्रभु की प्रियतमा बन गई है, तेरे स्वामी ने तुझे नाम द्वारा सुन्दर बना दिया है। तूने भगवान के साथ प्रेम बना लिया है।

ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਤਾ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇਆ ॥
आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥
जब तूने अपने अभिमान को दूर किया तो ही तूने अपने पति-प्रभु को पाया है और तेरा मन गुरु के शब्द द्वारा प्रभु में समाया रहता है।

ਸਾ ਧਨ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਈ ਪ੍ਰੇਮ ਕਸਾਈ ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥
सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥
ऐसी जीव-स्त्री जिसे उसके स्वामी के प्रेम ने आकर्षित किया हुआ है और जिसके अन्तर्मन को उसकी प्रीति प्यारी लगती है, वह उसके नाम से सुहावनी हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮੇਲਿ ਲਈ ਪਿਰਿ ਆਪੇ ਸਾਚੈ ਸਾਹਿ ਸਵਾਰੀ ॥੧॥
नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥१॥
हे नानक ! प्रिय-पति ने उस जीव-स्त्री को अपने साथ मिला लिया है तथा सच्चे बादशाह ने उसे अपने नाम से श्रृंगार दिया है ॥१॥

ਨਿਰਗੁਣਵੰਤੜੀਏ ਪਿਰੁ ਦੇਖਿ ਹਦੂਰੇ ਰਾਮ ॥
निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम ॥
हे गुणहीन जीवात्मा ! अपने पति-परमेश्वर को सदैव प्रत्यक्ष दृष्टिमान कर।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਿਨੀ ਰਾਵਿਆ ਮੁਈਏ ਪਿਰੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥
हे नाशवान् नववधू! जो गुरु के माध्यम से अपने प्रभु को स्मरण करती है, वह उसे परिपूर्ण व्यापक देखती है।

ਪਿਰੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਵੇਖੁ ਹਜੂਰੇ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥
पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥
पति-परमेश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है; तू उसे प्रत्यक्ष देख और युग-युगान्तरों में उसे एक समान ही अनुभव कर।

ਧਨ ਬਾਲੀ ਭੋਲੀ ਪਿਰੁ ਸਹਜਿ ਰਾਵੈ ਮਿਲਿਆ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ॥
धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥
मासूम जीव-स्त्री भोलेपन में सहज ही अपने पति-प्रभु के साथ रमण करती है एवं अपने कर्म विधाता प्रभु को मिल जाती है।

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਖਿਆ ਹਰਿ ਸਰਿ ਰਹੀ ਭਰਪੂਰੇ ॥
जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥
जो जीव-स्त्री हरि-रस को चखती है, वह प्रेमपूर्वक नाम का उच्चारण करती है और वह परमेश्वर के अमृत सरोवर में लीन रहती है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਸਬਦੇ ਰਹੈ ਹਦੂਰੇ ॥੨॥
नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥२॥
हे नानक ! प्रिय-प्रभु को वही जीव-स्त्री लुभाती है, जो गुरु के शब्द द्वारा प्रत्यक्ष रहती है॥ २॥

ਸੋਹਾਗਣੀ ਜਾਇ ਪੂਛਹੁ ਮੁਈਏ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥
हे जीवात्मा ! उन सुहागिनों से भी जाकर पूछ लो, जिन्होंने अपना अहंत्व मिटा दिया है।

ਪਿਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਪਾਇਓ ਮੁਈਏ ਜਿਨੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਨ ਗਵਾਇਆ ॥
पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥
जिन्होंने अपना अहंत्व नहीं मिटाया, उन्होंने अपने पति-प्रभु के हुक्म को अनुभव नहीं किया।

ਜਿਨੀ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਤਿਨੀ ਪਿਰੁ ਪਾਇਆ ਰੰਗ ਸਿਉ ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ॥
जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥
लेकिन जिन्होंने अपना अहंत्व मिटा दिया है, उन्हें अपना पति-प्रभु मिल गया है और प्रेम-रंग में लीन होकर रमण करती हैं।

ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥
सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥
अपने प्रभु के प्रेम में सदैव रंगी और सहज ही मतवाली हुई वह रात-दिन उसका नाम जपती रहती है।

ਕਾਮਣਿ ਵਡਭਾਗੀ ਅੰਤਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਕਾ ਪ੍ਰੇਮੁ ਸੁਭਾਇਆ ॥
कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥
वह जीव-स्त्री बड़ी भाग्यशाली है, जिसके हृदय में पति-प्रभु की ही सुरति लगी हुई है और परमेश्वर का प्रेम मीठा लगता है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਸਹਜੇ ਰਾਤੀ ਜਿਨਿ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੁ ਬਣਾਇਆ ॥੩॥
नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥३॥
हे नानक ! जिस जीव-स्त्री ने सत्य के साथ श्रृंगार किया है, वह सहज ही अपने पति-प्रभु के प्रेम में लीन रहती है ॥३॥

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮੁਈਏ ਤੂ ਚਲੁ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਏ ॥
हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥
हे नाशवान् जीवात्मा ! तू अपना अहंकार नष्ट कर दे और गुरु की रज़ा पर अनुसरण कर।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਰਾਵਹਿ ਸਦਾ ਮੁਈਏ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ॥
हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥
इस तरह तू परमेश्वर के साथ हमेशा आनंद उपभोग करेगी और अपने मूल घर आत्म स्वरूप में निवास प्राप्त कर लेगी।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਪਾਏ ਸਬਦੁ ਵਜਾਏ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾਰੀ ॥
निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥
अपने मूल निवास प्रभु के पास रहकर वह नाम का उच्चारण करती है और सदा सुहागिन नारी हो जाती है।

ਪਿਰੁ ਰਲੀਆਲਾ ਜੋਬਨੁ ਬਾਲਾ ਅਨਦਿਨੁ ਕੰਤਿ ਸਵਾਰੀ ॥
पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥
प्रिय-प्रभु बड़ा रंगीला एवं यौवन सम्पन्न है; वह रात-दिन अपनी पत्नी को संवारता है।

ਹਰਿ ਵਰੁ ਸੋਹਾਗੋ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਏ ॥
हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥
अपने सुहाग हरि-परमेश्वर द्वारा उसके माथे के भाग्य उदय हो जाते हैं और वह सच्चे शब्द से शोभावान हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਕਾਮਣਿ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਜਾ ਚਲੈ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਏ ॥੪॥੧॥
नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥४॥१॥
हे नानक ! जब जीव-स्त्री सतिगुरु की शिक्षा पर अनुसरण करती है तो वह परमेश्वर के प्रेम-रंग में लीन हो जाती है ॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਭੁ ਵਾਪਾਰੁ ਭਲਾ ਜੇ ਸਹਜੇ ਕੀਜੈ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥
गुरुमुख बनकर सभी व्यापार भले हैं, यदि ये सहज अवस्था द्वारा किए जाएँ।

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀਐ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ਰਾਮ ॥
अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥
हर समय परमात्मा के नाम का जाप करना चाहिए और हरि रस को पान करने का लाभ प्राप्त करना चाहिए।

ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਲੀਜੈ ਹਰਿ ਰਾਵੀਜੈ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥
लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥
हरि-रस का लाभ प्राप्त करना चाहिए, हरि का सुमिरन करना चाहिए और रात-दिन नाम का चिंतन करते रहना चाहिए।

ਗੁਣ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਅਵਗਣ ਵਿਕਣਹਿ ਆਪੈ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥
गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥
जो व्यक्ति गुणों का संग्रह करता है और अवगुणों को मिटा देता है; इस तरह वह अपने आत्म स्वरूप को पहचान लेता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈ ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ॥
गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥
वह गुरु की मति द्वारा नाम रूपी बड़ी शोभा पा लेता है और सच्चे शब्द द्वारा हरि-रस का पान करता रहता है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਨਿਰਾਲੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕੀਜੈ ॥੧॥
नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥१॥
हे नानक ! हरि की भक्ति बड़ी विलक्षण है और कोई विरला गुरुमुख ही भक्ति करता है॥ १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੇਤੀ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬੀਜੀਐ ਹਰਿ ਲੀਜੈ ਸਰੀਰਿ ਜਮਾਏ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥
गुरुमुख बनकर अपने अन्तर्मन में परमेश्वर रूपी खेती बोनी चाहिए और अपने शरीर में नाम रूपी बीज उगाना चाहिए।

ਆਪਣੇ ਘਰ ਅੰਦਰਿ ਰਸੁ ਭੁੰਚੁ ਤੂ ਲਾਹਾ ਲੈ ਪਰਥਾਏ ਰਾਮ ॥
आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥
इस तरह तुम अपने हृदय-घर में ही हरि के नाम रस को चख लोक और परलोक में भी इसका लाभ प्राप्त करोगे।

ਲਾਹਾ ਪਰਥਾਏ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਧਨੁ ਖੇਤੀ ਵਾਪਾਰਾ ॥
लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥
हरि-परमेश्वर को अपने अन्तर्मन में बसाने की खेती एवं व्यापार धन्य है, जिस द्वारा परलोक में लाभ होता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਬੂਝੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਾ ॥
हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥
जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करता है और इसे अपने मन में बसाता है, वह गुरु के उपदेश को समझ लेता है।

ਮਨਮੁਖ ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਨ ਜਾਏ ॥
मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥
मनमुख प्राणी सांसारिक मोह-माया की खेती एवं व्यापार करके थक गए हैं और उनकी तृष्णा एवं भूख दूर नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਬੀਜਿ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ॥੨॥
नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥२॥
हे नानक ! अपने मन के भीतर परमात्मा के नाम का बीज बोया कर और सच्चे शब्द द्वारा शोभायमान हो जा ॥२॥

ਹਰਿ ਵਾਪਾਰਿ ਸੇ ਜਨ ਲਾਗੇ ਜਿਨਾ ਮਸਤਕਿ ਮਣੀ ਵਡਭਾਗੋ ਰਾਮ ॥
हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥
वही लोग हरि-परमेश्वर के नाम-व्यापार में सक्रिय हैं, जिनके माथे पर सौभाग्य की मणि उदय होती है।

ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਸਿਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਬੈਰਾਗੋ ਰਾਮ ॥
गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥
गुरु-उपदेश द्वारा मन अपने मूल घर प्रभु-चरणों में बसता है और सच्चे शब्द के माध्यम से मोह-माया से निर्लिप्त हो जाता है।

ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ਸਚਿ ਬੈਰਾਗੋ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥

मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥

जिनके मुख-मस्तक पर भाग्य उदय हो जाते हैं, वही सच्चे बैराग को प्राप्त होते हैं और वही विचारवान सच्चे नाम में लीन हो जाते हैं।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨਾ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥

नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥

हरि-नाम बिना सारी दुनिया मोह-माया में फँसकर बावली हो रही है और शब्द द्वारा ही अहंकार का नाश होता है।

ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਲਾਗਿ ਮਤਿ ਉਪਜੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸੋਹਾਗੋ ॥

साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥

सत्यनाम में लीन होने से सुमति उत्पन्न होती है और गुरु के माध्यम से हरि-नाम रूपी सुहाग मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਹਰਿ ਰਾਵੈ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੋ ॥੩॥
नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥३॥
हे नानक ! शब्द द्वारा ही भय का नाश करने वाला हरि मिलता है और जीवात्मा मस्तक के भाग्य द्वारा ही उससे रमण करती है॥ ३॥

ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਸਭੁ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਹੁਕਮੇ ਮੰਨਿ ਵਡਿਆਈ ਰਾਮ ॥
खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥
भगवान के हुक्म को स्वीकार करना उत्तम खेती एवं सर्वोत्तम व्यापार है, हुक्म को स्वीकार करने से मान-सम्मान मिलता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹੁਕਮੁ ਬੂਝੀਐ ਹੁਕਮੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਰਾਮ ॥
गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥
गुरु की मति द्वारा ही परमात्मा के हुक्म को समझा जाता है और उसके हुक्म द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है।

ਹੁਕਮਿ ਮਿਲਾਈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥
हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥
परमात्मा के हुक्म में ही जीव सहजता से उसमें विलीन हो जाता है। गुरु का शब्द अपरम्पार है, (क्योंकि)"

ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥
सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥
गुरु के द्वारा ही सच्ची वड़ाई प्राप्त होती है और मनुष्य सत्य से सुशोभित हो जाता है।

ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥
भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥
जीव अपना अहंत्व मिटाकर भयनाशक परमात्मा को प्राप्त कर लेता है और गुरु के माध्यम से ही उसका मिलन होता है।

कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥
कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥
नानक का कथन है कि परमात्मा का पावन नाम अगम्य एवं अगोचर है और यह उसके हुक्म में ही समा रहा है ॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲਿ ਜੀਉ ॥
मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥
हे मेरे मन ! तू सर्वदा ही सच्चे परमेश्वर को अपने अन्तर्मन में बसाकर रख।

ਆਪਣੈ ਘਰਿ ਤੂ ਸੁਖਿ ਵਸਹਿ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਜਮਕਾਲੁ ਜੀਉ ॥
आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥
अपने हृदय-घर में इस तरह तू सुखपूर्वक निवास करेगा एवं यमदूत तुझे स्पर्श नहीं कर सकेगा।

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥
सच्चे शब्द में सुरति लगाने से मृत्यु रूपी जाल एवं यमदूत प्राणी को तंग नहीं कर सकते।

ਸਦਾ ਸਚਿ ਰਤਾ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਰਹਾਏ ॥
सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥
सत्य-नाम में लीन हुआ मन हमेशा निर्मल है और जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਭਰਮਿ ਵਿਗੁਤੀ ਮਨਮੁਖਿ ਮੋਹੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥
दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥
मनमुख दुनिया द्वैतभाव एवं भ्रम में फँसकर नाश हो रही है और इसे यमदूत ने मोह लिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਤੂ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥
कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥१॥
नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! ध्यानपूर्वक सुन, तू सर्वदा सच्चे परमेश्वर की आराधना कर ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਅੰਤਰਿ ਤੇਰੈ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਬਾਹਰਿ ਵਸਤੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥
मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥
हे मेरे मन ! तेरे भीतर परमात्मा के नाम का भण्डार है, इसलिए तू अनमोल वस्तु को बाहर मत खोज।

ਜੋ ਭਾਵੈ ਸੋ ਭੁੰਚਿ ਤੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥
जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥
जो कुछ प्रभु को अच्छा लगता है, उसे सहर्ष ग्रहण कर और गुरुमुख बनकर उसकी कृपा-दृष्टि से कृतार्थ हो जा।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ਮਨ ਮੇਰੇ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥
गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥
हे मेरे मन ! गुरुमुख बन और कृपादृष्टि से निहाल हो जा, क्योंकि तेरा सहायक हरि-नाम तेरे अन्तर्मन में ही है।

ਮਨਮੁਖ ਅੰਧੁਲੇ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ॥
मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥
मनमुख व्यक्ति मोह-माया में अन्धे एवं ज्ञानविहीन हैं और द्वैतभाव ने इन्हें नष्ट कर दिया है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਛੂਟੈ ਨਾਹੀ ਸਭ ਬਾਧੀ ਜਮਕਾਲਿ ॥
बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥
परमात्मा के नाम के बिना किसी की भी मुक्ति नहीं होती; यमदूतों ने सारी दुनिया को जकड़ा हुआ है।

ਨਾਨਕ ਅੰਤਰਿ ਤੇਰੈ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਤੂ ਬਾਹਰਿ ਵਸਤੁ ਨ ਭਾਲਿ ॥੨॥
नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥२॥
नानक का कथन है कि तेरे भीतर परमात्मा के नाम का भण्डार है, इसलिए तू इस अनमोल वस्तु को बाहर मत खोज ॥ २॥

ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇ ਕੈ ਇਕਿ ਸਚਿ ਲਗੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥
मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥
हे मेरे मन ! अमूल्य मनुष्य जन्म के पदार्थ को प्राप्त करके कुछ लोग सत्यनाम के व्यापार में क्रियाशील हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥
सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥
वे अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं और उनके अन्तर में अपार शब्द विद्यमान है।

ਅੰਤਰਿ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਨਾਮੇ ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥
अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥
उनके भीतर अपार शब्द है; हरि-परमेश्वर का नाम उन्हें प्यारा लगता है और नाम के फलस्वरूप वे नवनिधियाँ प्राप्त कर लेते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਵਿਆਪੇ ਦੂਖਿ ਸੰਤਾਪੇ ਦੂਜੈ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥
मनमुख प्राणी तो माया के मोह में ही लीन हैं, उससे वे दु:खी होते हैं और दुविधा में फँसकर अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਸਚਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੇ ਸਚਿ ਰਤੇ ਅਧਿਕਾਈ ॥
हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥
जो अपने अहंकार को मार कर सच्चे शब्द में लीन होते हैं; वे अधिकतर सत्य में ही लीन रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਦੁਲੰਭੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥੩॥
नानक माणस जनमु दुल्मभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥३॥
हे नानक ! यह मानव जन्म बड़ा दुर्लभ है और सतिगुरु ही इस भेद को समझाता है॥ ३॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਜਨ ਵਡਭਾਗੀ ਰਾਮ ॥
मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥
हे मेरे मन ! वे लोग बड़े खुशकिस्मत हैं, जो अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं।

ਜੋ ਮਨੁ ਮਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਪੁਰਖ ਬੈਰਾਗੀ ਰਾਮ ॥
जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥
जो अपने मन को वश में कर लेता है, वही पुरुष वास्तव में बैरागी है।

ਸੇ ਜਨ ਬੈਰਾਗੀ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣਿਆ ॥
से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥
जो सच्चे परमेश्वर के साथ सुरति लगाते हैं, वही विरक्त हैं और वे अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेते हैं।

ਮਤਿ ਨਿਹਚਲ ਅਤਿ ਗੂੜੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਿਆ ॥
मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥
उनकी बुद्धि बड़ी अटल एवं अत्यंत गहरी है और गुरुमुख बनकर वे सहजता से परमात्मा के नाम की स्तुति करते हैं।

ਇਕ ਕਾਮਣਿ ਹਿਤਕਾਰੀ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਪਿਆਰੀ ਮਨਮੁਖ ਸੋਇ ਰਹੇ ਅਭਾਗੇ ॥
इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥
कुछ लोग सुन्दर नारियों से प्रेम करते हैं एवं माया का मोह उन्हें मीठा लगता है, ऐसे बदकिस्मत मनमुख अज्ञानता की निद्रा में सोये रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਸੇਵਹਿ ਗੁਰੁ ਅਪਣਾ ਸੇ ਪੂਰੇ ਵਡਭਾਗੇ ॥੪॥੩॥
नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥४॥३॥
हे नानक ! जो सहज-स्वभाव ही अपने गुरु की सेवा करते हैं, वे पूर्ण भाग्यशाली हैं।॥ ४॥ ३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜੀਅਹਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਈ ਰਾਮ ॥
रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥
हे जीव ! सतिगुरु ने यही सूझ दी है कि परमात्मा के नाम रूपी रत्न पदार्थों का ही व्यापार करना चाहिए।

ਲਾਹਾ ਲਾਭੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਗੁਣ ਮਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਈ ਰਾਮ ॥
लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥
हरि की भक्ति ही सर्वोत्तम लाभ है और गुणवान प्राणी गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समाया रहता है।

ਗੁਣ ਮਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਏ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਲਾਹਾ ਭਗਤਿ ਸੈਸਾਰੇ ॥
गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥
जिसे वह स्वयं सूझ प्रदान करता है, वही गुणवान प्राणी गुणों के मालिक में लीन रहता है और इस नश्वर दुनिया में परमात्मा की भक्ति का ही वह लाभ प्राप्त करता है।

ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ਦੂਜੈ ਪਤਿ ਖੋਈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥
बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥
परमात्मा की भक्ति के बिना कहीं सुख प्राप्त नहीं होता, द्वैतभाव में फँसकर वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है और गुरु की मति द्वारा नाम ही आधार बनता है।

ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲਾਭੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਏਤੁ ਵਾਪਾਰਿ ਲਾਏ ॥
वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥
ईश्वर जिसे इस नाम-व्यापार में लगाता है, वह नाम के सौदे का सर्वदा लाभ प्राप्त करता है।

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜੀਅਹਿ ਜਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥੧॥
रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥१॥
जब सतिगुरु सूझ प्रदान करता है तो ही जीव नाम रूपी रत्न पदार्थ का व्यापार करता है॥ १ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਖੋਟਾ ਇਹੁ ਵਾਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥
माया का मोह सब दुःख-संताप ही है और यह व्यापार बड़ा झूठा है।

ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਬਿਖੁ ਖਾਵਣੀ ਬਹੁ ਵਧਹਿ ਵਿਕਾਰਾ ਰਾਮ ॥
कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥
मनुष्य झूठ बोल-बोलकर माया रूपी विष ही खाता है और इसके फलस्वरूप उसके अन्दर बहुत सारे विकार बढ जाते हैं।

ਬਹੁ ਵਧਹਿ ਵਿਕਾਰਾ ਸਹਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥
इस प्रकार पाप बहुत बढ़ गए हैं और संसार में संशय बना रहता है। परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है।

ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਵਾਦੁ ਵਖਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥
पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़कर वाद-विवाद करते हैं परन्तु ज्ञान के बिना उन्हें भी सुख प्राप्त नहीं होता।

ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਕਦੇ ਨ ਚੂਕੈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਪਿਆਰਾ ॥
आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥
उन्हें तो मोह-माया से ही प्रेम है, इसलिए उनका जन्म-मरण का चक्र कदापि नहीं मिटता।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਹੈ ਖੋਟਾ ਇਹੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥੨॥
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥२॥
माया का मोह सब दुःख-संताप ही है और यह व्यापार बड़ा झूठा तथा खोटा है॥ २॥

ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਸਭਿ ਪਰਖੀਅਨਿ ਤਿਤੁ ਸਚੇ ਕੈ ਦਰਬਾਰਾ ਰਾਮ ॥
खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥
उस सच्चे परमेश्वर के दरबार में सभी बुरे एवं भले जीव परखे जाते हैं।

ਖੋਟੇ ਦਰਗਹ ਸੁਟੀਅਨਿ ਊਭੇ ਕਰਨਿ ਪੁਕਾਰਾ ਰਾਮ ॥
खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥
बुरे जीव प्रभु के दरबार से बाहर निकाल दिए जाते हैं और वे खड़े होकर हमेशा रोते रहते हैं।

ਊਭੇ ਕਰਨਿ ਪੁਕਾਰਾ ਮੁਗਧ ਗਵਾਰਾ ਮਨਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥
विमूढ़ एवं गंवार खड़े होकर विलाप करते हैं। इस प्रकार ऐसे मनमुख व्यक्ति अपना अमूल्य जीवन विनष्ट कर लेते हैं।

ਬਿਖਿਆ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਇਆ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਨ ਭਾਇਆ ॥
बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥
माया रूपी विष ने समूचे संसार को भुला दिया है और उसे सच्चे परमेश्वर का नाम अच्छा नहीं लगता।

ਮਨਮੁਖ ਸੰਤਾ ਨਾਲਿ ਵੈਰੁ ਕਰਿ ਦੁਖੁ ਖਟੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥
मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥
मनमुख व्यक्ति संतजनों से वैर करके दुनिया में दुःख ही प्राप्त करते हैं।

ਖੋਟੇ ਖਰੇ ਪਰਖੀਅਨਿ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਵਾਰਾ ਰਾਮ ॥੩॥
खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥३॥
उस सच्चे परमेश्वर के दरबार में खोटे एवं भले जीवों की परख की जाती है।॥ ३॥

ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਹੋਰੁ ਕਰਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछु न जाई राम ॥
परमेश्वर आप ही जीवों को अच्छा-बुरा बनाता है। इसलिए किसी से गिला-शिकवा नहीं किया जा सकता क्योंकि दूसरा कोई कुछ नहीं कर सकता।

ਜਿਤੁ ਭਾਵੈ ਤਿਤੁ ਲਾਇਸੀ ਜਿਉ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਰਾਮ ॥
जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥
जैसे उसकी कीर्ति है और जैसे उसकी खुशी है, वह वैसे ही जीवों को लगाता है।

ਜਿਉ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਆਪਿ ਕਰਾਈ ਵਰੀਆਮੁ ਨ ਫੁਸੀ ਕੋਈ ॥
जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥
जैसे उस परमात्मा का बड़प्पन है, वह स्वयं वैसे ही जीवों से करवाता है और अपने आप कोई महान् योद्धा अथवा कायर नहीं।

ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਕਰਮਿ ਬਿਧਾਤਾ ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਸੋਈ ॥
जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥
दाता परमेश्वर जगत को जीवन प्रदान करने वाला एवं कर्म-विधाता है और वह स्वयं ही क्षमा करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥
गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से ही अहंकार निवृत्त होता है और परमात्मा के नाम के फलस्वरूप मान-सम्मान प्राप्त होता है। परमेश्वर स्वयं ही जीवों को अच्छा बुरा बनाता है।

ਆਪਿ ਕਰੇ ਕਿਸੁ ਆਖੀਐ ਹੋਰੁ ਕਰਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੪॥
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥४॥४॥
इसलिए किसी से गिला-शिकवा नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य कोई कुछ नहीं कर सकता ॥ ४॥ ४॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਸਚਾ ਸਉਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਸਚਾ ਵਾਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥
हरि का नाम ही सच्चा सौदा है और यही सच्चा व्यापार है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਣਜੀਐ ਅਤਿ ਮੋਲੁ ਅਫਾਰਾ ਰਾਮ ॥
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥
गुरु के उपदेश द्वारा ही हरि के नाम का व्यापार करना चाहिए और इस सच्चे नाम का व्यापार अत्यंत मूल्यवान एवं महान् है।

ਅਤਿ ਮੋਲੁ ਅਫਾਰਾ ਸਚ ਵਾਪਾਰਾ ਸਚਿ ਵਾਪਾਰਿ ਲਗੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥

अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥

इस सच्चे व्यापार का मूल्य अनन्त एवं बहुमूल्य है, जो लोग इस सच्चे व्यापार में क्रियाशील हैं, वे बड़े भाग्यशाली हैं।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥

अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥

भीतर एवं बाहर से ऐसे प्राणी परमात्मा की भक्ति में लीन रहते हैं और सच्चे नाम में उनकी सुरति लगी रहती है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਸਚੁ ਪਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥

नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥

जो गुरु के शब्द का चिंतन करता है और जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है, उसे ही सत्य की प्राप्ति होती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਾਚੈ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥੧॥

नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥१॥

हे नानक ! जो सत्यनाम में लीन रहते हैं, उन्हें ही सुख प्राप्त होता है और वही सच्चे परमेश्वर के नाम के सच्चे व्यापारी हैं।॥१॥

ਹੰਉਮੈ ਮਾਇਆ ਮੈਲੁ ਹੈ ਮਾਇਆ ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ਰਾਮ ॥

हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥

अहंत्व माया की मैल है और यह माया की मैल इन्सान के मन में भर जाती है।

ਗੁਰਮਤੀ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲਾ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ਰਾਮ ॥

गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥

गुरु की मति द्वारा मन अहंत्व की मैल से निर्मल हो जाता है। अतः रसना द्वारा हरि रस पीते रहना चाहिए।

ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਜੈ ਅੰਤਰੁ ਭੀਜੈ ਸਾਚ ਸਬਦਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥

रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥

रसना द्वारा हरि रस पीने से इन्सान का हृदय परमेश्वर के प्रेम से भीग जाता है और सच्चे नाम का ही चिंतन करता रहता है।

ਅੰਤਰਿ ਖੂਹਟਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਭਰਿਆ ਸਬਦੇ ਕਾਢਿ ਪੀਐ ਪਨਿਹਾਰੀ ॥

अंतरि खूहटा अम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥

जीवात्मा के अन्तर्मन में ही हरि के अमृत का सरोवर भरा हुआ है और नाम-सुमिरन द्वारा पनिहारिन इसे निकाल कर पान करती है।

ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਸਚਿ ਲਾਗੈ ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਰਵੀਜੈ ॥

जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥

जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है, यही सत्य से लगता है और उसकी रसना परमात्मा के नाम का भजन करती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲ ਹੋਰ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਭਰੀਜੈ ॥੨॥

नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥२॥

हे नानक ! जो लोग परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, वही पवित्र-पावन हैं और शेष जीव अहंकार की मैल से भरपूर हैं।॥२॥

ਪੰਡਿਤ ਜੋਤਕੀ ਸਭਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕੂਕਦੇ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ਰਾਮ ॥

पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥

सभी पण्डित एवं ज्योतिषी पढ़-पढ़कर उच्च स्वर में उपदेश देते हैं किन्तु ये उच्च स्वर में किसे सुना रहे हैं ?

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਅੰਤਰਿ ਮਲੁ ਲਾਗੈ ਮਾਇਆ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥
माया-मोह की मैल इनके हृदय में विद्यमान है और ये केवल माया का ही व्यापार करने में सक्रिय हैं।

ਮਾਇਆ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ ਜਗਤਿ ਪਿਆਰਾ ਆਵਣਿ ਜਾਣਿ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥
माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥
जगत में इन्हें तो माया के व्यापार से ही प्रेम है और परिणामस्वरूप जन्म-मरण के चक्र में फँसकर दुःख ही भोगते हैं।

ਬਿਖੁ ਕਾ ਕੀੜਾ ਬਿਖੁ ਸਿਉ ਲਾਗਾ ਬਿਸ੍ਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਈ ॥
बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ॥
विष का कीड़ा विष से ही लगा हुआ है और विष्ठा में ही नष्ट हो जाता है।

ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋਇ ਕਮਾਵੈ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰਾ ॥
जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥
जो उसके लिए परमात्मा ने कर्म लिखा है, वह वही कार्य करता है और उसके लिखे लेख को कोई मिटा नहीं सकता।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹੋਰਿ ਮੂਰਖ ਕੂਕਿ ਮੁਏ ਗਾਵਾਰਾ ॥੩॥
नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥३॥
हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, वे सर्वदा सुख प्राप्त करते हैं, अन्यथा शेष मूर्ख एवं गंवार चिल्लाते हुए मर जाते हैं।॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਮਨੁ ਰੰਗਿਆ ਮੋਹਿ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ਰਾਮ ॥
माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥
जिसका मन माया के मोह में लीन रहता है, उसे मोहवश कोई सूझ नहीं रहती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰੰਗੀਐ ਦੂਜਾ ਰੰਗੁ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥
गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥
लेकिन यदि यह मन गुरु के माध्यम से परमात्मा के नाम में लीन हो जाए तो द्वैतभाव का रंग दूर हो जाता है।

ਦੂਜਾ ਰੰਗੁ ਜਾਈ ਸਾਚਿ ਸਮਾਈ ਸਚਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥
इस प्रकार द्वैतभाव का प्रेम निवृत्त हो जाता है और मन सच्चे परमेश्वर में विलीन हो जाता है। फिर सच्चे परमेश्वर के नाम द्वारा उसके भण्डार भरपूर हो जाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੋਈ ਬੂਝੈ ਸਚਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥
गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥
जो मनुष्य गुरुमुख बन जाता है, वही इस भेद को समझता है और सच्चा परमेश्वर जीव को नाम से सुशोभित कर देता है।

ਆਪੇ ਮੇਲੇ ਸੋ ਹਰਿ ਮਿਲੈ ਹੋਰੁ ਕਹਣਾ ਕਿਛੁ ਨ ਜਾਏ ॥
आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछु न जाए ॥
जिसे परमेश्वर स्वयं मिलाता है, वही प्राणी उससे मिलता है, शेष कुछ भी कथन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਇਕਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ॥੪॥੫॥
नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥४॥५॥
हे नानक ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य भ्रम में ही भूला रहता है और कई व्यक्ति प्रभु के प्रेम में मग्न होकर नाम में लीन रहते हैं।॥ ४॥ ५॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਏ ਮਨ ਮੇਰਿਆ ਆਵਾ ਗਉਣੁ ਸੰਸਾਰੁ ਹੈ ਅੰਤਿ ਸਚਿ ਨਿਬੇੜਾ ਰਾਮ ॥
ए मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥
हे मेरे मन ! यह दुनिया आवागमन अर्थात् जन्म-मरण का चक्र ही है, अन्ततः इस आवागमन से मुक्ति सच्चे परमेश्वर के नाम से ही मिलती है।

ਆਪੇ ਸਚਾ ਬਖਸਿ ਲਏ ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਨ ਫੇਰਾ ਰਾਮ ॥
आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥
जब सच्चा परमेश्वर स्वयं क्षमा कर देता है तो मनुष्य का दोबारा इहलोक में जन्म-मरण का चक्र नहीं पड़ता।

ਫਿਰਿ ਹੋਇ ਨ ਫੇਰਾ ਅੰਤਿ ਸਚਿ ਨਿਬੇੜਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥
फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥
वह दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता और अन्ततः सत्यनाम द्वारा मोक्ष मिल जाता है एवं गुरु के माध्यम से प्रशंसा प्राप्त करता है।

ਸਾਚੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਸਹਜੇ ਰਹੇ ਸਮਾਈ ॥
साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥
जो मनुष्य सच्चे परमेश्वर के रंग में लीन हो जाते हैं, वे सहज अवस्था में मस्त रहते हैं और सहज ही सत्य में समा जाते हैं।

ਸਚਾ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਸਚੁ ਵਸਾਇਆ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਅੰਤਿ ਨਿਬੇਰਾ ॥
सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥
सच्चा परमेश्वर उसके मन को अच्छा लगता है और सत्य ही उसके भीतर निवास करता है और शब्द से रंग कर वह अंत में मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਸਚਿ ਸਮਾਣੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੧॥
नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥
हे नानक ! जो परमात्मा के नाम में रंगे हुए हैं, वह सत्य में ही समा जाते हैं और दोबारा भवसागर के चक्र में नहीं पड़ते॥ १॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਭੁ ਬਰਲੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ਰਾਮ ॥
माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥
माया का मोह केवल पागलपन ही है, चूंकि द्वैतभाव के कारण मनुष्य नष्ट हो जाता है।

ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਸਭੁ ਹੇਤੁ ਹੈ ਹੇਤੇ ਪਲਚਾਈ ਰਾਮ ॥
माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥
माता-पिता का रिश्ता भी निरा मोह ही है और इस मोह में सारी दुनिया उलझी हुई है।

ਹੇਤੇ ਪਲਚਾਈ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਈ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥
हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥
पूर्व जन्म में किए कर्मों के फलस्वरूप ही दुनिया मोह में उलझी हुई है। (परमात्मा के अतिरिक्त) कोई भी कर्मो को मिटा नहीं सकता।

ਜਿਨਿ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਾਜੀ ਸੋ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
जिनि स्रिसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥
जिस परमेश्वर ने सृष्टि रचना की है, वही इसे रचकर देख रहा है और उस जैसा महान् दूसरा कोई नहीं।

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਤਪਿ ਤਪਿ ਖਪੈ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸਾਂਤਿ ਨ ਆਈ ॥
मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥
ज्ञानहीन मनमुख प्राणी जल-जल कर नष्ट हो जाता है और शब्द के बिना उसे शांति नहीं मिलती।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਕੋਈ ਭੁਲਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਖੁਆਈ ॥੨॥
नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥२॥
हे नानक ! भगवान के नाम से विहीन सभी भटके हुए हैं और माया के मोह ने उन्हें नष्ट कर दिया है॥ २॥

ਏਹੁ ਜਗੁ ਜਲਤਾ ਦੇਖਿ ਕੈ ਭਜਿ ਪਏ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ਰਾਮ ॥
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥
इस जगत को मोह-माया में जलता देखकर मैं भागकर भगवान की शरण में आया हूँ।

ਅਰਦਾਸਿ ਕਰੀਂ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਆਗੈ ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਦੇਹੁ ਵਡਾਈ ਰਾਮ ॥
अरदासि करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥
मैं अपने पूर्ण गुरु के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि मेरी रक्षा करो एवं मुझे नाम की बड़ाई प्रदान करें।

ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਤੁਧੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤਾ ॥
रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥
मेरे गुरुदेव मुझे अपनी शरण में रखें और हरि-नाम की बड़ाई प्रदान करें, तुझ जैसा अन्य कोई दाता नहीं।

ਸੇਵਾ ਲਾਗੇ ਸੇ ਵਡਭਾਗੇ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥
सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ॥
वे बड़े भाग्यशाली हैं, जो तेरी सेवा करते हैं और युग-युगान्तरों में वह एक ईश्वर को ही जानते हैं।

ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥
मनुष्य ब्रह्मचर्य, सत्य, संयम एवं कर्मकाण्ड करता है परन्तु गुरु के बिना उसकी गति नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਤਿਸ ਨੋ ਸਬਦੁ ਬੁਝਾਏ ਜੋ ਜਾਇ ਪਵੈ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥੩॥
नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥३॥
हे नानक ! जो जाकर भगवान की शरण में आते हैं, उन्हें वह शब्द की सूझ प्रदान करता है॥ ३॥

ਜੋ ਹਰਿ ਮਤਿ ਦੇਇ ਸਾ ਊਪਜੈ ਹੋਰ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ਰਾਮ ॥
जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥
हरि जैसी सुमति प्रदान करता है, वैसे ही मनुष्य के भीतर उत्पन्न होती है और शेष कोई सुमति उत्पन्न नहीं होती।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਏਕੁ ਤੂ ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ਰਾਮ ॥

अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥

हे हरि ! अन्तर्मन में एवं बाहर तुम ही मौजूद हो और इस बात की सूझ भी तुम स्वयं ही प्रदान करते हो।

ਆਪੇ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ਅਵਰ ਨ ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ॥

आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥

जिसे तुम यह सूझ प्रदान करते हो, वह किसी अन्य से प्रेम नहीं करता और गुरु के माध्यम से वह हरि-रस को चखता है।

ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਦਾ ਹੈ ਸਾਚਾ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਖਿਆ ॥

दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ॥

परमात्मा के सच्चे दरबार में सर्वदा सत्य ही रहता है। और सच्चे शब्द का वह प्रेमपूर्वक स्तुतिगान करता है।

ਘਰ ਮਹਿ ਨਿਜ ਘਰੁ ਪਾਇਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਵਡਾਈ ॥
घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥
वह अपने हृदय में अपना यथार्थ घर प्राप्त कर लेता है और सतगुरु उसे मान-सम्मान प्रदान करता है।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇਈ ਮਹਲੁ ਪਾਇਨਿ ਮਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ਸਚੁ ਸਾਈ ॥੪॥੬॥
नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥
हे नानक ! जो प्राणी परमेश्वर के नाम में लीन रहते हैं, वे सच्चे दरबार को प्राप्त कर लेते हैं और सच्चे प्रभु के सन्मुख उनकी मति स्वीकृत हो जाती है॥ ४॥ ६॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਛੰਤ
वडहंसु महला ४ छंत
वडहंसु महला ४ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਰਾਮ ॥
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥
सतिगुरु ने मेरे मन में प्रभु से प्रीति लगा दी है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ਰਾਮ ॥
हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥
उसने मेरे मन में परमात्मा का हरिहरि नाम बसा दिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ਸਭਿ ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਣਹਾਰਾ ॥
हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥
सभी दुख मिटाने वाला हरि का हरि-नाम गुरु ने मेरे मन में बसा दिया है।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ॥
वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥
अहोभाग्य से मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं और मेरा सतिगुरु धन्य-धन्य है।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸਾਂਤਿ ਪਾਈ ॥
ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥
मैं उठते-बैठते गुरु की सेवा ही करता रहता हूँ, जिसकी सेवा के फलस्वरूप शांति प्राप्त हुई है।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ॥੧॥
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥१॥
मेरे मन में सतिगुरु ने परमात्मा से प्रीति लगा दी है॥ १॥

ਹਉ ਜੀਵਾ ਹਉ ਜੀਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਖਿ ਸਰਸੇ ਰਾਮ ॥
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥
सतिगुरु को देखकर मैं जीता हूँ और मेरा मन फूलों की भाँति खिला रहता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਗਸੇ ਰਾਮ ॥
हरि नामो हरि नामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥
गुरु ने मेरे मन में हरि-नाम बसा दिया है और हरि-नाम जपकर मेरा मन खिला रहता है।

ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕਮਲ ਪਰਗਾਸੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਵੰ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥
जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥
हरि-नाम का भजन करने से हृदय-कमल खिल गया है और हरि-नाम द्वारा ही नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं।

ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਗਇਆ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ਹਰਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਈ ॥
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥
अहंकार का रोग दूर हो गया है, पीड़ा भी मिट गई है और मैंने सहज अवस्था में हरि में समाधि लगाई है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਸੁਖੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਵ ਮਨੁ ਪਰਸੇ ॥
हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥
हरि के नाम की कीर्ति मुझे सतिगुरु से प्राप्त हुई है और सुखदाता सतिगुरु के चरण-स्पर्श से मन आनंदित हो गया है।

ਹਉ ਜੀਵਾ ਹਉ ਜੀਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇਖਿ ਸਰਸੇ ॥੨॥
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥२॥
सतिगुरु को देखकर मैं जीवन जीता हूँ और मेरा मन फूलों की भाँति खिला रहता है॥ २॥

ਕੋਈ ਆਣਿ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਰਾਮ ॥
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥
कोई आकर मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दे।

ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਵਾ ਤਿਸੁ ਕਾਟਿ ਸਰੀਰਾ ਰਾਮ ॥
हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥
मैं अपना मन-तन उसे अर्पण कर दूँगा और अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके उसे भेंट कर दूँगा।

ਹਉ ਮਨੁ ਤਨੁ ਕਾਟਿ ਕਾਟਿ ਤਿਸੁ ਦੇਈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨ ਸੁਣਾਏ ॥
हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥
जो मुझे सतिगुरु के वचन सुनाएगा, मैं उसको अपने मन-तन के टुकड़े कर करके अर्पण कर दूँगा।

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਬੈਰਾਗੁ ਭਇਆ ਬੈਰਾਗੀ ਮਿਲਿ ਗੁਰ ਦਰਸਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥
मेरा बैरागी मन संसार से विरक्त हो गया है और गुरु के दर्शन करके इसे सुख प्राप्त हो गया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਸੁਖਦਾਤੇ ਦੇਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਹਮ ਧੂਰਾ ॥
हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥
हे सुखों के दाता ! हे हरि-परमेश्वर ! मुझ पर कृपा करो, मुझे सतिगुरु की चरण-धूलि प्रदान करो।

ਕੋਈ ਆਣਿ ਕੋਈ ਆਣਿ ਮਿਲਾਵੈ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੩॥
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥३॥
कोई आकर मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दे ॥ ३॥

ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਗੁਰ ਜੇਵਡੁ ਦਾਤਾ ਮੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਰਾਮ ॥
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥
गुरु जैसा महान् दाता मुझे कोई अन्य नजर नहीं आता।

ਹਰਿ ਦਾਨੋ ਹਰਿ ਦਾਨੁ ਦੇਵੈ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ਰਾਮ ॥
हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥
वह मुझे हरि के नाम का दान प्रदान करता है और वह स्वयं ही निरंजन हरि-परमेश्वर है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਦੁਖੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥
जिन्होंने हरि-नाम की आराधना की है, उनका दुःख, भ्रम एवं भय भाग गए हैं।

ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਮਿਲੇ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਨ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥
वे लोग बड़े खुशनसीब हैं, जिन्होंने गुरु के चरणों में अपना मन लगाया है, वही सेवक भावना से परमात्मा को मिलते हैं।

कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥
कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥
नानक का कथन है कि हरि-परमेश्वर स्वयं जीव को गुरु से मिलाता है और महापुरुष सतिगुरु को मिलने से सुख प्राप्त होता है।

गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥
गुरु जैसा महान् दाता मुझे कोई और नजर नहीं आता ॥४॥१॥

वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४ ॥

हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥
गुरु के बिना में बड़ी विनीत एवं मानहीन थी

जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥
जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥
गुरू के मिलाप से मैं जगत की जीवन देने वाले दाता परमेश्वर में विलीन हो गई हूँ।

सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥
सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥
सच्चे गुरु के मिलाप से मैं हरि-नाम में समा गई हूँ और हरि-नाम का भजन एवं ध्यान करती रहती हूँ।

जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥
जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥
जिस प्रभु को मिलने के कारण मैं खोज-तलाश कर रही थी, उस सज्जन हरि को मैंने हृदय-घर में ही पा लिया है।

ਏਕ ਦ੍ਰਿਸ੍ਟਿ ਹਰਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ਹਰਿ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਛਾਣੀ ॥
एक द्रिस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥
एक ईश्वर को मैं देखती हूँ, एक को जानती हूँ और एक को ही हृदय में अनुभव करती हूँ।

ਹੰਉ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਹੰਉ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਖਰੀ ਨਿਮਾਣੀ ॥੧॥
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥१॥
मैं गुरु के बिना बड़ी विनीत एवं तुच्छ हूँ॥ १॥

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ਰਾਮ ॥
जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥
जिन्होंने सतगुरु को पा लिया है, हरि-प्रभु ने उन्हें गुरु से साक्षात्कार करवाकर अपने साथ मिला लिया है।

ਤਿਨ ਚਰਣ ਤਿਨ ਚਰਣ ਸਰੇਵਹ ਹਮ ਲਾਗਹ ਤਿਨ ਕੈ ਪਾਏ ਰਾਮ ॥
तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥
मेरी यही कामना है कि मैं उनके चरणों की पूजा करूँ और उनके चरण स्पर्श करता रहूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰੇਵਹ ਤਿਨ ਕੇ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਪ੍ਰਭੁ ਧ੍ਯਾਇਆ ॥
हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥
हे ईश्वर ! मैं उनके चरणों की पूजा करूं, जिन्होंने सतगुरु महापुरुष प्रभु का ध्यान किया है।

ਤੂ ਵਡਦਾਤਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥
हे परमेश्वर ! तू ही बड़ा दाता है, तू ही अन्तर्यामी है, कृपा करके मेरी अभिलाषा पूरी कीजिए।

ਗੁਰਸਿਖ ਮੇਲਿ ਮੇਰੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥
गुरु के शिष्य को मिलकर मेरी अभिलाषा पूरी हो गई है और मैं रात-दिन राम के गुण गाता रहता हूँ।

ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਤਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥
जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥२॥
जिन्होंने सतगुरु को पा लिया है, हरि-प्रभु ने उन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया है ॥ २॥

ਹੰਉ ਵਾਰੀ ਹੰਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰਸਿਖ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ॥
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥
मैं अपने मित्र-प्यारे गुरु के शिष्य पर सर्वदा न्योछावर होता हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਏ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥
वह मुझे हरि का नाम सुनाता है, प्रियतम-प्रभु का नाम मेरे जीवन का आधार है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਾਨ ਸਖਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨਿਮਖ ਨਹੀ ਜੀਵਾਂ ॥
हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां ॥
हरि का नाम मेरे प्राणों का साथी है और इसके बिना मैं एक घड़ी एवं निमेष मात्र भी जीवित नहीं रह सकता

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਾਂ ॥
हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अम्रितु पीवां ॥
अगर सुख देने वाला ईश्वर कृपा करे तो गुरुमुख बनकर मैं नामामृत का पान कर लूं।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਰਧਾ ਲਾਇ ਮਿਲਾਏ ਹਰਿ ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥
हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥
ईश्वर स्वयं ही निष्ठा लगाकर अपने संग मिला लेता है और वह स्वयं ही शोभायमान करता है।

ਹੰਉ ਵਾਰੀ ਹੰਉ ਵਾਰੀ ਗੁਰਸਿਖ ਮੀਤ ਪਿਆਰੇ ॥੩॥
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥३॥
मैं अपने प्यारे मित्र गुरु के शिष्य पर कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥

ਹਰਿ ਆਪੇ ਹਰਿ ਆਪੇ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ਰਾਮ ॥
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥
वह निरंजन पुरुष हरि आप ही सर्वव्यापी है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਹਰਿ ਆਪੇ ਮੇਲੈ ਕਰੈ ਸੋ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥
हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥
वह सर्वशक्तिमान स्वयं ही जीव को अपने साथ मिलाता है, जो कुछ वह करता है, वही होता है।

ਜੋ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਹੋਵੈ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥
जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥
जो परमात्मा को मंजूर है वही होता है, उसकी मर्जी के बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता।

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਲਇਆ ਨ ਜਾਈ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਸਭਿ ਚਤੁਰਾਈ ॥
बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥
अधिक चतुराई करने से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि बहुत सारे चतुराई करने वाले थक गए हैं।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦੇਖਿਆ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥
गुरु की कृपा से नानक ने देख लिया है कि मेरे हरि-परमेश्वर के अलावा दूसरा कोई सहारा नहीं है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਹਰਿ ਆਪੇ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ॥੪॥੨॥
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥४॥२॥
वह मायातीत ईश्वर ही सर्वव्यापी है॥ ४॥ २॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४ ॥

ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਹਮ ਭਾਇਆ ਰਾਮ ॥
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥
हे हरि ! मुझे सतगुरु से मिला दो, चूंकि सतगुरु के सुन्दर चरण मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

ਤਿਮਰ ਅਗਿਆਨੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਅੰਜਨੁ ਗੁਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥
गुरु ने ज्ञान का सुरमा डालकर मेरी अज्ञानता का अंधेरा दूर कर दिया है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪਾਇਆ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰ ਬਿਨਾਸੇ ॥
गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥
सतगुरु से ज्ञान का सुरमा प्राप्त हुआ है, जिसने अज्ञानता का अंधेरा मिटा दिया है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਿ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸੇ ॥
सतिगुर सेवि परम पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥
सतगुरु की सेवा करने से मैंने परम पद प्राप्त किया है, मैंने श्वास - ग्रास हरि का नाम जपा है।

ਜਿਨ ਕੰਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਲਾਇਆ ॥
जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥
जिस पर भी हरि प्रभु ने कृपा की है वह सतगुरु की सेवा में लगता है।

ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣ ਹਮ ਭਾਇਆ ॥੧॥
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥१॥
हे हरि मेरा सतगुरु से मेल करा दो, क्योकि सतगुरु के सुन्दर चरण मुझे मधुर लगते हैं।॥१॥

ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਰਾਮ ॥
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥
मेरा सतगुरु मेरा प्रियतम है और गुरु के बिना मैं रह नहीं सकता।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵੈ ਮੇਰਾ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਰਾਮ ॥
हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥
वह मुझे हरि का नाम प्रदान करता है जो अंतिम क्षण तक मेरी सहायता करता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰਾ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥
हरि-नाम अंतिम क्षणों तक मेरा सहायक होगा, गुरु सतगुरु ने मेरे नाम दृढ़ किया है।

ਜਿਥੈ ਪੁਤੁ ਕਲਤ੍ਰ ਕੋਈ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ਤਿਥੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਛਡਾਇਆ ॥
जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥
जहाँ पुत्र, स्त्री कोई भी मेरा साथी नहीं होगा, वहाँ हरि का नाम मुझे मुक्ति प्रदान करवाएगा।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥
महापुरुष सतगुरु धन्य-धन्य हैं, वह मायातीत हैं, जिससे भेंट करके मैं हरि के नाम का ध्यान करता रहता हूँ।

ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥२॥
मेरा सतगुरु मेरा प्रियतम है और गुरु के बिना मैं रह नहीं सकता ॥ २॥

ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖ ਨ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥
जिन्होंने महापुरुष सतगुरु के दर्शन नहीं किए,

ਤਿਨ ਨਿਹਫਲੁ ਤਿਨ ਨਿਹਫਲੁ ਜਨਮੁ ਸਭੁ ਬ੍ਰਿਥਾ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥
तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम ॥
उन्होंने अपना सारा जीवन निष्फल व्यर्थ ही गंवा दिया है और

ਨਿਹਫਲੁ ਜਨਮੁ ਤਿਨ ਬ੍ਰਿਥਾ ਗਵਾਇਆ ਤੇ ਸਾਕਤ ਮੁਏ ਮਰਿ ਝੂਰੇ ॥
निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥
वे शाक्त दुःखी होकर तड़प-तड़प कर मर गए हैं।

ਘਰਿ ਹੋਦੈ ਰਤਨਿ ਪਦਾਰਥਿ ਭੂਖੇ ਭਾਗਹੀਣ ਹਰਿ ਦੂਰੇ ॥
घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥
नाम-रतन की दौलत हृदय-घर में होने के बावजूद वे भूखे ही रहते हैं और वे भाग्यहीन प्रभु से बहुत दूर रहते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸੁ ਨ ਕਰੀਅਹੁ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਧਿਆਇਆ ॥
हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥
हे परमेश्वर ! मैं उनके दर्शन नहीं करना चाहता, जिन्होंने हरि-नाम का ध्यान नहीं किया और

ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਜਿਨੀ ਦਰਸਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖ ਨ ਪਾਇਆ ॥੩॥
जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥३॥
न ही महापुरुष सतगुरु के दर्शन किए हैं।॥ ३॥

ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਦੀਨ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ਬੇਨੰਤੀ ਰਾਮ ॥
हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥
हम दीन-चातक हैं और अपने हरि-परमेश्वर के समक्ष निवेदन करते हैं कि

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਹਮ ਸਤਿਗੁਰ ਕਰਹ ਭਗਤੀ ਰਾਮ ॥
गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥
हमें प्रियतम गुरु से मिला दें चूंकि हम सतगुरु की भक्ति करें।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਕਰਹ ਭਗਤੀ ਜਾਂ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੇ ॥
हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे ॥
जब हरि-प्रभु की कृपा होती है तो ही सतगुरु की भक्ति करते हैं।

ਮੈ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ਬੇਲੀ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਾਣ ਹਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ॥
मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे ॥
गुरु के बिना मेरा कोई मित्र नहीं और गुरु सतगुरु ही हमारे प्राण हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਾਇਆ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਤੀ ॥
कहु नानक गुरि नामु द्रिड़्हाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥
नानक का कथन है कि गुरु ने मेरे भीतर परमात्मा का नाम बसा दिया है और उस सच्चे हरि-परमेश्वर के नाम का सुमिरन करता हूँ,"

ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਦੀਨ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ਬੇਨੰਤੀ ॥੪॥੩॥
हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती ॥४॥३॥
हम दीन चातक हैं और अपने प्रभु के समक्ष निवेदन करते हैं।॥ ४॥ ३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४ ॥

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਰਾਮ ॥
हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥
हे हरि ! मुझ पर कृपा करो एवं सुखों के दाता सतिगुरु से मिला दो।

ਹਮ ਪੂਛਹ ਹਮ ਪੂਛਹ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ਹਰਿ ਬਾਤਾ ਰਾਮ ॥
हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥
सतिगुरु से मैं हरि की स्तुति की बातें पूछूँगा।

ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ਹਰਿ ਬਾਤ ਪੂਛਹ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥
सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥
जिसने नाम-धन प्राप्त किया है, मैं उस सतिगुरु से हरि की स्तुति की बातें पूछूँगा।

ਪਾਇ ਲਗਹ ਨਿਤ ਕਰਹ ਬਿਨੰਤੀ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੰਥੁ ਬਤਾਇਆ ॥
पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥
गुरु सतगुरु ने मुझे मार्ग बताया है, इसलिए मैं नित्य उसके चरण स्पर्श करता हूँ और उसके समक्ष सदा निवेदन करता हूँ।

ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਸਮਤੁ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਰਾਤਾ ॥
सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥
जो हरि-नाम एवं हरि से रंगा हुआ है, वही भक्त दुःख-सुख को एक समान समझता है।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥੧॥
हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥१॥
हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे सुखों के दाता गुरु से मिला दो॥ १॥

ਸੁਣਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਣਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਸਭਿ ਬਿਨਸੇ ਹੰਉਮੈ ਪਾਪਾ ਰਾਮ ॥
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥
गुरु के मुख से परमात्मा का नाम सुनकर मेरे सभी पाप एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं।

ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲਥਿਅੜੇ ਜਗਿ ਤਾਪਾ ਰਾਮ ॥
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥
हरि-नाम का भजन करने से संसार के तमाम रोग निवृत्त हो जाते हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨੀ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਕੇ ਦੁਖ ਪਾਪ ਨਿਵਾਰੇ ॥
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥
जिन्होंने हरि-नाम की आराधना की है, उनके दुःख एवं पाप नाश हो गए हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਗਿਆਨ ਖੜਗੁ ਹਥਿ ਦੀਨਾ ਜਮਕੰਕਰ ਮਾਰਿ ਬਿਦਾਰੇ ॥
सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥
सतगुरु ने मेरे हाथ में ज्ञान की कृपाण पकड़ा दी है, जिसके साथ मैंने यमदूतों का प्रहार करके वध कर दिया है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰੀ ਸੁਖਦਾਤੇ ਦੁਖ ਲਾਥੇ ਪਾਪ ਸੰਤਾਪਾ ॥
हरि प्रभि क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥
सुखों के दाता हरि-प्रभु ने मुझ पर कृपा धारण की है और मैं दुःख, पाप एवं संताप से मुक्त हो गया हूँ।

ਸੁਣਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਣਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਭਿ ਬਿਨਸੇ ਹੰਉਮੈ ਪਾਪਾ ॥੨॥
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥२॥
गुरु से परमात्मा का नाम सुनकर मेरे सभी पाप एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं।॥ २॥

ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਰਾਮ ॥
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥
हरि का भजन करने से हरि का नाम मेरे मन को बहुत अच्छा लगा है।

ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਖਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪਿ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਇਆ ਰਾਮ ॥
मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥
गुरुमुख बनकर परमात्मा का भजन करने से सभी रोग नष्ट हो गए हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਪਿ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਇਆ ਅਰੋਗਤ ਭਏ ਸਰੀਰਾ ॥

गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥

गुरुमुख बनकर परमात्मा की आराधना करने से सभी रोग दूर हो गए हैं और शरीर आरोग्य हो गया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਹਰਿ ਲਾਗੀ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ॥

अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर ग्मभीरा ॥

रात-दिन सहज समाधि हरि में लगी रहती है चूंकि मैंने गहरे एवं गंभीर हरि का ही ध्यान किया है।

ਜਾਤਿ ਅਜਾਤਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਪਰਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥

जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥

उच्च कुल अथवा निम्न कुल से संबंधित जिस व्यक्ति ने भी परमात्मा का ध्यान-मनन किया है, उसने परम पदार्थ (मोक्ष) पा लिया है।

ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥੩॥

जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥३॥

हरि का भजन करने से हरि-नाम मेरे मन को अच्छा लगा है ॥३॥

ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੇ ਰਾਮ ॥
हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥
हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो और अपनी कृपा करके मेरा उद्धार करो।

ਹਮ ਪਾਪੀ ਹਮ ਪਾਪੀ ਨਿਰਗੁਣ ਦੀਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਰਾਮ ॥
हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥
हम पापी एवं गुण विहीन हैं किन्तु फिर भी तुम्हारे तुच्छ सेवक हैं।

ਹਮ ਪਾਪੀ ਨਿਰਗੁਣ ਦੀਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਹਰਿ ਦੈਆਲ ਸਰਣਾਇਆ ॥
हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥
हे दयालु परमेश्वर ! चाहे हम पापी निर्गुण हैं, फिर भी तुम्हारी शरण में आए हैं।

ਤੂ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਮ ਪਾਥਰ ਤਰੇ ਤਰਾਇਆ ॥
तू दुख भंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥
तू दुखनाशक, सर्व सुखों का दाता है और हम पत्थर तुम्हारे पार करवाने से ही पार हो सकते हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਭੇਟਿ ਰਾਮ ਰਸੁ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਉਧਾਰੇ ॥
सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥
हे नानक ! जिन्होंने सतगुरु से मिलकर राम रस पा लिया है, नाम ने उनका उद्धार कर दिया है।

ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਹਰਿ ਧਾਰਹੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੇ ਰਾਮ ॥੪॥੪॥
हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥४॥४॥
हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और अपनी कृपा द्वारा मेरा संसार-सागर से उद्धार कर दो॥ ४॥ ४॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ਘੋੜੀਆ
वडहंसु महला ४ घोड़ीआ
वडहंसु महला ४ घोड़ीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੇਹ ਤੇਜਣਿ ਜੀ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥
देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥
यह देह रूपी घोड़ी राम ने उत्पन्न की है।

ਧੰਨੁ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਪੁੰਨਿ ਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥
धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥
यह मनुष्य जीवन बड़ा धन्य है जो पुण्य कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है।

ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਵਡ ਪੁੰਨੇ ਪਾਇਆ ਦੇਹ ਸੁ ਕੰਚਨ ਚੰਗੜੀਆ ॥
माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥
यह मनुष्य जन्म बड़े पुण्य कर्म करने के फलस्वरूप ही मिला है और यह शरीर सोने की भाँति उत्तम है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਰੰਗੁ ਚਲੂਲਾ ਪਾਵੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਵ ਰੰਗੜੀਆ ॥
गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥
गुरु के माध्यम से यह शरीर फूलों की भाँति गहरा रंग प्राप्त करता है और हरि-परमेश्वर के नवीन रंग में रंग जाता है।

ਏਹ ਦੇਹ ਸੁ ਬਾਂਕੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਜਾਪੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਹਾਵੀਆ ॥
एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥
यह शरीर अति सुन्दर है जो हरि का जाप करता है और हरि-नाम से यह सुहावना हो गया है।

ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਈ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈਆ ॥੧॥
वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥१॥
अहोभाग्य से ही यह देह प्राप्त हुई है और परमेश्वर का नाम इसका साथी है। हे नानक ! इस शरीर की रचना राम ने की है॥ १॥

ਦੇਹ ਪਾਵਉ ਜੀਨੁ ਬੁਝਿ ਚੰਗਾ ਰਾਮ ॥
देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥
मैंने देह रूपी घोड़ी पर राम की अच्छी सूझ रूपी काठी डाली है।

ਚੜਿ ਲੰਘਾ ਜੀ ਬਿਖਮੁ ਭੁਇਅੰਗਾ ਰਾਮ ॥
चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥
इस शरीर रूपी घोड़ी पर सवार होकर मैं विषम संसार-सागर से पार होता हूँ।

ਬਿਖਮੁ ਭੁਇਅੰਗਾ ਅਨਤ ਤਰੰਗਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਲੰਘਾਏ ॥
बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥
विषम संसार सागर में असंख्य ही तरंगें हैं और गुरु के माध्यम से ही जीव इससे पार होते हैं।

ਹਰਿ ਬੋਹਿਥਿ ਚੜਿ ਵਡਭਾਗੀ ਲੰਘੈ ਗੁਰੁ ਖੇਵਟੁ ਸਬਦਿ ਤਰਾਏ ॥
हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥
हरि रूपी जहाज पर सवार होकर भाग्यशाली पार हो जाते हैं और गुरु खेवट अपने शब्द से जीवों को पार कर देता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਹਰਿ ਰੰਗਾ ॥
अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥
हरि के प्रेम से रंगा हुआ हरि का प्रेमी रात-दिन हरि का गुणगान करता रहता है और हरि जैसा ही हो जाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਿਰਬਾਣ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਉਤਮੁ ਹਰਿ ਪਦੁ ਚੰਗਾ ॥੨॥
जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥२॥
नानक ने निर्वाण पद पा लिया है, दुनिया में हरिं सर्वोत्तम है और हरि पद ही भला है।॥ २॥

ਕੜੀਆਲੁ ਮੁਖੇ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਰਾਮ ॥
कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥
मुँह में लगाम के स्थान पर गुरु ने ज्ञान दृढ़ किया है।

ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਚਾਬਕੁ ਲਾਇਆ ਰਾਮ ॥
तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥
उसने प्रभु के प्रेम का चाबुक मेरे तन पर मारा है।

ਤਨਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਾਇ ਚਾਬਕੁ ਮਨੁ ਜਿਣੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜੀਤਿਆ ॥
तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥
प्रभु-प्रेम का चाबुक अपने तन पर मारकर गुरुमुख अपने मन को जीत कर जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त कर लेता है।

ਅਘੜੋ ਘੜਾਵੈ ਸਬਦੁ ਪਾਵੈ ਅਪਿਉ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਤਿਆ ॥
अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥
अपने बेकाबू मन को वह काबू करता है, शब्द को प्राप्त होता है और सजीव करने वाले हरि-रस का पान करता है।

ਸੁਣਿ ਸ੍ਰਵਣ ਬਾਣੀ ਗੁਰਿ ਵਖਾਣੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਤੁਰੀ ਚੜਾਇਆ ॥
सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥
गुरु की उच्चरित की हुई वाणी को अपने कानों से सुनकर अपनी देह की घोड़ी को हरि-प्रेम का रंग चढ़ा दिया है।

ਮਹਾ ਮਾਰਗੁ ਪੰਥੁ ਬਿਖੜਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪਾਰਿ ਲੰਘਾਇਆ ॥੩॥
महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥३॥
नानक ने मृत्यु का महामार्ग पथ पार कर लिया है।॥३॥

ਘੋੜੀ ਤੇਜਣਿ ਦੇਹ ਰਾਮਿ ਉਪਾਈਆ ਰਾਮ ॥
घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥
यह शरीर रूपी फुर्तीली घोड़ी राम ने उत्पन्न की है।

ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ਸਾ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਤੁਖਾਈਆ ਰਾਮ ॥
जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम ॥
यह शरीर रूपी घोड़ी धन्य-धन्य है, जिसके माध्यम से हरि-प्रभु की आराधना की जाती है।

ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪੈ ਸਾ ਧੰਨੁ ਸਾਬਾਸੈ ਧੁਰਿ ਪਾਇਆ ਕਿਰਤੁ ਜੁੜੰਦਾ ॥
जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥
जिससे प्रभु का जाप किया जाता है, वह शरीर रूपी घोड़ी धन्य एवं सराहनीय है और यह पूर्व जन्म में किए गए शुभ कर्मों के संचय से ही प्राप्त होती है।

ਚੜਿ ਦੇਹੜਿ ਘੋੜੀ ਬਿਖਮੁ ਲਘਾਏ ਮਿਲੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥
जीव शरीर रूपी घोड़ी पर सवार होकर विषम संसार-सागर से पार हो जाता है और गुरु के माध्यम से परमानन्द प्रभु को मिल जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਾਜੁ ਰਚਾਇਆ ਪੂਰੈ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੰਞ ਆਈ ॥
हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥
पूर्ण परमेश्वर ने जीवात्मा का विवाह रचाया है और संतजनों की मिलकर बारात आई है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਵਰੁ ਪਾਇਆ ਮੰਗਲੁ ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਜਨਾ ਵਾਧਾਈ ॥੪॥੧॥੫॥
जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥४॥१॥५॥
नानक का कथन है कि उसने हरि-परमेश्वर को वर के रूप में पा लिया है। संतजन मिलकर मंगल गीत गा रहे हैं और उसे शुभ-कामनाएँ दे रहे हैं।॥४॥१॥५॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
वडहंसु महला ४ ॥
वडहंसु महला ४ ॥

ਦੇਹ ਤੇਜਨੜੀ ਹਰਿ ਨਵ ਰੰਗੀਆ ਰਾਮ ॥
देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥
यह देह हरि के सर्वदा नवीन रंग वाली घोड़ी है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੂ ਹਰਿ ਮੰਗੀਆ ਰਾਮ ॥
गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥
मैंने गुरु से सत्य का ज्ञान माँगा है।

ਗਿਆਨ ਮੰਗੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਚੰਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਜਾਣੀਆ ॥
गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥
मैं गुरु से सत्य का ज्ञान माँगता हूँ और मुझे हरि-कथा बहुत अच्छी लगती है। हरि-नाम द्वारा मैंने हरि की गति को जान लिया है।

ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਸਫਲਿਉ ਕੀਆ ਕਰਤੈ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਵਖਾਣੀਆ ॥
सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥
राम-नाम का बखान करने से कर्ता-परमेश्वर ने मेरा समूचा जीवन सफल कर दिया है।

ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਜਨ ਮੰਗੀਆ ॥
हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥
राम नाम का स्तुतिगान करके भक्तजन हरि-प्रभु की भक्ति ही माँगते हैं।

ਜਨੁ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਸੁਣਹੁ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ਚੰਗੀਆ ॥੧॥
जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥१॥
नानक का कथन है कि हे संतजनो ! जरा सुनो, गोविन्द की भक्ति ही भली है॥ १॥

ਦੇਹ ਕੰਚਨ ਜੀਨੁ ਸੁਵਿਨਾ ਰਾਮ ॥
देह कंचन जीनु सुविना राम ॥
यह कंचन काया सोने की सुन्दर काठी से शोभायमान है और यह परमेश्वर के नाम-रत्नों से जड़ी हुई है।

ਜੜਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਤੰਨਾ ਰਾਮ ॥
जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम ॥
इस तरह नाम के रत्नों से अलंकृत होकर इसने गोविन्द को पा लिया है।

ਜੜਿ ਨਾਮ ਰਤਨੁ ਗੋਵਿੰਦ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਸੁਖ ਘਣੇ ॥
जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥
जब मुझे हरि मिल गया तो उसका गुणगान करके बहुत सुख पाया है।

ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਰੰਗ ਹਰਿ ਬਣੇ ॥
गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥
गुरु-शब्द को प्राप्त करके हरि-नाम का ही ध्यान किया है। मैं बड़ा भाग्यवान हूँ कि हरि के रंग में हरि का रूप बन गया हूँ।

ਹਰਿ ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਹਰਿ ਨਵਤਨ ਹਰਿ ਨਵ ਰੰਗੀਆ ॥
हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥
जगत का स्वामी अन्तर्यामी हरि मुझे मिल गया है और वह सदा ही नितनवीन एवं नवरंग है।

ਨਾਨਕੁ ਵਖਾਣੈ ਨਾਮੁ ਜਾਣੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੰਗੀਆ ॥੨॥
नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥२॥
नानक का कथन है कि जो नाम को जानता है वह प्रभु से हरि-नाम ही माँगता है॥ २॥

ਕੜੀਆਲੁ ਮੁਖੇ ਗੁਰਿ ਅੰਕਸੁ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥
मैंने शरीर रूपी घोड़ी के मुँह में गुरु के ज्ञान के अंकुश की लगाम लगा दी है।

ਮਨੁ ਮੈਗਲੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਸਿ ਆਇਆ ਰਾਮ ॥
मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥
यह मन रूपी हाथी गुरु के शब्द द्वारा ही वश में आता है।

ਮਨੁ ਵਸਗਤਿ ਆਇਆ ਪਰਮ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਸਾ ਧਨ ਕੰਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥
मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥
जिसका मन वश में आ जाता है, वह परम पदवी प्राप्त कर लेता है और वह जीव-स्त्री अपने प्रभु की प्रियतमा बन जाती है।

ਅੰਤਰਿ ਪ੍ਰੇਮੁ ਲਗਾ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਰੀ ॥
अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥
ऐसी नारी अपने हृदय में प्रभु से प्रेम करती है और अपने प्रभु के चरणों में सुहावनी लगती है।

ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥
हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥
हरि के प्रेम रंग में रंगकर वह सहज ही मस्त हो जाती है और नाम की आराधना करके हरि-परमेश्वर को पा लेती है।

ਨਾਨਕ ਜਨੁ ਹਰਿ ਦਾਸੁ ਕਹਤੁ ਹੈ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥੩॥
नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥३॥
हरि का दास नानक कहता है कि अहोभाग्य से ही हरि का ध्यान किया है॥ ३॥

ਦੇਹ ਘੋੜੀ ਜੀ ਜਿਤੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਰਾਮ ॥
देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥
यह काया एक सुन्दर घोड़ी है, जिसके माध्यम से हरि को पाया है।

ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਜੀ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਰਾਮ ॥
मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥
सतगुरु से मिलकर खुशी के मंगल गीत गाता हूँ।

ਹਰਿ ਗਾਇ ਮੰਗਲੁ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਸੇਵ ਸੇਵਕ ਸੇਵਕੀ ॥
हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥
हरि का मंगल गान किया है, राम नाम का जाप किया है और हरि के सेवकों की सेवा की है।

ਪ੍ਰਭ ਜਾਇ ਪਾਵੈ ਰੰਗ ਮਹਲੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਮਾਣੈ ਰੰਗ ਕੀ ॥
प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥
हरि के रंग में रंगकर प्रभु को पाकर आनंद किया जा सकता है।

ਗੁਣ ਰਾਮ ਗਾਏ ਮਨਿ ਸੁਭਾਏ ਹਰਿ ਗੁਰਮਤੀ ਮਨਿ ਧਿਆਇਆ ॥
गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥
मैं सहज स्वभाव राम का गुणगान करता हूँ और गुरु-उपदेश द्वारा हरि को अपने मन में स्मरण करता हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਦੇਹ ਘੋੜੀ ਚੜਿ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੬॥
जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥४॥२॥६॥
परमेश्वर ने नानक पर कृपा धारण की है और देह रूपी घोड़ी पर सवार होकर उसने हरि को पा लिया है॥ ४॥ २॥ ६॥

ਰਾਗੁ ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੪
रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४
रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਲਧਾ ਜੀ ਰਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ਰਾਮ ॥
गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥
गुरु से मिलकर मैंने प्रिय राम को खोज लिया है और

ਇਹੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦਿਤੜਾ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ਰਾਮ ॥
इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥
यह तन-मन मैंने उस पर न्योछावर कर दिया है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਦਿਤਾ ਭਵਜਲੁ ਜਿਤਾ ਚੂਕੀ ਕਾਂਣਿ ਜਮਾਣੀ ॥
तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी कांणि जमाणी ॥
अपना तन-मन न्योछावर करके मैं भवसागर से पार हो गया हूँ और मेरा मृत्यु का डर समाप्त हो गया है।

ਅਸਥਿਰੁ ਥੀਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਆ ਰਹਿਆ ਆਵਣ ਜਾਣੀ ॥
असथिरु थीआ अम्रितु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥
नामामृत का पान करके मैं अटल हो गया हूँ और मेरा जीवन-मृत्यु का चक्र मिट गया है।

ਸੋ ਘਰੁ ਲਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਧਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥
सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥
मैंने वह निवास खोज लिया है, जहाँ सहज समाधि में प्रविष्ट हो जाता हूँ और वहाँ हरि का नाम ही मेरा आधार है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਮਾਣੇ ਰਲੀਆਂ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੰਉ ਨਮਸਕਾਰਾ ॥੧॥
कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥१॥
नानक का कथन है कि अब मैं सुख एवं आनंद का उपभोग करता हूँ एवं पूर्ण गुरु को मेरा शत-शत नमन है॥ १॥

ਸੁਣਿ ਸਜਣ ਜੀ ਮੈਡੜੇ ਮੀਤਾ ਰਾਮ ॥
सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥
हे मेरे मीत राम ! हे सज्जन जी ! कृपया सुनो,

ਗੁਰਿ ਮੰਤ੍ਰੁ ਸਬਦੁ ਸਚੁ ਦੀਤਾ ਰਾਮ ॥
गुरि मंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥
गुरु ने मुझे सच्चे शब्द (की आराधना) का मंत्र प्रदान किया है।

ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਧਿਆਇਆ ਮੰਗਲੁ ਗਾਇਆ ਚੂਕੇ ਮਨਹੁ ਅਦੇਸਾ ॥
सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥
सच्चे शब्द का ध्यान करने से मेरे मन की चिंता दूर हो गई है और मंगल गीत गायन करता हूँ।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਕਤਹਿ ਨ ਜਾਇਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਬੈਸਾ ॥
सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥
मैंने उस प्रभु को पाया है, जो कहीं नहीं जाता और सर्वदा मेरे साथ रहता है।

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਭਾਣਾ ਸਚਾ ਮਾਣਾ ਪ੍ਰਭਿ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਹਜੇ ਦੀਤਾ ॥

प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥

जो पूज्य प्रभु को अच्छा लगा है, उसने मुझे सच्चा सम्मान प्रदान किया है, उसने सहज ही मुझे नाम का धन प्रदान किया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਜਨ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤੇਰਾ ਦਾਨੁ ਸਭਨੀ ਹੈ ਲੀਤਾ ॥੨॥
कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥२॥
नानक कहते हैं कि ऐसे प्रभु-भक्त पर मैं बलिहारी जाता हूँ और तेरा दान सभी ने लिया है॥ २॥

ਤਉ ਭਾਣਾ ਤਾਂ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਏ ਰਾਮ ॥
तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! जब तुझे अच्छा लगा तो मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया।

ਮਨੁ ਥੀਆ ਠੰਢਾ ਸਭ ਤ੍ਰਿਸਨ ਬੁਝਾਏ ਰਾਮ ॥
मनु थीआ ठंढा सभ त्रिसन बुझाए राम ॥
मेरा मन शीतल हो गया है और मेरी समस्त तृष्णा मिट गई है।

ਮਨੁ ਥੀਆ ਠੰਢਾ ਚੂਕੀ ਡੰਝਾ ਪਾਇਆ ਬਹੁਤੁ ਖਜਾਨਾ ॥
मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना ॥
मेरा मन शीतल हो गया है, जलन भी मिट गई है और मुझे तेरे नाम का बड़ा भण्डार मिल गया है।

ਸਿਖ ਸੇਵਕ ਸਭਿ ਭੁੰਚਣ ਲਗੇ ਹੰਉ ਸਤਗੁਰ ਕੈ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥
सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना ॥
गुरु के सभी सिक्ख एवं सेवक इसका सेवन करते हैं। मैं अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਖਸਮ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਬੁਝਾਏ ॥
निरभउ भए खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाए ॥
मालिक के प्रेम-रंग में लीन हो जाने से मैं मृत्यु के आतंक को दूर करके निडर हो गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਸਦਾ ਸੰਗਿ ਸੇਵਕੁ ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਕਰੰਉ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੩॥
नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥३॥
दास नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! सदैव ही अपने सेवक के साथ रहो ताकि तेरे चरणों में वृत्ति लगाकर मैं तेरी भक्ति करता रहूँ॥ ३॥

ਪੂਰੀ ਆਸਾ ਜੀ ਮਨਸਾ ਮੇਰੇ ਰਾਮ ॥
पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥
हे मेरे राम जी ! मेरी आशा एवं इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣ ਜੀਉ ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਰਾਮ ॥
मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥
मैं गुणहीन हूँ और सभी गुण तुझ में ही विद्यमान हैं।

ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ ਕਿਤੁ ਮੁਖਿ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥
हे मेरे ठाकुर ! समस्त गुण तुझ में ही हैं, फिर मैं किस मुँह से तेरी महिमा-स्तुति करूँ ?

ਗੁਣੁ ਅਵਗੁਣੁ ਮੇਰਾ ਕਿਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ਬਖਸਿ ਲੀਆ ਖਿਨ ਮਾਹੀ ॥
गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥
मेरे गुणों एवं अवगुणों की ओर तूने बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया और तूने मुझे एक क्षण में ही क्षमा कर दिया है।

ਨਉ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥
नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥
मैंने नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं, शुभकामनाएँ गूंज रही हैं और अनहद-नाद बज रहे हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਮੈ ਵਰੁ ਘਰਿ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਲਾਥੇ ਜੀ ਸਗਲ ਵਿਸੂਰੇ ॥੪॥੧॥
कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥४॥१॥
हे नानक ! मैंने अपने हृदय घर में अपने पति-प्रभु को पा लिया है और मेरी सभी चिंताएं मिट गई हैं।॥ ४॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਕਿਆ ਸੁਣੇਦੋ ਕੂੜੁ ਵੰਞਨਿ ਪਵਣ ਝੁਲਾਰਿਆ ॥
किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥
तुम क्यों झूठी बात सुनते रहते हो ? क्योंकि यह तो हवा के तेज झोंके की तरह लुप्त हो जाने वाली हैं।

ਨਾਨਕ ਸੁਣੀਅਰ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ਜੋ ਸੁਣੇਦੇ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੧॥
नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥१॥
हे नानक ! वही कान परमात्मा को स्वीकार हैं, जो सच्चे परमेश्वर के नाम की महिमा सुनते हैं।॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਤਿਨ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਜਿਨ ਪ੍ਰਭੁ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣਿਆ ਰਾਮ ॥
तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥
मैं उन पर न्यौछावर होता हूँ, जो अपने कानों से प्रभु का नाम सुनते हैं।

ਸੇ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਭਣਿਆ ਰਾਮ ॥
से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥
जो अपनी जुबान से परमेश्वर का गुणगान करते हैं, वे सहज ही सुखी हैं।

ਸੇ ਸਹਜਿ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਣਹ ਅਮੋਲੇ ਜਗਤ ਉਧਾਰਣ ਆਏ ॥
से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥
वे भी प्राकृतिक रूप से शोभायमान हैं एवं अमूल्य गुणों वाले हैं जो दुनिया का उद्धार करने के लिए आए हैं।

ਭੈ ਬੋਹਿਥ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭ ਚਰਣਾ ਕੇਤੇ ਪਾਰਿ ਲਘਾਏ ॥
भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए ॥
प्रभु के सुन्दर चरण भवसागर से पार करवाने वाले जहाज हैं, जिन्होंने अनेकों को भवसागर से पार किया है।

ਜਿਨ ਕੰਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੀ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਤਿਨ ਕਾ ਲੇਖਾ ਨ ਗਣਿਆ ॥
जिन कंउ क्रिपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥
जिन पर मेरे ठाकुर जी ने कृपा-दृष्टि की है, उनसे उनके कर्मों का लेखा-जोखा नहीं पूछा जाता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਘੋਲਿ ਘੁਮਾਈ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣਿਆ ॥੧॥
कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥१॥
नानक का कथन है कि मैं उन पर न्यौछावर होता हूँ, जिन्होंने अपने कानों से प्रभु की महिमा सुनी है॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਲੋਇਣ ਲੋਈ ਡਿਠ ਪਿਆਸ ਨ ਬੁਝੈ ਮੂ ਘਣੀ ॥
लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥
अपने नेत्रों से मैंने भगवान का आलोक देख लिया है, परन्तु उसे देखने की मेरी अत्यन्त प्यास समाप्त नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਸੇ ਅਖੜੀਆਂ ਬਿਅੰਨਿ ਜਿਨੀ ਡਿਸੰਦੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੧॥
नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥१॥
हे नानक ! वे आँखें भाग्यवान हैं जिन से मेरा प्रिय-प्रभु देखा जाता है ॥१॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਤਿਨ ਕੁਰਬਾਣੇ ਰਾਮ ॥
जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥
जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।

ਸੇ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਭਾਣੇ ਰਾਮ ॥
से साची दरगह भाणे राम ॥
वही सच्चे दरबार में सत्कृत होते हैं।

ਠਾਕੁਰਿ ਮਾਨੇ ਸੇ ਪਰਧਾਨੇ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ॥
ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥
ठाकुर जी के स्वीकृत किए हुए वे सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं और हरि के प्रेम रंग में लीन रहते हैं।

ਹਰਿ ਰਸਹਿ ਅਘਾਏ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਜਾਤੇ ॥
हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥
वे हरि रस से तृप्त होते हैं, सहज अवस्था में लीन रहते हैं और सर्वव्यापक परमात्मा को वे घट-घट में देखते हैं।

ਸੇਈ ਸਜਣ ਸੰਤ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਠਾਕੁਰ ਅਪਣੇ ਭਾਣੇ ॥
सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥
जो अपने ठाकुर को अच्छे लगते हैं, वही सज्जन एवं संत सुखी रहते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡਿਠਾ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੇ ॥੨॥
कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥२॥
नानक का कथन है कि जिन्होंने हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, मैं उन पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਦੇਹ ਅੰਧਾਰੀ ਅੰਧ ਸੁੰਞੀ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੀਆ ॥
देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥
परमात्मा के नाम के बिना यह शरीर बिल्कुल अज्ञानपूर्ण एवं निर्जन है।

ਨਾਨਕ ਸਫਲ ਜਨੰਮੁ ਜੈ ਘਟਿ ਵੁਠਾ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੧॥
नानक सफल जनमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥१॥
हे नानक ! जिसके अन्तर्मन में सच्चे परमेश्वर का निवास है, उस प्राणी का जन्म सफल है॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਤਿਨ ਖੰਨੀਐ ਵੰਞਾਂ ਜਿਨ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਡੀਠਾ ਰਾਮ ॥
तिन खंनीऐ वंञां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥
जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, उनके लिए टुकड़े-टुकड़े होकर न्यौछावर होता हूँ।

ਜਨ ਚਾਖਿ ਅਘਾਣੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੀਠਾ ਰਾਮ ॥
जन चाखि अघाणे हरि हरि अम्रितु मीठा राम ॥
हरिनामामृत का पान करके भक्तजन तृप्त हो गए हैं।

ਹਰਿ ਮਨਹਿ ਮੀਠਾ ਪ੍ਰਭੂ ਤੂਠਾ ਅਮਿਉ ਵੂਠਾ ਸੁਖ ਭਏ ॥
हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥
उनके मन को तो परमेश्वर ही मीठा लगता है, प्रभु उन पर मेहरबान है, इसलिए उन पर अमृत बरसता है और वे सुख भोगते हैं।

ਦੁਖ ਨਾਸ ਭਰਮ ਬਿਨਾਸ ਤਨ ਤੇ ਜਪਿ ਜਗਦੀਸ ਈਸਹ ਜੈ ਜਏ ॥
दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जए ॥
विश्व के मालिक जगदीश्वर का भजन एवं जय-जयकार करने से उनके शरीर के सभी दुःख एवं भ्रम नाश हो गए हैं और

ਮੋਹ ਰਹਤ ਬਿਕਾਰ ਥਾਕੇ ਪੰਚ ਤੇ ਸੰਗੁ ਤੂਟਾ ॥
मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा ॥
पाँचों विकार-कामवासना, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की संगति भी हट गई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਖੰਨੀਐ ਵੰਞਾ ਜਿਨ ਘਟਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਵੂਠਾ ॥੩॥
कहु नानक तिन खंनीऐ वंजा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥३॥
नानक का कथन है कि जिसकी अन्तरात्मा में मेरा परमात्मा निवास कर गया है, मैं उस पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान होता हूँ॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਜੋ ਲੋੜੀਦੇ ਰਾਮ ਸੇਵਕ ਸੇਈ ਕਾਂਢਿਆ ॥
जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥
जिन्हें राम को पाने की तीव्र लालसा लगी हुई है, वही उसके सच्चे सेवक कहलाते हैं।

ਨਾਨਕ ਜਾਣੇ ਸਤਿ ਸਾਂਈ ਸੰਤ ਨ ਬਾਹਰਾ ॥੧॥
नानक जाणे सति सांई संत न बाहरा ॥१॥
नानक इस सत्य को भली भांति जानता है कि जगत का सांई अपने संतों से अलग नहीं है।॥१॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਮਿਲਿ ਜਲੁ ਜਲਹਿ ਖਟਾਨਾ ਰਾਮ ॥
मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥
जैसे जल, जल से मिलकर अभेद हो जाता है,

ਸੰਗਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਨਾ ਰਾਮ ॥
संगि जोती जोति मिलाना राम ॥
वैसे ही संतों की ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है।

ਸੰਮਾਇ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਕਰਤੇ ਆਪਿ ਆਪਹਿ ਜਾਣੀਐ ॥
समाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥
सर्वशक्तिमान जग के रचयिता परमात्मा में विलीन होकर जीव अपने आत्म स्वरूप को समझ लेता है।

ਤਹ ਸੁੰਨਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਧਿ ਲਾਗੀ ਏਕੁ ਏਕੁ ਵਖਾਣੀਐ ॥
तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥
तब उसकी सहज ही शून्य समाधि लग जाती है और वह एक ईश्वर का ही ध्यान करता है।

ਆਪਿ ਗੁਪਤਾ ਆਪਿ ਮੁਕਤਾ ਆਪਿ ਆਪੁ ਵਖਾਨਾ ॥
आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥
ईश्वर आप ही गुप्त है और आप ही माया के बन्धनों से मुक्त है और वह स्वयं ही अपने आप का बखान करता है।

ਨਾਨਕ ਭ੍ਰਮ ਭੈ ਗੁਣ ਬਿਨਾਸੇ ਮਿਲਿ ਜਲੁ ਜਲਹਿ ਖਟਾਨਾ ॥੪॥੨॥
नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥४॥२॥
हे नानक ! ऐसे गुरुमुख व्यक्ति का भ्रम, भय एवं तीनों गुण-रजो, तमो एवं सतो गुण नाश हो जाते हैं और जैसे जल, जल में ही मिल जाता है वैसे ही वह परमात्मा में विलीन हो जाता है।॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥
वडहंसु महला ५ ॥
वडहंसु महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥਾ ਰਾਮ ॥
प्रभ करण कारण समरथा राम ॥
हे प्रभु ! तू सब कुछ करने-कराने में समर्थ है,

ਰਖੁ ਜਗਤੁ ਸਗਲ ਦੇ ਹਥਾ ਰਾਮ ॥
रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥
अपना हाथ देकर सारी दुनिया की रक्षा करो।

ਸਮਰਥ ਸਰਣਾ ਜੋਗੁ ਸੁਆਮੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपा निधि सुखदाता ॥
तू ही समर्थ, शरण प्रदान करने योग्य, सबका मालिक, कृपानिधि एवं सुखों का दाता है।

ਹੰਉ ਕੁਰਬਾਣੀ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਜਿਨੀ ਏਕੁ ਪਛਾਤਾ ॥
हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥
मैं तेरे उन सेवकों पर कुर्बान जाता हूँ, जो केवल एक ईश्वर को ही पहचानते हैं।

ਵਰਨੁ ਚਿਹਨੁ ਨ ਜਾਇ ਲਖਿਆ ਕਥਨ ਤੇ ਅਕਥਾ ॥
वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥
उस परमात्मा का कोई रंग एवं चिन्ह वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि उसका कथन अकथनीय है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਣਹੁ ਬਿਨਤੀ ਪ੍ਰਭ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥਾ ॥੧॥
बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे सब कुछ करने-करवाने में सर्वशक्तिमान प्रभु ! मेरी एक वंदना सुनो॥ १॥

ਏਹਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਕਰਤਾ ਰਾਮ ॥
एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥
ये जीव तेरे उत्पन्न किए हुए हैं और तू इनका रचयिता है।

ਪ੍ਰਭ ਦੂਖ ਦਰਦ ਭ੍ਰਮ ਹਰਤਾ ਰਾਮ ॥
प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥
हे प्रभु ! तू दुःख-दर्द एवं भ्रम का नाश करने वाला है।

ਭ੍ਰਮ ਦੂਖ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਰਖਿ ਲੇਹੁ ਦੀਨ ਦੈਆਲਾ ॥
भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥
हे दीनदयालु ! दुविधा, दुख-दर्द का नाश करके एक क्षण में मेरी रक्षा करो।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਆਮਿ ਸਜਣੁ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਬਾਲ ਗੋਪਾਲਾ ॥
मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥
तू ही माता-पिता, मालिक एवं मित्र है और यह सारा जगत तेरी संतान है।

ਜੋ ਸਰਣਿ ਆਵੈ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਪਾਵੈ ਸੋ ਬਹੁੜਿ ਜਨਮਿ ਨ ਮਰਤਾ ॥
जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥
जो तेरी शरण में आता है, उसे गुणों का भण्डार प्राप्त हो जाता है और वह दुबारा न जन्म लेता है और न ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਤੇਰਾ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਕਰਤਾ ॥੨॥
बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥२॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे पूज्य परमेश्वर ! यह सभी जीव तेरे हैं और तू सबका रचयिता है ॥२॥

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਰਾਮ ॥
आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥
दिन-रात परमात्मा का ध्यान करना चाहिए,

ਮਨ ਇਛਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ਰਾਮ ॥
मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥
इसके फलस्वरूप मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं।

ਮਨ ਇਛ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ਮਿਟਹਿ ਜਮ ਕੇ ਤ੍ਰਾਸਾ ॥
मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥
परमात्मा का ध्यान करने से मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं और मृत्यु का भय मिट जाता है।

ਗੋਬਿਦੁ ਗਾਇਆ ਸਾਧ ਸੰਗਾਇਆ ਭਈ ਪੂਰਨ ਆਸਾ ॥
गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥
संतों की सभा में सम्मिलित होकर जगत पालक गोविंद का गुणगान करने से सभी आशाएं पूरी हो गई हैं।

ਤਜਿ ਮਾਨੁ ਮੋਹੁ ਵਿਕਾਰ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਭੂ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਈਐ ॥
तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥
अपना अहंकार, मोह एवं सभी विकार त्याग कर हम प्रभु के मन को अच्छे लगने लग गए हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣੀ ਸਦਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ॥੩॥
बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि हमें दिन-रात सदा-सर्वदा भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए॥ ३॥

ਦਰਿ ਵਾਜਹਿ ਅਨਹਤ ਵਾਜੇ ਰਾਮ ॥
दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥
परमात्मा के दरबार में हमेशा ही अनहत कीर्तन गूंज रहा है।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਹਰਿ ਗੋਬਿੰਦੁ ਗਾਜੇ ਰਾਮ ॥
घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥
जगत का रक्षक गोविन्द प्रत्येक हृदय में बोल रहा है।

ਗੋਵਿਦ ਗਾਜੇ ਸਦਾ ਬਿਰਾਜੇ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਊਚਾ ॥
गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥
वह सर्वदा ही बोलता एवं सभी के भीतर विराजमान है, वह अगम्य, मन-वाणी से परे एवं सर्वोपरि है।

ਗੁਣ ਬੇਅੰਤ ਕਿਛੁ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਕੋਇ ਨ ਸਕੈ ਪਹੂਚਾ ॥
गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥
उस प्रभु के अनन्त गुण है, मनुष्य उसके गुणों का तिल मात्र भी वर्णन नहीं कर सकता और कोई भी उसके पास पहुँच नहीं सकता।

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਸਾਜੇ ॥
आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥
वह स्वयं ही पैदा करता है, स्वयं ही पालन-पोषण करता है और सभी जीव-जन्तु उसकी ही रचना है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਖੁ ਨਾਮਿ ਭਗਤੀ ਦਰਿ ਵਜਹਿ ਅਨਹਦ ਵਾਜੇ ॥੪॥੩॥
बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥४॥३॥
नानक प्रार्थना करता है कि जीवन के सभी सुख परमात्मा के नाम एवं भक्ति में हैं, जिसके द्वार पर अनहद नाद बजते रहते हैं॥४॥३॥

ਰਾਗੁ ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੫ ਅਲਾਹਣੀਆ
रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ
रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਧੰਨੁ ਸਿਰੰਦਾ ਸਚਾ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਧੰਧੈ ਲਾਇਆ ॥
धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥
वह जगत का रचयिता सच्चा पातशाह, प्रभु धन्य है, जिसने सारी दुनिया को धन्धे में लगाया है।

ਮੁਹਲਤਿ ਪੁਨੀ ਪਾਈ ਭਰੀ ਜਾਨੀਅੜਾ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ॥
मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ ॥
जब अन्तिम समय पूरा हो जाता है और जीवन प्याला भर जाता है तो यह प्यारी आत्मा पकड़ कर आगे यमलोक में धकेल दी जाती है।

ਜਾਨੀ ਘਤਿ ਚਲਾਇਆ ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਰੁੰਨੇ ਵੀਰ ਸਬਾਏ ॥
जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए ॥
जब ईश्वर का हुक्म आ जाता है तो प्यारी आत्मा यमलोक में धकेल दी जाती है और सभी सगे-संबंधी, भाई-बहन फूट-फूट कर रोने लग जाते हैं।

कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥
कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥
हे मेरी माता ! जब जीव की जिन्दगी के दिन समाप्त हो जाते हैं तो शरीर एवं आत्मा जुदा हो जाते हैं।

जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥
जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥
जीव पूर्व-जन्म में जैसे कर्म करता है, वैसे ही कर्म-फल की प्राप्ति होती है और उस ही उसका भाग्य लिखा होता है।

धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥१॥
धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥१॥
वह जगत का रचयिता सच्चा पातशाह, परमेश्वर धन्य है, जिसने जीवों को (कर्मो के अनुसार) धन्धे में लगाया हुआ है॥ १॥

साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥
साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥
हे मेरे भाइयों ! उस मालिक को याद करो चूंकि सभी ने दुनिया से चले जाना है।

एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥
एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥
इहलोक का झूठा धंधा केवल चार दिनों का ही है, फिर जीव निश्चित ही आगे परलोक को चल देता है।

आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥
आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥
जीव ने निश्चित ही संसार को छोड़कर चले जाना है और वह यहाँ पर एक अतिथि के समान है, फिर क्यों अहंकार कर रहे हो ?

ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਦਰਗਹ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਤਿਸੈ ਕਾ ਲੀਜੈ ॥
जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥
जिसकी उपासना करने से उसके दरबार में सुख प्राप्त होता है, उस प्रभु के नाम का भजन करना चाहिए।

ਆਗੈ ਹੁਕਮੁ ਨ ਚਲੈ ਮੂਲੇ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਕਿਆ ਵਿਹਾਣਾ ॥
आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥
आगे परलोक में परमात्मा के अलावा किसी का हुक्म नहीं चलता और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है।

ਸਾਹਿਬੁ ਸਿਮਰਿਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈਹੋ ਸਭਨਾ ਏਹੁ ਪਇਆਣਾ ॥੨॥
साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥२॥
हे मेरे भाइयों ! परमात्मा को याद करो, चूंकि सभी ने संसार को छोड़कर चले जाना है॥ २॥

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੰਮ੍ਰਥ ਸੋ ਥੀਐ ਹੀਲੜਾ ਏਹੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥
जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥
उस सर्वशक्तिमान प्रभु को जो मंजूर है, वही घटित होता है। जगत के जीवों का उद्यम तो एक बहाना ही है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਾਚੜਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥
सच्चा सृजनहार जल, धरती, आकाश-पाताल में सर्वव्यापी है।

ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ਅਲਖ ਅਪਾਰੋ ਤਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥
वह सच्चा सृजनहार परमात्मा अदृष्ट एवं अनन्त है, उसका अन्त पाया नहीं जा सकता।

ਆਇਆ ਤਿਨ ਕਾ ਸਫਲੁ ਭਇਆ ਹੈ ਇਕ ਮਨਿ ਜਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ॥
आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥
जो लोग एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान करते हैं, उनका इस दुनिया में जन्म लेना सफल है।

ਢਾਹੇ ਢਾਹਿ ਉਸਾਰੇ ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰੋ ॥
ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥
वह स्वयं ही सृष्टि का निर्माण करता है और स्वयं ही इसका नाश कर देता है और अपने हुक्म द्वारा स्वयं ही संवारता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੰਮ੍ਰਥ ਸੋ ਥੀਐ ਹੀਲੜਾ ਏਹੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥੩॥
जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥३॥
उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को जो कुछ मंजूर है, वही घटित होता है और यह संसार उद्यम करने का एक सुनहरी अवसर है॥ ३॥

ਨਾਨਕ ਰੁੰਨਾ ਬਾਬਾ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਰੋਵੈ ਲਾਇ ਪਿਆਰੋ ॥
नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥
गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! वही सच्चा रोता समझा जाता है, यदि वह प्रभु के प्रेम में रोता है।

ਵਾਲੇਵੇ ਕਾਰਣਿ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਰੋਵਣੁ ਸਗਲ ਬਿਕਾਰੋ ॥
वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥
हे बाबा ! सांसारिक पदार्थों की खातिर जीव विलाप करता है, इसलिए सभी विलाप व्यर्थ हैं।

ਰੋਵਣੁ ਸਗਲ ਬਿਕਾਰੋ ਗਾਫਲੁ ਸੰਸਾਰੋ ਮਾਇਆ ਕਾਰਣਿ ਰੋਵੈ ॥
रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥
यह सारा विलाप करना निरर्थक है। संसार प्रभु की ओर से विमुख होकर धन-दौलत के लिए रोता है।

ਚੰਗਾ ਮੰਦਾ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ਨਾਹੀ ਇਹੁ ਤਨੁ ਏਵੈ ਖੋਵੈ ॥
चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥
भले एवं बुरे की जीव को कुछ भी सूझ नहीं और इस शरीर को वह व्यर्थ ही गंवा देता है।

ਐਥੈ ਆਇਆ ਸਭੁ ਕੋ ਜਾਸੀ ਕੂੜਿ ਕਰਹੁ ਅਹੰਕਾਰੋ ॥
ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥
इस दुनिया में जो भी आता है, वह इसे छोड़कर चला जाता है। इसलिए अभिमान करना तो झूठा ही है।

ਨਾਨਕ ਰੁੰਨਾ ਬਾਬਾ ਜਾਣੀਐ ਜੇ ਰੋਵੈ ਲਾਇ ਪਿਆਰੋ ॥੪॥੧॥
नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥४॥१॥
गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! जो प्रभु प्रेम में विलाप करता है, वही मनुष्य सच्चा वैराग्यवान एवं सही रूप में रोता समझा जाता है॥४॥१॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
वडहंसु महला १ ॥
वडहंसु महला १ ॥

ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਚੜਾ ਨਾਮੁ ਲਏਹਾਂ ॥
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥
हे मेरी सखियों ! आओ हम मिलकर भगवान के सत्य-नाम का सिमरन करें।

ਰੋਵਹ ਬਿਰਹਾ ਤਨ ਕਾ ਆਪਣਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਮ੍ਹਾਲੇਹਾਂ ॥
रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु सम्हालेहां ॥
आओ, हम भगवान से अपनी आत्मा के विरह पर संवेदना व्यक्त करें और अपने मालिक का चिंतन करें।

ਸਾਹਿਬੁ ਸਮ੍ਹਾਲਿਹ ਪੰਥੁ ਨਿਹਾਲਿਹ ਅਸਾ ਭਿ ਓਥੈ ਜਾਣਾ ॥
साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥
आओ, हम भगवान की आराधना करें एवं परलोक के मार्ग का ध्यान करें, क्योंकि हमने भी वहाँ जाना है।

ਜਿਸ ਕਾ ਕੀਆ ਤਿਨ ਹੀ ਲੀਆ ਹੋਆ ਤਿਸੈ ਕਾ ਭਾਣਾ ॥
जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥
जिस ईश्वर ने उसे पैदा किया था, अब उसने ही उसे वापिस लें लिया है और यह (मृत्यु) ईश्वरेच्छा से हुई है।

ਜੋ ਤਿਨਿ ਕਰਿ ਪਾਇਆ ਸੁ ਆਗੈ ਆਇਆ ਅਸੀ ਕਿ ਹੁਕਮੁ ਕਰੇਹਾ ॥
जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥
जो कुछ उसने किया है, वही आगे आया है। हम कैसे कोई हुक्म परमात्मा को कर सकते हैं ? अर्थात् हम जीवों के वश में कुछ भी नहीं।

ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਚੜਾ ਨਾਮੁ ਲਏਹਾ ॥੧॥
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥१॥
हे सखियो ! आओ, मिलकर भगवान के सत्य-नाम का स्तुतिगान करें।॥ १॥

ਮਰਣੁ ਨ ਮੰਦਾ ਲੋਕਾ ਆਖੀਐ ਜੇ ਮਰਿ ਜਾਣੈ ਐਸਾ ਕੋਇ ॥
मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥
हे लोगो, मौत तो अटल है, इसे बुरा नहीं कहना चाहिए क्योंकि कोई विरला ही ऐसा जीव है, जो मौत को जानता है।

ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਆਪਣਾ ਪੰਥੁ ਸੁਹੇਲਾ ਆਗੈ ਹੋਇ ॥
सेविहु साहिबु सम्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ ॥
इसलिए सर्वशक्तिमान भगवान की आराधना करो, इस तरह तुम्हारे परलोक का मार्ग सुखद हो जाएगा।

ਪੰਥਿ ਸੁਹੇਲੈ ਜਾਵਹੁ ਤਾਂ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਆਗੈ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ॥

पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥

यदि तुम सुखद मार्ग जाओगे तो अवश्य फल की प्राप्ति होगी एवं परलोक में भी तुझे प्रशंसा मिलेगी।

ਭੇਟੈ ਸਿਉ ਜਾਵਹੁ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹੁ ਤਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਪਾਈ ॥

भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥

यदि तुम भजन-सिमरन की भेंट सहित जाओगे तो तुम सत्य में विलीन हो जाओगे और तुम्हारी इज्जत स्वीकृत हो जाएगी।

ਮਹਲੀ ਜਾਇ ਪਾਵਹੁ ਖਸਮੈ ਭਾਵਹੁ ਰੰਗ ਸਿਉ ਰਲੀਆ ਮਾਣੈ ॥

महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥

तुझे भगवान के महल में स्थान मिल जाएगा, उसे अच्छा लगेगा तथा प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करोगे।

ਮਰਣੁ ਨ ਮੰਦਾ ਲੋਕਾ ਆਖੀਐ ਜੇ ਕੋਈ ਮਰਿ ਜਾਣੈ ॥੨॥

मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥२॥

हे लोगो ! मौत तो अटल है, इसे बुरा नहीं कहना चाहिए, चूंकि कोई विरला ही है जो मौत को जानता है॥ २॥

ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾ ਸੂਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਨਿ ਪਰਵਾਣੋ ॥

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥

उन शूरवीरों का मरना सफल है, जो मर कर परमात्मा को स्वीकृत हो जाते हैं।

ਸੂਰੇ ਸੇਈ ਆਗੈ ਆਖੀਅਹਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੀ ਮਾਣੋ ॥
सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥
जो सच्चे दरबार में सम्मानित होते हैं, वही आगे शूरवीर कहलाते हैं।

ਦਰਗਹ ਮਾਣੁ ਪਾਵਹਿ ਪਤਿ ਸਿਉ ਜਾਵਹਿ ਆਗੈ ਦੂਖੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥
वे आदरपूर्वक जाते हैं व भगवान के दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त करते है और परलोक में उन्हें कोई दुःख नहीं होता।

ਕਰਿ ਏਕੁ ਧਿਆਵਹਿ ਤਾਂ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥
करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै ॥
वे एक परमात्मा को सर्वव्यापक समझकर उसका ही ध्यान करते हैं तो उन्हें दरबार से फल प्राप्त होता है और आराधना करने से उनके तमाम भय दूर हो जाते हैं।

ਊਚਾ ਨਹੀ ਕਹਣਾ ਮਨ ਮਹਿ ਰਹਣਾ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਜਾਣੋ ॥
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥
अभिमान करके ऊँचा नहीं बोलना चाहिए और अपने मन को काबू में रखना चाहिए क्योंकि सर्वज्ञाता भगवान सब कुछ स्वयं ही जानता है।

ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾਂ ਸੂਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਹਿ ਪਰਵਾਣੋ ॥੩॥
मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥३॥
उन शूरवीरों का मरना सफल है, जिनकी मौत भगवान के दरबार में स्वीकृत होती है ॥३॥

ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਬਾਜੀ ਹੈ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥
गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! किसी के देहांत पर क्यों विलाप करें ? जबकि यह दुनिया तो केवल एक नाटक अथवा खेल ही है।

ਕੀਤਾ ਵੇਖੈ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਣਾ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੋ ॥
कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥
भगवान अपनी सृष्टि-रचना को देखता है और अपनी कुदरत पर विचार करता है।

ਕੁਦਰਤਿ ਬੀਚਾਰੇ ਧਾਰਣ ਧਾਰੇ ਜਿਨਿ ਕੀਆ ਸੋ ਜਾਣੈ ॥
कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥
वह अपनी कुदरत पर विचार करता है और जगत को उसने अपना सहारा दिया हुआ है।

ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਬੂਝੈ ਆਪੇ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥
आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥
वह स्वयं ही देखता है, स्वयं ही समझता है और स्वयं ही अपने हुक्म की पहचान करता है।

ਜਿਨਿ ਕਿਛੁ ਕੀਆ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਤਾ ਕਾ ਰੂਪੁ ਅਪਾਰੋ ॥
जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥
जिसने सृष्टि-रचना की है, वही इसे जानता है और उस भगवान का रूप अपार है।

ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਬਾਬਾ ਰੋਈਐ ਬਾਜੀ ਹੈ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥੪॥੨॥
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥४॥२॥
गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! किसी की मृत्यु पर हम क्यों विलाप करें, क्योंकि यह संसार तो केवल एक नाटक अथवा खेल ही है ॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ਦਖਣੀ ॥
वडहंसु महला १ दखणी ॥
वडहंसु महला १ दखणी ॥

ਸਚੁ ਸਿਰੰਦਾ ਸਚਾ ਜਾਣੀਐ ਸਚੜਾ ਪਰਵਦਗਾਰੋ ॥
सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥
सच्चे सृष्टिकर्ता परमपिता को ही सत्य समझना चाहिए; वह सच्चा परमेश्वर सारी दुनिया का पालनहार है।

ਜਿਨਿ ਆਪੀਨੈ ਆਪੁ ਸਾਜਿਆ ਸਚੜਾ ਅਲਖ ਅਪਾਰੋ ॥
जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥
जिसने स्वयं ही अपने आप को उत्पन्न किया हुआ है, वह सत्यस्वरूप परमेश्वर अदृष्ट एवं अपार है।

ਦੁਇ ਪੁੜ ਜੋੜਿ ਵਿਛੋੜਿਅਨੁ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰੁ ਅੰਧਾਰੋ ॥
दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥
उसने पृथ्वी एवं गगन दोनों को जोड़कर उन्हें अलग कर दिया है। इस दुनिया में गुरु के बिना घोर अंधेरा है।

ਸੂਰਜੁ ਚੰਦੁ ਸਿਰਜਿਅਨੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਚਲਤੁ ਵੀਚਾਰੋ ॥੧॥
सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥१॥
सूर्य एवं चन्द्रमा की रचना भी परमेश्वर ने ही की है जो दिन एवं रात को उजाला करते हैं। उसकी इस जगत-लीला का विचार करो ॥१॥

ਸਚੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਸਚੜਾ ਦੇਹਿ ਪਿਆਰੋ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥
हे सच्चे मालिक ! तू ही सत्य है, कृपा करके मुझे अपना सच्चा प्रेम दीजिए॥ रहाउ॥

तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥
तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥
हे परमपिता ! तूने ही सृष्टि-रचना की है और तू ही जीवों को दुःख-सुख देने वाला है।

नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥
नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥
स्त्री एवं पुरुष तेरी ही रचना है और तूने ही मोह-माया का विष एवं (वासना का) प्रेम उत्पन्न किया है।

खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥
खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥
उत्पत्ति के चारों स्रोत एवं विभिन्न वाणियाँ भी तेरी ही रचना है एवं तू ही जीवों को आधार प्रदान करता है।

कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥२॥
कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥२॥
अपनी कुदरत को तूने अपना सिंहासन बनाया हुआ है और तू ही सच्चा न्यायकर्ता है॥ २॥

आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥
आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥
हे विश्व के रचयिता ! जीवों का आवागमन अर्थात् जन्म-मृत्यु का चक्र तूने ही बनाया है और तुम सदा अमर हो।

जंमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥
जमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥
जीवात्मा विकारों में ग्रस्त होकर जन्म-मरण, आवागमन के चक्र में फंसी हुई है।

भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥
भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥
दुष्टात्मा वाले जीव ने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है, जिसके फलस्वरूप वह मोह-माया में प्रवृत्त है और इसका अब क्या उपचार है ?

ਗੁਣ ਛੋਡਿ ਬਿਖੁ ਲਦਿਆ ਅਵਗੁਣ ਕਾ ਵਣਜਾਰੋ ॥੩॥
गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥३॥
गुणों को त्यागकर इसने बुराइयों को लाद लिया है और वह अवगुणों का व्यापारी बन बैठा है॥ ३॥

ਸਦੜੇ ਆਏ ਤਿਨਾ ਜਾਨੀਆ ਹੁਕਮਿ ਸਚੇ ਕਰਤਾਰੋ ॥
सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥
सच्चे करतार के हुक्म द्वारा प्यारी आत्मा को निमंत्रण आता है तो पति (आत्मा) पत्नी (शरीर) से जुदा हो जाता है।

ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ਵਿਛੁੜਿਆ ਮੇਲਣਹਾਰੋ ॥
नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥
किन्तु उन बिछुड़ों हुओं को परमात्मा ही मिलाने वाला है।

ਰੂਪੁ ਨ ਜਾਣੈ ਸੋਹਣੀਐ ਹੁਕਮਿ ਬਧੀ ਸਿਰਿ ਕਾਰੋ ॥
रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥
हे सुन्दरी ! मृत्यु सौन्दर्य की परवाह नहीं करती और यमदूत भी अपने मालिक के हुक्म में बंधे हुए हैं।

ਬਾਲਕ ਬਿਰਧਿ ਨ ਜਾਣਨੀ ਤੋੜਨਿ ਹੇਤੁ ਪਿਆਰੋ ॥੪॥
बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥४॥
यमदूत बालक एवं वृद्ध के बीच कोई फर्क नहीं समझते और दुनिया से स्नेह एवं प्रेम को तोड़ देते हैं।॥४॥

ਨਉ ਦਰ ਠਾਕੇ ਹੁਕਮਿ ਸਚੈ ਹੰਸੁ ਗਇਆ ਗੈਣਾਰੇ ॥
नउ दर ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥
सच्चे परमेश्वर के हुक्म द्वारा शरीर के नौ द्वार बन्द हो जाते हैं और हंस रूपी आत्मा आकाश को चल देती है।

ਸਾ ਧਨ ਛੁਟੀ ਮੁਠੀ ਝੂਠਿ ਵਿਧਣੀਆ ਮਿਰਤਕੜਾ ਅੰਙਨੜੇ ਬਾਰੇ ॥
सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥
देह रूपी स्त्री अलग हो गई है; झूठ में ठग कर वह विधवा हो गई है और मृतक लाश आंगन के द्वार पर पड़ी है।

ਸੁਰਤਿ ਮੁਈ ਮਰੁ ਮਾਈਏ ਮਹਲ ਰੁੰਨੀ ਦਰ ਬਾਰੇ ॥
सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दर बारे ॥
मृतक व्यक्ति की पत्नी द्वार पर जोर-जोर से रोती-चिल्लाती है। वह कहती है कि हे माँ! पति के देहांत से मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।

ਰੋਵਹੁ ਕੰਤ ਮਹੇਲੀਹੋ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਸਾਰੇ ॥੫॥
रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥५॥
हे पति-परमेश्वर की वधुओं ! यदि रुदन करना है तो सच्चे मालिक के गुणों को याद करके उसके प्रेम के अश्रु बहाओ ॥५॥

ਜਲਿ ਮਲਿ ਜਾਨੀ ਨਾਵਾਲਿਆ ਕਪੜਿ ਪਟਿ ਅੰਬਾਰੇ ॥
जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अ्मबारे ॥
प्यारे जीव को जल से मल-मल कर नहलाया जाता है और उसे बहुत सारे रेशमी वस्त्र पहनाए जाते हैं।

ਵਾਜੇ ਵਜੇ ਸਚੀ ਬਾਣੀਆ ਪੰਚ ਮੁਏ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ॥
वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥
सच्ची वाणी के कीर्तन सहित बाजे बजते हैं और शून्य मन से सभी सगे-संबंधी मृतक समान हो जाते हैं।

ਜਾਨੀ ਵਿਛੁੰਨੜੇ ਮੇਰਾ ਮਰਣੁ ਭਇਆ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥
जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥
पति के देहांत पर स्त्री पुकारती है कि मेरे जीवन-साथी की जुदाई मेरे लिए मृत्यु समान है और इस दुनिया में मेरा जीवन भी धिक्कार-योग्य है।

ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਸੁ ਜਾਣੀਐ ਪਿਰ ਸਚੜੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥੬॥
जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥६॥
जो अपने सच्चे पति-प्रभु के प्रेम हेतु सांसारिक कार्य करती हुई विरक्त रहती है, वही जीवित समझी जाती है॥ ६॥

ਤੁਸੀ ਰੋਵਹੁ ਰੋਵਣ ਆਈਹੋ ਝੂਠਿ ਮੁਠੀ ਸੰਸਾਰੇ ॥
तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे ॥
हे स्त्रियो ! जो तुम रोने के लिए आई हो, रुदन करो परन्तु मोह-माया में ठगी हुई दुनिया का विलाप झूठा है।

ਹਉ ਮੁਠੜੀ ਧੰਧੈ ਧਾਵਣੀਆ ਪਿਰਿ ਛੋਡਿਅੜੀ ਵਿਧਣਕਾਰੇ ॥
हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥
मैं ठगी हुई पत्नी सांसारिक कार्यों के पीछे भाग रही हूँ। मैं विधवा वाले अशुभ कर्म करती हूँ और पति ने मुझे त्याग दिया है।

ਘਰਿ ਘਰਿ ਕੰਤੁ ਮਹੇਲੀਆ ਰੂੜੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥
घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥
प्रत्येक घर में पति-परमेश्वर की स्त्रियाँ हैं। सच्ची स्त्रियाँ अपने सुन्दर पति के साथ स्नेह एवं प्रेम करती है।

ਮੈ ਪਿਰੁ ਸਚੁ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹਉ ਰਹਸਿਅੜੀ ਨਾਮਿ ਭਤਾਰੇ ॥੭॥
मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥७॥
मैं अपने सच्चे पति-परमेश्वर की महिमा-स्तुति करती हूँ और अपने स्वामी के नाम द्वारा ही प्रसन्न होती हूँ ॥७॥

ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਵੇਸੁ ਪਲਟਿਆ ਸਾ ਧਨ ਸਚੁ ਸੀਗਾਰੋ ॥
गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥
गुरु को मिलने से जीवात्मा की वेशभूषा बदल जाती है अर्थात् जीवन संवर जाता है और वह सत्य से अपने आपको श्रृंगार लेती है।

ਆਵਹੁ ਮਿਲਹੁ ਸਹੇਲੀਹੋ ਸਿਮਰਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥
आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥
हे मेरी सखियों ! आओ, हम मिलकर सृजनहार प्रभु को याद करें।

ਬਈਅਰਿ ਨਾਮਿ ਸੋਹਾਗਣੀ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੋ ॥
बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥
प्रभु-पति के नाम द्वारा जीव-स्त्री अपने स्वामी की सुहागिन बन जाती है और सत्यनाम उसको सुन्दर बनाने वाला है।

ਗਾਵਹੁ ਗੀਤੁ ਨ ਬਿਰਹੜਾ ਨਾਨਕ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੋ ॥੮॥੩॥
गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥८॥३॥
इसलिए विरह के गीत मत गायन करो अपितु हे नानक ! ब्रह्म का चिन्तन करो।॥८॥३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
वडहंसु महला १ ॥
वडहंसु महला १ ॥

ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਸਿਰਜਿ ਸਮਾਇਆ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਕੁਦਰਤਿ ਜਾਣੋਵਾ ॥

जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥

जो जगत की रचना करके स्वयं भी उसमें ही समाया हुआ है, वह मालिक अपनी कुदरत से ही जाना जाता है।

ਸਚੜਾ ਦੂਰਿ ਨ ਭਾਲੀਐ ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੋਵਾ ॥

सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥

सत्यस्वरूप परमेश्वर को कहीं दूर नहीं खोजना चाहिए, क्योंकि वह तो प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, इसलिए अपने हृदय में ही शब्द रूप में पहचानो।

ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣਹੁ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣਹੁ ਜਿਨਿ ਏਹ ਰਚਨਾ ਰਾਚੀ ॥

सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥

जिसने यह सृष्टि-रचना की है, उसे सच्चे परमेश्वर को सच्चे शब्द द्वारा पहचानो एवं उसे दूर मत समझो।

ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪਿੜ ਕਾਚੀ ॥

नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥

जब मनुष्य परमात्मा के नाम का ध्यान-मनन करता है तो वह सुख प्राप्त करता है, अन्यथा नाम के बिना वह पराजित होने वाली जीवन खेल खेलता है।

ਜਿਨਿ ਥਾਪੀ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ਕਿਆ ਕੋ ਕਹੈ ਵਖਾਣੋ ॥

जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥

जो सृष्टि की रचना करता है, वही इसे आधार देने की विधि जानता है। कोई क्या कथन एवं वर्णन कर सकता है।

ਜਿਨਿ ਜਗੁ ਥਾਪਿ ਵਤਾਇਆ ਜਾਲੋ ਸੋ ਸਾਹਿਬੁ ਪਰਵਾਣੋ ॥੧॥

जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥१॥

जिसने संसार की रचना करके उस पर मोह-माया का जाल डाला हुआ है, उसे ही अपना मालिक मानना चाहिए॥ १ ॥

ਬਾਬਾ ਆਇਆ ਹੈ ਉਠਿ ਚਲਣਾ ਅਧ ਪੰਧੈ ਹੈ ਸੰਸਾਰੋਵਾ ॥

बाबा आइआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥

हे बाबा ! जो भी जीव दुनिया में आया है, उसने अवश्य ही उठकर चले जाना है। यह दुनिया एक बीच का आधा पड़ाव है अर्थात् जन्म-मरण का चक्र है।

ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਸਚੜੈ ਲਿਖਿਆ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਪੁਰਬਿ ਵੀਚਾਰੋਵਾ ॥
सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥
जीवों के पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों का विचार करके परमात्मा उनके मस्तक पर दुःख-सुख की तकदीर लिख देता है।

ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਦੀਆ ਜੇਹਾ ਕੀਆ ਸੋ ਨਿਬਹੈ ਜੀਅ ਨਾਲੇ ॥
दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥
जीवों के किए हुए कर्मों के फलस्वरूप परमेश्वर दुःख-सुख प्रदान करता है और वे जीव के साथ रहते हैं।

ਜੇਹੇ ਕਰਮ ਕਰਾਏ ਕਰਤਾ ਦੂਜੀ ਕਾਰ ਨ ਭਾਲੇ ॥
जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥
कर्ता-प्रभु जैसे कर्म जीवों से करवाता है, वह वैसे ही कर्म करते हैं और वे किसी अन्य कार्य की तलाश भी नहीं करते।

ਆਪਿ ਨਿਰਾਲਮੁ ਧੰਧੈ ਬਾਧੀ ਕਰਿ ਹੁਕਮੁ ਛਡਾਵਣਹਾਰੋ ॥
आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥
परमेश्वर स्वयं तो दुनिया से निर्लिप्त है किन्तु दुनिया मोह-माया के बंधनों में फँसी हुई है। अपने हुक्म अनुसार ही वह जीवों को मुक्ति प्रदान करता है।

ਅਜੁ ਕਲਿ ਕਰਦਿਆ ਕਾਲੁ ਬਿਆਪੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਵਿਕਾਰੋ ॥੨॥
अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥२॥
जीव द्वैतभाव से जुड़कर पाप करता रहता है और परमात्मा के सिमरन को आज अथवा कल को करने का टालते-टालते आयु निकल जाती है और मृत्यु आकर घेर लेती है॥ २॥

ਜਮ ਮਾਰਗ ਪੰਥੁ ਨ ਸੁਝਈ ਉਝੜੁ ਅੰਧ ਗੁਬਾਰੋਵਾ ॥
जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥
मृत्यु का मार्ग बड़ा निर्जन एवं घोर अन्धेरे वाला है और जीव को मार्ग दिखाई नहीं देता।

ਨਾ ਜਲੁ ਲੇਫ ਤੁਲਾਈਆ ਨਾ ਭੋਜਨ ਪਰਕਾਰੋਵਾ ॥
ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥
वहाँ न तो जल मिलता है, न ही विश्राम के लिए ओढ़ने हेतु चादर एवं तोशक और न ही विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन पदार्थ खाने को मिलते हैं।

ਭੋਜਨ ਭਾਉ ਨ ਠੰਢਾ ਪਾਣੀ ਨਾ ਕਾਪੜੁ ਸੀਗਾਰੋ ॥
भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥
वहाँ जीव को न ही भोजन, शीतल जल मिलता है और न ही वस्त्र एवं श्रृंगार पदार्थ मिलते हैं।

ਗਲਿ ਸੰਗਲੁ ਸਿਰਿ ਮਾਰੇ ਊਭੌ ਨਾ ਦੀਸੈ ਘਰ ਬਾਰੋ ॥
गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥
वहाँ जीव की गर्दन जंजीर से जकड़ी जाती है, यमदूत सिर पर खड़ा होकर उसे मारता है और वहाँ कोई भी घर बार सुख का स्थान बचने के लिए नहीं मिलता।

ਇਬ ਕੇ ਰਾਹੇ ਜੰਮਨਿ ਨਾਹੀ ਪਛੁਤਾਣੇ ਸਿਰਿ ਭਾਰੋ ॥
इब के राहे जमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥
इस मार्ग के बोए हुए बीज नहीं फलते अर्थात् सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। जीव पापों का बोझ अपने सिर पर उठाकर पश्चाताप करता है।

ਬਿਨੁ ਸਾਚੇ ਕੋ ਬੇਲੀ ਨਾਹੀ ਸਾਚਾ ਏਹੁ ਬੀਚਾਰੋ ॥੩॥
बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥३॥
केवल यही सच्चा विचार है कि सच्चे परमेश्वर के बिना मनुष्य का कोई भी सज्जन नहीं ॥ ३॥

ਬਾਬਾ ਰੋਵਹਿ ਰਵਹਿ ਸੁ ਜਾਣੀਅਹਿ ਮਿਲਿ ਰੋਵੈ ਗੁਣ ਸਾਰੇਵਾ ॥
बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥
हे बाबा ! वास्तव में वैरागी होकर वही रोते एवं विलाप करते समझे जाते हैं, जो मिलकर प्रभु का यशोगान करते हुए अश्रु बहाते हैं।

ਰੋਵੈ ਮਾਇਆ ਮੁਠੜੀ ਧੰਧੜਾ ਰੋਵਣਹਾਰੇਵਾ ॥
रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥
मोह-माया के ठगे हुए एवं अपने सांसारिक कार्यों की खातिर रोने वाले रोते ही रहते हैं।

ਧੰਧਾ ਰੋਵੈ ਮੈਲੁ ਨ ਧੋਵੈ ਸੁਪਨੰਤਰੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥
धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो ॥
वे सांसारिक कार्यों हेतु रोते हैं और अपनी विकारों की मैल को नहीं धोते। उन्हें यह नहीं पता कि यह संसार तो एक स्वप्न की भाँति है।

ਜਿਉ ਬਾਜੀਗਰੁ ਭਰਮੈ ਭੂਲੈ ਝੂਠਿ ਮੁਠੀ ਅਹੰਕਾਰੋ ॥
जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥
जैसे बाजीगर भ्रम भरी खेल में भूल जाता है, वैसे ही मनुष्य झूठ एवं कपट के अहंकार में ग्रस्त हैं।

ਆਪੇ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵਣਹਾਰਾ ਆਪੇ ਕਰਮ ਕਮਾਏ ॥
आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाए ॥
परमात्मा स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है और स्वयं ही कर्म कराने वाला है।

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਰਾਖੇ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥੪॥੪॥
नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥४॥४॥
हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, पूर्ण गुरु उनकी सहज-स्वभाव रक्षा करता है॥ ४॥ ४॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥
वडहंसु महला १ ॥
वडहंसु महला १ ॥

ਬਾਬਾ ਆਇਆ ਹੈ ਉਠਿ ਚਲਣਾ ਇਹੁ ਜਗੁ ਝੂਠੁ ਪਸਾਰੋਵਾ ॥
बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥
हे बाबा ! जो कोई भी इस दुनिया में जन्म लेकर आया है, उसने एक दिन अवश्य ही यहाँ से चले जाना है, चूंकि यह क्षणभंगुर दुनिया तो झूठ का प्रसार है।

ਸਚਾ ਘਰੁ ਸਚੜੈ ਸੇਵੀਐ ਸਚੁ ਖਰਾ ਸਚਿਆਰੋਵਾ ॥
सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥
सच्चे परमेश्वर की भक्ति करने से ही सच्चा घर मिलता है और सत्यवादी होने से सत्य मिल जाता है।

ਕੂੜਿ ਲਬਿ ਜਾਂ ਥਾਇ ਨ ਪਾਸੀ ਅਗੈ ਲਹੈ ਨ ਠਾਓ ॥
कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥
झूठ एवं लालच के द्वारा मनुष्य स्वीकृत नहीं होता और उसे परलोक में भी शरण नहीं मिलती।

ਅੰਤਰਿ ਆਉ ਨ ਬੈਸਹੁ ਕਹੀਐ ਜਿਉ ਸੁੰਞੈ ਘਰਿ ਕਾਓ ॥
अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥
उसे भीतर आने के लिए कोई नहीं कहता अर्थात् कोई भी उसका स्वागत नहीं करता: अपितु वह तो सूने घर में कौए की भाँति है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਵਡਾ ਵੇਛੋੜਾ ਬਿਨਸੈ ਜਗੁ ਸਬਾਏ ॥
जमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥
मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में फँसकर प्रभु से लम्बे समय के लिए बिछुड़ जाता है। इसी तरह ही सारा संसार नष्ट हो रहा है।

ਲਬਿ ਧੰਧੈ ਮਾਇਆ ਜਗਤੁ ਭੁਲਾਇਆ ਕਾਲੁ ਖੜਾ ਰੂਆਏ ॥੧॥
लबि धंधै माइआ जगतु भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥१॥
लालच में माया के प्रपंच ने जगत को भुलाया हुआ है और काल (मृत्यु) सिर-पर खड़ा होकर दुनिया को रुला रहा है॥ १॥

ਬਾਬਾ ਆਵਹੁ ਭਾਈਹੋ ਗਲਿ ਮਿਲਹ ਮਿਲਿ ਮਿਲਿ ਦੇਹ ਆਸੀਸਾ ਹੇ ॥
बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥
हे मेरे मित्र एवं भाइयों ! आओ, हम गले लगकर मिलें और मिल-मिलकर एक-दूसरे को आशीर्वाद दें।

ਬਾਬਾ ਸਚੜਾ ਮੇਲੁ ਨ ਚੁਕਈ ਪ੍ਰੀਤਮ ਕੀਆ ਦੇਹ ਅਸੀਸਾ ਹੇ ॥
बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥
हे बाबा ! प्रभु का मिलाप सच्चा है, जो कभी नहीं टूटता। प्रियतम के मिलाप हेतु हम एक-दूसरे को आशीर्वाद दें।

ਆਸੀਸਾ ਦੇਵਹੋ ਭਗਤਿ ਕਰੇਵਹੋ ਮਿਲਿਆ ਕਾ ਕਿਆ ਮੇਲੋ ॥
आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥
आशीर्वाद दो और भक्ति करो, जो आगे ही प्रभु से मिले हुए हैं, उन्हें क्या मिलाना है ?"

ਇਕਿ ਭੂਲੇ ਨਾਵਹੁ ਥੇਹਹੁ ਥਾਵਹੁ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਸਚੁ ਖੇਲੋ ॥
इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥
कुछ लोग परमात्मा के नाम एवं प्रभु-चरणों से भटके हुए हैं, उन्हें गुरु के शब्द द्वारा सच्ची खेल खेलते हुए कहो, अर्थात् सत्य का खेल सिखलाएं।

ਜਮ ਮਾਰਗਿ ਨਹੀ ਜਾਣਾ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸਾਚੈ ਵੇਸੇ ॥
जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥
उन्हें यह भी ज्ञान करवाओ कि मृत्यु के मार्ग नहीं जाना। वह परमात्मा में ही लीन रहें, क्योंकि युग-युगान्तरों में उसी का सच्चा स्वरूप है।

ਸਾਜਨ ਸੈਣ ਮਿਲਹੁ ਸੰਜੋਗੀ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਖੋਲੇ ਫਾਸੇ ॥੨॥
साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥२॥
संयोग से ही हमें ऐसे मित्र एवं संबंधी मिल जाते हैं, जिन्होंने गुरु से मिलकर मोह-माया के बन्धनों को खोल दिया है॥ २॥

ਬਾਬਾ ਨਾਂਗੜਾ ਆਇਆ ਜਗ ਮਹਿ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਇਆ ॥
बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥
हे बाबा ! इस जगत में दुःख-सुख की तकदीर लिखा कर मनुष्य नग्न ही आया है।

ਲਿਖਿਅੜਾ ਸਾਹਾ ਨਾ ਟਲੈ ਜੇਹੜਾ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ॥
लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥
पूर्व जन्म में किए कर्मों के अनुरूप परलोक जाने की जो तारीख लिखी गई है, वह बदली नहीं जा सकती।

ਬਹਿ ਸਾਚੈ ਲਿਖਿਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਬਿਖਿਆ ਜਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥
बहि साचै लिखिआ अम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥
सच्चा परमेश्वर बैठकर अमृत एवं विष (सुख-दुख की तकदीर) लिखता है और जिससे वह लगाता है मनुष्य उसी के साथ लगता है।

ਕਾਮਣਿਆਰੀ ਕਾਮਣ ਪਾਏ ਬਹੁ ਰੰਗੀ ਗਲਿ ਤਾਗਾ ॥
कामणिआरी कामण पाए बहु रंगी गलि तागा ॥
जादूगरनी माया अपना जादू करती है और प्रत्येक जीव की गर्दन पर बहुरंगी धागा डाल देती है।

ਹੋਛੀ ਮਤਿ ਭਇਆ ਮਨੁ ਹੋਛਾ ਗੁੜੁ ਸਾ ਮਖੀ ਖਾਇਆ ॥
होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥
भ्रष्ट बुद्धि से मन भ्रष्ट हो जाता है और मनुष्य मीठे के लालच में मक्खी को भी निगल लेता है।

ਨਾ ਮਰਜਾਦੁ ਆਇਆ ਕਲਿ ਭੀਤਰਿ ਨਾਂਗੋ ਬੰਧਿ ਚਲਾਇਆ ॥੩॥
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥३॥
मर्यादा के विपरीत नग्न ही मनुष्य दुनिया में जन्म लेकर आया था और नग्न ही वह बंधकर चला गया है।३॥

ਬਾਬਾ ਰੋਵਹੁ ਜੇ ਕਿਸੈ ਰੋਵਣਾ ਜਾਨੀਅੜਾ ਬੰਧਿ ਪਠਾਇਆ ਹੈ ॥
बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥
हे बाबा ! यदि किसी ने अवश्य ही विलाप करना है, तो विलाप कर लो क्योंकि जीवन-साथी आत्मा जकड़ी हुई परलोक में भेज दी गई है।

ਲਿਖਿਅੜਾ ਲੇਖੁ ਨ ਮੇਟੀਐ ਦਰਿ ਹਾਕਾਰੜਾ ਆਇਆ ਹੈ ॥
लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥
लिखी हुई तकदीर को मिटाया नहीं जा सकता, प्रभु के दरबार से निमंत्रण आया है।

ਹਾਕਾਰਾ ਆਇਆ ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਇਆ ਰੁੰਨੇ ਰੋਵਣਹਾਰੇ ॥
हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे ॥
जब प्रभु को अच्छा लगा है, संदेशक आ गया है और रोने वाले रोने लग गए हैं।

ਪੁਤ ਭਾਈ ਭਾਤੀਜੇ ਰੋਵਹਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਤਿ ਪਿਆਰੇ ॥
पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥
पुत्र, भाई, भतीजे एवं अत्यंत प्यारे प्रीतम विलाप करते हैं।

ਭੈ ਰੋਵੈ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੇ ਕੋ ਮਰੈ ਨ ਮੁਇਆ ਨਾਲੇ ॥
भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥
मृतक के साथ कोई भी नहीं मरता, जो प्रभु के गुणों को स्मरण करके उसके भय में रोता है, वह भला है।

ਨਾਨਕ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਜਾਣ ਸਿਜਾਣਾ ਰੋਵਹਿ ਸਚੁ ਸਮਾਲੇ ॥੪॥੫॥
नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥४॥५॥
हे नानक ! जो परमात्मा का नाम-स्मरण करते हुए रोते हैं, वे युग-युगान्तरों में बुद्धिमान समझे जाते हैं।॥ ४॥ ५॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ਮਹਲਾ ਤੀਜਾ
वडहंसु महला ३ महला तीजा
वडहंसु महला ३ महला तीजा

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪ੍ਰਭੁ ਸਚੜਾ ਹਰਿ ਸਾਲਾਹੀਐ ਕਾਰਜੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥
प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥
हे जीव ! सच्चे हरि-प्रभु की स्तुति करनी चाहिए, चूंकि वह सब कुछ करने में समर्थ है।

ਸਾ ਧਨ ਰੰਡ ਨ ਕਬਹੂ ਬੈਸਈ ਨਾ ਕਦੇ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ॥
सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥
जो स्त्री पति-प्रभु का यशगान करती है, वह कदापि विधवा नहीं होती और न ही कभी उसे संताप होता है।

ਨਾ ਕਦੇ ਹੋਵੈ ਸੋਗੁ ਅਨਦਿਨੁ ਰਸ ਭੋਗ ਸਾ ਧਨ ਮਹਲਿ ਸਮਾਣੀ ॥
ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥
वह अपने पति-प्रभु के चरणों में रहती है, उसे कदाचित शोक नहीं होता और वह रात-दिन आनंद का उपभोग करती है।

ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਿਉ ਜਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਬੋਲੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अम्रित बाणी ॥
जो जीव-स्त्री अपने प्रिय कर्म विधाता को जानती है, वह अमृत वाणी बोलती है।

ਗੁਣਵੰਤੀਆ ਗੁਣ ਸਾਰਹਿ ਅਪਣੇ ਕੰਤ ਸਮਾਲਹਿ ਨਾ ਕਦੇ ਲਗੈ ਵਿਜੋਗੋ ॥
गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥
गुणवान जीव-स्त्रियाँ अपने पति-प्रभु के गुणों का चिन्तन करती रहती हैं एवं उसे याद करती रहती हैं और उनका अपने पति-परमेश्वर से कभी वियोग नहीं होता।

ਸਚੜਾ ਪਿਰੁ ਸਾਲਾਹੀਐ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈ ਜੋਗੋ ॥੧॥
सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥१॥
इसलिए हमें सर्वदा सच्चे परमेश्वर की ही स्तुति करनी चाहिए, जो सब कुछ करने में समर्थ है॥ १॥

ਸਚੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥
सच्चा मालिक शब्द द्वारा ही पहचाना जाता है और वह स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला लेता है।

ਸਾ ਧਨ ਪ੍ਰਿਅ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਤੀ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥
सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥
प्रिय-प्रभु के प्रेम रंग में लीन हुई जीव-स्त्री अपने हृदय से अपना अहंकार दूर कर देती है।

ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ਫਿਰਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕੋ ਜਾਤਾ ॥
विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ॥
अपने हृदय से अहंकार निवृत्त करने के कारण मृत्यु उसे दुबारा नहीं निगलती और गुरु के माध्यम से वह एक ईश्वर को ही जानती है।

ਕਾਮਣਿ ਇਛ ਪੁੰਨੀ ਅੰਤਰਿ ਭਿੰਨੀ ਮਿਲਿਆ ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ॥
कामणि इछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥
जीव-स्त्री की इच्छा पूरी हो जाती है, उसका हृदय प्रेम से भर जाता है और उसे संसार को जीवन देने वाला दाता प्रभु मिल जाता है।

ਸਬਦ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਜੋਬਨਿ ਮਾਤੀ ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥
सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥
वह शब्द के रंग से रंगी हुई है, यौवन से मतवाली हैं और अपने पति-परमेश्वर की गोद में विलीन हो जाती है।

ਸਚੜਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥

सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥२॥

सच्चा मालिक शब्द द्वारा ही पहचाना जाता है और वह स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला लेता है॥ २ ॥

ਜਿਨੀ ਆਪਣਾ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਉ ਤਿਨ ਪੂਛਉ ਸੰਤਾ ਜਾਏ ॥

जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥

जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर को पहचान लिया है, मैं उन संतजनों के पास जाकर अपने स्वामी के बारे में पूछती हूँ।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਪਿਰੁ ਸਚੜਾ ਮਿਲੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥
अपना अहंत्व मिटाकर मैं उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करती हूँ, इस तरह सहज स्वभाव ही सच्चा पति-प्रभु मुझे मिल जाएगा।

ਪਿਰੁ ਸਚਾ ਮਿਲੈ ਆਏ ਸਾਚੁ ਕਮਾਏ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਧਨ ਰਾਤੀ ॥
पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥
जीव-स्त्री सत्य की साधना करती है एवं सच्चे शब्द में अनुरक्त हुई है। इस तरह सच्चा पति-परमेश्वर आकर उसे मिल जाता है।

ਕਦੇ ਨ ਰਾਂਡ ਸਦਾ ਸੋਹਾਗਣਿ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜ ਸਮਾਧੀ ॥
कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥
वह कभी विधवा नहीं होती और सदा सुहागिन बनी रहती है।

ਪਿਰੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੇ ਵੇਖੁ ਹਦੂਰੇ ਰੰਗੁ ਮਾਣੇ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥
पति-परमेश्वर सर्वव्यापक है, उसे प्रत्यक्ष देख कर वह सहज-स्वभाव ही उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करती है।

ਜਿਨੀ ਆਪਣਾ ਕੰਤੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਉ ਤਿਨ ਪੂਛਉ ਸੰਤਾ ਜਾਏ ॥੩॥
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥३॥
जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर को पहचान लिया है, मैं उन संतजनों के पास जाकर अपने स्वामी के बारे में पूछती हूँ॥३॥

ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਭੀ ਮਿਲਹ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਹ ਸਾਚੇ ਪਾਏ ॥
पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥
पति-परमेश्वर से जुदा हुई जीव-स्त्रियों का अपने स्वामी से मिलन हो जाता है; यदि वे सतगुरु के चरणों में लग जाएँ।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਅਵਗੁਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥
सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥
सतगुरु हमेशा दया का घर है, उसके शब्द द्वारा मनुष्य के अवगुण मिट जाते हैं।

ਅਉਗੁਣ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ਦੂਜਾ ਭਾਉ ਗਵਾਏ ਸਚੇ ਹੀ ਸਚਿ ਰਾਤੀ ॥
अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥
अपने अवगुणों को गुरु के शब्द द्वारा जला कर जीव मोह-माया को त्याग देता है और केवल सत्य में ही समाया रहता है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਉਮੈ ਗਈ ਭਰਾਤੀ ॥
सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥
सच्चे शब्द द्वारा हमेशा सुख प्राप्त होता है और अहंकार एवं भ्रांतियां दूर हो जाती हैं।

ਪਿਰੁ ਨਿਰਮਾਇਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਏ ॥
पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥
हे नानक ! पवित्र-पावन पति-परमेश्वर हमेशा ही सुख देने वाला है और वह शब्द द्वारा ही मिलता है।

ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਭੀ ਮਿਲਹ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰ ਲਾਗਹ ਸਾਚੇ ਪਾਏ ॥੪॥੧॥
पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥४॥१॥
पति-परमेश्वर से जुदा हुई जीव-स्त्रियों का भी अपने सच्चे स्वामी से मिलन हो जाता है, यदि वे सतगुरु के चरणों में लग जाएँ॥ ४॥ १॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਸੁਣਿਅਹੁ ਕੰਤ ਮਹੇਲੀਹੋ ਪਿਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥
हे पति-परमेश्वर की स्त्रियों ! ध्यानपूर्वक सुनो, शब्द का विचार करके अपने प्रियतम प्रभु की सेवा करो।

ਅਵਗਣਵੰਤੀ ਪਿਰੁ ਨ ਜਾਣਈ ਮੁਠੀ ਰੋਵੈ ਕੰਤ ਵਿਸਾਰਿ ॥
अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥
अवगुणों से भरी स्त्री अपने प्रियतम को नहीं जानती और वह मोह-माया में ठगी हुई अपने पति-प्रभु को विस्मृत करके रोती रहती है।

ਰੋਵੈ ਕੰਤ ਸੰਮਾਲਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਸਾਰਿ ਨਾ ਪਿਰੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥
रोवै कंत समालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥
जो जीव-स्त्री अपने प्रभु के गुणों को याद करके वैराग में अश्रु बहाती है, उसका स्वामी न मरता है और न ही कहीं जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ਸਾਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਸਮਾਏ ॥
गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥
जिस जीव-स्त्री ने गुरु के माध्यम से प्रभु को जान लिया है एवं शब्द द्वारा पहचान कर ली है, वह सच्चे प्रभु के प्रेम में समाई रहती है।

ਜਿਨਿ ਅਪਣਾ ਪਿਰੁ ਨਹੀ ਜਾਤਾ ਕਰਮ ਬਿਧਾਤਾ ਕੂੜਿ ਮੁਠੀ ਕੂੜਿਆਰੇ ॥
जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥
जिसने अपने प्रियतम कर्म विधाता को नहीं समझा, उस झूठी जीव-स्त्री को झूठ ने ठग लिया है।

ਸੁਣਿਅਹੁ ਕੰਤ ਮਹੇਲੀਹੋ ਪਿਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥੧॥
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥१॥
हे पति-परमेश्वर की स्त्रियों ! ध्यानपूर्वक सुनो, शब्द का विचार करके अपने प्रियतम प्रभु की सेवा करो ॥ १॥

ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਉਪਾਇਓਨੁ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥
सारे संसार की उत्पत्ति परमेश्वर ने स्वयं ही की है और यह संसार आवागमन अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में पड़ा है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਖੁਆਇਅਨੁ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥
माइआ मोहु खुआइअनु मरि जमै वारो वारा ॥
माया के मोह ने जीव-स्त्री को नष्ट कर दिया है और वह बार-बार मरती एवं जन्म लेती है।

ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ਵਧਹਿ ਬਿਕਾਰਾ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਮੂਠੀ ॥
मरि जमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥
वह बार-बार मरती एवं दुनिया में जन्म लेती है, उसके पाप-विकार बढ़ते जाते हैं एवं ज्ञान के बिना वह ठगी गई है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਪਿਰੁ ਨ ਪਾਇਓ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਓ ਰੋਵੈ ਅਵਗੁਣਿਆਰੀ ਝੂਠੀ ॥
बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥
शब्द के बिना उसे प्रियतम प्राप्त नहीं होता और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देती है। इस प्रकार गुणों से विहीन झूठी जीव-स्त्री विलाप करती है।

ਪਿਰੁ ਜਗਜੀਵਨੁ ਕਿਸ ਨੋ ਰੋਈਐ ਰੋਵੈ ਕੰਤੁ ਵਿਸਾਰੇ ॥
पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥
प्रियतम-प्रभु तो जगत का जीवन है तो फिर किसके लिए विलाप करना। जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु को विस्मृत करने पर ही रुदन करती है।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਆਪਿ ਉਪਾਇਓਨੁ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਸੰਸਾਰੇ ॥੨॥
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥२॥
सारा जगत परमात्मा ने स्वयं उत्पन्न किया है और यह संसार जन्मता-मरता रहता है॥ २॥

ਸੋ ਪਿਰੁ ਸਚਾ ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਹੈ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥
सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥
वह पति-प्रभु सदैव सत्य है। वह अनश्वर है अर्थात् न ही वह मरता है एवं न ही कहीं जाता है।

ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਧਨ ਇਆਣੀਆ ਰੰਡ ਬੈਠੀ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ॥
भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥
भूली हुई जीव-स्त्री भटकती रहती है और द्वैतभाव द्वारा विधवा बनी बैठी है।

ਰੰਡ ਬੈਠੀ ਦੂਜੈ ਭਾਏ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ਆਵ ਘਟੈ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ॥
रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥
द्वैतभाव द्वारा वह विधवा की भाँति बैठी हुई है; माया के मोह के कारण वह दुःख प्राप्त करती है, उसकी आयु कम होती जा रही है और शरीर भी नाश होता जा रहा है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਆਇਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਸੀ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਭਾਇ ਦੂਜੈ ॥
जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥
जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह सब कुछ नाश हो जाएगा। सांसारिक आकर्षण के कारण मनुष्य दुःख प्राप्त करता है।

ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਸੂਝੈ ਮਾਇਆ ਜਗੁ ਲੂਝੈ ਲਬਿ ਲੋਭਿ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥
जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥
दुनिया माया की लालसा में हमेशा उलझती रहती है, उसे इसी लालसा में मृत्यु का भी ध्यान नहीं आता और अपने चित्त को लोभ एवं लालच में लगाती रहती है।

ਸੋ ਪਿਰੁ ਸਾਚਾ ਸਦ ਹੀ ਸਾਚਾ ਨਾ ਓਹੁ ਮਰੈ ਨ ਜਾਏ ॥੩॥
सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥३॥
वह पति-प्रभु सदैव सत्य है, वह अनश्वर है अर्थात् न ही वह मरता है और न ही कहीं जाता है॥ ३॥

ਇਕਿ ਰੋਵਹਿ ਪਿਰਹਿ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਅੰਧੀ ਨਾ ਜਾਣੈ ਪਿਰੁ ਨਾਲੇ ॥
इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥
अपने पति-परमेश्वर से बिछुड़ी हुई कई जीव-स्त्रियों रोती रहती हैं।अज्ञानता में अंधी हुई वे यह नहीं जानती कि उनका पति-परमेश्वर तो उनके साथ ही निवास करता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸਾਚਾ ਪਿਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਤਰਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥

गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥

गुरु की कृपा से सच्चा पति-परमेश्वर मिलता है और जीव-स्त्री अपने हृदय में सर्वदा उसे याद करती है।

ਪਿਰੁ ਅੰਤਰਿ ਸਮਾਲੇ ਸਦਾ ਹੈ ਨਾਲੇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਦੂਰੇ ॥

पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥

प्रियतम प्रभु को सर्वदा अपने साथ समझकर वह अपने हृदय में उसे स्मरण करती है। लेकिन मनमुख जीव-स्त्रियाँ उसे दूर ही समझती हैं।

ਇਹੁ ਤਨੁ ਰੁਲੈ ਰੁਲਾਇਆ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਆ ਜਿਨਿ ਖਸਮੁ ਨ ਜਾਤਾ ਹਦੂਰੇ ॥

इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥

जिन्होंने परमेश्वर को अपने पास अनुभव नहीं किया, उनका यह शरीर मिट्टी में मिलकर खराब हो जाता है और किसी काम में नहीं आता।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਪਿਰੁ ਅੰਤਰਿ ਸਦਾ ਸਮਾਲੇ ॥
नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥
हे नानक ! जो जीव-स्त्री अपने अन्तर्मन में पति-परमेश्वर को सदा याद करती रहती है, वह गुरु द्वारा मिलाई हुई अपने पति-प्रभु से मिल जाती है।

ਇਕਿ ਰੋਵਹਿ ਪਿਰਹਿ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਅੰਧੀ ਨ ਜਾਣੈ ਪਿਰੁ ਹੈ ਨਾਲੇ ॥੪॥੨॥
इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥
अपने पति-परमेश्वर से विछुड़ी हुई कई जीव-स्त्रियां रोती रहती है।लेकिन अज्ञानता में अन्धी हुई उन्हें यह नहीं पता कि उनका पति-परमेश्वर तो उनके साथ ही है।॥४॥२॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਃ ੩ ॥
वडहंसु मः ३ ॥
वडहंसु मः ३ ॥

ਰੋਵਹਿ ਪਿਰਹਿ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਮੈ ਪਿਰੁ ਸਚੜਾ ਹੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥
रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥
मेरा सच्चा पति-परमेश्वर सर्वदा मेरे साथ रहता है किन्तु उससे जुदा होकर कई जीव-स्त्रियाँ विलाप करती रहती हैं।

ਜਿਨੀ ਚਲਣੁ ਸਹੀ ਜਾਣਿਆ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥
जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥
जिन्होंने दुनिया से कूच करने को सत्य समझ लिया है, वे सतगुरु की सेवा करती हैं और परमात्मा के नाम को याद करती रहती हैं।

ਸਦਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੈ ਨਾਲੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥
सतगुरु को साथ समझकर वे हमेशा नाम-सुमिरन करती हैं और सतगुरु की सेवा करके उन्होंने सुख पाया है।

ਸਬਦੇ ਕਾਲੁ ਮਾਰਿ ਸਚੁ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ਫਿਰਿ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਨ ਹੋਇਆ ॥
सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥
शब्द के माध्यम से उन्होंने काल के भय को मार दिया है और सत्य को अपने हृदय में लगाकर रखती हैं। फिर वे दुनिया में जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती।

ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੀ ਨਾਈ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲੇ ॥
सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥
परमात्मा सत्य स्वरूप है और उसकी कीर्ति भी सत्य है। वह नाम-स्मरण करने वाली जीव-स्त्रियों को अपनी कृपा-दृष्टि से देखता है।

ਰੋਵਹਿ ਪਿਰਹੁ ਵਿਛੁੰਨੀਆ ਮੈ ਪਿਰੁ ਸਚੜਾ ਹੈ ਸਦਾ ਨਾਲੇ ॥੧॥
रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥१॥
मेरा सच्चा प्रभु सदा मेरे साथ है किन्तु उससे जुदा हुई जीव-स्त्रियां रोती रहती हैं॥ १॥

ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਭ ਦੂ ਊਚਾ ਹੈ ਕਿਵ ਮਿਲਾਂ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ ॥
प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥
मेरा मालिक-प्रभु सबसे ऊँचा है, फिर मैं अपने प्रियतम-प्यारे को कैसे मिलूं?

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲੀ ਤਾਂ ਸਹਜਿ ਮਿਲੀ ਪਿਰੁ ਰਾਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥
सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥
जब सतगुरु ने मुझे प्रभु से मिलाया तो मैं सहज ही उससे मिल गई। मैंने अपने प्रियतम को अपने मन में बसा लिया है।

ਸਦਾ ਉਰ ਧਾਰੇ ਨੇਹੁ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਿਰੁ ਦਿਸੈ ॥
सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥
जिसका प्रिय-प्रभु से प्रेम होता है, वह उसे अपने मन में बसाता है और सतगुरु द्वारा ही प्रभु के दर्शन होते हैं।

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਕਾ ਕਚਾ ਚੋਲਾ ਤਿਤੁ ਪੈਧੈ ਪਗੁ ਖਿਸੈ ॥
माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥
माया के मोह में रंगा हुआ शरीर रूपी चोला झूठा है, इसे पहनने से पैर सत्य की ओर से डगमगा जाते हैं।

ਪਿਰ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸੋ ਸਚਾ ਚੋਲਾ ਤਿਤੁ ਪੈਧੈ ਤਿਖਾ ਨਿਵਾਰੇ ॥
पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥
लेकिन प्रियतम-प्रभु के प्रेम में रंगा हुआ चोला ही सच्चा है क्योंकि इसे पहनने से मन की तृष्णा बुझ जाती है।

ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਭ ਦੂ ਊਚਾ ਹੈ ਕਿਉ ਮਿਲਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ ॥੨॥
प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥२॥
मेरा स्वामी प्रभु सबसे ऊँचा है, फिर मैं अपने प्रियतम प्यारे से कैसे मिल सकती हूँ? ॥२॥

ਮੈ ਪ੍ਰਭੁ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹੋਰ ਭੂਲੀ ਅਵਗਣਿਆਰੇ ॥
मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥
मैंने अपने सत्य प्रभु को पहचान लिया है लेकिन गुण-विहीन जीव स्त्रियाँ उसे विस्मृत करके कुमार्गगामी हो गई हैं।

ਮੈ ਸਦਾ ਰਾਵੇ ਪਿਰੁ ਆਪਣਾ ਸਚੜੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥
मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥
मैं हमेशा ही अपने प्रियतम को स्मरण करके आनंद प्राप्त करती हूँ एवं सच्चे शब्द का चिंतन करती हैं।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਨਾਰੇ ਮਿਲਿ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਪਾਇਆ ॥
सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥
जो जीव-स्त्री सच्चे शब्द का चिंतन करती है, वह अपने प्रियतम के प्रेम में मग्न रहती है और सतगुरु को मिलकर अपने प्रियतम को पा लेती है।

ਅੰਤਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਮਾਤੀ ਗਇਆ ਦੁਸਮਨੁ ਦੂਖੁ ਸਬਾਇਆ ॥
अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥
उसका हृदय प्रभु के प्रेम से रंगा हुआ है, वह सहज अवस्था में लीन रहती है और उसके दुश्मन एवं दुःख सभी दूर हो गए हैं।

ਅਪਨੇ ਗੁਰ ਕੰਉ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੀਜੈ ਤਾਂ ਮਨੁ ਭੀਜੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਦੂਖ ਨਿਵਾਰੇ ॥
अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै त्रिसना दूख निवारे ॥
यदि हम अपने गुरु को तन-मन अर्पण कर दें तो हमारा मन प्रसन्न हो जाएगा और तृष्णा एवं दुःख नाश हो जाएँगे।

ਮੈ ਪਿਰੁ ਸਚੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹੋਰ ਭੂਲੀ ਅਵਗਣਿਆਰੇ ॥੩॥
मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥३॥
मैंने अपने सच्चे प्रभु को पहचान लिया है, अन्य अवगुणों से भरी जीव-स्त्रियां कुमार्गगामी हो गई हैं।॥३॥

ਸਚੜੈ ਆਪਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੋ ॥
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥
सच्चे परमेश्वर ने स्वयं जगत पैदा किया है परन्तु गुरु के बिना जग में घोर अन्धकार है।

ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਆਪਿ ਮਿਲੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ਪਿਆਰੋ ॥
आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥
वह स्वयं ही जीव को गुरु से मिलाता है, स्वयं ही उसे मिलता है और स्वयं ही उसे अपने प्रेम का दान देता है।

ਆਪੇ ਦੇਇ ਪਿਆਰੋ ਸਹਜਿ ਵਾਪਾਰੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮੁ ਸਵਾਰੇ ॥
आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥
वह स्वयं ही अपना प्रेम प्रदान करता है और जीव इस तरह नाम-ज्ञान का व्यापार करता है और गुरुमुख बनकर अपना अमूल्य-जन्म संवार लेता है।

ਧਨੁ ਜਗ ਮਹਿ ਆਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਚਿਆਰੋ ॥
धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥
इस दुनिया में उसका जन्म लेना सफल है, जो अपना अहंत्व दूर कर देता है और सच्चे दरबार में वह सत्यवादी माना जाता है।

ਗਿਆਨਿ ਰਤਨਿ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਪਿਆਰੋ ॥
गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥
हे नानक ! उसके हृदय में ज्ञान-रत्न का प्रकाश हो गया है एवं प्रभु के नाम से उसका प्रेम है।

ਸਚੜੈ ਆਪਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਆ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੋ ॥੪॥੩॥
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥४॥३॥
सच्चे परमेश्वर ने स्वयं ही जगत उत्पन्न किया है परन्तु गुरु के बिना जगत में घोर अन्धकार है ॥४॥३॥

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥
वडहंसु महला ३ ॥
वडहंसु महला ३ ॥

ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਜਜਰੀ ਹੈ ਇਸ ਨੋ ਜਰੁ ਪਹੁਚੈ ਆਏ ॥
इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥
यह शरीर बड़ा नाजुक है तथा इसे आहिस्ता आहिस्ता बुढापा आ जाता है।

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਹੋਰੁ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥
गुरि राखे से उबरे होरु मरि जमै आवै जाए ॥
जिनकी गुरु ने रक्षा की है, उनका उद्धार हो गया है परन्तु अन्य तो जन्म लेते और मरते रहते हैं तथा दुनिया में आते-जाते ही रहते हैं।

ਹੋਰਿ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਵਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥
होरि मरि जमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥
शेष मरते-जन्मते और आते जाते रहते हैं, अन्तिम क्षण में जाते हुए अफसोस करते हैं और परमात्मा के नाम के बिना उन्हें सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਐਥੈ ਕਮਾਵੈ ਸੋ ਫਲੁ ਪਾਵੈ ਮਨਮੁਖਿ ਹੈ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥

ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥

इहलोक में व्यक्ति जो कर्म करता है, वही फल प्राप्त होता है और स्वेच्छाचारी मनुष्य अपनी इज्जत गंवा देता है।

ਜਮ ਪੁਰਿ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰੁ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰੁ ਨਾ ਤਿਥੈ ਭੈਣ ਨ ਭਾਈ ॥

जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥

यमलोक में भयानक अन्धेरा एवं महा गुबार है और वहाँ न कोई बहन है और न ही कोई भाई है।

ਇਹੁ ਸਰੀਰੁ ਜਜਰੀ ਹੈ ਇਸ ਨੋ ਜਰੁ ਪਹੁਚੈ ਆਈ ॥੧॥

इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥१॥

यह शरीर बड़ा नाजुक एवं क्षीण है और इसे आहिस्ता-आहिस्ता बुढ़ापा आ जाता है॥ १॥

ਕਾਇਆ ਕੰਚਨੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥

काइआ कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए ॥

यदि सतिगुरु अपने साथ मिला लें तो यह काया स्वर्ण की भाँति पावन हो जाती है।

ਭ੍ਰਮੁ ਮਾਇਆ ਵਿਚਹੁ ਕਟੀਐ ਸਚੜੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥
भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥
सतगुरु उसके मन में से माया का भ्रम दूर कर देता है और फिर वह सत्य-नाम में समाया रहता है।

ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥
सत्य-नाम में समाकर वह भगवान का गुणगान करता रहता है और अपने प्रियतम प्रभु से मिलकर सुख प्राप्त करता है।

ਸਦਾ ਅਨੰਦਿ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਵਿਚਹੁ ਹਉਮੈ ਜਾਏ ॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥
वह दिन-रात हमेशा ही आनंद में रहता है और उसके हृदय से अहंत्व दूर हो जाता है।

ਜਿਨੀ ਪੁਰਖੀ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਨ ਕੈ ਹਉ ਲਾਗਉ ਪਾਏ ॥
जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥
जिन महापुरुषों ने हरि के नाम को अपने चित्त से लगाया है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ।

ਕਾਂਇਆ ਕੰਚਨੁ ਤਾਂ ਥੀਐ ਜਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਲਏ ਮਿਲਾਏ ॥੨॥
कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥२॥
यदि सतिगुरु अपने साथ मिला लें, तो यह शरीर स्वर्ण की भाँति पावन हो जाता है॥ २॥

ਸੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥
यदि सतगुरु सूझ प्रदान करें तो ही उस सच्चे प्रभु का स्तुतिगान किया जाता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਣੀਆ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਨਿ ਆਗੈ ਜਾਏ ॥
बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥
सच्चे गुरु के बिना जो जीव-स्त्रियों भ्रम में मूली हुई हैं, वे आगे जाकर परलोक में क्या मुंह दिखाएँगी ?

ਕਿਆ ਦੇਨਿ ਮੁਹੁ ਜਾਏ ਅਵਗੁਣਿ ਪਛੁਤਾਏ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਏ ॥
किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥
वे परलोक में क्या मुंह दिखाएँगी, वे अपने अवगुणों के कारण पछताती हैं और दुःख ही भोगती हैं।

ਨਾਮਿ ਰਤੀਆ ਸੇ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲਾ ਪਿਰ ਕੈ ਅੰਕਿ ਸਮਾਏ ॥
नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥
लेकिन जो जीव-स्त्रियाँ नाम में मग्न रहती हैं, उनका गहरा लाल रंग हो जाता है और वे अपने पति-परमेश्वर की गोद में विलीन हो जाती हैं।

ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਸੂਝਈ ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਕਹੀਐ ਜਾਏ ॥
तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥
मुझे परमात्मा जैसा महान् अन्य कोई नहीं दिखाई देता। फिर मैं अपना दुःख किसके समक्ष जाकर कहूँ?

ਸੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਐ ਜੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥੩॥
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥३॥
यदि सतगुरु सूझ प्रदान करें तो उस परम-सत्य का स्तुतिगान किया जाता है॥ ३॥

ਜਿਨੀ ਸਚੜਾ ਸਚੁ ਸਲਾਹਿਆ ਹੰਉ ਤਿਨ ਲਾਗਉ ਪਾਏ ॥
जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥
जिन्होंने सच्चे परमात्मा की प्रशंसा की है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ।

ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਨਿਰਮਲੇ ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਲੁ ਸਭ ਜਾਏ ॥
से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥
ऐसे मनुष्य सत्यवादी एवं निर्मल होते हैं और उन्हें मिलकर मन की अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है।

ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਲੁ ਸਭ ਜਾਏ ਸਚੈ ਸਰਿ ਨਾਏ ਸਚੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਏ ॥
तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥
उनको मिलकर अहंकार रूपी मैल निवृत्त हो जाती है और मनुष्य सत्यनाम के सच्चे सरोवर में स्नान करता है और सहज स्वभाव ही सत्यवादी बन जाता है।

ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਏ ॥
नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥
सतिगुरु ने मुझे अगम्य, अगोचर एवं मायातीत प्रभु-नाम का भेद बता दिया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਸਮਾਏ ॥
अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥
नानक का कथन है कि प्रेम-रंग में लीन हुए जो रात-दिन प्रभु-भक्ति करते हैं, वे सत्य में समा जाते हैं।

ਜਿਨੀ ਸਚੜਾ ਸਚੁ ਧਿਆਇਆ ਹੰਉ ਤਿਨ ਕੈ ਲਾਗਉ ਪਾਏ ॥੪॥੪॥
जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिन कै लागउ पाए ॥४॥४॥
जिन्होंने परम-सत्य ईश्वर का ध्यान केिया है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ॥ ४॥ ४॥

ਵਡਹੰਸ ਕੀ ਵਾਰ ਮਹਲਾ ੪ ਲਲਾਂ ਬਹਲੀਮਾ ਕੀ ਧੁਨਿ ਗਾਵਣੀ
वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी
वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਵਡ ਹੰਸ ਹੈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥
जो लोग शब्द में मग्न हैं, वही परमहंस (परमार्थी) हैं और उन्होंने सत्यनाम को अपने हृदय में बसा कर रखा हुआ है।

ਸਚੁ ਸੰਗ੍ਰਹਹਿ ਸਦ ਸਚਿ ਰਹਹਿ ਸਚੈ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰਿ ॥
सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥
वे सत्य को संचित करते हैं, सत्य में लीन रहते हैं और सत्य नाम से ही प्रेम करते हैं।

ਸਦਾ ਨਿਰਮਲ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਨਦਰਿ ਕੀਤੀ ਕਰਤਾਰਿ ॥
सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥
करतार ने उन पर यह दया-दृष्टि की हुई है कि वे हमेशा पावन रहते हैं और उन्हें कोई मैल नहीं लगती।

ਨਾਨਕ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜੋ ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਹਿ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥
नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥१॥
हे नानक ! मैं उन महापुरुषों पर कुर्बान जाता हूँ, जो निशदिन प्रभु का जाप करते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮੈ ਜਾਨਿਆ ਵਡ ਹੰਸੁ ਹੈ ਤਾ ਮੈ ਕੀਆ ਸੰਗੁ ॥
मै जानिआ वड हंसु है ता मै कीआ संगु ॥
मैं यह जानती थी कि वह कोई परमहंस (परमार्थी) है, तभी मैंने उसकी संगति की।

ਜੇ ਜਾਣਾ ਬਗੁ ਬਪੁੜਾ ਤ ਜਨਮਿ ਨ ਦੇਦੀ ਅੰਗੁ ॥੨॥
जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥२॥
यदि यह समझती कि बेचारा बगुला अर्थात् कोई ढोंगी है तो जन्म से ही उससे मिलाप न करती ॥ २ ॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਹੰਸਾ ਵੇਖਿ ਤਰੰਦਿਆ ਬਗਾਂ ਭਿ ਆਯਾ ਚਾਉ ॥
हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ ॥
हंसों (परमार्थियों) को तैरते देखकर बगुलों (ढोंगियों) को भी तैरने की तीव्र लालसा उत्पन्न हुई है।

ਡੁਬਿ ਮੁਏ ਬਗ ਬਪੁੜੇ ਸਿਰੁ ਤਲਿ ਉਪਰਿ ਪਾਉ ॥੩॥
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥३॥
लेकिन बेचारे बगुले तो भवसागर में डूबकर प्राण त्याग गए. उनके सिर नीचे एवं पैर ऊपर थे ॥३॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪਿ ਕਾਰਣੁ ਕੀਆ ॥
तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥
हे परमपिता ! तू स्वयंभू, सर्वशक्तिमान है और तूने स्वयं ही संसार बनाया है।

ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਹੈ ਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਬੀਆ ॥
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥
तू स्वयं ही निराकार है और तेरे सिवाय अन्य कोई दूसरा नहीं।

ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਥੀਆ ॥
तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥
तू ही करने एवं कराने में समर्थ है एवं जो तू करता है, वही होता है।

ਤੂ ਅਣਮੰਗਿਆ ਦਾਨੁ ਦੇਵਣਾ ਸਭਨਾਹਾ ਜੀਆ ॥
तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥
तू ही सब जीवों को बिना मांगे हुए दान प्रदान करता है।

ਸਭਿ ਆਖਹੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਜਿਨਿ ਦਾਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਖਿ ਦੀਆ ॥੧॥
सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥१॥
सभी बोलो-सतिगुरु धन्य-धन्य हैं, जिसने हरि-नाम का दान हम जीवों के मुख में दिया हुआ है॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਭੈ ਵਿਚਿ ਸਭੁ ਆਕਾਰੁ ਹੈ ਨਿਰਭਉ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸੋਇ ॥
भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥
यह सारी दुनिया भय में है लेकिन एक पूज्य-परमेश्वर ही निर्भीक है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਿਥੈ ਭਉ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥
सतिगुरु की सेवा करने से परमेश्वर मन में निवास कर लेता है और फिर मन में भय कदापि प्रवेश नहीं करता।

ਦੁਸਮਨੁ ਦੁਖੁ ਤਿਸ ਨੋ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵੈ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥
कोई दुश्मन एवं दुःख-संकट उसके समीप नहीं आते और कोई उसे तंग नहीं कर सकता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਨਿ ਵੀਚਾਰਿਆ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਹੋਇ ॥
गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥
गुरुमुख ने अपने मन में यह विचार किया है कि जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਹੀ ਪਤਿ ਰਖਸੀ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ਸੋਇ ॥੧॥
नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥१॥
हे नानक ! परमेश्वर स्वयं ही मनुष्य की प्रतिष्ठा रखता है और वही सारे कार्य सम्पूर्ण करता है। ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਕਿ ਸਜਣ ਚਲੇ ਇਕਿ ਚਲਿ ਗਏ ਰਹਦੇ ਭੀ ਫੁਨਿ ਜਾਹਿ ॥
इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥
कुछ साथी दुनिया से जा रहे हैं, कुछ मित्र पहले ही दुनिया को छोड़कर चले गए हैं और जो रहते हैं, अंतः वे भी यहाँ से चले जाएँगे।

ਜਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਨ ਸੇਵਿਓ ਸੇ ਆਇ ਗਏ ਪਛੁਤਾਹਿ ॥
जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥
जिन्होंने सतगुरु की सेवा नहीं की है, वे दुनिया में आकर अफसोस करते चले गए हैं।

ਨਾਨਕ ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥२॥
हे नानक ! जो लोग सत्य में मग्न रहते हैं, वे कदापि जुदा नहीं.होते और सतगुरु की सेवा करके परमात्मा में विलीन हो जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤਿਸੁ ਮਿਲੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਸਜਣੈ ਜਿਸੁ ਅੰਤਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥
तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥
जिसके हृदय में गुणकारी भगवान का निवास है, हमें ऐसे महापुरुष सतगुरु से भेंट करनी चाहिए।

ਤਿਸੁ ਮਿਲੀਐ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਮੈ ਜਿਨਿ ਹੰਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਮਾਰੀ ॥
तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥
जिसने मन से अहंत्व का नाश कर दिया है, हमें ऐसे प्रियतम सतगुरु से साक्षात्कार करना चाहिए।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਦੇ ਸਭ ਸ੍ਰਿਸ੍ਟਿ ਸਵਾਰੀ ॥
सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ स्रिस्टि सवारी ॥
जिसने हरि का उपदेश देकर सारी सृष्टि का कल्याण कर दिया है, वह पूर्ण सतगुरु धन्य-धन्य है।

ਨਿਤ ਜਪਿਅਹੁ ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਭਉਜਲ ਬਿਖੁ ਤਾਰੀ ॥
नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥
हे संतजनो ! नित्य ही राम नाम का जाप करो, जो तुझे विषैले भवसागर से पार कर देगा।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸਿਆ ਗੁਰ ਵਿਟੜਿਅਹੁ ਹੰਉ ਸਦ ਵਾਰੀ ॥੨॥
गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥२॥
पूर्ण गुरु ने मुझे हरि का उपदेश दिया है, इसलिए मैं उस गुरुदेव पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ ॥२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਚਾਕਰੀ ਸੁਖੀ ਹੂੰ ਸੁਖ ਸਾਰੁ ॥
सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥
सतगुरु की सेवा-चाकरी सर्व सुखों का सार है।

ਐਥੈ ਮਿਲਨਿ ਵਡਿਆਈਆ ਦਰਗਹ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥
गुरु की सेवा करने से दुनिया में बड़ा मान-सम्मान मिलता है और भगवान के दरबार में मोक्ष द्वार प्राप्त होता है।

ਸਚੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਸਚੁ ਪੈਨਣੁ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥
वह पुरुष सत्य-कर्म ही करता है, सत्य को ही धारण करता है और सत्य-नाम ही उसका आधार है।

ਸਚੀ ਸੰਗਤਿ ਸਚਿ ਮਿਲੈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥
सच्ची संगति से उसे सत्य प्राप्त हो जाता है एवं सच्चे-नाम से उसका प्यार हो जाता है।

ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਹਰਖੁ ਸਦਾ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥
सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥
सच्चे शब्द द्वारा वह सर्वदा हर्षित रहता है और सत्य-दरबार में सत्यशील माना जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੈ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੈ ਕਰਤਾਰੁ ॥੧॥
नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु की सेवा वही करता है, जिस पर भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਹੋਰ ਵਿਡਾਣੀ ਚਾਕਰੀ ਧ੍ਰਿਗੁ ਜੀਵਣੁ ਧ੍ਰਿਗੁ ਵਾਸੁ ॥
होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥
उनके जीवन पर धिक्कार है और उनका निवास भी धिक्कार योग्य है, जो सतिगुरु के अतिरिक्त किसी अन्य की सेवा करते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਛੋਡਿ ਬਿਖੁ ਲਗੇ ਬਿਖੁ ਖਟਣਾ ਬਿਖੁ ਰਾਸਿ ॥
अम्रितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥
वे अमृत को त्याग कर विष से संलग्न होकर विष को कमाते हैं और विष ही उनकी पूंजी है।

ਬਿਖੁ ਖਾਣਾ ਬਿਖੁ ਪੈਨਣਾ ਬਿਖੁ ਕੇ ਮੁਖਿ ਗਿਰਾਸ ॥
बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥
विष ही उनका भोजन है, विष ही उनका पहरावा है और विष के ग्रास ही अपने मुँह में डालते हैं।

ਐਥੈ ਦੁਖੋ ਦੁਖੁ ਕਮਾਵਣਾ ਮੁਇਆ ਨਰਕਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥
ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥
इहलोक में वे घोर कष्ट ही कमाते हैं और मृत्यु के पश्चात् नरक में ही निवास करते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਮੁਹਿ ਮੈਲੈ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਕਾਮ ਕਰੋਧਿ ਵਿਣਾਸੁ ॥
मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥
स्वेच्छाचारी लोगों के मुँह बड़े मैले हैं, वे शब्द के भेद को नहीं जानते और कामवासना एवं गुस्से में ही उनका विनाश हो जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਉ ਛੋਡਿਆ ਮਨਹਠਿ ਕੰਮੁ ਨ ਆਵੈ ਰਾਸਿ ॥
सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कमु न आवै रासि ॥
वे सतगुरु का प्रेम त्याग देते हैं और मन के हठ के कारण उनका कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता।

ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਕੋ ਨ ਸੁਣੇ ਅਰਦਾਸਿ ॥
जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥
यमपुरी में वे बांध कर पीटे जाते हैं और कोई भी उनकी प्रार्थना नहीं सुनता।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥੨॥
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥२॥
हे नानक ! पूर्व जन्म में कर्मों के अनुसार विधाता ने जो तकदीर लिख दी है, हम जीव उसके अनुसार ही कर्म करते हैं तथा गुरु के माध्यम से ही प्रभु-नाम में निवास होता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਧ ਜਨੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥
हे साधुजनो ! उस सतगुरु की सेवा करो, जिसने परमात्मा का नाम मन में दृढ़ करवाया है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਜਹੁ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਜਿਨਿ ਜਗੰਨਾਥੁ ਜਗਦੀਸੁ ਜਪਾਇਆ ॥
सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ ॥
उस सतगुरु की दिन-रात पूजा करो, जिसने जगन्नाथ-जगदीश्वर का नाम हमें जपाया है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਖਹੁ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕਾ ਹਰਿ ਪੰਥੁ ਬਤਾਇਆ ॥
सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥
ऐसे सतगुरु के क्षण-क्षण दर्शन करो, जिसने हरि का हरि-मार्ग बताया है।

ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਭ ਪਗੀ ਪਵਹੁ ਜਿਨਿ ਮੋਹ ਅੰਧੇਰੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥
तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥
सभी उस सतगुरु के चरण-स्पर्श करो, जिसने मोह का अन्धेरा नष्ट कर दिया है।

ਸੋ ਸਤਗੁਰੁ ਕਹਹੁ ਸਭਿ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਲਹਾਇਆ ॥੩॥
सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥३॥
सभी लोग ऐसे सतगुरु को धन्य-धन्य कहो, जिसने हरि-भक्ति के भण्डार जीवों को दिलवा दिए हैं।॥ ३ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਭੁਖ ਗਈ ਭੇਖੀ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥
सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ ॥
सतिगुरु से भेंट हो जाने पर भूख दूर हो जाती है लेकिन पाखण्ड धारण करने से भूख दूर नहीं होती।

ਦੁਖਿ ਲਗੈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਫਿਰੈ ਅਗੈ ਦੂਣੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥
पाखण्डी व्यक्ति को बहुत दु:ख होता है, वह घर-घर भटकता रहता है और परलोक में भी उसे दुगुना दण्ड मिलता है।

ਅੰਦਰਿ ਸਹਜੁ ਨ ਆਇਓ ਸਹਜੇ ਹੀ ਲੈ ਖਾਇ ॥
अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥
उसके मन में संतोष नहीं होता तांकि जो कुछ भी उसे मिलता है, उसे संतोषपूर्वक खाए।

ਮਨਹਠਿ ਜਿਸ ਤੇ ਮੰਗਣਾ ਲੈਣਾ ਦੁਖੁ ਮਨਾਇ ॥
मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥
जिस किसी से भी वह माँगता है, वह अपने मन के हठ से माँगता है और लेकर वे अपने देने वाले को दु:ख ही पहुँचाता है।

ਇਸੁ ਭੇਖੈ ਥਾਵਹੁ ਗਿਰਹੋ ਭਲਾ ਜਿਥਹੁ ਕੋ ਵਰਸਾਇ ॥
इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥
इस आडम्बर का वेष करने से तो गृहस्थी होना बेहतर है, जो किसी न किसी को तो कुछ देता ही है।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਤਿਨਾ ਸੋਝੀ ਪਈ ਦੂਜੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥
जो व्यक्ति शब्द में मग्न हैं, उन्हें सूझ आ जाती है और कुछ लोग तो दुविधा में ही भूले हुए हैं।

ਪਇਐ ਕਿਰਤਿ ਕਮਾਵਣਾ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥
पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥
वे अपनी तकदीर के अनुसार कर्म करते हैं और इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵਹਿ ਸੇ ਭਲੇ ਜਿਨ ਕੀ ਪਤਿ ਪਾਵਹਿ ਥਾਇ ॥੧॥
नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥१॥
हे नानक ! जो भगवान को अच्छे लगते हैं, वे भले हैं और जिनकी प्रतिष्ठा वह बरकरार रखता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥

सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥

सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य हमेशा सुखी रहता है और उसकी जन्म-मरण की पीड़ा दूर हो जाती है।

ਚਿੰਤਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਅਚਿੰਤੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥

चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥

उसे बिल्कुल ही चिन्ता नहीं होती और अचिंत प्रभु उसके मन में आकर निवास कर लेता है।

ਅੰਤਰਿ ਤੀਰਥੁ ਗਿਆਨੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਇ ॥

अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥

सतगुरु ने यह ज्ञान प्रदान किया है कि मनुष्य के हृदय में ही ज्ञान रूपी तीर्थ-स्थान है।

ਮੈਲੁ ਗਈ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇ ॥

मैलु गई मनु निरमलु होआ अम्रित सरि तीरथि नाइ ॥

इस ज्ञान रूपी तीर्थ-स्थान के अमृत-सरोवर में स्नान करने से सर्व प्रकार की मैल उतर जाती है और मन निर्मल हो जाता है ।

ਸਜਣ ਮਿਲੇ ਸਜਣਾ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ॥

सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥

सच्चे शब्द के प्रेम द्वारा सज्जनों को अपना सज्जन (प्रभु) मिल जाता है।

ਘਰ ਹੀ ਪਰਚਾ ਪਾਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥

घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥

अपने घर में ही वे दिव्य ज्ञान को पा लेते हैं और उनकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है।

ਪਾਖੰਡਿ ਜਮਕਾਲੁ ਨ ਛੋਡਈ ਲੈ ਜਾਸੀ ਪਤਿ ਗਵਾਇ ॥

पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥

ढोंगी पुरुष को यमदूत नहीं छोड़ता और उसे तिरस्कृत करके परलोक में ले जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਸਚੇ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥

नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥

हे नानक ! जो सत्य-नाम में मग्न रहते हैं, उनका उद्धार हो जाता है और सच्चे प्रभु के साथ ही उनकी वृति लगी रहती है।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਤਿਤੁ ਜਾਇ ਬਹਹੁ ਸਤਸੰਗਤੀ ਜਿਥੈ ਹਰਿ ਕਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬਿਲੋਈਐ ॥
तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥
उस सत्संगति में जाकर बैठो, जहाँ हरि-नाम का मंथन अर्थात् सिमरन किया जाता है।

ਸਹਜੇ ਹੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੇਹੁ ਹਰਿ ਤਤੁ ਨ ਖੋਈਐ ॥
सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥
वहाँ सहज अवस्था में हरि के नाम का भजन करो चूंकि तुम हरि के नाम-तत्त्व को न गंवा बैठना।

ਨਿਤ ਜਪਿਅਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਢੋਈਐ ॥
नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥
नित्य ही हरि-परमेश्वर का भजन करते रहो, हरि के दरबार में आश्रय प्राप्त हो जाएगा।

ਸੋ ਪਾਏ ਪੂਰਾ ਸਤਗੁਰੂ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖੋਈਐ ॥
सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥
जिस व्यक्ति के माथे पर शुभ-कर्मों के फलस्वरूप विधाता द्वारा तकदीर लिखी होती है, उसे पूर्ण सतिगुरु मिल जाता है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੰਉ ਸਭਿ ਨਮਸਕਾਰੁ ਕਰਹੁ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਗਾਲ ਗਲੋਈਐ ॥੪॥
तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥४॥
सभी लोग उस गुरु को नमस्कार करो, जिसने हरि की कथा कथन की है॥ ४ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਜਣ ਮਿਲੇ ਸਜਣਾ ਜਿਨ ਸਤਗੁਰ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੁ ॥
सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥
जिनका सतगुरु से प्यार होता है, उन सज्जनों को सज्जन ही मिलते हैं।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਤਿਨੀ ਧਿਆਇਆ ਸਚੈ ਪ੍ਰੇਮਿ ਪਿਆਰੁ ॥
मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥
सच्चे प्रेम-प्यार के कारण वे मिलकर प्रियतम-परमेश्वर को याद करते हैं।

ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਿ ॥
मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥
गुरु के अपार शब्द के कारण उनके मन में प्रभु के प्रति आस्था हो जाती है।

ऐहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥
एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥
यदि परमात्मा स्वयं मिलन करवा दे तो ऐसे सज्जन कभी जुदा नहीं होते।

इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥
इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥
कुछ लोग इस तरह के भी हैं, जिनके हृदय में भगवान के दर्शनों की प्रतीति नहीं होती और शब्द के बारे में भी विचार नहीं करते।

विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥
विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥
जो द्वैतभाव से स्नेह करते हैं, उन प्रभु से जुदा हुए मनुष्यों का और क्या वियोग हो सकता है?

मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥
मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥
मनमुख लोगों के साथ दोस्ती थोड़े समय केवल चार दिन ही रहती है।

इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥
इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥
इस प्रेम के टूटते विलम्ब नहीं होता और ऐसी दोस्ती से तो केवल विकार ही उत्पन्न होते हैं।

जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥
जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥
जिनके हृदय में सच्चे परमात्मा का भय विद्यमान नहीं होता और भगवान के नाम से प्यार नहीं करते,

नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥१॥
नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥१॥
हे नानक ! इस तरह के मनुष्यों से दोस्ती नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनको करतार ने स्वयं ही विस्मृत करके कुमार्गगामी कर दिया है॥ १॥

मः ३ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਕਿ ਸਦਾ ਇਕਤੈ ਰੰਗਿ ਰਹਹਿ ਤਿਨ ਕੈ ਹਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥
कुछ लोग हमेशा भगवान के प्रेम-रंग में मग्न रहते हैं और मैं उन पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਅਰਪੀ ਤਿਨ ਕਉ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥
तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥
मैं अपना तन-मन-धन उन्हें समर्पित करता हूँ और झुक-झुक कर उनके चरण छूता हूँ।

ਤਿਨ ਮਿਲਿਆ ਮਨੁ ਸੰਤੋਖੀਐ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਇ ॥
तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ त्रिसना भुख सभ जाइ ॥
उन लोगों से भेंट करके मन को बड़ा संतोष होता है और तृष्णा व भूख इत्यादि सभी मिट जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੀਏ ਸਦਾ ਸਚੇ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥
हे नानक ! जो भगवान के नाम में मग्न हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और उनकी सत्य में ही लगन लगी रहती है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਕੀ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣਾਈ ॥
तिसु गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥
मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने हरि की कथा सुनाई है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥
तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥
मैं उस गुरु पर हमेशा बलिहारी हूँ, जिसने हरि की उपासना का शुभावसर बनाया है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮੇਰੈ ਨਾਲਿ ਹੈ ਜਿਥੈ ਕਿਥੈ ਮੈਨੋ ਲਏ ਛਡਾਈ ॥
सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥
वह प्यारा सतिगुरु हमेशा मेरे साथ है एवं जहाँ-कहीं भी मैं होता हूँ, मुझे मुक्त करवा देता है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਸਾਬਾਸਿ ਹੈ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥
तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥
उस गुरु को शाबाश है, जिसने मुझे हरि का ज्ञान प्रदान किया है ।

ਨਾਨਕੁ ਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਮੇਰੇ ਮਨ ਕੀ ਆਸ ਪੁਰਾਈ ॥੫॥
नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥५॥
हे नानक ! मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे हरि का नाम देकर मेरे मन की अभिलाषा पूर्ण कर दी है ॥५॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਦਾਧੀ ਜਲਿ ਮੁਈ ਜਲਿ ਜਲਿ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥
त्रिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥
तृष्णा में दग्ध होकर सारी दुनिया जल कर मर गई है और जल-जल कर पुकार कर रही है।

ਸਤਿਗੁਰ ਸੀਤਲ ਜੇ ਮਿਲੈ ਫਿਰਿ ਜਲੈ ਨ ਦੂਜੀ ਵਾਰ ॥
सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥
यदि शांति प्रदान करने वाले सतिगुरु से भेंट हो जाए तो उसे फिर से दूसरी बार जलना नहीं पड़ेगा।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਿਰਭਉ ਕੋ ਨਹੀ ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥੧॥
नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥१॥
हे नानक ! जब तक मनुष्य गुरु के शब्द पर विचार नहीं करता, तब तक परमात्मा के नाम के बिना कोई भी भय-रहित नहीं हो सकता ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਭੇਖੀ ਅਗਨਿ ਨ ਬੁਝਈ ਚਿੰਤਾ ਹੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥
झूठा भेष अर्थात् ढोंग धारण करने से तृष्णा की अग्नि नहीं बुझती और मन में चिन्ता ही बनी रहती है।

ਵਰਮੀ ਮਾਰੀ ਸਾਪੁ ਨਾ ਮਰੈ ਤਿਉ ਨਿਗੁਰੇ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥
जैसे सर्प की बांबी को ध्वस्त करने से सर्प नहीं मरता वैसे ही निगुरा कर्म करता रहता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਸੇਵੀਐ ਸਬਦੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥
दाता सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य के मन में शब्द का निवास हो जाता है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਇ ॥
मनु तनु सीतलु सांति होइ त्रिसना अगनि बुझाइ ॥
इससे मन-तन शीतल एवं शांति हो जाती है और तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है।

ਸੁਖਾ ਸਿਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਜਾ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥
जब मनुष्य अपने हृदय से अहंकार को निकाल देता है तो उसे सर्व सुखों का परम सुख मिल जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਦਾਸੀ ਸੋ ਕਰੇ ਜਿ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥
वही गुरुमुख मनुष्य त्यागी होता है जो अपनी वृति सत्य के साथ लगाता है।

ਚਿੰਤਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਜਾ ਆਘਾਇ ॥
चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥
उसे बिल्कुल भी चिंता नहीं होती और हरि के नाम से वह तृप्त एवं संतुष्ट रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਹ ਛੂਟੀਐ ਹਉਮੈ ਪਚਹਿ ਪਚਾਇ ॥੨॥
नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥२॥
हे नानक ! भगवान के नाम के बिना मनुष्य का छुटकारा नहीं होता और अहंकार के कारण वह बिल्कुल नष्ट हो जाता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨੀ ਪਾਇਅੜੇ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ॥
जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥
जिन्होंने हरि के नाम का ध्यान किया है, उन लोगों को सर्व सुख प्राप्त हो गया है।

ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ਭੁਖਾ ॥
सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥
उन लोगों का समूचा जीवन सफल है, जिनके मन में हरि के नाम की तीव्र लालसा लगी हुई है।

ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਆਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਵਿਸਰਿ ਗਏ ਸਭਿ ਦੁਖਾ ॥
जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥
जिन्होंने गुरु के वचन द्वारा हरि की आराधना की है, उनके सभी दुःख-क्लेश मिट गए हैं।

ਤੇ ਸੰਤ ਭਲੇ ਗੁਰਸਿਖ ਹੈ ਜਿਨ ਨਾਹੀ ਚਿੰਤ ਪਰਾਈ ਚੁਖਾ ॥
ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥
वे सन्तजन, गुरु के शिष्य भले हैं, जिन्हें भगवान के अतिरिक्त किसी की भी तनिक चिन्ता नहीं।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਤਿਨਾ ਕਾ ਗੁਰੂ ਹੈ ਜਿਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਫਲ ਹਰਿ ਲਾਗੇ ਮੁਖਾ ॥੬॥
धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अम्रित फल हरि लागे मुखा ॥६॥
उनका गुरु धन्य-धन्य है, जिनके मुखारबिंद पर हरि के नाम का अमृत-फल लगा हुआ है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਕਲਿ ਮਹਿ ਜਮੁ ਜੰਦਾਰੁ ਹੈ ਹੁਕਮੇ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥
इस कलियुग में यमराज प्राणों का शत्रु है लेकिन वह भी ईश्वर की रज़ा अनुसार कार्य करता है।

ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਮਨਮੁਖਾ ਦੇਇ ਸਜਾਇ ॥
गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥
जिन लोगों की गुरु ने रक्षा की है, उनका उद्धार हो गया है। लेकिन स्वेच्छाचारी जीवों को वह दण्ड देता है।

ਜਮਕਾਲੈ ਵਸਿ ਜਗੁ ਬਾਂਧਿਆ ਤਿਸ ਦਾ ਫਰੂ ਨ ਕੋਇ ॥
जमकालै वसि जगु बांधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥
सारी दुनिया यमकाल के वश में कैद है और उसे कोई भी पकड़ नहीं सकता।

ਜਿਨਿ ਜਮੁ ਕੀਤਾ ਸੋ ਸੇਵੀਐ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਇ ॥
जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥
जिस परमेश्वर ने यमराज को पैदा किया है, गुरुमुख बनकर उसकी आराधना करनी चाहिए, फिर कोई दुःख-कष्ट नहीं सताता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਮੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਜਿਨ ਮਨਿ ਸਚਾ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥१॥
हे नानक ! जिनके मन में सच्चा परमेश्वर होता है, उन गुरुमुखों की यमराज भी सेवा करता रहता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਏਹਾ ਕਾਇਆ ਰੋਗਿ ਭਰੀ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਰੋਗੁ ਨ ਜਾਇ ॥
एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥
यह कोमल काया (अहंकार के) रोग से भरी हुई है और शब्द-ब्रह्मा के बिना इसका अहंकार का रोग एवं दुःख नाश नहीं होता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲ ਹੋਵੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇ ॥
सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥
यदि सतिगुरु से भेंट हो जाए तो यह काया निर्मल हो जाती है और हरि के नाम को अपने मन में बसा लेती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ਦੁਖੁ ਵਿਸਰਿਆ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥੨॥
नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥२॥
हे नानक ! सुख देने वाला परमात्मा के नाम का ध्यान करने से सहज-स्वभाव ही दुःख-क्लेश समाप्त हो जाते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਨਿ ਜਗਜੀਵਨੁ ਉਪਦੇਸਿਆ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਹਉ ਸਦਾ ਘੁਮਾਇਆ ॥
जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥
मैं उस गुरु पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे जगत के जीवनदाता प्रभु की भक्ति का उपदेश प्रदान किया है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਹਉ ਖੰਨੀਐ ਜਿਨਿ ਮਧੁਸੂਦਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਣਾਇਆ ॥
तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥
मैं उस गुरु पर खण्ड-खण्ड होकर न्यौछावर होता हूँ, जिसने मधुसूदन हरि का नाम सुनाया है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕਉ ਹਉ ਵਾਰਣੈ ਜਿਨਿ ਹਉਮੈ ਬਿਖੁ ਸਭੁ ਰੋਗੁ ਗਵਾਇਆ ॥
तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥
मैं उस गुरु पर शत्-शत् कुर्बान जाता हूँ, जिसने अहंकार रूपी विष एवं सभी रोगों को मिटा दिया है।

ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਵਡ ਪੁੰਨੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਅਵਗਣ ਕਟਿ ਗੁਣੀ ਸਮਝਾਇਆ ॥
तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥
उस गुरु का मुझ पर बड़ा उपकार है, जिसने अवगुणों को मिटाकर गुणों के भण्डार परमात्मा का ज्ञान प्रदान किया है।

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਿਨ ਕਉ ਭੇਟਿਆ ਜਿਨ ਕੈ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੭॥
सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥७॥
ऐसे सतगुरु से उन लोगों की ही भेंट होती है, जिनके मुख-मस्तक पर परमात्मा ने भाग्य लिखा होता है ॥७॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਮਰਜੀਵੜੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਹੋਇ ॥
भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥
मरजीवे ही भगवान की भक्ति करते हैं और गुरु द्वारा भक्ति की जा सकती है।

ਓਨਾ ਕਉ ਧੁਰਿ ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਬਖਸਿਆ ਮੇਟਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥
भक्ति का भण्डार उन्हें प्रारम्भ से ही दिया हुआ है, जिसे कोई भी मिटा नहीं सकता।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਮਨਿ ਪਾਇਆ ਏਕੋ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥
ऐसे महापुरुष अपने मन में ही गुणों के भण्डार एक परम-सत्य को प्राप्त कर लेते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਫਿਰਿ ਵਿਛੋੜਾ ਕਦੇ ਨ ਹੋਇ ॥੧॥
नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥१॥
नानक का कथन है कि गुरुमुख व्यक्ति सदैव ही भगवान में मिले रहते हैं और वे फिर कभी जुदा नहीं होते॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਕਿਆ ਓਹੁ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा नहीं करता, वह कैसे चिंतन कर सकता है।

ਸਬਦੈ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਬਿਖੁ ਭੂਲਾ ਗਾਵਾਰੁ ॥
सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥
मूर्ख व्यक्ति विकारों में भटकता रहता है और शब्द के सार को नहीं जानता।

ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥
अज्ञानी एवं अन्धा मनुष्य बहुत सारे कर्म करता है और द्वैतभाव से प्रेम करता है।

ਅਣਹੋਦਾ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਜਮੁ ਮਾਰਿ ਕਰੇ ਤਿਨ ਖੁਆਰੁ ॥
अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥
जो व्यक्ति गुणहीन होते हुए भी खुद को बड़ा कहलाते हैं, उन्हें मृत्यु दूत मार-मार कर बड़ा तंग करता है।

ਨਾਨਕ ਕਿਸ ਨੋ ਆਖੀਐ ਜਾ ਆਪੇ ਬਖਸਣਹਾਰੁ ॥੨॥
नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥२॥
नानक का कथन है कि अन्य किस को बताया जाए, जबकि भगवान स्वयं ही क्षमाशील है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਕਰਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣਦਾ ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੁਮਾਰੇ ॥
तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥
हे सृष्टिकर्ता ! तू सब कुछ जानता है एवं ये सारे जीव तेरे अपने ही हैं।

ਜਿਸੁ ਤੂ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਤੂ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਕਿਆ ਜੰਤ ਵਿਚਾਰੇ ॥
जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥
जिसे तू पसन्द करता है, उसे अपने साथ मिला लेता है। लेकिन ये जीव बेचारे क्या कर सकते हैं।

ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹੈ ਸਚੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੇ ॥
तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥
हे सच्चे सृजनहार ! तू समस्त कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है।

ਜਿਸੁ ਤੂ ਮੇਲਹਿ ਪਿਆਰਿਆ ਸੋ ਤੁਧੁ ਮਿਲੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥
जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥
हे प्रियतम ! जिसे तू स्वयं अपने साथ मिलाता है, वही गुरुमुख बनकर तेरा चिन्तन करके तुझ में विलीन हो जाता है।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਆਪਣੇ ਜਿਨਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਅਲਖੁ ਲਖਾਰੇ ॥੮॥

हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥८॥

मैं अपने सच्चे गुरु पर शत्-शत् कुर्बान हूँ, जिसने मेरे अदृश्य भगवान के दर्शन करा दिए हैं ॥८॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥

सलोक मः ३ ॥

श्लोक महला ३ ॥

ਰਤਨਾ ਪਾਰਖੁ ਜੋ ਹੋਵੈ ਸੁ ਰਤਨਾ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥

रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥

जो रत्नों की परख करने वाला पारखी है, वही रत्नों पर विचार करता है।

ਰਤਨਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਅੰਧਾਰੁ ॥

रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥

किन्तु अज्ञानी एवं परम अन्धा व्यक्ति रत्नों की कद्र को नहीं जानता।

ਰਤਨੁ ਗੁਰੂ ਕਾ ਸਬਦੁ ਹੈ ਬੂਝੈ ਬੂਝਣਹਾਰੁ ॥

रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥

कोई मेधावी इन्सान ही यह बात समझता है कि गुरु का शब्द ही रत्न है।

ਮੂਰਖ ਆਪੁ ਗਣਾਇਦੇ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥

मूरख आपु गणाइदे मरि जमहि होइ खुआरु ॥

मूर्ख मनुष्य स्वयं पर बड़ा गर्व करते हैं परन्तु ऐसे मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में पड़कर दुखी होते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਰਤਨਾ ਸੋ ਲਹੈ ਜਿਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥

नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥

नानक का कथन है कि नाम-रत्नों की प्राप्ति उस व्यक्ति को ही होती है, जिसे गुरुमुख बनकर नाम से प्यार होता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਮੁ ਉਚਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਨਿਤ ਬਿਉਹਾਰੁ ॥

सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥

ऐसा व्यक्ति दिन-रात हरि-नाम का ही उच्चारण करता है और हरि का नाम ही उसका प्रतिदिन का व्यवहार बन जाता है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਹਰਿ ਰਖਾ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੧॥
क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥१॥
यदि परमेश्वर अपनी कृपा करे तो मैं उसे अपने हृदय में बसा कर रख सकता हूँ ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥
जो व्यक्ति गुरु की सेवा नहीं करते एवं हरि के नाम से प्रेम नहीं लगाते,

ਮਤ ਤੁਮ ਜਾਣਹੁ ਓਇ ਜੀਵਦੇ ਓਇ ਆਪਿ ਮਾਰੇ ਕਰਤਾਰਿ ॥
मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥
उन्हें तुम जीवित मत समझो, क्योंकि उन्हें कर्ता प्रभु ने स्वयं ही समाप्त कर दिया है।

ਹਉਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਹੈ ਭਾਇ ਦੂਜੈ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥
अहंकार एक बड़ा भयानक रोग है, यह रोग मनुष्य से द्वैतभाव के कर्म करवाता रहता है।

ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਜੀਵਦਿਆ ਮੁਏ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥੨॥
नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥२॥
नानक का कथन है कि मनमुख मनुष्य जीवित रहते हुए भी लाश के बराबर हैं और प्रभु को भुलाकर वे बहुत दुःखी होते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਸੁ ਅੰਤਰੁ ਹਿਰਦਾ ਸੁਧੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਸਭਿ ਨਮਸਕਾਰੀ ॥
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥
जिसका हृदय भीतर से शुद्ध है, उस व्यक्ति को सभी नमस्कार करते हैं।

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕਉ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥
जिस के हृदय में नाम का भण्डार विद्यमान है, उस व्यक्ति पर मैं बलिहारी जाता हूँ।

ਜਿਸੁ ਅੰਦਰਿ ਬੁਧਿ ਬਿਬੇਕੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥
जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥
जिसके अन्दर विवेक-बुद्धि है तथा मुरारि हरि का नाम विद्यमान रहता है,

ਸੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਭਨਾ ਕਾ ਮਿਤੁ ਹੈ ਸਭ ਤਿਸਹਿ ਪਿਆਰੀ ॥
सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥
वह सतिगुरु सभी का मित्र है तथा सारी दुनिया से उसका प्रेम है।

ਸਭੁ ਆਤਮ ਰਾਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਗੁਰ ਬੁਧਿ ਬੀਚਾਰੀ ॥੯॥
सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥९॥
मैंने गुरु की दी हुई बुद्धि से यह विचार किया है कि सब आत्माओं में समाए हुए राम का ही यह प्रसार है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜੀਅ ਕੇ ਬੰਧਨਾ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥
सतिगुरु की सेवा के बिना वह कर्म जीव के लिए बन्धन बन जाते हैं जो कर्म वह अहंकार में ही करता रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵਹੀ ਮਰਿ ਜੰਮਹਿ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥
बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जमहि आवहि जाहि ॥
गुरु की सेवा के बिना जीव को सुख का स्थान नहीं मिलता और वह जन्मता-मरता और दुनिया में आता-जाता ही रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਫਿਕਾ ਬੋਲਣਾ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥
सतिगुरु की सेवा के बिना मनुष्य कटु वचन ही बोलता रहता है और उसके मन में भगवान का नाम नहीं बसता।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਮ ਪੁਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਨਿ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਉਠਿ ਜਾਹਿ ॥੧॥
नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥
हे नानक ! सतिगुरु की सेवा के बिना जीव दुनिया से मुँह काला करवा कर चला जाता है और यमपुरी में जकड़कर दण्ड भोगता है॥ १॥

ਮਹਲਾ ੧ ॥
महला १ ॥
महला १॥

ਜਾਲਉ ਐਸੀ ਰੀਤਿ ਜਿਤੁ ਮੈ ਪਿਆਰਾ ਵੀਸਰੈ ॥
जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥
मैं ऐसी रीति को जला दूँगा, जिसके फलस्वरूप मुझे मेरा प्यारा प्रभु भूल जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਈ ਭਲੀ ਪਰੀਤਿ ਜਿਤੁ ਸਾਹਿਬ ਸੇਤੀ ਪਤਿ ਰਹੈ ॥੨॥
नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥२॥
हे नानक ! वह प्यार ही भला है, जो प्रभु से प्रतिष्ठा कायम रखता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਰਿ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਸੇਵੀਐ ਹਰਿ ਇਕੁ ਧਿਆਈਐ ॥
हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥
एक दाता परमेश्वर की ही भक्ति करनी चाहिए और एक ईश्वर का ही ध्यान करना चाहिए।

ਹਰਿ ਇਕੋ ਦਾਤਾ ਮੰਗੀਐ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਈਐ ॥
हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥
एक दाता परमेश्वर से ही माँगना चाहिए, क्योंकि उससे ही मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।

ਜੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸਹੁ ਮੰਗੀਐ ਤਾ ਲਾਜ ਮਰਾਈਐ ॥
जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥
यदि हम भगवान के अलावा किसी दूसरे से मांगते हैं तो लज्जित होकर मरेंगे।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਤਿਸੁ ਜਨ ਕੀ ਸਭ ਭੁਖ ਗਵਾਈਐ ॥
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥
जिसने उपासना की है, उसे फल प्राप्त हो गया है और उस व्यक्ति की सारी भूख दूर हो गई है।

ਨਾਨਕੁ ਤਿਨ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨ ਅਨਦਿਨੁ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥੧੦॥
नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥१०॥
नानक उन लोगों पर न्योछावर है, जो अपने हृदय में रात-दिन हरि-नाम का ध्यान करते हैं ॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੰਉ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਲਇਅਨੁ ਜਨ ਲਾਇ ॥
भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥
मेरा प्यारा परमेश्वर भक्तजनों पर स्वयं प्रसन्न हुआ है और अपने भक्तों को उसने स्वयं ही भक्ति में लगा लिया है।

ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਭਗਤ ਜਨਾ ਕਉ ਦਿਤੀਅਨੁ ਸਿਰਿ ਛਤੁ ਸਚਾ ਹਰਿ ਬਣਾਇ ॥
पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥
अपने भक्तजनों का उसने साम्राज्य प्रदान किया है और उनके सिर हेतु उसने सच्चा मुकुट बनाया है।

ਸਦਾ ਸੁਖੀਏ ਨਿਰਮਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥
वे सर्वदा सुखी एवं निर्मल हैं और सतिगुरु की सेवा करते हैं।

ਰਾਜੇ ਓਇ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਭਿੜਿ ਮਰਹਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਹਿ ॥
राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥
वे राजा नहीं कहे जा सकते, जो आपस में भिड़कर मर जाते हैं और तत्पश्चात् पुनः योनियों के चक्र में ही पड़े रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਕੀਂ ਵਢੀਂ ਫਿਰਹਿ ਸੋਭਾ ਮੂਲਿ ਨ ਪਾਹਿ ॥੧॥
नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥१॥
हे नानक ! भगवान के नाम के बिना वे नकटा अर्थात् तिरस्कृत होकर घूमते रहते हैं तथा बिल्कुल ही शोभा प्राप्त नहीं करते॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸੁਣਿ ਸਿਖਿਐ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਓ ਜਿਚਰੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦਿ ਨ ਲਾਗੈ ॥
सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥
"(शब्द को) सुनने एवं निर्देश देने से मनुष्य को इसका स्वाद नहीं आता, जब तक वह गुरुमुख बनकर शब्द में मग्न नहीं होता।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਵਿਚਹੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥
सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥
गुरु की सेवा करने से भगवान का नाम जीव के मन में निवास कर लेता है और भ्रम एवं खौफ उसके भीतर से भाग जाते हैं।

ਜੇਹਾ ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਜਾਣੈ ਤੇਹੋ ਹੋਵੈ ਤਾ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੈ ॥
जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥
जीवं जैसा गुरु को जानता है, वह भी वैसे ही हो जाता है और तब उसकी सुरति सत्य-नाम से लग जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਦਰਿ ਸੋਹਨਿ ਆਗੈ ॥੨॥
नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥२॥
हे नानक ! नाम के फलस्वरूप ही जीव को कीर्ति प्राप्त होती है और आगे भगवान के दरबार में भी शोभायमान होता है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਗੁਰਸਿਖਾਂ ਮਨਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਗੁਰੁ ਪੂਜਣ ਆਵਹਿ ॥
गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥
गुरु के शिष्यों के मन में भगवान की प्रीति है और वे आकर गुरु की पूजा करते हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਣੰਜਹਿ ਰੰਗ ਸਿਉ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈ ਜਾਵਹਿ ॥
हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥
वे हरि-नाम का बड़े प्रेम से व्यापार करते हैं और हरि-नाम का लाभ अर्जित करके चले जाते हैं।

ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਭਾਵਹਿ ॥
गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥
गुरु के शिष्यों के मुख हमेशा उज्ज्वल हैं और वे भगवान के दरबार में सत्कृत होते हैं।

ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੋਹਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਕਾ ਵਡਭਾਗੀ ਸਿਖ ਗੁਣ ਸਾਂਝ ਕਰਾਵਹਿ ॥
गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि ॥
गुरु-सतगुरु भगवान के नाम का अमूल्य भण्डार है और भाग्यशाली गुरु के शिष्य इस गुणों के भण्डार में उनके भागीदार बन जाते हैं।

ਤਿਨਾ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੰਉ ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਜੋ ਬਹਦਿਆ ਉਠਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ॥੧੧॥
तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥११॥
मैं गुरु के उन शिष्यों पर न्यौछावर हूँ, जो बैठते-उठते समय सदा हरि-नाम का ध्यान करते रहते हैं।॥११॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥
हे नानक ! भगवान का नाम एक अमूल्य भण्डार है, जिसकी उपलब्धि गुरु के माध्यम से ही होती है।

ਮਨਮੁਖ ਘਰਿ ਹੋਦੀ ਵਥੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਅੰਧੇ ਭਉਕਿ ਮੁਏ ਬਿਲਲਾਇ ॥੧॥
मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥१॥
स्वेच्छाचारी जीव अपने हृदय रूपी घर में मौजूद इस अनमोल वस्तु को नहीं जानते और ज्ञान से अन्धे भौंकते एवं रोते-चिल्लाते ही जीवन छोड़ देते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਕੰਚਨ ਕਾਇਆ ਨਿਰਮਲੀ ਜੋ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਸਚਿ ਲਾਗੀ ॥
कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥
वह काया स्वर्ण की भाँति निर्मल है, जो सत्यस्वरूप परमात्मा के सत्य-नाम में मग्न हो गई है।

ਨਿਰਮਲ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੀ ॥
निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥
गुरुमुख बनने से इस काया को निर्मल ज्योति वाले निरंजन प्रभु की प्राप्ति हो जाती है और इसका भ्रम एवं डर दूर हो जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਬੈਰਾਗੀ ॥੨॥

नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥२॥

हे नानक ! गुरुमुख व्यक्ति हमेशा सुखी रहते हैं और रात-दिन भगवान के प्रेम में बैरागी बने रहते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਸੇ ਗੁਰਸਿਖ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਹੈ ਜਿਨੀ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਿਆ ਹਰਿ ਕੰਨੀ ॥

से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी ॥

वे गुरु के शिष्य बड़े धन्य-धन्य हैं, जिन्होंने अपने कानों से ध्यानपूर्वक गुरु का उपदेश सुना है।

ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਤਿਨਿ ਹੰਉਮੈ ਦੁਬਿਧਾ ਭੰਨੀ ॥

गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी ॥

गुरु-सतगुरु ने उनके अन्तर में भगवान के नाम को दृढ़ किया है और उनकी दुविधा एवं अहंकार का नाश कर दिया है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਕੋ ਮਿਤ੍ਰੁ ਨਾਹੀ ਵੀਚਾਰਿ ਡਿਠਾ ਹਰਿ ਜੰਨੀ ॥

बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि जंनी ॥

भक्तों ने विचार करके यह देख लिया है कि हरि-नाम के सिवाय दूसरा कोई मित्र नहीं।

ਜਿਨਾ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕਉ ਹਰਿ ਸੰਤੁਸਟੁ ਹੈ ਤਿਨੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਗਲ ਮੰਨੀ ॥
जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मंनी ॥
जिन गुरु के शिष्यों पर भगवान परम संतुष्ट हैं, उन्होंने सतिगुरु की बात मानी है।

ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨੀ ਚੜੀ ਚਵਗਣਿ ਵੰਨੀ ॥੧੨॥
जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥१२॥
जो गुरुमुख हरि-नाम का ध्यान-मनन करते हैं, वे उसके प्रेम रंग के चौगुणा रंग से रंगे जाते हैं।॥ १२ ॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਮਨਮੁਖੁ ਕਾਇਰੁ ਕਰੂਪੁ ਹੈ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਨਕੁ ਨਾਹਿ ॥
मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥
स्वेच्छाचारी पुरुष बड़ा कायर एवं बदशक्ल है और भगवान के नाम के बिना वह नकटा है अर्थात् उसका कोई सम्मान नहीं करता।

ਅਨਦਿਨੁ ਧੰਧੈ ਵਿਆਪਿਆ ਸੁਪਨੈ ਭੀ ਸੁਖੁ ਨਾਹਿ ॥
अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥
ऐसा पुरुष दिन-रात दुनिया के धंधों में व्यस्त रहता है और स्वप्न में भी उसे सुख उपलब्ध नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵਹਿ ਤਾ ਉਬਰਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਬਧੇ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥੧॥
नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥१॥
हे नानक ! ऐसा पुरुष यदि गुरुमुख बन जाए तो ही उसे मुक्ति मिल सकती है, अन्यथा बन्धनों में फँसा हुआ वह दुख ही भोगता रहता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਦਰਿ ਸੋਹਣੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ ॥
गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥
गुरुमुख व्यक्ति भगवान के दरबार में सर्वदा सुन्दर लगते हैं और वे गुरु के शब्द का अभ्यास करते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸੋਭਾ ਪਾਹਿ ॥
अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥
उनके अन्तर में सदा शांति एवं सुख बना रहता है और वे सच्चे परमेश्वर के द्वार पर बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥२॥
हे नानक ! जिन गुरुमुखों ने हरि-नाम पाया है, वे सहज स्वभाव ही सत्य में समा गए हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥
गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥
गुरु के सान्निध्य में रहकर भक्त प्रहलाद ने हरि का जाप करके गति प्राप्त की थी।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਕਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥
गुरु के माध्यम से ही जनक ने हरि के नाम में सुरति लगाई थी।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਸਿਸਟਿ ਹਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਾਈ ॥
गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥
गुरु के माध्यम से ही वसिष्ठ जी ने हरि का उपदेश सुनाया था।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਕਿਨੈ ਪਾਇਆ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥
बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥
हे मेरे भाई ! गुरु के बिना किसी को भी हरि का नाम प्राप्त नहीं हुआ।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਲਹਾਈ ॥੧੩॥
गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥१३॥
गुरुमुख व्यक्ति को ही हरि ने स्वयं अपनी भक्ति प्रदान की है॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਈਆ ਸਬਦਿ ਨ ਲਾਗੋ ਭਾਉ ॥
सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥
जिस व्यक्ति की सतिगुरु पर श्रद्धा अथवा निष्ठा नहीं बनी और जो शब्द से प्रेम नहीं करता,

ਓਸ ਨੋ ਸੁਖੁ ਨ ਉਪਜੈ ਭਾਵੈ ਸਉ ਗੇੜਾ ਆਵਉ ਜਾਉ ॥
ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥
उसे सुख की उपलब्धि नहीं होती, निसंदेह वह सौ बार दुनिया में आता (जन्म लेता) अथवा जाता (मरता) रहे।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਸਚੇ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਉ ॥੧॥
नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥१॥
हे नानक! यदि गुरु के सान्निध्य में सच्चे परमेश्वर में सुरति लगाई जाए तो वह सहज स्वभाव ही प्राप्त हो जाता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਏ ਮਨ ਐਸਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਖੋਜਿ ਲਹੁ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥
हे मन ! ऐसे सतिगुरु की खोज कर लो, जिसकी सेवा करने से जन्म-मरण का दुःख दूर हो जाता है।

ਸਹਸਾ ਮੂਲਿ ਨ ਹੋਵਈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥
सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥
गुरु को पाने से तब तुझे बिल्कुल भी दुविधा नहीं होगी और तेरा अहंकार शब्द के माध्यम से जल जाएगा।

ਕੂੜੈ ਕੀ ਪਾਲਿ ਵਿਚਹੁ ਨਿਕਲੈ ਸਚੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥
फिर झूठ की दीवार तेरे अन्तर से निकल जाएगी और तेरे मन में आकर सत्य का निवास हो जाएगा।

ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਮਨਿ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ਸਚ ਸੰਜਮਿ ਕਾਰ ਕਮਾਇ ॥
अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥
सत्य की युक्ति अनुसार कर्म करने से तेरे अन्तर्मन के भीतर शांति एवं सुख हो जाएगा।

ਨਾਨਕ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਹਰਿ ਜੀਉ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੨॥

नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥२॥

हे नानक ! पूर्ण तकदीर से सतिगुरु तभी मिलता है, जब परमात्मा अपनी इच्छा से कृपा-दृष्टि करता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी।

ਜਿਸ ਕੈ ਘਰਿ ਦੀਬਾਨੁ ਹਰਿ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਕੀ ਮੁਠੀ ਵਿਚਿ ਜਗਤੁ ਸਭੁ ਆਇਆ ॥

जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय-घर में न्यायदाता श्रीहरि रहता हो, उसकी मुट्ठी में तो सारी दुनिया ही आ जाती है।

ਤਿਸ ਕਉ ਤਲਕੀ ਕਿਸੈ ਦੀ ਨਾਹੀ ਹਰਿ ਦੀਬਾਨਿ ਸਭਿ ਆਣਿ ਪੈਰੀ ਪਾਇਆ ॥

तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥

उस व्यक्ति को किसी की भी अनुसेवा करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि न्यायदाता श्रीहरि ही सारी दुनिया को लाकर उसके चरणों में झुका कर रख देता है।

ਮਾਣਸਾ ਕਿਅਹੁ ਦੀਬਾਣਹੁ ਕੋਈ ਨਸਿ ਭਜਿ ਨਿਕਲੈ ਹਰਿ ਦੀਬਾਣਹੁ ਕੋਈ ਕਿਥੈ ਜਾਇਆ ॥

माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥

मनुष्यों के न्यायालय में से तो कोई भाग-दोड़कर निकल सकता है किन्तु श्रीहरि के न्यायालय में से कोई किधर जा सकता है ?

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਦੀਬਾਨੁ ਵਸਿਆ ਭਗਤਾ ਕੈ ਹਿਰਦੈ ਤਿਨਿ ਰਹਦੇ ਖੁਹਦੇ ਆਣਿ ਸਭਿ ਭਗਤਾ ਅਗੈ ਖਲਵਾਇਆ ॥

सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥

सो ऐसा श्रीहरि न्यायदाता बादशाह भक्तों के हृदय में निवास कर रहा है, जिसने शेष बचे-खुचे समस्त लोगों को भी लाकर भक्तों के समक्ष खड़ा कर दिया है।

ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਧਿਆਇਆ ॥੧੪॥

हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥१४॥

हरि-नाम की कीर्ति तकदीर से ही मिलती है और किसी विरले गुरुमुख ने ही उसका ध्यान किया है॥ १४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਗਤੁ ਮੁਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥
बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥
सतिगुरु की सेवा के बिना जगत मुर्दा-लाश के बराबर बना हुआ है और अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा रहा है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਅਤਿ ਦੁਖੁ ਲਗਾ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जमै आवै जाइ ॥
मोह-माया में फँस कर जगत अत्यंत दुःख भोगता है और यह जन्मता एवं मरता रहता है।

ਵਿਸਟਾ ਅੰਦਰਿ ਵਾਸੁ ਹੈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜੂਨੀ ਪਾਇ ॥
विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥
वह विष्टा में निवास करता है और बार-बार योनियों में घूमता रहता हे।

ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਮੁ ਮਾਰਸੀ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਇ ॥੧॥
नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥१॥
हे नानक ! भगवान के नाम से विहीन लोगों को यम सख्त सज़ा देता है और अन्तिम क्षणों में लोग पश्चाताप में जलते हुए चले जाते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਪੁਰਖੁ ਏਕੁ ਹੈ ਹੋਰ ਸਗਲੀ ਨਾਰਿ ਸਬਾਈ ॥
इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥
इस जगत में एक ही परम पुरुष (भगवान) है, शेष सारी दुनिया तो उसकी स्त्रियाँ हैं।

ਸਭਿ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਅਲਿਪਤੁ ਰਹੈ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖਣਾ ਜਾਈ ॥
सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥
वह सभी के हृदय में रमण करता है लेकिन फिर भी उनसे निर्लिप्त रहता है। वह अदृष्य है और उसे देखा नहीं जा सकता।

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਵੇਖਾਲਿਆ ਸਬਦੇ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥
पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥
इस विश्व में पूर्ण गुरु ने उसके दर्शन करा दिए हैं और शब्द के द्वारा उसका ज्ञान प्रदान कर दिया है।

ਪੁਰਖੈ ਸੇਵਹਿ ਸੇ ਪੁਰਖ ਹੋਵਹਿ ਜਿਨੀ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਈ ॥
पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥
जो लोग परमपुरुष की आराधना करते हैं और गुरु-शब्द के माध्यम से अपना अहंकार जला देते हैं, वे स्वयं ही पूर्ण पुरुष बन जाते हैं।

ਤਿਸ ਕਾ ਸਰੀਕੁ ਕੋ ਨਹੀ ਨਾ ਕੋ ਕੰਟਕੁ ਵੈਰਾਈ ॥
तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥
इस विश्व में उस ईश्वर का कोई भी शरीक नहीं है और न ही कोई उसका कटक शत्रु है।

ਨਿਹਚਲ ਰਾਜੁ ਹੈ ਸਦਾ ਤਿਸੁ ਕੇਰਾ ਨਾ ਆਵੈ ਨਾ ਜਾਈ ॥
निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥
उसका शासन सदैव अटल है और न वह योनियों में आता है और न ही जाता है अर्थात् वह अनश्वर है।

ਅਨਦਿਨੁ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੇ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥
अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥
उसके भक्त रात-दिन उसकी उपासना करते हैं और सच्चे हरि का गुणगान करते रहते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸਿਆ ਹਰਿ ਸਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥
नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥२॥
उस सच्चे हरि की कीर्ति को देख कर नानक कृतार्थ हो गया है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਿਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਸਦ ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਤਿਨ ਕੰਉ ਰਖਣਹਾਰਾ ॥
जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥
जिनके अन्तर्मन में हमेशा हरि का नाम निवास करता है, हरि का नाम ही उनका रखवाला बन जाता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਿਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਮਾਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਮਿਤ੍ਰੁ ਹਮਾਰਾ ॥
हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥
हरि का नाम ही हमारा पिता है, हरि का नाम ही हमारी माता एवं हरि का नाम ही हमारा सखा एवं मित्र है।

ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਗਲਾ ਹਰਿ ਨਾਵੈ ਨਾਲਿ ਮਸਲਤਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੀ ਕਰਦਾ ਨਿਤ ਸਾਰਾ ॥
हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥
हरि के नाम से ही हमारी बातचीत है, हरि के नाम से हमारा सलाह-मशविरा है एवं हरि का नाम ही हमारी नित्य देख-रेख करता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰੀ ਸੰਗਤਿ ਅਤਿ ਪਿਆਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਕੁਲੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਵਾਰਾ ॥
हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥
हरि का नाम हमारी अत्यंत प्यारी संगति है, हरि का नाम ही हमारा वंश है और हरि का नाम ही हमारा परिवार है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੰਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ਹਰਿ ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸਦਾ ਕਰੇ ਨਿਸਤਾਰਾ॥੧੫॥
जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥१५॥
नानक को हरि-(रूप) गुरु ने हरि का नाम दिया है और हरि लोक-परलोक में सर्वदा ही हमें मोक्ष दिलवाता है ॥१५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਜਿਨ ਕੰਉ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਆ ਸੇ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਸਦਾ ਕਮਾਹਿ ॥
जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥
जिनकी सतिगुरु से भेंट हो जाती है, वे सर्वदा हरि का कीर्ति-गान करते रहते हैं।

ਅਚਿੰਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥
अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥
उनके मन में अचिंत हरि का नाम निवास कर लेता है और वे सच्चे-शब्द में समा जाते हैं।

ਕੁਲੁ ਉਧਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਮੋਖ ਪਦਵੀ ਆਪੇ ਪਾਹਿ ॥
कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥
जिसके फलस्वरूप वे अपने वंश का उद्धार कर देते हैं और स्वयं मोक्ष पदवी को प्राप्त कर लेते हैं।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਤਿਨ ਕੰਉ ਸੰਤੁਸਟੁ ਭਇਆ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਜਨ ਪਾਹਿ ॥
पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥
जो श्रद्धालु गुरु के चरणों में आए हैं, परब्रह्म-परमेश्वर उन पर खुश हो गया है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਲਾਜ ਰਖਾਹਿ ॥੧॥
जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥१॥
नानक तो हरि का दास है और हरि अपनी कृपा करके उसकी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਹੰਉਮੈ ਅੰਦਰਿ ਖੜਕੁ ਹੈ ਖੜਕੇ ਖੜਕਿ ਵਿਹਾਇ ॥
हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥
अहंकारवश मनुष्य के भीतर परेशानी ही बनी रहती है और इस असमंजस में वह अपना जीवन दुःखों में बिता देता है।

ਹੰਉਮੈ ਵਡਾ ਰੋਗੁ ਹੈ ਮਰਿ ਜੰਮੈ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥
हंउमै वडा रोगु है मरि जमै आवै जाइ ॥
अहंकार एक भयानक रोग है, जिसके परिणामस्वरूप वह मरता है, पुनः जन्म लेता है और दुनिया में आता जाता रहता है।

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਨਾ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥
विधाता ने जिनकी तकदीर में लिखा होता है, उसे सतगुरु -प्रभु मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਉਬਰੇ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੨॥
नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥२॥
हे नानक ! गुरु की अपार कृपा से उनका उद्धार हो जाता है और शब्द के माध्यम से वे अपने अहंकार को जला देते हैं। ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਗਤੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥
हरि का नाम हमारा प्रभु है जो अविगत, अगोचर, अनश्वर, परमपुरुष, विधाता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮ ਸੇ੍ਵਹ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮ ਪੂਜਹ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
हरि नामु हम सेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥
हम हरि के नाम की ही वन्दना करते हैं, हरि के नाम की ही पूजा करते हैं और हमारा मन हरि के नाम में ही मग्न रहता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਜੇਵਡੁ ਕੋਈ ਅਵਰੁ ਨ ਸੂਝੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਅੰਤਿ ਛਡਾਤਾ ॥
हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥
हरि के नाम जैसा कोई दूसरा नहीं सूझता, क्योंकि हरि का नाम ही अन्त में मोक्ष दिलवाता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਆ ਗੁਰਿ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਕਾ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ॥
हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता ॥
जिस परोपकारी गुरु ने हमें हरि का नाम दिया है, उस गुरु के माता-पिता धन्य-धन्य हैं।

ਹੰਉ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਣੇ ਕੰਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੀ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੈ ਜਾਤਾ ॥੧੬॥
हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥१६॥
मैं अपने सतिगुरु को हमेशा नमन करता रहता हूँ, जिनके साथ भेंट करने से मुझे हरि के नाम का ज्ञान हुआ है॥ १६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵ ਨ ਕੀਨੀਆ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥
जिस व्यक्ति ने गुरु के सान्निध्य में रहकर सेवा नहीं की, हरि के नाम से भी प्रेम नहीं लगाया और

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਓ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥
सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥
गुरु-शब्द का स्वाद भी नहीं प्राप्त किया, ऐसा अज्ञानी व्यक्ति बार-बार दुनिया में मरता एवं जन्मता रहता है।

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੁ ਨ ਚੇਤਈ ਕਿਤੁ ਆਇਆ ਸੈਸਾਰਿ ॥
मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥
अन्धा मनमुख पुरुष यदि भगवान को कभी याद ही नहीं करता तो उसका इस दुनिया में आने का क्या अभिप्राय है ?

ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲੰਘੇ ਪਾਰਿ ॥੧॥
नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥१॥
हे नानक ! भगवान जिस पर अपनी करुणा-दृष्टि करता है, वह गुरु के सान्निध्य में रहकर भवसागर से पार हो जाता है॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਕੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਾਗਤਾ ਹੋਰੁ ਜਗੁ ਸੂਤਾ ਮੋਹਿ ਪਿਆਸਿ ॥
इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥
एक सतगुरु ही जाग्रत रहता है, परन्तु बाकी सारी दुनिया मोह एवं तृष्णा में निद्रा-मग्न है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਨਿ ਜਾਗੰਨਿ ਸੇ ਜੋ ਰਤੇ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥
जो लोग गुणों के भण्डार सत्य-नाम में मग्न हैं और सतगुरु की सेवा करते हैं, वे मोह-तृष्णा की ओर से जाग्रत रहते हैं।

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧ ਨ ਚੇਤਨੀ ਜਨਮਿ ਮਰਿ ਹੋਹਿ ਬਿਨਾਸਿ ॥
मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥
अन्धे मनमुख व्यक्ति भगवान को याद नहीं करते, जिसके कारण जन्म-मरण के चक्र में ही उनका विनाश हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਜਿਨ ਕੰਉ ਧੁਰਿ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆਸਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥२॥
हे नानक ! जिनकी तकदीर में विधाता ने प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है, उन्होंने ही गुरु के माध्यम से नाम का ध्यान किया है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਭੋਜਨੁ ਛਤੀਹ ਪਰਕਾਰ ਜਿਤੁ ਖਾਇਐ ਹਮ ਕਉ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਭਈ ॥
हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ त्रिपति भई ॥
हरि का नाम हमारा छत्तीस प्रकार का स्वादिष्ट भोजन है, जिसको खाने से हमें बड़ी तृप्ति हुई है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਪੈਨਣੁ ਜਿਤੁ ਫਿਰਿ ਨੰਗੇ ਨ ਹੋਵਹ ਹੋਰ ਪੈਨਣ ਕੀ ਹਮਾਰੀ ਸਰਧ ਗਈ ॥
हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥
हरि का नाम हमारा पहनावा है, जिसे पहनने से हम दुबारा नग्न नहीं होंगे तथा अन्य कुछ पहनने की हमारी चाहत दूर हो गई है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਵਣਜੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੁ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਕੀ ਹਮ ਕੰਉ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਾਰਕੁਨੀ ਦੀਈ ॥
हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥
हरि का नाम ही हमारा वाणिज्य है, हरि का नाम ही व्यापार है और हरि के नाम का ही कारोबार सतिगुरु ने हमें दिया है।

ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਕਾ ਹਮ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਸਭ ਜਮ ਕੀ ਅਗਲੀ ਕਾਣਿ ਗਈ ॥
हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥
हरि-नाम का ही हमने लेखा लिख दिया है और यम की अगली सारी मुहताजी खत्म हो गई है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਧਿਆਇਆ ਜਿਨ ਕੰਉ ਧੁਰਿ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਲਿਖਤੁ ਪਈ ॥੧੭॥

हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥१७॥

जिनकी तकदीर में विधाता ने शुरु से ही नाम लब्धि का ऐसा लेख लिखा है, ऐसे किसी विरले गुरुमुख ने ही हरि-नाम का ध्यान किया है॥१७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥

सलोक मः ३ ॥

श्लोक महला ३।

ਜਗਤੁ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥

जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥

यह दुनिया अज्ञानी एवं अन्धी है, जो द्वैतभाव में कर्म करती रहती है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਜੇਤੇ ਕਰਮ ਕਰੇ ਦੁਖੁ ਲਗੈ ਤਨਿ ਧਾਇ ॥

दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥

यह द्वैतभाव में जितने भी कर्म करती है, उतने ही दुःख-कष्ट भागकर उसके तन को लग जाते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਜਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਇ ॥

गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥

यदि मनुष्य गुरु के शब्द का अभ्यास करे तो गुरु की कृपा से सुख उत्पन्न हो जाता है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਕਰਮ ਕਰੇ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥

सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥

वह सच्ची वाणी के द्वारा कर्म करे और रात-दिन नाम का ध्यान-मनन करता रहे।

ਨਾਨਕ ਜਿਤੁ ਆਪੇ ਲਾਏ ਤਿਤੁ ਲਗੇ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥

नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥१॥

हे नानक ! मनुष्य उस तरफ ही लगता है, जिधर भगवान स्वयं उसे लगाता है और मनुष्य का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३ ॥

ਹਮ ਘਰਿ ਨਾਮੁ ਖਜਾਨਾ ਸਦਾ ਹੈ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥
हमारे हृदय-घर में सर्वदा भगवान के नाम का खज़ाना विद्यमान है एवं भक्ति के भण्डार भरपूर हैं।

ਸਤਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਜੀਅ ਕਾ ਸਦ ਜੀਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥
सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥
सतगुरु जीवों को नाम की देन देने वाला दाता है और वह देने वाला सदा ही जीवित रहता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਸਦਾ ਕਰਹਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਅਪਾਰਾ ॥
अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥
गुरु के अपार शब्द द्वारा हम रात-दिन हरि का कीर्तन करते रहते हैं।

ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਕਾ ਸਦ ਉਚਰਹਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵਰਤਾਵਣਹਾਰਾ ॥
सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥
हम सर्वदा गुरु के शब्द का उच्चारण करते रहते हैं, जो युग-युगान्तरों में नाम की देन बांटने वाला है।

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਸਦਾ ਸੁਖਿ ਵਸੈ ਸਹਜੇ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥
इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥
हमारा यह मन हमेशा सुखी रहता है और सहज ही नाम का व्यापार करता है।

ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਹਰਿ ਰਤਨੁ ਹੈ ਮੁਕਤਿ ਕਰਾਵਣਹਾਰਾ ॥
अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥
हमारे अन्तर्मन में गुरु का ज्ञान एवं हरि का नाम रत्न विद्यमान है, जो हमारी मुक्ति कराने वाला है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ਸੋ ਹੋਵੈ ਦਰਿ ਸਚਿਆਰਾ ॥੨॥
नानक जिस नो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥२॥
हे नानक ! भगवान जिस पर करुणा-दृष्टि करता है, वह इस देन को प्राप्त कर लेता है और वह उसके दरबार में सत्यवादी माना जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਹੀਐ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣੀ ਜਾਇ ਪਇਆ ॥
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥
उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जो सतिगुरु के चरणों में जाकर लगा है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਹੀਐ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਮੁਖਿ ਰਾਮੁ ਕਹਿਆ ॥
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥
उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने अपने मुखारविंद से परमेश्वर के नाम का उच्चारण किया है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਹੀਐ ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸੁਣਿਐ ਮਨਿ ਅਨਦੁ ਭਇਆ ॥
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥
उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसके मन में हरि का नाम सुनकर आनंद पैदा हो गया है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੋ ਗੁਰਸਿਖੁ ਕਹੀਐ ਜਿਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵਾ ਕਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲਇਆ ॥
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥
उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने सतिगुरु की सेवा करके हरि के नाम को प्राप्त किया है।

ਤਿਸੁ ਗੁਰਸਿਖ ਕੰਉ ਹੰਉ ਸਦਾ ਨਮਸਕਾਰੀ ਜੋ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਗੁਰਸਿਖੁ ਚਲਿਆ ॥੧੮॥
तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥१८॥
मैं हमेशा उस गुरु के शिष्य को नमन करता हूँ, जो गुरु की आज्ञा अनुसार चला है ॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३।

ਮਨਹਠਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਸਭ ਥਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ ॥
मन के हठ के कारण किसी को भी ईश्वर प्राप्त नहीं हुआ और सभी (हठधर्मी) हठ से कर्म करते हुए थक गए हैं।

ਮਨਹਠਿ ਭੇਖ ਕਰਿ ਭਰਮਦੇ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥
मन के हठ द्वारा पाखण्ड धारण करके वे भटकते ही रहते हैं और इसी कारण द्वैतभाव में दुःख ही भोगते हैं।

ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਸਭੁ ਮੋਹੁ ਹੈ ਨਾਮੁ ਨ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥
ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ सभी मोह ही हैं और उसके कारण मन में आकर नाम का निवास नहीं होता।

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਵੈ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ ॥
गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥
गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है और अज्ञान का अन्धेरा नष्ट हो जाता है।

ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਘਰਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਆ ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥੧॥
नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥१॥
हे नानक ! हमारे हृदय-घर में ही नाम-रत्न प्रगट हो गया है और मन सहज ही समा गया है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਓ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੋ ਪਿਆਰੁ ॥
सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥
जिस व्यक्ति को गुरु के शब्द का आनंद प्राप्त नहीं होता, भगवान के नाम से प्रेम नहीं लगाता,

ਰਸਨਾ ਫਿਕਾ ਬੋਲਣਾ ਨਿਤ ਨਿਤ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥
वह अपनी जीभ से कड़वा ही बोलता है और दिन-प्रतिदिन ख्वार होता रहता है।

ਨਾਨਕ ਕਿਰਤਿ ਪਇਐ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੨॥
नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥
हे नानक ! ऐसा व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के (शुभाशुभ) कर्मों के अनुसार ही कर्म करता है और उन्हें कोई भी मिटा नहीं सकता॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਕਉ ਸਾਂਤਿ ਆਈ ॥
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई ॥
हमारा सत्यपुरुष सतगुरु धन्य है, जिसे मिलने से हमें शांति प्राप्त हुई है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਹਮ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਪਾਈ ॥
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥
हमारा वह सत्यपुरुष सतगुरु धन्य है, जिसके साथ भेंट करने से हमें हरि-भक्ति प्राप्त हुई है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ਜਿਸ ਕੀ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਮ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥
धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥
हमारा हरि का भक्त सतगुरु धन्य है, जिसकी सेवा करने से हमने हरि के नाम में सुरति लगाई है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਹਰਿ ਗਿਆਨੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਮਾਰਾ ਜਿਨਿ ਵੈਰੀ ਮਿਤ੍ਰ ਹਮ ਕਉ ਸਭ ਸਮ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਦਿਖਾਈ ॥
धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम द्रिसटि दिखाई ॥
हरि का ज्ञानवान हमारा सतिगुरु धन्य है, जिसने हमें समदृष्टि से सभी शत्रु एवं मित्र दिखा दिए हैं।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਤ੍ਰੁ ਹਮਾਰਾ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਉ ਹਮਾਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਣਾਈ ॥੧੯॥
धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥१९॥
हमारा मित्र सतिगुरु धन्य है, जिसने हरि के नाम से हमारी प्रीति बनाई है।॥१९॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਘਰ ਹੀ ਮੁੰਧਿ ਵਿਦੇਸਿ ਪਿਰੁ ਨਿਤ ਝੂਰੇ ਸੰਮ੍ਹਾਲੇ ॥
घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे सम्हाले ॥
जीव-स्त्री अपने घर में ही है लेकिन उसका पति - परमेश्वर विदेश में है और वह नित्य ही पति की याद में मुरझाती जा रही है

ਮਿਲਦਿਆ ਢਿਲ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਨੀਅਤਿ ਰਾਸਿ ਕਰੇ ॥੧॥
मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥१॥
लेकिन अगर वह अपनी नियत शुद्ध कर ले तो पति-परमेश्वर के मिलन में बिल्कुल देर नहीं होगी॥ १ ॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਨਾਨਕ ਗਾਲੀ ਕੂੜੀਆ ਬਾਝੁ ਪਰੀਤਿ ਕਰੇਇ ॥
नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ ॥
गुरु नानक देव जी का कथन है कि प्रभु से प्रीति किए बिना अन्य समस्त बातें निरर्थक एवं झूठी हैं।

ਤਿਚਰੁ ਜਾਣੈ ਭਲਾ ਕਰਿ ਜਿਚਰੁ ਲੇਵੈ ਦੇਇ ॥੨॥
तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥२॥
जब तक वह देता जाता है तो जीव लिए जाता है और तब तक ही जीव प्रभु को भला समझता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਜਿਨਿ ਉਪਾਏ ਜੀਅ ਤਿਨਿ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ॥
जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥
जिस परमात्मा ने जीव उत्पन्न किए हैं, वही उनकी रक्षा करता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਚਾ ਨਾਉ ਭੋਜਨੁ ਚਾਖਿਆ ॥
अम्रितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥
मैंने तो हरि के अमृत स्वरूप सत्य-नाम का ही भोजन चखा है।

ਤਿਪਤਿ ਰਹੇ ਆਘਾਇ ਮਿਟੀ ਭਭਾਖਿਆ ॥
तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥
अब मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ तथा मेरी भोजन की अभिलाषा मिट गई है।

ਸਭ ਅੰਦਰਿ ਇਕੁ ਵਰਤੈ ਕਿਨੈ ਵਿਰਲੈ ਲਾਖਿਆ ॥
सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥
सभी के हृदय में एक ईश्वर ही मौजूद है तथा इस तथ्य का किसी विरले को ही ज्ञान प्राप्त हुआ है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਭਏ ਨਿਹਾਲੁ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਪਾਖਿਆ ॥੨੦॥
जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥२०॥
नानक प्रभु की शरण लेकर निहाल हो गया है।॥२०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਸਭੁ ਕੋ ਵੇਖਦਾ ਜੇਤਾ ਜਗਤੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥
परमात्मा ने जितना भी जगत-संसार बनाया है, जगत के सारे प्राणी सतिगुरु के दर्शन करते हैं।

ਡਿਠੈ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜਿਚਰੁ ਸਬਦਿ ਨ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥
परन्तु गुरु के दर्शनों से प्राणी को तब तक मोक्ष नहीं मिलता, जब तक वह शब्द पर विचार नहीं करता,"
ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਨ ਚੁਕਈ ਨਾਮਿ ਨ ਲਗੈ ਪਿਆਰੁ ॥
हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥
(जब तक) उसकी अहंकार की मैल दूर नहीं होती और न ही भगवान के नाम से प्रेम होता है।

ਇਕਿ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇਅਨੁ ਦੁਬਿਧਾ ਤਜਿ ਵਿਕਾਰ ॥
इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥
कुछ प्राणियों को तो भगवान क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है, जो दुविधा एवं विकार त्याग देते हैं।

ਨਾਨਕ ਇਕਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਮਰਿ ਮਿਲੇ ਸਤਿਗੁਰ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੧॥
नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥१॥
हे नानक ! कुछ लोग स्नेह, प्यार के कारण सतिगुरु के दर्शन करके अपने आहत्व को मार कर सत्य से मिल जाते हैं।१ ।।

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਨ ਸੇਵਿਓ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਗਵਾਰਿ ॥
सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि ॥
मूर्ख, अन्धा एवं गंवार व्यक्ति सतगुरु की सेवा नहीं करता।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਜਲਤਾ ਕਰੇ ਪੁਕਾਰ ॥
दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥
द्वैतभाव के कारण वह बहुत दु:ख भोगता है और दु:ख में जलता हुआ बहुत चिल्लाता है।

ਜਿਨ ਕਾਰਣਿ ਗੁਰੂ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੇ ਨ ਉਪਕਰੇ ਅੰਤੀ ਵਾਰ ॥
जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥
जिस दुनिया के मोह एवं पारिवारिक स्नेह के कारण वह गुरु को भुला देता है, वह भी अन्त में उस पर उपकार नहीं करते।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮਤੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਬਖਸੇ ਬਖਸਣਹਾਰ ॥੨॥
नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥२॥
हे नानक ! गुरु के उपदेश द्वारा ही सुख प्राप्त होता है और क्षमावान परमात्मा क्षमा कर देता है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਤੂ ਆਪੇ ਆਪਿ ਆਪਿ ਸਭੁ ਕਰਤਾ ਕੋਈ ਦੂਜਾ ਹੋਇ ਸੁ ਅਵਰੋ ਕਹੀਐ ॥

तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥

हे ईश्वर ! तू स्वयं ही सबका रचयिता है, यदि कोई दूसरा होता तो ही मैं उसका जिक्र करता।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਬੋਲੈ ਆਪਿ ਬੁਲਾਵੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਜਲਿ ਥਲਿ ਰਵਿ ਰਹੀਐ ॥

हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥

परमात्मा स्वयं ही बोलता है, स्वयं ही हम से बुलवाता है और वह स्वयं ही समुद्र एवं धरती में मौजूद है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਮਾਰੈ ਹਰਿ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਮਨ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਪੜਿ ਰਹੀਐ ॥

हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥

परमेश्वर स्वयं ही नाश करता है और स्वयं ही मुक्ति प्रदान करता है। हे मन ! इसलिए परमेश्वर की शरण में पड़े रहना चाहिए।

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕੋਈ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਿ ਨ ਸਕੈ ਮਨ ਹੋਇ ਨਿਚਿੰਦ ਨਿਸਲੁ ਹੋਇ ਰਹੀਐ ॥

हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥

हे मेरे मन ! हमें तो परमेश्वर के सिवाय कोई मार अथवा जीवित नहीं कर सकता, इसलिए हमें निश्चिन्त एवं निडर होकर रहना चाहिए।

ਉਠਦਿਆ ਬਹਦਿਆ ਸੁਤਿਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਲਹੀਐ ॥੨੧॥੧॥ ਸੁਧੁ

उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥२१॥१॥ सुधु

उठते-बैठते एवं सोते वक्त सदा हरि-नाम का ध्यान करते रहना चाहिए। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में ही परमेश्वर मिलता है।॥२१॥१॥ शुद्ध।

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ईश्वर एक है, उसका नाम सदैव सत्य है, वह जगत का रचयिता है, सर्वशक्तिमान है, निर्भय है, उसका किसी से कोई वैर नहीं, वह मायातीत अमर है, जन्म-मरण के चक्र से परे है, स्वयंभू है, जो गुरु की बख्शिश से ही मिलता है।

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ ॥
ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ ॥
सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥

ਸਭਨਾ ਮਰਣਾ ਆਇਆ ਵੇਛੋੜਾ ਸਭਨਾਹ ॥
ਸਭਨਾ ਮਰਣਾ ਆਇਆ ਵੇਛੋੜਾ ਸਭਨਾਹ ॥
दुनिया में जो भी आया है, सभी के लिए मृत्यु अटल है और सभी ने अपनों से जुदा होना है।

ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ਸਿਆਣਿਆ ਆਗੈ ਮਿਲਣੁ ਕਿਨਾਹ ॥
ਪੁਛਹੁ ਜਾਇ ਸਿਆਣਿਆ ਆਗੈ ਮਿਲਣੁ ਕਿਨਾਹ ॥
चाहे जाकर विद्वानों से इस बारे पूछ लो कि आगे जाकर प्राणियों का (प्रभु से) मिलाप होगा अथवा नहीं।

ਜਿਨ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵੀਸਰੈ ਵਡੜੀ ਵੇਦਨ ਤਿਨਾਹ ॥੧॥
ਜਿਨ ਮੇਰਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵੀਸਰੈ ਵਡੜੀ ਵੇਦਨ ਤਿਨਾਹ ॥੧॥
जो मेरे मालिक को भुला देते हैं, उन लोगों को बड़ी वेदना होती है॥ १ ॥

ਭੀ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
ਭੀ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
इसलिए हमेशा ही उस परम-सत्य परमेश्वर की स्तुति करो,

ਜਾ ਕੀ ਨਦਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ਜਾ ਕੀ ਨਦਰਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसकी कृपा-दृष्टि से सदा सुख मिलता है॥ रहाउ ॥

ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਸੋਇ ॥
ਵਡਾ ਕਰਿ ਸਾਲਾਹਣਾ ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਸੋਇ ॥
उस परमेश्वर को महान् समझकर उसका स्तुतिगान करो चूंकि वह वर्तमान में भी स्थित है और भविष्य में भी मौजूद रहेगा।

ਸਭਨਾ ਦਾਤਾ ਏਕੁ ਤੂ ਮਾਣਸ ਦਾਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥

सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥

हे परमेश्वर ! एक तू ही सभी जीवों का दाता है और मनुष्य तो तिल मात्र भी कोई देन नहीं दे सकता।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਥੀਐ ਰੰਨ ਕਿ ਰੁੰਨੈ ਹੋਇ ॥੨॥

जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥२॥

जो कुछ उस प्रभु को मंजूर है, वही होता है, औरतों की तरह फूट फूट कर अश्रु बहाने से क्या उपलब्ध हो सकता है ? ॥२॥

ਧਰਤੀ ਉਪਰਿ ਕੋਟ ਗੜ ਕੇਤੀ ਗਈ ਵਜਾਇ ॥

धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥

इस धरती में कितने ही लोग करोड़ों दुर्ग निर्मित करके, (राज का) ढोल बजाकर कूच कर गए हैं।

ਜੋ ਅਸਮਾਨਿ ਨ ਮਾਵਨੀ ਤਿਨ ਨਕਿ ਨਥਾ ਪਾਇ ॥

जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥

जो लोग अभिमान में आकर आसमान में फूले हुए भी समाते नहीं थे, उनकी नाक में परमात्मा ने नुकेल डाल दी है अर्थात् उनका अभिमान चूर-चूर कर दिया है।

ਜੇ ਮਨ ਜਾਣਹਿ ਸੂਲੀਆ ਕਾਹੇ ਮਿਠਾ ਖਾਹਿ ॥੩॥

जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥३॥

हे मन ! यद्यपि तुझे यह बोध हो जाए कि संसार के सारे विलास सूली चढ़ने के बराबर कष्टदायक हैं तो फिर तू क्यों विषय-विकारों को मीठा समझते हुए ग्रहण करे॥ ३ ॥

ਨਾਨਕ ਅਉਗੁਣ ਜੇਤੜੇ ਤੇਤੇ ਗਲੀ ਜੰਜੀਰ ॥

नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥

गुरु नानक देव जी का कथन है कि ये जितने भी अवगुण हैं, उतनी ही मनुष्य की गर्दन में अवगुणों की जंजीरें पड़ी हुई हैं।

ਜੇ ਗੁਣ ਹੋਨਿ ਤ ਕਟੀਅਨਿ ਸੇ ਭਾਈ ਸੇ ਵੀਰ ॥

जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥

यदि उसके पास गुण हों तो ही उसकी जंजीरो को कटा जा सकता है।इस तरह गुण ही सबके मित्र एवं भाई है।

ਅਗੈ ਗਏ ਨ ਮੰਨੀਅਨਿ ਮਾਰਿ ਕਢਹੁ ਵੇਪੀਰ ॥੪॥੧॥

अगै गए न मंनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥४॥१॥

अवगुणों से भरे हुए हुए वे गुरु-विहीन आगे परलोक में जाकर स्वीकृत नहीं होते और उन्हें मार-मार कर वहाँ से निकाल दिया जाता है|॥४॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ॥

सोरठि महला १ घरु १ ॥

सोरठि महला १ घरु १ ॥

ਮਨੁ ਹਾਲੀ ਕਿਰਸਾਣੀ ਕਰਣੀ ਸਰਮੁ ਪਾਣੀ ਤਨੁ ਖੇਤੁ ॥

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥

अपने मन को कृषक, शुभ आचरण को कृषि, श्रम को जल एवं अपने तन को खेत बना।

ਨਾਮੁ ਬੀਜੁ ਸੰਤੋਖੁ ਸੁਹਾਗਾ ਰਖੁ ਗਰੀਬੀ ਵੇਸੁ ॥

नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥

"(प्रभु का) नाम तेरा बीज, संतोष भूमि समतल करने वाला सोहागा एवं नम्रता का पहनावा तेरी बाड़ हो।

ਭਾਉ ਕਰਮ ਕਰਿ ਜੰਮਸੀ ਸੇ ਘਰ ਭਾਗਠ ਦੇਖੁ ॥੧॥

भाउ करम करि जमसी से घर भागठ देखु ॥१॥

इस तरह प्रेम के कर्म करने से तेरा बीज अंकुरित हो जाएगा और तब तू ऐसे घर को भाग्यशाली होता देखेगा। ॥१॥

ਬਾਬਾ ਮਾਇਆ ਸਾਥਿ ਨ ਹੋਇ ॥

बाबा माइआ साथि न होइ ॥

हे बाबा ! माया मनुष्य के साथ नहीं जाती।

ਇਨਿ ਮਾਇਆ ਜਗੁ ਮੋਹਿਆ ਵਿਰਲਾ ਬੂਝੈ ਕੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥

इस माया ने तो सारी दुनिया को ही मोहित कर लिया है लेकिन कोई विरला पुरुष ही इस तथ्य को समझता है ॥ रहाउ ॥

ਹਾਣੁ ਹਟੁ ਕਰਿ ਆਰਜਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਵਥੁ ॥

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥

नित्य क्षीण होने वाली आयु को अपनी दुकान बना और उसमें सत्य-नाम को अपना सौदा बना।

ਸੁਰਤਿ ਸੋਚ ਕਰਿ ਭਾਂਡਸਾਲ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਤਿਸ ਨੋ ਰਖੁ ॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥
सुरति एवं चिंतन को अपना माल-गोदाम बना और उस माल-गोदाम में तू उस सत्य नाम को रख।

ਵਣਜਾਰਿਆ ਸਿਉ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਲੈ ਲਾਹਾ ਮਨ ਹਸੁ ॥੨॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥२॥
प्रभु नाम के व्यापारियों से व्यापार कर और लाभ प्राप्त करके अपने मन में सुप्रसन्न हो ॥ २ ॥

ਸੁਣਿ ਸਾਸਤ ਸਉਦਾਗਰੀ ਸਤੁ ਘੋੜੇ ਲੈ ਚਲੁ ॥
सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥
शास्त्रों को सुनना तेरी सौदागिरी हो एवं सत्य नाम रूपी घोड़े माल बेचने के लिए ले चल।

ਖਰਚੁ ਬੰਨੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਮਤੁ ਮਨ ਜਾਣਹਿ ਕਲੁ ॥
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥
अपने गुणों को यात्रा का खर्च बना ले और अपने मन में आने वाली सुबह का ख्याल मत कर।

ਨਿਰੰਕਾਰ ਕੈ ਦੇਸਿ ਜਾਹਿ ਤਾ ਸੁਖਿ ਲਹਹਿ ਮਹਲੁ ॥੩॥
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥३॥
जब तू निराकार प्रभु के देश में जाएगा तो तुझे उसके महल में सुख प्राप्त होगा। ॥ ३ ॥

ਲਾਇ ਚਿਤੁ ਕਰਿ ਚਾਕਰੀ ਮੰਨਿ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਕੰਮੁ ॥
लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कमु ॥
चित लगाकर अपनी प्रभु-भक्ति रूपी नौकरी कर और मन में ही नाम-सिमरन का काम कर।

ਬੰਨੁ ਬਦੀਆ ਕਰਿ ਧਾਵਣੀ ਤਾ ਕੋ ਆਖੈ ਧੰਨੁ ॥
बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥
बुराइयों की रोकथाम को अपना उद्यम बना तो ही लोग तुझे धन्य कहेंगे।

ਨਾਨਕ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਚੜੈ ਚਵਗਣ ਵੰਨੁ ॥੪॥੨॥
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥४॥२॥
हे नानक ! तब ही प्रभु तुझे कृपा-दृष्टि से देखेगा और तुझ पर चौगुना रूप रंग चढ़ जाएगा। ॥४॥२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੧ ਚਉਤੁਕੇ ॥
सोरठि मः १ चउतुके ॥
सोरठि मः १ चउतुके ॥

ਮਾਇ ਬਾਪ ਕੋ ਬੇਟਾ ਨੀਕਾ ਸਸੁਰੈ ਚਤੁਰੁ ਜਵਾਈ ॥
माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥
माता-पिता को अपना बेटा एवं ससुर को अपना चतुर दामाद बहुत प्रिय है।

ਬਾਲ ਕੰਨਿਆ ਕੌ ਬਾਪੁ ਪਿਆਰਾ ਭਾਈ ਕੌ ਅਤਿ ਭਾਈ ॥
बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥
बाल कन्या को अपना पिता बहुत प्यारा है तथा भाई को अपना भाई अच्छा लगता है।

ਹੁਕਮੁ ਭਇਆ ਬਾਹਰੁ ਘਰੁ ਛੋਡਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਈ ਪਰਾਈ ॥
हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥
लेकिन परमात्मा का हुक्म होने पर (मृत्यु का निमंत्रण आने पर) प्राणी ने घर-बाहर हरेक को त्याग दिया और एक क्षण में ही सब कुछ पराया हो गया है।

ਨਾਮੁ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਨ ਮਨਮੁਖਿ ਤਿਤੁ ਤਨਿ ਧੂੜਿ ਧੁਮਾਈ ॥੧॥
नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥१॥
मनमुख मनुष्य ने भगवान के नाम का सिमरन नहीं किया, न ही दान-पुण्य किया है, न ही स्नान को महत्व दिया है, जिसके फलस्वरूप उसका शरीर धूल में ही फिरता रहता है अर्थात् नष्ट ही होता रहता है॥ १ ॥

ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ॥
मनु मानिआ नामु सखाई ॥
मेरा मन भगवान के नाम को सहायक बनाकर सुखी हो गया है।

ਪਾਇ ਪਰਉ ਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਿਨਿ ਸਾਚੀ ਬੂਝ ਬੁਝਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥
मैं उस गुरु के चरण छूकर उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे सच्ची सूझ-सुमति दी है॥ रहाउ ॥

ਜਗ ਸਿਉ ਝੂਠ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਜਨ ਸਿਉ ਵਾਦੁ ਰਚਾਈ ॥
जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥
मनमुख मनुष्य दुनिया के झूठे प्रेम से बंधा हुआ है और भक्तजनों के साथ वाद-विवाद में क्रियाशील रहता है।

ਮਾਇਆ ਮਗਨੁ ਅਹਿਨਿਸਿ ਮਗੁ ਜੋਹੈ ਨਾਮੁ ਨ ਲੇਵੈ ਮਰੈ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥
माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥
माया में मग्न हुआ वह दिन-रात्रि केवल माया का मार्ग ही देखता रहता है तथा भगवान का नाम नहीं लेता और माया रूपी विष खाकर प्राण त्याग देता है।

ਗੰਧਣ ਵੈਣਿ ਰਤਾ ਹਿਤਕਾਰੀ ਸਬਦੈ ਸੁਰਤਿ ਨ ਆਈ ॥
गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥
वह अभद्र बातों में ही मस्त रहता है और हितकारी शब्द की ओर ध्यान नहीं लगाता।

ਰੰਗਿ ਨ ਰਾਤਾ ਰਸਿ ਨਹੀ ਬੇਧਿਆ ਮਨਮੁਖਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥੨॥
रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥२॥
न ही वह भगवान के रंग में रंगा है, न ही वह नाम के रस से बिंधा गया है। इस तरह मनमुख अपनी इज्जत गंवा देता है। ॥२॥

ਸਾਧ ਸਭਾ ਮਹਿ ਸਹਜੁ ਨ ਚਾਖਿਆ ਜਿਹਬਾ ਰਸੁ ਨਹੀ ਰਾਈ ॥
साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥
साधुओं की सभा में वह सहजावस्था को नहीं चखता और उसकी जिव्हा में कण-मात्र भी मधुरता नहीं।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਧਨੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ਦਰ ਕੀ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈ ॥
मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥
वह मन, तन एवं धन को अपना मानकर जानता है लेकिन भगवान के दरबार का उसे कोई ज्ञान नहीं।

ਅਖੀ ਮੀਟਿ ਚਲਿਆ ਅੰਧਿਆਰਾ ਘਰੁ ਦਰੁ ਦਿਸੈ ਨ ਭਾਈ ॥
अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥
हे भाई! ऐसा मनुष्य अपनी आँखें बन्द करके अज्ञानता के अन्धेरे में चल देता है और उसे अपना घर द्वार दिखाई नहीं देता।

ਜਮ ਦਰਿ ਬਾਧਾ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵੈ ਅਪੁਨਾ ਕੀਆ ਕਮਾਈ ॥੩॥
जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥३॥
मृत्यु के द्वार पर उस बंधे हुए मनुष्य को कोई ठिकाना नहीं मिलता और वह अपने किए हुए कर्मों का फल भोगता है।॥३॥

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਅਖੀ ਵੇਖਾ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥
यद्यपि भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही मैं अपनी आँखों से उसके दर्शन कर सकता हूँ, जिसका कथन एवं वर्णन नहीं किया जा सकता।

ਕੰਨੀ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਿਦੈ ਵਸਾਈ ॥
कंनी सुणि सुणि सबदि सलाही अम्रितु रिदै वसाई ॥
अपने कानों से मैं भगवान की महिमा सुन-सुनकर शब्द द्वारा उसकी स्तुति करता हूँ और उसका अमृत नाम मैंने अपने हृदय में बसाया है।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਨਿਰਵੈਰੁ ਪੂਰਨ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥
निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥
निर्भीक, निराकार, निरवैर प्रभु की पूर्ण ज्योति सारे जगत में समाई हुई है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਵਿਣੁ ਭਰਮੁ ਨ ਭਾਗੈ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੩॥
नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥४॥३॥
हे नानक ! गुरु के बिना मन का भ्रम दूर नहीं होता और सत्य-नाम से ही प्रशंसा प्राप्त होती है।॥४॥३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਦੁਤੁਕੇ ॥
सोरठि महला १ दुतुके ॥
सोरठि महला १ दुतुके ॥

ਪੁੜੁ ਧਰਤੀ ਪੁੜੁ ਪਾਣੀ ਆਸਣੁ ਚਾਰਿ ਕੁੰਟ ਚਉਬਾਰਾ ॥
पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥
हे ईश्वर ! यह जगत रूपी चौबारा तेरा निवास स्थान है। चारों दिशाएँ इस चौबारें की दीवारें हैं, इसका एक पाट धरती है और एक पाट पानी है।

ਸਗਲ ਭਵਣ ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਏਕਾ ਮੁਖਿ ਤੇਰੈ ਟਕਸਾਲਾ ॥੧॥

सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥१॥

तेरे मुँह से उच्चरित हुआ शब्द ही एक टकसाल है, जिसमें सब भवनों के जीवों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। १ ।

ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਤੇਰੇ ਚੋਜ ਵਿਡਾਣਾ ॥

मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥

हे मेरे मालिक ! तेरी लीलाएँ बड़ी अद्भुत हैं।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਭਰਿਪੁਰਿ ਲੀਣਾ ਆਪੇ ਸਰਬ ਸਮਾਣਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥

तू समुद्र, धरती एवं गगन में भरपूर होकर स्वयं ही सब में समाया हुआ है॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ਤੇਰਾ ਰੂਪੁ ਕਿਨੇਹਾ ॥

जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥

जहाँ-जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ तुम्हारी ही ज्योति विद्यमान है। तेरा रूप कैसा है?"

ਇਕਤੁ ਰੂਪਿ ਫਿਰਹਿ ਪਰਛੰਨਾ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਜੇਹਾ ॥੨॥

इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किस ही जेहा ॥२॥

तेरा एक ही रूप कितना विलक्षण है और तू गुप्त तौर पर सबमें भ्रमण करता है। तेरी रचना में कोई भी जीव किसी एक जैसा नहीं।२ ।

ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਭੁਜ ਸੇਤਜ ਤੇਰੇ ਕੀਤੇ ਜੰਤਾ ॥

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥

अण्डज, जेरज, उद्धृभिज और स्वदेज से पैदा हुए समस्त जीव तूने ही पैदा किए हैं।

ਏਕੁ ਪੁਰਬੁ ਮੈ ਤੇਰਾ ਦੇਖਿਆ ਤੂ ਸਭਨਾ ਮਾਹਿ ਰਵੰਤਾ ॥੩॥

एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥३॥

मैंने तेरी एक विचित्र लीला देखी है कि तू सब जीवों में व्यापक है।३॥

ਤੇਰੇ ਗੁਣ ਬਹੁਤੇ ਮੈ ਏਕੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਮੈ ਮੂਰਖ ਕਿਛੁ ਦੀਜੈ ॥

तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥

हे भगवान ! तेरे गुण अनन्त हैं परन्तु मैं तो तेरे एक गुण को भी नहीं जानता, मुझ मूर्ख को कुछ सद्बुद्धि दीजिए।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕ ਸੁਣਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਡੁਬਦਾ ਪਥਰੁ ਲੀਜੈ ॥੪॥੪॥
प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥४॥४॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे मालिक ! सुनो, मुझ डूबते हुए पत्थर को बचा लीजिए। ॥४॥४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਹਉ ਪਾਪੀ ਪਤਿਤੁ ਪਰਮ ਪਾਖੰਡੀ ਤੂ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ॥
हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥
हे मालिक ! मैं बड़ा पापी, पतित एवं परम पाखंडी हूँ, पर तू निर्मल और निराकार है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਚਾਖਿ ਪਰਮ ਰਸਿ ਰਾਤੇ ਠਾਕੁਰ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥
अम्रितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥१॥
हे ठाकुर जी ! मैं तुम्हारी शरण में हूँ और नामामृत को चख कर मैं परम-रस में मग्न रहता हूँ॥ १ ॥

ਕਰਤਾ ਤੂ ਮੈ ਮਾਣੁ ਨਿਮਾਣੇ ॥
करता तू मै माणु निमाणे ॥
हे कर्ता प्रभु! मुझ दीन-तुच्छ का तू ही मान-सम्मान है।

ਮਾਣੁ ਮਹਤੁ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਲੈ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥
जिनके दामन में भगवान का नाम रूपी धन है, उनका आदर सत्कार है और वे सच्चे शब्द में लीन रहते है॥ रहाउ ॥

ਤੂ ਪੂਰਾ ਹਮ ਊਰੇ ਹੋਛੇ ਤੂ ਗਉਰਾ ਹਮ ਹਉਰੇ ॥
तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥
हे स्वामी ! तू परिपूर्ण है और हम अधूरे तथा अयोग्य हैं। तू गंभीर है और हम बड़े हल्के हैं।

ਤੁਝ ਹੀ ਮਨ ਰਾਤੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਪਰਭਾਤੇ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਜਪਿ ਮਨ ਰੇ ॥੨॥
तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥२॥
मेरा मन दिन-रात प्रभातकाल तुझ में ही मग्न रहता है। हे मन ! अपनी रसना से हरि का जाप करो ॥ २॥

ਤੁਮ ਸਾਚੇ ਹਮ ਤੁਮ ਹੀ ਰਾਚੇ ਸਬਦਿ ਭੇਦਿ ਫੁਨਿ ਸਾਚੇ ॥
तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥
हे भगवान ! तुम सत्य हो और हम तुझ में मग्न हैं और तेरे शब्द के भेद को समझकर सत्यवादी बन गए हैं।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੇ ਸੂਚੇ ਮਰਿ ਜਨਮੇ ਸੇ ਕਾਚੇ ॥੩॥
अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥३॥
जो लोग रात-दिन भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे शुद्ध हैं लेकिन जो दुनिया में जन्मते-मरते रहते हैं, वे कच्चे हैं।॥३॥

ਅਵਰੁ ਨ ਦੀਸੈ ਕਿਸੁ ਸਾਲਾਹੀ ਤਿਸਹਿ ਸਰੀਕੁ ਨ ਕੋਈ ॥
अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥
मुझे तो मेरे भगवान जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, फिर मैं किसकी स्तुति करूं ? क्योंकि कोई भी उसका शरीक नहीं।

ਪ੍ਰਣਵਤਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸਾ ਗੁਰਮਤਿ ਜਾਨਿਆ ਸੋਈ ॥੪॥੫॥
प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥४॥५॥
नानक विनती करते हैं कि में प्रभु के दासों का दास हूँ और गुरु की मति द्वारा मैंने सत्य को जान लिया है।॥४॥५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਅਲਖ ਅਪਾਰ ਅਗੰਮ ਅਗੋਚਰ ਨਾ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਨ ਕਰਮਾ ॥
अलख अपार अगम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥
परमात्मा अलक्ष्य, अपार, अगम्य एवं अगोचर है, वह काल (मृत्यु) एवं प्रारब्ध से रहित है।

ਜਾਤਿ ਅਜਾਤਿ ਅਜੋਨੀ ਸੰਭਉ ਨਾ ਤਿਸੁ ਭਾਉ ਨ ਭਰਮਾ ॥੧॥
जाति अजाति अजोनी स्मभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥
उसकी कोई जाति नहीं, वह समस्त जातियों से दूर है, वह अयोनि एवं स्वयंभू है, उसे न कोई मोह-अभिलाषा है और न ही कोई भ्रम है ॥१॥

ਸਾਚੇ ਸਚਿਆਰ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥
मैं उस सच्चे सत्यशील परमात्मा पर कुर्बान जाता हूँ,

ਨਾ ਤਿਸੁ ਰੂਪ ਵਰਨੁ ਨਹੀ ਰੇਖਿਆ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥
न उसका कोई रूप है, न कोई वर्ण है और न ही कोई आकार है, वह तो सच्चे-शब्द के माध्यम से ही मालूम होता है। रहाउ॥

ਨਾ ਤਿਸੁ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਨਾ ਤਿਸੁ ਕਾਮੁ ਨ ਨਾਰੀ ॥
ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥
न ही उसकी कोई माता है, न ही कोई पिता है, न ही कोई पुत्र है और न ही कोई बंधु है, न ही उसमें कोई कामवासना है और न ही उसकी कोई नारी है।

ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨ ਅਪਰ ਪਰੰਪਰੁ ਸਗਲੀ ਜੋਤਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥
अकुल निरंजन अपर पर्मपरु सगली जोति तुमारी ॥२॥
हे परमात्मा ! तू अकुल, निरंजन एवं अपरम्पार है और तुम्हारी ज्योति सभी के भीतर मौजूद है।॥२॥

ਘਟ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਲੁਕਾਇਆ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ॥
घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥
प्रत्येक शरीर में ब्रह्म छिपा हुआ है, सभी के हृदय में उसकी ही ज्योति मौजूद है।

ਬਜਰ ਕਪਾਟ ਮੁਕਤੇ ਗੁਰਮਤੀ ਨਿਰਭੈ ਤਾੜੀ ਲਾਈ ॥੩॥
बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥३॥
गुरु के उपदेश से वज कपाट भी खुल जाते हैं और निर्भय प्रभु में सुरति लग जाती है।॥३॥

ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਕਾਲੁ ਸਿਰਿ ਜੰਤਾ ਵਸਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਸਬਾਈ ॥
जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥
परमात्मा ने जीवों की रचना करके उनके सिर पर मृत्यु खड़ी कर दी है और समस्त जीवों की जीवन-युक्ति अपने वश में रखी हुई है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਵਹਿ ਛੂਟਹਿ ਸਬਦੁ ਕਮਾਈ ॥੪॥
सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥
जो सतगुरु की सेवा करता है, उसे नाम-धन प्राप्त हो जाता है और शब्द की साधना से उसकी मुक्ति हो जाती है।॥४॥

ਸੂਚੈ ਭਾਡੈ ਸਾਚੁ ਸਮਾਵੈ ਵਿਰਲੇ ਸੂਚਾਚਾਰੀ ॥
सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥
काया रूपी शुद्ध बर्तन में ही सत्य समा सकता है तथा विरले इन्सान ही सदाचारी होते हैं।

ਤੰਤੈ ਕਉ ਪਰਮ ਤੰਤੁ ਮਿਲਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੫॥੬॥
तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥६॥
जीवात्मा को परमात्मा ने अपने साथ मिला लिया है, हे परमेश्वर ! नानक तो तुम्हारी ही शरण में आया है ॥५॥६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਜਿਉ ਮੀਨਾ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀਐ ਤਿਉ ਸਾਕਤੁ ਮਰੈ ਪਿਆਸ ॥
जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥
जैसे मछली जल के बिना तड़पती मर जाती है, वैसे ही शाक्त इन्सान माया की तृष्णा से प्राण त्याग देता है।

ਤਿਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਮਰੀਐ ਰੇ ਮਨਾ ਜੋ ਬਿਰਥਾ ਜਾਵੈ ਸਾਸੁ ॥੧॥
तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥१॥
हे मन ! यदि तेरा श्वास नाम-सिमरन के बिना व्यर्थ ही जाता है तो तुझे वैसे ही प्रभु के बिना मर जाना चाहिए ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਜਸੁ ਲੇਇ ॥
मन रे राम नाम जसु लेइ ॥
हे मन ! राम-नाम का यशगान करो।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਇਹੁ ਰਸੁ ਕਿਉ ਲਹਉ ਗੁਰੁ ਮੇਲੈ ਹਰਿ ਦੇਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥
लेकिन गुरु के बिना यह रस तुझे किस तरह मिल सकता है? क्योंकि गुरु के मिलने पर ही भगवान यह रस देता है ॥ रहाउ ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਮਿਲੁ ਸੰਗਤੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੀਰਥੁ ਹੋਇ ॥
संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥
संतजनों की सभा में सम्मिलित होना गुरु के सान्निध्य में रहना ही तीर्थ-स्थान होता है।

ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਮਜਨਾ ਗੁਰ ਦਰਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੨॥
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥२॥
गुरु के दर्शन करने से ही अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।॥२॥

ਜਿਉ ਜੋਗੀ ਜਤ ਬਾਹਰਾ ਤਪੁ ਨਾਹੀ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ॥
जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥
जैसे ब्रह्मचर्य धारण किए बिना योगी नहीं बना जा सकता तथा सत्य एवं संतोष को धारण किए बिना तपस्या नहीं हो सकती

ਤਿਉ ਨਾਮੈ ਬਿਨੁ ਦੇਹੁਰੀ ਜਮੁ ਮਾਰੈ ਅੰਤਰਿ ਦੋਖੁ ॥੩॥
तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥३॥
वैसे ही भगवान के नाम सिमरन शरीर बेकार है, शरीर के भीतर अनेक दोष होने के कारण यम उसे कठोर दण्ड देता है। ॥३ ॥

ਸਾਕਤ ਪ੍ਰੇਮੁ ਨ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥
साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥
शाक्त मनुष्य को प्रेम प्राप्त नहीं होता और सतगुरु के स्नेह से ही परमात्मा प्राप्त होता है।

ਸੁਖ ਦੁਖ ਦਾਤਾ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਿਫਤਿ ਸਮਾਇ ॥੪॥੭॥
सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥४॥७॥
नानक का कथन है कि जिसे सुख एवं दुःख का दाता गुरु मिल जाता है, वह प्रभु की स्तुति में लीन रहता है।॥४ ॥ ७ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਤੂ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤਾ ਦਾਨਿ ਮਤਿ ਪੂਰਾ ਹਮ ਥਾਰੇ ਭੇਖਾਰੀ ਜੀਉ ॥
तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥
हे प्रभु! तू दाता एवं दानशील है और बुद्धि से परिपूर्ण है, लेकिन हम तो तेरे भिखारी ही हैं।

ਮੈ ਕਿਆ ਮਾਗਉ ਕਿਛੁ ਥਿਰੁ ਨ ਰਹਾਈ ਹਰਿ ਦੀਜੈ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰੀ ਜੀਉ ॥੧॥

मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥

मैं तुझ से क्या माँगूँ? क्योंकि कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है अर्थात् प्रत्येक पदार्थ नश्वर है। इसलिए मुझे तो केवल अपना प्यारा हरि-नाम ही दीजिए।॥१॥

ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਬਨਵਾਰੀ ॥

घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥

प्रभु तो प्रत्येक हृदय में विद्यमान है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਗੁਪਤੋ ਵਰਤੈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਦੇਖਿ ਨਿਹਾਰੀ ਜੀਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥

जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥

वह समुद्र, धरती एवं गगन में गुप्त रूप से व्यापक है और गुरु के शब्द द्वारा उसके दर्शन करके कृतार्थ हुआ जा सकता है।॥ रहाउ ॥

ਮਰਤ ਪਇਆਲ ਅਕਾਸੁ ਦਿਖਾਇਓ ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਜੀਉ ॥

मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥

गुरु-सतगुरु ने कृपा करके मृत्युलोक, पाताल लोक एवं आकाश में उसके दर्शन करवा दिए हैं।

ਸੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਅਜੋਨੀ ਹੈ ਭੀ ਹੋਨੀ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਦੇਖੁ ਮੁਰਾਰੀ ਜੀਉ ॥੨॥

सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥२॥

वह अयोनि ब्रह्म वर्तमान में भी है और भविष्य में भी विद्यमान रहेगा। इसलिए अपने हृदय में ही मुरारि प्रभु के दर्शन करो ॥२॥

ਜਨਮ ਮਰਨ ਕਉ ਇਹੁ ਜਗੁ ਬਪੁੜੋ ਇਨਿ ਦੂਜੈ ਭਗਤਿ ਵਿਸਾਰੀ ਜੀਉ ॥
जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥
बेचारी यह दुनिया तो जन्म मरण के चक्र में ही पड़ी हुई है, चूंकि इसने द्वैतभाव में फंसकर प्रभु-भक्ति को ही भुला दिया है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਗੁਰਮਤਿ ਪਾਈਐ ਸਾਕਤ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ਜੀਉ ॥੩॥
सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥३॥
जब सतगुरु मिल जाता है तो ही ज्ञान प्राप्त होता है, किन्तु शाक्त मनुष्य ने भक्ति के बिना अपनी जीवन की बाजी हार दी है।॥३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਬੰਧਨ ਤੋੜਿ ਨਿਰਾਰੇ ਬਹੁੜਿ ਨ ਗਰਭ ਮਝਾਰੀ ਜੀਉ ॥
सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥
सतिगुरु ने मेरे बन्धन तोड़कर मुझे मुक्त कर दिया है और अब मैं गर्भ-योनि में नहीं आऊँगा।

ਨਾਨਕ ਗਿਆਨ ਰਤਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ਜੀਉ ॥੪॥੮॥
नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥४॥८॥
हे नानक ! अब मेरे हृदय में ज्ञान-रत्न का प्रकाश हो गया है और निराकार प्रभु ने मेरे मन में निवास कर लिया है।॥४॥८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਜਿਸੁ ਜਲ ਨਿਧਿ ਕਾਰਣਿ ਤੁਮ ਜਗਿ ਆਏ ਸੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਗੁਰ ਪਾਹੀ ਜੀਉ ॥
जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अम्रितु गुर पाही जीउ ॥
जिस नामामृत रूपी निधि हेतु तुम इस दुनिया में आए हो, वह नामामृत गुरु के पास है।

ਛੋਡਹੁ ਵੇਸੁ ਭੇਖ ਚਤੁਰਾਈ ਦੁਬਿਧਾ ਇਹੁ ਫਲੁ ਨਾਹੀ ਜੀਉ ॥੧॥
छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥१॥
धार्मिक वेष का पाखण्ड एवं चतुराई को छोड़ दो, चूंकि दुविधा में ग्रस्त इन्सान को यह (अमृत) फल प्राप्त नहीं होता ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਥਿਰੁ ਰਹੁ ਮਤੁ ਕਤ ਜਾਹੀ ਜੀਉ ॥
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥
हे मेरे मन ! तू स्थिर रह और इधर-उधर मत भटक।

ਬਾਹਰਿ ਢੂਢਤ ਬਹੁਤੁ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਘਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਘਟ ਮਾਹੀ ਜੀਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥
बाहर तलाश करने से बहुत दुःख-कष्ट प्राप्त होते हैं, यह अमृत तो देहि रूपी घर में ही है ॥ रहाउ ॥

ਅਵਗੁਣ ਛੋਡਿ ਗੁਣਾ ਕਉ ਧਾਵਹੁ ਕਰਿ ਅਵਗੁਣ ਪਛੁਤਾਹੀ ਜੀਉ ॥
अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥
अवगुण छोड़कर गुणों की तरफ दौड़ों अर्थात् गुण संग्रह करो, यदि अवगुणों में ही सक्रिय रहे तो बहुत पछताना पड़ेगा।

ਸਰ ਅਪਸਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਹਿ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਕੀਚ ਬੁਡਾਹੀ ਜੀਉ ॥੨॥
सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥२॥
तुम भले एवं बुरे के अन्तर को नहीं समझते और बार-बार पापों के कीचड़ में डूबते रहते हो ॥२॥

ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਲੋਭ ਬਹੁ ਝੂਠੇ ਬਾਹਰਿ ਨਾਵਹੁ ਕਾਹੀ ਜੀਉ ॥
अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥
यदि मन में लोभ की मैल तथा बहुत सारा झूठ है तो बाहर स्नान करने का क्या अभिप्राय है ?

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਸਦ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਤਾਹੀ ਜੀਉ ॥੩॥
निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥३॥
गुरु के उपदेश द्वारा हमेशा ही निर्मल नाम का जाप करो, तभी तेरे अन्तर्मन का कल्याण होगा ॥ ३ ॥

ਪਰਹਰਿ ਲੋਭੁ ਨਿੰਦਾ ਕੂੜੁ ਤਿਆਗਹੁ ਸਚੁ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਫਲੁ ਪਾਹੀ ਜੀਉ ॥
परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥
लोभ, निन्दा एवं झूठ को निकाल कर त्याग दो, गुरु के वचन द्वारा ही सच्चा फल मिल जाएगा।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖਹੁ ਹਰਿ ਜੀਉ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਜੀਉ ॥੪॥੯॥
जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥४॥९॥
हे हरि ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, नानक तो शब्द द्वारा तेरी ही स्तुति करता है।॥४॥९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਪੰਚਪਦੇ ॥
सोरठि महला १ पंचपदे ॥
सोरठि महला १ पंचपदे ॥

ਅਪਨਾ ਘਰੁ ਮੂਸਤ ਰਾਖਿ ਨ ਸਾਕਹਿ ਕੀ ਪਰ ਘਰੁ ਜੋਹਨ ਲਾਗਾ ॥

अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥

अपने लुटते जा रहे घर की तो तुम रक्षा नहीं कर सकते, फिर पराए घर की तरफ बुरी नीयत से क्यों देख रहे हो ?

ਘਰੁ ਦਰੁ ਰਾਖਹਿ ਜੇ ਰਸੁ ਚਾਖਹਿ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕੁ ਲਾਗਾ ॥੧॥

घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥१॥

अपने घर, द्वार की रक्षा तुम तभी कर सकोगे, यदि तुम प्रभु के नाम-रस को चखोगे, नाम-रस भी वही सेवक चखता है जो गुरुमुख बनकर नाम में लीन हो जाता है ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸਮਝੁ ਕਵਨ ਮਤਿ ਲਾਗਾ ॥

मन रे समझु कवन मति लागा ॥

हे मन ! तू स्वयं को समझा, किस खोटी बुद्धि में लग गए हो ?

ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਅਨ ਰਸ ਲੋਭਾਨੇ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਹਿ ਅਭਾਗਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥

भगवान के नाम को भुलाकर पराए रसों में आकर्षित हो रहे हो। हे भाग्यहीन ! अन्त में तुम बहुत पछताओगे ॥ रहाउ ॥

ਆਵਤ ਕਉ ਹਰਖ ਜਾਤ ਕਉ ਰੋਵਹਿ ਇਹੁ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਨਾਲੇ ਲਾਗਾ ॥

आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥

जब धन आता है तो तू बड़ा खुश होता है लेकिन जब धन चला जाता है तो तू फूट-फूट कर रोने लगता है। यह दु:ख तथा सुख तो साथ ही लगा रहता है।

ਆਪੇ ਦੁਖ ਸੁਖ ਭੋਗਿ ਭੋਗਾਵੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੋ ਅਨਰਾਗਾ ॥੨॥

आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥२॥

भगवान स्वयं ही मनुष्य से दु:ख एवं सुख के भोग करवाता रहता है। लेकिन गुरुमुख व्यक्ति इससे विरक्त रहता है ॥२॥

ਹਰਿ ਰਸ ਊਪਰਿ ਅਵਰੁ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਜਿਨਿ ਪੀਆ ਸੋ ਤ੍ਰਿਪਤਾਗਾ ॥

हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा ॥

हरि-रस से उत्तम कौन-सी वस्तु श्रेष्ठ कही जा सकती है, जो इस रस का पान करता है, वह तृप्त हो जाता है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿਤ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਰਸੁ ਖੋਇਆ ਜਾ ਸਾਕਤ ਦੁਰਮਤਿ ਲਾਗਾ ॥੩॥

माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥३॥

जिस व्यक्ति ने माया में मुग्ध होकर यह रस गंवा दिया है, ऐसा शाक्त व्यक्ति दुर्मति में ही लग गया है। ॥३॥

ਮਨ ਕਾ ਜੀਉ ਪਵਨਪਤਿ ਦੇਹੀ ਦੇਹੀ ਮਹਿ ਦੇਉ ਸਮਾਗਾ ॥
मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥
परमात्मा शरीर के भीतर ही समाया हुआ है। वह मन का जीवन आधार है और शरीर के प्राणों का स्वामी है।

ਜੇ ਤੂ ਦੇਹਿ ਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਗਾਈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥੪॥
जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिव लागा ॥४॥
हे हरि ! यद्यपि तू यह देन प्रदान करे तो ही मैं हरि रस की स्तुति कर सकता हूँ और मेरा मन भी तृप्त हो जाएगा तथा मेरी लगन तुझ में लग ज़ाएगी।॥४॥

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਹਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਜਮ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥
साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥
संतों की सभा में ही हरि-रस प्राप्त होता है और गुरु को मिलने से मृत्यु का भय दूर हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਪਾਏ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗਾ ॥੫॥੧੦॥
नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥५॥१०॥
हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में राम नाम का जाप करो, जिसके मस्तक पर भाग्य होता है, उसे परमात्मा मिल जाता है ॥५॥१०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਸਰਬ ਜੀਆ ਸਿਰਿ ਲੇਖੁ ਧੁਰਾਹੂ ਬਿਨੁ ਲੇਖੈ ਨਹੀ ਕੋਈ ਜੀਉ ॥
सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥
समस्त जीवों के माथे पर कर्मों के अनुसार विधाता ने नसीब (लेख) लिखा हुआ है और कोई भी नसीब (लेख) के बिना नहीं है।

ਆਪਿ ਅਲੇਖੁ ਕੁਦਰਤਿ ਕਰਿ ਦੇਖੈ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਏ ਸੋਈ ਜੀਉ ॥੧॥
आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥१॥
परन्तु वह स्वयं लेख से रहित है, अपनी कुदरत की रचना करके वह उसे देखता रहता है और स्वयं ही अपने हुक्म का जीवों से पालन करवाता है।॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਰਾਮ ਜਪਹੁ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
मन रे राम जपहु सुखु होई ॥
हे मेरे मन ! राम नाम का जाप करो तो ही तुझे सुख प्राप्त होगा।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਸਰੇਵਹੁ ਹਰਿ ਦਾਤਾ ਭੁਗਤਾ ਸੋਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥

अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥

दिन-रात्रि गुरु के चरणों की सेवा करो तो ही तुझे ज्ञान होगा कि परमेश्वर ही दाता है और स्वयं ही भोगने वाला है।॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਅੰਤਰਿ ਸੋ ਬਾਹਰਿ ਦੇਖਹੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ਜੀਉ ॥
जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥
जो प्रभु अन्तर्मन में ही मौजूद है, उसके बाहर भी दर्शन करो, क्योंकि उसके अलावा दूसरा कोई भी नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਕ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰਿ ਦੇਖਹੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਜੋਤਿ ਸਮੋਈ ਜੀਉ ॥੨॥
गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥२॥
गुरु के उपदेश से सभी को एक दृष्टि से देखो, क्योंकि प्रत्येक हृदय में प्रभु की ही ज्योति समाई हुई है।॥२॥

ਚਲਤੌ ਠਾਕਿ ਰਖਹੁ ਘਰਿ ਅਪਨੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਇਹ ਮਤਿ ਹੋਈ ਜੀਉ ॥
चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥
अपने चंचल मन पर अंकुश लगाकर उसे अपने हृदय-घर में रखो। गुरु को मिलने से ही यह सद्बुद्धि प्राप्त होती है।

ਦੇਖਿ ਅਦ੍ਰਿਸਟੁ ਰਹਉ ਬਿਸਮਾਦੀ ਦੁਖੁ ਬਿਸਰੈ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਜੀਉ ॥੩॥
देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥३॥
अदृश्य प्रभु के दर्शन करके तू आश्चर्यचकित हो जाएगा और अपने दु:खों को भुलाकर तुझे सुख प्राप्त हो जाएगा। ॥३॥

ਪੀਵਹੁ ਅਪਿਉ ਪਰਮ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸਾ ਹੋਈ ਜੀਉ ॥
पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥
नामामृत का पान करो, इसे पीने से परम सुख प्राप्त होगा और तुझे अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त हो जाएगा।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਭੰਜਨੁ ਗਾਈਐ ਪੁਨਰਪਿ ਜਨਮੁ ਨ ਹੋਈ ਜੀਉ ॥੪॥
जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥४॥
जन्म-मरण का दुख नाश करने वाले भगवान का गुणगान करने से तुझे बार-बार दुनिया में जन्म नहीं लेना पड़ेगा ॥४ ॥

ਤਤੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜੋਤਿ ਸਬਾਈ ਸੋਹੰ ਭੇਦੁ ਨ ਕੋਈ ਜੀਉ ॥
ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥
सृष्टि में परम तत्व, निरंजन प्रभु की ज्योति सबके भीतर समाई हुई है और वह परमात्मा ही सबकुछ है और उसमें कोई भी भेद नहीं।

ਅਪਰੰਪਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਮਿਲਿਆ ਸੋਈ ਜੀਉ ॥੫॥੧੧॥
अपर्मपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥५॥११॥
हे नानक ! अपरम्पार, परब्रह्म, परमेश्वर मुझे गुरु के रूप में मिल गया है।॥५॥११॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩
सोरठि महला १ घरु ३
सोरठि महला १ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਾ ਤਿਸੁ ਭਾਵਾ ਤਦ ਹੀ ਗਾਵਾ ॥
जा तिसु भावा तद ही गावा ॥
जब मैं उस भगवान को भला लगता हूँ तो ही उसका स्तुतिगान करता हूँ।

ਤਾ ਗਾਵੇ ਕਾ ਫਲੁ ਪਾਵਾ ॥
ता गावे का फलु पावा ॥
इस तरह मैं स्तुतिगान करने का फल प्राप्त करता हूँ।

ਗਾਵੇ ਕਾ ਫਲੁ ਹੋਈ ॥
गावे का फलु होई ॥
लेकिन उसका स्तुतिगान करने का फल भी तब ही मिलता है,

ਜਾ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਸੋਈ ॥੧॥
जा आपे देवै सोई ॥१॥
जब वह स्वयं देता है॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥
मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥
हे मेरे मन ! गुरु के उपदेश से नाम की निधि पा ली है,

ਤਾ ਤੇ ਸਚ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥
इसलिए अब मैं सत्य में समाया रहता हूँ॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਅੰਤਰਿ ਜਾਗੀ ॥
गुर साखी अंतरि जागी ॥
जब गुरु की शिक्षा मेरी अन्तरात्मा में जागी

ਤਾ ਚੰਚਲ ਮਤਿ ਤਿਆਗੀ ॥
ता चंचल मति तिआगी ॥
तो मैंने अपनी चंचल बुद्धि को त्याग दिया।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਕਾ ਉਜੀਆਰਾ ॥
गुर साखी का उजीआरा ॥
गुरु की शिक्षा का उजाला होने से

ਤਾ ਮਿਟਿਆ ਸਗਲ ਅੰਧਜਾਰਾ ॥੨॥
ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥२॥
सारा अज्ञानता का अन्धेरा मिट गया है॥ २॥

ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
गुर चरनी मनु लागा ॥
जब मेरा मन गुरु के चरणों में लग गया

ਤਾ ਜਮ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਭਾਗਾ ॥
ता जम का मारगु भागा ॥
तो मृत्यु का मार्ग मुझ से दूर हो गया है।

ਭੈ ਵਿਚਿ ਨਿਰਭਉ ਪਾਇਆ ॥
भै विचि निरभउ पाइआ ॥
प्रभु-भय में निर्भय (प्रभु) को पा लिया

ਤਾ ਸਹਜੈ ਕੈ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੩॥
ता सहजै कै घरि आइआ ॥३॥
तो सहज आनन्द के घर में आ गया।॥३॥

ਭਣਤਿ ਨਾਨਕੁ ਬੂਝੈ ਕੋ ਬੀਚਾਰੀ ॥
भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥
नानक का कथन है कि कोई विरला विचारवान ही जानता है कि

ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਕਰਣੀ ਸਾਰੀ ॥
इसु जग महि करणी सारी ॥
इस दुनिया में सर्वश्रेष्ठ कर्म प्रभु की स्तुति करनी है।

ਕਰਣੀ ਕੀਰਤਿ ਹੋਈ ॥
करणी कीरति होई ॥
उसकी महिमा स्तुति मेरा नित्य कर्म हो गया

ਜਾ ਆਪੇ ਮਿਲਿਆ ਸੋਈ ॥੪॥੧॥੧੨॥
जा आपे मिलिआ सोई ॥४॥१॥१२॥
जब वह प्रभु स्वयं ही मुझे मिल गया ॥४॥१॥१२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧
सोरठि महला ३ घरु १
सोरठि महला ३ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੇਵਕ ਸੇਵ ਕਰਹਿ ਸਭਿ ਤੇਰੀ ਜਿਨ ਸਬਦੈ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ॥
सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥
हे ठाकुर जी ! जिन्हें शब्द का स्वाद आया है, वे सारे सेवक तेरी ही सेवा करते हैं।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਜਿਨਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ॥
गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥
गुरु की कृपा से वह मनुष्य निर्मल हो गया है, जिसने अपने अन्तर से अहंकार को मिटा दिया है।

ਅਨਦਿਨੁ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ਨਿਤ ਸਾਚੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ॥੧॥
अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥१॥
वह रात-दिन नित्य ही सच्चे परमेश्वर का गुणानुवाद करता है और गुरु के शब्द से सुन्दर बन गया है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥
मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥
हे मेरे ठाकुर ! हम बालक तुम्हारी शरण में हैं।

ਏਕੋ ਸਚਾ ਸਚੁ ਤੂ ਕੇਵਲੁ ਆਪਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥
एक तू ही परम-सत्य है और केवल स्वयं ही सब कुछ है ॥ रहाउ ॥

ਜਾਗਤ ਰਹੇ ਤਿਨੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥
जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥
जो मोह-माया से जाग्रत रहे हैं, उन्होंने प्रभु को पा लिया है और शब्द के माध्यम से अपने अहंकार को मार दिया है।

ਗਿਰਹੀ ਮਹਿ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਨ ਉਦਾਸੀ ਗਿਆਨ ਤਤ ਬੀਚਾਰੀ ॥
गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥
हरि का सेवक गृहस्थ जीवन में ही सर्वदा निर्लिप्त रहता है और ज्ञान-तत्व पर चिंतन करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰੀ ॥੨॥
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धारी ॥२॥
सतिगुरु की सेवा करके वह सदा सुख प्राप्त करता है और परमेश्वर को अपने हृदय में लगाकर रखता है ॥२॥

ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਦਹ ਦਿਸਿ ਧਾਵਦਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇਆ ॥
इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥
यह (चंचल) मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है और इसे द्वैतभाव ने नष्ट कर दिया है।

ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥
मनमुख विमूढ़ व्यक्ति परमात्मा के नाम को स्मरण नहीं करता और अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਤਾ ਨਾਉ ਪਾਏ ਹਉਮੈ ਮੋਹੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੩॥
सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥३॥
लेकिन यदि उसकी सतिगुरु से भेंट हो जाए तो वह नाम प्राप्त कर लेता है, जिससे उसका अहंकार एवं मोह दूर हो जाते हैं।३॥

ਹਰਿ ਜਨ ਸਾਚੇ ਸਾਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ॥
हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥
हरि के सेवक सत्यशील हैं, वे सत्य की साधना करते हैं और गुरु के शब्द पर चिंतन करते हैं।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੁ ਰਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰੀ ॥
आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥
सच्चा प्रभु उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है और वे सत्य को अपने हृदय से लगाकर रखते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਵਹੁ ਗਤਿ ਮਤਿ ਪਾਈ ਏਹਾ ਰਾਸਿ ਹਮਾਰੀ ॥੪॥੧॥
नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥४॥१॥
हे नानक ! नाम के माध्यम से हमें गति एवं ज्ञान मिला है और यही हमारी पूँजी है ॥४॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਭਗਤਿ ਖਜਾਨਾ ਭਗਤਨ ਕਉ ਦੀਆ ਨਾਉ ਹਰਿ ਧਨੁ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥
भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥
परमात्मा ने अपनी भक्ति का खजाना भक्तों को दिया है और हरि का नाम ही उनका सच्चा धन है।

ਅਖੁਟੁ ਨਾਮ ਧਨੁ ਕਦੇ ਨਿਖੁਟੈ ਨਾਹੀ ਕਿਨੈ ਨ ਕੀਮਤਿ ਹੋਇ ॥
अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥
यह अक्षय नाम-धन कदापि खत्म नहीं होता और न ही इसका मूल्यांकन किया जा सकता है।

ਨਾਮ ਧਨਿ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਹੋਏ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਚੁ ਸੋਇ ॥੧॥
नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥
हरि के नाम-धन से भक्तजनों के मुख उज्ज्वल हो गए हैं और उन्हें सत्य स्वरूप हरि मिल गया है ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइ ॥
हे मेरे मन ! गुरु के शब्द द्वारा ही श्रीहरि पाया जाता है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਭੁਲਦਾ ਫਿਰਦਾ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥
यह दुनिया शब्द के बिना दुविधा में पड़कर भटकती ही रहती है और हरि के दरबार में कठोर दण्ड प्राप्त करती है ॥ रहाउ ॥

ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਅੰਦਰਿ ਪੰਚ ਚੋਰ ਵਸਹਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
इस शरीर के अन्दर पाँच चोर-कामवासना, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार निवास करते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਲੂਟਹਿ ਮਨਮੁਖ ਨਹੀ ਬੂਝਹਿ ਕੋਇ ਨ ਸੁਣੈ ਪੂਕਾਰਾ ॥
अम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥
वे नाम रूपी अमृत को लूटते रहते हैं, लेकिन मनमुख व्यक्ति इस तथ्य को नहीं समझते और कोई भी उनकी फरियाद नहीं सुनता।

ਅੰਧਾ ਜਗਤੁ ਅੰਧੁ ਵਰਤਾਰਾ ਬਾਝੁ ਗੁਰੂ ਗੁਬਾਰਾ ॥੨॥
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥
यह दुनिया अन्धी अर्थात् ज्ञानहीन है और इसके व्यवहार भी अन्धे हैं और गुरु के बिना घोर अन्धेरा है ॥२॥

ਹਉਮੈ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਵਿਗੁਤੇ ਕਿਹੁ ਚਲੈ ਨ ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ॥
हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥
अहंकार में मैं-मेरा करते हुए प्राणी पीड़ित होते रहते हैं किन्तु जब मृत्यु का समय आता है तो कुछ भी उनके साथ नहीं जाता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥
गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥
जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है वह नाम का ही ध्यान करता है और सदैव हरि-नाम की ही आराधना करता रहता है।

ਸਚੀ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿ ॥੩॥
सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥
वह सच्ची वाणी के द्वारा हरि का गुणगान करता है और करुणा के घर परमात्मा की करुणा-दृष्टि से कृतार्थ हो जाता है ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਸਦਾ ਘਟਿ ਚਾਨਣੁ ਅਮਰੁ ਸਿਰਿ ਬਾਦਿਸਾਹਾ ॥
सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥
सतगुरु का दिया हुआ ज्ञान हमेशा ही उसके हृदय को रोशन करता है और परमात्मा का हुक्म बादशाहों के सिर पर भी है।

ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਚੁ ਲਾਹਾ ॥
अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥
भक्त रात-दिन प्रभु की भक्ति करते रहते हैं और राम-नाम रूपी सच्चा लाभ प्राप्त करते हैं।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਹਰਿ ਪਾਹਾ ॥੪॥੨॥
नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥४॥२॥
हे नानक ! राम-नाम के फलस्वरूप ही मनुष्य की मुक्ति हो जाती है और शब्द में मग्न होने से हरि मिल जाता है।॥४॥२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੩ ॥
सोरठि मः ३ ॥
सोरठि मः ३ ॥

ਦਾਸਨਿ ਦਾਸੁ ਹੋਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਪਾਏ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ॥
दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥
यदि मनुष्य दासों का दास बन जाए तो उसे परमात्मा मिल जाता है और वह अपने मन से आत्माभिमान को गंवा देता है।

ਭਗਤਾ ਕਾ ਕਾਰਜੁ ਹਰਿ ਅਨੰਦੁ ਹੈ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥
भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥
भक्तों का मुख्य कार्य तो आनंद रूप श्रीहरि ही है, इसलिए वे रात-दिन हरि का ही गुणगान करते रहते हैं।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸਦਾ ਇਕ ਰੰਗੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੇ ਸਮਾਈ ॥੧॥
सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥१॥
शब्द के साथ मग्न हुए वे हमेशा एक ही रंग में लीन रहते हैं और हरि में समाए रहते हैं।॥१॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਾਚੀ ਨਦਰਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥
हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥
हे श्री हरि ! तुम्हारी कृपा-दृष्टि सच्ची है।

ਆਪਣਿਆ ਦਾਸਾ ਨੋ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਪਿਆਰੇ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਹਮਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥
हे प्यारे ! अपने सेवकों पर कृपा करो और हमारी लाज-प्रतिष्ठा भी बरकरार रखो॥ रहाउ॥

ਸਬਦਿ ਸਲਾਹੀ ਸਦਾ ਹਉ ਜੀਵਾ ਗੁਰਮਤੀ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥
सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥
शब्द द्वारा स्तुतिगान करने से मैं सदैव जीवित रहता हूँ और गुरु के उपदेश द्वारा मेरा भय दूर हो गया है।

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਅਤਿ ਸੁਆਲਿਉ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥
मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥
मेरा सच्चा प्रभु अत्यंत सुन्दर है और गुरु की सेवा करने से मेरा चित्त उसमें लग गया है।

ਸਾਚਾ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਸੋ ਜਨੁ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਾ ॥੨॥
साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥२॥
जो व्यक्ति सच्चे शब्द एवं परम सच्ची वाणी का बोध करता है, वह दिन-रात चेतन रहता है ॥२॥

ਮਹਾ ਗੰਭੀਰੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ਤਿਸ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
महा ग्मभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥
भगवान महा गंभीर और सर्वदा सुखों का दाता है और उसका कोई भी जीव अन्त नहीं पा सकता।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕੀਨੀ ਅਚਿੰਤੁ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਇਆ ॥
पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥
जिसने पूर्ण गुरु की सेवा की है, उसने चिन्ता से रहित हरि को अपने मन में बसा लिया है।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਅੰਤਰਿ ਵਿਚਹੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਆ ॥੩॥
मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥३॥
उसका मन, तन निर्मल हो गया है और अन्तर्मन सदा सुखी रहता है और मन से सन्देह भी दूर हो गया है ॥३॥

ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਸਦਾ ਪੰਥੁ ਵਿਖੜਾ ਕੋ ਪਾਏ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਾ ॥

हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥

भगवान (की उपलब्धि) का मार्ग सर्वदा ही एक विषम पथ है और कोई विरला पुरुष ही गुरु के विचार द्वारा चिंतन करते हुए इसे प्राप्त करता है।

ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸਬਦੇ ਮਾਤਾ ਹਉਮੈ ਤਜੇ ਵਿਕਾਰਾ ॥

हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥

हरि के प्रेम-रंग में लीन एवं शब्द में मस्त हुआ व्यक्ति अपने अहंकार एवं विकारों को त्याग देता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਇਕ ਰੰਗੀ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੪॥੩॥

नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥४॥३॥

नानक तो प्रभु के नाम-रंग में रंगकर एक रंग हो गया है और ब्रह्म-शब्द उसे संवारने वाला है ॥४॥३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੁਧੁ ਨੋ ਸਦਾ ਸਾਲਾਹੀ ਪਿਆਰੇ ਜਿਚਰੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਹੈ ਸਾਸਾ ॥
हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥
हे हरि ! जब तक मेरे शरीर में जीवन सांसें हैं, तब तक मैं सर्वदा तेरी ही महिमा-स्तुति करता रहूँ।

ਇਕੁ ਪਲੁ ਖਿਨੁ ਵਿਸਰਹਿ ਤੂ ਸੁਆਮੀ ਜਾਣਉ ਬਰਸ ਪਚਾਸਾ ॥
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥
हे मेरे स्वामी ! यदि मैं तुझे एक पल एवं क्षण भर के लिए विस्मृत कर दूँ तो मैं इसे पचास वर्ष के बराबर समझता हूँ।

ਹਮ ਮੂੜ ਮੁਗਧ ਸਦਾ ਸੇ ਭਾਈ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥੧॥
हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥१॥
हे भाई ! हम तो हमेशा से ही विमूढ़ एवं बुद्धिहीन थे लेकिन गुरु के शब्द से हमें ज्ञान का प्रकाश मिल गया है॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੁਮ ਆਪੇ ਦੇਹੁ ਬੁਝਾਈ ॥
हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥
हे हरि ! तुम स्वयं ही हम जीवों को सुबुद्धि प्रदान करते हो।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੁਧੁ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਸਦ ਹੀ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥
इसलिए मैं तुझ पर हमेशा ही कुर्बान जाता हूँ और तेरे नाम पर न्यौछावर होता हूँ॥ रहाउ॥

ਹਮ ਸਬਦਿ ਮੁਏ ਸਬਦਿ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲੇ ਭਾਈ ਸਬਦੇ ਹੀ ਮੁਕਤਿ ਪਾਈ ॥
हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥
हे भाई ! हम गुरु-शब्द द्वारा ही मोह-माया के प्रति मरे हैं और शब्द द्वारा ही मरकर पुन:जीवित हुए हैं और शब्द के द्वारा ही मुक्ति प्राप्त हुई है।

ਸਬਦੇ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਹਰਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਈ ॥
सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥
शब्द से ही मन एवं तन निर्मल हुआ और हरि आकर मन में निवास कर गया है।

ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਦਾਤਾ ਜਿਤੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੨॥
सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥२॥
शब्द रूपी गुरु ही दाता है, जिससे मेरा मन लीन हो गया है और मैं प्रभु में समाया रहता हूँ॥ २॥

ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ਸੇ ਅੰਨੇ ਬੋਲੇ ਸੇ ਕਿਤੁ ਆਏ ਸੰਸਾਰਾ ॥
सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥
जो शब्द के रहस्य को नहीं जानते, वे अन्धे एवं बहरे हैं, फिर वे दुनिया में किसलिए आए हैं ?

ਹਰਿ ਰਸੁ ਨ ਪਾਇਆ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਜੰਮਹਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥
हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जमहि वारो वारा ॥
उन्होंने हरि रस को प्राप्त नहीं किया एवं यूं ही अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है और फिर बार-बार जन्मते रहते हैं।

ਬਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀੜੇ ਬਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਸਮਾਣੇ ਮਨਮੁਖ ਮੁਗਧ ਗੁਬਾਰਾ ॥੩॥
बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥३॥
ऐसे मूर्ख एवं अज्ञानी मनमुख व्यक्ति विष्ठा के ही कीड़े हैं और विष्ठा में ही गल-सड़ जाते हैं।॥ ३॥

ਆਪੇ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਮਾਰਗਿ ਲਾਏ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥
हे भाई ! ईश्वर स्वयं ही जीवों को पैदा करके उनका पालन-पोषण करता है और सन्मार्ग लगाता है।उसके अलावा दूसरा कोई रचयिता नहीं।

ਜੋ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੁ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟੈ ਭਾਈ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥
जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥
हे भाई ! जो जीवों की किस्मत में आरंभ से ही लिखा हुआ है, उसे कोई भी मिटा नहीं सकता, जो सृजनहार करता है, वही होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਭਾਈ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ॥੪॥੪॥
नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥४॥४॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! मन के भीतर प्रभु का नाम निवास कर गया है और उसके सिवाय कोई दूसरा है ही नहीं ॥ ४॥ ४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵਹਿ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੇ ॥

गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥

गुरुमुख पुरुष ही भक्ति करते हैं और प्रभु को बहुत अच्छे लगते हैं। वे रात-दिन प्रभु के नाम का ही बखान करते हैं।

ਭਗਤਾ ਕੀ ਸਾਰ ਕਰਹਿ ਆਪਿ ਰਾਖਹਿ ਜੋ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥

भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥

हे प्रभु ! तू स्वयं ही अपने भक्तों की देखरेख करता है, जो तेरे मन को बहुत भले लगते हैं।

ਤੂ ਗੁਣਦਾਤਾ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ਗੁਣ ਕਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਣੇ ॥੧॥

तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥१॥

तू ही गुणों का दाता है और गुरु-शब्द द्वारा तेरी पहचान होती है और तेरा गुणानुवाद करते हुए तेरे भक्त तुझ में ही विलीन हो जाते हैं।॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਦਾ ਸਮਾਲਿ ॥

मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥

हे मेरे मन ! सदा ही परमात्मा का सिमरन करते रहो,"

ਅੰਤ ਕਾਲਿ ਤੇਰਾ ਬੇਲੀ ਹੋਵੈ ਸਦਾ ਨਿਬਹੈ ਤੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥

अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥

अन्तकाल में वही तेरा मित्र होगा और सर्वदा ही तेरा साथ निभाएगा।॥ रहाउ॥

ਦੁਸਟ ਚਉਕੜੀ ਸਦਾ ਕੂੜੁ ਕਮਾਵਹਿ ਨਾ ਬੂਝਹਿ ਵੀਚਾਰੇ ॥

दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥

दुष्टों की मण्डली सर्वदा मिथ्याचरण ही करती रहती है और न कुछ ज्ञान प्राप्त करती है और न ही चिंतन करती है।

ਨਿੰਦਾ ਦੁਸਟੀ ਤੇ ਕਿਨਿ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਹਰਣਾਖਸ ਨਖਹਿ ਬਿਦਾਰੇ ॥

निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥

दुष्टता एवं निन्दा से कब किसे फल प्राप्त हुआ है ? चूंकि दुष्ट हिरण्यकश्यिपु नाखुनों से ही चीर दिया गया था।

ਪ੍ਰਹਿਲਾਦੁ ਜਨੁ ਸਦ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਹਰਿ ਜੀਉ ਲਏ ਉਬਾਰੇ ॥੨॥

प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥२॥

भक्त प्रहलाद हमेशा ही हरि का गुणगान करता रहता था और उसकी श्रीहरि ने रक्षा की थी ॥२॥

ਆਪਸ ਕਉ ਬਹੁ ਭਲਾ ਕਰਿ ਜਾਣਹਿ ਮਨਮੁਖਿ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ॥
आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥
मनमुख व्यक्ति स्वयं को बहुत ही भला समझते हैं परन्तु उनके अन्दर बिल्कुल ही सुमति नहीं होती।

ਸਾਧੂ ਜਨ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਵਿਆਪੇ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਈ ॥
साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥
वे तो साधु-संतों की निन्दा में ही प्रवृत्त रहते हैं और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਕਦੇ ਚੇਤਹਿ ਨਾਹੀ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਈ ॥੩॥
राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥३॥
वे राम का नाम कभी याद नहीं करते और अन्त में पछताते हुए दुनिया से विदा हो जाते हैं।॥ ३॥

ਸਫਲੁ ਜਨਮੁ ਭਗਤਾ ਕਾ ਕੀਤਾ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਆਪਿ ਲਾਏ ॥
सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥
प्रभु ने अपने भक्तों का जन्म सफल कर दिया है और स्वयं ही उन्हें गुरु की सेवा में लगाया है।

ਸਬਦੇ ਰਾਤੇ ਸਹਜੇ ਮਾਤੇ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥
सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥
शब्द में मग्न एवं परम-आनंद में मस्त हुए भक्त रात-दिन हरि का गुणगान करते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਕਹੈ ਬੇਨੰਤੀ ਹਉ ਲਾਗਾ ਤਿਨ ਕੈ ਪਾਏ ॥੪॥੫॥
नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥४॥५॥
दास नानक प्रार्थना करता है मैं तो उन भक्तों के ही चरण छूता हूँ॥ ४॥ ५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਸੋ ਸਿਖੁ ਸਖਾ ਬੰਧਪੁ ਹੈ ਭਾਈ ਜਿ ਗੁਰ ਕੇ ਭਾਣੇ ਵਿਚਿ ਆਵੈ ॥
सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥
हे भाई ! वही सच्चा सिक्ख मेरा मित्र एवं संबंधी है, जो गुरु की रज़ा में आचरण करता है।

ਆਪਣੈ ਭਾਣੈ ਜੋ ਚਲੈ ਭਾਈ ਵਿਛੁੜਿ ਚੋਟਾ ਖਾਵੈ ॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥
जो अपनी इच्छानुसार आचरण करता है, वह भगवान से विछुड़ कर चोटें खाता रहता है।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਖੁ ਕਦੇ ਨ ਪਾਵੈ ਭਾਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਪਛੋਤਾਵੈ ॥੧॥

बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥

हे भाई ! सतगुरु के बिना उसे कदापि सुख नहीं मिलता और वह बार-बार पश्चाताप में जलता रहता है ॥१॥

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਸੁਹੇਲੇ ਭਾਈ ॥

हरि के दास सुहेले भाई ॥

हे भाई ! भगवान के भक्त हमेशा सुखी एवं प्रसन्न हैं।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਦੁਖ ਕਾਟੇ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥
वह उनके जन्म-जन्मान्तरों के पाप एवं कष्ट मिटा देता है और उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਕੁਟੰਬੁ ਸਭੁ ਜੀਅ ਕੇ ਬੰਧਨ ਭਾਈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾ ਸੈਂਸਾਰਾ ॥
इहु कुट्मबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥
हे भाई! यह सभी कुटुंब इत्यादि तो जीव हेतु बन्धन ही हैं और सारी दुनिया भ्रम में ही भटक रही है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਬੰਧਨ ਟੂਟਹਿ ਨਾਹੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥
बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥
गुरु के बिना बन्धन नष्ट नहीं होते और गुरु के माध्यम से मोक्ष का द्वार मिल जाता है।

ਕਰਮ ਕਰਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਨ ਪਛਾਣਹਿ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰਾ ॥੨॥
करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥
जो प्राणी सांसारिक कर्म करता है और गुरु के शब्द की पहचान नहीं करता, वह बार-बार दुनिया में मरता और जन्मता ही रहता है॥ २॥

ਹਉ ਮੇਰਾ ਜਗੁ ਪਲਚਿ ਰਹਿਆ ਭਾਈ ਕੋਇ ਨ ਕਿਸ ਹੀ ਕੇਰਾ ॥
हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥
हे भाई ! यह दुनिया तो अहंत्व एवं आत्माभिमान में ही उलझी हुई है परन्तु कोई भी किसी का सखा नहीं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਹਲੁ ਪਾਇਨਿ ਗੁਣ ਗਾਵਨਿ ਨਿਜ ਘਰਿ ਹੋਇ ਬਸੇਰਾ ॥
गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥
गुरुमुख पुरुष सत्य के महल को प्राप्त कर लेते हैं, सत्य का ही गुणगान करते हैं और अपने आत्मस्वरूप (भगवान के चरणों) में बसेरा प्राप्त कर लेते हैं।

ਐਥੈ ਬੂਝੈ ਸੁ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਤਿਸੁ ਕੇਰਾ ॥੩॥
ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥
जो व्यक्ति इहलोक में स्वयं को समझ जाता है, वह अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेता है और हरि-प्रभु उसका बन जाता है॥ ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਦਾ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਭਾਈ ਵਿਣੁ ਭਾਗਾ ਕਿਆ ਪਾਈਐ ॥
सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥
हे भाई ! सतिगुरु तो हमेशा ही दयालु है परन्तु तकदीर के बिना प्राणी क्या प्राप्त कर सकता है ?

ਏਕ ਨਦਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸਭ ਊਪਰਿ ਜੇਹਾ ਭਾਉ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ॥
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥
सतिगुरु सभी पर एक समान कृपा-दृष्टि से ही देखता है परन्तु जैसी प्राणी की प्रेम-भावना होती है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਈਐ ॥੪॥੬॥
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥४॥६॥
हे नानक ! यदि अन्तर्मन में से आत्माभिमान को दूर कर दिया जाए तो मन के अन्दर प्रभु-नाम का निवास हो जाता है॥ ४॥ ६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਚਉਤੁਕੇ ॥
सोरठि महला ३ चौतुके ॥
सोरठि महला ३ चौतुके ॥

ਸਚੀ ਭਗਤਿ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਹੋਵੈ ਸਚੀ ਹਿਰਦੈ ਬਾਣੀ ॥
सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥
सतगुरु के माध्यम से ही सच्ची भक्ति होती है एवं हृदय में सच्ची वाणी का निवास हो जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਣੀ ॥
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥
गुरु की सेवा करने से सदा सुख की उपलब्धि होती है और गुरु-शब्द के माध्यम से अहंकार मिट जाता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਸਾਚੇ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵੀ ਹੋਰ ਭੂਲੀ ਫਿਰੈ ਇਆਣੀ ॥
बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥
गुरु के बिना सच्ची भक्ति नहीं हो सकती और गुरु के बिना नादान दुनिया दुविधा में फँस कर भटकती ही रहती है।

ਮਨਮੁਖਿ ਫਿਰਹਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਡੂਬਿ ਮੁਏ ਵਿਣੁ ਪਾਣੀ ॥੧॥
मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥१॥
मनमुख व्यक्ति भटकते ही रहते हैं, वे हमेशा दुःखी ही रहते हैं और जल के बिना ही डूबकर मर जाते हैं।॥ १॥

ਭਾਈ ਰੇ ਸਦਾ ਰਹਹੁ ਸਰਣਾਈ ॥
भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥
हे भाई ! हमेशा भगवान की शरण में रहो,

ਆਪਣੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਪਤਿ ਰਾਖੈ ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥
वह अपनी कृपा-दृष्टि करके जीवों की हमेशा ही लाज-प्रतिष्ठा बचाता रहता है और अपने हरि-नाम की जीवों को कीर्ति प्रदान करता है॥ रहाउ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਤੇ ਆਪੁ ਪਛਾਤਾ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਵੀਚਾਰਾ ॥
पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥
पूर्ण गुरु के माध्यम से मनुष्य सच्चे शब्द का चिंतन करने से अपने आत्माभिमान को समझ लेता है।

ਹਿਰਦੈ ਜਗਜੀਵਨੁ ਸਦ ਵਸਿਆ ਤਜਿ ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥
वह काम, क्रोध एवं अहंकार को छोड़ देता है और जगत का जीवनदाता हरि हमेशा ही उसके हृदय में आकर निवास कर लेता है।

ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ਰਵਿਆ ਸਭ ਠਾਈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥
सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥
अपरंपार नाम हृदय में निवास करने से प्रभु हमेशा उसे प्रत्यक्ष एवं समस्त स्थानों पर व्यापक दृष्टिमान होता है।

ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਬਾਣੀ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀ ਨਾਉ ਮੀਠਾ ਮਨਹਿ ਪਿਆਰਾ ॥੨॥
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥२॥
युग-युगान्तरों में अनहद शब्द द्वारा ही प्रभु वाणी की पहचान हुई है और मन को नाम मधुर एवं प्यारा लगता है ॥२॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਤਾ ਸਫਲ ਜਨਮੁ ਜਗਿ ਆਇਆ ॥
सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥
सतगुरु की सेवा करके जिस व्यक्ति ने नाम की पहचान कर ली है, इस दुनिया में उसका आगमन एवं जन्म सफल हो गया है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਸਦਾ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤਿਆ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣੀ ਅਘਾਇਆ ॥
हरि रसु चाखि सदा मनु त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥
हरि-रस को चखकर उसका मन हमेशा के लिए तृप्त हो गया है और वह गुणों के भण्डार प्रभु का गुणगान करते हुए संतुष्ट हुआ रहता है।

ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਅਨਹਦ ਸਬਦੁ ਵਜਾਇਆ ॥

कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥

उसका हृदय-कमल प्रफुल्लित हो गया है और प्रभु के प्रेम-रंग में वह सदैव मग्न रहता है और उसके भीतर अनहद शब्द गूंजता रहता है।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਣੀ ਸਚੇ ਸਚਿ ਸਮਾਇਆ ॥੩॥

तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥३॥

उसका तन-मन निर्मल हो गया है और वाणी भी निर्मल हो गई है और वह सत्यशील बनकर परम-सत्य में विलीन हो गया है॥ ३॥

ਰਾਮ ਨਾਮ ਕੀ ਗਤਿ ਕੋਇ ਨ ਬੂਝੈ ਗੁਰਮਤਿ ਰਿਦੈ ਸਮਾਈ ॥

राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥

राम-नाम की महानता को कोई भी नहीं जानता और गुरु के उपदेश द्वारा ही यह हृदय में समाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਮਗੁ ਪਛਾਣੈ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥

गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥

जो व्यक्ति गुरुमुख होता है, वह मार्ग की पहचान कर लेता है और हरि-रस में ही उसकी रसना रसमग्न रहती है।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਸਭੁ ਗੁਰ ਤੇ ਹੋਵੈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਈ ॥

जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥

जप, तप एवं संयम सभी गुरु से ही प्राप्त होते हैं और गुरु द्वारा ही हृदय में नाम का निवास होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸੇ ਜਨ ਸੋਹਨਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਪਤਿ ਪਾਈ ॥੪॥੭॥

नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥७॥

हे नानक ! जो व्यक्ति नाम-सिमरन करते हैं, वे सुन्दर दिखाई देते हैं और सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥ ४ ॥ ७ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੩ ਦੁਤੁਕੇ ॥

सोरठि मः ३ दुतुके ॥

सोरठि मः ३ दुतुके ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਉਲਟੀ ਭਈ ਭਾਈ ਜੀਵਤ ਮਰੈ ਤਾ ਬੂਝ ਪਾਇ ॥

सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥

हे भाई ! सतिगुरु से भेंट करके मेरी बुद्धि मोह-माया की तरफ से उलट गई है, यदि कोई जीवित ही विषय-विकारों की ओर से मृत रहता है तो उसे आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान मिल जाता है।

ਸੋ ਗੁਰੂ ਸੋ ਸਿਖੁ ਹੈ ਭਾਈ ਜਿਸੁ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥

सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥१॥

हे भाई ! वही गुरु है और वही सिक्ख है, जिसकी ज्योति को परमात्मा अपनी परम ज्योति से मिला लेता है॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥

मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥

हे मेरे मन ! परमात्मा के साथ सुरति लगाओ।

ਮਨ ਹਰਿ ਜਪਿ ਮੀਠਾ ਲਾਗੈ ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ਹਰਿ ਥਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥

हे भाई ! भजन करने से हरि जिसके मन को मीठा लगता है वह गुरुमुख व्यक्ति हरि के चरणों में स्थान प्राप्त कर लेता है ॥ रहाउ ॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਮਨਮੁਖਿ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥
हे भाई ! गुरु के बिना प्रभु-प्रीति उत्पन्न नहीं होती और मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में ही फँसे रहते हैं।

तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछु न पाइ ॥२॥
तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछु न पाइ ॥२॥
मनमुख व्यक्ति जो भी कर्म करता है, वह छिलका कूटने के सादृश्य निरर्थक है, इससे उन्हें कुछ भी हासिल नहीं होता।॥ २॥

ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਰਵਿਆ ਭਾਈ ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥
गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥
हे भाई ! गुरु से भेंट करके नाम हृदय में प्रविष्ट हो गया है और प्रभु से सच्ची प्रीति एवं प्रेम हो गया है।

ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਰਵੈ ਭਾਈ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰਿ ॥੩॥
सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥३॥
हे भाई ! गुरु के अपार प्रेम से ही मनुष्य हरि का गुणगान करता रहता है॥ ३॥

ਆਇਆ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਭਾਈ ਜਿ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥
हे भाई ! जिसने गुरु की सेवा में चित्त लगाया है, उसका दुनिया में आगमन परवान है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਮੇਲਾਇ ॥੪॥੮॥
नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥४॥८॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! गुरु के शब्द द्वारा प्राणी प्रभु के नाम को प्राप्त कर लेता है और उसमें विलीन हो जाता है ॥४॥८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥
सोरठि महला ३ घरु १ ॥
सोरठि महला ३ घरु १ ॥

ਤਿਹੀ ਗੁਣੀ ਤ੍ਰਿਭਵਣੁ ਵਿਆਪਿਆ ਭਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੂਝ ਬੁਝਾਇ ॥
तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥
हे भाई ! पृथ्वी, पाताल एवं आकाश-इन तीनों लोक वाला जगत त्रिगुणों- रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण में पूर्णतया लीन है और गुरुमुख व्यक्ति ही इस भेद को समझ सकता है।

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਗਿ ਛੂਟੀਐ ਭਾਈ ਪੂਛਹੁ ਗਿਆਨੀਆ ਜਾਇ ॥੧॥

राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥

हे भाई ! राम के नाम में लीन होने से ही मुक्ति प्राप्त होती है, चाहे इस संदर्भ में जाकर ज्ञानी महापुरुषों से पूछ लो॥ १॥

ਮਨ ਰੇ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਛੋਡਿ ਚਉਥੈ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥

मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥

हे मेरे मन ! तू त्रिगुणों (रज, तम एवं सत्व) को छोड़ दे और अपने चित्त को चौथे पद (परम पद) में लगा।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਸਦਾ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥

हे भाई ! हरि ने तेरे मन में ही निवास किया हुआ है, इसलिए सर्वदा हरि का गुणगान करता रह ॥ रहाउ ॥

ਨਾਮੈ ਤੇ ਸਭਿ ਊਪਜੇ ਭਾਈ ਨਾਇ ਵਿਸਰਿਐ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥

नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥

हे भाई ! नाम से ही सभी जीव उत्पन्न हुए हैं और नाम को विस्मृत करके वे मर जाते हैं।

ਅਗਿਆਨੀ ਜਗਤੁ ਅੰਧੁ ਹੈ ਭਾਈ ਸੂਤੇ ਗਏ ਮੁਹਾਇ ॥੨॥

अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥२॥

हे भाई ! यह अज्ञानी दुनिया तो माया-मोह में अन्धी है तथा माया-मोह में निद्रामग्न लोग माया के हाथों लूटे जा रहे हैं॥ २ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਗੇ ਸੇ ਉਬਰੇ ਭਾਈ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿ ॥

गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥

हे भाई ! गुरुमुख व्यक्ति ही जाग्रत रहते हैं और उनका कल्याण हो जाता है तथा वे भयानक संसार-सागर से पार हो जाते हैं।

ਜਗ ਮਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਭਾਈ ਹਿਰਦੈ ਰਖਿਆ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥੩॥

जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥३॥

हे भाई ! इस दुनिया में हरि का नाम ही फलप्रद है, इसलिए हमें हरि का नाम ही हृदय में रखना चाहिए ॥३॥

ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਉਬਰੇ ਭਾਈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥

गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥

हे भाई ! गुरु की शरण में आने एवं राम नाम में सुरति लगाने से उद्धार हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਉ ਬੇੜਾ ਨਾਉ ਤੁਲਹੜਾ ਭਾਈ ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਪਾਰਿ ਜਨ ਪਾਇ ॥੪॥੯॥

नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥४॥९॥

नानक का कथन है कि हे भाई ! नाम ही जहाज है और नाम ही बेड़ा है, जिस पर सवार होकर प्रभु के भक्तजन संसार-सागर से पार हो जाते हैं ॥४॥६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਜਗ ਅੰਤਰਿ ਹੋਰ ਥੈ ਸੁਖੁ ਨਾਹੀ ॥

सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥

सतगुरु ही सुखों का सागर है, इस दुनिया में दूसरा कोई सुखों का स्थान नहीं है।

ਹਉਮੈ ਜਗਤੁ ਦੁਖਿ ਰੋਗਿ ਵਿਆਪਿਆ ਮਰਿ ਜਨਮੈ ਰੋਵੈ ਧਾਹੀ ॥੧॥

हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥१॥

सारी दुनिया अहंकार के कारण दुखों एवं रोगों से ग्रस्त है, जिसके कारण लोग जन्मते-मरते और फूट-फूट कर रोते हैं॥१॥

ਪ੍ਰਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥

प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥

हे प्राणी ! सतिगुरु की निष्काम सेवा करने से सुख उपलब्ध होता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਨਾਹਿ ਤ ਜਾਹਿਗਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥

यदि तू सतगुरु की सेवा करेगा तो ही तुझे सुख मिलेगा, अन्यथा तू अपना अमूल्य जन्म गंवा कर दुनिया से विदा हो जाएगा॥ रहाउ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਧਾਤੁ ਬਹੁ ਕਰਮ ਕਮਾਵਹਿ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਆਇਆ ॥

त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥

मनुष्य त्रिगुणी माया (रज, तम, सत) के प्रभाव अधीन भाग-दौड़ करता हुआ अनेक कर्म करता है, लेकिन हरि-रस का स्वाद प्राप्त नहीं करता।

ਸੰਧਿਆ ਤਰਪਣੁ ਕਰਹਿ ਗਾਇਤ੍ਰੀ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥

संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥२॥

वह संध्या-पाठ, तर्पण (पितरों को जल) एवं गायत्री मंत्र का पाठ करता है परन्तु ज्ञान के बिना वह दुःख ही भोगता है॥ २॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਸੋ ਵਡਭਾਗੀ ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥
सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥
जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा करता है, वह बड़ा भाग्यशाली है लेकिन सतिगुरु से वही मिलता है, जिसे भगवान स्वयं मिलाता है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀ ਜਨ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਏ ॥੩॥
हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥३॥
हरि-रस को पीकर भक्तजन हमेशा तृप्त रहते हैं और अपने अन्तर्मन से अपना आत्माभिमान दूर कर देते हैं।॥ ३॥

ਇਹੁ ਜਗੁ ਅੰਧਾ ਸਭੁ ਅੰਧੁ ਕਮਾਵੈ ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮਗੁ ਨ ਪਾਏ ॥
इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥
यह दुनिया तो अन्धी है, सब लोग अज्ञानता के कर्म ही करते हैं। गुरु बिना उन्हें सन्मार्ग नहीं मिलता।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਅਖੀ ਵੇਖੈ ਘਰੈ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਪਾਏ ॥੪॥੧੦॥
नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥४॥१०॥
हे नानक ! यदि सतगुरु से भेंट हो जाए तो मनुष्य ज्ञान-चक्षुओं से देखने लगता है और सत्य को अपने हृदय-घर में ही प्राप्त कर लेता है ॥४॥१०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਬਹੁਤਾ ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਭਰਮਾਈ ॥
बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥
गुरु की सेवा किए बिना मनुष्य अत्यन्त दुःखों में ही घिरा रहता है और चहुं युगों में भटकता फिरता है।

ਹਮ ਦੀਨ ਤੁਮ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਦਾਤੇ ਸਬਦੇ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥੧॥
हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥१॥
हे भगवान् ! हम बड़े दीन हैं और तुम तो युगों-युगान्तरों में दाता हो, कृपा करके हमें शब्द का ज्ञान प्रदान करो॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਤੁਮ ਪਿਆਰੇ ॥
हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥
हे प्रिय प्रभु ! हम पर तुम कृपा करो।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ਆਧਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥

हमें सतगुरु दाता से मिला दो और हरि-नाम का सहारा प्रदान करो ॥ रहाउ ॥

ਮਨਸਾ ਮਾਰਿ ਦੁਬਿਧਾ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ਪਾਇਆ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥

मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ॥

मैंने अपनी अभिलाषा एवं दुविधा को मिटाकर तथा सहज अवस्था में लीन होकर अनन्त नाम को प्राप्त कर लिया है।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਆ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਣਹਾਰਾ ॥੨॥

हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥२॥

पापों का नाश करने वाला हरि रस चख कर मेरा मन निर्मल हो गया है॥ २॥

ਸਬਦਿ ਮਰਹੁ ਫਿਰਿ ਜੀਵਹੁ ਸਦ ਹੀ ਤਾ ਫਿਰਿ ਮਰਣੁ ਨ ਹੋਈ ॥
सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥
गुरु के शब्द में मग्न होकर अहम् को मारोगे तो फिर हमेशा ही जीवित रहोगे और फिर दुबारा मृत्यु नहीं होगी।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਮੀਠਾ ਸਬਦੇ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੩॥
अम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥३॥
हरिनामामृत सर्वदा ही मन को मीठा लगता है लेकिन गुरु के शब्द द्वारा कोई विरला ही इसे प्राप्त करता है ॥३॥

ਦਾਤੈ ਦਾਤਿ ਰਖੀ ਹਥਿ ਅਪਣੈ ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਦੇਈ ॥
दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥
उस महान् दाता ने समस्त बख्शिशें अपने हाथ में रखी हुई हैं, वह जिसे चाहता है, उसे देता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਦਰਗਹ ਜਾਪਹਿ ਸੇਈ ॥੪॥੧੧॥
नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥४॥११॥
हे नानक ! हरि-नाम में मग्न होकर जिन्होंने सुख प्राप्त किया है, भगवान के दरबार में वे सत्यवादी लगते हैं ॥४॥११॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੈ ਗਤਿ ਮਤਿ ਤਦ ਹੀ ਪਾਏ ॥
सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥
जब मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है तो उसके भीतर सहज धुन उत्पन्न होती है और तब ही उसे मोक्ष एवं ज्ञान-बुद्धि प्राप्त होती है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਾਮੇ ਨਾਮਿ ਸਮਾਏ ॥੧॥
हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥१॥
हरि का सच्चा नाम उसके मन में निवास कर लेता है और नाम द्वारा वह नाम-स्वरूप भगवान में विलीन हो जाता है।॥१॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨਾ ॥
बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥
सतिगुरु के बिना सारी दुनिया पागल हो गई है।

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧਾ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਣੈ ਝੂਠੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥
अन्धा मनमुख व्यक्ति शब्द के भेद को नहीं जानता और झूठे भ्रम में ही भटकता रहता है ॥ रहाउ ॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਕਮਾਏ ॥
त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए ॥
त्रिगुणी माया ने मनुष्य को भ्रम में ही गुमराह किया हुआ है, जिसके कारण वह अहंकार के बन्धन ही संचित करता रहता है।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣੁ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਊਭਉ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ॥੨॥
जमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥२॥
जन्म-मरण उसके सिर ऊपर खड़े रहते हैं और गर्भ-योनि में पड़कर वह दुःख प्राप्त करता रहता है॥ २॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਵਰਤਹਿ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥
त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥
सारा संसार ही माया के त्रिगुणों के प्रभाव अधीन क्रियाशील है और अहंकार में इसने अपना मान-सम्मान गंवा दिया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਚਉਥਾ ਪਦੁ ਚੀਨੈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥੩॥
गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥३॥
जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, उसे चौथे पद का ज्ञान हो जाता है और राम नाम से सुखी रहता है॥ ३॥

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਸਭਿ ਤੇਰੇ ਤੂ ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਜੋ ਤੂ ਕਰਹਿ ਸੁ ਹੋਈ ॥
त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥
हे परमेश्वर ! माया के तीनों गुण-रज, तम, सत् तेरी ही रचना है और तू स्वयं ही स्रष्टा है। जो कुछ तू करता है, दुनिया में वही होता है।

ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਸਬਦੇ ਹਉਮੈ ਖੋਈ ॥੪॥੧੨॥
नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥४॥१२॥
हे नानक ! राम नाम द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है और गुरु के शब्द द्वारा आत्माभिमान दूर हो जाता है ॥४॥१२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧
सोरठि महला ४ घरु १
सोरठि महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ਅਪਾਹੁ ॥
आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही सब जीवों में व्याप्त है और स्वयं ही निर्लिप्त रहता है।

ਵਣਜਾਰਾ ਜਗੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਾਚਾ ਸਾਹੁ ॥
वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥
वह स्वयं ही जगत रूपी वणजारा है और स्वयं ही सच्चा साहूकार है।

ਆਪੇ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਚੁ ਵੇਸਾਹੁ ॥੧॥
आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥१॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही वाणिज्य एवं व्यापारी है और स्वयं ही सच्ची रास-पूंजी है॥ १॥

ਜਪਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹ ॥
जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥
हे मेरे मन ! हरि का जाप करो, उसकी ही स्तुति करो।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਈਐ ਪਿਆਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अम्रितु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥
गुरु की अपार कृपा से ही वह अमृत रूप अगम्य एवं अथाह प्यारा परमेश्वर पाया जा सकता है॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਸੁਣਿ ਸਭ ਵੇਖਦਾ ਪਿਆਰਾ ਮੁਖਿ ਬੋਲੇ ਆਪਿ ਮੁਹਾਹੁ ॥
आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सबको सुनता एवं देखता है और स्वयं ही सभी प्राणियों के मुख द्वारा अपने मुखारबिंद से बोलता है।

ਆਪੇ ਉਝੜਿ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਵਿਖਾਲੇ ਰਾਹੁ ॥
आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही कुमार्ग लगाता है और स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਸਭੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੨॥
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥२॥
वह प्रियतम आप ही सबकुछ है और आप ही बेपरवाह है॥ २॥

ਆਪੇ ਆਪਿ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਸਿਰਿ ਆਪੇ ਧੰਧੜੈ ਲਾਹੁ ॥
आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥
वह स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही प्रत्येक प्राणी को सांसारिक कार्यों में लगाता है।

ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਸਾਖਤੀ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਮਾਰੇ ਮਰਿ ਜਾਹੁ ॥
आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों को पैदा करता है और स्वयं ही जब जीवों का नाश करता है तो वह नाश हो जाते हैं।

ਆਪੇ ਪਤਣੁ ਪਾਤਣੀ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਪਾਰਿ ਲੰਘਾਹੁ ॥੩॥
आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥३॥
वह स्वयं ही घाट और मल्लाह है और स्वयं ही पार करवाता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਬੋਹਿਥਾ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰੁ ਖੇਵਟੁ ਆਪਿ ਚਲਾਹੁ ॥
आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥
वह स्वयं ही सागर है और स्वयं ही जहाज है। वह स्वयं ही गुरु-खेवट बनकर जहाज चलाता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਚੜਿ ਲੰਘਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵੇਖੈ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥
आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं जहाज पर सवार होकर पार होता है। सृष्टि का बादशाह वह परमेश्वर अपनी आश्चर्यजनक लीलाएँ रच-रचकर देखता रहता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਹੁ ॥੪॥੧॥
आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥४॥१॥
वह स्वयं ही दयावान है, हे नानक ! वह स्वयं ही जीवों को क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ १॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਚਉਥਾ ॥
सोरठि महला ४ चउथा ॥
सोरठि महला ४ चउथा ॥

ਆਪੇ ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਸੇਤਜ ਉਤਭੁਜ ਆਪੇ ਖੰਡ ਆਪੇ ਸਭ ਲੋਇ ॥

आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥

परमेश्वर स्वयं ही अंडज (अण्डे से उत्पन्न), जेरज (भ्रूण से उत्पन्न), स्वेदज (पसीने से उत्पन्न), उदभिज (धरती से उत्पन्न) है। वह स्वयं ही धरती के खण्ड एवं स्वयं ही समस्त लोक है।

ਆਪੇ ਸੂਤੁ ਆਪੇ ਬਹੁ ਮਣੀਆ ਕਰਿ ਸਕਤੀ ਜਗਤੁ ਪਰੋਇ ॥

आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥

वह स्वयं ही सूत्र है और स्वयं ही अनेक मणियां हैं। अपनी शक्ति धारण करके उसने सारी दुनिया को सूत्र में पिरोया हुआ है।

ਆਪੇ ਹੀ ਸੂਤਧਾਰੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਸੂਤੁ ਖਿੰਚੇ ਢਹਿ ਢੇਰੀ ਹੋਇ ॥੧॥
आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥१॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सूत्रधार है, जब वह सूत्र खींच लेता है तो दुनिया नाश हो जाती है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
हे मेरे मन ! श्रीहरि के अलावा मेरा अन्य कोई आधार नहीं।

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਦਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਮੁਖਿ ਚੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अम्रितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥
सतगुरु के भीतर ही नाम का खजाना है और वह प्यारा प्रभु अपनी दया करके हमारे मुख में नामामृत डालता रहता है॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਜਲ ਥਲਿ ਸਭਤੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੇ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही समुद्र, धरती में सर्वत्र मौजूद है और जो कुछ भी स्वयं करता है, जग में वही होता है।

ਸਭਨਾ ਰਿਜਕੁ ਸਮਾਹਦਾ ਪਿਆਰਾ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥
वह प्रियतम प्रभु समस्त प्राणियों को आहार प्रदान करता है उसके अलावा तो दूसरा कोई नहीं।

ਆਪੇ ਖੇਲ ਖੇਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥੨॥
आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥२॥
वह परमेश्वर स्वयं दुनिया के खेल खेलता और खिलाता है, जो कुछ वह स्वयं करता है दुनिया में वही होता है॥ २॥

ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਨਿਰਮਲਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਨਿਰਮਲ ਸੋਇ ॥
आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही निर्मल है और उसकी कीर्ति भी निर्मल है।

ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਇ ॥
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥
वह स्वयं ही अपना मूल्यांकन जानता है और जो वह स्वयं करता है, वही होता है।

ਆਪੇ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖੀਐ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਲਖਾਵੈ ਸੋਇ ॥੩॥
आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥३॥
वह प्रियतम स्वयं ही अदृश्य है और देखा नहीं जा सकता और वह स्वयं ही जीव को अपने दर्शन करवाता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
आपे गहिर ग्मभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही गहन और गंभीर है, उस जैसा महान् सृष्टि में कोई नहीं।

ਸਭਿ ਘਟ ਆਪੇ ਭੋਗਵੈ ਪਿਆਰਾ ਵਿਚਿ ਨਾਰੀ ਪੁਰਖ ਸਭੁ ਸੋਇ ॥
सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥
वह प्रियतम समस्त हृदयों में व्याप्त होकर भोग भोगता है और समस्त स्त्रियों एवं पुरुषों में विद्यमान है।

ਨਾਨਕ ਗੁਪਤੁ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥੪॥੨॥
नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥
हे नानक ! प्यारा प्रभु स्वयं ही गुप्त रूप में सर्वव्यापी है और गुरु के माध्यम से ही वह प्रगट होता है॥ ४ ॥ २ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सोरठि महला ४ ॥
सोरठि महला ४ ॥

ਆਪੇ ਹੀ ਸਭੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪੈ ॥
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही सर्वशक्तिमान है, वह स्वयं ही संसार बनाकर स्वयं ही उसका नाश कर देता है।

ਆਪੇ ਵੇਖਿ ਵਿਗਸਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਚੋਜ ਵੇਖੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੈ ॥
आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥
वह स्वयं ही अपनी सृष्टि रचना को देखकर खुश होता है और स्वयं ही लीलाएँ करके उन्हें स्वयं ही देखता है।

ਆਪੇ ਵਣਿ ਤਿਣਿ ਸਭਤੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਪੈ ॥੧॥
आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥१॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही वनों एवं तृणों में सर्वत्र विद्यमान है और वह गुरु के माध्यम से ही मालूम होता है ॥१॥

ਜਪਿ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰਸਿ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥
जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥
हे मन ! हरि-नाम का जाप करो, नाम-रस से तू तृप्त हो जाएगा।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚਖਿ ਜਾਪੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥
हरिनामामृत महा रस मीठा है और गुरु के शब्द द्वारा चखकर ही इसका स्वाद मालूम होता है ॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਤੀਰਥੁ ਤੁਲਹੜਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਤਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੈ ॥
आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही तीर्थ एवं बेड़ा है और स्वयं ही पार करवाता है।

ਆਪੇ ਜਾਲੁ ਵਤਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਸਭੁ ਜਗੁ ਮਛੁਲੀ ਹਰਿ ਆਪੈ ॥
आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥
वह स्वयं ही जाल बिछाता है और वह हरि स्वयं ही सांसारिक जाल में फंसने वाली दुनिया रूपी मछली है।

ਆਪਿ ਅਭੁਲੁ ਨ ਭੁਲਈ ਪਿਆਰਾ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਜਾਪੈ ॥੨॥
आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥२॥
वह प्रियतम प्रभु अविस्मरणीय है और वह भूलता नहीं। उस जैसा महान् दूसरा कोई मुझे नजर नहीं आता ॥ २॥

ਆਪੇ ਸਿੰਙੀ ਨਾਦੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਧੁਨਿ ਆਪਿ ਵਜਾਏ ਆਪੈ ॥
आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥
वह प्रियतम प्रभु स्वयं ही (सिंडीनाद) योगी की वीणा एवं नाद है और अपने आप ही ध्वनि बजाता है।

ਆਪੇ ਜੋਗੀ ਪੁਰਖੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਤਪੁ ਤਾਪੈ ॥
आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥
वह स्वयं ही योगी पुरुष है और स्वयं ही तपस्या करता है।

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਆਪਿ ਹੈ ਚੇਲਾ ਉਪਦੇਸੁ ਕਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪੈ ॥੩॥
आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥३॥
वह प्रभु स्वयं ही सतगुरु और स्वयं ही शिष्य है और आप ही उपदेश करता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਨਾਉ ਜਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਜਪੁ ਜਾਪੈ ॥
आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही प्राणियों से नाम का जाप करवाता है और स्वयं ही जाप जपता है।

ਆਪੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਰਸੁ ਆਪੈ ॥
आपे अम्रितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥
वह प्यारा स्वयं ही अमृत है और स्वयं ही अमृत-रस का पान करता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਸਲਾਹਦਾ ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਸਿ ਧ੍ਰਾਪੈ ॥੪॥੩॥
आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥४॥३॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही अपनी सरहाना करता है। सेवक नानक तो हरि रस से तृप्त हो गया है॥ ४॥ ३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सोरठि महला ४ ॥
सोरठि महला ४ ॥

ਆਪੇ ਕੰਡਾ ਆਪਿ ਤਰਾਜੀ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਤੋਲਿ ਤੋਲਾਇਆ ॥
आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥
प्रभु आप ही (तराजू का) कांटा है, आप ही तराजू है और उसने आप ही बाटों से जगत को तोला है।

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਆਪੇ ਵਣਜੁ ਕਰਾਇਆ ॥
आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥
वह स्वयं ही साहूकार हैं, स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही वाणिज्य करवाता है।

ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਅਨੁ ਪਿਆਰੈ ਪਿਛੈ ਟੰਕੁ ਚੜਾਇਆ ॥੧॥
आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥१॥
उस प्रियतम प्रभु ने आप ही धरती का निर्माण किया है और एक चार माशे के बाट से इसका वजन किया है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥
हे मेरे मन ! हरि-परमेश्वर का सिमरन करने से सुख प्राप्त हुआ है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਮੀਠਾ ਲਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥

प्यारा हरि-नाम सुख-समृद्धि का भण्डार है और पूर्ण गुरु ने मुझे यह मीठा लगा दिया है॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਆਪਿ ਜਲੁ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕਰੇ ਕਰਾਇਆ ॥

आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ ॥

वह स्वयं ही धरती एवं स्वयं ही जल है और वह स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है।

ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਜਲੁ ਮਾਟੀ ਬੰਧਿ ਰਖਾਇਆ ॥

आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥

वह प्यारा प्रभु स्वयं ही हुक्म लागू करता है और जल एवं भूमि को बांधकर रखता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਭਉ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਬੰਨਿ ਬਕਰੀ ਸੀਹੁ ਹਢਾਇਆ ॥੨॥

आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥२॥

वह प्यारा स्वयं ही जीवों में भय उत्पन्न करता है और बकरी एवं शेर को साथ बांधकर रखा हुआ है॥ २॥

ਆਪੇ ਕਾਸਟ ਆਪਿ ਹਰਿ ਪਿਆਰਾ ਵਿਚਿ ਕਾਸਟ ਅਗਨਿ ਰਖਾਇਆ ॥
आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥
प्यारा प्रभु आप ही लकड़ी भी है और लकड़ी में उसने स्वयं ही अग्नि को रखा हुआ है।

ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਭੈ ਅਗਨਿ ਨ ਸਕੈ ਜਲਾਇਆ ॥
आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥
वह प्यारा स्वयं ही लकड़ी एवं अग्नि दोनों में क्रियाशील है और उसके भय कारण अग्नि लकड़ी को जला नहीं सकती।

ਆਪੇ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਸਾਹ ਲੈਦੇ ਸਭਿ ਲਵਾਇਆ ॥੩॥
आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥३॥
मेरा प्रियतम प्रभु स्वयं ही मारकर पुनः जीवित करने वाला है और सभी लोग उसकी दी हुई सांसे लेते हैं।॥ ३॥

ਆਪੇ ਤਾਣੁ ਦੀਬਾਣੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਕਾਰੈ ਲਾਇਆ ॥
आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही शक्ति और अटल दरबार है और स्वयं ही उसने जीवों को कामकाज में लगाया हुआ है।

ਜਿਉ ਆਪਿ ਚਲਾਏ ਤਿਉ ਚਲੀਐ ਪਿਆਰੇ ਜਿਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਭਾਇਆ ॥
जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥
हे प्यारे ! जैसे वह स्वयं चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं, जैसे मेरे हरि-प्रभु को अच्छा लगा है।

ਆਪੇ ਜੰਤੀ ਜੰਤੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਵਜਹਿ ਵਜਾਇਆ ॥੪॥੪॥
आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥४॥४॥
वह स्वयं ही संगीतकार और संगीत (यंत्र) है। हे नानक ! मनुष्य वैसे ही बजता है, जैसे प्रभु उसे बजाता है॥ ४॥ ४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सोरठि महला ४ ॥
सोरठि महला ४ ॥

ਆਪੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਸੂਰਜੁ ਚੰਦੁ ਚਾਨਾਣੁ ॥
आपे स्रिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही सृष्टि-रचना करके सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश करता है।

ਆਪਿ ਨਿਤਾਣਿਆ ਤਾਣੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਨਿਮਾਣਿਆ ਮਾਣੁ ॥
आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही निर्बलों का बल है और स्वयं ही आदरहीन व्यक्तियों का आदर-सत्कार है।

ਆਪਿ ਦਇਆ ਕਰਿ ਰਖਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥੧॥
आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥१॥
वह स्वयं ही दया करके सबकी रक्षा करता है और स्वयं ही बुद्धिमान एवं सर्वज्ञाता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥
मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥
हे मेरे मन ! राम-नाम का भजन कर, यह नाम ही दरगाह में जाने के लिए परवाना है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਧਿਆਇ ਤੂ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਹੁੜਿ ਨ ਆਵਣ ਜਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर तू परमेश्वर का सिमरन कर, जिसके फलस्वरूप तेरा फिर जन्म-मरण नहीं होगा।॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਹੀ ਗੁਣ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਪਰਵਾਣੁ ॥
आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही समस्त गुणों में सक्रिय है और स्वयं ही सत्कृत होता है।

ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥
आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥
वह स्वयं ही जीवों पर बखसीस करता है और स्वयं ही सत्य के चिन्ह की देन प्रदान करता है।

ਆਪੇ ਹੁਕਮਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥੨॥
आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥२॥
वह प्यारा स्वयं ही हुक्म में सक्रिय रहता है और स्वयं ही फुरमान करता है॥ २॥

ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਦਾਣੁ ॥
आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥
वह प्यारा स्वयं ही भक्ति का भण्डार है और स्वयं ही भक्ति का दान प्रदान करता है।

ਆਪੇ ਸੇਵ ਕਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪਿ ਦਿਵਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥
आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों से अपनी उपासना करवाता है और स्वयं ही दुनिया में मान-सम्मान दिलाता है।

ਆਪੇ ਤਾੜੀ ਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥੩॥
आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥३॥
वह स्वयं ही शून्य-समाधि लगाता है और स्वयं ही गुणों का खजाना है ॥३॥

ਆਪੇ ਵਡਾ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਪਰਧਾਨੁ ॥
आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधानु ॥
प्यारा प्रभु स्वयं ही महान् है और स्वयं ही प्रधान है।

ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਤੁਲੁ ਪਰਵਾਨੁ ॥
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवानु ॥
वह स्वयं ही अपना मूल्यांकन करता है और स्वयं ही तराजू एवं माप है।

ਆਪੇ ਅਤੁਲੁ ਤੁਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੪॥੫॥
आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबानु ॥४॥५॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं अतुलनीय है लेकिन जीवों को तोल लेता है। नानक सर्वदा उस पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ ५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सोरठि महला ४ ॥
सोरठि महला ४ ॥

ਆਪੇ ਸੇਵਾ ਲਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਭਗਤਿ ਉਮਾਹਾ ॥
आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों को अपनी सेवा में लगाता है और स्वयं ही उनमें अपनी भक्ति की उमंग उत्पन्न करता है।

ਆਪੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਾ ॥
आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥
वह स्वयं ही भक्तजनों से अपना गुणगान करवाता है और स्वयं ही अपने शब्द में समाया हुआ है।

ਆਪੇ ਲੇਖਣਿ ਆਪਿ ਲਿਖਾਰੀ ਆਪੇ ਲੇਖੁ ਲਿਖਾਹਾ ॥੧॥
आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥१॥
वह स्वयं ही कलम है, स्वयं ही लिखने वाला लिखारी है और स्वयं ही जीवों के कर्मों का लेख लिखता है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ॥
मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥
हे मेरे मन ! तू उमंग से राम-नाम का भजन कर।

ਅਨਦਿਨੁ ਅਨਦੁ ਹੋਵੈ ਵਡਭਾਗੀ ਲੈ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥
भाग्यशाली जीव पूर्ण गुरु के द्वारा हरि-नाम का लाभ प्राप्त करते हैं और उनका प्रतिदिन आनंददायक होता है।॥ रहाउ॥

ਆਪੇ ਗੋਪੀ ਕਾਨੁ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਬਨਿ ਆਪੇ ਗਊ ਚਰਾਹਾ ॥
आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥
प्रिय प्रभु स्वयं ही गोपी (राधा) एवं श्रीकृष्ण है और वह स्वयं ही वृंदावन में गाय चराने वाला है।

ਆਪੇ ਸਾਵਲ ਸੁੰਦਰਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਵੰਸੁ ਵਜਾਹਾ ॥
आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥
वह स्वयं ही सांवला सुन्दर कन्हैया है और स्वयं ही मधुर ध्वनि में बांसुरी बजाने वाला है।

ਕੁਵਲੀਆ ਪੀੜੁ ਆਪਿ ਮਰਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਬਾਲਕ ਰੂਪਿ ਪਚਾਹਾ ॥੨॥
कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥२॥
उस प्यारे प्रभु ने स्वयं ही बालक का रूप धारण करके कुबलियापीड़ हाथी का वध किया था ॥ २ ॥

ਆਪਿ ਅਖਾੜਾ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਆਪਿ ਚੋਜਾਹਾ ॥
आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥
वह स्वयं ही अखाड़ा बनाता है और लीलाएँ रचकर स्वयं ही उन्हें देखता है।

ਕਰਿ ਬਾਲਕ ਰੂਪ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਚੰਡੂਰੁ ਕੰਸੁ ਕੇਸੁ ਮਾਰਾਹਾ ॥
करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥
वह स्वयं ही बालक कृष्ण-कन्हैया रूप में उत्पन्न हुआ और कृष्ण द्वारा चंडूर, कस एवं केशि का वध किया।

ਆਪੇ ਹੀ ਬਲੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਬਲੁ ਭੰਨੈ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧਾਹਾ ॥੩॥
आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भंनै मूरख मुगधाहा ॥३॥
वह प्यारा प्रभु स्वयं ही शक्ति का रूप है और वह मूर्ख एवं विमूढ़ लोगों के बल का दमन करता है॥ ३॥

ਸਭੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਵਸਿ ਆਪੇ ਜੁਗਤਿ ਹਥਾਹਾ ॥

सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥

वह प्यारा प्रभु स्वयं ही समूचे जगत की रचना करता है और जगत की युक्ति उसी के वश में है।

ਗਲਿ ਜੇਵੜੀ ਆਪੇ ਪਾਇਦਾ ਪਿਆਰਾ ਜਿਉ ਪ੍ਰਭੁ ਖਿੰਚੈ ਤਿਉ ਜਾਹਾ ॥
गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥
वह स्वयं ही प्राणियों के गले में जीवन की डोर डालता है और जैसे प्रभु उन्हें खींचता है, वैसे ही प्राणी जीवन-मार्ग की ओर जाते हैं।

ਜੋ ਗਰਬੈ ਸੋ ਪਚਸੀ ਪਿਆਰੇ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਸਮਾਹਾ ॥੪॥੬॥
जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥४॥६॥
नानक का कथन है कि हे प्यारे ! जो व्यक्ति केवल घमण्ड ही करता है, उसका अंत हो जाता है। इसलिए ईश्वर का नाम जपकर उसकी भक्ति में ही लीन रहो।॥ ४॥ ६ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੪ ਦੁਤੁਕੇ ॥
सोरठि मः ४ दुतुके ॥
सोरठि मः ४ दुतुके ॥

ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਵਿਛੁੜੇ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਰੈ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥
अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥
अनेक जन्मों से भगवान से जुदा हुआ मनमुख पुरुष अत्यंत दुःख ही भोग रहा है और वह तो अहंकार के वशीभूत होकर कर्म करने में सक्रिय है।

ਸਾਧੂ ਪਰਸਤ ਹੀ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ਗੋਬਿਦ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥
साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥१॥
साधु रूपी गुरु के चरण-छूने से ही प्रभु की प्राप्ति हो गई है। हे गोविन्द ! मैं तो तुम्हारी शरण में ही आया हूँ॥ १॥

ਗੋਬਿਦ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਅਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥
गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥
गोविन्द की प्रीति मुझे अत्यन्त प्यारी लगती है।

ਜਬ ਸਤਸੰਗ ਭਏ ਸਾਧੂ ਜਨ ਹਿਰਦੈ ਮਿਲਿਆ ਸਾਂਤਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥
जब साधुओं के साथ मेरा सत्संग हुआ तो मुझे मेरे हृदय में ही शांति प्रदान करने वाला मुरारि प्रभु प्राप्त हो गया।॥ रहाउ ॥

ਤੂ ਹਿਰਦੈ ਗੁਪਤੁ ਵਸਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਤੇਰਾ ਭਾਉ ਨ ਬੁਝਹਿ ਗਵਾਰੀ ॥
तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥
हे भगवान ! तू हम जीवों के हृदय में ही गुप्त रूप में रहता है लेकिन हम गंवार तुम्हारे स्नेह को नहीं समझते।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਵੀਚਾਰੀ ॥੨॥
सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥२॥
महापुरुष सतगुरु के मिलाप से प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन हो गए हैं। अब तो मैं उसका ही यशगान करता हूँ और प्रभु के गुणों पर ही चिंतन करता हूँ॥ २॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਭਇਆ ਸਾਤਿ ਆਈ ਦੁਰਮਤਿ ਬੁਧਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥
गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥
गुरु के सान्निध्य में रहकर मेरा मन उज्जवल हो गया है और शांति प्राप्त होने के कारण मेरे मन में से खोटी बुद्धि दूर हो गई है।

ਆਤਮ ਬ੍ਰਹਮੁ ਚੀਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਤਸੰਗਤਿ ਪੁਰਖ ਤੁਮਾਰੀ ॥੩॥
आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥३॥
हे सतगुरु ! तुम्हारी सत्संगति के फलस्वरूप आत्मा में ही ब्रह्म को जान कर मुझे सुख प्राप्त हो गया है ॥३॥

ਪੁਰਖੈ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਿਆ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਜਿਨ ਕਉ ਕਿਰਪਾ ਭਈ ਤੁਮਾਰੀ ॥
पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥
हे प्रभु ! जिन पर तुम्हारी अपार कृपा हुई है, उन्हें गुरु प्राप्त हो गया है और गुरु से साक्षात्कार करके उन्हें तेरी प्राप्ति हो गई है।

ਨਾਨਕ ਅਤੁਲੁ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਤੁ ਰਹੈ ਬਨਵਾਰੀ ॥੪॥੭॥
नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥४॥७॥
हे नानक ! उसे अतुलनीय सहज सुख प्राप्त हो गया है और वह अब प्रतिदिन भगवान में मग्न होकर जाग्रत रहता है॥ ४ ॥ ७ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥
सोरठि महला ४ ॥
सोरठि महला ४ ॥

ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਅੰਤਰੁ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥
हरि के प्रेम से मेरा मन बिंध गया है एवं हरि के बिना में रह नहीं सकता।

ਜਿਉ ਮਛੁਲੀ ਬਿਨੁ ਨੀਰੈ ਬਿਨਸੈ ਤਿਉ ਨਾਮੈ ਬਿਨੁ ਮਰਿ ਜਾਈ ॥੧॥

जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥१॥

जैसे मछली जल के बिना नाश हो जाती है, वैसे ही जीवात्मा हरि-नाम बिना मर जाती है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਜਲੁ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਨਾਈ ॥

मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥

हे मेरे प्रभु ! मुझे हरि-नाम रूपी कृपा-जल प्रदान कीजिए।

ਹਉ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਗਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸਾਂਤਿ ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥

मैं अपने मन में दिन-रात नाम ही माँगता रहता हूँ और नाम से ही शांति प्राप्त होती है ॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਚਾਤ੍ਰਿਕੁ ਜਲ ਬਿਨੁ ਬਿਲਲਾਵੈ ਬਿਨੁ ਜਲ ਪਿਆਸ ਨ ਜਾਈ ॥

जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥

जैसे पपीहा जल के बिना तड़पता रहता है और जल के बिना उसकी प्यास नहीं बुझती;

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਲੁ ਪਾਵੈ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਹਰਿਆ ਭਾਇ ਸੁਭਾਈ ॥੨॥

गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥२॥

वैसे ही गुरु के माध्यम से ही ब्रह्म रूपी जल का सुख प्राप्त होता है और वह प्रभु-प्रेम से सहज ही प्रफुल्लित हो जाता है॥ २ ॥

ਮਨਮੁਖ ਭੂਖੇ ਦਹ ਦਿਸ ਡੋਲਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਈ ॥

मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥

मोह-माया के भूखे मनमुख पुरुष दसों दिशाओं में भटकते रहते हैं और नाम से वंचित रहने के कारण अत्यंत दु:ख भोगते हैं।

ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਆਵੈ ਦਰਗਹਿ ਮਿਲੈ ਸਜਾਈ ॥੩॥

जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥३॥

ऐसे लोग जन्मते-मरते रहते हैं, पुनः पुनः योनियों में आते हैं और भगवान के दरबार में उन्हें कठोर दण्ड मिलता है॥ ३॥

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹਿ ਤਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਰਸੁ ਅੰਤਰਿ ਪਾਈ ॥

क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥

यदि भगवान कृपा करे तो मनुष्य हरि का गुणगान करता है और उसे हृदय में ही हरि-रस प्राप्त हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਭਏ ਹੈ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸਬਦਿ ਬੁਝਾਈ ॥੪॥੮॥
नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥४॥८॥
हे नानक ! भगवान दीनदयालु है, जिस पर वह दयालु होता है, उसकी शब्द के माध्यम से तृष्णा बुझा देता है॥ ४॥ ८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਪੰਚਪਦਾ ॥
सोरठि महला ४ पंचपदा ॥
सोरठि महला ४ पंचपदा ॥

ਅਚਰੁ ਚਰੈ ਤਾ ਸਿਧਿ ਹੋਈ ਸਿਧੀ ਤੇ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥
अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥
यदि मनुष्य अजेय मन पर विजय प्राप्त कर ले तो उसे सिद्धि की प्राप्ति होती है और सिद्धि के फलस्वरूप ही ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

ਪ੍ਰੇਮ ਕੇ ਸਰ ਲਾਗੇ ਤਨ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਭ੍ਰਮੁ ਕਾਟਿਆ ਜਾਈ ॥੧॥
प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥
जब भगवान के प्रेम के तीर तन के भीतर लगते हैं तो भ्रम दूर हो जाता है ॥१॥

ਮੇਰੇ ਗੋਬਿਦ ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਕਉ ਦੇਹਿ ਵਡਿਆਈ ॥
मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥
हे मेरे गोविन्द ! अपने सेवक को अपने नाम की बड़ाई प्रदान करो।

ਗੁਰਮਤਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਸਹੁ ਸਦਾ ਰਹਹੁ ਸਰਣਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥
गुरु के उपदेश द्वारा ही अपना राम नाम मेरे हृदय में उज्ज्वल करो चूंकि मैं हमेशा ही तुम्हारी शरण में पड़ा रहूँ ॥ रहाउ ॥

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਸਭੁ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਮਨ ਮੂਰਖ ਚੇਤਿ ਅਜਾਣਾ ॥
इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥
हे मूर्ख एवं अचेतन मन ! यह सारी दुनिया आवागमन (जन्म मरण) के वशीभूत है, इसलिए केवल भगवान का ही भजन करो।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਤਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣਾ ॥੨॥
हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥२॥
हे श्री हरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे गुरु से मिला दो ताकि मैं तेरे हरि-नाम में लीन हो जाऊँ॥ २॥

ਜਿਸ ਕੀ ਵਥੁ ਸੋਈ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ਜਿਸ ਨੋ ਦੇਇ ਸੁ ਪਾਏ ॥

जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥

जिसकी अनमोल वस्तु यह नाम है, वह प्रभु ही इसे जानता है। जिसे यह अनमोल वस्तु देता है, वही इसे प्राप्त करता है।

ਵਸਤੁ ਅਨੂਪ ਅਤਿ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਅਲਖੁ ਲਖਾਏ ॥੩॥

वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥३॥

यह नाम-वस्तु अत्यंत अनूप, अगम्य, अगोचर है और पूर्ण गुरु के द्वारा ही अलक्ष्य वस्तु प्रगट होती है॥ ३॥

ਜਿਨਿ ਇਹ ਚਾਖੀ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਗੂੰਗੇ ਕੀ ਮਿਠਿਆਈ ॥

जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥

जिसने इसे चखा है, वही इसके स्वाद को जानता है। जैसे गूंगा मिठाई का स्वाद नहीं बता सकता यह वैसे ही है।

ਰਤਨੁ ਲੁਕਾਇਆ ਲੂਕੈ ਨਾਹੀ ਜੇ ਕੋ ਰਖੈ ਲੁਕਾਈ ॥੪॥
रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥४॥
नाम-रत्न छिपाने पर भी छिपा नहीं रह सकता चाहे कोई छिपाने की कितनी ही कोशिश करे॥ ४॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤੇਰਾ ਤੂ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਤੂ ਸਭਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥
सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥
हे परमात्मा ! यह सारी सृष्टि तेरी ही है। तू अंतर्यामी है और तू हम सबका प्रभु है।

ਜਿਸ ਨੋ ਦਾਤਿ ਕਰਹਿ ਸੋ ਪਾਏ ਜਨ ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੫॥੯॥
जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥५॥९॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जिसे तू दान देता है, वही इसे प्राप्त करता है। दूसरा कोई नहीं जो इसे तेरे बिना प्राप्त कर ले॥ ५ ॥ ६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਤਿਤੁਕੇ
सोरठि महला ५ घरु १ तितुके
सोरठि महला ५ घरु १ तितुके

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਸੁ ਹਉ ਜਾਚੀ ਕਿਸ ਆਰਾਧੀ ਜਾ ਸਭੁ ਕੋ ਕੀਤਾ ਹੋਸੀ ॥
किसु हउ जाची किस आराधी जा सभु को कीता होसी ॥
जब सब जीवों को ईश्वर ने ही पैदा किया हुआ है तो फिर उसके अलावा मैं किससे मांगू? किसकी आराधना करूँ ?

ਜੋ ਜੋ ਦੀਸੈ ਵਡਾ ਵਡੇਰਾ ਸੋ ਸੋ ਖਾਕੂ ਰਲਸੀ ॥
जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥
जो कोई बड़े से बड़ा आदमी दिखाई देता है, वह भी आखिरकार मिट्टी में ही मिल जाता है।

ਨਿਰਭਉ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਭਵ ਖੰਡਨੁ ਸਭਿ ਸੁਖ ਨਵ ਨਿਧਿ ਦੇਸੀ ॥੧॥
निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥१॥
वह निरंकार निर्भय है, संसार के जन्म-मरण के बंधन मिटाने वाला है और वह स्वयं ही सर्वसुख एवं नवनिधियाँ देता है॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰੀ ਦਾਤੀ ਰਾਜਾ ॥
हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥
हे श्री हरि ! जब तेरे दिए हुए दान से मैं तृप्त हो जाता हूँ तो फिर

ਮਾਣਸੁ ਬਪੁੜਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀ ਕਿਆ ਤਿਸ ਕਾ ਮੁਹਤਾਜਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥
मैं मनुष्य बेचारे की क्यों तारीफ करूँ ? मुझे उस पर निर्भर होने की क्या आवश्यकता है?॥ रहाउ॥

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕਾ ਤਿਸ ਕੀ ਭੂਖ ਗਵਾਈ ॥
जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥
जिसने भी भगवान का ध्यान किया है, विश्व का सब कुछ उसका हो गया है और भगवान ने उसकी तमाम भूख निवृत्त कर दी है।

ਐਸਾ ਧਨੁ ਦੀਆ ਸੁਖਦਾਤੈ ਨਿਖੁਟਿ ਨ ਕਬ ਹੀ ਜਾਈ ॥
ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥
सुखों के दाता प्रभु ने ऐसा धन दिया है, जो कदापि खत्म नहीं होता।

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੇ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥੨॥
अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥२॥
सतिगुरु ने मुझे उससे मिला दिया है, अब मैं बड़ा आनंदित हूँ और सहज सुख में लीन रहता हूँ॥ २॥

ਮਨ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਆਰਾਧਿ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੀ ॥
मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥
हे मेरे मन ! नाम का भजन कर, नाम की आराधना कर और प्रतिदिन नाम का ही बखान कर।

ਉਪਦੇਸੁ ਸੁਣਿ ਸਾਧ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸਭ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ਜਮਾਣੀ ॥
उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥
साधु-संतों का ध्यानपूर्वक उपदेश सुनकर मृत्यु का तमाम भय दूर हो गया है।

ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹੋਆ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸੇ ਲਾਗੇ ਗੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥੩॥
जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥३॥
जिन पर मेरा प्रभु कृपालु हुआ है, उसने गुरु की वाणी में वृति लगा ली है ॥ ३॥

ਕੀਮਤਿ ਕਉਣੁ ਕਰੈ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਤੂ ਸਰਬ ਜੀਆ ਦਇਆਲਾ ॥
कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥
हे प्रभु ! तेरा मूल्यांकन कौन कर सकता है, जबकि तू तो सब जीवों पर दयालु है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕੀਤਾ ਤੇਰਾ ਵਰਤੈ ਕਿਆ ਹਮ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥
सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥
हे परमपिता ! विश्व में सब कुछ तेरा किया ही होता है, हम जीव क्या करने में समर्थ हैं?

ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਤੁਮਰਾ ਜਿਉ ਪਿਤਾ ਪੂਤ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥੪॥੧॥
राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥
हे ईश्वर ! नानक तेरा ही दास है, उसकी इस तरह रक्षा कर, जैसे पिता अपने पुत्र पर कृपालु होता है॥ ४॥ १॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਚੌਤੁਕੇ ॥
सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥
सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥

ਗੁਰੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਲਾਹੀਐ ਭਾਈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਿਰਦੈ ਧਾਰ ॥
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥
हे भाई ! अपने मन, तन एवं हृदय में प्रेम बसाकर गोविन्द-गुरु की स्तुति करनी चाहिए।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਏਹਾ ਕਰਣੀ ਸਾਰ ॥
साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥
सच्चा परमेश्वर हृदय में बसा रहे, यही सर्वश्रेष्ठ जीवन-आचरण है।

ਜਿਤੁ ਤਨਿ ਨਾਮੁ ਨ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਸੇ ਤਨ ਹੋਏ ਛਾਰ ॥
जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥
जिस शरीर में भगवान का नाम उत्पन्न नहीं होता, वह शरीर भस्म हो जाता है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕਉ ਵਾਰਿਆ ਭਾਈ ਜਿਨ ਏਕੰਕਾਰ ਅਧਾਰ ॥੧॥
साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥१॥
मैं उस सत्संगति पर मन-तन से न्यौछावर हूँ, जिसे केवल एक परमेश्वर का ही सहारा है॥ १॥

ਸੋਈ ਸਚੁ ਅਰਾਧਣਾ ਭਾਈ ਜਿਸ ਤੇ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਇ ॥
सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥
हे भाई ! उस परम-सत्य परमेश्वर की ही आराधना करो, जिससे सब कुछ उत्पन्न हुआ है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਜਾਣਾਇਆ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने ज्ञान करवा दिया है कि उस एक परमेश्वर के अलावा अन्य कोई समर्थ नहीं ॥ रहाउ ॥

ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਪਚਿ ਮੁਏ ਭਾਈ ਗਣਤ ਨ ਜਾਇ ਗਣੀ ॥
नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥
हे भाई ! परमेश्वर के नाम बिना कितने ही गल सड़ कर मर गए हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती।

ਵਿਣੁ ਸਚ ਸੋਚ ਨ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਸਾਚਾ ਅਗਮ ਧਣੀ ॥
विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥
सत्य के बिना पवित्रता प्राप्त नहीं होती और वह मालिक सत्यस्वरूप एवं अगम्य है।

ਆਵਣ ਜਾਣੁ ਨ ਚੁਕਈ ਭਾਈ ਝੂਠੀ ਦੁਨੀ ਮਣੀ ॥
आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥
हे भाई ! सांसारिक पदार्थों का अहंकार झूठा है और इन में मग्न होने से जन्म-मरण का चक्र नष्ट नहीं होता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋਟਿ ਉਧਾਰਦਾ ਭਾਈ ਦੇ ਨਾਵੈ ਏਕ ਕਣੀ ॥੨॥
गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥२॥
हे भाई ! गुरुमुख मनुष्य परमात्मा के नाम का एक कण-मात्र ही प्रदान करके करोड़ों की मुक्ति कर देता है॥ २॥

ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਸਾਸਤ ਸੋਧਿਆ ਭਾਈ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਇ ॥
सिम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥
हे भाई ! स्मृतियों तथा शास्त्रों का मैंने भली भांति विश्लेषण किया है परन्तु सतगुरु के बिना भ्रम दूर नहीं होता।

ਅਨਿਕ ਕਰਮ ਕਰਿ ਥਾਕਿਆ ਭਾਈ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਬੰਧਨ ਪਾਇ ॥
अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥
मनुष्य अनेक कर्म करके थक जाता है लेकिन फिर भी बार-बार वह बन्धनों में ही पड़ता है।

ਚਾਰੇ ਕੁੰਡਾ ਸੋਧੀਆ ਭਾਈ ਵਿਣੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ ॥
हे भाई ! मैंने चारों-दिशाओं में पड़ताल कर ली है लेकिन सतगुरु के अलावा मुक्ति का कोई मार्ग नहीं।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਭਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੩॥
वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥३॥
हे भाई ! अहोभाग्य से मुझे गुरु मिल गया है और अब मैं हरि-नाम का ही ध्यान करता हूँ ॥ ३॥

ਸਚੁ ਸਦਾ ਹੈ ਨਿਰਮਲਾ ਭਾਈ ਨਿਰਮਲ ਸਾਚੇ ਸੋਇ ॥
सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥
हे भाई ! परम-सत्य प्रभु हमेशा पवित्र है और वही पवित्र हैं जो सच्चे हैं।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਆਪਣੀ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥
नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥
हे भाई ! जिस पर प्रभु की करुणा-दृष्टि होती है, उसे वह प्राप्त हो जाता है।

ਕੋਟਿ ਮਧੇ ਜਨੁ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਵਿਰਲਾ ਕੋਈ ਕੋਇ ॥
कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥
करोड़ों में से कोई विरला पुरुष ही प्रभु-भक्त मिलता है।

ਨਾਨਕ ਰਤਾ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਭਾਈ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੪॥੨॥
नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥४॥२॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! भक्त तो सत्य-नाम में ही मग्न रहता है और जिसे सुनकर मन, तन पावन हो जाता है॥ ४॥ २॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਦੁਤੁਕੇ ॥
सोरठि महला ५ दुतुके ॥
सोरठि महला ५ दुतुके ॥

ਜਉ ਲਉ ਭਾਉ ਅਭਾਉ ਇਹੁ ਮਾਨੈ ਤਉ ਲਉ ਮਿਲਣੁ ਦੂਰਾਈ ॥
जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥
यह मन जब तक किसी से स्नेह एवं वैर-विरोध मानता रहता है, तब तक उसके लिए भगवान से मिलन करना असंभव है।

ਆਨ ਆਪਨਾ ਕਰਤ ਬੀਚਾਰਾ ਤਉ ਲਉ ਬੀਚੁ ਬਿਖਾਈ ॥੧॥
आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥१॥
जब तक मनुष्य अपने-पराए पर ही विचार करता है, तब तक उसके एवं भगवान के मध्य जुदाई की दीवार बनी रहती है॥ १॥

ਮਾਧਵੇ ਐਸੀ ਦੇਹੁ ਬੁਝਾਈ ॥
माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥
हे भगवान ! मुझे ऐसी सुमति दीजिए कि

ਸੇਵਉ ਸਾਧ ਗਹਉ ਓਟ ਚਰਨਾ ਨਹ ਬਿਸਰੈ ਮੁਹਤੁ ਚਸਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥
मैं संतों की सेवा में ही तल्लीन रहूँ, उनके चरणों का आश्रय लूं और तुम मुझे एक क्षण एवं पल भर के लिए विस्मृत न हो सको ॥ रहाउ ॥

ਰੇ ਮਨ ਮੁਗਧ ਅਚੇਤ ਚੰਚਲ ਚਿਤ ਤੁਮ ਐਸੀ ਰਿਦੈ ਨ ਆਈ ॥
रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥
हे मेरे मूर्ख, अचेत एवं चंचल मन ! तेरे चित्त को ऐसी बात नहीं सूझी कि

ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਤਿਆਗਿ ਆਨ ਤੂ ਰਚਿਆ ਉਰਝਿਓ ਸੰਗਿ ਬੈਰਾਈ ॥੨॥
प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥२॥
प्राणपति प्रभु को त्याग कर तू द्वैतभाव में मगन है और तू अपने शत्रुओं-कामवासना, अहंकार, लोभ, क्रोध, मोह के संग उलझा रहता है॥ २॥

ਸੋਗੁ ਨ ਬਿਆਪੈ ਆਪੁ ਨ ਥਾਪੈ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥
सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥
संतों की पावन संगति में मुझे यह बुद्धि प्राप्त हुई है कि आत्माभिमान को स्थापित न करने से कोई शोक व्याप्त नहीं होता।

ਸਾਕਤ ਕਾ ਬਕਨਾ ਇਉ ਜਾਨਉ ਜੈਸੇ ਪਵਨੁ ਝੁਲਾਈ ॥੩॥
साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥३॥
भगवान से विमुख मनुष्य की वार्ता को यूं समझो जैसे कोई हवा का झोंका कहीं उड़ जाता है ॥३॥

ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਅਛਾਦਿਓ ਇਹੁ ਮਨੁ ਕਹਣਾ ਕਛੂ ਨ ਜਾਈ ॥
कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥
यह चंचल मन करोड़ों ही अपराधों से ढका हुआ है, इसकी दुर्दशा के बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਦੀਨ ਸਰਨਿ ਆਇਓ ਪ੍ਰਭ ਸਭੁ ਲੇਖਾ ਰਖਹੁ ਉਠਾਈ ॥੪॥੩॥
जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥४॥३॥
हे प्रभु ! नानक तो दीन होकर तेरी शरण में आया है, तू उसके कर्मों का प्रत्येक लेखा खत्म कर दे ॥ ४॥ ३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਲੋਕ ਗ੍ਰਿਹ ਬਨਿਤਾ ਮਾਇਆ ਸਨਬੰਧੇਹੀ ॥
पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबंधेही ॥
पुत्र, पत्नी, घर के सदस्य तथा अन्य महिला इत्यादि सभी धन-दौलत के संबंधी ही हैं।

ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਕੋ ਖਰਾ ਨ ਹੋਸੀ ਸਭ ਮਿਥਿਆ ਅਸਨੇਹੀ ॥੧॥
अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥१॥
जीवन के अन्तिम क्षणों में इन में से किसी ने भी साथ नहीं देना, क्योंकि ये सभी झूठे हमदर्दी ही हैं॥ १॥

ਰੇ ਨਰ ਕਾਹੇ ਪਪੋਰਹੁ ਦੇਹੀ ॥
रे नर काहे पपोरहु देही ॥
हे मानव ! तुम क्यों शरीर से ही दुलार करते रहते हो ?

ਊਡਿ ਜਾਇਗੋ ਧੂਮੁ ਬਾਦਰੋ ਇਕੁ ਭਾਜਹੁ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥
यह तो धुएं के बादल की तरह उड़ जाएगा। इसलिए एक ईश्वर का ही भजन कर, जो तेरा सच्चा हमदर्द है ॥ रहाउ ॥

ਤੀਨਿ ਸੰਝਿਆ ਕਰਿ ਦੇਹੀ ਕੀਨੀ ਜਲ ਕੂਕਰ ਭਸਮੇਹੀ ॥
तीनि संञिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥
स्रष्टा ने शरीर का निर्माण करते वक्त उसका अन्त तीन प्रकार से नियत किया है। १. शरीर का जल प्रवाह, २. शरीर को कुत्तों के हवाले करना ३. शरीर को जलाकर भस्म करना।

ਹੋਇ ਆਮਰੋ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਬੈਠਾ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਬਿਸਰੋਹੀ ॥੨॥
होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥२॥
परन्तु मनुष्य शरीर गृह को अमर समझ कर बैठा है और परमात्मा को उसने भुला दिया है ॥२॥

ਅਨਿਕ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ਮਣੀਏ ਸਾਜੇ ਕਾਚੈ ਤਾਗਿ ਪਰੋਹੀ ॥
अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥
भगवान ने अनेक विधियों से जीव रूपी मोती बनाए हैं और उन्हें जीवन रूपी कमजोर धागे में पिरो दिया है।

ਤੂਟਿ ਜਾਇਗੋ ਸੂਤੁ ਬਾਪੁਰੇ ਫਿਰਿ ਪਾਛੈ ਪਛੁਤੋਹੀ ॥੩॥
तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥३॥
हे बेचारे मनुष्य ! धागा टूट जाएगा और तू उसके उपरांत पछताता रहेगा ॥३॥

ਜਿਨਿ ਤੁਮ ਸਿਰਜੇ ਸਿਰਜਿ ਸਵਾਰੇ ਤਿਸੁ ਧਿਆਵਹੁ ਦਿਨੁ ਰੈਨੇਹੀ ॥
जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥
हे मानव ! जिसने तुझे बनाया है और बनाकर तुझे संवारा है, दिन-रात उस परमात्मा का सिमरन कर।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮੈ ਸਤਿਗੁਰ ਓਟ ਗਹੇਹੀ ॥੪॥੪॥
जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥४॥४॥
नानक पर प्रभु ने कृपा की है और उसने सतिगुरु का आश्रय लिया हुआ है ॥४॥४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਓ ਵਡਭਾਗੀ ਮਨਹਿ ਭਇਆ ਪਰਗਾਸਾ ॥
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥
बड़ी अच्छी तकदीर से मेरा पूर्ण गुरु के साथ मिलाप हुआ है, गुरु के दर्शन से मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है।

ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ਦੂਜਾ ਅਪੁਨੇ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥੧॥
कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥१॥
मैं तो अपने मालिक पर ही आश्वस्त हूँ, कोई अन्य उसके तुल्य पहुँचने वाला नहीं है ॥१॥

ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ॥
अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥
मैं अपने सतगुरु पर बलिहारी हूँ।

ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਪਾਛੈ ਸੁਖ ਸਹਜਾ ਘਰਿ ਆਨੰਦੁ ਹਮਾਰੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥
गुरु के द्वारा आगे-पीछे अर्थात् लोक परलोक में मेरे लिए सुख ही सुख है और हमारे घर में सहज आनंद बना हुआ है ॥ रहाउ ॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ਸੋਈ ਖਸਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥
वह अन्तर्यामी स्रष्टा प्रभु ही हमारा मालिक है।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਾਗੇ ਇਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਆਧਾਰਾ ॥੨॥

निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥२॥

गुरु के चरणों में आने से मैं निर्भीक हो गया हूँ और एक राम नाम ही हमारा आधार बन चुका है ॥२॥

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਭੀ ਹੋਵਨਹਾਰਾ ॥

सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥

उस अकालमूर्ति प्रभु के दर्शन फलदायक हैं, वह वर्तमान में भी स्थित है और भविष्य में भी विद्यमान रहेगा।

ਕੰਠਿ ਲਗਾਇ ਅਪੁਨੇ ਜਨ ਰਾਖੇ ਅਪੁਨੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰਾ ॥੩॥

कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥३॥

वह अपने भक्तों को अपनी प्रीति प्यार द्वारा गले से लगाकर उनकी रक्षा करता है॥ ३॥

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਅਚਰਜ ਸੋਭਾ ਕਾਰਜੁ ਆਇਆ ਰਾਸੇ ॥

वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥

सतगुरु की बड़ी बड़ाई एवं अद्भुत शोभा है, जिसके द्वारा मेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।

ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਓ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਬਿਨਾਸੇ ॥੪॥੫॥
नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥४॥५॥
नानक की पूर्ण गुरु से भेंट हो गई है और उसके सभी दुःख-क्लेश नष्ट हो गए हैं।॥४॥५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੁਖੀਏ ਕਉ ਪੇਖੈ ਸਭ ਸੁਖੀਆ ਰੋਗੀ ਕੈ ਭਾਣੈ ਸਭ ਰੋਗੀ ॥
सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥
सुखी रहने वाले को तो सभी लोग सुखी ही दिखाई देते हैं लेकिन रोगी को सारी दुनिया ही रोगी लगती है।

ਕਰਣ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸੁਆਮੀ ਆਪਨ ਹਾਥਿ ਸੰਜੋਗੀ ॥੧॥
करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥१॥
भगवान सब कुछ करने एवं कराने वाला है और सारे संयोग उसके हाथ में हैं॥ १॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਜਿਨਿ ਅਪੁਨਾ ਭਰਮੁ ਗਵਾਤਾ ॥
मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥
हे मेरे मन ! जिस व्यक्ति ने अपना भ्रम दूर कर दिया है,

ਤਿਸ ਕੈ ਭਾਣੈ ਕੋਇ ਨ ਭੂਲਾ ਜਿਨਿ ਸਗਲੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥
जिसने सबमें विद्यमान ब्रह्म, को पहचान लिया है, उसके अनुसार कोई भी भटका हुआ नहीं है ॥ रहाउ ॥

ਸੰਤ ਸੰਗਿ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਓਹੁ ਜਾਣੈ ਸਗਲੀ ਠਾਂਢੀ ॥
संत संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ॥
जिसका मन संतों की सभा में सम्मिलित होकर शीतल हुआ है, वह सबको शांतचित ही जानता है।

ਹਉਮੈ ਰੋਗਿ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਬਿਆਪਿਤ ਓਹੁ ਜਨਮਿ ਮਰੈ ਬਿਲਲਾਤੀ ॥੨॥
हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥२॥
जिसका मन अहंकार के रोग से ग्रस्त है, वह जीवन-मृत्यु में फँसकर रोता रहता है।॥ २॥

ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਜਾ ਕੀ ਨੇਤ੍ਰੀ ਪੜਿਆ ਤਾ ਕਉ ਸਰਬ ਪ੍ਰਗਾਸਾ ॥
गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥
जिसके नेत्रों में ब्रह्म-ज्ञान का अञ्जन (सुरमा) पड़ा है, उसे हर तरफ उजाला ही नज़र आता है।

ਅਗਿਆਨਿ ਅੰਧੇਰੈ ਸੂਝਸਿ ਨਾਹੀ ਬਹੁੜਿ ਬਹੁੜਿ ਭਰਮਾਤਾ ॥੩॥
अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥३॥
अज्ञानता के अन्धकार में फँसे अज्ञानी को कुछ भी सूझ नहीं आती और वह बार-बार आवागमन में भटकता है॥ ३॥

ਸੁਣਿ ਬੇਨੰਤੀ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੇ ਨਾਨਕੁ ਇਹੁ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ॥
सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥
हे स्वामी ! मेरी विनती सुनो; नानक तुझसे यही सुख माँगता है कि

ਜਹ ਕੀਰਤਨੁ ਤੇਰਾ ਸਾਧੂ ਗਾਵਹਿ ਤਹ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗੈ ॥੪॥੬॥
जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥४॥६॥
जहाँ साधु तेरा कीर्ति-गान करते हैं, मेरा मन वहाँ ही लगा रहे ॥४॥६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਤਨੁ ਸੰਤਨ ਕਾ ਧਨੁ ਸੰਤਨ ਕਾ ਮਨੁ ਸੰਤਨ ਕਾ ਕੀਆ ॥
तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥
मैंने अपना यह तन, धन एवं मन सब कुछ संतों को सौंप दिया है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਸਰਬ ਕੁਸਲ ਤਬ ਥੀਆ ॥੧॥
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥१॥
संतों के प्रसाद से जब मैंने हरि-नाम का ध्यान किया तो सर्व सुख प्राप्त हो गए ॥१॥

ਸੰਤਨ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦਾਤਾ ਬੀਆ ॥
संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥
संतों के सिवाय, दूसरा कोई नाम का दान देने वाला नहीं।

ਜੋ ਜੋ ਸਰਣਿ ਪਰੈ ਸਾਧੂ ਕੀ ਸੋ ਪਾਰਗਰਾਮੀ ਕੀਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥
जो कोई भी संतों की शरण में आता है, वह भवसागर से पार हो जाता है ॥ रहाउ ॥

ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟਹਿ ਜਨ ਸੇਵਾ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਰਸਿ ਗਾਈਐ ॥
कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥
भगवान के भक्तों की निष्काम सेवा करने एवं हरि का रसपूर्वक भजन-कीर्तन करने से करोड़ों अपराध मिट जाते हैं।

ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥२॥
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥२॥
भक्त की संगति करने से इहलोक में सुख प्राप्त होता है और परलोक में मुख उज्ज्वल हो जाता है परन्तु भक्त की संगति बड़े भाग्य से मिलती है।॥२॥

रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥
रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥
मेरी एक रसना है, प्रभु भक्त अनेक गुणों से भरपूर हैं। फिर उनकी उपमा कितनी बखान की जा सकती है ?

अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥३॥
अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥३॥
उस अगम्य, अगोचर एवं सदा अनश्वर परमात्मा की प्राप्ति संतों की शरण में आने से ही होती है।॥३॥

निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥
निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥
मैं निर्गुण, नीच, अनाथ एवं अपराधी संतों की शरण की ही कामना करता हूँ।

बूडत मोह ग्रिह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥
बूडत मोह ग्रिह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तो पारिवारिक मोह के अन्धे कुएँ में ही डूब रहा हूँ, इसलिए मेरा साथ निभाकर मेरी रक्षा करो॥ ४॥ ७॥

सोरठि महला ५ घरु १ ॥
सोरठि महला ५ घरु १ ॥
सोरठि महला ५ घरु १ ॥

जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥
जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥
हे सृष्टिकर्ता! तू जिसके हृदय में भी निवास कर गया है, तूने उसकी मनोकामना पूरी कर दी है।

ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕਉ ਤੂ ਵਿਸਰਹਿ ਨਾਹੀ ਚਰਣ ਧੂਰਿ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥੧॥
दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥१॥
अपने सेवक को तू कदापि विस्मृत नहीं होता और तेरी चरण-धूलि उसके मन को अच्छी लगती है॥ १॥

ਤੇਰੀ ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥
तेरी अकथनीय कथा कथन नहीं की जा सकती।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਸੁਖਦਾਤੇ ਸੁਆਮੀ ਸਭ ਤੇ ਊਚ ਬਡਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥
हे गुणनिधान ! हे सुखदाता स्वामी ! तेरी बड़ाई सर्वोच्च है॥ रहाउ॥

ਸੋ ਸੋ ਕਰਮ ਕਰਤ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਜੈਸੀ ਤੁਮ ਲਿਖਿ ਪਾਈ ॥
सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥
प्राणी वही कर्म करता है, जैसा कर्म तूने उसकी तकदीर में लिख दिया है।

ਸੇਵਕ ਕਉ ਤੁਮ ਸੇਵਾ ਦੀਨੀ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਿ ਅਘਾਈ ॥੨॥
सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥२॥
अपने सेवक को तूने सेवा-भक्ति दी हुई है और तुम्हारे दर्शन प्राप्त करके वह तृप्त हो गया है॥ २॥

ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਤੁਮਹਿ ਸਮਾਨੇ ਜਾ ਕਉ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਈ ॥
सरब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥
हे भगवान ! समस्त जीवों में निरन्तर तू ही समाया हुआ है और जिसे तू सूझ प्रदान करता है वही इसे समझता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਮਿਟਿਓ ਅਗਿਆਨਾ ਪ੍ਰਗਟ ਭਏ ਸਭ ਠਾਈ ॥੩॥
गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥३॥
गुरु की अपार कृपा से उसका अज्ञान मिट गया है और वह सर्वत्र प्रख्यात हो गया है॥ ३॥

ਸੋਈ ਗਿਆਨੀ ਸੋਈ ਧਿਆਨੀ ਸੋਈ ਪੁਰਖੁ ਸੁਭਾਈ ॥
सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥
नानक का कथन है कि वही ज्ञानी है, वही ध्यानी है और वही पुरुष भद्र स्वभाव वाला है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ਤਾ ਕਉ ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੪॥੮॥
कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥४॥८॥
जिस पर ईश्वर दया करता है, वह उसे अपने मन से कभी नहीं भुलाता ॥४॥८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੀ ਕਬ ਊਚੇ ਕਬ ਨੀਚੇ ॥
सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥
सारी दुनिया मोह में फसी हुई है, परिणामस्वरूप मनुष्य कभी ऊँचा हो जाता है और कभी निम्न हो जाता है।

ਸੁਧੁ ਨ ਹੋਈਐ ਕਾਹੂ ਜਤਨਾ ਓੜਕਿ ਕੋ ਨ ਪਹੂਚੇ ॥੧॥
सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥१॥
किसी भी प्रयास से वह शुद्ध नहीं होता और कोई भी अपने मुकाम को नहीं पहुँचता ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਾਧ ਸਰਣਿ ਛੁਟਕਾਰਾ ॥
मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥
हे मेरे मन ! साधुओं की शरण में आने से ही छुटकारा है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਜਨਮ ਮਰਣੁ ਨ ਰਹਈ ਫਿਰਿ ਆਵਤ ਬਾਰੋ ਬਾਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु बिना जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता अपितु जीव बार-बार दुनिया में आता जाता (जन्मता-मरता) रहता है॥ रहाउ॥

ਓਹੁ ਜੁ ਭਰਮੁ ਭੁਲਾਵਾ ਕਹੀਅਤ ਤਿਨ ਮਹਿ ਉਰਝਿਓ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰਾ ॥
ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥
वह जिसे भ्रम-भुलावा कहा जाता है, सारी दुनिया उसमें उलझी हुई है।

ਪੂਰਨ ਭਗਤੁ ਪੁਰਖ ਸੁਆਮੀ ਕਾ ਸਰਬ ਥੋਕ ਤੇ ਨਿਆਰਾ ॥੨॥
पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥२॥
परन्तु परम-पुरुष स्वामी का पूर्ण भक्त समस्त पदार्थों से न्यारा है॥ २॥

ਨਿੰਦਉ ਨਾਹੀ ਕਾਹੂ ਬਾਤੈ ਏਹੁ ਖਸਮ ਕਾ ਕੀਆ ॥
निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ ॥
दुनिया की किसी भी बात से निन्दा मत करो क्योंकि यह मालिक की ही रचना है।

ਜਾ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੀ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਰੈ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਨਾਉ ਲੀਆ ॥੩॥
जा कउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥३॥
जिस पर मेरे प्रभु ने कृपा की हुई है, वह संतों की पावन सभा में प्रभु-नाम का भजन करता है॥ ३॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭਨਾ ਕਰਤ ਉਧਾਰਾ ॥
पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥
परब्रह्म, परमेश्वर सतगुरु सबका उद्धार करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਤਰੀਐ ਇਹੁ ਪੂਰਨ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥੪॥੯॥
कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥९॥
हे नानक ! गुरु बिना भवसागर से पार नहीं हुआ जा सकता, यही पूर्ण तत्व विचार है॥ ४॥ ६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਖੋਜਿ ਬੀਚਾਰਿਓ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਤਤੁ ਸਾਰਾ ॥
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥
खोजते-खोजते खोजकर मैंने इस बात पर निष्कर्ष किया है कि राम का नाम ही श्रेष्ठ है।

ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੇ ਨਿਮਖ ਅਰਾਧਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥੧॥
किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥१॥
एक क्षण भर भी इसकी आराधना करने से सब पाप मिट जाते हैं और गुरुमुख बनकर व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है॥ १॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਹੁ ਪੁਰਖ ਗਿਆਨੀ ॥
हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥
हे ज्ञानी पुरुषो ! हरि रस का पान करो।

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮਹਾ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਮਨੁ ਪਾਵੈ ਸਾਧੂ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सुणि सुणि महा त्रिपति मनु पावै साधू अम्रित बानी ॥ रहाउ ॥
साधु रूपी गुरु की अमृतवाणी सुन-सुनकर मन को महा-तृप्ति प्राप्त होती है॥ रहाउ॥

ਮੁਕਤਿ ਭੁਗਤਿ ਜੁਗਤਿ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥
अमृतवाणी के फलस्वरूप ही मुक्ति, भुक्ति, युक्ति एवं सत्य की प्राप्ति होती है, जो सर्व सुख देने वाला है।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਭਗਤਿ ਦਾਨੁ ਦੇਵੈ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥੨॥
अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥२॥
सर्वव्यापक अकालपुरुष विधाता अपने दास को अपनी भक्ति का दान देता है॥ २॥

ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣੀਐ ਰਸਨਾ ਗਾਈਐ ਹਿਰਦੈ ਧਿਆਈਐ ਸੋਈ ॥
स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥
उस प्रभु की महिमा को अपने कानों से सुनना चाहिए, अपनी जिव्हा से उसका गुणगान करना चाहिए और हृदय में भी उसका ही ध्यान-मनन करना चाहिए जो

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਜਾ ਤੇ ਬ੍ਰਿਥਾ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥
करण कारण समरथ सुआमी जा ते ब्रिथा न कोई ॥३॥
सब कुछ करने-करवाने में समर्थ है और जिस स्वामी के घर से कोई खाली हाथ नहीं लौटता॥ ३॥

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਪਾਇਆ ਕਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥
वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला ॥
बड़ी किस्मत से मुझे मनुष्य जन्म रूपी रत्न प्राप्त हुआ है, हे कृपानिधि ! मुझ पर कृपा करो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਸਿਮਰੈ ਸਦਾ ਗੋਪਾਲਾ ॥੪॥੧੦॥
साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥४॥१०॥
साधसंगत में नानक परमात्मा के ही गुण गाता है और हमेशा ही उसकी आराधना करता है॥ ४॥ १०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਅਰੋਗਾ ॥
करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥
स्नान करके अपने प्रभु को स्मरण करने से मन एवं तन आरोग्य हो गए हैं।

ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਲਾਥੇ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾ ਪ੍ਰਗਟੇ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗਾ ॥੧॥
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥
प्रभु की शरण लेने से करोड़ों विघ्न समाप्त हो गए हैं और भले संयोग उदय हो गए हैं।॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁਭਾਖਿਆ ॥
प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥
प्रभु की वाणी एवं शब्द शोभनीय है।

ਗਾਵਹੁ ਸੁਣਹੁ ਪੜਹੁ ਨਿਤ ਭਾਈ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਤੂ ਰਾਖਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥
हे भाई ! इसे नित्य गाओ, सुनो एवं पढ़ो; पूर्ण गुरु ने तुझे भवसागर में डूबने से बचा लिया है॥ रहाउ॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਮਿਤਿ ਵਡਾਈ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਦਇਆਲਾ ॥
साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥
सच्चे परमेश्वर की महिमा अमित है। वह बड़ा दयालु एवं भक्तवत्सल है।

ਸੰਤਾ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ਆਦਿ ਬਿਰਦੁ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥੨॥
संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥
अपने विरद् का पालन करने वाला प्रभु आदि से ही अपने संतों-भक्तों की लाज रखता आया है॥ २॥

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਨਿਤ ਭੁੰਚਹੁ ਸਰਬ ਵੇਲਾ ਮੁਖਿ ਪਾਵਹੁ ॥
हरि अम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥
नित्य ही हरिनामामृत का भोजन खाओ और हर समय इसे अपने मुँह में डालो।

ਜਰਾ ਮਰਾ ਤਾਪੁ ਸਭੁ ਨਾਠਾ ਗੁਣ ਗੋਬਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਵਹੁ ॥੩॥
जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥
नित्य गोविन्द का गुणगान करो, वृद्ध अवस्था, मृत्यु एवं समस्त दुःख-संकट भाग जाएँगे ॥ ३॥

ਸੁਣੀ ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੈ ਸਰਬ ਕਲਾ ਬਣਿ ਆਈ ॥
सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥
मेरे स्वामी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और मन में पूर्ण बल पैदा हो गया है।

ਪ੍ਰਗਟ ਭਈ ਸਗਲੇ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੧੧॥
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥
गुरु नानक की महिमा समस्त युगों में प्रगट हो गई है॥ ४॥ ११॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਚਉਪਦੇ
सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे
सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਏਕੁ ਪਿਤਾ ਏਕਸ ਕੇ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੂ ਮੇਰਾ ਗੁਰ ਹਾਈ ॥
एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥
एक (परमेश्वर) ही हमारा पिता है और हम सब एक पिता-परमेश्वर की ही संतान हैं। तू ही मेरा गुरु है।

ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਜੀਉ ਹਮਾਰਾ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਸੀ ਹਰਿ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਦਿਖਾਈ ॥੧॥
सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥१॥
हे मेरे मित्र ! सुनो, यदि तू मुझे हरि-दर्शन करवा दे तो मेरा मन तुझ पर बार-बार न्योछावर होगा ॥ १॥

ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਧੂਰੀ ਕਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥
हे मेरे मित्र ! सुनो, मैं तेरी चरण-धूलि पर कुर्बान जाता हूँ।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥
हे भाई ! यह मन तेरा ही है॥ रहाउ ॥

ਪਾਵ ਮਲੋਵਾ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵਾ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੈ ਕੂ ਦੇਸਾ ॥
पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥
में तेरे पैरों की मालिश करता और अच्छी तरह मल-मलकर उन्हें धोता हूँ। मैं यह मन तुझे ही अर्पण करता हूँ।

ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਹਉ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ਆਇਆ ਪ੍ਰਭ ਮਿਲਉ ਦੇਹੁ ਉਪਦੇਸਾ ॥੨॥
सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥२॥
हे मेरे मित्र ! सुनो, मैं तेरी शरण में आया हूँ, मुझे ऐसा उपदेश दो कि मेरा प्रभु से मिलाप हो जाए॥ २॥

ਮਾਨੁ ਨ ਕੀਜੈ ਸਰਣਿ ਪਰੀਜੈ ਕਰੈ ਸੁ ਭਲਾ ਮਨਾਈਐ ॥
मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥
हमें अभिमान नहीं करना चाहिए और प्रभु-शरण में ही आना चाहिए, चूंकि वह सब कुछ अच्छा ही करता है, इसलिए उसे भला ही मानना चाहिए।

ਸੁਣਿ ਮੀਤਾ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭੁ ਤਨੁ ਅਰਪੀਜੈ ਇਉ ਦਰਸਨੁ ਹਰਿ ਜੀਉ ਪਾਈਐ ॥੩॥
सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥३॥
हे मेरे मित्र ! सुनो, अपने प्राण, शरीर तथा अपना सब कुछ अर्पण कर देना चाहिए, इस प्रकार हरि-दर्शन की प्राप्ति होती है॥ ३॥

ਭਇਓ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹੈ ਮੀਠਾ ॥
भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥
संतों के प्रसाद से प्रभु ने मुझ पर दया की है और हरि का नाम मुझे मीठा लगने लग गया है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਸਭੁ ਅਕੁਲ ਨਿਰੰਜਨੁ ਡੀਠਾ ॥੪॥੧॥੧੨॥
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥४॥१॥१२॥
गुरु ने नानक पर कृपा की है और उसने अकुल एवं निरंजन प्रभु को सर्वत्र देख लिया है॥ ४॥ १॥ १२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਕੋਟਿ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬ ਜੀਆ ਕਾ ਦਾਤਾ ਰੇ ॥
कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥
ईश्वर तो करोड़ों ही ब्रह्माण्डों का स्वामी है और सब जीवों का दाता है।

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਨਿਤ ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੈ ਇਕੁ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਮੂੜਖਿ ਜਾਤਾ ਰੇ ॥੧॥
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥१॥
वह हमेशा ही सबका पालन-पोषण एवं देखभाल करता है किन्तु मुझ मूर्ख ने उसके एक उपकार को भी नहीं समझा॥ १॥

ਹਰਿ ਆਰਾਧਿ ਨ ਜਾਨਾ ਰੇ ॥
हरि आराधि न जाना रे ॥
मुझे तो हरि की आराधना करने की कोई विधि नहीं आती।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਕਰਤਾ ਰੇ ॥
हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥
इसलिए मैं हरि-हरि एवं गुरु-गुरु ही बोलता रहता हूँ।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਨਾਮੁ ਪਰਿਓ ਰਾਮਦਾਸੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥
हे हरि ! तेरी कृपा से मेरा नाम रामदास' पड़ गया है॥ रहाउ॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਸਰਬ ਘਟਾ ਭਰਪੂਰੀ ਰੇ ॥
दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥
दीनदयालु, कृपालु एवं सुख का सागर परमात्मा सबके हृदय में समाया हुआ है।

ਪੇਖਤ ਸੁਨਤ ਸਦਾ ਹੈ ਸੰਗੇ ਮੈ ਮੂੜਖ ਜਾਨਿਆ ਦੂਰੀ ਰੇ ॥੨॥
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥२॥
वह दीनदयालु सबको देखता, सुनता एवं सदा साथ ही रहता है किन्तु मुझ मूर्ख ने उसे दूर ही समझा हुआ है॥ २॥

ਹਰਿ ਬਿਅੰਤੁ ਹਉ ਮਿਤਿ ਕਰਿ ਵਰਨਉ ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਹੋਇ ਕੈਸੋ ਰੇ ॥
हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥
हरि बेअन्त है, मैं तो उसे किसी सीमा में ही वर्णन कर सकता हूँ परन्तु मुझे क्या मालूम वह कैसा है ?

ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਮੈ ਮੂਰਖ ਦੇਹੁ ਉਪਦੇਸੋ ਰੇ ॥੩॥
करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥३॥
मैं अपने सतगुरु से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि मुझ मूर्ख को भी उपदेश दीजिए॥ ३॥

ਮੈ ਮੂਰਖ ਕੀ ਕੇਤਕ ਬਾਤ ਹੈ ਕੋਟਿ ਪਰਾਧੀ ਤਰਿਆ ਰੇ ॥
मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥
मुझ मूर्ख की क्या बात है, गुरु के उपदेश से तो करोड़ों ही अपराधी भवसागर से पार हो गए हैं।

ਗੁਰੁ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਸੁਣਿਆ ਪੇਖਿਆ ਸੇ ਫਿਰਿ ਗਰਭਾਸਿ ਨ ਪਰਿਆ ਰੇ ॥੪॥੨॥੧੩॥
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥४॥२॥१३॥
जिन्होंने गुरु नानक देव जी के बारे में सुना एवं उनके दर्शन प्राप्त किए हैं, वे दोबारा गर्भ-योनि में नहीं पड़े॥ ४॥ २॥ १३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜਿਨਾ ਬਾਤ ਕੋ ਬਹੁਤੁ ਅੰਦੇਸਰੋ ਤੇ ਮਿਟੇ ਸਭਿ ਗਇਆ ॥
जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥
जिन बातों का मुझे बहुत फ़िक्र सताता रहता था, वह सब अब मिट गए हैं।

ਸਹਜ ਸੈਨ ਅਰੁ ਸੁਖਮਨ ਨਾਰੀ ਊਧ ਕਮਲ ਬਿਗਸਇਆ ॥੧॥
सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥१॥
अब मैं सहज-सुख में सोता हूँ और सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा मेरा विपरीत पड़ा हृदय-कमल खिल गया है॥ १॥

ਦੇਖਹੁ ਅਚਰਜੁ ਭਇਆ ॥
देखहु अचरजु भइआ ॥
देखो ! एक अद्भुत बात हो गई है।

ਜਿਹ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਸੁਨਤ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਸੋ ਰਿਦੈ ਗੁਰਿ ਦਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥
जिस भगवान के ज्ञान को अगाध सुना जाता है, उसे गुरु ने मेरे हृदय में बसा दिया है॥ रहाउ॥

ਜੋਇ ਦੂਤ ਮੋਹਿ ਬਹੁਤੁ ਸੰਤਾਵਤ ਤੇ ਭਇਆਨਕ ਭਇਆ ॥
जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥
जो माया के दूत कामादिक विकार मुझे बहुत सताते रहते थे, वे स्वयं ही भयभीत हो गए हैं।

ਕਰਹਿ ਬੇਨਤੀ ਰਾਖੁ ਠਾਕੁਰ ਤੇ ਹਮ ਤੇਰੀ ਸਰਨਇਆ ॥੨॥
करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥२॥
वे प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने भगवान से बचा लो, हम तेरी शरण में आए हैं॥ २॥

जह ਭੰਡਾਰੁ ਗੋਬਿੰਦ ਕਾ ਖੁਲਿਆ ਜਿਹ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਤਿਹ ਲਇਆ ॥
जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥
गोविन्द की भक्ति का भण्डार तो खुला हुआ है, जिसकी तकदीर में इसकी लब्धि लिखी हुई है, उसे भक्ति का भण्डार मिल गया है।

ਏਕੁ ਰਤਨੁ ਮੋ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਥਿਆ ॥੩॥
एकु रतनु मो कउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥३॥
एक रत्न गुरु ने मुझे दिया है, जिसके फलस्वरूप मेरा मन एवं तन शीतल हो गए हैं।॥३॥

ਏਕ ਬੂੰਦ ਗੁਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਦੀਨੋ ਤਾ ਅਟਲੁ ਅਮਰੁ ਨ ਮੁਆ ॥
एक बूंद गुरि अम्रितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥
गुरु ने मुझे एक अमृत की बूंद प्रदान की है, जिसके फलस्वरूप मैं अटल एवं आत्मिक तौर पर अमर हो गया हूँ और अब मेरे समीप काल नहीं आता।

ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਗੁਰਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਸਉਪੇ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੂਲਿ ਨ ਲਇਆ ॥੪॥੩॥੧੪॥
भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥४॥३॥१४॥
वाहिगुरु ने अपनी भक्ति के भण्डार (गुरु) नानक को सौंप दिए हैं और फिर कभी उनसे कर्मों का लेखा नहीं पूछा ॥ ४॥ ३ ॥ १४ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਸੇ ਜਨ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਈ ॥
चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन त्रिपति अघाई ॥
जिनका मन भगवान के चरण-कमलों में समाया हुआ है, वे लोग तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं।

ਗੁਣ ਅਮੋਲ ਜਿਸੁ ਰਿਦੈ ਨ ਵਸਿਆ ਤੇ ਨਰ ਤ੍ਰਿਸਨ ਤ੍ਰਿਖਾਈ ॥੧॥
गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥१॥
जिनके हृदय में अमूल्य गुण निवास नहीं करते, वे पुरुष तृष्णा के ही प्यासे रहते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਆਰਾਧੇ ਅਰੋਗ ਅਨਦਾਈ ॥
हरि आराधे अरोग अनदाई ॥
भगवान की आराधना करने से मनुष्य आरोग्य एवं आनंदित हो जाता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਵਿਸਰੈ ਮੇਰਾ ਰਾਮ ਸਨੇਹੀ ਤਿਸੁ ਲਾਖ ਬੇਦਨ ਜਣੁ ਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥

जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥

जिसे भी मेरा प्यारा राम विस्मृत हो जाता है, उसे समझो लाखों ही संकट आकर घेर लेते हैं।॥ रहाउ॥

ਜਿਹ ਜਨ ਓਟ ਗਹੀ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੀ ਸੇ ਸੁਖੀਏ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣੇ ॥
जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥
हे प्रभु ! जिन भक्तों ने तेरी ओट ली है, वे तेरी शरण में सुख भोगते हैं।

ਜਿਹ ਨਰ ਬਿਸਰਿਆ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ਤੇ ਦੁਖੀਆ ਮਹਿ ਗਨਣੇ ॥੨॥
जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥२॥
जिन लोगों को परमपुरुष विधाता भूल गया है, वे दुःखी मनुष्यों में गिने जाते हैं।॥ २॥

ਜਿਹ ਗੁਰ ਮਾਨਿ ਪ੍ਰਭੂ ਲਿਵ ਲਾਈ ਤਿਹ ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਰਸੁ ਕਰਿਆ ॥
जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥
जिन्होंने गुरु पर श्रद्धा धारण करके प्रभु में सुरति लगाई है, उन्हें महा आनंद के रस की अनुभूति हुई है।

ਜਿਹ ਪ੍ਰਭੂ ਬਿਸਾਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਬੇਮੁਖਾਈ ਤੇ ਨਰਕ ਘੋਰ ਮਹਿ ਪਰਿਆ ॥੩॥
जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥३॥
जो प्रभु को विस्मृत करके गुरु से विमुख हो जाता है, वह भयानक नरक में पड़ता है॥ ३॥

ਜਿਤੁ ਕੋ ਲਾਇਆ ਤਿਤ ਹੀ ਲਾਗਾ ਤੈਸੋ ਹੀ ਵਰਤਾਰਾ ॥
जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥
जैसे भगवान किसी मनुष्य को लगाता है, वह वैसे ही लग जाता है, वैसा ही उसका आचरण बन जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਹ ਪਕਰੀ ਸੰਤਨ ਕੀ ਰਿਦੈ ਭਏ ਮਗਨ ਚਰਨਾਰਾ ॥੪॥੪॥੧੫॥
नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥४॥४॥१५॥
नानक ने तो संतों का आश्रय पकड़ा है और उसका हृदय प्रभु-चरणों में मग्न हो गया है॥ ४॥ ४॥ १५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਰਾਜਨ ਮਹਿ ਰਾਜਾ ਉਰਝਾਇਓ ਮਾਨਨ ਮਹਿ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥
राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥
जैसे राजा राज्य के कार्यों में ही फंसा रहता है, जैसे अभिमानी पुरुष अभिमान में ही फंसा रहता है,

ਲੋਭਨ ਮਹਿ ਲੋਭੀ ਲੋਭਾਇਓ ਤਿਉ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਚੇ ਗਿਆਨੀ ॥੧॥
लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥१॥
जैसे लोभी पुरुष लोभ में ही मुग्ध रहता है, वैसे ही ज्ञानी पुरुष भगवान के रंग में लीन रहता है ॥१॥

ਹਰਿ ਜਨ ਕਉ ਇਹੀ ਸੁਹਾਵੈ ॥
हरि जन कउ इही सुहावै ॥
भक्त को तो यही भला लगता है कि

ਪੇਖਿ ਨਿਕਟਿ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਹੀ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥
वह निकट ही दर्शन करके सतगुरु की सेवा करता रहे और भगवान का भजन करके ही तृप्त होता है ॥ रहाउ ॥

ਅਮਲਨ ਸਿਉ ਅਮਲੀ ਲਪਟਾਇਓ ਭੂਮਨ ਭੂਮਿ ਪਿਆਰੀ ॥
अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥
नशे करने वाला पुरुष मादक पदार्थों में ही लीन रहता है और भूस्वामी का अपनी भूमि की वृद्धि से प्रेम है।

ਖੀਰ ਸੰਗਿ ਬਾਰਿਕੁ ਹੈ ਲੀਨਾ ਪ੍ਰਭ ਸੰਤ ਐਸੇ ਹਿਤਕਾਰੀ ॥੨॥
खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥२॥
जैसे छोटे बालक का दूध से लगाव है, वैसे ही संतजन प्रभु से अत्याधिक प्रेम करते हैं।॥२॥

ਬਿਦਿਆ ਮਹਿ ਬਿਦੁਅੰਸੀ ਰਚਿਆ ਨੈਨ ਦੇਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥
बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥
विद्वान पुरुष विद्या के अध्ययन में ही मग्न रहता है और आँखें सौन्दर्य रूप देख-देखकर सुख की अनुभूति करती हैं।

ਜੈਸੇ ਰਸਨਾ ਸਾਦਿ ਲੁਭਾਨੀ ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹਿ ॥੩॥
जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥३॥
जैसे जीभ विभिन्न स्वादों में मस्त रहती है, वैसे ही भक्त भगवान का गुणगान करने में लीन रहता है ॥३॥

ਜੈਸੀ ਭੂਖ ਤੈਸੀ ਕਾ ਪੂਰਕੁ ਸਗਲ ਘਟਾ ਕਾ ਸੁਆਮੀ ॥
जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥
वह समस्त हृदयों का स्वामी जैसी मनुष्य की भूख-अभिलाषा है, वैसी ही वह इच्छा पूरी करने वाला है।

ਨਾਨਕ ਪਿਆਸ ਲਗੀ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਆ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੪॥੫॥੧੬॥
नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥४॥५॥१६॥
नानक को तो प्रभु-दर्शनों की तीव्र अभिलाषा थी और अंतर्यामी प्रभु उसे मिल गया है॥ ४॥ ५॥ १६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਮ ਮੈਲੇ ਤੁਮ ਊਜਲ ਕਰਤੇ ਹਮ ਨਿਰਗੁਨ ਤੂ ਦਾਤਾ ॥
हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥
हे पतितपावन ! हम पापों की मैल से मलिन हैं और तुम ही हमें पवित्र करते हो। हम निर्गुण हैं और तू हमारा दाता है।

ਹਮ ਮੂਰਖ ਤੁਮ ਚਤੁਰ ਸਿਆਣੇ ਤੂ ਸਰਬ ਕਲਾ ਕਾ ਗਿਆਤਾ ॥੧॥
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥१॥
हम मूर्ख हैं, पर तुम चतुर-सियाने हो। तुम ही सर्वकला के ज्ञाता हो ॥१॥

ਮਾਧੋ ਹਮ ਐਸੇ ਤੂ ਐਸਾ ॥
माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥
हे ईश्वर ! हम जीव ऐसे नीच हैं और तुम ऐसे (सर्वकला सम्पूर्ण) हो।

ਹਮ ਪਾਪੀ ਤੁਮ ਪਾਪ ਖੰਡਨ ਨੀਕੋ ਠਾਕੁਰ ਦੇਸਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥
हम बड़े पापी हैं और तुम पापों का नाश करने वाले हो। हे ठाकुर जी ! तेरा निवास स्थान मनोरम है ॥ रहाउ ॥

ਤੁਮ ਸਭ ਸਾਜੇ ਸਾਜਿ ਨਿਵਾਜੇ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਦੇ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥
तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥
हे परमेश्वर ! तुम ही आत्मा, शरीर एवं प्राण देकर सबकी रचना करके निवाजते हो।

ਨਿਰਗੁਨੀਆਰੇ ਗੁਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ਤੁਮ ਦਾਨੁ ਦੇਹੁ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥੨॥
निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥२॥
हे मेहरबान प्रभु ! हम गुणविहीन हैं और कोई भी गुण हमारे भीतर विद्यमान नहीं।अतः हमें गुणों का दान दीजिए ॥२॥

ਤੁਮ ਕਰਹੁ ਭਲਾ ਹਮ ਭਲੋ ਨ ਜਾਨਹ ਤੁਮ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਇਆਲਾ ॥
तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥
हे दीनदयालु ! हम जीवों का तुम भला ही करते हो परन्तु हम तुच्छ जीव तेरे भले को नहीं समझते। तुम हम पर सर्वदा ही दयावान हो।

ਤੁਮ ਸੁਖਦਾਈ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਤੁਮ ਰਾਖਹੁ ਅਪੁਨੇ ਬਾਲਾ ॥੩॥
तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥३॥
हे परमपुरुष विधाता ! तुम हमें सुख-समृद्धि प्रदान करने वाले हो, इसलिए तुम अपनी संतान की रक्षा करना ॥३॥

ਤੁਮ ਨਿਧਾਨ ਅਟਲ ਸੁਲਿਤਾਨ ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਜਾਚੈ ॥
तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥
हे ईश्वर ! तुम गुणों के कोष हो, अटल सुल्तान हो और समस्त जीव तेरे समक्ष तुझ से ही (भिक्षा) माँगते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਮ ਇਹੈ ਹਵਾਲਾ ਰਾਖੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਾਛੈ ॥੪॥੬॥੧੭॥
कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥४॥६॥१७॥
नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! हम जीवों का यही हाल है। अतः तुम हम पर अपार कृपा करके हमें संतों के मार्ग पर चलाओ ॥४॥६॥१७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ॥
सोरठि महला ५ घरु २ ॥
सोरठि महला ५ घरु २ ॥

ਮਾਤ ਗਰਭ ਮਹਿ ਆਪਨ ਸਿਮਰਨੁ ਦੇ ਤਹ ਤੁਮ ਰਾਖਨਹਾਰੇ ॥
मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥
जैसे तूने माता के गर्भ में अपने सिमरन की देन देकर मेरी रक्षा की थी;

ਪਾਵਕ ਸਾਗਰ ਅਥਾਹ ਲਹਰਿ ਮਹਿ ਤਾਰਹੁ ਤਾਰਨਹਾਰੇ ॥੧॥
पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥१॥
वैसे ही हे मुक्तिदाता प्रभु! इस जगत रूपी अग्नि सागर की अथाह लहरों से मुझे पार कर दो ॥१॥

ਮਾਧੌ ਤੂ ਠਾਕੁਰੁ ਸਿਰਿ ਮੋਰਾ ॥
माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥
हे भगवान ! तू ही मेरे सिर पर मेरा ठाकुर है और

ਈਹਾ ਊਹਾ ਤੁਹਾਰੋ ਧੋਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥
लोक-परलोक में तेरा ही मुझे आसरा है ॥ रहाउ ॥

ਕੀਤੇ ਕਉ ਮੇਰੈ ਸੰਮਾਨੈ ਕਰਣਹਾਰੁ ਤ੍ਰਿਣੁ ਜਾਨੈ ॥
कीते कउ मेरै समानै करणहारु त्रिणु जानै ॥
भगवान द्वारा रचित पदार्थों को तुच्छ मनुष्य पर्वत तुल्य वड़ा जानता है परन्तु उस रचयिता को तृण मात्र ही समझता है।

ਤੂ ਦਾਤਾ ਮਾਗਨ ਕਉ ਸਗਲੀ ਦਾਨੁ ਦੇਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਨੈ ॥੨॥
तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥२॥
हे परमात्मा ! तू दाता है और सभी तेरे द्वार पर भिखारी हैं।किन्तु तू अपनी इच्छानुसार ही दान देता है ॥२॥

ਖਿਨ ਮਹਿ ਅਵਰੁ ਖਿਨੈ ਮਹਿ ਅਵਰਾ ਅਚਰਜ ਚਲਤ ਤੁਮਾਰੇ ॥
खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥
हे ईश्वर ! तुम्हारी लीलाएँ अद्भुत हैं क्योंकि एक क्षण में तुम कुछ होते हो और एक क्षण में ही कुछ अन्य भी।

ਰੂੜੋ ਗੂੜੋ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰੋ ਊਚੌ ਅਗਮ ਅਪਾਰੇ ॥੩॥
रूड़ो गूड़ो गहिर ग्मभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥
तुम सुन्दर, रहस्यपूर्ण, गहन-गंभीर, सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार हो।॥ ३॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਜਉ ਤੁਮਹਿ ਮਿਲਾਇਓ ਤਉ ਸੁਨੀ ਤੁਮਾਰੀ ਬਾਣੀ ॥
साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥
जब तूने मुझे साधुओं की पावन सभा में मिलाया तो ही मैंने तुम्हारी वाणी सुनी है।

ਅਨਦੁ ਭਇਆ ਪੇਖਤ ਹੀ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਤਾਪ ਪੁਰਖ ਨਿਰਬਾਣੀ ॥੪॥੭॥੧੮॥
अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥
निर्लिप्त परमात्मा का तेज-प्रताप देखकर नानक के मन में आनंद पैदा हो गया ॥४॥७॥१८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਮ ਸੰਤਨ ਕੀ ਰੇਨੁ ਪਿਆਰੇ ਹਮ ਸੰਤਨ ਕੀ ਸਰਣਾ ॥
हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥
हे प्यारे ! हम संतों की चरण-धूलि हैं और हम उनकी शरण में ही रहते हैं।

ਸੰਤ ਹਮਾਰੀ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ਸੰਤ ਹਮਾਰਾ ਗਹਣਾ ॥੧॥
संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥
संत हमारा प्रबल सहारा है और वही हमारा सुन्दर आभूषण हैं।॥१॥

ਹਮ ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਬਣਿ ਆਈ ॥
हम संतन सिउ बणि आई ॥
संतों से ही हमारी बनती है।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਈ ॥
पूरबि लिखिआ पाई ॥
जो कुछ पूर्व-जन्म के कर्मो अनुसार तकदीर में लिखा था, वह मुझे मिल गया है।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥
हे संतजनों ! मेरा यह मन आपका ही है॥ रहाउ॥

ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਮੇਰੀ ਲੇਵਾ ਦੇਵੀ ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਬਿਉਹਾਰਾ ॥
संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥
संतों से ही मेरा लेन-देन है और उनसे ही मेरा व्यवहार है।

ਸੰਤਨ ਸਿਉ ਹਮ ਲਾਹਾ ਖਾਟਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥
संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥२॥
संतों की संगति में हमने लाभ अर्जित किया है; हरि की भक्ति के भण्डार हमारे हृदय में भरे हुए हैं।॥ २॥

ਸੰਤਨ ਮੋ ਕਉ ਪੂੰਜੀ ਸਉਪੀ ਤਉ ਉਤਰਿਆ ਮਨ ਕਾ ਧੋਖਾ ॥
संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥
जब संतों ने मुझे हरि-नाम की पूंजी सौंपी तो मेरे मन का धोखा उतर गया।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਅਬ ਕਹਾ ਕਰੈਗੋ ਜਉ ਫਾਟਿਓ ਸਗਲੋ ਲੇਖਾ ॥੩॥
धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥३॥
अब यमराज भी क्या कर सकता है? क्योंकि भगवान ने ही मेरे कर्मों का लेखा फाड़ दिया है ॥३॥

ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਭਏ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਰਸਾਦੇ ॥
महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥
संतों के प्रसाद से में महा आनंदित हो गया हूँ और मुझे सुख की प्राप्ति हो गई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਰੰਗਿ ਰਤੇ ਬਿਸਮਾਦੇ ॥੪॥੮॥੧੯॥
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥४॥८॥१९॥
नानक का कथन है कि मेरा मन तो ईश्वर के साथ लग कर उसके अद्भुत प्रेम-रंग में ही रत हो गया है ॥४॥८॥१६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥
सोरठि मः ५ ॥
सोरठि मः ५ ॥

ਜੇਤੀ ਸਮਗ੍ਰੀ ਦੇਖਹੁ ਰੇ ਨਰ ਤੇਤੀ ਹੀ ਛਡਿ ਜਾਨੀ ॥
जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥
हे मानव ! जितनी भी सामग्री-पदार्थ तुम देख रहे हो उसे तूने यहाँ ही छोड़ जाना है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸੰਗਿ ਕਰਿ ਬਿਉਹਾਰਾ ਪਾਵਹਿ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥੧॥
राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥१॥
अतः राम के नाम के साथ ही व्यापार करो, तभी तुझे मुक्ति पद की लब्धि होगी॥ १॥

ਪਿਆਰੇ ਤੂ ਮੇਰੋ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥
हे प्यारे ! तू ही मेरा सुखदाता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਦੀਆ ਉਪਦੇਸਾ ਤੁਮ ਹੀ ਸੰਗਿ ਪਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने जबसे मुझे उपदेश दिया है, तब से मेरी तुझ में ही लगन लग गई है॥ रहाउ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮੋਹ ਅਭਿਮਾਨਾ ਤਾ ਮਹਿ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਪਾਈਐ ॥
काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥
कामवासना, क्रोध, लोभ, मोह एवं अभिमान में लीन होने से सुख की उपलब्धि नहीं होती।

ਹੋਹੁ ਰੇਨ ਤੂ ਸਗਲ ਕੀ ਮੇਰੇ ਮਨ ਤਉ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੨॥
होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥२॥
हे मेरे मन ! तू सबकी चरण-धूलि बन जा, तो ही तुझे आनंद-प्रसन्नता एवं सुख की उपलब्धि होगी॥ २॥

ਘਾਲ ਨ ਭਾਨੈ ਅੰਤਰ ਬਿਧਿ ਜਾਨੈ ਤਾ ਕੀ ਕਰਿ ਮਨ ਸੇਵਾ ॥
घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥
हे मन ! तू उसका भजन कर, जो सबके अन्तर की भावना को जानता है और जो तेरी सेवा को निष्फल नहीं होने देता।

ਕਰਿ ਪੂਜਾ ਹੋਮਿ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਗੁਰਦੇਵਾ ॥੩॥
करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥३॥
तू उस गुरुदेव की पूजा कर और अपना यह मन उसे अर्पण कर दे जो अकालमूर्ति (अमर) है॥ ३॥

ਗੋਬਿਦ ਦਾਮੋਦਰ ਦਇਆਲ ਮਾਧਵੇ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥
गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥
नानक का कथन है कि हे गोविन्द, हे दामोदर, हे दीनदयाल, हे माधव, हे निरंकार परब्रह्म !

ਨਾਮੁ ਵਰਤਣਿ ਨਾਮੋ ਵਾਲੇਵਾ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੪॥੯॥੨੦॥
नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥४॥९॥२०॥
तेरा नाम ही मेरी नित्य की उपयोगी वस्तु है, तेरा नाम ही मेरा सामान है और तेरा नाम ही मेरे प्राणों का आधार है॥ ४॥ ६ ॥ २० ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਮਿਰਤਕ ਕਉ ਪਾਇਓ ਤਨਿ ਸਾਸਾ ਬਿਛੁਰਤ ਆਨਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥
सतगुरु ने मृतक के शरीर में (हरि-नाम) प्राण डाल दिए हैं और परमात्मा से बिछुड़े हुए जीव को उससे मिला दिया है।

ਪਸੁ ਪਰੇਤ ਮੁਗਧ ਭਏ ਸ੍ਰੋਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਮੁਖਿ ਗਾਇਆ ॥੧॥
पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥१॥
पशु, प्रेत एवं मूर्ख आदमी भी हरि-नाम के श्रोता बन गए हैं और उन्होंने अपने मुख से हरि-नाम का ही गुणगान किया है॥ १॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਦੇਖੁ ਵਡਾਈ ॥
पूरे गुर की देखु वडाई ॥
पूर्ण गुरु की बड़ाई देखो,

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥
उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ रहाउ॥

ਦੂਖ ਸੋਗ ਕਾ ਢਾਹਿਓ ਡੇਰਾ ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਬਿਸਰਾਮਾ ॥
दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥
उसने दुःख एवं शोक का डेरा ध्वस्त कर दिया है और जीव को आनंद-मंगल एवं विश्राम प्रदान कर दिया है।

ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਫਲ ਮਿਲੇ ਅਚਿੰਤਾ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੨॥
मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥२॥
यह सहज ही अपने मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और उसके समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥ २॥

ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ਮੁਖ ਊਜਲ ਮਿਟਿ ਗਏ ਆਵਣ ਜਾਣੇ ॥
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥
वह इहलोक में भी सुख प्राप्त करता है, परलोक में भी उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है और उसका जन्म-मरण का चक्र मिट गया है।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਿਆ ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥੩॥

निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥३॥

जो अपने सतगुरु के मन को अच्छे लगते हैं, वे निर्भीक हो गए हैं और प्रभु का नाम उनके हृदय में बस गया है॥ ३॥

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਦੂਖੁ ਦਰਦੁ ਭ੍ਰਮੁ ਭਾਗਾ ॥

ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥

जो व्यक्ति उठते-बैठते भगवान का यशगान करता है, उसके दुःख-दर्द एवं सन्देह उससे लुप्त हो जाते हैं।

कहु ਨਾਨਕ ਤਾ ਕੇ ਪੂਰ ਕਰੰਮਾ ਜਾ ਕਾ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥੪॥੧੦॥੨੧॥

कहु नानक ता के पूर करमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥४॥१०॥२१॥

नानक का कथन है कि जिसका मन गुरु के चरणों में लग जाता है, उसके तमाम कार्य पूर्ण हो जाते हैं।॥ ४॥ १०॥ २१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सोरठि महला ५ ॥

ਰਤਨੁ ਛਾਡਿ ਕਉਡੀ ਸੰਗਿ ਲਾਗੇ ਜਾ ਤੇ ਕਛੂ ਨ ਪਾਈਐ ॥

रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते कछू न पाईऐ ॥

जीव अनमोल नाम रत्न को छोड़कर मोह-माया रूपी कोड़ी में आसक्त है जिसके द्वारा कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

ਪੂਰਨ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸੁਰ ਮੇਰੇ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ॥੧॥
पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥१॥
हे मेरे मन ! सदैव पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहिए॥ १ ॥

ਸਿਮਰਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪਰਾਨੀ ॥
सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥
हे प्राणी ! हरि-नाम का भजन करो।

ਬਿਨਸੈ ਕਾਚੀ ਦੇਹ ਅਗਿਆਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥
हे प्राणी ! यह तेरा नाजुक शरीर एक दिन जरूर नाश हो जाएगा ॥ रहाउ॥

ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਰੁ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਤਾ ਕੀ ਕਛੁ ਨ ਵਡਾਈ ॥
म्रिग त्रिसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥
मृगतृष्णा एवं स्वप्न मनोरथ को कोई महानता नहीं दी जा सकती।

ਰਾਮ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਸਿ ਸੰਗਿ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਈ ॥੨॥
राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥२॥
चूंकि राम के भजन के बिना कुछ भी प्राणी के काम नहीं आता, न ही अंत में कुछ उसके साथ जाता है॥ २ ॥

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬਿਹਾਇ ਅਵਰਦਾ ਜੀਅ ਕੋ ਕਾਮੁ ਨ ਕੀਨਾ ॥
हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥
मनुष्य का समूचा जीवन अहंकार करते हुए ही व्यतीत हो जाता है और वह अपनी आत्मा की भलाई हेतु कुछ भी प्राप्त नहीं करता।

ਧਾਵਤ ਧਾਵਤ ਨਹ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸਿਆ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਨਹੀ ਚੀਨਾ ॥੩॥
धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥३॥
वह जीवन भर धन-दौलत के लिए इधर-उधर दौड़ता हुआ तृप्त नहीं होता और राम के नाम को नहीं जानता ॥ ३॥

ਸਾਦ ਬਿਕਾਰ ਬਿਖੈ ਰਸ ਮਾਤੋ ਅਸੰਖ ਖਤੇ ਕਰਿ ਫੇਰੇ ॥
साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥
वह माया में आसक्त होकर विकारों के स्वाद एवं विषय-विकारों के रसों में लीन रहता है और असंख्य दुष्कर्म करता हुआ योनियों में ही भटकता रहता है।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਪਾਹਿ ਬਿਨੰਤੀ ਕਾਟਹੁ ਅਵਗੁਣ ਮੇਰੇ ॥੪॥੧੧॥੨੨॥

नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥४॥११॥२२॥

नानक की तो प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मेरे अवगुण नाश कर दीजिए॥ ४ ॥ ११॥ २२ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਪੂਰਨ ਅਬਿਨਾਸੀ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਜਾਰੇ ॥

गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥

पूर्ण अविनाशी परमात्मा का गुणगान करो जिसके फलस्वरूप कामवासना एवं क्रोध का विष जल जाता है।

ਮਹਾ ਬਿਖਮੁ ਅਗਨਿ ਕੋ ਸਾਗਰੁ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੇ ॥੧॥

महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥१॥

यह सृष्टि महाभयंकर अग्नि का सागर है और साधुओं की संगति करने से ही इससे उद्धार होता है।॥ १॥

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਮੇਟਿਓ ਭਰਮੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥

पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥

पूर्ण गुरु ने भ्रम का अन्धकार नष्ट कर दिया है।

ਭਜੁ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਨੇਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥

प्रेमपूर्वक भक्ति करते हुए प्रभु का भजन करो चूंकि वह हमेशा ही निकट रहता है॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨ ਰਸੁ ਪੀਆ ਮਨ ਤਨ ਰਹੇ ਅਘਾਈ ॥

हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥

हरि-नाम-भण्डार में से नामामृत का पान करने से मनं एवं तन तृप्त रहते हैं।

ਜਤ ਕਤ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਪਰਮੇਸਰੁ ਕਤ ਆਵੈ ਕਤ ਜਾਈ ॥੨॥

जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥२॥

परमेश्वर सर्वत्र ही परिपूर्ण हो रहा है। वह न किधर जाता है और न ही कहीं से आता है॥ २॥

ਜਪ ਤਪ ਸੰਜਮ ਗਿਆਨ ਤਤ ਬੇਤਾ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਗੋਪਾਲਾ ॥
जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥
जिसके मन में भगवान का निवास है, उसे ही पूजा, तपस्या, संयम का ज्ञान है और वही तत्ववेता है।

ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਜਿਨਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਤਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਘਾਲਾ ॥੩॥
नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥३॥
जिसे गुरु के सान्निध्य में नाम-रत्न की उपलब्धि हो गई है, उसकी साधना सफल है॥ ३॥

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟੇ ਦੁਖ ਸਗਲੇ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਾ ॥
कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥
उसके समस्त कलह-क्लेश एवं दुख-दर्द नाश हो गए हैं और उसकी मृत्यु की फाँसी भी कट गई है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਬਿਗਾਸਾ ॥੪॥੧੨॥੨੩॥
कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥४॥१२॥२३॥
हे नानक ! प्रभु ने उस पर अपनी कृपा की है, जिससे उसका मन-तन विकसित हो गया है॥ ४॥ १२ ॥ २३ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਕਰਣ ਕਰਾਵਣਹਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਦਾਤਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭੁ ਸੁਆਮੀ ॥
करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥
जगत का स्वामी परब्रह्म-प्रभु सबकुछ करने-करवाने वाला है, वह सबका दाता है।

ਸਗਲੇ ਜੀਅ ਕੀਏ ਦਇਆਲਾ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੧॥
सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥१॥
सब जीवों को पैदा करने वाला दयालु प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है॥ १ ॥

ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਹੋਆ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ॥
मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥
मेरा गुरु आप ही सहायक हुआ है,

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਰਸ ਅਚਰਜ ਭਈ ਬਡਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥
जिसके फलस्वरूप मुझे सहज सुख, आनंद, मंगल एवं खुशियों की उपलब्धि हो गई है और मेरी अद्भुत लोकप्रियता हो गई है॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਏ ਭੈ ਨਾਸੇ ਸਾਚੀ ਦਰਗਹ ਮਾਨੇ ॥
गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥
गुरु की शरण में आने से मेरे तमाम भय नाश हो गए हैं और सत्य के दरबार में सत्कृत हो गया हूँ।

ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਆਰਾਧਿ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਆਏ ਅਪੁਨੈ ਥਾਨੇ ॥੨॥
गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥२॥
हरि-नाम का गुणगान एवं आराधना करते हुए मैं अपने मूल निवास में आ गया हूँ॥ २॥

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕਰੈ ਸਭ ਉਸਤਤਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਪਿਆਰੀ ॥
जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥
अब सभी मेरी जय-जयकार एवं स्तुति करते हैं और साधुओं की संगति मुझे बहुत प्यारी लगती है।

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਿ ਜਾਉ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੩॥
सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥३॥
मैं अपने प्रभु पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ, जिसने पूर्णतया मेरी लाज बचा ली है॥ ३॥

ਗੋਸਟਿ ਗਿਆਨੁ ਨਾਮੁ ਸੁਣਿ ਉਧਰੇ ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਇਆ ॥
गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥
जिस किसी को भी भगवान के दर्शन प्राप्त हुए हैं, ज्ञान-गोष्टि एवं नाम को श्रवण करके उनका उद्धार हो गया है।

ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਅਨਦ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੪॥੧੩॥੨੪॥
भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥४॥१३॥२४॥
हे नानक ! मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है, जिससे मैं आनंद से अपने सच्चे घर में आ गया हूँ॥ ४॥ १३॥ २४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਣਿ ਸਗਲ ਭੈ ਲਾਥੇ ਦੁਖ ਬਿਨਸੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥
प्रभु की शरण में आने से सारे भय निवृत्त हो गए हैं, दुःख-संकटों का अंत हुआ है और सुख की उपलब्धि हो गई है।

ਦਇਆਲੁ ਹੋਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਸੁਆਮੀ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥१॥
पूर्ण सतगुरु का ध्यान करने से परब्रह्म स्वामी दयालु हो गया है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਤੂ ਮੇਰੋ ਸਾਹਿਬੁ ਦਾਤਾ ॥
प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥
हे प्रभु जी ! तू ही मेरा मालिक एवं दाता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ਗੁਣ ਗਾਵਉ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥
हे दीनदयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ताकि तेरे रंग में लीन होकर तेरा गुणगान करता रहूँ॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਚਿੰਤਾ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੀ ॥
सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी ॥
सतगुरु ने मेरे अन्तर्मन में नाम का खजाना दृढ़ कर दिया है और मेरी समस्त चिंताओं का नाश हो गया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੋ ਕਰਿ ਲੀਨਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥੨॥
करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥२॥
उसने अपनी कृपा करके मुझे अपना बना लिया है और अविनाशी प्रभु मेरे मन में निवास कर गया है॥ २॥

ਤਾ ਕਉ ਬਿਘਨੁ ਨ ਕੋਊ ਲਾਗੈ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰਿ ਅਪੁਨੈ ਰਾਖੇ ॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥
जिसकी रक्षा स्वयं सतगुरु करता है, उसे कोई संकट नहीं आता।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਸੇ ਰਿਦ ਅੰਤਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੇ ॥੩॥
चरन कमल बसे रिद अंतरि अम्रित हरि रसु चाखे ॥३॥
उसके हृदय में भगवान के सुन्दर चरण कमल बस जाते हैं और वह हरि-रस अमृत को चखता रहता है॥ ३॥

ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸੇਵਕ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਮਨ ਕੀ ਇਛ ਪੁਜਾਈ ॥
करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥
जिस प्रभु ने तेरे मन की अभिलाषा पूर्ण कर दी है, उसकी सेवा-भक्ति सेवक की भांति कर।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤਾ ਕੈ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੪॥੧੪॥੨੫॥
नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥४॥१४॥२५॥
दास नानक तो उस प्रभु पर कुर्बान जाता है, जिसने उसकी पूर्ण लाज-प्रतिष्ठा बचा ली है॥ ४॥ १४॥ २५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਮਗਨੁ ਅੰਧਿਆਰੈ ਦੇਵਨਹਾਰੁ ਨ ਜਾਨੈ ॥
माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥
माया-मोह के अन्धेरे में मग्न होकर मनुष्य सब कुछ देने वाले दाता को नहीं जानता।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਾਜਿ ਜਿਨਿ ਰਚਿਆ ਬਲੁ ਅਪੁਨੋ ਕਰਿ ਮਾਨੈ ॥੧॥
जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥१॥
वह उसे नहीं जानता, जिसने प्राण एवं शरीर की सृजना करके उसकी रचना की है और जो शक्ति उसके भीतर है, वह उसे ही अपना मानता है॥ १॥

ਮਨ ਮੂੜੇ ਦੇਖਿ ਰਹਿਓ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ॥
मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥
हे विमूढ़ मन ! स्वामी-प्रभु तेरे कर्मों को देख रहा है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਕਰਹਿ ਸੋਈ ਸੋਈ ਜਾਣੈ ਰਹੈ ਨ ਕਛੂਐ ਛਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥
जो कुछ तू करता है, वह सब जानता है और कुछ भी उससे छिपा नहीं रह सकता ॥ रहाउ॥

ਜਿਹਵਾ ਸੁਆਦ ਲੋਭ ਮਦਿ ਮਾਤੋ ਉਪਜੇ ਅਨਿਕ ਬਿਕਾਰਾ ॥
जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥
जिव्हा के स्वाद एवं लालच के नशे में मदमस्त व्यक्ति के अन्दर अनेक पाप-विकार ही उत्पन्न होते हैं।

ਬਹੁਤੁ ਜੋਨਿ ਭਰਮਤ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਹਉਮੈ ਬੰਧਨ ਕੇ ਭਾਰਾ ॥੨॥
बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ॥२॥
अहंत्प के बन्धनों के बोझ के निचे अनेक योनियों में भटकता हुआ वह बहुत दुःख भोगता है॥ २॥

ਦੇਇ ਕਿਵਾੜ ਅਨਿਕ ਪੜਦੇ ਮਹਿ ਪਰ ਦਾਰਾ ਸੰਗਿ ਫਾਕੈ ॥
देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥
द्वार बन्द करके एवं अनेक पदों के भीतर मनुष्य पराई नारी के साथ भोग-विलास करता है।

ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤੁ ਜਬ ਲੇਖਾ ਮਾਗਹਿ ਤਬ ਕਉਨੁ ਪੜਦਾ ਤੇਰਾ ਢਾਕੈ ॥੩॥
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥३॥
लेकिन जब चित्रगुप्त तुझसे कर्मों का लेखा मांगेगा तो तेरे कुकर्मों पर कौन पर्दा डालेगा ?॥ ३॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਪੂਰਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਤੁਮ ਬਿਨੁ ਓਟ ਨ ਕਾਈ ॥
दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई ॥
हे दीनदयालु ! हे सर्वव्यापी ! हे दुःखनाशक ! तेरे अलावा मेरा कोई सहारा नहीं है।

ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥੪॥੧੫॥੨੬॥
काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥४॥१५॥२६॥
हे प्रभु ! नानक ने तेरी ही शरण ली है, इसीलिए उसे संसार-सागर में से बाहर निकाल लो॥ ४॥ १५ ॥ २६ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਹੋਆ ਸਹਾਈ ਕਥਾ ਕੀਰਤਨੁ ਸੁਖਦਾਈ ॥
पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥
परब्रह्म-प्रभु मेरा सहायक हो गया है और उसकी कथा एवं कीर्तन सुखदायक है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜਪਿ ਅਨਦੁ ਕਰਹੁ ਨਿਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ॥੧॥
गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥
हे प्राणी ! पूर्ण गुरु की वाणी का जाप करके नित्य आनंद करो।॥ १॥

ਹਰਿ ਸਾਚਾ ਸਿਮਰਹੁ ਭਾਈ ॥
हरि साचा सिमरहु भाई ॥
हे भाई ! सच्चे परमेश्वर की आराधना करो।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਬਿਸਰਿ ਨ ਕਬਹੂ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥
सत्संगति में हमेशा सुख की प्राप्ति होती है और भगवान कभी भी विस्मृत नहीं होता॥ रहाउ ॥

.

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਪਰਮੇਸਰੁ ਤੇਰਾ ਜੋ ਸਿਮਰੈ ਸੋ ਜੀਵੈ ॥
अम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥
हे परमेश्वर ! तेरा नाम अमृत है, जो भी तेरा नाम-सिमरन करता है, वह जीवित रहता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਰਮਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਵੈ ਸੋ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਥੀਵੈ ॥੨॥
जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥२॥
जिस पर परमात्मा का करम होता है, वह मनुष्य पवित्र हो जाता है॥ २॥

ਬਿਘਨ ਬਿਨਾਸਨ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਾਸਨ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥
मेरा मन उस गुरु के चरणों में लगा है, जो विघ्नों का विनाश करने वाला एवं सब दुःखों का नाशक है।

ਗੁਣ ਗਾਵਤ ਅਚੁਤ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਜਾਗਾ ॥੩॥
गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥३॥
अच्युत अविनाशी प्रभु का गुणगान करते हुए मैं रात-दिन हरि-रंग में जाग्रत रहता हूँ॥ ३॥

ਮਨ ਇਛੇ ਸੇਈ ਫਲ ਪਾਏ ਹਰਿ ਕੀ ਕਥਾ ਸੁਹੇਲੀ ॥
मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥
सुखकारी हरि की कथा सुनने से मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है।

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਮਧਿ ਨਾਨਕ ਕਉ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਬੇਲੀ ॥੪॥੧੬॥੨੭॥
आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥४॥१६॥२७॥
आदिकाल, मध्यकाल एवं अन्तकाल तक वह प्रभु ही नानक का साथी बना हुआ है॥ ४॥ १६॥ २७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਪੰਚਪਦਾ ॥
सोरठि महला ५ पंचपदा ॥
सोरठि महला ५ पंचपदा ॥

ਬਿਨਸੈ ਮੋਹੁ ਮੇਰਾ ਅਰੁ ਤੇਰਾ ਬਿਨਸੈ ਅਪਨੀ ਧਾਰੀ ॥੧॥
बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥१॥
ईश्वर करे मेरा मोह और मेरा-तेरा की भावना तथा अहंत्व का नाश हो जाए॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਇਹਾ ਬਤਾਵਹੁ ਕਾਰੀ ॥
संतहु इहा बतावहु कारी ॥
हे संतो ! मुझे कोई ऐसी युक्ति बताओ,

ਜਿਤੁ ਹਉਮੈ ਗਰਬੁ ਨਿਵਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु हउमै गरबु निवारी ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे मेरा आत्माभिमान एवं घमण्ड का नाश हो जाए॥ १॥ रहाउ॥

ਸਰਬ ਭੂਤ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ਹੋਵਾਂ ਸਗਲ ਰੇਨਾਰੀ ॥੨॥
सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥२॥
सारी दुनिया के लोगों को मैं परब्रह्म का रूप ही मानता हूँ और सब की चरण-धूलि ही होता हूँ॥ २॥

ਪੇਖਿਓ ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਅਪੁਨੈ ਸੰਗੇ ਚੂਕੈ ਭੀਤਿ ਭ੍ਰਮਾਰੀ ॥੩॥
पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥३॥
पूज्य परमेश्वर को हमेशा मैंने अपने साथ ही देखा है, जिससे मेरी दुविधा की दीवार ध्वस्त हो गई है॥ ३॥

ਅਉਖਧੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮਲ ਜਲੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਈਐ ਗੁਰੂ ਦੁਆਰੀ ॥੪॥
अउखधु नामु निरमल जलु अम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥४॥
भगवान की नाम-औषधि एवं निर्मल अमृत जल की प्राप्ति गुरु के द्वारा ही होती है॥ ४॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਰੋਗ ਬਿਦਾਰੀ ॥੫॥੧੭॥੨੮॥

कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥५॥१७॥२८॥

हे नानक ! जिस व्यक्ति की तकदीर में लिखा हुआ है, उसने गुरु से मिलकर अपना रोग नष्ट कर लिया है ॥५॥१७॥२८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਦੁਪਦੇ
सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे
सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਗਲ ਬਨਸਪਤਿ ਮਹਿ ਬੈਸੰਤਰੁ ਸਗਲ ਦੂਧ ਮਹਿ ਘੀਆ ॥
सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥
जैसे समस्त वनस्पति में अग्नि विद्यमान है और समूचे दूध में घी होता है,

ਊਚ ਨੀਚ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਣੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਮਾਧਉ ਜੀਆ ॥੧॥
ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥१॥
वैसे ही उच्च एवं निम्न अच्छे-बुरे सब जीवों में परमात्मा की ज्योति समाई हुई है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਹਿਓ ॥
संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥
हे संतो ! घट-घट में परमात्मा सबमें समा रहा है।

ਪੂਰਨ ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਰਬ ਮਹਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਰਮਈਆ ਆਹਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥
वह जल एवं धरती में सर्वव्यापी है॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕੁ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਓ ॥
गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥
नानक तो गुणों के भण्डार भगवान का ही यशगान करता है, सतगुरु ने उसका भ्रम मिटा दिया है।

ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਦਾ ਅਲੇਪਾ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇਓ ॥੨॥੧॥੨੯॥
सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥२॥१॥२९॥
सर्वव्यापक ईश्वर सबमें समाया हुआ है लेकिन वे समस्त प्राणियों से सदा निर्लिप्त रहता है ॥२॥१॥२९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਹੋਇ ਅਨੰਦਾ ਬਿਨਸੈ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਦੁਖੀ ॥
जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥
जिस (भगवान) का सिमरन करने से आनंद प्राप्त होता है और जन्म-मरण के भय का दु:ख नाश हो जाता है।

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਵਹਿ ਬਹੁਰਿ ਨ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖੀ ॥੧॥
चारि पदारथ नव निधि पावहि बहुरि न त्रिसना भुखी ॥१॥
चार उत्तम पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष एवं नवनिधियों की उपलब्धि होती है और फिर दुबारा तुझे तृष्णा की भूख नहीं लगती ॥ १॥

ਜਾ ਕੋ ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਤੂ ਸੁਖੀ ॥
जा को नामु लैत तू सुखी ॥
जिसका नाम जपने से तू सुखी रहता है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਧਿਆਵਹੁ ਠਾਕੁਰ ਕਉ ਮਨ ਤਨ ਜੀਅਰੇ ਮੁਖੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥१॥ रहाउ ॥
हे जीव ! अपने मन, तन एवं मुँह से, अपने श्वास-श्वास से, ठाकुर जी का ही ध्यान-मनन करते रहो ॥१॥ रहाउ ॥

ਸਾਂਤਿ ਪਾਵਹਿ ਹੋਵਹਿ ਮਨ ਸੀਤਲ ਅਗਨਿ ਨ ਅੰਤਰਿ ਧੁਖੀ ॥
सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥
ध्यान-मनन से तुझे शांति प्राप्त होगी, तेरा मन शीतल हो जाएगा और तेरे अन्तर्मन में तृष्णा की अग्नि प्रज्वलित नहीं होगी।

ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਖਾਇਆ ਜਲਿ ਥਲਿ ਤ੍ਰਿਭਵਣਿ ਰੁਖੀ ॥੨॥੨॥੩੦॥
गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ॥२॥२॥३०॥
गुरु ने नानक को प्रभु के दर्शन समुद्र, धरती, पेड़ों एवं तीनों लोकों में करवा दिए हैं।॥२॥२॥३०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਝੂਠ ਨਿੰਦਾ ਇਨ ਤੇ ਆਪਿ ਛਡਾਵਹੁ ॥
काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥
हे ईश्वर ! काम, क्रोध, लोभ, झूठ एवं निन्दा इत्यादि से स्वयं ही मेरी मुक्ति करवा दो ।

ਇਹ ਭੀਤਰ ਤੇ ਇਨ ਕਉ ਡਾਰਹੁ ਆਪਨ ਨਿਕਟਿ ਬੁਲਾਵਹੁ ॥੧॥
इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥१॥
इस मन के भीतर से इन बुराइयों को निकाल कर मुझे अपने निकट आमंत्रित कर लो ॥ १॥

ਅਪੁਨੀ ਬਿਧਿ ਆਪਿ ਜਨਾਵਹੁ ॥
अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥
अपनी विधि तू स्वयं ही मुझे बोध करवा दे।

ਹਰਿ ਜਨ ਮੰਗਲ ਗਾਵਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जन मंगल गावहु ॥१॥ रहाउ ॥
हे भक्तजनो ! हरि के मंगल गीत गायन करो ॥ १॥ रहाउ ॥

ਬਿਸਰੁ ਨਾਹੀ ਕਬਹੂ ਹੀਏ ਤੇ ਇਹ ਬਿਧਿ ਮਨ ਮਹਿ ਪਾਵਹੁ ॥
बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥
हे ईश्वर ! मेरे मन में यह विधि डाल दीजिए कि मैं अपने मन से तुझे कभी विस्मृत न करूँ।

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਓ ਵਡਭਾਗੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਤਹਿ ਨ ਧਾਵਹੁ ॥੨॥੩॥੩੧॥
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥२॥३॥३१॥
हे नानक ! बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु से भेंट हो गई है, इसलिए अब मैं इधर-उधर नही दौड़ता ॥२॥३॥३१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਣਿ ਸਭੁ ਕਛੁ ਪਾਈਐ ਬਿਰਥੀ ਘਾਲ ਨ ਜਾਈ ॥
जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥
जिसका सिमरन करने से सब कुछ प्राप्त हो जाता है और मनुष्य की साधना व्यर्थ नहीं जाती;

ਤਿਸੁ ਪ੍ਰਭ ਤਿਆਗਿ ਅਵਰ ਕਤ ਰਾਚਹੁ ਜੋ ਸਭ ਮਹਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੧॥
तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥१॥
जो सबमें समा रहा है, उस प्रभु को छोड़कर किसी दूसरे में क्यों मग्न हो रहे हो ?॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ ਸੰਤ ਗੋਪਾਲਾ ॥
हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥
हे गोपाल के संतो ! हरि की आराधना करो,

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹੁ ਪੂਰਨ ਹੋਵੈ ਘਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥१॥ रहाउ ॥
सत्संगति में मिलकर हरि-नाम का भजन करो, तुम्हारी साधना साकार हो जाएगी।॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਰਿ ਸਮਾਲੈ ਨਿਤਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਪ੍ਰੇਮ ਸਹਿਤ ਗਲਿ ਲਾਵੈ ॥
सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥
वह परमेश्वर अपने सेवकों की नित्य देखभाल एवं पालन-पोषण करता है और प्रेमपूर्वक अपने गले से लगा लेता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਤੁਮਰੇ ਬਿਸਰਤ ਜਗਤ ਜੀਵਨੁ ਕੈਸੇ ਪਾਵੈ ॥੨॥੪॥੩੨॥
कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥२॥४॥३२॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुझे विस्मृत करके यह जगत कैसे जीवन प्राप्त कर सकता है॥ २ ॥ ४॥ ३२ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਅਬਿਨਾਸੀ ਜੀਅਨ ਕੋ ਦਾਤਾ ਸਿਮਰਤ ਸਭ ਮਲੁ ਖੋਈ ॥
अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥
अविनाशी परमात्मा सब जीवों का दाता है, उसका सिमरन करने से विकारों की सारी मैल दूर हो गई है।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਭਗਤਨ ਕਉ ਬਰਤਨਿ ਬਿਰਲਾ ਪਾਵੈ ਕੋਈ ॥੧॥
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥१॥
वह गुणों का भण्डार अपने भक्तों की पूंजी है किन्तु कोई विरला ही उसे प्राप्त करता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥
हे मेरे मन ! उस गोपाल-गुरु प्रभु का जाप करो;

ਜਾ ਕੀ ਸਰਣਿ ਪਇਆਂ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ਬਾਹੁੜਿ ਦੂਖੁ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥१॥ रहाउ ॥

जिसकी शरण लेने से सुख की प्राप्ति होती है और दोबारा कदापि कोई दुःख नहीं होता।॥ १॥ रहाउ॥

ਵਡਭਾਗੀ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਰਾਪਤਿ ਤਿਨ ਭੇਟਤ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਈ ॥

वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥

बड़ी किस्मत से संतों की संगति प्राप्त होती है, उनके साथ भेंट करने से दुर्बुद्धि नष्ट हो जाती है।

ਤਿਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ਬਾਛੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਪਰੋਈ ॥੨॥੫॥੩੩॥
तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥२॥५॥३३॥
दास नानक उनकी चरण-धूलि की अभिलाषा करता है, जिन्होंने हरि का नाम अपने हृदय में पिरोया हुआ है।॥ २॥ ५॥ ३३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਦੂਖ ਨਿਵਾਰੈ ਸੂਕਾ ਮਨੁ ਸਾਧਾਰੈ ॥
नम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥
गुरु जन्म-जन्मांतरों के दुःख-क्लेश नष्ट कर देता है और मुरझाए हुए मन को हरा-भरा कर देता है।

ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਹੋਤ ਨਿਹਾਲਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥੧॥
दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥१॥
गुरु के दर्शन करने से मनुष्य निहाल हो जाता है और हरि के नाम का चिंतन करता है॥ १॥

ਮੇਰਾ ਬੈਦੁ ਗੁਰੂ ਗੋਵਿੰਦਾ ॥
मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
गोविन्द गुरु ही मेरा वैद्य है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਉਖਧੁ ਮੁਖਿ ਦੇਵੈ ਕਾਟੈ ਜਮ ਕੀ ਫੰਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥ रहाउ ॥
वह मेरे मुख में हरि-नाम की औषधि डालता है और मृत्यु की फाँसी काट देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਮਰਥ ਪੁਰਖ ਪੂਰਨ ਬਿਧਾਤੇ ਆਪੇ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥
सर्वकला समर्थ पूर्ण पुरुष विधाता स्वयं ही रचयिता है।

ਅਪੁਨਾ ਦਾਸੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਉਬਾਰਿਆ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਅਧਾਰਾ ॥੨॥੬॥੩੪॥
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥२॥६॥३४॥
हे नानक ! परमात्मा ने स्वयं ही अपने दास को बचाया है और नाम ही उसके जीवन का आधार है॥ २ ॥ ६ ॥ ३४ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ ਤੁਮ ਹੀ ਜਾਨੀ ਤੁਝ ਹੀ ਪਾਹਿ ਨਿਬੇਰੋ ॥
अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥
हे ईश्वर ! मेरे अन्तर्मन की गति तुम ही जानते हो और तेरे पास ही अन्तिम निर्णय है।

ਬਖਸਿ ਲੈਹੁ ਸਾਹਿਬ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਲਾਖ ਖਤੇ ਕਰਿ ਫੇਰੋ ॥੧॥
बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥१॥
हे मालिक-प्रभु ! मुझे क्षमा कर दो; चाहे मैंने लाखों ही भूलें एवं अपराध किए हैं॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤੂ ਮੇਰੋ ਠਾਕੁਰੁ ਨੇਰੋ ॥
प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥
हे प्रभु जी ! तू ही मेरा मालिक है, जो मेरे निकट ही रहता है।

ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਰਣ ਮੋਹਿ ਚੇਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥१॥ रहाउ ॥
हे हरि ! अपने इस शिष्य को अपने चरणों में शरण प्रदान कीजिए॥ १॥ रहाउ॥

ਬੇਸੁਮਾਰ ਬੇਅੰਤ ਸੁਆਮੀ ਊਚੋ ਗੁਨੀ ਗਹੇਰੋ ॥
बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥
मेरा प्रभु बेशुमार, बेअंत, सर्वोच्च एवं गुणों का गहरा सागर है।

ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਕੀਨੋ ਅਪੁਨੋ ਦਾਸਰੋ ਤਉ ਨਾਨਕ ਕਹਾ ਨਿਹੋਰੋ ॥੨॥੭॥੩੫॥
काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५॥
जब प्रभु ने बन्धनों की फांसी काटकर नानक को अपना दास बना लिया है तो अब उसे किसी के सहारे की क्या जरूरत है ॥२॥७॥३५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥
सोरठि मः ५ ॥
सोरठि मः ५ ॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਗੁਰੂ ਗੋਵਿੰਦਾ ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪਾਏ ॥
भए क्रिपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥
जब गोविन्द गुरु मुझ पर मेहरबान हो गया तो मैंने सारे मनोरथ पा लिए।

ਅਸਥਿਰ ਭਏ ਲਾਗਿ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਗੋਵਿੰਦ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਏ ॥੧॥
असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥१॥
भगवान के सुन्दर चरणों में लगकर मैं स्थिर हो गया हूँ और गोविन्द के ही गुण गाए हैं।॥ १॥

ਭਲੋ ਸਮੂਰਤੁ ਪੂਰਾ ॥
भलो समूरतु पूरा ॥
वह मुहूर्त पूर्ण एवं शुभ हैं,

ਸਾਂਤਿ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਨਾਮੁ ਜਪਿ ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सांति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥१॥ रहाउ ॥
जब भगवान के नाम का भजन करने से मुझे आत्मिक शांति, धैर्य एवं आनंद की प्राप्ति हो गई है और मेरे भीतर अनहद नाद बजते हैं॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਿਲੇ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਅਪੁਨੇ ਘਰ ਮੰਦਰ ਸੁਖਦਾਈ ॥
मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥
अपने प्रियतम स्वामी से भेंट करके मेरा हृदय-घर सुखदायक हो गया है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਨਾਨਕ ਜਨ ਪਾਇਆ ਸਗਲੀ ਇਛ ਪੁਜਾਈ ॥੨॥੮॥੩੬॥
हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥
दास नानक को हरि-नाम का खजाना प्राप्त हुआ है और उसकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं।॥ २॥ ८॥ ३६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਬਸੇ ਰਿਦ ਭੀਤਰਿ ਸੁਭ ਲਖਣ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੇ ॥
गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥
गुरु के चरण मेरे हृदय में बस गए हैं और प्रभु ने शुभ लक्षण (गुण) पैदा कर दिए हैं।

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰ ਨਾਮ ਨਿਧਾਨ ਮਨਿ ਚੀਨੇ ॥੧॥
भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१॥
जब पूर्ण परमेश्वर मुझ पर कृपालु हुआ तो मैंने नाम के भण्डार को अपने हृदय में ही पहचान लिया ॥ १॥

ਮੇਰੋ ਗੁਰੁ ਰਖਵਾਰੋ ਮੀਤ ॥
मेरो गुरु रखवारो मीत ॥
गुरु मेरा रखवाला एवं मित्र है।

ਦੂਣ ਚਉਣੀ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ਸੋਭਾ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥१॥ रहाउ ॥
वह मुझे नित्य ही दोगुनी-चौगुनी प्रशंसा एवं शोभा देता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਪ੍ਰਭਿ ਸਗਲ ਉਧਾਰੇ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖਣਹਾਰੇ ॥
जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥
प्रभु ने दर्शन-दीदार करने वाले सब जीवों का उद्धार कर दिया है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਅਚਰਜ ਵਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੇ ॥੨॥੯॥੩੭॥
गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥३७॥
पूर्ण गुरु की महिमा बड़ी अद्भुत है और नानक सदा ही उस पर बलिहारी जाता है॥२॥९॥३७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੰਚਨਿ ਕਰਉ ਨਾਮ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲ ਥਾਤੀ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥
संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥
निर्मल हरि-नाम रूपी धन को संचित करो, चूंकि नाम की धरोहर अनन्त एवं अपार है।

ਬਿਲਛਿ ਬਿਨੋਦ ਆਨੰਦ ਸੁਖ ਮਾਣਹੁ ਖਾਇ ਜੀਵਹੁ ਸਿਖ ਪਰਵਾਰ ॥੧॥
बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥१॥
हे गुरु के सिक्खो एवं मेरे परिजनो ! नाम-आहार का सेवन करके जीवित रहो और विलक्षण विनोद एवं आनन्द-सुख भोगो ॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਧਾਰ ॥
हरि के चरन कमल आधार ॥
हरि के सुन्दर चरण-कमल ही हमारा जीवनाधार है।

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪਾਇਓ ਸਚ ਬੋਹਿਥੁ ਚੜਿ ਲੰਘਉ ਬਿਖੁ ਸੰਸਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की कृपा से मुझे सत्य का जहाज़ प्राप्त हुआ है, जिस पर सवार होकर मैं विषैले जगत सागर से पार हो जाऊँगा ॥ १॥ रहाउ॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਪੂਰਨ ਅਬਿਨਾਸੀ ਆਪਹਿ ਕੀਨੀ ਸਾਰ ॥
भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥
पूर्ण अविनाशी प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है और उसने स्वयं ही मेरी देखरेख की है।

ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਨਾਨਕ ਬਿਗਸਾਨੋ ਨਾਨਕ ਨਾਹੀ ਸੁਮਾਰ ॥੨॥੧੦॥੩੮॥

पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥

उसके दर्शन-दीदार करके नानक प्रसन्न हो गया है। हे नानक ! भगवान के गुणों का कोई शुमार नहीं वे तो बेशुमार है ॥ २॥ १०॥ ३८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਅਪਨੀ ਕਲ ਧਾਰੀ ਸਭ ਘਟ ਉਪਜੀ ਦਇਆ ॥

गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥

पूर्ण गुरु ने अपनी ऐसी कला (शक्ति) प्रगट की है कि समस्त जीवों के मन में दया उत्पन्न हो गई है।

ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਵਡਾਈ ਕੀਨੀ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਸਭ ਭਇਆ ॥੧॥

आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥१॥

भगवान ने मुझे अपने साथ मिलाकर शोभा प्रदान की है और हर तरफ कुशलक्षेम ही है॥ १॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥

सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥

पूर्ण सतगुरु सदा मेरे साथ है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਜਪਿ ਸਦਾ ਨਿਹਾਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥
अपने परब्रह्म-प्रभु का जाप करने से मैं सदा निहाल रहता हूँ॥ रहाउ॥

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਸੋਈ ॥
अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥
अन्दर-बाहर, देश-दिशांतर जगत में जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, उधर ही भगवान मौजूद है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪਾਇਓ ਵਡਭਾਗੀ ਤਿਸੁ ਜੇਵਡੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੨॥੧੧॥੩੯॥
नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥२॥११॥३९॥
हे नानक ! बड़ी किस्मत से मुझे ऐसा गुरु प्राप्त हुआ है कि उस जैसा महान् दूसरा कोई नहीं ॥ २॥ ११॥ ३६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੂਖ ਮੰਗਲ ਕਲਿਆਣ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਚਰਣ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥
सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥
प्रभु के सुन्दर चरणों के दर्शन करने से सुख, मंगल, कल्याण एवं सहज ध्वनि की उपलब्धि हो गई है।

ਰਾਖਨਹਾਰੈ ਰਾਖਿਓ ਬਾਰਿਕੁ ਸਤਿਗੁਰਿ ਤਾਪੁ ਉਤਾਰਿਆ ॥੧॥
राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥१॥
रखवाले परमात्मा ने बालक हरिगोविंद की रक्षा की है और सतगुरु ने उसका ताप निवृत्त कर दिया है॥ १॥

ਉਬਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਰਣਾਈ ॥
उबरे सतिगुर की सरणाई ॥
उस सतगुरु की शरण में बच गया हूं,

ਜਾ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥
जिसकी की हुई सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती ॥ रहाउ ॥

ਘਰ ਮਹਿ ਸੂਖ ਬਾਹਰਿ ਫੁਨਿ ਸੂਖਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ॥
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥
जब अपना प्रभु दयालु हो गया तो घर में सुख और बाहर भी सुख ही सुख हो गया।

ਨਾਨਕ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਊ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥੨॥੧੨॥੪੦॥
नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥२॥१२॥४०॥
हे नानक ! अब मुझे कोई भी विघ्न नहीं लगता, क्योंकि मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है॥ २॥ १२॥ ४०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਭਇਆ ਮਨਿ ਉਦਮੁ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਜਸੁ ਗਾਈ ॥
साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥
साधु की संगत करने से मेरे मन में उद्यम उत्पन्न हो गया है और मैंने नाम-रत्न का यश गायन किया है।

ਮਿਟਿ ਗਈ ਚਿੰਤਾ ਸਿਮਰਿ ਅਨੰਤਾ ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਭਾਈ ॥੧॥
मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥१॥
हे भाई ! परमेश्वर का सिमरन करने से मेरी चिन्ता मिट गई है और संसार-सागर से तर गया हूँ॥ १॥

ਹਿਰਦੈ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਵਸਾਈ ॥
हिरदै हरि के चरण वसाई ॥
अपने हृदय में मैंने भगवान के चरणों को बसा लिया है।

ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਉਪਜੀ ਰੋਗਾ ਘਾਣਿ ਮਿਟਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥
अब मुझे सुख प्राप्त हो गया है, सहज ध्वनि मेरे भीतर गूंज रही है एवं रोगों के समुदाय नष्ट हो गए हैं।॥ रहाउ ॥

ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਆਖਿ ਵਖਾਣਾ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥
हे ईश्वर ! तेरे कौन-कौन से गुणों का मैं बखान करूँ ? तेरा तो मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਭਏ ਅਬਿਨਾਸੀ ਅਪੁਨਾ ਪ੍ਰਭੁ ਭਇਆ ਸਹਾਈ ॥੨॥੧੩॥੪੧॥
नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥२॥१३॥४१॥
हे नानक ! जब अपना प्रभु सहायक बन गया तो भक्त भी अविनाशी हो गए हैं।॥ २॥ १३॥ ४१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥
सोरठि मः ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗਏ ਕਲੇਸ ਰੋਗ ਸਭਿ ਨਾਸੇ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥
मेरे प्रभु ने अपनी कृपा की तो मेरे समस्त दुःख-क्लेश एवं रोग नाश हो गए।

ਆਠ ਪਹਰ ਆਰਾਧਹੁ ਸੁਆਮੀ ਪੂਰਨ ਘਾਲ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥
आठ प्रहर भगवान की आराधना करो चूंकि हमारी साधना भी पूर्ण हो गई है॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੂ ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਰਾਸਿ ॥
हरि जीउ तू सुख स्मपति रासि ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! तू ही हमारी सुख-संपत्ति एवं पूंजी है।

ਰਾਖਿ ਲੈਹੁ ਭਾਈ ਮੇਰੇ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥
राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥
मेरी प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे मेरे प्रियतम ! मुझे दुखों से बचा लो॥ रहाउ॥

ਜੋ ਮਾਗਉ ਸੋਈ ਸੋਈ ਪਾਵਉ ਅਪਨੇ ਖਸਮ ਭਰੋਸਾ ॥
जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥
जो कुछ भी मैं माँगता हूँ, वही कुछ मुझे प्राप्त हो जाता है, मुझे तो अपने मालिक पर ही भरोसा है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟਿਓ ਮਿਟਿਓ ਸਗਲ ਅੰਦੇਸਾ ॥੨॥੧੪॥੪੨॥
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥२॥१४॥४२॥
नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु से भेंट हो जाने से मेरी समस्त चिन्ताएँ मिट गई है॥ २॥ १४॥ ४२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਨਾ ਸਗਲਾ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥
सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥
अपने गुरु सतगुरु का सिमरन करके मैंने अपने समस्त दुःखों-क्लेशों को मिटा लिया है।

ਤਾਪ ਰੋਗ ਗਏ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥੧॥
ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥१॥
गुरु के वचनों द्वारा ताप एवं रोग दूर हो गए हैं तथा मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है ॥१॥

ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥
मेरा पूर्ण गुरु सुखों का दाता है।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥
वह समस्त कार्य करने एवं कराने वाला, सर्वकला समर्थ स्वामी एवं पूर्ण पुरुष विधाता है॥ रहाउ॥

ਅਨੰਦ ਬਿਨੋਦ ਮੰਗਲ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ॥
अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥
हे नानक ! अब आप आनंद करो, खुशियाँ मनाओ और प्रभु की स्तुति के मंगल गीत गायन करो, चूंकि गुरु आप पर दयालु हो गया है।

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰ ਭਏ ਜਗ ਭੀਤਰਿ ਹੋਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਰਖਵਾਲਾ ॥੨॥੧੫॥੪੩॥
जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥
सारी दुनिया में जय-जयकार हो रही है, चूंकि परब्रह्म मेरा रखवाला हो गया है ॥२॥१५॥ ४३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਮਰੀ ਗਣਤ ਨ ਗਣੀਆ ਕਾਈ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ ਪਛਾਣਿ ॥
हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥
परमात्मा ने हमारे कर्मों की गणना नहीं की और अपने विरद् को पहचान कर हमें क्षमा कर दिया है।

ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਕਰਿ ਅਪੁਨੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਮਾਣਿ ॥੧॥
हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥१॥
उसने अपना हाथ देकर मुझे अपना समझता हुए मेरी रक्षा की है और अब मैं उसके प्रेम का हमेशा आनंद प्राप्त करता रहता हूँ॥ १॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦ ਮਿਹਰਵਾਣ ॥
साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥
मेरा सच्चा परमेश्वर सदैव ही मेहरबान है।

ਬੰਧੁ ਪਾਇਆ ਮੇਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹੋਈ ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥
मेरे पूर्ण सतगुरु ने दु:खों-संकटों पर अंकुश लगाया है और अब सर्व कल्याण हो गया है॥ रहाउ॥

ਜੀਉ ਪਾਇ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿਆ ਦਿਤਾ ਪੈਨਣੁ ਖਾਣੁ ॥
जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥
जिस ईश्वर ने प्राण डाल कर मेरे शरीर की रचना की है और वस्त्र एवं भोजन प्रदान किया है; उसने स्वयं ही अपने दास की लाज बचा ली है।

ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਕੀ ਆਪਿ ਪੈਜ ਰਾਖੀ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੨॥੧੬॥੪੪॥
अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥२॥१६॥४४॥
नानक तो उस पर सदा कुर्बान जाता है॥ ॥२॥१६॥४४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਦੁਰਤੁ ਗਵਾਇਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੁ ਉਬਾਰਿਆ ॥
दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥
हरि-प्रभु ने स्वयं ही पाप निवृत्त करके सारी दुनिया को बचाया है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਅਪਣਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥੧॥
पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥१॥
परब्रह्म-प्रभु ने अपनी कृपा की है और अपने विरद् का पालन किया है॥ १ ॥

ਹੋਈ ਰਾਜੇ ਰਾਮ ਕੀ ਰਖਵਾਲੀ ॥
होई राजे राम की रखवाली ॥
मुझे राजा राम का संरक्षण मिल गया है।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨਦ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮਨੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ਸੁਖਾਲੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥
सहज सुख एवं आनंद में भगवान का गुणगान करो, इससे मन, तन एवं शरीर सुखी हो जाएगा ॥ रहाउ॥

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਮੋਹਿ ਤਿਸ ਕਾ ਭਰਵਾਸਾ ॥
पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥
मेरा सतगुरु तो पतितों का कल्याण करने वाला है और मुझे तो उस पर ही भरोसा है।

ਬਖਸਿ ਲਏ ਸਭਿ ਸਚੈ ਸਾਹਿਬਿ ਸੁਣਿ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਾ ॥੨॥੧੭॥੪੫॥
बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥२॥१७॥४५॥
नानक की प्रार्थना सुनकर सच्चे परमेश्वर ने उसके समस्त अवगुण क्षमा कर दिए हैं।॥ २॥१७॥ ४५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਬਖਸਿਆ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸਰਿ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਬਿਦਾਰੇ ॥
बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥
परब्रह्म-परमेश्वर ने क्षमा करके समस्त रोग नष्ट कर दिए हैं।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸਰਣੀ ਉਬਰੇ ਕਾਰਜ ਸਗਲ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥
गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥१॥
जो पूर्ण गुरु की शरण में आता है, उसका उद्धार हो जाता है और समस्त कार्य भी सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਜਨਿ ਸਿਮਰਿਆ ਨਾਮ ਅਧਾਰਿ ॥
हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥
हरि के दास ने नाम-सिमरन ही किया है और नाम का ही आसरा लिया है।

ਤਾਪੁ ਉਤਾਰਿਆ ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥
पूर्ण सतगुरु ने अपनी कृपा करके बालक हरिगोविन्द का ताप उतार दिया है॥ रहाउ॥

ਸਦਾ ਅਨੰਦ ਕਰਹ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ ਗੁਰਿ ਰਾਖਿਆ ॥
सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥
हे मेरे प्यारे ! अब सभी सदैव ही आनंद करो, चूंकि मेरे गुरु ने श्री हरिगोविन्द को बचा लिया है।

ਵਡੀ ਵਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੀ ਸਾਚੁ ਸਬਦੁ ਸਤਿ ਭਾਖਿਆ ॥੨॥੧੮॥੪੬॥
वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥२॥१८॥४६॥
हे नानक ! कर्ता परमेश्वर की महिमा महान् है, चूंकि उसके शब्द सत्य हैं और उसकी वाणी भी सत्य है॥ २॥ १८॥ ४६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਤਿਤੁ ਸਾਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥
भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥
मेरा मालिक मुझ पर कृपालु हो गया है और मैं उसके सच्चे दरबार में सत्कृत हो गया हूँ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਤਾਪੁ ਗਵਾਇਆ ਭਾਈ ਠਾਂਢਿ ਪਈ ਸੰਸਾਰਿ ॥
सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि ॥
हे भाई ! सतगुरु ने हरिगोबिन्द का बुखार उतार दिया है और सारे संसार में सुख-शांति हो गई है।

ਅਪਣੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਆਪੇ ਰਾਖੇ ਜਮਹਿ ਕੀਓ ਹਟਤਾਰਿ ॥੧॥
अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥१॥
अपने जीव की प्रभु ने स्वयं ही रक्षा की है और मृत्यु भी बेअसर हो गई है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਰਿਦੈ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥
भगवान के सुन्दर चरण अपने हृदय में धारण करो।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰੀਐ ਭਾਈ ਦੁਖ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਣਹਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥१॥ रहाउ ॥
हे भाई! हमें सदा-सर्वदा ही प्रभु का ध्यान करना चाहिए, चूंकि वह दुःख-मुसीबतों एवं पापों का नाश करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਿਸ ਕੀ ਸਰਣੀ ਊਬਰੈ ਭਾਈ ਜਿਨਿ ਰਚਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥
तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥
हे भाई ! जिसने सबको पैदा किया है, उसकी शरण में जाने से ही उद्धार होता है।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਸੋ ਭਾਈ ਸਚੈ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥
करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥
वह तो समस्त कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है, उस परम-सत्य परमेश्वर की कीर्ति भी सत्य है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਈਐ ਭਾਈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇ ॥੨॥੧੯॥੪੭॥
नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥२॥१९॥४७॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! हमें प्रभु का ही ध्यान करना चाहिए, जिसके फलस्वरुप मन तन शीतल हो जाता है॥ २॥ १६॥ ४७ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥
हे संतो ! मैंने तो हरि-नाम का ही ध्यान-मनन किया है।

ਸੁਖ ਸਾਗਰ ਪ੍ਰਭੁ ਵਿਸਰਉ ਨਾਹੀ ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜਾ ਫਲੁ ਪਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥१॥ रहाउ ॥
मैं सुखों के सागर प्रभु को कदापि विस्मृत नहीं करता और मनोवांछित फल प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤਾਪੁ ਗਵਾਇਆ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥
पूर्ण सतगुरु ने अपनी कृपा करके हरिगोविन्द का ताप (बुखार) उतार दिया है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ਦੁਖੁ ਮਿਟਿਆ ਸਭ ਪਰਵਾਰੀ ॥੧॥
पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥१॥
परब्रह्म-प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है और मेरे सारे परिवार का दुःख मिट गया है॥ १॥

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਮੰਗਲ ਰਸ ਰੂਪਾ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੋ ॥
सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥
मुझे हरि के नाम का ही सहारा है, जो समस्त खुशियों, अमृत एवं सुन्दरता का खजाना है।

ਨਾਨਕ ਪਤਿ ਰਾਖੀ ਪਰਮੇਸਰਿ ਉਧਰਿਆ ਸਭੁ ਸੰਸਾਰੋ ॥੨॥੨੦॥੪੮॥
नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥२॥२०॥४८॥
हे नानक ! उस परमेश्वर ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा को बचा लिया है और सारी दुनिया का कल्याण हो गया है॥ २॥ २०॥ ४८ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਮੇਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ਹੋਆ ॥
मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥
मेरा सतगुरु (बालक हरिगोबिन्द का) रखवाला हुआ है।

ਧਾਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭ ਹਾਥ ਦੇ ਰਾਖਿਆ ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ ਨਵਾ ਨਿਰੋਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी कृपा करके प्रभु ने हाथ देकर श्री हरिगोबिन्द की रक्षा की है और अब वह बिल्कुल तन्दरुस्त है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਾਪੁ ਗਇਆ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਟਾਇਆ ਜਨ ਕੀ ਲਾਜ ਰਖਾਈ ॥

तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥

श्री हरिगोविन्द का बुखार अब निवृत्त हो गया है, जिसे प्रभु ने स्वयं मिटाया है और अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा बचा ली है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਤੇ ਸਭ ਫਲ ਪਾਏ ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਂਈ ॥੧॥

साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥१॥

सत्संगति से ही हमें सभी फल प्राप्त हुए हैं और सतिगुरु पर मैं कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਪ੍ਰਭ ਦੋਵੈ ਸਵਾਰੇ ਹਮਰਾ ਗੁਣੁ ਅਵਗੁਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥

हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥

प्रभु ने मेरे लोक-परलोक दोनों ही संवार दिए हैं और उसने मेरे गुणों एवं अवगुणों का ख्याल नहीं किया।

ਅਟਲ ਬਚਨੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇਰਾ ਸਫਲ ਕਰੁ ਮਸਤਕਿ ਧਾਰਿਆ ॥੨॥੨੧॥੪੯॥
अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥२॥२१॥४९॥
नानक का कथन है कि हे गुरु ! तेरा वचन अटल है, अपना फलदायक हाथ तूने मेरे मस्तक पर रखा है ॥२॥२१॥४९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ੍ਰ ਸਭਿ ਤਿਸ ਕੇ ਕੀਏ ਸੋਈ ਸੰਤ ਸਹਾਈ ॥
जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥
सभी जीव-जन्तु उस (परमेश्वर) के पैदा किए हुए हैं और वही संतों का सहायक है।

ਅਪੁਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪੇ ਰਾਖੈ ਪੂਰਨ ਭਈ ਬਡਾਈ ॥੧॥
अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥१॥
अपने सेवक की वह स्वयं ही रक्षा करता है और उसकी महिमा पूर्ण है॥ १ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪੂਰਾ ਮੇਰੈ ਨਾਲਿ ॥
पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥
पूर्ण परब्रह्म-परमेश्वर मेरे साथ है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰੀ ਸਭ ਰਾਖੀ ਹੋਏ ਸਰਬ ਦਇਆਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने भलीभांति पूर्णतया मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचा ली है और वह सब पर दयालु हो गया है॥ १॥ रहाउ ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥
अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥
नानक रात-दिन जीवन एवं प्राणों के दाता परमेश्वर के नाम का ही ध्यान करता रहता है।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕਉ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਰਾਖੈ ਜਿਉ ਬਾਰਿਕ ਪਿਤ ਮਾਤਾ ॥੨॥੨੨॥੫੦॥
अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥२॥२२॥५०॥
अपने दास को वह ऐसे गले से लगाकर रखता है जैसे माता-पिता अपनी संतान को गले से लगाकर रखते हैं।॥ २॥ २२॥ ५०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਚਉਪਦੇ
सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे
सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਿਲਿ ਪੰਚਹੁ ਨਹੀ ਸਹਸਾ ਚੁਕਾਇਆ ॥
मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥
पंचों से मिलकर मेरा संशय दूर नहीं हुआ और

ਸਿਕਦਾਰਹੁ ਨਹ ਪਤੀਆਇਆ ॥
सिकदारहु नह पतीआइआ ॥
चौधरियों से भी मेरी संतुष्टि नहीं हुई।

ਉਮਰਾਵਹੁ ਆਗੈ ਝੇਰਾ ॥
उमरावहु आगै झेरा ॥
मैंने अपना झगड़ा अमीरों-वजीरों के समक्ष भी रखा लेकिन

ਮਿਲਿ ਰਾਜਨ ਰਾਮ ਨਿਬੇਰਾ ॥੧॥
मिलि राजन राम निबेरा ॥१॥
जगत के राजन राम से मिलकर ही मेरा झगड़े का निपटारा हुआ है॥ १॥

ਅਬ ਢੂਢਨ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਈ ॥
अब ढूढन कतहु न जाई ॥
अब मैं इधर-उधर ढूँढने के लिए नहीं जाता चूंकि

ਗੋਬਿਦ ਭੇਟੇ ਗੁਰ ਗੋਸਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥
सृष्टि का स्वामी गुरु-परमेश्वर मुझे मिल गया है॥ रहाउ॥

ਆਇਆ ਪ੍ਰਭ ਦਰਬਾਰਾ ॥
आइआ प्रभ दरबारा ॥
जब मैं प्रभु के दरबार में आया तो

ਤਾ ਸਗਲੀ ਮਿਟੀ ਪੂਕਾਰਾ ॥
ता सगली मिटी पूकारा ॥
मेरे मन की फरियाद मिट गई।

ਲਬਧਿ ਆਪਣੀ ਪਾਈ ॥
लबधि आपणी पाई ॥
जो मेरी तकदीर में था, वह सब मुझे मिल गया है और

ਤਾ ਕਤ ਆਵੈ ਕਤ ਜਾਈ ॥੨॥
ता कत आवै कत जाई ॥२॥
अब मैंने कहाँ आना एवं कहाँ जाना है ? ॥२॥

ਤਹ ਸਾਚ ਨਿਆਇ ਨਿਬੇਰਾ ॥
तह साच निआइ निबेरा ॥
वहाँ सत्य के न्यायालय में सच्चा न्याय होता है।

ਊਹਾ ਸਮ ਠਾਕੁਰੁ ਸਮ ਚੇਰਾ ॥
ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥
प्रभु के दरबार में तो जैसा मालिक है, वैसा ही नौकर है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਨੈ ॥
अंतरजामी जानै ॥
अंतर्यामी प्रभु सर्वज्ञाता है और

ਬਿਨੁ ਬੋਲਤ ਆਪਿ ਪਛਾਨੈ ॥੩॥
बिनु बोलत आपि पछानै ॥३॥
मनुष्य के कुछ बोले बिना ही वह स्वयं ही मनोरथ को पहचान लेता है।॥३॥

ਸਰਬ ਥਾਨ ਕੋ ਰਾਜਾ ॥
सरब थान को राजा ॥
वह सब स्थानों का राजा है,

ਤਹ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਅਗਾਜਾ ॥
तह अनहद सबद अगाजा ॥
वहाँ अनहद शब्द गूंजता रहता है।

ਤਿਸੁ ਪਹਿ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ॥
तिसु पहि किआ चतुराई ॥
उसके साथ क्या चतुराई की जा सकती है ?

ਮਿਲੁ ਨਾਨਕ ਆਪੁ ਗਵਾਈ ॥੪॥੧॥੫੧॥
मिलु नानक आपु गवाई ॥४॥१॥५१॥
हे नानक ! अपने अहंकार को दूर करके प्रभु से मिलन करो।॥ ४॥ १॥ ५१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਵਸਾਇਹੁ ॥
हिरदै नामु वसाइहु ॥
अपने हृदय में परमात्मा के नाम को बसाओ और

ਘਰਿ ਬੈਠੇ ਗੁਰੂ ਧਿਆਇਹੁ ॥
घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥
घर में बैठे ही गुरु का ध्यान करो।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਚੁ ਕਹਿਆ ॥
गुरि पूरै सचु कहिआ ॥
पूर्ण गुरु ने सत्य ही कहा है कि

ਸੋ ਸੁਖੁ ਸਾਚਾ ਲਹਿਆ ॥੧॥
सो सुखु साचा लहिआ ॥१॥
सच्चा सुख भगवान से ही प्राप्त होता है॥ १॥

ਅਪੁਨਾ ਹੋਇਓ ਗੁਰੁ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥
अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥
मेरा गुरु मुझ पर मेहरबान हो गया है,

ਅਨਦ ਸੂਖ ਕਲਿਆਣ ਮੰਗਲ ਸਿਉ ਘਰਿ ਆਏ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥
जिसके फलस्वरूप आनंद, सुख, कल्याण एवं मंगल सहित मैं स्नान करके अपने घर में आ गया हूँ॥ रहाउ॥

ਸਾਚੀ ਗੁਰ ਵਡਿਆਈ ॥
साची गुर वडिआई ॥
मेरे गुरु की महिमा सत्य है,

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
ता की कीमति कहणु न जाई ॥
जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਸਿਰਿ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹਾ ॥
सिरि साहा पातिसाहा ॥
वह तो राजाओं का भी महाराजा है।

ਗੁਰ ਭੇਟਤ ਮਨਿ ਓਮਾਹਾ ॥੨॥
गुर भेटत मनि ओमाहा ॥२॥
गुरु से भेंट करके मन में उत्साह उत्पन्न हो जाता है॥ २॥

ਸਗਲ ਪਰਾਛਤ ਲਾਥੇ ॥ ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਸਾਥੇ ॥
सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साधसंगति कै साथे ॥
तब सभी पाप नाश हो जाते हैं जब संतों की संगति में सम्मिलित होते है ।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥
गुण निधान हरि नामा ॥
हरि का नाम गुणों का खजाना है,

ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮਾ ॥੩॥
जपि पूरन होए कामा ॥३॥
जिसका जाप करने से कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं।॥ ३॥

ਗੁਰਿ ਕੀਨੋ ਮੁਕਤਿ ਦੁਆਰਾ ॥
गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥
गुरु ने मोक्ष का द्वार खोल दिया और

ਸਭ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਰੈ ਜੈਕਾਰਾ ॥
सभ स्रिसटि करै जैकारा ॥
सारी दुनिया गुरु की जय-जयकार करती है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰੈ ਸਾਥੇ ॥
नानक प्रभु मेरै साथे ॥
हे नानक ! प्रभु मेरे साथ है,

ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਲਾਥੇ ॥੪॥੨॥੫੨॥
जनम मरण भै लाथे ॥४॥२॥५२॥
इसलिए मेरा जन्म-मरण का भय दूर हो गया है ॥४॥२॥५२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
गुरि पूरै किरपा धारी ॥
पूर्ण गुरु ने मुझ पर बड़ी कृपा की है,

ਪ੍ਰਭਿ ਪੂਰੀ ਲੋਚ ਹਮਾਰੀ ॥
प्रभि पूरी लोच हमारी ॥
जिसके फलस्वरूप प्रभु ने हमारी मनोकामना पूरी कर दी है।

ਕਰਿ ਇਸਨਾਨੁ ਗ੍ਰਿਹਿ ਆਏ ॥
करि इसनानु ग्रिहि आए ॥
नाम का स्नान करके मैं घर आ गया हूँ और

ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਸੁਖ ਪਾਏ ॥੧॥
अनद मंगल सुख पाए ॥१॥
मुझे आनंद, मंगल एवं सुख की प्राप्ति हो गई है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਰੀਐ ॥
संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥
हे संतो ! राम-नाम के स्मरण से ही मुक्ति प्राप्त होती है।

ਊਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਕ੍ਰਿਤੁ ਕਰੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए हमें उठते-बैठते हर समय परमात्मा का ध्यान करना चाहिए और प्रतिदिन शुभ कर्म ही करने चाहिए ॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੰਤ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਧਰਮ ਕੀ ਪਉੜੀ ਕੋ ਵਡਭਾਗੀ ਪਾਏ ॥
संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥
संतों का मार्ग ही धर्म की सीढ़ी है, जिसे कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है।

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਨਾਸੇ ਹਰਿ ਚਰਣੀ ਚਿਤੁ ਲਾਏ ॥੨॥
कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥२॥
हरि-चरणों में चित्त लगाने से करोड़ों जन्मों के किल्विष-पाप नाश हो जाते हैं।॥२॥

ਉਸਤਤਿ ਕਰਹੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਜਿਨਿ ਪੂਰੀ ਕਲ ਰਾਖੀ ॥
उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥
उस प्रभु की सदा ही स्तुति करो, जिसने पूर्ण कला (शक्ति) को धारण किया हुआ है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਭਏ ਪਵਿਤ੍ਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ॥੩॥
जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥३॥
सतगुरु का सच्चा उपदेश सुनने से सभी जीव पवित्र हो गए हैं ॥ ३॥

ਬਿਘਨ ਬਿਨਾਸਨ ਸਭਿ ਦੁਖ ਨਾਸਨ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ॥
बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥
सतगुरु ने विघ्नों का विनाश करने वाला एवं समस्त दुःखों का नाश करने वाला परमात्मा का नाम मन में दृढ़ कर दिया है।

ਖੋਏ ਪਾਪ ਭਏ ਸਭਿ ਪਾਵਨ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥੪॥੩॥੫੩॥
खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥४॥३॥५३॥
नानक का कथन है कि मेरे सभी पाप नाश हो गए हैं और मैं पावन होकर सुख के घर में आ गया हूँ॥ ४॥ ३॥ ५३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਨੀ ਗਹੇਰਾ ॥
साहिबु गुनी गहेरा ॥
हे मालिक ! तू गुणों की गहरा सागर है।

ਘਰੁ ਲਸਕਰੁ ਸਭੁ ਤੇਰਾ ॥
घरु लसकरु सभु तेरा ॥
मेरा (हृदय) घर एवं लश्कर (इन्द्रियाँ) सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है।

ਰਖਵਾਲੇ ਗੁਰ ਗੋਪਾਲਾ ॥
रखवाले गुर गोपाला ॥
गोपाल-गुरु ही मेरा रखवाला है

ਸਭਿ ਜੀਅ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ॥੧॥
सभि जीअ भए दइआला ॥१॥
जिसके फलस्वरूप सभी जीव मुझ पर दयालु हो गए हैं।॥ १॥

ਜਪਿ ਅਨਦਿ ਰਹਉ ਗੁਰ ਚਰਣਾ ॥
जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥
गुरु के चरणों का जाप करके मैं आनंदित रहता हूँ।

ਭਉ ਕਤਹਿ ਨਹੀ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥
प्रभु की शरण में आने से कहीं कोई भय नहीं॥ रहाउ॥

ਤੇਰਿਆ ਦਾਸਾ ਰਿਦੈ ਮੁਰਾਰੀ ॥
तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥
हे मुरारि ! तू अपने सेवकों के हृदय में ही रहता है।

ਪ੍ਰਭਿ ਅਬਿਚਲ ਨੀਵ ਉਸਾਰੀ ॥
प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥
प्रभु ने अविचल आधारशिला का निर्माण किया हुआ है।

ਬਲੁ ਧਨੁ ਤਕੀਆ ਤੇਰਾ ॥
बलु धनु तकीआ तेरा ॥
तू ही शक्ति, धन एवं सहारा है।

ਤੂ ਭਾਰੋ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੨॥
तू भारो ठाकुरु मेरा ॥२॥
तू ही मेरा महान् ठाकुर है॥ २॥

ਜਿਨਿ ਜਿਨਿ ਸਾਧਸੰਗੁ ਪਾਇਆ ॥
जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥
जिस-जिस ने भी साधसंगत को प्राप्त किया है,

ਸੋ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਤਰਾਇਆ ॥
सो प्रभि आपि तराइआ ॥
प्रभु ने स्वयं ही उसे भवसागर से पार कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮ ਰਸੁ ਦੀਆ ॥
करि किरपा नाम रसु दीआ ॥
उसने स्वयं ही कृपा करके नामामृत प्रदान किया है और

ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਸਭ ਥੀਆ ॥੩॥
कुसल खेम सभ थीआ ॥३॥
हर तरफ कुशलक्षेम है॥ ३॥

ਹੋਏ ਪ੍ਰਭੂ ਸਹਾਈ ॥
होए प्रभू सहाई ॥
प्रभु जब मेरा सहायक बन गया तो

ਸਭ ਉਠਿ ਲਾਗੀ ਪਾਈ ॥
सभ उठि लागी पाई ॥
सभी उठकर मेरे चरण स्पर्श करने लगे।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥
सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥
नानक का कथन है कि अपने श्वास-श्वास से हमें प्रभु का ध्यान ही करना चाहिए और

ਹਰਿ ਮੰਗਲੁ ਨਾਨਕ ਗਾਈਐ ॥੪॥੪॥੫੪॥
हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥४॥४॥५४॥
हरि की महिमा के मंगल गीत गायन करने चाहिए ॥४॥४॥५४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦਾ ॥
सूख सहज आनंदा ॥
मेरे मन में सहज सुख एवं आनंद की प्राप्ति हो गई है

ਪ੍ਰਭੁ ਮਿਲਿਓ ਮਨਿ ਭਾਵੰਦਾ ॥
प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥
और मुझे मनभावता प्रभु मिल गया है,

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
पूरै गुरि किरपा धारी ॥
पूर्ण गुरु ने जब मुझ पर कृपा की तो

ਤਾ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
ता गति भई हमारी ॥१॥
हमारा कल्याण हो गया ॥ १॥

ਹਰਿ ਕੀ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ॥
हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥
मेरा मन हरि की प्रेम-भक्ति में लीन रहता है,

ਨਿਤ ਬਾਜੇ ਅਨਹਤ ਬੀਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥
जिसके फलस्वरूप अन्तर्मन में नित्य ही अनहद वीणा बजती रहती है।रहाउ ॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਕੀ ਓਟ ਸਤਾਣੀ ॥
हरि चरण की ओट सताणी ॥
हरि के चरणों का सहारा बड़ा मजबूत है,

ਸਭ ਚੂਕੀ ਕਾਣਿ ਲੋਕਾਣੀ ॥
सभ चूकी काणि लोकाणी ॥
इसलिए मेरी संसार के लोगों पर निर्भरता सब चूक गई है।

ਜਗਜੀਵਨੁ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥
जगजीवनु दाता पाइआ ॥
मैंने जगत का जीवनदाता प्रभु पा लिया है,

ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਗੁਣ ਗਾਇਆ ॥੨॥
हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥२॥
अब मैं खुशी से मोहित होकर उसका गुणगान करता हूँ ॥२॥

ਪ੍ਰਭ ਕਾਟਿਆ ਜਮ ਕਾ ਫਾਸਾ ॥
प्रभ काटिआ जम का फासा ॥
प्रभु ने मृत्यु की फांसी काट दी है और

ਮਨ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ॥
मन पूरन होई आसा ॥
मेरे मन की आशा पूरी हो गई है।

ਜਹ ਪੇਖਾ ਤਹ ਸੋਈ ॥
जह पेखा तह सोई ॥
अब मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही वह विद्यमान है।

ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥੩॥
हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥३॥
प्रभु के सिवाय दूसरा कोई सहायक नही॥ ३॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੇ ॥
करि किरपा प्रभि राखे ॥
प्रभु ने कृपा करके मेरी रक्षा की है और

ਸਭਿ ਜਨਮ ਜਨਮ ਦੁਖ ਲਾਥੇ ॥
सभि जनम जनम दुख लाथे ॥
जन्म-जन्मांतरों के सभी दु:खों से मुक्त हो गया हूँ॥

ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
निरभउ नामु धिआइआ ॥
हे नानक ! ईश्वर के निर्भय नाम का ध्यान करने से

ਅਟਲ ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਪਾਇਆ ॥੪॥੫॥੫੫॥
अटल सुखु नानक पाइआ ॥४॥५॥५५॥
मुझे अटल सुख मिल गया है॥ ४॥५॥ ५५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਠਾਢਿ ਪਾਈ ਕਰਤਾਰੇ ॥
ठाढि पाई करतारे ॥
ईश्वर ने मेरे घर में शांति कर दी है,

ਤਾਪੁ ਛੋਡਿ ਗਇਆ ਪਰਵਾਰੇ ॥
तापु छोडि गइआ परवारे ॥
जिससे ज्वर मेरे परिवार को त्याग गया है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹੈ ਰਾਖੀ ॥ ਸਰਣਿ ਸਚੇ ਕੀ ਤਾਕੀ ॥੧॥
गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥१॥
पूर्ण गुरु ने मेरी रक्षा की है और अब मैंने उस परम-सत्य प्रभु की शरण ली है॥ १ ॥

ਪਰਮੇਸਰੁ ਆਪਿ ਹੋਆ ਰਖਵਾਲਾ ॥
परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥
परमेश्वर आप ही मेरा रखवाला बना है और

ਸਾਂਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖ ਖਿਨ ਮਹਿ ਉਪਜੇ ਮਨੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਸੁਖਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥
क्षण भर में ही सहज सुख एवं शांति उत्पन्न हो गए हैं और मन हमेशा के लिए सुखी हो गया है ॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਦਾਰੂ ॥
हरि हरि नामु दीओ दारू ॥
गुरु ने मुझे हरि-नाम की औषधि दी है,

ਤਿਨਿ ਸਗਲਾ ਰੋਗੁ ਬਿਦਾਰੂ ॥
तिनि सगला रोगु बिदारू ॥
जिसने सारा रोग दूर कर दिया है।

ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
अपणी किरपा धारी ॥
प्रभु ने मुझ पर अपनी कृपा की है,

ਤਿਨਿ ਸਗਲੀ ਬਾਤ ਸਵਾਰੀ ॥੨॥
तिनि सगली बात सवारी ॥२॥
जिसने मेरे समस्त कार्य संवार दिए हैं।॥ २॥

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰਿਆ ॥
प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥
प्रभु ने तो अपने विरद् का पालन किया है और

ਹਮਰਾ ਗੁਣੁ ਅਵਗੁਣੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥
हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥
हमारे गुणों एवं अवगुणों की ओर विचार नहीं किया।

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਭਇਓ ਸਾਖੀ ॥
गुर का सबदु भइओ साखी ॥
गुरु का शब्द साक्षात् हुआ है,

ਤਿਨਿ ਸਗਲੀ ਲਾਜ ਰਾਖੀ ॥੩॥
तिनि सगली लाज राखी ॥३॥
जिसने पूर्णतया मेरी लाज बचा ली है॥ ३॥

ਬੋਲਾਇਆ ਬੋਲੀ ਤੇਰਾ ॥
बोलाइआ बोली तेरा ॥
मैं वही कुछ बोलता हूँ जो तू मुझ से बुलवाता है

ਤੂ ਸਾਹਿਬੁ ਗੁਣੀ ਗਹੇਰਾ ॥
तू साहिबु गुणी गहेरा ॥
हे मेरे मालिक ! तू गुणों का गहरा सागर है।

ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਚੁ ਸਾਖੀ ॥
जपि नानक नामु सचु साखी ॥
हे नानक ! सत्य नाम का जाप करो वही परलोक में साक्षी होगा।

ਅਪੁਨੇ ਦਾਸ ਕੀ ਪੈਜ ਰਾਖੀ ॥੪॥੬॥੫੬॥
अपुने दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥
भगवान ने अपने दास की लाज बचा ली ॥४॥६॥५६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਵਿਚਿ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਖਲੋਆ ॥
विचि करता पुरखु खलोआ ॥
कर्ता पुरुष स्वयं आकर खड़ा हुआ है

ਵਾਲੁ ਨ ਵਿੰਗਾ ਹੋਆ ॥
वालु न विंगा होआ ॥
और मेरा एक बाल भी बांका नहीं हुआ।

ਮਜਨੁ ਗੁਰ ਆਂਦਾ ਰਾਸੇ ॥
मजनु गुर आंदा रासे ॥
गुरु ने मेरा स्नान सफल कर दिया है।

ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਿਲਵਿਖ ਨਾਸੇ ॥੧॥
जपि हरि हरि किलविख नासे ॥१॥
हरि-परमेश्वर का सिमरन करने से मेरे किल्विष-पाप नाश हो गए हैं ॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਰਾਮਦਾਸ ਸਰੋਵਰੁ ਨੀਕਾ ॥
संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥
हे संतो ! रामदास का सरोवर उत्कृष्ट है,

ਜੋ ਨਾਵੈ ਸੋ ਕੁਲੁ ਤਰਾਵੈ ਉਧਾਰੁ ਹੋਆ ਹੈ ਜੀ ਕਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥१॥ रहाउ ॥
जो कोई भी इस में स्नान करता है, उसकी वंशावलि का उद्धार हो जाता है और वह अपनी आत्मा का भी कल्याण कर लेता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਜਗੁ ਗਾਵੈ ॥ ਮਨ ਚਿੰਦਿਅੜੇ ਫਲ ਪਾਵੈ ॥
जै जै कारु जगु गावै ॥ मन चिंदिअड़े फल पावै ॥
जगत उसकी जय-जयकार करता है और उसे मनोवांछित फल मिल जाता है।

ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਨਾਇ ਆਏ ॥ ਅਪਣਾ ਪ੍ਰਭੂ ਧਿਆਏ ॥੨॥
सही सलामति नाइ आए ॥ अपणा प्रभू धिआए ॥२॥
वह स्वस्थ हो जाता है, जो यहाँ आकर स्नान करता है और प्रभु का ध्यान करता है ।॥२॥

ਸੰਤ ਸਰੋਵਰ ਨਾਵੈ ॥ ਸੋ ਜਨੁ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥
संत सरोवर नावै ॥ सो जनु परम गति पावै ॥
जो संतों के सरोवर में स्नान करता है, उस व्यक्ति को परमगति मिल जाती है।

ਮਰੈ ਨ ਆਵੈ ਜਾਈ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥੩॥
मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥३॥
उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है जो हरि-नाम का ध्यान करता है ॥३॥

ਇਹੁ ਬ੍ਰਹਮ ਬਿਚਾਰੁ ਸੁ ਜਾਨੈ ॥
इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥
वही यह ब्रह्म विचार समझता है,

ਜਿਸੁ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਭਗਵਾਨੈ ॥
जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥
जिस पर भगवान दयालु होता है।

ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥
बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥
नानक का कथन है कि हे बाबा ! जो प्रभु की शरण में आता है उस

ਸਭ ਚਿੰਤਾ ਗਣਤ ਮਿਟਾਈ ॥੪॥੭॥੫੭॥
सभ चिंता गणत मिटाई ॥४॥७॥५७॥
की समस्त चिंताएँ एवं संकट मिट जाते हैं।॥ ४॥ ७ ॥ ५७ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਨਿਬਾਹੀ ਪੂਰੀ ॥
पारब्रहमि निबाही पूरी ॥
परब्रह्म ने मेरा पूरा साथ निभाया है और

ਕਾਈ ਬਾਤ ਨ ਰਹੀਆ ਊਰੀ ॥
काई बात न रहीआ ऊरी ॥
कोई बात अधूरी नहीं रह गई।

ਗੁਰਿ ਚਰਨ ਲਾਇ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥
गुरि चरन लाइ निसतारे ॥
गुरु ने अपने चरणों से लगाकर मुझे भवसागर से पार कर दिया है और

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹਾਰੇ ॥੧॥
हरि हरि नामु सम्हारे ॥१॥
अब मैं हरि-नाम का सिमरन करता हूँ॥ १॥

ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕਾ ਸਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ॥
अपने दास का सदा रखवाला ॥
भगवान सदा ही अपने दास का रखवाला है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਰਾਖੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਜਿਉ ਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी कृपा करके अपना हाथ देकर उसने हमारी ऐसे रक्षा की है, जैसे माता-पिता पालन-पोषण करते हैं।॥१॥ रहाउ ॥

ਵਡਭਾਗੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥
बड़ी किस्मत से मुझे सतगुरु मिला है,"

ਜਿਨਿ ਜਮ ਕਾ ਪੰਥੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥
जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥
जिसने मृत्यु का मार्ग मिटा दिया है।

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥
हरि भगति भाइ चितु लागा ॥
मेरा चित्त तो भगवान की प्यारी भक्ति में लग गया है।

ਜਪਿ ਜੀਵਹਿ ਸੇ ਵਡਭਾਗਾ ॥੨॥
जपि जीवहि से वडभागा ॥२॥
वह बड़े भाग्यशाली हैं, जो भगवान का जाप करते हुए जीवित रहते हैं।॥ २॥

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਗਾਵੈ ॥
हरि अम्रित बाणी गावै ॥
दास हरि की अमृत वाणी गाता रहता है और

ਸਾਧਾ ਕੀ ਧੂਰੀ ਨਾਵੈ ॥
साधा की धूरी नावै ॥
संतों की चरण-धूलि में ही स्नान करता है।

ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਆਪੇ ਦੀਆ ॥
अपुना नामु आपे दीआ ॥
उसने स्वयं ही मुझे अपना नाम दिया है और

ਪ੍ਰਭ ਕਰਣਹਾਰ ਰਖਿ ਲੀਆ ॥੩॥
प्रभ करणहार रखि लीआ ॥३॥
कर्ता प्रभु ने स्वयं ही मेरी रक्षा की है ॥३॥

ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥
हरि दरसन प्रान अधारा ॥
हरि के दर्शन ही मेरे प्राणों का आधार है और

ਇਹੁ ਪੂਰਨ ਬਿਮਲ ਬੀਚਾਰਾ ॥
इहु पूरन बिमल बीचारा ॥
यही पूर्ण एवं पवित्र विचार है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
करि किरपा अंतरजामी ॥
हे अंतर्यामी प्रभु ! मुझ पर कृपा करो चूंकि

ਦਾਸ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ॥੪॥੮॥੫੮॥
दास नानक सरणि सुआमी ॥४॥८॥५८॥
दास नानक तो अपने स्वामी की शरण में ही आया है ॥४॥८॥५८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਚਰਨੀ ਲਾਇਆ ॥
गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥
पूर्ण गुरु ने जब मुझे अपने चरणों में लगा लिया तो

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਪਾਇਆ ॥
हरि संगि सहाई पाइआ ॥
मैंने भगवान को अपने साथी एवं सहायक के रूप में पा लिया।

ਜਹ ਜਾਈਐ ਤਹਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥
जह जाईऐ तहा सुहेले ॥
जहाँ कहीं भी मैं जाता हैं, उधर ही मैं सुखी हूँ।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਮੇਲੇ ॥੧॥
करि किरपा प्रभि मेले ॥१॥
प्रभु ने कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लिया है॥ १॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਸਦਾ ਸੁਭਾਈ ॥
हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥
सदैव ही श्रद्धा से भगवान का गुणगान करो,

ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਸਗਲੇ ਫਲ ਪਾਵਹੁ ਜੀਅ ਕੈ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥१॥ रहाउ ॥
इससे सभी मनोवांछित फल प्राप्त कर लो और भगवान आत्मा का साथी एवं सहायक बना रहेगा।॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਾਰਾਇਣ ਪ੍ਰਾਣ ਅਧਾਰਾ ॥
नाराइण प्राण अधारा ॥
नारायण हमारे प्राणों का आधार है।

ਹਮ ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਰੇਨਾਰਾ ॥
हम संत जनां रेनारा ॥
हम तो संतजनों की चरण-धूलि हैं।

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਕਰਿ ਲੀਨੇ ॥
पतित पुनीत करि लीने ॥
मुझ पतित को प्रभु ने पावन कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਦੀਨੇ ॥੨॥
करि किरपा हरि जसु दीने ॥२॥
उसने कृपा करके हरि-यश की देन प्रदान की है॥ २॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਕਰੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥
परब्रह्म-प्रभु हमेशा ही मेरा पालन-पोषण करता है।

ਸਦ ਜੀਅ ਸੰਗਿ ਰਖਵਾਲਾ ॥
सद जीअ संगि रखवाला ॥
वह सदा ही मेरी आत्मा का रखवाला है।

ਹਰਿ ਦਿਨੁ ਰੈਨਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਈਐ ॥
हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥
हमें तो रात-दिन हरि का कीर्तन ही गायन करना चाहिए,

ਬਹੁੜਿ ਨ ਜੋਨੀ ਪਾਈਐ ॥੩॥
बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥३॥
जिसके फलस्वरूप प्राणी बार-बार योनियों में नहीं पड़ता ॥३॥

ਜਿਸੁ ਦੇਵੈ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥
जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥
जिसे अकालपुरुष विधाता देता है,

ਹਰਿ ਰਸੁ ਤਿਨ ਹੀ ਜਾਤਾ ॥
हरि रसु तिन ही जाता ॥
वही हरि के अमृत रस को अनुभव करता है और

ਜਮਕੰਕਰੁ ਨੇੜਿ ਨ ਆਇਆ ॥
जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥
मृत्यु का दूत उसके निकट नहीं आता।

ਸੁਖੁ ਨਾਨਕ ਸਰਣੀ ਪਾਇਆ ॥੪॥੯॥੫੯॥
सुखु नानक सरणी पाइआ ॥४॥९॥५९॥
हे नानक ! प्रभु की शरण में मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ६॥ ५६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕੀਤੀ ਪੂਰੀ ॥
गुरि पूरै कीती पूरी ॥
पूर्ण गुरु ने मुझ पर पूरी कृपा कर दी है।

ਪ੍ਰਭੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰੀ ॥
प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥
प्रभु सर्वव्यापक है।

ਖੇਮ ਕੁਸਲ ਭਇਆ ਇਸਨਾਨਾ ॥
खेम कुसल भइआ इसनाना ॥
अब मैं कुशलक्षेम से स्नान करता हूँ।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੧॥
पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥१॥
मैं परब्रह्म पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਕਵਲ ਰਿਦ ਧਾਰੇ ॥
गुर के चरन कवल रिद धारे ॥
अपने हृदय में मैंने गुरु के सुन्दर चरण-कमलों को धारण किया है।

ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਤਿਲ ਕਾ ਕੋਈ ਕਾਰਜ ਸਗਲ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
अब मुझे तिल-मात्र भी विघ्न नहीं आता और मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਦੁਰਮਤਿ ਖੋਏ ॥
मिलि साधू दुरमति खोए ॥
जिन्होंने संतों से मिलकर दुर्मति नाश कर ली है।

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਸਭ ਹੋਏ ॥
पतित पुनीत सभ होए ॥
अतः वे सभी पतित भी पावन हो गए हैं।

ਰਾਮਦਾਸਿ ਸਰੋਵਰ ਨਾਤੇ ॥
रामदासि सरोवर नाते ॥
रामदास सरोवर का इतना महात्म्य है कि इस में स्नान करने के फलस्वरूप

ਸਭ ਲਾਥੇ ਪਾਪ ਕਮਾਤੇ ॥੨॥
सभ लाथे पाप कमाते ॥२॥
मनुष्य के किए हुए सभी पाप उतर जाते हैं।॥ २॥

ਗੁਨ ਗੋਬਿੰਦ ਨਿਤ ਗਾਈਐ ॥
गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥
हमें नित्य ही भगवान का गुणगान करना चाहिए और

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਿਲਿ ਧਿਆਈਐ ॥
साधसंगि मिलि धिआईऐ ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर उसका ही ध्यान-मनन करना चाहिए।

ਮਨ ਬਾਂਛਤ ਫਲ ਪਾਏ ॥ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਰਿਦੈ ਧਿਆਏ ॥੩॥
मन बांछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥३॥
तब मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है," जब पूर्ण गुरु का हृदय में ध्यान करते हैं ॥ ३॥

ਗੁਰ ਗੋਪਾਲ ਆਨੰਦਾ ॥
गुर गोपाल आनंदा ॥
गुरु-परमेश्वर आनंद का भण्डार है।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਜੀਵੈ ਪਰਮਾਨੰਦਾ ॥
जपि जपि जीवै परमानंदा ॥
परमानंद प्रभु का जाप करने से ही मनुष्य आध्यात्मिक तौर पर जीवित रहता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जन नानक नामु धिआइआ ॥
नानक ने तो भगवान के नाम का ध्यान किया है और

ਪ੍ਰਭ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਰਖਾਇਆ ॥੪॥੧੦॥੬੦॥
प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥४॥१०॥६०॥
उसने अपने विरद् का पालन करते हुए उसे सत्कृत किया है॥ ४॥ १०॥ ६०॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु सोरठि महला ५ ॥
रागु सोरठि महला ५ ॥

ਦਹ ਦਿਸ ਛਤ੍ਰ ਮੇਘ ਘਟਾ ਘਟ ਦਾਮਨਿ ਚਮਕਿ ਡਰਾਇਓ ॥
दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥
दसों दिशाओं में मेघ छत्र की भांति फैले हुए हैं और काली घटा की दामिनी की चमक भयभीत कर रही है।

ਸੇਜ ਇਕੇਲੀ ਨੀਦ ਨਹੁ ਨੈਨਹ ਪਿਰੁ ਪਰਦੇਸਿ ਸਿਧਾਇਓ ॥੧॥
सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥१॥
मेरी सेज अकेली है, नयनों में नींद भी नहीं आ रही चूंकि मेरा प्रियवर परदेस चला गया है॥ १॥

ਹੁਣਿ ਨਹੀ ਸੰਦੇਸਰੋ ਮਾਇਓ ॥
हुणि नही संदेसरो माइओ ॥
हे माँ! अब तक मुझे उसका कोई सन्देश भी नहीं आया।

ਏਕ ਕੋਸਰੋ ਸਿਧਿ ਕਰਤ ਲਾਲੁ ਤਬ ਚਤੁਰ ਪਾਤਰੋ ਆਇਓ ॥ ਰਹਾਉ ॥
एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥
इससे पूर्व जब मेरा प्रियवर एक मील भी दूर जाता था तो मुझे उसकी चार चिठियां आ जाती थी।॥ रहाउ॥

ਕਿਉ ਬਿਸਰੈ ਇਹੁ ਲਾਲੁ ਪਿਆਰੋ ਸਰਬ ਗੁਣਾ ਸੁਖਦਾਇਓ ॥
किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥
मैं अपने दुलारे प्रियतम को कैसे भुला सकती हूँ जो सर्वगुण सम्पन्न एवं सुखों का दाता है।

ਮੰਦਰਿ ਚਰਿ ਕੈ ਪੰਥੁ ਨਿਹਾਰਉ ਨੈਨ ਨੀਰਿ ਭਰਿ ਆਇਓ ॥੨॥
मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥२॥
मैं छत पर चढ़कर अपने प्रियतम का मार्ग देखती हूँ और मेरे नयन भी अश्रुओं से भरे हुए हैं।॥ २॥

ਹਉ ਹਉ ਭੀਤਿ ਭਇਓ ਹੈ ਬੀਚੋ ਸੁਨਤ ਦੇਸਿ ਨਿਕਟਾਇਓ ॥
हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥
अहंत्व एवं आत्माभिमान की दीवार मेरे एवं उसके मध्य पड़ी हुई है। मैं सुनती हूँ कि वह मेरे हृदय देश में निकट ही रहता है।

ਭਾਂਭੀਰੀ ਕੇ ਪਾਤ ਪਰਦੋ ਬਿਨੁ ਪੇਖੇ ਦੂਰਾਇਓ ॥੩॥
भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥३॥
मेरे प्रियतम के मध्य तितली के पंखों जैसा सूक्ष्म पद है और उसके दर्शनों के बिना मैं उसे दूर ही समझती हूँ॥ ३॥

ਭਇਓ ਕਿਰਪਾਲੁ ਸਰਬ ਕੋ ਠਾਕੁਰੁ ਸਗਰੋ ਦੂਖੁ ਮਿਟਾਇਓ ॥
भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥
सबका मालिक मुझ पर कृपालु हो गया है और उसने मेरे समस्त दुःख मिटा दिए हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਉਮੈ ਭੀਤਿ ਗੁਰਿ ਖੋਈ ਤਉ ਦਇਆਰੁ ਬੀਠਲੋ ਪਾਇਓ ॥੪॥
कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥४॥
हे नानक ! जब गुरु ने अहंत्व की दीवार ध्वस्त कर दी तो मैंने दयालु विठ्ठल भगवान को पा लिया ॥ ४॥

ਸਭੁ ਰਹਿਓ ਅੰਦੇਸਰੋ ਮਾਇਓ ॥
सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥
हे माँ! मेरे सभी भय अब दूर हो गए हैं,

ਜੋ ਚਾਹਤ ਸੋ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਇਓ ॥
जो चाहत सो गुरू मिलाइओ ॥
जो मेरी कामना थी, गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है।

ਸਰਬ ਗੁਨਾ ਨਿਧਿ ਰਾਇਓ ॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧੧॥੬੧॥
सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥११॥६१॥
मेरा प्रभु तो सर्वगुणों का खजाना एवं बादशाह है॥ रहाउ दूसरा ॥ ११॥ ६१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗਈ ਬਹੋੜੁ ਬੰਦੀ ਛੋੜੁ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਦੁਖਦਾਰੀ ॥
गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥
निराकार परमात्मा खोई हुई वस्तु को दिलाने वाला, कैद से स्वतंत्र करने वाला एवं दुःखों का नाशक है।

ਕਰਮੁ ਨ ਜਾਣਾ ਧਰਮੁ ਨ ਜਾਣਾ ਲੋਭੀ ਮਾਇਆਧਾਰੀ ॥
करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥
मैं तो लोभ एवं माया का पुजारी हूँ जो कोई शुभकर्म एवं धर्म नहीं जानता।

ਨਾਮੁ ਪਰਿਓ ਭਗਤੁ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਇਹ ਰਾਖਹੁ ਪੈਜ ਤੁਮਾਰੀ ॥੧॥
नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥
हे ईश्वर ! मेरा नाम गोविन्द का भक्त पड़ गया है, अतः अपने नाम की लाज रखो ॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਨਿਮਾਣਿਆ ਤੂ ਮਾਣੁ ॥
हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥
हे ईश्वर ! तू सम्मान-हीन व्यक्तियों का सम्मान है।

ਨਿਚੀਜਿਆ ਚੀਜ ਕਰੇ ਮੇਰਾ ਗੋਵਿੰਦੁ ਤੇਰੀ ਕੁਦਰਤਿ ਕਉ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥
मेरा गोविन्द नाचीज़ व्यक्तियों को भी गुणवान बना देता है। मैं तेरी कुदरत पर कुर्बान जाता हूँ॥ रहाउ॥

ਜੈਸਾ ਬਾਲਕੁ ਭਾਇ ਸੁਭਾਈ ਲਖ ਅਪਰਾਧ ਕਮਾਵੈ ॥
जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥
जैसे बालक स्नेह एवं स्वभाववश लाखों ही अपराध करता है और

ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਝਿੜਕੇ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਬਹੁੜਿ ਪਿਤਾ ਗਲਿ ਲਾਵੈ ॥
करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥
चाहे उसका पिता उसे अनेक तरीकों से उपदेश देता एवं झिड़कता है परन्तु अन्तः वह उसे अपने गले से लगा लेता है।

ਪਿਛਲੇ ਅਉਗੁਣ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਆਗੈ ਮਾਰਗਿ ਪਾਵੈ ॥੨॥
पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥
इस तरह परमपिता परमेश्वर भी जीवों के पिछले अवगुणों को क्षमा कर देता है और भविष्य हेतु सन्मार्ग प्रदान कर देता है ॥२॥

ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾਣੈ ਤਾ ਕਿਸੁ ਪਹਿ ਆਖਿ ਸੁਣਾਈਐ ॥
हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥
अन्तर्यामी प्रभु समस्त विधियाँ जानता है तो फिर किस के समक्ष अपनी वेदना सुनाई जा सकती है?

ਕਹਣੈ ਕਥਨਿ ਨ ਭੀਜੈ ਗੋਬਿੰਦੁ ਹਰਿ ਭਾਵੈ ਪੈਜ ਰਖਾਈਐ ॥
कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥
निरा बातें एवं खुशामद करने से गोविन्द प्रसन्न नहीं होता, यदि उसे उपयुक्त लगे तो ही वह मनुष्य की लाज बचाता है।

ਅਵਰ ਓਟ ਮੈ ਸਗਲੀ ਦੇਖੀ ਇਕ ਤੇਰੀ ਓਟ ਰਹਾਈਐ ॥੩॥

अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ॥३॥

हे स्वामी ! मैंने अन्य सभी आश्रय देख लिए हैं, मुझे एक तेरा ही आश्रय रह गया है ॥३॥

ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਕਿਰਪਾਲੁ ਪ੍ਰਭੁ ਠਾਕੁਰੁ ਆਪੇ ਸੁਣੈ ਬੇਨੰਤੀ ॥
होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥
ठाकुर प्रभु दयालु एवं कृपालु होकर स्वयं ही विनती सुनता है।

ਪੂਰਾ ਸਤਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਵੈ ਸਭ ਚੂਕੈ ਮਨ ਕੀ ਚਿੰਤੀ ॥
पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥
जब पूर्ण सतगुरु उसके संग मिला देता है, तब मन की सारी चिंता मिट जाती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਵਖਦੁ ਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਵਸੰਤੀ ॥੪॥੧੨॥੬੨॥
हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥४॥१२॥६२॥
हे नानक ! गुरु ने हरि-नाम की औषधि भेरे मुँह में डाल दी है और अब मैं सुखी रहता हूँ ॥४॥ १२॥ ६२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਅਨੰਦਾ ਦੁਖ ਕਲੇਸ ਸਭਿ ਨਾਠੇ ॥
सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥
प्रभु का सिमरन करने से मुझे आनंद प्राप्त हो गया है और मेरे सभी दुःख एवं क्लेश दूर हो गए हैं।

ਗੁਨ ਗਾਵਤ ਧਿਆਵਤ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਂਠੇ ॥੧॥
गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥१॥
अपने प्रभु का गुणगान एवं ध्यान करते हुए हमारे सभी कार्य संवर गए हैं॥ १॥

ਜਗਜੀਵਨ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
जगजीवन नामु तुमारा ॥
हे ईश्वर! तुम्हारा नाम जगत का जीवन है।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਦੀਓ ਉਪਦੇਸਾ ਜਪਿ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने हमें उपदेश दिया है कि प्रभु का जाप करने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ रहाउ॥

ਤੂਹੈ ਮੰਤ੍ਰੀ ਸੁਨਹਿ ਪ੍ਰਭ ਤੂਹੈ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਕਰਣੈਹਾਰਾ ॥
तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥
हे प्रभु ! तू स्वयं ही मंत्री है, तू स्वयं सबकी प्रार्थना सुनता है और तू ही सब कुछ करने वाला है।

ਤੂ ਆਪੇ ਦਾਤਾ ਆਪੇ ਭੁਗਤਾ ਕਿਆ ਇਹੁ ਜੰਤੁ ਵਿਚਾਰਾ ॥੨॥
तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥२॥
तू स्वयं ही दाता है, स्वयं ही भोग भोगने वाला है, यह जीव बेचारा तो लाचार है?॥ २॥

ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਆਖਿ ਵਖਾਣੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥
मैं तेरे कौन-से गुणों का बखान करूँ ? चूंकि तेरे गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਜੀਵੈ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਅਚਰਜੁ ਤੁਮਹਿ ਵਡਾਈ ॥੩॥
पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥३॥
तेरी महिमा बड़ी अद्भुत है चूंकि तेरे दर्शन-दीदार करके ही हम जीवित रहते हैं।॥ ३॥

ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਆਪਿ ਪ੍ਰਭ ਸ੍ਵਾਮੀ ਪਤਿ ਮਤਿ ਕੀਨੀ ਪੂਰੀ ॥
धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥
स्वामी प्रभु ने स्वयं ही अपनी मेहर करके हमारी लाज एवं बुद्धि को सुशोभित कर दिया है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਨਾਨਕ ਬਲਿਹਾਰੀ ਬਾਛਉ ਸੰਤਾ ਧੂਰੀ ॥੪॥੧੩॥੬੩॥
सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥४॥१३॥६३॥
नानक तो हमेशा ही प्रभु पर बलिहारी जाता है और संतों की चरण-धूलि की कामना करता है॥ ४॥ १३॥ ६३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਃ ੫ ॥
सोरठि मः ५ ॥
सोरठि मः ५ ॥

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਨਮਸਕਾਰੇ ॥
गुरु पूरा नमसकारे ॥
पूर्ण गुरु को हमारा शत्-शत् नमन है,

ਪ੍ਰਭਿ ਸਭੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥
प्रभि सभे काज सवारे ॥
प्रभु ने हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं।

ਹਰਿ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
हरि अपणी किरपा धारी ॥
भगवान ने मुझ पर अपनी कृपा की है और

ਪ੍ਰਭ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੧॥
प्रभ पूरन पैज सवारी ॥१॥
उसने हमारी पूर्ण लाज-प्रतिष्ठा सुशोभित की है॥ १॥

ਅਪਨੇ ਦਾਸ ਕੋ ਭਇਓ ਸਹਾਈ ॥
अपने दास को भइओ सहाई ॥
वह अपने दास का सहायक बन गया है।

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਕੀਨੇ ਕਰਤੈ ਊਣੀ ਬਾਤ ਨ ਕਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥
कर्ता-प्रभु ने हमारे सभी मनोरथ पूरे कर दिए हैं और कोई बात की कमी नहीं रह गई॥ रहाउ॥

ਕਰਤੈ ਪੁਰਖਿ ਤਾਲੁ ਦਿਵਾਇਆ ॥
करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥
कर्ता-पुरुष ने अमृत सरोवर दिलवाया है।

ਪਿਛੈ ਲਗਿ ਚਲੀ ਮਾਇਆ ॥
पिछै लगि चली माइआ ॥
माया हमारे पीछे लगकर चली आई है और

ਤੋਟਿ ਨ ਕਤਹੂ ਆਵੈ ॥ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ ਸਤਗੁਰ ਭਾਵੈ ॥੨॥
तोटि न कतहू आवै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥
अब हमें किसी वस्तु की कोई कमी नहीं। मेरे पूर्ण सतगुरु को यूं ही भला लगता है ॥ २॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਦਇਆਲਾ ॥ ਸਭਿ ਜੀਅ ਭਏ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥
सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥
दयालु परमात्मा का सिमरन करने से सभी लोग मुझ पर कृपालु हो गए हैं।

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਗੁਸਾਈ ॥
जै जै कारु गुसाई ॥
उस मालिक की जय-जयकार है,

ਜਿਨਿ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥੩॥
जिनि पूरी बणत बणाई ॥३॥
जिसने पूर्ण दिया हुआ रचना का विधान किया है॥ ३॥

ਤੂ ਭਾਰੋ ਸੁਆਮੀ ਮੋਰਾ ॥
तू भारो सुआमी मोरा ॥
हे प्रभु ! तू मेरा महान् मालिक है।

ਇਹੁ ਪੁੰਨੁ ਪਦਾਰਥੁ ਤੇਰਾ ॥
इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥
यह पुण्य पदार्थ सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਏਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जन नानक एकु धिआइआ ॥
नानक ने तो एक ईश्वर का ही ध्यान किया है और

ਸਰਬ ਫਲਾ ਪੁੰਨੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੪॥੬੪॥
सरब फला पुंनु पाइआ ॥४॥१४॥६४॥
उसे सर्व फलों के पुण्य की प्राप्ति हो गई है ॥४॥१४॥६४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਦੁਪਦੇ
सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे
सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰਾਮਦਾਸ ਸਰੋਵਰਿ ਨਾਤੇ ॥
रामदास सरोवरि नाते ॥
रामदास सरोवर का इतना महात्म्य है कि इसमें स्नान करने के फलस्वरूप

ਸਭਿ ਉਤਰੇ ਪਾਪ ਕਮਾਤੇ ॥
सभि उतरे पाप कमाते ॥
पिछले किए हुए सभी पाप नाश हो जाते हैं।

ਨਿਰਮਲ ਹੋਏ ਕਰਿ ਇਸਨਾਨਾ ॥
निरमल होए करि इसनाना ॥
इस सरोवर में स्नान करने से मनुष्य पवित्र हो जाता है और

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕੀਨੇ ਦਾਨਾ ॥੧॥
गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥
पूर्ण गुरु ने हमें यह प्रदान किया है॥ १॥

ਸਭਿ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੇ ॥
सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥
प्रभु ने सभी को सुख एवं खुशियों की देन प्रदान की है।

ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਸਭਿ ਥੋਕ ਉਬਾਰੇ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥
गुरु के शब्द का चिंतन करने से सभी वस्तुएँ सही सलामत बच गई हैं अर्थात् सभी लोग भवसागर से पार हो गए है॥ रहाउ॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਮਲੁ ਲਾਥੀ ॥
साधसंगि मलु लाथी ॥
सत्संगति में शामिल होने से मन की मैल निवृत्त हो गई है और

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਭਇਓ ਸਾਥੀ ॥
पारब्रहमु भइओ साथी ॥
परब्रह्म-परमेश्वर उसका साथी बन गया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
नानक नामु धिआइआ ॥
नानक ने तो हरि-नाम का ही ध्यान किया है और

ਆਦਿ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧॥੬੫॥
आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥२॥१॥६५॥
आदिपुरुष प्रभु को पा लिया है॥ २॥ १॥ ६५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜਿਤੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਚਿਤਿ ਆਇਆ ॥
जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥
जिसे परब्रह्म याद आया है,

ਸੋ ਘਰੁ ਦਯਿ ਵਸਾਇਆ ॥
सो घरु दयि वसाइआ ॥
उसका घर उसने सुख-समृद्ध कर दिया है।

ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
सुख सागरु गुरु पाइआ ॥
जब सुखों के सागर गुरु को पाया तो

ਤਾ ਸਹਸਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥
ता सहसा सगल मिटाइआ ॥१॥
मेरे सभी भ्रम मिट गए ॥१॥

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हरि के नाम की वडिआई ॥
सृष्टि में हरि-नाम की ही बड़ाई है।

ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਈ ॥
आठ पहर गुण गाई ॥
इसलिए मैं तो आठ प्रहर उसका ही गुणगान करता हूँ और

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥
यह देन हमें पूर्ण गुरु से प्राप्त हुई है॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥
प्रभ की अकथ कहाणी ॥
प्रभु की कहानी अकथनीय है।

ਜਨ ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ॥
जन बोलहि अम्रित बाणी ॥
उसके भक्तजन अमृत वाणी बोलते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਵਖਾਣੀ ॥
नानक दास वखाणी ॥
हे नानक ! उस दास ने ही वाणी का ही बखान किया है

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਜਾਣੀ ॥੨॥੨॥੬੬॥
गुर पूरे ते जाणी ॥२॥२॥६६॥
जिसने पूर्ण गुरु से अमृत-वाणी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है॥२॥२॥६६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਗੁਰਿ ਦੀਆ ॥
आगै सुखु गुरि दीआ ॥
यहाँ पहले गुरु ने सुख दिया है और

ਪਾਛੈ ਕੁਸਲ ਖੇਮ ਗੁਰਿ ਕੀਆ ॥
पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥
भविष्य में भी उसने कुशलक्षेम की व्यवस्था कर दी है।

ਸਰਬ ਨਿਧਾਨ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥
सरब निधान सुख पाइआ ॥
मुझे तब सर्व सुखों का भण्डार मिल गया

ਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਰਿਦੈ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥१॥
जब अपने गुरु का हृदय में मैंने ध्यान किया ॥ १॥

ਅਪਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
अपने सतिगुर की वडिआई ॥
यह मेरे अपने सतगुरु की बड़ाई है कि

ਮਨ ਇਛੇ ਫਲ ਪਾਈ ॥
मन इछे फल पाई ॥
मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गए हैं।

ਸੰਤਹੁ ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਚੜੈ ਸਵਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥
हे संतो ! गुरु की बड़ाई में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੇ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ॥
जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥
सभी जीव मुझ पर दयालु हो गए हैं, मेरे प्रभु ने स्वयं ही उन्हें ऐसा किया है।

ਸਹਜ ਸੁਭਾਇ ਮਿਲੇ ਗੋਪਾਲਾ ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਪਤੀਨੇ ॥੨॥੩॥੬੭॥
सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥२॥३॥६७॥
हे नानक ! परमात्मा सहज स्वभाव ही मिल गया है और मेरा मन सत्य से प्रसन्न हो गया है ॥२॥३॥६७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਰਖਵਾਰੇ ॥
गुर का सबदु रखवारे ॥
गुरु का शब्द मेरा रखवाला है और

ਚਉਕੀ ਚਉਗਿਰਦ ਹਮਾਰੇ ॥
चउकी चउगिरद हमारे ॥
यह हमारे चारों तरफ की हिफाजत कर रहा है।

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
राम नामि मनु लागा ॥
मेरा मन राम-नाम में लीन हो गया है,

ਜਮੁ ਲਜਾਇ ਕਰਿ ਭਾਗਾ ॥੧॥
जमु लजाइ करि भागा ॥१॥
जिसके फलस्वरूप मृत्यु का देवता भी लज्जित होकर भाग गया है॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤੂ ਮੇਰੋ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥
हे प्रभु जी ! तू मेरा सुखों का दाता है।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਕਰੇ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥
पूर्ण पुरुष विधाता बन्धन काटकर मन निर्मल कर देता है॥ रहाउ॥

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਅਬਿਨਾਸੀ ॥
नानक प्रभु अबिनासी ॥
हे नानक ! अविनाशी प्रभु की

ਤਾ ਕੀ ਸੇਵ ਨ ਬਿਰਥੀ ਜਾਸੀ ॥
ता की सेव न बिरथी जासी ॥
सेवा-भक्ति निष्फल नहीं जाती।

ਅਨਦ ਕਰਹਿ ਤੇਰੇ ਦਾਸਾ ॥
अनद करहि तेरे दासा ॥
हे प्रभु ! तेरेभक्त आनंद करते हैं।

ਜਪਿ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ॥੨॥੪॥੬੮॥
जपि पूरन होई आसा ॥२॥४॥६८॥
चूंकि तेरा जाप करके उनकी आशा पूर्ण हो गई है॥ २॥ ४॥ ६८ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥
गुर अपुने बलिहारी ॥
मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ,

ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥
जिनि पूरन पैज सवारी ॥
जिसने पूर्णतया मेरी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखी है।

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥
मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है और

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਸਦਾ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥१॥
मैंने हमेशा ही अपने प्रभु का ध्यान किया है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥
संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥
हे संतो ! ईश्वर के अलावा दूसरा कोई साथी नहीं,

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥
चूंकि वह ही करने कराने में समर्थ है॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭਿ ਅਪਨੈ ਵਰ ਦੀਨੇ ॥
प्रभि अपनै वर दीने ॥
मेरे प्रभु ने मुझे ऐसा वरदान दिया है कि

ਸਗਲ ਜੀਅ ਵਸਿ ਕੀਨੇ ॥
सगल जीअ वसि कीने ॥
सभी जीव मेरे वश में कर दिए हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जन नानक नामु धिआइआ ॥
दास नानक ने जब प्रभु का नाम-स्मरण किया तो

ਤਾ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਮਿਟਾਇਆ ॥੨॥੫॥੬੯॥
ता सगले दूख मिटाइआ ॥२॥५॥६९॥
उसके सभी दुःख मिट गए ॥२॥५॥६९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਤਾਪੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰਿ ਪੂਰੇ ॥
तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥
पूर्ण गुरु ने हरिगोविन्द का ज्वर दूर कर दिया है और

ਵਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥
वाजे अनहद तूरे ॥
अब घर में अनहद बाजे बज रहे हैं।

ਸਰਬ ਕਲਿਆਣ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਨੇ ॥
सरब कलिआण प्रभि कीने ॥
प्रभु ने सर्व कल्याण किया है और

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਆਪਿ ਦੀਨੇ ॥੧॥
करि किरपा आपि दीने ॥१॥
अपनी कृपा करके उसने स्वयं ही सुख घर में दिया है ॥१॥

ਬੇਦਨ ਸਤਿਗੁਰਿ ਆਪਿ ਗਵਾਈ ॥
बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥
सतगुरु ने स्वयं ही हमारी विपत्ति दूर की है।

ਸਿਖ ਸੰਤ ਸਭਿ ਸਰਸੇ ਹੋਏ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥
हरि-नाम का ध्यान करने से सभी शिष्य एवं संत प्रसन्न हो गए हैं।॥ रहाउ॥

ਜੋ ਮੰਗਹਿ ਸੋ ਲੇਵਹਿ ॥
जो मंगहि सो लेवहि ॥
जो कुछ संत मांगते हैं, वही वे पा लेते हैं।

ਪ੍ਰਭ ਅਪਣਿਆ ਸੰਤਾ ਦੇਵਹਿ ॥
प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥
प्रभु अपने संतों को सब कुछ देता है।

ਹਰਿ ਗੋਵਿਦੁ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖਿਆ ॥
हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥
प्रभु ने श्री हरिगोविन्द की रक्षा की है

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਸੁਭਾਖਿਆ ॥੨॥੬॥੭੦॥
जन नानक साचु सुभाखिआ ॥२॥६॥७०॥
यह दास नानक सहज स्वभाव सत्य कह रहा है ॥२॥७॥७१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੋਈ ਕਰਾਇ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ॥
सोई कराइ जो तुधु भावै ॥
हे प्रभु ! जो तुझे भला लगता है, मुझ से वही करवा।

ਮੋਹਿ ਸਿਆਣਪ ਕਛੂ ਨ ਆਵੈ ॥
मोहि सिआणप कछू न आवै ॥
चूंकि मुझे तो अन्य कोई भी चतुराई नहीं आती।

ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤਉ ਸਰਣਾਈ ॥
हम बारिक तउ सरणाई ॥
मैं बालक तेरी शरण में आया हूँ।

ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੧॥
प्रभि आपे पैज रखाई ॥१॥
प्रभु ने आप ही मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचाई है॥ १॥

ਮੇਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥
मेरा मात पिता हरि राइआ ॥
हे हरि-परमेश्वर ! तुम ही मेरे माता-पिता हो और

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਣ ਲਾਗਾ ਕਰੀਂ ਤੇਰਾ ਕਰਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥
तुम ही कृपा करके हमारा पालन-पोषण करते हो, मैं वही कुछ करता हूँ जो तुम मुझ से करवाते हो॥ १॥ रहाउ ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥
जीअ जंत तेरे धारे ॥
हे प्रभु ! समस्त जीव-जन्तु तेरी ही रचना है और

ਪ੍ਰਭ ਡੋਰੀ ਹਾਥਿ ਤੁਮਾਰੇ ॥
प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥
उनकी जीवन-डोर तुम्हारे हाथ में ही है।

ਜਿ ਕਰਾਵੈ ਸੋ ਕਰਣਾ ॥
जि करावै सो करणा ॥
जो कुछ तुम जीवों से करवाते हो, वही वे करते हैं।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾ ॥੨॥੭॥੭੧॥
नानक दास तेरी सरणा ॥२॥७॥७१॥
दास नानक ने तो तेरी ही शरण ली है॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਪਰੋਇਆ ॥
हरि नामु रिदै परोइआ ॥
जब से हमने परमात्मा का नाम अपने हृदय में पिरोया है,

ਸਭੁ ਕਾਜੁ ਹਮਾਰਾ ਹੋਇਆ ॥
सभु काजु हमारा होइआ ॥
हमारे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।

ਪ੍ਰਭ ਚਰਣੀ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥
प्रभ चरणी मनु लागा ॥
प्रभु के चरणों में उसी का मन लगता है,

ਪੂਰਨ ਜਾ ਕੇ ਭਾਗਾ ॥੧॥
पूरन जा के भागा ॥१॥
जिसका पूर्ण भाग्योदय हो जाता है॥ १॥

ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
मिलि साधसंगि हरि धिआइआ ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर हमने भगवान का सिमरन किया है।

ਆਠ ਪਹਰ ਅਰਾਧਿਓ ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥
आठ प्रहर परमेश्वर की आराधना करने से हमें मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है॥ १॥

ਪਰਾ ਪੂਰਬਲਾ ਅੰਕੁਰੁ ਜਾਗਿਆ ॥
परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥
हमारे आदि एवं पूर्व कर्मों का अंकुर जाग गया है और

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਲਾਗਿਆ ॥
राम नामि मनु लागिआ ॥
मन राम-नाम में मग्न हो गया है।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਦਰਸਿ ਸਮਾਵੈ ॥
मनि तनि हरि दरसि समावै ॥
अब मन एवं तन हरि के दर्शनों में ही लीन रहता है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੨॥੮॥੭੨॥
नानक दास सचे गुण गावै ॥२॥८॥७२॥
दास नानक तो सच्चे परमेश्वर का ही गुणगान करता है॥ २॥ ८॥ ७२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਾਰਿਆ ॥
गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥
गुरु से मिलकर हमने प्रभु को याद किया है,"

ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
कारज सभि सवारिआ ॥
जिसके फलस्वरूप हमारे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।

ਮੰਦਾ ਕੋ ਨ ਅਲਾਏ ॥
मंदा को न अलाए ॥
अब कोई भी हमें बुरा नहीं कहता और

ਸਭ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਸੁਣਾਏ ॥੧॥
सभ जै जै कारु सुणाए ॥१॥
हर कोई हमारी जय-जयकार करता है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਸਾਚੀ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ॥

संतहु साची सरणि सुआमी ॥
हे भक्तजनो ! उस सच्चे परमेश्वर की शरण ही शाश्वत है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਹਾਥਿ ਤਿਸੈ ਕੈ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥
सभी जीव-जन्तु उसके वश में हैं और वह प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है ॥ रहाउ ॥

ਕਰਤਬ ਸਭਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਰੇ ॥
करतब सभि सवारे ॥ प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥
प्रभु ने हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं और उसने अपने विरद् का पालन किया है ।

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਪ੍ਰਭ ਨਾਮਾ ॥
पतित पावन प्रभ नामा ॥
प्रभु का नाम पापियों को पावन करने वाला है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੨॥੯॥੭੩॥
जन नानक सद कुरबाना ॥२॥९॥७३॥
दास नानक तो हमेशा ही उस पर कुर्बान जाता है॥ २॥ ६॥ ७३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸਾਜਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥ ਇਹੁ ਲਹੁੜਾ ਗੁਰੂ ਉਬਾਰਿਆ ॥
पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥
परब्रह्म-परमेश्वर ने हमारे पुत्र (हरिगोविन्द) को उत्पन्न करके सुशोभित किया है। इस नन्हे बालक (हरिगोविन्द) की गुरु ने रक्षा की है।

ਅਨਦ ਕਰਹੁ ਪਿਤ ਮਾਤਾ ॥ ਪਰਮੇਸਰੁ ਜੀਅ ਕਾ ਦਾਤਾ ॥੧॥
अनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीअ का दाता ॥१॥
हे माता-पिता ! आनंद करो। परमेश्वर ही प्राणों का दाता है॥ १॥

ਸੁਭ ਚਿਤਵਨਿ ਦਾਸ ਤੁਮਾਰੇ ॥
सुभ चितवनि दास तुमारे ॥
हे प्रभु ! तुम्हारे सेवक सबका शुभ-भला ही सोचते हैं।

ਰਾਖਹਿ ਪੈਜ ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਕਾਰਜ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥
तू अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा कायम रखता है और स्वयं ही उसके कार्य संवार देता है॥ रहाउ॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਪਰਉਪਕਾਰੀ ॥
मेरा प्रभु परउपकारी ॥
मेरा प्रभु बड़ा परोपकारी है,

ਪੂਰਨ ਕਲ ਜਿਨਿ ਧਾਰੀ ॥
पूरन कल जिनि धारी ॥
जिसने सम्पूर्ण कला (शक्ति) धारण की हुई है।

ਨਾਨਕ ਸਰਣੀ ਆਇਆ ॥
नानक सरणी आइआ ॥
नानक तो उसकी शरण में आया है और

ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੦॥੭੪॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥२॥१०॥७४॥
उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है॥ २॥ १०॥ ७४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪੇ ॥
सदा सदा हरि जापे ॥
मैं सदैव ही हरि का भजन करता हूँ।

ਪ੍ਰਭ ਬਾਲਕ ਰਾਖੇ ਆਪੇ ॥
प्रभ बालक राखे आपे ॥
प्रभु ने स्वयं ही बालक (हरिगोबिन्द) की रक्षा की है।

ਸੀਤਲਾ ਠਾਕਿ ਰਹਾਈ ॥
सीतला ठाकि रहाई ॥
उसने कृपा करके शीतला (चेचक) पर अंकुश लगा दिया है।

ਬਿਘਨ ਗਏ ਹਰਿ ਨਾਈ ॥੧॥
बिघन गए हरि नाई ॥१॥
हरिनाम स्मरण से हमारे सभी विघ्न नाश हो गए हैं॥१॥

ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਆ ਸਦਾ ਦਇਆਲਾ ॥
मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥
मेरा प्रभु सदैव ही मुझ पर दयालु हुआ है।

ਅਰਦਾਸਿ ਸੁਣੀ ਭਗਤ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਸਭ ਜੀਅ ਭਇਆ ਕਿਰਪਾਲਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥
उसने अपने भक्त की प्रार्थना सुन ली है और वह सभी जीवों पर कृपालु हो गया है॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਾਥਾ ॥
प्रभ करण कारण समराथा ॥
प्रभु सभी कार्य करने कराने में सर्वशक्तिमान है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਸਭੁ ਦੁਖੁ ਲਾਥਾ ॥
हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥
भगवान का सिमरन करने से सभी दुःखं दूर हो गए हैं।

ਅਪਣੇ ਦਾਸ ਕੀ ਸੁਣੀ ਬੇਨੰਤੀ ॥
अपणे दास की सुणी बेनंती ॥
अपने दास की उसने प्रार्थना सुन ली है।

ਸਭ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਵੰਤੀ ॥੨॥੧੧॥੭੫॥
सभ नानक सुखि सवंती ॥२॥११॥७५॥
हे नानक ! अब सभी सुखी रहते हैं।॥ २॥ ११॥ ७५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਅਪਨਾ ਗੁਰੂ ਧਿਆਏ ॥
अपना गुरू धिआए ॥
मैंने अपने गुरु का ध्यान किया है,

ਮਿਲਿ ਕੁਸਲ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਆਏ ॥
मिलि कुसल सेती घरि आए ॥
जिससे मिलकर मैं कुशलपूर्वक घर को लौट आया हूँ।

ਨਾਮੈ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
नामै की वडिआई ॥
प्रभु नाम की इतनी महिमा है कि

ਤਿਸੁ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥
तिसु कीमति कहणु न जाई ॥१॥
उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥१॥

ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਹੁ ॥
संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥
हे भक्तजनों ! परमात्मा की आराधना करो चूंकि

ਹਰਿ ਆਰਾਧਿ ਸਭੋ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਧਹੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥
उसकी आराधना करने से सबकुछ प्राप्त हो जाता है और तुम्हारे भी सभी कार्य सिद्ध (सफल) हो जाएँगे ॥ रहाउ ॥

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਲਾਗੀ ॥ ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਵਡਭਾਗੀ ॥
प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥
हमारा मन प्रभु की प्रेम-भक्ति में ही मग्न है लेकिन इसे वही प्राप्त करता है, जो भाग्यशाली होता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
जन नानक नामु धिआइआ ॥
दास नानक ने प्रभु-नाम का ही ध्यान किया है और

ਤਿਨਿ ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਫਲ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੨॥੭੬॥
तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥२॥१२॥७६॥
उसे सर्व सुखों के फल की प्राप्ति हो गई है॥ २॥१२॥७६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਰਮੇਸਰਿ ਦਿਤਾ ਬੰਨਾ ॥
परमेसरि दिता बंना ॥
परमेश्वर ने हमें पुत्र दिया है और

ਦੁਖ ਰੋਗ ਕਾ ਡੇਰਾ ਭੰਨਾ ॥
दुख रोग का डेरा भंना ॥
समस्त दु:खों एवं रोगों का डेरा ही मिटा दिया है।

ਅਨਦ ਕਰਹਿ ਨਰ ਨਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥੧॥
अनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥
अब सभी नर-नारी आनंद करते हैं। चूंकि हरि-प्रभु ने अपनी कृपा की है॥१॥

ਸੰਤਹੁ ਸੁਖੁ ਹੋਆ ਸਭ ਥਾਈ ॥
संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥
हे संतो! अब हर जगह सुख ही सुख हो गया है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸਰੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥
मेरा पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर सब में समा रहा है॥ रहाउ॥

ਧੁਰ ਕੀ ਬਾਣੀ ਆਈ ॥
धुर की बाणी आई ॥
यह वाणी परमात्मा से आई है,

ਤਿਨਿ ਸਗਲੀ ਚਿੰਤ ਮਿਟਾਈ ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥
जिसने सारी चिंता मिटा दी है।

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ॥ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਵਖਾਨਾ ॥੨॥੧੩॥੭੭॥
दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥
दयालु परमपुरुष प्रभु मुझ पर बड़ा मेहरबान है। नानक तो सत्य (परमेश्वर) की ही बात करता है॥ २॥१३॥७७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਐਥੈ ਓਥੈ ਰਖਵਾਲਾ ॥ ਪ੍ਰਭ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਨ ਦਇਆਲਾ ॥
ऐथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥
प्रभु ही लोक-परलोक में हमारा रक्षक है, वह सतगुरु दीनदयालु है

ਦਾਸ ਅਪਨੇ ਆਪਿ ਰਾਖੇ ॥
दास अपने आपि राखे ॥
वह स्वयं ही अपने सेवकों की रक्षा करता है और

ਘਟਿ ਘਟਿ ਸਬਦੁ ਸੁਭਾਖੇ ॥੧॥
घटि घटि सबदु सुभाखे ॥१॥
सुन्दर शब्द प्रत्येक हृदय में गूंज रहा है॥ १॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਣ ਊਪਰਿ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥
मैं अपने गुरु के चरणों पर कुर्बान जाता हूँ और

ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਲੀ ਪੂਰਨੁ ਸਭਨੀ ਥਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥
दिन-रात, श्वास-श्वास से उसका ही सिमरन करता हूँ जो (पूर्ण परमेश्वर) सर्वव्यापक है॥ रहाउ॥

ਆਪਿ ਸਹਾਈ ਹੋਆ ॥
आपि सहाई होआ ॥
प्रभु स्वयं ही मेरा सहायक बन गया है।

ਸਚੇ ਦਾ ਸਚਾ ਢੋਆ ॥
सचे दा सचा ढोआ ॥
मुझे उस सच्चे प्रभु का सच्चा सहारा प्राप्त है।

ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਵਡਿਆਈ ॥ ਪਾਈ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥੨॥੧੪॥੭੮॥
तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१४॥७८॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! यह तेरी भक्ति की ही बड़ाई है, जो उसने तेरी शरण प्राप्त कर ली है॥ २॥ १४ ॥ ७८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰੇ ਭਾਣਾ ॥
सतिगुर पूरे भाणा ॥
जब पूर्ण सतगुरु को भला लगा तो ही

ਤਾ ਜਪਿਆ ਨਾਮੁ ਰਮਾਣਾ ॥
ता जपिआ नामु रमाणा ॥
मैंने सर्वव्यापी राम-नाम का जाप किया।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥ ਪ੍ਰਭਿ ਰਾਖੀ ਪੈਜ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥
गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥१॥
गोविन्द ने जब मुझ पर कृपा की तो उसने हमारी लाज बचा ली॥ १॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਈ ॥
हरि के चरन सदा सुखदाई ॥
भगवान के सुन्दर चरण हमेशा ही सुखदायक हैं।

ਜੋ ਇਛਹਿ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿ ਬਿਰਥੀ ਆਸ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
प्राणी जैसी भी इच्छा करता है, उसे वही फल मिल जाता है और उसकी आशा निष्फल नहीं जाती ॥१॥ रहाउ ॥

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਦਾਤਾ ਸੋਈ ਸੰਤੁ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥
क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥
जिस पर प्राणपति दाता अपनी कृपा करता है वही संत उसका गुणगान करता है।

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਤਾ ਕਾ ਮਨੁ ਲੀਣਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ॥੨॥
प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥२॥
जब परब्रह्म प्रभु के मन को अच्छा लगता है तो ही मन प्रेम-भक्ति में लीन होता है॥ २॥

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਕਾ ਜਸੁ ਰਵਣਾ ਬਿਖੈ ਠਗਉਰੀ ਲਾਥੀ ॥
आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥
आठ प्रहर भगवान का यशगान करने से माया की विषैली ठगौरी का असर नष्ट हो गया है।

ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇ ਲੀਆ ਮੇਰੈ ਕਰਤੈ ਸੰਤ ਸਾਧ ਭਏ ਸਾਥੀ ॥੩॥
संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥३॥
मेरे कर्तार-प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है एवं साधु-संत मेरे साथी बन गए हैं।॥ ३॥

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੀਨੇ ਸਰਬਸੁ ਦੀਨੇ ਆਪਹਿ ਆਪੁ ਮਿਲਾਇਆ ॥
करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥
प्रभु ने मुझे हाथ से पकड़ कर सर्वस्व प्रदान करके अपने साथ विलीन कर लिया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਥੋਕ ਪੂਰਨ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥੪॥੧੫॥੭੬॥
कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥४॥१५॥७९॥
हे नानक ! मैंने पूर्ण सतगुरु को पा लिया है, जिनके द्वारा मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं।॥ ४॥ १५॥ ७६ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗਰੀਬੀ ਗਦਾ ਹਮਾਰੀ ॥
गरीबी गदा हमारी ॥
नम्रता हमारी गदा है और

ਖੰਨਾ ਸਗਲ ਰੇਨੁ ਛਾਰੀ ॥
खंना सगल रेनु छारी ॥
सबके चरणों की धूल बनना हमारा खण्डा है।

ਇਸੁ ਆਗੈ ਕੋ ਨ ਟਿਕੈ ਵੇਕਾਰੀ ॥
इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥
इन शस्त्रों के समक्ष कोई विकारों से ग्रस्त दुराचारी टिक नहीं सकता,"

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਏਹ ਗਲ ਸਾਰੀ ॥੧॥
गुर पूरे एह गल सारी ॥१॥
इस बात की सूझ पूर्ण गुरु ने प्रदान की है ॥ १॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੰਤਨ ਕੀ ਓਟਾ ॥
हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥
परमेश्वर का नाम संतों का सशक्त सहारा है।

ਜੋ ਸਿਮਰੈ ਤਿਸ ਕੀ ਗਤਿ ਹੋਵੈ ਉਧਰਹਿ ਸਗਲੇ ਕੋਟਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥१॥ रहाउ ॥
जो नाम-स्मरण करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है और प्रभु का नाम-स्मरण करने से करोड़ों जीवों का उद्धार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੰਤ ਸੰਗਿ ਜਸੁ ਗਾਇਆ ॥
संत संगि जसु गाइआ ॥
संतों के संग भगवान का यशगान किया है और

ਇਹੁ ਪੂਰਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ॥
इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥
हरि-नाम रूपी यह पूर्ण धन हमें प्राप्त हो गया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥
कहु नानक आपु मिटाइआ ॥
नानक का कथन है कि जब से हमने अपना आत्माभिमान मिटाया है तो

ਸਭੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥੨॥੧੬॥੮੦॥
सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥
सर्वत्र परब्रह्म ही नजर आया है॥ २॥ १६ ॥ ८० ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰੀ ਕੀਨੀ ॥
गुरि पूरै पूरी कीनी ॥
पूर्ण गुरु ने प्रत्येक कार्य पूर्ण किया है और

ਬਖਸ ਅਪੁਨੀ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ॥
बखस अपुनी करि दीनी ॥
मुझ पर अपनी कृपा कर दी है।

ਨਿਤ ਅਨੰਦ ਸੁਖ ਪਾਇਆ ॥ ਥਾਵ ਸਗਲੇ ਸੁਖੀ ਵਸਾਇਆ ॥੧॥
नित अनंद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥१॥
मैं हमेशा आनंद एवं सुख प्राप्त करता हूँ। गुरु ने मुझे समस्त स्थानों पर सुखी बसा दिया है॥ १॥

ਹਰਿ ਕੀ ਭਗਤਿ ਫਲ ਦਾਤੀ ॥
हरि की भगति फल दाती ॥
भगवान की भक्ति समस्त फल प्रदान करने वाली है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨ ਹੀ ਜਾਤੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने कृपा करके भक्ति की देन प्रदान की है और कोई विरला पुरुष ही भक्ति के महत्व को समझता है।॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਬਾਣੀ ਗਾਵਹ ਭਾਈ ॥
गुरबाणी गावह भाई ॥
हे भाई ! मधुर गुरुद्राणी का गायन करो,

ਓਹ ਸਫਲ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਈ ॥
ओह सफल सदा सुखदाई ॥
क्योंकि यह हमेशा ही फलदायक एवं सुख देने वाली है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਪਾਇਆ ॥੨॥੧੭॥੮੧॥

नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥२॥१७॥८१॥

हे नानक ! जिसने भगवान का नाम-सिमरन किया है, उसे वही प्राप्त हो गया है जो पूर्व ही उसके भाग्य में लिखा हुआ था॥२॥१७॥८१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सोरठि महला ५ ॥

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਆਰਾਧੇ ॥
गुरु पूरा आराधे ॥
पूर्ण गुरु की आराधना करने से

ਕਾਰਜ ਸਗਲੇ ਸਾਧੇ ॥
कारज सगले साधे ॥
सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं।

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰੇ ॥
सगल मनोरथ पूरे ॥
मेरे सभी मनोरथ भी पूरे हो गए हैं और

ਬਾਜੇ ਅਨਹਦ ਤੂਰੇ ॥੧॥
बाजे अनहद तूरे ॥१॥
मन में अनहद नाद बजते हैं।॥१॥

ਸੰਤਹੁ ਰਾਮੁ ਜਪਤ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥
हे संतो ! राम का भजन करने से सुख की उपलब्धि हुई है।

ਸੰਤ ਅਸਥਾਨਿ ਬਸੇ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਮਿਟਾਇਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
संतों के पावन स्थान पर निर्मल सहज सुख पा लिया है और सभी दुःख मिट गए हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਬਾਣੀ ॥ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮਨਿ ਭਾਣੀ ॥
गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥
पूर्ण गुरु की मधुर वाणी परब्रह्म-परमेश्वर के मन को लुभाती है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸਿ ਵਖਾਣੀ ॥ ਨਿਰਮਲ ਅਕਥ ਕਹਾਣੀ ॥੨॥੧੮॥੮੨॥
नानक दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥२॥१८॥८२॥
दास नानक ने वही बखान किया है जो प्रभु की निर्मल अकथनीय कहानी है ॥२॥१८॥८२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਭੂਖੇ ਖਾਵਤ ਲਾਜ ਨ ਆਵੈ ॥
भूखे खावत लाज न आवै ॥
जैसे किसी भूखे पुरुष को खाते वक्त लज्जा नहीं आती

ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੧॥
तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥१॥
वैसे ही प्रभु-भक्त नि:संकोच प्रभु का गुणगान करता है॥ १॥

ਅਪਨੇ ਕਾਜ ਕਉ ਕਿਉ ਅਲਕਾਈਐ ॥
अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥
अपने कार्य (प्रभु-भक्ति) को करने में क्यों आलस्य करें ?

ਜਿਤੁ ਸਿਮਰਨਿ ਦਰਗਹ ਮੁਖੁ ਊਜਲ ਸਦਾ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਪਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जिसका सिमरन करने से प्रभु-दरबार में मुख उज्ज्वल होता है और हमेशा ही सुख की उपलब्धि होती है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਿਉ ਕਾਮੀ ਕਾਮਿ ਲੁਭਾਵੈ ॥
जिउ कामी कामि लुभावै ॥
जैसे कामुक व्यक्ति कामवासना में ही तल्लीन रहता है,

ਤਿਉ ਹਰਿ ਦਾਸ ਹਰਿ ਜਸੁ ਭਾਵੈ ॥੨॥
तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥२॥
वैसे ही प्रभु के भक्त को प्रभु का यशगान ही अच्छा लगता है॥ २ ॥

ਜਿਉ ਮਾਤਾ ਬਾਲਿ ਲਪਟਾਵੈ ॥
जिउ माता बालि लपटावै ॥
जैसे माता अपने बालक के साथ मोह में लिपटी रहती है,

ਤਿਉ ਗਿਆਨੀ ਨਾਮੁ ਕਮਾਵੈ ॥੩॥
तिउ गिआनी नामु कमावै ॥३॥
वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति प्रभु-नाम की साधना में ही मग्न रहता है।॥३॥

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਾਵੈ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥੪॥੧੯॥੮੩॥
गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥४॥१९॥८३॥
नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु से नाम-सिमरन की प्राप्ति होती है, और वह प्रभु-नाम का ही ध्यान करता है ॥४॥१६॥८३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੁਖ ਸਾਂਦਿ ਘਰਿ ਆਇਆ ॥
सुख सांदि घरि आइआ ॥
मैं अपने घर में सकुशल आ गया हूँ और

ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਮੁਖਿ ਛਾਇਆ ॥
निंदक कै मुखि छाइआ ॥
निन्दकों का मुँह काला हो गया है अर्थात् निन्दक लज्जित हो गए हैं।

ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਪਹਿਰਾਇਆ ॥
पूरै गुरि पहिराइआ ॥
पूर्ण गुरु ने मुझे प्रतिष्ठा का परिधान पहना दिया है और

ਬਿਨਸੇ ਦੁਖ ਸਬਾਇਆ ॥੧॥
बिनसे दुख सबाइआ ॥१॥
मेरे समस्त दुःखों का विनाश हो गया है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਸਾਚੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
संतहु साचे की वडिआई ॥
हे भक्तजनों ! यह सच्चे परमेश्वर का बड़प्पन है,

ਜਿਨਿ ਅਚਰਜ ਸੋਭ ਬਣਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिनि अचरज सोभ बणाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिसने मेरी अद्भुत शोभा बनाई है ॥१॥ रहाउ ॥

ਬੋਲੇ ਸਾਹਿਬ ਕੈ ਭਾਣੈ ॥ ਦਾਸੁ ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮੁ ਵਖਾਣੈ ॥
बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥
मैं तो मालिक की रज़ा में ही बोलता हूँ और यह दास तो ब्रह्म-वाणी का ही बखान करता है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸੁਖਦਾਈ ॥ ਜਿਨਿ ਪੂਰੀ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥੨॥੨੦॥੮੪॥
नानक प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥२॥२०॥८४॥
हे नानक ! वह प्रभु बड़ा सुखदायक है, जिसने पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है ॥२॥२०॥८४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਰਿਦੈ ਧਿਆਏ ॥
प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥
अपने प्रभु का हृदय में ध्यान करते हुए

ਘਰਿ ਸਹੀ ਸਲਾਮਤਿ ਆਏ ॥
घरि सही सलामति आए ॥
हम सकुशल घर लौट आए हैं।

ਸੰਤੋਖੁ ਭਇਆ ਸੰਸਾਰੇ ॥
संतोखु भइआ संसारे ॥
अब संसार को संतोष प्राप्त हो गया है चूंकि

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਲੈ ਤਾਰੇ ॥੧॥
गुरि पूरै लै तारे ॥१॥
पूर्ण गुरु ने उसे भवसागर से तार दिया है॥ १॥

ਸੰਤਹੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਦਇਆਲਾ ॥
संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥
हे भक्तजनों ! मेरा प्रभु हमेशा ही मुझ पर दयालु है।

ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਕੀ ਗਣਤ ਨ ਗਣਈ ਰਾਖੈ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने भक्त के कर्मों का लेखा-जोखा नहीं करता और अपनी संतान की भांति उसकी रक्षा करता है॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਉਰਿ ਧਾਰੇ ॥
हरि नामु रिदै उरि धारे ॥
मैंने तो अपने हृदय में भगवान का नाम ही धारण किया हुआ है और

ਤਿਨਿ ਸਭੇ ਥੋਕ ਸਵਾਰੇ ॥
तिनि सभे थोक सवारे ॥
उसने मेरे सभी कार्य संवार दिए हैं।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਤੁਸਿ ਦੀਆ ॥ ਫਿਰਿ ਨਾਨਕ ਦੂਖੁ ਨ ਥੀਆ ॥੨॥੨੧॥੮੫॥
गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥२॥२१॥८५॥
पूर्ण गुरु ने प्रसन्न होकर नाम-दान दिया है, अतः नानक को पुनः कोई कष्ट नहीं हुआ ॥ २॥ २१॥ ८५ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਹਰਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਈ ॥
हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥
मेरे मन-तन में हरि का निवास हो गया है,

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਕਰੇ ਸਭੁ ਕੋਈ ॥
जै जै कारु करे सभु कोई ॥
जिसके फलस्वरूप अब सभी मेरा मान-सम्मान कर रहे हैं।

ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
गुर पूरे की वडिआई ॥
यह पूर्ण गुरु का बड़प्पन है कि

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥
ता की कीमति कही न जाई ॥१॥
उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥ १॥

ਹਉ ਕੁਰਬਾਨੁ ਜਾਈ ਤੇਰੇ ਨਾਵੈ ॥
हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥
हे प्रभु ! मैं तेरे नाम पर कुर्बान जाता हूँ।

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸਿ ਲੈਹਿ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸੋ ਜਸੁ ਤੇਰਾ ਗਾਵੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्यारे ! जिसे तू क्षमा कर देता है, वही तेरा यश गाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੂੰ ਭਾਰੋ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ ॥
तूं भारो सुआमी मेरा ॥
हे ईश्वर ! तू मेरा महान् स्वामी है और

ਸੰਤਾਂ ਭਰਵਾਸਾ ਤੇਰਾ ॥
संतां भरवासा तेरा ॥
संतों को तेरा ही भरोसा है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥ ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਕ ਕੈ ਛਾਈ ॥੨॥੨੨॥੮੬॥
नानक प्रभ सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥२॥२२॥८६॥
नानक का कथन है कि प्रभु की शरण में आने से निन्दकों का मुँह काला हो गया है॥ २॥ २२॥ ८६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਆਗੈ ਸੁਖੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ॥
आगै सुखु मेरे मीता ॥
हे मेरे मित्र ! भूतकाल-भविष्यकाल (लोक-परलोक) में

ਪਾਛੇ ਆਨਦੁ ਪ੍ਰਭਿ ਕੀਤਾ ॥
पाछे आनदु प्रभि कीता ॥
मेरे लिए प्रभु ने सुख एवं आनंद कर दिया है।

ਪਰਮੇਸੁਰਿ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥
परमेसुरि बणत बणाई ॥
परमेश्वर ने ऐसा विधान बनाया है कि

ਫਿਰਿ ਡੋਲਤ ਕਤਹੂ ਨਾਹੀ ॥੧॥
फिरि डोलत कतहू नाही ॥१॥
मेरा मन फिर कहीं ओर डांवाडोल नहीं होता ॥१॥

ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥
मेरा मन अब तो सच्चे परमेश्वर में लीन हो गया है और

ਹਰਿ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने उस प्रभु को निरन्तर सर्वव्यापी जान लिया है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਭ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਦਇਆਲਾ ॥
सभ जीअ तेरे दइआला ॥
हे दयालु परमेश्वर ! सभी जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं और

ਅਪਨੇ ਭਗਤ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥
अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥
अपने भक्तों का तू ही पोषण करता है।

ਅਚਰਜੁ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥
अचरजु तेरी वडिआई ॥
तेरी महिमा बड़ी अद्भुत है और

ਨਿਤ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥੨॥੨੩॥੮੭॥
नित नानक नामु धिआई ॥२॥२३॥८७॥
नानक तो नित्य ही तेरा नाम-सिमरन करता रहता है ॥२॥२३॥८७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਨਾਲਿ ਨਰਾਇਣੁ ਮੇਰੈ ॥
नालि नराइणु मेरै ॥
नारायण सदा मेरे साथ है,

ਜਮਦੂਤੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇਰੈ ॥
जमदूतु न आवै नेरै ॥
अतः यमदूत मेरे निकट नहीं आता।

ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖੈ ॥
कंठि लाइ प्रभ राखै ॥
वह प्रभु अपने गले से लगाकर मेरी रक्षा करता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸਚੁ ਸਾਖੈ ॥੧॥
सतिगुर की सचु साखै ॥१॥
सतगुरु की शिक्षा सत्य है॥ १॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪੂਰੀ ਕੀਤੀ ॥
गुरि पूरै पूरी कीती ॥
पूर्ण गुरु ने पूर्ण कार्य किया है,

ਦੁਸਮਨ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰੇ ਸਗਲੇ ਦਾਸ ਕਉ ਸੁਮਤਿ ਦੀਤੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥१॥ रहाउ ॥
उसने समस्त दुश्मनों को मार कर भगा दिया है और मुझ दास को सुमति दी है॥ १॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰਭਿ ਸਗਲੇ ਥਾਨ ਵਸਾਏ ॥
प्रभि सगले थान वसाए ॥
प्रभु ने समस्त स्थानों को बसा दिया है और

ਸੁਖਿ ਸਾਂਦਿ ਫਿਰਿ ਆਏ ॥
सुखि सांदि फिरि आए ॥
मैं फिर सकुशल घर लौट आया हूँ।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਏ ॥
नानक प्रभ सरणाए ॥
नानक का कथन है कि मैंने तो प्रभु की शरण ली है,

ਜਿਨਿ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਮਿਟਾਏ ॥੨॥੨੪॥੮੮॥
जिनि सगले रोग मिटाए ॥२॥२४॥८८॥
जिसने सभी रोग मिटा दिए हैं।॥ २॥ २४॥ ८८ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਰਬ ਸੁਖਾ ਕਾ ਦਾਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਤਾ ਕੀ ਸਰਨੀ ਪਾਈਐ ॥
सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥
सतगुरु सर्व सुखों का दाता है. अतः हमें उसकी शरण में ही जाना चाहिए।

ਦਰਸਨੁ ਭੇਟਤ ਹੋਤ ਅਨੰਦਾ ਦੂਖੁ ਗਇਆ ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥੧॥
दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥१॥
उसके दर्शन एवं साक्षात्कार होने से आनंद प्राप्त होता है और हरि का गुणगान करने से दु:खों का नाश हो गया है॥ १॥

ਹਰਿ ਰਸੁ ਪੀਵਹੁ ਭਾਈ ॥
हरि रसु पीवहु भाई ॥
हे भाई ! हरि-रस का पान कीजिए।

ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਨਾਮੋ ਆਰਾਧਹੁ ਗੁਰ ਪੂਰੇ ਕੀ ਸਰਨਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥
नाम का जाप करो, नाम की आराधना करो एवं पूर्ण गुरु की शरण प्राप्त करो ॥ रहाउ ॥

ਤਿਸਹਿ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿਆ ਸੋਈ ਪੂਰਨੁ ਭਾਈ ॥
तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥
हे भाई ! उसे ही नाम की प्राप्ति होती है, जिसके भाग्य में जन्म से पूर्व ही लिखा होता है और वही पूर्ण पुरुष होता है।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਨਾਮਿ ਰਹਾ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥੨॥੨੫॥੮੯॥
नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥२॥२५॥८९॥
हे प्रभु जी ! नानक यही निवेदन करता है कि मेरी वृत्ति तेरे नाम-सिमरन में ही लीन रहे ॥२॥२५॥८९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਹਰਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਨ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਰਾਖੈ ॥
करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥
करने-करवाने में समर्थ अन्तर्यामी प्रभु अपने भक्तों की स्वयं ही रक्षा करता है।

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਹੋਤੁ ਜਗ ਭੀਤਰਿ ਸਬਦੁ ਗੁਰੂ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ॥੧॥
जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥१॥
जो व्यक्ति गुरु-शब्द के रस को चखता है, उसकी सारी दुनिया के भीतर बड़ी जय-जयकार (कीर्ति) होती है॥ १ ॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤੇਰੀ ਓਟ ਗੁਸਾਈ ॥
प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥
हे प्रभु जी ! हे विश्व के मालिक ! मुझे तो केवल तेरा ही सहारा है।

ਤੂ ਸਮਰਥੁ ਸਰਨਿ ਕਾ ਦਾਤਾ ਆਠ ਪਹਰ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਧਿਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह्ह धिआई ॥ रहाउ ॥
तू बड़ा समर्थ एवं शरण दाता है और आठ प्रहर मैं तेरा ही ध्यान-मनन करता हूँ॥ रहाउ॥

ਜੋ ਜਨੁ ਭਜਨੁ ਕਰੇ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਾ ਤਿਸੈ ਅੰਦੇਸਾ ਨਾਹੀ ॥
जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥
जो व्यक्ति तेरा भजन करता है, उसे कोई चिंता स्पर्श नहीं करती।

ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਨ ਲਗੇ ਭਉ ਮਿਟਿਆ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੨॥
सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥२॥
सतगुरु के चरणों में लगने से मेरा भय मिट गया है और अपने मन में भगवान का गुणगान करता हूँ ॥२॥

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਘਨੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਆ ਦਿਲਾਸਾ ॥
सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥
सतगुरु ने मुझे ऐसा दिलासा दिया है कि अब मुझे सहज सुख एवं अधिकतर आनंद प्राप्त हो गया है।

ਜਿਣਿ ਘਰਿ ਆਏ ਸੋਭਾ ਸੇਤੀ ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸਾ ॥੩॥
जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥३॥
मैं विकारों पर विजय प्राप्त करके बड़ी शोभा से अपने घर आया हूँ और सारी आशा पूरी हो गई है॥ ३॥

ਪੂਰਾ ਗੁਰੁ ਪੂਰੀ ਮਤਿ ਜਾ ਕੀ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਕਾਮਾ ॥
पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥
पूर्ण गुरु की मति भी पूर्ण है और उस प्रभु के कार्य भी पूर्ण हैं।

ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਲਾਗਿ ਤਰਿਓ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥੪॥੨੬॥੯੦॥
गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥४॥२६॥९०॥
नानक का कथन है कि गुरु के चरणों में लगकर, हरि-नाम का भजन करते हुए मैं भवसागर से पार हो गया हूँ॥४॥२६॥९०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਭਇਓ ਕਿਰਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਆਪੇ ਸਭ ਬਿਧਿ ਥਾਟੀ ॥
भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥
दीन व्यक्तियों के दुःख नाश करने वाला प्रभु मुझ पर मेहरबान हो गया है और उसने स्वयं ही सारी विधि बनाई है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਰਾਖਿ ਲੀਓ ਜਨੁ ਅਪੁਨਾ ਗੁਰ ਪੂਰੈ ਬੇੜੀ ਕਾਟੀ ॥੧॥
खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥१॥
पूर्ण गुरु ने एक क्षण में ही बंधन काटकर अपने सेवक की रक्षा की है ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਦ ਧਿਆਈਐ ॥
मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥
हे मेरे मन ! सदा गोविन्द गुरु का ध्यान करते रहना चाहिए,

ਸਗਲ ਕਲੇਸ ਮਿਟਹਿ ਇਸੁ ਤਨ ਤੇ ਮਨ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥
ध्यान करने से तन के सभी क्लेश मिट जाते हैं और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਜਾ ਕੇ ਸਭਿ ਕੀਨੇ ਪ੍ਰਭੁ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥
जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥
वह प्रभु अत्यंत ऊँचा, अगम्य एवं अपार है, जिसने समस्त जीव-जन्तुओं की रचना की है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਮੁਖ ਊਜਲ ਭਏ ਦਰਬਾਰਾ ॥੨॥੨੭॥੯੧॥
साधसंगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥२॥२७॥९१॥
नानक का कथन है कि जिन्होंने सत्संगति में भगवान के नाम का ध्यान किया है, दरबार में उनका मुख उज्ज्वल हो गया है॥२॥२७॥९१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸਿਮਰਉ ਅਪੁਨਾ ਸਾਂਈ ॥
सिमरउ अपुना सांई ॥
मैं तो अपने मालिक को ही स्मरण करता हूँ और

ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਸਦ ਧਿਆਈ ॥
दिनसु रैनि सद धिआई ॥
दिन-रात सदैव उसका ध्यान करता हूँ।

ਹਾਥ ਦੇਇ ਜਿਨਿ ਰਾਖੇ ॥
हाथ देइ जिनि राखे ॥
जिसने अपना हाथ देकर रक्षा की है,

ਹਰਿ ਨਾਮ ਮਹਾ ਰਸ ਚਾਖੇ ॥੧॥

हरि नाम महा रस चाखे ॥१॥

मैंने हरि-नाम के महारस का पान किया है॥ १॥

ਅਪਨੇ ਗੁਰ ਊਪਰਿ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥
अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥
मैं तो अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ।

ਭਏ ਕਿਰਪਾਲ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਦਾਤੇ ਜੀਅ ਹੋਏ ਮਿਹਰਵਾਨ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥
जब से, पूर्ण प्रभु मुझ पर कृपालु हुआ है, तब से लोग भी मुझ पर मेहरबान हो गए हैं॥ रहाउ ॥

ਨਾਨਕ ਜਨ ਸਰਨਾਈ ॥
नानक जन सरनाई ॥
हे नानक ! मैं तो प्रभु की शरण में हैं,

ਜਿਨਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥
जिनि पूरन पैज रखाई ॥
जिसने उसकी पूर्ण लाज प्रतिष्ठा बचा ली है।

ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਮਿਟਾਈ ॥
सगले दूख मिटाई ॥
उसने सभी दुःख मिटा दिए हैं,

ਸੁਖੁ ਭੁੰਚਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥੨॥੨੮॥੯੨॥
सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥२॥२८॥९२॥
अतः हे मेरे भाई! प्रभु शरण में आकर सुख भोगो ॥२॥२८॥९२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਸੁਨਹੁ ਬਿਨੰਤੀ ਠਾਕੁਰ ਮੇਰੇ ਜੀਅ ਜੰਤ ਤੇਰੇ ਧਾਰੇ ॥
सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥
हे मेरे ठाकुर जी ! मेरी विनम्र प्रार्थना सुनो, ये जितने भी जीव-जन्तु तूने उत्पन्न किए हैं, वे तेरे ही सहारे हैं।

ਰਾਖੁ ਪੈਜ ਨਾਮ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰੇ ॥੧॥
राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥१॥
हे करने एवं कराने वाले प्रभु! अपने नाम की लाज रखो॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਖਸਮਾਨਾ ਕਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥
प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥
हे प्यारे प्रभु जी ! हमें अपना बनाकर अपने स्वामी होने का फर्ज निभाओ,

ਬੁਰੇ ਭਲੇ ਹਮ ਥਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥
चूंकि चाहे हम बुरे अथवा भले हैं, किन्तु तेरे ही हैं।॥ रहाउ॥

ਸੁਣੀ ਪੁਕਾਰ ਸਮਰਥ ਸੁਆਮੀ ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਸਵਾਰੇ ॥
सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥
सर्वशक्तिमान मालिक ने हमारी प्रार्थना सुन ली है और बंधनों को काटकर शोभायमान कर दिया है।

ਪਹਿਰਿ ਸਿਰਪਾਉ ਸੇਵਕ ਜਨ ਮੇਲੇ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਗਟ ਪਹਾਰੇ ॥੨॥੨੯॥੯੩॥
पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२९॥९३॥
नानक का कथन है कि उस प्रभु ने शोभा का वस्त्र पहना कर अपने सेवक को अपने साथ विलीन कर लिया है और समूचे जगत में लोकप्रिय कर दिया है ॥२॥२९॥९३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਵਸਿ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ਸੇਵਕ ਸਭਿ ਦਰਬਾਰੇ ॥
जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥
सभी सेवक भक्ति के फलस्वरूप भगवान के दरबार में बड़ी शोभा से रहते हैं और सभी जीव-जन्तु उनके वश में कर दिए हैं।

ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਓ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਭਵ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥੧॥
अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥१॥
भगवान ने तो हमेशा अपने सेवकों का साथ निभाया है और उन्हें भवसागर से पार कर दिया है ॥१॥

ਸੰਤਨ ਕੇ ਕਾਰਜ ਸਗਲ ਸਵਾਰੇ ॥
संतन के कारज सगल सवारे ॥
उसने अपने संतों के सभी कार्य संवार दिए हैं

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਪੂਰਨ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
दीन दइआल क्रिपाल क्रिपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥
हमारा सर्वव्यापी मालिक बड़ा दीनदयालु, मेहरबान एवं कृपा का भण्डार है।॥ रहाउ ॥

ਆਉ ਬੈਠੁ ਆਦਰੁ ਸਭ ਥਾਈ ਊਨ ਨ ਕਤਹੂੰ ਬਾਤਾ ॥
आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥
हर जगह पर हमारा आदर-सत्कार एवं अभिनन्दन होता है और हमें किसी बात की कोई कमी नहीं।

ਭਗਤਿ ਸਿਰਪਾਉ ਦੀਓ ਜਨ ਅਪੁਨੇ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਜਾਤਾ ॥੨॥੩੦॥੯੪॥
भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥२॥३०॥९४॥
नानक का कथन है कि भगवान अपने भक्तों को भक्ति का शोभायुक्त वस्त्र प्रदान करता है और ऐसे भगवान का तेज-प्रताप दुनिया में जान लिया है ॥२॥३०॥६४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯
सोरठि महला ९
सोरठि महला ९

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰੇ ਮਨ ਰਾਮ ਸਿਉ ਕਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥
रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
हे मन ! राम से प्रेम करो।

ਸ੍ਰਵਨ ਗੋਬਿੰਦ ਗੁਨੁ ਸੁਨਉ ਅਰੁ ਗਾਉ ਰਸਨਾ ਗੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥
अपने कानों से गोविन्द के गुण सुनो और जिह्म से उसकी स्तुति के गीत गाओ। १॥ रहाउ ॥

ਕਰਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਮਰੁ ਮਾਧੋ ਹੋਹਿ ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ॥
करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥
सत्संगति में सम्मिलित होकर भगवान का सिमरन करो, सिमरन से पतित भी पावन हो जाता है।

ਕਾਲੁ ਬਿਆਲੁ ਜਿਉ ਪਰਿਓ ਡੋਲੈ ਮੁਖੁ ਪਸਾਰੇ ਮੀਤ ॥੧॥
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥
हे सज्जन ! काल (मृत्यु) सर्प की भांति मुँह खोलकर चारों ओर भ्रमण कर रहा है ॥१॥

ਆਜੁ ਕਾਲਿ ਫੁਨਿ ਤੋਹਿ ਗ੍ਰਸਿ ਹੈ ਸਮਝਿ ਰਾਖਉ ਚੀਤਿ ॥
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥
इस बात को समझ कर अपने मन में याद रखो कि यह काल आज अथवा कल अंतः तुझे अपना ग्रास अवश्य बना लेगा।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਰਾਮੁ ਭਜਿ ਲੈ ਜਾਤੁ ਅਉਸਰੁ ਬੀਤ ॥੨॥੧॥
कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥
नानक का कथन है कि भगवान का भजन अवश्य कर ले, चूंकि यह सुनहरी अवसर व्यतीत होता जा रहा है ॥२॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਮਨ ਕੀ ਮਨ ਹੀ ਮਾਹਿ ਰਹੀ ॥
मन की मन ही माहि रही ॥
मनुष्य के मन की अभिलाषा मन में ही अधूरी रह गई है,

ਨਾ ਹਰਿ ਭਜੇ ਨ ਤੀਰਥ ਸੇਵੇ ਚੋਟੀ ਕਾਲਿ ਗਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि न ही उसने भगवान का भजन किया है, न ही तीर्थ-स्थान पर जाकर सेवा की है, जिसके परिणामस्वरूप काल (मृत्यु) ने उसे चोटी से पकड़ लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਦਾਰਾ ਮੀਤ ਪੂਤ ਰਥ ਸੰਪਤਿ ਧਨ ਪੂਰਨ ਸਭ ਮਹੀ ॥
दारा मीत पूत रथ स्मपति धन पूरन सभ महीं ॥
पत्नी, दोस्त, पुत्र, रथ, संपति, बेशुमार धन-दौलत एवं सारा विश्व

ਅਵਰ ਸਗਲ ਮਿਥਿਆ ਏ ਜਾਨਉ ਭਜਨੁ ਰਾਮੁ ਕੋ ਸਹੀ ॥੧॥
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥
समझ लो नाशवान ही है और भगवान का भजन ही सत्य एवं सही है॥ १॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਬਹੁਤੇ ਜੁਗ ਹਾਰਿਓ ਮਾਨਸ ਦੇਹ ਲਹੀ ॥
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
अनेक युगों तक भटकते-भटकते हार कर अंतः जीव को दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त हुआ है।

ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਮਿਲਨ ਕੀ ਬਰੀਆ ਸਿਮਰਤ ਕਹਾ ਨਹੀ ॥੨॥੨॥

नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥

नानक का कथन है कि हे मानव ! भगवान से मिलाप का यह सुनहरी अवसर है, फिर तू उसका सिमरन क्यों नहीं करता ? ॥ २ ॥ २ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥

सोरठि महला ९ ॥

सोरठि महला ९ ॥

ਮਨ ਰੇ ਕਉਨੁ ਕੁਮਤਿ ਤੈ ਲੀਨੀ ॥

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥

हे मन ! तूने कैसी कुमति धारण की हुई है?

ਪਰ ਦਾਰਾ ਨਿੰਦਿਆ ਰਸ ਰਚਿਓ ਰਾਮ ਭਗਤਿ ਨਹਿ ਕੀਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥

तूने राम की भक्ति नहीं की और तू पराई नारी एवं निन्दा के स्वाद में मग्न है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੁਕਤਿ ਪੰਥੁ ਜਾਨਿਓ ਤੈ ਨਾਹਨਿ ਧਨ ਜੋਰਨ ਕਉ ਧਾਇਆ ॥

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥

तूने मुक्ति के मार्ग को नहीं जाना लेकिन धन-दौलत संचित करने के लिए इधर-उधर दौड़ रहा है।

ਅੰਤਿ ਸੰਗ ਕਾਹੂ ਨਹੀ ਦੀਨਾ ਬਿਰਥਾ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਆ ॥੧॥
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥
जीवन के अन्तिम क्षणों में किसी ने भी तेरा साथ नहीं देना और तूने निरर्थक ही खुद को लौकिक पदार्थों में फंसा लिया है॥ १॥

ਨਾ ਹਰਿ ਭਜਿਓ ਨ ਗੁਰ ਜਨੁ ਸੇਵਿਓ ਨਹ ਉਪਜਿਓ ਕਛੁ ਗਿਆਨਾ ॥
ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
न तूने भगवान का भजन किया, न ही गुरुजन की सेवा की और न ही तेरे भीतर कुछ ज्ञान उत्पन्न हुआ है।

ਘਟ ਹੀ ਮਾਹਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤੇਰੈ ਤੈ ਖੋਜਤ ਉਦਿਆਨਾ ॥੨॥
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥
मायातीत प्रभु तो तेरे हृदय में ही विद्यमान है लेकिन तू उसे वीराने में खोज रहा है॥ २॥

ਬਹੁਤੁ ਜਨਮ ਭਰਮਤ ਤੈ ਹਾਰਿਓ ਅਸਥਿਰ ਮਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
तू अनेक योनियों में भटकता हुआ थक गया है और तुझे फिर भी स्थिर बुद्धि प्राप्त नहीं हुई।

ਮਾਨਸ ਦੇਹ ਪਾਇ ਪਦ ਹਰਿ ਭਜੁ ਨਾਨਕ ਬਾਤ ਬਤਾਈ ॥੩॥੩॥
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥
नानक ने तो यही बात बताई है कि दुर्लभ मानव शरीर को पाकर भगवान के चरणों का ही भजन कर ॥३॥३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਮਨ ਰੇ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਸਰਨਿ ਬਿਚਾਰੋ ॥
मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥
हे मन ! उस प्रभु की शरण में आने का विचार करो,

ਜਿਹ ਸਿਮਰਤ ਗਨਕਾ ਸੀ ਉਧਰੀ ਤਾ ਕੋ ਜਸੁ ਉਰ ਧਾਰੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥
जिसका सिमरन करने से गणिका का भी उद्धार हो गया था, इसलिए उस प्रभु का यश अपने हृदय में धारण करो ॥ १॥ रहाउ॥

ਅਟਲ ਭਇਓ ਧ੍ਰੂਅ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਅਰੁ ਨਿਰਭੈ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ॥

अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥

जिस भगवान का सिमरन करने से भक्त धुव भी अटल हो गया था और उसे निर्भय पदवी प्राप्त हो गई थी।

ਦੁਖ ਹਰਤਾ ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਸੁਆਮੀ ਤੈ ਕਾਹੇ ਬਿਸਰਾਇਆ ॥੧॥

दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥

मेरा स्वामी इस प्रकार के दुःख नाश करने वाला है, फिर तूने उसे क्यों विस्मृत कर दिया है॥ १॥

ਜਬ ਹੀ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਗਜ ਗਰਾਹ ਤੇ ਛੂਟਾ ॥

जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥

जब ही हाथी कृपानिधि प्रभु की शरण में आया तो उसी समय वह मगरमच्छ से स्वतंत्र हो गया।

ਮਹਮਾ ਨਾਮ ਕਹਾ ਲਉ ਬਰਨਉ ਰਾਮ ਕਹਤ ਬੰਧਨ ਤਿਹ ਤੂਟਾ ॥੨॥

महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥

मैं नाम की महिमा का कहाँ तक वर्णन करूँ ? चूंकि राम कहते ही बन्धन टूट जाते हैं ॥ २॥

ਅਜਾਮਲੁ ਪਾਪੀ ਜਗੁ ਜਾਨੇ ਨਿਮਖ ਮਾਹਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥

इस जगत में वासना में रत अजामल पापी जाना जाता है, जिसका एक क्षण में ही उद्धार हो गया था।

ਨਾਨਕ ਕਹਤ ਚੇਤ ਚਿੰਤਾਮਨਿ ਤੈ ਭੀ ਉਤਰਹਿ ਪਾਰਾ ॥੩॥੪॥

नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥

नानक कहते हैं कि उस चिंतामणि प्रभु को याद करो, तू भी भवसागर से पार हो जाएगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥

सोरठि महला ९ ॥

सोरठि महला ९ ॥

ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਉਨੁ ਉਪਾਉ ਕਰੈ ॥

प्रानी कउनु उपाउ करै ॥

प्राणी क्या उपाय करे,

ਜਾ ਤੇ ਭਗਤਿ ਰਾਮ ਕੀ ਪਾਵੈ ਜਮ ਕੋ ਤ੍ਰਾਸੁ ਹਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥

जिससे उसे राम की भक्ति प्राप्त हो जाए और मृत्यु का डर निवृत्त हो जाए॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਉਨੁ ਕਰਮ ਬਿਦਿਆ ਕਹੁ ਕੈਸੀ ਧਰਮੁ ਕਉਨੁ ਫੁਨਿ ਕਰਈ ॥
कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥
बताओ , वह कौन-सा कर्म, कैसी विद्या और फिर कौन-सा धर्म करे।

ਕਉਨੁ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰੈ ਭਵ ਸਾਗਰ ਕਉ ਤਰਈ ॥੧॥
कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥
वह कौन-सा गुरु का दिया नाम है, जिसका सिमरन करने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाए? ॥ १॥

ਕਲ ਮੈ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਜਾਹਿ ਜਪੈ ਗਤਿ ਪਾਵੈ ॥
कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
इस कलियुग में एक ईश्वर का नाम ही कृपा का भण्डार है, जिसका जाप करने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ਅਉਰ ਧਰਮ ਤਾ ਕੈ ਸਮ ਨਾਹਨਿ ਇਹ ਬਿਧਿ ਬੇਦੁ ਬਤਾਵੈ ॥੨॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥
वेद भी यही विधि बताते हैं कि एक ईश्वर के नाम के तुल्य अन्य कोई भी धर्म नहीं ॥ २॥

ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਰਹਤ ਸਦਾ ਨਿਰਲੇਪੀ ਜਾ ਕਉ ਕਹਤ ਗੁਸਾਈ ॥
सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥
जिसे सारी दुनिया (विश्व का मालिक) गुसाँई कहती है, वह सुख-दुख से रहित है और सर्वदा निर्लिप्त रहता है।

ਸੋ ਤੁਮ ਹੀ ਮਹਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਤਰਿ ਨਾਨਕ ਦਰਪਨਿ ਨਿਆਈ ॥੩॥੫॥
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥
नानक का कथन है कि वह भगवान तेरे भीतर निरन्तर दर्पण में अक्स की भांति निवास करता है॥ ३ ॥ ५॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਮਾਈ ਮੈ ਕਿਹਿ ਬਿਧਿ ਲਖਉ ਗੁਸਾਈ ॥
माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥
है मेरी माँ! मैं किस विधि से उस भगवान को पहचानूँ ?

ਮਹਾ ਮੋਹ ਅਗਿਆਨਿ ਤਿਮਰਿ ਮੋ ਮਨੁ ਰਹਿਓ ਉਰਝਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि मेरा मन तो महामोह एवं अज्ञानता के अन्धेरे में उलझा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਗਲ ਜਨਮ ਭਰਮ ਹੀ ਭਰਮ ਖੋਇਓ ਨਹ ਅਸਥਿਰੁ ਮਤਿ ਪਾਈ ॥
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥
मैंने अपना समूचा जीवन भ्रम में भटक कर ही गंवा दिया है और मुझे सुमति प्राप्त नहीं हुई।

ਬਿਖਿਆਸਕਤ ਰਹਿਓ ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਨਹ ਛੂਟੀ ਅਧਮਾਈ ॥੧॥
बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥
मैं तो रात-दिन विषय-विकारों में ही आसक्त रहता हूँ और मेरी यह अधमता अभी तक नहीं छूटी ॥ १ ॥

ਸਾਧਸੰਗੁ ਕਬਹੂ ਨਹੀ ਕੀਨਾ ਨਹ ਕੀਰਤਿ ਪ੍ਰਭ ਗਾਈ ॥
साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥
मैंने कभी भी सत्संगति नहीं की और न ही मैंने प्रभु का कीर्ति-गान किया है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਮੈ ਨਾਹਿ ਕੋਊ ਗੁਨੁ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਸਰਨਾਈ ॥੨॥੬॥
जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! मुझ में तो कोई अच्छाई नहीं है, फिर भी दया करके मुझे अपनी शरण में रख लो॥ २॥ ६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਮਾਈ ਮਨੁ ਮੇਰੋ ਬਸਿ ਨਾਹਿ ॥
माई मनु मेरो बसि नाहि ॥
हे मेरी माँ ! मेरा चंचल मन नियंत्रण में नहीं है।

ਨਿਸ ਬਾਸੁਰ ਬਿਖਿਅਨ ਕਉ ਧਾਵਤ ਕਿਹਿ ਬਿਧਿ ਰੋਕਉ ਤਾਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥
यह तो रात-दिन विषय-विकारों के पीछे ही भागता रहता है, अतः मैं इस पर किस विधि से विराम लगाऊँ॥ १॥ रहाउ॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਕੇ ਮਤ ਸੁਨਿ ਨਿਮਖ ਨ ਹੀਏ ਬਸਾਵੈ ॥

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥

यह वेद, पुराणों एवं स्मृतियों के उपदेश को सुनकर एक क्षण भर के लिए भी अपने हृदय में नहीं बसाता।

ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਦਾਰਾ ਸਿਉ ਰਚਿਓ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਸਿਰਾਵੈ ॥੧॥

पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥

यह तो-पराया धन एवं पराई नारी के आकर्षण में ही फॅसकर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा रहा है॥ १॥

ਮਦਿ ਮਾਇਆ ਕੈ ਭਇਓ ਬਾਵਰੋ ਸੂਝਤ ਨਹ ਕਛੁ ਗਿਆਨਾ ॥

मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥

यह तो केवल माया के नशे में ही बावला हो गया है और उसे कुछ ज्ञान नहीं सूझता।

ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਬਸਤ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤਾ ਕੋ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾ ॥੨॥

घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥

निरंजन परमात्मा तो उसके हृदय के भीतर ही निवास करता है लेकिन वह उसके रहस्य को नहीं जानता ॥२॥

ਜਬ ਹੀ ਸਰਨਿ ਸਾਧ ਕੀ ਆਇਓ ਦੁਰਮਤਿ ਸਗਲ ਬਿਨਾਸੀ ॥
जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥
जब ही यह साधु की शरण में आया है तो उसकी तमाम दुर्मति का नाश हो गया है।

ਤਬ ਨਾਨਕ ਚੇਤਿਓ ਚਿੰਤਾਮਨਿ ਕਾਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ॥੩॥੭॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥
हे नानक ! तब ही इसने चिंतामणि भगवान का सिमरन किया तो इसकी यम की फाँसी कट गई है ॥३॥७॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਰੇ ਨਰ ਇਹ ਸਾਚੀ ਜੀਅ ਧਾਰਿ ॥
रे नर इह साची जीअ धारि ॥
हे मनुष्य ! अपने हृदय में इस सत्य को धारण कर लो कि

ਸਗਲ ਜਗਤੁ ਹੈ ਜੈਸੇ ਸੁਪਨਾ ਬਿਨਸਤ ਲਗਤ ਨ ਬਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥
यह समूचा जगत एक स्वप्न जैसा है और इसका विनाश होने में कोई देरी नहीं लगती॥१॥ रहाउ॥

ਬਾਰੂ ਭੀਤਿ ਬਨਾਈ ਰਚਿ ਪਚਿ ਰਹਤ ਨਹੀ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ॥
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥
जैसे बनाई गई रेत की दीवार, पोतकर चार दिन भी नहीं रहती,

ਤੈਸੇ ਹੀ ਇਹ ਸੁਖ ਮਾਇਆ ਕੇ ਉਰਝਿਓ ਕਹਾ ਗਵਾਰ ॥੧॥
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥
वैसे ही यह माया के सुख हैं, हे गंवार मनुष्य ! तू उन में क्यों फंसा हुआ है॥ १॥

ਅਜਹੂ ਸਮਝਿ ਕਛੁ ਬਿਗਰਿਓ ਨਾਹਿਨਿ ਭਜਿ ਲੇ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥
आज ही कुछ समझ ले चूंकि अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है और भगवान के नाम का भजन कर ले।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਜ ਮਤੁ ਸਾਧਨ ਕਉ ਭਾਖਿਓ ਤੋਹਿ ਪੁਕਾਰਿ ॥੨॥੮॥
कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥
नानक का कथन है कि हे मनुष्य ! संतों का यही निजी उपदेश एवं युक्ति है जो तुझे पुकार कर बता दी है ॥२॥८॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਇਹ ਜਗਿ ਮੀਤੁ ਨ ਦੇਖਿਓ ਕੋਈ ॥
इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
मैंने इस दुनिया में कोई घनिष्ठ मित्र नहीं देखा है।

ਸਗਲ ਜਗਤੁ ਅਪਨੈ ਸੁਖਿ ਲਾਗਿਓ ਦੁਖ ਮੈ ਸੰਗਿ ਨ ਹੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥
सारी दुनिया अपने सुख में ही मग्न है और दुःख में कोई किसी का साथी नहीं बनता ॥ १॥ रहाउ॥

ਦਾਰਾ ਮੀਤ ਪੂਤ ਸਨਬੰਧੀ ਸਗਰੇ ਧਨ ਸਿਉ ਲਾਗੇ ॥
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥
पत्नी, मित्र, पुत्र एवं सभी रिश्तेदारों का केवल धन-दौलत से ही लगाव है।

ਜਬ ਹੀ ਨਿਰਧਨ ਦੇਖਿਓ ਨਰ ਕਉ ਸੰਗੁ ਛਾਡਿ ਸਭ ਭਾਗੇ ॥੧॥
जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥
जब ही वे मनुष्य को निर्धन होता देखते हैं तो सभी उसका साथ छोड़कर दौड़ जाते हैं।॥ १॥

ਕਹੰਉ ਕਹਾ ਯਿਆ ਮਨ ਬਉਰੇ ਕਉ ਇਨ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਲਗਾਇਓ ॥
कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥
मैं इस बावले मन को क्या उपदेश दूँ ? इसने तो केवल इन सभी स्वार्थियों से ही स्नेह लगाया हुआ है।

ਦੀਨਾ ਨਾਥ ਸਕਲ ਭੈ ਭੰਜਨ ਜਸੁ ਤਾ ਕੋ ਬਿਸਰਾਇਓ ॥੨॥
दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥
इसने उस प्रभु का यश भुला दिया है जो दीनों का स्वामी एवं सभी भय नाश करने वाला है॥ २॥

ਸੁਆਨ ਪੂਛ ਜਿਉ ਭਇਓ ਨ ਸੂਧਉ ਬਹੁਤੁ ਜਤਨੁ ਮੈ ਕੀਨਉ ॥
सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥
मैंने अनेक यत्न किए हैं परन्तु यह मन कुत्ते की पूंछ की तरह टेढ़ा ही रहता है और सीधा नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਲਾਜ ਬਿਰਦ ਕੀ ਰਾਖਹੁ ਨਾਮੁ ਤੁਹਾਰਉ ਲੀਨਉ ॥੩॥੯॥
नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥
नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! अपने विरद् की लाज रखो; चूंकि मैं तो तुम्हारा ही नाम-सिमरन करता हूँ ॥३॥६॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਮਨ ਰੇ ਗਹਿਓ ਨ ਗੁਰ ਉਪਦੇਸੁ ॥
मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥
हे मन ! तूने गुरु के उपदेश को तो ग्रहण नहीं किया,

ਕਹਾ ਭਇਓ ਜਉ ਮੂਡੁ ਮੁਡਾਇਓ ਭਗਵਉ ਕੀਨੋ ਭੇਸੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥
फिर सिर मुंडवा कर भगवा वेष धारण करने का क्या अभिप्राय है? ॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਚ ਛਾਡਿ ਕੈ ਝੂਠਹ ਲਾਗਿਓ ਜਨਮੁ ਅਕਾਰਥੁ ਖੋਇਓ ॥
साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥
सत्य को छोड़कर झूठ के साथ लगकर तूने अकारण ही अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर दिया है।

ਕਰਿ ਪਰਪੰਚ ਉਦਰ ਨਿਜ ਪੋਖਿਓ ਪਸੁ ਕੀ ਨਿਆਈ ਸੋਇਓ ॥੧॥
करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥
तू अनेक छल-कपट करके अपने पेट का पोषण करता है और पशु की भांति सोता है ॥१॥

ਰਾਮ ਭਜਨ ਕੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ਮਾਇਆ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਾ ॥
राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥
तूने राम भजन के महत्व को नहीं समझा और स्वयं को माया के हाथ बेच दिया है।

ਉਰਝਿ ਰਹਿਓ ਬਿਖਿਅਨ ਸੰਗਿ ਬਉਰਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਬਿਸਰਾਨਾ ॥੨॥
उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥
यह बावला मन तो विषय-विकारों में ही फंसा रहा है और नाम-रत्न को भुला दिया है॥ २॥

ਰਹਿਓ ਅਚੇਤੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਗੋਬਿੰਦ ਬਿਰਥਾ ਅਉਧ ਸਿਰਾਨੀ ॥
रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥
यह अचेत रहता है और भगवान को स्मरण नहीं करता और अपना जन्म व्यर्थ ही बिता दिया है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਬਿਰਦੁ ਪਛਾਨਉ ਭੂਲੇ ਸਦਾ ਪਰਾਨੀ ॥੩॥੧੦॥
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥
नानक का कथन है कि हे भगवान ! तू अपने विरद् को पहचानते हुए सब का कल्याण कर, चूंकि प्राणी तो हमेशा ही भूल-चूक करने वाला है॥ ३॥ १०॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਜੋ ਨਰੁ ਦੁਖ ਮੈ ਦੁਖੁ ਨਹੀ ਮਾਨੈ ॥
जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
जो पुरुष दुःख में भी दुःख नहीं मानता अर्थात् दुःख से विचलित नहीं होता,

ਸੁਖ ਸਨੇਹੁ ਅਰੁ ਭੈ ਨਹੀ ਜਾ ਕੈ ਕੰਚਨ ਮਾਟੀ ਮਾਨੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे सुख के साथ किसी प्रकार का कोई स्नेह नहीं और जिसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं और जो स्वर्ण को भी मिट्टी की भांति समझता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਹ ਨਿੰਦਿਆ ਨਹ ਉਸਤਤਿ ਜਾ ਕੈ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਅਭਿਮਾਨਾ ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
जो न ही किसी की निन्दा करता है, न ही प्रशंसा की परवाह करता है और जिसे कोई लोभ, मोह एवं अभिमान नहीं,

ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਆਰਉ ਨਾਹਿ ਮਾਨ ਅਪਮਾਨਾ ॥੧॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
जो हर्ष एवं शोक से भी निर्लिप्त रहता है और जो न ही मान एवं न ही अपमान की ओर ध्यान देता है॥ १॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਗਲ ਤਿਆਗੈ ਜਗ ਤੇ ਰਹੈ ਨਿਰਾਸਾ ॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
जो आशा एवं अभिलाषा सबको त्याग देता है, जो दुनिया में इच्छा-रहित ही रहता है,

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜਿਹ ਪਰਸੈ ਨਾਹਨਿ ਤਿਹ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਨਿਵਾਸਾ ॥੨॥

कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥

जिसे कामवासना एवं गुस्सा जरा भी स्पर्श नहीं करते, वास्तव में उसके अन्तर्मन में ही भगवान का निवास है॥ २॥

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਜਿਹ ਨਰ ਕਉ ਕੀਨੀ ਤਿਹ ਇਹ ਜੁਗਤਿ ਪਛਾਨੀ ॥

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥

जिस पुरुष पर गुरु ने अपनी कृपा की है, वही इस युक्ति से परिचित होता है।

ਨਾਨਕ ਲੀਨ ਭਇਓ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਉ ਜਿਉ ਪਾਨੀ ਸੰਗਿ ਪਾਨੀ ॥੩॥੧੧॥

नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥

हे नानक ! ऐसा पुरुष भगवान के साथ यू विलीन हो जाता है, जैसे जल, जल में लीन हो जाता है ॥३॥११॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੯ ॥
सोरठि महला ९ ॥
सोरठि महला ९ ॥

ਪ੍ਰੀਤਮ ਜਾਨਿ ਲੇਹੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
हे प्रियतम ! अपने मन में इस तथ्य को भलीभांति समझ ले कि

ਅਪਨੇ ਸੁਖ ਸਿਉ ਹੀ ਜਗੁ ਫਾਂਧਿਓ ਕੋ ਕਾਹੂ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥
सारी दुनिया केवल अपने सुख में ही फँसी हुई है और कोई किसी का शुभचिन्तक नहीं ॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਖ ਮੈ ਆਨਿ ਬਹੁਤੁ ਮਿਲਿ ਬੈਠਤ ਰਹਤ ਚਹੂ ਦਿਸਿ ਘੇਰੈ ॥
सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥
जीवन में सुख-समृद्धि के समय में तो बहुत सारे सगे-संबंधी मिलकर बैठते हैं तथा चहुँ दिशाओं से घेर कर रखते हैं लेकिन

ਬਿਪਤਿ ਪਰੀ ਸਭ ਹੀ ਸੰਗੁ ਛਾਡਿਤ ਕੋਊ ਨ ਆਵਤ ਨੇਰੈ ॥੧॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥
जब कोई विपत्ति आती है तो सभी साथ छोड़ देते हैं और कोई भी निकट तक नहीं आता ॥ १॥

ਘਰ ਕੀ ਨਾਰਿ ਬਹੁਤੁ ਹਿਤੁ ਜਾ ਸਿਉ ਸਦਾ ਰਹਤ ਸੰਗ ਲਾਗੀ ॥
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥
जिस गृहिणी (धर्मपत्नी) के संग पति बहुत स्नेह करता है और जो हमेशा ही अपने जीवनसाथी के संग लगी रहती है,

ਜਬ ਹੀ ਹੰਸ ਤਜੀ ਇਹ ਕਾਂਇਆ ਪ੍ਰੇਤ ਪ੍ਰੇਤ ਕਰਿ ਭਾਗੀ ॥੨॥
जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥
जब हंस रूपी आत्मा इस शरीर को त्याग देती है तो वह जीवनसंगिनी भी मृत शरीर को प्रेत-प्रेत कहती हुई भाग जाती है।॥ २॥

ਇਹ ਬਿਧਿ ਕੋ ਬਿਉਹਾਰੁ ਬਨਿਓ ਹੈ ਜਾ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ਲਗਾਇਓ ॥
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥
इस संसार में लोगों का इस तरीके का ही व्यवहार बना हुआ है, जिनके साथ हम भरपूर प्रेम करते हैं।

ਅੰਤ ਬਾਰ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਜੀ ਕੋਊ ਕਾਮਿ ਨ ਆਇਓ ॥੩॥੧੨॥੧੩੯॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥
नानक का कथन है कि जीवन के अन्तिम क्षणों में ईश्वर के अलावा कोई भी काम नहीं आता ॥३॥१२॥१३९॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ ਚਉਤੁਕੀ
सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी
सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੁਬਿਧਾ ਨ ਪੜਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹੋਰੁ ਨ ਪੂਜਉ ਮੜੈ ਮਸਾਣਿ ਨ ਜਾਈ ॥
दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥
मैं किसी दुविधा में नहीं पड़ता; भगवान के सिवाय किसी अन्य की पूजा नहीं करता और किसी समाधि एवं श्मशानघाट में भी नहीं जाता।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਰਾਚਿ ਨ ਪਰ ਘਰਿ ਜਾਵਾ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨਾਮਿ ਬੁਝਾਈ ॥
त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई ॥
किसी प्रकार की तृष्णा में प्रवृत्त होकर किसी पराए घर में भी नहीं जाता, चूंकि नाम ने मेरी तृष्णा मिटा दी है।

ਘਰ ਭੀਤਰਿ ਘਰੁ ਗੁਰੂ ਦਿਖਾਇਆ ਸਹਜਿ ਰਤੇ ਮਨ ਭਾਈ ॥
घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥
हे भाई ! मेरे हृदय-घर में ही गुरु ने प्रभु-घर के दर्शन करवा दिए हैं और मेरा मन सहज अवस्था में लीन हो गया है।

ਤੂ ਆਪੇ ਦਾਨਾ ਆਪੇ ਬੀਨਾ ਤੂ ਦੇਵਹਿ ਮਤਿ ਸਾਈ ॥੧॥
तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥१॥
हे ईश्वर ! तू स्वयं ही चतुर है; स्वयं ही सर्वज्ञ है और तू स्वयं ही सुमति प्रदान करता है॥ १॥

ਮਨੁ ਬੈਰਾਗਿ ਰਤਉ ਬੈਰਾਗੀ ਸਬਦਿ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਮੇਰੀ ਮਾਈ ॥
मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥
हे मेरी माता ! मेरा मन वैराग्य में मग्न होकर वैरागी बन गया है और शब्द ने मेरा मन भेद दिया है।

ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਬਾਣੀ ਸਾਚੇ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥

अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥

मैंने सच्चे परमेश्वर के साथ लगन लगाई है, निरन्तर वाणी पढ़ने से अन्तर्मन में परम-ज्योति का निवास हो गया है॥ रहाउ॥

ਅਸੰਖ ਬੈਰਾਗੀ ਕਹਹਿ ਬੈਰਾਗ ਸੋ ਬੈਰਾਗੀ ਜਿ ਖਸਮੈ ਭਾਵੈ ॥

असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥

असंख्य वैरागी वैराग्य की बातें कहते हैं परन्तु सच्चा वैरागी तो वही है, जो परमात्मा को भला लगता है।

ਹਿਰਦੈ ਸਬਦਿ ਸਦਾ ਭੈ ਰਚਿਆ ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥

हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥

वह शब्द को अपने हृदय में बसाता है और हमेशा प्रभु-भय में लीन रहकर गुरु की सेवा करता है।

ਏਕੋ ਚੇਤੈ ਮਨੂਆ ਨ ਡੋਲੈ ਧਾਵਤੁ ਵਰਜਿ ਰਹਾਵੈ ॥

एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥

वह एक ईश्वर को ही स्मरण करता है, उसका मन डांवाडोल नहीं होता और मोह-माया की तरफ दौड़ रहे मन पर अंकुश लगाता है।

ਸਹਜੇ ਮਾਤਾ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ਸਾਚੇ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ॥੨॥

सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥२॥

वह सहज अवस्था में मतवाला होकर प्रभु के रंग में हमेशा ही मग्न रहता है और सच्चे परमेश्वर का गुणगान करता है ॥२॥

ਮਨੂਆ ਪਉਣੁ ਬਿੰਦੁ ਸੁਖਵਾਸੀ ਨਾਮਿ ਵਸੈ ਸੁਖ ਭਾਈ ॥

मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥

यदि पवन जैसा मन एक क्षण भर के लिए भी सुखवासी हो जाए तो वह नाम में निवास करके सुखी रहेगा।

ਜਿਹਬਾ ਨੇਤ੍ਰ ਸੋਤ੍ਰ ਸਚਿ ਰਾਤੇ ਜਲਿ ਬੂਝੀ ਤੁਝਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥

जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥

मेरी जिव्हा, नेत्र एवं कान सत्य के साथ मग्न हो गए हैं और नाम-जल से तृष्णा बुझ गई है। हे परमेश्वर ! तूने ही तृष्णा को बुझाया है।

ਆਸ ਨਿਰਾਸ ਰਹੈ ਬੈਰਾਗੀ ਨਿਜ ਘਰਿ ਤਾੜੀ ਲਾਈ ॥

आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥

यह वैरागी मन इच्छाओं से विरक्त रहकर परमात्मा में ही ध्यान लगाता है।

ਭਿਖਿਆ ਨਾਮਿ ਰਜੇ ਸੰਤੋਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਹਜਿ ਪੀਆਈ ॥੩॥
भिखिआ नामि रजे संतोखी अम्रितु सहजि पीआई ॥३॥
संतोषी मन नाम की भिक्षा से ही तृप्त रहता है और सहज ही प्रभु के नामामृत का पान करता है॥ ३॥

दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥
दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥
दुविधा में और जब तक अल्पमात्र भी द्वैतभाव है, तब तक कोई वैरागी नहीं हो सकता।

सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥
सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥
हे भगवान ! यह समूचा जगत तेरा है और एक तू ही दाता है, हे भाई ! भगवान के सिवाय दूसरा कोई बड़ा नहीं।

मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥
मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥
स्वेच्छाचारी व्यक्ति हमेशा ही दु:खी रहता है लेकिन गुरुमुख को तो भगवान बड़ाई प्रदान करता है।

अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥
अपर अपार अगम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥
अपरंपार, अगम्य एवं अगोचर ईश्वर का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता ॥४॥

सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥
सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥
हे परमेश्वर ! तू शून्य समाधि धारण करने वाला, महा परमार्थ एवं तीनों लोकों का स्वामी तेरा ही नाम है।

मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥
मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥
इस दुनिया में पैदा हुए लोगों के मस्तक पर विधाता द्वारा किस्मत लिखी हुई है और जो कर्मानुसार भाग्य लिखा होता है, लोग उसके अनुसार ही सुख-दुख भोगते हैं।

करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं ॥
करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं ॥
परमात्मा स्वयं ही लोगों से कर्म एवं सुकर्म करवाता है और स्वयं ही अपनी भक्ति में दृढ़ करता है।

ਮਨਿ ਮੁਖਿ ਜੂਠਿ ਲਹੈ ਭੈ ਮਾਨੰ ਆਪੇ ਗਿਆਨੁ ਅਗਾਮੰ ॥੫॥

मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥५॥

जो व्यक्ति भगवान के भय में आचरण करता है, उसके मन एवं मुँह की जूठन उतर जाती है और वह स्वयं ही ज्ञान देता है ॥५॥

ਜਿਨ ਚਾਖਿਆ ਸੇਈ ਸਾਦੁ ਜਾਣਨਿ ਜਿਉ ਗੁੰਗੇ ਮਿਠਿਆਈ ॥
जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥
जिसने ज्ञान को चखा है, वही इसके स्वाद को ऐसे जानता है जैसे गूंगे व्यक्ति के लिए मिठाई का स्वाद होता है।

ਅਕਥੈ ਕਾ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਭਾਈ ਚਾਲਉ ਸਦਾ ਰਜਾਈ ॥
अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥
हे भाई ! अकथनीय परमात्मा का मैं क्या कथन कर सकता हूँ, अतः मैं तो हमेशा उसकी इच्छानुसार ही चलता हूँ।

ਗੁਰੁ ਦਾਤਾ ਮੇਲੇ ਤਾ ਮਤਿ ਹੋਵੈ ਨਿਗੁਰੇ ਮਤਿ ਨ ਕਾਈ ॥
गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥
यदि दाता गुरु से मिलन करवा दे तो ही सुमति प्राप्त होती है और निगुरे को तो कोई सूझ नहीं होती।

ਜਿਉ ਚਲਾਏ ਤਿਉ ਚਾਲਹ ਭਾਈ ਹੋਰ ਕਿਆ ਕੋ ਕਰੇ ਚਤੁਰਾਈ ॥੬॥
जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥६॥
हे भाई ! जैसे प्रभु हमें चलाता है, हमें वैसे ही चलना चाहिए, मनुष्य अन्य कौन-सी चतुराई.कर सकता है ॥६॥

ਇਕਿ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਏ ਇਕਿ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਤੇਰਾ ਖੇਲੁ ਅਪਾਰਾ ॥
इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥
हे परमेश्वर ! तेरी लीला अपरंपार है, चूंकि कई जीव भ्रम में ही भटकते रहते हैं और कई तेरी भक्ति में मग्न रहते हैं।

ਜਿਤੁ ਤੁਧੁ ਲਾਏ ਤੇਹਾ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਤੂ ਹੁਕਮਿ ਚਲਾਵਣਹਾਰਾ ॥
जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा ॥
जिधर तू लोगों को लगाता है, वे वैसा ही फल प्राप्त करते हैं और तू ही अपना हुक्म लागू करने वाला है।

ਸੇਵਾ ਕਰੀ ਜੇ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਅਪਣਾ ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥
यदि मेरा कुछ अपना हो तो ही मैं तेरी सेवा करूं, मेरी यह आत्मा एवं शरीर तो तुम्हारा ही है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰਾ ॥੭॥

सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अम्रित नामु अधारा ॥७॥

जो सतिगुरु से मिल जाता है, भगवान उस पर कृपा करता है और नामामृत ही उसका आधार बन जाता है॥ ७ ॥

ਗਗਨੰਤਰਿ ਵਾਸਿਆ ਗੁਣ ਪਰਗਾਸਿਆ ਗੁਣ ਮਹਿ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨੰ ॥

गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥

जब गुरु ने मन में गुणों का प्रकाश कर दिया तो मन दसम द्वार में जा बसा। अब मन गुणों व ज्ञान में ही ध्यान लगाता है।

ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਕਹੈ ਕਹਾਵੈ ਤਤੋ ਤਤੁ ਵਖਾਨੰ ॥

नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥

नाम ही मन को अच्छा लगता है, नाम ही जपता और दूसरों से जपाता हूँ और परम तत्व का ही बखान करता हूँ।

ਸਬਦੁ ਗੁਰ ਪੀਰਾ ਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰਾ ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨੰ ॥

सबदु गुर पीरा गहिर ग्मभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥

शब्द गुरु ही हम सभी का पीर है, जो बड़ा गहन एवं गंभीर है। शब्द के बिना तो सारी दुनिया ही पागलों की तरह आचरण करती है।

ਪੂਰਾ ਬੈਰਾਗੀ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਗੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਮਾਨੰ ॥੮॥੧॥

पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥८॥१॥

हे नानक ! जिसका मन सत्य नाम से निहाल हुआ है, वही पूर्ण वैरागी एवं सहज सौभाग्यशाली है ॥८॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਤਿਤੁਕੀ ॥

सोरठि महला १ तितुकी ॥

सोरठि महला १ तितुकी ॥

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਬੰਧਨੀ ਭਾਈ ਕਰਮ ਧਰਮ ਬੰਧਕਾਰੀ ॥

आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥

हे भाई ! आशा एवं मनसा तो मात्र बन्धन ही हैं और धर्म-कर्म भी इन्सान को बन्धनों में फँसाने वाले हैं।

ਪਾਪਿ ਪੁੰਨਿ ਜਗੁ ਜਾਇਆ ਭਾਈ ਬਿਨਸੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰੀ ॥

पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥

पाप एवं पुण्य के कारण ही लोग दुनिया में जन्म लेते हैं लेकिन नाम को विस्मृत करने से मनुष्य का नाश हो जाता है।

ਇਹ ਮਾਇਆ ਜਗਿ ਮੋਹਣੀ ਭਾਈ ਕਰਮ ਸਭੇ ਵੇਕਾਰੀ ॥੧॥
इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥१॥
हे भाई ! यह माया तो दुनिया में लोगों को मोहित करने वाली ही है और माया के पीछे लगकर किए गए सभी कर्म पापपूर्ण हैं।॥ १॥

ਸੁਣਿ ਪੰਡਿਤ ਕਰਮਾ ਕਾਰੀ ॥
सुणि पंडित करमा कारी ॥
हे कर्मकाण्डी पण्डित ! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन;

ਜਿਤੁ ਕਰਮਿ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਸੁ ਆਤਮ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥
जिस कर्म से सुख उत्पन्न होता है, वह कर्म आत्मतत्व का चिंतन करना है॥ रहाउ ॥

ਸਾਸਤੁ ਬੇਦੁ ਬਕੈ ਖੜੋ ਭਾਈ ਕਰਮ ਕਰਹੁ ਸੰਸਾਰੀ ॥
सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥
तू खड़ा होकर शास्त्रों एवं वेदों का पाठ करता है परन्तु हे भाई ! स्वयं तो तुम सांसारिक कर्म ही करते हो।

ਪਾਖੰਡਿ ਮੈਲੁ ਨ ਚੁਕਈ ਭਾਈ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਵਿਕਾਰੀ ॥
पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥
तेरे मन में तो विकारों की मैल भरी हुई है और यह मैल पाखण्ड करने से दूर नहीं हो सकती।

ਇਨ ਬਿਧਿ ਡੂਬੀ ਮਾਕੁਰੀ ਭਾਈ ਊਂਡੀ ਸਿਰ ਕੈ ਭਾਰੀ ॥੨॥
इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥२॥
इस तरह ही मकड़ी भी जाला बुनकर सिर के बल ही नष्ट हो जाती है॥ २॥

ਦੁਰਮਤਿ ਘਣੀ ਵਿਗੂਤੀ ਭਾਈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਈ ॥
दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥
दुर्मति के कारण ही बहुत सारे लोग बर्बाद हो गए हैं; हे भाई ! प्रभु के अलावा द्वैतभाव में पड़कर लोग ख्वार ही हुए हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਮੁ ਨ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਬਿਨੁ ਨਾਮੈ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥
बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥
सतगुरु के बिना नाम प्राप्त नहीं होता और नाम के बिना भ्रम दूर नहीं होता।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਭਾਈ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ਰਹਾਈ ॥੩॥
सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥३॥
हे भाई ! यदि सतिगुरु की सेवा की जाए तो ही सुख की उपलब्धि होती है और मनुष्य का जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है॥ ३॥

साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥
साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥
हे भाई ! सच्चा सुख तो गुरु से ही प्राप्त होता है और मन निर्मल होकर परम सत्य में समा जाता है।

गुरु सेवे सो बुझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥
गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥
जो व्यक्ति गुरु की निष्काम सेवा करता है, उसे ही सन्मार्ग सूझता है और गुरु के बिना मार्ग नहीं मिलता।

जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कुड़ु बोलि बिखु खाई ॥४॥
जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥४॥
जिसके हृदय में मात्र लोभ ही भरा हुआ है, वह क्या शुभ कर्म कर सकता है? झूठ बोलकर तो वह विष ही खाता है॥ ४॥

पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥
पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥
हे पण्डित ! यदि दही का मंथन किया जाए तो इस में से मक्खन ही निकलता है।

जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥
जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥
यदि जल का मंथन किया जाए तो जल ही दिखाई देगा; यह जगत भी जल की तरह ही वस्तु है।

गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥५॥
गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥५॥
हे भाई ! गुरु के बिना मनुष्य दुविधा में ही नष्ट हो जाता है और घट-घट में विद्यमान अलक्ष्य प्रभु से जुदा ही रहता है ॥५॥

इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥
इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥
हे भाई ! यह नश्वर दुनिया तो सूत के धागे की भांति है, जिसे माया ने (अपने आकर्षण में) दसों दिशाओं में बाँध कर रखा हुआ है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਗਾਠਿ ਨ ਛੂਟਈ ਭਾਈ ਥਾਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥
गुरु के बिना माया की गांठ नहीं खुलती और लोग कर्मकाण्ड करते हुए ही थक जाते हैं।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ਭਾਈ ਕਹਣਾ ਕਿਛੂ ਨ ਜਾਇ ॥੬॥
इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥६॥
हे भाई ! इस दुनिया को तो भ्रमों ने ही भटकाया हुआ है और इस बारे कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सकता ॥६॥

ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਭਉ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਭੈ ਮਰਣਾ ਸਚੁ ਲੇਖੁ ॥
गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥
हे भाई ! गुरु को मिलने से ही प्रभु का भय-प्रेम मन में निवास करता है और उस भय प्रेम में मरना ही सच्चा लेख है।

ਮਜਨੁ ਦਾਨੁ ਚੰਗਿਆਈਆ ਭਾਈ ਦਰਗਹ ਨਾਮੁ ਵਿਸੇਖੁ ॥
मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥
स्नान, दान-पुण्य एवं अन्य शुभ कर्मों से तो नाम ही भगवान के दरबार में सर्वोत्तम साधन है।

ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਭਾਈ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਚੂਕਾ ਭੇਖੁ ॥੭॥
गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥७॥
जो व्यक्ति गुरु के अंकुश द्वारा नाम को अपने भीतर दृढ़ करता है, उसका आडम्बर दूर हो जाता है और भगवान का उसके मन में निवास हो जाता है॥ ७॥

ਇਹੁ ਤਨੁ ਹਾਟੁ ਸਰਾਫ ਕੋ ਭਾਈ ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥
इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥
हे भाई ! यह तन उस भगवान जौहरी की एक दुकान है, जिसमें अक्षय नाम की पूँजी विद्यमान है।

ਇਹੁ ਵਖਰੁ ਵਾਪਾਰੀ ਸੋ ਦ੍ਰਿੜੈ ਭਾਈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥
जो व्यापारी गुरु के शब्द का चिन्तन करता है, वह इस सौदे को दृढ़ता से प्राप्त कर लेता है।

ਧਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਭਾਈ ਮੇਲਿ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰੁ ॥੮॥੨॥
धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥८॥२॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! वह व्यापारी धन्य है, जो गुरु से साक्षात्कार करके नाम का व्यापार करता है ॥ ८ ॥ २ ॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ॥
सोरठि महला १ ॥
सोरठि महला १ ॥

ਜਿਨ੍ਹ੍ਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ੍ ਕੇ ਸਾਥ ਤਰੇ ॥
जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे ॥
हे मेरे प्यारे ! जिन्होंने सतगुरु की सेवा की है, उनके साथी भी भवसागर से पार हो गए हैं।

ਤਿਨ੍ਹ੍ਹਾ ਠਾਕ ਨ ਪਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸਨ ਹਰੇ ॥
तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अम्रित रसन हरे ॥
जिन की रसना हरिनामामृत चखती रहती है, उन्हें भगवान के दरबार में प्रवेश करने में कोई अड़चन नहीं आती।

ਬੂਡੇ ਭਾਰੇ ਭੈ ਬਿਨਾ ਪਿਆਰੇ ਤਾਰੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੧॥
बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥१॥
हे मेरे प्यारे ! जो लोग भगवान के भय बिना पापों के भार से भरे हुए हैं, वे डूब गए हैं, यदि ईश्वर उन पर दया करे तो वे भी भवसागर से पार हो सकते हैं।॥१॥

ਭੀ ਤੂਹੈ ਸਾਲਾਹਣਾ ਪਿਆਰੇ ਭੀ ਤੇਰੀ ਸਾਲਾਹ ॥
भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥
हे प्यारे प्रभु ! मैं हमेशा ही तेरी स्तुति करता हूँ और सदा तेरी ही स्तुति करनी चाहिए।

ਵਿਣੁ ਬੋਹਿਥ ਭੈ ਡੁਬੀਐ ਪਿਆਰੇ ਕੰਧੀ ਪਾਇ ਕਹਾਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्यारे ! नाम-जहाज के बिना मनुष्य भवसागर में ही डूब जाता है और वह कैसे दूसरे किनारे को पा सकता है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਣਾ ਪਿਆਰੇ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥
हे प्यारे ! हमें महामहिम परमात्मा की महिमा करनी चाहिए चूंकि उसके अलावा दूसरा कोई भी महिमा के योग्य नहीं।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਸਾਲਾਹਨਿ ਸੇ ਭਲੇ ਪਿਆਰੇ ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਰੰਗੁ ਹੋਇ ॥
मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥
जो मेरे प्रभु की प्रशंसा करते हैं, वे श्रेष्ठ हैं, वे शब्द के साथ मग्न रहते हैं और उन्हें प्रभु के प्रेम-रंग की देन मिलती है।

ਤਿਸ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਜੇ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਰਸੁ ਲੈ ਤਤੁ ਵਿਲੋਇ ॥੨॥
तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥२॥
हे प्यारे ! यदि में भी उनकी संगति में मिल जाऊँ तो नाम-रस को लेकर तत्त्व का मंथन करूं ॥२॥

ਪਤਿ ਪਰਵਾਨਾ ਸਾਚ ਕਾ ਪਿਆਰੇ ਨਾਮੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥
पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥
हे प्यारे ! सत्य-नाम ही प्रभु की दरगाह में जाने के लिए परवाना है और यही जीव की प्रतिष्ठा है।

ਆਇਆ ਲਿਖਿ ਲੈ ਜਾਵਣਾ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣੁ ॥
आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥
इस दुनिया में आकर मनुष्य को इस प्रकार का परवाना लेकर जाना चाहिए और हुक्म करने वाले भगवान के हुक्म से परिचित होना चाहिए।

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂਝੀਐ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚੇ ਸਾਚਾ ਤਾਣੁ ॥੩॥
गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥३॥
गुरु के बिना परमात्मा के हुक्म की सूझ नहीं आती और उस सच्चे प्रभु का बल सत्य है ॥३॥

ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਨਿੰਮਿਆ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੈ ਉਦਰ ਮਝਾਰਿ ॥
हुकमै अंदरि निमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥
हे प्यारे ! परमात्मा के हुक्म में ही प्राणी माता के गर्भ में आता है और उसके हुक्म में वह माता के गर्भ में ही विकसित होता है।

ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਜੰਮਿਆ ਪਿਆਰੇ ਊਧਉ ਸਿਰ ਕੈ ਭਾਰਿ ॥
हुकमै अंदरि जमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥
हे प्यारे ! ईश्वर हुक्म में ही प्राणी माता के गर्भ में सिर के भार उल्टा होकर जन्म लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਦਰਗਹ ਜਾਣੀਐ ਪਿਆਰੇ ਚਲੈ ਕਾਰਜ ਸਾਰਿ ॥੪॥
गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥४॥
हे प्यारे ! गुरुमुख मनुष्य ईश्वर दरबार में सम्मानित होता है और अपने सभी कार्य संवार कर दुनिया से चल देता है॥ ४॥

ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਆਇਆ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੇ ਜਾਦੋ ਜਾਇ ॥
हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥
हे प्यारे ! मनुष्य भगवान के हुक्म में इस दुनिया में आया है और हुक्म में ही दुनिया से चले जाना है।

ਹੁਕਮੇ ਬੰਨ੍ਹਿ ਚਲਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਮਨਮੁਖਿ ਲਹੈ ਸਜਾਇ ॥
हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥
हुक्म में ही मनुष्य बांधकर दुनिया से भेज दिया जाता है और मनमुख व्यक्ति भगवान के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है।

ਹੁਕਮੇ ਸਬਦਿ ਪਛਾਣੀਐ ਪਿਆਰੇ ਦਰਗਹ ਪੈਧਾ ਜਾਇ ॥੫॥
हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥५॥
हे प्यारे ! ईश्वर के हुक्म में जीव शब्द की पहचान करता है और दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥ ५॥

ਹੁਕਮੇ ਗਣਤ ਗਣਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਹੁਕਮੇ ਹਉਮੈ ਦੋਇ ॥
हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥
ईश्वर के हुक्म में ही मनुष्य कर्मों की गणनाएँ गिनता है और ईश्वर के हुक्म में ही अभिमान एवं अहंत्व उत्पन्न होते हैं।

ਹੁਕਮੇ ਭਵੈ ਭਵਾਈਐ ਪਿਆਰੇ ਅਵਗਣਿ ਮੁਠੀ ਰੋਇ ॥
हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥
हे प्यारे ! ईश्वर के हुक्म में ही मनुष्य कर्मों में जकड़ा हुआ भटकता फिरता है और बुराइयों में ठगी हुई दुनिया विलाप करती है।

ਹੁਕਮੁ ਸਿਞਾਪੈ ਸਾਹ ਕਾ ਪਿਆਰੇ ਸਚੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਹੋਇ ॥੬॥
हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥६॥
यदि मनुष्य ईश्वर के हुक्म को समझ ले तो उसे सत्य की प्राप्ति होती है और उसकी दुनिया में बहुत शोभा होती है॥ ६॥

ਆਖਣਿ ਅਉਖਾ ਆਖੀਐ ਪਿਆਰੇ ਕਿਉ ਸੁਣੀਐ ਸਚੁ ਨਾਉ ॥
आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥
हे प्यारे ! भगवान के नाम का बखान करना बड़ा कठिन है, फिर हम कैसे सत्य नाम को कह एवं सुन सकते हैं।

ਜਿਨ੍ੀ ਸੋ ਸਾਲਾਹਿਆ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਤਿਨ੍ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥
हे प्यारे ! जिन्होंने ईश्वर का स्तुतिगान किया है, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਉ ਮਿਲੈ ਸੰਤੋਖੀਆਂ ਪਿਆਰੇ ਨਦਰੀ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਉ ॥੭॥
नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥७॥
ईश्वर के नाम को प्राप्त करके मुझे बड़ा संतोष हुआ है और उसकी कृपा से मैं उसके संग मिल गया हूँ ॥७॥

ਕਾਇਆ ਕਾਗਦੁ ਜੇ ਥੀਐ ਪਿਆਰੇ ਮਨੁ ਮਸਵਾਣੀ ਧਾਰਿ ॥
काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥
हे प्यारे ! यदि मेरा यह शरीर कागज बन जाए मन को दवात मान लिया जाए और

ਲਲਤਾ ਲੇਖਣਿ ਸਚ ਕੀ ਪਿਆਰੇ ਹਰਿ ਗੁਣ ਲਿਖਹੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥
यदि मेरी यह जिव्हा सत्य की कलम बन जाए तो मैं विचार करके उस परमेश्वर की ही महिमा लिखूंगा।

ਧਨੁ ਲੇਖਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚੁ ਲਿਖੈ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥੮॥੩॥
धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥८॥३॥
नानक का कथन है कि हे प्यारे ! वह लिखने वाला धन्य है जो सत्य नाम को अपने हृदय में धारण करता और लिखता है ॥८॥३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੧ ਪਹਿਲਾ ਦੁਤੁਕੀ ॥
सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥
सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥

ਤੂ ਗੁਣਦਾਤੌ ਨਿਰਮਲੋ ਭਾਈ ਨਿਰਮਲੁ ਨਾ ਮਨੁ ਹੋਇ ॥

तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥

हे ईश्वर ! तू हमें गुण प्रदान करने वाला एवं पवित्र-पावन है लेकिन हम जीवों का मन पवित्र नहीं होता।

ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਨਿਰਗੁਣੇ ਭਾਈ ਤੁਝ ਹੀ ਤੇ ਗੁਣੁ ਸੋਇ ॥੧॥

हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥१॥

हम बड़े अपराधी एवं गुणविहीन हैं और तुझ से ही गुणों की उपलब्धि हो सकती है ॥ १॥

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮਾ ਤੂ ਕਰਤਾ ਕਰਿ ਵੇਖੁ ॥

मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥

हे मेरे प्रियतम ! तू जग का रचयिता है और तू ही सबको पैदा करके देखता रहता है।

ਹਉ ਪਾਪੀ ਪਾਖੰਡੀਆ ਭਾਈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮ ਵਿਸੇਖੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥

मैं बड़ा पापी एवं पाखण्डी हूँ और मेरे मन एवं तन के भीतर अपना विशेष नाम स्थापित कर दो ॥ रहाउ॥

ਬਿਖੁ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਮੋਹਿਆ ਭਾਈ ਚਤੁਰਾਈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥
बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥
हे प्रियवर ! विषैली माया ने मनुष्य के मन को मोहित कर दिया है और उसने चतुराई द्वारा अपनी इज्जत गंवा दी है।

ਚਿਤ ਮਹਿ ਠਾਕੁਰੁ ਸਚਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਜੇ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਸਮੋਇ ॥੨॥
चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥२॥
हे भाई ! यदि गुरु का ज्ञान मन में समा जाए तो ही सच्चा ठाकुर चित में बस जाता है॥ २॥

ਰੂੜੌ ਰੂੜੌ ਆਖੀਐ ਭਾਈ ਰੂੜੌ ਲਾਲ ਚਲੂਲੁ ॥
रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥
हमारे ठाकुर जी को तो बहुत सुन्दर, मनोहर कहा जाता है, वह तो गहरे लाल रंग जैसा मनोहर है।

ਜੇ ਮਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਬੈਰਾਗੀਐ ਭਾਈ ਦਰਿ ਘਰਿ ਸਾਚੁ ਅਭੂਲੁ ॥੩॥
जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥३॥
हे भाई ! यदि मन भगवान के साथ मोहब्बत कर ले तो वह उसके दरबार में सत्यशील एवं भूल-रहित माना जाता है।॥ ३॥

ਪਾਤਾਲੀ ਆਕਾਸਿ ਤੂ ਭਾਈ ਘਰਿ ਘਰਿ ਤੂ ਗੁਣ ਗਿਆਨੁ ॥
पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥
हे परमेश्वर ! तू ही आकाश एवं पाताल में समाया हुआ है और सबके हृदय में तेरे ही गुण एवं ज्ञान मौजूद है।

ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਭਾਈ ਚੂਕਾ ਮਨਹੁ ਗੁਮਾਨੁ ॥੪॥
गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥४॥
हे भाई ! गुरु से साक्षात्कार होने पर ही सुख की उपलब्धि होती है और मन से घमण्ड दूर हो जाता है॥ ४॥

ਜਲਿ ਮਲਿ ਕਾਇਆ ਮਾਜੀਐ ਭਾਈ ਭੀ ਮੈਲਾ ਤਨੁ ਹੋਇ ॥
जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥
हे भाई ! इस काया को जल से भलीभांति मलकर स्वच्छ किया जाए तो भी यह तन फिर भी मैला ही रहता है।

ਗਿਆਨਿ ਮਹਾ ਰਸਿ ਨਾਈਐ ਭਾਈ ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥੫॥
गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥५॥
यदि ज्ञान के महारस से स्नान किया जाए तो मन एवं तन निर्मल हो जाते हैं॥ ५॥

ਦੇਵੀ ਦੇਵਾ ਪੂਜੀਐ ਭਾਈ ਕਿਆ ਮਾਗਉ ਕਿਆ ਦੇਹਿ ॥
देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥
हे भाई ! देवी-देवताओं की (मूर्ति) पूजा करके मनुष्य क्या मांग सकता है और देवी-देवता भी क्या दे सकते हैं ?

ਪਾਹਣੁ ਨੀਰਿ ਪਖਾਲੀਐ ਭਾਈ ਜਲ ਮਹਿ ਬੂਡਹਿ ਤੇਹਿ ॥੬॥
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥६॥
देवताओं की मूर्तियों का जल से स्नान करवाया जाता है, हे भाई ! परन्तु वह पत्थर स्वयं ही जल में डूब जाते हैं।॥६॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਅਲਖੁ ਨ ਲਖੀਐ ਭਾਈ ਜਗੁ ਬੂਡੈ ਪਤਿ ਖੋਇ ॥
गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥
गुरु के बिना अदृश्य परमात्मा की पहचान नहीं हो सकती और मोह-माया में आसक्त यह गुरु के बिना अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर डूब जाती है।

ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਹਾਥਿ ਵਡਾਈਆ ਭਾਈ ਜੈ ਭਾਵੈ ਤੈ ਦੇਇ ॥੭॥
मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥७॥
हे भाई ! सारी बड़ाई तो मेरे ठाकुर जी के हाथ में है, यदि उसे मंजूर हो तो ही बड़ाई देता है॥ ७॥

ਬਈਅਰਿ ਬੋਲੈ ਮੀਠੁਲੀ ਭਾਈ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਪਿਰ ਭਾਇ ॥
बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥
जो जीव-स्त्री मधुर वचन बोलती है और सत्य वचन कहती है, वह अपने पति-परमेश्वर को अच्छी लगने लगती है।

ਬਿਰਹੈ ਬੇਧੀ ਸਚਿ ਵਸੀ ਭਾਈ ਅਧਿਕ ਰਹੀ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥੮॥
बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ॥८॥
वह अपने स्वामी के प्रेम में आकर्षित हुई सत्य में निवास करती है और प्रभु के नाम में ही मग्न रहती है।॥ ८ ॥

ਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਆਪਣਾ ਭਾਈ ਗੁਰ ਤੇ ਬੁਝੈ ਸੁਜਾਨੁ ॥
सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥
हे भाई ! मनुष्य सभी को अपना ही कहता है अर्थात् मोह-माया में फंसकर हरेक वस्तु पर अपना ही अधिकार समझता है लेकिन यदि गुरु द्वारा सूझ प्राप्त हो जाए तो वह बुद्धिमान बन जाता है।

ਜੋ ਬੀਧੇ ਸੇ ਊਬਰੇ ਭਾਈ ਸਬਦੁ ਸਚਾ ਨੀਸਾਨੁ ॥੯॥
जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥९॥
जो व्यक्ति अपने प्रभु के प्रेम में बिंधे हुए हैं, वे भवसागर से पार हो गए हैं और उनके पास दरगाह में जाने के लिए शब्द रूपी परवाना है।॥९॥

ਈਧਨੁ ਅਧਿਕ ਸਕੇਲੀਐ ਭਾਈ ਪਾਵਕੁ ਰੰਚਕ ਪਾਇ ॥
ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥
हे भाई ! यदि अधिकतर ईधन संग्रह करके उसे जरा-सी अग्नि प्रज्वलित कर दी जाए तो वह जलकर भस्म हो जाता है;

ਖਿਨੁ ਪਲੁ ਨਾਮੁ ਰਿਦੈ ਵਸੈ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਮਿਲਣੁ ਸੁਭਾਇ ॥੧੦॥੪॥
खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥१०॥४॥
हे नानक ! यूं ही यदि एक क्षण एवं पल भर के लिए नाम हृदय में बस जाए तो फिर सहज ही ईश्वर से मिलन हो जाता है ॥१०॥४॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੧ ਤਿਤੁਕੀ
सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी
सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭਗਤਾ ਦੀ ਸਦਾ ਤੂ ਰਖਦਾ ਹਰਿ ਜੀਉ ਧੁਰਿ ਤੂ ਰਖਦਾ ਆਇਆ ॥
भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥
हे हरि ! तू सदैव ही अपने भक्तों की रक्षा करता आया है, जगत-रचना से ही उनकी लाज बचाता आया है।

ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਜਨ ਤੁਧੁ ਰਾਖਿ ਲਏ ਹਰਿ ਜੀਉ ਹਰਣਾਖਸੁ ਮਾਰਿ ਪਚਾਇਆ ॥
प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥
अपने भक्त प्रहलाद की तूने ही रक्षा की थी और तूने ही नृसिंह अवतार धारण करके दैत्य हिरण्यकशिपु का वध करके उसे नष्ट कर दिया था।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਤੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਜੀਉ ਮਨਮੁਖ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥੧॥
गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥१॥
हे प्रभु जी ! गुरुमुख व्यक्तियों की तुझ पर पूर्ण आस्था है किन्तु मनमुख व्यक्ति भ्रम में ही भटकते रहते हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀ ਏਹ ਤੇਰੀ ਵਡਿਆਈ ॥
हरि जी एह तेरी वडिआई ॥
हे परमेश्वर ! यह तेरी ही बड़ाई है।

ਭਗਤਾ ਕੀ ਪੈਜ ਰਖੁ ਤੂ ਸੁਆਮੀ ਭਗਤ ਤੇਰੀ ਸਰਣਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥
हे स्वामी ! तू अपने भक्तों की लाज रखना, क्योंकि भक्त तो तेरी ही शरण में रहते हैं।॥ रहाउ॥

ਭਗਤਾ ਨੋ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਕਾਲੁ ਨ ਨੇੜੈ ਜਾਈ ॥
भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥
भक्तों को तो यमराज भी स्पर्श नहीं कर सकता और न ही काल (मृत्यु) उनके निकट जाता है।

ਕੇਵਲ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਨਾਮੇ ਹੀ ਮੁਕਤਿ ਪਾਈ ॥
केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥
भक्तों के मन में तो केवल राम-नाम ही बसा हुआ है और नाम द्वारा ही वे मुक्ति प्राप्त करते हैं।

ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਸਭ ਭਗਤਾ ਚਰਣੀ ਲਾਗੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਈ ॥੨॥
रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥२॥
गुरु के सहज स्वभाव के कारण सभी ऋद्धियाँ एवं सिद्धियाँ भक्तों के चरणों में लगी रहती हैं।॥२॥

ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਵੀ ਅੰਤਰਿ ਲੋਭ ਸੁਆਉ ॥
मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥
स्वेच्छाचारी पुरुषों के भीतर तो भगवान के प्रति बिल्कुल आस्था नहीं होती, उनके भीतर तो लोभ एवं स्वार्थ की भावना ही बनी रहती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਿਰਦੈ ਸਬਦੁ ਨ ਭੇਦਿਓ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਨ ਲਾਗਾ ਭਾਉ ॥
गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥
गुरु के सान्निध्य में रहकर उनके हृदय में शब्द का भेदन नहीं होता और न ही हरि-नाम से उनका प्रेम होता है।

ਕੂੜ ਕਪਟ ਪਾਜੁ ਲਹਿ ਜਾਸੀ ਮਨਮੁਖ ਫੀਕਾ ਅਲਾਉ ॥੩॥

कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥३॥

मनमुख व्यक्ति हमेशा ही रुक्ष एवं कटु वचन बोलते हैं और उनके झूठ एवं कपट का ढोंग प्रत्यक्ष होकर उतर जाता है।॥३॥

ਭਗਤਾ ਵਿਚਿ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਭਗਤੀ ਹੂ ਤੂ ਜਾਤਾ ॥

भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥

हे प्रभु ! तू स्वयं ही अपने भक्तों में प्रवृत रहता है; तू भक्ति के द्वारा ही जाना जाता है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਸਭ ਲੋਕ ਹੈ ਤੇਰੀ ਤੂ ਏਕੋ ਪੁਰਖੁ ਬਿਧਾਤਾ ॥

माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥

तेरी माया का मोह सब लोगों में रमा हुआ है और एक तू ही परमपुरुष विधाता है।

ਹਉਮੈ ਮਾਰਿ ਮਨਸਾ ਮਨਹਿ ਸਮਾਣੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਪਛਾਤਾ ॥੪॥
हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥४॥
अपने आत्माभिमान को नष्ट करके एवं तृष्णा को मन में ही मिटा कर मैंने गुरु के शब्द द्वारा परम-सत्य को पहचान लिया है ॥४॥

ਅਚਿੰਤ ਕੰਮ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਭ ਤਿਨ ਕੇ ਜਿਨ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਪਿਆਰਾ ॥
अचिंत कम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥
जिन लोगों को हरि का नाम प्यारा लगता है, प्रभु उनके सभी कार्य सहज ही संवार देता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਸਦਾ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸਭਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥
गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥
सभी कार्य संवारने वाला परमात्मा गुरु की अपार कृपा से सदा ही मन में बसा रहता है।

ਓਨਾ ਕੀ ਰੀਸ ਕਰੇ ਸੁ ਵਿਗੁਚੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਹੈ ਰਖਵਾਰਾ ॥੫॥
ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥५॥
जिनका मेरा हरि-प्रभु रखवाला है, जो उनकी रीस करता है, वह नष्ट हो जाता है ॥५॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਮਨਮੁਖਿ ਭਉਕਿ ਮੁਏ ਬਿਲਲਾਈ ॥
बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥
सतगुरु की सेवा किए बिना कभी किसी को परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई। मनमुख व्यक्ति तो रोते एवं चिल्लाते हुए ही प्राण त्याग गए हैं और

ਆਵਹਿ ਜਾਵਹਿ ਠਉਰ ਨ ਪਾਵਹਿ ਦੁਖ ਮਹਿ ਦੁਖਿ ਸਮਾਈ ॥
आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥
योनि-चक्र में फँसकर जन्मते-मरते ही रहते हैं और कोई सुख का स्थान नहीं पाते। वे तो दुःख में दुखी रहकर मिट जाते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵੈ ਸਹਜੇ ਸਾਚਿ ਸਮਾਈ ॥੬॥
गुरमुखि होवै सु अम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥६॥
यदि कोई गुरुमुख बन जाता है तो वह नामामृत का पान करके सहज ही सत्य में समा जाता है॥ ६॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸੇਵੇ ਜਨਮੁ ਨ ਛੋਡੈ ਜੇ ਅਨੇਕ ਕਰਮ ਕਰੈ ਅਧਿਕਾਈ ॥
बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥
सतगुरु की सेवा किए बिना मनुष्य को जन्मों का बन्धन नहीं छोड़ता, चाहे वे कितने ही प्रकार के अनेक कर्मकाण्ड करता रहे।

ਵੇਦ ਪੜਹਿ ਤੈ ਵਾਦ ਵਖਾਣਹਿ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਪਤਿ ਗਵਾਈ ॥
वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥
जो वेदों का अध्ययन करते हैं, वे भी वाद-विवाद में ही रहते हैं और परमात्मा के बिना अपना मान-सम्मान गंवा देते हैं।

ਸਚਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਚੀ ਜਿਸੁ ਬਾਣੀ ਭਜਿ ਛੁਟਹਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ॥੭॥
सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥७॥
सतगुरु सत्य है, जिसकी वाणी भी सत्य है। गुरु की शरण में आने से ही मनुष्य की मुक्ति हो जाती है।॥७॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੇ ਦਰਿ ਸਾਚੇ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਚਿਆਰਾ ॥
जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥
जिनके हृदय में ईश्वर का वास हो गया है, वे उसके दरबार में सच्चे हैं और सत्य के दरबार में वे सत्यशील ही कहलाए जाते हैं।

ਓਨਾ ਦੀ ਸੋਭਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਹੋਈ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰਾ ॥
ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥
उनकी शोभा युगों-युगान्तरों में लोकप्रिय होती है और कोई भी इसे मिटा नहीं सकता।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਿਨ ਹਰਿ ਰਾਖਿਆ ਉਰਿ ਧਾਰਾ ॥੮॥੧॥
नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥८॥१॥
जिन्होंने भगवान को अपने हृदय में धारण किया हुआ है; नानक हमेशा ही उन पर कुर्बान जाता है ॥८॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ਦੁਤੁਕੀ ॥
सोरठि महला ३ दुतुकी ॥
सोरठि महला ३ दुतुकी ॥

ਨਿਗੁਣਿਆ ਨੋ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਲਏ ਭਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਲਾਇ ॥
निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥
हे भाई ! सतगुरु की सेवा में लगाकर ईश्वर स्वयं ही गुणविहीन जीवों को क्षमा कर देता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਊਤਮ ਹੈ ਭਾਈ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥੧॥
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥१॥
सतगुरु की सेवा बड़ी उत्तम है, चूंकि इसके फलस्वरूप ही चित राम-नाम में संलग्न हो जाता है ॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਆਪੇ ਬਖਸਿ ਮਿਲਾਇ ॥
हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥
परमेश्वर स्वयं ही जीव को क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है।

ਗੁਣਹੀਣ ਹਮ ਅਪਰਾਧੀ ਭਾਈ ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਲਏ ਰਲਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥
हे भाई ! हम बड़े गुणविहीन एवं अपराधी हैं लेकिन पूर्ण सतगुरु ने कृपा करके हमें अपने साथ मिला लिया है॥ रहाउ॥

ਕਉਣ ਕਉਣ ਅਪਰਾਧੀ ਬਖਸਿਅਨੁ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥
हे प्यारे ! शब्द गुरु का चिन्तन करने से भगवान ने कितने ही अपराधियों को क्षमा कर दिया है।

ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਅਨੁ ਭਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਬੇੜੈ ਚਾੜਿ ॥੨॥
भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥२॥
भगवान ने सतगुरु रूपी जहाज पर सवार करवा कर कितने ही जीवों को भवसागर से पार कर दिया है॥ २॥

ਮਨੂਰੈ ਤੇ ਕੰਚਨ ਭਏ ਭਾਈ ਗੁਰੁ ਪਾਰਸੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥
मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥
हे भाई ! गुरु रूपी पारस के मिलाप में मिलन होने से हम जले हुए लोहे से स्वर्ण अर्थात् गुणवान बन गए हैं।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਨਾਉ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਭਾਈ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥
आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥३॥
आत्माभिमान को त्याग देने से नाम हमारे हृदय में बस गया है और हमारी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है ॥३॥

ਹਉ ਵਾਰੀ ਹਉ ਵਾਰਣੈ ਭਾਈ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥
हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥
हे भाई ! मैं गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਜਿਨਿ ਦਿਤਾ ਭਾਈ ਗੁਰਮਤਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਉ ॥੪॥
नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥४॥
जिसने हमें नाम का भण्डार दिया है, गुरु-उपदेश द्वारा हम सहज अवस्था में समा गए हैं।॥ ४॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਸਹਜੁ ਨ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਪੂਛਹੁ ਗਿਆਨੀਆ ਜਾਇ ॥
गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥
गुरु के बिना सहज अवस्था उत्पन्न नहीं होती; चाहे इस बारे ज्ञानियों से जाकर पूछ लो।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਦਾ ਕਰਿ ਭਾਈ ਵਿਚਹੁ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥੫॥
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥
हे भाई ! अपने मन से अपने आत्माभिमान को दूर करके हमेशा ही सतगुरु की सेवा करो ॥५॥

ਗੁਰਮਤੀ ਭਉ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਭਉ ਕਰਣੀ ਸਚੁ ਸਾਰੁ ॥
गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥
गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु का भय-प्रेम उत्पन्न होता है और प्रभु के भय-प्रेम में किए गए सभी कर्म सत्य एवं श्रेष्ठ हैं।

ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਈਐ ਭਾਈ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਆਧਾਰੁ ॥੬॥
प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥६॥
तब मनुष्य को प्रभु के प्रेम का पदार्थ (धन) प्राप्त हो जाता है और सत्य नाम ही उसका आधार बन जाता है॥ ६॥

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਆਪਣਾ ਭਾਈ ਤਿਨ ਕੈ ਹਉ ਲਾਗਉ ਪਾਇ ॥
जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥
हे भाई जो अपने सतगुरु की निष्काम सेवा करते हैं, हम उनके चरण स्पर्श करते हैं।

ਜਨਮੁ ਸਵਾਰੀ ਆਪਣਾ ਭਾਈ ਕੁਲੁ ਭੀ ਲਈ ਬਖਸਾਇ ॥੭॥
जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥७॥
हमने अपना अमूल्य मानव-जन्म सफल कर लिया है और अपने वंश के लिए भी क्षमा-दान प्राप्त कर लिया है ॥७॥

ਸਚੁ ਬਾਣੀ ਸਚੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਭਾਈ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹੋਇ ॥
सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥
हे भाई ! वाणी सत्य है और (गुरु का) शब्द भी सत्य है और इसकी उपलब्धि गुरु की कृपा से ही होती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵਸੈ ਭਾਈ ਤਿਸੁ ਬਿਘਨੁ ਨ ਲਾਗੈ ਕੋਇ ॥੮॥੨॥
नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥८॥२॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! जिसके मन में हरि-नाम का वास हो गया है, उसे कोई भी विघ्न नहीं लगता ॥८॥२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੩ ॥
सोरठि महला ३ ॥
सोरठि महला ३ ॥

ਹਰਿ ਜੀਉ ਸਬਦੇ ਜਾਪਦਾ ਭਾਈ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਮਿਲਾਇ ॥
हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥
हे भाई ! परमात्मा तो गुरु के शब्द द्वारा ही ज्ञात होता है, जो पूर्ण भाग्य से ही मिलता है।

ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਸੋਹਾਗਣੀ ਭਾਈ ਅਨਦਿਨੁ ਰਤੀਆ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥੧॥
सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥१॥
वे सुहागिन जीव-स्त्रियाँ तो सदा ही सुखपूर्वक रहती हैं जो प्रेम-रंग लगाकर रात-दिन स्वामी के साथ मग्न रहती हैं।॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀ ਤੂ ਆਪੇ ਰੰਗੁ ਚੜਾਇ ॥
हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥
हे परमेश्वर ! तू आप ही उन्हें अपना प्रेम-रंग चढ़ाता है।

ਗਾਵਹੁ ਗਾਵਹੁ ਰੰਗਿ ਰਾਤਿਹੋ ਭਾਈ ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥
हे प्रभु-प्रेम में लीन जीव-स्त्रियो ! ईश्वर से प्रेम लगाकर उसके गुण गाओ॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਕੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਭਾਈ ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥
हे भाई ! जो जीव-स्त्री अपना आत्माभिमान छोड़कर मन लगाकर गुरु की सेवा करती है।

ਸਦਾ ਸਹਜੁ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਲਗਈ ਭਾਈ ਹਰਿ ਆਪਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੨॥
सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥२॥
इस तरह सदा सुख में रहकर उसे फिर कोई दुःख नहीं लगता और ईश्वर स्वयं ही आकर हृदय में निवास कर लेता है॥ २॥

ਪਿਰ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਜਾਣਈ ਭਾਈ ਸਾ ਕੁਲਖਣੀ ਕੁਨਾਰਿ ॥
पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥
हे भाई ! जो जीव-स्त्री अपने प्रियतम के हुक्म को नहीं जानती, वह कुलक्षणी एवं व्यभिचारिणी नारी है और

ਮਨਹਠਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਣੀ ਭਾਈ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੂੜਿਆਰਿ ॥੩॥

मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥३॥

अपना प्रत्येक कार्य अपने मन के हठ से ही करती है, हे भाई ! पति-परमेश्वर के नाम से विहीन होने के कारण वह झूठी है॥ ३॥

ਸੇ ਗਾਵਹਿ ਜਿਨ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਹੈ ਭਾਈ ਭਾਇ ਸਚੈ ਬੈਰਾਗੁ ॥

से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥

जिनके माथे पर शुभ भाग्य है, हे भाई ! वही भगवान का गुणगान करते हैं और सच्चे परमेश्वर के प्रेम द्वारा वे वैराग्यवान बन जाते हैं।

ਅਨਦਿਨੁ ਰਾਤੇ ਗੁਣ ਰਵਹਿ ਭਾਈ ਨਿਰਭਉ ਗੁਰ ਲਿਵ ਲਾਗੁ ॥੪॥

अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥४॥

वे अपनी सुरति निर्भय गुरु के साथ लगाकर रात-दिन प्रभु का यश-गान करने में मग्न रहते हैं।॥ ४॥

ਸਭਨਾ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਦਾ ਭਾਈ ਸੋ ਸੇਵਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥

सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥

हे भाई ! दिन-रात उसकी उपासना करो; जो सभी को मारता एवं पुनः जीवित कर देता है।

ਸੋ ਕਿਉ ਮਨਹੁ ਵਿਸਾਰੀਐ ਭਾਈ ਜਿਸ ਦੀ ਵਡੀ ਹੈ ਦਾਤਿ ॥੫॥

सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥५॥

अपने मन से हम उसे क्यों विस्मृत करें, जिसकी देन बहुत बड़ी है॥ ५॥

ਮਨਮੁਖਿ ਮੈਲੀ ਡੁੰਮਣੀ ਭਾਈ ਦਰਗਹ ਨਾਹੀ ਥਾਉ ॥

मनमुखि मैली डुमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥

हे भाई ! मनमुख जीव-स्त्री बड़ी मैली एवं दुविधाग्रस्त है और भगवान के दरबार में उसे कोई सुख का स्थान नहीं मिलता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਤ ਗੁਣ ਰਵੈ ਭਾਈ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚਿ ਸਮਾਉ ॥੬॥

गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥६॥

यदि वह भी गुरुमुख बन जाए तो ही वह प्रभु का यश गान करने में मग्न होती है और अपने प्रियतम से मिलकर उस सत्य में ही विलीन हो जाती है॥ ६॥

ਏਤੁ ਜਨਮਿ ਹਰਿ ਨ ਚੇਤਿਓ ਭਾਈ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸੀ ਜਾਇ ॥

एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥

हे भाई ! इस जन्म में यदि भगवान का सिमरन नहीं किया तो आगे परलोक में क्या मुँह लेकर जाओगे ?

ਕਿੜੀ ਪਵੰਦੀ ਮੁਹਾਇਓਨੁ ਭਾਈ ਬਿਖਿਆ ਨੋ ਲੋਭਾਇ ॥੭॥
किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥७॥
हम तुझे निर्देश भी देते रहे लेकिन माया के कारण विकारों में फँसकर तूने अपना जीवन ही बर्बाद कर दिया ॥ ७॥

ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਹਿ ਸੁਖਿ ਵਸਹਿ ਭਾਈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਸਾਂਤਿ ਸਰੀਰ ॥
नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीर ॥
हे भाई ! जो भगवान का नाम सिमरन करते हैं, वे सुखी रहते हैं और उनका शरीर भी हमेशा शान्त एवं सुखी रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂ ਭਾਈ ਅਪਰੰਪਰ ਗੁਣੀ ਗਹੀਰ ॥੮॥੩॥
नानक नामु समालि तू भाई अपर्मपर गुणी गहीर ॥८॥३॥
नानक का कथन है कि हे भाई ! तू उस भगवान का नाम-सिमरन करता रह, जो अपरंपार, गुणवान एवं गहन गंभीर है ॥८॥३॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਅਸਟਪਦੀਆ
सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ
सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਭੁ ਜਗੁ ਜਿਨਹਿ ਉਪਾਇਆ ਭਾਈ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ॥
सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥
हे भाई ! जिस ईश्वर ने समूचे जगत को पैदा किया है, वह सब कुछ करने-कराने में समर्थ है।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਜਿਨਿ ਸਾਜਿਆ ਭਾਈ ਦੇ ਕਰਿ ਅਪਣੀ ਵਥੁ ॥
जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥
वह ऐसा परमेश्वर है, जिसने अपनी सत्ता देकर आत्मा एवं शरीर का निर्माण किया है।

ਕਿਨਿ ਕਹੀਐ ਕਿਉ ਦੇਖੀਐ ਭਾਈ ਕਰਤਾ ਏਕੁ ਅਕਥੁ ॥
किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥
उसका किस तरह कथन किया जा सकता है, किस तरह उसके दर्शन किए जा सकते हैं, जो एक ही अकथनीय जग का रचयिता है।

ਗੁਰੁ ਗੋਵਿੰਦੁ ਸਲਾਹੀਐ ਭਾਈ ਜਿਸ ਤੇ ਜਾਪੈ ਤਥੁ ॥੧॥
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु ॥१॥
हे भाई ! उस गोविन्द-गुरु की ही स्तुति करनी चाहिए, जिससे इस तथ्य का ज्ञान होता है॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਭਗਵੰਤਾ ॥
मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥
हे मेरे मन ! हमें तो भगवान का ही भजन करना चाहिए।

ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਦੇਇ ਜਨ ਅਪਨੇ ਦੂਖ ਦਰਦ ਕਾ ਹੰਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥
वह तो सदैव ही अपने भक्तजनों को नाम-दान देता रहता है और दुःख-दर्द का अंत करने वाला है ॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੈ ਘਰਿ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੈ ਭਾਈ ਨਉ ਨਿਧਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥
जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥
हे भाई ! जिसके घर में सब कुछ है, जिसके भण्डार नवनिधियों से भरे हुए हैं;

ਤਿਸ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਭਾਈ ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ॥
तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥
उसका कैसे मूल्यांकन किया जा सकता है, जो स्वयं ही सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਭਾਈ ਨਿਤ ਨਿਤ ਕਰਦਾ ਸਾਰ ॥
जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥
सृष्टि में जितने भी जीव-जन्तु हैं, वह सबका पालन-पोषण करता है और प्रतिदिन उनकी देखरेख करता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਭੇਟੀਐ ਭਾਈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰ ॥੨॥
सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥२॥
हमें पूर्ण सतगुरु से साक्षात्कार करना चाहिए, जो अपने शब्द द्वारा भगवान से मिला देता है॥ २॥

ਸਚੇ ਚਰਣ ਸਰੇਵੀਅਹਿ ਭਾਈ ਭ੍ਰਮੁ ਭਉ ਹੋਵੈ ਨਾਸੁ ॥
सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥
हे भाई ! सच्चे परमेश्वर के चरणों की पूजा करने से भ्रम एवं भय का नाश हो जाता है।

ਮਿਲਿ ਸੰਤ ਸਭਾ ਮਨੁ ਮਾਂਜੀਐ ਭਾਈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਸੁ ॥

मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥

संतों की पावन सभा में सम्मिलित होकर अपने मन को स्वच्छ करना चाहिए, तो ही भगवान के नाम का मन में निवास हो जाता है।

ਮਿਟੈ ਅੰਧੇਰਾ ਅਗਿਆਨਤਾ ਭਾਈ ਕਮਲ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥

फिर अज्ञानता का अन्धेरा मिट जाता है और हृदय-कमल उज्ज्वल हो जाता है।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਭਾਈ ਸਭਿ ਫਲ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥੩॥

गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥३॥

गुरु के वचन से ही मन में सुख पैदा होता है और सतगुरु के पास सब फल हैं॥ ३॥

ਮੇਰਾ ਤੇਰਾ ਛੋਡੀਐ ਭਾਈ ਹੋਈਐ ਸਭ ਕੀ ਧੂਰਿ ॥
मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥
हे भाई ! 'मेरा-तेरा' की भावना त्याग देनी चाहिए और सबकी चरणों की धूल बन जाना चाहिए।

ਘਟਿ ਘਟਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਾਰਿਆ ਭਾਈ ਪੇਖੈ ਸੁਣੈ ਹਜੂਰਿ ॥
घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥
ईश्वर तो घट-घट में विद्यमान है और वह प्रत्यक्ष सबको देखता एवं सुनता है।

ਜਿਤੁ ਦਿਨਿ ਵਿਸਰੈ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮੁ ਭਾਈ ਤਿਤੁ ਦਿਨਿ ਮਰੀਐ ਝੂਰਿ ॥
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥
हे भाई ! जिस दिन भी मनुष्य को परब्रह्म विस्मृत हो जाता है, उस दिन उसे अफसोस से मर जाना चाहिए।

ਕਰਨ ਕਰਾਵਨ ਸਮਰਥੋ ਭਾਈ ਸਰਬ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰਿ ॥੪॥
करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥४॥
हे भाई ! सृष्टि का मूल परमात्मा सभी कार्य करने-कराने में समर्थ है, वह सर्वकला सम्पूर्ण है ॥४॥

ਪ੍ਰੇਮ ਪਦਾਰਥੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਭਾਈ ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਬਿਨਾਸੁ ॥
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥
भगवान का नाम ऐसा प्रेम रूपी बहुमूल्य धन है, जिसके कारण माया-मोह का नाश हो जाता है।

ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਾ ਮੇਲਿ ਲਏ ਭਾਈ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥
तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥
हे भाई ! यद्यपि उसे भला लगे तो वह मनुष्य को अपने साथ मिला लेता है और उसके हृदय में नाम का निवास हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਮਲੁ ਪ੍ਰਗਾਸੀਐ ਭਾਈ ਰਿਦੈ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥
गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥
हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में हृदय-कमल प्रफुल्लित होने से हृदय में सत्य की ज्योति का प्रकाश हो जाता है।

ਪ੍ਰਗਟੁ ਭਇਆ ਪਰਤਾਪੁ ਪ੍ਰਭ ਭਾਈ ਮਉਲਿਆ ਧਰਤਿ ਅਕਾਸੁ ॥੫॥
प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥५॥
प्रभु के तेज-प्रताप से धरती एवं आकाश भी कृतार्थ हो गए हैं॥ ५॥

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸੰਤੋਖਿਆ ਭਾਈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਾਗਾ ਭਾਉ ॥
गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥
हे भाई ! पूर्ण गुरदेव ने हमें संतोष प्रदान किया है और अब हमारा दिन-रात भगवान से स्नेह लगा रहता है।

ਰਸਨਾ ਰਾਮੁ ਰਵੈ ਸਦਾ ਭਾਈ ਸਾਚਾ ਸਾਦੁ ਸੁਆਉ ॥
रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥
हमारी रसना हमेशा राम का ही भजन करती है और हमें यही जीवन का सच्चा स्वाद एवं मनोरथ लगता है।

ਕਰਨੀ ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਜੀਵਿਆ ਭਾਈ ਨਿਹਚਲੁ ਪਾਇਆ ਥਾਉ ॥
करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥
हे भाई ! हम तो अपने कानों से हरि का नाम सुन-सुनकर कर ही जीवित हैं और अब हमें अटल स्थान प्राप्त हो गया है।

ਜਿਸੁ ਪਰਤੀਤਿ ਨ ਆਵਈ ਭਾਈ ਸੋ ਜੀਅੜਾ ਜਲਿ ਜਾਉ ॥੬॥
जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥६॥
जिस मन में भगवान के प्रति आस्था नहीं आती, उसे जल जाना ही चाहिए॥ ६॥

ਬਹੁ ਗੁਣ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬੈ ਭਾਈ ਹਉ ਤਿਸ ਕੈ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥
हे भाई ! मेरे मालिक-प्रभु में अनन्त गुण हैं और मैं उस पर ही बलिहारी जाता हूँ।

ਓਹੁ ਨਿਰਗੁਣੀਆਰੇ ਪਾਲਦਾ ਭਾਈ ਦੇਇ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥
ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥
वह तो गुणविहीनों का भी पोषण करता है और निराश्रितों को भी आश्रय देता है।

ਰਿਜਕੁ ਸੰਬਾਹੇ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਭਾਈ ਗੂੜਾ ਜਾ ਕਾ ਨਾਉ ॥
रिजकु स्मबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥
वह हमें श्वास-श्वास से भोजन पहुँचाता है, जिसका नाम बड़ा गहनगंभीर है।

ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਸਾਚਾ ਭੇਟੀਐ ਭਾਈ ਪੂਰਾ ਤਿਸੁ ਕਰਮਾਉ ॥੭॥
जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥७॥
जिसकी सच्चे गुरु से भेंट हो जाती है, उसकी तकदीर पूर्ण है॥ ७॥

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਘੜੀ ਨ ਜੀਵੀਐ ਭਾਈ ਸਰਬ ਕਲਾ ਭਰਪੂਰਿ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥
हे भाई ! हम तो उसके बिना एक घड़ी भी जीवित नहीं रह सकते, जो सर्वकला सम्पूर्ण है।

ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਭਾਈ ਪੇਖਉ ਸਦਾ ਹਜੂਰਿ ॥
सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥
मैं तो अपने किसी श्वास एवं ग्रास से उसे विस्मृत नहीं करता और हमेशा ही उस प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन करता हूँ।

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲਾਇਆ ਭਾਈ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥
साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥
हे भाई ! जो सर्वव्यापक है, सत्संगति ने मुझे उससे मिला दिया है।

ਜਿਨਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਲਗੀਆ ਭਾਈ ਸੇ ਨਿਤ ਨਿਤ ਮਰਦੇ ਝੂਰਿ ॥੮॥
जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥८॥
जो लोग भगवान से प्रेम नहीं करते, वह हमेशा ही दुःखी होकर मरते रहते हैं।॥ ८॥

ਅੰਚਲਿ ਲਾਇ ਤਰਾਇਆ ਭਾਈ ਭਉਜਲੁ ਦੁਖੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥
अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥
भगवान ने हमें अपने आंचल से लगाकर भयानक एवं दुःखों के संसार-सागर से पार कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਆ ਭਾਈ ਕੀਤੋਨੁ ਅੰਗੁ ਅਪਾਰੁ ॥
करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥
उसने अपनी कृपा-दृष्टि करके हमें निहाल कर दिया है और अंत तक बेहद साथ निभाएगा।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇਆ ਭਾਈ ਭੋਜਨੁ ਨਾਮ ਅਧਾਰੁ ॥
मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥
हे भाई ! हमारा मन एवं तन शीतल हो गया है और नाम का भोजन ही हमारा जीवनाधार है।

ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਗਤੀ ਭਾਈ ਜਿ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟਣਹਾਰੁ ॥੯॥੧॥
नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥९॥१॥
नानक तो उस ईश्वर की शरण में है, जो किल्विष-पापों को नाश करने वाला है ॥६॥१॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ॥
सोरठि महला ५ ॥
सोरठि महला ५ ॥

ਮਾਤ ਗਰਭ ਦੁਖ ਸਾਗਰੋ ਪਿਆਰੇ ਤਹ ਅਪਣਾ ਨਾਮੁ ਜਪਾਇਆ ॥
मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥
माता का गर्भ भी दुःख-तकलीफों का गहरा सागर है लेकिन हे प्यारे प्रभु ! वहाँ भी तूने अपने नाम का ही जाप करवाया है।

ਬਾਹਰਿ ਕਾਢਿ ਬਿਖੁ ਪਸਰੀਆ ਪਿਆਰੇ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਆ ॥
बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥
जब माता के गर्भ से जीव बाहर निकला तो उसके भीतर मोह-माया का विष फैल गया।

ਜਿਸ ਨੋ ਕੀਤੋ ਕਰਮੁ ਆਪਿ ਪਿਆਰੇ ਤਿਸੁ ਪੂਰਾ ਗੁਰੂ ਮਿਲਾਇਆ ॥
जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥
हे प्यारे प्रभु ! जिस पर तूने अपनी कृपा की, उसे पूर्ण गुरु से मिला दिया।

ਸੋ ਆਰਾਧੇ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪਿਆਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲਿਵ ਲਾਇਆ ॥੧॥
सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥१॥
गुरु से साक्षात्कार करके वह अपने श्वास-श्वास आराधना करता है और उसकी सुरति राम-नाम से लगा दी ॥१॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ਹੈ ਪਿਆਰੇ ਮਨਿ ਤਨਿ ਤੇਰੀ ਟੇਕ ॥
मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥
हे प्रभु ! हमारे मन एवं तन में तेरा ही सहारा है।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਨਹਾਰੁ ਪਿਆਰੇ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਏਕ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥
तेरे सिवाय अन्य कोई सृजनहार नहीं और एक तू ही अन्तर्यामी है॥ रहाउ॥

ਕੋਟਿ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਆਇਆ ਪਿਆਰੇ ਅਨਿਕ ਜੋਨਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇ ॥
कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥
हे प्यारे ! जीव करोड़ों ही जन्मों में भटकने एवं अनेक योनियों में कष्ट सहन करके इस दुनिया में आता है।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵਿਸਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਬਹੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥
जब जीव सच्चे परमेश्वर को भुला देता है तो उसे कठोर दण्ड मिलता है।

ਜਿਨ ਭੇਟੈ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪਿਆਰੇ ਸੇ ਲਾਗੇ ਸਾਚੈ ਨਾਇ ॥
जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे साचै नाइ ॥
लेकिन जिनकी पूर्ण सतगुरु से भेंट हो जाती है, वे सत्य नाम में तल्लीन हो जाते हैं।

ਤਿਨਾ ਪਿਛੈ ਛੁਟੀਐ ਪਿਆਰੇ ਜੋ ਸਾਚੀ ਸਰਣਾਇ ॥੨॥
तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥२॥
हे प्यारे ! जो लोग सत्य की शरण में आते हैं, उनका अनुसरण करते हुए हम भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।॥ २॥

ਮਿਠਾ ਕਰਿ ਕੈ ਖਾਇਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨਿ ਤਨਿ ਕੀਤਾ ਰੋਗੁ ॥
मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥
हे प्यारे ! मनुष्य लौकिक पदार्थों को मीठा समझते हुए खाता है, लेकिन वह तो शरीर में रोग ही उत्पन्न कर देता है।

ਕਉੜਾ ਹੋਇ ਪਤਿਸਟਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਸ ਤੇ ਉਪਜਿਆ ਸੋਗੁ ॥
कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥
फिर यह कड़वा होकर निकलता है और जिससे शोक ही उत्पन्न होता है।

ਭੋਗ ਭੁੰਚਾਇ ਭੁਲਾਇਅਨੁ ਪਿਆਰੇ ਉਤਰੈ ਨਹੀ ਵਿਜੋਗੁ ॥
भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥
हे प्यारे प्रभु ! तूने जीव को सांसारिक भोगों का लुत्फ प्राप्त करने में भटकाया हुआ है और इससे उसकी वियोग की दूरी खत्म नहीं होती है।

ਜੋ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਉਧਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਧੁਰੇ ਪਇਆ ਸੰਜੋਗੁ ॥੩॥
जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥३॥
हे प्यारे ! जिनका गुरु के मिलन से उद्धार हो गया है, उनका ऐसा ही संयोग लिखा था ॥ ३॥

ਮਾਇਆ ਲਾਲਚਿ ਅਟਿਆ ਪਿਆਰੇ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਹਿ ਮੂਲਿ ॥
माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥
हे प्रभु ! मनुष्य तो धन-दौलत के लालच में ही भरा हुआ है और उसके चित्त में तू कदापि स्मरण नहीं होता।

ਜਿਨ ਤੂ ਵਿਸਰਹਿ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਸੇ ਤਨ ਹੋਏ ਧੂੜਿ ॥
जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥
हे परब्रह्म-परमेश्वर ! जो तुझे भुला देते हैं, उनका शरीर धूल बन जाता है।

ਬਿਲਲਾਟ ਕਰਹਿ ਬਹੁਤੇਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਉਤਰੈ ਨਾਹੀ ਸੂਲੁ ॥
बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥
वे बहुत रोते-चिल्लाते हैं किन्तु उनकी पीड़ा निवृत्त नहीं होती।

ਜੋ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਕਾ ਰਹਿਆ ਮੂਲੁ ॥੪॥
जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥४॥
हे प्यारे ! गुरु से मिलाकर तूने जिनका जीवन संवार दिया है, उनका मूल बरकरार रह गया है॥ ४॥

ਸਾਕਤ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਜਈ ਪਿਆਰੇ ਜੇ ਕਾ ਪਾਰਿ ਵਸਾਇ ॥
साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥
हे प्यारे मित्र ! जहाँ तक मुमकिन हो सके भगवान से विमुख मनुष्य की संगति मत करो।

ਜਿਸੁ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਵਿਸਰੈ ਪਿਆਰੇ ਸੋ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਉਠਿ ਜਾਇ ॥
जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥
जिस विमुख को मिलकर भगवान ही भूल जाता है, फिर कुसंग के कारण मनुष्य तिरस्कृत होकर संसार से चला जाता है।

ਮਨਮੁਖਿ ਢੋਈ ਨਹ ਮਿਲੈ ਪਿਆਰੇ ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥
मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥
हे प्यारे ! मनमुख व्यक्तियों को तो कहीं भी शरण नहीं मिलती और उन्हें भगवान के दरबार में कठोर दण्ड ही प्राप्त होता है।

ਜੋ ਗੁਰ ਮੇਲਿ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨਾ ਪੂਰੀ ਪਾਇ ॥੫॥
जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥५॥
जो लोग गुरु से मिलकर अपना जीवन संवार लेते हैं, उनके सभी कार्य संवर जाते हैं।॥५॥

ਸੰਜਮ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਪਿਆਰੇ ਇਕ ਨ ਚਲੀ ਨਾਲਿ ॥
संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥
हे प्यारे ! जीवन में यदि कोई व्यक्ति हजारों ही युक्तियाँ एवं चतुराईयों का प्रयोग भी क्यों न कर ले किन्तु एक भी युक्ति एवं चतुराई उसका साथ नहीं देती।

ਜੋ ਬੇਮੁਖ ਗੋਬਿੰਦ ਤੇ ਪਿਆਰੇ ਤਿਨ ਕੁਲਿ ਲਾਗੈ ਗਾਲਿ ॥
जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥
जो परमात्मा से विमुख हो जाते हैं, उनका वंश ही कलंकित हो जाता है।

ਹੋਦੀ ਵਸਤੁ ਨ ਜਾਤੀਆ ਪਿਆਰੇ ਕੂੜੁ ਨ ਚਲੀ ਨਾਲਿ ॥
होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥
हे प्यारे ! जो सदैव नाम रूपी वस्तु है, उसे व्यक्ति जानता ही नहीं और झूठ उसके किसी काम नहीं आने वाला।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨਾ ਮਿਲਾਇਓਨੁ ਪਿਆਰੇ ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥੬॥

सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥६॥

हे प्यारे ! ईश्वर जिसे सतगुरु से मिला देता है, वह सत्य नाम का ही चिंतन करता रहता है॥ ६॥

ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਪਿਆਰੇ ਜਿਸ ਨੋ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥

सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥

हे प्यारे ! जिस पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसे सत्यं, संतोष, ज्ञान एवं ध्यान की प्राप्ति हो जाती है।

ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਗੁਣ ਰਵੈ ਪਿਆਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪੂਰ ਭਰੇ ॥

अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अम्रिति पूर भरे ॥

फिर वह रात-दिन भगवान का ही गुणगान करता रहता है और उसका हृदय नामामृत से भरपूर हो जाता है।

ਦੁਖ ਸਾਗਰੁ ਤਿਨ ਲੰਘਿਆ ਪਿਆਰੇ ਭਵਜਲੁ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ॥

दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥

वह जीवन के दु:खों के सागर से पार होकर भवसागर से भी पार हो जाता है।

ਜਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਸੁ ਮੇਲਿ ਲੈਹਿ ਪਿਆਰੇ ਸੇਈ ਸਦਾ ਖਰੇ ॥੭॥

जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥७॥

हे प्यारे प्रभु! जिसे तू पसंद करता है, उसे अपने साथ मिला लेता है और वे सदैव ही सत्यवादी एवं भले हैं।॥७॥

ਸੰਮ੍ਰਥ ਪੁਰਖੁ ਦਇਆਲ ਦੇਉ ਪਿਆਰੇ ਭਗਤਾ ਤਿਸ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥

सम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥

हे प्यारे ! ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, दीन-दयालु एवं ज्योतिर्मय है और भक्तों को तो उसका ही सहारा है।

ਤਿਸੁ ਸਰਣਾਈ ਢਹਿ ਪਏ ਪਿਆਰੇ ਜਿ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਣੁ ॥

तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥

जो बड़ा अन्तर्यामी एवं दक्ष है, भक्त उसकी शरण में ही पड़े रहते हैं।

ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਵਾਰਿਆ ਪਿਆਰੇ ਮਸਤਕਿ ਸਚੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥

हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥

हे प्यारे ! भगवान ने तो हमारा लोक-परलोक ही संवार दिया है और मस्तक पर सत्य का चिन्ह अंकित कर दिया है।

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਪਿਆਰੇ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥੮॥੨॥
सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥८॥२॥
हे प्यारे ! वह प्रभु कदापि विस्मृत न हो चूंकि नानक तो सदा ही उस पर कुर्बान जाता है ॥८॥२॥

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਅਸਟਪਦੀਆ
सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ
सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਪਾਠੁ ਪੜਿਓ ਅਰੁ ਬੇਦੁ ਬੀਚਾਰਿਓ ਨਿਵਲਿ ਭੁਅੰਗਮ ਸਾਧੇ ॥
पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥
मनुष्य ने अपने जीवन में विभिन्न पाठों का अध्ययन और वेदों का चिन्तन किया। उसने योगासन श्वास-नियन्त्रण एवं कुण्डलिनी की साधना भी की किन्तु फिर भी

ਪੰਚ ਜਨਾ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਨ ਛੁਟਕਿਓ ਅਧਿਕ ਅਹੰਬੁਧਿ ਬਾਧੇ ॥੧॥
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अह्मबुधि बाधे ॥१॥
उसका पाँचों विकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से साथ नहीं छूटा अपितु वह अधिक अहंकार में ही बंध गया ॥१॥

ਪਿਆਰੇ ਇਨ ਬਿਧਿ ਮਿਲਣੁ ਨ ਜਾਈ ਮੈ ਕੀਏ ਕਰਮ ਅਨੇਕਾ ॥
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥
हे प्यारे ! मैंने भी ऐसे अनेक कर्म किए हैं। लेकिन इन विधियों द्वारा भगवान से मिलन नहीं होता,

ਹਾਰਿ ਪਰਿਓ ਸੁਆਮੀ ਕੈ ਦੁਆਰੈ ਦੀਜੈ ਬੁਧਿ ਬਿਬੇਕਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥
मैं हार-थक प्रभु के द्वार पर आ गया हूँ और उससे यही प्रार्थना करता हूँ कि हे जगत के स्वामी ! दया करके मुझे विवेक-बुद्धि दीजिए॥ रहाउ॥

ਮੋਨਿ ਭਇਓ ਕਰਪਾਤੀ ਰਹਿਓ ਨਗਨ ਫਿਰਿਓ ਬਨ ਮਾਹੀ ॥
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही ॥
मनुष्य मौन धारण करता है, अपने हाथों का ही पतल के रूप में प्रयोग करता है, वह वनों में नग्न भटकता है और

ਤਟ ਤੀਰਥ ਸਭ ਧਰਤੀ ਭ੍ਰਮਿਓ ਦੁਬਿਧਾ ਛੁਟਕੈ ਨਾਹੀ ॥੨॥

तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥२॥

तीर्थों के तटों सहित समस्त धरती में भ्रमण करता है परन्तु फिर भी उसकी दुविधा समाप्त नहीं होती॥ २॥

ਮਨ ਕਾਮਨਾ ਤੀਰਥ ਜਾਇ ਬਸਿਓ ਸਿਰਿ ਕਰਵਤ ਧਰਾਏ ॥
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥
वह अपनी मनोकामना हेतु तीर्थ-स्थान पर जाकर भी बसता है, अपने सिर को आरे के नीचे भी रखवाता है,

ਮਨ ਕੀ ਮੈਲੁ ਨ ਉਤਰੈ ਇਹ ਬਿਧਿ ਜੇ ਲਖ ਜਤਨ ਕਰਾਏ ॥੩॥
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥३॥
चाहे वह इस विधि के लाखों ही उपाय कर ले लेकिन फिर भी उसके मन की मैल दूर नहीं होती।॥३॥

ਕਨਿਕ ਕਾਮਿਨੀ ਹੈਵਰ ਗੈਵਰ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਦਾਨੁ ਦਾਤਾਰਾ ॥
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥
मनुष्य दानी बनकर अनेक प्रकार के दान करता है, जैसे सोना, कन्या (दान), बहुमूल्य हाथी, घोड़े दान करता है।

ਅੰਨ ਬਸਤ੍ਰ ਭੂਮਿ ਬਹੁ ਅਰਪੇ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਹਰਿ ਦੁਆਰਾ ॥੪॥
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥४॥
वह अन्न, वस्त्र एवं बहुत भूमि अर्पित करता है किन्तु फिर भी उसे इस तरह भगवान का द्वार नहीं मिलता ॥ ४॥

ਪੂਜਾ ਅਰਚਾ ਬੰਦਨ ਡੰਡਉਤ ਖਟੁ ਕਰਮਾ ਰਤੁ ਰਹਤਾ ॥
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥
वह पूजा-अर्चना, दण्डवत प्रणाम, षट्-कर्म करने में भी लीन रहता है परन्तु फिर भी

ਹਉ ਹਉ ਕਰਤ ਬੰਧਨ ਮਹਿ ਪਰਿਆ ਨਹ ਮਿਲੀਐ ਇਹ ਜੁਗਤਾ ॥੫॥
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥५॥
बड़ा अहंकार करता हुआ बन्धनों में ही पड़ता है, इन युक्तियों से भी उसे भगवान नहीं मिलता ॥ ५॥

ਜੋਗ ਸਿਧ ਆਸਣ ਚਉਰਾਸੀਹ ਏ ਭੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਹਿਆ ॥
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥
योगियों एवं सिद्धों के चौरासी आसन मनुष्य यह भी कर करके हार ही जाता है,

ਵਡੀ ਆਰਜਾ ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮੈ ਹਰਿ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਨ ਗਹਿਆ ॥੬॥

वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥६॥

वह चाहे लम्बी उम्र ही प्राप्त कर ले परन्तु फिर भी निरंकार से मिलन न होने के कारण बार-बार जन्म लेता हुआ भटकता ही रहता है॥ ६॥

ਰਾਜ ਲੀਲਾ ਰਾਜਨ ਕੀ ਰਚਨਾ ਕਰਿਆ ਹੁਕਮੁ ਅਫਾਰਾ ॥

राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥

मनुष्य राजा बनकर शासन करता है और बड़ा ऐश्वर्य बनाता है, वह प्रजा पर हुक्म चलाता है,

ਸੇਜ ਸੋਹਨੀ ਚੰਦਨੁ ਚੋਆ ਨਰਕ ਘੋਰ ਕਾ ਦੁਆਰਾ ॥੭॥

सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥७॥

शरीर पर चंदन और इत्र लगाकर सुन्दर सेज पर सुख भोगता है परन्तु ये सभी सुख उसे घोर नरक की ओर ही धकेलते हैं।॥७॥

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੈ ਸਿਰਿ ਕਰਮਨ ਕੈ ਕਰਮਾ ॥

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥

सभी कर्मों में सर्वोत्तम कर्म सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि का कीर्तिगान करना है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਭਇਓ ਪਰਾਪਤਿ ਜਿਸੁ ਪੁਰਬ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਨਾ ॥੮॥

कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥

नानक का कथन है कि सत्संगति की उपलब्धि भी उसे ही होती है, जिसके भाग्य में पूर्व जन्मों के कर्मों अनुसार ऐसा लिखा होता है ॥८॥

ਤੇਰੋ ਸੇਵਕੁ ਇਹ ਰੰਗਿ ਮਾਤਾ ॥

तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥

हे परमात्मा ! तेरा सेवक तो इस रंग में ही मग्न है।

ਭਇਓ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧॥੩॥

भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥

दीनों के दुःख नाश करने वाला ईश्वर मुझ पर कृपालु हो गया है, जिससे यह मन अब उसका भजन करने में ही लीन रहता है॥ रहाउ दूसरा ॥ १॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਵਾਰ ਮਹਲੇ ੪ ਕੀ

रागु सोरठि वार महले ४ की

रागु सोरठि वार महले ४ की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੧ ॥
सलोकु मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਸੋਰਠਿ ਸਦਾ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜੇ ਸਚਾ ਮਨਿ ਹੋਇ ॥
सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥
यदि मन में सत्य-(ईश्वर) स्थित हो जाए तो सोरठि रागिनी सदैव सुहावनी है।

ਦੰਦੀ ਮੈਲੁ ਨ ਕਤੁ ਮਨਿ ਜੀਭੈ ਸਚਾ ਸੋਇ ॥
दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥
उसके दांतों पर कोई बुराई-निंदा की मैल न हो, मन में द्वेष-भावना न हो और जीभ सत्य का यशगान करती रहे।

ਸਸੁਰੈ ਪੇਈਐ ਭੈ ਵਸੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਨਿਸੰਗ ॥
ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥
वह लोक-परलोक दोनों में प्रभु-भय में रहती हो और निर्भीक होकर अपने सतगुरु की सेवा करती रहे।

ਪਰਹਰਿ ਕਪੜੁ ਜੇ ਪਿਰ ਮਿਲੈ ਖੁਸੀ ਰਾਵੈ ਪਿਰੁ ਸੰਗਿ ॥
परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥
जब वह लौकिक श्रृंगार त्याग कर अपने प्रियतम के पास जाती है तो वह अपने प्रियतम के साथ सहर्ष सुख भोगती है।

ਸਦਾ ਸੀਗਾਰੀ ਨਾਉ ਮਨਿ ਕਦੇ ਨ ਮੈਲੁ ਪਤੰਗੁ ॥
सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥
अपने मन में नाम से वह सदा अलंकृत रहती है और उसमें कदाचित मैल नहीं होती।

ਦੇਵਰ ਜੇਠ ਮੁਏ ਦੁਖਿ ਸਸੂ ਕਾ ਡਰੁ ਕਿਸੁ ॥
देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥
जब उसके देवर एवं जेठ (कामादिक विकार) दुःखी होकर मर गए हैं तो अब सास (माया) से किस बात का डर ?

ਜੇ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਨਾਨਕਾ ਕਰਮ ਮਣੀ ਸਭੁ ਸਚੁ ॥੧॥
जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥
हे नानक ! यदि जीवात्मा अपने प्रियतम प्रभु को पसंद आ जाए तो उसके लिलाट पर भाग्य-मणि चमक पड़ती है और फिर उसे सब सत्य ही दिखाई देता है ॥१॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸੋਰਠਿ ਤਾਮਿ ਸੁਹਾਵਣੀ ਜਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਢੰਢੋਲੇ ॥
सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥
सोरठि रागिनी तभी सुन्दर लगती है, यदि इसके द्वारा जीवात्मा हरि-नाम की खोज करे।

ਗੁਰ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਵੈ ਆਪਣਾ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੇ ॥
गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥
वह अपने गुरु को प्रसन्न करे और गुरु-उपदेश द्वारा परमेश्वर के नाम का जाप करती रहे।

ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮਿ ਕਸਾਈ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਹਰਿ ਰਤੀ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਚੋਲੇ ॥
हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥
वह दिन-रात प्रभु प्रेम में आकर्षित रहती है और उसके शरीर का पहनावा हरि के प्रेम में लीन हो जाता है।

ਹਰਿ ਜੈਸਾ ਪੁਰਖੁ ਨ ਲਭਈ ਸਭੁ ਦੇਖਿਆ ਜਗਤੁ ਮੈ ਟੋਲੇ ॥
हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥
मैंने समूचा जगत खोज कर देख लिया है परन्तु भगवान जैसा परमपुरुष मुझे कोई नहीं मिला।

ਗੁਰਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਮਨੁ ਅਨਤ ਨ ਕਾਹੂ ਡੋਲੇ ॥
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥
गुरु ने मेरे भीतर परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है, जिससे मेरा मन कहीं ओर डावांडोल नहीं होता।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਗੋਲ ਗੋਲੇ ॥੨॥
जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥२॥
नानक तो परमात्मा का दास है और गुरु-सतगुरु के सेवकों का सेवक है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਤੂ ਆਪੇ ਸਿਸਟਿ ਕਰਤਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਿਆ ॥
तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥
हे सृजनहार ईश्वर ! तू स्वयं ही इस सृष्टि का कर्ता है,

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇ ਤੁਧੁ ਆਪਿ ਸਵਾਰਿਆ ॥
तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥
तूने स्वयं ही यह जगत रूपी खेल रचा है और तूने आप ही इसे सुन्दर बनाया है।

ਦਾਤਾ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਆਪਿ ਭੋਗਣਹਾਰਿਆ ॥
दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥
तू स्वयं ही दाता एवं कर्ता है और आप ही भोगने वाला है।

ਸਭੁ ਤੇਰਾ ਸਬਦੁ ਵਰਤੈ ਉਪਾਵਣਹਾਰਿਆ ॥
सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥
हे दुनिया को पैदा करने वाले ! तेरा शब्द (हुक्म) सर्वव्यापक है।

ਹਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਦਾ ਸਲਾਹੀ ਗੁਰ ਕਉ ਵਾਰਿਆ ॥੧॥
हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥१॥
मैं अपने गुरु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिस गुरु के माध्यम से मैं सदैव ही तेरा स्तुतिगान करता रहता हूँ॥ १॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਹਉਮੈ ਜਲਤੇ ਜਲਿ ਮੁਏ ਭ੍ਰਮਿ ਆਏ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥
अनेक जीव अहंकार की अग्नि में जलते हुए ही प्राण त्याग गए हैं, दुविधा में भटकते हुए अंतः गुरु के पास आए हैं।

ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਆਪਣੈ ਪੰਨੈ ਪਾਇ ॥
पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥
पूर्ण गुरु ने शरण में आए हुए जीवों के कर्मों को अपने लेखे में डालकर उनका कल्याण कर दिया है।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਜਲਤਾ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਇ ॥
इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥
गुरु के शब्द द्वारा सहज ही यह जगत मोह-माया में जलता हुआ नजर आया है।

ਸਬਦਿ ਰਤੇ ਸੇ ਸੀਤਲ ਭਏ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਕਮਾਇ ॥੧॥
सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति शब्द में मग्न हैं, उनके मन शीतल हो गए हैं और अब वे हमेशा सत्य की साधना करते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

ਸਫਲਿਓ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਧੰਨੁ ਜਨਮੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥
सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥
सतगुरु की सेवा बड़ी फलदायक है।

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੀਵਦਿਆ ਮੁਇਆ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਣ ॥
जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥
जो गुरु की सेवा करता है, उसका जन्म धन्य एवं स्वीकृत है। जो जीते एवं मरते समय भी गुरु को विस्मृत नहीं करता, वही चतुर है।

ਕੁਲੁ ਉਧਾਰੇ ਆਪਣਾ ਸੋ ਜਨੁ ਹੋਵੈ ਪਰਵਾਣੁ ॥
कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥
वह अपने वंश का उद्धार कर देता है और उसका जन्म स्वीकार हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੁਏ ਜੀਵਦੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹਹਿ ਮਨਮੁਖ ਜਨਮਿ ਮਰਾਹਿ ॥
गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥
गुरुमुख व्यक्ति जीवन एवं मृत्यु में प्रामाणिक हैं लेकिन मनमुख व्यक्ति जन्मते-मरते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਮੁਏ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਜਿ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति गुरु के शब्द में लीन रहते हैं, उन्हें मृत नहीं कहा जा सकता ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ॥
हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईऐ ॥
निरंजन परमपुरुष परमेश्वर की ही उपासना करो और हरि-नाम का ध्यान-मनन करते रहो।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਾਧੂ ਲਗਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈਐ ॥
सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥
संतों की पावन सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि-नाम में ही लीन होना चाहिए।

ਹਰਿ ਤੇਰੀ ਵਡੀ ਕਾਰ ਮੈ ਮੂਰਖ ਲਾਈਐ ॥
हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥
हे प्रभु ! तेरी सेवा बड़ी महान् है, मुझ मूर्ख को भी अपनी सेवा में लगाओ।

ਹਉ ਗੋਲਾ ਲਾਲਾ ਤੁਧੁ ਮੈ ਹੁਕਮੁ ਫੁਰਮਾਈਐ ॥
हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥
मैं तेरा गुलाम एवं सेवक हूँ, जैसे तुझे अच्छा लगता है, मुझे आज्ञा करो।

ਹਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਾਰ ਕਮਾਵਾ ਜਿ ਗੁਰਿ ਸਮਝਾਈਐ ॥੨॥
हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥२॥
जैसा गुरु उपदेश देता है, गुरुमुख बनकर मैं वही कार्य करूँगा ॥२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ॥

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਜਿ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਲਿਖਿਆਸੁ ॥
पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥
पूर्व कर्मों के अनुसार सृष्टिकर्ता ने जो जीव की तकदीर में लिख दिया है, उसने वही कर्म करना है।

ਮੋਹ ਠਗਉਲੀ ਪਾਈਅਨੁ ਵਿਸਰਿਆ ਗੁਣਤਾਸੁ ॥
मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥
माया ने जीव के मुँह में मोह रूपी ठग बूटी डाल दी है, जिसके कारण उसे गुणों का भण्डार ईश्वर भूल गया है।

ਮਤੁ ਜਾਣਹੁ ਜਗੁ ਜੀਵਦਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਮੁਇਆਸੁ ॥
मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥
इस जगत को जिंदा मत समझो, चूंकि यह तो दुविधा में फँस कर मरा हुआ है।

ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਬਹਣਿ ਨ ਮਿਲਨੀ ਪਾਸਿ ॥
जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥
जिन्होंने गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम को याद नहीं किया, उन्हें उसके पास बैठने का अवसर प्राप्त नहीं होता।

ਦੁਖੁ ਲਾਗਾ ਬਹੁ ਅਤਿ ਘਣਾ ਪੁਤੁ ਕਲਤੁ ਨ ਸਾਥਿ ਕੋਈ ਜਾਸਿ ॥
दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥
वे बहुत अधिक दुःख भोगते हैं और अन्तिम समय उनके पुत्र एवं पत्नी में से कोई भी उनका साथ नहीं देता।

ਲੋਕਾ ਵਿਚਿ ਮੁਹੁ ਕਾਲਾ ਹੋਆ ਅੰਦਰਿ ਉਭੇ ਸਾਸ ॥
लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥
लोगों के भीतर उनका तिरस्कार किया जाता है और वे कठिन श्वास अंदर खींचते हैं।

ਮਨਮੁਖਾ ਨੋ ਕੋ ਨ ਵਿਸਹੀ ਚੁਕਿ ਗਇਆ ਵੇਸਾਸੁ ॥
मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥
मनमुख व्यक्तियों पर कोई भी भरोसा नहीं करता चूंकि उनका भरोसा टूट चुका होता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਾ ਨੋ ਸੁਖੁ ਅਗਲਾ ਜਿਨਾ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥੧॥

नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥१॥

हे नानक ! जिनके अन्तर्मन में परमात्मा के नाम का निवास होता है, उन गुरुमुखों को अपार सुख प्राप्त होता है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥

मः ३ ॥

महला ३॥

ਸੇ ਸੈਣ ਸੇ ਸਜਣਾ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਹਿ ਸੁਭਾਇ ॥

से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥

जो लोग गुरुमुख बनकर सहज-स्वभाव मिलते हैं, वही संबंधी एवं सज्जन हैं।

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਅਨਦਿਨੁ ਕਰਹਿ ਸੇ ਸਚਿ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥

सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥

वे तो रात-दिन सतगुरु की इच्छानुसार ही कार्य करते हैं और सत्य में ही समाए रहते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਲਗੇ ਸਜਣ ਨ ਆਖੀਅਹਿ ਜਿ ਅਭਿਮਾਨੁ ਕਰਹਿ ਵੇਕਾਰ ॥

दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥

जो लोग बड़ा अभिमान एवं पाप करते हुए द्वैतभाव में लीन रहते हैं, उन्हें सज्जन नहीं कहना चाहिए।

ਮਨਮੁਖ ਆਪ ਸੁਆਰਥੀ ਕਾਰਜੁ ਨ ਸਕਹਿ ਸਵਾਰਿ ॥

मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥

मनमुख व्यक्ति स्वयं बड़े स्वार्थी हैं और वे कोई भी कार्य संवार नहीं सकते।

ਨਾਨਕ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਵਣਾ ਕੋਇ ਨ ਮੇਟਣਹਾਰੁ ॥੨॥

नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥

हे नानक ! वे वही कर्म करते हैं, जो पूर्व कर्मो के अनुसार विधाता ने लिखा होता है और कोई भी उसे मिटा नहीं सकता ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇ ਕੈ ਆਪਿ ਖੇਲੁ ਰਚਾਇਆ ॥

तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥

हे परमेश्वर ! तूने स्वयं ही जगत पैदा करके स्वयं ही इस खेल का निर्माण किया है।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਆਪਿ ਸਿਰਜਿਆ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਵਧਾਇਆ ॥
त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥
तूने स्वयं ही त्रिगुणों (रज, तम, सत) का निर्माण करके मोह-माया में वृद्धि की है।

ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਲੇਖਾ ਮੰਗੀਐ ਫਿਰਿ ਆਵੈ ਜਾਇਆ ॥
विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥
अहंकार में किए हुए कर्मों के कारण मनुष्य से दरगाह में कर्मों का लेखा मांगा जाता है और तब ही वह जगत में जन्मता-मरता रहता है।

ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੇ ਗੁਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥
जिना हरि आपि क्रिपा करे से गुरि समझाइआ ॥
जिन पर ईश्वर स्वयं कृपा करता है, उन्हें गुरु उपदेश देता है।

ਬਲਿਹਾਰੀ ਗੁਰ ਆਪਣੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਘੁਮਾਇਆ ॥੩॥
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥३॥
मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और सदैव ही उस पर न्योछावर हूँ॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਮੋਹਣੀ ਜਿਨਿ ਵਿਣੁ ਦੰਤਾ ਜਗੁ ਖਾਇਆ ॥
माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥
माया की ममता मनुष्य के मन को मुग्ध करने वाली है, जिसने दांतों के बिना ही समूचे जगत को निगल लिया है।

ਮਨਮੁਖ ਖਾਧੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਜਿਨੀ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਚਿਤੁ ਲਾਇਆ ॥
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥
मनमुख व्यक्ति निगल लिए जाते हैं परन्तु जिन्होंने सत्य-नाम से अपना चित लगाया है, वे गुरुमुख (माया से) बच गए हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜਗੁ ਕਮਲਾ ਫਿਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਦਰੀ ਆਇਆ ॥
बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ ॥
नाम से विहीन दुनिया पागलों की भांति भटक रही है और गुरुमुख बनकर यह सब कुछ नजर आया है।

ਧੰਧਾ ਕਰਤਿਆ ਨਿਹਫਲੁ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮਨਿ ਨ ਵਸਾਇਆ ॥
धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥
सांसारिक कार्य करता हुआ मनुष्य अपना जीवन निष्फल ही गंवा देता है और सुखों के दाता भगवान को अपने मन में नहीं बसाता।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਤਿਨਾ ਕਉ ਮਿਲਿਆ ਜਿਨ ਕਉ ਧੁਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਇਆ ॥੧॥
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा का नाम उन्हें ही मिला है, जिनके भाग्य में इस तरह जन्म से पूर्व प्रारम्भ से लिखा हुआ है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਘਰ ਹੀ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਭਰਪੂਰੁ ਹੈ ਮਨਮੁਖਾ ਸਾਦੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥
घर ही महि अम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥
मन रूपी घर में ही अमृत भरपूर है किन्तु मनमुख इसके आनंद को नहीं जानते।

ਜਿਉ ਕਸਤੂਰੀ ਮਿਰਗੁ ਨ ਜਾਣੈ ਭ੍ਰਮਦਾ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥
जैसे कोई मृग नाभि में ही कस्तूरी होने के बावजूद उसे नहीं जानता और दुविधा में पड़ कर भटकता ही रहता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਜਿ ਬਿਖੁ ਸੰਗ੍ਰਹੈ ਕਰਤੈ ਆਪਿ ਖੁਆਇਆ ॥
अम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥
स्वेच्छाचारी व्यक्ति नामामृत को त्याग कर मोह-माया रूपी विष को ही संचित करता रहता है और स्वयं को नष्ट करते रहते है,

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਿਰਲੇ ਸੋਝੀ ਪਈ ਤਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ॥
किसी विरले गुरुमुख को ही ज्ञान की प्राप्ति हुई है और उसने अपने अन्तर्मन में ही ब्रह्म के दर्शन किए हैं।

ਤਨੁ ਮਨੁ ਸੀਤਲੁ ਹੋਇਆ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਸਾਦੁ ਆਇਆ ॥
तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥
फिर उसका तन एवं मन शीतल हो गया है और उसकी जिव्हा को हरि-नाम का स्वाद आ गया है।

ਸਬਦੇ ਹੀ ਨਾਉ ਊਪਜੈ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥
सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥
गुरु-शब्द से ही हृदय में नाम पैदा होता है और शब्द-गुरु ने सत्य से मेल करवाया है।

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸਭੁ ਜਗੁ ਬਉਰਾਨਾ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥
बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥
शब्द के बिना यह समूचा जगत पागल है और इसने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਏਕੋ ਸਬਦੁ ਹੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਇਆ ॥੨॥
अम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥२॥
हे नानक ! एक शब्द ही अमृत है, जिसकी उपलब्धि गुरु के माध्यम से होती है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੋ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਅਗੰਮੁ ਹੈ ਕਹੁ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਪਾਈਐ ॥
सो हरि पुरखु अगमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥
वह परमपुरुष प्रभु अगम्य है। बताओ, किस विधि से उसे पाया जा सकता है?

ਤਿਸੁ ਰੂਪੁ ਨ ਰੇਖ ਅਦ੍ਰਿਸਟੁ ਕਹੁ ਜਨ ਕਿਉ ਧਿਆਈਐ ॥
तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥
उसका न कोई रूप है, न ही कोई चिन्ह है और वह अदृश्य है।

ਨਿਰੰਕਾਰੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹਰਿ ਅਗਮੁ ਕਿਆ ਕਹਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ॥
निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥
हे भक्तजनों ! बताओ, उसका कैसे ध्यान-मनन किया जाए ? वह प्रभु निराकार, मायातीत एवं अपहुँच है।

ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਆਪਿ ਸੁ ਹਰਿ ਮਾਰਗਿ ਪਾਈਐ ॥
जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥
फिर क्या कहकर उसका गुणगान करें ? जिसे वह स्वयं मार्गदर्शन करता है, वही व्यक्ति उसके मार्ग पर चल देता है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਵੇਖਾਲਿਆ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਪਾਈਐ ॥੪॥
गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥४॥
पूर्ण गुरु ने हमें भगवान के दर्शन करा दिए हैं और गुरु की सेवा करने से ही उसकी प्राप्ति होती है॥ ४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਜਿਉ ਤਨੁ ਕੋਲੂ ਪੀੜੀਐ ਰਤੁ ਨ ਭੋਰੀ ਡੇਹਿ ॥
जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥
चाहे तिलों की तरह मेरे तन को कोल्हू में पीसा जाए और इस में से थोड़ा-सा भी रक्त नहीं रहने दिया जाये

ਜੀਉ ਵੰਞੈ ਚਉ ਖੰਨੀਐ ਸਚੇ ਸੰਦੜੈ ਨੇਹਿ ॥
जीउ वंञै चउ खंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥
चाहे मेरे चार टुकड़े कर दिए जाएँ, पर सच्चे प्रभु से मेरा जो प्रेम है

ਨਾਨਕ ਮੇਲੁ ਨ ਚੁਕਈ ਰਾਤੀ ਅਤੈ ਡੇਹ ॥੧॥
नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥१॥
हे नानक !यह प्रभु से मिलन रात-दिन कभी भी समाप्त नहीं होगा।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਜਣੁ ਮੈਡਾ ਰੰਗੁਲਾ ਰੰਗੁ ਲਾਏ ਮਨੁ ਲੇਇ ॥
सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥
मेरा सज्जन प्रभु बड़ा रंगीला है।

ਜਿਉ ਮਾਜੀਠੈ ਕਪੜੇ ਰੰਗੇ ਭੀ ਪਾਹੇਹਿ ॥
जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥
वह अपना प्रेम प्रदान करके मन को इस तरह मोह लेता है जैसे मजीठ के साथ कपड़े रंग दिए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਰੰਗੁ ਨ ਉਤਰੈ ਬਿਆ ਨ ਲਗੈ ਕੇਹ ॥੨॥
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥२॥
हे नानक ! यह रंग फिर कभी भी उतरता नहीं तथा कोई अन्य रंग मन को नहीं लगता॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਰਿ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਆਪਿ ਹਰਿ ਆਪਿ ਬੁਲਾਇਦਾ ॥
हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥
परमेश्वर स्वयं ही सब जीवों में व्यापक है और वह स्वयं ही जीव को बुलवाता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਵਾਰਿ ਸਿਰਿ ਧੰਧੈ ਲਾਇਦਾ ॥
हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥
वह स्वयं ही सृष्टि-रचना करके जीवों को कामकाज में लगाता है।

ਇਕਨਾ ਭਗਤੀ ਲਾਇ ਇਕਿ ਆਪਿ ਖੁਆਇਦਾ ॥
इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥
वह किसी को अपनी भक्ति में लगा देता है और किसी को स्वयं ही कुपथ प्रदान कर देता है।

ਇਕਨਾ ਮਾਰਗਿ ਪਾਇ ਇਕਿ ਉਝੜਿ ਪਾਇਦਾ ॥
इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥
वह किसी को सन्मार्ग प्रदान करता है और किसी को वीराने में धकेल देता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗੁਣ ਗਾਇਦਾ ॥੫॥
जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥५॥
नानक तो परमात्मा के नाम का ध्यान करता और गुरु के सान्निध्य में उसका ही गुणगान करता है ॥५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸਫਲੁ ਹੈ ਜੇ ਕੋ ਕਰੇ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥
सतगुरु की सेवा तभी फलदायक है, यदि कोई इसे मन लगाकर करता है।

ਮਨਿ ਚਿੰਦਿਆ ਫਲੁ ਪਾਵਣਾ ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥
इस तरह मनचाहा फल मिल जाता है और अन्तर्मन से अहंकार का नाश हो जाता है।

ਬੰਧਨ ਤੋੜੈ ਮੁਕਤਿ ਹੋਇ ਸਚੇ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥
ऐसा पुरुष अपने बंधनों को तोड़ कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है और सत्य में ही समाया रहता है।

ਇਸੁ ਜਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਅਲਭੁ ਹੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥
इस दुनिया में भगवान का नाम बड़ा दुर्लभ है और गुरुमुख बन कर ही यह मन में आकर स्थित होता है।

ਨਾਨਕ ਜੋ ਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਆਪਣਾ ਹਉ ਤਿਨ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥੧॥
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥
हे नानक ! जो अपने गुरु की सेवा करता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨਮੁਖ ਮੰਨੁ ਅਜਿਤੁ ਹੈ ਦੂਜੈ ਲਗੈ ਜਾਇ ॥
मनमुख मंनु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥
मनमुख व्यक्ति का मन नियंत्रण से बाहर है, चूंकि वह तो द्वैतभाव में ही लिप्त रहता है।

ਤਿਸ ਨੋ ਸੁਖੁ ਸੁਪਨੈ ਨਹੀ ਦੁਖੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਇ ॥
तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥
उसे स्वप्न में भी सुख की उपलब्धि नहीं होती है और वह अपना जीवन अत्यंत कष्टों में ही व्यतीत कर देता है।

ਘਰਿ ਘਰਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਥਕੇ ਸਿਧ ਸਮਾਧਿ ਲਗਾਇ ॥
घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥
पण्डित घर-घर में जाकर धर्म-ग्रंथों का पाठ पढ़-पढ़कर और सिद्ध पुरुष समाधि लगा-लगाकर थक गए हैं।

ਇਹੁ ਮਨੁ ਵਸਿ ਨ ਆਵਈ ਥਕੇ ਕਰਮ ਕਮਾਇ ॥
इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ॥
लोग अनेकों ही कर्म कर करके थक गए हैं परन्तु उनका यह मन वश में नहीं आता।

ਭੇਖਧਾਰੀ ਭੇਖ ਕਰਿ ਥਕੇ ਅਠਿਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਇ ॥
भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥
अधिक वेष धारण करके बहुत सारे वेषधारी अड़सठ तीर्थों पर स्नान करके भी थक गए हैं।

ਮਨ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਹਉਮੈ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇ ॥
मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥
वे अपने मन की अवस्था को नहीं समझते, चूंकि उनके अहंकार एवं भ्रम ने ही उन्हें भटका दिया है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਭਉ ਪਇਆ ਵਡਭਾਗਿ ਵਸਿਆ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥
गुरु की कृपा से ही मन में श्रद्धा-भावना पैदा होती है और सौभाग्य से ही भगवान मन में आकर अवस्थित होता है।

ਭੈ ਪਇਐ ਮਨੁ ਵਸਿ ਹੋਆ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥
भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥
जब भगवान के प्रति श्रद्धा भय उत्पन्न हो जाता है तो मन नियंत्रण में आ जाता है और शब्द के माध्यम से अहंकार जल कर राख हो जाता है।

ਸਚਿ ਰਤੇ ਸੇ ਨਿਰਮਲੇ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਮਿਲਾਇ ॥
सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥
जो सत्य में मग्न हैं, वही निर्मल हैं और उनकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਉ ਪਾਇਆ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਸਮਾਇ ॥੨॥
सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥२॥
हे नानक ! सतगुरु से साक्षात्कार होने पर ही हरि-नाम की प्राप्ति हुई है और अब मैं सुख में लीन रहता हूँ ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਏਹ ਭੂਪਤਿ ਰਾਣੇ ਰੰਗ ਦਿਨ ਚਾਰਿ ਸੁਹਾਵਣਾ ॥
एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥
ये राजाओं-महाराजाओं का ऐश्वर्य-वैभव चार दिनों के लिए सुहावना है (अर्थात् इनका भी नाश अवश्यंभावी है)

ਏਹੁ ਮਾਇਆ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਖਿਨ ਮਹਿ ਲਹਿ ਜਾਵਣਾ ॥
एहु माइआ रंगु कसुमभ खिन महि लहि जावणा ॥
माया की यह बहारें कुसुंभ के फूल के रंग जैसी हैं, जो एक क्षण में ही उठ जाती हैं।

ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੈ ਸਿਰਿ ਪਾਪ ਲੈ ਜਾਵਣਾ ॥
चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥
परलोक में जाते समय यह माया साथ नहीं जाती अपितु मनुष्य अपने पापों का बोझ अपने सिर पर उठाकर चल देता है।

ਜਾਂ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਕਾਲਿ ਤਾਂ ਖਰਾ ਡਰਾਵਣਾ ॥
जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥
जब मृत्यु उसे पकड़ कर आगे धकेलती है तो वह अत्यंत भयंकर लगता है।

ਓਹ ਵੇਲਾ ਹਥਿ ਨ ਆਵੈ ਫਿਰਿ ਪਛੁਤਾਵਣਾ ॥੬॥
ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥६॥
जीवन का सुनहरी अवसर पुनः उसके हाथ नहीं आता और वह अंतः बहुत पश्चाताप करता है ॥६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਜੋ ਮੁਹ ਫਿਰੇ ਸੇ ਬਧੇ ਦੁਖ ਸਹਾਹਿ ॥
सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥
जो व्यक्ति सतगुरु की तरफ से मुँह मोड़ लेता है, वे यमपुरी में बंधे हुए दुःख सहन करता रहता है।

ਫਿਰਿ ਫਿਰਿ ਮਿਲਣੁ ਨ ਪਾਇਨੀ ਜੰਮਹਿ ਤੈ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥
फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जमहि तै मरि जाहि ॥
वह बार-बार जन्मता-मरता रहता है और उसका भगवान से मिलन नहीं होता।

ਸਹਸਾ ਰੋਗੁ ਨ ਛੋਡਈ ਦੁਖ ਹੀ ਮਹਿ ਦੁਖ ਪਾਹਿ ॥
सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥
उसका संशय-चिंता का रोग दूर नहीं होता और दुःख में ही वह बहुत दुःखी होता रहता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਖਸਿ ਲੇਹਿ ਸਬਦੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਹਿ ॥੧॥
नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥१॥
हे नानक ! यद्यपि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि से जीव को क्षमा कर दे तो वह उसे शब्द द्वारा अपने साथ मिला लेता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਜੋ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਮੁਹ ਫਿਰੇ ਤਿਨਾ ਠਉਰ ਨ ਠਾਉ ॥
जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥
जो व्यक्ति सतगुरु की तरफ से मुंह मोड़ लेते हैं, अर्थात् विमुख हो जाते हैं, उन्हें कहीं भी शरण नहीं मिलती।

ਜਿਉ ਛੁਟੜਿ ਘਰਿ ਘਰਿ ਫਿਰੈ ਦੁਹਚਾਰਣਿ ਬਦਨਾਉ ॥
जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥
वे तो छोड़ी हुई स्त्री की भांति घर-घर भटकते रहते हैं और दुराचारिणी के नाम से बदनाम होते हैं।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬਖਸੀਅਹਿ ਸੇ ਸਤਿਗੁਰ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਉ ॥੨॥
नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥२॥
हे नानक ! जिन गुरुमुखों को क्षमादान मिल जाता है, सतगुरु उन्हें ईश्वर से मिला देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜੋ ਸੇਵਹਿ ਸਤਿ ਮੁਰਾਰਿ ਸੇ ਭਵਜਲ ਤਰਿ ਗਇਆ ॥
जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥
जो व्यक्ति परम-सत्य प्रभु की आराधना करते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं।

ਜੋ ਬੋਲਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਉ ਤਿਨ ਜਮੁ ਛਡਿ ਗਇਆ ॥
जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥
जो हरि-नाम बोलते रहते हैं, उन्हें यमराज भी छोड़कर दूर हो गया है।

ਸੇ ਦਰਗਹ ਪੈਧੇ ਜਾਹਿ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਜਪਿ ਲਇਆ ॥
से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥
जो परमात्मा का जाप करते हैं, वे सत्कृत होकर उसके दरबार में जाते हैं।

ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੇਈ ਪੁਰਖ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਤੁਧੁ ਮਇਆ ॥
हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥
हे परमेश्वर ! जिन पर तुम्हारी कृपा है, वही पुरुष तेरी उपासना करते हैं।

ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਗੁਰਮੁਖਿ ਭ੍ਰਮ ਭਉ ਗਇਆ ॥੭॥
गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥७॥
हे मेरे प्यारे ! मैं सर्वदा ही तेरे गुण गाता रहता हूँ और गुरु के माध्यम से मेरा भ्रम एवं भय नष्ट हो गया है॥ ७ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਥਾਲੈ ਵਿਚਿ ਤੈ ਵਸਤੂ ਪਈਓ ਹਰਿ ਭੋਜਨੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਰੁ ॥
थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अम्रितु सारु ॥
थाल में तीन वस्तुएँ-सत्य, संतोष एवं सिमरन को परोसा हुआ है, यह हरिनामामृत रूपी सर्वोत्तम भोजन है,"

ਜਿਤੁ ਖਾਧੈ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੀਐ ਪਾਈਐ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥
जिसे खाने से मन तृप्त हो जाता है और मोक्ष का द्वार सहज ही मिल जाता है।

ਇਹੁ ਭੋਜਨੁ ਅਲਭੁ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਲਭੈ ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥
हे संतो ! यह नामामृत रूपी भोजन बड़ा दुर्लभ है और गुरु के ज्ञान को सोचने-समझाने से ही इसकी उपलब्धि होती है।

ਏਹ ਮੁਦਾਵਣੀ ਕਿਉ ਵਿਚਹੁ ਕਢੀਐ ਸਦਾ ਰਖੀਐ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥
यह पहेली अपने हृदय में से कैसे निकालें? हरि-नाम की इस पहेली को अपने हृदय में धारण करके रखना चाहिए।

ਏਹ ਮੁਦਾਵਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪਾਈ ਗੁਰਸਿਖਾ ਲਧੀ ਭਾਲਿ ॥
एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥
यह पहेली सतगुरु ने ही स्थापित की है और इसका समाधान गुरु के शिष्यों ने बड़ी खोज के उपरांत ढूंढ लिया है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਬੁਝਾਏ ਸੁ ਬੁਝਸੀ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਘਾਲਿ ॥੧॥
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥१॥
हे नानक ! जिसे वह सूझ-बूझ प्रदान करता है, वही इस पहेली को बूझता है। कठिन साधना के द्वारा गुरुमुख भगवान को प्राप्त कर लेते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਜੋ ਧੁਰਿ ਮੇਲੇ ਸੇ ਮਿਲਿ ਰਹੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਇ ॥
जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥
जिन्हें आदि से परमेश्वर ने मिलाया है, वे उससे मिले रहते हैं और अपना चित गुरु के साथ लगाते हैं।

ਆਪਿ ਵਿਛੋੜੇਨੁ ਸੇ ਵਿਛੁੜੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਇ ॥
आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥
जिन्हें वह स्वयं जुदा करता है, वे उससे जुदा रहते हैं और द्वैतभाव के कारण तंग होते हैं।

ਨਾਨਕ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿਆ ਪਾਈਐ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਕਮਾਇ ॥੨॥
नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥
हे नानक ! भगवान की कृपा के बिना क्या प्राप्त हो सकता है? मनुष्य वही कर्म करता है, जो उसके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा होता है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਹਿ ਸਖੀਆ ਜਸੁ ਗਾਵਹਿ ਗਾਵਣਹਾਰੀਆ ॥
बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥
यश गाने वाली सत्संगी सखियाँ साथ बैठकर हरि का यशगान करती हैं।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹਿਹੁ ਨਿਤ ਹਰਿ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰੀਆ ॥
हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥
वह नित्य ही हरि-नाम की स्तुति करती हैं और हरि पर न्योछावर होती हैं।

ਜਿਨੀ ਸੁਣਿ ਮੰਨਿਆ ਹਰਿ ਨਾਉ ਤਿਨਾ ਹਉ ਵਾਰੀਆ ॥
जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥
जिन्होंने हरि-नाम सुनकर उस पर आस्था रखी है, मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर होता हूँ।

ਗੁਰਮੁਖੀਆ ਹਰਿ ਮੇਲੁ ਮਿਲਾਵਣਹਾਰੀਆ ॥
गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥
हे परमेश्वर ! मेरा गुरुमुख सत्संगी सखियों से मिलाप करवा दो, जो मुझे तेरे साथ मिलाने में समर्थ है।

ਹਉ ਬਲਿ ਜਾਵਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਗੁਰ ਦੇਖਣਹਾਰੀਆ ॥੮॥

हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥८॥

मैं तो दिन-रात उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो अपने गुरु के दर्शन करती रहती हैं।॥८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭਿ ਭਰਮਦੇ ਨਿਤ ਜਗਿ ਤੋਟਾ ਸੈਸਾਰਿ ॥
विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥
नाम से विहीन सभी व्यक्ति नित्य भटकते ही रहते हैं और संसार में उनकी क्षति ही होती रहती है।

ਮਨਮੁਖਿ ਕਰਮ ਕਮਾਵਣੇ ਹਉਮੈ ਅੰਧੁ ਗੁਬਾਰੁ ॥
मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥
मनमुख व्यक्ति अहंकार के घोर अन्धकार में ही कर्म करते रहते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਣਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥੧॥
गुरमुखि अम्रितु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥१॥
लेकिन, हे नानक ! गुरुमुख शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप नामामृत का ही पान करते हैं।॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਹਜੇ ਜਾਗੈ ਸਹਜੇ ਸੋਵੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਨਦਿਨੁ ਉਸਤਤਿ ਹੋਵੈ ॥
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥
गुरुमुख व्यक्ति सहज में ही जाग्रत रहता है और सहज में ही सोता है। वह रात-दिन प्रभु की ही स्तुति करता रहता है।

ਮਨਮੁਖ ਭਰਮੈ ਸਹਸਾ ਹੋਵੈ ॥
मनमुख भरमै सहसा होवै ॥
लेकिन मनमुख प्राणी भ्रम में फँसकर भटकता ही रहता है।

ਅੰਤਰਿ ਚਿੰਤਾ ਨੀਦ ਨ ਸੋਵੈ ॥
अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥
उसके अन्तर्मन में चिंता ही सताती रहती है और वह सुख की नींद में कदापि नहीं सोता।

ਗਿਆਨੀ ਜਾਗਹਿ ਸਵਹਿ ਸੁਭਾਇ ॥
गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥
ज्ञानवान पुरुष सहज-स्वभाव में जागते और सोते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤਿਆ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੨॥
नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥२॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में मग्न हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਸੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਰਤਿਆ ॥
से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥
जो व्यक्ति हरि में मग्न है, वही हरि-नाम का ध्यान-मनन करता है।

ਹਰਿ ਇਕੁ ਧਿਆਵਹਿ ਇਕੁ ਇਕੋ ਹਰਿ ਸਤਿਆ ॥
हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥
वह तो एक ईश्वर का ही चिंतन करता है, चूंकि एक वही सत्य है।

ਹਰਿ ਇਕੋ ਵਰਤੈ ਇਕੁ ਇਕੋ ਉਤਪਤਿਆ ॥
हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥
एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है और एक से ही सारी दुनिया पैदा हुई है।

ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਹਿ ਤਿਨ ਡਰੁ ਸਟਿ ਘਤਿਆ ॥
जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥
जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करता है, उसके सभी भय नाश हो जाते हैं।

ਗੁਰਮਤੀ ਦੇਵੈ ਆਪਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ॥੯॥
गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥९॥
वह स्वयं ही प्राणी को गुरु की मति प्रदान करता है और उन गुरुमुखों ने भगवान का ही जाप किया है ॥६॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੩ ॥
सलोक मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਨ ਆਇਓ ਜਿਤੁ ਕਿਛੁ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥
अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥
मनुष्य के अन्तर्मन में वह ज्ञान तो प्रविष्ट ही नहीं हुआ, जिससे कुछ समझ प्राप्त होती है।

ਵਿਣੁ ਡਿਠਾ ਕਿਆ ਸਾਲਾਹੀਐ ਅੰਧਾ ਅੰਧੁ ਕਮਾਇ ॥
विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥
भगवान के दर्शन एवं बोध के बिना वह कैसे स्तुति कर सकता है ? ज्ञानहीन मनुष्य ज्ञानहीन कर्म ही करता है।

ਨਾਨਕ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੀਐ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥
हे नानक ! जब वह शब्द की पहचान कर लेता है तो उसके मन में आकर भगवान का नाम बस जाता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਇਕਾ ਬਾਣੀ ਇਕੁ ਗੁਰੁ ਇਕੋ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥
इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥
इस सृष्टि में एक ही वाणी है, एक ही गुरु और एक ही शब्द है, जिसका हमें हमेशा ध्यान करना चाहिए।

ਸਚਾ ਸਉਦਾ ਹਟੁ ਸਚੁ ਰਤਨੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ ॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥
यही सत्य का सौदा एवं सत्य की दुकान है, जो सत्य-नाम रूपी रत्नों के भण्डार से भरा हुआ है।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਪਾਈਅਨਿ ਜੇ ਦੇਵੈ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥
यदि दाता प्रभु प्रदान करे तो ही वह गुरु की कृपा से प्राप्त होते हैं।

ਸਚਾ ਸਉਦਾ ਲਾਭੁ ਸਦਾ ਖਟਿਆ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥
सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥
इस सत्य के सौदे का व्यापार करके मनुष्य हमेशा ही अपार नाम का लाभ प्राप्त करता है।

ਵਿਖੁ ਵਿਚਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਕਰਮਿ ਪੀਆਵਣਹਾਰੁ ॥
विखु विचि अम्रितु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥
इस (भयंकर) विष रूपी जगत में ही नामामृत प्रगट होता है और भगवान की अपार कृपा से ही नामामृत का पान किया जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਸਲਾਹੀਐ ਧੰਨੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰੁ ॥੨॥
नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥२॥
हे नानक ! उस सच्चे परमेश्वर की ही महिमा करनी चाहिए, चूंकि वह परम सत्य धन्य है, जो प्राणियों के जीवन को संवारने वाला है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜਿਨਾ ਅੰਦਰਿ ਕੂੜੁ ਵਰਤੈ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵਈ ॥
जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥
जिनके मन में झूठ ही विद्यमान रहता है, उन्हें सत्य से कोई लगाव नहीं होता।

ਜੇ ਕੋ ਬੋਲੈ ਸਚੁ ਕੂੜਾ ਜਲਿ ਜਾਵਈ ॥
जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥
यदि कोई सत्य बोलता है तो झूठा व्यक्ति तुरंत ही क्रोध की अग्नि में जल जाता है।

ਕੂੜਿਆਰੀ ਰਜੈ ਕੂੜਿ ਜਿਉ ਵਿਸਟਾ ਕਾਗੁ ਖਾਵਈ ॥
कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥
जैसे कौआ विष्ठा ही खाता है, वैसे ही झूठा व्यक्ति झूठ से संतुष्ट होता है।

ਜਿਸੁ ਹਰਿ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਸੋ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵਈ ॥
जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई ॥
जिस पर परमात्मा मेहरबान होता है, वही उसके नाम का भजन करता है।

ਹਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਰਾਧਿ ਕੂੜੁ ਪਾਪੁ ਲਹਿ ਜਾਵਈ ॥੧੦॥
हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥१०॥
जो गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम की आराधना करता है, उसकी झूठ एवं पाप से मुक्ति हो जाती है ॥१०॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਸੇਖਾ ਚਉਚਕਿਆ ਚਉਵਾਇਆ ਏਹੁ ਮਨੁ ਇਕਤੁ ਘਰਿ ਆਣਿ ॥
सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥
हे चहुँ दिशाओं में चारों तरफ हवा में उड़ने वाले शेख ! अपने इस मन को एक घर में स्थिर कर।

ਏਹੜ ਤੇਹੜ ਛਡਿ ਤੂ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥
एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥
तू छल-कपट करने वाली बातों को छोड़ दे और गुरु के शब्द की पहचान कर।

ਸਤਿਗੁਰ ਅਗੈ ਢਹਿ ਪਉ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ॥
सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥
हे शेख ! तू सतगुरु की शरण में आ जा, चूंकि वह सब कुछ जानते हैं।

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਜਲਾਇ ਤੂ ਹੋਇ ਰਹੁ ਮਿਹਮਾਣੁ ॥
आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥
तू अपनी आशा एवं मनसा को जला दे और इस दुनिया में चार दिनों का मेहमान बनकर ही रह।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਭੀ ਚਲਹਿ ਤਾ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਣੁ ॥
सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥
अब यदि तू सतगुरु की इच्छानुसार अनुसरण करे तो ही तुझे परमात्मा के दरबार में शोभा प्राप्त होगी।

ਨਾਨਕ ਜਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਤਿਨ ਧਿਗੁ ਪੈਨਣੁ ਧਿਗੁ ਖਾਣੁ ॥੧॥
नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति नाम का सिमरन नहीं करते, उनके रहन-सहन एवं भोजन को धिक्कार है॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਤੋਟਿ ਨ ਆਵਈ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ ॥
हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥
परमात्मा के गुण अनन्त हैं और उनका मूल्यांकन वर्णन से परे है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਵਹਿ ਗੁਣ ਮਹਿ ਰਹੈ ਸਮਾਇ ॥੨॥
नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥२॥
हे नानक ! गुरुमुख ही परमात्मा का गुणगान करते हैं और उसकी महिमा में ही समाए रहते हैं।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਰਿ ਚੋਲੀ ਦੇਹ ਸਵਾਰੀ ਕਢਿ ਪੈਧੀ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ॥
हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥
भगवान ने इस शरीर रूपी चोली का बड़ा सुन्दर निर्माण किया है और उसकी भक्ति द्वारा इस चोली की कढ़ाई करके ही मैं इसे पहनता हूँ।

ਹਰਿ ਪਾਟੁ ਲਗਾ ਅਧਿਕਾਈ ਬਹੁ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਭਾਤਿ ਕਰਿ ॥
हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥
हरि-नाम का रेशम उस पर अनेक विधियों एवं अनेक ढंगों से लगा हुआ है।

ਕੋਈ ਬੂਝੈ ਬੂਝਣਹਾਰਾ ਅੰਤਰਿ ਬਿਬੇਕੁ ਕਰਿ ॥
कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥
कोई विरला ही बुद्धिमान पुरुष है जो अपने अन्तर्मन में विवेक द्वारा इस तथ्य को समझता है।

ਸੋ ਬੂਝੈ ਏਹੁ ਬਿਬੇਕੁ ਜਿਸੁ ਬੁਝਾਏ ਆਪਿ ਹਰਿ ॥
सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥
लेकिन इस विवेक को वही पुरुष समझता है, जिसे भगवान स्वयं समझाता है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਵਿਚਾਰਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਸਤਿ ਹਰਿ ॥੧੧॥
जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥११॥
दास नानक यही विचार कहता है कि गुरुमुख हरि-परमेश्वर को सदैव सत्य समझते हैं।॥ ११॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਪਰਥਾਇ ਸਾਖੀ ਮਹਾ ਪੁਰਖ ਬੋਲਦੇ ਸਾਝੀ ਸਗਲ ਜਹਾਨੈ ॥
परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥
महापुरुष किसी विशेष के संबंध में शिक्षा की बात बोलते हैं परन्तु उनकी शिक्षा जहान के सब लोगों के लिए होती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਸੁ ਭਉ ਕਰੇ ਆਪਣਾ ਆਪੁ ਪਛਾਣੈ ॥
गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥
जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, वह भगवान का भय मानता है और अपने आपको पहचान लेता है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਤਾ ਮਨ ਹੀ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ॥
गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥
यदि गुरु की कृपा से मनुष्य जीवित ही मोह की ओर से विरक्त हो जाए तो उसके मन की मन से संतुष्टि हो जाती है।

ਜਿਨ ਕਉ ਮਨ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨਾਹੀ ਨਾਨਕ ਸੇ ਕਿਆ ਕਥਹਿ ਗਿਆਨੈ ॥੧॥
जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥१॥
हे नानक ! जिनके मन में आस्था ही नहीं, वे फिर कैसे ज्ञान की बातें कथन कर सकते हैं ? ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਿਤੁ ਨ ਲਾਇਓ ਅੰਤਿ ਦੁਖੁ ਪਹੁਤਾ ਆਇ ॥
गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥
जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहकर अपना चित भगवान के साथ नहीं लगाता, वह अन्त में बहुत दुःखी होता है।

ਅੰਦਰਹੁ ਬਾਹਰਹੁ ਅੰਧਿਆਂ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥
अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ॥
वह तो भीतर एवं बाहर से अन्धा ही है और उसे कोई सूझ नहीं पड़ती।

ਪੰਡਿਤ ਤਿਨ ਕੀ ਬਰਕਤੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਖਾਇ ਜੋ ਰਤੇ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥
हे पण्डित ! जो हरि-नाम में मग्न हैं, समूचा जगत उनकी साधना के फलस्वरूप ही खा रहा है।

ਜਿਨ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਸਲਾਹਿਆ ਹਰਿ ਸਿਉ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥
जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥
जो गुरु के शब्द द्वारा स्तुति करते हैं, वे भगवान में ही समाए रहते हैं।

ਪੰਡਿਤ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਬਰਕਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾ ਧਨੁ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥
पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥
हे पण्डित ! द्वैतभाव के कारण कदापि बरकत नहीं होती और न ही नाम धन प्राप्त होता है।

ਪੜਿ ਥਕੇ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਆਇਓ ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਤ ਵਿਹਾਇ ॥
पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥
विद्वान धर्मग्रंथ पढ़-पढ़कर थक गए हैं, परन्तु फिर भी संतोष नहीं आया और अपना जीवन रात-दिन ईष्यग्नि में जलते हुए ही व्यतीत कर दिया है।

ਕੂਕ ਪੂਕਾਰ ਨ ਚੁਕਈ ਨਾ ਸੰਸਾ ਵਿਚਹੁ ਜਾਇ ॥
कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥
उनकी चिल्लाहट एवं शिकायतें समाप्त नहीं होती और न ही उनके मन से संशय दूर होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣਿਆ ਮੁਹਿ ਕਾਲੈ ਉਠਿ ਜਾਇ ॥੨॥
नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥
हे नानक ! नाम से विहीन व्यक्ति निंदा के पात्र बनकर संसार से चले जाते हैं ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਸਜਣ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ਮਿਲਿ ਪੰਥੁ ਦਸਾਈ ॥
हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥
हे प्यारे हरि ! मेरा सज्जन (गुरु) से मिलन करवा दो, उससे मिलकर मैं तेरा मार्ग पूँछूगा ।

ਜੋ ਹਰਿ ਦਸੇ ਮਿਤੁ ਤਿਸੁ ਹਉ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥
जो मित्र मुझे भगवान के बारे में मार्गदर्शन करेगा, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ।

ਗੁਣ ਸਾਝੀ ਤਿਨ ਸਿਉ ਕਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥
मैं उसके साथ उसके गुणों का भागीदार बन जाऊँगा और हरि-नाम का भजन करूँगा।

ਹਰਿ ਸੇਵੀ ਪਿਆਰਾ ਨਿਤ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥
हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥
मैं नित्य ही अपने प्यारे हरि की आराधना करता हूँ और हरि की आराधना करने से मुझे सुख की अनुभूति होती है।

ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਤਿਸੁ ਜਿਨਿ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੧੨॥
बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥१२॥
मैं उस सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मेरे भीतर सूझ प्रदान की है ॥१२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਪੰਡਿਤ ਮੈਲੁ ਨ ਚੁਕਈ ਜੇ ਵੇਦ ਪੜੈ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥
पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥
पण्डित चाहे चारों युग तक वेदों को पढ़ता रहे लेकिन फिर भी उसकी मैल दूर नहीं होती।

ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਮਾਇਆ ਮੂਲੁ ਹੈ ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ॥
त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥
त्रिगुणात्मक माया ही मूल है और आत्माभिमान में उसने ईश्वर के नाम को भुला दिया है।

ਪੰਡਿਤ ਭੂਲੇ ਦੂਜੈ ਲਾਗੇ ਮਾਇਆ ਕੈ ਵਾਪਾਰਿ ॥
पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥
पण्डित सत्य को भूल कर मोह-माया में ही लिप्त है और वह तो केवल माया का ही व्यापारी है।

ਅੰਤਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਹੈ ਮੂਰਖ ਭੁਖਿਆ ਮੁਏ ਗਵਾਰ ॥
अंतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥
उसके मन में तृष्णा की भूख है और वह मूर्ख गंवार तो भूखा ही मर जाता है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥
सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥
सतगुरु की सेवा एवं सच्चे शब्द का चिंतन करने के फलस्वरूप ही सुख की उपलब्धि होती है।

ਅੰਦਰਹੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਗਈ ਸਚੈ ਨਾਇ ਪਿਆਰਿ ॥
अंदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥
सत्य नाम के साथ प्रेम करने से मन से तृष्णा की भूख दूर हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਸਹਜੇ ਰਜੇ ਜਿਨਾ ਹਰਿ ਰਖਿਆ ਉਰਿ ਧਾਰਿ ॥੧॥
नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥१॥
हे नानक ! जो व्यक्ति हरि-नाम में मग्न हैं और जिन्होंने भगवान को अपने हृदय में धारण किया हुआ है, वे सहज संतुष्ट हो जाते हैं।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਨਮੁਖ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਸੇਵਿਆ ਦੁਖੁ ਲਗਾ ਬਹੁਤਾ ਆਇ ॥
मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥
मनमुख व्यक्ति हरि-नाम की आराधना नहीं करता जिसके कारण उसे अत्यंत कष्ट आकर लग जाते हैं।

ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰੁ ਹੈ ਸੁਧਿ ਨ ਕਾਈ ਪਾਇ ॥
अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥
उसके मन में अज्ञान का ही अन्धेरा है और उसे कोई सूझ नहीं पड़ती।

ਮਨਹਠਿ ਸਹਜਿ ਨ ਬੀਜਿਓ ਭੁਖਾ ਕਿ ਅਗੈ ਖਾਇ ॥
मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥
अपने मन के हठ के कारण वह हरि-नाम का बीज नहीं बोता, फिर भूख लगते समय परलोक में क्या खाएगा ?

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਦੂਜੈ ਲਗਾ ਜਾਇ ॥
नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥
उसने मोह माया में संलग्न होकर प्रभु नाम के भण्डार को विस्मृत कर दिया है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਹਿ ਵਡਿਆਈਆ ਜੇ ਆਪੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥२॥
हे नानक ! जब भगवान स्वयं अपने साथ मिला लेता है तो उस गुरुमुख को बड़ी शोभा प्राप्त होती है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵੈ ਖਰੀ ਸੁਹਾਵਣੀ ॥
हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥
वह रसना बड़ी सुन्दर है, जो हरि का यशगान करती है।

ਜੋ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਬੋਲੈ ਸਾ ਹਰਿ ਭਾਵਣੀ ॥
जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥
जो जीव-स्त्री अपने मन, तन एवं मुँह से हरि-नाम की महिमा ही करती है, वह हरि को बहुत अच्छी लगती है।

ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਚਖੈ ਸਾਦੁ ਸਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵਣੀ ॥
जो गुरमुखि चखै सादु सा त्रिपतावणी ॥
जो गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि के नाम-स्वाद को चखती है, वह तृप्त हो जाती है।

ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਗੁਣ ਗਾਇ ਗੁਣੀ ਸਮਝਾਵਣੀ ॥
गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥
वह नित्य ही प्यारे हरि की महिमा गान करती है और गुणवान हरि के गुणों का उपदेश प्रदान करती है।

ਜਿਸੁ ਹੋਵੈ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਸਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਗੁਰੂ ਬੁਲਾਵਣੀ ॥੧੩॥
जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥१३॥
जिस पर वह स्वयं दयालु हो जाता है, वह गुरु-सतगुरु का ही जाप करती रहती है।॥ १३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਹਸਤੀ ਸਿਰਿ ਜਿਉ ਅੰਕਸੁ ਹੈ ਅਹਰਣਿ ਜਿਉ ਸਿਰੁ ਦੇਇ ॥
हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥
जैसे किसी मस्त हाथी के सिर पर अंकुश होता है और जैसे अहरन (लोहार का एक औज़ार) हथौड़े के सन्मुख स्वयं को अर्पित करता है,

ਮਨੁ ਤਨੁ ਆਗੈ ਰਾਖਿ ਕੈ ਊਭੀ ਸੇਵ ਕਰੇਇ ॥
मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥
वैसे ही अपना मन एवं तन गुरु के सन्मुख अर्पित करके और हमेशा खड़े होकर सेवा करो।

ਇਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪੁ ਨਿਵਾਰੀਐ ਸਭੁ ਰਾਜੁ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਲੇਇ ॥
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥
इस प्रकार अपने आत्माभिमान को मिटा कर गुरुमुख सारे विश्व का शासन प्राप्त कर लेता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੁਝੀਐ ਜਾ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ॥੧॥
नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥१॥
हे नानक ! जब भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है, तो ही मनुष्य गुरुमुख बनकर इस तथ्य को समझता है॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਜਿਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਆਏ ਤੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥
जिन्होंने गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम का ध्यान किया है, जगत में जन्म लेकर आए वे मनुष्य ही परवान हैं।

ਨਾਨਕ ਕੁਲ ਉਧਾਰਹਿ ਆਪਣਾ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਮਾਣੁ ॥੨॥
नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥२॥
हे नानक ! वे अपनी वंशावली का भी उद्धार कर लेते हैं और उन्हें भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਖੀਆ ਸਿਖ ਗੁਰੂ ਮੇਲਾਈਆ ॥
गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥
गुरुमुख सिक्ख-सहेलियों को गुरु ने अपने साथ मिला लिया है।

ਇਕਿ ਸੇਵਕ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ਇਕਿ ਗੁਰਿ ਕਾਰੈ ਲਾਈਆ ॥
इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥
इनमें से कुछ सेवक बनकर गुरु के पास रहती हैं और कुछ को गुरु ने अन्य कार्यों में लगाया है।

ਜਿਨਾ ਗੁਰੁ ਪਿਆਰਾ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਤਿਨਾ ਭਾਉ ਗੁਰੂ ਦੇਵਾਈਆ ॥
जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥
जिन्हें गुरु अपने मन एवं चित में प्यारा लगता है, उन्हें गुरु अपना प्रेम देता है।

ਗੁਰ ਸਿਖਾ ਇਕੋ ਪਿਆਰੁ ਗੁਰ ਮਿਤਾ ਪੁਤਾ ਭਾਈਆ ॥
गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥
गुरसिक्खों, मित्रों, पुत्रों एवं भाईयों से गुरु को एक-सा प्रेम होता है।

ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਬੋਲਹੁ ਸਭਿ ਗੁਰੁ ਆਖਿ ਗੁਰੂ ਜੀਵਾਈਆ ॥੧੪॥
गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥१४॥
सभी गुरु-गुरु बोलो, गुरु-गुरु कहने से गुरु ने उन्हें पुनः जीवित कर दिया है ॥१४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३ ।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਨੀ ਅਗਿਆਨੀ ਅੰਧੁਲੇ ਅਵਰੇ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥
नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥
हे नानक ! अज्ञानी एवं अन्धे व्यक्ति परमात्मा के नाम को याद नहीं करते अपितु अन्य ही कर्म करते रहते हैं।

ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਫਿਰਿ ਵਿਸਟਾ ਮਾਹਿ ਪਚਾਹਿ ॥੧॥
जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥१॥
ऐसे व्यक्ति यम के द्वार पर बंधे हुए बहुत दण्ड भोगते हैं और अन्त में वे विष्ठा में ही नष्ट हो जाते हैं ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਹਿ ਆਪਣਾ ਸੇ ਜਨ ਸਚੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥
नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥
हे नानक ! जो अपने सतगुरु की सेवा करते हैं, वही सत्यशील एवं प्रामाणिक हैं।

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਇ ਸਮਾਇ ਰਹੇ ਚੂਕਾ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥੨॥
हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥२॥
ऐसे सत्यवादी पुरुष हरि-नाम में ही समाए रहते हैं और उनका जीवन एवं मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਮਾਇਆ ਸੰਚੀਐ ਅੰਤੇ ਦੁਖਦਾਈ ॥
धनु स्मपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥
धन, सम्पति एवं माया के पदार्थों को संचित करना अंत में बड़ा दुखदायक बन जाता है।

ਘਰ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਸਵਾਰੀਅਹਿ ਕਿਛੁ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਈ ॥
घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥
घर, मन्दिर एवं महलों को संवारा जाता है, लेकिन उनमें से कोई भी इन्सान के साथ नहीं जाता।

ਹਰ ਰੰਗੀ ਤੁਰੇ ਨਿਤ ਪਾਲੀਅਹਿ ਕਿਤੈ ਕਾਮਿ ਨ ਆਈ ॥
हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥
मनुष्य अनेक रंगों के कुशल घोड़ों को नित्य पालता है परन्तु वे भी अंत में किसी काम नहीं आते

ਜਨ ਲਾਵਹੁ ਚਿਤੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਸਿਉ ਅੰਤਿ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥
जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥
हे भक्तजनों ! अपना चित हरि-नाम में लगाओ, वही अंत में सहायक होगा।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੁਖੁ ਪਾਈ ॥੧੫॥
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥१५॥
नानक ने गुरु के सान्निध्य में नाम का ही ध्यान किया है, जिसके फलस्वरूप उसे सुख प्राप्त हो गया है॥१५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਬਿਨੁ ਕਰਮੈ ਨਾਉ ਨ ਪਾਈਐ ਪੂਰੈ ਕਰਮਿ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥
भाग्य के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती और पूर्ण भाग्य के द्वारा ही नाम प्राप्त हो सकता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਗੁਰਮਤਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥੧॥
नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥१॥
हे नानक ! यदि ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही मनुष्य गुरु की मति द्वारा सत्य में मिल जाता है॥१॥

ਮਃ ੧ ॥
मः १ ॥
महला १॥

ਇਕ ਦਝਹਿ ਇਕ ਦਬੀਅਹਿ ਇਕਨਾ ਕੁਤੇ ਖਾਹਿ ॥
इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥
मरणोपरांत कुछ व्यक्तियों का दाह-संस्कार कर दिया जाता है, किसी को दफना दिया जाता है और कुछ लोगों को कुते इत्यादि ही खा जाते हैं।

ਇਕਿ ਪਾਣੀ ਵਿਚਿ ਉਸਟੀਅਹਿ ਇਕਿ ਭੀ ਫਿਰਿ ਹਸਣਿ ਪਾਹਿ ॥
इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥
कुछ लोग जल-प्रवाह कर दिए जाते हैं तथा कुछ लोग सूखे कुएँ में फेंक दिए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਏਵ ਨ ਜਾਪਈ ਕਿਥੈ ਜਾਇ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥२॥
हे नानक ! यह तो कुछ ज्ञात ही नहीं होता कि आत्मा किधर समा जाती है॥२ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਤਿਨ ਕਾ ਖਾਧਾ ਪੈਧਾ ਮਾਇਆ ਸਭੁ ਪਵਿਤੁ ਹੈ ਜੋ ਨਾਮਿ ਹਰਿ ਰਾਤੇ ॥
तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥
जो लोग परमात्मा के नाम में मग्न रहते हैं, उनका खाना, पहनना, धन-दौलत इत्यादि सभी पावन है।

ਤਿਨ ਕੇ ਘਰ ਮੰਦਰ ਮਹਲ ਸਰਾਈ ਸਭਿ ਪਵਿਤੁ ਹਹਿ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕ ਸਿਖ ਅਭਿਆਗਤ ਜਾਇ ਵਰਸਾਤੇ ॥
तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥
जिनके पास गुरुमुख सेवक, गुरु के शिष्य एवं अभ्यागत जाकर विश्राम करते हैं, उनके घर, मन्दिर, महल एवं सराय सब पवित्र हैं।

ਤਿਨ ਕੇ ਤੁਰੇ ਜੀਨ ਖੁਰਗੀਰ ਸਭਿ ਪਵਿਤੁ ਹਹਿ ਜਿਨੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਖ ਸਾਧ ਸੰਤ ਚੜਿ ਜਾਤੇ ॥
तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥
उनके सभी घोड़े, जीन एवं खुरगीर इत्यादि पवित्र हैं, जिन पर सवार होकर गुरुमुख, गुरु के शिष्य, साधु एवं संत अपने मार्ग चल देते हैं।

ਤਿਨ ਕੇ ਕਰਮ ਧਰਮ ਕਾਰਜ ਸਭਿ ਪਵਿਤੁ ਹਹਿ ਜੋ ਬੋਲਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸਾਤੇ ॥
तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥
उन लोगों के सभी कर्म, धर्म एवं समस्त कार्य पवित्र हैं, जो 'हरि-हरि' बोलते एवं राम नाम का जाप करते रहते हैं।

ਜਿਨ ਕੈ ਪੋਤੈ ਪੁੰਨੁ ਹੈ ਸੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਖ ਗੁਰੂ ਪਹਿ ਜਾਤੇ ॥੧੬॥
जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥१६॥
जिनके पास (शुभ कर्मों के फलस्वरूप) पुण्य हैं, वे गुरुमुख शिष्य गुरु के पास जाते हैं ॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਨਾਨਕ ਨਾਵਹੁ ਘੁਥਿਆ ਹਲਤੁ ਪਲਤੁ ਸਭੁ ਜਾਇ ॥
नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥
हे नानक ! नाम को विस्मृत करने से मनुष्य का लोक एवं परलोक सब व्यर्थ चला जाता है।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸੰਜਮੁ ਸਭੁ ਹਿਰਿ ਲਇਆ ਮੁਠੀ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥
जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥
उसकी पूजा, तपस्या एवं संयम सभी छीन लिया गया है और उसे द्वैतभाव ने ठग लिया है।

ਜਮ ਦਰਿ ਬਧੇ ਮਾਰੀਅਹਿ ਬਹੁਤੀ ਮਿਲੈ ਸਜਾਇ ॥੧॥
जम दरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥१॥
फिर यम के द्वार पर उसे बांधकर बहुत पीटा जाता है और उसे बहुत सजा मिलती है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸੰਤਾ ਨਾਲਿ ਵੈਰੁ ਕਮਾਵਦੇ ਦੁਸਟਾ ਨਾਲਿ ਮੋਹੁ ਪਿਆਰੁ ॥
संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥
निन्दक व्यक्ति संतों के साथ बड़ा बैर रखते हैं लेकिन दुष्टों के साथ उनका बड़ा मोह एवं प्यार होता है।

ਅਗੈ ਪਿਛੈ ਸੁਖੁ ਨਹੀ ਮਰ�ि ਜੰਮਹਿ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ॥
अगै पिछै सुखु नही मरि जमहि वारो वार ॥
ऐसे व्यक्तियों को लोक एवं परलोक में कदापि सुख नहीं मिलता, जिसके कारण वे पीड़ित होकर पुनः पुनः जन्मते एवं मरते रहते हैं।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਕਦੇ ਨ ਬੁਝਈ ਦੁਬਿਧਾ ਹੋਇ ਖੁਆਰੁ ॥
त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥
उनकी तृष्णा कदापि नहीं बुझती और दुविधा में पड़कर ख्वार होते हैं।

ਮੁਹ ਕਾਲੇ ਤਿਨਾ ਨਿੰਦਕਾ ਤਿਤੁ ਸਚੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥
मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥
उन निन्दकों के सत्य के दरबार में मुंह काले कर दिए जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣਿਆ ਨਾ ਉਰਵਾਰਿ ਨ ਪਾਰਿ ॥੨॥
नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥२॥
हे नानक ! हरि-नाम से विहीन व्यक्ति को लोक-परलोक कहीं भी शरण नहीं मिलती ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਸੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥
जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥
जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करते हैं, वे अपने हृदय में भी हरि-नाम में मग्न रहते हैं।

ਜਿਨਾ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ਇਕੁ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨਾ ਇਕਸ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥
जो अपने मन एवं चित में एक ईश्वर की ही आराधना करते हैं, वे एक प्रभु के सिवाय किसी दूसरे को नहीं जानते।

सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥
सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥
वही पुरुष भगवान की उपासना करते हैं, जिनके मस्तक पर प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिखा हुआ है।

हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥
हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥
वे तो नित्य ही भगवान की महिमा गाते रहते हैं और गुणवान भगवान की महिमा गायन करके अपने मन को सीख देते हैं।

वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥१७॥
वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥१७॥
गुरुमुखों की बड़ी बड़ाई है कि वे पूर्ण गुरु के द्वारा हरि-नाम में ही लीन रहते हैं ॥१७॥

सलोकु मः ३ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
सतगुरु की सेवा बड़ी कठिन है चूंकि यह तो अपना आत्माभिमान मिटाकर, सिर अर्पित करके ही की जा सकती है।

सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥
यदि व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा मोह-माया की ओर से निर्लिप्त हो जाए तो वह दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता और उसकी सारी सेवा सफल हो जाती है।

पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥
पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥
वह गुरु रूपी पारस को स्पर्श करके पारस अर्थात् गुणवान ही बन जाता है और सत्य में ही अपनी सुरति लगाकर रखता है।

ਜਿਸੁ ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਤਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰਭੁ ਆਇ ॥
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥
जिसकी तकदीर में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा होता है, उस व्यक्ति को सदगुरु प्रभु आकर मिल जाता है।

ਨਾਨਕ ਗਣਤੈ ਸੇਵਕੁ ਨਾ ਮਿਲੈ ਜਿਸੁ ਬਖਸੇ ਸੋ ਪਵੈ ਥਾਇ ॥੧॥
नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥१॥
हे नानक ! यदि लेखा-जोखा किया जाए तो सेवक अपने भगवान से नहीं मिल सकता। जिसे वह क्षमादान कर देता है, वह स्वीकृत हो जाता है॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਮਹਲੁ ਕੁਮਹਲੁ ਨ ਜਾਣਨੀ ਮੂਰਖ ਅਪਣੈ ਸੁਆਇ ॥
महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥
अपने स्वार्थ के कारण मूर्ख व्यक्ति अच्छे एवं बुरे की पहचान नहीं करते।

ਸਬਦੁ ਚੀਨਹਿ ਤਾ ਮਹਲੁ ਲਹਹਿ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਇ ॥
सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥
यदि वे शब्द का चिंतन करे तो उन्हें सच्चे घर की प्राप्ति हो जाती है और उनकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है।

ਸਦਾ ਸਚੇ ਕਾ ਭਉ ਮਨਿ ਵਸੈ ਤਾ ਸਭਾ ਸੋਝੀ ਪਾਇ ॥
सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥
यदि सच्चे परमेश्वर का प्रेम-भय हमेशा अन्तर्मन में विद्यमान रहे तो हर प्रकार की सूझ प्राप्त हो जाती है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਅਪਣੈ ਘਰਿ ਵਰਤਦਾ ਆਪੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥
सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥
सतगुरु अपने हृदय-घर में ही अवस्थित होता है और स्वयं भी उन्हें भगवान से मिला देता है।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸਭ ਪੂਰੀ ਪਈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਰਜਾਇ ॥੨॥
नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥
हे नानक ! निरंकार अपनी इच्छानुसार जिस पर कृपा करता है, उसका गुरु से मिलाप हो जाता है और गुरु द्वारा उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਧੰਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਭਗਤ ਜਨਾ ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਮੁਖਿ ਕਹਤਿਆ ॥
धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥
उन भक्तजनों का भाग्य धन्य-धन्य है, जो अपने मुखारबिंद से हरि-नाम का भजन करते हैं।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਸੰਤ ਜਨਾ ਜੋ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣਤਿਆ ॥
धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥
उन संतजनों का भाग्य भी धन्य है, जो अपने कानों से हरि का यश सुनते है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਸਾਧ ਜਨਾ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਗਾਇ ਗੁਣੀ ਜਨ ਬਣਤਿਆ ॥
धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥
उन साधु जनों का भाग्य भी धन्य है, जो भगवान का कीर्ति-गान करने से गुणवान बन जाते हैं।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਭਾਗ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਜੋ ਗੁਰਸਿਖ ਲੈ ਮਨੁ ਜਿਣਤਿਆ ॥
धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥
उन गुरुमुखों का भाग्य भी धन्य है जो गुरु की शिक्षा का अनुसरण करके अपने मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

ਸਭ ਦੂ ਵਡੇ ਭਾਗ ਗੁਰਸਿਖਾ ਕੇ ਜੋ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਸਿਖ ਪੜਤਿਆ ॥੧੮॥
सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥१८॥
सबसे महाभाग्यवान तो गुरु के शिष्य है, जो अपने गुरु के चरणों में पड़ जाते हैं।॥१८॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਬ੍ਰਹਮੁ ਬਿੰਦੈ ਤਿਸ ਦਾ ਬ੍ਰਹਮਤੁ ਰਹੈ ਏਕ ਸਬਦਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
ब्रहमु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥
जो ब्रह्म का ज्ञाता है और एक शब्द में ही अपनी लगन लगाकर रखता है, उसका ही ब्राह्मणत्व कायम रहता है।

ਨਵ ਨਿਧੀ ਅਠਾਰਹ ਸਿਧੀ ਪਿਛੈ ਲਗੀਆ ਫਿਰਹਿ ਜੋ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦਾ ਵਸਾਇ ॥
नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥
जो हमेशा ही अपने हृदय में परमात्मा को बसाकर रखता है, विश्व की नवनिधियाँ एवं अठारह सिद्धियाँ उसके आगे पीछे लगी रहती हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਉ ਨ ਪਾਈਐ ਬੁਝਹੁ ਕਰਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥
इस तथ्य को भली-भांति विचार कर समझ लो कि सतगुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਜੁਗ ਚਾਰਿ ॥੧॥
नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥१॥
हे नानक ! पूर्ण भाग्य से ही सतगुरु से मिलन होता है और गुरु से साक्षात्कार होने पर मनुष्य को चारों युगों में सुख प्राप्त हो जाता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਕਿਆ ਗਭਰੂ ਕਿਆ ਬਿਰਧਿ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਨ ਜਾਇ ॥
किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥
चाहे नवयुवक हो अथवा चाहे वृद्ध ही क्यों न हो, मनमुख की तृष्णा की भूख कदापि नहीं मिटती।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੇ ਰਤਿਆ ਸੀਤਲੁ ਹੋਏ ਆਪੁ ਗਵਾਇ ॥
गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥
गुरुमुख व्यक्ति शब्द में मग्न होकर अपना आत्माभिमान नष्ट करके शीतल-शांत हो जाते हैं।

ਅੰਦਰੁ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਸੰਤੋਖਿਆ ਫਿਰਿ ਭੁਖ ਨ ਲਗੈ ਆਇ ॥
अंदरु त्रिपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै आइ ॥
उनका मन तृप्त एवं संतुष्ट हो जाता है और उन्हें पुनः कोई भूख आकर नहीं लगती।

ਨਾਨਕ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਹਿ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ਹੈ ਜੋ ਨਾਮਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੨॥
नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥२॥
हे नानक ! गुरुमुख जो कुछ भी करते हैं वह स्वीकृत हैं, चूंकि उनकी सुरति भगवान के नाम में ही लगी रहती है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿੰਨ ਕੰਉ ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਿਖਾ ॥
हउ बलिहारी तिंन कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥
मैं उन पर तन मन से बलिहारी जाता हूँ, जो गुरुमुख शिष्य हैं।

ਜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦੇ ਤਿਨ ਦਰਸਨੁ ਪਿਖਾ ॥
जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥
मैं तो केवल उनके ही दर्शन करता हूँ, जो हरि-नाम का सिमरण करते हैं।

ਸੁਣਿ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਵਾ ਹਰਿ ਜਸੁ ਮਨਿ ਲਿਖਾ ॥
सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥
मैं हरि का कीर्तन सुनकर उसका ही गुणगान करता हूँ, और अपने हृदय में हरि का ही यश लिखता हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਲਾਹੀ ਰੰਗ ਸਿਉ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕ੍ਰਿਖਾ ॥
हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख क्रिखा ॥
मैं प्रेमपूर्वक हरि-नाम की ही स्तुति करता हूँ और अपने समस्त पापों का मूल रूप से नाश करता हूँ।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਸੁਹਾਵਾ ਸੋ ਸਰੀਰੁ ਥਾਨੁ ਹੈ ਜਿਥੈ ਮੇਰਾ ਗੁਰੁ ਧਰੇ ਵਿਖਾ ॥੧੯॥
धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥१९॥
वह शरीर एवं स्थान धन्य धन्य एवं बड़ा सुहावना है, जहाँ मेरा गुरु अपने सुन्दर चरण रखता है॥१६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੁਰ ਬਿਨੁ ਗਿਆਨੁ ਨ ਹੋਵਈ ਨਾ ਸੁਖੁ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥
गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥
गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और न ही मन में आकर सुख का निवास होता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੇ ਮਨਮੁਖੀ ਜਾਸਨਿ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇ ॥੧॥
नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥१॥
हे नानक ! नाम से विहीन मनमुखी जीव अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा कर दुनिया से चले जाएँगे॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਨਾਵੈ ਨੋ ਸਭਿ ਖੋਜਦੇ ਥਕਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥
समस्त सिद्ध एवं साधक पुरुष नाम की खोज करते हुए अपनी सुरति लगाकर थक गए हैं।

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥
गुरु के बिना किसी को भी नाम की प्राप्ति नहीं हुई और गुरु के सान्निध्य में रहकर ही परम-सत्य से मिलन होता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਪੈਨਣੁ ਖਾਣੁ ਸਭੁ ਬਾਦਿ ਹੈ ਧਿਗੁ ਸਿਧੀ ਧਿਗੁ ਕਰਮਾਤਿ ॥
बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥
नाम के बिना खाना-पहनना सब व्यर्थ है और नाम के बिना समस्त सिद्धियाँ एवं करामातें भी धिक्कार योग्य हैं।

ਸਾ ਸਿਧਿ ਸਾ ਕਰਮਾਤਿ ਹੈ ਅਚਿੰਤੁ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਦਾਤਿ ॥
सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥
वही सिद्धि एवं वही करामात है, जिसे परमात्मा अपने दान के रूप में देता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਵਸੈ ਏਹਾ ਸਿਧਿ ਏਹਾ ਕਰਮਾਤਿ ॥੨॥
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥२॥
हे नानक ! हरि-नाम मन में स्थित हो जाए, यही सिद्धि एवं यही वास्तव में करामात है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी।

ਹਮ ਢਾਢੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਖਸਮ ਕੇ ਨਿਤ ਗਾਵਹ ਹਰਿ ਗੁਣ ਛੰਤਾ ॥
हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥
हम उस मालिक हरि-प्रभु के गवैया हैं और नित्य ही उसके गुण गाते रहते हैं।

ਹਰਿ ਕੀਰਤਨੁ ਕਰਹ ਹਰਿ ਜਸੁ ਸੁਣਹ ਤਿਸੁ ਕਵਲਾ ਕੰਤਾ ॥
हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥
हम तो हरि का ही कीर्तन करते हैं और उस कमलापति हरि का ही यश सुनते रहते हैं।

ਹਰਿ ਦਾਤਾ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਭਿਖਾਰੀਆ ਮੰਗਤ ਜਨ ਜੰਤਾ ॥
हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥
एक हरि ही सबका दाता है, यह समूचा विश्व मात्र भिखारी है और सभी जीव एवं लोग उसके याचक ही हैं।

ਹਰਿ ਦੇਵਹੁ ਦਾਨੁ ਦਇਆਲ ਹੋਇ ਵਿਚਿ ਪਾਥਰ ਕ੍ਰਿਮ ਜੰਤਾ ॥
हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता ॥
हे दीनदयाल श्रीहरि ! दयालु होकर हमें भी दान दीजिए, चूंकि तुम तो पत्थरों में कीड़ों एवं जन्तुओं को दान प्रदान करते रहते हो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਧਨਵੰਤਾ ॥੨੦॥
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥२०॥
हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में जिन्होंने नाम का ध्यान-मनन किया है, दरअसल वही धनवान हैं॥ २० ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਪੜਣਾ ਗੁੜਣਾ ਸੰਸਾਰ ਕੀ ਕਾਰ ਹੈ ਅੰਦਰਿ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਵਿਕਾਰੁ ॥
पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु ॥
अगर मन में तृष्णा एवं विकार विद्यमान हैं तो पढ़ना एवं विचारना जगत का एक धन्धा ही बन जाता है।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭਿ ਪੜਿ ਥਕੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਖੁਆਰੁ ॥
हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥
अहंकार में पढ़ने से सभी थक चुके हैं और द्वैतभाव के कारण वे नष्ट हो जाते हैं।

ਸੋ ਪੜਿਆ ਸੋ ਪੰਡਿਤੁ ਬੀਨਾ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥
जो गुरु के शब्द का चिन्तन करता है, वास्तव में वही विद्वान एवं चतुर पण्डित है।

ਅੰਦਰੁ ਖੋਜੈ ਤਤੁ ਲਹੈ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥
वह अपने अन्तर्मन में ही तलाश करते हुए परम तत्व को पा लेता है और उसे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाता है।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਸਹਜਿ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥
वह गुणों के भण्डार परमात्मा को प्राप्त कर लेता है और सहजता से उसका ही चिन्तन करता है।

ਧੰਨੁ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਨਕਾ ਜਿਸੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥੧॥
धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥१॥
हे नानक ! वह व्यापारी धन्य है, जिसे गुरु के सान्निध्य में नाम का ही आधार मिल जाता है ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਵਿਣੁ ਮਨੁ ਮਾਰੇ ਕੋਇ ਨ ਸਿਝਈ ਵੇਖਹੁ ਕੋ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥
अपने मन को वशीभूत किए बिना किसी भी मनुष्य को सफलता प्राप्त नहीं होती, चाहे कोई वृत्ति लगाकर देख ले।

ਭੇਖਧਾਰੀ ਤੀਰਥੀ ਭਵਿ ਥਕੇ ਨਾ ਏਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿਆ ਜਾਇ ॥
भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥
अनेक वेश धारण करने वाले तीर्थ-यात्रा पर भ्रमण करते हुए भी थक चुके हैं परन्तु फिर भी उनका यह मन नियंत्रण में नहीं आता।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਏਹੁ ਮਨੁ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਸਚਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥
गुरुमुख व्यक्ति का तो यह मन जीवित ही वशीभूत को जाता है और वह अपनी सुरति सत्य में ही लगाकर रखता है।

ਨਾਨਕ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਮਲੁ ਇਉ ਉਤਰੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੨॥
नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥२॥
हे नानक ! गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व को जला देने से ही इस मन की मैल दूर हो जाती है ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਤ ਮਿਲਹੁ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵਹੁ ਇਕ ਕਿਨਕਾ ॥
हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ॥
हे मेरे भाई ! हे हरि के संतो! मुझे आकर मिलो और मेरे भीतर थोड़ा-सा हरि का नाम दृढ़ कर दो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੀਗਾਰੁ ਬਨਾਵਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਕਾਪੜੁ ਪਹਿਰਹੁ ਖਿਮ ਕਾ ॥
हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥
हे भक्तजनों ! मुझे हरि-नाम से श्रृंगार दो और मुझे क्षमा का हरि वस्त्र पहना दो।

ਐਸਾ ਸੀਗਾਰੁ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਹਰਿ ਲਾਗੈ ਪਿਆਰਾ ਪ੍ਰਿਮ ਕਾ ॥
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥
ऐसा श्रृंगार मेरे प्रभु को बहुत अच्छा लगता है ऐसी प्रेम की सजावट मेरे प्रभु को बड़ी प्यारी लगती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਬੋਲਹੁ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਕਾਟੈ ਇਕ ਪਲਕਾ ॥
हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका ॥
दिन-रात परमेश्वर का जाप करो, चूंकि वह तो एक पल में ही सारे किल्विष-पाप मिटा देता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਉਪਰਿ ਸੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਿਣਕਾ ॥੨੧॥
हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥२१॥
जिस पर हरि-परमेश्वर दयालु हो जाता है, वह गुरुमुख बन कर हरि-नाम का जाप करके अपने जीवन की बाजी को जीत लेता है ॥२१॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੀ ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਮਲੁ ਲਾਗੀ ਕਾਲਾ ਹੋਆ ਸਿਆਹੁ ॥
जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥
इस मन को तो जन्म-जन्मांतरों की मैल लगी हुई है और यह तो बिल्कुल मैला हो गया है।

ਖੰਨਲੀ ਧੋਤੀ ਉਜਲੀ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸਉ ਧੋਵਣਿ ਪਾਹੁ ॥
खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥
किसी तेली की धोती धोने से वह उज्ज्वल नहीं होती चाहे उसे सौ बार ही क्यों न धोया जाए।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ਉਲਟੀ ਹੋਵੈ ਮਤਿ ਬਦਲਾਹੁ ॥
गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥
गुरु की कृपा से मनुष्य जीवित ही मोह-माया से विरक्त रहता है, उसका स्वभाव बदल कर सांसारिक पदार्थों की ओर से विपरीत हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਮੈਲੁ ਨ ਲਗਈ ਨਾ ਫਿਰਿ ਜੋਨੀ ਪਾਹੁ ॥੧॥
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥
हे नानक ! तब उसे किसी प्रकार की मैल नहीं लगती और वह फिर से योनियों के चक्र में नहीं पड़ता ॥ १॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਚਹੁ ਜੁਗੀ ਕਲਿ ਕਾਲੀ ਕਾਂਢੀ ਇਕ ਉਤਮ ਪਦਵੀ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਾਹਿ ॥
चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥
चारों युगों-(सतियुग, त्रैता, द्वापर, कलियुग) में एक कलियुग ही सबसे काला युग कहा जाता है किन्तु इस युग में भी एक उत्तम पदवी प्राप्त हो सकती है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਫਲੁ ਪਾਈਐ ਜਿਨ ਕਉ ਹਰਿ ਲਿਖਿ ਪਾਹਿ ॥
गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥
जिनकी विधाता ने ऐसी किस्मत लिख दी है, वे गुरु के सान्निध्य में रहकर इस युग में भगवान की कीर्ति का फल प्राप्त कर लेते है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਅਨਦਿਨੁ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਉਚਰਹਿ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥
नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥२॥
हे नानक ! ऐसे भक्तजन गुरु की अपार कृपा से रात-दिन भगवान की भक्ति का उच्चारण करते हैं और भक्ति में ही विलीन रहते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਸਾਧ ਜਨ ਸੰਗਤਿ ਮੁਖਿ ਬੋਲੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਲੀ ਬਾਣਿ ॥
हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥
हे हरि ! मुझे साधुजनों की सभा में मिला दो, चूंकि उनकी सभा में सम्मिलित होकर मैं अपने मुखारविंद से तेरी हरि-नाम रूपी सुन्दर वाणी को बोलूं।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ਹਰਿ ਨਿਤ ਚਵਾ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਸਦਾ ਮਾਣਿ ॥
हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥
मैं तो सदा भगवान का गुणगान करता हूँ और उसका ही भजन करता हूँ तथा गुरु-उपदेशानुसार सदैव भगवान के रंग का आनंद प्राप्त करता हूँ।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪਿ ਅਉਖਧ ਖਾਧਿਆ ਸਭਿ ਰੋਗ ਗਵਾਤੇ ਦੁਖਾ ਘਾਣਿ ॥
हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥
ईश्वर का जाप करके और जप रूपी औषधि को खाने से मेरे समस्त रोग एवं दु:खों का नाश हो गया है।

ਜਿਨਾ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ਨ ਵਿਸਰੈ ਸੇ ਹਰਿ ਜਨ ਪੂਰੇ ਸਹੀ ਜਾਣਿ ॥
जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥
जो श्वास लेते एवं खाते वक्त भी ईश्वर को नहीं भुलाते, उन भक्तजनों को पूर्ण सच्चे पुरुष समझो।

ਜੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਆਰਾਧਦੇ ਤਿਨ ਚੂਕੀ ਜਮ ਕੀ ਜਗਤ ਕਾਣਿ ॥੨੨॥
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥२२॥
जो गुरुमुख बनकर भगवान की आराधना करते हैं, उनकी मृत्यु का भय एवं दुनिया की अधीनता मिट जाती है ॥२२॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਰੇ ਜਨ ਉਥਾਰੈ ਦਬਿਓਹੁ ਸੁਤਿਆ ਗਈ ਵਿਹਾਇ ॥
रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥
हे मानव ! भयानक स्वप्न के दबाव के नीचे तेरा सारा जीवन निद्रा में सोते हुए ही व्यतीत हो गया है।

सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥
सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥
तुम तो गुरु का शब्द सुनकर भी जाग्रत नहीं हुए और न ही तुम्हारे मन में चाव पैदा हुआ है।

सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥
सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥
वह शरीर जो गुणों से खाली है और जो गुरु की सेवा भी नहीं करता, उसे जल जाना ही चाहिए।

जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥
जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥
मैंने तो इस दुनिया को आत्माभिमान एवं द्वैतभाव में जलते हुए ही देखा है।

नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥
नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥
हे नानक ! जिन्होंने गुरु की शरण में आकर सच्चे मन से शब्द का चिंतन किया है, उनका कल्याण हो गया है॥ १॥

मः ३ ॥
मः ३ ॥
महला ३ ॥

सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥
शब्द में मग्न होने से जीव-स्त्री का अहंकार नष्ट हो गया है और अब वह शोभावान हो गई है।

पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥
पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥
यदि जीव-स्त्री सदैव अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करे तो ही उसका श्रृंगार उत्तम है।

सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥
सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥
उस नारी की सेज सुहावनी हो जाती है, वह परमात्मा को ही अपने वर के रूप में प्राप्त कर लेती है और हमेशा ही अपने प्रियतम के साथ आनंद करती है।

ਨਾ ਹਰਿ ਮਰੈ ਨ ਕਦੇ ਦੁਖੁ ਲਾਗੈ ਸਦਾ ਸੁਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ॥
ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥
परमेश्वर तो अनश्वर है, जिसके कारण जीव रूपी नारी को कभी दुःख स्पर्श नहीं करता और वह तो सदा सुहागिन ही रहती है।

ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਮੇਲਿ ਲਈ ਗੁਰ ਕੈ ਹੇਤਿ ਪਿਆਰਿ ॥੨॥
नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥२॥
हे नानक ! गुरु के स्नेह एवं प्रेम के कारण प्रभु उसे अपने साथ ही मिला लेता है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਨਾ ਗੁਰੁ ਗੋਪਿਆ ਆਪਣਾ ਤੇ ਨਰ ਬੁਰਿਆਰੀ ॥
जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥
जिन्होंने अपने गुरु का तिरस्कार किया है, वे पुरुष बहुत बुरे हैं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤਿਨ ਕਾ ਦਰਸਨੁ ਨਾ ਕਰਹੁ ਪਾਪਿਸਟ ਹਤਿਆਰੀ ॥
हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥
हे ईश्वर ! हमें तो उनके दर्शन मत करवाना, चूंकि वे तो महापापी और हत्यारे हैं।

ਓਹਿ ਘਰਿ ਘਰਿ ਫਿਰਹਿ ਕੁਸੁਧ ਮਨਿ ਜਿਉ ਧਰਕਟ ਨਾਰੀ ॥
ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥
वे खोटे मन वाले व्यभिचारिणी नारी की तरह घर-घर फिरते रहते हैं।

ਵਡਭਾਗੀ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਵਾਰੀ ॥
वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥
लेकिन अहोभाग्य से ही वे सत्संगति में शामिल होते है और गुरु के सान्निध्य में उनका जीवन संवर जाता है।

ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਸਤਿਗੁਰ ਦਇਆ ਕਰਿ ਗੁਰ ਕਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੨੩॥
हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥२३॥
हे पूज्य परमेश्वर ! अपनी दया करके सतगुरु से मिला दो, चूंकि मैं तो गुरु पर ही बलिहारी जाता हूँ॥ २३॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਸੁਖੁ ਊਪਜੈ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਲਗੈ ਆਇ ॥
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥
गुरु की सेवा करने से ही सुख उत्पन्न होता है और फिर कोई दुःख-क्लेश आकर नहीं लगता।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਮਿਟਿ ਗਇਆ ਕਾਲੈ ਕਾ ਕਿਛੁ ਨ ਬਸਾਇ ॥
जमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥
गुरु की सेवा के फलस्वरूप मनुष्य का जन्म-मरण ही मिट जाता है और उसके ऊपर मृत्यु का भी कुछ वश नहीं चलता।

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਮਨੁ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਚੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥
फिर उसका मन भगवान के साथ ही लगा रहता है और अंतः सत्य में ही वह समाया रहता है।

ਨਾਨਕ ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿੰਨ ਕਉ ਜੋ ਚਲਨਿ ਸਤਿਗੁਰ ਭਾਇ ॥੧॥
नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥१॥
हे नानक ! मै तो उन पर कुर्बान जाता हूँ जो सतगुरु की आज्ञानुसार चलते हैं।॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਬਿਨੁ ਸਬਦੈ ਸੁਧੁ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਅਨੇਕ ਕਰੈ ਸੀਗਾਰ ॥
बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥
यदि जीव-स्त्री अनेक श्रृंगार करती रहे, लेकिन फिर भी वह शब्द के बिना शुद्ध नहीं होती।

ਪਿਰ ਕੀ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਈ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਿਆਰੁ ॥
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥
वह तो अपने प्रभु के महत्व को नहीं जानती और द्वैतभाव के स्नेह में ही लगी रहती है।

ਸਾ ਕੁਸੁਧ ਸਾ ਕੁਲਖਣੀ ਨਾਨਕ ਨਾਰੀ ਵਿਚਿ ਕੁਨਾਰਿ ॥੨॥
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥२॥
हे नानक ! वह तो अपवित्र एवं कुलक्षणी है और समस्त नारियों में वह कुलटा नारी है ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਪਣੀ ਦਇਆ ਕਰਿ ਹਰਿ ਬੋਲੀ ਬੈਣੀ ॥
हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥
हे हरि ! मुझ पर अपनी दया करो, ताकि मैं तेरी पवित्र वाणी का बखान करता रहूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਹਰਿ ਉਚਰਾ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਲੈਣੀ ॥
हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥
मैं तो हरि-नाम का ही ध्यान करता हूँ, हरि के नाम का ही उच्चारण करता हूँ और हरि-नाम को ही लाभ के रूप में प्राप्त करता हूँ।

ਜੋ ਜਪਦੇ ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਤਿਨ ਹਉ ਕੁਰਬੈਣੀ ॥
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥
जो भक्त दिन-रात परमेश्वर का ही भजन करते रहते हैं, मैं उन पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ।

ਜਿਨਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਅਰਾਧਿਆ ਤਿਨ ਜਨ ਦੇਖਾ ਨੈਣੀ ॥
जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥
जिन्होंने मेरे प्यारे सतगुरु की आराधना की है, अपने इन नयनों से मैं उन महापुरुषों के ही दर्शनों की कामना करता हूँ।

ਹਉ ਵਾਰਿਆ ਅਪਣੇ ਗੁਰੂ ਕਉ ਜਿਨਿ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਸਜਣੁ ਮੇਲਿਆ ਸੈਣੀ ॥੨੪॥
हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥२४॥
मैं तो अपने गुरु पर तन मन से न्यौछावर हूँ, जिसने मुझे मेरे सज्जन एवं संबंधी प्रभु से मिला दिया है ॥२४॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४ ॥

ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੋ ਮਿਤੁ ॥
हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥
परमात्मा को अपने दासों से बड़ी प्रीति है, वही अपने दासों का घनिष्ठ मित्र है।

ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਜਿਉ ਜੰਤੀ ਕੈ ਵਸਿ ਜੰਤੁ ॥
हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥
वह तो अपने दासों के ऐसे वशीभूत होता है, जैसे कोई संगीत यंत्र किसी संगीतकार के वशीभूत होता है,"

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਹਰਿ ਧਿਆਇਦੇ ਕਰਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਉ ਨੇਹੁ ॥
हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥
अपने प्रियतम से प्रेम करके हरि के दास, हरि का ही ध्यान करते हैं।

ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਕੈ ਸੁਨਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸਭ ਜਗ ਮਹਿ ਵਰਸੈ ਮੇਹੁ ॥
किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥
हे प्रभु ! कृपा करके सुनो और समूचे जगत में अपनी नाम-कृपा की मूसलाधार वर्षा कर दो।

ਜੋ ਹਰਿ ਦਾਸਨ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਹੈ ਸਾ ਹਰਿ ਕੀ ਵਡਿਆਈ ॥
जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥
जो परमात्मा के दासों की स्तुति है, वह परमात्मा की महिमा है।

ਹਰਿ ਆਪਣੀ ਵਡਿਆਈ ਭਾਵਦੀ ਜਨ ਕਾ ਜੈਕਾਰੁ ਕਰਾਈ ॥
हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥
परमात्मा को अपनी महिमा बहुत प्यारी लगती है, जिसके कारण वह अपने सेवकों की जय-जयकार करवाता है।

ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਦਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਨੁ ਇਕ ਸਮਾਨਿ ॥
सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥
जो नाम का ध्यान करता है वही भक्तजन है और परमात्मा एवं भक्तजन एक रूप ही होते हैं।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਹਰਿ ਪੈਜ ਰਖਹੁ ਭਗਵਾਨ ॥੧॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥१॥
नानक तो उस हरि-परमेश्वर का ही दास है, हे भगवान ! उसकी लाज-प्रतिष्ठा रखो ॥१॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਾਈ ਤਿਨਿ ਸਾਚੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਰਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥
नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥
हे नानक ! उस सच्चे परमात्मा ने मन में ऐसा प्रेम पैदा कर दिया है कि उसके बिना अब एक क्षण भी जीना असंभव है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤ ਪੂਰਾ ਪਾਈਐ ਹਰਿ ਰਸਿ ਰਸਨ ਰਸਾਈ ॥੨॥
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥
जब सतगुरु से साक्षात्कार होता है तो पूर्ण परमेश्वर की प्राप्ति होती है और जीभ हरि-रस का आनंद लेती है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਰੈਣਿ ਦਿਨਸੁ ਪਰਭਾਤਿ ਤੂਹੈ ਹੀ ਗਾਵਣਾ ॥
रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥
हे ईश्वर ! रात, दिन एवं प्रभात काल तेरा ही यशगान करना है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਰਬਤ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਧਿਆਵਣਾ ॥
जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥
सब जीव तेरे नाम का ही ध्यान करते हैं।

ਤੂ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਖਾਵਣਾ ॥
तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥
हे दातार प्रभु ! तू ही हम सबका दाता है और हम सब तेरा दिया हुआ ही खाते हैं।

ਭਗਤ ਜਨਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਪਾਪ ਗਵਾਵਣਾ ॥
भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥
भक्तजनों की संगति में ही सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਵਣਾ ॥੨੫॥
जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥२५॥
नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी है और तन-मन से न्यौछावर है ॥२५॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਅੰਤਰਿ ਅਗਿਆਨੁ ਭਈ ਮਤਿ ਮਧਿਮ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਪਰਤੀਤਿ ਨਾਹੀ ॥
अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥
जिस जीव के मन में अज्ञान है उसकी तो बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई है, उसे सतगुरु के प्रति कोई आस्था नहीं।

ਅੰਦਰਿ ਕਪਟੁ ਸਭੁ ਕਪਟੋ ਕਰਿ ਜਾਣੈ ਕਪਟੇ ਖਪਹਿ ਖਪਾਹੀ ॥
अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥
जिसके मन में छल-कपट ही है, वह सबको कपटी ही समझता है और इस छल-कपट के कारण वह तबाह हो जाता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕਾ ਭਾਣਾ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ਆਪਣੈ ਸੁਆਇ ਫਿਰਾਹੀ ॥
सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥
उसके मन में गुरु की रज़ा प्रविष्ट नहीं होती और वह तो अपने स्वार्थ के लिए ही भटकता रहता है।

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਨਾਨਕ ਸਬਦਿ ਸਮਾਹੀ ॥੧॥
किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥१॥
हे नानक ! यदि ईश्वर अपनी कृपा करे तो ही वह शब्द में समा जाता है।॥ १॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਮਨਮੁਖ ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਵਿਆਪੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਮਨੂਆ ਥਿਰੁ ਨਾਹਿ ॥
मनमुख माइआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥
मनमुख जीव माया के मोह में ही फँसे रहते हैं और द्वैतभाव के कारण उनका मन स्थिर नहीं होता।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਲਤ ਰਹਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਉਮੈ ਖਪਹਿ ਖਪਾਹਿ ॥
अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥
वे तो दिन-रात तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं और अहंकार में बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं (एवं दूसरों को भी नष्ट कर देते हैं)।

ਅੰਤਰਿ ਲੋਭੁ ਮਹਾ ਗੁਬਾਰਾ ਤਿਨ ਕੈ ਨਿਕਟਿ ਨ ਕੋਈ ਜਾਹਿ ॥
अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥
इनके मन में लोभ का घोर अन्धेरा है और कोई भी उनके निकट नहीं आता।

ਓਇ ਆਪਿ ਦੁਖੀ ਸੁਖੁ ਕਬਹੂ ਨ ਪਾਵਹਿ ਜਨਮਿ ਮਰਹਿ ਮਰਿ ਜਾਹਿ ॥
ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥
वे आप दुःखी रहते हैं और कभी भी उन्हें सुख की प्राप्ति नहीं होती। वे मर जाते हैं और जन्मते-मरते ही रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਬਖਸਿ ਲਏ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਚਾ ਜਿ ਗੁਰ ਚਰਨੀ ਚਿਤੁ ਲਾਹਿ ॥੨॥
नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥२॥
हे नानक ! जो अपना चित गुरु के चरणों में लगाते हैं, सच्चा प्रभु उन्हें क्षमा कर देता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸੰਤ ਭਗਤ ਪਰਵਾਣੁ ਜੋ ਪ੍ਰਭਿ ਭਾਇਆ ॥
संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥
जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही संत एवं भक्त परवान हैं।

ਸੇਈ ਬਿਚਖਣ ਜੰਤ ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਧਿਆਇਆ ॥
सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥
जिसने भगवान का ध्यान किया है, वही पुरुष चतुर है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥
अम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥
वह अमृत नाम का भोजन ग्रहण करता है, जो सर्व गुणों का भण्ड़ार है।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮਸਤਕਿ ਲਾਇਆ ॥
संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥
वह तो संतजनों की चरण-धूलि ही अपने माथे पर लगाता है।

ਨਾਨਕ ਭਏ ਪੁਨੀਤ ਹਰਿ ਤੀਰਥਿ ਨਾਇਆ ॥੨੬॥
नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥२६॥
हे नानक ! जिन्होंने हरि-नाम रूपी तीर्थ में स्नान किया है, वे पवित्र पावन हो गए हैं॥२६॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੪ ॥
सलोकु मः ४ ॥
श्लोक महला ४॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਹੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਇ ॥
गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥
गुरुमुख के मन में शांति है और उसका मन एवं तन नाम में ही समाया रहता है।

ਨਾਮੋ ਚਿਤਵੈ ਨਾਮੁ ਪੜੈ ਨਾਮਿ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥
वह नाम को ही याद करता है, नाम को ही पढ़ता है और नाम में ही सुरति लगाकर रखता है।

ਨਾਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ਚਿੰਤਾ ਗਈ ਬਿਲਾਇ ॥
नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥
अमूल्य नाम-पदार्थ को पा कर उसकी तमाम चिन्ता मिट गई है।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਨਾਮੁ ਊਪਜੈ ਤਿਸਨਾ ਭੁਖ ਸਭ ਜਾਇ ॥
सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥
गुरु के मिलाप से ही मन में नाम उत्पन्न होता है और इससे तृष्णा की तमाम भूख दूर हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੇ ਰਤਿਆ ਨਾਮੋ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥੧॥
नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥१॥
हे नानक ! परमात्मा के नाम में मग्न होने से वह अपने दामन में ही नाम को प्राप्त करता है॥१॥

ਮਃ ੪ ॥
मः ४ ॥
महला ४॥

ਸਤਿਗੁਰ ਪੁਰਖਿ ਜਿ ਮਾਰਿਆ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿਆ ਘਰੁ ਛੋਡਿ ਗਇਆ ॥
सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥
जिस व्यक्ति को महापुरुष सतगुरु ने धिक्कार दिया है, वह अपना घर त्याग कर हमेशा ही भटकता रहता है।

ਓਸੁ ਪਿਛੈ ਵਜੈ ਫਕੜੀ ਮੁਹੁ ਕਾਲਾ ਆਗੈ ਭਇਆ ॥
ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥
उसके बाद उसकी बहुत ही निन्दा होती है और आगे परलोक में भी उसका मुँह काला ही होता है।

ਓਸੁ ਅਰਲੁ ਬਰਲੁ ਮੁਹਹੁ ਨਿਕਲੈ ਨਿਤ ਝਗੂ ਸੁਟਦਾ ਮੁਆ ॥
ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥
उसके मुँह से उल्टी-सीधी व्यर्थ बातें ही निकलती हैं और वह नित्य ही मुँह से झाग निकालता हुआ अर्थात् निन्दित कर्म करता हुए प्राण त्याग देता है।

ਕਿਆ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਹੀ ਦੈ ਕੀਤੈ ਜਾਂ ਧੁਰਿ ਕਿਰਤੁ ਓਸ ਦਾ ਏਹੋ ਜੇਹਾ ਪਇਆ ॥
किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥
किसी के कुछ करने से क्या संभव हो सकता है? जबकि उसके पूर्व कर्मों के कारण उसका ऐसा ही भाग्य लिखा था।

ਜਿਥੈ ਓਹੁ ਜਾਇ ਤਿਥੈ ਓਹੁ ਝੂਠਾ ਕੂੜੁ ਬੋਲੇ ਕਿਸੈ ਨ ਭਾਵੈ ॥
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥
वह जिधर भी जाता है, वहाँ झूठ ही बोलता है और झूठा ही माना जाता है। उसका झूठ बोलना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

ਵੇਖਹੁ ਭਾਈ ਵਡਿਆਈ ਹਰਿ ਸੰਤਹੁ ਸੁਆਮੀ ਅਪੁਨੇ ਕੀ ਜੈਸਾ ਕੋਈ ਕਰੈ ਤੈਸਾ ਕੋਈ ਪਾਵੈ ॥
वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥
हे भाई ! हे संतजनो ! अपने स्वामी प्रभु का बड़प्पन देखो, जैसा कोई कर्म करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

ਏਹੁ ਬ੍ਰਹਮ ਬੀਚਾਰੁ ਹੋਵੈ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਅਗੋ ਦੇ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਆਖਿ ਸੁਣਾਵੈ ॥੨॥
एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥२॥
सत्य के दरबार में यही ब्रह्म -विचार होता है, इसलिए नानक इसे पूर्व ही कह कर सुना रहा है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਗੁਰਿ ਸਚੈ ਬਧਾ ਥੇਹੁ ਰਖਵਾਲੇ ਗੁਰਿ ਦਿਤੇ ॥
गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥
सच्चे गुरु ने सत्संगति रूपी एक उत्तम गांव का निर्माण किया है और उस गांव के लिए स्वयं ही रखवाले दिए हैं।

ਪੂਰਨ ਹੋਈ ਆਸ ਗੁਰ ਚਰਣੀ ਮਨ ਰਤੇ ॥
पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥
गुरु के चरणों में मन को मग्न करने से हमारी आशा पूर्ण हो गई है।

ਗੁਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਬੇਅੰਤਿ ਅਵਗੁਣ ਸਭਿ ਹਤੇ ॥
गुरि क्रिपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥
हमारा गुरु बेअन्त कृपालु है, जिसने हमारे सभी अवगुण नाश कर दिए हैं।

ਗੁਰਿ ਅਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਅਪਣੇ ਕਰਿ ਲਿਤੇ ॥
गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥
गुरु ने अपनी कृपा करके हमें अपना बना लिया।

ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰ ਜਿਸੁ ਗੁਰ ਕੇ ਗੁਣ ਇਤੇ ॥੨੭॥
नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥२७॥
नानक तो सदैव ही उस पर बलिहारी जाता है, जिस गुरु के भीतर इतने अनन्त गुण हैं।॥२७॥

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥
सलोक मः १ ॥
श्लोक महला १॥

ਤਾ ਕੀ ਰਜਾਇ ਲੇਖਿਆ ਪਾਇ ਅਬ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ਪਾਂਡੇ ॥
ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥
हे पण्डित ! अब क्या कर सकते हैं ? चूंकि उस परमात्मा की इच्छानुसार जो लिखा है, वही प्राप्त होना है।

ਹੁਕਮੁ ਹੋਆ ਹਾਸਲੁ ਤਦੇ ਹੋਇ ਨਿਬੜਿਆ ਹੰਢਹਿ ਜੀਅ ਕਮਾਂਦੇ ॥੧॥
हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥१॥
जब उसका हुक्म हुआ था, तो तेरी किस्मत का निर्णय हो गया था और उसके हुक्म अनुसार ही जीव अपना जीवन-आचरण करता है॥१॥

ਮਃ ੨ ॥
मः २ ॥
महला २॥

ਨਕਿ ਨਥ ਖਸਮ ਹਥ ਕਿਰਤੁ ਧਕੇ ਦੇ ॥
नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥
सृष्टि के प्रत्येक प्राणी की नाक में उस मालिक की हुक्म रूपी नुकेल पड़ी हुई है, सब कुछ उसके ही वश में है और जीव के किए हुए कर्म ही उसे धकेलते हैं।

ਜਹਾ ਦਾਣੇ ਤਹਾਂ ਖਾਣੇ ਨਾਨਕਾ ਸਚੁ ਹੇ ॥੨॥
जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥२॥
हे नानक ! केवल यही सत्य है कि जहाँ भी जीव का भोजन-निर्वाह है, वहीं वह इसे खाने के लिए जाता है।॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਭੇ ਗਲਾ ਆਪਿ ਥਾਟਿ ਬਹਾਲੀਓਨੁ ॥
सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥
जगत-रचना की सब योजनाएँ परमात्मा ने स्वयं बनाकर नियत कर रखी हैं।

ਆਪੇ ਰਚਨੁ ਰਚਾਇ ਆਪੇ ਹੀ ਘਾਲਿਓਨੁ ॥
आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥
वह स्वयं ही जगत-रचना करके स्वयं ही इसका नाश कर देता है।

ਆਪੇ ਜੰਤ ਉਪਾਇ ਆਪਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਿਓਨੁ ॥
आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥
वह स्वयं ही सब जीवों को पैदा करके स्वयं ही उनका पालन-पोषण करता है।

ਦਾਸ ਰਖੇ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲਿਓਨੁ ॥
दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥
वह अपने सेवकों को अपने गले से लगाकर रखता है और कृपा-दृष्टि से उन्हें निहाल कर देता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਭਾਉ ਦੂਜਾ ਜਾਲਿਓਨੁ ॥੨੮॥
नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥२८॥
हे नानक ! परमात्मा के भक्त सदैव ही आनंदित रहते हैं और दैतभाव को जला देते हैं॥२८ ॥

ਸਲੋਕੁ ਮਃ ੩ ॥
सलोकु मः ३ ॥
श्लोक महला ३॥

ਏ ਮਨ ਹਰਿ ਜੀ ਧਿਆਇ ਤੂ ਇਕ ਮਨਿ ਇਕ ਚਿਤਿ ਭਾਇ ॥
ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥
हे मन ! तू एकाग्रचित होकर सच्चे मन से भगवान का ध्यान कर।

ਹਰਿ ਕੀਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਵਡਿਆਈਆ ਦੇਇ ਨ ਪਛੋਤਾਇ ॥
हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥
उस परमेश्वर की महिमा सदैव महान् है, जो जीवों को देन देकर पश्चाताप नहीं करता।

ਹਉ ਹਰਿ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਣੈ ਜਿਤੁ ਸੇਵਿਐ ਸੁਖੁ ਪਾਇ ॥
हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥
मैं तो उस ईश्वर पर सदैव बलिहारी जाता हूँ, जिसकी उपासना करने से सुख पाया जाता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮਿਲਿ ਰਹੈ ਹਉਮੈ ਸਬਦਿ ਜਲਾਇ ॥੧॥
नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१॥
हे नानक ! गुरुमुख शब्द द्वारा अपने आत्माभिमान को जलाकर सत्य में ही लीन रहते हैं ॥१॥

ਮਃ ੩ ॥
मः ३ ॥
महला ३॥

ਆਪੇ ਸੇਵਾ ਲਾਇਅਨੁ ਆਪੇ ਬਖਸ ਕਰੇਇ ॥
आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥
परमात्मा ने स्वयं ही जीवों को अपनी सेवा में लगाया है और स्वयं ही उन पर अपनी कृपा करता है।

ਸਭਨਾ ਕਾ ਮਾ ਪਿਉ ਆਪਿ ਹੈ ਆਪੇ ਸਾਰ ਕਰੇਇ ॥
सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥
वह स्वयं ही सबका माता-पिता है और स्वयं ही सबकी देखभाल करता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਨਿ ਤਿਨ ਨਿਜ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਹੈ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਸੋਭਾ ਹੋਇ ॥੨॥
नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥२॥
हे नानक ! जो भक्तजन नाम की आराधना करते हैं, उनका अपना वास्तविक घर प्रभु-चरणों में निवास हो जाता हैं और युगों-युगान्तरों में उनकी ही शोभा होती है॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਤੂ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥੁ ਹਹਿ ਕਰਤੇ ਮੈ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਈ ॥

तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥

हे सृजनहार प्रभु ! तू सब कुछ करने एवं कराने में समर्थ है और तेरे बिना मेरा कोई सहारा नहीं।

ਤੁਧੁ ਆਪੇ ਸਿਸਟਿ ਸਿਰਜੀਆ ਆਪੇ ਫੁਨਿ ਗੋਈ ॥
तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥
तू स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही आखिरकार इसका विनाश करता है।

ਸਭੁ ਇਕੋ ਸਬਦੁ ਵਰਤਦਾ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥
सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥
एक तेरा शब्द (हुक्म) ही सर्वव्यापी है और जो कुछ भी तू करता है, वही होता है।

ਵਡਿਆਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਦੇਇ ਪ੍ਰਭੁ ਹਰਿ ਪਾਵੈ ਸੋਈ ॥
वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥
जिन गुरुमुख को तुम बड़ाई प्रदान करते हो, वही अपने हरि प्रभु को पा लेता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਨਕ ਆਰਾਧਿਆ ਸਭਿ ਆਖਹੁ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੁ ਸੋਈ ॥੨੯॥੧॥ ਸੁਧੁ
गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥२९॥१॥ सुधु
हे नानक ! गुरु ने हरि-नाम की आराधना की है, सभी तन-मन से कहो, वह गुरु धन्य-धन्य-धन्य है॥२६॥१॥ शुद्ध

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ ਘਰੁ ੧
रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १
रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਬੁਤ ਪੂਜਿ ਪੂਜਿ ਹਿੰਦੂ ਮੂਏ ਤੁਰਕ ਮੂਏ ਸਿਰੁ ਨਾਈ ॥
बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
हिन्दू तो अपने देवताओं की मूर्तियों की पूजा-उपासना कर-करके मर गए हैं और मुसलमान भी सिर झुका-झुका कर अर्थात् सिजदा करते हुए मर गए हैं।

ਓਇ ਲੇ ਜਾਰੇ ਓਇ ਲੇ ਗਾਡੇ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਦੁਹੂ ਨ ਪਾਈ ॥੧॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥१॥
हिन्दू मरणोपरांत पार्थिव देह को श्मशान घाट में ले जाकर जला देते हैं और मुसलमान मृतक को भूमि में दफन कर देते हैं। हे ईश्वर ! इन हिन्दू एवं मुसलमानों दोनों को ही तेरी महिमा का पता नहीं लगा ॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ਅੰਧ ਗਹੇਰਾ ॥
मन रे संसारु अंध गहेरा ॥
हे मेरे मन ! इस समूचे संसार में तो गहरा अन्धेरा ही विद्यमान है और

ਚਹੁ ਦਿਸ ਪਸਰਿਓ ਹੈ ਜਮ ਜੇਵਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥१॥ रहाउ ॥
चारों दिशाओं में मृत्यु का जाल फैला हुआ है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕਬਿਤ ਪੜੇ ਪੜਿ ਕਬਿਤਾ ਮੂਏ ਕਪੜ ਕੇਦਾਰੈ ਜਾਈ ॥
कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥
कई कवि कविताएँ पढ़-पढ़कर व्यर्थ ही मर गए हैं और गुदड़ी धारण करने वाले कई साधु केदारनाथ तीर्थ पर जाकर ही मर गए हैं।

ਜਟਾ ਧਾਰਿ ਧਾਰਿ ਜੋਗੀ ਮੂਏ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਇਨਹਿ ਨ ਪਾਈ ॥੨॥
जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥२॥
कई जटाधारी योगी पर्वतों की चोटियों में व्यर्थ ही मर गए है। परन्तु हे ईश्वर ! तेरी गति इन्हें भी ज्ञात नहीं हुई॥२॥

ਦਰਬੁ ਸੰਚਿ ਸੰਚਿ ਰਾਜੇ ਮੂਏ ਗਡਿ ਲੇ ਕੰਚਨ ਭਾਰੀ ॥
दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥
कई प्रसिद्ध राजा भी धन-दौलत को संचित कर-करके सोने-चांदी के भार को दबाते ही मर गए हैं।

ਬੇਦ ਪੜੇ ਪੜਿ ਪੰਡਿਤ ਮੂਏ ਰੂਪੁ ਦੇਖਿ ਦੇਖਿ ਨਾਰੀ ॥੩॥
बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥३॥
पण्डित भी वेदों को पढ़-पढ़कर मर गए हैं और कई सुन्दर नारियाँ भी अपना सुन्दर रूप ही देख-देख कर मर गई हैं॥३॥

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਸਭੈ ਬਿਗੂਤੇ ਦੇਖਹੁ ਨਿਰਖਿ ਸਰੀਰਾ ॥
राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥
हे मानव ! अपने मन में भली भांति निरीक्षण करके देख लो, राम-नाम के बिना सभी नष्ट हो गए हैं।

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਕਿਨਿ ਗਤਿ ਪਾਈ ਕਹਿ ਉਪਦੇਸੁ ਕਬੀਰਾ ॥੪॥੧॥
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥४॥१॥
कबीर तो यही उपदेश करता है कि हरि-नाम के बिना किसे मोक्ष की प्राप्ति हुई है ॥४॥१॥

ਜਬ ਜਰੀਐ ਤਬ ਹੋਇ ਭਸਮ ਤਨੁ ਰਹੈ ਕਿਰਮ ਦਲ ਖਾਈ ॥

जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥

जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो उसका शरीर जला दिया जाता है और जलकर राख हो जाता है। यदि मृत शरीर को दफना दिया जाए तो उसे कीड़ों का दल ही खा जाता है।

ਕਾਚੀ ਗਾਗਰਿ ਨੀਰੁ ਪਰਤੁ ਹੈ ਇਆ ਤਨ ਕੀ ਇਹੈ ਬਡਾਈ ॥੧॥

काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥१॥

जैसे मिट्टी की कच्ची गागर जल डालने से टूट जाती है, वैसे ही इस कोमल तन की बड़ाई है, जितना गागर का महत्व है।॥१॥

ਕਾਹੇ ਭਈਆ ਫਿਰਤੌ ਫੂਲਿਆ ਫੂਲਿਆ ॥

काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥

हे भाई ! तू क्यों घमण्ड में अकड़ा हुआ फिर रहा है ?

ਜਬ ਦਸ ਮਾਸ ਉਰਧ ਮੁਖ ਰਹਤਾ ਸੋ ਦਿਨੁ ਕੈਸੇ ਭੂਲਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥१॥ रहाउ ॥

वे दिन तुझे कैसे भूल गए हैं, जब तू दस महीने माता के गर्भ में उल्टे मुँह लटका हुआ था ? ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਮਧੁ ਮਾਖੀ ਤਿਉ ਸਠੋਰਿ ਰਸੁ ਜੋਰਿ ਜੋਰਿ ਧਨੁ ਕੀਆ ॥

जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥

जैसे मधुमक्खी शहद इकठ्ठा करती रहती है, वैसे ही मूर्ख मनुष्य जीवन भर धन-दौलत ही संचित करता रहता है।

ਮਰਤੀ ਬਾਰ ਲੇਹੁ ਲੇਹੁ ਕਰੀਐ ਭੂਤੁ ਰਹਨ ਕਿਉ ਦੀਆ ॥੨॥

मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥२॥

जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो सभी कहते हैं कि इस मृत शरीर को श्मशान ले जाओ, ले जाओ और इस भूत को क्यों यहाँ पर रखा हुआ है ?॥२॥

ਦੇਹੁਰੀ ਲਉ ਬਰੀ ਨਾਰਿ ਸੰਗਿ ਭਈ ਆਗੈ ਸਜਨ ਸੁਹੇਲਾ ॥

देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥

उस मृतक व्यक्ति की पत्नी घर की दहलीज तक उसके साथ जाती है और आगे उसके सभी सज्जन एवं संबंधी जाते हैं।

ਮਰਘਟ ਲਉ ਸਭੁ ਲੋਗੁ ਕੁਟੰਬੁ ਭਇਓ ਆਗੈ ਹੰਸੁ ਅਕੇਲਾ ॥੩॥

मरघट लउ सभु लोगु कुट्मबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥३॥

सारा परिवार एवं सभी लोग शमशान जाते हैं और उसके उपरांत आत्मा अकेली ही रह जाती है।॥३॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਪ੍ਰਾਨੀ ਪਰੇ ਕਾਲ ਗ੍ਰਸ ਕੂਆ ॥
कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! जरा ध्यानपूर्वक सुनो तुझे काल (मृत्यु) ने ग्रास बनाया हुआ है और अन्धे कुएँ में गिरे हुए हो।

झूठी ਮਾਇਆ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਆ ਜਿਉ ਨਲਨੀ ਭ੍ਰਮਿ ਸੂਆ ॥੪॥੨॥
झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥४॥२॥
जैसे तोता भ्रम में नलकी के संग फँसा रहता है, वैसे ही मनुष्य ने स्वयं को झूठी माया के बन्धन में फँसाया हुआ है।॥४॥२॥

ਬੇਦ ਪੁਰਾਨ ਸਭੈ ਮਤ ਸੁਨਿ ਕੈ ਕਰੀ ਕਰਮ ਕੀ ਆਸਾ ॥
बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥
वेदों एवं पुराणों के समस्त मत सुनकर हमें भी कर्म करने की आशा उत्पन्न हुई किन्तु

ਕਾਲ ਗ੍ਰਸਤ ਸਭ ਲੋਗ ਸਿਆਨੇ ਉਠਿ ਪੰਡਿਤ ਪੈ ਚਲੇ ਨਿਰਾਸਾ ॥੧॥
काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥१॥
सभी चतुर लोगों को काल (मृत्यु) ग्रस्त देखकर पण्डितों से निराश होकर आ गए हैं।॥१॥

ਮਨ ਰੇ ਸਰਿਓ ਨ ਏਕੈ ਕਾਜਾ ॥
मन रे सरिओ न एकै काजा ॥
हे मन ! तुम्हारा तो एक भी कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सका,

ਭਜਿਓ ਨ ਰਘੁਪਤਿ ਰਾਜਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
भजिओ न रघुपति राजा ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि तूने राम का भजन ही नहीं किया॥१॥ रहाउ ॥

ਬਨ ਖੰਡ ਜਾਇ ਜੋਗੁ ਤਪੁ ਕੀਨੋ ਕੰਦ ਮੂਲੁ ਚੁਨਿ ਖਾਇਆ ॥
बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥
कुछ लोग वनों में जाकर योग साधना एवं तपस्या करते हैं और कंदमूल चुन कर खाते हैं।

ਨਾਦੀ ਬੇਦੀ ਸਬਦੀ ਮੋਨੀ ਜਮ ਕੇ ਪਟੈ ਲਿਖਾਇਆ ॥੨॥
नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥२॥
सिंगी का नाद बजाने वाले योगी , वेदों में बताए कर्मकाण्ड़ करने वाले वेदी ,अलख-अलख बोलने वाले साधु एवं मौनी मृत्यु के रजिस्टर में दर्ज हैं।॥२॥

ਭਗਤਿ ਨਾਰਦੀ ਰਿਦੈ ਨ ਆਈ ਕਾਛਿ ਕੂਛਿ ਤਨੁ ਦੀਨਾ ॥

भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥

प्रेमा-भक्ति तो मनुष्य के हृदय में प्रविष्ट नहीं हुई और उसने अपने तन को बना संवार कर ही मृत्यु को सौंप दिया है।

ਰਾਗ ਰਾਗਨੀ ਡਿੰਭ ਹੋਇ ਬੈਠਾ ਉਨਿ ਹਰਿ ਪਹਿ ਕਿਆ ਲੀਨਾ ॥੩॥

राग रागनी ड्मभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥३॥

वह तो केवल राग-रागनियों को धारण करने वाला ढोंगी ही बनकर बैठता है किन्तु उसमें उसे प्रभु से क्या मिल सकता है?॥३॥

ਪਰਿਓ ਕਾਲੁ ਸਭੈ ਜਗ ਊਪਰ ਮਾਹਿ ਲਿਖੇ ਭ੍ਰਮ ਗਿਆਨੀ ॥

परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥

मौत का खौफ समूचे जगत के ऊपर मंडरा रहा है और भ्रम में पड़े हुए ज्ञानी भी मृत्यु के रजिस्टर में लिखे हुए हैं।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨ ਭਏ ਖਾਲਸੇ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਜਿਹ ਜਾਨੀ ॥੪॥੩॥
कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥४॥३॥
हे कबीर ! जिन्होंने प्रेमा-भक्ति को समझ लिया है, वे मुक्त हो गए हैं ॥४॥३॥

ਘਰੁ ੨ ॥
घरु २ ॥
घरु २ ॥

ਦੁਇ ਦੁਇ ਲੋਚਨ ਪੇਖਾ ॥
दुइ दुइ लोचन पेखा ॥
मैं इन दोनों नयनों से देखता हूँ लेकिन

ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਉਰੁ ਨ ਦੇਖਾ ॥
हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥
उस भगवान के सिवाय दूसरा कोई भी दिखाई नहीं देता।

ਨੈਨ ਰਹੇ ਰੰਗੁ ਲਾਈ ॥
नैन रहे रंगु लाई ॥
इन नयनों ने उसका प्रेम रंग लगाया हुआ है और

ਅਬ ਬੇ ਗਲ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥੧॥
अब बे गल कहनु न जाई ॥१॥
अब किसी अन्य विषय का वर्णन नहीं किया जा सकता ॥१ ॥

ਹਮਰਾ ਭਰਮੁ ਗਇਆ ਭਉ ਭਾਗਾ ॥ ਜਬ ਰਾਮ ਨਾਮ ਚਿਤੁ ਲਾਗਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥१॥ रहाउ ॥
तब हमारा भ्रम दूर हो गया और भय भी भाग गया जबसे हमारा राम नाम में चित लग गया।॥१॥रहाउ ॥

ਬਾਜੀਗਰ ਡੰਕ ਬਜਾਈ ॥
बाजीगर डंक बजाई ॥
जब बाजीगर-परमात्मा अपनी डुगडुगी बजाता अर्थात् जगत-रचना करता है तो

ਸਭ ਖਲਕ ਤਮਾਸੇ ਆਈ ॥
सभ खलक तमासे आई ॥
सारी दुनिया जीवन का तमाशा देखने के लिए आ जाती है।

ਬਾਜੀਗਰ ਸ੍ਵਾਂਗੁ ਸਕੇਲਾ ॥
बाजीगर स्वांगु सकेला ॥
जब बाजीगर-परमात्मा अपनी खेल सृष्टि का विनाश करके समेट लेता है तो

ਅਪਨੇ ਰੰਗ ਰਵੈ ਅਕੇਲਾ ॥੨॥
अपने रंग रवै अकेला ॥२॥
वह अकेला ही अपने रंग में मग्न रहता है॥२॥

ਕਥਨੀ ਕਹਿ ਭਰਮੁ ਨ ਜਾਈ ॥
कथनी कहि भरमु न जाई ॥
कहने एवं कथन करने से भ्रम दूर नहीं होता।

ਸਭ ਕਥਿ ਕਥਿ ਰਹੀ ਲੁਕਾਈ ॥
सभ कथि कथि रही लुकाई ॥
कथन कर करके सारी दुनिया ही हार गई है।

ਜਾ ਕਉ ਗੁਰਮੁਖਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਈ ॥
जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥
भगवान जिसे गुरु के सान्निध्य में स्वयं ज्ञान देता है,

ਤਾ ਕੇ ਹਿਰਦੈ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੩॥
ता के हिरदै रहिआ समाई ॥३॥
उसके हृदय में वह समाया रहता है॥३॥

ਗੁਰ ਕਿੰਚਤ ਕਿਰਪਾ ਕੀਨੀ ॥
गुर किंचत किरपा कीनी ॥
जब गुरु किंचत मात्र भी कृपा करता है तो

ਸਭੁ ਤਨੁ ਮਨੁ ਦੇਹ ਹਰਿ ਲੀਨੀ ॥
सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥
समूचा तन, मन एवं शरीर उस भगवान में समा जाता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥
कहि कबीर रंगि राता ॥
कबीर जी का कथन है कि मैं तो उसके रंग में ही मग्न हो गया हूँ और

ਮਿਲਿਓ ਜਗਜੀਵਨ ਦਾਤਾ ॥੪॥੪॥
मिलिओ जगजीवन दाता ॥४॥४॥
मुझे जगत का जीवनदाता मिल गया है॥४॥४॥

ਜਾ ਕੇ ਨਿਗਮ ਦੂਧ ਕੇ ਠਾਟਾ ॥
जा के निगम दूध के ठाटा ॥
जिसके घर में वेद इत्यादि धार्मिक ग्रंथ दूध का भण्डार है और

ਸਮੁੰਦੁ ਬਿਲੋਵਨ ਕਉ ਮਾਟਾ ॥
समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥
मन समुद्र मंथन के लिए मटकी है,

ਤਾ ਕੀ ਹੋਹੁ ਬਿਲੋਵਨਹਾਰੀ ॥
ता की होहु बिलोवनहारी ॥
हे जीवात्मा ! तू उस भगवान की दूध का मंथन करने वाली बन जा,

ਕਿਉ ਮੇਟੈ ਗੋ ਛਾਛਿ ਤੁਹਾਰੀ ॥੧॥
किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥१॥
वह तुझे छाछ देने से क्यों मना करेगा।१ ।

ਚੇਰੀ ਤੂ ਰਾਮੁ ਨ ਕਰਸਿ ਭਤਾਰਾ ॥
चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥
हे सेविका ! तू उस राम को अपना पति क्यों नहीं बनाती ?

ਜਗਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जगजीवन प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि वह तो जगत का जीवन एवं प्राणों का आधार है।॥१॥ रहाउ ॥

ਤੇਰੇ ਗਲਹਿ ਤਉਕੁ ਪਗ ਬੇਰੀ ॥
तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥
तेरे गले में पट्टी और पैरों में जंजीर है।

ਤੂ ਘਰ ਘਰ ਰਮਈਐ ਫੇਰੀ ॥
तू घर घर रमईऐ फेरी ॥
राम ने घर घर अर्थात् योनि-चक्र में तुझे भटकाया हुआ है।

ਤੂ ਅਜਹੁ ਨ ਚੇਤਸਿ ਚੇਰੀ ॥
तू अजहु न चेतसि चेरी ॥
हे सेविका ! अब भी तू उस परमात्मा को स्मरण नहीं कर रही।

ਤੂ ਜਮਿ ਬਪੁਰੀ ਹੈ ਹੇਰੀ ॥੨॥
तू जमि बपुरी है हेरी ॥२॥
हे भाग्यहीन ! तुझे मृत्यु देख रही है॥२॥

ਪ੍ਰਭ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰੀ ॥
प्रभ करन करावनहारी ॥
वह परमात्मा ही सब कुछ करने एवं कराने वाला है,

ਕਿਆ ਚੇਰੀ ਹਾਥ ਬਿਚਾਰੀ ॥
किआ चेरी हाथ बिचारी ॥
बेचारी सेविका के वश में कुछ भी नहीं।

ਸੋਈ ਸੋਈ ਜਾਗੀ ॥
सोई सोई जागी ॥
जिसे वह जगाता है, वही जीवात्मा जागती है और

ਜਿਤੁ ਲਾਈ ਤਿਤੁ ਲਾਗੀ ॥੩॥
जितु लाई तितु लागी ॥३॥
जिससे वह लगाता है, उससे ही वह लग जाती है ॥३॥

ਚੇਰੀ ਤੈ ਸੁਮਤਿ ਕਹਾਂ ਤੇ ਪਾਈ ॥
चेरी तै सुमति कहां ते पाई ॥
हे सेविका ! तूने सुमति कहाँ से प्राप्त की है ?

ਜਾ ਤੇ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਲੀਕ ਮਿਟਾਈ ॥
जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥
जिसके साथ तूने भ्रम की लकीर मिटा दी है।

ਸੁ ਰਸੁ ਕਬੀਰੈ ਜਾਨਿਆ ॥ ਮੇਰੋ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੪॥੫॥
सु रसु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥४॥५॥
कबीर जी का कथन है कि मैंने उस रस को समझ लिया है और गुरु की कृपा से मेरा मन आनंदित हो गया ॥४॥५॥

ਜਿਹ ਬਾਝੁ ਨ ਜੀਆ ਜਾਈ ॥
जिह बाझु न जीआ जाई ॥
जिस परमेश्वर के बिना जीवित नहीं रहा जा सकता,

ਜਉ ਮਿਲੈ ਤ ਘਾਲ ਅਘਾਈ ॥
जउ मिलै त घाल अघाई ॥
यदि वह मिल जाए तो उसकी साधना सफल हो जाती है।

ਸਦ ਜੀਵਨੁ ਭਲੋ ਕਹਾਂਹੀ ॥
सद जीवनु भलो कहांही ॥
लोग तो सदैव जीवन को भला कहते हैं लेकिन

ਮੂਏ ਬਿਨੁ ਜੀਵਨੁ ਨਾਹੀ ॥੧॥
मूए बिनु जीवनु नाही ॥१॥
अपने आत्माभिमान को मारे बिना यह जीवन प्राप्त नहीं होता।

ਅਬ ਕਿਆ ਕਥੀਐ ਗਿਆਨੁ ਬੀਚਾਰਾ ॥
अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥
अब में किस प्रकार के ज्ञान विचार का कथन करूँ ?

ਨਿਜ ਨਿਰਖਤ ਗਤ ਬਿਉਹਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निज निरखत गत बिउहारा ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि मेरे देखते देखते ही संसार तबाह हो रहा है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਘਸਿ ਕੁੰਕਮ ਚੰਦਨੁ ਗਾਰਿਆ ॥
घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥
जिस तरह केसर को घिस कर चन्दन के साथ मिलाया जाता है

ਬਿਨੁ ਨੈਨਹੁ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਰਿਆ ॥
बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥
वैसे ही नेत्रों के बिना जगत देख लिया है।

ਪੂਤਿ ਪਿਤਾ ਇਕੁ ਜਾਇਆ ॥
पूति पिता इकु जाइआ ॥
पुत्र ने एक पिता (ज्ञान) को जन्म दिया है और

ਬਿਨੁ ਠਾਹਰ ਨਗਰੁ ਬਸਾਇਆ ॥੨॥
बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥२॥
स्थान के बिना नगर बसाया है॥ २ ॥

ਜਾਚਕ ਜਨ ਦਾਤਾ ਪਾਇਆ ॥
जाचक जन दाता पाइआ ॥
याचक ने दाता को पा लिया है।

ਸੋ ਦੀਆ ਨ ਜਾਈ ਖਾਇਆ ॥
सो दीआ न जाई खाइआ ॥
उसे दाता ने इतना कुछ दे दिया है

ਛੋਡਿਆ ਜਾਇ ਨ ਮੂਕਾ ॥
छोडिआ जाइ न मूका ॥
कि यह खत्म भी नहीं होता।

ਅਉਰਨ ਪਹਿ ਜਾਨਾ ਚੂਕਾ ॥੩॥
अउरन पहि जाना चूका ॥३॥
मेरा दूसरों से मांगने जाना समाप्त हो गया है।३॥

ਜੋ ਜੀਵਨ ਮਰਨਾ ਜਾਨੈ ॥
जो जीवन मरना जानै ॥
जो जीवन में मृत्यु को स्वीकार करना जानता है,

ਸੋ ਪੰਚ ਸੈਲ ਸੁਖ ਮਾਨੈ ॥
सो पंच सैल सुख मानै ॥
वही प्रमुख व्यक्ति पहाड़ जितना सुख भोगता है।

ਕਬੀਰੈ ਸੋ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ॥
कबीरै सो धनु पाइआ ॥
कबीर ने वह धन प्राप्त कर लिया है और

ਹਰਿ ਭੇਟਤ ਆਪੁ ਮਿਟਾਇਆ ॥੪॥੬॥
हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥४॥६॥
भगवान से भेंट करके उसने अपने अहंत्व को मिटा दिया है।॥४॥६॥

ਕਿਆ ਪੜੀਐ ਕਿਆ ਗੁਨੀਐ ॥
किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥
पढ़ने एवं चिंतन का क्या लाभ है और

ਕਿਆ ਬੇਦ ਪੁਰਾਨਾਂ ਸੁਨੀਐ ॥
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥
वेदों एवं पुराणों को सुनने का क्या लाभ है ?

ਪੜੇ ਸੁਨੇ ਕਿਆ ਹੋਈ ॥
पड़े सुने किआ होई ॥
उस पढ़ने एवं सुनने का क्या फायदा है,

ਜਉ ਸਹਜ ਨ ਮਿਲਿਓ ਸੋਈ ॥੧॥
जउ सहज न मिलिओ सोई ॥१॥
अगर उससे सहजभाव ही प्राप्त नहीं होता॥ १ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਜਪਸਿ ਗਵਾਰਾ ॥
हरि का नामु न जपसि गवारा ॥
मूर्ख व्यक्ति भगवान के नाम का जाप नहीं करता।

ਕਿਆ ਸੋਚਹਿ ਬਾਰੰ ਬਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किआ सोचहि बारं बारा ॥१॥ रहाउ ॥
फिर वह बार-बार क्या सोचता है॥१॥ रहाउ ॥

ਅੰਧਿਆਰੇ ਦੀਪਕੁ ਚਹੀਐ ॥
अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥
अन्धेरे में एक दीपक चाहिए

ਇਕ ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਲਹੀਐ ॥
इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥
एक अगोचर वस्तु ढूंढने के लिए

ਬਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਪਾਈ ॥
बसतु अगोचर पाई ॥
मैंने अगोचर वस्तु को पा लिया है चूंकि

ਘਟਿ ਦੀਪਕੁ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੨॥
घटि दीपकु रहिआ समाई ॥२॥
मेरे हृदय में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो रहा है॥२॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਅਬ ਜਾਨਿਆ ॥
कहि कबीर अब जानिआ ॥
कबीर जी का कथन है कि अब मैंने प्रभु को जान लिया है।

ਜਬ ਜਾਨਿਆ ਤਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥
जब मैंने उस प्रभु को समझ लिया तो मेरा मन कृतार्थ हो गया,

ਮਨ ਮਾਨੇ ਲੋਗੁ ਨ ਪਤੀਜੈ ॥
मन माने लोगु न पतीजै ॥
परन्तु लोग इस पर विश्वास नहीं करते।

ਨ ਪਤੀਜੈ ਤਉ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥੩॥੭॥
न पतीजै तउ किआ कीजै ॥३॥७॥
यदि वे विश्वास नहीं करते तो मैं क्या कर सकता हूँ ॥३॥७॥

ਹ੍ਰਿਦੈ ਕਪਟੁ ਮੁਖ ਗਿਆਨੀ ॥
ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥
तेरे हृदय में तो छल-कपट है और मुँह से ज्ञान की बातें कर रहा है।

ਝੂਠੇ ਕਹਾ ਬਿਲੋਵਸਿ ਪਾਨੀ ॥੧॥
झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥
हे झूठे व्यक्ति ! तू क्यों जल का मंथन कर रहा है अर्थात् बेकार ही बोल रहा है ॥१॥

ਕਾਂਇਆ ਮਾਂਜਸਿ ਕਉਨ ਗੁਨਾਂ ॥
कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥
इस काया को स्वच्छ करने का कोई फायदा नहीं,

ਜਉ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਹੈ ਮਲਨਾਂ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जउ घट भीतरि है मलनां ॥१॥ रहाउ ॥
अगर तेरे हृदय में मैल ही भरी हुई है ॥१॥ रहाउ ॥

ਲਉਕੀ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨ੍ਹ੍ਹਾਈ ॥
लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥
यद्यपि लौकी अड़सठ तीर्थों पर जाकर स्नान कर ले तो भी

ਕਉਰਾਪਨੁ ਤਊ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥
कउरापनु तऊ न जाई ॥२॥
इसका कड़वापन दूर नहीं होता।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਬੀਚਾਰੀ ॥
कहि कबीर बीचारी ॥
कबीर जी गहन सोच-विचार के पश्चात् यही कथन करते हैं कि

ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਾਰਿ ਮੁਰਾਰੀ ॥੩॥੮॥
भव सागरु तारि मुरारी ॥३॥८॥
हे मुरारि ! मुझे इस भवसागर से पार कर दीजिए ॥ ३ ॥ ८॥

ਸੋਰਠਿ
सोरठि
सोरठि

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਬਹੁ ਪਰਪੰਚ ਕਰਿ ਪਰ ਧਨੁ ਲਿਆਵੈ ॥
बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥
मनुष्य अनेक प्रकार के प्रपंच करके पराया-धन लेकर आता है और

ਸੁਤ ਦਾਰਾ ਪਹਿ ਆਨਿ ਲੁਟਾਵੈ ॥੧॥
सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥१॥
उस धन को लाकर अपने पुत्र एवं पत्नी के पास लुटा देता है ॥१॥

ਮਨ ਮੇਰੇ ਭੂਲੇ ਕਪਟੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥
मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥
हे मेरे मन ! भूल कर भी छल-कपट मत कीजिए,

ਅੰਤਿ ਨਿਬੇਰਾ ਤੇਰੇ ਜੀਅ ਪਹਿ ਲੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि जीवन के अंत में तेरी आत्मा को भी कर्मों का लेखा-जोखा देना पड़ेगा ॥१॥ रहाउ ॥

ਛਿਨੁ ਛਿਨੁ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ਜਰਾ ਜਨਾਵੈ ॥
छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥
क्षण-क्षण यह तन क्षीण होता जा रहा है और बुढ़ापा बढ़ता जा रहा है।

ਤਬ ਤੇਰੀ ਓਕ ਕੋਈ ਪਾਨੀਓ ਨ ਪਾਵੈ ॥੨॥
तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥२॥
तब तेरी हाथों की ओक में किसी ने भी जल नही डालना ॥२॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਕੋਈ ਨਹੀ ਤੇਰਾ ॥
कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥
कबीर जी कहते हैं कि तेरा कोई भी नहीं है,

ਹਿਰਦੈ ਰਾਮੁ ਕੀ ਨ ਜਪਹਿ ਸਵੇਰਾ ॥੩॥੯॥
हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥३॥९॥
फिर तू उचित समय ब्रह्ममुहूर्त क्यों नहीं राम के नाम का जाप करता ॥३॥६॥

ਸੰਤਹੁ ਮਨ ਪਵਨੈ ਸੁਖੁ ਬਨਿਆ ॥
संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥
हे संतो ! पवन जैसे मन को सुख प्राप्त हो गया है और

ਕਿਛੁ ਜੋਗੁ ਪਰਾਪਤਿ ਗਨਿਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥
इस तरह लगता है कि मुझे किसी सीमा तक योग की प्राप्ति हो गई है ॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਿ ਦਿਖਲਾਈ ਮੋਰੀ ॥
गुरि दिखलाई मोरी ॥
गुरु ने मुझे वह मोरी (कमजोरी) दिखा दी है,

ਜਿਤੁ ਮਿਰਗ ਪੜਤ ਹੈ ਚੋਰੀ ॥
जितु मिरग पड़त है चोरी ॥
जिसके कारण विकार रूपी मृग चोरी से भीतर घुसते हैं।

ਮੂੰਦਿ ਲੀਏ ਦਰਵਾਜੇ ॥
मूंदि लीए दरवाजे ॥
मैंने दरवाजे बन्द कर लिए हैं और

ਬਾਜੀਅਲੇ ਅਨਹਦ ਬਾਜੇ ॥੧॥
बाजीअले अनहद बाजे ॥१॥
मेरे भीतर अनहद नाद बज रहा है।॥१॥

ਕੁੰਭ ਕਮਲੁ ਜਲਿ ਭਰਿਆ ॥
कुंभ कमलु जलि भरिआ ॥
मेरे हृदय-कमल का घड़ा पाप के जल से भरा हुआ है।

ਜਲੁ ਮੇਟਿਆ ਊਭਾ ਕਰਿਆ ॥
जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥
मैंने विकारों से भरे जल को निकाल दिया है और घड़े को सीधा कर दिया है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਜਨ ਜਾਨਿਆ ॥
कहु कबीर जन जानिआ ॥
कबीर जी का कथन है कि इस सेवक ने इसे समझ लिया है,

ਜਉ ਜਾਨਿਆ ਤਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੨॥੧੦॥
जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥२॥१०॥
अब जब समझ लिया है तो मेरा मन संतुष्ट हो गया है॥२॥१०॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ॥
रागु सोरठि ॥
रागु सोरठि ॥

ਭੂਖੇ ਭਗਤਿ ਨ ਕੀਜੈ ॥
भूखे भगति न कीजै ॥
हे ईश्वर! भूखे रहकर मुझसे तेरी भक्ति नहीं हो सकती,

ਯਹ ਮਾਲਾ ਅਪਨੀ ਲੀਜੈ ॥
यह माला अपनी लीजै ॥
इसलिए अपनी यह माला वापिस ले लो।

ਹਉ ਮਾਂਗਉ ਸੰਤਨ ਰੇਨਾ ॥
हउ मांगउ संतन रेना ॥
मैं तो केवल संतजनों की चरण धूलि ही माँगता हूँ और

ਮੈ ਨਾਹੀ ਕਿਸੀ ਕਾ ਦੇਨਾ ॥੧॥
मै नाही किसी का देना ॥१॥
मैंने किसी का कुछ नहीं देना ॥ १ ॥

ਮਾਧੋ ਕੈਸੀ ਬਨੈ ਤੁਮ ਸੰਗੇ ॥
माधो कैसी बनै तुम संगे ॥
हे माधव ! मेरा तेरे साथ कैसे प्रेम बना रह सकता है?

ਆਪਿ ਨ ਦੇਹੁ ਤ ਲੇਵਉ ਮੰਗੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥
यदि तू स्वयं मुझे नहीं देता तो तुझसे विनती करके प्राप्त कर लूँगा॥ रहाउ ॥

ਦੁਇ ਸੇਰ ਮਾਂਗਉ ਚੂਨਾ ॥ ਪਾਉ ਘੀਉ ਸੰਗਿ ਲੂਨਾ ॥
दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥
मैं दो सेर आटा, और एक पाव घी, के साथ नमक माँगता हूँ।

ਅਧ ਸੇਰੁ ਮਾਂਗਉ ਦਾਲੇ ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मैं आधा सेर दाल भी माँगता हूँ और

ਮੋ ਕਉ ਦੋਨਉ ਵਖਤ ਜਿਵਾਲੇ ॥੨॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥२॥
यह सारी साम्रगी दोनों समय जीवन निर्वाह के लिए मदद करेगी ॥ २॥

ਖਾਟ ਮਾਂਗਉ ਚਉਪਾਈ ॥ ਸਿਰਹਾਨਾ ਅਵਰ ਤੁਲਾਈ ॥
खाट मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥
में चार पावों वाली खाट माँगता हूँ और साथ एक तकिया और एक तोशक माँगता हूँ।

ਊਪਰ ਕਉ ਮਾਂਗਉ ਖੀਂਧਾ ॥
ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥
तन के ऊपर लेने के लिए एक रजाई भी माँगता हूँ।

ਤੇਰੀ ਭਗਤਿ ਕਰੈ ਜਨੁ ਥੀਂਧਾ ॥੩॥
तेरी भगति करै जनु थींधा ॥३॥
तभी तेरा यह सेवक तेरी भक्ति प्रेमपूर्वक कर सकेगा।३ ॥

ਮੈ ਨਾਹੀ ਕੀਤਾ ਲਬੋ ॥ ਇਕੁ ਨਾਉ ਤੇਰਾ ਮੈ ਫਬੋ ॥
मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥
हे प्रभु! ये चीजें माँगने में मैंने कोई लालच नहीं किया और एक तेरा नाम ही मुझे भला लगता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਤਉ ਹਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥੪॥੧੧॥
कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥४॥११॥
कबीर जी का कथन है कि मेरा मन प्रसन्न हो गया है। जब मेरा मन इस तरह प्रसन्न हो गया है तो मैंने प्रभु को जान लिया है।॥४॥११॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇ ਜੀ ਕੀ ਘਰੁ ੨
रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २
रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਬ ਦੇਖਾ ਤਬ ਗਾਵਾ ॥
जब देखा तब गावा ॥
जब ईश्वर के दर्शन करता हूँ, तब ही उसका गुणगान करता हूँ,

ਤਉ ਜਨ ਧੀਰਜੁ ਪਾਵਾ ॥੧॥
तउ जन धीरजु पावा ॥१॥
तो ही मुझ सेवक को धीरज प्राप्त होता है ॥१॥

ਨਾਦਿ ਸਮਾਇਲੋ ਰੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟਿਲੇ ਦੇਵਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥१॥ रहाउ ॥
सतगुरु से भेंट होने पर अनहद शब्द में समा गया हूँ।॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਝਿਲਿ ਮਿਲਿ ਕਾਰੁ ਦਿਸੰਤਾ ॥
जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥
जहाँ झिलमिल उजाले का प्रकाश दिखाई देता है,

ਤਹ ਅਨਹਦ ਸਬਦ ਬਜੰਤਾ ॥
तह अनहद सबद बजंता ॥
वहाँ अनहद शब्द बजता रहता है।

ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਸਮਾਨੀ ॥
जोती जोति समानी ॥
मेरी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है।

ਮੈ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨੀ ॥੨॥
मै गुर परसादी जानी ॥२॥
गुरु की कृपा से मैंने इस तथ्य को समझ लिया है।२।

ਰਤਨ ਕਮਲ ਕੋਠਰੀ ॥
रतन कमल कोठरी ॥
हृदय-कमल की कोठरी में गुणों के रत्न विद्यमान हैं और

ਚਮਕਾਰ ਬੀਜੁਲ ਤਹੀ ॥
चमकार बीजुल तही ॥
वहाँ वे दामिनी की तरह चमकते हैं।

ਨੇਰੈ ਨਾਹੀ ਦੂਰਿ ॥
नेरै नाही दूरि ॥
वह प्रभु कहीं दूर नहीं अपितु पास ही है।

ਨਿਜ ਆਤਮੈ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥੩॥
निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥३॥
वह तो मेरी आत्मा में ही निवास कर रहा है।॥३॥

ਜਹ ਅਨਹਤ ਸੂਰ ਉਜ੍ਯਾਰਾ ॥
जह अनहत सूर उज्यारा ॥
जहाँ अनश्वर सूर्य का उजाला है,

ਤਹ ਦੀਪਕ ਜਲੈ ਛੰਛਾਰਾ ॥
तह दीपक जलै छंछारा ॥
वहाँ जलते हुए सूर्य एवं चन्द्रमा के दीपक तुच्छ प्रतीत होते हैं।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥
गुर परसादी जानिआ ॥
गुरु की अपार कृपा से मैंने यह समझ लिया है और

ਜਨੁ ਨਾਮਾ ਸਹਜ ਸਮਾਨਿਆ ॥੪॥੧॥
जनु नामा सहज समानिआ ॥४॥१॥
दास नामदेव सहज ही प्रभु में समा गया है ॥४॥१॥

ਘਰੁ ੪ ਸੋਰਠਿ ॥
घरु ४ सोरठि ॥
घरु ४ सोरठि ॥

ਪਾੜ ਪੜੋਸਣਿ ਪੂਛਿ ਲੇ ਨਾਮਾ ਕਾ ਪਹਿ ਛਾਨਿ ਛਵਾਈ ਹੋ ॥
पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥
निकटवर्ती पड़ोसिन पूछती है कि हे नामदेव ! 'तूने अपनी यह कुटिया किससे बनवाई है?"

ਤੋ ਪਹਿ ਦੁਗਣੀ ਮਜੂਰੀ ਦੈਹਉ ਮੋ ਕਉ ਬੇਢੀ ਦੇਹੁ ਬਤਾਈ ਹੋ ॥੧॥
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥
तुम मुझे उस बढ़ई के बारे में बता दो, मैं उसे तुझ से भी दुगुनी मजदूरी दूँगी।॥१॥

ਰੀ ਬਾਈ ਬੇਢੀ ਦੇਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
री बाई बेढी देनु न जाई ॥
अरी बहन ! उस बढ़ई के बारे में तुझे बताया अथवा उसका पता दिया नहीं जा सकता।

ਦੇਖੁ ਬੇਢੀ ਰਹਿਓ ਸਮਾਈ ॥
देखु बेढी रहिओ समाई ॥
देख ! मेरा बढ़ई तो सबमें समां रहा है।

ਹਮਾਰੈ ਬੇਢੀ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
वह बढ़ई हमारे प्राणो का आधार है।॥१॥ रहाउ ॥

ਬੇਢੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਜੂਰੀ ਮਾਂਗੈ ਜਉ ਕੋਊ ਛਾਨਿ ਛਵਾਵੈ ਹੋ ॥
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥
यदि कोई उससे कुटिया बनवाना चाहे तो बढ़ई प्रीति की ही मजदूरी माँगता है।

ਲੋਗ ਕੁਟੰਬ ਸਭਹੁ ਤੇ ਤੋਰੈ ਤਉ ਆਪਨ ਬੇਢੀ ਆਵੈ ਹੋ ॥੨॥
लोग कुट्मब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥
जब मनुष्य लोगो एवं कुटुंब से रिश्ता तोड़ लेता है तो बढ़ई ही हृदय में आ जाता है।॥२॥

ਐਸੋ ਬੇਢੀ ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਉ ਸਭ ਅੰਤਰ ਸਭ ਠਾਂਈ ਹੋ ॥
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥
मैं ऐसे बढ़ई के बारे में वर्णन नहीं कर सकता, चूँकि वह तो सबके भीतर में स्थित है एवं सर्वव्यापी है।

ਗੂੰਗੈ ਮਹਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਪੂਛੇ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ਹੋ ॥੩॥
गूंगै महा अम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥
जैसे कोई गूंगा महा अमृत रस को चखता हैं, परन्तु यदि उससे पूछा जाए तो वह इसे कथन नहीं कर सकता ॥३॥

ਬੇਢੀ ਕੇ ਗੁਣ ਸੁਨਿ ਰੀ ਬਾਈ ਜਲਧਿ ਬਾਂਧਿ ਧ੍ਰੂ ਥਾਪਿਓ ਹੋ ॥
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥
अरी बहन ! तू उस बढ़ई की महिमा सुन: उसने ही समुद्र पर सेतु बनाया था और भक्त ध्रुव को भी उसने ही उच्च पदवी पर स्थापित किया था।

ਨਾਮੇ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸੀਅ ਬਹੋਰੀ ਲੰਕ ਭਭੀਖਣ ਆਪਿਓ ਹੋ ॥੪॥੨॥
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२॥
नामदेव के स्वामी राम ही लंका पर विजय पाकर सीता जी को ले आए थे और लंका का शाशन विभीषण को सौंप दिया था। ॥४॥२॥

ਸੋਰਠਿ ਘਰੁ ੩ ॥
सोरठि घरु ३ ॥
सोरठि घरु ३ ॥

ਅਣਮੜਿਆ ਮੰਦਲੁ ਬਾਜੈ ॥
अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥
खाल के बिना मढ़ा हुआ ढोलक बजता है।

ਬਿਨੁ ਸਾਵਣ ਘਨਹਰੁ ਗਾਜੈ ॥
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥
सावन के बिना ही बादल गर्जता है।

ਬਾਦਲ ਬਿਨੁ ਬਰਖਾ ਹੋਈ ॥
बादल बिनु बरखा होई ॥
बादल के बिना ही वर्षा होती है,

ਜਉ ਤਤੁ ਬਿਚਾਰੈ ਕੋਈ ॥੧॥
जउ ततु बिचारै कोई ॥१॥
यदि कोई परम-तत्व का विचार करता है तो ही ऐसा प्रतीत होता है ॥१॥

ਮੋ ਕਉ ਮਿਲਿਓ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥
मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥
मुझे अपना स्नेही राम मिल गया है,

ਜਿਹ ਮਿਲਿਐ ਦੇਹ ਸੁਦੇਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥१॥ रहाउ ॥
जिसको मिलने से मेरी यह देह निर्मल बन गई है ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਿਲਿ ਪਾਰਸ ਕੰਚਨੁ ਹੋਇਆ ॥
मिलि पारस कंचनु होइआ ॥
पारस रूपी गुरु से मिलकर मैं सोना अर्थात् पावन बन गया हूँ।

ਮੁਖ ਮਨਸਾ ਰਤਨੁ ਪਰੋਇਆ ॥
मुख मनसा रतनु परोइआ ॥
अपने मुँह एवं मन में उस प्रभु-नाम के रत्नों को पिरोया हुआ है।

ਨਿਜ ਭਾਉ ਭਇਆ ਭ੍ਰਮੁ ਭਾਗਾ ॥
निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥
उस प्रभु को मैं अपना समझ कर प्यार करता हूँ और मेरा भ्रम निवृत हो गया है।

ਗੁਰ ਪੂਛੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਗਾ ॥੨॥
गुर पूछे मनु पतीआगा ॥२॥
गुरु से उपदेश प्राप्त करके मेरा मन तृप्त हो गया है॥२॥

ਜਲ ਭੀਤਰਿ ਕੁੰਭ ਸਮਾਨਿਆ ॥
जल भीतरि कुमभ समानिआ ॥
जैसे जल घड़े के भीतर ही समाया हुआ है

ਸਭ ਰਾਮੁ ਏਕੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
सभ रामु एकु करि जानिआ ॥
वैसे ही मैं जानता हूँ कि एक राम ही सब जीवों में समाया हुआ है।

ਗੁਰ ਚੇਲੇ ਹੈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥
गुर चेले है मनु मानिआ ॥
चेले का मन गुरु पर ही भरोसा करता है।

ਜਨ ਨਾਮੈ ਤਤੁ ਪਛਾਨਿਆ ॥੩॥੩॥
जन नामै ततु पछानिआ ॥३॥३॥
सेवक नामदेव ने इस तथ्य को पहचान लिया है ॥३॥३॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੀ
रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की
रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜਬ ਹਮ ਹੋਤੇ ਤਬ ਤੂ ਨਾਹੀ ਅਬ ਤੂਹੀ ਮੈ ਨਾਹੀ ॥
जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
हे ईश्वर ! जब मुझ में आत्माभिमान था, तब तू मुझ में नहीं था, अब जब तू मेरे भीतर है तो मेरा आत्माभिमान दूर हो गया है।

ਅਨਲ ਅਗਮ ਜੈਸੇ ਲਹਰਿ ਮਇ ਓਦਧਿ ਜਲ ਕੇਵਲ ਜਲ ਮਾਂਹੀ ॥੧॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥१॥
जैसे-जैसे अग्नि की अनंत चिंगारियाँ होती हैं, पर वे अग्नि का ही रूप होती हैं। पवन के साथ बड़े समुद्र में भारी लहरें उठती हैं परन्तु वे लहरें केवल समुद्र के जल में जल ही होती हैं वैसे ही यह जगत परमात्मा में से पैदा होने के कारण उसका रूप है ।१।

ਮਾਧਵੇ ਕਿਆ ਕਹੀਐ ਭ੍ਰਮੁ ਐਸਾ ॥

माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥

हे माधव ! हम प्राणियों का तो भ्रम ही ऐसा है, हम इसके बारे में क्या कह सकते हैं ?

ਜੈਸਾ ਮਾਨੀਐ ਹੋਇ ਨ ਤੈਸਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥

जैसा हम किसी वस्तु को मानते हैं, वह वैसी नहीं होती॥ १ ॥ रहाउ॥

ਨਰਪਤਿ ਏਕੁ ਸਿੰਘਾਸਨਿ ਸੋਇਆ ਸੁਪਨੇ ਭਇਆ ਭਿਖਾਰੀ ॥

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥

जैसे एक राजा अपने सिंहासन पर निद्रा-मग्न हो जाता है और स्वप्न में वह भिखारी बन जाता है।

ਅਛਤ ਰਾਜ ਬਿਛੁਰਤ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੋ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥੨॥

अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥२॥

उसका राज्य अच्छा है परन्तु इससे विछुड़ कर वह बहुत दुखी होता है।ऐसी ही हालत हमारी हुई है ॥२॥

ਰਾਜ ਭੁਇਅੰਗ ਪ੍ਰਸੰਗ ਜੈਸੇ ਹਹਿ ਅਬ ਕਛੁ ਮਰਮੁ ਜਨਾਇਆ ॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥
जैसे अंधेरे में रस्सी को सांप समझने का प्रसंग है, वैसे ही मैं भूला हुआ था, पर अब तूने मुझे भेद बता दिया है।

ਅਨਿਕ ਕਟਕ ਜੈਸੇ ਭੂਲਿ ਪਰੇ ਅਬ ਕਹਤੇ ਕਹਨੁ ਨ ਆਇਆ ॥੩॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥
जैसे भूलकर मैं अनेक कगनों को स्वर्ण से पृथक मानता था, वैसे ही मैं भूल गया था कि मैं तुझसे भिन्न हूँ। अब जब मेरा यह भ्रम दूर हो गया है तो अब यह भ्रम वाली बात कहनी शोभा नहीं देती ॥३ ॥

ਸਰਬੇ ਏਕੁ ਅਨੇਕੈ ਸੁਆਮੀ ਸਭ ਘਟ ਭੋਗਵੈ ਸੋਈ ॥
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥
एक ईश्वर ही अनेक रूप धारण करके सर्वव्यापी है।वह तो सबके हृदय में सुख भोग रहा है।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਹਾਥ ਪੈ ਨੇਰੈ ਸਹਜੇ ਹੋਇ ਸੁ ਹੋਈ ॥੪॥੧॥
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥
रविदास जी का कथन है कि ईश्वर तो हाथों-पैरों से भी अत्यन्त निकट है, इसलिए जो कुछ प्राकृतिक रूप में हो रहा है, वह भला ही हो रहा है ॥४॥१॥

ਜਉ ਹਮ ਬਾਂਧੇ ਮੋਹ ਫਾਸ ਹਮ ਪ੍ਰੇਮ ਬਧਨਿ ਤੁਮ ਬਾਧੇ ॥
जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
हे प्रभु जी ! यद्यपि हम सांसारिक मोह की फाँसी में बँधे हुए थे तो हमने तुझे भी अपने प्रेम-बन्धन में बाँध लिया है।

ਅਪਨੇ ਛੂਟਨ ਕੋ ਜਤਨੁ ਕਰਹੁ ਹਮ ਛੂਟੇ ਤੁਮ ਆਰਾਧੇ ॥੧॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥
अब तुम इस प्रेम-बन्धन से मुक्त होने का यत्न करो, चूंकि हम तो तुम्हारी आराधना करके मुक्त हो गए हैं।१।

ਮਾਧਵੇ ਜਾਨਤ ਹਹੁ ਜੈਸੀ ਤੈਸੀ ॥
माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥
हे माधव ! जैसी तेरे साथ हमारी प्रीति है, वह तुम जानते ही हो।

ਅਬ ਕਹਾ ਕਰਹੁਗੇ ਐਸੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे साथ हमारी ऐसी प्रीति होने से अब तुम हमारे साथ क्या करोगे ? ।॥१॥ रहाउ ॥

ਮੀਨੁ ਪਕਰਿ ਫਾਂਕਿਓ ਅਰੁ ਕਾਟਿਓ ਰਾਂਧਿ ਕੀਓ ਬਹੁ ਬਾਨੀ ॥
मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥
मनुष्य मछली को पकड़ता है, मछली को चीरता और काटता है तथा विभिन्न प्रकार से इसे भलीभांति पकाता है।

ਖੰਡ ਖੰਡ ਕਰਿ ਭੋਜਨੁ ਕੀਨੋ ਤਊ ਨ ਬਿਸਰਿਓ ਪਾਨੀ ॥੨॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥
मछली के टुकड़े-टुकड़े करके भोजन किया जाता है परन्तु फिर भी मछली जल को नहीं भूलती॥ २ ॥

ਆਪਨ ਬਾਪੈ ਨਾਹੀ ਕਿਸੀ ਕੋ ਭਾਵਨ ਕੋ ਹਰਿ ਰਾਜਾ ॥
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥
परमात्मा किसी के बाप की जायदाद नहीं है, अपितु वह समूचे विश्व का मालिक है, जो प्रेम-भावना के ही वशीभूत है।

ਮੋਹ ਪਟਲ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਬਿਆਪਿਓ ਭਗਤ ਨਹੀ ਸੰਤਾਪਾ ॥੩॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥
समूचे जगत पर मोह का पद पड़ा हुआ है। परन्तु यह मोह भक्त को संताप नहीं देता।।३।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਭਗਤਿ ਇਕ ਬਾਢੀ ਅਬ ਇਹ ਕਾ ਸਿਉ ਕਹੀਐ ॥
कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥
रविदास जी का कथन है कि एक प्रभु की भक्ति हृदय में बढ़ गई है, यह मैं अब किसे बताऊँ।

ਜਾ ਕਾਰਨਿ ਹਮ ਤੁਮ ਆਰਾਧੇ ਸੋ ਦੁਖੁ ਅਜਹੂ ਸਹੀਐ ॥੪॥੨॥
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४॥२॥
हे प्रभु! जिस दु:ख के कारण हमने तुम्हारी आराधना की थी, क्या वह दु:ख हमें अब भी सहन करना होगा ? ॥४॥२॥

ਦੁਲਭ ਜਨਮੁ ਪੁੰਨ ਫਲ ਪਾਇਓ ਬਿਰਥਾ ਜਾਤ ਅਬਿਬੇਕੈ ॥
दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥
यह दुर्लभ मनुष्य जन्म बड़े पुण्य फल के कारण प्राप्त हुआ है किन्तु अविवेक के कारण यह व्यर्थ ही बीतता जा रहा है।

ਰਾਜੇ ਇੰਦ੍ਰ ਸਮਸਰਿ ਗ੍ਰਿਹ ਆਸਨ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਕਹਹੁ ਕਿਹ ਲੇਖੈ ॥੧॥

राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥

यदि राजा इंद्र के स्वर्ग जैसे महल एवं सिंहासन भी हो तो भी भगवान की भक्ति के बिना बताओ यह मेरे लिए व्यर्थ ही हैं॥ १ ॥

ਨ ਬੀਚਾਰਿਓ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਕੋ ਰਸੁ ॥

न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥

जीव ने राम के नाम के स्वाद का चिंतन नहीं किया,

ਜਿਹ ਰਸ ਅਨ ਰਸ ਬੀਸਰਿ ਜਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥

जिस नाम स्वाद में दूसरे सभी स्वाद विस्मृत हो जाते हैं॥ १ ॥ रहाउ ।

ਜਾਨਿ ਅਜਾਨ ਭਏ ਹਮ ਬਾਵਰ ਸੋਚ ਅਸੋਚ ਦਿਵਸ ਜਾਹੀ ॥

जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥

हम बावले हो गए हैं, हम उसे नहीं जानते, जो हमारे लिए जानने योग्य है और उसे नहीं सोचते, जिसे सोचना चाहिए।इस तरह हमारे जीवन के दिवस बीतते जा रहे हैं।

ਇੰਦ੍ਰੀ ਸਬਲ ਨਿਬਲ ਬਿਬੇਕ ਬੁਧਿ ਪਰਮਾਰਥ ਪਰਵੇਸ ਨਹੀ ॥੨॥

इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥

विषय-विकार भोगने वाली हमारी इन्द्रियाँ बहुत बलवान हैं, इसलिए हमारा विवेक बुद्धि का परमार्थ में प्रवेश नहीं हुआ।२ ।

ਕਹੀਅਤ ਆਨ ਅਚਰੀਅਤ ਅਨ ਕਛੁ ਸਮਝ ਨ ਪਰੈ ਅਪਰ ਮਾਇਆ ॥

कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥

हम कहते कुछ हैं और करते कुछ अन्य ही हैं। यह माया बड़ी प्रबल है और हमें इसकी कोई सूझ नहीं पड़ती।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਉਦਾਸ ਦਾਸ ਮਤਿ ਪਰਹਰਿ ਕੋਪੁ ਕਰਹੁ ਜੀਅ ਦਇਆ ॥੩॥੩॥

कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥

रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु! तेरे दास की मति उदास भाव परेशान हो रही है। इसलिए अपने क्रोध को दूर करके मेरे प्राणों पर दया करो ॥ ३॥ 3 ॥

ਸੁਖ ਸਾਗਰੁ ਸੁਰਤਰ ਚਿੰਤਾਮਨਿ ਕਾਮਧੇਨੁ ਬਸਿ ਜਾ ਕੇ ॥

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥

परमात्मा सुखों का सागर है, जिसके वश में स्वर्ग के कल्पवृक्ष, चिंतामणि एवं कामधेनु है।

ਚਾਰਿ ਪਦਾਰਥ ਅਸਟ ਦਸਾ ਸਿਧਿ ਨਵ ਨਿਧਿ ਕਰ ਤਲ ਤਾ ਕੇ ॥੧॥

चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥

चार पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष, अठारह सिद्धियाँ एवं नौ निधियाँ उसके हाथ की हथेली पर हैं॥ १ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨ ਜਪਹਿ ਰਸਨਾ ॥

हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥

रसना हरि-हरि नाम का जाप क्यों नहीं करती ,"

ਅਵਰ ਸਭ ਤਿਆਗਿ ਬਚਨ ਰਚਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥

अन्य समस्त वाद-विवाद छोड़ कर वाणी में लीन हो जा ॥ १॥ रहाउ ।

ਨਾਨਾ ਖਿਆਨ ਪੁਰਾਨ ਬੇਦ ਬਿਧਿ ਚਉਤੀਸ ਅਖਰ ਮਾਂਹੀ ॥

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥

पुराणों के भांति-भांति के प्रसंग, वेदों में बताई हुई कर्मकाण्ड की विधियाँ यह सभी चौंतीस अक्षरों में ही लिखी हुई हैं भाव यह अनुभवी ज्ञान नहीं है।

ਬਿਆਸ ਬਿਚਾਰਿ ਕਹਿਓ ਪਰਮਾਰਥੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਰਿ ਨਾਹੀ ॥੨॥

बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥

व्यास ऋषि ने सोच विचार कर यह परमार्थ बताया है कि राम-नाम के तुल्य अन्य कुछ भी नहीं है॥ २ ॥

ਸਹਜ ਸਮਾਧਿ ਉਪਾਧਿ ਰਹਤ ਫੁਨਿ ਬਡੈ ਭਾਗਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥

सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥

दु:ख-क्लेशों से रहित सहज अवस्था वाली मेरी समाधि लगी रहती है और फिर साथ ही सौभाग्य से प्रभु में सुरति भी लगी रहती है।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਪ੍ਰਗਾਸੁ ਰਿਦੈ ਧਰਿ ਜਨਮ ਮਰਨ ਭੈ ਭਾਗੀ ॥੩॥੪॥

कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥

रविदास जी का कथन है कि मेरे हृदय में सत्य की ज्योति का प्रकाश हो जाने से मेरा जन्म-मरण का भय भाग गया है॥३॥४॥

ਜਉ ਤੁਮ ਗਿਰਿਵਰ ਤਉ ਹਮ ਮੋਰਾ ॥

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥

हे ईश्वर ! यदि तुम सुन्दर पर्वत बन जाओ तो मैं तेरा मोर बन जाऊँ।

ਜਉ ਤੁਮ ਚੰਦ ਤਉ ਹਮ ਭਏ ਹੈ ਚਕੋਰਾ ॥੧॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥
यदि तुम चांद बन जाओ तो मैं चकोर बन जाऊँ॥ १ ॥

ਮਾਧਵੇ ਤੁਮ ਨ ਤੋਰਹੁ ਤਉ ਹਮ ਨਹੀ ਤੋਰਹਿ ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
हे माधव ! यदि तुम मुझ से प्रीत ना तोड़ो तो मैं भी तुझ से अपनी प्रीत नहीं तोडूंगा।

ਤੁਮ ਸਿਉ ਤੋਰਿ ਕਵਨ ਸਿਉ ਜੋਰਹਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥
मैं तुझ से अपनी प्रीत तोड़कर अन्य किससे जोड़ सकता हूँ? ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਉ ਤੁਮ ਦੀਵਰਾ ਤਉ ਹਮ ਬਾਤੀ ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥
यदि तुम सुन्दर दीपक बन जाओ तो मैं तेरी बाती बन जाऊँ।

ਜਉ ਤੁਮ ਤੀਰਥ ਤਉ ਹਮ ਜਾਤੀ ॥੨॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२॥
यदि तुम तीर्थ बन जाओ तो मैं तेरा तीर्थ-यात्री बन जाऊँ।२ ।

ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹਮ ਤੁਮ ਸਿਉ ਜੋਰੀ ॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
मैंने तो तुझ से सच्ची प्रीति जोड़ ली है और

ਤੁਮ ਸਿਉ ਜੋਰਿ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਤੋਰੀ ॥੩॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥
तुम से प्रीति जोड़कर दूसरों के साथ नाता तोड़ लिया है।३ ।

ਜਹ ਜਹ ਜਾਉ ਤਹਾ ਤੇਰੀ ਸੇਵਾ ॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
जहाँ-जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ ही मैं तेरी आराधना करता हूँ।

ਤੁਮ ਸੋ ਠਾਕੁਰੁ ਅਉਰੁ ਨ ਦੇਵਾ ॥੪॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥
हे प्रभु जी ! तुझ जैसा ठाकुर एवं पूज्य देव दूसरा कोई नहीं।॥४॥

ਤੁਮਰੇ ਭਜਨ ਕਟਹਿ ਜਮ ਫਾਂਸਾ ॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
तुम्हारा भजन करने से मृत्यु की फाँसी कट जाती है।

ਭਗਤਿ ਹੇਤ ਗਾਵੈ ਰਵਿਦਾਸਾ ॥੫॥੫॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥
तेरी भक्ति प्राप्त करने के लिए रविदास तेरा ही गुणगान करता है॥ ५॥ ५॥

ਜਲ ਕੀ ਭੀਤਿ ਪਵਨ ਕਾ ਥੰਭਾ ਰਕਤ ਬੁੰਦ ਕਾ ਗਾਰਾ ॥
जल की भीति पवन का थ्मभा रकत बुंद का गारा ॥
इस मानव शरीर की दीवारें जल की बनी हुई हैं, जिसके नीचे पवन का स्तंभ स्थापित किया हुआ है और इसे माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य का गारा लगा हुआ है।

ਹਾਡ ਮਾਸ ਨਾੜੀਂ ਕੋ ਪਿੰਜਰੁ ਪੰਖੀ ਬਸੈ ਬਿਚਾਰਾ ॥੧॥
हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
यह शरीर मांस एवं नाड़ियों का बना हुआ एक ढाँचा है, जिसमें बेचारा जीव रूपी पक्षी निवास करता है।१।

ਪ੍ਰਾਨੀ ਕਿਆ ਮੇਰਾ ਕਿਆ ਤੇਰਾ ॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
हे नश्वर प्राणी ! इस दुनिया में क्या मेरा है और क्या तेरा है?

ਜੈਸੇ ਤਰਵਰ ਪੰਖਿ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
यह बात यूं है जैसे वृक्ष पर पक्षी का बसेरा होता है॥१॥ रहाउ ॥

ਰਾਖਹੁ ਕੰਧ ਉਸਾਰਹੁ ਨੀਵਾਂ ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
तू गहरी बुनियाद खोद कर उन पर महल बनाने के लिए दीवारें खड़ी कर रहा है

ਸਾਢੇ ਤੀਨਿ ਹਾਥ ਤੇਰੀ ਸੀਵਾਂ ॥੨॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२॥
परन्तु तेरे शरीर की सीमा अधिक से अधिक साढ़े तीन हाथों की है ॥२ ॥

ਬੰਕੇ ਬਾਲ ਪਾਗ ਸਿਰਿ ਡੇਰੀ ॥
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥
तेरे सिर पर सुन्दर केश हैं और तू सिर पर तिरछी पगड़ी सुशोभित करता है

ਇਹੁ ਤਨੁ ਹੋਇਗੋ ਭਸਮ ਕੀ ਢੇਰੀ ॥੩॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥
किन्तु तेरा यह शरीर एक न एक दिन भस्म की ढेरी बन जाएगा ॥३॥

ਊਚੇ ਮੰਦਰ ਸੁੰਦਰ ਨਾਰੀ ॥
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
लेकिन ऊँचे महलों एवं सुन्दर पत्नी के प्रेम में पड़कर

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਬਾਜੀ ਹਾਰੀ ॥੪॥
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥
राम नाम के बिना तूने अपनी जीवन-बाजी हार दी है।॥४॥

ਮੇਰੀ ਜਾਤਿ ਕਮੀਨੀ ਪਾਂਤਿ ਕਮੀਨੀ ਓਛਾ ਜਨਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
मेरी जाति नीच है और मेरा गोत्र नीच है तथा मेरा जन्म भी औछा ही है।

ਤੁਮ ਸਰਨਾਗਤਿ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਚੰਦ ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰਾ ॥੫॥੬॥
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥
रविदास चमार का कथन है हे राजा राम ! फिर भी मैंने तेरी ही शरण ली है ॥५॥६॥

ਚਮਰਟਾ ਗਾਂਠਿ ਨ ਜਨਈ ॥
चमरटा गांठि न जनई ॥
मैं चमार गाँठना नहीं जानता परन्तु

ਲੋਗੁ ਗਠਾਵੈ ਪਨਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥
लोग मुझसे अपने जूते बनवाते हैं ॥१॥ रहाउ ॥

ਆਰ ਨਹੀ ਜਿਹ ਤੋਪਉ ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
मेरे पास आर नहीं हैं, जिससे मैं जूतों को गाँठु और

ਨਹੀ ਰਾਂਬੀ ਠਾਉ ਰੋਪਉ ॥੧॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥
न ही मेरे पास खुरपी है, जिससे मैं जोड़ लगा सकूं।॥१॥

ਲੋਗੁ ਗੰਠਿ ਗੰਠਿ ਖਰਾ ਬਿਗੂਚਾ ॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
अपने आपको जगत से जोड़-जोड़ कर लोग बिल्कुल नष्ट हो गए हैं।

ਹਉ ਬਿਨੁ ਗਾਂਠੇ ਜਾਇ ਪਹੂਚਾ ॥੨॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥
लेकिन बिना गांठे ही मैं प्रभु के पास पहुँच गया हूँ।॥२॥

ਰਵਿਦਾਸੁ ਜਪੈ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ॥
रविदासु जपै राम नामा ॥
रविदास तो राम के नाम का ही भजन करता रहता है और

ਮੋਹਿ ਜਮ ਸਿਉ ਨਾਹੀ ਕਾਮਾ ॥੩॥੭॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥
अब उसका यम से कोई काम नहीं रहा ॥३॥७॥

ਰਾਗੁ ਸੋਰਠਿ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਭੀਖਨ ਕੀ
रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की
रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨੈਨਹੁ ਨੀਰੁ ਬਹੈ ਤਨੁ ਖੀਨਾ ਭਏ ਕੇਸ ਦੁਧ ਵਾਨੀ ॥
नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
अब बुढ़ापे में मेरी यह अवस्था हो गई है कि नयनों में से जल बहता रहता है और तन भी क्षीण हो गया है तथा ये बाल दूध जैसे सफेद हो गए हैं।

रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥१॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥१॥
मेरा गला बंद हो गया है, जिस कारण में एक शब्द भी नहीं बोल सकता। मेरे जैसा नश्वर जीव अब क्या कर सकता है? ॥ १॥

ਰਾਮ ਰਾਇ ਹੋਹਿ ਬੈਦ ਬਨਵਾਰੀ ॥
राम राइ होहि बैद बनवारी ॥
हे बनवारी ! हे राम ! तुम स्वयं ही वैद्य बनकर

ਅਪਨੇ ਸੰਤਹ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अपने संतह लेहु उबारी ॥१॥ रहाउ ॥
अपने संतों को बचा लो ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਾਥੇ ਪੀਰ ਸਰੀਰਿ ਜਲਨਿ ਹੈ ਕਰਕ ਕਰੇਜੇ ਮਾਹੀ ॥
माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥
मेरे माथे में पीड़ा, शरीर में जलन एवं हृदय में दर्द है।

ਐਸੀ ਬੇਦਨ ਉਪਜਿ ਖਰੀ ਭਈ ਵਾ ਕਾ ਅਉਖਧੁ ਨਾਹੀ ॥੨॥
ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥२॥
मेरे भीतर ऐसी भयानक वेदना उत्पन्न हो गई है कि जिसकी कोई औषधि नहीं।॥२॥

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਜਲੁ ਨਿਰਮਲੁ ਇਹੁ ਅਉਖਧੁ ਜਗਿ ਸਾਰਾ ॥
हरि का नामु अम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥
हरि का नाम अमृतमयी निर्मल जल है और यह औषधि इस जगत में समस्त रोगों का निदान है।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕਹੈ ਜਨੁ ਭੀਖਨੁ ਪਾਵਉ ਮੋਖ ਦੁਆਰਾ ॥੩॥੧॥
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥३॥१॥
भीखन का कथन है कि गुरु की कृपा से मैंने मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लिया है ॥३॥१॥

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਪੁੰਨਿ ਪਦਾਰਥੁ ਪਾਇਆ ॥
ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥
हे भाई! परमात्मा का नाम ऐसा रत्न है जो बड़ा अमूल्य है।मैंने यह नाम-पदार्थ अपने पूर्व किए शुभ कर्मों के कारण प्राप्त किया है।

ਅਨਿਕ ਜਤਨ ਕਰਿ ਹਿਰਦੈ ਰਾਖਿਆ ਰਤਨੁ ਨ ਛਪੈ ਛਪਾਇਆ ॥੧॥
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥१॥
अनेकों यत्न करके मैंने इसे अपने हृदय में छिपा कर रखा परन्तु यह रत्न छिपाए छिपता नहीं।॥१॥

ਹਰਿ ਗੁਨ ਕਹਤੇ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥
हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥
मुझ से वैसे ही भगवान की महिमा बताने से बताई नहीं जा सकती

ਜੈਸੇ ਗੂੰਗੇ ਕੀ ਮਿਠਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जैसे गूंगे की मिठिआई ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे कोई गूँगा आदमी मिठाई खा कर उसका स्वाद नहीं बता सकता ॥१॥ रहाउ ॥

ਰਸਨਾ ਰਮਤ ਸੁਨਤ ਸੁਖੁ ਸ੍ਰਵਨਾ ਚਿਤ ਚੇਤੇ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥
ईश्वर का नाम जीभ से जप कर, कानों से सुनकर एवं चित से स्मरण करके मुझे सुख की अनुभूति हुई है।

ਕਹੁ ਭੀਖਨ ਦੁਇ ਨੈਨ ਸੰਤੋਖੇ ਜਹ ਦੇਖਾਂ ਤਹ ਸੋਈ ॥੨॥੨॥
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥२॥२॥
भीखन का कथन है कि मेरे यह दोनों नयन संतुष्ट हो गए हैं। अब मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही भगवान दिखाई देता है ॥२॥२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ
धनासरी महला १ घरु १ चउपदे
धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
औंकार वही एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि एवं जीवो की रचना करने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं है, वह निर्वैर, अकालमूर्ति कोई योनि धारण नहीं करता, वह स्वयंभू है, जिसे गुरु की कृपा से ही पाया जाता है।

ਜੀਉ ਡਰਤੁ ਹੈ ਆਪਣਾ ਕੈ ਸਿਉ ਕਰੀ ਪੁਕਾਰ ॥
जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥
मेरी आत्मा डर रही है, मैं किसके पास पुकार करूं ?

ਦੂਖ ਵਿਸਾਰਣੁ ਸੇਵਿਆ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥੧॥
दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥
इसलिए मैंने तो सब दुःख भुलाने वाले परमात्मा की ही उपासना की है, जो सदैव ही जीवो को देने वाला है ॥ १ ॥

ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਨੀਤ ਨਵਾ ਸਦਾ ਸਦਾ ਦਾਤਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मालिक नित्य ही नविन है और वह हमेशा है सबको देने वाला है ॥ १ ॥ रहाउ॥

ਅਨਦਿਨੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸੇਵੀਐ ਅੰਤਿ ਛਡਾਏ ਸੋਇ ॥
अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥
निशदिन उस मालिक की सेवा करते रहना चाहिए, क्योंकि अंत में वही यम से मुक्त करवाता है।

ਸੁਣਿ ਸੁਣਿ ਮੇਰੀ ਕਾਮਣੀ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ਹੋਇ ॥੨॥
सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥
हे मेरी प्राण रूपी कामिनी ! प्रभु का नाम सुनकर तेरा भवसागर से कल्याण हो जाएगा ॥२ ॥

ਦਇਆਲ ਤੇਰੈ ਨਾਮਿ ਤਰਾ ॥
दइआल तेरै नामि तरा ॥
हे दयालु परमात्मा ! तेरे नाम द्वारा मैं संसार-सागर से पार हो जाऊँगा।

ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੈ ਜਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं तुझ पर सदैव ही कुर्बान जाता हूँ।॥१॥ रहाउ ॥

ਸਰਬੰ ਸਾਚਾ ਏਕੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥
सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥
सबका मालिक एक सत्यस्वरूप ईश्वर ही सर्वव्यापी है, अन्य दूसरा कोई सत्य नहीं है।

ਤਾ ਕੀ ਸੇਵਾ ਸੋ ਕਰੇ ਜਾ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ॥੩॥
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥
उसकी सेवा वही करता है, जिस पर वह अपनी करुणा-दृष्टि करता है॥३।

ਤੁਧੁ ਬਾਝੁ ਪਿਆਰੇ ਕੇਵ ਰਹਾ ॥
तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥
हे मेरे प्यारे ! तेरे बिना मैं कैसे रह सकता हूँ?

ਸਾ ਵਡਿਆਈ ਦੇਹਿ ਜਿਤੁ ਨਾਮਿ ਤੇਰੇ ਲਾਗਿ ਰਹਾਂ ॥
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥
मुझे वही बड़ाई प्रदान करो, जिससे मैं तेरे नाम-सिमरन में लगा रहूँ।

ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ਜਿਸੁ ਆਗੈ ਪਿਆਰੇ ਜਾਇ ਕਹਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्यारे! कोई अन्य दूसरा है ही नहीं, जिसके समक्ष मैं अनुरोध करूं।॥१॥ रहाउ ॥

ਸੇਵੀ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਣਾ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਚੰਉ ਕੋਇ ॥
सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥
मैं तो अपने उस मालिक की ही सेवा करता रहता हूँ एवं किसी दूसरे से मैं कुछ नहीं माँगता।

ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੁ ਹੈ ਬਿੰਦ ਬਿੰਦ ਚੁਖ ਚੁਖ ਹੋਇ ॥੪॥
नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥४॥
नानक तो उस मालिक का दास है और हर क्षण उस पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान जाता है ॥४॥

ਸਾਹਿਬ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਬਿੰਦ ਬਿੰਦ ਚੁਖ ਚੁਖ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੪॥੧॥
साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥
हे मेरे मालिक ! हर क्षण मैं तेरे नाम पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान जाता हूँ।॥ १ ॥ रहाउ।४ ॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਹਮ ਆਦਮੀ ਹਾਂ ਇਕ ਦਮੀ ਮੁਹਲਤਿ ਮੁਹਤੁ ਨ ਜਾਣਾ ॥
हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥
हम एक साँस भर जीने वाले आदमी हैं, हमें इस बात का कोई ज्ञान नहीं कि हमारी जीवन-अवधि कितनी है और कब मृत्यु का समय आ जाना है।

ਨਾਨਕੁ ਬਿਨਵੈ ਤਿਸੈ ਸਰੇਵਹੁ ਜਾ ਕੇ ਜੀਅ ਪਰਾਣਾ ॥੧॥
नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥१॥
नानक विनती करते हैं कि जिसने यह आत्मा एवं प्राण दिए हैं, उस ईश्वर की ही उपासना करो।१

ਅੰਧੇ ਜੀਵਨਾ ਵੀਚਾਰਿ ਦੇਖਿ ਕੇਤੇ ਕੇ ਦਿਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥१॥ रहाउ ॥
हे अन्धे मानव ! अच्छी तरह विचार कर के देख ले की तेरा जीवन कितने दिनों का है?। ॥ १ ॥ रहाउ॥

ਸਾਸੁ ਮਾਸੁ ਸਭੁ ਜੀਉ ਤੁਮਾਰਾ ਤੂ ਮੈ ਖਰਾ ਪਿਆਰਾ ॥
सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥
ये श्वास, शरीर एवं प्राण इत्यादि सब तेरी ही देन है और तू ही मुझे अत्यंत प्यारा है

ਨਾਨਕੁ ਸਾਇਰੁ ਏਵ ਕਹਤੁ ਹੈ ਸਚੇ ਪਰਵਦਗਾਰਾ ॥੨॥
नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥२॥
है सच्चे परवदगार शायर नानक यही कहता है॥२॥

ਜੇ ਤੂ ਕਿਸੈ ਨ ਦੇਹੀ ਮੇਰੇ ਸਾਹਿਬਾ ਕਿਆ ਕੋ ਕਢੈ ਗਹਣਾ ॥
जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥
हे मेरे मालिक ! यदि तू किसी को कोई वस्तु न दे तो वह कौन-सा आभूषण गिरवी रखकर तुझसे कुछ ले सकता है?

ਨਾਨਕੁ ਬਿਨਵੈ ਸੋ ਕਿਛੁ ਪਾਈਐ ਪੁਰਬਿ ਲਿਖੇ ਕਾ ਲਹਣਾ ॥੩॥
नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥३॥
नानक विनती करते हैं कि आदमी वही कुछ प्राप्त करता है, जो उसकी किस्मत में पूर्व जन्म का लेना लिखा होता है।३ ।

ਨਾਮੁ ਖਸਮ ਕਾ ਚਿਤਿ ਨ ਕੀਆ ਕਪਟੀ ਕਪਟੁ ਕਮਾਣਾ ॥

नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥

उस आदमी ने परमात्मा को कभी याद ही नहीं किया और वह कपटी तो कपट ही करता रहता है।

ਜਮ ਦੁਆਰਿ ਜਾ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਤਾ ਚਲਦਾ ਪਛੁਤਾਣਾ ॥੪॥

जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥४॥

जब उसे पकड़ कर यम के द्वार पर ले जाया गया तो वह पछताता हुआ चल दिया ॥४॥

ਜਬ ਲਗੁ ਦੁਨੀਆ ਰਹੀਐ ਨਾਨਕ ਕਿਛੁ ਸੁਣੀਐ ਕਿਛੁ ਕਹੀਐ ॥
जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥
हे नानक ! जब तक हमने दुनिया में रहना है, हमें प्रभु के बारे में कुछ कहना एवं कुछ सुनना चाहिए।

ਭਾਲਿ ਰਹੇ ਹਮ ਰਹਣੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜੀਵਤਿਆ ਮਰਿ ਰਹੀਐ ॥੫॥੨॥
भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥५॥२॥
हमने बड़ी खोज-तलाश की है, किन्तु सदैव रहने का कोई मार्ग नहीं मिला। इसलिए जब तक जीना है, अहंकार को मारकर जीवन बिताना चाहिए।५।।२।।

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ਦੂਜਾ
धनासरी महला १ घरु दूजा
धनासरी महला १ घरु दूजा

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਿਉ ਸਿਮਰੀ ਸਿਵਰਿਆ ਨਹੀ ਜਾਇ ॥
किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥
मैं कैसे सिमरन करूं ? मुझ से तो परमात्मा का भजन-सिमरन नहीं किया जाता।

ਤਪੈ ਹਿਆਉ ਜੀਅੜਾ ਬਿਲਲਾਇ ॥
तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥
सिमरन के बिना मेरा हृदय अग्नि की भांति जल रहा है और मेरी आत्मा भी दुःख में विलाप कर रही है।

ਸਿਰਜਿ ਸਵਾਰੇ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥
सिरजि सवारे साचा सोइ ॥
जब परम-सत्य परमात्मा सब जीवों को पैदा करके स्वयं ही उन्हें गुणवान बनाता है तो

ਤਿਸੁ ਵਿਸਰਿਐ ਚੰਗਾ ਕਿਉ ਹੋਇ ॥੧॥
तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥१॥
फिर उस प्रभु को विस्मृत करने से भला कैसे हो सकता है ॥१॥

ਹਿਕਮਤਿ ਹੁਕਮਿ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥
किसी चतुराई एवं हुक्म द्वारा प्रभु प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ਕਿਉ ਕਰਿ ਸਾਚਿ ਮਿਲਉ ਮੇਰੀ ਮਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरी माता ! उस परम-सत्य ईश्वर को मैं कैसे मिल सकता हूँ? ॥१॥ रहाउ ॥

ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਦੇਖਣ ਕੋਈ ਜਾਇ ॥
वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥
कोई विरला मनुष्य ही नाम रूपी सौदा देखने के लिए जाता है।

ਨਾ ਕੋ ਚਾਖੈ ਨਾ ਕੋ ਖਾਇ ॥
ना को चाखै ना को खाइ ॥
इस नामामृत को न कोई चखता है और न ही कोई खाता है।

ਲੋਕਿ ਪਤੀਣੈ ਨਾ ਪਤਿ ਹੋਇ ॥
लोकि पतीणै ना पति होइ ॥
लोगों की खुशामद करने से मनुष्य को मान-सम्मान प्राप्त नही होता।

ਤਾ ਪਤਿ ਰਹੈ ਰਾਖੈ ਜਾ ਸੋਇ ॥੨॥
ता पति रहै राखै जा सोइ ॥२॥
मनुष्य का मान-सम्मान तभी रहता है, यदि वह सच्चा परमेश्वर स्वयं ही लाज रखे ॥२॥

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ ॥
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥
हे ईश्वर ! मैं जिधर भी देखता हूँ, तू उधर ही विद्यमान है।

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜੀ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥
तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई सुख का स्थान नहीं।

ਜੇ ਕੋ ਕਰੇ ਕੀਤੈ ਕਿਆ ਹੋਇ ॥
जे को करे कीतै किआ होइ ॥
यदि कोई मनुष्य कुछ करने का प्रयास भी करे तो भी उसका किया कुछ नहीं होता।

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥੩॥
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥३॥
वह सच्चा परमेश्वर जिस पर करुणा करता है, वही कुछ कर सकता है॥३॥

ਹੁਣਿ ਉਠਿ ਚਲਣਾ ਮੁਹਤਿ ਕਿ ਤਾਲਿ ॥
हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥
अब एक मुहूर्त अथवा हाथ की ताली बजाने जितने समय में ही उठकर मैंने यहाँ से चले जाना है।

ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਾ ਗੁਣ ਨਹੀ ਨਾਲਿ ॥
किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥
मुझ में तो कोई भी गुण विद्यमान नहीं, फिर मैं उस प्रभु को अपना कौन-सा मुँह दिखाऊँगा ?

ਜੈਸੀ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ॥
जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥
जैसी दृष्टि परमात्मा करता है, वैसा ही मनुष्य हो जाता है।

ਵਿਣੁ ਨਦਰੀ ਨਾਨਕ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥੪॥੧॥੩॥
विणु नदरी नानक नही कोइ ॥४॥१॥३॥
हे नानक ! उसकी (कृपा) दृष्टि के बिना कोई भी जीव नहीं है॥ ॥४॥१॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਿਮਰਿਆ ਜਾਇ ॥
नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥
यदि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही उसका भजन-सिमरन किया जाता है।

ਆਤਮਾ ਦ੍ਰਵੈ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥
जब मनुष्य की आत्मा द्रवित हो जाती है तो वह अपना ध्यान सत्य में ही लगाता है।

ਆਤਮਾ ਪਰਾਤਮਾ ਏਕੋ ਕਰੈ ॥
आतमा परातमा एको करै ॥
जब वह आत्मा-परमात्मा को एक रूप समझ लेता है तो

ਅੰਤਰ ਕੀ ਦੁਬਿਧਾ ਅੰਤਰਿ ਮਰੈ ॥੧॥
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥१॥
उसके मन की दुविधा उसके मन में ही मर जाती है ॥१॥

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
गुर परसादी पाइआ जाइ ॥
भगवान की प्राप्ति तो गुरु की अपार कृपा से ही होती है।

ਹਰਿ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ਲਾਗੈ ਫਿਰਿ ਕਾਲੁ ਨ ਖਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि मनुष्य का चित्त भगवान के साथ लग जाए तो फिर काल उसे नहीं निगलता ॥१॥ रहाउ॥

ਸਚਿ ਸਿਮਰਿਐ ਹੋਵੈ ਪਰਗਾਸੁ ॥
सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥
उस सच्चे प्रभु का सिमरन करने से मन में ही सत्य का आलोक हो जाता है और

ਤਾ ਤੇ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਰਹੈ ਉਦਾਸੁ ॥
ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥
वह विष रूपी माया में ही निर्लिप्त रहता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਐਸੀ ਵਡਿਆਈ ॥
सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
सतगुरु की ऐसी बड़ाई है कि

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਵਿਚੇ ਗਤਿ ਪਾਈ ॥੨॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥२॥
मनुष्य अपने पुत्रों एवं अपनी पत्नी के बीच रहता हुआ मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥२॥

ਐਸੀ ਸੇਵਕੁ ਸੇਵਾ ਕਰੈ ॥
ऐसी सेवकु सेवा करै ॥
प्रभु का सेवक उसकी ऐसी सेवा करता है कि

ਜਿਸ ਕਾ ਜੀਉ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਧਰੈ ॥
जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥
जिस प्रभु ने यह प्राण उसे दिए हुए हैं, वह उसके समक्ष अर्पित कर देता है।

ਸਾਹਿਬ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥
साहिब भावै सो परवाणु ॥
जो मनुष्य प्रभु को अच्छा लगता है, वह परवान हो जाता है।

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਦਰਗਹ ਪਾਵੈ ਮਾਣੁ ॥੩॥
सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥३॥
ऐसा सेवक प्रभु के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है ॥३॥

ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਮੂਰਤਿ ਹਿਰਦੈ ਵਸਾਏ ॥
सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥
सतगुरु की मूर्त को वह अपने हृदय में बसाता है, और

ਜੋ ਇਛੈ ਸੋਈ ਫਲੁ ਪਾਏ ॥
जो इछै सोई फलु पाए ॥
जो उसकी इच्छा होती है, वही फल प्राप्त कर लेता है।

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਕਿਰਪਾ ਕਰੈ ॥
साचा साहिबु किरपा करै ॥
सच्चा परमेश्वर स्वयं उस पर अपनी कृपा करता है तो

ਸੋ ਸੇਵਕੁ ਜਮ ਤੇ ਕੈਸਾ ਡਰੈ ॥੪॥
सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥४॥
ऐसा सेवक फिर मृत्यु से कैसे डर सकता है ॥४॥

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕੁ ਕਰੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
भनति नानकु करे वीचारु ॥
हे नानक ! जो मनुष्य शब्द पर विचार करता है और

ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ਸਿਉ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥
साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥
सच्ची वाणी से प्रेम करता है,

ਤਾ ਕੋ ਪਾਵੈ ਮੋਖ ਦੁਆਰੁ ॥
ता को पावै मोख दुआरु ॥
उसे मोक्ष के द्वार की प्राप्ति हो जाती है।

ਜਪੁ ਤਪੁ ਸਭੁ ਇਹੁ ਸਬਦੁ ਹੈ ਸਾਰੁ ॥੫॥੨॥੪॥
जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥५॥२॥४॥
यह शब्द ही समस्त जप एवं तप का सार है ॥५॥२॥४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਜੀਉ ਤਪਤੁ ਹੈ ਬਾਰੋ ਬਾਰ ॥
जीउ तपतु है बारो बार ॥
मेरी आत्मा बार-बार अग्नि की तरह जलती है।

ਤਪਿ ਤਪਿ ਖਪੈ ਬਹੁਤੁ ਬੇਕਾਰ ॥
तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥
यह जल-जल कर दुखी होती रहती है और अनेक विकारों में फंस जाती है।

ਜੈ ਤਨਿ ਬਾਣੀ ਵਿਸਰਿ ਜਾਇ ॥
जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥
जिस शरीर को वाणी विस्मृत हो जाती है,

ਜਿਉ ਪਕਾ ਰੋਗੀ ਵਿਲਲਾਇ ॥੧॥
जिउ पका रोगी विललाइ ॥१॥
वह पक्के रोगी की तरह विलाप करता रहता है ॥१॥

ਬਹੁਤਾ ਬੋਲਣੁ ਝਖਣੁ ਹੋਇ ॥
बहुता बोलणु झखणु होइ ॥
अधिकतर बोलना व्यर्थ बकवास हो जाता है क्योंकि

ਵਿਣੁ ਬੋਲੇ ਜਾਣੈ ਸਭੁ ਸੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह प्रभु तो हमारे बोले बिना ही हमारे बारे में सब कुछ जानता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਨਿ ਕਨ ਕੀਤੇ ਅਖੀ ਨਾਕੁ ॥
जिनि कन कीते अखी नाकु ॥
जिसने हमारे कान, नेत्र एवं नाक बनाया है,

ਜਿਨਿ ਜਿਹਵਾ ਦਿਤੀ ਬੋਲੇ ਤਾਤੁ ॥
जिनि जिहवा दिती बोले तातु ॥
जिसने हमें जिव्हा दी है, जो शीघ्र बोलती है,

ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਰਾਖਿਆ ਅਗਨੀ ਪਾਇ ॥
जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥
जिसने माँ के गर्भ की अग्नि में पैदा करके हमारे मन की रक्षा की है।

ਵਾਜੈ ਪਵਣੁ ਆਖੈ ਸਭ ਜਾਇ ॥੨॥
वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥२॥
उस परमात्मा की कृपा से जीवन-साँसें चलती हैं और जीव परस्पर बातचीत करता है ॥२॥

ਜੇਤਾ ਮੋਹੁ ਪਰੀਤਿ ਸੁਆਦ ॥
जेता मोहु परीति सुआद ॥
जितना भी मोह, प्रेम एवं स्वाद है,

ਸਭਾ ਕਾਲਖ ਦਾਗਾ ਦਾਗ ॥
सभा कालख दागा दाग ॥
ये सभी हमारे मन को लगे हुए कालिख के केवल दाग ही हैं।

ਦਾਗ ਦੋਸ ਮੁਹਿ ਚਲਿਆ ਲਾਇ ॥
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥
जो मनुष्य अपने चेहरे पर पापों के धब्बे लगवा कर दुनिया से चल देता है,

ਦਰਗਹ ਬੈਸਣ ਨਾਹੀ ਜਾਇ ॥੩॥
दरगह बैसण नाही जाइ ॥३॥
उसे प्रभु के दरबार में बैठने हेतु स्थान नहीं मिलता॥३॥

ਕਰਮਿ ਮਿਲੈ ਆਖਣੁ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ॥
करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥
हे परमात्मा, तेरा नाम तेरी कृपा से ही सिमरन हेतु मिलता है,

ਜਿਤੁ ਲਗਿ ਤਰਣਾ ਹੋਰੁ ਨਹੀ ਥਾਉ ॥
जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥
जिससे लग कर जीव भवसागर से पार हो जाता है और इस भवसागर में डूबने से बचने के लिए नाम के अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं है।

ਜੇ ਕੋ ਡੂਬੈ ਫਿਰਿ ਹੋਵੈ ਸਾਰ ॥
जे को डूबै फिरि होवै सार ॥
यदि कोई भवसागर में डूब भी जाए तो नाम द्वारा उसकी पुनः संभाल हो जाती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਾ ਸਰਬ ਦਾਤਾਰ ॥੪॥੩॥੫॥
नानक साचा सरब दातार ॥४॥३॥५॥
हे नानक ! परम-सत्य परमेश्वर सब जीवों को देने वाला है ॥४॥३॥५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਚੋਰੁ ਸਲਾਹੇ ਚੀਤੁ ਨ ਭੀਜੈ ॥
चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥
यदि चोर किसी व्यक्ति की सराहना करे तो उसका चित्त प्रसन्न नहीं होता।

ਜੇ ਬਦੀ ਕਰੇ ਤਾ ਤਸੂ ਨ ਛੀਜੈ ॥
जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥
परन्तु यदि चोर उसकी बुराई करे तो उसकी इज्जत तिनका भर भी कम नहीं होती।

ਚੋਰ ਕੀ ਹਾਮਾ ਭਰੇ ਨ ਕੋਇ ॥
चोर की हामा भरे न कोइ ॥
चोर की जिम्मेदारी कोई भी नहीं लेता।

ਚੋਰੁ ਕੀਆ ਚੰਗਾ ਕਿਉ ਹੋਇ ॥੧॥
चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥१॥
जिसे भगवान ने चोर बना दिया, वह मनुष्य भला कैसे हो सकता है।॥१॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਅੰਧੇ ਕੁਤੇ ਕੂੜਿਆਰ ॥
सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥
हे ज्ञानहीन, लालची एवं झूठे मन ! ध्यानपूर्वक सुन,

ਬਿਨੁ ਬੋਲੇ ਬੂਝੀਐ ਸਚਿਆਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥१॥ रहाउ ॥
तेरे बिना बोले ही वह सच्चा परमेश्वर तेरे मन की भावना को जानता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਚੋਰੁ ਸੁਆਲਿਉ ਚੋਰੁ ਸਿਆਣਾ ॥
चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥
चोर चाहे सुन्दर एवं अक्लमंद हो परन्तु

ਖੋਟੇ ਕਾ ਮੁਲੁ ਏਕੁ ਦੁਗਾਣਾ ॥
खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥
उस दुराचारी का मूल्य एक कौड़ी जितना ही होता है।

ਜੇ ਸਾਥਿ ਰਖੀਐ ਦੀਜੈ ਰਲਾਇ ॥
जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥
यदि उसे गुणवानों में मिलाकर रख दिया जाए तो

ਜਾ ਪਰਖੀਐ ਖੋਟਾ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥੨॥
जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥२॥
परखने पर वह खोटा ही पाया जाता है।॥२॥

ਜੈਸਾ ਕਰੇ ਸੁ ਤੈਸਾ ਪਾਵੈ ॥
जैसा करे सु तैसा पावै ॥
सच तो यही है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही उसका फल प्राप्त करता है।

ਆਪਿ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਵੈ ॥
आपि बीजि आपे ही खावै ॥
वह शुभाशुभ कर्मों का बीज बोकर स्वयं ही उसका फल खाता है।

ਜੇ ਵਡਿਆਈਆ ਆਪੇ ਖਾਇ ॥
जे वडिआईआ आपे खाइ ॥
यदि वह स्वयं ही अपनी प्रशंसा करे तो

ਜੇਹੀ ਸੁਰਤਿ ਤੇਹੈ ਰਾਹਿ ਜਾਇ ॥੩॥
जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥३॥
जैसे उसकी समझ होती है, वैसे मार्ग पर वह चलता है॥३॥

ਜੇ ਸਉ ਕੂੜੀਆ ਕੂੜੁ ਕਬਾੜੁ ॥
जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥
यदि वह अपने झूठ को छिपाने हेतु सैकड़ों झूठी बातें करे,

ਭਾਵੈ ਸਭੁ ਆਖਉ ਸੰਸਾਰੁ ॥
भावै सभु आखउ संसारु ॥
चाहे सारी दुनिया उसे भला पुरुष कहे तो भी वह सत्य के दरबार में मंजूर नहीं होता।

ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਅਧੀ ਪਰਵਾਣੁ ॥
तुधु भावै अधी परवाणु ॥
हे प्रभु ! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो एक साधारण पुरुष भी परवान हो जाता है।

ਨਾਨਕ ਜਾਣੈ ਜਾਣੁ ਸੁਜਾਣੁ ॥੪॥੪॥੬॥
नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥४॥४॥६॥
हे नानक ! वह चतुर एवं अन्तर्यामी प्रभु सर्वज्ञाता है।॥४॥४॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਕਾਇਆ ਕਾਗਦੁ ਮਨੁ ਪਰਵਾਣਾ ॥
काइआ कागदु मनु परवाणा ॥
मानव की यह काया कागज है और मन इस पर लिखा हुक्म उसकी किस्मत है।

ਸਿਰ ਕੇ ਲੇਖ ਨ ਪੜੈ ਇਆਣਾ ॥
सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥
परन्तु नादान मानव अपने मस्तक पर लिखी हुई किस्मत के लेख को नहीं पढ़ता।

ਦਰਗਹ ਘੜੀਅਹਿ ਤੀਨੇ ਲੇਖ ॥
दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥
उस भगवान के दरबार में तीन प्रकार की किस्मत के लेख लिखे जाते हैं।

ਖੋਟਾ ਕਾਮਿ ਨ ਆਵੈ ਵੇਖੁ ॥੧॥
खोटा कामि न आवै वेखु ॥१॥
देख लो, खोटा सिक्का वहाँ किसी काम नहीं आता ॥१॥

ਨਾਨਕ ਜੇ ਵਿਚਿ ਰੁਪਾ ਹੋਇ ॥
नानक जे विचि रुपा होइ ॥
हे नानक ! यदि सिक्के पर चाँदी हो तो

ਖਰਾ ਖਰਾ ਆਖੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥
हर कोई उस सिक्के को खरा-खरा कहता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕਾਦੀ ਕੂੜੁ ਬੋਲਿ ਮਲੁ ਖਾਇ ॥
कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
काजी कचहरी में झूठा न्याय सुना कर हराम का धन खाता है।

ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਨਾਵੈ ਜੀਆ ਘਾਇ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
ब्राह्मण अपने इष्ट देवता को बलि देने के लिए जीव-हत्या करके अपने पाप उतारने हेतु तीर्थ पर जाकर स्नान करता है।

ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਣੈ ਅੰਧੁ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन योगी योग साधना की युक्ति नहीं जानता।

ਤੀਨੇ ਓਜਾੜੇ ਕਾ ਬੰਧੁ ॥੨॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥२॥
काजी, ब्राह्मण एवं योगी यह तीनों ही जीवों हेतु विनाश का बंधन हैं॥ २॥

ਸੋ ਜੋਗੀ ਜੋ ਜੁਗਤਿ ਪਛਾਣੈ ॥
सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥
सच्चा योगी वही है, जो प्रभु-मिलन की युक्ति को समझता है और

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਏਕੋ ਜਾਣੈ ॥
गुर परसादी एको जाणै ॥
जो गुरु की कृपा से एक ईश्वर को जानता है।

ਕਾਜੀ ਸੋ ਜੋ ਉਲਟੀ ਕਰੈ ॥
काजी सो जो उलटी करै ॥
काजी वही है, जो अपनी मनोवृति को विकारों से बदल लेता है और

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜੀਵਤੁ ਮਰੈ ॥
गुर परसादी जीवतु मरै ॥
जो गुरु की कृपा से अपने अहंत्व को मार देता है।

ਸੋ ਬ੍ਰਾਹਮਣੁ ਜੋ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰੈ ॥
सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥
वास्तविक ब्राह्मण वही है, जो ब्रह्म का चिंतन करता है।

ਆਪਿ ਤਰੈ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੈ ॥੩॥
आपि तरै सगले कुल तारै ॥३॥
वह भवसागर में से स्वयं तो पार होता ही है और अपने समस्त वंश को भी पार करवा देता है ॥३॥

ਦਾਨਸਬੰਦੁ ਸੋਈ ਦਿਲਿ ਧੋਵੈ ॥
दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥
वही आदमी अक्लमंद है, जो अपने मन को स्वच्छ करता है।

ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਸੋਈ ਮਲੁ ਖੋਵੈ ॥
मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥
वास्तविक मुसलमान वही है, जो अपने मन की अपवित्रता को दूर करता है।

ਪੜਿਆ ਬੂਝੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥
पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥
वही मनुष्य विद्वान है, जो सत्य को समझता है और ऐसा मनुष्य प्रभु को स्वीकार हो जाता है।

ਜਿਸੁ ਸਿਰਿ ਦਰਗਹ ਕਾ ਨੀਸਾਣੁ ॥੪॥੫॥੭॥
जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥४॥५॥७॥
ऐसा मनुष्य वही होता है, जिसके माथे पर सत्य के दरबार की स्वीकृति का चिन्ह लगा होता ॥४॥५॥७॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩
धनासरी महला १ घरु ३
धनासरी महला १ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕਾਲੁ ਨਾਹੀ ਜੋਗੁ ਨਾਹੀ ਨਾਹੀ ਸਤ ਕਾ ਢਬੁ ॥
कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥
यह योग्य समय नहीं है, इस युग में योग-साधना नहीं हो सकती और सत्य-साधना के मार्ग पर भी चला नहीं जा सकता।

ਥਾਨਸਟ ਜਗ ਭਰਿਸਟ ਹੋਏ ਡੂਬਤਾ ਇਵ ਜਗੁ ॥੧॥

थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥१॥

जगत के सभी पूजा-स्थल भ्रष्ट हो गए हैं और यूं समूचा जगत ही तृष्णाग्नि के समुद्र में डूबता जा रहा है॥१॥

कल महि राम नामु सारु ॥

कल महि राम नामु सारु ॥

इस कलियुग में राम का नाम सभी धर्म-कर्मों से श्रेष्ठ साधन है।

ਅਖੀ ਤ ਮੀਟਹਿ ਨਾਕ ਪਕੜਹਿ ਠਗਣ ਕਉ ਸੰਸਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥१॥ रहाउ ॥

दुनिया को धोखा देने के लिए पाखण्डी ब्राह्मण अपनी ऑखे मिटकर अपना नाक पकड़ कर कहता है।॥१॥ रहाउ ॥

ਆਂਟ ਸੇਤੀ ਨਾਕੁ ਪਕੜਹਿ ਸੂਝਤੇ ਤਿਨਿ ਲੋਅ ॥

आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥

समाधिस्थ होकर पाखण्डी अपने अँगूठे एवं दोनो ऊंगलियों से अपने नाक को पकड़ कर कहता है कि मुझे आकाश, पाताल एवं पृथ्वी ये तीनों लोक दिखाई देते हैं।

ਮਗਰ ਪਾਛੈ ਕਛੁ ਨ ਸੂਝੈ ਏਹੁ ਪਦਮੁ ਅਲੋਅ ॥੨॥
मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥२॥
मगर, उसे अपनी पीठ के पीछे कुछ भी दिखाई नहीं देता। उसका यह पद्मासन कितना अदभुत है ॥२॥

ਖਤ੍ਰੀਆ ਤ ਧਰਮੁ ਛੋਡਿਆ ਮਲੇਛ ਭਾਖਿਆ ਗਹੀ ॥
खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
क्षत्रिय हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु युद्ध करते थे परन्तु अब क्षत्रियों ने अपना धर्म त्याग दिया है और वह मुस्लमानों की भाषा पढ़ने लग गए हैं।

ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਇਕ ਵਰਨ ਹੋਈ ਧਰਮ ਕੀ ਗਤਿ ਰਹੀ ॥੩॥
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥३॥
सारी सृष्टि एक ही वर्ण की हो गई है और धर्म की प्राचीन प्रचलित मर्यादा मिट गई है॥ ३॥

ਅਸਟ ਸਾਜ ਸਾਜਿ ਪੁਰਾਣ ਸੋਧਹਿ ਕਰਹਿ ਬੇਦ ਅਭਿਆਸੁ ॥
असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥
पाणनी ऋषि की रचित व्याकरण के आठ अध्याय एवं वेद व्यास के रचित अठारह पुराणों का विद्वान ध्यानपूर्वक चिंतन करते हैं और वे वेदों का भी अभ्यास करते रहते हैं।

ਬਿਨੁ ਨਾਮ ਹਰਿ ਕੇ ਮੁਕਤਿ ਨਾਹੀ ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਦਾਸੁ ॥੪॥੧॥੬॥੮॥
बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥४॥१॥६॥८॥
परन्तु दास नानक यही कहता है कि हरिनाम के बिना मुक्ति संभव नहीं ॥४॥१॥६॥८॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਆਰਤੀ
धनासरी महला १ आरती
धनासरी महला १ आरती

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲੁ ਰਵਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਿਕਾ ਮੰਡਲ ਜਨਕ ਮੋਤੀ ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों।

ਧੂਪੁ ਮਲਆਨਲੋ ਪਵਣੁ ਚਵਰੋ ਕਰੇ ਸਗਲ ਬਨਰਾਇ ਫੂਲੰਤ ਜੋਤੀ ॥੧॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं।॥१॥

ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ॥ ਭਵ ਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥
कैसी आरती होइ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥
सृष्टि के जीवों का जन्म-मरण नाश करने वाले हे प्रभु ! प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है कि

ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜੰਤ ਭੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानो नगारे बज रहे हों ॥१॥ रहाउ॥

ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹੈ ਤੋਹਿ ਕਉ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੋਹੀ ॥
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति ननना एक तोही ॥
हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं है क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हो,

ਸਹਸ ਪਦ ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੁ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਇਵ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सर्गुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण-कंवल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम धाणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हजारों ही नासिकाएँ हैं; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है ॥२॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति-स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है।

ਤਿਸ ਕੈ ਚਾਨਣਿ ਸਭ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥੩॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है ॥३॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਕਰੰਦ ਲੋਭਿਤ ਮਨੋ ਅਨਦਿਨੋ ਮੋਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य-प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਕਉ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੇਰੈ ਨਾਮਿ ਵਾਸਾ ॥੪॥੧॥੭॥੯॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥९॥
हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा-जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए ॥४॥१॥७॥९॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੨ ਚਉਪਦੇ
धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे
धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਇਹੁ ਧਨੁ ਅਖੁਟੁ ਨ ਨਿਖੁਟੈ ਨ ਜਾਇ ॥
इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥
यह नाम-धन कदापि खत्म होने वाला नहीं है अर्थात् यह तो अक्षय है, न यह कभी खत्म होता है और न ही यह चोरी होता है।

ਪੂਰੈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਦਿਖਾਇ ॥
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
पूर्ण सतगुरु ने मुझे यह दिखा दिया है।

ਅਪੁਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕਉ ਸਦ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥
अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥
मैं अपने पूर्ण सतगुरु पर सदैव ही कुर्बान जाता हूँ।

ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥੧॥
गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥१॥
गुरु की कृपा से मैंने भगवान को अपने मन में बसा लिया है ॥१॥

ਸੇ ਧਨਵੰਤ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥
केवल वही धनवान है, जो हरि-नाम में ध्यान लगाकर रखता हैं।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में हरि-नाम धन का प्रकाश कर दिया है और भगवान की कृपा से यह नाम-धन मेरे मन में आकर बस गया है ॥ रहाउ॥

ਅਵਗੁਣ ਕਾਟਿ ਗੁਣ ਰਿਦੈ ਸਮਾਇ ॥
अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥
अवगुण मिटकर गुण आकर उसके हृदय में बस गए हैं जो की

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਹਜਿ ਸੁਭਾਇ ॥
पूरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥
पूर्ण गुरु के प्रेम द्वारा सहज स्वभाव ही हुआ है।

ਪੂਰੇ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥
पूरे गुर की साची बाणी ॥
पूर्ण गुरु की वाणी सत्य एवं शाश्वत है और

ਸੁਖ ਮਨ ਅੰਤਰਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਣੀ ॥੨॥
सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥२॥
इससे मन में सुख एवं सहजावस्था उत्पन्न हो जाती है।॥ २॥

ਏਕੁ ਅਚਰਜੁ ਜਨ ਦੇਖਹੁ ਭਾਈ ॥
एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥
हे लोगो ! हे भाई ! एक आश्चर्य देखो

ਦੁਬਿਧਾ ਮਾਰਿ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਈ ॥
दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥
मैंने अपनी दुविधा को मारकर भगवान को अपने हृदय में बसा लिया है।

ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਕੁ ਨ ਪਾਇਆ ਜਾਇ ॥
नामु अमोलकु न पाइआ जाइ ॥
यह नाम बड़ा अमूल्य है और यह किसी भी मूल्य पर पाया नहीं जा सकता।

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੩॥
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥
यह तो गुरु की कृपा से ही मन में आकर बसता है॥३॥

ਸਭ ਮਹਿ ਵਸੈ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੋ ਸੋਇ ॥
सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥
एक प्रभु ही समस्त जीवों में निवास करता है और

ਗੁਰਮਤੀ ਘਟਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुरमती घटि परगटु होइ ॥
गुरु के उपदेश द्वारा वह हृदय में ही प्रगट हो जाता है।

ਸਹਜੇ ਜਿਨਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿ ਪਛਾਣਿਆ ॥
सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥
जिसने सहजावस्था में प्रभु को जान कर पहचान लिया है,

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੪॥੧॥
नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥४॥१॥
हे नानक ! उसे हरि-नाम मिल गया है और उसका मन तृप्त हो गया है ॥४॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਅਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥
हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥
हरि-नाम का धन अत्यंत निर्मल एवं अपंरपार है और

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥
गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥
गुरु के शब्द द्वारा मैंने इस धन के भण्डार भर लिए हैं।

ਨਾਮ ਧਨ ਬਿਨੁ ਹੋਰ ਸਭ ਬਿਖੁ ਜਾਣੁ ॥
नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥
नाम-धन के बिना अन्य सभी धन विष रूप समझो।

ਮਾਇਆ ਮੋਹਿ ਜਲੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥੧॥
माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥१॥
मनुष्य अभिमान में आकर माया के मोह की अग्नि में ही जलता रहता है।॥१॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖੈ ਕੋਇ ॥
गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥
गुरु के माध्यम से कोई विरला ही हरि-रस को चखता है।

ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥
वह दिन-रात सदैव आनंद में रहता है और पूर्ण भाग्य से ही हरि-नाम की प्राप्ति होती है॥ रहाउ॥

ਸਬਦੁ ਦੀਪਕੁ ਵਰਤੈ ਤਿਹੁ ਲੋਇ ॥
सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥
यह ब्रह्म-शब्द रूपी दीपक आकाश, पाताल एवं पृथ्वी-इन तीनों लोकों में ज्ञान रूपी प्रकाश कर रहा है।

ਜੋ ਚਾਖੈ ਸੋ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
जो चाखै सो निरमलु होइ ॥
जो मनुष्य इस को चखता है, वह पावन हो जाता है।

ਨਿਰਮਲ ਨਾਮਿ ਹਉਮੈ ਮਲੁ ਧੋਇ ॥
निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥
यह पावन नाम मन की अहंकार रूपी मैल को स्वच्छ कर देता है।

ਸਾਚੀ ਭਗਤਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੨॥
साची भगति सदा सुखु होइ ॥२॥
भगवान की सच्ची भक्ति से मनुष्य सदैव ही सुखी रहता है।॥२॥

ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਆ ਸੋ ਹਰਿ ਜਨੁ ਲੋਗੁ ॥
जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥
जिसने हरि-रस को चख लिया है, वह हरि का सेवक बन गया है।

ਤਿਸੁ ਸਦਾ ਹਰਖੁ ਨਾਹੀ ਕਦੇ ਸੋਗੁ ॥
तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥
उसे सदैव ही हर्ष बना रहता है और उसे कभी कोई चिन्ता नही होती।

ਆਪਿ ਮੁਕਤੁ ਅਵਰਾ ਮੁਕਤੁ ਕਰਾਵੈ ॥
आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥
वह स्वयं माया के बन्धनों से मुक्त हो जाता है और दूसरों को भी मुक्त करवा लेता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਹਰਿ ਤੇ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥੩॥
हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥३॥
वह हरि-नाम का भजन करता है और हरि से ही सुख प्राप्त करता है ॥३॥

ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰ ਸਭ ਮੁਈ ਬਿਲਲਾਇ ॥
बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥
गुरु के बिना सारी दुनिया दुखी हुई विलाप करती रहती है।

ਅਨਦਿਨੁ ਦਾਝਹਿ ਸਾਤਿ ਨ ਪਾਇ ॥
अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥
वह रात-दिन तृष्णा अग्नि में जलती रहती है और उसे शांति प्राप्त नहीं होती।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸਭੁ ਤ੍ਰਿਸਨ ਬੁਝਾਏ ॥
सतिगुरु मिलै सभु त्रिसन बुझाए ॥
यद्यपि गुरु मिल जाए तो समस्त तृष्णा मिट जाती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਾਂਤਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥੪॥੨॥
नानक नामि सांति सुखु पाए ॥४॥२॥
हे नानक ! नाम के द्वारा ही सुख एवं शांति की प्राप्ति होती है ॥४॥२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਸਦਾ ਧਨੁ ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲੇ ॥
सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥
जीव उसका नाम-सिमरन करते रहते हैं और यह नाम-धन सदैव जीव के हृदय में बसता है,"

ਜੀਅ ਜੰਤ ਜਿਨਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ॥
जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥
जिस परमात्मा ने समस्त जीवों का पालन-पोषण किया है।

ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਤਿਨ ਕਉ ਪਾਏ ॥
मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥
प्रभु मुक्ति पदार्थ उनके दामन में ही डालता है

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥੧॥
हरि कै नामि रते लिव लाए ॥१॥
जो मनुष्य हरि के नाम में लीन रहते और उसमें ही ध्यान लगाकर रखते हैं ॥१॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਪਾਵੈ ॥
गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥
प्रत्येक मनुष्य गुरु की सेवा द्वारा हरि-नाम धन को प्राप्त करता है।

ਅੰਤਰਿ ਪਰਗਾਸੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਵੈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥
जो हरि-नाम का ध्यान करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਗੂੜਾ ਧਨ ਪਿਰ ਹੋਇ ॥
इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥
यह हरि-प्रेम का गहरा रंग प्रभु-पति की उस जीव-स्त्री पर ही चढ़ता है,

ਸਾਂਤਿ ਸੀਗਾਰੁ ਰਾਵੇ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਇ ॥
सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥
जो शांति को अपना श्रृंगार बनाती है।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਪ੍ਰਭੁ ਕੋਇ ਨ ਪਾਏ ॥
हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥
कोई भी मनुष्य अहंकार में प्रभु को नहीं पा सकता और

ਮੂਲਹੁ ਭੁਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਏ ॥੨॥
मूलहु भुला जनमु गवाए ॥२॥
वह अपने मूल प्रभु को भुला कर अपना जन्म व्यर्थ गंवा लेता है॥ २॥

ਗੁਰ ਤੇ ਸਾਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖੁ ਬਾਣੀ ॥
गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥
शांति, आनंद एवं सुख देने वाली वाणी गुरु से ही प्राप्त होती है।

ਸੇਵਾ ਸਾਚੀ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥
सेवा साची नामि समाणी ॥
गुरु की सच्ची सेवा करने से मन नाम में लीन हो जाता है।

ਸਬਦਿ ਮਿਲੈ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਸਦਾ ਧਿਆਏ ॥
सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥
जिस व्यक्ति को शब्द की उपलब्धि हो जाती है, वह सदैव अपने प्रियतम प्रभु का ही ध्यान करता रहता है।

ਸਾਚ ਨਾਮਿ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ॥੩॥
साच नामि वडिआई पाए ॥३॥
इस तरह वह सत्य-नाम द्वारा प्रभु के दरबार पर शोभा प्राप्त करता है ॥३॥

ਆਪੇ ਕਰਤਾ ਜੁਗਿ ਜੁਗਿ ਸੋਇ ॥
आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥
वह कर्ता-परमेश्वर युग-युगांतरों में विद्यमान है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਮੇਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
नदरि करे मेलावा होइ ॥
यदि वह अपनी करुणा-दृष्टि करे तो जीव का उससे मिलन होता है।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਤੇ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥
गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥
गुरुवाणी के द्वारा मनुष्य प्रभु को अपने मन में बसा लेता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥੪॥੩॥
नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥४॥३॥
हे नानक ! जो व्यक्ति सत्य के प्रेम में मग्न हो जाते हैं, प्रभु स्वयं ही उन्हें अपने साथ मिला लेता है ॥४॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਤੀਜਾ ॥
धनासरी महला ३ तीजा ॥
धनासरी महला ३ तीजा ॥

ਜਗੁ ਮੈਲਾ ਮੈਲੋ ਹੋਇ ਜਾਇ ॥ ਆਵੈ ਜਾਇ ਦੂਜੈ ਲੋਭਾਇ ॥
जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥
यह जगत अपवित्र है और जीव भी अपवित्र होते जाते हैं। द्वैतभाव में मुग्ध हुए वे जन्मते एवं मरते रहते हैं।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਸਭ ਪਰਜ ਵਿਗੋਈ ॥
दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥
द्वैतभाव में फँस कर सारी दुनिया ही बर्बाद हो गई है।

ਮਨਮੁਖਿ ਚੋਟਾ ਖਾਇ ਅਪੁਨੀ ਪਤਿ ਖੋਈ ॥੧॥
मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥१॥
मनमुख व्यक्ति चोटें खाता है और अपनी इज्जत गंवा लेता है ॥१॥

ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਤੇ ਜਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਇ ॥
गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥
गुरु की सेवा से मनुष्य निर्मल हो जाता है,

ਅੰਤਰਿ ਨਾਮੁ ਵਸੈ ਪਤਿ ਊਤਮ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥
उसके मन में नाम का निवास हो जाता है और उसकी इज्जत उत्तम हो जाती है॥ रहाउ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਬਰੇ ਹਰਿ ਸਰਣਾਈ ॥
गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥
गुरुमुख व्यक्ति भगवान की शरण में आने से भवसागर से पार हो गए हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰਾਤੇ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਈ ॥
राम नामि राते भगति द्रिड़ाई ॥
राम के नाम में मग्न हुए वह मन में दृढ़ता से भक्ति करते हैं।

ਭਗਤਿ ਕਰੇ ਜਨੁ ਵਡਿਆਈ ਪਾਏ ॥
भगति करे जनु वडिआई पाए ॥
भक्तजन तो भगवान की भक्ति करके ही यश प्राप्त करते हैं।

ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਸੁਖ ਸਹਜਿ ਸਮਾਏ ॥੨॥
साचि रते सुख सहजि समाए ॥२॥
वे सत्य में रत रहकर सहज सुख में ही समा जाते हैं।॥ २॥

ਸਾਚੇ ਕਾ ਗਾਹਕੁ ਵਿਰਲਾ ਕੋ ਜਾਣੁ ॥
साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥
सत्य-नाम का ग्राहक किसी विरले को ही जानो।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਆਪੁ ਪਛਾਣੁ ॥
गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥
गुरु के शब्द द्वारा अपने आप की पहचान कर लो।

ਸਾਚੀ ਰਾਸਿ ਸਾਚਾ ਵਾਪਾਰੁ ॥
साची रासि साचा वापारु ॥
हरि-नाम की राशि सत्य है और इसका व्यापार भी सत्य है।

ਸੋ ਧੰਨੁ ਪੁਰਖੁ ਜਿਸੁ ਨਾਮਿ ਪਿਆਰੁ ॥੩॥
सो धंनु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥३॥
वह पुरुष धन्य है, जो प्रभु के नाम से प्रेम करता है॥ ३॥

ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਸਾਚੈ ਇਕਿ ਸਚਿ ਲਾਏ ॥
तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥
उस सच्चे प्रभु ने किसी को सत्य नाम में लगाया हुआ है और

ਊਤਮ ਬਾਣੀ ਸਬਦੁ ਸੁਣਾਏ ॥
ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥
वह उत्तम वाणी एवं शब्द ही सुनाता है।

ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਕੀ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੪॥੪॥
प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥
उस सच्चे प्रभु की आराधना भी सत्य है। हे नानक ! प्रभु का नाम मनुष्य को सुन्दर बनाने वाला है ॥४॥४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਤਿਨ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥
जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥
मैं तो उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो भगवान का सिमरन करते हैं।

ਤਿਨ ਹਿਰਦੈ ਸਾਚੁ ਸਚਾ ਮੁਖਿ ਨਾਉ ॥
तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥
उनके हृदय एवं मुख में हर समय सत्य-नाम ही रहता है अर्थात् वे हृदय और मुँह से सत्य-नाम ही जपते रहते हैं।

ਸਾਚੋ ਸਾਚੁ ਸਮਾਲਿਹੁ ਦੁਖੁ ਜਾਇ ॥
साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥
परम-सत्य प्रभु का चिंतन करने से दुःख दूर हो जाता है और

ਸਾਚੈ ਸਬਦਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਇ ॥੧॥
साचै सबदि वसै मनि आइ ॥१॥
सत्य-नाम द्वारा प्रभु मन में आकर बस जाता है ॥१॥

ਗੁਰਬਾਣੀ ਸੁਣਿ ਮੈਲੁ ਗਵਾਏ ॥
गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥
गुरुवाणी सुनकर मनुष्य अपने मन की अहंकार रूपी मैल दूर कर लेता है और

ਸਹਜੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥१॥ रहाउ ॥
हरि-नाम को सहज ही अपने मन में बसा लेता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕੂੜੁ ਕੁਸਤੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਏ ॥
कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥
वह झूठ, छल-कपट एवं तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा लेता है और

ਅੰਤਰਿ ਸਾਂਤਿ ਸਹਜਿ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥
अपने मन में शांति एवं सहज सुख को पा लेता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਚਲੈ ਤਾ ਆਪੁ ਜਾਇ ॥
गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥
जो मनुष्य गुरु की रज़ा अनुसार आचरण करता है, उसके मन में से अहंत्व दूर हो जाता है।

ਸਾਚੁ ਮਹਲੁ ਪਾਏ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੨॥
साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥२॥
वह भगवान का गुणगान करता रहता है और वह सत्य को प्राप्त कर लेता है॥ २॥

ਨ ਸਬਦੁ ਬੂਝੈ ਨ ਜਾਣੈ ਬਾਣੀ ॥
न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥
मनमुख न तो उसने शब्द के रहस्य को समझा है और न ही वाणी को जाना है,

ਮਨਮੁਖਿ ਅੰਧੇ ਦੁਖਿ ਵਿਹਾਣੀ ॥
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥
ज्ञानहीन मनमुख की तमाम आयु दुःख में ही व्यतीत हो गई है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ॥
सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥
यदि वह सतगुरु से साक्षात्कार कर ले तो उसे सुख की प्राप्ति हो जाए।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਠਾਕਿ ਰਹਾਏ ॥੩॥
हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥३॥
चूंकि गुरु उसके मन में से अहंकार को खत्म कर देता है।॥३॥

ਕਿਸ ਨੋ ਕਹੀਐ ਦਾਤਾ ਇਕੁ ਸੋਇ ॥
किस नो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥
जब एक ईश्वर ही सबका दाता है तो उसके अलावा किससे प्रार्थना करूँ ?

ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵਾ ਹੋਇ ॥
किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥
यदि वह मुझ पर अपनी कृपा कर दे तो मेरा शब्द द्वारा उससे मिलाप हो जाए।

ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਚੇ ਗੁਣ ਗਾਵਾ ॥
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥
फिर मैं अपने सच्चे प्रियतम को मिलकर उसका स्तुतिगान करूँ।

ਨਾਨਕ ਸਾਚੇ ਸਾਚਾ ਭਾਵਾ ॥੪॥੫॥
नानक साचे साचा भावा ॥४॥५॥
हे नानक ! मैं चाहता हूँ कि मैं सत्यवादी बनकर उस परम-सत्य प्रभु को अच्छा लगूं ॥ ४॥ ५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਮਨੁ ਮਰੈ ਧਾਤੁ ਮਰਿ ਜਾਇ ॥
मनु मरै धातु मरि जाइ ॥
जब मन विकारों की तरफ से समाप्त हो जाता है तो मोह-ममता भी मिट जाती है।

ਬਿਨੁ ਮਨ ਮੂਏ ਕੈਸੇ ਹਰਿ ਪਾਇ ॥
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥
मन को वशीभूत किए बिना भगवान कैसे पाया जा सकता है?

ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਰੈ ਦਾਰੂ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥
कोई विरला व्यक्ति ही इस मन को मारने की औषधि जानता है।

ਮਨੁ ਸਬਦਿ ਮਰੈ ਬੂਝੈ ਜਨੁ ਸੋਇ ॥੧॥
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥
केवल वही व्यक्ति जानता है कि मन शब्द द्वारा ही विषय-विकारों की ओर से मरता है ॥१॥

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਹਰਿ ਦੇ ਵਡਿਆਈ ॥
जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥
जिसे भगवान क्षमा कर देता है, उसे ही शोभा प्रदान करता है,

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਵਸੈ ਮਨਿ ਆਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥
गुरु की कृपा से हरि-नाम मन में आकर बस जाता है॥ रहाउ ॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਮਾਵੈ ॥
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥
जब व्यक्ति गुरुमुख बनकर शुभ कर्म करता है तो

ਤਾ ਇਸੁ ਮਨ ਕੀ ਸੋਝੀ ਪਾਵੈ ॥
ता इसु मन की सोझी पावै ॥
उसे इस मन की सूझ आती है।

ਮਨੁ ਮੈ ਮਤੁ ਮੈਗਲ ਮਿਕਦਾਰਾ ॥
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥
मन तो अहंकार रूपी मदिरा के नशे में मुग्ध होकर हाथी जैसा अहंकारी हो गया है।

ਗੁਰੁ ਅੰਕਸੁ ਮਾਰਿ ਜੀਵਾਲਣਹਾਰਾ ॥੨॥
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥
लेकिन गुरु नाम रूपी अंकुश लगाकर इस नाम विहीन मन को पुनः जीवित करने वाला है भाव नाम-सिमरन में लगाने वाला है॥२॥

ਮਨੁ ਅਸਾਧੁ ਸਾਧੈ ਜਨੁ ਕੋਈ ॥
मनु असाधु साधै जनु कोई ॥
कोई विरला आदमी ही इस असाध्य मन को अपने वश में करता है।

ਅਚਰੁ ਚਰੈ ਤਾ ਨਿਰਮਲੁ ਹੋਈ ॥
अचरु चरै ता निरमलु होई ॥
यह मन चंचल है, यदि कोई इसे अचल कर दे तो यह पवित्र हो जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਇਆ ਸਵਾਰਿ ॥
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥
जब गुरुमुख ने अपना यह मन अपने नियंत्रण में कर लिया तो

ਹਉਮੈ ਵਿਚਹੁ ਤਜੈ ਵਿਕਾਰ ॥੩॥
हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥
इस मन ने स्वयं में विद्यमान अहंत्व एवं विकार को त्याग दिया ॥३॥

ਜੋ ਧੁਰਿ ਰਖਿਅਨੁ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇ ॥
जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥
जिन्हें प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया वे

ਕਦੇ ਨ ਵਿਛੁੜਹਿ ਸਬਦਿ ਸਮਾਇ ॥
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥
कदापि जुदा नहीं होते और उसके शब्द में लीन रहते हैं।

ਆਪਣੀ ਕਲਾ ਆਪੇ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣੈ ॥
आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥
अपनी कला को प्रभु स्वयं ही जानता है।

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਪਛਾਣੈ ॥੪॥੬॥
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥६॥
हे नानक ! गुरुमुख ही नाम के भेद को पहचानता है ॥४॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਕਾਚਾ ਧਨੁ ਸੰਚਹਿ ਮੂਰਖ ਗਾਵਾਰ ॥
काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥
मूर्ख एवं गंवार मनुष्य नाशवान् धन को संचित करते रहते हैं।

ਮਨਮੁਖ ਭੂਲੇ ਅੰਧ ਗਾਵਾਰ ॥
मनमुख भूले अंध गावार ॥
ऐसे ज्ञानहीन एवं गंवार मनमुख भटके हुए हैं।

ਬਿਖਿਆ ਕੈ ਧਨਿ ਸਦਾ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ॥
बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥
झूठा धन सदैव ही दुःख देता है,

ਨਾ ਸਾਥਿ ਜਾਇ ਨ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥
ना साथि जाइ न परापति होइ ॥१॥
न यह व्यक्ति के साथ जाता है और न ही इससे कुछ उपलब्धि होती है ॥१॥

ਸਾਚਾ ਧਨੁ ਗੁਰਮਤੀ ਪਾਏ ॥
साचा धनु गुरमती पाए ॥
सच्चा धन तो गुरु की शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है और

ਕਾਚਾ ਧਨੁ ਫੁਨਿ ਆਵੈ ਜਾਏ ॥ ਰਹਾਉ ॥
काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥
झूठा नाशवान् धन सदैव आता एवं जाता रहता है॥ रहाउ॥

ਮਨਮੁਖਿ ਭੂਲੇ ਸਭਿ ਮਰਹਿ ਗਵਾਰ ॥
मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥
मनमुखी जीव तो भटके हुए ही हैं और वे सभी गंवार मरते ही रहते हैं।

ਭਵਜਲਿ ਡੂਬੇ ਨ ਉਰਵਾਰਿ ਨ ਪਾਰਿ ॥
भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥
वे भवसागर में डूब जाते हैं, वे न तो इस पार लगते हैं और न ही उस पार।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੇ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥
सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥
पूर्ण भाग्य से जिनकी गुरु से भेंट हो जाती है,

ਸਾਚਿ ਰਤੇ ਅਹਿਨਿਸਿ ਬੈਰਾਗਿ ॥੨॥
साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥
वे सत्य-नाम में मग्न हुए दिन-रात वैराग्यवान रहते हैं।॥२॥

ਚਹੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸਾਚੀ ਬਾਣੀ ॥
चहु जुग महि अम्रितु साची बाणी ॥
चारों युगों में सच्ची वाणी ही अमृत समान है और

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੀ ॥
पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥
पूर्ण भाग्य से ही जीव हरि-नाम में लीन होता है।

ਸਿਧ ਸਾਧਿਕ ਤਰਸਹਿ ਸਭਿ ਲੋਇ ॥
सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥
सिद्ध, साधक एवं सभी लोग परमात्मा के नाम के लिए तरसते रहते हैं,

ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੩॥
पूरै भागि परापति होइ ॥३॥
किन्तु अहोभाग्य से ही नाम की उपलब्धि होती है॥ ३॥

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚਾ ਹੈ ਸੋਇ ॥ ਊਤਮ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣੈ ਕੋਇ ॥
सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥ ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ ॥
एक ईश्वर ही सत्य है और सब कुछ उस सत्य का ही रूप है। वह ब्रह्म सर्वश्रेष्ठ है परन्तु कोई विरला मनुष्य ही उसे पहचानता है।

ਸਚੁ ਸਾਚਾ ਸਚੁ ਆਪਿ ਦ੍ਰਿੜਾਏ ॥
सचु साचा सचु आपि द्रिड़ाए ॥
परम-सत्य परमेश्वर स्वयं ही अपना नाम मनुष्य को दृढ़ करवाता है।

ਨਾਨਕ ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਸਚਿ ਲਾਏ ॥੪॥੭॥
नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥४॥७॥
हे नानक ! वह स्वयं सबको देखता रहता है और स्वयं ही मनुष्य को सत्य-नाम में लगाता है॥४॥७॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ॥
धनासरी महला ३ ॥
धनासरी महला ३ ॥

ਨਾਵੈ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਮਿਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥
परमात्मा के नाम का मूल्य एवं विस्तार व्यक्त नहीं किया जा सकता।

ਸੇ ਜਨ ਧੰਨੁ ਜਿਨ ਇਕ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥
वे भक्तजन बड़े खुशनसीब हैं, जिन्होंने एक नाम में अपनी सुरति लगाई है।

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਚੀ ਸਾਚਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
गुरमति साची साचा वीचारु ॥
गुरु की मति सत्य है और उसका ज्ञान भी सत्य है।

ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਦੇ ਵੀਚਾਰੁ ॥੧॥
आपे बखसे दे वीचारु ॥१॥
मनुष्य को ज्ञान प्रदान करके वह स्वयं ही उसे क्षमा कर देता है ॥१॥

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਚਰਜੁ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ਸੁਣਾਏ ॥
हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥
हरि-नाम एक अदभुत अनहद ध्वनि है और प्रभु स्वयं ही जीवों को यह नाम सुनाता है।

ਕਲੀ ਕਾਲ ਵਿਚਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥१॥ रहाउ ॥
कलियुग के समय में कोई गुरुमुख ही यह नाम प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥

ਹਮ ਮੂਰਖ ਮੂਰਖ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥
हम मूरख मूरख मन माहि ॥
हम (जीव) मूर्ख हैं और मूर्खता ही हमारे मन में विद्यमान है।

ਹਉਮੈ ਵਿਚਿ ਸਭ ਕਾਰ ਕਮਾਹਿ ॥
हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥
हम सभी कार्य अहंकार में ही करते हैं लेकिन

ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਹੰਉਮੈ ਜਾਇ ॥
गुर परसादी हंउमै जाइ ॥
गुरु की कृपा से ही मन से अहंकार दूर होता है।

ਆਪੇ ਬਖਸੇ ਲਏ ਮਿਲਾਇ ॥੨॥
आपे बखसे लए मिलाइ ॥२॥
वह प्रभु स्वयं ही क्षमा करके जीव को अपने साथ मिला लेता है ॥२॥

ਬਿਖਿਆ ਕਾ ਧਨੁ ਬਹੁਤੁ ਅਭਿਮਾਨੁ ॥
बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥
विषय-विकारों का धन मनुष्य के मन में बहुत अभिमान पैदा कर देता है,

ਅਹੰਕਾਰਿ ਡੂਬੈ ਨ ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥
अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥
जिसके परिणामस्वरूप वह अहंकार में डूब जाता है और दरगाह में सम्मान प्राप्त नहीं करता।

ਆਪੁ ਛੋਡਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ॥
आपु छोडि सदा सुखु होई ॥
लेकिन अपने आत्माभिमान को छोड़कर वह सदैव सुखी रहता है।

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਲਾਹੀ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੩॥
गुरमति सालाही सचु सोई ॥३॥
गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य सत्य का ही स्तुतिगान करता है ॥३॥

ਆਪੇ ਸਾਜੇ ਕਰਤਾ ਸੋਇ ॥
आपे साजे करता सोइ ॥
वह कर्ता-परमेश्वर स्वयं ही सबका रचयिता है एवं

ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥
उसके सिवाय विश्व में दूसरा कोई बड़ा नहीं।

ਜਿਸੁ ਸਚਿ ਲਾਏ ਸੋਈ ਲਾਗੈ ॥
जिसु सचि लाए सोई लागै ॥
जिसे प्रभु स्वयं सत्य-नाम में लगाता है, वही व्यक्ति सत्य-नाम में लगता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ॥੪॥੮॥
नानक नामि सदा सुखु आगै ॥४॥८॥
हे नानक ! नाम द्वारा प्राणी आगे परलोक में सदैव सुखी रहता है।॥४॥८॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਿਰੀ ਮਹਲਾ ੩ ਘਰੁ ੪
रागु धनासिरी महला ३ घरु ४
रागु धनासिरी महला ३ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਮ ਭੀਖਕ ਭੇਖਾਰੀ ਤੇਰੇ ਤੂ ਨਿਜ ਪਤਿ ਹੈ ਦਾਤਾ ॥
हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥
हे ईश्वर ! मैं तेरे दरबार पर भिक्षा माँगने वाला भिखारी हूँ और तू खुद ही अपना स्वामी है और सबको देने वाला है।

ਹੋਹੁ ਦੈਆਲ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ਮੰਗਤ ਜਨ ਕੰਉ ਸਦਾ ਰਹਉ ਰੰਗਿ ਰਾਤਾ ॥੧॥
होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥१॥
हे सर्वेश्वर ! मुझ पर दयालु हो जाओ और मुझ भिक्षुक को अपना नाम प्रदान कीजिए ताकि मैं सदैव ही तेरे प्रेम-रंग में मग्न रहूँ॥१॥

ਹੰਉ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ਸਾਚੇ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ॥
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥
हे सच्चे परमेश्वर ! मैं तेरे नाम पर कुर्बान जाता हूँ।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਭਨਾ ਕਾ ਏਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਕੋਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥१॥ रहाउ ॥
एक तू ही इस जगत, माया एवं सब जीवों को पैदा करने वाला है और तेरे सिवाय दूसरा कोई सर्वशक्तिमान नहीं है ॥१॥ रहाउ ॥

ਬਹੁਤੇ ਫੇਰ ਪਏ ਕਿਰਪਨ ਕਉ ਅਬ ਕਿਛੁ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥
बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥
हे परमपिता ! मुझ कृपण को जन्म-मरण के बहुत चक्र पड़ चुके हैं, अब मुझ पर कुछ कृपा करो।

ਹੋਹੁ ਦਇਆਲ ਦਰਸਨੁ ਦੇਹੁ ਅਪੁਨਾ ਐਸੀ ਬਖਸ ਕਰੀਜੈ ॥੨॥
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥२॥
मुझ पर दयालु हो जाओ एवं मुझे अपने दर्शन दीजिए, मुझ पर केवल ऐसी मेहर प्रदान करो ॥२॥

ਭਨਤਿ ਨਾਨਕ ਭਰਮ ਪਟ ਖੁਲ੍ਹਹੇ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦੀ ਜਾਨਿਆ ॥
भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥
नानक का कथन है कि भ्रम के किवाड़ (परदे) खुल गए हैं और गुरु की कृपा से सत्य को जान लिया है।

ਸਾਚੀ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਹੈ ਭੀਤਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਸਿਉ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ॥੩॥੧॥੯॥
साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥३॥१॥९॥
मेरे मन में प्रभु से सच्ची प्रीति लग गई है और मेरा मन गुरु के साथ संतुष्ट हो गया है ॥३॥१॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ
धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे
धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੋ ਹਰਿ ਸੇਵਹਿ ਸੰਤ ਭਗਤ ਤਿਨ ਕੇ ਸਭਿ ਪਾਪ ਨਿਵਾਰੀ ॥
जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥
हे भगवान् ! जो सन्त एवं भक्तजन तेरी आराधना करते हैं, तू उनके सभी पाप दूर कर देता हैं।

ਹਮ ਊਪਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਸੁਆਮੀ ਰਖੁ ਸੰਗਤਿ ਤੁਮ ਜੁ ਪਿਆਰੀ ॥੧॥
हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥१॥
हे मेरे स्वामी ! मुझ पर अपनी कृपा करो और मुझे उस सुसंगति में रखो, जो तुझे प्यारी लगती है ॥१॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਕਹਿ ਨ ਸਕਉ ਬਨਵਾਰੀ ॥
हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥
हे परमात्मा ! मैं तेरी महिमा कथन नहीं कर सकता।

ਹਮ ਪਾਪੀ ਪਾਥਰ ਨੀਰਿ ਡੁਬਤ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਖਣ ਹਮ ਤਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥
हम पापी पत्थर की भांति जल में डूब रहे हैं, अपनी कृपा करके हम पापी पत्थरों का उद्धार कर दीजिए ॥ रहाउ ॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਲਾਗੇ ਬਿਖੁ ਮੋਰਚਾ ਲਗਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਸਵਾਰੀ ॥
जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥
मैंने अपने मन को जन्म-जन्मांतरों की लगी हुई विष रूपी माया की जंग साधसंगत में सम्मिलित होकर यूं उतार दी है,

ਜਿਉ ਕੰਚਨੁ ਬੈਸੰਤਰਿ ਤਾਇਓ ਮਲੁ ਕਾਟੀ ਕਟਿਤ ਉਤਾਰੀ ॥੨॥
जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥२॥
जैसे स्वर्ण को अग्नि में तपा कर उसकी सारी मैल को काटा एवं काट कर उतार दिया जाता है।॥२॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਜਪਉ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰੀ ॥
हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥
मैं दिन-रात हरि-नाम का जाप जपता रहता हूँ और हरि-नाम जपकर हरि को अपने हृदय में बसाता हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਉਖਧੁ ਜਗਿ ਪੂਰਾ ਜਪਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਉਮੈ ਮਾਰੀ ॥੩॥
हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥३॥
परमात्मा का 'हरि-हरि' नाम इस जगत में पूर्ण औषधि है और हरि-नाम का भजन करके मैंने अपने अहंकार को मार दिया है ॥३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਗਮ ਅਗਾਧਿ ਬੋਧਿ ਅਪਰੰਪਰ ਪੁਰਖ ਅਪਾਰੀ ॥
हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपर्मपर पुरख अपारी ॥
हरि-परमेश्वर अगम्य, अगाध ज्ञान वाला, अपरम्पर सर्वशक्तिमान एवं अनन्त है।

ਜਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਜਗਜੀਵਨ ਜਨ ਨਾਨਕ ਪੈਜ ਸਵਾਰੀ ॥੪॥੧॥
जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥४॥१॥
हे जगत के जीवन ! अपने दास पर कृपा करो और दास नानक की प्रतिष्ठा कायम रखो ॥४॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਤਿਨ ਕਾ ਦੂਖੁ ਭਰਮੁ ਭਉ ਭਾਗੀ ॥
हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥
हरि के संतजनों ने हरि का ही जाप किया है, जिससे उनका दु:ख, भ्रम एवं भय दूर हो गया है।

ਅਪਨੀ ਸੇਵਾ ਆਪਿ ਕਰਾਈ ਗੁਰਮਤਿ ਅੰਤਰਿ ਜਾਗੀ ॥੧॥
अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥१॥
उसने स्वयं ही अपनी आराधना उनसे करवाई है और गुरु के उपदेश द्वारा मन में सत्य का प्रकाश हो गया है ॥१॥

ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ਰਤਾ ਬੈਰਾਗੀ ॥
हरि कै नामि रता बैरागी ॥
जो हरि-नाम में मग्न है, वही सच्चा वैरागी है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਣੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ਗੁਰਮਤਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥
उसने हरि की हरि-कथा सुनी है, जो उसके मन को अच्छी लगी है और गुरु के उपदेश द्वारा उसकी भगवान में सुरति लग गई है ॥१॥ रहाउ ॥

ਸੰਤ ਜਨਾ ਕੀ ਜਾਤਿ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ੍ਹ ਠਾਕੁਰ ਹਮ ਸਾਂਗੀ ॥
संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥
हे मेरे स्वामी हरि ! तू स्वयं ही संतजनों की जाति है। तू मेरा मालिक है और मैं तेरी कठपुतली हूँ।

ਜੈਸੀ ਮਤਿ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਤੈਸੇ ਬੁਲਗ ਬੁਲਾਗੀ ॥੨॥
जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥
हे स्वामी ! तुम जैसी मति देते हो, हम वैसे ही वचन बोलते हैं ॥२॥

किआ हम किरम नान् निक कीरे तुम्हृ वड पुरख वडागी ॥
किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वड पुरख वडागी ॥
हे प्रभु ! हम जीव क्या हैं ? नन्हे से कृमि एवं नन्हे से कीड़े हैं और तुम महान् महापुरुष हो।

तुम्हृहरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥
तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥
मैं तेरी गति एवं तेरा विस्तार कथन नहीं कर सकता। फिर मैं भाग्यहीन तुझे कैसे मिल सकता हूँ?॥३॥

हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥
हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥
हे मेरे हरि-प्रभु स्वामी ! मुझ पर कृपा करो, ताकि मैं तेरी सेवा में तल्लीन हो जाऊँ।

नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥
नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥
नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! मुझे अपने दासों का दास बना लो चूंकि मैं सदैव ही हरि-कथा का कथन करता रहूं ॥४॥२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਕਾ ਸੰਤੁ ਸਤਗੁਰੁ ਸਤ ਪੁਰਖਾ ਜੋ ਬੋਲੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਬਾਨੀ ॥
हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥
हरि का संत सतगुरु सत्यपुरुष है, जो हरि की वाणी बोलता रहता है।

ਜੋ ਜੋ ਕਹੈ ਸੁਣੈ ਸੋ ਮੁਕਤਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੈ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੀ ॥੧॥
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥१॥
जो कोई भी हरि की वाणी का स्वयं कथन करता एवं सुनता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।मैं तो उस महापुरुष गुरु पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥१॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਸੁਨਹੁ ਜਸੁ ਕਾਨੀ ॥
हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥
हे हरि के संतो ! अपने कानों से हरि का यश सुनो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਸੁਨਹੁ ਇਕ ਨਿਮਖ ਪਲ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਪਾਪ ਲਹਿ ਜਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥१॥ रहाउ ॥
यदि तुम एक निमेष एवं पल भर के लिए भी हरि-कथा सुन लो तुम्हारे सभी किल्विष पाप नाश हो जाएँगे ॥१॥ रहाउ॥

ਐਸਾ ਸੰਤੁ ਸਾਧੁ ਜਿਨ ਪਾਇਆ ਤੇ ਵਡ ਪੁਰਖ ਵਡਾਨੀ ॥
ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥
जिन्होंने ऐसा संत एवं साधु पा लिया है, वे महापुरुष बन गए हैं।

ਤਿਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਮੰਗਹ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਹਰਿ ਲੋਚ ਲੁਚਾਨੀ ॥੨॥
तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥
हे मेरे प्रभु स्वामी ! मैं तो उन संतजनों की चरण-धूलि की कामना करता हूँ और मुझे तो तुझे मिलने की तीव्र लालसा लगी हुई है॥२॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਫਲਿਓ ਬਿਰਖੁ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਜਿਨ ਜਪਿਓ ਸੇ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੀ ॥
हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी ॥
मेरा स्वामी हरि-प्रभु फलदायक वृक्ष है। जिसने उसका जाप किया है, वह तृप्त हो गया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀ ਤ੍ਰਿਪਤਾਸੇ ਸਭ ਲਾਥੀ ਭੂਖ ਭੁਖਾਨੀ ॥੩॥
हरि हरि अम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥३॥
वह हरिनामामृत का पान करके तृप्त हो गया है और उसकी तमाम भूख मिट गई है ॥३॥

ਜਿਨ ਕੇ ਵਡੇ ਭਾਗ ਵਡ ਊਚੇ ਤਿਨ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਜਪਾਨੀ ॥
जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥
जिनके बड़े उच्चतम भाग्य हैं, उन्होंने ही हरि का जाप जपा है।

ਤਿਨ ਹਰਿ ਸੰਗਤਿ ਮੇਲਿ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਦਸਾਨੀ ॥੪॥੩॥
तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥
नानक का कथन है कि हे मेरे स्वामी हरि-प्रभु ! मुझे उनकी संगति में मिला दो और मुझे दासों का दास बना दीजिए॥४॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਹਮ ਅੰਧੁਲੇ ਅੰਧ ਬਿਖੈ ਬਿਖੁ ਰਾਤੇ ਕਿਉ ਚਾਲਹ ਗੁਰ ਚਾਲੀ ॥
हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥
हम अन्धे ज्ञानहीन विष रूपी विकारों में मग्न रहते हैं, फिर हम गुरु के मार्ग पर कैसे चल सकते हैं ?

ਸਤਗੁਰੁ ਦਇਆ ਕਰੇ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਮ ਲਾਵੈ ਆਪਨ ਪਾਲੀ ॥੧॥
सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥१॥
सुखों का दाता सतगुरु हम पर दया करे तो हमें अपने साथ मिला ले।॥१॥

ਗੁਰਸਿਖ ਮੀਤ ਚਲਹੁ ਗੁਰ ਚਾਲੀ ॥
गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥
हे गुरसिक्ख मित्रो ! गुरु के मार्ग पर चलो,

ਜੋ ਗੁਰੁ ਕਹੈ ਸੋਈ ਭਲ ਮਾਨਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਨਿਰਾਲੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१॥ रहाउ ॥
जो कुछ गुरु कहता है, उसे भला समझ कर स्वीकार करो, हरि की कथा बड़ी अद्भुत है ॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਸੁਣਹੁ ਜਨ ਭਾਈ ਗੁਰੁ ਸੇਵਿਹੁ ਬੇਗਿ ਬੇਗਾਲੀ ॥
हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥
हे हरि के संतजनो एवं भाइयो ! शीघ्र ही गुरु की सेवा में जुट जाओ।

ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਖਰਚੁ ਹਰਿ ਬਾਧਹੁ ਮਤ ਜਾਣਹੁ ਆਜੁ ਕਿ ਕਾਲ੍ਹ੍ਹੀ ॥੨॥
सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥२॥
गुरु की सेवा करके यात्रा हेतु हरि-नाम रूपी व्यय अपने साथ ले लो, चूंकि पता नहीं आज अथवा कल को ही दुनिया से चल देना है ॥२॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਜਪਣਾ ਹਰਿ ਸੰਤੁ ਚਲੈ ਹਰਿ ਨਾਲੀ ॥
हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥
हे हरि के संतजनो ! हरि का जाप जपो; हरि का संत तो उसकी इच्छानुसार ही चलता है।

ਜਿਨ ਹਰਿ ਜਪਿਆ ਸੇ ਹਰਿ ਹੋਏ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਕੇਲ ਕੇਲਾਲੀ ॥੩॥
जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥३॥
जिन्होंने हरि का जाप किया है, वे हरि का ही रूप हो गए हैं और लीलाएँ करने वाला विनोदी प्रभु उन्हें मिल गया है ॥३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਜਪਿ ਲੋਚ ਲੋਚਾਨੀ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਕਰਿ ਬਨਵਾਲੀ ॥

हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥

मुझे तो हरि-नाम का जाप जपने की तीव्र लालसा लगी हुई है।हे बनवारी ! मुझ पर कृपा करो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਹਰਿ ਮੇਲਹੁ ਹਮ ਸਾਧ ਜਨਾ ਪਗ ਰਾਲੀ ॥੪॥੪॥

जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥४॥४॥

नानक विनती करता है कि हे हरि ! मुझे साधसंगत में मिला दो, मैं तो संतजनों के चरण-धूलि की कामना करता दुं।॥ ४॥ ४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਬੂੰਦ ਭਏ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਬਿਲਲ ਬਿਲਲਾਤੀ ॥
हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती ॥
हे मेरे स्वामी हरि ! तेरा हरि-नाम स्वाति-बूंद बन गया है और मैं चातक इसका पान करने के लिए तड़प रहा हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੀ ਮੁਖਿ ਦੇਵਹੁ ਹਰਿ ਨਿਮਖਾਤੀ ॥੧॥
हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥१॥
हे हरि-प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो और एक क्षण भर के लिए मेरे मुँह में हरि-नाम रूपी स्वाति-बूंद डाल दो ॥१॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕਉ ਇਕ ਰਾਤੀ ॥
हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥
हे भाई ! उस हरि के बिना में एक क्षण भर के लिए भी नहीं रह सकता।

ਜਿਉ ਬਿਨੁ ਅਮਲੈ ਅਮਲੀ ਮਰਿ ਜਾਈ ਹੈ ਤਿਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਹਮ ਮਰਿ ਜਾਤੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥
जैसे नशे के बिना नशा करने वाला व्यक्ति मर जाता है, वैसे ही मैं हरि के बिना मर जाता हूँ॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਹਰਿ ਸਰਵਰ ਅਤਿ ਅਗਾਹ ਹਮ ਲਹਿ ਨ ਸਕਹਿ ਅੰਤੁ ਮਾਤੀ ॥
तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥
हे परमेश्वर ! तुम सागर की भांति अत्यन्त गहरे हो और मैं एक क्षण भर के लिए भी तेरा अन्त नहीं पा सकता।

ਤੂ ਪਰੈ ਪਰੈ ਅਪਰੰਪਰੁ ਸੁਆਮੀ ਮਿਤਿ ਜਾਨਹੁ ਆਪਨ ਗਾਤੀ ॥੨॥
तू परै परै अपर्मपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥२॥
हे मेरे स्वामी ! तुम परे से परे और अपंरपार हो, अपनी गति एवं विस्तार तुम स्वयं ही जानते हो।॥ २॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਗੁਰ ਰੰਗਿ ਚਲੂਲੈ ਰਾਤੀ ॥
हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥
हरि के संतजनों ने हरि का जाप किया है और वे गुरु के प्रेम के गहरे लाल रंग में मग्न हो गए हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਬਨੀ ਅਤਿ ਸੋਭਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਊਤਮ ਪਾਤੀ ॥੩॥
हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥३॥
हरि की भक्ति से उनकी अत्यंत शोभा हो गई है और हरि का जाप करने से उन्हें उत्तम ख्याति मिली है ॥३॥

ਆਪੇ ਠਾਕੁਰੁ ਆਪੇ ਸੇਵਕੁ ਆਪਿ ਬਨਾਵੈ ਭਾਤੀ ॥
आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥
परमेश्वर स्वयं ही मालिक है, स्वयं ही सेवक है और वह स्वयं ही भक्ति की विधि बनाता है।

ਨਾਨਕੁ ਜਨੁ ਤੁਮਰੀ ਸਰਣਾਈ ਹਰਿ ਰਾਖਹੁ ਲਾਜ ਭਗਾਤੀ ॥੪॥੫॥
नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥४॥५॥
हे हरि ! नानक तो तेरी ही शरण में आया है, इसलिए अपने भक्त की लाज रखो ॥ ४॥ ५ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਕਲਿਜੁਗ ਕਾ ਧਰਮੁ ਕਹਹੁ ਤੁਮ ਭਾਈ ਕਿਵ ਛੂਟਹ ਹਮ ਛੁਟਕਾਕੀ ॥
कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥
हे भाई ! तुम मुझे कलियुग का धर्म बताओ, मैं माया के बन्धनों से मुक्त होने का इच्छुक हूँ, फिर मैं कैसे छूट सकता हूँ?

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪੁ ਬੇੜੀ ਹਰਿ ਤੁਲਹਾ ਹਰਿ ਜਪਿਓ ਤਰੈ ਤਰਾਕੀ ॥੧॥
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥१॥
हरि का जाप नाव है और हरि-नाम ही बेड़ा है; जिसने भी हरि का जाप किया है, वह तैराक बनकर भवसागर में से पार हो गया है॥ १॥

ਹਰਿ ਜੀ ਲਾਜ ਰਖਹੁ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ॥
हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥
हे परमेश्वर ! अपने दास की लाज रखो;

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਜਪਾਵਹੁ ਅਪਨਾ ਹਮ ਮਾਗੀ ਭਗਤਿ ਇਕਾਕੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥
मुझ से अपने नाम का जाप करवाओ। मैं तो तुझसे एक तेरी भक्ति की कामना ही करता हूँ॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੇਵਕ ਸੇ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ ਜਿਨ ਜਪਿਓ ਹਰਿ ਬਚਨਾਕੀ ॥
हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥
जिन्होंने हरि की वाणी का जाप किया है, वही वास्तव में हरि के सेवक हैं और वे हरि के प्रिय हैं।

ਲੇਖਾ ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤਿ ਜੋ ਲਿਖਿਆ ਸਭ ਛੁਟੀ ਜਮ ਕੀ ਬਾਕੀ ॥੨॥
लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥२॥
चित्र-गुप्त ने उनके कर्मों का जो लेखा लिखा था, यमराज का वह शेष सारा लेखा ही मिट गया है॥ २॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਜਪਿਓ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਗਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ॥
हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥
हरि के संतों ने साधुजनों की संगत में शामिल होकर अपने मन में हरि-नाम का ही जाप किया है।

ਦਿਨੀਅਰੁ ਸੂਰੁ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝਾਨੀ ਸਿਵ ਚਰਿਓ ਚੰਦੁ ਚੰਦਾਕੀ ॥੩॥
दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥३॥
हरि-नाम ने उनके हृदय में स सूर्य रूपी तृष्णा की अग्नि बुझा दी है और उनके हृदय में शीतल रूप चांदनी वाला चांद उदय हो गया है ॥३॥

ਤੁਮ ਵਡ ਪੁਰਖ ਵਡ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰ ਤੁਮ ਆਪੇ ਆਪਿ ਅਪਾਕੀ ॥
तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥
हे प्रभु ! तुम ही विश्व में बड़े महापुरुष एवं अगम्य-अगोचर सर्वव्यापी हो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ਕਰਿ ਦਾਸਨਿ ਦਾਸ ਦਸਾਕੀ ॥੪॥੬॥
जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥६॥
हे प्रभु ! नानक पर कृपा करो और उसे अपने दासों का दास बना लो ॥४॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੫ ਦੁਪਦੇ
धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे
धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਉਰ ਧਾਰਿ ਬੀਚਾਰਿ ਮੁਰਾਰਿ ਰਮੋ ਰਮੁ ਮਨਮੋਹਨ ਨਾਮੁ ਜਪੀਨੇ ॥

उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥

मन को मोहित करने वाले उस राम को अपने हृदय में बसाकर उसका चिन्तन करो और उसका ही नाम जपो।

ਅਦ੍ਰਿਸਟੁ ਅਗੋਚਰੁ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਿ ਦੀਨੇ ॥੧॥

अद्रिसटु अगोचरु अपर्मपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥१॥

जगत का स्वामी प्रभु अदृष्य, अगोचर एवं अपरंपार है और पूर्ण गुरु ने उसे मेरे हृदय में प्रगट कर दिया है ॥१॥

ਰਾਮ ਪਾਰਸ ਚੰਦਨ ਹਮ ਕਾਸਟ ਲੋਸਟ ॥

राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥

राम तो पारस एवं चन्दन है लेकिन मैं एक लकड़ी एवं लोहा हूँ।

ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਹਰੀ ਸਤਸੰਗੁ ਭਏ ਹਰਿ ਕੰਚਨੁ ਚੰਦਨੁ ਕੀਨੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥१॥ रहाउ ॥

जब उस हरि के सत्संग द्वारा मेरा उससे मिलाप हो गया तो उसने मुझे स्वर्ण एवं चन्दन बना दिया।॥ १॥ रहाउ ॥

ਨਵ ਛਿਅ ਖਟੁ ਬੋਲਹਿ ਮੁਖ ਆਗਰ ਮੇਰਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਇਵ ਨ ਪਤੀਨੇ ॥

नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥

कई विद्वान नौ प्रकार के व्याकरण एवं छः शास्त्र मौखिक बोलते रहते हैं परन्तु मेरा प्रभु इससे प्रसन्न नहीं होता।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਸਦ ਧਿਆਵਹੁ ਇਉ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ਭੀਨੇ ॥੨॥੧॥੭॥

जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥२॥१॥७॥

नानक का कथन है कि सदैव ही अपने हृदय में हरि का ध्यान-मनन करते रहो, इस तरह मेरा प्रभु प्रसन्न होता है ॥२॥१॥७॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਗੁਨ ਕਹੁ ਹਰਿ ਲਹੁ ਕਰਿ ਸੇਵਾ ਸਤਿਗੁਰ ਇਵ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥
गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥
भगवान का गुणगान करो; इस ढंग से उसे पा लो, गुरु की सेवा करके इस तरह हरि-नाम का ध्यान-मनन करते रहो।

ਹਰਿ ਦਰਗਹ ਭਾਵਹਿ ਫਿਰਿ ਜਨਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜੋਤਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥
हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥१॥
इस तरह हरि के दरबार में अच्छे लगोगे, फिर तुम दुबारा जन्म-मरण के चक्र में नही आओगे और उस परम-सत्य की ज्योति में ही विलीन हो जाओगे॥ १॥

ਜਪਿ ਮਨ ਨਾਮੁ ਹਰੀ ਹੋਹਿ ਸਰਬ ਸੁਖੀ ॥
जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥
हे मेरे मन ! हरि-नाम का जाप कर, फिर तू सर्वत्र सुखी रहेगा।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਊਚ ਸਭਨਾ ਤੇ ਊਪਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੇਵਿ ਛਡਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥
हरि का यश सभी धर्म-कर्मों से उत्तम एवं उनसे श्रेष्ठ है और हरि की सेवा तुझे यम से मुक्त करवा देगी॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਕੀਨੀ ਗੁਰਿ ਭਗਤਿ ਹਰਿ ਦੀਨੀ ਤਬ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਬਨਿ ਆਈ ॥
हरि क्रिपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥
जब कृपानिधि हरि ने मुझ पर कृपा की और गुरु ने मुझे हरि-भक्ति की देन प्रदान की तो हरि से मेरी प्रीति बन गई।

ਬਹੁ ਚਿੰਤ ਵਿਸਾਰੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਉਰਿ ਧਾਰੀ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਭਏ ਹੈ ਸਖਾਈ ॥੨॥੨॥੮॥
बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भए है सखाई ॥२॥२॥८॥
हे नानक ! मैंने अपनी सारी चिंता भुला कर अपने हृदय में हरि-नाम धारण कर लिया है और अब हरि मेरा मित्र बन गया है॥ २॥ २ ॥ ८ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਹਰਿ ਪੜੁ ਹਰਿ ਲਿਖੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਗਾਉ ਹਰਿ ਭਉਜਲੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੀ ॥
हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥
हरिनाम पढो,'हरि'हरि' लिखो, हरि का जाप करो और हरि का ही गुणगान करो, क्योंकि एक वही भवसागर से पार करवाने वाला है।

ਮਨਿ ਬਚਨਿ ਰਿਦੈ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਹੋਇ ਸੰਤੁਸਟੁ ਇਵ ਭਣੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੁਰਾਰੀ ॥੧॥
मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥१॥
अपने मन-वचन, हृदय में उसका ध्यान-मनन करो, प्रभु संतुष्ट हो जाता है, इसलिए इस तरह नाम ही जपते रहो ॥१॥

ਮਨਿ ਜਪੀਐ ਹਰਿ ਜਗਦੀਸ ॥ ਮਿਲਿ ਸੰਗਤਿ ਸਾਧੂ ਮੀਤ ॥
मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥
मन में परमात्मा का जाप करते रहना चाहिए हे मेरे मित्र ! यह साधु महापुरुषों की संगत में मिलकर करना चाहिए।

ਸਦਾ ਅਨੰਦੁ ਹੋਵੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਿ ਬਨਵਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥
उस बनवारी प्रभु का कीर्ति-गान करो, उससे सदैव दिन-रात आनंद बना रहता है॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਰੀ ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਤਬ ਭਇਓ ਮਨਿ ਉਦਮੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਿਓ ਗਤਿ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ॥
हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥
जब भगवान ने मुझ पर अपनी करुणादृष्टि की तो मेरे मन में उल्लास उत्पन्न हो गया। हरि-नाम का जाप करने से मेरी मुक्ति हो गई।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪਤਿ ਰਾਖੁ ਮੇਰੇ ਸੁਆਮੀ ਹਰਿ ਆਇ ਪਰਿਓ ਹੈ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ॥੨॥੩॥੯॥
जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥२॥३॥९॥
हे मेरे स्वामी हरि ! नानक की लाज रखो, मैं तो तुम्हारी शरण में आ गया हूँ॥ २॥ ३॥ ६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਚਉਰਾਸੀਹ ਸਿਧ ਬੁਧ ਤੇਤੀਸ ਕੋਟਿ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸਭਿ ਚਾਹਹਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰੋ ਨਾਉ ॥
चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥
हे परमेश्वर ! चौरासी सिद्ध, बुद्ध, तेतीस करोड़ देवते एवं मुनिजन सभी तेरे नाम की कामना करते हैं,

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕੋ ਵਿਰਲਾ ਪਾਵੈ ਜਿਨ ਕਉ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਭਾਉ ॥੧॥
गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥१॥
परन्तु इनमें से कोई विरला ही गुरु की कृपा से नाम की देन प्राप्त करता है, जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही प्रभु-प्रेम का लेख लिखा होता है ॥१॥

ਜਪਿ ਮਨ ਰਾਮੈ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਊਤਮ ਕਾਮ ॥
जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥
हे मेरे मन ! राम नाम का जाप कर, चूंकि हरि का यशोगान सर्वोत्तम कार्य है।

ਜੋ ਗਾਵਹਿ ਸੁਣਹਿ ਤੇਰਾ ਜਸੁ ਸੁਆਮੀ ਹਉ ਤਿਨ ਕੈ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੈ ਜਾਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥
हे मेरे स्वामी ! जो तेरा यश गाते एवं सुनते हैं, मैं उन पर सदैव ही बलिहारी जाता हूँ॥ रहाउ॥

ਸਰਣਾਗਤਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਹਰਿ ਸੁਆਮੀ ਜੋ ਤੁਮ ਦੇਹੁ ਸੋਈ ਹਉ ਪਾਉ ॥
सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥
हे मेरे स्वामी हरि ! तू अपनी शरण में आए जीवों का पालन-पोषण करने वाला है।जो तुम मुझे देते हो, मैं वही प्राप्त करता हूँ।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਦੀਜੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸਿਮਰਣ ਕਾ ਹੈ ਚਾਉ ॥੨॥੪॥੧੦॥
दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥२॥४॥१०॥
हे दीनदयालु ! अपनी कृपा करके नानक को अपने नाम की देन दीजिए, क्योंकि उसे तो हरि-सिमरन का ही अत्यंत चाव है ॥२॥४॥१०॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਸੇਵਕ ਸਿਖ ਪੂਜਣ ਸਭਿ ਆਵਹਿ ਸਭਿ ਗਾਵਹਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਊਤਮ ਬਾਨੀ ॥
सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
सभी सिक्ख-सेवक पूजा करने के लिए गुरु की संगति में आते हैं और वे सभी-मिलकर हरि की उत्तम वाणी ही गाते हैं।

ਗਾਵਿਆ ਸੁਣਿਆ ਤਿਨ ਕਾ ਹਰਿ ਥਾਇ ਪਾਵੈ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਸਤਿ ਸਤਿ ਕਰਿ ਮਾਨੀ ॥੧॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥१॥
परन्तु वाणी द्वारा गाया एवं सुना हुआ यश प्रभु केवल उनका ही परवान करता है, जिन्होंने सतगुरु की आज्ञा को पूर्ण सत्य समझकर स्वीकार कर लिया है ॥१॥

ਬੋਲਹੁ ਭਾਈ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਹਰਿ ਭਵਜਲ ਤੀਰਥਿ ॥
बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥
हे भाई ! हरि का कीर्ति-गान करो, चूंकि भवसागर में से पार करवाने हेतु हरि ही पावन तीर्थ स्थल है।

ਹਰਿ ਦਰਿ ਤਿਨ ਕੀ ਊਤਮ ਬਾਤ ਹੈ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਕਥਾ ਜਿਨ ਜਨਹੁ ਜਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥
हे संतजनों ! हरि के दरबार पर उनकी बात को उत्तम माना जाता है, जिन्होंने हरि-कथा की महिमा को समझा है ॥ रहाउ ॥

ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਚੇਲਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਚੋਜ ਵਿਡਾਨੀ ॥
आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥
वह हरि-प्रभु स्वयं ही गुरु है और स्वयं ही चेला है और स्वयं ही अद्भुत कौतुक करने वाला है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ਸੋਈ ਹਰਿ ਮਿਲਸੀ ਅਵਰ ਸਭ ਤਿਆਗਿ ਓਹਾ ਹਰਿ ਭਾਨੀ ॥੨॥੫॥੧੧॥
जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥२॥५॥११॥
हे नानक ! हरि को वही मनुष्य मिलता है, जिसे वह स्वयं ही अपने साथ मिलाता है और वही उसको भाता है, जो प्रभु-सिमरन के सिवाय अन्य सब कुछ त्याग देता है ॥२॥५॥११॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਇਛਾ ਪੂਰਕੁ ਸਰਬ ਸੁਖਦਾਤਾ ਹਰਿ ਜਾ ਕੈ ਵਸਿ ਹੈ ਕਾਮਧੇਨਾ ॥
इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥
जिस परमात्मा के वश में कामधेनु है, वह अपने भक्तों की हर इच्छाएँ पूरी करने वाला है और सर्व सुख प्रदान करने वाला है।

ਸੋ ਐਸਾ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ ਮੇਰੇ ਜੀਅੜੇ ਤਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ॥੧॥
सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥१॥
हे मेरी आत्मा ! सो ऐसे प्रभु का ध्यान-मनन करना चाहिए, तो ही तुझे सर्व सुख प्राप्त होगा ॥१॥

ਜਪਿ ਮਨ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ॥
जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥
हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम सदैव ही सत्य है इसलिए सत्य-नाम का ही जाप करो।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਮੁਖ ਊਜਲ ਹੋਈ ਹੈ ਨਿਤ ਧਿਆਈਐ ਹਰਿ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥
यदि निरंजन परमपुरुष परमात्मा का नित्य ही ध्यान-मनन किया जाए तो इहलोक एवं परलोक में मुख उज्ज्वल होता है, अर्थात् प्रशंसा प्राप्त होती है ॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨੁ ਭਇਆ ਤਹ ਉਪਾਧਿ ਗਤੁ ਕੀਨੀ ਵਡਭਾਗੀ ਹਰਿ ਜਪਨਾ ॥
जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥
जहाँ भी भगवान का सिमरन हुआ है, वहाँ से सब दुःख-तकलीफें दूर हो गई हैं।भगवान का भजन-सिमरन तो अहोभाग्य से ही होता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਗੁਰਿ ਇਹ ਮਤਿ ਦੀਨੀ ਜਪਿ ਹਰਿ ਭਵਜਲੁ ਤਰਨਾ ॥੨॥੬॥੧੨॥
जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥
गुरु ने नानक को यह मति दी है कि परमात्मा का जाप करने से ही भवसागर से पार हुआ जाता है॥२॥६॥१२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
धनासरी महला ४ ॥
धनासरी महला ४ ॥

ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਮੈ ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥
मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥
हे मेरे स्वामी ! मैं तो तेरे दर्शन करके ही सुखी होता हूँ।

ਹਮਰੀ ਬੇਦਨਿ ਤੂ ਜਾਨਤਾ ਸਾਹਾ ਅਵਰੁ ਕਿਆ ਜਾਨੈ ਕੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥
मेरी वेदना तू ही जानता है, अन्य कोई क्या जान सकता है॥ रहाउ ॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਤੂ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੇਰਾ ਕੀਆ ਸਚੁ ਸਭੁ ਹੋਇ ॥
साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥
हे मेरे स्वामी ! तू ही सच्चा मालिक है, सदैव सत्य है और जो कुछ तू करता है, वह सब सत्य है।

ਝੂਠਾ ਕਿਸ ਕਉ ਆਖੀਐ ਸਾਹਾ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥੧॥
झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥१॥
हे स्वामी ! जब तेरे सिवाय दूसरा कोई है ही नहीं, फिर झूठा किसे कहा जाए ? ॥१॥

ਸਭਨਾ ਵਿਚਿ ਤੂ ਵਰਤਦਾ ਸਾਹਾ ਸਭਿ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਵਹਿ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥
सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥
सब में तू ही समाया हुआ है और सभी तुझे दिन-रात स्मरण करते रहते हैं।

ਸਭਿ ਤੁਝ ਹੀ ਥਾਵਹੁ ਮੰਗਦੇ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੂ ਸਭਨਾ ਕਰਹਿ ਇਕ ਦਾਤਿ ॥੨॥
सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥२॥
हे स्वामी ! सभी तुझ से ही दान माँगते हैं और एक तू ही सब को देता रहता है॥ २॥

ਸਭੁ ਕੋ ਤੁਝ ਹੀ ਵਿਚਿ ਹੈ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਤੁਝ ਤੇ ਬਾਹਰਿ ਕੋਈ ਨਾਹਿ ॥
सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥
हे मेरे मालिक ! सभी जीव तेरे हुक्म में हैं और कोई भी तेरे हुक्म से बाहर नहीं है।

ਸਭਿ ਜੀਅ ਤੇਰੇ ਤੂ ਸਭਸ ਦਾ ਮੇਰੇ ਸਾਹਾ ਸਭਿ ਤੁਝ ਹੀ ਮਾਹਿ ਸਮਾਹਿ ॥੩॥
सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥३॥
सभी जीव तेरे हैं, तू सबका स्वामी है और सभी तुझ में ही विलीन हो जाते हैं।॥३॥

ਸਭਨਾ ਕੀ ਤੂ ਆਸ ਹੈ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਭਿ ਤੁਝਹਿ ਧਿਆਵਹਿ ਮੇਰੇ ਸਾਹ ॥
सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥
हे मेरे प्यारे स्वामी ! तू सबकी आशा है और सभी जीव तेरा ध्यान-मनन करते रहते हैं।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਖੁ ਤੂ ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥੪॥੭॥੧੩॥
जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥४॥७॥१३॥
हे प्यारे ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तू मुझे रख।हे नानक के पातशाह ! तू सदैव सत्य है ॥४॥७॥१३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ
धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे
धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭਵ ਖੰਡਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਸ੍ਵਾਮੀ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਨਿਰੰਕਾਰੇ ॥
भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥
हे निराकार परमात्मा ! तू जीवों का जन्म-मरण का चक्र काटने वाला, सब दुःख नाश करने वाला, सबका मालिक एवं भक्तवत्सल है।

कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥१॥
कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥१॥
यदि कोई गुरु के सान्निध्य में रहकर तेरा नाम-स्मरण करे तो क्षण में उसके करोड़ों अपराध मिट जाते हैं।॥१॥

मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥
मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥
मेरा मन प्यारे राम से लग गया है।

दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥१॥ रहाउ ॥
दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥१॥ रहाउ ॥
दीनदयाल प्रभु ने मुझ पर अपनी अपार कृपा की है, जिससे कामादिक शत्रु-काम, क्रोध, लालच, मोह तथा अहंकार मेरे नियंत्रण में कर दिए हैं ॥१॥ रहाउ ॥

तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥
तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥
हे परमात्मा ! तेरा निवास स्थान अति सुन्दर है, तेरा रूप भी बड़ा सुहावना है और तेरे भक्त तेरे दरबार में बहुत सुन्दर लगते हैं।

सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥२॥
सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥२॥
हे सर्व जीवों के दाता-स्वामी ! अपनी कृपा करके मुझे (भवसागर में डूबने से) बचा लो॥ २॥

तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥
तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥
हे परमेश्वर ! तेरा कोई रंग दिखाई नहीं देता, तेरा कोई रूप समझा नहीं जाता। तेरी कुदरत की कौन विचार कर सकता है ?

जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥३॥
जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥३॥
हे अगम्य रूप गिरिधारी ! तू जल, धरती एवं आकाश में सर्वव्यापी है

ਕੀਰਤਿ ਕਰਹਿ ਸਗਲ ਜਨ ਤੇਰੀ ਤੂ ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥
कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥
तेरे सब भक्तजन तेरी स्तुति करते हैं। हे मुरारि ! तू अविनाशी परमपुरुष है।

ਜਿਉ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖਹੁ ਸੁਆਮੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਦੁਆਰੇ ॥੪॥੧॥
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥४॥१॥
हे मेरे स्वामी ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो क्योंकि नानक ने तो तेरे ही द्वार की शरण ली है॥ ४॥ १॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਬਿਨੁ ਜਲ ਪ੍ਰਾਨ ਤਜੇ ਹੈ ਮੀਨਾ ਜਿਨਿ ਜਲ ਸਿਉ ਹੇਤੁ ਬਢਾਇਓ ॥
बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥
जल के बिना मछली ने अपने प्राण त्याग दिये हैं, क्योंकि उसने जल के साथ अत्याधिक मोह-लगाव बढ़ाया हुआ था।

ਕਮਲ ਹੇਤਿ ਬਿਨਸਿਓ ਹੈ ਭਵਰਾ ਉਨਿ ਮਾਰਗੁ ਨਿਕਸਿ ਨ ਪਾਇਓ ॥੧॥
कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥१॥
कमल-फूल के मोह में भैवरा नाश हो गया है, चूंकि उसे फूल में से बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला।॥१॥

ਅਬ ਮਨ ਏਕਸ ਸਿਉ ਮੋਹੁ ਕੀਨਾ ॥
अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥
अब मेरे मन ने एक परमेश्वर से ही अपना मोह-प्यार लगाया हुआ है,

ਮਰੈ ਨ ਜਾਵੈ ਸਦ ਹੀ ਸੰਗੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਬਦੀ ਚੀਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥१॥ रहाउ ॥
वह न तो कभी मरता है, न ही जन्म लेता है, वह तो सदैव मेरे साथ ही रहता है। सतगुरु के शब्द द्वारा मैंने उसे समझ लिया है ॥१॥ रहाउ ॥

ਕਾਮ ਹੇਤਿ ਕੁੰਚਰੁ ਲੈ ਫਾਂਕਿਓ ਓਹੁ ਪਰ ਵਸਿ ਭਇਓ ਬਿਚਾਰਾ ॥
काम हेति कुंचरु लै फांकिओ ओहु पर वसि भइओ बिचारा ॥
कामवासना में आसक्त होने के कारण हाथी फँस जाता है, वह बेचारा पराए वश में पड़ जाता है अर्थात् पराधीन हो जाता है।

ਨਾਦ ਹੇਤਿ ਸਿਰੁ ਡਾਰਿਓ ਕੁਰੰਕਾ ਉਸ ਹੀ ਹੇਤ ਬਿਦਾਰਾ ॥੨॥
नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥२॥
नाद में मुग्ध होने के कारण हिरण अपना सिर शिकारी को दे देता है और नाद के मोह में मुग्ध होने के कारण वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥ २॥

ਦੇਖਿ ਕੁਟੰਬੁ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿਓ ਪ੍ਰਾਨੀ ਮਾਇਆ ਕਉ ਲਪਟਾਨਾ ॥
देखि कुट्मबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥
प्राणी अपना कुटुंब देखकर धन-दौलत के लोभ में फंस जाता है, जिसके कारण वह धन-दौलत में ही लिपटा रहता है।

ਅਤਿ ਰਚਿਓ ਕਰਿ ਲੀਨੋ ਅਪੁਨਾ ਉਨਿ ਛੋਡਿ ਸਰਾਪਰ ਜਾਨਾ ॥੩॥
अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥३॥
वह सांसारिक पदार्थों को अपना ही समझता है और इन में ही अधिकतर मग्न रहता है। वह यह नहीं समझता किं उसने सब पदार्थों को यहाँ ही छोड़कर दुनिया से चले जाना है॥ ३॥

ਬਿਨੁ ਗੋਬਿੰਦ ਅਵਰ ਸੰਗਿ ਨੇਹਾ ਓਹੁ ਜਾਣਹੁ ਸਦਾ ਦੁਹੇਲਾ ॥
बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥
यह बात भलीभांति समझ लो किं जिस मनुष्य ने भगवान के अलावा किसी अन्य से प्रेम किया है, वह हमेशा ही दुखी रहता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਇਹੈ ਬੁਝਾਇਓ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸਦ ਕੇਲਾ ॥੪॥੨॥
कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥४॥२॥
हे नानक ! गुरु ने मुझे यही समझाया है कि भगवान के प्रेम में हमेशा आनंद ही बना रहता है ॥ ४॥ २॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥
धनासरी मः ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਦੀਓ ਮੋਹਿ ਨਾਮਾ ਬੰਧਨ ਤੇ ਛੁਟਕਾਏ ॥
करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥
ईश्वर ने कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान किया है और मुझे माया के बन्धनों से मुक्त कर दिया है।

ਮਨ ਤੇ ਬਿਸਰਿਓ ਸਗਲੋ ਧੰਧਾ ਗੁਰ ਕੀ ਚਰਣੀ ਲਾਏ ॥੧॥
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥१॥
उसने मुझे गुरु के चरणों से लगा दिया है और जगत का समूचा ही धंधा मेरे मन से भूल गया है॥१॥

ਸਾਧਸੰਗਿ ਚਿੰਤ ਬਿਰਾਨੀ ਛਾਡੀ ॥
साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥
साधसंगत में मिलकर मैंने बेगानी चिताएँ छोड़ दी हैं।

ਅਹੰਬੁਧਿ ਮੋਹ ਮਨ ਬਾਸਨ ਦੇ ਕਰਿ ਗਡਹਾ ਗਾਡੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अह्मबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपनी अहंबुद्धि, माया का मोह एवं अपनी मन की वासनाओं को गद्दा खोदकर उसमें दफन कर दिया है ॥१॥ रहाउ॥

ਨਾ ਕੋ ਮੇਰਾ ਦੁਸਮਨੁ ਰਹਿਆ ਨਾ ਹਮ ਕਿਸ ਕੇ ਬੈਰਾਈ ॥
ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥
अब कोई भी मेरा दुश्मन नहीं रहा और न ही मैं किसी का वैरी हूँ।

ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਸਾਰੁ ਪਸਾਰਿਓ ਭੀਤਰਿ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਸੋਝੀ ਪਾਈ ॥੨॥
ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥२॥
गुरु से मुझे यह सूझ प्राप्त हुई है कि जिसने यह सृष्टि-रचना का प्रसार किया है, वह ब्रह्म सर्वव्यापी है॥२ ॥

ਸਭੁ ਕੋ ਮੀਤੁ ਹਮ ਆਪਨ ਕੀਨਾ ਹਮ ਸਭਨਾ ਕੇ ਸਾਜਨ ॥
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥
मैंने सभी को अपना मित्र बना लिया है और मैं सबका सज्जन बन गया हूँ।

ਦੂਰਿ ਪਰਾਇਓ ਮਨ ਕਾ ਬਿਰਹਾ ਤਾ ਮੇਲੁ ਕੀਓ ਮੇਰੈ ਰਾਜਨ ॥੩॥
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥३॥
जब मेरे मन की जुदाई का दर्द दूर हो गया तो राजन प्रभु से मेरा मिलन हो गया।॥३॥

ਬਿਨਸਿਓ ਢੀਠਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਵੂਠਾ ਸਬਦੁ ਲਗੋ ਗੁਰ ਮੀਠਾ ॥
बिनसिओ ढीठा अम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥
मेरे मन की निर्लज्जता दूर हो गई है, मन में नामामृत आ बरसा है और गुरु का शब्द मेरे मन को मीठा लगता है।

जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥
जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥
हे नानक ! मैंने जल, धरती एवं आकाश में सर्व निवासी राम को देख लिया है ॥४॥३॥

धनासरी मः ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥
जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥
जब से मुझे साधु (गुरुदेव) के दर्शन हुए हैं, तब से मेरे शुभ दिन आ गए हैं।

महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥१॥
महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥१॥
सदैव ही प्रभु का कीर्तन करने से मेरे मन में महाआनंद बना रहता है और मैंने उस परमपुरुष विधाता को पा लिया है॥१॥

अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥
अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥
अब मैं अपने मन में राम का यशगान करता रहता हूँ।

भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पुरा पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने पूर्ण सतगुरु को पा लिया है, जिससे प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है और मेरे मन में सदैव ही सुख बना रहता है।॥१॥ रहाउ॥

गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥
गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥
जब गुणों का भण्डार प्रभु मेरे हृदय में आकर बस गया तो मेरा दुःख, भ्रम एवं भय सभी दूर हो गए।

ਭਈ ਪਰਾਪਤਿ ਵਸਤੁ ਅਗੋਚਰ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਰੰਗੁ ਲਾਗਾ ॥੨॥

भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥

मेरा राम-नाम से प्रेम हो गया है और मुझे अगोचर वस्तु प्राप्त हो गई है॥२ ॥

ਚਿੰਤ ਅਚਿੰਤਾ ਸੋਚ ਅਸੋਚਾ ਸੋਗੁ ਲੋਭੁ ਮੋਹੁ ਥਾਕਾ ॥

चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥

मैं सब चिंताओं एवं सब सोचो से रहित हो गया हूँ अर्थात् अब मुझे कोई चिन्ता एवं सोच नहीं रही, मेरे मन में से शोक, लोभ एवं मोह थक चुका है अर्थात् मिट गया है।

ਹਉਮੈ ਰੋਗ ਮਿਟੇ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਜਮ ਤੇ ਭਏ ਬਿਬਾਕਾ ॥੩॥

हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥३॥

प्रभु की अपार कृपा से मेरा अहंकार का रोग मिट गया है और यम का मुझे अब कोई भय नहीं ॥ ३॥

ਗੁਰ ਕੀ ਟਹਲ ਗੁਰੂ ਕੀ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਕੀ ਆਗਿਆ ਭਾਣੀ ॥

गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥

अब मुझे गुरु की सेवा-चाकरी एवं गुरु की आज्ञा ही अच्छी लगती है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਜਮ ਤੇ ਕਾਢੇ ਤਿਸੁ ਗੁਰ ਕੈ ਕੁਰਬਾਣੀ ॥੪॥੪॥

कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥४॥४॥

हे नानक ! मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे यम के बिछाए हुए कर्म-जाल से निकाल लिया है॥ ४॥ ४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

धनासरी महला ५ ॥

धनासरी मः ५ ॥

ਜਿਸ ਕਾ ਤਨੁ ਮਨੁ ਧਨੁ ਸਭੁ ਤਿਸ ਕਾ ਸੋਈ ਸੁਘੜੁ ਸੁਜਾਨੀ ॥

जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥

जिस परमात्मा का मुझे तन, मन एवं धन दिया हुआ है, यह सब कुछ उसका ही पैदा किया हुआ है और वही चतुर एवं सर्वज्ञ है।

ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਣਿਆ ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ ਮੇਰਾ ਤਉ ਬਿਧਿ ਨੀਕੀ ਖਟਾਨੀ ॥੧॥

तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥

जब उसने मेरा दुःख एवं सुख सुना तो मेरी दशा अच्छी बन गई॥१॥

ਜੀਅ ਕੀ ਏਕੈ ਹੀ ਪਹਿ ਮਾਨੀ ॥
जीअ की एकै ही पहि मानी ॥
मेरे मन की एक प्रार्थना ही परमात्मा के पास स्वीकार हुई है।

ਅਵਰਿ ਜਤਨ ਕਰਿ ਰਹੇ ਬਹੁਤੇਰੇ ਤਿਨ ਤਿਲੁ ਨਹੀ ਕੀਮਤਿ ਜਾਨੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥
मैं अन्य बहुत सारे यत्न करता रहा परन्तु मेरे मन ने एक तिल मात्र भी कीमत नहीं समझी॥ रहाउ॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਹੀਰਾ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਮੰਤਾਨੀ ॥
अम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥
हरिनामामृत एक अनमोल हीरा है, गुरु ने मुझे यह नाम-मंत्र दिया है।

ਡਿਗੈ ਨ ਡੋਲੈ ਦ੍ਰਿੜੁ ਕਰਿ ਰਹਿਓ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਤ੍ਰਿਪਤਾਨੀ ॥੨॥
डिगै न डोलै द्रिड़ु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥२॥
अब मेरा मन विकारों के गड़े में नहीं गिरता और न ही इधर-उधर भटकता अपितु दृढ़ रहता है और इसके साथ मेरा मन पूर्णतया तृप्त हो गया है॥२॥

ਓਇ ਜੁ ਬੀਚ ਹਮ ਤੁਮ ਕਛੁ ਹੋਤੇ ਤਿਨ ਕੀ ਬਾਤ ਬਿਲਾਨੀ ॥
ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥
वह जो मेरे तेरे वाली भेदभावना थी, उनकी बात अब मिट गई हैं।

ਅਲੰਕਾਰ ਮਿਲਿ ਥੈਲੀ ਹੋਈ ਹੈ ਤਾ ਤੇ ਕਨਿਕ ਵਖਾਨੀ ॥੩॥
अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥३॥
जब स्वर्ण के आभूषण पिघल कर एक थैली बन जाते हैं तो उन आभूषणों को स्वर्ण ही कहा जाता है।॥३॥

ਪ੍ਰਗਟਿਓ ਜੋਤਿ ਸਹਜ ਸੁਖ ਸੋਭਾ ਬਾਜੇ ਅਨਹਤ ਬਾਨੀ ॥
प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥
मेरे मन में प्रभु की ज्योति प्रगट हो गई है और मन में सहज सुख उत्पन्न हो गया है।अब हर जगह मेरी शोभा हो रही है और मन में अनहद शब्द गूंज रहा है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਿਹਚਲ ਘਰੁ ਬਾਧਿਓ ਗੁਰਿ ਕੀਓ ਬੰਧਾਨੀ ॥੪॥੫॥
कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥४॥५॥
हे नानक ! मेरे मन ने दसम द्वार में अपना अटल घर बना लिया है परन्तु उसे बनाने का प्रबन्ध मेरे गुरु ने किया है ॥४॥५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਵਡੇ ਵਡੇ ਰਾਜਨ ਅਰੁ ਭੂਮਨ ਤਾ ਕੀ ਤ੍ਰਿਸਨ ਨ ਬੂਝੀ ॥
वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥
जगत में बड़े-बड़े राजा एवं भूमिपति हुए हैं, परन्तु उनकी तृष्णाग्नि नहीं बुझी।

ਲਪਟਿ ਰਹੇ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਮਾਤੇ ਲੋਚਨ ਕਛੂ ਨ ਸੂਝੀ ॥੧॥
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥१॥
वे माया के मोह में मस्त हुए उससे लिपटे रहे हैं और उन्हें अपनी आँखों से माया के सिवाय अन्य कुछ दिखाई नहीं दिया॥१॥

ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਕਿਨ ਹੀ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨ ਪਾਈ ॥
बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई ॥
विष रूपी माया में किसी को तृप्ति प्राप्त नहीं हुई।

ਜਿਉ ਪਾਵਕੁ ਈਧਨਿ ਨਹੀ ਧ੍ਰਾਪੈ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਕਹਾ ਅਘਾਈ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥
जैसे अग्नि ईंधन से तृप्त नहीं होती, वैसे ही भगवान के बिना मन कैसे तृप्त हो सकता है? ॥ रहाउ ॥

ਦਿਨੁ ਦਿਨੁ ਕਰਤ ਭੋਜਨ ਬਹੁ ਬਿੰਜਨ ਤਾ ਕੀ ਮਿਟੈ ਨ ਭੂਖਾ ॥
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥
मनुष्य प्रतिदिन अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन एवं व्यंजन खाता रहता है, परन्तु उसकी खाने की भूख नहीं मिटती।

ਉਦਮੁ ਕਰੈ ਸੁਆਨ ਕੀ ਨਿਆਈ ਚਾਰੇ ਕੁੰਟਾ ਘੋਖਾ ॥੨॥
उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥२॥
वह कुत्ते की तरह प्रयास करता रहता है और चारों दिशाओं में माया की खोज करता रहता है॥ २॥

ਕਾਮਵੰਤ ਕਾਮੀ ਬਹੁ ਨਾਰੀ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹ ਜੋਹ ਨ ਚੂਕੈ ॥
कामवंत कामी बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै ॥
कामासक्त हुआ कामुक मनुष्य अनेक नारियों से भोग-विलास करता है परन्तु फिर भी उसका पराए घरों की नारियों की ओर देखना खत्म नहीं होता।

ਦਿਨ ਪ੍ਰਤਿ ਕਰੈ ਕਰੈ ਪਛੁਤਾਪੈ ਸੋਗ ਲੋਭ ਮਹਿ ਸੂਕੈ ॥੩॥
दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥३॥
वह नित्य-प्रतिदिन पाप कर करके पछताता है और शोक एवं लोभ में सूखता जाता है ॥३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰ ਅਮੋਲਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਏਕੁ ਨਿਧਾਨਾ ॥
हरि हरि नामु अपार अमोला अम्रितु एकु निधाना ॥
परमात्मा का नाम बड़ा अपार-अनमोल है और यह एक अमृत रूपी खजाना है।

ਸੁਖੁ ਸਹਜੁ ਆਨੰਦੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਤੇ ਜਾਨਾ ॥੪॥੬॥
सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥
हे नानक ! मैंने यह भेद गुरु से समझ लिया है कि नामामृत से संतजनों के हृदय में सहज सुख एवं आनंद बना रहता है।॥४॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥
धनासरी मः ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਲਵੈ ਨ ਲਾਗਨ ਕਉ ਹੈ ਕਛੂਐ ਜਾ ਕਉ ਫਿਰਿ ਇਹੁ ਧਾਵੈ ॥
लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इहु धावै ॥
जिन पदार्थों के लिए मानव बार-बार इधर-उधर दौड़ता रहता है, इनमें से कुछ भी प्रभु-नाम के तुल्य नहीं है।

ਜਾ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਨੋ ਇਹੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਿਸ ਹੀ ਕਉ ਬਨਿ ਆਵੈ ॥੧॥

जा कउ गुरि दीनो इहु अम्रितु तिस ही कउ बनि आवै ॥१॥

गुरु ने जिस व्यक्ति को यह नामामृत प्रदान किया है, उसे ही इसके मूल्य की समझ आती है॥१॥

ਜਾ ਕਉ ਆਇਓ ਏਕੁ ਰਸਾ ॥

जा कउ आइओ एकु रसा ॥

जिस जिज्ञासु को प्रभु-नाम का एक स्वाद मिल गया है,

ਖਾਨ ਪਾਨ ਆਨ ਨਹੀ ਖੁਧਿਆ ਤਾ ਕੈ ਚਿਤਿ ਨ ਬਸਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥

उसके चित्त में खाने-पीने एवं किसी अन्य पदार्थ की भूख नहीं रहती॥ रहाउ॥

ਮਉਲਿਓ ਮਨੁ ਤਨੁ ਹੋਇਓ ਹਰਿਆ ਏਕ ਬੂੰਦ ਜਿਨਿ ਪਾਈ ॥

मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥

जिसे इस नामामृत की एक बूंद भी मिल गई है, उसका मन एवं तन प्रफुल्लित एवं हरा-भरा हो गया है।

ਬਰਨਿ ਨ ਸਾਕਉ ਉਸਤਤਿ ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ॥੨॥

बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥२॥

मैं उसकी प्रशंसा वर्णन नहीं कर सकता और मुझ से उसका मूल्यांकन किया नहीं जा सकता॥ २॥

ਘਾਲ ਨ ਮਿਲਿਓ ਸੇਵ ਨ ਮਿਲਿਓ ਮਿਲਿਓ ਆਇ ਅਚਿੰਤਾ ॥

घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥

प्रभु मुझे कठिन परिश्रम करने से नहीं मिला और न ही सेवा करने से मिला, वह तो स्वयं ही आकर अचिन्त हो मुझे मिल गया है।

ਜਾ ਕਉ ਦਇਆ ਕਰੀ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਤਿਨਿ ਗੁਰਹਿ ਕਮਾਨੋ ਮੰਤਾ ॥੩॥

जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥३॥

मेरे ठाकुर ने जिस पर अपनी दया की है, उसने ही गुरु-मंत्र को कमाया है॥ ३॥

ਦੀਨ ਦੈਆਲ ਸਦਾ ਕਿਰਪਾਲਾ ਸਰਬ ਜੀਆ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਾ ॥

दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥

वह दीनदयाल सदैव कृपा का घर है और सब जीवों का पोषण करता है।

ਓਤਿ ਪੋਤਿ ਨਾਨਕ ਸੰਗਿ ਰਵਿਆ ਜਿਉ ਮਾਤਾ ਬਾਲ ਗੋਪਾਲਾ ॥੪॥੭॥
ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥
हे नानक ! परमात्मा जीव के संग ताने-बाने की तरह मिला रहता है और वह जीव का यूं पोषण करता है, जैसे एक माता अपने बालक का पोषण करती है॥ ४॥ ७ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਬਾਰਿ ਜਾਉ ਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਊਪਰਿ ਜਿਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਾਯਾ ॥
बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रिड़्हाया ॥
मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने परमात्मा का नाम मेरे हृदय में दृढ़ कर दिया है,

ਮਹਾ ਉਦਿਆਨ ਅੰਧਕਾਰ ਮਹਿ ਜਿਨਿ ਸੀਧਾ ਮਾਰਗੁ ਦਿਖਾਯਾ ॥੧॥
महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥१॥
जिसने मुझे संसार रूपी महा भयंकर जंगल के घोर अन्धकार में भटकते हुए को सन्मार्ग दिखा दिया है॥१ ॥

ਹਮਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ਗੁਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ॥
हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥
जगतपालक परमेश्वर ही मेरे प्राण है,

ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਰਬ ਥੋਕ ਕੀ ਜਿਸਹਿ ਹਮਾਰੀ ਚਿੰਦ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥ रहाउ ॥
जिसे लोक एवं परलोक में समस्त पदार्थ देने की हमारी चिन्ता रहती है।॥१॥ रहाउ॥

ਜਾ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨਾ ਮਾਨੁ ਮਹਤੁ ਪਤਿ ਪੂਰੀ ॥
जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥
जिसका सिमरन करने से सब निधियाँ, आदर-सत्कार, शोभा एवं पूर्ण सम्मान मिल जाता है,

ਨਾਮੁ ਲੈਤ ਕੋਟਿ ਅਘ ਨਾਸੇ ਭਗਤ ਬਾਛਹਿ ਸਭਿ ਧੂਰੀ ॥੨॥
नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥२॥
जिसका नाम लेने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं, सब भक्तजन उस प्रभु की चरण-धूलि की कामना करते हैं।॥ २॥

ਸਰਬ ਮਨੋਰਥ ਜੇ ਕੋ ਚਾਹੈ ਸੇਵੈ ਏਕੁ ਨਿਧਾਨਾ ॥

सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥

यदि कोई अपने समस्त मनोरथ पूरे करना चाहता है तो उसे एक ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए, जो समस्त पदार्थों का खजाना है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਪਰੰਪਰ ਸੁਆਮੀ ਸਿਮਰਤ ਪਾਰਿ ਪਰਾਨਾ ॥੩॥

पारब्रहम अपर्मपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥३॥

जगत का स्वामी परब्रह्म अपरंपार है, जिसका चिंतन करने से जीव का कल्याण हो जाता है।३॥

ਸੀਤਲ ਸਾਂਤਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸੰਤਸੰਗਿ ਰਹਿਓ ਓਲ੍ਹਾ ॥

सीतल सांति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओल्हा ॥

मेरा मन शीतल हो गया है और मैंने शांति एवं परम सुख पा लिया है। संतों की संगति में मेरा मान-सम्मान कायम रह गया है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਸੰਚਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਇਹੁ ਨਾਨਕ ਕੀਨੋ ਚੋਲ੍ਹਾ ॥੪॥੮॥

हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥४॥८॥

हे नानक हरि-नाम धन संचित करना एवं हरि-नाम रूपी भोजन खाना मैंने यह अपना स्वादिष्ट पकवान बना लिया है॥४॥८॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਜਿਹ ਕਰਣੀ ਹੋਵਹਿ ਸਰਮਿੰਦਾ ਇਹਾ ਕਮਾਨੀ ਰੀਤਿ ॥
जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥
हे प्राणी ! तू ऐसी मर्यादा इस्तेमाल कर रहा है, जिस आचरण के कारण तुझे भगवान के दरबार में शर्मिंदा होना पड़ेगा।

ਸੰਤ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਸਾਕਤ ਕੀ ਪੂਜਾ ਐਸੀ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹੀ ਬਿਪਰੀਤਿ ॥੧॥
संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ही बिपरीति ॥१॥
तू संतों की निन्दा करता है और भगवान से विमुख व्यक्ति की पूजा करता है। तूने ऐसी परम्परा ग्रहण कर ली है, जो धर्म की मर्यादा से विपरीत है॥ १॥

ਮਾਇਆ ਮੋਹ ਭੂਲੋ ਅਵਰੈ ਹੀਤ ॥
माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥
हे प्राणी ! तू माया के मोह में फँसकर भटका हुआ है और प्रभु को छोड़कर दूसरों से प्रेम करता है।

ਹਰਿਚੰਦਉਰੀ ਬਨ ਹਰ ਪਾਤ ਰੇ ਇਹੈ ਤੁਹਾਰੋ ਬੀਤ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरिचंदउरी बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥१॥ रहाउ ॥
तेरी अपनी दशा तो ऐसी है जैसी राजा हरि-चन्द की आकाश वाली नगरी का है और वन के हरे पत्तों का है॥१॥ रहाउ॥

ਚੰਦਨ ਲੇਪ ਹੋਤ ਦੇਹ ਕਉ ਸੁਖੁ ਗਰਧਭ ਭਸਮ ਸੰਗੀਤਿ ॥
चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥
चाहे गधे के शरीर पर चन्दन का लेप भी कर दिया जाए लेकिन फिर भी गधे को मिट्टी में लेट कर ही सुख मिलता है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸੰਗਿ ਨਾਹਿ ਰੁਚ ਆਵਤ ਬਿਖੈ ਠਗਉਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥੨॥
अम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥२॥
हे प्राणी ! नामामृत के संग तेरे मन में रुचि पैदा नहीं होती परन्तु विष रूपी ठगौरी से तू प्रेम करता है॥ २॥

ਉਤਮ ਸੰਤ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗੀ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਪਵਿਤ ਪੁਨੀਤ ॥
उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥
उत्तम एवं भले संत संयोग से ही मिलते हैं, जो इस युग में पवित्र एवं पुनीत हैं।

ਜਾਤ ਅਕਾਰਥ ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥ ਕਾਚ ਬਾਦਰੈ ਜੀਤ ॥੩॥
जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥३॥
हे प्राणी ! तेरा अनमोल मानव-जन्म व्यर्थ जा रहा है और यह काँच के बदले में जीता जा रहा है ॥३॥

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਭਾਗੇ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਨੇਤ੍ਰ ਦੀਤ ॥
जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥
जब गुरु ने ज्ञान का सुरमा नेत्रों में लगा दिया तो जन्म-जन्मांतरों के किल्विष दुख भाग गए।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਇਨ ਦੁਖ ਤੇ ਨਿਕਸਿਓ ਨਾਨਕ ਏਕ ਪਰੀਤ ॥੪॥੯॥
साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥४॥९॥
हे नानक ! साधुओं की संगत से इन दुःखों से निकल आया हूँ और अब मैंने एक प्रभु से ही प्रेम लगा लिया है ॥४॥६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਪਾਨੀ ਪਖਾ ਪੀਸਉ ਸੰਤ ਆਗੈ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਜਸੁ ਗਾਈ ॥
पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥
मैं संतों की सेवा में पानी ढोता, पंखा करता और गेहूँ पीसता हूँ और गोविन्द का ही यशोगान करता हूँ।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਮਨੁ ਨਾਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੈ ਇਹੁ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥
सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥१॥
मेरा मन श्वास-श्वास से नाम जपता रहता है और मैंने यह नाम रूपी सुखों की निधि प्राप्त कर ली है॥ १॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਕਰਹੁ ਦਇਆ ਮੇਰੇ ਸਾਈ ॥
तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥
हे मेरे मालिक ! मुझ पर दया करो।

ਐਸੀ ਮਤਿ ਦੀਜੈ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਸਦਾ ਸਦਾ ਤੁਧੁ ਧਿਆਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे ठाकुर ! मुझे ऐसी सुमति दीजिए कि मैं सर्वदा ही तेरा ध्यान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੇ ਮੋਹੁ ਮਾਨੁ ਛੂਟੈ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਭਰਮਾਈ ॥
तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥
तेरी कृपा से मेरा मोह एवं अभिमान छूट जाए और मेरा भ्रम भी मिट जाए।

ਅਨਦ ਰੂਪੁ ਰਵਿਓ ਸਭ ਮਧੇ ਜਤ ਕਤ ਪੇਖਉ ਜਾਈ ॥੨॥
अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥२॥
आनंद का स्वरूप वह प्रभु सबमें समाया हुआ है, मैं जिधर भी जाता हूँ, उसे ही देखता हूँ॥ २॥

ਤੁਮ੍ਹ੍ਹ ਦਇਆਲ ਕਿਰਪਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਧਿ ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਗੋਸਾਈ ॥
तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥
हे पतितपावन सृष्टि के स्वामी ! तुम बड़े दयालु, कृपालु एवं कृपानिधि हो।

ਕੋਟਿ ਸੂਖ ਆਨੰਦ ਰਾਜ ਪਾਏ ਮੁਖ ਤੇ ਨਿਮਖ ਬੁਲਾਈ ॥੩॥
कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥३॥
मैंने अपने मुँह से एक क्षण भर तेरे नाम का उच्चारण करके राज-भाग के करोड़ों सुख एवं आनंद पा लिए हैं।॥३॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਭਗਤਿ ਸਾ ਪੂਰੀ ਜੋ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਮਨਿ ਭਾਈ ॥
जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥
केवल वही पूजा, तपस्या एवं भक्ति पूर्ण होती है, जो प्रभु के मन में भा गई है।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਸਭ ਬੁਝੀ ਹੈ ਨਾਨਕ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਅਘਾਈ ॥੪॥੧੦॥
नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥४॥१०॥
हे नानक ! नाम का जाप करने से मेरी सारी तृष्णा बुझ गई है, अब मैं तृप्त एवं संतृष्ट हो गया हूँ॥ ४॥ १०॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਜਿਨਿ ਕੀਨੇ ਵਸਿ ਅਪੁਨੈ ਤ੍ਰੈ ਗੁਣ ਭਵਣ ਚਤੁਰ ਸੰਸਾਰਾ ॥
जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥
"(माया ने) तीनो भवनों-आकाश, पाताल, पृथ्वी एवं सत्यलोक को जीत कर अपने वशीभूत कर लिया है,

ਜਗ ਇਸਨਾਨ ਤਾਪ ਥਾਨ ਖੰਡੇ ਕਿਆ ਇਹੁ ਜੰਤੁ ਵਿਚਾਰਾ ॥੧॥

जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥१॥

जिसने यज्ञ करने वाले, स्नान करने वाले एवं तपस्या करने वाले इन समस्त स्थानों को खण्डित कर दिया है, ये बेचारा जीव इसके समक्ष क्या चीज हैं ?॥ १॥

ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਓਟ ਗਹੀ ਤਉ ਛੂਟੋ ॥

प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥

जब मैंने प्रभु की शरण ली तो मैं माया से स्वतन्त्र हो गया।

ਸਾਧ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਏ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ਤਬ ਹੂਟੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥१॥ रहाउ ॥

साधु-महापुरुष की कृपा से जब परमात्मा का स्तुतिगान किया तो मेरे पाप एवं रोग दूर हो गए ॥१॥ रहाउ ॥

ਨਹ ਸੁਣੀਐ ਨਹ ਮੁਖ ਤੇ ਬਕੀਐ ਨਹ ਮੋਹੈ ਉਹ ਡੀਠੀ ॥

नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥

वह माया जीवों को मुग्ध करती हुई इन नेत्रों से दिखाई नहीं देती, उसकी आवाज भी सुनाई नहीं देती और न ही वह अपने मुंह से बोलती है।

ਐਸੀ ਠਗਉਰੀ ਪਾਇ ਭੁਲਾਵੈ ਮਨਿ ਸਭ ਕੈ ਲਾਗੈ ਮੀਠੀ ॥੨॥

ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥२॥

वह कोई ऐसी ठगौरी लोगों के मुँह में डाल कर उनको भटका देती है कि वह सभी के मन में मीठी लगती है॥२॥

ਮਾਇ ਬਾਪ ਪੂਤ ਹਿਤ ਭ੍ਰਾਤਾ ਉਨਿ ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੇਲਿਓ ਦ੍ਵੂਆ ॥

माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ द्वूआ ॥

घर-घर में परस्पर प्रेम करने वाले माता-पिता, पुत्रों एवं भाइयों में माया ने भेदभाव एवं अलगाव उत्पन्न कर दिया है।

ਕਿਸ ਹੀ ਵਾਧਿ ਘਾਟਿ ਕਿਸ ਹੀ ਪਹਿ ਸਗਲੇ ਲਰਿ ਲਰਿ ਮੂਆ ॥੩॥

किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥३॥

माया किसी के पास कम है, किसी के पास अधिक है और वे सभी परस्पर लड़-लड़कर मरते हैं॥ ३॥

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਇਹੁ ਚਲਤੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥

हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥

मैं अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे माया की यह विचित्र लीला दिखा दी है।

ਗੂਝੀ ਭਾਹਿ ਜਲੈ ਸੰਸਾਰਾ ਭਗਤ ਨ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥੪॥
गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥४॥
शरीरों में छिपी हुई इस तृष्णाग्नि से समूचा जगत जल रहा है परन्तु भक्तजनों को यह माया प्रभावित नहीं करती ॥४॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਮਹਾ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਗਲੇ ਬੰਧਨ ਕਾਟੇ ॥
संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥
संतों की कृपा से मुझे परम सुख प्राप्त हो गया है और उन्होंने मेरे सभी बन्धन काट दिए हैं।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਧਨੁ ਪਾਇਆ ਅਪੁਨੈ ਘਰਿ ਲੈ ਆਇਆ ਖਾਟੇ ॥੫॥੧੧॥
हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥५॥११॥
हे नानक ! मैंने हरि-नाम रूपी धन को पा लिया है और मैं यह नाम-धन कमा कर अपने हृदय रूपी घर में ले आया हूँ ॥५॥११॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਤੁਮ ਦਾਤੇ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਕ ਨਾਇਕ ਖਸਮ ਹਮਾਰੇ ॥
तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥
हे ईश्वर ! तुम हमारे दाता एवं ठाकुर हो, तुम ही हमारा पालन-पोषण करते हो, तुम ही समूचे विश्व के नायक और तुम ही हमारे मालिक हो।

ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਤੁਮ ਹੀ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹੁ ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਤੁਮਰੇ ਧਾਰੇ ॥੧॥
निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥
क्षण-क्षण तुम हमारा पालन-पोषण करते रहते हो, हम तुम्हारी ही पैदा की हुई संतान हैं।॥ १॥

ਜਿਹਵਾ ਏਕ ਕਵਨ ਗੁਨ ਕਹੀਐ ॥
जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥
हम अपनी एक जिह्वा से तेरे कौन-कौन से गुण कथन करें ?

ਬੇਸੁਮਾਰ ਬੇਅੰਤ ਸੁਆਮੀ ਤੇਰੋ ਅੰਤੁ ਨ ਕਿਨ ਹੀ ਲਹੀਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
हे बेशुमार एवं बेअन्त स्वामी ! किसी ने भी तेरा अन्त नहीं जाना॥१॥ रहाउ॥

ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਹਮਾਰੇ ਖੰਡਹੁ ਅਨਿਕ ਬਿਧੀ ਸਮਝਾਵਹੁ ॥
कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥
हे प्रभु ! तुम हमारे करोड़ों पापों को नाश करते रहते हो और अनेक विधियों द्वारा उपदेश देते रहते हो।

ਹਮ ਅਗਿਆਨ ਅਲਪ ਮਤਿ ਥੋਰੀ ਤੁਮ ਆਪਨ ਬਿਰਦੁ ਰਖਾਵਹੁ ॥੨॥
हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥२॥
हम तो ज्ञानहीन हैं और हमारी मति बहुत ही थोड़ी एवं तुच्छ है, तुम अपने विरद की लाज रखते हो॥ २॥

ਤੁਮਰੀ ਸਰਣਿ ਤੁਮਾਰੀ ਆਸਾ ਤੁਮ ਹੀ ਸਜਨ ਸੁਹੇਲੇ ॥
तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥
हे प्रभु ! हम तेरी शरण में आए हैं और हमें तेरी ही आशा है, चूंकि तू ही हमारा सुखदायक सज्जन है।

ਰਾਖਹੁ ਰਾਖਨਹਾਰ ਦਇਆਲਾ ਨਾਨਕ ਘਰ ਕੇ ਗੋਲੇ ॥੩॥੧੨॥
राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥३॥१२॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे रक्षा करने वाले दयालु प्रभु ! हमारी रक्षा करो, चूंकि हम तेरे घर के सेवक हैं।॥ ३॥ १२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਪੂਜਾ ਵਰਤ ਤਿਲਕ ਇਸਨਾਨਾ ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਬਹੁ ਦੈਨ ॥
पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥
लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं, व्रत-उपवास रखते हैं, अपने माथे पर तिलक लगाते हैं, तीर्थों पर स्नान करते हैं, पुण्य-कर्म भी करते हैं और बहुत दान देते हैं,

ਕਹੂੰ ਨ ਭੀਜੈ ਸੰਜਮ ਸੁਆਮੀ ਬੋਲਹਿ ਮੀਠੇ ਬੈਨ ॥੧॥
कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥१॥
वे मधुर वचन भी बोलते हैं परन्तु स्वामी-प्रभु इनमें से किसी भी युक्ति द्वारा प्रसन्न नहीं होता ॥१॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਕੋ ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਮਨ ਚੈਨ ॥
प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥
प्रभु का नाम जपने से ही मन को शांति मिलती है।

ਬਹੁ ਪ੍ਰਕਾਰ ਖੋਜਹਿ ਸਭਿ ਤਾ ਕਉ ਬਿਖਮੁ ਨ ਜਾਈ ਲੈਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥१॥ रहाउ ॥
सभी लोग अनेक प्रकार की विधियों से उस प्रभु की तलाश करते रहते हैं परन्तु उसकी तलाश बड़ी कठिन है और उसे ढूंढ़ा नहीं जा सकता ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਾਪ ਤਾਪ ਭ੍ਰਮਨ ਬਸੁਧਾ ਕਰਿ ਉਰਧ ਤਾਪ ਲੈ ਗੈਨ ॥
जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥
मंत्रों के जाप करने से, तपस्या करने से, पृथ्वी पर भ्रमण करने से, सिर के बल तप करने से, प्राणायाम द्वारा श्वासों को दसम द्वार में करने इत्यादि से

ਇਹ ਬਿਧਿ ਨਹ ਪਤੀਆਨੋ ਠਾਕੁਰ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਕਰਿ ਜੈਨ ॥੨॥
इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥२॥
ठाकुर प्रभु प्रसन्न नहीं होता, वह योग मत एवं जैन मत की युक्तियाँ करने से भी खुश नहीं होता ॥२॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਨਿਰਮੋਲਕੁ ਹਰਿ ਜਸੁ ਤਿਨਿ ਪਾਇਓ ਜਿਸੁ ਕਿਰਪੈਨ ॥
अम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥
प्रभु का अमृत नाम अनमोल है और हरि-यश की देन उस खुशकिस्मत ने ही प्राप्त की है, जिस पर उसकी कृपा हुई है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਰੰਗਿ ਪ੍ਰਭ ਭੇਟੇ ਨਾਨਕ ਸੁਖਿ ਜਨ ਰੈਨ ॥੩॥੧੩॥
साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥१३॥
हे नानक ! जिसे सत्संगति में प्रेम द्वारा प्रभु मिल जाता है, उस मनुष्य की जीवन-रात्रि सुख में बीतती है॥३॥१३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਬੰਧਨ ਤੇ ਛੁਟਕਾਵੈ ਪ੍ਰਭੂ ਮਿਲਾਵੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸੁਨਾਵੈ ॥
बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥
क्या कोई ऐसा है ? जो मुझे माया के बन्धनों से स्वतंत्र करवा दे, मुझे प्रभु से मिला दे, मुझे हरि का नाम सुनाए,

ਅਸਥਿਰੁ ਕਰੇ ਨਿਹਚਲੁ ਇਹੁ ਮਨੂਆ ਬਹੁਰਿ ਨ ਕਤਹੂ ਧਾਵੈ ॥੧॥
असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥१॥
मेरा यह मन स्थिर एवं अटल कर दे, ताकि वह इधर-उधर कहीं न भटके ॥ १॥

ਹੈ ਕੋਊ ਐਸੋ ਹਮਰਾ ਮੀਤੁ ॥
है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥
क्या कोई ऐसा मेरा मित्र है ?

ਸਗਲ ਸਮਗ੍ਰੀ ਜੀਉ ਹੀਉ ਦੇਉ ਅਰਪਉ ਅਪਨੋ ਚੀਤੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥१॥ रहाउ ॥
मैं उसे अपनी सारी धन-सम्पति, अपने प्राण, अपना हृदय सब कुछ सौंप दूँगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਪਰ ਧਨ ਪਰ ਤਨ ਪਰ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਇਨ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਨ ਲਾਗੈ ॥
पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥
मेरी अभिलाषा है कि पराया धन, पराई नारी के तन एवं पराई निन्दा-इनसे मेरी प्रीति कदापि न लगे।

ਸੰਤਹ ਸੰਗੁ ਸੰਤ ਸੰਭਾਖਨੁ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨਿ ਮਨੁ ਜਾਗੈ ॥੨॥
संतह संगु संत स्मभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥२॥
मैं संतों के संग ज्ञान-गोष्ठी किया करूं एवं हरि-कीर्तन में मेरा मन जाग्रत रहे॥ २॥

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਭ ਸਰਬ ਸੂਖ ਦਇਆਲਾ ॥
गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला ॥
हे परमपुरुष ! तू गुणों का भण्डार है, तू बड़ा दयालु है। हे दयालु प्रभु ! तू सर्व सुख प्रदान करने वाला है।

ਮਾਗੈ ਦਾਨੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਨਾਨਕੁ ਜਿਉ ਮਾਤਾ ਬਾਲ ਗੁਪਾਲਾ ॥੩॥੧੪॥

मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥३॥१४॥

हे जगतपालक ! जैसे बच्चे अपनी माता से भोजन माँगते हैं, वैसे ही नानक तुझसे तेरे नाम का दान माँगता है॥३॥१४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

धनासरी महला ५ ॥

धनासरी मः ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਲੀਨੇ ਸੰਤ ਉਬਾਰਿ ॥

हरि हरि लीने संत उबारि ॥

हरि ने अपने संतों को बचा लिया है।

ਹਰਿ ਕੇ ਦਾਸ ਕੀ ਚਿਤਵੈ ਬੁਰਿਆਈ ਤਿਸ ਹੀ ਕਉ ਫਿਰਿ ਮਾਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥१॥ रहाउ ॥

जो व्यक्ति हरि के दास की बुराई सोचता है, उसे ही वह अंततः नष्ट कर देता है॥ १॥ रहाउ॥

ਜਨ ਕਾ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ਹੋਆ ਨਿੰਦਕ ਭਾਗੇ ਹਾਰਿ ॥

जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥

प्रभु अपने सेवक का स्वयं ही मददगार बन गया है तथा निंदक पराजित होकर भाग गए हैं।

ਭ੍ਰਮਤ ਭ੍ਰਮਤ ਊਹਾਂ ਹੀ ਮੂਏ ਬਾਹੁੜਿ ਗ੍ਰਿਹਿ ਨ ਮੰਝਾਰਿ ॥੧॥

भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि ग्रिहि न मंझारि ॥१॥

भटकते-भटकते निंदक वहाँ ही मर गए हैं और वे पुनः अनेक योनियों में भटकते हैं एवं उन्हें अपने घर में निवास नहीं मिलता ॥ १॥

ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਪਰਿਓ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਗੁਨ ਗਾਵੈ ਸਦਾ ਅਪਾਰਿ ॥

नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥

नानक ने तो दुःखनाशक प्रभु की शरण ली है और सदैव ही अनंत प्रभु का गुणगान करता रहता है।

ਨਿੰਦਕ ਕਾ ਮੁਖੁ ਕਾਲਾ ਹੋਆ ਦੀਨ ਦੁਨੀਆ ਕੈ ਦਰਬਾਰਿ ॥੨॥੧੫॥

निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥२॥१५॥

दीन-दुनिया के स्वामी प्रभु के दरबार में उस निंदक का मुँह काला हुआ है अर्थात् तिरस्कृत हुआ है॥ २॥ १५॥ ।

ਧਨਾਸਿਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासिरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਅਬ ਹਰਿ ਰਾਖਨਹਾਰੁ ਚਿਤਾਰਿਆ ॥
अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥
अब जब मैंने रक्षक हरि को याद किया तो

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਕੀਏ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਸਗਲਾ ਰੋਗੁ ਬਿਦਾਰਿਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥१॥ रहाउ ॥
उसने मुझ पतित को एक क्षण में ही पवित्र बना दिया और मेरा सारा रोग नाश कर दिया ॥१॥ रहाउ॥

ਗੋਸਟਿ ਭਈ ਸਾਧ ਕੈ ਸੰਗਮਿ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧੁ ਲੋਭੁ ਮਾਰਿਆ ॥
गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥
जब साधुओं के समागम में मेरी ज्ञान चर्चा हुई तो मेरे मन में से काम, क्रोध एवं लोभ नष्ट हो गए।

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਪੂਰਨ ਨਾਰਾਇਨ ਸੰਗੀ ਸਗਲੇ ਤਾਰਿਆ ॥੧॥
सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिआ ॥१॥
मैंने उस पूर्ण नारायण का सिमरन करके अपने समस्त संगी-साथियों को भी भवसागर में डूबने से बचा लिया है॥ १॥

ਅਉਖਧ ਮੰਤ੍ਰ ਮੂਲ ਮਨ ਏਕੈ ਮਨਿ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਿਆ ॥
अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥
जगत के मूल प्रभु के नाम रूपी मंत्र का सिमरन ही तमाम रोगों की एकमात्र औषधि है। अपने मन में मैंने प्रभु के प्रति आस्था धारण कर ली है।

ਚਰਨ ਰੇਨ ਬਾਂਛੈ ਨਿਤ ਨਾਨਕੁ ਪੁਨਹ ਪੁਨਹ ਬਲਿਹਾਰਿਆ ॥੨॥੧੬॥
चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥२॥१६॥
नानक नित्य ही प्रभु की चरण-धूलि की कामना करता है और बार-बार उस पर कुर्बान जाता है॥ २॥ १६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਮੇਰਾ ਲਾਗੋ ਰਾਮ ਸਿਉ ਹੇਤੁ ॥
मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥
मेरा राम से प्रेम हो गया है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਜਿਨਿ ਦੁਖ ਕਾ ਕਾਟਿਆ ਕੇਤੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥१॥ रहाउ ॥
सतगुरु सदैव ही मेरा सहायक है, जिसने मेरे दुख की जड़ ही काट दी है॥ १॥ रहाउ ॥

ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖਿਓ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਬਿਰਥਾ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈ ॥
हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥
उसने मुझे अपना बना कर अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है और मेरी तमाम पीड़ा मिटा दी है।

ਨਿੰਦਕ ਕੇ ਮੁਖ ਕਾਲੇ ਕੀਨੇ ਜਨ ਕਾ ਆਪਿ ਸਹਾਈ ॥੧॥
निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥१॥
उसने निंदकों के मुँह काले कर दिए हैं और वह अपने सेवक का सहायक बन गया है॥ १॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਹੋਆ ਰਖਵਾਲਾ ਰਾਖਿ ਲੀਏ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ॥
साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥
वह सच्चा परमेश्वर मेरा रखवाला बन गया है और उसने अपने गले से लगाकर मुझे बचा लिया है।

ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਸਦਾ ਸੁਖ ਮਾਣੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੨॥੧੭॥
निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥२॥१७॥
हे नानक ! भगवान का गुणगान करने से निडर हो गया हूँ और हमेशा ही सुख की अनुभूति करता हूँ॥ २॥ १७॥

ਧਨਾਸਿਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासिरी महला ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਅਉਖਧੁ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ਦਇਆਲ ॥
अउखधु तेरो नामु दइआल ॥
हे दीनदयाल ! तेरा नाम सर्व रोगों की औषधि है परन्तु

ਮੋਹਿ ਆਤੁਰ ਤੇਰੀ ਗਤਿ ਨਹੀ ਜਾਨੀ ਤੂੰ ਆਪਿ ਕਰਹਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥
मुझ दुखियारे ने तेरी महिमा को नहीं समझा, जबकि तू स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰੇ ਦੁਤੀਆ ਭਾਉ ਨਿਵਾਰਿ ॥
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥
हे मेरे स्वामी ! मुझ पर अपनी कृपा करो और मेरे मन में से दैतभाव दूर कर दो।

ਬੰਧਨ ਕਾਟਿ ਲੇਹੁ ਅਪੁਨੇ ਕਰਿ ਕਬਹੂ ਨ ਆਵਹ ਹਾਰਿ ॥੧॥
बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥१॥
मेरे माया के बन्धन काट कर मुझे अपना सेवक बना लो, ताकि मैं जीवन की बाजी में कभी पराजित न होऊँ॥ १॥

ਤੇਰੀ ਸਰਨਿ ਪਇਆ ਹਉ ਜੀਵਾਂ ਤੂੰ ਸੰਮ੍ਰਥੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਹਰਵਾਨੁ ॥
तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूं सम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥
हे प्रभु ! तू सर्वकला समर्थ एवं मेहरबान है तथा तेरी शरण लेने से ही मैं जीवित रहता हूँ।

ਆਠ ਪਹਰ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਆਰਾਧੀ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੁ ॥੨॥੧੮॥
आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥२॥१८॥
हे नानक ! मैं तो आठ प्रहर प्रभु की आराधना करता रहता हूँ और सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ॥२॥१८॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫
रागु धनासरी महला ५
रागु धनासरी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥
हा हा प्रभ राखि लेहु ॥
हाय ! हाय !! हे प्रभु ! मुझे बचा लो।

ਹਮ ਤੇ ਕਿਛੁ ਨ ਹੋਇ ਮੇਰੇ ਸ੍ਵਾਮੀ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਅਪੁਨਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हम ते किछ न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥१॥ रहाउ ॥
मुझ से कुछ भी नहीं हो सकता, हे मेरे स्वामी ! अंतः अपनी कृपा करके मुझे अपना नाम दे दो ॥१॥ रहाउ ॥

ਅਗਨਿ ਕੁਟੰਬ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰ ॥
अगनि कुट्मब सागर संसार ॥
मेरा कुटुंब संसार सागर के समान है,जिसमें जल के स्थान पर तृष्णा रूपी अग्नि भरी हुई है।

ਭਰਮ ਮੋਹ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਾਰ ॥੧॥
भरम मोह अगिआन अंधार ॥१॥
हर तरफ भ्रम, मोह एवं अज्ञान का अन्धेरा फैला हुआ है।॥१ ॥

ਊਚ ਨੀਚ ਸੁਖ ਦੂਖ ॥
ऊच नीच सूख द्रूख ॥
मैं कभी उच्च बन जाता हूँ, कभी निम्न बन जाता हूँ, कभी सुख भोगता हूँ तो कभी दुःख सहन करता हूँ।

ਧ੍ਰਾਪਸਿ ਨਾਹੀ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੂਖ ॥੨॥
ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥२॥
मुझे सदैव ही माया की तृष्णा एवं भूख लगी रहती है और कभी भी संतुष्ट नहीं होता।॥ २॥

ਮਨਿ ਬਾਸਨਾ ਰਚਿ ਬਿਖੈ ਬਿਆਧਿ ॥
मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥
मेरे मन में वासना है और विषय विकारों में लीन होने से मुझे रोग लग गए हैं।

ਪੰਚ ਦੂਤ ਸੰਗਿ ਮਹਾ ਅਸਾਧ ॥੩॥

पंच दूत संगि महा असाध ॥३॥

माया के पाँच दूत-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार सदैव ही मेरे साथ रहते हैं और ये बड़े असाध्य हैं अर्थात् मेरे वश में आने वाले नहीं हैं।॥ ३॥

ਜੀਅ ਜਹਾਨੁ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨੁ ਤੇਰਾ ॥

जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥

हे प्रभु ! ये सभी जीव, समूचा जगत, प्राण एवं धन सभी तेरा ही है।

ਨਾਨਕ ਜਾਨੁ ਸਦਾ ਹਰਿ ਨੇਰਾ ॥੪॥੧॥੧੯॥

नानक जानु सदा हरि नेरा ॥४॥१॥१९॥

हे नानक ! भगवान को हमेशा अपने समीप ही समझो।॥४॥१॥१६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

धनासरी महला ५ ॥

धनासरी महला ५ ॥

ਦੀਨ ਦਰਦ ਨਿਵਾਰਿ ਠਾਕੁਰ ਰਾਖੈ ਜਨ ਕੀ ਆਪਿ ॥

दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥

दीनों के दुःख निवृत्त करके ईश्वर स्वयं ही अपने सेवकों की लाज रखता है।

ਤਰਣ ਤਾਰਣ ਹਰਿ ਨਿਧਿ ਦੂਖੁ ਨ ਸਕੈ ਬਿਆਪਿ ॥੧॥

तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥१॥

वह तो सुखों का भण्डार है, वह भवसागर में से पार कराने वाला जहाज है, इसलिए उसके भक्तजनों को कोई भी दुःख प्रभावित नहीं कर सकता ॥१॥

ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਭਜਹੁ ਗੁਪਾਲ ॥

साधू संगि भजहु गुपाल ॥

साधु की पावन सभा में सम्मिलित होकर भगवान का भजन करो।

ਆਨ ਸੰਜਮ ਕਿਛੁ ਨ ਸੂਝੈ ਇਹ ਜਤਨ ਕਾਟਿ ਕਲਿ ਕਾਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥

आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥

मुझे तो अन्य कोई साधन नहीं सूझता, इसलिए इन यत्नों द्वारा कलियुग का समय व्यतीत करो॥ रहाउ ॥

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਦਇਆਲ ਪੂਰਨ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਨਹੀ ਕੋਇ ॥

आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥

सृष्टि के आदि एवं अंत में उस पूर्ण दयालु प्रभु के सिवाए अन्य कोई नहीं है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਨਿਵਾਰਿ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋਇ ॥੨॥

जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥२॥

भगवान का भजन करके अपना जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर लो और उस स्वामी का सिमरन करते रहो॥२॥

ਬੇਦ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਕਥੈ ਸਾਸਤ ਭਗਤ ਕਰਹਿ ਬੀਚਾਰੁ ॥

बेद सिम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥

हे प्रभु ! वेद, स्मृतियाँ एवं शास्त्र ये सभी तेरी ही महिमा कथन करते हैं और भक्तजन तेरे गुणों पर विचार करते हैं।

ਮੁਕਤਿ ਪਾਈਐ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਅੰਧਾਰੁ ॥੩॥

मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ॥३॥

मनुष्य को मुक्ति साधुओं की संगति करने से ही प्राप्त होती है और अज्ञानता का अन्धेरा दूर हो जाता है ॥३॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਅਧਾਰੁ ਜਨ ਕਾ ਰਾਸਿ ਪੂੰਜੀ ਏਕ ॥

चरन कमल अधारु जन का रासि पूंजी एक ॥

प्रभु के सुन्दर चरण-कमल भक्तजनों का सहारा है और यही उनकी राशि एवं पूंजी है।

ਤਾਣੁ ਮਾਣੁ ਦੀਬਾਣੁ ਸਾਚਾ ਨਾਨਕ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਟੇਕ ॥੪॥੨॥੨੦॥
ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥
सच्चा प्रभु ही उनका बल, मान-सम्मान एवं दरबार है। हे नानक ! प्रभु ही उनका अवलम्ब है॥ ४॥ २॥ २०॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਫਿਰਤ ਫਿਰਤ ਭੇਟੇ ਜਨ ਸਾਧੂ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਸਮਝਾਇਆ ॥
फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥
इधर-उधर भ्रमण करते हुए जब मेरा साधु-महापुरुष (गुरु) से साक्षात्कार हुआ तो पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दिया कि

ਆਨ ਸਗਲ ਬਿਧਿ ਕਾਂਮਿ ਨ ਆਵੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥
अन्य समस्त विधियों काम नहीं आनी, इसलिए हरि-नाम का ही ध्यान-मनन किया है॥ १ ॥

ਤਾ ਤੇ ਮੋਹਿ ਧਾਰੀ ਓਟ ਗੋਪਾਲ ॥
ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥
इसलिए मैंने ईश्वर का ही सहारा लिया है।

ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਬਿਨਸੇ ਸਗਲ ਜੰਜਾਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥
मैं तो पूर्ण परमेश्वर की शरण में आ गया हूँ और मेरे सभी कष्ट जंजाल नाश हो गए हैं।॥ रहाउ॥

ਸੁਰਗ ਮਿਰਤ ਪਇਆਲ ਭੂ ਮੰਡਲ ਸਗਲ ਬਿਆਪੇ ਮਾਇ ॥
सुरग मिरत पइआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥
स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक एवं समूचे भूमण्डल में माया व्यापक है।

ਜੀਅ ਉਧਾਰਨ ਸਭ ਕੁਲ ਤਾਰਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੨॥
जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥२॥
अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए एवं अपनी समस्त वंशावलि को भवसागर में से पार करवाने के लिए हरि-नाम का ही ध्यान करना चाहिए॥२॥

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗਾਈਐ ਪਾਈਐ ਸਰਬ ਨਿਧਾਨਾ ॥
नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥
हे नानक ! यदि मायातीत प्रभु-नाम का स्तुतिगान किया जाए तो सर्व सुखों के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं।

करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥
करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥
इस रहस्य को किसी विरले पुरुष ने ही समझा है, जिसे जगत का स्वामी प्रभु कृपा करके नाम की देन प्रदान करता है ॥३॥३॥२१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਚਉਪਦੇ
धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे
धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ ਸੇ ਕਰਹਿ ਪਰਾਲ ॥
छोडि जाहि से करहि पराल ॥
अज्ञानी मनुष्य उन क्षणभंगुर पदार्थों को संचित करता रहता है, जिसे उसने यहीं छोड़कर चले जाना है।

ਕਾਮਿ ਨ ਆਵਹਿ ਸੇ ਜੰਜਾਲ ॥
कामि न आवहि से जंजाल ॥
वह उन झांझट-जंजालों में उलझा रहता है, जो किसी काम नहीं आते।

ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਹਿ ਤਿਨ ਸਿਉ ਹੀਤ ॥
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥
वह उनसे स्नेह करता है, जो जीवन के अन्तिम क्षणों में उसके साथ नहीं जाते।

ਜੋ ਬੈਰਾਈ ਸੇਈ ਮੀਤ ॥੧॥
जो बैराई सेई मीत ॥१॥
जो उसके शत्रु हैं, वही उसके मित्र बने हुए हैं।॥१॥

ਐਸੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥
ऐसे भरमि भुले संसारा ॥
ऐसे ही यह संसार भ्रम में फँसकर भटका हुआ है और

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਖੋਇ ਗਵਾਰਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥
अज्ञानी मनुष्य यूं ही अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ गंवा रहा है ॥ रहाउ ॥

ਸਾਚੁ ਧਰਮੁ ਨਹੀ ਭਾਵੈ ਡੀਠਾ ॥
साचु धरमु नही भावै डीठा ॥
वह सत्य एवं धर्म को देखना भी पसंद नहीं करता।

ਝੂਠ ਧੋਹ ਸਿਉ ਰਚਿਓ ਮੀਠਾ ॥
झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥
वह तो झूठ एवं छल-कपट में ही मग्न रहता है और यह उसे बड़ा मीठा लगता है।

ਦਾਤਿ ਪਿਆਰੀ ਵਿਸਰਿਆ ਦਾਤਾਰਾ ॥
दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥
वह दी हुई वस्तुओं से तो बड़ा प्रेम करता है परन्तु देने वाले दातार को भूल गया है।

ਜਾਣੈ ਨਾਹੀ ਮਰਣੁ ਵਿਚਾਰਾ ॥੨॥
जाणै नाही मरणु विचारा ॥२॥
बेचारा भाग्यहीन अपनी मृत्यु का ख्याल नहीं करता ॥२॥

ਵਸਤੁ ਪਰਾਈ ਕਉ ਉਠਿ ਰੋਵੈ ॥
वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥
वह पराई वस्तु को प्राप्त करने के लिए उठ-उठकर कोशिश करता है और न मिलने पर विलाप करता है।

ਕਰਮ ਧਰਮ ਸਗਲਾ ਈ ਖੋਵੈ ॥
करम धरम सगला ई खोवै ॥
वह अपने धर्म कर्म का समूचा फल गंवा देता है।

ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂਝੈ ਆਵਣ ਜਾਣੇ ॥
हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥
वह भगवान के हुक्म को नहीं समझता, इसलिए उसे जन्म-मरण के चक्र पड़े रहते हैं।

ਪਾਪ ਕਰੈ ਤਾ ਪਛੋਤਾਣੇ ॥੩॥
पाप करै ता पछोताणे ॥३॥
जब वह पाप करता है तो तदुपरांत पछताता है॥ ३॥

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸੋ ਪਰਵਾਣੁ ॥
जो तुधु भावै सो परवाणु ॥
हे प्रभु ! जो तुझे मंजूर है, वही मुझे सहर्ष स्वीकार है।

ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਨੋ ਕੁਰਬਾਣੁ ॥
तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥
मैं तेरी रज़ा पर कुर्बान जाता हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਗਰੀਬੁ ਬੰਦਾ ਜਨੁ ਤੇਰਾ ॥
नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥
गरीब नानक तेरा बंदा एवं सेवक है,

ਰਾਖਿ ਲੇਇ ਸਾਹਿਬੁ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥੪॥੧॥੨੨॥
राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥१॥२२॥
हे मालिक प्रभु ! मेरी रक्षा करना ॥ ४ ॥ १॥ २२ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਮੋਹਿ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭੁ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ॥
मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥
मुझ विनीत को प्रभु का नाम ही एक सहारा है।

ਖਾਟਣ ਕਉ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰੋਜਗਾਰੁ ॥
खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥
मेरे कमाने के लिए हरि-नाम ही मेरा रोजगार है।

ਸੰਚਣ ਕਉ ਹਰਿ ਏਕੋ ਨਾਮੁ ॥
संचण कउ हरि एको नामु ॥
जिस व्यक्ति के पास संचित करने के लिए एकमात्र हरि-नाम है,

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਤਾ ਕੈ ਆਵੈ ਕਾਮ ॥੧॥
हलति पलति ता कै आवै काम ॥१॥
यह नाम ही इहलोक एवं आगे परलोक में उसके काम आता है॥ १॥

ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਪ੍ਰਭ ਰੰਗਿ ਅਪਾਰ ॥
नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥
प्रभु के प्रेम रंग एवं नाम में लीन होकर

ਸਾਧ ਗਾਵਹਿ ਗੁਣ ਏਕ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥ ਰਹਾਉ ॥
साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥
साधुजन तो केवल निराकार परमेश्वर का ही गुणगान करते हैं।॥ रहाउ ॥

ਸਾਧ ਕੀ ਸੋਭਾ ਅਤਿ ਮਸਕੀਨੀ ॥
साध की सोभा अति मसकीनी ॥
साधु की शोभा उसकी अत्यंत विनम्रता में है।

ਸੰਤ ਵਡਾਈ ਹਰਿ ਜਸੁ ਚੀਨੀ ॥
संत वडाई हरि जसु चीनी ॥
संत का बड़प्पन उसके हरि-यश गायन करने से जाना जाता है।

ਅਨਦੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਭਗਤਿ ਗੋਵਿੰਦ ॥
अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥
परमात्मा की भक्ति उनके हृदय में आनंद उत्पन्न करती है।

ਸੁਖੁ ਸੰਤਨ ਕੈ ਬਿਨਸੀ ਚਿੰਦ ॥੨॥
सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥२॥
संतों के मन में यही सुख की अनुभूति होती है कि उनकी चिंता का नाश हो जाता है॥ २॥

ਜਹ ਸਾਧ ਸੰਤਨ ਹੋਵਹਿ ਇਕਤ੍ਰ ॥
जह साध संतन होवहि इकत्र ॥
जहाँ भी साधु-संत एकत्र होते हैं,

ਤਹ ਹਰਿ ਜਸੁ ਗਾਵਹਿ ਨਾਦ ਕਵਿਤ ॥
तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥
वहाँ ही वे संगीत एवं काव्य द्वारा हरि का यश-गान करते हैं।

ਸਾਧ ਸਭਾ ਮਹਿ ਅਨਦ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
साध सभा महि अनद बिस्राम ॥
साधुओं की सभा में आनंद एवं शान्ति की प्राप्ति होती है।

ਉਨ ਸੰਗੁ ਸੋ ਪਾਏ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਕਰਾਮ ॥੩॥
उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥३॥
उनकी संगति भी वही मनुष्य करता है, जिसके मस्तक पर पूर्व कर्मों द्वारा ऐसा भाग्य लिखा होता है॥ ३॥

ਦੁਇ ਕਰ ਜੋੜਿ ਕਰੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥
दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥
मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि

ਚਰਨ ਪਖਾਰਿ ਕਹਾਂ ਗੁਣਤਾਸ ॥
चरन पखारि कहां गुणतास ॥
मैं संतों के चरण धोता रहूँ और गुणों के भण्डार प्रभु का ही नाम-सिमरन करने में मग्न रहूँ।

ਪ੍ਰਭ ਦਇਆਲ ਕਿਰਪਾਲ ਹਜੂਰਿ ॥
प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥
जो हमेशा ही दयालु एवं कृपालु प्रभु की उपस्थिति में रहते हैं,"

ਨਾਨਕੁ ਜੀਵੈ ਸੰਤਾ ਧੂਰਿ ॥੪॥੨॥੨੩॥
नानकु जीवै संता धूरि ॥४॥२॥२३॥
नानक तो उन संतों की चरण-धूलि के सहारे ही जीवित है।॥४॥२॥२३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥
धनासरी मः ५ ॥
धनासरी मः ५ ॥

ਸੋ ਕਤ ਡਰੈ ਜਿ ਖਸਮੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੈ ॥
सो कत डरै जि खसमु सम्हारै ॥
जो मालिक-प्रभु की आराधना करता है, उस व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नहीं होता।

ਡਰਿ ਡਰਿ ਪਚੇ ਮਨਮੁਖ ਵੇਚਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥१॥ रहाउ ॥
बेचारे मनमुखी व्यक्ति डर-डर कर ही नष्ट हो गए हैं॥१॥ रहाउ ॥

ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗੁਰਦੇਵ ॥
सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥
मेरे माता-पिता रूप गुरुदेव मेरे रक्षक हैं,

ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਜਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਸੇਵ ॥
सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥
जिनका (स्वरूप) दर्शन शुभ फलदायक है और उनकी सेवा भी निर्मल है।

ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਜਾ ਕੀ ਰਾਸਿ ॥
एकु निरंजनु जा की रासि ॥
जिस मनुष्य की पूंजी एक निरंजन प्रभु ही है,

ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹੋਵਤ ਪਰਗਾਸ ॥੧॥
मिलि साधसंगति होवत परगास ॥१॥
सत्संगति में सम्मिलित होने से उसके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है।॥१॥

ਜੀਅਨ ਕਾ ਦਾਤਾ ਪੂਰਨ ਸਭ ਠਾਇ ॥
जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥
सब जीवों का दाता प्रभु सर्वव्यापी है।

ਕੋਟਿ ਕਲੇਸ ਮਿਟਹਿ ਹਰਿ ਨਾਇ ॥
कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥
हरि-नाम से करोड़ों ही क्लेश मिट जाते हैं।

ਜਨਮ ਮਰਨ ਸਗਲਾ ਦੁਖੁ ਨਾਸੈ ॥
जनम मरन सगला दुखु नासै ॥
व्यक्ति का जन्म-मरण का समूचा दुःख मिट जाता है

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾ ਕੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਾਸੈ ॥੨॥
गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥२॥
गुरु के सान्निध्य में व्यक्ति के मन एवं तन में भगवान का निवास हो जाता है।॥ २॥

ਜਿਸ ਨੋ ਆਪਿ ਲਏ ਲੜਿ ਲਾਇ ॥
जिस नो आपि लए लड़ि लाइ ॥
जिसे वह अपने साथ मिला लेता है,

ਦਰਗਹ ਮਿਲੈ ਤਿਸੈ ਹੀ ਜਾਇ ॥
दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥
उस व्यक्ति को दरबार में सम्मानजनक स्थान मिल जाता है।

ਸੇਈ ਭਗਤ ਜਿ ਸਾਚੇ ਭਾਣੇ ॥
सेई भगत जि साचे भाणे ॥
जो सच्चे प्रभु को अच्छे लगते हैं, वही व्यक्ति वास्तव में भक्त हैं और

ਜਮਕਾਲ ਤੇ ਭਏ ਨਿਕਾਣੇ ॥੩॥
जमकाल ते भए निकाणे ॥३॥
वे मृत्यु से निडर हो जाते हैं।॥३॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਚੁ ਦਰਬਾਰੁ ॥
साचा साहिबु सचु दरबारु ॥
मालिक-प्रभु सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है।

ਕੀਮਤਿ ਕਉਣੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥
कीमति कउणु कहै बीचारु ॥
उसका मूल्यांकन कौन वर्णन करे और कौन उसके गुणों का कथन करे ?

ਘਟਿ ਘਟਿ ਅੰਤਰਿ ਸਗਲ ਅਧਾਰੁ ॥
घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥
वह तो प्रत्येक हृदय में निवास करता है और सबका जीवनाधार है।

ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਸੰਤ ਰੇਣਾਰੁ ॥੪॥੩॥੨੪॥
नानकु जाचै संत रेणारु ॥४॥३॥२४॥
नानक तो संतों की चरण-धूलि ही माँगता है॥ ४॥ ३॥ २४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫
धनासरी महला ५
धनासरी महला ५

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਘਰਿ ਬਾਹਰਿ ਤੇਰਾ ਭਰਵਾਸਾ ਤੂ ਜਨ ਕੈ ਹੈ ਸੰਗਿ ॥
घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥
हे ईश्वर ! मुझे घर एवं बाहर तेरा ही भरोसा है और तू हमेशा ही अपने सेवक के संग रहता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਅਪੁਨੇ ਨਾਮੁ ਜਪਉ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ॥੧॥
करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥१॥
हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मैं प्रेमपूर्वक तेरे नाम का जाप करता रहूँ॥ १॥

ਜਨ ਕਉ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਕਾ ਤਾਣੁ ॥
जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥
सेवक को तो अपने प्रभु का ही बल प्राप्त है।

ਜੋ ਤੂ ਕਰਹਿ ਕਰਾਵਹਿ ਸੁਆਮੀ ਸਾ ਮਸਲਤਿ ਪਰਵਾਣੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥
हे मेरे स्वामी ! जो कुछ तुम स्वयं करते एवं मुझ से करवाते हो, तेरी वह प्रेरणात्मक सलाह मुझे सहर्ष स्वीकार है॥ रहाउ ॥

ਪਤਿ ਪਰਮੇਸਰੁ ਗਤਿ ਨਾਰਾਇਣੁ ਧਨੁ ਗੁਪਾਲ ਗੁਣ ਸਾਖੀ ॥
पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥
वह नारायण स्वरूप, जगतपालक परमेश्वर ही मेरे लिए मेरी लाज-प्रतिष्ठा है, वही मेरी मुक्ति है और उसके गुणों की कथा ही मेरा धन है।

ਚਰਨ ਸਰਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਹਰਿ ਹਰਿ ਸੰਤੀ ਇਹ ਬਿਧਿ ਜਾਤੀ ॥੨॥੧॥੨੫॥
चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥२॥१॥२५॥
हे दास नानक ! संतों ने यह युक्ति जान ली है कि परमात्मा के चरणों की शरण में पड़े रहो।॥ २॥ १॥ २५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਪਾਏ ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ॥
सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥
सब मनोरथ प्रभु से प्राप्त कर लिए हैं और गुरु ने अपने गले से लगाकर बचा लिया है।

ਸੰਸਾਰ ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਜਲਨਿ ਨ ਦੀਨੇ ਕਿਨੈ ਨ ਦੁਤਰੁ ਭਾਖੇ ॥੧॥
संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥१॥
गुरु ने संसार-सागर की तृष्णा रूपी अग्नि में जलने नहीं दिया और किसी भी भक्त ने कभी यह नहीं कहा कि संसार-सागर में से पार होना कठिन है॥१॥

ਜਿਨ ਕੈ ਮਨਿ ਸਾਚਾ ਬਿਸ੍ਵਾਸੁ ॥
जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥
जिनके मन में प्रभु के प्रति सच्चा विश्वास है,

ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਸੁਆਮੀ ਕੀ ਸੋਭਾ ਆਨਦੁ ਸਦਾ ਉਲਾਸੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥
अपने स्वामी की शोभा देख-देखकर उनके मन में सदैव ही आनंद एवं उल्लास बना रहता है॥ रहाउ॥

ਚਰਨ ਸਰਨਿ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਸਾਖਿਓ ॥
चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥
उन्होंने अन्तर्यामी पूर्ण परमेश्वर के चरणों की शरण लेकर उसके दर्शन कर लिए हैं।

ਜਾਨਿ ਬੂਝਿ ਅਪਨਾ ਕੀਓ ਨਾਨਕ ਭਗਤਨ ਕਾ ਅੰਕੁਰੁ ਰਾਖਿਓ ॥੨॥੨॥੨੬॥
जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥२॥२॥२६॥
हे नानक ! प्रभु ने उनकी भावना को भलीभांति समझ कर उन्हें अपना बना लिया है। उसने अपने भक्तों के मन में भक्ति के अंकुरित हो रहे अंकुर को तृष्णा रूपी अग्नि में जलने से बचा लिया है ॥२॥२॥२६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਹ ਜਹ ਪੇਖਉ ਤਹ ਹਜੂਰਿ ਦੂਰਿ ਕਤਹੁ ਨ ਜਾਈ ॥
जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥
मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही परमात्मा प्रत्यक्ष दिखाई देता है, वह किसी भी स्थान से दूर नहीं है।

ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬਤ੍ਰ ਮੈ ਮਨ ਸਦਾ ਧਿਆਈ ॥੧॥
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥१॥
वह तो सब में समा रहा है, इसलिए मन में सदैव ही उसका ध्यान-मनन करो ॥१॥

ਈਤ ਊਤ ਨਹੀ ਬੀਛੁੜੈ ਸੋ ਸੰਗੀ ਗਨੀਐ ॥
ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥
केवल उसे ही साथी गिना जाता है जो इहलोक एवं परलोक में जुदा नहीं होता।

ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਜੋ ਨਿਮਖ ਮਹਿ ਸੋ ਅਲਪ ਸੁਖੁ ਭਨੀਐ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥
जो एक क्षण में ही नाश हो जाता है, उसे तुच्छ सुख कहा जाता है।रहाउ॥

ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੈ ਅਪਿਆਉ ਦੇਇ ਕਛੁ ਊਨ ਨ ਹੋਈ ॥
प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥
वह भोजन देकर सब जीवों का पालन-पोषण करता है और उन्हें किसी भी वस्तु की कमी नहीं आती।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸੰਮਾਲਤਾ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸੋਈ ॥੨॥
सासि सासि समालता मेरा प्रभु सोई ॥२॥
मेरा प्रभु श्वास-श्वास जीवों की देखरेख करता रहता है॥ २॥

ਅਛਲ ਅਛੇਦ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭ ਊਚਾ ਜਾ ਕਾ ਰੂਪੁ ॥
अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥
प्रभु से किसी प्रकार का कोई छल नहीं किया जा सकता, वह तो अटल एवं अनंत है। उसका रूप भी सर्वोच्च है।

ਜਪਿ ਜਪਿ ਕਰਹਿ ਅਨੰਦੁ ਜਨ ਅਚਰਜ ਆਨੂਪੁ ॥੩॥

जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥३॥

उसकी बड़ी अद्भुत हस्ती है और वह बहुत ही सुन्दर है। उसके सेवक उसके नाम का भजन सिमरन करके आनंद प्राप्त करते हैं।॥३॥

ਸਾ ਮਤਿ ਦੇਹੁ ਦਇਆਲ ਪ੍ਰਭ ਜਿਤੁ ਤੁਮਹਿ ਅਰਾਧਾ ॥

सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥

हे दयालु प्रभु ! मुझे ऐसी मति दीजिए, जिससे मैं तेरी आराधना करता रहूँ।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਰੇਨ ਪਗ ਸਾਧਾ ॥੪॥੩॥੨੭॥
नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥४॥३॥२७॥
हे प्रभु ! नानक तुझसे तेरे साधुओं की चरणरज का दान माँगता है ॥४॥३॥२७॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਿਨਿ ਤੁਮ ਭੇਜੇ ਤਿਨਹਿ ਬੁਲਾਏ ਸੁਖ ਸਹਜ ਸੇਤੀ ਘਰਿ ਆਉ ॥
जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥
जिस परमात्मा ने तुझे दुनिया में भेजा है, उसने ही अब तुझे वापिस बुला लिया है। अंतः सुख एवं आनंदपूर्वक अपने मूल घर (परमात्मा के चरणों) में वापिस आ जाओ।

ਅਨਦ ਮੰਗਲ ਗੁਨ ਗਾਉ ਸਹਜ ਧੁਨਿ ਨਿਹਚਲ ਰਾਜੁ ਕਮਾਉ ॥੧॥
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥१॥
आनंदपूर्वक मधुर ध्वनि में प्रभु-महिमा के मंगल गीत गायन करो और इस शरीर रूपी नगरी पर अटल राज करो॥ १॥

ਤੁਮ ਘਰਿ ਆਵਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤ ॥
तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥
हे मेरे मित्र ! तुम अपने मूल घर में वापिस आ जाओ।

ਤੁਮਰੇ ਦੋਖੀ ਹਰਿ ਆਪਿ ਨਿਵਾਰੇ ਅਪਦਾ ਭਈ ਬਿਤੀਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥
तुम्हारे वैरियों-कामवासना, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार को भगवान ने स्वयं ही तुझसे दूर कर दिया है तथा तेरी विपत्ति का समय अब बीत गया है॥ रहाउ ॥

ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਨੇ ਪ੍ਰਭ ਕਰਨੇਹਾਰੇ ਨਾਸਨ ਭਾਜਨ ਥਾਕੇ ॥
प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥
रचयिता प्रभु ने तुझे दुनिया में लोकप्रिय कर दिया है और अब तेरी भाग-दौड़ खत्म हो गई है।

ਘਰਿ ਮੰਗਲ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਅਪੁਨੈ ਖਸਮਿ ਨਿਵਾਜੇ ॥੨॥
घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥२॥
अब तेरे घर में नित्य ही खुशी की अनहद ध्वनियों वाले बाजे बजते रहते हैं और तेरे अपने मालिक ने तुझे सत्कृत किया है॥ २॥

ਅਸਥਿਰ ਰਹਹੁ ਡੋਲਹੁ ਮਤ ਕਬਹੂ ਗੁਰ ਕੈ ਬਚਨਿ ਅਧਾਰਿ ॥
असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥
गुरु की वाणी के आधार पर स्थिर होकर रहो और कभी भी विचलित मत होना।

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰੁ ਸਗਲ ਭੂ ਮੰਡਲ ਮੁਖ ਊਜਲ ਦਰਬਾਰ ॥੩॥
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥३॥
सारा जगत तेरी जय-जयकार करेगा और तूं उज्ज्वल मुख से प्रभु के दरबार में सम्मानपूर्वक जाएगा॥ ३॥

ਜਿਨ ਕੇ ਜੀਅ ਤਿਨੈ ਹੀ ਫੇਰੇ ਆਪੇ ਭਇਆ ਸਹਾਈ ॥
जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥
जिसने ये जीव उत्पन्न किए हैं, उसने ही इन्हें भटका कर फिर से सन्मार्ग लगाया है और वह स्वयं ही इनका सहायक बन गया है।

ਅਚਰਜੁ ਕੀਆ ਕਰਨੈਹਾਰੈ ਨਾਨਕ ਸਚੁ ਵਡਿਆਈ ॥੪॥੪॥੨੮॥
अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥४॥४॥२८॥
हे नानक ! रचयिता प्रभु ने एक अद्भुत लीला रची है और उसकी बड़ाई सदैव सत्य है ॥४॥ ४॥ २८॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬
धनासरी महला ५ घरु ६
धनासरी महला ५ घर ६ ॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੁਨਹੁ ਸੰਤ ਪਿਆਰੇ ਬਿਨਉ ਹਮਾਰੇ ਜੀਉ ॥
सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥
हे प्यारे संतजनो ! मेरी विनती ध्यानपूर्वक सुनो;

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਜੀਉ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥
भगवान के सिमरन के बिना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती ॥ रहाउ ॥

ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਕਰਮ ਕਰਿ ਤਾਰਨ ਤਰਨ ਹਰਿ ਅਵਰਿ ਜੰਜਾਲ ਤੇਰੈ ਕਾਹੂ ਨ ਕਾਮ ਜੀਉ ॥
मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥
हे मेरे मन ! शुभ एवं पवित्र कर्म करो, भगवान तो भवसागर में से पार करवाने वाला जहाज है; अन्य झंझट-जंजाल तेरे किसी काम नहीं आने।

ਜੀਵਨ ਦੇਵਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੇਵਾ ਇਹੁ ਉਪਦੇਸੁ ਮੋ ਕਉ ਗੁਰਿ ਦੀਨਾ ਜੀਉ ॥੧॥
जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मो कउ गुरि दीना जीउ ॥१॥
गुरु ने मुझे यह उपदेश दिया है कि अपने जीवन में परब्रह्म-गुरुदेव की ही उपासना करो।॥ १॥

ਤਿਸੁ ਸਿਉ ਨ ਲਾਈਐ ਹੀਤੁ ਜਾ ਕੋ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਬੀਤੁ ਅੰਤ ਕੀ ਬਾਰ ਓਹੁ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ॥
तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥
उससे स्नेह नहीं करना चाहिए, जिसकी अपनी कुछ भी हस्ती न हो चूंकि वह जीवन के अंतिम क्षणों में मनुष्य के साथ नहीं जाता।

ਮਨਿ ਤਨਿ ਤੂ ਆਰਾਧ ਹਰਿ ਕੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਾਧ ਜਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ਤੇਰੇ ਬੰਧਨ ਛੂਟੈ ॥੨॥
मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥२॥
तू अपने मन एवं तन में भगवान की आराधना कर, उसके प्रियतम साधुओं की संगति करने से तेरे माया के तमाम बन्धन समाप्त हो जाएँगे ॥२॥

ਗਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸਰਨ ਹਿਰਦੈ ਕਮਲ ਚਰਨ ਅਵਰ ਆਸ ਕਛੁ ਪਟਲੁ ਨ ਕੀਜੈ ॥
गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥
उस परब्रह्म की शरण लो और अपने हृदय में चरण कमल का ध्यान करो। उसके सिवाय किसी अन्य सहारे की कुछ भी आशा मत करो।

ਸੋਈ ਭਗਤੁ ਗਿਆਨੀ ਧਿਆਨੀ ਤਪਾ ਸੋਈ ਨਾਨਕ ਜਾ ਕਉ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥੩॥੧॥੨੯॥
सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥३॥१॥२९॥
हे नानक ! जिस पर भगवान कृपा करता है, वास्तव में वही भक्त, वही ज्ञानी, ध्यानी एवं तपस्वी है ॥ ३॥ १॥ २६ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਮੇਰੇ ਲਾਲ ਭਲੋ ਰੇ ਭਲੋ ਰੇ ਭਲੋ ਹਰਿ ਮੰਗਨਾ ॥
मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥
हे मेरे प्रिय ! भगवान का नाम माँगना बड़ा उत्तम एवं भला है।

ਦੇਖਹੁ ਪਸਾਰਿ ਨੈਨ ਸੁਨਹੁ ਸਾਧੂ ਕੇ ਬੈਨ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਚਿਤਿ ਰਾਖੁ ਸਗਲ ਹੈ ਮਰਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥

हे भाई ! अपने नेत्र खोलकर भलीभांति देखो एवं साधु के अनमोल वचन सुनो। अपने प्राणों के पति प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखो, चूंकि सभी ने एक न एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होना है॥रहाउ ॥

ਚੰਦਨ ਚੋਆ ਰਸ ਭੋਗ ਕਰਤ ਅਨੇਕੈ ਬਿਖਿਆ ਬਿਕਾਰ ਦੇਖੁ ਸਗਲ ਹੈ ਫੀਕੇ ਏਕੈ ਗੋਬਿਦ ਕੋ ਨਾਮੁ ਨੀਕੋ ਕਹਤ ਹੈ ਸਾਧ ਜਨ ॥

चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥

तुम अपने शरीर पर चंदन एवं इत्र लगाते हो, स्वादिष्ट पदार्थ खाते हो तथा अनेकों विषय-विकार भोगते हो, देख लो, ये सभी रस फीके हैं। साधुजन कहते हैं कि परमात्मा का नाम ही सर्वोत्तम है।

ਤਨੁ ਧਨੁ ਆਪਨ ਥਾਪਿਓ ਹਰਿ ਜਪੁ ਨ ਨਿਮਖ ਜਾਪਿਓ ਅਰਥੁ ਦ੍ਰਬੁ ਦੇਖੁ ਕਛੁ ਸੰਗਿ ਨਾਹੀ ਚਲਨਾ ॥੧॥

तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥१॥

तुम अपने शरीर एवं धन को अपना समझते हो और भगवान का भजन सिमरन एक क्षण भर के लिए भी नहीं करते।देख लो, यह धन-संपत्ति एवं दौलत कुछ भी तेरे साथ नहीं जाना॥ १॥

ਜਾ ਕੋ ਰੇ ਕਰਮੁ ਭਲਾ ਤਿਨਿ ਓਟ ਗਹੀ ਸੰਤ ਪਲਾ ਤਿਨ ਨਾਹੀ ਰੇ ਜਮੁ ਸੰਤਾਵੈ ਸਾਧੂ ਕੀ ਸੰਗਨਾ ॥

जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥

जिस मनुष्य की अच्छी किस्मत है, वही संतों की शरण लेता है। संतों की संगति करने से मृत्यु कदापि पीड़ित नहीं करती।

ਪਾਇਓ ਰੇ ਪਰਮ ਨਿਧਾਨੁ ਮਿਟਿਓ ਹੈ ਅਭਿਮਾਨੁ ਏਕੈ ਨਿਰੰਕਾਰ ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਲਗਨਾ ॥੨॥੨॥੩੦॥

पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥२॥२॥३०॥

हे नानक ! उसने नाम रूपी परम खजाना प्राप्त कर लिया है, उसका अभिमान मिट गया है और मन एक निराकार प्रभु से लग गया है ॥२॥२॥३०॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੭
धनासरी महला ५ घरु ७
धनासरी महला ५ घरु ७

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਏਕੁ ਸਿਮਰਿ ਪਿਆਰੇ ॥
हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥
हे प्यारे ! एक ईश्वर का सिमरन करो।

ਕਲਿ ਕਲੇਸ ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਹਾ ਭਉਜਲੁ ਤਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥
वह तुझे कलह-क्लेश लोभ एवं मोह से बचाएगा और तुझे महा भयानक संसार-सागर से पार करवा देगा।॥ रहाउ ॥

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਨਿਮਖ ਨਿਮਖ ਦਿਨਸੁ ਰੈਨਿ ਚਿਤਾਰੇ ॥
सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥
श्वास-श्वास, क्षण-क्षण एवं दिन-रात भगवान को मन में याद करते रहो।

ਸਾਧਸੰਗ ਜਪਿ ਨਿਸੰਗ ਮਨਿ ਨਿਧਾਨੁ ਧਾਰੇ ॥੧॥
साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥१॥
निश्चित होकर साध-संगति में भजन करके नाम रूपी खजाने को अपने हृदय में बसाकर रखो ॥ १॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਮਸਕਾਰ ਗੁਨ ਗੋਬਿਦ ਬੀਚਾਰੇ ॥
चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥
परमात्मा के सुन्दर चरण-कमलों को नमन करो और उसके गुणों का चिन्तन करो।

ਸਾਧ ਜਨਾ ਕੀ ਰੇਨ ਨਾਨਕ ਮੰਗਲ ਸੂਖ ਸਧਾਰੇ ॥੨॥੧॥੩੧॥
साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥२॥१॥३१॥
हे नानक ! संतजनों की चरण-धूलि बड़ी खुशी एवं सुख प्रदान करती है॥ २॥ १॥ ३१ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੮ ਦੁਪਦੇ
धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे
धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਮਰਉ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖ ਪਾਵਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਮਾਲੇ ॥
सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥
मैं परमात्मा का नाम-स्मरण करता हूँ और नाम-स्मरण करके सुखी होता हूँ। श्वास-श्वास से उसे ही स्मरण करता हूँ।

ਇਹ ਲੋਕਿ ਪਰਲੋਕਿ ਸੰਗਿ ਸਹਾਈ ਜਤ ਕਤ ਮੋਹਿ ਰਖਵਾਲੇ ॥੧॥
इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥१॥
परमात्मा का नाम ही इहलोक एवं आगे परलोक में मेरे साथ मेरा सहायक है और हर जगह मेरी रक्षा करता है ॥१॥

ਗੁਰ ਕਾ ਬਚਨੁ ਬਸੈ ਜੀਅ ਨਾਲੇ ॥
गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥
गुरु की वाणी मेरे प्राणों के साथ रहती है।

ਜਲਿ ਨਹੀ ਡੂਬੈ ਤਸਕਰੁ ਨਹੀ ਲੇਵੈ ਭਾਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਜਾਲੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥ रहाउ ॥
यह जल में नहीं डूबती, चोर इसे चुरा कर नहीं ले जा सकता और अग्नि इसे जला नहीं सकती ॥१॥ रहाउ ॥

ਨਿਰਧਨ ਕਉ ਧਨੁ ਅੰਧੁਲੇ ਕਉ ਟਿਕ ਮਾਤ ਦੂਧੁ ਜੈਸੇ ਬਾਲੇ ॥
निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥
जैसे निर्धन का सहारा धन है, अन्धे का सहारा छड़ी है और बालक का सहारा माता का दूध है, वैसे ही मुझे गुरु की वाणी का सहारा है।

ਸਾਗਰ ਮਹਿ ਬੋਹਿਥੁ ਪਾਇਓ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਕਰੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਿਰਪਾਲੇ ॥੨॥੧॥੩੨॥
सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले ॥२॥१॥३२॥
हे नानक ! कृपा के घर परमात्मा ने मुझ पर अपनी कृपा की है और मुझे भवसागर में से पार निकलने के लिए हरि-नाम रूपी जहाज मिल गया है॥ २॥ १॥ ३२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਭਏ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਗੋਬਿੰਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਰਿਦੈ ਸਿੰਚਾਈ ॥
भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अम्रितु रिदै सिंचाई ॥
जब दयालु परमात्मा कृपालु हो गया तो नामामृत को हृदय में ही संचित कर लिया।

ਨਵ ਨਿਧਿ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਹਰਿ ਲਾਗਿ ਰਹੀ ਜਨ ਪਾਈ ॥੧॥
नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥१॥
नवनिधियाँ एवं ऋद्धियाँ-सिद्धियों हरि के सेवक के चरणों में रहती हैं।॥ १॥

ਸੰਤਨ ਕਉ ਅਨਦੁ ਸਗਲ ਹੀ ਜਾਈ ॥
संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥
संतजनों को तो हर जगह पर आनंद ही आनंद बना रहता है।

ਗ੍ਰਿਹਿ ਬਾਹਰਿ ਠਾਕੁਰੁ ਭਗਤਨ ਕਾ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਸ੍ਰਬ ਠਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ग्रिहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥
भक्तों का ठाकुर प्रभु उनके हृदय-घर एवं जगत में सर्वव्यापी है॥ १॥ रहाउ॥

ਤਾ ਕਉ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰਾ ਜਾ ਕੈ ਅੰਗਿ ਗੁਸਾਈ ॥
ता कउ कोइ न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥
प्रभु जिस मनुष्य के साथ होता है, फिर कोई भी उसकी समानता करने वाला नहीं होता।

ਜਮ ਕੀ ਤ੍ਰਾਸ ਮਿਟੈ ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ॥੨॥੨॥੩੩॥
जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥२॥२॥३३॥
हे नानक ! जिसका सिमरन करने से मृत्यु का भय मिट जाता है, उसके नाम का ही ध्यान-मनन करते रहो ॥ २ ॥ २॥ ३३ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਦਰਬਵੰਤੁ ਦਰਬੁ ਦੇਖਿ ਗਰਬੈ ਭੂਮਵੰਤੁ ਅਭਿਮਾਨੀ ॥
दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥
जैसे कोई धनवान व्यक्ति अपने धन को देख-देख कर बड़ा घमण्ड करता है, भूमिपति अपनी भूमि के कारण अभिमानी बन जाता है और

ਰਾਜਾ ਜਾਨੈ ਸਗਲ ਰਾਜੁ ਹਮਰਾ ਤਿਉ ਹਰਿ ਜਨ ਟੇਕ ਸੁਆਮੀ ॥੧॥
राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥१॥
जैसे कोई राजा समझता है कि सारा राज्य मेरा अपना ही है, वैसे ही भक्तजनों को अपने स्वामी का सहारा है॥ १॥

ਜੇ ਕੋਊ ਅਪੁਨੀ ਓਟ ਸਮਾਰੈ ॥
जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥
यदि कोई प्राणी अपने सहारे भगवान को हृदय में स्मरण करता है, और

ਜੈਸਾ ਬਿਤੁ ਤੈਸਾ ਹੋਇ ਵਰਤੈ ਅਪੁਨਾ ਬਲੁ ਨਹੀ ਹਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी समर्था अनुसार कार्य करता है, तो वह अपना नाम रूपी बल नहीं हारता ॥१॥ रहाउ॥

ਆਨ ਤਿਆਗਿ ਭਏ ਇਕ ਆਸਰ ਸਰਣਿ ਸਰਣਿ ਕਰਿ ਆਏ ॥
आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥
मैंने अन्य सहारे छोड़कर एक प्रभु का ही सहारा लिया है। हे प्रभु ! मुझे अपनी शरण में लो, अपनी शरण में लो, यह पुकारता हुआ मैं तेरे द्वार पर आया हूँ।

ਸੰਤ ਅਨੁਗ੍ਰਹ ਭਏ ਮਨ ਨਿਰਮਲ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੨॥੩॥੩੪॥
संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥२॥३॥३४॥
हे नानक ! संतों के अनुग्रह से मेरा मन निर्मल हो गया है और अब मैं भगवान का ही गुणगान करता रहता हूँ ॥ २॥ ३॥ ३४ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਾਗੋ ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਸੋ ਕਹੀਅਤ ਹੈ ਸੂਰਾ ॥
जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥
जिस मनुष्य को इस युग में भगवान का प्रेम-रंग लग गया है, वास्तव में वही शूरवीर कहा जाता है।

ਆਤਮ ਜਿਣੈ ਸਗਲ ਵਸਿ ਤਾ ਕੈ ਜਾ ਕਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ॥੧॥
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥१॥
जिसका सतगुरु पूर्ण है, वह अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त कर लेता है और समूचा जगत उसके वश में हो जाता है ॥१॥

ਠਾਕੁਰੁ ਗਾਈਐ ਆਤਮ ਰੰਗਿ ॥
ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥
आत्मा के स्नेह से जगत के ठाकुर परमात्मा का स्तुतिगान करना चाहिए।

ਸਰਣੀ ਪਾਵਨ ਨਾਮ ਧਿਆਵਨ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਨ ਸੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥१॥ रहाउ ॥
उसकी शरण लेने से एवं नाम-स्मरण करने से मनुष्य सहज ही उसके साथ समा जाता है॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਜਨ ਕੇ ਚਰਨ ਵਸਹਿ ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ ਸੰਗਿ ਪੁਨੀਤਾ ਦੇਹੀ ॥
जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥
भगवान के भक्तों के चरण मेरे हृदय में निवास करते है और उनकी संगति करने से मेरा तन पवित्र हो गया है।

ਜਨ ਕੀ ਧੂਰਿ ਦੇਹੁ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਨਾਨਕ ਕੈ ਸੁਖੁ ਏਹੀ ॥੨॥੪॥੩੫॥
जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥२॥४॥३५॥
हे कृपा के भण्डार ! नानक के लिए तो यही परम-सुख है कि मुझे अपने भक्तों की चरण-धूलि प्रदान करो ॥ २॥ ४॥ ३५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਤਨ ਕਰੈ ਮਾਨੁਖ ਡਹਕਾਵੈ ਓਹੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਜਾਨੈ ॥
जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥
लोभी आदमी अनेक प्रयास करता है एवं अन्य लोगों से बड़ा छल-कपट करता है परन्तु अन्तर्यामी ईश्वर सब कुछ जानता है।

ਪਾਪ ਕਰੇ ਕਰਿ ਮੁਕਰਿ ਪਾਵੈ ਭੇਖ ਕਰੈ ਨਿਰਬਾਨੈ ॥੧॥
पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥१॥
आदमी त्यागी साधुओं वाला भेष बनाकर रखता है। लेकिन फिर भी वह बहुत पाप करता रहता है परन्तु पाप करके भी मुकरता रहता है॥ १॥

ਜਾਨਤ ਦੂਰਿ ਤੁਮਹਿ ਪ੍ਰਭ ਨੇਰਿ ॥
जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥
हे प्रभु ! तू सब जीवों के निकट ही रहता है, परन्तु वह तुझे कहीं दूर ही समझते हैं।

ਉਤ ਤਾਕੈ ਉਤ ਤੇ ਉਤ ਪੇਖੈ ਆਵੈ ਲੋਭੀ ਫੇਰਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥
उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥
लोभी आदमी इधर-उधर झांकता है, फिर इधर-उधर देखता है और धन-दौलत के चक्र में ही फंसा रहता है।॥ रहाउ ॥

ਜਬ ਲਗੁ ਤੁਟੈ ਨਾਹੀ ਮਨ ਭਰਮਾ ਤਬ ਲਗੁ ਮੁਕਤੁ ਨ ਕੋਈ ॥
जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥
जब तक मनुष्य के मन का भ्रम नाश नहीं होता, तब तक कोई भी माया के बन्धनों से मुक्त नहीं होता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦਇਆਲ ਸੁਆਮੀ ਸੰਤੁ ਭਗਤੁ ਜਨੁ ਸੋਈ ॥੨॥੫॥੩੬॥
कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥२॥५॥३६॥
हे नानक ! जिस पर सृष्टि का स्वामी भगवान दयालु हो जाता है, वास्तव में वही संत एवं वही भक्त है॥ २॥ ५ ॥ ३६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਨਾਮੁ ਗੁਰਿ ਦੀਓ ਹੈ ਅਪੁਨੈ ਜਾ ਕੈ ਮਸਤਕਿ ਕਰਮਾ ॥
नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥
जिसके माथे पर शुभ भाग्य है, गुरु ने अपने उस सेवक को नाम ही प्रदान किया है।

ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵੈ ਤਾ ਕਾ ਜੁਗ ਮਹਿ ਧਰਮਾ ॥੧॥
नामु द्रिड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥१॥
इस युग में गुरु का यही धर्म है कि वह अपने सेवकों को नाम का जाप करवाता है और नाम ही उनके मन में दृढ़ करता है॥१॥

ਜਨ ਕਉ ਨਾਮੁ ਵਡਾਈ ਸੋਭ ॥
जन कउ नामु वडाई सोभ ॥
प्रभु के दास के लिए नाम ही उसकी बड़ाई है और नाम ही उसकी शोभा है।

ਨਾਮੋ ਗਤਿ ਨਾਮੋ ਪਤਿ ਜਨ ਕੀ ਮਾਨੈ ਜੋ ਜੋ ਹੋਗ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा का नाम ही उसकी मुक्ति है और नाम ही उसकी लाज-प्रतिष्ठा है।जो कुछ भी ईश्वरेच्छा में होता है, वह उसे भला ही समझता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮ ਧਨੁ ਜਿਸੁ ਜਨ ਕੈ ਪਾਲੈ ਸੋਈ ਪੂਰਾ ਸਾਹਾ ॥
नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥
जिस व्यक्ति के पास नाम का धन है, वही पूर्ण साहूकार है।

ਨਾਮੁ ਬਿਉਹਾਰਾ ਨਾਨਕ ਆਧਾਰਾ ਨਾਮੁ ਪਰਾਪਤਿ ਲਾਹਾ ॥੨॥੬॥੩੭॥
नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥२॥६॥३७॥
हे नानक ! प्रभु का नाम ही उस मनुष्य का व्यवसाय है, नाम का ही उसे सहारा है और वह नाम रूपी लाभ ही प्राप्त करता है॥ २ ॥ ६ ॥ ३७ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਨੇਤ੍ਰ ਪੁਨੀਤ ਭਏ ਦਰਸ ਪੇਖੇ ਮਾਥੈ ਪਰਉ ਰਵਾਲ ॥
नेत्र पुनीत भए दरस पेखे माथै परउ रवाल ॥
भगवान के दर्शन करके मेरे नेत्र पावन हो गए हैं। मेरे माथे पर उसकी चरण-धूलि ही पड़ी रहे।

ਰਸਿ ਰਸਿ ਗੁਣ ਗਾਵਉ ਠਾਕੁਰ ਕੇ ਮੋਰੈ ਹਿਰਦੈ ਬਸਹੁ ਗੋਪਾਲ ॥੧॥
रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥१॥
हे गोपाल ! मेरे हृदय में आकर बस जाओ। मैं तो स्वाद ले-लेकर ठाकुर जी के ही गुण गाता रहता हूँ॥१॥

ਤੁਮ ਤਉ ਰਾਖਨਹਾਰ ਦਇਆਲ ॥
तुम तउ राखनहार दइआल ॥
हे दयालु परमेश्वर ! तुम सबके रखवाले हो।

ਸੁੰਦਰ ਸੁਘਰ ਬੇਅੰਤ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਭ ਹੋਹੁ ਪ੍ਰਭੂ ਕਿਰਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे प्रभु-पिता ! तुम बड़े सुन्दर, चतुर एवं अनन्त हो। मुझ पर भी कृपालु हो जाओ॥ १॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਮੰਗਲ ਰੂਪ ਤੁਮਰੇ ਬਚਨ ਅਨੂਪ ਰਸਾਲ ॥
महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥
हे महा आनंद एवं प्रसन्नता के रूप ! तुम्हारी वाणी बड़ी अनूप एवं अमृत का घर है।

ਹਿਰਦੈ ਚਰਣ ਸਬਦੁ ਸਤਿਗੁਰ ਕੋ ਨਾਨਕ ਬਾਂਧਿਓ ਪਾਲ ॥੨॥੭॥੩੮॥
हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥२॥७॥३८॥
हे नानक ! मेरे हृदय में भगवान के चरण कमल बस गए हैं और मैंने गुरु का शब्द अपने दामन में बाँध लिया है॥ २॥ ७॥ ३८ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਅਪਨੀ ਉਕਤਿ ਖਲਾਵੈ ਭੋਜਨ ਅਪਨੀ ਉਕਤਿ ਖੇਲਾਵੈ ॥
अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥
अपनी युक्ति से ही भगवान हमें भोजन खिलाता है और अपनी युक्ति से ही हमें (जीवन की) खेल खेलाता है।

ਸਰਬ ਸੁਖ ਭੋਗ ਰਸ ਦੇਵੈ ਮਨ ਹੀ ਨਾਲਿ ਸਮਾਵੈ ॥੧॥
सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥१॥
वह हमें समस्त सुख एवं स्वादिष्ट भोजन देता है और हमारे मन में ही रहता है ॥ १॥

ਹਮਰੇ ਪਿਤਾ ਗੋਪਾਲ ਦਇਆਲ ॥
हमरे पिता गोपाल दइआल ॥
दया का घर परमेश्वर हमारा पिता है।

ਜਿਉ ਰਾਖੈ ਮਹਤਾਰੀ ਬਾਰਿਕ ਕਉ ਤੈਸੇ ਹੀ ਪ੍ਰਭ ਪਾਲ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे माता अपने बालक की देखरेख करती है, वैसे ही प्रभु हमारा पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥

ਮੀਤ ਸਾਜਨ ਸਰਬ ਗੁਣ ਨਾਇਕ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਦੇਵਾ ॥
मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥
हे गुरुदेव प्रभु ! तू सच्चा मित्र एवं सज्जन है, तू ही गुणों का मालिक है और तू सदा शाश्वत रूप है।

ਈਤ ਊਤ ਜਤ ਕਤ ਤਤ ਤੁਮ ਹੀ ਮਿਲੈ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਸੇਵਾ ॥੨॥੮॥੩੯॥
ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥२॥८॥३९॥
लोक-परलोक में जहाँ कहीं तू ही विद्यमान है। हे नानक ! ईश्वर तो संतों की निष्काम सेवा करने से ही मिलता है॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਸੰਤ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਦਮੋਦਰ ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਬਿਖੁ ਜਾਰੇ ॥
संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥
कृपालु एवं दयालु संतजन अपने मन में से काम-क्रोध के विष को जला देते हैं।

ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਜੋਬਨੁ ਤਨੁ ਜੀਅਰਾ ਇਨ ਊਪਰਿ ਲੈ ਬਾਰੇ ॥੧॥
राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥१॥
मैंने अपना राज्य, धन, यौवन, तन एवं प्राण सब कुछ इन पर न्यौछावर कर दिया है॥ १॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਾਮ ਨਾਮ ਹਿਤਕਾਰੇ ॥
मनि तनि राम नाम हितकारे ॥
वे अपने मन एवं तन में राम-नाम से ही प्रेम करते हैं।

ਸੁਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਮੰਗਲ ਸਹਿਤ ਭਵ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
सूख सहज आनंद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥
वे स्वयं सुख-शांति, आनंद एवं प्रसन्नता से रहते ही हैं, दूसरों को भी भवसागर से पार करवा देते हैं ॥ रहाउ ॥

ਧੰਨਿ ਸੁ ਥਾਨੁ ਧੰਨਿ ਓਇ ਭਵਨਾ ਜਾ ਮਹਿ ਸੰਤ ਬਸਾਰੇ ॥
धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥
वह स्थान बड़ा धन्य है और वह भवन भी खुशसनीब है, जहाँ संतजन रहते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੀ ਸਰਧਾ ਪੂਰਹੁ ਠਾਕੁਰ ਭਗਤ ਤੇਰੇ ਨਮਸਕਾਰੇ ॥੨॥੯॥੪੦॥
जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥२॥९॥४०॥
हे मेरे ठाकुर जी ! नानक की यह आकांक्षा पूरी करो, ताकि वह तेरे भक्तों को नमन करे॥ २॥ ६ ॥ ४० ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਛਡਾਇ ਲੀਓ ਮਹਾ ਬਲੀ ਤੇ ਅਪਨੇ ਚਰਨ ਪਰਾਤਿ ॥
छडाइ लीओ महा बली ते अपने चरन पराति ॥
गुरु ने अपने चरणों में लगाकर मुझे महाबली माया से बचा लिया है।

ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਮਨ ਮੰਤਾ ਬਿਨਸਿ ਨ ਕਤਹੂ ਜਾਤਿ ॥੧॥
एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥१॥
उसने सिमरन करने के लिए मेरे मन को एक नाम रूपी मंत्र प्रदान किया है, जो न कभी नाश होता है और न ही कहीं जाता है॥१॥

ਸਤਿਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਕੀਨੀ ਦਾਤਿ ॥
सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥
पूर्ण सतगुरु ने मुझे नाम की देन प्रदान की है और

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਕੀਰਤਨ ਕਉ ਭਈ ਹਮਾਰੀ ਗਾਤਿ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥
कीर्तन करने के लिए मुझे परमात्मा का नाम प्रदान किया है और कीर्तन करने से मैं बंधनों से मुक्त हो गया हूँ॥ रहाउ॥

ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕੀਓ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਭਗਤਨ ਕੀ ਰਾਖੀ ਪਾਤਿ ॥
अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥
प्रभु ने हमेशा ही अपने भक्तों का पक्ष लिया है और उनकी लाज रखी है।

ਨਾਨਕ ਚਰਨ ਗਹੇ ਪ੍ਰਭ ਅਪਨੇ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ਦਿਨ ਰਾਤਿ ॥੨॥੧੦॥੪੧॥
नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥२॥१०॥४१॥
हे नानक ! मैंने अपने प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं और अब दिन-रात सुख प्राप्त कर रहा हूँ ॥२॥१०॥४१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਪਰ ਹਰਨਾ ਲੋਭੁ ਝੂਠ ਨਿੰਦ ਇਵ ਹੀ ਕਰਤ ਗੁਦਾਰੀ ॥
पर हरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥
पराया धन चोरी करना, लालच करना, झूठ बोलना एवं निन्दा करना- इस तरह करते ही शाक्त आदमी ने अपना जीवन व्यतीत कर दिया है।

ਮ੍ਰਿਗ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਆਸ ਮਿਥਿਆ ਮੀਠੀ ਇਹ ਟੇਕ ਮਨਹਿ ਸਾਧਾਰੀ ॥੧॥
म्रिग त्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥१॥
जिस तरह प्यासे मृग को मृगतृष्णा का जल बड़ा मीठा लगता है, वैसे ही शाक्त झूठी आशाओं को बड़ा मीठा समझता है और उसने इन झूठी आशाओं के सहारे को अपने मन में भलीभांति बसा लिया है॥१॥

ਸਾਕਤ ਕੀ ਆਵਰਦਾ ਜਾਇ ਬ੍ਰਿਥਾਰੀ ॥
साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी ॥
शाक्त व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही बीत जाता है,

ਜੈਸੇ ਕਾਗਦ ਕੇ ਭਾਰ ਮੂਸਾ ਟੂਕਿ ਗਵਾਵਤ ਕਾਮਿ ਨਹੀ ਗਾਵਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥
जैसे कागज के ढेर को चूहा कुतर-कुतर कर गंवा देता है परन्तु वह कुतरे हुए कागज उस मूर्ख के कोई काम नहीं आते ॥ रहाउ ॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਇਹ ਬੰਧਨ ਛੁਟਕਾਰੀ ॥
करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥
हे मेरे स्वामी परब्रह्म ! अपनी कृपा करके मुझे माया के इन बधनों से मुक्त कर दीजिए।

ਬੂਡਤ ਅੰਧ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਕਾਢਤ ਸਾਧ ਜਨਾ ਸੰਗਾਰੀ ॥੨॥੧੧॥੪੨॥
बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥२॥११॥४२॥
हे नानक ! प्रभु डूब रहे ज्ञानहीन मनुष्यों को साधुजनों की संगति में मिलाकर भवसागर में से बाहर निकाल लेता है॥ २ ॥ ११॥ ४२ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪਨਾ ਸੀਤਲ ਤਨੁ ਮਨੁ ਛਾਤੀ ॥
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥
अपने स्वामी प्रभु का सिमरन करने से मेरा तन, मन एवं छाती शीतल हो गए हैं।

ਰੂਪ ਰੰਗ ਸੁਖ ਧਨੁ ਜੀਅ ਕਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਮੋਰੈ ਜਾਤੀ ॥੧॥
रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥१॥
मेरे प्राणों का स्वामी परब्रह्म ही मेरी जाति, रूप, रंग, सुख एवं धन है ॥१॥

ਰਸਨਾ ਰਾਮ ਰਸਾਇਨਿ ਮਾਤੀ ॥
रसना राम रसाइनि माती ॥
मेरी जिव्हा रसों के घर राम-नाम में मस्त रहती है और

ਰੰਗ ਰੰਗੀ ਰਾਮ ਅਪਨੇ ਕੈ ਚਰਨ ਕਮਲ ਨਿਧਿ ਥਾਤੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥
राम के प्रेम-रंग में रंग गई है, भगवान के सुन्दर चरण-कमल नवनिधियों का भण्डार हैं॥ रहाउ॥

ਜਿਸ ਕਾ ਸਾ ਤਿਨ ਹੀ ਰਖਿ ਲੀਆ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਭਾਤੀ ॥
जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥
जिसका मैं सेवक था, उसने मुझे भवसागर में डूबने से बचा लिया है। पूर्ण प्रभु का अपने सेवकों को बचाने का तरीका निराला ही है।

ਮੇਲਿ ਲੀਓ ਆਪੇ ਸੁਖਦਾਤੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰਾਖੀ ਪਾਤੀ ॥੨॥੧੨॥੪੩॥
मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥२॥१२॥४३॥
सुखों के दाता ने मुझे स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है। हे नानक ! भगवान ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है ॥२॥१२॥४३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਦੂਤ ਦੁਸਮਨ ਸਭਿ ਤੁਝ ਤੇ ਨਿਵਰਹਿ ਪ੍ਰਗਟ ਪ੍ਰਤਾਪੁ ਤੁਮਾਰਾ ॥
दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥
हे ईश्वर ! तेरा तेज-प्रताप समूचे जगत में प्रगट है; कामादिक पाँच शत्रु तेरी कृपा से ही दूर होते हैं।

ਜੋ ਜੋ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਦੁਖਾਏ ਓਹੁ ਤਤਕਾਲ ਤੁਮ ਮਾਰਾ ॥੧॥
जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥१॥
जो कोई भी तेरे भक्तों को दुखी करता था, उसका तूने तुरंत ही वध कर दिया है॥१॥

ਨਿਰਖਉ ਤੁਮਰੀ ਓਰਿ ਹਰਿ ਨੀਤ ॥
निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥
हे हरि ! मैं तो नित्य ही तेरी तरफ मदद के लिए देखता रहता हूँ।

ਮੁਰਾਰਿ ਸਹਾਇ ਹੋਹੁ ਦਾਸ ਕਉ ਕਰੁ ਗਹਿ ਉਧਰਹੁ ਮੀਤ ॥ ਰਹਾਉ ॥
मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥
हे मुरारि ! अपने दास के सहायक बन जाओ। हे मेरे मित्र प्रभु! मेरा हाथ पकड़ कर मेरा उद्धार कर दो॥ रहाउ ॥

ਸੁਣੀ ਬੇਨਤੀ ਠਾਕੁਰਿ ਮੇਰੈ ਖਸਮਾਨਾ ਕਰਿ ਆਪਿ ॥
सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥
मेरे ठाकुर जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और उसने मुझे अपना सेवक बना कर मालिक वाला कर्त्तव्य पूरा किया है।

ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਭਏ ਦੁਖ ਭਾਗੇ ਸਦਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਜਾਪਿ ॥੨॥੧੩॥੪੪॥
नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥२॥१३॥४४॥
हे नानक ! हमेशा ही हरि का जाप करने से आनंद बना रहता है और मेरे समस्त दुःख दूर हो गए है ॥ २॥ १३॥ ४४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਚਤੁਰ ਦਿਸਾ ਕੀਨੋ ਬਲੁ ਅਪਨਾ ਸਿਰ ਊਪਰਿ ਕਰੁ ਧਾਰਿਓ ॥
चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥
जिस परमात्मा ने चारों दिशाओं में अपने बल का प्रसार किया हुआ है, उसने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा हुआ है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਟਾਖ੍ ਅਵਲੋਕਨੁ ਕੀਨੋ ਦਾਸ ਕਾ ਦੂਖੁ ਬਿਦਾਰਿਓ ॥੧॥

क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥१॥

उसने अपनी कृपा-दृष्टि से देखा है और अपने दास का दुःख नाश कर दिया है॥१॥

ਹਰਿ ਜਨ ਰਾਖੇ ਗੁਰ ਗੋਵਿੰਦ ॥

हरि जन राखे गुर गोविंद ॥

गोविन्द गुरु ने दास को संसार-सागर में डूबने से बचा लिया है।

ਕੰਠਿ ਲਾਇ ਅਵਗੁਣ ਸਭਿ ਮੇਟੇ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਬਖਸੰਦ ॥ ਰਹਾਉ ॥

कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥

क्षमाशील एवं दयालु परमपुरुष ने अपने गले से लगा लिया है और सभी अवगुण मिटा दिए हैं ॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਮਾਗਹਿ ਠਾਕੁਰ ਅਪੁਨੇ ਤੇ ਸੋਈ ਸੋਈ ਦੇਵੈ ॥

जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥

वह अपने ठाकुर जी से जो कुछ भी माँगता है, वह वही कुछ दे देता है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਮੁਖ ਤੇ ਜੋ ਬੋਲੈ ਈਹਾ ਊਹਾ ਸਚੁ ਹੋਵੈ ॥੨॥੧੪॥੪੫॥

नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥२॥१४॥४५॥

हे नानक ! परमात्मा का दास जो कुछ भी मुँह से बोलता है, वह लोक एवं परलोक में सत्य हो जाता है।॥२॥१४॥४५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਅਉਖੀ ਘੜੀ ਨ ਦੇਖਣ ਦੇਈ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦੁ ਸਮਾਲੇ ॥
अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥
परमात्मा अपना विरद् याद रखता है और अपने दास को संकट काल की एक घड़ी भी देखने नहीं देता।

ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੈ ਅਪਨੇ ਕਉ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲੇ ॥੧॥
हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥
वह अपना हाथ देकर अपने दास की रक्षा करता है और श्वास -श्वास उसका पालन-पोषण करता है ॥१॥

ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਲਾਗਿ ਰਹਿਓ ਮੇਰਾ ਚੀਤੁ ॥
प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥
मेरा चित प्रभु से ही लगा रहता है।

ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਧੰਨੁ ਹਮਾਰਾ ਮੀਤੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥
मेरा मित्र प्रभु धन्य है, वह तो आदि से अंत तक सदैव ही मेरा सहायक बना रहता है ॥ रहाउ ॥

ਮਨਿ ਬਿਲਾਸ ਭਏ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਅਚਰਜ ਦੇਖਿ ਬਡਾਈ ॥
मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥
मालिक की आश्चर्यजनक लीला एवं बड़ाई को देख कर मेरे मन में हर्षोल्लास उत्पन्न हो गया है।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਆਨਦ ਕਰਿ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭਿ ਪੂਰਨ ਪੈਜ ਰਖਾਈ ॥੨॥੧੫॥੪੬॥
हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥
हे नानक ! प्रभु ने मेरी पूरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है, इसलिए परमेश्वर का नाम-स्मरण करके आनंद प्राप्त करो ॥ २॥ १५॥४६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਿਸ ਕਉ ਬਿਸਰੈ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਦਾਤਾ ਸੋਈ ਗਨਹੁ ਅਭਾਗਾ ॥
जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥
जिस आदमी को प्राणपति दाता भूल जाता है, उसे बदनसीब समझो।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਗਿਓ ਅਮਿਅ ਸਰੋਵਰ ਪਾਗਾ ॥੧॥
चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥१॥
जिसका मन प्रभु चरणों के प्रेम में लग गया है, उसने अमृत का सरोवर प्राप्त कर लिया है॥१॥

ਤੇਰਾ ਜਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰੰਗਿ ਜਾਗਾ ॥
तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥
हे ईश्वर ! तेरा सेवक राम नाम के प्रेम में मग्न होकर अज्ञान की निद्रा में से जाग्रत हो गया है।

ਆਲਸੁ ਛੀਜਿ ਗਇਆ ਸਭੁ ਤਨ ਤੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿਉ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥
मेरे शरीर में से सारा आलस्य दूर हो गया है तथा मेरा मन अपने प्रियतम के साथ लग गया है॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਜਹ ਪੇਖਉ ਤਹ ਨਾਰਾਇਣ ਸਗਲ ਘਟਾ ਮਹਿ ਤਾਗਾ ॥
जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥
मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही नारायण को माला के मोतियों के धागे की भांति समस्त शरीरों में निवास करता हुआ देखता हूँ।

ਨਾਮ ਉਦਕੁ ਪੀਵਤ ਜਨ ਨਾਨਕ ਤਿਆਗੇ ਸਭਿ ਅਨੁਰਾਗਾ ॥੨॥੧੬॥੪੭॥
नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥२॥१६॥४७॥
हरिनामामृत रूपी जल को पान करते ही नानक ने अन्य सभी अनुराग त्याग दिए हैं।॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਜਨ ਕੇ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਕਾਮ ॥
जन के पूरन होए काम ॥
दास के सभी काम सम्पूर्ण हो गए हैं।

ਕਲੀ ਕਾਲ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਮਹਿ ਲਜਾ ਰਾਖੀ ਰਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥१॥ रहाउ ॥
इस कलियुग के समय में महा विषैली माया के जाल में राम ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है ॥१॥ रहाउ॥

ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਆਮੀ ਪ੍ਰਭੁ ਅਪੁਨਾ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਜਾਮ ॥
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥
अपने स्वामी प्रभु का बार-बार सिमरन करने से यम मेरे निकट नहीं आता।

ਮੁਕਤਿ ਬੈਕੁੰਠ ਸਾਧ ਕੀ ਸੰਗਤਿ ਜਨ ਪਾਇਓ ਹਰਿ ਕਾ ਧਾਮ ॥੧॥
मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥१॥
दास ने भगवान का धाम पा लिया है और उसके लिए साधु की संगति ही मुक्ति एवं वैकुंठ है॥१॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਰਿ ਜਨ ਕੀ ਥਾਤੀ ਕੋਟਿ ਸੂਖ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥
चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥
भगवान के चरण कमल ही दास के लिए अक्षय धन की थैली है और करोड़ों सुखों का निवास है।

ਗੋਬਿੰਦੁ ਦਮੋਦਰ ਸਿਮਰਉ ਦਿਨ ਰੈਨਿ ਨਾਨਕ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨ ॥੨॥੧੭॥੪੮॥
गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥२॥१७॥४८॥
हे नानक ! मैं दिन-रात गोविन्द की आराधना करता रहता हूँ और सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ ॥२॥१७॥४८॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਮਾਂਗਉ ਰਾਮ ਤੇ ਇਕੁ ਦਾਨੁ ॥
मांगउ राम ते इकु दानु ॥
मैं राम से एक यही दान माँगता हूँ कि

ਸਗਲ ਮਨੋਰਥ ਪੂਰਨ ਹੋਵਹਿ ਸਿਮਰਉ ਤੁਮਰਾ ਨਾਮੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥१॥ रहाउ ॥
मैं तुम्हारा नाम-सिमरन करता रहूँ, जिसके फलस्वरूप सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਨ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਹਿਰਦੈ ਵਾਸਹਿ ਸੰਤਨ ਕਾ ਸੰਗੁ ਪਾਵਉ ॥
चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥
तेरे चरण कमल मेरे हृदय में बस जाएँ और मैं संतजनों की संगति प्राप्त करूँ।

ਸੋਗ ਅਗਨਿ ਮਹਿ ਮਨੁ ਨ ਵਿਆਪੈ ਆਠ ਪਹਰ ਗੁਣ ਗਾਵਉ ॥੧॥
सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥१॥
मेरा मन चिंता की अग्नि में न जले और आठ प्रहर तेरे गुण गाता रहूँ ॥१॥

ਸ੍ਵਸਤਿ ਬਿਵਸਥਾ ਹਰਿ ਕੀ ਸੇਵਾ ਮਧ੍ਯੰਤ ਪ੍ਰਭ ਜਾਪਣ ॥
स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥
मैं सुख-कल्याण की अवस्था में भगवान की भक्ति करता रहूँ और जीवन भर प्रभु का जाप करता रहूँ।

ਨਾਨਕ ਰੰਗੁ ਲਗਾ ਪਰਮੇਸਰ ਬਾਹੁੜਿ ਜਨਮ ਨ ਛਾਪਣ ॥੨॥੧੮॥੪੯॥
नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥२॥१८॥४९॥
हे नानक ! मेरा परमेश्वर से अटूट प्रेम-रंग लग गया है, अब पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ूंगा ॥२॥१८॥४६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਮਾਂਗਉ ਰਾਮ ਤੇ ਸਭਿ ਥੋਕ ॥
मांगउ राम ते सभि थोक ॥
मैं तो राम से ही सभी पदार्थ माँगता हूँ।

ਮਾਨੁਖ ਕਉ ਜਾਚਤ ਸ੍ਰਮੁ ਪਾਈਐ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਸਿਮਰਨਿ ਮੋਖ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥१॥ रहाउ ॥
किसी मनुष्य से माँगने से मेहनत के बाद चिंता ही मिलती है, किन्तु प्रभु के सिमरन से ही मोक्ष मिल जाता है।॥१॥ रहाउ॥

ਘੋਖੇ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪੁਰਾਨਾਂ ਬੇਦ ਪੁਕਾਰਹਿ ਘੋਖ ॥
घोखे मुनि जन सिम्रिति पुरानां बेद पुकारहि घोख ॥
ऋषियों-मुनियों ने स्मृतियों एवं पुराणों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया है और वे वेदों का अध्ययन करके उच्च स्वर में पढ़कर दूसरों को सुनाते रहते हैं।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਿੰਧੁ ਸੇਵਿ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ਦੋਵੈ ਸੁਹੇਲੇ ਲੋਕ ॥੧॥
क्रिपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥१॥
कृपा के सागर भगवान की भक्ति करने से ही उस परम-सत्य को पाया जाता है और यह लोक एवं परलोक दोनों ही सुखद हो जाते हैं।॥१॥

ਆਨ ਅਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰ ਹੈ ਜੇਤੇ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸਿਮਰਨ ਫੋਕ ॥
आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥
भगवान के सिमरन के सिवाय अन्य जितने भी आचार-व्यवहार हैं, वे सभी निष्फल हैं।

ਨਾਨਕ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਕਾਟੇ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਬਿਨਸੇ ਸੋਕ ॥੨॥੧੯॥੫੦॥
नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥२॥१९॥५०॥
हे नानक ! संत गुरुदेव को मिलने से चिन्ता मिट जाती है और जन्म-मरण का भय नाश हो जाता है।॥२॥१६॥५०॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਬੁਝੈ ਹਰਿ ਕੈ ਨਾਮਿ ॥
त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
भगवान के नाम-सिमरन से सारी तृष्णा बुझ जाती है।

ਮਹਾ ਸੰਤੋਖੁ ਹੋਵੈ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਲਾਗੈ ਪੂਰਨ ਧਿਆਨੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु की वाणी से मन में बड़ा संतोष उत्पन्न होता है और प्रभु के साथ पूर्ण ध्यान लग जाता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਮਹਾ ਕਲੋਲ ਬੁਝਹਿ ਮਾਇਆ ਕੇ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਰੇ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ॥
महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥
हे मेरे दीन-दयालु प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मेरे मन में से माया के बड़े आनंद-कौतुक प्राप्त करने की तृष्णा बुझ जाए।

ਅਪਣਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹਿ ਜਪਿ ਜੀਵਾ ਪੂਰਨ ਹੋਇ ਦਾਸ ਕੀ ਘਾਲ ॥੧॥
अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥१॥
मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए, जिसका जाप करके मैं जीवित रहूँ और तेरे दास की साधना सफल हो जाए॥१॥

ਸਰਬ ਮਨੋਰਥ ਰਾਜ ਸੂਖ ਰਸ ਸਦ ਖੁਸੀਆ ਕੀਰਤਨੁ ਜਪਿ ਨਾਮ ॥
सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥
हरि-कीर्तन करने एवं नाम का जाप करने से सदैव ही खुशियाँ बनी रहती हैं, सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं तथा राज के सभी सुख एवं आनंद प्राप्त हो जाते हैं।

ਜਿਸ ਕੈ ਕਰਮਿ ਲਿਖਿਆ ਧੁਰਿ ਕਰਤੈ ਨਾਨਕ ਜਨ ਕੇ ਪੂਰਨ ਕਾਮ ॥੨॥੨੦॥੫੧॥
जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥२॥२०॥५१॥
हे नानक ! जिसकी किस्मत में कर्ता-प्रभु ने प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिखा होता है, उस व्यक्ति के सब काम पूर्ण होते हैं॥२॥२०॥५१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥
धनासरी मः ५ ॥
धनासरी म: ५ ॥

ਜਨ ਕੀ ਕੀਨੀ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਿ ਸਾਰ ॥
जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥
परब्रह्म ने अपने दास की देखरेख की है,

ਨਿੰਦਕ ਟਿਕਨੁ ਨ ਪਾਵਨਿ ਮੂਲੇ ਊਡਿ ਗਏ ਬੇਕਾਰ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥१॥ रहाउ ॥
अब दास के समक्ष निन्दक तो सर्वथा टिक ही नहीं पाते और बेकार ही बादलों की तरह उड़ गए हैं ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਉ ਤਹ ਤਹ ਸੁਆਮੀ ਕੋਇ ਨ ਪਹੁਚਨਹਾਰ ॥
जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥
जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ ही मेरा स्वामी प्रभु स्थित है और कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता।

ਜੋ ਜੋ ਕਰੈ ਅਵਗਿਆ ਜਨ ਕੀ ਹੋਇ ਗਇਆ ਤਤ ਛਾਰ ॥੧॥
जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥१॥
जो कोई भी दास की अवज्ञा करता है, वह तुरंत ही नष्ट हो गया है॥१॥

ਕਰਨਹਾਰੁ ਰਖਵਾਲਾ ਹੋਆ ਜਾ ਕਾ ਅੰਤੁ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰ ॥
करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥
जिसका न कोई अन्त है, न ही कोई आर-पार है, वह सबका रचियता प्रभु स्वयं रखवाला बन गया है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਰਖੇ ਪ੍ਰਭਿ ਅਪੁਨੈ ਨਿੰਦਕ ਕਾਢੇ ਮਾਰਿ ॥੨॥੨੧॥੫੨॥
नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥२॥२१॥५२॥
हे नानक ! प्रभु ने अपने दास को बचा लिया है और निन्दकों को मार कर संगत में से बाहर निकाल दिया है॥२॥२१॥५२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੯ ਪੜਤਾਲ
धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल
धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਚਰਨ ਸਰਨ ਗੋਬਿੰਦ ਦੁਖ ਭੰਜਨਾ ਦਾਸ ਅਪੁਨੇ ਕਉ ਨਾਮੁ ਦੇਵਹੁ ॥
हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥
हे दुःख नाश करने वाले गोविन्द ! हे हरि ! मैं तेरे चरणों की शरण चाहता हूँ, अपने दास को अपना अमूल्य नाम प्रदान करो।

ਦ੍ਰਿਸਟਿ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਤਾਰਹੁ ਭੁਜਾ ਗਹਿ ਕੂਪ ਤੇ ਕਾਢਿ ਲੇਵਹੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥
हे प्रभु ! मुझ पर कृपा-दृष्टि करो; मुझे भवसागर में से पार कर दो और मेरी भुजा पकड़ कर अज्ञान के कुएँ में से निकाल लो॥ रहाउ ॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਕਰਿ ਅੰਧ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬੰਧ ਅਨਿਕ ਦੋਖਾ ਤਨਿ ਛਾਦਿ ਪੂਰੇ ॥
काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥
काम, क्रोध के कारण मैं अन्धा होकर माया के बंधनों में फँसा हुआ हूँ और मेरे शरीर पर अनेक पाप पूर्णतया भरे हुए हैं।

ਪ੍ਰਭ ਬਿਨਾ ਆਨ ਨ ਰਾਖਨਹਾਰਾ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਾਵਹੁ ਸਰਨਿ ਸੂਰੇ ॥੧॥
प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥१॥
प्रभु के अलावा अन्य कोई भी बंधनों से बचाने वाला नही हैं। हे शूरवीर प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, अंतः मुझसे अपने नाम का सिमरन करवाओ ॥१॥

ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣਾ ਜੀਅ ਜੰਤ ਤਾਰਣਾ ਬੇਦ ਉਚਾਰ ਨਹੀ ਅੰਤੁ ਪਾਇਓ ॥
पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥
हे ईश्वर ! तू पतितों का उद्धार करने वाला एवं जीव-जन्तुओं का कल्याण करने वाला हैं। वेदों का अध्ययन करने वाले पण्डित भी तेरी महिमा का अन्त नहीं पा सके।

ਗੁਣਹ ਸੁਖ ਸਾਗਰਾ ਬ੍ਰਹਮ ਰਤਨਾਗਰਾ ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਨਾਨਕ ਗਾਇਓ ॥੨॥੧॥੫੩॥
गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥२॥१॥५३॥
हे ब्रह्म ! तू गुणों एवं सुखों का सागर है और तू ही रत्नों की खान है। नानक ने तो भक्तवत्सल परमात्मा का ही स्तुतिगान किया है॥ २॥ १॥ ५३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਹਲਤਿ ਸੁਖੁ ਪਲਤਿ ਸੁਖੁ ਨਿਤ ਸੁਖੁ ਸਿਮਰਨੋ ਨਾਮੁ ਗੋਬਿੰਦ ਕਾ ਸਦਾ ਲੀਜੈ ॥
हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥
सदा-सर्वदा गोविन्द का नाम जपना चाहिए; नाम-सिमरन से इहलोक एवं परलोक में भी नित्य ही सुख प्राप्त होता है।

ਮਿਟਹਿ ਕਮਾਣੇ ਪਾਪ ਚਿਰਾਣੇ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿ ਮੁਆ ਜੀਜੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥१॥ रहाउ ॥
साधु-संगति में शामिल होने से आध्यात्मिक तौर पर मृत व्यक्ति भी जीवित हो जाता है अर्थात् शाक्त से गुरुमुख बन जाता है तथा उसके पूर्वकृत पाप भी मिट जाते हैं॥१॥ रहाउ॥

ਰਾਜ ਜੋਬਨ ਬਿਸਰੰਤ ਹਰਿ ਮਾਇਆ ਮਹਾ ਦੁਖੁ ਏਹੁ ਮਹਾਂਤ ਕਹੈ ॥
राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै ॥
राज एवं यौवन में मनुष्य को भगवान भूल जाता है।महापुरुष यही बात कहते हैं कि माया का मोह एक महां दुःख है।

ਆਸ ਪਿਆਸ ਰਮਣ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਏਹੁ ਪਦਾਰਥੁ ਭਾਗਵੰਤੁ ਲਹੈ ॥੧॥
आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥१॥
मनुष्य को भगवान का कीर्तन करने की अभिलाषा एवं प्यास लगी रहनी चाहिए परन्तु यह अनमोल पदार्थ कोई भाग्यवान् ही प्राप्त करता है॥ १॥

ਸਰਣਿ ਸਮਰਥ ਅਕਥ ਅਗੋਚਰਾ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ॥
सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥
हे अगोचर एवं अकथनीय प्रभु ! तू अपने भक्तों को शरण देने में समर्थ है, तेरा नाम पापियों का उद्धार करने वाला है।

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸਰਬਤ ਪੂਰਨ ਠਾਕੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥੨॥੨॥੫੪॥
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥२॥२॥५४॥
हे नानक के स्वामी प्रभु ! तू अन्तर्यामी है। मेरा ठाकुर सर्वव्यापी है ॥२॥२॥५४॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧੨
धनासरी महला ५ घरु १२
धनासरी महला ५ घरु १२

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਬੰਦਨਾ ਹਰਿ ਬੰਦਨਾ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥
भगवान की हमेशा वन्दना करो, जगतपालक परमात्मा का गुणगान करो ॥ रहाउ ॥

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਭੇਟੇ ਗੁਰਦੇਵਾ ॥
वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥
अहोभाग्य से ही गुरुदेव से भेंट होती है।

ਕੋਟਿ ਪਰਾਧ ਮਿਟੇ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ॥੧॥
कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥१॥
भगवान की भक्ति करने से करोड़ों ही अपराध मिट जाते हैं।॥१॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਜਾ ਕਾ ਮਨੁ ਰਾਪੈ ॥
चरन कमल जा का मनु रापै ॥
जिसका मन भगवान के चरण-कमलों के प्रेम में लीन हो जाता है,

ਸੋਗ ਅਗਨਿ ਤਿਸੁ ਜਨ ਨ ਬਿਆਪੈ ॥੨॥
सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥२॥
उस मनुष्य को चिन्ता की अग्नि प्रभावित नहीं करती॥२॥

ਸਾਗਰੁ ਤਰਿਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗੇ ॥
सागरु तरिआ साधू संगे ॥
वह संतों की सभा में सम्मिलित होकर संसार-सागर में से पार हो गया है।

ਨਿਰਭਉ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਰੰਗੇ ॥੩॥
निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥३॥
निर्भय प्रभु का नाम जपो; हरि के प्रेम में आसक्त रहो॥ ३॥

ਪਰ ਧਨ ਦੋਖ ਕਿਛੁ ਪਾਪ ਨ ਫੇੜੇ ॥
पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥
जो व्यक्ति पराया-धन के लोभ दोष एवं अन्य पापों से मुक्त रहता है,

ਜਮ ਜੰਦਾਰੁ ਨ ਆਵੈ ਨੇੜੇ ॥੪॥
जम जंदारु न आवै नेड़े ॥४॥
भयंकर यम उसके निकट नहीं आता ॥ ४॥

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਬੁਝਾਈ ॥
त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥
उसकी तृष्णाग्नि प्रभु ने खुद ही बुझा दी है।

ਨਾਨਕ ਉਧਰੇ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਈ ॥੫॥੧॥੫੫॥
नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥५॥१॥५५॥
हे नानक ! वह प्रभु की शरण में आकर माया के बन्धनों से मुक्त हो गया है॥ ५ ॥ १॥ ५५ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਭਈ ਸਚੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥ ਮਨਿ ਤਨਿ ਰਸਨਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥१॥
सत्य का भोजन खाने से मैं तृप्त हो गया हूँ। अपने मन, तन एवं जिह्वा से मैंने परमात्मा के नाम का ध्यान किया है।॥१॥

ਜੀਵਨਾ ਹਰਿ ਜੀਵਨਾ ॥ ਜੀਵਨੁ ਹਰਿ ਜਪਿ ਸਾਧਸੰਗਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान के सिमरन में जीना ही वास्तव में सच्चा जीवन है। साधुओं की संगत में मिलकर उसका भजन करना ही वास्तविक जीवन है ॥१॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰੀ ਬਸਤ੍ਰ ਓਢਾਏ ॥ ਅਨਦਿਨੁ ਕੀਰਤਨੁ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੨॥
अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥२॥
जँहा मैंने अनेक प्रकार के वस्त्र पहने हैं वही मैंने प्रतिदिन ही जो भजन-कीर्तन एवं भगवान का गुणगान किया है।॥२॥

ਹਸਤੀ ਰਥ ਅਸੁ ਅਸਵਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਰਿਦੈ ਨਿਹਾਰੀ ॥੩॥
हसती रथ असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥३॥
यही मेरे लिए हाथी, रथ एवं घोड़े की सवारी करना है में भगवान से मिलन का मार्ग अपने हृदय में देखता हूँ ॥३॥

ਮਨ ਤਨ ਅੰਤਰਿ ਚਰਨ ਧਿਆਇਆ ॥
मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥
मैंने अपने मन, तन, अन्तर में ईश्वर का ही ध्यान किया है।

ਹਰਿ ਸੁਖ ਨਿਧਾਨ ਨਾਨਕ ਦਾਸਿ ਪਾਇਆ ॥੪॥੨॥੫੬॥
हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥४॥२॥५६॥
हे नानक ! दास ने सुखों का भण्डार परमेश्वर पा लिया है॥४॥२॥५६॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਗੁਰ ਕੇ ਚਰਨ ਜੀਅ ਕਾ ਨਿਸਤਾਰਾ ॥
गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥
गुरु के चरण जीव का उद्धार कर देते हैं,"

ਸਮੁੰਦੁ ਸਾਗਰੁ ਜਿਨਿ ਖਿਨ ਮਹਿ ਤਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥१॥ रहाउ ॥
जिसने एक क्षण में ही प्राणी को संसार-सागर में से पार कर दिया है॥१॥ रहाउ॥

ਕੋਈ ਹੋਆ ਕ੍ਰਮ ਰਤੁ ਕੋਈ ਤੀਰਥ ਨਾਇਆ ॥
कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥
कोई मनुष्य कर्मकाण्ड करने में ही मग्न हो गया है और कोई तीर्थों पर स्नान कर आया है परन्तु

ਦਾਸੀਂ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥੧॥
दासीं हरि का नामु धिआइआ ॥१॥
दास ने तो हरि-नाम का ध्यान-मनन किया है।॥१॥

ਬੰਧਨ ਕਾਟਨਹਾਰੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕੁ ਸਿਮਰੈ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥੨॥੩॥੫੭॥
बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥२॥३॥५७॥
जगत का स्वामी परमेश्वर सब जीवों के बन्धन काटने वाला है। नानक तो उस अन्तर्यामी ईश्वर का सिमरन करता रहता है।॥२ ॥३ ॥५७ ॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
धनासरी महला ५ ॥
धनासरी महला ५ ॥

ਕਿਤੈ ਪ੍ਰਕਾਰਿ ਨ ਤੂਟਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ॥ ਦਾਸ ਤੇਰੇ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥
तुझसे किसी तरह भी प्रीति न टूटे हे परमात्मा ! तेरे दास का यही निर्मल आचरण है॥१॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨ ਧਨ ਤੇ ਪਿਆਰਾ ॥ ਹਉਮੈ ਬੰਧੁ ਹਰਿ ਦੇਵਣਹਾਰਾ ॥੧॥
जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥१॥
तू मुझे मेरी आत्मा, प्राणों, मन एवं धन से भी अत्याधिक प्यारा है। हे परमेश्वर ! एक तू ही अहंकार के मार्ग पर रोक लगाने वाला है ॥१॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਲਾਗਉ ਨੇਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀ ਏਹ ॥੨॥੪॥੫੮॥
चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेनंती एह ॥२॥४॥५८॥
तेरे सुन्दर चरण कमलों से मेरा प्यार लग जाए नानक की तो यही प्रार्थना है ॥२॥४॥५८॥

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
धनासरी महला ९ ॥
धनासरी महला ९ ॥

ਕਾਹੇ ਰੇ ਬਨ ਖੋਜਨ ਜਾਈ ॥
काहे रे बन खोजन जाई ॥
हे मानव ! तू भगवान को ढूंढने के लिए क्यों वन में जाता है।

ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਸਦਾ ਅਲੇਪਾ ਤੋਹੀ ਸੰਗਿ ਸਮਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥
वह तो सबमें निवास करने वाला है, जो हमेशा माया से निर्लिप्त रहता है, वह तो तेरे साथ ही रहता है।॥१॥ रहाउ ॥

ਪੁਹਪ ਮਧਿ ਜਿਉ ਬਾਸੁ ਬਸਤੁ ਹੈ ਮੁਕਰ ਮਾਹਿ ਜੈਸੇ ਛਾਈ ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
हे मानव ! जैसे फूल में सुगन्धि रहती है और जैसे देखने वाले का अपना प्रतिबिम्ब शीशे में रहता है,

ਤੈਸੇ ਹੀ ਹਰਿ ਬਸੇ ਨਿਰੰਤਰਿ ਘਟ ਹੀ ਖੋਜਹੁ ਭਾਈ ॥੧॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥
वैसे ही भगवान तेरे हृदय में निवास करता है; अंतः उसे अपने हृदय में खोजो।॥१॥

ਬਾਹਰਿ ਭੀਤਰਿ ਏਕੋ ਜਾਨਹੁ ਇਹੁ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਬਤਾਈ ॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
गुरु का ज्ञान यह भेद बताता है कि शरीर से बाहर जगत में और शरीर के भीतर हृदय में एक परमात्मा का ही निवास समझो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਆਪਾ ਚੀਨੈ ਮਿਟੈ ਨ ਭ੍ਰਮ ਕੀ ਕਾਈ ॥੨॥੧॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥
हे नानक ! अपने आत्म-स्वरूप को पहचाने बिना मन से भ्रम की मैल दूर नहीं होती ॥२ ॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
धनासरी महला ९ ॥
धनासरी महला ९ ॥

ਸਾਧੋ ਇਹੁ ਜਗੁ ਭਰਮ ਭੁਲਾਨਾ ॥
साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
हे संतजनो ! यह जगत भ्रम में पड़कर भटका हुआ है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਕਾ ਸਿਮਰਨੁ ਛੋਡਿਆ ਮਾਇਆ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥

इसने राम-नाम का सिमरन छोड़ दिया है और यह माया के हाथों बिक चुका है॥१॥ रहाउ ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਤਾ ਕੈ ਰਸਿ ਲਪਟਾਨਾ ॥

मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥

यह जगत तो माता, पिता, भाई, पुत्र एवं पत्नी के मोह में फँस चुका है।

ਜੋਬਨੁ ਧਨੁ ਪ੍ਰਭਤਾ ਕੈ ਮਦ ਮੈ ਅਹਿਨਿਸਿ ਰਹੈ ਦਿਵਾਨਾ ॥੧॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥
यह यौवन, धन एवं प्रभुता के नशे में दिन-रात दीवाना हुआ रहता है॥१॥

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਸਦਾ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਤਾ ਸਿਉ ਮਨੁ ਨ ਲਗਾਨਾ ॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥
जो सदैव ही दीनदयालु एवं दुखों का नाश करने वाला है, इसने उस भगवान के साथ अपना मन नहीं लगाया।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੋਟਨ ਮੈ ਕਿਨਹੂ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਇ ਪਛਾਨਾ ॥੨॥੨॥
जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥
हे नानक ! करोड़ों में किसी विरले मनुष्य ने ही गुरुमुख बनकर भगवान की पहचान की है॥२॥२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
धनासरी महला ९ ॥
धनासरी महला ९ ॥

ਤਿਹ ਜੋਗੀ ਕਉ ਜੁਗਤਿ ਨ ਜਾਨਉ ॥
तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥
उस योगी को योग-साधना की युक्ति की सूझ नहीं है

ਲੋਭ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਮਮਤਾ ਫੁਨਿ ਜਿਹ ਘਟਿ ਮਾਹਿ ਪਛਾਨਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिस के हृदय में लोभ, मोह एवं माया की ममता प्रबल रहती है॥ १॥ रहाउ॥

ਪਰ ਨਿੰਦਾ ਉਸਤਤਿ ਨਹ ਜਾ ਕੈ ਕੰਚਨ ਲੋਹ ਸਮਾਨੋ ॥
पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥
जिसके स्वभाव में पराई निन्दा एवं प्रशंसा नहीं है, जिसके लिए सोना एवं लोहा एक समान है और

ਹਰਖ ਸੋਗ ਤੇ ਰਹੈ ਅਤੀਤਾ ਜੋਗੀ ਤਾਹਿ ਬਖਾਨੋ ॥੧॥
हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥
जो खुशी एवं चिन्ता से तटस्थ रहता है, उसे ही वास्तविक योगी समझो।॥१॥

ਚੰਚਲ ਮਨੁ ਦਹ ਦਿਸਿ ਕਉ ਧਾਵਤ ਅਚਲ ਜਾਹਿ ਠਹਰਾਨੋ ॥
चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥
यह चंचल मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है, जिसने इसे स्थिर कर लिया है।

कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥
कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥
हे नानक ! जो आदमी इस प्रकार का है, उसे ही माया के बन्धनों से मुक्त हुआ समझो॥२॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
धनासरी महला ९ ॥
धनासरी महला ९ ॥

अब मै कउनु उपाउ करउ ॥
अब मै कउनु उपाउ करउ ॥
अब मैं क्या उपाय करूँ ?

जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिस विधि से मेरे मन का संशय दूर हो जाए और मैं भयानक संसार-सागर से पार हो जाऊँ॥१॥ रहाउ ॥

जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥
अमूल्य मानव जन्म प्राप्त करके मैंने कोई शुभ-कर्म नहीं किया, इसलिए मैं बहुत डरता हूँ।

मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥
यह चिन्ता मेरे मन में लगी रहती है कि मैंने अपने मन, वचन एवं कर्म से कभी भी भगवान का गुणगान नहीं किया॥१॥

गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
गुरु का उपदेश सुनकर मेरे मन में कुछ भी ज्ञान पैदा नहीं हुआ और मैं तो पशु की भांति अपना पेट भरता रहता हूँ।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਿਰਦੁ ਪਛਾਨਉ ਤਬ ਹਉ ਪਤਿਤ ਤਰਉ
॥੨॥੪॥੯॥੯॥੧੩॥੫੮॥੪॥੯੩॥

कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुम अपने विरद् को पहचानो, तब ही मैं पतित भवसागर में से पार हो सकता ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ਅਸਟਪਦੀਆ

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗੁਰੁ ਸਾਗਰੁ ਰਤਨੀ ਭਰਪੂਰੇ ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥

गुरु नाम रूपी रत्नों से भरा हुआ सागर है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਸੰਤ ਚੁਗਹਿ ਨਹੀ ਦੂਰੇ ॥

अम्रितु संत चुगहि नही दूरे ॥

संत रूपी हंस इस में से अमृत रूपी रत्न चुगते हैं और वे गुरु रूपी सागर से दूर नहीं होते।

ਹਰਿ ਰਸੁ ਚੋਗ ਚੁਗਹਿ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ॥

हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥

संत रूपी हंस हरि रस रूपी चोगा चुगते हैं और वे प्रभु को अच्छे लगते हैं।

ਸਰਵਰ ਮਹਿ ਹੰਸੁ ਪ੍ਰਾਨਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥੧॥

सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥१॥

हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु में से अपने प्राणपति परमेश्वर को पा लेते हैं।॥१॥

ਕਿਆ ਬਗੁ ਬਪੁੜਾ ਛਪੜੀ ਨਾਇ ॥

किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥

बेचारा बगुला (पाखण्डी) छोटे तालाब में क्यों स्नान करता है ?

ਕੀਚੜਿ ਡੂਬੈ ਮੈਲੁ ਨ ਜਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥

वह तो छोटे तालाब के कीचड़ में ही डूबता है परन्तु उसकी (विकारों की) मैल दूर नहीं होती ॥१॥ रहाउ ॥

ਰਖਿ ਰਖਿ ਚਰਨ ਧਰੇ ਵੀਚਾਰੀ ॥
रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥
विचारवान पुरुष बड़े ध्यानपूर्वक अपने पैर धरती पर रखते हैं और

ਦੁਬਿਧਾ ਛੋਡਿ ਭਏ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ॥
दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥
वे दुविधा को छोड़कर निरंकार के उपासक बन जाते है।

ਮੁਕਤਿ ਪਦਾਰਥੁ ਹਰਿ ਰਸ ਚਾਖੇ ॥
मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥
वे मुक्ति पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं और हरि रस चखते रहते हैं।

ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਗੁਰਿ ਰਾਖੇ ॥੨॥
आवण जाण रहे गुरि राखे ॥२॥
गुरु ने उन्हें भवसागर में डूबने से बचा लिया है और उनके जन्म-मरण के चक्र मिट गए हैं।॥२॥

ਸਰਵਰ ਹੰਸਾ ਛੋਡਿ ਨ ਜਾਇ ॥
सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥
हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु को छोड़कर कहीं नहीं जाता और

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕਰਿ ਸਹਜਿ ਸਮਾਇ ॥
प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥
वह प्रेम-भक्ति करके सहज अवस्था में ही लीन रहता है।

ਸਰਵਰ ਮਹਿ ਹੰਸੁ ਹੰਸ ਮਹਿ ਸਾਗਰੁ ॥
सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥
हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु में और सागर रूपी गुरु, हंस रूपी संत में मिलकर एक रूप हो जाते हैं।

ਅਕਥ ਕਥਾ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਆਦਰੁ ॥੩॥
अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥३॥
यह एक अकथनीय कथा है कि संत गुरु की वाणी द्वारा प्रभु के दरबार में आदर-सत्कार प्राप्त करता है ॥३॥

ਸੁੰਨ ਮੰਡਲ ਇਕੁ ਜੋਗੀ ਬੈਸੇ ॥
सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥
शून्य मण्डल में एक योगी अर्थात् प्रभु विराजमान है।

ਨਾਰਿ ਨ ਪੁਰਖੁ ਕਹਹੁ ਕੋਊ ਕੈਸੇ ॥
नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥
वह न तो स्त्री है और न ही वह पुरुष है।कोई कैसे कहे कि वह कैसा है ?

त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥
त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥
धरती, आकाश एवं पाताल-इन तीनों भवनों के जीव उस ज्योति में ध्यान लगाकर रखते हैं।

सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥४॥
सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥४॥
देवते, मनुष्य एवं नाथ परम-सत्य परमेश्वर की शरण में रहते हैं।॥ ४ ॥

आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥
आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥
परमेश्वर आनंद का स्रोत है, अनाथों का सहारा है और

गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥
गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥
गुरुमुख जन सहज अवस्था में उसकी भक्ति एवं सिमरन करते रहते हैं।

भगति वछल भै काटणहारे ॥
भगति वछल भै काटणहारे ॥
हे भय का नाश करने वाले प्रभु ! तू भक्तवत्सल है,

हउमै मारि मिले पगु धारे ॥५॥
हउमै मारि मिले पगु धारे ॥५॥
तेरे चरण को अपने हृदय में बसा कर एवं अपने अहंत्व को मारकर ही तेरे भक्तजन तुझे मिले हैं।॥ ५॥

अनिक जतन करि कालु संताए ॥
अनिक जतन करि कालु संताए ॥
मनुष्य अनेक यत्न करता है परन्तु मृत्यु उसे बहुत दुःख देती है।

मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥
मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥
सभी जीव अपने माथे पर मृत्यु का लेख लिखवा कर पृथ्वी में आए हैं

ਜਨਮੁ ਪਦਾਰਥੁ ਦੁਬਿਧਾ ਖੋਵੈ ॥
जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥
परन्तु वे दुविधा में फँस कर अपना दुर्लभ जन्म व्यर्थ ही गंवा देते हैं।

ਆਪੁ ਨ ਚੀਨਸਿ ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਰੋਵੈ ॥੬॥
आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥६॥
वे अपने आत्म स्वरूप को नहीं पहचानते और भ्रम में पड़कर रोते रहते हैं।॥ ६॥

ਕਹਤਉ ਪੜਤਉ ਸੁਣਤਉ ਏਕ ॥
कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥
जो मनुष्य एक परमेश्वर की गुणों वाली वाणी का बखान करता रहता है, वाणी को पढ़ता और सुनता रहता है,

ਧੀਰਜ ਧਰਮੁ ਧਰਣੀਧਰ ਟੇਕ ॥
धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥
पृथ्वी को धारण करने वाला परमेश्वर उसे धर्म, धैर्य एवं अपना सहारा देता है।

ਜਤੁ ਸਤੁ ਸੰਜਮੁ ਰਿਦੈ ਸਮਾਏ ॥
जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥
जब मनुष्य के हृदय में ब्रह्मचर्य, सत्य एवं संयम समा जाते है

ਚਉਥੇ ਪਦ ਕਉ ਜੇ ਮਨੁ ਪਤੀਆਏ ॥੭॥
चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥७॥
तब मनुष्य का मन तुरीयावस्था में प्रसन्न हो जाता है ॥ ७॥

ਸਾਚੇ ਨਿਰਮਲ ਮੈਲੁ ਨ ਲਾਗੈ ॥
साचे निरमल मैलु न लागै ॥
सत्यवादी पुरुष के निर्मल मन को विकारों की मैल नहीं लगती और

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਭਰਮ ਭਉ ਭਾਗੈ ॥
गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥
गुरु के शब्द द्वारा उसका भ्रम एवं मृत्यु का भय दूर हो जाता है।,"

ਸੂਰਤਿ ਮੂਰਤਿ ਆਦਿ ਅਨੂਪੁ ॥
सूरति मूरति आदि अनूपु ॥
आदिपुरुष की सूरत एवं मूर्त अत्यंत सुन्दर है।

ਨਾਨਕੁ ਜਾਚੈ ਸਾਚੁ ਸਰੂਪੁ ॥੮॥੧॥
नानकु जाचै साचु सरूपु ॥८॥१॥
नानक तो उस तत्यस्वरूप प्रभु के दर्शनों की ही कामना करता है ॥८॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮਿਲਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ॥
सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥
जो व्यक्ति सहजावस्था में भगवान से मिलता है, उसका मिलाप ही स्वीकार होता है।

ਨਾ ਤਿਸੁ ਮਰਣੁ ਨ ਆਵਣੁ ਜਾਣੁ ॥
ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥
फिर उसकी मृत्यु नहीं होती और न ही वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ता है।

ਠਾਕੁਰ ਮਹਿ ਦਾਸੁ ਦਾਸ ਮਹਿ ਸੋਇ ॥
ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥
दास अपने मालिक-प्रभु में ही लीन रहता है और दास के मन में वही निवास करता है।

ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥੧॥
जह देखा तह अवरु न कोइ ॥१॥
मैं जहाँ भी देखता हूँ, उधर ही भगवान के सिवाय मुझे अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता ॥ १॥

ਗੁਰਮੁਖਿ ਭਗਤਿ ਸਹਜ ਘਰੁ ਪਾਈਐ ॥
गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥
गुरु के माध्यम से परमात्मा की भक्ति करने से मनुष्य सहज ही सच्चे घर को पा लेता है।

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਭੇਟੇ ਮਰਿ ਆਈਐ ਜਾਈਐ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु से साक्षात्कार किए बिना मनुष्य मरणोपरांत आवागमन के चक्र में ही पड़ा रहता है अर्थात् जन्मता-मरता ही रहता है।॥ १॥ रहाउ ॥

ਸੋ ਗੁਰੁ ਕਰਉ ਜਿ ਸਾਚੁ ਦ੍ਰਿੜਾਵੈ ॥
सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥
ऐसा गुरु ही धारण करो, जो मन में सत्य को दृढ़ करवा दे एवं

ਅਕਥੁ ਕਥਾਵੈ ਸਬਦਿ ਮਿਲਾਵੈ ॥
अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥
अकथनीय प्रभु की कथा करवाए और शब्द द्वारा भगवान से मिलाप करवा दे।

ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗ ਅਵਰ ਨਹੀ ਕਾਰਾ ॥
हरि के लोग अवर नही कारा ॥
भक्तों को नाम-सिमरन के सिवाय अन्य कोई कार्य अच्छा नहीं लगता।

ਸਾਚਉ ਠਾਕੁਰੁ ਸਾਚੁ ਪਿਆਰਾ ॥੨॥
साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥२॥
वे तो केवल सत्यस्वरूप परमेश्वर एवं सत्य से ही प्रेम करते हैं।॥ २॥

ਤਨ ਮਹਿ ਮਨੂਆ ਮਨ ਮਹਿ ਸਾਚਾ ॥
तन महि मनूआ मन महि साचा ॥
मनुष्य के तन में मन का निवास है और मन में ही सत्य का वास है।

ਸੋ ਸਾਚਾ ਮਿਲਿ ਸਾਚੇ ਰਾਚਾ ॥
सो साचा मिलि साचे राचा ॥
वही मनुष्य सत्यवादी है, जो सत्य प्रभु को मिलकर उसके साथ लीन रहता है।

ਸੇਵਕੁ ਪ੍ਰਭ ਕੈ ਲਾਗੈ ਪਾਇ ॥
सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥
सेवक प्रभु-चरणों में लग जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਇ ॥੩॥
सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥३॥
यदि मनुष्य को पूर्ण सतगुरु मिल जाए तो वह उसे भगवान से मिला देता है॥ ३॥

ਆਪਿ ਦਿਖਾਵੈ ਆਪੇ ਦੇਖੈ ॥
आपि दिखावै आपे देखै ॥
भगवान स्वयं ही समस्त जीवों को देखता है लेकिन वह उन्हें अपने दर्शन स्वयं ही दिखाता है।

ਹਠਿ ਨ ਪਤੀਜੈ ਨਾ ਬਹੁ ਭੇਖੈ ॥
हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥
वह न तो हठयोग से प्रसन्न होता है और न ही वह अनेक वेष धारण करने से प्रसन्न होता है।

ਘੜਿ ਭਾਡੇ ਜਿਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪਾਇਆ ॥
घड़ि भाडे जिनि अम्रितु पाइआ ॥
जिसने शरीर रूपी बर्तन का निर्माण करके उसमें नाम रूपी अमृत डाला है,

ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭਿ ਮਨੁ ਪਤੀਆਇਆ ॥੪॥
प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥४॥
उसका मन केवल प्रेम-भक्ति से ही प्रसन्न होता है॥ ४॥

ਪੜਿ ਪੜਿ ਭੂਲਹਿ ਚੋਟਾ ਖਾਹਿ ॥
पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥
जो व्यक्ति धार्मिक ग्रंथ पढ़-पढ़कर भटक जाते हैं, वे यम द्वारा बहुत दुःखी होते हैं।

ਬਹੁਤੁ ਸਿਆਣਪ ਆਵਹਿ ਜਾਹਿ ॥
बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥
वे अपनी अधिक चतुराई के कारण जन्मते-मरते ही रहते हैं।

ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਭਉ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇ ॥
नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥
जो नाम का जाप करते रहते हैं और भगवान का भय रूपी भोजन खाते रहते हैं,

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸੇਵਕ ਰਹੇ ਸਮਾਇ ॥੫॥
गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥५॥
वे सेवक गुरु के माध्यम से परम-सत्य में ही लीन रहते हैं ॥५॥

ਪੂਜਿ ਸਿਲਾ ਤੀਰਥ ਬਨ ਵਾਸਾ ॥
पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥
जो मनुष्य मूर्ति-पूजा करता है, तीर्थ-स्नान करता है, जंगलों में निवास कर लेता है,

ਭਰਮਤ ਡੋਲਤ ਭਏ ਉਦਾਸਾ ॥
भरमत डोलत भए उदासा ॥
त्यागी भी बन गया है और स्थान-स्थान भटकता एवं विचलित होता रहता है,

ਮਨਿ ਮੈਲੈ ਸੂਚਾ ਕਿਉ ਹੋਇ ॥
मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥
फिर वह अशुद्ध मन से कैसे पवित्र हो सकता है ?

ਸਾਚਿ ਮਿਲੈ ਪਾਵੈ ਪਤਿ ਸੋਇ ॥੬॥
साचि मिलै पावै पति सोइ ॥६॥
जिसे सत्य मिल जाता है, उसे ही शोभा प्राप्त होती है॥ ६॥

ਆਚਾਰਾ ਵੀਚਾਰੁ ਸਰੀਰਿ ॥
आचारा वीचारु सरीरि ॥
उसका आचरण अच्छा हो जाता है और उसके शरीर में शुभ विचार उत्पन्न हो जाते हैं।

ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਸਹਜਿ ਮਨੁ ਧੀਰਿ ॥
आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥
उसका मन युग-युगांतरों में भी सदैव ही धैर्य से सहज अवस्था में लीन रहता है।

ਪਲ ਪੰਕਜ ਮਹਿ ਕੋਟਿ ਉਧਾਰੇ ॥
पल पंकज महि कोटि उधारे ॥
जो पलक झपकने के समय में ही करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਗੁਰੁ ਮੇਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥੭॥
करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥७॥
हे प्यारे परमेश्वर ! अपनी कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो ॥ ७॥

ਕਿਸੁ ਆਗੈ ਪ੍ਰਭ ਤੁਧੁ ਸਾਲਾਹੀ ॥
किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥
हे प्रभु ! मैं किसके समक्ष तेरी स्तुति करूँ ?

ਤੁਧੁ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਮੈ ਕੋ ਨਾਹੀ ॥
तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥
चूंकि तेरे अलावा मेरे लिए अन्य कोई महान् नहीं।

ਜਿਉ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਰਜਾਇ ॥
जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥
जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तू मुझे अपनी इच्छानुसार रख।

ਨਾਨਕ ਸਹਜਿ ਭਾਇ ਗੁਣ ਗਾਇ ॥੮॥੨॥
नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥८॥२॥
चूंकि नानक तो सहज स्वभाव प्रेमपूर्वक तेरे ही गुण गाता है॥८॥२॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੬ ਅਸਟਪਦੀ
धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी
धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੋ ਜੋ ਜੂਨੀ ਆਇਓ ਤਿਹ ਤਿਹ ਉਰਝਾਇਓ ਮਾਣਸ ਜਨਮੁ ਸੰਜੋਗਿ ਪਾਇਆ ॥
जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥
जो भी जीव जिस योनि में आया है, वह उस में ही उलझ गया है; अहोभाग्य से अमूल्य मानव-जन्म प्राप्त हुआ है।

ਤਾਕੀ ਹੈ ਓਟ ਸਾਧ ਰਾਖਹੁ ਦੇ ਕਰਿ ਹਾਥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੇਲਹੁ ਹਰਿ ਰਾਇਆ ॥੧॥
ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥१॥
हे साधुजनो ! मैंने आपका सहारा ही देखा है, इसलिए अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो तथा कृपा करके विश्व के बादशाह प्रभु से मिला दो॥१॥

ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਥਿਤਿ ਨਹੀ ਪਾਈ ॥
अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥
मैं तो अनेक जन्मों में भटका हूँ परन्तु मुझे कहीं भी स्थिरता प्राप्त नहीं हुई।

ਕਰਉ ਸੇਵਾ ਗੁਰ ਲਾਗਉ ਚਰਨ ਗੋਵਿੰਦ ਜੀ ਕਾ ਮਾਰਗੁ ਦੇਹੁ ਜੀ ਬਤਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥१॥ रहाउ ॥
अब मैं अपने गुरु के चरणों में लगकर उसकी सेवा करता हूँ। हे गुरुदेव ! मुझे गोविन्द से मिलन का मार्ग बता दीजिए ॥१॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਉਪਾਵ ਕਰਉ ਮਾਇਆ ਕਉ ਬਚਿਤਿ ਧਰਉ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ ਸਦ ਹੀ ਵਿਹਾਵੈ ॥
अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥
मैं माया को अपने हृदय में बसाकर रखता हूँ और इसे प्राप्त करने हेतु अनेक उपाय करता रहता हूँ। हमेशा ही 'मेरी-मेरी' करते हुए मेरी तमाम आयु बीतती जा रही है।

ਕੋਈ ਐਸੋ ਰੇ ਭੇਟੈ ਸੰਤੁ ਮੇਰੀ ਲਾਹੈ ਸਗਲ ਚਿੰਤ ਠਾਕੁਰ ਸਿਉ ਮੇਰਾ ਰੰਗੁ ਲਾਵੈ ॥੨॥
कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥२॥
मेरी अभिलाषा है कि मुझे कोई ऐसा संत मिल जाए, जो मेरी सारी चिन्ता दूर कर दे और ठाकुर जी से मेरा प्यार लगा दे ॥२॥

पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥
पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥
मैंने सभी वेद पढ़े हैं परन्तु मेरे मन के सन्देह दूर नहीं होते और मेरे शरीर रूपी घर में रहने वाली पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, आँख, कान, नाक, जिव्हा इत्यादि एक क्षण भर के लिए धैर्य नहीं करते।

कोई ऐसो रे भगतु जु मारिआ ते रहतु इकु अंम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥३॥
कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥३॥
क्या कोई ऐसा भक्त है, जो मोह-माया से निर्लिप्त हो और वह मेरे हृदय में नामामृत को सींच दे॥ ३॥

जेते रे तीरथ नाए अहंबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥
जेते रे तीरथ नाए अह्मबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥
मैंने जितने भी तीर्थ किए हैं, इन तीर्थों पर स्नान करने से उतनी अहंकार रूपी मैल मैंने अपने मन को लगा ली है और मेरे हृदय रूपी घर का स्वामी प्रभु एक तिल भर के लिए भी प्रसन्न नहीं होता।

कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥४॥
कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥४॥
मैं ऐसी साधसंगति कब प्राप्त करूँगा जिसमें मैं परमेश्वर का नाम जप कर सदैव ही आनंदित रहूँगा और मेरा मन अपनी आँखों में ज्ञान रूपी सुरमा डालकर ज्ञान रूपी तीर्थ में स्नान करेगा ॥ ४॥

सगल असम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोऐ ॥
सगल असम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥
मैंने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास इन सभी आश्रमों के धर्म कमाए हैं परन्तु मेरा मन संतुष्ट नहीं होता। मैं ज्ञानहीन स्नान करके अपने शरीर को स्वच्छ करता रहता हूँ।

कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोऐ ॥५॥
कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥५॥
मेरी तो कामना है कि कोई ऐसा महापुरुष मुझे मिल जाए जो विधाता परब्रह्म के प्रेम में मग्न हुआ हो और वह मेरी दुर्मति की मैल दूर कर दे ॥ ५॥

ਕਰਮ ਧਰਮ ਜੁਗਤਾ ਨਿਮਖ ਨ ਹੇਤੁ ਕਰਤਾ ਗਰਬਿ ਗਰਬਿ ਪੜੈ ਕਹੀ ਨ ਲੇਖੈ ॥

करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥

मनुष्य धर्म-कर्मों में ही मग्न रहता है परन्तु वह क्षण भर के लिए भी प्रभु से प्रेम नहीं करता। वह तो घमण्ड एवं अहंकार में ही पड़ा रहता है परन्तु उसका कोई भी धर्म-कर्म किसी काम नहीं आता।

ਜਿਸੁ ਭੇਟੀਐ ਸਫਲ ਮੂਰਤਿ ਕਰੈ ਸਦਾ ਕੀਰਤਿ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਕੋਊ ਨੇਤ੍ਰਹੁ ਪੇਖੈ ॥੬॥

जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥६॥

जिसे शुभ फल देने वाला सत्य की मूर्ति गुरु मिल जाता है, वह सदा परमात्मा का कीर्ति-गान करता रहता है और गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही अपने नेत्रों से भगवान के दर्शन प्राप्त करता है॥ ६॥

ਮਨਹਠਿ ਜੋ ਕਮਾਵੈ ਤਿਲੁ ਨ ਲੇਖੈ ਪਾਵੈ ਬਗੁਲ ਜਿਉ ਧਿਆਨੁ ਲਾਵੈ ਮਾਇਆ ਰੇ ਧਾਰੀ ॥

मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥

जो मनुष्य अपने मन के हठ से अभ्यास करता है, उसकी साधना तिल भर भी स्वीकृत नहीं होती। वह तो मायाधारी बगुले की तरह ही ध्यान लगाकर रखता है।

ਕੋਈ ਐਸੋ ਰੇ ਸੁਖਹ ਦਾਈ ਪ੍ਰਭ ਕੀ ਕਥਾ ਸੁਨਾਈ ਤਿਸੁ ਭੇਟੇ ਗਤਿ ਹੋਇ ਹਮਾਰੀ ॥੭॥

कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥७॥

क्या कोई ऐसा सुख देने वाला महापुरुष है, जो मुझे प्रभु की कथा सुनाए और उसे मिलने से मेरी मुक्ति हो जाए॥ ७॥

ਸੁਪ੍ਰਸੰਨ ਗੋਪਾਲ ਰਾਇ ਕਾਟੈ ਰੇ ਬੰਧਨ ਮਾਇ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥

सुप्रसंन गोपाल राइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥

यदि सृष्टि का पालनहार परमात्मा मुझ पर सुप्रसन्न हो जाए तो मेरे मोह-माया के बन्धन काट दे। मेरा मन गुरु के शब्द द्वारा प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है।

ਸਦਾ ਸਦਾ ਆਨੰਦੁ ਭੇਟਿਓ ਨਿਰਭੈ ਗੋਬਿੰਦੁ ਸੁਖ ਨਾਨਕ ਲਾਧੇ ਹਰਿ ਚਰਨ ਪਰਾਤਾ ॥੮॥

सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥८॥

अपने निर्भय गोविन्द को मिलकर मैं सदैव ही आनंदपूर्वक रहता हूँ। हे नानक ! भगवान के चरणों में पड़कर मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं।॥ ८॥

ਸਫਲ ਸਫਲ ਭਈ ਸਫਲ ਜਾਤ੍ਰਾ ॥ ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਮਿਲੇ ਸਾਧਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ ॥੧॥੩॥

सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥

अब मेरी जीवन-यात्रा सफल हो गई है और संतों से मिलकर मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ दूसरा ॥ १॥ ३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ਛੰਤ
धनासरी महला १ छंत
धनासरी महला १ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਣ ਜਾਉ ਤੀਰਥੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ॥
तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
मैं तीर्थ पर स्नान करने के लिए जाऊँ ? किन्तु परमात्मा का नाम ही वास्तविक तीर्थ है।

ਤੀਰਥੁ ਸਬਦ ਬੀਚਾਰੁ ਅੰਤਰਿ ਗਿਆਨੁ ਹੈ ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥
शब्द का चिन्तन ही तीर्थ है और यह ज्ञान मेरे हृदय में है।

ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਸਾਚਾ ਥਾਨੁ ਤੀਰਥੁ ਦਸ ਪੁਰਬ ਸਦਾ ਦਸਾਹਰਾ ॥
गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥
गुरु का दिया हुआ ज्ञान ही सच्चा तीर्थ-स्थान और दसाहरा है, जहाँ हमेशा ही दस पर्व (अष्टमी, चौदश, संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावस्या, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, उत्तरायण, दक्षिणयान एवं व्यतिपात) मनाए जाते हैं।

ਹਉ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਕਾ ਸਦਾ ਜਾਚਉ ਦੇਹੁ ਪ੍ਰਭ ਧਰਣੀਧਰਾ ॥
हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥
हे पृथ्वी को धारण करने वाले प्रभु! मैं तुझसे सदैव ही नाम माँगता रहता हूँ, मुझे यह नाम प्रदान कीजिए।

ਸੰਸਾਰੁ ਰੋਗੀ ਨਾਮੁ ਦਾਰੂ ਮੈਲੁ ਲਾਗੈ ਸਚ ਬਿਨਾ ॥
संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥
समूचा संसार ही रोगी है और इन रोगों की औषधि केवल परमात्मा का नाम ही है।सत्य नाम के बिना मन को अहंकार की मैल लग जाती है।

ਗੁਰ ਵਾਕੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਚਾਨਣੁ ਨਿਤ ਸਾਚੁ ਤੀਰਥੁ ਮਜਨਾ ॥੧॥
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥१॥
गुरु की वाणी पवित्र है, जो सदैव ही मन में से अज्ञान रूपी अन्धेरे को दूर करके प्रकाश करती है। यह नित्य ही स्नान करने वाला सच्चा तीर्थ स्थान है॥ १॥

ਸਾਚਿ ਨ ਲਾਗੈ ਮੈਲੁ ਕਿਆ ਮਲੁ ਧੋਈਐ ॥

साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥

सत्य नाम में समावेश करने से मन को अहंकार की मैल नहीं लगती, तदन्तर अहंकार की मैल को स्वच्छ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

ਗੁਣਹਿ ਹਾਰੁ ਪਰੋਇ ਕਿਸ ਕਉ ਰੋਈਐ ॥

गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥

अपने हृदय में भगवान के गुणों का हार पिरोने से मनुष्य को किसी के समक्ष विनती करने की जरूरत नहीं पड़ती।

ਵੀਚਾਰਿ ਮਾਰੈ ਤਰੈ ਤਾਰੈ ਉਲਟਿ ਜੋਨਿ ਨ ਆਵਏ ॥

वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥

जो मनुष्य सिमरन द्वारा अपने मन के अहंकार को नष्ट कर देता है, वह भवसागर में से पार हो जाता है और दूसरों को भी भवसागर से पार करवा देता है। वह पुनः योनि-चक्र में नहीं पड़ता अर्थात् उसकी मुक्ति हो जाती है।

ਆਪਿ ਪਾਰਸੁ ਪਰਮ ਧਿਆਨੀ ਸਾਚੁ ਸਾਚੇ ਭਾਵਏ ॥

आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥

वह स्वयं ही पारस और ध्यानी बन जाता है। ऐसा सत्यवादी पुरुष ही सच्चे प्रभु को अच्छा लगता है।

ਆਨੰਦੁ ਅਨਦਿਨੁ ਹਰਖੁ ਸਾਚਾ ਦੂਖ ਕਿਲਵਿਖ ਪਰਹਰੇ ॥

आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥

वह रात-दिन आनंद एवं हर्ष की अनुभूति करता है और उसके तमाम दुःख एवं पाप नाश हो जाते हैं।

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਦਿਖਾਇਆ ਮੈਲੁ ਨਾਹੀ ਸਚ ਮਨੇ ॥੨॥

सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥२॥

वह सत्यनाम को प्राप्त कर लेता है और गुरु उसे भगवान के दर्शन करवा देता है। फिर उसके मन को अहंकार की मैल नहीं लगती, क्योंकि सत्य उसके हृदय में बस जाता है॥ २॥

ਸੰਗਤਿ ਮੀਤ ਮਿਲਾਪੁ ਪੂਰਾ ਨਾਵਣੋ ॥

संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ॥

हे मित्र ! सत्संगियों से मिलाप ही पूर्ण स्नान है।

ਗਾਵੈ ਗਾਵਣਹਾਰੁ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਵਣੋ ॥
गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥
जो गाने वाला वाणी द्वारा प्रभु का स्तुतिगान करता है, वह सुन्दर बन जाता है।

ਸਾਲਾਹਿ ਸਾਚੇ ਮੰਨਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁੰਨ ਦਾਨ ਦਇਆ ਮਤੇ ॥
सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ॥
मन में गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा धारण करके सत्य परमेश्वर की स्तुति करने से मनुष्य दान, पुण्य एवं दया करने वाली बुद्धि वाला बन जाता है।

ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਭਾਵੈ ਸਹਜਿ ਨਾਵੈ ਬੇਣੀ ਤ ਸੰਗਮੁ ਸਤ ਸਤੇ ॥
पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥
जिस मनुष्य को सहज अवस्था में अपने प्रियतम-प्रभु की संगति अच्छी लगती है, वह त्रिवेणी के संगम व सर्वोत्तम पावन तीर्थ प्रयागराज में स्नान कर लेता है।

ਆਰਾਧਿ ਏਕੰਕਾਰੁ ਸਾਚਾ ਨਿਤ ਦੇਇ ਚੜੈ ਸਵਾਇਆ ॥
आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥
उस एक सत्यस्वरूप औंकार की ही आराधना करो, जो सदैव ही जीवों को देन देता रहता है।उस दाता की दी हुई देन दिन-ब-दिन प्रफुल्लित होती रहती है।

ਗਤਿ ਸੰਗਿ ਮੀਤਾ ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਕਰਿ ਨਦਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਇਆ ॥੩॥
गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥३॥
हे मित्र ! संतों की संगति व सत्संगी मित्रों में सम्मिलित होने से मोक्ष प्राप्त हो जाता है।भगवान ने मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि करके मुझे सत्संगति में मिलाकर अपने साथ मिला लिया है॥३॥

ਕਹਣੁ ਕਹੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ਕੇਵਡੁ ਆਖੀਐ ॥
कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ॥
हे प्रभु ! प्रत्येक मनुष्य तेरे बारे में कथन करता है परन्तु तुझे कितना महान् कहा जाए ?

ਹਉ ਮੂਰਖੁ ਨੀਚੁ ਅਜਾਣੁ ਸਮਝਾ ਸਾਖੀਐ ॥
हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥
मैं तो मूर्ख, नीच एवं अनजान हूँ, मैंने गुरु की शिक्षा द्वारा तेरी महिमा के बारे में समझा है

ਸਚੁ ਗੁਰ ਕੀ ਸਾਖੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਾਖੀ ਤਿਤੁ ਮਨੁ ਮਾਨਿਆ ਮੇਰਾ ॥
सचु गुर की साखी अम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥
गुरु की शिक्षा सत्य है, यह अमृत वाणी है और इससे मेरा मन प्रसन्न हो गया है।

ਕੂਚੁ ਕਰਹਿ ਆਵਹਿ ਬਿਖੁ ਲਾਦੇ ਸਬਦਿ ਸਚੈ ਗੁਰੁ ਮੇਰਾ ॥
कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥
जो मनुष्य विष रूपी माया का भार लादते हैं, वे मरते एवं जन्मते रहते हैं। मेरा गुरु अपने सेवक को शब्द के द्वारा सत्य के साथ मिला देता है।

ਆਖਣਿ ਤੋਟਿ ਨ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰੀ ਭਰਿਪੁਰਿ ਰਹਿਆ ਸੋਈ ॥
आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥
कहने मात्र से प्रभु के गुण समाप्त नहीं होते और जीवों को देने से उसकी भक्ति के भण्डार में कोई न्यूनता नहीं आती।

ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਕਹੈ ਬੇਨੰਤੀ ਮਨੁ ਮਾਂਜੈ ਸਚੁ ਸੋਈ ॥੪॥੧॥
नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥४॥१॥
वह प्रभु तो सर्वव्यापक है नानक प्रार्थना के तौर पर सत्य ही कहता है कि जो मनुष्य अपने मन को अँहम् की मैल से स्वच्छ कर लेता है, वही सत्यवादी है और उसे सत्य ही दृष्टिगत होता है॥४॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी महला १ ॥
धनासरी महला १ ॥

ਜੀਵਾ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਮਨਿ ਆਨੰਦੁ ਹੈ ਜੀਉ ॥
जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥
हे पूज्य परमेश्वर ! मैं तेरे नाम-सिमरन द्वारा ही जीवित हूँ और मेरे मन में आनंद बना रहता है।

ਸਾਚੋ ਸਾਚਾ ਨਾਉ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦੁ ਹੈ ਜੀਉ ॥
साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥
सत्यस्वरूप परमेश्वर का नाम सत्य है और उस गोविन्द के गुण भी सत्य हैं।

ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਅਪਾਰਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ਜਿਨਿ ਸਿਰਜੀ ਤਿਨਿ ਗੋਈ ॥
गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥
गुरु का ज्ञान बोध करवाता है कि सृष्टि का सृजनहार परमेश्वर अनंत है, जिसने यह सृष्टि रचना की है, उसने ही इसका विनाश किया है।

ਪਰਵਾਣਾ ਆਇਆ ਹੁਕਮਿ ਪਠਾਇਆ ਫੇਰਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਈ ॥
परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥
जब प्रभु के हुक्म द्वारा भेजा हुआ (मृत्यु का) निमंत्रण आ जाता है तो कोई भी प्राणी उसे टाल नहीं सकता।

ਆਪੇ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸਿਰਿ ਸਿਰਿ ਲੇਖੈ ਆਪੇ ਸੁਰਤਿ ਬੁਝਾਈ ॥

आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥

वह स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करके देखता रहता है अर्थात् उनकी देखभाल करता रहता है और स्वयं ही जीवों के किए कर्मों अनुसार उनके माथे पर किस्मत का लेख लिखता है।उसने स्वयं ही जीवों को अपने बारे में ज्ञान प्रदान किया है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਅਗਮ ਅਗੋਚਰੁ ਜੀਵਾ ਸਚੀ ਨਾਈ ॥੧॥

नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥१॥

हे नानक ! वह मालिक-परमेश्वर अगम्य एवं अगोचर है और मैं उसके सत्य नाम की स्तुति करने से ही जीवित हूँ ॥१॥

ਤੁਮ ਸਰਿ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ਆਇਆ ਜਾਇਸੀ ਜੀਉ ॥

तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥

हे ईश्वर ! तुम्हारे जैसा अन्य कोई भी नहीं है। जो भी जन्म लेकर दुनिया में आया है, वह यहाँ से चला जाएगा।

ਹੁਕਮੀ ਹੋਇ ਨਿਬੇੜੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਇਸੀ ਜੀਉ ॥

हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥

तेरे हुक्म से ही जीवों के किए कर्मों का निपटारा होता है और तू ही उनका भ्रम दूर करता है।

ਗੁਰੁ ਭਰਮੁ ਚੁਕਾਏ ਅਕਥੁ ਕਹਾਏ ਸਚ ਮਹਿ ਸਾਚੁ ਸਮਾਣਾ ॥

गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥

हे भाई ! गुरु अपने सेवक का भ्रम दूर कर देता है और उससे अकथनीय प्रभु की स्तुति करवाता है। फिर वह सत्यपुरुष सत्य में ही समा जाता है।

ਆਪਿ ਉਪਾਏ ਆਪਿ ਸਮਾਏ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਪਛਾਣਾ ॥

आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥

भगवान स्वयं ही जीवों को पैदा करता है और स्वयं ही उन्हें पुनः अपने में ही विलीन कर लेता है। मैंने हुक्म करने वाले भगवान का हुक्म पहचान लिया है।

ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਤੂ ਮਨਿ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥

सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥

हे मालिक प्रभु ! जिसने गुरु से तेरे नाम की सच्ची शोभा प्राप्त कर ली है, तू उसके मन में आकर बस जाता है और अन्तिम काल में भी उसका साथी बनता है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਅਵਰੁ ਨ ਦੂਜਾ ਨਾਮਿ ਤੇਰੈ ਵਡਿਆਈ ॥੨॥

नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥२॥

नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तेरे सिवाय दूसरा कोई भी मालिक नहीं है और तेरे सत्य नाम द्वारा ही जीव को तेरे दरबार में बड़ाई मिलती है।॥२॥

ਤੂ ਸਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ਅਲਖ ਸਿਰੰਦਿਆ ਜੀਉ ॥

तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥

हे परमेश्वर ! एक तू ही सच्चा सृजनहार एवं अलख है और तूने ही सब जीवों को पैदा किया है।

ਏਕੁ ਸਾਹਿਬੁ ਦੁਇ ਰਾਹ ਵਾਦ ਵਧੰਦਿਆ ਜੀਉ ॥

एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥

सब का मालिक एक परमात्मा ही है परन्तु उससे मिलने के कर्म मार्ग एवं ज्ञान मार्ग-उन दो प्रचलित मार्गों ने जीवों में परस्पर विवाद बढ़ा दिए हैं।

ਦੁਇ ਰਾਹ ਚਲਾਏ ਹੁਕਮਿ ਸਬਾਏ ਜਨਮਿ ਮੁਆ ਸੰਸਾਰਾ ॥

दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥

परमेश्वर ने अपने हुक्म में समस्त जीवों को इन दो मार्गों पर चलाया हुआ है। उसके हुक्म से ही यह जगत जन्मता एवं मरता रहता है।

ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਾਹੀ ਕੋ ਬੇਲੀ ਬਿਖੁ ਲਾਦੀ ਸਿਰਿ ਭਾਰਾ ॥

नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥

जीव ने व्यर्थ ही माया रूपी विष का भार उठाया हुआ है परन्तु परमात्मा के नाम बिना कोई भी उसका साथी नहीं बनता।

ਹੁਕਮੀ ਆਇਆ ਹੁਕਮੁ ਨ ਬੂਝੈ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥

हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥

जीव तो परमात्मा के हुक्म से ही जगत में आया है। परन्तु वह उसके हुक्म को नहीं समझता। प्रभु स्वयं ही अपने हुक्म में जीव को सुन्दर बनाने वाला है।

ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਬਦਿ ਸਿਞਾਪੈ ਸਾਚਾ ਸਿਰਜਣਹਾਰਾ ॥੩॥

नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥३॥

हे नानक ! मालिक-परमेश्वर की पहचान तो शब्द के द्वारा ही होती है और वही सच्चा सृजनहार है ॥३॥

ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਵਾਰਿ ਸਬਦਿ ਸੁਹਾਇਆ ਜੀਉ ॥

भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥

भगवान के भक्त उसके दरबार में बैठे बड़े सुन्दर लगते हैं और उनका जीवन शब्द से ही सुन्दर बना हुआ है।

ਬੋਲਹਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣਿ ਰਸਨ ਰਸਾਇਆ ਜੀਉ ॥
बोलहि अम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥
वह अपने मुख से अमृत वाणी बोलते हैं और उन्होंने अपनी रसना को अमृत रस पिलाया हुआ है।

ਰਸਨ ਰਸਾਏ ਨਾਮਿ ਤਿਸਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵਿਕਾਣੇ ॥
रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥
वे अमृत रस के ही प्यासे होते हैं और अपनी रसना को अमृत रस ही पिलाते रहते हैं। वे तो गुरु के शब्द पर ही न्योछावर होते हैं।

ਪਾਰਸਿ ਪਰਸਿਐ ਪਾਰਸੁ ਹੋਏ ਜਾ ਤੇਰੈ ਮਨਿ ਭਾਣੇ ॥
पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥
हे प्रभु ! जब वे तेरे मन को अच्छे लगते हैं तो वे पारस रूपी गुरु को स्पर्श करके स्वयं भी पारस (रूपी गुरु) बन जाते हैं।

ਅਮਰਾ ਪਦੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਵਿਰਲਾ ਗਿਆਨ ਵੀਚਾਰੀ ॥
अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥
वे अपने अहंकार को समाप्त करके अमर पदवी प्राप्त कर लेते हैं।कोई विरला पुरुष ही इस ज्ञान पर चिंतन करता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਨਿ ਦਰਿ ਸਾਚੈ ਸਾਚੇ ਕੇ ਵਾਪਾਰੀ ॥੪॥
नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥४॥
हे नानक !भक्त सत्य के द्वार पर ही शोभा देते हैं और सत्य नाम के ही व्यापारी हैं।॥ ४॥

ਭੂਖ ਪਿਆਸੋ ਆਥਿ ਕਿਉ ਦਰਿ ਜਾਇਸਾ ਜੀਉ ॥
भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥
हे भाई ! मैं तो माया का भूखा और प्यासा हैं। फिर मैं भगवान के दरबार पर कैसे जा सकता हूँ?

ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਛਉ ਜਾਇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਸਾ ਜੀਉ ॥
सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥
मैं जाकर अपने गुरु से पूछूगा एवं भगवान का नाम-सिमरन करूँगा।

ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈ ਸਾਚੁ ਚਵਾਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚੁ ਪਛਾਣਾ ॥
सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥
मैं अपने मन में सत्यनाम का ही ध्यान-मनन करता हूँ। अपने मुँह से सत्य नाम को जपता हूँ।

ਦੀਨਾ ਨਾਥੁ ਦਇਆਲੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣਾ ॥
दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥
अब तो मैं रात-दिन दीनानाथ, दयालु एवं पवित्र प्रभु के नाम का ही जाप करता हूँ।

ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਧੁਰਹੁ ਫੁਰਮਾਈ ਆਪਿ ਮੁਆ ਮਨੁ ਮਾਰੀ ॥
करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥
यह नाम-सिमरन करने का कार्य मुझे परमात्मा ने प्रारम्भ से ही करने की आज्ञा की है। इस तरह अहंकार मिट गया है और मन नियंत्रण में आ गया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਹਾ ਰਸੁ ਮੀਠਾ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਨਾਮਿ ਨਿਵਾਰੀ ॥੫॥੨॥
नानक नामु महा रसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥५॥२॥
हे नानक ! नाम महां मीठा रस है और नाम ने मेरी माया की तृष्णा दूर कर दी है॥ ५॥ २॥

ਧਨਾਸਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧ ॥
धनासरी छंत महला १ ॥
धनासरी छंत महला १ ॥

ਪਿਰ ਸੰਗਿ ਮੂਠੜੀਏ ਖਬਰਿ ਨ ਪਾਈਆ ਜੀਉ ॥
पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥
हे माया से ठगी हुई जीव-स्त्री ! तेरा प्रियतम-प्रभु तो तेरे साथ ही है परन्तु तुझे अभी तक इस बात की कोई खबर नहीं।

ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਅੜਾ ਲੇਖੁ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ਜੀਉ ॥
मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥
जो कुछ तूने अपने पूर्व जन्म में किया है, तेरी उस किस्मत का लेख तेरे माथे पर लिखा हुआ है।

ਲੇਖੁ ਨ ਮਿਟਈ ਪੁਰਬਿ ਕਮਾਇਆ ਕਿਆ ਜਾਣਾ ਕਿਆ ਹੋਸੀ ॥
लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥
पूर्व जन्म में किए कर्मों का लेख अब मिट नहीं सकता। मैं क्या जानता हूँ कि आगे क्या होगा ?

ਗੁਣੀ ਅਚਾਰਿ ਨਹੀ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ਅਵਗੁਣ ਬਹਿ ਬਹਿ ਰੋਸੀ ॥
गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥
गुणवान एवं सदाचारिणी बन कर तू अपने प्रियतम-प्रभु के प्रेम में मग्न नहीं हुई। इसलिए अपने अवगुणों के कारण तू सदैव ही परलोक में बैठी दुःखी होती रहेगी।

ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਆਕ ਕੀ ਛਾਇਆ ਬਿਰਧਿ ਭਏ ਦਿਨ ਪੁੰਨਿਆ ॥
धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥
यह धन एवं यौवन आक की छाया के समान है, वृद्ध होने से तेरी आयु के दिन समाप्त हो जाएँगे।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਦੋਹਾਗਣਿ ਛੁਟੀ ਝੂਠਿ ਵਿਛੁੰਨਿਆ ॥੧॥
नानक नाम बिना दोहागणि छुटी झूठि विछुंनिआ ॥१॥
नानक का कथन है कि नाम के बिना तू बदकिस्मत एवं परित्यक्ता स्त्री बन गई है और तेरे झूठ ने तुझे तेरे प्रियतम-प्रभु से तुझे जुदा कर दिया है ॥१॥

ਬੂਡੀ ਘਰੁ ਘਾਲਿਓ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਇ ਚਲੋ ॥
बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥
हे जीव-स्त्री ! तू भवसागर में डूब गई है और तूने अपना घर नष्ट कर लिया है। अंतः अब तू गुरु की रज़ानुसार आचरण कर।

ਸਾਚਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਪਾਵਹਿ ਸੁਖਿ ਮਹਲੋ ॥
साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥
तू सत्य नाम का सिमरन कर, तू अपने प्रियतम प्रभु के महल का सुख प्राप्त कर लेगी।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਤਾ ਸੁਖੁ ਪਾਏ ਪੇਈਅੜੈ ਦਿਨ ਚਾਰੇ ॥
हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥
यदि तू हरि-नाम का ध्यान करे तो तुझे सुख प्राप्त हो जाएगा। तुझे इस पीहर जगत में केवल चार दिन ही रहना है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਜਾਇ ਬਹੈ ਸਚੁ ਪਾਏ ਅਨਦਿਨੁ ਨਾਲਿ ਪਿਆਰੇ ॥
निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥
यदि तुझे सत्य (प्रभु) प्राप्त हो जाए तो तू अपने वास्तविक घर प्रभु-स्वरूप में जाकर बैठ जाए और वहाँ प्रतिदिन ही अपने प्रियतम के साथ रमण करे।

ਵਿਣੁ ਭਗਤੀ ਘਰਿ ਵਾਸੁ ਨ ਹੋਵੀ ਸੁਣਿਅਹੁ ਲੋਕ ਸਬਾਏ ॥
विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥
हे लोगो ! ध्यानपूर्वक सुन लो, भक्ति के बिना जीव-स्त्री का अपने वास्तविक घर प्रभु स्वरूप में निवास नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਸਰਸੀ ਤਾ ਪਿਰੁ ਪਾਏ ਰਾਤੀ ਸਾਚੈ ਨਾਏ ॥੨॥
नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥२॥
हे नानक ! यदि जीव-स्त्री सदैव ही सत्य-नाम में मग्न हो जाए तो वह प्रसन्न हो जाती है और प्रियतम-प्रभु को प्राप्त कर लेती है॥२॥

ਪਿਰੁ ਧਨ ਭਾਵੈ ਤਾ ਪਿਰ ਭਾਵੈ ਨਾਰੀ ਜੀਉ ॥
पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥
जब जीव-स्त्री को अपना प्रियतम-प्रभु अच्छा लगता है तो वह जीव-स्त्री भी अपने प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगने लगती है।

ਰੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਾਤੀ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ਜੀਉ ॥
रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥
जब वह गुरु की वाणी द्वारा सिमरन करती है तो अपने प्रभु के प्रेम में मग्न हो जाती है।

ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰੀ ਨਾਹ ਪਿਆਰੀ ਨਿਵਿ ਨਿਵਿ ਭਗਤਿ ਕਰੇਈ ॥
गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥
जब वह गुरु के शब्द द्वारा चिन्तन करती है तो वह अपने पति-परमेश्वर की लाडली बन जाती है। वह अपने पति-प्रभु के समक्ष झुक-झुक नम्रतापूर्वक उसकी भक्ति करती है।

ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਜਲਾਏ ਪ੍ਰੀਤਮੁ ਰਸ ਮਹਿ ਰੰਗੁ ਕਰੇਈ ॥
माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥
जब वह अपना माया का मोह जला देती है तो उसका प्रियतम-प्रभु बड़े उल्लास से उससे रमण करता है।

ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ਸੇਤੀ ਰੰਗਿ ਰੰਗੇਤੀ ਲਾਲ ਭਈ ਮਨੁ ਮਾਰੀ ॥
प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥
जीव-स्त्री सत्य-प्रभु से मिलकर उसके प्रेम में मग्न हो गई है। उसने अपने मन पर अंकुश लगा लिया है और वह बहुत सुन्दर बन गई है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚਿ ਵਸੀ ਸੋਹਾਗਣਿ ਪਿਰ ਸਿਉ ਪ੍ਰੀਤਿ ਪਿਆਰੀ ॥੩॥
नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥३॥
हे नानक ! वह सुहागिन जीव-स्त्री सच्चे पति-प्रभु के घर अर्थात् परमात्मा के स्वरूप में जाकर बस गई है और अपने प्रियतम से प्रेम प्राप्त करके उसकी प्रियतमा बन गई है॥३ ॥

ਪਿਰ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਨਾਰਿ ਜੇ ਪਿਰ ਭਾਵਏ ਜੀਉ ॥
पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥
अपने प्रियतम-प्रभु के घर में वही जीव-स्त्री शोभा प्राप्त करती है, जो अपने पति-प्रभु को अच्छी लगने लगती है।

झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥
झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥
जो जीव-स्त्री झूठे वचन बोलती है, वह झूठे वचन उसके किसी काम नहीं आते।

झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥
झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥
वह झूठ बोलती है परन्तु वह झूठ उसके किसी काम नहीं आता। उसका प्रियतम-प्रभु उसे अपनी आँखों से देखता भी नहीं।

अवगुणिआरी कंति विसारी छुटी विधण रैणी ॥
अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥
उसके पति-प्रभु ने अवगुणों से भरी हुई उस जीव-स्त्री को भुला दिया है। वह परित्यक्ता स्त्री बन गई है और उसकी जीवन रूपी रात्रि प्रियतम के बिना दुःखों में ही व्यतीत होती है।

गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥
गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥
ऐसी जीव-स्त्री गुरु के शब्द पर आस्था नहीं रखती, वह मृत्यु के जाल में फँस जाती है और अपने पति-प्रभु के महल अर्थात् प्रभु-स्वरूप को प्राप्त नही करती।

नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥४॥
नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥४॥
हे नानक ! जब जीव-स्त्री स्वयं ही अपने आत्म-स्वरूप को पहचान लेती है तो वह गुरु के द्वारा सहज अवस्था में लीन हो जाती है।॥ ४॥

धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥
धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥
वह सुहागिन नारी धन्य है, जिसने अपना प्रियतम-प्रभु जान लिया है।

नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥
नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥
नामविहीन झूठी जीव-स्त्री झूठ का ही कार्य करती है।

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਹਾਵੀ ਸਾਚੇ ਭਾਵੀ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਪ੍ਰਭ ਰਾਤੀ ॥

हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥

भगवान की भक्ति करने वाली जीव-स्त्री अति सुन्दर होती है और वह सच्चे प्रभु को अच्छी लगती है और प्रभु की प्रेम-भक्ति में लीन रहती है!

ਪਿਰੁ ਰਲੀਆਲਾ ਜੋਬਨਿ ਬਾਲਾ ਤਿਸੁ ਰਾਵੇ ਰੰਗਿ ਰਾਤੀ ॥

पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥

प्रियतम-प्रभु बड़ा रंगीला, यौवन सम्पन्न एवं जवान है, उसके प्रेम-रंग में मग्न हुई जीव-स्त्री उसके साथ रमण करती है।

ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਵਿਗਾਸੀ ਸਹੁ ਰਾਵਾਸੀ ਫਲੁ ਪਾਇਆ ਗੁਣਕਾਰੀ ॥

गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥

वह गुरु के शब्द द्वारा प्रफुल्लित होती है, अपने प्रियतम के साथ आनंद करती है और अपनी की हुई भक्ति का गुणकारी फल प्राप्त कर लेती है।

ਨਾਨਕ ਸਾਚੁ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ਪਿਰ ਘਰਿ ਸੋਹੈ ਨਾਰੀ ॥੫॥੩॥

नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥५॥३॥

हे नानक ! उस जीव-स्त्री को सत्य प्रभु मिल जाता है, प्रभु के घर में उसे बड़ाई प्राप्त होती है और अपने प्रियतम के घर में बड़ी सुन्दर लगती है ॥५॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧
धनासरी छंत महला ४ घरु १
धनासरी छंत महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜੀਉ ॥
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥
अगर परमेश्वर अपनी कृपा करे तो ही उसके नाम का ध्यान किया जाता है।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਸੁਭਾਇ ਸਹਜਿ ਗੁਣ ਗਾਈਐ ਜੀਉ ॥
सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥
सतगुरु मिल जाए तो सहज-स्वभाव ही प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान होता है।

ਗੁਣ ਗਾਇ ਵਿਗਸੈ ਸਦਾ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾ ਆਪਿ ਸਾਚੇ ਭਾਵਏ ॥
गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥
यदि परमेश्वर को स्वयं भा जाए तो मनुष्य दिन-रात उसकी महिमा गा कर सदैव ही प्रसन्न रहता है।

ਅਹੰਕਾਰੁ ਹਉਮੈ ਤਜੈ ਮਾਇਆ ਸਹਜਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਵਏ ॥
अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥
वह अपना अहंकार, अपने अहंत्व एवं माया के मोह को त्याग देता है और सहज ही नाम में समा जाता है।

ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਕਰੇ ਸੋਈ ਆਪਿ ਦੇਇ ਤ ਪਾਈਐ ॥
आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥
कर्ता-परमेश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है, जब वह स्वयं देन प्रदान करता है तो ही मनुष्य नाम की देन प्राप्त करता है।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਤਾ ਨਾਮੁ ਧਿਆਈਐ ਜੀਉ ॥੧॥
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥१॥
गुरु साहिब का फरमान है कि यदि भगवान अपनी कृपा करे तो ही उसके नाम का ध्यान किया जाता है।॥१॥

ਅੰਦਰਿ ਸਾਚਾ ਨੇਹੁ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰੈ ਜੀਉ ॥
अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥
हे भाई ! पूर्ण सतगुरु ने मेरे मन में प्रभु हेतु सच्चा प्रेम उत्पन्न कर दिया है।

ਹਉ ਤਿਸੁ ਸੇਵੀ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਮੈ ਕਦੇ ਨ ਵੀਸਰੈ ਜੀਉ ॥
हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥
अब मैं दिन-रात उसका ही सिमरन करता रहता हूँ और वह मुझे कदापि नहीं भूलता।

ਕਦੇ ਨ ਵਿਸਾਰੀ ਅਨਦਿਨੁ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਜਾ ਨਾਮੁ ਲਈ ਤਾ ਜੀਵਾ ॥
कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥
मैं उसे कदापि विस्मृत नहीं करता और प्रतिदिन उसका ही सिमरन करता रहता हूँ। जब मैं उसका नाम लेता हूँ तो जिंदा रहता हूँ।

ਸ੍ਰਵਣੀ ਸੁਣੀ ਤ ਇਹੁ ਮਨੁ ਤ੍ਰਿਪਤੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਪੀਵਾ ॥
स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अम्रितु पीवा ॥
जब मैं अपने कानों से नाम श्रवण करता हूँ तो मेरा यह मन तृप्त हो जाता है। मैं गुरु के माध्यम से नामामृत ही पीता रहता हूँ।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਤਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਅਨਦਿਨੁ ਬਿਬੇਕ ਬੁਧਿ ਬਿਚਰੈ ॥
नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥
ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करे तो मनुष्य को सतगुरु से मिला देता है और फिर गुरु की अनुकंपा से उसके मन में विवेक बुद्धि विचरन करती है।

ਅੰਦਰਿ ਸਾਚਾ ਨੇਹੁ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰੈ ॥੨॥
अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥२॥
सतगुरु ने मेरे हृदय में सच्चा प्रेम लगा दिया है॥२॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵਏ ਜੀਉ ॥
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥
यदि मनुष्य को अहोभाग्य से सत्संगति मिल जाए तो उसे हरि-रस ही प्राप्त होता है।

ਅਨਦਿਨੁ ਰਹੈ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵਏ ਜੀਉ ॥
अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥
वह दिन-रात परम-सत्य में ही अपना ध्यान लगाकर रखता है, जिसके फलस्वरूप वह हर समय सहज अवस्था में लीन हुआ रहता है।

ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਤਾ ਹਰਿ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਸਦਾ ਅਤੀਤੁ ਬੈਰਾਗੀ ॥
सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥
जब वह सहज अवस्था में समाया रहता है तो वह भगवान के मन को बड़ा अच्छा लगता है और सदैव निर्लिप्त एवं वैराग्यवान रहता है।

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਸੋਭਾ ਜਗ ਅੰਤਰਿ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥
राम नाम में लगन लगाने से लोक-परलोक एवं समूचे जगत में उसे शोभा प्राप्त हो जाती है।

ਹਰਖ ਸੋਗ ਦੁਹਾ ਤੇ ਮੁਕਤਾ ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਕਰੇ ਸੁ ਭਾਵਏ ॥
हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥
वह सुख एवं दुःख दोनों से ही मुक्त हो जाता है। फिर प्रभु जो कुछ भी करता है, वही उसे अच्छा लगता है।

ਸਤਸੰਗਤਿ ਮਿਲੈ ਵਡਭਾਗਿ ਤਾ ਹਰਿ ਰਸੁ ਆਵਏ ਜੀਉ ॥੩॥
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥३॥
अहोभाग्य से मनुष्य को सत्संगति मिल जाए तो उसे सत्संगति में हरि-रस प्राप्त हो जाता है।॥३॥

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖ ਜਮਿ ਜੋਹਿਆ ਜੀਉ ॥
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥
मृत्यु ने स्वेच्छाचारी मनुष्य को अपनी दृष्टि में रखा हुआ है और द्वैतभाव के कारण वह बहुत दुःखी होता है।

ਹਾਇ ਹਾਇ ਕਰੇ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ਮਾਇਆ ਦੁਖਿ ਮੋਹਿਆ ਜੀਉ ॥
हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥
वह माया के दुःख में ही फँसकर 'हाय-हाय' करता रहता है।

ਮਾਇਆ ਦੁਖਿ ਮੋਹਿਆ ਹਉਮੈ ਰੋਹਿਆ ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕਰਤ ਵਿਹਾਵਏ ॥
माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥
वह माया के दुःख में फँसा रहता है और अहंकार में फँसा हुआ क्रोधी बन गया है। उसका समूचा जीवन 'मेरी-मेरी' करते ही व्यतीत हो जाता है।

ਜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਇ ਤਿਸੁ ਚੇਤੈ ਨਾਹੀ ਅੰਤਿ ਗਇਆ ਪਛੁਤਾਵਏ ॥
जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥
जो प्रभु उसे सब कुछ देता है, उसे स्मरण नहीं करता, अंतिम समय वह पछताता है।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਕੋ ਸਾਥਿ ਨ ਚਾਲੈ ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਮਾਇਆ ਧੋਹਿਆ ॥
बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥
नाम के सिवाय अन्य कुछ भी प्राणी के साथ नहीं जाता। उसके पुत्र, स्त्री एवं धन-दौलत ने उसे ठग लिया है।

ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਦੁਖੁ ਹੋਇ ਮਨਮੁਖਿ ਜਮਿ ਜੋਹਿਆ ਜੀਉ ॥੪॥
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥४॥
गुरु साहिब का फरमान है कि द्वैतभाव में फँसकर स्वेच्छाचारी प्राणी बहुत दुःखी होता है और मृत्यु उस पर अपनी दृष्टि रखती है ॥४॥

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ਮਹਲੁ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਜੀਉ ॥
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥
भगवान ने स्वयं ही अपनी कृपा करके उसे अपने साथ मिला लिया है, गुरुमुख ने दसम द्वार प्राप्त कर लिया है, वह प्रभु के मन को भा गया है और

ਸਦਾ ਰਹੈ ਕਰ ਜੋੜਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ਜੀਉ ॥
सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥
वह अपने दोनों हाथ जोड़कर सदैव ही उसके समक्ष खड़ा रहता है।

ਪ੍ਰਭੁ ਮਨਿ ਭਾਵੈ ਤਾ ਹੁਕਮਿ ਸਮਾਵੈ ਹੁਕਮੁ ਮੰਨਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥
प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥
उसका हुक्म मानकर उसने सुख प्राप्त किया है, जब प्रभु के मन को भा गया है तो वह उसके हुक्म में ही लीन हो गया।

ਅਨਦਿਨੁ ਜਪਤ ਰਹੈ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਸਹਜੇ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ॥
अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥
वह दिन-रात सर्वदा ही उस प्रभु का सिमरन करता रहता है और सहज ही नाम का ध्यान-मनन करता है।

ਨਾਮੋ ਨਾਮੁ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਮਨਿ ਭਾਵਏ ॥
नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥
नाम के द्वारा ही उसे नाम रूपी बड़ाई प्राप्त होती है। प्रभु का नाम ही नानक के मन को भाया है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਲੇਹੁ ਮਿਲਾਇ ਮਹਲੁ ਹਰਿ ਪਾਵਏ ਜੀਉ ॥੫॥੧॥
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥५॥१॥
ईश्वर ने स्वयं ही अपनी कृपा से अपने साथ मिला लिया है और उसने प्रभु का महल दसम द्वार प्राप्त कर लिया है ॥५॥१॥

ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ
धनासरी महला ५ छंत
धनासरी महला ५ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਤਿਗੁਰ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਗਾਵੀਐ ਜੀਉ ॥
सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥
जिसकी संगति में मिलकर भगवान का गुणगान किया जाता है, वह सतगुरु दीनदयाल है।

ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਸਾਧਸੰਗਿ ਰਾਵੀਐ ਜੀਉ ॥
अम्रितु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥
प्रभु का नाम अमृत है, जो साधु-संगति में मिलकर ही गाया जाता है।

ਭਜੁ ਸੰਗਿ ਸਾਧੂ ਇਕੁ ਅਰਾਧੂ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੁਖ ਨਾਸਏ ॥
भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥
साधुओं की सभा में मिलकर भगवान का भजन करो, उसके एक नाम की ही आराधना करो, जिससे जन्म-मरण का दुःख नाश हो जाता है।

ਧੁਰਿ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ ਸਾਚੁ ਸਿਖਿਆ ਕਟੀ ਜਮ ਕੀ ਫਾਸਏ ॥
धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥
जिस मनुष्य के माथे पर जन्म से पूर्व आरम्भ से ही अच्छी तकदीर लिखी हुई है, उसने गुरु की सच्ची शिक्षा प्राप्त कर ली है और उसकी मृत्यु की फाँसी कट गई है।

ਭੈ ਭਰਮ ਨਾਠੇ ਛੁਟੀ ਗਾਠੇ ਜਮ ਪੰਥਿ ਮੂਲਿ ਨ ਆਵੀਐ ॥
भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥
उसके भय एवं भ्रम दूर हो गए हैं और माया की त्रिगुणात्मक गांठ खुल गई है। वह मृत्यु के मार्ग पर कदाचित नहीं पड़ता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਦਾ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵੀਐ ॥੧॥
बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥१॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मैं सदैव ही तेरा स्तुतिगान करता रहूँ ॥१॥

ਨਿਧਰਿਆ ਧਰ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੋ ਜੀਉ ॥
निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥
परमात्मा का एक पवित्र नाम ही निराश्रितों का आश्रय है।

ਤੂ ਦਾਤਾ ਦਾਤਾਰੁ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੰਜਨੋ ਜੀਉ ॥
तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥
हे मेरे दातार ! एक तू ही सबको देने वाला है और तू सब जीवों के दुःख नाश करने वाला है।

ਦੁਖ ਹਰਤ ਕਰਤਾ ਸੁਖਹ ਸੁਆਮੀ ਸਰਣਿ ਸਾਧੂ ਆਇਆ ॥
दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥
हे जगत के स्वामी ! तू दुःखों का नाश करके सुख प्रदान करने वाला है। मैं तेरे साधु की शरण में आया हूँ।

ਸੰਸਾਰੁ ਸਾਗਰੁ ਮਹਾ ਬਿਖੜਾ ਪਲ ਏਕ ਮਾਹਿ ਤਰਾਇਆ ॥
संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥
यह संसार सागर पार करना बहुत ही कठिन है परन्तु तेरे साधु ने मुझे एक पल में ही इससे पार करवा दिया है।

ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਥਾਈ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਨੇਤ੍ਰੀ ਅੰਜਨੋ ॥
पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥
जब मैंने गुरु के ज्ञान का सुरमा अपनी आँखों में लगाया तो मैंने देखा कि परमात्मा सर्वव्यापी है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸਿਮਰੀ ਸਰਬ ਦੁਖ ਭੈ ਭੰਜਨੋ ॥੨॥
बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥२॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि सर्व दुःख एवं भय का नाश करने वाले प्रभु ! मैं सदैव ही तेरा नाम-सिमरन करता रहूँ ॥२॥

ਆਪਿ ਲੀਏ ਲੜਿ ਲਾਇ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀਆ ਜੀਉ ॥
आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥
हे प्रभु! अपनी कृपा करके तूने स्वयं ही मुझे अपने आंचल के साथ लगा लिया है।

ਮੋਹਿ ਨਿਰਗੁਣੁ ਨੀਚੁ ਅਨਾਥੁ ਪ੍ਰਭ ਅਗਮ ਅਪਾਰੀਆ ਜੀਉ ॥
मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥
मैं गुणविहीन, नीच एवं अनाथ हूँ परन्तु हे प्रभु ! तू अगम्य एवं अपरम्पार है।

ਦਇਆਲ ਸਦਾ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸੁਆਮੀ ਨੀਚ ਥਾਪਣਹਾਰਿਆ ॥
दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥
हे मेरे स्वामी ! तू सदैव ही दयालु एवं कृपालु है। तू मुझ जैसे नीच को भी सर्वोच्च बनाने वाला है।

ਜੀਅ ਜੰਤ ਸਭਿ ਵਸਿ ਤੇਰੈ ਸਗਲ ਤੇਰੀ ਸਾਰਿਆ ॥
जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥
समस्त जीव-जन्तु तेरे वशीभूत हैं और तू सबकी देखरेख करता है।

ਆਪਿ ਕਰਤਾ ਆਪਿ ਭੁਗਤਾ ਆਪਿ ਸਗਲ ਬੀਚਾਰੀਆ ॥
आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥
तू स्वयं ही सभी पदार्थ भोगने वाला है, तू स्वयं ही जीवों की आवश्यकता के बारे में विचार करता है।

ਬਿਨਵੰਤ ਨਾਨਕ ਗੁਣ ਗਾਇ ਜੀਵਾ ਹਰਿ ਜਪੁ ਜਪਉ ਬਨਵਾਰੀਆ ॥੩॥
बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥३॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! मैं तेरा गुणगान करके ही जीता हूँ और तेरा ही जाप जपता रहूँ ॥३॥

ਤੇਰਾ ਦਰਸੁ ਅਪਾਰੁ ਨਾਮੁ ਅਮੋਲਈ ਜੀਉ ॥
तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥
हे ईश्वर ! तेरे दर्शन अपार फलदायक हैं और तेरा नाम अनमोल है।

ਨਿਤਿ ਜਪਹਿ ਤੇਰੇ ਦਾਸ ਪੁਰਖ ਅਤੋਲਈ ਜੀਉ ॥
निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥
हे अतुलनीय परमपुरुष ! तेरे दास नित्य ही तेरे नाम का भजन करते रहते हैं।

ਸੰਤ ਰਸਨ ਵੂਠਾ ਆਪਿ ਤੂਠਾ ਹਰਿ ਰਸਹਿ ਸੇਈ ਮਾਤਿਆ ॥
संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥
जिन संतजनों पर तू प्रसन्न हो गया है, तू उनकी रसना में आकर बस गया है और वे हरि-रस में ही मस्त रहते हैं।

ਗੁਰ ਚਰਨ ਲਾਗੇ ਮਹਾ ਭਾਗੇ ਸਦਾ ਅਨਦਿਨੁ ਜਾਗਿਆ ॥
गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥
वे बड़े भाग्यशाली हैं, जो गुरु के चरणों में आ लगे हैं और सदा जाग्रत रहते हैं।

ਸਦ ਸਦਾ ਸਿੰਮ੍ਰਤਬ੍ ਸੁਆਮੀ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਗੁਣ ਬੋਲਈ ॥
सद सदा सिम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥
ये सदैव ही स्मरणीय स्वामी के गुण श्वास-श्वास से बोलते रहते हैं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਧੂਰਿ ਸਾਧੂ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭੂ ਅਮੋਲਈ ॥੪॥੧॥
बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥४॥१॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझे साधु की चरण-धूलि प्रदान करो, तेरा नाम बड़ा अनमोल है ॥४॥१॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਕੀ
रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की
रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਨਕ ਸਨੰਦ ਮਹੇਸ ਸਮਾਨਾਂ ॥ ਸੇਖਨਾਗਿ ਤੇਰੋ ਮਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾਂ ॥੧॥
सनक सनंद महेस समानां ॥ सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥१॥
हे ईश्वर ! ब्रह्मा जी के पुत्र सनक, सनन्दन एवं शिव-शंकर सरीखों और शेषनाग ने भी तेरा भेद नहीं समझा ॥१॥

ਸੰਤਸੰਗਤਿ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਬਸਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥१॥ रहाउ ॥
संतों की संगत करने से राम हृदय में आकर स्थित होता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਹਨੂਮਾਨ ਸਰਿ ਗਰੁੜ ਸਮਾਨਾਂ ॥ ਸੁਰਪਤਿ ਨਰਪਤਿ ਨਹੀ ਗੁਨ ਜਾਨਾਂ ॥੨॥
हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥२॥
हनुमान जैसे, पक्षियों के राजा गरुड़ जैसे, देवराज इन्द्र एवं मनुष्यों के राजाओं ने भी तेरे गुणों को नहीं जाना ॥२॥

ਚਾਰਿ ਬੇਦ ਅਰੁ ਸਿੰਮ੍ਰਿਤਿ ਪੁਰਾਨਾਂ ॥ ਕਮਲਾਪਤਿ ਕਵਲਾ ਨਹੀ ਜਾਨਾਂ ॥੩॥
चारि बेद अरु सिम्रिति पुरानां ॥ कमलापति कवला नही जानां ॥३॥
चार वेद-ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, सत्ताईस स्मृतियाँ, अठारह पुराण, लक्ष्मीपति विष्णु एवं लक्ष्मी भी तेरे रहस्य को नहीं जान सके॥३॥

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਸੋ ਭਰਮੈ ਨਾਹੀ ॥ ਪਗ ਲਗਿ ਰਾਮ ਰਹੈ ਸਰਨਾਂਹੀ ॥੪॥੧॥
कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लगि राम रहै सरनांही ॥४॥१॥
कबीर जी कहते हैं कि वह मनुष्य दुविधा में कभी नहीं भटकता, जो संतों के चरणों में लगकर राम की शरण में पड़ा रहता ॥४॥१॥

ਦਿਨ ਤੇ ਪਹਰ ਪਹਰ ਤੇ ਘਰੀਆਂ ਆਵ ਘਟੈ ਤਨੁ ਛੀਜੈ ॥
दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥
दिनों से प्रहर एवं प्रहरों से घड़ियों होकर मनुष्य की आयु कम होती जाती है और उसका शरीर कमजोर होता रहता है।

कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥
कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥
काल रूपी शिकारी उसके आस-पास हत्यारे की तरह फिरता रहता है। बताओ, मृत्यु से बचने के लिए वह कौन-सी विधि का प्रयोग करे ? ॥१॥

सो दिनु आवन लागा ॥
सो दिनु आवन लागा ॥
वह दिन निकट आने वाला है, जब मृत्यु ने उसके प्राण छीन लेने हैं।

मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥१॥ रहाउ ॥
मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥१॥ रहाउ ॥
बताओ, माता-पिता, भाई, पुत्र एवं स्त्री इन में से कौन किस का है ?॥१॥ रहाउ॥

जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥
जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥
जब तक जीवन की ज्योति अर्थात् आत्मा शरीर में रहती है, तब तक यह पशु जैसा मूर्ख मनुष्य अपने आत्म-स्वरूप को नहीं समझता।

लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥२॥
लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥२॥
वह और अधिक जीवन जीने की लालच करता है परन्तु उसे अपनी आंखों से कुछ भी नहीं सूझता ॥२॥

कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! सुनो, अपने मन के सारे भ्रम छोड़ दो।

केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥३॥२॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥३॥२॥
हे प्राणी ! एक परमेश्वर की शरण में जाओ और केवल उसके नाम का ही भजन करो ॥३॥२॥

ਜੋ ਜਨੁ ਭਾਉ ਭਗਤਿ ਕਛੁ ਜਾਨੈ ਤਾ ਕਉ ਅਚਰਜੁ ਕਾਹੋ ॥
जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥
जो व्यक्ति भगवान के प्रेम एवं उसकी भक्ति के बारे में कुछ जानता है, उसके लिए कोई भी आश्चर्यजनक बात नहीं है।

ਜਿਉ ਜਲੁ ਜਲ ਮਹਿ ਪੈਸਿ ਨ ਨਿਕਸੈ ਤਿਉ ਢੁਰ�ि ਮਿਲਿਓ ਜੁਲਾਹੋ ॥੧॥
जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥१॥
जैसे जल में मिलकर जल दुबारा अलग नहीं होता, वैसे ही कबीर जुलाहा भी अपने आत्माभिमान को समाप्त करके भगवान में लीन हो गया है॥१॥

ਹਰਿ ਕੇ ਲੋਗਾ ਮੈ ਤਉ ਮਤਿ ਕਾ ਭੋਰਾ ॥
हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥
हे भगवान के लोगो ! मैं तो बुद्धि का भोला हूँ।

ਜਉ ਤਨੁ ਕਾਸੀ ਤਜਹਿ ਕਬੀਰਾ ਰਮਈਐ ਕਹਾ ਨਿਹੋਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥
यदि कबीर अपना शरीर काशी (बनारस) में त्याग दे और मोक्ष प्राप्त कर ले तो इसमें मेरे राम का मुझ पर कौन-सा उपकार होगा ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਹਤੁ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਈ ਭਰਮਿ ਨ ਭੂਲਹੁ ਕੋਈ ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥
कबीर जी का कथन है कि हे लोगो ! ध्यानपूर्वक सुनो, कोई भ्रम में पड़कर भत भूलो;

ਕਿਆ ਕਾਸੀ ਕਿਆ ਊਖਰੁ ਮਗਹਰੁ ਰਾਮੁ ਰਿਦੈ ਜਉ ਹੋਈ ॥੨॥੩॥
किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥२॥३॥
जिसके हृदय में राम स्थित है, उसके लिए क्या काशी और वीरान मगहर है, अर्थात् शरीर का त्याग करने के लिए दोनों एक समान हैं।॥२॥३॥

ਇੰਦ੍ਰ ਲੋਕ ਸਿਵ ਲੋਕਹਿ ਜੈਬੋ ॥ ਓਛੇ ਤਪ ਕਰਿ ਬਾਹੁਰਿ ਐਬੋ ॥੧॥
इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥१॥
यदि कोई मनुष्य तपस्या करके इन्द्रलोक एवं शिवलोक में चला जाता है तो ओछी तपस्या अथवा दुष्कर्मो के कारण वह पुनः वापिस आ जाता है॥१॥

ਕਿਆ ਮਾਂਗਉ ਕਿਛੁ ਥਿਰੁ ਨਾਹੀ ॥
किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥
मैं भगवान से क्या मांगू? क्योंकि इस सृष्टि में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं अर्थात् सब कुछ नश्वर होने वाला है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਖੁ ਮਨ ਮਾਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नाम रखु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥
अतः राम के नाम को ही अपने मन में बसा कर रखो ॥१॥ रहाउ ॥

ਸੋਭਾ ਰਾਜ ਬਿਭੈ ਬਡਿਆਈ ॥
सोभा राज बिभै बडिआई ॥
दुनिया में शोभा, धरती का राज्य शासन, ऐश्वर्य-वैभव एवं बड़ाई

ਅੰਤਿ ਨ ਕਾਹੂ ਸੰਗ ਸਹਾਈ ॥੨॥
अंति न काहू संग सहाई ॥२॥
अंत में किसी के भी साथी एवं सहायक नहीं बनते॥२॥

ਪੁਤ੍ਰ ਕਲਤ੍ਰ ਲਛਮੀ ਮਾਇਆ ॥
पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥
पुत्र, पत्नी, धन-दौलत एवं सम्पति-इनसे बताओ,

ਇਨ ਤੇ ਕਹੁ ਕਵਨੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੩॥
इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥३॥
कब किसी ने सुख प्राप्त किया है?॥३॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰ ਅਵਰ ਨਹੀ ਕਾਮਾ ॥
कहत कबीर अवर नही कामा ॥
कबीर जी का कथन है कि मेरी अन्य कोई अभिलाषा नहीं है,

ਹਮਰੈ ਮਨ ਧਨ ਰਾਮ ਕੋ ਨਾਮਾ ॥੪॥੪॥
हमरै मन धन राम को नामा ॥४॥४॥
क्योंकि मेरे मन का धन तो राम का नाम है॥४॥४॥

ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਰਾਮ ਸਿਮਰਿ ਭਾਈ ॥
राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥
हे भाई ! प्रेम से राम का सिमरन करते रहो, हमेशा राम का ही सिमरन करो।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਬਿਨੁ ਬੂਡਤੇ ਅਧਿਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि राम नाम के सिमरन के बिना बहुत सारे लोग भवसागर में ही डूब जाते हैं॥१॥ रहाउ॥

ਬਨਿਤਾ ਸੁਤ ਦੇਹ ਗ੍ਰੇਹ ਸੰਪਤਿ ਸੁਖਦਾਈ ॥
बनिता सुत देह ग्रेह स्मपति सुखदाई ॥
स्त्री, पुत्र, सुन्दर शरीर, घर एवं सम्पति-ये सभी सुख देने वाले प्रतीत होते हैं परन्तु

ਇਨ੍ ਮੈ ਕਛੁ ਨਾਹਿ ਤੇਰੋ ਕਾਲ ਅਵਧ ਆਈ ॥੧॥
इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥१॥
जब तेरी मृत्यु का समय आएगा, तब इन में से कुछ भी तेरा नहीं रहेगा।॥१॥

ਅਜਾਮਲ ਗਜ ਗਨਿਕਾ ਪਤਿਤ ਕਰਮ ਕੀਨੇ ॥
अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥
अजामल ब्राह्मण, गजिन्द्र हाथी एवं एक वेश्या ने जीवन भर पतित कर्म ही किए थे,

ਤੇਊ ਉਤਰਿ ਪਾਰਿ ਪਰੇ ਰਾਮ ਨਾਮ ਲੀਨੇ ॥੨॥
तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥२॥
परन्तु राम नाम का सिमरन करने से वे भी भवसागर से पार हो गए॥ २॥

ਸੂਕਰ ਕੂਕਰ ਜੋਨਿ ਭ੍ਰਮੇ ਤਊ ਲਾਜ ਨ ਆਈ ॥
सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥
हे प्राणी ! पूर्व जन्मों में तू सूअर एवं कुते की योनियों में भटकता रहा, परन्तु फिर भी तुझे शर्म नहीं आई।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਛਾਡਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾਹੇ ਬਿਖੁ ਖਾਈ ॥੩॥
राम नाम छाडि अम्रित काहे बिखु खाई ॥३॥
राम नाम रूपी अमृत को छोड़कर तू क्यों विषय-विकार रूपी विष खाता है॥ ३॥

ਤਜਿ ਭਰਮ ਕਰਮ ਬਿਧਿ ਨਿਖੇਧ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਲੇਹੀ ॥
तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥
तू शास्त्रों की विधि अनुसार करने योग्य कर्म एवं निषेध कर्मो के भ्रम को छोड़कर राम नाम का ही सिमरन करता रह।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਜਨ ਕਬੀਰ ਰਾਮੁ ਕਰਿ ਸਨੇਹੀ ॥੪॥੫॥
गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥४॥५॥
कबीर जी का कथन है कि गुरु की कृपा से राम को अपना मित्र बना॥४॥५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਕੀ
धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की
धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗਹਰੀ ਕਰਿ ਕੈ ਨੀਵ ਖੁਦਾਈ ਊਪਰਿ ਮੰਡਪ ਛਾਏ ॥
गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥
लोगों ने गहरी नीव खोदकर उस पर बड़े ऊँचे-ऊँचे महल बनवाए हैं।

ਮਾਰਕੰਡੇ ਤੇ ਕੋ ਅਧਿਕਾਈ ਜਿਨਿ ਤ੍ਰਿਣ ਧਰਿ ਮੂੰਡ ਬਲਾਏ ॥੧॥
मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥१॥
किन्तु मार्कण्डेय ऋषि से भी अधिक लम्बी आयु वाला कौन हुआ है ? जिसने तिनकों की कुटिया बनाकर ही अपना जीवन व्यतीत किया था॥ १॥

ਹਮਰੋ ਕਰਤਾ ਰਾਮੁ ਸਨੇਹੀ ॥
हमरो करता रामु सनेही ॥
मेरा रचयिता राम ही मेरा शुभचिन्तक है।

ਕਾਹੇ ਰੇ ਨਰ ਗਰਬੁ ਕਰਤ ਹਹੁ ਬਿਨਸਿ ਜਾਇ ਝੂਠੀ ਦੇਹੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥
हे प्राणी ! तू क्यों अभिमान करता है? तेरा यह नश्वर शरीर एक दिन अवश्य नष्ट हो जाएगा ॥१॥ रहाउ ॥

ਮੇਰੀ ਮੇਰੀ ਕੈਰਉ ਕਰਤੇ ਦੁਰਜੋਧਨ ਸੇ ਭਾਈ ॥
मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥
जिनके भाई दुर्योधन जैसे पराक्रमी शूरवीर थे, वे कौरव भी अहंकार में आकर 'मेरी-मेरी' करते थे।

ਬਾਰਹ ਜੋਜਨ ਛਤ੍ਰੁ ਚਲੈ ਥਾ ਦੇਹੀ ਗਿਰਝਨ ਖਾਈ ॥੨॥
बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥
जिस दुर्योधन का साम्राज्य बारह योजन तक फैला हुआ था, उसकी मृतक देह को भी गिद्धों ने अपना भक्षण बनाया॥२॥

ਸਰਬ ਸੋਇਨ ਕੀ ਲੰਕਾ ਹੋਤੀ ਰਾਵਨ ਸੇ ਅਧਿਕਾਈ ॥
सरब सोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥
महाबली लंकापति रावण की सारी लंका सोने की बनी हुई थी

ਕਹਾ ਭਇਓ ਦਰਿ ਬਾਂਧੇ ਹਾਥੀ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਈ ਪਰਾਈ ॥੩॥
कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥
परन्तु उसके द्वार पर बंधे हुए हाथी भी उसके किसी काम नहीं आए और क्षण भर में ही उसकी सारी लंका पराई हो गई॥३॥

ਦੁਰਬਾਸਾ ਸਿਉ ਕਰਤ ਠਗਉਰੀ ਜਾਦਵ ਏ ਫਲ ਪਾਏ ॥
दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥
दुर्वासा ऋषि से कपट करके यादवों ने यह फल प्राप्त किया कि उसके श्राप देने से उनके समूचे वंश का ही सर्वनाश हो गया।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੀ ਜਨ ਅਪੁਨੇ ਊਪਰ ਨਾਮਦੇਉ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਏ ॥੪॥੧॥
क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥४॥१॥
भगवान ने स्वयं ही अपने भक्त पर कृपा की है और नामदेव अब भगवान का ही गुणगान करता रहता है ॥४॥१॥

ਦਸ ਬੈਰਾਗਨਿ ਮੋਹਿ ਬਸਿ ਕੀਨ੍ਹੀ ਪੰਚਹੁ ਕਾ ਮਿਟ ਨਾਵਉ ॥
दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ ॥
मैंने अपनी दसों इन्द्रियों को अपने नियन्त्रण में कर लिया है और मन में से मेरे पाँचों शत्रु काम, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार का तो नामोनिशान ही मिट गया है।

ਸਤਰਿ ਦੋਇ ਭਰੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰਿ ਬਿਖੁ ਕਉ ਮਾਰਿ ਕਢਾਵਉ ॥੧॥
सतरि दोइ भरे अम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥१॥
मैंने अपने शरीर के सरोवरों को नामामृत से भर लिया है एवं विष रूपी विषय-विकारों का दमन करके बाहर निकाल दिया है॥१॥

ਪਾਛੈ ਬਹੁਰਿ ਨ ਆਵਨੁ ਪਾਵਉ ॥
पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥
अब मैं इन विकारों को वापिस नहीं आने दूँगा।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਘਟ ਤੇ ਉਚਰਉ ਆਤਮ ਕਉ ਸਮਝਾਵਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥१॥ रहाउ ॥
अब मैं एकाग्रचित होकर अमृत वाणी का ही उच्चारण करता रहता हूँ और अपनी आत्मा को इसी कार्य में लगे रहने का उपदेश देता रहता हूँ॥१॥ रहाउ॥

ਬਜਰ ਕੁਠਾਰੁ ਮੋਹਿ ਹੈ ਛੀਨਾਂ ਕਰਿ ਮਿੰਨਤਿ ਲਗਿ ਪਾਵਉ ॥
बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ ॥
मैं निवेदन करके गुरु के चरणों में लग गया हूँ और नाम रूपी वज्र कुठार से मोह को नाश कर दिया है।

ਸੰਤਨ ਕੇ ਹਮ ਉਲਟੇ ਸੇਵਕ ਭਗਤਨ ਤੇ ਡਰਪਾਵਉ ॥੨॥
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥२॥
मैं संसार की तरफ से विमुख होकर संतों का सेवक बन गया हूँ और भक्तों का भय अपने मन में रखने लग गया हूँ॥२॥

ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਤੇ ਤਬ ਹੀ ਛੂਟਉ ਜਉ ਮਾਇਆ ਨਹ ਲਪਟਾਵਉ ॥
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥
इस संसार के बन्धनों से मैं तभी मुक्त होऊँगा यदि मैं माया के साथ संलग्न नहीं होऊँगा।

ਮਾਇਆ ਨਾਮੁ ਗਰਭ ਜੋਨਿ ਕਾ ਤਿਹ ਤਜਿ ਦਰਸਨੁ ਪਾਵਉ ॥੩॥
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥३॥
माया तो उस शक्ति का नाम है, जो जीवों को गर्भ-योनि में भटकाती रहती है और इसका त्याग करके ही में भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकता हूँ॥३॥

ਇਤੁ ਕਰਿ ਭਗਤਿ ਕਰਹਿ ਜੋ ਜਨ ਤਿਨ ਭਉ ਸਗਲ ਚੁਕਾਈਐ ॥
इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥
जो व्यक्ति इस प्रकार अर्थात् माया का त्याग करके भक्ति करते है, उनका जन्म-मरण का सारा भय दूर हो जाता है।

ਕਹਤ ਨਾਮਦੇਉ ਬਾਹਰਿ ਕਿਆ ਭਰਮਹੁ ਇਹ ਸੰਜਮ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ॥੪॥੨॥
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥४॥२॥
नामदेव जी का कथन है कि हे भाई ! भगवान को ढूंढने के लिए बाहर वनों में क्यों भटकते हो ? क्योंकि उपरोक्त विधि द्वारा वह तो हृदय-घर में ही प्राप्त हो जाता है। ॥४॥२॥

ਮਾਰਵਾੜਿ ਜੈਸੇ ਨੀਰੁ ਬਾਲਹਾ ਬੇਲਿ ਬਾਲਹਾ ਕਰਹਲਾ ॥
मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
मारवाड़ देश में जैसे जल प्यारा होता है और ऊँट को लता प्यारी लगती है।

ਜਿਉ ਕੁਰੰਕ ਨਿਸਿ ਨਾਦੁ ਬਾਲਹਾ ਤਿਉ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਰਾਮਈਆ ॥੧॥
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
जैसे मृग को रात्रिकाल में ध्वनि मधुर लगती है, वैसे ही मेरे मन में मुझे राम बहुत प्यारा लगता है॥१॥

ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਰੂੜੋ ਰੂਪੁ ਰੂੜੋ ਅਤਿ ਰੰਗ ਰੂੜੋ ਮੇਰੋ ਰਾਮਈਆ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरे राम ! तेरा नाम बहुत सुन्दर है, तेरा रूप सुन्दर है और तेरा रंग भी अति सुन्दर है॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਉ ਧਰਣੀ ਕਉ ਇੰਦ੍ਰੁ ਬਾਲਹਾ ਕੁਸਮ ਬਾਸੁ ਜੈਸੇ ਭਵਰਲਾ ॥
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥
जैसे धरती को बादल प्यारा लगता है, भंवरे को जैसे फूलों की महक प्यारी लगती है और

ਜਿਉ ਕੋਕਿਲ ਕਉ ਅੰਬੁ ਬਾਲਹਾ ਤਿਉ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਰਾਮਈਆ ॥੨॥
जिउ कोकिल कउ अ्मबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥
कोयल जैसे आम अति प्रिय है, वैसे ही मेरे मन में मुझे राम अति प्रिय है॥२॥

ਚਕਵੀ ਕਉ ਜੈਸੇ ਸੂਰੁ ਬਾਲਹਾ ਮਾਨ ਸਰੋਵਰ ਹੰਸੁਲਾ ॥
चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥
जैसे चकवी को सूर्य प्रिय होता है और हंस को मानसरोवर प्रिय होता है।

ਜਿਉ ਤਰੁਣੀ ਕਉ ਕੰਤੁ ਬਾਲਹਾ ਤਿਉ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਰਾਮਈਆ ॥੩॥
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥
जैसे युवती को अपना पति बहुत प्यारा है, वैसे ही मेरे मन को राम बड़ा प्रिय है॥ ३॥

ਬਾਰਿਕ ਕਉ ਜੈਸੇ ਖੀਰੁ ਬਾਲਹਾ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਮੁਖ ਜੈਸੇ ਜਲਧਰਾ ॥
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥
जैसे बालक का दूध से अत्याधिक प्रेम होता जैसे पपीहे को मुंह में स्वाति बूंद की धारा बहुत प्यारी होती है।

ਮਛੁਲੀ ਕਉ ਜੈਸੇ ਨੀਰੁ ਬਾਲਹਾ ਤਿਉ ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਰਾਮਈਆ ॥੪॥
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥
जैसे मछली का जल से है, वैसे ही मेरे मन में राम से बहुत प्रेम है॥ ४॥

ਸਾਧਿਕ ਸਿਧ ਸਗਲ ਮੁਨਿ ਚਾਹਹਿ ਬਿਰਲੇ ਕਾਹੂ ਡੀਠੁਲਾ ॥
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥
तमाम साधक, सिद्ध एवं मुनिजन राम के दर्शन करने की अभिलाषा करते हैं परन्तु किसी विरले को ही उसके दर्शन प्राप्त होते हैं।

ਸਗਲ ਭਵਣ ਤੇਰੋ ਨਾਮੁ ਬਾਲਹਾ ਤਿਉ ਨਾਮੇ ਮਨਿ ਬੀਠੁਲਾ ॥੫॥੩॥
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥
हे राम ! जैसे तीन लोकों के जीवों को तेरा नाम बहुत प्यारा है, वैसे ही नामदेव के मन को बिट्ठल भगवान बहुत प्यारा है॥ ५॥ ३॥

ਪਹਿਲ ਪੁਰੀਏ ਪੁੰਡਰਕ ਵਨਾ ॥
पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥
सर्वप्रथम विष्णु जी की नाभि से कमल पैदा हुआ, फिर उस कमल में से ब्रह्मा जी पैदा हुए और

ਤਾ ਚੇ ਹੰਸਾ ਸਗਲੇ ਜਨਾਂ ॥
ता चे हंसा सगले जनां ॥
फिर इस जगत के समस्त जीव ब्रह्मा जी से उत्पन्न हुए हैं।

ਕ੍ਰਿਸ੍ਨਾ ਤੇ ਜਾਨਊ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਚੰਤੀ ਨਾਚਨਾ ॥੧॥
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥
आदिपुरुष परमात्मा की पैदा की हुई सृष्टि माया में फँसकर जीवन रूपी नृत्य कर रही है॥१॥

ਪਹਿਲ ਪੁਰਸਾਬਿਰਾ ॥
पहिल पुरसाबिरा ॥
सर्वप्रथम आदिपुरुष परमात्मा प्रगट हुआ और

ਅਥੋਨ ਪੁਰਸਾਦਮਰਾ ॥
अथोन पुरसादमरा ॥
फिर आदिपुरुष से प्रकृति पैदा हुई।

ਅਸਗਾ ਅਸ ਉਸਗਾ ॥

असगा अस उसगा ॥

यह सारी सृष्टि इस प्रकृति एवं उस आदिपुरुष दोनों के सम्मिलन से रची हुई है।

ਹਰਿ ਕਾ ਬਾਗਰਾ ਨਾਚੈ ਪਿੰਧੀ ਮਹਿ ਸਾਗਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥

यह जगत भगवान का एक सुन्दर उपवन है, जिसमें जीव यू नृत्य करते हैं जैसे कुएँ की रहटों में पानी नृत्य करता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਨਾਚੰਤੀ ਗੋਪੀ ਜੰਨਾ ॥

नाचंती गोपी जंना ॥

स्त्री एवं पुरुष नृत्य कर रहे हैं।

ਨਈਆ ਤੇ ਬੈਰੇ ਕੰਨਾ ॥

नईआ ते बैरे कंना ॥

इस जग में जीवों से नृत्य कराने वाला परमेश्वर के सिवाय अन्य कोई नहीं है।

ਤਰਕੁ ਨ ਚਾ ॥ ਭ੍ਰਮੀਆ ਚਾ ॥

तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥

तर्क करने से भ्रम उत्पन्न होता है।

ਕੇਸਵਾ ਬਚਉਨੀ ਅਈਏ ਮਈਏ ਏਕ ਆਨ ਜੀਉ ॥੨॥

केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥

प्रभु का वचन है कि इस जगत में एक मैं ही हूँ और एक मैं ही अन्य सब रूपों में विद्यमान हो रहा हूँ ॥२॥

ਪਿੰਧੀ ਉਭਕਲੇ ਸੰਸਾਰਾ ॥
पिंधी उभकले संसारा ॥
जगत के जीव कुएँ की रहटों की भांति भवसागर में डुबकियाँ लगाते रहते हैं अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में भटकते रहते हैं।

ਭ੍ਰਮਿ ਭ੍ਰਮਿ ਆਏ ਤੁਮ ਚੇ ਦੁਆਰਾ ॥
भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥
हे प्रभु! अनेक योनियों में भटक-भटक कर अब मैं तेरे द्वार पर तेरी शरण में आया हूँ।

ਤੂ ਕੁਨੁ ਰੇ ॥
तू कुनु रे ॥
प्रभु पूछता है कि हे प्राणी ! तू कौन है?

ਮੈ ਜੀ ॥ ਨਾਮਾ ॥ ਹੋ ਜੀ ॥
मै जी ॥ नामा ॥ हो जी ॥
भक्त जी उत्तर देते हैं कि मैं नामदेव हूँ। हे प्रभु जी !

ਆਲਾ ਤੇ ਨਿਵਾਰਣਾ ਜਮ ਕਾਰਣਾ ॥੩॥੪॥
आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥
मुझे जगत के जंजाल में से निकाल दीजिए, जो यमों के भय का कारण है॥ ३॥ ४॥

ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਮਾਧਉ ਬਿਰਦੁ ਤੇਰਾ ॥
पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥
हे माधव ! तेरा विरद् पापियों को पावन करना है।

ਧੰਨਿ ਤੇ ਵੈ ਮੁਨਿ ਜਨ ਜਿਨ ਧਿਆਇਓ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਮੇਰਾ ॥੧॥
धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥१॥
वे मुनिजन धन्य हैं, जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु का ध्यान किया है।॥१॥

ਮੇਰੈ ਮਾਥੈ ਲਾਗੀ ਲੇ ਧੂਰਿ ਗੋਬਿੰਦ ਚਰਨਨ ਕੀ ॥
मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥
मेरे माथे पर गोविंद की चरण-धूलि लग चुकी है।

ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਤਿਨਹੂ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥
देवते, मनुष्य एवं मुनिजन उसकी चरण-धूलि से दूर ही रहते रहे हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਦੀਨ ਕਾ ਦਇਆਲੁ ਮਾਧੌ ਗਰਬ ਪਰਹਾਰੀ ॥
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥
हे माधव ! तू दीनों पर दया करने वाला है और अहंकारियों का अहंकार नाश करने वाला है।

ਚਰਨ ਸਰਨ ਨਾਮਾ ਬਲਿ ਤਿਹਾਰੀ ॥੨॥੫॥
चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥
नामदेव प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मैंने तेरे चरणों की शरण ली है और मैं तुझ पर ही कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ ५॥

ਧਨਾਸਰੀ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਕੀ
धनासरी भगत रविदास जी की
धनासरी भगत रविदास जी की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਮ ਸਰਿ ਦੀਨੁ ਦਇਆਲੁ ਨ ਤੁਮ ਸਰਿ ਅਬ ਪਤੀਆਰੁ ਕਿਆ ਕੀਜੈ ॥
हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
हे मेरे परमेश्वर ! मुझ जैसा कोई दीन नहीं है और तुझ जैसा अन्य कोई दयालु नहीं है। अब भला और अजमायश क्या करनी है ?

ਬਚਨੀ ਤੋਰ ਮੋਰ ਮਨੁ ਮਾਨੈ ਜਨ ਕਉ ਪੂਰਨੁ ਦੀਜੈ ॥੧॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥
अपने सेवक को यह पूर्णतया प्रदान कीजिए कि मेरा मन तेरे वचनों पर आस्था धारण करे॥१॥

ਹਉ ਬਲਿ ਬਲਿ ਜਾਉ ਰਮਈਆ ਕਾਰਨੇ ॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥
हे मेरे राम ! मैं तुझ पर तन एवं मन से कुर्बान जाता हूँ।

ਕਾਰਨ ਕਵਨ ਅਬੋਲ ॥ ਰਹਾਉ ॥
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥
फिर किस कारण तुम मुझसे बोल क्यों नहीं रहे॥ रहाउ॥

ਬਹੁਤ ਜਨਮ ਬਿਛੁਰੇ ਥੇ ਮਾਧਉ ਇਹੁ ਜਨਮੁ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੇ ਲੇਖੇ ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
हे माधव ! मैं अनेक जन्मों से तुझसे बिछुड़ा हुआ हूँ और अपना यह जन्म मैं तुझ पर अर्पण करता हूँ।

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਆਸ ਲਗਿ ਜੀਵਉ ਚਿਰ ਭਇਓ ਦਰਸਨੁ ਦੇਖੇ ॥੨॥੧॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२॥१॥
रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु ! तेरे दर्शन किए चिरकाल हो गया है, अब तो मैं तेरे दर्शन करने की आशा में ही जीवित हूँ॥ २॥ १ ॥

ਚਿਤ ਸਿਮਰਨੁ ਕਰਉ ਨੈਨ ਅਵਿਲੋਕਨੋ ਸ੍ਰਵਨ ਬਾਨੀ ਸੁਜਸੁ ਪੂਰਿ ਰਾਖਉ ॥
चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मेरी तो यही अभिलाषा है कि मैं अपने चित से भगवान का सिमरन करता रहूँ और अपने नयनों से उसके दर्शन करता रहूँ। मैं वाणी श्रवण करूँ और भगवान का सुयश अपने कानों में सुनता रहूँ।

ਮਨੁ ਸੁ ਮਧੁਕਰੁ ਕਰਉ ਚਰਨ ਹਿਰਦੇ ਧਰਉ ਰਸਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਾਮ ਨਾਮ ਭਾਖਉ ॥੧॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अम्रित राम नाम भाखउ ॥१॥
मैं अपने मन को सुन्दर भैवरा बनाऊँ और प्रभु के चरण-कमलों को अपने हृदय में बसाकर रखूं। मैं अपनी रसना से राम का अमृत नाम उच्चारण करता रहूँ॥१॥

ਮੇਰੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿਉ ਜਿਨਿ ਘਟੈ ॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मेरा प्रेम गोविन्द के साथ कभी कम न हो।

ਮੈ ਤਉ ਮੋਲਿ ਮਹਗੀ ਲਈ ਜੀਅ ਸਟੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि यह प्रेम अपने प्राण देकर मूल्य चुका कर बहुत महंगा लिया है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਬਿਨਾ ਭਾਉ ਨਹੀ ਊਪਜੈ ਭਾਵ ਬਿਨੁ ਭਗਤਿ ਨਹੀ ਹੋਇ ਤੇਰੀ ॥
साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥
हे प्रभु ! संतों की संगति के बिना तेरे साथ प्रेम उत्पन्न नहीं होता और प्रेम के बिना तेरी भक्ति नहीं हो सकती।

ਕਹੈ ਰਵਿਦਾਸੁ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਹਰਿ ਸਿਉ ਪੈਜ ਰਾਖਹੁ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੇਰੀ ॥੨॥੨॥
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥
रविदास ईश्वर के समक्ष एक विनती करता है कि हे राजा राम ! मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचाओ॥२॥ २॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਆਰਤੀ ਮਜਨੁ ਮੁਰਾਰੇ ॥
नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हे परमात्मा ! तेरा नाम ही आरती है और यही पावन तीर्थ-स्नान है।

ਹਰਿ ਕੇ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਝੂਠੇ ਸਗਲ ਪਾਸਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान के नाम-सिमरन के बिना अन्य सभी आडम्बर झूठे हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਆਸਨੋ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਉਰਸਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਕੇਸਰੋ ਲੇ ਛਿਟਕਾਰੇ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
हे ईश्वर ! तेरा नाम ही सुन्दर आसन है, तेरा नाम ही चन्दन धिसने वाला पत्थर है और तेरा नाम ही केसर है, जिसे जप कर तुझ पर छिड़का जाता है।

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਅੰਭੁਲਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਚੰਦਨੋ ਘਸਿ ਜਪੇ ਨਾਮੁ ਲੇ ਤੁਝਹਿ ਕਉ ਚਾਰੇ ॥੧॥
नामु तेरा अ्मभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥
तेरा नाम ही जल है और तेरा नाम ही चन्दन है। मैं इस चन्दन को धिस कर अर्थात् तेरे नाम को जप कर तेरे समक्ष भेंट करता हूँ॥ १ ॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਦੀਵਾ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਬਾਤੀ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਤੇਲੁ ਲੇ ਮਾਹਿ ਪਸਾਰੇ ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
तेरा नाम ही दीपक है और तेरा नाम ही बाती है। तेरा नाम ही तेल है, जिसे लेकर मैं दीपक में डालता हूँ।

ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਕੀ ਜੋਤਿ ਲਗਾਈ ਭਇਓ ਉਜਿਆਰੋ ਭਵਨ ਸਗਲਾਰੇ ॥੨॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥
मैंने तेरे नाम की ही ज्योति प्रज्वलित की है, जिससे समस्त लोकों में उजाला हो गया है॥ २ ॥

ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਤਾਗਾ ਨਾਮੁ ਫੂਲ ਮਾਲਾ ਭਾਰ ਅਠਾਰਹ ਸਗਲ ਜੂਠਾਰੇ ॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरा नाम ही धागा है और तेरा नाम ही फूलों की माला है। अन्य अठारह भार वाली सारी वनस्पति जूठी है।

ਤੇਰੋ ਕੀਆ ਤੁਝਹਿ ਕਿਆ ਅਰਪਉ ਨਾਮੁ ਤੇਰਾ ਤੁਹੀ ਚਵਰ ਢੋਲਾਰੇ ॥੩॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥
हे प्रभु ! तेरा उत्पन्न किया हुआ कौन-सा पदार्थ तुझे भेंट करूँ ? तेरा नाम ही चंवर है परन्तु यह चंवर भी तू स्वयं ही मुझ से झुलाता है ॥३॥

ਦਸ ਅਠਾ ਅਠਸਠੇ ਚਾਰੇ ਖਾਣੀ ਇਹੈ ਵਰਤਣਿ ਹੈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੇ ॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
समूचे संसार में यही व्यवहार हो रहा है कि लोग अठारह पुराणों की कथाएँ सुनते रहते हैं, अड़सठ तीर्थों पर स्नान करते रहते हैं।

ਕਹੈ ਰਵਿਦਾਸੁ ਨਾਮੁ ਤੇਰੋ ਆਰਤੀ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਹਰਿ ਭੋਗ ਤੁਹਾਰੇ ॥੪॥੩॥

कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥

रविदास जी का कथन है कि हे परमेश्वर ! तेरा नाम ही आरती है और तेरा सत्य-नाम ही तेरा भोग-प्रसाद है ॥४॥३॥

ਧਨਾਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾਂ ਕੀ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨ
धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन
धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਾਰਾਇਣ ਨਿੰਦਸਿ ਕਾਇ ਭੂਲੀ ਗਵਾਰੀ ॥
नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥
हे भूली हुई मूर्ख स्त्री ! तू नारायण की क्यों निन्दा कर रही है ?

दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥
दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्व जन्म में किए हुए शुभाशुभ कर्म ही तेरा भाग्य है जो तू दुःख-सुःख के रूप में भोग रही है ॥१॥ रहाउ ॥

ਸੰਕਰਾ ਮਸਤਕਿ ਬਸਤਾ ਸੁਰਸਰੀ ਇਸਨਾਨ ਰੇ ॥
संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥
चन्द्रमा शिव-शंकर के माथे पर बसता है और हमेशा ही गंगा में स्नान करता है।

ਕੁਲ ਜਨ ਮਧੇ ਮਿਲਿਜਓ ਸਾਰਗ ਪਾਨ ਰੇ ॥
कुल जन मधे मिल्यिो सारग पान रे ॥
चाहे विष्णु का अवतार कृष्ण भी चंद्र वंश के लोगों में आ मिला था तो भी

करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥
करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥
चन्द्रमा के कर्मों के कारण लगा कलंक नहीं मिट सका।॥१॥

बिसू का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥
बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥
विश्व का दीपक सूर्य अपने सारथी अरुण का स्वामी है और पक्षीराज गरुड़ अरुण का भाई है किन्तु

ਕਰਮ ਕਰਿ ਅਰੁਣ ਪਿੰਗੁਲਾ ਰੀ ॥੨॥
करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥
अपने कर्मों के कारण अरुण लंगड़ा है॥ २॥

ਅਨਿਕ ਪਾਤਿਕ ਹਰਤਾ ਤ੍ਰਿਭਵਣ ਨਾਥੁ ਰੀ ਤੀਰਥਿ ਤੀਰਥਿ ਭ੍ਰਮਤਾ ਲਹੈ ਨ ਪਾਰੁ ਰੀ ॥
अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥
तीनों लोकों का स्वामी शिव-शंकर जीवों के अनेक पाप हरण करने वाला है। वह भी अनेक तीर्थों पर भटकता रहा किन्तु फिर भी अन्त नहीं पा सका।

ਕਰਮ ਕਰਿ ਕਪਾਲੁ ਮਫੀਟਸਿ ਰੀ ॥੩॥
करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥
शिव, ब्रह्मा के सिर काटने के बुरे कर्म को मिटा नहीं सके॥ ३॥

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਸੀਅ ਧੇਨ ਲਛਿਮੀ ਕਲਪਤਰ ਸਿਖਰਿ ਸੁਨਾਗਰ ਨਦੀ ਚੇ ਨਾਥੰ ॥
अम्रित ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥
नदियों के स्वामी समुद्र में से अमृत, चन्द्रमा, कामधेनु, विष्णु की पत्नी लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, उच्चैश्रवा घोड़ा, धन्वंतरि वैद्य इत्यादि रत्न निकले हैं परन्तु

ਕਰਮ ਕਰਿ ਖਾਰੁ ਮਫੀਟਸਿ ਰੀ ॥੪॥
करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥
समुद्र अपने दुष्कर्मों के कारण ही अपना खारापन नहीं मिटा सका ॥ ४॥

ਦਾਧੀਲੇ ਲੰਕਾ ਗੜੁ ਉਪਾੜੀਲੇ ਰਾਵਣ ਬਣੁ ਸਲਿ ਬਿਸਲਿ ਆਣਿ ਤੋਖੀਲੇ ਹਰੀ ॥
दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥
चाहे हनुमान जी ने लंका का दुर्ग जला दिया, रावण का उपवन बर्बाद कर दिया और लक्ष्मण जी के मूर्छित होने पर घाव ठीक करने के लिए संजीवनी बूटी लाकर श्री रामचंद्र जी को प्रसन्न किया परन्तु

ਕਰਮ ਕਰਿ ਕਛਉਟੀ ਮਫੀਟਸਿ ਰੀ ॥੫॥
करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥
उसके कर्मों के कारण उसे एक छोटी-सी लंगोटी ही मिली और उसके कर्मो का फल न मिट सका।॥५॥

ਪੂਰਬਲੋ ਕ੍ਰਿਤ ਕਰਮੁ ਨ ਮਿਟੈ ਰੀ ਘਰ ਗੇਹਣਿ ਤਾ ਚੇ ਮੋਹਿ ਜਾਪੀਅਲੇ ਰਾਮ ਚੇ ਨਾਮੰ ॥
पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥
हे मेरे घर की गृहिणी ! पूर्व जन्म में किए पाप-पुण्य के कर्मों का फल नहीं मिटता और उसका दुःख-सुःख भोगना ही पड़ता है।

ਬਦਤਿ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨ ਰਾਮ ਜੀ ॥੬॥੧॥
बदति त्रिलोचन राम जी ॥६॥१॥
त्रिलोचन जी का कथन है कि इसलिए मैं राम का नाम ही जपता रहता हूँ और तू भी राम जी के नाम को जप॥ ६॥ १॥

ਸ੍ਰੀ ਸੈਣੁ ॥
स्री सैणु ॥
श्री सैणु ॥

ਧੂਪ ਦੀਪ ਘ੍ਰਿਤ ਸਾਜਿ ਆਰਤੀ ॥ ਵਾਰਨੇ ਜਾਉ ਕਮਲਾ ਪਤੀ ॥੧॥
धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ वारने जाउ कमला पती ॥१॥
मेरी धूप, दीप, घी इत्यादि सजाकर की हुई आरती के समान हे लक्ष्मीपति प्रभु ! मेरा तुझ पर तन-मन से न्यौछावर जाना ही है ॥ १॥

ਮੰਗਲਾ ਹਰਿ ਮੰਗਲਾ ॥ ਨਿਤ ਮੰਗਲੁ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਰਾਇ ਕੋ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥
समूचे विश्व में हरि का मंगल-गान हो रहा है और मैं भी नित्य ही धरती के स्वामी प्रभु राम का मंगल-गान कर रहा हूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਊਤਮੁ ਦੀਅਰਾ ਨਿਰਮਲ ਬਾਤੀ ॥ ਤੁਹੀਂ ਨਿਰੰਜਨੁ ਕਮਲਾ ਪਾਤੀ ॥੨॥
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥
मेरे लिए तू ही उत्तम दीपक एवं निर्मल बाती है हे लक्ष्मीपति ! तू ही निरंजन है। ॥२॥

ਰਾਮਾ ਭਗਤਿ ਰਾਮਾਨੰਦੁ ਜਾਨੈ ॥ ਪੂਰਨ ਪਰਮਾਨੰਦੁ ਬਖਾਨੈ ॥੩॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥ पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥
राम की भक्ति करनी मेरा गुरु रामानंद ही जानता है। मेरा गुरुदेव बताता है कि राम सर्वव्यापी है और परमानंद है॥३॥

ਮਦਨ ਮੂਰਤਿ ਭੈ ਤਾਰਿ ਗੋਬਿੰਦੇ ॥ ਸੈਨੁ ਭਣੈ ਭਜੁ ਪਰਮਾਨੰਦੇ ॥੪॥੨॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥
हे गोविन्द ! तेरा स्वरूप बड़ा मनमोहक है, मुझे भवसागर से पार कर दो। भक्त सैन जी का कथन है कि उस परमानंद प्रभु का ही भजन करो ॥४ ॥२॥

ਪੀਪਾ ॥
पीपा ॥
पीपा ॥

ਕਾਯਉ ਦੇਵਾ ਕਾਇਅਉ ਦੇਵਲ ਕਾਇਅਉ ਜੰਗਮ ਜਾਤੀ ॥

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥

मैं अपने शरीर में ही भगवान की खोज करता हूँ, चूंकि मेरा शरीर ही ईश्वर का मन्दिर है। मेरे शरीर में विद्यमान आत्मा ही तीर्थ-यात्रा करने वाला जंगम साधु है।

ਕਾਇਅਉ ਧੂਪ ਦੀਪ ਨਈਬੇਦਾ ਕਾਇਅਉ ਪੂਜਉ ਪਾਤੀ ॥੧॥

काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥१॥

मेरा शरीर ही आरती की सामग्री-धूप, दीप एवं नैवैद्य है। मेरा शरीर ही पूजा की फूलों की पतियाँ हैं।॥ १ ॥

ਕਾਇਆ ਬਹੁ ਖੰਡ ਖੋਜਤੇ ਨਵ ਨਿਧਿ ਪਾਈ ॥

काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥

मैंने अपने शरीर में ही बहुत खोज-तलाश करके नवनिधियों प्राप्त कर ली हैं।

ਨਾ ਕਛੁ ਆਇਬੋ ਨਾ ਕਛੁ ਜਾਇਬੋ ਰਾਮ ਕੀ ਦੁਹਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥

मैं राम की दुहाई देकर कहता हूँ कि न कुछ यहाँ से आता है और न ही कुछ यहाँ से जाता है अर्थात् भगवान ही सर्वस्व है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜੋ ਬ੍ਰਹਮੰਡੇ ਸੋਈ ਪਿੰਡੇ ਜੋ ਖੋਜੈ ਸੋ ਪਾਵੈ ॥

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥

जो प्रभु ब्रह्माण्ड में निवास करता है, वही प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भी निवास करता है। जो उसकी खोज करता है, वह उसे शरीर में से ही प्राप्त कर लेता है।

ਪੀਪਾ ਪ੍ਰਣਵੈ ਪਰਮ ਤਤੁ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰੁ ਹੋਇ ਲਖਾਵੈ ॥੨॥੩॥

पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥३॥

भक्त पीपा प्रार्थना करता है कि ईश्वर ही परम-तत्व है और वह सतगुरु बनकर खुद ही दर्शन करवा देता है ॥२॥३॥

ਧੰਨਾ ॥

धंना ॥

धंना ॥

ਗੋਪਾਲ ਤੇਰਾ ਆਰਤਾ ॥

गोपाल तेरा आरता ॥

हे परमात्मा ! मैं भिक्षुक तुझ से प्रार्थना कर रहा हूँ।

ਜੋ ਜਨ ਤੁਮਰੀ ਭਗਤਿ ਕਰੰਤੇ ਤਿਨ ਕੇ ਕਾਜ ਸਵਾਰਤਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥

जो व्यक्ति भी तुम्हारी भक्ति करते हैं, तुम उनके सभी कार्य संवार देते हो ॥१॥ रहाउ ॥

ਦਾਲਿ ਸੀਧਾ ਮਾਗਉ ਘੀਉ ॥

दालि सीधा मागउ घीउ ॥

मैं तुझ से दाल, घी एवं आटा माँगता हूँ,

ਹਮਰਾ ਖੁਸੀ ਕਰੈ ਨਿਤ ਜੀਉ ॥

हमरा खुसी करै नित जीउ ॥

जिससे मेरा मन सदैव प्रसन्न रहेगा।

ਪਨ੍ਹੀਆ ਛਾਦਨੁ ਨੀਕਾ ॥

पन्हीआ छादनु नीका ॥

मैं पैरों के लिए जूती एवं शरीर पर पहनने के लिए सुन्दर वस्त्र भी माँगता हूँ।

ਅਨਾਜੁ ਮਗਉ ਸਤ ਸੀ ਕਾ ॥੧॥

अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥

मैं सात प्रकार का अनाज भी माँगता हूँ॥१॥

ਗਊ ਭੈਸ ਮਗਉ ਲਾਵੇਰੀ ॥

गऊ भैस मगउ लावेरी ॥

हे ईश्वर ! मैं दूध पीने के लिए एक गाय और एक दूध देती भैंस भी माँगता हूँ।

ਇਕ ਤਾਜਨਿ ਤੁਰੀ ਚੰਗੇਰੀ ॥

इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥

मेरी इच्छा है कि सवारी के लिए एक कुशल अरबी घोड़ी भी मिल जाए।

ਘਰ ਕੀ ਗੀਹਨਿ ਚੰਗੀ ॥ ਜਨੁ ਧੰਨਾ ਲੇਵੈ ਮੰਗੀ ॥੨॥੪॥

घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥

मैं अपने घर की देखभाल हेतु एक सुशील पत्नी भी चाहता हूँ। तेरा भक्त धन्ना केवल यही वस्तुएँ तुझसे माँगकर लेता है ॥२॥४॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ਚਉਪਦੇ
जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे
जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ ਰਤਨੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਬਸਿਆ ਗੁਰਿ ਹਾਥੁ ਧਰਿਓ ਮੇਰੈ ਮਾਥਾ ॥
मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥
जब गुरु ने मेरे माथे पर अपना (आशीर्वाद का) हाथ रखा तो मेरे हृदय में हरि-नाम रूपी रत्न बस गया।

ਜਨਮ ਜਨਮ ਕੇ ਕਿਲਬਿਖ ਦੁਖ ਉਤਰੇ ਗੁਰਿ ਨਾਮੁ ਦੀਓ ਰਿਨੁ ਲਾਥਾ ॥੧॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥१॥
मेरे जन्म-जन्मांतरों के किल्विष दुःख दूर हो गए हैं, क्योंकि गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम प्रदान किया है और मेरा ऋण उतर गया है॥१ ॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਭਜੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਸਭਿ ਅਰਥਾ ॥
मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥
हे मेरे मन ! राम-नाम का भजन करो, जिससे तेरे सभी कार्य सिद्ध हो जाएँगे।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜੀਵਨੁ ਬਿਰਥਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥
पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में भगवान का नाम दृढ़ कर दिया है और नाम के बिना जीवन व्यर्थ है ॥ रहाउ ॥

ਬਿਨੁ ਗੁਰ ਮੂੜ ਭਏ ਹੈ ਮਨਮੁਖ ਤੇ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਨਿਤ ਫਾਥਾ ॥
बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥
गुरु के बिना स्वेच्छाचारी मनुष्य मूर्ख बने हुए हैं और नित्य ही माया के मोह में फँसे रहते हैं।

ਤਿਨ ਸਾਧੂ ਚਰਣ ਨ ਸੇਵੇ ਕਬਹੂ ਤਿਨ ਸਭੁ ਜਨਮੁ ਅਕਾਥਾ ॥੨॥
तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥
जिन्होंने कभी भी संतों के चरणों की सेवा नहीं की, उनका समूचा जीवन व्यर्थ ही चला गया है॥२॥

ਜਿਨ ਸਾਧੂ ਚਰਣ ਸਾਧ ਪਗ ਸੇਵੇ ਤਿਨ ਸਫਲਿਓ ਜਨਮੁ ਸਨਾਥਾ ॥
जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥
जिन्होंने संत-महात्मा जैसे महापुरुषों के चरणों की सेवा की है, उनका जीवन सफल हो गया है और प्रभु को पा लिया है।

ਮੋ ਕਉ ਕੀਜੈ ਦਾਸੁ ਦਾਸ ਦਾਸਨ ਕੋ ਹਰਿ ਦਇਆ ਧਾਰਿ ਜਗੰਨਾਥਾ ॥੩॥
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥३॥
हे जगन्नाथ ! हे हरि ! मुझ पर दया करो और मुझे अपने दासों का दास बना लो॥३॥

ਹਮ ਅੰਧੁਲੇ ਗਿਆਨਹੀਨ ਅਗਿਆਨੀ ਕਿਉ ਚਾਲਹ ਮਾਰਗਿ ਪੰਥਾ ॥
हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥
हे प्रभु ! मैं अंधा, ज्ञानहीन एवं अज्ञानी हूँ, फिर भला मैं कैसे सन्मार्ग पर चल सकता हूँ।

ਹਮ ਅੰਧੁਲੇ ਕਉ ਗੁਰ ਅੰਚਲੁ ਦੀਜੈ ਜਨ ਨਾਨਕ ਚਲਹ ਮਿਲੰਥਾ ॥੪॥੧॥
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥४॥१॥
नानक का कथन है कि हे गुरु ! मुझ ज्ञान से अन्धे व्यक्ति को अपना आंचल (सहारा) प्रदान कीजिए चूंकि तेरे साथ मिलकर चल सकूं ॥४॥१॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
जैतसरी महला ४ ॥
जैतसरी महला ४ ॥

ਹੀਰਾ ਲਾਲੁ ਅਮੋਲਕੁ ਹੈ ਭਾਰੀ ਬਿਨੁ ਗਾਹਕ ਮੀਕਾ ਕਾਖਾ ॥
हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥
भगवान का नाम रूपी हीरा बड़ा अनमोल एवं बहुमूल्य है किन्तु ग्राहक के बिना यह नाम रूपी हीरा तिनके के बराबर है।

ਰਤਨ ਗਾਹਕੁ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਦੇਖਿਓ ਤਬ ਰਤਨੁ ਬਿਕਾਨੋ ਲਾਖਾ ॥੧॥
रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥१॥
जब नाम-रत्न के ग्राहक साधु रूपी गुरु ने देखा तो यह हीरा लाखों में बिकने लगा ॥१॥

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਗੁਪਤ ਹੀਰੁ ਹਰਿ ਰਾਖਾ ॥
मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥
भगवान ने मेरे हृदय में यह हीरा गुप्त तौर पर रखा हुआ है।

ਦੀਨ ਦਇਆਲਿ ਮਿਲਾਇਓ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹੀਰੁ ਪਰਾਖਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥

जब दीनदयालु परमेश्वर ने मुझे साधु रूपी गुरु से मिला दिया तो गुरु को मिलकर मैंने हीरे को परख लिया ॥ रहाउ॥

ਮਨਮੁਖ ਕੋਠੀ ਅਗਿਆਨੁ ਅੰਧੇਰਾ ਤਿਨ ਘਰਿ ਰਤਨੁ ਨ ਲਾਖਾ ॥

मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥

स्वेच्छाचारी व्यक्तियों के हृदय में अज्ञानता का अन्धेरा ही बना रहता है और उनके हृदय-घर में नाम रूपी हीरा दिखाई नहीं देता।

ਤੇ ਊਝੜਿ ਭਰਮਿ ਮੁਏ ਗਾਵਾਰੀ ਮਾਇਆ ਭੁਅੰਗ ਬਿਖੁ ਚਾਖਾ ॥੨॥

ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥२॥

वे मूर्ख वीराने में भटक कर ही मर मिट जाते हैं, चूंकि वे तो माया रूपी नागिन का विष ही चखते रहते हैं।॥२॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਾਧ ਮੇਲਹੁ ਜਨ ਨੀਕੇ ਹਰਿ ਸਾਧੂ ਸਰਣਿ ਹਮ ਰਾਖਾ ॥

हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥

हे परमेश्वर ! मुझे महापुरुषों-संतों की संगति से मिला दो और साधु रूपी गुरु की शरण में ही रखो।

ਹਰਿ ਅੰਗੀਕਾਰੁ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਪਰੇ ਭਾਗਿ ਤੁਮ ਪਾਖਾ ॥੩॥

हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥३॥

हे हरि ! मुझे अपना बना लो, हे मेरे स्वामी-प्रभु ! मैं भागकर तेरे पास आ गया हूँ॥३॥

ਜਿਹਵਾ ਕਿਆ ਗੁਣ ਆਖਿ ਵਖਾਣਹ ਤੁਮ ਵਡ ਅਗਮ ਵਡ ਪੁਰਖਾ ॥

जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥

मेरी जिह्म तेरे कौन-कौन से गुणों का वर्णन कर सकती है, क्योंकि तुम बड़े अगम्य एवं महान् पुरुष हो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ਪਾਖਾਣੁ ਡੁਬਤ ਹਰਿ ਰਾਖਾ ॥੪॥੨॥

जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥४॥२॥

हे नानक ! भगवान ने बड़ी कृपा की है और उसने मुझ जैसे डूबते हुए पत्थर को बचा लिया है ॥४॥२॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥
जैतसरी मः ४ ॥
जैतसरी मः ४ ॥

ਹਮ ਬਾਰਿਕ ਕਛੂਅ ਨ ਜਾਨਹ ਗਤਿ ਮਿਤਿ ਤੇਰੇ ਮੂਰਖ ਮੁਗਧ ਇਆਨਾ ॥
हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥
हे ईश्वर ! हम तेरे मूर्ख, नासमझ एवं नादान बालक हैं और तेरी गति एवं महिमा कुछ भी नहीं जानते।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ਦੀਜੈ ਮਤਿ ਊਤਮ ਕਰਿ ਲੀਜੈ ਮੁਗਧੁ ਸਿਆਨਾ ॥੧॥
हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥१॥
हे प्रभु ! कृपा करके उत्तम मति प्रदान कीजिए और मुझ मूर्ख को चतुर बना दीजिए ॥१॥

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਆਲਸੀਆ ਉਘਲਾਨਾ ॥
मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥
मेरा मन बड़ा आलसी एवं निद्रा मग्न वाला है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਆਨਿ ਮਿਲਾਇਓ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਕਪਟ ਖੁਲਾਨਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥
मेरे प्रभु ने मुझे साधु रूपी गुरु से मिला दिया है और साधु रूपी गुरु से मिलकर मेरे मन के कपाट खुल गए हैं।॥ रहाउ॥

ਗੁਰ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਵਹੁ ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਮੁ ਪਰਾਨਾ ॥
गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥
हे गुरुदेव ! मेरे हृदय में क्षण-क्षण ऐसी प्रीति लगा दो, जो सदैव बढ़ती रहे और प्रियतम का नाम ही प्राण बन जाएँ।

ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਮਰਿ ਜਾਈਐ ਮੇਰੇ ਠਾਕੁਰ ਜਿਉ ਅਮਲੀ ਅਮਲਿ ਲੁਭਾਨਾ ॥੨॥
बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥२॥
हे मेरे ठाकुर ! नाम के बिना तो ऐसे मर जाता हूँ, जैसे कोई नशा करने वाला नशे के बिना उत्तेजित हो रहा है॥ २॥

ਜਿਨ ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਹਰਿ ਕੇਰੀ ਤਿਨ ਧੁਰਿ ਭਾਗ ਪੁਰਾਨਾ ॥
जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥
जिनके मन में भगवान की प्रीति पैदा हो गई है, उनका प्रारम्भ से भाग्योदय हो गया है।

ਤਿਨ ਹਮ ਚਰਣ ਸਰੇਵਹ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥੩॥

तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥३॥

जिन महापुरुषों को भगवान का नाम बड़ा मीठा लगता है, मैं क्षण-क्षण उनके चरणों की पूजा करता हूँ॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰੀ ਮੇਰੈ ਠਾਕੁਰਿ ਜਨੁ ਬਿਛੁਰਿਆ ਚਿਰੀ ਮਿਲਾਨਾ ॥

हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥

मेरे ठाकुर हरि-परमेश्वर ने मुझ पर बड़ी कृपा की है और चिरकाल से बिछुड़े हुए सेवक को अपने साथ मिला लिया है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਿਨਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਤਿਸੁ ਕੁਰਬਾਨਾ ॥੪॥੩॥

धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥४॥३॥

वह सतगुरु धन्य है, जिसने मेरे हृदय में नाम दृढ़ किया है। नानक तो उस गुरु पर कुर्बान जाता है।॥ ४॥ ३॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥

जैतसरी महला ४ ॥

जैतसरी महला ४ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਜਨੁ ਪੁਰਖੁ ਵਡ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਰਸਕਿ ਰਸਕਿ ਫਲ ਲਾਗਿਬਾ ॥

सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥

मुझे सज्जन एवं महापुरुष सतगुरु मिल गया है और अब स्वाद ले-लेकर हरि-नाम रूपी फल खाने लग गया हूँ अर्थात् नाम जपने लग गया हूँ।

ਮਾਇਆ ਭੁਇਅੰਗ ਗ੍ਰਸਿਓ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਬਿਸੁ ਹਰਿ ਕਾਢਿਬਾ ॥੧॥

माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥१॥

माया नागिन ने प्राणी को पकड़ा हुआ है किन्तु भगवान ने गुरु के उपदेश द्वारा माया के विष को बाहर निकाल दिया है॥१॥

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮ ਰਸਿ ਲਾਗਿਬਾ ॥

मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥

मेरा मन राम-नाम के रस में मग्न हो गया है अर्थात् राम-नाम जपने लग गया है।

ਹਰਿ ਕੀਏ ਪਤਿਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਮਿਲਿ ਸਾਧ ਗੁਰ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਹਰਿ ਰਸੁ ਚਾਖਿਬਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥

महापुरुष गुरु से मिला कर भगवान ने पापियों को पवित्र कर दिया है और अब वे हरिनामामृत को ही चखते हैं॥ रहाउ ॥

ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਡਭਾਗ ਮਿਲਿਓ ਗੁਰੁ ਸਾਧੂ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਲਿਵ ਉਨਮਨਿ ਲਾਗਿਬਾ ॥
धनु धनु वडभाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥
जिसे साधु-गुरु मिल गया है, वह आदमी धन्य है, खुशकिस्मत है। साधु से मिलकर, उसका ध्यान सहजावस्था में प्रभु से लग गया है,

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਅਗਨਿ ਬੁਝੀ ਸਾਂਤਿ ਪਾਈ ਹਰਿ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਗੁਨ ਗਾਇਬਾ ॥੨॥
त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥२॥
उसके मन की तृष्णाग्नि बुझ गई है और उसे शान्ति प्राप्त हो गई है। अब वह परमात्मा के निर्मल गुण ही गाता है॥२॥

ਤਿਨ ਕੇ ਭਾਗ ਖੀਨ ਧੁਰਿ ਪਾਏ ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਦਰਸੁ ਨ ਪਾਇਬਾ ॥
तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥
जिन्हें सतगुरु के दर्शन प्राप्त नहीं हुए, उनके भाग्य प्रारम्भ से ही क्षीण लिखे गए हैं।

ਤੇ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ਪਵਹਿ ਗ੍ਰਭ ਜੋਨੀ ਸਭੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਤਿਨ ਜਾਇਬਾ ॥੩॥
ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥३॥
द्वैतभाव के कारण वे गर्भ योनियों में ही पड़ते हैं और उनका समूचा जीवन व्यर्थ ही बीत जाता है।॥३॥

ਹਰਿ ਦੇਹੁ ਬਿਮਲ ਮਤਿ ਗੁਰ ਸਾਧ ਪਗ ਸੇਵਹ ਹਮ ਹਰਿ ਮੀਠ ਲਗਾਇਬਾ ॥
हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥
हे ईश्वर ! मुझे पवित्र बुद्धि प्रदान करो ताकि मैं गुरु के चरणों की सेवा कर सकूं और तू मुझे मीठा लगने लगे।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਰੇਣ ਸਾਧ ਪਗ ਮਾਗੈ ਹਰਿ ਹੋਇ ਦਇਆਲੁ ਦਿਵਾਇਬਾ ॥੪॥੪॥
जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥४॥४॥
नानक संत गुरुदेव की चरण-धूलि की ही कामना करता रहता है और प्रभु दयालु होकर यह देन दिलवा देता है॥४॥४॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
जैतसरी महला ४ ॥
जैतसरी महला ४ ॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਨਾਮੁ ਨ ਬਸਿਓ ਤਿਨ ਮਾਤ ਕੀਜੈ ਹਰਿ ਬਾਂਝਾ ॥
जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥
जिनके हृदय में ईश्वर का नाम नहीं बसा है, परमेश्वर उनकी माता को बाँझ बना दे तो ही अच्छा है।

ਤਿਨ ਸੁੰਞੀ ਦੇਹ ਫਿਰਹਿ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਓਇ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮੁਏ ਕਰਾਂਝਾ ॥੧॥
तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥१॥
क्योंकि उनका सूना शरीर नाम के बिना भटकता ही रहता है और वे अपना जीवन विकारों में ही दुखी होकर नष्ट कर लेते हैं।॥ १॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਮਾਝਾ ॥
मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥
हे मेरे मन ! राम-नाम का जाप करो, जो तेरे हृदय में ही बसा हुआ है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਪ੍ਰਭਿ ਧਾਰੀ ਗੁਰਿ ਗਿਆਨੁ ਦੀਓ ਮਨੁ ਸਮਝਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥
कृपालु हरि-प्रभु ने मुझ पर बड़ी कृपा की है, जिससे गुरु ने मुझे ज्ञान प्रदान किया है और मेरा मन नाम-स्मरण के लाभ को समझ गया है॥ रहाउ ॥

ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਲਜੁਗਿ ਪਦੁ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਸਤਿਗੁਰ ਮਾਝਾ ॥
हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥
कलियुग में भगवान की महिमा उत्तम पदवी रखती है और गुरु की दया से ही भगवान की प्राप्ति होती है।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਸਤਿਗੁਰ ਅਪੁਨੇ ਜਿਨਿ ਗੁਪਤੁ ਨਾਮੁ ਪਰਗਾਝਾ ॥੨॥
हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥२॥
मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने गुप्त नाम मेरे हृदय में प्रगट कर दिया है॥ २॥

ਦਰਸਨੁ ਸਾਧ ਮਿਲਿਓ ਵਡਭਾਗੀ ਸਭਿ ਕਿਲਬਿਖ ਗਏ ਗਵਾਝਾ ॥
दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा ॥
मैं बड़ा खुशनसीब हूँ जो मुझे साधु रूपी गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं और मेरे सभी किल्विष पाप नष्ट हो गए हैं।

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਪਾਇਆ ਵਡ ਦਾਣਾ ਹਰਿ ਕੀਏ ਬਹੁ ਗੁਣ ਸਾਝਾ ॥੩॥
सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥३॥
मैंने बड़े चतुर, शाह गुरु को प्राप्त कर लिया है और उसने भगवान के अनेक गुणों में मुझे भागीदार बना दिया है॥ ३॥

ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੀ ਜਗਜੀਵਨਿ ਹਰਿ ਉਰਿ ਧਾਰਿਓ ਮਨ ਮਾਝਾ ॥
जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिओ मन माझा ॥
जगत के जीवन परमात्मा ने जिस पर अपनी कृपा की है, उसने अपने मन एवं हृदय में उसे बसा लिया है।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਦਰਿ ਕਾਗਦ ਫਾਰੇ ਜਨ ਨਾਨਕ ਲੇਖਾ ਸਮਝਾ ॥੪॥੫॥
धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥४॥५॥
यमराज ने अपने दरबार में उनके कर्मों के कागज फाड़ दिए हैं। हे नानक ! उन परमात्मा के भक्तों का लेखा समाप्त हो गया है॥ ४॥ ५ ॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
जैतसरी महला ४ ॥
जैतसरी महला ४ ॥

ਸਤਸੰਗਤਿ ਸਾਧ ਪਾਈ ਵਡਭਾਗੀ ਮਨੁ ਚਲਤੌ ਭਇਓ ਅਰੂੜਾ ॥
सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥
अहोभाग्य से मुझे संतों की सुसंगति प्राप्त हुई है, जिससे मेरा अस्थिर मन स्थिर हो गया है।

ਅਨਹਤ ਧੁਨਿ ਵਾਜਹਿ ਨਿਤ ਵਾਜੇ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਧਾਰ ਰਸਿ ਲੀੜਾ ॥੧॥
अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अम्रित धार रसि लीड़ा ॥१॥
अब मेरे मन में नित्य ही अनहद ध्वनि का नाद बजता रहता है और मैं हरिनामामृत की धारा के रस से तृप्त हो गया हूँ॥१॥

ਮੇਰੇ ਮਨ ਜਪਿ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਰੂੜਾ ॥
मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥
हे मेरे मन ! सुन्दर हरि का राम-नाम जपो,

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ਸਤਿਗੁਰਿ ਹਰਿ ਮਿਲਿਓ ਲਾਇ ਝਪੀੜਾ ॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥
गुरु ने मेरे मन एवं तन में प्रीति लगा दी है और भगवान ने मुझे गले लगा लिया है॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਬੰਧ ਭਏ ਹੈ ਮਾਇਆ ਬਿਖੁ ਸੰਚਹਿ ਲਾਇ ਜਕੀੜਾ ॥
साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥
भगवान से विमुख व्यक्ति माया के बन्धनों में फँसे हुए हैं और वे दृढ़ता से विषैली माया को संचित करते रहते हैं।

ਹਰਿ ਕੈ ਅਰਥਿ ਖਰਚਿ ਨਹ ਸਾਕਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਪੀੜਾ ॥੨॥

हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥२॥

वे इस माया को भगवान के नाम पर खर्च नहीं कर सकते और अपने सिर पर यमों की पीड़ा ही सहते रहते हैं।॥ २ ॥

ਜਿਨ ਹਰਿ ਅਰਥਿ ਸਰੀਰੁ ਲਗਾਇਆ ਗੁਰ ਸਾਧੂ ਬਹੁ ਸਰਧਾ ਲਾਇ ਮੁਖਿ ਧੂੜਾ ॥

जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥

जिन्होंने अपना शरीर भगवान की आराधना में लगाया है और बड़ी श्रद्धा से संत गुरुदेव की चरण-धूलि अपने मुख पर लगाई है,

ਹਲਤਿ ਪਲਤਿ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਪਾਵਹਿ ਹਰਿ ਰੰਗੁ ਲਗਾ ਮਨਿ ਗੂੜਾ ॥੩॥

हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा मनि गूड़ा ॥३॥

वे इहलोक एवं परलोक में भगवान की शोभा का पात्र बनते हैं चूंकि उनके मन को भगवान के प्रेम का गहरा रंग लगा होता है।॥ ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਮੇਲਿ ਜਨ ਸਾਧੂ ਹਮ ਸਾਧ ਜਨਾ ਕਾ ਕੀੜਾ ॥

हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥

हे मेरे परमेश्वर ! मुझे साधुओं की संगति में मिला दो, क्योंकि मैं तो उन साधुजनों का एक कीड़ा ही हूँ।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਪਗ ਸਾਧ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਪਾਖਾਣੁ ਹਰਿਓ ਮਨੁ ਮੂੜਾ ॥੪॥੬॥

जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥४॥६॥

हे नानक ! मेरी प्रीति तो साधु-गुरुदेव के चरणों से ही लगी हुई है और उनसे मिलकर मेरा विमूढ़ कठोर मन खिल गया है॥ ४॥ ६॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੨

जैतसरी महला ४ घरु २

जैतसरी महला ४ घरु २

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਿਮਰਹੁ ਅਗਮ ਅਪਾਰਾ ॥

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥

अगम्य एवं अपरंपार हरि का सिमरन करो,

ਜਿਸੁ ਸਿਮਰਤ ਦੁਖੁ ਮਿਟੈ ਹਮਾਰਾ ॥
जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥
जिसका सिमरन करने से हमारा दुःख मिट जाता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪੁਰਖੁ ਮਿਲਾਵਹੁ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੧॥
हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥१॥
हे हरि ! मुझे महापुरुष सतगुरु से मिला दो, क्योंकि गुरु मिलने से ही सुख की प्राप्ति होती है॥१॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਵਹੁ ਮੀਤ ਹਮਾਰੇ ॥
हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥
हे मेरे मित्रो ! भगवान के गुण गाओ;

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਰਖਹੁ ਉਰ ਧਾਰੇ ॥
हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥
हरि-नाम को अपने हृदय में बसाकर रखो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਚਨ ਸੁਣਾਵਹੁ ਗੁਰ ਮਿਲਿਐ ਪਰਗਟੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੨॥
हरि हरि अम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥२॥
मुझे हरि के अमृत वचन सुनाओ, जब गुरु मिल जाता है तो भगवान चित में प्रगट हो जाता है।॥२॥

ਮਧੁਸੂਦਨ ਹਰਿ ਮਾਧੋ ਪ੍ਰਾਨਾ ॥
मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥
हे मधुसूदन ! हे हरि ! हे माधव ! तू ही मेरे प्राण है और

ਮੇਰੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮੀਠ ਲਗਾਨਾ ॥
मेरै मनि तनि अम्रित मीठ लगाना ॥
मेरे मन एवं तन में तेरा नाम ही अमृत के समान मीठा लगता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਇਆ ਕਰਹੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਈ ਰਾਮ ॥੩॥
हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥३॥
हे प्रभु ! दया करके मुझे गुरु से मिला दो, क्योंकि वही महापुरुष, माया से निर्लिप्त परमात्मा के समान है ॥३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸੁਖਦਾਤਾ ॥
हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥
हरि-नाम हमेशा सुख प्रदान करने वाला है।

ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ॥
हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥
अतः मेरा मन हरि के रंग में ही मग्न रहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਮਹਾ ਪੁਰਖੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲਹੁ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸੁਖੁ ਹੋਈ ਰਾਮ ॥੪॥੧॥੭॥
हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥४॥१॥७॥
हे हरि ! मुझे महापुरुष गुरु से मिला दो, क्योंकि हे नानक ! गुरु के नाम द्वारा ही सुख प्राप्त होता है॥४॥१॥७॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥
जैतसरी मः ४ ॥
जैतसरी मः ४ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥
हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥
सदा-सर्वदा हरि नाम का ही निरन्तर जाप करो;

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥
गुरु के सन्मुख रहकर सदैव ही नाम का लाभ प्राप्त करो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜਾਵਹੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥
हरि हरि हरि हरि भगति द्रिड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥१॥
अपने मन में भगवान की भक्ति दृढ़ करो और हरि-नाम के लिए चाहत पैदा करो ॥१॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦਇਆਲੁ ਧਿਆਹਾ ॥
हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥
दया के घर हरि-नाम का ध्यान करो।

ਹਰਿ ਕੈ ਰੰਗਿ ਸਦਾ ਗੁਣ ਗਾਹਾ ॥
हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥
भगवान के रंग में मग्न होकर सदा उसका गुणगान करो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਸੁ ਘੂਮਰਿ ਪਾਵਹੁ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥२॥
हरि का यशोगान करो और निष्ठा से उसका ही नृत्य करो और बड़े चाव से संतों की सभा में शामिल होकर आनंद करो ॥ २ ॥

ਆਉ ਸਖੀ ਹਰਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਹਾ ॥
आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥
है सत्संगी सखियो।आओ, हम भगवान की संगति में मिलें और

ਸੁਣਿ ਹਰਿ ਕਥਾ ਨਾਮੁ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥
हरि-कथा को सुनकर उसके नाम का लाभ प्राप्त करें।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰਿ ਗੁਰ ਮੇਲਹੁ ਗੁਰਿ ਮਿਲਿਐ ਹਰਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥
हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥३॥
हे हरि ! कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो, क्योंकि गुरु से मिलकर ही तेरे प्रति उमंग पैदा होती है।॥ ३॥

ਕਰਿ ਕੀਰਤਿ ਜਸੁ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ॥
करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥
उस अगम्य एवं अनंत प्रभु का कीर्ति-गान करो,"

ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਗਾਵਾਹਾ ॥
खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥
क्षण-क्षण राम-नाम का स्तुतिगान करो।

ਮੋ ਕਉ ਧਾਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਮਿਲੀਐ ਗੁਰ ਦਾਤੇ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੨॥੮॥
मो कउ धारि क्रिपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥४॥२॥८॥
हे मेरे दाता गुरु ! कृपा करके मुझे दर्शन दीजिए, चूंकि नानक को तो भगवान की भक्ति की तीव्र लालसा लगी हुई है ॥४॥२॥८॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੪ ॥
जैतसरी मः ४ ॥
जैतसरी मः ४ ॥

ਰਸਿ ਰਸਿ ਰਾਮੁ ਰਸਾਲੁ ਸਲਾਹਾ ॥
रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥
मैं प्रेमपूर्वक रसों के घर राम का स्तुतिगान करता हूँ।

ਮਨੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਭੀਨਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥
मेरा मन राम के नाम से प्रसन्न हो गया है और नाम का लाभ प्राप्त कर रहा है।

ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਭਗਤਿ ਕਰਹ ਦਿਨੁ ਰਾਤੀ ਗੁਰਮਤਿ ਭਗਤਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥
खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥१॥
मैं दिन-रात प्रत्येक क्षण भक्ति करता हूँ और गुरु के उपदेश द्वारा मेरे मन में भक्ति की उमंग उत्पन्न होती है ॥१॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਗੋਵਿੰਦ ਜਪਾਹਾ ॥
हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥
मैं भगवान का गुणगान करता हूँ, गोविन्द का जाप जपता रहता हूँ।

ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਤਿ ਸਬਦੁ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥
अपने मन एवं तन पर विजय प्राप्त करके शब्द-गुरु का लाभ प्राप्त किया है।

ਗੁਰਮਤਿ ਪੰਚ ਦੂਤ ਵਸਿ ਆਵਹਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਹਰਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥२॥
गुरु की शिक्षा द्वारा कामादिक शत्रु नियन्त्रण में आ गए हैं और मन एवं तन में भगवान की भक्ति का चाव उत्पन्न होता रहता है॥ २॥

ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥
नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥
नाम अमूल्य रत्न है, अंतः हरि-नाम का जाप करो।

ਹਰਿ ਗੁਣ ਗਾਇ ਸਦਾ ਲੈ ਲਾਹਾ ॥
हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥
भगवान का स्तुतिगान कर सदैव ही लाभ प्राप्त करो।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਮਾਧੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥
दीन दइआल क्रिपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥३॥
हे दीनदयालु परमेश्वर ! मुझ पर कृपा करो और मेरे मन में नाम की लालसा उत्पन्न कर ॥ ३॥

ਜਪਿ ਜਗਦੀਸੁ ਜਪਉ ਮਨ ਮਾਹਾ ॥
जपि जगदीसु जपउ मन माहा ॥
अपने मन में जगदीश्वर का जाप जपता रहूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਗੰਨਾਥੁ ਜਗਿ ਲਾਹਾ ॥
हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा ॥
इस जगत में जगन्नाथ हरि-नाम ही लाभप्रद है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਡੇ ਠਾਕੁਰ ਪ੍ਰਭ ਮੇਰੇ ਜਪਿ ਨਾਨਕ ਭਗਤਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੩॥੯॥
धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥४॥३॥९॥
नानक का कथन है कि हे मेरे ठाकुर प्रभु ! तू बड़ा धन्य-धन्य है, क्योंकि तेरा नाम जपकर ही भक्ति करने का चाव उत्पन्न होता है। ॥४॥३॥९॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
जैतसरी महला ४ ॥
जैतसरी महला ४ ॥

ਆਪੇ ਜੋਗੀ ਜੁਗਤਿ ਜੁਗਾਹਾ ॥
आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥
ईश्वर स्वयं ही योगी है और स्वयं ही समस्त युगों में योग की युक्ति है।

ਆਪੇ ਨਿਰਭਉ ਤਾੜੀ ਲਾਹਾ ॥
आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥
वह स्वयं ही निर्भीक होकर समाधि लगाता है।

ਆਪੇ ਹੀ ਆਪਿ ਆਪਿ ਵਰਤੈ ਆਪੇ ਨਾਮਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥
आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥१॥
वह स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और मनुष्य को स्वयं ही नाम-सिमरन की उमंग प्रदान करता है॥ १॥

ਆਪੇ ਦੀਪ ਲੋਅ ਦੀਪਾਹਾ ॥
आपे दीप लोअ दीपाहा ॥
वह स्वयं ही दीप, प्रकाश एवं प्रकाश करने वाला है।

ਆਪੇ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਮੁੰਦੁ ਮਥਾਹਾ ॥
आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥
वह स्वयं ही सतगुरु है और स्वयं समुद्र मंथन करने वाला है।

ਆਪੇ ਮਥਿ ਮਥਿ ਤਤੁ ਕਢਾਏ ਜਪਿ ਨਾਮੁ ਰਤਨੁ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥२॥
वह स्वयं ही मंथन करके तत्व निकालता है और नाम-रत्न का जाप करने से मन में भक्ति करने का चाव उत्पन्न होता है॥ २ ॥

ਸਖੀ ਮਿਲਹੁ ਮਿਲਿ ਗੁਣ ਗਾਵਾਹਾ ॥
सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥
हे सत्संगी सखियों ! आओ, हम मिलकर भगवान का गुणगान करें।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਜਪਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ॥
गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥
गुरु के उन्मुख रहकर नाम का जाप करो और भगवान के नाम का लाभ प्राप्त करो।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਦ੍ਰਿੜੀ ਮਨਿ ਭਾਈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥
हरि हरि भगति द्रिड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥३॥
मैंने हरि की भक्ति अपने मन में दृढ़ कर ली है और यही मेरे मन को भा गई है। हरि का नाम-सिमरन करने से मन में उत्साह बना रहता है॥ ३॥

ਆਪੇ ਵਡ ਦਾਣਾ ਵਡ ਸਾਹਾ ॥
आपे वड दाणा वड साहा ॥
भगवान स्वयं ही बड़ा चतुर एवं महान् शाह है और

ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹਾ ॥
गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥
गुरु के सान्निध्य में रहकर ही नाम की पूंजी प्राप्त होती है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਗੁਣ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੪॥੧੦॥
हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥४॥४॥१०॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे नाम की देन प्रदान करो क्योंकि तेरे ही गुण मुझे भाते हैं और मेरे हृदय में नाम का उत्साह बना रहे ॥४॥४॥१०॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
जैतसरी महला ४ ॥
जैतसरी महला ४ ॥

ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਤਿ ਸੰਗਿ ਗੁਰਾਹਾ ॥
मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥
मैं सतसंगति में मिलकर गुरु की संगत करता हूँ

ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਸਾਹਾ ॥
पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥
नाम की पूंजी संचित करता हूँ।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾ ਧਾਰਿ ਮਧੁਸੂਦਨ ਮਿਲਿ ਸਤਸੰਗਿ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੧॥
हरि हरि क्रिपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥१॥
हे मधुसूदन ! हे हरि ! मुझ पर कृपा करो ताकि सतसंगति में मिलकर मन में तेरी भक्ति करने के लिए तीव्र लालसा बनी रहे॥ १॥

ਹਰਿ ਗੁਣ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰਵਣਿ ਸੁਣਾਹਾ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਮਿਲਾਹਾ ॥
हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥
वाणी द्वारा अपने कानों से भगवान के गुण श्रवण करूँ हे परमेश्वर ! कृपा करके मुझे सतगुरु से मिला दो।

ਗੁਣ ਗਾਵਹ ਗੁਣ ਬੋਲਹ ਬਾਣੀ ਹਰਿ ਗੁਣ ਜਪਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੨॥
गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥२॥
मैं हरि का गुणगान करूँ, वाणी द्वारा तेरे गुण उच्चारण करूँ और हरि के गुण जपकर मेरे मन में तुझे मिलने के लिए उत्साह बना रहे ॥२॥

ਸਭਿ ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਜਗ ਪੁੰਨ ਤੁਲਾਹਾ ॥
सभि तीरथ वरत जग पुंन तोलाहा ॥
मैंने समस्त तीर्थ, व्रत, यज्ञ एवं दान पुण्य के फलों को तोल लिया है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਪੁਜਹਿ ਪੁਜਾਹਾ ॥
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥
परन्तु यह सभी हरि-नाम सिमरण के बराबर नहीं पहुँचते।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਅਤੁਲੁ ਤੋਲੁ ਅਤਿ ਭਾਰੀ ਗੁਰਮਤਿ ਜਪਿ ਉਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੩॥
हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥३॥
हरि का नाम अतुलनीय है, अत्यन्त महान् होने के कारण इसे तोला नहीं जा सकता, गुरु के उपदेश द्वारा ही हरि-नाम का जाप करने का उत्साह पैदा होता है॥ ३॥

ਸਭਿ ਕਰਮ ਧਰਮ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪਾਹਾ ॥
सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥
जो हरि-नाम जपता है, उसे सभी धर्म-कर्मो का फल मिल जाता है,

ਕਿਲਵਿਖ ਮੈਲੁ ਪਾਪ ਧੋਵਾਹਾ ॥
किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥
इससे किल्विष-पापों की सारी मैल धुल जाती है।

ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਹੋਹੁ ਜਨ ਊਪਰਿ ਦੇਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਓਮਾਹਾ ਰਾਮ ॥੪॥੫॥੧੧॥
दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥४॥५॥११॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे दीनदयालु ! अपने सेवक पर दयालु हो जाओ तथा मेरे हृदय में अपना नाम देकर उत्साह बनाए रखो ॥४॥५॥११॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩
जैतसरी महला ५ घरु ३
जैतसरी महला ५ घरु ३

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਕੋਈ ਜਾਨੈ ਕਵਨੁ ਈਹਾ ਜਗਿ ਮੀਤੁ ॥
कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥
कोई विरला ही जानता है कि इस दुनिया में हमारा कौन घनिष्ठ मित्र है ?

ਜਿਸੁ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਸੋਈ ਬਿਧਿ ਬੂਝੈ ਤਾ ਕੀ ਨਿਰਮਲ ਰੀਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥
जिस पर भगवान कृपालु होता है, वही इस तथ्य को भलीभांति बूझता है और उसका जीवन-आचरण पवित्र बन जाता है॥१॥ रहाउ॥

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਬਨਿਤਾ ਸੁਤ ਬੰਧਪ ਇਸਟ ਮੀਤ ਅਰੁ ਭਾਈ ॥
मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥
माता-पिता, पत्नी, पुत्र, संबंधी, परम मित्र एवं भाई-"

ਪੂਰਬ ਜਨਮ ਕੇ ਮਿਲੇ ਸੰਜੋਗੀ ਅੰਤਹਿ ਕੋ ਨ ਸਹਾਈ ॥੧॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥१॥
पूर्व जन्म के संयोग से ही मिलते हैं, लेकिन जीवन के अन्तिम समय में कोई सहायक नहीं होता ॥ १ ॥

ਮੁਕਤਿ ਮਾਲ ਕਨਿਕ ਲਾਲ ਹੀਰਾ ਮਨ ਰੰਜਨ ਕੀ ਮਾਇਆ ॥
मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥
मोतियों की मालाएँ, स्वर्ण, जवाहरात एवं हीरे मन को आनंद देने वाली दौलत है।

ਹਾ ਹਾ ਕਰਤ ਬਿਹਾਨੀ ਅਵਧਹਿ ਤਾ ਮਹਿ ਸੰਤੋਖੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥२॥
मनुष्य की जीवन-अवधि इन्हें एकत्र करने के दु:ख में व्यतीत हो जाती है किन्तु इन सबकी उपलब्धि होने पर मनुष्य को संतोष प्राप्त नहीं होता।॥ २॥

ਹਸਤਿ ਰਥ ਅਸ੍ਵ ਪਵਨ ਤੇਜ ਧਨੀ ਭੂਮਨ ਚਤੁਰਾਂਗਾ ॥
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥
मनुष्य के पास चाहे हाथी, रथ, पवन की तरह तेज चलने वाले घोड़े, धन-दौलत, भूमि एवं चतुरंगिणी सेना भी क्यों न हो,

ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਿਓ ਇਨ ਮਹਿ ਕਛੂਐ ਊਠਿ ਸਿਧਾਇਓ ਨਾਂਗਾ ॥੩॥
संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥३॥
इनमें से कुछ भी मनुष्य के साथ नहीं जाता और वह नग्न ही दुनिया को छोड़कर चला जाता है॥ ३॥

ਹਰਿ ਕੇ ਸੰਤ ਪ੍ਰਿਅ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਭ ਕੇ ਤਾ ਕੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਗਾਈਐ ॥
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥
हरि के संतजन प्रियतम प्रभु के प्रिय होते हैं, इसलिए हमें उनकी संगति में रहकर सदैव भगवान का यशोगान करना चाहिए।

ਨਾਨਕ ਈਹਾ ਸੁਖੁ ਆਗੈ ਮੁਖ ਊਜਲ ਸੰਗਿ ਸੰਤਨ ਕੈ ਪਾਈਐ ॥੪॥੧॥
नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥४॥१॥
हे नानक ! ऐसे संतों की संगति में रहने से मनुष्य को इहलोक में सुख प्राप्त होता है और आगे परलोक में भी बड़ी शोभा प्राप्त होती है।॥४॥ १॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਦੁਪਦੇ
जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे
जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਦੇਹੁ ਸੰਦੇਸਰੋ ਕਹੀਅਉ ਪ੍ਰਿਅ ਕਹੀਅਉ ॥
देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥
हे सत्संगी सुहागिन सखियों ! मुझे मेरे प्रियतम-परमेश्वर का सन्देश दो, उस प्रिय के बारे में कुछ तो बताओ।

ਬਿਸਮੁ ਭਈ ਮੈ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਸੁਨਤੇ ਕਹਹੁ ਸੁਹਾਗਨਿ ਸਹੀਅਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥१॥ रहाउ ॥
उसके बारे में अनेक प्रकार की बातें सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गई हूँ ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕੋ ਕਹਤੋ ਸਭ ਬਾਹਰਿ ਬਾਹਰਿ ਕੋ ਕਹਤੋ ਸਭ ਮਹੀਅਉ ॥
को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥
कोई कहता है कि वह शरीर से बाहर ही रहता है और कोई कहता है कि वह सबमें समाया हुआ है।

ਬਰਨੁ ਨ ਦੀਸੈ ਚਿਹਨੁ ਨ ਲਖੀਐ ਸੁਹਾਗਨਿ ਸਾਤਿ ਬੁਝਹੀਅਉ ॥੧॥
बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥१॥
उसका कोई वर्ण दिखाई नहीं देता और कोई चिन्ह भी दिखाई नहीं देता, हे सुहागिनो ! मुझे सत्य बतलाओ॥ १॥

ਸਰਬ ਨਿਵਾਸੀ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਾਸੀ ਲੇਪੁ ਨਹੀ ਅਲਪਹੀਅਉ ॥
सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥
वह परमेश्वर सब में निवास कर रहा है, प्रत्येक शरीर में वे वास करने वाला है, वह माया से निर्लिप्त है और उस पर जीवों के शुभाशुभ कर्मों का कोई दोष नहीं लगता।

ਨਾਨਕੁ ਕਹਤ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਲੋਗਾ ਸੰਤ ਰਸਨ ਕੋ ਬਸਹੀਅਉ ॥੨॥੧॥੨॥
नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥२॥१॥२॥
नानक कहते हैं कि हे लोगो ! ध्यानपूर्वक सुनो, मेरा परमेश्वर तो संतजनों की रसना पर निवास कर रहा है॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਃ ੫ ॥
जैतसरी मः ५ ॥
जैतसरी मः ५ ॥

ਧੀਰਉ ਸੁਨਿ ਧੀਰਉ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥१॥ रहाउ ॥
अपने प्रभु की महिमा सुनकर मुझे बड़ा धैर्य होता है।॥१॥ रहाउ॥

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਮਨੁ ਤਨੁ ਸਭੁ ਅਰਪਉ ਨੀਰਉ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਨੀਰਉ ॥੧॥
जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥१॥
अपने प्रभु के अत्यन्त निकट दर्शन करके मैं अपनी आत्मा, प्राण, मन एवं तन सब कुछ उसे अर्पण करता हूँ॥१॥

ਬੇਸੁਮਾਰ ਬੇਅੰਤੁ ਬਡ ਦਾਤਾ ਮਨਹਿ ਗਹੀਰਉ ਪੇਖਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ॥੨॥
बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥२॥
उस बेशुमार, बेअंत एवं महान् दाता प्रभु को देखकर मैं अपने हृदय में बसाता हूँ ॥२॥

ਜੋ ਚਾਹਉ ਸੋਈ ਸੋਈ ਪਾਵਉ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪੂਰਉ ਜਪਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ॥੩॥
जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥३॥
मैं जो कुछ चाहता हूँ, वही उससे प्राप्त कर लेता हूँ, अपने प्रभु का सिमरन करने से मेरी आशा एवं मनोरथ भी पूर्ण हो जाते हैं।॥३॥

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਦੂਖਿ ਨ ਕਬਹੂ ਝੂਰਉ ਬੁਝਿ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ॥੪॥੨॥੩॥
गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥४॥२॥३॥
हे नानक ! गुरु की अपार कृपा से वह मेरे मन में बस गया है और प्रभु को समझकर अब मैं दु:ख में कभी व्याकुल नहीं होता।॥ ४॥ २॥ ३॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਲੋੜੀਦੜਾ ਸਾਜਨੁ ਮੇਰਾ ॥
लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥
वह मेरा साजन प्रभु ही है, जिसे पाने के लिए प्रत्येक जिज्ञासु के मन में तीव्र लालसा लगी हुई है।

ਘਰਿ ਘਰਿ ਮੰਗਲ ਗਾਵਹੁ ਨੀਕੇ ਘਟਿ ਘਟਿ ਤਿਸਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
अतः घर-घर में उसका मंगल-गान करो, उसका निवास तो प्रत्येक जीव के हृदय में है॥ १॥ रहाउ॥

ਸੁਖਿ ਅਰਾਧਨੁ ਦੂਖਿ ਅਰਾਧਨੁ ਬਿਸਰੈ ਨ ਕਾਹੂ ਬੇਰਾ ॥
सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥
हर्षोल्लास (सुख) के समय उसकी ही आराधना करो एवं किसी संकट काल (दुःख) के समय भी उसकी ही आराधना करो और किसी भी समय उसे कदापि विस्मृत न करो।

ਨਾਮੁ ਜਪਤ ਕੋਟਿ ਸੂਰ ਉਜਾਰਾ ਬਿਨਸੈ ਭਰਮੁ ਅੰਧੇਰਾ ॥੧॥
नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥१॥
उसके नाम का जाप करने से करोड़ों ही सूर्यो का उजाला हो जाता है एवं भ्रम, अज्ञान के अन्धेरे का नाश हो जाता है॥१॥

ਥਾਨਿ ਥਨੰਤਰਿ ਸਭਨੀ ਜਾਈ ਜੋ ਦੀਸੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ॥
थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥
हे परमात्मा ! देश-देशान्तर सब में तू ही व्यापक है तथा जो कुछ भी होता है, वह तेरा ही है।

ਸੰਤਸੰਗਿ ਪਾਵੈ ਜੋ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਈ ਹੈ ਫੇਰਾ ॥੨॥੩॥੪॥

संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥२॥३॥४॥

हे नानक ! जो व्यक्ति संतों की संगति में रहता है, वह पुनः आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता अर्थात् उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।॥२॥३॥४॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪ ਦੁਪਦੇ
जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे
जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਅਬ ਮੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ਗੁਰ ਆਗਿਜ ॥
अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥
अब मैंने गुरु की आज्ञा में रहकर सुख प्राप्त कर लिया है।

ਤਜੀ ਸਿਆਨਪ ਚਿੰਤ ਵਿਸਾਰੀ ਅਹੰ ਛੋਡਿਓ ਹੈ ਤਿਆਗਿਜ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआग्यि ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने हर प्रकार की चालाकी छोड़ दी है, अपनी चिन्ता को भुला दिया है और अपने अहंत्व को पूर्णतया छोड़ दिया है॥१॥ रहाउ॥

ਜਉ ਦੇਖਉ ਤਉ ਸਗਲ ਮੋਹਿ ਮੋਹੀਅਉ ਤਉ ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਗੁਰ ਭਾਗਿ ॥
जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥
मैंने जब यह देखा कि दुनिया के सभी लोग माया के मोह में ही लिप्त हैं तो मैं तुरंत ही गुरु की शरण में भागकर आ गया।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਟਹਲ ਹਰਿ ਲਾਇਓ ਤਉ ਜਮਿ ਛੋਡੀ ਮੋਰੀ ਲਾਗਿ ॥੧॥
करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥१॥
जब गुरु ने कृपा करके मुझे भगवान की उपासना में लगाया तो यमों ने भी मेरा पीछा छोड़ दिया ॥१॥

ਤਰਿਓ ਸਾਗਰੁ ਪਾਵਕ ਕੋ ਜਉ ਸੰਤ ਭੇਟੇ ਵਡ ਭਾਗਿ ॥
तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥
अहोभाग्य से जब मेरी संतों से भेंट हुई तो जगत के अग्नि सागर को पार कर लिया।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਰਬ ਸੁਖ ਪਾਏ ਮੋਰੋ ਹਰਿ ਚਰਨੀ ਚਿਤੁ ਲਾਗਿ ॥੨॥੧॥੫॥
जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥२॥१॥५॥
नानक का कथन है कि अब मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं चूंकि मेरा चित भगवान के सुन्दर चरणों में ही लग गया है ॥२॥१॥५॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਮਨ ਮਹਿ ਸਤਿਗੁਰ ਧਿਆਨੁ ਧਰਾ ॥
मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥
मैंने अपने मन में सतगुरु का ध्यान धारण किया,

ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਿਓ ਗਿਆਨੁ ਮੰਤ੍ਰੁ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਭ ਜੀਉ ਮਇਆ ਕਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
द्रिड़्हिओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपने मन में भगवान का नाम-मंत्र एवं ज्ञान को दृढ़ कर लिया है, जिसके फलस्वरूप प्रभु ने मुझ पर बड़ी करुणा की है।॥१॥ रहाउ ॥

ਕਾਲ ਜਾਲ ਅਰੁ ਮਹਾ ਜੰਜਾਲਾ ਛੁਟਕੇ ਜਮਹਿ ਡਰਾ ॥
काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥
अब काल का जाल, सांसारिक बन्धनों का महा जंजाल एवं मृत्यु का भय अब सभी लुप्त हो चुके हैं।

ਆਇਓ ਦੁਖ ਹਰਣ ਸਰਣ ਕਰੁਣਾਪਤਿ ਗਹਿਓ ਚਰਣ ਆਸਰਾ ॥੧॥
आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥१॥
हे करुणापति ! तू समस्त दुःख हरण करने वाला है, अतः मैं तेरी शरण में आया हूँ और तेरे चरणों का ही सहारा लिया है॥१॥

ਨਾਵ ਰੂਪ ਭਇਓ ਸਾਧਸੰਗੁ ਭਵ ਨਿਧਿ ਪਾਰਿ ਪਰਾ ॥
नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ॥
साधु-संतों की संगति भवसागर से पार होने के लिए एक नाव का रूप है।

ਅਪਿਉ ਪੀਓ ਗਤੁ ਥੀਓ ਭਰਮਾ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਅਜਰੁ ਜਰਾ ॥੨॥੨॥੬॥
अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥२॥२॥६॥
हे नानक ! अब मैंने नामामृत पान कर लिया है, जिससे मेरी दुविधा का नाश हो गया है तथा अजर अवस्था प्राप्त होने के कारण अब मुझे बुढ़ापा भी नहीं आ सकता ॥२॥२॥६॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਜਾ ਕਉ ਭਏ ਗੋਵਿੰਦ ਸਹਾਈ ॥
जा कउ भए गोविंद सहाई ॥
जिस जीव का परमात्मा सहायक बन गया है,

ਸੂਖ ਸਹਜ ਆਨੰਦ ਸਗਲ ਸਿਉ ਵਾ ਕਉ ਬਿਆਧਿ ਨ ਕਾਈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सूख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥१॥ रहाउ ॥
वह आत्मिक सुख एवं तमाम हर्षोल्लास प्राप्त कर लेता है और उसे कोई भारी व्याधि प्रभावित नहीं करती ॥१॥ रहाउ॥

ਦੀਸਹਿ ਸਭ ਸੰਗਿ ਰਹਹਿ ਅਲੇਪਾ ਨਹ ਵਿਆਪੈ ਉਨ ਮਾਈ ॥
दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥
वह सब के साथ रहता दृष्टिगत होता है परन्तु फिर भी निर्लिप्त रहता है और माया उसे बिल्कुल भी स्पर्श नहीं करती।

ਏਕੈ ਰੰਗਿ ਤਤ ਕੇ ਬੇਤੇ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ॥੧॥
एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥१॥
वह एक परमेश्वर के रंग में मग्न रहता है तथा तत्ववेता बन जाता है परन्तु यह बुद्धि भी उसे सतगुरु से ही प्राप्त हुई है॥१॥

ਦਇਆ ਮਇਆ ਕਿਰਪਾ ਠਾਕੁਰ ਕੀ ਸੇਈ ਸੰਤ ਸੁਭਾਈ ॥
दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥
जिन पर ठाकुर जी की दया, मेहर एवं कृपा होती है, वही संत स्वभाव वाले हैं।

ਤਿਨ ਕੈ ਸੰਗਿ ਨਾਨਕ ਨਿਸਤਰੀਐ ਜਿਨ ਰਸਿ ਰਸਿ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗਾਈ ॥੨॥੩॥੭॥
तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥२॥३॥७॥
हे नानक ! जो महापुरुष प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान करते हैं, उनकी संगति में रहने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।॥२॥३॥७॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਗੋਬਿੰਦ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਾਨ ਧਨ ਰੂਪ ॥
गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥
हे गोविन्द ! तू ही हमारा जीवन, प्राण, धन-दौलत एवं सौन्दर्य है।

ਅਗਿਆਨ ਮੋਹ ਮਗਨ ਮਹਾ ਪ੍ਰਾਨੀ ਅੰਧਿਆਰੇ ਮਹਿ ਦੀਪ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥१॥ रहाउ ॥

अज्ञान के कारण प्राणी मोह में मग्न रहता है और इस अज्ञानता के अन्धेरे में परमेश्वर ही एकमात्र ज्ञान का दीपक है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਫਲ ਦਰਸਨੁ ਤੁਮਰਾ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੀਤਮ ਚਰਨ ਕਮਲ ਆਨੂਪ ॥

सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥

हे प्रियतम प्रभु ! तेरे चरण कमल बड़े अनुपम हैं और तुम्हारे दर्शन बड़े फलदायक हैं।

ਅਨਿਕ ਬਾਰ ਕਰਉ ਤਿਹ ਬੰਦਨ ਮਨਹਿ ਚਰ੍ਹਾਵਉ ਧੂਪ ॥੧॥

अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चर्हावउ धूप ॥१॥

मैं बार-बार तेरी ही वन्दना करता हूँ एवं अपने मन को धूप-सामग्री के रूप में अर्पण करता हूँ॥ १॥

ਹਾਰਿ ਪਰਿਓ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੈ ਪ੍ਰਭ ਦੁਆਰੈ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹੁ ਕਰਿ ਗਹੀ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ਲੂਕ ॥

हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिड़्हु करि गही तुम्हारी लूक ॥

हे प्रभु ! मायूस होकर अब मैं तुम्हारे द्वार पर आया हूँ और तेरे सहारे को जकड़ कर पकड़ लिया है।

ਕਾਢਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਅਪੁਨੇ ਕਉ ਸੰਸਾਰ ਪਾਵਕ ਕੇ ਕੂਪ ॥੨॥੪॥੮॥

काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥२॥४॥८॥

नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! इस संसार रूपी अग्नि के कुएँ में से मुझे बाहर निकाल दो॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

जैतसरी महला ५ ॥

जैतसरी महला ५ ॥

ਕੋਈ ਜਨੁ ਹਰਿ ਸਿਉ ਦੇਵੈ ਜੋਰਿ ॥

कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥

कोई महापुरुष मुझे भगवान के साथ मिला दे तो

ਚਰਨ ਗਹਉ ਬਕਉ ਸੁਭ ਰਸਨਾ ਦੀਜਹਿ ਪ੍ਰਾਨ ਅਕੋਰਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥१॥ रहाउ ॥

मैं उसके चरण पकड़ लूं, अपनी जीभ से शुभ वचन बोलूं तथा अपने प्राण भी उसे ही अर्पण कर दूँ॥ १॥ रहाउ ॥

ਮਨੁ ਤਨੁ ਨਿਰਮਲ ਕਰਤ ਕਿਆਰੋ ਹਰਿ ਸਿੰਚੈ ਸੁਧਾ ਸੰਜੋਰਿ ॥
मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥
अपने मन एवं तन को निर्मल क्यारियाँ बनाकर मैं उन्हें हरिनामामृत से भलीभांति सींचता हूँ।

ਇਆ ਰਸ ਮਹਿ ਮਗਨੁ ਹੋਤ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਮਹਾ ਬਿਖਿਆ ਤੇ ਤੋਰਿ ॥੧॥
इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥१॥
भगवान की कृपा से ही प्राणी इस अमृत में मग्न होता है और विषय-विकारों से अलग हो जाता है॥१॥

ਆਇਓ ਸਰਣਿ ਦੀਨ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਚਿਤਵਉ ਤੁਮ੍ਹ੍ਹਰੀ ਓਰਿ ॥
आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥
हे दीनों के दुःख नष्ट करने वाले प्रभु ! मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और तुम्हारी ओट को ही स्मरण करता रहता हूँ।

ਅਭੈ ਪਦੁ ਦਾਨੁ ਸਿਮਰਨੁ ਸੁਆਮੀ ਕੋ ਪ੍ਰਭ ਨਾਨਕ ਬੰਧਨ ਛੋਰਿ ॥੨॥੫॥੯॥
अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥२॥५॥९॥
हे मेरे स्वामी ! मुझे अभय पद एवं सिमरन का दान प्रदान करो। हे नानक ! वह प्रभु जीवों के बन्धन काटने वाला है ॥२॥५॥९॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਚਿਤਵਤ ਬਰਸਤ ਮੇਂਹ ॥
चात्रिक चितवत बरसत मेंह ॥
जैसे पपीहे को हर समय वर्षा की अभिलाषा रहती है,

ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਿੰਧੁ ਕਰੁਣਾ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰੇਮ ਭਗਤਿ ਕੋ ਨੇਂਹ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
क्रिपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥१॥ रहाउ ॥
वैसे ही हे कृपा के समुद्र प्रभु ! मुझ पर करुणा करो ताकि तेरी प्रेम-भक्ति से मेरी प्रीति बनी रहे ॥१॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਸੂਖ ਚਕਵੀ ਨਹੀ ਚਾਹਤ ਅਨਦ ਪੂਰਨ ਪੇਖਿ ਦੇਂਹ ॥
अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥
चकवी को अनेक सुखों की लालसा नहीं, परन्तु सूर्य को देखकर वह आनंद से भर जाती है।

ਆਨ ਉਪਾਵ ਨ ਜੀਵਤ ਮੀਨਾ ਬਿਨੁ ਜਲ ਮਰਨਾ ਤੇਂਹ ॥੧॥
आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥१॥
मछली जल के अलावा किसी अन्य उपाय द्वारा जीवित नहीं रह सकती और जल के बिना वह अपने प्राण त्याग देती है ॥१॥

ਹਮ ਅਨਾਥ ਨਾਥ ਹਰਿ ਸਰਣੀ ਅਪੁਨੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇਂਹ ॥
हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह ॥
हे मेरे मालिक ! तेरे बिना हम अनाथ हैं, हे प्रभु ! कृपा करके अपनी शरण में रखो।

ਚਰਣ ਕਮਲ ਨਾਨਕੁ ਆਰਾਧੈ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਆਨ ਨ ਕੇਂਹ ॥੨॥੬॥੧੦॥
चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥२॥६॥१०॥
नानक तो प्रभु के चरण-कमलों की ही आराधना करता है और उसके बिना उसे कुछ भी उपयुक्त नहीं।॥२॥६॥१०॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਮਨਿ ਤਨਿ ਬਸਿ ਰਹੇ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥
मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥
मेरे प्राणों का आधार परमात्मा मेरे मन एवं तन में बस रहा है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਭੇਟੇ ਪੂਰਨ ਪੁਰਖ ਸੁਜਾਨ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥१॥ रहाउ ॥
वह चतुर परमपुरुष सर्वव्यापी है और अपनी कृपा करके साधु की संगति द्वारा मुझे मिला है॥१॥ रहाउ॥

ਪ੍ਰੇਮ ਠਗਉਰੀ ਜਿਨ ਕਉ ਪਾਈ ਤਿਨ ਰਸੁ ਪੀਅਉ ਭਾਰੀ ॥
प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥
उसने जिन मनुष्यों के मुँह में प्रेम की ठग-बूटी डाल दी है, उन्होंने उत्तम हरि-नाम रूपी रस पान कर लिया है।

ਤਾ ਕੀ ਕੀਮਤਿ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਈ ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਨ ਹਮ੍ਹ੍ਹਾਰੀ ॥੧॥
ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्हारी ॥१॥
मैं उनका मूल्यांकन बता नहीं सकता, क्योंकि ऐसा करने की मुझ में कौन-सी क्षमता है?॥१॥

ਲਾਇ ਲਏ ਲੜਿ ਦਾਸ ਜਨ ਅਪੁਨੇ ਉਧਰੇ ਉਧਰਨਹਾਰੇ ॥
लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥
प्रभु ने अपने भक्तों को अपने आंचल के साथ लगा लिया है और वे पार होने वाले भवसागर से पार हो गए है।

ਪ੍ਰਭੁ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸਿਮਰਿ ਸੁਖੁ ਪਾਇਓ ਨਾਨਕ ਸਰਣਿ ਦੁਆਰੇ ॥੨॥੭॥੧੧॥
प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥२॥७॥११॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तेरा बारंबार सिमरन करने से ही सुख प्राप्त हुआ है और मैं तेरे द्वार पर तेरी शरण में आया हूँ॥ २॥ ७ ॥ ११॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਆਏ ਅਨਿਕ ਜਨਮ ਭ੍ਰਮਿ ਸਰਣੀ ॥
आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥
हे ईश्वर ! अनेक जन्म भटकने के पश्चात् हम तेरी शरण में आए हैं।

ਉਧਰੁ ਦੇਹ ਅੰਧ ਕੂਪ ਤੇ ਲਾਵਹੁ ਅਪੁਨੀ ਚਰਣੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥१॥ रहाउ ॥
हमारे शरीर को अज्ञानता के कुएँ में से बाहर निकाल दो और अपने चरणों में लगा लो॥ १॥ रहाउ॥

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਕਿਛੁ ਕਰਮੁ ਨ ਜਾਨਾ ਨਾਹਿਨ ਨਿਰਮਲ ਕਰਣੀ ॥
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥
मैं ज्ञान, ध्यान एवं शुभ कर्म कुछ भी नहीं जानता और न ही मेरा जीवन-आचरण शुद्ध है।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਕੈ ਅੰਚਲਿ ਲਾਵਹੁ ਬਿਖਮ ਨਦੀ ਜਾਇ ਤਰਣੀ ॥੧॥
साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥१॥
हे प्रभु ! मुझे संतों की शरण में लगा दो ताकि उनकी संगति में रहकर विषम संसार नदिया से पार हो जाऊँ ॥१॥

ਸੁਖ ਸੰਪਤਿ ਮਾਇਆ ਰਸ ਮੀਠੇ ਇਹ ਨਹੀ ਮਨ ਮਹਿ ਧਰਣੀ ॥
सुख स्मपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥
संसार की सुख-सम्पति एवं माया के मीठे रसों को अपने मन में धारण नहीं करना चाहिए।

ਹਰਿ ਦਰਸਨ ਤ੍ਰਿਪਤਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਪਾਵਤ ਹਰਿ ਨਾਮ ਰੰਗ ਆਭਰਣੀ ॥੨॥੮॥੧੨॥
हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥२॥८॥१२॥
हे नानक ! भगवान के दर्शनों से तृप्त हो गया हूँ और भगवान के नाम की प्रीति ही मेरा आभूषण है॥ २॥ ८॥ १२ ॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
जैतसरी महला ५ ॥
जैतसरी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਸਿਮਰਹੁ ਹਿਰਦੈ ਰਾਮ ॥
हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥
हे भक्तजनों ! अपने हृदय में राम का नाम-सिमरन करते रहो।

ਹਰਿ ਜਨ ਕਉ ਅਪਦਾ ਨਿਕਟਿ ਨ ਆਵੈ ਪੂਰਨ ਦਾਸ ਕੇ ਕਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥१॥ रहाउ ॥

भक्तजन के समीप कोई भी मुसीबत नहीं आती और दासों के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।॥१॥ रहाउ ॥

ਕੋਟਿ ਬਿਘਨ ਬਿਨਸਹਿ ਹਰਿ ਸੇਵਾ ਨਿਹਚਲੁ ਗੋਵਿਦ ਧਾਮ ॥

कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥

भगवान की उपासना करने से करोड़ों ही विघ्न नष्ट हो जाते हैं और गोविन्द का अटल धाम प्राप्त हो जाता है।

ਭਗਵੰਤ ਭਗਤ ਕਉ ਭਉ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਆਦਰੁ ਦੇਵਤ ਜਾਮ ॥੧॥

भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥१॥

भगवान के भक्त को किसी भी प्रकार का डर प्रभावित नहीं करता और मृत्यु का देवता यमराज भी उसका पूर्ण आदर करता है॥१॥

ਤਜਿ ਗੋਪਾਲ ਆਨ ਜੋ ਕਰਣੀ ਸੋਈ ਸੋਈ ਬਿਨਸਤ ਖਾਮ ॥

तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥

ईश्वर को त्याग कर अन्य किए गए सभी कर्म क्षणभंगुर एवं झूठे हैं।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਹਿਰਦੈ ਗਹੁ ਨਾਨਕ ਸੁਖ ਸਮੂਹ ਬਿਸਰਾਮ ॥੨॥੯॥੧੩॥

चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥२॥९॥१३॥

हे नानक ! अपने हृदय में प्रभु के चरण कमल धारण कर लो, क्योंकि उसके चरण सर्व सुखों का परम निवास है॥ २॥ ६॥ १३॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯

जैतसरी महला ९

जैतसरी महला ९

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਭੂਲਿਓ ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਉਰਝਾਇਓ ॥

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥

मेरा भूला हुआ (पथ विचलित) मन माया के मोह में ही उलझा हुआ है।

ਜੋ ਜੋ ਕਰਮ ਕੀਓ ਲਾਲਚ ਲਗਿ ਤਿਹ ਤਿਹ ਆਪੁ ਬੰਧਾਇਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ ॥

लालच में आकर इसने जो भी कर्म किए हैं, उन सभी के साथ स्वयं को ही बंधनों में फँसा रहा है॥ १॥ रहाउ ॥

ਸਮਝ ਨ ਪਰੀ ਬਿਖੈ ਰਸ ਰਚਿਓ ਜਸੁ ਹਰਿ ਕੋ ਬਿਸਰਾਇਓ ॥

समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥

इसे सत्य के मार्ग की कोई सूझ नहीं पड़ी और यह विषय-विकारों के स्वादों में ही लीन रहा और इसने हरि-यश को भुला दिया।

ਸੰਗਿ ਸੁਆਮੀ ਸੋ ਜਾਨਿਓ ਨਾਹਿਨ ਬਨੁ ਖੋਜਨ ਕਉ ਧਾਇਓ ॥੧॥

संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥

स्वामी प्रभु तो हृदय में साथ ही है परन्तु उसे जानता ही नहीं और व्यर्थ ही भगवान की खोज हेतु जंगलों में दौड़ता रहा।॥ १॥

ਰਤਨੁ ਰਾਮੁ ਘਟ ਹੀ ਕੇ ਭੀਤਰਿ ਤਾ ਕੋ ਗਿਆਨੁ ਨ ਪਾਇਓ ॥
रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥
राम-नाम रूपी रत्न हृदय में ही रहता है परन्तु इस बारे में कोई ज्ञान नहीं प्राप्त किया।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਭਗਵੰਤ ਭਜਨ ਬਿਨੁ ਬਿਰਥਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਓ ॥੨॥੧॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥
हे नानक ! भगवान के भजन के बिना इसने अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही बर्बाद कर दिया है॥ २॥ १॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
जैतसरी महला ९ ॥
जैतसरी महला ९ ॥

ਹਰਿ ਜੂ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਪਤਿ ਮੇਰੀ ॥
हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
हे परमात्मा ! मेरी लाज बचा लो।

ਜਮ ਕੋ ਤ੍ਰਾਸ ਭਇਓ ਉਰ ਅੰਤਰਿ ਸਰਨਿ ਗਹੀ ਕਿਰਪਾ ਨਿਧਿ ਤੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे हृदय में मृत्यु का भय निवास कर चुका है। अतः हे कृपानिधि ! मैंने तेरी ही शरण ली है॥१॥ रहाउ॥

ਮਹਾ ਪਤਿਤ ਮੁਗਧ ਲੋਭੀ ਫੁਨਿ ਕਰਤ ਪਾਪ ਅਬ ਹਾਰਾ ॥
महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥
में बड़ा पतित, मूर्ख एवं लालची हूँ और पाप कर्म करते-करते अब मैं थक चुका हूँ।

ਭੈ ਮਰਬੇ ਕੋ ਬਿਸਰਤ ਨਾਹਿਨ ਤਿਹ ਚਿੰਤਾ ਤਨੁ ਜਾਰਾ ॥੧॥
भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥
मृत्यु का भय मुझे भूलता नहीं और इस चिन्ता ने मेरे शरीर को जलाकर रख दिया है॥१॥

ਕੀਏ ਉਪਾਵ ਮੁਕਤਿ ਕੇ ਕਾਰਨਿ ਦਹ ਦਿਸਿ ਕਉ ਉਠਿ ਧਾਇਆ ॥
कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
अपनी मुक्ति हेतु मैंने अनेक उपाय किए हैं और दसों दिशाओं में भी भागता रहता हूँ।

ਘਟ ਹੀ ਭੀਤਰਿ ਬਸੈ ਨਿਰੰਜਨੁ ਤਾ ਕੋ ਮਰਮੁ ਨ ਪਾਇਆ ॥੨॥
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥
भगवान मेरे हृदय में ही निवास कर रहा है किन्तु उसके भेद को नहीं जाना॥२॥

ਨਾਹਿਨ ਗੁਨੁ ਨਾਹਿਨ ਕਛੁ ਜਪੁ ਤਪੁ ਕਉਨੁ ਕਰਮੁ ਅਬ ਕੀਜੈ ॥
नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥
हे प्रभु ! मुझ में कोई गुण नहीं और न ही कुछ सिमरन एवं तपस्या की है। फिर तुझे प्रसन्न करने हेतु अब कौन-सा कर्म करूँ ?

ਨਾਨਕ ਹਾਰਿ ਪਰਿਓ ਸਰਨਾਗਤਿ ਅਭੈ ਦਾਨੁ ਪ੍ਰਭ ਦੀਜੈ ॥੩॥੨॥
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! अब मैं निराश होकर तेरी शरण में आया हूँ, अतः मुझे अभय दान (मोक्ष दान) प्रदान कीजिए॥३॥२॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੯ ॥
जैतसरी महला ९ ॥
जैतसरी महला ९ ॥

ਮਨ ਰੇ ਸਾਚਾ ਗਹੋ ਬਿਚਾਰਾ ॥
मन रे साचा गहो बिचारा ॥
हे प्रिय मन ! यह सच्चा विचार धारण कर लो कि

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮਿਥਿਆ ਮਾਨੋ ਸਗਰੋ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥
राम नाम के बिना यह समूचा संसार झूठा ही समझो॥१॥ रहाउ ॥

ਜਾ ਕਉ ਜੋਗੀ ਖੋਜਤ ਹਾਰੇ ਪਾਇਓ ਨਾਹਿ ਤਿਹ ਪਾਰਾ ॥
जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥
जिस की खोज करते हुए योगी भी निराश हो चुके हैं और उसका अन्त नहीं पा सके,

ਸੋ ਸੁਆਮੀ ਤੁਮ ਨਿਕਟਿ ਪਛਾਨੋ ਰੂਪ ਰੇਖ ਤੇ ਨਿਆਰਾ ॥੧॥
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥
उस परमात्मा को तुम निकट ही समझो, चूंकि उसका रूप एवं चिन्ह बड़ा न्यारा है ॥१॥

ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਜਗਤ ਮੈ ਹਰਿ ਕੋ ਕਬਹੂ ਨਾਹਿ ਸੰਭਾਰਾ ॥
पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि स्मभारा ॥
भगवान का नाम इस दुनिया में पतितों को पावन बनाने वाला है परन्तु तूने उसे कदापि स्मरण नहीं किया।

ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਜਗ ਬੰਦਨ ਰਾਖਹੁ ਬਿਰਦੁ ਤੁਹਾਰਾ ॥੨॥੩॥
नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥
नानक का कथन है कि उसने उसकी शरण ली है, जिसकी समूचा जगत वन्दना करता है। हे प्रभु ! भक्तों की रक्षा करना ही तुम्हारा विरद् है, अतः मेरी भी रक्षा करो।॥२॥३॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਛੰਤ ਘਰੁ ੧
जैतसरी महला ५ छंत घरु १
जैतसरी महला ५ छंत घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਦਰਸਨ ਪਿਆਸੀ ਦਿਨਸੁ ਰਾਤਿ ਚਿਤਵਉ ਅਨਦਿਨੁ ਨੀਤ ॥
दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥
मैं तो दिन-रात प्रभु के दर्शनों की प्यासी हूँ, और नित्य उसको ही स्मरण करती रहती हूँ।

ਖੋਲ੍ਹਿ ਕਪਟ ਗੁਰਿ ਮੇਲੀਆ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਮੀਤ ॥੧॥
खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥१॥
हे नानक ! गुरु ने मेरे मन के कपाट खोलकर मुझे मित्र प्रभु के संग मिला दिया है॥ १॥

ਛੰਤ ॥
छंत ॥
छंद॥

ਸੁਣਿ ਯਾਰ ਹਮਾਰੇ ਸਜਣ ਇਕ ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀਆ ॥
सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥
हे मेरे सज्जन, हे मित्र ! सुनो; मैं एक विनती करती हूँ,

ਤਿਸੁ ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਪਿਆਰੇ ਹਉ ਫਿਰਉ ਖੋਜੰਤੀਆ ॥
तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥
मैं उस मोहन प्रियतम को खोजती रहती हूँ।

ਤਿਸੁ ਦਸਿ ਪਿਆਰੇ ਸਿਰੁ ਧਰੀ ਉਤਾਰੇ ਇਕ ਭੋਰੀ ਦਰਸਨੁ ਦੀਜੈ ॥
तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥
मुझे उस प्रियतम के बारे में बताओ, यदि वह एक क्षण भर के लिए मुझे दर्शन प्रदान कर दे तो मैं अपना सिर काट कर उसके समक्ष अर्पण कर दूँगी।

ਨੈਨ ਹਮਾਰੇ ਪ੍ਰਿਅ ਰੰਗ ਰੰਗਾਰੇ ਇਕੁ ਤਿਲੁ ਭੀ ਨਾ ਧੀਰੀਜੈ ॥
नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥
मेरे नेत्र मेरे प्रिय के रंग में मग्न हैं और उसके बिना एक क्षण भर के लिए भी धैर्य नहीं करते।

ਪ੍ਰਭ ਸਿਉ ਮਨੁ ਲੀਨਾ ਜਿਉ ਜਲ ਮੀਨਾ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਜਿਵੈ ਤਿਸੰਤੀਆ ॥
प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ ॥
मेरा मन प्रभु के साथ ऐसे मग्न है, जैसे जल के साथ मछली एवं स्वाति बूंद के साथ पपीहा मग्न होता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਪਾਇਆ ਸਗਲੀ ਤਿਖਾ ਬੁਝੰਤੀਆ ॥੧॥
जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥१॥
हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु पा लिया है और प्रियतम के दर्शन करने की मेरी सारी प्यास बुझ गई है॥ १॥

ਯਾਰ ਵੇ ਪ੍ਰਿਅ ਹਭੇ ਸਖੀਆ ਮੂ ਕਹੀ ਨ ਜੇਹੀਆ ॥
यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥
हे सज्जन ! प्रिय प्रभु की जितनी भी सखियों है, उनमें से मैं तो किसी के भी तुल्य नहीं।

ਯਾਰ ਵੇ ਹਿਕ ਡੂੰ ਹਿਕਿ ਚਾੜੈ ਹਉ ਕਿਸੁ ਚਿਤੇਹੀਆ ॥
यार वे हिक डूं हिकि चाड़ै हउ किसु चितेहीआ ॥
यह सखियाँ एक से बढ़कर एक सुन्दर हैं। इसलिए मुझे किसने याद करना है ?

ਹਿਕ ਦੂੰ ਹਿਕਿ ਚਾੜੇ ਅਨਿਕ ਪਿਆਰੇ ਨਿਤ ਕਰਦੇ ਭੋਗ ਬਿਲਾਸਾ ॥
हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥
मेरे प्रियतम प्रभु की एक से बढ़कर एक सुन्दर सखियाँ उसके साथ नित्य ही रमण करती हैं।

ਤਿਨਾ ਦੇਖਿ ਮਨਿ ਚਾਉ ਉਠੰਦਾ ਹਉ ਕਦਿ ਪਾਈ ਗੁਣਤਾਸਾ ॥

तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥

उन्हें देखकर मेरे हृदय में भी चाव उत्पन्न होता है। मैं उस गुणों के भण्डार प्रभु को कब प्राप्त करूँगी।

ਜਿਨੀ ਮੈਡਾ ਲਾਲੁ ਰੀਝਾਇਆ ਹਉ ਤਿਸੁ ਆਗੈ ਮਨੁ ਡੇਂਹੀਆ ॥

जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥

जिन्होंने मेरे प्रिय प्रभु को प्रसन्न किया है, मैं अपना मन उनके समक्ष अर्पण करती हूँ।

ਨਾਨਕੁ ਕਹੈ ਸੁਣਿ ਬਿਨਉ ਸੁਹਾਗਣਿ ਮੂ ਦਸਿ ਡਿਖਾ ਪਿਰੁ ਕੇਹੀਆ ॥੨॥

नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥२॥

नानक का कथन है कि हे सुहागिन ! मेरी एक विनती ध्यानपूर्वक सुनो, मुझे बताओ मेरा प्रिय प्रभु कैसा दिखता है॥ २॥

ਯਾਰ ਵੇ ਪਿਰੁ ਆਪਣ ਭਾਣਾ ਕਿਛੁ ਨੀਸੀ ਛੰਦਾ ॥

यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥

हे सज्जन ! मेरा प्रिय-प्रभु वही करता है, जो उसे अच्छा लगता है। वह किसी के अधीन नहीं।

ਯਾਰ ਵੇ ਤੈ ਰਾਵਿਆ ਲਾਲਨੁ ਮੂ ਦਸਿ ਦਸੰਦਾ ॥
यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥
हे सज्जन ! तूने मेरे प्रियवर के साथ रमण किया है अतः मुझे उसके बारे में बताओ।

ਲਾਲਨੁ ਤੈ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਜੈ ਧਨ ਭਾਗ ਮਥਾਣੇ ॥
लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥
जिनके माथे पर शुभ भाग्य विद्यमान है, वे अपना अहंत्व मिटाकर प्रिय-प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।

ਬਾਂਹ ਪਕੜਿ ਠਾਕੁਰਿ ਹਉ ਘਿਧੀ ਗੁਣ ਅਵਗਣ ਨ ਪਛਾਣੇ ॥
बांह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥
ठाकुर जी ने मुझे बाँह से पकड़ कर अपना बना लिया है और मेरे गुण एवं अवगुणों की ओर ध्यान नहीं दिया।

ਗੁਣ ਹਾਰੁ ਤੈ ਪਾਇਆ ਰੰਗੁ ਲਾਲੁ ਬਣਾਇਆ ਤਿਸੁ ਹਭੋ ਕਿਛੁ ਸੁਹੰਦਾ ॥
गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥
हे प्रभु ! जिसे तू गुणों की माला से अलंकृत कर देता है और अपने लाल रंग से रंग देता है, उसे सब कुछ सुन्दर लगता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਧੰਨਿ ਸੁਹਾਗਣਿ ਸਾਈ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਭਤਾਰੁ ਵਸੰਦਾ ॥੩॥
जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥३॥
हे नानक ! वह सुहागिन नारी धन्य है, जिसके साथ उसका पति-परमेश्वर रहता है॥ ३॥

ਯਾਰ ਵੇ ਨਿਤ ਸੁਖ ਸੁਖੇਦੀ ਸਾ ਮੈ ਪਾਈ ॥
यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥
हे सज्जन ! जिसकी कामना हेतु मैं मन्नत माँगती थी, उसे मैंने पा लिया है।

ਵਰੁ ਲੋੜੀਦਾ ਆਇਆ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥
वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥
मेरा मनचाहा दूल्हा आया है और मुझे शुभ-कामनाएँ मिल रही हैं।

ਮਹਾ ਮੰਗਲੁ ਰਹਸੁ ਥੀਆ ਪਿਰੁ ਦਇਆਲੁ ਸਦ ਨਵ ਰੰਗੀਆ ॥
महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥
बड़ा आनंद एवं हर्षोल्लास उत्पन्न हो गया है, जब मेरा सदैव नवरंग सुन्दर प्रियवर प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है।

ਵਡ ਭਾਗਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਿ ਮਿਲਾਇਆ ਸਾਧ ਕੈ ਸਤਸੰਗੀਆ ॥
वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥
अहोभाग्य से मैंने अपने प्रियतम प्रभु को पा लिया है। संतों की सुसंगति में रहने से गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है।

ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਸਗਲ ਪੂਰੀ ਪ੍ਰਿਅ ਅੰਕਿ ਅੰਕੁ ਮਿਲਾਈ ॥
आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥
मेरी आशा एवं सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं और मेरे प्रियवर प्रभु ने मुझे अपने गले से लगा लिया है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸੁਖ ਸੁਖੇਦੀ ਸਾ ਮੈ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਪਾਈ ॥੪॥੧॥
बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥४॥१॥
नानक प्रार्थना करते हैं, जिस प्रभु को पाने के लिए मैं मन्नत मानती थी, उसे मैंने गुरु से मिलकर पा लिया है ॥४॥१॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਛੰਤ
जैतसरी महला ५ घरु २ छंत
जैतसरी महला ५ घरु २ छंत

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਊਚਾ ਅਗਮ ਅਪਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਇ ਅਕਥੁ ॥
ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥
मेरा प्रभु सर्वोच्च, अगम्य एवं अपरंपार है, वह अकथनीय है तथा उसका कथन करना असंभव है।

ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਸਰਣਾਗਤੀ ਰਾਖਨ ਕਉ ਸਮਰਥੁ ॥੧॥
नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥१॥
नानक तो उस प्रभु की शरण में आया है, जो रक्षा करने में समर्थ है॥ १॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छन्द॥

ਜਿਉ ਜਾਨਹੁ ਤਿਉ ਰਾਖੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰਿਆ ॥
जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥
हे हरि-प्रभु ! मैं तो तेरा ही दास हूँः अतः जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी रक्षा करो।

ਕੇਤੇ ਗਨਉ ਅਸੰਖ ਅਵਗਣ ਮੇਰਿਆ ॥
केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥
मुझ में तो असंख्य अवगुण हैं, फिर मैं अपने कितने अवगुण गिन सकता हूँ।

ਅਸੰਖ ਅਵਗਣ ਖਤੇ ਫੇਰੇ ਨਿਤਪ੍ਰਤਿ ਸਦ ਭੂਲੀਐ ॥
असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥
मुझ में असंख्य अवगुण होने के कारण अपराधों में ही फंसा रहता हूँ तथा नित्य-प्रतिदिन सर्वदा ही भूल करता हूँ।

ਮੋਹ ਮਗਨ ਬਿਕਰਾਲ ਮਾਇਆ ਤਉ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਘੂਲੀਐ ॥
मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥
मैं विकराल माया के मोह में मग्न हूँ और तेरी दया से ही मैं इससे मुक्ति प्राप्त कर सकता हूँ।

ਲੂਕ ਕਰਤ ਬਿਕਾਰ ਬਿਖੜੇ ਪ੍ਰਭ ਨੇਰ ਹੂ ਤੇ ਨੇਰਿਆ ॥
लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥
हम छिपकर बड़े कष्टप्रद पाप करते हैं। लेकिन वह प्रभु तो बहुत निकट है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਇਆ ਧਾਰਹੁ ਕਾਢਿ ਭਵਜਲ ਫੇਰਿਆ ॥੧॥
बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥१॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! मुझ पर दया करो और इस भवसागर के भंवर से बाहर निकाल दो ॥१॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਨਿਰਤਿ ਨ ਪਵੈ ਅਸੰਖ ਗੁਣ ਊਚਾ ਪ੍ਰਭ ਕਾ ਨਾਉ ॥
निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥
उस प्रभु का नाम महान् है और उसके असंख्य गुणों का निर्णय नहीं किया जा सकता।

ਨਾਨਕ ਕੀ ਬੇਨੰਤੀਆ ਮਿਲੈ ਨਿਥਾਵੇ ਥਾਉ ॥੨॥
नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥२॥
नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु! हम बेसहारा जीवों को तेरे चरणों में सहारा मिल जाए॥ २ ॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਦੂਸਰ ਨਾਹੀ ਠਾਉ ਕਾ ਪਹਿ ਜਾਈਐ ॥
दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥
भगवान के अलावा हम जीवों हेतु अन्य कोई ठिकाना नहीं। फिर हम तुच्छ जीव उसके सिवाय किसके पास जाएँ।

ਆਠ ਪਹਰ ਕਰ ਜੋੜਿ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਧਿਆਈਐ ॥
आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥
आठ प्रहर हमें दोनों हाथ जोड़कर प्रभु का ध्यान-मनन करना चाहिए।

ਧਿਆਇ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸਦਾ ਅਪੁਨਾ ਮਨਹਿ ਚਿੰਦਿਆ ਪਾਈਐ ॥
धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥
अपने उस प्रभु का ध्यान-मनन करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

ਤਜਿ ਮਾਨ ਮੋਹੁ ਵਿਕਾਰੁ ਦੂਜਾ ਏਕ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਈਐ ॥
तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥
अतः हम जीवों को अपना अभिमान, मोह तथा विकार त्याग कर एक परमेश्वर के साथ सुरति लगानी चाहिए।

ਅਰਪਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਪ੍ਰਭੂ ਆਗੈ ਆਪੁ ਸਗਲ ਮਿਟਾਈਐ ॥
अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥
हमें अपना मन एवं तन प्रभु के समक्ष अर्पण करके अपना समूचा अहंत्व मिटा देना चाहिए।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਧਾਰਿ ਕਿਰਪਾ ਸਾਚਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਈਐ ॥੨॥
बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥२॥
नानक प्रार्थना करते है कि हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ताकि मैं तेरे सत्य नाम में विलीन हो जाऊँ॥ २॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਰੇ ਮਨ ਤਾ ਕਉ ਧਿਆਈਐ ਸਭ ਬਿਧਿ ਜਾ ਕੈ ਹਾਥਿ ॥
रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥
हे मन ! उस प्रभु का ध्यान करना चाहिए, जिसके वश में समस्त युक्तियाँ हैं।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਸੰਚੀਐ ਨਾਨਕ ਨਿਬਹੈ ਸਾਥਿ ॥੩॥
राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥३॥
हे नानक ! राम-नाम का ही धन संचित करना चाहिए, जो परलोक में हमारा सहायक बनता है॥ ३॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद॥

ਸਾਥੀਅੜਾ ਪ੍ਰਭੁ ਏਕੁ ਦੂਸਰ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ॥
साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥
जीवन में एक प्रभु ही हमारा सच्चा साथी है और उसके अलावा दूसरा कोई हितैषी नहीं।

ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਆਪਿ ਜਲਿ ਥਲਿ ਪੂਰ ਸੋਇ ॥
थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥
वह स्वयं ही देश-देशांतरों, समुद्र एवं धरती में सर्वव्यापी है।

ਜਲਿ ਥਲਿ ਮਹੀਅਲਿ ਪੂਰਿ ਰਹਿਆ ਸਰਬ ਦਾਤਾ ਪ੍ਰਭੁ ਧਨੀ ॥
जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥
सबका दाता, मालिक-प्रभु समुद्र, पृथ्वी एवं अंतरिक्ष में विद्यमान हो रहा है।

ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਅੰਤੁ ਨਾਹੀ ਬੇਅੰਤ ਗੁਣ ਤਾ ਕੇ ਕਿਆ ਗਨੀ ॥
गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥
उस गोपाल गोविन्द का कोई अन्त नहीं चूंकि उसके गुण बेअंत हैं और हम उसके गुणों की गिनती कैसे कर सकते हैं।

ਭਜੁ ਸਰਣਿ ਸੁਆਮੀ ਸੁਖਹ ਗਾਮੀ ਤਿਸੁ ਬਿਨਾ ਅਨ ਨਾਹਿ ਕੋਇ ॥
भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥
हमें सुख प्रदान करने वाले स्वामी प्रभु की शरण का ही भजन करना चाहिए चूंकि उसके बिना अन्य कोई सहायक नहीं।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਇਆ ਧਾਰਹੁ ਤਿਸੁ ਪਰਾਪਤਿ ਨਾਮੁ ਹੋਇ ॥੩॥

बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥३॥

नानक प्रार्थना करते है कि हे प्रभु ! जिस पर तू दया के घर में आता है, उसे तुम्हारे नाम की लब्धि हो जाती है॥ ३॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक॥

ਚਿਤਿ ਜਿ ਚਿਤਵਿਆ ਸੋ ਮੈ ਪਾਇਆ ॥
चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥
जो कुछ मैंने अपने चित में चाहा था, वह मुझे मिल गया है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਸੁਖ ਸਬਾਇਆ ॥੪॥
नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥४॥
हे नानक ! भगवान का ध्यान करने से मुझे सर्व सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥

ਛੰਤੁ ॥
छंतु ॥
छंद ॥

ਅਬ ਮਨੁ ਛੂਟਿ ਗਇਆ ਸਾਧੂ ਸੰਗਿ ਮਿਲੇ ॥
अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥
संतों-महापुरुषों की पावन संगति में रहने से अब मेरा मन संसार के बन्धनों से छूट गया है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਲਇਆ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਰਲੇ ॥
गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥
गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम-सिमरन करने से मेरी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਿਮਰਤ ਮਿਟੇ ਕਿਲਬਿਖ ਬੁਝੀ ਤਪਤਿ ਅਘਾਨਿਆ ॥
हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥
हरि-नाम का सिमरन करने से सभी किल्विष-पाप मिट गए हैं, तृष्णाग्नि बुझ चुकी है और मैं तृप्त हो गया हूँ।

ਗਹਿ ਭੁਜਾ ਲੀਨੇ ਦਇਆ ਕੀਨੇ ਆਪਨੇ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥
भगवान ने दया करके मुझे बाँह से पकड़कर अपना बना लिया है।

ਲੈ ਅੰਕਿ ਲਾਏ ਹਰਿ ਮਿਲਾਏ ਜਨਮ ਮਰਣਾ ਦੁਖ ਜਲੇ ॥
लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥
गुरु ने मुझे अपने गले से लगाकर भगवान के संग मिला दिया है, जिससे मेरा जन्म-मरण का दुःख नष्ट हो गया है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਇਆ ਧਾਰੀ ਮੇਲਿ ਲੀਨੇ ਇਕ ਪਲੇ ॥੪॥੨॥
बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥४॥२॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि भगवान ने मुझ पर बड़ी दया की है और एक क्षण में ही मुझे अपने साथ मिला लिया है॥ ४॥ २॥

ਜੈਤਸਰੀ ਛੰਤ ਮਃ ੫ ॥
जैतसरी छंत मः ५ ॥
जैतसरी छंत मः ५ ॥

ਪਾਧਾਣੂ ਸੰਸਾਰੁ ਗਾਰਬਿ ਅਟਿਆ ॥
पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥
यह संसार तो एक मुसाफिर है परन्तु फिर भी संसार के लोग अहंकार से भरे हुए हैं।

ਕਰਤੇ ਪਾਪ ਅਨੇਕ ਮਾਇਆ ਰੰਗ ਰਟਿਆ ॥
करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥
वे माया के रंग में मग्न होकर जीवन में अनेक पाप कर्म करते हैं और

ਲੋਭਿ ਮੋਹਿ ਅਭਿਮਾਨਿ ਬੂਡੇ ਮਰਣੁ ਚੀਤਿ ਨ ਆਵਏ ॥
लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥
लालच, मोह एवं में ही डूबे लोगों को मृत्यु याद नहीं आती।

ਪੁਤ੍ਰ ਮਿਤ੍ਰ ਬਿਉਹਾਰ ਬਨਿਤਾ ਏਹ ਕਰਤ ਬਿਹਾਵਏ ॥
पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥
अपने पुत्र, मित्र एवं धर्मपत्नी के मोह में कार्य करते हुए उनकी तमाम आयु बीत जाती है।

ਪੁਜਿ ਦਿਵਸ ਆਏ ਲਿਖੇ ਮਾਏ ਦੁਖੁ ਧਰਮ ਦੂਤਹ ਡਿਠਿਆ ॥
पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥
हे माता ! अब जब जीवन के लिखे हुए दिवस पूरे हो गए हैं तो वे यमराज के दूतों को देखकर दुःखी होते हैं।

ਕਿਰਤ ਕਰਮ ਨ ਮਿਟੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਨੁ ਨਹੀ ਖਟਿਆ ॥੧॥
किरत करम न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥१॥
हे नानक ! अपने जीवन में उन्होंने हरि-नाम रूपी धन संचित नहीं किया, जिसके परिणामस्वरूप उनके कृत्य कर्मों के फल मिट नहीं सकते ॥१॥

ਉਦਮ ਕਰਹਿ ਅਨੇਕ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਗਾਵਹੀ ॥
उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥
मनुष्य अपने जीवन में अनेक उद्यम करता रहता है किन्तु भगवान के नाम को वह स्मरण नहीं करता।

ਭਰਮਹਿ ਜੋਨਿ ਅਸੰਖ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਆਵਹੀ ॥
भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥
इसलिए वह अनगिनत योनियों में भटकता रहता है, आवागमन में फँसकर पुनः पुनः संसार में जन्मता-मरता रहता है।

ਪਸੂ ਪੰਖੀ ਸੈਲ ਤਰਵਰ ਗਣਤ ਕਛੂ ਨ ਆਵਏ ॥
पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥
वह पशु, पक्षी, पत्थर एवं पेड़ों की योनियों में पड़ता है, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती।

ਬੀਜੁ ਬੋਵਸਿ ਭੋਗ ਭੋਗਹਿ ਕੀਆ ਅਪਣਾ ਪਾਵਏ ॥
बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥
मनुष्य अपने कर्मों का जैसा बीज बोता है, वैसा ही उसे फल प्राप्त होता है। वह अपने किए हुए कर्मों का ही फल भोगता है।

ਰਤਨ ਜਨਮੁ ਹਾਰੰਤ ਜੂਐ ਪ੍ਰਭੂ ਆਪਿ ਨ ਭਾਵਹੀ ॥
रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥
अपना हीरे जैसा अनमोल मानव जन्म वह जुए में हार देता है और फिर वह अपने प्रभु को भी भला नहीं लगता।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਭਰਮਹਿ ਭ੍ਰਮਾਏ ਖਿਨੁ ਏਕੁ ਟਿਕਣੁ ਨ ਪਾਵਹੀ ॥੨॥
बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥२॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! ये जीव दुविधा में पड़कर भटकते ही रहते हैं और एक क्षण भर के लिए भी उन्हें सुख का ठिकाना नहीं मिलता॥ २॥

ਜੋਬਨੁ ਗਇਆ ਬਿਤੀਤਿ ਜਰੁ ਮਲਿ ਬੈਠੀਆ ॥
जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥
मनुष्य का सुन्दर यौवन व्यतीत हो गया है और उसके शरीर पर बुढ़ापा कब्जा करके बैठ गया है।

ਕਰ ਕੰਪਹਿ ਸਿਰੁ ਡੋਲ ਨੈਣ ਨ ਡੀਠਿਆ ॥
कर क्मपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥
बुढ़ापे के कारण उसके हाथ थर-थर कांपते हैं, सिर डोलता है और आंखों से कुछ भी साफ नजर नहीं आता।

ਨਹ ਨੈਣ ਦੀਸੈ ਬਿਨੁ ਭਜਨ ਈਸੈ ਛੋਡਿ ਮਾਇਆ ਚਾਲਿਆ ॥
नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥
ईश्वर के भजन बिना वह अपना धन छोड़कर चल पड़ा है।

ਕਹਿਆ ਨ ਮਾਨਹਿ ਸਿਰਿ ਖਾਕੁ ਛਾਨਹਿ ਜਿਨ ਸੰਗਿ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜਾਲਿਆ ॥
कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥
जिन परिजनों हेतु उसने अपना तन-मन जला दिया था, वे उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते अपितु उसके सिर पर धूल ही डालते है अर्थात् उसे अपमानित करते हैं।

ਸ੍ਰੀਰਾਮ ਰੰਗ ਅਪਾਰ ਪੂਰਨ ਨਹ ਨਿਮਖ ਮਨ ਮਹਿ ਵੂਠਿਆ ॥
स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥
भगवान का पूर्ण एवं अपार प्रेम-रंग एक क्षण भर के लिए उसके मन में निवास नहीं कर सका।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕ ਕੋਟਿ ਕਾਗਰ ਬਿਨਸ ਬਾਰ ਨ ਝੂਠਿਆ ॥੩॥
बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥३॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि जैसे करोड़ों कागज पल भर में जलकर राख हो जाते हैं, वैसा ही इस देह का नाश होने में कोई देरी नहीं होती ॥ ३॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਰਣਾਇ ਨਾਨਕੁ ਆਇਆ ॥
चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥
नानक तो परमेश्वर के चरण-कमलों की शरण में आया है।

ਦੁਤਰੁ ਭੈ ਸੰਸਾਰੁ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਤਰਾਇਆ ॥
दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥
इस दुष्कर एवं भयानक संसार-सागर से मुझे प्रभु ने स्वयं ही पार कर दिया है।

ਮਿਲਿ ਸਾਧਸੰਗੇ ਭਜੇ ਸ੍ਰੀਧਰ ਕਰਿ ਅੰਗੁ ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਤਾਰਿਆ ॥
मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥
संतों की पावन संगति में भजन करने से प्रभु ने मेरा पक्ष लेकर मुझे भवसागर से पार कर दिया है।

ਹਰਿ ਮਾਨਿ ਲੀਏ ਨਾਮ ਦੀਏ ਅਵਰੁ ਕਛੁ ਨ ਬੀਚਾਰਿਆ ॥
हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥
भगवान ने मुझे स्वीकार करके अपना नाम प्रदान किया है और किसी गुण-अवगुण की ओर ध्यान नहीं दिया।

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਅਪਾਰ ਠਾਕੁਰ ਮਨਿ ਲੋੜੀਦਾ ਪਾਇਆ ॥
गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥
मैंने गुणों के भण्डार, अपरंपार एवं मनोवांछित ठाकुर जी को पा लिया है।

ਬਿਨਵੰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਸਦਾ ਤ੍ਰਿਪਤੇ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਭੋਜਨੁ ਖਾਇਆ ॥੪॥੨॥੩॥
बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥४॥२॥३॥
नानक प्रार्थना करते हैं कि हरि-नाम रूपी भोजन खाने से मैं हमेशा के लिए तृप्त हो चुका हूँ॥ ४॥ २॥ ३॥

ਜੈਤਸਰੀ ਮਹਲਾ ੫ ਵਾਰ ਸਲੋਕਾ ਨਾਲਿ
जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि
जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਆਦਿ ਪੂਰਨ ਮਧਿ ਪੂਰਨ ਅੰਤਿ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥
आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥
जो सृष्टि रचना से पूर्व भी सर्वव्यापक था, सृष्टि काल में अब भी विद्यमान है और सृष्टि के अन्त तक भी सर्वव्यापी रहेगा,

ਸਿਮਰੰਤਿ ਸੰਤ ਸਰਬਤ੍ਰ ਰਮਣੰ ਨਾਨਕ ਅਘਨਾਸਨ ਜਗਦੀਸੁਰਹ ॥੧॥
सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघनासन जगदीसुरह ॥१॥
सभी सन्त-महात्मा उस सर्वत्र रमण करने वाले परमेश्वर का ही सिमरन करते रहते हैं। हे नानक ! वह जगदीश्वर सर्व पापों का हरण करने वाला है॥ १॥

ਪੇਖਨ ਸੁਨਨ ਸੁਨਾਵਨੋ ਮਨ ਮਹਿ ਦ੍ਰਿੜੀਐ ਸਾਚੁ ॥
पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रिड़ीऐ साचु ॥
उस परम-सत्य ईश्वर को मन में भली भांति याद करते रहना चाहिए, जो स्वयं ही सुनने, देखने एवं सुनाने वाला है।

ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਸਰਬਤ੍ਰ ਮੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਾਚੁ ॥੨॥
पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥२॥
हे नानक ! उस सर्वव्यापी परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहना चाहिए॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਏਕੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਗਾਈਐ ਸਭ ਅੰਤਰਿ ਸੋਈ ॥
हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥
जो सबके अन्तर में मौजूद है, उस एक निरंजन परमेश्वर का ही यशोगान करना चाहिए।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਪ੍ਰਭੁ ਜੋ ਕਰੇ ਸੁ ਹੋਈ ॥
करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥
प्रभु प्रत्येक कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है, वह जो कुछ भी करता है, वही होता है।

ਖਿਨ ਮਹਿ ਥਾਪਿ ਉਥਾਪਦਾ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਨਹੀ ਕੋਈ ॥
खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥
वह एक क्षण में ही दुनिया को बनाकर उसका विनाश भी कर देता है, उसके सिवाय दूसरा कोई रचयिता नहीं।

ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਪਾਤਾਲ ਦੀਪ ਰਵਿਆ ਸਭ ਲੋਈ ॥
खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥
वह देशों, ब्रह्माण्डों, पातालों, दीपों एवं सब लोकों में विद्यमान है।

ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋ ਬੁਝਸੀ ਨਿਰਮਲ ਜਨੁ ਸੋਈ ॥੧॥
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥१॥
परमात्मा जिसे स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, वही उसे समझता है और वही व्यक्ति पावन हो जाता है॥१॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਰਚੰਤਿ ਜੀਅ ਰਚਨਾ ਮਾਤ ਗਰਭ ਅਸਥਾਪਨੰ ॥
रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥
रचयिता परमात्मा जीव की रचना करके उसे माता के गर्भ में स्थापित कर देता है।

ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਸਿਮਰੰਤਿ ਨਾਨਕ ਮਹਾ ਅਗਨਿ ਨ ਬਿਨਾਸਨੰ ॥੧॥
सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥१॥
तदुपरांत वह माता के गर्भ में आकर श्वास-श्वास से उसका सिमरन करता है। हे नानक ! इस तरह भगवान का सिमरन करने से गर्भ की भयानक अग्नि जीव का विनाश नहीं कर पाती ॥ १॥

ਮੁਖੁ ਤਲੈ ਪੈਰ ਉਪਰੇ ਵਸੰਦੋ ਕੁਹਥੜੈ ਥਾਇ ॥
मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥
हे जीव ! माता के गर्भ में तेरा मुँह नीचे एवं पैर ऊपर की ओर थे। इस तरह तू अपवित्र स्थान पर निवास कर रहा था।

ਨਾਨਕ ਸੋ ਧਣੀ ਕਿਉ ਵਿਸਾਰਿਓ ਉਧਰਹਿ ਜਿਸ ਦੈ ਨਾਇ ॥੨॥
नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥२॥
नानक का कथन है कि हे जीव ! तूने अपने उस मालिक को क्यों विस्मृत कर दिया, जिसके नाम का सिमरन करने से तू गर्भ में से बाहर निकला है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਰਕਤੁ ਬਿੰਦੁ ਕਰਿ ਨਿੰਮਿਆ ਅਗਨਿ ਉਦਰ ਮਝਾਰਿ ॥
रकतु बिंदु करि निमिआ अगनि उदर मझारि ॥
जीव माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य द्वारा पेट की अग्नि में पैदा हुआ था।

ਉਰਧ ਮੁਖੁ ਕੁਚੀਲ ਬਿਕਲੁ ਨਰਕਿ ਘੋਰਿ ਗੁਬਾਰਿ ॥
उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥
हे जीव ! तेर मुँह नीचे था और तू मलिन एवं भयानक नरक समान घोर अन्धेरे में रहता था।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤੂ ਨਾ ਜਲਹਿ ਮਨਿ ਤਨਿ ਉਰ ਧਾਰਿ ॥
हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उर धारि ॥
भगवान का सिमरन करने से तू जल नहीं सका था। अतः अब तू अपने मन, तन एवं हृदय में स्मरण करता रह।

ਬਿਖਮ ਥਾਨਹੁ ਜਿਨਿ ਰਖਿਆ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਵਿਸਾਰਿ ॥
बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥
जिसने तेरी विषम स्थान से रक्षा की है, तू उसे एक क्षण भर के लिए भी मत भुला।

ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰਤ ਸੁਖੁ ਕਦੇ ਨਾਹਿ ਜਾਸਹਿ ਜਨਮੁ ਹਾਰਿ ॥੨॥
प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥२॥
चूंकि प्रभु को भुला कर तुझे कभी सुख प्राप्त नहीं होगा और तू अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा कर चला जाएगा ॥२॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਮਨ ਇਛਾ ਦਾਨ ਕਰਣੰ ਸਰਬਤ੍ਰ ਆਸਾ ਪੂਰਨਹ ॥
मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥
जो हमें मनोवांछित दान प्रदान करता है, हमारी समस्त अभिलाषाएँ पूरी करता है,

ਖੰਡਣੰ ਕਲਿ ਕਲੇਸਹ ਪ੍ਰਭ ਸਿਮਰਿ ਨਾਨਕ ਨਹ ਦੂਰਣਹ ॥੧॥
खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥१॥
हमारे दुःखों-क्लेशों का नाश करता है, अतः हे नानक ! हमें उस प्रभु का ही सिमरन करते रहना चाहिए, जो हमसे कहीं दूर नहीं अर्थात् हमारे पास ही है ॥१॥

ਹਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣਹਿ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਤੈ ਸਿਉ ਲਾਈਐ ਨੇਹੁ ॥
हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥
जिसकी करुणा-दृष्टि से हम सभी सुख भोगते हैं, हमें तो उसके साथ ही अपना प्रेम लगाना चाहिए।

ਸੋ ਸਹੁ ਬਿੰਦ ਨ ਵਿਸਰਉ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਸੁੰਦਰੁ ਰਚਿਆ ਦੇਹੁ ॥੨॥
सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥२॥
हे नानक ! जिसने इस सुन्दर शरीर का निर्माण किया है, उस मालिक को हमें एक क्षण भर के लिए भी विस्मृत नहीं करना चाहिए ॥२॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਨ ਤਨੁ ਧਨੁ ਦੀਆ ਦੀਨੇ ਰਸ ਭੋਗ ॥
जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥
हे जीव ! भगवान ने तुझे जीवन, प्राण, शरीर एवं धन प्रदान किया है और सर्व प्रकार के रस भोग दिए हैं।

ਗ੍ਰਿਹ ਮੰਦਰ ਰਥ ਅਸੁ ਦੀਏ ਰਚਿ ਭਲੇ ਸੰਜੋਗ ॥
ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग ॥
भले संयोग बनाकर ही उसने तुझे घर, महल, रथ एवं घोड़े दिए हैं।

ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਸਾਜਨ ਸੇਵਕ ਦੀਏ ਪ੍ਰਭ ਦੇਵਨ ਜੋਗ ॥
सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥
सभी को देने में समर्थ उस प्रभु ने तुझे पुत्र, पत्नी, मित्र एवं सेवक दिए हैं।

ਹਰਿ ਸਿਮਰਤ ਤਨੁ ਮਨੁ ਹਰਿਆ ਲਹਿ ਜਾਹਿ ਵਿਜੋਗ ॥
हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥
उस भगवान का भजन करने से तन एवं मन हर्षित हो जाते हैं तथा वियोग भी समाप्त हो जाते हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਗੁਣ ਰਮਹੁ ਬਿਨਸੇ ਸਭਿ ਰੋਗ ॥੩॥
साधसंगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥३॥
अतः संतों-महापुरुषों की पवित्र सभा में सम्मिलित होकर भगवान का गुणगान करो, जिससे सभी रोग नाश हो जाएँगे।॥ ३॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਕੁਟੰਬ ਜਤਨ ਕਰਣੰ ਮਾਇਆ ਅਨੇਕ ਉਦਮਹ ॥
कुट्मब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥
अपने परिवार की भलाई के लिए मानव जीव अथक यत्न करता है और धन कमाने हेतु भरसक प्रयास करता रहता है।

ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭਾਵ ਹੀਣੰ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭ ਬਿਸਰਤ ਤੇ ਪ੍ਰੇਤਹ ॥੧॥
हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेतह ॥१॥
परन्तु यदि यह भगवान की भक्ति भावना से विहीन है तो हे नानक ! प्रभु को विस्मृत करने वाला जीव प्रेत ही माना जाता है।॥ १॥

ਤੁਟੜੀਆ ਸਾ ਪ੍ਰੀਤਿ ਜੋ ਲਾਈ ਬਿਅੰਨ ਸਿਉ ॥
तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ ॥
वह प्रेम जो भगवान के अलावा किसी दूसरे से लगाया जाता है, वह अंततः टूट ही जाता है।

ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਰੀਤਿ ਸਾਂਈ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ॥੨॥
नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥२॥
हे नानक ! भगवान के साथ मग्न रहने की मर्यादा ही सत्य एवं शाश्वत है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਸੁ ਬਿਸਰਤ ਤਨੁ ਭਸਮ ਹੋਇ ਕਹਤੇ ਸਭਿ ਪ੍ਰੇਤੁ ॥
जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥
जिस आत्मा के जुदा होने से मानव का शरीर भस्म हो जाता है, उस मृत शरीर को फिर लोग प्रेत कहने लगते हैं।

ਖਿਨੁ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਬਸਨ ਨ ਦੇਵਹੀ ਜਿਨ ਸਿਉ ਸੋਈ ਹੇਤੁ ॥
खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥
जिन परिजनों के साथ मानव का इतना गहरा प्रेम था, वे अब घर में एक क्षण भर के लिए भी रहने नहीं देते।

ਕਰਿ ਅਨਰਥ ਦਰਬੁ ਸੰਚਿਆ ਸੋ ਕਾਰਜਿ ਕੇਤੁ ॥
करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥
वह अनेक अनर्थ करके धन संचित करने में लगा रहा परन्तु अब वह उसके किसी काम का नहीं रहा।

ਜੈਸਾ ਬੀਜੈ ਸੋ ਲੁਣੈ ਕਰਮ ਇਹੁ ਖੇਤੁ ॥
जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥
मानव जीव जैसा बीज बोता है, वैसा ही उसे काटता है। यह तन कर्मभूमि है।

ਅਕਿਰਤਘਣਾ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਜੋਨੀ ਭਰਮੇਤੁ ॥੪॥

अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥४॥

एहसान-फरामोश जीवों को परमात्मा भूल गया है, इसलिए वे योनि-चक्र में ही भटकते रहते हैं॥ ४ ॥

ਸਲੋਕ ॥

सलोक ॥

श्लोक ॥

ਕੋਟਿ ਦਾਨ ਇਸਨਾਨੰ ਅਨਿਕ ਸੋਧਨ ਪਵਿਤ੍ਰਹ ॥

कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥

हे नानक ! करोड़ों दान, स्नान, अनेक शुद्धिकरण एवं पवित्रता का फल प्राप्त हो जाता है

ਉਚਰੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਸਨਾ ਸਰਬ ਪਾਪ ਬਿਮੁਚਤੇ ॥੧॥

उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥१॥

अपनी जुबान से भगवान का नाम उच्चारण करने से तमाम पाप नाश हो जाते हैं ॥ १॥

ਈਧਣੁ ਕੀਤੋਮੂ ਘਣਾ ਭੋਰੀ ਦਿਤੀਮੁ ਭਾਹਿ ॥

ईधणु कीतोमू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥

मैंने अत्याधिक ईंधन संग्रह किया और जब उसमें थोड़ी-सी चिंगारी लगाई तो वह जल कर भस्म हो गया।

ਮਨਿ ਵਸੰਦੜੋ ਸਚੁ ਸਹੁ ਨਾਨਕ ਹਭੇ ਡੁਖੜੇ ਉਲਾਹਿ ॥੨॥
मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥२॥
हे नानक ! ऐसे ही यदि हम परम-सत्य परमेश्वर को अपने हृदय में बसा लें तो दु:खों के अम्बार समाप्त हो जाते हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਕੋਟਿ ਅਘਾ ਸਭਿ ਨਾਸ ਹੋਹਿ ਸਿਮਰਤ ਹਰਿ ਨਾਉ ॥
कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥
भगवान का नाम-सिमरन करने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं।

ਮਨ ਚਿੰਦੇ ਫਲ ਪਾਈਅਹਿ ਹਰਿ ਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ॥
मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥
उसका स्तुतिगान करने से मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਭੈ ਕਟੀਅਹਿ ਨਿਹਚਲ ਸਚੁ ਥਾਉ ॥
जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥
फिर जन्म एवं मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है और मनुष्य को अटल एवं शाश्वत स्थान मिल जाता है।

ਪੂਰਬਿ ਹੋਵੈ ਲਿਖਿਆ ਹਰਿ ਚਰਣ ਸਮਾਉ ॥
पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥
यदि मनुष्य की पूर्व से ही ऐसी तकदीर लिखी हुई हो तो वह भगवान के चरणों में समा जाता है।

ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਉ ॥੫॥
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥५॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! अपनी कृपा करके मेरी रक्षा करो चूंकि मैं तो तुझ पर ही बलिहारी जाता हूँ॥ ५॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਗ੍ਰਿਹ ਰਚਨਾ ਅਪਾਰੰ ਮਨਿ ਬਿਲਾਸ ਸੁਆਦੰ ਰਸਹ ॥

ग्रिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥

जो इन्सान अपने जीवन में घर की सुन्दर रचना, मन के विलासों, स्वादों एवं भोग रसों में ही मग्न रहते हैं और

ਕਦਾਂਚ ਨਹ ਸਿਮਰੰਤਿ ਨਾਨਕ ਤੇ ਜੰਤ ਬਿਸਟਾ ਕ੍ਰਿਮਹ ॥੧॥

कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ॥१॥

जो कभी भी भगवान का ध्यान-सिमरन नहीं करते, हे नानक ! इस प्रकार के व्यक्ति तो विष्ठा के ही कीड़े हैं॥ १ ॥

ਮੁਚੁ ਅਡੰਬਰੁ ਹਭੁ ਕਿਹੁ ਮੰਝਿ ਮੁਹਬਤਿ ਨੇਹ ॥

मुचु अड्मबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥

जिस इन्सान के पास काफी साज-सजावट एवं सब कुछ उपलब्ध है और उसके हृदय में शान-शौकत से ही प्यार-मोहब्बत बना हुआ है लेकिन

ਸੋ ਸਾਂਈ ਜੈਂ ਵਿਸਰੈ ਨਾਨਕ ਸੋ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥੨॥

सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥२॥

हे नानक ! यदि वह मालिक को भुला देता है तो उसका शरीर मात्र धूल के समान ही है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी ॥

ਸੁੰਦਰ ਸੇਜ ਅਨੇਕ ਸੁਖ ਰਸ ਭੋਗਣ ਪੂਰੇ ॥

सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥

इन्सान के पास चाहे सुन्दर शैय्या, जीवन के तमाम सुख तथा रसों का भोग करने के लिए पूर्ण साम्रगी है।

ਗ੍ਰਿਹ ਸੋਇਨ ਚੰਦਨ ਸੁਗੰਧ ਲਾਇ ਮੋਤੀ ਹੀਰੇ ॥

ग्रिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥

घर में चाहे स्वर्ण, चन्दन, सुगन्धि तथा पहनने हेतु हीरे-मोती उपलब्ध हैं।

ਮਨ ਇਛੇ ਸੁਖ ਮਾਣਦਾ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ਵਿਸੂਰੇ ॥

मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥

वह चाहे मनोवांछित सुख का आनंद प्राप्त करता हो और उसे कोई भी चिन्ता न हो

ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਈ ਵਿਸਟਾ ਕੇ ਕੀਰੇ ॥
सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥
परन्तु यदि वह प्रभु को याद नहीं करता तो वह विष्ठा के कीड़े समान ही है।

ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨ ਸਾਂਤਿ ਹੋਇ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਮਨੁ ਧੀਰੇ ॥੬॥
बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥६॥
हरि-नाम के बिना इन्सान को जीवन में शांति प्राप्त नहीं होती। फिर नाम के अलावा अन्य किस उपाय द्वारा मन को धैर्य हो सकता है॥ ६ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਬਿਰਹੰ ਖੋਜੰਤ ਬੈਰਾਗੀ ਦਹ ਦਿਸਹ ॥
चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह ॥
परमात्मा के सुन्दर चरण-कमलों के विरह की पीड़ा से वैरागी वैराग्यवान बनकर उसे दसों दिशाओं में ढूंढता रहता है।

ਤਿਆਗੰਤ ਕਪਟ ਰੂਪ ਮਾਇਆ ਨਾਨਕ ਆਨੰਦ ਰੂਪ ਸਾਧ ਸੰਗਮਹ ॥੧॥
तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥१॥
हे नानक ! वह कपट रूप माया को त्याग देता है और आनंद रूपी संतों-महापुरुषों की पवित्र सभा में संगम करता है॥ १॥

ਮਨਿ ਸਾਂਈ ਮੁਖਿ ਉਚਰਾ ਵਤਾ ਹਭੇ ਲੋਅ ॥
मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥
मेरे मन में परमात्मा का नाम विद्यमान है, अपने मुख से उसका ही नाम उच्चरित करता हूँ और समस्त देशों में भ्रमण करता हूँ।

ਨਾਨਕ ਹਭਿ ਅਡੰਬਰ ਕੂੜਿਆ ਸੁਣਿ ਜੀਵਾ ਸਚੀ ਸੋਇ ॥੨॥
नानक हभि अड्मबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥२॥
हे नानक ! जीवन के सभी आडम्बर झूठे हैं और परमात्मा की सच्ची कीर्ति सुनकर ही जीवित हूँ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਬਸਤਾ ਤੂਟੀ ਝੁੰਪੜੀ ਚੀਰ ਸਭਿ ਛਿੰਨਾ ॥
बसता तूटी झुमपड़ी चीर सभि छिंना ॥
जो इन्सान टूटी हुई झोपड़ी में रहता है और उसके वस्त्र भी फटे-पुराने हों,

ਜਾਤਿ ਨ ਪਤਿ ਨ ਆਦਰੋ ਉਦਿਆਨ ਭ੍ਰਮਿੰਨਾ ॥
जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिंना ॥
जिसकी न श्रेष्ठ जाति है, न ही आदर-सत्कार है और जो उजाड़ स्थल में भटकता है,

ਮਿਤ੍ਰ ਨ ਇਠ ਧਨ ਰੂਪਹੀਣ ਕਿਛੁ ਸਾਕੁ ਨ ਸਿੰਨਾ ॥
मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिंना ॥
जिसका न कोई मित्र अथवा शुभचिन्तक है, जो धन-दौलत एवं सौन्दर्य से विहीन है और जिसका कोई रिश्तेदार अथवा संबंधी भी नहीं,

ਰਾਜਾ ਸਗਲੀ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਕਾ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਮਨੁ ਭਿੰਨਾ ॥
राजा सगली स्रिसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥
लेकिन यदि उसका मन परमात्मा के नाम में मग्न है तो वह सारे संसार का राजा है।

ਤਿਸ ਕੀ ਧੂੜਿ ਮਨੁ ਉਧਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਹੋਇ ਸੁਪ੍ਰਸੰਨਾ ॥੭॥
तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसंना ॥७॥
उसकी चरण-धूलि से मन का कल्याण हो जाता है और प्रभु भी उस पर बड़ा प्रसन्न होता है॥ ७ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਅਨਿਕ ਲੀਲਾ ਰਾਜ ਰਸ ਰੂਪੰ ਛਤ੍ਰ ਚਮਰ ਤਖਤ ਆਸਨੰ ॥
अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥
अनेक लीलाओं, राज्य सुख, मनोरंजन, सौन्दर्य, सिर पर छत्र, चंवर, राजसिंहासन जैसे प्रपंचों में ही डूबे,

ਰਚੰਤਿ ਮੂੜ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਹ ਨਾਨਕ ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਮਾਇਆ ॥੧॥
रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥१॥
कुछ मूर्ख, अज्ञानी एवं अन्धे मनुष्य रहते है। हे नानक ! माया के ये मनोरथ एक स्वप्न के समान हैं॥ १॥

ਸੁਪਨੈ ਹਭਿ ਰੰਗ ਮਾਣਿਆ ਮਿਠਾ ਲਗੜਾ ਮੋਹੁ ॥

सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥

गुरु जी का फरमान है कि आदमी स्वप्न में ही सभी सुख भोगता रहता है और उसका मोह उसे बड़ा मीठा लगता है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਹੂਣੀਆ ਸੁੰਦਰਿ ਮਾਇਆ ਧ੍ਰੋਹੁ ॥੨॥

नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥२॥

किन्तु हे नानक ! नाम के बिना यह सुन्दर दिखने वाली माया छल कपट ही है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

ਸੁਪਨੇ ਸੇਤੀ ਚਿਤੁ ਮੂਰਖਿ ਲਾਇਆ ॥

सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥

मूर्ख इन्सान का चित स्वप्नों में ही डूबा रहता है।

ਬਿਸਰੇ ਰਾਜ ਰਸ ਭੋਗ ਜਾਗਤ ਭਖਲਾਇਆ ॥

बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥

जब वह स्वप्न से जागता है तो उसे माया के प्रपंच-राज्य सुख, मनोरंजन तथा भोग-विलास इत्यादि भूल जाते हैं और वह मायूस हो जाता है।

ਆਰਜਾ ਗਈ ਵਿਹਾਇ ਧੰਧੈ ਧਾਇਆ ॥

आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥

इन्सान की सारी जिन्दगी संसार के धन्धों में भाग दौड़ करते ही बीत गई है।

ਪੂਰਨ ਭਏ ਨ ਕਾਮ ਮੋਹਿਆ ਮਾਇਆ ॥

पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥

माया के मोह में मग्न रहने के कारण जिस उद्देश्य से वह जीवन में आया था, उसका कार्य सम्पूर्ण नहीं हुआ।

ਕਿਆ ਵੇਚਾਰਾ ਜੰਤੁ ਜਾ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਆ ॥੮॥

किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥८॥

सच तो यही है कि जब भगवान ने स्वयं ही उसे मोह-माया में भटकाया हुआ है तो जीव बेचारा भी क्या कर सकता है॥ ८॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਬਸੰਤਿ ਸ੍ਵਰਗ ਲੋਕਹ ਜਿਤਤੇ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਨਵ ਖੰਡਣਹ ॥
बसंति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नव खंडणह ॥
प्राणी चाहे स्वर्ग लोक में रहता हो, चाहे उसने पृथ्वी के नौ खण्डों पर भी विजय प्राप्त कर ली हो,

ਬਿਸਰੰਤ ਹਰਿ ਗੋਪਾਲਹ ਨਾਨਕ ਤੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਉਦਿਆਨ ਭਰਮਣਹ ॥੧॥
बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥१॥
परन्तु यदि वह पृथ्वीपालक परमात्मा को विस्मृत कर देता है तो हे नानक ! वह भयानक वन में ही भटक रहा है॥ १॥

ਕਉਤਕ ਕੋਡ ਤਮਾਸਿਆ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਸੁ ਨਾਉ ॥
कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥
हे नानक ! जिन्हें कौतुक, आनंद एवं खेल-तमाशों के कारण परमात्मा का नाम याद नहीं आता,

ਨਾਨਕ ਕੋੜੀ ਨਰਕ ਬਰਾਬਰੇ ਉਜੜੁ ਸੋਈ ਥਾਉ ॥੨॥
नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥२॥
वे मनुष्य नरक में रहने वाले कुष्ठी समान हैं और उनका निवास स्थान भी उजाड़ समान है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਮਹਾ ਭਇਆਨ ਉਦਿਆਨ ਨਗਰ ਕਰਿ ਮਾਨਿਆ ॥
महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥
यह जगत एक महाभयानक वन के समान है परन्तु मूर्ख जीव ने इसे सुन्दर नगर समझ लिया है और

ਝੂਠ ਸਮਗ੍ਰੀ ਪੇਖਿ ਸਚੁ ਕਰਿ ਜਾਨਿਆ ॥
झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥
झूठी सामग्री को देखकर उसने सत्य समझ लिया है।

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਿ ਅਹੰਕਾਰਿ ਫਿਰਹਿ ਦੇਵਾਨਿਆ ॥
काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥
वह काम, क्रोध एवं अहंकार में मग्न होकर पागलों की तरह घूम रहा है।

ਸਿਰਿ ਲਗਾ ਜਮ ਡੰਡੁ ਤਾ ਪਛੁਤਾਨਿਆ ॥
सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥
लेकिन जब मृत्यु की चोट इसके सिर पर आकर लगी तो वह पश्चाताप कर रहा है।

ਬਿਨੁ ਪੂਰੇ ਗੁਰਦੇਵ ਫਿਰੈ ਸੈਤਾਨਿਆ ॥੬॥
बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥६॥
पूर्ण गुरुदेव के बिना जीव एक शैतान की भांति घूमता रहता है॥ ६ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਰਾਜ ਕਪਟੰ ਰੂਪ ਕਪਟੰ ਧਨ ਕਪਟੰ ਕੁਲ ਗਰਬਤਹ ॥
राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥
मानव जीव अपने जीवन में जिस राज्य, सौन्दर्य, धन-दौलत एवं उच्च कुल का घमण्ड करता रहता है, दरअसल ये सभी प्रपंच मात्र छल-कपट ही हैं।

ਸੰਚੰਤਿ ਬਿਖਿਆ ਛਲੰ ਛਿਦ੍ਰੰ ਨਾਨਕ ਬਿਨੁ ਹਰਿ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲਤੇ ॥੧॥
संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥१॥
वह बड़े छल-कपट एवं दोषों द्वारा विष रूपी धन संचित करता है। परन्तु हे नानक ! सत्य तो यही है कि परमात्मा के नाम-धन के सिवाय कुछ भी उसके साथ नहीं जाता॥ १॥

ਪੇਖੰਦੜੋ ਕੀ ਭੁਲੁ ਤੁੰਮਾ ਦਿਸਮੁ ਸੋਹਣਾ ॥
पेखंदड़ो की भुलु तुमा दिसमु सोहणा ॥
तुंबा देखने में बड़ा सुन्दर लगता है लेकिन मानव जीव इसे देखकर भूल में फंस जाता है।

ਅਢੁ ਨ ਲਹੰਦੜੋ ਮੁਲੁ ਨਾਨਕ ਸਾਥਿ ਨ ਜੁਲਈ ਮਾਇਆ ॥੨॥
अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥२॥
इस तुम्बे का एक कौड़ी मात्र भी मूल्य प्राप्त नहीं होता। हे नानक ! धन-दौलत जीव के साथ नहीं जाते ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਨ ਚਲੈ ਸੋ ਕਿਉ ਸੰਜੀਐ ॥
चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥
गुरु साहिब का फरमान है कि उस धन को हम क्यों संचित करें ? जो संसार से जाते समय हमारे साथ ही नहीं जाता।

ਤਿਸ ਕਾ ਕਹੁ ਕਿਆ ਜਤਨੁ ਜਿਸ ਤੇ ਵੰਜੀਐ ॥
तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥
जिस धन को हमने इस दुनिया में ही छोड़कर चल देना है, बताओ, उसे प्राप्त करने के लिए हम क्यों प्रयास करें ?

ਹਰਿ ਬਿਸਰਿਐ ਕਿਉ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ਨਾ ਮਨੁ ਰੰਜੀਐ ॥
हरि बिसरिऐ किउ त्रिपतावै ना मनु रंजीऐ ॥
भगवान को भुलाकर मन कैसे तृप्त हो सकता है? यह मन भी प्रसन्न नहीं हो सकता।

ਪ੍ਰਭੂ ਛੋਡਿ ਅਨ ਲਾਗੈ ਨਰਕਿ ਸਮੰਜੀਐ ॥
प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥
जो इन्सान प्रभु को छोड़कर सांसारिक प्रपंचों में लीन रहता है, आखिरकार वह नरक में ही बसेरा करता है।

ਹੋਹੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਦਇਆਲ ਨਾਨਕ ਭਉ ਭੰਜੀਐ ॥੧੦॥
होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥१०॥
नानक प्रार्थना करता है कि हे दया के घर, परमेश्वर ! कृपालु होकर हमारा भय नष्ट कर दो ॥ १०॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਨਚ ਰਾਜ ਸੁਖ ਮਿਸਟੰ ਨਚ ਭੋਗ ਰਸ ਮਿਸਟੰ ਨਚ ਮਿਸਟੰ ਸੁਖ ਮਾਇਆ ॥
नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥
गुरु साहिब का फरमान है कि न ही राज्य इत्यादि के सुख-वैभव मीठे हैं, न ही भोगने वाले रस मीठे हैं और न ही धन-दौलत के सुख मीठे हैं।

ਮਿਸਟੰ ਸਾਧਸੰਗਿ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਮਿਸਟੰ ਪ੍ਰਭ ਦਰਸਨੰ ॥੧॥
मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥१॥
हे नानक ! भगवान के संतों महापुरुषों की पवित्र संगति ही मीठी है और भक्तजनों को प्रभु के दर्शन ही मीठे लगते हैं।॥ १॥

ਲਗੜਾ ਸੋ ਨੇਹੁ ਮੰਨ ਮਝਾਹੂ ਰਤਿਆ ॥
लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥
मुझे तो ऐसी मुहब्बत हो गई है, जिसके भीतर ही मेरा मन मग्न हो गया है।

ਵਿਧੜੋ ਸਚ ਥੋਕਿ ਨਾਨਕ ਮਿਠੜਾ ਸੋ ਧਣੀ ॥੨॥
विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥२॥
हे नानक ! मेरा यह मन भगवान के सत्य नाम रूपी धन के साथ लग गया है और वह मालिक ही मुझे मीठा लगता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਕਛੂ ਨ ਲਾਗਈ ਭਗਤਨ ਕਉ ਮੀਠਾ ॥
हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥
भक्तजनों को भगवान (की भक्ति) के सिवाय कुछ भी मीठा नहीं लगता।

ਆਨ ਸੁਆਦ ਸਭਿ ਫੀਕਿਆ ਕਰਿ ਨਿਰਨਉ ਡੀਠਾ ॥
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥
मैंने भली भांति यह निर्णय करके देख लिया है कि नाम के सिवाय जीवन के अन्य सभी स्वाद फीके हैं।

ਅਗਿਆਨੁ ਭਰਮੁ ਦੁਖੁ ਕਟਿਆ ਗੁਰ ਭਏ ਬਸੀਠਾ ॥
अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥
जब गुरु मेरा मध्यस्थ बन गया तो अज्ञान, भ्रम एवं दुःख कट गया।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨੁ ਬੇਧਿਆ ਜਿਉ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠਾ ॥
चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥
मेरा मन भगवान के चरण-कमलों से ऐसे बिंध गया है, जैसे मजीठ से कपड़े को पक्का रंग चढ़ जाता है।

ਜੀਉ ਪ੍ਰਾਣ ਤਨੁ ਮਨੁ ਪ੍ਰਭੂ ਬਿਨਸੇ ਸਭਿ ਝੂਠਾ ॥੧੧॥
जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥११॥
मेरी यह आत्मा, प्राण, तन एवं मन सब प्रभु के ही हैं और अन्य सभी झूठे मोह नष्ट हो गए हैं।॥ ११॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਤਿਅਕਤ ਜਲੰ ਨਹ ਜੀਵ ਮੀਨੰ ਨਹ ਤਿਆਗਿ ਚਾਤ੍ਰਿਕ ਮੇਘ ਮੰਡਲਹ ॥
तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चात्रिक मेघ मंडलह ॥
जैसे जल को त्याग कर मछली जीवित नहीं रहती, जैसे एक पपीहा भी मेघ मण्डल को त्याग कर जीवित नहीं रहता,

ਬਾਣ ਬੇਧੰਚ ਕੁਰੰਕ ਨਾਦੰ ਅਲਿ ਬੰਧਨ ਕੁਸਮ ਬਾਸਨਹ ॥
बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥
जैसे एक मृग सुन्दर नाद को श्रवण करके मुग्ध हो जाता है, जैसे भंवरा फूलों की सुगन्धि के बन्धन में फंस जाता है।

ਚਰਨ ਕਮਲ ਰਚੰਤਿ ਸੰਤਹ ਨਾਨਕ ਆਨ ਨ ਰੁਚਤੇ ॥੧॥
चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥१॥
हे नानक ! वैसे ही सन्त-महात्मा प्रभु के चरण-कमलों में मग्न रहते हैं और उसके सिवाय उनकी किसी अन्य में कोई रुचि नहीं होती ॥ १॥

ਮੁਖੁ ਡੇਖਾਊ ਪਲਕ ਛਡਿ ਆਨ ਨ ਡੇਊ ਚਿਤੁ ॥
मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥
हे प्रभु ! यदि एक क्षण भर के लिए भी तेरे मुख के मुझे दर्शन हो जाएँ तो तुझे छोड़कर मैं अपना चित किसी दूसरे में नहीं लगाऊँगा।

ਜੀਵਣ ਸੰਗਮੁ ਤਿਸੁ ਧਣੀ ਹਰਿ ਨਾਨਕ ਸੰਤਾਂ ਮਿਤੁ ॥੨॥
जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥२॥
हे नानक ! वास्तविक जीवन तो उस मालिक-परमेश्वर के संगम में ही है, जो संतो-महापुरुषों का घनिष्ठ मित्र है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਿਉ ਮਛੁਲੀ ਬਿਨੁ ਪਾਣੀਐ ਕਿਉ ਜੀਵਣੁ ਪਾਵੈ ॥
जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥
जिस तरह मछली जल के बिना जीवन प्राप्त नहीं कर पाती,

ਬੂੰਦ ਵਿਹੂਣਾ ਚਾਤ੍ਰਿਕੋ ਕਿਉ ਕਰਿ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ॥
बूंद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥
जिस तरह एक पपीहा स्वाति बूंद के सिवाय कैसे तृप्त रह सकता है,

ਨਾਦ ਕੁਰੰਕਹਿ ਬੇਧਿਆ ਸਨਮੁਖ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥
नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥
जैसे एक मृग नाद को सुनकर आकर्षित होकर नाद की तरफ उठ दौड़ता है,

ਭਵਰੁ ਲੋਭੀ ਕੁਸਮ ਬਾਸੁ ਕਾ ਮਿਲਿ ਆਪੁ ਬੰਧਾਵੈ ॥
भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥
भंवरा पुष्पों की महक का लोभी है और पुष्प में ही फँस जाता है,

ਤਿਉ ਸੰਤ ਜਨਾ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਹੈ ਦੇਖਿ ਦਰਸੁ ਅਘਾਵੈ ॥੧੨॥
तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥१२॥
वैसे ही संत-महापुरुषों की भगवान के साथ अटूट प्रीति है और उसके दर्शन प्राप्त करके वे आनंदित हो जाते हैं।॥ १२ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਚਿਤਵੰਤਿ ਚਰਨ ਕਮਲੰ ਸਾਸਿ ਸਾਸਿ ਅਰਾਧਨਹ ॥
चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥
संतजन केवल भगवान के चरणों को ही स्मरण करते रहते हैं और सांस-सांस से उसकी आराधना में ही मग्न रहते हैं।

ਨਹ ਬਿਸਰੰਤਿ ਨਾਮ ਅਚੁਤ ਨਾਨਕ ਆਸ ਪੂਰਨ ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥੧॥
नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥१॥
हे नानक ! उन्हें अच्युत नाम विस्मृत नहीं होता और परमेश्वर उनकी प्रत्येक आशा पूरी करता है॥ १॥

ਸੀਤੜਾ ਮੰਨ ਮੰਝਾਹਿ ਪਲਕ ਨ ਥੀਵੈ ਬਾਹਰਾ ॥
सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥
जिन श्रद्धालुओं के हृदय में भगवान का नाम सिला हुआ है तथा पल भर के लिए भी नाम उन से दूर नहीं होता।

ਨਾਨਕ ਆਸੜੀ ਨਿਬਾਹਿ ਸਦਾ ਪੇਖੰਦੋ ਸਚੁ ਧਣੀ ॥੨॥
नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥२॥
हे नानक ! सच्चा मालिक उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी करता है और हमेशा ही उनकी देखरेख करता है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਆਸਾਵੰਤੀ ਆਸ ਗੁਸਾਈ ਪੂਰੀਐ ॥
आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥
हे जगत के मालिक ! मुझ आशावान की आशा पूरी कीजिए।

ਮਿਲਿ ਗੋਪਾਲ ਗੋਬਿੰਦ ਨ ਕਬਹੂ ਝੂਰੀਐ ॥
मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥
हे गोपाल, हे गोविन्द ! यदि तुम मुझे मिल जाओ तो मुझे कभी भी खेद एवं पश्चाताप नहीं होगा।

ਦੇਹੁ ਦਰਸੁ ਮਨਿ ਚਾਉ ਲਹਿ ਜਾਹਿ ਵਿਸੂਰੀਐ ॥
देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ ॥
मेरे मन में बड़ा चाव है, मुझे अपने दर्शन दो, ताकि मेरे सभी दुःख मिट जाएँ।

ਹੋਇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਸਰੀਰੁ ਚਰਨਾ ਧੂਰੀਐ ॥
होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥
तेरी चरण-धूलि मिलने से मेरा यह शरीर पवित्र-पावन हो सकता है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰਦੇਵ ਸਦਾ ਹਜੂਰੀਐ ॥੧੩॥
पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥१३॥
हे परब्रह्म, हे गुरुदेव ! करुणा करो ताकि मैं सर्वदा ही तेरी उपासना में उपस्थित रह सकूं ॥ १३॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਰਸਨਾ ਉਚਰੰਤਿ ਨਾਮੰ ਸ੍ਰਵਣੰ ਸੁਨੰਤਿ ਸਬਦ ਅੰਮ੍ਰਿਤਹ ॥
रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अम्रितह ॥
जो अपनी रसना से परमेश्वर का नाम उच्चारित करते हैं, अपने कानों से अमृत शब्द सुनते रहते हैं।

ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੰ ਜਿਨਾ ਧਿਆਨੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮਣਹ ॥੧॥
नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥१॥
हे नानक ! मैं उन पर सर्वदा ही कुर्बान जाता हूँ, जिनका ध्यान परब्रह्म में लगा रहता है॥ १॥

ਹਭਿ ਕੂੜਾਵੇ ਕੰਮ ਇਕਸੁ ਸਾਈ ਬਾਹਰੇ ॥
हभि कूड़ावे कम इकसु साई बाहरे ॥
एक परमात्मा की भक्ति के बिना सभी कर्म झूठे हैं।

ਨਾਨਕ ਸੇਈ ਧੰਨੁ ਜਿਨਾ ਪਿਰਹੜੀ ਸਚ ਸਿਉ ॥੨॥
नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥२॥
हे नानक ! वही इन्सान भाग्यवान् हैं, जिनका परम-सत्य परमेश्वर के साथ अटूट स्नेह बना हुआ है॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਸਦ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨਾ ਜਿ ਸੁਨਤੇ ਹਰਿ ਕਥਾ ॥
सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥
गुरु साहिब का फरमान है कि मैं उन महापुरुषों पर सदैव कुर्बान जाता हूँ, जो हरि-कथा सुनते रहते हैं।

ਪੂਰੇ ਤੇ ਪਰਧਾਨ ਨਿਵਾਵਹਿ ਪ੍ਰਭ ਮਥਾ ॥
पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥
ऐसे महान् एवं पूर्ण गुणवान ही भगवान के समक्ष अपना शीश निवाते हैं।

ਹਰਿ ਜਸੁ ਲਿਖਹਿ ਬੇਅੰਤ ਸੋਹਹਿ ਸੇ ਹਥਾ ॥
हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥
उनके वे हाथ अत्यंत सुन्दर हैं जो बेअंत हरि का यश लिखते हैं।

ਚਰਨ ਪੁਨੀਤ ਪਵਿਤ੍ਰ ਚਾਲਹਿ ਪ੍ਰਭ ਪਥਾ ॥
चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥
जो चरण प्रभु के मार्ग पर चलते हैं, वे बड़े पवित्र एवं पावन हैं।

ਸੰਤਾਂ ਸੰਗਿ ਉਧਾਰੁ ਸਗਲਾ ਦੁਖੁ ਲਥਾ ॥੧੪॥
संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥१४॥
संतों-महापुरुषों की संगति करने से ही मनुष्य का कल्याण होता है और सभी दुःख दूर हो जाते हैं।॥ १४॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक ॥

ਭਾਵੀ ਉਦੋਤ ਕਰਣੰ ਹਰਿ ਰਮਣੰ ਸੰਜੋਗ ਪੂਰਨਹ ॥
भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥
पूर्ण संयोग से जिस मनुष्य का भाग्य उदय होता है, वही भगवान का सिमरन करता है।

ਗੋਪਾਲ ਦਰਸ ਭੇਟੰ ਸਫਲ ਨਾਨਕ ਸੋ ਮਹੂਰਤਹ ॥੧॥
गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥१॥
हे नानक ! वह मुहूर्त फलदायक एवं शुभ है, जब जगतपालक परमेश्वर के दर्शन होते हैं।॥ १॥

ਕੀਮ ਨ ਸਕਾ ਪਾਇ ਸੁਖ ਮਿਤੀ ਹੂ ਬਾਹਰੇ ॥
कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥
उसने मुझे आशा से भी अधिक अनन्त सुख प्रदान किए हैं, अतः मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता।

ਨਾਨਕ ਸਾ ਵੇਲੜੀ ਪਰਵਾਣੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲੰਦੜੋ ਮਾ ਪਿਰੀ ॥੨॥
नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥२॥
हे नानक ! वह शुभ समय परवान है, जब मुझे मेरा प्रिय-परमेश्वर मिल जाता है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਸਾ ਵੇਲਾ ਕਹੁ ਕਉਣੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਪ੍ਰਭ ਕਉ ਪਾਈ ॥
सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥
बताओ, वह कौन-सा समय है, जब प्रभु की प्राप्ति होती है।

ਸੋ ਮੂਰਤੁ ਭਲਾ ਸੰਜੋਗੁ ਹੈ ਜਿਤੁ ਮਿਲੈ ਗੁਸਾਈ ॥
सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥
वही मुहूर्त व भला संयोग है, जब परमेश्वर प्राप्त होता है।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਕੈ ਮਨ ਇਛ ਪੁਜਾਈ ॥
आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥
उस हरि का आठ प्रहर सिमरन करने से सभी मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं।

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਸਤਸੰਗੁ ਹੋਇ ਨਿਵਿ ਲਾਗਾ ਪਾਈ ॥
वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥
अहोभाग्य से ही संतों की संगति मिली है और मैं झुक कर उनके चरणों में लगता हूँ।

ਮਨਿ ਦਰਸਨ ਕੀ ਪਿਆਸ ਹੈ ਨਾਨਕ ਬਲਿ ਜਾਈ ॥੧੫॥
मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥१५॥
हे नानक ! मेरे मन में ईश्वर के दर्शनों की तीव्र लालसा है और उस पर मैं तन-मन से कुर्बान जाता हूँ।॥१५॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਪਤਿਤ ਪੁਨੀਤ ਗੋਬਿੰਦਹ ਸਰਬ ਦੋਖ ਨਿਵਾਰਣਹ ॥
पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥
पतितों को पावन करने वाला गोविन्द ही सर्व दोषों का निवारण करने वाला है।

ਸਰਣਿ ਸੂਰ ਭਗਵਾਨਹ ਜਪੰਤਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਹਰੇ ॥੧॥
सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥१॥
हे नानक ! जो 'हरि-हरि' नाम-मंत्र जपते रहते हैं, भगवान उन्हें शरण देने में समर्थ है॥१॥

ਛਡਿਓ ਹਭੁ ਆਪੁ ਲਗੜੋ ਚਰਣਾ ਪਾਸਿ ॥
छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥
हे नानक ! जो अपने अहम् को छोड़कर चरणों में लग गया है,

ਨਠੜੋ ਦੁਖ ਤਾਪੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਭੁ ਪੇਖੰਦਿਆ ॥੨॥
नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥२॥
प्रभु के दर्शन करने से उस मनुष्य के सभी दुःख एवं ताप दूर हो गए हैं।॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਮੇਲਿ ਲੈਹੁ ਦਇਆਲ ਢਹਿ ਪਏ ਦੁਆਰਿਆ ॥
मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥
हे दयालु ईश्वर ! मुझे अपने साथ मिला लो, मैं तेरे द्वार पर आ गिरा हूँ।

ਰਖਿ ਲੇਵਹੁ ਦੀਨ ਦਇਆਲ ਭ੍ਰਮਤ ਬਹੁ ਹਾਰਿਆ ॥
रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥
हे दीनदयाल ! मुझे बचा लो, मैं योनि-चक्र में भटकता हुआ बहुत थक गया हूँ।

ਭਗਤਿ ਵਛਲੁ ਤੇਰਾ ਬਿਰਦੁ ਹਰਿ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਿਆ ॥
भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥
हे हरि ! तेरा विरद् भक्तवत्सल एवं पतितों का कल्याण करना है।

ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ਬਿਨਉ ਮੋਹਿ ਸਾਰਿਆ ॥
तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥
तेरे बिना अन्य कोई नहीं है, जो मेरी विनती को स्वीकार करे।

ਕਰੁ ਗਹਿ ਲੇਹੁ ਦਇਆਲ ਸਾਗਰ ਸੰਸਾਰਿਆ ॥੧੬॥
करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥१६॥
हे दयालु! मेरा हाथ पकड़कर इस संसार-सागर से मुझे पार करवा दो॥ १६॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਸੰਤ ਉਧਰਣ ਦਇਆਲੰ ਆਸਰੰ ਗੋਪਾਲ ਕੀਰਤਨਹ ॥
संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥
दयालु परमेश्वर ही संतों का कल्याण करने वाला है, अतः उस प्रभु का कीर्तन ही उनके जीवन का एकमात्र सहारा है।

ਨਿਰਮਲੰ ਸੰਤ ਸੰਗੇਣ ਓਟ ਨਾਨਕ ਪਰਮੇਸੁਰਹ ॥੧॥
निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥१॥
हे नानक ! संतों-महापुरुषों की संगति करने एवं परमेश्वर की शरण लेने से मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है॥ १॥

ਚੰਦਨ ਚੰਦੁ ਨ ਸਰਦ ਰੁਤਿ ਮੂਲਿ ਨ ਮਿਟਈ ਘਾਮ ॥
चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घाम ॥
चन्दन का लेप लगाने, चाँदनी रात एवं शरद् ऋतु से मन की जलन बिल्कुल दूर नहीं होती।

ਸੀਤਲੁ ਥੀਵੈ ਨਾਨਕਾ ਜਪੰਦੜੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ॥੨॥
सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥२॥
हे नानक ! हरि-नाम का जाप करने से मन शीतल एवं शांत हो जाता है ॥ २ ॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਕੀ ਓਟ ਉਧਰੇ ਸਗਲ ਜਨ ॥
चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥
भगवान के चरण-कमलों की शरण में आने से ही समस्त भक्तजनों का कल्याण हो गया है।

ਸੁਣਿ ਪਰਤਾਪੁ ਗੋਵਿੰਦ ਨਿਰਭਉ ਭਏ ਮਨ ॥
सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥
गोविन्द का यश-प्रताप सुनने से उनका मन निर्भीक हो गया है।

ਤੋਟਿ ਨ ਆਵੈ ਮੂਲਿ ਸੰਚਿਆ ਨਾਮੁ ਧਨ ॥
तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥
नाम रूपी धन संचित करने से जीवन में किसी भी प्रकार की पदार्थ की कमी नहीं रहती।

ਸੰਤ ਜਨਾ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਪਾਈਐ ਵਡੈ ਪੁਨ ॥
संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥
संतजनों से संगत बड़े पुण्य कर्म से होती है।

ਆਠ ਪਹਰ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਹਰਿ ਜਸੁ ਨਿਤ ਸੁਨ ॥੧੭॥
आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥१७॥
इसलिए आठ प्रहर भगवान का ही ध्यान करते रहना चाहिए और नित्य ही हरि-यश सुनना चाहिए॥ १७॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक ॥

ਦਇਆ ਕਰਣੰ ਦੁਖ ਹਰਣੰ ਉਚਰਣੰ ਨਾਮ ਕੀਰਤਨਹ ॥
दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥
यदि परमात्मा का भजन-कीर्तन एवं उसका नाम-सिमरन किया जाए तो वह दया करके समस्त दुःख-क्लेशों को मिटा देता है।

ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਭਗਵਾਨਹ ਨਾਨਕ ਲਿਪਤ ਨ ਮਾਇਆ ॥੧॥
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥१॥
हे नानक ! परम पुरुष भगवान जिस पर कृपा कर देता है, वह मोह-माया से निर्लिप्त हो जाता है॥ १ ॥

ਭਾਹਿ ਬਲੰਦੜੀ ਬੁਝਿ ਗਈ ਰਖੰਦੜੋ ਪ੍ਰਭੁ ਆਪਿ ॥
भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥
मेरे मन में प्रज्वलित तृष्णा की अग्नि बुझ गई है तथा प्रभु स्वयं ही मेरा रखवाला बना है।

ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ਮੇਦਨੀ ਨਾਨਕ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਪਿ ॥੨॥
जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥२॥
हे नानक ! जिसने यह पृथ्वी उत्पन्न की है, उस प्रभु का जाप करो ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਜਾ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਇਆਲ ਨ ਬਿਆਪੈ ਮਾਇਆ ॥
जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥
जब प्रभु दयालु हो गया तो माया मुझे प्रभावित नहीं करती।

ਕੋਟਿ ਅਘਾ ਗਏ ਨਾਸ ਹਰਿ ਇਕੁ ਧਿਆਇਆ ॥
कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥
एक परमेश्वर का ध्यान करने से करोड़ों पाप नाश हो गए हैं।

ਨਿਰਮਲ ਭਏ ਸਰੀਰ ਜਨ ਧੂਰੀ ਨਾਇਆ ॥
निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥
संतजनों की चरण-धूलि में स्नान करने से शरीर शुद्ध हो गया है।

ਮਨ ਤਨ ਭਏ ਸੰਤੋਖ ਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੁ ਪਾਇਆ ॥
मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥
जब पूर्ण प्रभु प्राप्त हुआ तो मन एवं तन सन्तुष्ट हो गए।

ਤਰੇ ਕੁਟੰਬ ਸੰਗਿ ਲੋਗ ਕੁਲ ਸਬਾਇਆ ॥੧੮॥
तरे कुट्मब संगि लोग कुल सबाइआ ॥१८॥
फिर मेरे परिवार के सदस्य एवं वंशावली मेरे साथ भवसागर से पार हो गए॥ १८ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਪਾਲ ਗੁਰ ਗੁਰ ਪੂਰਨ ਨਾਰਾਇਣਹ ॥
गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥
गुरु ही गोविंद एवं गुरु ही गोपाल है और गुरु ही पूर्ण नारायण का रूप है।

ਗੁਰ ਦਇਆਲ ਸਮਰਥ ਗੁਰ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣਹ ॥੧॥
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥१॥
हे नानक ! गुरु ही दया का सागर है, वह सर्वकला समर्थ है और वही पतितों का उद्धार करने वाला है॥ १॥

ਭਉਜਲੁ ਬਿਖਮੁ ਅਸਗਾਹੁ ਗੁਰਿ ਬੋਹਿਥੈ ਤਾਰਿਅਮੁ ॥
भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥
यह भवसागर बड़ा विषम एवं भयानक है किन्तु गुरु रूपी जहाज के द्वारा मैं इस भवसागर से पार हो गया हूँ।

ਨਾਨਕ ਪੂਰ ਕਰੰਮ ਸਤਿਗੁਰ ਚਰਣੀ ਲਗਿਆ ॥੨॥
नानक पूर करम सतिगुर चरणी लगिआ ॥२॥
हे नानक ! पूर्ण भाग्य से ही सतगुरु के चरणों में लगा हूँ॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी ॥

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰਦੇਵ ਜਿਸੁ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਜਪੇ ॥
धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥
वह गुरुदेव धन्य-धन्य है, जिसकी संगति में भगवान का सिमरन किया जाता है।

ਗੁਰ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਜਬ ਭਏ ਤ ਅਵਗੁਣ ਸਭਿ ਛਪੇ ॥
गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥
जब गुरु कृपा के घर में आया तो तमाम अवगुण लुप्त हो गए।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਗੁਰਦੇਵ ਨੀਚਹੁ ਉਚ ਥਪੇ ॥
पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥
परब्रह्म गुरुदेव ने मुझे निम्न से उच्च बना दिया है।

ਕਾਟਿ ਸਿਲਕ ਦੁਖ ਮਾਇਆ ਕਰਿ ਲੀਨੇ ਅਪ ਦਸੇ ॥
काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥
उसने माया के दुखों के बन्धन को काटकर हमें अपना दास बनाया है।

ਗੁਣ ਗਾਏ ਬੇਅੰਤ ਰਸਨਾ ਹਰਿ ਜਸੇ ॥੧੯॥
गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥१९॥
अब हमारी रसना भगवान का यश एवं उसका गुणगान करती रहती है।॥ १६ ॥

ਸਲੋਕ ॥
सलोक ॥
श्लोक॥

ਦ੍ਰਿਸਟੰਤ ਏਕੋ ਸੁਨੀਅੰਤ ਏਕੋ ਵਰਤੰਤ ਏਕੋ ਨਰਹਰਹ ॥
द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥
एक परमेश्वर ही सर्वत्र दिखाई दे रहा है, एक वही सब जगह सुना जा रहा है और एक वही सारी सृष्टि में व्यापक हो रहा है।

ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਜਾਚੰਤਿ ਨਾਨਕ ਦਇਆਲ ਪੁਰਖ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹ ॥੧॥
नाम दानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥१॥
हे दयालु परमेश्वर ! कृपा करो, क्योंकि नानक तो तुझसे नाम-दान की ही याचना कर रहा है॥ १॥

ਹਿਕੁ ਸੇਵੀ ਹਿਕੁ ਸੰਮਲਾ ਹਰਿ ਇਕਸੁ ਪਹਿ ਅਰਦਾਸਿ ॥
हिकु सेवी हिकु समला हरि इकसु पहि अरदासि ॥
मैं तो उस एक परमेश्वर की ही उपासना करता हूँ, उस एक को ही स्मरण करता हूँ तथा एक के समक्ष ही प्रार्थना करता हूँ।

ਨਾਮ ਵਖਰੁ ਧਨੁ ਸੰਚਿਆ ਨਾਨਕ ਸਚੀ ਰਾਸਿ ॥੨॥
नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥२॥
हे नानक ! मैंने तो नाम पदार्थ एवं नाम धन ही संचित किया है, क्योंकि यह नाम धन ही सच्ची पूंजी है॥ २॥

ਪਉੜੀ ॥
पउड़ी ॥
पउड़ी॥

ਪ੍ਰਭ ਦਇਆਲ ਬੇਅੰਤ ਪੂਰਨ ਇਕੁ ਏਹੁ ॥
प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥
प्रभु बड़ा दयालु एवं बेअंत है और एक वही सर्वव्यापक है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਦੂਜਾ ਕਹਾ ਕੇਹੁ ॥
सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥
वह आप ही सबकुछ है, फिर उस जैसा मैं अन्य किसे कहूँ?

ਆਪਿ ਕਰਹੁ ਪ੍ਰਭ ਦਾਨੁ ਆਪੇ ਆਪਿ ਲੇਹੁ ॥
आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥
हे प्रभु ! तुम स्वयं ही दान करते हो और स्वयं ही दान लेते हो।

ਆਵਣ ਜਾਣਾ ਹੁਕਮੁ ਸਭੁ ਨਿਹਚਲੁ ਤੁਧੁ ਥੇਹੁ ॥
आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥
जन्म एवं मृत्यु सब तेरे हुक्म में ही है और तेरा पावन धाम सदा अटल है।

ਨਾਨਕੁ ਮੰਗੈ ਦਾਨੁ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਨਾਮੁ ਦੇਹੁ ॥੨੦॥੧॥
नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥२०॥१॥
नानक तो तुझसे नाम का दान ही माँगता है, इसलिए कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान करो॥ २०॥ १॥

ਜੈਤਸਰੀ ਬਾਣੀ ਭਗਤਾ ਕੀ
जैतसरी बाणी भगता की
जैतसरी बाणी भगता की

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਨਾਥ ਕਛੂਅ ਨ ਜਾਨਉ ॥
नाथ कछूअ न जानउ ॥
हे मालिक ! मैं कुछ भी नहीं जानता,

ਮਨੁ ਮਾਇਆ ਕੈ ਹਾਥਿ ਬਿਕਾਨਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि मेरा यह मन माया के हाथ बिक चुका है॥ १॥ रहाउ॥

ਤੁਮ ਕਹੀਅਤ ਹੌ ਜਗਤ ਗੁਰ ਸੁਆਮੀ ॥
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥
हे स्वामी ! तुझे सारे जगत का गुरु कहा जाता है,

ਹਮ ਕਹੀਅਤ ਕਲਿਜੁਗ ਕੇ ਕਾਮੀ ॥੧॥
हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥
किन्तु मैं कलियुग का कामी कहलाता हूँ॥ १॥

ਇਨ ਪੰਚਨ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਜੁ ਬਿਗਾਰਿਓ ॥
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥
इन कामादिक पाँच विकारों ने मेरा मन दूषित कर दिया है,

ਪਲੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇ ਅੰਤਰੁ ਪਾਰਿਓ ॥੨॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२॥
क्योंकि ये हर क्षण प्रभु से मेरी अंतरात्मा को दूर करते रहते हैं।॥ २ ॥

ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਦੁਖ ਕੀ ਰਾਸੀ ॥
जत देखउ तत दुख की रासी ॥
मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही दु:खों की राशि है।

ਅਜੌਂ ਨ ਪਤ੍ਯਾਇ ਨਿਗਮ ਭਏ ਸਾਖੀ ॥੩॥
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥
चाहे वेद इस बात के साक्षी हैं, परन्तु अभी भी मेरा मन इस सत्य को स्वीकार नहीं कर रहा कि विकारों का फल दु:ख हैं।॥ ३॥

ਗੋਤਮ ਨਾਰਿ ਉਮਾਪਤਿ ਸ੍ਵਾਮੀ ॥
गोतम नारि उमापति स्वामी ॥
गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या एवं पार्वती के स्वामी शिव का क्या हाल हुआ ? (गौतम ऋषि के शाप से अहिल्या पत्थर बन गई थी और अहल्या से देवराज इन्द्र द्वारा छलपूर्वक भोग करने के कारण उसके शरीर पर हजारों भग के चिन्ह बन गए थे।)

ਸੀਸੁ ਧਰਨਿ ਸਹਸ ਭਗ ਗਾਂਮੀ ॥੪॥
सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४॥
ब्रह्मा का अपनी कन्या पर कुदृष्टि रखने के कारण उमापति शिव ने जब ब्रह्मा का पांचवां सिर काटा तो वह सिर शिव के हाथ से ही चिपक गया था॥ ४॥

ਇਨ ਦ੍ਰੁਤਨ ਖਲੁ ਬਧੁ ਕਰਿ ਮਾਰਿਓ ॥
इन द्रुतन खलु बधु करि मारिओ ॥
इन कामादिक विकारों ने मेरे मूर्ख मन पर बड़े आक्रमण किए हैं किन्तु

ਬਡੋ ਨਿਲਾਜੁ ਅਜਹੂ ਨਹੀ ਹਾਰਿਓ ॥੫॥
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥
यह मन बड़ा निर्लज्ज है, जो अभी भी इसकी संगति नहीं छोड़ रहा ॥ ५ ॥

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਕਹਾ ਕੈਸੇ ਕੀਜੈ ॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥
रविदास जी कहते हैं कि अब मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ?

ਬਿਨੁ ਰਘੁਨਾਥ ਸਰਨਿ ਕਾ ਕੀ ਲੀਜੈ ॥੬॥੧॥
बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥
अब परमेश्वर के सिवाय किस की शरण ली जाए॥ ६॥ १ ॥

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है। उसमें किसी तरह का भय व्याप्त नहीं है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं, वह कालातीत, अजन्मा एवं स्वयंभू है और गुरु-कृपा से उसे पाया जा सकता है।

ਰਾਗੁ ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧ ॥
रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥
रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥

ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਰਹਿ ਨ ਸਕੈ ਮਨੁ ਮੇਰਾ ॥
हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥
भगवान के बिना मेरा यह मन रह नहीं सकता।

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪ੍ਰਾਨ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਭਵਜਲਿ ਫੇਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ रहाउ ॥
यदि गुरु मुझे प्राणपति प्रियतम हरि-प्रभु से मिला दे तो इस संसार-सागर में पुनः जन्म लेकर आना नहीं पड़ेगा ॥१॥ रहाउ ॥

ਮੇਰੈ ਹੀਅਰੈ ਲੋਚ ਲਗੀ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰੀ ਹਰਿ ਨੈਨਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਹੇਰਾ ॥
मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभ हेरा ॥
मेरे मन में प्रभु-मिलन की तीव्र लालसा लगी हुई है और अपनी आंखों से हरि-प्रभु को ही देखता रहता हूँ।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਦਇਆਲਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਹਰਿ ਪਾਧਰੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥੧॥
सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥१॥
दयालु, सतगुरु ने मेरे मन में परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है। चूंकि हरि-प्रभु की प्राप्ति का यह नाम रूपी मार्ग ही सुगम है ॥१॥

ਹਰਿ ਰੰਗੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਭ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਗੋਵਿੰਦ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥
हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥
मैंने प्रिय गोविन्द, हरि-प्रभु का हरि-नाम प्राप्त किया है।

ਹਰਿ ਹਿਰਦੈ ਮਨਿ ਤਨਿ ਮੀਠਾ ਲਾਗਾ ਮੁਖਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਚੰਗੇਰਾ ॥੨॥
हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥२॥
हरि का नाम मेरे हृदय, मन एवं तन को बड़ा मीठा लगता है। चूंकि मेरे मुख एवं माथे पर शुभ भाग्य जाग गया है॥२॥

ਲੋਭ ਵਿਕਾਰ ਜਿਨਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਹਰਿ ਵਿਸਰਿਆ ਪੁਰਖੁ ਚੰਗੇਰਾ ॥
लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥
जिनका मन लोभ एवं विकारों में लगा रहता है, उन्हें महान् परमपुरुष परमेश्वर विस्मृत ही रहता है।

ਓਇ ਮਨਮੁਖ ਮੂੜ ਅਗਿਆਨੀ ਕਹੀਅਹਿ ਤਿਨ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਮੰਦੇਰਾ ॥੩॥
ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥३॥
ऐसे व्यक्ति स्वेच्छाचारी, मूर्ख एवं अज्ञानी ही कहलाते हैं और उनके माथे पर भी दुर्भाग्य ही विद्यमान रहता है।॥३॥

ਬਿਬੇਕ ਬੁਧਿ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਗੁਰ ਗਿਆਨੁ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਭ ਕੇਰਾ ॥
बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥
गुरु से ही मुझे विवेक बुद्धि प्राप्त हुई है और गुरु से ही प्रभु प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त हुआ है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਗੁਰੂ ਤੇ ਪਾਇਆ ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਭਾਗੁ ਲਿਖੇਰਾ ॥੪॥੧॥
जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥४॥१॥
हे नानक ! गुरु से ही मुझे प्रभु नाम की प्राप्ति हुई क्योंकि प्रारम्भ से ही मेरे माथे पर ऐसा भाग्य लिखा हुआ था॥ ४॥ १॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੧ ਦੁਪਦੇ
टोडी महला ५ घरु १ दुपदे
टोडी महला ५ घरु १ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸੰਤਨ ਅਵਰ ਨ ਕਾਹੂ ਜਾਨੀ ॥
संतन अवर न काहू जानी ॥
संत-महापुरुष परमात्मा के अलावा अन्य किसी को भी नहीं जानते।

ਬੇਪਰਵਾਹ ਸਦਾ ਰੰਗਿ ਹਰਿ ਕੈ ਜਾ ਕੋ ਪਾਖੁ ਸੁਆਮੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥
जगत का स्वामी जिनका भी पक्ष लेता हैं, वे हमेशा ही निश्चिंत होकर प्रभु के रंग में बेपरवाह हुए रहते हैं।॥ रहाउ॥

ਊਚ ਸਮਾਨਾ ਠਾਕੁਰ ਤੇਰੋ ਅਵਰ ਨ ਕਾਹੂ ਤਾਨੀ ॥
ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥
हे ठाकुर जी ! तेरा नाम रूपी शामियाना सर्वोच्च है और तेरे अलावा अन्य कोई ताकतवर नहीं।

ਐਸੋ ਅਮਰੁ ਮਿਲਿਓ ਭਗਤਨ ਕਉ ਰਾਚਿ ਰਹੇ ਰੰਗਿ ਗਿਆਨੀ ॥੧॥
ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥१॥
भक्तों को ऐसा हुक्म मिला है कि वे ज्ञानी बनकर प्रभु के रंग में ही मग्न रहते हैं।॥ १॥

ਰੋਗ ਸੋਗ ਦੁਖ ਜਰਾ ਮਰਾ ਹਰਿ ਜਨਹਿ ਨਹੀ ਨਿਕਟਾਨੀ ॥
रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥
रोग, शोक, दुःख, बुढ़ापा एवं मृत्यु भक्तजनों के निकट नहीं आते।

ਨਿਰਭਉ ਹੋਇ ਰਹੇ ਲਿਵ ਏਕੈ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਮਨੁ ਮਾਨੀ ॥੨॥੧॥
निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥२॥१॥
हे नानक ! ऐसे भक्त निर्भीक होकर एक परमेश्वर में ही वृति लगाकर रखते हैं और उनका मन उसकी भक्ति में ही प्रसन्न रहता है। ॥२॥१॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਬਿਸਰਤ ਸਦਾ ਖੁਆਰੀ ॥
हरि बिसरत सदा खुआरी ॥
भगवान को विस्मृत करने से मनुष्य सदैव ही ख्वार होता रहता है।

ਤਾ ਕਉ ਧੋਖਾ ਕਹਾ ਬਿਆਪੈ ਜਾ ਕਉ ਓਟ ਤੁਹਾਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥
हे परमेश्वर ! जिसे तुम्हारी शरण मिली हुई है, फिर वह कैसे धोखे का शिकार हो सकता है ॥ रहाउ ॥

ਬਿਨੁ ਸਿਮਰਨ ਜੋ ਜੀਵਨੁ ਬਲਨਾ ਸਰਪ ਜੈਸੇ ਅਰਜਾਰੀ ॥
बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥
भगवान के सिमरन के बिना जीना वासनाओं की अग्नि में जलने की भांति है, जिस तरह एक सांप अपने आंतरिक जहर को पालता हुआ लम्बी उम्र तक जहर की जलन में जलता रहता है।

ਨਵ ਖੰਡਨ ਕੋ ਰਾਜੁ ਕਮਾਵੈ ਅੰਤਿ ਚਲੈਗੋ ਹਾਰੀ ॥੧॥
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥१॥
चाहे मनुष्य समूचे विश्व को जीतकर शासन कर ले परन्तु सिमरन के बिना अंत में वह जीवन की बाजी हार कर चला जाएगा ॥ १॥

ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ ਗੁਣ ਤਿਨ ਹੀ ਗਾਏ ਜਾ ਕਉ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰੀ ॥
गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी ॥
हे नानक ! जिस पर उसने अपनी कृपा-दृष्टि की है, उसने ही गुणों के भण्डार परमात्मा का गुणगान किया है।

ਸੋ ਸੁਖੀਆ ਧੰਨੁ ਉਸੁ ਜਨਮਾ ਨਾਨਕ ਤਿਸੁ ਬਲਿਹਾਰੀ ॥੨॥੨॥
सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥२॥२॥
वास्तव में वही सुखी है और उसका ही जीवन धन्य है तथा मैं उस पर ही न्योछावर होता हूँ॥ २॥ २॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੨ ਚਉਪਦੇ
टोडी महला ५ घरु २ चउपदे
टोडी महला ५ घरु २ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਧਾਇਓ ਰੇ ਮਨ ਦਹ ਦਿਸ ਧਾਇਓ ॥
धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥
यह चंचल मन दसों दिशाओं की तरफ भटकता फिरता है।

ਮਾਇਆ ਮਗਨ ਸੁਆਦਿ ਲੋਭਿ ਮੋਹਿਓ ਤਿਨਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਿ ਭੁਲਾਇਓ ॥ ਰਹਾਉ ॥
माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥
यह माया में मग्न रहता है और लोभ के स्वादों ने इसे मोह लिया है। सत्य तो यही है कि प्रभु ने खुद ही इसे भुलाया हुआ है॥ रहाउ॥

ਹਰਿ ਕਥਾ ਹਰਿ ਜਸ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਇਕੁ ਮੁਹਤੁ ਨ ਇਹੁ ਮਨੁ ਲਾਇਓ ॥
हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥
यह एक मुहूर्त भर के लिए भी हरि कथा, हरि यश एवं साधसंगत में सम्मिलित नहीं होता।

ਬਿਗਸਿਓ ਪੇਖਿ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕੋ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹ ਜੋਹਨਿ ਜਾਇਓ ॥੧॥
बिगसिओ पेखि रंगु कसुमभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥१॥
यह कुसुंभ के पुष्प का रंग देखकर बड़ा प्रसन्न होता है और पराई स्त्रियों की ओर भी देखता रहता है॥ १॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸਿਉ ਭਾਉ ਨ ਕੀਨੋ ਨਹ ਸਤ ਪੁਰਖੁ ਮਨਾਇਓ ॥
चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥
इस चंचल मन ने भगवान के चरण-कमलों पर श्रद्धा धारण नहीं की और न ही सद्पुरुष को प्रसन्न किया है।

ਧਾਵਤ ਕਉ ਧਾਵਹਿ ਬਹੁ ਭਾਤੀ ਜਿਉ ਤੇਲੀ ਬਲਦੁ ਭ੍ਰਮਾਇਓ ॥੨॥
धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥२॥
दौड़ने को अनेक प्रकार से नश्वर पदार्थों की तरफ ऐसे दौड़ता है, जिस तरह तेली का बैल एक ही स्थान पर चक्कर लगाता रहता है॥ २॥

ਨਾਮ ਦਾਨੁ ਇਸਨਾਨੁ ਨ ਕੀਓ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਕੀਰਤਿ ਗਾਇਓ ॥
नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥
इसने नाम-सिमरन, दान-पुण्य एवं स्नान इत्यादि कुछ भी नहीं किया और एक पल भर के लिए भगवान का कीर्ति-गान नहीं किया।

ਨਾਨਾ ਝੂਠਿ ਲਾਇ ਮਨੁ ਤੋਖਿਓ ਨਹ ਬੂਝਿਓ ਅਪਨਾਇਓ ॥੩॥
नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥३॥
यह विभिन्न प्रकार के झूठ अपनाकर अपने चित्त को प्रसन्न करने में लगा रहता है परन्तु अपने स्वरूप को बिल्कुल नहीं समझा ॥ ३॥

ਪਰਉਪਕਾਰ ਨ ਕਬਹੂ ਕੀਏ ਨਹੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿ ਧਿਆਇਓ ॥
परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥
इसने कोई परोपकार भी नहीं किया, न ही गुरु की सेवा एवं ध्यान किया है।

ਪੰਚ ਦੂਤ ਰਚਿ ਸੰਗਤਿ ਗੋਸਟਿ ਮਤਵਾਰੋ ਮਦ ਮਾਇਓ ॥੪॥
पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥४॥
यह तो केवल कामादिक विकारों की संगति एवं गोष्ठी में मग्न होकर माया के नशे में ही मतवाला बना रहता है।॥ ४॥

ਕਰਉ ਬੇਨਤੀ ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਵਛਲ ਸੁਨਿ ਆਇਓ ॥
करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥
मैं विनती करता हूँ कि मुझे साध-संगत में मिला दो, हे हरि ! तुझे भक्तवत्सल सुनकर तेरी शरण में आया हूँ।

ਨਾਨਕ ਭਾਗਿ ਪਰਿਓ ਹਰਿ ਪਾਛै ਰਾਖੁ ਲਾਜ ਅਪੁਨਾਇਓ ॥੫॥੧॥੩॥
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥५॥१॥३॥
हे नानक ! मैं भागकर हरि के पीछे पड़ गया हूँ मुझे अपना बनाकर मेरी लाज रख लो॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਮਾਨੁਖੁ ਬਿਨੁ ਬੂਝੇ ਬਿਰਥਾ ਆਇਆ ॥
मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥
मनुष्य सत्य को बूझे बिना व्यर्थ ही इस दुनिया में आया है।

ਅਨਿਕ ਸਾਜ ਸੀਗਾਰ ਬਹੁ ਕਰਤਾ ਜਿਉ ਮਿਰਤਕੁ ਓਢਾਇਆ ॥ ਰਹਾਉ ॥
अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥
वह अनेक प्रकार की सजावट एवं बहुत प्रकार के श्रृंगार करता है परन्तु यह तो मृतक को सुन्दर वस्त्र पहनाने की भांति ही समझो।॥ रहाउ ॥

ਧਾਇ ਧਾਇ ਕ੍ਰਿਪਨ ਸ੍ਰਮੁ ਕੀਨੋ ਇਕਤ੍ਰ ਕਰੀ ਹੈ ਮਾਇਆ ॥
धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥
जैसे कोई कंजूस इधर-उधर भाग दौड़ करके बड़े परिश्रम से धन एकत्रित करता है।

ਦਾਨੁ ਪੁੰਨੁ ਨਹੀ ਸੰਤਨ ਸੇਵਾ ਕਿਤ ਹੀ ਕਾਜਿ ਨ ਆਇਆ ॥੧॥
दानु पुंनु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥१॥
यदि वह कोई दान-पुण्य एवं संतों की सेवा में नहीं जुटता तो वह धन उसके किसी काम में नहीं आता ॥ १॥

ਕਰਿ ਆਭਰਣ ਸਵਾਰੀ ਸੇਜਾ ਕਾਮਨਿ ਥਾਟੁ ਬਨਾਇਆ ॥
करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥
जीव रूपी नारी सुन्दर आभूषण पहनकर अपनी सेज को बड़ी संवारती एवं श्रृंगार करती है परन्तु

ਸੰਗੁ ਨ ਪਾਇਓ ਅਪੁਨੇ ਭਰਤੇ ਪੇਖਿ ਪੇਖਿ ਦੁਖੁ ਪਾਇਆ ॥੨॥
संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥२॥
यदि उसे अपने प्रियतम का संयोग प्राप्त नहीं होता तो वह अपने श्रृंगारों को देख-देखकर बहुत दुखी होती है।॥ २॥

सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥
सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥
मनुष्य सारा दिन मजदूरी करता रहा किन्तु वह तो व्यर्थ ही छिलके को मूसल से पीटता रहा।

खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥३॥
खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥३॥
दूसरे की बेगार करने वाले मनुष्य की तरह उसे दुःख ही मिला है क्योंकि उसने अपने घर का कोई भी कार्य नहीं संवारा ॥ ३॥

भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥
भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥
जिस पर प्रभु की कृपा हो गई है, उसके हृदय में नाम का निवास हो गया है।

साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥
साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥
हे नानक ! जिसने साधुओं की संगति का अनुसरण किया है, उसे हरि-रस की उपलब्धि हो गई है॥ ४॥ २॥ ४॥

टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी *महला* ५ ॥

क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥
क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥
हे कृपानिधान परमात्मा ! सदैव मेरे हृदय में बसे रहो।

तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥
तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥
मेरे हृदय में ऐसी बुद्धि का प्रकाश करो कि मेरी तुझ से प्रीति लग जाए॥ रहाउ ॥

दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥
दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥
में तेरे दास की चरण-धूलि प्राप्त करूँ और उसे लेकर अपने माथे पर लगाऊँ।

ਮਹਾ ਪਤਿਤ ਤੇ ਹੋਤ ਪੁਨੀਤਾ ਹਰਿ ਕੀਰਤਨ ਗੁਨ ਗਾਵਉ ॥੧॥

महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥१॥

हरि का भजन एवं गुणगान करने से मैं महापतित से पवित्र हो गया हूँ॥ १॥

ਆਗਿਆ ਤੁਮਰੀ ਮੀਠੀ ਲਾਗਉ ਕੀਓ ਤੁਹਾਰੋ ਭਾਵਉ ॥
आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥
तुम्हारी आज्ञा मुझे बड़ी मीठी लगती है एवं तुम जो भी करते हो, वह सब मुझे अच्छा लगता है।

जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥२॥
जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥२॥
तुम जो कुछ भी मुझे देते हो, उससे ही मेरा मन प्रसन्न हो जाता है और मैं किसी अन्य के पीछे नहीं दौड़ता ॥२॥

सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥
सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥
उस मालिक-प्रभु को मैं हमेशा ही अपने निकट समझता हूँ और उसकी चरण-धूलि बना रहता हूँ।

साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥३॥
साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥३॥
यदि संतों की संगति प्राप्त हो जाए तो सहज ही प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है ॥३॥

सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥
सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥
हे प्रभु ! तू हमारा मालिक है और हम प्राणी हमेशा ही तेरी सन्तान है।

नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥४॥३॥५॥
नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥४॥३॥५॥
नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारा बालक हूँ और तुम मेरे माता-पिता हो। तेरा नाम रूपी दूध हमेशा ही मेरे मुख में पीने के लिए है ॥ ४॥ ३॥ ५॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे
टोडी महला ५ घरु २ दुपदे
टोडी महला ५ घरु २ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਮਾਗਉ ਦਾਨੁ ਠਾਕੁਰ ਨਾਮ ॥
मागउ दानु ठाकुर नाम ॥
हे परमेश्वर ! मैं तो तुझसे नाम का दान ही माँगता हूँ,

ਅਵਰੁ ਕਛੁ ਮੇਰੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਮਿਲੈ ਕ੍ਰਿਪਾ ਗੁਣ ਗਾਮ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥१॥ रहाउ ॥
चूंकि इस दुनिया से नाम के सिवाय अन्य कुछ भी मेरे साथ नहीं जाना। अतः ऐसी कृपा करो कि मुझे तेरे गुणगान का दान प्राप्त हो जाए॥ १॥ रहाउ॥

ਰਾਜੁ ਮਾਲੁ ਅਨੇਕ ਭੋਗ ਰਸ ਸਗਲ ਤਰਵਰ ਕੀ ਛਾਮ ॥
राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥
तमाम राजसुख, धन-दौलत, अनेक प्रकार के भोग रस सभी पेड़ की छाया के समान लुप्त होने वाले हैं।

ਧਾਇ ਧਾਇ ਬਹੁ ਬਿਧਿ ਕਉ ਧਾਵੈ ਸਗਲ ਨਿਰਾਰਥ ਕਾਮ ॥੧॥
धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥१॥
मनुष्य अपने जीवन में सांसारिक सुखों की उपलब्धि हेतु अनेक विधियों द्वारा चारों ओर भागदौड़ करता है परन्तु ये सभी कार्य निष्फल हैं॥ १॥

ਬਿਨੁ ਗੋਵਿੰਦ ਅਵਰੁ ਜੇ ਚਾਹਉ ਦੀਸੈ ਸਗਲ ਬਾਤ ਹੈ ਖਾਮ ॥
बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥
गोविन्द के सिवाय किसी अन्य पदार्थ की लालसा करना निरर्थक बात ही नजर आती है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੰਤ ਰੇਨ ਮਾਗਉ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਪਾਵੈ ਬਿਸ੍ਰਾਮ ॥੨॥੧॥੬॥
कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥२॥१॥६॥
हे नानक ! मैं तो संत-महापुरुषों की चरण-धूलि की ही कामना करता हूँ, जिससे मेरे मन को सुख की उपलब्धि हो जाए॥ २॥ १॥ ६॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਪ੍ਰਭ ਜੀ ਕੋ ਨਾਮੁ ਮਨਹਿ ਸਾਧਾਰੈ ॥
प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥
प्रभु का नाम ही मेरे मन का एकमात्र सहारा है।

ਜੀਅ ਪ੍ਰਾਨ ਸੂਖ ਇਸੁ ਮਨ ਕਉ ਬਰਤਨਿ ਏਹ ਹਮਾਰੈ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥१॥ रहाउ ॥

नाम ही इस मन की आत्मा, प्राण एवं सुख है और यही हमारे लिए नित्य उपयोग में आता है॥ १॥ रहाउ॥

ਨਾਮੁ ਜਾਤਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੀ ਪਤਿ ਹੈ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਪਰਵਾਰੈ ॥

नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥

प्रभु का नाम ही मेरी जाति, मेरा मान-सम्मान एवं मेरा परिवार है।

ਨਾਮੁ ਸਖਾਈ ਸਦਾ ਮੇਰੈ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੋ ਕਉ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥੧॥

नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥१॥

नाम मेरा सखा बनकर सदैव ही मेरे साथ है और परमेश्वर का नाम ही मेरा भवसागर से उद्धार करता है॥ १॥

ਬਿਖੈ ਬਿਲਾਸ ਕਹੀਅਤ ਬਹੁਤੇਰੇ ਚਲਤ ਨ ਕਛੂ ਸੰਗਾਰੈ ॥

बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥

जीवन में बहुत सारे विषय-विलास कहे जाते हैं परन्तु अन्तिम समय कुछ भी साथ नहीं चलता।

ਇਸਟੁ ਮੀਤੁ ਨਾਮੁ ਨਾਨਕ ਕੋ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਮੇਰੈ ਭੰਡਾਰੈ ॥੨॥੨॥੭॥

इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥२॥२॥७॥

हे नानक ! नाम ही मेरा इष्ट-मित्र है और परमेश्वर का नाम ही मेरा अक्षय भण्डार है॥ २॥ २॥ ७॥ ।

ਟੋਡੀ ਮਃ ੫ ॥

टोडी मः ५ ॥

टोडी मः ५ ॥

ਨੀਕੇ ਗੁਣ ਗਾਉ ਮਿਟਹੀ ਰੋਗ ॥

नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥

हे श्रद्धालुओं ! परमात्मा के सुन्दर गुण गाओ, जिसके फलस्वरूप तुम्हारे सर्व प्रकार के रोग मिटने वाले हैं।

ਮੁਖ ਊਜਲ ਮਨੁ ਨਿਰਮਲ ਹੋਈ ਹੈ ਤੇਰੋ ਰਹੈ ਈਹਾ ਊਹਾ ਲੋਗੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥१॥ रहाउ ॥

गुणगान से ही तुम्हारा मुख उज्ज्वल एवं मन शुद्ध होता है और तुम्हारा लोक-परलोक संवरने वाला है॥ १॥ रहाउ॥

ਚਰਨ ਪਖਾਰਿ ਕਰਉ ਗੁਰ ਸੇਵਾ ਮਨਹਿ ਚਰਾਵਉ ਭੋਗ ॥
चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥
मैं तो बड़ी श्रद्धा से अपने गुरु के चरण धोकर उनकी निष्काम सेवा करता हूँ और अपने मन को प्रसाद रूप में गुरु के समक्ष अर्पण करता हूँ।

ਛੋਡਿ ਆਪਤੁ ਬਾਦੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ਮਾਨੁ ਸੋਈ ਜੋ ਹੋਗੁ ॥੧॥
छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥१॥
हे सज्जनो ! अपना अहंत्व, वाद-विवाद एवं अहंकार को त्याग कर भगवान की ओर से जो कुछ भी हो रहा है, उसे सहर्ष स्वीकार करो।॥ १॥

ਸੰਤ ਟਹਲ ਸੋਈ ਹੈ ਲਾਗਾ ਜਿਸੁ ਮਸਤਕਿ ਲਿਖਿਆ ਲਿਖੋਗੁ ॥
संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥
संतों-महापुरुषों की सेवा में वही व्यक्ति लगता है, जिसके मस्तक पर ऐसा भाग्य लिखा होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਏਕ ਬਿਨੁ ਦੂਜਾ ਅਵਰੁ ਨ ਕਰਣੈ ਜੋਗੁ ॥੨॥੩॥੮॥
कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥२॥३॥८॥
हे नानक ! एक परमात्मा के सिवाय कोई अन्य कुछ भी करने योग्य नहीं है॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਆਇਓ ਸਰਣਿ ਤੁਹਾਰੀ ॥
सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥
हे मेरे सतगुरु ! मैं तो तुम्हारी शरण में ही आया हूँ।

ਮਿਲੈ ਸੂਖੁ ਨਾਮੁ ਹਰਿ ਸੋਭਾ ਚਿੰਤਾ ਲਾਹਿ ਹਮਾਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥
तेरी दया से ही मुझे हरि-नाम का सुख एवं शोभा मिलेगी और हमारी चिन्ता दूर हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥

ਅਵਰ ਨ ਸੂਝੈ ਦੂਜੀ ਠਾਹਰ ਹਾਰਿ ਪਰਿਓ ਤਉ ਦੁਆਰੀ ॥
अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥
मुझे अन्य कोई शरणस्थल नजर नहीं आता, इसलिए मायूस होकर तेरे द्वार पर आ गया हूँ।

ਲੇਖਾ ਛੋਡਿ ਅਲੇਖੈ ਛੁਟਹ ਹਮ ਨਿਰਗੁਨ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੀ ॥੧॥

लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥

तुम हमारे कर्मों का लेखा-जोखा छोड़कर यदि कर्मों के लेखे को नजर-अंदाज कर दोगे तो हमारा कल्याण हो जाएगा। मुझ निर्गुण को भवसागर से बचा लो॥ १॥

ਸਦ ਬਖਸਿੰਦੁ ਸਦਾ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਸਭਨਾ ਦੇਇ ਅਧਾਰੀ ॥

सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥

तू सदैव क्षमाशील है, सदैव मेहरबान है और सभी को सहारा देता है।

ਨਾਨਕ ਦਾਸ ਸੰਤ ਪਾਛੈ ਪਰਿਓ ਰਾਖਿ ਲੇਹੁ ਇਹ ਬਾਰੀ ॥੨॥੪॥੯॥

नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥२॥४॥९॥

दास नानक तो संतों के पीछे पड़ा हुआ है, इसलिए इस बार जन्म-मरण से बचा लो॥ २॥ ४॥ ६॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥

टोडी महला ५ ॥

टोडी महला ५ ॥

ਰਸਨਾ ਗੁਣ ਗੋਪਾਲ ਨਿਧਿ ਗਾਇਣ ॥

रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥

यदि रसना से गुणों के भण्डार परमेश्वर का गुणानुवाद किया जाए तो

ਸਾਂਤਿ ਸਹਜੁ ਰਹਸੁ ਮਨਿ ਉਪਜਿਓ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਪਲਾਇਣ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥१॥ रहाउ ॥

मन को बड़ी शांति, आत्मिक स्थिरता एवं आनंद प्राप्त होता है और सभी दुःख निवृत्त हो जाते हैं।॥ १॥ रहाउ॥

ਜੋ ਮਾਗਹਿ ਸੋਈ ਸੋਈ ਪਾਵਹਿ ਸੇਵਿ ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਣ ਰਸਾਇਣ ॥
जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥
प्रसन्नता के घर, परमेश्वर के चरणों की आराधना करने से भक्त जो भी कामना करते हैं, उन्हें वही प्राप्त होता है।

ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਹਹੂ ਤੇ ਛੂਟਹਿ ਭਵਜਲੁ ਜਗਤੁ ਤਰਾਇਣ ॥੧॥
जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥१॥
वे जीवन एवं मृत्यु दोनों से ही स्वतंत्र होकर भवसागर को पार कर जाते हैं।॥ १॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰਿਓ ਦਾਸ ਗੋਵਿੰਦ ਪਰਾਇਣ ॥
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥
मैंने खोज-पड़ताल करके इस तत्व पर ही विचार किया है कि भक्त तो गोविन्द परायण ही होते हैं।

ਅਬਿਨਾਸੀ ਖੇਮ ਚਾਹਹਿ ਜੇ ਨਾਨਕ ਸਦਾ ਸਿਮਰਿ ਨਾਰਾਇਣ ॥੨॥੫॥੧੦॥
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥२॥५॥१०॥
हे नानक ! यदि अटल कुशल-क्षेम चाहते हो तो हमेशा ही नारायण का सिमरन करते रहो॥ २॥ ५ ॥ १०॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਨਿੰਦਕੁ ਗੁਰ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਾਟਿਓ ॥
निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥
गुरु की कृपा से निन्दक अब निन्दा करने से हट गया है।

ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭ ਭਏ ਦਇਆਲਾ ਸਿਵ ਕੈ ਬਾਣਿ ਸਿਰੁ ਕਾਟਿਓ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥१॥ रहाउ ॥
जब परब्रह्म-प्रभु मुझ पर दयालु हो गया तो उसने कल्याणकारी नाम रूपी बाण से उसका सिर काट दिया ॥ १॥ रहाउ ॥

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਸਚ ਕਾ ਪੰਥਾ ਥਾਟਿਓ ॥
कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥
सत्य-मार्ग का अनुसरण करने से अब मृत्यु का जाल एवं यम भी दृष्टि नहीं कर सकते।

ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਕਿਛੁ ਨਿਖੁਟਤ ਨਾਹੀ ਰਾਮ ਰਤਨੁ ਧਨੁ ਖਾਟਿਓ ॥੧॥
खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥१॥
मैंने राम-नाम रूपी रत्न धन की कमाई की है, जो खाने एवं खर्च करने से न्यून नहीं होता ॥ १॥

ਭਸਮਾ ਭੂਤ ਹੋਆ ਖਿਨ ਭੀਤਰਿ ਅਪਨਾ ਕੀਆ ਪਾਇਆ ॥
भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥
हमारा निन्दक एक क्षण में ही भस्माभूत हुआ है और इस प्रकार उसने अपने कर्मों का फल प्राप्त किया है।

ਆਗਮ ਨਿਗਮੁ ਕਹੈ ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਸਭੁ ਦੇਖੈ ਲੋਕੁ ਸਬਾਇਆ ॥੨॥੬॥੧੧॥
आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥२॥६॥११॥
हे नानक ! शास्त्र एवं वेद भी कहते हैं और सम्पूर्ण विश्व इस आश्चर्य को देख रहा है।॥२॥६॥११॥

ਟੋਡੀ ਮਃ ੫ ॥
टोडी मः ५ ॥
टोडी मः ५ ॥

ਕਿਰਪਨ ਤਨ ਮਨ ਕਿਲਵਿਖ ਭਰੇ ॥
किरपन तन मन किलविख भरे ॥
हे कंजूस आदमी ! तेरा तन एवं मन दोनों ही किल्विष-पापों से भरे पड़े हैं।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਭਜਨੁ ਕਰਿ ਸੁਆਮੀ ਢਾਕਨ ਕਉ ਇਕੁ ਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥१॥ रहाउ ॥
अत: संतों की पवित्र सभा में भगवान का भजन कर, चूंकि एक वही तुम्हारे पापों को ढककर तेरा कल्याण कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥

ਅਨਿਕ ਛਿਦ੍ਰ ਬੋਹਿਥ ਕੇ ਛੁਟਕਤ ਥਾਮ ਨ ਜਾਹੀ ਕਰੇ ॥
अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥
जब शरीर रूपी जहाज में बहुत सारे छिद्र हो जाएँ तो वह हाथों से बंद नहीं हो सकते।

ਜਿਸ ਕਾ ਬੋਹਿਥੁ ਤਿਸੁ ਆਰਾਧੇ ਖੋਟੇ ਸੰਗਿ ਖਰੇ ॥੧॥
जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥१॥
जिसका यह जहाज है, उसकी आराधना करने से दोषी भी महापुरुषों की संगति करने से पार हो जाते हैं।॥ १॥

ਗਲੀ ਸੈਲ ਉਠਾਵਤ ਚਾਹੈ ਓਇ ਊਹਾ ਹੀ ਹੈ ਧਰੇ ॥
गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥
यद्यपि कोई बातों द्वारा पर्वत को उठाना चाहे तो वह उठाया नहीं जा सकता अपितु वही स्थित रहता है।

ਜੋਰੁ ਸਕਤਿ ਨਾਨਕ ਕਿਛੁ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਰਾਖਹੁ ਸਰਣਿ ਪਰੇ ॥੨॥੭॥੧੨॥
जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥२॥७॥१२॥
नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! हम जीवों के पास कोई जोर एवं शक्ति नहीं। हम तुम्हारी शरण में आए हैं, हमारी रक्षा करो।॥ २॥ ७॥ १२॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਕੇ ਚਰਨ ਕਮਲ ਮਨਿ ਧਿਆਉ ॥
हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥
अपने मन में परमात्मा के चरण-कमलों का चिन्तन करो।

ਕਾਢਿ ਕੁਠਾਰੁ ਪਿਤ ਬਾਤ ਹੰਤਾ ਅਉਖਧੁ ਹਰਿ ਕੋ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
परमात्मा का नाम तो वह औषधि है जो पित रूपी क्रोध एवं वात रूपी अहंकार जैसे रोगों का कुल्हाड़ा निकाल कर नाश कर देती है ॥१॥ रहाउ ॥

ਤੀਨੇ ਤਾਪ ਨਿਵਾਰਣਹਾਰਾ ਦੁਖ ਹੰਤਾ ਸੁਖ ਰਾਸਿ ॥
तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥
परमात्मा का नाम तीनों ताप-मानसिक, शारीरिक एवं क्लेश इत्यादि का नाश करने वाला है तथा दुःख नाशक एवं सुख की पूंजी है।

ਤਾ ਕਉ ਬਿਘਨੁ ਨ ਕੋਊ ਲਾਗੈ ਜਾ ਕੀ ਪ੍ਰਭ ਆਗੈ ਅਰਦਾਸਿ ॥੧॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥१॥
जो व्यक्ति अपने भगवान के समक्ष प्रार्थना करता है, उसे कोई संकट नहीं आता ॥ १॥

ਸੰਤ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਬੈਦ ਨਾਰਾਇਣ ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਪ੍ਰਭ ਏਕ ॥
संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥
सृष्टि का रचयिता एक प्रभु ही है और संतों की कृपा से उस वैद्य रूपी नारायण की उपलब्धि होती है।

ਬਾਲ ਬੁਧਿ ਪੂਰਨ ਸੁਖਦਾਤਾ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਹਰਿ ਟੇਕ ॥੨॥੮॥੧੩॥
बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥
हे नानक ! वह हरि-परमेश्वर ही बाल बुद्धि वाले जीवों हेतु पूर्ण सुखदाता एवं सहारा है॥ २॥ ८॥ १३॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਸਦ ਜਾਪਿ ॥
हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥
सदैव ही परमेश्वर के नाम का जाप करो,

ਧਾਰਿ ਅਨੁਗ੍ਰਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਸੁਆਮੀ ਵਸਦੀ ਕੀਨੀ ਆਪਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी कृपा करके परब्रह्म-प्रभु ने स्वयं ही निवास करके हृदय-नगरी को शुभ गुणों से बसा दिया है ॥१॥ रहाउ ॥

ਜਿਸ ਕੇ ਸੇ ਫਿਰਿ ਤਿਨ ਹੀ ਸਮ੍ਹ੍ਹਾਲੇ ਬਿਨਸੇ ਸੋਗ ਸੰਤਾਪ ॥
जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥
जिसने हमें उत्पन्न किया है, उसने हमारी देखभाल की है और सारे दुःख-क्लेश मिट गए हैं।

ਹਾਥ ਦੇਇ ਰਾਖੇ ਜਨ ਅਪਨੇ ਹਰਿ ਹੋਏ ਮਾਈ ਬਾਪ ॥੧॥
हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥१॥
परमात्मा ने माता-पिता बनकर अपना हाथ देकर अपने दास की रक्षा की है॥१॥

ਜੀਅ ਜੰਤ ਹੋਏ ਮਿਹਰਵਾਨਾ ਦਯਾ ਧਾਰੀ ਹਰਿ ਨਾਥ ॥
जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥
उस मालिक-प्रभु ने बड़ी दया धारण की है और सभी लोग मेहरबान हो गए हैं।

ਨਾਨਕ ਸਰਨਿ ਪਰੇ ਦੁਖ ਭੰਜਨ ਜਾ ਕਾ ਬਡ ਪਰਤਾਪ ॥੨॥੯॥੧੪॥
नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥२॥९॥१४॥
हे नानक ! मैं तो सब दुःख मिटाने वाले उस परमात्मा की शरण में हूँ, जिसका बड़ा तेज-प्रताप है॥ २॥ ६॥१४॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਸ੍ਵਾਮੀ ਸਰਨਿ ਪਰਿਓ ਦਰਬਾਰੇ ॥
स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥
हे स्वामी ! हम तो तेरे दरबार की शरण में पड़े हैं।

ਕੋਟਿ ਅਪਰਾਧ ਖੰਡਨ ਕੇ ਦਾਤੇ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕਉਨੁ ਉਧਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥१॥ रहाउ ॥
हे करोड़ों अपराध नाश करने वाले दाता ! तेरे सिवाय हमारा कौन उद्धार कर सकता है॥ १॥

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਬਹੁ ਪਰਕਾਰੇ ਸਰਬ ਅਰਥ ਬੀਚਾਰੇ ॥
खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥
हमने तो अनेक प्रकार से खोज-पड़ताल करके समस्त अर्थों पर गहन चिन्तन किया है।

ਸਾਧਸੰਗਿ ਪਰਮ ਗਤਿ ਪਾਈਐ ਮਾਇਆ ਰਚਿ ਬੰਧਿ ਹਾਰੇ ॥੧॥
साधसंगि परम गति पाईऐ माइआ रचि बंधि हारे ॥१॥
अंततः सत्य यही है कि संतों-महापुरुषों की संगति द्वारा ही मुक्ति मिलती है तथा माया के बन्धनों में फँसकर मनुष्य अपने जीवन की बाजी हार जाता है ॥१॥

ਚਰਨ ਕਮਲ ਸੰਗਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਮਨਿ ਲਾਗੀ ਸੁਰਿ ਜਨ ਮਿਲੇ ਪਿਆਰੇ ॥
चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥
जब मन की प्रीति ईश्वर के सुन्दर चरण-कमलों के संग लग गई तो प्यारे महापुरुषों की संगति मिल गई।

ਨਾਨਕ ਅਨਦ ਕਰੇ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜਪਿ ਸਗਲੇ ਰੋਗ ਨਿਵਾਰੇ ॥੨॥੧੦॥੧੫॥
नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥२॥१०॥१५॥
हे नानक ! मैं हरि-नाम जप-जपकर आनंद करता रहता हूँ और इसने मेरे सारे रोग दूर कर दिए है॥ २॥ १०॥ १५ ॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੩ ਚਉਪਦੇ
टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे
टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਹਾਂ ਹਾਂ ਲਪਟਿਓ ਰੇ ਮੂੜ੍ਹੇ ਕਛੂ ਨ ਥੋਰੀ ॥
हां हां लपटिओ रे मूड़्हे कछू न थोरी ॥
अरे मूर्ख ! निःसंदेह तू माया से लिपटा पड़ा है किन्तु इसमें तेरा मोह कुछ थोड़ा नहीं है।

ਤੇਰੋ ਨਹੀ ਸੁ ਜਾਨੀ ਮੋਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥
जिसे तू अपना समझता है, दरअसल वह तेरी नहीं है॥ रहाउ॥

ਆਪਨ ਰਾਮੁ ਨ ਚੀਨੋ ਖਿਨੂਆ ॥
आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥
अपने राम को तू एक पल भर के लिए भी पहचानता नहीं लेकिन

ਜੋ ਪਰਾਈ ਸੁ ਅਪਨੀ ਮਨੂਆ ॥੧॥
जो पराई सु अपनी मनूआ ॥१॥
जो (माया) पराई है, उसे तू अपनी मानता है॥ १॥

ਨਾਮੁ ਸੰਗੀ ਸੋ ਮਨਿ ਨ ਬਸਾਇਓ ॥
नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥
ईश्वर का नाम ही तेरा साथी है, किन्तु उसे तूने अपने मन में नहीं बसाया।

ਛੋਡਿ ਜਾਹਿ ਵਾਹੂ ਚਿਤੁ ਲਾਇਓ ॥੨॥
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥२॥
जिसने तुझे छोड़ जाना है, अपना चित्त तूने उसके साथ लगाया हुआ है॥ २॥

ਸੋ ਸੰਚਿਓ ਜਿਤੁ ਭੂਖ ਤਿਸਾਇਓ ॥
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥
तुमने उन पदार्थों को संचित कर लिया जो तुम्हारी भूख एवं तृष्णा में वृद्धि करते हैं।

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮੁ ਤੋਸਾ ਨਹੀ ਪਾਇਓ ॥੩॥
अम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥३॥
तुमने परमात्मा का अमृत नाम जो जीवन-यात्रा का खर्च है, उसे प्राप्त ही नहीं किया ॥३॥

ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਿ ਮੋਹ ਕੂਪਿ ਪਰਿਆ ॥
काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥
तुम तो काम, क्रोध एवं मोह रूपी कुएँ में पड़े हुए हो।

ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਨਾਨਕ ਕੋ ਤਰਿਆ ॥੪॥੧॥੧੬॥
गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥४॥१॥१६॥
हे नानक ! गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही भवसागर से पार हुआ है ॥४॥१॥१६॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਹਮਾਰੈ ਏਕੈ ਹਰੀ ਹਰੀ ॥
हमारै एकै हरी हरी ॥
हमारे मन में तो एक परमेश्वर ही बसा हुआ है तथा

ਆਨ ਅਵਰ ਸਿਞਾਣਿ ਨ ਕਰੀ ॥ ਰਹਾਉ ॥
आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥
उसके अलावा किसी अन्य से हमारी जान-पहचान ही नहीं ॥ रहाउ ॥

ਵਡੈ ਭਾਗਿ ਗੁਰੁ ਅਪੁਨਾ ਪਾਇਓ ॥
वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥
अहोभाग्य से मुझे अपना गुरु प्राप्त हुआ है तथा

ਗੁਰਿ ਮੋ ਕਉ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਓ ॥੧॥
गुरि मो कउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥१॥
गुरु ने मुझे परमेश्वर का नाम दृढ़ करवाया है॥१॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਾਪ ਤਾਪ ਬ੍ਰਤ ਨੇਮਾ ॥
हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥
एक परमेश्वर ही हमारा जाप, तपस्या, व्रत एवं जीवन आचरण बना हुआ है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਇ ਕੁਸਲ ਸਭਿ ਖੇਮਾ ॥੨॥
हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥२॥
एक ईश्वर का ध्यान-मनन करने से हमारी सब कुशल क्षेम बनी हुई है॥२॥

ਆਚਾਰ ਬਿਉਹਾਰ ਜਾਤਿ ਹਰਿ ਗੁਨੀਆ ॥
आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥
भगवान का भजन ही हमारा जीवन-आचरण, व्यवहार एवं श्रेष्ठ जाति है तथा

ਮਹਾ ਅਨੰਦ ਕੀਰਤਨ ਹਰਿ ਸੁਨੀਆ ॥੩॥
महा अनंद कीरतन हरि सुनीआ ॥३॥
उसका कीर्तन सुनने से महा आनंद मिलता है॥३॥

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਜਿਨਿ ਠਾਕੁਰੁ ਪਾਇਆ ॥
कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥
हे नानक ! जिसने ठाकुर जी को पाया है,

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਤਿਸ ਕੇ ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਆਇਆ ॥੪॥੨॥੧੭॥
सभु किछु तिस के ग्रिह महि आइआ ॥४॥२॥१७॥
उसके हृदय-घर में सब कुछ आ गया है॥ ४॥ २॥ १७ ॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪ ਦੁਪਦੇ
टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे
टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਰੂੜੋ ਮਨੁ ਹਰਿ ਰੰਗੋ ਲੋੜੈ ॥
रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥
मेरा यह सुन्दर मन भगवान के प्रेम-रंग की कामना करता है किन्तु

ਗਾਲੀ ਹਰਿ ਨੀਹੁ ਨ ਹੋਇ ॥ ਰਹਾਉ ॥
गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥
बातों द्वारा उसका प्रेम नहीं मिलता॥ रहाउ ॥

ਹਉ ਢੂਢੇਦੀ ਦਰਸਨ ਕਾਰਣਿ ਬੀਥੀ ਬੀਥੀ ਪੇਖਾ ॥
हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥
उसके दर्शन करने के लिए मैं गली-गली ढूंढती हुई देख रही हूँ।

ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਭਰਮੁ ਗਵਾਇਆ ਹੇ ॥੧॥
गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥१॥
अब गुरु को मिलने से ही मेरा भ्रम दूर हुआ है॥१॥

ਇਹ ਬੁਧਿ ਪਾਈ ਮੈ ਸਾਧੂ ਕੰਨਹੁ ਲੇਖੁ ਲਿਖਿਓ ਧੁਰਿ ਮਾਥੈ ॥
इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥
यह बुद्धि मुझे साधु से उपलब्ध हुई है, चूंकि मेरे माथे पर प्रारम्भ से ऐसी तकदीर लिखी हुई थी।

ਇਹ ਬਿਧਿ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਨੈਣ ਅਲੋਇ ॥੨॥੧॥੧੮॥
इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥२॥१॥१८॥
हे नानक ! इस विधि द्वारा अपने नेत्रों से मैंने भगवान के दर्शन प्राप्त किए हैं॥२॥१॥१८॥

ਟੋਡੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
टोडी महला ५ ॥
टोडी महला ५ ॥

ਗਰਬਿ ਗਹਿਲੜੋ ਮੂੜੜੋ ਹੀਓ ਰੇ ॥
गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥
इस विमूढ़ हृदय को घमण्ड ने जकड़ रखा है।

ਹੀਓ ਮਹਰਾਜ ਰੀ ਮਾਇਓ ॥ ਡੀਹਰ ਨਿਆਈ ਮੋਹਿ ਫਾਕਿਓ ਰੇ ॥ ਰਹਾਉ ॥

हीओ महराज री माइओ ॥ डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥

परमेश्वर की माया ने डायन की तरह हृदय को अपने मोह में फँसाया हुआ है॥ रहाउ ॥

ਘਣੋ ਘਣੋ ਘਣੋ ਸਦ ਲੋੜੈ ਬਿਨੁ ਲਹਣੇ ਕੈਠੈ ਪਾਇਓ ਰੇ ॥

घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥

यह सदैव ही अत्याधिक धन-दौलत की कामना करता रहता है परन्तु तकदीर में लिखी हुई उपलब्धि के बिना वह इसे कैसे पा सकता है?

ਮਹਰਾਜ ਰੋ ਗਾਥੁ ਵਾਹੂ ਸਿਉ ਲੁਭੜਿਓ ਨਿਹਭਾਗੜੋ ਭਾਹਿ ਸੰਜੋਇਓ ਰੇ ॥੧॥

महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥१॥

वह भगवान के दिए हुए धन से फँसा हुआ है। यह दुर्भाग्यशाली हृदय स्वयं को तृष्णा की अग्नि से जोड़ रहा है॥१॥

ਸੁਣਿ ਮਨ ਸੀਖ ਸਾਧੂ ਜਨ ਸਗਲੋ ਥਾਰੇ ਸਗਲੇ ਪ੍ਰਾਛਤ ਮਿਟਿਓ ਰੇ ॥

सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥

हे मन ! तू साधुजनों की शिक्षा को ध्यानपूर्वक सुन, इस तरह तेरे समस्त पाप पूर्णतया मिट जाएँगे।

ਜਾ ਕੋ ਲਹਣੋ ਮਹਰਾਜ ਰੀ ਗਾਠੜੀਓ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗਰਭਾਸਿ ਨ ਪਉੜਿਓ ਰੇ ॥੨॥੨॥੧੯॥

जा को लहणो महराज री गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥२॥२॥१९॥

हे नानक ! जिसकी किस्मत में ईश्वर-नाम की गठरी से कुछ लेना लिखा हुआ है, वह गर्भ-योनि में नहीं आता और उसे मोक्ष मिल जाता है॥ २ ॥ २॥ १६॥

अध्यात्म की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु हैं, जो सिख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब में दृष्टि किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज की है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ उनकी आध्यात्मिकता को साधने का समान अधिकार होता है। महिलाएं प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर की श्रद्धा है। सिख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। ईश्वरीय संदेश में प्राय: प्रलहद, हरनाकाश, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि हिंदू और मुस्लिम पौराणिक कथाओं का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ एक होना मानव जीवन का लक्ष्य है।

आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश आप तक पहुँचाने के लिए यह कार्य कई स्वयंसेवकों द्वारा वर्षों से किया जा रहा है। यदि आपके कोई प्रश्न हैं, तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM